किताब-ए मुक़द्दस

तौरेत - तारीख़ी सहाइफ़ - सहाइफ़-ए हिकमत और ज़बूर -
सहाइफ़-ए अन्बिया - इंजील

असल इब्रानी, अरामी और यूनानी मतन से नया उर्दू तर्जुमा

नाशिरीन

जियोलिंक रीसोर्स कन्सल्टेंट्स

बार _____ दुवुम

The Old and New Testament in Modern Urdu.
Translated from the Original Hebrew, Aramaic and Greek
Urdu Geo Version (Devanagari) (beta version 150122)
© 2012 Geolink Resource Consultants, LLC

Published by
Geolink Resource Consultants, LLC
10307 W. Broad Street, # 169, Glen Allen, Virginia 23060
United States of America

http://urdugeoversion.com

जुम्ला हुक़ूक़ ब-हक़्क़-ए नाशिरीन, जियोलिंक रीसोर्स कन्सल्टेंट्स, एल-एल-सी महफ़ूज़ हैं

पैदाइश

दुनिया की तख़्लीक़ का पहला दिन : रौशनी

1 [1] इब्तिदा में अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को
बनाया। [2] अभी तक ज़मीन वीरान और ख़ाली
थी। वह गहरे पानी से ढकी हुई थी जिस के ऊपर
अंधेरा ही अंधेरा था। अल्लाह का रूह पानी के ऊपर
मंडला रहा था।
[3] फिर अल्लाह ने कहा, "रौशनी हो जाए" तो रौशनी
पैदा हो गई। [4] अल्लाह ने देखा कि रौशनी अच्छी है,
और उस ने रौशनी को तारीकी से अलग कर दिया।
[5] अल्लाह ने रौशनी को दिन का नाम दिया और तारीकी
को रात का। शाम हुई, फिर सुब्ह। यूँ पहला दिन गुज़र
गया।

दूसरा दिन : आसमान

[6] अल्लाह ने कहा, "पानी के दरमियान एक ऐसा
गुम्बद पैदा हो जाए जिस से निचला पानी ऊपर के
पानी से अलग हो जाए।" [7] ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने
एक ऐसा गुम्बद बनाया जिस से निचला पानी ऊपर
के पानी से अलग हो गया। [8] अल्लाह ने गुम्बद को
आसमान का नाम दिया। शाम हुई, फिर सुब्ह। यूँ
दूसरा दिन गुज़र गया।

तीसरा दिन : ख़ुश्क ज़मीन और पौदे

[9] अल्लाह ने कहा, "जो पानी आसमान के नीचे है
वह एक जगह जमा हो जाए ताकि दूसरी तरफ़ ख़ुश्क
जगह नज़र आए।" ऐसा ही हुआ। [10] अल्लाह ने ख़ुश्क
जगह को ज़मीन का नाम दिया और जमाशुदा पानी
को समुन्दर का। और अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा
है। [11] फिर उस ने कहा, "ज़मीन हरियावल पैदा करे,
ऐसे पौदे जो बीज रखते हों और ऐसे दरख़्त जिन के
फल अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते हों।" ऐसा
ही हुआ। [12] ज़मीन ने हरियावल पैदा की, ऐसे पौदे जो
अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते और ऐसे दरख़्त
जिन के फल अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते थे।
अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। [13] शाम हुई, फिर
सुब्ह। यूँ तीसरा दिन गुज़र गया।

चौथा दिन : सूरज, चाँद और सितारे

[14] अल्लाह ने कहा, "आसमान पर रौशनियाँ पैदा
हो जाएँ ताकि दिन और रात में इम्तियाज़ हो और
इसी तरह मुख़्तलिफ़ मौसमों, दिनों और सालों में
भी। [15] आसमान की यह रौशनियाँ दुनिया को रौशन
करें।" ऐसा ही हुआ। [16] अल्लाह ने दो बड़ी रौशनियाँ
बनाईं, सूरज जो बड़ा था दिन पर हुकूमत करने को
और चाँद जो छोटा था रात पर। इन के इलावा उस
ने सितारों को भी बनाया। [17] उस ने उन्हें आसमान
पर रखा ताकि वह दुनिया को रौशन करें, [18] दिन
और रात पर हुकूमत करें और रौशनी और तारीकी
में इम्तियाज़ पैदा करें। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा
है। [19] शाम हुई, फिर सुब्ह। यूँ चौथा दिन गुज़र गया।

पाँचवाँ दिन : पानी और हवा के जानदार

[20] अल्लाह ने कहा, "पानी आबी जानदारों से भर
जाए और फ़िज़ा में परिन्दे उड़ते फिरें।" [21] अल्लाह
ने बड़े बड़े समुन्दरी जानवर बनाए, पानी की तमाम
दीगर मख़्लूक़ात और हर क़िस्म के पर रखने वाले
जानदार भी बनाए। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा
है। [22] उस ने उन्हें बरकत दी और कहा, "फलो फूलो
और तादाद में बढ़ते जाओ। समुन्दर तुम से भर जाए।
इसी तरह परिन्दे ज़मीन पर तादाद में बढ़ जाएँ।"
[23] शाम हुई, फिर सुब्ह। यूँ पाँचवाँ दिन गुज़र गया।

छटा दिन : ज़मीन पर चलने वाले जानवर और इन्सान

24 अल्लाह ने कहा, “ज़मीन हर क़िस्म के जानदार
पैदा करे : मवेशी, रेंगने वाले और जंगली जानवर।”
ऐसा ही हुआ। 25 अल्लाह ने हर क़िस्म के मवेशी, रेंगने
वाले और जंगली जानवर बनाए। उस ने देखा कि यह
अच्छा है।

26 अल्लाह ने कहा, “आओ अब हम इन्सान को
अपनी सूरत पर बनाएँ, वह हम से मुशाबहत रखे।
वह तमाम जानवरों पर हुकूमत करे, समुन्दर की
मछलियों पर, हवा के परिन्दों पर, मवेशियों पर,
जंगली जानवरों पर और ज़मीन पर के तमाम रेंगने
वाले जानदारों पर।” 27 यूँ अल्लाह ने इन्सान को
अपनी सूरत पर बनाया, अल्लाह की सूरत पर। उस
ने उन्हें मर्द और औरत बनाया। 28 अल्लाह ने उन्हें
बरकत दी और कहा, “फलो फूलो और तादाद में
बढ़ते जाओ। दुनिया तुम से भर जाए और तुम उस
पर इख़तियार रखो। समुन्दर की मछलियों, हवा के
परिन्दों और ज़मीन पर के तमाम रेंगने वाले जानदारों
पर हुकूमत करो।”

29 अल्लाह ने उन से मज़ीद कहा, “तमाम बीजदार
पौदे और फलदार दरख़्त तुम्हारे ही हैं। मैं उन्हें तुम को
खाने के लिए देता हूँ। 30 इस तरह मैं तमाम जानवरों
को खाने के लिए हरियाली देता हूँ। जिस में भी जान
है वह यह खा सकता है, ख़्वाह वह ज़मीन पर चलने
फिरने वाला जानवर, हवा का परिन्दा या ज़मीन पर
रेंगने वाला क्यूँ न हो।” ऐसा ही हुआ। 31 अल्लाह ने
सब पर नज़र की तो देखा कि वह बहुत अच्छा बन
गया है। शाम हुई, फिर सुब्ह। छटा दिन गुज़र गया।

सातवाँ दिन : आराम

2 1 यूँ आसमान-ओ-ज़मीन और उन की तमाम
चीज़ों की तख़्लीक़ मुकम्मल हुई। 2 सातवें दिन
अल्लाह का सारा काम तक्मील को पहुँचा। इस से
फ़ारिग़ हो कर उस ने आराम किया। 3 अल्लाह ने
सातवें दिन को बरकत दी और उसे मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस किया। क्यूँकि उस दिन उस ने अपने तमाम
तख़्लीक़ी काम से फ़ारिग़ हो कर आराम किया।

आदम और हव्वा

4 यह आसमान-ओ-ज़मीन की तख़्लीक़ का बयान
है। जब रब ख़ुदा ने आसमान-ओ-ज़मीन को बनाया
5 तो शुरू में झाड़ियाँ और पौदे नहीं उगते थे। वजह
यह थी कि अल्लाह ने बारिश का इन्तिज़ाम नहीं किया
था। और अभी इन्सान भी पैदा नहीं हुआ था कि
ज़मीन की खेतीबाड़ी करता। 6 इस की बजाय ज़मीन
में से धुन्द उठ कर उस की पूरी सतह को तर करती
थी। 7 फिर रब ख़ुदा ने ज़मीन से मिट्टी ले कर इन्सान
को तश्कील दिया और उस के नथनों में ज़िन्दगी का
दम फूँका तो वह जीती जान हुआ।

8 रब ख़ुदा ने मशरिक़ में मुल्क-ए-अदन में एक बाग़
लगाया। उस में उस ने उस आदमी को रखा जिसे उस
ने बनाया था। 9 रब ख़ुदा के हुक्म पर ज़मीन में से तरह
तरह के दरख़्त फूट निकले, ऐसे दरख़्त जो देखने में
दिलकश और खाने के लिए अच्छे थे। बाग़ के बीच
में दो दरख़्त थे। एक का फल ज़िन्दगी बख़्शता था
जबकि दूसरे का फल अच्छे और बुरे की पहचान
दिलाता था। 10 अदन में से एक दरया निकल कर
बाग़ की आबपाशी करता था। वहाँ से बह कर वह
चार शाख़ों में तक़्सीम हुआ। 11–12 पहली शाख़ का
नाम फ़ीसून है। वह मुल्क-ए-हवीला को घेरे हुए बहती
है जहाँ ख़ालिस सोना, गूगल का गूँद और अक़ीक़-
ए-अह्मर [a]पाए जाते हैं। 13 दूसरी का नाम जैहून है जो
कूश को घेरे हुए बहती है। 14 तीसरी का नाम दिजला
है जो असूर के मशरिक़ को जाती है और चौथी का
नाम फ़ुरात है।

15 रब ख़ुदा ने पहले आदमी को बाग़-ए-अदन में
रखा ताकि वह उस की बाग़बानी और हिफ़ाज़त करे।

---

[a]carnelian

16 लेकिन रब ख़ुदा ने उसे आगाह किया, “तुझे हर
दरख़्त का फल खाने की इजाज़त है। 17 लेकिन जिस
दरख़्त का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता
है उस का फल खाना मना है। अगर उसे खाए तो
यक़ीनन मरेगा।”

18 रब ख़ुदा ने कहा, “अच्छा नहीं कि आदमी
अकेला रहे। मैं उस के लिए एक मुनासिब मददगार
बनाता हूँ।”

19 रब ख़ुदा ने मिट्टी से ज़मीन पर चलने फिरने वाले
जानवर और हवा के परिन्दे बनाए थे। अब वह उन्हें
आदमी के पास ले आया ताकि मालूम हो जाए कि
वह उन के क्या क्या नाम रखेगा। यूँ हर जानवर
को आदम की तरफ़ से नाम मिल गया। 20 आदमी ने
तमाम मवेशियों, परिन्दों और ज़मीन पर फिरने वाले
जानदारों के नाम रखे। लेकिन उसे अपने लिए कोई
मुनासिब मददगार न मिला।

21 तब रब ख़ुदा ने उसे सुला दिया। जब वह गहरी
नींद सो रहा था तो उस ने उस की पसलियों में से एक
निकाल कर उस की जगह गोश्त भर दिया। 22 पसली
से उस ने औरत बनाई और उसे आदमी के पास ले
आया। 23 उसे देख कर वह पुकार उठा, “वाह! यह
तो मुझ जैसी ही है, मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे
गोश्त में से गोश्त है। इस का नाम नारी रखा जाए
क्यूँकि वह नर से निकाली गई है।” 24 इस लिए मर्द
अपने माँ-बाप को छोड़ कर अपनी बीवी के साथ
पैवस्त हो जाता है, और वह दोनों एक हो जाते हैं।
25 दोनों, आदमी और औरत नंगे थे, लेकिन यह उन
के लिए शर्म का बाइस नहीं था।

गुनाह का आग़ाज़

3 1 साँप ज़मीन पर चलने फिरने वाले उन तमाम
जानवरों से ज़्यादा चालाक था जिन को रब ख़ुदा
ने बनाया था। उस ने औरत से पूछा, “क्या अल्लाह ने
वाक़ई कहा कि बाग़ के किसी भी दरख़्त का फल न
खाना?” 2 औरत ने जवाब दिया, “हरगिज़ नहीं। हम
बाग़ का हर फल खा सकते हैं, 3 सिर्फ़ उस दरख़्त
के फल से गुरेज़ करना है जो बाग़ के बीच में है।
अल्लाह ने कहा कि उस का फल न खाओ बल्कि उसे
छूना भी नहीं, वर्ना तुम यक़ीनन मर जाओगे।” 4 साँप
ने औरत से कहा, “तुम हरगिज़ न मरोगे, 5 बल्कि
अल्लाह जानता है कि जब तुम उस का फल खाओगे
तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और तुम अल्लाह की
मानिन्द हो जाओगे, तुम जो भी अच्छा और बुरा है
उसे जान लोगे।”

6 औरत ने दरख़्त पर ग़ौर किया कि खाने के
लिए अच्छा और देखने में भी दिलकश है। सब से
दिलफ़रेब बात यह कि उस से समझ हासिल हो
सकती है! यह सोच कर उस ने उस का फल ले कर
उसे खाया। फिर उस ने अपने शौहर को भी दे दिया,
क्यूँकि वह उस के साथ था। उस ने भी खा लिया।
7 लेकिन खाते ही उन की आँखें खुल गईं और उन को
मालूम हुआ कि हम नंगे हैं। चुनाँचे उन्हों ने अन्जीर
के पत्ते सी कर लुंगियाँ बना लीं।

8 शाम के वक़्त जब ठंडी हवा चलने लगी तो उन्हों
ने रब ख़ुदा को बाग़ में चलते फिरते सुना। वह डर
के मारे दरख़्तों के पीछे छुप गए। 9 रब ख़ुदा ने पुकार
कर कहा, “आदम, तू कहाँ है?” 10 आदम ने जवाब
दिया, “मैं ने तुझे बाग़ में चलते हुए सुना तो डर गया,
क्यूँकि मैं नंगा हूँ। इस लिए मैं छुप गया।” 11 उस ने
पूछा, “किस ने तुझे बताया कि तू नंगा है? क्या तू
ने उस दरख़्त का फल खाया है जिसे खाने से मैं ने
मना किया था?” 12 आदम ने कहा, “जो औरत तू ने
मेरे साथ रहने के लिए दी है उस ने मुझे फल दिया।
इस लिए मैं ने खा लिया।” 13 अब रब ख़ुदा औरत
से मुख़ातिब हुआ, “तू ने यह क्यूँ किया?” औरत ने
जवाब दिया, “साँप ने मुझे बहकाया तो मैं ने खाया।”

14 रब ख़ुदा ने साँप से कहा, “चूँकि तू ने यह किया,
इस लिए तू तमाम मवेशियों और जंगली जानवरों में
लानती है। तू उम्र भर पेट के बल रेंगेगा और ख़ाक
चाटेगा। 15 मैं तेरे और औरत के दरमियान दुश्मनी
पैदा करूँगा। उस की औलाद तेरी औलाद की दुश्मन

होगी। वह तेरे सर को कुचल डालेगी जबकि तू उस
की एड़ी पर काटेगा।”

16 फिर रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ और
कहा, “जब तू उम्मीद से होगी तो मैं तेरी तक्लीफ़ को
बहुत बढ़ाऊँगा। जब तेरे बच्चे होंगे तो तू शदीद दर्द
का शिकार होगी। तू अपने शौहर की तमन्ना करेगी
लेकिन वह तुझ पर हुकूमत करेगा।” 17 आदम से उस
ने कहा, “तू ने अपनी बीवी की बात मानी और उस
दरख़्त का फल खाया जिसे खाने से मैं ने मना किया
था। इस लिए तेरे सबब से ज़मीन पर लानत है। उस
से ख़ुराक हासिल करने के लिए तुझे उम्र भर मेहनत-
मशक़्क़त करनी पड़ेगी। 18 तेरे लिए वह ख़ारदार पौदे
और ऊँटकटारे पैदा करेगी, हालाँकि तू उस से अपनी
ख़ुराक भी हासिल करेगा। 19 पसीना बहा बहा कर
तुझे रोटी कमाने के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ेगी।
और यह सिलसिला मौत तक जारी रहेगा। तू मेहनत
करते करते दुबारा ज़मीन में लौट जाएगा, क्यूँकि तू
उसी से लिया गया है। तू ख़ाक है और दुबारा ख़ाक
में मिल जाएगा।”

20 आदम ने अपनी बीवी का नाम हव्वा यानी
ज़िन्दगी रखा, क्यूँकि बाद में वह तमाम ज़िन्दों की
माँ बन गई। 21 रब ख़ुदा ने आदम और उस की बीवी
के लिए खालों से लिबास बना कर उन्हें पहनाया।
22 उस ने कहा, “इन्सान हमारी मानिन्द हो गया है,
वह अच्छे और बुरे का इल्म रखता है। अब ऐसा
न हो कि वह हाथ बढ़ा कर ज़िन्दगी बख़्शने वाले
दरख़्त के फल से ले और उस से खा कर हमेशा
तक ज़िन्दा रहे।” 23 इस लिए रब ख़ुदा ने उसे बाग़-
ए-अदन से निकाल कर उस ज़मीन की खेतीबाड़ी
करने की ज़िम्मादारी दी जिस में से उसे लिया गया
था। 24 इन्सान को ख़ारिज करने के बाद उस ने बाग़-
ए-अदन के मशरिक़ में करूबी फ़रिश्ते खड़े किए
और साथ साथ एक आतिशी तलवार रखी जो इधर
उधर घूमती थी ताकि उस रास्ते की हिफ़ाज़त करे
जो ज़िन्दगी बख़्शने वाले दरख़्त तक पहुँचाता था।

क़ाबील और हाबील

4 1 आदम हव्वा से हमबिसतर हुआ तो उन का
पहला बेटा क़ाबील पैदा हुआ। हव्वा ने कहा,
“रब की मदद से मैं ने एक मर्द हासिल किया है।”
2 बाद में क़ाबील का भाई हाबील पैदा हुआ। हाबील
भेड़-बकरियों का चरवाहा बन गया जबकि क़ाबील
खेतीबाड़ी करने लगा।

पहला क़त्ल

3 कुछ देर के बाद क़ाबील ने रब को अपनी फ़सलों
में से कुछ पेश किया। 4 हाबील ने भी नज़राना पेश
किया, लेकिन उस ने अपनी भेड़-बकरियों के कुछ
पहलौठे उन की चर्बी समेत चढ़ाए। हाबील का
नज़राना रब को पसन्द आया, 5 मगर क़ाबील का
नज़राना मन्ज़ूर न हुआ। यह देख कर क़ाबील बड़े
ग़ुस्से में आ गया, और उस का मुँह बिगड़ गया।
6 रब ने पूछा, “तू ग़ुस्से में क्यूँ आ गया है? तेरा मुँह
क्यूँ लटका हुआ है? 7 क्या अगर तू अच्छी नीयत
रखता है तो अपनी नज़र उठा कर मेरी तरफ़ नहीं
देख सकेगा? लेकिन अगर अच्छी नीयत नहीं रखता
तो ख़बरदार! गुनाह दरवाज़े पर दबका बैठा है और
तुझे चाहता है। लेकिन तेरा फ़र्ज़ है कि उस पर ग़ालिब
आए।”

8 एक दिन क़ाबील ने अपने भाई से कहा, “आओ,
हम बाहर खुले मैदान में चलें।” और जब वह खुले
मैदान में थे तो क़ाबील ने अपने भाई हाबील पर हम्ला
करके उसे मार डाला।

9 तब रब ने क़ाबील से पूछा, “तेरा भाई हाबील
कहाँ है?” क़ाबील ने जवाब दिया, “मुझे क्या पता!
क्या अपने भाई की देख-भाल करना मेरी ज़िम्मादारी
है?” 10 रब ने कहा, “तू ने क्या किया है? तेरे भाई
का ख़ून ज़मीन में से पुकार कर मुझ से फ़र्याद कर
रहा है। 11 इस लिए तुझ पर लानत है और ज़मीन ने
तुझे रद्द किया है, क्यूँकि ज़मीन को मुँह खोल कर
तेरे हाथ से क़त्ल किए हुए भाई का ख़ून पीना पड़ा।

12 अब से जब तू खेतीबाड़ी करेगा तो ज़मीन अपनी
पैदावार देने से इन्कार करेगी। तू मफ़रूर हो कर
मारा मारा फिरेगा।” 13 क़ाबील ने कहा, “मेरी सज़ा
निहायत सख़्त है। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर पाऊँगा।
14 आज तू मुझे ज़मीन की सतह से भगा रहा है और
मुझे तेरे हुज़ूर से भी छुप जाना है। मैं मफ़रूर की
हैसियत से मारा मारा फिरता रहूँगा, इस लिए जिस
को भी पता चलेगा कि मैं कहाँ हूँ वह मुझे क़त्ल कर
डालेगा।” 15 लेकिन रब ने उस से कहा, “हरगिज़
नहीं। जो क़ाबील को क़त्ल करे उस से सात गुना
बदला लिया जाएगा।” फिर रब ने उस पर एक निशान
लगाया ताकि जो भी क़ाबील को देखे वह उसे क़त्ल
न कर दे। 16 इस के बाद क़ाबील रब के हुज़ूर से
चला गया और अदन के मशरिक़ की तरफ़ नोद के
इलाक़े में जा बसा।

क़ाबील का ख़ानदान

17 क़ाबील की बीवी हामिला हुई। बेटा पैदा हुआ
जिस का नाम हनूक रखा गया। क़ाबील ने एक शहर
तामीर किया और अपने बेटे की ख़ुशी में उस का
नाम हनूक रखा। 18 हनूक का बेटा ईराद था, ईराद
का बेटा महूयाएल, महूयाएल का बेटा मतूसाएल
और मतूसाएल का बेटा लमक था। 19 लमक की
दो बीवियाँ थीं, अदा और ज़िल्ला। 20 अदा का बेटा
याबल था। उस की नस्ल के लोग ख़ैमों में रहते और
मवेशी पालते थे। 21 याबल का भाई यूबल था। उस
की नस्ल के लोग सरोद [b]और बाँसरी बजाते थे।
22 ज़िल्ला के भी बेटा पैदा हुआ जिस का नाम तूबल-
क़ाबील था। वह लोहार था। उस की नस्ल के लोग
पीतल और लोहे की चीज़ें बनाते थे। तूबल-क़ाबील
की बहन का नाम नामा था। 23 एक दिन लमक ने
अपनी बीवियों से कहा, “अदा और ज़िल्ला, मेरी बात
सुनो! लमक की बीवियो, मेरे अल्फ़ाज़ पर ग़ौर करो!
24 एक आदमी ने मुझे ज़ख़्मी किया तो मैं ने उसे मार
डाला। एक लड़के ने मेरे चोट लगाई तो मैं ने उसे
क़त्ल कर दिया। जो क़ाबील को क़त्ल करे उस से
सात गुना बदला लिया जाएगा, लेकिन जो लमक को
क़त्ल करे उस से सतत्तर गुना बदला लिया जाएगा।”

सेत और अनूस

25 आदम और हव्वा का एक और बेटा पैदा हुआ।
हव्वा ने उस का नाम सेत रख कर कहा, “अल्लाह ने
मुझे हाबील की जगह जिसे क़ाबील ने क़त्ल किया
एक और बेटा बख़्शा है।” 26 सेत के हाँ भी बेटा पैदा
हुआ। उस ने उस का नाम अनूस रखा।

उन दिनों में लोग रब का नाम ले कर इबादत करने
लगे।

आदम से नूह तक का नसबनामा

5 1 ज़ैल में आदम का नसबनामा दर्ज है।
जब अल्लाह ने इन्सान को ख़ल्क़ किया तो उस
ने उसे अपनी सूरत पर बनाया। 2 उस ने उन्हें मर्द और
औरत पैदा किया। और जिस दिन उस ने उन्हें ख़ल्क़
किया उस ने उन्हें बरकत दे कर उन का नाम आदम
यानी इन्सान रखा।

3 आदम की उम्र 130 साल थी जब उस का बेटा
सेत पैदा हुआ। सेत सूरत के लिहाज़ से अपने बाप
की मानिन्द था, वह उस से मुशाबहत रखता था।
4 सेत की पैदाइश के बाद आदम मज़ीद 800 साल
ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
5 वह 930 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

6 सेत 105 साल का था जब उस का बेटा अनूस
पैदा हुआ। 7 इस के बाद वह मज़ीद 807 साल ज़िन्दा
रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 8 वह 912
साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

9 अनूस 90 बरस का था जब उस का बेटा क़ीनान
पैदा हुआ। 10 इस के बाद वह मज़ीद 815 साल

---

[b]लफ़्ज़ी तर्जुमा : चंग। चूँकि यह साज़ बर्र-ए-सग़ीर में कम ही इस्तेमाल होता है, इस लिए मुतर्जमीन ने इस की जगह लफ़्ज़ ‘सरोद’ इस्तेमाल किया है।

ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
11 वह 905 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

12 क़ीनान 70 साल का था जब उस का बेटा
महलल-एल पैदा हुआ। 13 इस के बाद वह मज़ीद
840 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी
पैदा हुए। 14 वह 910 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

15 महलल-एल 65 साल का था जब उस का बेटा
यारिद पैदा हुआ। 16 इस के बाद वह मज़ीद 830
साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा
हुए। 17 वह 895 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

18 यारिद 162 साल का था जब उस का बेटा हनूक
पैदा हुआ। 19 इस के बाद वह मज़ीद 800 साल
ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
20 वह 962 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

21 हनूक 65 साल का था जब उस का बेटा
मतूसिलह पैदा हुआ। 22 इस के बाद वह मज़ीद 300
साल अल्लाह के साथ चलता रहा। उस के और बेटे-
बेटियाँ भी पैदा हुए। 23 वह कुल 365 साल दुनिया में
रहा। 24 हनूक अल्लाह के साथ साथ चलता था। 365
साल की उम्र में वह ग़ाइब हुआ, क्यूँकि अल्लाह ने
उसे उठा लिया।

25 मतूसिलह 187 साल का था जब उस का बेटा
लमक पैदा हुआ। 26 वह मज़ीद 782 साल ज़िन्दा
रहा। उस के और बेटे और बेटियाँ भी पैदा हुए। 27 वह
969 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

28 लमक 182 साल का था जब उस का बेटा पैदा
हुआ। 29 उस ने उस का नाम नूह यानी तसल्ली रखा,
क्यूँकि उस ने उस के बारे में कहा, "हमारा खेतीबाड़ी
का काम निहायत तक्लीफ़दिह है, इस लिए कि
अल्लाह ने ज़मीन पर लानत भेजी है। लेकिन अब हम
बेटे की मारिफ़त तसल्ली पाएँगे।" 30 इस के बाद वह
मज़ीद 595 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ
भी पैदा हुए। 31 वह 777 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

32 नूह 500 साल का था जब उस के बेटे सिम, हाम
और याफ़त पैदा हुए।

लोगों की ज़ियादतियाँ

6 1 दुनिया में लोगों की तादाद बढ़ने लगी। उन के
हाँ बेटियाँ पैदा हुईं। 2 तब आसमानी हस्तियों
ने देखा कि बनी नौ इन्सान की बेटियाँ ख़ूबसूरत हैं,
और उन्हों ने उन में से कुछ चुन कर उन से शादी की।
3 फिर रब ने कहा, "मेरी रूह हमेशा के लिए इन्सान
में न रहे क्यूँकि वह फ़ानी मख़्लूक़ है। अब से वह
120 साल से ज़्यादा ज़िन्दा नहीं रहेगा।" 4 उन दिनों
में और बाद में भी दुनिया में देओक़ामत अफ़राद
थे जो इन्सानी औरतों और उन आसमानी हस्तियों
की शादियों से पैदा हुए थे। यह देओक़ामत अफ़राद
क़दीम ज़माने के मश्हूर सूरमा थे।

5 रब ने देखा कि इन्सान निहायत बिगड़ गया है,
कि उस के तमाम ख़यालात लगातार बुराई की तरफ़
माइल रहते हैं। 6 वह पछताया कि मैं ने इन्सान को
बना कर दुनिया में रख दिया है, और उसे सख़्त दुख
हुआ। 7 उस ने कहा, "गो मैं ही ने इन्सान को ख़ल्क़
किया मैं उसे रू-ए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा। मैं
न सिर्फ़ लोगों को बल्कि ज़मीन पर चलने फिरने
और रेंगने वाले जानवरों और हवा के परिन्दों को
भी हलाक कर दूँगा, क्यूँकि मैं पछताता हूँ कि मैं ने
उन को बनाया।"

बड़े सैलाब के लिए नूह की तय्यारियाँ

8 सिर्फ़ नूह पर रब की नज़र-ए-करम थी। 9 यह उस
की ज़िन्दगी का बयान है।

नूह रास्तबाज़ था। उस ज़माने के लोगों में सिर्फ़
वही बेक़ुसूर था। वह अल्लाह के साथ साथ चलता
था। 10 नूह के तीन बेटे थे, सिम, हाम और याफ़त।
11 लेकिन दुनिया अल्लाह की नज़र में बिगड़ी हुई और
ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद से भरी हुई थी। 12 जहाँ भी अल्लाह
देखता दुनिया ख़राब थी, क्यूँकि तमाम जानदारों ने
ज़मीन पर अपनी रविश को बिगाड़ दिया था।

13 तब अल्लाह ने नूह से कहा, "मैं ने तमाम जानदारों
को ख़त्म करने का फ़ैसला किया है, क्यूँकि उन

के सबब से पूरी दुनिया ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद से भर गई
है। चुनाँचे मैं उन को ज़मीन समेत तबाह कर दूँगा।
14 अब अपने लिए सर्व [c]की लकड़ी की कश्ती बना
ले। उस में कमरे हों और उसे अन्दर और बाहर
तारकोल लगा। 15 उस की लम्बाई 450 फ़ुट, चौड़ाई
75 फ़ुट और ऊँचाई 45 फ़ुट हो। 16 कश्ती की छत
को यूँ बनाना कि उस के नीचे 18 इंच खुला रहे। एक
तरफ़ दरवाज़ा हो, और उस की तीन मन्ज़िलें हों।
17 मैं पानी का इतना बड़ा सैलाब लाऊँगा कि वह
ज़मीन के तमाम जानदारों को हलाक कर डालेगा।
ज़मीन पर सब कुछ फ़ना हो जाएगा। 18 लेकिन तेरे
साथ मैं अह्द बांधूँगा जिस के तहत तू अपने बेटों,
अपनी बीवी और बहूओं के साथ कश्ती में जाएगा।
19 हर क़िस्म के जानवर का एक नर और एक मादा
भी अपने साथ कश्ती में ले जाना ताकि वह तेरे साथ
जीते बचें। 20 हर क़िस्म के पर रखने वाले जानवर
और हर क़िस्म के ज़मीन पर फिरने या रेंगने वाले
जानवर दो दो हो कर तेरे पास आएँगे ताकि जीते बच
जाएँ। 21 जो भी ख़ुराक दरकार है उसे अपने और उन
के लिए जमा करके कश्ती में मह्फ़ूज़ कर लेना।”
22 नूह ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा अल्लाह ने
उसे बताया।

सैलाब का अग़ाज़

7 1 फिर रब ने नूह से कहा, “अपने घराने समेत
कश्ती में दाख़िल हो जा, क्यूँकि इस दौर के
लोगों में से मैं ने सिर्फ़ तुझे रास्तबाज़ पाया है। 2 हर
क़िस्म के पाक जानवरों में से सात सात नर-ओ-मादा
के जोड़े जबकि नापाक जानवरों में से नर-ओ-मादा
का सिर्फ़ एक एक जोड़ा साथ ले जाना। 3 इसी तरह
हर क़िस्म के पर रखने वालों में से सात सात नर-ओ-
मादा के जोड़े भी साथ ले जाना ताकि उन की नस्लें
बची रहें। 4 एक हफ़्ते के बाद मैं चालीस दिन और
चालीस रात मुतवातिर बारिश बरसाऊँगा। इस से मैं
तमाम जानदारों को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा,
अगरचे मैं ही ने उन्हें बनाया है।”
5 नूह ने वैसा ही किया जैसा रब ने हुक्म दिया था।
6 वह 600 साल का था जब यह तूफ़ानी सैलाब ज़मीन
पर आया।
7 तूफ़ानी सैलाब से बचने के लिए नूह अपने बेटों,
अपनी बीवी और बहूओं के साथ कश्ती में सवार
हुआ। 8 ज़मीन पर फिरने वाले पाक और नापाक
जानवर, पर रखने वाले और तमाम रेंगने वाले जानवर
भी आए। 9 नर-ओ-मादा की सूरत में दो दो हो कर वह
नूह के पास आ कर कश्ती में सवार हुए। सब कुछ
वैसा ही हुआ जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म दिया था।
10 एक हफ़्ते के बाद तूफ़ानी सैलाब ज़मीन पर आ
गया।
11 यह सब कुछ उस वक़्त हुआ जब नूह 600 साल
का था। दूसरे महीने के 17वें दिन ज़मीन की गहराइयों
में से तमाम चश्मे फूट निकले और आसमान पर पानी
के दरीचे खुल गए। 12 चालीस दिन और चालीस रात
तक मूसलाधार बारिश होती रही। 13 जब बारिश शुरू
हुई तो नूह, उस के बेटे सिम, हाम और याफ़त, उस
की बीवी और बहूएँ कश्ती में सवार हो चुके थे।
14 उन के साथ हर क़िस्म के जंगली जानवर, मवेशी,
रेंगने और पर रखने वाले जानवर थे। 15 हर क़िस्म
के जानदार दो दो हो कर नूह के पास आ कर कश्ती
में सवार हो चुके थे। 16 नर-ओ-मादा आए थे। सब
कुछ वैसा ही हुआ था जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म
दिया था। फिर रब ने दरवाज़े को बन्द कर दिया।
17 चालीस दिन तक तूफ़ानी सैलाब जारी रहा। पानी
चढ़ा तो उस ने कश्ती को ज़मीन पर से उठा लिया।
18 पानी ज़ोर पकड़ कर बहुत बढ़ गया, और कश्ती
उस पर तैरने लगी। 19 आख़िरकार पानी इतना ज़्यादा
हो गया कि तमाम ऊँचे पहाड़ भी उस में छुप गए,
20 बल्कि सब से ऊँची चोटी पर पानी की गहराई 20
फ़ुट थी। 21 ज़मीन पर रहने वाली हर मख़्लूक़ हलाक

[c]इब्रानी लफ़्ज़ मतरूक है। शायद इस का मतलब सर्व या देवदार की लकड़ी हो।

हुई। परिन्दे, मवेशी, जंगली जानवर, तमाम जानदार
जिन से ज़मीन भरी हुई थी और इन्सान, सब कुछ
मर गया। 22 ज़मीन पर हर जानदार मख़्लूक़ हलाक
हुई। 23 यूँ हर मख़्लूक़ को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा
दिया गया। इन्सान, ज़मीन पर फिरने और रेंगने वाले
जानवर और परिन्दे, सब कुछ ख़त्म कर दिया गया।
सिर्फ़ नूह और कश्ती में सवार उस के साथी बच गए।
24 सैलाब डेढ़ सौ दिन तक ज़मीन पर ग़ालिब रहा।

सैलाब का इख़तिताम

8 1 लेकिन अल्लाह को नूह और तमाम जानवर याद
रहे जो कश्ती में थे। उस ने हवा चला दी जिस से
पानी कम होने लगा। 2 ज़मीन के चश्मे और आसमान
पर के पानी के दरीचे बन्द हो गए, और बारिश रुक
गई। 3 पानी घटता गया। 150 दिन के बाद वह काफ़ी
कम हो गया था। 4 सातवें महीने के 17वें दिन कश्ती
अरारात के एक पहाड़ पर टिक गई। 5 दसवें महीने
के पहले दिन पानी इतना कम हो गया था कि पहाड़ों
की चोटियाँ नज़र आने लगी थीं।

6–7 चालीस दिन के बाद नूह ने कश्ती की खिड़की
खोल कर एक कव्वा छोड़ दिया, और वह उड़ कर
चला गया। लेकिन जब तक ज़मीन पर पानी था वह
आता जाता रहा। 8 फिर नूह ने एक कबूतर छोड़ दिया
ताकि पता चले कि ज़मीन पानी से निकल आई है या
नहीं। 9 लेकिन कबूतर को कहीं भी बैठने की जगह
न मिली, क्यूँकि अब तक पूरी ज़मीन पर पानी ही
पानी था। वह कश्ती और नूह के पास वापस आ
गया, और नूह ने अपना हाथ बढ़ाया और कबूतर
को पकड़ कर अपने पास कश्ती में रख लिया।

10 उस ने एक हफ़्ता और इन्तिज़ार करके कबूतर
को दुबारा छोड़ दिया। 11 शाम के वक़्त वह लौट
आया। इस दफ़ा उस की चोंच में ज़ैतून का ताज़ा
पत्ता था। तब नूह को मालूम हुआ कि ज़मीन पानी से
निकल आई है।

12 उस ने मज़ीद एक हफ़्ते के बाद कबूतर को छोड़
दिया। इस दफ़ा वह वापस न आया।

13 जब नूह 601 साल का था तो पहले महीने के
पहले दिन ज़मीन की सतह पर पानी ख़त्म हो गया।
तब नूह ने कश्ती की छत खोल दी और देखा कि
ज़मीन की सतह पर पानी नहीं है। 14 दूसरे महीने के
27वें दिन ज़मीन बिलकुल ख़ुश्क हो गई।

15 फिर अल्लाह ने नूह से कहा, 16 "अपनी बीवी,
बेटों और बहूओं के साथ कश्ती से निकल आ।
17 जितने भी जानवर साथ हैं उन्हें निकाल दे, ख़्वाह
परिन्दे हों, ख़्वाह ज़मीन पर फिरने या रेंगने वाले
जानवर। वह दुनिया में फैल जाएँ, नस्ल बढ़ाएँ
और तादाद में बढ़ते जाएँ।" 18 चुनाँचे नूह अपने
बेटों, अपनी बीवी और बहूओं समेत निकल आया।
19 तमाम जानवर और परिन्दे भी अपनी अपनी क़िस्म
के गुरोहों में कश्ती से निकले।

20 उस वक़्त नूह ने रब के लिए क़ुर्बानगाह बनाई।
उस ने तमाम फिरने और उड़ने वाले पाक जानवरों
में से कुछ चुन कर उन्हें ज़बह किया और क़ुर्बानगाह
पर पूरी तरह जला दिया। 21 यह क़ुर्बानियाँ देख कर
रब ख़ुश हुआ और अपने दिल में कहा, "अब से
मैं कभी ज़मीन पर इन्सान की वजह से लानत नहीं
भेजूँगा, क्यूँकि उस का दिल बचपन ही से बुराई की
तरफ़ माइल है। अब से मैं कभी इस तरह तमाम जान
रखने वाली मख़्लूक़ात को रू-ए-ज़मीन पर से नहीं
मिटाऊँगा। 22 दुनिया के मुक़र्ररा औक़ात जारी रहेंगे।
बीज बोने और फ़सल काटने का वक़्त, ठंड और
तपिश, गर्मियों और सर्दियों का मौसम, दिन और
रात, यह सब कुछ दुनिया के अख़ीर तक क़ाइम
रहेगा।"

अल्लाह का नूह के साथ अह्द

9 1 फिर अल्लाह ने नूह और उस के बेटों को बरकत
दे कर कहा, "फलो फूलो और तादाद में बढ़ते
जाओ। दुनिया तुम से भर जाए 2 ज़मीन पर फिरने
और रेंगने वाले जानवर, परिन्दे और मछलियाँ सब
तुम से डरेंगे। उन्हें तुम्हारे इख़तियार में कर दिया गया
है। 3 जिस तरह मैं ने तुम्हारे खाने के लिए पौदों की

पैदावार मुक़र्रर की है उसी तरह अब से तुम्हें हर
क़िस्म के जानवर खाने की इजाज़त भी है। 4 लेकिन
ख़बरदार! ऐसा गोश्त न खाना जिस में ख़ून है, क्यूँकि
ख़ून में उस की जान है।
5 किसी की जान लेना मना है। जो ऐसा करेगा उसे
अपनी जान देनी पड़ेगी, ख़्वाह वह इन्सान हो या
हैवान। मैं ख़ुद इस का मुतालबा करूँगा। 6 जो भी
किसी का ख़ून बहाए उस का ख़ून भी बहाया जाएगा।
क्यूँकि अल्लाह ने इन्सान को अपनी सूरत पर बनाया
है।
7 अब फलो फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ।
दुनिया में फैल जाओ।”
8 तब अल्लाह ने नूह और उस के बेटों से कहा,
9 “अब मैं तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के साथ अह्द
क़ाइम करता हूँ। 10 यह अह्द उन तमाम जानवरों
के साथ भी होगा जो कश्ती में से निकले हैं यानी
परिन्दों, मवेशियों और ज़मीन पर के तमाम जानवरों
के साथ। 11 मैं तुम्हारे साथ अह्द बांध कर वादा
करता हूँ कि अब से ऐसा कभी नहीं होगा कि ज़मीन
की तमाम ज़िन्दगी सैलाब से ख़त्म कर दी जाएगी।
अब से ऐसा सैलाब कभी नहीं आएगा जो पूरी ज़मीन
को तबाह कर दे। 12 इस अबदी अह्द का निशान
जो मैं तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ क़ाइम
कर रहा हूँ यह है कि 13 मैं अपनी कमान बादलों में
रखता हूँ। वह मेरे दुनिया के साथ अह्द का निशान
होगा। 14 जब कभी मेरे कहने पर आसमान पर बादल
छा जाएंगे और क़ौस-ए-क़ुज़ह उन में से नज़र आएगी
15 तो मैं यह अह्द याद करूँगा जो तुम्हारे और तमाम
जानदारों के साथ किया गया है। अब कभी भी ऐसा
सैलाब नहीं आएगा जो तमाम ज़िन्दगी को हलाक
कर दे। 16 क़ौस-ए-क़ुज़ह नज़र आएगी तो मैं उसे देख
कर उस दाइमी अह्द को याद करूँगा जो मेरे और
दुनिया की तमाम जानदार मख़्लूक़ात के दरमियान
है। 17 यह उस अह्द का निशान है जो मैं ने दुनिया के
तमाम जानदारों के साथ किया है।”

नूह के बेटे

18 नूह के जो बेटे उस के साथ कश्ती से निकले
सिम, हाम और याफ़त थे। हाम कनआन का बाप था।
19 दुनिया भर के तमाम लोग इन तीनों की औलाद हैं।
20 नूह किसान था। शुरू में उस ने अंगूर का बाग़
लगाया। 21 अंगूर से मै बना कर उस ने इतनी पी ली
कि वह नशे में धुत अपने डेरे में नंगा पड़ा रहा।
22 कनआन के बाप हाम ने उसे यूँ पड़ा हुआ देखा
तो बाहर जा कर अपने दोनों भाइयों को उस के बारे
में बताया। 23 यह सुन कर सिम और याफ़त ने अपने
कंधों पर कपड़ा रखा। फिर वह उलटे चलते हुए
डेरे में दाख़िल हुए और कपड़ा अपने बाप पर डाल
दिया। उन के मुँह दूसरी तरफ़ मुड़े रहे ताकि बाप की
बरहनगी नज़र न आए।
24 जब नूह होश में आया तो उस को पता चला
कि सब से छोटे बेटे ने क्या किया है। 25 उस ने
कहा, “कनआन पर लानत! वह अपने भाइयों का
ज़लीलतरीन ग़ुलाम होगा।
26 मुबारक हो रब जो सिम का ख़ुदा है। कनआन
सिम का ग़ुलाम हो। 27 अल्लाह करे कि याफ़त की
हुदूद बढ़ जाएँ। याफ़त सिम के डेरों में रहे और
कनआन उस का ग़ुलाम हो।”
28 सैलाब के बाद नूह मज़ीद 350 साल ज़िन्दा रहा।
29 वह 950 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

नूह की औलाद

10 1 यह नूह के बेटों सिम, हाम और याफ़त
का नसबनामा है। उन के बेटे सैलाब के
बाद पैदा हुए।

याफ़त की नस्ल

2 याफ़त के बेटे जुमर, माजूज, मादी, यावान, तूबल,
मसक और तीरास थे। 3 जुमर के बेटे अश्कनाज़,
रीफ़त और तुजर्मा थे। 4 यावान के बेटे इलीसा और
तरसीस थे। कित्ती और दोदानी भी उस की औलाद

हैं। 5 वह उन क़ौमों के आबा-ओ-अजदाद हैं जो
साहिली इलाक़ों और जज़ीरों में फैल गईं। यह याफ़त
की औलाद हैं जो अपने अपने क़बीले और मुल्क में
रहते हुए अपनी अपनी ज़बान बोलते हैं।

हाम की नस्ल

6 हाम के बेटे कूश, मिस्र, फ़ूत और कनआन थे।
7 कूश के बेटे सिबा, हवीला, सब्ता, रामा और
सब्तका थे। रामा के बेटे सबा और ददान थे।
8 कूश का एक और बेटा बनाम नमरूद था। वह
दुनिया में पहला ज़बरदस्त हाकिम था। 9 रब के
नज़्दीक वह ज़बरदस्त शिकारी था। इस लिए आज
भी किसी अच्छे शिकारी के बारे में कहा जाता
है, "वह नमरूद की मानिन्द है जो रब के नज़्दीक
ज़बरदस्त शिकारी था।" 10 उस की सल्तनत के पहले
मर्कज़ मुल्क-ए-सिनआर में बाबल, अरक, अक्काद
और कल्ना के शहर थे। 11 उस मुल्क से निकल कर
वह असूर चला गया जहाँ उस ने नीनवा, रहोबोत-
ईर, कलह 12 और रसन के शहर तामीर किए। बड़ा
शहर रसन नीनवा और कलह के दरमियान वाक़े है।
13 मिस्र इन क़ौमों का बाप था : लूदी, अनामी,
लिहाबी, नफ़्तूही, 14 फ़त्रूसी, कस्लूही (जिन से
फ़िलिस्ती निकले) और कफ़्तूरी।
15 कनआन का पहलौठा सैदा था। कनआन ज़ैल
की क़ौमों का बाप भी था : हित्ती 16 यबूसी, अमोरी,
जिर्जासी, 17 हिव्वी, अर्क़ी, सीनी, 18 अर्वादी, समारी
और हमाती। बाद में कनआनी क़बीले इतने फैल गए
19 कि उन की हुदूद शिमाल में सैदा से जुनूब की तरफ़
जिरार से हो कर ग़ज़्ज़ा तक और वहाँ से मशरिक़ की
तरफ़ सदूम, अमूरा, अदमा और ज़बोईम से हो कर
लसा तक थीं।
20 यह सब हाम की औलाद हैं, जो उन के अपने
अपने क़बीले, अपनी अपनी ज़बान, अपने अपने
मुल्क और अपनी अपनी क़ौम के मुताबिक़ दर्ज हैं।

सिम की नस्ल

21 सिम याफ़त का बड़ा भाई था। उस के भी बेटे
पैदा हुए। सिम तमाम बनी इबर का बाप है।
22 सिम के बेटे ऐलाम, असूर, अर्फ़क्सद, लूद और
अराम थे।
23 अराम के बेटे ऊज़, हूल, जतर और मस थे।
24 अर्फ़क्सद का बेटा सिलह और सिलह का बेटा
इबर था।
25 इबर के हाँ दो बेटे पैदा हुए। एक का नाम फ़लज
यानी तक़्सीम था, क्यूँकि उन अय्याम में दुनिया
तक़्सीम हुई। फ़लज के भाई का नाम युक़्तान था।
26 युक़्तान के बेटे अल्मूदाद, सलफ़, हसरमावत,
इराख़, 27 हदूराम, ऊज़ाल, दिक़्ला, 28 ऊबाल,
अबीमाएल, सबा, 29 ओफ़ीर, हवीला और यूबाब थे।
यह सब युक़्तान के बेटे थे। 30 वह मेसा से ले कर
सफ़ार और मशरिक़ी पहाड़ी इलाक़े तक आबाद थे।
31 यह सब सिम की औलाद हैं, जो अपने अपने
क़बीले, अपनी अपनी ज़बान, अपने अपने मुल्क
और अपनी अपनी क़ौम के मुताबिक़ दर्ज हैं।
32 यह सब नूह के बेटों के क़बीले हैं, जो अपनी
नस्लों और क़ौमों के मुताबिक़ दर्ज किए गए हैं।
सैलाब के बाद तमाम क़ौमें इन ही से निकल कर
रू-ए-ज़मीन पर फैल गईं।

बाबल का बुर्ज

11 1 उस वक़्त तक पूरी दुनिया के लोग एक
ही ज़बान बोलते थे। 2 मशरिक़ की तरफ़
बढ़ते बढ़ते वह सिनआर के एक मैदान में पहुँच कर
वहाँ आबाद हुए। 3 तब वह एक दूसरे से कहने लगे,
"आओ, हम मिट्टी से ईंटें बना कर उन्हें आग में ख़ूब
पकाएँ।" उन्हों ने तामीरी काम के लिए पत्थर की
जगह ईंटें और मसाले की जगह तारकोल इस्तेमाल
किया। 4 फिर वह कहने लगे, "आओ, हम अपने
लिए शहर बना लें जिस में ऐसा बुर्ज हो जो आसमान

तक पहुँच जाए फिर हमारा नाम क़ाइम रहेगा और
हम रू-ए-ज़मीन पर बिखर जाने से बच जाएंगे।”
5 लेकिन रब उस शहर और बुर्ज को देखने के लिए
उतर आया जिसे लोग बना रहे थे। 6 रब ने कहा,
“यह लोग एक ही क़ौम हैं और एक ही ज़बान बोलते
हैं। और यह सिर्फ़ उस का आग़ाज़ है जो वह करना
चाहते हैं। अब से जो भी वह मिल कर करना चाहेंगे
उस से उन्हें रोका नहीं जा सकेगा। 7 इस लिए आओ,
हम दुनिया में उतर कर उन की ज़बान को दर्हम-बर्हम
कर दें ताकि वह एक दूसरे की बात समझ न पाएँ।”
8 इस तरीक़े से रब ने उन्हें तमाम रू-ए-ज़मीन पर
मुन्तशिर कर दिया, और शहर की तामीर रुक गई।
9 इस लिए शहर का नाम बाबल यानी अब्तरी ठहरा,
क्यूँकि रब ने वहाँ तमाम लोगों की ज़बान को दर्हम-
बर्हम करके उन्हें तमाम रू-ए-ज़मीन पर मुन्तशिर कर
दिया।

सिम से अब्राम तक का नसबनामा

10 यह सिम का नसबनामा है :
सिम 100 साल का था जब उस का बेटा अर्फ़क्सद
पैदा हुआ। यह सैलाब के दो साल बाद हुआ। 11 इस
के बाद वह मज़ीद 500 साल ज़िन्दा रहा। उस के
और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
12 अर्फ़क्सद 35 साल का था जब सिलह पैदा
हुआ। 13 इस के बाद वह मज़ीद 403 साल ज़िन्दा
रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
14 सिलह 30 साल का था जब इबर पैदा हुआ।
15 इस के बाद वह मज़ीद 403 साल ज़िन्दा रहा। उस
के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
16 इबर 34 साल का था जब फ़लज पैदा हुआ।
17 इस के बाद वह मज़ीद 430 साल ज़िन्दा रहा। उस
के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
18 फ़लज 30 साल का था जब रऊ पैदा हुआ।
19 इस के बाद वह मज़ीद 209 साल ज़िन्दा रहा।
उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
20 रऊ 32 साल का था जब सरूज पैदा हुआ।
21 इस के बाद वह मज़ीद 207 साल ज़िन्दा रहा।
उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
22 सरूज 30 साल का था जब नहूर पैदा हुआ।
23 इस के बाद वह मज़ीद 200 साल ज़िन्दा रहा। उस
के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
24 नहूर 29 साल का था जब तारह पैदा हुआ।
25 इस के बाद वह मज़ीद 119 साल ज़िन्दा रहा।
उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
26 तारह 70 साल का था जब उस के बेटे अब्राम,
नहूर और हारान पैदा हुए।
27 यह तारह का नसबनामा है : अब्राम, नहूर और
हारान तारह के बेटे थे। लूत हारान का बेटा था।
28 अपने बाप तारह की ज़िन्दगी में ही हारान कस्दियों
के ऊर में इन्तिक़ाल कर गया जहाँ वह पैदा भी हुआ
था।
29 बाक़ी दोनों बेटों की शादी हुई। अब्राम की बीवी
का नाम सारय था और नहूर की बीवी का नाम
मिल्काह। मिल्काह हारान की बेटी थी, और उस की
एक बहन बनाम इस्का थी। 30 सारय बाँझ थी, इस
लिए उस के बच्चे नहीं थे।
31 तारह कस्दियों के ऊर से रवाना हो कर मुल्क-
ए-कनआन की तरफ़ सफ़र करने लगा। उस के साथ
उस का बेटा अब्राम, उस का पोता लूत यानी हारान
का बेटा और उस की बहू सारय थे। जब वह हारान
पहुँचे तो वहाँ आबाद हो गए। 32 तारह 205 साल का
था जब उस ने हारान में वफ़ात पाई।

अब्राम की बुलाहट

12 1 रब ने अब्राम से कहा, “अपने वतन,
अपने रिश्तेदारों और अपने बाप के घर को
छोड़कर उस मुल्क में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।
2 मैं तुझ से एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा, तुझे बरकत दूँगा
और तेरे नाम को बहुत बढ़ाऊँगा। तू दूसरों के लिए
बरकत का बाइस होगा। 3 जो तुझे बरकत देंगे उन्हें
मैं भी बरकत दूँगा। जो तुझ पर लानत करेगा उस पर

मैं भी लानत करूँगा। दुनिया की तमाम क़ौमें तुझ से
बरकत पाएँगी।”
4 अब्राम ने रब की सुनी और हारान से रवाना हुआ।
लूत उस के साथ था। उस वक़्त अब्राम 75 साल का
था। 5 उस के साथ उस की बीवी सारय और उस
का भतीजा लूत थे। वह अपने नौकर-चाकरों समेत
अपनी पूरी मिलकियत भी साथ ले गया जो उस ने
हारान में हासिल की थी। चलते चलते वह कनआन
पहुँचे। 6 अब्राम उस मुल्क में से गुज़र कर सिकम के
मक़ाम पर ठहर गया जहाँ मोरिह के बलूत का दरख़्त
था। उस ज़माने में मुल्क में कनआनी क़ौमें आबाद
थीं।
7 वहाँ रब अब्राम पर ज़ाहिर हुआ और उस से कहा,
“मैं तेरी औलाद को यह मुल्क दूँगा।” इस लिए उस
ने वहाँ रब की ताज़ीम में क़ुर्बानगाह बनाई जहाँ वह
उस पर ज़ाहिर हुआ था। 8 वहाँ से वह उस पहाड़ी
इलाक़े की तरफ़ गया जो बैत-एल के मशरिक़ में है।
वहाँ उस ने अपना ख़ैमा लगाया। मग़रिब में बैत-एल
था और मशरिक़ में अई। इस जगह पर भी उस ने रब
की ताज़ीम में क़ुर्बानगाह बनाई और रब का नाम ले
कर इबादत की।
9 फिर अब्राम दुबारा रवाना हो कर जुनूब के दश्त-
ए-नजब की तरफ़ चल पड़ा।

अब्राम मिस्र में

10 उन दिनों में मुल्क-ए-कनआन में काल पड़ा।
काल इतना सख़्त था कि अब्राम उस से बचने की
ख़ातिर कुछ देर के लिए मिस्र में जा बसा, लेकिन
परदेसी की हैसियत से। 11 जब वह मिस्र की सरहद
के क़रीब आए तो उस ने अपनी बीवी सारय से कहा,
“मैं जानता हूँ कि तू कितनी ख़ूबसूरत है। 12 मिस्री
तुझे देखेंगे, फिर कहेंगे, ‘यह इस का शौहर है।’ नतीजे
में वह मुझे मार डालेंगे और तुझे ज़िन्दा छोड़ेंगे।
13 इस लिए लोगों से यह कहते रहना कि मैं अब्राम
की बहन हूँ। फिर मेरे साथ अच्छा सुलूक किया
जाएगा और मेरी जान तेरे सबब से बच जाएगी।”
14 जब अब्राम मिस्र पहुँचा तो वाक़ई मिस्रियों ने
देखा कि सारय निहायत ही ख़ूबसूरत है। 15 और
जब फ़िरऔन के अफ़सरान ने उसे देखा तो उन्हों
ने फ़िरऔन के सामने सारय की तारीफ़ की।
आख़िरकार उसे महल में पहुँचाया गया। 16 फ़िरऔन
ने सारय की ख़ातिर अब्राम पर एहसान करके उसे
भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गधे-गधियाँ, नौकर-चाकर
और ऊँट दिए।
17 लेकिन रब ने सारय के सबब से फ़िरऔन और
उस के घराने में सख़्त क़िस्म के अमराज़ फैलाए।
18 आख़िरकार फ़िरऔन ने अब्राम को बुला कर
कहा, “तू ने मेरे साथ क्या किया? तू ने मुझे क्यूँ
नहीं बताया कि सारय तेरी बीवी है? 19 तू ने क्यूँ
कहा कि वह मेरी बहन है? इस धोके की बिना पर
मैं ने उसे घर में रख लिया ताकि उस से शादी करूँ।
देख, तेरी बीवी हाज़िर है। इसे ले कर यहाँ से निकल
जा!” 20 फिर फ़िरऔन ने अपने सिपाहियों को हुक्म
दिया, और उन्हों ने अब्राम, उस की बीवी और पूरी
मिलकियत को रुख़्सत करके मुल्क से रवाना कर
दिया।

अब्राम और लूत अलग हो जाते हैं

13 1 अब्राम अपनी बीवी, लूत और तमाम
जायदाद को साथ ले कर मिस्र से निकला
और कनआन के जुनूबी इलाक़े दश्त-ए-नजब में
वापस आया।
2 अब्राम निहायत दौलतमन्द हो गया था। उस के
पास बहुत से मवेशी और सोना-चाँदी थी। 3 वहाँ से
जगह-ब-जगह चलते हुए वह आख़िरकार बैत-एल से
हो कर उस मक़ाम तक पहुँच गया जहाँ उस ने शुरू में
अपना डेरा लगाया था और जो बैत-एल और अई के
दरमियान था। 4 वहाँ जहाँ उस ने क़ुर्बानगाह बनाई
थी उस ने रब का नाम ले कर उस की इबादत की।
5 लूत के पास भी बहुत सी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल
और ख़ैमे थे। 6 नतीजा यह निकला कि आख़िरकार
वह मिल कर न रह सके, क्यूँकि इतनी जगह नहीं

थी कि दोनों के रेवड़ एक ही जगह पर चर सकें।
7 अब्राम और लूत के चरवाहे आपस में झगड़ने लगे।
(उस ज़माने में कनआनी और फ़रिज़्ज़ी भी मुल्क में
आबाद थे।) 8 तब अब्राम ने लूत से बात की, "ऐसा
नहीं होना चाहिए कि तेरे और मेरे दरमियान झगड़ा
हो या तेरे चरवाहों और मेरे चरवाहों के दरमियान।
हम तो भाई हैं। 9 क्या ज़रूरत है कि हम मिल कर
रहें जबकि तू आसानी से इस मुल्क की किसी और
जगह रह सकता है। बेहतर है कि तू मुझ से अलग
हो कर कहीं और रहे। अगर तू बाएँ हाथ जाए तो मैं
दाएँ हाथ जाऊँगा, और अगर तू दाएँ हाथ जाए तो मैं
बाएँ हाथ जाऊँगा।"

10 लूत ने अपनी नज़र उठा कर देखा कि दरया-ए-
यर्दन के पूरे इलाक़े में ज़ुग़र तक पानी की कस्रत है।
वह रब के बाग़ या मुल्क-ए-मिस्र की मानिन्द था,
क्यूँकि उस वक़्त रब ने सदूम और अमूरा को तबाह
नहीं किया था। 11 चुनाँचे लूत ने दरया-ए-यर्दन के
पूरे इलाक़े को चुन लिया और मशरिक़ की तरफ़ जा
बसा। यूँ दोनों रिश्तेदार एक दूसरे से जुदा हो गए।
12 अब्राम मुल्क-ए-कनआन में रहा जबकि लूत यर्दन
के इलाक़े के शहरों के दरमियान आबाद हो गया।
वहाँ उस ने अपने ख़ैमे सदूम के क़रीब लगा दिए।
13 लेकिन सदूम के बाशिन्दे निहायत शरीर थे, और
उन के रब के ख़िलाफ़ गुनाह निहायत मकरूह थे।

रब का अब्राम के साथ दुबारा वादा

14 लूत अब्राम से जुदा हुआ तो रब ने अब्राम
से कहा, "अपनी नज़र उठा कर चारों तरफ़ यानी
शिमाल, जुनूब, मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ देख।
15 जो भी ज़मीन तुझे नज़र आए उसे मैं तुझे और
तेरी औलाद को हमेशा के लिए देता हूँ। 16 मैं तेरी
औलाद को ख़ाक की तरह बेशुमार होने दूँगा। जिस
तरह ख़ाक के ज़र्रे गिने नहीं जा सकते उसी तरह तेरी
औलाद भी गिनी नहीं जा सकेगी। 17 चुनाँचे उठ कर
इस मुल्क की हर जगह चल फिर, क्यूँकि मैं इसे तुझे
देता हूँ।"

18 अब्राम रवाना हुआ। चलते चलते उस ने अपने
डेरे हब्रून के क़रीब मम्रे के दरख़्तों के पास लगाए।
वहाँ उस ने रब की ताज़ीम में क़ुर्बानगाह बनाई।

अब्राम लूत को छुड़ाता है

14 1 कनआन में जंग हुई। बैरून-ए-मुल्क
के चार बादशाहों ने कनआन के पाँच
बादशाहों से जंग की। बैरून-ए-मुल्क के बादशाह यह
थे : सिनआर से अम्राफ़िल, इल्लासर से अर्यूक, ऐलाम
से किदर्लाउमर और जोइम से तिदआल। 2 कनआन
के बादशाह यह थे : सदूम से बिरा, अमूरा से बिर्शा,
अदमा से सिन्याब, ज़बोईम से शिमेबर और बाला
यानी ज़ुग़र का बादशाह।

3 कनआन के इन पाँच बादशाहों का इत्तिहाद हुआ
था और वह वादी-य-सिद्दीम में जमा हुए थे। (अब
सिद्दीम नहीं है, क्यूँकि उस की जगह बहीरा-ए-मुर्दार
आ गया है)। 4 किदर्लाउमर ने बारह साल तक उन
पर हुकूमत की थी, लेकिन तेरहवें साल वह बाग़ी हो
गए थे।

5 अब एक साल के बाद किदर्लाउमर और उस के
इत्तिहादी अपनी फ़ौजों के साथ आए। पहले उन्हों ने
अस्तारात-क़र्नैम में रफ़ाइयों को, हाम में ज़ूज़ियों को,
सवी-क़िर्यताइम में ऐमियों को 6 और होरियों को उन
के पहाड़ी इलाक़े सईर में शिकस्त दी। यूँ वह एल-
फ़ारान तक पहुँच गए जो रेगिस्तान के किनारे पर
है। 7 फिर वह वापस आए और ऐन-मिस्फ़ात यानी
क़ादिस पहुँचे। उन्हों ने अमालीक़ियों के पूरे इलाक़े
को तबाह कर दिया और हससून-तमर में आबाद
अमोरियों को भी शिकस्त दी।

8 उस वक़्त सदूम, अमूरा, अदमा, ज़बोईम और
बाला यानी ज़ुग़र के बादशाह उन से लड़ने के लिए
सिद्दीम की वादी में जमा हुए। 9 इन पाँच बादशाहों ने
ऐलाम के बादशाह किदर्लाउमर, जोइम के बादशाह
तिदआल, सिनआर के बादशाह अम्राफ़िल और
इल्लासर के बादशाह अर्यूक का मुक़ाबला किया।
10 इस वादी में तारकोल के मुतअद्दिद गढ़े थे। जब

बाग़ी बादशाह शिकस्त खा कर भागने लगे तो सदूम
और अमूरा के बादशाह इन गढ़ों में गिर गए जबकि
बाक़ी तीन बादशाह बच कर पहाड़ी इलाक़े में फ़रार
हुए। 11 फ़त्हमन्द बादशाह सदूम और अमूरा का
तमाम माल तमाम खाने वाली चीज़ों समेत लूट कर
वापस चल दिए। 12 अब्राम का भतीजा लूत सदूम में
रहता था, इस लिए वह उसे भी उस की मिलकियत
समेत छीन कर साथ ले गए।

13 लेकिन एक आदमी ने जो बच निकला था इब्रानी
मर्द अब्राम के पास आ कर उसे सब कुछ बता दिया।
उस वक़्त वह मम्रे के दरख़्तों के पास आबाद था। मम्रे
अमोरी था। वह और उस के भाई इस्काल और आनेर
अब्राम के इत्तिहादी थे। 14 जब अब्राम को पता चला
कि भतीजे को गिरिफ़्तार कर लिया गया है तो उस ने
अपने घर में पैदा हुए तमाम जंगआज़मूदा ग़ुलामों को
जमा करके दान तक दुश्मन का ताक़्क़ुब किया। उस
के साथ 318 अफ़राद थे। 15 वहाँ उस ने अपने बन्दों
को गुरोहों में तक़्सीम करके रात के वक़्त दुश्मन पर
हम्ला किया। दुश्मन शिकस्त खा कर भाग गया और
अब्राम ने दमिश्क़ के शिमाल में वाक़े ख़ूबा तक उस
का ताक़्क़ुब किया। 16 वह उन से लूटा हुआ तमाम
माल वापस ले आया। लूत, उस की जायदाद, औरतें
और बाक़ी क़ैदी भी दुश्मन के क़ब्ज़े से बच निकले।

मलिक-ए-सिद्क़, सालिम का बादशाह

17 जब अब्राम किदर्लाउमर और उस के इत्तिहादियों
पर फ़त्ह पाने के बाद वापस पहुँचा तो सदूम का
बादशाह उस से मिलने के लिए वादी-ए-सवी में
आया। (इसे आजकल बादशाह की वादी कहा जाता
है।) 18 सालिम का बादशाह मलिक-ए-सिद्क़ भी
वहाँ पहुँचा। वह अपने साथ रोटी और मै ले आया।
मलिक-ए-सिद्क़ अल्लाह तआला का इमाम था।
19 उस ने अब्राम को बरकत दे कर कहा, "अब्राम
पर अल्लाह तआला की बरकत हो, जो आसमान-ओ-
ज़मीन का ख़ालिक़ है। 20 अल्लाह तआला मुबारक
हो जिस ने तेरे दुश्मनों को तेरे हाथ में कर दिया है।"
अब्राम ने उसे तमाम माल का दसवाँ हिस्सा दिया।

21 सदूम के बादशाह ने अब्राम से कहा, "मुझे मेरे
लोग वापस कर दें और बाक़ी चीज़ें अपने पास रख
लें।" 22 लेकिन अब्राम ने उस से कहा, "मैं ने रब से
क़सम खाई है, अल्लाह तआला से जो आसमान-ओ-
ज़मीन का ख़ालिक़ है 23 कि मैं उस में से कुछ नहीं
लूँगा जो आप का है, चाहे वह धागा या जूती का
तस्मा ही क्यूँ न हो। ऐसा न हो कि आप कहें, 'मैं
ने अब्राम को दौलतमन्द बना दिया है।' 24 सिवाए
उस खाने के जो मेरे आदमियों ने रास्ते में खाया है
मैं कुछ क़बूल नहीं करूँगा। लेकिन मेरे इत्तिहादी
आनेर, इस्काल और मम्रे ज़रूर अपना अपना हिस्सा
लें।"

अब्राम के साथ रब का अह्द

15 1 इस के बाद रब रोया में अब्राम से
हमकलाम हुआ, "अब्राम, मत डर। मैं ही
तेरी सिपर हूँ, मैं ही तेरा बहुत बड़ा अज्र हूँ।"

2 लेकिन अब्राम ने एतिराज़ किया, "ऐ रब क़ादिर-
ए-मुतलक़, तू मुझे क्या देगा जबकि अभी तक मेरे
हाँ कोई बच्चा नहीं है और इलीअज़र दमिश्क़ी मेरी
मीरास पाएगा। 3 तू ने मुझे औलाद नहीं बख़्शी, इस
लिए मेरे घराने का नौकर मेरा वारिस होगा।" 4 तब
अब्राम को अल्लाह से एक और कलाम मिला। "यह
आदमी इलीअज़र तेरा वारिस नहीं होगा बल्कि तेरा
अपना ही बेटा तेरा वारिस होगा।" 5 रब ने उसे बाहर
ले जा कर कहा, "आसमान की तरफ़ देख और
सितारों को गिनने की कोशिश कर। तेरी औलाद
इतनी ही बेशुमार होगी।"

6 अब्राम ने रब पर भरोसा रखा। इस बिना पर
अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।

7 फिर रब ने उस से कहा, "मैं रब हूँ जो तुझे
कस्दियों के ऊर से यहाँ ले आया ताकि तुझे यह
मुल्क मीरास में दे दूँ।" 8 अब्राम ने पूछा, "ऐ रब
क़ादिर-ए-मुतलक़, मैं किस तरह जानूँकि इस मुल्क

पर क़ब्ज़ा करूँगा?” 9 जवाब में रब ने कहा, “मेरे
हुज़ूर एक तीनसाला गाय, एक तीनसाला बकरी और
एक तीनसाला मेंढा ले आ। एक क़ुम्री और एक
कबूतर का बच्चा भी ले आना।” 10 अब्राम ने ऐसा
ही किया और फिर हर एक जानवर को दो हिस्सों
में काट कर उन को एक दूसरे के आमने-सामने रख
दिया। लेकिन परिन्दों को उस ने सालिम रहने दिया।
11 शिकारी परिन्दे उन पर उतरने लगे, लेकिन अब्राम
उन्हें भगाता रहा।

12 जब सूरज डूबने लगा तो अब्राम पर गहरी नींद
तारी हुई। उस पर दहशत और अंधेरा ही अंधेरा
छा गया। 13 फिर रब ने उस से कहा, “जान ले कि
तेरी औलाद ऐसे मुल्क में रहेगी जो उस का नहीं
होगा। वहाँ वह अजनबी और ग़ुलाम होगी, और
उस पर 400 साल तक बहुत ज़ुल्म किया जाएगा।
14 लेकिन मैं उस क़ौम की अदालत करूँगा जिस
ने उसे ग़ुलाम बनाया होगा। इस के बाद वह बड़ी
दौलत पा कर उस मुल्क से निकलेंगे। 15 तू ख़ुद
उम्ररसीदा हो कर सलामती के साथ इन्तिक़ाल करके
अपने बापदादा से जा मिलेगा और दफ़नाया जाएगा।
16 तेरी औलाद की चौथी पुश्त ग़ैरवतन से वापस
आएगी, क्यूँकि उस वक़्त तक मैं अमोरियों को
बर्दाश्त करूँगा। लेकिन आख़िरकार उन के गुनाह
इतने संगीन हो जाएंगे कि मैं उन्हें मुल्क-ए-कनआन
से निकाल दूँगा।”

17 सूरज ग़ुरूब हुआ। अंधेरा छा गया। अचानक
एक धुआँदार तनूर और एक भड़कती हुई मशअल
नज़र आई और जानवरों के दो दो टुकड़ों के बीच में
से गुज़रे।

18 उस वक़्त रब ने अब्राम के साथ अह्द किया।
उस ने कहा, “मैं यह मुल्क मिस्र की सरहद से फ़ुरात
तक तेरी औलाद को दूँगा, 19 अगरचे अभी तक
इस में क़ीनी, क़निज़्ज़ी, कदमूनी, 20 हित्ती, फ़रिज़्ज़ी,
रफ़ाई, 21 अमोरी, कनआनी, जिर्जासी और यबूसी
आबाद हैं।”

हाजिरा और इस्माईल

16 1 अब तक अब्राम की बीवी सारय के कोई
बच्चा नहीं हुआ था। लेकिन उन्हों ने एक
मिस्री लौंडी रखी थी जिस का नाम हाजिरा था, 2 और
एक दिन सारय ने अब्राम से कहा, “रब ने मुझे बच्चे
पैदा करने से महरूम रखा है, इस लिए मेरी लौंडी
के साथ हमबिसतर हों। शायद मुझे उस की मारिफ़त
बच्चा मिल जाए।”

अब्राम ने सारय की बात मान ली। 3 चुनाँचे सारय
ने अपनी मिस्री लौंडी हाजिरा को अपने शौहर अब्राम
को दे दिया ताकि वह उस की बीवी बन जाए उस
वक़्त अब्राम को कनआन में बसते हुए दस साल हो
गए थे। 4 अब्राम हाजिरा से हमबिसतर हुआ तो वह
उम्मीद से हो गई। जब हाजिरा को यह मालूम हुआ
तो वह अपनी मालिकन को हक़ीर जानने लगी। 5 तब
सारय ने अब्राम से कहा, “जो ज़ुल्म मुझ पर किया
जा रहा है वह आप ही पर आए। मैं ने ख़ुद इसे आप
के बाज़ूओं में दे दिया था। अब जब इसे मालूम हुआ
है कि उम्मीद से है तो मुझे हक़ीर जानने लगी है। रब
मेरे और आप के दरमियान फ़ैसला करे।” 6 अब्राम
ने जवाब दिया, “देखो, यह तुम्हारी लौंडी है और
तुम्हारे इख़तियार में है। जो तुम्हारा जी चाहे उस के
साथ करो।”

इस पर सारय उस से इतना बुरा सुलूक करने लगी
कि हाजिरा फ़रार हो गई। 7 रब के फ़रिश्ते को हाजिरा
रेगिस्तान के उस चश्मे के क़रीब मिली जो शूर के
रास्ते पर है। 8 उस ने कहा, “सारय की लौंडी हाजिरा,
तू कहाँ से आ रही है और कहाँ जा रही है?” हाजिरा
ने जवाब दिया, “मैं अपनी मालिकन सारय से फ़रार
हो रही हूँ।” 9 रब के फ़रिश्ते ने उस से कहा, “अपनी
मालिकन के पास वापस चली जा और उस के ताबे
रह। 10 मैं तेरी औलाद इतनी बढ़ाऊँगा कि उसे गिना
नहीं जा सकेगा।” 11 रब के फ़रिश्ते ने मज़ीद कहा,
“तू उम्मीद से है। एक बेटा पैदा होगा। उस का नाम
इस्माईल यानी ‘अल्लाह सुनता है’ रख, क्यूँकि रब ने

मुसीबत में तेरी आवाज़ सुनी। 12 वह जंगली गधे की
मानिन्द होगा। उस का हाथ हर एक के ख़िलाफ़ और
हर एक का हाथ उस के ख़िलाफ़ होगा। तो भी वह
अपने तमाम भाइयों के सामने आबाद रहेगा।"

13 रब के उस के साथ बात करने के बाद हाजिरा ने
उस का नाम अत्ता-एल-रोई यानी 'तू एक माबूद है जो
मुझे देखता है' रखा। उस ने कहा, "क्या मैं ने वाक़ई
उस के पीछे देखा है जिस ने मुझे देखा है?" 14 इस
लिए उस जगह के कुएँ का नाम 'बैर-लही-रोई' यानी
'उस ज़िन्दा हस्ती का कुआँ जो मुझे देखता है' पड़
गया। वह क़ादिस और बरद के दरमियान वाक़े है।

15 हाजिरा वापस गई, और उस के बेटा पैदा हुआ।
अब्राम ने उस का नाम इस्माईल रखा। 16 उस वक़्त
अब्राम 86 साल का था।

अह्द का निशान : ख़तना

17 1 जब अब्राम 99 साल का था तो रब
उस पर ज़ाहिर हुआ। उस ने कहा, "मैं
अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ हूँ। मेरे हुज़ूर चलता रह
और बेइल्ज़ाम हो। 2 मैं तेरे साथ अपना अह्द बांधूँगा
और तेरी औलाद को बहुत ही ज़्यादा बढ़ा दूँगा।"

3 अब्राम मुँह के बल गिर गया, और अल्लाह ने उस
से कहा, 4 "मेरा तेरे साथ अह्द है कि तू बहुत क़ौमों
का बाप होगा। 5 अब से तू अब्राम यानी 'अज़ीम
बाप' नहीं कहलाएगा बल्कि तेरा नाम इब्राहीम यानी
'बहुत क़ौमों का बाप' होगा। क्यूँकि मैं ने तुझे बहुत
क़ौमों का बाप बना दिया है। 6 मैं तुझे बहुत ही ज़्यादा
औलाद बख़्श दूँगा, इतनी कि क़ौमें बनेंगी। तुझ से
बादशाह भी निकलेंगे। 7 मैं अपना अह्द तेरे और
तेरी औलाद के साथ नस्ल-दर-नस्ल क़ाइम करूँगा,
एक अबदी अह्द जिस के मुताबिक़ मैं तेरा और
तेरी औलाद का ख़ुदा हूँगा। 8 तू इस वक़्त मुल्क-ए-
कनआन में परदेसी है, लेकिन मैं इस पूरे मुल्क को
तुझे और तेरी औलाद को देता हूँ। यह हमेशा तक
उन का ही रहेगा, और मैं उन का ख़ुदा हूँगा।"

9 अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, "तुझे और
तेरी औलाद को नस्ल-दर-नस्ल मेरे अह्द की शराइत
पूरी करनी हैं। 10 इस की एक शर्त यह है कि हर एक
मर्द का ख़तना किया जाए 11 अपना ख़तना कराओ।
यह हमारे आपस के अह्द का ज़ाहिरी निशान होगा।
12 लाज़िम है कि तू और तेरी औलाद नस्ल-दर-नस्ल
अपने हर एक बेटे का आठवें दिन ख़तना करवाएँ।
यह उसूल उस पर भी लागू है जो तेरे घर में रहता
है लेकिन तुझ से रिश्ता नहीं रखता, चाहे वह घर में
पैदा हुआ हो या किसी अजनबी से ख़रीदा गया हो।
13 घर के हर एक मर्द का ख़तना करना लाज़िम है,
ख़्वाह वह घर में पैदा हुआ हो या किसी अजनबी से
ख़रीदा गया हो। यह इस बात का निशान होगा कि
मेरा तेरे साथ अह्द हमेशा तक क़ाइम रहेगा। 14 जिस
मर्द का ख़तना न किया गया उसे उस की क़ौम में से
मिटाया जाएगा, क्यूँकि उस ने मेरे अह्द की शराइत
पूरी न कीं।"

15 अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, "अपनी बीवी
सारय का नाम भी बदल देना। अब से उस का नाम
सारय नहीं बल्कि सारा यानी शहज़ादी होगा। 16 मैं
उसे बरकत बख़्शूँगा और तुझे उस की मारिफ़त बेटा
दूँगा। मैं उसे यहाँ तक बरकत दूँगा कि उस से क़ौमें
बल्कि क़ौमों के बादशाह निकलेंगे।"

17 इब्राहीम मुँह के बल गिर गया। लेकिन दिल ही
दिल में वह हंस पड़ा और सोचा, "यह किस तरह हो
सकता है? मैं तो 100 साल का हूँ। ऐसे आदमी के हाँ
बच्चा किस तरह पैदा हो सकता है? और सारा जैसी
उम्ररसीदा औरत के बच्चा किस तरह पैदा हो सकता
है? उस की उम्र तो 90 साल है।" 18 उस ने अल्लाह से
कहा, "हाँ, इस्माईल ही तेरे सामने जीता रहे।"

19 अल्लाह ने कहा, "नहीं, तेरी बीवी सारा के हाँ बेटा
पैदा होगा। तू उस का नाम इस्हाक़ यानी 'वह हँसता
है' रखना। मैं उस के और उस की औलाद के साथ
अबदी अह्द बांधूँगा। 20 मैं इस्माईल के सिलसिले
में भी तेरी दरख़्वास्त पूरी करूँगा। मैं उसे भी बरकत
दे कर फलने फूलने दूँगा और उस की औलाद बहुत

ही ज़्यादा बढ़ा दूँगा। वह बारह रईसों का बाप होगा,
और मैं उस की मारिफ़त एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा।
21 लेकिन मेरा अह्द इस्हाक़ के साथ होगा, जो ऐन
एक साल के बाद सारा के हाँ पैदा होगा।"

22 अल्लाह की इब्राहीम के साथ बात ख़त्म हुई, और
वह उस के पास से आसमान पर चला गया।

23 उसी दिन इब्राहीम ने अल्लाह का हुक्म पूरा किया।
उस ने घर के हर एक मर्द का ख़तना करवाया, अपने
बेटे इस्माईल का भी और उन का भी जो उस के घर
में रहते लेकिन उस से रिश्ता नहीं रखते थे, चाहे वह
उस के घर में पैदा हुए थे या ख़रीदे गए थे। 24 इब्राहीम
99 साल का था जब उस का ख़तना हुआ, 25 जबकि
उस का बेटा इस्माईल 13 साल का था। 26 दोनों का
ख़तना उसी दिन हुआ। 27 साथ साथ घराने के तमाम
बाक़ी मर्दों का ख़तना भी हुआ, बशमूल उन के जिन
का इब्राहीम के साथ रिश्ता नहीं था, चाहे वह घर में
पैदा हुए या किसी अजनबी से ख़रीदे गए थे।

मम्रे में इब्राहीम के तीन मेहमान

18 1 एक दिन रब मम्रे के दरख़्तों के पास
इब्राहीम पर ज़ाहिर हुआ। इब्राहीम अपने
ख़ैमे के दरवाज़े पर बैठा था। दिन की गर्मी उरूज पर
थी। 2 अचानक उस ने देखा कि तीन मर्द मेरे सामने
खड़े हैं। उन्हें देखते ही वह ख़ैमे से उन से मिलने के
लिए दौड़ा और मुँह के बल गिर कर सिज्दा किया।
3 उस ने कहा, "मेरे आक़ा, अगर मुझ पर आप के
करम की नज़र है तो आगे न बढ़ें बल्कि कुछ देर
अपने बन्दे के घर ठहरें। 4 अगर इजाज़त हो तो मैं
कुछ पानी ले आऊँ ताकि आप अपने पाँओ धो कर
दरख़्त के साय में आराम कर सकें। 5 साथ साथ मैं
आप के लिए थोड़ा बहुत खाना भी ले आऊँ ताकि
आप तक़वियत पा कर आगे बढ़ सकें। मुझे यह करने
दें, क्यूँकि आप अपने ख़ादिम के घर आ गए हैं।"
उन्हों ने कहा, "ठीक है। जो कुछ तू ने कहा है वह
कर।"

6 इब्राहीम ख़ैमे की तरफ़ दौड़ कर सारा के पास
आया और कहा, "जल्दी करो! 16 किलोग्राम
बेहतरीन मैदा ले और उसे गूँध कर रोटियाँ बना।"
7 फिर वह भाग कर बैलों के पास पहुँचा। उन में से
उस ने एक मोटा-ताज़ा बछड़ा चुन लिया जिस का
गोश्त नर्म था और उसे अपने नौकर को दिया जिस
ने जल्दी से उसे तय्यार किया। 8 जब खाना तय्यार
था तो इब्राहीम ने उसे ले कर लस्सी और दूध के
साथ अपने मेहमानों के आगे रख दिया। वह खाने
लगे और इब्राहीम उन के सामने दरख़्त के साय में
खड़ा रहा।

9 उन्हों ने पूछा, "तेरी बीवी सारा कहाँ है?" उस
ने जवाब दिया, "ख़ैमे में।" 10 रब ने कहा, "ऐन एक
साल के बाद मैं वापस आऊँगा तो तेरी बीवी सारा
के बेटा होगा।"

सारा यह बातें सुन रही थी, क्यूँकि वह उस के पीछे
ख़ैमे के दरवाज़े के पास थी। 11 दोनों मियाँ-बीवी बूढ़े
हो चुके थे और सारा उस उम्र से गुज़र चुकी थी जिस
में औरतों के बच्चे पैदा होते हैं। 12 इस लिए सारा
अन्दर ही अन्दर हंस पड़ी और सोचा, "यह कैसे
हो सकता है? क्या जब मैं बुढ़ापे के बाइस घिसे फटे
लिबास की मानिन्द हूँ तो जवानी के जोबन का लुत्फ़
उठाऊँ? और मेरा शौहर भी बूढ़ा है।"

13 रब ने इब्राहीम से पूछा, "सारा क्यूँ हंस रही है?
वह क्यूँ कह रही है, 'क्या वाक़ई मेरे हाँ बच्चा पैदा
होगा जबकि मैं इतनी उम्ररसीदा हूँ?' 14 क्या रब के
लिए कोई काम नामुमकिन है? एक साल के बाद
मुक़र्ररा वक़्त पर मैं वापस आऊँगा तो सारा के बेटा
होगा।" 15 सारा डर गई। उस ने झूट बोल कर इन्कार
किया, "मैं नहीं हंस रही थी।"

रब ने कहा, "नहीं, तू ज़रूर हंस रही थी।"

इब्राहीम सदूम के लिए मिन्नत करता है

16 फिर मेहमान उठ कर रवाना हुए और नीचे वादी
में सदूम की तरफ़ देखने लगे। इब्राहीम उन्हें रुख़्सत
करने के लिए साथ साथ चल रहा था। 17 रब ने दिल

में कहा, “मैं इब्राहीम से वह काम क्यूँ छुपाए रखूँ जो
मैं करने के लिए जा रहा हूँ? 18 इसी से तो एक बड़ी
और ताक़तवर क़ौम निकलेगी और इसी से मैं दुनिया
की तमाम क़ौमों को बरकत दूँगा। 19 उसी को मैं ने
चुन लिया है ताकि वह अपनी औलाद और अपने
बाद के घराने को हुक्म दे कि वह रब की राह पर
चल कर रास्त और मुन्सिफ़ाना काम करें। क्यूँकि
अगर वह ऐसा करें तो रब इब्राहीम के साथ अपना
वादा पूरा करेगा।”

20 फिर रब ने कहा, “सदूम और अमूरा की बदी के
बाइस लोगों की आहें बुलन्द हो रही हैं, क्यूँकि उन से
बहुत संगीन गुनाह सरज़द हो रहे हैं। 21 मैं उतर कर
उन के पास जा रहा हूँ ताकि देखूँ कि यह इल्ज़ाम
वाक़ई सच हैं जो मुझ तक पहुँचे हैं। अगर ऐसा नहीं
है तो मैं यह जानना चाहता हूँ।”

22 दूसरे दो आदमी सदूम की तरफ़ आगे निकले
जबकि रब कुछ देर के लिए वहाँ ठहरा रहा और
इब्राहीम उस के सामने खड़ा रहा। 23 फिर उस ने
क़रीब आ कर उस से बात की, “क्या तू रास्तबाज़ों
को भी शरीरों के साथ तबाह कर देगा? 24 हो सकता
है कि शहर में 50 रास्तबाज़ हों। क्या तू फिर भी
शहर को बर्बाद कर देगा और उसे उन 50 के सबब
से मुआफ़ नहीं करेगा? 25 यह कैसे हो सकता है कि
तू बेक़ुसूरों को शरीरों के साथ हलाक कर दे? यह
तो नामुमकिन है कि तू नेक और शरीर लोगों से एक
जैसा सुलूक करे। क्या लाज़िम नहीं कि पूरी दुनिया
का मुन्सिफ़ इन्साफ़ करे?”

26 रब ने जवाब दिया, “अगर मुझे शहर में 50
रास्तबाज़ मिल जाएँ तो उन के सबब से तमाम को
मुआफ़ कर दूँगा।”

27 इब्राहीम ने कहा, “मैं मुआफ़ी चाहता हूँ कि मैं ने
रब से बात करने की जुरअत की है अगरचे मैं ख़ाक
और राख ही हूँ। 28 लेकिन हो सकता है कि सिर्फ़ 45
रास्तबाज़ उस में हों। क्या तू फिर भी उन पाँच लोगों
की कमी के सबब से पूरे शहर को तबाह करेगा?”
उस ने कहा, “अगर मुझे 45 भी मिल जाएँ तो उसे
बर्बाद नहीं करूँगा।”

29 इब्राहीम ने अपनी बात जारी रखी, “और अगर
सिर्फ़ 40 नेक लोग हों तो?” रब ने कहा, “मैं उन 40
के सबब से उन्हें छोड़ दूँगा।”

30 इब्राहीम ने कहा, “रब ग़ुस्सा न करे कि मैं एक
दफ़ा और बात करूँ। शायद वहाँ सिर्फ़ 30 हों।” उस
ने जवाब दिया, “फिर भी उन्हें छोड़ दूँगा।”

31 इब्राहीम ने कहा, “मैं मुआफ़ी चाहता हूँ कि मैं ने
रब से बात करने की जुरअत की है। अगर सिर्फ़ 20
पाए जाएँ?” रब ने कहा, “मैं 20 के सबब से शहर
को बर्बाद करने से बाज़ रहूँगा।”

32 इब्राहीम ने एक आख़िरी दफ़ा बात की, “रब
ग़ुस्सा न करे अगर मैं एक और बार बात करूँ। शायद
उस में सिर्फ़ 10 पाए जाएँ।” रब ने कहा, “मैं उसे उन
10 लोगों के सबब से भी बर्बाद नहीं करूँगा।”

33 इन बातों के बाद रब चला गया और इब्राहीम
अपने घर को लौट आया।

सदूम और अमूरा की तबाही

19 1 शाम के वक़्त यह दो फ़रिश्ते सदूम पहुँचे।
लूत शहर के दरवाज़े पर बैठा था। जब उस
ने उन्हें देखा तो खड़े हो कर उन से मिलने गया और
मुँह के बल गिर कर सिज्दा किया। 2 उस ने कहा,
“साहिबो, अपने बन्दे के घर तश्रीफ़ लाएँ ताकि अपने
पाँओ धो कर रात को ठहरें और फिर कल सुब्ह-
सवेरे उठ कर अपना सफ़र जारी रखें।” उन्हों ने कहा,
“कोई बात नहीं, हम चौक में रात गुज़ारेंगे।” 3 लेकिन
लूत ने उन्हें बहुत मज्बूर किया, और आख़िरकार वह
उस के साथ उस के घर आए। उस ने उन के लिए
खाना पकाया और बेख़मीरी रोटी बनाई। फिर उन्हों
ने खाना खाया।

4 वह अभी सोने के लिए लेटे नहीं थे कि शहर के
जवानों से ले कर बूढ़ों तक तमाम मर्दों ने लूत के
घर को घेर लिया। 5 उन्हों ने आवाज़ दे कर लूत से
कहा, “वह आदमी कहाँ हैं जो रात के वक़्त तेरे पास

आए? उन को बाहर ले आ ताकि हम उन के साथ
हरामकारी करें।”
6 लूत उन से मिलने बाहर गया। उस ने अपने पीछे
दरवाज़ा बन्द कर लिया 7 और कहा, “मेरे भाइयो,
ऐसा मत करो, ऐसी बदकारी न करो। 8 देखो, मेरी
दो कुंवारी बेटियाँ हैं। उन्हें मैं तुम्हारे पास बाहर ले
आता हूँ। फिर जो जी चाहे उन के साथ करो। लेकिन
इन आदमियों को छोड़ दो, क्यूँकि वह मेरे मेहमान
हैं।”
9 उन्हों ने कहा, “रास्ते से हट जा! देखो, यह शख़्स
जब हमारे पास आया था तो अजनबी था, और अब
यह हम पर हाकिम बनना चाहता है। अब तेरे साथ
उन से ज़्यादा बुरा सुलूक करेंगे।” वह उसे मज्बूर
करते करते दरवाज़े को तोड़ने के लिए आगे बढ़े।
10 लेकिन ऐन वक़्त पर अन्दर के आदमी लूत को
पकड़ कर अन्दर ले आए, फिर दरवाज़ा दुबारा बन्द
कर दिया। 11 उन्हों ने छोटों से ले कर बड़ों तक बाहर
के तमाम आदमियों को अंधा कर दिया, और वह
दरवाज़े को ढूँडते ढूँडते थक गए।
12 दोनों आदमियों ने लूत से कहा, “क्या तेरा कोई
और रिश्तेदार इस शहर में रहता है, मसलन कोई
दामाद या बेटा-बेटी? सब को साथ ले कर यहाँ से
चला जा, 13 क्यूँकि हम यह मक़ाम तबाह करने को
हैं। इस के बाशिन्दों की बदी के बाइस लोगों की
आहें बुलन्द हो कर रब के हुज़ूर पहुँच गई हैं, इस
लिए उस ने हमें इस को तबाह करने के लिए भेजा
है।”
14 लूत घर से निकला और अपने दामादों से बात
की जिन का उस की बेटियों के साथ रिश्ता हो चुका
था। उस ने कहा, “जल्दी करो, इस जगह से निकलो,
क्यूँकि रब इस शहर को तबाह करने को है।” लेकिन
उस के दामादों ने इसे मज़ाक़ ही समझा।
15 जब पौ फटने लगी तो दोनों आदमियों ने लूत
को बहुत समझाया और कहा, “जल्दी कर! अपनी
बीवी और दोनों बेटियों को साथ ले कर चला जा,
वर्ना जब शहर को सज़ा दी जाएगी तो तू भी हलाक हो
जाएगा।” 16 तो भी वह झिजकता रहा। आख़िरकार
दोनों ने लूत, उस की बीवी और बेटियों के हाथ
पकड़ कर उन्हें शहर के बाहर तक पहुँचा दिया,
क्यूँकि रब को लूत पर तरस आता था।
17 जूँ ही वह उन्हें बाहर ले आए उन में से एक ने
कहा, “अपनी जान बचा कर चला जा। पीछे मुड़ कर
न देखना। मैदान में कहीं न ठहरना बल्कि पहाड़ों में
पनाह लेना, वर्ना तू हलाक हो जाएगा।”
18 लेकिन लूत ने उन से कहा, “नहीं मेरे आक़ा, ऐसा
न हो। 19 तेरे बन्दे को तेरी नज़र-ए-करम हासिल हुई
है और तू ने मेरी जान बचाने में बहुत मेहरबानी कर
दिखाई है। लेकिन मैं पहाड़ों में पनाह नहीं ले सकता।
वहाँ पहुँचने से पहले यह मुसीबत मुझ पर आन पड़ेगी
और मैं हलाक हो जाऊँगा। 20 देख, क़रीब ही एक
छोटा क़स्बा है। वह इतना नज़्दीक है कि मैं उस
तरफ़ हिज्रत कर सकता हूँ। मुझे वहाँ पनाह लेने दे।
वह छोटा ही है, ना? फिर मेरी जान बचेगी।”
21 उस ने कहा, “चलो, ठीक है। तेरी यह दरख़्वास्त
भी मन्ज़ूर है। मैं यह क़स्बा तबाह नहीं करूँगा।
22 लेकिन भाग कर वहाँ पनाह ले, क्यूँकि जब तक
तू वहाँ पहुँच न जाए मैं कुछ नहीं कर सकता।” इस
लिए क़स्बे का नाम ज़ुग़र यानी छोटा है।
23 जब लूत ज़ुग़र पहुँचा तो सूरज निकला हुआ था।
24 तब रब ने आसमान से सदूम और अमूरा पर गंधक
और आग बरसाई। 25 यूँ उस ने उस पूरे मैदान को उस
के शहरों, बाशिन्दों और तमाम हरियाली समेत तबाह
कर दिया। 26 लेकिन फ़रार होते वक़्त लूत की बीवी
ने पीछे मुड़ कर देखा तो वह फ़ौरन नमक का सतून
बन गई।
27 इब्राहीम सुब्ह-सवेरे उठ कर उस जगह वापस
आया जहाँ वह कल रब के सामने खड़ा हुआ था।
28 जब उस ने नीचे सदूम, अमूरा और पूरी वादी की
तरफ़ नज़र की तो वहाँ से भट्टे का सा धुआँ उठ रहा
था।
29 यूँ अल्लाह ने इब्राहीम को याद किया जब उस
ने उस मैदान के शहर तबाह किए। क्यूँकि वह उन्हें

तबाह करने से पहले लूत को जो उन में आबाद था
वहाँ से निकाल लाया।

लूत और उस की बेटियाँ

30 लूत और उस की बेटियाँ ज़्यादा देर तक ज़ुग़र
में न ठहरे। वह रवाना हो कर पहाड़ों में आबाद हुए,
क्यूँकि लूत ज़ुग़र में रहने से डरता था। वहाँ उन्हों ने
एक ग़ार को अपना घर बना लिया।
31 एक दिन बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, "अब्बू बूढ़ा
है और यहाँ कोई मर्द है नहीं जिस के ज़रीए हमारे बच्चे
पैदा हो सकें। 32 आओ, हम अब्बू को मै पिलाएँ। जब
वह नशे में धुत हो तो हम उस के साथ हमबिसतर हो
कर अपने लिए औलाद पैदा करें ताकि हमारी नस्ल
क़ाइम रहे।"
33 उस रात उन्हों ने अपने बाप को मै पिलाई। जब
वह नशे में था तो बड़ी बेटी अन्दर जा कर उस के
साथ हमबिसतर हुई। चूँकि लूत होश में नहीं था इस
लिए उसे कुछ भी मालूम न हुआ। 34 अगले दिन बड़ी
बहन ने छोटी बहन से कहा, "पिछली रात मैं अब्बू
से हमबिसतर हुई। आओ, आज रात को हम उसे
दुबारा मै पिलाएँ। जब वह नशे में धुत हो तो तुम
उस के साथ हमबिसतर हो कर अपने लिए औलाद
पैदा करना ताकि हमारी नस्ल क़ाइम रहे।" 35 चुनाँचे
उन्हों ने उस रात भी अपने बाप को मै पिलाई। जब
वह नशे में था तो छोटी बेटी उठ कर उस के साथ
हमबिसतर हुई। इस बार भी वह होश में नहीं था, इस
लिए उसे कुछ भी मालूम न हुआ।
36 यूँ लूत की बेटियाँ अपने बाप से उम्मीद से
हुईं। 37 बड़ी बेटी के हाँ बेटा पैदा हुआ। उस ने उस
का नाम मोआब रखा। उस से मोआबी निकले हैं।
38 छोटी बेटी के हाँ भी बेटा पैदा हुआ। उस ने उस
का नाम बिन-अम्मी रखा। उस से अम्मोनी निकले हैं।

इब्राहीम और अबीमलिक

20 1 इब्राहीम वहाँ से जुनूब की तरफ़ दश्त-ए-
नजब में चला गया और क़ादिस और शूर
के दरमियान जा बसा। कुछ देर के लिए वह जिरार में
ठहरा, लेकिन अजनबी की हैसियत से। 2 वहाँ उस
ने लोगों को बताया, "सारा मेरी बहन है।" इस लिए
जिरार के बादशाह अबीमलिक ने किसी को भिजवा
दिया कि उसे महल में ले आए।
3 लेकिन रात के वक़्त अल्लाह ख़्वाब में अबीमलिक
पर ज़ाहिर हुआ और कहा, "मौत तेरे सर पर खड़ी
है, क्यूँकि जो औरत तू अपने घर ले आया है वह
शादीशुदा है।"
4 असल में अबीमलिक अभी तक सारा के क़रीब
नहीं गया था। उस ने कहा, "मेरे आक़ा, क्या तू एक
बेक़ुसूर क़ौम को भी हलाक करेगा? 5 क्या इब्राहीम
ने मुझ से नहीं कहा था कि सारा मेरी बहन है? और
सारा ने उस की हाँ में हाँ मिलाई। मेरी नीयत अच्छी
थी और मैं ने ग़लत काम नहीं किया।" 6 अल्लाह ने
कहा, "हाँ, मैं जानता हूँ कि इस में तेरी नीयत अच्छी
थी। इस लिए मैं ने तुझे मेरा गुनाह करने और उसे छूने
से रोक दिया। 7 अब उस औरत को उस के शौहर
को वापस कर दे, क्यूँकि वह नबी है और तेरे लिए
दुआ करेगा। फिर तू नहीं मरेगा। लेकिन अगर तू उसे
वापस नहीं करेगा तो जान ले कि तेरी और तेरे लोगों
की मौत यक़ीनी है।"
8 अबीमलिक ने सुब्ह-सवेरे उठ कर अपने तमाम
कारिन्दों को यह सब कुछ बताया। यह सुन कर उन
पर दहशत छा गई। 9 फिर अबीमलिक ने इब्राहीम
को बुला कर कहा, "आप ने हमारे साथ क्या किया
है? मैं ने आप के साथ क्या ग़लत काम किया कि
आप ने मुझे और मेरी सल्तनत को इतने संगीन जुर्म
में फंसा दिया है? जो सुलूक आप ने हमारे साथ कर
दिखाया है वह किसी भी शख़्स के साथ नहीं करना
चाहिए। 10 आप ने यह क्यूँ किया?"
11 इब्राहीम ने जवाब दिया, "मैं ने अपने दिल में
कहा कि यहाँ के लोग अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं रखते
होंगे, इस लिए वह मेरी बीवी को हासिल करने के
लिए मुझे क़त्ल कर देंगे। 12 हक़ीक़त में वह मेरी बहन
भी है। वह मेरे बाप की बेटी है अगरचे उस की और

मेरी माँ फ़र्क़ हैं। यूँ मैं उस से शादी कर सका। 13 फिर
जब अल्लाह ने होने दिया कि मैं अपने बाप के घराने
से निकल कर इधर उधर फिरूँ तो मैं ने अपनी बीवी
से कहा, 'मुझ पर यह मेहरबानी कर कि जहाँ भी हम
जाएँ मेरे बारे में कह देना कि वह मेरा भाई है'।"
14 फिर अबीमलिक ने इब्राहीम को भेड़-बकरियाँ,
गाय-बैल, ग़ुलाम और लौंडियाँ दे कर उस की बीवी
सारा को उसे वापस कर दिया। 15 उस ने कहा, "मेरा
मुल्क आप के लिए खुला है। जहाँ जी चाहे उस में जा
बसें।" 16 सारा से उस ने कहा, "मैं आप के भाई को
चाँदी के हज़ार सिक्के देता हूँ। इस से आप और आप
के लोगों के सामने आप के साथ किए गए नारवा
सुलूक का इज़ाला हो और आप को बेक़ुसूर क़रार
दिया जाए।"
17–18 तब इब्राहीम ने अल्लाह से दुआ की और
अल्लाह ने अबीमलिक, उस की बीवी और उस की
लौंडियों को शिफ़ा दी, क्यूँकि रब ने अबीमलिक के
घराने की तमाम औरतों को सारा के सबब से बाँझ
बना दिया था। लेकिन अब उन के हाँ दुबारा बच्चे
पैदा होने लगे।

इस्हाक़ की पैदाइश

21 1 तब रब ने सारा के साथ वैसा ही किया
जैसा उस ने फ़रमाया था। जो वादा उस ने
सारा के बारे में किया था उसे उस ने पूरा किया। 2 वह
हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। ऐन उस वक़्त बूढ़े
इब्राहीम के हाँ बेटा पैदा हुआ जो अल्लाह ने मुक़र्रर
करके उसे बताया था।
3 इब्राहीम ने अपने इस बेटे का नाम इस्हाक़ यानी
'वह हँसता है' रखा। 4 जब इस्हाक़ आठ दिन का
था तो इब्राहीम ने उस का ख़तना कराया, जिस तरह
अल्लाह ने उसे हुक्म दिया था। 5 जब इस्हाक़ पैदा
हुआ उस वक़्त इब्राहीम 100 साल का था। 6 सारा
ने कहा, "अल्लाह ने मुझे हंसाया, और हर कोई जो
मेरे बारे में यह सुनेगा हंसेगा। 7 इस से पहले कौन
इब्राहीम से यह कहने की जुरअत कर सकता था कि
सारा अपने बच्चों को दूध पिलाएगी? और अब मेरे
हाँ बेटा पैदा हुआ है, अगरचे इब्राहीम बूढ़ा हो गया
है।"
8 इस्हाक़ बड़ा होता गया। जब उस का दूध छुड़ाया
गया तो इब्राहीम ने उस के लिए बड़ी ज़ियाफ़त की।

इब्राहीम हाजिरा और इस्माईल को निकाल देता है

9 एक दिन सारा ने देखा कि मिस्री लौंडी हाजिरा
का बेटा इस्माईल इस्हाक़ का मज़ाक़ उड़ा रहा है।
10 उस ने इब्राहीम से कहा, "इस लौंडी और उस के
बेटे को घर से निकाल दें, क्यूँकि वह मेरे बेटे इस्हाक़
के साथ मीरास नहीं पाएगा।"
11 इब्राहीम को यह बात बहुत बुरी लगी। आख़िर
इस्माईल भी उस का बेटा था। 12 लेकिन अल्लाह ने
उस से कहा, "जो बात सारा ने अपनी लौंडी और
उस के बेटे के बारे में कही है वह तुझे बुरी न लगे।
सारा की बात मान ले, क्यूँकि तेरी नस्ल इस्हाक़ ही
से क़ाइम रहेगी। 13 लेकिन मैं इस्माईल से भी एक
क़ौम बनाऊँगा, क्यूँकि वह तेरा बेटा है।"
14 इब्राहीम सुब्ह-सवेरे उठा। उस ने रोटी और पानी
की मश्क हाजिरा के कंधों पर रख कर उसे लड़के के
साथ घर से निकाल दिया। हाजिरा चलते चलते बैर-
सबा के रेगिस्तान में इधर उधर फिरने लगी। 15 फिर
पानी ख़त्म हो गया। हाजिरा लड़के को किसी झाड़ी
के नीचे छोड़ कर 16 कोई 300 फ़ुट दूर बैठ गई।
क्यूँकि उस ने दिल में कहा, "मैं उसे मरते नहीं देख
सकती।" वह वहाँ बैठ कर रोने लगी।
17 लेकिन अल्लाह ने बेटे की रोती हुई आवाज़ सुन
ली। अल्लाह के फ़रिश्ते ने आसमान पर से पुकार कर
हाजिरा से बात की, "हाजिरा, क्या बात है? मत डर,
क्यूँकि अल्लाह ने लड़के का जो वहाँ पड़ा है रोना सुन
लिया है। 18 उठ, लड़के को उठा कर उस का हाथ
थाम ले, क्यूँकि मैं उस से एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा।"
19 फिर अल्लाह ने हाजिरा की आँखें खोल दीं, और
उस की नज़र एक कुएँ पर पड़ी। वह वहाँ गई और
मश्क को पानी से भर कर लड़के को पिलाया।

20 अल्लाह लड़के के साथ था। वह जवान हुआ और
तीरअन्दाज़ बन कर बयाबान में रहने लगा। 21 जब
वह फ़ारान के रेगिस्तान में रहता था तो उस की माँ
ने उसे एक मिस्री औरत से ब्याह दिया।

अबीमलिक के साथ अह्द

22 उन दिनों में अबीमलिक और उस के
सिपाहसालार फ़ीकुल ने इब्राहीम से कहा, "जो कुछ
भी आप करते हैं अल्लाह आप के साथ है। 23 अब मुझ
से अल्लाह की क़सम खाएँ कि आप मुझे और मेरी
आल-ओ-औलाद को धोका नहीं देंगे। मुझ पर और
इस मुल्क पर जिस में आप परदेसी हैं वही मेहरबानी
करें जो मैं ने आप पर की है।"
24 इब्राहीम ने जवाब दिया, "मैं क़सम खाता हूँ।"
25 फिर उस ने अबीमलिक से शिकायत करते हुए
कहा, "आप के बन्दों ने हमारे एक कुएँ पर क़ब्ज़ा
कर लिया है।" 26 अबीमलिक ने कहा, "मुझे नहीं
मालूम कि किस ने ऐसा किया है। आप ने भी मुझे
नहीं बताया। आज मैं पहली दफ़ा यह बात सुन रहा
हूँ।"
27 तब इब्राहीम ने अबीमलिक को भेड़-बकरियाँ
और गाय-बैल दिए, और दोनों ने एक दूसरे के साथ
अह्द बांधा। 28 फिर इब्राहीम ने भेड़ के सात मादा
बच्चों को अलग कर लिया। 29 अबीमलिक ने पूछा,
"आप ने यह क्यूँ किया?" 30 इब्राहीम ने जवाब दिया,
"भेड़ के इन सात बच्चों को मुझ से ले लें। यह इस के
गवाह हों कि मैं ने इस कुएँ को खोदा है।" 31 इस लिए
उस जगह का नाम बैर-सबा यानी 'क़सम का कुआँ'
रखा गया, क्यूँकि वहाँ उन दोनों मर्दों ने क़सम खाई।
32 यूँ उन्हों ने बैर-सबा में एक दूसरे से अह्द बांधा।
फिर अबीमलिक और फ़ीकुल फ़िलिस्तियों के मुल्क
वापस चले गए। 33 इस के बाद इब्राहीम ने बैर-सबा
में झाओ का दरख़्त लगाया। वहाँ उस ने रब का
नाम ले कर उस की इबादत की जो अबदी ख़ुदा है।
34 इब्राहीम बहुत अर्से तक फ़िलिस्तियों के मुल्क में
आबाद रहा, लेकिन अजनबी की हैसियत से।

इब्राहीम की आज़माइश

22 1 कुछ अर्से के बाद अल्लाह ने इब्राहीम
को आज़माया। उस ने उस से कहा,
"इब्राहीम!" उस ने जवाब दिया, "जी, मैं हाज़िर
हूँ।" 2 अल्लाह ने कहा, "अपने इक्लौते बेटे इस्हाक़
को जिसे तू प्यार करता है साथ ले कर मोरियाह
के इलाक़े में चला जा। वहाँ मैं तुझे एक पहाड़
दिखाऊँगा। उस पर अपने बेटे को क़ुर्बान कर दे।
उसे ज़बह करके क़ुर्बानगाह पर जला देना।"
3 सुब्ह-सवेरे इब्राहीम उठा और अपने गधे पर ज़ीन
कसा। उस ने अपने साथ दो नौकरों और अपने बेटे
इस्हाक़ को लिया। फिर वह क़ुर्बानी को जलाने के
लिए लकड़ी काट कर उस जगह की तरफ़ रवाना
हुआ जो अल्लाह ने उसे बताई थी। 4 सफ़र करते
करते तीसरे दिन क़ुर्बानी की जगह इब्राहीम को दूर
से नज़र आई। 5 उस ने नौकरों से कहा, "यहाँ गधे के
पास ठहरो। मैं लड़के के साथ वहाँ जा कर परस्तिश
करूँगा। फिर हम तुम्हारे पास वापस आ जाएंगे।"
6 इब्राहीम ने क़ुर्बानी को जलाने के लिए लकड़ियाँ
इस्हाक़ के कंधों पर रख दीं और ख़ुद छुरी और आग
जलाने के लिए अंगारों का बर्तन उठाया। दोनों चल
दिए। 7 इस्हाक़ बोला, "अब्बू!" इब्राहीम ने कहा,
"जी बेटा।" "अब्बू, आग और लकड़ियाँ तो हमारे
पास हैं, लेकिन क़ुर्बानी के लिए भेड़ या बकरी कहाँ
है?" 8 इब्राहीम ने जवाब दिया, "अल्लाह ख़ुद क़ुर्बानी
के लिए जानवर मुहय्या करेगा, बेटा।" वह आगे बढ़
गए।
9 चलते चलते वह उस मक़ाम पर पहुँचे जो अल्लाह
ने उस पर ज़ाहिर किया था। इब्राहीम ने वहाँ
क़ुर्बानगाह बनाई और उस पर लकड़ियाँ तर्तीब से
रख दीं। फिर उस ने इस्हाक़ को बांध कर लकड़ियों
पर रख दिया 10 और छुरी पकड़ ली ताकि अपने
बेटे को ज़बह करे। 11 ऐन उसी वक़्त रब के फ़रिश्ते
ने आसमान पर से उसे आवाज़ दी, "इब्राहीम,
इब्राहीम!" इब्राहीम ने कहा, "जी, मैं हाज़िर हूँ।"

12 फ़रिश्ते ने कहा, “अपने बेटे पर हाथ न चला, न
उस के साथ कुछ कर। अब मैं ने जान लिया है कि तू
अल्लाह का ख़ौफ़ रखता है, क्यूँकि तू अपने इक्लौते
बेटे को भी मुझे देने के लिए तय्यार है।”
13 अचानक इब्राहीम को एक मेंढा नज़र आया जिस
के सींग गुंजान झाड़ियों में फंसे हुए थे। इब्राहीम ने
उसे ज़बह करके अपने बेटे की जगह क़ुर्बानी के तौर
पर जला दिया। 14 उस ने उस मक़ाम का नाम “रब
मुहय्या करता है” रखा। इस लिए आज तक कहा
जाता है, “रब के पहाड़ पर मुहय्या किया जाता है।”
15 रब के फ़रिश्ते ने एक बार फिर आसमान पर से
पुकार कर उस से बात की। 16 “रब का फ़रमान है,
मेरी ज़ात की क़सम, चूँकि तू ने यह किया और अपने
इक्लौते बेटे को मुझे पेश करने के लिए तय्यार था
17 इस लिए मैं तुझे बरकत दूँगा और तेरी औलाद
को आसमान के सितारों और साहिल की रेत की
तरह बेशुमार होने दूँगा। तेरी औलाद अपने दुश्मनों
के शहरों के दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करेगी। 18 चूँकि तू ने
मेरी सुनी इस लिए तेरी औलाद से दुनिया की तमाम
क़ौमें बरकत पाएँगी।”
19 इस के बाद इब्राहीम अपने नौकरों के पास
वापस आया, और वह मिल कर बैर-सबा लौटे। वहाँ
इब्राहीम आबाद रहा।
20 इन वाक़िआत के बाद इब्राहीम को इत्तिला
मिली, “आप के भाई नहूर की बीवी मिल्काह के
हाँ भी बेटे पैदा हुए हैं। 21 उस के पहलौठे ऊज़
के बाद बूज़, क़मूएल (अराम का बाप), 22 कसद,
हज़ू, फ़िल्दास, इद्लाफ़ और बतूएल पैदा हुए हैं।”
23 मिल्काह और नहूर के हाँ यह आठ बेटे पैदा हुए।
(बतूएल रिब्क़ा का बाप था)। 24 नहूर की हरम का
नाम रूमा था। उस के हाँ भी बेटे पैदा हुए जिन के
नाम तिबख़, जाहम, तख़स और माका हैं।

सारा की वफ़ात

23 1 सारा 127 साल की उम्र में हब्रून में
इन्तिक़ाल कर गई। 2 उस ज़माने में हब्रून
का नाम क़िर्यत-अर्बा था, और वह मुल्क-ए-कनआन
में था। इब्राहीम ने उस के पास आ कर मातम किया।
3 फिर वह जनाज़े के पास से उठा और हित्तियों से
बात की। उस ने कहा, 4 “मैं आप के दरमियान
परदेसी और ग़ैरशहरी की हैसियत से रहता हूँ। मुझे
क़ब्र के लिए ज़मीन बेचें ताकि अपनी बीवी को अपने
घर से ले जा कर दफ़न कर सकूँ।” 5–6 हित्तियों ने
जवाब दिया, “हमारे आक़ा, हमारी बात सुनें! आप
हमारे दरमियान अल्लाह के रईस हैं। अपनी बीवी को
हमारी बेहतरीन क़ब्र में दफ़न करें। हम में से कोई
नहीं जो आप से अपनी क़ब्र का इन्कार करेगा।”
7 इब्राहीम उठा और मुल्क के बाशिन्दों यानी
हित्तियों के सामने ताज़ीमन झुक गया। 8 उस ने कहा,
“अगर आप इस के लिए तय्यार हैं कि मैं अपनी
बीवी को अपने घर से ले जा कर दफ़न करूँ तो सुहर
के बेटे इफ़्रोन से मेरी सिफ़ारिश करें 9 कि वह मुझे
मक्फ़ीला का ग़ार बेच दे। वह उस का है और उस
के खेत के किनारे पर है। मैं उस की पूरी क़ीमत देने
के लिए तय्यार हूँ ताकि आप के दरमियान रहते हुए
मेरे पास क़ब्र भी हो।”
10 इफ़्रोन हित्तियों की जमाअत में मौजूद था।
इब्राहीम की दरख़्वास्त पर उस ने उन तमाम हित्तियों
के सामने जो शहर के दरवाज़े पर जमा थे जवाब
दिया, 11 “नहीं, मेरे आक़ा! मेरी बात सुनें। मैं आप
को यह खेत और उस में मौजूद ग़ार दे देता हूँ। सब
जो हाज़िर हैं मेरे गवाह हैं, मैं यह आप को देता हूँ।
अपनी बीवी को वहाँ दफ़न कर दें।”
12 इब्राहीम दुबारा मुल्क के बाशिन्दों के सामने
अदबन झुक गया। 13 उस ने सब के सामने इफ़्रोन
से कहा, “मेहरबानी करके मेरी बात पर ग़ौर करें।
मैं खेत की पूरी क़ीमत अदा करूँगा। उसे क़बूल
करें ताकि वहाँ अपनी बीवी को दफ़न कर सकूँ।”
14–15 इफ़्रोन ने जवाब दिया, “मेरे आक़ा, सुनें। इस

ज़मीन की क़ीमत सिर्फ़ 400 चाँदी के सिक्के है।[d] आप
के और मेरे दरमियान यह क्या है? अपनी बीवी को
दफ़न कर दें।”

16 इब्राहीम ने इफ़्रोन की मतलूबा क़ीमत मान ली
और सब के सामने चाँदी के 400 सिक्के तोल कर
इफ़्रोन को दे दिए। इस के लिए उस ने उस वक़्त
के राइज बाट इस्तेमाल किए। 17 चुनाँचे मक्फ़ीला में
इफ़्रोन की ज़मीन इब्राहीम की मिलकियत हो गई।
यह ज़मीन मम्रे के मशरिक़ में थी। उस में खेत, खेत
का ग़ार और खेत की हुदूद में मौजूद तमाम दरख़्त
शामिल थे। 18 हित्तियों की पूरी जमाअत ने जो शहर
के दरवाज़े पर जमा थी ज़मीन के इन्तिक़ाल की
तस्दीक़ की। 19 फिर इब्राहीम ने अपनी बीवी सारा
को मुल्क-ए-कनआन के उस ग़ार में दफ़न किया जो
मम्रे यानी हब्रून के मशरिक़ में वाक़े मक्फ़ीला के खेत
में था। 20 इस तरीक़े से यह खेत और उस का ग़ार
हित्तियों से इब्राहीम के नाम पर मुन्तक़िल कर दिया
गया ताकि उस के पास क़ब्र हो।

इस्हाक़ और रिब्क़ा

24 1 इब्राहीम अब बहुत बूढ़ा हो गया था। रब
ने उसे हर लिहाज़ से बरकत दी थी। 2 एक
दिन उस ने अपने घर के सब से बुज़ुर्ग नौकर से
जो उस की जायदाद का पूरा इन्तिज़ाम चलाता था
बात की। “क़सम के लिए अपना हाथ मेरी रान के
नीचे रखो। 3 रब की क़सम खाओ जो आसमान-ओ-
ज़मीन का ख़ुदा है कि तुम इन कनआनियों में से
जिन के दरमियान मैं रहता हूँ मेरे बेटे के लिए बीवी
नहीं लाओगे 4 बल्कि मेरे वतन में मेरे रिश्तेदारों के
पास जाओगे और उन ही में से मेरे बेटे के लिए बीवी
लाओगे।” 5 उस के नौकर ने कहा, “शायद वह औरत
मेरे साथ यहाँ आना न चाहे। क्या मैं इस सूरत में
आप के बेटे को उस वतन में वापस ले जाऊँ जिस
से आप निकले हैं?” 6 इब्राहीम ने कहा, “ख़बरदार!
उसे हरगिज़ वापस न ले जाना। 7 रब जो आसमान
का ख़ुदा है अपना फ़रिश्ता तुम्हारे आगे भेजेगा, इस
लिए तुम वहाँ मेरे बेटे के लिए बीवी चुनने में ज़रूर
कामयाब होगे। क्यूँकि वही मुझे मेरे बाप के घर और
मेरे वतन से यहाँ ले आया है, और उसी ने क़सम
खा कर मुझ से वादा किया है कि मैं कनआन का
यह मुल्क तेरी औलाद को दूँगा। 8 अगर वहाँ की
औरत यहाँ आना न चाहे तो फिर तुम अपनी क़सम
से आज़ाद होगे। लेकिन किसी सूरत में भी मेरे बेटे
को वहाँ वापस न ले जाना।”

9 इब्राहीम के नौकर ने अपना हाथ उस की रान
के नीचे रख कर क़सम खाई कि मैं सब कुछ ऐसा
ही करूँगा। 10 फिर वह अपने आक़ा के दस ऊँटों
पर क़ीमती तुह्फ़े लाद कर मसोपुतामिया की तरफ़
रवाना हुआ। चलते चलते वह नहूर के शहर पहुँच
गया।

11 उस ने ऊँटों को शहर के बाहर कुएँ के पास
बिठाया। शाम का वक़्त था जब औरतें कुएँ के पास
आ कर पानी भर्ती थीं। 12 फिर उस ने दुआ की, “ऐ
रब मेरे आक़ा इब्राहीम के ख़ुदा, मुझे आज कामयाबी
बख़्श और मेरे आक़ा इब्राहीम पर मेहरबानी कर।
13 अब मैं इस चश्मे पर खड़ा हूँ, और शहर की
बेटियाँ पानी भरने के लिए आ रही हैं। 14 मैं उन में से
किसी से कहूँगा, ‘ज़रा अपना घड़ा नीचे करके मुझे
पानी पिलाएँ।’ अगर वह जवाब दे, ‘पी लें, मैं आप
के ऊँटों को भी पानी पिला देती हूँ,’ तो वह वही होगी
जिसे तू ने अपने ख़ादिम इस्हाक़ के लिए चुन रखा है।
अगर ऐसा हुआ तो मैं जान लूँगा कि तू ने मेरे आक़ा
पर मेहरबानी की है।”

15 वह अभी दुआ कर ही रहा था कि रिब्क़ा शहर से
निकल आई। उस के कंधे पर घड़ा था। वह बतूएल
की बेटी थी (बतूएल इब्राहीम के भाई नहूर की बीवी
मिल्काह का बेटा था)। 16 रिब्क़ा निहायत ख़ूबसूरत
जवान लड़की थी, और वह कुंवारी भी थी। वह चश्मे

---

[d] तक़रीबन साढ़े चार किलोग्राम चाँदी।

तक उतरी, अपना घड़ा भरा और फिर वापस ऊपर
आई।
17 इब्राहीम का नौकर दौड़ कर उस से मिला। उस
ने कहा, “ज़रा मुझे अपने घड़े से थोड़ा सा पानी
पिलाएँ।” 18 रिब्क़ा ने कहा, “जनाब, पी लें।” जल्दी
से उस ने अपने घड़े को कंधे पर से उतार कर हाथ में
पकड़ा ताकि वह पी सके। 19 जब वह पीने से फ़ारिग़
हुआ तो रिब्क़ा ने कहा, “मैं आप के ऊँटों के लिए भी
पानी ले आती हूँ। वह भी पूरे तौर पर अपनी प्यास
बुझाएँ।” 20 जल्दी से उस ने अपने घड़े का पानी हौज़
में उंडेल दिया और फिर भाग कर कुएँ से इतना पानी
लाती रही कि तमाम ऊँटों की प्यास बुझ गई।
21 इतने में इब्राहीम का आदमी ख़ामोशी से उसे
देखता रहा, क्यूँकि वह जानना चाहता था कि क्या
रब मुझे सफ़र की कामयाबी बख़्शेगा या नहीं। 22 ऊँट
पानी पीने से फ़ारिग़ हुए तो उस ने रिब्क़ा को सोने की
एक नथ और दो कंगन दिए। नथ का वज़न तक़रीबन
6 ग्राम था और कंगनों का 120 ग्राम।
23 उस ने पूछा, “आप किस की बेटी हैं? क्या उस
के हाँ इतनी जगह है कि हम वहाँ रात गुज़ार सकें?”
24 रिब्क़ा ने जवाब दिया, “मेरा बाप बतूएल है। वह
नहूर और मिल्काह का बेटा है। 25 हमारे पास भूसा
और चारा है। रात गुज़ारने के लिए भी काफ़ी जगह
है।” 26 यह सुन कर इब्राहीम के नौकर ने रब को
सिज्दा किया। 27 उस ने कहा, “मेरे आक़ा इब्राहीम
के ख़ुदा की तम्जीद हो जिस के करम और वफ़ादारी
ने मेरे आक़ा को नहीं छोड़ा। रब ने मुझे सीधा मेरे
मालिक के रिश्तेदारों तक पहुँचाया है।”
28 लड़की भाग कर अपनी माँ के घर चली गई।
वहाँ उस ने सब कुछ बता दिया जो हुआ था।
29–30 जब रिब्क़ा के भाई लाबन ने नथ और बहन
की कलाइयों में कंगनों को देखा और वह सब कुछ
सुना जो इब्राहीम के नौकर ने रिब्क़ा को बताया था
तो वह फ़ौरन कुएँ की तरफ़ दौड़ा।
इब्राहीम का नौकर अब तक ऊँटों समेत वहाँ खड़ा
था। 31 लाबन ने कहा, “रब के मुबारक बन्दे, मेरे
साथ आएँ। आप यहाँ शहर के बाहर क्यूँ खड़े हैं? मैं
ने अपने घर में आप के लिए सब कुछ तय्यार किया
है। आप के ऊँटों के लिए भी काफ़ी जगह है।” 32 वह
नौकर को ले कर घर पहुँचा। ऊँटों से सामान उतारा
गया, और उन को भूसा और चारा दिया गया। पानी
भी लाया गया ताकि इब्राहीम का नौकर और उस के
आदमी अपने पाँओ धोएँ।
33 लेकिन जब खाना आ गया तो इब्राहीम के नौकर
ने कहा, “इस से पहले कि मैं खाना खाऊँ लाज़िम
है कि अपना मुआमला पेश करूँ।” लाबन ने कहा,
“बताएँ अपनी बात।” 34 उस ने कहा, “मैं इब्राहीम
का नौकर हूँ। 35 रब ने मेरे आक़ा को बहुत बरकत
दी है। वह बहुत अमीर बन गया है। रब ने उसे कस्रत
से भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, सोना-चाँदी, ग़ुलाम और
लौंडियाँ, ऊँट और गधे दिए हैं। 36 जब मेरे मालिक
की बीवी बूढ़ी हो गई थी तो उस के बेटा पैदा हुआ
था। इब्राहीम ने उसे अपनी पूरी मिलकियत दे दी है।
37 लेकिन मेरे आक़ा ने मुझ से कहा, ‘क़सम खाओ
कि तुम इन कनआनियों में से जिन के दरमियान मैं
रहता हूँ मेरे बेटे के लिए बीवी नहीं लाओगे 38 बल्कि
मेरे बाप के घराने और मेरे रिश्तेदारों के पास जा कर
उस के लिए बीवी लाओगे।’ 39 मैं ने अपने मालिक
से कहा, ‘शायद वह औरत मेरे साथ आना न चाहे।’
40 उस ने कहा, ‘रब जिस के सामने मैं चलता रहा
हूँ अपने फ़रिश्ते को तुम्हारे साथ भेजेगा और तुम्हें
कामयाबी बख़्शेगा। तुम्हें ज़रूर मेरे रिश्तेदारों और
मेरे बाप के घराने से मेरे बेटे के लिए बीवी मिलेगी।
41 लेकिन अगर तुम मेरे रिश्तेदारों के पास जाओ और
वह इन्कार करें तो फिर तुम अपनी क़सम से आज़ाद
होगे।’ 42 आज जब मैं कुएँ के पास आया तो मैं ने
दुआ की, ‘ऐ रब, मेरे आक़ा के ख़ुदा, अगर तेरी मर्ज़ी
हो तो मुझे इस मिशन में कामयाबी बख़्श जिस के
लिए मैं यहाँ आया हूँ। 43 अब मैं इस कुएँ के पास
खड़ा हूँ। जब कोई जवान औरत शहर से निकल कर
यहाँ आए तो मैं उस से कहूँगा, “ज़रा मुझे अपने घड़े
से थोड़ा सा पानी पिलाएँ।” 44 अगर वह कहे, “पी

लें, मैं आप के ऊँटों के लिए भी पानी ले आऊँगी” तो
इस का मतलब यह हो कि तू ने उसे मेरे आक़ा के
बेटे के लिए चुन लिया है कि उस की बीवी बन जाए
’

45 मैं अभी दिल में यह दुआ कर रहा था कि रिब्क़ा
शहर से निकल आई। उस के कंधे पर घड़ा था। वह
चश्मे तक उतरी और अपना घड़ा भर लिया। मैं ने
उस से कहा, ‘ज़रा मुझे पानी पिलाएँ।’ 46 जवाब में
उस ने जल्दी से अपने घड़े को कंधे पर से उतार कर
कहा, ‘पी लें, मैं आप के ऊँटों को भी पानी पिलाती
हूँ।’ मैं ने पानी पिया, और उस ने ऊँटों को भी पानी
पिलाया। 47 फिर मैं ने उस से पूछा, ‘आप किस की
बेटी हैं?’ उस ने जवाब दिया, ‘मेरा बाप बतूएल है।
वह नहूर और मिल्काह का बेटा है।’ फिर मैं ने उस
की नाक में नथ और उस की कलाइयों में कंगन
पहना दिए। 48 तब मैं ने रब को सिज्दा करके अपने
आक़ा इब्राहीम के ख़ुदा की तम्जीद की जिस ने मुझे
सीधा मेरे मालिक की भतीजी तक पहुँचाया ताकि
वह इस्हाक़ की बीवी बन जाए

49 अब मुझे बताएँ, क्या आप मेरे आक़ा पर अपनी
मेहरबानी और वफ़ादारी का इज़हार करना चाहते
हैं? अगर ऐसा है तो रिब्क़ा की इस्हाक़ के साथ
शादी क़बूल करें। अगर आप मुत्तफ़िक़ नहीं हैं तो
मुझे बताएँ ताकि मैं कोई और क़दम उठा सकूँ।”

50 लाबन और बतूएल ने जवाब दिया, “यह बात
रब की तरफ़ से है, इस लिए हम किसी तरह भी
इन्कार नहीं कर सकते। 51 रिब्क़ा आप के सामने
है। उसे ले जाएँ। वह आप के मालिक के बेटे की
बीवी बन जाए जिस तरह रब ने फ़रमाया है।” 52 यह
सुन कर इब्राहीम के नौकर ने रब को सिज्दा किया।
53 फिर उस ने सोने और चाँदी के ज़ेवरात और महंगे
मल्बूसात अपने सामान में से निकाल कर रिब्क़ा को
दिए। रिब्क़ा के भाई और माँ को भी क़ीमती तुह्फ़े
मिले।

54 इस के बाद उस ने अपने हमसफ़रों के साथ शाम
का खाना खाया। वह रात को वहीं ठहरे। अगले दिन
जब उठे तो नौकर ने कहा, “अब हमें इजाज़त दें
ताकि अपने आक़ा के पास लौट जाएँ।” 55 रिब्क़ा
के भाई और माँ ने कहा, “रिब्क़ा कुछ दिन और
हमारे हाँ ठहरे। फिर आप जाएँ।” 56 लेकिन उस ने
उन से कहा, “अब देर न करें, क्यूँकि रब ने मुझे
मेरे मिशन में कामयाबी बख़्शी है। मुझे इजाज़त दें
ताकि अपने मालिक के पास वापस जाऊँ।” 57 उन्हों
ने कहा, “चलें, हम लड़की को बुला कर उसी से पूछ
लेते हैं।”

58 उन्हों ने रिब्क़ा को बुला कर उस से पूछा, “क्या
तू अभी इस आदमी के साथ जाना चाहती है?”
उस ने कहा, “जी, मैं जाना चाहती हूँ।” 59 चुनाँचे
उन्हों ने अपनी बहन रिब्क़ा, उस की दाया, इब्राहीम
के नौकर और उस के हमसफ़रों को रुख़्सत कर
दिया। 60 पहले उन्हों ने रिब्क़ा को बरकत दे कर
कहा, “हमारी बहन, अल्लाह करे कि तू करोड़ों की
माँ बने। तेरी औलाद अपने दुश्मनों के शहरों के
दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करे।” 61 फिर रिब्क़ा और उस
की नौकरानियाँ उठ कर ऊँटों पर सवार हुईं और
इब्राहीम के नौकर के पीछे हो लीं। चुनाँचे नौकर उन्हें
साथ ले कर रवाना हो गया।

62 उस वक़्त इस्हाक़ मुल्क के जुनूबी हिस्से, दश्त-
ए-नजब में रहता था। वह बैर-लही-रोई से आया था।
63 एक शाम वह निकल कर खुले मैदान में अपनी
सोचों में मगन टहल रहा था कि अचानक ऊँट उस
की तरफ़ आते हुए नज़र आए। 64 जब रिब्क़ा ने
अपनी नज़र उठा कर इस्हाक़ को देखा तो उस ने
ऊँट से उतर कर 65 नौकर से पूछा, “वह आदमी कौन
है जो मैदान में हम से मिलने आ रहा है?” नौकर ने
कहा, “मेरा मालिक है।” यह सुन कर रिब्क़ा ने चादर
ले कर अपने चिहरे को ढाँप लिया।

66 नौकर ने इस्हाक़ को सब कुछ बता दिया जो
उस ने किया था। 67 फिर इस्हाक़ रिब्क़ा को अपनी
माँ सारा के डेरे में ले गया। उस ने उस से शादी की,
और वह उस की बीवी बन गई। इस्हाक़ के दिल में

उस के लिए बहुत मुहब्बत पैदा हुई। यूँ उसे अपनी माँ की मौत के बाद सुकून मिला।

इब्राहीम की मज़ीद औलाद

25 1 इब्राहीम ने एक और शादी की। नई बीवी का नाम क़तूरा था। 2 क़तूरा के छः बेटे पैदा हुए, ज़िम्रान, युक़्सान, मिदान, मिदियान, इस्बाक़ और सूख़। 3 युक़्सान के दो बेटे थे, सबा और ददान। असूरी, लतूसी और लूमी ददान की औलाद हैं। 4 मिदियान के बेटे ऐफ़ा, इफ़र, हनूक, अबीदा और इल्दआ थे। यह सब क़तूरा की औलाद थे।

5 इब्राहीम ने अपनी सारी मिलकियत इस्हाक़ को दे दी। 6 अपनी मौत से पहले उस ने अपनी दूसरी बीवियों के बेटों को तुह्फ़े दे कर अपने बेटे से दूर मशरिक़ की तरफ़ भेज दिया।

इब्राहीम की वफ़ात

7–8 इब्राहीम 175 साल की उम्र में फ़ौत हुआ। ग़रज़ वह बहुत उम्ररसीदा और ज़िन्दगी से आसूदा हो कर इन्तिक़ाल करके अपने बापदादा से जा मिला। 9–10 उस के बेटों इस्हाक़ और इस्माईल ने उसे मक्फ़ीला के ग़ार में दफ़न किया जो मम्रे के मशरिक़ में है। यह वही ग़ार था जिसे खेत समेत हित्ती आदमी इफ़्रोन बिन सुहर से ख़रीदा गया था। इब्राहीम और उस की बीवी सारा दोनों को उस में दफ़न किया गया।

11 इब्राहीम की वफ़ात के बाद अल्लाह ने इस्हाक़ को बरकत दी। उस वक़्त इस्हाक़ बैर-लही-रोई के क़रीब आबाद था।

इस्माईल की औलाद

12 इब्राहीम का बेटा इस्माईल जो सारा की मिस्री लौंडी हाजिरा के हाँ पैदा हुआ उस का नसबनामा यह है। 13 इस्माईल के बेटे बड़े से ले कर छोटे तक यह हैं : नबायोत, क़ीदार, अदबिएल, मिब्साम, 14 मिश्मा, दूमा, मस्सा, 15 हदद, तैमा, यतूर, नफ़ीस और क़िदमा।

16 यह बेटे बारह क़बीलों के बानी बन गए, और जहाँ जहाँ वह आबाद हुए उन जगहों का वही नाम पड़ गया। 17 इस्माईल 137 साल का था जब वह कूच करके अपने बापदादा से जा मिला। 18 उस की औलाद उस इलाक़े में आबाद थी जो हवीला और शूर के दरमियान है और जो मिस्र के मशरिक़ में असूर की तरफ़ है। यूँ इस्माईल अपने तमाम भाइयों के सामने ही आबाद हुआ।

एसौ और याक़ूब की पैदाइश

19 यह इब्राहीम के बेटे इस्हाक़ का बयान है।

20 इस्हाक़ 40 साल का था जब उस की रिब्क़ा से शादी हुई। रिब्क़ा लाबन की बहन और अरामी मर्द बतूएल की बेटी थी (बतूएल मसोपुतामिया का था)। 21 रिब्क़ा के बच्चे पैदा न हुए। लेकिन इस्हाक़ ने अपनी बीवी के लिए दुआ की तो रब ने उस की सुनी, और रिब्क़ा उम्मीद से हुई। 22 उस के पेट में बच्चे एक दूसरे से ज़ोरआज़माई करने लगे तो वह रब से पूछने गई, "अगर यह मेरी हालत रहेगी तो फिर मैं यहाँ तक क्यूँ पहुँच गई हूँ?" 23 रब ने उस से कहा, "तेरे अन्दर दो क़ौमें हैं। वह तुझ से निकल कर एक दूसरी से अलग अलग हो जाएँगी। उन में से एक ज़्यादा ताक़तवर होगी, और बड़ा छोटे की ख़िदमत करेगा।"

24 पैदाइश का वक़्त आ गया तो जुड़वाँ बेटे पैदा हुए। 25 पहला बच्चा निकला तो सुर्ख़ सा था, और ऐसा लग रहा था कि वह घने बालों का कोट ही पहने हुए है। इस लिए उस का नाम एसौ यानी 'बालों वाला' रखा गया। 26 इस के बाद दूसरा बच्चा पैदा हुआ। वह एसौ की एड़ी पकड़े हुए निकला, इस लिए उस का नाम याक़ूब यानी 'एड़ी पकड़ने वाला' रखा गया। उस वक़्त इस्हाक़ 60 साल का था।

27 लड़के जवान हुए। एसौ माहिर शिकारी बन गया और खुले मैदान में ख़ुश रहता था। उस के मुक़ाबले में याक़ूब शाइस्ता था और डेरे में रहना पसन्द करता था। 28 इस्हाक़ एसौ को प्यार करता था, क्यूँकि वह

शिकार का गोश्त पसन्द करता था। लेकिन रिब्क़ा
याक़ूब को प्यार करती थी।

29 एक दिन याक़ूब सालन पका रहा था कि एसौ
थकाहारा जंगल से आया। 30 उस ने कहा, “मुझे
जल्दी से लाल सालन, हाँ इसी लाल सालन से कुछ
खाने को दो। मैं तो बेदम हो रहा हूँ।” (इसी लिए
बाद में उस का नाम अदोम यानी सुर्ख़ पड़ गया।)
31 याक़ूब ने कहा, “पहले मुझे पहलौठे का हक़ बेच
दो।” 32 एसौ ने कहा, “मैं तो भूक से मर रहा हूँ,
पहलौठे का हक़ मेरे किस काम का?” 33 याक़ूब ने
कहा, “पहले क़सम खा कर मुझे यह हक़ बेच दो।”
एसौ ने क़सम खा कर उसे पहलौठे का हक़ मुन्तक़िल
कर दिया।

34 तब याक़ूब ने उसे कुछ रोटी और दाल दे दी,
और एसौ ने खाया और पिया। फिर वह उठ कर चला
गया। यूँ उस ने पहलौठे के हक़ को हक़ीर जाना।

इस्हाक़ और रिब्क़ा जिरार में

26 1 उस मुल्क में दुबारा काल पड़ा, जिस
तरह इब्राहीम के दिनों में भी पड़ गया
था। इस्हाक़ जिरार शहर गया जिस पर फ़िलिस्तियों
के बादशाह अबीमलिक की हुकूमत थी। 2 रब ने
इस्हाक़ पर ज़ाहिर हो कर कहा, “मिस्र न जा बल्कि
उस मुल्क में बस जो मैं तुझे दिखाता हूँ। 3 उस मुल्क
में अजनबी रह तो मैं तेरे साथ हूँगा और तुझे बरकत
दूँगा। क्यूँकि मैं तुझे और तेरी औलाद को यह तमाम
इलाक़ा दूँगा और वह वादा पूरा करूँगा जो मैं ने
क़सम खा कर तेरे बाप इब्राहीम से किया था। 4 मैं
तुझे इतनी औलाद दूँगा जितने आसमान पर सितारे
हैं। और मैं यह तमाम मुल्क उन्हें दे दूँगा। तेरी औलाद
से दुनिया की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी। 5 मैं तुझे
इस लिए बरकत दूँगा कि इब्राहीम मेरे ताबे रहा
और मेरी हिदायात और अह्काम पर चलता रहा।”
6 चुनाँचे इस्हाक़ जिरार में आबाद हो गया।

7 जब वहाँ के मर्दों ने रिब्क़ा के बारे में पूछा तो
इस्हाक़ ने कहा, “यह मेरी बहन है।” वह उन्हें यह
बताने से डरता था कि यह मेरी बीवी है, क्यूँकि उस
ने सोचा, “रिब्क़ा निहायत ख़ूबसूरत है। अगर उन्हें
मालूम हो जाए कि रिब्क़ा मेरी बीवी है तो वह उसे
हासिल करने की ख़ातिर मुझे क़त्ल कर देंगे।”

8 काफ़ी वक़्त गुज़र गया। एक दिन फ़िलिस्तियों के
बादशाह ने अपनी खिड़की में से झाँक कर देखा कि
इस्हाक़ अपनी बीवी को प्यार कर रहा है। 9 उस ने
इस्हाक़ को बुला कर कहा, “वह तो आप की बीवी
है! आप ने क्यूँ कहा कि मेरी बहन है?” इस्हाक़ ने
जवाब दिया, “मैं ने सोचा कि अगर मैं बताऊँ कि यह
मेरी बीवी है तो लोग मुझे क़त्ल कर देंगे।”

10 अबीमलिक ने कहा, “आप ने हमारे साथ
कैसा सुलूक कर दिखाया! कितनी आसानी से मेरे
आदमियों में से कोई आप की बीवी से हमबिसतर
हो जाता। इस तरह हम आप के सबब से एक बड़े जुर्म
के क़ुसूरवार ठहरते।” 11 फिर अबीमलिक ने तमाम
लोगों को हुक्म दिया, “जो भी इस मर्द या उस की
बीवी को छेड़े उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी।”

इस्हाक़ का फ़िलिस्तियों के साथ झगड़ा

12 इस्हाक़ ने उस इलाक़े में काश्तकारी की, और
उसी साल उसे सौ गुना फल मिला। यूँ रब ने उसे
बरकत दी, 13 और वह अमीर हो गया। उस की
दौलत बढ़ती गई, और वह निहायत दौलतमन्द हो
गया। 14 उस के पास इतनी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल
और ग़ुलाम थे कि फ़िलिस्ती उस से हसद करने लगे।
15 अब ऐसा हुआ कि उन्हों ने उन तमाम कुओं को
मिट्टी से भर कर बन्द कर दिया जो उस के बाप के
नौकरों ने खोदे थे।

16 आख़िरकार अबीमलिक ने इस्हाक़ से कहा,
“कहीं और जा कर रहें, क्यूँकि आप हम से ज़्यादा
ज़ोरावर हो गए हैं।”

17 चुनाँचे इस्हाक़ ने वहाँ से जा कर जिरार की वादी
में अपने डेरे लगाए। 18 वहाँ फ़िलिस्तियों ने इब्राहीम
की मौत के बाद तमाम कुओं को मिट्टी से भर दिया

था। इस्हाक़ ने उन को दुबारा खुदवाया। उस ने उन
के वही नाम रखे जो उस के बाप ने रखे थे।
19 इस्हाक़ के नौकरों को वादी में खोदते खोदते
ताज़ा पानी मिल गया। 20 लेकिन जिरार के चरवाहे
आ कर इस्हाक़ के चरवाहों से झगड़ने लगे। उन्हों
ने कहा, "यह हमारा कुआँ है!" इस लिए उस ने उस
कुएँ का नाम उसक यानी झगड़ा रखा। 21 इस्हाक़
के नौकरों ने एक और कुआँ खोद लिया। लेकिन
उस पर भी झगड़ा हुआ, इस लिए उस ने उस का
नाम सितना यानी मुख़ालफ़त रखा। 22 वहाँ से जा कर
उस ने एक तीसरा कुआँ खुदवाया। इस दफ़ा कोई
झगड़ा न हुआ, इस लिए उस ने उस का नाम रहोबोत
यानी 'खुली जगह' रखा। क्यूँकि उस ने कहा, "रब
ने हमें खुली जगह दी है, और अब हम मुल्क में फलें
फूलेंगे।"
23 वहाँ से वह बैर-सबा चला गया। 24 उसी रात
रब उस पर ज़ाहिर हुआ और कहा, "मैं तेरे बाप
इब्राहीम का ख़ुदा हूँ। मत डर, क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ।
मैं तुझे बरकत दूँगा और तुझे अपने ख़ादिम इब्राहीम
की ख़ातिर बहुत औलाद दूँगा।"
25 वहाँ इस्हाक़ ने क़ुर्बानगाह बनाई और रब का
नाम ले कर इबादत की। वहाँ उस ने अपने ख़ैमे
लगाए और उस के नौकरों ने कुआँ खोद लिया।

अबीमलिक के साथ अह्द

26 एक दिन अबीमलिक, उस का साथी अख़ूज़त
और उस का सिपहसालार फ़ीकुल जिरार से उस के
पास आए। 27 इस्हाक़ ने पूछा, "आप क्यूँ मेरे पास
आए हैं? आप तो मुझ से नफ़रत रखते हैं। क्या आप
ने मुझे अपने दरमियान से ख़ारिज नहीं किया था?"
28 उन्हों ने जवाब दिया, "हम ने जान लिया है कि
रब आप के साथ है। इस लिए हम ने कहा कि हमारा
आप के साथ अह्द होना चाहिए। आइए हम क़सम
खा कर एक दूसरे से अह्द बांधें 29 कि आप हमें
नुक़्सान नहीं पहुँचाएँगे, क्यूँकि हम ने भी आप को
नहीं छेड़ा बल्कि आप से सिर्फ़ अच्छा सुलूक किया
और आप को सलामती के साथ रुख़्सत किया है।
और अब ज़ाहिर है कि रब ने आप को बरकत दी
है।"
30 इस्हाक़ ने उन की ज़ियाफ़त की, और उन्हों ने
खाया और पिया। 31 फिर सुब्ह-सवेरे उठ कर उन्हों ने
एक दूसरे के सामने क़सम खाई। इस के बाद इस्हाक़
ने उन्हें रुख़्सत किया और वह सलामती से रवाना
हुए।
32 उसी दिन इस्हाक़ के नौकर आए और उसे उस
कुएँ के बारे में इत्तिला दी जो उन्हों ने खोदा था। उन्हों
ने कहा, "हमें पानी मिल गया है।" 33 उस ने कुएँ का
नाम सबा यानी 'क़सम' रखा। आज तक साथ वाले
शहर का नाम बैर-सबा है।

एसौ की अजनबी बीवियाँ

34 जब एसौ 40 साल का था तो उस ने दो हित्ती
औरतों से शादी की, बैरी की बेटी यहूदित से और
ऐलोन की बेटी बासमत से। 35 यह औरतें इस्हाक़
और रिब्क़ा के लिए बड़े दुख का बाइस बनीं।

इस्हाक़ याक़ूब को बरकत देता है

27 1 इस्हाक़ बूढ़ा हो गया तो उस की नज़र
धुन्दला गई। उस ने अपने बड़े बेटे को
बुला कर कहा, "बेटा।" एसौ ने जवाब दिया, "जी,
मैं हाज़िर हूँ।" 2 इस्हाक़ ने कहा, "मैं बूढ़ा हो गया
हूँ और ख़ुदा जाने कब मर जाऊँ। 3 इस लिए अपना
तीर कमान ले कर जंगल में निकल जा और मेरे लिए
किसी जानवर का शिकार कर। 4 उसे तय्यार करके
ऐसा लज़ीज़ खाना पका जो मुझे पसन्द है। फिर उसे
मेरे पास ले आ। मरने से पहले मैं वह खाना खा कर
तुझे बरकत देना चाहता हूँ।"
5 रिब्क़ा ने इस्हाक़ की एसौ के साथ बातचीत सुन
ली थी। जब एसौ शिकार करने के लिए चला गया
तो उस ने याक़ूब से कहा, 6 "अभी अभी मैं ने तुम्हारे
अब्बू को एसौ से यह बात करते हुए सुना कि 7 'मेरे
लिए किसी जानवर का शिकार करके ले आ। उसे

तय्यार करके मेरे लिए लज़ीज़ खाना पका। मरने से
पहले मैं यह खाना खा कर तुझे रब के सामने बरकत
देना चाहता हूँ।' 8 अब सुनो, मेरे बेटे! जो कुछ मैं
बताती हूँ वह करो। 9 जा कर रेवड़ में से बकरियों
के दो अच्छे अच्छे बच्चे चुन लो। फिर मैं वही लज़ीज़
खाना पकाऊँगी जो तुम्हारे अब्बू को पसन्द है। 10 तुम
यह खाना उस के पास ले जाओगे तो वह उसे खा कर
मरने से पहले तुम्हें बरकत देगा।"

11 लेकिन याक़ूब ने एतिराज़ किया, "आप जानती
हैं कि एसौ के जिस्म पर घने बाल हैं जबकि मेरे बाल
कम हैं। 12 कहीं मुझे छूने से मेरे बाप को पता न चल
जाए कि मैं उसे फ़रेब दे रहा हूँ। फिर मुझ पर बरकत
नहीं बल्कि लानत आएगी।" 13 उस की माँ ने कहा,
"तुम पर आने वाली लानत मुझ पर आए, बेटा। बस
मेरी बात मान लो। जाओ और बकरियों के वह बच्चे
ले आओ।"

14 चुनाँचे वह गया और उन्हें अपनी माँ के पास
ले आया। रिब्क़ा ने ऐसा लज़ीज़ खाना पकाया जो
याक़ूब के बाप को पसन्द था। 15 एसौ के ख़ास मौक़ों
के लिए अच्छे लिबास रिब्क़ा के पास घर में थे। उस
ने उन में से बेहतरीन लिबास चुन कर अपने छोटे बेटे
को पहना दिया। 16 साथ साथ उस ने बकरियों की
खालें उस के हाथों और गर्दन पर जहाँ बाल न थे
लपेट दीं। 17 फिर उस ने अपने बेटे याक़ूब को रोटी
और वह लज़ीज़ खाना दिया जो उस ने पकाया था।

18 याक़ूब ने अपने बाप के पास जा कर कहा,
"अब्बू जी।" इस्हाक़ ने कहा, "जी, बेटा। तू कौन
है?" 19 उस ने कहा, "मैं आप का पहलौठा एसौ हूँ।
मैं ने वह किया है जो आप ने मुझे कहा था। अब ज़रा
उठें और बैठ कर मेरे शिकार का खाना खाएँ ताकि
आप बाद में मुझे बरकत दें।" 20 इस्हाक़ ने पूछा,
"बेटा, तुझे यह शिकार इतनी जल्दी किस तरह मिल
गया?" उस ने जवाब दिया, "रब आप के ख़ुदा ने
उसे मेरे सामने से गुज़रने दिया।"

21 इस्हाक़ ने कहा, "बेटा, मेरे क़रीब आ ताकि मैं
तुझे छू लूँकि तू वाक़ई मेरा बेटा एसौ है कि नहीं।"
22 याक़ूब अपने बाप के नज़्दीक आया। इस्हाक़ ने
उसे छू कर कहा, "तेरी आवाज़ तो याक़ूब की है
लेकिन तेरे हाथ एसौ के हैं।" 23 यूँ उस ने फ़रेब
खाया। चूँकि याक़ूब के हाथ एसौ के हाथ की
मानिन्द थे इस लिए उस ने उसे बरकत दी। 24 तो
भी उस ने दुबारा पूछा, "क्या तू वाक़ई मेरा बेटा
एसौ है?" याक़ूब ने जवाब दिया, "जी, मैं वही
हूँ।" 25 आख़िरकार इस्हाक़ ने कहा, "शिकार का
खाना मेरे पास ले आ, बेटा। उसे खाने के बाद मैं
तुझे बरकत दूँगा।" याक़ूब खाना और मै ले आया।
इस्हाक़ ने खाया और पिया, 26 फिर कहा, "बेटा, मेरे
पास आ और मुझे बोसा दे।" 27 याक़ूब ने पास आ
कर उसे बोसा दिया। इस्हाक़ ने उस के लिबास को
सूँघ कर उसे बरकत दी। उस ने कहा,

"मेरे बेटे की ख़ुश्बू उस खुले मैदान की ख़ुश्बू की
मानिन्द है जिसे रब ने बरकत दी है। 28 अल्लाह तुझे
आसमान की ओस और ज़मीन की ज़रख़ेज़ी दे। वह
तुझे कस्रत का अनाज और अंगूर का रस दे। 29 क़ौमें
तेरी ख़िदमत करें, और उम्मतें तेरे सामने झुक जाएँ।
अपने भाइयों का हुक्मरान बन, और तेरी माँ की
औलाद तेरे सामने घुटने टेके। जो तुझ पर लानत करे
वह ख़ुद लानती हो और जो तुझे बरकत दे वह ख़ुद
बरकत पाए।"

एसौ भी बरकत माँगता है

30 इस्हाक़ की बरकत के बाद याक़ूब अभी रुख़्सत
ही हुआ था कि उस का भाई एसौ शिकार करके
वापस आया। 31 वह भी लज़ीज़ खाना पका कर उसे
अपने बाप के पास ले आया। उस ने कहा, "अब्बू
जी, उठें और मेरे शिकार का खाना खाएँ ताकि आप
मुझे बरकत दें।" 32 इस्हाक़ ने पूछा, "तू कौन है?"
उस ने जवाब दिया, "मैं आप का बड़ा बेटा एसौ हूँ।"

33 इस्हाक़ घबरा कर शिद्दत से काँपने लगा। उस
ने पूछा, "फिर वह कौन था जो किसी जानवर का
शिकार करके मेरे पास ले आया? तेरे आने से ज़रा

पहले मैं ने उस शिकार का खाना खा कर उस शख़्स
को बरकत दी। अब वह बरकत उसी पर रहेगी।”
34 यह सुन कर एसौ ज़ोरदार और तल्ख़ चीख़ें मारने
लगा। “अब्बू, मुझे भी बरकत दें,” उस ने कहा।
35 लेकिन इस्हाक़ ने जवाब दिया, “तेरे भाई ने आ
कर मुझे फ़रेब दिया। उस ने तेरी बरकत तुझ से छीन
ली है।” 36 एसौ ने कहा, “उस का नाम याक़ूब ठीक
ही रखा गया है, क्यूँकि अब उस ने मुझे दूसरी बार
धोका दिया है। पहले उस ने पहलौठे का हक़ मुझ
से छीन लिया और अब मेरी बरकत भी ज़बरदस्ती
ले ली। क्या आप ने मेरे लिए कोई बरकत महफ़ूज़
नहीं रखी?” 37 लेकिन इस्हाक़ ने कहा, “मैं ने उसे
तेरा हुक्मरान और उस के तमाम भाइयों को उस के
ख़ादिम बना दिया है। मैं ने उसे अनाज और अंगूर का
रस मुहय्या किया है। अब मुझे बता बेटा, क्या कुछ
रह गया है जो मैं तुझे दूँ?” 38 लेकिन एसौ ख़ामोश न
हुआ बल्कि कहा, “अब्बू, क्या आप के पास वाक़ई
सिर्फ़ यही बरकत थी? अब्बू, मुझे भी बरकत दें।”
वह ज़ार-ओ-क़तार रोने लगा।
39 फिर इस्हाक़ ने कहा, “तू ज़मीन की ज़रख़ेज़ी
और आसमान की ओस से महरूम रहेगा। 40 तू सिर्फ़
अपनी तलवार के सहारे ज़िन्दा रहेगा और अपने भाई
की ख़िदमत करेगा। लेकिन एक दिन तू बेचैन हो कर
उस का जूआ अपनी गर्दन पर से उतार फैंकेगा।”

याक़ूब की हिज्रत

41 बाप की बरकत के सबब से एसौ याक़ूब का
दुश्मन बन गया। उस ने दिल में कहा, “वह दिन
क़रीब आ गए हैं कि अब्बू इन्तिक़ाल कर जाएंगे
और हम उन का मातम करेंगे। फिर मैं अपने भाई को
मार डालूँगा।”
42 रिब्क़ा को अपने बड़े बेटे एसौ का यह इरादा
मालूम हुआ। उस ने याक़ूब को बुला कर कहा,
“तुम्हारा भाई बदला लेना चाहता है। वह तुम्हें क़त्ल
करने का इरादा रखता है। 43 बेटा, अब मेरी सुनो,
यहाँ से हिज्रत कर जाओ। हारान शहर में मेरे भाई
लाबन के पास चले जाओ। 44 वहाँ कुछ दिन ठहरे
रहना जब तक तुम्हारे भाई का ग़ुस्सा ठंडा न हो जाए
45 जब उस का ग़ुस्सा ठंडा हो जाएगा और वह तुम्हारे
उस के साथ किए गए सुलूक को भूल जाएगा, तब मैं
इत्तिला दूँगी कि तुम वहाँ से वापस आ सकते हो। मैं
क्यूँ एक ही दिन में तुम दोनों से महरूम हो जाऊँ?”
46 फिर रिब्क़ा ने इस्हाक़ से बात की, “मैं एसौ की
बीवियों के सबब से अपनी ज़िन्दगी से तंग हूँ। अगर
याक़ूब भी इस मुल्क की औरतों में से किसी से शादी
करे तो बेहतर है कि मैं पहले ही मर जाऊँ।”

28 1 इस्हाक़ ने याक़ूब को बुला कर उसे
बरकत दी और कहा, “लाज़िम है कि तू
किसी कनआनी औरत से शादी न करे। 2 अब सीधे
मसोपुतामिया में अपने नाना बतूएल के घर जा और
वहाँ अपने मामूँ लाबन की लड़कियों में से किसी एक
से शादी कर। 3 अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ तुझे बरकत
दे कर फलने फूलने दे और तुझे इतनी औलाद दे कि
तू बहुत सारी क़ौमों का बाप बने। 4 वह तुझे और
तेरी औलाद को इब्राहीम की बरकत दे जिसे उस ने
यह मुल्क दिया जिस में तू मेहमान के तौर पर रहता
है। यह मुल्क तुम्हारे क़ब्ज़े में आए।” 5 यूँ इस्हाक़
ने याक़ूब को मसोपुतामिया में लाबन के घर भेजा।
लाबन अरामी मर्द बतूएल का बेटा और रिब्क़ा का
भाई था।

एसौ एक और शादी करता है

6 एसौ को पता चला कि इस्हाक़ ने याक़ूब को
बरकत दे कर मसोपुतामिया भेज दिया है ताकि वहाँ
शादी करे। उसे यह भी मालूम हुआ कि इस्हाक़ ने उसे
कनआनी औरत से शादी करने से मना किया है 7 और
कि याक़ूब अपने माँ-बाप की सुन कर मसोपुतामिया
चला गया है। 8 एसौ समझ गया कि कनआनी औरतें
मेरे बाप को मन्ज़ूर नहीं हैं। 9 इस लिए वह इब्राहीम के
बेटे इस्माईल के पास गया और उस की बेटी महलत
से शादी की। वह नबायोत की बहन थी। यूँ उस की
बीवियों में इज़ाफ़ा हुआ।

बैत-एल में याक़ूब का ख़्वाब

10 याक़ूब बैर-सबा से हारान की तरफ़ रवाना हुआ।
11 जब सूरज ग़ुरूब हुआ तो वह रात गुज़ारने के लिए
रुक गया और वहाँ के पत्थरों में से एक को ले कर
उसे अपने सिरहाने रखा और सो गया।
12 जब वह सो रहा था तो ख़्वाब में एक सीढ़ी देखी
जो ज़मीन से आसमान तक पहुँचती थी। फ़रिश्ते उस
पर चढ़ते और उतरते नज़र आते थे। 13 रब उस के
ऊपर खड़ा था। उस ने कहा, "मैं रब इब्राहीम और
इस्हाक़ का ख़ुदा हूँ। मैं तुझे और तेरी औलाद को
यह ज़मीन दूँगा जिस पर तू लेटा है। 14 तेरी औलाद
ज़मीन पर ख़ाक की तरह बेशुमार होगी, और तू चारों
तरफ़ फैल जाएगा। दुनिया की तमाम क़ौमें तेरे और
तेरी औलाद के वसीले से बरकत पाएँगी। 15 मैं तेरे
साथ हूँगा, तुझे महफ़ूज़ रखूँगा और आख़िरकार तुझे
इस मुल्क में वापस लाऊँगा। मुमकिन ही नहीं कि मैं
तेरे साथ अपना वादा पूरा करने से पहले तुझे छोड़
दूँ।"
16 तब याक़ूब जाग उठा। उस ने कहा, "यक़ीनन
रब यहाँ हाज़िर है, और मुझे मालूम नहीं था।" 17 वह
डर गया और कहा, "यह कितना ख़ौफ़नाक मक़ाम
है। यह तो अल्लाह ही का घर और आसमान का
दरवाज़ा है।"
18 याक़ूब सुब्ह-सवेरे उठा। उस ने वह पत्थर लिया
जो उस ने अपने सिरहाने रखा था और उसे सतून की
तरह खड़ा किया। फिर उस ने उस पर ज़ैतून का तेल
उंडेल दिया। 19 उस ने मक़ाम का नाम बैत-एल यानी
'अल्लाह का घर' रखा (पहले साथ वाले शहर का
नाम लूज़ था)। 20 उस ने क़सम खा कर कहा, "अगर
रब मेरे साथ हो, सफ़र पर मेरी हिफ़ाज़त करे, मुझे
खाना और कपड़ा मुहय्या करे 21 और मैं सलामती से
अपने बाप के घर वापस पहुँचूँ तो फिर वह मेरा ख़ुदा
होगा। 22 जहाँ यह पत्थर सतून के तौर पर खड़ा है
वहाँ अल्लाह का घर होगा, और जो भी तू मुझे देगा
उस का दसवाँ हिस्सा तुझे दिया करूँगा।"

याक़ूब लाबन के घर पहुँचता है

29 1 याक़ूब ने अपना सफ़र जारी रखा और
चलते चलते मशरिक़ी क़ौमों के मुल्क में
पहुँच गया। 2 वहाँ उस ने खेत में कुआँ देखा जिस के
इर्दगिर्द भेड़-बकरियों के तीन रेवड़ जमा थे। रेवड़ों
को कुएँ का पानी पिलाया जाना था, लेकिन उस के
मुँह पर बड़ा पत्थर पड़ा था। 3 वहाँ पानी पिलाने का
यह तरीक़ा था कि पहले चरवाहे तमाम रेवड़ों का
इन्तिज़ार करते और फिर पत्थर को लुढ़का कर मुँह
से हटा देते थे। पानी पिलाने के बाद वह पत्थर को
दुबारा मुँह पर रख देते थे।
4 याक़ूब ने चरवाहों से पूछा, "मेरे भाइयो, आप
कहाँ के हैं?" उन्हों ने जवाब दिया, "हारान के।"
5 उस ने पूछा, "क्या आप नहूर के पोते लाबन को
जानते हैं?" उन्हों ने कहा, "जी हाँ।" 6 उस ने पूछा,
"क्या वह ख़ैरियत से है?" उन्हों ने कहा, "जी, वह
ख़ैरियत से है। देखो, उधर उस की बेटी राख़िल
रेवड़ ले कर आ रही है।" 7 याक़ूब ने कहा, "अभी
तो शाम तक बहुत वक़्त बाक़ी है। रेवड़ों को जमा
करने का वक़्त तो नहीं है। आप क्यूँ उन्हें पानी पिला
कर दुबारा चरने नहीं देते?" 8 उन्हों ने जवाब दिया,
"पहले ज़रूरी है कि तमाम रेवड़ यहाँ पहुँचें। तब ही
पत्थर को लुढ़का कर एक तरफ़ हटाया जाएगा और
हम रेवड़ों को पानी पिलाएँगे।"
9 याक़ूब अभी उन से बात कर ही रहा था कि
राख़िल अपने बाप का रेवड़ ले कर आ पहुँची,
क्यूँकि भेड़-बकरियों को चराना उस का काम था।
10 जब याक़ूब ने राख़िल को मामूँ लाबन के रेवड़ के
साथ आते देखा तो उस ने कुएँ के पास जा कर पत्थर
को लुढ़का कर मुँह से हटा दिया और भेड़-बकरियों
को पानी पिलाया। 11 फिर उस ने उसे बोसा दिया
और ख़ूब रोने लगा। 12 उस ने कहा, "मैं आप के
अब्बू की बहन रिब्क़ा का बेटा हूँ।" यह सुन कर
राख़िल ने भाग कर अपने अब्बू को इत्तिला दी।

13 जब लाबन ने सुना कि मेरा भान्जा याक़ूब आया
है तो वह दौड़ कर उस से मिलने गया और उसे गले
लगा कर अपने घर ले आया। याक़ूब ने उसे सब कुछ
बता दिया जो हुआ था। 14 लाबन ने कहा, “आप
वाक़ई मेरे रिश्तेदार हैं।” याक़ूब ने वहाँ एक पूरा
महीना गुज़ारा।

अपनी बीवियों के लिए याक़ूब की मेहनत-मशक़्क़त

15 फिर लाबन याक़ूब से कहने लगा, “बेशक आप
मेरे रिश्तेदार हैं, लेकिन आप को मेरे लिए काम करने
के बदले में कुछ मिलना चाहिए। मैं आप को कितने
पैसे दूँ?” 16 लाबन की दो बेटियाँ थीं। बड़ी का नाम
लियाह था और छोटी का राख़िल। 17 लियाह की
आँखें चुनधी थीं जबकि राख़िल हर तरह से ख़ूबसूरत
थी। 18 याक़ूब को राख़िल से मुहब्बत थी, इस लिए
उस ने कहा, “अगर मुझे आप की छोटी बेटी राख़िल
मिल जाए तो आप के लिए सात साल काम करूँगा।”
19 लाबन ने कहा, “किसी और आदमी की निस्बत
मुझे यह ज़्यादा पसन्द है कि आप ही से उस की शादी
कराऊँ।”

20 पस याक़ूब ने राख़िल को पाने के लिए सात साल
तक काम किया। लेकिन उसे ऐसा लगा जैसा दो एक
दिन ही गुज़रे हों क्यूँकि वह राख़िल को शिद्दत से
प्यार करता था। 21 इस के बाद उस ने लाबन से कहा,
“मुद्दत पूरी हो गई है। अब मुझे अपनी बेटी से शादी
करने दें।” 22 लाबन ने उस मक़ाम के तमाम लोगों
को दावत दे कर शादी की ज़ियाफ़त की। 23 लेकिन
उस रात वह राख़िल की बजाय लियाह को याक़ूब
के पास ले आया, और याक़ूब उसी से हमबिसतर
हुआ। 24 (लाबन ने लियाह को अपनी लौंडी ज़िल्फ़ा
दे दी थी ताकि वह उस की ख़िदमत करे।)

25 जब सुब्ह हुई तो याक़ूब ने देखा कि लियाह ही
मेरे पास है। उस ने लाबन के पास जा कर कहा, “यह
आप ने मेरे साथ क्या किया है? क्या मैं ने राख़िल
के लिए काम नहीं किया? आप ने मुझे धोका क्यूँ
दिया?” 26 लाबन ने जवाब दिया, “यहाँ दस्तूर नहीं
है कि छोटी बेटी की शादी बड़ी से पहले कर दी
जाए 27 एक हफ़्ते के बाद शादी की रुसूमात पूरी हो
जाएँगी। उस वक़्त तक सब्र करें। फिर मैं आप को
राख़िल भी दे दूँगा। शर्त यह है कि आप मज़ीद सात
साल मेरे लिए काम करें।”

28 याक़ूब मान गया। चुनाँचे जब एक हफ़्ते के बाद
शादी की रुसूमात पूरी हुईं तो लाबन ने अपनी बेटी
राख़िल की शादी भी उस के साथ कर दी। 29 (लाबन
ने राख़िल को अपनी लौंडी बिल्हाह दे दी ताकि
वह उस की ख़िदमत करे।) 30 याक़ूब राख़िल से भी
हमबिसतर हुआ। वह लियाह की निस्बत उसे ज़्यादा
प्यार करता था। फिर उस ने राख़िल के इवज़ सात
साल और लाबन की ख़िदमत की।

याक़ूब के बच्चे

31 जब रब ने देखा कि लियाह से नफ़रत की जाती
है तो उस ने उसे औलाद दी जबकि राख़िल के हाँ
बच्चे पैदा न हुए।

32 लियाह हामिला हुई और उस के बेटा पैदा हुआ।
उस ने कहा, “रब ने मेरी मुसीबत देखी है और अब
मेरा शौहर मुझे प्यार करेगा।” उस ने उस का नाम
रूबिन यानी ‘देखो एक बेटा’ रखा।

33 वह दुबारा हामिला हुई। एक और बेटा पैदा
हुआ। उस ने कहा, “रब ने सुना कि मुझ से नफ़रत
की जाती है, इस लिए उस ने मुझे यह भी दिया है।”
उस ने उस का नाम शमाऊन यानी ‘रब ने सुना है’
रखा।

34 वह एक और दफ़ा हामिला हुई। तीसरा बेटा पैदा
हुआ। उस ने कहा, “अब आख़िरकार शौहर के साथ
मेरा बंधन मज़बूत हो जाएगा, क्यूँकि मैं ने उस के
लिए तीन बेटों को जन्म दिया है।” उस ने उस का
नाम लावी यानी बंधन रखा।

35 वह एक बार फिर हामिला हुई। चौथा बेटा पैदा
हुआ। उस ने कहा, “इस दफ़ा मैं रब की तम्जीद
करूँगी।” उस ने उस का नाम यहूदाह यानी तम्जीद
रखा। इस के बाद उस से और बच्चे पैदा न हुए।

30 1 लेकिन राख़िल बेऔलाद ही रही, इस
लिए वह अपनी बहन से हसद करने लगी।
उस ने याक़ूब से कहा, “मुझे भी औलाद दें वर्ना
मैं मर जाऊँगी।” 2 याक़ूब को ग़ुस्सा आया। उस ने
कहा, “क्या मैं अल्लाह हूँ जिस ने तुझे औलाद से
महरूम रखा है?” 3 राख़िल ने कहा, “यहाँ मेरी लौंडी
बिल्हाह है। उस के साथ हमबिसतर हों ताकि वह मेरे
लिए बच्चे को जन्म दे और मैं उस की मारिफ़त माँ बन
जाऊँ।”

4 यूँ उस ने अपने शौहर को बिल्हाह दी, और वह
उस से हमबिसतर हुआ। 5 बिल्हाह हामिला हुई और
बेटा पैदा हुआ। 6 राख़िल ने कहा, “अल्लाह ने मेरे हक़
में फ़ैसला दिया है। उस ने मेरी दुआ सुन कर मुझे बेटा
दे दिया है।” उस ने उस का नाम दान यानी ‘किसी
के हक़ में फ़ैसला करने वाला’ रखा।

7 बिल्हाह दुबारा हामिला हुई और एक और बेटा
पैदा हुआ। 8 राख़िल ने कहा, “मैं ने अपनी बहन से
सख़्त कुश्ती लड़ी है, लेकिन जीत गई हूँ।” उस ने
उस का नाम नफ़्ताली यानी ‘कुश्ती में मुझ से जीता
गया’ रखा।

9 जब लियाह ने देखा कि मेरे और बच्चे पैदा नहीं
हो रहे तो उस ने याक़ूब को अपनी लौंडी ज़िल्फ़ा दे
दी ताकि वह भी उस की बीवी हो। 10 ज़िल्फ़ा के भी
एक बेटा पैदा हुआ। 11 लियाह ने कहा, “मैं कितनी
ख़ुशक़िसमत हूँ!” चुनाँचे उस ने उस का नाम जद
यानी ख़ुशक़िसमती रखा।

12 फिर ज़िल्फ़ा के दूसरा बेटा पैदा हुआ। 13 लियाह
ने कहा, “मैं कितनी मुबारक हूँ। अब ख़वातीन मुझे
मुबारक कहेंगी।” उस ने उस का नाम आशर यानी
मुबारक रखा।

14 एक दिन अनाज की फ़सल की कटाई हो रही
थी कि रूबिन बाहर निकल कर खेतों में चला गया।
वहाँ उसे मर्दुमगयाह [e]मिल गए। वह उन्हें अपनी माँ
लियाह के पास ले आया। यह देख कर राख़िल ने
लियाह से कहा, “मुझे ज़रा अपने बेटे के मर्दुमगयाह
में से कुछ दे दो।” 15 लियाह ने जवाब दिया, “क्या
यही काफ़ी नहीं कि तुम ने मेरे शौहर को मुझ से छीन
लिया है? अब मेरे बेटे के मर्दुमगयाह को भी छीनना
चाहती हो।” राख़िल ने कहा, “अगर तुम मुझे अपने
बेटे के मर्दुमगयाह में से दो तो आज रात याक़ूब के
साथ सो सकती हो।”

16 शाम को याक़ूब खेतों से वापस आ रहा था कि
लियाह आगे से उस से मिलने को गई और कहा,
“आज रात आप को मेरे साथ सोना है, क्यूँकि मैं ने
अपने बेटे के मर्दुमगयाह के इवज़ आप को उजरत
पर लिया है।” चुनाँचे याक़ूब ने लियाह के पास रात
गुज़ारी।

17 उस वक़्त अल्लाह ने लियाह की दुआ सुनी और
वह हामिला हुई। उस के पाँचवाँ बेटा पैदा हुआ।
18 लियाह ने कहा, “अल्लाह ने मुझे इस का अज्र दिया
है कि मैं ने अपने शौहर को अपनी लौंडी दी।” उस
ने उस का नाम इश्कार यानी अज्र रखा।

19 इस के बाद वह एक और दफ़ा हामिला हुई।
उस के छटा बेटा पैदा हुआ। 20 उस ने कहा, “अल्लाह
ने मुझे एक अच्छा-ख़ासा तुह्फ़ा दिया है। अब मेरा
ख़ावन्द मेरे साथ रहेगा, क्यूँकि मुझ से उस के छः
बेटे पैदा हुए हैं।” उस ने उस का नाम ज़बूलून यानी
रिहाइश रखा।

21 इस के बाद बेटी पैदा हुई। उस ने उस का नाम
दीना रखा।

22 फिर अल्लाह ने राख़िल को भी याद किया। उस
ने उस की दुआ सुन कर उसे औलाद बख़्शी। 23 वह
हामिला हुई और एक बेटा पैदा हुआ। उस ने कहा,
“मुझे बेटा अता करने से अल्लाह ने मेरी इज़्ज़त बहाल
कर दी है। 24 रब मुझे एक और बेटा दे।” उस ने उस
का नाम यूसुफ़ यानी ‘वह और दे’ रखा।

---

[e]एक पौदा जिस के बारे में ख़याल किया जाता था कि उसे खा कर बाँझ औरत भी बच्चे को जन्म देगी।

याक़ूब का लाबन के साथ सौदा

25 यूसुफ़ की पैदाइश के बाद याक़ूब ने लाबन से
कहा, “अब मुझे इजाज़त दें कि मैं अपने वतन और
घर को वापस जाऊँ। 26 मुझे मेरे बाल-बच्चे दें जिन के
इवज़ मैं ने आप की ख़िदमत की है। फिर मैं चला
जाऊँगा। आप तो ख़ुद जानते हैं कि मैं ने कितनी
मेहनत के साथ आप के लिए काम किया है।”
27 लेकिन लाबन ने कहा, “मुझ पर मेहरबानी करें
और यहीं रहें। मुझे ग़ैबदानी से पता चला है कि रब ने
मुझे आप के सबब से बरकत दी है। 28 अपनी उजरत
ख़ुद मुक़र्रर करें तो मैं वही दिया करूँगा।”
29 याक़ूब ने कहा, “आप जानते हैं कि मैं ने किस
तरह आप के लिए काम किया, कि मेरे वसीले से
आप के मवेशी कितने बढ़ गए हैं। 30 जो थोड़ा बहुत
मेरे आने से पहले आप के पास था वह अब बहुत
ज़्यादा बढ़ गया है। रब ने मेरे काम से आप को बहुत
बरकत दी है। अब वह वक़्त आ गया है कि मैं अपने
घर के लिए कुछ करूँ।”
31 लाबन ने कहा, “मैं आप को क्या दूँ?” याक़ूब
ने कहा, “मुझे कुछ न दें। मैं इस शर्त पर आप की
भेड़-बकरियों की देख-भाल जारी रखूँगा कि 32 आज
मैं आप के रेवड़ में से गुज़र कर उन तमाम भेड़ों
को अलग कर लूँगा जिन के जिस्म पर छोटे या बड़े
धब्बे हों या जो सफ़ेद न हों। इसी तरह मैं उन तमाम
बकरियों को भी अलग कर लूँगा जिन के जिस्म
पर छोटे या बड़े धब्बे हों। यही मेरी उजरत होगी।
33 आइन्दा जिन बकरियों के जिस्म पर छोटे या बड़े
धब्बे होंगे या जिन भेड़ों का रंग सफ़ेद नहीं होगा
वह मेरा अज्र होंगी। जब कभी आप उन का मुआइना
करेंगे तो आप मालूम कर सकेंगे कि मैं दियानतदार
रहा हूँ। क्यूँकि मेरे जानवरों के रंग से ही ज़ाहिर होगा
कि मैं ने आप का कुछ चुराया नहीं है।” 34 लाबन ने
कहा, “ठीक है। ऐसा ही हो जैसा आप ने कहा है।”
35 उसी दिन लाबन ने उन बकरों को अलग कर
लिया जिन के जिस्म पर धारियाँ या धब्बे थे और
उन तमाम बकरियों को जिन के जिस्म पर छोटे या
बड़े धब्बे थे। जिस के भी जिस्म पर सफ़ेद निशान
था उसे उस ने अलग कर लिया। इसी तरह उस ने
उन तमाम भेड़ों को भी अलग कर लिया जो पूरे तौर
पर सफ़ेद न थे। फिर लाबन ने उन्हें अपने बेटों के
सपुर्द कर दिया 36 जो उन के साथ याक़ूब से इतना दूर
चले गए कि उन के दरमियान तीन दिन का फ़ासिला
था। तब याक़ूब लाबन की बाक़ी भेड़-बकरियों की
देख-भाल करता गया।
37 याक़ूब ने सफ़ेदा, बादाम और चनार की हरी हरी
शाख़ें ले कर उन से कुछ छिलका यूँ उतार दिया कि
उस पर सफ़ेद धारियाँ नज़र आईं। 38 उस ने उन्हें
भेड़-बकरियों के सामने उन हौज़ों में गाड़ दिया जहाँ
वह पानी पीते थे, क्यूँकि वहाँ यह जानवर मस्त हो
कर मिलाप करते थे। 39 जब वह इन शाख़ों के सामने
मिलाप करते तो जो बच्चे पैदा होते उन के जिस्म पर
छोटे और बड़े धब्बे और धारियाँ होती थीं। 40 फिर
याक़ूब ने भेड़ के बच्चों को अलग करके अपने रेवड़ों
को लाबन के उन जानवरों के सामने चरने दिया जिन
के जिस्म पर धारियाँ थीं और जो सफ़ेद न थे। यूँ उस
ने अपने ज़ाती रेवड़ों को अलग कर लिया और उन्हें
लाबन के रेवड़ के साथ चरने न दिया।
41 लेकिन उस ने यह शाख़ें सिर्फ़ उस वक़्त हौज़ों में
खड़ी कीं जब ताक़तवर जानवर मस्त हो कर मिलाप
करते थे। 42 कमज़ोर जानवरों के साथ उस ने ऐसा
न किया। इसी तरह लाबन को कमज़ोर जानवर और
याक़ूब को ताक़तवर जानवर मिल गए। 43 यूँ याक़ूब
बहुत अमीर बन गया। उस के पास बहुत से रेवड़,
ग़ुलाम और लौंडियाँ, ऊँट और गधे थे।

याक़ूब की हिज्रत

31 1 एक दिन याक़ूब को पता चला कि लाबन
के बेटे मेरे बारे में कह रहे हैं, “याक़ूब ने
हमारे अब्बू से सब कुछ छीन लिया है। उस ने यह
तमाम दौलत हमारे बाप की मिलकियत से हासिल
की है।” 2 याक़ूब ने यह भी देखा कि लाबन का

मेरे साथ रवय्या पहले की निस्बत बिगड़ गया है।
3 फिर रब ने उस से कहा, “अपने बाप के मुल्क और
अपने रिश्तेदारों के पास वापस चला जा। मैं तेरे साथ
हूँगा।”
4 उस वक़्त याक़ूब खुले मैदान में अपने रेवड़ों के
पास था। उस ने वहाँ से राख़िल और लियाह को
बुला कर 5 उन से कहा, “मैं ने देख लिया है कि आप
के बाप का मेरे साथ रवय्या पहले की निस्बत बिगड़
गया है। लेकिन मेरे बाप का ख़ुदा मेरे साथ रहा है।
6 आप दोनों जानती हैं कि मैं ने आप के अब्बू के
लिए कितनी जाँफ़िशानी से काम किया है। 7 लेकिन
वह मुझे फ़रेब देता रहा और मेरी उजरत दस बार
बदली। ताहम अल्लाह ने उसे मुझे नुक़्सान पहुँचाने न
दिया। 8 जब मामूँ लाबन कहते थे, ‘जिन जानवरों के
जिस्म पर धब्बे हों वही आप को उजरत के तौर पर
मिलेंगे’ तो तमाम भेड़-बकरियों के ऐसे बच्चे पैदा हुए
जिन के जिस्मों पर धब्बे ही थे। जब उन्हों ने कहा,
‘जिन जानवरों के जिस्म पर धारियाँ होंगी वही आप
को उजरत के तौर पर मिलेंगे’ तो तमाम भेड़-बकरियों
के ऐसे बच्चे पैदा हुए जिन के जिस्मों पर धारियाँ ही
थीं। 9 यूँ अल्लाह ने आप के अब्बू के मवेशी छीन
कर मुझे दे दिए हैं। 10 अब ऐसा हुआ कि हैवानों की
मस्ती के मौसम में मैं ने एक ख़्वाब देखा। उस में जो
मेंढे और बकरे भेड़-बकरियों से मिलाप कर रहे थे
उन के जिस्म पर बड़े और छोटे धब्बे और धारियाँ
थीं। 11 उस ख़्वाब में अल्लाह के फ़रिश्ते ने मुझ से
बात की, ‘याक़ूब!’ मैं ने कहा, ‘जी, मैं हाज़िर हूँ।’
12 फ़रिश्ते ने कहा, ‘अपनी नज़र उठा कर उस पर
ग़ौर कर जो हो रहा है। वह तमाम मेंढे और बकरे
जो भेड़-बकरियों से मिलाप कर रहे हैं उन के जिस्म
पर बड़े और छोटे धब्बे और धारियाँ हैं। मैं यह ख़ुद
करवा रहा हूँ, क्यूँकि मैं ने वह सब कुछ देख लिया है
जो लाबन ने तेरे साथ किया है। 13 मैं वह ख़ुदा हूँ जो
बैत-एल में तुझ पर ज़ाहिर हुआ था, उस जगह जहाँ
तू ने सतून पर तेल उंडेल कर उसे मेरे लिए मख़्सूस
किया और मेरे हुज़ूर क़सम खाई थी। अब उठ और
रवाना हो कर अपने वतन वापस चला जा’।”
14 राख़िल और लियाह ने जवाब में याक़ूब से कहा,
“अब हमें अपने बाप की मीरास से कुछ मिलने की
उम्मीद नहीं रही। 15 उस का हमारे साथ अजनबी का
सा सुलूक है। पहले उस ने हमें बेच दिया, और अब
उस ने वह सारे पैसे खा भी लिए हैं। 16 चुनाँचे जो भी
दौलत अल्लाह ने हमारे बाप से छीन ली है वह हमारी
और हमारे बच्चों की ही है। अब जो कुछ भी अल्लाह
ने आप को बताया है वह करें।”
17 तब याक़ूब ने उठ कर अपने बाल-बच्चों को
ऊँटों पर बिठाया 18 और अपने तमाम मवेशी और
मसोपुतामिया से हासिल किया हुआ तमाम सामान
ले कर मुल्क-ए-कनआन में अपने बाप के हाँ जाने के
लिए रवाना हुआ। 19 उस वक़्त लाबन अपनी भेड़-
बकरियों की पश्म कतरने को गया हुआ था। उस
की ग़ैरमौजूदगी में राख़िल ने अपने बाप के बुत चुरा
लिए।
20 याक़ूब ने लाबन को फ़रेब दे कर उसे इत्तिला न
दी कि मैं जा रहा हूँ 21 बल्कि अपनी सारी मिलकियत
समेट कर फ़रार हुआ। दरया-ए-फ़ुरात को पार करके
वह जिलिआद के पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ सफ़र
करने लगा।

लाबन याक़ूब का ताक़्क़ुब करता है

22 तीन दिन गुज़र गए। फिर लाबन को बताया गया
कि याक़ूब भाग गया है। 23 अपने रिश्तेदारों को
साथ ले कर उस ने उस का ताक़्क़ुब किया। सात
दिन चलते चलते उस ने याक़ूब को आ लिया जब
वह जिलिआद के पहाड़ी इलाक़े में पहुँच गया था।
24 लेकिन उस रात अल्लाह ने ख़्वाब में लाबन के पास
आ कर उस से कहा, “ख़बरदार! याक़ूब को बुरा-
भला न कहना।”
25 जब लाबन उस के पास पहुँचा तो याक़ूब ने
जिलिआद के पहाड़ी इलाक़े में अपने ख़ैमे लगाए
हुए थे। लाबन ने भी अपने रिश्तेदारों के साथ वहीं

अपने ख़ैमे लगाए। 26 उस ने याक़ूब से कहा, “यह
आप ने क्या किया है? आप मुझे धोका दे कर मेरी
बेटियों को क्यूँ जंगी क़ैदियों की तरह हाँक लाए हैं?
27 आप क्यूँ मुझे फ़रेब दे कर ख़ामोशी से भाग आए
हैं? अगर आप मुझे इत्तिला देते तो मैं आप को ख़ुशी
ख़ुशी दफ़ और सरोद के साथ गाते बजाते रुख़्सत
करता। 28 आप ने मुझे अपने नवासे-नवासियों और
बेटियों को बोसा देने का मौक़ा भी न दिया। आप की
यह हरकत बड़ी अहमक़ाना थी। 29 मैं आप को बहुत
नुक़्सान पहुँचा सकता हूँ। लेकिन पिछली रात आप
के अब्बू के ख़ुदा ने मुझ से कहा, ‘ख़बरदार! याक़ूब
को बुरा-भला न कहना।’ 30 ठीक है, आप इस लिए
चले गए कि अपने बाप के घर वापस जाने के बड़े
आरज़ूमन्द थे। लेकिन यह आप ने क्या किया है कि
मेरे बुत चुरा लाए हैं?”

31 याक़ूब ने जवाब दिया, “मुझे डर था कि आप
अपनी बेटियों को मुझ से छीन लेंगे। 32 लेकिन अगर
आप को यहाँ किसी के पास अपने बुत मिल जाएँ
तो उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए हमारे रिश्तेदारों की
मौजूदगी में मालूम करें कि मेरे पास आप की कोई
चीज़ है कि नहीं। अगर है तो उसे ले लें।” याक़ूब को
मालूम नहीं था कि राख़िल ने बुतों को चुराया है।

33 लाबन याक़ूब के ख़ैमे में दाख़िल हुआ और ढूँडने
लगा। वहाँ से निकल कर वह लियाह के ख़ैमे में और
दोनों लौंडियों के ख़ैमे में गया। लेकिन उस के बुत
कहीं नज़र न आए। आख़िर में वह राख़िल के ख़ैमे
में दाख़िल हुआ। 34 राख़िल बुतों को ऊँटों की एक
काठी के नीचे छुपा कर उस पर बैठ गई थी। लाबन
टटोल टटोल कर पूरे ख़ैमे में से गुज़रा लेकिन बुत न
मिले। 35 राख़िल ने अपने बाप से कहा, “अब्बू, मुझ
से नाराज़ न होना कि मैं आप के सामने खड़ी नहीं हो
सकती। मैं अय्याम-ए-माहवारी के सबब से उठ नहीं
सकती।” लाबन उसे छोड़ कर ढूँडता रहा, लेकिन
कुछ न मिला।

36 फिर याक़ूब को ग़ुस्सा आया और वह लाबन से
झगड़ने लगा। उस ने पूछा, “मुझ से क्या जुर्म सरज़द
हुआ है? मैं ने क्या गुनाह किया है कि आप इतनी
तुन्दी से मेरे ताक़्क़ुब के लिए निकले हैं? 37 आप ने
टटोल टटोल कर मेरे सारे सामान की तलाशी ली है।
तो आप का क्या निकला है? उसे यहाँ अपने और मेरे
रिश्तेदारों के सामने रखें। फिर वह फ़ैसला करें कि
हम में से कौन हक़ पर है। 38 मैं बीस साल तक आप
के साथ रहा हूँ। उस दौरान आप की भेड़-बकरियाँ
बच्चों से महरूम नहीं रहीं बल्कि मैं ने आप का एक
मेंढा भी नहीं खाया। 39 जब भी कोई भेड़ या बकरी
किसी जंगली जानवर ने फाड़ डाली तो मैं उसे आप
के पास न लाया बल्कि मुझे ख़ुद उस का नुक़्सान
भरना पड़ा। आप का तक़ाज़ा था कि मैं ख़ुद चोरी
हुए माल का इवज़ाना दूँ, ख़्वाह वह दिन के वक़्त
चोरी हुआ या रात को। 40 मैं दिन की शदीद गर्मी
के बाइस पिघल गया और रात की शदीद सर्दी के
बाइस जम गया। काम इतना सख़्त था कि मैं नींद से
महरूम रहा। 41 पूरे बीस साल इसी हालत में गुज़र
गए। चौदह साल मैं ने आप की बेटियों के इवज़ काम
किया और छः साल आप की भेड़-बकरियों के लिए।
उस दौरान आप ने दस बार मेरी तनख़्वाह बदल दी।
42 अगर मेरे बाप इस्हाक़ का ख़ुदा और मेरे दादा
इब्राहीम का माबूद [f]मेरे साथ न होता तो आप मुझे
ज़रूर ख़ाली हाथ रुख़्सत करते। लेकिन अल्लाह ने
मेरी मुसीबत और मेरी सख़्त मेहनत-मशक़्क़त देखी
है, इस लिए उस ने कल रात को मेरे हक़ में फ़ैसला
दिया।”

याक़ूब और लाबन के दरमियान अह्द

43 तब लाबन ने याक़ूब से कहा, “यह बेटियाँ तो
मेरी बेटियाँ हैं, और इन के बच्चे मेरे बच्चे हैं। यह भेड़-
बकरियाँ भी मेरी ही हैं। लेकिन अब मैं अपनी बेटियों
और उन के बच्चों के लिए कुछ नहीं कर सकता।

---

[f]लफ़्ज़ी तर्जुमा : दहशत यानी इस्हाक़ का वह ख़ुदा जिस से इन्सान दहशत खाता है।

44 इस लिए आओ, हम एक दूसरे के साथ अह्द
बांधें। इस के लिए हम यहाँ पत्थरों का ढेर लगाएँ
जो अह्द की गवाही देता रहे।”
45 चुनाँचे याक़ूब ने एक पत्थर ले कर उसे सतून
के तौर पर खड़ा किया। 46 उस ने अपने रिश्तेदारों से
कहा, “कुछ पत्थर जमा करें।” उन्हों ने पत्थर जमा
करके ढेर लगा दिया। फिर उन्हों ने उस ढेर के पास
बैठ कर खाना खाया। 47 लाबन ने उस का नाम यग्र-
शाहदूथा रखा जबकि याक़ूब ने जल-एद रखा। दोनों
नामों का मतलब ‘गवाही का ढेर’ है यानी वह ढेर जो
गवाही देता है। 48 लाबन ने कहा, “आज हम दोनों
के दरमियान यह ढेर अह्द की गवाही देता है।” इस
लिए उस का नाम जल-एद रखा गया। 49 उस का एक
और नाम मिस्फ़ाह यानी ‘पहरेदारों का मीनार’ भी
रखा गया। क्यूँकि लाबन ने कहा, “रब हम पर पहरा
दे जब हम एक दूसरे से अलग हो जाएंगे। 50 मेरी
बेटियों से बुरा सुलूक न करना, न उन के इलावा
किसी और से शादी करना। अगर मुझे पता भी न
चले लेकिन ज़रूर याद रखें कि अल्लाह मेरे और आप
के सामने गवाह है। 51 यहाँ यह ढेर है जो मैं ने लगा
दिया है और यहाँ यह सतून भी है। 52 यह ढेर और
सतून दोनों इस के गवाह हैं कि न मैं यहाँ से गुज़र
कर आप को नुक़्सान पहुँचाऊँगा और न आप यहाँ से
गुज़र कर मुझे नुक़्सान पहुँचाएँगे। 53 इब्राहीम, नहूर
और उन के बाप का ख़ुदा हम दोनों के दरमियान
फ़ैसला करे अगर ऐसा कोई मुआमला हो।” जवाब
में याक़ूब ने इस्हाक़ के माबूद की क़सम खाई कि
मैं यह अह्द कभी नहीं तोड़ूँगा। 54 उस ने पहाड़ पर
एक जानवर क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाया और अपने
रिश्तेदारों को खाना खाने की दावत दी। उन्हों ने
खाना खा कर वहीं पहाड़ पर रात गुज़ारी।
55 अगले दिन सुब्ह-सवेरे लाबन ने अपने नवासे-
नवासियों और बेटियों को बोसा दे कर उन्हें बरकत
दी। फिर वह अपने घर वापस चला गया।

याक़ूब एसौ से मिलने के लिए तय्यार हो जाता है

32 1 याक़ूब ने भी अपना सफ़र जारी रखा।
रास्ते में अल्लाह के फ़रिश्ते उस से मिले।
2 उन्हें देख कर उस ने कहा, “यह अल्लाह की
लश्करगाह है।” उस ने उस मक़ाम का नाम महनाइम
यानी ‘दो लश्करगाहें’ रखा।
3 याक़ूब ने अपने भाई एसौ के पास अपने आगे
आगे क़ासिद भेजे। एसौ सईर यानी अदोम के मुल्क
में आबाद था। 4 उन्हें एसौ को बताना था, “आप
का ख़ादिम याक़ूब आप को इत्तिला देता है कि मैं
परदेस में जा कर अब तक लाबन का मेहमान रहा
हूँ। 5 वहाँ मुझे बैल, गधे, भेड़-बकरियाँ, ग़ुलाम और
लौंडियाँ हासिल हुए हैं। अब मैं अपने मालिक को
इत्तिला दे रहा हूँ कि वापस आ गया हूँ और आप
की नज़र-ए-करम का ख़्वाहिशमन्द हूँ।”
6 जब क़ासिद वापस आए तो उन्हों ने कहा, “हम
आप के भाई एसौ के पास गए, और वह 400 आदमी
साथ ले कर आप से मिलने आ रहा है।”
7 याक़ूब घबरा कर बहुत परेशान हुआ। उस ने
अपने साथ के तमाम लोगों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों
और ऊँटों को दो गुरोहों में तक़्सीम किया। 8 ख़याल
यह था कि अगर एसौ आ कर एक गुरोह पर हम्ला
करे तो बाक़ी गुरोह शायद बच जाए 9 फिर याक़ूब
ने दुआ की, “ऐ मेरे दादा इब्राहीम और मेरे बाप
इस्हाक़ के ख़ुदा, मेरी दुआ सुन! ऐ रब, तू ने ख़ुद
मुझे बताया, ‘अपने मुल्क और रिश्तेदारों के पास
वापस जा, और मैं तुझे कामयाबी दूँगा।’ 10 मैं उस
तमाम मेहरबानी और वफ़ादारी के लाइक़ नहीं जो तू
ने अपने ख़ादिम को दिखाई है। जब मैं ने लाबन के
पास जाते वक़्त दरया-ए-यर्दन को पार किया तो मेरे
पास सिर्फ़ यह लाठी थी, और अब मेरे पास यह दो
गुरोह हैं। 11 मुझे अपने भाई एसौ से बचा, क्यूँकि मुझे
डर है कि वह मुझ पर हम्ला करके बाल-बच्चों समेत
सब कुछ तबाह कर देगा। 12 तू ने ख़ुद कहा था, ‘मैं

तुझे कामयाबी दूँगा और तेरी औलाद इतनी बढ़ाऊँगा
कि वह समुन्दर की रेत की मानिन्द बेशुमार होगी'।"
13 याक़ूब ने वहाँ रात गुज़ारी। फिर उस ने अपने
माल में से एसौ के लिए तुह्फ़े चुन लिए : 14 200
बकरियाँ, 20 बकरे, 200 भेड़ें, 20 मेंढे, 15 30 दूध
देने वाली ऊँटनियाँ बच्चों समेत, 40 गाएँ, 10 बैल,
20 गधियाँ और 10 गधे। 16 उस ने उन्हें मुख़्तलिफ़
रेवड़ों में तक़्सीम करके अपने मुख़्तलिफ़ नौकरों के
सपुर्द किया और उन से कहा, "मेरे आगे आगे चलो
लेकिन हर रेवड़ के दरमियान फ़ासिला रखो।"
17 जो नौकर पहले रेवड़ ले कर आगे निकला उस
से याक़ूब ने कहा, "मेरा भाई एसौ तुम से मिलेगा और
पूछेगा, 'तुम्हारा मालिक कौन है? तुम कहाँ जा रहे
हो? तुम्हारे सामने के जानवर किस के हैं?' 18 जवाब
में तुम्हें कहना है, 'यह आप के ख़ादिम याक़ूब के हैं।
यह तुह्फ़ा हैं जो वह अपने मालिक एसौ को भेज रहे
हैं। याक़ूब हमारे पीछे पीछे आ रहे हैं'।"
19 याक़ूब ने यही हुक्म हर एक नौकर को दिया
जिसे रेवड़ ले कर उस के आगे आगे जाना था। उस
ने कहा, "जब तुम एसौ से मिलोगे तो उस से यही
कहना है। 20 तुम्हें यह भी ज़रूर कहना है, आप के
ख़ादिम याक़ूब हमारे पीछे आ रहे हैं।" क्यूँकि याक़ूब
ने सोचा, मैं इन तुह्फ़ों से उस के साथ सुलह करूँगा।
फिर जब उस से मुलाक़ात होगी तो शायद वह मुझे
क़बूल कर ले। 21 यूँ उस ने यह तुह्फ़े अपने आगे
आगे भेज दिए। लेकिन उस ने ख़ुद ख़ैमागाह में रात
गुज़ारी।

याक़ूब की कुश्ती

22 उस रात वह उठा और अपनी दो बीवियों, दो
लौंडियों और ग्यारह बेटों को ले कर दरया-ए-यब्बोक़
को वहाँ से पार किया जहाँ कम गहराई थी। 23 फिर
उस ने अपना सारा सामान भी वहाँ भेज दिया।
24 लेकिन वह ख़ुद अकेला ही पीछे रह गया।
उस वक़्त एक आदमी आया और पौ फटने तक
उस से कुश्ती लड़ता रहा। 25 जब उस ने देखा कि
मैं याक़ूब पर ग़ालिब नहीं आ रहा तो उस ने उस
के कूल्हे को छुआ, और उस का जोड़ निकल गया।
26 आदमी ने कहा, "मुझे जाने दे, क्यूँकि पौ फटने
वाली है।"
याक़ूब ने कहा, "पहले मुझे बरकत दें, फिर ही आप
को जाने दूँगा।" 27 आदमी ने पूछा, "तेरा क्या नाम
है?" उस ने जवाब दिया, "याक़ूब।" 28 आदमी ने
कहा, "अब से तेरा नाम याक़ूब नहीं बल्कि इस्राईल
यानी 'वह अल्लाह से लड़ता है' होगा। क्यूँकि तू
अल्लाह और आदमियों के साथ लड़ कर ग़ालिब
आया है।"
29 याक़ूब ने कहा, "मुझे अपना नाम बताएँ।" उस
ने कहा, "तू क्यूँ मेरा नाम जानना चाहता है?" फिर
उस ने याक़ूब को बरकत दी।
30 याक़ूब ने कहा, "मैं ने अल्लाह को रू-ब-रू देखा
तो भी बच गया हूँ।" इस लिए उस ने उस मक़ाम का
नाम फ़नीएल रखा। 31 याक़ूब वहाँ से चला तो सूरज
तुलू हो रहा था। वह कूल्हे के सबब से लंगड़ाता रहा।
32 यही वजह है कि आज भी इस्राईल की औलाद
कूल्हे के जोड़ पर की नस को नहीं खाते, क्यूँकि
याक़ूब की इसी नस को छुआ गया था।

याक़ूब एसौ से मिलता है

33 1 फिर एसौ उन की तरफ़ आता हुआ नज़र
आया। उस के साथ 400 आदमी थे। उन्हें
देख कर याक़ूब ने बच्चों को बाँट कर लियाह, राख़िल
और दोनों लौंडियों के हवाले कर दिया। 2 उस ने
दोनों लौंडियों को उन के बच्चों समेत आगे चलने
दिया। फिर लियाह उस के बच्चों समेत और आख़िर
में राख़िल और यूसुफ़ आए। 3 याक़ूब ख़ुद सब से
आगे एसौ से मिलने गया। चलते चलते वह सात दफ़ा
ज़मीन तक झुका। 4 लेकिन एसौ दौड़ कर उस से
मिलने आया और उसे गले लगा कर बोसा दिया।
दोनों रो पड़े।
5 फिर एसौ ने औरतों और बच्चों को देखा। उस ने
पूछा, "तुम्हारे साथ यह लोग कौन हैं?" याक़ूब ने

कहा, “यह आप के ख़ादिम के बच्चे हैं जो अल्लाह ने
अपने करम से नवाज़े हैं।”
6 दोनों लौंडियाँ अपने बच्चों समेत आ कर उस के
सामने झुक गईं। 7 फिर लियाह अपने बच्चों के साथ
आई और आख़िर में यूसुफ़ और राख़िल आ कर झुक
गए।
8 एसौ ने पूछा, “जिस जानवरों के बड़े ग़ोल से
मेरी मुलाक़ात हुई उस से क्या मुराद है?” याक़ूब ने
जवाब दिया, “यह तुह्फ़ा है ताकि आप का ख़ादिम
आप की नज़र में मक़्बूल हो।” 9 लेकिन एसौ ने कहा,
“मेरे भाई, मेरे पास बहुत कुछ है। यह अपने पास ही
रखो।” 10 याक़ूब ने कहा, “नहीं जी, अगर मुझ पर
आप के करम की नज़र है तो मेरे इस तुह्फ़े को ज़रूर
क़बूल फ़रमाएँ। क्यूँकि जब मैं ने आप का चिहरा
देखा तो वह मेरे लिए अल्लाह के चिहरे की मानिन्द
था, आप ने मेरे साथ इस क़दर अच्छा सुलूक किया
है। 11 मेहरबानी करके यह तुह्फ़ा क़बूल करें जो मैं
आप के लिए लाया हूँ। क्यूँकि अल्लाह ने मुझ पर
अपने करम का इज़हार किया है, और मेरे पास बहुत
कुछ है।”

याक़ूब इसरार करता रहा तो आख़िरकार एसौ
ने उसे क़बूल कर लिया। फिर एसौ कहने लगा,
12 “आओ, हम रवाना हो जाएँ। मैं तुम्हारे आगे आगे
चलूँगा।” 13 याक़ूब ने जवाब दिया, “मेरे मालिक,
आप जानते हैं कि मेरे बच्चे नाज़ुक हैं। मेरे पास भेड़-
बकरियाँ, गाय-बैल और उन के दूध पीने वाले बच्चे भी
हैं। अगर मैं उन्हें एक दिन के लिए भी हद से ज़्यादा
हाँकूँ तो वह मर जाएंगे। 14 मेरे मालिक, मेहरबानी
करके मेरे आगे आगे जाएँ। मैं आराम से उसी रफ़्तार
से आप के पीछे पीछे चलता रहूँगा जिस रफ़्तार से
मेरे मवेशी और मेरे बच्चे चल सकेंगे। यूँ हम आहिस्ता
चलते हुए आप के पास सईर पहुँचेंगे।” 15 एसौ ने
कहा, “क्या मैं अपने आदमियों में से कुछ आप के
पास छोड़ दूँ?” लेकिन याक़ूब ने कहा, “क्या ज़रूरत
है? सब से अहम बात यह है कि आप ने मुझे क़बूल
कर लिया है।”
16 उस दिन एसौ सईर के लिए और 17 याक़ूब
सुक्कात के लिए रवाना हुआ। वहाँ उस ने अपने
लिए मकान बना लिया और अपने मवेशियों के लिए
झोंपड़ियाँ। इस लिए उस मक़ाम का नाम सुक्कात यानी
झोंपड़ियाँ पड़ गया।
18 फिर याक़ूब चलते चलते सलामती से सिकम
शहर पहुँचा। यूँ उस का मसोपुतामिया से मुल्क-ए-
कनआन तक का सफ़र इख़तिताम तक पहुँच गया।
उस ने अपने ख़ैमे शहर के सामने लगाए। 19 उस के
ख़ैमे हमोर की औलाद की ज़मीन पर लगे थे। उस ने
यह ज़मीन चाँदी के 100 सिक्कों के बदले ख़रीद ली।
20 वहाँ उस ने क़ुर्बानगाह बनाई जिस का नाम उस ने
‘एल ख़ुदा-ए- इस्राईल’ रखा।

दीना की इस्मतदरी

34 1 एक दिन याक़ूब और लियाह की बेटी
दीना कनआनी औरतों से मिलने के लिए
घर से निकली। 2 शहर में एक आदमी बनाम सिकम
रहता था। उस का वालिद हमोर उस इलाक़े का
हुक्मरान था और हिव्वी क़ौम से ताल्लुक़ रखता था।
जब सिकम ने दीना को देखा तो उस ने उसे पकड़
कर उस की इस्मतदरी की। 3 लेकिन उस का दिल
दीना से लग गया। वह उस से मुहब्बत करने लगा
और प्यार से उस से बातें करता रहा। 4 उस ने अपने
बाप से कहा, “इस लड़की के साथ मेरी शादी करा
दें।”
5 जब याक़ूब ने अपनी बेटी की इस्मतदरी की ख़बर
सुनी तो उस के बेटे मवेशियों के साथ खुले मैदान में
थे। इस लिए वह उन के वापस आने तक ख़ामोश
रहा।
6 सिकम का बाप हमोर शहर से निकल कर याक़ूब
से बात करने के लिए आया। 7 जब याक़ूब के बेटों
को दीना की इस्मतदरी की ख़बर मिली तो उन के
दिल रंजिश और ग़ुस्से से भर गए कि सिकम ने
याक़ूब की बेटी की इस्मतदरी से इस्राईल की इतनी
बेइज़्ज़ती की है। वह सीधे खुले मैदान से वापस

आए। 8 हमोर ने याक़ूब से कहा, “मेरे बेटे का दिल
आप की बेटी से लग गया है। मेहरबानी करके उस
की शादी मेरे बेटे के साथ कर दें। 9 हमारे साथ रिश्ता
बांधें, हमारे बेटे-बेटियों के साथ शादियाँ कराएँ।
10 फिर आप हमारे साथ इस मुल्क में रह सकेंगे और
पूरा मुल्क आप के लिए खुला होगा। आप जहाँ भी
चाहें आबाद हो सकेंगे, तिजारत कर सकेंगे और
ज़मीन ख़रीद सकेंगे।” 11 सिकम ने ख़ुद भी दीना
के बाप और भाइयों से मिन्नत की, “अगर मेरी यह
दरख़्वास्त मन्ज़ूर हो तो मैं जो कुछ आप कहेंगे अदा
कर दूँगा। 12 जितना भी महर और तुह्फ़े आप मुक़र्रर
करें मैं दे दूँगा। सिर्फ़ मेरी यह ख़्वाहिश पूरी करें कि
यह लड़की मेरे अक़द में आ जाए।”

13 लेकिन दीना की इस्मतदरी के सबब से याक़ूब
के बेटों ने सिकम और उस के बाप हमोर से चालाकी
करके 14 कहा, “हम ऐसा नहीं कर सकते। हम अपनी
बहन की शादी किसी ऐसे आदमी से नहीं करा सकते
जिस का ख़तना नहीं हुआ। इस से हमारी बेइज़्ज़ती
होती है। 15 हम सिर्फ़ इस शर्त पर राज़ी होंगे कि आप
अपने तमाम लड़कों और मर्दों का ख़तना करवाने से
हमारी मानिन्द हो जाएँ। 16 फिर आप के बेटे-बेटियों
के साथ हमारी शादियाँ हो सकेंगी और हम आप
के साथ एक क़ौम बन जाएंगे। 17 लेकिन अगर आप
ख़तना कराने के लिए तय्यार नहीं हैं तो हम अपनी
बहन को ले कर चले जाएंगे।”

18 यह बातें हमोर और उस के बेटे सिकम को
अच्छी लगीं। 19 नौजवान सिकम ने फ़ौरन उन पर
अमल किया, क्यूँकि वह दीना को बहुत पसन्द
करता था। सिकम अपने ख़ानदान में सब से
मुअज़्ज़ज़ था। 20 हमोर अपने बेटे सिकम के साथ
शहर के दरवाज़े पर गया जहाँ शहर के फ़ैसले किए
जाते थे। वहाँ उन्हों ने बाक़ी शहरियों से बात की।
21 “यह आदमी हम से झगड़ने वाले नहीं हैं, इस लिए
क्यूँ न वह इस मुल्क में हमारे साथ रहें और हमारे
दरमियान तिजारत करें? हमारे मुल्क में उन के लिए
भी काफ़ी जगह है। आओ, हम उन की बेटियों और
बेटों से शादियाँ करें। 22 लेकिन यह आदमी सिर्फ़
इस शर्त पर हमारे दरमियान रहने और एक ही क़ौम
बनने के लिए तय्यार हैं कि हम उन की तरह अपने
तमाम लड़कों और मर्दों का ख़तना कराएँ। 23 अगर
हम ऐसा करें तो उन के तमाम मवेशी और सारा माल
हमारा ही होगा। चुनाँचे आओ, हम मुत्तफ़िक़ हो कर
फ़ैसला कर लें ताकि वह हमारे दरमियान रहें।”

24 सिकम के शहरी हमोर और सिकम के मश्वरे पर
राज़ी हुए। तमाम लड़कों और मर्दों का ख़तना कराया
गया। 25 तीन दिन के बाद जब ख़तने के सबब से
लोगों की हालत बुरी थी तो दीना के दो भाई शमाऊन
और लावी अपनी तलवारें ले कर शहर में दाख़िल
हुए। किसी को शक तक नहीं था कि क्या कुछ होगा।
अन्दर जा कर उन्हों ने बच्चों से ले कर बूढ़ों तक
तमाम मर्दों को क़त्ल कर दिया 26 जिन में हमोर और
उस का बेटा सिकम भी शामिल थे। फिर वह दीना
को सिकम के घर से ले कर चले गए।

27 इस क़त्ल-ए-आम के बाद याक़ूब के बाक़ी बेटे
शहर पर टूट पड़े और उसे लूट लिया। यूँ उन्हों ने
अपनी बहन की इस्मतदरी का बदला लिया। 28 वह
भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गधे और शहर के अन्दर
और बाहर का सब कुछ ले कर चलते बने। 29 उन्हों
ने सारे माल पर क़ब्ज़ा किया, औरतों और बच्चों को
क़ैदी बना लिया और तमाम घरों का सामान भी ले
गए।

30 फिर याक़ूब ने शमाऊन और लावी से कहा, “तुम
ने मुझे मुसीबत में डाल दिया है। अब कनआनी,
फ़रिज़्ज़ी और मुल्क के बाक़ी बाशिन्दों में मेरी
बदनामी हुई है। मेरे साथ कम आदमी हैं। अगर दूसरे
मिल कर हम पर हम्ला करें तो हमारे पूरे ख़ानदान
का सत्यानास हो जाएगा।” 31 लेकिन उन्हों ने कहा,
“क्या यह ठीक था कि उस ने हमारी बहन के साथ
कस्बी का सा सुलूक किया?”

बैत-एल में याक़ूब पर अल्लाह की बरकत

35 1 अल्लाह ने याक़ूब से कहा, “उठ, बैत-एल
जा कर वहाँ आबाद हो। वहीं अल्लाह के
लिए जो तुझ पर ज़ाहिर हुआ जब तू अपने भाई एसौ
से भाग रहा था क़ुर्बानगाह बना।” 2 चुनाँचे याक़ूब ने
अपने घर वालों और बाक़ी सारे साथियों से कहा,
“जो भी अजनबी बुत आप के पास हैं उन्हें फैंक दें।
अपने आप को पाक-साफ़ करके अपने कपड़े बदलें,
3 क्यूँकि हमें यह जगह छोड़ कर बैत-एल जाना है।
वहाँ मैं उस ख़ुदा के लिए क़ुर्बानगाह बनाऊँगा जिस
ने मुसीबत के वक़्त मेरी दुआ सुनी। जहाँ भी मैं गया
वहाँ वह मेरे साथ रहा है।” 4 यह सुन कर उन्हों ने
याक़ूब को तमाम बुत दे दिए जो उन के पास थे और
तमाम बालियाँ जो उन्हों ने तावीज़ के तौर पर कानों
में पहन रखी थीं। उस ने सब कुछ सिकम के क़रीब
बलूत के दरख़्त के नीचे ज़मीन में दबा दिया। 5 फिर
वह रवाना हुए। इर्दगिर्द के शहरों पर अल्लाह की तरफ़
से इतना शदीद ख़ौफ़ छा गया कि उन्हों ने याक़ूब
और उस के बेटों का ताक़्क़ुब न किया।

6 चलते चलते याक़ूब अपने लोगों समेत लूज़ पहुँच
गया जो मुल्क-ए-कनआन में था। आज लूज़ का नाम
बैत-एल है। 7 याक़ूब ने वहाँ क़ुर्बानगाह बना कर
मक़ाम का नाम बैत-एल यानी ‘अल्लाह का घर’ रखा।
क्यूँकि वहाँ अल्लाह ने अपने आप को उस पर ज़ाहिर
किया था जब वह अपने भाई से फ़रार हो रहा था।

8 वहाँ रिब्क़ा की दाया दबोरा मर गई। वह बैत-एल
के जुनूब में बलूत के दरख़्त के नीचे दफ़न हुई, इस
लिए उस का नाम अल्लोन-बकूत यानी ‘रोने का बलूत
का दरख़्त’ रखा गया।

9 अल्लाह याक़ूब पर एक दफ़ा और ज़ाहिर हुआ और
उसे बरकत दी। यह मसोपुतामिया से वापस आने पर
दूसरी बार हुआ। 10 अल्लाह ने उस से कहा, “अब से
तेरा नाम याक़ूब नहीं बल्कि इस्राईल होगा।” यूँ उस
ने उस का नया नाम इस्राईल रखा। 11 अल्लाह ने यह
भी उस से कहा, “मैं अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ हूँ।
फल फूल और तादाद में बढ़ता जा। एक क़ौम नहीं
बल्कि बहुत सी क़ौमें तुझ से निकलेंगी। तेरी औलाद
में बादशाह भी शामिल होंगे। 12 मैं तुझे वही मुल्क
दूँगा जो इब्राहीम और इस्हाक़ को दिया है। और तेरे
बाद उसे तेरी औलाद को दूँगा।”

13 फिर अल्लाह वहाँ से आसमान पर चला गया।
14 जहाँ अल्लाह याक़ूब से हमकलाम हुआ था वहाँ
उस ने पत्थर का सतून खड़ा किया और उस पर मै
और तेल उंडेल कर उसे मख़्सूस किया। 15 उस ने
जगह का नाम बैत-एल रखा।

राख़िल की मौत

16 फिर याक़ूब अपने घर वालों के साथ बैत-एल
को छोड़ कर इफ़्राता की तरफ़ चल पड़ा। राख़िल
उम्मीद से थी, और रास्ते में बच्चे की पैदाइश का
वक़्त आ गया। बच्चा बड़ी मुश्किल से पैदा हुआ।
17 जब दर्द-ए-ज़ह उरूज को पहुँच गया तो दाई ने
उस से कहा, “मत डरो, क्यूँकि एक और बेटा है।”
18 लेकिन वह दम तोड़ने वाली थी, और मरते मरते
उस ने उस का नाम बिन-ऊनी यानी ‘मेरी मुसीबत
का बेटा’ रखा। लेकिन उस के बाप ने उस का नाम
बिनयमीन यानी ‘दहने हाथ या ख़ुशक़िसमती का
बेटा’ रखा। 19 राख़िल फ़ौत हुई, और वह इफ़्राता के
रास्ते में दफ़न हुई। आजकल इफ़्राता को बैत-लहम
कहा जाता है। 20 याक़ूब ने उस की क़ब्र पर पत्थर
का सतून खड़ा किया। वह आज तक राख़िल की
क़ब्र की निशानदिही करता है।

21 वहाँ से याक़ूब ने अपना सफ़र जारी रखा और
मिज्दल-इदर की परली तरफ़ अपने ख़ैमे लगाए।
22 जब वह वहाँ ठहरे थे तो रूबिन याक़ूब की हरम
बिल्हाह से हमबिसतर हुआ। याक़ूब को मालूम हो
गया।

याक़ूब के बेटे

याक़ूब के बारह बेटे थे। 23 लियाह के बेटे यह थे
: उस का सब से बड़ा बेटा रूबिन, फिर शमाऊन,

लावी, यहूदाह, इश्कार और ज़बूलून। 24 राख़िल के
दो बेटे थे, यूसुफ़ और बिनयमीन। 25 राख़िल की
लौंडी बिल्हाह के दो बेटे थे, दान और नफ़्ताली।
26 लियाह की लौंडी ज़िल्फ़ा के दो बेटे थे, जद और
आशर। याक़ूब के यह बेटे मसोपुतामिया में पैदा हुए।

इस्हाक़ की मौत

27 फिर याक़ूब अपने बाप इस्हाक़ के पास पहुँच
गया जो हब्रून के क़रीब मम्रे में अजनबी की हैसियत
से रहता था (उस वक़्त हब्रून का नाम क़िर्यत-अर्बा
था)। वहाँ इस्हाक़ और उस से पहले इब्राहीम रहा
करते थे। 28–29 इस्हाक़ 180 साल का था जब वह
उम्ररसीदा और ज़िन्दगी से आसूदा हो कर अपने
बापदादा से जा मिला। उस के बेटे एसौ और याक़ूब
ने उसे दफ़न किया।

एसौ की औलाद

36 1 यह एसौ की औलाद का नसबनामा है
(एसौ को अदोम भी कहा जाता है) :
2 एसौ ने तीन कनआनी औरतों से शादी की :
हित्ती आदमी ऐलोन की बेटी अदा से, अना की
बेटी उहलीबामा से जो हिव्वी आदमी सिबओन की
नवासी थी 3 और इस्माईल की बेटी बासमत से
जो नबायोत की बहन थी। 4 अदा का एक बेटा
इलीफ़ज़ और बासमत का एक बेटा रऊएल पैदा
हुआ। 5 उहलीबामा के तीन बेटे पैदा हुए, यऊस,
यालाम और क़ोरह। एसौ के यह तमाम बेटे मुल्क-ए-
कनआन में पैदा हुए।
6 बाद में एसौ दूसरे मुल्क में चला गया। उस ने
अपनी बीवियों, बेटे-बेटियों और घर के रहने वालों
को अपने तमाम मवेशियों और मुल्क-ए-कनआन में
हासिल किए हुए माल समेत अपने साथ लिया। 7 वह
इस वजह से चला गया कि दोनों भाइयों के पास इतने
रेवड़ थे कि चराने की जगह कम पड़ गई। 8 चुनाँचे
एसौ पहाड़ी इलाक़े सईर में आबाद हुआ। एसौ का
दूसरा नाम अदोम है।
9 यह एसौ यानी सईर के पहाड़ी इलाक़े में आबाद
अदोमियों का नसबनामा है : 10 एसौ की बीवी अदा
का एक बेटा इलीफ़ज़ था जबकि उस की बीवी
बासमत का एक बेटा रऊएल था। 11 इलीफ़ज़ के
बेटे तेमान, ओमर, स़फ़ो, जाताम, क़नज़ 12 और
अमालीक़ थे। अमालीक़ इलीफ़ज़ की हरम तिमना
का बेटा था। यह सब एसौ की बीवी अदा की औलाद
में शामिल थे। 13 रऊएल के बेटे नहत, ज़ारह, सम्मा
और मिज़्ज़ा थे। यह सब एसौ की बीवी बासमत की
औलाद में शामिल थे। 14 एसौ की बीवी उहलीबामा
जो अना की बेटी और सिबओन की नवासी थी के
तीन बेटे यऊस, यालाम और क़ोरह थे।
15 एसौ से मुख़्तलिफ़ क़बीलों के सरदार निकले।
उस के पहलौठे इलीफ़ज़ से यह क़बाइली सरदार
निकले : तेमान, ओमर, स़फ़ो, क़नज़, 16 क़ोरह,
जाताम और अमालीक़। यह सब एसौ की बीवी
अदा की औलाद थे। 17 एसौ के बेटे रऊएल से यह
क़बाइली सरदार निकले : नहत, ज़ारह, सम्मा और
मिज़्ज़ा। यह सब एसौ की बीवी बासमत की औलाद
थे। 18 एसौ की बीवी उहलीबामा यानी अना की बेटी
से यह क़बाइली सरदार निकले : यऊस, यालाम और
क़ोरह। 19 यह तमाम सरदार एसौ की औलाद हैं।

सईर की औलाद

20 मुल्क-ए-अदोम के कुछ बाशिन्दे होरी आदमी
सईर की औलाद थे। उन के नाम लोतान, सोबल,
सिबओन, अना, 21 दीसोन, एसर और दीसान थे।
सईर के यह बेटे मुल्क-ए-अदोम में होरी क़बीलों के
सरदार थे।
22 लोतान होरी और हेमाम का बाप था। (तिमना
लोतान की बहन थी।) 23 सोबल के बेटे अल्वान,
मानहत, ऐबाल, सफ़ो और ओनाम थे। 24 सिबओन
के बेटे अय्याह और अना थे। इसी अना को गर्म
चश्मे मिले जब वह बयाबान में अपने बाप के गधे
चरा रहा था। 25 अना का एक बेटा दीसोन और एक
बेटी उहलीबामा थी। 26 दीसोन के चार बेटे हम्दान,

इश्बान, यित्रान और किरान थे। 27 एसर के तीन बेटे
बिल्हान, ज़ावान और अक़ान थे। 28 दीसान के दो
बेटे ऊज़ और अरान थे।

29–30 यही यानी लोतान, सोबल, सिबओन, अना,
दीसोन, एसर और दीसान सईर के मुल्क में होरी
क़बाइल के सरदार थे।

अदोम के बादशाह

31 इस से पहले कि इस्राईलियों का कोई बादशाह
था ज़ैल के बादशाह यके बाद दीगरे मुल्क-ए-अदोम
में हुकूमत करते थे :

32 बाला बिन बओर जो दिन्हाबा शहर का था
मुल्क-ए-अदोम का पहला बादशाह था।

33 उस की मौत पर यूबाब बिन ज़ारह जो बुस्रा शहर
का था।

34 उस की मौत पर हुशाम जो तेमानियों के मुल्क
का था।

35 उस की मौत पर हदद बिन बिदद जिस ने
मुल्क-ए-मोआब में मिदियानियों को शिकस्त दी। वह
अवीत का था।

36 उस की मौत पर सम्ला जो मस्रिक़ा का था।

37 उस की मौत पर साऊल जो दरया-ए-फ़ुरात पर
रहोबोत शहर का था।

38 उस की मौत पर बाल-हनान बिन अक्बोर।

39 उस की मौत पर हदद जो फ़ाऊ शहर का
था (बीवी का नाम महेतब-एल बिन्त मत्रिद बिन्त
मेज़ाहाब था)।

40–43 एसौ से अदोमी क़बीलों के यह सरदार
निकले : तिमना, अल्वह, यतेत, उहलीबामा, ऐला,
फ़ीनोन, क़नज़, तेमान, मिब्सार, मजदीएल और
इराम। अदोम के सरदारों की यह फ़हरिस्त उन
की मौरूसी ज़मीन की आबादियों और क़बीलों के
मुताबिक़ ही बयान की गई है। एसौ उन का बाप है।

यूसुफ़ के ख़्वाब

37 1 याक़ूब मुल्क-ए-कनआन में रहता था
जहाँ पहले उस का बाप भी परदेसी था।
2 यह याक़ूब के ख़ानदान का बयान है।

उस वक़्त याक़ूब का बेटा यूसुफ़ 17 साल का
था। वह अपने भाइयों यानी बिल्हाह और ज़िल्फ़ा के
बेटों के साथ भेड़-बकरियों की देख-भाल करता था।
यूसुफ़ अपने बाप को अपने भाइयों की बुरी हरकतों
की इत्तिला दिया करता था।

3 याक़ूब यूसुफ़ को अपने तमाम बेटों की निस्बत
ज़्यादा प्यार करता था। वजह यह थी कि वह तब
पैदा हुआ जब बाप बूढ़ा था। इस लिए याक़ूब ने उस
के लिए एक ख़ास रंगदार लिबास बनवाया। 4 जब
उस के भाइयों ने देखा कि हमारा बाप यूसुफ़ को हम
से ज़्यादा प्यार करता है तो वह उस से नफ़रत करने
लगे और अदब से उस से बात नहीं करते थे।

5 एक रात यूसुफ़ ने ख़्वाब देखा। जब उस ने अपने
भाइयों को ख़्वाब सुनाया तो वह उस से और भी
नफ़रत करने लगे। 6 उस ने कहा, "सुनो, मैं ने ख़्वाब
देखा। 7 हम सब खेत में पूले बांध रहे थे कि मेरा पूला
खड़ा हो गया। आप के पूले मेरे पूले के इर्दगिर्द जमा
हो कर उस के सामने झुक गए।" 8 उस के भाइयों ने
कहा, "अच्छा, तू बादशाह बन कर हम पर हुकूमत
करेगा?" उस के ख़्वाबों और उस की बातों के सबब
से उन की उस से नफ़रत मज़ीद बढ़ गई।

9 कुछ देर के बाद यूसुफ़ ने एक और ख़्वाब देखा।
उस ने अपने भाइयों से कहा, "मैं ने एक और ख़्वाब
देखा है। उस में सूरज, चाँद और ग्यारह सितारे मेरे
सामने झुक गए।" 10 उस ने यह ख़्वाब अपने बाप को
भी सुनाया तो उस ने उसे डाँटा। उस ने कहा, "यह
कैसा ख़्वाब है जो तू ने देखा! यह कैसी बात है कि
मैं, तेरी माँ और तेरे भाई आ कर तेरे सामने ज़मीन
तक झुक जाएँ?" 11 नतीजे में उस के भाई उस से
बहुत हसद करने लगे। लेकिन उस के बाप ने दिल
में यह बात महफ़ूज़ रखी।

यूसुफ़ को बेचा जाता है

12 एक दिन जब यूसुफ़ के भाई अपने बाप के रेवड़
चराने के लिए सिकम तक पहुँच गए थे 13 तो याक़ूब
ने यूसुफ़ से कहा, “तेरे भाई सिकम में रेवड़ों को चरा
रहे हैं। आ, मैं तुझे उन के पास भेज देता हूँ।” यूसुफ़ ने
जवाब दिया, “ठीक है।” 14 याक़ूब ने कहा, “जा कर
मालूम कर कि तेरे भाई और उन के साथ के रेवड़
ख़ैरियत से हैं कि नहीं। फिर वापस आ कर मुझे बता
देना।” चुनाँचे उस के बाप ने उसे वादी-ए-हब्रून से
भेज दिया, और यूसुफ़ सिकम पहुँच गया।

15 वहाँ वह इधर उधर फिरता रहा। आख़िरकार
एक आदमी उस से मिला और पूछा, “आप क्या ढूँड
रहे हैं?” 16 यूसुफ़ ने जवाब दिया, “मैं अपने भाइयों
को तलाश कर रहा हूँ। मुझे बताएँ कि वह अपने
जानवरों को कहाँ चरा रहे हैं।” 17 आदमी ने कहा,
“वह यहाँ से चले गए हैं। मैं ने उन्हें यह कहते सुना
कि आओ, हम दूतैन जाएँ।” यह सुन कर यूसुफ़ अपने
भाइयों के पीछे दूतैन चला गया। वहाँ उसे वह मिल
गए।

18 जब यूसुफ़ अभी दूर से नज़र आया तो उस के
भाइयों ने उस के पहुँचने से पहले उसे क़त्ल करने
का मन्सूबा बनाया। 19 उन्हों ने कहा, “देखो, ख़्वाब
देखने वाला आ रहा है। 20 आओ, हम उसे मार डालें
और उस की लाश किसी गढ़े में फैंक दें। हम कहेंगे
कि किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया है। फिर
पता चलेगा कि उस के ख़्वाबों की क्या हक़ीक़त
है।”

21 जब रूबिन ने उन की बातें सुनीं तो उस ने यूसुफ़
को बचाने की कोशिश की। उस ने कहा, “नहीं, हम
उसे क़त्ल न करें। 22 उस का ख़ून न करना। बेशक
उसे इस गढ़े में फैंक दें जो रेगिस्तान में है, लेकिन उसे
हाथ न लगाएँ।” उस ने यह इस लिए कहा कि वह
उसे बचा कर बाप के पास वापस पहुँचाना चाहता
था।

23 जूँ ही यूसुफ़ अपने भाइयों के पास पहुँचा उन्हों
ने उस का रंगदार लिबास उतार कर 24 यूसुफ़ को गढ़े
में फैंक दिया। गढ़ा ख़ाली था, उस में पानी नहीं था।
25 फिर वह रोटी खाने के लिए बैठ गए। अचानक
इस्माईलियों का एक क़ाफ़िला नज़र आया। वह
जिलिआद से मिस्र जा रहे थे, और उन के ऊँट क़ीमती
मसालों यानी लादन, बल्सान और मुर से लदे हुए थे।
26 तब यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा, “हमें क्या
फ़ाइदा है अगर अपने भाई को क़त्ल करके उस के
ख़ून को छुपा दें? 27 आओ, हम उसे इन इस्माईलियों
के हाथ फ़रोख़्त कर दें। फिर कोई ज़रूरत नहीं होगी
कि हम उसे हाथ लगाएँ। आख़िर वह हमारा भाई
है।”

उस के भाई राज़ी हुए। 28 चुनाँचे जब मिदियानी
ताजिर वहाँ से गुज़रे तो भाइयों ने यूसुफ़ को खैंच कर
गढ़े से निकाला और चाँदी के 20 सिक्कों के इवज़ बेच
डाला। इस्माईली उसे ले कर मिस्र चले गए।

29 उस वक़्त रूबिन मौजूद नहीं था। जब वह गढ़े
के पास वापस आया तो यूसुफ़ उस में नहीं था। यह
देख कर उस ने परेशानी में अपने कपड़े फाड़ डाले।
30 वह अपने भाइयों के पास वापस गया और कहा,
“लड़का नहीं है। अब मैं किस तरह अब्बू के पास
जाऊँ?” 31 तब उन्हों ने बकरा ज़बह करके यूसुफ़
का लिबास उस के ख़ून में डुबोया, 32 फिर रंगदार
लिबास इस ख़बर के साथ अपने बाप को भिजवा
दिया कि “हमें यह मिला है। इसे ग़ौर से देखें। यह
आप के बेटे का लिबास तो नहीं?”

33 याक़ूब ने उसे पहचान लिया और कहा, “बेशक
उसी का है। किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया
है। यक़ीनन यूसुफ़ को फाड़ दिया गया है।” 34 याक़ूब
ने ग़म के मारे अपने कपड़े फाड़े और अपनी कमर से
टाट ओढ़ कर बड़ी देर तक अपने बेटे के लिए मातम
करता रहा। 35 उस के तमाम बेटे-बेटियाँ उसे तसल्ली
देने आए, लेकिन उस ने तसल्ली पाने से इन्कार किया
और कहा, “मैं पाताल में उतरते हुए भी अपने बेटे के

लिए मातम करूँगा।” इस हालत में वह अपने बेटे
के लिए रोता रहा।

36 इतने में मिदियानी मिस्र पहुँच कर यूसुफ़ को बेच
चुके थे। मिस्र के बादशाह फ़िरऔन के एक आला
अफ़सर फ़ूतीफ़ार ने उसे ख़रीद लिया। फ़ूतीफ़ार
बादशाह के मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर था।

यहूदाह और तमर

38 1 उन दिनों में यहूदाह अपने भाइयों को
छोड़ कर एक आदमी के पास रहने लगा
जिस का नाम हीरा था और जो अदुल्लाम शहर से था।
2 वहाँ यहूदाह की मुलाक़ात एक कनआनी औरत से
हुई जिस के बाप का नाम सूअ था। उस ने उस से
शादी की। 3 बेटा पैदा हुआ जिस का नाम यहूदाह ने
एर रखा। 4 एक और बेटा पैदा हुआ जिस का नाम
बीवी ने ओनान रखा। 5 उस के तीसरा बेटा भी पैदा
हुआ। उस ने उस का नाम सेला रखा। यहूदाह क़ज़ीब
में था जब वह पैदा हुआ।

6 यहूदाह ने अपने बड़े बेटे एर की शादी एक लड़की
से कराई जिस का नाम तमर था। 7 रब के नज़्दीक
एर शरीर था, इस लिए उस ने उसे हलाक कर दिया।
8 इस पर यहूदाह ने एर के छोटे भाई ओनान से कहा,
“अपने बड़े भाई की बेवा के पास जाओ और उस से
शादी करो ताकि तुम्हारे भाई की नस्ल क़ाइम रहे।”
9 ओनान ने ऐसा किया, लेकिन वह जानता था कि जो
भी बच्चे पैदा होंगे वह क़ानून के मुताबिक़ मेरे बड़े भाई
के होंगे। इस लिए जब भी वह तमर से हमबिसतर
होता तो नुत्फ़ा को ज़मीन पर गिरा देता, क्यूँकि वह
नहीं चाहता था कि मेरी मारिफ़त मेरे भाई के बच्चे
पैदा हों। 10 यह बात रब को बुरी लगी, और उस ने
उसे भी सज़ा-ए-मौत दी। 11 तब यहूदाह ने अपनी बहू
तमर से कहा, “अपने बाप के घर वापस चली जाओ
और उस वक़्त तक बेवा रहो जब तक मेरा बेटा सेला
बड़ा न हो जाए।” उस ने यह इस लिए कहा कि उसे
डर था कि कहीं सेला भी अपने भाइयों की तरह मर
न जाए चुनाँचे तमर अपने मैके चली गई।

12 काफ़ी दिनों के बाद यहूदाह की बीवी जो सूअ
की बेटी थी मर गई। मातम का वक़्त गुज़र गया तो
यहूदाह अपने अदुल्लामी दोस्त हीरा के साथ तिम्नत
गया जहाँ यहूदाह की भेड़ों की पश्म कतरी जा रही
थी। 13 तमर को बताया गया, “आप का सुसर अपनी
भेड़ों की पश्म कतरने के लिए तिम्नत जा रहा है।”
14 यह सुन कर तमर ने बेवा के कपड़े उतार कर आम
कपड़े पहन लिए। फिर वह अपना मुँह चादर से लपेट
कर ऐनीम शहर के दरवाज़े पर बैठ गई जो तिम्नत
के रास्ते में था। तमर ने यह हरकत इस लिए की कि
यहूदाह का बेटा सेला अब बालिग़ हो चुका था तो
भी उस की उस के साथ शादी नहीं की गई थी।

15 जब यहूदाह वहाँ से गुज़रा तो उस ने उसे देख
कर सोचा कि यह कस्बी है, क्यूँकि उस ने अपना मुँह
छुपाया हुआ था। 16 वह रास्ते से हट कर उस के पास
गया और कहा, “ज़रा मुझे अपने हाँ आने दें।” (उस
ने नहीं पहचाना कि यह मेरी बहू है)। तमर ने कहा,
“आप मुझे क्या देंगे?” 17 उस ने जवाब दिया, “मैं
आप को बकरी का बच्चा भेज दूँगा।” तमर ने कहा,
“ठीक है, लेकिन उसे भेजने तक मुझे ज़मानत दें।”
18 उस ने पूछा, “मैं आप को क्या दूँ?” तमर ने कहा,
“अपनी मुहर और उसे गले में लटकाने की डोरी। वह
लाठी भी दें जो आप पकड़े हुए हैं।” चुनाँचे यहूदाह
उसे यह चीज़ें दे कर उस के साथ हमबिसतर हुआ।
नतीजे में तमर उम्मीद से हुई। 19 फिर तमर उठ कर
अपने घर वापस चली गई। उस ने अपनी चादर उतार
कर दुबारा बेवा के कपड़े पहन लिए।

20 यहूदाह ने अपने दोस्त हीरा अदुल्लामी के हाथ
बकरी का बच्चा भेज दिया ताकि वह चीज़ें वापस
मिल जाएँ जो उस ने ज़मानत के तौर पर दी थीं।
लेकिन हीरा को पता न चला कि औरत कहाँ है।
21 उस ने ऐनीम के बाशिन्दों से पूछा, “वह कस्बी
कहाँ है जो यहाँ सड़क पर बैठी थी?” उन्हों ने जवाब
दिया, “यहाँ ऐसी कोई कस्बी नहीं थी।”

22 उस ने यहूदाह के पास वापस जा कर कहा, “वह
मुझे नहीं मिली बल्कि वहाँ के रहने वालों ने कहा कि

यहाँ कोई ऐसी कस्बी थी नहीं।” 23 यहूदाह ने कहा,
“फिर वह ज़मानत की चीज़ें अपने पास ही रखे। उसे
छोड़ दो वर्ना लोग हमारा मज़ाक़ उड़ाएँगे। हम ने तो
पूरी कोशिश की कि उसे बकरी का बच्चा मिल जाए,
लेकिन खोज लगाने के बावुजूद आप को पता न चला
कि वह कहाँ है।”

24 तीन माह के बाद यहूदाह को इत्तिला दी गई,
“आप की बहू तमर ने ज़िना किया है, और अब वह
हामिला है।” यहूदाह ने हुक्म दिया, “उसे बाहर ला
कर जला दो।” 25 तमर को जलाने के लिए बाहर
लाया गया तो उस ने अपने सुसर को ख़बर भेज दी,
“यह चीज़ें देखें। यह उस आदमी की हैं जिस की
मारिफ़त मैं उम्मीद से हूँ। पता करें कि यह मुहर, उस
की डोरी और यह लाठी किस की हैं।” 26 यहूदाह
ने उन्हें पहचान लिया। उस ने कहा, “मैं नहीं बल्कि
यह औरत हक़ पर है, क्यूँकि मैं ने उस की अपने बेटे
सेला से शादी नहीं कराई।” लेकिन बाद में यहूदाह
कभी भी तमर से हमबिसतर न हुआ।

27 जब जन्म देने का वक़्त आया तो मालूम हुआ
कि जुड़वाँ बच्चे हैं। 28 एक बच्चे का हाथ निकला तो
दाई ने उसे पकड़ कर उस में सुर्ख़ धागा बांध दिया
और कहा, “यह पहले पैदा हुआ।” 29 लेकिन उस
ने अपना हाथ वापस खैंच लिया, और उस का भाई
पहले पैदा हुआ। यह देख कर दाई बोल उठी, “तू
किस तरह फूट निकला है!” उस ने उस का नाम
फ़ारस यानी फूट रखा। 30 फिर उस का भाई पैदा हुआ
जिस के हाथ में सुर्ख़ धागा बंधा हुआ था। उस का
नाम ज़ारह यानी चमक रखा गया।

यूसुफ़ और फ़ूतीफ़ार की बीवी

39 1 इस्माईलियों ने यूसुफ़ को मिस्र ले जा कर
बेच दिया था। मिस्र के बादशाह के एक
आला अफ़्सर बनाम फ़ूतीफ़ार ने उसे ख़रीद लिया।
वह शाही मुहाफ़िज़ों का कप्तान था। 2 रब यूसुफ़ के
साथ था। जो भी काम वह करता उस में कामयाब
रहता। वह अपने मिस्री मालिक के घर में रहता
था 3 जिस ने देखा कि रब यूसुफ़ के साथ है और
उसे हर काम में कामयाबी देता है। 4 चुनाँचे यूसुफ़
को मालिक की ख़ास मेहरबानी हासिल हुई, और
फ़ूतीफ़ार ने उसे अपना ज़ाती नौकर बना लिया। उस
ने उसे अपने घराने के इन्तिज़ाम पर मुक़र्रर किया
और अपनी पूरी मिलकियत उस के सपुर्द कर दी।
5 जिस वक़्त से फ़ूतीफ़ार ने अपने घराने का इन्तिज़ाम
और पूरी मिलकियत यूसुफ़ के सपुर्द की उस वक़्त
से रब ने फ़ूतीफ़ार को यूसुफ़ के सबब से बरकत दी।
उस की बरकत फ़ूतीफ़ार की हर चीज़ पर थी, ख़्वाह
घर में थी या खेत में। 6 फ़ूतीफ़ार ने अपनी हर चीज़
यूसुफ़ के हाथ में छोड़ दी। और चूँकि यूसुफ़ सब
कुछ अच्छी तरह चलाता था इस लिए फ़ूतीफ़ार को
खाना खाने के सिवा किसी भी मुआमले की फ़िक्र
नहीं थी।

यूसुफ़ निहायत ख़ूबसूरत आदमी था। 7 कुछ देर
के बाद उस के मालिक की बीवी की आँख उस पर
लगी। उस ने उस से कहा, “मेरे साथ हमबिसतर हो!”
8 यूसुफ़ इन्कार करके कहने लगा, “मेरे मालिक को
मेरे सबब से किसी मुआमले की फ़िक्र नहीं है। उन्हों
ने सब कुछ मेरे सपुर्द कर दिया है। 9 घर के इन्तिज़ाम
पर उन का इख़तियार मेरे इख़तियार से ज़्यादा नहीं
है। आप के सिवा उन्हों ने कोई भी चीज़ मुझ से बाज़
नहीं रखी। तो फिर मैं किस तरह इतना ग़लत काम
करूँ? मैं किस तरह अल्लाह का गुनाह करूँ?”

10 मालिक की बीवी रोज़-ब-रोज़ यूसुफ़ के पीछे
पड़ी रही कि मेरे साथ हमबिसतर हो। लेकिन वह
हमेशा इन्कार करता रहा।

11 एक दिन वह काम करने के लिए घर में गया। घर
में और कोई नौकर नहीं था। 12 फ़ूतीफ़ार की बीवी
ने यूसुफ़ का लिबास पकड़ कर कहा, “मेरे साथ
हमबिसतर हो!” यूसुफ़ भाग कर बाहर चला गया
लेकिन उस का लिबास पीछे औरत के हाथ में ही रह
गया। 13 जब मालिक की बीवी ने देखा कि वह अपना
लिबास छोड़ कर भाग गया है 14 तो उस ने घर के
नौकरों को बुला कर कहा, “यह देखो! मेरे मालिक

इस इब्रानी को हमारे पास ले आए हैं ताकि वह हमें
ज़लील करे। वह मेरी इस्मतदरी करने के लिए मेरे
कमरे में आ गया, लेकिन मैं ऊँची आवाज़ से चीख़ने
लगी। 15 जब मैं मदद के लिए ऊँची आवाज़ से चीख़ने
लगी तो वह अपना लिबास छोड़ कर भाग गया।"
16 उस ने मालिक के आने तक यूसुफ़ का लिबास
अपने पास रखा। 17 जब वह घर वापस आया तो
उस ने उसे यही कहानी सुनाई, "यह इब्रानी ग़ुलाम
जो आप ले आए हैं मेरी तज़्लील के लिए मेरे पास
आया। 18 लेकिन जब मैं मदद के लिए चीख़ने लगी
तो वह अपना लिबास छोड़ कर भाग गया।"

यूसुफ़ क़ैदख़ाने में

19 यह सुन कर फ़ूतीफ़ार बड़े ग़ुस्से में आ गया।
20 उस ने यूसुफ़ को गिरिफ़्तार करके उस जेल में डाल
दिया जहाँ बादशाह के क़ैदी रखे जाते थे। वहीं वह
रहा। 21 लेकिन रब यूसुफ़ के साथ था। उस ने उस
पर मेहरबानी की और उसे क़ैदख़ाने के दारोग़े की
नज़र में मक़्बूल किया। 22 यूसुफ़ यहाँ तक मक़्बूल
हुआ कि दारोग़े ने तमाम क़ैदियों को उस के सपुर्द
करके उसे पूरा इन्तिज़ाम चलाने की ज़िम्मादारी दी।
23 दारोग़े को किसी भी मुआमले की जिसे उस ने
यूसुफ़ के सपुर्द किया था फ़िक्र न रही, क्यूँकि रब
यूसुफ़ के साथ था और उसे हर काम में कामयाबी
बख़्शी।

क़ैदियों के ख़्वाब

40 1 कुछ देर के बाद यूँ हुआ कि मिस्र के
बादशाह के सरदार साक़ी और बेकरी के
इंचार्ज ने अपने मालिक का गुनाह किया। 2 फ़िरऔन
को दोनों अफ़्सरों पर ग़ुस्सा आ गया। 3 उस ने उन्हें
उस क़ैदख़ाने में डाल दिया जो शाही मुहाफ़िज़ों
के कप्तान के सपुर्द था और जिस में यूसुफ़ था।
4 मुहाफ़िज़ों के कप्तान ने उन्हें यूसुफ़ के हवाले किया
ताकि वह उन की ख़िदमत करे। वहाँ वह काफ़ी देर
तक रहे।

5 एक रात बादशाह के सरदार साक़ी और बेकरी
के इंचार्ज ने ख़्वाब देखा। दोनों का ख़्वाब फ़र्क़ फ़र्क़
था, और उन का मतलब भी फ़र्क़ फ़र्क़ था। 6 जब
यूसुफ़ सुब्ह के वक़्त उन के पास आया तो वह दबे
हुए नज़र आए। 7 उस ने उन से पूछा, "आज आप
क्यूँ इतने परेशान हैं?" 8 उन्हों ने जवाब दिया, "हम
दोनों ने ख़्वाब देखा है, और कोई नहीं जो हमें उन का
मतलब बताए।" यूसुफ़ ने कहा, "ख़्वाबों की ताबीर
तो अल्लाह का काम है। ज़रा मुझे अपने ख़्वाब तो
सुनाएँ।"

9 सरदार साक़ी ने शुरू किया, "मैं ने ख़्वाब में अपने
सामने अंगूर की बेल देखी। 10 उस की तीन शाख़ें थीं।
उस के पत्ते लगे, कोंपलें फूट निकलीं और अंगूर पक
गए। 11 मेरे हाथ में बादशाह का प्याला था, और मैं
ने अंगूरों को तोड़ कर यूँ भींच दिया कि उन का
रस बादशाह के प्याले में आ गया। फिर मैं ने प्याला
बादशाह को पेश किया।"

12 यूसुफ़ ने कहा, "तीन शाख़ों से मुराद तीन दिन
हैं। 13 तीन दिन के बाद फ़िरऔन आप को बहाल
कर लेगा। आप को पहली ज़िम्मादारी वापस मिल
जाएगी। आप पहले की तरह सरदार साक़ी की
हैसियत से बादशाह का प्याला सँभालेंगे। 14 लेकिन
जब आप बहाल हो जाएँ तो मेरा ख़याल करें।
मेहरबानी करके बादशाह के सामने मेरा ज़िक्र करें
ताकि मैं यहाँ से रिहा हो जाऊँ। 15 क्यूँकि मुझे
इब्रानियों के मुल्क से अग़वा करके यहाँ लाया गया
है, और यहाँ भी मुझ से कोई ऐसी ग़लती नहीं हुई
कि मुझे इस गढ़े में फैंका जाता।"

16 जब शाही बेकरी के इंचार्ज ने देखा कि सरदार
साक़ी के ख़्वाब का अच्छा मतलब निकला तो उस
ने यूसुफ़ से कहा, "मेरा ख़्वाब भी सुनें। मैं ने सर पर
तीन टोकरियाँ उठा रखी थीं जो बेकरी की चीज़ों से
भरी हुई थीं। 17 सब से ऊपर वाली टोकरी में वह
तमाम चीज़ें थीं जो बादशाह की मेज़ के लिए बनाई
जाती हैं। लेकिन परिन्दे आ कर उन्हें खा रहे थे।"

18 यूसुफ़ ने कहा, “तीन टोकरियों से मुराद तीन
दिन हैं। 19 तीन दिन के बाद ही फ़िरऔन आप को
क़ैदख़ाने से निकाल कर दरख़्त से लटका देगा।
परिन्दे आप की लाश को खा जाएंगे।”
20 तीन दिन के बाद बादशाह की सालगिरह थी।
उस ने अपने तमाम अफ़्सरों की ज़ियाफ़त की। इस
मौक़े पर उस ने सरदार साक़ी और बेकरी के इंचार्ज
को जेल से निकाल कर अपने हुज़ूर लाने का हुक्म
दिया। 21 सरदार साक़ी को पहले वाली ज़िम्मादारी
सौंप दी गई, 22 लेकिन बेकरी के इंचार्ज को सज़ा-ए-
मौत दे कर दरख़्त से लटका दिया गया। सब कुछ
वैसा ही हुआ जैसा यूसुफ़ ने कहा था।
23 लेकिन सरदार साक़ी ने यूसुफ़ का ख़याल न
किया बल्कि उसे भूल ही गया।

बादशाह के ख़्वाब

41 1 दो साल गुज़र गए कि एक रात बादशाह ने
ख़्वाब देखा। वह दरया-ए-नील के किनारे
खड़ा था। 2 अचानक दरया में से सात ख़ूबसूरत
और मोटी गाएँ निकल कर सरकंडों में चरने लगीं।
3 उन के बाद सात और गाएँ निकल आईं। लेकिन
वह बदसूरत और दुबली-पतली थीं। वह दरया के
किनारे दूसरी गायों के पास खड़ी हो कर 4 पहली
सात ख़ूबसूरत और मोटी मोटी गायों को खा गईं।
इस के बाद मिस्र का बादशाह जाग उठा। 5 फिर वह
दुबारा सो गया। इस दफ़ा उस ने एक और ख़्वाब
देखा। अनाज के एक पौदे पर सात मोटी मोटी और
अच्छी अच्छी बालें लगी थीं। 6 फिर सात और बालें
फूट निकलीं जो दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा
से झुलसी हुई थीं। 7 अनाज की सात दुबली-पतली
बालों ने सात मोटी और ख़ूबसूरत बालों को निगल
लिया। फिर फ़िरऔन जाग उठा तो मालूम हुआ कि
मैं ने ख़्वाब ही देखा है।
8 सुब्ह हुई तो वह परेशान था, इस लिए उस ने मिस्र
के तमाम जादूगरों और आलिमों को बुलाया। उस ने
उन्हें अपने ख़्वाब सुनाए, लेकिन कोई भी उन की
ताबीर न कर सका।
9 फिर सरदार साक़ी ने फ़िरऔन से कहा, “आज
मुझे अपनी ख़ताएँ याद आती हैं। 10 एक दिन
फ़िरऔन अपने ख़ादिमों से नाराज़ हुए। हुज़ूर ने मुझे
और बेकरी के इंचार्ज को क़ैदख़ाने में डलवा दिया
जिस पर शाही मुहाफ़िज़ों का कप्तान मुक़र्रर था।
11 एक ही रात में हम दोनों ने मुख़्तलिफ़ ख़्वाब देखे
जिन का मतलब फ़र्क़ फ़र्क़ था। 12 वहाँ जेल में एक
इब्रानी नौजवान था। वह मुहाफ़िज़ों के कप्तान का
ग़ुलाम था। हम ने उसे अपने ख़्वाब सुनाए तो उस ने
हमें उन का मतलब बता दिया। 13 और जो कुछ भी
उस ने बताया सब कुछ वैसा ही हुआ। मुझे अपनी
ज़िम्मादारी वापस मिल गई जबकि बेकरी के इंचार्ज
को सज़ा-ए-मौत दे कर दरख़्त से लटका दिया गया।”
14 यह सुन कर फ़िरऔन ने यूसुफ़ को बुलाया, और
उसे जल्दी से क़ैदख़ाने से लाया गया। उस ने शेव
करवा कर अपने कपड़े बदले और सीधे बादशाह
के हुज़ूर पहुँचा।
15 बादशाह ने कहा, “मैं ने ख़्वाब देखा है, और
यहाँ कोई नहीं जो उस की ताबीर कर सके। लेकिन
सुना है कि तू ख़्वाब को सुन कर उस का मतलब
बता सकता है।” 16 यूसुफ़ ने जवाब दिया, “यह मेरे
इख़तियार में नहीं है। लेकिन अल्लाह ही बादशाह को
सलामती का पैग़ाम देगा।”
17 फ़िरऔन ने यूसुफ़ को अपने ख़्वाब सुनाए,
“मैं ख़्वाब में दरया-ए-नील के किनारे खड़ा था।
18 अचानक दरया में से सात मोटी मोटी और
ख़ूबसूरत गाएँ निकल कर सरकंडों में चरने लगीं।
19 इस के बाद सात और गाएँ निकलीं। वह निहायत
बदसूरत और दुबली-पतली थीं। मैं ने इतनी बदसूरत
गाएँ मिस्र में कहीं भी नहीं देखीं। 20 दुबली और
बदसूरत गाएँ पहली मोटी गायों को खा गईं। 21 और
निगलने के बाद भी मालूम नहीं होता था कि उन्हों ने
मोटी गायों को खाया है। वह पहले की तरह बदसूरत
ही थीं। इस के बाद मैं जाग उठा। 22 फिर मैं ने एक

और ख़्वाब देखा। सात मोटी और अच्छी बालें एक
ही पौदे पर लगी थीं। 23 इस के बाद सात और बालें
निकलीं जो ख़राब, दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा
से झुलसी हुई थीं। 24 सात दुबली-पतली बालें सात
अच्छी बालों को निगल गईं। मैं ने यह सब कुछ अपने
जादूगरों को बताया, लेकिन वह इस की ताबीर न कर
सके।"

25 यूसुफ़ ने बादशाह से कहा, "दोनों ख़्वाबों का
एक ही मतलब है। इन से अल्लाह ने हुज़ूर पर ज़ाहिर
किया है कि वह क्या कुछ करने को है। 26 सात
अच्छी गायों से मुराद सात साल हैं। इसी तरह सात
अच्छी बालों से मुराद भी सात साल हैं। दोनों ख़्वाब
एक ही बात बयान करते हैं। 27 जो सात दुबली और
बदसूरत गाएँ बाद में निकलें उन से मुराद सात और
साल हैं। यही सात दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा
से झुलसी हुई बालों का मतलब भी है। वह एक ही
बात बयान करती हैं कि सात साल तक काल पड़ेगा।
28 यह वही बात है जो मैं ने हुज़ूर से कही कि अल्लाह
ने हुज़ूर पर ज़ाहिर किया है कि वह क्या करेगा।
29 सात साल आएँगे जिन के दौरान मिस्र के पूरे मुल्क
में कस्रत से पैदावार होगी। 30 उस के बाद सात साल
काल पड़ेगा। काल इतना शदीद होगा कि लोग भूल
जाएंगे कि पहले इतनी कस्रत थी। क्यूँकि काल मुल्क
को तबाह कर देगा। 31 काल की शिद्दत के बाइस
अच्छे सालों की कस्रत याद ही नहीं रहेगी। 32 हुज़ूर
को इस लिए एक ही पैग़ाम दो मुख़्तलिफ़ ख़्वाबों
की सूरत में मिला कि अल्लाह इस का पक्का इरादा
रखता है, और वह जल्द ही इस पर अमल करेगा।
33 अब बादशाह किसी समझदार और दानिशमन्द
आदमी को मुल्क-ए-मिस्र का इन्तिज़ाम सौंपें। 34 इस
के इलावा वह ऐसे आदमी मुक़र्रर करें जो सात अच्छे
सालों के दौरान हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा लें।
35 वह उन अच्छे सालों के दौरान ख़ुराक जमा करें।
बादशाह उन्हें इख़तियार दें कि वह शहरों में गोदाम
बना कर अनाज को महफ़ूज़ कर लें। 36 यह ख़ुराक
काल के उन सात सालों के लिए मख़्सूस की जाए जो
मिस्र में आने वाले हैं। यूँ मुल्क तबाह नहीं होगा।"

यूसुफ़ को मिस्र पर हाकिम मुक़र्रर किया जाता है

37 यह मन्सूबा बादशाह और उस के अफ़सरान को
अच्छा लगा। 38 उस ने उन से कहा, "हमें इस काम
के लिए यूसुफ़ से ज़्यादा लाइक़ आदमी नहीं मिलेगा।
उस में अल्लाह की रूह है।" 39 बादशाह ने यूसुफ़ से
कहा, "अल्लाह ने यह सब कुछ तुझ पर ज़ाहिर किया
है, इस लिए कोई भी तुझ से ज़्यादा समझदार और
दानिशमन्द नहीं है। 40 मैं तुझे अपने महल पर मुक़र्रर
करता हूँ। मेरी तमाम रआया तेरे ताबे रहेगी। तेरा
इख़तियार सिर्फ़ मेरे इख़तियार से कम होगा। 41 अब
मैं तुझे पूरे मुल्क-ए-मिस्र पर हाकिम मुक़र्रर करता
हूँ।"

42 बादशाह ने अपनी उंगली से वह अंगूठी उतारी
जिस से मुहर लगाता था और उसे यूसुफ़ की उंगली
में पहना दिया। उस ने उसे कतान का बारीक लिबास
पहनाया और उस के गले में सोने का गलूबन्द पहना
दिया। 43 फिर उस ने उसे अपने दूसरे रथ में सवार
किया और लोग उस के आगे आगे पुकारते रहे,
"घुटने टेको! घुटने टेको!"

यूँ यूसुफ़ पूरे मिस्र का हाकिम बना। 44 फ़िरऔन ने
उस से कहा, "मैं तो बादशाह हूँ, लेकिन तेरी इजाज़त
के बग़ैर पूरे मुल्क में कोई भी अपना हाथ या पाँओ
नहीं हिलाएगा।" 45–46 उस ने यूसुफ़ का मिस्री नाम
साफ़नत-फ़ानेह रखा और ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा
की बेटी आसनत के साथ उस की शादी कराई।

यूसुफ़ 30 साल का था जब वह मिस्र के बादशाह
फ़िरऔन की ख़िदमत करने लगा। उस ने फ़िरऔन
के हुज़ूर से निकल कर मिस्र का दौरा किया।

47 सात अच्छे सालों के दौरान मुल्क में निहायत
अच्छी फ़सलें उगीं। 48 यूसुफ़ ने तमाम ख़ुराक
जमा करके शहरों में महफ़ूज़ कर ली। हर शहर
में उस ने इर्दगिर्द के खेतों की पैदावार महफ़ूज़
रखी। 49 जमाशुदा अनाज समुन्दर की रेत की

मानिन्द बकस्रत था। इतना अनाज था कि यूसुफ़ ने
आख़िरकार उस की पैमाइश करना छोड़ दिया।
50 काल से पहले यूसुफ़ और आसनत के दो बेटे
पैदा हुए। 51 उस ने पहले का नाम मनस्सी यानी 'जो
भुला देता है' रखा। क्यूँकि उस ने कहा, "अल्लाह ने
मेरी मुसीबत और मेरे बाप का घराना मेरी याददाश्त
से निकाल दिया है।" 52 दूसरे का नाम उस ने इफ़्राईम
यानी 'दुगना फलदार' रखा। क्यूँकि उस ने कहा,
"अल्लाह ने मुझे मेरी मुसीबत के मुल्क में फलने फूलने
दिया है।"
53 सात अच्छे साल जिन में कस्रत की फ़सलें उगीं
गुज़र गए। 54 फिर काल के सात साल शुरू हुए जिस
तरह यूसुफ़ ने कहा था। तमाम दीगर ममालिक में
भी काल पड़ गया, लेकिन मिस्र में वाफ़िर ख़ुराक
पाई जाती थी। 55 जब काल ने तमाम मिस्र में ज़ोर
पकड़ा तो लोग चीख़ कर खाने के लिए बादशाह
से मिन्नत करने लगे। तब फ़िरऔन ने उन से कहा,
"यूसुफ़ के पास जाओ। जो कुछ वह तुम्हें बताएगा
वही करो।" 56 जब काल पूरी दुनिया में फैल गया
तो यूसुफ़ ने अनाज के गोदाम खोल कर मिस्रियों को
अनाज बेच दिया। क्यूँकि काल के बाइस मुल्क के
हालात बहुत ख़राब हो गए थे। 57 तमाम ममालिक
से भी लोग अनाज ख़रीदने के लिए यूसुफ़ के पास
आए, क्यूँकि पूरी दुनिया सख़्त काल की गिरिफ़्त में
थी।

यूसुफ़ के भाई मिस्र में

42 1 जब याक़ूब को मालूम हुआ कि मिस्र में
अनाज है तो उस ने अपने बेटों से कहा,
"तुम क्यूँ एक दूसरे का मुँह तकते हो? 2 सुना है
कि मिस्र में अनाज है। वहाँ जा कर हमारे लिए कुछ
ख़रीद लाओ ताकि हम भूके न मरें।"
3 तब यूसुफ़ के दस भाई अनाज ख़रीदने के लिए
मिस्र गए। 4 लेकिन याक़ूब ने यूसुफ़ के सगे भाई
बिनयमीन को साथ न भेजा, क्यूँकि उस ने कहा,
"ऐसा न हो कि उसे जानी नुक़्सान पहुँचे।" 5 यूँ याक़ूब
के बेटे बहुत सारे और लोगों के साथ मिस्र गए,
क्यूँकि मुल्क-ए-कनआन भी काल की गिरिफ़्त में
था।
6 यूसुफ़ मिस्र के हाकिम की हैसियत से लोगों को
अनाज बेचता था, इस लिए उस के भाई आ कर
उस के सामने मुँह के बल झुक गए। 7 जब यूसुफ़
ने अपने भाइयों को देखा तो उस ने उन्हें पहचान
लिया लेकिन ऐसा किया जैसा उन से नावाक़िफ़ हो
और सख़्ती से उन से बात की, "तुम कहाँ से आए
हो?" उन्हों ने जवाब दिया, "हम मुल्क-ए-कनआन
से अनाज ख़रीदने के लिए आए हैं।" 8 गो यूसुफ़ ने
अपने भाइयों को पहचान लिया, लेकिन उन्हों ने उसे
न पहचाना। 9 उसे वह ख़्वाब याद आए जो उस ने
उन के बारे में देखे थे। उस ने कहा, "तुम जासूस हो।
तुम यह देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन
जगहों पर ग़ैरमह्फ़ूज़ है।"
10 उन्हों ने कहा, "जनाब, हरगिज़ नहीं। आप के
ग़ुलाम ग़ल्ला ख़रीदने आए हैं। 11 हम सब एक ही मर्द
के बेटे हैं। आप के ख़ादिम शरीफ़ लोग हैं, जासूस
नहीं हैं।" 12 लेकिन यूसुफ़ ने इसरार किया, "नहीं,
तुम देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों
पर ग़ैरमह्फ़ूज़ है।"
13 उन्हों ने अर्ज़ की, "आप के ख़ादिम कुल बारह
भाई हैं। हम एक ही आदमी के बेटे हैं जो कनआन में
रहता है। सब से छोटा भाई इस वक़्त हमारे बाप के
पास है जबकि एक मर गया है।" 14 लेकिन यूसुफ़ ने
अपना इल्ज़ाम दुहराया, "ऐसा ही है जैसा मैं ने कहा
है कि तुम जासूस हो। 15 मैं तुम्हारी बातें जाँच लूँगा।
फ़िरऔन की हयात की क़सम, पहले तुम्हारा सब से
छोटा भाई आए, वर्ना तुम इस जगह से कभी नहीं जा
सकोगे। 16 एक भाई को उसे लाने के लिए भेज दो।
बाक़ी सब यहाँ गिरिफ़्तार रहेंगे। फिर पता चलेगा कि
तुम्हारी बातें सच हैं कि नहीं। अगर नहीं तो फ़िरऔन
की हयात की क़सम, इस का मतलब यह होगा कि
तुम जासूस हो।"

17 यह कह कर यूसुफ़ ने उन्हें तीन दिन के लिए
क़ैदख़ाने में डाल दिया। 18 तीसरे दिन उस ने उन से
कहा, “मैं अल्लाह का ख़ौफ़ मानता हूँ, इस लिए तुम
को एक शर्त पर जीता छोड़ूँगा। 19 अगर तुम वाक़ई
शरीफ़ लोग हो तो ऐसा करो कि तुम में से एक यहाँ
क़ैदख़ाने में रहे जबकि बाक़ी सब अनाज ले कर
अपने भूके घर वालों के पास वापस जाएँ। 20 लेकिन
लाज़िम है कि तुम अपने सब से छोटे भाई को मेरे
पास ले आओ। सिर्फ़ इस से तुम्हारी बातें सच साबित
होंगी और तुम मौत से बच जाओगे।”

यूसुफ़ के भाई राज़ी हो गए। 21 वह आपस में कहने
लगे, “बेशक यह हमारे अपने भाई पर ज़ुल्म की सज़ा
है। जब वह इल्तिजा कर रहा था कि मुझ पर रहम
करें तो हम ने उस की बड़ी मुसीबत देख कर भी उस
की न सुनी। इस लिए यह मुसीबत हम पर आ गई
है।” 22 और रूबिन ने कहा, “क्या मैं ने नहीं कहा
था कि लड़के पर ज़ुल्म मत करो, लेकिन तुम ने मेरी
एक न मानी। अब उस की मौत का हिसाब-किताब
किया जा रहा है।”

23 उन्हें मालूम नहीं था कि यूसुफ़ हमारी बातें समझ
सकता है, क्यूँकि वह मुतर्जिम की मारिफ़त उन से
बात करता था। 24 यह बातें सुन कर वह उन्हें छोड़
कर रोने लगा। फिर वह सँभल कर वापस आया।
उस ने शमाऊन को चुन कर उसे उन के सामने ही
बांध लिया।

यूसुफ़ के भाई कनआन वापस जाते हैं

25 यूसुफ़ ने हुक्म दिया कि मुलाज़िम उन की बोरियाँ
अनाज से भर कर हर एक भाई के पैसे उस की बोरी
में वापस रख दें और उन्हें सफ़र के लिए खाना भी
दें। उन्हों ने ऐसा ही किया। 26 फिर यूसुफ़ के भाई
अपने गधों पर अनाज लाद कर रवाना हो गए।

27 जब वह रात के लिए किसी जगह पर ठहरे तो
एक भाई ने अपने गधे के लिए चारा निकालने की
ग़रज़ से अपनी बोरी खोली तो देखा कि बोरी के मुँह
में उस के पैसे पड़े हैं। 28 उस ने अपने भाइयों से
कहा, “मेरे पैसे वापस कर दिए गए हैं! वह मेरी बोरी
में हैं।” यह देख कर उन के होश उड़ गए। काँपते हुए
वह एक दूसरे को देखने और कहने लगे, “यह क्या
है जो अल्लाह ने हमारे साथ किया है?”

29 मुल्क-ए-कनआन में अपने बाप के पास पहुँच
कर उन्हों ने उसे सब कुछ सुनाया जो उन के साथ
हुआ था। उन्हों ने कहा, 30 “उस मुल्क के मालिक
ने बड़ी सख़्ती से हमारे साथ बात की। उस ने हमें
जासूस क़रार दिया। 31 लेकिन हम ने उस से कहा,
‘हम जासूस नहीं बल्कि शरीफ़ लोग हैं। 32 हम बारह
भाई हैं, एक ही बाप के बेटे। एक तो मर गया जबकि
सब से छोटा भाई इस वक़्त कनआन में बाप के पास
है।’ 33 फिर उस मुल्क के मालिक ने हम से कहा, ‘इस
से मुझे पता चलेगा कि तुम शरीफ़ लोग हो कि एक
भाई को मेरे पास छोड़ दो और अपने भूके घर वालों
के लिए ख़ुराक ले कर चले जाओ। 34 लेकिन अपने
सब से छोटे भाई को मेरे पास ले आओ ताकि मुझे
मालूम हो जाए कि तुम जासूस नहीं बल्कि शरीफ़
लोग हो। फिर मैं तुम को तुम्हारा भाई वापस कर
दूँगा और तुम इस मुल्क में आज़ादी से तिजारत कर
सकोगे’।”

35 उन्हों ने अपनी बोरियों से अनाज निकाल दिया
तो देखा कि हर एक की बोरी में उस के पैसों की थैली
रखी हुई है। यह पैसे देख कर वह ख़ुद और उन का
बाप डर गए। 36 उन के बाप ने उन से कहा, “तुम ने
मुझे मेरे बच्चों से महरूम कर दिया है। यूसुफ़ नहीं रहा,
शमाऊन भी नहीं रहा और अब तुम बिनयमीन को भी
मुझ से छीनना चाहते हो। सब कुछ मेरे ख़िलाफ़ है।”
37 फिर रूबिन बोल उठा, “अगर मैं उसे सलामती
से आप के पास वापस न पहुँचाऊँ तो आप मेरे दो
बेटों को सज़ा-ए-मौत दे सकते हैं। उसे मेरे सपुर्द करें
तो मैं उसे वापस ले आऊँगा।” 38 लेकिन याक़ूब ने
कहा, “मेरा बेटा तुम्हारे साथ जाने का नहीं। क्यूँकि
उस का भाई मर गया है और वह अकेला ही रह गया
है। अगर उस को रास्ते में जानी नुक़्सान पहुँचे तो तुम
मुझ बूढ़े को ग़म के मारे पाताल में पहुँचाओगे।”

बिनयमीन के हमराह दूसरा सफ़र

43 1 काल ने ज़ोर पकड़ा। 2 जब मिस्र से लाया
गया अनाज ख़त्म हो गया तो याक़ूब ने
कहा, "अब वापस जा कर हमारे लिए कुछ और ग़ल्ला
ख़रीद लाओ।" 3 लेकिन यहूदाह ने कहा, "उस मर्द
ने सख़्ती से कहा था, 'तुम सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास
आ सकते हो कि तुम्हारा भाई साथ हो।' 4 अगर आप
हमारे भाई को साथ भेजें तो फिर हम जा कर आप के
लिए ग़ल्ला ख़रीदेंगे 5 वर्ना नहीं। क्यूँकि उस आदमी ने
कहा था कि हम सिर्फ़ इस सूरत में उस के पास आ
सकते हैं कि हमारा भाई साथ हो।" 6 याक़ूब ने कहा,
"तुम ने उसे क्यूँ बताया कि हमारा एक और भाई भी
है? इस से तुम ने मुझे बड़ी मुसीबत में डाल दिया
है।" 7 उन्हों ने जवाब दिया, "वह आदमी हमारे और
हमारे ख़ानदान के बारे में पूछता रहा, 'क्या तुम्हारा
बाप अब तक ज़िन्दा है? क्या तुम्हारा कोई और भाई
है?' फिर हमें जवाब देना पड़ा। हमें क्या पता था
कि वह हमें अपने भाई को साथ लाने को कहेगा।"
8 फिर यहूदाह ने बाप से कहा, "लड़के को मेरे साथ
भेज दें तो हम अभी रवाना हो जाएंगे। वर्ना आप,
हमारे बच्चे बल्कि हम सब भूकों मर जाएंगे। 9 मैं ख़ुद
उस का ज़ामिन हूँगा। आप मुझे उस की जान का
ज़िम्मादार ठहरा सकते हैं। अगर मैं उसे सलामती से
वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं ज़िन्दगी के आख़िर तक
क़ुसूरवार ठहरूँगा। 10 जितनी देर तक हम झिजकते
रहे हैं उतनी देर में तो हम दो दफ़ा मिस्र जा कर वापस
आ सकते थे।"

11 तब उन के बाप इस्राईल ने कहा, "अगर और
कोई सूरत नहीं तो इस मुल्क की बेहतरीन पैदावार
में से कुछ तुह्फ़े के तौर पर ले कर उस आदमी को दे
दो यानी कुछ बल्सान, शहद, लादन, मुर, पिस्ता और
बादाम। 12 अपने साथ दुगनी रक़म ले कर जाओ,
क्यूँकि तुम्हें वह पैसे वापस करने हैं जो तुम्हारी
बोरियों में रखे गए थे। शायद किसी से ग़लती हुई
हो। 13 अपने भाई को ले कर सीधे वापस पहुँचना।
14 अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ करे कि यह आदमी तुम
पर रहम करके बिनयमीन और तुम्हारे दूसरे भाई को
वापस भेजे। जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, अगर मुझे
अपने बच्चों से महरूम होना है तो ऐसा ही हो।"

15 चुनाँचे वह तुह्फ़े, दुगनी रक़म और बिनयमीन
को साथ ले कर चल पड़े। मिस्र पहुँच कर वह यूसुफ़
के सामने हाज़िर हुए। 16 जब यूसुफ़ ने बिनयमीन को
उन के साथ देखा तो उस ने अपने घर पर मुक़र्रर
मुलाज़िम से कहा, "इन आदमियों को मेरे घर ले
जाओ ताकि वह दोपहर का खाना मेरे साथ खाएँ।
जानवर को ज़बह करके खाना तय्यार करो।"

17 मुलाज़िम ने ऐसा ही किया और भाइयों को यूसुफ़
के घर ले गया। 18 जब उन्हें उस के घर पहुँचाया जा
रहा था तो वह डर कर सोचने लगे, "हमें उन पैसों के
सबब से यहाँ लाया जा रहा है जो पहली दफ़ा हमारी
बोरियों में वापस किए गए थे। वह हम पर अचानक
हम्ला करके हमारे गधे छीन लेंगे और हमें ग़ुलाम बना
लेंगे।"

19 इस लिए घर के दरवाज़े पर पहुँच कर उन्हों ने घर
पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा, 20 "जनाब-ए-आली,
हमारी बात सुन लीजिए। इस से पहले हम अनाज
ख़रीदने के लिए यहाँ आए थे। 21 लेकिन जब हम
यहाँ से रवाना हो कर रास्ते में रात के लिए ठहरे तो
हम ने अपनी बोरियाँ खोल कर देखा कि हर बोरी के
मुँह में हमारे पैसों की पूरी रक़म पड़ी है। हम यह पैसे
वापस ले आए हैं। 22 नीज़, हम मज़ीद ख़ुराक ख़रीदने
के लिए और पैसे ले आए हैं। ख़ुदा जाने किस ने हमारे
यह पैसे हमारी बोरियों में रख दिए।"

23 मुलाज़िम ने कहा, "फ़िक्र न करें। मत डरें। आप
के और आप के बाप के ख़ुदा ने आप के लिए आप
की बोरियों में यह ख़ज़ाना रखा होगा। बहरहाल मुझे
आप के पैसे मिल गए हैं।"

मुलाज़िम शमाऊन को उन के पास बाहर ले आया।
24 फिर उस ने भाइयों को यूसुफ़ के घर में ले जा कर
उन्हें पाँओ धोने के लिए पानी और गधों को चारा
दिया। 25 उन्हों ने अपने तुह्फ़े तय्यार रखे, क्यूँकि

उन्हें बताया गया, “यूसुफ़ दोपहर का खाना आप के
साथ ही खाएगा।”
26 जब यूसुफ़ घर पहुँचा तो वह अपने तुह्फ़े ले कर
उस के सामने आए और मुँह के बल झुक गए। 27 उस
ने उन से ख़ैरियत दरयाफ़्त की और फिर कहा, “तुम
ने अपने बूढ़े बाप का ज़िक्र किया। क्या वह ठीक
हैं? क्या वह अब तक ज़िन्दा हैं?” 28 उन्हों ने जवाब
दिया, “जी, आप के ख़ादिम हमारे बाप अब तक
ज़िन्दा हैं।” वह दुबारा मुँह के बल झुक गए।
29 जब यूसुफ़ ने अपने सगे भाई बिनयमीन को देखा
तो उस ने कहा, “क्या यह तुम्हारा सब से छोटा भाई
है जिस का तुम ने ज़िक्र किया था? बेटा, अल्लाह की
नज़र-ए-करम तुम पर हो।” 30 यूसुफ़ अपने भाई को
देख कर इतना मुतअस्सिर हुआ कि वह रोने को था,
इस लिए वह जल्दी से वहाँ से निकल कर अपने सोने
के कमरे में गया और रो पड़ा। 31 फिर वह अपना मुँह
धो कर वापस आया। अपने आप पर क़ाबू पा कर
उस ने हुक्म दिया कि नौकर खाना ले आएँ।
32 नौकरों ने यूसुफ़ के लिए खाने का अलग
इन्तिज़ाम किया और भाइयों के लिए अलग। मिस्रियों
के लिए भी खाने का अलग इन्तिज़ाम था, क्यूँकि
इब्रानियों के साथ खाना खाना उन की नज़र में
क़ाबिल-ए-नफ़रत था। 33 भाइयों को उन की उम्र की
तर्तीब के मुताबिक़ यूसुफ़ के सामने बिठाया गया।
यह देख कर भाई निहायत हैरान हुए। 34 नौकरों ने
उन्हें यूसुफ़ की मेज़ पर से खाना ले कर खिलाया।
लेकिन बिनयमीन को दूसरों की निस्बत पाँच गुना
ज़्यादा मिला। यूँ उन्हों ने यूसुफ़ के साथ जी भर कर
खाया और पिया।

गुमशुदा प्याला

44 1 यूसुफ़ ने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम को
हुक्म दिया, “उन मर्दों की बोरियाँ ख़ुराक
से इतनी भर देना जितनी वह उठा कर ले जा सकें। हर
एक के पैसे उस की अपनी बोरी के मुँह में रख देना।
2 सब से छोटे भाई की बोरी में न सिर्फ़ पैसे बल्कि
मेरे चाँदी के प्याले को भी रख देना।” मुलाज़िम ने
ऐसा ही किया।
3 अगली सुब्ह जब पौ फटने लगी तो भाइयों को
उन के गधों समेत रुख़्सत कर दिया गया। 4 वह अभी
शहर से निकल कर दूर नहीं गए थे कि यूसुफ़ ने अपने
घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा, “जल्दी करो। उन
आदमियों का ताक़्क़ुब करो। उन के पास पहुँच कर
यह पूछना, ‘आप ने हमारी भलाई के जवाब में ग़लत
काम क्यूँ किया है? 5 आप ने मेरे मालिक का चाँदी
का प्याला क्यूँ चुराया है? उस से वह न सिर्फ़ पीते हैं
बल्कि उसे ग़ैबदानी के लिए भी इस्तेमाल करते हैं।
आप एक निहायत संगीन जुर्म के मुर्तकिब हुए हैं’।”
6 जब मुलाज़िम भाइयों के पास पहुँचा तो उस ने उन
से यही बातें कीं। 7 जवाब में उन्हों ने कहा, “हमारे
मालिक ऐसी बातें क्यूँ करते हैं? कभी नहीं हो सकता
कि आप के ख़ादिम ऐसा करें। 8 आप तो जानते हैं
कि हम मुल्क-ए-कनआन से वह पैसे वापस ले आए
जो हमारी बोरियों में थे। तो फिर हम क्यूँ आप के
मालिक के घर से चाँदी या सोना चुराएँगे? 9 अगर वह
आप के ख़ादिमों में से किसी के पास मिल जाए तो
उसे मार डाला जाए और बाक़ी सब आप के ग़ुलाम
बनें।”
10 मुलाज़िम ने कहा, “ठीक है ऐसा ही होगा।
लेकिन सिर्फ़ वही मेरा ग़ुलाम बनेगा जिस ने प्याला
चुराया है। बाक़ी सब आज़ाद हैं।” 11 उन्हों ने जल्दी
से अपनी बोरियाँ उतार कर ज़मीन पर रख दीं। हर
एक ने अपनी बोरी खोल दी। 12 मुलाज़िम बोरियों
की तलाशी लेने लगा। वह बड़े भाई से शुरू करके
आख़िरकार सब से छोटे भाई तक पहुँच गया। और
वहाँ बिनयमीन की बोरी में से प्याला निकला।
13 भाइयों ने यह देख कर परेशानी में अपने लिबास
फाड़ लिए। वह अपने गधों को दुबारा लाद कर शहर
वापस आ गए।
14 जब यहूदाह और उस के भाई यूसुफ़ के घर पहुँचे
तो वह अभी वहीं था। वह उस के सामने मुँह के बल
गिर गए। 15 यूसुफ़ ने कहा, “यह तुम ने क्या किया

है? क्या तुम नहीं जानते कि मुझ जैसा आदमी ग़ैब
का इल्म रखता है?” 16 यहूदाह ने कहा, “जनाब-ए-
आली, हम क्या कहें? अब हम अपने दिफ़ा में क्या
कहें? अल्लाह ही ने हमें क़ुसूरवार ठहराया है। अब
हम सब आप के ग़ुलाम हैं, न सिर्फ़ वह जिस के पास
से प्याला मिल गया।” 17 यूसुफ़ ने कहा, “अल्लाह न
करे कि मैं ऐसा करूँ, बल्कि सिर्फ़ वही मेरा ग़ुलाम
होगा जिस के पास प्याला था। बाक़ी सब सलामती
से अपने बाप के पास वापस चले जाएँ।”

यहूदाह बिनयमीन की सिफ़ारिश करता है

18 लेकिन यहूदाह ने यूसुफ़ के क़रीब आ कर कहा,
“मेरे मालिक, मेहरबानी करके अपने बन्दे को एक
बात करने की इजाज़त दें। मुझ पर ग़ुस्सा न करें
अगरचे आप मिस्र के बादशाह जैसे हैं। 19 जनाब-ए-
आली, आप ने हम से पूछा, ‘क्या तुम्हारा बाप या
कोई और भाई है?’ 20 हम ने जवाब दिया, ‘हमारा
बाप है। वह बूढ़ा है। हमारा एक छोटा भाई भी है जो
उस वक़्त पैदा हुआ जब हमारा बाप उम्ररसीदा था।
उस लड़के का भाई मर चुका है। उस की माँ के सिर्फ़
यह दो बेटे पैदा हुए। अब वह अकेला ही रह गया है।
उस का बाप उसे शिद्दत से प्यार करता है।’ 21 जनाब-
ए-आली, आप ने हमें बताया, ‘उसे यहाँ ले आओ
ताकि मैं ख़ुद उसे देख सकूँ।’ 22 हम ने जवाब दिया,
‘यह लड़का अपने बाप को छोड़ नहीं सकता, वर्ना
उस का बाप मर जाएगा।’ 23 फिर आप ने कहा, ‘तुम
सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास आ सकोगे कि तुम्हारा
सब से छोटा भाई तुम्हारे साथ हो।’ 24 जब हम अपने
बाप के पास वापस पहुँचे तो हम ने उन्हें सब कुछ
बताया जो आप ने कहा था। 25 फिर उन्हों ने हम से
कहा, ‘मिस्र लौट कर कुछ ग़ल्ला ख़रीद लाओ।’ 26 हम
ने जवाब दिया, ‘हम जा नहीं सकते। हम सिर्फ़ इस
सूरत में उस मर्द के पास जा सकते हैं कि हमारा
सब से छोटा भाई साथ हो। हम तब ही जा सकते हैं
जब वह भी हमारे साथ चले।’ 27 हमारे बाप ने हम
से कहा, ‘तुम जानते हो कि मेरी बीवी राख़िल से मेरे
दो बेटे पैदा हुए। 28 पहला मुझे छोड़ चुका है। किसी
जंगली जानवर ने उसे फाड़ खाया होगा, क्यूँकि उसी
वक़्त से मैं ने उसे नहीं देखा। 29 अगर इस को भी मुझ
से ले जाने की वजह से जानी नुक़्सान पहुँचे तो तुम
मुझ बूढ़े को ग़म के मारे पाताल में पहुँचाओगे’।”

30–31 यहूदाह ने अपनी बात जारी रखी, “जनाब-ए-
आली, अब अगर मैं अपने बाप के पास जाऊँ और
वह देखें कि लड़का मेरे साथ नहीं है तो वह दम तोड़
देंगे। उन की ज़िन्दगी इस क़दर लड़के की ज़िन्दगी
पर मुन्हसिर है और वह इतने बूढ़े हैं कि हम ऐसी
हरकत से उन्हें क़ब्र तक पहुँचा देंगे। 32 न सिर्फ़ यह
बल्कि मैं ने बाप से कहा, ‘मैं ख़ुद इस का ज़ामिन
हूँगा। अगर मैं इसे सलामती से वापस न पहुँचाऊँ तो
फिर मैं ज़िन्दगी के आख़िर तक क़ुसूरवार ठहरूँगा।’
33 अब अपने ख़ादिम की गुज़ारिश सुनें। मैं यहाँ रह
कर इस लड़के की जगह ग़ुलाम बन जाता हूँ, और
वह दूसरे भाइयों के साथ वापस चला जाए 34 अगर
लड़का मेरे साथ न हुआ तो मैं किस तरह अपने बाप
को मुँह दिखा सकता हूँ? मैं बर्दाश्त नहीं कर सकूँगा
कि वह इस मुसीबत में मुब्तला हो जाएँ।”

यूसुफ़ अपने आप को ज़ाहिर करता है

45 1 यह सुन कर यूसुफ़ अपने आप पर क़ाबू
न रख सका। उस ने ऊँची आवाज़ से हुक्म
दिया कि तमाम मुलाज़िम कमरे से निकल जाएँ। कोई
और शख़्स कमरे में नहीं था जब यूसुफ़ ने अपने
भाइयों को बताया कि वह कौन है। 2 वह इतने ज़ोर
से रो पड़ा कि मिस्रियों ने उस की आवाज़ सुनी और
फ़िरऔन के घराने को पता चल गया। 3 यूसुफ़ ने
अपने भाइयों से कहा, “मैं यूसुफ़ हूँ। क्या मेरा बाप
अब तक ज़िन्दा है?”

लेकिन उस के भाई यह सुन कर इतने घबरा गए
कि वह जवाब न दे सके।

4 फिर यूसुफ़ ने कहा, “मेरे क़रीब आओ।” वह
क़रीब आए तो उस ने कहा, “मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़
हूँ जिसे तुम ने बेच कर मिस्र भिजवाया। 5 अब

मेरी बात सुनो। न घबराओ और न अपने आप को
इल्ज़ाम दो कि हम ने यूसुफ़ को बेच दिया। असल में
अल्लाह ने ख़ुद मुझे तुम्हारे आगे यहाँ भेज दिया ताकि
हम सब बचे रहें। 6 यह काल का दूसरा साल है।
पाँच और साल के दौरान न हल चलेगा, न फ़सल
कटेगी। 7 अल्लाह ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा ताकि
दुनिया में तुम्हारा एक बचा-खुचा हिस्सा महफ़ूज़ रहे
और तुम्हारी जान एक बड़ी मख़्लसी की मारिफ़त
छूट जाए 8 चुनाँचे तुम ने मुझे यहाँ नहीं भेजा बल्कि
अल्लाह ने। उस ने मुझे फ़िरऔन का बाप, उस के पूरे
घराने का मालिक और मिस्र का हाकिम बना दिया
है। 9 अब जल्दी से मेरे बाप के पास वापस जा कर
उन से कहो, 'आप का बेटा यूसुफ़ आप को इत्तिला
देता है कि अल्लाह ने मुझे मिस्र का मालिक बना दिया
है। मेरे पास आ जाएँ, देर न करें। 10 आप जुशन के
इलाक़े में रह सकते हैं। वहाँ आप मेरे क़रीब होंगे,
आप, आप की आल-ओ-औलाद, गाय-बैल, भेड़-
बकरियाँ और जो कुछ भी आप का है। 11 वहाँ मैं
आप की ज़रूरियात पूरी करूँगा, क्यूँकि काल को
अभी पाँच साल और लगेंगे। वर्ना आप, आप के घर
वाले और जो भी आप के हैं बदहाल हो जाएंगे।'
12 तुम ख़ुद और मेरा भाई बिनयमीन देख सकते हो
कि मैं यूसुफ़ ही हूँ जो तुम्हारे साथ बात कर रहा हूँ।
13 मेरे बाप को मिस्र में मेरे असर-ओ-रसूख़ के बारे
में इत्तिला दो। उन्हें सब कुछ बताओ जो तुम ने देखा
है। फिर जल्द ही मेरे बाप को यहाँ ले आओ।"

14 यह कह कर वह अपने भाई बिनयमीन को गले
लगा कर रो पड़ा। बिनयमीन भी उस के गले लग
कर रोने लगा। 15 फिर यूसुफ़ ने रोते हुए अपने हर
एक भाई को बोसा दिया। इस के बाद उस के भाई
उस के साथ बातें करने लगे।

16 जब यह ख़बर बादशाह के महल तक पहुँची कि
यूसुफ़ के भाई आए हैं तो फ़िरऔन और उस के तमाम
अफ़सरान ख़ुश हुए। 17 उस ने यूसुफ़ से कहा, "अपने
भाइयों को बता कि अपने जानवरों पर ग़ल्ला लाद कर
मुल्क-ए-कनआन वापस चले जाओ। 18 वहाँ अपने
बाप और ख़ानदानों को ले कर मेरे पास आ जाओ।
मैं तुम को मिस्र की सब से अच्छी ज़मीन दे दूँगा,
और तुम इस मुल्क की बेहतरीन पैदावार खा सकोगे।
19 उन्हें यह हिदायत भी दे कि अपने बाल-बच्चों के
लिए मिस्र से गाड़ियाँ ले जाओ और अपने बाप को भी
बिठा कर यहाँ ले आओ। 20 अपने माल की ज़्यादा
फ़िक्र न करो, क्यूँकि तुम्हें मुल्क-ए-मिस्र का बेहतरीन
माल मिलेगा।"

21 यूसुफ़ के भाइयों ने ऐसा ही किया। यूसुफ़ ने उन्हें
बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ गाड़ियाँ और सफ़र के
लिए ख़ुराक दी। 22 उस ने हर एक भाई को कपड़ों
का एक जोड़ा भी दिया। लेकिन बिनयमीन को उस
ने चाँदी के 300 सिक्के और पाँच जोड़े दिए। 23 उस
ने अपने बाप को दस गधे भिजवा दिए जो मिस्र के
बेहतरीन माल से लदे हुए थे और दस गधियाँ जो
अनाज, रोटी और बाप के सफ़र के लिए खाने से
लदी हुई थीं। 24 यूँ उस ने अपने भाइयों को रुख़्सत
करके कहा, "रास्ते में झगड़ा न करना।"

25 वह मिस्र से रवाना हो कर मुल्क-ए-कनआन में
अपने बाप के पास पहुँचे। 26 उन्हों ने उस से कहा,
"यूसुफ़ ज़िन्दा है! वह पूरे मिस्र का हाकिम है।"
लेकिन याक़ूब हक्का-बक्का रह गया, क्यूँकि उसे यक़ीन
न आया। 27 ताहम उन्हों ने उसे सब कुछ बताया जो
यूसुफ़ ने उन से कहा था, और उस ने ख़ुद वह गाड़ियाँ
देखीं जो यूसुफ़ ने उसे मिस्र ले जाने के लिए भिजवा
दी थीं। फिर याक़ूब की जान में जान आ गई, 28 और
उस ने कहा, "मेरा बेटा यूसुफ़ ज़िन्दा है! यही काफ़ी
है। मरने से पहले मैं जा कर उस से मिलूँगा।"

याक़ूब मिस्र जाता है

46 1 याक़ूब सब कुछ ले कर रवाना हुआ और
बैर-सबा पहुँचा। वहाँ उस ने अपने बाप
इस्हाक़ के ख़ुदा के हुज़ूर क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं। 2 रात को
अल्लाह रोया में उस से हमकलाम हुआ। उस ने कहा,
"याक़ूब, याक़ूब!" याक़ूब ने जवाब दिया, "जी, मैं
हाज़िर हूँ।" 3 अल्लाह ने कहा, "मैं अल्लाह हूँ, तेरे बाप

इस्हाक़ का ख़ुदा। मिस्र जाने से मत डर, क्यूँकि वहाँ
मैं तुझ से एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा। 4 मैं तेरे साथ
मिस्र जाऊँगा और तुझे इस मुल्क में वापस भी ले
आऊँगा। जब तू मरेगा तो यूसुफ़ ख़ुद तेरी आँखें बन्द
करेगा।"

5 इस के बाद याक़ूब बैर-सबा से रवाना हुआ। उस
के बेटों ने उसे और अपने बाल-बच्चों को उन गाड़ियों
में बिठा दिया जो मिस्र के बादशाह ने भिजवाई थीं।
6 यूँ याक़ूब और उस की तमाम औलाद अपने मवेशी
और कनआन में हासिल किया हुआ माल ले कर
मिस्र चले गए। 7 याक़ूब के बेटे-बेटियाँ, पोते-पोतियाँ
और बाक़ी औलाद सब साथ गए।

8 इस्राईल की औलाद के नाम जो मिस्र चली गई
यह हैं :

याक़ूब के पहलौठे रूबिन 9 के बेटे हनूक, फ़ल्लू,
हस्रोन और कर्मी थे। 10 शमाऊन के बेटे यमूएल,
यमीन, उहद, यकीन, सुहर और साऊल थे (साऊल
कनआनी औरत का बच्चा था)। 11 लावी के बेटे
जैर्सोन, क़िहात और मिरारी थे। 12 यहूदाह के बेटे एर,
ओनान, सेला, फ़ारस और ज़ारह थे (एर और ओनान
कनआन में मर चुके थे)। फ़ारस के दो बेटे हस्रोन
और हमूल थे। 13 इश्कार के बेटे तोला, फ़ुव्वा, योब
और सिम्रोन थे। 14 ज़बूलून के बेटे सरद, ऐलोन और
यहलीएल थे। 15 इन बेटों की माँ लियाह थी, और
वह मसोपुतामिया में पैदा हुए। इन के इलावा दीना
उस की बेटी थी। कुल 33 मर्द लियाह की औलाद
थे।

16 जद के बेटे सिफ़्यान, हज्जी, सूनी, इस्बून, एरी,
अरूदी और अरेली थे। 17 आशर के बेटे यिम्ना,
इस्वाह, इस्वी और बरीआ थे। आशर की बेटी सिरह
थी, और बरीआ के दो बेटे थे, हिबर और मल्कीएल।
18 कुल 16 अफ़राद ज़िल्फ़ा की औलाद थे जिसे
लाबन ने अपनी बेटी लियाह को दिया था।

19 राख़िल के बेटे यूसुफ़ और बिनयमीन थे।
20 यूसुफ़ के दो बेटे मनस्सी और इफ़्राईम मिस्र में
पैदा हुए। उन की माँ ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा की
बेटी आसनत थी। 21 बिनयमीन के बेटे बाला, बकर,
अश्बेल, जीरा, नामान, इख़ी, रोस, मुफ़्फ़ीम, हुफ़्फ़ीम
और अर्द थे। 22 कुल 14 मर्द राख़िल की औलाद थे।

23 दान का बेटा हुशीम था। 24 नफ़्ताली के बेटे
यहसीएल, जूनी, यिसर और सिल्लीम थे। 25 कुल 7
मर्द बिल्हाह की औलाद थे जिसे लाबन ने अपनी
बेटी राख़िल को दिया था।

26 याक़ूब की औलाद के 66 अफ़राद उस के साथ
मिस्र चले गए। इस तादाद में बेटों की बीवियाँ
शामिल नहीं थीं। 27 जब हम याक़ूब, यूसुफ़ और उस
के दो बेटे इन में शामिल करते हैं तो याक़ूब के घराने
के 70 अफ़राद मिस्र गए।

याक़ूब और उस का ख़ानदान मिस्र में

28 याक़ूब ने यहूदाह को अपने आगे यूसुफ़ के पास
भेजा ताकि वह जुशन में उन से मिले। जब वह वहाँ
पहुँचे 29 तो यूसुफ़ अपने रथ पर सवार हो कर अपने
बाप से मिलने के लिए जुशन गया। उसे देख कर वह
उस के गले लग कर काफ़ी देर रोता रहा। 30 याक़ूब
ने यूसुफ़ से कहा, "अब मैं मरने के लिए तय्यार हूँ,
क्यूँकि मैं ने ख़ुद देखा है कि तू ज़िन्दा है।"

31 फिर यूसुफ़ ने अपने भाइयों और अपने बाप के
ख़ानदान के बाक़ी अफ़राद से कहा, "ज़रूरी है कि मैं
जा कर बादशाह को इत्तिला दूँ कि मेरे भाई और मेरे
बाप का पूरा ख़ानदान जो कनआन के रहने वाले हैं
मेरे पास आ गए हैं। 32 मैं उस से कहूँगा, 'यह आदमी
भेड़-बकरियों के चरवाहे हैं। वह मवेशी पालते हैं, इस
लिए अपनी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और बाक़ी सारा
माल अपने साथ ले आए हैं।' 33 बादशाह तुम्हें बुला
कर पूछेगा कि तुम क्या काम करते हो? 34 फिर तुम
को जवाब देना है, 'आप के ख़ादिम बचपन से मवेशी
पालते आए हैं। यह हमारे बापदादा का पेशा था और
हमारा भी है।' अगर तुम यह कहो तो तुम्हें जुशन में
रहने की इजाज़त मिलेगी। क्यूँकि भेड़-बकरियों के
चरवाहे मिस्रियों की नज़र में क़ाबिल-ए-नफ़रत हैं।"

47 1 यूसुफ़ फ़िरऔन के पास गया और उसे
इत्तिला दे कर कहा, “मेरा बाप और भाई
अपनी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और सारे माल समेत
मुल्क-ए-कनआन से आ कर जुशन में ठहरे हुए हैं।”
2 उस ने अपने भाइयों में से पाँच को चुन कर फ़िरऔन
के सामने पेश किया। 3 फ़िरऔन ने भाइयों से पूछा,
“तुम क्या काम करते हो?” उन्हों ने जवाब दिया,
“आप के ख़ादिम भेड़-बकरियों के चरवाहे हैं। यह
हमारे बापदादा का पेशा था और हमारा भी है। 4 हम
यहाँ आए हैं ताकि कुछ देर अजनबी की हैसियत से
आप के पास ठहरें, क्यूँकि काल ने कनआन में बहुत
ज़ोर पकड़ा है। वहाँ आप के ख़ादिमों के जानवरों के
लिए चरागाहें ख़त्म हो गई हैं। इस लिए हमें जुशन में
रहने की इजाज़त दें।”

5 बादशाह ने यूसुफ़ से कहा, “तेरा बाप और भाई
तेरे पास आ गए हैं। 6 मुल्क-ए-मिस्र तेरे सामने खुला
है। उन्हें बेहतरीन जगह पर आबाद कर। वह जुशन
में रहें। और अगर उन में से कुछ हैं जो ख़ास
क़ाबिलियत रखते हैं तो उन्हें मेरे मवेशियों की
निगहदाशत पर रख।”

7 फिर यूसुफ़ अपने बाप याक़ूब को ले आया और
फ़िरऔन के सामने पेश किया। याक़ूब ने बादशाह को
बरकत दी। 8 बादशाह ने उस से पूछा, “तुम्हारी उम्र
क्या है?” 9 याक़ूब ने जवाब दिया, “मैं 130 साल से
इस दुनिया का मेहमान हूँ। मेरी ज़िन्दगी मुख़्तसर और
तक्लीफ़दिह थी, और मेरे बापदादा मुझ से ज़्यादा
उम्ररसीदा हुए थे जब वह इस दुनिया के मेहमान थे।”
10 यह कह कर याक़ूब फ़िरऔन को दुबारा बरकत
दे कर चला गया।

11 फिर यूसुफ़ ने अपने बाप और भाइयों को मिस्र
में आबाद किया। उस ने उन्हें रामसीस के इलाक़े में
बेहतरीन ज़मीन दी जिस तरह बादशाह ने हुक्म दिया
था। 12 यूसुफ़ अपने बाप के पूरे घराने को ख़ुराक
मुहय्या करता रहा। हर ख़ानदान को उस के बच्चों
की तादाद के मुताबिक़ ख़ुराक मिलती रही।

काल का सख़्त असर

13 काल इतना सख़्त था कि कहीं भी रोटी नहीं
मिलती थी। मिस्र और कनआन में लोग निढाल हो
गए।

14 मिस्र और कनआन के तमाम पैसे अनाज ख़रीदने
के लिए सर्फ़ हो गए। यूसुफ़ उन्हें जमा करके
फ़िरऔन के महल में ले आया। 15 जब मिस्र और
कनआन के पैसे ख़त्म हो गए तो मिस्रियों ने यूसुफ़ के
पास आ कर कहा, “हमें रोटी दें! हम आप के सामने
क्यूँ मरें? हमारे पैसे ख़त्म हो गए हैं।” 16 यूसुफ़ ने
जवाब दिया, “अगर आप के पैसे ख़त्म हैं तो मुझे
अपने मवेशी दें। मैं उन के इवज़ रोटी देता हूँ।”
17 चुनाँचे वह अपने घोड़े, भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल
और गधे यूसुफ़ के पास ले आए। इन के इवज़ उस
ने उन्हें ख़ुराक दी। उस साल उस ने उन्हें उन के तमाम
मवेशियों के इवज़ ख़ुराक मुहय्या की।

18 अगले साल वह दुबारा उस के पास आए। उन्हों
ने कहा, “जनाब-ए-आली, हम यह बात आप से नहीं
छुपा सकते कि अब हम सिर्फ़ अपने आप और अपनी
ज़मीन को आप को दे सकते हैं। हमारे पैसे तो ख़त्म
हैं और आप हमारे मवेशी भी ले चुके हैं। 19 हम क्यूँ
आप की आँखों के सामने मर जाएँ? हमारी ज़मीन
क्यूँ तबाह हो जाए? हमें रोटी दें तो हम और हमारी
ज़मीन बादशाह की होगी। हम फ़िरऔन के ग़ुलाम
होंगे। हमें बीज दें ताकि हम जीते बचें और ज़मीन
तबाह न हो जाए।”

20 चुनाँचे यूसुफ़ ने फ़िरऔन के लिए मिस्र की पूरी
ज़मीन ख़रीद ली। काल की सख़्ती के सबब से तमाम
मिस्रियों ने अपने खेत बेच दिए। इस तरीक़े से पूरा
मुल्क फ़िरऔन की मिलकियत में आ गया। 21 यूसुफ़
ने मिस्र के एक सिरे से दूसरे सिरे तक के लोगों को
शहरों में मुन्तक़िल कर दिया। 22 सिर्फ़ पुजारियों की
ज़मीन आज़ाद रही। उन्हें अपनी ज़मीन बेचने की
ज़रूरत ही नहीं थी, क्यूँकि उन्हें फ़िरऔन से इतना
वज़ीफ़ा मिलता था कि गुज़ारा हो जाता था।

23 यूसुफ़ ने लोगों से कहा, “ग़ौर से सुनें। आज मैं ने
आप को और आप की ज़मीन को बादशाह के लिए
ख़रीद लिया है। अब यह बीज ले कर अपने खेतों में
बोना। 24 आप को फ़िरऔन को फ़सल का पाँचवाँ
हिस्सा देना है। बाक़ी पैदावार आप की होगी। आप
इस से बीज बो सकते हैं, और यह आप के और
आप के घरानों और बच्चों के खाने के लिए होगा।”
25 उन्हों ने जवाब दिया, “आप ने हमें बचाया है।
हमारे मालिक हम पर मेहरबानी करें तो हम फ़िरऔन
के ग़ुलाम बनेंगे।”
26 इस तरह यूसुफ़ ने मिस्र में यह क़ानून नाफ़िज़
किया कि हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा बादशाह का
है। यह क़ानून आज तक जारी है। सिर्फ़ पुजारियों की
ज़मीन बादशाह की मिलकियत में न आई।

याक़ूब की आख़िरी गुज़ारिश

27 इस्राईली मिस्र में जुशन के इलाक़े में आबाद
हुए। वहाँ उन्हें ज़मीन मिली, और वह फले फूले और
तादाद में बहुत बढ़ गए।
28 याक़ूब 17 साल मिस्र में रहा। वह 147 साल
का था जब फ़ौत हुआ। 29 जब मरने का वक़्त क़रीब
आया तो उस ने यूसुफ़ को बुला कर कहा, “मेहरबानी
करके अपना हाथ मेरी रान के नीचे रख कर क़सम
खा कि तू मुझ पर शफ़क़त और वफ़ादारी का इस
तरह इज़हार करेगा कि मुझे मिस्र में दफ़न नहीं
करेगा। 30 जब मैं मर कर अपने बापदादा से जा
मिलूँगा तो मुझे मिस्र से ले जा कर मेरे बापदादा
की क़ब्र में दफ़नाना।” यूसुफ़ ने जवाब दिया, “ठीक
है।” 31 याक़ूब ने कहा, “क़सम खा कि तू ऐसा ही
करेगा।” यूसुफ़ ने क़सम खाई। तब इस्राईल ने अपने
बिस्तर के सिरहाने पर अल्लाह को सिज्दा किया।

याक़ूब इफ़्राईम और मनस्सी को बरकत देता है

48 1 कुछ देर के बाद यूसुफ़ को इत्तिला दी गई
कि आप का बाप बीमार है। वह अपने दो
बेटों मनस्सी और इफ़्राईम को साथ ले कर याक़ूब से
मिलने गया।
2 याक़ूब को बताया गया, “आप का बेटा आ
गया है” तो वह अपने आप को सँभाल कर अपने
बिस्तर पर बैठ गया। 3 उस ने यूसुफ़ से कहा, “जब
मैं कनआनी शहर लूज़ में था तो अल्लाह क़ादिर-ए-
मुतलक़ मुझ पर ज़ाहिर हुआ। उस ने मुझे बरकत
दे कर 4 कहा, ‘मैं तुझे फलने फूलने दूँगा और तेरी
औलाद बढ़ा दूँगा बल्कि तुझ से बहुत सी क़ौमें
निकलने दूँगा। और मैं तेरी औलाद को यह मुल्क
हमेशा के लिए दे दूँगा।’ 5 अब मेरी बात सुन। मैं
चाहता हूँ कि तेरे बेटे जो मेरे आने से पहले मिस्र
में पैदा हुए मेरे बेटे हों। इफ़्राईम और मनस्सी रूबिन
और शमाऊन के बराबर ही मेरे बेटे हों। 6 अगर इन
के बाद तेरे हाँ और बेटे पैदा हो जाएँ तो वह मेरे बेटे
नहीं बल्कि तेरे ठहरेंगे। जो मीरास वह पाएँगे वह
उन्हें इफ़्राईम और मनस्सी की मीरास में से मिलेगी।
7 मैं यह तेरी माँ राख़िल के सबब से कर रहा हूँ जो
मसोपुतामिया से वापसी के वक़्त कनआन में इफ़्राता
के क़रीब मर गई। मैं ने उसे वहीं रास्ते में दफ़न
किया” (आज इफ़्राता को बैत-लहम कहा जाता है)।
8 फिर याक़ूब ने यूसुफ़ के बेटों पर नज़र डाल कर
पूछा, “यह कौन हैं?” 9 यूसुफ़ ने जवाब दिया, “यह
मेरे बेटे हैं जो अल्लाह ने मुझे यहाँ मिस्र में दिए।”
याक़ूब ने कहा, “उन्हें मेरे क़रीब ले आ ताकि मैं
उन्हें बरकत दूँ।” 10 बूढ़ा होने के सबब से याक़ूब
की आँखें कमज़ोर थीं। वह अच्छी तरह देख नहीं
सकता था। यूसुफ़ अपने बेटों को याक़ूब के पास
ले आया तो उस ने उन्हें बोसा दे कर गले लगाया
11 और यूसुफ़ से कहा, “मुझे तवक़्क़ो ही नहीं थी
कि मैं कभी तेरा चिहरा देखूँगा, और अब अल्लाह ने
मुझे तेरे बेटों को देखने का मौक़ा भी दिया है।”
12 फिर यूसुफ़ उन्हें याक़ूब की गोद में से ले कर
ख़ुद उस के सामने मुँह के बल झुक गया। 13 यूसुफ़
ने इफ़्राईम को याक़ूब के बाएँ हाथ रखा और मनस्सी
को उस के दाएँ हाथ। 14 लेकिन याक़ूब ने अपना

दहना हाथ बाईं तरफ़ बढ़ा कर इफ़्राईम के सर पर
रखा अगरचे वह छोटा था। इस तरह उस ने अपना
बायाँ हाथ दाईं तरफ़ बढ़ा कर मनस्सी के सर पर
रखा जो बड़ा था। 15 फिर उस ने यूसुफ़ को उस के
बेटों की मारिफ़त बरकत दी, "अल्लाह जिस के हुज़ूर
मेरे बापदादा इब्राहीम और इस्हाक़ चलते रहे और जो
शुरू से आज तक मेरा चरवाहा रहा है इन्हें बरकत दे।
16 जिस फ़रिश्ते ने इवज़ाना दे कर मुझे हर नुक़्सान से
बचाया है वह इन्हें बरकत दे। अल्लाह करे कि इन में
मेरा नाम और मेरे बापदादा इब्राहीम और इस्हाक़ के
नाम जीते रहें। दुनिया में इन की औलाद की तादाद
बहुत बढ़ जाए।"

17 जब यूसुफ़ ने देखा कि बाप ने अपना दहना हाथ
छोटे बेटे इफ़्राईम के सर पर रखा है तो यह उसे बुरा
लगा, इस लिए उस ने बाप का हाथ पकड़ा ताकि
उसे इफ़्राईम के सर पर से उठा कर मनस्सी के सर
पर रखे। 18 उस ने कहा, "अब्बू, ऐसे नहीं। दूसरा
लड़का बड़ा है। उसी पर अपना दहना हाथ रखें।"
19 लेकिन बाप ने इन्कार करके कहा, "मुझे पता है
बेटा, मुझे पता है। वह भी एक बड़ी क़ौम बनेगा।
फिर भी उस का छोटा भाई उस से बड़ा होगा और
उस से क़ौमों की बड़ी तादाद निकलेगी।"

20 उस दिन उस ने दोनों बेटों को बरकत दे कर
कहा, "इस्राईली तुम्हारा नाम ले कर बरकत दिया
करेंगे। जब वह बरकत देंगे तो कहेंगे, 'अल्लाह आप
के साथ वैसा करे जैसा उस ने इफ़्राईम और मनस्सी
के साथ किया है'।" इस तरह याक़ूब ने इफ़्राईम को
मनस्सी से बड़ा बना दिया। 21 यूसुफ़ से उस ने कहा,
"मैं तो मरने वाला हूँ, लेकिन अल्लाह तुम्हारे साथ
होगा और तुम्हें तुम्हारे बापदादा के मुल्क में वापस ले
जाएगा। 22 एक बात में मैं तुझे तेरे भाइयों पर तर्जीह
देता हूँ, मैं तुझे कनआन में वह क़ितआ देता हूँ जो मैं
ने अपनी तलवार और कमान से अमोरियों से छीना
था।"

याक़ूब अपने बेटों को बरकत देता है

49 1 याक़ूब ने अपने बेटों को बुला कर कहा,
"मेरे पास जमा हो जाओ ताकि मैं तुम्हें
बताऊँ कि मुस्तक़बिल में तुम्हारे साथ क्या क्या
होगा। 2 ऐ याक़ूब के बेटो, इकट्ठे हो कर सुनो, अपने
बाप इस्राईल की बातों पर ग़ौर करो।

3 रूबिन, तुम मेरे पहलौठे हो, मेरे ज़ोर और मेरी
ताक़त का पहला फल। तुम इज़्ज़त और क़ुव्वत
के लिहाज़ से बरतर हो। 4 लेकिन चूँकि तुम बेकाबू
सैलाब की मानिन्द हो इस लिए तुम्हारी अव्वल
हैसियत जाती रहे। क्यूँकि तुम ने मेरी हरम से
हमबिसतर हो कर अपने बाप की बेहुरमती की है।

5 शमाऊन और लावी दोनों भाइयों की तलवारें
ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद के हथियार रहे हैं। 6 मेरी जान न
उन की मजलिस में शामिल और न उन की जमाअत
में दाख़िल हो, क्यूँकि उन्हों ने ग़ुस्से में आ कर दूसरों
को क़त्ल किया है, उन्हों ने अपनी मर्ज़ी से बैलों की
कोंचें काटी हैं। 7 उन के ग़ुस्से पर लानत हो जो इतना
ज़बरदस्त है और उन के तैश पर जो इतना सख़्त है।
मैं उन्हें याक़ूब के मुल्क में तित्तर-बित्तर करूँगा, उन्हें
इस्राईल में मुन्तशिर कर दूँगा।

8 यहूदाह, तुम्हारे भाई तुम्हारी तारीफ़ करेंगे। तुम
अपने दुश्मनों की गर्दन पकड़े रहोगे, और तुम्हारे बाप
के बेटे तुम्हारे सामने झुक जाएंगे। 9 यहूदाह शेरबबर
का बच्चा है। मेरे बेटे, तुम अभी अभी शिकार मार
कर वापस आए हो। यहूदाह शेरबबर बल्कि शेरनी
की तरह दबक कर बैठ जाता है। कौन उसे छेड़ने
की जुरअत करेगा? 10 शाही असा यहूदाह से दूर नहीं
होगा बल्कि शाही इख़तियार उस वक़्त तक उस की
औलाद के पास रहेगा जब तक वह हाकिम न आए
जिस के ताबे क़ौमें रहेंगी। 11 वह अपना जवान गधा
अंगूर की बेल से और अपनी गधी का बच्चा बेहतरीन
अंगूर की बेल से बांधेगा। वह अपना लिबास मै में
और अपना कपड़ा अंगूर के ख़ून में धोएगा। 12 उस

की आँखें मै से ज़्यादा गदली और उस के दाँत दूध
से ज़्यादा सफ़ेद होंगे।
13 ज़बूलून साहिल पर आबाद होगा जहाँ बहरी
जहाज़ होंगे। उस की हद सैदा तक होगी।
14 इश्कार ताक़तवर गधा है जो अपने ज़ीन के दो
बोरों के दरमियान बैठा है। 15 जब वह देखेगा कि उस
की आरामगाह अच्छी और उस का मुल्क ख़ुशनुमा
है तो वह बोझ उठाने के लिए तय्यार हो जाएगा और
उजरत के बग़ैर काम करने के लिए मज्बूर किया
जाएगा।
16 दान अपनी क़ौम का इन्साफ़ करेगा अगरचे वह
इस्राईल के क़बीलों में से एक ही है। 17 दान सड़क
के साँप और रास्ते के अफ़ई की मानिन्द होगा। वह
घोड़े की एड़ियों को काटेगा तो उस का सवार पीछे
गिर जाएगा।
18 ऐ रब, मैं तेरी ही नजात के इन्तिज़ार में हूँ!
19 जद पर डाकुओं का जथ्था हम्ला करेगा, लेकिन
वह पलट कर उसी पर हम्ला कर देगा।
20 आशर को ग़िज़ाइयत वाली ख़ुराक हासिल
होगी। वह लज़ीज़ शाही खाना मुहय्या करेगा।
21 नफ़्ताली आज़ाद छोड़ी हुई हिरनी है। वह
ख़ूबसूरत बातें करता है। [8]
22 यूसुफ़ फलदार बेल है। वह चश्मे पर लगी हुई
फलदार बेल है जिस की शाख़ें दीवार पर चढ़ गई
हैं। 23 तीरअन्दाज़ों ने उस पर तीर चला कर उसे
तंग किया और उस के पीछे पड़ गए, 24 लेकिन उस
की कमान मज़बूत रही, और उस के बाज़ू याक़ूब
के ज़ोरावर ख़ुदा के सबब से ताक़तवर रहे, उस
चरवाहे के सबब से जो इस्राईल का ज़बरदस्त सूरमा
है। 25 क्यूँकि तेरे बाप का ख़ुदा तेरी मदद करता है,
अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ तुझे आसमान की बरकत,
ज़मीन की गहराइयों की बरकत और औलाद की
बरकत देता है। 26 तेरे बाप की बरकत क़दीम पहाड़ों
और अबदी पहाड़ियों की मर्ग़ूब चीज़ों से ज़्यादा
अज़ीम है। यह तमाम बरकत यूसुफ़ के सर पर हो,
उस शख़्स के चाँद पर जो अपने भाइयों पर शहज़ादा
है।
27 बिनयमीन फाड़ने वाला भेड़िया है। सुब्ह वह
अपना शिकार खा जाता और रात को अपना लूटा
हुआ माल तक़्सीम कर देता है।”
28 यह इस्राईल के कुल बारह क़बीले हैं। और यह
वह कुछ है जो उन के बाप ने उन से बरकत देते वक़्त
कहा। उस ने हर एक को उस की अपनी बरकत दी।

याक़ूब का इन्तिक़ाल

29 फिर याक़ूब ने अपने बेटों को हुक्म दिया, “अब
मैं कूच करके अपने बापदादा से जा मिलूँगा। मुझे
मेरे बापदादा के साथ उस ग़ार में दफ़नाना जो हित्ती
आदमी इफ़्रोन के खेत में है। 30 यानी उस ग़ार में जो
मुल्क-ए-कनआन में मम्रे के मशरिक़ में मक्फ़ीला के
खेत में है। इब्राहीम ने उसे खेत समेत अपने लोगों
को दफ़नाने के लिए इफ़्रोन हित्ती से ख़रीद लिया था।
31 वहाँ इब्राहीम और उस की बीवी सारा दफ़नाए
गए, वहाँ इस्हाक़ और उस की बीवी रिब्क़ा दफ़नाए
गए और वहाँ मैं ने लियाह को दफ़न किया। 32 वह
खेत और उस का ग़ार हित्तियों से ख़रीदा गया था।”
33 इन हिदायात के बाद याक़ूब ने अपने पाँओ
बिस्तर पर समेट लिए और दम छोड़ कर अपने
बापदादा से जा मिला।

याक़ूब को दफ़न किया जाता है

50 1 यूसुफ़ अपने बाप के चिहरे से लिपट
गया। उस ने रोते हुए उसे बोसा दिया। 2 उस
के मुलाज़िमों में से कुछ डाक्टर थे। उस ने उन्हें
हिदायत दी कि मेरे बाप इस्राईल की लाश को हनूत
करें ताकि वह गल न जाए। उन्हों ने ऐसा ही किया।
3 इस में 40 दिन लग गए। आम तौर पर हनूत करने

---

[8] या ख़ूबसूरत बच्चे पैदा करती है।

के लिए इतने ही दिन लगते हैं। मिस्रियों ने 70 दिन
तक याक़ूब का मातम किया।
4 जब मातम का वक़्त ख़त्म हुआ तो यूसुफ़ ने
बादशाह के दरबारियों से कहा, “मेहरबानी करके
यह ख़बर बादशाह तक पहुँचा दें 5 कि मेरे बाप ने
मुझे क़सम दिला कर कहा था, ‘मैं मरने वाला हूँ। मुझे
उस क़ब्र में दफ़न करना जो मैं ने मुल्क-ए-कनआन
में अपने लिए बनवाई।’ अब मुझे इजाज़त दें कि मैं
वहाँ जाऊँ और अपने बाप को दफ़न करके वापस
आऊँ।” 6 फ़िरऔन ने जवाब दिया, “जा, अपने बाप
को दफ़न कर जिस तरह उस ने तुझे क़सम दिलाई
थी।”
7 चुनाँचे यूसुफ़ अपने बाप को दफ़नाने के लिए
कनआन रवाना हुआ। बादशाह के तमाम मुलाज़िम,
महल के बुज़ुर्ग और पूरे मिस्र के बुज़ुर्ग उस के साथ
थे। 8 यूसुफ़ के घराने के अफ़राद, उस के भाई और
उस के बाप के घराने के लोग भी साथ गए। सिर्फ़ उन
के बच्चे, उन की भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल जुशन
में रहे। 9 रथ और घुड़सवार भी साथ गए। सब मिल
कर बड़ा लश्कर बन गए।
10 जब वह यर्दन के क़रीब अतद के खलियान पर
पहुँचे तो उन्हों ने निहायत दिलसोज़ नोहा किया। वहाँ
यूसुफ़ ने सात दिन तक अपने बाप का मातम किया।
11 जब मक़ामी कनआनियों ने अतद के खलियान पर
मातम का यह नज़ारा देखा तो उन्हों ने कहा, “यह तो
मातम का बहुत बड़ा इन्तिज़ाम है जो मिस्री करवा
रहे हैं।” इस लिए उस जगह का नाम अबील-मिस्रीम
यानी ‘मिस्रियों का मातम’ पड़ गया। 12 यूँ याक़ूब के
बेटों ने अपने बाप का हुक्म पूरा किया। 13 उन्हों ने
उसे मुल्क-ए-कनआन में ले जा कर मक्फ़ीला के खेत
के ग़ार में दफ़न किया जो मम्रे के मशरिक़ में है। यह
वही खेत है जो इब्राहीम ने इफ़्रोन हित्ती से अपने लोगों
को दफ़नाने के लिए ख़रीदा था।
14 इस के बाद यूसुफ़, उस के भाई और बाक़ी
तमाम लोग जो जनाज़े के लिए साथ गए थे मिस्र को
लौट आए।

यूसुफ़ अपने भाइयों को तसल्ली देता है

15 जब याक़ूब इन्तिक़ाल कर गया तो यूसुफ़ के
भाई डर गए। उन्हों ने कहा, “ख़तरा है कि अब यूसुफ़
हमारा ताक़्क़ुब करके उस ग़लत काम का बदला ले
जो हम ने उस के साथ किया था। फिर क्या होगा?”
16 यह सोच कर उन्हों ने यूसुफ़ को ख़बर भेजी, “आप
के बाप ने मरने से पेशतर हिदायत दी 17 कि यूसुफ़
को बताना, ‘अपने भाइयों के उस ग़लत काम को
मुआफ़ कर देना जो उन्हों ने तुम्हारे साथ किया।’
अब हमें जो आप के बाप के ख़ुदा के पैरोकार हैं
मुआफ़ कर दें।”
यह ख़बर सुन कर यूसुफ़ रो पड़ा। 18 फिर उस के
भाई ख़ुद आए और उस के सामने गिर गए। उन्हों ने
कहा, “हम आप के ख़ादिम हैं।” 19 लेकिन यूसुफ़ ने
कहा, “मत डरो। क्या मैं अल्लाह की जगह हूँ? हरगिज़
नहीं! 20 तुम ने मुझे नुक़्सान पहुँचाने का इरादा किया
था, लेकिन अल्लाह ने उस से भलाई पैदा की। और
अब इस का मक़्सद पूरा हो रहा है। बहुत से लोग
मौत से बच रहे हैं। 21 चुनाँचे अब डरने की ज़रूरत
नहीं है। मैं तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को ख़ुराक मुहय्या
करता रहूँगा।”
यूँ यूसुफ़ ने उन्हें तसल्ली दी और उन से नर्मी से बात
की।

यूसुफ़ का इन्तिक़ाल

22 यूसुफ़ अपने बाप के ख़ानदान समेत मिस्र में रहा।
वह 110 साल ज़िन्दा रहा। 23 मौत से पहले उस ने न
सिर्फ़ इफ़्राईम के बच्चों को बल्कि उस के पोतों को
भी देखा। मनस्सी के बेटे मकीर के बच्चे भी उस की
मौजूदगी में पैदा हो कर उस की गोद में रखे गए। [h]

---

[h] ग़ालिबन इस का मतलब यह है कि उस ने उन्हें लेपालक बनाया।

24 फिर एक वक़्त आया कि यूसुफ़ ने अपने भाइयों
से कहा, “मैं मरने वाला हूँ। लेकिन अल्लाह ज़रूर
आप की देख-भाल करके आप को इस मुल्क से
उस मुल्क में ले जाएगा जिस का उस ने इब्राहीम,
इस्हाक़ और याक़ूब से क़सम खा कर वादा किया
है।” 25 फिर यूसुफ़ ने इस्राईलियों को क़सम दिला
कर कहा, “अल्लाह यक़ीनन तुम्हारी देख-भाल करके
वहाँ ले जाएगा। उस वक़्त मेरी हड्डियों को भी उठा
कर साथ ले जाना।”
26 फिर यूसुफ़ फ़ौत हो गया। वह 110 साल का था।
उसे हनूत करके मिस्र में एक ताबूत में रखा गया।

ख़ुरूज

याक़ूब का ख़ानदान मिस्र में

1 1 ज़ैल में उन बेटों के नाम हैं जो अपने बाप
याक़ूब और अपने ख़ानदानों समेत मिस्र में आए
थे : 2 रूबिन, शमाऊन, लावी, यहूदाह, 3 इश्कार,
ज़बूलून, बिनयमीन, 4 दान, नफ़्ताली, जद और
आशर। 5 उस वक़्त याक़ूब की औलाद की तादाद
70 थी। यूसुफ़ तो पहले ही मिस्र आ चुका था।
6 मिस्र में रहते हुए बहुत दिन गुज़र गए। इतने में
यूसुफ़, उस के तमाम भाई और उस नस्ल के तमाम
लोग मर गए। 7 इस्राईली फले फूले और तादाद में
बहुत बढ़ गए। नतीजे में वह निहायत ही ताक़तवर
हो गए। पूरा मुल्क उन से भर गया।

इस्राईलियों को दबाया जाता है

8 होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन हुआ जो
यूसुफ़ से नावाक़िफ़ था। 9 उस ने अपने लोगों से
कहा, "इस्राईलियों को देखो। वह तादाद और ताक़त
में हम से बढ़ गए हैं। 10 आओ, हम हिक्मत से काम
लें, वर्ना वह मज़ीद बढ़ जाएंगे। ऐसा न हो कि वह
किसी जंग के मौक़े पर दुश्मन का साथ दे कर हम
से लड़ें और मुल्क को छोड़ जाएँ।"
11 चुनाँचे मिस्रियों ने इस्राईलियों पर निगरान मुक़र्रर
किए ताकि बेगार में उन से काम करवा कर उन्हें
दबाते रहें। उस वक़्त उन्हों ने पितोम और रामसीस
के शहर तामीर किए। इन शहरों में फ़िरऔन बादशाह
के बड़े बड़े गोदाम थे। 12 लेकिन जितना इस्राईलियों
को दबाया गया उतना ही वह तादाद में बढ़ते और
फैलते गए। आख़िरकार मिस्री उन से दहशत खाने
लगे, 13 और वह बड़ी बेरहमी से उन से काम करवाते
रहे। 14 इस्राईलियों का गुज़ारा निहायत मुश्किल हो
गया। उन्हें गारा तय्यार करके ईंटें बनाना और खेतों
में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के काम करना पड़े। इस में मिस्री
उन से बड़ी बेरहमी से पेश आते रहे।

दाइयाँ अल्लाह की राह पर चलती हैं

15 इस्राईलियों की दो दाइयाँ थीं जिन के नाम सिफ़्रा
और फ़ूआ थे। मिस्र के बादशाह ने उन से कहा,
16 "जब इब्रानी औरतें तुम्हें मदद के लिए बुलाएँ तो
ख़बरदार रहो। अगर लड़का पैदा हो तो उसे जान से
मार दो, अगर लड़की हो तो उसे जीता छोड़ दो।"
17 लेकिन दाइयाँ अल्लाह का ख़ौफ़ मानती थीं। उन्हों
ने मिस्र के बादशाह का हुक्म न माना बल्कि लड़कों
को भी जीने दिया।
18 तब मिस्र के बादशाह ने उन्हें दुबारा बुला कर
पूछा, "तुम ने यह क्यूँ किया? तुम लड़कों को
क्यूँ जीता छोड़ देती हो?" 19 उन्हों ने जवाब दिया,
"इब्रानी औरतें मिस्री औरतों से ज़्यादा मज़बूत हैं।
बच्चे हमारे पहुँचने से पहले ही पैदा हो जाते हैं।"
20 चुनाँचे अल्लाह ने दाइयों को बरकत दी, और
इस्राईली क़ौम तादाद में बढ़ कर बहुत ताक़तवर हो
गई। 21 और चूँकि दाइयाँ अल्लाह का ख़ौफ़ मानती थीं
इस लिए उस ने उन्हें औलाद दे कर उन के ख़ानदानों
को क़ाइम रखा।
22 आख़िरकार बादशाह ने अपने तमाम हमवतनों
से बात की, "जब भी इब्रानियों के लड़के पैदा हों तो
उन्हें दरया-ए-नील में फैंक देना। सिर्फ़ लड़कियों को
ज़िन्दा रहने दो।"

मूसा की पैदाइश और बचाओ

2 1 उन दिनों में लावी के एक आदमी ने अपने ही
क़बीले की एक औरत से शादी की। 2 औरत
हामिला हुई और बच्चा पैदा हुआ। माँ ने देखा कि
लड़का ख़ूबसूरत है, इस लिए उस ने उसे तीन माह

तक छुपाए रखा। 3 जब वह उसे और ज़्यादा न छुपा
सकी तो उस ने आबी नर्सल से टोकरी बना कर उस
पर तारकोल चढ़ाया। फिर उस ने बच्चे को टोकरी
में रख कर टोकरी को दरया-ए-नील के किनारे पर
उगे हुए सरकंडों में रख दिया। 4 बच्चे की बहन कुछ
फ़ासिले पर खड़ी देखती रही कि उस का क्या बनेगा।
5 उस वक़्त फ़िरऔन की बेटी नहाने के लिए दरया
पर आई। उस की नौकरानियाँ दरया के किनारे
टहलने लगीं। तब उस ने सरकंडों में टोकरी देखी
और अपनी लौंडी को उसे लाने भेजा। 6 उसे खोला तो
छोटा लड़का दिखाई दिया जो रो रहा था। फ़िरऔन
की बेटी को उस पर तरस आया। उस ने कहा, "यह
कोई इब्रानी बच्चा है।"
7 अब बच्चे की बहन फ़िरऔन की बेटी के पास गई
और पूछा, "क्या मैं बच्चे को दूध पिलाने के लिए
कोई इब्रानी औरत ढूँड लाऊँ?" 8 फ़िरऔन की बेटी
ने कहा, "हाँ, जाओ।" लड़की चली गई और बच्चे
की सगी माँ को ले कर वापस आई। 9 फ़िरऔन की
बेटी ने माँ से कहा, "बच्चे को ले जाओ और उसे मेरे
लिए दूध पिलाया करो। मैं तुम्हें इस का मुआवज़ा
दूँगी।" चुनाँचे बच्चे की माँ ने उसे दूध पिलाने के लिए
ले लिया।
10 जब बच्चा बड़ा हुआ तो उस की माँ उसे फ़िरऔन
की बेटी के पास ले गई, और वह उस का बेटा
बन गया। फ़िरऔन की बेटी ने उस का नाम मूसा
यानी 'निकाला गया' रख कर कहा, "मैं उसे पानी से
निकाल लाई हूँ।"

मूसा फ़रार होता है

11 जब मूसा जवान हुआ तो एक दिन वह घर से
निकल कर अपने लोगों के पास गया जो जबरी काम
में मसरूफ़ थे। मूसा ने देखा कि एक मिस्री मेरे एक
इब्रानी भाई को मार रहा है। 12 मूसा ने चारों तरफ़
नज़र दौड़ाई। जब मालूम हुआ कि कोई नहीं देख
रहा तो उस ने मिस्री को जान से मार दिया और उसे
रेत में छुपा दिया।
13 अगले दिन भी मूसा घर से निकला। इस दफ़ा दो
इब्रानी मर्द आपस में लड़ रहे थे। जो ग़लती पर था
उस से मूसा ने पूछा, "तुम अपने भाई को क्यूँ मार
रहे हो?" 14 आदमी ने जवाब दिया, "किस ने आप
को हम पर हुक्मरान और क़ाज़ी मुक़र्रर किया है?
क्या आप मुझे भी क़त्ल करना चाहते हैं जिस तरह
मिस्री को मार डाला था?" तब मूसा डर गया। उस
ने सोचा, "हाय, मेरा भेद खुल गया है!"
15 बादशाह को भी पता लगा तो उस ने मूसा को
मरवाने की कोशिश की। लेकिन मूसा मिदियान के
मुल्क को भाग गया। वहाँ वह एक कुएँ के पास बैठ
गया। 16 मिदियान में एक इमाम था जिस की सात
बेटियाँ थीं। यह लड़कियाँ अपनी भेड़-बकरियों को
पानी पिलाने के लिए कुएँ पर आईं और पानी निकाल
कर हौज़ भरने लगीं। 17 लेकिन कुछ चरवाहों ने आ
कर उन्हें भगा दिया। यह देख कर मूसा उठा और
लड़कियों को चरवाहों से बचा कर उन के रेवड़ को
पानी पिलाया।
18 जब लड़कियाँ अपने बाप रऊएल के पास वापस
आईं तो बाप ने पूछा, "आज तुम इतनी जल्दी से क्यूँ
वापस आ गई हो?" 19 लड़कियों ने जवाब दिया,
"एक मिस्री आदमी ने हमें चरवाहों से बचाया। न
सिर्फ़ यह बल्कि उस ने हमारे लिए पानी भी निकाल
कर रेवड़ को पिला दिया।" 20 रऊएल ने कहा, "वह
आदमी कहाँ है? तुम उसे क्यूँ छोड़ कर आई हो?
उसे बुलाओ ताकि वह हमारे साथ खाना खाए।"
21 मूसा रऊएल के घर में ठहरने के लिए राज़ी हो
गया। बाद में उस की शादी रऊएल की बेटी सफ़्फ़ूरा
से हुई। 22 सफ़्फ़ूरा के बेटा पैदा हुआ तो मूसा ने
कहा, "इस का नाम जैर्सोम यानी 'अजनबी मुल्क
में परदेसी' हो, क्यूँकि मैं अजनबी मुल्क में परदेसी
हूँ।"
23 काफ़ी अर्सा गुज़र गया। इतने में मिस्र का
बादशाह इन्तिक़ाल कर गया। इस्राईली अपनी
ग़ुलामी तले कराहते और मदद के लिए पुकारते रहे,
और उन की चीख़ें अल्लाह तक पहुँच गईं। 24 अल्लाह

ने उन की आहें सुनीं और उस अह्द को याद किया
जो उस ने इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से बांधा
था। 25 अल्लाह इस्राईलियों की हालत देख कर उन
का ख़याल करने लगा।

जलती हुई झाड़ी

3 1 मूसा अपने सुसर यित्रो की भेड़-बकरियों
की निगहबानी करता था (मिदियान का इमाम
रऊएल यित्रो भी कहलाता था)। एक दिन मूसा रेवड़
को रेगिस्तान की परली जानिब ले गया और चलते
चलते अल्लाह के पहाड़ होरिब यानी सीना तक पहुँच
गया। 2 वहाँ रब का फ़रिश्ता आग के शोले में उस
पर ज़ाहिर हुआ। यह शोला एक झाड़ी में भड़क रहा
था। मूसा ने देखा कि झाड़ी जल रही है लेकिन भस्म
नहीं हो रही। 3 मूसा ने सोचा, "यह तो अजीब बात
है। क्या वजह है कि जलती हुई झाड़ी भस्म नहीं
हो रही? मैं ज़रा वहाँ जा कर यह हैरतअंगेज़ मन्ज़र
देखूँ।"

4 जब रब ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने आ
रहा है तो उस ने उसे झाड़ी में से पुकारा, "मूसा,
मूसा!" मूसा ने कहा, "जी, मैं हाज़िर हूँ।" 5 रब ने
कहा, "इस से ज़्यादा क़रीब न आना। अपनी जूतियाँ
उतार, क्यूँकि तू मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है। 6 मैं तेरे
बाप का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा, इस्हाक़ का ख़ुदा
और याक़ूब का ख़ुदा हूँ।" यह सुन कर मूसा ने अपना
मुँह ढाँक लिया, क्यूँकि वह अल्लाह को देखने से डरा।

7 रब ने कहा, "मैं ने मिस्र में अपनी क़ौम की बुरी
हालत देखी और ग़ुलामी में उन की चीख़ें सुनी हैं,
और मैं उन के दुखों को ख़ूब जानता हूँ। 8 अब मैं
उन्हें मिस्रियों के क़ाबू से बचाने के लिए उतर आया
हूँ। मैं उन्हें मिस्र से निकाल कर एक अच्छे वसी
मुल्क में ले जाऊँगा, एक ऐसे मुल्क में जहाँ दूध और
शहद की कस्रत है, गो इस वक़्त कनआनी, हित्ती,
अमोरी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी उस में रहते हैं।
9 इस्राईलियों की चीख़ें मुझ तक पहुँची हैं। मैं ने देखा
है कि मिस्री उन पर किस तरह का ज़ुल्म ढा रहे हैं।
10 चुनाँचे अब जा। मैं तुझे फ़िरऔन के पास भेजता
हूँ, क्यूँकि तुझे मेरी क़ौम इस्राईल को मिस्र से निकाल
कर लाना है।"

11 लेकिन मूसा ने अल्लाह से कहा, "मैं कौन हूँ कि
फ़िरऔन के पास जा कर इस्राईलियों को मिस्र से
निकाल लाऊँ?" 12 अल्लाह ने कहा, "मैं तो तेरे साथ
हूँगा। और इस का सबूत कि मैं तुझे भेज रहा हूँ यह
होगा कि लोगों के मिस्र से निकलने के बाद तुम यहाँ
आ कर इस पहाड़ पर मेरी इबादत करोगे।"

13 लेकिन मूसा ने एतिराज़ किया, "अगर मैं
इस्राईलियों के पास जा कर उन्हें बताऊँ कि तुम्हारे
बापदादा के ख़ुदा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है तो वह
पूछेंगे, 'उस का नाम क्या है?' फिर मैं उन को क्या
जवाब दूँ?"

14 अल्लाह ने कहा, "मैं जो हूँ सो मैं हूँ। उन से कहना,
'मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। 15 रब जो तुम्हारे
बापदादा का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा, इस्हाक़ का
ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा है उसी ने मुझे तुम्हारे पास
भेजा है।' यह अबद तक मेरा नाम रहेगा। लोग यही
नाम ले कर मुझे नस्ल-दर-नस्ल याद करेंगे।

16 अब जा और इस्राईल के बुज़ुर्गों को जमा करके
उन को बता दे कि रब तुम्हारे बापदादा इब्राहीम,
इस्हाक़ और याक़ूब का ख़ुदा मुझ पर ज़ाहिर हुआ है।
वह फ़रमाता है, 'मैं ने ख़ूब देख लिया है कि मिस्र में
तुम्हारे साथ क्या सुलूक हो रहा है। 17 इस लिए मैं ने
फ़ैसला किया है कि तुम्हें मिस्र की मुसीबत से निकाल
कर कनआनियों, हित्तियों, अमोरियों, फ़रिज़्ज़ियों,
हिव्वियों और यबूसियों के मुल्क में ले जाऊँ, ऐसे
मुल्क में जहाँ दूध और शहद की कस्रत है।' 18 बुज़ुर्ग
तेरी सुनेंगे। फिर उन के साथ मिस्र के बादशाह के
पास जा कर उस से कहना, 'रब इब्रानियों का ख़ुदा
हम पर ज़ाहिर हुआ है। इस लिए हमें इजाज़त दें कि
हम तीन दिन का सफ़र करके रेगिस्तान में रब अपने
ख़ुदा के लिए क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँ।'

19 लेकिन मुझे मालूम है कि मिस्र का बादशाह सिर्फ़
इस सूरत में तुम्हें जाने देगा कि कोई ज़बरदस्ती तुम्हें

ले जाए। 20 इस लिए मैं अपनी क़ुदरत ज़ाहिर करके
अपने मोजिज़ों की मारिफ़त मिस्रियों को मारूँगा।
फिर वह तुम्हें जाने देगा। 21 उस वक़्त मैं मिस्रियों
के दिलों को तुम्हारे लिए नर्म कर दूँगा। तुम्हें ख़ाली
हाथ नहीं जाना पड़ेगा। 22 तमाम इब्रानी औरतें अपनी
मिस्री पड़ोसनों और अपने घर में रहने वाली मिस्री
औरतों से चाँदी और सोने के ज़ेवरात और नफ़ीस
कपड़े माँग कर अपने बच्चों को पहनाएँगी। यूँ मिस्रियों
को लूट लिया जाएगा।"

4 1 मूसा ने एतिराज़ किया, "लेकिन इस्राईली न
मेरी बात का यक़ीन करेंगे, न मेरी सुनेंगे। वह
तो कहेंगे, 'रब तुम पर ज़ाहिर नहीं हुआ'।" 2 जवाब
में रब ने मूसा से कहा, "तू ने हाथ में क्या पकड़ा
हुआ है?" मूसा ने कहा, "लाठी।" 3 रब ने कहा, "उसे
ज़मीन पर डाल दे।" मूसा ने ऐसा किया तो लाठी साँप
बन गई, और मूसा डर कर भागा। 4 रब ने कहा, "अब
साँप की दुम को पकड़ ले।" मूसा ने ऐसा किया तो
साँप फिर लाठी बन गया।

5 रब ने कहा, "यह देख कर लोगों को यक़ीन
आएगा कि रब जो उन के बापदादा का ख़ुदा,
इब्राहीम का ख़ुदा, इस्हाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का
ख़ुदा है तुझ पर ज़ाहिर हुआ है। 6 अब अपना हाथ
अपने लिबास में डाल दे।" मूसा ने ऐसा किया। जब
उस ने अपना हाथ निकाला तो वह बर्फ़ की मानिन्द
सफ़ेद हो गया था। कोढ़ जैसी बीमारी लग गई थी।
7 तब रब ने कहा, "अब अपना हाथ दुबारा अपने
लिबास में डाल।" मूसा ने ऐसा किया। जब उस ने
अपना हाथ दुबारा निकाला तो वह फिर सेहतमन्द
था।

8 रब ने कहा, "अगर लोगों को पहला मोजिज़ा देख
कर यक़ीन न आए और वह तेरी न सुनें तो शायद
उन्हें दूसरा मोजिज़ा देख कर यक़ीन आए। 9 अगर
उन्हें फिर भी यक़ीन न आए और वह तेरी न सुनें तो
दरया-ए-नील से कुछ पानी निकाल कर उसे ख़ुश्क
ज़मीन पर उंडेल दे। यह पानी ज़मीन पर गिरते ही ख़ून
बन जाएगा।"

10 लेकिन मूसा ने कहा, "मेरे आक़ा, मैं माज़रत
चाहता हूँ, मैं अच्छी तरह बात नहीं कर सकता
बल्कि मैं कभी भी यह लियाक़त नहीं रखता था।
इस वक़्त भी जब मैं तुझ से बात कर रहा हूँ मेरी
यही हालत है। मैं रुक रुक कर बोलता हूँ।" 11 रब
ने कहा, "किस ने इन्सान का मुँह बनाया? कौन एक
को गूँगा और दूसरे को बहरा बना देता है? कौन एक
को देखने की क़ाबिलियत देता है और दूसरे को इस
से महरूम रखता है? क्या मैं जो रब हूँ यह सब कुछ
नहीं करता? 12 अब जा! तेरे बोलते वक़्त मैं ख़ुद
तेरे साथ हूँगा और तुझे वह कुछ सिखाऊँगा जो तुझे
कहना है।"

13 लेकिन मूसा ने इल्तिजा की, "मेरे आक़ा,
मेहरबानी करके किसी और को भेज दे।"

14 तब रब मूसा से सख़्त ख़फ़ा हुआ। उस ने कहा,
"क्या तेरा लावी भाई हारून ऐसे काम के लिए हाज़िर
नहीं है? मैं जानता हूँ कि वह अच्छी तरह बोल
सकता है। देख, वह तुझ से मिलने के लिए निकल
चुका है। तुझे देख कर वह निहायत ख़ुश होगा।
15 उसे वह कुछ बता जो उसे कहना है। तुम्हारे बोलते
वक़्त मैं तेरे और उस के साथ हूँगा और तुम्हें वह कुछ
सिखाऊँगा जो तुम्हें करना होगा। 16 हारून तेरी जगह
क़ौम से बात करेगा जबकि तू मेरी तरह उसे वह कुछ
बताएगा जो उसे कहना है। 17 लेकिन यह लाठी भी
साथ ले जाना, क्यूँकि इसी के ज़रीए तू यह मोजिज़े
करेगा।"

मूसा मिस्र को लौट जाता है

18 फिर मूसा अपने सुसर यित्रो के घर वापस चला
गया। उस ने कहा, "मुझे ज़रा अपने अज़ीज़ों के पास
वापस जाने दें जो मिस्र में हैं। मैं मालूम करना चाहता
हूँ कि वह अभी तक ज़िन्दा हैं कि नहीं।" यित्रो ने
जवाब दिया, "ठीक है, सलामती से जाएँ।" 19 मूसा
अभी मिदियान में था कि रब ने उस से कहा, "मिस्र
को वापस चला जा, क्यूँकि जो आदमी तुझे क़त्ल
करना चाहते थे वह मर गए हैं।" 20 चुनाँचे मूसा

अपनी बीवी और बेटों को गधे पर सवार करके मिस्र
को लौटने लगा। अल्लाह की लाठी उस के हाथ में थी।
21 रब ने उस से यह भी कहा, "मिस्र जा कर
फ़िरऔन के सामने वह तमाम मोजिज़े दिखा जिन
का मैं ने तुझे इख़तियार दिया है। लेकिन मेरे कहने
पर वह अड़ा रहेगा। वह इस्राईलियों को जाने की
इजाज़त नहीं देगा। 22 उस वक़्त फ़िरऔन को बता
देना, 'रब फ़रमाता है कि इस्राईल मेरा पहलौठा है।
23 मैं तुझे बता चुका हूँ कि मेरे बेटे को जाने दे ताकि
वह मेरी इबादत करे। अगर तू मेरे बेटे को जाने से
मना करे तो मैं तेरे पहलौठे को जान से मार दूँगा'।"
24 एक दिन जब मूसा अपने ख़ानदान के साथ रास्ते
में किसी सराय में ठहरा हुआ था तो रब ने उस पर
हम्ला करके उसे मार देने की कोशिश की। 25 यह
देख कर सफ़्फ़ूरा ने एक तेज़ पत्थर से अपने बेटे
का ख़तना किया और काटे हुए हिस्से से मूसा के पैर
छुए। उस ने कहा, "यक़ीनन तुम मेरे ख़ूनी दूल्हा हो।"
26 तब अल्लाह ने मूसा को छोड़ दिया। सफ़्फ़ूरा ने उसे
ख़तने के बाइस ही 'ख़ूनी दूल्हा' कहा था।
27 रब ने हारून से भी बात की, "रेगिस्तान में मूसा
से मिलने जा।" हारून चल पड़ा और अल्लाह के
पहाड़ के पास मूसा से मिला। उस ने उसे बोसा दिया।
28 मूसा ने हारून को सब कुछ सुना दिया जो रब ने
उसे कहने के लिए भेजा था। उस ने उसे उन मोजिज़ों
के बारे में भी बताया जो उसे दिखाने थे।
29 फिर दोनों मिल कर मिस्र गए। वहाँ पहुँच कर
उन्हों ने इस्राईल के तमाम बुज़ुर्गों को जमा किया।
30 हारून ने उन्हें वह तमाम बातें सुनाईं जो रब ने
मूसा को बताई थीं। उस ने मज़कूरा मोजिज़े भी लोगों
के सामने दिखाए। 31 फिर उन्हें यक़ीन आया। और
जब उन्हों ने सुना कि रब को तुम्हारा ख़याल है और
वह तुम्हारी मुसीबत से आगाह है तो उन्हों ने रब को
सिज्दा किया।

मूसा और हारून फ़िरऔन के दरबार में

5 1 फिर मूसा और हारून फ़िरऔन के पास गए।
उन्हों ने कहा, "रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता
है, 'मेरी क़ौम को रेगिस्तान में जाने दे ताकि वह
मेरे लिए ईद मनाएँ'।" 2 फ़िरऔन ने जवाब दिया,
"यह रब कौन है? मैं क्यूँ उस का हुक्म मान कर
इस्राईलियों को जाने दूँ? न मैं रब को जानता हूँ, न
इस्राईलियों को जाने दूँगा।"
3 हारून और मूसा ने कहा, "इब्रानियों का ख़ुदा
हम पर ज़ाहिर हुआ है। इस लिए मेहरबानी करके
हमें इजाज़त दें कि रेगिस्तान में तीन दिन का सफ़र
करके रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर क़ुर्बानियाँ पेश करें।
कहीं वह हमें किसी बीमारी या तलवार से न मारे।"
4 लेकिन मिस्र के बादशाह ने इन्कार किया, "मूसा
और हारून, तुम लोगों को काम से क्यूँ रोक रहे हो?
जाओ, जो काम हम ने तुम को दिया है उस पर लग
जाओ! 5 इस्राईली वैसे भी तादाद में बहुत बढ़ गए
हैं, और तुम उन्हें काम करने से रोक रहे हो।"

जवाब में फ़िरऔन का सख़्त दबाओ

6 उसी दिन फ़िरऔन ने मिस्री निगरानों और उन के
तहत के इस्राईली निगरानों को हुक्म दिया, 7 "अब
से इस्राईलियों को ईंटें बनाने के लिए भूसा मत देना,
बल्कि वह ख़ुद जा कर भूसा जमा करें। 8 तो भी वह
उतनी ही ईंटें बनाएँ जितनी पहले बनाते थे। वह सुस्त
हो गए हैं और इसी लिए चीख़ रहे हैं कि हमें जाने दें
ताकि अपने ख़ुदा को क़ुर्बानियाँ पेश करें। 9 उन से
और ज़्यादा सख़्त काम कराओ, उन्हें काम में लगाए
रखो। उन के पास इतना वक़्त ही न हो कि वह झूटी
बातों पर ध्यान दें।"
10 मिस्री निगरान और उन के तहत के इस्राईली
निगरानों ने लोगों के पास जा कर उन से कहा,
"फ़िरऔन का हुक्म है कि तुम्हें भूसा न दिया जाए।
11 इस लिए ख़ुद जाओ और भूसा ढूँड कर जमा करो।

लेकिन ख़बरदार! उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले
बनाते थे।”
12 यह सुन कर इस्राईली भूसा जमा करने के लिए
पूरे मुल्क में फैल गए। 13 मिस्री निगरान यह कह कर
उन पर दबाओ डालते रहे कि उतनी ईंटें बनाओ
जितनी पहले बनाते थे। 14 जो इस्राईली निगरान उन्हों
ने मुक़र्रर किए थे उन्हें वह पीटते और कहते रहे,
“तुम ने कल और आज उतनी ईंटें क्यूँ नहीं बनवाईं
जितनी पहले बनवाते थे?”
15 फिर इस्राईली निगरान फ़िरऔन के पास गए।
उन्हों ने शिकायत करके कहा, “आप अपने ख़ादिमों
के साथ ऐसा सुलूक क्यूँ कर रहे हैं? 16 हमें भूसा नहीं
दिया जा रहा और साथ साथ यह कहा गया है कि
उतनी ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे। नतीजे में
हमें मारा पीटा भी जा रहा है हालाँकि ऐसा करने में
आप के अपने लोग ग़लती पर हैं।”
17 फ़िरऔन ने जवाब दिया, “तुम लोग सुस्त हो,
तुम काम करना नहीं चाहते। इस लिए तुम यह
जगह छोड़ना और रब को क़ुर्बानियाँ पेश करना
चाहते हो। 18 अब जाओ, काम करो। तुम्हें भूसा नहीं
दिया जाएगा, लेकिन ख़बरदार! उतनी ही ईंटें बनाओ
जितनी पहले बनाते थे।”
19 जब इस्राईली निगरानों को बताया गया कि ईंटों
की मतलूबा तादाद कम न करो तो वह समझ गए कि
हम फंस गए हैं। 20 फ़िरऔन के महल से निकल कर
उन की मुलाक़ात मूसा और हारून से हुई जो उन के
इन्तिज़ार में थे। 21 उन्हों ने मूसा और हारून से कहा,
“रब ख़ुद आप की अदालत करे। क्यूँकि आप के
सबब से फ़िरऔन और उस के मुलाज़िमों को हम से
घिन आती है। आप ने उन्हें हमें मार देने का मौक़ा दे
दिया है।”

मूसा की शिकायत और रब का जवाब

22 यह सुन कर मूसा रब के पास वापस आया और
कहा, “ऐ आक़ा, तू ने इस क़ौम से ऐसा बुरा सुलूक
क्यूँ किया? क्या तू ने इसी मक़सद से मुझे यहाँ भेजा
है? 23 जब से मैं ने फ़िरऔन के पास जा कर उसे
तेरी मर्ज़ी बताई है वह इस्राईली क़ौम से बुरा सुलूक
कर रहा है। और तू ने अब तक उन्हें बचाने का कोई
क़दम नहीं उठाया।”
6 1 रब ने जवाब दिया, “अब तू देखेगा कि मैं
फ़िरऔन के साथ क्या कुछ करता हूँ। मेरी
अज़ीम क़ुदरत का तजरिबा करके वह मेरे लोगों को
जाने देगा बल्कि उन्हें जाने पर मज्बूर करेगा।”
2 अल्लाह ने मूसा से यह भी कहा, “मैं रब हूँ। 3 मैं
इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब पर ज़ाहिर हुआ। वह
मेरे नाम अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ [i]से वाक़िफ़ हुए,
लेकिन मैं ने उन पर अपने नाम रब [j]का इन्किशाफ़
नहीं किया। 4 मैं ने उन से अह्द करके वादा किया
कि उन्हें मुल्क-ए-कनआन दूँगा जिस में वह अजनबी
के तौर पर रहते थे। 5 अब मैं ने सुना है कि इस्राईली
किस तरह मिस्रियों की ग़ुलामी में कराह रहे हैं, और
मैं ने अपना अह्द याद किया है। 6 चुनाँचे इस्राईलियों
को बताना, ‘मैं रब हूँ। मैं तुम्हें मिस्रियों के जूए से
आज़ाद करूँगा और उन की ग़ुलामी से बचाऊँगा। मैं
बड़ी क़ुदरत के साथ तुम्हें छुड़ाऊँगा और उन की
अदालत करूँगा। 7 मैं तुम्हें अपनी क़ौम बनाऊँगा
और तुम्हारा ख़ुदा हूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं
रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जिस ने तुम्हें मिस्रियों के जूए
से आज़ाद कर दिया है। 8 मैं तुम्हें उस मुल्क में ले
जाऊँगा जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर इब्राहीम,
इस्हाक़ और याक़ूब से किया है। वह मुल्क तुम्हारी
अपनी मिलकियत होगा। मैं रब हूँ’।”
9 मूसा ने यह सब कुछ इस्राईलियों को बता दिया,
लेकिन उन्हों ने उस की बात न मानी, क्यूँकि वह

[i]इब्रानी में एल-शदई।

[j]इब्रानी में यहवे।

सख़्त काम के बाइस हिम्मत हार गए थे। 10 तब रब
ने मूसा से कहा, 11 "जा, मिस्र के बादशाह फ़िरऔन
को बता देना कि इस्राईलियों को अपने मुल्क से जाने
दे।" 12 लेकिन मूसा ने एतिराज़ किया, "इस्राईली मेरी
बात सुनना नहीं चाहते तो फ़िरऔन क्यूँ मेरी बात माने
जबकि मैं रुक रुक कर बोलता हूँ?"
13 लेकिन रब ने मूसा और हारून को हुक्म दिया,
"इस्राईलियों और मिस्र के बादशाह फ़िरऔन से बात
करके इस्राईलियों को मिस्र से निकालो।"

मूसा और हारून के आबा-ओ-अजदाद

14 इस्राईल के आबाई घरानों के सरबराह यह थे :
इस्राईल के पहलौठे रूबिन के चार बेटे हनूक, फ़ल्लू,
हस्रोन और कर्मी थे। इन से रूबिन की चार शाख़ें
निकलीं।
15 शमाऊन के पाँच बेटे यमूएल, यमीन, उहद,
यकीन, सुहर और साऊल थे। (साऊल कनआनी
औरत का बच्चा था)। इन से शमाऊन की पाँच शाख़ें
निकलीं।
16 लावी के तीन बेटे जैर्सोन, क़िहात और मिरारी
थे। (लावी 137 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)।
17 जैर्सोन के दो बेटे लिब्नी और सिमई थे। इन से
जैर्सोन की दो शाख़ें निकलीं। 18 क़िहात के चार बेटे
अम्राम, इज़हार , हब्रून और उज़्ज़ीएल थे। (क़िहात
133 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)। 19 मिरारी के दो बेटे
महली और मूशी थे। इन सब से लावी की मुख़्तलिफ़
शाख़ें निकलीं।
20 अम्राम ने अपनी फूफी यूकबिद से शादी की। उन
के दो बेटे हारून और मूसा पैदा हुए। (अम्राम 137
साल की उम्र में फ़ौत हुआ)। 21 इज़हार के तीन बेटे
क़ोरह, नफ़ज और ज़िक्री थे। 22 उज़्ज़ीएल के तीन
बेटे मीसाएल, इल्सफ़न और सित्री थे।
23 हारून ने इलीसिबा से शादी की। (इलीसिबा
अम्मीनदाब की बेटी और नह्सोन की बहन थी)।
उन के चार बेटे नदब, अबीहू, इलीअज़र और इतमर
थे। 24 क़ोरह के तीन बेटे अस्सीर, इल्क़ाना और
अबियासफ़ थे। उन से क़ोरहियों की तीन शाख़ें
निकलीं। 25 हारून के बेटे इलीअज़र ने फ़ूतीएल की
एक बेटी से शादी की। उन का एक बेटा फ़ीन्हास
था।
यह सब लावी के आबाई घरानों के सरबराह थे।
26 रब ने अम्राम के दो बेटों हारून और मूसा को
हुक्म दिया कि मेरी क़ौम को उस के ख़ानदानों की
तर्तीब के मुताबिक़ मिस्र से निकालो। 27 इन ही दो
आदमियों ने मिस्र के बादशाह फ़िरऔन से बात की
कि इस्राईलियों को मिस्र से जाने दे।

रब दुबारा मूसा से हमकलाम होता है

28 मिस्र में रब ने मूसा से कहा, 29 "मैं रब हूँ। मिस्र
के बादशाह को वह सब कुछ बता देना जो मैं तुझे
बताता हूँ।" 30 मूसा ने एतिराज़ किया, "मैं तो रुक
रुक कर बोलता हूँ। फ़िरऔन किस तरह मेरी बात
मानेगा।"

7 1 लेकिन रब ने कहा, "देख, मेरे कहने पर तू
फ़िरऔन के लिए अल्लाह की हैसियत रखेगा
और तेरा भाई हारून तेरा पैग़म्बर होगा। 2 जो भी
हुक्म मैं तुझे दूँगा उसे तू हारून को बता दे। फिर वह
सब कुछ फ़िरऔन को बताए ताकि वह इस्राईलियों
को अपने मुल्क से जाने दे। 3 लेकिन मैं फ़िरऔन को
अड़ जाने दूँगा। अगरचे मैं मिस्र में बहुत से निशानों
और मोजिज़ों से अपनी क़ुदरत का मुज़ाहरा करूँगा
4 तो भी फ़िरऔन तुम्हारी नहीं सुनेगा। तब मिस्रियों
पर मेरा हाथ भारी हो जाएगा, और मैं उन को सख़्त
सज़ा दे कर अपनी क़ौम इस्राईल को ख़ानदानों की
तर्तीब के मुताबिक़ मिस्र से निकाल लाऊँगा। 5 जब
मैं मिस्र के ख़िलाफ़ अपनी क़ुदरत का इज़हार करके
इस्राईलियों को वहाँ से निकालूँगा तो मिस्री जान लेंगे
कि मैं रब हूँ।"
6 मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा
रब ने उन्हें हुक्म दिया। 7 फ़िरऔन से बात करते वक़्त
मूसा 80 साल का और हारून 83 साल का था।

मूसा की लाठी साँप बन जाती है

8 रब ने मूसा और हारून से कहा, 9 “जब फ़िरऔन
तुम्हें मोजिज़ा दिखाने को कहेगा तो मूसा हारून से
कहे कि अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दे। इस पर वह
साँप बन जाएगी।”
10 मूसा और हारून ने फ़िरऔन के पास जा कर
ऐसा ही किया। हारून ने अपनी लाठी फ़िरऔन और
उस के उह्देदारों के सामने डाल दी तो वह साँप बन
गई। 11 यह देख कर फ़िरऔन ने अपने आलिमों और
जादूगरों को बुलाया। जादूगरों ने भी अपने जादू से
ऐसा ही किया। 12 हर एक ने अपनी लाठी ज़मीन पर
फैंकी तो वह साँप बन गई। लेकिन हारून की लाठी
ने उन की लाठियों को निगल लिया।
13 ताहम फ़िरऔन इस से मुतअस्सिर न हुआ। उस
ने मूसा और हारून की बात सुनने से इन्कार किया।
वैसा ही हुआ जैसा रब ने कहा था।

पानी ख़ून में बदल जाता है

14 फिर रब ने मूसा से कहा, “फ़िरऔन अड़ गया
है। वह मेरी क़ौम को मिस्र छोड़ने से रोकता है।
15 कल सुब्ह-सवेरे जब वह दरया-ए-नील पर आएगा
तो उस से मिलने के लिए दरया के किनारे पर खड़े
हो जाना। उस लाठी को थामे रखना जो साँप बन
गई थी। 16 जब वह वहाँ पहुँचे तो उस से कहना,
‘रब इब्रानियों के ख़ुदा ने मुझे आप को यह बताने
के लिए भेजा है कि मेरी क़ौम को मेरी इबादत करने
के लिए रेगिस्तान में जाने दे। लेकिन आप ने अभी
तक उस की नहीं सुनी। 17 चुनाँचे अब आप जान लेंगे
कि वह रब है। मैं इस लाठी को जो मेरे हाथ में है
ले कर दरया-ए-नील के पानी को मारूँगा। फिर वह
ख़ून में बदल जाएगा। 18 दरया-ए-नील की मछलियाँ
मर जाएँगी, दरया से बदबू उठेगी और मिस्री दरया
का पानी नहीं पी सकेंगे’।”
19 रब ने मूसा से कहा, “हारून को बता देना कि
वह अपनी लाठी ले कर अपना हाथ उन तमाम जगहों
की तरफ़ बढ़ाए जहाँ पानी जमा होता है। तब मिस्र
की तमाम नदियों, नहरों, जोहड़ों और तालाबों का
पानी ख़ून में बदल जाएगा। पूरे मुल्क में ख़ून ही ख़ून
होगा, यहाँ तक कि लकड़ी और पत्थर के बर्तनों का
पानी भी ख़ून में बदल जाएगा।”
20 चुनाँचे मूसा और हारून ने फ़िरऔन और उस के
उह्देदारों के सामने अपनी लाठी उठा कर दरया-ए-
नील के पानी पर मारी। इस पर दरया का सारा पानी
ख़ून में बदल गया। 21 दरया की मछलियाँ मर गईं,
और उस से इतनी बदबू उठने लगी कि मिस्री उस
का पानी न पी सके। मिस्र में चारों तरफ़ ख़ून ही ख़ून
था।
22 लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू के ज़रीए ऐसा
ही किया। इस लिए फ़िरऔन अड़ गया और मूसा
और हारून की बात न मानी। वैसा ही हुआ जैसा रब
ने कहा था। 23 फ़िरऔन पलट कर अपने घर वापस
चला गया। उसे उस की पर्वा नहीं थी जो मूसा और
हारून ने किया था। 24 लेकिन मिस्री दरया से पानी
न पी सके, और उन्हों ने पीने का पानी हासिल करने
के लिए दरया के किनारे किनारे गढ़े खोदे। 25 पानी
के बदल जाने के बाद सात दिन गुज़र गए।

मेंढ़क

8 1 फिर रब ने मूसा से कहा, “फ़िरऔन के पास
जा कर उसे बता देना कि रब फ़रमाता है, ‘मेरी
क़ौम को मेरी इबादत करने के लिए जाने दे, 2 वर्ना
मैं पूरे मिस्र को मेंढ़कों से सज़ा दूँगा। 3 दरया-ए-नील
मेंढ़कों से इतना भर जाएगा कि वह दरया से निकल
कर तेरे महल, तेरे सोने के कमरे और तेरे बिस्तर में
जा घुसेंगे। वह तेरे उह्देदारों और तेरी रआया के घरों
में आएँगे बल्कि तेरे तनूरों और आटा गूँधने के बर्तनों
में भी फुदकते फिरेंगे। 4 मेंढ़क तुझ पर, तेरी क़ौम पर
और तेरे उह्देदारों पर चढ़ जाएंगे’।”
5 रब ने मूसा से कहा, “हारून को बता देना कि
वह अपनी लाठी को हाथ में ले कर उसे दरयाओं,
नहरों और जोहड़ों के ऊपर उठाए ताकि मेंढ़क बाहर

निकल कर मिस्र के मुल्क में फैल जाएँ।” 6 हारून ने
मुल्क-ए-मिस्र के पानी के ऊपर अपनी लाठी उठाई
तो मेंढ़कों के ग़ोल पानी से निकल कर पूरे मुल्क पर
छा गए। 7 लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा
ही किया। वह भी दरया से मेंढ़क निकाल लाए।

8 फ़िरऔन ने मूसा और हारून को बुला कर कहा,
“रब से दुआ करो कि वह मुझ से और मेरी क़ौम से
मेंढ़कों को दूर करे। फिर मैं तुम्हारी क़ौम को जाने
दूँगा ताकि वह रब को क़ुर्बानियाँ पेश करें।”

9 मूसा ने जवाब दिया, “वह वक़्त मुक़र्रर करें जब
मैं आप के उह्देदारों और आप की क़ौम के लिए
दुआ करूँ। फिर जो मेंढ़क आप के पास और आप
के घरों में हैं उसी वक़्त ख़त्म हो जाएंगे। मेंढ़क सिर्फ़
दरया में पाए जाएंगे।”

10 फ़िरऔन ने कहा, “ठीक है, कल उन्हें ख़त्म
करो।” मूसा ने कहा, “जैसा आप कहते हैं वैसा ही
होगा। इस तरह आप को मालूम होगा कि हमारे ख़ुदा
की मानिन्द कोई नहीं है। 11 मेंढ़क आप, आप के
घरों, आप के उह्देदारों और आप की क़ौम को छोड़
कर सिर्फ़ दरया में रह जाएंगे।”

12 मूसा और हारून फ़िरऔन के पास से चले गए,
और मूसा ने रब से मिन्नत की कि वह मेंढ़कों के वह
ग़ोल दूर करे जो उस ने फ़िरऔन के ख़िलाफ़ भेजे थे।
13 रब ने उस की दुआ सुनी। घरों, सहनों और खेतों
में मेंढ़क मर गए। 14 लोगों ने उन्हें जमा करके उन के
ढेर लगा दिए। उन की बदबू पूरे मुल्क में फैल गई।

15 लेकिन जब फ़िरऔन ने देखा कि मसला हल हो
गया है तो वह फिर अकड़ गया और उन की न सुनी।
यूँ रब की बात दुरुस्त निकली।

जूएँ

16 फिर रब ने मूसा से कहा, “हारून से कहना कि
वह अपनी लाठी से ज़मीन की गर्द को मारे। जब
वह ऐसा करेगा तो पूरे मिस्र की गर्द जूओं में बदल
जाएगी।”

17 उन्हों ने ऐसा ही किया। हारून ने अपनी लाठी से
ज़मीन की गर्द को मारा तो पूरे मुल्क की गर्द जूओं में
बदल गई। उन के ग़ोल जानवरों और आदमियों पर
छा गए। 18 जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा करने
की कोशिश की, लेकिन वह गर्द से जूएँ न बना सके।
जूएँ आदमियों और जानवरों पर छा गईं। 19 जादूगरों
ने फ़िरऔन से कहा, “अल्लाह की क़ुदरत ने यह किया
है।” लेकिन फ़िरऔन ने उन की न सुनी। यूँ रब की
बात दुरुस्त निकली।

काटने वाली मक्खियाँ

20 फिर रब ने मूसा से कहा, “जब फ़िरऔन सुब्ह-
सवेरे दरया पर जाए तो तू उस के रास्ते में खड़ा हो
जाना। उसे कहना कि रब फ़रमाता है, ‘मेरी क़ौम को
जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें। 21 वर्ना मैं
तेरे और तेरे उह्देदारों के पास, तेरी क़ौम के पास और
तेरे घरों में काटने वाली मक्खियाँ भेज दूँगा। मिस्रियों
के घर मक्खियों से भर जाएंगे बल्कि जिस ज़मीन
पर वह खड़े हैं वह भी मक्खियों से ढाँकी जाएगी।
22 लेकिन उस वक़्त मैं अपनी क़ौम के साथ जो जुशन
में रहती है फ़र्क़ सुलूक करूँगा। वहाँ एक भी काटने
वाली मक्खी नहीं होगी। इस तरह तुझे पता लगेगा
कि इस मुल्क में मैं ही रब हूँ। 23 मैं अपनी क़ौम और
तेरी क़ौम में इम्तियाज़ करूँगा। कल ही मेरी क़ुदरत
का इज़हार होगा’।”

24 रब ने ऐसा ही किया। काटने वाली मक्खियों के
ग़ोल फ़िरऔन के महल, उस के उह्देदारों के घरों
और पूरे मिस्र में फैल गए। मुल्क का सत्यानास हो
गया।

25 फिर फ़िरऔन ने मूसा और हारून को बुला कर
कहा, “चलो, इसी मुल्क में अपने ख़ुदा को क़ुर्बानियाँ
पेश करो।” 26 लेकिन मूसा ने कहा, “यह मुनासिब
नहीं है। जो क़ुर्बानियाँ हम रब अपने ख़ुदा को पेश
करेंगे वह मिस्रियों की नज़र में घिनौनी हैं। अगर हम
यहाँ ऐसा करें तो क्या वह हमें संगसार नहीं करेंगे?
27 इस लिए लाज़िम है कि हम तीन दिन का सफ़र

करके रेगिस्तान में ही रब अपने ख़ुदा को क़ुर्बानियाँ
पेश करें जिस तरह उस ने हमें हुक्म भी दिया है।”
28 फ़िरऔन ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं तुम्हें
जाने दूँगा ताकि तुम रेगिस्तान में रब अपने ख़ुदा को
क़ुर्बानियाँ पेश करो। लेकिन तुम्हें ज़्यादा दूर नहीं
जाना है। और मेरे लिए भी दुआ करना।”
29 मूसा ने कहा, “ठीक, मैं जाते ही रब से
दुआ करूँगा। कल ही मक्खियाँ फ़िरऔन, उस के
उह्देदारों और उस की क़ौम से दूर हो जाएँगी। लेकिन
हमें दुबारा फ़रेब न देना बल्कि हमें जाने देना ताकि
हम रब को क़ुर्बानियाँ पेश कर सकें।”
30 फिर मूसा फ़िरऔन के पास से चला गया और
रब से दुआ की। 31 रब ने मूसा की दुआ सुनी।
काटने वाली मक्खियाँ फ़िरऔन, उस के उह्देदारों
और उस की क़ौम से दूर हो गईं। एक भी मक्खी न
रही। 32 लेकिन फ़िरऔन फिर अकड़ गया। उस ने
इस्राईलियों को जाने न दिया।

मवेशियों में वबा

9 1 फिर रब ने मूसा से कहा, “फ़िरऔन के पास
जा कर उसे बता कि रब इब्रानियों का ख़ुदा
फ़रमाता है, ‘मेरी क़ौम को जाने दे ताकि वह मेरी
इबादत कर सकें।’ 2 अगर आप इन्कार करें और
उन्हें रोकते रहें 3 तो रब अपनी क़ुदरत का इज़हार
करके आप के मवेशियों में भयानक वबा फैला देगा
जो आप के घोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय-बैलों, भेड़-
बकरियों और मेंढों में फैल जाएगी। 4 लेकिन रब
इस्राईल और मिस्र के मवेशियों में इम्तियाज़ करेगा।
इस्राईलियों का एक भी जानवर नहीं मरेगा। 5 रब ने
फ़ैसला कर लिया है कि वह कल ही ऐसा करेगा।”
6 अगले दिन रब ने ऐसा ही किया। मिस्र के तमाम
मवेशी मर गए, लेकिन इस्राईलियों का एक भी
जानवर न मरा। 7 फ़िरऔन ने कुछ लोगों को उन के
पास भेज दिया तो पता चला कि एक भी जानवर नहीं
मरा। ताहम फ़िरऔन अड़ा रहा। उस ने इस्राईलियों
को जाने न दिया।

फोड़े-फुंसियाँ

8 फिर रब ने मूसा और हारून से कहा, “अपनी
मुट्ठियाँ किसी भट्टी की राख से भर कर फ़िरऔन के
पास जाओ। फिर मूसा फ़िरऔन के सामने यह राख
हवा में उड़ा दे। 9 यह राख बारीक धूल का बादल बन
जाएगी जो पूरे मुल्क पर छा जाएगा। उस के असर
से लोगों और जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ
फूट निकलेंगे।”
10 मूसा और हारून ने ऐसा ही किया। वह किसी
भट्टी से राख ले कर फ़िरऔन के सामने खड़े हो गए।
मूसा ने राख को हवा में उड़ा दिया तो इन्सानों और
जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ निकल आए।
11 इस मर्तबा जादूगर मूसा के सामने खड़े भी न हो
सके क्यूँकि उन के जिस्मों पर भी फोड़े निकल आए
थे। तमाम मिस्रियों का यही हाल था। 12 लेकिन रब
ने फ़िरऔन को ज़िद्दी बनाए रखा, इस लिए उस ने
मूसा और हारून की न सुनी। यूँ वैसा ही हुआ जैसा
रब ने मूसा को बताया था।

ओले

13 इस के बाद रब ने मूसा से कहा, “सुब्ह-सवेरे
उठ और फ़िरऔन के सामने खड़े हो कर उसे बता
कि रब इब्रानियों का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मेरी क़ौम
को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें। 14 वर्ना
मैं अपनी तमाम आफ़तें तुझ पर, तेरे उह्देदारों पर
और तेरी क़ौम पर आने दूँगा। फिर तू जान लेगा कि
तमाम दुनिया में मुझ जैसा कोई नहीं है। 15 अगर मैं
चाहता तो अपनी क़ुदरत से ऐसी वबा फैला सकता
कि तुझे और तेरी क़ौम को दुनिया से मिटा दिया
जाता। 16 लेकिन मैं ने तुझे इस लिए बरपा किया है
कि तुझ पर अपनी क़ुदरत का इज़हार करूँ और
यूँ तमाम दुनिया में मेरे नाम का प्रचार किया जाए।
17 तू अभी तक अपने आप को सरफ़राज़ करके मेरी
क़ौम के ख़िलाफ़ है और उन्हें जाने नहीं देता। 18 इस
लिए कल मैं इसी वक़्त भयानक क़िस्म के ओलों का

तूफ़ान भेज दूँगा। मिस्री क़ौम की इब्तिदा से ले कर
आज तक मिस्र में ओलों का ऐसा तूफ़ान कभी नहीं
आया होगा। 19 अपने बन्दों को अभी भेजना ताकि
वह तेरे मवेशियों को और खेतों में पड़े तेरे माल को
ला कर महफ़ूज़ कर लें। क्यूँकि जो भी खुले मैदान में
रहेगा वह ओलों से मर जाएगा, ख़्वाह इन्सान हो या
हैवान'।"

20 फ़िरऔन के कुछ उह्देदार रब का पैग़ाम सुन कर
डर गए और भाग कर अपने जानवरों और ग़ुलामों
को घरों में ले आए। 21 लेकिन दूसरों ने रब के पैग़ाम
की पर्वा न की। उन के जानवर और ग़ुलाम बाहर
खुले मैदान में रहे।

22 रब ने मूसा से कहा, "अपना हाथ आसमान की
तरफ़ बढ़ा दे। फिर मिस्र के तमाम इन्सानों, जानवरों
और खेतों के पौदों पर ओले पड़ेंगे।" 23 मूसा ने
अपनी लाठी आसमान की तरफ़ उठाई तो रब ने
एक ज़बरदस्त तूफ़ान भेज दिया। ओले पड़े, बिजली
गिरी और बादल गरजते रहे। 24 ओले पड़ते रहे और
बिजली चमकती रही। मिस्री क़ौम की इब्तिदा से ले
कर अब तक ऐसे ख़तरनाक ओले कभी नहीं पड़े थे।
25 इन्सानों से ले कर हैवानों तक खेतों में सब कुछ
बर्बाद हो गया। ओलों ने खेतों में तमाम पौदे और
दरख़्त भी तोड़ दिए। 26 वह सिर्फ़ जुशन के इलाक़े में
न पड़े जहाँ इस्राईली आबाद थे।

27 तब फ़िरऔन ने मूसा और हारून को बुलाया।
उस ने कहा, "इस मर्तबा मैं ने गुनाह किया है। रब
हक़ पर है। मुझ से और मेरी क़ौम से ग़लती हुई
है। 28 ओले और अल्लाह की गरजती आवाज़ें हद से
ज़्यादा हैं। रब से दुआ करो ताकि ओले रुक जाएँ।
अब मैं तुम्हें जाने दूँगा। अब से तुम्हें यहाँ रहना नहीं
पड़ेगा।"

29 मूसा ने फ़िरऔन से कहा, "मैं शहर से निकल
कर दोनों हाथ रब की तरफ़ उठा कर दुआ करूँगा।
फिर गरज और ओले रुक जाएंगे और आप जान लेंगे
कि पूरी दुनिया रब की है। 30 लेकिन मैं जानता हूँ कि
आप और आप के उह्देदार अभी तक रब ख़ुदा का
ख़ौफ़ नहीं मानते।"

31 उस वक़्त सन के फूल निकल चुके थे और जौ
की बालें लग गई थीं। इस लिए यह फ़सलें तबाह हो
गईं। 32 लेकिन गेहूँ और एक और क़िस्म की गन्दुम
जो बाद में पकती है बर्बाद न हुई।

33 मूसा फ़िरऔन को छोड़ कर शहर से निकला।
उस ने रब की तरफ़ अपने हाथ उठाए तो गरज, ओले
और बारिश का तूफ़ान रुक गया। 34 जब फ़िरऔन ने
देखा कि तूफ़ान ख़त्म हो गया है तो वह और उस के
उह्देदार दुबारा गुनाह करके अकड़ गए। 35 फ़िरऔन
अड़ा रहा और इस्राईलियों को जाने न दिया। वैसा ही
हुआ जैसा रब ने मूसा से कहा था।

टिड्डियाँ

10 1 फिर रब ने मूसा से कहा, "फ़िरऔन के
पास जा, क्यूँकि मैं ने उस का और उस
के दरबारियों का दिल सख़्त कर दिया है ताकि उन
के दरमियान अपने मोजिज़ों और अपनी क़ुदरत का
इज़हार कर सकूँ 2 और तुम अपने बेटे-बेटियों और
पोते-पोतियों को सुना सको कि मैं ने मिस्रियों के साथ
क्या सुलूक किया है और उन के दरमियान किस तरह
के मोजिज़े करके अपनी क़ुदरत का इज़हार किया है।
यूँ तुम जान लोगे कि मैं रब हूँ।"

3 मूसा और हारून फ़िरऔन के पास गए। उन्हों ने
उस से कहा, "रब इब्रानियों के ख़ुदा का फ़रमान है,
'तू कब तक मेरे सामने हथियार डालने से इन्कार
करेगा? मेरी क़ौम को मेरी इबादत करने के लिए
जाने दे, 4 वर्ना मैं कल तेरे मुल्क में टिड्डियाँ लाऊँगा।
5 उन के ग़ोल ज़मीन पर यूँ छा जाएंगे कि ज़मीन नज़र
ही नहीं आएगी। जो कुछ ओलों ने तबाह नहीं किया
उसे वह चट कर जाएँगी। बचे हुए दरख़्तों के पत्ते
भी ख़त्म हो जाएंगे। 6 तेरे महल, तेरे उह्देदारों और
बाक़ी लोगों के घर उन से भर जाएंगे। जब से मिस्री
इस मुल्क में आबाद हुए हैं तुम ने कभी टिड्डियों का

ऐसा सख़्त हम्ला नहीं देखा होगा'।" यह कह कर मूसा पलट कर वहाँ से चला गया।

7 इस पर दरबारियों ने फ़िरऔन से बात की, "हम कब तक इस मर्द के जाल में फंसे रहें? इस्राईलियों को रब अपने ख़ुदा की इबादत करने के लिए जाने दें। क्या आप को अभी तक मालूम नहीं कि मिस्र बर्बाद हो गया है?"

8 तब मूसा और हारून को फ़िरऔन के पास बुलाया गया। उस ने उन से कहा, "जाओ, अपने ख़ुदा की इबादत करो। लेकिन यह बताओ कि कौन कौन साथ जाएगा?" 9 मूसा ने जवाब दिया, "हमारे जवान और बूढ़े साथ जाएंगे। हम अपने बेटे-बेटियों, भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को भी साथ ले कर जाएंगे। हम सब के सब जाएंगे, क्यूँकि हमें रब की ईद मनानी है।"

10 फ़िरऔन ने तन्ज़न कहा, "ठीक है, जाओ और रब तुम्हारे साथ हो। नहीं, मैं किस तरह तुम सब को बाल-बच्चों समेत जाने दे सकता हूँ? तुम ने कोई बुरा मन्सूबा बनाया है। 11 नहीं, सिर्फ़ मर्द जा कर रब की इबादत कर सकते हैं। तुम ने तो यही दरख़्वास्त की थी।" तब मूसा और हारून को फ़िरऔन के सामने से निकाल दिया गया।

12 फिर रब ने मूसा से कहा, "मिस्र पर अपना हाथ उठा ताकि टिड्डियाँ आ कर मिस्र की सरज़मीन पर फैल जाएँ। जो कुछ भी खेतों में ओलों से बच गया है उसे वह खा जाएँगी।"

13 मूसा ने अपनी लाठी मिस्र पर उठाई तो रब ने मशरिक़ से आँधी चलाई जो सारा दिन और सारी रात चलती रही और अगली सुब्ह तक मिस्र में टिड्डियाँ पहुँचाईं। 14 बेशुमार टिड्डियाँ पूरे मुल्क पर हम्ला करके हर जगह बैठ गईं। इस से पहले या बाद में कभी भी टिड्डियों का इतना सख़्त हम्ला न हुआ था। 15 उन्हों ने ज़मीन को यूँ ढाँक लिया कि वह काली नज़र आने लगी। जो कुछ भी ओलों से बच गया था चाहे खेतों के पौदे या दरख़्तों के फल थे उन्हों ने खा लिया। मिस्र में एक भी दरख़्त या पौदा न रहा जिस के पत्ते बच गए हों।

16 तब फ़िरऔन ने मूसा और हारून को जल्दी से बुलवाया। उस ने कहा, "मैं ने तुम्हारे ख़ुदा का और तुम्हारा गुनाह किया है। 17 अब एक और मर्तबा मेरा गुनाह मुआफ़ करो और रब अपने ख़ुदा से दुआ करो ताकि मौत की यह हालत मुझ से दूर हो जाए।"

18 मूसा ने महल से निकल कर रब से दुआ की। 19 जवाब में रब ने हवा का रुख़ बदल दिया। उस ने मग़रिब से तेज़ आँधी चलाई जिस ने टिड्डियों को उड़ा कर बहर-ए-क़ुल्ज़ुम में डाल दिया। मिस्र में एक भी टिड्डी न रही। 20 लेकिन रब ने होने दिया कि फ़िरऔन फिर अड़ गया। उस ने इस्राईलियों को जाने न दिया।

अंधेरा

21 इस के बाद रब ने मूसा से कहा, "अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठा तो मिस्र पर अंधेरा छा जाएगा। इतना अंधेरा होगा कि बन्दा उसे छू सकेगा।" 22 मूसा ने अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठाया तो तीन दिन तक मिस्र पर गहरा अंधेरा छाया रहा। 23 तीन दिन तक लोग न एक दूसरे को देख सके, न कहीं जा सके। लेकिन जहाँ इस्राईली रहते थे वहाँ रौशनी थी।

24 तब फ़िरऔन ने मूसा को फिर बुलवाया और कहा, "जाओ, रब की इबादत करो! तुम अपने साथ बाल-बच्चों को भी ले जा सकते हो। सिर्फ़ अपनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल पीछे छोड़ देना।" 25 मूसा ने जवाब दिया, "क्या आप ही हमें क़ुर्बानियों के लिए जानवर देंगे ताकि उन्हें रब अपने ख़ुदा को पेश करें? 26 यक़ीनन नहीं। इस लिए लाज़िम है कि हम अपने जानवरों को साथ ले कर जाएँ। एक खुर भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा, क्यूँकि अभी तक हमें मालूम नहीं कि रब की इबादत के लिए किन किन जानवरों की ज़रूरत होगी। यह उस वक़्त ही पता चलेगा जब हम मन्ज़िल-ए-मक़सूद पर पहुँचेंगे। इस लिए ज़रूरी है कि हम सब को अपने साथ ले कर जाएँ।"

27 लेकिन रब की मर्ज़ी के मुताबिक़ फ़िरऔन अड़
गया। उस ने उन्हें जाने न दिया। 28 उस ने मूसा से
कहा, “दफ़ा हो जा। ख़बरदार! फिर कभी अपनी
शक्ल न दिखाना, वर्ना तुझे मौत के हवाले कर दिया
जाएगा।” 29 मूसा ने कहा, “ठीक है, आप की मर्ज़ी।
मैं फिर कभी आप के सामने नहीं आऊँगा।”

आख़िरी सज़ा का एलान

11 1 तब रब ने मूसा से कहा, “अब मैं फ़िरऔन
और मिस्र पर आख़िरी आफ़त लाने को
हूँ। इस के बाद वह तुम्हें जाने देगा बल्कि तुम्हें
ज़बरदस्ती निकाल देगा। 2 इस्राईलियों को बता देना
कि हर मर्द अपने पड़ोसी और हर औरत अपनी
पड़ोसन से सोने-चाँदी की चीज़ें माँग ले।” 3 (रब ने
मिस्रियों के दिल इस्राईलियों की तरफ़ माइल कर
दिए थे। वह फ़िरऔन के उह्देदारों समेत ख़ासकर
मूसा की बड़ी इज़्ज़त करते थे)।
4 मूसा ने कहा, “रब फ़रमाता है, ‘आज आधी रात
के वक़्त मैं मिस्र में से गुज़रूँगा। 5 तब बादशाह के
पहलौठे से ले कर चक्की पीसने वाली नौकरानी के
पहलौठे तक मिस्रियों का हर पहलौठा मर जाएगा।
चौपाइयों के पहलौठे भी मर जाएंगे। 6 मिस्र की
सरज़मीन पर ऐसा रोना पीटना होगा कि न माज़ी में
कभी हुआ, न मुस्तक़बिल में कभी होगा। 7 लेकिन
इस्राईली और उन के जानवर बचे रहेंगे। कुत्ता भी
उन पर नहीं भौंकेगा। इस तरह तुम जान लोगे कि
रब इस्राईलियों की निस्बत मिस्रियों से फ़र्क़ सुलूक
करता है’।” 8 मूसा ने यह कुछ फ़िरऔन को बताया
फिर कहा, “उस वक़्त आप के तमाम उह्देदार
आ कर मेरे सामने झुक जाएंगे और मिन्नत करेंगे,
‘अपने पैरोकारों के साथ चले जाएँ।’ तब मैं चला
ही जाऊँगा।” यह कह कर मूसा फ़िरऔन के पास से
चला गया। वह बड़े ग़ुस्से में था।
9 रब ने मूसा से कहा था, “फ़िरऔन तुम्हारी नहीं
सुनेगा। क्यूँकि लाज़िम है कि मैं मिस्र में अपनी क़ुदरत
का मज़ीद इज़हार करूँ।” 10 गो मूसा और हारून ने
फ़िरऔन के सामने यह तमाम मोजिज़े दिखाए, लेकिन
रब ने फ़िरऔन को ज़िद्दी बनाए रखा, इस लिए उस
ने इस्राईलियों को मुल्क छोड़ने न दिया।

फ़सह की ईद

12 1 फिर रब ने मिस्र में मूसा और हारून से
कहा, 2 “अब से यह महीना तुम्हारे लिए
साल का पहला महीना हो।” 3 इस्राईल की पूरी
जमाअत को बताना कि इस महीने के दसवें दिन
हर ख़ानदान का सरपरस्त अपने घराने के लिए लेला
यानी भेड़ या बकरी का बच्चा हासिल करे। 4 अगर
घराने के अफ़राद पूरा जानवर खाने के लिए कम हों
तो वह अपने सब से क़रीबी पड़ोसी के साथ मिल
कर लेला हासिल करें। इतने लोग उस में से खाएँ
कि सब के लिए काफ़ी हो और पूरा जानवर खाया
जाए। 5 इस के लिए एक साल का नर बच्चा चुन लेना
जिस में नुक़्स न हो। वह भेड़ या बकरी का बच्चा हो
सकता है।
6 महीने के 14वें दिन तक उस की देख-भाल करो।
उस दिन तमाम इस्राईली सूरज के ग़ुरूब होते वक़्त
अपने लेले ज़बह करें। 7 हर ख़ानदान अपने जानवर
का कुछ ख़ून जमा करके उसे उस घर के दरवाज़े
की चौखट पर लगाए जहाँ लेला खाया जाएगा।
यह ख़ून चौखट के ऊपर वाले हिस्से और दाएँ
बाएँ के बाज़ूओं पर लगाया जाए। 8 लाज़िम है कि
लोग जानवर को भून कर उसी रात खाएँ। साथ
ही वह कड़वा साग-पात और बेख़मीरी रोटियाँ भी
खाएँ। 9 लेले का गोश्त कच्चा न खाना, न उसे पानी
में उबालना बल्कि पूरे जानवर को सर, पैरों और
अन्दरूनी हिस्सों समेत आग पर भूनना। 10 लाज़िम
है कि पूरा गोश्त उसी रात खाया जाए। अगर कुछ
सुब्ह तक बच जाए तो उसे जलाना है। 11 खाना खाते
वक़्त ऐसा लिबास पहनना जैसे तुम सफ़र पर जा रहे
हो। अपने जूते पहने रखना और हाथ में सफ़र के लिए
लाठी लिए हुए तुम उसे जल्दी जल्दी खाना। रब के
फ़सह की ईद यूँ मनाना।

12 मैं आज रात मिस्र में से गुज़रूँगा और हर पहलौठे
को जान से मार दूँगा, ख़्वाह इन्सान का हो या हैवान
का। यूँ मैं जो रब हूँ मिस्र के तमाम देवताओं की
अदालत करूँगा। 13 लेकिन तुम्हारे घरों पर लगा
हुआ ख़ून तुम्हारा ख़ास निशान होगा। जिस जिस
घर के दरवाज़े पर मैं वह ख़ून देखूँगा उसे छोड़ता
जाऊँगा। जब मैं मिस्र पर हम्ला करूँगा तो मोहलिक
वबा तुम तक नहीं पहुँचेगी। 14 आज की रात को
हमेशा याद रखना। इसे नस्ल-दर-नस्ल और हर साल
रब की ख़ास ईद के तौर पर मनाना।

बेख़मीरी रोटी की ईद

15 सात दिन तक बेख़मीरी रोटी खाना है। पहले दिन
अपने घरों से तमाम ख़मीर निकाल देना। अगर कोई
इन सात दिनों के दौरान ख़मीर खाए तो उसे क़ौम में
से मिटाया जाए। 16 इस ईद के पहले और आख़िरी
दिन मुक़द्दस इजतिमा मुनअक़िद करना। इन तमाम
दिनों के दौरान काम न करना। सिर्फ़ एक काम की
इजाज़त है और वह है अपना खाना तय्यार करना।
17 बेख़मीरी रोटी की ईद मनाना लाज़िम है, क्यूँकि
उस दिन मैं तुम्हारे मुतअद्दिद ख़ानदानों को मिस्र से
निकाल लाया। इस लिए यह दिन नस्ल-दर-नस्ल हर
साल याद रखना। 18 पहले महीने के 14वें दिन की
शाम से ले कर 21वें दिन की शाम तक सिर्फ़ बेख़मीरी
रोटी खाना। 19 सात दिन तक तुम्हारे घरों में ख़मीर
न पाया जाए। जो भी इस दौरान ख़मीर खाए उसे
इस्राईल की जमाअत में से मिटाया जाए, ख़्वाह वह
इस्राईली शहरी हो या अजनबी। 20 ग़रज़, इस ईद के
दौरान ख़मीर न खाना। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ
बेख़मीरी रोटी ही खाना है।

पहलौठों की हलाकत

21 फिर मूसा ने तमाम इस्राईली बुज़ुर्गों को बुला कर
उन से कहा, "जाओ, अपने ख़ानदानों के लिए भेड़
या बकरी के बच्चे चुन कर उन्हें फ़सह की ईद के
लिए ज़बह करो। 22 ज़ूफ़े का गुच्छा ले कर उसे ख़ून
से भरे हुए बासन में डुबो देना। फिर उसे ले कर ख़ून
को चौखट के ऊपर वाले हिस्से और दाएँ बाएँ के
बाज़ूओं पर लगा देना। सुब्ह तक कोई अपने घर से न
निकले। 23 जब रब मिस्रियों को मार डालने के लिए
मुल्क में से गुज़रेगा तो वह चौखट के ऊपर वाले
हिस्से और दाएँ बाएँ के बाज़ूओं पर लगा हुआ ख़ून
देख कर उन घरों को छोड़ देगा। वह हलाक करने
वाले फ़रिश्ते को इजाज़त नहीं देगा कि वह तुम्हारे
घरों में जा कर तुम्हें हलाक करे।

24 तुम अपनी औलाद समेत हमेशा इन हिदायात
पर अमल करना। 25 यह रस्म उस वक़्त भी अदा
करना जब तुम उस मुल्क में पहुँचोगे जो रब तुम्हें
देगा। 26 और जब तुम्हारे बच्चे तुम से पूछें कि हम यह
ईद क्यूँ मनाते हैं 27 तो उन से कहो, 'यह फ़सह की
क़ुर्बानी है जो हम रब को पेश करते हैं। क्यूँकि जब
रब मिस्रियों को हलाक कर रहा था तो उस ने हमारे
घरों को छोड़ दिया था'।"

यह सुन कर इस्राईलियों ने अल्लाह को सिज्दा
किया। 28 फिर उन्हों ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा
रब ने मूसा और हारून को बताया था।

29 आधी रात को रब ने बादशाह के पहलौठे से
ले कर जेल के क़ैदी के पहलौठे तक मिस्रियों के
तमाम पहलौठों को जान से मार दिया। चौपाइयों के
पहलौठे भी मर गए। 30 उस रात मिस्र के हर घर में
कोई न कोई मर गया। फ़िरऔन, उस के उह्देदार
और मिस्र के तमाम लोग जाग उठे और ज़ोर ज़ोर से
रोने और चीख़ने लगे।

इस्राईलियों की हिज्रत

31 अभी रात थी कि फ़िरऔन ने मूसा और हारून
को बुला कर कहा, "अब तुम और बाक़ी इस्राईली
मेरी क़ौम में से निकल जाओ। अपनी दरख़्वास्त के
मुताबिक़ रब की इबादत करो। 32 जिस तरह तुम
चाहते हो अपनी भेड़-बकरियों को भी अपने साथ ले
जाओ। और मुझे भी बरकत देना।" 33 बाक़ी मिस्रियों

ने भी इस्राईलियों पर ज़ोर दे कर कहा, “जल्दी जल्दी मुल्क से निकल जाओ, वर्ना हम सब मर जाएंगे।”

34 इस्राईलियों के गूँधे हुए आटे में ख़मीर नहीं था। उन्हों ने उसे गूँधने के बर्तनों में रख कर अपने कपड़ों में लपेट लिया और सफ़र करते वक़्त अपने कंधों पर रख लिया। 35 इस्राईली मूसा की हिदायत पर अमल करके अपने मिस्री पड़ोसियों के पास गए और उन से कपड़े और सोने-चाँदी की चीज़ें माँगीं। 36 रब ने मिस्रियों के दिलों को इस्राईलियों की तरफ़ माइल कर दिया था, इस लिए उन्हों ने उन की हर दरख़्वास्त पूरी की। यूँ इस्राईलियों ने मिस्रियों को लूट लिया।

37 इस्राईली रामसीस से रवाना हो कर सुक्कात पहुँच गए। औरतों और बच्चों को छोड़ कर उन के 6 लाख मर्द थे। 38 वह अपने भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के बड़े बड़े रेवड़ भी साथ ले गए। बहुत से ऐसे लोग भी उन के साथ निकले जो इस्राईली नहीं थे। 39 रास्ते में उन्हों ने उस बेख़मीरी आटे से रोटियाँ बनाईं जो वह साथ ले कर निकले थे। आटे में इस लिए ख़मीर नहीं था कि उन्हें इतनी जल्दी से मिस्र से निकाल दिया गया था कि खाना तय्यार करने का वक़्त ही न मिला था।

40 इस्राईली 430 साल तक मिस्र में रहे थे। 41 430 साल के ऐन बाद, उसी दिन रब के यह तमाम ख़ानदान मिस्र से निकले। 42 उस ख़ास रात रब ने ख़ुद पहरा दिया ताकि इस्राईली मिस्र से निकल सकें। इस लिए तमाम इस्राईलियों के लिए लाज़िम है कि वह नस्ल-दर-नस्ल इस रात रब की ताज़ीम में जागते रहें, वह भी और उन के बाद की औलाद भी।

फ़सह की ईद की हिदायात

43 रब ने मूसा और हारून से कहा, “फ़सह की ईद के यह उसूल हैं :

किसी भी परदेसी को फ़सह की ईद का खाना खाने की इजाज़त नहीं है। 44 अगर तुम ने किसी ग़ुलाम को ख़रीद कर उस का ख़तना किया है तो वह फ़सह का खाना खा सकता है। 45 लेकिन ग़ैरशहरी या मज़दूर को फ़सह का खाना खाने की इजाज़त नहीं है। 46 यह खाना एक ही घर के अन्दर खाना है। न गोश्त घर से बाहर ले जाना, न लेले की किसी हड्डी को तोड़ना। 47 लाज़िम है कि इस्राईल की पूरी जमाअत यह ईद मनाए। 48 अगर कोई परदेसी तुम्हारे साथ रहता है जो फ़सह की ईद में शिर्कत करना चाहे तो लाज़िम है कि पहले उस के घराने के हर मर्द का ख़तना किया जाए। तब वह इस्राईली की तरह खाने में शरीक हो सकता है। लेकिन जिस का ख़तना न हुआ उसे फ़सह का खाना खाने की इजाज़त नहीं है। 49 यही उसूल हर एक पर लागू होगा, ख़्वाह वह इस्राईली हो या परदेसी।”

50 तमाम इस्राईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा और हारून से कहा था। 51 उसी दिन रब तमाम इस्राईलियों को ख़ानदानों की तर्तीब के मुताबिक़ मिस्र से निकाल लाया।

यह ईद नजात की याद दिलाती

13 1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इस्राईलियों के हर पहलौठे को मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करना है। हर पहला नर बच्चा मेरा ही है, ख़्वाह इन्सान का हो या हैवान का।” 3 फिर मूसा ने लोगों से कहा, “इस दिन को याद रखो जब तुम रब की अज़ीम क़ुदरत के बाइस मिस्र की ग़ुलामी से निकले। इस दिन कोई चीज़ न खाना जिस में ख़मीर हो। 4 आज ही अबीब के महीने [k]में तुम मिस्र से रवाना हो रहे हो। 5 रब ने तुम्हारे बापदादा से क़सम खा कर वादा किया है कि वह तुम को कनआनी, हित्ती, अमोरी, हिव्वी और यबूसी क़ौमों का मुल्क देगा, एक ऐसा मुल्क जिस में दूध और शहद की कसरत है। जब रब तुम्हें उस मुल्क में पहुँचा देगा तो लाज़िम है कि तुम इसी महीने में यह रस्म मनाओ। 6 सात दिन बेख़मीरी रोटी

[k]मार्च ता अप्रैल।

खाओ। सातवें दिन रब की ताज़ीम में ईद मनाओ।
7 सात दिन ख़मीरी रोटी न खाना। कहीं भी ख़मीर न
पाया जाए। पूरे मुल्क में ख़मीर का नाम-ओ-निशान
तक न हो।
8 उस दिन अपने बेटे से यह कहो, 'मैं यह ईद उस
काम की ख़ुशी में मनाता हूँ जो रब ने मेरे लिए किया
जब मैं मिस्र से निकला।' 9 यह ईद तुम्हारे हाथ या
पेशानी पर निशान की मानिन्द हो जो तुम्हें याद दिलाए
कि रब की शरीअत को तुम्हारे होंटों पर रहना है।
क्यूँकि रब तुम्हें अपनी अज़ीम क़ुदरत से मिस्र से
निकाल लाया। 10 इस दिन की याद हर साल ठीक
वक़्त पर मनाना।

पहलौठों की मख़्सूसियत

11 रब तुम्हें कनआनियों के उस मुल्क में ले जाएगा
जिस का वादा उस ने क़सम खा कर तुम और तुम्हारे
बापदादा से किया है। 12 लाज़िम है कि वहाँ पहुँच
कर तुम अपने तमाम पहलौठों को रब के लिए
मख़्सूस करो। तुम्हारे मवेशियों के तमाम पहलौठे भी
रब की मिलकियत हैं। 13 अगर तुम अपना पहलौठा
गधा ख़ुद रखना चाहो तो रब को उस के बदले
भेड़ या बकरी का बच्चा पेश करो। लेकिन अगर
तुम उसे रखना नहीं चाहते तो उस की गर्दन तोड़
डालो। लेकिन इन्सान के पहलौठों के लिए हर सूरत
में इवज़ी देना है।
14 आने वाले दिनों में जब तुम्हारा बेटा पूछे कि इस
का क्या मतलब है तो उसे जवाब देना, 'रब अपनी
अज़ीम क़ुदरत से हमें मिस्र की ग़ुलामी से निकाल
लाया। 15 जब फ़िरऔन ने अकड़ कर हमें जाने न
दिया तो रब ने मिस्र के तमाम इन्सानों और हैवानों
के पहलौठों को मार डाला। इस वजह से मैं अपने
जानवरों का हर पहला बच्चा रब को क़ुर्बान करता
और अपने हर पहलौठे के लिए इवज़ी देता हूँ'। 16 यह
दस्तूर तुम्हारे हाथ और पेशानी पर निशान की मानिन्द
हो जो तुम्हें याद दिलाए कि रब हमें अपनी क़ुदरत
से मिस्र से निकाल लाया।"

मिस्र से निकलने का रास्ता

17 जब फ़िरऔन ने इस्राईली क़ौम को जाने दिया तो
अल्लाह उन्हें फ़िलिस्तियों के इलाक़े में से गुज़रने वाले
रास्ते से ले कर न गया, अगरचे उस पर चलते हुए
वह जल्द ही मुल्क-ए-कनआन पहुँच जाते। बल्कि
रब ने कहा, "अगर उस रास्ते पर चलेंगे तो उन्हें
दूसरों से लड़ना पड़ेगा। ऐसा न हो कि वह इस वजह
से अपना इरादा बदल कर मिस्र लौट जाएँ।" 18 इस
लिए अल्लाह उन्हें दूसरे रास्ते से ले कर गया, और
वह रेगिस्तान के रास्ते से बहर-ए-क़ुल्ज़ुम की तरफ़
बढ़े। मिस्र से निकलते वक़्त मर्द मुसल्लह थे। 19 मूसा
यूसुफ़ का ताबूत भी अपने साथ ले गया, क्यूँकि
यूसुफ़ ने इस्राईलियों को क़सम दिला कर कहा था,
"अल्लाह यक़ीनन तुम्हारी देख-भाल करके वहाँ ले
जाएगा। उस वक़्त मेरी हड्डियों को भी उठा कर साथ
ले जाना।"
20 इस्राईलियों ने सुक्कात को छोड़ कर एताम में
अपने ख़ैमे लगाए। एताम रेगिस्तान के किनारे पर
था। 21 रब उन के आगे आगे चलता गया, दिन के
वक़्त बादल के सतून में ताकि उन्हें रास्ते का पता
लगे और रात के वक़्त आग के सतून में ताकि उन्हें
रौशनी मिले। यूँ वह दिन और रात सफ़र कर सकते
थे। 22 दिन के वक़्त बादल का सतून और रात के
वक़्त आग का सतून उन के सामने रहा। वह कभी
भी अपनी जगह से न हटा।

इस्राईल समुन्दर में से गुज़रता है

14 1 तब रब ने मूसा से कहा, 2 "इस्राईलियों
को कह देना कि वह पीछे मुड़ कर मिज्दाल
और समुन्दर के बीच यानी फ़ी-हख़ीरोत के नज़्दीक
रुक जाएँ। वह बाल-सफ़ोन के मुक़ाबिल साहिल पर
अपने ख़ैमे लगाएँ। 3 यह देख कर फ़िरऔन समझेगा
कि इस्राईली रास्ता भूल कर आवारा फिर रहे हैं
और कि रेगिस्तान ने चारों तरफ़ उन्हें घेर रखा
है। 4 फिर मैं फ़िरऔन को दुबारा अड़ जाने दूँगा,

और वह इस्राईलियों का पीछा करेगा। लेकिन मैं
फ़िरऔन और उस की पूरी फ़ौज पर अपना जलाल
ज़ाहिर करूँगा। मिस्री जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”
इस्राईलियों ने ऐसा ही किया।

5 जब मिस्र के बादशाह को इत्तिला दी गई कि
इस्राईली हिज्रत कर गए हैं तो उस ने और उस के
दरबारियों ने अपना ख़याल बदल कर कहा, “हम ने
क्या किया है? हम ने उन्हें जाने दिया है, और अब
हम उन की ख़िदमत से महरूम हो गए हैं।” 6 चुनाँचे
बादशाह ने अपना जंगी रथ तय्यार करवाया और
अपनी फ़ौज को ले कर निकला। 7 वह 600 बेहतरीन
क़िस्म के रथ और मिस्र के बाक़ी तमाम रथों को साथ
ले गया। तमाम रथों पर अफ़सरान मुक़र्रर थे। 8 रब
ने मिस्र के बादशाह फ़िरऔन को दुबारा अड़ जाने
दिया था, इस लिए जब इस्राईली बड़े इख़तियार के
साथ निकल रहे थे तो वह उन का ताक़्क़ुब करने
लगा। 9 इस्राईलियों का पीछा करते करते फ़िरऔन
के तमाम घोड़े, रथ, सवार और फ़ौजी उन के क़रीब
पहुँचे। इस्राईली बहर-ए-क़ुल्ज़ुम के साहिल पर बाल-
सफ़ोन के मुक़ाबिल फ़ी-हख़ीरोत के नज़्दीक ख़ैमे
लगा चुके थे।

10 जब इस्राईलियों ने फ़िरऔन और उस की फ़ौज
को अपनी तरफ़ बढ़ते देखा तो वह सख़्त घबरा गए
और मदद के लिए रब के सामने चीख़ने-चिल्लाने लगे।
11 उन्हों ने मूसा से कहा, “क्या मिस्र में क़ब्रों की कमी
थी कि आप हमें रेगिस्तान में ले आए हैं? हमें मिस्र
से निकाल कर आप ने हमारे साथ क्या किया है?
12 क्या हम ने मिस्र में आप से दरख़्वास्त नहीं की थी
कि मेहरबानी करके हमें छोड़ दें, हमें मिस्रियों की
ख़िदमत करने दें? यहाँ आ कर रेगिस्तान में मर जाने
की निस्बत बेहतर होता कि हम मिस्रियों के ग़ुलाम
रहते।”

13 लेकिन मूसा ने जवाब दिया, “मत घबराओ।
आराम से खड़े रहो और देखो कि रब तुम्हें आज किस
तरह बचाएगा। आज के बाद तुम इन मिस्रियों को
फिर कभी नहीं देखोगे। 14 रब तुम्हारे लिए लड़ेगा।
तुम्हें बस, चुप रहना है।”

15 फिर रब ने मूसा से कहा, “तू मेरे सामने क्यूँ
चीख़ रहा है? इस्राईलियों को आगे बढ़ने का हुक्म
दे। 16 अपनी लाठी को पकड़ कर उसे समुन्दर के
ऊपर उठा तो वह दो हिस्सों में बट जाएगा। इस्राईली
ख़ुश्क ज़मीन पर समुन्दर में से गुज़रेंगे। 17 मैं मिस्रियों
को अड़े रहने दूँगा ताकि वह इस्राईलियों का पीछा
करें। फिर मैं फ़िरऔन, उस की सारी फ़ौज, उस के
रथों और उस के सवारों पर अपना जलाल ज़ाहिर
करूँगा। 18 जब मैं फ़िरऔन, उस के रथों और उस
के सवारों पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा तो मिस्री
जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

19 अल्लाह का फ़रिश्ता इस्राईली लश्कर के आगे
आगे चल रहा था। अब वह वहाँ से हट कर उन के
पीछे खड़ा हो गया। बादल का सतून भी लोगों के
आगे से हट कर उन के पीछे जा खड़ा हुआ। 20 इस
तरह बादल मिस्रियों और इस्राईलियों के लश्करों के
दरमियान आ गया। पूरी रात मिस्रियों की तरफ़ अंधेरा
ही अंधेरा था जबकि इस्राईलियों की तरफ़ रौशनी
थी। इस लिए मिस्री पूरी रात के दौरान इस्राईलियों
के क़रीब न आ सके।

21 मूसा ने अपना हाथ समुन्दर के ऊपर उठाया तो
रब ने मशरिक़ से तेज़ आँधी चलाई। आँधी तमाम
रात चलती रही। उस ने समुन्दर को पीछे हटा कर
उस की तह ख़ुश्क कर दी। समुन्दर दो हिस्सों में बट
गया 22 तो इस्राईली समुन्दर में से ख़ुश्क ज़मीन पर
चलते हुए गुज़र गए। उन के दाईं और बाईं तरफ़ पानी
दीवार की तरह खड़ा रहा।

23 जब मिस्रियों को पता चला तो फ़िरऔन के
तमाम घोड़े, रथ और घुड़सवार भी उन के पीछे पीछे
समुन्दर में चले गए। 24 सुब्ह-सवेरे ही रब ने बादल
और आग के सतून से मिस्र की फ़ौज पर निगाह की
और उस में अब्तरी पैदा कर दी। 25 उन के रथों के
पहिए निकल गए तो उन पर क़ाबू पाना मुश्किल हो
गया। मिस्रियों ने कहा, “आओ, हम इस्राईलियों से

भाग जाएँ, क्यूँकि रब उन के साथ है। वही मिस्र का
मुक़ाबला कर रहा है।”
26 तब रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ समुन्दर
के ऊपर उठा। फिर पानी वापस आ कर मिस्रियों, उन
के रथों और घुड़सवारों को डुबो देगा।” 27 मूसा ने
अपना हाथ समुन्दर के ऊपर उठाया तो दिन निकलते
वक़्त पानी मामूल के मुताबिक़ बहने लगा, और जिस
तरफ़ मिस्री भाग रहे थे वहाँ पानी ही पानी था। यूँ रब
ने उन्हें समुन्दर में बहा कर ग़र्क़ कर दिया। 28 पानी
वापस आ गया। उस ने रथों और घुड़सवारों को ढाँक
लिया। फ़िरऔन की पूरी फ़ौज जो इस्राईलियों का
ताक़्क़ुब कर रही थी डूब कर तबाह हो गई। उन में
से एक भी न बचा। 29 लेकिन इस्राईली ख़ुश्क ज़मीन
पर समुन्दर में से गुज़रे। उन के दाईं और बाईं तरफ़
पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।
30 उस दिन रब ने इस्राईलियों को मिस्रियों से
बचाया। मिस्रियों की लाशें उन्हें साहिल पर नज़र
आईं। 31 जब इस्राईलियों ने रब की यह अज़ीम
क़ुदरत देखी जो उस ने मिस्रियों पर ज़ाहिर की थी
तो रब का ख़ौफ़ उन पर छा गया। वह उस पर और
उस के ख़ादिम मूसा पर एतिमाद करने लगे।

मूसा का गीत

15 1 तब मूसा और इस्राईलियों ने रब के लिए
यह गीत गाया,
“मैं रब की तम्जीद में गीत गाऊँगा, क्यूँकि वह
निहायत अज़ीम है। घोड़े और उस के सवार को उस
ने समुन्दर में पटख़ दिया है।

2 रब मेरी क़ुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नजात
बन गया है। वही मेरा ख़ुदा है, और मैं उस की तारीफ़
करूँगा। वही मेरे बाप का ख़ुदा है, और मैं उस की
ताज़ीम करूँगा।
3 रब सूरमा है, रब उस का नाम है।
4 फ़िरऔन के रथों और फ़ौज को उस ने समुन्दर में
पटख़ दिया तो बादशाह के बेहतरीन अफ़सरान बहर-
ए-क़ुल्ज़ुम में डूब गए।
5 गहरे पानी ने उन्हें ढाँक लिया, और वह पत्थर
की तरह समुन्दर की तह तक उतर गए।

6 ऐ रब, तेरे दहने हाथ का जलाल बड़ी क़ुदरत से
ज़ाहिर होता है। ऐ रब, तेरा दहना हाथ दुश्मन को
चिकनाचूर कर देता है।
7 जो तेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े होते हैं उन्हें तू अपनी
अज़मत का इज़हार करके ज़मीन पर पटख़ देता है।
तेरा ग़ज़ब उन पर आन पड़ता है तो वह आग में भूसे
की तरह जल जाते हैं।
8 तू ने ग़ुस्से में आ कर फूँक मारी तो पानी ढेर की
सूरत में जमा हो गया। बहता पानी ठोस दीवार बन
गया, समुन्दर गहराई तक जम गया।
9 दुश्मन ने डींग मार कर कहा, ‘मैं उन का पीछा
करके उन्हें पकड़ लूँगा, मैं उन का लूटा हुआ माल
तक़्सीम करूँगा। मेरी लालची जान उन से सेर हो
जाएगी, मैं अपनी तलवार खैंच कर उन्हें हलाक
करूँगा।’
10 लेकिन तू ने उन पर फूँक मारी तो समुन्दर ने उन्हें
ढाँक लिया, और वह सीसे की तरह ज़ोरदार मौजों
में डूब गए।

11 ऐ रब, कौन सा माबूद तेरी मानिन्द है? कौन
तेरी तरह जलाली और क़ुद्दूस है? कौन तेरी तरह
हैरतअंगेज़ काम करता और अज़ीम मोजिज़े दिखाता
है? कोई भी नहीं।
12 तू ने अपना दहना हाथ उठाया तो ज़मीन हमारे
दुश्मनों को निगल गई।
13 अपनी शफ़क़त से तू ने इवज़ाना दे कर अपनी
क़ौम को छुटकारा दिया और उस की राहनुमाई
की है, अपनी क़ुदरत से तू ने उसे अपनी मुक़द्दस
सुकूनतगाह तक पहुँचाया है।

14 यह सुन कर दीगर क़ौमें काँप उठीं, फ़िलिस्ती
डर के मारे पेच-ओ-ताब खाने लगे।
15 अदोम के रईस सहम गए, मोआब के राहनुमाओं
पर कपकपी तारी हो गई, और कनआन के तमाम
बाशिन्दे हिम्मत हार गए।
16 दहशत और ख़ौफ़ उन पर छा गया। तेरी अज़ीम
क़ुदरत के बाइस वह पत्थर की तरह जम गए। ऐ
रब, वह न हिले जब तक तेरी क़ौम गुज़र न गई।
वह बेहिस्स-ओ-हरकत रहे जब तक तेरी ख़रीदी हुई
क़ौम गुज़र न गई।
17 ऐ रब, तू अपने लोगों को ले कर पौदों की तरह
अपने मौरूसी पहाड़ पर लगाएगा, उस जगह पर जो
तू ने अपनी सुकूनत के लिए चुन ली है, जहाँ तू ने
अपने हाथों से अपना मक़्दिस तय्यार किया है।
18 रब अबद तक बादशाह है!"

19 जब फ़िरऔन के घोड़े, रथ और घुड़सवार
समुन्दर में चले गए तो रब ने उन्हें समुन्दर के पानी
से ढाँक लिया। लेकिन इस्राईली ख़ुश्क ज़मीन पर
समुन्दर में से गुज़र गए। 20 तब हारून की बहन
मरियम जो नबिया थी ने दफ़ लिया, और बाक़ी तमाम
औरतें भी दफ़ ले कर उस के पीछे हो लीं। सब
गाने और नाचने लगीं। मरियम ने यह गा कर उन
की राहनुमाई की,
21 "रब की तम्जीद में गीत गाओ, क्यूँकि वह
निहायत अज़ीम है। घोड़े और उस के सवार को उस
ने समुन्दर में पटख़ दिया है।"

मारा और एलीम के चश्मे

22 मूसा के कहने पर इस्राईली बहर-ए-क़ुल्ज़ुम से
रवाना हो कर दश्त-ए-शूर में चले गए। वहाँ वह
तीन दिन तक सफ़र करते रहे। इस दौरान उन्हें
पानी न मिला। 23 आख़िरकार वह मारा पहुँचे जहाँ
पानी दस्तयाब था। लेकिन वह कड़वा था, इस लिए
मक़ाम का नाम मारा यानी कड़वाहट पड़ गया।
24 यह देख कर लोग मूसा के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ा कर
कहने लगे, "हम क्या पिएँ?" 25 मूसा ने मदद के लिए
रब से इल्तिजा की तो उस ने उसे लकड़ी का एक
टुकड़ा दिखाया। जब मूसा ने यह लकड़ी पानी में
डाली तो पानी की कड़वाहट ख़त्म हो गई।

मारा में रब ने अपनी क़ौम को क़वानीन दिए। वहाँ
उस ने उन्हें आज़माया भी। 26 उस ने कहा, "ग़ौर से
रब अपने ख़ुदा की आवाज़ सुनो! जो कुछ उस की
नज़र में दुरुस्त है वही करो। उस के अह्काम पर
ध्यान दो और उस की तमाम हिदायात पर अमल
करो। फिर मैं तुम पर वह बीमारियाँ नहीं लाऊँगा जो
मिस्रियों पर लाया था, क्यूँकि मैं रब हूँ जो तुझे शिफ़ा
देता हूँ।" 27 फिर इस्राईली रवाना हो कर एलीम पहुँचे
जहाँ 12 चश्मे और खजूर के 70 दरख़्त थे। वहाँ
उन्हों ने पानी के क़रीब अपने ख़ैमे लगाए।

मन और बटेरें

16 1 इस के बाद इस्राईल की पूरी जमाअत
एलीम से सफ़र करके सीन के रेगिस्तान में
पहुँची जो एलीम और सीना के दरमियान है। वह मिस्र
से निकलने के बाद दूसरे महीने के 15वें दिन पहुँचे।
2 रेगिस्तान में तमाम लोग फिर मूसा और हारून के
ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे। 3 उन्हों ने कहा, "काश रब
हमें मिस्र में ही मार डालता! वहाँ हम कम अज़ कम
जी भर कर गोश्त और रोटी तो खा सकते थे। आप
हमें सिर्फ़ इस लिए रेगिस्तान में ले आए हैं कि हम
सब भूके मर जाएँ।"

4 तब रब ने मूसा से कहा, "मैं आसमान से तुम्हारे
लिए रोटी बरसाऊँगा। हर रोज़ लोग बाहर जा कर
उसी दिन की ज़रूरत के मुताबिक़ खाना जमा करें।
इस से मैं उन्हें आज़मा कर देखूँगा कि आया वह मेरी
सुनते हैं कि नहीं। 5 हर रोज़ वह सिर्फ़ उतना खाना
जमा करें जितना कि एक दिन के लिए काफ़ी हो।
लेकिन छटे दिन जब वह खाना तय्यार करेंगे तो वह
अगले दिन के लिए भी काफ़ी होगा।"

6 मूसा और हारून ने इस्राईलियों से कहा, "आज
शाम को तुम जान लोगे कि रब ही तुम्हें मिस्र से

निकाल लाया है। 7 और कल सुब्ह तुम रब का
जलाल देखोगे। उस ने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं,
क्यूँकि असल में तुम हमारे ख़िलाफ़ नहीं बल्कि रब
के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ा रहे हो। 8 फिर भी रब तुम को
शाम के वक़्त गोश्त और सुब्ह के वक़्त वाफ़िर रोटी
देगा, क्यूँकि उस ने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं।
तुम्हारी शिकायतें हमारे ख़िलाफ़ नहीं बल्कि रब के
ख़िलाफ़ हैं।"

9 मूसा ने हारून से कहा, "इस्राईलियों को बताना,
'रब के सामने हाज़िर हो जाओ, क्यूँकि उस ने तुम्हारी
शिकायतें सुन ली हैं'।" 10 जब हारून पूरी जमाअत
के सामने बात करने लगा तो लोगों ने पलट कर
रेगिस्तान की तरफ़ देखा। वहाँ रब का जलाल बादल
में ज़ाहिर हुआ। 11 रब ने मूसा से कहा, 12 "मैं ने
इस्राईलियों की शिकायत सुन ली है। उन्हें बता,
'आज जब सूरज ग़ुरूब होने लगेगा तो तुम गोश्त
खाओगे और कल सुब्ह पेट भर कर रोटी। फिर तुम
जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ'।"

13 उसी शाम बटेरों के ग़ोल आए जो पूरी ख़ैमागाह
पर छा गए। और अगली सुब्ह ख़ैमे के चारों तरफ़
ओस पड़ी थी। 14 जब ओस सूख गई तो बर्फ़ के
गालों जैसे पतले दाने पाले की तरह ज़मीन पर पड़े
थे। 15 जब इस्राईलियों ने उसे देखा तो एक दूसरे से
पूछने लगे, "मन हू?" यानी "यह क्या है?" क्यूँकि
वह नहीं जानते थे कि यह क्या चीज़ है। मूसा ने उन
को समझाया, "यह वह रोटी है जो रब ने तुम्हें खाने
के लिए दी है। 16 रब का हुक्म है कि हर एक उतना
जमा करे जितना उस के ख़ानदान को ज़रूरत हो।
अपने ख़ानदान के हर फ़र्द के लिए दो लिटर जमा
करो।"

17 इस्राईलियों ने ऐसा ही किया। बाज़ ने ज़्यादा और
बाज़ ने कम जमा किया। 18 लेकिन जब उसे नापा
गया तो हर एक आदमी के लिए काफ़ी था। जिस
ने ज़्यादा जमा किया था उस के पास कुछ न बचा।
लेकिन जिस ने कम जमा किया था उस के पास भी
काफ़ी था। 19 मूसा ने हुक्म दिया, "अगले दिन के
लिए खाना न बचाना।"

20 लेकिन लोगों ने मूसा की बात न मानी बल्कि
बाज़ ने खाना बचा लिया। लेकिन अगली सुब्ह मालूम
हुआ कि बचे हुए खाने में कीड़े पड़ गए हैं और उस
से बहुत बदबू आ रही है। यह सुन कर मूसा उन से
नाराज़ हुआ।

21 हर सुब्ह हर कोई उतना जमा कर लेता जितनी
उसे ज़रूरत होती थी। जब धूप तेज़ होती तो जो कुछ
ज़मीन पर रह जाता वह पिघल कर ख़त्म हो जाता
था।

22 छटे दिन जब लोग यह ख़ुराक जमा करते तो वह
मिक़्दार में दुगनी होती थी यानी हर फ़र्द के लिए चार
लिटर। जब जमाअत के बुज़ुर्गों ने मूसा के पास आ
कर उसे इत्तिला दी 23 तो उस ने उन से कहा, "रब
का फ़रमान है कि कल आराम का दिन है, मुक़द्दस
सबत का दिन जो अल्लाह की ताज़ीम में मनाना है।
आज तुम जो तनूर में पकाना चाहते हो पका लो और
जो उबालना चाहते हो उबाल लो। जो बच जाए उसे
कल के लिए महफ़ूज़ रखो।"

24 लोगों ने मूसा के हुक्म के मुताबिक़ अगले दिन
के लिए खाना महफ़ूज़ कर लिया तो न खाने से बदबू
आई, न उस में कीड़े पड़े। 25 मूसा ने कहा, "आज
यही बचा हुआ खाना खाओ, क्यूँकि आज सबत का
दिन है, रब की ताज़ीम में आराम का दिन। आज
तुम्हें रेगिस्तान में कुछ नहीं मिलेगा। 26 छः दिन के
दौरान यह ख़ुराक जमा करना है, लेकिन सातवाँ दिन
आराम का दिन है। उस दिन ज़मीन पर खाने के लिए
कुछ नहीं होगा।"

27 तो भी कुछ लोग हफ़्ते को खाना जमा करने के
लिए निकले, लेकिन उन्हें कुछ न मिला। 28 तब रब
ने मूसा से कहा, "तुम लोग कब तक मेरे अहकाम
और हिदायात पर अमल करने से इन्कार करोगे?
29 देखो, रब ने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किया है कि सबत
का दिन आराम का दिन है। इस लिए वह तुम्हें जुमए
को दो दिन के लिए ख़ुराक देता है। हफ़्ते को सब को

अपने ख़ैमों में रहना है। कोई भी अपने घर से बाहर न निकले।”

30 चुनाँचे लोग सबत के दिन आराम करते थे।

31 इस्राईलियों ने इस ख़ुराक का नाम ‘मन’ रखा। उस के दाने धनिए की मानिन्द सफ़ेद थे, और उस का ज़ाइक़ा शहद से बने केक की मानिन्द था।

32 मूसा ने कहा, “रब फ़रमाता है, ‘दो लिटर मन एक मर्तबान में रख कर उसे आने वाली नस्लों के लिए मह्फ़ूज़ रखना। फिर वह देख सकेंगे कि मैं तुम्हें क्या खाना खिलाता रहा जब तुम्हें मिस्र से निकाल लाया’।” 33 मूसा ने हारून से कहा, “एक मर्तबान लो और उसे दो लिटर मन से भर कर रब के सामने रखो ताकि वह आने वाली नस्लों के लिए मह्फ़ूज़ रहे।” 34 हारून ने ऐसा ही किया। उस ने मन के इस मर्तबान को अह्द के सन्दूक़ के सामने रखा ताकि वह मह्फ़ूज़ रहे।

35 इस्राईलियों को 40 साल तक मन मिलता रहा। वह उस वक़्त तक मन खाते रहे जब तक रेगिस्तान से निकल कर कनआन की सरहद पर न पहुँचे। 36 (जो पैमाना इस्राईली मन के लिए इस्तेमाल करते थे वह दो लिटर का एक बर्तन था जिस का नाम ओमर था।)

चटान से पानी

17 1 फिर इस्राईल की पूरी जमाअत सीन के रेगिस्तान से निकली। रब जिस तरह हुक्म देता रहा वह एक जगह से दूसरी जगह सफ़र करते रहे। रफ़ीदीम में उन्हों ने ख़ैमे लगाए। वहाँ पीने के लिए पानी न मिला। 2 इस लिए वह मूसा के साथ यह कह कर झगड़ने लगे, “हमें पीने के लिए पानी दो।” मूसा ने जवाब दिया, “तुम मुझ से क्यूँ झगड़ रहे हो? रब को क्यूँ आज़मा रहे हो?” 3 लेकिन लोग बहुत प्यासे थे। वह मूसा के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने से बाज़ न आए बल्कि कहा, “आप हमें मिस्र से क्यूँ लाए हैं? क्या इस लिए कि हम अपने बच्चों और रेवड़ों समेत प्यासे मर जाएँ?”

4 तब मूसा ने रब के हुज़ूर फ़र्याद की, “मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? हालात ज़रा भी और बिगड़ जाएँ तो वह मुझे संगसार कर देंगे।” 5 रब ने मूसा से कहा, “कुछ बुज़ुर्ग साथ ले कर लोगों के आगे आगे चल। वह लाठी भी साथ ले जा जिस से तू ने दरया-ए-नील को मारा था। 6 मैं होरिब यानी सीना पहाड़ की एक चटान पर तेरे सामने खड़ा हूँगा। लाठी से चटान को मारना तो उस से पानी निकलेगा और लोग पी सकेंगे।”

मूसा ने इस्राईल के बुज़ुर्गों के सामने ऐसा ही किया। 7 उस ने उस जगह का नाम मस्सा और मरीबा यानी ‘आज़माना और झगड़ना’ रखा, क्यूँकि वहाँ इस्राईली बुड़बुड़ाए और यह पूछ कर रब को आज़माया कि क्या रब हमारे दरमियान है कि नहीं?

अमालीक़ियों की शिकस्त

8 रफ़ीदीम वह जगह भी थी जहाँ अमालीक़ी इस्राईलियों से लड़ने आए। 9 मूसा ने यशूअ से कहा, “लड़ने के क़ाबिल आदमियों को चुन लो और निकल कर अमालीक़ियों का मुक़ाबला करो। कल मैं अल्लाह की लाठी पकड़े हुए पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो जाऊँगा।”

10 यशूअ मूसा की हिदायत के मुताबिक़ अमालीक़ियों से लड़ने गया जबकि मूसा, हारून और हूर पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। 11 और यूँ हुआ कि जब मूसा के हाथ उठाए हुए थे तो इस्राईली जीतते रहे, और जब वह नीचे थे तो अमालीक़ी जीतते रहे। 12 कुछ देर के बाद मूसा के बाज़ू थक गए। इस लिए हारून और हूर एक चटान ले आए ताकि वह उस पर बैठ जाए। फिर उन्हों ने उस के दाईं और बाईं तरफ़ खड़े हो कर उस के बाज़ूओं को ऊपर उठाए रखा। सूरज के ग़ुरूब होने तक उन्हों ने यूँ मूसा की मदद की। 13 इस तरह यशूअ ने अमालीक़ियों से लड़ते लड़ते उन्हें शिकस्त दी।

14 तब रब ने मूसा से कहा, “यह वाक़िआ यादगारी के लिए किताब में लिख ले। लाज़िम है कि यह

सब कुछ यशूअ की याद में रहे, क्यूँकि मैं दुनिया
से अमालीक़ियों का नाम-ओ-निशान मिटा दूँगा।”
15 उस वक़्त मूसा ने क़ुर्बानगाह बना कर उस का
नाम ‘रब मेरा झंडा है’ रखा। 16 उस ने कहा, “रब के
तख़्त के ख़िलाफ़ हाथ उठाया गया है, इस लिए रब
की अमालीक़ियों से हमेशा तक जंग रहेगी।”

यित्रो से मुलाक़ात

18 1 मूसा का सुसर यित्रो अब तक मिदियान
में इमाम था। जब उस ने सब कुछ सुना
जो अल्लाह ने मूसा और अपनी क़ौम के लिए किया
है, कि वह उन्हें मिस्र से निकाल लाया है 2 तो वह
मूसा के पास आया। वह उस की बीवी सफ़्फ़ूरा को
अपने साथ लाया, क्यूँकि मूसा ने उसे अपने बेटों
समेत मैके भेज दिया था। 3 यित्रो मूसा के दोनों बेटों
को भी साथ लाया। पहले बेटे का नाम जैर्सोम यानी
‘अजनबी मुल्क में परदेसी’ था, क्यूँकि जब वह पैदा
हुआ तो मूसा ने कहा था, “मैं अजनबी मुल्क में
परदेसी हूँ।” 4 दूसरे बेटे का नाम इलीअज़र यानी ‘मेरा
ख़ुदा मददगार है’ था, क्यूँकि जब वह पैदा हुआ तो
मूसा ने कहा था, “मेरे बाप के ख़ुदा ने मेरी मदद
करके मुझे फ़िरऔन की तलवार से बचाया है।”

5 यित्रो मूसा की बीवी और बेटे साथ ले कर उस
वक़्त मूसा के पास पहुँचा जब उस ने रेगिस्तान में
अल्लाह के पहाड़ यानी सीना के क़रीब ख़ैमा लगाया
हुआ था। 6 उस ने मूसा को पैग़ाम भेजा था, “मैं, आप
का सुसर यित्रो आप की बीवी और दो बेटों को साथ
ले कर आप के पास आ रहा हूँ।”

7 मूसा अपने सुसर के इस्तिक़्बाल के लिए बाहर
निकला, उस के सामने झुका और उसे बोसा दिया।
दोनों ने एक दूसरे का हाल पूछा, फिर ख़ैमे में चले
गए। 8 मूसा ने यित्रो को तफ़्सील से बताया कि रब
ने इस्राईलियों की ख़ातिर फ़िरऔन और मिस्रियों के
साथ क्या कुछ किया है। उस ने रास्ते में पेश आई
तमाम मुश्किलात का ज़िक्र भी किया कि रब ने हमें
किस तरह उन से बचाया है।

9 यित्रो उन सारे अच्छे कामों के बारे में सुन कर
ख़ुश हुआ जो रब ने इस्राईलियों के लिए किए थे जब
उस ने उन्हें मिस्रियों के हाथ से बचाया था। 10 उस ने
कहा, “रब की तम्जीद हो जिस ने आप को मिस्रियों
और फ़िरऔन के क़ब्ज़े से नजात दिलाई है। उसी
ने क़ौम को ग़ुलामी से छुड़ाया है! 11 अब मैं ने जान
लिया है कि रब तमाम माबूदों से अज़ीम है, क्यूँकि
उस ने यह सब कुछ उन लोगों के साथ किया जिन्हों
ने अपने ग़ुरूर में इस्राईलियों के साथ बुरा सुलूक
किया था।” 12 फिर यित्रो ने अल्लाह को भस्म होने
वाली क़ुर्बानी और दीगर कई क़ुर्बानियाँ पेश कीं।
तब हारून और तमाम बुज़ुर्ग मूसा के सुसर यित्रो के
साथ अल्लाह के हुज़ूर खाना खाने बैठे।

70 बुज़ुर्गों को मुक़र्रर किया जाता है

13 अगले दिन मूसा लोगों का इन्साफ़ करने के लिए
बैठ गया। उन की तादाद इतनी ज़्यादा थी कि वह
सुब्ह से ले कर शाम तक मूसा के सामने खड़े रहे।
14 जब यित्रो ने यह सब कुछ देखा तो उस ने पूछा,
“यह क्या है जो आप लोगों के साथ कर रहे हैं?
सारा दिन वह आप को घेरे रहते और आप उन की
अदालत करते रहते हैं। आप यह सब कुछ अकेले
ही क्यूँ कर रहे हैं?”

15 मूसा ने जवाब दिया, “लोग मेरे पास आ कर
अल्लाह की मर्ज़ी मालूम करते हैं। 16 जब कभी कोई
तनाज़ो या झगड़ा होता है तो दोनों पार्टियाँ मेरे पास
आती हैं। मैं फ़ैसला करके उन्हें अल्लाह के अह्काम
और हिदायात बताता हूँ।”

17 मूसा के सुसर ने उस से कहा, “आप का तरीक़ा
अच्छा नहीं है। 18 काम इतना वसी है कि आप उसे
अकेले नहीं सँभाल सकते। इस से आप और वह
लोग जो आप के पास आते हैं बुरी तरह थक जाते
हैं। 19 मेरी बात सुनें! मैं आप को एक मश्वरा देता हूँ।
अल्लाह उस में आप की मदद करे। लाज़िम है कि
आप अल्लाह के सामने क़ौम के नुमाइन्दा रहें और
उन के मुआमलात उस के सामने पेश करें। 20 यह

भी ज़रूरी है कि आप उन्हें अल्लाह के अह्काम और हिदायात सिखाएँ, कि वह किस तरह ज़िन्दगी गुज़ारें और क्या क्या करें। 21 लेकिन साथ साथ क़ौम में से क़ाबिल-ए-एतिमाद आदमी चुनें। वह ऐसे लोग हों जो अल्लाह का ख़ौफ़ मानते हों, रास्तदिल हों और रिश्वत से नफ़रत करते हों। उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास पचास और दस दस आदमियों पर मुक़र्रर करें। 22 उन आदमियों की ज़िम्मादारी यह होगी कि वह हर वक़्त लोगों का इन्साफ़ करें। अगर कोई बहुत ही पेचीदा मुआमला हो तो वह फ़ैसले के लिए आप के पास आएँ, लेकिन दीगर मुआमलों का फ़ैसला वह ख़ुद करें। यूँ वह काम में आप का हाथ बटाएँगे और आप का बोझ हल्का हो जाएगा।

23 अगर मेरा यह मश्वरा अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ हो और आप ऐसा करें तो आप अपनी ज़िम्मादारी निभा सकेंगे और यह तमाम लोग इन्साफ़ के मिलने पर सलामती के साथ अपने अपने घर जा सकेंगे।"

24 मूसा ने अपने सुसर का मश्वरा मान लिया और ऐसा ही किया। 25 उस ने इस्राईलियों में से क़ाबिल-ए-एतिमाद आदमी चुने और उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास पचास और दस दस आदमियों पर मुक़र्रर किया। 26 यह मर्द क़ाज़ी बन कर मुस्तक़िल तौर पर लोगों का इन्साफ़ करने लगे। आसान मसलों का फ़ैसला वह ख़ुद करते और मुश्किल मुआमलों को मूसा के पास ले आते थे।

27 कुछ अर्से बाद मूसा ने अपने सुसर को रुख़्सत किया तो यित्रो अपने वतन वापस चला गया।

कोह-ए-सीना

19 1 इस्राईलियों को मिस्र से सफ़र करते हुए दो महीने हो गए थे। तीसरे महीने के पहले ही दिन वह सीना के रेगिस्तान में पहुँचे। 2 उस दिन वह रफ़ीदीम को छोड़ कर दश्त-ए-सीना में आ पहुँचे। वहाँ उन्हों ने रेगिस्तान में पहाड़ के क़रीब डेरे डाले।

3 तब मूसा पहाड़ पर चढ़ कर अल्लाह के पास गया। अल्लाह ने पहाड़ पर से मूसा को पुकार कर कहा, "याक़ूब के घराने बनी इस्राईल को बता, 4 'तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों के साथ क्या कुछ किया, और कि मैं तुम को उक़ाब के परों पर उठा कर यहाँ अपने पास लाया हूँ। 5 चुनाँचे अगर तुम मेरी सुनो और मेरे अह्द के मुताबिक़ चलो तो फिर तमाम क़ौमों में से मेरी ख़ास मिलकियत होगे। गो पूरी दुनिया मेरी ही है, 6 लेकिन तुम मेरे लिए मख़्सूस इमामों की बादशाही और मुक़द्दस क़ौम होगे।' अब जा कर यह सारी बातें इस्राईलियों को बता।"

7 मूसा ने पहाड़ से उतर कर और क़ौम के बुज़ुर्गों को बुला कर उन्हें वह तमाम बातें बताईं जो कहने के लिए रब ने उसे हुक्म दिया था। 8 जवाब में पूरी क़ौम ने मिल कर कहा, "हम रब की हर बात पूरी करेंगे जो उस ने फ़रमाई है।" मूसा ने पहाड़ पर लौट कर रब को क़ौम का जवाब बताया। 9 जब वह पहुँचा तो रब ने मूसा से कहा, "मैं घने बादल में तेरे पास आऊँगा ताकि लोग मुझे तुझ से हमकलाम होते हुए सुनें। फिर वह हमेशा तुझ पर भरोसा रखेंगे।" तब मूसा ने रब को वह तमाम बातें बताईं जो लोगों ने की थीं।

10 रब ने मूसा से कहा, "अब लोगों के पास लौट कर आज और कल उन्हें मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर। वह अपने लिबास धो कर 11 तीसरे दिन के लिए तय्यार हो जाएँ, क्यूँकि उस दिन रब लोगों के देखते देखते कोह-ए-सीना पर उतरेगा। 12 लोगों की हिफ़ाज़त के लिए चारों तरफ़ पहाड़ की हद्दें मुक़र्रर कर। उन्हें ख़बरदार कर कि हुदूद को पार न करो। न पहाड़ पर चढ़ो, न उस के दामन को छुओ। जो भी उसे छुए वह ज़रूर मारा जाए। 13 और उसे हाथ से छू कर नहीं मारना है बल्कि पत्थरों या तीरों से। ख़्वाह इन्सान हो या हैवान, वह ज़िन्दा नहीं रह सकता। जब तक नरसिंगा देर तक फूँका न जाए उस वक़्त तक लोगों को पहाड़ पर चढ़ने की इजाज़त नहीं है।"

14 मूसा ने पहाड़ से उतर कर लोगों को अल्लाह के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया। उन्हों ने अपने

लिबास भी धोए। 15 उस ने उन से कहा, “तीसरे दिन
के लिए तय्यार हो जाओ। मर्द औरतों से हमबिसतर
न हों।”

16 तीसरे दिन सुब्ह पहाड़ पर घना बादल छा
गया। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगा
और नरसिंगे की निहायत ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी।
ख़ैमागाह में लोग लरज़ उठे। 17 तब मूसा लोगों को
अल्लाह से मिलने के लिए ख़ैमागाह से बाहर पहाड़
की तरफ़ ले गया, और वह पहाड़ के दामन में खड़े
हुए। 18 सीना पहाड़ धुएँ से ढका हुआ था, क्यूँकि रब
आग में उस पर उतर आया। पहाड़ से धुआँ इस तरह
उठ रहा था जैसे किसी भट्टे से उठता है। पूरा पहाड़
शिद्दत से लरज़ने लगा। 19 नरसिंगे की आवाज़ तेज़
से तेज़तर होती गई। मूसा बोलने लगा और अल्लाह
उसे ऊँची आवाज़ में जवाब देता रहा।

20 रब सीना पहाड़ की चोटी पर उतरा और मूसा को
ऊपर आने के लिए कहा। मूसा ऊपर चढ़ा। 21 रब
ने मूसा से कहा, “फ़ौरन नीचे उतर कर लोगों को
ख़बरदार कर कि वह मुझे देखने के लिए पहाड़ की
हुदूद में ज़बरदस्ती दाख़िल न हों। अगर वह ऐसा करें
तो बहुत से हलाक हो जाएंगे। 22 इमाम भी जो रब
के हुज़ूर आते हैं अपने आप को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
करें, वर्ना मेरा ग़ज़ब उन पर टूट पड़ेगा।”

23 लेकिन मूसा ने रब से कहा, “लोग पहाड़ पर नहीं
आ सकते, क्यूँकि तू ने ख़ुद ही हमें ख़बरदार किया
कि हम पहाड़ की हद्दें मुक़र्रर करके उसे मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस करें।”

24 रब ने जवाब दिया, “तो भी उतर जा और हारून
को साथ ले कर वापस आ। लेकिन इमामों और
लोगों को मत आने दे। अगर वह ज़बरदस्ती मेरे पास
आएँ तो मेरा ग़ज़ब उन पर टूट पड़ेगा।”

25 मूसा ने लोगों के पास उतर कर उन्हें यह बातें
बता दीं।

दस अह्काम

20 1 तब अल्लाह ने यह तमाम बातें फ़रमाईं,
2 “मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्क-ए-मिस्र
की ग़ुलामी से निकाल लाया। 3 मेरे सिवा किसी और
माबूद की परस्तिश न करना। 4 अपने लिए बुत न
बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह
आसमान में, ज़मीन पर या समुन्दर में हो। 5 न बुतों की
परस्तिश, न उन की ख़िदमत करना, क्यूँकि मैं तेरा
रब ग़यूर ख़ुदा हूँ। जो मुझ से नफ़रत करते हैं उन्हें मैं
तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा दूँगा। 6 लेकिन जो
मुझ से मुहब्बत रखते और मेरे अह्काम पूरे करते हैं
उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा।

7 रब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़्सद या ग़लत मक़्सद
के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता है उसे
रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

8 सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस तरह
मनाना कि वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो। 9 हफ़्ते के
पहले छः दिन अपना काम-काज कर, 10 लेकिन
सातवाँ दिन रब तेरे ख़ुदा का आराम का दिन है।
उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा
बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी और
न तेरे मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह
भी काम न करे। 11 क्यूँकि रब ने पहले छः दिन में
आसमान-ओ-ज़मीन, समुन्दर और जो कुछ उन में है
बनाया लेकिन सातवें दिन आराम किया। इस लिए
रब ने सबत के दिन को बरकत दे कर मुक़र्रर किया
कि वह मख़्सूस और मुक़द्दस हो।

12 अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना।
फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देने वाला
है देर तक जीता रहेगा।

13 क़त्ल न करना।

14 ज़िना न करना।

15 चोरी न करना।

16 अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।

17 अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। न
उस की बीवी का, न उस के नौकर का, न उस की
नौकरानी का, न उस के बैल और न उस के गधे का
बल्कि उस की किसी भी चीज़ का लालच न करना।”

लोग घबरा जाते हैं

18 जब बाक़ी तमाम लोगों ने बादल की गरज और
नरसिंगे की आवाज़ सुनी और बिजली की चमक और
पहाड़ से उठते हुए धुएँ को देखा तो वह ख़ौफ़ के मारे
काँपने लगे और पहाड़ से दूर खड़े हो गए। 19 उन्हों
ने मूसा से कहा, “आप ही हम से बात करें तो हम
सुनेंगे। लेकिन अल्लाह को हम से बात न करने दें वर्ना
हम मर जाएंगे।”
20 लेकिन मूसा ने उन से कहा, “मत डरो, क्यूँकि
रब तुम्हें जाँचने के लिए आया है, ताकि उस का ख़ौफ़
तुम्हारी आँखों के सामने रहे और तुम गुनाह न करो।”
21 लोग दूर ही रहे जबकि मूसा उस गहरी तारीकी के
क़रीब गया जहाँ अल्लाह था।
22 तब रब ने मूसा से कहा, “इस्राईलियों को बता,
‘तुम ने ख़ुद देखा कि मैं ने आसमान पर से तुम्हारे
साथ बातें की हैं। 23 चुनाँचे मेरी परस्तिश के साथ
साथ अपने लिए सोने या चाँदी के बुत न बनाओ।
24 मेरे लिए मिट्टी की क़ुर्बानगाह बना कर उस पर
अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों की भस्म होने
वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाना। मैं तुझे
वह जगहें दिखाऊँगा जहाँ मेरे नाम की ताज़ीम में
क़ुर्बानियाँ पेश करनी हैं। ऐसी तमाम जगहों पर मैं
तेरे पास आ कर तुझे बरकत दूँगा।
25 अगर तू मेरे लिए क़ुर्बानगाह बनाने की ख़ातिर
पत्थर इस्तेमाल करना चाहे तो तराशे हुए पत्थर
इस्तेमाल न करना। क्यूँकि तू तराशने के लिए
इस्तेमाल होने वाले औज़ार से उस की बेहुरमती
करेगा। 26 क़ुर्बानगाह को सीढ़ियों के बग़ैर बनाना
है ताकि उस पर चढ़ने से तेरे लिबास के नीचे से तेरा
नंगापन नज़र न आए।’

21

1 इस्राईलियों को यह अह्काम बता,

इब्रानी ग़ुलाम के हुक़ूक़

2 ‘अगर तू इब्रानी ग़ुलाम ख़रीदे तो वह
छः साल तेरा ग़ुलाम रहे। इस के बाद लाज़िम है कि
उसे आज़ाद कर दिया जाए। आज़ाद होने के लिए
उसे पैसे देने की ज़रूरत नहीं होगी।
3 अगर ग़ुलाम ग़ैरशादीशुदा हालत में मालिक के
घर आया हो तो वह आज़ाद हो कर अकेला ही
चला जाए। अगर वह शादीशुदा हालत में आया हो
तो लाज़िम है कि वह अपनी बीवी समेत आज़ाद
हो कर जाए। 4 अगर मालिक ने ग़ुलाम की शादी
कराई और बच्चे पैदा हुए हैं तो उस की बीवी और
बच्चे मालिक की मिलकियत होंगे। छः साल के बाद
जब ग़ुलाम आज़ाद हो कर जाए तो उस की बीवी
और बच्चे मालिक ही के पास रहें।
5 अगर ग़ुलाम कहे, “मैं अपने मालिक और अपने
बीवी बच्चों से मुहब्बत रखता हूँ, मैं आज़ाद नहीं
होना चाहता” 6 तो ग़ुलाम का मालिक उसे अल्लाह
के सामने लाए। वह उसे दरवाज़े या उस की चौखट
के पास ले जाए और सुताली यानी तेज़ औज़ार से
उस के कान की लौ छेद दे। तब वह ज़िन्दगी भर
उस का ग़ुलाम बना रहेगा।
7 अगर कोई अपनी बेटी को ग़ुलामी में बेच डाले तो
उस के लिए आज़ादी मिलने की शराइत मर्द से फ़र्क़
हैं। 8 अगर उस के मालिक ने उसे मुन्तख़ब किया
कि वह उस की बीवी बन जाए, लेकिन बाद में वह
उसे पसन्द न आए तो लाज़िम है कि वह मुनासिब
मुआवज़ा ले कर उसे उस के रिश्तेदारों को वापस
कर दे। उसे औरत को ग़ैरमुल्कियों के हाथ बेचने
का इख़तियार नहीं है, क्यूँकि उस ने उस के साथ
बेवफ़ा सुलूक किया है।
9 अगर लौंडी का मालिक उस की अपने बेटे के
साथ शादी कराए तो औरत को बेटी के हुक़ूक़
हासिल होंगे।

10 अगर मालिक ने उस से शादी करके बाद में
दूसरी औरत से भी शादी की तो लाज़िम है कि वह
पहली को भी खाना और कपड़े देता रहे। इस के
इलावा उस के साथ हमबिसतर होने का फ़र्ज़ भी
अदा करना है। 11 अगर वह यह तीन फ़राइज़ अदा
न करे तो उसे औरत को आज़ाद करना पड़ेगा। इस
सूरत में उसे मुफ़्त आज़ाद करना होगा।

ज़ख़्मी करने की सज़ा

12 जो किसी को जान-बूझ कर इतना सख़्त मारता
हो कि वह मर जाए तो उसे ज़रूर सज़ा-ए-मौत देना
है। 13 लेकिन अगर उस ने उसे जान-बूझ कर न मारा
बल्कि यह इत्तिफ़ाक़ से हुआ और अल्लाह ने यह होने
दिया, तो मारने वाला एक ऐसी जगह पनाह ले सकता
है जो मैं मुक़र्रर करूँगा। वहाँ उसे क़त्ल किए जाने
की इजाज़त नहीं होगी। 14 लेकिन जो दीदा-दानिस्ता
और चालाकी से किसी को मार डालता है उसे मेरी
क़ुर्बानगाह से भी छीन कर सज़ा-ए-मौत देना है।
15 जो अपने बाप या अपनी माँ को मारता पीटता
है उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।
16 जिस ने किसी को अग़वा कर लिया है उसे सज़ा-
ए-मौत दी जाए, चाहे वह उसे ग़ुलाम बना कर बेच
चुका हो या उसे अब तक अपने पास रखा हुआ हो।
17 जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ा-
ए-मौत दी जाए।
18 हो सकता है कि आदमी झगड़ें और एक शख़्स
दूसरे को पत्थर या मुक्के से इतना ज़ख़्मी कर दे कि
गो वह बच जाए वह बिस्तर से उठ न सकता हो।
19 अगर बाद में मरीज़ यहाँ तक शिफ़ा पाए कि दुबारा
उठ कर लाठी के सहारे चल फिर सके तो चोट
पहुँचाने वाले को सज़ा नहीं मिलेगी। उसे सिर्फ़ उस
वक़्त के लिए मुआवज़ा देना पड़ेगा जब तक मरीज़
पैसे न कमा सके। साथ ही उसे उस का पूरा इलाज
करवाना है।
20 जो अपने ग़ुलाम या लौंडी को लाठी से यूँ मारे
कि वह मर जाए उसे सज़ा दी जाए। 21 लेकिन अगर
ग़ुलाम या लौंडी पिटाई के बाद एक या दो दिन ज़िन्दा
रहे तो मालिक को सज़ा न दी जाए। क्यूँकि जो रक़म
उस ने उस के लिए दी थी उस का नुक़्सान उसे ख़ुद
उठाना पड़ेगा।
22 हो सकता है कि लोग आपस में लड़ रहे हों
और लड़ते लड़ते किसी हामिला औरत से यूँ टकरा
जाएँ कि उस का बच्चा ज़ाए हो जाए। अगर कोई और
नुक़्सान न हुआ हो तो ज़र्ब पहुँचाने वाले को जुर्माना
देना पड़ेगा। औरत का शौहर यह जुर्माना मुक़र्रर करे,
और अदालत में इस की तस्दीक़ हो।
23 लेकिन अगर उस औरत को और नुक़्सान भी
पहुँचा हो तो फिर ज़र्ब पहुँचाने वाले को इस उसूल
के मुताबिक़ सज़ा दी जाए कि जान के बदले जान,
24 आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के
बदले हाथ, पाँओ के बदले पाँओ, 25 जलने के ज़ख़्म
के बदले जलने का ज़ख़्म, मार के बदले मार, काट
के बदले काट।
26 अगर कोई मालिक अपने ग़ुलाम की आँख पर यूँ
मारे कि वह ज़ाए हो जाए तो उसे ग़ुलाम को आँख के
बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे ग़ुलाम मर्द हो या
औरत। 27 अगर मालिक के पीटने से ग़ुलाम का दाँत
टूट जाए तो उसे ग़ुलाम को दाँत के बदले आज़ाद
करना पड़ेगा, चाहे ग़ुलाम मर्द हो या औरत।

नुक़्सान का मुआवज़ा

28 अगर कोई बैल किसी मर्द या औरत को ऐसा मारे
कि वह मर जाए तो उस बैल को संगसार किया जाए।
उस का गोश्त खाने की इजाज़त नहीं है। इस सूरत
में बैल के मालिक को सज़ा न दी जाए। 29 लेकिन हो
सकता है कि मालिक को पहले आगाह किया गया
था कि बैल लोगों को मारता है, तो भी उस ने बैल को
खुला छोड़ा था जिस के नतीजे में उस ने किसी को
मार डाला। ऐसी सूरत में न सिर्फ़ बैल को बल्कि उस
के मालिक को भी संगसार करना है। 30 लेकिन अगर
फ़ैसला किया जाए कि वह अपनी जान का फ़िद्या दे

तो जितना मुआवज़ा भी मुक़र्रर किया जाए उसे देना पड़ेगा।

31 सज़ा में कोई फ़र्क़ नहीं है, चाहे बेटे को मारा
जाए या बेटी को। 32 लेकिन अगर बैल किसी ग़ुलाम
या लौंडी को मार दे तो उस का मालिक ग़ुलाम
के मालिक को चाँदी के 30 सिक्के दे और बैल को
संगसार किया जाए।

33 हो सकता है कि किसी ने अपने हौज़ को खुला
रहने दिया या हौज़ बनाने के लिए गढ़ा खोद कर उसे
खुला रहने दिया और कोई बैल या गधा उस में गिर
कर मर गया। 34 ऐसी सूरत में हौज़ का मालिक मुर्दा
जानवर के लिए पैसे दे। वह जानवर के मालिक को
उस की पूरी क़ीमत अदा करे और मुर्दा जानवर ख़ुद
ले ले।

35 अगर किसी का बैल किसी दूसरे के बैल को
ऐसे मारे कि वह मर जाए तो दोनों मालिक ज़िन्दा
बैल को बेच कर उस के पैसे आपस में बराबर बाँट
लें। इसी तरह वह मुर्दा बैल को भी बराबर तक़्सीम
करें। 36 लेकिन हो सकता है कि मालिक को मालूम
था कि मेरा बैल दूसरे जानवरों पर हम्ला करता है, इस
के बावुजूद उस ने उसे आज़ाद छोड़ दिया था। ऐसी
सूरत में उसे मुर्दा बैल के इवज़ उस के मालिक को
नया बैल देना पड़ेगा, और वह मुर्दा बैल ख़ुद ले ले।

मिलकियत की हिफ़ाज़त

22 1 जिस ने कोई बैल या भेड़ चोरी करके उसे
ज़बह किया या बेच डाला है उसे हर चोरी
के बैल के इवज़ पाँच बैल और हर चोरी की भेड़ के
इवज़ चार भेड़ें वापस करना है।

2 हो सकता है कि कोई चोर नक़ब लगा रहा हो
और लोग उसे पकड़ कर यहाँ तक मारते पीटते रहें
कि वह मर जाए। अगर रात के वक़्त ऐसा हुआ हो
तो वह उस के ख़ून के ज़िम्मादार नहीं ठहर सकते।
3 लेकिन अगर सूरज के तुलू होने के बाद ऐसा हुआ
हो तो जिस ने उसे मारा वह क़ातिल ठहरेगा।

चोर को हर चुराई हुई चीज़ का इवज़ाना देना है।
अगर उस के पास देने के लिए कुछ न हो तो उसे
ग़ुलाम बना कर बेचना है। जो पैसे उसे बेचने के इवज़
मिलें वह चुराई हुई चीज़ों के बदले में दिए जाएँ।

4 अगर चोरी का जानवर चोर के पास ज़िन्दा पाया
जाए तो उसे हर जानवर के इवज़ दो देने पड़ेंगे, चाहे
वह बैल, भेड़, बकरी या गधा हो।

5 हो सकता है कि कोई अपने मवेशी को अपने खेत
या अंगूर के बाग़ में छोड़ कर चरने दे और होते होते
वह किसी दूसरे के खेत या अंगूर के बाग़ में जा कर
चरने लगे। ऐसी सूरत में लाज़िम है कि मवेशी का
मालिक नुक़्सान के इवज़ अपने अंगूर के बाग़ और
खेत की बेहतरीन पैदावार में से दे।

6 हो सकता है कि किसी ने आग जलाई हो और
वह काँटेदार झाड़ियों के ज़रीए पड़ोसी के खेत तक
फैल कर उस के अनाज के पूलों को, उस की पकी
हुई फ़सल को या खेत की किसी और पैदावार को
बर्बाद कर दे। ऐसी सूरत में जिस ने आग जलाई हो
उसे उस की पूरी क़ीमत अदा करनी है।

7 हो सकता है कि किसी ने कुछ पैसे या कोई और
माल अपने किसी वाक़िफ़कार के सपुर्द कर दिया हो
ताकि वह उसे महफ़ूज़ रखे। अगर यह चीज़ें उस के
घर से चोरी हो जाएँ और बाद में चोर को पकड़ा जाए
तो चोर को उस की दुगनी क़ीमत अदा करनी पड़ेगी।
8 लेकिन अगर चोर पकड़ा न जाए तो लाज़िम है कि
उस घर का मालिक जिस के सपुर्द यह चीज़ें की गई
थीं अल्लाह के हुज़ूर खड़ा हो ताकि मालूम किया जाए
कि उस ने ख़ुद यह माल चोरी किया है या नहीं।

9 हो सकता है कि दो लोगों का आपस में झगड़ा
हो, और दोनों किसी चीज़ के बारे में दावा करते हों
कि यह मेरी है। अगर कोई क़ीमती चीज़ हो मसलन
बैल, गधा, भेड़, बकरी, कपड़े या कोई खोई हुई
चीज़ तो मुआमला अल्लाह के हुज़ूर लाया जाए। जिसे
अल्लाह क़ुसूरवार क़रार दे उसे दूसरे को ज़ेर-ए-बह्स
चीज़ की दुगनी क़ीमत अदा करनी है।

10 हो सकता है कि किसी ने अपना कोई गधा, बैल,
भेड़, बकरी या कोई और जानवर किसी वाक़िफ़कार
के सपुर्द कर दिया ताकि वह उसे महफ़ूज़ रखे। वहाँ
जानवर मर जाए या ज़ख़्मी हो जाए, या कोई उस
पर क़ब्ज़ा करके उसे उस वक़्त ले जाए जब कोई न
देख रहा हो। 11 यह मुआमला यूँ हल किया जाए कि
जिस के सपुर्द जानवर किया गया था वह रब के हुज़ूर
क़सम खा कर कहे कि मैं ने अपने वाक़िफ़कार के
जानवर के लालच में यह काम नहीं किया। जानवर
के मालिक को यह क़बूल करना पड़ेगा, और दूसरे
को इस के बदले कुछ नहीं देना होगा। 12 लेकिन
अगर वाक़ई जानवर को चोरी किया गया है तो जिस
के सपुर्द जानवर किया गया था उसे उस की क़ीमत
अदा करनी पड़ेगी। 13 अगर किसी जंगली जानवर ने
उसे फाड़ डाला हो तो वह सबूत के तौर पर फाड़ी
हुई लाश को ले आए। फिर उसे उस की क़ीमत अदा
नहीं करनी पड़ेगी।

14 हो सकता है कि कोई अपने वाक़िफ़कार से
इजाज़त ले कर उस का जानवर इस्तेमाल करे। अगर
जानवर को मालिक की ग़ैरमौजूदगी में चोट लगे
या वह मर जाए तो उस शख़्स को जिस के पास
जानवर उस वक़्त था उस का मुआवज़ा देना पड़ेगा।
15 लेकिन अगर जानवर का मालिक उस वक़्त साथ
था तो दूसरे को मुआवज़ा देने की ज़रूरत नहीं होगी।
अगर उस ने जानवर को किराए पर लिया हो तो उस
का नुक़्सान किराए से पूरा हो जाएगा।

लड़की को वरग़लाने का जुर्म

16 अगर किसी कुंवारी की मंगनी नहीं हुई और कोई
मर्द उसे वरग़ला कर उस से हमबिसतर हो जाए तो
वह महर दे कर उस से शादी करे। 17 लेकिन अगर
लड़की का बाप उस की उस मर्द के साथ शादी करने
से इन्कार करे, इस सूरत में भी मर्द को कुंवारी के
लिए मुक़र्ररा रक़म देनी पड़ेगी।

सज़ा-ए-मौत के लाइक़ जराइम

18 जादूगरनी को जीने न देना।

19 जो शख़्स किसी जानवर के साथ जिन्सी
ताल्लुक़ात रखता हो उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।

20 जो न सिर्फ़ रब को क़ुर्बानियाँ पेश करे बल्कि
दीगर माबूदों को भी उसे क़ौम से निकाल कर हलाक
किया जाए।

कमज़ोरों की हिफ़ाज़त के लिए अह्काम

21 जो परदेसी तेरे मुल्क में मेहमान है उसे न दबाना
और न उस से बुरा सुलूक करना, क्यूँकि तुम भी मिस्र
में परदेसी थे।

22 किसी बेवा या यतीम से बुरा सुलूक न करना।
23 अगर तू ऐसा करे और वह चिल्ला कर मुझ से फ़र्याद
करें तो मैं ज़रूर उन की सुनूँगा। 24 मैं बड़े ग़ुस्से में
आ कर तुम्हें तलवार से मार डालूँगा। फिर तुम्हारी
बीवियाँ ख़ुद बेवाएँ और तुम्हारे बच्चे ख़ुद यतीम बन
जाएंगे।

25 अगर तू ने मेरी क़ौम के किसी ग़रीब को क़र्ज़
दिया है तो उस से सूद न लेना।

26 अगर तुझे किसी से उस की चादर गिरवी के
तौर पर मिली हो तो उसे सूरज डूबने से पहले ही
वापस कर देना है, 27 क्यूँकि इसी को वह सोने के
लिए इस्तेमाल करता है। वर्ना वह क्या चीज़ ओढ़
कर सोएगा? अगर तू चादर वापस न करे और वह
शख़्स चिल्ला कर मुझ से फ़र्याद करे तो मैं उस की
सुनूँगा, क्यूँकि मैं मेहरबान हूँ।

अल्लाह से मुताल्लिक़ फ़राइज़

28 अल्लाह को न कोसना, न अपनी क़ौम के किसी
सरदार पर लानत करना।

29 मुझे वक़्त पर अपने खेत और कोल्हूओं की
पैदावार में से नज़राने पेश करना। अपने पहलौठे मुझे
देना। 30 अपने बैलों, भेड़ों और बकरियों के पहलौठों
को भी मुझे देना। जानवर का पहलौठा पहले सात

दिन अपनी माँ के साथ रहे। आठवें दिन वह मुझे
दिया जाए।
31 अपने आप को मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
रखना। इस लिए ऐसे जानवर का गोश्त मत खाना
जिसे किसी जंगली जानवर ने फाड़ डाला है। ऐसे
गोश्त को कुत्तों को खाने देना।

अदालत में इन्साफ़ और दूसरों से मुहब्बत

23 1 ग़लत अफ़्वाहें न फैलाना। किसी शरीर
आदमी का साथ दे कर झूटी गवाही देना
मना है। 2 अगर अक्सरियत ग़लत काम कर रही हो
तो उस के पीछे न हो लेना। अदालत में गवाही देते
वक़्त अक्सरियत के साथ मिल कर ऐसी बात न
करना जिस से ग़लत फ़ैसला किया जाए। 3 लेकिन
अदालत में किसी ग़रीब की तरफ़दारी भी न करना।
4 अगर तुझे तेरे दुश्मन का बैल या गधा आवारा
फिरता हुआ नज़र आए तो उसे हर सूरत में वापस
कर देना। 5 अगर तुझ से नफ़रत करने वाले का गधा
बोझ तले गिर गया हो और तुझे पता लगे तो उसे न
छोड़ना बल्कि ज़रूर उस की मदद करना।
6 अदालत में ग़रीब के हुक़ूक़ न मारना। 7 ऐसे
मुआमले से दूर रहना जिस में लोग झूट बोलते हैं।
जो बेगुनाह और हक़ पर है उसे सज़ा-ए-मौत न
देना, क्यूँकि मैं क़ुसूरवार को हक़-ब-जानिब नहीं
ठहराऊँगा। 8 रिश्वत न लेना, क्यूँकि रिश्वत देखने वाले
को अंधा कर देती है और उस की बात बनने नहीं
देती जो हक़ पर है।
9 जो परदेसी तेरे मुल्क में मेहमान है उस पर दबाओ
न डालना। तुम ऐसे लोगों की हालत से ख़ूब वाक़िफ़
हो, क्यूँकि तुम ख़ुद मिस्र में परदेसी रहे हो।

सबत का साल और सबत

10 छः साल तक अपनी ज़मीन में बीज बो कर
उस की पैदावार जमा करना। 11 लेकिन सातवें साल
ज़मीन को इस्तेमाल न करना बल्कि उसे पड़े रहने
देना। जो कुछ भी उगे वह क़ौम के ग़रीब लोग खाएँ।
जो उन से बच जाए उसे जंगली जानवर खाएँ। अपने
अंगूर और ज़ैतून के बाग़ों के साथ भी ऐसा ही करना
है।
12 छः दिन अपना काम-काज करना, लेकिन सातवें
दिन आराम करना। फिर तेरा बैल और तेरा गधा भी
आराम कर सकेंगे, तेरी लौंडी का बेटा और तेरे साथ
रहने वाला परदेसी भी ताज़ादम हो जाएंगे।
13 जो भी हिदायत मैं ने दी है उस पर अमल कर।
दीगर माबूदों की परस्तिश न करना। मैं तेरे मुँह से
उन के नामों तक का ज़िक्र न सुनूँ।

तीन ख़ास ईदें

14 साल में तीन दफ़ा मेरी ताज़ीम में ईद मनाना।
15 पहले, बेख़मीरी रोटी की ईद मनाना। अबीब के
महीने [l]में सात दिन तक तेरी रोटी में ख़मीर न हो
जिस तरह मैं ने हुक्म दिया है, क्यूँकि इस महीने में तू
मिस्र से निकला। इन दिनों में कोई मेरे हुज़ूर ख़ाली
हाथ न आए। 16 दूसरे, फ़सलकटाई की ईद उस वक़्त
मनाना जब तू अपने खेत में बोई हुई पहली फ़सल
काटेगा। तीसरे, जमा करने की ईद फ़सल की कटाई
के इख़तिताम [m]पर मनाना है जब तू ने अंगूर और
बाक़ी बाग़ों के फल जमा किए होंगे। 17 यूँ तेरे तमाम
मर्द तीन मर्तबा रब क़ादिर-ए-मुतलक़ के हुज़ूर हाज़िर
हुआ करें।
18 जब तू किसी जानवर को ज़बह करके क़ुर्बानी
के तौर पर पेश करे तो उस के ख़ून के साथ ऐसी रोटी
पेश न करना जिस में ख़मीर हो। और जो जानवर तू
मेरी ईदों पर चढ़ाए उन की चर्बी अगली सुब्ह तक
बाक़ी न रहे।
19 अपनी ज़मीन की पहली पैदावार का बेहतरीन
हिस्सा रब अपने ख़ुदा के घर में लाना।

---

[l]मार्च ता अप्रैल।

[m]सितम्बर ता अक्तूबर।

भेड़ या बकरी के बच्चे को उस की माँ के दूध में न पकाना।

रब का फ़रिश्ता राहनुमाई करेगा

20 मैं तेरे आगे आगे फ़रिश्ता भेजता हूँ जो रास्ते
में तेरी हिफ़ाज़त करेगा और तुझे उस जगह तक ले
जाएगा जो मैं ने तेरे लिए तय्यार की है। 21 उस की
मौजूदगी में एहतियात बरतना। उस की सुनना, और
उस की ख़िलाफ़वरज़ी न करना। अगर तू सरकश
हो जाए तो वह तुझे मुआफ़ नहीं करेगा, क्यूँकि मेरा
नाम उस में हाज़िर होगा। 22 लेकिन अगर तू उस की
सुने और सब कुछ करे जो मैं तुझे बताता हूँ तो मैं तेरे
दुश्मनों का दुश्मन और तेरे मुख़ालिफ़ों का मुख़ालिफ़
हूँगा।

23 क्यूँकि मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा
और तुझे मुल्क-ए-कनआन तक पहुँचा देगा जहाँ
अमोरी, हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, कनआनी, हिव्वी और
यबूसी आबाद हैं। तब मैं उन्हें रू-ए-ज़मीन पर से
मिटा दूँगा। 24 उन के माबूदों को सिज्दा न करना, न
उन की ख़िदमत करना। उन के रस्म-ओ-रिवाज भी
न अपनाना बल्कि उन के बुतों को तबाह कर देना।
जिन सतूनों के सामने वह इबादत करते हैं उन को
भी टुकड़े टुकड़े कर डालना। 25 रब अपने ख़ुदा की
ख़िदमत करना। फिर मैं तेरी ख़ुराक और पानी को
बरकत दे कर तमाम बीमारियाँ तुझ से दूर करूँगा।
26 फिर तेरे मुल्क में न किसी का बच्चा ज़ाए होगा,
न कोई बाँझ होगी। साथ ही मैं तुझे तवील ज़िन्दगी
अता करूँगा।

27 मैं तेरे आगे आगे दहशत फैलाऊँगा। जहाँ भी
तू जाएगा वहाँ मैं तमाम क़ौमों में अब्तरी पैदा
करूँगा। मेरे सबब से तेरे सारे दुश्मन पलट कर भाग
जाएंगे। 28 मैं तेरे आगे ज़म्बूर भेज दूँगा जो हिव्वी,
कनआनी और हित्ती को मुल्क छोड़ने पर मज्बूर
करेंगे। 29 लेकिन जब तू वहाँ पहुँचेगा तो मैं उन्हें एक
ही साल में मुल्क से नहीं निकालूँगा। वर्ना पूरा मुल्क
वीरान हो जाएगा और जंगली जानवर फैल कर तेरे
लिए नुक़्सान का बाइस बन जाएंगे। 30 इस लिए मैं
तेरे पहुँचने पर मुल्क के बाशिन्दों को थोड़ा थोड़ा
करके निकालता जाऊँगा। इतने में तेरी तादाद बढ़ेगी
और तू रफ़्ता रफ़्ता मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सकेगा।

31 मैं तेरी सरहद्दें मुक़र्रर करूँगा। बहर-ए-क़ुल्ज़ुम
एक हद होगी और फ़िलिस्तियों का समुन्दर दूसरी,
जुनूब का रेगिस्तान एक होगी और दरया-ए-फ़ुरात
दूसरी। मैं मुल्क के बाशिन्दों को तेरे क़ब्ज़े में कर
दूँगा, और तू उन्हें अपने आगे आगे मुल्क से दूर
करता जाएगा। 32 लाज़िम है कि तू उन के साथ या
उन के माबूदों के साथ अह्द न बांधे। 33 उन का तेरे
मुल्क में रहना मना है, वर्ना तू उन के सबब से मेरा
गुनाह करेगा। अगर तू उन के माबूदों की इबादत
करेगा तो यह तेरे लिए फंदा बन जाएगा'।"

रब इस्राईल से अह्द बांधता है

24 1 रब ने मूसा से कहा, "तू, हारून, नदब,
अबीहू और इस्राईल के 70 बुज़ुर्ग मेरे पास
ऊपर आएँ। कुछ फ़ासिले पर खड़े हो कर मुझे सिज्दा
करो। 2 सिर्फ़ तू अकेला ही मेरे क़रीब आ, दूसरे दूर
रहें। और क़ौम के बाक़ी लोग तेरे साथ पहाड़ पर न
चढ़ें।"

3 तब मूसा ने क़ौम के पास जा कर रब की तमाम
बातें और अह्काम पेश किए। जवाब में सब ने मिल
कर कहा, "हम रब की इन तमाम बातों पर अमल
करेंगे।"

4 तब मूसा ने रब की तमाम बातें लिख लीं। अगले
दिन वह सुब्ह-सवेरे उठा और पहाड़ के पास गया।
उस के दामन में उस ने क़ुर्बानगाह बनाई। साथ ही
उस ने इस्राईल के हर एक क़बीले के लिए एक एक
पत्थर का सतून खड़ा किया। 5 फिर उस ने कुछ
इस्राईली नौजवानों को क़ुर्बानी पेश करने के लिए
बुलाया ताकि वह रब की ताज़ीम में भस्म होने वाली
क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँ और जवान बैलों को सलामती की
क़ुर्बानी के तौर पर पेश करें। 6 मूसा ने क़ुर्बानियों
का ख़ून जमा किया। उस का आधा हिस्सा उस ने

बासनों में डाल दिया और आधा हिस्सा क़ुर्बानगाह पर छिड़क दिया।

7 फिर उस ने वह किताब ली जिस में रब के साथ
अह्द की तमाम शराइत दर्ज थीं और उसे क़ौम को
पढ़ कर सुनाया। जवाब में उन्हों ने कहा, "हम रब
की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे। हम उस की
सुनेंगे।" 8 इस पर मूसा ने बासनों में से ख़ून ले कर उसे
लोगों पर छिड़का और कहा, "यह ख़ून उस अह्द
की तस्दीक़ करता है जो रब ने तुम्हारे साथ किया है
और जो उस की तमाम बातों पर मब्नी है।"

9 इस के बाद मूसा, हारून, नदब, अबीहू और
इस्राईल के 70 बुज़ुर्ग सीना पहाड़ पर चढ़े। 10 वहाँ
उन्हों ने इस्राईल के ख़ुदा को देखा। लगता था कि
उस के पाँओ के नीचे संग-ए-लाजवर्द का सा तख़्ता
था। वह आसमान की मानिन्द साफ़-ओ-शफ़्फ़ाफ़
था। 11 अगरचे इस्राईल के राहनुमाओं ने यह सब
कुछ देखा तो भी रब ने उन्हें हलाक न किया, बल्कि
वह अल्लाह को देखते रहे और उस के हुज़ूर अह्द का
खाना खाते और पीते रहे।

पत्थर की तख़्तियाँ

12 पहाड़ से उतरने के बाद रब ने मूसा से कहा, "मेरे
पास पहाड़ पर आ कर कुछ देर के लिए ठहरे रहना।
मैं तुझे पत्थर की तख़्तियाँ दूँगा जिन पर मैं ने अपनी
शरीअत और अह्काम लिखे हैं और जो इस्राईल की
तालीम-ओ-तर्बियत के लिए ज़रूरी हैं।"

13 मूसा अपने मददगार यशूअ के साथ चल पड़ा
और अल्लाह के पहाड़ पर चढ़ गया। 14 पहले उस ने
बुज़ुर्गों से कहा, "हमारी वापसी के इन्तिज़ार में यहाँ
ठहरे रहो। हारून और हूर तुम्हारे पास रहेंगे। कोई
भी मुआमला हो तो लोग उन ही के पास जाएँ।"

मूसा रब से मिलता है

15 जब मूसा चढ़ने लगा तो पहाड़ पर बादल छा
गया। 16 रब का जलाल कोह-ए-सीना पर उतर आया।
छः दिन तक बादल उस पर छाया रहा। सातवें दिन
रब ने बादल में से मूसा को बुलाया। 17 रब का जलाल
इस्राईलियों को भी नज़र आता था। उन्हें यूँ लगा जैसा
कि पहाड़ की चोटी पर तेज़ आग भड़क रही हो।
18 चढ़ते चढ़ते मूसा बादल में दाख़िल हुआ। वहाँ
वह चालीस दिन और चालीस रात रहा।

मुलाक़ात का ख़ैमा बनाने के लिए हदिए

25 1 रब ने मूसा से कहा, 2 "इस्राईलियों को
बता कि वह हदिए ला कर मुझे उठाने वाली
क़ुर्बानी के तौर पर पेश करें। लेकिन सिर्फ़ उन से
हदिए क़बूल करो जो दिली ख़ुशी से दें। 3 उन से यह
चीज़ें हदिए के तौर पर क़बूल करो : सोना, चाँदी,
पीतल; 4 नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा,
बारीक कतान, बकरी के बाल, 5 मेंढों की सुर्ख़ रंगी
हुई खालें, तख़स [n]की खालें, कीकर की लकड़ी,
6 शमादान के लिए ज़ैतून का तेल, मसह करने के लिए
तेल और ख़ुश्बूदार बख़ूर के लिए मसाले, 7 अक़ीक़-
ए-अह्मर और दीगर जवाहिर जो इमाम-ए-आज़म के
बालापोश और सीने के कीसे में जड़े जाएंगे। 8 इन
चीज़ों से लोग मेरे लिए मक़्दिस बनाएँ ताकि मैं उन
के दरमियान रहूँ। 9 मैं तुझे मक़्दिस और उस के तमाम
सामान का नमूना दिखाऊँगा, क्यूँकि तुम्हें सब कुछ
ऐन उसी के मुताबिक़ बनाना है।

अह्द का सन्दूक़

10–12 लोग कीकर की लकड़ी का सन्दूक़ बनाएँ।
उस की लम्बाई पौने चार फ़ुट हो जबकि उस की
चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो दो फ़ुट हो। पूरे सन्दूक़
पर अन्दर और बाहर से ख़ालिस सोना चढ़ाना। ऊपर

---

[n]ग़ालिबन इस मतरूक इब्रानी लफ़्ज़ से मुराद कोई समुन्दरी जानवर है।

की सतह के इर्दगिर्द सोने की झालर लगाना। सन्दूक़
को उठाने के लिए सोने के चार कड़े ढाल कर उन्हें
सन्दूक़ के चारपाइयों पर लगाना। दोनों तरफ़ दो दो
कड़े हों। 13 फिर कीकर की दो लकड़ियाँ सन्दूक़ को
उठाने के लिए तय्यार करना। उन पर सोना चढ़ा कर
14 उन को दोनों तरफ़ के कड़ों में डालना ताकि उन से
सन्दूक़ को उठाया जाए। 15 यह लकड़ियाँ सन्दूक़ के
इन कड़ों में पड़ी रहें। उन्हें कभी भी दूर न किया जाए।
16 सन्दूक़ में शरीअत की वह दो तख़्तियाँ रखना जो
मैं तुझे दूँगा।

17 सन्दूक़ का ढकना ख़ालिस सोने का बनाना। उस
की लम्बाई पौने चार फ़ुट और चौड़ाई सवा दो फ़ुट
हो। उस का नाम कफ़्फ़ारे का ढकना है। 18–19 सोने से
घड़ कर दो करूबी फ़रिश्ते बनाए जाएँ जो ढकने के
दोनों सिरों पर खड़े हों। यह दो फ़रिश्ते और ढकना
एक ही टुकड़े से बनाने हैं। 20 फ़रिश्तों के पर यूँ ऊपर
की तरफ़ फैले हुए हों कि वह ढकने को पनाह दें।
उन के मुँह एक दूसरे की तरफ़ किए हुए हों, और वह
ढकने की तरफ़ देखें।

21 ढकने को सन्दूक़ पर लगा, और सन्दूक़ में
शरीअत की वह दो तख़्तियाँ रख जो मैं तुझे दूँगा।
22 वहाँ ढकने के ऊपर दोनों फ़रिश्तों के दरमियान
से मैं अपने आप को तुझ पर ज़ाहिर करके तुझ से
हमकलाम हूँगा और तुझे इस्राईलियों के लिए तमाम
अह्काम दूँगा।

मख़्सूस रोटियों की मेज़

23 कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाना। उस की
लम्बाई तीन फ़ुट, चौड़ाई डेढ़ फ़ुट और ऊँचाई सवा
दो फ़ुट हो। 24 उस पर ख़ालिस सोना चढ़ाना, और
उस के इर्दगिर्द सोने की झालर लगाना। 25 मेज़ की
ऊपर की सतह पर चौखटा लगाना जिस की ऊँचाई
तीन इंच हो और जिस पर सोने की झालर लगी हो।
26 सोने के चार कड़े ढाल कर उन्हें चारों कोनों पर
लगाना जहाँ मेज़ के पाए लगे हैं। 27 यह कड़े मेज़
की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए जाएँ। उन
में वह लकड़ियाँ डालनी हैं जिन से मेज़ को उठाया
जाएगा। 28 यह लकड़ियाँ भी कीकर की हों और उन
पर सोना चढ़ाया जाए। उन से मेज़ को उठाना है।

29 उस के थाल, प्याले, मर्तबान और मै की नज़रें
पेश करने के बर्तन ख़ालिस सोने से बनाना है। 30 मेज़
पर वह रोटियाँ हर वक़्त मेरे हुज़ूर पड़ी रहें जो मेरे
लिए मख़्सूस हैं।

शमादान

31 ख़ालिस सोने का शमादान भी बनाना। उस का
पाया और डंडी घड़ कर बनाना है। उस की प्यालियाँ
जो फूलों और कलियों की शक्ल की होंगी पाए और
डंडी के साथ एक ही टुकड़ा हों। 32 डंडी से दाईं और
बाईं तरफ़ तीन तीन शाख़ें निकलें। 33 हर शाख़ पर
तीन प्यालियाँ लगी हों जो बादाम की कलियों और
फूलों की शक्ल की हों। 34 शमादान की डंडी पर
भी इस क़िस्म की प्यालियाँ लगी हों, लेकिन तादाद
में चार। 35 इन में से तीन प्यालियाँ दाएँ बाएँ की छः
शाख़ों के नीचे लगी हों। वह यूँ लगी हों कि हर प्याली
से दो शाख़ें निकलें। 36 शाख़ें और प्यालियाँ बल्कि
पूरा शमादान ख़ालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़
कर बनाना है।

37 शमादान के लिए सात चराग़ बना कर उन्हें यूँ
शाख़ों पर रखना कि वह सामने की जगह रौशन
करें। 38 बत्ती कतरने की क़ैंचियाँ और जलते कोएले
के लिए छोटे बर्तन भी ख़ालिस सोने से बनाए
जाएँ। 39 शमादान और उस सारे सामान के लिए पूरे
34 किलोग्राम ख़ालिस सोना इस्तेमाल किया जाए।
40 ग़ौर कर कि सब कुछ ऐन उस नमूने के मुताबिक़
बनाया जाए जो मैं तुझे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।

मुलाक़ात का ख़ैमा

26 1 मुक़द्दस ख़ैमे के लिए दस पर्दे बनाना। उन
के लिए बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी
और क़िर्मिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल करना। पर्दों में
किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी

फ़रिश्तों का डिज़ाइन बनवाना। 2 हर पर्दे की लम्बाई
42 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट हो। 3 पाँच पर्दों के लम्बे
हाशिए एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ और इसी तरह
बाक़ी पाँच भी। यूँ दो बड़े टुकड़े बन जाएंगे। 4 दोनों
टुकड़ों को एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए नीले
धागे के हल्क़े बनाना। यह हल्क़े हर टुकड़े के 42
फ़ुट वाले एक किनारे पर लगाए जाएँ, 5 एक टुकड़े
के हाशिए पर 50 हल्क़े और दूसरे पर भी उतने ही
हल्क़े। इन दो हाशियों के हल्क़े एक दूसरे के आमने-
सामने हों। 6 फिर सोने की 50 हुकें बना कर उन से
आमने-सामने के हल्क़े एक दूसरे के साथ मिलाना।
यूँ दोनों टुकड़े जुड़ कर ख़ैमे का काम देंगे।

7 बकरी के बालों से भी 11 पर्दे बनाना जिन्हें कपड़े
वाले ख़ैमे के ऊपर रखा जाए। 8 हर पर्दे की लम्बाई
45 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट हो। 9 पाँच पर्दों के लम्बे
हाशिए एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ और इसी तरह
बाक़ी छः भी। इन छः पर्दों के छटे पर्दे को एक दफ़ा
तह करना। यह सामने वाले हिस्से से लटके।

10 बकरी के बाल के इन दोनों टुकड़ों को भी
मिलाना है। इस के लिए हर टुकड़े के 45 फ़ुट वाले
एक किनारे पर पचास पचास हल्क़े लगाना। 11 फिर
पीतल की 50 हुकें बना कर उन से दोनों हिस्से
मिलाना। 12 जब बकरियों के बालों का यह ख़ैमा
कपड़े के ख़ैमे के ऊपर लगाया जाएगा तो आधा पर्दा
बाक़ी रहेगा। वह ख़ैमे की पिछली तरफ़ लटका रहे।
13 ख़ैमे के दाईं और बाईं तरफ़ बकरी के बालों का
ख़ैमा कपड़े के ख़ैमे की निस्बत डेढ़ डेढ़ फ़ुट लम्बा
होगा। यूँ वह दोनों तरफ़ लटके हुए कपड़े के ख़ैमे
को महफ़ूज़ रखेगा।

14 एक दूसरे के ऊपर के इन दोनों ख़ैमों की
हिफ़ाज़त के लिए दो ग़िलाफ़ बनाने हैं। बकरी के
बालों के ख़ैमे पर मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई खालें जोड़
कर रखी जाएँ और उन पर तख़स की खालें मिला
कर रखी जाएँ।

15 कीकर की लकड़ी के तख़्ते बनाना जो खड़े
किए जाएँ ताकि ख़ैमे की दीवारों का काम दें। 16 हर
तख़्ते की ऊँचाई 15 फ़ुट हो और चौड़ाई सवा दो
फ़ुट। 17 हर तख़्ते के नीचे दो दो चूलें हों। यह चूलें
हर तख़्ते को उस के पाइयों के साथ जोड़ेंगी ताकि
तख़्ता खड़ा रहे। 18 ख़ैमे की जुनूबी दीवार के लिए
20 तख़्तों की ज़रूरत है 19 और साथ ही चाँदी के
40 पाइयों की। उन पर तख़्ते खड़े किए जाएंगे। हर
तख़्ते के नीचे दो पाए होंगे, और हर पाए में एक
चूल लगेगी। 20 इसी तरह ख़ैमे की शिमाली दीवार
के लिए भी 20 तख़्तों की ज़रूरत है 21 और साथ
ही चाँदी के 40 पाइयों की। वह भी तख़्तों को खड़ा
करने के लिए हैं। हर तख़्ते के नीचे दो पाए होंगे।
22 ख़ैमे की पिछली यानी मग़रिबी दीवार के लिए
छः तख़्ते बनाना। 23 इस दीवार को शिमाली और
जुनूबी दीवारों के साथ जोड़ने के लिए कोने वाले दो
तख़्ते बनाना। 24 इन दो तख़्तों में नीचे से ले कर ऊपर
तक कोना हो ताकि एक से शिमाली दीवार मग़रिबी
दीवार के साथ जुड़ जाए और दूसरे से जुनूबी दीवार
मग़रिबी दीवार के साथ। इन के ऊपर के सिरे कड़ों
से मज़बूत किए जाएँ। 25 यूँ पिछले यानी मग़रिबी
तख़्तों की पूरी तादाद 8 होगी और इन के लिए चाँदी
के पाइयों की तादाद 16, हर तख़्ते के नीचे दो दो
पाए होंगे।

26–27 इस के इलावा कीकर की लकड़ी के शहतीर
बनाना, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच शहतीर।
वह हर दीवार के तख़्तों पर यूँ लगाए जाएँ कि
वह उन्हें एक दूसरे के साथ मिलाएँ। 28 दरमियानी
शहतीर दीवार की आधी ऊँचाई पर दीवार के एक
सिरे से दूसरे सिरे तक लगाया जाए। 29 शहतीरों को
तख़्तों के साथ लगाने के लिए सोने के कड़े बना
कर तख़्तों में लगाना। तमाम तख़्तों और शहतीरों
पर सोना चढ़ाना।

30 पूरे मुक़द्दस ख़ैमे को उसी नमूने के मुताबिक़
बनाना जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता हूँ।

मुक़द्दस ख़ैमे के पर्दे

31 अब एक और पर्दा बनाना। इस के लिए भी
बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी
रंग का धागा इस्तेमाल करना। उस पर भी किसी
माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी फ़रिश्तों
का डिज़ाइन बनवाना। 32 इसे सोने की हुकों से
कीकर की लकड़ी के चार सतूनों से लटकाना। इन
सतूनों पर सोना चढ़ाया जाए और वह चाँदी के
पाइयों पर खड़े हों। 33 यह पर्दा मुक़द्दस कमरे को
मुक़द्दसतरीन कमरे से अलग करेगा जिस में अह्द
का सन्दूक़ पड़ा रहेगा। पर्दे को लटकाने के बाद
उस के पीछे मुक़द्दसतरीन कमरे में अह्द का सन्दूक़
रखना। 34 फिर अह्द के सन्दूक़ पर कफ़्फ़ारे का
ढकना रखना।

35 जिस मेज़ पर मेरे लिए मख़्सूस की गई रोटियाँ
पड़ी रहती हैं वह पर्दे के बाहर मुक़द्दस कमरे में
शिमाल की तरफ़ रखी जाए। उस के मुक़ाबिल जुनूब
की तरफ़ शमादान रखा जाए।

36 फिर ख़ैमे के दरवाज़े के लिए भी पर्दा बनाया
जाए। इस के लिए भी बारीक कतान और नीले,
अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल किया
जाए। इस पर कढ़ाई का काम किया जाए।

37 इस पर्दे को सोने की हुकों से कीकर की लकड़ी
के पाँच सतूनों से लटकाना। इन सतूनों पर भी सोना
चढ़ाया जाए, और वह पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह

27 1 कीकर की लकड़ी की क़ुर्बानगाह
बनाना। उस की ऊँचाई साढ़े चार फ़ुट हो
जबकि उस की लम्बाई और चौड़ाई साढ़े सात सात
फ़ुट हो। 2 उस के ऊपर चारों कोनों में से एक एक
सींग निकले। सींग और क़ुर्बानगाह एक ही टुकड़े के
हों। सब पर पीतल चढ़ाना। 3 उस का तमाम साज़-
ओ-सामान और बर्तन भी पीतल के हों यानी राख को
उठा कर ले जाने की बालटियाँ, बेलचे, काँटे, जलते
हुए कोएले के लिए बर्तन और छिड़काओ के कटोरे।

4 क़ुर्बानगाह को उठाने के लिए पीतल का जंगला
बनाना जो ऊपर से खुला हो। जंगले के चारों कोनों
पर कड़े लगाए जाएँ। 5 क़ुर्बानगाह की आधी ऊँचाई
पर किनारा लगाना, और क़ुर्बानगाह को जंगले में इस
किनारे तक रखा जाए। 6 उसे उठाने के लिए कीकर
की दो लकड़ियाँ बनाना जिन पर पीतल चढ़ाना है।
7 उन को क़ुर्बानगाह के दोनों तरफ़ के कड़ों में डाल
देना।

8 पूरी क़ुर्बानगाह लकड़ी की हो, लेकिन अन्दर से
खोखली हो। उसे ऐन उस नमूने के मुताबिक़ बनाना
जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता हूँ।

ख़ैमे का सहन

9 मुक़द्दस ख़ैमे के लिए सहन बनाना। उस की
चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई जाए।
चारदीवारी की लम्बाई जुनूब की तरफ़ 150 फ़ुट हो।
10 कपड़े को चाँदी की हुकों और पट्टियों से लकड़ी
के 20 खम्बों के साथ लगाया जाए। हर खम्बा पीतल
के पाए पर खड़ा हो। 11 चारदीवारी शिमाल की तरफ़
भी इसी की मानिन्द हो। 12 ख़ैमे के पीछे मग़रिब की
तरफ़ चारदीवारी की चौड़ाई 75 फ़ुट हो और कपड़ा
लकड़ी के 10 खम्बों के साथ लगाया जाए। यह खम्बे
भी पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

13 सामने, मशरिक़ की तरफ़ जहाँ से सूरज तुलू
होता है चारदीवारी की चौड़ाई भी 75 फ़ुट हो।
14–15 यहाँ चारदीवारी का दरवाज़ा हो। कपड़ा
दरवाज़े के दाईं तरफ़ साढ़े 22 फ़ुट चौड़ा हो और
उस के बाईं तरफ़ भी उतना ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ़
तीन तीन लकड़ी के खम्बों के साथ लगाया जाए जो
पीतल के पाइयों पर खड़े हों। 16 दरवाज़े का पर्दा 30
फ़ुट चौड़ा बनाना। वह नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी
रंग के धागे और बारीक कतान से बनाया जाए, और
उस पर कढ़ाई का काम हो। यह कपड़ा लकड़ी के

चार खम्बों के साथ लगाया जाए। वह भी पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

17 तमाम खम्बे पीतल के पाइयों पर खड़े हों और कपड़ा चाँदी की हुकों और पट्टियों से हर खम्बे के साथ लगाया जाए। 18 चारदीवारी की लम्बाई 150 फ़ुट, चौड़ाई 75 फ़ुट और ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट हो। खम्बों के तमाम पाए पीतल के हों। 19 जो भी साज़-ओ-सामान मुक़द्दस ख़ैमे में इस्तेमाल किया जाता है वह सब पीतल का हो। ख़ैमे और चारदीवारी की मेख़ें भी पीतल की हों।

शमादान का तेल

20 इस्राईलियों को हुक्म देना कि वह तेरे पास कूटे हुए ज़ैतूनों का ख़ालिस तेल लाएँ ताकि मुक़द्दस कमरे के शमादान के चराग़ मुतवातिर जलते रहें। 21 हारून और उस के बेटे शमादान को मुलाक़ात के ख़ैमे के मुक़द्दस कमरे में रखें, उस पर्दे के सामने जिस के पीछे अह्द का सन्दूक़ है। उस में वह तेल डालते रहें ताकि वह रब के सामने शाम से ले कर सुब्ह तक जलता रहे। इस्राईलियों का यह उसूल अबद तक क़ाइम रहे।

इमामों के लिबास

28 1 अपने भाई हारून और उस के बेटों नदब, अबीहू, इलीअज़र और इतमर को बुला। मैं ने उन्हें इस्राईलियों में से चुन लिया है ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी ख़िदमत करें। 2 अपने भाई हारून के लिए मुक़द्दस लिबास बनवाना जो पुरवक़ार और शानदार हों। 3 लिबास बनाने की ज़िम्मादारी उन तमाम लोगों को देना जो ऐसे कामों में माहिर हैं और जिन को मैं ने हिक्मत की रूह से भर दिया है। क्यूँकि जब हारून को मख़्सूस किया जाएगा और वह मुक़द्दस ख़ैमे की ख़िदमत सरअन्जाम देगा तो उसे इन कपड़ों की ज़रूरत होगी।

4 उस के लिए यह लिबास बनाने हैं : सीने का कीसा, बालापोश, चोग़ा, बुना हुआ ज़ेरजामा, पगड़ी और कमरबन्द। यह कपड़े अपने भाई हारून और उस के बेटों के लिए बनवाने हैं ताकि वह इमाम के तौर पर ख़िदमत कर सकें। 5 इन कपड़ों के लिए सोना और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया जाए।

हारून का बालापोश

6 बालापोश को भी सोने और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाना है। उस पर किसी माहिर कारीगर से कढ़ाई का काम करवाया जाए। 7 उस की दो पट्टियाँ हों जो कंधों पर रख कर सामने और पीछे से बालापोश के साथ लगी हों। 8 इस के इलावा एक पटका बुनना है जिस से बालापोश को बांधा जाए और जो बालापोश के साथ एक टुकड़ा हो। उस के लिए भी सोना, नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया जाए।

9 फिर अक़ीक़-ए-अह्मर के दो पत्थर चुन कर उन पर इस्राईल के बारह बेटों के नाम कन्दा करना। 10 हर जौहर पर छः छः नाम उन की पैदाइश की तर्तीब के मुताबिक़ कन्दा किए जाएँ। 11 यह नाम उस तरह जौहरों पर कन्दा किए जाएँ जिस तरह मुहर कन्दा की जाती है। फिर दोनों जौहर सोने के ख़ानों में जड़ कर 12 बालापोश की दो पट्टियों पर ऐसे लगाना कि कंधों पर आ जाएँ। जब हारून मेरे हुज़ूर आएगा तो जौहरों पर के यह नाम उस के कंधों पर होंगे और मुझे इस्राईलियों की याद दिलाएँगे।

13 सोने के ख़ाने बनाना 14 और ख़ालिस सोने की दो ज़न्जीरें जो डोरी की तरह गुंधी हुई हों। फिर इन दो ज़न्जीरों को सोने के ख़ानों के साथ लगाना।

सीने का कीसा

15 सीने के लिए कीसा बनाना। उस में वह क़ुरए पड़े रहें जिन की मारिफ़त मेरी मर्ज़ी मालूम की जाएगी। माहिर कारीगर उसे उन ही चीज़ों से बनाए जिन से हारून का बालापोश बनाया गया है यानी सोने

और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और
बारीक कतान से। 16 जब कपड़े को एक दफ़ा तह
किया गया हो तो कीसे की लम्बाई और चौड़ाई नौ
नौ इंच हो।
17 उस पर चार क़तारों में जवाहिर जड़ना। हर
क़तार में तीन तीन जौहर हों। पहली क़तार में
लाल, [o]ज़बर्जद [p]और ज़ुमुर्रद। 18 दूसरी में फ़ीरोज़ा,
संग-ए-लाजवर्द [q]और हज्र-उल-क़मर। [r]19 तीसरी
में ज़रक़ोन, [s]अक़ीक़ [t]और याक़ूत-ए-अर्ग़वानी।
[u]20 चौथी में पुखराज, [v]अक़ीक़-ए-अह्मर [w]और
यशब। [x]हर जौहर सोने के ख़ाने में जड़ा हुआ हो।
21 यह बारह जवाहिर इस्राईल के बारह क़बीलों की
नुमाइन्दगी करते हैं। एक एक जौहर पर एक क़बीले
का नाम कन्दा किया जाए। यह नाम उस तरह कन्दा
किए जाएँ जिस तरह मुहर कन्दा की जाती है।
22 सीने के कीसे पर ख़ालिस सोने की दो ज़न्जीरें
लगाना जो डोरी की तरह गुंधी हुई हों। 23 उन्हें
लगाने के लिए दो कड़े बना कर कीसे के ऊपर
के दो कोनों पर लगाना। 24 अब दोनों ज़न्जीरें उन
दो कड़ों से लगाना। 25 उन के दूसरे सिरे बालापोश
की कंधों वाली पट्टियों के दो ख़ानों के साथ जोड़
देना, फिर सामने की तरफ़ लगाना। 26 कीसे के
निचले दो कोनों पर भी सोने के दो कड़े लगाना।
वह अन्दर, बालापोश की तरफ़ लगे हों। 27 अब दो
और कड़े बना कर बालापोश की कंधों वाली पट्टियों
पर लगाना। यह भी सामने की तरफ़ लगे हों लेकिन
नीचे, बालापोश के पटके के ऊपर ही। 28 सीने के
कीसे के निचले कड़े नीली डोरी से बालापोश के इन
निचले कड़ों के साथ बांधे जाएँ। यूँ कीसा पटके के
ऊपर अच्छी तरह सीने के साथ लगा रहेगा।
29 जब भी हारून मक़्दिस में दाख़िल हो कर रब
के हुज़ूर आएगा वह इस्राईली क़बीलों के नाम अपने
दिल पर सीने के कीसे की सूरत में साथ ले जाएगा।
यूँ वह क़ौम की याद दिलाता रहेगा।
30 सीने के कीसे में दोनों क़ुरए बनाम ऊरीम और
तुम्मीम रखे जाएँ। वह भी मक़्दिस में रब के सामने
आते वक़्त हारून के दिल पर हों। यूँ जब हारून
रब के हुज़ूर होगा तो रब की मर्ज़ी पूछने का वसीला
हमेशा उस के दिल पर होगा।

हारून का चोग़ा

31 चोग़ा भी बुनना। वह पूरी तरह नीले धागे से
बनाया जाए। चोग़े को बालापोश से पहले पहना
जाए। 32 उस के गिरीबान को बुने हुए कालर से
मज़बूत किया जाए ताकि वह न फटे। 33 नीले,
अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे से अनार बना कर
उन्हें चोग़े के दामन में लगा देना। उन के दरमियान
सोने की घंटियाँ लगाना। 34 दामन में अनार और
घंटियाँ बारी बारी लगाना।

---

[o]या एक क़िस्म का सुर्ख़ अक़ीक़। याद रहे कि चूँकि क़दीम ज़माने के अक्सर जवाहिरात के नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख़्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

[p]peridot

[q]lapis lazuli

[r]moonstone

[s]hyacinth

[t]agate

[u]amethyst

[v]topas

[w]carnelian

[x]jasper

35 हारून ख़िदमत करते वक़्त हमेशा चोग़ा पहने।
जब वह मक़्दिस में रब के हुज़ूर आएगा और वहाँ
से निकलेगा तो घंटियाँ सुनाई देंगी। फिर वह नहीं
मरेगा।

माथे पर छोटी तख़्ती, ज़ेरजामा और पगड़ी

36 ख़ालिस सोने की तख़्ती बना कर उस पर यह
अल्फ़ाज़ कन्दा करना, 'रब के लिए मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस।' यह अल्फ़ाज़ यूँ कन्दा किए जाएँ जिस
तरह मुहर कन्दा की जाती है। 37 उसे नीली डोरी से
पगड़ी के सामने वाले हिस्से से लगाया जाए 38 ताकि
वह हारून के माथे पर पड़ी रहे। जब भी वह मक़्दिस
में जाए तो यह तख़्ती साथ हो। जब इस्राईली अपने
नज़राने ला कर रब के लिए मख़्सूस करें लेकिन
किसी ग़लती के बाइस क़ुसूरवार हों तो उन का यह
क़ुसूर हारून पर मुन्तक़िल होगा। इस लिए यह तख़्ती
हर वक़्त उस के माथे पर हो ताकि रब इस्राईलियों
को क़बूल कर ले।

39 ज़ेरजामे को बारीक कतान से बुनना और इस
तरह पगड़ी भी। फिर कमरबन्द बनाना। उस पर
कढ़ाई का काम किया जाए।

बाक़ी लिबास

40 हारून के बेटों के लिए भी ज़ेरजामे, कमरबन्द
और पगड़ियाँ बनाना ताकि वह पुरवक़ार और
शानदार नज़र आएँ। 41 यह सब अपने भाई हारून
और उस के बेटों को पहनाना। उन के सरों पर तेल
उंडेल कर उन्हें मसह करना। यूँ उन्हें उन के उह्दे पर
मुक़र्रर करके मेरी ख़िदमत के लिए मख़्सूस करना।

42 उन के लिए कतान के पाजामे भी बनाना ताकि
वह ज़ेरजामे के नीचे नंगे न हों। उन की लम्बाई
कमर से रान तक हो। 43 जब भी हारून और उस
के बेटे मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल हों तो उन्हें यह
पाजामे पहनने हैं। इसी तरह जब उन्हें मुक़द्दस कमरे
में ख़िदमत करने के लिए क़ुर्बानगाह के पास आना
होता है तो वह यह पहनें, वर्ना वह क़ुसूरवार ठहर
कर मर जाएंगे। यह हारून और उस की औलाद के
लिए एक अबदी उसूल है।

इमामों की मख़्सूसियत

29 1 इमामों को मक़्दिस में मेरी ख़िदमत के
लिए मख़्सूस करने का यह तरीक़ा है :
एक जवान बैल और दो बेऐब मेंढे चुन लेना।
2 बेहतरीन मैदे से तीन क़िस्म की चीज़ें पकाना जिन
में ख़मीर न हो। पहले, सादा रोटी। दूसरे, रोटी जिस
में तेल डाला गया हो। तीसरे, रोटी जिस पर तेल
लगाया गया हो। 3 यह चीज़ें टोकरी में रख कर जवान
बैल और दो मेंढों के साथ रब को पेश करना।
4 फिर हारून और उस के बेटों को मुलाक़ात के
ख़ैमे के दरवाज़े पर ला कर ग़ुसल कराना। 5 इस के
बाद ज़ेरजामा, चोग़ा, बालापोश और सीने का कीसा
ले कर हारून को पहनाना। बालापोश को उस के
महारत से बुने हुए पटके के ज़रीए बांधना। 6 उस के
सर पर पगड़ी बांध कर उस पर सोने की मुक़द्दस
तख़्ती लगाना। 7 हारून के सर पर मसह का तेल
उंडेल कर उसे मसह करना।

8 फिर उस के बेटों को आगे ला कर ज़ेरजामा
पहनाना। 9 उन के पगड़ियाँ और कमरबन्द बांधना।
यूँ तू हारून और उस के बेटों को उन के मन्सब पर
मुक़र्रर करना। सिर्फ़ वह और उन की औलाद हमेशा
तक मक़्दिस में मेरी ख़िदमत करते रहें।

10 बैल को मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने लाना।
हारून और उस के बेटे उस के सर पर अपने हाथ
रखें। 11 उसे ख़ैमे के दरवाज़े के सामने रब के हुज़ूर
ज़बह करना। 12 बैल के ख़ून में से कुछ ले कर अपनी
उंगली से क़ुर्बानगाह के सींगों पर लगाना और बाक़ी
ख़ून क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेल देना। 13 अंतड़ियों
पर की तमाम चर्बी, जोड़कलेजी और दोनों गुर्दे उन
की चर्बी समेत ले कर क़ुर्बानगाह पर जला देना।
14 लेकिन बैल के गोश्त, खाल और अंतड़ियों के
गोबर को ख़ैमागाह के बाहर जला देना। यह गुनाह
की क़ुर्बानी है।

15 इस के बाद पहले मेंढे को ले आना। हारून और
उस के बेटे अपने हाथ मेंढे के सर पर रखें। 16 उसे
ज़बह करके उस का ख़ून क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं
पर छिड़कना। 17 मेंढे को टुकड़े टुकड़े करके उस की
अंतड़ियों और पिंडलियों को धोना। फिर उन्हें सर
और बाक़ी टुकड़ों के साथ मिला कर 18 पूरे मेंढे को
क़ुर्बानगाह पर जला देना। जलने वाली यह क़ुर्बानी
रब के लिए भस्म होने वाली क़ुर्बानी है, और उस की
ख़ुश्बू रब को पसन्द है।

19 अब दूसरे मेंढे को ले आना। हारून और उस
के बेटे अपने हाथ मेंढे के सर पर रखें। 20 उस को
ज़बह करना। उस के ख़ून में से कुछ ले कर हारून
और उस के बेटों के दहने कान की लौ पर लगाना।
इसी तरह ख़ून को उन के दहने हाथ और दहने पाँओ
के अंगूठों पर भी लगाना। बाक़ी ख़ून क़ुर्बानगाह के
चार पहलूओं पर छिड़कना। 21 जो ख़ून क़ुर्बानगाह
पर पड़ा है उस में से कुछ ले कर और मसह के तेल
के साथ मिला कर हारून और उस के कपड़ों पर
छिड़कना। इसी तरह उस के बेटों और उन के कपड़ों
पर भी छिड़कना। यूँ वह और उस के बेटे ख़िदमत
के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाएंगे।

22 इस मेंढे का ख़ास मक़्सद यह है कि हारून
और उस के बेटों को मक़्दिस में ख़िदमत करने का
इख़तियार और उह्दा दिया जाए। मेंढे की चर्बी, दुम,
अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, जोड़कलेजी, दोनों गुर्दे
उन की चर्बी समेत और दहनी रान अलग करनी है।
23 उस टोकरी में से जो रब के हुज़ूर यानी ख़ैमे के
दरवाज़े पर पड़ी है एक सादा रोटी, एक रोटी जिस
में तेल डाला गया हो और एक रोटी जिस पर तेल
लगाया गया हो निकालना। 24 मेंढे से अलग की गई
चीज़ें और बेख़मीरी रोटी की टोकरी की यह चीज़ें
ले कर हारून और उस के बेटों के हाथों में देना,
और वह उन्हें हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब
के सामने हिलाएँ। 25 फिर यह चीज़ें उन से वापस ले
कर भस्म होने वाली क़ुर्बानी के साथ क़ुर्बानगाह पर
जला देना। यह रब के लिए जलने वाली क़ुर्बानी है,
और उस की ख़ुश्बू रब को पसन्द है।

26 अब उस मेंढे का सीना लेना जिस की मारिफ़त
हारून को इमाम-ए-आज़म का इख़तियार दिया जाता
है। सीने को भी हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर
रब के सामने हिलाना। यह सीना क़ुर्बानी का तेरा
हिस्सा होगा। 27 यूँ तुझे हारून और उस के बेटों की
मख़्सूसियत के लिए मुस्तामल मेंढे के टुकड़े मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस करने हैं। उस के सीने को रब के सामने
हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर हिलाया जाए और
उस की रान को उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर
उठाया जाए। 28 हारून और उस की औलाद को
इस्राईलियों की तरफ़ से हमेशा तक यह मिलने का
हक़ है। जब भी इस्राईली रब को अपनी सलामती
की क़ुर्बानियाँ पेश करें तो इमामों को यह दो टुकड़े
मिलेंगे।

29 जब हारून फ़ौत हो जाएगा तो उस के मुक़द्दस
लिबास उस की औलाद में से उस मर्द को देने हैं जिसे
मसह करके हारून की जगह मुक़र्रर किया जाएगा।
30 जो बेटा उस की जगह मुक़र्रर किया जाएगा और
मक़्दिस में ख़िदमत करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे
में आएगा वह यह लिबास सात दिन तक पहने रहे।

31 जो मेंढा हारून और उस के बेटों की मख़्सूसियत
के लिए ज़बह किया गया है उसे मुक़द्दस जगह पर
उबालना है। 32 फिर हारून और उस के बेटे मुलाक़ात
के ख़ैमे के दरवाज़े पर मेंढे का गोश्त और टोकरी की
बेख़मीरी रोटियाँ खाएँ। 33 वह यह चीज़ें खाएँ जिन
से उन्हें गुनाहों का कफ़्फ़ारा और इमाम का उह्दा
मिला है। लेकिन कोई और यह न खाए, क्यूँकि यह
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं। 34 और अगर अगली सुब्ह
तक इस गोश्त या रोटी में से कुछ बच जाए तो उसे
जलाया जाए। उसे खाना मना है, क्यूँकि वह मुक़द्दस
है।

35 जब तू हारून और उस के बेटों को इमाम मुक़र्रर
करेगा तो ऐन मेरी हिदायत पर अमल करना। यह
तक़्रीब सात दिन तक मनाई जाए। 36 इस के दौरान

गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर रोज़ाना एक जवान बैल ज़बह करना। इस से तू क़ुर्बानगाह का कफ़्फ़ारा दे कर उसे हर तरह की नापाकी से पाक करेगा। इस के इलावा उस पर मसह का तेल उंडेलना। इस से वह मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाएगा। 37 सात दिन तक क़ुर्बानगाह का कफ़्फ़ारा दे कर उसे पाक-साफ़ करना और उसे तेल से मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करना। फिर क़ुर्बानगाह निहायत मुक़द्दस होगी। जो भी उसे छुएगा वह भी मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाएगा।

रोज़मर्रा की क़ुर्बानियाँ

38 रोज़ाना एक एक साल के दो भेड़ के नर बच्चे क़ुर्बानगाह पर जला देना, 39 एक को सुब्ह के वक़्त, दूसरे को सूरज के ग़ुरूब होने के ऐन बाद। 40 पहले जानवर के साथ डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश किया जाए जो कूटे हुए ज़ैतूनों के एक लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। मै की नज़र के तौर पर एक लिटर मै भी क़ुर्बानगाह पर उंडेलना। 41 दूसरे जानवर के साथ भी ग़ल्ला और मै की यह दो नज़रें पेश की जाएँ। ऐसी क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब को पसन्द है।

42 लाज़िम है कि आने वाली तमाम नस्लें भस्म होने वाली यह क़ुर्बानी बाक़ाइदगी से मुक़द्दस ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के हुज़ूर चढ़ाएँ। वहाँ मैं तुम से मिला करूँगा और तुम से हमकलाम हूँगा। 43 वहाँ मैं इस्राईलियों से भी मिला करूँगा, और वह जगह मेरे जलाल से मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाएगी। 44 यूँ मैं मुलाक़ात के ख़ैमे और क़ुर्बानगाह को मख़्सूस करूँगा और हारून और उस के बेटों को मख़्सूस करूँगा ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी ख़िदमत करें।

45 तब मैं इस्राईलियों के दरमियान रहूँगा और उन का ख़ुदा हूँगा। 46 वह जान लेंगे कि मैं रब उन का ख़ुदा हूँ, कि मैं उन्हें मिस्र से निकाल लाया ताकि उन के दरमियान सुकूनत करूँ। मैं रब उन का ख़ुदा हूँ।

बख़ूर जलाने की क़ुर्बानगाह

30 1 कीकर की लकड़ी की क़ुर्बानगाह बनाना जिस पर बख़ूर जलाया जाए। 2 वह डेढ़ फ़ुट लम्बी, इतनी ही चौड़ी और तीन फ़ुट ऊँची हो। उस के चारों कोनों में से सींग निकलें जो क़ुर्बानगाह के साथ एक ही टुकड़े से बनाए गए हों। 3 उस की ऊपर की सतह, उस के चार पहलूओं और उस के सींगों पर ख़ालिस सोना चढ़ाना। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द सोने की झालर हो। 4 सोने के दो कड़े बना कर इन्हें उस झालर के नीचे एक दूसरे के मुक़ाबिल पहलूओं पर लगाना। इन कड़ों में क़ुर्बानगाह को उठाने की लकड़ियाँ डाली जाएँगी। 5 यह लकड़ियाँ कीकर की हों, और उन पर भी सोना चढ़ाना।

6 इस क़ुर्बानगाह को ख़ैमे के मुक़द्दस कमरे में उस पर्दे के सामने रखना जिस के पीछे अह्द का सन्दूक़ और उस का ढकना होंगे, वह ढकना जहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा। 7 जब हारून हर सुब्ह शमादान के चराग़ तय्यार करे उस वक़्त वह उस पर ख़ुश्बूदार बख़ूर जलाए। 8 सूरज के ग़ुरूब होने के बाद भी जब वह दुबारा चराग़ों की देख-भाल करेगा तो वह साथ साथ बख़ूर जलाए। यूँ रब के सामने बख़ूर मुतवातिर जलता रहे। लाज़िम है कि बाद की नस्लें भी इस उसूल पर क़ाइम रहें।

9 इस क़ुर्बानगाह पर सिर्फ़ जाइज़ बख़ूर इस्तेमाल किया जाए। इस पर न तो जानवरों की क़ुर्बानियाँ चढ़ाई जाएँ, न ग़ल्ला या मै की नज़रें पेश की जाएँ। 10 हारून साल में एक दफ़ा उस का कफ़्फ़ारा दे कर उसे पाक करे। इस के लिए वह कफ़्फ़ारे के दिन उस क़ुर्बानी का कुछ ख़ून सींगों पर लगाए। यह उसूल भी अबद तक क़ाइम रहे। यह क़ुर्बानगाह रब के लिए निहायत मुक़द्दस है।”

मर्दुमशुमारी के पैसे

11 रब ने मूसा से कहा, 12 “जब भी तू इस्राईलियों की मर्दुमशुमारी करे तो लाज़िम है कि जिन का शुमार

किया गया हो वह रब को अपनी जान का फ़िद्या दें
ताकि उन में वबा न फैले। 13 जिस जिस का शुमार
किया गया हो वह चाँदी के आधे सिक्के के बराबर
रक़म उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर दे। सिक्के का
वज़न मक़्दिस के सिक्कों के बराबर हो। यानी चाँदी के
सिक्के का वज़न 11 ग्राम हो, इस लिए छः ग्राम चाँदी
देनी है। 14 जिस की भी उम्र 20 साल या इस से ज़ाइद
हो वह रब को यह रक़म उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर
पर दे। 15 अमीर और ग़रीब दोनों इतना ही दें, क्यूँकि
यही नज़राना रब को पेश करने से तुम्हारी जान का
कफ़्फ़ारा दिया जाता है। 16 कफ़्फ़ारे की यह रक़म
मुलाक़ात के ख़ैमे की ख़िदमत के लिए इस्तेमाल
करना। फिर यह नज़राना रब को याद दिलाता रहेगा
कि तुम्हारी जानों का कफ़्फ़ारा दिया गया है।”

धोने का हौज़

17 रब ने मूसा से कहा, 18 “पीतल का ढाँचा बनाना
जिस पर पीतल का हौज़ बना कर रखना है। यह हौज़
धोने के लिए है। उसे सहन में मुलाक़ात के ख़ैमे और
जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह के दरमियान रख
कर पानी से भर देना। 19 हारून और उस के बेटे अपने
हाथ-पाँओ धोने के लिए उस का पानी इस्तेमाल करें।
20 मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल होने से पहले ही वह
अपने आप को धोएँ वर्ना वह मर जाएंगे। इसी तरह
जब भी वह ख़ैमे के बाहर की क़ुर्बानगाह पर जानवरों
की क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँ 21 तो लाज़िम है कि पहले हाथ-
पाँओ धो लें, वर्ना वह मर जाएंगे। यह उसूल हारून
और उस की औलाद के लिए हमेशा तक क़ाइम रहे।”

मसह का तेल

22 रब ने मूसा से कहा, 23 “मसह के तेल के
लिए उम्दा क़िस्म के मसाले इस्तेमाल करना।
6 किलोग्राम आब-ए-मुर, 3 किलोग्राम ख़ुश्बूदार
दारचीनी, 3 किलोग्राम ख़ुश्बूदार बेद 24 और 6
किलोग्राम तेजपात। यह चीज़ें मक़्दिस के बाटों के
हिसाब से तोल कर चार लिटर ज़ैतून के तेल में
डालना। 25 सब कुछ मिला कर ख़ुश्बूदार तेल तय्यार
करना। वह मुक़द्दस है और सिर्फ़ उस वक़्त इस्तेमाल
किया जाए जब कोई चीज़ या शख़्स मेरे लिए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस किया जाए।

26 यही तेल ले कर मुलाक़ात का ख़ैमा और उस
का सारा सामान मसह करना यानी ख़ैमा, अह्द
का सन्दूक़, 27 मेज़ और उस का सामान, शमादान
और उस का सामान, बख़ूर जलाने की क़ुर्बानगाह,
28 जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह और उस का
सामान, धोने का हौज़ और उस का ढाँचा। 29 यूँ तू
यह तमाम चीज़ें मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करेगा। इस से
वह निहायत मुक़द्दस हो जाएँगी। जो भी उन्हें छुएगा
वह मुक़द्दस हो जाएगा।

30 हारून और उस के बेटों को भी इस तेल से मसह
करना ताकि वह मुक़द्दस हो कर मेरे लिए इमाम का
काम सरअन्जाम दे सकें। 31 इस्राईलियों को कह
दे कि यह तेल हमेशा तक मेरे लिए मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस है। 32 इस लिए इसे अपने लिए इस्तेमाल न
करना और न इस तरकीब से अपने लिए तेल बनाना।
यह तेल मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है और तुम्हें भी इसे यूँ
ठहराना है। 33 जो इस तरकीब से आम इस्तेमाल के
लिए तेल बनाता है या किसी आम शख़्स पर लगाता
है उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है।”

बख़ूर की क़ुर्बानी

34 रब ने मूसा से कहा, “बख़ूर इस तरकीब से
बनाना है : मस्तकी, ओनिका, [y]बिरीजा और ख़ालिस
लुबान बराबर के हिस्सों में 35 मिला कर ख़ुश्बूदार
बख़ूर बनाना। इत्रसाज़ का यह काम नमकीन,
ख़ालिस और मुक़द्दस हो। 36 इस में से कुछ पीस
कर पाउडर बनाना और मुलाक़ात के ख़ैमे में अह्द

---

[y]onycha (unguis odoratus)

के सन्दूक़ के सामने डालना जहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा।

इस बख़ूर को मुक़द्दसतरीन ठहराना। 37 इसी तरकीब के मुताबिक़ अपने लिए बख़ूर न बनाना। इसे रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस ठहराना है। 38 जो भी अपने ज़ाती इस्तेमाल के लिए इस क़िस्म का बख़ूर बनाए उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है।"

बज़लीएल और उहलियाब

31 1 फिर रब ने मूसा से कहा, 2 "मैं ने यहूदाह के क़बीले के बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर को चुन लिया है ताकि वह मुक़द्दस ख़ैमे की तामीर में राहनुमाई करे। 3 मैं ने उसे इलाही रूह से मामूर करके हिक्मत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है। 4 वह नक़्शे बना कर उन के मुताबिक़ सोने, चाँदी और पीतल की चीज़ें बना सकता है। 5 वह जवाहिर को काट कर जड़ने की क़ाबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराश कर उस से मुख़्तलिफ़ चीज़ें बना सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत रखता है।

6 साथ ही मैं ने दान के क़बीले के उहलियाब बिन अख़ीसमक को मुक़र्रर किया है ताकि वह हर काम में उस की मदद करे। इस के इलावा मैं ने तमाम समझदार कारीगरों को महारत दी है ताकि वह सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बना सकें जो मैं ने तुझे दी हैं। 7 यानी मुलाक़ात का ख़ैमा, कफ़्फ़ारे के ढकने समेत अह्द का सन्दूक़ और ख़ैमे का सारा दूसरा सामान, 8 मेज़ और उस का सामान, ख़ालिस सोने का शमादान और उस का सामान, बख़ूर जलाने की क़ुर्बानगाह, 9 जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह और उस का सामान, धोने का हौज़ उस ढाँचे समेत जिस पर वह रखा जाता है, 10 वह लिबास जो हारून और उस के बेटे मक़्दिस में ख़िदमत करने के लिए पहनते हैं, 11 मसह का तेल और मक़्दिस के लिए ख़ुश्बूदार बख़ूर। यह सब कुछ वह वैसे ही बनाएँ जैसे मैं ने तुझे हुक्म दिया है।"

सबत यानी हफ़्ते का दिन

12 रब ने मूसा से कहा, 13 "इस्राईलियों को बता कि हर सबत का दिन ज़रूर मनाओ। क्यूँकि सबत का दिन एक नुमायाँ निशान है जिस से जान लिया जाएगा कि मैं रब हूँ जो तुम्हें मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता हूँ। और यह निशान मेरे और तुम्हारे दरमियान नस्ल-दर-नस्ल क़ाइम रहेगा। 14 सबत का दिन ज़रूर मनाना, क्यूँकि वह तुम्हारे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है। जो भी उस की बेहुरमती करे वह ज़रूर जान से मारा जाए। जो भी इस दिन काम करे उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए। 15 छः दिन काम करना, लेकिन सातवाँ दिन आराम का दिन है। वह रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है।

16 इस्राईलियों को हाल में और मुस्तक़बिल में सबत का दिन अबदी अह्द समझ कर मनाना है। 17 वह मेरे और इस्राईलियों के दरमियान अबदी निशान होगा। क्यूँकि रब ने छः दिन के दौरान आसमान-ओ-ज़मीन को बनाया जबकि सातवें दिन उस ने आराम किया और ताज़ादम हो गया।"

रब शरीअत की तख़्तियाँ देता है

18 यह सब कुछ मूसा को बताने के बाद रब ने उसे सीना पहाड़ पर शरीअत की दो तख़्तियाँ दीं। अल्लाह ने ख़ुद पत्थर की इन तख़्तियों पर तमाम बातें लिखी थीं।

सोने का बछड़ा

32 1 पहाड़ के दामन में लोग मूसा के इन्तिज़ार में रहे, लेकिन बहुत देर हो गई। एक दिन वह हारून के गिर्द जमा हो कर कहने लगे, "आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्यूँकि क्या मालूम कि उस

बन्दे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिस्र से निकाल लाया।”

2 जवाब में हारून ने कहा, “आप की बीवियाँ, बेटे और बेटियाँ अपनी सोने की बालियाँ उतार कर मेरे पास ले आएँ।” 3 सब लोग अपनी बालियाँ उतार उतार कर हारून के पास ले आए 4 तो उस ने यह ज़ेवरात ले कर बछड़ा ढाल दिया। बछड़े को देख कर लोग बोल उठे, “ऐ इस्राईल, यह तेरे देवता हैं जो तुझे मिस्र से निकाल लाए।”

5 जब हारून ने यह देखा तो उस ने बछड़े के सामने क़ुर्बानगाह बना कर एलान किया, “कल हम रब की ताज़ीम में ईद मनाएँगे।” 6 अगले दिन लोग सुब्ह-सवेरे उठे और भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं। वह खाने-पीने के लिए बैठ गए और फिर उठ कर रंगरलियों में अपने दिल बहलाने लगे।

मूसा अपनी क़ौम की शफ़ाअत करता है

7 उस वक़्त रब ने मूसा से कहा, “पहाड़ से उतर जा। तेरे लोग जिन्हें तू मिस्र से निकाल लाया बड़ी शरारतें कर रहे हैं। 8 वह कितनी जल्दी से उस रास्ते से हट गए हैं जिस पर चलने के लिए मैं ने उन्हें हुक्म दिया था। उन्हों ने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बना कर उसे सिज्दा किया है। उन्हों ने उसे क़ुर्बानियाँ पेश करके कहा है, ‘ऐ इस्राईल, यह तेरे देवता हैं। यही तुझे मिस्र से निकाल लाए हैं’।” 9 अल्लाह ने मूसा से कहा, “मैं ने देखा है कि यह क़ौम बड़ी हटधर्म है। 10 अब मुझे रोकने की कोशिश न कर। मैं उन पर अपना ग़ज़ब उंडेल कर उन को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उन की जगह मैं तुझ से एक बड़ी क़ौम बना दूँगा।”

11 लेकिन मूसा ने कहा, “ऐ रब, तू अपनी क़ौम पर अपना ग़ुस्सा क्यूँ उतारना चाहता है? तू ख़ुद अपनी अज़ीम क़ुदरत से उसे मिस्र से निकाल लाया है। 12 मिस्री क्यूँ कहें, ‘रब इस्राईलियों को सिर्फ़ इस बुरे मक़्सद से हमारे मुल्क से निकाल ले गया है कि उन्हें पहाड़ी इलाक़े में मार डाले और यूँ उन्हें रू-ए-ज़मीन पर से मिटाए’? अपना ग़ुस्सा ठंडा होने दे और अपनी क़ौम के साथ बुरा सुलूक करने से बाज़ रह। 13 याद रख कि तू ने अपने ख़ादिमों इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से अपनी ही क़सम खा कर कहा था, ‘मैं तुम्हारी औलाद की तादाद यूँ बढ़ाऊँगा कि वह आसमान के सितारों के बराबर हो जाएगी। मैं उन्हें वह मुल्क दूँगा जिस का वादा मैं ने किया है, और वह उसे हमेशा के लिए मीरास में पाएँगे’।”

14 मूसा के कहने पर रब ने वह नहीं किया जिस का एलान उस ने कर दिया था बल्कि वह अपनी क़ौम से बुरा सुलूक करने से बाज़ रहा।

बुतपरस्ती के नताइज

15 मूसा मुड़ कर पहाड़ से उतरा। उस के हाथों में शरीअत की दोनों तख़्तियाँ थीं। उन पर आगे पीछे लिखा गया था। 16 अल्लाह ने ख़ुद तख़्तियों को बना कर उन पर अपने अह्काम कन्दा किए थे।

17 उतरते उतरते यशूअ ने लोगों का शोर सुना और मूसा से कहा, “ख़ैमागाह में जंग का शोर मच रहा है!” 18 मूसा ने जवाब दिया, “न तो यह फ़त्हमन्दों के नारे हैं, न शिकस्त खाए हुओं की चीख़-पुकार। मुझे गाने वालों की आवाज़ सुनाई दे रही है।”

19 जब वह ख़ैमागाह के नज़्दीक पहुँचा तो उस ने लोगों को सोने के बछड़े के सामने नाचते हुए देखा। बड़े ग़ुस्से में आ कर उस ने तख़्तियों को ज़मीन पर पटख़ दिया, और वह टुकड़े टुकड़े हो कर पहाड़ के दामन में गिर गईं। 20 मूसा ने इस्राईलियों के बनाए हुए बछड़े को जला दिया। जो कुछ बच गया उसे उस ने पीस पीस कर पाउडर बना डाला और पाउडर पानी पर छिड़क कर इस्राईलियों को पिला दिया।

21 उस ने हारून से पूछा, “इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया कि तुम ने उन्हें ऐसे बड़े गुनाह में फंसा दिया?” 22 हारून ने कहा, “मेरे आक़ा। ग़ुस्से न हों। आप ख़ुद जानते हैं कि यह लोग बदी पर तुले रहते हैं। 23 उन्हों ने मुझ से कहा, ‘हमारे लिए देवता बना

दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई
करें। क्यूँकि क्या मालूम कि उस बन्दे मूसा को क्या
हुआ है जो हमें मिस्र से निकाल लाया।' 24 इस लिए
मैं ने उन को बताया, 'जिस के पास सोने के ज़ेवरात
हैं वह उन्हें उतार लाए।' जो कुछ उन्हों ने मुझे दिया
उसे मैं ने आग में फैंक दिया तो होते होते सोने का
यह बछड़ा निकल आया।"

25 मूसा ने देखा कि लोग बेकाबू हो गए हैं। क्यूँकि
हारून ने उन्हें बेलगाम छोड़ दिया था, और यूँ वह
इस्राईल के दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन
गए थे। 26 मूसा ख़ैमागाह के दरवाज़े पर खड़े हो
कर बोला, "जो भी रब का बन्दा है वह मेरे पास
आए।" जवाब में लावी के क़बीले के तमाम लोग
उस के पास जमा हो गए। 27 फिर मूसा ने उन से
कहा, "रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है, 'हर एक
अपनी तलवार ले कर ख़ैमागाह में से गुज़रे। एक सिरे
के दरवाज़े से शुरू करके दूसरे सिरे के दरवाज़े तक
चलते चलते हर मिलने वाले को जान से मार दो, चाहे
वह तुम्हारा भाई, दोस्त या रिश्तेदार ही क्यूँ न हो।
फिर मुड़ कर मारते मारते पहले दरवाज़े पर वापस
आ जाओ'।"

28 लावियों ने मूसा की हिदायत पर अमल किया
तो उस दिन तक़रीबन 3,000 मर्द हलाक हुए। 29 यह
देख कर मूसा ने लावियों से कहा, "आज अपने
आप को मक़्दिस में रब की ख़िदमत करने के लिए
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करो, क्यूँकि तुम अपने बेटों
और भाइयों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए तय्यार थे।
इस लिए रब तुम को आज बरकत देगा।"

30 अगले दिन मूसा ने इस्राईलियों से बात की, "तुम
ने निहायत संगीन गुनाह किया है। तो भी मैं अब रब
के पास पहाड़ पर जा रहा हूँ। शायद मैं तुम्हारे गुनाह
का कफ़्फ़ारा दे सकूँ।"

31 चुनाँचे मूसा ने रब के पास वापस जा कर कहा,
"हाय, इस क़ौम ने निहायत संगीन गुनाह किया है।
उन्हों ने अपने लिए सोने का देवता बना लिया।
32 मेहरबानी करके उन्हें मुआफ़ कर। लेकिन अगर
तू उन्हें मुआफ़ न करे तो फिर मुझे भी अपनी उस
किताब में से मिटा दे जिस में तू ने अपने लोगों
के नाम दर्ज किए हैं।" 33 रब ने जवाब दिया, "मैं
सिर्फ़ उस को अपनी किताब में से मिटाता हूँ जो मेरा
गुनाह करता है। 34 अब जा, लोगों को उस जगह ले
चल जिस का ज़िक्र मैं ने किया है। मेरा फ़रिश्ता तेरे
आगे आगे चलेगा। लेकिन जब सज़ा का मुक़र्ररा दिन
आएगा तब मैं उन्हें सज़ा दूँगा।"

35 फिर रब ने इस्राईलियों के दरमियान वबा फैलने
दी, इस लिए कि उन्हों ने उस बछड़े की पूजा की थी
जो हारून ने बनाया था।

33 1 रब ने मूसा से कहा, "इस जगह से रवाना
हो जा। उन लोगों को ले कर जिन को तू
मिस्र से निकाल लाया है उस मुल्क को जा जिस का
वादा मैं ने इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया
है। उन ही से मैं ने क़सम खा कर कहा था, 'मैं यह
मुल्क तुम्हारी औलाद को दूँगा।' 2 मैं तेरे आगे आगे
फ़रिश्ता भेज कर कनआनी, अमोरी, हित्ती, फ़रिज़्ज़ी,
हिव्वी और यबूसी अक़्वाम को उस मुल्क से निकाल
दूँगा। 3 उठ, उस मुल्क को जा जहाँ दूध और शहद
की कस्रत है। लेकिन मैं साथ नहीं जाऊँगा। तुम इतने
हटधर्म हो कि अगर मैं साथ जाऊँ तो ख़तरा है कि
तुम्हें वहाँ पहुँचने से पहले ही बर्बाद कर दूँ।"

4 जब इस्राईलियों ने यह सख़्त अल्फ़ाज़ सुने तो
वह मातम करने लगे। किसी ने भी अपने ज़ेवर न
पहने, 5 क्यूँकि रब ने मूसा से कहा था, "इस्राईलियों
को बता कि तुम हटधर्म हो। अगर मैं एक लम्हा भी
तुम्हारे साथ चलूँ तो ख़तरा है कि मैं तुम्हें तबाह कर
दूँ। अब अपने ज़ेवरात उतार डालो। फिर मैं फ़ैसला
करूँगा कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए।"

6 इन अल्फ़ाज़ पर इस्राईलियों ने होरिब यानी सीना
पहाड़ पर अपने ज़ेवर उतार दिए।

मुलाक़ात का ख़ैमा

7 उस वक़्त मूसा ने ख़ैमा ले कर उसे कुछ फ़ासिले
पर ख़ैमागाह के बाहर लगा दिया। उस ने उस का

नाम ‘मुलाक़ात का ख़ैमा’ रखा। जो भी रब की मर्ज़ी दरयाफ़्त करना चाहता वह ख़ैमागाह से निकल कर वहाँ जाता। 8 जब भी मूसा ख़ैमागाह से निकल कर वहाँ जाता तो तमाम लोग अपने ख़ैमों के दरवाज़ों पर खड़े हो कर मूसा के पीछे देखने लगते। उस के मुलाक़ात के ख़ैमे में ओझल होने तक वह उसे देखते रहते।

9 मूसा के ख़ैमे में दाख़िल होने पर बादल का सतून उतर कर ख़ैमे के दरवाज़े पर ठहर जाता। जितनी देर तक रब मूसा से बातें करता उतनी देर तक वह वहाँ ठहरा रहता। 10 जब इस्राईली मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर बादल का सतून देखते तो वह अपने अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े हो कर सिज्दा करते। 11 रब मूसा से रू-ब-रू बातें करता था, ऐसे शख़्स की तरह जो अपने दोस्त से बातें करता है। इस के बाद मूसा निकल कर ख़ैमागाह को वापस चला जाता। लेकिन उस का जवान मददगार यशूअ बिन नून ख़ैमे को नहीं छोड़ता था।

मूसा रब का जलाल देखता है

12 मूसा ने रब से कहा, “देख, तू मुझ से कहता आया है कि इस क़ौम को कनआन ले चल। लेकिन तू मेरे साथ किस को भेजेगा? तू ने अब तक यह बात मुझे नहीं बताई हालाँकि तू ने कहा है, ‘मैं तुझे बनाम जानता हूँ, तुझे मेरा करम हासिल हुआ है।’ 13 अगर मुझे वाक़ई तेरा करम हासिल है तो मुझे अपने रास्ते दिखा ताकि मैं तुझे जान लूँ और तेरा करम मुझे हासिल होता रहे। इस बात का ख़याल रख कि यह क़ौम तेरी ही उम्मत है।”

14 रब ने जवाब दिया, “मैं ख़ुद तेरे साथ चलूँगा और तुझे आराम दूँगा।” 15 मूसा ने कहा, “अगर तू ख़ुद साथ नहीं चलेगा तो फिर हमें यहाँ से रवाना न करना। 16 अगर तू हमारे साथ न जाए तो किस तरह पता चलेगा कि मुझे और तेरी क़ौम को तेरा करम हासिल हुआ है? हम सिर्फ़ इसी वजह से दुनिया की दीगर क़ौमों से अलग और मुम्ताज़ हैं।”

17 रब ने मूसा से कहा, “मैं तेरी यह दरख़्वास्त भी पूरी करूँगा, क्यूँकि तुझे मेरा करम हासिल हुआ है और मैं तुझे बनाम जानता हूँ।”

18 फिर मूसा बोला, “बराह-ए-करम मुझे अपना जलाल दिखा।” 19 रब ने जवाब दिया, “मैं अपनी पूरी भलाई तेरे सामने से गुज़रने दूँगा और तेरे सामने ही अपने नाम रब का एलान करूँगा। मैं जिस पर मेहरबान होना चाहूँ उस पर मेहरबान होता हूँ, और जिस पर रहम करना चाहूँ उस पर रहम करता हूँ। 20 लेकिन तू मेरा चिहरा नहीं देख सकता, क्यूँकि जो भी मेरा चिहरा देखे वह ज़िन्दा नहीं रह सकता।” 21 फिर रब ने फ़रमाया, “देख, मेरे पास एक जगह है। वहाँ की चटान पर खड़ा हो जा। 22 जब मेरा जलाल वहाँ से गुज़रेगा तो मैं तुझे चटान के एक शिगाफ़ में रखूँगा और अपना हाथ तेरे ऊपर फैलाऊँगा ताकि तू मेरे गुज़रने के दौरान महफ़ूज़ रहे। 23 इस के बाद मैं अपना हाथ हटाऊँगा और तू मेरे पीछे देख सकेगा। लेकिन मेरा चिहरा देखा नहीं जा सकता।”

पत्थर की नई तख़्तियाँ

34 1 रब ने मूसा से कहा, “अपने लिए पत्थर की दो तख़्तियाँ तराश ले जो पहली दो की मानिन्द हों। फिर मैं उन पर वह अल्फ़ाज़ लिखूँगा जो पहली तख़्तियों पर लिखे थे जिन्हें तू ने पटख़ दिया था। 2 सुब्ह तक तय्यार हो कर सीना पहाड़ पर चढ़ना। चोटी पर मेरे सामने खड़ा हो जा। 3 तेरे साथ कोई भी न आए बल्कि पूरे पहाड़ पर कोई और शख़्स नज़र न आए, यहाँ तक कि भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल भी पहाड़ के दामन में न चरें।”

4 चुनाँचे मूसा ने दो तख़्तियाँ तराश लीं जो पहली की मानिन्द थीं। फिर वह सुब्ह-सवेरे उठ कर सीना पहाड़ पर चढ़ गया जिस तरह रब ने उसे हुक्म दिया था। उस के हाथों में पत्थर की दोनों तख़्तियाँ थीं। 5 जब वह चोटी पर पहुँचा तो रब बादल में उतर आया और उस के पास खड़े हो कर अपने नाम रब का एलान किया। 6 मूसा के सामने से गुज़रते

हुए उस ने पुकारा, “रब, रब, रहीम और मेहरबान
ख़ुदा। तहम्मुल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर। 7 वह
हज़ारों पर अपनी शफ़क़त क़ाइम रखता और लोगों
का क़ुसूर, नाफ़रमानी और गुनाह मुआफ़ करता है।
लेकिन वह हर एक को उस की मुनासिब सज़ा भी
देता है। जब वालिदैन गुनाह करें तो उन की औलाद
को भी तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा के नताइज
भुगतने पड़ेंगे।”

8 मूसा ने जल्दी से झुक कर सिज्दा किया। 9 उस ने
कहा, “ऐ रब, अगर मुझ पर तेरा करम हो तो हमारे
साथ चल। बेशक यह क़ौम हटधर्म है, तो भी हमारा
क़ुसूर और गुनाह मुआफ़ कर और बख़्श दे कि हम
दुबारा तेरे ही बन जाएँ।”

10 तब रब ने कहा, “मैं तुम्हारे साथ अह्द बांधूँगा।
तेरी क़ौम के सामने ही मैं ऐसे मोजिज़े करूँगा जो
अब तक दुनिया भर की किसी भी क़ौम में नहीं किए
गए। पूरी क़ौम जिस के दरमियान तू रहता है रब
का काम देखेगी और उस से डर जाएगी जो मैं तेरे
साथ करूँगा। 11 जो अह्काम मैं आज देता हूँ उन
पर अमल करता रह। मैं अमोरी, कनआनी, हित्ती,
फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी अक़्वाम को तेरे आगे
आगे मुल्क से निकाल दूँगा। 12 ख़बरदार, जो उस
मुल्क में रहते हैं जहाँ तू जा रहा है उन से अह्द न
बांधना। वर्ना वह तेरे दरमियान रहते हुए तुझे गुनाहों
में फंसाते रहेंगे। 13 उन की क़ुर्बानगाहें ढा देना, उन
के बुतों के सतून टुकड़े टुकड़े कर देना और उन की
देवी यसीरत के खम्बे काट डालना।

14 किसी और माबूद की परस्तिश न करना,
क्यूँकि रब का नाम ग़यूर है, अल्लाह ग़ैरतमन्द है।
15 ख़बरदार, उस मुल्क के बाशिन्दों से अह्द न
करना, क्यूँकि तेरे दरमियान रहते हुए भी वह अपने
माबूदों की पैरवी करके ज़िना करेंगे और उन्हें
क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँगे। आख़िरकार वह तुझे भी अपनी
क़ुर्बानियों में शिर्कत की दावत देंगे। 16 ख़तरा है कि तू
उन की बेटियों का अपने बेटों के साथ रिश्ता बांधे।
फिर जब यह अपने माबूदों की पैरवी करके ज़िना
करेंगी तो उन के सबब से तेरे बेटे भी उन की पैरवी
करने लगेंगे।

17 अपने लिए देवता न ढालना।

सालाना ईदें

18 बेख़मीरी रोटी की ईद मनाना। अबीब के महीने
[z]में सात दिन तक तेरी रोटी में ख़मीर न हो जिस तरह
मैं ने हुक्म दिया है। क्यूँकि इस महीने में तू मिस्र से
निकला।

19 हर पहलौठा मेरा है। तेरे माल मवेशियों का हर
पहलौठा मेरा है, चाहे बछड़ा हो या लेला। 20 लेकिन
पहलौठे गधे के इवज़ भेड़ देना। अगर यह मुमकिन
न हो तो उस की गर्दन तोड़ डालना। अपने पहलौठे
बेटों के लिए भी इवज़ी देना। कोई मेरे पास ख़ाली
हाथ न आए।

21 छः दिन काम-काज करना, लेकिन सातवें दिन
आराम करना। ख़्वाह हल चलाना हो या फ़सल
काटनी हो तो भी सातवें दिन आराम करना।

22 गन्दुम की फ़सल की कटाई की ईद [a]उस वक़्त
मनाना जब तू गेहूँ की पहली फ़सल काटेगा। अंगूर
और फल जमा करने की ईद इस्राईली साल के
इख़तिताम पर मनानी है। 23 लाज़िम है कि तेरे तमाम
मर्द साल में तीन मर्तबा रब क़ादिर-ए-मुतलक़ के
सामने जो इस्राईल का ख़ुदा है हाज़िर हों। 24 मैं तेरे
आगे आगे क़ौमों को मुल्क से निकाल दूँगा और तेरी
सरहद्दें बढ़ाता जाऊँगा। फिर जब तू साल में तीन
मर्तबा रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर आएगा तो कोई भी
तेरे मुल्क का लालच नहीं करेगा।

25 जब तू किसी जानवर को ज़बह करके क़ुर्बानी
के तौर पर पेश करता है तो उस के ख़ून के साथ ऐसी
रोटी पेश न करना जिस में ख़मीर हो। ईद-ए-फ़सह की
क़ुर्बानी से अगली सुब्ह तक कुछ बाक़ी न रहे।

---

[z]मार्च ता अप्रैल।

[a]सितम्बर ता अक्तूबर।

26 अपनी ज़मीन की पहली पैदावार में से बेहतरीन
हिस्सा रब अपने ख़ुदा के घर में ले आना।
बकरी या भेड़ के बच्चे को उस की माँ के दूध में न
पकाना।”

मूसा के चिहरे पर चमक

27 रब ने मूसा से कहा, “यह तमाम बातें लिख ले,
क्यूँकि यह उस अह्द की बुन्याद हैं जो मैं ने तेरे और
इस्राईल के साथ बांधा है।”
28 मूसा चालीस दिन और चालीस रात वहीं रब के
हुज़ूर रहा। इस दौरान न उस ने कुछ खाया न पिया।
उस ने पत्थर की तख़्तियों पर अह्द के दस अह्काम
लिखे।
29 इस के बाद मूसा शरीअत की दोनों तख़्तियों को
हाथ में लिए हुए सीना पहाड़ से उतरा। उस के चिहरे
की जिल्द चमक रही थी, क्यूँकि उस ने रब से बात
की थी। लेकिन उसे ख़ुद इस का इल्म नहीं था।
30 जब हारून और तमाम इस्राईलियों ने देखा कि
मूसा का चिहरा चमक रहा है तो वह उस के पास
आने से डर गए। 31 लेकिन उस ने उन्हें बुलाया तो
हारून और जमाअत के तमाम सरदार उस के पास
आए, और उस ने उन से बात की। 32 बाद में बाक़ी
इस्राईली भी आए, और मूसा ने उन्हें तमाम अह्काम
सुनाए जो रब ने उसे कोह-ए-सीना पर दिए थे।
33 यह सब कुछ कहने के बाद मूसा ने अपने चिहरे
पर निक़ाब डाल लिया। 34 जब भी वह रब से बात
करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे में जाता तो निक़ाब
को ख़ैमे से निकलते वक़्त तक उतार लेता। और
जब वह निकल कर इस्राईलियों को रब से मिले हुए
अह्काम सुनाता 35 तो वह देखते कि उस के चिहरे
की जिल्द चमक रही है। इस के बाद मूसा दुबारा
निक़ाब को अपने चिहरे पर डाल लेता, और वह उस
वक़्त तक चिहरे पर रहता जब तक मूसा रब से बात
करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे में न जाता था।

सबत का दिन

35 1 मूसा ने इस्राईल की पूरी जमाअत को
इकट्ठा करके कहा, “रब ने तुम को यह
हुक्म दिए हैं : 2 छः दिन काम-काज किया जाए,
लेकिन सातवाँ दिन मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो। वह रब
के लिए आराम का सबत है। जो भी इस दिन काम
करे उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। 3 हफ़्ते के दिन अपने
तमाम घरों में आग तक न जलाना।”

मुलाक़ात के ख़ैमे के लिए सामान

4 मूसा ने इस्राईल की पूरी जमाअत से कहा, “रब
ने हिदायत दी है 5 कि जो कुछ तुम्हारे पास है उस में
से हदिए ला कर रब को उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर
पर पेश करो। जो भी दिली ख़ुशी से देना चाहे वह
इन चीज़ों में से कुछ दे : सोना, चाँदी, पीतल; 6 नीले,
अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा, बारीक कतान,
बकरी के बाल, 7 मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई खालें,
तख़स की खालें, कीकर की लकड़ी, 8 शमादान के
लिए ज़ैतून का तेल, मसह करने के लिए तेल और
ख़ुश्बूदार बख़ूर के लिए मसाले, 9 अक़ीक़-ए-अह्मर
और दीगर जवाहिर जो इमाम-ए-आज़म के बालापोश
और सीने के कीसे में जड़े जाएंगे।
10 तुम में से जितने माहिर कारीगर हैं वह आ कर
वह कुछ बनाएँ जो रब ने फ़रमाया 11 यानी ख़ैमा और
वह ग़िलाफ़ जो उस के ऊपर लगाए जाएंगे, हुकें,
दीवारों के तख़्ते, शहतीर, सतून और पाए, 12 अह्द
का सन्दूक़, उसे उठाने की लकड़ियाँ, उस के
कफ़्फ़ारे का ढकना, मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े
का पर्दा, 13 मख़्सूस रोटियों की मेज़, उसे उठाने
की लकड़ियाँ, उस का सारा सामान और रोटियाँ,
14 शमादान और उस पर रखने के चराग़ उस के
सामान समेत, शमादान के लिए तेल, 15 बख़ूर जलाने
की क़ुर्बानगाह, उसे उठाने की लकड़ियाँ, मसह का
तेल, ख़ुश्बूदार बख़ूर, मुक़द्दस ख़ैमे के दरवाज़े का
पर्दा, 16 जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह, उस का

पीतल का जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और
बाक़ी सारा सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा
जिस पर हौज़ रखा जाता है, 17 चारदीवारी के पर्दे
उन के खम्बों और पाइयों समेत, सहन के दरवाज़े
का पर्दा, 18 ख़ैमे और चारदीवारी की मेख़ें और रस्से,
19 और वह मुक़द्दस लिबास जो हारून और उस के
बेटे मक़्दिस में ख़िदमत करने के लिए पहनते हैं।"

20 यह सुन कर इस्राईल की पूरी जमाअत मूसा
के पास से चली गई। 21 और जो जो दिली ख़ुशी
से देना चाहता था वह मुलाक़ात के ख़ैमे, उस के
सामान या इमामों के कपड़ों के लिए कोई हदिया
ले कर वापस आया। 22 रब के हदिए के लिए मर्द
और ख़वातीन दिली ख़ुशी से अपने सोने के ज़ेवरात
मसलन जड़ाओ पिनें, बालियाँ और छल्ले ले आए।
23 जिस जिस के पास दरकार चीज़ों में से कुछ था
वह उसे मूसा के पास ले आया यानी नीले, क़िर्मिज़ी
और अर्ग़वानी रंग का धागा, बारीक कतान, बकरी
के बाल, मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई खालें और तख़स
की खालें। 24 चाँदी, पीतल और कीकर की लकड़ी
भी हदिए के तौर पर लाई गई। 25 और जितनी औरतें
कातने में माहिर थीं वह अपनी काती हुई चीज़ें ले
आईं यानी नीले, क़िर्मिज़ी और अर्ग़वानी रंग का
धागा और बारीक कतान। 26 इसी तरह जो जो औरत
बकरी के बाल कातने में माहिर थी और दिली ख़ुशी
से मक़्दिस के लिए काम करना चाहती थी वह
यह कात कर ले आई। 27 सरदार अक़ीक़-ए-अह्मर
और दीगर जवाहिर ले आए जो इमाम-ए-आज़म के
बालापोश और सीने के कीसे के लिए दरकार थे।
28 वह शमादान, मसह के तेल और ख़ुश्बूदार बख़ूर
के लिए मसाले और ज़ैतून का तेल भी ले आए।

29 यूँ इस्राईल के तमाम मर्द और ख़वातीन जो दिली
ख़ुशी से रब को कुछ देना चाहते थे उस सारे काम
के लिए हदिए ले आए जो रब ने मूसा की मारिफ़त
करने को कहा था।

बज़लीएल और उहलियाब

30 फिर मूसा ने इस्राईलियों से कहा, "रब ने यहूदाह
के क़बीले के बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर को चुन
लिया है। 31 उस ने उसे इलाही रूह से मामूर करके
हिक्मत, समझ और तामीर के हर काम के लिए
दरकार इल्म दे दिया है। 32 वह नक़्शे बना कर उन
के मुताबिक़ सोने, चाँदी और पीतल की चीज़ें बना
सकता है। 33 वह जवाहिर को काट कर जड़ने की
क़ाबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराश कर
उस से मुख़्तलिफ़ चीज़ें बना सकता है। वह बहुत
सारे और कामों में भी महारत रखता है। 34 साथ ही
रब ने उसे और दान के क़बीले के उहलियाब बिन
अख़ीसमक को दूसरों को सिखाने की क़ाबिलियत
भी दी है। 35 उस ने उन्हें वह महारत और हिक्मत दी
है जो हर काम के लिए दरकार है यानी कारीगरी के
हर काम के लिए, कढ़ाई के काम के लिए, नीले,
अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक
कतान से कपड़ा बनाने के लिए और बुनाई के काम
के लिए। वह माहिर कारीगर हैं और नक़्शे भी बना
सकते हैं।

36 1 लाज़िम है कि बज़लीएल, उहलियाब और
बाक़ी कारीगर जिन को रब ने मक़्दिस की
तामीर के लिए हिक्मत और समझ दी है सब कुछ
ऐन उन हिदायात के मुताबिक़ बनाएँ जो रब ने दी
हैं।"

इस्राईली दिली ख़ुशी से देते हैं

2 मूसा ने बज़लीएल और उहलियाब को बुलाया।
साथ ही उस ने हर उस कारीगर को भी बुलाया जिसे
रब ने मक़्दिस की तामीर के लिए हिक्मत और महारत
दी थी और जो ख़ुशी से आना और यह काम करना
चाहता था। 3 उन्हें मूसा से तमाम हदिए मिले जो
इस्राईली मक़्दिस की तामीर के लिए लाए थे।

इस के बाद भी लोग रोज़-ब-रोज़ सुब्ह के वक़्त
हदिए लाते रहे। 4 आख़िरकार तमाम कारीगर जो

मक़्दिस बनाने के काम में लगे थे अपना काम छोड़
कर मूसा के पास आए। 5 उन्हों ने कहा, “लोग हद से
ज़्यादा ला रहे हैं। जिस काम का हुक्म रब ने दिया है
उस के लिए इतने सामान की ज़रूरत नहीं है।” 6 तब
मूसा ने पूरी ख़ैमागाह में एलान करवा दिया कि कोई
मर्द या औरत मक़्दिस की तामीर के लिए अब कुछ
न लाए।

यूँ उन्हें मज़ीद चीज़ें लाने से रोका गया, 7 क्यूँकि
काम के लिए सामान ज़रूरत से ज़्यादा हो गया था।

मुलाक़ात का ख़ैमा

8 जो कारीगर महारत रखते थे उन्हों ने ख़ैमे को
बनाया। उन्हों ने बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी
और क़िर्मिज़ी धागे से दस पर्दे बनाए। पर्दों पर किसी
माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी फ़रिश्तों
का डिज़ाइन बनाया गया। 9 हर पर्दे की लम्बाई 42
फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट थी। 10 पाँच पर्दों के लम्बे
हाशिए एक दूसरे के साथ जोड़े गए और इसी तरह
बाक़ी पाँच भी। यूँ दो बड़े टुकड़े बन गए। 11 दोनों
टुकड़ों को एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए उन्हों ने
नीले धागे के हल्क़े बनाए। यह हल्क़े हर टुकड़े के 42
फ़ुट वाले एक किनारे पर लगाए गए, 12 एक टुकड़े
के हाशिए पर 50 हल्क़े और दूसरे पर भी उतने ही
हल्क़े। इन दो हाशियों के हल्क़े एक दूसरे के आमने-
सामने थे। 13 फिर बज़लीएल ने सोने की 50 हुकें बना
कर उन से आमने-सामने के हल्क़ों को एक दूसरे के
साथ मिलाया। यूँ दोनों टुकड़ों के जोड़ने से ख़ैमा बन
गया।

14 उस ने बकरी के बालों से भी 11 पर्दे बनाए जिन्हें
कपड़े वाले ख़ैमे के ऊपर रखना था। 15 हर पर्दे की
लम्बाई 45 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट थी। 16 पाँच पर्दों
के लम्बे हाशिए एक दूसरे के साथ जोड़े गए और इस
तरह बाक़ी छः भी। 17 इन दोनों टुकड़ों को मिलाने
के लिए उस ने हर टुकड़े के 45 फ़ुट वाले एक किनारे
पर पचास पचास हल्क़े लगाए। 18 फिर पीतल की 50
हुकें बना कर उस ने दोनों हिस्से मिलाए।

19 एक दूसरे के ऊपर के दोनों ख़ैमों की हिफ़ाज़त
के लिए बज़लीएल ने दो और ग़िलाफ़ बनाए। बकरी
के बालों के ख़ैमे पर रखने के लिए उस ने मेंढों की
सुर्ख़ रंगी हुई खालें जोड़ दीं और उस के ऊपर रखने
के लिए तख़स की खालें मिलाईं।

20 इस के बाद उस ने कीकर की लकड़ी के तख़्ते
बनाए जो ख़ैमे की दीवारों का काम देते थे। 21 हर
तख़्ते की ऊँचाई 15 फ़ुट थी और चौड़ाई सवा दो
फ़ुट। 22 हर तख़्ते के नीचे दो दो चूलें थीं। इन चूलों
से हर तख़्ते को उस के पाइयों के साथ जोड़ा जाता
था ताकि तख़्ता खड़ा रहे। 23 ख़ैमे की जुनूबी दीवार
के लिए 20 तख़्ते बनाए गए 24 और साथ ही चाँदी
के 40 पाए भी जिन पर तख़्ते खड़े किए जाते थे। हर
तख़्ते के नीचे दो पाए थे, और हर पाए में एक चूल
लगती थी। 25 इसी तरह ख़ैमे की शिमाली दीवार के
लिए भी 20 तख़्ते बनाए गए 26 और साथ ही चाँदी
के 40 पाए जो तख़्तों को खड़ा करने के लिए थे।
हर तख़्ते के नीचे दो पाए थे। 27 ख़ैमे की पिछली
यानी मग़रिबी दीवार के लिए छः तख़्ते बनाए गए।
28 इस दीवार को शिमाली और जुनूबी दीवारों के
साथ जोड़ने के लिए कोने वाले दो तख़्ते बनाए गए।
29 इन दो तख़्तों में नीचे से ले कर ऊपर तक कोना
था ताकि एक से शिमाली दीवार मग़रिबी दीवार के
साथ जुड़ जाए और दूसरे से जुनूबी दीवार मग़रिबी
दीवार के साथ। इन के ऊपर के सिरे कड़ों से मज़बूत
किए गए। 30 यूँ पिछले यानी मग़रिबी तख़्तों की पूरी
तादाद 8 थी और इन के लिए चाँदी के पाइयों की
तादाद 16, हर तख़्ते के नीचे दो पाए।

31–32 फिर बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी के
शहतीर बनाए, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच
शहतीर। वह हर दीवार के तख़्तों पर यूँ लगाने के
लिए थे कि उन से तख़्ते एक दूसरे के साथ मिलाए
जाएँ। 33 दरमियानी शहतीर यूँ बनाया गया कि वह
दीवार की आधी ऊँचाई पर दीवार के एक सिरे से
दूसरे सिरे तक लग सकता था। 34 उस ने तमाम तख़्तों
और शहतीरों पर सोना चढ़ाया। शहतीरों को तख़्तों

के साथ लगाने के लिए उस ने सोने के कड़े बनाए
जो तख़्तों में लगाने थे।

मुक़द्दस ख़ैमे के पर्दे

35 अब बज़लीएल ने एक और पर्दा बनाया। उस
के लिए भी बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी और
क़िर्मिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल हुआ। उस पर भी
किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी
फ़रिश्तों का डिज़ाइन बनाया गया। 36 फिर उस ने
पर्दे को लटकाने के लिए कीकर की लकड़ी के चार
सतून, सोने की हुकें और चाँदी के चार पाए बनाए।
सतूनों पर सोना चढ़ाया गया।
37 बज़लीएल ने ख़ैमे के दरवाज़े के लिए भी पर्दा
बनाया। वह भी बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी
और क़िर्मिज़ी रंग के धागे से बनाया गया, और उस
पर कढ़ाई का काम किया गया। 38 इस पर्दे को
लटकाने के लिए उस ने सोने की हुकें और कीकर
की लकड़ी के पाँच सतून बनाए। सतूनों के ऊपर के
सिरों और पट्टियों पर सोना चढ़ाया गया जबकि उन
के पाए पीतल के थे।

अह्द का सन्दूक़

37 1 बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी का
सन्दूक़ बनाया। उस की लम्बाई पौने चार
फ़ुट थी जबकि उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो
दो फ़ुट थी। 2 उस ने पूरे सन्दूक़ पर अन्दर और बाहर
से ख़ालिस सोना चढ़ाया। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द
उस ने सोने की झालर लगाई। 3 सन्दूक़ को उठाने के
लिए उस ने सोने के चार कड़े ढाल कर उन्हें सन्दूक़
के चारपाइयों पर लगाया। दोनों तरफ़ दो दो कड़े
थे। 4 फिर उस ने कीकर की दो लकड़ियाँ सन्दूक़
को उठाने के लिए तय्यार कीं और उन पर सोना
चढ़ाया। 5 उस ने इन लकड़ियों को दोनों तरफ़ के
कड़ों में डाल दिया ताकि उन से सन्दूक़ को उठाया
जा सके।
6 बज़लीएल ने सन्दूक़ का ढकना ख़ालिस सोने का
बनाया। उस की लम्बाई पौने चार फ़ुट और चौड़ाई
सवा दो फ़ुट थी। 7–8 फिर उस ने दो करूबी फ़रिश्ते
सोने से घड़ कर बनाए जो ढकने के दोनों सिरों पर
खड़े थे। यह दो फ़रिश्ते और ढकना एक ही टुकड़े से
बनाए गए। 9 फ़रिश्तों के पर यूँ ऊपर की तरफ़ फैले
हुए थे कि वह ढकने को पनाह देते थे। उन के मुँह
एक दूसरे की तरफ़ किए हुए थे, और वह ढकने की
तरफ़ देखते थे।

मख़्सूस रोटियों की मेज़

10 इस के बाद बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी
की मेज़ बनाई। उस की लम्बाई तीन फ़ुट, चौड़ाई
डेढ़ फ़ुट और ऊँचाई सवा दो फ़ुट थी। 11 उस ने उस
पर ख़ालिस सोना चढ़ा कर उस के इर्दगिर्द सोने की
झालर लगाई। 12 मेज़ की ऊपर की सतह पर उस
ने चौखटा भी लगाया जिस की ऊँचाई तीन इंच थी
और जिस पर सोने की झालर लगी थी। 13 अब उस
ने सोने के चार कड़े ढाल कर उन्हें चारों कोनों पर
लगाया जहाँ मेज़ के पाए लगे थे। 14 यह कड़े मेज़ की
सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए गए। उन में वह
लकड़ियाँ डालनी थीं जिन से मेज़ को उठाना था।
15 बज़लीएल ने यह लकड़ियाँ भी कीकर से बनाईं
और उन पर सोना चढ़ाया।
16 आख़िरकार उस ने ख़ालिस सोने के वह थाल,
प्याले, मै की नज़रें पेश करने के बर्तन और मर्तबान
बनाए जो उस पर रखे जाते थे।

शमादान

17 फिर बज़लीएल ने ख़ालिस सोने का शमादान
बनाया। उस का पाया और डंडी घड़ कर बनाए
गए। उस की प्यालियाँ जो फूलों और कलियों की
शक्ल की थीं पाए और डंडी के साथ एक ही टुकड़ा
थीं। 18 डंडी से दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन शाख़ें
निकलती थीं। 19 हर शाख़ पर तीन प्यालियाँ लगी
थीं जो बादाम की कलियों और फूलों की शक्ल

की थीं। 20 शमादान की डंडी पर भी इस क़िस्म की
प्यालियाँ लगी थीं, लेकिन तादाद में चार। 21 इन में
से तीन प्यालियाँ दाएँ बाएँ की छः शाख़ों के नीचे
लगी थीं। वह यूँ लगी थीं कि हर प्याली से दो शाख़ें
निकलती थीं। 22 शाख़ें और प्यालियाँ बल्कि पूरा
शमादान ख़ालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़ कर
बनाया गया।

23 बज़लीएल ने शमादान के लिए ख़ालिस सोने के
सात चराग़ बनाए। उस ने बत्ती कतरने की क़ैंचियाँ
और जलते कोएले के लिए छोटे बर्तन भी ख़ालिस
सोने से बनाए। 24 शमादान और उस के तमाम सामान
के लिए पूरे 34 किलोग्राम ख़ालिस सोना इस्तेमाल
हुआ।

बख़ूर जलाने की क़ुर्बानगाह

25 बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी की क़ुर्बानगाह
बनाई जो बख़ूर जलाने के लिए थी। वह डेढ़ फ़ुट
लम्बी, इतनी ही चौड़ी और तीन फ़ुट ऊँची थी। उस
के चार कोनों में से सींग निकलते थे जो क़ुर्बानगाह के
साथ एक ही टुकड़े से बनाए गए थे। 26 उस की ऊपर
की सतह, उस के चार पहलूओं और उस के सींगों
पर ख़ालिस सोना चढ़ाया गया। ऊपर की सतह के
इर्दगिर्द बज़लीएल ने सोने की झालर बनाई। 27 सोने
के दो कड़े बना कर उस ने उन्हें इस झालर के नीचे
एक दूसरे के मुक़ाबिल पहलूओं पर लगाया। इन
कड़ों में क़ुर्बानगाह को उठाने की लकड़ियाँ डाली
गईं। 28 यह लकड़ियाँ कीकर की थीं, और उन पर
भी सोना चढ़ाया गया।

29 बज़लीएल ने मसह करने का मुक़द्दस तेल और
ख़ुश्बूदार ख़ालिस बख़ूर भी बनाया। यह इत्रसाज़ का
काम था।

जानवरों को पेश करने की क़ुर्बानगाह

38 1 बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी की एक
और क़ुर्बानगाह बनाई जो भस्म होने वाली
क़ुर्बानियों के लिए थी। उस की ऊँचाई साढ़े चार फ़ुट,
उस की लम्बाई और चौड़ाई साढ़े सात सात फ़ुट थी।
2 उस के ऊपर चारों कोनों में से सींग निकलते थे।
सींग और क़ुर्बानगाह एक ही टुकड़े के थे, और उस
पर पीतल चढ़ाया गया। 3 उस का तमाम साज़-ओ-
सामान और बर्तन भी पीतल के थे यानी राख को उठा
कर ले जाने की बालटियाँ, बेलचे, काँटे, जलते हुए
कोएले के लिए बर्तन और छिड़काओ के कटोरे।

4 क़ुर्बानगाह को उठाने के लिए उस ने पीतल का
जंगला बनाया। वह ऊपर से खुला था और यूँ बनाया
गया कि जब क़ुर्बानगाह उस में रखी जाए तो वह उस
किनारे तक पहुँचे जो क़ुर्बानगाह की आधी ऊँचाई पर
लगी थी। 5 उस ने क़ुर्बानगाह को उठाने के लिए चार
कड़े बना कर उन्हें जंगले के चार कोनों पर लगाया।
6 फिर उस ने कीकर की दो लकड़ियाँ बना कर उन
पर पीतल चढ़ाया 7 और क़ुर्बानगाह के दोनों तरफ़
लगे इन कड़ों में डाल दीं। यूँ उसे उठाया जा सकता
था। क़ुर्बानगाह लकड़ी की थी लेकिन खोखली थी।

8 बज़लीएल ने धोने का हौज़ और उस का ढाँचा
भी पीतल से बनाया। उस का पीतल उन औरतों के
आईनों से मिला था जो मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े
पर ख़िदमत करती थीं।

ख़ैमे का सहन

9 फिर बज़लीएल ने सहन बनाया। उस की
चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई गई।
चारदीवारी की लम्बाई जुनूब की तरफ़ 150 फ़ुट
थी। 10 कपड़े को लगाने के लिए चाँदी की हुकें,
पट्टियाँ, लकड़ी के खम्बे और उन के पाए बनाए गए।
11 चारदीवारी शिमाल की तरफ़ भी इसी तरह बनाई
गई। 12 ख़ैमे के पीछे मग़रिब की तरफ़ चारदीवारी की
चौड़ाई 75 फ़ुट थी। कपड़े के इलावा उस के लिए
10 खम्बे, 10 पाए और कपड़ा लगाने के लिए चाँदी
की हुकें और पट्टियाँ बनाई गईं। 13 सामने, मशरिक़
की तरफ़ जहाँ से सूरज तुलू होता है चारदीवारी की
चौड़ाई भी 75 फ़ुट थी। 14–15 कपड़ा दरवाज़े के दाईं
तरफ़ साढ़े 22 फ़ुट चौड़ा था और उस के बाईं तरफ़

भी उतना ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ़ तीन तीन खम्बों
के साथ लगाया गया जो पीतल के पाइयों पर खड़े थे।
16 चारदीवारी के तमाम पर्दों के लिए बारीक कतान
इस्तेमाल हुआ। 17 खम्बे पीतल के पाइयों पर खड़े
थे, और पर्दे चाँदी की हुकों और पट्टियों से खम्बों
के साथ लगे थे। खम्बों के ऊपर के सिरों पर चाँदी
चढ़ाई गई थी। सहन के तमाम खम्बों पर चाँदी की
पट्टियाँ लगी थीं।

18 चारदीवारी के दरवाज़े का पर्दा नीले, अर्ग़वानी
और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से
बनाया गया, और उस पर कढ़ाई का काम किया
गया। वह 30 फ़ुट चौड़ा और चारदीवारी के दूसरे
पर्दों की तरह साढ़े सात फ़ुट ऊँचा था। 19 उस के चार
खम्बे और पीतल के चार पाए थे। उस की हुकें और
पट्टियाँ चाँदी की थीं, और खम्बों के ऊपर के सिरों
पर चाँदी चढ़ाई गई थी। 20 ख़ैमे और चारदीवारी की
तमाम मेख़ें पीतल की थीं।

ख़ैमे का तामीरी सामान

21 ज़ैल में उस सामान की फ़हरिस्त है जो मक़्दिस
की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ। मूसा के हुक्म
पर इमाम-ए-आज़म हारून के बेटे इतमर ने लावियों
की मारिफ़त यह फ़हरिस्त तय्यार की। 22 (यहूदाह के
क़बीले के बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर ने वह सब
कुछ बनाया जो रब ने मूसा को बताया था। 23 उस के
साथ दान के क़बीले का उहलियाब बिन अख़ीसमक
था जो कारीगरी के हर काम और कढ़ाई के काम में
माहिर था। वह नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के
धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाने में भी माहिर
था।)

24 उस सोने का वज़न जो लोगों के हदियों से जमा
हुआ और मक़्दिस की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ
तक़रीबन 1,000 किलोग्राम था (उसे मक़्दिस के
बाटों के हिसाब से तोला गया)।

25 तामीर के लिए चाँदी जो मर्दुमशुमारी के हिसाब
से वसूल हुई, उस का वज़न तक़रीबन 3,430
किलोग्राम था (उसे भी मक़्दिस के बाटों के हिसाब
से तोला गया)। 26 जिन मर्दों की उम्र 20 साल या इस
से ज़ाइद थी उन्हें चाँदी का आधा आधा सिक्का देना
पड़ा। मर्दों की कुल तादाद 6,03,550 थी। 27 चूँकि
दीवारों के तख़्तों के पाए और मुक़द्दसतरीन कमरे
के दरवाज़े के सतूनों के पाए चाँदी के थे इस लिए
तक़रीबन पूरी चाँदी इन 100 पाइयों के लिए सर्फ़
हुई। 28 तक़रीबन 30 किलोग्राम चाँदी बच गई। इस
से चारदीवारी के खम्बों की हुकें और पट्टियाँ बनाई
गईं, और यह खम्बों के ऊपर के सिरों पर भी चढ़ाई
गई।

29 जो पीतल हदियों से जमा हुआ उस का वज़न
तक़रीबन 2,425 किलोग्राम था। 30 ख़ैमे के दरवाज़े
के पाए, जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह, उस का
जंगला, बर्तन और साज़-ओ-सामान, 31 चारदीवारी
के पाए, सहन के दरवाज़े के पाए और ख़ैमे और
चारदीवारी की तमाम मेख़ें इसी से बनाई गईं।

हारून का बालापोश

39 1 बज़लीएल की हिदायत पर कारीगरों ने
नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा
ले कर मक़्दिस में ख़िदमत के लिए लिबास बनाए।
उन्हों ने हारून के मुक़द्दस कपड़े उन हिदायात के ऐन
मुताबिक़ बनाए जो रब ने मूसा को दी थीं। 2 उन्हों ने
इमाम-ए-आज़म का बालापोश बनाने के लिए सोना,
नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा और
बारीक कतान इस्तेमाल किया। 3 उन्हों ने सोने को
कूट कूट कर वर्क़ बनाया और फिर उसे काट कर
धागे बनाए। जब नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग
के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाया गया
तो सोने का यह धागा महारत से कढ़ाई के काम
में इस्तेमाल हुआ। 4 उन्हों ने बालापोश के लिए दो
पट्टियाँ बनाईं और उन्हें बालापोश के कंधों पर रख
कर सामने और पीछे से बालापोश के साथ लगाइं।
5 पटका भी बनाया गया जिस से बालापोश को बांधा
जाता था। इस के लिए भी सोना, नीले, अर्ग़वानी और

क़िर्मिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल
हुआ। यह उन हिदायात के ऐन मुताबिक़ हुआ जो
रब ने मूसा को दी थीं। 6 फिर उन्हों ने अक़ीक़-ए-
अह्मर के दो पत्थर चुन लिए और उन्हें सोने के ख़ानों
में जड़ कर उन पर इस्राईल के बारह बेटों के नाम
कन्दा किए। यह नाम जौहरों पर उस तरह कन्दा किए
गए जिस तरह मुहर कन्दा की जाती है। 7 उन्हों ने
पत्थरों को बालापोश की दो पट्टियों पर यूँ लगाया कि
वह हारून के कंधों पर रब को इस्राईलियों की याद
दिलाते रहें। यह सब कुछ रब की दी गई हिदायात
के ऐन मुताबिक़ हुआ।

सीने का कीसा

8 इस के बाद उन्हों ने सीने का कीसा बनाया।
यह माहिर कारीगर का काम था और उन ही चीज़ों
से बना जिन से हारून का बालापोश भी बना था
यानी सोने और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग
के धागे और बारीक कतान से। 9 जब कपड़े को
एक दफ़ा तह किया गया तो कीसे की लम्बाई और
चौड़ाई नौ नौ इंच थी। 10 उन्हों ने उस पर चार
क़तारों में जवाहिर जड़े। हर क़तार में तीन तीन जौहर
थे। पहली क़तार में लाल, ज़बर्जद और ज़ुमुर्रद।
11 दूसरी में फ़ीरोज़ा, संग-ए-लाजवर्द और हज्र-उल-
क़मर। 12 तीसरी में ज़रक़ोन, अक़ीक़ और याक़ूत-
ए-अर्ग़वानी। 13 चौथी में पुखराज, अक़ीक़-ए-अह्मर
और यशब। हर जौहर सोने के ख़ाने में जड़ा हुआ था।
14 यह बारह जवाहिर इस्राईल के बारह क़बीलों की
नुमाइन्दगी करते थे। एक एक जौहर पर एक क़बीले
का नाम कन्दा किया गया, और यह नाम उस तरह
कन्दा किए गए जिस तरह मुहर कन्दा की जाती है।
15 अब उन्हों ने सीने के कीसे के लिए ख़ालिस
सोने की दो ज़न्जीरें बनाईं जो डोरी की तरह गुंधी
हुई थीं। 16 साथ साथ उन्हों ने सोने के दो ख़ाने और
दो कड़े भी बनाए। उन्हों ने यह कड़े कीसे के ऊपर
के दो कोनों पर लगाए। 17 फिर दोनों ज़न्जीरें उन
दो कड़ों के साथ लगाई गईं। 18 उन के दूसरे सिरे
बालापोश की कंधों वाली पट्टियों के दो ख़ानों के
साथ जोड़ दिए गए, फिर सामने की तरफ़ लगाए गए।
19 उन्हों ने कीसे के निचले दो कोनों पर भी सोने के
दो कड़े लगाए। वह अन्दर, बालापोश की तरफ़ लगे
थे। 20 अब उन्हों ने दो और कड़े बना कर बालापोश
की कंधों वाली पट्टियों पर लगाए। यह भी सामने की
तरफ़ लगे थे लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के
ऊपर ही। 21 उन्हों ने सीने के कीसे के निचले कड़े
नीली डोरी से बालापोश के इन निचले कड़ों के साथ
बांधे। यूँ कीसा पटके के ऊपर अच्छी तरह सीने के
साथ लगा रहा। यह उन हिदायात के ऐन मुताबिक़
हुआ जो रब ने मूसा को दी थीं।

हारून का चोग़ा

22 फिर कारीगरों ने चोग़ा बुना। वह पूरी तरह नीले
धागे से बनाया गया। चोग़े को बालापोश से पहले
पहनना था। 23 उस के गिरीबान को बुने हुए कालर
से मज़बूत किया गया ताकि वह न फटे। 24 उन्हों ने
नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे से अनार
बना कर उन्हें चोग़े के दामन में लगा दिया। 25 उन
के दरमियान ख़ालिस सोने की घंटियाँ लगाई गईं।
26 दामन में अनार और घंटियाँ बारी बारी लगाई गईं।
लाज़िम था कि हारून ख़िदमत करने के लिए हमेशा
यह चोग़ा पहने। रब ने मूसा को यही हुक्म दिया था।

ख़िदमत के लिए दीगर लिबास

27 कारीगरों ने हारून और उस के बेटों के लिए
बारीक कतान के ज़ेरजामे बनाए। यह बुनने वाले
का काम था। 28 साथ साथ उन्हों ने बारीक कतान
की पगड़ियाँ और बारीक कतान के पाजामे बनाए।
29 कमरबन्द को बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी
और क़िर्मिज़ी रंग के धागे से बनाया गया। कढ़ाई
करने वालों ने इस पर काम किया। सब कुछ उन
हिदायात के मुताबिक़ बनाया गया जो रब ने मूसा
को दी थीं।

30 उन्हों ने मुक़द्दस ताज यानी ख़ालिस सोने की
तख़्ती बनाई और उस पर यह अल्फ़ाज़ कन्दा किए,
'रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस।' 31 फिर उन्हों ने
इसे नीली डोरी से पगड़ी के सामने वाले हिस्से से
लगा दिया। यह भी उन हिदायात के मुताबिक़ बनाया
गया जो रब ने मूसा को दी थीं।

सारा सामान मूसा को दिखाया जाता है

32 आख़िरकार मक़्दिस का काम मुकम्मल हुआ।
इस्राईलियों ने सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़
बनाया था जो रब ने मूसा को दी थीं। 33 वह मक़्दिस
की तमाम चीज़ें मूसा के पास ले आए यानी मुक़द्दस
ख़ैमा और उस का सारा सामान, उस की हुकें, दीवारों
के तख़्ते, शहतीर, सतून और पाए, 34 ख़ैमे पर मेंढों
की सुर्ख़ रंगी हुई खालों का ग़िलाफ़ और तख़स की
खालों का ग़िलाफ़, मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े
का पर्दा, 35 अह्द का सन्दूक़ जिस में शरीअत की
तख़्तियाँ रखनी थीं, उसे उठाने की लकड़ियाँ और
उस का ढकना, 36 मख़्सूस रोटियों की मेज़, उस
का सारा सामान और रोटियाँ, 37 ख़ालिस सोने का
शमादान और उस पर रखने के चराग़ उस के सारे
सामान समेत, शमादान के लिए तेल, 38 बख़ूर जलाने
की सोने की क़ुर्बानगाह, मसह का तेल, ख़ुश्बूदार
बख़ूर, मुक़द्दस ख़ैमे के दरवाज़े का पर्दा, 39 जानवरों
को चढ़ाने की पीतल की क़ुर्बानगाह, उस का पीतल
का जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और बाक़ी
सारा सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा जिस
पर हौज़ रखना था, 40 चारदीवारी के पर्दे उन के
खम्बों और पाइयों समेत, सहन के दरवाज़े का पर्दा,
चारदीवारी के रस्से और मेख़ें, मुलाक़ात के ख़ैमे
में ख़िदमत करने का बाक़ी सारा सामान 41 और
मक़्दिस में ख़िदमत करने के वह मुक़द्दस लिबास
जो हारून और उस के बेटों को पहनने थे।

42 सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बनाया गया
था जो रब ने मूसा को दी थीं। 43 मूसा ने तमाम चीज़ों
का मुआइना किया और मालूम किया कि उन्हों ने
सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक़ बनाया था।
तब उस ने उन्हें बरकत दी।

मक़्दिस को खड़ा करने की हिदायात

40 1 फिर रब ने मूसा से कहा, 2 "पहले महीने
की पहली तारीख़ को मुलाक़ात का ख़ैमा
खड़ा करना। 3 अह्द का सन्दूक़ जिस में शरीअत
की तख़्तियाँ हैं मुक़द्दसतरीन कमरे में रख कर उस
के दरवाज़े का पर्दा लगाना। 4 इस के बाद मख़्सूस
रोटियों की मेज़ मुक़द्दस कमरे में ला कर उस पर
तमाम ज़रूरी सामान रखना। उस कमरे में शमादान भी
ले आना और उस पर उस के चराग़ रखना। 5 बख़ूर
की सोने की क़ुर्बानगाह उस पर्दे के सामने रखना
जिस के पीछे अह्द का सन्दूक़ है। फिर ख़ैमे में
दाख़िल होने के दरवाज़े पर पर्दा लगाना। 6 जानवरों
को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह सहन में ख़ैमे के दरवाज़े
के सामने रखी जाए। 7 ख़ैमे और इस क़ुर्बानगाह के
दरमियान धोने का हौज़ रख कर उस में पानी डालना।
8 सहन की चारदीवारी खड़ी करके उस के दरवाज़े
का पर्दा लगाना।

9 फिर मसह का तेल ले कर उसे ख़ैमे और उस
के सारे सामान पर छिड़क देना। यूँ तू उसे मेरे
लिए मख़्सूस करेगा और वह मुक़द्दस होगा। 10 फिर
जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह और उस के
सामान पर मसह का तेल छिड़कना। यूँ तू उसे मेरे
लिए मख़्सूस करेगा और वह निहायत मुक़द्दस होगा।
11 इसी तरह हौज़ और उस ढाँचे को भी मख़्सूस
करना जिस पर हौज़ रखा गया है।

12 हारून और उस के बेटों को मुलाक़ात के ख़ैमे
के दरवाज़े पर ला कर ग़ुसल कराना। 13 फिर हारून
को मुक़द्दस लिबास पहनाना और उसे मसह करके
मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करना ताकि इमाम के
तौर पर मेरी ख़िदमत करे। 14 उस के बेटों को ला कर
उन्हें ज़ेरजामे पहना देना। 15 उन्हें उन के वालिद की
तरह मसह करना ताकि वह भी इमामों के तौर पर
मेरी ख़िदमत करें। जब उन्हें मसह किया जाएगा तो

वह और बाद में उन की औलाद हमेशा तक मक़्दिस
में इस ख़िदमत के लिए मख़्सूस होंगे।”

मक़्दिस को खड़ा किया जाता है

16 मूसा ने सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक़
किया। 17 पहले महीने की पहली तारीख़ को मुक़द्दस
ख़ैमा खड़ा किया गया। उन्हें मिस्र से निकले पूरा एक
साल हो गया था। 18 मूसा ने दीवार के तख़्तों को
उन के पाइयों पर खड़ा करके उन के साथ शहतीर
लगाए। इसी तरह उस ने सतूनों को भी खड़ा किया।
19 उस ने रब की हिदायात के ऐन मुताबिक़ दीवारों
पर कपड़े का ख़ैमा लगाया और उस पर दूसरे ग़िलाफ़
रखे।

20 उस ने शरीअत की दोनों तख़्तियाँ ले कर अह्द
के सन्दूक़ में रख दीं, उठाने के लिए लकड़ियाँ
सन्दूक़ के कड़ों में डाल दीं और कफ़्फ़ारे का ढकना
उस पर लगा दिया। 21 फिर उस ने रब की हिदायात के
ऐन मुताबिक़ सन्दूक़ को मुक़द्दसतरीन कमरे में रख
कर उस के दरवाज़े का पर्दा लगा दिया। यूँ अह्द के
सन्दूक़ पर पर्दा पड़ा रहा। 22 मूसा ने मख़्सूस रोटियों
की मेज़ मुक़द्दस कमरे के शिमाली हिस्से में उस पर्दे
के सामने रख दी जिस के पीछे अह्द का सन्दूक़ था।
23 उस ने रब की हिदायत के ऐन मुताबिक़ रब के
लिए मख़्सूस की हुई रोटियाँ मेज़ पर रखीं। 24 उसी
कमरे के जुनूबी हिस्से में उस ने शमादान को मेज़
के मुक़ाबिल रख दिया। 25 उस पर उस ने रब की
हिदायत के ऐन मुताबिक़ रब के सामने चराग़ रख
दिए। 26 उस ने बख़ूर की सोने की क़ुर्बानगाह भी उसी
कमरे में रखी, उस पर्दे के बिलकुल सामने जिस के
पीछे अह्द का सन्दूक़ था। 27 उस ने उस पर रब की
हिदायत के ऐन मुताबिक़ ख़ुश्बूदार बख़ूर जलाया।
28 फिर उस ने ख़ैमे का दरवाज़ा लगा दिया।
29 बाहर जा कर उस ने जानवरों को चढ़ाने की
क़ुर्बानगाह ख़ैमे के दरवाज़े के सामने रख दी। उस
पर उस ने रब की हिदायत के ऐन मुताबिक़ भस्म
होने वाली क़ुर्बानियाँ और ग़ल्ला की नज़्रें चढ़ाईं।

30 उस ने धोने के हौज़ को ख़ैमे और उस क़ुर्बानगाह
के दरमियान रख कर उस में पानी डाल दिया।
31 मूसा, हारून और उस के बेटे उसे अपने हाथ-
पाँओ धोने के लिए इस्तेमाल करते थे। 32 जब भी
वह मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल होते या जानवरों
को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह के पास आते तो रब की
हिदायत के ऐन मुताबिक़ पहले ग़ुसल करते।

33 आख़िर में मूसा ने ख़ैमा, क़ुर्बानगाह और
चारदीवारी खड़ी करके सहन के दरवाज़े का पर्दा
लगा दिया। यूँ मूसा ने मक़्दिस की तामीर मुकम्मल
की।

ख़ैमे में रब का जलाल

34 फिर मुलाक़ात के ख़ैमे पर बादल छा गया और
मक़्दिस रब के जलाल से भर गया। 35 मूसा ख़ैमे में
दाख़िल न हो सका, क्यूँकि बादल उस पर ठहरा हुआ
था और मक़्दिस रब के जलाल से भर गया था।

36 तमाम सफ़र के दौरान जब भी मक़्दिस के ऊपर
से बादल उठता तो इस्राईली सफ़र के लिए तय्यार
हो जाते। 37 अगर वह न उठता तो वह उस वक़्त तक
ठहरे रहते जब तक बादल उठ न जाता। 38 दिन के
वक़्त बादल मक़्दिस के ऊपर ठहरा रहता और रात
के वक़्त वह तमाम इस्राईलियों को आग की सूरत में
नज़र आता था। यह सिलसिला पूरे सफ़र के दौरान
जारी रहा।

अहबार

भस्म होने वाली क़ुर्बानी

1 1 रब ने मुलाक़ात के ख़ैमे में से मूसा को बुला
कर कहा 2 कि इस्राईलियों को इत्तिला दे,
"अगर तुम में से कोई रब को क़ुर्बानी पेश करना
चाहे तो वह अपने गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से
जानवर चुन ले।
3 अगर वह अपने गाय-बैलों में से भस्म होने वाली
क़ुर्बानी चढ़ाना चाहे तो वह बेऐब बैल चुन कर उसे
मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर पेश करे ताकि रब
उसे क़बूल करे। 4 क़ुर्बानी पेश करने वाला अपना
हाथ जानवर के सर पर रखे तो यह क़ुर्बानी मक़्बूल
हो कर उस का कफ़्फ़ारा देगी। 5 क़ुर्बानी पेश करने
वाला बैल को वहाँ रब के सामने ज़बह करे। फिर
हारून के बेटे जो इमाम हैं उस का ख़ून रब को
पेश करके उसे दरवाज़े पर की क़ुर्बानगाह के चार
पहलूओं पर छिड़कें। 6 इस के बाद क़ुर्बानी पेश
करने वाला खाल उतार कर जानवर के टुकड़े टुकड़े
करे। 7 इमाम क़ुर्बानगाह पर आग लगा कर उस पर
तर्तीब से लकड़ियाँ चुनें। 8 उस पर वह जानवर के
टुकड़े सर और चर्बी समेत रखें। 9 लाज़िम है कि
क़ुर्बानी पेश करने वाला पहले जानवर की अंतड़ियाँ
और पिंडलियाँ धोए, फिर इमाम पूरे जानवर को
क़ुर्बानगाह पर जला दे। इस जलने वाली क़ुर्बानी की
ख़ुश्बू रब को पसन्द है।
10 अगर भस्म होने वाली क़ुर्बानी भेड़-बकरियों में
से चुनी जाए तो वह बेऐब नर हो। 11 पेश करने वाला
उसे रब के सामने क़ुर्बानगाह की शिमाली सिम्त में
ज़बह करे। फिर हारून के बेटे जो इमाम हैं उस
का ख़ून क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कें।
12 इस के बाद पेश करने वाला जानवर के टुकड़े
टुकड़े करे और इमाम यह टुकड़े सर और चर्बी समेत
क़ुर्बानगाह की जलती हुई लकड़ियों पर तर्तीब से
रखे। 13 लाज़िम है कि क़ुर्बानी पेश करने वाला पहले
जानवर की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ धोए, फिर
इमाम पूरे जानवर को रब को पेश करके क़ुर्बानगाह
पर जला दे। इस जलने वाली क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब
को पसन्द है।
14 अगर भस्म होने वाली क़ुर्बानी परिन्दा हो तो वह
क़ुम्री या जवान कबूतर हो। 15 इमाम उसे क़ुर्बानगाह
के पास ले आए और उस का सर मरोड़ कर
क़ुर्बानगाह पर जला दे। वह उस का ख़ून यूँ निकलने
दे कि वह क़ुर्बानगाह की एक तरफ़ से नीचे टपके।
16 वह उस का पोटा और जो उस में है दूर करके
क़ुर्बानगाह की मशरिक़ी सिम्त में फैंक दे, वहाँ जहाँ
राख फैंकी जाती है। 17 उसे पेश करते वक़्त इमाम
उस के पर पकड़ कर परिन्दे को फाड़ डाले, लेकिन
यूँ कि वह बिलकुल टुकड़े टुकड़े न हो जाए। फिर
इमाम उसे क़ुर्बानगाह पर जलती हुई लकड़ियों पर
जला दे। इस जलने वाली क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब को
पसन्द है।

ग़ल्ला की नज़र

2 1 अगर कोई रब को ग़ल्ला की नज़र पेश करना
चाहे तो वह इस के लिए बेहतरीन मैदा इस्तेमाल
करे। उस पर वह ज़ैतून का तेल उंडेले और लुबान
रख कर 2 उसे हारून के बेटों के पास ले आए जो
इमाम हैं। इमाम तेल से मिलाया गया मुट्ठी भर मैदा
और तमाम लुबान ले कर क़ुर्बानगाह पर जला दे।
यह यादगार का हिस्सा है, और उस की ख़ुश्बू रब
को पसन्द है। 3 बाक़ी मैदा और तेल हारून और
उस के बेटों का हिस्सा है। वह रब की जलने वाली
क़ुर्बानियों में से एक निहायत मुक़द्दस हिस्सा है।

4 अगर यह क़ुर्बानी तनूर में पकाई हुई रोटी हो तो
उस में ख़मीर न हो। इस की दो क़िस्में हो सकती
हैं, रोटियाँ जो बेहतरीन मैदे और तेल से बनी हुई हों
और रोटियाँ जिन पर तेल लगाया गया हो।
5 अगर यह क़ुर्बानी तवे पर पकाई हुई रोटी हो तो
वह बेहतरीन मैदे और तेल की हो। उस में ख़मीर न
हो। 6 चूँकि वह ग़ल्ला की नज़र है इस लिए रोटी को
टुकड़े टुकड़े करना और उस पर तेल डालना।
7 अगर यह क़ुर्बानी कड़ाही में पकाई हुई रोटी हो
तो वह बेहतरीन मैदे और तेल की हो।
8 अगर तू इन चीज़ों की बनी हुई ग़ल्ला की नज़र रब
के हुज़ूर लाना चाहे तो उसे इमाम को पेश करना।
वही उसे क़ुर्बानगाह के पास ले आए। 9 फिर इमाम
यादगार का हिस्सा अलग करके उसे क़ुर्बानगाह पर
जला दे। ऐसी क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब को पसन्द है।
10 क़ुर्बानी का बाक़ी हिस्सा हारून और उस के बेटों
के लिए है। वह रब की जलने वाली क़ुर्बानियों में से
एक निहायत मुक़द्दस हिस्सा है।
11 ग़ल्ला की जितनी नज़रें तुम रब को पेश करते हो
उन में ख़मीर न हो, क्यूँकि लाज़िम है कि तुम रब
को जलने वाली क़ुर्बानी पेश करते वक़्त न ख़मीर,
न शहद जलाओ। 12 यह चीज़ें फ़सल के पहले फलों
के साथ रब को पेश की जा सकती हैं, लेकिन उन्हें
क़ुर्बानगाह पर न जलाया जाए, क्यूँकि वहाँ रब को
उन की ख़ुश्बू पसन्द नहीं है। 13 ग़ल्ला की हर नज़र
में नमक हो, क्यूँकि नमक उस अह्द की नुमाइन्दगी
करता है जो तेरे ख़ुदा ने तेरे साथ बांधा है। तुझे हर
क़ुर्बानी में नमक डालना है।
14 अगर तू ग़ल्ला की नज़र के लिए फ़सल के पहले
फल पेश करना चाहे तो कुचली हुई कच्ची बालियाँ
भून कर पेश करना। 15 चूँकि वह ग़ल्ला की नज़र है
इस लिए उस पर तेल उंडेलना और लुबान रखना।
16 कुचले हुए दानों और तेल का जो हिस्सा रब का
है यानी यादगार का हिस्सा उसे इमाम तमाम लुबान
के साथ जला दे। यह नज़र रब के लिए जलने वाली
क़ुर्बानी है।

सलामती की क़ुर्बानी

3 1 अगर कोई रब को सलामती की क़ुर्बानी पेश
करने के लिए गाय या बैल चढ़ाना चाहे तो वह
जानवर बेऐब हो। 2 वह अपना हाथ जानवर के सर
पर रख कर उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर
ज़बह करे। हारून के बेटे जो इमाम हैं उस का ख़ून
क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कें। 3–4 पेश
करने वाला अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, गुर्दे उस
चर्बी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है
और जोड़कलेजी जलने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब
को पेश करे। इन चीज़ों को गुर्दों के साथ ही अलग
करना है। 5 फिर हारून के बेटे यह सब कुछ भस्म
होने वाली क़ुर्बानी के साथ क़ुर्बानगाह की लकड़ियों
पर जला दें। यह जलने वाली क़ुर्बानी है, और इस की
ख़ुश्बू रब को पसन्द है। 6 अगर सलामती की क़ुर्बानी
के लिए भेड़-बकरियों में से जानवर चुना जाए तो वह
बेऐब नर या मादा हो।
7 अगर वह भेड़ का बच्चा चढ़ाना चाहे तो वह उसे
रब के सामने ले आए। 8 वह अपना हाथ उस के
सर पर रख कर उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने
ज़बह करे। हारून के बेटे उस का ख़ून क़ुर्बानगाह
के चार पहलूओं पर छिड़कें। 9–10 पेश करने वाला
चर्बी, पूरी दुम, अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, गुर्दे
उस चर्बी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब
होती है और जोड़कलेजी जलने वाली क़ुर्बानी के
तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुर्दों के साथ
ही अलग करना है। 11 इमाम यह सब कुछ रब को
पेश करके क़ुर्बानगाह पर जला दे। यह ख़ुराक जलने
वाली क़ुर्बानी है।
12 अगर सलामती की क़ुर्बानी बकरी की हो 13 तो
पेश करने वाला उस पर हाथ रख कर उसे मुलाक़ात
के ख़ैमे के सामने ज़बह करे। हारून के बेटे जानवर
का ख़ून क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कें।
14–15 पेश करने वाला अंतड़ियों पर की सारी चर्बी,
गुर्दे उस चर्बी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब

होती है और जोड़कलेजी जलने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुर्दों के साथ ही अलग करना है। 16 इमाम यह सब कुछ रब को पेश करके क़ुर्बानगाह पर जला दे। यह ख़ुराक जलने वाली क़ुर्बानी है, और इस की ख़ुश्बू रब को पसन्द है।

सारी चर्बी रब की है। 17 तुम्हारे लिए ख़ून या चर्बी खाना मना है। यह न सिर्फ़ तुम्हारे लिए मना है बल्कि तुम्हारी औलाद के लिए भी, न सिर्फ़ यहाँ बल्कि हर जगह जहाँ तुम रहते हो।”

गुनाह की क़ुर्बानी

4 1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इस्राईलियों को बताना कि जो भी ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म को तोड़े वह यह करे :

इमाम के लिए गुनाह की क़ुर्बानी

3 अगर इमाम-ए-आज़म गुनाह करे और नतीजे में पूरी क़ौम क़ुसूरवार ठहरे तो फिर वह रब को एक बेऐब जवान बैल ले कर गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। 4 वह जवान बैल को मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े के पास ले आए और अपना हाथ उस के सर पर रख कर उसे रब के सामने ज़बह करे। 5 फिर वह जानवर के ख़ून में से कुछ ले कर ख़ैमे में जाए। 6 वहाँ वह अपनी उंगली उस में डाल कर उसे सात बार रब के सामने यानी मुक़द्दसतरीन कमरे के पर्दे पर छिड़के। 7 फिर वह ख़ैमे के अन्दर की उस क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर ख़ून लगाए जिस पर बख़ूर जलाया जाता है। बाक़ी ख़ून वह बाहर ख़ैमे के दरवाज़े पर की उस क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेले जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 8 जवान बैल की सारी चर्बी, अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, 9 गुर्दे उस चर्बी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी को गुर्दों के साथ ही अलग करना है। 10 यह बिलकुल उसी तरह किया जाए जिस तरह उस बैल के साथ किया गया जो सलामती की क़ुर्बानी के लिए पेश किया जाता है। इमाम यह सब कुछ उस क़ुर्बानगाह पर जला दे जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 11 लेकिन वह उस की खाल, उस का सारा गोश्त, सर और पिंडलियाँ, अंतड़ियाँ और उन का गोबर 12 ख़ैमागाह के बाहर ले जाए। यह चीज़ें उस पाक जगह पर जहाँ क़ुर्बानियों की राख फैंकी जाती है लकड़ियों पर रख कर जला देनी हैं।

क़ौम के लिए गुनाह की क़ुर्बानी

13 अगर इस्राईल की पूरी जमाअत ने ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ किया है और जमाअत को मालूम नहीं था तो भी वह क़ुसूरवार है। 14 जब लोगों को पता लगे कि हम ने गुनाह किया है तो जमाअत मुलाक़ात के ख़ैमे के पास एक जवान बैल ले आए और उसे गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। 15 जमाअत के बुज़ुर्ग रब के सामने अपने हाथ उस के सर पर रखें, और वह वहीं ज़बह किया जाए। 16 फिर इमाम-ए-आज़म जानवर के ख़ून में से कुछ ले कर मुलाक़ात के ख़ैमे में जाए। 17 वहाँ वह अपनी उंगली उस में डाल कर उसे सात बार रब के सामने यानी मुक़द्दसतरीन कमरे के पर्दे पर छिड़के। 18 फिर वह ख़ैमे के अन्दर की उस क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर ख़ून लगाए जिस पर बख़ूर जलाया जाता है। बाक़ी ख़ून वह बाहर ख़ैमे के दरवाज़े की उस क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेले जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 19 इस के बाद वह उस की तमाम चर्बी निकाल कर क़ुर्बानगाह पर जला दे। 20 उस बैल के साथ वह सब कुछ करे जो उसे अपने ज़ाती ग़ैरइरादी गुनाह के लिए करना होता है। यूँ वह लोगों का कफ़्फ़ारा देगा और उन्हें मुआफ़ी मिल जाएगी। 21 आख़िर में वह बैल को ख़ैमागाह के बाहर ले जा कर उस तरह जला दे जिस तरह उसे अपने लिए बैल को जला देना होता है। यह जमाअत का गुनाह दूर करने की क़ुर्बानी है।

क़ौम के राहनुमा के लिए गुनाह की क़ुर्बानी

22 अगर कोई सरदार ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके
रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे और यूँ क़ुसूरवार
ठहरे तो 23 जब भी उसे पता लगे कि मुझ से गुनाह
हुआ है तो वह क़ुर्बानी के लिए एक बेऐब बकरा ले
आए। 24 वह अपना हाथ बकरे के सर पर रख कर
उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ
ज़बह की जाती हैं। यह गुनाह की क़ुर्बानी है। 25 इमाम
अपनी उंगली ख़ून में डाल कर उसे उस क़ुर्बानगाह के
चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते
हैं। बाक़ी ख़ून वह क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेले।
26 फिर वह उस की सारी चर्बी क़ुर्बानगाह पर उस
तरह जला दे जिस तरह वह सलामती की क़ुर्बानियों
की चर्बी जला देता है। यूँ इमाम उस आदमी का
कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी हासिल हो जाएगी।

आम लोगों के लिए गुनाह की क़ुर्बानी

27 अगर कोई आम शख़्स ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह
करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे और यूँ
क़ुसूरवार ठहरे तो 28 जब भी उसे पता लगे कि मुझ
से गुनाह हुआ है तो वह क़ुर्बानी के लिए एक बेऐब
बकरी ले आए। 29 वह अपना हाथ बकरी के सर पर
रख कर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होने वाली
क़ुर्बानियाँ ज़बह की जाती हैं। 30 इमाम अपनी उंगली
ख़ून में डाल कर उसे उस क़ुर्बानगाह के चारों सींगों
पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी
ख़ून वह क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेले। 31 फिर वह
उस की सारी चर्बी उस तरह निकाले जिस तरह वह
सलामती की क़ुर्बानियों की चर्बी निकालता है। इस
के बाद वह उसे क़ुर्बानगाह पर जला दे। ऐसी क़ुर्बानी
की ख़ुश्बू रब को पसन्द है। यूँ इमाम उस आदमी का
कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी हासिल हो जाएगी।
32 अगर वह गुनाह की क़ुर्बानी के लिए भेड़ का
बच्चा लाना चाहे तो वह बेऐब मादा हो। 33 वह अपना
हाथ उस के सर पर रख कर उसे वहाँ ज़बह करे
जहाँ भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ ज़बह की जाती हैं।
34 इमाम अपनी उंगली ख़ून में डाल कर उसे उस
क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर
जलाए जाते हैं। बाक़ी ख़ून वह क़ुर्बानगाह के पाए
पर उंडेले। 35 फिर वह उस की तमाम चर्बी उस तरह
निकाले जिस तरह सलामती की क़ुर्बानी के लिए
ज़बह किए गए जवान मेंढे की चर्बी निकाली जाती
है। इस के बाद इमाम चर्बी को क़ुर्बानगाह पर उन
क़ुर्बानियों समेत जला दे जो रब के लिए जलाई जाती
हैं। यूँ इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे
मुआफ़ी मिल जाएगी।

गुनाह की क़ुर्बानियों के बारे में ख़ास हिदायात

5 1 हो सकता है कि किसी ने यूँ गुनाह किया कि
उस ने कोई जुर्म देखा या वह उस के बारे में कुछ
जानता है। तो भी जब गवाहों को क़सम के लिए
बुलाया जाता है तो वह गवाही देने के लिए सामने
नहीं आता। इस सूरत में वह क़ुसूरवार ठहरता है।
2 हो सकता है कि किसी ने ग़ैरइरादी तौर पर किसी
नापाक चीज़ को छू लिया है, ख़्वाह वह किसी जंगली
जानवर, मवेशी या रेंगने वाले जानवर की लाश क्यूँ न
हो। इस सूरत में वह नापाक है और क़ुसूरवार ठहरता
है।
3 हो सकता है कि किसी ने ग़ैरइरादी तौर पर किसी
शख़्स की नापाकी को छू लिया है यानी उस की कोई
ऐसी चीज़ जिस से वह नापाक हो गया है। जब उसे
मालूम हो जाता है तो वह क़ुसूरवार ठहरता है।
4 हो सकता है कि किसी ने बेपर्वाई से कुछ करने
की क़सम खाई है, चाहे वह अच्छा काम था या
ग़लत। जब वह जान लेता है कि उस ने क्या किया
है तो वह क़ुसूरवार ठहरता है।
5 जो इस तरह के किसी गुनाह की बिना पर
क़ुसूरवार हो, लाज़िम है कि वह अपना गुनाह तस्लीम
करे। 6 फिर वह गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर एक
भेड़ या बकरी पेश करे। यूँ इमाम उस का कफ़्फ़ारा
देगा।

7 अगर क़ुसूरवार शख़्स ग़ुर्बत के बाइस भेड़ या
बकरी न दे सके तो वह रब को दो क़ुम्रियाँ या दो
जवान कबूतर पेश करे, एक गुनाह की क़ुर्बानी के
लिए और एक भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए।
8 वह उन्हें इमाम के पास ले आए। इमाम पहले गुनाह
की क़ुर्बानी के लिए परिन्दा पेश करे। वह उस की
गर्दन मरोड़ डाले लेकिन ऐसे कि सर जुदा न हो जाए।
9 फिर वह उस के ख़ून में से कुछ क़ुर्बानगाह के एक
पहलू पर छिड़के। बाक़ी ख़ून वह यूँ निकलने दे कि
वह क़ुर्बानगाह के पाए पर टपके। यह गुनाह की
क़ुर्बानी है। 10 फिर इमाम दूसरे परिन्दे को क़वाइद
के मुताबिक़ भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश
करे। यूँ इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और
उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

11 अगर वह शख़्स ग़ुर्बत के बाइस दो क़ुम्रियाँ या
दो जवान कबूतर भी न दे सके तो फिर वह गुनाह की
क़ुर्बानी के लिए डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश
करे। वह उस पर न तेल उंडेले, न लुबान रखे, क्यूँकि
यह ग़ल्ला की नज़र नहीं बल्कि गुनाह की क़ुर्बानी है।
12 वह उसे इमाम के पास ले आए जो यादगार का
हिस्सा यानी मुट्ठी भर उन क़ुर्बानियों के साथ जला दे
जो रब के लिए जलाई जाती हैं। यह गुनाह की क़ुर्बानी
है। 13 यूँ इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और
उसे मुआफ़ी मिल जाएगी। ग़ल्ला की नज़र की तरह
बाक़ी मैदा इमाम का हिस्सा है।"

क़ुसूर की क़ुर्बानी

14 रब ने मूसा से कहा, 15 "अगर किसी ने बेईमानी
करके ग़ैरइरादी तौर पर रब की मख़्सूस और मुक़द्दस
चीज़ों के सिलसिले में गुनाह किया हो, ऐसा शख़्स
क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर रब को बेऐब और
क़ीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा या बकरा पेश
करे। उस की क़ीमत मक़्दिस की शरह के मुताबिक़
मुक़र्रर की जाए। 16 जितना नुक़्सान मक़्दिस को हुआ
है उतना ही वह दे। इस के इलावा वह मज़ीद 20
फ़ीसद अदा करे। वह उसे इमाम को दे दे और इमाम
जानवर को क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करके
उस का कफ़्फ़ारा दे। यूँ उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

17 अगर कोई ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब
के किसी हुक्म से तजावुज़ करे तो वह क़ुसूरवार है,
और वह उस का ज़िम्मादार ठहरेगा। 18 वह क़ुसूर
की क़ुर्बानी के तौर पर इमाम के पास एक बेऐब
और क़ीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा ले आए।
उस की क़ीमत मक़्दिस की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर
की जाए। फिर इमाम यह क़ुर्बानी उस गुनाह के लिए
चढ़ाए जो क़ुसूरवार शख़्स ने ग़ैरइरादी तौर पर किया
है। यूँ उसे मुआफ़ी मिल जाएगी। 19 यह क़ुसूर की
क़ुर्बानी है, क्यूँकि वह रब का गुनाह करके क़ुसूरवार
ठहरा है।"

6 1 रब ने मूसा से कहा, 2 "हो सकता है किसी
ने गुनाह करके बेईमानी की है, मसलन उस ने
अपने पड़ोसी की कोई चीज़ वापस नहीं की जो उस
के सपुर्द की गई थी या जो उसे गिरवी के तौर पर
मिली थी, या उस ने उस की कोई चीज़ चोरी की,
या उस ने किसी से कोई चीज़ छीन ली, 3 या उस ने
किसी की गुमशुदा चीज़ के बारे में झूट बोला जब
उसे मिल गई, या उस ने क़सम खा कर झूट बोला है,
या इस तरह का कोई और गुनाह किया है। 4 अगर
वह इस तरह का गुनाह करके क़ुसूरवार ठहरे तो
लाज़िम है कि वह वही चीज़ वापस करे जो उस ने
चोरी की या छीन ली या जो उस के सपुर्द की गई
या जो गुमशुदा हो कर उस के पास आ गई है 5 या
जिस के बारे में उस ने क़सम खा कर झूट बोला है।
वह उस का उतना ही वापस करके 20 फ़ीसद ज़्यादा
दे। और वह यह सब कुछ उस दिन वापस करे जब
वह अपनी क़ुसूर की क़ुर्बानी पेश करता है। 6 क़ुसूर
की क़ुर्बानी के तौर पर वह एक बेऐब और क़ीमत के
लिहाज़ से मुनासिब मेंढा इमाम के पास ले आए और
रब को पेश करे। उस की क़ीमत मक़्दिस की शरह
के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। 7 फिर इमाम रब के
सामने उस का कफ़्फ़ारा देगा तो उसे मुआफ़ी मिल
जाएगी।"

भस्म होने वाली क़ुर्बानी

8 रब ने मूसा से कहा, 9 “हारून और उस के बेटों
को भस्म होने वाली क़ुर्बानियों के बारे में ज़ैल की
हिदायात देना : भस्म होने वाली क़ुर्बानी पूरी रात
सुब्ह तक क़ुर्बानगाह की उस जगह पर रहे जहाँ आग
जलती है। आग को बुझने न देना। 10 सुब्ह को इमाम
कतान का लिबास और कतान का पाजामा पहन कर
क़ुर्बानी से बची हुई राख क़ुर्बानगाह के पास ज़मीन
पर डाले। 11 फिर वह अपने कपड़े बदल कर राख
को ख़ैमागाह के बाहर किसी पाक जगह पर छोड़
आए। 12 क़ुर्बानगाह पर आग जलती रहे। वह कभी
भी न बुझे। हर सुब्ह इमाम लकड़ियाँ चुन कर उस
पर भस्म होने वाली क़ुर्बानी तर्तीब से रखे और उस
पर सलामती की क़ुर्बानी की चर्बी जला दे। 13 आग
हमेशा जलती रहे। वह कभी न बुझने पाए।

ग़ल्ला की नज़र

14 ग़ल्ला की नज़र के बारे में हिदायात यह हैं :
हारून के बेटे उसे क़ुर्बानगाह के सामने रब को पेश
करें। 15 फिर इमाम यादगार का हिस्सा यानी तेल से
मिलाया गया मुट्ठी भर बेहतरीन मैदा और क़ुर्बानी का
तमाम लुबान ले कर क़ुर्बानगाह पर जला दे। इस
की ख़ुश्बू रब को पसन्द है। 16 हारून और उस के
बेटे क़ुर्बानी का बाक़ी हिस्सा खा लें। लेकिन वह
उसे मुक़द्दस जगह पर यानी मुलाक़ात के ख़ैमे की
चारदीवारी के अन्दर खाएँ, और उस में ख़मीर न
हो। 17 उसे पकाने के लिए उस में ख़मीर न डाला
जाए। मैं ने जलने वाली क़ुर्बानियों में से यह हिस्सा
उन के लिए मुक़र्रर किया है। यह गुनाह की क़ुर्बानी
और क़ुसूर की क़ुर्बानी की तरह निहायत मुक़द्दस है।
18 हारून की औलाद के तमाम मर्द उसे खाएँ। यह
उसूल अबद तक क़ाइम रहे। जो भी उसे छुएगा वह
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाएगा।”

19 रब ने मूसा से कहा, 20 “जब हारून और उस
के बेटों को इमाम की ज़िम्मादारी उठाने के लिए
मख़्सूस करके तेल से मसह किया जाएगा तो वह डेढ़
किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश करें। उस का आधा
हिस्सा सुब्ह को और आधा हिस्सा शाम के वक़्त
पेश किया जाए। वह ग़ल्ला की यह नज़र रोज़ाना पेश
करें। 21 उसे तेल के साथ मिला कर तवे पर पकाना
है। फिर उसे टुकड़े टुकड़े करके ग़ल्ला की नज़र के
तौर पर पेश करना। उस की ख़ुश्बू रब को पसन्द है।
22 यह क़ुर्बानी हमेशा हारून की नस्ल का वह आदमी
पेश करे जिसे मसह करके इमाम-ए-आज़म का उह्दा
दिया गया है, और वह उसे पूरे तौर पर रब के लिए
जला दे। 23 इमाम की ग़ल्ला की नज़र हमेशा पूरे तौर
पर जलाना। उसे न खाना।”

गुनाह की क़ुर्बानी

24 रब ने मूसा से कहा, 25 “हारून और उस के बेटों
को गुनाह की क़ुर्बानी के बारे में ज़ैल की हिदायात
देना : गुनाह की क़ुर्बानी को रब के सामने वहीं ज़बह
करना है जहाँ भस्म होने वाली क़ुर्बानी ज़बह की
जाती है। वह निहायत मुक़द्दस है। 26 उसे पेश करने
वाला इमाम उसे मुक़द्दस जगह पर यानी मुलाक़ात
के ख़ैमे की चारदीवारी के अन्दर खाए। 27 जो भी
इस क़ुर्बानी के गोश्त को छू लेता है वह मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस हो जाता है। अगर क़ुर्बानी के ख़ून के छींटे
किसी लिबास पर पड़ जाएँ तो उसे मुक़द्दस जगह पर
धोना है। 28 अगर गोश्त को हंडिया में पकाया गया
हो तो उस बर्तन को बाद में तोड़ देना है। अगर उस
के लिए पीतल का बर्तन इस्तेमाल किया गया हो तो
उसे ख़ूब माँझ कर पानी से साफ़ करना। 29 इमामों
के ख़ानदानों में से तमाम मर्द उसे खा सकते हैं। यह
खाना निहायत मुक़द्दस है। 30 लेकिन गुनाह की हर
वह क़ुर्बानी खाई न जाए जिस का ख़ून मुलाक़ात के
ख़ैमे में इस लिए लाया गया है कि मक़्दिस में किसी
का कफ़्फ़ारा दिया जाए। उसे जलाना है।

क़ुसूर की क़ुर्बानी

7 1 क़ुसूर की क़ुर्बानी जो निहायत मुक़द्दस है उस
के बारे में हिदायात यह हैं :
2 क़ुसूर की क़ुर्बानी वहीं ज़बह करनी है जहाँ भस्म
होने वाली क़ुर्बानी ज़बह की जाती है। उस का ख़ून
क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़का जाए। 3 उस
की तमाम चर्बी निकाल कर क़ुर्बानगाह पर चढ़ानी है
यानी उस की दुम, अंतड़ियों पर की चर्बी, 4 गुर्दे उस
चर्बी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती
है और जोड़कलेजी। इन चीज़ों को गुर्दों के साथ
ही अलग करना है। 5 इमाम यह सब कुछ रब को
क़ुर्बानगाह पर जलने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश
करे। यह क़ुसूर की क़ुर्बानी है। 6 इमामों के ख़ानदानों
में से तमाम मर्द उसे खा सकते हैं। लेकिन उसे
मुक़द्दस जगह पर खाया जाए। यह निहायत मुक़द्दस
है।
7 गुनाह और क़ुसूर की क़ुर्बानी के लिए एक ही
उसूल है, जो इमाम क़ुर्बानी को पेश करके कफ़्फ़ारा
देता है उस को उस का गोश्त मिलता है। 8 इस
तरह जो इमाम किसी जानवर को भस्म होने वाली
क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाता है उसी को जानवर की
खाल मिलती है। 9 और इसी तरह तनूर में, कड़ाही
में या तवे पर पकाई गई ग़ल्ला की हर नज़र उस इमाम
को मिलती है जिस ने उसे पेश किया है। 10 लेकिन
हारून के तमाम बेटों को ग़ल्ला की बाक़ी नज़रें बराबर
बराबर मिलती रहें, ख़्वाह उन में तेल मिलाया गया
हो या वह ख़ुश्क हों।

सलामती की क़ुर्बानी

11 सलामती की क़ुर्बानी जो रब को पेश की जाती
है उस के बारे में ज़ैल की हिदायात हैं :
12 अगर कोई इस क़ुर्बानी से अपनी शुक्रगुज़ारी का
इज़हार करना चाहे तो वह जानवर के साथ बेख़मीरी
रोटी जिस में तेल डाला गया हो, बेख़मीरी रोटी जिस
पर तेल लगाया गया हो और रोटी जिस में बेहतरीन
मैदा और तेल मिलाया गया हो पेश करे। 13 इस के
इलावा वह ख़मीरी रोटी भी पेश करे। 14 पेश करने
वाला क़ुर्बानी की हर चीज़ का एक हिस्सा उठा कर
रब के लिए मख़्सूस करे। यह उस इमाम का हिस्सा
है जो जानवर का ख़ून क़ुर्बानगाह पर छिड़कता है।
15 गोश्त उसी दिन खाया जाए जब जानवर को ज़बह
किया गया हो। अगली सुब्ह तक कुछ नहीं बचना
चाहिए।
16 इस क़ुर्बानी का गोश्त सिर्फ़ इस सूरत में अगले
दिन खाया जा सकता है जब किसी ने मन्नत मान
कर या अपनी ख़ुशी से उसे पेश किया है। 17 अगर
कुछ गोश्त तीसरे दिन तक बच जाए तो उसे जलाना
है। 18 अगर उसे तीसरे दिन भी खाया जाए तो रब यह
क़ुर्बानी क़बूल नहीं करेगा। उस का कोई फ़ाइदा नहीं
होगा बल्कि उसे नापाक क़रार दिया जाएगा। जो भी
उस से खाएगा वह क़ुसूरवार ठहरेगा। 19 अगर यह
गोश्त किसी नापाक चीज़ से लग जाए तो उसे नहीं
खाना है बल्कि उसे जलाया जाए। अगर गोश्त पाक
है तो हर शख़्स जो ख़ुद पाक है उसे खा सकता है।
20 लेकिन अगर नापाक शख़्स रब को पेश की गई
सलामती की क़ुर्बानी का यह गोश्त खाए तो उसे उस
की क़ौम में से मिटा डालना है। 21 हो सकता है कि
किसी ने किसी नापाक चीज़ को छू लिया है चाहे वह
नापाक शख़्स, जानवर या कोई और घिनौनी और
नापाक चीज़ हो। अगर ऐसा शख़्स रब को पेश की
गई सलामती की क़ुर्बानी का गोश्त खाए तो उसे उस
की क़ौम में से मिटा डालना है।”

चर्बी और ख़ून खाना मना है

22 रब ने मूसा से कहा, 23 “इस्राईलियों को बता
देना कि गाय-बैल और भेड़-बकरियों की चर्बी खाना
तुम्हारे लिए मना है। 24 तुम फ़ित्री तौर पर मरे हुए
जानवरों और फाड़े हुए जानवरों की चर्बी दीगर कामों
के लिए इस्तेमाल कर सकते हो, लेकिन उसे खाना
मना है। 25 जो भी उस चर्बी में से खाए जो जला कर
रब को पेश की जाती है उसे उस की क़ौम में से मिटा

डालना है। 26 जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ परिन्दों या
दीगर जानवरों का ख़ून खाना मना है। 27 जो भी ख़ून
खाए उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए।”

क़ुर्बानियों में से इमाम का हिस्सा

28 रब ने मूसा से कहा, 29 “इस्राईलियों को बताना
कि जो रब को सलामती की क़ुर्बानी पेश करे वह रब
के लिए एक हिस्सा मख़्सूस करे। 30 वह जलने वाली
यह क़ुर्बानी अपने हाथों से रब को पेश करे। इस के
लिए वह जानवर की चर्बी और सीना रब के सामने
पेश करे। सीना हिलाने वाली क़ुर्बानी हो। 31 इमाम
चर्बी को क़ुर्बानगाह पर जला दे जबकि सीना हारून
और उस के बेटों का हिस्सा है। 32 क़ुर्बानी की दहनी
रान इमाम को उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर दी
जाए। 33 वह उस इमाम का हिस्सा है जो सलामती
की क़ुर्बानी का ख़ून और चर्बी चढ़ाता है।

34 इस्राईलियों की सलामती की क़ुर्बानियों में से मैं
ने हिलाने वाला सीना और उठाने वाली रान इमामों
को दी है। यह चीज़ें हमेशा के लिए इस्राईलियों की
तरफ़ से इमामों का हक़ हैं।”

35 यह उस दिन जलने वाली क़ुर्बानियों में से हारून
और उस के बेटों का हिस्सा बन गईं जब उन्हें
मक़्दिस में रब की ख़िदमत में पेश किया गया। 36 रब
ने उस दिन जब उन्हें तेल से मसह किया गया हुक्म
दिया था कि इस्राईली यह हिस्सा हमेशा इमामों को
दिया करें।

37 ग़रज़ यह हिदायात तमाम क़ुर्बानियों के बारे में हैं
यानी भस्म होने वाली क़ुर्बानी, ग़ल्ला की नज़र, गुनाह
की क़ुर्बानी, क़ुसूर की क़ुर्बानी, इमाम को मक़्दिस
में ख़िदमत के लिए मख़्सूस करने की क़ुर्बानी और
सलामती की क़ुर्बानी के बारे में। 38 रब ने मूसा को
यह हिदायात सीना पहाड़ पर दीं, उस दिन जब उस
ने इस्राईलियों को हुक्म दिया कि वह दश्त-ए-सीना
में रब को अपनी क़ुर्बानियाँ पेश करें।

हारून और उस के बेटों की मख़्सूसियत

8 1 रब ने मूसा से कहा, 2 “हारून और उस के
बेटों को मेरे हुज़ूर ले आना। नीज़ इमामों के
लिबास, मसह का तेल, गुनाह की क़ुर्बानी के लिए
जवान बैल, दो मेंढे और बेख़मीरी रोटियों की टोकरी
ले आना। 3 फिर पूरी जमाअत को ख़ैमे के दरवाज़े
पर जमा करना।”

4 मूसा ने ऐसा ही किया। जब पूरी जमाअत इकट्ठी
हो गई तो 5 उस ने उन से कहा, “अब मैं वह कुछ
करता हूँ जिस का हुक्म रब ने दिया है।” 6 मूसा ने
हारून और उस के बेटों को सामने ला कर ग़ुसल
कराया। 7 उस ने हारून को कतान का ज़ेरजामा पहना
कर कमरबन्द लपेटा। फिर उस ने चोग़ा पहनाया
जिस पर उस ने बालापोश को महारत से बुने हुए
पटके से बांधा। 8 इस के बाद उस ने सीने का कीसा
लगा कर उस में दोनों क़ुरए बनाम ऊरीम और तुम्मीम
रखे। 9 फिर उस ने हारून के सर पर पगड़ी रखी जिस
के सामने वाले हिस्से पर उस ने मुक़द्दस ताज यानी
सोने की तख़्ती लगा दी। सब कुछ उस हुक्म के ऐन
मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दिया था।

10 इस के बाद मूसा ने मसह के तेल से मक़्दिस को
और जो कुछ उस में था मसह करके उसे मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस किया। 11 उस ने यह तेल सात बार जानवर
चढ़ाने की क़ुर्बानगाह और उस के सामान पर छिड़क
दिया। इसी तरह उस ने सात बार धोने के हौज़
और उस ढाँचे पर तेल छिड़क दिया जिस पर हौज़
रखा हुआ था। यूँ यह चीज़ें मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हुईं।
12 उस ने हारून के सर पर मसह का तेल उंडेल कर
उसे मसह किया। यूँ वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हुआ।

13 फिर मूसा ने हारून के बेटों को सामने ला कर
उन्हें ज़ेरजामे पहनाए, कमरबन्द लपेटे और उन के
सरों पर पगड़ियाँ बांधीं। सब कुछ उस हुक्म के ऐन
मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दिया था।

14 अब मूसा ने गुनाह की क़ुर्बानी के लिए जवान
बैल को पेश किया। हारून और उस के बेटों ने

अपने हाथ उस के सर पर रखे। 15 मूसा ने उसे ज़बह
करके उस के ख़ून में से कुछ ले कर अपनी उंगली से
क़ुर्बानगाह के सींगों पर लगा दिया ताकि वह गुनाहों
से पाक हो जाए। बाक़ी ख़ून उस ने क़ुर्बानगाह के पाए
पर उंडेल दिया। यूँ उस ने उसे मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
करके उस का कफ़्फ़ारा दिया। 16 मूसा ने अंतड़ियों
पर की तमाम चर्बी, जोड़कलेजी और दोनों गुर्दे उन
की चर्बी समेत ले कर क़ुर्बानगाह पर जला दिए।
17 लेकिन बैल की खाल, गोश्त और अंतड़ियों के
गोबर को उस ने ख़ैमागाह के बाहर ले जा कर जला
दिया। सब कुछ उस हुक्म के मुताबिक़ हुआ जो रब
ने मूसा को दिया था।

18 इस के बाद उस ने भस्म होने वाली क़ुर्बानी के
लिए पहला मेंढा पेश किया। हारून और उस के बेटों
ने अपने हाथ उस के सर पर रख दिए। 19 मूसा ने
उसे ज़बह करके उस का ख़ून क़ुर्बानगाह के चार
पहलूओं पर छिड़क दिया। 20 उस ने मेंढे को टुकड़े
टुकड़े करके सर, टुकड़े और चर्बी जला दी। 21 उस
ने अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ पानी से साफ़ करके पूरे
मेंढे को क़ुर्बानगाह पर जला दिया। सब कुछ उस
हुक्म के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दिया
था। रब के लिए जलने वाली यह क़ुर्बानी भस्म होने
वाली क़ुर्बानी थी, और उस की ख़ुश्बू रब को पसन्द
थी।

22 इस के बाद मूसा ने दूसरे मेंढे को पेश किया। इस
क़ुर्बानी का मक़्सद इमामों को मक़्दिस में ख़िदमत के
लिए मख़्सूस करना था। हारून और उस के बेटों ने
अपने हाथ मेंढे के सर पर रख दिए। 23 मूसा ने उसे
ज़बह करके उस के ख़ून में से कुछ ले कर हारून
के दहने कान की लौ पर और उस के दहने हाथ
और दहने पाँओ के अंगूठों पर लगाया। 24 यही उस
ने हारून के बेटों के साथ भी किया। उस ने उन्हें
सामने ला कर उन के दहने कान की लौ पर और
उन के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर
ख़ून लगाया। बाक़ी ख़ून उस ने क़ुर्बानगाह के चार
पहलूओं पर छिड़क दिया। 25 उस ने मेंढे की चर्बी,
दुम, अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, जोड़कलेजी, दोनों
गुर्दे उन की चर्बी समेत और दहनी रान अलग की।
26 फिर वह रब के सामने पड़ी बेख़मीरी रोटियों की
टोकरी में से एक सादा रोटी, एक रोटी जिस में तेल
डाला गया था और एक रोटी जिस पर तेल लगाया
गया था ले कर चर्बी और रान पर रख दी। 27 उस ने
यह सब कुछ हारून और उस के बेटों के हाथों पर
रख कर उसे हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब
को पेश किया। 28 फिर उस ने यह चीज़ें उन से वापस
ले कर क़ुर्बानगाह पर जला दीं जिस पर पहले भस्म
होने वाली क़ुर्बानी रखी गई थी। रब के लिए जलने
वाली यह क़ुर्बानी इमामों को मख़्सूस करने के लिए
चढ़ाई गई, और उस की ख़ुश्बू रब को पसन्द थी।

29 मूसा ने सीना भी लिया और उसे हिलाने वाली
क़ुर्बानी के तौर पर रब के सामने हिलाया। यह
मख़्सूसियत के मेंढे में से मूसा का हिस्सा था। मूसा
ने इस में भी सब कुछ रब के हुक्म के ऐन मुताबिक़
किया।

30 फिर उस ने मसह के तेल और क़ुर्बानगाह पर के
ख़ून में से कुछ ले कर हारून, उस के बेटों और उन
के कपड़ों पर छिड़क दिया। यूँ उस ने उन्हें और उन
के कपड़ों को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया।

31 मूसा ने उन से कहा, “गोश्त को मुलाक़ात के
ख़ैमे के दरवाज़े पर उबाल कर उसे उन रोटियों के
साथ खाना जो मख़्सूसियत की क़ुर्बानियों की टोकरी
में पड़ी हैं। क्यूँकि रब ने मुझे यही हुक्म दिया है।
32 गोश्त और रोटियों का बक़ाया जला देना। 33 सात
दिन तक मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े में से न
निकलना, क्यूँकि मक़्दिस में ख़िदमत के लिए तुम्हारी
मख़्सूसियत के इतने ही दिन हैं। 34 जो कुछ आज
हुआ है वह रब के हुक्म के मुताबिक़ हुआ ताकि
तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाए। 35 तुम्हें सात रात और
दिन तक ख़ैमे के दरवाज़े के अन्दर रहना है। रब की
इस हिदायत को मानो वर्ना तुम मर जाओगे, क्यूँकि
यह हुक्म मुझे रब की तरफ़ से दिया गया है।”

36 हारून और उस के बेटों ने उन तमाम हिदायात
पर अमल किया जो रब ने मूसा की मारिफ़त उन्हें दी
थीं।

हारून क़ुर्बानियाँ चढ़ाता है

9 1 मख़्सूसियत के सात दिन के बाद मूसा ने
आठवें दिन हारून, उस के बेटों और इस्राईल
के बुज़ुर्गों को बुलाया। 2 उस ने हारून से कहा,
"एक बेऐब बछड़ा और एक बेऐब मेंढा चुन कर
रब को पेश कर। बछड़ा गुनाह की क़ुर्बानी के
लिए और मेंढा भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए
हो। 3 फिर इस्राईलियों को कह देना कि गुनाह की
क़ुर्बानी के लिए एक बकरा जबकि भस्म होने वाली
क़ुर्बानी के लिए एक बेऐब यकसाला बछड़ा और
एक बेऐब यकसाला भेड़ का बच्चा पेश करो। 4 साथ
ही सलामती की क़ुर्बानी के लिए एक बैल और एक
मेंढा चुनो। तेल के साथ मिलाई हुई ग़ल्ला की नज़र
भी ले कर सब कुछ रब को पेश करो। क्यूँकि आज
ही रब तुम पर ज़ाहिर होगा।"

5 इस्राईली मूसा की मतलूबा तमाम चीज़ें मुलाक़ात
के ख़ैमे के सामने ले आए। पूरी जमाअत क़रीब आ
कर रब के सामने खड़ी हो गई। 6 मूसा ने उन से कहा,
"तुम्हें वही करना है जिस का हुक्म रब ने तुम्हें दिया
है। क्यूँकि आज ही रब का जलाल तुम पर ज़ाहिर
होगा।"

7 फिर उस ने हारून से कहा, "क़ुर्बानगाह के
पास जा कर गुनाह की क़ुर्बानी और भस्म होने
वाली क़ुर्बानी चढ़ा कर अपना और अपनी क़ौम का
कफ़्फ़ारा देना। रब के हुक्म के मुताबिक़ क़ौम के
लिए भी क़ुर्बानी पेश करना ताकि उस का कफ़्फ़ारा
दिया जाए।"

8 हारून क़ुर्बानगाह के पास आया। उस ने बछड़े
को ज़बह किया। यह उस के लिए गुनाह की क़ुर्बानी
था। 9 उस के बेटे बछड़े का ख़ून उस के पास ले
आए। उस ने अपनी उंगली ख़ून में डुबो कर उसे
क़ुर्बानगाह के सींगों पर लगाया। बाक़ी ख़ून को उस
ने क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेल दिया। 10 फिर उस ने
उस की चर्बी, गुर्दों और जोड़कलेजी को क़ुर्बानगाह
पर जला दिया। जैसे रब ने मूसा को हुक्म दिया था
वैसे ही हारून ने किया। 11 बछड़े का गोश्त और
खाल उस ने ख़ैमागाह के बाहर ले जा कर जला दी।

12 इस के बाद हारून ने भस्म होने वाली क़ुर्बानी
को ज़बह किया। उस के बेटों ने उसे उस का ख़ून
दिया, और उस ने उसे क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर
छिड़क दिया। 13 उन्हों ने उसे क़ुर्बानी के मुख़्तलिफ़
टुकड़े सर समेत दिए, और उस ने उन्हें क़ुर्बानगाह
पर जला दिया। 14 फिर उस ने उस की अंतड़ियाँ और
पिंडलियाँ धो कर भस्म होने वाली क़ुर्बानी की बाक़ी
चीज़ों पर रख कर जला दीं।

15 अब हारून ने क़ौम के लिए क़ुर्बानी चढ़ाई। उस
ने गुनाह की क़ुर्बानी के लिए बकरा ज़बह करके
उसे पहली क़ुर्बानी की तरह चढ़ाया। 16 उस ने भस्म
होने वाली क़ुर्बानी भी क़वाइद के मुताबिक़ चढ़ाई।
17 उस ने ग़ल्ला की नज़र पेश की और उस में से मुट्ठी
भर क़ुर्बानगाह पर जला दिया। यह ग़ल्ला की उस नज़र
के इलावा थी जो सुब्ह को भस्म होने वाली क़ुर्बानी
के साथ चढ़ाई गई थी। 18 फिर उस ने सलामती की
क़ुर्बानी के लिए बैल और मेंढे को ज़बह किया। यह
भी क़ौम के लिए थी। उस के बेटों ने उसे जानवरों
का ख़ून दिया, और उस ने उसे क़ुर्बानगाह के चार
पहलूओं पर छिड़क दिया। 19 लेकिन उन्हों ने बैल
और मेंढे को चर्बी, दुम, अंतड़ियों पर की चर्बी और
जोड़कलेजी निकाल कर 20 सीने के टुकड़ों पर रख
दिया। हारून ने चर्बी का हिस्सा क़ुर्बानगाह पर जला
दिया। 21 सीने के टुकड़े और दहनी रानें उस ने हिलाने
वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब के सामने हिलाईं। उस
ने सब कुछ मूसा के हुक्म के मुताबिक़ ही किया।

22 तमाम क़ुर्बानियाँ पेश करने के बाद हारून ने
अपने हाथ उठा कर क़ौम को बरकत दी। फिर वह
क़ुर्बानगाह से उतर कर 23 मूसा के साथ मुलाक़ात के
ख़ैमे में दाख़िल हुआ। जब दोनों बाहर आए तो उन्हों
ने क़ौम को बरकत दी। तब रब का जलाल पूरी क़ौम

पर ज़ाहिर हुआ। 24 रब के हुज़ूर से आग निकल कर
क़ुर्बानगाह पर उतरी और भस्म होने वाली क़ुर्बानी
और चर्बी के टुकड़े भस्म कर दिए। यह देख कर
लोग ख़ुशी के नारे मारने लगे और मुँह के बल गिर
गए।

नदब और अबीहू का गुनाह

10 1 हारून के बेटे नदब और अबीहू ने अपने
अपने बख़ूरदान ले कर उन में जलते हुए
कोएले डाले। उन पर बख़ूर डाल कर वह रब के
सामने आए ताकि उसे पेश करें। लेकिन यह आग
नाजाइज़ थी। रब ने यह पेश करने का हुक्म नहीं
दिया था। 2 अचानक रब के हुज़ूर से आग निकली
जिस ने उन्हें भस्म कर दिया। वहीं रब के सामने वह
मर गए।

3 मूसा ने हारून से कहा, "अब वही हुआ है जो रब
ने फ़रमाया था कि जो मेरे क़रीब हैं उन से मैं अपनी
क़ुद्दूसियत ज़ाहिर करूँगा, मैं तमाम क़ौम के सामने
ही अपने जलाल का इज़हार करूँगा।"

हारून ख़ामोश रहा। 4 मूसा ने हारून के चचा
उज़्ज़ीएल के बेटों मीसाएल और इल्सफ़न को बुला
कर कहा, "इधर आओ और अपने रिश्तेदारों को
मक़्दिस के सामने से उठा कर ख़ैमागाह के बाहर
ले जाओ।" 5 वह आए और मूसा के हुक्म के ऐन
मुताबिक़ उन्हें उन के ज़ेरजामों समेत उठा कर
ख़ैमागाह के बाहर ले गए।

6 मूसा ने हारून और उस के दीगर बेटों इलीअज़र
और इतमर से कहा, "मातम का इज़हार न करो। न
अपने बाल बिखरने दो, न अपने कपड़े फाड़ो। वर्ना
तुम मर जाओगे और रब पूरी जमाअत से नाराज़ हो
जाएगा। लेकिन तुम्हारे रिश्तेदार और बाक़ी तमाम
इस्राईली ज़रूर इन का मातम करें जिन को रब ने
आग से हलाक कर दिया है। 7 मुलाक़ात के ख़ैमे के
दरवाज़े के बाहर न निकलो वर्ना तुम मर जाओगे,
क्यूँकि तुम्हें रब के तेल से मसह किया गया है।"
चुनाँचे उन्हों ने ऐसा ही किया।

इमामों के लिए हिदायात

8 रब ने हारून से कहा, 9 "जब भी तुझे या तेरे बेटों
को मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल होना है तो मै या
कोई और नशाआवर चीज़ पीना मना है, वर्ना तुम
मर जाओगे। यह उसूल आने वाली नस्लों के लिए
भी अबद तक अनमिट है। 10 यह भी लाज़िम है कि
तुम मुक़द्दस और ग़ैरमुक़द्दस चीज़ों में, पाक और
नापाक चीज़ों में इम्तियाज़ करो। 11 तुम्हें इस्राईलियों
को तमाम पाबन्दियाँ सिखानी हैं जो मैं ने तुम्हें मूसा
की मारिफ़त बताई हैं।"

12 मूसा ने हारून और उस के बचे हुए बेटों
इलीअज़र और इतमर से कहा, "ग़ल्ला की नज़र का
जो हिस्सा रब के सामने जलाया नहीं जाता उसे अपने
लिए ले कर बेख़मीरी रोटी पकाना और क़ुर्बानगाह
के पास ही खाना। क्यूँकि वह निहायत मुक़द्दस है।
13 उसे मुक़द्दस जगह पर खाना, क्यूँकि वह रब की
जलने वाली क़ुर्बानियों में से तुम्हारे और तुम्हारे बेटों
का हिस्सा है। क्यूँकि मुझे इस का हुक्म दिया गया
है। 14 जो सीना हिलाने वाली क़ुर्बानी और दहनी
रान उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश की गई
है, वह तुम और तुम्हारे बेटे-बेटियाँ खा सकते हैं।
उन्हें मुक़द्दस जगह पर खाना है। इस्राईलियों की
सलामती की क़ुर्बानियों में से यह टुकड़े तुम्हारा
हिस्सा हैं। 15 लेकिन पहले इमाम रान और सीने को
जलने वाली क़ुर्बानियों की चर्बी के साथ पेश करें।
वह उन्हें हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब के
सामने हिलाएँ। रब फ़रमाता है कि यह टुकड़े अबद
तक तुम्हारे और तुम्हारे बेटों का हिस्सा हैं।"

16 मूसा ने दरयाफ़्त किया कि उस बकरे के गोश्त
का क्या हुआ जो गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर
चढ़ाया गया था। उसे पता चला कि वह भी जल
गया था। यह सुन कर उसे हारून के बेटों इलीअज़र
और इतमर पर ग़ुस्सा आया। उस ने पूछा, 17 "तुम ने
गुनाह की क़ुर्बानी का गोश्त क्यूँ नहीं खाया? तुम्हें
उसे मुक़द्दस जगह पर खाना था। यह एक निहायत

मुक़द्दस हिस्सा है जो रब ने तुम्हें दिया ताकि तुम
जमाअत का क़ुसूर दूर करके रब के सामने लोगों का
कफ़्फ़ारा दो। 18 चूँकि इस बकरे का ख़ून मक़्दिस में
न लाया गया इस लिए तुम्हें उस का गोश्त मक़्दिस
में खाना था जिस तरह मैं ने तुम्हें हुक्म दिया था।”
19 हारून ने मूसा को जवाब दे कर कहा, “देखें,
आज लोगों ने अपने लिए गुनाह की क़ुर्बानी और
भस्म होने वाली क़ुर्बानी रब को पेश की है जबकि
मुझ पर यह आफ़त गुज़री है। अगर मैं आज गुनाह
की क़ुर्बानी से खाता तो क्या यह रब को अच्छा
लगता?” 20 यह बात मूसा को अच्छी लगी।

पाक और नापाक जानवर

11 1 रब ने मूसा और हारून से कहा,
2 “इस्राईलियों को बताना कि तुम्हें ज़मीन
पर रहने वाले जानवरों में से ज़ैल के जानवरों को
खाने की इजाज़त है : 3 जिन के खुर या पाँओ
बिलकुल चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं उन्हें
खाने की इजाज़त है। 4–6 ऊँट, बिज्जू या ख़रगोश
खाना मना है। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं, क्यूँकि
वह जुगाली तो करते हैं लेकिन उन के खुर या पाँओ
चिरे हुए नहीं हैं। 7 सूअर न खाना। वह तुम्हारे लिए
नापाक है, क्यूँकि उस के खुर तो चिरे हुए हैं लेकिन
वह जुगाली नहीं करता। 8 न उन का गोश्त खाना, न
उन की लाशों को छूना। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं।
9 समुन्दरी और दरयाई जानवर खाने के लिए जाइज़
हैं अगर उन के पर और छिलके हों। 10 लेकिन जिन
के पर या छिलके नहीं हैं वह सब तुम्हारे लिए
मकरूह हैं, ख़्वाह वह बड़ी तादाद में मिल कर रहते
हैं या नहीं। 11 इस लिए उन का गोश्त खाना मना है,
और उन की लाशों से भी घिन खाना है। 12 पानी में
रहने वाले तमाम जानवर जिन के पर या छिलके न
हों तुम्हारे लिए मकरूह हैं।
13 ज़ैल के परिन्दे तुम्हारे लिए क़ाबिल-ए-घिन हों।
इन्हें खाना मना है, क्यूँकि वह मकरूह हैं : उक़ाब,
दढ़ियल गिद्ध, काला गिद्ध, 14 लाल चील, हर क़िस्म
की काली चील, 15 हर क़िस्म का कव्वा, 16 उक़ाबी
उल्लू, छोटे कान वाला उल्लू, बड़े कान वाला उल्लू,
हर क़िस्म का बाज़, 17 छोटा उल्लू, क़ूक़, चिंघाड़ने
वाला उल्लू, 18 सफ़ेद उल्लू, दश्ती उल्लू, मिस्री गिद्ध,
19 लक़्लक़, हर क़िस्म का बूतीमार, हुदहुद और
चमगादड़। [b]
20 तमाम पर रखने वाले कीड़े जो चार पाँओ पर
चलते हैं तुम्हारे लिए मकरूह हैं, 21 सिवाए उन के
जिन की टाँगों के दो हिस्से हैं और जो फुदकते हैं। उन
को तुम खा सकते हो। 22 इस नाते से तुम मुख़्तलिफ़
क़िस्म के टिड्डे खा सकते हो। 23 बाक़ी सब पर रखने
वाले कीड़े जो चार पाँओ पर चलते हैं तुम्हारे लिए
मकरूह हैं।
24–28 जो भी ज़ैल के जानवरों की लाशें छुए वह
शाम तक नापाक रहेगा : (अलिफ़) खुर रखने वाले
तमाम जानवर सिवाए उन के जिन के खुर या पाँओ
पूरे तौर पर चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं, (बे)
तमाम जानवर जो अपने चार पंजों पर चलते हैं। यह
जानवर तुम्हारे लिए नापाक हैं, और जो भी उन की
लाशें उठाए या छुए लाज़िम है कि वह अपने कपड़े
धो ले। इस के बावुजूद भी वह शाम तक नापाक
रहेगा।
29–30 ज़मीन पर रेंगने वाले जानवरों में से छछूँदर,
मुख़्तलिफ़ क़िस्म के चूहे और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की
छिपकलियाँ तुम्हारे लिए नापाक हैं। 31 जो भी उन्हें
और उन की लाशें छू लेता है वह शाम तक नापाक
रहेगा। 32 अगर उन में से किसी की लाश किसी चीज़
पर गिर पड़े तो वह भी नापाक हो जाएगी। इस से
कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि वह लकड़ी, कपड़े, चमड़े
या टाट की बनी हो, न इस से कोई फ़र्क़ पड़ता है
कि वह किस काम के लिए इस्तेमाल की जाती है।

---

[b] याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन परिन्दों के अक्सर नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख़्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

उसे हर सूरत में पानी में डुबोना है। तो भी वह शाम
तक नापाक रहेगी। 33 अगर ऐसी लाश मिट्टी के बर्तन
में गिर जाए तो जो कुछ भी उस में है नापाक हो
जाएगा और तुम्हें उस बर्तन को तोड़ना है। 34 हर खाने
वाली चीज़ जिस पर ऐसे बर्तन का पानी डाला गया
है नापाक है। इसी तरह उस बर्तन से निकली हुई
हर पीने वाली चीज़ नापाक है। 35 जिस पर भी ऐसी
लाश गिर पड़े वह नापाक हो जाता है। अगर वह तनूर
या चूल्हे पर गिर पड़े तो उन को तोड़ देना है। वह
नापाक हैं और तुम्हारे लिए नापाक रहेंगे। 36 लेकिन
जिस चश्मे या हौज़ में ऐसी लाश गिरे वह पाक रहता
है। सिर्फ़ वह जो लाश को छू लेता है नापाक हो जाता
है। 37 अगर ऐसी लाश बीजों पर गिर पड़े जिन को
अभी बोना है तो वह पाक रहते हैं। 38 लेकिन अगर
बीजों पर पानी डाला गया हो और फिर लाश उन पर
गिर पड़े तो वह नापाक हैं।

39 अगर ऐसा जानवर जिसे खाने की इजाज़त है मर
जाए तो जो भी उस की लाश छुए शाम तक नापाक
रहेगा। 40 जो उस में से कुछ खाए या उसे उठा कर
ले जाए उसे अपने कपड़ों को धोना है। तो भी वह
शाम तक नापाक रहेगा।

41 हर जानवर जो ज़मीन पर रेंगता है क़ाबिल-ए-
घिन है। उसे खाना मना है, 42 चाहे वह अपने पेट पर
चाहे चार या इस से ज़ाइद पाँओ पर चलता हो। 43 इन
तमाम रेंगने वालों से अपने आप को घिन का बाइस
और नापाक न बनाना, 44 क्यूँकि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा
हूँ। लाज़िम है कि तुम अपने आप को मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस रखो, क्यूँकि मैं क़ुद्दूस हूँ। अपने आप को
ज़मीन पर रेंगने वाले तमाम जानवरों से नापाक न
बनाना। 45 मैं रब हूँ। मैं तुम्हें मिस्र से निकाल लाया
हूँ ताकि तुम्हारा ख़ुदा बनूँ। लिहाज़ा मुक़द्दस रहो,
क्यूँकि मैं क़ुद्दूस हूँ।

46 ज़मीन पर चलने वाले जानवरों, परिन्दों, आबी
जानवरों और ज़मीन पर रेंगने वाले जानवरों के बारे
में शरअ यही है। 47 लाज़िम है कि तुम नापाक और
पाक में इम्तियाज़ करो, ऐसे जानवरों में जो खाने के
लिए जाइज़ हैं और ऐसों में जो नाजाइज़ हैं।"

बच्चे की पैदाइश के बाद माँ पर पाबन्दियाँ

12 1 रब ने मूसा से कहा, 2 "इस्राईलियों को
बता कि जब किसी औरत के लड़का पैदा
हो तो वह माहवारी के अय्याम की तरह सात दिन
तक नापाक रहेगी। 3 आठवें दिन लड़के का ख़तना
करवाना है। 4 फिर माँ मज़ीद 33 दिन इन्तिज़ार करे।
इस के बाद उस की वह नापाकी दूर हो जाएगी जो
ख़ून बहने से पैदा हुई है। इस दौरान वह कोई मख़्सूस
और मुक़द्दस चीज़ न छुए, न मक़्दिस के पास जाए।

5 अगर उस के लड़की पैदा हो जाए तो वह माहवारी
के अय्याम की तरह नापाक है। यह नापाकी 14 दिन
तक रहेगी। फिर वह मज़ीद 66 दिन इन्तिज़ार करे।
इस के बाद उस की वह नापाकी दूर हो जाएगी जो
ख़ून बहने से पैदा हुई है।

6 जब लड़के या लड़की के सिलसिले में यह दिन
गुज़र जाएँ तो वह मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर
इमाम को ज़ैल की चीज़ें दे : भस्म होने वाली क़ुर्बानी
के लिए एक यकसाला भेड़ का बच्चा और गुनाह की
क़ुर्बानी के लिए एक जवान कबूतर या क़ुम्री। 7 इमाम
यह जानवर रब को पेश करके उस का कफ़्फ़ारा दे।
फिर ख़ून बहने के बाइस पैदा होने वाली नापाकी
दूर हो जाएगी। उसूल एक ही है, चाहे लड़का हो या
लड़की।

8 अगर वह ग़ुर्बत के बाइस भेड़ का बच्चा न दे
सके तो फिर वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर
ले आए, एक भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए और
दूसरा गुनाह की क़ुर्बानी के लिए। यूँ इमाम उस का
कफ़्फ़ारा दे और वह पाक हो जाएगी।"

जिल्दी बीमारियाँ

13 1 रब ने मूसा और हारून से कहा, 2 "अगर
किसी की जिल्द में सूजन या पपड़ी या
सफ़ेद दाग़ हो और ख़तरा है कि वबाई जिल्दी बीमारी

हो तो उसे इमामों यानी हारून या उस के बेटों के
पास ले आना है। 3 इमाम उस जगह का मुआइना
करे। अगर उस के बाल सफ़ेद हो गए हों और वह
जिल्द में धंसी हुई हो तो वबाई बीमारी है। जब इमाम
को यह मालूम हो तो वह उसे नापाक क़रार दे।
4 लेकिन हो सकता है कि जिल्द की जगह सफ़ेद
तो है लेकिन जिल्द में धंसी हुई नहीं है, न उस के
बाल सफ़ेद हुए हैं। इस सूरत में इमाम उस शख़्स
को सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे। 5 सातवें
दिन इमाम दुबारा उस का मुआइना करे। अगर वह
देखे कि मुतअस्सिरा जगह वैसी ही है और फैली
नहीं तो वह उसे मज़ीद सात दिन अलाहिदगी में रखे।
6 सातवें दिन वह एक और मर्तबा उस का मुआइना
करे। अगर उस जगह का रंग दुबारा सेहतमन्द जिल्द
के रंग की मानिन्द हो रहा हो और फैली न हो तो वह
उसे पाक क़रार दे। इस का मतलब है कि यह मर्ज़
आम पपड़ी से ज़्यादा नहीं है। मरीज़ अपने कपड़े
धो ले तो वह पाक हो जाएगा। 7 लेकिन अगर इस
के बाद मुतअस्सिरा जगह फैलने लगे तो वह दुबारा
अपने आप को इमाम को दिखाए। 8 इमाम उस का
मुआइना करे। अगर जगह वाक़ई फैल गई हो तो
इमाम उसे नापाक क़रार दे, क्यूँकि यह वबाई जिल्दी
मर्ज़ है।

9 अगर किसी के जिस्म पर वबाई जिल्दी मर्ज़ नज़र
आए तो उसे इमाम के पास लाया जाए। 10 इमाम उस
का मुआइना करे। अगर मुतअस्सिरा जिल्द में सफ़ेद
सूजन हो, उस के बाल भी सफ़ेद हो गए हों, और
उस में कच्चा गोश्त मौजूद हो 11 तो इस का मतलब
है कि वबाई जिल्दी बीमारी पुरानी है। इमाम उस
शख़्स को सात दिन के लिए अलाहिदगी में रख कर
इन्तिज़ार न करे बल्कि उसे फ़ौरन नापाक क़रार दे,
क्यूँकि यह उस की नापाकी का सबूत है। 12 लेकिन
अगर बीमारी जल्दी से फैल गई हो, यहाँ तक कि
सर से ले कर पाँओ तक पूरी जिल्द मुतअस्सिर हुई
हो 13 तो इमाम यह देख कर मरीज़ को पाक क़रार
दे। चूँकि पूरी जिल्द सफ़ेद हो गई है इस लिए वह
पाक है। 14 लेकिन जब भी कहीं कच्चा गोश्त नज़र
आए उस वक़्त वह नापाक हो जाता है। 15 इमाम
यह देख कर मरीज़ को नापाक क़रार दे। कच्चा गोश्त
हर सूरत में नापाक है, क्यूँकि इस का मतलब है
कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 16 अगर कच्चे
गोश्त का यह ज़ख़्म भर जाए और मुतअस्सिरा जगह
की जिल्द सफ़ेद हो जाए तो मरीज़ इमाम के पास
जाए। 17 अगर इमाम देखे कि वाक़ई ऐसा ही हुआ है
और मुतअस्सिरा जिल्द सफ़ेद हो गई है तो वह उसे
पाक क़रार दे।

18 अगर किसी की जिल्द पर फोड़ा हो लेकिन वह
ठीक हो जाए 19 और उस की जगह सफ़ेद सूजन या
सुर्ख़ी-माइल सफ़ेद दाग़ नज़र आए तो मरीज़ अपने
आप को इमाम को दिखाए। 20 अगर वह उस का
मुआइना करके देखे कि मुतअस्सिरा जगह जिल्द के
अन्दर धंसी हुई है और उस के बाल सफ़ेद हो गए
हैं तो वह मरीज़ को नापाक क़रार दे। क्यूँकि इस
का मतलब है कि जहाँ पहले फोड़ा था वहाँ वबाई
जिल्दी बीमारी पैदा हो गई है। 21 लेकिन अगर इमाम
देखे कि मुतअस्सिरा जगह के बाल सफ़ेद नहीं हैं, वह
जिल्द में धंसी हुई नज़र नहीं आती और उस का रंग
दुबारा सेहतमन्द जिल्द की मानिन्द हो रहा है तो वह
उसे सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे। 22 अगर
इस दौरान बीमारी मज़ीद फैल जाए तो इमाम मरीज़
को नापाक क़रार दे, क्यूँकि इस का मतलब है कि
वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 23 लेकिन अगर
दाग़ न फैले तो इस का मतलब है कि यह सिर्फ़ उस
भरे हुए ज़ख़्म का निशान है जो फोड़े से पैदा हुआ
था। इमाम मरीज़ को पाक क़रार दे।

24 अगर किसी की जिल्द पर जलने का ज़ख़्म
लग जाए और मुतअस्सिरा जगह पर सुर्ख़ी-माइल
सफ़ेद दाग़ या सफ़ेद दाग़ पैदा हो जाए 25 तो इमाम
मुतअस्सिरा जगह का मुआइना करे। अगर मालूम हो
जाए कि मुतअस्सिरा जगह के बाल सफ़ेद हो गए हैं
और वह जिल्द में धंसी हुई है तो इस का मतलब
है कि चोट की जगह पर वबाई जिल्दी मर्ज़ लग

गया है। इमाम उसे नापाक क़रार दे, क्यूँकि वबाई
जिल्दी बीमारी लग गई है। 26 लेकिन अगर इमाम
ने मालूम किया है कि दाग़ में बाल सफ़ेद नहीं हैं,
वह जिल्द में धंसा हुआ नज़र नहीं आता और उस
का रंग सेहतमन्द जिल्द की मानिन्द हो रहा है तो
वह मरीज़ को सात दिन तक अलाहिदगी में रखे।
27 अगर वह सातवें दिन मालूम करे कि मुतअस्सिरा
जगह फैल गई है तो वह उसे नापाक क़रार दे। क्यूँकि
इस का मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई
है। 28 लेकिन अगर दाग़ फैला हुआ नज़र नहीं आता
और मुतअस्सिरा जिल्द का रंग सेहतमन्द जिल्द के
रंग की मानिन्द हो गया है तो इस का मतलब है कि
यह सिर्फ़ उस भरे हुए ज़ख़्म का निशान है जो जलने
से पैदा हुआ था। इमाम मरीज़ को पाक क़रार दे।

29 अगर किसी के सर या दाढ़ी की जिल्द में
निशान नज़र आए 30 तो इमाम मुतअस्सिरा जगह का
मुआइना करे। अगर वह धंसी हुई नज़र आए और
उस के बाल रंग के लिहाज़ से चमकते हुए सोने
की मानिन्द और बारीक हों तो इमाम मरीज़ को
नापाक क़रार दे। इस का मतलब है कि ऐसी वबाई
जिल्दी बीमारी सर या दाढ़ी की जिल्द पर लग गई है
जो ख़ारिश पैदा करती है। 31 लेकिन अगर इमाम ने
मालूम किया कि मुतअस्सिरा जगह जिल्द में धंसी हुई
नज़र नहीं आती अगरचे उस के बालों का रंग बदल
गया है तो वह उसे सात दिन के लिए अलाहिदगी
में रखे। 32 सातवें दिन इमाम जिल्द की मुतअस्सिरा
जगह का मुआइना करे। अगर वह फैली हुई नज़र
नहीं आती और उस के बालों का रंग चमकदार सोने
की मानिन्द नहीं है, साथ ही वह जगह जिल्द में धंसी
हुई भी दिखाई नहीं देती, 33 तो मरीज़ अपने बाल
मुंडवाए। सिर्फ़ वह बाल रह जाएँ जो मुतअस्सिरा
जगह से निकलते हैं। इमाम मरीज़ को मज़ीद सात
दिन अलाहिदगी में रखे। 34 सातवें दिन वह उस का
मुआइना करे। अगर मुतअस्सिरा जगह नहीं फैली
और वह जिल्द में धंसी हुई नज़र नहीं आती तो
इमाम उसे पाक क़रार दे। वह अपने कपड़े धो ले
तो वह पाक हो जाएगा। 35 लेकिन अगर इस के बाद
जिल्द की मुतअस्सिरा जगह फैलना शुरू हो जाए
36 तो इमाम दुबारा उस का मुआइना करे। अगर वह
जगह वाक़ई फैली हुई नज़र आए तो मरीज़ नापाक
है, चाहे मुतअस्सिरा जगह के बालों का रंग चमकते
सोने की मानिन्द हो या न हो। 37 लेकिन अगर उस
के ख़याल में मुतअस्सिरा जगह फैली हुई नज़र नहीं
आती बल्कि उस में से काले रंग के बाल निकल रहे
हैं तो इस का मतलब है कि मरीज़ की सेहत बहाल
हो गई है। इमाम उसे पाक क़रार दे।

38 अगर किसी मर्द या औरत की जिल्द पर सफ़ेद
दाग़ पैदा हो जाएँ 39 तो इमाम उन का मुआइना करे।
अगर उन का सफ़ेद रंग हल्का सा हो तो यह सिर्फ़
बेज़रर पपड़ी है। मरीज़ पाक है।

40–41 अगर किसी मर्द का सर माथे की तरफ़ या
पीछे की तरफ़ गंजा है तो वह पाक है। 42 लेकिन
अगर उस जगह जहाँ वह गंजा है सुर्ख़ी-माइल सफ़ेद
दाग़ हो तो इस का मतलब है कि वहाँ वबाई जिल्दी
बीमारी लग गई है। 43 इमाम उस का मुआइना करे।
अगर गंजी जगह पर सुर्ख़ी-माइल सफ़ेद सूजन हो जो
वबाई जिल्दी बीमारी की मानिन्द नज़र आए 44 तो
मरीज़ को वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। इमाम
उसे नापाक क़रार दे।

नापाक मरीज़ का सुलूक

45 वबाई जिल्दी बीमारी का मरीज़ फटे कपड़े
पहने। उस के बाल बिखरे रहें। वह अपनी मूँछों को
किसी कपड़े से छुपाए और पुकारता रहे, 'नापाक,
नापाक।' 46 जिस वक़्त तक वबाई जिल्दी बीमारी
लगी रहे वह नापाक है। वह इस दौरान ख़ैमागाह के
बाहर जा कर तन्हाई में रहे।

फफूँदी से निपटने का तरीक़ा

47 हो सकता है कि ऊन या कतान के किसी लिबास
पर फफूँदी लग गई है, 48 या कि फफूँदी ऊन या
कतान के किसी कपड़े के टुकड़े या किसी चमड़े

या चमड़े की किसी चीज़ पर लग गई है। 49 अगर
फफूँदी का रंग हरा या लाल सा हो तो वह फैलने
वाली फफूँदी है, और लाज़िम है कि उसे इमाम को
दिखाया जाए। 50 इमाम उस का मुआइना करके उसे
सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे। 51 सातवें दिन
वह दुबारा उस का मुआइना करे। अगर फफूँदी फैल
गई हो तो इस का मतलब है कि वह नुक़्सानदेह है।
मुतअस्सिरा चीज़ नापाक है। 52 इमाम उसे जला दे,
क्यूँकि यह फफूँदी नुक़्सानदेह है। लाज़िम है कि उसे
जला दिया जाए। 53 लेकिन अगर इन सात दिनों के
बाद फफूँदी फैली हुई नज़र नहीं आती 54 तो इमाम
हुक्म दे कि मुतअस्सिरा चीज़ को धुलवाया जाए।
फिर वह उसे मज़ीद सात दिन के लिए अलाहिदगी
में रखे। 55 इस के बाद वह दुबारा उस का मुआइना
करे। अगर वह मालूम करे कि फफूँदी तो फैली हुई
नज़र नहीं आती लेकिन उस का रंग वैसे का वैसा
है तो वह नापाक है। उसे जला देना, चाहे फफूँदी
मुतअस्सिरा चीज़ के सामने वाले हिस्से या पिछले
हिस्से में लगी हो। 56 लेकिन अगर मालूम हो जाए
कि फफूँदी का रंग माँद पड़ गया है तो इमाम कपड़े
या चमड़े में से मुतअस्सिरा जगह फाड़ कर निकाल
दे। 57 तो भी हो सकता है कि फफूँदी दुबारा उसी
कपड़े या चमड़े पर नज़र आए। इस का मतलब है
कि वह फैल रही है और उसे जला देना लाज़िम है।
58 लेकिन अगर फफूँदी धोने के बाद ग़ाइब हो जाए
तो उसे एक और दफ़ा धोना है। फिर मुतअस्सिरा
चीज़ पाक होगी।

59 इसी तरह फफूँदी से निपटना है, चाहे वह ऊन
या कतान के किसी लिबास को लग गई हो, चाहे
ऊन या कतान के किसी टुकड़े या चमड़े की किसी
चीज़ को लग गई हो। इन ही उसूलों के तहत फ़ैसला
करना है कि मुतअस्सिरा चीज़ पाक है या नापाक।”

वबाई जिल्दी बीमारी के मरीज़ की शिफ़ा पर क़ुर्बानी

14 1 रब ने मूसा से कहा, 2 “अगर कोई शख़्स
जिल्दी बीमारी से शिफ़ा पाए और उसे
पाक-साफ़ कराना है तो उसे इमाम के पास लाया
जाए 3 जो ख़ैमागाह के बाहर जा कर उस का मुआइना
करे। अगर वह देखे कि मरीज़ की सेहत वाक़ई
बहाल हो गई है 4 तो इमाम उस के लिए दो ज़िन्दा
और पाक परिन्दे, देवदार की लकड़ी, क़िर्मिज़ी रंग
का धागा और ज़ूफ़ा मंगवाए। 5 इमाम के हुक्म पर
परिन्दों में से एक को ताज़ा पानी से भरे हुए मिट्टी
के बर्तन के ऊपर ज़बह किया जाए। 6 इमाम ज़िन्दा
परिन्दे को देवदार की लकड़ी, क़िर्मिज़ी रंग के धागे
और ज़ूफ़ा के साथ ज़बह किए गए परिन्दे के उस ख़ून
में डुबो दे जो मिट्टी के बर्तन के पानी में आ गया है।
7 वह पानी से मिलाया हुआ ख़ून सात बार पाक होने
वाले शख़्स पर छिड़क कर उसे पाक क़रार दे, फिर
ज़िन्दा परिन्दे को खुले मैदान में छोड़ दे। 8 जो अपने
आप को पाक-साफ़ करा रहा है वह अपने कपड़े
धोए, अपने तमाम बाल मुंडवाए और नहा ले। इस
के बाद वह पाक है। अब वह ख़ैमागाह में दाख़िल हो
सकता है अगरचे वह मज़ीद सात दिन अपने डेरे में
नहीं जा सकता। 9 सातवें दिन वह दुबारा अपने सर
के बाल, अपनी दाढ़ी, अपने अब्रू और बाक़ी तमाम
बाल मुंडवाए। वह अपने कपड़े धोए और नहा ले।
तब वह पाक है।

10 आठवें दिन वह दो भेड़ के नर बच्चे और एक
यकसाला भेड़ चुन ले जो बेऐब हों। साथ ही वह ग़ल्ला
की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाया गया साढ़े
4 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 300 मिलीलिटर
तेल ले। 11 फिर जिस इमाम ने उसे पाक क़रार दिया
वह उसे इन क़ुर्बानियों समेत मुलाक़ात के ख़ैमे के
दरवाज़े पर रब को पेश करे। 12 भेड़ का एक नर
बच्चा और 300 मिलीलिटर तेल क़ुसूर की क़ुर्बानी के
लिए है। इमाम उन्हें हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर
रब के सामने हिलाए। 13 फिर वह भेड़ के इस बच्चे
को ख़ैमे के दरवाज़े पर ज़बह करे जहाँ गुनाह की
क़ुर्बानियाँ और भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ ज़बह की
जाती हैं। गुनाह की क़ुर्बानियों की तरह क़ुसूर की यह
क़ुर्बानी इमाम का हिस्सा है और निहायत मुक़द्दस है।

14 इमाम ख़ून में से कुछ ले कर पाक होने वाले के
दहने कान की लौ पर और उस के दहने हाथ और
दहने पाँओ के अंगूठों पर लगाए। 15 अब वह 300
मिलीलिटर तेल में से कुछ ले कर अपने बाएँ हाथ
की हथेली पर डाले। 16 अपने दहने हाथ के अंगूठे
के साथ वाली उंगली इस तेल में डुबो कर वह उसे
सात बार रब के सामने छिड़के। 17 वह अपनी हथेली
पर के तेल में से कुछ और ले कर पाक होने वाले के
दहने कान की लौ पर और उस के दहने हाथ और
दहने पाँओ के अंगूठों पर लगा दे यानी उन जगहों
पर जहाँ वह क़ुसूर की क़ुर्बानी का ख़ून लगा चुका
है। 18 इमाम अपनी हथेली पर का बाक़ी तेल पाक
होने वाले के सर पर डाल कर रब के सामने उस का
कफ़्फ़ारा दे।

19 इस के बाद इमाम गुनाह की क़ुर्बानी चढ़ा कर
पाक होने वाले का कफ़्फ़ारा दे। आख़िर में वह भस्म
होने वाली क़ुर्बानी का जानवर ज़बह करे। 20 वह उसे
ग़ल्ला की नज़र के साथ क़ुर्बानगाह पर चढ़ा कर उस
का कफ़्फ़ारा दे। तब वह पाक है।

21 अगर शिफ़ायाब शख़्स ग़ुर्बत के बाइस यह
क़ुर्बानियाँ नहीं चढ़ा सकता तो फिर वह क़ुसूर की
क़ुर्बानी के लिए भेड़ का सिर्फ़ एक नर बच्चा ले आए।
काफ़ी है कि कफ़्फ़ारा देने के लिए यही रब के सामने
हिलाया जाए। साथ साथ ग़ल्ला की नज़र के लिए
डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा तेल के साथ मिला कर
पेश किया जाए और 300 मिलीलिटर तेल। 22 इस
के इलावा वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर पेश
करे, एक को गुनाह की क़ुर्बानी के लिए और दूसरे
को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए। 23 आठवें दिन
वह उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम के
पास और रब के सामने ले आए ताकि वह पाक-साफ़
हो जाए। 24 इमाम भेड़ के बच्चे को 300 मिलीलिटर
तेल समेत ले कर हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर
रब के सामने हिलाए। 25 वह क़ुसूर की क़ुर्बानी के
लिए भेड़ के बच्चे को ज़बह करे और उस के ख़ून में से
कुछ ले कर पाक होने वाले के दहने कान की लौ पर
और उस के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों
पर लगाए। 26 अब वह 300 मिलीलिटर तेल में से
कुछ अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डाले 27 और
अपने दहने हाथ के अंगूठे के साथ वाली उंगली इस
तेल में डुबो कर उसे सात बार रब के सामने छिड़क
दे। 28 वह अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ और
ले कर पाक होने वाले के दहने कान की लौ पर
और उस के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों
पर लगा दे यानी उन जगहों पर जहाँ वह क़ुसूर की
क़ुर्बानी का ख़ून लगा चुका है। 29 अपनी हथेली पर
का बाक़ी तेल वह पाक होने वाले के सर पर डाल दे
ताकि रब के सामने उस का कफ़्फ़ारा दे। 30 इस के
बाद वह शिफ़ायाब शख़्स की गुन्जाइश के मुताबिक़
दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर चढ़ाए, 31 एक को
गुनाह की क़ुर्बानी के लिए और दूसरे को भस्म होने
वाली क़ुर्बानी के लिए। साथ ही वह ग़ल्ला की नज़र
पेश करे। यूँ इमाम रब के सामने उस का कफ़्फ़ारा
देता है। 32 यह उसूल ऐसे शख़्स के लिए है जो वबाई
जिल्दी बीमारी से शिफ़ा पा गया है लेकिन अपनी
ग़ुर्बत के बाइस पाक हो जाने के लिए पूरी क़ुर्बानी
पेश नहीं कर सकता।”

घरों में फफूँदी

33 रब ने मूसा और हारून से कहा, 34 “जब तुम
मुल्क-ए-कनआन में दाख़िल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा तो
वहाँ ऐसे मकान होंगे जिन में मैं ने फफूँदी फैलने दी
है। 35 ऐसे घर का मालिक जा कर इमाम को बताए
कि मैं ने अपने घर में फफूँदी जैसी कोई चीज़ देखी है।
36 तब इमाम हुक्म दे कि घर का मुआइना करने से
पहले घर का पूरा सामान निकाला जाए। वर्ना अगर
घर को नापाक क़रार दिया जाए तो सामान को भी
नापाक क़रार दिया जाएगा। इस के बाद इमाम अन्दर
जा कर मकान का मुआइना करे। 37 वह दीवारों
के साथ लगी हुई फफूँदी का मुआइना करे। अगर
मुतअस्सिरा जगहें हरी या लाल सी हों और दीवार
के अन्दर धंसी हुई नज़र आएँ 38 तो फिर इमाम घर से

निकल कर सात दिन के लिए ताला लगाए। 39 सातवें
दिन वह वापस आ कर मकान का मुआइना करे।
अगर फफूँदी फैली हुई नज़र आए 40 तो वह हुक्म दे
कि मुतअस्सिरा पत्थरों को निकाल कर आबादी के
बाहर किसी नापाक जगह पर फैंका जाए। 41 नीज़
वह हुक्म दे कि अन्दर की दीवारों को कुरेदा जाए
और कुरेदी हुई मिट्टी को आबादी के बाहर किसी
नापाक जगह पर फैंका जाए। 42 फिर लोग नए पत्थर
लगा कर घर को नए गारे से पलस्तर करें। 43 लेकिन
अगर इस के बावुजूद फफूँदी दुबारा पैदा हो जाए
44 तो इमाम आ कर दुबारा उस का मुआइना करे।
अगर वह देखे कि फफूँदी घर में फैल गई है तो इस
का मतलब है कि फफूँदी नुक़्सानदेह है, इस लिए घर
नापाक है। 45 लाज़िम है कि उसे पूरे तौर पर ढा दिया
जाए और सब कुछ यानी उस के पत्थर, लकड़ी और
पलस्तर को आबादी के बाहर किसी नापाक जगह
पर फैंका जाए।

46 अगर इमाम ने किसी घर का मुआइना करके
ताला लगा दिया है और फिर भी कोई उस घर में
दाख़िल हो जाए तो वह शाम तक नापाक रहेगा।
47 जो ऐसे घर में सोए या खाना खाए लाज़िम है कि
वह अपने कपड़े धो ले। 48 लेकिन अगर घर को नए
सिरे से पलस्तर करने के बाद इमाम आ कर उस
का दुबारा मुआइना करे और देखे कि फफूँदी दुबारा
नहीं निकली तो इस का मतलब है कि फफूँदी ख़त्म
हो गई है। वह उसे पाक क़रार दे। 49 उसे गुनाह से
पाक-साफ़ कराने के लिए वह दो परिन्दे, देवदार की
लकड़ी, क़िर्मिज़ी रंग का धागा और ज़ूफ़ा ले ले।
50 वह परिन्दों में से एक को ताज़ा पानी से भरे हुए
मिट्टी के बर्तन के ऊपर ज़बह करे। 51 इस के बाद
वह देवदार की लकड़ी, ज़ूफ़ा, क़िर्मिज़ी रंग का धागा
और ज़िन्दा परिन्दा ले कर उस ताज़ा पानी में डुबो दे
जिस के साथ ज़बह किए हुए परिन्दे का ख़ून मिलाया
गया है और इस पानी को सात बार घर पर छिड़क दे।
52 इन चीज़ों से वह घर को गुनाह से पाक-साफ़ करता
है। 53 आख़िर में वह ज़िन्दा परिन्दे को आबादी के
बाहर खुले मैदान में छोड़ दे। यूँ वह घर का कफ़्फ़ारा
देगा, और वह पाक-साफ़ हो जाएगा।

54–56 लाज़िम है कि हर क़िस्म की वबाई बीमारी
से ऐसे निपटो जैसे बयान किया गया है, चाहे वह
वबाई जिल्दी बीमारियाँ हों (मसलन ख़ारिश, सूजन,
पपड़ी या सफ़ेद दाग़), चाहे कपड़ों या घरों में फफूँदी
हो। 57 इन उसूलों के तहत फ़ैसला करना है कि कोई
शख़्स या चीज़ पाक है या नापाक।”

मर्दों की नापाकी

15 1 रब ने मूसा और हारून से कहा,
2 “इस्राईलियों को बताना कि अगर किसी
मर्द को जरयान का मर्ज़ हो तो वह ख़ारिज होने वाले
माए के सबब से नापाक है, 3 चाहे माए बहता रहता
हो या रुक गया हो। 4 जिस चीज़ पर भी मरीज़ लेटता
या बैठता है वह नापाक है। 5–6 जो भी उस के लेटने
की जगह को छुए या उस के बैठने की जगह पर
बैठ जाए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम
तक नापाक रहेगा। 7 इसी तरह जो भी ऐसे मरीज़ को
छुए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम तक
नापाक रहेगा। 8 अगर मरीज़ किसी पाक शख़्स पर
थूके तो यही कुछ करना है और वह शख़्स शाम तक
नापाक रहेगा। 9 जब ऐसा मरीज़ किसी जानवर पर
सवार होता है तो हर चीज़ जिस पर वह बैठ जाता
है नापाक है। 10 जो भी ऐसी चीज़ छुए या उसे उठा
कर ले जाए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह
शाम तक नापाक रहेगा। 11 जिस किसी को भी मरीज़
अपने हाथ धोए बग़ैर छुए वह अपने कपड़े धो कर
नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 12 मिट्टी का जो
बर्तन ऐसा मरीज़ छुए उसे तोड़ दिया जाए। लकड़ी
का जो बर्तन वह छुए उसे ख़ूब धोया जाए।

13 जिसे इस मर्ज़ से शिफ़ा मिली है वह सात दिन
इन्तिज़ार करे। इस के बाद वह ताज़ा पानी से अपने
कपड़े धो कर नहा ले। फिर वह पाक हो जाएगा।
14 आठवें दिन वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर
ले कर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के सामने

इमाम को दे। 15 इमाम उन में से एक को गुनाह की
क़ुर्बानी के तौर पर और दूसरे को भस्म होने वाली
क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाए। यूँ वह रब के सामने उस
का कफ़्फ़ारा देगा।

16 अगर किसी मर्द का नुत्फ़ा ख़ारिज हो जाए तो
वह अपने पूरे जिस्म को धो ले। वह शाम तक नापाक
रहेगा। 17 हर कपड़ा या चमड़ा जिस से नुत्फ़ा लग
गया हो उसे धोना है। वह भी शाम तक नापाक रहेगा।
18 अगर मर्द और औरत के हमबिसतर होने पर नुत्फ़ा
ख़ारिज हो जाए तो लाज़िम है कि दोनों नहा लें। वह
शाम तक नापाक रहेंगे।

औरतों की नापाकी

19 माहवारी के वक़्त औरत सात दिन तक नापाक
है। जो भी उसे छुए वह शाम तक नापाक रहेगा।
20 इस दौरान जिस चीज़ पर भी वह लेटती या बैठती
है वह नापाक है। 21–23 जो भी उस के लेटने की जगह
को छुए या उस के बैठने की जगह पर बैठ जाए वह
अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक
रहेगा। 24 अगर मर्द औरत से हमबिसतर हो और उसी
वक़्त माहवारी के दिन शुरू हो जाएँ तो मर्द ख़ून लगने
के बाइस सात दिन तक नापाक रहेगा। जिस चीज़ पर
भी वह लेटता है वह नापाक हो जाएगी।

25 अगर किसी औरत को माहवारी के दिन छोड़
कर किसी और वक़्त कई दिनों तक ख़ून आए या
ख़ून माहवारी के दिनों के बाद भी जारी रहे तो वह
माहवारी के दिनों की तरह उस वक़्त तक नापाक
रहेगी जब तक ख़ून रुक न जाए। 26 जिस चीज़ पर
भी वह लेटती या बैठती है वह नापाक है। 27 जो भी
ऐसी चीज़ को छुए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले।
वह शाम तक नापाक रहेगा। 28 ख़ून के रुक जाने
पर औरत मज़ीद सात दिन इन्तिज़ार करे। फिर वह
पाक होगी। 29 आठवें दिन वह दो क़ुम्रियाँ या दो
जवान कबूतर ले कर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े
पर इमाम के पास आए। 30 इमाम उन में से एक को
गुनाह की क़ुर्बानी के लिए और दूसरे को भस्म होने
वाली क़ुर्बानी के लिए चढ़ाए। यूँ वह रब के सामने
उस की नापाकी का कफ़्फ़ारा देगा।

31 लाज़िम है कि इस्राईलियों को ऐसी चीज़ों से दूर
रखा जाए जिन से वह नापाक हो जाएँ। वर्ना मेरा वह
मक़्दिस जो उन के दरमियान है उन से नापाक हो
जाएगा और वह हलाक हो जाएंगे।

32 लाज़िम है कि इस क़िस्म के मुआमलों से ऐसे
निपटो जैसे बयान किया गया है। इस में वह मर्द
शामिल है जो जरयान का मरीज़ है और वह जो नुत्फ़ा
ख़ारिज होने के बाइस नापाक है। 33 इस में वह औरत
भी शामिल है जिस के माहवारी के अय्याम हैं और
वह मर्द जो नापाक औरत से हमबिसतर हो जाता
है।”

यौम-ए-कफ़्फ़ारा

16 1 जब हारून के दो बेटे रब के क़रीब आ
कर हलाक हुए तो इस के बाद रब मूसा से
हमकलाम हुआ। 2 उस ने कहा,

“अपने भाई हारून को बताना कि वह सिर्फ़ मुक़र्ररा
वक़्त पर पर्दे के पीछे मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल
हो कर अह्द के सन्दूक़ के ढकने के सामने खड़ा हो
जाए, वर्ना वह मर जाएगा। क्यूँकि मैं ख़ुद उस ढकने
के ऊपर बादल की सूरत में ज़ाहिर होता हूँ। 3 और
जब भी वह दाख़िल हो तो गुनाह की क़ुर्बानी के लिए
एक जवान बैल और भस्म होने वाली क़ुर्बानी के
लिए एक मेंढा पेश करे। 4 पहले वह नहा कर इमाम
के कतान के मुक़द्दस कपड़े पहन ले यानी ज़ेरजामा,
उस के नीचे पाजामा, फिर कमरबन्द और पगड़ी।
5 इस्राईल की जमाअत हारून को गुनाह की क़ुर्बानी
के लिए दो बकरे और भस्म होने वाली क़ुर्बानी के
लिए एक मेंढा दे।

6 पहले हारून अपने और अपने घराने के लिए
जवान बैल को गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाए।
7 फिर वह दोनों बकरों को मुलाक़ात के ख़ैमे के
दरवाज़े पर रब के सामने ले आए। 8 वहाँ वह क़ुरआ
डाल कर एक को रब के लिए चुने और दूसरे को

अज़ाज़ेल के लिए। 9 जो बकरा रब के लिए है उसे
वह गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। 10 दूसरा
बकरा जो क़ुरए के ज़रीए अज़ाज़ेल के लिए चुना गया
उसे ज़िन्दा हालत में रब के सामने खड़ा किया जाए
ताकि वह जमाअत का कफ़्फ़ारा दे। वहाँ से उसे
रेगिस्तान में अज़ाज़ेल के पास भेजा जाए।

11 लेकिन पहले हारून जवान बैल को गुनाह की
क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ा कर अपना और अपने घराने
का कफ़्फ़ारा दे। उसे ज़बह करने के बाद 12 वह बख़ूर
की क़ुर्बानगाह से जलते हुए कोएलों से भरा हुआ
बर्तन ले कर अपनी दोनों मुट्ठियाँ बारीक ख़ुश्बूदार
बख़ूर से भर ले और मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल
हो जाए। 13 वहाँ वह रब के हुज़ूर बख़ूर को जलते
हुए कोएलों पर डाल दे। इस से पैदा होने वाला धुआँ
अह्द के सन्दूक़ का ढकना छुपा देगा ताकि हारून
मर न जाए। 14 अब वह जवान बैल के ख़ून में से
कुछ ले कर अपनी उंगली से ढकने के सामने वाले
हिस्से पर छिड़के, फिर कुछ अपनी उंगली से सात
बार उस के सामने ज़मीन पर छिड़के। 15 इस के बाद
वह उस बकरे को ज़बह करे जो क़ौम के लिए गुनाह
की क़ुर्बानी है। वह उस का ख़ून मुक़द्दसतरीन कमरे
में ले आए और उसे बैल के ख़ून की तरह अह्द के
सन्दूक़ के ढकने पर और सात बार उस के सामने
ज़मीन पर छिड़के। 16 यूँ वह मुक़द्दसतरीन कमरे का
कफ़्फ़ारा देगा जो इस्राईलियों की नापाकियों और
तमाम गुनाहों से मुतअस्सिर होता रहता है। इस से
वह मुलाक़ात के पूरे ख़ैमे का भी कफ़्फ़ारा देगा जो
ख़ैमागाह के दरमियान होने के बाइस इस्राईलियों की
नापाकियों से मुतअस्सिर होता रहता है।

17 जितना वक़्त हारून अपना, अपने घराने का और
इस्राईल की पूरी जमाअत का कफ़्फ़ारा देने के लिए
मुक़द्दसतरीन कमरे में रहेगा इस दौरान किसी दूसरे
को मुलाक़ात के ख़ैमे में ठहरने की इजाज़त नहीं है।
18 फिर वह मुक़द्दसतरीन कमरे से निकल कर ख़ैमे
में रब के सामने पड़ी क़ुर्बानगाह का कफ़्फ़ारा दे।
वह बैल और बकरे के ख़ून में से कुछ ले कर उसे
क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर लगाए। 19 कुछ ख़ून
वह अपनी उंगली से सात बार उस पर छिड़क दे। यूँ
वह उसे इस्राईलियों की नापाकियों से पाक करके
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करेगा।

20 मुक़द्दसतरीन कमरे, मुलाक़ात के ख़ैमे और
क़ुर्बानगाह का कफ़्फ़ारा देने के बाद हारून ज़िन्दा
बकरे को सामने लाए। 21 वह अपने दोनों हाथ उस
के सर पर रखे और इस्राईलियों के तमाम क़ुसूर यानी
उन के तमाम जराइम और गुनाहों का इक़्रार करके
उन्हें बकरे के सर पर डाल दे। फिर वह उसे रेगिस्तान
में भेज दे। इस के लिए वह बकरे को एक आदमी के
सपुर्द करे जिसे यह ज़िम्मादारी दी गई है। 22 बकरा
अपने आप पर उन का तमाम क़ुसूर उठा कर किसी
वीरान जगह में ले जाएगा। वहाँ साथ वाला आदमी
उसे छोड़ आए।

23 इस के बाद हारून मुलाक़ात के ख़ैमे में जाए
और कतान के वह कपड़े जो उस ने मुक़द्दसतरीन
कमरे में दाख़िल होने से पेशतर पहन लिए थे उतार
कर वहीं छोड़ दे। 24 वह मुक़द्दस जगह पर नहा कर
अपनी ख़िदमत के आम कपड़े पहन ले। फिर वह
बाहर आ कर अपने और अपनी क़ौम के लिए भस्म
होने वाली क़ुर्बानी पेश करे ताकि अपना और अपनी
क़ौम का कफ़्फ़ारा दे। 25 इस के इलावा वह गुनाह
की क़ुर्बानी की चर्बी क़ुर्बानगाह पर जला दे।

26 जो आदमी अज़ाज़ेल के लिए बकरे को रेगिस्तान
में छोड़ आया है वह अपने कपड़े धो कर नहा ले।
इस के बाद वह ख़ैमागाह में आ सकता है।

27 जिस बैल और बकरे को गुनाह की क़ुर्बानी के
लिए पेश किया गया और जिन का ख़ून कफ़्फ़ारा देने
के लिए मुक़द्दसतरीन कमरे में लाया गया, लाज़िम
है कि उन की खालें, गोश्त और गोबर ख़ैमागाह के
बाहर जला दिया जाए। 28 यह चीज़ें जलाने वाला बाद
में अपने कपड़े धो कर नहा ले। फिर वह ख़ैमागाह
में आ सकता है।

29 लाज़िम है कि सातवें महीने के दसवें दिन
इस्राईली और उन के दरमियान रहने वाले परदेसी

अपनी जान को दुख दें और काम न करें। यह
उसूल तुम्हारे लिए अबद तक क़ाइम रहे। 30 इस दिन
तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाएगा ताकि तुम्हें पाक किया
जाए। तब तुम रब के सामने अपने तमाम गुनाहों से
पाक ठहरोगे। 31 पूरा दिन आराम करो और अपनी
जान को दुख दो। यह उसूल अबद तक क़ाइम रहे।
32 इस दिन इमाम-ए-आज़म तुम्हारा कफ़्फ़ारा दे,
वह इमाम जिसे उस के बाप की जगह मसह किया
गया और इख़तियार दिया गया है। वह कतान के
मुक़द्दस कपड़े पहन कर 33 मुक़द्दसतरीन कमरे,
मुलाक़ात के ख़ैमे, क़ुर्बानगाह, इमामों और जमाअत
के तमाम लोगों का कफ़्फ़ारा दे। 34 लाज़िम है कि
साल में एक दफ़ा इस्राईलियों के तमाम गुनाहों का
कफ़्फ़ारा दिया जाए। यह उसूल तुम्हारे लिए अबद
तक क़ाइम रहे।"

सब कुछ वैसे ही किया गया जैसा रब ने मूसा को
हुक्म दिया था।

क़ुर्बानी चढ़ाने का मक़ाम

17 1 रब ने मूसा से कहा, 2 "हारून, उस के
बेटों और तमाम इस्राईलियों को हिदायत
देना 3–4 कि जो भी इस्राईली अपनी गाय या भेड़-
बकरी मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब को
क़ुर्बानी के तौर पर पेश न करे बल्कि ख़ैमागाह के
अन्दर या बाहर किसी और जगह पर ज़बह करे
वह ख़ून बहाने का क़ुसूरवार ठहरेगा। उस ने ख़ून
बहाया है, और लाज़िम है कि उसे उस की क़ौम में
से मिटाया जाए। 5 इस हिदायत का मक़सद यह है
कि इस्राईली अब से अपनी क़ुर्बानियाँ खुले मैदान
में ज़बह न करें बल्कि रब को पेश करें। वह अपने
जानवरों को मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम
के पास ला कर उन्हें रब को सलामती की क़ुर्बानी
के तौर पर पेश करें। 6 इमाम उन का ख़ून मुलाक़ात
के ख़ैमे के दरवाज़े पर की क़ुर्बानगाह पर छिड़के
और उन की चर्बी उस पर जला दे। ऐसी क़ुर्बानी की
ख़ुश्बू रब को पसन्द है। 7 अब से इस्राईली अपनी
क़ुर्बानियाँ उन बकरों के देवताओं को पेश न करें
जिन की पैरवी करके उन्हों ने ज़िना किया है। यह
उन के लिए और उन के बाद आने वाली नस्लों के
लिए एक दाइमी उसूल है।

8 लाज़िम है कि हर इस्राईली और तुम्हारे दरमियान
रहने वाला परदेसी अपनी भस्म होने वाली क़ुर्बानी
या कोई और क़ुर्बानी 9 मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े
पर ला कर रब को पेश करे। वर्ना उसे उस की क़ौम
में से मिटाया जाएगा।

ख़ून खाना मना है

10 ख़ून खाना बिलकुल मना है। जो भी इस्राईली
या तुम्हारे दरमियान रहने वाला परदेसी ख़ून खाए मैं
उस के ख़िलाफ़ हो जाऊँगा और उसे उस की क़ौम
में से मिटा डालूँगा। 11 क्यूँकि हर मख़्लूक़ के ख़ून में
उस की जान है। मैं ने उसे तुम्हें दे दिया है ताकि वह
क़ुर्बानगाह पर तुम्हारा कफ़्फ़ारा दे। क्यूँकि ख़ून ही
उस जान के ज़रीए जो उस में है तुम्हारा कफ़्फ़ारा देता
है। 12 इस लिए मैं कहता हूँ कि न कोई इस्राईली न
कोई परदेसी ख़ून खाए।

13 अगर कोई भी इस्राईली या परदेसी किसी
जानवर या परिन्दे का शिकार करके पकड़े जिसे
खाने की इजाज़त है तो वह उसे ज़बह करने के बाद
उस का पूरा ख़ून ज़मीन पर बहने दे और ख़ून पर
मिट्टी डाले। 14 क्यूँकि हर मख़्लूक़ का ख़ून उस की
जान है। इस लिए मैं ने इस्राईलियों को कहा है कि
किसी भी मख़्लूक़ का ख़ून न खाओ। हर मख़्लूक़
का ख़ून उस की जान है, और जो भी उसे खाए उसे
क़ौम में से मिटा देना है।

15 अगर कोई भी इस्राईली या परदेसी ऐसे जानवर
का गोश्त खाए जो फ़ित्री तौर पर मर गया या जिसे
जंगली जानवरों ने फाड़ डाला हो तो वह अपने कपड़े
धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 16 जो
ऐसा नहीं करता उसे अपने क़ुसूर की सज़ा भुगतनी
पड़ेगी।"

नाजाइज़ जिन्सी ताल्लुक़ात

18 1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इस्राईलियों
को बताना कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
3 मिस्रियों की तरह ज़िन्दगी न गुज़ारना जिन में तुम
रहते थे। मुल्क-ए-कनआन के लोगों की तरह भी
ज़िन्दगी न गुज़ारना जिन के पास मैं तुम्हें ले जा
रहा हूँ। उन के रस्म-ओ-रिवाज न अपनाना। 4 मेरे
ही अह्काम पर अमल करो और मेरी हिदायात
के मुताबिक़ चलो। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 5 मेरी
हिदायात और अह्काम के मुताबिक़ चलना, क्यूँकि
जो यूँ करेगा वह जीता रहेगा। मैं रब हूँ।

6 तुम में से कोई भी अपनी क़रीबी रिश्तेदार से
हमबिसतर न हो। मैं रब हूँ।

7 अपनी माँ से हमबिसतर न होना, वर्ना तेरे बाप
की बेहुरमती हो जाएगी। वह तेरी माँ है, इस लिए
उस से हमबिसतर न होना।

8 अपने बाप की किसी भी बीवी से हमबिसतर न
होना, वर्ना तेरे बाप की बेहुरमती हो जाएगी।

9 अपनी बहन से हमबिसतर न होना, चाहे वह तेरे
बाप या तेरी माँ की बेटी हो, चाहे वह तेरे ही घर में
या कहीं और पैदा हुई हो।

10 अपनी पोती या नवासी से हमबिसतर न होना,
वर्ना तेरी अपनी बेहुरमती हो जाएगी।

11 अपने बाप की बीवी की बेटी से हमबिसतर न
होना। वह तेरी बहन है।

12 अपनी फूफी से हमबिसतर न होना। वह तेरे बाप
की क़रीबी रिश्तेदार है।

13 अपनी ख़ाला से हमबिसतर न होना। वह तेरी माँ
की क़रीबी रिश्तेदार है।

14 अपने बाप के भाई की बीवी से हमबिसतर न
होना, वर्ना तेरे बाप के भाई की बेहुरमती हो जाएगी।
उस की बीवी तेरी चची है।

15 अपनी बहू से हमबिसतर न होना। वह तेरे बेटे
की बीवी है।

16 अपनी भाबी से हमबिसतर न होना, वर्ना तेरे भाई
की बेहुरमती हो जाएगी।

17 अगर तेरा जिन्सी ताल्लुक़ किसी औरत से हो तो
उस की बेटी, पोती या नवासी से हमबिसतर होना
मना है, क्यूँकि वह उस की क़रीबी रिश्तेदार हैं। ऐसा
करना बड़ी शर्मनाक हरकत है।

18 अपनी बीवी के जीते जी उस की बहन से शादी
न करना।

19 किसी औरत से उस की माहवारी के दिनों में
हमबिसतर न होना। इस दौरान वह नापाक है।

20 किसी दूसरे मर्द की बीवी से हमबिसतर न होना,
वर्ना तू अपने आप को नापाक करेगा।

21 अपने किसी भी बच्चे को मलिक देवता को
क़ुर्बानी के तौर पर पेश करके जला देना मना है। ऐसी
हरकत से तू अपने ख़ुदा के नाम को दाग़ लगाएगा।
मैं रब हूँ।

22 मर्द दूसरे मर्द के साथ जिन्सी ताल्लुक़ात न रखे।
ऐसी हरकत क़ाबिल-ए-घिन है।

23 किसी जानवर से जिन्सी ताल्लुक़ात न रखना, वर्ना
तू नापाक हो जाएगा। औरतों के लिए भी ऐसा करना
मना है। यह बड़ी शर्मनाक हरकत है।

24 ऐसी हरकतों से अपने आप को नापाक न
करना। क्यूँकि जो क़ौमें मैं तुम्हारे आगे मुल्क से
निकालूँगा वह इसी तरह नापाक होती रहीं। 25 मुल्क
ख़ुद भी नापाक हुआ। इस लिए मैं ने उसे उस के
क़ुसूर के सबब से सज़ा दी, और नतीजे में उस
ने अपने बाशिन्दों को उगल दिया। 26 लेकिन तुम
मेरी हिदायात और अह्काम के मुताबिक़ चलो। न
देसी और न परदेसी ऐसी कोई घिनौनी हरकत करें।
27 क्यूँकि यह तमाम क़ाबिल-ए-घिन बातें उन से हुईं
जो तुम से पहले इस मुल्क में रहते थे। यूँ मुल्क
नापाक हुआ। 28 लिहाज़ा अगर तुम भी मुल्क को
नापाक करोगे तो वह तुम्हें इसी तरह उगल देगा
जिस तरह उस ने तुम से पहले मौजूद क़ौमों को उगल
दिया। 29 जो भी मज़कूरा घिनौनी हरकतों में से एक
करे उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए। 30 मेरे

अह्काम के मुताबिक़ चलते रहो और ऐसे क़ाबिल-
ए-घिन रस्म-ओ-रिवाज न अपनाना जो तुम्हारे आने
से पहले राइज थे। इन से अपने आप को नापाक न
करना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

मुक़द्दस क़ौम के लिए हिदायात

19 1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इस्राईलियों की
पूरी जमाअत को बताना कि मुक़द्दस रहो,
क्यूँकि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा क़ुद्दूस हूँ।
3 तुम में से हर एक अपने माँ-बाप की इज़्ज़त करे।
हफ़्ते के दिन काम न करना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
4 न बुतों की तरफ़ रुजू करना, न अपने लिए देवता
ढालना। मैं ही रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
5 जब तुम रब को सलामती की क़ुर्बानी पेश करते
हो तो उसे यूँ चढ़ाओ कि तुम मन्ज़ूर हो जाओ। 6 उस
का गोश्त उसी दिन या अगले दिन खाया जाए। जो भी
तीसरे दिन तक बच जाता है उसे जलाना है। 7 अगर
कोई उसे तीसरे दिन खाए तो उसे इल्म होना चाहिए
कि यह क़ुर्बानी नापाक है और रब को पसन्द नहीं है।
8 ऐसे शख़्स को अपने क़ुसूर की सज़ा उठानी पड़ेगी,
क्यूँकि उस ने उस चीज़ की मुक़द्दस हालत ख़त्म की
है जो रब के लिए मख़्सूस की गई थी। उसे उस की
क़ौम में से मिटाया जाए।
9 कटाई के वक़्त अपनी फ़सल पूरे तौर पर न
काटना बल्कि खेत के किनारों पर कुछ छोड़ देना।
इस तरह जो कुछ कटाई करते वक़्त खेत में बच जाए
उसे छोड़ना। 10 अंगूर के बाग़ों में भी जो कुछ अंगूर
तोड़ते वक़्त बच जाए उसे छोड़ देना। जो अंगूर ज़मीन
पर गिर जाएँ उन्हें उठा कर न ले जाना। उन्हें ग़रीबों
और परदेसियों के लिए छोड़ देना। मैं रब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ।
11 चोरी न करना, झूट न बोलना, एक दूसरे को
धोका न देना।
12 मेरे नाम की क़सम खा कर धोका न देना, वर्ना
तुम मेरे नाम को दाग़ लगाओगे। मैं रब हूँ।
13 एक दूसरे को न दबाना और न लूटना। किसी
की मज़दूरी उसी दिन की शाम तक दे देना और उसे
अगली सुब्ह तक रोके न रखना।
14 बहरे को न कोसना, न अंधे के रास्ते में कोई
चीज़ रखना जिस से वह ठोकर खाए। इस में भी अपने
ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना। मैं रब हूँ।
15 अदालत में किसी की हक़तल्फ़ी न करना।
फ़ैसला करते वक़्त किसी की भी जानिबदारी न
करना, चाहे वह ग़रीब या असर-ओ-रसूख़ वाला हो।
इन्साफ़ से अपने पड़ोसी की अदालत कर।
16 अपनी क़ौम में इधर उधर फिरते हुए किसी पर
बुह्तान न लगाना। कोई भी ऐसा काम न करना जिस
से किसी की जान ख़तरे में पड़ जाए। मैं रब हूँ।
17 दिल में अपने भाई से नफ़रत न करना। अगर
किसी की सरज़निश करनी है तो रू-ब-रू करना, वर्ना
तू उस के सबब से क़ुसूरवार ठहरेगा।
18 इन्तिक़ाम न लेना। अपनी क़ौम के किसी शख़्स
पर देर तक तेरा ग़ुस्सा न रहे बल्कि अपने पड़ोसी से
वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आप से रखता है।
मैं रब हूँ।
19 मेरी हिदायात पर अमल करो। दो मुख़्तलिफ़
क़िस्म के जानवरों को मिलाप न करने देना। अपने
खेत में दो क़िस्म के बीज न बोना। ऐसा कपड़ा न
पहनना जो दो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के धागों का बुना
हुआ हो।
20 अगर कोई आदमी किसी लौंडी से जिस की
मंगनी किसी और से हो चुकी हो हमबिसतर हो जाए
और लौंडी को अब तक न पैसों से न वैसे ही आज़ाद
किया गया हो तो मुनासिब सज़ा दी जाए। लेकिन उन्हें
सज़ा-ए-मौत न दी जाए, क्यूँकि उसे अब तक आज़ाद
नहीं किया गया। 21 क़ुसूरवार आदमी मुलाक़ात के
ख़ैमे के दरवाज़े पर एक मेंढा ले आए ताकि वह रब
को क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर पेश किया जाए।
22 इमाम इस क़ुर्बानी से रब के सामने उस के गुनाह
का कफ़्फ़ारा दे। यूँ उस का गुनाह मुआफ़ किया
जाएगा। 23 जब मुल्क-ए-कनआन में दाख़िल होने के

बाद तुम फलदार दरख़्त लगाओगे तो पहले तीन साल
उन का फल न खाना बल्कि उसे मम्नू [c]समझना।
24 चौथे साल उन का तमाम फल ख़ुशी के मुक़द्दस
नज़राने के तौर पर रब के लिए मख़्सूस किया जाए।
25 पाँचवें साल तुम उन का फल खा सकते हो। यूँ
तुम्हारी फ़सल बढ़ाई जाएगी। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
26 ऐसा गोश्त न खाना जिस में ख़ून हो। फ़ाल या
शुगून न निकालना।
27 अपने सर के बाल गोल शक्ल में न कटवाना, न
अपनी दाढ़ी को तराशना। 28 अपने आप को मुर्दों के
सबब से काट कर ज़ख़्मी न करना, न अपनी जिल्द
पर नुक़ूश गुदवाना। मैं रब हूँ।
29 अपनी बेटी को कस्बी न बनाना, वर्ना उस की
मुक़द्दस हालत जाती रहेगी और मुल्क ज़िनाकारी के
बाइस हरामकारी से भर जाएगा।
30 हफ़्ते के दिन आराम करना और मेरे मक़्दिस का
एहतिराम करना। मैं रब हूँ।
31 ऐसे लोगों के पास न जाना जो मुर्दों से राबिता
करते हैं, न ग़ैबदानों की तरफ़ रुजू करना, वर्ना तुम
उन से नापाक हो जाओगे। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
32 बूढ़े लोगों के सामने उठ कर खड़ा हो जाना,
बुज़ुर्गों की इज़्ज़त करना और अपने ख़ुदा का
एहतिराम करना। मैं रब हूँ।
33 जो परदेसी तुम्हारे मुल्क में तुम्हारे दरमियान
रहता है उसे न दबाना। 34 उस के साथ ऐसा सुलूक
कर जैसा अपने हमवतनों के साथ करता है। जिस
तरह तू अपने आप से मुहब्बत रखता है उसी तरह
उस से भी मुहब्बत रखना। याद रहे कि तुम ख़ुद मिस्र
में परदेसी थे। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
35 नाइन्साफ़ी न करना। न अदालत में, न लम्बाई
नापते वक़्त, न तोलते वक़्त और न किसी चीज़ की
मिक़्दार नापते वक़्त। 36 सहीह तराज़ू, सहीह बाट
और सहीह पैमाना इस्तेमाल करना। मैं रब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिस्र से निकाल लाया हूँ।
37 मेरी तमाम हिदायात और तमाम अह्काम मानो
और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ।”

जराइम की सज़ाएँ

20 1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इस्राईलियों को
बताना कि तुम में से जो भी अपने बच्चे
को मलिक देवता को क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे
उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। इस में कोई फ़र्क़ नहीं कि
वह इस्राईली है या परदेसी। जमाअत के लोग उसे
संगसार करें। 3 मैं ख़ुद ऐसे शख़्स के ख़िलाफ़ हो
जाऊँगा और उसे उस की क़ौम में से मिटा डालूँगा।
क्यूँकि अपने बच्चों को मलिक को पेश करने से उस ने
मेरे मक़्दिस को नापाक किया और मेरे नाम को दाग़
लगाया है। 4 अगर जमाअत के लोग अपनी आँखें
बन्द करके ऐसे शख़्स की हरकतें नज़रअन्दाज़ करें
और उसे सज़ा-ए-मौत न दें 5 तो फिर मैं ख़ुद ऐसे शख़्स
और उस के घराने के ख़िलाफ़ खड़ा हो जाऊँगा। मैं
उसे और उन तमाम लोगों को क़ौम में से मिटा डालूँगा
जिन्हों ने उस के पीछे लग कर मलिक देवता को
सिज्दा करने से ज़िना किया है।
6 जो शख़्स मुर्दों से राबिता करने और ग़ैबदानी
करने वालों की तरफ़ रुजू करता है मैं उस के ख़िलाफ़
हो जाऊँगा। उन की पैरवी करने से वह ज़िना करता
है। मैं उसे उस की क़ौम में से मिटा डालूँगा। 7 अपने
आप को मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रखो, क्यूँकि
मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 8 मेरी हिदायात मानो और
उन पर अमल करो। मैं रब हूँ जो तुम्हें मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस करता हूँ।
9 जिस ने भी अपने बाप या माँ पर लानत भेजी है
उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। इस हरकत से वह अपनी
मौत का ख़ुद ज़िम्मादार है।
10 अगर किसी मर्द ने किसी की बीवी के साथ ज़िना
किया है तो दोनों को सज़ा-ए-मौत देनी है।

---

[c]लफ़्ज़ी तर्जुमा : नामख़्तून।

11 जो मर्द अपने बाप की बीवी से हमबिसतर हुआ
है उस ने अपने बाप की बेहुरमती की है। दोनों
को सज़ा-ए-मौत देनी है। वह अपनी मौत के ख़ुद
ज़िम्मादार हैं।
12 अगर कोई मर्द अपनी बहू से हमबिसतर हुआ
है तो दोनों को सज़ा-ए-मौत देनी है। जो कुछ उन्हों
ने किया है वह निहायत शर्मनाक है। वह अपनी मौत
के ख़ुद ज़िम्मादार हैं।
13 अगर कोई मर्द किसी दूसरे मर्द से जिन्सी
ताल्लुक़ात रखे तो दोनों को इस घिनौनी हरकत के
बाइस सज़ा-ए-मौत देनी है। वह अपनी मौत के ख़ुद
ज़िम्मादार हैं।
14 अगर कोई आदमी अपनी बीवी के इलावा उस
की माँ से भी शादी करे तो यह एक निहायत शर्मनाक
बात है। दोनों को जला देना है ताकि तुम्हारे दरमियान
कोई ऐसी ख़बीस बात न रहे।
15 जो मर्द किसी जानवर से जिन्सी ताल्लुक़ात रखे
उसे सज़ा-ए-मौत देना है। उस जानवर को भी मार
दिया जाए। 16 जो औरत किसी जानवर से जिन्सी
ताल्लुक़ात रखे उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। उस जानवर
को भी मार दिया जाए। वह अपनी मौत के ख़ुद
ज़िम्मादार हैं।
17 जिस मर्द ने अपनी बहन से शादी की है उस ने
शर्मनाक हरकत की है, चाहे वह बाप की बेटी हो
या माँ की। उन्हें इस्राईली क़ौम की नज़रों से मिटाया
जाए। ऐसे शख़्स ने अपनी बहन की बेहुरमती की
है। इस लिए उसे ख़ुद अपने क़ुसूर के नतीजे बर्दाश्त
करने पड़ेंगे।
18 अगर कोई मर्द माहवारी के अय्याम में किसी
औरत से हमबिसतर हुआ है तो दोनों को उन की
क़ौम में से मिटाना है। क्यूँकि दोनों ने औरत के ख़ून
के मम्बा से पर्दा उठाया है।
19 अपनी ख़ाला या फूफी से हमबिसतर न होना।
क्यूँकि जो ऐसा करता है वह अपनी क़रीबी रिश्तेदार
की बेहुरमती करता है। दोनों को अपने क़ुसूर के
नतीजे बर्दाश्त करने पड़ेंगे।
20 जो अपनी चची या ताई से हमबिसतर हुआ है
उस ने अपने चचा या ताया की बेहुरमती की है। दोनों
को अपने क़ुसूर के नतीजे बर्दाश्त करने पड़ेंगे। वह
बेऔलाद मरेंगे।
21 जिस ने अपनी भाबी से शादी की है उस ने एक
नजिस हरकत की है। उस ने अपने भाई की बेहुरमती
की है। वह बेऔलाद रहेंगे।
22 मेरी तमाम हिदायात और अह्काम को मानो और
उन पर अमल करो। वर्ना जिस मुल्क में मैं तुम्हें ले जा
रहा हूँ वह तुम्हें उगल देगा। 23 उन क़ौमों के रस्म-
ओ-रिवाज के मुताबिक़ ज़िन्दगी न गुज़ारना जिन्हें
मैं तुम्हारे आगे से निकाल दूँगा। मुझे इस सबब से
उन से घिन आने लगी कि वह यह सब कुछ करते
थे। 24 लेकिन तुम से मैं ने कहा, 'तुम ही उन की
ज़मीन पर क़ब्ज़ा करोगे। मैं ही उसे तुम्हें दे दूँगा, ऐसा
मुल्क जिस में कस्रत का दूध और शहद है।' मैं रब
तुम्हारा ख़ुदा हूँ, जिस ने तुम को दीगर क़ौमों में से चुन
कर अलग कर दिया है। 25 इस लिए लाज़िम है कि
तुम ज़मीन पर चलने वाले जानवरों और परिन्दों में
पाक और नापाक का इम्तियाज़ करो। अपने आप को
नापाक जानवर खाने से क़ाबिल-ए-घिन न बनाना,
चाहे वह ज़मीन पर चलते या रेंगते हैं, चाहे हवा में
उड़ते हैं। मैं ही ने उन्हें तुम्हारे लिए नापाक क़रार
दिया है। 26 तुम्हें मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस होना
है, क्यूँकि मैं क़ुद्दूस हूँ, और मैं ने तुम्हें दीगर क़ौमों
में से चुन कर अपने लिए अलग कर लिया है।
27 तुम में से जो मुर्दों से राबिता या ग़ैबदानी करता
है उसे सज़ा-ए-मौत देनी है, ख़्वाह औरत हो या
मर्द। उन्हें संगसार करना। वह अपनी मौत के ख़ुद
ज़िम्मादार हैं।"

इमामों के लिए हिदायात

21 1 रब ने मूसा से कहा, "हारून के बेटों को
जो इमाम हैं बता देना कि इमाम अपने
आप को किसी इस्राईली की लाश के क़रीब जाने
से नापाक न करे 2 सिवाए अपने क़रीबी रिश्तेदारों

के यानी माँ, बाप, बेटा, बेटी, भाई 3 और जो
ग़ैरशादीशुदा बहन उस के घर में रहती है। 4 वह
अपनी क़ौम में किसी और के बाइस अपने आप को
नापाक न करे, वर्ना उस की मुक़द्दस हालत जाती
रहेगी।

5 इमाम अपने सर को न मुंडवाएँ। वह न अपनी
दाढ़ी को तराशें और न काटने से अपने आप को
ज़ख़्मी करें।

6 वह अपने ख़ुदा के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रहें
और अपने ख़ुदा के नाम को दाग़ न लगाएँ। चूँकि वह
रब को जलने वाली क़ुर्बानियाँ यानी अपने ख़ुदा की
रोटी पेश करते हैं इस लिए लाज़िम है कि वह मुक़द्दस
रहें। 7 इमाम ज़िनाकार औरत, मन्दिर की कस्बी या
तलाक़याफ़्ता औरत से शादी न करें, क्यूँकि वह
अपने रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं। 8 इमाम
को मुक़द्दस समझना, क्यूँकि वह तेरे ख़ुदा की रोटी
को क़ुर्बानगाह पर चढ़ाता है। वह तेरे लिए मुक़द्दस
ठहरे क्यूँकि मैं रब क़ुद्दूस हूँ। मैं ही तुम्हें मुक़द्दस
करता हूँ।

9 किसी इमाम की जो बेटी ज़िनाकारी से अपनी
मुक़द्दस हालत को ख़त्म कर देती है वह अपने बाप
की मुक़द्दस हालत को भी ख़त्म कर देती है। उसे
जला दिया जाए।

10 इमाम-ए-आज़म के सर पर मसह का तेल उंडेला
गया है और उसे इमाम-ए-आज़म के मुक़द्दस कपड़े
पहनने का इख़तियार दिया गया है। इस लिए वह
रंज के आलम में अपने बालों को बिखरने न दे, न
कभी अपने कपड़ों को फाड़े। 11 वह किसी लाश के
क़रीब न जाए, चाहे वह उस के बाप या माँ की लाश
क्यूँ न हो, वर्ना वह नापाक हो जाएगा। 12 जब तक
कोई लाश उस के घर में पड़ी रहे वह मक़्दिस को
छोड़ कर अपने घर न जाए, वर्ना वह मक़्दिस को
नापाक करेगा। क्यूँकि उसे उस के ख़ुदा के तेल
से मख़्सूस किया गया है। मैं रब हूँ। 13 इमाम-ए-
आज़म को सिर्फ़ कुंवारी से शादी की इजाज़त है।
14 वह बेवा, तलाक़याफ़्ता औरत, मन्दिर की कस्बी
या ज़िनाकार औरत से शादी न करे बल्कि सिर्फ़
अपने क़बीले की कुंवारी से, 15 वर्ना उस की औलाद
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस नहीं होगी। क्यूँकि मैं रब हूँ जो
उसे अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता हूँ।"

16 रब ने मूसा से यह भी कहा, 17 "हारून को बताना
कि तेरी औलाद में से कोई भी जिस के जिस्म में नुक़्स
हो मेरे हुज़ूर आ कर अपने ख़ुदा की रोटी न चढ़ाए।
यह उसूल आने वाली नस्लों के लिए भी अटल है।
18 क्यूँकि कोई भी माज़ूर मेरे हुज़ूर न आए, न अंधा,
न लंगड़ा, न वह जिस की नाक चिरी हुई हो या जिस
के किसी उज़ू में कमी बेशी हो, 19 न वह जिस का
पाँओ या हाथ टूटा हुआ हो, 20 न कुबड़ा, न बौना, न
वह जिस की आँख में नुक़्स हो या जिसे वबाई जिल्दी
बीमारी हो या जिस के ख़ुस्ये कुचले हुए हों। 21 हारून
इमाम की कोई भी औलाद जिस के जिस्म में नुक़्स हो
मेरे हुज़ूर आ कर रब को जलने वाली क़ुर्बानियाँ पेश
न करे। चूँकि उस में नुक़्स है इस लिए वह मेरे हुज़ूर
आ कर अपने ख़ुदा की रोटी न चढ़ाए। 22 उसे अल्लाह
की मुक़द्दस बल्कि मुक़द्दसतरीन क़ुर्बानियों में से भी
इमामों का हिस्सा खाने की इजाज़त है। 23 लेकिन
चूँकि उस में नुक़्स है इस लिए वह मुक़द्दसतरीन कमरे
के दरवाज़े के पर्दे के क़रीब न जाए, न क़ुर्बानगाह के
पास आए। वर्ना वह मेरी मुक़द्दस चीज़ों को नापाक
करेगा। क्यूँकि मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस करता हूँ।"

24 मूसा ने यह हिदायात हारून, उस के बेटों और
तमाम इस्राईलियों को दीं।

क़ुर्बानी का गोश्त खाने की हिदायात

22 1 रब ने मूसा से कहा, 2 "हारून और उस
के बेटों को बताना कि इस्राईलियों की उन
क़ुर्बानियों का एहतिराम करो जो तुम ने मेरे लिए
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस की हैं, वर्ना तुम मेरे नाम को
दाग़ लगाओगे। मैं रब हूँ। 3 जो इमाम नापाक होने
के बावुजूद उन क़ुर्बानियों के पास आ जाए जो
इस्राईलियों ने मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस की हैं

उसे मेरे सामने से मिटाना है। यह उसूल आने वाली नस्लों के लिए भी अटल है। मैं रब हूँ।

4 हारून की औलाद में से जो भी वबाई जिल्दी बीमारी या जरयान का मरीज़ हो उसे मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से अपना हिस्सा खाने की इजाज़त नहीं है। पहले वह पाक हो जाए। जो ऐसी कोई भी चीज़ छुए जो लाश से नापाक हो गई हो या ऐसे आदमी को छुए जिस का नुत्फ़ा निकला हो वह नापाक हो जाता है। 5 वह नापाक रेंगने वाले जानवर या नापाक शख़्स को छूने से भी नापाक हो जाता है, ख़्वाह वह किसी भी सबब से नापाक क्यूँ न हुआ हो। 6 जो ऐसी कोई भी चीज़ छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। इस के इलावा लाज़िम है कि वह मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से अपना हिस्सा खाने से पहले नहा ले। 7 सूरज के ग़ुरूब होने पर वह पाक होगा और मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से अपना हिस्सा खा सकेगा। क्यूँकि वह उस की रोज़ी हैं। 8 इमाम ऐसे जानवरों का गोश्त न खाए जो फ़ित्री तौर पर मर गए या जिन्हें जंगली जानवरों ने फाड़ डाला हो, वर्ना वह नापाक हो जाएगा। मैं रब हूँ।

9 इमाम मेरी हिदायात के मुताबिक़ चलें, वर्ना वह क़ुसूरवार बन जाएंगे और मुक़द्दस चीज़ों की बेहुरमती करने के सबब से मर जाएंगे। मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता हूँ।

10 सिर्फ़ इमाम के ख़ानदान के अफ़राद मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से खा सकते हैं। ग़ैरशहरी या मज़दूर को इजाज़त नहीं है। 11 लेकिन इमाम का ग़ुलाम या लौंडी उस में से खा सकते हैं, चाहे उन्हें ख़रीदा गया हो या वह उस के घर में पैदा हुए हों। 12 अगर इमाम की बेटी ने किसी ऐसे शख़्स से शादी की है जो इमाम नहीं है तो उसे मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से खाने की इजाज़त नहीं है। 13 लेकिन हो सकता है कि वह बेवा या तलाक़याफ़्ता हो और उस के बच्चे न हों। जब वह अपने बाप के घर लौट कर वहाँ ऐसे रहेगी जैसे अपनी जवानी में तो वह अपने बाप के उस खाने में से खा सकती है जो क़ुर्बानियों में से बाप का हिस्सा है। लेकिन जो इमाम के ख़ानदान का फ़र्द नहीं है उसे खाने की इजाज़त नहीं है।

14 जिस शख़्स ने नादानिस्ता तौर पर मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से इमाम के हिस्से से कुछ खाया है वह इमाम को सब कुछ वापस करने के इलावा 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। 15 इमाम रब को पेश की हुई क़ुर्बानियों की मुक़द्दस हालत यूँ ख़त्म न करें 16 कि वह दूसरे इस्राईलियों को यह मुक़द्दस चीज़ें खाने दें। ऐसी हरकत से वह उन को बड़ा क़ुसूरवार बना देंगे। मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता हूँ।”

जानवरों की क़ुर्बानियों के बारे में हिदायात

17 रब ने मूसा से कहा, 18 “हारून, उस के बेटों और इस्राईलियों को बताना कि अगर तुम में से कोई इस्राईली या परदेसी रब को भस्म होने वाली क़ुर्बानी पेश करना चाहे तो तरीक़-ए-कार में कोई फ़र्क़ नहीं है, चाहे वह यह मन्नत मान कर या वैसे ही दिली ख़ुशी से कर रहा हो। 19 इस के लिए लाज़िम है कि तुम एक बेऐब बैल, मेंढा या बकरा पेश करो। फिर ही उसे क़बूल किया जाएगा। 20 क़ुर्बानी के लिए कभी भी ऐसा जानवर पेश न करना जिस में नुक़्स हो, वर्ना तुम उस के बाइस मन्ज़ूर नहीं होगे। 21 अगर कोई रब को सलामती की क़ुर्बानी पेश करना चाहे तो तरीक़-ए-कार में कोई फ़र्क़ नहीं है, चाहे वह यह मन्नत मान कर या वैसे ही दिली ख़ुशी से कर रहा हो। इस के लिए लाज़िम है कि वह गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से बेऐब जानवर चुने। फिर उसे क़बूल किया जाएगा। 22 रब को ऐसे जानवर पेश न करना जो अंधे हों, जिन के आज़ा टूटे या कटे हुए हों, जिन को रसौली हो या जिन्हें वबाई जिल्दी बीमारी लग गई हो। रब को उन्हें जलने वाली क़ुर्बानी के तौर पर क़ुर्बानगाह पर पेश न करना। 23 लेकिन जिस गाय-बैल या भेड़-बकरी के किसी उज़्व में कमी बेशी हो उसे पेश किया जा सकता है। शर्त यह है कि पेश करने वाला उसे वैसे ही दिली ख़ुशी से चढ़ाए। अगर वह उसे अपनी मन्नत

मान कर पेश करे तो वह क़बूल नहीं किया जाएगा।
24 रब को ऐसा जानवर पेश न करना जिस के ख़ुस्ये
कुचले, तोड़े या कटे हुए हों। अपने मुल्क में जानवरों
को इस तरह ख़सी न बनाना, 25 न ऐसे जानवर किसी
ग़ैरमुल्की से ख़रीद कर अपने ख़ुदा की रोटी के तौर
पर पेश करना। तुम ऐसे जानवरों के बाइस मन्ज़ूर
नहीं होगे, क्यूँकि उन में ख़राबी और नुक़्स है।”
26 रब ने मूसा से यह भी कहा, 27 “जब किसी गाय,
भेड़ या बकरी का बच्चा पैदा होता है तो लाज़िम है कि
वह पहले सात दिन अपनी माँ के पास रहे। आठवें
दिन से पहले रब उसे जलने वाली क़ुर्बानी के तौर पर
क़बूल नहीं करेगा। 28 किसी गाय, भेड़ या बकरी के
बच्चे को उस की माँ समेत एक ही दिन ज़बह न करना।
29 जब तुम रब को सलामती की कोई क़ुर्बानी चढ़ाना
चाहते हो तो उसे यूँ पेश करना कि तुम मन्ज़ूर हो
जाओ। 30 अगली सुब्ह तक कुछ बचा न रहे बल्कि
उसे उसी दिन खाना है। मैं रब हूँ।
31 मेरे अह्काम मानो और उन पर अमल करो। मैं
रब हूँ। 32 मेरे नाम को दाग़ न लगाना। लाज़िम है कि
मुझे इस्राईलियों के दरमियान क़ुद्दूस माना जाए। मैं
रब हूँ जो तुम्हें अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता
हूँ। 33 मैं तुम्हें मिस्र से निकाल लाया हूँ ताकि तुम्हारा
ख़ुदा हूँ। मैं रब हूँ।”

23 1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इस्राईलियों को
बताना कि यह मेरी, रब की ईदें हैं जिन पर
तुम्हें लोगों को मुक़द्दस इजतिमा के लिए जमा करना
है।

सबत का दिन

3 हफ़्ते में छः दिन काम करना, लेकिन सातवाँ दिन
हर तरह से आराम का दिन है। उस दिन मुक़द्दस
इजतिमा हो। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ काम न
करना। यह दिन रब के लिए मख़्सूस सबत है।

फ़सह की ईद और बेख़मीरी रोटी की ईद

4 यह रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें लोगों को मुक़द्दस
इजतिमा के लिए जमा करना है।
5 फ़सह की ईद पहले महीने के चौधवें दिन शुरू
होती है। उस दिन सूरज के ग़ुरूब होने पर रब
की ख़ुशी मनाई जाए। 6 अगले दिन रब की याद में
बेख़मीरी रोटी की ईद शुरू होती है। सात दिन तक
तुम्हारी रोटी में ख़मीर न हो। 7 इन सात दिनों के पहले
दिन मुक़द्दस इजतिमा हो और लोग अपना हर काम
छोड़ें। 8 इन सात दिनों में रोज़ाना रब को जलने वाली
क़ुर्बानी पेश करो। सातवें दिन भी मुक़द्दस इजतिमा
हो और लोग अपना हर काम छोड़ें।”

पहले पूले की ईद

9 रब ने मूसा से कहा, 10 “इस्राईलियों को बताना
कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुम्हें
दूँगा और वहाँ अनाज की फ़सल काटोगे तो तुम्हें
इमाम को पहला पूला देना है। 11 इत्वार को इमाम
यह पूला रब के सामने हिलाए ताकि तुम मन्ज़ूर हो
जाओ। 12 उस दिन भेड़ का एक यकसाला बेऐब बच्चा
भी रब को पेश करना। उसे क़ुर्बानगाह पर भस्म होने
वाली क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाना। 13 साथ ही ग़ल्ला
की नज़र के लिए तेल से मिलाया गया 3 किलोग्राम
बेहतरीन मैदा भी पेश करना। जलने वाली यह क़ुर्बानी
रब को पसन्द है। इस के इलावा मै की नज़र के लिए
एक लिटर मै भी पेश करना। 14 पहले यह सब कुछ
करो, फिर ही तुम्हें नई फ़सल के अनाज से खाने की
इजाज़त होगी, ख़्वाह वह भुना हुआ हो, ख़्वाह कच्चा
या रोटी की सूरत में पकाया गया हो। जहाँ भी तुम
रहते हो वहाँ ऐसा ही करना है। यह उसूल अबद तक
क़ाइम रहे।

हफ़्तों की ईद यानी पन्तिकुस्त

15 जिस दिन तुम ने अनाज का पूला पेश किया उस
दिन से पूरे सात हफ़्ते गिनो। 16 पचासवें दिन यानी

सातवें इत्वार को रब को नए अनाज की क़ुर्बानी
चढ़ाना। 17 हर घराने की तरफ़ से रब को हिलाने
वाली क़ुर्बानी के तौर पर दो रोटियाँ पेश की जाएँ।
हर रोटी के लिए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा इस्तेमाल
किया जाए। उन में ख़मीर डाल कर पकाना है। यह
फ़सल की पहली पैदावार की क़ुर्बानी हैं। 18 इन
रोटियों के साथ एक जवान बैल, दो मेंढे और भेड़
के सात बेऐब और यकसाला बच्चे पेश करो। उन्हें
रब के हुज़ूर भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर
चढ़ाना। इस के इलावा ग़ल्ला की नज़र और मै की
नज़र भी पेश करनी है। जलने वाली इस क़ुर्बानी की
ख़ुश्बू रब को पसन्द है। 19 फिर गुनाह की क़ुर्बानी
के लिए एक बकरा और सलामती की क़ुर्बानी के
लिए दो यकसाला भेड़ के बच्चे चढ़ाओ। 20 इमाम भेड़
के यह दो बच्चे मज़कूरा रोटियों समेत हिलाने वाली
क़ुर्बानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। यह रब
के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं और क़ुर्बानियों में से
इमाम का हिस्सा हैं। 21 उसी दिन लोगों को मुक़द्दस
इजतिमा के लिए जमा करो। कोई भी काम न करना।
यह उसूल अबद तक क़ाइम रहे, और इसे हर जगह
मानना है।

22 कटाई के वक़्त अपनी फ़सल पूरे तौर पर न
काटना बल्कि खेत के किनारों पर कुछ छोड़ देना।
इस तरह जो कुछ कटाई करते वक़्त खेत में बच
जाए उसे छोड़ना। बचा हुआ अनाज ग़रीबों और
परदेसियों के लिए छोड़ देना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा
हूँ।"

नए साल की ईद

23 रब ने मूसा से कहा, 24 "इस्राईलियों को बताना
कि सातवें महीने का पहला दिन आराम का दिन है।
उस दिन मुक़द्दस इजतिमा हो जिस पर याद दिलाने के
लिए नरसिंगा फूँका जाए। 25 कोई भी काम न करना।
रब को जलने वाली क़ुर्बानी पेश करना।"

कफ़्फ़ारा का दिन

26 रब ने मूसा से कहा, 27 "सातवें महीने का दसवाँ
दिन कफ़्फ़ारा का दिन है। उस दिन मुक़द्दस इजतिमा
हो। अपनी जान को दुख देना और रब को जलने
वाली क़ुर्बानी पेश करना। 28 उस दिन काम न करना,
क्यूँकि यह कफ़्फ़ारा का दिन है, जब रब तुम्हारे ख़ुदा
के सामने तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाता है। 29 जो उस
दिन अपनी जान को दुख नहीं देता उसे उस की क़ौम
में से मिटाया जाए। 30 जो उस दिन काम करता है उसे
मैं उस की क़ौम में से निकाल कर हलाक करूँगा।
31 कोई भी काम न करना। यह उसूल अबद तक
क़ाइम रहे, और इसे हर जगह मानना है। 32 यह दिन
आराम का ख़ास दिन है जिस में तुम्हें अपनी जान को
दुख देना है। इसे महीने के नवें दिन की शाम से ले
कर अगली शाम तक मनाना।"

झोंपड़ियों की ईद

33 रब ने मूसा से कहा, 34 "इस्राईलियों को बताना
कि सातवें महीने के पंद्रहवें दिन झोंपड़ियों की ईद
शुरू होती है। इस का दौरानिया सात दिन है। 35 पहले
दिन मुक़द्दस इजतिमा हो। इस दिन कोई काम न
करना। 36 इन सात दिनों के दौरान रब को जलने
वाली क़ुर्बानियाँ पेश करना। आठवें दिन मुक़द्दस
इजतिमा हो। रब को जलने वाली क़ुर्बानी पेश करो।
इस ख़ास इजतिमा के दिन भी काम नहीं करना है।

37 यह रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें मुक़द्दस इजतिमा
करना है ताकि रब को रोज़मर्रा की मतलूबा जलने
वाली क़ुर्बानियाँ और मै की नज़रें पेश की जाएँ यानी
भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ, ग़ल्ला की नज़रें, ज़बह की
क़ुर्बानियाँ और मै की नज़रें। 38 यह क़ुर्बानियाँ उन
क़ुर्बानियों के इलावा हैं जो सबत के दिन चढ़ाई जाती
हैं और जो तुम ने हदिए के तौर पर या मन्नत मान कर
या अपनी दिली ख़ुशी से पेश की हैं।

39 चुनाँचे सातवें महीने के पंद्रहवें दिन फ़सल की
कटाई के इख़तिताम पर रब की यह ईद यानी

झोंपड़ियों की ईद मनाओ। इसे सात दिन मनाना।
पहला और आख़िरी दिन आराम के दिन हैं। 40 पहले
दिन अपने लिए दरख़्तों के बेहतरीन फल, खजूर
की डालियाँ और घने दरख़्तों और सफ़ेदा की शाख़ें
तोड़ना। सात दिन तक रब अपने ख़ुदा के सामने ख़ुशी
मनाओ। 41 हर साल सातवें महीने में रब की ख़ुशी में
यह ईद मनाना। यह उसूल अबद तक क़ाइम रहे।
42 ईद के हफ़्ते के दौरान झोंपड़ियों में रहना। तमाम
मुल्क में आबाद इस्राईली ऐसा करें। 43 फिर तुम्हारी
औलाद जानेगी कि इस्राईलियों को मिस्र से निकालते
वक़्त मैं ने उन्हें झोंपड़ियों में बसाया। मैं रब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ।"

44 मूसा ने इस्राईलियों को रब की ईदों के बारे में
यह बातें बताईं।

रब के सामने शमादान और रोटियाँ

24 1 रब ने मूसा से कहा, 2 "इस्राईलियों को
हुक्म दे कि वह तेरे पास कूटे हुए ज़ैतूनों
का ख़ालिस तेल ले आएँ ताकि मुक़द्दस कमरे के
शमादान के चराग़ मुतवातिर जलते रहें। 3 हारून उन्हें
मुसलसल, शाम से ले कर सुब्ह तक रब के हुज़ूर
सँभाले यानी वहाँ जहाँ वह मुक़द्दसतरीन कमरे के
पर्दे के सामने पड़े हैं, उस पर्दे के सामने जिस के पीछे
अह्द का सन्दूक़ है। यह उसूल अबद तक क़ाइम
रहे। 4 वह ख़ालिस सोने के शमादान पर लगे चराग़ों
की देख-भाल यूँ करे कि यह हमेशा रब के सामने
जलते रहें।

5 बारह रोटियाँ पकाना। हर रोटी के लिए 3
किलोग्राम बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए।
6 उन्हें दो क़तारों में रब के सामने ख़ालिस सोने
की मेज़ पर रखना। 7 हर क़तार पर ख़ालिस लुबान
डालना। यह लुबान रोटी के लिए यादगारी की
क़ुर्बानी है जिसे बाद में रब के लिए जलाना है। 8 हर
हफ़्ते को रब के सामने ताज़ा रोटियाँ इसी तर्तीब से
मेज़ पर रखनी हैं। यह इस्राईलियों के लिए अबदी
अह्द की लाज़िमी शर्त है। 9 मेज़ की रोटियाँ हारून
और उस के बेटों का हिस्सा हैं, और वह उन्हें
मुक़द्दस जगह पर खाएँ, क्यूँकि वह जलने वाली
क़ुर्बानियों का मुक़द्दसतरीन हिस्सा हैं। यह अबद
तक उन का हक़ रहेगा।"

अल्लाह की तौहीन, ख़ूँरेज़ी और ज़ख़्मी करने की सज़ाएँ

10–11 ख़ैमागाह में एक आदमी था जिस का बाप
मिस्री और माँ इस्राईली थी। माँ का नाम सलूमीत
था। वह दिब्री की बेटी और दान के क़बीले की थी।
एक दिन यह आदमी ख़ैमागाह में किसी इस्राईली से
झगड़ने लगा। लड़ते लड़ते उस ने रब के नाम पर कुफ़्र
बक कर उस पर लानत भेजी। यह सुन कर लोग उसे
मूसा के पास ले आए। 12 वहाँ उन्हों ने उसे पहरे में
बिठा कर रब की हिदायत का इन्तिज़ार किया।

13 तब रब ने मूसा से कहा, 14 "लानत करने वाले
को ख़ैमागाह के बाहर ले जाओ। जिन्हों ने उस
की यह बातें सुनी हैं वह सब अपने हाथ उस के
सर पर रखें। फिर पूरी जमाअत उसे संगसार करे।
15 इस्राईलियों से कहना कि जो भी अपने ख़ुदा पर
लानत भेजे उसे अपने क़ुसूर के नतीजे बर्दाश्त करने
पड़ेंगे। 16 जो भी रब के नाम पर कुफ़्र बके उसे सज़ा-
ए-मौत दी जाए। पूरी जमाअत उसे संगसार करे। जिस
ने रब के नाम पर कुफ़्र बका हो उसे ज़रूर सज़ा-ए-
मौत देनी है, ख़्वाह देसी हो या परदेसी।

17 जिस ने किसी को मार डाला है उसे सज़ा-ए-
मौत दी जाए। 18 जिस ने किसी के जानवर को मार
डाला है वह उस का मुआवज़ा दे। जान के बदले
जान दी जाए। 19 अगर किसी ने किसी को ज़ख़्मी
कर दिया है तो वही कुछ उस के साथ किया जाए
जो उस ने दूसरे के साथ किया है। 20 अगर दूसरे की
कोई हड्डी टूट जाए तो उस की वही हड्डी तोड़ी जाए।
अगर दूसरे की आँख ज़ाए हो जाए तो उस की आँख
ज़ाए कर दी जाए। अगर दूसरे का दाँत टूट जाए तो
उस का वही दाँत तोड़ा जाए। जो भी ज़ख़्म उस ने
दूसरे को पहुँचाया वही ज़ख़्म उसे पहुँचाया जाए।

21 जिस ने किसी जानवर को मार डाला है वह उस
का मुआवज़ा दे, लेकिन जिस ने किसी इन्सान को
मार दिया है उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। 22 देसी और
परदेसी के लिए तुम्हारा एक ही क़ानून हो। मैं रब
तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”
23 फिर मूसा ने इस्राईलियों से बात की, और उन्हों
ने रब पर लानत भेजने वाले को ख़ैमागाह से बाहर ले
जा कर उसे संगसार किया। उन्हों ने वैसा ही किया
जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

ज़मीन के लिए सबत का साल

25 1 रब ने सीना पहाड़ पर मूसा से कहा,
2 “इस्राईलियों को बताना कि जब तुम उस
मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा तो लाज़िम
है कि रब की ताज़ीम में ज़मीन एक साल आराम
करे। 3 छः साल के दौरान अपने खेतों में बीज बोना,
अपने अंगूर के बाग़ों की काँट-छाँट करना और उन
की फ़सलें जमा करना। 4 लेकिन सातवाँ साल ज़मीन
के लिए आराम का साल है, रब की ताज़ीम में सबत
का साल। उस साल न अपने खेतों में बीज बोना,
न अपने अंगूर के बाग़ों की काँट-छाँट करना। 5 जो
अनाज ख़ुद-ब-ख़ुद उगता है उस की कटाई न करना
और जो अंगूर उस साल लगते हैं उन को तोड़ कर
जमा न करना, क्यूँकि ज़मीन को एक साल के लिए
आराम करना है। 6 अलबत्ता जो भी यह ज़मीन आराम
के साल में पैदा करेगी उस से तुम अपनी रोज़ाना
की ज़रूरियात पूरी कर सकते हो यानी तू, तेरे ग़ुलाम
और लौंडियाँ, तेरे मज़दूर, तेरे ग़ैरशहरी, तेरे साथ रहने
वाले परदेसी, 7 तेरे मवेशी और तेरी ज़मीन पर रहने
वाले जंगली जानवर। जो कुछ भी यह ज़मीन पैदा
करती है वह खाया जा सकता है।

बहाली का साल

8 सात सबत के साल यानी 49 साल के बाद एक
और काम करना है। 9 पचासवें साल के सातवें महीने
के दसवें दिन यानी कफ़्फ़ारा के दिन अपने मुल्क
की हर जगह नरसिंगा बजाना। 10 पचासवाँ साल
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करो और पूरे मुल्क में एलान
करो कि तमाम बाशिन्दों को आज़ाद कर दिया जाए।
यह बहाली का साल हो जिस में हर शख़्स को उस
की मिलकियत वापस की जाए और हर ग़ुलाम को
आज़ाद किया जाए ताकि वह अपने रिश्तेदारों के
पास वापस जा सके। 11 यह पचासवाँ साल बहाली
का साल हो, इस लिए न अपने खेतों में बीज बोना, न
ख़ुद-ब-ख़ुद उगने वाले अनाज की कटाई करना, और
न अंगूर तोड़ कर जमा करना। 12 क्यूँकि यह बहाली
का साल है जो तुम्हारे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है।
रोज़ाना उतनी ही पैदावार लेना कि एक दिन की
ज़रूरियात पूरी हो जाएँ। 13 बहाली के साल में हर
शख़्स को उस की मिलकियत वापस की जाए।
14 चुनाँचे जब कभी तुम अपने किसी हमवतन भाई
को ज़मीन बेचते या उस से ख़रीदते हो तो उस से
नाजाइज़ फ़ाइदा न उठाना। 15 ज़मीन की क़ीमत इस
हिसाब से मुक़र्रर की जाए कि वह अगले बहाली के
साल तक कितने साल फ़सलें पैदा करेगी। 16 अगर
बहुत साल रह गए हों तो उस की क़ीमत ज़्यादा होगी,
और अगर कम साल रह गए हों तो उस की क़ीमत
कम होगी। क्यूँकि उन फ़सलों की तादाद बिक रही
है जो ज़मीन अगले बहाली के साल तक पैदा कर
सकती है।
17 अपने हमवतन से नाजाइज़ फ़ाइदा न उठाना
बल्कि रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना, क्यूँकि मैं
रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
18 मेरी हिदायात पर अमल करना और मेरे अह्काम
को मान कर उन के मुताबिक़ चलना। तब तुम
अपने मुल्क में मह्फ़ूज़ रहोगे। 19 ज़मीन अपनी पूरी
पैदावार देगी, तुम सेर हो जाओगे और मह्फ़ूज़ रहोगे।
20 हो सकता है कोई पूछे, ‘हम सातवें साल में क्या
खाएँगे जबकि हम बीज नहीं बोएँगे और फ़सल नहीं
काटेंगे?’ 21 जवाब यह है कि मैं छटे साल में ज़मीन
को इतनी बरकत दूँगा कि उस साल की पैदावार तीन
साल के लिए काफ़ी होगी। 22 जब तुम आठवें साल

बीज बोओगे तो तुम्हारे पास छटे साल की इतनी पैदावार बाक़ी होगी कि तुम फ़सल की कटाई तक गुज़ारा कर सकोगे।

मौरूसी ज़मीन के हुक़ूक़

23 कोई ज़मीन भी हमेशा के लिए न बेची जाए, क्यूँकि मुल्क की तमाम ज़मीन मेरी ही है। तुम मेरे हुज़ूर सिर्फ़ परदेसी और ग़ैरशहरी हो। 24 मुल्क में जहाँ भी ज़मीन बिक जाए वहाँ मौरूसी मालिक का यह हक़ माना जाए कि वह अपनी ज़मीन वापस ख़रीद सकता है।

25 अगर तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब हो कर अपनी कुछ ज़मीन बेचने पर मज्बूर हो जाए तो लाज़िम है कि उस का सब से क़रीबी रिश्तेदार उसे वापस ख़रीद ले। 26 हो सकता है कि ऐसे शख़्स का कोई क़रीबी रिश्तेदार न हो जो उस की ज़मीन वापस ख़रीद सके, लेकिन वह ख़ुद कुछ देर के बाद इतने पैसे जमा करता है कि वह अपनी ज़मीन वापस ख़रीद सकता है। 27 इस सूरत में वह हिसाब करे कि ख़रीदने वाले के लिए अगले बहाली के साल तक कितने साल रह गए हैं। जितना नुक़्सान ख़रीदने वाले को ज़मीन को बहाली के साल से पहले वापस देने से पहुँचेगा उतने ही पैसे उसे देने हैं। 28 लेकिन अगर उस के पास इतने पैसे न हों तो ज़मीन अगले बहाली के साल तक ख़रीदने वाले के हाथ में रहेगी। फिर उसे मौरूसी मालिक को वापस दिया जाएगा।

29 अगर किसी का घर फ़सीलदार शहर में है तो जब वह उसे बेचेगा तो अपना घर वापस ख़रीदने का हक़ सिर्फ़ एक साल तक रहेगा। 30 अगर पहला मालिक उसे पहले साल के अन्दर अन्दर न ख़रीदे तो वह हमेशा के लिए ख़रीदने वाले की मौरूसी मिलकियत बन जाएगा। वह बहाली के साल में भी वापस नहीं किया जाएगा।

31 लेकिन जो घर ऐसी आबादी में है जिस की फ़सील न हो वह दीहात में शुमार किया जाता है। उस के मौरूसी मालिक को हक़ हासिल है कि हर वक़्त अपना घर वापस ख़रीद सके। बहाली के साल में इस घर को लाज़िमन वापस कर देना है।

32 लेकिन लावियों को यह हक़ हासिल है कि वह अपने वह घर हर वक़्त ख़रीद सकते हैं जो उन के लिए मुक़र्रर किए हुए शहरों में हैं। 33 अगर ऐसा घर किसी लावी के हाथ फ़रोख़्त किया जाए और वापस न ख़रीदा जाए तो उसे लाज़िमन बहाली के साल में वापस करना है। क्यूँकि लावी के जो घर उन के मुक़र्ररा शहरों में होते हैं वह इस्राईलियों में उन की मौरूसी मिलकियत हैं। 34 लेकिन जो ज़मीनें शहरों के इर्दगिर्द मवेशी चराने के लिए मुक़र्रर हैं उन्हें बेचने की इजाज़त नहीं है। वह उन की दाइमी मिलकियत हैं।

ग़रीबों के लिए क़र्ज़ा

35 अगर तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब हो जाए और गुज़ारा न कर सके तो उस की मदद कर। उस तरह उस की मदद करना जिस तरह परदेसी या ग़ैरशहरी की मदद करनी होती है ताकि वह तेरे साथ रहते हुए ज़िन्दगी गुज़ार सके। 36 उस से किसी तरह का सूद न लेना बल्कि अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना ताकि तेरा भाई तेरे साथ ज़िन्दगी गुज़ार सके। 37 अगर वह तेरा क़र्ज़दार हो तो उस से सूद न लेना। इसी तरह ख़ुराक बेचते वक़्त उस से नफ़ा न लेना। 38 मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मैं तुम्हें इस लिए मिस्र से निकाल लाया कि तुम्हें मुल्क-ए-कनआन दूँ और तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

इस्राईली ग़ुलामों के हुक़ूक़

39 अगर तेरा कोई इस्राईली भाई ग़रीब हो कर अपने आप को तेरे हाथ बेच डाले तो उस से ग़ुलाम का सा काम न कराना। 40 उस के साथ मज़दूर या ग़ैरशहरी का सा सुलूक करना। वह तेरे लिए बहाली के साल तक काम करे। 41 फिर वह और उस के बाल-बच्चे आज़ाद हो कर अपने रिश्तेदारों और मौरूसी ज़मीन के पास वापस जाएँ। 42 चूँकि इस्राईली मेरे ख़ादिम हैं जिन्हें मैं मिस्र से निकाल लाया इस लिए उन्हें ग़ुलामी में न बेचा जाए। 43 ऐसे

लोगों पर सख़्ती से हुक्मरानी न करना बल्कि अपने
ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना।

44 तुम पड़ोसी ममालिक से अपने लिए ग़ुलाम
और लौंडियाँ हासिल कर सकते हो। 45 जो परदेसी
ग़ैरशहरी के तौर पर तुम्हारे मुल्क में आबाद हैं उन्हें
भी तुम ख़रीद सकते हो। उन में वह भी शामिल हैं जो
तुम्हारे मुल्क में पैदा हुए हैं। वही तुम्हारी मिलकियत
बन कर 46 तुम्हारे बेटों की मीरास में आ जाएँ और
वही हमेशा तुम्हारे ग़ुलाम रहें। लेकिन अपने हमवतन
भाइयों पर सख़्त हुक्मरानी न करना।

47 अगर तेरे मुल्क में रहने वाला कोई परदेसी या
ग़ैरशहरी अमीर हो जाए जबकि तेरा कोई हमवतन
भाई ग़रीब हो कर अपने आप को उस परदेसी या
ग़ैरशहरी या उस के ख़ानदान के किसी फ़र्द को बेच
डाले 48 तो बिक जाने के बाद उसे आज़ादी ख़रीदने
का हक़ हासिल है। कोई भाई, 49 चचा, ताया, चचा
या ताया का बेटा या कोई और क़रीबी रिश्तेदार उसे
वापस ख़रीद सकता है। वह ख़ुद भी अपनी आज़ादी
ख़रीद सकता है अगर उस के पास पैसे काफ़ी हों।
50 इस सूरत में वह अपने मालिक से मिल कर वह
साल गिने जो उस के ख़रीदने से ले कर अगले बहाली
के साल तक बाक़ी हैं। उस की आज़ादी के पैसे उस
क़ीमत पर मब्नी हों जो मज़दूर को इतने सालों के
लिए दिए जाते हैं। 51–52 जितने साल बाक़ी रह गए
हैं उन के मुताबिक़ उस की बिक जाने की क़ीमत में
से पैसे वापस कर दिए जाएँ। 53 उस के साथ साल-
ब-साल मज़दूर का सा सुलूक किया जाए। उस का
मालिक उस पर सख़्त हुक्मरानी न करे। 54 अगर वह
इस तरह के किसी तरीक़े से आज़ाद न हो जाए तो
उसे और उस के बच्चों को हर हालत में अगले बहाली
के साल में आज़ाद कर देना है, 55 क्यूँकि इस्राईली
मेरे ही ख़ादिम हैं। वह मेरे ही ख़ादिम हैं जिन्हें मैं मिस्र
से निकाल लाया। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

फ़रमाँबरदारी का अज्र

26 1 अपने लिए बुत न बनाना। न अपने लिए
देवता के मुजस्समे या पत्थर के मख़्सूस
किए हुए सतून खड़े करना, न सिज्दा करने के लिए
अपने मुल्क में ऐसे पत्थर रखना जिन में देवता की
तस्वीर कन्दा की गई हो। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
2 सबत का दिन मनाना और मेरे मक़्दिस की ताज़ीम
करना। मैं रब हूँ।

3 अगर तुम मेरी हिदायात पर चलो और मेरे
अह्काम मान कर उन पर अमल करो 4 तो मैं वक़्त
पर बारिश भेजूँगा, ज़मीन अपनी पैदावार देगी और
दरख़्त अपने अपने फल लाएँगे। 5 कस्रत के बाइस
अनाज की फ़सल की कटाई अंगूर तोड़ते वक़्त तक
जारी रहेगी और अंगूर की फ़सल उस वक़्त तक तोड़ी
जाएगी जब तक बीज बोने का मौसम आएगा। इतनी
ख़ुराक मिलेगी कि तुम कभी भूके नहीं होगे। और
तुम अपने मुल्क में मह्फ़ूज़ रहोगे।

6 मैं मुल्क को अम्न-ओ-अमान बख़्शूँगा। तुम
आराम से लेट जाओगे, क्यूँकि किसी ख़तरे से डरने
की ज़रूरत नहीं होगी। मैं वहशी जानवर मुल्क से दूर
कर दूँगा, और वह तलवार की क़त्ल-ओ-ग़ारत से
बचा रहेगा। 7 तुम अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आ कर
उन का ताक़्क़ुब करोगे, और वह तुम्हारी तलवार
से मारे जाएंगे। 8 तुम्हारे पाँच आदमी सौ दुश्मनों का
पीछा करेंगे, और तुम्हारे सौ आदमी उन के दस
हज़ार आदमियों को भगा देंगे। तुम्हारे दुश्मन तुम्हारी
तलवार से मारे जाएंगे।

9 मेरी नज़र-ए-करम तुम पर होगी। मैं तुम्हारी
औलाद की तादाद बढ़ाऊँगा और तुम्हारे साथ अपना
अह्द क़ाइम रखूँगा। 10 एक साल इतनी फ़सल होगी
कि जब अगली फ़सल की कटाई होगी तो नए
अनाज के लिए जगह बनाने की ख़ातिर पुराने अनाज
को फैंक देना पड़ेगा। 11 मैं तुम्हारे दरमियान अपना
मस्कन क़ाइम करूँगा और तुम से घिन नहीं खाऊँगा।
12 मैं तुम में फिरूँगा, और तुम मेरी क़ौम होगे।

13 मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिस्र से निकाल
लाया ताकि तुम्हारी ग़ुलामी की हालत ख़त्म हो जाए।
मैं ने तुम्हारे जूए को तोड़ डाला, और अब तुम आज़ाद
और सीधे हो कर चल सकते हो।

फ़रमाँबरदार न होने की सज़ा

14 लेकिन अगर तुम मेरी नहीं सुनोगे और इन तमाम
अह्काम पर नहीं चलोगे, 15 अगर तुम मेरी हिदायात
को रद्द करके मेरे अह्काम से घिन खाओगे और उन
पर अमल न करके मेरा अह्द तोड़ोगे 16 तो मैं जवाब
में तुम पर अचानक दह्शत तारी कर दूँगा। जिस्म को
ख़त्म करने वाली बीमारियों और बुख़ार से तुम्हारी
आँखें ज़ाए हो जाएँगी और तुम्हारी जान छिन जाएगी।
जब तुम बीज बोओगे तो बेफ़ाइदा, क्यूँकि दुश्मन
उस की फ़सल खा जाएगा। 17 मैं तुम्हारे ख़िलाफ़
हो जाऊँगा, इस लिए तुम अपने दुश्मनों के हाथ
से शिकस्त खाओगे। तुम से नफ़रत रखने वाले तुम
पर हुकूमत करेंगे। उस वक़्त भी जब कोई तुम्हारा
ताक़्क़ुब नहीं करेगा तुम भाग जाओगे।

18 अगर तुम इस के बाद भी मेरी न सुनो तो मैं तुम्हारे
गुनाहों के सबब से तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा।
19 मैं तुम्हारा सख़्त ग़ुरूर ख़ाक में मिला दूँगा। तुम्हारे
ऊपर आसमान लोहे जैसा और तुम्हारे नीचे ज़मीन
पीतल जैसी होगी। 20 जितनी भी मेहनत करोगे वह
बेफ़ाइदा होगी, क्यूँकि तुम्हारे खेतों में फ़सलें नहीं
पकेंगी और तुम्हारे दरख़्त फल नहीं लाएँगे।

21 अगर तुम फिर भी मेरी मुख़ालफ़त करोगे और
मेरी नहीं सुनोगे तो मैं इन गुनाहों के जवाब में तुम्हें
इस से भी सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 22 मैं तुम्हारे
ख़िलाफ़ जंगली जानवर भेज दूँगा जो तुम्हारे बच्चों
को फाड़ खाएँगे और तुम्हारे मवेशी बर्बाद कर देंगे।
आख़िर में तुम्हारी तादाद इतनी कम हो जाएगी कि
तुम्हारी सड़कें वीरान हो जाएँगी।

23 अगर तुम फिर भी मेरी तर्बियत क़बूल न करो
बल्कि मेरे मुख़ालिफ़ रहो 24 तो मैं ख़ुद तुम्हारे
ख़िलाफ़ हो जाऊँगा। इन गुनाहों के जवाब में मैं तुम्हें
सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 25 मैं तुम पर तलवार
चला कर इस का बदला लूँगा कि तुम ने मेरे अह्द
को तोड़ा है। जब तुम अपनी हिफ़ाज़त के लिए शहरों
में भाग कर जमा होगे तो मैं तुम्हारे दरमियान वबाई
बीमारियाँ फैलाऊँगा और तुम्हें दुश्मनों के हाथ में दे
दूँगा। 26 अनाज की इतनी कमी होगी कि दस औरतें
तुम्हारी पूरी रोटी एक ही तनूर में पका सकेंगी, और
वह उसे बड़ी एहतियात से तोल तोल कर तक़्सीम
करेंगी। तुम खा कर भी भूके रहोगे।

27 अगर तुम फिर भी मेरी नहीं सुनोगे बल्कि मेरे
मुख़ालिफ़ रहोगे 28 तो मेरा ग़ुस्सा भड़केगा और मैं
तुम्हारे ख़िलाफ़ हो कर तुम्हारे गुनाहों के जवाब में
तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 29 तुम मुसीबत के
बाइस अपने बेटे-बेटियों का गोश्त खाओगे। 30 मैं
तुम्हारी ऊँची जगहों की क़ुर्बानगाहें और तुम्हारी
बख़ूर की क़ुर्बानगाहें बर्बाद कर दूँगा। मैं तुम्हारी
लाशों के ढेर तुम्हारे बेजान बुतों पर लगाऊँगा और
तुम से घिन खाऊँगा। 31 मैं तुम्हारे शहरों को खंडरात
में बदल कर तुम्हारे मन्दिरों को बर्बाद करूँगा।
तुम्हारी क़ुर्बानियों की ख़ुश्बू मुझे पसन्द नहीं आएगी।
32 मैं तुम्हारे मुल्क का सत्यानास यूँ करूँगा कि जो
दुश्मन उस में आबाद हो जाएंगे उन के रोंगटे खड़े हो
जाएंगे। 33 मैं तुम्हें मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुन्तशिर
कर दूँगा, लेकिन वहाँ भी अपनी तलवार को हाथ
में लिए तुम्हारा पीछा करूँगा। तुम्हारी ज़मीन वीरान
होगी और तुम्हारे शहर खंडरात बन जाएंगे। 34 उस
वक़्त जब तुम अपने दुश्मनों के मुल्क में रहोगे
तुम्हारी ज़मीन वीरान हालत में आराम के वह साल
मना सकेगी जिन से वह महरूम रही है। 35 उन तमाम
दिनों में जब वह बर्बाद रहेगी उसे वह आराम मिलेगा
जो उसे न मिला जब तुम मुल्क में रहते थे।

36 तुम में से जो बच कर अपने दुश्मनों के ममालिक
में रहेंगे उन के दिलों पर मैं दह्शत तारी करूँगा। वह
हवा के झोंकों से गिरने वाले पत्ते की आवाज़ से
चौंक कर भाग जाएंगे। वह फ़रार होंगे गोया कोई
हाथ में तलवार लिए उन का ताक़्क़ुब कर रहा हो।

और वह गिर कर मर जाएंगे हालाँकि कोई उन का
पीछा नहीं कर रहा होगा। 37 वह एक दूसरे से टकरा
कर लड़खड़ाएँगे गोया कोई तलवार ले कर उन के
पीछे चल रहा हो हालाँकि कोई नहीं है। चुनाँचे तुम
अपने दुश्मनों का सामना नहीं कर सकोगे। 38 तुम
दीगर क़ौमों में मुन्तशिर हो कर हलाक हो जाओगे,
और तुम्हारे दुश्मनों की ज़मीन तुम्हें हड़प कर लेगी।
39 तुम में से बाक़ी लोग अपने और अपने बापदादा
के क़ुसूर के बाइस अपने दुश्मनों के ममालिक में
गल सड़ जाएंगे। 40 लेकिन एक वक़्त आएगा कि
वह अपने और अपने बापदादा का क़ुसूर मान लेंगे।
वह मेरे साथ अपनी बेवफ़ाई और वह मुख़ालफ़त
तस्लीम करेंगे 41 जिस के सबब से मैं उन के ख़िलाफ़
हुआ और उन्हें उन के दुश्मनों के मुल्क में धकेल
दिया था। पहले उन का ख़तना सिर्फ़ ज़ाहिरी तौर
पर हुआ था, लेकिन अब उन का दिल आजिज़ हो
जाएगा और वह अपने क़ुसूर की क़ीमत अदा करेंगे।
42 फिर मैं इब्राहीम के साथ अपना अह्द, इस्हाक़ के
साथ अपना अह्द और याक़ूब के साथ अपना अह्द
याद करूँगा। मैं मुल्क-ए-कनआन भी याद करूँगा।
43 लेकिन पहले वह ज़मीन को छोड़ेंगे ताकि वह उन
की ग़ैरमौजूदगी में वीरान हो कर आराम के साल
मनाए। यूँ इस्राईली अपने क़ुसूर के नतीजे भुगतेंगे,
इस सबब से कि उन्हों ने मेरे अह्काम रद्द किए और
मेरी हिदायात से घिन खाई। 44 इस के बावुजूद भी मैं
उन्हें दुश्मनों के मुल्क में छोड़ कर रद्द नहीं करूँगा,
न यहाँ तक उन से घिन खाऊँगा कि वह बिलकुल
तबाह हो जाएँ। क्यूँकि मैं उन के साथ अपना अह्द
नहीं तोड़ने का। मैं रब उन का ख़ुदा हूँ। 45 मैं उन की
ख़ातिर उन के बापदादा के साथ बंधा हुआ अह्द
याद करूँगा, उन लोगों के साथ अह्द जिन्हें मैं दूसरी
क़ौमों के देखते देखते मिस्र से निकाल लाया ताकि
उन का ख़ुदा हूँ। मैं रब हूँ।”
46 रब ने मूसा को इस्राईलियों के लिए यह तमाम
हिदायात और अह्काम सीना पहाड़ पर दिए।

मख़्सूस की हुई चीज़ों की वापसी

27 1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इस्राईलियों को
बताना कि अगर किसी ने मन्नत मान कर
किसी को रब के लिए मख़्सूस किया हो तो वह
उसे ज़ैल की रक़म दे कर आज़ाद कर सकता है
(मुस्तामल सिक्के मक़्दिस के सिक्कों के बराबर हों)
: 3 उस आदमी के लिए जिस की उम्र 20 और 60
साल के दरमियान है चाँदी के 50 सिक्के, 4 इसी उम्र
की औरत के लिए चाँदी के 30 सिक्के, 5 उस लड़के
के लिए जिस की उम्र 5 और 20 साल के दरमियान
हो चाँदी के 20 सिक्के, इसी उम्र की लड़की के लिए
चाँदी के 10 सिक्के, 6 एक माह से ले कर 5 साल तक
के लड़के के लिए चाँदी के 5 सिक्के, इसी उम्र की
लड़की के लिए चाँदी के 3 सिक्के, 7 साठ साल से
बड़े आदमी के लिए चाँदी के 15 सिक्के और इसी उम्र
की औरत के लिए चाँदी के 10 सिक्के।
8 अगर मन्नत मानने वाला मुक़र्ररा रक़म अदा न
कर सके तो वह मख़्सूस किए हुए शख़्स को इमाम
के पास ले आए। फिर इमाम ऐसी रक़म मुक़र्रर करे
जो मन्नत मानने वाला अदा कर सके।
9 अगर किसी ने मन्नत मान कर ऐसा जानवर
मख़्सूस किया जो रब की क़ुर्बानियों के लिए
इस्तेमाल हो सकता है तो ऐसा जानवर मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस हो जाता है। 10 वह उसे बदल नहीं सकता।
न वह अच्छे जानवर की जगह नाक़िस, न नाक़िस
जानवर की जगह अच्छा जानवर दे। अगर वह एक
जानवर दूसरे की जगह दे तो दोनों मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस हो जाते हैं।
11 अगर किसी ने मन्नत मान कर कोई नापाक
जानवर मख़्सूस किया जो रब की क़ुर्बानियों के लिए
इस्तेमाल नहीं हो सकता तो वह उस को इमाम के
पास ले आए। 12 इमाम उस की रक़म उस की अच्छी
और बुरी सिफ़्तों का लिहाज़ करके मुक़र्रर करे। इस
मुक़र्ररा क़ीमत में कमी बेशी नहीं हो सकती। 13 अगर

मन्नत मानने वाला उसे वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद अदा करे।

14 अगर कोई अपना घर रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करे तो इमाम उस की अच्छी और बुरी सिफ़्तों का लिहाज़ करके उस की रक़म मुक़र्रर करे। इस मुक़र्ररा क़ीमत में कमी बेशी नहीं हो सकती। 15 अगर घर को मख़्सूस करने वाला उसे वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्ररा रक़म जमा 20 फ़ीसद अदा करे।

16 अगर कोई अपनी मौरूसी ज़मीन में से कुछ रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करे तो उस की क़ीमत उस बीज की मिक़्दार के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए जो उस में बोना होता है। जिस खेत में 135 किलोग्राम जौ का बीज बोया जाए उस की क़ीमत चाँदी के 50 सिक्के होगी। 17 शर्त यह है कि वह अपनी ज़मीन बहाली के साल के ऐन बाद मख़्सूस करे। फिर उस की यही क़ीमत मुक़र्रर की जाए। 18 अगर ज़मीन का मालिक उसे बहाली के साल के कुछ देर बाद मख़्सूस करे तो इमाम अगले बहाली के साल तक रहने वाले सालों के मुताबिक़ ज़मीन की क़ीमत मुक़र्रर करे। जितने कम साल बाक़ी हैं उतनी कम उस की क़ीमत होगी। 19 अगर मख़्सूस करने वाला अपनी ज़मीन वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद अदा करे। 20 अगर मख़्सूस करने वाला अपनी ज़मीन को रब से वापस ख़रीदे बग़ैर उसे किसी और को बेचे तो उसे वापस ख़रीदने का हक़ ख़त्म हो जाएगा। 21 अगले बहाली के साल यह ज़मीन मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रहेगी और रब की दाइमी मिलकियत हो जाएगी। चुनाँचे वह इमाम की मिलकियत होगी।

22 अगर कोई अपना मौरूसी खेत नहीं बल्कि अपना ख़रीदा हुआ खेत रब के लिए मख़्सूस करे 23 तो इमाम अगले बहाली के साल तक रहने वाले सालों का लिहाज़ करके उस की क़ीमत मुक़र्रर करे। खेत का मालिक उसी दिन उस के पैसे अदा करे। यह पैसे रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस होंगे। 24 बहाली के साल में यह खेत उस शख़्स के पास वापस आएगा जिस ने उसे बेचा था।

25 वापस ख़रीदने के लिए मुस्तामल सिक्के मक़्दिस के सिक्कों के बराबर हों। उस के चाँदी के सिक्कों का वज़न 11 ग्राम है।

26 लेकिन कोई भी किसी मवेशी का पहलौठा रब के लिए मख़्सूस नहीं कर सकता। वह तो पहले से रब के लिए मख़्सूस है। इस में कोई फ़र्क़ नहीं कि वह गाय, बैल या भेड़ हो। 27 अगर उस ने कोई नापाक जानवर मख़्सूस किया हो तो वह उसे मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद के लिए वापस ख़रीद सकता है। अगर वह उसे वापस न ख़रीदे तो वह मुक़र्ररा क़ीमत के लिए बेचा जाए।

28 लेकिन अगर किसी ने अपनी मिलकियत में से कुछ ग़ैरमशरूत तौर पर रब के लिए मख़्सूस किया है तो उसे बेचा या वापस नहीं ख़रीदा जा सकता, ख़्वाह वह इन्सान, जानवर या ज़मीन हो। जो इस तरह मख़्सूस किया गया हो वह रब के लिए निहायत मुक़द्दस है। 29 इसी तरह जिस शख़्स को तबाही के लिए मख़्सूस किया गया है उस का फ़िद्या नहीं दिया जा सकता। लाज़िम है कि उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।

30 हर फ़सल का दसवाँ हिस्सा रब का है, चाहे वह अनाज हो या फल। वह रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है। 31 अगर कोई अपनी फ़सल का दसवाँ हिस्सा छुड़ाना चाहता है तो वह इस के लिए उस की मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद दे। 32 इसी तरह गाय-बैलों और भेड़-बकरियों का दसवाँ हिस्सा भी रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है, हर दसवाँ जानवर जो गल्लाबान के डंडे के नीचे से गुज़रेगा। 33 यह जानवर चुनने से पहले उन का मुआइना न किया जाए कि कौन से जानवर अच्छे या कमज़ोर हैं। यह भी न करना कि दसवें हिस्से के किसी जानवर के बदले कोई और जानवर दिया जाए। अगर फिर भी उसे बदला जाए तो दोनों जानवर रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस होंगे। और उन्हें वापस ख़रीदा नहीं जा सकता।”

34 यह वह अह्काम हैं जो रब ने सीना पहाड़ पर
मूसा को इस्राईलियों के लिए दिए।

गिनती

इस्राईलियों की पहली मर्दुमशुमारी

1 1 इस्राईलियों को मिस्र से निकले हुए एक साल
से ज़्यादा अर्सा गुज़र गया था। अब तक वह
दश्त-ए-सीना में थे। दूसरे साल के दूसरे महीने के
पहले दिन रब मुलाक़ात के ख़ैमे में मूसा से हमकलाम
हुआ। उस ने कहा,
2 "तू और हारून तमाम इस्राईलियों की मर्दुमशुमारी
कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। उन
तमाम मर्दों की फ़हरिस्त बनाना 3 जो कम अज़ कम
बीस साल के और जंग लड़ने के क़ाबिल हों। 4 इस
में हर क़बीले के एक ख़ानदान का सरपरस्त तुम्हारी
मदद करे। 5 यह उन के नाम हैं : रूबिन के क़बीले
से इलीसूर बिन शदियूर,
6 शमाऊन के क़बीले से सलूमीएल बिन सूरीशद्दी,
7 यहूदाह के क़बीले से नह्सोन बिन अम्मीनदाब,
8 इश्कार के क़बीले से नतनीएल बिन ज़ुग़र,
9 ज़बूलून के क़बीले से इलियाब बिन हेलोन,
10 यूसुफ़ के बेटे इफ़्राईम के क़बीले से इलीसमा
बिन अम्मीहूद, यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले से
जमलीएल बिन फ़दाह्सूर,
11 बिनयमीन के क़बीले से अबिदान बिन
जिदाऊनी,
12 दान के क़बीले से अख़ीअज़र बिन अम्मीशद्दी,
13 आशर के क़बीले से फ़जईएल बिन अक्रान,
14 जद के क़बीले से इलियासफ़ बिन दऊएल,
15 नफ़्ताली के क़बीले से अख़ीरा बिन एनान।"
16 यही मर्द जमाअत से इस काम के लिए बुलाए
गए। वह अपने क़बीलों के राहनुमा और कुंबों के
सरपरस्त थे। 17 इन की मदद से मूसा और हारून
ने 18 उसी दिन पूरी जमाअत को इकट्ठा किया। हर
इस्राईली मर्द जो कम अज़ कम 20 साल का था
रजिस्टर में दर्ज किया गया। रजिस्टर की तर्तीब उन
के कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ थी।
19 सब कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब ने हुक्म
दिया था। मूसा ने सीना के रेगिस्तान में लोगों की
मर्दुमशुमारी की। नतीजा यह निकला :
20–21 रूबिन के क़बीले के 46,500 मर्द,
22–23 शमाऊन के क़बीले के 59,300 मर्द,
24–25 जद के क़बीले के 45,650 मर्द,
26–27 यहूदाह के क़बीले के 74,600 मर्द,
28–29 इश्कार के क़बीले के 54,400 मर्द,
30–31 ज़बूलून के क़बीले के 57,400 मर्द,
32–33 यूसुफ़ के बेटे इफ़्राईम के क़बीले के 40,500
मर्द,
34–35 यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले के 32,200
मर्द,
36–37 बिनयमीन के क़बीले के 35,400 मर्द,
38–39 दान के क़बीले के 62,700 मर्द,
40–41 आशर के क़बीले के 41,500 मर्द,
42–43 नफ़्ताली के क़बीले के 53,400 मर्द।
44 मूसा, हारून और क़बीलों के बारह राहनुमाओं
ने इन तमाम आदमियों को गिना। 45–46 उन की पूरी
तादाद 6,03,550 थी।
47 लेकिन लावियों की मर्दुमशुमारी न हुई, 48 क्यूँकि
रब ने मूसा से कहा था, 49 "इस्राईलियों की
मर्दुमशुमारी में लावियों को शामिल न करना। 50 इस
के बजाय उन्हें शरीअत की सुकूनतगाह और उस
का सारा सामान सँभालने की ज़िम्मादारी देना। वह
सफ़र करते वक़्त यह ख़ैमा और उस का सारा
सामान उठा कर ले जाएँ, उस की ख़िदमत के लिए
हाज़िर रहें और रुकते वक़्त उसे अपने ख़ैमों से
घेरे रखें। 51 रवाना होते वक़्त वही ख़ैमे को समेटें
और रुकते वक़्त वही उसे लगाएँ। अगर कोई और

उस के क़रीब आए तो उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी।
52 बाक़ी इस्राईली ख़ैमागाह में अपने अपने दस्ते के
मुताबिक़ और अपने अपने अलम के इर्दगिर्द अपने
ख़ैमे लगाएँ। 53 लेकिन लावी अपने ख़ैमों से शरीअत
की सुकूनतगाह को घेर लें ताकि मेरा ग़ज़ब किसी
ग़लत शख़्स के नज़्दीक आने से इस्राईलियों की
जमाअत पर नाज़िल न हो जाए। यूँ लावियों को
शरीअत की सुकूनतगाह को सँभालना है।”
54 इस्राईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा
को हुक्म दिया था।

ख़ैमागाह में क़बीलों की तर्तीब

2 1 रब ने मूसा और हारून से कहा 2 कि इस्राईली
अपने ख़ैमे कुछ फ़ासिले पर मुलाक़ात के ख़ैमे
के इर्दगिर्द लगाएँ। हर एक अपने अपने अलम
और अपने अपने आबाई घराने के निशान के साथ
ख़ैमाज़न हो।
3 इन हिदायात के मुताबिक़ मक़्दिस के मशरिक़
में यहूदाह का अलम था जिस के इर्दगिर्द तीन दस्ते
ख़ैमाज़न थे। पहले, यहूदाह का क़बीला जिस का
कमाँडर नह्सोन बिन अम्मीनदाब था, 4 और जिस
के लश्कर के 74,600 फ़ौजी थे। 5 दूसरे, इश्कार का
क़बीला जिस का कमाँडर नतनीएल बिन ज़ुग़र था,
6 और जिस के लश्कर के 54,400 फ़ौजी थे। 7 तीसरे,
ज़बूलून का क़बीला जिस का कमाँडर इलियाब बिन
हेलोन था 8 और जिस के लश्कर के 57,400 फ़ौजी
थे। 9 तीनों क़बीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद
1,86,400 थी। रवाना होते वक़्त यह आगे चलते
थे।
10 मक़्दिस के जुनूब में रूबिन का अलम था जिस
के इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले, रूबिन
का क़बीला जिस का कमाँडर इलीसूर बिन शदियूर
था, 11 और जिस के 46,500 फ़ौजी थे। 12 दूसरे,
शमाऊन का क़बीला जिस का कमाँडर सलूमीएल
बिन सूरीशद्दी था, 13 और जिस के 59,300 फ़ौजी
थे। 14 तीसरे, जद का क़बीला जिस का कमाँडर
इलियासफ़ बिन दऊएल था, 15 और जिस के 45,650
फ़ौजी थे। 16 तीनों क़बीलों के फ़ौजियों की कुल
तादाद 1,51,450 थी। रवाना होते वक़्त यह मशरिक़ी
क़बीलों के पीछे चलते थे।
17 इन जुनूबी क़बीलों के बाद लावी मुलाक़ात का
ख़ैमा उठा कर क़बीलों के ऐन बीच में चलते थे।
क़बीले उस तर्तीब से रवाना होते थे जिस तर्तीब से
वह अपने ख़ैमे लगाते थे। हर क़बीला अपने अलम
के पीछे चलता था।
18 मक़्दिस के मग़रिब में इफ़्राईम का अलम था
जिस के इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले,
इफ़्राईम का क़बीला जिस का कमाँडर इलीसमा
बिन अम्मीहूद था, 19 और जिस के 40,500 फ़ौजी
थे। 20 दूसरे, मनस्सी का क़बीला जिस का कमाँडर
जमलीएल बिन फ़दाह्सूर था, 21 और जिस के
32,200 फ़ौजी थे। 22 तीसरे, बिनयमीन का क़बीला
जिस का कमाँडर अबिदान बिन जिदाऊनी था,
23 और जिस के 35,400 फ़ौजी थे। 24 तीनों क़बीलों
के फ़ौजियों की कुल तादाद 1,08,100 थी। रवाना
होते वक़्त यह जुनूबी क़बीलों के पीछे चलते थे।
25 मक़्दिस के शिमाल में दान का अलम था
जिस के इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले,
दान का क़बीला जिस का कमाँडर अख़ीअज़र
बिन अम्मीशद्दी था, 26 और जिस के 62,700 फ़ौजी
थे। 27 दूसरे, आशर का क़बीला जिस का कमाँडर
फ़जईएल बिन अक्रान था, 28 और जिस के 41,500
फ़ौजी थे। 29 तीसरे, नफ़्ताली का क़बीला जिस का
कमाँडर अख़ीरा बिन एनान था, 30 और जिस के
53,400 फ़ौजी थे। 31 तीनों क़बीलों की कुल तादाद
1,57,600 थी। वह आख़िर में अपना अलम उठा कर
रवाना होते थे।
32 पूरी ख़ैमागाह के फ़ौजियों की कुल तादाद
6,03,550 थी। 33 सिर्फ़ लावी इस तादाद में शामिल
नहीं थे, क्यूँकि रब ने मूसा को हुक्म दिया था कि उन
की भर्ती न की जाए।

34 यूँ इस्राईलियों ने सब कुछ उन हिदायात के
मुताबिक़ किया जो रब ने मूसा को दी थीं। उन के
मुताबिक़ ही वह अपने झंडों के इर्दगिर्द अपने ख़ैमे
लगाते थे और उन के मुताबिक़ ही अपने कुंबों और
आबाई घरानों के साथ रवाना होते थे।

हारून के बेटे

3 1 यह हारून और मूसा के ख़ानदान का बयान
है। उस वक़्त का ज़िक्र है जब रब ने सीना पहाड़
पर मूसा से बात की। 2 हारून के चार बेटे थे। बड़ा
बेटा नदब था, फिर अबीहू, इलीअज़र और इतमर।
3 यह इमाम थे जिन को मसह करके इस ख़िदमत का
इख़तियार दिया गया था। 4 लेकिन नदब और अबीहू
उस वक़्त मर गए जब उन्हों ने दश्त-ए-सीना में रब
के हुज़ूर नाजाइज़ आग पेश की। चूँकि वह बेऔलाद
थे इस लिए हारून के जीते जी सिर्फ़ इलीअज़र और
इतमर इमाम की ख़िदमत सरअन्जाम देते थे।

लावियों की मक़्दिस में ज़िम्मादारी

5 रब ने मूसा से कहा, 6 "लावी के क़बीले को
ला कर हारून की ख़िदमत करने की ज़िम्मादारी
दे। 7 उन्हें उस के लिए और पूरी जमाअत के लिए
मुलाक़ात के ख़ैमे की ख़िदमात सँभालना है। 8 वह
मुलाक़ात के ख़ैमे का सामान सँभालें और तमाम
इस्राईलियों के लिए मक़्दिस के फ़राइज़ अदा करें।
9 तमाम इस्राईलियों में से सिर्फ़ लावियों को हारून
और उस के बेटों की ख़िदमत के लिए मुक़र्रर कर।
10 लेकिन सिर्फ़ हारून और उस के बेटों को इमाम
की हैसियत हासिल है। जो भी बाक़ियों में से उन की
ज़िम्मादारियाँ उठाने की कोशिश करेगा उसे सज़ा-ए-
मौत दी जाएगी।"

11 रब ने मूसा से यह भी कहा, 12 "मैं ने इस्राईलियों
में से लावियों को चुन लिया है। वह तमाम इस्राईली
पहलौठों के इवज़ मेरे लिए मख़्सूस हैं, 13 क्यूँकि
तमाम पहलौठे मेरे ही हैं। जिस दिन मैं ने मिस्र में
तमाम पहलौठों को मार दिया उस दिन मैं ने इस्राईल
के पहलौठों को अपने लिए मख़्सूस किया, ख़्वाह
वह इन्सान के थे या हैवान के। वह मेरे ही हैं। मैं रब
हूँ।"

लावियों की मर्दुमशुमारी

14 रब ने सीना के रेगिस्तान में मूसा से कहा,
15 "लावियों को गिन कर उन के आबाई घरानों और
कुंबों के मुताबिक़ रजिस्टर में दर्ज करना। हर बेटे
को गिनना है जो एक माह या इस से ज़ाइद का है।"
16 मूसा ने ऐसा ही किया।

17 लावी के तीन बेटे जैर्सोन, क़िहात और मिरारी
थे। 18 जैर्सोन के दो कुंबे उस के बेटों लिब्नी और
सिमई के नाम रखते थे। 19 क़िहात के चार कुंबे उस
के बेटों अम्राम, इज़हार , हब्रून और उज़्ज़ीएल के नाम
रखते थे। 20 मिरारी के दो कुंबे उस के बेटों महली
और मूशी के नाम रखते थे। ग़रज़ लावी के क़बीले
के कुंबे उस के पोतों के नाम रखते थे।

21 जैर्सोन के दो कुंबों बनाम लिब्नी और सिमई
22 के 7,500 मर्द थे जो एक माह या इस से ज़ाइद
के थे। 23 उन्हें अपने ख़ैमे मग़रिब में मक़्दिस के
पीछे लगाने थे। 24 उन का राहनुमा इलियासफ़ बिन
लाएल था, 25 और वह ख़ैमे को सँभालते थे यानी
उस की पोशिशें, ख़ैमे के दरवाज़े का पर्दा, 26 ख़ैमे
और क़ुर्बानगाह की चारदीवारी के पर्दे, चारदीवारी
के दरवाज़े का पर्दा और तमाम रस्से। इन चीज़ों से
मुताल्लिक़ सारी ख़िदमत उन की ज़िम्मादारी थी।

27 क़िहात के चार कुंबों बनाम अम्राम, इज़हार ,
हब्रून और उज़्ज़ीएल 28 के 8,600 मर्द थे जो एक
माह या इस से ज़ाइद के थे और जिन को मक़्दिस
की ख़िदमत करनी थी। 29 उन्हें अपने डेरे मक़्दिस
के जुनूब में डालने थे। 30 उन का राहनुमा इलीसफ़न
बिन उज़्ज़ीएल था, 31 और वह यह चीज़ें सँभालते थे
: अह्द का सन्दूक़, मेज़, शमादान, क़ुर्बानगाहें, वह
बर्तन और साज़-ओ-सामान जो मक़्दिस में इस्तेमाल
होता था और मुक़द्दसतरीन कमरे का पर्दा। इन चीज़ों
से मुताल्लिक़ सारी ख़िदमत उन की ज़िम्मादारी थी।

32 हारून इमाम का बेटा इलीअज़र लावियों के तमाम
राहनुमाओं पर मुक़र्रर था। वह उन तमाम लोगों का
इंचार्ज था जो मक़्दिस की देख-भाल करते थे।
33 मिरारी के दो कुंबों बनाम महली और मूशी 34 के
6,200 मर्द थे जो एक माह या इस से ज़ाइद के
थे। 35 उन का राहनुमा सूरीएल बिन अबीख़ैल था।
उन्हें अपने डेरे मक़्दिस के शिमाल में डालने थे,
36 और वह यह चीज़ें सँभालते थे : ख़ैमे के तख़्ते,
उस के शहतीर, खम्बे, पाए और इस तरह का सारा
सामान। इन चीज़ों से मुताल्लिक़ सारी ख़िदमत उन की
ज़िम्मादारी थी। 37 वह चारदीवारी के खम्बे, पाए,
मेख़ें और रस्से भी सँभालते थे।
38 मूसा, हारून और उन के बेटों को अपने डेरे
मशरिक़ में मक़्दिस के सामने डालने थे। उन की
ज़िम्मादारी मक़्दिस में बनी इस्राईल के लिए ख़िदमत
करना थी। उन के इलावा जो भी मक़्दिस में दाख़िल
होने की कोशिश करता उसे सज़ा-ए-मौत देनी थी।
39 उन लावी मर्दों की कुल तादाद जो एक माह या
इस से ज़ाइद के थे 22,000 थी। रब के कहने पर
मूसा और हारून ने उन्हें कुंबों के मुताबिक़ गिन कर
रजिस्टर में दर्ज किया।

लावी के क़बीले के मर्द पहलौठों के इवज़ी हैं

40 रब ने मूसा से कहा, "तमाम इस्राईली पहलौठों
को गिनना जो एक माह या इस से ज़ाइद के हैं
और उन के नाम रजिस्टर में दर्ज करना। 41 उन
तमाम पहलौठों की जगह लावियों को मेरे लिए
मख़्सूस करना। इसी तरह इस्राईलियों के मवेशियों
के पहलौठों की जगह लावियों के मवेशी मेरे लिए
मख़्सूस करना। मैं रब हूँ।" 42 मूसा ने ऐसा ही किया
जैसा रब ने उसे हुक्म दिया। उस ने तमाम इस्राईली
पहलौठे 43 जो एक माह या इस से ज़ाइद के थे गिन
लिए। उन की कुल तादाद 22,273 थी।
44 रब ने मूसा से कहा, 45 "मुझे तमाम इस्राईली
पहलौठों की जगह लावियों को पेश करना। इसी
तरह मुझे इस्राईलियों के मवेशियों की जगह लावियों
के मवेशी पेश करना। लावी मेरे ही हैं। मैं रब हूँ।
46 लावियों की निस्बत बाक़ी इस्राईलियों के 273
पहलौठे ज़्यादा हैं। उन में से 47 हर एक के इवज़ चाँदी
के पाँच सिक्के ले जो मक़्दिस के वज़न के मुताबिक़
हों (फ़ी सिक्का तक़रीबन 11 ग्राम)। 48 यह पैसे हारून
और उस के बेटों को देना।"
49 मूसा ने ऐसा ही किया। 50 यूँ उस ने चाँदी के
1,365 सिक्के (तक़रीबन 16 किलोग्राम) जमा करके
51 हारून और उस के बेटों को दिए, जिस तरह रब
ने उसे हुक्म दिया था।

क़िहातियों की ज़िम्मादारियाँ

4 1 रब ने मूसा और हारून से कहा, 2 "लावी के
क़बीले में से क़िहातियों की मर्दुमशुमारी उन के
कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। 3 उन
तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से ले
कर 50 साल के हैं और मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत
करने के लिए आ सकते हैं। 4 क़िहातियों की ख़िदमत
मुक़द्दसतरीन कमरे की देख-भाल है।
5 जब ख़ैमे को सफ़र के लिए समेटना है तो हारून
और उस के बेटे दाख़िल हो कर मुक़द्दसतरीन कमरे
का पर्दा उतारें और उसे शरीअत के सन्दूक़ पर डाल
दें। 6 इस पर वह तख़स की खालों का ग़िलाफ़ और
आख़िर में पूरी तरह नीले रंग का कपड़ा बिछाएँ। इस
के बाद वह सन्दूक़ को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।
7 वह उस मेज़ पर भी नीले रंग का कपड़ा बिछाएँ
जिस पर रब को रोटी पेश की जाती है। उस पर थाल,
प्याले, मै की नज़रें पेश करने के बर्तन और मर्तबान
रखे जाएँ। जो रोटी हमेशा मेज़ पर होती है वह भी उस
पर रहे। 8 हारून और उस के बेटे इन तमाम चीज़ों पर
क़िर्मिज़ी रंग का कपड़ा बिछा कर आख़िर में उन के
ऊपर तख़स की खालों का ग़िलाफ़ डालें। इस के
बाद वह मेज़ को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।
9 वह शमादान और उस के सामान पर यानी उस
के चराग़, बत्ती कतरने की क़ैंचियों, जलते कोएले
के छोटे बर्तनों और तेल के बर्तनों पर नीले रंग का

कपड़ा रखें। 10 यह सब कुछ वह तख़स की खालों
के ग़िलाफ़ में लपेटें और उसे उठा कर ले जाने के
लिए एक चौखटे पर रखें।
11 वह बख़ूर जलाने की सोने की क़ुर्बानगाह पर भी
नीले रंग का कपड़ा बिछा कर उस पर तख़स की
खालों का ग़िलाफ़ डालें और फिर उसे उठाने की
लकड़ियाँ लगाएँ। 12 वह सारा सामान जो मुक़द्दस
कमरे में इस्तेमाल होता है ले कर नीले रंग के कपड़े
में लपेटें, उस पर तख़स की खालों का ग़िलाफ़ डालें
और उसे उठा कर ले जाने के लिए एक चौखटे पर
रखें।
13 फिर वह जानवरों को जलाने की क़ुर्बानगाह को
राख से साफ़ करके उस पर अर्ग़वानी रंग का कपड़ा
बिछाएँ। 14 उस पर वह क़ुर्बानगाह की ख़िदमत के
लिए सारा ज़रूरी सामान रखें यानी छिड़काओ के
कटोरे, जलते हुए कोएले के बर्तन, बेलचे और काँटे।
इस सामान पर वह तख़स की खालों का ग़िलाफ़
डाल कर क़ुर्बानगाह को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।
15 सफ़र के लिए रवाना होते वक़्त यह सब कुछ
उठा कर ले जाना क़िहातियों की ज़िम्मादारी है।
लेकिन लाज़िम है कि पहले हारून और उस के बेटे
यह तमाम मुक़द्दस चीज़ें ढाँपें। क़िहाती इन में से कोई
भी चीज़ न छुएँ वर्ना मर जाएंगे।
16 हारून इमाम का बेटा इलीअज़र पूरे मुक़द्दस ख़ैमे
और उस के सामान का इंचार्ज हो। इस में चराग़ों का
तेल, बख़ूर, ग़ल्ला की रोज़ाना नज़र और मसह का तेल
भी शामिल है।"
17 रब ने मूसा और हारून से कहा, 18 "ख़बरदार
रहो कि क़िहात के कुंबे लावी के क़बीले में से मिटने
न पाएँ। 19 चुनाँचे जब वह मुक़द्दसतरीन चीज़ों के
पास आएँ तो हारून और उस के बेटे हर एक को
उस सामान के पास ले जाएँ जो उसे उठा कर ले
जाना है ताकि वह न मरें बल्कि जीते रहें। 20 क़िहाती
एक लम्हे के लिए भी मुक़द्दस चीज़ें देखने के लिए
अन्दर न जाएँ, वर्ना वह मर जाएंगे।"

जैर्सोनियों की ज़िम्मादारियाँ

21 फिर रब ने मूसा से कहा, 22 "जैर्सोन की औलाद
की मर्दुमशुमारी भी उन के आबाई घरानों और कुंबों
के मुताबिक़ करना। 23 उन तमाम मर्दों को रजिस्टर
में दर्ज करना जो 30 से ले कर 50 साल के हैं और
मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत के लिए आ सकते हैं।
24 वह यह चीज़ें उठा कर ले जाने के ज़िम्मादार हैं
: 25 मुलाक़ात का ख़ैमा, उस की छत, छत पर रखी
हुई तख़स की खाल की पोशिश, ख़ैमे के दरवाज़े
का पर्दा, 26 ख़ैमे और क़ुर्बानगाह की चारदीवारी के
पर्दे, चारदीवारी के दरवाज़े का पर्दा, उस के रस्से
और उसे लगाने का बाक़ी सामान। वह उन तमाम
कामों के ज़िम्मादार हैं जो इन चीज़ों से मुन्सलिक
हैं। 27 जैर्सोनियों की पूरी ख़िदमत हारून और उस के
बेटों की हिदायात के मुताबिक़ हो। ख़बरदार रहो कि
वह सब कुछ ऐन हिदायात के मुताबिक़ उठा कर ले
जाएँ। 28 यह सब मुलाक़ात के ख़ैमे में जैर्सोनियों की
ज़िम्मादारियाँ हैं। इस काम में हारून इमाम का बेटा
इतमर उन पर मुक़र्रर है।"

मिरारियों की ज़िम्मादारियाँ

29 रब ने कहा, "मिरारी की औलाद की मर्दुमशुमारी
भी उन के आबाई घरानों और कुंबों के मुताबिक़
करना। 30 उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना
जो 30 से ले कर 50 साल के हैं और मुलाक़ात
के ख़ैमे में ख़िदमत के लिए आ सकते हैं। 31 वह
मुलाक़ात के ख़ैमे की यह चीज़ें उठा कर ले जाने
के ज़िम्मादार हैं : दीवार के तख़्ते, शहतीर, खम्बे
और पाए, 32 फिर ख़ैमे की चारदीवारी के खम्बे, पाए,
मेख़ें, रस्से और यह चीज़ें लगाने का सामान। हर एक
को तफ़्सील से बताना कि वह क्या क्या उठा कर
ले जाए। 33 यह सब कुछ मिरारियों की मुलाक़ात
के ख़ैमे में ज़िम्मादारियों में शामिल है। इस काम में
हारून इमाम का बेटा इतमर उन पर मुक़र्रर हो।"

लावियों की मर्दुमशुमारी

34 मूसा, हारून और जमाअत के राहनुमाओं ने
क़िहातियों की मर्दुमशुमारी उन के कुंबों और आबाई
घरानों के मुताबिक़ की। 35–37 उन्हों ने उन तमाम
मर्दों को रजिस्टर में दर्ज किया जो 30 से ले कर 50
साल के थे और जो मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत
कर सकते थे। उन की कुल तादाद 2,750 थी। मूसा
और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने
मूसा की मारिफ़त फ़रमाया था। 38–41 फिर जैर्सोनियों
की मर्दुमशुमारी उन के कुंबों और आबाई घरानों
के मुताबिक़ हुई। ख़िदमत के लाइक़ मर्दों की कुल
तादाद 2,630 थी। मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा
ही किया जैसा रब ने मूसा के ज़रीए फ़रमाया था।
42–45 फिर मिरारियों की मर्दुमशुमारी उन के कुंबों
और आबाई घरानों के मुताबिक़ हुई। ख़िदमत के
लाइक़ मर्दों की कुल तादाद 3,200 थी। मूसा और
हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा
के ज़रीए फ़रमाया था। 46–48 लावियों के उन मर्दों
की कुल तादाद 8,580 थी जिन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे
में ख़िदमत करना और सफ़र करते वक़्त उसे उठा
कर ले जाना था।
49 मूसा ने रब के हुक्म के मुताबिक़ हर एक को उस
की अपनी अपनी ज़िम्मादारी सौंपी और उसे बताया
कि उसे क्या क्या उठा कर ले जाना है। यूँ उन की
मर्दुमशुमारी रब के उस हुक्म के ऐन मुताबिक़ की गई
जो उस ने मूसा की मारिफ़त दिया था।

नापाक लोग ख़ैमागाह में नहीं रह सकते

5 1 रब ने मूसा से कहा, 2 "इस्राईलियों को हुक्म
दे कि हर उस शख़्स को ख़ैमागाह से बाहर कर
दो जिस को वबाई जिल्दी बीमारी है, जिस के ज़ख़्मों
से माए निकलता रहता है या जो किसी लाश को
छूने से नापाक है। 3 ख़्वाह मर्द हो या औरत, सब
को ख़ैमागाह के बाहर भेज देना ताकि वह ख़ैमागाह
को नापाक न करें जहाँ मैं तुम्हारे दरमियान सुकूनत
करता हूँ।" 4 इस्राईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब
ने मूसा को कहा था। उन्हों ने रब के हुक्म के ऐन
मुताबिक़ इस तरह के तमाम लोगों को ख़ैमागाह से
बाहर कर दिया।

ग़लत काम का मुआवज़ा

5 रब ने मूसा से कहा, 6 "इस्राईलियों को हिदायत
देना कि जो भी किसी से ग़लत सुलूक करे वह मेरे
साथ बेवफ़ाई करता है और क़ुसूरवार है, ख़्वाह
मर्द हो या औरत। 7 लाज़िम है कि वह अपना गुनाह
तस्लीम करे और उस का पूरा मुआवज़ा दे बल्कि
मुतअस्सिरा शख़्स का नुक़्सान पूरा करने के इलावा
20 फ़ीसद ज़्यादा दे। 8 लेकिन अगर वह शख़्स जिस
का क़ुसूर किया गया था मर चुका हो और उस
का कोई वारिस न हो जो यह मुआवज़ा वसूल कर
सके तो फिर उसे रब को देना है। इमाम को यह
मुआवज़ा उस मेंढे के इलावा मिलेगा जो क़ुसूरवार
अपने कफ़्फ़ारा के लिए देगा। 9–10 नीज़ इमाम को
इस्राईलियों की क़ुर्बानियों में से वह कुछ मिलना है
जो उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर उसे दिया जाता
है। यह हिस्सा सिर्फ़ इमामों को ही मिलना है।"

ज़िना के शक पर अल्लाह का फ़ैसला

11 रब ने मूसा से कहा, 12 "इस्राईलियों को बताना,
हो सकता है कि कोई शादीशुदा औरत भटक कर
अपने शौहर से बेवफ़ा हो जाए और 13 किसी और
से हमबिसतर हो कर नापाक हो जाए। उस के शौहर
ने उसे नहीं देखा, क्यूँकि यह पोशीदगी में हुआ है
और न किसी ने उसे पकड़ा, न इस का कोई गवाह
है। 14 अगर शौहर को अपनी बीवी की वफ़ादारी पर
शक हो और वह ग़ैरत खाने लगे, लेकिन यक़ीन से
नहीं कह सकता कि मेरी बीवी क़ुसूरवार है कि नहीं
15 तो वह अपनी बीवी को इमाम के पास ले आए।
साथ साथ वह अपनी बीवी के लिए क़ुर्बानी के तौर
पर जौ का डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा ले आए। इस
पर न तेल उंडेला जाए, न बख़ूर डाला जाए, क्यूँकि

ग़ल्ला की यह नज़र ग़ैरत की नज़र है जिस का मक़्सद
है कि पोशीदा क़ुसूर ज़ाहिर हो जाए। 16 इमाम औरत
को क़रीब आने दे और रब के सामने खड़ा करे।
17 वह मिट्टी का बर्तन मुक़द्दस पानी से भर कर उस
में मक़्दिस के फ़र्श की कुछ ख़ाक डाले। 18 फिर वह
औरत को रब को पेश करके उस के बाल खुलवाए
और उस के हाथों पर मैदे की नज़र रखे। इमाम के
अपने हाथ में कड़वे पानी का वह बर्तन हो जो लानत
का बाइस है।

19 फिर वह औरत को क़सम खिला कर कहे,
'अगर कोई और आदमी आप से हमबिसतर नहीं
हुआ है और आप नापाक नहीं हुई हैं तो इस कड़वे
पानी की लानत का आप पर कोई असर न हो।
20 लेकिन अगर आप भटक कर अपने शौहर से
बेवफ़ा हो गई हैं और किसी और से हमबिसतर हो
कर नापाक हो गई हैं 21 तो रब आप को आप की
क़ौम के सामने लानती बनाए। आप बाँझ हो जाएँ
और आप का पेट फूल जाए। 22 जब लानत का यह
पानी आप के पेट में उतरे तो आप बाँझ हो जाएँ
और आप का पेट फूल जाए।' इस पर औरत कहे,
'आमीन, ऐसा ही हो।'

23 फिर इमाम यह लानत लिख कर काग़ज़ को बर्तन
के पानी में यूँ धो दे कि उस पर लिखी हुई बातें
पानी में घुल जाएँ। 24 बाद में वह औरत को यह पानी
पिलाए ताकि वह उस के जिस्म में जा कर उसे लानत
पहुँचाए। 25 लेकिन पहले इमाम उस के हाथों में से
ग़ैरत की क़ुर्बानी ले कर उसे ग़ल्ला की नज़र के तौर
पर रब के सामने हिलाए और फिर क़ुर्बानगाह के
पास ले आए। 26 उस पर वह मुट्ठी भर यादगारी की
क़ुर्बानी के तौर पर जलाए। इस के बाद वह औरत
को पानी पिलाए। 27 अगर वह अपने शौहर से बेवफ़ा
थी और नापाक हो गई है तो वह बाँझ हो जाएगी, उस
का पेट फूल जाएगा और वह अपनी क़ौम के सामने
लानती ठहरेगी। 28 लेकिन अगर वह पाक-साफ़ है
तो उसे सज़ा नहीं दी जाएगी और वह बच्चे जन्म देने
के क़ाबिल रहेगी।

29–30 चुनाँचे ऐसा ही करना है जब शौहर ग़ैरत खाए
और उसे अपनी बीवी पर ज़िना का शक हो। बीवी
को क़ुर्बानगाह के सामने खड़ा किया जाए और इमाम
यह सब कुछ करे। 31 इस सूरत में शौहर बेक़ुसूर
ठहरेगा, लेकिन अगर उस की बीवी ने वाक़ई ज़िना
किया हो तो उसे अपने गुनाह के नतीजे बर्दाश्त करने
पड़ेंगे।"

जो अपने आप को मख़्सूस करते हैं

6 1 रब ने मूसा से कहा, 2 "इस्राईलियों को
हिदायत देना कि अगर कोई आदमी या औरत
मन्नत मान कर अपने आप को एक मुक़र्ररा वक़्त के
लिए रब के लिए मख़्सूस करे 3 तो वह मै या कोई
और नशाआवर चीज़ न पिए। न वह अंगूर या किसी
और चीज़ का सिरका पिए, न अंगूर का रस। वह
अंगूर या किशमिश न खाए। 4 जब तक वह मख़्सूस
है वह अंगूर की कोई भी पैदावार न खाए, यहाँ तक
कि अंगूर के बीज या छिलके भी न खाए। 5 जब तक
वह अपनी मन्नत के मुताबिक़ मख़्सूस है वह अपने
बाल न कटवाए। जितनी देर के लिए उस ने अपने
आप को रब के लिए मख़्सूस किया है उतनी देर तक
वह मुक़द्दस है। इस लिए वह अपने बाल बढ़ने दे।
6 जब तक वह मख़्सूस है वह किसी लाश के क़रीब
न जाए, 7 चाहे वह उस के बाप, माँ, भाई या बहन की
लाश क्यूँ न हो। क्यूँकि इस से वह नापाक हो जाएगा
जबकि अभी तक उस की मख़्सूसियत लम्बे बालों
की सूरत में नज़र आती है। 8 वह अपनी मख़्सूसियत
के दौरान रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है।

9 अगर कोई अचानक मर जाए जब मख़्सूस शख़्स
उस के क़रीब हो तो उस के मख़्सूस बाल नापाक
हो जाएंगे। ऐसी सूरत में लाज़िम है कि वह अपने
आप को पाक-साफ़ करके सातवें दिन अपने सर
को मुंडवाए। 10 आठवें दिन वह दो क़ुम्रियाँ या दो
जवान कबूतर ले कर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े
पर आए और इमाम को दे। 11 इमाम इन में से एक
को गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाए और दूसरे

को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर। यूँ वह उस
के लिए कफ़्फ़ारा देगा जो लाश के क़रीब होने से
नापाक हो गया है। उसी दिन वह अपने सर को दुबारा
मख़्सूस करे 12 और अपने आप को मुक़र्ररा वक़्त के
लिए दुबारा रब के लिए मख़्सूस करे। वह क़ुसूर की
क़ुर्बानी के तौर पर एक साल का भेड़ का बच्चा पेश
करे। जितने दिन उस ने पहले मख़्सूसियत की हालत
में गुज़ारे हैं वह शुमार नहीं किए जा सकते क्यूँकि
वह मख़्सूसियत की हालत में नापाक हो गया था।
वह दुबारा पहले दिन से शुरू करे।

13 शरीअत के मुताबिक़ जब मख़्सूस शख़्स का
मुक़र्ररा वक़्त गुज़र गया हो तो पहले उसे मुलाक़ात के
ख़ैमे के दरवाज़े पर लाया जाए। 14 वहाँ वह रब को
भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए भेड़ का एक बेऐब
यकसाला नर बच्चा, गुनाह की क़ुर्बानी के लिए एक
बेऐब यकसाला भेड़ और सलामती की क़ुर्बानी के
लिए एक बेऐब मेंढा पेश करे। 15 इस के इलावा वह
एक टोकरी में बेख़मीरी रोटियाँ जिन में बेहतरीन मैदा
और तेल मिलाया गया हो और बेख़मीरी रोटियाँ जिन
पर तेल लगाया गया हो मुताल्लिक़ा ग़ल्ला की नज़र और
मै की नज़र के साथ 16 रब को पेश करे। पहले इमाम
गुनाह की क़ुर्बानी और भस्म होने वाली क़ुर्बानी रब
के हुज़ूर चढ़ाए। 17 फिर वह मेंढे को बेख़मीरी रोटियों
के साथ सलामती की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे।
इमाम ग़ल्ला की नज़र और मै की नज़र भी चढ़ाए।
18 इस दौरान मख़्सूस शख़्स मुलाक़ात के ख़ैमे पर
अपने मख़्सूस किए गए सर को मुंडवा कर तमाम
बाल सलामती की क़ुर्बानी की आग में फैंके।

19 फिर इमाम मेंढे का एक पका हुआ शाना और
टोकरी में से दोनों क़िस्मों की एक एक रोटी ले कर
मख़्सूस शख़्स के हाथों पर रखे। 20 इस के बाद वह
यह चीज़ें वापस ले कर उन्हें हिलाने की क़ुर्बानी
के तौर पर रब के सामने हिलाए। यह एक मुक़द्दस
क़ुर्बानी है जो इमाम का हिस्सा है। सलामती की
क़ुर्बानी का हिलाया हुआ सीना और उठाई हुई रान
भी इमाम का हिस्सा हैं। क़ुर्बानी के इख़तिताम पर
मख़्सूस किए हुए शख़्स को मै पीने की इजाज़त है।

21 जो अपने आप को रब के लिए मख़्सूस करता है
वह ऐसा ही करे। लाज़िम है कि वह इन हिदायात के
मुताबिक़ तमाम क़ुर्बानियाँ पेश करे। अगर गुन्जाइश
हो तो वह और भी पेश कर सकता है। बहरहाल
लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत और यह हिदायात
पूरी करे।"

इमाम की बरकत

22 रब ने मूसा से कहा, 23 "हारून और उस के बेटों
को बता देना कि वह इस्राईलियों को यूँ बरकत दें,
24 'रब तुझे बरकत दे और तेरी हिफ़ाज़त करे।
25 रब अपने चिहरे का मेहरबान नूर तुझ पर
चमकाए और तुझ पर रहम करे।
26 रब की नज़र-ए-करम तुझ पर हो, और वह तुझे
सलामती बख़्शे।'
27 यूँ वह मेरा नाम ले कर इस्राईलियों को बरकत
दें। फिर मैं उन्हें बरकत दूँगा।"

मक़्दिस की मख़्सूसियत के हदिए

7 1 जिस दिन मक़्दिस मुकम्मल हुआ उसी दिन
मूसा ने उसे मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया। इस के
लिए उस ने ख़ैमे, उस के तमाम सामान, क़ुर्बानगाह
और उस के तमाम सामान पर तेल छिड़का। 2–3 फिर
क़बीलों के बारह सरदार मक़्दिस के लिए हदिए ले
कर आए। यह वही राहनुमा थे जिन्हों ने मर्दुमशुमारी
के वक़्त मूसा की मदद की थी। उन्हों ने छत वाली
छ: बैल गाड़ियाँ और बारह बैल ख़ैमे के सामने
रब को पेश किए, दो दो सरदारों की तरफ़ से एक
बैलगाड़ी और हर एक सरदार की तरफ़ से एक बैल।

4 रब ने मूसा से कहा, 5 "यह तुह्फ़े क़बूल करके
मुलाक़ात के ख़ैमे के काम के लिए इस्तेमाल कर।
उन्हें लावियों में उन की ख़िदमत की ज़रूरत के
मुताबिक़ तक़्सीम करना।" 6 चुनाँचे मूसा ने बैल
गाड़ियाँ और बैल लावियों को दे दिए। 7 उस ने दो

बैल गाड़ियाँ चार बैलों समेत जैर्सोनियों को 8 और
चार बैल गाड़ियाँ आठ बैलों समेत मिरारियों को दीं।
मिरारी हारून इमाम के बेटे इतमर के तहत ख़िदमत
करते थे। 9 लेकिन मूसा ने क़िहातियों को न बैल
गाड़ियाँ और न बैल दिए। वजह यह थी कि जो
मुक़द्दस चीज़ें उन के सपुर्द थीं वह उन को कंधों
पर उठा कर ले जानी थीं।

10 बारह सरदार क़ुर्बानगाह की मख़्सूसियत के
मौक़े पर भी हदिए ले आए। उन्हों ने अपने हदिए
क़ुर्बानगाह के सामने पेश किए। 11 रब ने मूसा से
कहा, "सरदार बारह दिन के दौरान बारी बारी अपने
हदिए पेश करें।" 12 पहले दिन यहूदाह के सरदार
नह्सोन बिन अम्मीनदाब की बारी थी। उस के हदिए
यह थे : 13 चाँदी का थाल जिस का वज़न डेढ़
किलोग्राम था और छिड़काओ का चाँदी का कटोरा
जिस का वज़न 800 ग्राम था। दोनों ग़ल्ला की नज़र
के लिए तेल के साथ मिलाए गए बेहतरीन मैदे से भरे
हुए थे। 14 इन के इलावा नह्सोन ने यह चीज़ें पेश कीं
: सोने का प्याला जिस का वज़न 110 ग्राम था और
जो बख़ूर से भरा हुआ था, 15 एक जवान बैल, एक
मेंढा, भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए भेड़ का एक
यकसाला बच्चा, 16 गुनाह की क़ुर्बानी के लिए एक
बकरा 17 और सलामती की क़ुर्बानी के लिए दो बैल,
पाँच मेंढे, पाँच बकरे और भेड़ के पाँच यकसाला
बच्चे।

18–23 अगले ग्यारह दिन बाक़ी सरदार भी यही
हदिए मक़्दिस के पास ले आए। दूसरे दिन इश्कार
के सरदार नतनीएल बिन ज़ुग़र की बारी थी,
24–29 तीसरे दिन ज़बूलून के सरदार इलियाब बिन
हेलोन की, 30–47 चौथे दिन रूबिन के सरदार इलीसूर
बिन शदियूर की, पाँचवें दिन शमाऊन के सरदार
सलूमीएल बिन सूरीशद्दी की, छटे दिन जद के
सरदार इलियासफ़ बिन दऊएल की, 48–53 सातवें
दिन इफ़्राईम के सरदार इलीसमा बिन अम्मीहूद
की, 54–71 आठवें दिन मनस्सी के सरदार जमलीएल
बिन फ़दाह्सूर की, नवें दिन बिनयमीन के सरदार
अबिदान बिन जिदाऊनी की, दसवें दिन दान के
सरदार अख़ीअज़र बिन अम्मीशद्दी की, 72–83 ग्यारवें
दिन आशर के सरदार फ़जईएल बिन अक्रान की और
बारहवें दिन नफ़्ताली के सरदार अख़ीरा बिन एनान
की बारी थी।

84 इस्राईल के इन सरदारों ने मिल कर क़ुर्बानगाह
की मख़्सूसियत के लिए चाँदी के 12 थाल,
छिड़काओ के चाँदी के 12 कटोरे और सोने के
12 प्याले पेश किए। 85 हर थाल का वज़न डेढ़
किलोग्राम और छिड़काओ के हर कटोरे का वज़न
800 ग्राम था। इन चीज़ों का कुल वज़न तक़रीबन 28
किलोग्राम था। 86 बख़ूर से भरे हुए सोने के प्यालों
का कुल वज़न तक़रीबन डेढ़ किलोग्राम था (फ़ी
प्याला 110 ग्राम)। 87 सरदारों ने मिल कर भस्म होने
वाली क़ुर्बानी के लिए 12 जवान बैल, 12 मेंढे और
भेड़ के 12 यकसाला बच्चे उन की ग़ल्ला की नज़रों
समेत पेश किए। गुनाह की क़ुर्बानी के लिए उन्हों ने
12 बकरे पेश किए 88 और सलामती की क़ुर्बानी के
लिए 24 बैल, 60 मेंढे, 60 बकरे और भेड़ के 60
यकसाला बच्चे। इन तमाम जानवरों को क़ुर्बानगाह
की मख़्सूसियत के मौक़े पर चढ़ाया गया।

89 जब मूसा मुलाक़ात के ख़ैमे में रब के साथ बात
करने के लिए दाख़िल होता था तो वह रब की
आवाज़ अह्द के सन्दूक़ के ढकने पर से यानी दो
करूबी फ़रिश्तों के दरमियान से सुनता था।

शमादान पर चराग़

8 1 रब ने मूसा से कहा, 2 "हारून को बताना,
'तुझे सात चराग़ों को शमादान पर यूँ रखना
है कि वह शमादान का सामने वाला हिस्सा रौशन
करें'।"

3 हारून ने ऐसा ही किया। जिस तरह रब ने मूसा को
हुक्म दिया था उसी तरह उस ने चराग़ों को रख दिया
ताकि वह सामने वाला हिस्सा रौशन करें। 4 शमादान
पाए से ले कर ऊपर की कलियों तक सोने के एक
घड़े हुए टुकड़े का बना हुआ था। मूसा ने उसे उस

नमूने के ऐन मुताबिक़ बनवाया जो रब ने उसे दिखाया था।

लावियों की मख़्सूसियत

5 रब ने मूसा से कहा, 6 "लावियों को दीगर
इस्राईलियों से अलग करके पाक-साफ़ करना। 7 इस
के लिए गुनाह से पाक करने वाला पानी उन पर
छिड़क कर उन्हें हुक्म देना कि अपने जिस्म के
पूरे बाल मुंडवाओ और अपने कपड़े धोओ। यूँ वह
पाक-साफ़ हो जाएंगे। 8 फिर वह एक जवान बैल चुनें
और साथ की ग़ल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ
मिलाया गया बेहतरीन मैदा लें। तू ख़ुद भी एक जवान
बैल चुन। वह गुनाह की क़ुर्बानी के लिए होगा।
9 इस के बाद लावियों को मुलाक़ात के ख़ैमे के
सामने खड़ा करके इस्राईल की पूरी जमाअत को
वहाँ जमा करना। 10 जब लावी रब के सामने खड़े हों
तो बाक़ी इस्राईली उन के सरों पर अपने हाथ रखें।
11 फिर हारून लावियों को रब के सामने पेश करे।
उन्हें इस्राईलियों की तरफ़ से हिलाई हुई क़ुर्बानी की
हैसियत से पेश किया जाए ताकि वह रब की ख़िदमत
कर सकें। 12 फिर लावी अपने हाथ दोनों बैलों के
सरों पर रखें। एक बैल को गुनाह की क़ुर्बानी के तौर
पर और दूसरे को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर
पर चढ़ाओ ताकि लावियों का कफ़्फ़ारा दिया जाए।
13 लावियों को इस तरीक़े से हारून और उस के
बेटों के सामने खड़ा करके रब को हिलाई हुई क़ुर्बानी
के तौर पर पेश करना है। 14 उन्हें बाक़ी इस्राईलियों
से अलग करने से वह मेरा हिस्सा बनेंगे। 15 इस के
बाद ही वह मुलाक़ात के ख़ैमे में आ कर ख़िदमत
करें, क्यूँकि अब वह ख़िदमत करने के लाइक़ हैं।
उन्हें पाक-साफ़ करके हिलाई हुई क़ुर्बानी के तौर पर
पेश करने का सबब यह है 16 कि लावी इस्राईलियों
में से वह हैं जो मुझे पूरे तौर पर दिए गए हैं। मैं ने
उन्हें इस्राईलियों के तमाम पहलौठों की जगह ले
लिया है। 17 क्यूँकि इस्राईल में हर पहलौठा मेरा है,
ख़्वाह वह इन्सान का हो या हैवान का। उस दिन
जब मैं ने मिस्रियों के पहलौठों को मार दिया मैं ने
इस्राईल के पहलौठों को अपने लिए मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस किया। 18 इस सिलसिले में मैं ने लावियों
को इस्राईलियों के तमाम पहलौठों की जगह ले कर
19 उन्हें हारून और उस के बेटों को दिया है। वह
मुलाक़ात के ख़ैमे में इस्राईलियों की ख़िदमत करें
और उन के लिए कफ़्फ़ारा का इन्तिज़ाम क़ाइम रखें
ताकि जब इस्राईली मक़्दिस के क़रीब आएँ तो उन
को वबा से मारा न जाए।"
20 मूसा, हारून और इस्राईलियों की पूरी जमाअत
ने एहतियात से रब की लावियों के बारे में हिदायात
पर अमल किया। 21 लावियों ने अपने आप को
गुनाहों से पाक-साफ़ करके अपने कपड़ों को धोया।
फिर हारून ने उन्हें रब के सामने हिलाई हुई क़ुर्बानी
के तौर पर पेश किया और उन का कफ़्फ़ारा दिया
ताकि वह पाक हो जाएँ। 22 इस के बाद लावी
मुलाक़ात के ख़ैमे में आए ताकि हारून और उस के
बेटों के तहत ख़िदमत करें। यूँ सब कुछ वैसा ही
किया गया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।
23 रब ने मूसा से यह भी कहा, 24 "लावी 25 साल
की उम्र में मुलाक़ात के ख़ैमे में अपनी ख़िदमत शुरू
करें 25 और 50 साल की उम्र में रिटायर हो जाएँ।
26 इस के बाद वह मुलाक़ात के ख़ैमे में अपने भाइयों
की मदद कर सकते हैं, लेकिन ख़ुद ख़िदमत नहीं कर
सकते। तुझे लावियों को इन हिदायात के मुताबिक़
उन की अपनी अपनी ज़िम्मादारियाँ देनी हैं।"

रेगिस्तान में ईद-ए-फ़सह

9 1 इस्राईलियों को मिस्र से निकले एक साल हो
गया था। दूसरे साल के पहले महीने में रब ने
दश्त-ए-सीना में मूसा से बात की।
2 "लाज़िम है कि इस्राईली ईद-ए-फ़सह को मुक़र्ररा
वक़्त पर मनाएँ, 3 यानी इस महीने के चौधवें दिन,
सूरज के ग़ुरूब होने के ऐन बाद। उसे तमाम क़वाइद
के मुताबिक़ मनाना।" 4 चुनाँचे मूसा ने इस्राईलियों से
कहा कि वह ईद-ए-फ़सह मनाएँ, 5 और उन्हों ने ऐसा

ही किया। उन्हों ने ईद-ए-फ़सह को पहले महीने के चौधवें दिन सूरज के ग़ुरूब होने के ऐन बाद मनाया। उन्हों ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

6 लेकिन कुछ आदमी नापाक थे, क्यूँकि उन्हों ने लाश छू ली थी। इस वजह से वह उस दिन ईद-ए-फ़सह न मना सके। वह मूसा और हारून के पास आ कर 7 कहने लगे, "हम ने लाश छू ली है, इस लिए नापाक हैं। लेकिन हमें इस सबब से ईद-ए-फ़सह को मनाने से क्यूँ रोका जाए? हम भी मुक़र्ररा वक़्त पर बाक़ी इस्राईलियों के साथ रब की क़ुर्बानी पेश करना चाहते हैं।" 8 मूसा ने जवाब दिया, "यहाँ मेरे इन्तिज़ार में खड़े रहो। मैं मालूम करता हूँ कि रब तुम्हारे बारे में क्या हुक्म देता है।"

9 रब ने मूसा से कहा, 10 "इस्राईलियों को बता देना कि अगर तुम या तुम्हारी औलाद में से कोई ईद-ए-फ़सह के दौरान लाश छूने से नापाक हो या किसी दूरदराज़ इलाक़े में सफ़र कर रहा हो, तो भी वह ईद मना सकता है। 11 ऐसा शख़्स उसे ऐन एक माह के बाद मना कर लेले के साथ बेख़मीरी रोटी और कड़वा साग-पात खाए। 12 खाने में से कुछ भी अगली सुब्ह तक बाक़ी न रहे। जानवर की कोई भी हड्डी न तोड़ना। मनाने वाला ईद-ए-फ़सह के पूरे फ़राइज़ अदा करे। 13 लेकिन जो पाक होने और सफ़र न करने के बावुजूद भी ईद-ए-फ़सह को न मनाए उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए, क्यूँकि उस ने मुक़र्ररा वक़्त पर रब को क़ुर्बानी पेश नहीं की। उस शख़्स को अपने गुनाह का नतीजा भुगतना पड़ेगा। 14 अगर कोई परदेसी तुम्हारे दरमियान रहते हुए रब के सामने ईद-ए-फ़सह मनाना चाहे तो उसे इजाज़त है। शर्त यह है कि वह पूरे फ़राइज़ अदा करे। परदेसी और देसी के लिए ईद-ए-फ़सह मनाने के फ़राइज़ एक जैसे हैं।"

मुलाक़ात के ख़ैमे पर बादल का सतून

15 जिस दिन शरीअत के मुक़द्दस ख़ैमे को खड़ा किया गया उस दिन बादल आ कर उस पर छा गया। रात के वक़्त बादल आग की सूरत में नज़र आया। 16 इस के बाद यही सूरत-ए-हाल रही कि बादल उस पर छाया रहता और रात के दौरान आग की सूरत में नज़र आता। 17 जब भी बादल ख़ैमे पर से उठता इस्राईली रवाना हो जाते। जहाँ भी बादल उतर जाता वहाँ इस्राईली अपने डेरे डालते। 18 इस्राईली रब के हुक्म पर रवाना होते और उस के हुक्म पर डेरे डालते। जब तक बादल मक़्दिस पर छाया रहता उस वक़्त तक वह वहीं ठहरते। 19 कभी कभी बादल बड़ी देर तक ख़ैमे पर ठहरा रहता। तब इस्राईली रब का हुक्म मान कर रवाना न होते। 20 कभी कभी बादल सिर्फ़ दो चार दिन के लिए ख़ैमे पर ठहरता। फिर वह रब के हुक्म के मुताबिक़ ही ठहरते और रवाना होते थे। 21 कभी कभी बादल सिर्फ़ शाम से ले कर सुब्ह तक ख़ैमे पर ठहरता। जब वह सुब्ह के वक़्त उठता तो इस्राईली भी रवाना होते थे। जब भी बादल उठता वह भी रवाना हो जाते। 22 जब तक बादल मुक़द्दस ख़ैमे पर छाया रहता उस वक़्त तक इस्राईली रवाना न होते, चाहे वह दो दिन, एक माह, एक साल या इस से ज़्यादा अर्सा मक़्दिस पर छाया रहता। लेकिन जब वह उठता तो इस्राईली भी रवाना हो जाते। 23 वह रब के हुक्म पर ख़ैमे लगाते और उस के हुक्म पर रवाना होते थे। वह वैसा ही करते थे जैसा रब मूसा की मारिफ़त फ़रमाता था।

10 1 रब ने मूसा से कहा, 2 "चाँदी के दो बिगुल घड़ कर बनवा ले। उन्हें जमाअत को जमा करने और क़बीलों को रवाना करने के लिए इस्तेमाल कर। 3 जब दोनों को देर तक बजाया जाए तो पूरी जमाअत मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आ कर तेरे सामने जमा हो जाए। 4 लेकिन अगर एक ही बजाया जाए तो सिर्फ़ कुंबों के बुज़ुर्ग तेरे सामने जमा हो जाएँ। 5 अगर उन की आवाज़ सिर्फ़ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मक़्दिस के मशरिक़ में मौजूद क़बीले रवाना हो जाएँ। 6 फिर जब उन की आवाज़ दूसरी बार थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मक़्दिस के जुनूब में मौजूद क़बीले रवाना हो जाएँ। जब उन की

आवाज़ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो यह रवाना होने
का एलान होगा। 7 इस के मुक़ाबले में जब उन की
आवाज़ देर तक सुनाई दे तो यह इस बात का एलान
होगा कि जमाअत जमा हो जाए।
8 बिगुल बजाने की ज़िम्मादारी हारून के बेटों यानी
इमामों को दी जाए। यह तुम्हारे और आने वाली
नस्लों के लिए दाइमी उसूल हो। 9 उन की आवाज़
उस वक़्त भी थोड़ी देर के लिए सुना दो जब तुम
अपने मुल्क में किसी ज़ालिम दुश्मन से जंग लड़ने
के लिए निकलोगे। तब रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें याद
करके दुश्मन से बचाएगा।
10 इसी तरह उन की आवाज़ मक़्दिस में ख़ुशी के
मौक़ों पर सुनाई दे यानी मुक़र्ररा ईदों और नए चाँद
की ईदों पर। इन मौक़ों पर वह भस्म होने वाली
क़ुर्बानियाँ और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाते वक़्त
बजाए जाएँ। फिर तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें याद करेगा। मैं
रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

सीना पहाड़ से रवानगी

11 इस्राईलियों को मिस्र से निकले एक साल से
ज़ाइद अर्सा हो चुका था। दूसरे साल के बीसवें
दिन बादल मुलाक़ात के ख़ैमे पर से उठा। 12 फिर
इस्राईली मुक़र्ररा तर्तीब के मुताबिक़ दश्त-ए-सीना से
रवाना हुए। चलते चलते बादल फ़ारान के रेगिस्तान
में उतर आया।
13 उस वक़्त वह पहली दफ़ा उस तर्तीब से रवाना
हुए जो रब ने मूसा की मारिफ़त मुक़र्रर की थी।
14 पहले यहूदाह के क़बीले के तीन दस्ते अपने अलम
के तहत चल पड़े। तीनों का कमाँडर नह्सोन बिन
अम्मीनदाब था। 15 साथ चलने वाले क़बीले इश्कार
का कमाँडर नतनीएल बिन ज़ुग़र था। 16 ज़बूलून का
क़बीला भी साथ चला जिस का कमाँडर इलियाब
बिन हेलोन था। 17 इस के बाद मुलाक़ात का ख़ैमा
उतारा गया। जैर्सोनी और मिरारी उसे उठा कर चल
दिए। 18 इन लावियों के बाद रूबिन के क़बीले के
तीन दस्ते अपने अलम के तहत चलने लगे। तीनों
का कमाँडर इलीसूर बिन शदियूर था। 19 साथ चलने
वाले क़बीले शमाऊन का कमाँडर सलूमीएल बिन
सूरीशद्दी था। 20 जद का क़बीला भी साथ चला जिस
का कमाँडर इलियासफ़ बिन दऊएल था। 21 फिर
लावियों में से क़िहाती मक़्दिस का सामान उठा कर
रवाना हुए। लाज़िम था कि उन के अगली मन्ज़िल
पर पहुँचने तक मुलाक़ात का ख़ैमा लगा दिया गया
हो। 22 इस के बाद इफ़्राईम के क़बीले के तीन दस्ते
अपने अलम के तहत चल दिए। उन का कमाँडर
इलीसमा बिन अम्मीहूद था। 23 इफ़्राईम के साथ
चलने वाले क़बीले मनस्सी का कमाँडर जमलीएल
बिन फ़दाह्सूर था। 24 बिनयमीन का क़बीला भी साथ
चला जिस का कमाँडर अबिदान बिन जिदाऊनी था।
25 आख़िर में दान के तीन दस्ते अक़बी मुहाफ़िज़
के तौर पर अपने अलम के तहत रवाना हुए। उन
का कमाँडर अख़ीअज़र बिन अम्मीशद्दी था। 26 दान
के साथ चलने वाले क़बीले आशर का कमाँडर
फ़जईएल बिन अक्रान था। 27 नफ़्ताली का क़बीला
भी साथ चला जिस का कमाँडर अख़ीरा बिन एनान
था। 28 इस्राईली इसी तर्तीब से रवाना हुए।

मूसा होबाब को साथ चलने पर मज्बूर करता है

29 मूसा ने अपने मिदियानी सुसर रऊएल यानी यित्रो
के बेटे होबाब से कहा, “हम उस जगह के लिए
रवाना हो रहे हैं जिस का वादा रब ने हम से किया है।
हमारे साथ चलें! हम आप पर एह्सान करेंगे, क्यूँकि
रब ने इस्राईल पर एह्सान करने का वादा किया
है।” 30 लेकिन होबाब ने जवाब दिया, “मैं साथ नहीं
जाऊँगा बल्कि अपने मुल्क और रिश्तेदारों के पास
वापस चला जाऊँगा।” 31 मूसा ने कहा, “मेहरबानी
करके हमें न छोड़ें। क्यूँकि आप ही जानते हैं कि हम
रेगिस्तान में कहाँ कहाँ अपने डेरे डाल सकते हैं।
आप रेगिस्तान में हमें रास्ता दिखा सकते हैं। 32 अगर
आप हमारे साथ जाएँ तो हम आप को उस एह्सान
में शरीक करेंगे जो रब हम पर करेगा।”

अह्द के सन्दूक़ का सफ़र

33 चुनाँचे उन्हों ने रब के पहाड़ से रवाना हो कर
तीन दिन सफ़र किया। इस दौरान रब का अह्द का
सन्दूक़ उन के आगे आगे चला ताकि उन के लिए
आराम करने की जगह मालूम करे। 34 जब कभी
वह रवाना होते तो रब का बादल दिन के वक़्त
उन के ऊपर रहता। 35 सन्दूक़ के रवाना होते वक़्त
मूसा कहता, "ऐ रब, उठ। तेरे दुश्मन तित्तर-बित्तर
हो जाएँ। तुझ से नफ़रत करने वाले तेरे सामने से
फ़रार हो जाएँ।" 36 और जब भी वह रुक जाता तो
मूसा कहता, "ऐ रब, इस्राईल के हज़ारों ख़ानदानों
के पास वापस आ।"

तबएरा में रब की आग

11 1 एक दिन लोग ख़ूब शिकायत करने लगे।
जब यह शिकायतें रब तक पहुँचीं तो उसे
ग़ुस्सा आया और उस की आग उन के दरमियान
भड़क उठी। जलते जलते उस ने ख़ैमागाह का एक
किनारा भस्म कर दिया। 2 लोग मदद के लिए मूसा के
पास आ कर चिल्लाने लगे तो उस ने रब से दुआ की,
और आग बुझ गई। 3 उस मक़ाम का नाम तबएरा
यानी जलना पड़ गया, क्यूँकि रब की आग उन के
दरमियान जल उठी थी।

मूसा 70 राहनुमा चुनता है

4 इस्राईलियों के साथ जो अजनबी सफ़र कर रहे
थे वह गोश्त खाने की शदीद आर्ज़ू करने लगे। तब
इस्राईली भी रो पड़े और कहने लगे, "कौन हमें गोश्त
खिलाएगा? 5 मिस्र में हम मछली मुफ़्त खा सकते
थे। हाय, वहाँ के खीरे, तरबूज़, गन्दने, प्याज़ और
लहसन कितने अच्छे थे! 6 लेकिन अब तो हमारी
जान सूख गई है। यहाँ बस मन ही मन नज़र आता
रहता है।"

7 मन धनिए के दानों की मानिन्द था, और उस का
रंग गूगल के गूँद की मानिन्द था। 8–9 रात के वक़्त
वह ख़ैमागाह में ओस के साथ ज़मीन पर गिरता था।
सुब्ह के वक़्त लोग इधर उधर घूमते फिरते हुए उसे
जमा करते थे। फिर वह उसे चक्की में पीस कर या
उखली में कूट कर उबालते या रोटी बनाते थे। उस
का ज़ाइक़ा ऐसी रोटी का सा था जिस में ज़ैतून का
तेल डाला गया हो।

10 तमाम ख़ानदान अपने अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर
रोने लगे तो रब को शदीद ग़ुस्सा आया। उन का शोर
मूसा को भी बहुत बुरा लगा। 11 उस ने रब से पूछा,
"तू ने अपने ख़ादिम के साथ इतना बुरा सुलूक क्यूँ
किया? मैं ने किस काम से तुझे इतना नाराज़ किया
कि तू ने इन तमाम लोगों का बोझ मुझ पर डाल
दिया? 12 क्या मैं ने हामिला हो कर इस पूरी क़ौम
को जन्म दिया कि तू मुझ से कहता है, 'इसे उस तरह
उठा कर ले चलना जिस तरह आया शीरख़्वार बच्चे
को उठा कर हर जगह साथ लिए फिरती है। इसी
तरह इसे उस मुल्क में ले जाना जिस का वादा मैं
ने क़सम खा कर इन के बापदादा से किया है।' 13 ऐ
अल्लाह, मैं इन तमाम लोगों को कहाँ से गोश्त मुहय्या
करूँ? वह मेरे सामने रोते रहते हैं कि हमें खाने के
लिए गोश्त दो। 14 मैं अकेला इन तमाम लोगों की
ज़िम्मादारी नहीं उठा सकता। यह बोझ मेरे लिए हद
से ज़्यादा भारी है। 15 अगर तू इस पर इसरार करे तो
फिर बेहतर है कि अभी मुझे मार दे ताकि मैं अपनी
तबाही न देखूँ।"

16 जवाब में रब ने मूसा से कहा, "मेरे पास इस्राईल
के 70 बुज़ुर्ग जमा कर। सिर्फ़ ऐसे लोग चुन जिन के
बारे में तुझे मालूम है कि वह लोगों के बुज़ुर्ग और
निगहबान हैं। उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के पास ले आ।
वहाँ वह तेरे साथ खड़े हो जाएँ, 17 तो मैं उतर कर
तेरे साथ हमकलाम हूँगा। उस वक़्त मैं उस रूह में से
कुछ लूँगा जो मैं ने तुझ पर नाज़िल किया था और उसे
उन पर नाज़िल करूँगा। तब वह क़ौम का बोझ उठाने
में तेरी मदद करेंगे और तू इस में अकेला नहीं रहेगा।
18 लोगों को बताना, 'अपने आप को मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस करो, क्यूँकि कल तुम गोश्त खाओगे। रब

ने तुम्हारी सुनी जब तुम रो पड़े कि कौन हमें गोश्त
खिलाएगा, मिस्र में हमारी हालत बेहतर थी। अब
रब तुम्हें गोश्त मुहय्या करेगा और तुम उसे खाओगे।
19 तुम उसे न सिर्फ़ एक, दो या पाँच दिन खाओगे
बल्कि 10 या 20 दिन से भी ज़्यादा अर्से तक। 20 तुम
एक पूरा महीना ख़ूब गोश्त खाओगे, यहाँ तक कि
वह तुम्हारी नाक से निकलेगा और तुम्हें उस से घिन
आएगी। और यह इस सबब से होगा कि तुम ने रब
को जो तुम्हारे दरमियान है रद्द किया और रोते रोते
उस के सामने कहा कि हम क्यूँ मिस्र से निकले'।"

21 लेकिन मूसा ने एतिराज़ किया, "अगर क़ौम के
पैदल चलने वाले गिने जाएँ तो छः लाख हैं। तू किस
तरह हमें एक माह तक गोश्त मुहय्या करेगा? 22 क्या
गाय-बैलों या भेड़-बकरियों को इतनी मिक़्दार में
ज़बह किया जा सकता है कि काफ़ी हो? अगर
समुन्दर की तमाम मछलियाँ उन के लिए पकड़ी जाएँ
तो क्या काफ़ी होंगी?"

23 रब ने कहा, "क्या रब का इख़तियार कम है?
अब तू ख़ुद देख लेगा कि मेरी बातें दुरुस्त हैं कि
नहीं।"

24 चुनाँचे मूसा ने वहाँ से निकल कर लोगों को
रब की यह बातें बताईं। उस ने उन के बुज़ुर्गों में से
70 को चुन कर उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के इर्दगिर्द
खड़ा कर दिया। 25 तब रब बादल में उतर कर मूसा
से हमकलाम हुआ। जो रूह उस ने मूसा पर नाज़िल
किया था उस में से उस ने कुछ ले कर उन 70 बुज़ुर्गों
पर नाज़िल किया। जब रूह उन पर आया तो वह
नबुव्वत करने लगे। लेकिन ऐसा फिर कभी न हुआ।

26 अब ऐसा हुआ कि इन सत्तर बुज़ुर्गों में से दो
ख़ैमागाह में रह गए थे। उन के नाम इल्दाद और मेदाद
थे। उन्हें चुना तो गया था लेकिन वह मुलाक़ात के
ख़ैमे के पास नहीं आए थे। इस के बावुजूद रूह उन
पर भी नाज़िल हुआ और वह ख़ैमागाह में नबुव्वत
करने लगे। 27 एक नौजवान भाग कर मूसा के पास
आया और कहा, "इल्दाद और मेदाद ख़ैमागाह में ही
नबुव्वत कर रहे हैं।"

28 यशूअ बिन नून जो जवानी से मूसा का मददगार
था बोल उठा, "मूसा मेरे आक़ा, उन्हें रोक दें!"
29 लेकिन मूसा ने जवाब दिया, "क्या तू मेरी ख़ातिर
ग़ैरत खा रहा है? काश रब के तमाम लोग नबी होते
और वह उन सब पर अपना रूह नाज़िल करता!"
30 फिर मूसा और इस्राईल के बुज़ुर्ग ख़ैमागाह में
वापस आए।

31 तब रब की तरफ़ से ज़ोरदार हवा चलने लगी
जिस ने समुन्दर को पार करने वाले बटेरों के ग़ोल
धकेल कर ख़ैमागाह के इर्दगिर्द ज़मीन पर फैंक दिए।
उन के ग़ोल तीन फ़ुट ऊँचे और ख़ैमागाह के चारों
तरफ़ 30 किलोमीटर तक पड़े रहे। 32 उस पूरे दिन
और रात और अगले पूरे दिन लोग निकल कर बटेरें
जमा करते रहे। हर एक ने कम अज़ कम दस बड़ी
टोकरियाँ भर लीं। फिर उन्हों ने उन का गोश्त ख़ैमे
के इर्दगिर्द ज़मीन पर फैला दिया ताकि वह ख़ुश्क हो
जाए।

33 लेकिन गोश्त के पहले टुकड़े अभी मुँह में थे
कि रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और उस ने उन
में सख़्त वबा फैलने दी। 34 चुनाँचे मक़ाम का नाम
क़ब्रोत-हत्तावा यानी 'लालच की क़ब्रें' रखा गया,
क्यूँकि वहाँ उन्हों ने उन लोगों को दफ़न किया जो
गोश्त के लालच में आ गए थे।

35 इस के बाद इस्राईली क़ब्रोत-हत्तावा से रवाना
हो कर हसीरात पहुँच गए। वहाँ वह ख़ैमाज़न हुए।

मरियम और हारून की मुख़ालफ़त

12 1 एक दिन मरियम और हारून मूसा के
ख़िलाफ़ बातें करने लगे। वजह यह थी कि
उस ने कूश की एक औरत से शादी की थी। 2 उन्हों ने
पूछा, "क्या रब सिर्फ़ मूसा की मारिफ़त बात करता
है? क्या उस ने हम से भी बात नहीं की?" रब ने उन
की यह बातें सुनीं।

3 लेकिन मूसा निहायत हलीम था। दुनिया में उस
जैसा हलीम कोई नहीं था। 4 अचानक रब मूसा,

हारून और मरियम से मुख़ातिब हुआ, “तुम तीनों
बाहर निकल कर मुलाक़ात के ख़ैमे के पास आओ।”
तीनों वहाँ पहुँचे। 5 तब रब बादल के सतून में उतर
कर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़ा हुआ।
उस ने हारून और मरियम को बुलाया तो दोनों आए।
6 उस ने कहा, “मेरी बात सुनो। जब तुम्हारे दरमियान
नबी होता है तो मैं अपने आप को रोया में उस पर
ज़ाहिर करता हूँ या ख़्वाब में उस से मुख़ातिब होता
हूँ। 7 लेकिन मेरे ख़ादिम मूसा की और बात है। उसे
मैं ने अपने पूरे घराने पर मुक़र्रर किया है। 8 उस से
मैं रू-ब-रू हमकलाम होता हूँ। उस से मैं मुअम्मों
के ज़रीए नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात करता हूँ। वह
रब की सूरत देखता है। तो फिर तुम मेरे ख़ादिम के
ख़िलाफ़ बातें करने से क्यूँ न डरे?”
9 रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और वह चला
गया। 10 जब बादल का सतून ख़ैमे से दूर हुआ तो
मरियम की जिल्द बर्फ़ की मानिन्द सफ़ेद थी। वह
कोढ़ का शिकार हो गई थी। हारून उस की तरफ़
मुड़ा तो उस की हालत देखी 11 और मूसा से कहा,
“मेरे आक़ा, मेहरबानी करके हमें इस गुनाह की सज़ा
न दें जो हमारी हमाक़त के बाइस सरज़द हुआ है।
12 मरियम को इस हालत में न छोड़ें। वह तो ऐसे बच्चे
की मानिन्द है जो मुर्दा पैदा हुआ हो, जिस के जिस्म
का आधा हिस्सा गल चुका हो।”
13 तब मूसा ने पुकार कर रब से कहा, “ऐ अल्लाह,
मेहरबानी करके उसे शिफ़ा दे।” 14 रब ने जवाब में
मूसा से कहा, “अगर मरियम का बाप उस के मुँह
पर थूकता तो क्या वह पूरे हफ़्ते तक शर्म महसूस न
करती? उसे एक हफ़्ते के लिए ख़ैमागाह के बाहर
बन्द रख। इस के बाद उसे वापस लाया जा सकता
है।”
15 चुनाँचे मरियम को एक हफ़्ते के लिए ख़ैमागाह
के बाहर बन्द रखा गया। लोग उस वक़्त तक सफ़र
के लिए रवाना न हुए जब तक उसे वापस न लाया
गया। 16 जब वह वापस आई तो इस्राईली हसीरात से
रवाना हो कर फ़ारान के रेगिस्तान में ख़ैमाज़न हुए।

मुल्क-ए-कनआन में इस्राईली जासूस

13 1 फिर रब ने मूसा से कहा, 2 “कुछ आदमी
मुल्क-ए-कनआन का जाइज़ा लेने के लिए
भेज दे, क्यूँकि मैं उसे इस्राईलियों को देने को हूँ। हर
क़बीले में से एक राहनुमा को चुन कर भेज दे।”
3 मूसा ने रब के कहने पर उन्हें दश्त-ए-फ़ारान से
भेजा। सब इस्राईली राहनुमा थे। 4 उन के नाम यह हैं
: रूबिन के क़बीले से सम्मूअ बिन ज़क्कूर,
5 शमाऊन के क़बीले से साफ़त बिन होरी,
6 यहूदाह के क़बीले से कालिब बिन यफ़ुन्ना,
7 इश्कार के क़बीले से इजाल बिन यूसुफ़,
8 इफ़्राईम के क़बीले से होसेअ बिन नून,
9 बिनयमीन के क़बीले से फ़ल्ती बिन रफ़ू,
10 ज़बूलून के क़बीले से जद्दीएल बिन सोदी,
11 यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले से जिद्दी बिन
सूसी,
12 दान के क़बीले से अम्मीएल बिन जमल्ली,
13 आशर के क़बीले से सतूर बिन मीकाएल,
14 नफ़्ताली के क़बीले से नख़्बी बिन वुफ़्सी,
15 जद के क़बीले से जियूएल बिन माकी।
16 मूसा ने इन ही बारह आदमियों को मुल्क का
जाइज़ा लेने के लिए भेजा। उस ने होसेअ का नाम
यशूअ यानी ‘रब नजात है’ में बदल दिया।
17 उन्हें रुख़्सत करने से पहले उस ने कहा, “दश्त-
ए-नजब से गुज़र कर पहाड़ी इलाक़े तक पहुँचो।
18 मालूम करो कि यह किस तरह का मुल्क है और
उस के बाशिन्दे कैसे हैं। क्या वह ताक़तवर हैं
या कमज़ोर, तादाद में कम हैं या ज़्यादा? 19 जिस
मुल्क में वह बसते हैं क्या वह अच्छा है कि नहीं?
वह किस क़िस्म के शहरों में रहते हैं? क्या उन
की चारदीवारियाँ हैं कि नहीं? 20 मुल्क की ज़मीन
ज़रख़ेज़ है या बंजर? उस में दरख़्त हैं कि नहीं?
और जुरअत करके मुल्क का कुछ फल चुन कर ले
आओ।” उस वक़्त पहले अंगूर पक गए थे।

21 चुनाँचे इन आदमियों ने सफ़र करके दश्त-ए-सीन
से रहोब तक मुल्क का जाइज़ा लिया। रहोब लबो-
हमात के क़रीब है। 22 वह दश्त-ए-नजब से गुज़र कर
हब्रून पहुँचे जहाँ अनाक़ के बेटे अख़ीमान, सीसी और
तल्मी रहते थे। (हब्रून को मिस्र के शहर ज़ुअन से
सात साल पहले तामीर किया गया था)। 23 जब वह
वादी-ए-इस्काल तक पहुँचे तो उन्हों ने एक डाली
काट ली जिस पर अंगूर का गुच्छा लगा हुआ था।
दो आदमियों ने यह अंगूर, कुछ अनार और कुछ
अन्जीर लाठी पर लटकाए और उसे उठा कर चल
पड़े। 24 उस जगह का नाम उस गुच्छे के सबब से
जो इस्राईलियों ने वहाँ से काट लिया इस्काल यानी
गुच्छा रखा गया।

25 चालीस दिन तक मुल्क का खोज लगाते लगाते
वह लौट आए। 26 वह मूसा, हारून और इस्राईल
की पूरी जमाअत के पास आए जो दश्त-ए-फ़ारान
में क़ादिस की जगह पर इन्तिज़ार कर रहे थे। वहाँ
उन्हों ने सब कुछ बताया जो उन्हों ने मालूम किया
था और उन्हें वह फल दिखाए जो ले कर आए थे।
27 उन्हों ने मूसा को रिपोर्ट दी, "हम उस मुल्क में
गए जहाँ आप ने हमें भेजा था। वाक़ई उस मुल्क
में दूध और शहद की कस्रत है। यहाँ हमारे पास
उस के कुछ फल भी हैं। 28 लेकिन उस के बाशिन्दे
ताक़तवर हैं। उन के शहरों की फ़सीलें हैं, और वह
निहायत बड़े हैं। हम ने वहाँ अनाक़ की औलाद भी
देखी। 29 अमालीक़ी दश्त-ए-नजब में रहते हैं जबकि
हित्ती, यबूसी और अमोरी पहाड़ी इलाक़े में आबाद
हैं। कनआनी साहिली इलाक़े और दरया-ए-यर्दन के
किनारे किनारे बसते हैं।"

30 कालिब ने मूसा के सामने जमाशुदा लोगों को
इशारा किया कि वह ख़ामोश हो जाएँ। फिर उस ने
कहा, "आएँ, हम मुल्क में दाख़िल हो जाएँ और उस
पर क़ब्ज़ा कर लें, क्यूँकि हम यक़ीनन यह करने के
क़ाबिल हैं।" 31 लेकिन दूसरे आदमियों ने जो उस के
साथ मुल्क को देखने गए थे कहा, "हम उन लोगों
पर हम्ला नहीं कर सकते, क्यूँकि वह हम से ताक़तवर
हैं।" 32 उन्हों ने इस्राईलियों के दरमियान उस मुल्क
के बारे में ग़लत अफ़्वाहें फैलाईं जिस की तफ़्तीश
उन्हों ने की थी। उन्हों ने कहा, "जिस मुल्क में से हम
गुज़रे ताकि उस का जाइज़ा लें वह अपने बाशिन्दों
को हड़प कर लेता है। जो भी उस में रहता है निहायत
दराज़क़द है। 33 हम ने वहाँ देओक़ामत अफ़राद भी
देखे। (अनाक़ के बेटे देओक़ामत के अफ़राद की
औलाद थे)। उन के सामने हम अपने आप को टिड्डी
जैसा मह्सूस कर रहे थे, और हम उन की नज़र में
ऐसे थे भी।"

लोग कनआन में दाख़िल नहीं होना चाहते

14 1 उस रात तमाम लोग चीख़ें मार मार
कर रोते रहे। 2 सब मूसा और हारून के
ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे। पूरी जमाअत ने उन से कहा,
"काश हम मिस्र या इस रेगिस्तान में मर गए होते!
3 रब हमें क्यूँ उस मुल्क में ले जा रहा है? क्या
इस लिए कि दुश्मन हमें तलवार से क़त्ल करे और
हमारे बाल-बच्चों को लूट ले? क्या बेहतर नहीं होगा
कि हम मिस्र वापस जाएँ?" 4 उन्हों ने एक दूसरे से
कहा, "आओ, हम राहनुमा चुन कर मिस्र वापस चले
जाएँ।"

5 तब मूसा और हारून पूरी जमाअत के सामने मुँह
के बल गिरे। 6 लेकिन यशूअ बिन नून और कालिब
बिन यफ़ुन्ना बाक़ी दस जासूसों से फ़र्क़ थे। परेशानी
के आलम में उन्हों ने अपने कपड़े फाड़ कर 7 पूरी
जमाअत से कहा, "जिस मुल्क में से हम गुज़रे और
जिस की तफ़्तीश हम ने की वह निहायत ही अच्छा
है। 8 अगर रब हम से ख़ुश है तो वह ज़रूर हमें उस
मुल्क में ले जाएगा जिस में दूध और शहद की कस्रत
है। वह हमें ज़रूर यह मुल्क देगा। 9 रब से बग़ावत
मत करना। उस मुल्क के रहने वालों से न डरें। हम
उन्हें हड़प कर जाएंगे। उन की पनाह उन से जाती
रही है जबकि रब हमारे साथ है। चुनाँचे उन से मत
डरें।"

10 यह सुन कर पूरी जमाअत उन्हें संगसार करने के
लिए तय्यार हुई। लेकिन अचानक रब का जलाल
मुलाक़ात के ख़ैमे पर ज़ाहिर हुआ, और तमाम
इस्राईलियों ने उसे देखा। 11 रब ने मूसा से कहा, "यह
लोग मुझे कब तक हक़ीर जानेंगे? वह कब तक मुझ
पर ईमान रखने से इन्कार करेंगे अगरचे मैं ने उन के
दरमियान इतने मोजिज़े किए हैं? 12 मैं उन्हें वबा से
मार डालूँगा और उन्हें रू-ए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा।
उन की जगह मैं तुझ से एक क़ौम बनाऊँगा जो उन
से बड़ी और ताक़तवर होगी।"

13 लेकिन मूसा ने रब से कहा, "फिर मिस्री यह सुन
लेंगे! क्यूँकि तू ने अपनी क़ुदरत से इन लोगों को
मिस्र से निकाल कर यहाँ तक पहुँचाया है। 14 मिस्री
यह बात कनआन के बाशिन्दों को बताएँगे। यह लोग
पहले से सुन चुके हैं कि रब इस क़ौम के साथ है,
कि तुझे रू-ब-रू देखा जाता है, कि तेरा बादल उन
के ऊपर ठहरा रहता है, और कि तू दिन के वक़्त
बादल के सतून में और रात को आग के सतून में इन
के आगे आगे चलता है। 15 अगर तू एक दम इस पूरी
क़ौम को तबाह कर डाले तो बाक़ी क़ौमें यह सुन
कर कहेंगी, 16 'रब इन लोगों को उस मुल्क में ले
जाने के क़ाबिल नहीं था जिस का वादा उस ने उन
से क़सम खा कर किया था। इसी लिए उस ने उन्हें
रेगिस्तान में हलाक कर दिया।' 17 ऐ रब, अब अपनी
क़ुदरत यूँ ज़ाहिर कर जिस तरह तू ने फ़रमाया है।
क्यूँकि तू ने कहा, 18 'रब तहम्मुल और शफ़क़त से
भरपूर है। वह गुनाह और नाफ़रमानी मुआफ़ करता
है, लेकिन हर एक को उस की मुनासिब सज़ा भी देता
है। जब वालिदैन गुनाह करें तो उन की औलाद को भी
तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा के नताइज भुगतने
पड़ेंगे।' 19 इन लोगों का क़ुसूर अपनी अज़ीम शफ़क़त
के मुताबिक़ मुआफ़ कर। उन्हें उस तरह मुआफ़ कर
जिस तरह तू उन्हें मिस्र से निकलते वक़्त अब तक
मुआफ़ करता रहा है।"

20 रब ने जवाब दिया, "तेरे कहने पर मैं ने उन्हें
मुआफ़ कर दिया है। 21 इस के बावुजूद मेरी हयात
की क़सम और मेरे जलाल की क़सम जो पूरी दुनिया
को मामूर करता है, 22 इन लोगों में से कोई भी उस
मुल्क में दाख़िल नहीं होगा। उन्हों ने मेरा जलाल और
मेरे मोजिज़े देखे हैं जो मैं ने मिस्र और रेगिस्तान में कर
दिखाए हैं। तो भी उन्हों ने दस दफ़ा मुझे आज़माया
और मेरी न सुनी। 23 उन में से एक भी उस मुल्क को
नहीं देखेगा जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर उन
के बापदादा से किया था। जिस ने भी मुझे हक़ीर
जाना है वह कभी उसे नहीं देखेगा। 24 सिर्फ़ मेरा
ख़ादिम कालिब मुख़्तलिफ़ है। उस की रूह फ़र्क़
है। वह पूरे दिल से मेरी पैरवी करता है, इस लिए
मैं उसे उस मुल्क में ले जाऊँगा जिस में उस ने सफ़र
किया है। उस की औलाद मुल्क मीरास में पाएगी।
25 लेकिन फ़िलहाल अमालीक़ी और कनआनी उस
की वादियों में आबाद रहेंगे। चुनाँचे कल मुड़ कर
वापस चलो। रेगिस्तान में बहर-ए-क़ुल्ज़ुम की तरफ़
रवाना हो जाओ।"

26 रब ने मूसा और हारून से कहा, 27 "यह शरीर
जमाअत कब तक मेरे ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाती रहेगी?
उन के गिले-शिकवे मुझ तक पहुँच गए हैं। 28 इस
लिए उन्हें बताओ, 'रब फ़रमाता है कि मेरी हयात की
क़सम, मैं तुम्हारे साथ वही कुछ करूँगा जो तुम ने मेरे
सामने कहा है। 29 तुम इस रेगिस्तान में मर कर यहीं
पड़े रहोगे, हर एक जो 20 साल या इस से ज़ाइद का
है, जो मर्दुमशुमारी में गिना गया और जो मेरे ख़िलाफ़
बुड़बुड़ाया। 30 गो मैं ने हाथ उठा कर क़सम खाई
थी कि मैं तुझे उस में बसाऊँगा तुम में से कोई भी
उस मुल्क में दाख़िल नहीं होगा। सिर्फ़ कालिब बिन
यफ़ुन्ना और यशूअ बिन नून दाख़िल होंगे। 31 तुम ने
कहा था कि दुश्मन हमारे बच्चों को लूट लेंगे। लेकिन
उन ही को मैं उस मुल्क में ले जाऊँगा जिसे तुम ने
रद्द किया है। 32 लेकिन तुम ख़ुद दाख़िल नहीं होगे।
तुम्हारी लाशें इस रेगिस्तान में पड़ी रहेंगी। 33 तुम्हारे
बच्चे 40 साल तक यहाँ रेगिस्तान में गल्लाबान होंगे।
उन्हें तुम्हारी बेवफ़ाई के सबब से उस वक़्त तक
तक्लीफ़ उठानी पड़ेगी जब तक तुम में से आख़िरी

शख़्स मर न गया हो। 34 तुम ने चालीस दिन के दौरान
उस मुल्क का जाइज़ा लिया। अब तुम्हें चालीस साल
तक अपने गुनाहों का नतीजा भुगतना पड़ेगा। तब
तुम्हें पता चलेगा कि इस का क्या मतलब है कि
मैं तुम्हारी मुख़ालफ़त करता हूँ। 35 मैं, रब ने यह
बात फ़रमाई है। मैं यक़ीनन यह सब कुछ उस सारी
शरीर जमाअत के साथ करूँगा जिस ने मिल कर
मेरी मुख़ालफ़त की है। इसी रेगिस्तान में वह ख़त्म
हो जाएंगे, यहीं मर जाएंगे'।"

36–37 जिन आदमियों को मूसा ने मुल्क का जाइज़ा
लेने के लिए भेजा था, रब ने उन्हें फ़ौरन मोहलिक
वबा से मार डाला, क्यूँकि उन के ग़लत अफ़्वाहें
फैलाने से पूरी जमाअत बुड़बुड़ाने लगी थी। 38 सिर्फ़
यशूअ बिन नून और कालिब बिन यफ़ुन्ना ज़िन्दा रहे।

39 जब मूसा ने रब की यह बातें इस्राईलियों को
बताईं तो वह ख़ूब मातम करने लगे। 40 अगली सुब्ह-
सवेरे वह उठे और यह कहते हुए ऊँचे पहाड़ी इलाक़े
के लिए रवाना हुए कि हम से ग़लती हुई है, लेकिन
अब हम हाज़िर हैं और उस जगह की तरफ़ जा रहे
हैं जिस का ज़िक्र रब ने किया है।

41 लेकिन मूसा ने कहा, "तुम क्यूँ रब की
ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे हो? तुम कामयाब नहीं होगे।
42 वहाँ न जाओ, क्यूँकि रब तुम्हारे साथ नहीं है। तुम
दुश्मनों के हाथों शिकस्त खाओगे, 43 क्यूँकि वहाँ
अमालीक़ी और कनआनी तुम्हारा सामना करेंगे।
चूँकि तुम ने अपना मुँह रब से फेर लिया है इस लिए
वह तुम्हारे साथ नहीं होगा, और दुश्मन तुम्हें तलवार
से मार डालेगा।"

44 तो भी वह अपने ग़ुरूर में जुरअत करके ऊँचे
पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ बढ़े, हालाँकि न मूसा और
न अह्द के सन्दूक़ ही ने ख़ैमागाह को छोड़ा। 45 फिर
उस पहाड़ी इलाक़े में रहने वाले अमालीक़ी और
कनआनी उन पर आन पड़े और उन्हें मारते मारते
हुर्मा तक तित्तर-बित्तर कर दिया।

कनआन में क़ुर्बानियाँ पेश करने का तरीक़ा

15 1 रब ने मूसा से कहा, 2 "इस्राईलियों को
बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल
होगे जो मैं तुम्हें दूँगा 3–4 तो जलने वाली क़ुर्बानियाँ
यूँ पेश करना :

अगर तुम अपने गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से
ऐसी क़ुर्बानी पेश करना चाहो जिस की ख़ुश्बू रब
को पसन्द हो तो साथ साथ डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन
मैदा भी पेश करो जो एक लिटर ज़ैतून के तेल के साथ
मिलाया गया हो। इस में कोई फ़र्क़ नहीं कि यह भस्म
होने वाली क़ुर्बानी, मन्नत की क़ुर्बानी, दिली ख़ुशी की
क़ुर्बानी या किसी ईद की क़ुर्बानी हो।

5 हर भेड़ को पेश करते वक़्त एक लिटर मै भी मै
की नज़र के तौर पर पेश करना। 6 जब मेंढा क़ुर्बान
किया जाए तो 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी साथ
पेश करना जो सवा लिटर तेल के साथ मिलाया गया
हो। 7 सवा लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश की
जाए। ऐसी क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब को पसन्द आएगी।

8 अगर तू रब को भस्म होने वाली क़ुर्बानी, मन्नत
की क़ुर्बानी या सलामती की क़ुर्बानी के तौर पर
जवान बैल पेश करना चाहे 9 तो उस के साथ साढ़े 4
किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करना जो दो लिटर
तेल के साथ मिलाया गया हो। 10 दो लिटर मै भी
मै की नज़र के तौर पर पेश की जाए। ऐसी क़ुर्बानी
की ख़ुश्बू रब को पसन्द है। 11 लाज़िम है कि जब
भी किसी गाय, बैल, भेड़, मेंढे, बकरी या बकरे को
चढ़ाया जाए तो ऐसा ही किया जाए।

12 अगर एक से ज़ाइद जानवरों को क़ुर्बान करना
है तो हर एक के लिए मुक़र्ररा ग़ल्ला और मै की नज़रें
भी साथ ही पेश की जाएँ।

13 लाज़िम है कि हर देसी इस्राईली जलने वाली
क़ुर्बानियाँ पेश करते वक़्त ऐसा ही करे। फिर उन की
ख़ुश्बू रब को पसन्द आएगी। 14 यह भी लाज़िम है कि
इस्राईल में आरिज़ी या मुस्तक़िल तौर पर रहने वाले
परदेसी इन उसूलों के मुताबिक़ अपनी क़ुर्बानियाँ

चढ़ाएँ। फिर उन की ख़ुश्बू रब को पसन्द आएगी।
15 मुल्क-ए-कनआन में रहने वाले तमाम लोगों के
लिए पाबन्दियाँ एक जैसी हैं, ख़्वाह वह देसी हों
या परदेसी, क्यूँकि रब की नज़र में परदेसी तुम्हारे
बराबर है। यह तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के लिए
दाइमी उसूल है। 16 तुम्हारे और तुम्हारे साथ रहने
वाले परदेसी के लिए एक ही शरीअत है।"

फ़सल के लिए शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानी

17 रब ने मूसा से कहा, 18 "इस्राईलियों को बताना
कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जिस में मैं
तुम्हें ले जा रहा हूँ 19 और वहाँ की पैदावार खाओगे
तो पहले उस का एक हिस्सा उठाने वाली क़ुर्बानी
के तौर पर रब को पेश करना। 20 फ़सल के पहले
ख़ालिस आटे में से मेरे लिए एक रोटी बना कर उठाने
वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करो। वह गाहने की
जगह की तरफ़ से रब के लिए उठाने वाली क़ुर्बानी
होगी। 21 अपनी फ़सल के पहले ख़ालिस आटे में से
यह क़ुर्बानी पेश किया करो। यह उसूल हमेशा तक
लागू रहे।

नादानिस्ता गुनाहों के लिए क़ुर्बानियाँ

22 हो सकता है कि ग़ैरइरादी तौर पर तुम से ग़लती
हुई है और तुम ने उन अह्काम पर पूरे तौर पर अमल
नहीं किया जो रब मूसा को दे चुका है 23 या जो वह
आने वाली नस्लों को देगा। 24 अगर जमाअत इस
बात से नावाक़िफ़ थी और ग़ैरइरादी तौर पर उस से
ग़लती हुई तो फिर पूरी जमाअत एक जवान बैल भस्म
होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। साथ ही वह
मुक़र्ररा ग़ल्ला और मै की नज़रें भी पेश करे। इस की
ख़ुश्बू रब को पसन्द होगी। इस के इलावा जमाअत
गुनाह की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा पेश करे।
25 इमाम इस्राईल की पूरी जमाअत का कफ़्फ़ारा दे तो
उन्हें मुआफ़ी मिलेगी, क्यूँकि उन का गुनाह ग़ैरइरादी
था और उन्हों ने रब को भस्म होने वाली क़ुर्बानी
और गुनाह की क़ुर्बानी पेश की है। 26 इस्राईलियों की
पूरी जमाअत को परदेसियों समेत मुआफ़ी मिलेगी,
क्यूँकि गुनाह ग़ैरइरादी था।
27 अगर सिर्फ़ एक शख़्स से ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह
हुआ हो तो गुनाह की क़ुर्बानी के लिए वह एक
यकसाला बकरी पेश करे। 28 इमाम रब के सामने
उस शख़्स का कफ़्फ़ारा दे। जब कफ़्फ़ारा दे दिया
गया तो उसे मुआफ़ी हासिल होगी। 29 यही उसूल
परदेसी पर भी लागू है। अगर उस से ग़ैरइरादी तौर
पर गुनाह हुआ हो तो वह मुआफ़ी हासिल करने के
लिए वही कुछ करे जो इस्राईली को करना होता है।

दानिस्ता गुनाहों के लिए सज़ा-ए-मौत

30 लेकिन अगर कोई देसी या परदेसी जान-बूझ कर
गुनाह करता है तो ऐसा शख़्स रब की इहानत करता
है, इस लिए लाज़िम है कि उसे उस की क़ौम में से
मिटाया जाए। 31 उस ने रब का कलाम हक़ीर जान
कर उस के अह्काम तोड़ डाले हैं, इस लिए उसे
ज़रूर क़ौम में से मिटाया जाए। वह अपने गुनाह का
ज़िम्मादार है।"
32 जब इस्राईली रेगिस्तान में से गुज़र रहे थे तो एक
आदमी को पकड़ा गया जो हफ़्ते के दिन लकड़ियाँ
जमा कर रहा था। 33 जिन्हों ने उसे पकड़ा था वह
उसे मूसा, हारून और पूरी जमाअत के पास ले आए।
34 चूँकि साफ़ मालूम नहीं था कि उस के साथ क्या
किया जाए इस लिए उन्हों ने उसे गिरिफ़्तार कर
लिया।
35 फिर रब ने मूसा से कहा, "इस आदमी को ज़रूर
सज़ा-ए-मौत दी जाए। पूरी जमाअत उसे ख़ैमागाह के
बाहर ले जा कर संगसार करे।" 36 चुनाँचे जमाअत
ने उसे ख़ैमागाह के बाहर ले जा कर संगसार किया,
जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

अह्काम की याद दिलाने वाले फुन्दने

37 रब ने मूसा से कहा, 38 "इस्राईलियों को बताना
कि तुम और तुम्हारे बाद की नस्लें अपने लिबास के
किनारों पर फुन्दने लगाएँ। हर फुन्दना एक क़िर्मिज़ी

डोरी से लिबास के साथ लगा हो। 39 इन फुन्दनों
को देख कर तुम्हें रब के तमाम अह्काम याद रहेंगे
और तुम उन पर अमल करोगे। फिर तुम अपने
दिलों और आँखों की ग़लत ख़्वाहिशों के पीछे नहीं
पड़ोगे बल्कि ज़िनाकारी से दूर रहोगे। 40 फिर तुम मेरे
अह्काम को याद करके उन पर अमल करोगे और
अपने ख़ुदा के सामने मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रहोगे।
41 मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिस्र से निकाल
लाया ताकि तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा
हूँ।"

क़ोरह, दातन और अबीराम की सरकशी

16 1–2 एक दिन क़ोरह बिन इज़हार मूसा के
ख़िलाफ़ उठा। वह लावी के क़बीले का
क़िहाती था। उस के साथ रूबिन के क़बीले के तीन
आदमी थे, इलियाब के बेटे दातन और अबीराम और
ओन बिन पलत। उन के साथ 250 और आदमी भी थे
जो जमाअत के सरदार और असर-ओ-रसूख़ वाले थे,
और जो कौंसल के लिए चुने गए थे। 3 वह मिल कर
मूसा और हारून के पास आ कर कहने लगे, "आप
हम से ज़ियादती कर रहे हैं। पूरी जमाअत मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस है, और रब उस के दरमियान है। तो फिर
आप अपने आप को क्यूँ रब की जमाअत से बढ़ कर
समझते हैं?"

4 यह सुन कर मूसा मुँह के बल गिरा। 5 फिर उस
ने क़ोरह और उस के तमाम साथियों से कहा,
"कल सुब्ह रब ज़ाहिर करेगा कि कौन उस का
बन्दा और कौन मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है। उसी को वह
अपने पास आने देगा। 6 ऐ क़ोरह, कल अपने तमाम
साथियों के साथ बख़ूरदान ले कर 7 रब के सामने
उन में अंगारे और बख़ूर डालो। जिस आदमी को रब
चुनेगा वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस होगा। अब तुम लावी
ख़ुद ज़ियादती कर रहे हो।"

8 मूसा ने क़ोरह से बात जारी रखी, "ऐ लावी की
औलाद, सुनो! 9 क्या तुम्हारी नज़र में यह कोई छोटी
बात है कि रब तुम्हें इस्राईली जमाअत के बाक़ी
लोगों से अलग करके अपने क़रीब ले आया ताकि
तुम रब के मक़्दिस में और जमाअत के सामने खड़े
हो कर उन की ख़िदमत करो? 10 वह तुझे और तेरे
साथी लावियों को अपने क़रीब लाया है। लेकिन अब
तुम इमाम का उह्दा भी अपनाना चाहते हो। 11 अपने
साथियों से मिल कर तू ने हारून की नहीं बल्कि रब
की मुख़ालफ़त की है। क्यूँकि हारून कौन है कि तुम
उस के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाओ?"

12 फिर मूसा ने इलियाब के बेटों दातन और
अबीराम को बुलाया। लेकिन उन्हों ने कहा, "हम
नहीं आएँगे। 13 आप हमें एक ऐसे मुल्क से निकाल
लाए हैं जहाँ दूध और शहद की कस्रत है ताकि हम
रेगिस्तान में हलाक हो जाएँ। क्या यह काफ़ी नहीं है?
क्या अब आप हम पर हुकूमत भी करना चाहते हैं?
14 न आप ने हमें ऐसे मुल्क में पहुँचाया जिस में दूध
और शहद की कस्रत है, न हमें खेतों और अंगूर के
बाग़ों के वारिस बनाया है। क्या आप इन आदमियों
की आँखें निकाल डालेंगे? नहीं, हम हरगिज़ नहीं
आएँगे।"

15 तब मूसा निहायत ग़ुस्से हुआ। उस ने रब से
कहा, "उन की क़ुर्बानी को क़बूल न कर। मैं ने एक
गधा तक उन से नहीं लिया, न मैं ने उन में से किसी
से बुरा सुलूक किया है।"

16 क़ोरह से उस ने कहा, "कल तुम और तुम्हारे
साथी रब के सामने हाज़िर हो जाओ। हारून भी
आएगा। 17 हर एक अपना बख़ूरदान ले कर उसे
रब को पेश करे।" 18 चुनाँचे हर आदमी ने अपना
बख़ूरदान ले कर उस में अंगारे और बख़ूर डाल दिया।
फिर सब मूसा और हारून के साथ मुलाक़ात के ख़ैमे
के दरवाज़े पर खड़े हुए। 19 क़ोरह ने पूरी जमाअत
को दरवाज़े पर मूसा और हारून के मुक़ाबले में जमा
किया था।

अचानक पूरी जमाअत पर रब का जलाल ज़ाहिर
हुआ। 20 रब ने मूसा और हारून से कहा, 21 "इस
जमाअत से अलग हो जाओ ताकि मैं इसे फ़ौरन
हलाक कर दूँ।" 22 मूसा और हारून मुँह के बल गिरे

और बोल उठे, “ऐ अल्लाह, तू तमाम जानों का ख़ुदा
है। क्या तेरा ग़ज़ब एक ही आदमी के गुनाह के सबब
से पूरी जमाअत पर आन पड़ेगा?”
23 तब रब ने मूसा से कहा, 24 “जमाअत को बता
दे कि क़ोरह, दातन और अबीराम के डेरों से दूर
हो जाओ।” 25 मूसा उठ कर दातन और अबीराम के
पास गया, और इस्राईल के बुज़ुर्ग उस के पीछे चले।
26 उस ने जमाअत को आगाह किया, “इन शरीरों के
ख़ैमों से दूर हो जाओ! जो कुछ भी उन के पास है उसे
न छुओ, वर्ना तुम भी उन के साथ तबाह हो जाओगे
जब वह अपने गुनाहों के बाइस हलाक होंगे।” 27 तब
बाक़ी लोग क़ोरह, दातन और अबीराम के डेरों से
दूर हो गए।
दातन और अबीराम अपने बाल-बच्चों समेत अपने
ख़ैमों से निकल कर बाहर खड़े थे। 28 मूसा ने कहा,
“अब तुम्हें पता चलेगा कि रब ने मुझे यह सब कुछ
करने के लिए भेजा है। मैं अपनी नहीं बल्कि उस की
मर्ज़ी पूरी कर रहा हूँ। 29 अगर यह लोग दूसरों की
तरह तबई मौत मरें तो फिर रब ने मुझे नहीं भेजा।
30 लेकिन अगर रब ऐसा काम करे जो पहले कभी
नहीं हुआ और ज़मीन अपना मुँह खोल कर उन्हें और
उन का पूरा माल हड़प कर ले और उन्हें जीते जी
दफ़ना दे तो इस का मतलब होगा कि इन आदमियों
ने रब को हक़ीर जाना है।”
31 यह बात कहते ही उन के नीचे की ज़मीन फट
गई। 32 उस ने अपना मुँह खोल कर उन्हें, उन के
ख़ानदानों को, क़ोरह के तमाम लोगों को और उन
का सारा सामान हड़प कर लिया। 33 वह अपनी पूरी
मिलकियत समेत जीते जी दफ़न हो गए। ज़मीन उन
के ऊपर वापस आ गई। यूँ उन्हें जमाअत से निकाला
गया और वह हलाक हो गए। 34 उन की चीख़ें सुन
कर उन के इर्दगिर्द खड़े तमाम इस्राईली भाग उठे,
क्यूँकि उन्हों ने सोचा, “ऐसा न हो कि ज़मीन हमें भी
निगल ले।”
35 उसी लम्हे रब की तरफ़ से आग उतर आई और
उन 250 आदमियों को भस्म कर दिया जो बख़ूर पेश
कर रहे थे। 36 रब ने मूसा से कहा, 37 “हारून इमाम
के बेटे इलीअज़र को इत्तिला दे कि वह बख़ूरदानों
को राख में से निकाल कर रखे। उन के अंगारे वह दूर
फैंके। बख़ूरदानों को रखने का सबब यह है कि अब
वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं। 38 लोग उन आदमियों के
यह बख़ूरदान ले लें जो अपने गुनाह के बाइस जाँ-ब-
हक़ हो गए। वह उन्हें कूट कर उन से चादरें बनाएँ
और उन्हें जलने वाली क़ुर्बानियों की क़ुर्बानगाह पर
चढ़ाएँ। क्यूँकि वह रब को पेश किए गए हैं, इस लिए
वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं। यूँ वह इस्राईलियों के
लिए एक निशान रहेंगे।”
39 चुनाँचे इलीअज़र इमाम ने पीतल के यह
बख़ूरदान जमा किए जो भस्म किए हुए आदमियों
ने रब को पेश किए थे। फिर लोगों ने उन्हें कूट कर
उन से चादरें बनाईं और उन्हें क़ुर्बानगाह पर चढ़ा
दिया। 40 हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब
ने मूसा की मारिफ़त बताया था। मक़्सद यह था कि
बख़ूरदान इस्राईलियों को याद दिलाते रहें कि सिर्फ़
हारून की औलाद ही को रब के सामने आ कर बख़ूर
जलाने की इजाज़त है। अगर कोई और ऐसा करे तो
उस का हाल क़ोरह और उस के साथियों का सा
होगा।
41 अगले दिन इस्राईल की पूरी जमाअत मूसा और
हारून के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगी। उन्हों ने कहा,
“आप ने रब की क़ौम को मार डाला है।” 42 लेकिन
जब वह मूसा और हारून के मुक़ाबले में जमा हुए
और मुलाक़ात के ख़ैमे का रुख़ किया तो अचानक
उस पर बादल छा गया और रब का जलाल ज़ाहिर
हुआ। 43 फिर मूसा और हारून मुलाक़ात के ख़ैमे के
सामने आए, 44 और रब ने मूसा से कहा, 45 “इस
जमाअत से निकल जाओ ताकि मैं इसे फ़ौरन हलाक
कर दूँ।” यह सुन कर दोनों मुँह के बल गिरे। 46 मूसा
ने हारून से कहा, “अपना बख़ूरदान ले कर उस में
क़ुर्बानगाह के अंगारे और बख़ूर डालें। फिर भाग कर
जमाअत के पास चले जाएँ ताकि उन का कफ़्फ़ारा

दें। जल्दी करें, क्यूँकि रब का ग़ज़ब उन पर टूट पड़ा
है। वबा फैलने लगी है।”
47 हारून ने ऐसा ही किया। वह दौड़ कर जमाअत
के बीच में गया। लोगों में वबा शुरू हो चुकी थी,
लेकिन हारून ने रब को बख़ूर पेश करके उन का
कफ़्फ़ारा दिया। 48 वह ज़िन्दों और मुर्दों के बीच
में खड़ा हुआ तो वबा रुक गई। 49 तो भी 14,700
अफ़राद वबा से मर गए। इस में वह शामिल नहीं हैं
जो क़ोरह के सबब से मर गए थे।
50 जब वबा रुक गई तो हारून मूसा के पास वापस
आया जो अब तक मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर
खड़ा था।

हारून की लाठी से कोंपलें निकलती हैं

17 1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इस्राईलियों से
बात करके उन से 12 लाठियाँ मंगवा ले,
हर क़बीले के सरदार से एक लाठी। हर लाठी पर उस
के मालिक का नाम लिखना। 3 लावी की लाठी पर
हारून का नाम लिखना, क्यूँकि हर क़बीले के सरदार
के लिए एक लाठी होगी। 4 फिर उन को मुलाक़ात के
ख़ैमे में अह्द के सन्दूक़ के सामने रख जहाँ मेरी तुम
से मुलाक़ात होती है। 5 जिस आदमी को मैं ने चुन
लिया है उस की लाठी से कोंपलें फूट निकलेंगी। इस
तरह मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ इस्राईलियों की बुड़बुड़ाहट
ख़त्म कर दूँगा।”
6 चुनाँचे मूसा ने इस्राईलियों से बात की, और
क़बीलों के हर सरदार ने उसे अपनी लाठी दी। इन 12
लाठियों में हारून की लाठी भी शामिल थी। 7 मूसा
ने उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे में अह्द के सन्दूक़ के
सामने रखा। 8 अगले दिन जब वह मुलाक़ात के ख़ैमे
में दाख़िल हुआ तो उस ने देखा कि लावी के क़बीले
के सरदार हारून की लाठी से न सिर्फ़ कोंपलें फूट
निकली हैं बल्कि फूल और पके हुए बादाम भी लगे
हैं।
9 मूसा तमाम लाठियाँ रब के सामने से बाहर ला
कर इस्राईलियों के पास ले आया, और उन्हों ने उन
का मुआइना किया। फिर हर एक ने अपनी अपनी
लाठी वापस ले ली। 10 रब ने मूसा से कहा, “हारून
की लाठी अह्द के सन्दूक़ के सामने रख दे। यह
बाग़ी इस्राईलियों को याद दिलाएगी कि वह अपना
बुड़बुड़ाना बन्द करें, वर्ना हलाक हो जाएंगे।”
11 मूसा ने ऐसा ही किया। 12 लेकिन इस्राईलियों ने
मूसा से कहा, “हाय, हम मर जाएंगे। हाय, हम हलाक
हो जाएंगे, हम सब हलाक हो जाएंगे। 13 जो भी रब
के मक़्दिस के क़रीब आए वह मर जाएगा। क्या हम
सब ही हलाक हो जाएंगे?”

इमामों और लावियों की ज़िम्मादारियाँ

18 1 रब ने हारून से कहा, “मक़्दिस तेरी, तेरे
बेटों और लावी के क़बीले की ज़िम्मादारी
है। अगर इस में कोई ग़लती हो जाए तो तुम क़ुसूरवार
ठहरोगे। इसी तरह इमामों की ख़िदमत सिर्फ़ तेरी
और तेरे बेटों की ज़िम्मादारी है। अगर इस में कोई
ग़लती हो जाए तो तू और तेरे बेटे क़ुसूरवार ठहरेंगे।
2 अपने क़बीले लावी के बाक़ी आदमियों को भी मेरे
क़रीब आने दे। वह तेरे साथ मिल कर यूँ हिस्सा लें
कि वह तेरी और तेरे बेटों की ख़िदमत करें जब तुम
ख़ैमे के सामने अपनी ज़िम्मादारियाँ निभाओगे। 3 तेरी
ख़िदमत और ख़ैमे में ख़िदमत उन की ज़िम्मादारी है।
लेकिन वह ख़ैमे के मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस सामान और
क़ुर्बानगाह के क़रीब न जाएँ, वर्ना न सिर्फ़ वह बल्कि
तू भी हलाक हो जाएगा। 4 यूँ वह तेरे साथ मिल कर
मुलाक़ात के ख़ैमे के पूरे काम में हिस्सा लें। लेकिन
किसी और को ऐसा करने की इजाज़त नहीं है।
5 सिर्फ़ तू और तेरे बेटे मक़्दिस और क़ुर्बानगाह की
देख-भाल करें ताकि मेरा ग़ज़ब दुबारा इस्राईलियों
पर न भड़के। 6 मैं ही ने इस्राईलियों में से तेरे भाइयों
यानी लावियों को चुन कर तुझे तुह्फ़े के तौर पर
दिया है। वह रब के लिए मख़्सूस हैं ताकि ख़ैमे में
ख़िदमत करें। 7 लेकिन सिर्फ़ तू और तेरे बेटे इमाम
की ख़िदमत सरअन्जाम दें। मैं तुम्हें इमाम का उह्दा
तुह्फ़े के तौर पर देता हूँ। कोई और क़ुर्बानगाह और

मुक़द्दस चीज़ों के नज़्दीक न आए, वर्ना उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।”

इमामों का हिस्सा

8 रब ने हारून से कहा, “मैं ने ख़ुद मुक़र्रर किया
है कि तमाम उठाने वाली क़ुर्बानियाँ तेरा हिस्सा हों।
यह हमेशा तक क़ुर्बानियों में से तेरा और तेरी औलाद
का हिस्सा हैं। 9 तुम्हें मुक़द्दसतरीन क़ुर्बानियों का वह
हिस्सा मिलना है जो जलाया नहीं जाता। हाँ, तुझे
और तेरे बेटों को वही हिस्सा मिलना है, ख़्वाह वह
मुझे ग़ल्ला की नज़रें, गुनाह की क़ुर्बानियाँ या क़ुसूर
की क़ुर्बानियाँ पेश करें। 10 उसे मुक़द्दस जगह पर
खाना। हर मर्द उसे खा सकता है। ख़याल रख कि
वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है।

11 मैं ने मुक़र्रर किया है कि तमाम हिलाने वाली
क़ुर्बानियों का उठाया हुआ हिस्सा तेरा है। यह हमेशा
के लिए तेरे और तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा है। तेरे
घराने का हर फ़र्द उसे खा सकता है। शर्त यह है कि
वह पाक हो। 12 जब लोग रब को अपनी फ़सलों का
पहला फल पेश करेंगे तो वह तेरा ही हिस्सा होगा।
मैं तुझे ज़ैतून के तेल, नई मै और अनाज का बेहतरीन
हिस्सा देता हूँ। 13 फ़सलों का जो भी पहला फल वह
रब को पेश करेंगे वह तेरा ही होगा। तेरे घराने का
हर पाक फ़र्द उसे खा सकता है। 14 इस्राईल में जो
भी चीज़ रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस की गई है
वह तेरी होगी। 15 हर इन्सान और हर हैवान का जो
पहलौठा रब को पेश किया जाता है वह तेरा ही है।
लेकिन लाज़िम है कि तू हर इन्सान और हर नापाक
जानवर के पहलौठे का फ़िद्या दे कर उसे छुड़ाए।

16 जब वह एक माह के हैं तो उन के इवज़ चाँदी
के पाँच सिक्के देना। (हर सिक्के का वज़न मक़्दिस के
बाटों के मुताबिक़ 11 ग्राम हो)। 17 लेकिन गाय-बैलों
और भेड़-बकरियों के पहले बच्चों का फ़िद्या यानी
मुआवज़ा न देना। वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं। उन
का ख़ून क़ुर्बानगाह पर छिड़क देना और उन की
चर्बी जला देना। ऐसी क़ुर्बानी रब को पसन्द होगी।
18 उन का गोश्त वैसे ही तुम्हारे लिए हो, जैसे हिलाने
वाली क़ुर्बानी का सीना और दहनी रान भी तुम्हारे
लिए हैं।

19 मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से तमाम उठाने वाली
क़ुर्बानियाँ तेरा और तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा हैं।
मैं ने उसे हमेशा के लिए तुझे दिया है। यह नमक का
दाइमी अह्द है जो मैं ने तेरे और तेरी औलाद के साथ
क़ाइम किया है।”

लावियों का हिस्सा

20 रब ने हारून से कहा, “तू मीरास में ज़मीन
नहीं पाएगा। इस्राईल में तुझे कोई हिस्सा नहीं दिया
जाएगा, क्यूँकि इस्राईलियों के दरमियान मैं ही तेरा
हिस्सा और तेरी मीरास हूँ। 21 अपनी पैदावार का जो
दसवाँ हिस्सा इस्राईली मुझे देते हैं वह मैं लावियों को
देता हूँ। यह उन की विरासत है, जो उन्हें मुलाक़ात के
ख़ैमे में ख़िदमत करने के बदले में मिलती है। 22 अब
से इस्राईली मुलाक़ात के ख़ैमे के क़रीब न आएँ, वर्ना
उन्हें अपनी ख़ता का नतीजा बर्दाश्त करना पड़ेगा
और वह हलाक हो जाएंगे। 23 सिर्फ़ लावी मुलाक़ात
के ख़ैमे में ख़िदमत करें। अगर इस में कोई ग़लती हो
जाए तो वही क़ुसूरवार ठहरेंगे। यह एक दाइमी उसूल
है। उन्हें इस्राईल में मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।
24 क्यूँकि मैं ने उन्हें वही दसवाँ हिस्सा मीरास के तौर
पर दिया है जो इस्राईली मुझे उठाने वाली क़ुर्बानी के
तौर पर पेश करते हैं। इस वजह से मैं ने उन के बारे
में कहा कि उन्हें बाक़ी इस्राईलियों के साथ मीरास
में ज़मीन नहीं मिलेगी।”

लावियों का दसवाँ हिस्सा

25 रब ने मूसा से कहा, 26 “लावियों को बताना
कि तुम्हें इस्राईलियों की पैदावार का दसवाँ हिस्सा
मिलेगा। यह रब की तरफ़ से तुम्हारी विरासत होगी।
लाज़िम है कि तुम इस का दसवाँ हिस्सा रब को
उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करो। 27 तुम्हारी
यह क़ुर्बानी नए अनाज या नए अंगूर के रस की

क़ुर्बानी के बराबर क़रार दी जाएगी। 28 इस तरह तुम
भी रब को इस्राईलियों की पैदावार के दसवें हिस्से में
से उठाने वाली क़ुर्बानी पेश करोगे। रब के लिए यह
क़ुर्बानी हारून इमाम को देना। 29 जो भी तुम्हें मिला
है उस में से सब से अच्छा और मुक़द्दस हिस्सा रब
को देना। 30 जब तुम इस का सब से अच्छा हिस्सा
पेश करोगे तो उसे नए अनाज या नए अंगूर के रस की
क़ुर्बानी के बराबर क़रार दिया जाएगा। 31 तुम अपने
घरानों समेत इस का बाक़ी हिस्सा कहीं भी खा सकते
हो, क्यूँकि यह मुलाक़ात के ख़ैमे में तुम्हारी ख़िदमत
का अज्र है। 32 अगर तुम ने पहले इस का बेहतरीन
हिस्सा पेश किया हो तो फिर इसे खाने में तुम्हारा
कोई क़ुसूर नहीं होगा। फिर इस्राईलियों की मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस क़ुर्बानियाँ तुम से नापाक नहीं हो जाएँगी
और तुम नहीं मरोगे।”

सुर्ख़ गाय की राख

19 1 रब ने मूसा और हारून से कहा,
2 “इस्राईलियों को बताना कि वह तुम्हारे
पास सुर्ख़ रंग की जवान गाय ले कर आएँ। उस में
नुक़्स न हो और उस पर कभी जूआ न रखा गया हो।
3 तुम उसे इलीअज़र इमाम को देना जो उसे ख़ैमे के
बाहर ले जाए। वहाँ उसे उस की मौजूदगी में ज़बह
किया जाए। 4 फिर इलीअज़र इमाम अपनी उंगली
से उस के ख़ून से कुछ ले कर मुलाक़ात के ख़ैमे
के सामने वाले हिस्से की तरफ़ छिड़के। 5 उस की
मौजूदगी में पूरी की पूरी गाय को जलाया जाए। उस
की खाल, गोश्त, ख़ून और अंतड़ियों का गोबर भी
जलाया जाए। 6 फिर वह देवदार की लकड़ी, ज़ूफ़ा
और क़िर्मिज़ी रंग का धागा ले कर उसे जलती हुई
गाय पर फैंके। 7 इस के बाद वह अपने कपड़ों को
धो कर नहा ले। फिर वह ख़ैमागाह में आ सकता है
लेकिन शाम तक नापाक रहेगा।

8 जिस आदमी ने गाय को जलाया वह भी अपने
कपड़ों को धो कर नहा ले। वह भी शाम तक नापाक
रहेगा।

9 एक दूसरा आदमी जो पाक है गाय की राख
इकट्ठी करके ख़ैमागाह के बाहर किसी पाक जगह
पर डाल दे। वहाँ इस्राईल की जमाअत उसे नापाकी
दूर करने का पानी तय्यार करने के लिए महफ़ूज़ रखे।
यह गुनाह से पाक करने के लिए इस्तेमाल होगा।
10 जिस आदमी ने राख इकट्ठी की है वह भी अपने
कपड़ों को धो ले। वह भी शाम तक नापाक रहेगा।
यह इस्राईलियों और उन के दरमियान रहने वाले
परदेसियों के लिए दाइमी उसूल हो।

लाश छूने से पाक हो जाने का तरीक़ा

11 जो भी लाश छुए वह सात दिन तक नापाक
रहेगा। 12 तीसरे और सातवें दिन वह अपने आप पर
नापाकी दूर करने का पानी छिड़क कर पाक-साफ़
हो जाए। इस के बाद ही वह पाक होगा। लेकिन
अगर वह इन दोनों दिनों में अपने आप को यूँ पाक
न करे तो नापाक रहेगा। 13 जो भी लाश छू कर अपने
आप को यूँ पाक नहीं करता वह रब के मक़्दिस को
नापाक करता है। लाज़िम है कि उसे इस्राईल में से
मिटाया जाए। चूँकि नापाकी दूर करने का पानी उस
पर छिड़का नहीं गया इस लिए वह नापाक रहेगा।

14 अगर कोई डेरे में मर जाए तो जो भी उस वक़्त
उस में मौजूद हो या दाख़िल हो जाए वह सात दिन
तक नापाक रहेगा। 15 हर खुला बर्तन जो ढकने से
बन्द न किया गया हो वह भी नापाक होगा। 16 इसी
तरह जो खुले मैदान में लाश छुए वह भी सात दिन
तक नापाक रहेगा, ख़्वाह वह तलवार से या तबई
मौत मरा हो। जो इन्सान की कोई हड्डी या क़ब्र छुए
वह भी सात दिन तक नापाक रहेगा।

17 नापाकी दूर करने के लिए उस सुर्ख़ रंग की गाय
की राख में से कुछ लेना जो गुनाह दूर करने के लिए
जलाई गई थी। उसे बर्तन में डाल कर ताज़ा पानी
में मिलाना। 18 फिर कोई पाक आदमी कुछ ज़ूफ़ा ले
और उसे उस पानी में डुबो कर मरे हुए शख़्स के ख़ैमे,
उस के सामान और उन लोगों पर छिड़के जो उस के
मरते वक़्त वहाँ थे। इसी तरह वह पानी उस शख़्स

पर भी छिड़के जिस ने तबई या ग़ैरतबई मौत मरे हुए
शख़्स को, किसी इन्सान की हड्डी को या कोई क़ब्र
छूई हो। 19 पाक आदमी यह पानी तीसरे और सातवें
दिन नापाक शख़्स पर छिड़के। सातवें दिन वह उसे
पाक करे। जिसे पाक किया जा रहा है वह अपने
कपड़े धो कर नहा ले तो वह उसी शाम पाक होगा।
20 लेकिन जो नापाक शख़्स अपने आप को पाक
नहीं करता उसे जमाअत में से मिटाना है, क्यूँकि
उस ने रब का मक़्दिस नापाक कर दिया है। नापाकी
दूर करने का पानी उस पर नहीं छिड़का गया, इस
लिए वह नापाक रहा है। 21 यह उन के लिए दाइमी
उसूल है। जिस आदमी ने नापाकी दूर करने का पानी
छिड़का है वह भी अपने कपड़े धोए। बल्कि जिस ने
भी यह पानी छुआ है शाम तक नापाक रहेगा। 22 और
नापाक शख़्स जो भी चीज़ छुए वह नापाक हो जाती
है। न सिर्फ़ यह बल्कि जो बाद में यह नापाक चीज़
छुए वह भी शाम तक नापाक रहेगा।"

चटान से पानी

20 1 पहले महीने में इस्राईल की पूरी जमाअत
दश्त-ए-सीन में पहुँच कर क़ादिस में रहने
लगी। वहाँ मरियम ने वफ़ात पाई और वहीं उसे
दफ़नाया गया।
2 क़ादिस में पानी दस्तयाब नहीं था, इस लिए लोग
मूसा और हारून के मुक़ाबले में जमा हुए। 3 वह मूसा
से यह कह कर झगड़ने लगे, "काश हम अपने भाइयों
के साथ रब के सामने मर गए होते! 4 आप रब की
जमाअत को क्यूँ इस रेगिस्तान में ले आए? क्या इस
लिए कि हम यहाँ अपने मवेशियों समेत मर जाएँ?
5 आप हमें मिस्र से निकाल कर उस नाख़ुशगवार
जगह पर क्यूँ ले आए हैं? यहाँ न तो अनाज, न
अन्जीर, अंगूर या अनार दस्तयाब हैं। पानी भी नहीं
है!"
6 मूसा और हारून लोगों को छोड़ कर मुलाक़ात के
ख़ैमे के दरवाज़े पर गए और मुँह के बल गिरे। तब
रब का जलाल उन पर ज़ाहिर हुआ। 7 रब ने मूसा
से कहा, 8 "अह्द के सन्दूक़ के सामने पड़ी लाठी
पकड़ कर हारून के साथ जमाअत को इकट्ठा कर।
उन के सामने चटान से बात करो तो वह अपना पानी
देगी। यूँ तू चटान में से जमाअत के लिए पानी निकाल
कर उन्हें उन के मवेशियों समेत पानी पिलाएगा।"
9 मूसा ने ऐसा ही किया। उस ने अह्द के सन्दूक़
के सामने पड़ी लाठी उठाई 10 और हारून के साथ
जमाअत को चटान के सामने इकट्ठा किया। मूसा ने
उन से कहा, "ऐ बग़ावत करने वालो, सुनो! क्या हम
इस चटान में से तुम्हारे लिए पानी निकालें?" 11 उस
ने लाठी को उठा कर चटान को दो मर्तबा मारा तो
बहुत सा पानी फूट निकला। जमाअत और उन के
मवेशियों ने ख़ूब पानी पिया।
12 लेकिन रब ने मूसा और हारून से कहा, "तुम्हारा
मुझ पर इतना ईमान नहीं था कि मेरी क़ुद्दूसियत को
इस्राईलियों के सामने क़ाइम रखते। इस लिए तुम उस
जमाअत को उस मुल्क में नहीं ले जाओगे जो मैं उन्हें
दूँगा।"
13 यह वाक़िआ मरीबा यानी 'झगड़ना' के पानी पर
हुआ। वहाँ इस्राईलियों ने रब से झगड़ा किया, और
वहाँ उस ने उन पर ज़ाहिर किया कि वह क़ुद्दूस है।

अदोम इस्राईल को गुज़रने नहीं देता

14 क़ादिस से मूसा ने अदोम के बादशाह को इत्तिला
भेजी, "आप के भाई इस्राईल की तरफ़ से एक
गुज़ारिश है। आप को उन तमाम मुसीबतों के बारे में
इल्म है जो हम पर आन पड़ी हैं। 15 हमारे बापदादा
मिस्र गए थे और वहाँ हम बहुत अर्से तक रहे।
मिस्रियों ने हमारे बापदादा और हम से बुरा सुलूक
किया। 16 लेकिन जब हम ने चिल्ला कर रब से मिन्नत
की तो उस ने हमारी सुनी और फ़रिश्ता भेज कर हमें
मिस्र से निकाल लाया। अब हम यहाँ क़ादिस शहर
में हैं जो आप की सरहद पर है। 17 मेहरबानी करके
हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें। हम किसी खेत या
अंगूर के बाग़ में नहीं जाएंगे, न किसी कुएँ का पानी
पिएँगे। हम शाहराह पर ही रहेंगे। आप के मुल्क में

से गुज़रते हुए हम उस से न दाईं और न बाईं तरफ़
हटेंगे।”
18 लेकिन अदोमियों ने जवाब दिया, “यहाँ से न
गुज़रना, वर्ना हम निकल कर आप से लड़ेंगे।”
19 इस्राईल ने दुबारा ख़बर भेजी, “हम शाहराह पर
रहते हुए गुज़रेंगे। अगर हमें या हमारे जानवरों को
पानी की ज़रूरत हुई तो पैसे दे कर ख़रीद लेंगे। हम
पैदल ही गुज़रना चाहते हैं, और कुछ नहीं चाहते।”
20 लेकिन अदोमियों ने दुबारा इन्कार किया। साथ
ही उन्हों ने उन के साथ लड़ने के लिए एक बड़ी और
ताक़तवर फ़ौज भेजी।
21 चूँकि अदोम ने उन्हें गुज़रने की इजाज़त न दी
इस लिए इस्राईली मुड़ कर दूसरे रास्ते से चले गए।

हारून की वफ़ात

22 इस्राईल की पूरी जमाअत क़ादिस से रवाना हो
कर होर पहाड़ के पास पहुँची। 23 यह पहाड़ अदोम
की सरहद पर वाक़े था। वहाँ रब ने मूसा और हारून
से कहा, 24 “हारून अब कूच करके अपने बापदादा
से जा मिलेगा। वह उस मुल्क में दाख़िल नहीं होगा
जो मैं इस्राईलियों को दूँगा, क्यूँकि तुम दोनों ने
मरीबा के पानी पर मेरे हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की।
25 हारून और उस के बेटे इलीअज़र को ले कर होर
पहाड़ पर चढ़ जा। 26 हारून के कपड़े उतार कर उस
के बेटे इलीअज़र को पहना देना। फिर हारून कूच
करके अपने बापदादा से जा मिलेगा।”
27 मूसा ने ऐसा ही किया जैसा रब ने कहा। तीनों
पूरी जमाअत के देखते देखते होर पहाड़ पर चढ़ गए।
28 मूसा ने हारून के कपड़े उतरवा कर उस के बेटे
इलीअज़र को पहना दिए। फिर हारून वहाँ पहाड़
की चोटी पर फ़ौत हुआ, और मूसा और इलीअज़र
नीचे उतर गए। 29 जब पूरी जमाअत को मालूम हुआ
कि हारून इन्तिक़ाल कर गया है तो सब ने 30 दिन
तक उस के लिए मातम किया।

कनआनी मुल्क-ए-अराद पर फ़त्ह

21 1 दश्त-ए-नजब के कनआनी मुल्क अराद
के बादशाह को ख़बर मिली कि इस्राईली
अथारिम की तरफ़ बढ़ रहे हैं। उस ने उन पर हम्ला
किया और कई एक को पकड़ कर क़ैद कर लिया।
2 तब इस्राईलियों ने रब के सामने मन्नत मान कर
कहा, “अगर तू हमें उन पर फ़त्ह देगा तो हम उन्हें
उन के शहरों समेत तबाह कर देंगे।” 3 रब ने उन की
सुनी और कनआनियों पर फ़त्ह बख़्शी। इस्राईलियों
ने उन्हें उन के शहरों समेत पूरी तरह तबाह कर दिया।
इस लिए उस जगह का नाम हुर्मा यानी तबाही पड़
गया।

पीतल का साँप

4 होर पहाड़ से रवाना हो कर वह बहर-ए-क़ुल्ज़ुम
की तरफ़ चल दिए ताकि अदोम के मुल्क में से
गुज़रना न पड़े। लेकिन चलते चलते लोग बेसबर हो
गए। 5 वह रब और मूसा के ख़िलाफ़ बातें करने लगे,
“आप हमें मिस्र से निकाल कर रेगिस्तान में मरने
के लिए क्यूँ ले आए हैं? यहाँ न रोटी दस्तयाब है
न पानी। हमें इस घटिया क़िस्म की ख़ुराक से घिन
आती है।”
6 तब रब ने उन के दरमियान ज़हरीले साँप भेज दिए
जिन के काटने से बहुत से लोग मर गए। 7 फिर लोग
मूसा के पास आए। उन्हों ने कहा, “हम ने रब और
आप के ख़िलाफ़ बातें करते हुए गुनाह किया। हमारी
सिफ़ारिश करें कि रब हम से साँप दूर कर दे।”
मूसा ने उन के लिए दुआ की 8 तो रब ने मूसा से
कहा, “एक साँप बना कर उसे खम्बे से लटका दे।
जो भी डसा गया हो वह उसे देख कर बच जाएगा।”
9 चुनाँचे मूसा ने पीतल का एक साँप बनाया और
खम्बा खड़ा करके साँप को उस से लटका दिया।
और ऐसा हुआ कि जिसे भी डसा गया था वह पीतल
के साँप पर नज़र करके बच गया।

मोआब की तरफ़ सफ़र

10 इस्राईली रवाना हुए और ओबोत में अपने ख़ैमे
लगाए। 11 फिर वहाँ से कूच करके अय्ये-अबारीम
में डेरे डाले, उस रेगिस्तान में जो मशरिक़ की तरफ़
मोआब के सामने है। 12 वहाँ से रवाना हो कर वह
वादी-ए-ज़िरद में ख़ैमाज़न हुए। 13 जब वादी-ए-ज़िरद
से रवाना हुए तो दरया-ए-अर्नोन के परले यानी जुनूबी
किनारे पर ख़ैमाज़न हुए। यह दरया रेगिस्तान में
है और अमोरियों के इलाक़े से निकलता है। यह
अमोरियों और मोआबियों के दरमियान की सरहद
है। 14 इस का ज़िक्र किताब 'रब की जंगें' में भी है,

"वाहेब जो सूफ़ा में है, दरया-ए-अर्नोन की वादियाँ
15 और वादियों का वह ढलान जो आर शहर तक
जाता है और मोआब की सरहद पर वाक़े है।"

16 वहाँ से वह बैर यानी 'कुआँ' पहुँचे। यह वही बैर
है जहाँ रब ने मूसा से कहा, "लोगों को इकट्ठा कर
तो मैं उन्हें पानी दूँगा।" 17 उस वक़्त इस्राईलियों ने
यह गीत गाया,

"ऐ कुएँ, फूट निकल! उस के बारे में गीत गाओ,
18 उस कुएँ के बारे में जिसे सरदारों ने खोदा, जिसे
क़ौम के राहनुमाओं ने असा-ए-शाही और अपनी
लाठियों से खोदा।"

फिर वह रेगिस्तान से मत्तना को गए, 19 मत्तना
से नहलीएल को और नहलीएल से बामात को।
20 बामात से वह मोआबियों के इलाक़े की उस वादी
में पहुँचे जो पिसगा पहाड़ के दामन में है। इस पहाड़
की चोटी से वादी-ए-यर्दन का जुनूबी हिस्सा यशीमोन
ख़ूब नज़र आता है।

सीहोन और ओज की शिकस्त

21 इस्राईल ने अमोरियों के बादशाह सीहोन को
इत्तिला भेजी, 22 "हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें।
हम सीधे सीधे गुज़र जाएंगे। न हम कोई खेत या
अंगूर का बाग़ छेड़ेंगे, न किसी कुएँ का पानी पिएँगे।
हम आप के मुल्क में से सीधे गुज़रते हुए शाहराह पर
ही रहेंगे।" 23 लेकिन सीहोन ने उन्हें गुज़रने न दिया
बल्कि अपनी फ़ौज जमा करके इस्राईल से लड़ने के
लिए रेगिस्तान में चल पड़ा। यहज़ पहुँच कर उस ने
इस्राईलियों से जंग की। 24 लेकिन इस्राईलियों ने उसे
क़त्ल किया और दरया-ए-अर्नोन से ले कर दरया-ए-
यब्बोक़ तक यानी अम्मोनियों की सरहद तक उस
के मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया। वह इस से आगे
न जा सके क्यूँकि अम्मोनियों ने अपनी सरहद की
हिसारबन्दी कर रखी थी। 25 इस्राईली तमाम अमोरी
शहरों पर क़ब्ज़ा करके उन में रहने लगे। उन में
हस्बोन और उस के इर्दगिर्द की आबादियाँ शामिल
थीं।

26 हस्बोन अमोरी बादशाह सीहोन का दार-उल-
हकूमत था। उस ने मोआब के पिछले बादशाह से
लड़ कर उस से यह इलाक़ा दरया-ए-अर्नोन तक छीन
लिया था। 27 उस वाकिए का ज़िक्र शाइरी में यूँ किया
गया है,

"हस्बोन के पास आ कर उसे अज़ सर-ए-नौ तामीर
करो, सीहोन के शहर को अज़ सर-ए-नौ क़ाइम करो।
28 हस्बोन से आग निकली, सीहोन के शहर से
शोला भड़का। उस ने मोआब के शहर आर को जला
दिया, अर्नोन की बुलन्दियों के मालिकों को भस्म
किया।
29 ऐ मोआब, तुझ पर अफ़्सोस! ऐ कमोस देवता
की क़ौम, तू हलाक हुई है। कमोस ने अपने बेटों
को मफ़रूर और अपनी बेटियों को अमोरी बादशाह
सीहोन की क़ैदी बना दिया है।
30 लेकिन जब हम ने अमोरियों पर तीर चलाए तो
हस्बोन का इलाक़ा दीबोन तक बर्बाद हुआ। हम ने
नुफ़ह तक सब कुछ तबाह किया, वह नुफ़ह जिस
का इलाक़ा मीदबा तक है।"

31 यूँ इस्राईल अमोरियों के मुल्क में आबाद हुआ।
32 वहाँ से मूसा ने अपने जासूस याज़ेर शहर भेजे।
वहाँ भी अमोरी रहते थे। इस्राईलियों ने याज़ेर और
उस के इर्दगिर्द के शहरों पर भी क़ब्ज़ा किया और
वहाँ के अमोरियों को निकाल दिया।

33 इस के बाद वह मुड़ कर बसन की तरफ़ बढ़े।
तब बसन का बादशाह ओज अपनी तमाम फ़ौज ले
कर उन से लड़ने के लिए शहर इद्रई आया। 34 उस
वक़्त रब ने मूसा से कहा, “ओज से न डरना। मैं उसे,
उस की तमाम फ़ौज और उस का मुल्क तेरे हवाले
कर चुका हूँ। उस के साथ वही सुलूक कर जो तू ने
अमोरियों के बादशाह सीहोन के साथ किया, जिस
का दार-उल-हकूमत हस्बोन था।” 35 इस्राईलियों ने
ओज, उस के बेटों और तमाम फ़ौज को हलाक कर
दिया। कोई भी न बचा। फिर उन्हों ने बसन के मुल्क
पर क़ब्ज़ा कर लिया।

बलक़ बलआम को इस्राईल पर लानत भेजने के लिए बुलाता है

22 1 इस के बाद इस्राईली मोआब के मैदानों
में पहुँच कर दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी
किनारे पर यरीहू के आमने-सामने ख़ैमाज़न हुए।
2 मोआब के बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर को मालूम
हुआ कि इस्राईलियों ने अमोरियों के साथ क्या कुछ
किया है। 3 मोआबियों ने यह भी देखा कि इस्राईली
बहुत ज़्यादा हैं, इस लिए उन पर दहशत छा गई।
4 उन्हों ने मिदियानियों के बुज़ुर्गों से बात की, “अब
यह हुजूम उस तरह हमारे इर्दगिर्द का इलाक़ा चट
कर जाएगा जिस तरह बैल मैदान की घास चट कर
जाता है।”
5 तब बलक़ ने अपने क़ासिद फ़तोर शहर को भेजे
जो दरया-ए-फ़ुरात पर वाक़े था और जहाँ बलआम
बिन बओर अपने वतन में रहता था। क़ासिद उसे
बुलाने के लिए उस के पास पहुँचे और उसे बलक़
का पैग़ाम सुनाया, “एक क़ौम मिस्र से निकल आई है
जो रू-ए-ज़मीन पर छा कर मेरे क़रीब ही आबाद हुई
है। 6 इस लिए आएँ और इन लोगों पर लानत भेजें,
क्यूँकि वह मुझ से ज़्यादा ताक़तवर हैं। फिर शायद
मैं उन्हें शिकस्त दे कर मुल्क से भगा सकूँ। क्यूँकि मैं
जानता हूँ कि जिन्हें आप बरकत देते हैं उन्हें बरकत
मिलती है और जिन पर आप लानत भेजते हैं उन पर
लानत आती है।”
7 यह पैग़ाम ले कर मोआब और मिदियान के बुज़ुर्ग
रवाना हुए। उन के पास इनआम के पैसे थे। बलआम
के पास पहुँच कर उन्हों ने उसे बलक़ का पैग़ाम
सुनाया। 8 बलआम ने कहा, “रात यहाँ गुज़ारें। कल
मैं आप को बता दूँगा कि रब इस के बारे में क्या
फ़रमाता है।” चुनाँचे मोआबी सरदार उस के पास
ठहर गए।
9 रात के वक़्त अल्लाह बलआम पर ज़ाहिर हुआ।
उस ने पूछा, “यह आदमी कौन हैं जो तेरे पास
आए हैं?” 10 बलआम ने जवाब दिया, “मोआब के
बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर ने मुझे पैग़ाम भेजा है,
11 ‘जो क़ौम मिस्र से निकल आई है वह रू-ए-ज़मीन
पर छा गई है। इस लिए आएँ और मेरे लिए उन पर
लानत भेजें। फिर शायद मैं उन से लड़ कर उन्हें भगा
देने में कामयाब हो जाऊँ’।” 12 रब ने बलआम से
कहा, “उन के साथ न जाना। तुझे उन पर लानत भेजने
की इजाज़त नहीं है, क्यूँकि उन पर मेरी बरकत है।”
13 अगली सुब्ह बलआम जाग उठा तो उस ने बलक़
के सरदारों से कहा, “अपने वतन वापस चले जाएँ,
क्यूँकि रब ने मुझे आप के साथ जाने की इजाज़त नहीं
दी।” 14 चुनाँचे मोआबी सरदार ख़ाली हाथ बलक़
के पास वापस आए। उन्हों ने कहा, “बलआम हमारे
साथ आने से इन्कार करता है।” 15 तब बलक़ ने और
सरदार भेजे जो पहले वालों की निस्बत तादाद और
उहदे के लिहाज़ से ज़्यादा थे। 16 वह बलआम के
पास जा कर कहने लगे, “बलक़ बिन सफ़ोर कहते
हैं कि कोई भी बात आप को मेरे पास आने से न
रोके, 17 क्यूँकि मैं आप को बड़ा इनआम दूँगा। आप
जो भी कहेंगे मैं करने के लिए तय्यार हूँ। आएँ तो
सही और मेरे लिए उन लोगों पर लानत भेजें।”
18 लेकिन बलआम ने जवाब दिया, “अगर बलक़
अपने महल को चाँदी और सोने से भर कर भी
मुझे दे तो भी मैं रब अपने ख़ुदा के फ़रमान की
ख़िलाफ़वरज़ी नहीं कर सकता, ख़्वाह बात छोटी

हो या बड़ी। 19 आप दूसरे सरदारों की तरह रात यहाँ
गुज़ारें। इतने में मैं मालूम करूँगा कि रब मुझे मज़ीद
क्या कुछ बताता है।"
20 उस रात अल्लाह बलआम पर ज़ाहिर हुआ और
कहा, "चूँकि यह आदमी तुझे बुलाने आए हैं इस लिए
उन के साथ चला जा। लेकिन सिर्फ़ वही कुछ करना
जो मैं तुझे बताऊँगा।"

बलआम की गधी

21 सुब्ह को बलआम ने उठ कर अपनी गधी पर
ज़ीन कसा और मोआबी सरदारों के साथ चल पड़ा।
22 लेकिन अल्लाह निहायत ग़ुस्से हुआ कि वह जा रहा
है, इस लिए उस का फ़रिश्ता उस का मुक़ाबला करने
के लिए रास्ते में खड़ा हो गया। बलआम अपनी गधी
पर सवार था और उस के दो नौकर उस के साथ चल
रहे थे। 23 जब गधी ने देखा कि रब का फ़रिश्ता अपने
हाथ में तलवार थामे हुए रास्ते में खड़ा है तो वह रास्ते
से हट कर खेत में चलने लगी। बलआम उसे मारते
मारते रास्ते पर वापस ले आया।
24 फिर वह अंगूर के दो बाग़ों के दरमियान से
गुज़रने लगे। रास्ता तंग था, क्यूँकि वह दोनों तरफ़
बाग़ों की चारदीवारी से बन्द था। अब रब का
फ़रिश्ता वहाँ खड़ा हुआ। 25 गधी यह देख कर
चारदीवारी के साथ साथ चलने लगी, और बलआम
का पाँओ कुचला गया। उस ने उसे दुबारा मारा।
26 रब का फ़रिश्ता आगे निकला और तीसरी मर्तबा
रास्ते में खड़ा हो गया। अब रास्ते से हट जाने की
कोई गुन्जाइश नहीं थी, न दाईं तरफ़ और न बाईं
तरफ़। 27 जब गधी ने रब का फ़रिश्ता देखा तो वह
लेट गई। बलआम को ग़ुस्सा आ गया, और उस ने
उसे अपनी लाठी से ख़ूब मारा।
28 तब रब ने गधी को बोलने दिया, और उस ने
बलआम से कहा, "मैं ने आप से क्या ग़लत सुलूक
किया है कि आप मुझे अब तीसरी दफ़ा पीट रहे
हैं?" 29 बलआम ने जवाब दिया, "तू ने मुझे बेवुक़ूफ़
बनाया है! काश मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं अभी
तुझे ज़बह कर देता!" 30 गधी ने बलआम से कहा,
"क्या मैं आप की गधी नहीं हूँ जिस पर आप आज
तक सवार होते रहे हैं? क्या मुझे कभी ऐसा करने
की आदत थी?" उस ने कहा, "नहीं।"
31 फिर रब ने बलआम की आँखें खोलीं और उस ने
रब के फ़रिश्ते को देखा जो अब तक हाथ में तलवार
थामे हुए रास्ते में खड़ा था। बलआम ने मुँह के बल
गिर कर सिज्दा किया। 32 रब के फ़रिश्ते ने पूछा,
"तू ने तीन बार अपनी गधी को क्यूँ पीटा? मैं तेरे
मुक़ाबले में आया हूँ, क्यूँकि जिस तरफ़ तू बढ़ रहा
है उस का अन्जाम बुरा है। 33 गधी तीन मर्तबा मुझे
देख कर मेरी तरफ़ से हट गई। अगर वह न हटती
तो तू उस वक़्त हलाक हो गया होता अगरचे मैं गधी
को छोड़ देता।"
34 बलआम ने रब के फ़रिश्ते से कहा, "मैं ने गुनाह
किया है। मुझे मालूम नहीं था कि तू मेरे मुक़ाबले
में रास्ते में खड़ा है। लेकिन अगर मेरा सफ़र तुझे
बुरा लगे तो मैं अब वापस चला जाऊँगा।" 35 रब के
फ़रिश्ते ने कहा, "इन आदमियों के साथ अपना सफ़र
जारी रख। लेकिन सिर्फ़ वही कुछ कहना जो मैं तुझे
बताऊँगा।" चुनाँचे बलआम ने बलक़ के सरदारों के
साथ अपना सफ़र जारी रखा।
36 जब बलक़ को ख़बर मिली कि बलआम आ
रहा है तो वह उस से मिलने के लिए मोआब के उस
शहर तक गया जो मोआब की सरहद दरया-ए-अर्नोन
पर वाक़े है। 37 उस ने बलआम से कहा, "क्या मैं ने
आप को इत्तिला नहीं भेजी थी कि आप ज़रूर आएँ?
आप क्यूँ नहीं आए? क्या आप ने सोचा कि मैं आप
को मुनासिब इनआम नहीं दे पाऊँगा?" 38 बलआम
ने जवाब दिया, "बहरहाल अब मैं पहुँच गया हूँ।
लेकिन मैं सिर्फ़ वही कुछ कह सकता हूँ जो अल्लाह
ने पहले ही मेरे मुँह में डाल दिया है।"
39 फिर बलआम बलक़ के साथ क़िर्यत-हुसात
गया। 40 वहाँ बलक़ ने गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ
क़ुर्बान करके उन के गोश्त में से बलआम और उस
के साथ वाले सरदारों को दे दिया। 41 अगली सुब्ह

बलक़ बलआम को साथ ले कर एक ऊँची जगह
पर चढ़ गया जिस का नाम बामोत-बाल था। वहाँ से
इस्राईली ख़ैमागाह का किनारा नज़र आता था।

बलआम की पहली बरकत

23 1 बलआम ने कहा, "यहाँ मेरे लिए सात
क़ुर्बानगाहें बनाएँ। साथ साथ मेरे लिए सात
बैल और सात मेंढे तय्यार कर रखें।" 2 बलक़ ने ऐसा
ही किया, और दोनों ने मिल कर हर क़ुर्बानगाह पर
एक बैल और एक मेंढा चढ़ाया। 3 फिर बलआम ने
बलक़ से कहा, "यहाँ अपनी क़ुर्बानी के पास खड़े
रहें। मैं कुछ फ़ासिले पर जाता हूँ, शायद रब मुझ से
मिलने आए। जो कुछ वह मुझ पर ज़ाहिर करे मैं आप
को बता दूँगा।"

यह कह कर वह एक ऊँचे मक़ाम पर चला गया
जो हरियाली से बिलकुल महरूम था। 4 वहाँ अल्लाह
बलआम से मिला। बलआम ने कहा, "मैं ने सात
क़ुर्बानगाहें तय्यार करके हर क़ुर्बानगाह पर एक बैल
और एक मेंढा क़ुर्बान किया है।" 5 तब रब ने उसे
बलक़ के लिए पैग़ाम दिया और कहा, "बलक़ के
पास वापस जा और उसे यह पैग़ाम सुना।" 6 बलआम
बलक़ के पास वापस आया जो अब तक मोआबी
सरदारों के साथ अपनी क़ुर्बानी के पास खड़ा था।
7 बलआम बोल उठा,

"बलक़ मुझे अराम से यहाँ लाया है, मोआबी
बादशाह ने मुझे मशरिक़ी पहाड़ों से बुला कर कहा,
'आओ, याक़ूब पर मेरे लिए लानत भेजो। आओ,
इस्राईल को बददुआ दो।'

8 मैं किस तरह उन पर लानत भेजूँ जिन पर अल्लाह
ने लानत नहीं भेजी? मैं किस तरह उन्हें बददुआ दूँ
जिन्हें रब ने बददुआ नहीं दी?

9 मैं उन्हें चटानों की चोटी से देखता हूँ, पहाड़ियों
से उन का मुशाहदा करता हूँ। वाक़ई यह एक ऐसी
क़ौम है जो दूसरों से अलग रहती है। यह अपने आप
को दूसरी क़ौमों से मुम्ताज़ समझती है।

10 कौन याक़ूब की औलाद को गिन सकता है जो
गर्द की मानिन्द बेशुमार है। कौन इस्राईलियों का
चौथा हिस्सा भी गिन सकता है? रब करे कि मैं
रास्तबाज़ों की मौत मरूँ, कि मेरा अन्जाम उन के
अन्जाम जैसा अच्छा हो।"

11 बलक़ ने बलआम से कहा, "आप ने मेरे साथ
क्या किया है? मैं आप को अपने दुश्मनों पर लानत
भेजने के लिए लाया और आप ने उन्हें अच्छी-ख़ासी
बरकत दी है।" 12 बलआम ने जवाब दिया, "क्या
लाज़िम नहीं कि मैं वही कुछ बोलूँ जो रब ने बताने
को कहा है?"

बलआम की दूसरी बरकत

13 फिर बलक़ ने उस से कहा, "आएँ, हम एक
और जगह जाएँ जहाँ से आप इस्राईली क़ौम को
देख सकेंगे, गो उन की ख़ैमागाह का सिर्फ़ किनारा
ही नज़र आएगा। आप सब को नहीं देख सकेंगे।
वहीं से उन पर मेरे लिए लानत भेजें।" 14 यह कह
कर वह उस के साथ पिसगा की चोटी पर चढ़ कर
पहरेदारों के मैदान तक पहुँच गया। वहाँ भी उस
ने सात क़ुर्बानगाहें बना कर हर एक पर एक बैल
और एक मेंढा क़ुर्बान किया। 15 बलआम ने बलक़
से कहा, "यहाँ अपनी क़ुर्बानगाह के पास खड़े रहें।
मैं कुछ फ़ासिले पर जा कर रब से मिलूँगा।"

16 रब बलआम से मिला। उस ने उसे बलक़ के लिए
पैग़ाम दिया और कहा, "बलक़ के पास वापस जा
और उसे यह पैग़ाम सुना दे।" 17 वह वापस चला
गया। बलक़ अब तक अपने सरदारों के साथ अपनी
क़ुर्बानी के पास खड़ा था। उस ने उस से पूछा, "रब
ने क्या कहा?" 18 बलआम ने कहा, "ऐ बलक़, उठो
और सुनो। ऐ सफ़ोर के बेटे, मेरी बात पर ग़ौर करो।

19 अल्लाह आदमी नहीं जो झूट बोलता है। वह
इन्सान नहीं जो कोई फ़ैसला करके बाद में पछताए।
क्या वह कभी अपनी बात पर अमल नहीं करता?
क्या वह कभी अपनी बात पूरी नहीं करता?

20 मुझे बरकत देने को कहा गया है। उस ने बरकत
दी है और मैं यह बरकत रोक नहीं सकता।
21 याक़ूब के घराने में ख़राबी नज़र नहीं आती,
इस्राईल में दुख दिखाई नहीं देता। रब उस का ख़ुदा
उस के साथ है, और क़ौम बादशाह की ख़ुशी में नारे
लगाती है।
22 अल्लाह उन्हें मिस्र से निकाल लाया, और उन्हें
जंगली बैल की ताक़त हासिल है।
23 याक़ूब के घराने के ख़िलाफ़ जादूगरी नाकाम
है, इस्राईल के ख़िलाफ़ ग़ैबदानी बेफ़ाइदा है। अब
याक़ूब के घराने से कहा जाएगा, 'अल्लाह ने कैसा
काम किया है!'
24 इस्राईली क़ौम शेरनी की तरह उठती और
शेरबबर की तरह खड़ी हो जाती है। जब तक वह
अपना शिकार न खा ले वह आराम नहीं करता, जब
तक वह मारे हुए लोगों का ख़ून न पी ले वह नहीं
लेटता।"
25 यह सुन कर बलक़ ने कहा, "अगर आप उन
पर लानत भेजने से इन्कार करें, कम अज़ कम उन्हें
बरकत तो न दें।" 26 बलआम ने जवाब दिया, "क्या
मैं ने आप को नहीं बताया था कि जो कुछ भी रब
कहेगा मैं वही करूँगा?"

बलआम की तीसरी बरकत

27 तब बलक़ ने बलआम से कहा, "आएँ, मैं आप
को एक और जगह ले जाऊँ। शायद अल्लाह राज़ी हो
जाए कि आप मेरे लिए वहाँ से उन पर लानत भेजें।"
28 वह उस के साथ फ़ग़ूर पहाड़ पर चढ़ गया। उस की
चोटी से यर्दन की वादी का जुनूबी हिस्सा यशीमोन
दिखाई दिया। 29 बलआम ने उस से कहा, "मेरे लिए
यहाँ सात क़ुर्बानगाहें बना कर सात बैल और सात
मेंढे तय्यार कर रखें।" 30 बलक़ ने ऐसा ही किया।
उस ने हर एक क़ुर्बानगाह पर एक बैल और एक
मेंढा क़ुर्बान किया।

24 1 अब बलआम को उस बात का पूरा
यक़ीन हो गया कि रब को पसन्द है कि
मैं इस्राईलियों को बरकत दूँ। इस लिए उस ने इस
मर्तबा पहले की तरह जादूगरी का तरीक़ा इस्तेमाल
न किया बल्कि सीधा रेगिस्तान की तरफ़ रुख़ किया
2 जहाँ इस्राईल अपने अपने क़बीलों की तर्तीब से
ख़ैमाज़न था। यह देख कर अल्लाह का रूह उस पर
नाज़िल हुआ, 3 और वह बोल उठा,
"बलआम बिन बओर का पैग़ाम सुनो, उस के
पैग़ाम पर ग़ौर करो जो साफ़ साफ़ देखता है, 4 उस
का पैग़ाम जो अल्लाह की बातें सुन लेता है, क़ादिर-
ए-मुतलक़ की रोया को देख लेता है और ज़मीन पर
गिर कर पोशीदा बातें देखता है।
5 ऐ याक़ूब, तेरे ख़ैमे कितने शानदार हैं! ऐ इस्राईल,
तेरे घर कितने अच्छे हैं!
6 वह दूर तक फैली हुई वादियों की मानिन्द, नहर
के किनारे लगे बाग़ों की मानिन्द, रब के लगाए हुए
ऊद के दरख़्तों की मानिन्द, पानी के किनारे लगे
देवदार के दरख़्तों की मानिन्द हैं।
7 उन की बाल्टियों से पानी छलकता रहेगा, उन के
बीज को कस्रत का पानी मिलेगा। उन का बादशाह
अजाज से ज़्यादा ताक़तवर होगा, और उन की
सल्तनत सरफ़राज़ होगी।
8 अल्लाह उन्हें मिस्र से निकाल लाया, और उन्हें
जंगली बैल की सी ताक़त हासिल है। वह मुख़ालिफ़
क़ौमों को हड़प करके उन की हड्डियाँ चूर चूर कर
देते हैं, वह अपने तीर चला कर उन्हें मार डालते हैं।
9 इस्राईल शेरबबर या शेरनी की मानिन्द है। जब
वह दबक कर बैठ जाए तो कोई भी उसे छेड़ने की
जुरअत नहीं करता। जो तुझे बरकत दे उसे बरकत
मिले, और जो तुझ पर लानत भेजे उस पर लानत
आए।"
10 यह सुन कर बलक़ आपे से बाहर हुआ। उस ने
ताली बजा कर अपनी हिक़ारत का इज़हार किया
और कहा, "मैं ने तुझे इस लिए बुलाया था कि तू
मेरे दुश्मनों पर लानत भेजे। अब तू ने उन्हें तीनों
बार बरकत ही दी है। 11 अब दफ़ा हो जा! अपने
घर वापस भाग जा! मैं ने कहा था कि बड़ा इनआम

दूँगा। लेकिन रब ने तुझे इनआम पाने से रोक दिया
है।”
12 बलआम ने जवाब दिया, “क्या मैं ने उन लोगों
को जिन्हें आप ने मुझे बुलाने के लिए भेजा था नहीं
बताया था 13 कि अगर बलक़ अपने महल को चाँदी
और सोने से भर कर भी मुझे दे दे तो भी मैं रब
की किसी बात की ख़िलाफ़वरज़ी नहीं कर सकता,
ख़्वाह मेरी नीयत अच्छी हो या बुरी। मैं सिर्फ़ वह
कुछ कर सकता हूँ जो अल्लाह फ़रमाता है। 14 अब
मैं अपने वतन वापस चला जाता हूँ। लेकिन पहले मैं
आप को बता देता हूँ कि आख़िरकार यह क़ौम आप
की क़ौम के साथ क्या कुछ करेगी।”

बलआम की चौथी बरकत

15 वह बोल उठा,
“बलआम बिन बओर का पैग़ाम सुनो, उस का
पैग़ाम जो साफ़ साफ़ देखता है,
16 उस का पैग़ाम जो अल्लाह की बातें सुन लेता और
अल्लाह तआला की मर्ज़ी को जानता है, जो क़ादिर-ए-
मुतलक़ की रोया को देख लेता और ज़मीन पर गिर
कर पोशीदा बातें देखता है।
17 जिसे मैं देख रहा हूँ वह इस वक़्त नहीं है। जो
मुझे नज़र आ रहा है वह क़रीब नहीं है। याक़ूब के
घराने से सितारा निकलेगा, और इस्राईल से असा-ए-
शाही उठेगा जो मोआब के माथों और सेत के तमाम
बेटों की खोपड़ियों को पाश पाश करेगा।
18 अदोम उस के क़ब्ज़े में आएगा, उस का दुश्मन
सईर उस की मिलकियत बनेगा जबकि इस्राईल की
ताक़त बढ़ती जाएगी।
19 याक़ूब के घराने से एक हुक्मरान निकलेगा जो
शहर के बचे हुओं को हलाक कर देगा।”

बलआम के आख़िरी पैग़ाम

20 फिर बलआम ने अमालीक़ को देखा और कहा,
“अमालीक़ क़ौमों में अव्वल था, लेकिन
आख़िरकार वह ख़त्म हो जाएगा।”
21 फिर उस ने क़ीनियों को देखा और कहा,
“तेरी सुकूनतगाह मुस्तहकम है, तेरा चटान में बना
घोंसला मज़बूत है।
22 लेकिन तू तबाह हो जाएगा जब असूर तुझे
गिरिफ़्तार करेगा।”
23 एक और दफ़ा उस ने बात की,
“हाय, कौन ज़िन्दा रह सकता है जब अल्लाह यूँ
करेगा?
24 कित्तीम के साहिल से बहरी जहाज़ आएँगे जो
असूर और इबर को ज़लील करेंगे, लेकिन वह ख़ुद
भी हलाक हो जाएंगे।”
25 फिर बलआम उठ कर अपने घर वापस चला
गया। बलक़ भी वहाँ से चला गया।

मोआब इस्राईलियों की आज़माइश करता है

25 1 जब इस्राईली शित्तीम में रह रहे थे तो
इस्राईली मर्द मोआबी औरतों से ज़िनाकारी
करने लगे। 2 यह ऐसा हुआ कि मोआबी औरतें अपने
देवताओं को क़ुर्बानियाँ पेश करते वक़्त इस्राईलियों
को शरीक होने की दावत देने लगीं। इस्राईली दावत
क़बूल करके क़ुर्बानियों से खाने और देवताओं को
सिज्दा करने लगे। 3 इस तरीक़े से इस्राईली मोआबी
देवता बनाम बाल-फ़ग़ूर की पूजा करने लगे, और रब
का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा। 4 उस ने मूसा से कहा,
“इस क़ौम के तमाम राहनुमाओं को सज़ा-ए-मौत दे
कर सूरज की रौशनी में रब के सामने लटका, वर्ना रब
का इस्राईलियों पर से ग़ज़ब नहीं टलेगा।” 5 चुनाँचे
मूसा ने इस्राईल के क़ाज़ियों से कहा, “लाज़िम है कि
तुम में से हर एक अपने उन आदमियों को जान से
मार दे जो बाल-फ़ग़ूर देवता की पूजा में शरीक हुए
हैं।”
6 मूसा और इस्राईल की पूरी जमाअत मुलाक़ात के
ख़ैमे के दरवाज़े पर जमा हो कर रोने लगे। इत्तिफ़ाक़
से उसी वक़्त एक आदमी वहाँ से गुज़रा जो एक
मिदियानी औरत को अपने घर ले जा रहा था। 7 यह
देख कर हारून का पोता फ़ीन्हास बिन इलीअज़र

जमाअत से निकला और नेज़ा पकड़ कर 8 उस
इस्राईली के पीछे चल पड़ा। वह औरत समेत अपने
ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो फ़ीन्हास ने उन के पीछे पीछे
जा कर नेज़ा इतने ज़ोर से मारा कि वह दोनों में से
गुज़र गया। उस वक़्त वबा फैलने लगी थी, लेकिन
फ़ीन्हास के इस अमल से वह रुक गई। 9 तो भी
24,000 अफ़राद मर चुके थे।

10 रब ने मूसा से कहा, 11 "हारून के पोते फ़ीन्हास
बिन इलीअज़र ने इस्राईलियों पर मेरा ग़ुस्सा ठंडा
कर दिया है। मेरी ग़ैरत अपना कर वह इस्राईल में
दीगर माबूदों की पूजा को बर्दाश्त न कर सका। इस
लिए मेरी ग़ैरत ने इस्राईलियों को नेस्त-ओ-नाबूद नहीं
किया। 12 लिहाज़ा उसे बता देना कि मैं उस के साथ
सलामती का अह्द क़ाइम करता हूँ। 13 इस अह्द
के तहत उसे और उस की औलाद को अबद तक
इमाम का उह्दा हासिल रहेगा, क्यूँकि अपने ख़ुदा की
ख़ातिर ग़ैरत खा कर उस ने इस्राईलियों का कफ़्फ़ारा
दिया।"

14 जिस आदमी को मिदियानी औरत के साथ मार
दिया गया उस का नाम ज़िम्री बिन सलू था, और
वह शमाऊन के क़बीले के एक आबाई घराने का
सरपरस्त था। 15 मिदियानी औरत का नाम कज़्बी
था, और वह सूर की बेटी थी जो मिदियानियों के
एक आबाई घराने का सरपरस्त था।

16 रब ने मूसा से कहा, 17 "मिदियानियों को दुश्मन
क़रार दे कर उन्हें मार डालना। 18 क्यूँकि उन्हों ने
अपनी चालाकियों से तुम्हारे साथ दुश्मन का सा
सुलूक किया, उन्हों ने तुम्हें बाल-फ़ग़ूर की पूजा
करने पर उकसाया और तुम्हें अपनी बहन मिदियानी
सरदार की बेटी कज़्बी के ज़रीए जिसे वबा फैलते
वक़्त मार दिया गया बहकाया।"

दूसरी मर्दुमशुमारी

26 1 वबा के बाद रब ने मूसा और हारून के
बेटे इलीअज़र से कहा,

2 "पूरी इस्राईली जमाअत की मर्दुमशुमारी उन के
आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। उन तमाम मर्दों
को गिनना जो 20 साल या इस से ज़ाइद के हैं और
जो जंग लड़ने के क़ाबिल हैं।"

3–4 मूसा और इलीअज़र ने इस्राईलियों को बताया
कि रब ने उन्हें क्या हुक्म दिया है। चुनाँचे उन्हों ने
मोआब के मैदानी इलाक़े में यरीहू के सामने, लेकिन
दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर मर्दुमशुमारी
की। यह वह इस्राईली आदमी थे जो मिस्र से निकले
थे।

5–7 इस्राईल के पहलौठे रूबिन के क़बीले के
43,730 मर्द थे। क़बीले के चार कुंबे हनूकी, फ़ल्लुवी,
हस्रोनी और कर्मी रूबिन के बेटों हनूक, फ़ल्लू, हस्रोन
और कर्मी से निकले हुए थे। 8 रूबिन का बेटा फ़ल्लू
इलियाब का बाप था 9 जिस के बेटे नमूएल, दातन
और अबीराम थे।

दातन और अबीराम वही लोग थे जिन्हें जमाअत
ने चुना था और जिन्हों ने क़ोरह के गुरोह समेत मूसा
और हारून से झगड़ते हुए ख़ुद रब से झगड़ा किया।
10 उस वक़्त ज़मीन ने अपना मुँह खोल कर उन्हें
क़ोरह समेत हड़प कर लिया था। उस के 250 साथी
भी मर गए थे जब आग ने उन्हें भस्म कर दिया। यूँ
वह सब इस्राईल के लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल बन गए
थे। 11 लेकिन क़ोरह की पूरी नस्ल मिटाई नहीं गई
थी।

12–14 शमाऊन के क़बीले के 22,200 मर्द थे।
क़बीले के पाँच कुंबे नमूएली, यमीनी, यक़ीनी,
ज़ारही और साऊली शमाऊन के बेटों नमूएल, यमीन,
यकीन, ज़ारह और साऊल से निकले हुए थे।

15–18 जद के क़बीले के 40,500 मर्द थे। क़बीले के
सात कुंबे सफ़ोनी, हज्जी, सूनी, उज़नी, एरी, अरूदी
और अरेली जद के बेटों सफ़ोन, हज्जी, सूनी, उज़नी,
एरी, अरूद और अरेली से निकले हुए थे।

19–22 यहूदाह के क़बीले के 76,500 मर्द थे।
यहूदाह के दो बेटे एर और ओनान मिस्र आने से
पहले कनआन में मर गए थे। क़बीले के तीन कुंबे

सेलानी, फ़ारसी और ज़ारही यहूदाह के बेटों सेला,
फ़ारस और ज़ारह से निकले हुए थे।

फ़ारस के दो बेटों हस्रोन और हमूल से दो कुंबे
हस्रोनी और हमूली निकले हुए थे। 23–25 इश्कार के
क़बीले के 64,300 मर्द थे। क़बीले के चार कुंबे
तोलई, फ़ुव्वी, यसूबी और सिम्रोनी इश्कार के बेटों
तोला, फ़ुव्वा, यसूब और सिम्रोन से निकले हुए थे।

26–27 ज़बूलून के क़बीले के 60,500 मर्द थे।
क़बीले के तीन कुंबे सरदी, ऐलोनी और यहलीएली
ज़बूलून के बेटों सरद, ऐलोन और यहलीएल से
निकले हुए थे।

28 यूसुफ़ के दो बेटों मनस्सी और इफ़्राईम के अलग
अलग क़बीले बने।

29–34 मनस्सी के क़बीले के 52,700 मर्द थे।
क़बीले के आठ कुंबे मकीरी, जिलिआदी, ईअज़री,
ख़लक़ी, अस्रीएली, सिकमी, समीदाई और हिफ़री
थे। मकीरी मनस्सी के बेटे मकीर से जबकि
जिलिआदी मकीर के बेटे जिलिआद से निकले हुए
थे। बाक़ी कुंबे जिलिआद के छः बेटों ईअज़र,
ख़लक़, अस्रीएल, सिकम, समीदा और हिफ़र से
निकले हुए थे।

हिफ़र सिलाफ़िहाद का बाप था। सिलाफ़िहाद का
कोई बेटा नहीं बल्कि पाँच बेटियाँ महलाह, नूआह,
हुज्लाह, मिल्काह और तिर्ज़ा थीं।

35–37 इफ़्राईम के क़बीले के 32,500 मर्द थे।
क़बीले के चार कुंबे सूतलही, बकरी, तहनी और
ईरानी थे। पहले तीन कुंबे इफ़्राईम के बेटों सूतलह,
बकर और तहन से जबकि ईरानी सूतलह के बेटे
ईरान से निकले हुए थे।

38–41 बिनयमीन के क़बीले के 45,600 मर्द थे।
क़बीले के सात कुंबे बालाई, अश्बेली, अख़ीरामी,
सूफ़ामी, हूफ़ामी, अर्दी और नामानी थे। पहले पाँच
कुंबे बिनयमीन के बेटों बाला, अश्बेल, अख़ीराम,
सूफ़ाम और हूफ़ाम से जबकि अर्दी और नामानी
बाला के बेटों से निकले हुए थे।

42–43 दान के क़बीले के 64,400 मर्द थे। सब दान
के बेटे सूहाम से निकले हुए थे, इस लिए सूहामी
कहलाते थे।

44–47 आशर के क़बीले के 53,400 मर्द थे। क़बीले
के पाँच कुंबे यिमनी, इस्वी, बरीई, हिबरी और
मल्कीएली थे। पहले तीन कुंबे आशर के बेटों यिम्ना,
इस्वी और बरीआ से जबकि बाक़ी बरीआ के बेटों
हिबर और मल्कीएल से निकले हुए थे। आशर की
एक बेटी बनाम सिरह भी थी।

48–50 नफ़्ताली के क़बीले के 45,400 मर्द थे।
क़बीले के चार कुंबे यहसीएली, जूनी, यिसरी और
सिल्लीमी नफ़्ताली के बेटों यहसीएल, जूनी, यिसर
और सिल्लीम से निकले हुए थे।

51 इस्राईली मर्दों की कुल तादाद 6,01,730 थी।

52 रब ने मूसा से कहा, 53 "जब मुल्क-ए-कनआन
को तक़्सीम किया जाएगा तो ज़मीन इन की तादाद
के मुताबिक़ देना है। 54 बड़े क़बीलों को छोटे की
निस्बत ज़्यादा ज़मीन दी जाए। हर क़बीले का इलाक़ा
उस की तादाद से मुताबिक़त रखे। 55–56 क़ुरआ
डालने से फ़ैसला किया जाए कि हर क़बीले को
कहाँ ज़मीन मिलेगी। लेकिन हर क़बीले के इलाक़े
का रक़बा इस पर मब्नी हो कि क़बीले के कितने
अफ़राद हैं।"

57 लावी के क़बीले के तीन कुंबे जैर्सोनी, क़िहाती
और मिरारी लावी के बेटों जैर्सोन, क़िहात और
मिरारी से निकले हुए थे। 58 इस के इलावा लिब्नी,
हिब्रूनी, महली, मूशी और कोरही भी लावी के कुंबे
थे। क़िहात अम्राम का बाप था। 59 अम्राम ने लावी
औरत यूकबिद से शादी की जो मिस्र में पैदा हुई थी।
उन के दो बेटे हारून और मूसा और एक बेटी मरियम
पैदा हुए। 60 हारून के बेटे नदब, अबीहू, इलीअज़र
और इतमर थे। 61 लेकिन नदब और अबीहू रब को
बख़ूर की नाजाइज़ क़ुर्बानी पेश करने के बाइस मर
गए। 62 लावियों के मर्दों की कुल तादाद 23,000
थी। इन में वह सब शामिल थे जो एक माह या इस
से ज़ाइद के थे। उन्हें दूसरे इस्राईलियों से अलग गिना

गया, क्यूँकि उन्हें इस्राईल में मीरास में ज़मीन नहीं मिलनी थी।

63 यूँ मूसा और इलीअज़र ने मोआब के मैदानी इलाक़े में यरीहू के सामने लेकिन दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर इस्राईलियों की मर्दुमशुमारी की। 64 लोगों को गिनते गिनते उन्हें मालूम हुआ कि जो लोग दश्त-ए-सीन में मूसा और हारून की पहली मर्दुमशुमारी में गिने गए थे वह सब मर चुके हैं। 65 रब ने कहा था कि वह सब के सब रेगिस्तान में मर जाएंगे, और ऐसा ही हुआ था। सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना और यशूअ बिन नून ज़िन्दा रहे।

सिलाफ़िहाद की बेटियाँ

27 1 सिलाफ़िहाद की पाँच बेटियाँ महलाह, नूआह, हुज्लाह, मिल्काह और तिर्ज़ा थीं। सिलाफ़िहाद यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के कुंबे का था। उस का पूरा नाम सिलाफ़िहाद बिन हिफ़र बिन जिलिआद बिन मकीर बिन मनस्सी बिन यूसुफ़ था। 2 सिलाफ़िहाद की बेटियाँ मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आ कर मूसा, इलीअज़र इमाम और पूरी जमाअत के सामने खड़ी हुईं। उन्हों ने कहा, 3 "हमारा बाप रेगिस्तान में फ़ौत हुआ। लेकिन वह क़ोरह के उन साथियों में से नहीं था जो रब के ख़िलाफ़ मुत्तहिद हुए थे। वह इस सबब से न मरा बल्कि अपने ज़ाती गुनाह के बाइस। जब वह मर गया तो उस का कोई बेटा नहीं था। 4 क्या यह ठीक है कि हमारे ख़ानदान में बेटा न होने के बाइस हमें ज़मीन न मिले और हमारे बाप का नाम-ओ-निशान मिट जाए? हमें भी हमारे बाप के दीगर रिश्तेदारों के साथ ज़मीन दें।"

5 मूसा ने उन का मुआमला रब के सामने पेश किया 6 तो रब ने उस से कहा, 7 "जो बात सिलाफ़िहाद की बेटियाँ कर रही हैं वह दुरुस्त है। उन्हें ज़रूर उन के बाप के रिश्तेदारों के साथ ज़मीन मिलनी चाहिए। उन्हें बाप का विरसा मिल जाए। 8 इस्राईलियों को भी बताना कि जब भी कोई आदमी मर जाए जिस का बेटा न हो तो उस की बेटी को उस की मीरास मिल जाए। 9 अगर उस की बेटी भी न हो तो उस के भाइयों को उस की मीरास मिल जाए। 10 अगर उस के भाई भी न हों तो उस के बाप के भाइयों को उस की मीरास मिल जाए। 11 अगर यह भी न हों तो उस के सब से क़रीबी रिश्तेदार को उस की मीरास मिल जाए। वह उस की ज़ाती मिलकियत होगी। यह उसूल इस्राईलियों के लिए क़ानूनी हैसियत रखता है। वह इसे वैसा मानें जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया है।"

यशूअ को मूसा का जानशीन मुक़र्रर किया जाता है

12 फिर रब ने मूसा से कहा, "अबारीम के पहाड़ी सिलसिले के इस पहाड़ पर चढ़ कर उस मुल्क पर निगाह डाल जो मैं इस्राईलियों को दूँगा। 13 उसे देखने के बाद तू भी अपने भाई हारून की तरह कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा, 14 क्यूँकि तुम दोनों ने दश्त-ए-सीन में मेरे हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की। उस वक़्त जब पूरी जमाअत ने मरीबा में मेरे ख़िलाफ़ गिला-शिकवा किया तो तू ने चटान से पानी निकालते वक़्त लोगों के सामने मेरी क़ुद्दूसियत क़ाइम न रखी।" (मरीबा दश्त-ए-सीन के क़ादिस में चश्मा है।)

15 मूसा ने रब से कहा, 16 "ऐ रब, तमाम जानों के ख़ुदा, जमाअत पर किसी आदमी को मुक़र्रर कर 17 जो उन के आगे आगे जंग के लिए निकले और उन के आगे आगे वापस आ जाए, जो उन्हें बाहर ले जाए और वापस ले आए। वर्ना रब की जमाअत उन भेड़ों की मानिन्द होगी जिन का कोई चरवाहा न हो।"

18 जवाब में रब ने मूसा से कहा, "यशूअ बिन नून को चुन ले जिस में मेरा रूह है, और अपना हाथ उस पर रख। 19 उसे इलीअज़र इमाम और पूरी जमाअत के सामने खड़ा करके उन के रू-ब-रू ही उसे राहनुमाई की ज़िम्मादारी दे। 20 अपने इख़तियार में से कुछ उसे दे ताकि इस्राईल की पूरी जमाअत उस की इताअत करे। 21 रब की मर्ज़ी जानने के लिए वह इलीअज़र इमाम के सामने खड़ा होगा तो इलीअज़र

रब के सामने ऊरीम और तुम्मीम इस्तेमाल करके उस
की मर्ज़ी दरयाफ़्त करेगा। उसी के हुक्म पर यशूअ
और इस्राईल की पूरी जमाअत ख़ैमागाह से निकलेंगे
और वापस आएँगे।”
22 मूसा ने ऐसा ही किया। उस ने यशूअ को चुन
कर इलीअज़र और पूरी जमाअत के सामने खड़ा
किया। 23 फिर उस ने उस पर अपने हाथ रख कर
उसे राहनुमाई की ज़िम्मादारी सौंपी जिस तरह रब ने
उसे बताया था।

रोज़मर्रा की क़ुर्बानियाँ

28 1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इस्राईलियों को
बताना, ख़याल रखो कि तुम मुक़र्ररा
औक़ात पर मुझे जलने वाली क़ुर्बानियाँ पेश करो।
यह मेरी रोटी हैं और इन की ख़ुश्बू मुझे पसन्द है।
3 रब को जलने वाली यह क़ुर्बानी पेश करना :
रोज़ाना भेड़ के दो यकसाला बच्चे जो बेऐब हों पूरे
तौर पर जला देना। 4 एक को सुब्ह के वक़्त पेश
करना और दूसरे को सूरज के डूबने के ऐन बाद।
5 भेड़ के बच्चे के साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश की जाए
यानी डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा जो एक लिटर
ज़ैतून के कूट कर निकाले हुए तेल के साथ मिलाया
गया हो। 6 यह रोज़मर्रा की क़ुर्बानी है जो पूरे तौर
पर जलाई जाती है और पहली दफ़ा सीना पहाड़ पर
चढ़ाई गई। इस जलने वाली क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब
को पसन्द है। 7–8 साथ ही एक लिटर शराब भी नज़र
के तौर पर क़ुर्बानगाह पर डाली जाए। सुब्ह और
शाम की यह क़ुर्बानियाँ दोनों ही इस तरीक़े से पेश
की जाएँ।

सबत यानी हफ़्ते की क़ुर्बानी

9 सबत के दिन भेड़ के दो और बच्चे चढ़ाना। वह
भी बेऐब और एक साल के हों। साथ ही मै और ग़ल्ला
की नज़रें भी पेश की जाएँ। ग़ल्ला की नज़र के लिए 3
किलोग्राम बेहतरीन मैदा तेल के साथ मिलाया जाए।
10 भस्म होने वाली यह क़ुर्बानी हर हफ़्ते के दिन पेश
करनी है। यह रोज़मर्रा की क़ुर्बानियों के इलावा है।

हर माह के पहले दिन की क़ुर्बानी

11 हर माह के शुरू में रब को भस्म होने वाली
क़ुर्बानी के तौर पर दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़
के सात यकसाला बच्चे पेश करना। सब बग़ैर नुक़्स
के हों। 12 हर जानवर के साथ ग़ल्ला की नज़र पेश
करना जिस के लिए तेल में मिलाया गया बेहतरीन
मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4
किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम 13 और भेड़
के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना।
भस्म होने वाली यह क़ुर्बानियाँ रब को पसन्द हैं।
14 इन क़ुर्बानियों के साथ मै की नज़र भी क़ुर्बानगाह
पर डालना यानी हर बैल के साथ दो लिटर, हर मेंढे
के साथ सवा लिटर और भेड़ के हर बच्चे के साथ एक
लिटर मै पेश करना। यह क़ुर्बानी साल में हर महीने के
पहले दिन के मौक़े पर पेश करनी है। 15 इस क़ुर्बानी
और रोज़मर्रा की क़ुर्बानियों के इलावा रब को एक
बकरा गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करना।

फ़सह की क़ुर्बानियाँ

16 पहले महीने के चौधवें दिन फ़सह की ईद मनाई
जाए। 17 अगले दिन पूरे हफ़्ते की वह ईद शुरू होती
है जिस के दौरान तुम्हें सिर्फ़ बेख़मीरी रोटी खानी है।
18 पहले दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा
के लिए इकट्ठे होना। 19 रब के हुज़ूर भस्म होने वाली
क़ुर्बानी के तौर पर दो जवान बैल, एक मेंढा और
भेड़ के सात यकसाला बच्चे पेश करना। सब बग़ैर
नुक़्स के हों। 20 हर जानवर के साथ ग़ल्ला की नज़र
भी पेश करना जिस के लिए तेल के साथ मिलाया
गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के
साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम
21 और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा
पेश करना। 22 गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर एक
बकरा भी पेश करना ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया

जाए। 23–24 इन तमाम क़ुर्बानियों को ईद के दौरान
हर रोज़ पेश करना। यह रोज़मर्रा की भस्म होने वाली
क़ुर्बानियों के इलावा हैं। इस ख़ुराक की ख़ुश्बू रब
को पसन्द है। 25 सातवें दिन काम न करना बल्कि
मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना।

फ़सल की कटाई की ईद की क़ुर्बानियाँ

26 फ़सल की कटाई के पहले दिन की ईद पर जब
तुम रब को अपनी फ़सल की पहली पैदावार पेश
करते हो तो काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा
के लिए इकट्ठे होना। 27–29 उस दिन दो जवान बैल,
एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे क़ुर्बानगाह
पर पूरे तौर पर जला देना। इस के साथ ग़ल्ला और मै
की वही नज़रें पेश करना जो फ़सह की ईद पर भी पेश
की जाती हैं। 30 इस के इलावा रब को एक बकरा
गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाना।
31 यह तमाम क़ुर्बानियाँ रोज़मर्रा की भस्म होने
वाली क़ुर्बानियों और उन के साथ वाली ग़ल्ला और
मै की नज़रों के इलावा हैं। वह बेऐब हों।

नए साल की ईद की क़ुर्बानियाँ

29 1 सातवें माह के पंद्रहवें दिन भी काम न
करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए
इकट्ठे होना। उस दिन नरसिंगे फूँके जाएँ। 2 रब को
भस्म होने वाली क़ुर्बानी पेश की जाए जिस की
ख़ुश्बू उसे पसन्द हो यानी एक जवान बैल, एक
मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे। सब नुक़्स
के बग़ैर हों। 3 हर जानवर के साथ ग़ल्ला की नज़र भी
पेश करना जिस के लिए तेल के साथ मिलाया गया
बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। बैल के साथ
साढ़े 4 किलोग्राम, मेंढे के साथ 3 किलोग्राम 4 और
भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश
करना। 5 एक बकरा भी गुनाह की क़ुर्बानी के तौर
पर पेश करना ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाए।
6 यह क़ुर्बानियाँ रोज़ाना और हर माह के पहले दिन
की क़ुर्बानियों और उन के साथ की ग़ल्ला और मै की
नज़रों के इलावा हैं। इन की ख़ुश्बू रब को पसन्द है।

कफ़्फ़ारा के दिन की क़ुर्बानियाँ

7 सातवें महीने के दसवें दिन मुक़द्दस इजतिमा के
लिए इकट्ठे होना। उस दिन काम न करना और अपनी
जान को दुख देना। 8–11 रब को वही क़ुर्बानियाँ पेश
करना जो इसी महीने के पहले दिन पेश की जाती हैं।
सिर्फ़ एक फ़र्क़ है, उस दिन एक नहीं बल्कि दो बकरे
गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर पेश किए जाएँ ताकि
तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाए। ऐसी क़ुर्बानियाँ रब को
पसन्द हैं।

झोंपड़ियों की ईद की क़ुर्बानियाँ

12 सातवें महीने के पंद्रहवें दिन भी काम न करना
बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। सात
दिन तक रब की ताज़ीम में ईद मनाना। 13 ईद के
पहले दिन रब को 13 जवान बैल, 2 मेंढे और 14
भेड़ के यकसाला बच्चे भस्म होने वाली क़ुर्बानी के
तौर पर पेश करना। इन की ख़ुश्बू उसे पसन्द है।
सब नुक़्स के बग़ैर हों। 14 हर जानवर के साथ ग़ल्ला
की नज़र भी पेश करना जिस के लिए तेल से मिलाया
गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के
साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम
15 और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा
पेश करना। 16 इस के इलावा एक बकरा भी गुनाह
की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करना। यह क़ुर्बानियाँ
रोज़ाना की भस्म होने वाली क़ुर्बानियों और उन के
साथ वाली ग़ल्ला और मै की नज़रों के इलावा हैं।
17–34 ईद के बाक़ी छः दिन यही क़ुर्बानियाँ पेश करनी
हैं। लेकिन हर दिन एक बैल कम हो यानी दूसरे दिन
12, तीसरे दिन 11, चौथे दिन 10, पाँचवें दिन 9,
छटे दिन 8 और सातवें दिन 7 बैल। हर दिन गुनाह
की क़ुर्बानी के लिए बकरा और मामूल की रोज़ाना
की क़ुर्बानियाँ भी पेश करना। 35 ईद के आठवें दिन
काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे

होना। 36 रब को एक जवान बैल, एक मेंढा और भेड़
के सात यकसाला बच्चे भस्म होने वाली क़ुर्बानी के
तौर पर पेश करना। इन की ख़ुश्बू रब को पसन्द
है। सब नुक़्स के बग़ैर हों। 37–38 साथ ही वह तमाम
क़ुर्बानियाँ भी पेश करना जो पहले दिन पेश की
जाती हैं। 39 यह सब वही क़ुर्बानियाँ हैं जो तुम्हें रब
को अपनी ईदों पर पेश करनी हैं। यह उन तमाम
क़ुर्बानियों के इलावा हैं जो तुम दिली ख़ुशी से या
मन्नत मान कर देते हो, चाहे वह भस्म होने वाली,
ग़ल्ला की, मै की या सलामती की क़ुर्बानियाँ क्यूँ न
हों।"

40 मूसा ने रब की यह तमाम हिदायात इस्राईलियों
को बता दीं।

मन्नत मानने के क़वाइद

30 1 फिर मूसा ने क़बीलों के सरदारों से कहा,
"रब फ़रमाता है,

2 अगर कोई आदमी रब को कुछ देने की मन्नत माने
या किसी चीज़ से पर्हेज़ करने की क़सम खाए तो वह
अपनी बात पर क़ाइम रह कर उसे पूरा करे।

3 अगर कोई जवान औरत जो अब तक अपने बाप
के घर में रहती है रब को कुछ देने की मन्नत माने
या किसी चीज़ से पर्हेज़ करने की क़सम खाए 4 तो
लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत या क़सम की हर बात
पूरी करे। शर्त यह है कि उस का बाप उस के बारे में
सुन कर एतिराज़ न करे। 5 लेकिन अगर उस का बाप
यह सुन कर उसे ऐसा करने से मना करे तो उस की
मन्नत या क़सम मन्सूख़ है, और वह उसे पूरा करने से
बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा, क्यूँकि उस के बाप
ने उसे मना किया है।

6 हो सकता है कि किसी ग़ैरशादीशुदा औरत ने
मन्नत मानी या किसी चीज़ से पर्हेज़ करने की क़सम
खाई, चाहे उस ने दानिस्ता तौर पर या बेसोचे-समझे
ऐसा किया। इस के बाद उस औरत ने शादी कर ली।
7 शादीशुदा हालत में भी लाज़िम है कि वह अपनी
मन्नत या क़सम की हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि
उस का शौहर इस के बारे में सुन कर एतिराज़ न करे।
8 लेकिन अगर उस का शौहर यह सुन कर उसे ऐसा
करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम मन्सूख़
है, और वह उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़
करेगा। 9 अगर किसी बेवा या तलाकशुदा औरत ने
मन्नत मानी या किसी चीज़ से पर्हेज़ करने की क़सम
खाई तो लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी करे।

10 अगर किसी शादीशुदा औरत ने मन्नत मानी या
किसी चीज़ से पर्हेज़ करने की क़सम खाई 11 तो
लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी करे। शर्त यह
है कि उस का शौहर उस के बारे में सुन कर एतिराज़
न करे। 12 लेकिन अगर उस का शौहर उसे ऐसा करने
से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम मन्सूख़ है।
वह उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा,
क्यूँकि उस के शौहर ने उसे मना किया है। 13 चाहे
बीवी ने कुछ देने की मन्नत मानी हो या किसी चीज़
से पर्हेज़ करने की क़सम खाई हो, उस के शौहर को
उस की तस्दीक़ या उसे मन्सूख़ करने का इख़तियार
है। 14 अगर उस ने अपनी बीवी की मन्नत या क़सम
के बारे में सुन लिया और अगले दिन तक एतिराज़
न किया तो लाज़िम है कि उस की बीवी अपनी हर
बात पूरी करे। शौहर ने अगले दिन तक एतिराज़ न
करने से अपनी बीवी की बात की तस्दीक़ की है।
15 अगर वह इस के बाद यह मन्नत या क़सम मन्सूख़
करे तो उसे इस क़ुसूर के नताइज भुगतने पड़ेंगे।"

16 रब ने मूसा को यह हिदायात दीं। यह ऐसी औरतों
की मन्नतों या क़समों के उसूल हैं जो ग़ैरशादीशुदा
हालत में अपने बाप के घर में रहती हैं या जो
शादीशुदा हैं।

मिदियानियों से जंग

31 1 रब ने मूसा से कहा, 2 "मिदियानियों से
इस्राईलियों का बदला ले। इस के बाद तू
कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा।"

3 चुनाँचे मूसा ने इस्राईलियों से कहा, "हथियारों
से अपने कुछ आदमियों को लेस करो ताकि वह

मिदियान से जंग करके रब का बदला लें। 4 हर
क़बीले के 1,000 मर्द जंग लड़ने के लिए भेजो।”
5 चुनाँचे हर क़बीले के 1,000 मुसल्लह मर्द यानी
कुल 12,000 आदमी चुने गए। 6 तब मूसा ने उन्हें जंग
लड़ने के लिए भेज दिया। उस ने इलीअज़र इमाम के
बेटे फ़ीन्हास को भी उन के साथ भेजा जिस के पास
मक़्दिस की कुछ चीज़ें और एलान करने के बिगुल
थे। 7 उन्हों ने रब के हुक्म के मुताबिक़ मिदियानियों
से जंग की और तमाम आदमियों को मौत के घाट
उतार दिया। 8 इन में मिदियानियों के पाँच बादशाह
इवी, रक़म, सूर, हूर और रबा थे। बलआम बिन
बओर को भी जान से मार दिया गया।
9 इस्राईलियों ने मिदियानी औरतों और बच्चों को
गिरिफ़्तार करके उन के तमाम गाय-बैल, भेड़-
बकरियाँ और माल लूट लिया। 10 उन्हों ने उन की
तमाम आबादियों को ख़ैमागाहों समेत जला कर राख
कर दिया। 11–12 फिर वह तमाम लूटा हुआ माल
क़ैदियों और जानवरों समेत मूसा, इलीअज़र इमाम
और इस्राईल की पूरी जमाअत के पास ले आए
जो ख़ैमागाह में इन्तिज़ार कर रहे थे। अभी तक
वह मोआब के मैदानी इलाक़े में दरया-ए-यर्दन के
मशरिक़ी किनारे पर यरीहू के सामने ठहरे हुए थे।
13 मूसा, इलीअज़र और जमाअत के तमाम सरदार
उन का इस्तिक़्बाल करने के लिए ख़ैमागाह से
निकले।
14 उन्हें देख कर मूसा को हज़ार हज़ार और सौ
सौ अफ़राद पर मुक़र्रर अफ़्सरान पर ग़ुस्सा आया।
15 उस ने कहा, “आप ने तमाम औरतों को क्यूँ बचाए
रखा? 16 उन ही ने बलआम के मश्वरे पर फ़ग़ूर में
इस्राईलियों को रब से दूर कर दिया था। उन ही के
सबब से रब की वबा उस के लोगों में फैल गई।
17 चुनाँचे अब तमाम लड़कों को जान से मार दो।
उन तमाम औरतों को भी मौत के घाट उतारना जो
कुंवारियाँ नहीं हैं। 18 लेकिन तमाम कुंवारियों को
बचाए रखना। 19 जिस ने भी किसी को मार दिया या
किसी लाश को छुआ है वह सात दिन तक ख़ैमागाह
के बाहर रहे। तीसरे और सातवें दिन अपने आप
को अपने क़ैदियों समेत गुनाह से पाक-साफ़ करना।
20 हर लिबास और हर चीज़ को पाक-साफ़ करना
जो चमड़े, बकरियों के बालों या लकड़ी की हो।”
21 फिर इलीअज़र इमाम ने जंग से वापस आने वाले
मर्दों से कहा, “जो शरीअत रब ने मूसा को दी उस
के मुताबिक़ 22–23 जो भी चीज़ जल नहीं जाती उसे
आग में से गुज़ार देना ताकि पाक-साफ़ हो जाए।
उस में सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, टीन और सीसा
शामिल है। फिर उस पर नापाकी दूर करने का पानी
छिड़कना। बाक़ी तमाम चीज़ें पानी में से गुज़ार देना
ताकि वह पाक-साफ़ हो जाएँ। 24 सातवें दिन अपने
लिबास को धोना तो तुम पाक-साफ़ हो कर ख़ैमागाह
में दाख़िल हो सकते हो।”

लूटे हुए माल की तक़्सीम

25 रब ने मूसा से कहा, 26 “तमाम क़ैदियों और लूटे
हुए जानवरों को गिन। इस में इलीअज़र इमाम और
क़बाइली कुंबों के सरपरस्त तेरी मदद करें। 27 सारा
माल दो बराबर के हिस्सों में तक़्सीम करना, एक
हिस्सा फ़ौजियों के लिए और दूसरा बाक़ी जमाअत
के लिए हो। 28 फ़ौजियों के हिस्से के पाँच पाँच सौ
क़ैदियों में से एक एक निकाल कर रब को देना। इसी
तरह पाँच पाँच सौ बैलों, गधों, भेड़ों और बकरियों
में से एक एक निकाल कर रब को देना। 29 उन्हें
इलीअज़र इमाम को देना ताकि वह उन्हें रब को
उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। 30 बाक़ी
जमाअत के हिस्से के पचास पचास क़ैदियों में से
एक एक निकाल कर रब को देना, इसी तरह पचास
पचास बैलों, गधों, भेड़ों और बकरियों या दूसरे
जानवरों में से भी एक एक निकाल कर रब को देना।
उन्हें उन लावियों को देना जो रब के मक़्दिस को
सँभालते हैं।”
31 मूसा और इलीअज़र ने ऐसा ही किया।
32–34 उन्हों ने 6,75,000 भेड़-बकरियाँ, 72,000
गाय-बैल और 61,000 गधे गिने। 35 इन के इलावा

32,000 क़ैदी कुंवारियाँ भी थीं। 36–40 फ़ौजियों
को तमाम चीज़ों का आधा हिस्सा मिल गया
यानी 3,37,500 भेड़-बकरियाँ, 36,000 गाय-बैल,
30,500 गधे और 16,000 क़ैदी कुंवारियाँ। इन में
से उन्हों ने 675 भेड़-बकरियाँ, 72 गाय-बैल, 61 गधे
और 32 लड़कियाँ रब को दीं। 41 मूसा ने रब का यह
हिस्सा इलीअज़र इमाम को उठाने वाली क़ुर्बानी के
तौर पर दे दिया, जिस तरह रब ने हुक्म दिया था।
42–47 बाक़ी जमाअत को भी लूटे हुए माल का आधा
हिस्सा मिल गया। मूसा ने पचास पचास क़ैदियों और
जानवरों में से एक एक निकाल कर उन लावियों को
दे दिया जो रब का मक़्दिस सँभालते थे। उस ने वैसा
ही किया जैसा रब ने हुक्म दिया था।

48 फिर वह अफ़्सर मूसा के पास आए जो लश्कर
के हज़ार हज़ार और सौ सौ आदमियों पर मुक़र्रर
थे। 49 उन्हों ने उस से कहा, "आप के ख़ादिमों ने
उन फ़ौजियों को गिन लिया है जिन पर वह मुक़र्रर
हैं, और हमें पता चल गया कि एक भी कम नहीं
हुआ। 50 इस लिए हम रब को सोने का तमाम ज़ेवर
क़ुर्बान करना चाहते हैं जो हमें फ़त्ह पाने पर मिला
था मसलन सोने के बाज़ूबन्द, कंगन, मुहर लगाने की
अंगूठियाँ, बालियाँ और हार। यह सब कुछ हम रब
को पेश करना चाहते हैं ताकि रब के सामने हमारा
कफ़्फ़ारा हो जाए।"

51 मूसा और इलीअज़र इमाम ने सोने की तमाम
चीज़ें उन से ले लीं। 52 जो चीज़ें उन्हों ने अफ़्सरान
के लूटे हुए माल में से रब को उठाने वाली क़ुर्बानी
के तौर पर पेश कीं उन का पूरा वज़न तक़रीबन
190 किलोग्राम था। 53 सिर्फ़ अफ़्सरान ने ऐसा किया।
बाक़ी फ़ौजियों ने अपना लूट का माल अपने लिए
रख लिया। 54 मूसा और इलीअज़र अफ़्सरान का यह
सोना मुलाक़ात के ख़ैमे में ले आए ताकि वह रब को
उस की क़ौम की याद दिलाता रहे।

दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर आबाद क़बीले

32 1 रूबिन और जद के क़बीलों के पास
बहुत से मवेशी थे। जब उन्हों ने देखा कि
याज़ेर और जिलिआद का इलाक़ा मवेशी पालने के
लिए अच्छा है 2 तो उन्हों ने मूसा, इलीअज़र इमाम
और जमाअत के राहनुमाओं के पास आ कर कहा,
3–4 "जिस इलाक़े को रब ने इस्राईल की जमाअत के
आगे आगे शिकस्त दी है वह मवेशी पालने के लिए
अच्छा है। अतारात, दीबोन, याज़ेर, निम्रा, हस्बोन,
इलीआली, सबाम, नबू और बऊन जो इस में शामिल
हैं हमारे काम आएँगे, क्यूँकि आप के ख़ादिमों के
पास मवेशी हैं। 5 अगर आप की नज़र-ए-करम हम
पर हो तो हमें यह इलाक़ा दिया जाए। यह हमारी
मिलकियत बन जाए और हमें दरया-ए-यर्दन को पार
करने पर मज्बूर न किया जाए।"

6 मूसा ने जद और रूबिन के अफ़राद से कहा,
"क्या तुम यहाँ पीछे रह कर अपने भाइयों को छोड़ना
चाहते हो जब वह जंग लड़ने के लिए आगे निकलेंगे?
7 उस वक़्त जब इस्राईली दरया-ए-यर्दन को पार
करके उस मुल्क में दाख़िल होने वाले हैं जो रब
ने उन्हें दिया है तो तुम क्यूँ उन की हौसलाशिकनी
कर रहे हो? 8 तुम्हारे बापदादा ने भी यही कुछ किया
जब मैं ने उन्हें क़ादिस-बर्नीअ से मुल्क के बारे में
मालूमात हासिल करने के लिए भेजा। 9 इस्काल की
वादी में पहुँच कर मुल्क की तफ़्तीश करने के बाद
उन्हों ने इस्राईलियों की हौसलाशिकनी की ताकि
वह उस मुल्क में दाख़िल न हों जो रब ने उन्हें दिया
था। 10 उस दिन रब ने ग़ुस्से में आ कर क़सम खाई,
11 'उन आदमियों में से जो मिस्र से निकल आए हैं
कोई उस मुल्क को नहीं देखेगा जिस का वादा मैं
ने क़सम खा कर इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से
किया था। क्यूँकि उन्हों ने पूरी वफ़ादारी से मेरी पैरवी
न की। सिर्फ़ वह जिन की उम्र उस वक़्त 20 साल से
कम है दाख़िल होंगे। 12 बुज़ुर्गों में से सिर्फ़ कालिब
बिन यफ़ुन्ना क़निज़्ज़ी और यशूअ बिन नून मुल्क में

दाख़िल होंगे, इस लिए कि उन्हों ने पूरी वफ़ादारी
से मेरी पैरवी की।' 13 उस वक़्त रब का ग़ज़ब उन
पर आन पड़ा, और उन्हें 40 साल तक रेगिस्तान में
मारे मारे फिरना पड़ा, जब तक कि वह तमाम नस्ल
ख़त्म न हो गई जिस ने उस के नज़्दीक ग़लत काम
किया था। 14 अब तुम गुनाहगारों की औलाद अपने
बापदादा की जगह खड़े हो कर रब का इस्राईल पर
ग़ुस्सा मज़ीद बढ़ा रहे हो। 15 अगर तुम उस की पैरवी
से हटोगे तो वह दुबारा इन लोगों को रेगिस्तान में रहने
देगा, और तुम इन की हलाकत का बाइस बनोगे।"

16 इस के बाद रूबिन और जद के अफ़राद दुबारा
मूसा के पास आए और कहा, "हम यहाँ फ़िलहाल
अपने मवेशी के लिए बाड़े और अपने बाल-बच्चों
के लिए शहर बनाना चाहते हैं। 17 इस के बाद हम
मुसल्लह हो कर इस्राईलियों के आगे आगे चलेंगे और
हर एक को उस की अपनी जगह तक पहुँचाएँगे।
इतने में हमारे बाल-बच्चे हमारे शहरों की फ़सीलों के
अन्दर मुल्क के मुख़ालिफ़ बाशिन्दों से महफ़ूज़ रहेंगे।
18 हम उस वक़्त तक अपने घरों को नहीं लौटेंगे
जब तक हर इस्राईली को उस की मौरूसी ज़मीन
न मिल जाए। 19 दूसरे, हम ख़ुद उन के साथ दरया-ए-
यर्दन के मग़रिब में मीरास में कुछ नहीं पाएँगे, क्यूँकि
हमें अपनी मौरूसी ज़मीन दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी
किनारे पर मिल चुकी है।"

20 यह सुन कर मूसा ने कहा, "अगर तुम ऐसा ही
करोगे तो ठीक है। फिर रब के सामने जंग के लिए
तय्यार हो जाओ 21 और सब हथियार बांध कर रब
के सामने दरया-ए-यर्दन को पार करो। उस वक़्त
तक न लौटो जब तक रब ने अपने तमाम दुश्मनों
को अपने आगे से निकाल न दिया हो। 22 फिर जब
मुल्क पर रब का क़ब्ज़ा हो गया होगा तो तुम लौट
सकोगे। तब तुम ने रब और अपने हमवतन भाइयों
के लिए अपने फ़राइज़ अदा कर दिए होंगे, और यह
इलाक़ा रब के सामने तुम्हारा मौरूसी हक़ होगा।
23 लेकिन अगर तुम ऐसा न करो तो फिर तुम रब ही
का गुनाह करोगे। यक़ीन जानो तुम्हें अपने गुनाह की
सज़ा मिलेगी। 24 अब अपने बाल-बच्चों के लिए शहर
और अपने मवेशियों के लिए बाड़े बना लो। लेकिन
अपने वादे को ज़रूर पूरा करना।"

25 जद और रूबिन के अफ़राद ने मूसा से कहा,
"हम आप के ख़ादिम हैं, हम अपने आक़ा के हुक्म
के मुताबिक़ ही करेंगे। 26 हमारे बाल-बच्चे और मवेशी
यहीं जिलिआद के शहरों में रहेंगे। 27 लेकिन आप के
ख़ादिम मुसल्लह हो कर दरया को पार करेंगे और रब
के सामने जंग करेंगे। हम सब कुछ वैसा ही करेंगे
जैसा हमारे आक़ा ने हमें हुक्म दिया है।"

28 तब मूसा ने इलीअज़र इमाम, यशूअ बिन नून
और क़बाइली कुंबों के सरपरस्तों को हिदायत दी,
29 "लाज़िम है कि जद और रूबिन के मर्द मुसल्लह
हो कर तुम्हारे साथ ही रब के सामने दरया-ए-यर्दन
को पार करें और मुल्क पर क़ब्ज़ा करें। अगर वह
ऐसा करें तो उन्हें मीरास में जिलिआद का इलाक़ा
दो। 30 लेकिन अगर वह ऐसा न करें तो फिर उन्हें
मुल्क-ए-कनआन ही में तुम्हारे साथ मौरूसी ज़मीन
मिले।"

31 जद और रूबिन के अफ़राद ने इसरार किया,
"आप के ख़ादिम सब कुछ करेंगे जो रब ने कहा
है। 32 हम मुसल्लह हो कर रब के सामने दरया-ए-यर्दन
को पार करेंगे और कनआन के मुल्क में दाख़िल
होंगे, अगरचे हमारी मौरूसी ज़मीन यर्दन के मशरिक़ी
किनारे पर होगी।"

33 तब मूसा ने जद, रूबिन और मनस्सी के आधे
क़बीले को यह इलाक़ा दिया। उस में वह पूरा मुल्क
शामिल था जिस पर पहले अमोरियों का बादशाह
सीहोन और बसन का बादशाह ओज हुकूमत करते
थे। इन शिकस्तख़ुर्दा ममालिक के दीहातों समेत
तमाम शहर उन के हवाले किए गए।

34 जद के क़बीले ने दीबोन, अतारात, अरोईर,
35 अतरात-शोफ़ान, याज़ेर, युगबहा, 36 बैत-निम्रा
और बैत-हारान के शहरों को दुबारा तामीर किया।
उन्हों ने उन की फ़सीलें बनाईं और अपने मवेशियों
के लिए बाड़े भी। 37 रूबिन के क़बीले ने हस्बोन,

इलीआली, क़िर्यताइम, 38 नबू, बाल-मऊन और
सिब्माह दुबारा तामीर किए। नबू और बाल-मऊन
के नाम बदल गए, क्यूँकि उन्हों ने उन शहरों को नए
नाम दिए जो उन्हों ने दुबारा तामीर किए।
39 मनस्सी के बेटे मकीर की औलाद ने जिलिआद
जा कर उस पर क़ब्ज़ा कर लिया और उस के तमाम
अमोरी बाशिन्दों को निकाल दिया। 40 चुनाँचे मूसा
ने मकीरियों को जिलिआद की सरज़मीन दे दी, और
वह वहाँ आबाद हुए। 41 मनस्सी के एक आदमी
बनाम याईर ने उस इलाक़े में कुछ बस्तियों पर क़ब्ज़ा
करके उन्हें हव्वोत-याईर यानी 'याईर की बस्तियाँ'
का नाम दिया। 42 इसी तरह उस क़बीले के एक और
आदमी बनाम नूबह ने जा कर क़नात और उस के
दीहातों पर क़ब्ज़ा कर लिया। उस ने शहर का नाम
नूबह रखा।

इस्राईल के सफ़र के मरहले

33 1 ज़ैल में उन जगहों के नाम हैं जहाँ जहाँ
इस्राईली क़बीले अपने दस्तों के मुताबिक़
मूसा और हारून की राहनुमाई में मिस्र से निकल कर
ख़ैमाज़न हुए थे। 2 रब के हुक्म पर मूसा ने हर जगह
का नाम क़लमबन्द किया जहाँ उन्हों ने अपने ख़ैमे
लगाए थे। उन जगहों के नाम यह हैं :
3 पहले महीने के पंद्रहवें दिन इस्राईली रामसीस
से रवाना हुए। यानी फ़सह के दिन के बाद के दिन
वह बड़े इख़तियार के साथ तमाम मिस्रियों के देखते
देखते चले गए। 4 मिस्री उस वक़्त अपने पहलौठों
को दफ़न कर रहे थे, क्यूँकि रब ने पहलौठों को मार
कर उन के देवताओं की अदालत की थी।
5 रामसीस से इस्राईली सुक्कात पहुँच गए जहाँ उन्हों
ने पहली मर्तबा अपने डेरे लगाए। 6 वहाँ से वह एताम
पहुँचे जो रेगिस्तान के किनारे पर वाक़े है। 7 एताम
से वह वापस मुड़ कर फ़ी-हख़ीरोत की तरफ़ बढ़े जो
बाल-सफ़ोन के मशरिक़ में है। वह मिज्दाल के क़रीब
ख़ैमाज़न हुए। 8 फिर वह फ़ी-हख़ीरोत से कूच करके
समुन्दर में से गुज़र गए। इस के बाद वह तीन दिन
एताम के रेगिस्तान में सफ़र करते करते मारा पहुँच
गए और वहाँ अपने ख़ैमे लगाए। 9 मारा से वह एलीम
चले गए जहाँ 12 चश्मे और खजूर के 70 दरख़्त थे।
वहाँ ठहरने के बाद 10 वह बहर-ए-क़ुल्ज़ुम के साहिल
पर ख़ैमाज़न हुए, 11 फिर दश्त-ए-सीन में पहुँच गए।
12 उन के अगले मरहले यह थे : दुफ़्क़ा,
13–37 अलूस, रफ़ीदीम जहाँ पीने का पानी दस्तयाब
न था, दश्त-ए-सीना, क़ब्रोत-हत्तावा, हसीरात, रित्मा,
रिम्मोन-फ़ारस, लिब्ना, रिस्सा, क़हीलाता, साफ़र
पहाड़, हरादा, मक़हीलोत, तहत, तारह, मितक़ा,
हश्मूना, मौसीरोत, बनी-याक़ान, होर-हज्जिदजाद,
युत्बाता, अब्रूना, अस्यून-जाबर, दश्त-ए-सीन में वाक़े
क़ादिस और होर पहाड़ जो अदोम की सरहद पर
वाक़े है।
38 वहाँ रब ने हारून इमाम को हुक्म दिया कि वह
होर पहाड़ पर चढ़ जाए। वहीं वह पाँचवें माह के
पहले दिन फ़ौत हुआ। इस्राईलियों को मिस्र से निकले
40 साल गुज़र चुके थे। 39 उस वक़्त हारून 123 साल
का था।
40 उन दिनों में अराद के कनआनी बादशाह ने सुना
कि इस्राईली मेरे मुल्क की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वह
कनआन के जुनूब में हुकूमत करता था।
41–47 होर पहाड़ से रवाना हो कर इस्राईली ज़ैल
की जगहों पर ठहरे : ज़ल्मूना, फ़ूनोन, ओबोत,
अय्ये-अबारीम जो मोआब के इलाक़े में था, दीबोन-
जद, अल्मून-दिब्लाताइम और नबू के क़रीब वाक़े
अबारीम का पहाड़ी इलाक़ा। 48 वहाँ से उन्हों ने
यर्दन की वादी में उतर कर मोआब के मैदानी इलाक़े
में अपने डेरे लगाए। अब वह दरया-ए-यर्दन के
मशरिक़ी किनारे पर यरीहू शहर के सामने थे। 49 उन
के ख़ैमे बैत-यसीमोत से ले कर अबील-शित्तीम तक
लगे थे।

तमाम कनआनी बाशिन्दों को निकालने का हुक्म

50 वहाँ रब ने मूसा से कहा, 51 "इस्राईलियों को
बताना कि जब तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके

मुल्क-ए-कनआन में दाख़िल होगे 52 तो लाज़िम है
कि तुम तमाम बाशिन्दों को निकाल दो। उन के
तराशे और ढाले हुए बुतों को तोड़ डालो और
उन की ऊँची जगहों के मन्दिरों को तबाह करो।
53 मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उस में आबाद हो जाओ,
क्यूँकि मैं ने यह मुल्क तुम्हें दे दिया है। यह मेरी
तरफ़ से तुम्हारी मौरूसी मिलकियत है। 54 मुल्क को
मुख़्तलिफ़ क़बीलों और ख़ानदानों में क़ुरआ डाल
कर तक़्सीम करना। हर ख़ानदान के अफ़राद की
तादाद का लिहाज़ रखना। बड़े ख़ानदान को निस्बतन
ज़्यादा ज़मीन देना और छोटे ख़ानदान को निस्बतन
कम ज़मीन। 55 लेकिन अगर तुम मुल्क के बाशिन्दों
को नहीं निकालोगे तो बचे हुए तुम्हारी आँखों में ख़ार
और तुम्हारे पहलूओं में काँटे बन कर तुम्हें उस मुल्क
में तंग करेंगे जिस में तुम आबाद होगे। 56 फिर मैं
तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो उन के साथ करना
चाहता हूँ।"

मुल्क-ए-कनआन की सरहद्दें

34 1 रब ने मूसा से कहा, 2 "इस्राईलियों को
बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल
होगे जो मैं तुम्हें मीरास में दूँगा तो उस की सरहद्दें यह
होंगी :

3 उस की जुनूबी सरहद दश्त-ए-सीन में अदोम
की सरहद के साथ साथ चलेगी। मशरिक़ में वह
बहीरा-ए-मुर्दार के जुनूबी साहिल से शुरू होगी, फिर
इन जगहों से हो कर मग़रिब की तरफ़ गुज़रेगी
: 4 दर्रा-ए-अक़्रब्बीम के जुनूब में से, दश्त-ए-सीन
में से, क़ादिस-बर्नीअ के जुनूब में से हसर-अद्दार
और अज़्मून में से। 5 वहाँ से वह मुड़ कर मिस्र
की सरहद पर वाक़े वादी-ए-मिस्र के साथ साथ
बहीरा-ए-रूम तक पहुँचेगी। 6 उस की मग़रिबी सरहद
बहीरा-ए-रूम का साहिल होगा। 7 उस की शिमाली
सरहद बहीरा-ए-रूम से ले कर इन जगहों से हो
कर मशरिक़ की तरफ़ गुज़रेगी : होर पहाड़, 8 लबो-
हमात, सिदाद, 9 ज़िफ़्रून और हसर-एनान। हसर-
एनान शिमाली सरहद का सब से मशरिक़ी मक़ाम
होगा। 10 उस की मशरिक़ी सरहद शिमाल में हसर-
एनान से शुरू होगी। फिर वह इन जगहों से हो कर
जुनूब की तरफ़ गुज़रेगी : सिफ़ाम, 11 रिब्ला जो ऐन के
मशरिक़ में है और किन्नरत यानी गलील की झील के
मशरिक़ में वाक़े पहाड़ी इलाक़ा। 12 इस के बाद वह
दरया-ए-यर्दन के किनारे किनारे गुज़रती हुई बहीरा-
ए-मुर्दार तक पहुँचेगी। यह तुम्हारे मुल्क की सरहद्दें
होंगी।"

13 मूसा ने इस्राईलियों से कहा, "यह वही मुल्क है
जिसे तुम्हें क़ुरआ डाल कर तक़्सीम करना है। रब
ने हुक्म दिया है कि उसे बाक़ी साढ़े नौ क़बीलों को
देना है। 14 क्यूँकि अढ़ाई क़बीलों के ख़ानदानों को
उन की मीरास मिल चुकी है यानी रूबिन और जद
के पूरे क़बीले और मनस्सी के आधे क़बीले को।
15 उन्हें यहाँ, दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में यरीहू के
सामने ज़मीन मिल चुकी है।"

मुल्क तक़्सीम करने के ज़िम्मादार आदमी

16 रब ने मूसा से कहा, 17 "इलीअज़र इमाम और
यशूअ बिन नून लोगों के लिए मुल्क तक़्सीम करें।
18 हर क़बीले के एक एक राहनुमा को भी चुनना
ताकि वह तक़्सीम करने में मदद करे। जिन को तुम्हें
चुनना है उन के नाम यह हैं :

19 यहूदाह के क़बीले का कालिब बिन यफ़ुन्ना,
20 शमाऊन के क़बीले का समूएल बिन अम्मीहूद,
21 बिनयमीन के क़बीले का इलीदाद बिन
किस्लोन,
22 दान के क़बीले का बुक़्क़ी बिन युगली,
23 मनस्सी के क़बीले का हन्नीएल बिन अफ़ूद,
24 इफ़्राईम के क़बीले का क़मूएल बिन सिफ़्तान,
25 ज़बूलून के क़बीले का इलीसफ़न बिन फ़र्नाक,
26 इश्कार के क़बीले का फ़ल्तीएल बिन अज़्ज़ान,
27 आशर के क़बीले का अख़ीहूद बिन शलूमी,
28 नफ़्ताली के क़बीले का फ़िदाहेल बिन
अम्मीहूद।"

29 रब ने इन ही आदमियों को मुल्क को इस्राईलियों
में तक़्सीम करने की ज़िम्मादारी दी।

लावियों के लिए शहर

35 1 इस्राईली अब तक मोआब के मैदानी
इलाक़े में दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी
किनारे पर यरीहू के सामने थे। वहाँ रब ने मूसा से
कहा,
2 "इस्राईलियों को बता दे कि वह लावियों को
अपनी मिली हुई ज़मीनों में से रहने के लिए शहर
दें। उन्हें शहरों के इर्दगिर्द मवेशी चराने की ज़मीन भी
मिले। 3 फिर लावियों के पास रहने के लिए शहर और
अपने जानवर चराने के लिए ज़मीन होगी। 4 चराने के
लिए ज़मीन शहर के इर्दगिर्द होगी, और चारों तरफ़
का फ़ासिला फ़सीलों से 1,500 फ़ुट हो। 5 चराने की
यह ज़मीन मुरब्बा शक्ल की होगी जिस के हर पहलू
का फ़ासिला 3,000 फ़ुट हो। शहर इस मुरब्बा शक्ल
के बीच में हो। यह रक़बा शहर के बाशिन्दों के लिए
हो ताकि वह अपने मवेशी चरा सकें।

ग़ैरइरादी ख़ूँरेज़ी के लिए पनाह के शहर

6–7 "लावियों को कुल 48 शहर देना। इन में से छः
पनाह के शहर मुक़र्रर करना। उन में ऐसे लोग पनाह
ले सकेंगे जिन के हाथों ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक
हुआ हो। 8 हर क़बीला लावियों को अपने इलाक़े के
रक़बे के मुताबिक़ शहर दे। जिस क़बीले का इलाक़ा
बड़ा है उसे लावियों को ज़्यादा शहर देने हैं जबकि
जिस क़बीले का इलाक़ा छोटा है वह लावियों को
कम शहर दे।"
9 फिर रब ने मूसा से कहा, 10 "इस्राईलियों को
बताना कि दरया-ए-यर्दन को पार करने के बाद
11 कुछ पनाह के शहर मुक़र्रर करना। उन में वह
शख़्स पनाह ले सकेगा जिस के हाथों ग़ैरइरादी तौर
पर कोई हलाक हुआ हो। 12 वहाँ वह इन्तिक़ाम लेने
वाले से पनाह ले सकेगा और जमाअत की अदालत
के सामने खड़े होने से पहले मारा नहीं जा सकेगा।
13 इस के लिए छः शहर चुन लो। 14 तीन दरया-ए-
यर्दन के मशरिक़ में और तीन मुल्क-ए-कनआन में
हों। 15 यह छः शहर हर किसी को पनाह देंगे, चाहे
वह इस्राईली, परदेसी या उन के दरमियान रहने वाला
ग़ैरशहरी हो। जिस से भी ग़ैरइरादी तौर पर कोई
हलाक हुआ हो वह वहाँ पनाह ले सकता है।
16–18 अगर किसी ने किसी को जान-बूझ कर लोहे,
पत्थर या लकड़ी की किसी चीज़ से मार डाला हो वह
क़ातिल है और उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। 19 मक़्तूल
का सब से क़रीबी रिश्तेदार उसे तलाश करके मार
दे। 20–21 क्यूँकि जो नफ़रत या दुश्मनी के बाइस जान-
बूझ कर किसी को यूँ धक्का दे, उस पर कोई चीज़
फैंक दे या उसे मुक्का मारे कि वह मर जाए वह क़ातिल
है और उसे सज़ा-ए-मौत देनी है।
22 लेकिन वह क़ातिल नहीं है जिस से दुश्मनी के
बाइस नहीं बल्कि इत्तिफ़ाक़ से और ग़ैरइरादी तौर
पर कोई हलाक हुआ हो, चाहे उस ने उसे धक्का
दिया, कोई चीज़ उस पर फैंक दी 23 या कोई पत्थर
उस पर गिरने दिया। 24 अगर ऐसा हुआ तो लाज़िम
है कि जमाअत इन हिदायात के मुताबिक़ उस के
और इन्तिक़ाम लेने वाले के दरमियान फ़ैसला करे।
25 अगर मुल्ज़िम बेक़ुसूर है तो जमाअत उस की
हिफ़ाज़त करके उसे पनाह के उस शहर में वापस ले
जाए जिस में उस ने पनाह ली है। वहाँ वह मुक़द्दस
तेल से मसह किए गए इमाम-ए-आज़म की मौत तक
रहे। 26 लेकिन अगर यह शख़्स इस से पहले पनाह के
शहर से निकले तो वह महफ़ूज़ नहीं होगा। 27 अगर
उस का इन्तिक़ाम लेने वाले से सामना हो जाए तो
इन्तिक़ाम लेने वाले को उसे मार डालने की इजाज़त
होगी। अगर वह ऐसा करे तो बेक़ुसूर रहेगा। 28 पनाह
लेने वाला इमाम-ए-आज़म की वफ़ात तक पनाह के
शहर में रहे। इस के बाद ही वह अपने घर वापस जा
सकता है। 29 यह उसूल दाइमी हैं। जहाँ भी तुम रहते
हो तुम्हें हमेशा इन पर अमल करना है।
30 जिस पर क़त्ल का इल्ज़ाम लगाया गया हो उसे
सिर्फ़ इस सूरत में सज़ा-ए-मौत दी जा सकती है कि

कम अज़ कम दो गवाह हों। एक गवाह काफ़ी नहीं है।

31 क़ातिल को ज़रूर सज़ा-ए-मौत देना। ख़्वाह वह इस से बचने के लिए कोई भी मुआवज़ा दे उसे आज़ाद न छोड़ना बल्कि सज़ा-ए-मौत देना। 32 उस शख़्स से भी पैसे क़बूल न करना जिस से ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो और जो इस सबब से पनाह के शहर में रह रहा है। उसे इजाज़त नहीं कि वह पैसे दे कर पनाह का शहर छोड़े और अपने घर वापस चला जाए। लाज़िम है कि वह इस के लिए इमाम-ए-आज़म की वफ़ात का इन्तिज़ार करे।

33 जिस मुल्क में तुम रहते हो उस की मुक़द्दस हालत को नापाक न करना। जब किसी को उस में क़त्ल किया जाए तो वह नापाक हो जाता है। जब इस तरह ख़ून बहता है तो मुल्क की मुक़द्दस हालत सिर्फ़ उस शख़्स के ख़ून बहने से बहाल हो जाती है जिस ने यह ख़ून बहाया है। यानी मुल्क का सिर्फ़ क़ातिल की मौत से ही कफ़्फ़ारा दिया जा सकता है। 34 उस मुल्क को नापाक न करना जिस में तुम आबाद हो और जिस में मैं सुकूनत करता हूँ। क्यूँकि मैं रब हूँ जो इस्राईलियों के दरमियान सुकूनत करता हूँ।"

एक क़बीले की मौरूसी ज़मीन शादी से दूसरे क़बीले में मुन्तक़िल नहीं हो सकती

36 1 एक दिन जिलिआद बिन मकीर बिन मनस्सी बिन यूसुफ़ के कुंबे से निकले हुए आबाई घरानों के सरपरस्त मूसा और उन सरदारों के पास आए जो दीगर आबाई घरानों के सरपरस्त थे। 2 उन्हों ने कहा, "रब ने आप को हुक्म दिया था कि आप क़ुरआ डाल कर मुल्क को इस्राईलियों में तक़्सीम करें। उस वक़्त उस ने यह भी कहा था कि हमारे भाई सिलाफ़िहाद की बेटियों को उस की मौरूसी ज़मीन मिलनी है। 3 अगर वह इस्राईल के किसी और क़बीले के मर्दों से शादी करें तो फिर यह ज़मीन जो हमारे क़बीले का मौरूसी हिस्सा है उस क़बीले का मौरूसी हिस्सा बनेगी और हम उस से महरूम हो जाएंगे। फिर हमारा क़बाइली इलाक़ा छोटा हो जाएगा। 4 और अगर हम यह ज़मीन वापस भी ख़रीदें तो भी वह अगले बहाली के साल में दूसरे क़बीले को वापस चली जाएगी जिस में इन औरतों ने शादी की है। इस तरह वह हमेशा के लिए हमारे हाथ से निकल जाएगी।"

5 मूसा ने रब के हुक्म पर इस्राईलियों को बताया, "जिलिआद के मर्द हक़-ब-जानिब हैं। 6 इस लिए रब की हिदायत यह है कि सिलाफ़िहाद की बेटियों को हर आदमी से शादी करने की इजाज़त है, लेकिन सिर्फ़ इस सूरत में कि वह उन के अपने क़बीले का हो। 7 इस तरह एक क़बीले की मौरूसी ज़मीन किसी दूसरे क़बीले में मुन्तक़िल नहीं होगी। लाज़िम है कि हर क़बीले का पूरा इलाक़ा उसी के पास रहे।

8 जो भी बेटी मीरास में ज़मीन पाती है उस के लिए लाज़िम है कि वह अपने ही क़बीले के किसी मर्द से शादी करे ताकि उस की ज़मीन क़बीले के पास ही रहे। 9 एक क़बीले की मौरूसी ज़मीन किसी दूसरे क़बीले को मुन्तक़िल करने की इजाज़त नहीं है। लाज़िम है कि हर क़बीले का पूरा मौरूसी इलाक़ा उसी के पास रहे।"

10–11 सिलाफ़िहाद की बेटियों महलाह, तिर्ज़ा, हुज्लाह, मिल्काह और नूआह ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को बताया था। उन्हों ने अपने चचाज़ाद भाइयों से शादी की। 12 चूँकि वह भी मनस्सी के क़बीले के थे इस लिए यह मौरूसी ज़मीन सिलाफ़िहाद के क़बीले के पास रही।

13 रब ने यह अह्काम और हिदायात इस्राईलियों को मूसा की मारिफ़त दीं जब वह मोआब के मैदानी इलाक़े में दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर यरीहू के सामने ख़ैमाज़न थे।

इस्तिस्ना

मूसा इस्राईलियों से मुख़ातिब होता है

1 [1] इस किताब में वह बातें दर्ज हैं जो मूसा ने
तमाम इस्राईलियों से कहीं जब वह दरया-ए-
यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर बयाबान में थे। वह
यर्दन की वादी में सूफ़ के क़रीब थे। एक तरफ़ फ़ारान
शहर था और दूसरी तरफ़ तोफ़ल, लाबन, हसीरात
और दीज़हब के शहर थे। [2] अगर अदोम के पहाड़ी
इलाक़े से हो कर जाएँ तो होरिब यानी सीना पहाड़
से क़ादिस-बर्नीअ तक का सफ़र 11 दिन में तै किया
जा सकता है।

[3] इस्राईलियों को मिस्र से निकले 40 साल हो गए
थे। इस साल के ग्यारवें माह के पहले दिन मूसा ने
उन्हें सब कुछ बताया जो रब ने उसे उन्हें बताने
को कहा था। [4] उस वक़्त वह अमोरियों के बादशाह
सीहोन को शिकस्त दे चुका था जिस का दार-उल-
हकूमत हस्बोन था। बसन के बादशाह ओज पर भी
फ़त्ह हासिल हो चुकी थी जिस की हुकूमत के मर्कज़
अस्तारात और इद्रई थे।

[5] वहाँ, दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर जो
मोआब के इलाक़े में था मूसा अल्लाह की शरीअत
की तश्रीह करने लगा। उस ने कहा,

[6] जब तुम होरिब यानी सीना पहाड़ के पास थे तो
रब हमारे ख़ुदा ने हम से कहा, "तुम काफ़ी देर से
यहाँ ठहरे हुए हो। [7] अब इस जगह को छोड़ कर
आगे मुल्क-ए-कनआन की तरफ़ बढ़ो। अमोरियों
के पहाड़ी इलाक़े और उन के पड़ोस की क़ौमों के
पास जाओ जो यर्दन के मैदानी इलाक़े में आबाद हैं।
पहाड़ी इलाक़े में, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े
में, जुनूब के दश्त-ए-नजब में, साहिली इलाक़े में,
मुल्क-ए-कनआन में और लुबनान में दरया-ए-फ़ुरात
तक चले जाओ। [8] मैं ने तुम्हें यह मुल्क दे दिया है।
अब जा कर उस पर क़ब्ज़ा कर लो। क्यूँकि रब ने
क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़
और याक़ूब से वादा किया था कि मैं यह मुल्क तुम्हें
और तुम्हारी औलाद को दूँगा।"

राहनुमा मुक़र्रर किए गए

[9] उस वक़्त मैं ने तुम से कहा, "मैं अकेला तुम्हारी
राहनुमाई करने की ज़िम्मादारी नहीं उठा सकता।
[10] रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हारी तादाद इतनी बढ़ा दी
है कि आज तुम आसमान के सितारों की मानिन्द
बेशुमार हो। [11] और रब तुम्हारे बापदादा का ख़ुदा
करे कि तुम्हारी तादाद मज़ीद हज़ार गुना बढ़ जाए।
वह तुम्हें वह बरकत दे जिस का वादा उस ने किया
है। [12] लेकिन मैं अकेला ही तुम्हारा बोझ उठाने
और झगड़ों को निपटाने की ज़िम्मादारी नहीं उठा
सकता। [13] इस लिए अपने हर क़बीले में से कुछ ऐसे
दानिशमन्द और समझदार आदमी चुन लो जिन की
लियाक़त को लोग मानते हैं। फिर मैं उन्हें तुम पर
मुक़र्रर करूँगा।"

[14] यह बात तुम्हें पसन्द आई। [15] तुम ने अपने में से
ऐसे राहनुमा चुन लिए जो दानिशमन्द थे और जिन की
लियाक़त को लोग मानते थे। फिर मैं ने उन्हें हज़ार
हज़ार, सौ सौ और पचास पचास मर्दों पर मुक़र्रर
किया। यूँ वह क़बीलों के निगहबान बन गए। [16] उस
वक़्त मैं ने उन क़ाज़ियों से कहा, "अदालत करते
वक़्त हर एक की बात ग़ौर से सुन कर ग़ैरजानिबदार
फ़ैसले करना, चाहे दो इस्राईली फ़रीक़ एक दूसरे
से झगड़ा कर रहे हों या मुआमला किसी इस्राईली
और परदेसी के दरमियान हो। [17] अदालत करते वक़्त
जानिबदारी न करना। छोटे और बड़े की बात सुन
कर दोनों के साथ एक जैसा सुलूक करना। किसी से
मत डरना, क्यूँकि अल्लाह ही ने तुम्हें अदालत करने

की ज़िम्मादारी दी है। अगर किसी मुआमले में फ़ैसला
करना तुम्हारे लिए मुश्किल हो तो उसे मुझे पेश करो।
फिर मैं ही उस का फ़ैसला करूँगा।" 18 उस वक़्त मैं
ने तुम्हें सब कुछ बताया जो तुम्हें करना था।

मुल्क-ए-कनआन में जासूस

19 हम ने वैसा ही किया जैसा रब ने हमें कहा था।
हम होरिब से रवाना हो कर अमोरियों के पहाड़ी
इलाक़े की तरफ़ बढ़े। सफ़र करते करते हम उस
वसी और हौलनाक रेगिस्तान में से गुज़र गए जिसे
तुम ने देख लिया है। आख़िरकार हम क़ादिस-बर्नीअ
पहुँच गए। 20 वहाँ मैं ने तुम से कहा, "तुम अमोरियों
के पहाड़ी इलाक़े तक पहुँच गए हो जो रब हमारा
ख़ुदा हमें देने वाला है। 21 देख, रब तेरे ख़ुदा ने तुझे
यह मुल्क दे दिया है। अब जा कर उस पर क़ब्ज़ा
कर ले जिस तरह रब तेरे बापदादा के ख़ुदा ने तुझे
बताया है। मत डरना और बेदिल न हो जाना!"

22 लेकिन तुम सब मेरे पास आए और कहा, "क्यूँ
न हम जाने से पहले कुछ आदमी भेजें जो मुल्क के
हालात दरयाफ़्त करें और वापस आ कर हमें उस
रास्ते के बारे में बताएँ जिस पर हमें जाना है और उन
शहरों के बारे में इत्तिला दें जिन के पास हम पहुँचेंगे।"
23 यह बात मुझे पसन्द आई। मैं ने इस काम के लिए
हर क़बीले के एक आदमी को चुन कर भेज दिया।
24 जब यह बारह आदमी पहाड़ी इलाक़े में जा कर
वादी-ए-इस्काल में पहुँचे तो उस की तफ़तीश की।
25 फिर वह मुल्क का कुछ फल ले कर लौट आए
और हमें मुल्क के बारे में इत्तिला दे कर कहा, "जो
मुल्क रब हमारा ख़ुदा हमें देने वाला है वह अच्छा
है।"

26 लेकिन तुम जाना नहीं चाहते थे बल्कि सरकशी
करके रब अपने ख़ुदा का हुक्म न माना। 27 तुम
ने अपने ख़ैमों में बुड़बुड़ाते हुए कहा, "रब हम से
नफ़रत रखता है। वह हमें मिस्र से निकाल लाया है
ताकि हमें अमोरियों के हाथों हलाक करवाए। 28 हम
कहाँ जाएँ? हमारे भाइयों ने हमें बेदिल कर दिया
है। वह कहते हैं, 'वहाँ के लोग हम से ताक़तवर
और दराज़क़द हैं। उन के बड़े बड़े शहरों की फ़सीलें
आसमान से बातें करती हैं। वहाँ हम ने अनाक़ की
औलाद भी देखी जो देओक़ामत हैं'।"

29 मैं ने कहा, "न घबराओ और न उन से ख़ौफ़
खाओ। 30 रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे आगे आगे चलता
हुआ तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम ख़ुद देख चुके हो कि
वह किस तरह मिस्र 31 और रेगिस्तान में तुम्हारे लिए
लड़ा। यहाँ भी वह ऐसा ही करेगा। तू ख़ुद गवाह
है कि बयाबान में पूरे सफ़र के दौरान रब तुझे यूँ
उठाए फिरा जिस तरह बाप अपने बेटे को उठाए
फिरता है। इस तरह चलते चलते तुम यहाँ तक पहुँच
गए।" 32 इस के बावुजूद तुम ने रब अपने ख़ुदा पर
भरोसा न रखा। 33 तुम ने यह बात नज़रअन्दाज़ की
कि वह सफ़र के दौरान रात के वक़्त आग और दिन
के वक़्त बादल की सूरत में तुम्हारे आगे आगे चलता
रहा ताकि तुम्हारे लिए ख़ैमे लगाने की जगहें मालूम
करे और तुम्हें रास्ता दिखाए।

34 जब रब ने तुम्हारी यह बातें सुनीं तो उसे ग़ुस्सा
आया और उस ने क़सम खा कर कहा, 35 "इस शरीर
नस्ल का एक मर्द भी उस अच्छे मुल्क को नहीं
देखेगा अगरचे मैं ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा
से वादा किया था कि मैं उसे उन्हें दूँगा। 36 सिर्फ़
कालिब बिन यफ़ुन्ना उसे देखेगा। मैं उसे और उस
की औलाद को वह मुल्क दूँगा जिस में उस ने सफ़र
किया है, क्यूँकि उस ने पूरे तौर पर रब की पैरवी
की।"

37 तुम्हारी वजह से रब मुझ से भी नाराज़ हुआ और
कहा, "तू भी उस में दाख़िल नहीं होगा। 38 लेकिन
तेरा मददगार यशूअ बिन नून दाख़िल होगा। उस की
हौसलाअफ़ज़ाई कर, क्यूँकि वह मुल्क पर क़ब्ज़ा
करने में इस्राईल की राहनुमाई करेगा।" 39 तुम से
रब ने कहा, "तुम्हारे बच्चे जो अभी अच्छे और बुरे
में इम्तियाज़ नहीं कर सकते, वही मुल्क में दाख़िल
होंगे, वही बच्चे जिन के बारे में तुम ने कहा कि दुश्मन
उन्हें मुल्क-ए-कनआन में छीन लेंगे। उन्हें मैं मुल्क

दूँगा, और वह उस पर क़ब्ज़ा करेंगे। 40 लेकिन तुम
ख़ुद आगे न बढ़ो। पीछे मुड़ कर दुबारा रेगिस्तान में
बहर-ए-क़ुल्ज़ुम की तरफ़ सफ़र करो।"
41 तब तुम ने कहा, "हम ने रब का गुनाह किया है।
अब हम मुल्क में जा कर लड़ेंगे, जिस तरह रब हमारे
ख़ुदा ने हमें हुक्म दिया है।" चुनाँचे यह सोचते हुए
कि उस पहाड़ी इलाक़े पर हम्ला करना आसान होगा,
हर एक मुसल्लह हुआ। 42 लेकिन रब ने मुझ से कहा,
"उन्हें बताना कि वहाँ जंग करने के लिए न जाओ,
क्यूँकि मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँगा। तुम अपने दुश्मनों
के हाथों शिकस्त खाओगे।"
43 मैं ने तुम्हें यह बताया, लेकिन तुम ने मेरी न सुनी।
तुम ने सरकशी करके रब का हुक्म न माना बल्कि
मग़रूर हो कर पहाड़ी इलाक़े में दाख़िल हुए। 44 वहाँ
के अमोरी बाशिन्दे तुम्हारा सामना करने निकले। वह
शहद की मक्खियों के ग़ोल की तरह तुम पर टूट पड़े
और तुम्हारा ताक़्क़ुब करके तुम्हें सईर से हुर्मा तक
मारते गए।
45 तब तुम वापस आ कर रब के सामने ज़ार-ओ-
क़तार रोने लगे। लेकिन उस ने तवज्जुह न दी बल्कि
तुम्हें नज़रअन्दाज़ किया। 46 इस के बाद तुम बहुत
दिनों तक क़ादिस-बर्नीअ में रहे।

रेगिस्तान में दुबारा सफ़र

2 1 फिर जिस तरह रब ने मुझे हुक्म दिया था हम
पीछे मुड़ कर रेगिस्तान में बहर-ए-क़ुल्ज़ुम की
तरफ़ सफ़र करने लगे। काफ़ी देर तक हम सईर यानी
अदोम के पहाड़ी इलाक़े के किनारे किनारे फिरते
रहे।
2 एक दिन रब ने मुझ से कहा, 3 "तुम बहुत देर
से इस पहाड़ी इलाक़े के किनारे किनारे फिर रहे हो।
अब शिमाल की तरफ़ सफ़र करो। 4 क़ौम को बताना,
अगले दिनों में तुम सईर के मुल्क में से गुज़रोगे जहाँ
तुम्हारे भाई एसौ की औलाद आबाद है। वह तुम से
डरेंगे। तो भी बड़ी एहतियात से गुज़रना। 5 उन के
साथ जंग न छेड़ना, क्यूँकि मैं तुम्हें उन के मुल्क
का एक मुरब्बा फ़ुट भी नहीं दूँगा। मैं ने सईर का
पहाड़ी इलाक़ा एसौ और उस की औलाद को दिया
है। 6 लाज़िम है कि तुम खाने और पीने की तमाम
ज़रूरियात पैसे दे कर ख़रीदो।"
7 जो भी काम तू ने किया है रब ने उस पर बरकत
दी है। इस वसी रेगिस्तान में पूरे सफ़र के दौरान उस
ने तेरी निगहबानी की। इन 40 सालों के दौरान रब
तेरा ख़ुदा तेरे साथ था, और तेरी तमाम ज़रूरियात
पूरी होती रहीं।
8 चुनाँचे हम सईर को छोड़ कर जहाँ हमारे भाई
एसौ की औलाद आबाद थी दूसरे रास्ते से आगे
निकले। हम ने वह रास्ता छोड़ दिया जो ऐलात
और अस्यून-जाबर के शहरों से बहीरा-ए-मुर्दार तक
पहुँचाता है और मोआब के बयाबान की तरफ़ बढ़ने
लगे। 9 वहाँ रब ने मुझ से कहा, "मोआब के बाशिन्दों
की मुख़ालफ़त न करना और न उन के साथ जंग
छेड़ना, क्यूँकि मैं उन के मुल्क का कोई भी हिस्सा
तुझे नहीं दूँगा। मैं ने आर शहर को लूत की औलाद
को दिया है।"
10 पहले ऐमी वहाँ रहते थे जो अनाक़ की औलाद
की तरह ताक़तवर, दराज़क़द और तादाद में ज़्यादा
थे। 11 अनाक़ की औलाद की तरह वह रफ़ाइयों में
शुमार किए जाते थे, लेकिन मोआबी उन्हें ऐमी कहते
थे।
12 इसी तरह क़दीम ज़माने में होरी सईर में आबाद
थे, लेकिन एसौ की औलाद ने उन्हें वहाँ से निकाल
दिया था। जिस तरह इस्राईलियों ने बाद में उस मुल्क
में किया जो रब ने उन्हें दिया था उसी तरह एसौ की
औलाद बढ़ते बढ़ते होरियों को तबाह करके उन की
जगह आबाद हुए थे।
13 रब ने कहा, "अब जा कर वादी-ए-ज़िरद को
उबूर करो।" हम ने ऐसा ही किया। 14 हमें क़ादिस-
बर्नीअ से रवाना हुए 38 साल हो गए थे। अब वह
तमाम आदमी मर चुके थे जो उस वक़्त जंग करने
के क़ाबिल थे। वैसा ही हुआ था जैसा रब ने क़सम
खा कर कहा था। 15 रब की मुख़ालफ़त के बाइस

आख़िरकार ख़ैमागाह में उस नस्ल का एक मर्द भी
न रहा। 16 जब वह सब मर गए थे 17 तब रब ने मुझ
से कहा, 18 "आज तुम्हें आर शहर से हो कर मोआब
के इलाक़े में से गुज़रना है। 19 फिर तुम अम्मोनियों
के इलाक़े तक पहुँचोगे। उन की भी मुख़ालफ़त न
करना, और न उन के साथ जंग छेड़ना, क्यूँकि मैं
उन के मुल्क का कोई भी हिस्सा तुम्हें नहीं दूँगा। मैं
ने यह मुल्क लूत की औलाद को दिया है।"

20 हक़ीक़त में अम्मोनियों का मुल्क भी रफ़ाइयों
का मुल्क समझा जाता था जो क़दीम ज़माने में
वहाँ आबाद थे। अम्मोनी उन्हें ज़मज़ुमी कहते थे,
21 और वह देओक़ामत थे, ताक़तवर और तादाद में
ज़्यादा। वह अनाक़ की औलाद जैसे दराज़क़द थे।
जब अम्मोनी मुल्क में आए तो रब ने रफ़ाइयों को उन
के आगे आगे तबाह कर दिया। चुनाँचे अम्मोनी बढ़ते
बढ़ते उन्हें निकालते गए और उन की जगह आबाद
हुए, 22 बिलकुल उसी तरह जिस तरह रब ने एसौ की
औलाद के आगे आगे होरियों को तबाह कर दिया
था जब वह सईर के मुल्क में आए थे। वहाँ भी वह
बढ़ते बढ़ते होरियों को निकालते गए और उन की
जगह आबाद हुए। 23 इसी तरह एक और क़दीम क़ौम
बनाम अव्वी को भी उस के मुल्क से निकाला गया।
अव्वी ग़ज़्ज़ा तक आबाद थे, लेकिन जब कफ़्तूरी
कफ़्तूर यानी क्रेते से आए तो उन्हों ने उन्हें तबाह
कर दिया और उन की जगह आबाद हो गए।

सीहोन बादशाह से जंग

24 रब ने मूसा से कहा, "अब जा कर वादी-ए-
अर्नोन को उबूर करो। यूँ समझो कि मैं हस्बोन के
अमोरी बादशाह सीहोन को उस के मुल्क समेत
तुम्हारे हवाले कर चुका हूँ। उस पर क़ब्ज़ा करना
शुरू करो और उस के साथ जंग करने का मौक़ा
ढूँडो। 25 इसी दिन से मैं तमाम क़ौमों में तुम्हारे बारे
में दहशत और ख़ौफ़ पैदा करूँगा। वह तुम्हारी ख़बर
सुन कर ख़ौफ़ के मारे थरथराएँगी और काँपेंगी।"

26 मैं ने दश्त-ए-क़दीमात से हस्बोन के बादशाह
सीहोन के पास क़ासिद भेजे। मेरा पैग़ाम नफ़रत और
मुख़ालफ़त से ख़ाली था। वह यह था, 27 "हमें अपने
मुल्क में से गुज़रने दें। हम शाहराह पर ही रहेंगे और
उस से न बाईं, न दाईं तरफ़ हटेंगे। 28 हम खाने और
पीने की तमाम ज़रूरियात के लिए मुनासिब पैसे देंगे।
हमें पैदल अपने मुल्क में से गुज़रने दें, 29 जिस तरह
सईर के बाशिन्दों एसौ की औलाद और आर के रहने
वाले मोआबियों ने हमें गुज़रने दिया। क्यूँकि हमारी
मन्ज़िल दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में है, वह मुल्क जो
रब हमारा ख़ुदा हमें देने वाला है।"

30 लेकिन हस्बोन के बादशाह सीहोन ने हमें गुज़रने
न दिया, क्यूँकि रब तुम्हारे ख़ुदा ने उसे बेलचक और
हमारी बात से इन्कार करने पर आमादा कर दिया
था ताकि सीहोन हमारे क़ाबू में आ जाए। और बाद
में ऐसा ही हुआ। 31 रब ने मुझ से कहा, "यूँ समझ ले
कि मैं सीहोन और उस के मुल्क को तेरे हवाले करने
लगा हूँ। अब निकल कर उस पर क़ब्ज़ा करना शुरू
करो।"

32 जब सीहोन अपनी सारी फ़ौज ले कर हमारा
मुक़ाबला करने के लिए यहज़ आया 33 तो रब हमारे
ख़ुदा ने हमें पूरी फ़त्ह बख़्शी। हम ने सीहोन, उस के
बेटों और पूरी क़ौम को शिकस्त दी। 34 उस वक़्त
हम ने उस के तमाम शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया और
उन के तमाम मर्दों, औरतों और बच्चों को मार डाला।
कोई भी न बचा। 35 हम ने सिर्फ़ मवेशी और शहरों
का लूटा हुआ माल अपने लिए बचाए रखा।

36 वादी-ए-अर्नोन के किनारे पर वाक़े अरोईर से
ले कर जिलिआद तक हर शहर को शिकस्त माननी
पड़ी। इस में वह शहर भी शामिल था जो वादी-ए-
अर्नोन में था। रब हमारे ख़ुदा ने उन सब को हमारे
हवाले कर दिया। 37 लेकिन तुम ने अम्मोनियों का
मुल्क छोड़ दिया और न दरया-ए-यब्बोक़ के इर्दगिर्द
के इलाक़े, न उस के पहाड़ी इलाक़े के शहरों को
छेड़ा, क्यूँकि रब हमारे ख़ुदा ने ऐसा करने से तुम्हें
मना किया था।

बसन के बादशाह ओज की शिकस्त

3 1 इस के बाद हम शिमाल में बसन की तरफ़
बढ़ गए। बसन का बादशाह ओज अपनी तमाम
फ़ौज के साथ निकल कर हमारा मुक़ाबला करने के
लिए इद्रई आया। 2 रब ने मुझ से कहा, “उस से मत
डर। मैं उसे, उस की पूरी फ़ौज और उस का मुल्क
तेरे हवाले कर चुका हूँ। उस के साथ वह कुछ कर
जो तू ने अमोरी बादशाह सीहोन के साथ किया जो
हस्बोन में हुकूमत करता था।”
3 ऐसा ही हुआ। रब हमारे ख़ुदा की मदद से हम
ने बसन के बादशाह ओज और उस की तमाम क़ौम
को शिकस्त दी। हम ने सब को हलाक कर दिया।
कोई भी न बचा। 4 उसी वक़्त हम ने उस के तमाम
शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया। हम ने कुल 60 शहरों पर
यानी अर्जूब के सारे इलाक़े पर क़ब्ज़ा किया जिस पर
ओज की हुकूमत थी। 5 इन तमाम शहरों की हिफ़ाज़त
ऊँची ऊँची फ़सीलों और कुंडे वाले दरवाज़ों से की
गई थी। दीहात में बहुत सी ऐसी आबादियाँ भी मिल
गईं जिन की फ़सीलें नहीं थीं। 6 हम ने उन के साथ
वह कुछ किया जो हम ने हस्बोन के बादशाह सीहोन
के इलाक़े के साथ किया था। हम ने सब कुछ रब के
हवाले करके हर शहर को और तमाम मर्दों, औरतों
और बच्चों को हलाक कर डाला। 7 हम ने सिर्फ़ तमाम
मवेशी और शहरों का लूटा हुआ माल अपने लिए
बचाए रखा।
8 यूँ हम ने उस वक़्त अमोरियों के इन दो बादशाहों
से दरया-ए-यर्दन का मशरिक़ी इलाक़ा वादी-ए-अर्नोन
से ले कर हर्मून पहाड़ तक छीन लिया। 9 (सैदा के
बाशिन्दे हर्मून को सिर्यून कहते हैं जबकि अमोरियों
ने उस का नाम सनीर रखा)। 10 हम ने ओज बादशाह
के पूरे इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस में मैदान-ए-
मुर्तफ़ा के तमाम शहर शामिल थे, नीज़ सल्का और
इद्रई तक जिलिआद और बसन के पूरे इलाक़े।
11 बादशाह ओज देओक़ामत क़बीले रफ़ाई का
आख़िरी मर्द था। उस का लोहे का ताबूत 13 से
ज़ाइद फ़ुट लम्बा और छः फ़ुट चौड़ा था और आज
तक अम्मोनियों के शहर रब्बा में देखा जा सकता है।

यर्दन के मशरिक़ में मुल्क की तक़्सीम

12 जब हम ने दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी इलाक़े पर
क़ब्ज़ा किया तो मैं ने रूबिन और जद के क़बीलों
को उस का जुनूबी हिस्सा शहरों समेत दिया। इस
इलाक़े की जुनूबी सरहद दरया-ए-अर्नोन पर वाक़े
शहर अरोईर है जबकि शिमाल में इस में जिलिआद
के पहाड़ी इलाक़े का आधा हिस्सा भी शामिल है।
13 जिलिआद का शिमाली हिस्सा और बसन का
मुल्क मैं ने मनस्सी के आधे क़बीले को दिया।
(बसन में अर्जूब का इलाक़ा है जहाँ पहले
ओज बादशाह की हुकूमत थी और जो रफ़ाइयों
यानी देओक़ामत अफ़राद का मुल्क कहलाता था।
14 मनस्सी के क़बीले के एक आदमी बनाम याईर ने
अर्जूब पर जसूरियों और माकातियों की सरहद तक
क़ब्ज़ा कर लिया था। उस ने इस इलाक़े की बस्तियों
को अपना नाम दिया। आज तक यही नाम हव्वोत-
याईर यानी याईर की बस्तियाँ चलता है।)
15 मैं ने जिलिआद का शिमाली हिस्सा मनस्सी के
कुंबे मकीर को दिया 16 लेकिन जिलिआद का जुनूबी
हिस्सा रूबिन और जद के क़बीलों को दिया। इस
हिस्से की एक सरहद जुनूब में वादी-ए-अर्नोन के बीच
में से गुज़रती है जबकि दूसरी सरहद दरया-ए-यब्बोक़
है जिस के पार अम्मोनियों की हुकूमत है। 17 उस
की मग़रिबी सरहद दरया-ए-यर्दन है यानी किन्नरत
(गलील) की झील से ले कर बहीरा-ए-मुर्दार तक जो
पिसगा के पहाड़ी सिलसिले के दामन में है।
18 उस वक़्त मैं ने रूबिन, जद और मनस्सी के
क़बीलों से कहा, “रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हें मीरास
में यह मुल्क दे दिया है। लेकिन शर्त यह है कि
तुम्हारे तमाम जंग करने के क़ाबिल मर्द मुसल्लह हो
कर तुम्हारे इस्राईली भाइयों के आगे आगे दरया-ए-
यर्दन को पार करें। 19 सिर्फ़ तुम्हारी औरतें और बच्चे
पीछे रह कर उन शहरों में इन्तिज़ार कर सकते हैं जो

मैं ने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किए हैं। तुम अपने मवेशियों
को भी पीछे छोड़ सकते हो, क्यूँकि मुझे पता है कि
तुम्हारे बहुत ज़्यादा जानवर हैं। 20 अपने भाइयों के
साथ चलते हुए उन की मदद करते रहो। जब रब
तुम्हारा ख़ुदा उन्हें दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में वाक़े
मुल्क देगा और वह तुम्हारी तरह आराम और सुकून
से वहाँ आबाद हो जाएंगे तब तुम अपने मुल्क में
वापस जा सकते हो।"

मूसा को यर्दन पार करने की इजाज़त नहीं मिलती

21 साथ साथ मैं ने यशूअ से कहा, "तू ने अपनी
आँखों से सब कुछ देख लिया है जो रब तुम्हारे ख़ुदा
ने इन दोनों बादशाहों सीहोन और ओज से किया।
वह यही कुछ हर उस बादशाह के साथ करेगा जिस
के मुल्क पर तू दरया को पार करके हम्ला करेगा।
22 उन से न डरो। तुम्हारा ख़ुदा ख़ुद तुम्हारे लिए जंग
करेगा।"

23 उस वक़्त मैं ने रब से इल्तिजा करके कहा,
24 "ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, तू अपने ख़ादिम को
अपनी अज़मत और क़ुदरत दिखाने लगा है। क्या
आसमान या ज़मीन पर कोई और ख़ुदा है जो तेरी
तरह के अज़ीम काम कर सकता है? हरगिज़ नहीं!
25 मेहरबानी करके मुझे भी दरया-ए-यर्दन को पार
करके उस अच्छे मुल्क यानी उस बेहतरीन पहाड़ी
इलाक़े को लुबनान तक देखने की इजाज़त दे।"

26 लेकिन तुम्हारे सबब से रब मुझ से नाराज़ था।
उस ने मेरी न सुनी बल्कि कहा, "बस कर! आइन्दा
मेरे साथ इस का ज़िक्र न करना। 27 पिसगा की चोटी
पर चढ़ कर चारों तरफ़ नज़र दौड़ा। वहाँ से ग़ौर
से देख, क्यूँकि तू ख़ुद दरया-ए-यर्दन को उबूर नहीं
करेगा। 28 अपनी जगह यशूअ को मुक़र्रर कर। उस
की हौसलाअफ़्ज़ाई कर और उसे मज़बूत कर, क्यूँकि
वही इस क़ौम को दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में ले
जाएगा और क़बीलों में उस मुल्क को तक़्सीम करेगा
जिसे तू पहाड़ से देखेगा।"

29 चुनाँचे हम बैत-फ़ग़ूर के क़रीब वादी में ठहरे।

फ़रमाँबरदारी की अशद्द ज़रूरत

4 1 ऐ इस्राईल, अब वह तमाम अह्काम ध्यान से
सुन ले जो मैं तुम्हें सिखाता हूँ। उन पर अमल
करो ताकि तुम ज़िन्दा रहो और जा कर उस मुल्क पर
क़ब्ज़ा करो जो रब तुम्हारे बापदादा का ख़ुदा तुम्हें
देने वाला है। 2 जो अह्काम मैं तुम्हें सिखाता हूँ उन
में न किसी बात का इज़ाफ़ा करो और न उन से कोई
बात निकालो। रब अपने ख़ुदा के तमाम अह्काम पर
अमल करो जो मैं ने तुम्हें दिए हैं। 3 तुम ने ख़ुद देखा
है कि रब ने बाल-फ़ग़ूर से क्या कुछ किया। वहाँ रब
तेरे ख़ुदा ने हर एक को हलाक कर डाला जिस ने
फ़ग़ूर के बाल देवता की पूजा की। 4 लेकिन तुम में
से जितने रब अपने ख़ुदा के साथ लिपटे रहे वह सब
आज तक ज़िन्दा हैं।

5 मैं ने तुम्हें तमाम अह्काम यूँ सिखा दिए हैं जिस
तरह रब मेरे ख़ुदा ने मुझे बताया। क्यूँकि लाज़िम है
कि तुम उस मुल्क में इन के ताबे रहो जिस पर तुम
क़ब्ज़ा करने वाले हो। 6 इन्हें मानो और इन पर अमल
करो तो दूसरी क़ौमों को तुम्हारी दानिशमन्दी और
समझ नज़र आएगी। फिर वह इन तमाम अह्काम के
बारे में सुन कर कहेंगी, "वाह, यह अज़ीम क़ौम कैसी
दानिशमन्द और समझदार है!" 7 कौन सी अज़ीम
क़ौम के माबूद इतने क़रीब हैं जितना हमारा ख़ुदा
हमारे क़रीब है? जब भी हम मदद के लिए पुकारते हैं
तो रब हमारा ख़ुदा मौजूद होता है। 8 कौन सी अज़ीम
क़ौम के पास ऐसे मुन्सिफ़ाना अह्काम और हिदायात
हैं जैसे मैं आज तुम्हें पूरी शरीअत सुना कर पेश कर
रहा हूँ?

9 लेकिन ख़बरदार, एहतियात करना और वह
तमाम बातें न भूलना जो तेरी आँखों ने देखी हैं। वह
उम्र भर तेरे दिल में से मिट न जाएँ बल्कि उन्हें अपने
बच्चों और पोते-पोतियों को भी बताते रहना। 10 वह
दिन याद कर जब तू होरिब यानी सीना पहाड़ पर
रब अपने ख़ुदा के सामने हाज़िर था और उस ने मुझे
बताया, "क़ौम को यहाँ मेरे पास जमा कर ताकि मैं

उन से बात करूँ और वह उम्र भर मेरा ख़ौफ़ मानें
और अपने बच्चों को मेरी बातें सिखाते रहें।”

11 उस वक़्त तुम क़रीब आ कर पहाड़ के दामन
में खड़े हुए। वह जल रहा था, और उस की आग
आसमान तक भड़क रही थी जबकि काले बादलों
और गहरे अंधेरे ने उसे नज़रों से छुपा दिया। 12 फिर
रब आग में से तुम से हमकलाम हुआ। तुम ने उस की
बातें सुनीं लेकिन उस की कोई शक्ल न देखी। सिर्फ़
उस की आवाज़ सुनाई दी। 13 उस ने तुम्हारे लिए
अपने अह्द यानी उन 10 अह्काम का एलान किया
और हुक्म दिया कि इन पर अमल करो। फिर उस ने
उन्हें पत्थर की दो तख़्तियों पर लिख दिया। 14 रब ने
मुझे हिदायत की, “उन्हें वह तमाम अह्काम सिखा
जिन के मुताबिक़ उन्हें चलना होगा जब वह दरया-
ए-यर्दन को पार करके कनआन पर क़ब्ज़ा करेंगे।”

बुतपरस्ती के बारे में आगाही

15 जब रब होरिब यानी सीना पहाड़ पर तुम से
हमकलाम हुआ तो तुम ने उस की कोई शक्ल न
देखी। चुनाँचे ख़बरदार रहो 16 कि तुम ग़लत काम
करके अपने लिए किसी भी शक्ल का बुत न बनाओ।
न मर्द, औरत, 17 ज़मीन पर चलने वाले जानवर,
परिन्दे, 18 रेंगने वाले जानवर या मछली का बुत
बनाओ। 19 जब तू आसमान की तरफ़ नज़र उठा
कर आसमान का पूरा लश्कर देखे तो सूरज, चाँद
और सितारों की परस्तिश और ख़िदमत करने की
आज़माइश में न पड़ना। रब तेरे ख़ुदा ने इन चीज़ों
को बाक़ी तमाम क़ौमों को अता किया है, 20 लेकिन
तुम्हें उस ने मिस्र के भड़कते भट्टे से निकाला है ताकि
तुम उस की अपनी क़ौम और उस की मीरास बन
जाओ। और आज ऐसा ही हुआ है।

21 तुम्हारे सबब से रब ने मुझ से नाराज़ हो कर
क़सम खाई कि तू दरया-ए-यर्दन को पार करके उस
अच्छे मुल्क में दाख़िल नहीं होगा जो रब तेरा ख़ुदा
तुझे मीरास में देने वाला है। 22 मैं यहीं इसी मुल्क में
मर जाऊँगा और दरया-ए-यर्दन को पार नहीं करूँगा।
लेकिन तुम दरया को पार करके उस बेहतरीन मुल्क
पर क़ब्ज़ा करोगे। 23 हर सूरत में वह अह्द याद
रखना जो रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हारे साथ बांधा है।
अपने लिए किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना। यह
रब का हुक्म है, 24 क्यूँकि रब तेरा ख़ुदा भस्म कर
देने वाली आग है, वह ग़यूर ख़ुदा है।

25 तुम मुल्क में जा कर वहाँ रहोगे। तुम्हारे बच्चे और
पोते-नवासे उस में पैदा हो जाएंगे। जब इस तरह बहुत
वक़्त गुज़र जाएगा तो ख़तरा है कि तुम ग़लत काम
करके किसी चीज़ की मूरत बनाओ। ऐसा कभी न
करना। यह रब तुम्हारे ख़ुदा की नज़र में बुरा है और
उसे ग़ुस्सा दिलाएगा। 26 आज आसमान और ज़मीन
मेरे गवाह हैं कि अगर तुम ऐसा करो तो जल्दी से उस
मुल्क में से मिट जाओगे जिस पर तुम दरया-ए-यर्दन
को पार करके क़ब्ज़ा करोगे। तुम देर तक वहाँ जीते
नहीं रहोगे बल्कि पूरे तौर पर हलाक हो जाओगे।
27 रब तुम्हें मुल्क से निकाल कर मुख़्तलिफ़ क़ौमों में
मुन्तशिर कर देगा, और वहाँ सिर्फ़ थोड़े ही अफ़राद
बचे रहेंगे। 28 वहाँ तुम इन्सान के हाथों से बने हुए
लकड़ी और पत्थर के बुतों की ख़िदमत करोगे, जो
न देख सकते, न सुन सकते, न खा सकते और न सूँघ
सकते हैं।

29 वहीं तू रब अपने ख़ुदा को तलाश करेगा, और
अगर उसे पूरे दिल-ओ-जान से ढूँडे तो वह तुझे
मिल भी जाएगा। 30 जब तू इस तक्लीफ़ में मुब्तला
होगा और यह सारा कुछ तुझ पर से गुज़रेगा फिर
आख़िरकार रब अपने ख़ुदा की तरफ़ रुजू करके उस
की सुनेगा। 31 क्यूँकि रब तेरा ख़ुदा रहीम ख़ुदा है।
वह तुझे न तर्क करेगा और न बर्बाद करेगा। वह उस
अह्द को नहीं भूलेगा जो उस ने क़सम खा कर तेरे
बापदादा से बांधा था।

रब ही हमारा ख़ुदा है

32 दुनिया में इन्सान की तख़्लीक़ से ले कर आज
तक माज़ी की तफ़्तीश कर। आसमान के एक सिरे से
दूसरे सिरे तक खोज लगा। क्या इस से पहले कभी

इस तरह का मोजिज़ाना काम हुआ है? क्या किसी
ने इस से पहले इस क़िस्म के अज़ीम काम की ख़बर
सुनी है? 33 तू ने आग में से बोलती हुई अल्लाह की
आवाज़ सुनी तो भी जीता बचा! क्या किसी और क़ौम
के साथ ऐसा हुआ है? 34 क्या किसी और माबूद
ने कभी जुरअत की है कि रब की तरह पूरी क़ौम
को एक मुल्क से निकाल कर अपनी मिलकियत
बनाया हो? उस ने ऐसा ही तुम्हारे साथ किया। उस
ने तुम्हारे देखते देखते मिस्रियों को आज़माया, उन्हें
बड़े मोजिज़े दिखाए, उन के साथ जंग की, अपनी
बड़ी क़ुदरत और इख़तियार का इज़हार किया और
हौलनाक कामों से उन पर ग़ालिब आ गया।

35 तुझे यह सब कुछ दिखाया गया ताकि तू जान
ले कि रब ख़ुदा है। उस के सिवा कोई और नहीं
है। 36 उस ने तुझे नसीहत देने के लिए आसमान से
अपनी आवाज़ सुनाई। ज़मीन पर उस ने तुझे अपनी
अज़ीम आग दिखाई जिस में से तू ने उस की बातें
सुनीं। 37 उसे तेरे बापदादा से प्यार था, और उस ने
तुझे जो उन की औलाद हैं चुन लिया। इस लिए वह
ख़ुद हाज़िर हो कर अपनी अज़ीम क़ुदरत से तुझे मिस्र
से निकाल लाया। 38 उस ने तेरे आगे से तुझ से ज़्यादा
बड़ी और ताक़तवर क़ौमें निकाल दीं ताकि तुझे उन
का मुल्क मीरास में मिल जाए। आज ऐसा ही हो रहा
है।

39 चुनाँचे आज जान ले और ज़हन में रख कि रब
आसमान और ज़मीन का ख़ुदा है। कोई और माबूद
नहीं है। 40 उस के अह्काम पर अमल कर जो मैं तुझे
आज सुना रहा हूँ। फिर तू और तेरी औलाद कामयाब
होंगे, और तू देर तक उस मुल्क में जीता रहेगा जो
रब तुझे हमेशा के लिए दे रहा है।

यर्दन के मशरिक़ में पनाह के शहर

41 यह कह कर मूसा ने दरया-ए-यर्दन के मशरिक़
में पनाह के तीन शहर चुन लिए। 42 उन में वह शख़्स
पनाह ले सकता था जिस ने दुश्मनी की बिना पर
नहीं बल्कि ग़ैरइरादी तौर पर किसी को जान से मार
दिया था। ऐसे शहर में पनाह लेने के सबब से उसे
बदले में क़त्ल नहीं किया जा सकता था। 43 इस के
लिए रूबिन के क़बीले के लिए मैदान-ए-मुर्तफ़ा का
शहर बसर, जद के क़बीले के लिए जिलिआद का
शहर रामात और मनस्सी के क़बीले के लिए बसन
का शहर जौलान चुना गया।

शरीअत का पेशलफ़्ज़

44 दर्ज-ए-ज़ैल वह शरीअत है जो मूसा ने
इस्राईलियों को पेश की। 45 मूसा ने यह अह्काम और
हिदायात उस वक़्त पेश कीं जब वह मिस्र से निकल
कर 46 दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर थे। बैत-
फ़ग़ूर उन के मुक़ाबिल था, और वह अमोरी बादशाह
सीहोन के मुल्क में ख़ैमाज़न थे। सीहोन की रिहाइश
हस्बोन में थी और उसे इस्राईलियों से शिकस्त हुई थी
जब वह मूसा की राहनुमाई में मिस्र से निकल आए
थे। 47 उस के मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उन्हों ने बसन
के मुल्क पर भी फ़त्ह पाई थी जिस का बादशाह ओज
था। इन दोनों अमोरी बादशाहों का यह पूरा इलाक़ा
उन के हाथ में आ गया था। यह इलाक़ा दरया-ए-यर्दन
के मशरिक़ में था। 48 उस की जुनूबी सरहद दरया-ए-
अर्नोन के किनारे पर वाक़े शहर अरोईर थी जबकि
उस की शिमाली सरहद सिर्यून यानी हर्मून पहाड़ थी।
49 दरया-ए-यर्दन का पूरा मशरिक़ी किनारा पिसगा के
पहाड़ी सिलसिले के दामन में वाक़े बहीरा-ए-मुर्दार
तक उस में शामिल था।

दस अह्काम

5 1 मूसा ने तमाम इस्राईलियों को जमा करके
कहा,

ए इस्राईल, ध्यान से वह हिदायात और अह्काम
सुन जो मैं तुम्हें आज पेश कर रहा हूँ। उन्हें सीखो
और बड़ी एहतियात से उन पर अमल करो। 2 रब
हमारे ख़ुदा ने होरिब यानी सीना पहाड़ पर हमारे साथ
अह्द बांधा। 3 उस ने यह अह्द हमारे बापदादा के
साथ नहीं बल्कि हमारे ही साथ बांधा है, जो आज

इस जगह पर ज़िन्दा हैं। 4 रब पहाड़ पर आग में से
रू-ब-रू हो कर तुम से हमकलाम हुआ। 5 उस वक़्त
मैं तुम्हारे और रब के दरमियान खड़ा हुआ ताकि
तुम्हें रब की बातें सुनाऊँ। क्यूँकि तुम आग से डरते
थे और इस लिए पहाड़ पर न चढ़े। उस वक़्त रब ने
कहा,

6 "मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्क-ए-मिस्र की
ग़ुलामी से निकाल लाया। 7 मेरे सिवा किसी और
माबूद की परस्तिश न करना।

8 अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत
न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुन्दर
में हो। 9 न बुतों की परस्तिश, न उन की ख़िदमत
करना, क्यूँकि मैं तेरा रब ग़यूर ख़ुदा हूँ। जो मुझ से
नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुश्त तक
सज़ा दूँगा। 10 लेकिन जो मुझ से मुहब्बत रखते और
मेरे अह्काम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक
मेहरबानी करूँगा।

11 रब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़्सद या ग़लत
मक़्सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता
है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

12 सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस तरह
मनाना कि वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो, उसी तरह
जिस तरह रब तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है। 13 हफ़्ते
के पहले छः दिन अपना काम-काज कर, 14 लेकिन
सातवाँ दिन रब तेरे ख़ुदा का आराम का दिन है।
उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा
बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी, न
तेरा बैल, न तेरा गधा, न तेरा कोई और मवेशी। जो
परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह भी काम न करे। तेरे
नौकर और तेरी नौकरानी को तेरी तरह आराम का
मौक़ा मिलना है। 15 याद रखना कि तू मिस्र में ग़ुलाम
था और कि रब तेरा ख़ुदा ही तुझे बड़ी क़ुदरत और
इख़्तियार से वहाँ से निकाल लाया। इस लिए उस ने
तुझे हुक्म दिया है कि सबत का दिन मनाना।

16 अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना
जिस तरह रब तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है। फिर
तू उस मुल्क में जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देने वाला है
ख़ुशहाल होगा और देर तक जीता रहेगा।

17 क़त्ल न करना।

18 ज़िना न करना।

19 चोरी न करना।

20 अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।

21 अपने पड़ोसी की बीवी का लालच न करना। न
उस के घर का, न उस की ज़मीन का, न उस के नौकर
का, न उस की नौकरानी का, न उस के बैल और न
उस के गधे का बल्कि उस की किसी भी चीज़ का
लालच न करना।"

22 रब ने तुम सब को यह अह्काम दिए जब तुम
सीना पहाड़ के दामन में जमा थे। वहाँ तुम ने आग,
बादल और गहरे अंधेरे में से उस की ज़ोरदार आवाज़
सुनी। यही कुछ उस ने कहा और बस। फिर उस ने
उन्हें पत्थर की दो तख़्तियों पर लिख कर मुझे दे
दिया।

लोग रब से डरते हैं

23 जब तुम ने तारीकी से यह आवाज़ सुनी और
पहाड़ की जलती हुई हालत देखी तो तुम्हारे क़बीलों
के राहनुमा और बुज़ुर्ग मेरे पास आए। 24 उन्हों ने
कहा, "रब हमारे ख़ुदा ने हम पर अपना जलाल और
अज़मत ज़ाहिर की है। आज हम ने आग में से उस
की आवाज़ सुनी है। हम ने देख लिया है कि जब
अल्लाह इन्सान से हमकलाम होता है तो ज़रूरी नहीं
कि वह मर जाए। 25 लेकिन अब हम क्यूँ अपनी जान
ख़तरे में डालें? अगर हम मज़ीद रब अपने ख़ुदा की
आवाज़ सुनें तो यह बड़ी आग हमें भस्म कर देगी और
हम अपनी जान से हाथ धो बैठेंगे। 26 क्यूँकि फ़ानी
इन्सानों में से कौन हमारी तरह ज़िन्दा ख़ुदा को आग
में से बातें करते हुए सुन कर ज़िन्दा रहा है? कोई भी
नहीं! 27 आप ही क़रीब जा कर उन तमाम बातों को
सुनें जो रब हमारा ख़ुदा हमें बताना चाहता है। फिर
लौट कर हमें वह बातें सुनाएँ। हम उन्हें सुनेंगे और
उन पर अमल करेंगे।"

28 जब रब ने यह सुना तो उस ने मुझ से कहा, “मैं ने
इन लोगों की यह बातें सुन ली हैं। वह ठीक कहते हैं।
29 काश उन की सोच हमेशा ऐसी ही हो! काश वह
हमेशा इसी तरह मेरा ख़ौफ़ मानें और मेरे अह्काम
पर अमल करें! अगर वह ऐसा करेंगे तो वह और
उन की औलाद हमेशा कामयाब रहेंगे। 30 जा, उन्हें
बता दे कि अपने ख़ैमों में लौट जाओ। 31 लेकिन तू
यहाँ मेरे पास रह ताकि मैं तुझे तमाम क़वानीन और
अह्काम दे दूँ। उन को लोगों को सिखाना ताकि वह
उस मुल्क में उन के मुताबिक़ चलें जो मैं उन्हें दूँगा।”
32 चुनाँचे एहतियात से उन अह्काम पर अमल करो
जो रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हें दिए हैं। उन से न दाईं
तरफ़ हटो न बाईं तरफ़। 33 हमेशा उस राह पर चलते
रहो जो रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हें बताई है। फिर तुम
कामयाब होगे और उस मुल्क में देर तक जीते रहोगे
जिस पर तुम क़ब्ज़ा करोगे।

सब से बड़ा हुक्म

6 1 यह वह तमाम अह्काम हैं जो रब तुम्हारे ख़ुदा
ने मुझे तुम्हें सिखाने के लिए कहा। उस मुल्क में
इन पर अमल करना जिस में तुम जाने वाले हो ताकि
उस पर क़ब्ज़ा करो। 2 उम्र भर तू, तेरे बच्चे और पोते-
नवासे रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें और उस के
उन तमाम अह्काम पर चलें जो मैं तुझे दे रहा हूँ।
तब तू देर तक जीता रहेगा। 3 ऐ इस्राईल, यह मेरी
बातें सुन और बड़ी एहतियात से इन पर अमल कर!
फिर रब तेरे ख़ुदा का वादा पूरा हो जाएगा कि तू
कामयाब रहेगा और तेरी तादाद उस मुल्क में ख़ूब
बढ़ती जाएगी जिस में दूध और शहद की कस्रत है।
4 सुन ऐ इस्राईल! रब हमारा ख़ुदा एक ही रब है।
5 रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान
और अपनी पूरी ताक़त से प्यार करना। 6 जो अह्काम
मैं तुझे आज बता रहा हूँ उन्हें अपने दिल पर नक़्श
कर। 7 उन्हें अपने बच्चों के ज़हननशीन करा। यही
बातें हर वक़्त और हर जगह तेरे लबों पर हों ख़्वाह
तू घर में बैठा या रास्ते पर चलता हो, लेटा हो या
खड़ा हो। 8 उन्हें निशान के तौर पर और याददहानी
के लिए अपने बाज़ूओं और माथे पर लगा। 9 उन्हें
अपने घरों की चौखटों और अपने शहरों के दरवाज़ों
पर लिख।
10 रब तेरे ख़ुदा का वादा पूरा होगा जो उस ने क़सम
खा कर तेरे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब
के साथ किया कि मैं तुझे कनआन में ले जाऊँगा। जो
बड़े और शानदार शहर उस में हैं वह तू ने ख़ुद नहीं
बनाए। 11 जो मकान उस में हैं वह ऐसी अच्छी चीज़ों
से भरे हुए हैं जो तू ने उन में नहीं रखीं। जो कुएँ उस
में हैं उन को तू ने नहीं खोदा। जो अंगूर और ज़ैतून के
बाग़ उस में हैं उन्हें तू ने नहीं लगाया। यह हक़ीक़त
याद रख। जब तू उस मुल्क में कस्रत का खाना खा
कर सेर हो जाएगा 12 तो ख़बरदार! रब को न भूलना
जो तुझे मिस्र की ग़ुलामी से निकाल लाया।
13 रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना। सिर्फ़ उसी
की इबादत करना और उसी का नाम ले कर क़सम
खाना। 14 दीगर माबूदों की पैरवी न करना। इस में
तमाम पड़ोसी अक़्वाम के देवता भी शामिल हैं।
15 वर्ना रब तेरे ख़ुदा का ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल हो
कर तुझे मुल्क में से मिटा डालेगा। क्यूँकि वह ग़यूर
ख़ुदा है और तेरे दरमियान ही रहता है।
16 रब अपने ख़ुदा को उस तरह न आज़माना जिस
तरह तुम ने मस्सा में किया था। 17 ध्यान से रब
अपने ख़ुदा के अह्काम के मुताबिक़ चलो, उन तमाम
हिदायात और क़वानीन पर जो उस ने तुझे दिए हैं।
18 जो कुछ रब की नज़र में दुरुस्त और अच्छा है वह
कर। फिर तू कामयाब रहेगा, तू जा कर उस अच्छे
मुल्क पर क़ब्ज़ा करेगा जिस का वादा रब ने तेरे
बापदादा से क़सम खा कर किया था। 19 तब रब की
बात पूरी हो जाएगी कि तू अपने दुश्मनों को अपने
आगे आगे निकाल देगा।
20 आने वाले दिनों में तेरे बच्चे पूछेंगे, “रब हमारे
ख़ुदा ने आप को इन तमाम अह्काम पर अमल
करने को क्यूँ कहा?” 21 फिर उन्हें जवाब देना, “हम
मिस्र के बादशाह फ़िरऔन के ग़ुलाम थे, लेकिन रब

हमें बड़ी क़ुदरत का इज़हार करके मिस्र से निकाल
लाया। 22 हमारे देखते देखते उस ने बड़े बड़े निशान
और मोजिज़े किए और मिस्र, फ़िरऔन और उस के
पूरे घराने पर हौलनाक मुसीबतें भेजीं। 23 उस वक़्त
वह हमें वहाँ से निकाल लाया ताकि हमें ले कर वह
मुल्क दे जिस का वादा उस ने क़सम खा कर हमारे
बापदादा के साथ किया था। 24 रब हमारे ख़ुदा ही ने
हमें कहा कि इन तमाम अह्काम के मुताबिक़ चलो
और रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानो। क्यूँकि अगर
हम ऐसा करें तो फिर हम हमेशा कामयाब और ज़िन्दा
रहेंगे। और आज तक ऐसा ही रहा है। 25 अगर हम
रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर रह कर एहतियात से उन
तमाम बातों पर अमल करेंगे जो उस ने हमें करने को
कही हैं तो वह हमें रास्तबाज़ क़रार देगा।”

दूसरी कनआनी क़ौमों को निकालना है

7 1 रब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में ले जाएगा जिस
पर तू जा कर क़ब्ज़ा करेगा। वह तेरे सामने से
बहुत सी क़ौमें भगा देगा। गो यह सात क़ौमें यानी
हित्ती, जिर्जासी, अमोरी, कनआनी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी
और यबूसी तादाद और ताक़त के लिहाज़ से तुझ
से बड़ी होंगी 2 तो भी रब तेरा ख़ुदा उन्हें तेरे हवाले
करेगा। जब तू उन्हें शिकस्त देगा तो उन सब को उस
के लिए मख़्सूस करके हलाक कर देना है। न उन के
साथ अह्द बांधना और न उन पर रहम करना। 3 उन
में से किसी से शादी न करना। न अपनी बेटियों का
रिश्ता उन के बेटों को देना, न अपने बेटों का रिश्ता
उन की बेटियों से करना। 4 वर्ना वह तुम्हारे बच्चों को
मेरी पैरवी से दूर करेंगे और वह मेरी नहीं बल्कि उन
के देवताओं की ख़िदमत करेंगे। तब रब का ग़ज़ब
तुम पर नाज़िल हो कर जल्दी से तुम्हें हलाक कर
देगा। 5 इस लिए उन की क़ुर्बानगाहें ढा देना। जिन
पत्थरों की वह पूजा करते हैं उन्हें चिकनाचूर कर
देना, उन के यसीरत देवी के खम्बे काट डालना और
उन के बुत जला देना।

6 क्यूँकि तू रब अपने ख़ुदा के लिए मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस है। उस ने दुनिया की तमाम क़ौमों में से तुझे
चुन कर अपनी क़ौम और ख़ास मिलकियत बनाया।
7 रब ने क्यूँ तुम्हारे साथ ताल्लुक़ क़ाइम किया और
तुम्हें चुन लिया? क्या इस वजह से कि तुम तादाद
में दीगर क़ौमों की निस्बत ज़्यादा थे? हरगिज़ नहीं!
तुम तो बहुत कम थे। 8 बल्कि वजह यह थी कि रब
ने तुम्हें प्यार किया और वह वादा पूरा किया जो उस
ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा के साथ किया
था। इसी लिए वह फ़िद्या दे कर तुम्हें बड़ी क़ुदरत से
मिस्र की ग़ुलामी और उस मुल्क के बादशाह के हाथ
से बचा लाया। 9 चुनाँचे जान ले कि सिर्फ़ रब तेरा
ख़ुदा ही ख़ुदा है। वह वफ़ादार ख़ुदा है। जो उस से
मुहब्बत रखते और उस के अह्काम पर अमल करते
हैं उन के साथ वह अपना अह्द क़ाइम रखेगा और
उन पर हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करेगा। 10 लेकिन
उस से नफ़रत करने वालों को वह उन के रू-ब-रू
मुनासिब सज़ा दे कर बर्बाद करेगा। हाँ, जो उस से
नफ़रत करते हैं, उन के रू-ब-रू वह मुनासिब सज़ा
देगा और झिजकेगा नहीं।

11 चुनाँचे ध्यान से उन तमाम अह्काम पर अमल
कर जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ ताकि तू उन के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे। 12 अगर तू उन पर तवज्जुह
दे और एहतियात से उन पर चले तो फिर रब तेरा
ख़ुदा तेरे साथ अपना अह्द क़ाइम रखेगा और तुझ
पर मेहरबानी करेगा, बिलकुल उस वादे के मुताबिक़
जो उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा से किया था।
13 वह तुझे प्यार करेगा और तुझे उस मुल्क में बरकत
देगा जो तुझे देने का वादा उस ने क़सम खा कर तेरे
बापदादा से किया था। तुझे बहुत औलाद बख़्शने
के इलावा वह तेरे खेतों को बरकत देगा, और तुझे
कस्रत का अनाज, अंगूर और ज़ैतून हासिल होगा।
वह तेरे रेवड़ों को भी बरकत देगा, और तेरे गाय-
बैलों और भेड़-बकरियों की तादाद बढ़ती जाएगी।
14 तुझे दीगर तमाम क़ौमों की निस्बत कहीं ज़्यादा
बरकत मिलेगी। न तुझ में और न तेरे मवेशियों में

बाँझपन पाया जाएगा। 15 रब हर बीमारी को तुझ से
दूर रखेगा। वह तुझ में वह ख़तरनाक वबाएँ फैलने
नहीं देगा जिन से तू मिस्र में वाक़िफ़ हुआ बल्कि उन्हें
उन में फैलाएगा जो तुझ से नफ़रत रखते हैं।
16 जो भी क़ौमें रब तेरा ख़ुदा तेरे हाथ में कर देगा
उन्हें तबाह करना लाज़िम है। उन पर रहम की निगाह
से न देखना, न उन के देवताओं की ख़िदमत करना,
वर्ना तू फंस जाएगा।
17 गो तेरा दिल कहे, "यह क़ौमें हम से ताक़तवर
हैं। हम किस तरह इन्हें निकाल सकते हैं?" 18 तो
भी उन से न डर। वही कुछ ज़हन में रख जो रब
तेरे ख़ुदा ने फ़िरऔन और पूरे मिस्र के साथ किया।
19 क्यूँकि तू ने अपनी आँखों से रब अपने ख़ुदा की
वह बड़ी आज़माने वाली मुसीबतें और मोजिज़े, उस
का वह अज़ीम इख़तियार और क़ुदरत देखी जिस
से वह तुझे वहाँ से निकाल लाया। वही कुछ रब
तेरा ख़ुदा उन क़ौमों के साथ भी करेगा जिन से तू
इस वक़्त डरता है। 20 न सिर्फ़ यह बल्कि रब तेरा
ख़ुदा उन के दरमियान ज़म्बूर भी भेजेगा ताकि वह
भी तबाह हो जाएँ जो पहले हम्लों से बच कर छुप गए
हैं। 21 उन से दहशत न खा, क्यूँकि रब तेरा ख़ुदा तेरे
दरमियान है। वह अज़ीम ख़ुदा है जिस से सब ख़ौफ़
खाते हैं। 22 वह रफ़्ता रफ़्ता उन क़ौमों को तेरे आगे से
भगा देगा। तू उन्हें एक दम ख़त्म नहीं कर सकेगा,
वर्ना जंगली जानवर तेज़ी से बढ़ कर तुझे नुक़्सान
पहुचाएँगे।
23 रब तेरा ख़ुदा उन्हें तेरे हवाले कर देगा। वह उन
में इतनी सख़्त अफ़्रा-तफ़्री पैदा करेगा कि वह बर्बाद
हो जाएंगे। 24 वह उन के बादशाहों को भी तेरे क़ाबू में
कर देगा, और तू उन का नाम-ओ-निशान मिटा देगा।
कोई भी तेरा सामना नहीं कर सकेगा बल्कि तू उन
सब को बर्बाद कर देगा।
25 उन के देवताओं के मुजस्समे जला देना। जो
चाँदी और सोना उन पर चढ़ाया हुआ है उस का
लालच न करना। उसे न लेना वर्ना तू फंस जाएगा।
क्यूँकि इन चीज़ों से रब तेरे ख़ुदा को घिन आती
है। 26 इस तरह की मकरूह चीज़ अपने घर में न
लाना, वर्ना तुझे भी उस के साथ अलग करके बर्बाद
किया जाएगा। तेरे दिल में उस से शदीद नफ़रत और
घिन हो, क्यूँकि उसे पूरे तौर पर बर्बाद करने के लिए
मख़्सूस किया गया है।

रब को न भूलना

8 1 एहतियात से उन तमाम अह्काम पर अमल
करो जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। क्यूँकि ऐसा
करने से तुम जीते रहोगे, तादाद में बढ़ोगे और जा
कर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे जिस का वादा रब
ने तुम्हारे बापदादा से क़सम खा कर किया था।
2 वह पूरा वक़्त याद रख जब रब तेरा ख़ुदा
रेगिस्तान में 40 साल तक तेरी राहनुमाई करता रहा
ताकि तुझे आजिज़ करके आज़माए और मालूम करे
कि क्या तू उस के अह्काम पर चलेगा कि नहीं।
3 उस ने तुझे आजिज़ करके भूके होने दिया, फिर
तुझे मन खिलाया जिस से न तू और न तेरे बापदादा
वाक़िफ़ थे। क्यूँकि वह तुझे सिखाना चाहता था कि
इन्सान की ज़िन्दगी सिर्फ़ रोटी पर मुन्हसिर नहीं होती
बल्कि हर उस बात पर जो रब के मुँह से निकलती
है।
4 इन 40 सालों के दौरान तेरे कपड़े न घिसे न फटे,
न तेरे पाँओ सूजे। 5 चुनाँचे दिल में जान ले कि जिस
तरह बाप अपने बेटे की तर्बीयत करता है उसी तरह
रब हमारा ख़ुदा हमारी तर्बियत करता है।
6 रब अपने ख़ुदा के अह्काम पर अमल करके उस
की राहों पर चल और उस का ख़ौफ़ मान। 7 क्यूँकि
वह तुझे एक बेहतरीन मुल्क में ले जा रहा है जिस
में नहरें और ऐसे चश्मे हैं जो पहाड़ियों और वादियों
की ज़मीन से फूट निकलते हैं। 8 उस की पैदावार
अनाज, जौ, अंगूर, अन्जीर, अनार, ज़ैतून और शहद
है। 9 उस में रोटी की कमी नहीं होगी, और तू किसी
चीज़ से महरूम नहीं रहेगा। उस के पत्थरों में लोहा
पाया जाता है, और खुदाई से तू उस की पहाड़ियों से
ताँबा हासिल कर सकेगा।

10 जब तू कस्रत का खाना खा कर सेर हो जाएगा
तो फिर रब अपने ख़ुदा की तम्जीद करना जिस ने
तुझे यह शानदार मुल्क दिया है। 11 ख़बरदार, रब
अपने ख़ुदा को न भूल और उस के उन अह्काम
पर अमल करने से गुरेज़ न कर जो मैं आज तुझे दे
रहा हूँ। 12 क्यूँकि जब तू कस्रत का खाना खा कर
सेर हो जाएगा, तू शानदार घर बना कर उन में रहेगा
13 और तेरे रेवड़, सोने-चाँदी और बाक़ी तमाम माल
में इज़ाफ़ा होगा 14 तो कहीं तू मग़रूर हो कर रब
अपने ख़ुदा को भूल न जाए जो तुझे मिस्र की ग़ुलामी
से निकाल लाया। 15 जब तू उस वसी और हौलनाक
रेगिस्तान में सफ़र कर रहा था जिस में ज़हरीले साँप
और बिच्छू थे तो वही तेरी राहनुमाई करता रहा।
पानी से महरूम उस इलाक़े में वही सख़्त पत्थर में
से पानी निकाल लाया। 16 रेगिस्तान में वही तुझे मन
खिलाता रहा, जिस से तेरे बापदादा वाक़िफ़ न थे।
इन मुश्किलात से वह तुझे आजिज़ करके आज़माता
रहा ताकि आख़िरकार तू कामयाब हो जाए।
17 जब तुझे कामयाबी हासिल होगी तो यह न कहना
कि मैं ने अपनी ही क़ुव्वत और ताक़त से यह सब
कुछ हासिल किया है। 18 बल्कि रब अपने ख़ुदा को
याद करना जिस ने तुझे दौलत हासिल करने की
क़ाबिलियत दी है। क्यूँकि वह आज भी उसी अह्द
पर क़ाइम है जो उस ने तेरे बापदादा से किया था।
19 रब अपने ख़ुदा को न भूलना, और न दीगर
माबूदों के पीछे पड़ कर उन्हें सिज्दा और उन की
ख़िदमत करना। वर्ना मैं ख़ुद गवाह हूँ कि तुम
यक़ीनन हलाक हो जाओगे। 20 अगर तुम रब अपने
ख़ुदा की इताअत नहीं करोगे तो फिर वह तुम्हें उन
क़ौमों की तरह तबाह कर देगा जो तुम से पहले इस
मुल्क में रहती थीं।

मुल्क मिलने का सबब इस्राईल की रास्ती नहीं है

9 1 सुन ऐ इस्राईल! आज तू दरया-ए-यर्दन को पार
करने वाला है। दूसरी तरफ़ तू ऐसी क़ौमों को
भगा देगा जो तुझ से बड़ी और ताक़तवर हैं और
जिन के शानदार शहरों की फ़सीलें आसमान से बातें
करती हैं। 2 वहाँ अनाक़ी बसते हैं जो ताक़तवर और
दराज़क़द हैं। तू ख़ुद जानता है कि उन के बारे में कहा
जाता है, "कौन अनाक़ियों का सामना कर सकता
है?" 3 लेकिन आज जान ले कि रब तेरा ख़ुदा तेरे
आगे आगे चलते हुए उन्हें भस्म कर देने वाली आग
की तरह हलाक करेगा। वह तेरे आगे आगे उन पर
क़ाबू पाएगा, और तू उन्हें निकाल कर जल्दी मिटा
देगा, जिस तरह रब ने वादा किया है।
4 जब रब तेरा ख़ुदा उन्हें तेरे सामने से निकाल देगा
तो तू यह न कहना, "मैं रास्तबाज़ हूँ, इसी लिए रब
मुझे लाइक़ समझ कर यहाँ लाया और यह मुल्क
मीरास में दे दिया है।" यह बात हरगिज़ दुरुस्त नहीं
है। रब उन क़ौमों को उन की ग़लत हरकतों की वजह
से तेरे सामने से निकाल देगा। 5 तू अपनी रास्तबाज़ी
और दयानतदारी की बिना पर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा
नहीं करेगा बल्कि रब उन्हें उन की शरीर हरकतों
के बाइस तेरे सामने से निकाल देगा। दूसरे, जो वादा
उस ने तेरे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब के
साथ क़सम खा कर किया था उसे पूरा होना है।
6 चुनाँचे जान ले कि रब तेरा ख़ुदा तुझे तेरी रास्ती
के बाइस यह अच्छा मुल्क नहीं दे रहा। हक़ीक़त तो
यह है कि तू हटधर्म क़ौम है।

सोने का बछड़ा

7 याद रख और कभी न भूल कि तू ने रेगिस्तान में
रब अपने ख़ुदा को किस तरह नाराज़ किया। मिस्र
से निकलते वक़्त से ले कर यहाँ पहुँचने तक तुम
रब से सरकश रहे हो। 8 ख़ासकर होरिब यानी सीना
के दामन में तुम ने रब को इतना ग़ुस्सा दिलाया कि
वह तुम्हें हलाक करने को था। 9 उस वक़्त मैं पहाड़
पर चढ़ गया था ताकि पत्थर की तख़्तियाँ यानी उस
अह्द की तख़्तियाँ मिल जाएँ जो रब ने तुम्हारे साथ
बांधा था। कुछ खाए पिए बग़ैर मैं 40 दिन और रात
वहाँ रहा।

10–11 जो कुछ रब ने आग में से कहा था जब तुम
पहाड़ के दामन में जमा थे वही कुछ उस ने अपनी
उंगली से दोनों तख़्तियों पर लिख कर मुझे दिया।
12 उस ने मुझ से कहा, “फ़ौरन यहाँ से उतर जा। तेरी
क़ौम जिसे तू मिस्र से निकाल लाया बिगड़ गई है।
वह कितनी जल्दी से मेरे अह्काम से हट गए हैं।
उन्हों ने अपने लिए बुत ढाल लिया है। 13 मैं ने जान
लिया है कि यह क़ौम कितनी ज़िद्दी है। 14 अब मुझे
छोड़ दे ताकि मैं उन्हें तबाह करके उन का नाम-ओ-
निशान दुनिया में से मिटा डालूँ। उन की जगह मैं तुझ
से एक क़ौम बना लूँगा जो उन से बड़ी और ताक़तवर
होगी।”

15 मैं मुड़ कर पहाड़ से उतरा जो अब तक भड़क
रहा था। मेरे हाथों में अह्द की दोनों तख़्तियाँ थीं।
16 तुम्हें देखते ही मुझे मालूम हुआ कि तुम ने रब
अपने ख़ुदा का गुनाह किया है। तुम ने अपने लिए
बछड़े का बुत ढाल लिया था। तुम कितनी जल्दी से
रब की मुक़र्ररा राह से हट गए थे।

17 तब मैं ने तुम्हारे देखते देखते दोनों तख़्तियों को
ज़मीन पर पटख़ कर टुकड़े टुकड़े कर दिया। 18 एक
और बार मैं रब के सामने मुँह के बल गिरा। मैं ने न
कुछ खाया, न कुछ पिया। 40 दिन और रात मैं तुम्हारे
तमाम गुनाहों के बाइस इसी हालत में रहा। क्यूँकि
जो कुछ तुम ने किया था वह रब को निहायत बुरा
लगा, इस लिए वह ग़ज़बनाक हो गया था। 19 वह
तुम से इतना नाराज़ था कि मैं बहुत डर गया। यूँ लग
रहा था कि वह तुम्हें हलाक कर देगा। लेकिन इस
बार भी उस ने मेरी सुन ली। 20 मैं ने हारून के लिए
भी दुआ की, क्यूँकि रब उस से भी निहायत नाराज़
था और उसे हलाक कर देना चाहता था।

21 जो बछड़ा तुम ने गुनाह करके बनाया था उसे
मैं ने जला दिया, फिर जो कुछ बाक़ी रह गया उसे
कुचल दिया और पीस पीस कर पाउडर बना दिया।
यह पाउडर मैं ने उस चश्मे में फैंक दिया जो पहाड़
पर से बह रहा था।

22 तुम ने रब को तबएरा, मस्सा और क़ब्रोत-हत्तावा
में भी ग़ुस्सा दिलाया। 23 क़ादिस-बर्नीअ में भी ऐसा ही
हुआ। वहाँ से रब ने तुम्हें भेज कर कहा था, “जाओ,
उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करो जो मैं ने तुम्हें दे दिया
है।” लेकिन तुम ने सरकश हो कर रब अपने ख़ुदा के
हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की। तुम ने उस पर एतिमाद
न किया, न उस की सुनी। 24 जब से मैं तुम्हें जानता
हूँ तुम्हारा रब के साथ रवय्या बाग़ियाना ही रहा है।

25 मैं 40 दिन और रात रब के सामने ज़मीन पर मुँह
के बल रहा, क्यूँकि रब ने कहा था कि वह तुम्हें
हलाक कर देगा। 26 मैं ने उस से मिन्नत करके कहा,
“ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, अपनी क़ौम को तबाह न
कर। वह तो तेरी ही मिलकियत है जिसे तू ने फ़िद्या
दे कर अपनी अज़ीम क़ुदरत से बचाया और बड़े
इख़तियार के साथ मिस्र से निकाल लाया। 27 अपने
ख़ादिमों इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब को याद कर,
और इस क़ौम की ज़िद, शरीर हरकतों और गुनाह
पर तवज्जुह न दे। 28 वर्ना मिस्री कहेंगे, ‘रब उन्हें
उस मुल्क में लाने के क़ाबिल नहीं था जिस का वादा
उस ने किया था, बल्कि वह उन से नफ़रत करता था।
हाँ, वह उन्हें हलाक करने के लिए रेगिस्तान में ले
आया।’ 29 वह तो तेरी क़ौम हैं, तेरी मिलकियत जिसे
तू अपनी अज़ीम क़ुदरत और इख़तियार से मिस्र से
निकाल लाया।”

मूसा को नई तख़्तियाँ मिलती हैं

10 1 उस वक़्त रब ने मुझ से कहा, “पत्थर
की दो और तख़्तियाँ तराशना जो पहली
तख़्तियों की मानिन्द हों। उन्हें ले कर मेरे पास पहाड़
पर चढ़ आ। लकड़ी का सन्दूक़ भी बनाना। 2 फिर
मैं इन तख़्तियों पर दुबारा वही बातें लिखूँगा जो मैं
उन तख़्तियों पर लिख चुका था जो तू ने तोड़ डालीं।
तुम्हें उन्हें सन्दूक़ में मह्फ़ूज़ रखना है।”

3 मैं ने कीकर की लकड़ी का सन्दूक़ बनवाया
और दो तख़्तियाँ तराशीं जो पहली तख़्तियों की
मानिन्द थीं। फिर मैं दोनों तख़्तियाँ ले कर पहाड़

पर चढ़ गया। 4 रब ने उन तख़्तियों पर दुबारा वह
दस अह्काम लिख दिए जो वह पहली तख़्तियों पर
लिख चुका था। (उन ही अह्काम का एलान उस ने
पहाड़ पर आग में से किया था जब तुम उस के दामन
में जमा थे।) फिर उस ने यह तख़्तियाँ मेरे सपुर्द कीं।
5 मैं लौट कर उतरा और तख़्तियों को उस सन्दूक़ में
रखा जो मैं ने बनाया था। वहाँ वह अब तक हैं। सब
कुछ वैसा ही हुआ जैसा रब ने हुक्म दिया था।

इमामों और लावियों की ख़िदमत

6 (इस के बाद इस्राईली बनी-याक़ान के कुओं से
रवाना हो कर मौसीरा पहुँचे। वहाँ हारून फ़ौत हुआ।
उसे दफ़न करने के बाद उस का बेटा इलीअज़र उस
की जगह इमाम बना। 7 फिर वह आगे सफ़र करते
करते जुदजूदा, फिर युत्बाता पहुँचे जहाँ नहरें हैं।
8 उन दिनों में रब ने लावी के क़बीले को अलग
करके उसे रब के अह्द के सन्दूक़ को उठा कर ले
जाने, रब के हुज़ूर ख़िदमत करने और उस के नाम
से बरकत देने की ज़िम्मादारी दी। आज तक यह उन
की ज़िम्मादारी रही है। 9 इस वजह से लावियों को
दीगर क़बीलों की तरह न हिस्सा न मीरास मिली।
रब तेरा ख़ुदा ख़ुद उन की मीरास है। उस ने ख़ुद उन्हें
यह फ़रमाया है।)
10 जब मैं ने दूसरी मर्तबा 40 दिन और रात पहाड़
पर गुज़ारे तो रब ने इस दफ़ा भी मेरी सुनी और तुझे
हलाक न करने पर आमादा हुआ। 11 उस ने कहा,
"जा, क़ौम की राहनुमाई कर ताकि वह जा कर उस
मुल्क पर क़ब्ज़ा करें जिस का वादा मैं ने क़सम खा
कर उन के बापदादा से किया था।"

रब का ख़ौफ़

12 ऐ इस्राईल, अब मेरी बात सुन! रब तेरा ख़ुदा तुझ
से क्या तक़ाज़ा करता है? सिर्फ़ यह कि तू उस का
ख़ौफ़ माने, उस की तमाम राहों पर चले, उसे प्यार
करे, अपने पूरे दिल-ओ-जान से उस की ख़िदमत करे
13 और उस के तमाम अह्काम पर अमल करे। आज
मैं उन्हें तुझे तेरी बेहतरी के लिए दे रहा हूँ।
14 पूरा आसमान, ज़मीन और जो कुछ उस पर है,
सब का मालिक रब तेरा ख़ुदा है। 15 तो भी उस ने
तेरे बापदादा पर ही अपनी ख़ास शफ़क़त का इज़हार
करके उन से मुहब्बत की। और उस ने तुम्हें चुन
कर दूसरी तमाम क़ौमों पर तर्जीह दी जैसा कि आज
ज़ाहिर है। 16 ख़तना उस की क़ौम का निशान है,
लेकिन ध्यान रखो कि वह न सिर्फ़ ज़ाहिरी बल्कि
बातिनी भी हो। आइन्दा अड़ न जाओ।
17 क्यूँकि रब तुम्हारा ख़ुदा ख़ुदाओं का ख़ुदा और
रबों का रब है। वह अज़ीम और ज़ोरावर ख़ुदा है जिस
से सब ख़ौफ़ खाते हैं। वह जानिबदारी नहीं करता
और रिश्वत नहीं लेता। 18 वह यतीमों और बेवाओं का
इन्साफ़ करता है। वह परदेसी से प्यार करता और
उसे ख़ुराक और पोशाक मुहय्या करता है। 19 तुम भी
उन के साथ मुहब्बत से पेश आओ, क्यूँकि तुम भी
मिस्र में परदेसी थे।
20 रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मान और उस की
ख़िदमत कर। उस से लिपटा रह और उसी के नाम
की क़सम खा। 21 वही तेरा फ़ख़र है। वह तेरा ख़ुदा
है जिस ने वह तमाम अज़ीम और डराऔने काम किए
जो तू ने ख़ुद देखे। 22 जब तेरे बापदादा मिस्र गए थे
तो 70 अफ़राद थे। और अब रब तेरे ख़ुदा ने तुझे
सितारों की मानिन्द बेशुमार बना दिया है।

रब से मुहब्बत रख और उस की सुन

11 1 रब अपने ख़ुदा से प्यार कर और हमेशा
उस के अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी
गुज़ार। 2 आज जान लो कि तुम्हारे बच्चों ने नहीं बल्कि
तुम ही ने रब अपने ख़ुदा से तर्बियत पाई। तुम ने उस
की अज़मत, बड़े इख़्तियार और क़ुदरत को देखा,
3 और तुम उन मोजिज़ों के गवाह हो जो उस ने मिस्र
के बादशाह फ़िरऔन और उस के पूरे मुल्क के सामने
किए। 4 तुम ने देखा कि रब ने किस तरह मिस्री फ़ौज
को उस के घोड़ों और रथों समेत बहर-ए-क़ुल्ज़ुम में

ग़र्क़ कर दिया जब वह तुम्हारा ताक़्क़ुब कर रहे थे। उस ने उन्हें यूँ तबाह किया कि वह आज तक बहाल नहीं हुए।

5 तुम्हारे बच्चे नहीं बल्कि तुम ही गवाह हो कि यहाँ पहुँचने से पहले रब ने रेगिस्तान में तुम्हारी किस तरह देख-भाल की। 6 तुम ने उस का इलियाब के बेटों दातन और अबीराम के साथ सुलूक देखा जो रूबिन के क़बीले के थे। उस दिन ज़मीन ने ख़ैमागाह के अन्दर मुँह खोल कर उन्हें उन के घरानों, डेरों और तमाम जानदारों समेत हड़प कर लिया।

7 तुम ने अपनी ही आँखों से रब के यह तमाम अज़ीम काम देखे हैं। 8 चुनाँचे उन तमाम अह्काम पर अमल करते रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ ताकि तुम्हें वह ताक़त हासिल हो जो दरकार होगी जब तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे। 9 अगर तुम फ़रमाँबरदार रहो तो देर तक उस मुल्क में जीते रहोगे जिस का वादा रब ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा से किया था और जिस में दूध और शहद की कस्रत है।

10 क्यूँकि यह मुल्क मिस्र की मानिन्द नहीं है जहाँ से तुम निकल आए हो। वहाँ के खेतों में तुझे बीज बो कर बड़ी मेहनत से उस की आबपाशी करनी पड़ती थी 11 जबकि जिस मुल्क पर तुम क़ब्ज़ा करोगे उस में पहाड़ और वादियाँ हैं जिन्हें सिर्फ़ बारिश का पानी सेराब करता है। 12 रब तेरा ख़ुदा ख़ुद उस मुल्क का ख़याल रखता है। रब तेरे ख़ुदा की आँखें साल के पहले दिन से ले कर आख़िर तक मुतवातिर उस पर लगी रहती हैं।

13 चुनाँचे उन अह्काम के ताबे रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ। रब अपने ख़ुदा से प्यार करो और अपने पूरे दिल-ओ-जान से उस की ख़िदमत करो। 14 फिर वह ख़रीफ़ और बहार की सालाना बारिश वक़्त पर भेजेगा। अनाज, अंगूर और ज़ैतून की फ़सलें पकेंगी, और तू उन्हें जमा कर लेगा। 15 नीज़, अल्लाह तेरी चरागाहों में तेरे रेवड़ों के लिए घास मुहय्या करेगा, और तू खा कर सेर हो जाएगा।

16 लेकिन ख़बरदार, कहीं तुम्हें वरग़लाया न जाए। ऐसा न हो कि तुम रब की राह से हट जाओ और दीगर माबूदों को सिज्दा करके उन की ख़िदमत करो। 17 वर्ना रब का ग़ज़ब तुम पर आन पड़ेगा, और वह मुल्क में बारिश होने नहीं देगा। तुम्हारी फ़सलें नहीं पकेंगी, और तुम्हें जल्द ही उस अच्छे मुल्क में से मिटा दिया जाएगा जो रब तुम्हें दे रहा है।

18 चुनाँचे मेरी यह बातें अपने दिलों पर नक़्श कर लो। उन्हें निशान के तौर पर और याददहानी के लिए अपने हाथों और माथों पर लगाओ। 19 उन्हें अपने बच्चों को सिखाओ। हर जगह और हमेशा उन के बारे में बात करो, ख़्वाह तू घर में बैठा या रास्ते पर चलता हो, लेटा हो या खड़ा हो। 20 उन्हें अपने घरों की चौखटों और अपने शहरों के दरवाज़ों पर लिख 21 ताकि जब तक ज़मीन पर आसमान क़ाइम है तुम और तुम्हारी औलाद उस मुल्क में जीते रहें जिस का वादा रब ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा से किया था।

22 एहतियात से उन अह्काम की पैरवी करो जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ। रब अपने ख़ुदा से प्यार करो, उस के तमाम अह्काम पर अमल करो और उस के साथ लिपटे रहो। 23 फिर वह तुम्हारे आगे आगे यह तमाम क़ौमें निकाल देगा और तुम ऐसी क़ौमों की ज़मीनों पर क़ब्ज़ा करोगे जो तुम से बड़ी और ताक़तवर हैं। 24 तुम जहाँ भी क़दम रखोगे वह तुम्हारा ही होगा, जुनूबी रेगिस्तान से ले कर लुबनान तक, दरया-ए-फ़ुरात से बहीरा-ए-रूम तक। 25 कोई भी तुम्हारा सामना नहीं कर सकेगा। तुम उस मुल्क में जहाँ भी जाओगे वहाँ रब तुम्हारा ख़ुदा अपने वादे के मुताबिक़ तुम्हारी दह्शत और ख़ौफ़ पैदा कर देगा। 26 आज तुम ख़ुद फ़ैसला करो। क्या तुम रब की बरकत या उस की लानत पाना चाहते हो? 27 अगर तुम रब अपने ख़ुदा के उन अह्काम पर अमल करो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ तो वह तुम्हें बरकत देगा। 28 लेकिन अगर तुम उन के ताबे न रहो बल्कि मेरी

पेशकरदा राह से हट कर दीगर माबूदों की पैरवी करो
तो वह तुम पर लानत भेजेगा।
29 जब रब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में ले जाएगा
जिस पर तू क़ब्ज़ा करेगा तो लाज़िम है कि गरिज़ीम
पहाड़ पर चढ़ कर बरकत का एलान करे और ऐबाल
पहाड़ पर लानत का। 30 यह दो पहाड़ दरया-ए-यर्दन
के मग़रिब में उन कनआनियों के इलाक़े में वाक़े
हैं जो वादी-ए-यर्दन में आबाद हैं। वह मग़रिब की
तरफ़ जिल्जाल शहर के सामने मोरिह के बलूत के
दरख़्तों के नज़्दीक हैं। 31 अब तुम दरया-ए-यर्दन को
पार करके उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करने वाले हो जो
रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें दे रहा है। जब तुम उसे अपना
कर उस में आबाद हो जाओगे 32 तो एहतियात से
उन तमाम अह्काम पर अमल करते रहो जो मैं आज
तुम्हें दे रहा हूँ।

मुल्क में रब के अह्काम

12 1 ज़ैल में वह अह्काम और क़वानीन हैं
जिन पर तुम्हें ध्यान से अमल करना होगा
जब तुम उस मुल्क में आबाद होगे जो रब तेरे
बापदादा का ख़ुदा तुझे दे रहा है ताकि तू उस पर
क़ब्ज़ा करे। मुल्क में रहते हुए उम्र भर उन के ताबे
रहो।

मुल्क में एक ही जगह पर मक़्दिस हो

2 उन तमाम जगहों को बर्बाद करो जहाँ वह क़ौमें
जिन्हें तुम्हें निकालना है अपने देवताओं की पूजा
करती हैं, ख़्वाह वह ऊँचे पहाड़ों, पहाड़ियों या घने
दरख़्तों के साय में क्यूँ न हों। 3 उन की क़ुर्बानगाहों
को ढा देना। जिन पत्थरों की पूजा वह करते हैं उन्हें
चिकनाचूर कर देना। यसीरत देवी के खम्बे जला
देना। उन के देवताओं के मुजस्समे काट डालना।
ग़रज़ इन जगहों से उन का नाम-ओ-निशान मिट जाए।
4 रब अपने ख़ुदा की परस्तिश करने के लिए उन के
तरीक़े न अपनाना। 5 रब तुम्हारा ख़ुदा क़बीलों में से
अपने नाम की सुकूनत के लिए एक जगह चुन लेगा।
इबादत के लिए वहाँ जाया करो, 6 और वहाँ अपनी
तमाम क़ुर्बानियाँ ला कर पेश करो, ख़्वाह वह भस्म
होने वाली क़ुर्बानियाँ, ज़बह की क़ुर्बानियाँ, पैदावार
का दसवाँ हिस्सा, उठाने वाली क़ुर्बानियाँ, मन्नत के
हदिए, ख़ुशी से पेश की गई क़ुर्बानियाँ या मवेशियों
के पहलौठे क्यूँ न हों। 7 वहाँ रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर
अपने घरानों समेत खाना खा कर उन कामयाबियों
की ख़ुशी मनाओ जो तुझे रब तेरे ख़ुदा की बरकत के
बाइस हासिल हुई हैं।
8 उस वक़्त तुम्हें वह नहीं करना जो हम करते आए
हैं। आज तक हर कोई अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़
इबादत करता है, 9 क्यूँकि अब तक तुम आराम की
उस जगह नहीं पहुँचे जो तुझे रब तेरे ख़ुदा से मीरास
में मिलनी है। 10 लेकिन जल्द ही तुम दरया-ए-यर्दन
को पार करके उस मुल्क में आबाद हो जाओगे जो
रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें मीरास में दे रहा है। उस वक़्त
वह तुम्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों से बचाए रखेगा, और
तुम आराम और सुकून से ज़िन्दगी गुज़ार सकोगे।
11 तब रब तुम्हारा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के
लिए एक जगह चुन लेगा, और तुम्हें सब कुछ जो मैं
बताऊँगा वहाँ ला कर पेश करना है, ख़्वाह वह भस्म
होने वाली क़ुर्बानियाँ, ज़बह की क़ुर्बानियाँ, पैदावार
का दसवाँ हिस्सा, उठाने वाली क़ुर्बानियाँ या मन्नत
के ख़ास हदिए क्यूँ न हों। 12 वहाँ रब के सामने तुम,
तुम्हारे बेटे-बेटियाँ, तुम्हारे ग़ुलाम और लौंडियाँ ख़ुशी
मनाएँ। अपने शहरों में आबाद लावियों को भी अपनी
ख़ुशी में शरीक करो, क्यूँकि उन के पास मौरूसी
ज़मीन नहीं होगी।
13 ख़बरदार, अपनी भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ हर
जगह पर पेश न करना 14 बल्कि सिर्फ़ उस जगह पर
जो रब क़बीलों में से चुनेगा। वहीं सब कुछ यूँ मना
जिस तरह मैं तुझे बताता हूँ।
15 लेकिन वह जानवर इस में शामिल नहीं हैं जो
तू क़ुर्बानी के तौर पर पेश नहीं करना चाहता बल्कि
सिर्फ़ खाना चाहता है। ऐसे जानवर तू आज़ादी से
अपने तमाम शहरों में ज़बह करके उस बरकत के

मुताबिक़ खा सकता है जो रब तेरे ख़ुदा ने तुझे दी है। ऐसा गोश्त हिरन और ग़ज़ाल के गोश्त की मानिन्द है यानी पाक और नापाक दोनों ही उसे खा सकते हैं। 16 लेकिन ख़ून न खाना। उसे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेल कर ज़ाए कर देना।

17 जो भी चीज़ें रब के लिए मख़्सूस की गई हैं उन्हें अपने शहरों में न खाना मसलन अनाज, अंगूर के रस और ज़ैतून के तेल का दसवाँ हिस्सा, मवेशियों के पहलौठे, मन्नत के हदिए, ख़ुशी से पेश की गई क़ुर्बानियाँ और उठाने वाली क़ुर्बानियाँ। 18 यह चीज़ें सिर्फ़ रब के हुज़ूर खाना यानी उस जगह पर जिसे वह मक़्दिस के लिए चुनेगा। वहीं तू अपने बेटे-बेटियों, ग़ुलामों, लौंडियों और अपने क़बाइली इलाक़े के लावियों के साथ जमा हो कर ख़ुशी मना कि रब ने हमारी मेहनत को बरकत दी है। 19 अपने मुल्क में लावियों की ज़रूरियात उम्र भर पूरी करने की फ़िक्र रख।

20 जब रब तेरा ख़ुदा अपने वादे के मुताबिक़ तेरी सरहद्दें बढ़ा देगा और तू गोश्त खाने की ख़्वाहिश रखेगा तो जिस तरह जी चाहे गोश्त खा सकेगा। 21 अगर तेरा घर उस मक़्दिस से दूर हो जिसे रब तेरा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा तो तू जिस तरह जी चाहे अपने शहरों में रब से मिले हुए मवेशियों को ज़बह करके खा सकता है। लेकिन ऐसा ही करना जैसा मैं ने हुक्म दिया है। 22 ऐसा गोश्त हिरन और ग़ज़ाल के गोश्त की मानिन्द है यानी पाक और नापाक दोनों ही उसे खा सकते हैं। 23 अलबत्ता गोश्त के साथ ख़ून न खाना, क्यूँकि ख़ून जानदार की जान है। उस की जान गोश्त के साथ न खाना। 24 ख़ून न खाना बल्कि उसे ज़मीन पर उंडेल कर ज़ाए कर देना। 25 उसे न खाना ताकि तुझे और तेरी औलाद को कामयाबी हासिल हो, क्यूँकि ऐसा करने से तू रब की नज़र में सहीह काम करेगा।

26 लेकिन जो चीज़ें रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं या जो तू ने मन्नत मान कर उस के लिए मख़्सूस की हैं लाज़िम है कि तू उन्हें उस जगह ले जाए जिसे रब मक़्दिस के लिए चुनेगा। 27 वहीं, रब अपने ख़ुदा की क़ुर्बानगाह पर अपनी भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ गोश्त और ख़ून समेत चढ़ा। ज़बह की क़ुर्बानियों का ख़ून क़ुर्बानगाह पर उंडेल देना, लेकिन उन का गोश्त तू खा सकता है।

28 जो भी हिदायात मैं तुझे दे रहा हूँ उन्हें एहतियात से पूरा कर। फिर तू और तेरी औलाद ख़ुशहाल रहेंगे, क्यूँकि तू वह कुछ करेगा जो रब तेरे ख़ुदा की नज़र में अच्छा और दुरुस्त है।

29 रब तेरा ख़ुदा उन क़ौमों को मिटा देगा जिन की तरफ़ तू बढ़ रहा है। तू उन्हें उन के मुल्क से निकालता जाएगा और ख़ुद उस में आबाद हो जाएगा। 30 लेकिन ख़बरदार, उन के ख़त्म होने के बाद भी उन के देवताओं के बारे में मालूमात हासिल न कर, वर्ना तू फंस जाएगा। मत कहना कि यह क़ौमें किस तरीक़े से अपने देवताओं की पूजा करती हैं? हम भी ऐसा ही करें। 31 ऐसा मत कर! यह क़ौमें ऐसे घिनौने तरीक़े से पूजा करती हैं जिन से रब नफ़रत करता है। वह अपने बच्चों को भी जला कर अपने देवताओं को पेश करते हैं।

32 कलाम की जो भी बात मैं तुम्हें पेश करता हूँ उस के ताबे रह कर उस पर अमल करो। न किसी बात का इज़ाफ़ा करना, न कोई बात निकालना।

देवताओं की तरफ़ लेजाने वालों से सुलूक

13 1 तेरे दरमियान ऐसे लोग उठ खड़े होंगे जो अपने आप को नबी या ख़्वाब देखने वाले कहेंगे। हो सकता है कि वह किसी इलाही निशान या मोजिज़े का एलान करें 2 जो वाक़ई वुजूद में आए। साथ साथ वह कहें, “आ, हम दीगर माबूदों की पूजा करें, हम उन की ख़िदमत करें जिन से तू अब तक वाक़िफ़ नहीं है।” 3 ऐसे लोगों की न सुन। इस से रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें आज़मा कर मालूम कर रहा है कि क्या तुम वाक़ई अपने पूरे दिल-ओ-जान से उस से प्यार करते हो। 4 तुम्हें रब अपने ख़ुदा की पैरवी करना और उसी का ख़ौफ़ मानना है। उस के

अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारो, उस की सुनो, उस की ख़िदमत करो, उस के साथ लिपटे रहो। 5 ऐसे नबियों या ख़्वाब देखने वालों को सज़ा-ए-मौत देना, क्यूँकि वह तुझे रब तुम्हारे ख़ुदा से बग़ावत करने पर उकसाना चाहते हैं, उसी से जिस ने फ़िद्या दे कर तुम्हें मिस्र की ग़ुलामी से बचाया और वहाँ से निकाल लाया। चूँकि वह तुझे उस राह से हटाना चाहते हैं जिसे रब तेरे ख़ुदा ने तेरे लिए मुक़र्रर किया है इस लिए लाज़िम है कि उन्हें सज़ा-ए-मौत दी जाए। ऐसी बुराई अपने दरमियान से मिटा देना।

6 हो सकता है कि तेरा सगा भाई, तेरा बेटा या बेटी, तेरी बीवी या तेरा क़रीबी दोस्त तुझे चुपके से वरग़लाने की कोशिश करे कि आ, हम जा कर दीगर माबूदों की पूजा करें, ऐसे देवताओं की जिन से न तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़ थे। 7 ख़्वाह इर्दगिर्द की या दूरदराज़ की क़ौमों के देवता हों, ख़्वाह दुनिया के एक सिरे के या दूसरे सिरे के माबूद हों, 8 किसी सूरत में अपनी रज़ामन्दी का इज़हार न कर, न उस की सुन। उस पर रहम न कर। न उसे बचाए रख, न उसे पनाह दे 9 बल्कि उसे सज़ा-ए-मौत दे। और उसे संगसार करते वक़्त पहले तेरा हाथ उस पर पत्थर फैंके, फिर ही बाक़ी तमाम लोग हिस्सा लें। 10 उसे ज़रूर पत्थरों से सज़ा-ए-मौत देना, क्यूँकि उस ने तुझे रब तेरे ख़ुदा से दूर करने की कोशिश की, उसी से जो तुझे मिस्र की ग़ुलामी से निकाल लाया। 11 फिर तमाम इस्राईल यह सुन कर डर जाएगा और आइन्दा तेरे दरमियान ऐसी शरीर हरकत करने की जुरअत नहीं करेगा।

12 जब तू उन शहरों में रहने लगेगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे दे रहा है तो शायद तुझे ख़बर मिल जाए 13 कि शरीर लोग तेरे दरमियान से उभर आए हैं जो अपने शहर के बाशिन्दों को यह कह कर ग़लत राह पर लाए हैं कि आओ, हम दीगर माबूदों की पूजा करें, ऐसे माबूदों की जिन से तुम वाक़िफ़ नहीं हो। 14 लाज़िम है कि तू दरयाफ़्त करके इस की तफ़्तीश करे और ख़ूब मालूम करे कि क्या हुआ है। अगर साबित हो जाए कि यह घिनौनी बात वाक़ई हुई है 15 तो फिर लाज़िम है कि तू शहर के तमाम बाशिन्दों को हलाक करे। उसे रब के सपुर्द करके सरासर तबाह करना, न सिर्फ़ उस के लोग बल्कि उस के मवेशी भी। 16 शहर का पूरा माल-ए-ग़नीमत चौक में इकट्ठा कर। फिर पूरे शहर को उस के माल समेत रब के लिए मख़्सूस करके जला देना। उसे दुबारा कभी न तामीर किया जाए बल्कि उस के खंडरात हमेशा तक रहें।

17 पूरा शहर रब के लिए मख़्सूस किया गया है, इस लिए उस की कोई भी चीज़ तेरे पास न पाई जाए। सिर्फ़ इस सूरत में रब का ग़ज़ब ठंडा हो जाएगा, और वह तुझ पर रहम करके अपनी मेहरबानी का इज़हार करेगा और तेरी तादाद बढ़ाएगा, जिस तरह उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा से वादा किया है। 18 लेकिन यह सब कुछ इस पर मब्नी है कि तू रब अपने ख़ुदा की सुने और उस के उन तमाम अह्काम पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। वही कुछ कर जो उस की नज़र में दुरुस्त है।

पाक और नापाक जानवर

14 1 तुम रब अपने ख़ुदा के फ़र्ज़न्द हो। अपने आप को मुर्दों के सबब से न ज़ख़्मी करो, न अपने सर के सामने वाले बाल मुंडवाओ। 2 क्यूँकि तू रब अपने ख़ुदा के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस क़ौम है। दुनिया की तमाम क़ौमों में से रब ने तुझे ही चुन कर अपनी मिलकियत बना लिया है।

3 कोई भी मकरूह चीज़ न खाना।

4 तुम बैल, भेड़-बकरी, 5 हिरन, ग़ज़ाल, मृग,
[d]पहाड़ी बकरी, महात, [e]ग़ज़ाल-ए-अफ़्रीक़ा [f]और
पहाड़ी बकरी खा सकते हो। 6 जिन के खुर या पाँओ
बिलकुल चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं उन्हें
खाने की इजाज़त है। 7 ऊँट, बिज्जू या ख़रगोश खाना
मना है। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं, क्यूँकि वह
जुगाली तो करते हैं लेकिन उन के खुर या पाँओ
चिरे हुए नहीं हैं। 8 सूअर न खाना। वह तुम्हारे लिए
नापाक है, क्यूँकि उस के खुर तो चिरे हुए हैं लेकिन
वह जुगाली नहीं करता। न उन का गोश्त खाना, न
उन की लाशों को छूना।

9 पानी में रहने वाले जानवर खाने के लिए जाइज़
हैं अगर उन के पर और छिलके हों। 10 लेकिन जिन
के पर या छिलके नहीं हैं वह तुम्हारे लिए नापाक हैं।

11 तुम हर पाक परिन्दा खा सकते हो। 12 लेकिन
ज़ैल के परिन्दे खाना मना है : उक़ाब, दढ़ियल गिद्ध,
काला गिद्ध, 13 लाल चील, काली चील, हर क़िस्म
का गिद्ध, 14 हर क़िस्म का कव्वा, 15 उक़ाबी उल्लू,
छोटे कान वाला उल्लू, बड़े कान वाला उल्लू, हर क़िस्म
का बाज़, 16 छोटा उल्लू, चिंघाड़ने वाला उल्लू, सफ़ेद
उल्लू, 17 दश्ती उल्लू, मिस्री गिद्ध, क़ूक़, 18 लक़्लक़, हर
क़िस्म का बूतीमार, हुदहुद और चमगादड़। [g]

19 तमाम पर रखने वाले कीड़े तुम्हारे लिए नापाक
हैं। उन्हें खाना मना है। 20 लेकिन तुम हर पाक परिन्दा
खा सकते हो।

21 जो जानवर ख़ुद-ब-ख़ुद मर जाए उसे न खाना।
तू उसे अपनी आबादी में रहने वाले किसी परदेसी
को दे या किसी अजनबी को बेच सकता है और वह
उसे खा सकता है। लेकिन तू उसे मत खाना, क्यूँकि
तू रब अपने ख़ुदा के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस क़ौम
है।

बकरी के बच्चे को उस की माँ के दूध में पकाना
मना है।

अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा मख़्सूस करना

22 लाज़िम है कि तू हर साल अपने खेतों की
पैदावार का दसवाँ हिस्सा रब के लिए अलग करे।
23 इस के लिए अपना अनाज, अंगूर का रस, ज़ैतून
का तेल और मवेशी के पहलौठे रब अपने ख़ुदा के
हुज़ूर ले आना यानी उस जगह जो वह अपने नाम की
सुकूनत के लिए चुनेगा। वहाँ यह चीज़ें क़ुर्बान करके
खा ताकि तू उम्र भर रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना
सीखे।

24 लेकिन हो सकता है कि जो जगह रब तेरा ख़ुदा
अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा वह तेरे घर से
हद से ज़्यादा दूर हो और रब तेरे ख़ुदा की बरकत
के बाइस मज़कूरा दसवाँ हिस्सा इतना ज़्यादा हो कि
तू उसे मक़्दिस तक नहीं पहुँचा सकता। 25 इस सूरत
में उसे बेच कर उस के पैसे उस जगह ले जा जो रब
तेरा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा।
26 वहाँ पहुँच कर उन पैसों से जो जी चाहे ख़रीदना,
ख़्वाह गाय-बैल, भेड़-बकरी, मै या मै जैसी कोई और
चीज़ क्यूँ न हो। फिर अपने घराने के साथ मिल कर
रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर यह चीज़ें खाना और ख़ुशी
मनाना। 27 ऐसे मौक़ों पर उन लावियों का ख़याल
रखना जो तेरे क़बाइली इलाक़े में रहते हैं, क्यूँकि
उन्हें मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।

---

[d]यह हिरन के मुशाबेह होता है लेकिन फ़ित्रतन मुख़्तलिफ़ होता है। इस के सींग खोखले, बेशाख और उनझड़ होते हैं। antelope। याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन जानवरों के अक्सर नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख़्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

[e]महात। दराज़क़द हिरनों की एक नौ जिस के सींग चक्करदार होते हैं। addax।

[f]ग़ज़ाल-ए-अफ़्रीक़ा। चिकारों की तीन इक़साम में से कोई जो अपने लम्बे और हल्क़ादार सींगों की वजह से मुम्ताज़ है। oryx।

[g]याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन परिन्दों के अक्सर नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख़्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

28 हर तीसरे साल अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा
अपने शहरों में जमा करना। 29 उसे लावियों को देना
जिन के पास मौरूसी ज़मीन नहीं है, नीज़ अपने शहरों
में आबाद परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को देना।
वह आएँ और खाना खा कर सेर हो जाएँ ताकि रब
तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत दे।

क़र्ज़दारों की बहाली का साल

15 1 हर सात साल के बाद एक दूसरे के कर्ज़े
मुआफ़ कर देना। 2 उस वक़्त जिस ने भी
किसी इस्राईली भाई को क़र्ज़ दिया है वह उसे मन्सूख़
करे। वह अपने पड़ोसी या भाई को पैसे वापस करने
पर मज्बूर न करे, क्यूँकि रब की ताज़ीम में क़र्ज़
मुआफ़ करने के साल का एलान किया गया है। 3 इस
साल में तू सिर्फ़ ग़ैरमुल्की क़र्ज़दारों को पैसे वापस
करने पर मज्बूर कर सकता है। अपने इस्राईली भाई
के तमाम क़र्ज़ मुआफ़ कर देना।

4 तेरे दरमियान कोई भी ग़रीब नहीं होना चाहिए,
क्यूँकि जब तू उस मुल्क में रहेगा जो रब तेरा ख़ुदा
तुझे मीरास में देने वाला है तो वह तुझे बहुत बरकत
देगा। 5 लेकिन शर्त यह है कि तू पूरे तौर पर उस की
सुने और एहतियात से उस के उन तमाम अह्काम
पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 6 फिर रब
तुम्हारा ख़ुदा तुझे अपने वादे के मुताबिक़ बरकत
देगा। तू किसी भी क़ौम से उधार नहीं लेगा बल्कि
बहुत सी क़ौमों को उधार देगा। कोई भी क़ौम तुझ
पर हुकूमत नहीं करेगी बल्कि तू बहुत सी क़ौमों पर
हुकूमत करेगा।

7 जब तू उस मुल्क में आबाद होगा जो रब तेरा ख़ुदा
तुझे देने वाला है तो अपने दरमियान रहने वाले ग़रीब
भाई से सख़्त सुलूक न करना, न कंजूस होना। 8 खुले
दिल से उस की मदद कर। जितनी उसे ज़रूरत है उसे
उधार के तौर पर दे। 9 ख़बरदार, ऐसा मत सोच कि
क़र्ज़ मुआफ़ करने का साल क़रीब है, इस लिए मैं उसे
कुछ नहीं दूँगा। अगर तू ऐसी शरीर बात अपने दिल
में सोचते हुए ज़रूरतमन्द भाई को क़र्ज़ देने से इन्कार
करे और वह रब के सामने तेरी शिकायत करे तो तू
क़ुसूरवार ठहरेगा। 10 उसे ज़रूर कुछ दे बल्कि ख़ुशी
से दे। फिर रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत देगा।
11 मुल्क में हमेशा ग़रीब और ज़रूरतमन्द लोग पाए
जाएंगे, इस लिए मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि खुले दिल से
अपने ग़रीब और ज़रूरतमन्द भाइयों की मदद कर।

ग़ुलामों को आज़ाद करने का फ़र्ज़

12 अगर कोई इस्राईली भाई या बहन अपने आप
को बेच कर तेरा ग़ुलाम बन जाए तो वह छः साल
तेरी ख़िदमत करे। लेकिन लाज़िम है कि सातवें साल
उसे आज़ाद कर दिया जाए। 13 आज़ाद करते वक़्त
उसे ख़ाली हाथ फ़ारिग़ न करना 14 बल्कि अपनी
भेड़-बकरियों, अनाज, तेल और मै से उसे फ़य्याज़ी
से कुछ दे, यानी उन चीज़ों में से जिन से रब तेरे ख़ुदा
ने तुझे बरकत दी है। 15 याद रख कि तू भी मिस्र में
ग़ुलाम था और कि रब तेरे ख़ुदा ने फ़िद्या दे कर तुझे
छुड़ाया। इसी लिए मैं आज तुझे यह हुक्म देता हूँ।

16 लेकिन मुमकिन है कि तेरा ग़ुलाम तुझे छोड़ना न
चाहे, क्यूँकि वह तुझ से और तेरे ख़ानदान से मुहब्बत
रखता है, और वह तेरे पास रह कर ख़ुशहाल है।
17 इस सूरत में उसे दरवाज़े के पास ले जा और उस
के कान की लौ चौखट के साथ लगा कर उसे सुताली
यानी तेज़ औज़ार से छेद दे। तब वह ज़िन्दगी भर तेरा
ग़ुलाम बना रहेगा। अपनी लौंडी के साथ भी ऐसा ही
करना।

18 अगर ग़ुलाम तुझे छः साल के बाद छोड़ना चाहे
तो बुरा न मानना। आख़िर अगर उस की जगह कोई
और वही काम तनख़्वाह के लिए करता तो तेरे
अख़्राजात दुगने होते। उसे आज़ाद करना तो रब तेरा
ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत देगा।

जानवरों के पहलौठे मख़्सूस हैं

19 अपनी गायों और भेड़-बकरियों के नर पहलौठे
रब अपने ख़ुदा के लिए मख़्सूस करना। न गाय के
पहलौठे को काम के लिए इस्तेमाल करना, न भेड़ के

पहलौठे के बाल कतरना। 20 हर साल ऐसे बच्चे उस
जगह ले जा जो रब अपने मक़्दिस के लिए चुनेगा।
वहाँ उन्हें रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर अपने पूरे ख़ानदान
समेत खाना।
21 अगर ऐसे जानवर में कोई ख़राबी हो, वह अंधा
या लंगड़ा हो या उस में कोई और नुक़्स हो तो उसे रब
अपने ख़ुदा के लिए क़ुर्बान न करना। 22 ऐसे जानवर
तू घर में ज़बह करके खा सकता है। वह हिरन और
ग़ज़ाल की मानिन्द हैं जिन्हें तू खा तो सकता है
लेकिन क़ुर्बानी के तौर पर पेश नहीं कर सकता।
पाक और नापाक शख़्स दोनों उसे खा सकते हैं।
23 लेकिन ख़ून न खाना। उसे पानी की तरह ज़मीन
पर उंडेल कर ज़ाए कर देना।

फ़सह की ईद

16 1 अबीब के महीने [h]में रब अपने ख़ुदा की
ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाना, क्यूँकि इस
महीने में वह तुझे रात के वक़्त मिस्र से निकाल लाया।
2 उस जगह जमा हो जा जो रब अपने नाम की सुकूनत
के लिए चुनेगा। उसे क़ुर्बानी के लिए भेड़-बकरियाँ
या गाय-बैल पेश करना। 3 गोश्त के साथ बेख़मीरी
रोटी खाना। सात दिन तक यही रोटी खा, बिलकुल
उसी तरह जिस तरह तू ने किया जब जल्दी जल्दी
मिस्र से निकला। मुसीबत की यह रोटी इस लिए खा
ताकि वह दिन तेरे जीते जी याद रहे जब तू मिस्र से
रवाना हुआ। 4 लाज़िम है कि ईद के हफ़्ते के दौरान
तेरे पूरे मुल्क में ख़मीर न पाया जाए।
जो क़ुर्बानी तू ईद के पहले दिन की शाम को पेश
करे उस का गोश्त उसी वक़्त खा ले। अगली सुब्ह
तक कुछ बाक़ी न रह जाए। 5 फ़सह की क़ुर्बानी
किसी भी शहर में जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा न
चढ़ाना 6 बल्कि सिर्फ़ उस जगह जो वह अपने नाम
की सुकूनत के लिए चुनेगा। मिस्र से निकलते वक़्त
की तरह क़ुर्बानी के जानवर को सूरज डूबते वक़्त
ज़बह कर। 7 फिर उसे भून कर उस जगह खाना जो
रब तेरा ख़ुदा चुनेगा। अगली सुब्ह अपने घर वापस
चला जा। 8 ईद के पहले छः दिन बेख़मीरी रोटी खाता
रह। सातवें दिन काम न करना बल्कि रब अपने ख़ुदा
की इबादत के लिए जमा हो जाना।

फ़सल की कटाई की ईद

9 जब अनाज की फ़सल की कटाई शुरू होगी तो
पहले दिन के सात हफ़्ते बाद 10 फ़सल की कटाई
की ईद मनाना। रब अपने ख़ुदा को उतना पेश कर
जितना जी चाहे। वह उस बरकत के मुताबिक़ हो
जो उस ने तुझे दी है। 11 इस के लिए भी उस जगह
जमा हो जा जो रब अपने नाम की सुकूनत के लिए
चुनेगा। वहाँ उस के हुज़ूर ख़ुशी मना। तेरे बाल-बच्चे,
तेरे ग़ुलाम और लौंडियाँ और तेरे शहरों में रहने वाले
लावी, परदेसी, यतीम और बेवाएँ सब तेरी ख़ुशी में
शरीक हों। 12 इन अह्काम पर ज़रूर अमल करना
और मत भूलना कि तू मिस्र में ग़ुलाम था।

झोंपड़ियों की ईद

13 अनाज गाहने और अंगूर का रस निकालने के
बाद झोंपड़ियों की ईद मनाना जिस का दौरानिया
सात दिन हो। 14 ईद के मौक़े पर ख़ुशी मनाना। तेरे
बाल-बच्चे, तेरे ग़ुलाम और लौंडियाँ और तेरे शहरों
में बसने वाले लावी, परदेसी, यतीम और बेवाएँ सब
तेरी ख़ुशी में शरीक हों। 15 जो जगह रब तेरा ख़ुदा
मक़्दिस के लिए चुनेगा वहाँ उस की ताज़ीम में सात
दिन तक यह ईद मनाना। क्यूँकि रब तेरा ख़ुदा तेरी
तमाम फ़सलों और मेहनत को बरकत देगा, इस लिए
ख़ूब ख़ुशी मनाना।
16 इस्राईल के तमाम मर्द साल में तीन मर्तबा उस
मक़्दिस पर हाज़िर हो जाएँ जो रब तेरा ख़ुदा चुनेगा
यानी बेख़मीरी रोटी की ईद, फ़सल की कटाई की
ईद और झोंपड़ियों की ईद पर। कोई भी रब के

[h]मार्च ता अप्रैल।

हुज़ूर ख़ाली हाथ न आए। 17 हर कोई उस बरकत
के मुताबिक़ दे जो रब तेरे ख़ुदा ने उसे दी है।

क़ाज़ी मुक़र्रर करना

18 अपने अपने क़बाइली इलाक़े में क़ाज़ी और
निगहबान मुक़र्रर कर। वह हर उस शहर में हों
जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा। वह इन्साफ़ से लोगों
की अदालत करें। 19 न किसी के हुक़ूक़ मारना, न
जानिबदारी दिखाना। रिश्वत क़बूल न करना, क्यूँकि
रिश्वत दानिशमन्दों को अंधा कर देती और रास्तबाज़
की बातें पलट देती है। 20 सिर्फ़ और सिर्फ़ इन्साफ़
के मुताबिक़ चल ताकि तू जीता रहे और उस मुल्क
पर क़ब्ज़ा करे जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा।

बुतपरस्ती की सज़ा

21 जहाँ तू रब अपने ख़ुदा के लिए क़ुर्बानगाह
बनाएगा वहाँ न यसीरत देवी की पूजा के लिए लकड़ी
का खम्बा 22 और न कोई ऐसा पत्थर खड़ा करना
जिस की पूजा लोग करते हैं। रब तेरा ख़ुदा इन चीज़ों
से नफ़रत रखता है।

17 1 रब अपने ख़ुदा को नाक़िस गाय-बैल या
भेड़-बकरी पेश न करना, क्यूँकि वह ऐसी
क़ुर्बानी से नफ़रत रखता है।

2 जब तू उन शहरों में आबाद हो जाएगा जो रब
तेरा ख़ुदा तुझे देगा तो हो सकता है कि तेरे दरमियान
कोई मर्द या औरत रब तेरे ख़ुदा का अह्द तोड़ कर
वह कुछ करे जो उसे बुरा लगे। 3 मसलन वह दीगर
माबूदों को या सूरज, चाँद या सितारों के पूरे लश्कर
को सिज्दा करे, हालाँकि मैं ने यह मना किया है।
4 जब भी तुझे इस क़िस्म की ख़बर मिले तो इस का
पूरा खोज लगा। अगर बात दुरुस्त निकले और ऐसी
घिनौनी हरकत वाक़ई इस्राईल में की गई हो 5 तो
क़ुसूरवार को शहर के बाहर ले जा कर संगसार कर
देना। 6 लेकिन लाज़िम है कि पहले कम अज़ कम दो
या तीन लोग गवाही दें कि उस ने ऐसा ही किया है।
उसे सज़ा-ए-मौत देने के लिए एक गवाह काफ़ी नहीं।
7 पहले गवाह उस पर पत्थर फैंकें, इस के बाद बाक़ी
तमाम लोग उसे संगसार करें। यूँ तू अपने दरमियान
से बुराई मिटा देगा।

मक़्दिस में आलातरीन अदालत

8 अगर तेरे शहर के क़ाज़ियों के लिए किसी मुक़द्दमे
का फ़ैसला करना मुश्किल हो तो उस मक़्दिस में
आ कर अपना मुआमला पेश कर जो रब तेरा ख़ुदा
चुनेगा, ख़्वाह किसी को क़त्ल किया गया हो, उसे
ज़ख़्मी कर दिया गया हो या कोई और मसला हो।
9 लावी के क़बीले के इमामों और मक़्दिस में ख़िदमत
करने वाले क़ाज़ी को अपना मुक़द्दमा पेश कर, और
वह फ़ैसला करें। 10 जो फ़ैसला वह उस मक़्दिस
में करेंगे जो रब चुनेगा उसे मानना पड़ेगा। जो भी
हिदायत वह दें उस पर एहतियात से अमल कर।
11 शरीअत की जो भी बात वह तुझे सिखाएँ और जो
भी फ़ैसला वह दें उस पर अमल कर। जो कुछ भी वह
तुझे बताएँ उस से न दाईं और न बाईं तरफ़ मुड़ना।
12 जो मक़्दिस में रब तेरे ख़ुदा की ख़िदमत करने
वाले क़ाज़ी या इमाम को हक़ीर जान कर उन की
नहीं सुनता उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। यूँ तू इस्राईल से
बुराई मिटा देगा। 13 फिर तमाम लोग यह सुन कर डर
जाएंगे और आइन्दा ऐसी गुस्ताख़ी करने की जुरअत
नहीं करेंगे।

बादशाह के बारे में उसूल

14 तू जल्द ही उस मुल्क में दाख़िल होगा जो रब
तेरा ख़ुदा तुझे देने वाला है। जब तू उस पर क़ब्ज़ा
करके उस में आबाद हो जाएगा तो हो सकता है कि तू
एक दिन कहे, “आओ हम इर्दगिर्द की तमाम क़ौमों
की तरह बादशाह मुक़र्रर करें जो हम पर हुकूमत
करे।” 15 अगर तू ऐसा करे तो सिर्फ़ वह शख़्स मुक़र्रर
कर जिसे रब तेरा ख़ुदा चुनेगा। वह परदेसी न हो
बल्कि तेरा अपना इस्राईली भाई हो। 16 बादशाह
बहुत ज़्यादा घोड़े न रखे, न अपने लोगों को उन्हें
ख़रीदने के लिए मिस्र भेजे। क्यूँकि रब ने तुझ से कहा

है कि कभी वहाँ वापस न जाना। 17 तेरा बादशाह
ज़्यादा बीवियाँ भी न रखे, वर्ना उस का दिल रब से
दूर हो जाएगा। और वह हद से ज़्यादा सोना-चाँदी
जमा न करे।

18 तख़्तनशीन होते वक़्त वह लावी के क़बीले
के इमामों के पास पड़ी इस शरीअत की नक़ल
लिखवाए। 19 यह किताब उस के पास महफ़ूज़ रहे,
और वह उम्र भर रोज़ाना इसे पढ़ता रहे ताकि रब
अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना सीखे। तब वह शरीअत
की तमाम बातों की पैरवी करेगा, 20 अपने आप को
अपने इस्राईली भाइयों से ज़्यादा अहम नहीं समझेगा
और किसी तरह भी शरीअत से हट कर काम नहीं
करेगा। नतीजे में वह और उस की औलाद बहुत अर्से
तक इस्राईल पर हुकूमत करेंगे।

इमामों और लावियों का हिस्सा

18 1 इस्राईल के हर क़बीले को मीरास में उस
का अपना इलाक़ा मिलेगा सिवाए लावी के
क़बीले के जिस में इमाम भी शामिल हैं। वह जलने
वाली और दीगर क़ुर्बानियों में से अपना हिस्सा ले
कर गुज़ारा करें। 2 उन के पास दूसरों की तरह मौरूसी
ज़मीन नहीं होगी बल्कि रब ख़ुद उन का मौरूसी
हिस्सा होगा। यह उस ने वादा करके कहा है।

3 जब भी किसी बैल या भेड़ को क़ुर्बान किया जाए
तो इमामों को उस का शाना, जबड़े और ओझड़ी
मिलने का हक़ है। 4 अपनी फ़सलों का पहला फल
भी उन्हें देना यानी अनाज, मै, ज़ैतून का तेल और
भेड़ों की पहली कतरी हुई ऊन। 5 क्यूँकि रब ने तेरे
तमाम क़बीलों में से लावी के क़बीले को ही मक़्दिस
में रब के नाम में ख़िदमत करने के लिए चुना है।
यह हमेशा के लिए उन की और उन की औलाद की
ज़िम्मादारी रहेगी।

6 कुछ लावी मक़्दिस के पास नहीं बल्कि इस्राईल
के मुख़्तलिफ़ शहरों में रहेंगे। अगर उन में से कोई उस
जगह आना चाहे जो रब मक़्दिस के लिए चुनेगा 7 तो
वह वहाँ के ख़िदमत करने वाले लावियों की तरह
मक़्दिस में रब अपने ख़ुदा के नाम में ख़िदमत कर
सकता है। 8 उसे क़ुर्बानियों में से दूसरों के बराबर
लावियों का हिस्सा मिलना है, ख़्वाह उसे ख़ानदानी
मिलकियत बेचने से पैसे मिल गए हों या नहीं।

जादूगरी मना है

9 जब तू उस मुल्क में दाख़िल होगा जो रब तेरा
ख़ुदा तुझे दे रहा है तो वहाँ की रहने वाली क़ौमों के
घिनौने दस्तूर न अपनाना। 10 तेरे दरमियान कोई भी
अपने बेटे या बेटी को क़ुर्बानी के तौर पर न जलाए।
न कोई ग़ैबदानी करे, न फ़ाल या शुगून निकाले
या जादूगरी करे। 11 इसी तरह मंत्र पढ़ना, हाज़िरात
करना, क़िस्मत का हाल बताना या मुर्दों की रूहों से
राबिता करना सख़्त मना है। 12 जो भी ऐसा करे वह
रब की नज़र में क़ाबिल-ए-घिन है। इन ही मकरूह
दस्तूरों की वजह से रब तेरा ख़ुदा तेरे आगे से उन
क़ौमों को निकाल देगा। 13 इस लिए लाज़िम है कि
तू रब अपने ख़ुदा के सामने बेक़ुसूर रहे।

नबी का वादा

14 जिन क़ौमों को तू निकालने वाला है वह उन की
सुनती हैं जो फ़ाल निकालते और ग़ैबदानी करते हैं।
लेकिन रब तेरे ख़ुदा ने तुझे ऐसा करने की इजाज़त
नहीं दी।

15 रब तेरा ख़ुदा तेरे वास्ते तेरे भाइयों में से मुझ
जैसे नबी को बरपा करेगा। उस की सुनना। 16 क्यूँकि
होरिब यानी सीना पहाड़ पर जमा होते वक़्त तू
ने ख़ुद रब अपने ख़ुदा से दरख़्वास्त की, “न मैं
मज़ीद रब अपने ख़ुदा की आवाज़ सुनना चाहता,
न यह भड़कती हुई आग देखना चाहता हूँ, वर्ना मर
जाऊँगा।” 17 तब रब ने मुझ से कहा, “जो कुछ वह
कहते हैं वह ठीक है। 18 आइन्दा मैं उन में से तुझ
जैसा नबी खड़ा करूँगा। मैं अपने अल्फ़ाज़ उस के
मुँह में डाल दूँगा, और वह मेरी हर बात उन तक
पहुँचाएगा। 19 जब वह नबी मेरे नाम में कुछ कहे तो
लाज़िम है कि तू उस की सुन। जो नहीं सुनेगा उस से

मैं ख़ुद जवाब तलब करूँगा। 20 लेकिन अगर कोई
नबी गुस्ताख़ हो कर मेरे नाम में कोई बात कहे जो मैं
ने उसे बताने को नहीं कहा था तो उसे सज़ा-ए-मौत
देनी है। इसी तरह उस नबी को भी हलाक कर देना
है जो दीगर माबूदों के नाम में बात करे।”
21 शायद तेरे ज़हन में सवाल उभर आए कि हम
किस तरह मालूम कर सकते हैं कि कोई कलाम
वाक़ई रब की तरफ़ से है या नहीं। 22 जवाब यह
है कि अगर नबी रब के नाम में कुछ कहे और वह
पूरा न हो जाए तो मतलब है कि नबी की बात रब की
तरफ़ से नहीं है बल्कि उस ने गुस्ताख़ी करके बात
की है। इस सूरत में उस से मत डरना।

पनाह के शहर

19 1 रब तेरा ख़ुदा उस मुल्क में आबाद क़ौमों
को तबाह करेगा जो वह तुझे दे रहा है।
जब तू उन्हें भगा कर उन के शहरों और घरों में
आबाद हो जाएगा 2–3 तो पूरे मुल्क को तीन हिस्सों में
तक़्सीम कर। हर हिस्से में एक मर्कज़ी शहर मुक़र्रर
कर। उन तक पहुँचाने वाले रास्ते साफ़-सुथरे रखना।
इन शहरों में हर वह शख़्स पनाह ले सकता है जिस
के हाथ से कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ है।
4 वह ऐसे शहर में जा कर इन्तिक़ाम लेने वालों से
महफ़ूज़ रहेगा। शर्त यह है कि उस ने न क़सदन और
न दुश्मनी के बाइस किसी को मार दिया हो।
5 मसलन दो आदमी जंगल में दरख़्त काट रहे हैं।
कुल्हाड़ी चलाते वक़्त एक की कुल्हाड़ी दस्ते से
निकल कर उस के साथी को लग जाए और वह मर
जाए। ऐसा शख़्स फ़रार हो कर ऐसे शहर में पनाह
ले सकता है ताकि बचा रहे। 6 इस लिए ज़रूरी है
कि ऐसे शहरों का फ़ासिला ज़्यादा न हो। क्यूँकि
जब इन्तिक़ाम लेने वाला उस का ताक़्क़ुब करेगा तो
ख़तरा है कि वह तैश में उसे पकड़ कर मार डाले,
अगरचे भागने वाला बेक़ुसूर है। जो कुछ उस ने किया
वह दुश्मनी के सबब से नहीं बल्कि ग़ैरइरादी तौर पर
हुआ। 7 इस लिए लाज़िम है कि तू पनाह के तीन शहर
अलग कर ले।
8 बाद में रब तेरा ख़ुदा तेरी सरहद्दें मज़ीद बढ़ा देगा,
क्यूँकि यही वादा उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा
से किया है। अपने वादे के मुताबिक़ वह तुझे पूरा
मुल्क देगा, 9 अलबत्ता शर्त यह है कि तू एहतियात से
उन तमाम अह्काम की पैरवी करे जो मैं तुझे आज
दे रहा हूँ। दूसरे अल्फ़ाज़ में शर्त यह है कि तू रब
अपने ख़ुदा को प्यार करे और हमेशा उस की राहों
में चलता रहे। अगर तू ऐसा ही करे और नतीजतन
रब का वादा पूरा हो जाए तो लाज़िम है कि तू पनाह
के तीन और शहर अलग कर ले। 10 वर्ना तेरे मुल्क
में जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है बेक़ुसूर
लोगों को जान से मारा जाएगा और तू ख़ुद ज़िम्मादार
ठहरेगा।
11 लेकिन हो सकता है कोई दुश्मनी के बाइस
किसी की ताक में बैठ जाए और उस पर हम्ला करके
उसे मार डाले। अगर क़ातिल पनाह के किसी शहर
में भाग कर पनाह ले 12 तो उस के शहर के बुज़ुर्ग
इत्तिला दें कि उसे वापस लाया जाए। उसे इन्तिक़ाम
लेने वाले के हवाले किया जाए ताकि उसे सज़ा-ए-
मौत मिले। 13 उस पर रहम मत करना। लाज़िम है
कि तू इस्राईल में से बेक़ुसूर की मौत का दाग़ मिटाए
ताकि तू ख़ुशहाल रहे।

ज़मीनों की हद्दें

14 जब तू उस मुल्क में रहेगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे
मीरास में देगा ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे तो ज़मीन
की वह हद्दें आगे पीछे न करना जो तेरे बापदादा ने
मुक़र्रर कीं।

अदालत में गवाह

15 तू किसी को एक ही गवाह के कहने पर
क़ुसूरवार नहीं ठहरा सकता। जो भी जुर्म सरज़द हुआ
है, कम अज़ कम दो या तीन गवाहों की ज़रूरत है।
वर्ना तू उसे क़ुसूरवार नहीं ठहरा सकता।

16 अगर जिस पर इल्ज़ाम लगाया गया है इन्कार
करके दावा करे कि गवाह झूट बोल रहा है 17 तो
दोनों मक़्दिस में रब के हुज़ूर आ कर ख़िदमत करने
वाले इमामों और क़ाज़ियों को अपना मुआमला पेश
करें। 18 क़ाज़ी इस का ख़ूब खोज लगाएँ। अगर बात
दुरुस्त निकले कि गवाह ने झूट बोल कर अपने भाई
पर ग़लत इल्ज़ाम लगाया है 19 तो उस के साथ वह
कुछ किया जाए जो वह अपने भाई के लिए चाह
रहा था। यूँ तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।
20 फिर तमाम बाक़ी लोग यह सुन कर डर जाएंगे और
आइन्दा तेरे दरमियान ऐसी ग़लत हरकत करने की
जुरअत नहीं करेंगे। 21 क़ुसूरवार पर रहम न करना।
उसूल यह हो कि जान के बदले जान, आँख के बदले
आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँओ
के बदले पाँओ।

जंग के उसूल

20 1 जब तू जंग के लिए निकल कर देखता
है कि दुश्मन तादाद में ज़्यादा हैं और उन
के पास घोड़े और रथ भी हैं तो मत डरना। रब तेरा
ख़ुदा जो तुझे मिस्र से निकाल लाया अब भी तेरे साथ
है। 2 जंग के लिए निकलने से पहले इमाम सामने
आए और फ़ौज से मुख़ातिब हो कर 3 कहे, "सुन ऐ
इस्राईल! आज तुम अपने दुश्मन से लड़ने जा रहे
हो। उन के सबब से परेशान न हो। उन से न ख़ौफ़
खाओ, न घबराओ, 4 क्यूँकि रब तुम्हारा ख़ुदा ख़ुद
तुम्हारे साथ जा कर दुश्मन से लड़ेगा। वही तुम्हें फ़त्ह
बख़्शेगा।"

5 फिर निगहबान फ़ौज से मुख़ातिब हों, "क्या यहाँ
कोई है जिस ने हाल में अपना नया घर मुकम्मल
किया लेकिन उसे मख़्सूस करने का मौक़ा न मिला?
वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह
जंग के दौरान मारा जाए और कोई और घर को
मख़्सूस करके उस में बसने लगे। 6 क्या कोई है जिस
ने अंगूर का बाग़ लगा कर इस वक़्त उस की पहली
फ़सल के इन्तिज़ार में है? वह अपने घर वापस चला
जाए। ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और कोई
और बाग़ का फ़ाइदा उठाए। 7 क्या कोई है जिस की
मंगनी हुई है और जो इस वक़्त शादी के इन्तिज़ार में
है? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि
वह जंग में मारा जाए और कोई और उस की मंगेतर
से शादी करे।"

8 निगहबान कहें, "क्या कोई ख़ौफ़ज़दा या परेशान
है? वह अपने घर वापस चला जाए ताकि अपने
साथियों को परेशान न करे।" 9 इस के बाद फ़ौजियों
पर अफ़सर मुक़र्रर किए जाएँ।

10 किसी शहर पर हम्ला करने से पहले उस के
बाशिन्दों को हथियार डाल देने का मौक़ा देना।
11 अगर वह मान जाएँ और अपने दरवाज़े खोल दें तो
वह तेरे लिए बेगार में काम करके तेरी ख़िदमत करें।
12 लेकिन अगर वह हथियार डालने से इन्कार करें
और जंग छिड़ जाए तो शहर का मुहासरा कर। 13 जब
रब तेरा ख़ुदा तुझे शहर पर फ़त्ह देगा तो उस के तमाम
मर्दों को हलाक कर देना। 14 तू तमाम माल-ए-ग़नीमत
औरतों, बच्चों और मवेशियों समेत रख सकता है।
दुश्मन की जो चीज़ें रब ने तेरे हवाले कर दी हैं उन
सब को तू इस्तेमाल कर सकता है। 15 यूँ उन शहरों
से निपटना जो तेरे अपने मुल्क से बाहर हैं।

16 लेकिन जो शहर उस मुल्क में वाक़े हैं जो रब तेरा
ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है, उन के तमाम जानदारों
को हलाक कर देना। 17 उन्हें रब के सपुर्द करके
मुकम्मल तौर पर हलाक करना, जिस तरह रब तेरे
ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है। इस में हित्ती, अमोरी,
कनआनी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी शामिल हैं।
18 अगर तू ऐसा न करे तो वह तुम्हें रब तुम्हारे ख़ुदा
का गुनाह करने पर उकसाएँगे। जो घिनौनी हरकतें
वह अपने देवताओं की पूजा करते वक़्त करते हैं
उन्हें वह तुम्हें भी सिखाएँगे।

19 शहर का मुहासरा करते वक़्त इर्दगिर्द के फलदार
दरख़्तों को काट कर तबाह न कर देना ख़्वाह बड़ी
देर भी हो जाए, वर्ना तू उन का फल नहीं खा सकेगा।
उन्हें न काटना। क्या दरख़्त तेरे दुश्मन हैं जिन का

मुहासरा करना है? हरगिज़ नहीं! 20 उन दरख़्तों की
और बात है जो फल नहीं लाते। उन्हें तू काट कर
मुहासरे के लिए इस्तेमाल कर सकता है जब तक
शहर शिकस्त न खाए।

नामालूम क़त्ल का कफ़्फ़ारा

21 1 जब तू उस मुल्क में आबाद होगा जो रब
तुझे मीरास में दे रहा है ताकि तू उस पर
क़ब्ज़ा करे तो हो सकता है कि कोई लाश खुले मैदान
में कहीं पड़ी पाई जाए। अगर मालूम न हो कि किस
ने उसे क़त्ल किया है 2 तो पहले इर्दगिर्द के शहरों
के बुज़ुर्ग और क़ाज़ी आ कर पता करें कि कौन सा
शहर लाश के ज़्यादा क़रीब है। 3 फिर उस शहर के
बुज़ुर्ग एक जवान गाय चुन लें जो कभी काम के लिए
इस्तेमाल नहीं हुई। 4 वह उसे एक ऐसी वादी में ले
जाएँ जिस में न कभी हल चलाया गया, न पौदे लगाए
गए हों। वादी में ऐसी नहर हो जो पूरा साल बहती रहे।
वहीं बुज़ुर्ग जवान गाय की गर्दन तोड़ डालें।

5 फिर लावी के क़बीले के इमाम क़रीब आएँ।
क्यूँकि रब तुम्हारे ख़ुदा ने उन्हें चुन लिया है ताकि
वह ख़िदमत करें, रब के नाम से बरकत दें और
तमाम झगड़ों और हम्लों का फ़ैसला करें। 6 उन के
देखते देखते शहर के बुज़ुर्ग अपने हाथ गाय की
लाश के ऊपर धो लें। 7 साथ साथ वह कहें, "हम
ने इस शख़्स को क़त्ल नहीं किया, न हम ने देखा कि
किस ने यह किया। 8 ऐ रब, अपनी क़ौम इस्राईल
का यह कफ़्फ़ारा क़बूल फ़रमा जिसे तू ने फ़िद्या दे
कर छुड़ाया है। अपनी क़ौम इस्राईल को इस बेक़ुसूर
के क़त्ल का क़ुसूरवार न ठहरा।" तब मक़्तूल का
कफ़्फ़ारा दिया जाएगा।

9 यूँ तू ऐसे बेक़ुसूर शख़्स के क़त्ल का दाग़ अपने
दरमियान से मिटा देगा। क्यूँकि तू ने वही कुछ किया
होगा जो रब की नज़र में दुरुस्त है।

जंगी क़ैदी औरत से शादी

10 हो सकता है कि तू अपने दुश्मन से जंग करे
और रब तुम्हारा ख़ुदा तुझे फ़त्ह बख़्शे। जंगी क़ैदियों
को जमा करते वक़्त 11 तुझे उन में से एक ख़ूबसूरत
औरत नज़र आती है जिस के साथ तेरा दिल लग
जाता है। तू उस से शादी कर सकता है। 12 उसे
अपने घर में ले आ। वहाँ वह अपने सर के बालों
को मुंडवाए, अपने नाख़ुन तराशे 13 और अपने वह
कपड़े उतारे जो वह पहने हुए थी जब उसे क़ैद किया
गया। वह पूरे एक महीने तक अपने वालिदैन के लिए
मातम करे। फिर तू उस के पास जा कर उस के साथ
शादी कर सकता है।

14 अगर वह तुझे किसी वक़्त पसन्द न आए तो
उसे जाने दे। वह वहाँ जाए जहाँ उस का जी चाहे।
तुझे उसे बेचने या उस से लौंडी का सा सुलूक करने
की इजाज़त नहीं है, क्यूँकि तू ने उसे मज्बूर करके
उस से शादी की है।

पहलौठे के हुक़ूक़

15 हो सकता है किसी मर्द की दो बीवियाँ हों।
एक को वह प्यार करता है, दूसरी को नहीं। दोनों
बीवियों के बेटे पैदा हुए हैं, लेकिन जिस बीवी से
शौहर मुहब्बत नहीं करता उस का बेटा सब से पहले
पैदा हुआ। 16 जब बाप अपनी मिलकियत वसियत
में तक़्सीम करता है तो लाज़िम है कि वह अपने सब
से बड़े बेटे का मौरूसी हक़ पूरा करे। उसे पहलौठे
का यह हक़ उस बीवी के बेटे को मुन्तक़िल करने
की इजाज़त नहीं जिसे वह प्यार करता है। 17 उसे
तस्लीम करना है कि उस बीवी का बेटा सब से बड़ा
है, जिस से वह मुहब्बत नहीं करता। नतीजतन उसे
उस बेटे को दूसरे बेटों की निस्बत दुगना हिस्सा देना
पड़ेगा, क्यूँकि वह अपने बाप की ताक़त का पहला
इज़हार है। उसे पहलौठे का हक़ हासिल है।

सरकश बेटा

18 हो सकता है कि किसी का बेटा हटधर्म और
सरकश हो। वह अपने वालिदैन की इताअत नहीं
करता और उन के तम्बीह करने और सज़ा देने पर
भी उन की नहीं सुनता। 19 इस सूरत में वालिदैन उसे
पकड़ कर शहर के दरवाज़े पर ले जाएँ जहाँ बुज़ुर्ग
जमा होते हैं। 20 वह बुज़ुर्गों से कहें, "हमारा बेटा
हटधर्म और सरकश है। वह हमारी इताअत नहीं
करता बल्कि अय्याश और शराबी है।" 21 यह सुन
कर शहर के तमाम मर्द उसे संगसार करें। यूँ तू अपने
दरमियान से बुराई मिटा देगा। तमाम इस्राईल यह सुन
कर डर जाएगा।

सज़ा-ए-मौत पाने वाले को उसी दिन दफ़नाना है

22 जब तू किसी को सज़ा-ए-मौत दे कर उस की
लाश किसी लकड़ी या दरख़्त से लटकाता है 23 तो
उसे अगली सुब्ह तक वहाँ न छोड़ना। हर सूरत में
उसे उसी दिन दफ़ना देना, क्यूँकि जिसे भी दरख़्त से
लटकाया गया है उस पर अल्लाह की लानत है। अगर
उसे उसी दिन दफ़नाया न जाए तो तू उस मुल्क को
नापाक कर देगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे
रहा है।

मदद करने के लिए तय्यार रहना

22 1 अगर तुझे किसी हमवतन भाई का बैल
या भेड़-बकरी भटकी हुई नज़र आए तो उसे
नज़रअन्दाज़ न करना बल्कि मालिक के पास वापस
ले जाना। 2 अगर मालिक का घर क़रीब न हो या तुझे
मालूम न हो कि मालिक कौन है तो जानवर को अपने
घर ला कर उस वक़्त तक सँभाले रखना जब तक
कि मालिक उसे ढूँडने न आए। फिर जानवर को उसे
वापस कर देना। 3 यही कुछ कर अगर तेरे हमवतन
भाई का गधा भटका हुआ नज़र आए या उस का
गुमशुदा कोट या कोई और चीज़ कहीं नज़र आए।
उसे नज़रअन्दाज़ न करना।
4 अगर तू देखे कि किसी हमवतन का गधा या बैल
रास्ते में गिर गया है तो उसे नज़रअन्दाज़ न करना।
जानवर को खड़ा करने में अपने भाई की मदद कर।

क़ुदरती इन्तिज़ाम के तहत रहना

5 औरत के लिए मर्दों के कपड़े पहनना मना है। इसी
तरह मर्द के लिए औरतों के कपड़े पहनना भी मना
है। जो ऐसा करता है उस से रब तेरे ख़ुदा को घिन
आती है।
6 अगर तुझे कहीं रास्ते में, किसी दरख़्त में या
ज़मीन पर घोंसला नज़र आए और परिन्दा अपने बच्चों
या अंडों पर बैठा हुआ हो तो माँ को बच्चों समेत न
पकड़ना। 7 तुझे बच्चे ले जाने की इजाज़त है लेकिन
माँ को छोड़ देना ताकि तू ख़ुशहाल और देर तक
जीता रहे।
8 नया मकान तामीर करते वक़्त छत पर चारों
तरफ़ दीवार बनाना। वर्ना तू उस शख़्स की मौत का
ज़िम्मादार ठहरेगा जो तेरी छत पर से गिर जाए।
9 अपने अंगूर के बाग़ में दो क़िस्म के बीज न बोना।
वर्ना सब कुछ मक़्दिस के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
होगा, न सिर्फ़ वह फ़सल जो तुम ने अंगूर के इलावा
लगाई बल्कि अंगूर भी।
10 बैल और गधे को जोड़ कर हल न चलाना।
11 ऐसे कपड़े न पहनना जिन में बनते वक़्त ऊन
और कतान मिलाए गए हैं।
12 अपनी चादर के चारों कोनों पर फुन्दने लगाना।

इज़्दिवाजी ज़िन्दगी की हिफ़ाज़त

13 अगर कोई आदमी शादी करने के थोड़ी देर बाद
अपनी बीवी को पसन्द न करे 14 और फिर उस की
बदनामी करके कहे, "इस औरत से शादी करने के
बाद मुझे पता चला कि वह कुंवारी नहीं है" 15 तो
जवाब में बीवी के वालिदैन शहर के दरवाज़े पर जमा

होने वाले बुज़ुर्गों के पास सबूत [i]ले आएँ कि बेटी
शादी से पहले कुंवारी थी। 16 बीवी का बाप बुज़ुर्गों
से कहे, “मैं ने अपनी बेटी की शादी इस आदमी से
की है, लेकिन यह उस से नफ़रत करता है। 17 अब
इस ने उस की बदनामी करके कहा है, ‘मुझे पता
चला कि तुम्हारी बेटी कुंवारी नहीं है।’ लेकिन यहाँ
सबूत है कि मेरी बेटी कुंवारी थी।” फिर वालिदैन
शहर के बुज़ुर्गों को मज़कूरा कपड़ा दिखाएँ।

18 तब बुज़ुर्ग उस आदमी को पकड़ कर सज़ा दें,
19 क्यूँकि उस ने एक इस्राईली कुंवारी की बदनामी
की है। इस के इलावा उसे जुर्माने के तौर पर बीवी
के बाप को चाँदी के 100 सिक्के देने पड़ेंगे। लाज़िम है
कि वह शौहर के फ़राइज़ अदा करता रहे। वह उम्र
भर उसे तलाक़ नहीं दे सकेगा।

20 लेकिन अगर आदमी की बात दुरुस्त निकले
और साबित न हो सके कि बीवी शादी से पहले
कुंवारी थी 21 तो उसे बाप के घर लाया जाए। वहाँ
शहर के आदमी उसे संगसार कर दें। क्यूँकि अपने
बाप के घर में रहते हुए बदकारी करने से उस ने
इस्राईल में एक अहमक़ाना और बेदीन हरकत की
है। यूँ तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। 22 अगर
कोई आदमी किसी की बीवी के साथ ज़िना करे और
वह पकड़े जाएँ तो दोनों को सज़ा-ए-मौत देनी है। यूँ
तू इस्राईल से बुराई मिटा देगा।

23 अगर आबादी में किसी मर्द की मुलाक़ात किसी
ऐसी कुंवारी से हो जिस की किसी और के साथ
मंगनी हुई है और वह उस के साथ हमबिसतर हो जाए
24 तो लाज़िम है कि तुम दोनों को शहर के दरवाज़े के
पास ला कर संगसार करो। वजह यह है कि लड़की
ने मदद के लिए न पुकारा अगरचे उस जगह लोग
आबाद थे। मर्द का जुर्म यह था कि उस ने किसी
और की मंगेतर की इस्मतदरी की है। यूँ तू अपने
दरमियान से बुराई मिटा देगा।

25 लेकिन अगर मर्द ग़ैरआबाद जगह में किसी और
की मंगेतर की इस्मतदरी करे तो सिर्फ़ उसी को सज़ा-
ए-मौत दी जाए। 26 लड़की को कोई सज़ा न देना,
क्यूँकि उस ने कुछ नहीं किया जो मौत के लाइक़
हो। ज़ियादती करने वाले की हरकत उस शख़्स के
बराबर है जिस ने किसी पर हम्ला करके उसे क़त्ल कर
दिया है। 27 चूँकि उस ने लड़की को वहाँ पाया जहाँ
लोग नहीं रहते, इस लिए अगरचे लड़की ने मदद के
लिए पुकारा तो भी उसे कोई न बचा सका।

28 हो सकता है कोई आदमी किसी लड़की की
इस्मतदरी करे जिस की मंगनी नहीं हुई है। अगर उन्हें
पकड़ा जाए 29 तो वह लड़की के बाप को चाँदी के
50 सिक्के दे। लाज़िम है कि वह उसी लड़की से शादी
करे, क्यूँकि उस ने उस की इस्मतदरी की है। न सिर्फ़
यह बल्कि वह उम्र भर उसे तलाक़ नहीं दे सकता।

30 अपने बाप की बीवी से शादी करना मना है। जो
कोई यह करे वह अपने बाप की बेहुरमती करता है।

मुक़द्दस इजतिमा में शरीक होने की शराइत

23 1 जब इस्राईली रब के मक़्दिस के पास जमा
होते हैं तो उसे हाज़िर होने की इजाज़त नहीं
जो काटने या कुचलने से ख़ोजा बन गया है। 2 इसी
तरह वह भी मुक़द्दस इजतिमा से दूर रहे जो नाजाइज़
ताल्लुक़ात के नतीजे में पैदा हुआ है। उस की औलाद
भी दसवीं पुश्त तक उस में नहीं आ सकती।

3 कोई भी अम्मोनी या मोआबी मुक़द्दस इजतिमा में
शरीक नहीं हो सकता। इन क़ौमों की औलाद दसवीं
पुश्त तक भी इस जमाअत में हाज़िर नहीं हो सकती,
4 क्यूँकि जब तुम मिस्र से निकल आए तो वह रोटी
और पानी ले कर तुम से मिलने न आए। न सिर्फ़ यह
बल्कि उन्हों ने मसोपुतामिया के शहर फ़तोर में जा
कर बलआम बिन बओर को पैसे दिए ताकि वह तुझ
पर लानत भेजे। 5 लेकिन रब तेरे ख़ुदा ने बलआम की
न सुनी बल्कि उस की लानत बरकत में बदल दी।

---

[i]यानी वह कपड़ा जिस पर नया जोड़ा सोया हुआ था।

क्यूँकि रब तेरा ख़ुदा तुझ से प्यार करता है। 6 उम्र भर
कुछ न करना जिस से इन क़ौमों की सलामती और
ख़ुशहाली बढ़ जाए।
7 लेकिन अदोमियों को मकरूह न समझना, क्यूँकि
वह तुम्हारे भाई हैं। इसी तरह मिस्रियों को भी मकरूह
न समझना, क्यूँकि तू उन के मुल्क में परदेसी मेहमान
था। 8 उन की तीसरी नस्ल के लोग रब के मुक़द्दस
इजतिमा में शरीक हो सकते हैं।

ख़ैमागाह में नापाकी

9 अपने दुश्मनों से जंग करते वक़्त अपनी
लश्करगाह में हर नापाक चीज़ से दूर रहना।
10 मसलन अगर कोई आदमी रात के वक़्त
एहतिलाम के बाइस नापाक हो जाए तो वह
लश्करगाह के बाहर जा कर शाम तक वहाँ ठहरे।
11 दिन ढलते वक़्त वह नहा ले तो सूरज डूबने पर
लश्करगाह में वापस आ सकता है।
12 अपनी हाजत रफ़ा करने के लिए लश्करगाह
से बाहर कोई जगह मुक़र्रर कर। 13 जब किसी को
हाजत के लिए बैठना हो तो वह इस के लिए गढ़ा
खोदे और बाद में उसे मिट्टी से भर दे। इस लिए अपने
सामान में खुदाई का कोई आला रखना ज़रूरी है।
14 रब तेरा ख़ुदा तेरी लश्करगाह में तेरे दरमियान
ही घूमता फिरता है ताकि तू महफ़ूज़ रहे और दुश्मन
तेरे सामने शिकस्त खाए। इस लिए लाज़िम है कि
तेरी लश्करगाह उस के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो।
ऐसा न हो कि अल्लाह वहाँ कोई शर्मनाक बात देख
कर तुझ से दूर हो जाए।

फ़रार हुए ग़ुलामों की मदद करना

15 अगर कोई ग़ुलाम तेरे पास पनाह ले तो उसे
मालिक को वापस न करना। 16 वह तेरे साथ और
तेरे दरमियान ही रहे, वहाँ जहाँ वह बसना चाहे, उस
शहर में जो उसे पसन्द आए। उसे न दबाना।

मन्दिर में इस्मतफ़रोशी मना है

17 किसी देवता की ख़िदमत में इस्मतफ़रोशी करना
हर इस्राईली औरत और मर्द के लिए मना है। 18 मन्नत
मानते वक़्त न कस्बी का अज्र, न कुत्ते के पैसे [j]रब
के मक़्दिस में लाना, क्यूँकि रब तेरे ख़ुदा को दोनों
चीज़ों से घिन है।

अपने हमवतनों से सूद न लेना

19 अगर कोई इस्राईली भाई तुझ से क़र्ज़ ले तो उस
से सूद न लेना, ख़्वाह तू ने उसे पैसे, खाना या कोई
और चीज़ दी हो। 20 अपने इस्राईली भाई से सूद न ले
बल्कि सिर्फ़ परदेसी से। फिर जब तू मुल्क पर क़ब्ज़ा
करके उस में रहेगा तो रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में
बरकत देगा।

अपनी मन्नत पूरी करना

21 जब तू रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर मन्नत माने तो
उसे पूरा करने में देर न करना। रब तेरा ख़ुदा यक़ीनन
तुझ से इस का मुतालबा करेगा। अगर तू उसे पूरा न
करे तो क़ुसूरवार ठहरेगा। 22 अगर तू मन्नत मानने से
बाज़ रहे तो क़ुसूरवार नहीं ठहरेगा, 23 लेकिन अगर
तू अपनी दिली ख़ुशी से रब के हुज़ूर मन्नत माने तो
हर सूरत में उसे पूरा कर।

दूसरे के बाग़ में से गुज़रने का रवय्या

24 किसी हमवतन के अंगूर के बाग़ में से गुज़रते
वक़्त तुझे जितना जी चाहे उस के अंगूर खाने की
इजाज़त है। लेकिन अपने किसी बर्तन में फल जमा
न करना। 25 इसी तरह किसी हमवतन के अनाज के
खेत में से गुज़रते वक़्त तुझे अपने हाथों से अनाज
की बालियाँ तोड़ने की इजाज़त है। लेकिन दरान्ती
इस्तेमाल न करना।

---

[j]यक़ीन से नहीं कहा जा सकता कि 'कुत्ते के पैसे' से क्या मुराद है। ग़ालिबन इस के पीछे बुतपरस्ती का कोई दस्तूर है।

तलाक़ और दुबारा शादी

24 1 हो सकता है कोई आदमी किसी औरत
से शादी करे लेकिन बाद में उसे पसन्द न
करे, क्यूँकि उसे बीवी के बारे में किसी शर्मनाक बात
का पता चल गया है। वह तलाक़नामा लिख कर उसे
औरत को देता और फिर उसे घर से वापस भेज देता
है। 2 इस के बाद उस औरत की शादी किसी और मर्द
से हो जाती है, 3 और वह भी बाद में उसे पसन्द नहीं
करता। वह भी तलाक़नामा लिख कर उसे औरत को
देता और फिर उसे घर से वापस भेज देता है। ख़्वाह
दूसरा शौहर उसे वापस भेज दे या शौहर मर जाए,
4 औरत के पहले शौहर को उस से दुबारा शादी करने
की इजाज़त नहीं है, क्यूँकि वह औरत उस के लिए
नापाक है। ऐसी हरकत रब की नज़र में क़ाबिल-ए-
घिन है। उस मुल्क को यूँ गुनाहआलूदा न करना जो
रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है।

मज़ीद हिदायात

5 अगर किसी आदमी ने अभी अभी शादी की हो
तो तू उसे भर्ती करके जंग करने के लिए नहीं भेज
सकता। तू उसे कोई भी ऐसी ज़िम्मादारी नहीं दे
सकता, जिस से वह घर से दूर रहने पर मज्बूर हो
जाए। एक साल तक वह ऐसी ज़िम्मादारियों से बरी
रहे ताकि घर में रह कर अपनी बीवी को ख़ुश कर
सके।

6 अगर कोई तुझ से उधार ले तो ज़मानत के तौर
पर उस से न उस की छोटी चक्की, न उस की बड़ी
चक्की का पाट लेना, क्यूँकि ऐसा करने से तू उस की
जान लेगा यानी तू वह चीज़ लेगा जिस से उस का
गुज़ारा होता है।

7 अगर किसी आदमी को पकड़ा जाए जिस ने अपने
हमवतन को अग़वा करके ग़ुलाम बना लिया या बेच
दिया है तो उसे सज़ा-ए-मौत देना है। यूँ तू अपने
दरमियान से बुराई मिटा देगा।

8 अगर कोई वबाई जिल्दी बीमारी तुझे लग जाए
तो बड़ी एहतियात से लावी के क़बीले के इमामों की
तमाम हिदायात पर अमल करना। जो भी हुक्म मैं ने
उन्हें दिया उसे पूरा करना। 9 याद कर कि रब तेरे
ख़ुदा ने मरियम के साथ क्या किया जब तुम मिस्र से
निकल कर सफ़र कर रहे थे।

ग़रीबों के हुक़ूक़

10 अपने हमवतन को उधार देते वक़्त उस के घर में
न जाना ताकि ज़मानत की कोई चीज़ मिले 11 बल्कि
बाहर ठहर कर इन्तिज़ार कर कि वह ख़ुद घर से
ज़मानत की चीज़ निकाल कर तुझे दे। 12 अगर वह
इतना ज़रूरतमन्द हो कि सिर्फ़ अपनी चादर दे सके
तो रात के वक़्त ज़मानत तेरे पास न रहे। 13 उसे सूरज
डूबने तक वापस करना ताकि क़र्ज़दार उस में लिपट
कर सो सके। फिर वह तुझे बरकत देगा और रब तेरा
ख़ुदा तेरा यह क़दम रास्त क़रार देगा।

14 ज़रूरतमन्द मज़दूर से ग़लत फ़ाइदा न उठाना,
चाहे वह इस्राईली हो या परदेसी। 15 उसे रोज़ाना
सूरज डूबने से पहले पहले उस की मज़दूरी दे देना,
क्यूँकि इस से उस का गुज़ारा होता है। कहीं वह रब
के हुज़ूर तेरी शिकायत न करे और तू क़ुसूरवार ठहरे।

16 वालिदैन को उन के बच्चों के जराइम के सबब से
सज़ा-ए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उन के वालिदैन
के जराइम के सबब से। अगर किसी को सज़ा-ए-
मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब से जो उस ने
ख़ुद किया है।

17 परदेसियों और यतीमों के हुक़ूक़ क़ाइम रखना।
उधार देते वक़्त ज़मानत के तौर पर बेवा की चादर
न लेना। 18 याद रख कि तू भी मिस्र में ग़ुलाम था और
कि रब तेरे ख़ुदा ने फ़िद्या दे कर तुझे वहाँ से छुड़ाया।
इसी वजह से मैं तुझे यह हुक्म देता हूँ।

19 अगर तू फ़सल की कटाई के वक़्त एक पूला भूल
कर खेत में छोड़ आए तो उसे लाने के लिए वापस न
जाना। उसे परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए
वहीं छोड़ देना ताकि रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में

बरकत दे। 20 जब ज़ैतून की फ़सल पक गई हो तो
दरख़्तों को मार मार कर एक ही बार उन में से फल
उतार। इस के बाद उन्हें न छेड़ना। बचा हुआ फल
परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए छोड़ देना।
21 इसी तरह अपने अंगूर तोड़ने के लिए एक ही बार
बाग़ में से गुज़रना। इस के बाद उसे न छेड़ना। बचा
हुआ फल परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए
छोड़ देना। 22 याद रख कि तू ख़ुद मिस्र में ग़ुलाम था।
इसी वजह से मैं तुझे यह हुक्म देता हूँ।

कोड़े लगाने की मुनासिब सज़ा

25 1 अगर लोग अपना एक दूसरे के साथ
झगड़ा ख़ुद निपटा न सकें तो वह अपना
मुआमला अदालत में पेश करें। क़ाज़ी फ़ैसला करे
कि कौन बेक़ुसूर है और कौन मुजरिम। 2 अगर
मुजरिम को कोड़े लगाने की सज़ा देनी है तो उसे
क़ाज़ी के सामने ही मुँह के बल ज़मीन पर लिटाना।
फिर उसे इतने कोड़े लगाए जाएँ जितनों के वह
लाइक़ है। 3 लेकिन उस को ज़्यादा से ज़्यादा 40
कोड़े लगाने हैं, वर्ना तेरे इस्राईली भाई की सर-ए-
आम बेइज़्ज़ती हो जाएगी।

बैल का मुँह न बांधना

4 जब तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने
देता है तो उस का मुँह बांध कर न रखना।

मरहूम भाई की बीवी से शादी करने का हुक्म

5 अगर कोई शादीशुदा मर्द बेऔलाद मर जाए और
उस का सगा भाई साथ रहे तो उस का फ़र्ज़ है कि
बेवा से शादी करे। बेवा शौहर के ख़ानदान से हट
कर किसी और से शादी न करे बल्कि सिर्फ़ अपने
देवर से। 6 पहला बेटा जो इस रिश्ते से पैदा होगा
पहले शौहर के बेटे की हैसियत रखेगा। यूँ उस का
नाम क़ाइम रहेगा।

7 लेकिन अगर देवर भाबी से शादी करना न चाहे
तो भाबी शहर के दरवाज़े पर जमा होने वाले बुज़ुर्गों
के पास जाए और उन से कहे, "मेरा देवर मुझ से
शादी करने से इन्कार करता है। वह अपना फ़र्ज़
अदा करने को तय्यार नहीं कि अपने भाई का नाम
क़ाइम रखे।" 8 फिर शहर के बुज़ुर्ग देवर को बुला
कर उसे समझाएँ। अगर वह इस के बावुजूद भी
उस से शादी करने से इन्कार करे 9 तो उस की भाबी
बुज़ुर्गों की मौजूदगी में उस के पास जा कर उस की
एक चप्पल उतार ले। फिर वह उस के मुँह पर थूक
कर कहे, "उस आदमी से ऐसा सुलूक किया जाता
है जो अपने भाई की नस्ल क़ाइम रखने को तय्यार
नहीं।" 10 आइन्दा इस्राईल में देवर की नस्ल "नंगे
पाँओ वाले की नस्ल" कहलाएगी।

झगड़े में नाज़ेबा हरकतें

11 अगर दो आदमी लड़ रहे हों और एक की बीवी
अपने शौहर को बचाने की ख़ातिर मुख़ालिफ़ के उज़ू-
ए-तनासुल को पकड़ ले 12 तो लाज़िम है कि तू औरत
का हाथ काट डाले। उस पर रहम न करना।

धोका न देना

13 तोलते वक़्त अपने थैले में सहीह वज़न के बाट
रख, और धोका देने के लिए हल्के बाट साथ न
रखना। 14 इसी तरह अपने घर में अनाज की पैमाइश
करने का सहीह बर्तन रख, और धोका देने के लिए
छोटा बर्तन साथ न रखना। 15 सहीह वज़न के बाट
और पैमाइश करने के सहीह बर्तन इस्तेमाल करना
ताकि तू देर तक उस मुल्क में जीता रहे जो रब तेरा
ख़ुदा तुझे देगा। 16 क्यूँकि उसे हर धोकेबाज़ से घिन
है।

अमालीक़ियों को सज़ा देना

17 याद रहे कि अमालीक़ियों ने तुझ से क्या कुछ
किया जब तुम मिस्र से निकल कर सफ़र कर रहे
थे। 18 जब तू थकाहारा था तो वह तुझ पर हम्ला
करके पीछे पीछे चलने वाले तमाम कमज़ोरों को
जान से मारते रहे। वह अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं मानते

थे। 19 चुनाँचे जब रब तेरा ख़ुदा तुझे इर्दगिर्द के तमाम
दुश्मनों से सुकून देगा और तू उस मुल्क में आबाद
होगा जो वह तुझे मीरास में दे रहा है ताकि तू उस
पर क़ब्ज़ा करे तो अमालीक़ियों को यूँ हलाक कर
कि दुनिया में उन का नाम-ओ-निशान न रहे। यह बात
मत भूलना।

ज़मीन की पहली पैदावार रब को पेश करना

26 1 जब तू उस मुल्क में दाख़िल होगा जो रब
तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है और तू
उस पर क़ब्ज़ा करके उस में आबाद हो जाएगा 2 तो
जो भी फ़सल तू काटेगा उस के पहले फल में से
कुछ टोकरे में रख कर उस जगह ले जा जो रब
तेरा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा।
3 वहाँ ख़िदमत करने वाले इमाम से कह, "आज मैं
रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर एलान करता हूँ कि उस
मुल्क में पहुँच गया हूँ जिस का हमें देने का वादा रब
ने क़सम खा कर हमारे बापदादा से किया था।"
4 तब इमाम तेरा टोकरा ले कर उसे रब तेरे ख़ुदा की
क़ुर्बानगाह के सामने रख दे। 5 फिर रब अपने ख़ुदा
के हुज़ूर कह, "मेरा बाप आवारा फिरने वाला अरामी
था जो अपने लोगों को ले कर मिस्र में आबाद हुआ।
वहाँ पहुँचते वक़्त उन की तादाद कम थी, लेकिन
होते होते वह बड़ी और ताक़तवर क़ौम बन गए।
6 लेकिन मिस्रियों ने हमारे साथ बुरा सुलूक किया
और हमें दबा कर सख़्त ग़ुलामी में फंसा दिया। 7 फिर
हम ने चिल्ला कर रब अपने बापदादा के ख़ुदा से
फ़र्याद की, और रब ने हमारी सुनी। उस ने हमारा
दुख, हमारी मुसीबत और दबी हुई हालत देखी 8 और
बड़े इख़तियार और क़ुदरत का इज़हार करके हमें
मिस्र से निकाल लाया। उस वक़्त उस ने मिस्रियों में
दहशत फैला कर बड़े मोजिज़े दिखाए। 9 वह हमें यहाँ
ले आया और यह मुल्क दिया जिस में दूध और शहद
की कस्रत है। 10 ऐ रब, अब मैं तुझे उस ज़मीन का
पहला फल पेश करता हूँ जो तू ने हमें बख़्शी है।"
अपनी पैदावार का टोकरा रब अपने ख़ुदा के सामने
रख कर उसे सिज्दा करना। 11 ख़ुशी मनाना कि रब
मेरे ख़ुदा ने मुझे और मेरे घराने को इतनी अच्छी चीज़ों
से नवाज़ा है। इस ख़ुशी में अपने दरमियान रहने वाले
लावियों और परदेसियों को भी शामिल करना।

फ़सल का ज़रूरतमन्दों के लिए हिस्सा

12 हर तीसरे साल अपनी तमाम फ़सलों का दसवाँ
हिस्सा लावियों, परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को
देना ताकि वह तेरे शहरों में खाना खा कर सेर हो
जाएँ। 13 फिर रब अपने ख़ुदा से कह, "मैं ने वैसा
ही किया है जैसा तू ने मुझे हुक्म दिया। मैं ने अपने
घर से तेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हिस्सा निकाल
कर उसे लावियों, परदेसियों, यतीमों और बेवाओं
को दिया है। मैं ने सब कुछ तेरी हिदायात के ऐन
मुताबिक़ किया है और कुछ नहीं भूला। 14 मातम
करते वक़्त मैं ने इस मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हिस्से से
कुछ नहीं खाया। मैं इसे उठा कर घर से बाहर लाते
वक़्त नापाक नहीं था। मैं ने इस में से मुर्दों को भी कुछ
पेश नहीं किया। मैं ने रब अपने ख़ुदा की इताअत
करके वह सब कुछ किया है जो तू ने मुझे करने को
फ़रमाया था। 15 चुनाँचे आसमान पर अपने मक़्दिस
से निगाह करके अपनी क़ौम इस्राईल को बरकत
दे। उस मुल्क को भी बरकत दे जिस का वादा तू ने
क़सम खा कर हमारे बापदादा से किया और जो तू
ने हमें बख़्श भी दिया है, उस मुल्क को जिस में दूध
और शहद की कस्रत है।"

तुम रब की क़ौम हो

16 आज रब तेरा ख़ुदा फ़रमाता है कि इन अह्काम
और हिदायात की पैरवी कर। पूरे दिल-ओ-जान से
और बड़ी एहतियात से इन पर अमल कर।
17 आज तू ने एलान किया है, "रब मेरा ख़ुदा है।
मैं उस की राहों पर चलता रहूँगा, उस के अह्काम
के ताबे रहूँगा और उस की सुनूँगा।" 18 और आज
रब ने एलान किया है, "तू मेरी क़ौम और मेरी अपनी

मिलकियत है जिस तरह मैं ने तुझ से वादा किया
है। अब मेरे तमाम अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी
गुज़ार। 19 जितनी भी क़ौमें मैं ने ख़ल्क़ की हैं उन
सब पर मैं तुझे सरफ़राज़ करूँगा और तुझे तारीफ़,
शुहरत और इज़्ज़त अता करूँगा। तू रब अपने ख़ुदा
के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस क़ौम होगा जिस तरह मैं
ने वादा किया है।"

ऐबाल पहाड़ पर क़ुर्बानगाह बनाना है

27 1 फिर मूसा ने बुज़ुर्गों से मिल कर क़ौम से
कहा, "तमाम हिदायात के ताबे रहो जो मैं
तुम्हें आज दे रहा हूँ। 2 जब तुम दरया-ए-यर्दन को पार
करके उस मुल्क में दाख़िल होगे जो रब तेरा ख़ुदा
तुझे दे रहा है तो वहाँ बड़े पत्थर खड़े करके उन पर
सफेदी कर। 3 उन पर लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ पूरी शरीअत
लिख। दरया को पार करने के बाद यही कुछ कर
ताकि तू उस मुल्क में दाख़िल हो जो रब तेरा ख़ुदा
तुझे देगा और जिस में दूध और शहद की कस्रत है।
क्यूँकि रब तेरे बापदादा के ख़ुदा ने यह देने का तुझ से
वादा किया है। 4 चुनाँचे यर्दन को पार करके पत्थरों
को ऐबाल पहाड़ पर खड़ा करो और उन पर सफेदी
कर।

5 वहाँ रब अपने ख़ुदा के लिए क़ुर्बानगाह बनाना।
जो पत्थर तू उस के लिए इस्तेमाल करे उन्हें लोहे के
किसी औज़ार से न तराशना। 6 सिर्फ़ सालिम पत्थर
इस्तेमाल कर। क़ुर्बानगाह पर रब अपने ख़ुदा को
भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश कर। 7 सलामती की
क़ुर्बानियाँ भी उस पर चढ़ा। उन्हें वहाँ रब अपने ख़ुदा
के हुज़ूर खा कर ख़ुशी मना। 8 वहाँ खड़े किए गए
पत्थरों पर शरीअत के तमाम अल्फ़ाज़ साफ़ साफ़
लिखे जाएँ।"

ऐबाल पहाड़ पर से लानत

9 फिर मूसा ने लावी के क़बीले के इमामों से
मिल कर तमाम इस्राईलियों से कहा, "ऐ इस्राईल,
ख़ामोशी से सुन। अब तू रब अपने ख़ुदा की क़ौम
बन गया है, 10 इस लिए उस का फ़रमाँबरदार रह
और उस के उन अह्काम पर अमल कर जो मैं तुझे
आज दे रहा हूँ।"

11 उसी दिन मूसा ने इस्राईलियों को हुक्म दे
कर कहा, 12 "दरया-ए-यर्दन को पार करने के
बाद शमाऊन, लावी, यहूदाह, इश्कार, यूसुफ़ और
बिनयमीन के क़बीले गरिज़ीम पहाड़ पर खड़े हो
जाएँ। वहाँ वह बरकत के अल्फ़ाज़ बोलें। 13 बाक़ी
क़बीले यानी रूबिन, जद, आशर, ज़बूलून, दान और
नफ़्ताली ऐबाल पहाड़ पर खड़े हो कर लानत के
अल्फ़ाज़ बोलें।

14 फिर लावी तमाम लोगों से मुख़ातिब हो कर ऊँची
आवाज़ से कहें,

15 'उस पर लानत जो बुत तराश कर या ढाल कर
चुपके से खड़ा करे। रब को कारीगर के हाथों से बनी
हुई ऐसी चीज़ से घिन है।'

जवाब में सब लोग कहें, 'आमीन!'

16 फिर लावी कहें, 'उस पर लानत जो अपने बाप
या माँ की तह्क़ीर करे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

17 'उस पर लानत जो अपने पड़ोसी की ज़मीन की
हुदूद आगे पीछे करे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

18 'उस पर लानत जो किसी अंधे की राहनुमाई
करके उसे ग़लत रास्ते पर ले जाए।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

19 'उस पर लानत जो परदेसियों, यतीमों या बेवाओं
के हुक़ूक़ क़ाइम न रखे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

20 'उस पर लानत जो अपने बाप की बीवी से
हमबिसतर हो जाए, क्यूँकि वह अपने बाप की
बेहुरमती करता है।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

21 'उस पर लानत जो जानवर से जिन्सी ताल्लुक़
रखे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

22 ‘उस पर लानत जो अपनी सगी बहन, अपने बाप
की बेटी या अपनी माँ की बेटी से हमबिसतर हो
जाए।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’
23 ‘उस पर लानत जो अपनी सास से हमबिसतर हो
जाए।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’
24 ‘उस पर लानत जो चुपके से अपने हमवतन को
क़त्ल कर दे।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’
25 ‘उस पर लानत जो पैसे ले कर किसी बेक़ुसूर
शख़्स को क़त्ल करे।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’
26 ‘उस पर लानत जो इस शरीअत की बातें क़ाइम
न रखे, न इन पर अमल करे।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’

फ़रमाँबरदारी की बरकतें

28 1 रब तेरा ख़ुदा तुझे दुनिया की तमाम क़ौमों
पर सरफ़राज़ करेगा। शर्त यह है कि तू उस
की सुने और एहतियात से उस के उन तमाम अह्काम
पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 2 रब अपने
ख़ुदा का फ़रमाँबरदार रह तो तुझे हर तरह की बरकत
हासिल होगी। 3 रब तुझे शहर और दीहात में बरकत
देगा। 4 तेरी औलाद फले फूलेगी, तेरी अच्छी-ख़ासी
फ़सलें पकेंगी, तेरे गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के
बच्चे तरक़्क़ी करेंगे। 5 तेरा टोकरा फल से भरा रहेगा,
और आटा गूँधने का तेरा बर्तन आटे से ख़ाली नहीं
होगा। 6 रब तुझे घर में आते और वहाँ से निकलते
वक़्त बरकत देगा।
7 जब तेरे दुश्मन तुझ पर हम्ला करेंगे तो वह रब की
मदद से शिकस्त खाएँगे। गो वह मिल कर तुझ पर
हम्ला करें तो भी तू उन्हें चारों तरफ़ मुन्तशिर कर देगा।
8 अल्लाह तेरे हर काम में बरकत देगा। अनाज की
कस्रत के सबब से तेरे गोदाम भरे रहेंगे। रब तेरा
ख़ुदा तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जो वह तुझे देने
वाला है। 9 रब अपनी क़सम के मुताबिक़ तुझे अपनी
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस क़ौम बनाएगा अगर तू उस के
अह्काम पर अमल करे और उस की राहों पर चले।
10 फिर दुनिया की तमाम क़ौमें तुझ से ख़ौफ़ खाएँगी,
क्यूँकि वह देखेंगी कि तू रब की क़ौम है और उस के
नाम से कहलाता है।
11 रब तुझे बहुत औलाद देगा, तेरे रेवड़ बढ़ाएगा
और तुझे कस्रत की फ़सलें देगा। यूँ वह तुझे उस
मुल्क में बरकत देगा जिस का वादा उस ने क़सम
खा कर तेरे बापदादा से किया। 12 रब आसमान
के ख़ज़ानों को खोल कर वक़्त पर तेरी ज़मीन पर
बारिश बरसाएगा। वह तेरे हर काम में बरकत देगा।
तू बहुत सी क़ौमों को उधार देगा लेकिन किसी का
भी क़र्ज़दार नहीं होगा। 13 रब तुझे क़ौमों की दुम नहीं
बल्कि उन का सर बनाएगा। तू तरक़्क़ी करता जाएगा
और ज़वाल का शिकार नहीं होगा। लेकिन शर्त यह
है कि तू रब अपने ख़ुदा के वह अह्काम मान कर उन
पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 14 जो कुछ
भी मैं ने तुझे करने को कहा है उस से किसी तरह
भी हट कर ज़िन्दगी न गुज़ारना। न दीगर माबूदों की
पैरवी करना, न उन की ख़िदमत करना।

नाफ़रमानी की लानतें

15 लेकिन अगर तू रब अपने ख़ुदा की न सुने और
उस के उन तमाम अह्काम पर अमल न करे जो मैं
आज तुझे दे रहा हूँ तो हर तरह की लानत तुझ पर
आएगी। 16 शहर और दीहात में तुझ पर लानत होगी।
17 तेरे टोकरे और आटा गूँधने के तेरे बर्तन पर लानत
होगी। 18 तेरी औलाद पर, तेरे गाय-बैलों और भेड़-
बकरियों के बच्चों पर और तेरे खेतों पर लानत होगी।
19 घर में आते और वहाँ से निकलते वक़्त तुझ पर
लानत होगी। 20 अगर तू ग़लत काम करके रब को
छोड़े तो जो कुछ भी तू करे वह तुझ पर लानतें,
परेशानियाँ और मुसीबतें आने देगा। तब तेरा जल्दी
से सत्यानास होगा, और तू हलाक हो जाएगा।

21 रब तुझ में वबाई बीमारियाँ फैलाएगा जिन के
सबब से तुझ में से कोई उस मुल्क में ज़िन्दा नहीं
रहेगा जिस पर तू अभी क़ब्ज़ा करने वाला है।
22 रब तुझे मोहलिक बीमारियों, बुख़ार और सूजन
से मारेगा। झुलसाने वाली गर्मी, काल, पतरोग और
फफूँदी तेरी फ़सलें ख़त्म करेगी। ऐसी मुसीबतों के
बाइस तू तबाह हो जाएगा। 23 तेरे ऊपर आसमान
पीतल जैसा सख़्त होगा जबकि तेरे नीचे ज़मीन लोहे
की मानिन्द होगी। 24 बारिश की जगह रब तेरे मुल्क
पर गर्द और रेत बरसाएगा जो आसमान से तेरे मुल्क
पर छा कर तुझे बर्बाद कर देगी।

25 जब तू अपने दुश्मनों का सामना करे तो रब तुझे
शिकस्त दिलाएगा। गो तू मिल कर उन की तरफ़
बढ़ेगा तो भी उन से भाग कर चारों तरफ़ मुन्तशिर हो
जाएगा। दुनिया के तमाम ममालिक में लोगों के रोंगटे
खड़े हो जाएंगे जब वह तेरी मुसीबतें देखेंगे। 26 परिन्दे
और जंगली जानवर तेरी लाशों को खा जाएंगे, और
उन्हें भगाने वाला कोई नहीं होगा। 27 रब तुझे उन
ही फोड़ों से मारेगा जो मिस्रियों को निकले थे। ऐसे
जिल्दी अमराज़ फैलेंगे जिन का इलाज नहीं है। 28 तू
पागलपन का शिकार हो जाएगा, रब तुझे अंधेपन
और ज़हनी अब्तरी में मुब्तला कर देगा। 29 दोपहर के
वक़्त भी तू अंधे की तरह टटोल टटोल कर फिरेगा।
जो कुछ भी तू करे उस में नाकाम रहेगा। रोज़-ब-रोज़
लोग तुझे दबाते और लूटते रहेंगे, और तुझे बचाने
वाला कोई नहीं होगा।

30 तेरी मंगनी किसी औरत से होगी तो कोई और
आ कर उस की इस्मतदरी करेगा। तू अपने लिए घर
बनाएगा लेकिन उस में नहीं रहेगा। तू अपने लिए
अंगूर का बाग़ लगाएगा लेकिन उस का फल नहीं
खाएगा। 31 तेरे देखते देखते तेरा बैल ज़बह किया
जाएगा, लेकिन तू उस का गोश्त नहीं खाएगा। तेरा
गधा तुझ से छीन लिया जाएगा और वापस नहीं किया
जाएगा। तेरी भेड़-बकरियाँ दुश्मन को दी जाएँगी,
और उन्हें छुड़ाने वाला कोई नहीं होगा। 32 तेरे बेटे-
बेटियों को किसी दूसरी क़ौम को दिया जाएगा, और
तू कुछ नहीं कर सकेगा। रोज़-ब-रोज़ तू अपने बच्चों
के इन्तिज़ार में उफ़क़ को तकता रहेगा, लेकिन देखते
देखते तेरी आँखें धुन्दला जाएँगी।

33 एक अजनबी क़ौम तेरी ज़मीन की पैदावार और
तेरी मेहनत-ओ-मशक़्क़त की कमाई ले जाएगी। तुझे
उम्र भर ज़ुल्म और दबाओ बर्दाश्त करना पड़ेगा।

34 जो हौलनाक बातें तेरी आँखें देखेंगी उन से
तू पागल हो जाएगा। 35 रब तुझे तक्लीफ़दिह और
लाइलाज फोड़ों से मारेगा जो तल्वे से ले कर चाँदी
तक पूरे जिस्म पर फैल कर तेरे घुटनों और टाँगों को
मुतअस्सिर करेंगे।

36 रब तुझे और तेरे मुक़र्रर किए हुए बादशाह को
एक ऐसे मुल्क में ले जाएगा जिस से न तू और न
तेरे बापदादा वाक़िफ़ थे। वहाँ तू दीगर माबूदों यानी
लकड़ी और पत्थर के बुतों की ख़िदमत करेगा।
37 जिस जिस क़ौम में रब तुझे हाँक देगा वहाँ तुझे
देख कर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे और वह तेरा
मज़ाक़ उड़ाएँगे। तू उन के लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल
होगा।

38 तू अपने खेतों में बहुत बीज बोने के बावुजूद कम
ही फ़सल काटेगा, क्यूँकि टिड्डे उसे खा जाएंगे। 39 तू
अंगूर के बाग़ लगा कर उन पर ख़ूब मेहनत करेगा
लेकिन न उन के अंगूर तोड़ेगा, न उन की मै पिएगा,
क्यूँकि कीड़े उन्हें खा जाएंगे। 40 गो तेरे पूरे मुल्क में
ज़ैतून के दरख़्त होंगे तो भी तू उन का तेल इस्तेमाल
नहीं कर सकेगा, क्यूँकि ज़ैतून ख़राब हो कर ज़मीन
पर गिर जाएंगे।

41 तेरे बेटे-बेटियाँ तो होंगे, लेकिन तू उन से महरूम
हो जाएगा। क्यूँकि उन्हें गिरिफ़्तार करके किसी
अजनबी मुल्क में ले जाया जाएगा। 42 टिड्डियों के
ग़ोल तेरे मुल्क के तमाम दरख़्तों और फ़सलों पर
क़ब्ज़ा कर लेंगे। 43 तेरे दरमियान रहने वाला परदेसी
तुझ से बढ़ कर तरक़्क़ी करता जाएगा जबकि तुझ
पर ज़वाल आ जाएगा। 44 उस के पास तुझे उधार
देने के लिए पैसे होंगे जबकि तेरे पास उसे उधार देने

को कुछ नहीं होगा। आख़िर में वह सर और तू दुम होगा।

45 यह तमाम लानतें तुझ पर आन पड़ेंगी। जब तक तू तबाह न हो जाए वह तेरा ताक़्क़ुब करती रहेंगी, क्यूँकि तू ने रब अपने ख़ुदा की न सुनी और उस के अह्काम पर अमल न किया। 46 यूँ यह हमेशा तक तेरे और तेरी औलाद के लिए एक मोजिज़ाना और इब्रतअंगेज़ इलाही निशान रहेंगी।

47 चूँकि तू ने दिली ख़ुशी से उस वक़्त रब अपने ख़ुदा की ख़िदमत न की जब तेरे पास सब कुछ था 48 इस लिए तू उन दुश्मनों की ख़िदमत करेगा जिन्हें रब तेरे ख़िलाफ़ भेजेगा। तू भूका, प्यासा, नंगा और हर चीज़ का हाजतमन्द होगा, और रब तेरी गर्दन पर लोहे का जूआ रख कर तुझे मुकम्मल तबाही तक ले जाएगा।

49 रब तेरे ख़िलाफ़ एक क़ौम खड़ी करेगा जो दूर से बल्कि दुनिया की इन्तिहा से आ कर उक़ाब की तरह तुझ पर झपट्टा मारेगी। वह ऐसी ज़बान बोलेगी जिस से तू वाक़िफ़ नहीं होगा। 50 वह सख़्त क़ौम होगी जो न बुज़ुर्गों का लिहाज़ करेगी और न बच्चों पर रहम करेगी। 51 वह तेरे मवेशी और फ़सलें खा जाएगी और तू भूके मर जाएगा। तू हलाक हो जाएगा, क्यूँकि तेरे लिए कुछ नहीं बचेगा, न अनाज, न मै, न तेल, न गाय-बैलों या भेड़-बकरियों के बच्चे। 52 दुश्मन तेरे मुल्क के तमाम शहरों का मुहासरा करेगा। आख़िरकार जिन ऊँची और मज़बूत फ़सीलों पर तू एतिमाद करेगा वह भी सब गिर पड़ेंगी। दुश्मन उस मुल्क का कोई भी शहर नहीं छोड़ेगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देने वाला है।

53 जब दुश्मन तेरे शहरों का मुहासरा करेगा तो तू उन में इतना शदीद भूका हो जाएगा कि अपने बच्चों को खा लेगा जो रब तेरे ख़ुदा ने तुझे दिए हैं। 54–55 मुहासरे के दौरान तुम में से सब से शरीफ़ और शाइस्ता आदमी भी अपने बच्चे को ज़बह करके खाएगा, क्यूँकि उस के पास कोई और ख़ुराक नहीं होगी। उस की हालत इतनी बुरी होगी कि वह उसे अपने सगे भाई, बीवी या बाक़ी बच्चों के साथ तक़्सीम करने के लिए तय्यार नहीं होगा। 56–57 तुम में से सब से शरीफ़ और शाइस्ता औरत भी ऐसा ही करेगी, अगरचे पहले वह इतनी नाज़ुक थी कि फ़र्श को अपने तल्वे से छूने की जुरअत नहीं करती थी। मुहासरे के दौरान उसे इतनी शदीद भूक होगी कि जब उस के बच्चा पैदा होगा तो वह छुप छुप कर उसे खाएगी। न सिर्फ़ यह बल्कि वह पैदाइश के वक़्त बच्चे के साथ ख़ारिज हुई आलाईश भी खाएगी और उसे अपने शौहर या अपने बाक़ी बच्चों में बाँटने के लिए तय्यार नहीं होगी। इतनी मुसीबत तुझ पर मुहासरे के दौरान आएगी।

58 ग़रज़ एहतियात से शरीअत की उन तमाम बातों की पैरवी कर जो इस किताब में दर्ज हैं, और रब अपने ख़ुदा के पुरजलाल और बारोब नाम का ख़ौफ़ मानना। 59 वर्ना वह तुझ और तेरी औलाद में सख़्त और लाइलाज अमराज़ और ऐसी दह्शतनाक वबाएँ फैलाएगा जो रोकी नहीं जा सकेंगी। 60 जिन तमाम वबाओं से तू मिस्र में दह्शत खाता था वह अब तेरे दरमियान फैल कर तेरे साथ चिमटी रहेंगी। 61 न सिर्फ़ शरीअत की इस किताब में बयान की हुई बीमारियाँ और मुसीबतें तुझ पर आएँगी बल्कि रब और भी तुझ पर भेजेगा, जब तक कि तू हलाक न हो जाए।

62 अगर तू रब अपने ख़ुदा की न सुने तो आख़िरकार तुम में से बहुत कम बचे रहेंगे, गो तुम पहले सितारों जैसे बेशुमार थे। 63 जिस तरह पहले रब ख़ुशी से तुम्हें कामयाबी देता और तुम्हारी तादाद बढ़ाता था उसी तरह अब वह तुम्हें बर्बाद और तबाह करने में ख़ुशी मह्सूस करेगा। तुम्हें ज़बरदस्ती उस मुल्क से निकाला जाएगा जिस पर तू इस वक़्त दाख़िल हो कर क़ब्ज़ा करने वाला है। 64 तब रब तुझे दुनिया के एक सिरे से ले कर दूसरे सिरे तक तमाम क़ौमों में मुन्तशिर कर देगा। वहाँ तू दीगर माबूदों की पूजा करेगा, ऐसे देवताओं की जिन से न तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़ थे।

65 उन ममालिक में भी न तू आराम-ओ-सुकून
पाएगा, न तेरे पाँओ जम जाएंगे। रब होने देगा कि
तेरा दिल थरथराता रहेगा, तेरी आँखें परेशानी के
बाइस धुन्दला जाएँगी और तेरी जान से उम्मीद की
हर किरन जाती रहेगी। 66 तेरी जान हर वक़्त ख़तरे
में होगी और तू दिन रात दहशत खाते हुए मरने की
तवक़्क़ो करेगा। 67 सुब्ह उठ कर तू कहेगा, "काश
शाम हो!" और शाम के वक़्त, "काश सुब्ह हो!"
क्यूँकि जो कुछ तू देखेगा उस से तेरे दिल को दहशत
घेर लेगी।

68 रब तुझे जहाज़ों में बिठा कर मिस्र वापस ले
जाएगा अगरचे मैं ने कहा था कि तू उसे दुबारा कभी
नहीं देखेगा। वहाँ पहुँच कर तुम अपने दुश्मनों से
बात करके अपने आप को ग़ुलाम के तौर पर बेचने
की कोशिश करोगे, लेकिन कोई भी तुम्हें ख़रीदना
नहीं चाहेगा।"

मोआब में रब के साथ नया अह्द

29 1 जब इस्राईली मोआब में थे तो रब ने मूसा
को हुक्म दिया कि इस्राईलियों के साथ एक
और अह्द बांधे। यह उस अह्द के इलावा था जो
रब होरिब यानी सीना पर उन के साथ बांध चुका
था। 2 इस सिलसिले में मूसा ने तमाम इस्राईलियों
को बुला कर कहा, "तुम ने ख़ुद देखा कि रब ने
मिस्र के बादशाह फ़िरऔन, उस के मुलाज़िमों और
पूरे मुल्क के साथ क्या कुछ किया। 3 तुम ने अपनी
आँखों से वह बड़ी आज़माइशें, इलाही निशान और
मोजिज़े देखे जिन के ज़रीए रब ने अपनी क़ुदरत का
इज़हार किया।

4 मगर अफ़्सोस, आज तक रब ने तुम्हें न समझदार
दिल अता किया, न आँखें जो देख सकें या कान जो
सुन सकें। 5 रेगिस्तान में मैं ने 40 साल तक तुम्हारी
राहनुमाई की। इस दौरान न तुम्हारे कपड़े फटे और
न तुम्हारे जूते घिसे। 6 न तुम्हारे पास रोटी थी, न मै
या मै जैसी कोई और चीज़। तो भी रब ने तुम्हारी
ज़रूरियात पूरी कीं ताकि तुम सीख लो कि वही रब
तुम्हारा ख़ुदा है।

7 फिर हम यहाँ आए तो हस्बोन का बादशाह सीहोन
और बसन का बादशाह ओज निकल कर हम से
लड़ने आए। लेकिन हम ने उन्हें शिकस्त दी। 8 उन
के मुल्क पर क़ब्ज़ा करके हम ने उसे रूबिन, जद
और मनस्सी के आधे क़बीले को मीरास में दिया।
9 अब एहतियात से इस अह्द की तमाम शराइत पूरी
करो ताकि तुम हर बात में कामयाब हो।

10 इस वक़्त तुम सब रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर
खड़े हो, तुम्हारे क़बीलों के सरदार, तुम्हारे बुज़ुर्ग,
निगहबान, मर्द, 11 औरतें और बच्चे। तेरे दरमियान
रहने वाले परदेसी भी लक्कड़हारों से ले कर पानी भरने
वालों तक तेरे साथ यहाँ हाज़िर हैं। 12 तू इस लिए
यहाँ जमा हुआ है कि रब अपने ख़ुदा का वह अह्द
तस्लीम करे जो वह आज क़सम खा कर तेरे साथ
बांध रहा है। 13 इस से वह आज इस की तस्दीक़
कर रहा है कि तू उस की क़ौम और वह तेरा ख़ुदा
है यानी वही बात जिस का वादा उस ने तुझ से और
तेरे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया
था। 14–15 लेकिन मैं यह अह्द क़सम खा कर न सिर्फ़
तुम्हारे साथ जो हाज़िर हो बांध रहा हूँ बल्कि तुम्हारी
आने वाली नस्लों के साथ भी।

बुतपरस्ती की सज़ा

16 तुम ख़ुद जानते हो कि हम मिस्र में किस तरह
ज़िन्दगी गुज़ारते थे। यह भी तुम्हें याद है कि हम
किस तरह मुख़्तलिफ़ ममालिक में से गुज़रते हुए यहाँ
तक पहुँचे। 17 तुम ने उन के नफ़रतअंगेज़ बुत देखे
जो लकड़ी, पत्थर, चाँदी और सोने के थे। 18 ध्यान
दो कि यहाँ मौजूद कोई भी मर्द, औरत, कुम्बा या
क़बीला रब अपने ख़ुदा से हट कर दूसरी क़ौमों के
देवताओं की पूजा न करे। ऐसा न हो कि तुम्हारे
दरमियान कोई जड़ फूट कर ज़हरीला और कड़वा
फल लाए।

19 तुम सब ने वह लानतें सुनी हैं जो रब नाफ़रमानों
पर भेजेगा। तो भी हो सकता है कि कोई अपने
आप को रब की बरकत का वारिस समझ कर कहे,
“बेशक मैं अपनी ग़लत राहों से हटने के लिए तय्यार
नहीं हूँ, लेकिन कोई बात नहीं। मैं महफ़ूज़ रहूँगा।”
ख़बरदार, ऐसी हरकत से वह न सिर्फ़ अपने ऊपर
बल्कि पूरे मुल्क पर तबाही लाएगा। [k]20 रब कभी भी
उसे मुआफ़ करने पर आमादा नहीं होगा बल्कि वह
उसे अपने ग़ज़ब और ग़ैरत का निशाना बनाएगा। इस
किताब में दर्ज तमाम लानतें उस पर आएँगी, और रब
दुनिया से उस का नाम-ओ-निशान मिटा देगा। 21 वह
उसे पूरी जमाअत से अलग करके उस पर अह्द की
वह तमाम लानतें लाएगा जो शरीअत की इस किताब
में लिखी हुई हैं।

22 मुस्तक़बिल में तुम्हारी औलाद और दूरदराज़
ममालिक से आने वाले मुसाफ़िर उन मुसीबतों और
अमराज़ का असर देखेंगे जिन से रब ने मुल्क को
तबाह किया होगा। 23 चारों तरफ़ ज़मीन झुलसी हुई
और गंधक और नमक से ढकी हुई नज़र आएगी।
बीज उस में बोया नहीं जाएगा, क्यूँकि ख़ुदरौ पौदों
तक कुछ नहीं उगेगा। तुम्हारा मुल्क सदूम, अमूरा,
अदमा और ज़बोईम की मानिन्द होगा जिन को रब ने
अपने ग़ज़ब में तबाह किया। 24 तमाम क़ौमें पूछेंगी,
‘रब ने इस मुल्क के साथ ऐसा क्यूँ किया? उस
के सख़्त ग़ज़ब की क्या वजह थी?’ 25 उन्हें जवाब
मिलेगा, ‘वजह यह है कि इस मुल्क के बाशिन्दों ने
रब अपने बापदादा के ख़ुदा का अह्द तोड़ दिया जो
उस ने उन्हें मिस्र से निकालते वक़्त उन से बांधा था।
26 उन्हों ने जा कर दीगर माबूदों की ख़िदमत की और
उन्हें सिज्दा किया जिन से वह पहले वाक़िफ़ नहीं थे
और जो रब ने उन्हें नहीं दिए थे। 27 इसी लिए उस का
ग़ज़ब इस मुल्क पर नाज़िल हुआ और वह उस पर
वह तमाम लानतें लाया जिन का ज़िक्र इस किताब
में है। 28 वह इतना ग़ुस्से हुआ कि उस ने उन्हें जड़
से उखाड़ कर एक अजनबी मुल्क में फैंक दिया जहाँ
वह आज तक आबाद हैं।’

29 बहुत कुछ पोशीदा है, और सिर्फ़ रब हमारा ख़ुदा
उस का इल्म रखता है। लेकिन उस ने हम पर अपनी
शरीअत का इन्किशाफ़ कर दिया है। लाज़िम है कि
हम और हमारी औलाद उस के फ़रमाँबरदार रहें।

तौबा के मुसबत नतीजे

30 1 मैं ने तुझे बताया है कि तेरे लिए क्या
कुछ बरकत का और क्या कुछ लानत का
बाइस है। जब रब तेरा ख़ुदा तुझे तेरी ग़लत हरकतों
के सबब से मुख़्तलिफ़ क़ौमों में मुन्तशिर कर देगा तो
तू मेरी बातें मान जाएगा। 2 तब तू और तेरी औलाद
रब अपने ख़ुदा के पास वापस आएँगे और पूरे दिल-
ओ-जान से उस की सुन कर उन तमाम अह्काम पर
अमल करेंगे जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। 3 फिर रब
तेरा ख़ुदा तुझे बहाल करेगा और तुझ पर रहम करके
तुझे उन तमाम क़ौमों से निकाल कर जमा करेगा
जिन में उस ने तुझे मुन्तशिर कर दिया था। 4 हाँ,
रब तेरा ख़ुदा तुझे हर जगह से जमा करके वापस
लाएगा, चाहे तू सब से दूर मुल्क में क्यूँ न पड़ा हो।
5 वह तुझे तेरे बापदादा के मुल्क में लाएगा, और तू
उस पर क़ब्ज़ा करेगा। फिर वह तुझे तेरे बापदादा से
ज़्यादा कामयाबी बख़्शेगा, और तेरी तादाद ज़्यादा
बढ़ाएगा।

6 ख़तना रब की क़ौम का ज़ाहिरी निशान है। लेकिन
उस वक़्त रब तेरा ख़ुदा तेरे और तेरी औलाद का
बातिनी ख़तना करेगा ताकि तू उसे पूरे दिल-ओ-जान
से प्यार करे और जीता रहे। 7 जो लानतें रब तेरा ख़ुदा
तुझ पर लाया था उन्हें वह अब तेरे दुश्मनों पर आने
देगा, उन पर जो तुझ से नफ़रत रखते और तुझे ईज़ा
पहुँचाते हैं। 8 क्यूँकि तू दुबारा रब की सुनेगा और उस
के तमाम अह्काम की पैरवी करेगा जो मैं तुझे आज
दे रहा हूँ। 9 जो कुछ भी तू करेगा उस में रब तुझे बड़ी

---

[k]लफ़्ज़ी तर्जुमा : सेराब ज़मीन ख़ुश्क ज़मीन के साथ तबाह हो जाएगी।

कामयाबी बख़्शेगा, और तुझे कस्रत की औलाद, मवेशी और फ़सलें हासिल होंगी। क्यूँकि जिस तरह वह तेरे बापदादा को कामयाबी देने में ख़ुशी महसूस करता था उसी तरह वह तुझे भी कामयाबी देने में ख़ुशी महसूस करेगा।

10 शर्त सिर्फ़ यह है कि तू रब अपने ख़ुदा की सुने, शरीअत में दर्ज उस के अहकाम पर अमल करे और पूरे दिल-ओ-जान से उस की तरफ़ रुजू लाए।

11 जो अहकाम मैं आज तुझे दे रहा हूँ न वह हद से ज़्यादा मुश्किल हैं, न तेरी पहुँच से बाहर। 12 वह आसमान पर नहीं हैं कि तू कहे, 'कौन आसमान पर चढ़ कर हमारे लिए यह अहकाम नीचे ले आए ताकि हम उन्हें सुन सकें और उन पर अमल कर सकें?' 13 वह समुन्दर के पार भी नहीं हैं कि तू कहे, 'कौन समुन्दर को पार करके हमारे लिए यह अहकाम लाएगा ताकि हम उन्हें सुन सकें और उन पर अमल कर सकें?' 14 क्यूँकि यह कलाम तेरे निहायत क़रीब बल्कि तेरे मुँह और दिल में मौजूद है। चुनाँचे उस पर अमल करने में कोई भी रुकावट नहीं है।

ज़िन्दगी या मौत का चुनाओ

15 देख, आज मैं तुझे दो रास्ते पेश करता हूँ। एक ज़िन्दगी और ख़ुशहाली की तरफ़ ले जाता है जबकि दूसरा मौत और हलाकत की तरफ़। 16 आज मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि रब अपने ख़ुदा को प्यार कर, उस की राहों पर चल और उस के अहकाम के ताबे रह। फिर तू ज़िन्दा रह कर तरक़्क़ी करेगा, और रब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जिस में तू दाख़िल होने वाला है।

17 लेकिन अगर तेरा दिल इस रास्ते से हट कर नाफ़रमानी करे तो बरकत की तवक़्क़ो न कर। अगर तू आज़माइश में पड़ कर दीगर माबूदों को सिज्दा और उन की ख़िदमत करे 18 तो तुम ज़रूर तबाह हो जाओगे। आज मैं एलान करता हूँ कि इस सूरत में तुम ज़्यादा देर तक उस मुल्क में आबाद नहीं रहोगे जिस में तू दरया-ए-यर्दन को पार करके दाख़िल होगा ताकि उस पर क़ब्ज़ा करे।

19 आज आसमान और ज़मीन तुम्हारे ख़िलाफ़ मेरे गवाह हैं कि मैं ने तुम्हें ज़िन्दगी और बरकतों का रास्ता और मौत और लानतों का रास्ता पेश किया है। अब ज़िन्दगी का रास्ता इख़तियार कर ताकि तू और तेरी औलाद ज़िन्दा रहे। 20 रब अपने ख़ुदा को प्यार कर, उस की सुन और उस से लिपटा रह। क्यूँकि वही तेरी ज़िन्दगी है और वही करेगा कि तू देर तक उस मुल्क में जीता रहेगा जिस का वादा उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया था।"

यशूअ को मूसा की जगह मुक़र्रर किया जाता है

31 1 मूसा ने जा कर तमाम इस्राईलियों से मज़ीद कहा,

2 "अब मैं 120 साल का हो चुका हूँ। मेरा चलना फिरना मुश्किल हो गया है। और वैसे भी रब ने मुझे बताया है, 'तू दरया-ए-यर्दन को पार नहीं करेगा।' 3 रब तेरा ख़ुदा ख़ुद तेरे आगे आगे जा कर यर्दन को पार करेगा। वही तेरे आगे आगे इन क़ौमों को तबाह करेगा ताकि तू उन के मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सके। दरया को पार करते वक़्त यशूअ तेरे आगे चलेगा जिस तरह रब ने फ़रमाया है। 4 रब वहाँ के लोगों को बिलकुल उसी तरह तबाह करेगा जिस तरह वह अमोरियों को उन के बादशाहों सीहोन और ओज समेत तबाह कर चुका है। 5 रब तुम्हें उन पर ग़ालिब आने देगा। उस वक़्त तुम्हें उन के साथ वैसा सुलूक करना है जैसा मैं ने तुम्हें बताया है। 6 मज़बूत और दिलेर हो। उन से ख़ौफ़ न खाओ, क्यूँकि रब तेरा ख़ुदा तेरे साथ चलता है। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी तर्क नहीं करेगा।"

7 इस के बाद मूसा ने तमाम इस्राईलियों के सामने यशूअ को बुलाया और उस से कहा, "मज़बूत और दिलेर हो, क्यूँकि तू इस क़ौम को उस मुल्क में ले जाएगा जिस का वादा रब ने क़सम खा कर उन

के बापदादा से किया था। लाज़िम है कि तू ही
उसे तक़्सीम करके हर क़बीले को उस का मौरूसी
इलाक़ा दे। 8 रब ख़ुद तेरे आगे आगे चलते हुए तेरे
साथ होगा। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी
नहीं तर्क करेगा। ख़ौफ़ न खाना, न घबराना।"

हर सात साल के बाद शरीअत की तिलावत

9 मूसा ने यह पूरी शरीअत लिख कर इस्राईल के
तमाम बुज़ुर्गों और लावी के क़बीले के उन इमामों
के सपुर्द की जो सफ़र करते वक़्त अह्द का सन्दूक़
उठा कर ले चलते थे। उस ने उन से कहा, 10–11 "हर
सात साल के बाद इस शरीअत की तिलावत करना,
यानी बहाली के साल में जब तमाम क़र्ज़ मन्सूख़
किए जाते हैं। तिलावत उस वक़्त करना है जब
इस्राईली झोंपड़ियों की ईद के लिए रब अपने ख़ुदा के
सामने उस जगह हाज़िर होंगे जो वह मक़्दिस के लिए
चुनेगा। 12 तमाम लोगों को मर्दों, औरतों, बच्चों और
परदेसियों समेत वहाँ जमा करना ताकि वह सुन कर
सीखें, रब तुम्हारे ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें और एहतियात
से इस शरीअत की बातों पर अमल करें। 13 लाज़िम
है कि उन की औलाद जो इस शरीअत से नावाक़िफ़
है इसे सुने और सीखे ताकि उम्र भर उस मुल्क में
रब तुम्हारे ख़ुदा का ख़ौफ़ माने जिस पर तुम दरया-
ए-यर्दन को पार करके क़ब्ज़ा करोगे।"

रब मूसा को आख़िरी हिदायात देता है

14 रब ने मूसा से कहा, "अब तेरी मौत क़रीब है।
यशूअ को बुला कर उस के साथ मुलाक़ात के ख़ैमे
में हाज़िर हो जा। वहाँ मैं उसे उस की ज़िम्मादारियाँ
सौंपूँगा।"

मूसा और यशूअ आ कर ख़ैमे में हाज़िर हुए 15 तो
रब ख़ैमे के दरवाज़े पर बादल के सतून में ज़ाहिर
हुआ। 16 उस ने मूसा से कहा, "तू जल्द ही मर
कर अपने बापदादा से जा मिलेगा। लेकिन यह
क़ौम मुल्क में दाख़िल होने पर ज़िना करके उस के
अजनबी देवताओं की पैरवी करने लग जाएगी। वह
मुझे तर्क करके वह अह्द तोड़ देगी जो मैं ने उन के
साथ बांधा है। 17 फिर मेरा ग़ज़ब उन पर भड़केगा।
मैं उन्हें छोड़ कर अपना चिहरा उन से छुपा लूँगा।
तब उन्हें कच्चा चबा लिया जाएगा और बहुत सारी
हैबतनाक मुसीबतें उन पर आएँगी । उस वक़्त वह
कहेंगे, 'क्या यह मुसीबतें इस वजह से हम पर नहीं
आईं कि रब हमारे साथ नहीं है?' 18 और ऐसा ही
होगा। मैं ज़रूर अपना चिहरा उन से छुपाए रखूँगा,
क्यूँकि दीगर माबूदों के पीछे चलने से उन्हों ने एक
निहायत शरीर क़दम उठाया होगा।

19 अब ज़ैल का गीत लिख कर इस्राईलियों को यूँ
सिखाओ कि वह ज़बानी याद रहे और मेरे लिए उन
के ख़िलाफ़ गवाही दिया करे। 20 क्यूँकि मैं उन्हें उस
मुल्क में ले जा रहा हूँ जिस का वादा मैं ने क़सम खा
कर उन के बापदादा से किया था, उस मुल्क में जिस
में दूध और शहद की कस्रत है। वहाँ इतनी ख़ुराक
होगी कि उन की भूक जाती रहेगी और वह मोटे हो
जाएंगे। लेकिन फिर वह दीगर माबूदों के पीछे लग
जाएंगे और उन की ख़िदमत करेंगे। वह मुझे रद्द करेंगे
और मेरा अह्द तोड़ेंगे। 21 नतीजे में उन पर बहुत सारी
हैबतनाक मुसीबतें आएँगी । फिर यह गीत जो उन की
औलाद को याद रहेगा उन के ख़िलाफ़ गवाही देगा।
क्यूँकि गो मैं उन्हें उस मुल्क में ले जा रहा हूँ जिस
का वादा मैं ने क़सम खा कर उन से किया था तो भी
मैं जानता हूँ कि वह अब तक किस तरह की सोच
रखते हैं।"

22 मूसा ने उसी दिन यह गीत लिख कर इस्राईलियों
को सिखाया।

23 फिर रब ने यशूअ बिन नून से कहा, "मज़बूत
और दिलेर हो, क्यूँकि तू इस्राईलियों को उस मुल्क
में ले जाएगा जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर उन
से किया था। मैं ख़ुद तेरे साथ हूँगा।"

24 जब मूसा ने पूरी शरीअत को किताब में लिख
लिया 25 तो वह उन लावियों से मुख़ातिब हुआ जो
सफ़र करते वक़्त अह्द का सन्दूक़ उठा कर ले जाते
थे। 26 "शरीअत की यह किताब ले कर रब अपने

ख़ुदा के अह्द के सन्दूक़ के पास रखना। वहाँ वह
पड़ी रहे और तेरे ख़िलाफ़ गवाही देती रहे। 27 क्यूँकि
मैं ख़ूब जानता हूँ कि तू कितना सरकश और हटधर्म
है। मेरी मौजूदगी में भी तुम ने कितनी दफ़ा रब से
सरकशी की। तो फिर मेरे मरने के बाद तुम क्या
कुछ नहीं करोगे! 28 अब मेरे सामने अपने क़बीलों
के तमाम बुज़ुर्गों और निगहबानों को जमा करो ताकि
वह ख़ुद मेरी यह बातें सुनें और आसमान और ज़मीन
उन के ख़िलाफ़ गवाह हों। 29 क्यूँकि मुझे मालूम है
कि मेरी मौत के बाद तुम ज़रूर बिगड़ जाओगे और
उस रास्ते से हट जाओगे जिस पर चलने की मैं ने तुम्हें
ताकीद की है। आख़िरकार तुम पर मुसीबत आएगी,
क्यूँकि तुम वह कुछ करोगे जो रब को बुरा लगता है,
तुम अपने हाथों के काम से उसे ग़ुस्सा दिलाओगे।”
30 फिर मूसा ने इस्राईल की तमाम जमाअत के
सामने यह गीत शुरू से ले कर आख़िर तक पेश
किया,

मूसा का गीत

32 1 ऐ आसमान, मेरी बात पर ग़ौर कर! ऐ
ज़मीन, मेरा गीत सुन!
2 मेरी तालीम बूँदा-बाँदी जैसी हो, मेरी बात शबनम
की तरह ज़मीन पर पड़ जाए। वह बारिश की मानिन्द
हो जो हरियाली पर बरसती है।
3 मैं रब का नाम पुकारूँगा। हमारे ख़ुदा की अज़मत
की तम्जीद करो!
4 वह चटान है, और उस का काम कामिल है। उस
की तमाम राहें रास्त हैं। वह वफ़ादार ख़ुदा है जिस
में फ़रेब नहीं है बल्कि जो आदिल और दियानतदार
है।

5 एक टेढ़ी और कजरौ नस्ल ने उस का गुनाह
किया। वह उस के फ़र्ज़न्द नहीं बल्कि दाग़ साबित
हुए हैं।
6 ऐ मेरी अहमक़ और बेसमझ क़ौम, क्या तुम्हारा
रब से ऐसा रवय्या ठीक है? वह तो तुम्हारा बाप और
ख़ालिक़ है, जिस ने तुम्हें बनाया और क़ाइम किया।

7 क़दीम ज़माने को याद करना, माज़ी की नस्लों पर
तवज्जुह देना। अपने बाप से पूछना तो वह तुझे बता
देगा, अपने बुज़ुर्गों से पता करना तो वह तुझे इत्तिला
देंगे।
8 जब अल्लाह तआला ने हर क़ौम को उस का
अपना अपना मौरूसी इलाक़ा दे कर तमाम इन्सानों
को मुख़्तलिफ़ गुरोहों में अलग कर दिया तो उस ने
क़ौमों की सरहद्दें इस्राईलियों की तादाद के मुताबिक़
मुक़र्रर कीं।
9 क्यूँकि रब का हिस्सा उस की क़ौम है, याक़ूब
को उस ने मीरास में पाया है।
10 यह क़ौम उसे रेगिस्तान में मिल गई, वीरान-
ओ-सुन्सान बयाबान में जहाँ चारों तरफ़ हौलनाक
आवाज़ें गूँजती थीं। उस ने उसे घेर कर उस की देख-
भाल की, उसे अपनी आँख की पुतली की तरह बचाए
रखा।
11 जब उक़ाब अपने बच्चों को उड़ना सिखाता है तो
वह उन्हें घोंसले से निकाल कर उन के साथ उड़ता
है। अगर वह गिर भी जाएँ तो वह हाज़िर है और
उन के नीचे अपने परों को फैला कर उन्हें ज़मीन से
टकरा जाने से बचाता है। रब का इस्राईल के साथ
यही सुलूक था।
12 रब ने अकेले ही उस की राहनुमाई की। किसी
अजनबी माबूद ने शिर्कत न की।

13 उस ने उसे रथ पर सवार करके मुल्क की
बुलन्दियों पर से गुज़रने दिया और उसे खेत का फल
खिला कर उसे चटान से शहद और सख़्त पत्थर से
ज़ैतून का तेल मुहय्या किया। [1]

---

[1] लफ़्ज़ी तर्जुमा : चूसने दिया।

14 उस ने उसे गाय की लस्सी और भेड़-बकरी का
दूध चीदा भेड़ के बच्चों समेत खिलाया और उसे बसन
के मोटे-ताज़े मेंढे, बकरे और बेहतरीन अनाज अता
किया। उस वक़्त तू आला अंगूर की उम्दा मै से
लुत्फ़अन्दोज़ हुआ।

15 लेकिन जब यसूरून [m]मोटा हो गया तो वह
दोलत्तियाँ झाड़ने लगा। जब वह हलक़ तक भर कर
तनोमन्द और फ़र्बा हुआ तो उस ने अपने ख़ुदा और
ख़ालिक़ को रद्द किया, उस ने अपनी नजात की
चटान को हक़ीर जाना।
16 अपने अजनबी माबूदों से उन्हों ने उस की ग़ैरत
को जोश दिलाया, अपने घिनौने बुतों से उसे ग़ुस्सा
दिलाया।
17 उन्हों ने बदरूहों को क़ुर्बानियाँ पेश कीं जो ख़ुदा
नहीं हैं, ऐसे माबूदों को जिन से न वह और न उन
के बापदादा वाक़िफ़ थे, क्यूँकि वह थोड़ी देर पहले
वुजूद में आए थे।

18 तू वह चटान भूल गया जिस ने तुझे पैदा किया,
वही ख़ुदा जिस ने तुझे जन्म दिया।
19 रब ने यह देख कर उन्हें रद्द किया, क्यूँकि वह
अपने बेटे-बेटियों से नाराज़ था।
20 उस ने कहा, “मैं अपना चिहरा उन से छुपा लूँगा।
फिर पता लगेगा कि मेरे बग़ैर उन का क्या अन्जाम
होता है। क्यूँकि वह सरासर बिगड़ गए हैं, उन में
वफ़ादारी पाई नहीं जाती।
21 उन्हों ने उस की परस्तिश से जो ख़ुदा नहीं है
मेरी ग़ैरत को जोश दिलाया, अपने बेकार बुतों से
मुझे ग़ुस्सा दिलाया है। चुनाँचे मैं ख़ुद ही उन्हें ग़ैरत
दिलाऊँगा, एक ऐसी क़ौम के ज़रीए जो हक़ीक़त में
क़ौम नहीं है। एक नादान क़ौम के ज़रीए मैं उन्हें ग़ुस्सा
दिलाऊँगा।

22 क्यूँकि मेरे ग़ुस्से से आग भड़क उठी है जो
पाताल की तह तक पहुँचेगी और ज़मीन और उस की
पैदावार हड़प करके पहाड़ों की बुन्यादों को जला
देगी।

23 मैं उन पर मुसीबत पर मुसीबत आने दूँगा और
अपने तमाम तीर उन पर चलाऊँगा।
24 भूक के मारे उन की ताक़त जाती रहेगी, और
वह बुख़ार और वबाई अमराज़ का लुक़्मा बनेंगे। मैं
उन के ख़िलाफ़ फाड़ने वाले जानवर और ज़हरीले
साँप भेज दूँगा।
25 बाहर तलवार उन्हें बेऔलाद कर देगी, और
घर में दहशत फैल जाएगी। शीरख़्वार बच्चे, नौजवान
लड़के-लड़कियाँ और बुज़ुर्ग सब उस की गिरिफ़्त में
आ जाएंगे।

26 मुझे कहना चाहिए था कि मैं उन्हें चिकनाचूर
करके इन्सानों में से उन का नाम-ओ-निशान मिटा
दूँगा।
27 लेकिन अन्देशा था कि दुश्मन ग़लत मतलब
निकाल कर कहे, ‘हम ख़ुद उन पर ग़ालिब आए,
इस में रब का हाथ नहीं है’।”
28 क्यूँकि यह क़ौम बेसमझ और हिक्मत से ख़ाली
है।
29 काश वह दानिशमन्द हो कर यह बात समझें!
काश वह जान लें कि उन का क्या अन्जाम है।
30 क्यूँकि दुश्मन का एक आदमी किस तरह हज़ार
इस्राईलियों का ताक़्क़ुब कर सकता है? उस के दो
मर्द किस तरह दस हज़ार इस्राईलियों को भगा सकते
हैं? वजह सिर्फ़ यह है कि उन की चटान ने उन्हें
दुश्मन के हाथ बेच दिया। रब ने ख़ुद उन्हें दुश्मन के
क़ब्ज़े में कर दिया।
31 हमारे दुश्मन ख़ुद मानते हैं कि इस्राईल की चटान
हमारी चटान जैसी नहीं है।

---

[m]यानी इस्राईल।

32 उन की बेल तो सदूम की बेल और अमूरा के
बाग़ से है, उन के अंगूर ज़हरीले और उन के गुच्छे
कड़वे हैं।
33 उन की मै साँपों का मोहलिक ज़हर है।

34 रब फ़रमाता है, “क्या मैं ने इन बातों पर मुहर
लगा कर उन्हें अपने ख़ज़ाने में महफ़ूज़ नहीं रखा?
35 इन्तिक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला
लूँगा। एक वक़्त आएगा कि उन का पाँओ फिसलेगा।
क्यूँकि उन की तबाही का दिन क़रीब है, उन का
अन्जाम जल्द ही आने वाला है।”

36 यक़ीनन रब अपनी क़ौम का इन्साफ़ करेगा। वह
अपने ख़ादिमों पर तरस खाएगा जब देखेगा कि उन
की ताक़त जाती रही है और कोई नहीं बचा।
37 उस वक़्त वह पूछेगा, “अब उन के देवता कहाँ
हैं, वह चटान जिस की पनाह उन्हों ने ली?
38 वह देवता कहाँ हैं जिन्हों ने उन के बेहतरीन
जानवर खाए और उन की मै की नज़रें पी लीं। वह
तुम्हारी मदद के लिए उठें और तुम्हें पनाह दें।
39 अब जान लो कि मैं और सिर्फ़ मैं ख़ुदा हूँ। मेरे
सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। मैं ही हलाक करता
और मैं ही ज़िन्दा कर देता हूँ। मैं ही ज़ख़्मी करता
और मैं ही शिफ़ा देता हूँ। कोई मेरे हाथ से नहीं बचा
सकता।

40 मैं अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठा कर
एलान करता हूँ कि मेरी अबदी हयात की क़सम,
41 जब मैं अपनी चमकती हुई तलवार को तेज़
करके अदालत के लिए पकड़ लूँगा तो अपने
मुख़ालिफ़ों से इन्तिक़ाम और अपने नफ़रत करने
वालों से बदला लूँगा।
42 मेरे तीर ख़ून पी पी कर नशे में धुत हो जाएंगे, मेरी
तलवार मक़्तूलों और क़ैदियों के ख़ून और दुश्मन के
सरदारों के सरों से सेर हो जाएगी।”

43 ऐ दीगर क़ौमो, उस की उम्मत के साथ ख़ुशी
मनाओ! क्यूँकि वह अपने ख़ादिमों के ख़ून का
इन्तिक़ाम लेगा। वह अपने मुख़ालिफ़ों से बदला ले
कर अपने मुल्क और क़ौम का कफ़्फ़ारा देगा।

44 मूसा और यशूअ बिन नून ने आ कर इस्राईलियों
को यह पूरा गीत सुनाया। 45–46 फिर मूसा ने उन से
कहा, “आज मैं ने तुम्हें इन तमाम बातों से आगाह
किया है। लाज़िम है कि वह तुम्हारे दिलों में बैठ
जाएँ। अपनी औलाद को भी हुक्म दो कि एहतियात
से इस शरीअत की तमाम बातों पर अमल करे।
47 यह ख़ाली बातें नहीं बल्कि तुम्हारी ज़िन्दगी का
सरचश्मा हैं। इन के मुताबिक़ चलने के बाइस तुम
देर तक उस मुल्क में जीते रहोगे जिस पर तुम दरया-
ए-यर्दन को पार करके क़ब्ज़ा करने वाले हो।”

मूसा का नबू पहाड़ पर इन्तिक़ाल

48 उसी दिन रब ने मूसा से कहा, 49 “पहाड़ी
सिलसिले अबारीम के पहाड़ नबू पर चढ़ जा जो
यरीहू के सामने लेकिन यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर
यानी मोआब के मुल्क में है। वहाँ से कनआन पर
नज़र डाल, उस मुल्क पर जो मैं इस्राईलियों को दे
रहा हूँ। 50 इस के बाद तू वहाँ मर कर अपने बापदादा
से जा मिलेगा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह तेरा
भाई हारून होर पहाड़ पर मर कर अपने बापदादा से
जा मिला है। 51 क्यूँकि तुम दोनों इस्राईलियों के रू-
ब-रू बेवफ़ा हुए। जब तुम दश्त-ए-सीन में क़ादिस
के क़रीब थे और मरीबा के चश्मे पर इस्राईलियों
के सामने खड़े थे तो तुम ने मेरी क़ुद्दूसियत क़ाइम
न रखी। 52 इस सबब से तू वह मुल्क सिर्फ़ दूर से
देखेगा जो मैं इस्राईलियों को दे रहा हूँ। तू ख़ुद उस
में दाख़िल नहीं होगा।”

मूसा क़बीलों को बरकत देता है

33 1 मरने से पेशतर मर्द-ए-ख़ुदा मूसा ने
इस्राईलियों को बरकत दे कर 2 कहा,

“रब सीना से आया, सईर [n]से उस का नूर उन पर
तुलू हुआ। वह कोह-ए-फ़ारान से रौशनी फैला कर
रिबबोत-क़ादिस से आया, वह अपने जुनूबी इलाक़े
से रवाना हो कर उन की ख़ातिर पहाड़ी ढलानों के
पास आया।
3 यक़ीनन वह क़ौमों से मुहब्बत करता है, तमाम
मुक़द्दसीन तेरे हाथ में हैं। वह तेरे पाँओ के सामने
झुक कर तुझ से हिदायत पाते हैं।
4 मूसा ने हमें शरीअत दी यानी वह चीज़ जो याक़ूब
की जमाअत की मौरूसी मिलकियत है।
5 इस्राईल के राहनुमा अपने क़बीलों समेत जमा हुए
तो रब यसूरून [o]का बादशाह बन गया।

6 रूबिन की बरकत :
रूबिन मर न जाए बल्कि जीता रहे। वह तादाद में
बढ़ जाए।

7 यहूदाह की बरकत :
ऐ रब, यहूदाह की पुकार सुन कर उसे दुबारा उस
की क़ौम में शामिल कर। उस के हाथ उस के लिए
लड़ें। मुख़ालिफ़ों का सामना करते वक़्त उस की
मदद कर।

8 लावी की बरकत :
तेरी मर्ज़ी मालूम करने के क़ुरए बनाम ऊरीम और
तुम्मीम तेरे वफ़ादार ख़ादिम लावी के पास होते हैं।
तू ने उसे मस्सा में आज़माया और मरीबा में उस से
लड़ा। 9 उस ने तेरा कलाम सँभाल कर तेरा अह्द
क़ाइम रखा, यहाँ तक कि उस ने न अपने माँ-बाप
का, न अपने सगे भाइयों या बच्चों का लिहाज़ किया।
10 वह याक़ूब को तेरी हिदायात और इस्राईल को
तेरी शरीअत सिखा कर तेरे सामने बख़ूर और तेरी
क़ुर्बानगाह पर भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ चढ़ाता
है।
11 ऐ रब, उस की ताक़त को बढ़ा कर उस के हाथों
का काम पसन्द कर। उस के मुख़ालिफ़ों की कमर
तोड़ और उस से नफ़रत रखने वालों को ऐसा मार
कि आइन्दा कभी न उठें।

12 बिनयमीन की बरकत :
बिनयमीन रब को प्यारा है। वह सलामती से उस
के पास रहता है, क्यूँकि रब दिन रात उसे पनाह देता
है। बिनयमीन उस की पहाड़ी ढलानों के दरमियान
महफ़ूज़ रहता है।

13 यूसुफ़ की बरकत :
रब उस की ज़मीन को बरकत दे। आसमान से
क़ीमती ओस टपके और ज़मीन के नीचे से चश्मे फूट
निकलें।
14 यूसुफ़ को सूरज की बेहतरीन पैदावार और हर
महीने का लज़ीज़तरीन फल हासिल हो।
15 उसे क़दीम पहाड़ों और अबदी वादियों की
बेहतरीन चीज़ों से नवाज़ा जाए।
16 ज़मीन के तमाम ज़ख़ीरे उस के लिए खुल जाएँ।
वह उस को पसन्द हो जो जलती हुई झाड़ी में सुकूनत
करता था। यह तमाम बरकतें यूसुफ़ के सर पर ठहरें,
उस के सर पर जो अपने भाइयों में शहज़ादा है।
17 यूसुफ़ साँड के पहलौठे जैसा अज़ीम है, और उस
के सींग जंगली बैल के सींग हैं जिन से वह दुनिया
की इन्तिहा तक सब क़ौमों को मारेगा। इफ़्राईम
के बेशुमार अफ़राद ऐसे ही हैं, मनस्सी के हज़ारों
अफ़राद ऐसे ही हैं।

18 ज़बूलून और इश्कार की बरकत :
ऐ ज़बूलून, घर से निकलते वक़्त ख़ुशी मना। ऐ
इश्कार, अपने ख़ैमों में रहते हुए ख़ुश हो।
19 वह दीगर क़ौमों को अपने पहाड़ पर आने की
दावत देंगे और वहाँ रास्ती की क़ुर्बानियाँ पेश करेंगे।

---

[n]अदोम।

[o]इस्राईल।

वह समुन्दर की कस्रत और समुन्दर की रेत में छुपे हुए ख़ज़ानों को जज़्ब कर लेंगे।

20 जद की बरकत :
मुबारक है वह जो जद का इलाक़ा वसी कर दे। जद शेरबबर की तरह दबक कर किसी का बाज़ू या सर फाड़ डालने के लिए तय्यार रहता है।
21 उस ने अपने लिए सब से अच्छी ज़मीन चुन ली, राहनुमा का हिस्सा उसी के लिए मह्फ़ूज़ रखा गया। जब क़ौम के राहनुमा जमा हुए तो उस ने रब की रास्त मर्ज़ी पूरी की और इस्राईल के बारे में उस के फ़ैसले अमल में लाया।

22 दान की बरकत :
दान शेरबबर का बच्चा है जो बसन से निकल कर छलाँग लगाता है।

23 नफ़्ताली की बरकत :
नफ़्ताली रब की मन्ज़ूरी से सेर है, उसे उस की पूरी बरकत हासिल है। वह गलील की झील और उस के जुनूब का इलाक़ा मीरास में पाएगा।

24 आशर की बरकत :
आशर बेटों में सब से मुबारक है। वह अपने भाइयों को पसन्द हो। उस के पास ज़ैतून का इतना तेल हो कि वह अपने पाँओ उस में डुबो सके।
25 तेरे शहरों के दरवाज़ों के कुंडे लोहे और पीतल के हों, तेरी ताक़त उम्र भर क़ाइम रहे।

26 यसूरून के ख़ुदा की मानिन्द कोई नहीं है, जो आसमान पर सवार हो कर, हाँ अपने जलाल में बादलों पर बैठ कर तेरी मदद करने के लिए आता है।
27 अज़ली ख़ुदा तेरी पनाहगाह है, वह अपने अज़ली बाज़ू तेरे नीचे फैलाए रखता है। वह दुश्मन को तेरे सामने से भगा कर उसे हलाक करने को कहता है।
28 चुनाँचे इस्राईल सलामती से ज़िन्दगी गुज़ारेगा, याक़ूब का चश्मा अलग और मह्फ़ूज़ रहेगा। उस की ज़मीन अनाज और अंगूर की कस्रत पैदा करेगी, और उस के ऊपर आसमान ज़मीन पर ओस पड़ने देगा।
29 ऐ इस्राईल, तू कितना मुबारक है। कौन तेरी मानिन्द है, जिसे रब ने बचाया है। वह तेरी मदद की ढाल और तेरी शान की तलवार है। तेरे दुश्मन शिकस्त खा कर तेरी ख़ुशामद करेंगे, और तू उन की कमरें पाँओ तले कुचलेगा।”

मूसा की वफ़ात

34 1 यह बरकत दे कर मूसा मोआब का मैदानी इलाक़ा छोड़ कर यरीहू के मुक़ाबिल नबू पहाड़ पर चढ़ गया। नबू पिसगा के पहाड़ी सिलसिले की एक चोटी था। वहाँ से रब ने उसे वह पूरा मुल्क दिखाया जो वह इस्राईल को देने वाला था यानी जिलिआद के इलाक़े से ले कर दान के इलाक़े तक,
2 नफ़्ताली का पूरा इलाक़ा, इफ़्राईम और मनस्सी का इलाक़ा, यहूदाह का इलाक़ा बहीरा-ए-रूम तक,
3 जुनूब में दश्त-ए-नजब और खजूर के शहर यरीहू की वादी से ले कर ज़ुग़र तक। 4 रब ने उस से कहा, “यह वह मुल्क है जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया। मैं ने उन से कहा था कि उन की औलाद को यह मुल्क मिलेगा। तू उस में दाख़िल नहीं होगा, लेकिन मैं तुझे यहाँ ले आया हूँ ताकि तू उसे अपनी आँखों से देख सके।”
5 इस के बाद रब का ख़ादिम मूसा वहीं मोआब के मुल्क में फ़ौत हुआ, बिलकुल उसी तरह जिस तरह रब ने कहा था। 6 रब ने उसे बैत-फ़ग़ूर की किसी वादी में दफ़न किया, लेकिन आज तक किसी को भी मालूम नहीं कि उस की क़ब्र कहाँ है।
7 अपनी वफ़ात के वक़्त मूसा 120 साल का था। आख़िर तक न उस की आँखें धुन्दलाईं, न उस की ताक़त कम हुई। 8 इस्राईलियों ने मोआब के मैदानी इलाक़े में 30 दिन तक उस का मातम किया।

9 फिर यशूअ बिन नून मूसा की जगह खड़ा हुआ।
वह हिक्मत की रूह से मामूर था, क्यूँकि मूसा ने
अपने हाथ उस पर रख दिए थे। इस्राईलियों ने उस
की सुनी और वह कुछ किया जो रब ने उन्हें मूसा
की मारिफ़त बताया था।

10 इस के बाद इस्राईल में मूसा जैसा नबी कभी न
उठा जिस से रब रू-ब-रू बात करता था। 11 किसी
और नबी ने ऐसे इलाही निशान और मोजिज़े नहीं किए
जैसे मूसा ने फ़िरऔन बादशाह, उस के मुलाज़िमों
और पूरे मुल्क के सामने किए जब रब ने उसे मिस्र
भेजा। 12 किसी और नबी ने इस क़िस्म का बड़ा
इख़तियार न दिखाया, न ऐसे अज़ीम और हैबतनाक
काम किए जैसे मूसा ने इस्राईलियों के सामने किए।

यशूअ

रब यशूअ को राहनुमाई की ज़िम्मादारी सौंपता है

1 1 रब के ख़ादिम मूसा की मौत के बाद रब
मूसा के मददगार यशूअ बिन नून से हमकलाम
हुआ। उस ने कहा, 2 "मेरा ख़ादिम मूसा फ़ौत हो गया
है। अब उठ, इस पूरी क़ौम के साथ दरया-ए-यर्दन
को पार करके उस मुल्क में दाख़िल हो जा जो मैं
इस्राईलियों को देने को हूँ। 3 जिस ज़मीन पर भी तू
अपना पाँओ रखेगा उसे मैं मूसा के साथ किए गए
वादे के मुताबिक़ तुझे दूँगा। 4 तुम्हारे मुल्क की सरहद्दें
यह होंगी : जुनूब में नजब का रेगिस्तान, शिमाल में
लुबनान, मशरिक़ में दरया-ए-फ़ुरात और मग़रिब में
बहीरा-ए-रूम। हित्ती क़ौम का पूरा इलाक़ा इस में
शामिल होगा। 5 तेरे जीते जी कोई तेरा सामना नहीं
कर सकेगा। जिस तरह मैं मूसा के साथ था, उसी
तरह तेरे साथ भी हूँगा। मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा, न
तुझे तर्क करूँगा।

6 मज़बूत और दिलेर हो, क्यूँकि तू ही इस क़ौम
को मीरास में वह मुल्क देगा जिस का मैं ने उन के
बापदादा से क़सम खा कर वादा किया था। 7 लेकिन
ख़बरदार, मज़बूत और बहुत दिलेर हो। एहतियात
से उस पूरी शरीअत पर अमल कर जो मेरे ख़ादिम
मूसा ने तुझे दी है। उस से न दाईं और न बाईं तरफ़
हटना। फिर जहाँ कहीं भी तू जाए कामयाब होगा।
8 जो बातें इस शरीअत की किताब में लिखी हैं वह
तेरे मुँह से न हटें। दिन रात उन पर ग़ौर करता रह
ताकि तू एहतियात से इस की हर बात पर अमल कर
सके। फिर तू हर काम में कामयाब और ख़ुशहाल
होगा।

9 मैं फिर कहता हूँ कि मज़बूत और दिलेर हो। न
घबरा और न हौसला हार, क्यूँकि जहाँ भी तू जाएगा
वहाँ रब तेरा ख़ुदा तेरे साथ रहेगा।"

मुल्क में दाख़िल होने की तय्यारियाँ

10 फिर यशूअ क़ौम के निगहबानों से मुख़ातिब
हुआ, 11 "ख़ैमागाह में हर जगह जा कर लोगों को
इत्तिला दें कि सफ़र के लिए खाने का बन्द-ओ-बस्त
कर लें। क्यूँकि तीन दिन के बाद आप दरया-ए-यर्दन
को पार करके उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करेंगे जो रब
आप का ख़ुदा आप को विरसे में दे रहा है।"

12 फिर यशूअ रूबिन, जद और मनस्सी के आधे
क़बीले से मुख़ातिब हुआ, 13 "यह बात याद रखें जो
रब के ख़ादिम मूसा ने आप से कही थी, 'रब तुम्हारा
ख़ुदा तुम को दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर
का यह इलाक़ा देता है ताकि तुम यहाँ अम्न-ओ-
अमान के साथ रह सको।' 14 अब जब हम दरया-ए-
यर्दन को पार कर रहे हैं तो आप के बाल-बच्चे और
मवेशी यहीं रह सकते हैं। लेकिन लाज़िम है कि आप
के तमाम जंग करने के क़ाबिल मर्द मुसल्लह हो कर
अपने भाइयों के आगे आगे दरया को पार करें। आप
को उस वक़्त तक अपने भाइयों की मदद करना है
15 जब तक रब उन्हें वह आराम न दे जो आप को
हासिल है और वह उस मुल्क पर क़ब्ज़ा न कर लें
जो रब आप का ख़ुदा उन्हें दे रहा है। इस के बाद ही
आप को अपने उस इलाक़े में वापस जा कर आबाद
होने की इजाज़त होगी जो रब के ख़ादिम मूसा ने आप
को दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर दिया था।"

16 उन्हों ने जवाब में यशूअ से कहा, "जो भी हुक्म
आप ने हमें दिया है वह हम मानेंगे और जहाँ भी हमें
भेजेंगे वहाँ जाएंगे। 17 जिस तरह हम मूसा की हर
बात मानते थे उसी तरह आप की भी हर बात मानेंगे।
लेकिन रब आप का ख़ुदा उसी तरह आप के साथ हो
जिस तरह वह मूसा के साथ था। 18 जो भी आप के
हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी करके आप की वह तमाम

बातें न माने जो आप फ़रमाएँगे उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। लेकिन मज़बूत और दिलेर हों!”

यरीहू शहर में इस्राईली जासूस

2 1 फिर यशूअ ने चुपके से दो जासूसों को शित्तीम से भेज दिया जहाँ इस्राईली ख़ैमागाह थी। उस ने उन से कहा, “जा कर मुल्क का जाइज़ा लें, ख़ासकर यरीहू शहर का।” वह रवाना हुए और चलते चलते एक कस्बी के घर पहुँचे जिस का नाम राहब था। वहाँ वह रात के लिए ठहर गए। 2 लेकिन यरीहू के बादशाह को इत्तिला मिली कि आज शाम को कुछ इस्राईली मर्द यहाँ पहुँच गए हैं जो मुल्क की जासूसी करना चाहते हैं। 3 यह सुन कर बादशाह ने राहब को ख़बर भेजी, “उन आदमियों को निकाल दो जो तुम्हारे पास आ कर ठहरे हुए हैं, क्यूँकि यह पूरे मुल्क की जासूसी करने के लिए आए हैं।”

4 लेकिन राहब ने दोनों आदमियों को छुपा रखा था। उस ने कहा, “जी, यह आदमी मेरे पास आए तो थे लेकिन मुझे मालूम नहीं था कि कहाँ से आए हैं। 5 जब दिन ढलने लगा और शहर के दरवाज़ों को बन्द करने का वक़्त आ गया तो वह चले गए। मुझे मालूम नहीं कि किस तरफ़ गए। अब जल्दी करके उन का पीछा करें। ऐन मुमकिन है कि आप उन्हें पकड़ लें।” 6 हक़ीक़त में राहब ने उन्हें छत पर ले जा कर वहाँ पर पड़े सन के डंठलों के नीचे छुपा दिया था। 7 राहब की बात सुन कर बादशाह के आदमी वहाँ से चले गए और शहर से निकल कर जासूसों के ताक़्क़ुब में उस रास्ते पर चलने लगे जो दरया-ए-यर्दन के उन कम-गहरे मक़ामों तक ले जाता है जहाँ उसे पैदल उबूर किया जा सकता था। और जूँ ही यह आदमी निकले, शहर का दरवाज़ा उन के पीछे बन्द कर दिया गया।

8 जासूसों के सो जाने से पहले राहब ने छत पर आ कर 9 उन से कहा, “मैं जानती हूँ कि रब ने यह मुल्क आप को दे दिया है। आप के बारे में सुन कर हम पर दहशत छा गई है, और मुल्क के तमाम बाशिन्दे हिम्मत हार गए हैं। 10 क्यूँकि हमें ख़बर मिली है कि आप के मिस्र से निकलते वक़्त रब ने बहर-ए-क़ुल्ज़ुम का पानी किस तरह आप के आगे ख़ुश्क कर दिया। यह भी हमारे सुनने में आया है कि आप ने दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में रहने वाले दो बादशाहों सीहोन और ओज के साथ क्या कुछ किया, कि आप ने उन्हें पूरी तरह तबाह कर दिया। 11 यह सुन कर हमारी हिम्मत टूट गई। आप के सामने हम सब हौसला हार गए हैं, क्यूँकि रब आप का ख़ुदा आसमान-ओ-ज़मीन का ख़ुदा है। 12 अब रब की क़सम खा कर मुझ से वादा करें कि आप उसी तरह मेरे ख़ानदान पर मेहरबानी करेंगे जिस तरह कि मैं ने आप पर की है। और ज़मानत के तौर पर मुझे कोई निशान दें 13 कि आप मेरे माँ-बाप, मेरे बहन-भाइयों और उन के घर वालों को ज़िन्दा छोड़ कर हमें मौत से बचाए रखेंगे।”

14 आदमियों ने कहा, “हम अपनी जानों को ज़मानत के तौर पर पेश करते हैं कि आप महफ़ूज़ रहेंगे। अगर आप किसी को हमारे बारे में इत्तिला न दें तो हम आप से ज़रूर मेहरबानी और वफ़ादारी से पेश आएँगे जब रब हमें यह मुल्क अता फ़रमाएगा।”

15 तब राहब ने शहर से निकलने में उन की मदद की। चूँकि उस का घर शहर की चारदीवारी से मुल्हिक़ था इस लिए आदमी खिड़की से निकल कर रस्से के ज़रीए बाहर की ज़मीन पर उतर आए। 16 उतरने से पहले राहब ने उन्हें हिदायत की, “पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ चले जाएँ। जो आप का ताक़्क़ुब कर रहे हैं वह वहाँ आप को ढूँड नहीं सकेंगे। तीन दिन तक यानी जब तक वह वापस न आ जाएँ वहाँ छुपे रहना। इस के बाद जहाँ जाने का इरादा है चले जाना।”

17 आदमियों ने उस से कहा, “जो क़सम आप ने हमें खिलाई है हम ज़रूर उस के पाबन्द रहेंगे। लेकिन शर्त यह है 18 कि आप हमारे इस मुल्क में आते वक़्त क़िर्मिज़ी रंग का यह रस्सा उस खिड़की के सामने बांध दें जिस में से आप ने हमें उतरने दिया है। यह भी लाज़िम है कि उस वक़्त आप के माँ-बाप, भाई-

बहनें और तमाम घर वाले आप के घर में हों। 19 अगर
कोई आप के घर में से निकले और मार दिया जाए
तो यह हमारा क़ुसूर नहीं होगा, हम ज़िम्मादार नहीं
ठहरेंगे। लेकिन अगर किसी को हाथ लगाया जाए जो
आप के घर के अन्दर हो तो हम ही उस की मौत के
ज़िम्मादार ठहरेंगे। 20 और किसी को हमारे मुआमले
के बारे में इत्तिला न देना, वर्ना हम उस क़सम से
आज़ाद हैं जो आप ने हमें खिलाई।"

21 राहब ने जवाब दिया, "ठीक है, ऐसा ही हो।"
फिर उस ने उन्हें रुख़्सत किया और वह रवाना हुए।
और राहब ने अपनी खिड़की के साथ मज़कूरा रस्सा
बांध दिया।

22 जासूस चलते चलते पहाड़ी इलाक़े में आ गए।
वहाँ वह तीन दिन रहे। इतने में उन का ताक़्क़ुब करने
वाले पूरे रास्ते का खोज लगा कर ख़ाली हाथ लौटे।
23 फिर दोनों जासूसों ने पहाड़ी इलाक़े से उतर कर
दरया-ए-यर्दन को पार किया और यशूअ बिन नून के
पास आ कर सब कुछ बयान किया जो उन के साथ
हुआ था। 24 उन्हों ने कहा, "यक़ीनन रब ने हमें पूरा
मुल्क दे दिया है। हमारे बारे में सुन कर मुल्क के
तमाम बाशिन्दों पर दहशत तारी हो गई है।"

इस्राईली दरया-ए-यर्दन को उबूर करते हैं

3 1 सुब्ह-सवेरे उठ कर यशूअ और तमाम
इस्राईली शित्तीम से रवाना हुए। जब वह दरया-
ए-यर्दन पर पहुँचे तो उसे उबूर न किया बल्कि रात के
लिए किनारे पर रुक गए। 2 वह तीन दिन वहाँ रहे।
फिर निगहबानों ने ख़ैमागाह में से गुज़र कर 3 लोगों
को हुक्म दिया, "जब आप देखें कि लावी के क़बीले
के इमाम रब आप के ख़ुदा के अह्द का सन्दूक़
उठाए हुए हैं तो अपने अपने मक़ाम से रवाना हो कर
उस के पीछे हो लें। 4 फिर आप को पता चलेगा कि
कहाँ जाना है, क्यूँकि आप पहले कभी वहाँ नहीं
गए। लेकिन सन्दूक़ के तक़रीबन एक किलोमीटर
पीछे रहें और ज़्यादा क़रीब न जाएँ।"

5 यशूअ ने लोगों को बताया, "अपने आप को
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करें, क्यूँकि कल रब आप के
दरमियान हैरतअंगेज़ काम करेगा।"

6 अगले दिन यशूअ ने इमामों से कहा, "अह्द का
सन्दूक़ उठा कर लोगों के आगे आगे दरया को पार
करें।" चुनाँचे इमाम सन्दूक़ को उठा कर आगे आगे
चल दिए। 7 और रब ने यशूअ से फ़रमाया, "मैं तुझे
तमाम इस्राईलियों के सामने सरफ़राज़ कर दूँगा, और
आज ही मैं यह काम शुरू करूँगा ताकि वह जान लें
कि जिस तरह मैं मूसा के साथ था उसी तरह तेरे
साथ भी हूँ। 8 अह्द का सन्दूक़ उठाने वाले इमामों
को बता देना, 'जब आप दरया-ए-यर्दन के किनारे
पहुँचेंगे तो वहाँ पानी में रुक जाएँ'।"

9 यशूअ ने इस्राईलियों से कहा, "मेरे पास आएँ
और रब अपने ख़ुदा के फ़रमान सुन लें। 10 आज
आप जान लेंगे कि ज़िन्दा ख़ुदा आप के दरमियान
है और कि वह यक़ीनन आप के आगे आगे जा कर
दूसरी क़ौमों को निकाल देगा, ख़्वाह वह कनआनी,
हित्ती, हिव्वी, फ़रिज़्ज़ी, जिर्जासी, अमोरी या यबूसी
हों। 11 यह यूँ ज़ाहिर होगा कि अह्द का यह सन्दूक़
जो तमाम दुनिया के मालिक का है आप के आगे
आगे दरया-ए-यर्दन में जाएगा। 12 अब ऐसा करें कि
हर क़बीले में से एक एक आदमी को चुन लें ताकि
बारह अफ़राद जमा हो जाएँ। 13 फिर इमाम तमाम
दुनिया के मालिक रब के अह्द का सन्दूक़ उठा कर
दरया में जाएंगे। और जूँ ही वह अपने पाँओ पानी
में रखेंगे तो पानी का बहाओ रुक जाएगा और आने
वाला पानी ढेर बन कर खड़ा रहेगा।"

14 चुनाँचे इस्राईली अपने ख़ैमों को समेट कर रवाना
हुए, और अह्द का सन्दूक़ उठाने वाले इमाम उन के
आगे आगे चल दिए। 15 फ़सल की कटाई का मौसम
था, और दरया का पानी किनारों से बाहर आ गया
था। लेकिन जूँ ही सन्दूक़ को उठाने वाले इमामों ने
दरया के किनारे पहुँच कर पानी में क़दम रखा 16 तो
आने वाले पानी का बहाओ रुक गया। वह उन से
दूर एक शहर के क़रीब ढेर बन गया जिस का नाम

आदम था और जो ज़र्तान के नज़्दीक है। जो पानी
दूसरी यानी बहीरा-ए-मुर्दार की तरफ़ बह रहा था वह
पूरी तरह उतर गया। तब इस्राईलियों ने यरीहू शहर के
मुक़ाबिल दरया को पार किया। 17 रब का अह्द का
सन्दूक़ उठाने वाले इमाम दरया-ए-यर्दन के बीच में
ख़ुश्क ज़मीन पर खड़े रहे जबकि बाक़ी लोग ख़ुश्क
ज़मीन पर से गुज़र गए। इमाम उस वक़्त तक वहाँ
खड़े रहे जब तक तमाम इस्राईलियों ने ख़ुश्क ज़मीन
पर चल कर दरया को पार न कर लिया।

यादगार पत्थर

4 1 जब पूरी क़ौम ने दरया-ए-यर्दन को उबूर कर
लिया तो रब यशूअ से हमकलाम हुआ, 2 "हर
क़बीले में से एक एक आदमी को चुन ले। 3 फिर इन
बारह आदमियों को हुक्म दे कि जहाँ इमाम दरया-
ए-यर्दन के दरमियान खड़े हैं वहाँ से बारह पत्थर
उठा कर उन्हें उस जगह रख दो जहाँ तुम आज रात
ठहरोगे।"

4 चुनाँचे यशूअ ने उन बारह आदमियों को बुलाया
जिन्हें उस ने इस्राईल के हर क़बीले से चुन लिया था
5 और उन से कहा, "रब अपने ख़ुदा के सन्दूक़ के
आगे आगे चल कर दरया के दरमियान तक जाएँ।
आप में से हर आदमी एक एक पत्थर उठा कर अपने
कंधे पर रखे और बाहर ले जाए। कुल बारह पत्थर
होंगे, इस्राईल के हर क़बीले के लिए एक। 6 यह
पत्थर आप के दरमियान एक यादगार निशान रहेंगे।
आइन्दा जब आप के बच्चे आप से पूछेंगे कि इन
पत्थरों का क्या मतलब है 7 तो उन्हें बताना, 'यह
हमें याद दिलाते हैं कि दरया-ए-यर्दन का बहाओ रुक
गया जब रब का अह्द का सन्दूक़ उस में से गुज़रा।'
यह पत्थर अबद तक इस्राईल को याद दिलाते रहेंगे
कि यहाँ क्या कुछ हुआ था।"

8 इस्राईलियों ने ऐसा ही किया। उन्हों ने दरया-ए-
यर्दन के बीच में से अपने क़बीलों की तादाद के
मुताबिक़ बारह पत्थर उठाए, बिलकुल उसी तरह
जिस तरह रब ने यशूअ को फ़रमाया था। फिर उन्हों ने
यह पत्थर अपने साथ ले कर उस जगह रख दिए जहाँ
उन्हें रात के लिए ठहरना था। 9 साथ साथ यशूअ ने
उस जगह भी बारह पत्थर खड़े किए जहाँ अह्द का
सन्दूक़ उठाने वाले इमाम दरया-ए-यर्दन के दरमियान
खड़े थे। यह पत्थर आज तक वहाँ पड़े हैं। 10 सन्दूक़
को उठाने वाले इमाम दरया के दरमियान खड़े रहे
जब तक लोगों ने तमाम अह्काम जो रब ने यशूअ
को दिए थे पूरे न कर लिए। यूँ सब कुछ वैसा ही
हुआ जैसा मूसा ने यशूअ को फ़रमाया था।

लोग जल्दी जल्दी दरया में से गुज़रे। 11 जब सब
दूसरे किनारे पर थे तो इमाम भी रब का सन्दूक़
ले कर किनारे पर पहुँचे और दुबारा क़ौम के आगे
आगे चलने लगे। 12 और जिस तरह मूसा ने फ़रमाया
था, रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले के
मर्द मुसल्लह हो कर बाक़ी इस्राईली क़बीलों से पहले
दरया के दूसरे किनारे पर पहुँच गए थे। 13 तक़रीबन
40,000 मुसल्लह मर्द उस वक़्त रब के सामने यरीहू
के मैदान में पहुँच गए ताकि वहाँ जंग करें। 14 उस
दिन रब ने यशूअ को पूरी इस्राईली क़ौम के सामने
सरफ़राज़ किया। उस के जीते जी लोग उस का यूँ
ख़ौफ़ मानते रहे जिस तरह पहले मूसा का।

15 फिर रब ने यशूअ से कहा, 16 "अह्द का सन्दूक़
उठाने वाले इमामों को दरया में से निकलने का हुक्म
दे।" 17 यशूअ ने ऐसा ही किया 18 तो जूँ ही इमाम
किनारे पर पहुँच गए पानी दुबारा बह कर दरया के
किनारों से बाहर आने लगा।

19 इस्राईलियों ने पहले महीने के दसवें दिन [p]दरया-
ए-यर्दन को उबूर किया। उन्हों ने अपने ख़ैमे यरीहू
के मशरिक़ में वाक़े जिल्जाल में खड़े किए। 20 वहाँ
यशूअ ने दरया में से चुने हुए बारह पत्थरों को खड़ा
किया। 21 उस ने इस्राईलियों से कहा, "आइन्दा जब
आप के बच्चे अपने अपने बाप से पूछेंगे कि इन

---

[p]यानी अप्रैल में।

पत्थरों का क्या मतलब है 22 तो उन्हें बताना, ‘यह
वह जगह है जहाँ इस्राईली क़ौम ने ख़ुश्क ज़मीन पर
दरया-ए-यर्दन को पार किया।’ 23 क्यूँकि रब आप के
ख़ुदा ने उस वक़्त तक आप के आगे आगे दरया का
पानी ख़ुश्क कर दिया जब तक आप वहाँ से गुज़र न
गए, बिलकुल उसी तरह जिस तरह बहर-ए-क़ुल्ज़ुम
के साथ किया था जब हम उस में से गुज़रे। 24 उस
ने यह काम इस लिए किया ताकि ज़मीन की तमाम
क़ौमें अल्लाह की क़ुदरत को जान लें और आप हमेशा
रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें।”

5 1 यह ख़बर दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में आबाद
तमाम अमोरी बादशाहों और साहिली इलाक़े
में आबाद तमाम कनआनी बादशाहों तक पहुँच गई
कि रब ने इस्राईलियों के सामने दरया को उस वक़्त
तक ख़ुश्क कर दिया जब तक सब ने पार न कर
लिया था। तब उन की हिम्मत टूट गई और उन में
इस्राईलियों का सामना करने की जुरअत न रही।

जिल्जाल में ख़तना

2 उस वक़्त रब ने यशूअ से कहा, “पत्थर की
छुरियाँ बना कर पहले की तरह इस्राईलियों का
ख़तना करवा दे।” 3 चुनाँचे यशूअ ने पत्थर की
छुरियाँ बना कर एक जगह पर इस्राईलियों का ख़तना
करवाया जिस का नाम बाद में ‘ख़तना पहाड़’ रखा
गया। 4 बात यह थी कि जो मर्द मिस्र से निकलते
वक़्त जंग करने के क़ाबिल थे वह रेगिस्तान में चलते
चलते मर चुके थे। 5 मिस्र से रवाना होने वाले इन
तमाम मर्दों का ख़तना हुआ था, लेकिन जितने लड़कों
की पैदाइश रेगिस्तान में हुई थी उन का ख़तना नहीं
हुआ था। 6 चूँकि इस्राईली रब के ताबे नहीं रहे थे
इस लिए उस ने क़सम खाई थी कि वह उस मुल्क
को नहीं देखेंगे जिस में दूध और शहद की कस्रत
है और जिस का वादा उस ने क़सम खा कर उन
के बापदादा से किया था। नतीजे में इस्राईली फ़ौरन
मुल्क में दाख़िल न हो सके बल्कि उन्हें उस वक़्त
तक रेगिस्तान में फिरना पड़ा जब तक वह तमाम मर्द
मर न गए जो मिस्र से निकलते वक़्त जंग करने के
क़ाबिल थे। 7 उन की जगह रब ने उन के बेटों को
खड़ा किया था। यशूअ ने उन ही का ख़तना करवाया।
उन का ख़तना इस लिए हुआ कि रेगिस्तान में सफ़र
के दौरान उन का ख़तना नहीं किया गया था।

8 पूरी क़ौम के मर्दों का ख़तना होने के बाद वह
उस वक़्त तक ख़ैमागाह में रहे जब तक उन के ज़ख़्म
ठीक नहीं हो गए थे। 9 और रब ने यशूअ से कहा,
“आज मैं ने मिस्र की रुस्वाई तुम से दूर कर दी है।”
[1]इस लिए उस जगह का नाम आज तक जिल्जाल
यानी लुढ़काना रहा है।

10 जब इस्राईली यरीहू के मैदानी इलाक़े में वाक़े
जिल्जाल में ख़ैमाज़न थे तो उन्हों ने फ़सह की ईद
भी मनाई। महीने का चौधवाँ दिन था, 11 और अगले
ही दिन वह पहली दफ़ा उस मुल्क की पैदावार में
से बेख़मीरी रोटी और अनाज के भुने हुए दाने खाने
लगे। 12 उस के बाद के दिन मन का सिलसिला ख़त्म
हुआ और इस्राईलियों के लिए यह सहूलत न रही।
उस साल से वह कनआन की पैदावार से खाने लगे।

फ़रिश्ते से यशूअ की मुलाक़ात

13 एक दिन यशूअ यरीहू शहर के क़रीब था।
अचानक एक आदमी उस के सामने खड़ा नज़र आया
जिस के हाथ में नंगी तलवार थी। यशूअ ने उस के
पास जा कर पूछा, “क्या आप हमारे साथ या हमारे
दुश्मनों के साथ हैं?”

14 आदमी ने कहा, “नहीं, मैं रब के लश्कर का
सरदार हूँ और अभी अभी तेरे पास पहुँचा हूँ।”

यह सुन कर यशूअ ने गिर कर उसे सिज्दा किया
और पूछा, “मेरे आक़ा अपने ख़ादिम को क्या
फ़रमाना चाहते हैं?”

---

[1]लफ़्ज़ी तर्जुमा : लुढ़का कर दूर कर दी है।

15 रब के लश्कर के सरदार ने जवाब में कहा,
"अपने जूते उतार दे, क्यूँकि जिस जगह पर तू खड़ा
है वह मुक़द्दस है।" यशूअ ने ऐसा ही किया।

यरीहू की तबाही

6 1 उन दिनों में इस्राईलियों की वजह से यरीहू के
दरवाज़े बन्द ही रहे। न कोई बाहर निकला,
न कोई अन्दर गया। 2 रब ने यशूअ से कहा, "मैं
ने यरीहू को उस के बादशाह और फ़ौजी अफ़सरों
समेत तेरे हाथ में कर दिया है। 3 जो इस्राईली जंग
के लिए तेरे साथ निकलेंगे उन के साथ शहर की
फ़सील के साथ साथ चल कर एक चक्कर लगाओ
और फिर ख़ैमागाह में वापस आ जाओ। छः दिन
तक ऐसा ही करो। 4 सात इमाम एक एक नरसिंगा
उठाए अह्द के सन्दूक़ के आगे आगे चलें। फिर
सातवें दिन शहर के गिर्द सात चक्कर लगाओ। साथ
साथ इमाम नरसिंगे बजाते रहें। 5 जब वह नरसिंगों
को बजाते बजाते लम्बी सी फूँक मारेंगे तो फिर तमाम
इस्राईली बड़े ज़ोर से जंग का नारा लगाएँ। इस पर
शहर की फ़सील गिर जाएगी और तेरे लोग हर जगह
सीधे शहर में दाख़िल हो सकेंगे।"

6 यशूअ बिन नून ने इमामों को बुला कर उन से
कहा, "रब के अह्द का सन्दूक़ उठा कर मेरे साथ
चलें। और सात इमाम एक एक नरसिंगा उठाए
सन्दूक़ के आगे आगे चलें।" 7 फिर उस ने बाक़ी
लोगों से कहा, "आएँ, शहर की फ़सील के साथ
साथ चल कर एक चक्कर लगाएँ। मुसल्लह आदमी रब
के सन्दूक़ के आगे आगे चलें।"

8 सब कुछ यशूअ की हिदायात के मुताबिक़ हुआ।
सात इमाम नरसिंगे बजाते हुए रब के आगे आगे
चले जबकि रब के अह्द का सन्दूक़ उन के पीछे
पीछे था। 9 मुसल्लह आदमियों में से कुछ बजाने वाले
इमामों के आगे आगे और कुछ सन्दूक़ के पीछे
पीछे चलने लगे। इतने में इमाम नरसिंगे बजाते रहे।
10 लेकिन यशूअ ने बाक़ी लोगों को हुक्म दिया था
कि उस दिन जंग का नारा न लगाएँ। उस ने कहा,
"जब तक मैं हुक्म न दूँ उस वक़्त तक एक लफ़्ज़
भी न बोलना। जब मैं इशारा दूँगा तो फिर ही ख़ूब
नारा लगाना।" 11 इसी तरह रब के सन्दूक़ ने शहर
की फ़सील के साथ साथ चल कर चक्कर लगाया।
फिर लोगों ने ख़ैमागाह में लौट कर वहाँ रात गुज़ारी।

12–13 अगले दिन यशूअ सुब्ह-सवेरे उठा, और
इमामों और फ़ौजियों ने दूसरी मर्तबा शहर का चक्कर
लगाया। उन की वही तर्तीब थी। पहले कुछ मुसल्लह
आदमी, फिर सात नरसिंगे बजाने वाले इमाम, फिर
रब के अह्द का सन्दूक़ उठाने वाले इमाम और
आख़िर में मज़ीद कुछ मुसल्लह आदमी थे। चक्कर
लगाने के दौरान इमाम नरसिंगे बजाते रहे। 14 इस
दूसरे दिन भी वह शहर का चक्कर लगा कर ख़ैमागाह
में लौट आए। उन्हों ने छः दिन तक ऐसा ही किया।

15 सातवें दिन उन्हों ने सुब्ह-सवेरे उठ कर शहर
का चक्कर यूँ लगाया जैसे पहले छः दिनों में, लेकिन
इस दफ़ा उन्हों ने कुल सात चक्कर लगाए। 16 सातवें
चक्कर पर इमामों ने नरसिंगों को बजाते हुए लम्बी सी
फूँक मारी। तब यशूअ ने लोगों से कहा, "जंग का
नारा लगाएँ, क्यूँकि रब ने आप को यह शहर दे दिया
है। 17 शहर को और जो कुछ उस में है तबाह करके
रब के लिए मख़्सूस करना है। सिर्फ़ राहब कस्बी
को उन लोगों समेत बचाना है जो उस के घर में हैं।
क्यूँकि उस ने हमारे उन जासूसों को छुपा दिया जिन
को हम ने यहाँ भेजा था। 18 लेकिन अल्लाह के लिए
मख़्सूस चीज़ों को हाथ न लगाना, क्यूँकि अगर आप
उन में से कुछ ले लें तो अपने आप को तबाह करेंगे
बल्कि इस्राईली ख़ैमागाह पर भी तबाही और आफ़त
लाएँगे। 19 जो कुछ भी चाँदी, सोने, पीतल या लोहे
से बना है वह रब के लिए मख़्सूस है। उसे रब के
ख़ज़ाने में डालना है।"

20 जब इमामों ने लम्बी फूँक मारी तो इस्राईलियों
ने जंग के ज़ोरदार नारे लगाए। अचानक यरीहू की
फ़सील गिर गई, और हर शख़्स अपनी अपनी जगह
पर सीधा शहर में दाख़िल हुआ। यूँ शहर इस्राईल
के क़ब्ज़े में आ गया। 21 जो कुछ भी शहर में था

उसे उन्हों ने तलवार से मार कर रब के लिए मख़्सूस किया, ख़्वाह मर्द या औरत, जवान या बुज़ुर्ग, गाय-बैल, भेड़-बकरी या गधा था।

22 जिन दो आदमियों ने मुल्क की जासूसी की थी उन से यशूअ ने कहा, "अब अपनी क़सम का वादा पूरा करें। कस्बी के घर में जा कर उसे और उस के तमाम घर वालों को निकाल लाएँ।" 23 चुनाँचे यह जवान आदमी गए और राहब, उस के माँ-बाप, भाइयों और बाक़ी रिश्तेदारों को उस की मिलकियत समेत निकाल कर ख़ैमागाह से बाहर कहीं बसा दिया। 24 फिर उन्हों ने पूरे शहर को और जो कुछ उस में था भस्म कर दिया। लेकिन चाँदी, सोने, पीतल और लोहे का तमाम माल उन्हों ने रब के घर के ख़ज़ाने में डाल दिया। 25 यशूअ ने सिर्फ़ राहब कस्बी और उस के घर वालों को बचाए रखा, क्यूँकि उस ने उन आदमियों को छुपा दिया था जिन्हें यशूअ ने यरीहू भेजा था। राहब आज तक इस्राईलियों के दरमियान रहती है।

26 उस वक़्त यशूअ ने क़सम खाई, "रब की लानत उस पर हो जो यरीहू का शहर नए सिरे से तामीर करने की कोशिश करे। शहर की बुन्याद रखते वक़्त वह अपने पहलौठे से महरूम हो जाएगा, और उस के दरवाज़ों को खड़ा करते वक़्त वह अपने सब से छोटे बेटे से हाथ धो बैठेगा।"

27 यूँ रब यशूअ के साथ था, और उस की शुहरत पूरे मुल्क में फैल गई।

अकन का गुनाह

7 1 लेकिन जहाँ तक रब के लिए मख़्सूस चीज़ों का ताल्लुक़ था इस्राईलियों ने बेवफ़ाई की। यहूदाह के क़बीले के एक आदमी ने उन में से कुछ अपने लिए ले लिया। उस का नाम अकन बिन कर्मी बिन ज़ब्दी बिन ज़ारह था। तब रब का ग़ज़ब इस्राईलियों पर नाज़िल हुआ।

2 यह यूँ ज़ाहिर हुआ कि यशूअ ने कुछ आदमियों को यरीहू से अई शहर को भेज दिया जो बैत-एल के मशरिक़ में बैत-आवन के क़रीब है। उस ने उन से कहा, "उस इलाक़े में जा कर उस की जासूसी करें।" चुनाँचे वह जा कर ऐसा ही करने लगे। 3 जब वापस आए तो उन्हों ने यशूअ से कहा, "इस की ज़रूरत नहीं कि तमाम लोग अई पर हम्ला करें। उसे शिकस्त देने के लिए दो या तीन हज़ार मर्द काफ़ी हैं। बाक़ी लोगों को न भेजें वर्ना वह ख़्वाह-म-ख़्वाह थक जाएंगे, क्यूँकि दुश्मन के लोग कम हैं।" 4 चुनाँचे तक़रीबन तीन हज़ार आदमी अई से लड़ने गए। लेकिन वह अई के मर्दों से शिकस्त खा कर फ़रार हुए, 5 और उन के 36 अफ़राद शहीद हुए। अई के आदमियों ने शहर के दरवाज़े से ले कर शबरीम तक उन का ताक़्क़ुब करके वहाँ की ढलान पर उन्हें मार डाला। तब इस्राईली सख़्त घबरा गए, और उन की हिम्मत जवाब दे गई।

6 यशूअ ने रंजिश का इज़हार करके अपने कपड़ों को फाड़ दिया और रब के सन्दूक़ के सामने मुँह के बल गिर गया। वहाँ वह शाम तक पड़ा रहा। इस्राईल के बुज़ुर्गों ने भी ऐसा ही किया और अपने सर पर ख़ाक डाल ली। 7 यशूअ ने कहा, "हाय, ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़! तू ने इस क़ौम को दरया-ए-यर्दन में से गुज़रने क्यूँ दिया अगर तेरा मक़्सद सिर्फ़ यह था कि हमें अमोरियों के हवाले करके हलाक करे? काश हम दरया के मशरिक़ी किनारे पर रहने के लिए तय्यार होते! 8 ऐ रब, अब मैं क्या कहूँ जब इस्राईल अपने दुश्मनों के सामने से भाग आया है? 9 कनआनी और मुल्क की बाक़ी क़ौमें यह सुन कर हमें घेर लेंगी और हमारा नाम-ओ-निशान मिटा देंगी। अगर ऐसा होगा तो फिर तू ख़ुद अपना अज़ीम नाम क़ाइम रखने के लिए क्या करेगा?"

10 जवाब में रब ने यशूअ से कहा, "उठ कर खड़ा हो जा! तू क्यूँ मुँह के बल पड़ा है? 11 इस्राईल ने गुनाह किया है। उन्हों ने मेरे अह्द की ख़िलाफ़वरज़ी की है जो मैं ने उन के साथ बांधा था। उन्हों ने मख़्सूसशुदा चीज़ों में से कुछ ले लिया है, और चोरी करके चुपके से अपने सामान में मिला लिया है।

12 इसी लिए इस्राईली अपने दुश्मनों के सामने क़ाइम
नहीं रह सकते बल्कि पीठ फेर कर भाग रहे हैं।
क्यूँकि इस हरकत से इस्राईल ने अपने आप को भी
हलाकत के लिए मख़्सूस कर लिया है। जब तक तुम
अपने दरमियान से वह कुछ निकाल कर तबाह न
कर लो जो तबाही के लिए मख़्सूस है उस वक़्त तक
मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँगा। 13 अब उठ और लोगों को
मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर। उन्हें बता देना,
'अपने आप को कल के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
करना, क्यूँकि रब जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता
है कि ऐ इस्राईल, तेरे दरमियान ऐसा माल है जो मेरे
लिए मख़्सूस है। जब तक तुम उसे अपने दरमियान
से निकाल न दो अपने दुश्मनों के सामने क़ाइम नहीं
रह सकोगे।'

14 कल सुब्ह को हर एक क़बीला अपने आप को
पेश करे। रब ज़ाहिर करेगा कि क़ुसूरवार शख़्स
कौन से क़बीले का है। फिर उस क़बीले के कुंबे
बारी बारी सामने आएँ। जिस कुंबे को रब क़ुसूरवार
ठहराएगा उस के मुख़्तलिफ़ ख़ानदान सामने आएँ।
और जिस ख़ानदान को रब क़ुसूरवार ठराएगा उस के
मुख़्तलिफ़ अफ़राद सामने आएँ। 15 जो रब के लिए
मख़्सूस माल के साथ पकड़ा जाएगा उसे उस की
मिलकियत समेत जला देना है, क्यूँकि उस ने रब के
अह्द की ख़िलाफ़वरज़ी करके इस्राईल में शर्मनाक
काम किया है।"

16 अगले दिन सुब्ह-सवेरे यशूअ ने क़बीलों को
बारी बारी अपने पास आने दिया। जब यहूदाह के
क़बीले की बारी आई तो रब ने उसे क़ुसूरवार
ठहराया। 17 जब उस क़बीले के मुख़्तलिफ़ कुंबे
सामने आए तो रब ने ज़ारह के कुंबे को क़ुसूरवार
ठहराया। जब ज़ारह के मुख़्तलिफ़ ख़ानदान सामने
आए तो रब ने ज़ब्दी का ख़ानदान क़ुसूरवार ठहराया।
18 आख़िरकार यशूअ ने उस ख़ानदान को फ़र्दन फ़र्दन
अपने पास आने दिया, और अकन बिन कर्मी बिन
ज़ब्दी बिन ज़ारह पकड़ा गया। 19 यशूअ ने उस से
कहा, "बेटा, रब इस्राईल के ख़ुदा को जलाल दो
और उस की सताइश करो। मुझे बता दो कि तुम ने
क्या किया। कोई भी बात मुझ से मत छुपाना।"

20 अकन ने जवाब दिया, "वाक़ई मैं ने रब इस्राईल
के ख़ुदा का गुनाह किया है। 21 मैं ने लूटे हुए माल में
से बाबल का एक शानदार चोग़ा, तक़रीबन सवा दो
किलोग्राम चाँदी और आधे किलोग्राम से ज़ाइद सोने
की ईंट ले ली थी। यह चीज़ें देख कर मैं ने उन का
लालच किया और उन्हें ले लिया। अब वह मेरे ख़ैमे
की ज़मीन में दबी हुई हैं। चाँदी को मैं ने बाक़ी चीज़ों
के नीचे छुपा दिया।"

22 यह सुन कर यशूअ ने अपने बन्दों को अकन के
ख़ैमे के पास भेज दिया। वह दौड़ कर वहाँ पहुँचे तो
देखा कि यह माल वाक़ई ख़ैमे की ज़मीन में छुपाया
हुआ है और कि चाँदी दूसरी चीज़ों के नीचे पड़ी है।
23 वह यह सब कुछ ख़ैमे से निकाल कर यशूअ और
तमाम इस्राईलियों के पास ले आए और रब के सामने
रख दिया। 24 फिर यशूअ और तमाम इस्राईली अकन
बिन ज़ारह को पकड़ कर वादी-ए-अकूर में ले गए।
उन्हों ने चाँदी, लिबास, सोने की ईंट, अकन के बेटे-
बेटियों, गाय-बैलों, गधों, भेड़-बकरियों और उस के
ख़ैमे ग़रज़ उस की पूरी मिलकियत को उस वादी में
पहुँचा दिया।

25 यशूअ ने कहा, "तुम यह आफ़त हम पर क्यूँ
लाए हो? आज रब तुम पर ही आफ़त लाएगा।" फिर
पूरे इस्राईल ने अकन को उस के घर वालों समेत
संगसार करके जला दिया। 26 अकन के ऊपर उन्हों
ने पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया जो आज तक वहाँ
मौजूद है। यही वजह है कि आज तक उस का नाम
वादी-ए-अकूर यानी आफ़त की वादी रहा है।

इस के बाद रब का सख़्त ग़ज़ब ठंडा हो गया।

अई की शिकस्त

8 1 फिर रब ने यशूअ से कहा, "मत डर और मत
घबरा बल्कि तमाम फ़ौजी अपने साथ ले कर
अई शहर पर हम्ला कर। क्यूँकि मैं ने अई के बादशाह,
उस की क़ौम, उस के शहर और मुल्क को तेरे हाथ

में कर दिया है। 2 लाज़िम है कि तू अई और उस
के बादशाह के साथ वह कुछ करे जो तू ने यरीहू
और उस के बादशाह के साथ किया था। लेकिन
इस मर्तबा तुम उस का माल और मवेशी अपने पास
रख सकते हो। हम्ला करते वक़्त शहर के पीछे घात
लगा।"

3 चुनाँचे यशूअ पूरे लश्कर के साथ अई पर हम्ला
करने के लिए निकला। उस ने अपने सब से अच्छे
फ़ौजियों में से 30,000 को चुन लिया और उन्हें रात
के वक़्त अई के ख़िलाफ़ भेज कर 4 हुक्म दिया,
"ध्यान दें कि आप शहर के पीछे घात लगाएँ। सब के
सब शहर के क़रीब ही तय्यार रहें। 5 इतने में मैं बाक़ी
मर्दों के साथ शहर के क़रीब आ जाऊँगा। और जब
शहर के लोग पहले की तरह हमारे साथ लड़ने के
लिए निकलेंगे तो हम उन के आगे आगे भाग जाएंगे।
6 वह हमारे पीछे पड़ जाएंगे और यूँ हम उन्हें शहर से
दूर ले जाएंगे, क्यूँकि वह समझेंगे कि हम इस दफ़ा
भी पहले की तरह उन से भाग रहे हैं। 7 फिर आप उस
जगह से निकलें जहाँ आप घात में बैठे होंगे और शहर
पर क़ब्ज़ा कर लें। रब आप का ख़ुदा उसे आप के
हाथ में कर देगा। 8 जब शहर आप के क़ब्ज़े में होगा
तो उसे जला देना। वही करें जो रब ने फ़रमाया है।
मेरी इन हिदायात पर ध्यान दें।"

9 यह कह कर यशूअ ने उन्हें अई की तरफ़ भेज
दिया। वह रवाना हो कर अई के मग़रिब में घात में
बैठ गए। यह जगह बैत-एल और अई के दरमियान
थी। लेकिन यशूअ ने यह रात बाक़ी लोगों के साथ
ख़ैमागाह में गुज़ारी। 10 अगले दिन सुब्ह-सवेरे यशूअ
ने आदमियों को जमा करके उन का जाइज़ा लिया।
फिर वह इस्राईल के बुज़ुर्गों के साथ उन के आगे
आगे अई की तरफ़ चल दिया। 11 जो लश्कर उस के
साथ था वह चलते चलते अई के सामने पहुँच गया।
उन्हों ने शहर के शिमाल में अपने ख़ैमे लगाए। उन
के और शहर के दरमियान वादी थी।

12 जो शहर के मग़रिब में अई और बैत-एल के
दरमियान घात लगाए बैठे थे वह तक़रीबन 5,000
मर्द थे। 13 यूँ शहर के मग़रिब और शिमाल में आदमी
लड़ने के लिए तय्यार हुए। रात के वक़्त यशूअ वादी
में पहुँच गया।

14 जब अई के बादशाह ने शिमाल में इस्राईलियों
को देखा तो उस ने जल्दी जल्दी तय्यारियाँ कीं।
अगले दिन सुब्ह-सवेरे वह अपने आदमियों के साथ
शहर से निकला ताकि इस्राईलियों के साथ लड़े।
यह जगह वादी-ए-यर्दन की तरफ़ थी। बादशाह को
मालूम न हुआ कि इस्राईली शहर के पीछे घात में
बैठे हैं। 15 जब अई के मर्द निकले तो यशूअ और
उस का लश्कर शिकस्त का इज़हार करके रेगिस्तान
की तरफ़ भागने लगे।

16 तब अई के तमाम मर्दों को इस्राईलियों का
ताक़्क़ुब करने के लिए बुलाया गया, और यशूअ
के पीछे भागते भागते वह शहर से दूर निकल गए।
17 एक मर्द भी अई या बैत-एल में न रहा बल्कि सब
के सब इस्राईलियों के पीछे पड़ गए। न सिर्फ़ यह
बल्कि उन्हों ने शहर का दरवाज़ा खुला छोड़ दिया।

18 फिर रब ने यशूअ से कहा, "जो शम्शीर तेरे हाथ
में है उसे अई के ख़िलाफ़ उठाए रख, क्यूँकि मैं यह
शहर तेरे हाथ में कर दूँगा।" यशूअ ने ऐसा ही किया,
19 और जूँ ही उस ने अपनी शम्शीर से अई की तरफ़
इशारा किया घात में बैठे आदमी जल्दी से अपनी
जगह से निकल आए और दौड़ दौड़ कर शहर पर
झपट पड़े। उन्हों ने उस पर क़ब्ज़ा करके जल्दी से
उसे जला दिया।

20 जब अई के आदमियों ने मुड़ कर नज़र डाली
तो देखा कि शहर से धुएँ के बादल उठ रहे हैं।
लेकिन अब उन के लिए भी बचने का कोई रास्ता
न रहा, क्यूँकि जो इस्राईली अब तक उन के आगे
आगे रेगिस्तान की तरफ़ भाग रहे थे वह अचानक
मुड़ कर ताक़्क़ुब करने वालों पर टूट पड़े। 21 क्यूँकि
जब यशूअ और उस के साथ के आदमियों ने देखा
कि घात में बैठे इस्राईलियों ने शहर पर क़ब्ज़ा कर
लिया है और कि शहर से धुआँ उठ रहा है तो उन्हों
ने मुड़ कर अई के आदमियों पर हम्ला कर दिया।

22 साथ साथ शहर में दाख़िल हुए इस्राईली शहर से
निकल कर पीछे से उन से लड़ने लगे। चुनाँचे अई
के आदमी बीच में फंस गए। इस्राईलियों ने सब को
क़त्ल कर दिया, और न कोई बचा, न कोई फ़रार हो
सका। 23 सिर्फ़ अई के बादशाह को ज़िन्दा पकड़ा
और यशूअ के पास लाया गया।

24 अई के मर्दों का ताक़्क़ुब करते करते उन सब
को खुले मैदान और रेगिस्तान में तलवार से मार देने
के बाद इस्राईलियों ने अई शहर में वापस आ कर
तमाम बाशिन्दों को हलाक कर दिया। 25 उस दिन
अई के तमाम मर्द और औरतें मारे गए, कुल 12,000
अफ़राद। 26 क्यूँकि यशूअ ने उस वक़्त तक अपनी
शम्शीर उठाए रखी जब तक अई के तमाम बाशिन्दों
को हलाक न कर दिया गया। 27 सिर्फ़ शहर के मवेशी
और लूटा हुआ माल बच गया, क्यूँकि इस दफ़ा रब
ने हिदायत की थी कि इस्राईली उसे ले जा सकते हैं।

28 यशूअ ने अई को जला कर उसे हमेशा के लिए
मल्बे का ढेर बना दिया। यह मक़ाम आज तक वीरान
है। 29 अई के बादशाह की लाश उस ने शाम तक
दरख़्त से लटकाए रखी। फिर जब सूरज डूबने लगा
तो यशूअ ने अपने लोगों को हुक्म दिया कि बादशाह
की लाश को दरख़्त से उतार दें। तब उन्हों ने उसे
शहर के दरवाज़े के पास फैंक कर उस पर पत्थर का
बड़ा ढेर लगा दिया। यह ढेर आज तक मौजूद है।

ऐबाल पहाड़ पर अह्द की तज्दीद

30 उस वक़्त यशूअ ने रब इस्राईल के ख़ुदा की
ताज़ीम में ऐबाल पहाड़ पर क़ुर्बानगाह बनाई 31 जिस
तरह रब के ख़ादिम मूसा ने इस्राईलियों को हुक्म
दिया था। उस ने उसे मूसा की शरीअत की किताब
में दर्ज हिदायात के मुताबिक़ बनाया। क़ुर्बानगाह के
पत्थर तराशे बग़ैर लगाए गए, और उन पर लोहे का
आला न चलाया गया। उस पर उन्हों ने रब को भस्म
होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश कीं।

32 वहाँ यशूअ ने इस्राईलियों की मौजूदगी में पत्थरों
पर मूसा की शरीअत दुबारा लिख दी। 33 फिर बुज़ुर्गों,
निगहबानों और क़ाज़ियों के साथ मिल कर तमाम
इस्राईली दो गुरोहों में तक़्सीम हुए। परदेसी भी उन
में शामिल थे। एक गुरोह गरिज़ीम पहाड़ के सामने
खड़ा हुआ और दूसरा ऐबाल पहाड़ के सामने। दोनों
गुरोह एक दूसरे के मुक़ाबिल खड़े रहे जबकि लावी
के क़बीले के इमाम उन के दरमियान खड़े हुए। उन्हों
ने रब के अह्द का सन्दूक़ उठा रखा था। सब कुछ
उन हिदायात के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब के ख़ादिम
मूसा ने इस्राईलियों को बरकत देने के लिए दी थीं।

34 फिर यशूअ ने शरीअत की तमाम बातों की
तिलावत की, उस की बरकात भी और उस की
लानतें भी। सब कुछ उस ने वैसा ही पढ़ा जैसा
कि शरीअत की किताब में दर्ज था। 35 जो भी हुक्म
मूसा ने दिया था उस का एक भी लफ़्ज़ न रहा जिस
की तिलावत यशूअ ने तमाम इस्राईलियों की पूरी
जमाअत के सामने न की हो। और सब ने यह बातें
सुनीं। इस में औरतें, बच्चे और उन के दरमियान रहने
वाले परदेसी सब शामिल थे।

जिबऊनी यशूअ को धोका देते हैं

9 1 इन बातों की ख़बर दरया-ए-यर्दन के मग़रिब
के तमाम बादशाहों तक पहुँची, ख़्वाह वह
पहाड़ी इलाक़े, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े या
साहिली इलाक़े में लुबनान तक रहते थे। उन की यह
क़ौमें थीं : हित्ती, अमोरी, कनआनी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी
और यबूसी। 2 अब यह यशूअ और इस्राईलियों से
लड़ने के लिए जमा हुए।

3 लेकिन जब जिबऊन शहर के बाशिन्दों को पता
चला कि यशूअ ने यरीहू और अई के साथ क्या किया
है 4 तो उन्हों ने एक चाल चली। अपने साथ सफ़र
के लिए खाना ले कर वह यशूअ के पास चल पड़े।
उन के गधों पर ख़स्ताहाल बोरियाँ और मै की ऐसी
पुरानी और घिसी फटी मश्कें लदी हुई थीं जिन की
बार बार मरम्मत हुई थी। 5 मर्दों ने ऐसे पुराने जूते
पहन रखे थे जिन पर जगह जगह पैवन्द लगे हुए थे।
उन के कपड़े भी घिसे फटे थे, और सफ़र के लिए जो

रोटी उन के पास थी वह ख़ुश्क और टुकड़े टुकड़े हो
गई थी। 6 ऐसी हालत में वह यशूअ के पास जिल्जाल
की ख़ैमागाह में पहुँच गए। उन्हों ने उस से और बाक़ी
इस्राईली मर्दों से कहा, “हम एक दूरदराज़ मुल्क से
आए हैं। आएँ, हमारे साथ मुआहदा करें।”
7 लेकिन इस्राईलियों ने हिव्वियों से कहा, “शायद
आप हमारे इलाक़े के बीच में कहीं बसते हैं। अगर
ऐसा है तो हम किस तरह आप से मुआहदा कर सकते
हैं?”
8 वह यशूअ से बोले, “हम आप की ख़िदमत के
लिए हाज़िर हैं।”
यशूअ ने पूछा, “आप कौन हैं और कहाँ से आए
हैं?” 9 उन्हों ने जवाब दिया, “आप के ख़ादिम आप
के ख़ुदा के नाम के बाइस एक निहायत दूरदराज़
मुल्क से आए हैं। क्यूँकि उस की ख़बर हम तक
पहुँच गई है, और हम ने वह सब कुछ सुन लिया है
जो उस ने मिस्र में 10 और दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में
रहने वाले दो बादशाहों के साथ किया यानी हस्बोन
के बादशाह सीहोन और बसन के बादशाह ओज के
साथ जो अस्तारात में रहता था। 11 तब हमारे बुज़ुर्गों
बल्कि हमारे मुल्क के तमाम बाशिन्दों ने हम से कहा,
‘सफ़र के लिए खाना ले कर उन से मिलने जाएँ। उन
से बात करें कि हम आप की ख़िदमत के लिए हाज़िर
हैं। आएँ, हमारे साथ मुआहदा करें।’ 12 हमारी यह
रोटी अभी गर्म थी जब हम इसे सफ़र के लिए अपने
साथ ले कर आप से मिलने के लिए अपने घरों से
रवाना हुए। और अब आप ख़ुद देख सकते हैं कि यह
ख़ुश्क और टुकड़े टुकड़े हो गई है। 13 और मै की इन
मश्कों की घिसी फटी हालत देखें। भरते वक़्त यह
नई और लचकदार थीं। यही हमारे कपड़ों और जूतों
की हालत भी है। सफ़र करते करते यह ख़त्म हो गए
हैं।”
14 इस्राईलियों ने मुसाफ़िरों का कुछ खाना लिया।
अफ़सोस, उन्हों ने रब से हिदायत न माँगी। 15 फिर
यशूअ ने उन के साथ सुलह का मुआहदा किया और
जमाअत के राहनुमाओं ने क़सम खा कर उस की
तस्दीक़ की। मुआहदे में इस्राईल ने वादा किया कि
जिबऊनियों को जीने देगा।
16 तीन दिन गुज़रे तो इस्राईलियों को पता चला
कि जिबऊनी हमारे क़रीब ही और हमारे इलाक़े के
ऐन बीच में रहते हैं। 17 इस्राईली रवाना हुए और
तीसरे दिन उन के शहरों के पास पहुँचे जिन के
नाम जिबऊन, कफ़ीरा, बैरोत और क़िर्यत-यारीम
थे। 18 लेकिन चूँकि जमाअत के राहनुमाओं ने रब
इस्राईल के ख़ुदा की क़सम खा कर उन से वादा
किया था इस लिए उन्हों ने जिबऊनियों को हलाक
न किया। पूरी जमाअत राहनुमाओं पर बुड़बुड़ाने
लगी, 19 लेकिन उन्हों ने जवाब में कहा, “हम ने रब
इस्राईल के ख़ुदा की क़सम खा कर उन से वादा
किया, और अब हम उन्हें छेड़ नहीं सकते। 20 चुनाँचे
हम उन्हें जीने देंगे और वह क़सम न तोड़ेंगे जो हम ने
उन के साथ खाई। ऐसा न हो कि अल्लाह का ग़ज़ब हम
पर नाज़िल हो जाए। 21 उन्हें जीने दो।” फिर फ़ैसला
यह हुआ कि जिबऊनी लकड़हारे और पानी भरने
वाले बन कर पूरी जमाअत की ख़िदमत करें। यूँ
इस्राईली राहनुमाओं का उन के साथ वादा क़ाइम
रहा।
22 यशूअ ने जिबऊनियों को बुला कर कहा, “तुम ने
हमें धोका दे कर क्यूँ कहा कि हम आप से निहायत
दूर रहते हैं हालाँकि तुम हमारे इलाक़े के बीच में
ही रहते हो? 23 चुनाँचे अब तुम पर लानत हो। तुम
लकड़हारे और पानी भरने वाले बन कर हमेशा के
लिए मेरे ख़ुदा के घर की ख़िदमत करोगे।”
24 उन्हों ने जवाब दिया, “आप के ख़ादिमों को
साफ़ बताया गया था कि रब आप के ख़ुदा ने अपने
ख़ादिम मूसा को क्या हुक्म दिया था, कि उसे आप
को पूरा मुल्क देना और आप के आगे आगे तमाम
बाशिन्दों को हलाक करना है। यह सुन कर हम बहुत
डर गए कि हमारी जान नहीं बचेगी। इसी लिए हम ने
यह सब कुछ किया। 25 अब हम आप के हाथ में हैं।
हमारे साथ वह कुछ करें जो आप को अच्छा और
ठीक लगता है।”

26 चुनाँचे यशूअ ने उन्हें इस्राईलियों से बचाया, और
उन्हों ने जिबऊनियों को हलाक न किया। 27 उसी दिन
उस ने जिबऊनियों को लकड़हारे और पानी भरने
वाले बना दिया ताकि वह जमाअत और रब की उस
क़ुर्बानगाह की ख़िदमत करें जिस का मक़ाम रब को
अभी चुनना था। और यह लोग आज तक यही कुछ
करते हैं।

अमोरियों की शिकस्त

10 1 यरूशलम के बादशाह अदूनी-सिद्क़ को
ख़बर मिली कि यशूअ ने अई पर यूँ क़ब्ज़ा
करके उसे मुकम्मल तौर पर तबाह कर दिया है जिस
तरह उस ने यरीहू और उस के बादशाह के साथ भी
किया था। उसे यह इत्तिला भी दी गई कि जिबऊन
के बाशिन्दे इस्राईलियों के साथ सुलह का मुआहदा
करके उन के दरमियान रह रहे हैं। 2 यह सुन कर वह
और उस की क़ौम निहायत डर गए, क्यूँकि जिबऊन
बड़ा शहर था। वह अहमियत के लिहाज़ से उन शहरों
के बराबर था जिन के बादशाह थे, बल्कि वह अई
शहर से भी बड़ा था, और उस के तमाम मर्द बेहतरीन
फ़ौजी थे।

3 चुनाँचे यरूशलम के बादशाह अदूनी-सिद्क़ ने
अपने क़ासिद हब्रून के बादशाह हूहाम, यर्मूत के
बादशाह पीराम, लकीस के बादशाह यफ़ीअ और
इज्लून के बादशाह दबीर के पास भेज दिए। 4 पैग़ाम
यह था, "आएँ और जिबऊन पर हम्ला करने में मेरी
मदद करें, क्यूँकि उस ने यशूअ और इस्राईलियों के
साथ सुलह का मुआहदा कर लिया है।" 5 यरूशलम,
हब्रून, यर्मूत, लकीस और इज्लून के यह पाँच अमोरी
बादशाह मुत्तहिद हुए। वह अपने तमाम फ़ौजियों को
ले कर चल पड़े और जिबऊन का मुहासरा करके
उस से जंग करने लगे।

6 उस वक़्त यशूअ ने अपने ख़ैमे जिल्जाल में लगाए
थे। जिबऊन के लोगों ने उसे पैग़ाम भेज दिया, "अपने
ख़ादिमों को तर्क न करें। जल्दी से हमारे पास आ
कर हमें बचाएँ! हमारी मदद कीजिए, क्यूँकि पहाड़ी
इलाक़े के तमाम अमोरी बादशाह हमारे ख़िलाफ़
मुत्तहिद हो गए हैं।"

7 यह सुन कर यशूअ अपनी पूरी फ़ौज के साथ
जिल्जाल से निकला और जिबऊन के लिए रवाना
हुआ। उस के बेहतरीन फ़ौजी भी सब उस के साथ
थे। 8 रब ने यशूअ से कहा, "उन से मत डरना, क्यूँकि
मैं उन्हें तेरे हाथ में कर चुका हूँ। उन में से एक भी
तेरा मुक़ाबला नहीं करने पाएगा।" 9 और यशूअ ने
जिल्जाल से सारी रात सफ़र करते करते अचानक
दुश्मन पर हम्ला किया। 10 उस वक़्त रब ने इस्राईलियों
के देखते देखते दुश्मन में अब्तरी पैदा कर दी, और
उन्हों ने जिबऊन के क़रीब दुश्मन को ज़बरदस्त
शिकस्त दी। इस्राईली बैत-हौरून तक पहुँचाने वाले
रास्ते पर अमोरियों का ताक़्क़ुब करते करते उन्हें
अज़ीक़ा और मक़्क़ेदा तक मौत के घाट उतारते गए।
11 और जब अमोरी इस रास्ते पर अज़ीक़ा की तरफ़
भाग रहे थे तो रब ने आसमान से उन पर बड़े बड़े
ओले बरसाए जिन्हों ने इस्राईलियों की निस्बत ज़्यादा
दुश्मनों को हलाक कर दिया।

12 उस दिन जब रब ने अमोरियों को इस्राईल
के हाथ में कर दिया तो यशूअ ने इस्राईलियों की
मौजूदगी में रब से कहा,

"ऐ सूरज, जिबऊन के ऊपर रुक जा!
ऐ चाँद, वादी-ए-अय्यालोन पर ठहर जा!"

13 तब सूरज रुक गया, और चाँद ने आगे हरकत
न की। जब तक कि इस्राईल ने अपने दुश्मनों से पूरा
बदला न ले लिया उस वक़्त तक वह रुके रहे। इस
बात का ज़िक्र याशर की किताब में किया गया है।
सूरज आसमान के बीच में रुक गया और तक़रीबन
एक पूरे दिन के दौरान ग़ुरूब न हुआ। 14 यह दिन
मुन्फ़रिद था। रब ने इन्सान की इस तरह की दुआ न
कभी इस से पहले, न कभी इस के बाद सुनी। क्यूँकि
रब ख़ुद इस्राईल के लिए लड़ रहा था। 15 इस के बाद
यशूअ पूरे इस्राईल समेत जिल्जाल की ख़ैमागाह में
लौट आया।

पाँच अमोरी बादशाहों की गिरिफ़्तारी

16 लेकिन पाँचों अमोरी बादशाह फ़रार हो कर
मक़्क़ेदा के एक ग़ार में छुप गए थे। 17 यशूअ को
इत्तिला दी गई 18 तो उस ने कहा, “कुछ बड़े बड़े
पत्थर लुढ़का कर ग़ार का मुँह बन्द करना, और कुछ
आदमी उस की पहरादारी करें। 19 लेकिन बाक़ी लोग
न रुकें बल्कि दुश्मनों का ताक़्क़ुब करके पीछे से
उन्हें मारते जाएँ। उन्हें दुबारा अपने शहरों में दाख़िल
होने का मौक़ा मत देना, क्यूँकि रब आप के ख़ुदा
ने उन्हें आप के हाथ में कर दिया है।” 20 चुनाँचे
यशूअ और बाक़ी इस्राईली उन्हें हलाक करते रहे,
और कम ही अपने शहरों की फ़सील में दाख़िल हो
सके। 21 इस के बाद पूरी फ़ौज सहीह-सलामत यशूअ
के पास मक़्क़ेदा की लश्करगाह में वापस पहुँच गई।
अब से किसी में भी इस्राईलियों को धमकी देने की
जुरअत न रही।

22 फिर यशूअ ने कहा, “ग़ार के मुँह को खोल कर
यह पाँच बादशाह मेरे पास निकाल लाएँ।” 23 लोग
ग़ार को खोल कर यरूशलम, हब्रून, यर्मूत, लकीस
और इज्लून के बादशाहों को यशूअ के पास निकाल
लाए। 24 यशूअ ने इस्राईल के मर्दों को बुला कर
अपने साथ खड़े फ़ौजी अफ़्सरों से कहा, “इधर आ
कर अपने पैरों को बादशाहों की गरदनों पर रख
दें।” अफ़्सरों ने ऐसा ही किया। 25 फिर यशूअ ने उन
से कहा, “न डरें और न हौसला हारें। मज़बूत और
दिलेर हों। रब यही कुछ उन तमाम दुश्मनों के साथ
करेगा जिन से आप लड़ेंगे।” 26 यह कह कर उस
ने बादशाहों को हलाक करके उन की लाशें पाँच
दरख़्तों से लटका दीं। वहाँ वह शाम तक लटकी
रहीं। 27 जब सूरज डूबने लगा तो लोगों ने यशूअ के
हुक्म पर लाशें उतार कर उस ग़ार में फैंक दीं जिस
में बादशाह छुप गए थे। फिर उन्हों ने ग़ार के मुँह को
बड़े बड़े पत्थरों से बन्द कर दिया। यह पत्थर आज
तक वहाँ पड़े हुए हैं।

मज़ीद अमोरी शहरों पर क़ब्ज़ा

28 उस दिन मक़्क़ेदा यशूअ के क़ब्ज़े में आ गया।
उस ने पूरे शहर को तलवार से रब के लिए मख़्सूस
करके तबाह कर दिया। बादशाह समेत सब हलाक
हुए और एक भी न बचा। शहर के बादशाह के साथ
उस ने वह सुलूक किया जो उस ने यरीहू के बादशाह
के साथ किया था।

29 फिर यशूअ ने तमाम इस्राईलियों के साथ वहाँ
से आगे निकल कर लिब्ना पर हम्ला किया। 30 रब
ने उस शहर और उस के बादशाह को भी इस्राईल
के हाथ में कर दिया। यशूअ ने तलवार से शहर के
तमाम बाशिन्दों को हलाक किया, और एक भी न
बचा। बादशाह के साथ उस ने वही सुलूक किया जो
उस ने यरीहू के बादशाह के साथ किया था।

31 इस के बाद उस ने तमाम इस्राईलियों के साथ
लिब्ना से आगे बढ़ कर लकीस का मुहासरा किया।
जब उस ने उस पर हम्ला किया 32 तो रब ने यह शहर
उस के बादशाह समेत इस्राईल के हाथ में कर दिया।
दूसरे दिन वह यशूअ के क़ब्ज़े में आ गया। शहर के
सारे बाशिन्दों को उस ने तलवार से हलाक किया,
जिस तरह कि उस ने लिब्ना के साथ भी किया था।
33 साथ साथ यशूअ ने जज़र के बादशाह हूरम और
उस के लोगों को भी शिकस्त दी जो लकीस की मदद
करने के लिए आए थे। उन में से एक भी न बचा।

34 फिर यशूअ ने तमाम इस्राईलियों के साथ लकीस
से आगे बढ़ कर इज्लून का मुहासरा कर लिया। उसी
दिन उन्हों ने उस पर हम्ला करके 35 उस पर क़ब्ज़ा
कर लिया। जिस तरह लकीस के साथ हुआ उसी
तरह इज्लून के साथ भी किया गया यानी शहर के
तमाम बाशिन्दे तलवार से हलाक हुए।

36 इस के बाद यशूअ ने तमाम इस्राईलियों के साथ
इज्लून से आगे बढ़ कर हब्रून पर हम्ला किया। 37 शहर
पर क़ब्ज़ा करके उन्हों ने बादशाह, इर्दगिर्द की
आबादियाँ और बाशिन्दे सब के सब तह-ए-तेग़ कर
दिए। कोई न बचा। इज्लून की तरह उन्हों ने उसे पूरे

तौर पर तमाम बाशिन्दों समेत रब के लिए मख़्सूस
करके तबाह कर दिया।
38 फिर यशूअ तमाम इस्राईलियों के साथ मुड़ कर
दबीर की तरफ़ बढ़ गया। उस पर हम्ला करके 39 उस
ने शहर, उस के बादशाह और इर्दगिर्द की आबादियों
पर क़ब्ज़ा कर लिया। सब को नेस्त कर दिया गया,
एक भी न बचा। यूँ दबीर के साथ वह कुछ हुआ जो
पहले हब्रून और लिब्ना उस के बादशाह समेत हुआ
था।
40 इस तरह यशूअ ने जुनूबी कनआन के तमाम
बादशाहों को शिकस्त दे कर उन के पूरे मुल्क पर
क़ब्ज़ा कर लिया यानी मुल्क के पहाड़ी इलाक़े पर,
जुनूब के दश्त-ए-नजब पर, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी
इलाक़े पर और वादी-ए-यर्दन के मग़रिब में वाक़े
पहाड़ी ढलानों पर। उस ने किसी को भी बचने न
दिया बल्कि हर जानदार को रब के लिए मख़्सूस
करके हलाक कर दिया। यह सब कुछ वैसा ही हुआ
जैसा रब इस्राईल के ख़ुदा ने हुक्म दिया था।
41 यशूअ ने उन्हें क़ादिस-बर्नीअ से ले कर ग़ज़्ज़ा
तक और जुशन के पूरे इलाक़े से ले कर जिबऊन
तक शिकस्त दी। 42 इन तमाम बादशाहों और उन
के ममालिक पर यशूअ ने एक ही वक़्त फ़त्ह पाई,
क्यूँकि इस्राईल का ख़ुदा इस्राईल के लिए लड़ा।
43 इस के बाद यशूअ तमाम इस्राईलियों के साथ
जिल्जाल की ख़ैमागाह में लौट आया।

शिमाली इत्तिहादियों पर फ़त्ह

11 1 जब हसूर के बादशाह याबीन को इन
वाक़िआत की ख़बर मिली तो उस ने मदून
के बादशाह यूबाब और सिम्रोन और अक्शाफ़ के
बादशाहों को पैग़ाम भेजे। 2 इस के इलावा उस
ने उन बादशाहों को पैग़ाम भेजे जो शिमाल में थे
यानी शिमाली पहाड़ी इलाक़े में, वादी-ए-यर्दन के
उस हिस्से में जो किन्नरत यानी गलील के जुनूब में
है, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में, मग़रिब में
वाक़े नाफ़त-दोर में 3 और कनआन के मशरिक़ और
मग़रिब में। याबीन ने अमोरियों, हित्तियों, फ़रिज़्ज़ियों,
पहाड़ी इलाक़े के यबूसियों और हर्मून पहाड़ के दामन
में वाक़े मुल्क-ए-मिस्फ़ाह के हिव्वियों को भी पैग़ाम
भेजे।
4 चुनाँचे यह अपनी तमाम फ़ौजों को ले कर जंग
के लिए निकले। उन के आदमी समुन्दर के साहिल
की रेत की मानिन्द बेशुमार थे। उन के पास मुतअद्दिद
घोड़े और रथ भी थे। 5 इन तमाम बादशाहों ने इस्राईल
से लड़ने के लिए मुत्तहिद हो कर अपने ख़ैमे मरूम
के चश्मे पर लगा दिए।
6 रब ने यशूअ से कहा, “उन से मत डरना, क्यूँकि
कल इसी वक़्त तक मैं ने उन सब को हलाक करके
इस्राईल के हवाले कर दिया होगा। तुझे उन के घोड़ों
की कोंचों को काटना और उन के रथों को जला देना
है।” 7 चुनाँचे यशूअ अपने तमाम फ़ौजियों को ले कर
मरूम के चश्मे पर आया और अचानक दुश्मन पर
हम्ला किया। 8 और रब ने दुश्मनों को इस्राईलियों के
हवाले कर दिया। इस्राईलियों ने उन्हें शिकस्त दी
और उन का ताक़्क़ुब करते करते शिमाल में बड़े
शहर सैदा और मिस्रफ़ात-माइम तक जा पहुँचे। इसी
तरह उन्हों ने मशरिक़ में वादी-ए-मिस्फ़ाह तक भी
उन का ताक़्क़ुब किया। आख़िर में एक भी न बचा।
9 रब की हिदायत के मुताबिक़ यशूअ ने दुश्मन के
घोड़ों की कोंचों को कटवा कर उस के रथों को
जला दिया।

शिमाली कनआन पर क़ब्ज़ा

10 फिर यशूअ वापस आया और हसूर को अपने
क़ब्ज़े में ले लिया। हसूर उन तमाम बादशाहतों का
सदर मक़ाम था जिन्हें उन्हों ने शिकस्त दी थी।
इस्राईलियों ने शहर के बादशाह को मार दिया 11 और
शहर के हर जानदार को अल्लाह के हवाले करके
हलाक कर दिया। एक भी न बचा। फिर यशूअ ने
शहर को जला दिया।
12 इसी तरह यशूअ ने उन बाक़ी बादशाहों के शहरों
पर भी क़ब्ज़ा कर लिया जो इस्राईल के ख़िलाफ़

मुत्तहिद हो गए थे। हर शहर को उस ने रब के
ख़ादिम मूसा के हुक्म के मुताबिक़ तबाह कर दिया।
बादशाहों समेत सब कुछ नेस्त कर दिया गया।
13 लेकिन यशूअ ने सिर्फ़ हसूर को जलाया। पहाड़ियों
पर के बाक़ी शहरों को उस ने रहने दिया। 14 लूट का
जो भी माल जानवरों समेत उन में पाया गया उसे
इस्राईलियों ने अपने पास रख लिया। लेकिन तमाम
बाशिन्दों को उन्हों ने मार डाला और एक भी न बचने
दिया। 15 क्यूँकि रब ने अपने ख़ादिम मूसा को यही
हुक्म दिया था, और यशूअ ने सब कुछ वैसे ही किया
जैसे रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

16 यूँ यशूअ ने पूरे कनआन पर क़ब्ज़ा कर लिया।
इस में पहाड़ी इलाक़ा, पूरा दश्त-ए-नजब, जुशन
का पूरा इलाक़ा, मग़रिब का नशेबी पहाड़ी इलाक़ा,
वादी-ए-यर्दन और इस्राईल के पहाड़ उन के दामन की
पहाड़ियों समेत शामिल थे। 17 अब यशूअ की पहुँच
जुनूब में सईर की तरफ़ बढ़ने वाले पहाड़ ख़लक़ से
ले कर लुबनान के मैदानी इलाक़े के शहर बाल-जद
तक थी जो हर्मून पहाड़ के दामन में था। यशूअ ने
इन इलाक़ों के तमाम बादशाहों को पकड़ कर मार
डाला। 18 लेकिन इन बादशाहों से जंग करने में बहुत
वक़्त लगा, 19 क्यूँकि जिबऊन में रहने वाले हिव्वियों
के इलावा किसी भी शहर ने इस्राईलियों से सुलह न
की। इस लिए इस्राईल को उन सब पर जंग करके ही
क़ब्ज़ा करना पड़ा। 20 रब ही ने उन्हें अकड़ने दिया
था ताकि वह इस्राईल से जंग करें और उन पर रहम
न किया जाए बल्कि उन्हें पूरे तौर पर रब के हवाले
करके हलाक किया जाए। लाज़िम था कि उन्हें यूँ
नेस्त-ओ-नाबूद किया जाए जिस तरह रब ने मूसा को
हुक्म दिया था।

21 उस वक़्त यशूअ ने उन तमाम अनाक़ियों को
हलाक कर दिया जो हब्रून, दबीर, अनाब और उन
तमाम जगहों में रहते थे जो यहूदाह और इस्राईल
के पहाड़ी इलाक़े में थीं। उस ने उन सब को उन
के शहरों समेत अल्लाह के हवाले करके तबाह कर
दिया। 22 इस्राईल के पूरे इलाक़े में अनाक़ियों में से
एक भी न बचा। सिर्फ़ ग़ज़्ज़ा, जात और अश्दूद में
कुछ ज़िन्दा रहे।

23 ग़रज़ यशूअ ने पूरे मुल्क पर यूँ क़ब्ज़ा किया
जिस तरह रब ने मूसा को बताया था। फिर उस ने
उसे क़बीलों में तक़्सीम करके इस्राईल को मीरास
में दे दिया। जंग ख़त्म हुई, और मुल्क में अम्न-ओ-
अमान क़ाइम हो गया।

मूसा की फ़ुतूहात का ख़ुलासा

12 1 दर्ज-ए-ज़ैल दरया-ए-यर्दन के मशरिक़
में उन बादशाहों की फ़हरिस्त है जिन्हें
इस्राईलियों ने शिकस्त दी थी और जिन के इलाक़े पर
उन्हों ने क़ब्ज़ा किया था। यह इलाक़ा जुनूब में वादी-
ए-अर्नोन से ले कर शिमाल में हर्मून पहाड़ तक था,
और उस में वादी-ए-यर्दन का पूरा मशरिक़ी हिस्सा
शामिल था।

2 पहले का नाम सीहोन था। वह अमोरियों का
बादशाह था और उस का दार-उल-हकूमत हस्बोन
था। अरोईर शहर यानी वादी-ए-अर्नोन के दरमियान
से ले कर अम्मोनियों की सरहद दरया-ए-यब्बोक़
तक सारा इलाक़ा उस की गिरिफ़्त में था। इस में
जिलिआद का आधा हिस्सा भी शामिल था। 3 इस
के इलावा सीहोन का क़ब्ज़ा दरया-ए-यर्दन के पूरे
मशरिक़ी किनारे पर किन्नरत यानी गलील की झील
से ले कर बहीरा-ए-मुर्दार के पास शहर बैत-यसीमोत
तक बल्कि उस के जुनूब में पहाड़ी सिलसिले पिसगा
के दामन तक था।

4 दूसरा बादशाह जिस ने शिकस्त खाई थी बसन
का बादशाह ओज था। वह रफ़ाइयों के देओक़ामत
क़बीले में से बाक़ी रह गया था, और उस की हुकूमत
के मर्कज़ अस्तारात और इद्रई थे। 5 शिमाल में उस
की सल्तनत की सरहद हर्मून पहाड़ थी और मशरिक़
में सल्का शहर। बसन का तमाम इलाक़ा जसूरियों
और माकातियों की सरहद तक उस के हाथ में
था और इसी तरह जिलिआद का शिमाली हिस्सा
बादशाह सीहोन की सरहद तक।

6 इस्राईल ने रब के ख़ादिम मूसा की राहनुमाई में
इन दो बादशाहों पर फ़त्ह पाई थी, और मूसा ने यह
इलाक़ा रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले
के सपुर्द किया था।

यशूअ की फ़ुतूहात का ख़ुलासा

7 दर्ज-ए-ज़ैल दरया-ए-यर्दन के मग़रिब के उन
बादशाहों की फ़हरिस्त है जिन्हें इस्राईलियों ने यशूअ
की राहनुमाई में शिकस्त दी थी और जिन की
सल्तनत वादी-ए-लुबनान के शहर बाल-जद से ले
कर सईर की तरफ़ बढ़ने वाले पहाड़ ख़लक़ तक
थी। बाद में यशूअ ने यह सारा मुल्क इस्राईल के
क़बीलों में तक़्सीम करके उन्हें मीरास में दे दिया
8 यानी पहाड़ी इलाक़ा, मग़रिब का नशेबी पहाड़ी
इलाक़ा, यर्दन की वादी, उस के मग़रिब में वाक़े
पहाड़ी ढलानें, यहूदाह का रेगिस्तान और दश्त-
ए-नजब। पहले यह सब कुछ हित्तियों, अमोरियों,
कनआनियों, फ़रिज़्ज़ियों, हिव्वियों और यबूसियों
के हाथ में था। ज़ैल के हर शहर का अपना
बादशाह था, और हर एक ने शिकस्त खाई : 9 यरीहू,
अई नज़्द बैत-एल, 10 यरूशलम, हब्रून, 11 यर्मूत,
लकीस, 12 इज्लून, जज़र, 13 दबीर, जिदर, 14 हुर्मा,
अराद, 15 लिब्ना, अदुल्लाम, 16 मक़्क़ेदा, बैत-एल,
17 तफ़्फ़ूअह, हिफ़र, 18 अफ़ीक़, लश्शरून, 19 मदून,
हसूर, 20 सिम्रोन-मरोन, अक्शाफ़, 21 तानक, मजिद्दो,
22 क़ादिस, कर्मिल का युक़्निआम, 23 नाफ़त-दोर
में वाक़े दोर, जिल्जाल का गोइम 24 और तिर्ज़ा।
बादशाहों की कुल तादाद 31 थी।

कनआन के बाक़ी इलाक़ों पर क़ब्ज़ा करने का हुक्म

13 1 जब यशूअ बूढ़ा था तो रब ने उस से
कहा, "तू बहुत बूढ़ा हो चुका है, लेकिन
अभी काफ़ी कुछ बाक़ी रह गया है जिस पर क़ब्ज़ा
करने की ज़रूरत है। 2–3 इस में फ़िलिस्तियों के तमाम
इलाक़े उन के शाही शहरों ग़ज़्ज़ा, अश्दूद, अस्क़लून,
जात और अक्रून समेत शामिल हैं और इसी तरह
जसूर का इलाक़ा जिस की जुनूबी सरहद वादी-ए-
सैहूर है जो मिस्र के मशरिक़ में है और जिस की
शिमाली सरहद अक्रून है। उसे भी मुल्क-ए-कनआन
का हिस्सा क़रार दिया जाता है। अव्वियों का इलाक़ा
भी 4 जो जुनूब में है अब तक इस्राईल के क़ब्ज़े में
नहीं आया। यही बात शिमाल पर भी सादिक़ आती
है। सैदानियों के शहर मआरा से ले कर अफ़ीक़ शहर
और अमोरियों की सरहद तक सब कुछ अब तक
इस्राईल की हुकूमत से बाहर है। 5 इस के इलावा
जबलियों का मुल्क और मशरिक़ में पूरा लुबनान
हर्मून पहाड़ के दामन में बाल-जद से ले कर लबो-
हमात तक बाक़ी रह गया है। 6 इस में उन सैदानियों
का तमाम इलाक़ा भी शामिल है जो लुबनान के
पहाड़ों और मिस्रफ़ात-माइम के दरमियान के पहाड़ी
इलाक़े में आबाद हैं। इस्राईलियों के बढ़ते बढ़ते मैं
ख़ुद ही इन लोगों को उन के सामने से निकाल दूँगा।
लेकिन लाज़िम है कि तू क़ुरआ डाल कर यह पूरा
मुल्क मेरे हुक्म के मुताबिक़ इस्राईलियों में तक़्सीम
करे। 7 उसे नौ बाक़ी क़बीलों और मनस्सी के आधे
क़बीले को विरासत में दे दे।"

यर्दन के मशरिक़ में मुल्क की तक़्सीम

8 रब का ख़ादिम मूसा रूबिन, जद और मनस्सी के
बाक़ी आधे क़बीले को दरया-ए-यर्दन का मशरिक़ी
इलाक़ा दे चुका था। 9–10 यूँ हस्बोन के अमोरी
बादशाह सीहोन के तमाम शहर उन के क़ब्ज़े में
आ गए थे यानी जुनूबी वादी-ए-अर्नोन के किनारे
पर शहर अरोईर और उसी वादी के बीच के शहर
से ले कर शिमाल में अम्मोनियों की सरहद तक।
दीबोन और मीदबा के दरमियान का मैदान-ए-मुर्तफ़ा
भी इस में शामिल था 11 और इसी तरह जिलिआद,
जसूरियों और माकातियों का इलाक़ा, हर्मून का
पहाड़ी इलाक़ा और सल्का शहर तक बसन का सारा
इलाक़ा भी।

12 पहले यह सारा इलाक़ा बसन के बादशाह ओज
के क़ब्ज़े में था जिस की हुकूमत के मर्कज़ अस्तारात

और इद्रई थे। रफ़ाइयों के देओक़ामत क़बीले से
सिर्फ़ ओज बाक़ी रह गया था। मूसा की राहनुमाई
के तहत इस्राईलियों ने उस इलाक़े पर फ़त्ह पा कर
तमाम बाशिन्दों को निकाल दिया था। 13 सिर्फ़ जसूरी
और माकाती बाक़ी रह गए थे, और यह आज तक
इस्राईलियों के दरमियान रहते हैं।
14 सिर्फ़ लावी के क़बीले को कोई ज़मीन न मिली,
क्यूँकि उन का मौरूसी हिस्सा जलने वाली वह
क़ुर्बानियाँ हैं जो रब इस्राईल के ख़ुदा के लिए चढ़ाई
जाती हैं। रब ने यही कुछ मूसा को बताया था।

रूबिन का क़बाइली इलाक़ा

15 मूसा ने रूबिन के क़बीले को उस के कुंबों
के मुताबिक़ ज़ैल का इलाक़ा दिया। 16 वादी-ए-
अर्नोन के किनारे पर शहर अरोईर और उसी वादी
के बीच के शहर से ले कर मीदबा 17 और हस्बोन
तक। वहाँ के मैदान-ए-मुर्तफ़ा पर वाक़े तमाम शहर
भी रूबिन के सपुर्द किए गए यानी दीबोन, बामात-
बाल, बैत-बाल-मऊन, 18 यहज़, क़दीमात, मिफ़ात,
19 क़िर्यताइम, सिब्माह, ज़िरत-उस-सहर जो बहीरा-
ए-मुर्दार के मशरिक़ में वाक़े पहाड़ी इलाक़े में है,
20 बैत-फ़ग़ूर, पिसगा के पहाड़ी सिलसिले पर मौजूद
आबादियाँ और बैत-यसीमोत। 21 मैदान-ए-मुर्तफ़ा के
तमाम शहर रूबिन के क़बीले को दिए गए यानी
अमोरियों के बादशाह सीहोन की पूरी बादशाही जिस
का दार-उल-हकूमत हस्बोन शहर था। मूसा ने सीहोन
को मार डाला था और उस के साथ पाँच मिदियानी
रईसों को भी जिन्हें सीहोन ने अपने मुल्क में मुक़र्रर
किया था। इन रईसों के नाम इवी, रक़म, सूर, हूर
और रबा थे। 22 जिन लोगों को उस वक़्त मारा गया
उन में से बलआम बिन बओर भी था जो ग़ैबदान
था। 23 रूबिन के क़बीले की मग़रिबी सरहद दरया-
ए-यर्दन थी। यही शहर और आबादियाँ रूबिन के
क़बीले को उस के कुंबों के मुताबिक़ दी गईं, और
वह उस की मीरास ठहरीं।

जद के क़बीले का इलाक़ा

24 मूसा ने जद के क़बीले को उस के कुंबों
के मुताबिक़ ज़ैल का इलाक़ा दिया। 25 याज़ेर का
इलाक़ा, जिलिआद के तमाम शहर, अम्मोनियों का
आधा हिस्सा रब्बा के क़रीब शहर अरोईर तक
26–27 और हस्बोन के बादशाह सीहोन की बादशाही
का बाक़ी शिमाली हिस्सा यानी हस्बोन, रामत-उल-
मिस्फ़ाह और बतूनीम के दरमियान का इलाक़ा और
महनाइम और दबीर के दरमियान का इलाक़ा। इस
के इलावा जद को वादी-ए-यर्दन का वह मशरिक़ी
हिस्सा भी मिल गया जो बैत-हारम, बैत-निम्रा, सुक्कात
और सफ़ोन पर मुश्तमिल था। यूँ उस की शिमाली
सरहद किन्नरत यानी गलील की झील का जुनूबी
किनारा था। 28 यही शहर और आबादियाँ जद के
क़बीले को उस के कुंबों के मुताबिक़ दी गईं, और
वह उस की मीरास ठहरीं।

मनस्सी के मशरिक़ी हिस्से का इलाक़ा

29 जो इलाक़ा मूसा ने मनस्सी के आधे हिस्से को
उस के कुंबों के मुताबिक़ दिया था 30 वह महनाइम से
ले कर शिमाल में ओज बादशाह की तमाम बादशाही
पर मुश्तमिल था। उस में मुल्क-ए-बसन और वह
60 आबादियाँ शामिल थीं जिन पर याईर ने फ़त्ह
पाई थी। 31 जिलिआद का आधा हिस्सा ओज की
हुकूमत के दो मराकिज़ अस्तारात और इद्रई समेत
मकीर बिन मनस्सी की औलाद को उस के कुंबों के
मुताबिक़ दिया गया। 32 मूसा ने इन मौरूसी ज़मीनों
की तक़्सीम उस वक़्त की थी जब वह दरया-ए-यर्दन
के मशरिक़ में मोआब के मैदानी इलाक़े में यरीहू शहर
के मुक़ाबिल था।
33 लेकिन लावी को मूसा से कोई मौरूसी ज़मीन
नहीं मिली थी, क्यूँकि रब इस्राईल का ख़ुदा उन का
मौरूसी हिस्सा है जिस तरह उस ने उन से वादा किया
था।

कनआन की तक़्सीम

14 1 इस्राईल के बाक़ी साढ़े नौ क़बीलों को
दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में यानी मुल्क-ए-
कनआन में ज़मीन मिल गई। इस के लिए इलीअज़र
इमाम, यशूअ बिन नून और क़बीलों के आबाई
घरानों के सरबराहों ने 2 क़ुरआ डाल कर मुक़र्रर
किया कि हर क़बीले को कौन कौन सा इलाक़ा मिल
जाए। यूँ वैसा ही हुआ जिस तरह रब ने मूसा को
हुक्म दिया था। 3–4 मूसा अढ़ाई क़बीलों को उन की
मौरूसी ज़मीन दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में दे चुका
था, क्यूँकि यूसुफ़ की औलाद के दो क़बीले मनस्सी
और इफ़्राईम वुजूद में आए थे। लेकिन लावियों
को उन के दरमियान ज़मीन न मिली। इस्राईलियों ने
लावियों को ज़मीन न दी बल्कि उन्हें सिर्फ़ रिहाइश के
लिए शहर और रेवड़ों के लिए चरागाहें दीं। 5 यूँ उन्हों
ने ज़मीन को उन ही हिदायात के मुताबिक़ तक़्सीम
किया जो रब ने मूसा को दी थीं।

कालिब हब्रून पाने की गुज़ारिश करता है

6 जिल्जाल में यहूदाह के क़बीले के मर्द यशूअ के
पास आए। यफ़ुन्ना क़निज़्ज़ी का बेटा कालिब भी उन
के साथ था। उस ने यशूअ से कहा, "आप को याद
है कि रब ने मर्द-ए-ख़ुदा मूसा से आप के और मेरे
बारे में क्या कुछ कहा जब हम क़ादिस-बर्नीअ में थे।
7 मैं 40 साल का था जब रब के ख़ादिम मूसा ने मुझे
मुल्क-ए-कनआन का जाइज़ा लेने के लिए क़ादिस-
बर्नीअ से भेज दिया। जब वापस आया तो मैं ने मूसा
को दयानतदारी से सब कुछ बताया जो देखा था।
8 अफ़्सोस कि जो भाई मेरे साथ गए थे उन्हों ने लोगों
को डराया। लेकिन मैं रब अपने ख़ुदा का वफ़ादार
रहा। 9 उस दिन मूसा ने क़सम खा कर मुझ से वादा
किया, 'जिस ज़मीन पर तेरे पाँओ चले हैं वह हमेशा
तक तेरी और तेरी औलाद की विरासत में रहेगी।
क्यूँकि तू रब मेरे ख़ुदा का वफ़ादार रहा है।' 10 और
अब ऐसा ही हुआ है जिस तरह रब ने वादा किया
था। उस ने मुझे अब तक ज़िन्दा रहने दिया है। रब
को मूसा से यह बात किए 45 साल गुज़र गए हैं।
उस सारे अर्से में हम रेगिस्तान में घूमते फिरते रहे हैं।
आज मैं 85 साल का हूँ, 11 और अब तक उतना ही
ताक़तवर हूँ जितना कि उस वक़्त था जब मैं जासूस
था। अब तक मेरी बाहर निकलने और जंग करने
की वही क़ुव्वत क़ाइम है। 12 अब मुझे वह पहाड़ी
इलाक़ा दे दें जिस का वादा रब ने उस दिन मुझ से
किया था। आप ने ख़ुद सुना है कि अनाक़ी वहाँ बड़े
क़िलाबन्द शहरों में बसते हैं। लेकिन शायद रब मेरे
साथ हो और मैं उन्हें निकाल दूँ जिस तरह उस ने
फ़रमाया है।"

13 तब यशूअ ने कालिब बिन यफ़ुन्ना को बरकत दे
कर उसे विरासत में हब्रून दे दिया। 14–15 पहले हब्रून
क़िर्यत-अर्बा यानी अर्बा का शहर कहलाता था। अर्बा
अनाक़ियों का सब से बड़ा आदमी था। आज तक
यह शहर कालिब की औलाद की मिलकियत रही
है। वजह यह है कि कालिब रब इस्राईल के ख़ुदा
का वफ़ादार रहा। फिर जंग ख़त्म हुई, और मुल्क में
अम्न-ओ-अमान क़ाइम हो गया।

यहूदाह की सरहदें

15 1 जब इस्राईलियों ने क़ुरआ डाल कर मुल्क
को तक़्सीम किया तो यहूदाह के क़बीले
को उस के कुंबों के मुताबिक़ कनआन का जुनूबी
हिस्सा मिल गया। इस इलाक़े की सरहद मुल्क-ए-
अदोम और इन्तिहाई जुनूब में सीन का रेगिस्तान था।
2 यहूदाह की जुनूबी सरहद बहीरा-ए-मुर्दार के
जुनूबी सिरे से शुरू हो कर 3 जुनूब की तरफ़ चलती
चलती दर्रा-ए-अक़्रब्बीम पहुँच गई। वहाँ से वह सीन
की तरफ़ जारी हुई और क़ादिस-बर्नीअ के जुनूब में से
आगे निकल कर हस्रोन तक पहुँच गई। हस्रोन से वह
अद्दार की तरफ़ चढ़ गई और फिर क़र्क़ा की तरफ़
मुड़ी। 4 इस के बाद वह अज़्मून से हो कर मिस्र की
सरहद पर वाक़े वादी-ए-मिस्र तक पहुँच गई जिस के

साथ साथ चलती हुई वह समुन्दर पर ख़त्म हुई। यह
यहूदाह की जुनूबी सरहद थी।
5 मशरिक़ में उस की सरहद बहीरा-ए-मुर्दार के साथ
साथ चल कर वहाँ ख़त्म हुई जहाँ दरया-ए-यर्दन
बहीरा-ए-मुर्दार में बहता है।
यहूदाह की शिमाली सरहद यहीं से शुरू हो कर
6 बैत-हुज्लाह की तरफ़ चढ़ गई, फिर बैत-अराबा
के शिमाल में से गुज़र कर रूबिन के बेटे बोहन
के पत्थर तक पहुँच गई। 7 वहाँ से सरहद वादी-ए-
अकूर में उतर गई और फिर दुबारा दबीर की तरफ़
चढ़ गई। दबीर से वह शिमाल यानी जिल्जाल की
तरफ़ जो दर्रा-ए-अदुम्मीम के मुक़ाबिल है मुड़ गई
(यह दर्रा वादी के जुनूब में है)। यूँ वह चलती चलती
शिमाली सरहद ऐन-शम्स और ऐन-राजिल तक पहुँच
गई। 8 वहाँ से वह वादी-ए-बिन-हिन्नूम में से गुज़रती
हुई यबूसियों के शहर यरूशलम के जुनूब में से आगे
निकल गई और फिर उस पहाड़ पर चढ़ गई जो
वादी-ए-बिन-हिन्नूम के मग़रिब और मैदान-ए-रफ़ाईम
के शिमाली किनारे पर है। 9 वहाँ सरहद मुड़ कर
चश्मा बनाम निफ़्तूह की तरफ़ बढ़ गई और फिर
पहाड़ी इलाक़े इफ्रोन के शहरों के पास से गुज़र कर
बाला यानी क़िर्यत-यारीम तक पहुँच गई। 10 बाला से
मुड़ कर यहूदाह की यह सरहद मग़रिब में सईर के
पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ बढ़ गई और यारीम पहाड़
यानी कसलून के शिमाली दामन के साथ साथ चल
कर बैत-शम्स की तरफ़ उतर कर तिम्नत पहुँच गई।
11 वहाँ से वह अक्रून के शिमाल में से गुज़र गई
और फिर मुड़ कर सिक्करून और बाला पहाड़ की
तरफ़ बढ़ कर यब्निएल पहुँच गई। वहाँ यह शिमाली
सरहद समुन्दर पर ख़त्म हुई।
12 समुन्दर मुल्क-ए-यहूदाह की मग़रिबी सरहद थी।
यही वह इलाक़ा था जो यहूदाह के क़बीले को उस
के ख़ानदानों के मुताबिक़ मिल गया।

हब्रून और दबीर पर फ़त्ह

13 रब के हुक्म के मुताबिक़ यशूअ ने कालिब बिन
यफ़ुन्ना को उस का हिस्सा यहूदाह में दे दिया। वहाँ
उसे हब्रून शहर मिल गया। उस वक़्त उस का नाम
क़िर्यत-अर्बा था (अर्बा अनाक़ का बाप था)। 14 हब्रून
में तीन अनाक़ी बनाम सीसी, अख़ीमान और तल्मी
अपने घरानों समेत रहते थे। कालिब ने तीनों को
हब्रून से निकाल दिया। 15 फिर वह आगे दबीर के
बाशिन्दों से लड़ने चला गया। दबीर का पुराना नाम
क़िर्यत-सिफ़र था। 16 कालिब ने कहा, "जो क़िर्यत-
सिफ़र पर फ़त्ह पा कर क़ब्ज़ा करेगा उस के साथ मैं
अपनी बेटी अक्सा का रिश्ता बांधूँगा।" 17 कालिब
के भाई ग़ुतनीएल बिन क़नज़ ने शहर पर क़ब्ज़ा कर
लिया। चुनाँचे कालिब ने उस के साथ अपनी बेटी
अक्सा की शादी कर दी।
18 जब अक्सा ग़ुतनीएल के हाँ जा रही थी तो उस
ने उसे उभारा कि वह कालिब से कोई खेत पाने
की दरख़्वास्त करे। अचानक वह गधे से उतर गई।
कालिब ने पूछा, "क्या बात है?" 19 अक्सा ने जवाब
दिया, "जहेज़ के लिए मुझे एक चीज़ से नवाज़ें। आप
ने मुझे दश्त-ए-नजब में ज़मीन दे दी है। अब मुझे
चश्मे भी दे दीजिए।" चुनाँचे कालिब ने उसे अपनी
मिलकियत में से ऊपर और नीचे वाले चश्मे भी दे
दिए।

यहूदाह के क़बीले के शहर

20 जो मौरूसी ज़मीन यहूदाह के क़बीले को उस
के कुंबों के मुताबिक़ मिली 21 उस में ज़ैल के शहर
शामिल थे। जुनूब में मुल्क-ए-अदोम की सरहद
की तरफ़ यह शहर थे : क़ब्ज़िएल, इदर, यजूर,
22 क़ीना, दीमूना, अदअदा, 23 क़ादिस, हसूर,
इतनान, 24 ज़ीफ़, तलम, बालोत, 25 हसूर-हदत्ता,
क़रियोत-हस्रोन यानी हसूर, 26 अमाम, समा,
मोलादा, 27 हसार-जद्दा, हिश्मोन, बैत-फ़लत,
28 हसार-सूआल, बैर-सबा, बिज़्योतियाह, 29 बाला,

इय्यीम, अज़म, 30 इल्तोलद, कसील, हुर्मा,
31 सिक़्लाज, मदमन्ना, सन्सन्ना, 32 लबाओत,
सिल्हीम, ऐन और रिम्मोन। इन शहरों की तादाद 29
थी। हर शहर के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस
के साथ गिनी जाती थीं।

33 मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में यह
शहर थे : इस्ताल, सुरआ, अस्ना, 34 ज़नूह, ऐन-
जन्नीम, तफ़्फ़ूअह, ऐनाम, 35 यर्मूत, अदुल्लाम, सोका,
अज़ीक़ा, 36 शारैम, अदितैम और जदीरा यानी
जदीरतैम। इन शहरों की तादाद 14 थी। हर शहर
के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी
जाती थीं।

37 इन के इलावा यह शहर भी थे : ज़नान, हदाशा,
मिज्दल-जद, 38 दिलआन, मिस्फ़ाह, युक़्तिएल,
39 लकीस, बुस्क़त, इज्लून, 40 कब्बून, लहमास,
कितलीस, 41 जदीरोत, बैत-दजून, नामा और
मक़्क़ेदा। इन शहरों की तादाद 16 थी। हर शहर के
गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी
जाती थीं।

42 इस इलाक़े में यह शहर भी थे : लिब्ना,
इतर, असन, 43 यिफ़्ताह, अस्ना, नसीबब, 44 क़ईला,
अक्ज़ीब और मरेसा। इन शहरों की तादाद 9 थी। हर
शहर के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ
गिनी जाती थीं।

45 इन के इलावा यह शहर भी थे : अक्रून उस के
गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों और दीहातों समेत,
46 फिर अक्रून से ले कर मग़रिब की तरफ़ अश्दूद
तक तमाम क़स्बे और आबादियाँ। 47 अश्दूद ख़ुद भी
उस के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों और दीहातों
समेत इस में शामिल था और इसी तरह ग़ज़्ज़ा उस
के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों और दीहातों समेत
यानी तमाम आबादियाँ मिस्र की सरहद पर वाक़े
वादी-ए-मिस्र और समुन्दर के साहिल तक।

48 पहाड़ी इलाक़े के यह शहर यहूदाह के क़बीले
के थे : समीर, यत्तीर, सोका, 49 दन्ना, क़िर्यत-सन्ना
यानी दबीर, 50 अनाब, इस्तमोह, अनीम, 51 जुशन,
हौलून और जिलोह। इन शहरों की तादाद 11 थी,
और उन के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ भी उन के
साथ गिनी जाती थीं।

52 इन के इलावा यह शहर भी थे : अराब, दूमा,
इशआन, 53 यनूम, बैत-तफ़्फ़ूअह, अफ़ीक़ा, 54 हुम्ता,
क़िर्यत-अर्बा यानी हब्रून और सीऊर। इन शहरों
की तादाद 9 थी। हर शहर के गिर्द-ओ-नवाह की
आबादियाँ उस में गिनी जाती थीं।

55 इन के इलावा यह शहर भी थे : मऊन, कर्मिल,
ज़ीफ़, यूत्ता, 56 यज़्रएल, युक़्दिआम, ज़नूह, 57 क़ैन,
जिबिआ और तिम्नत। इन शहरों की तादाद 10 थी।
हर शहर के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के
साथ गिनी जाती थीं।

58 इन के इलावा यह शहर भी थे : हल्हूल, बैत-
सूर, जदूर, 59 मारात, बैत-अनोत और इल्तक़ोन। इन
शहरों की तादाद 6 थी। हर शहर के गिर्द-ओ-नवाह
की आबादियाँ उस के साथ गिनी जाती थीं।

60 फिर क़िर्यत-बाल यानी क़िर्यत-यारीम और रब्बा
भी यहूदाह के पहाड़ी इलाक़े में शामिल थे। हर शहर
के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी
जाती थीं।

61 रेगिस्तान में यह शहर यहूदाह के क़बीले के थे :
बैत-अराबा, मिद्दीन, सकाका, 62 निब्सान, नमक का
शहर और ऐन-जदी। इन शहरों की तादाद 6 थी। हर
शहर के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ
गिनी जाती थीं।

63 लेकिन यहूदाह का क़बीला यबूसियों को
यरूशलम से निकालने में नाकाम रहा। इस लिए
उन की औलाद आज तक यहूदाह के क़बीले के
दरमियान रहती है।

इफ़्राईम और मनस्सी की जुनूबी सरहद

16 1 क़ुरआ डालने से यूसुफ़ की औलाद का
इलाक़ा मुक़र्रर किया गया। उस की सरहद
यरीहू के क़रीब दरया-ए-यर्दन से शुरू हुई, शहर के
मशरिक़ में चश्मों के पास से गुज़री और रेगिस्तान

में से चलती चलती बैत-एल के पहाड़ी इलाक़े तक
पहुँची। 2 लूज़ यानी बैत-एल से आगे निकल कर
वह अर्कियों के इलाक़े में अतारात पहुँची। 3 वहाँ
से वह मग़रिब की तरफ़ उतरती उतरती यफ़्लीतियों
के इलाक़े में दाख़िल हुई जहाँ वह नशेबी बैत-हौरून
में से गुज़र कर जज़र के पीछे समुन्दर पर ख़त्म हुई।
4 यह उस इलाक़े की जुनूबी सरहद थी जो यूसुफ़
की औलाद इफ़्राईम और मनस्सी के क़बीलों को
विरासत में दिया गया।

इफ़्राईम का इलाक़ा

5 इफ़्राईम के क़बीले को उस के कुंबों के मुताबिक़
यह इलाक़ा मिल गया : उस की जुनूबी सरहद
अतारात-अद्दार और बालाई बैत-हौरून से हो कर
6–8 समुन्दर पर ख़त्म हुई। उस की शिमाली सरहद
मग़रिब में समुन्दर से शुरू हुई और क़ाना नदी के
साथ चलती चलती तफ़्फ़ूअह तक पहुँची। वहाँ से
वह शिमाल की तरफ़ मुड़ी और मिक्मताह तक पहुँच
कर दुबारा मशरिक़ की तरफ़ चलने लगी। फिर वह
तानत-सैला से हो कर यानूह पहुँची। मशरिक़ी सरहद
शिमाल में यानूह से शुरू हुई और अतारात से हो कर
दरया-ए-यर्दन के मग़रिबी किनारे तक उतरी और फिर
किनारे के साथ जुनूब की तरफ़ चलती चलती नारा
और इस के बाद यरीहू पहुँची। वहाँ वह दरया-ए-
यर्दन पर ख़त्म हुई। यही इफ़्राईम और उस के कुंबों
की सरहदें थीं।

9 इस के इलावा कुछ शहर और उन के गिर्द-ओ-
नवाह की आबादियाँ इफ़्राईम के लिए मुक़र्रर की
गईं जो मनस्सी के इलाक़े में थीं। 10 इफ़्राईम के
मर्दों ने जज़र में आबाद कनआनियों को न निकाला।
इस लिए उन की औलाद आज तक वहाँ रहती है,
अलबत्ता उसे बेगार में काम करना पड़ता है।

मनस्सी का इलाक़ा

17 1 यूसुफ़ के पहलौठे मनस्सी की औलाद
को दो इलाक़े मिल गए। दरया-ए-यर्दन के
मशरिक़ में मकीर के घराने को जिलिआद और बसन
दिए गए। मकीर मनस्सी का पहलौठा और जिलिआद
का बाप था, और उस की औलाद माहिर फ़ौजी थी।
2 अब क़ुरआ डालने से दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में
वह इलाक़ा मुक़र्रर किया गया जहाँ मनस्सी के बाक़ी
बेटों की औलाद को आबाद होना था। इन के छः
कुंबे थे जिन के नाम अबीअज़र, ख़लक़, अस्रीएल,
सिकम, हिफ़र और समीदा थे।

3 सिलाफ़िहाद बिन हिफ़र बिन जिलिआद बिन
मकीर बिन मनस्सी के बेटे नहीं थे बल्कि सिर्फ़
बेटियाँ। उन के नाम महलाह, नूआह, हुज्लाह,
मिल्काह और तिर्ज़ा थे। 4 यह ख़वातीन इलीअज़र
इमाम, यशूअ बिन नून और क़ौम के बुज़ुर्गों के पास
आईं और कहने लगीं, "रब ने मूसा को हुक्म दिया
था कि वह हमें भी क़बाइली इलाक़े का कोई हिस्सा
दे।" यशूअ ने रब का हुक्म मान कर न सिर्फ़ मनस्सी
की नरीना औलाद को ज़मीन दी बल्कि उन्हें भी।
5 नतीजे में मनस्सी के क़बीले को दरया-ए-यर्दन के
मग़रिब में ज़मीन के दस हिस्से मिल गए और मशरिक़
में जिलिआद और बसन। 6 मग़रिब में न सिर्फ़ मनस्सी
की नरीना औलाद के ख़ानदानों को ज़मीन मिली
बल्कि बेटियों के ख़ानदानों को भी। इस के बरअक्स
मशरिक़ में जिलिआद की ज़मीन सिर्फ़ नरीना औलाद
में तक़्सीम की गई।

7 मनस्सी के क़बीले के इलाक़े की सरहद आशर से
शुरू हुई और सिकम के मशरिक़ में वाक़े मिक्मताह
से हो कर जुनूब की तरफ़ चलती हुई ऐन-तफ़्फ़ूअह
की आबादी तक पहुँची। 8 तफ़्फ़ूअह के गिर्द-ओ-
नवाह की ज़मीन इफ़्राईम की मिलकियत थी, लेकिन
मनस्सी की सरहद पर के यह शहर मनस्सी की अपनी
मिलकियत थे। 9 वहाँ से सरहद क़ाना नदी के जुनूबी
किनारे तक उतरी। फिर नदी के साथ चलती चलती
वह समुन्दर पर ख़त्म हुई। नदी के जुनूबी किनारे पर
कुछ शहर इफ़्राईम की मिलकियत थे अगरचे वह
मनस्सी के इलाक़े में थे। 10 लेकिन मज्मूई तौर पर
मनस्सी का क़बाइली इलाक़ा क़ाना नदी के शिमाल

में था और इफ़्राईम का इलाक़ा उस के जुनूब में। दोनों क़बीलों का इलाक़ा मग़रिब में समुन्दर पर ख़त्म हुआ। मनस्सी के इलाक़े के शिमाल में आशर का क़बाइली इलाक़ा था और मशरिक़ में इश्कार का।

11 आशर और इश्कार के इलाक़ों के दर्ज-ए-ज़ैल शहर मनस्सी की मिलकियत थे : बैत-शान, इब्लीआम, दोर यानी नाफ़त-दोर, ऐन-दोर, तानक और मजिद्दो उन के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों समेत। 12 लेकिन मनस्सी का क़बीला वहाँ के कनआनियों को निकाल न सका बल्कि वह वहाँ बसते रहे। 13 बाद में भी जब इस्राईल की ताक़त बढ़ गई तो कनआनियों को निकाला न गया बल्कि उन्हें बेगार में काम करना पड़ा।

इफ़्राईम और मनस्सी मज़ीद ज़मीन का तक़ाज़ा करते हैं

14 यूसुफ़ के क़बीले इफ़्राईम और मनस्सी दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में ज़मीन पाने के बाद यशूअ के पास आए और कहने लगे, "आप ने हमारे लिए क़ुरआ डाल कर ज़मीन का सिर्फ़ एक हिस्सा क्यूँ मुक़र्रर किया? हम तो बहुत ज़्यादा लोग हैं, क्यूँकि रब ने हमें बरकत दे कर बड़ी क़ौम बनाया है।"

15 यशूअ ने जवाब दिया, "अगर आप इतने ज़्यादा हैं और आप के लिए इफ़्राईम का पहाड़ी इलाक़ा काफ़ी नहीं है तो फिर फ़रिज़्ज़ियों और रफ़ाइयों के पहाड़ी जंगलों में जाएँ और उन्हें काट कर काश्त के क़ाबिल बना लें।"

16 यूसुफ़ के क़बीलों ने कहा, "पहाड़ी इलाक़ा हमारे लिए काफ़ी नहीं है, और मैदानी इलाक़े में आबाद कनआनियों के पास लोहे के रथ हैं, उन के पास भी जो वादी-ए-यज़्रएल में हैं और उन के पास भी जो बैत-शान और उस के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों में रहते हैं।"

17 लेकिन यशूअ ने जवाब में कहा, "आप इतनी बड़ी और ताक़तवर क़ौम हैं कि आप का इलाक़ा एक ही हिस्से पर मह्दूद नहीं रहेगा 18 बल्कि जंगल का पहाड़ी इलाक़ा भी आप की मिलकियत में आएगा। उस के जंगलों को काट कर काश्त के क़ाबिल बना लें तो यह तमाम इलाक़ा आप ही का होगा। आप बाक़ी इलाक़े पर भी क़ब्ज़ा करके कनआनियों को निकाल देंगे अगरचे वह ताक़तवर हैं और उन के पास लोहे के रथ हैं।"

बाक़ी सात क़बीलों को ज़मीन मिलती है

18 1 कनआन पर ग़ालिब आने के बाद इस्राईल की पूरी जमाअत सैला शहर में जमा हुई। वहाँ उन्हों ने मुलाक़ात का ख़ैमा खड़ा किया।

2 अब तक सात क़बीलों को ज़मीन नहीं मिली थी। 3 यशूअ ने इस्राईलियों को समझा कर कहा, "आप कितनी देर तक सुस्त रहेंगे? आप कब तक उस मुल्क पर क़ब्ज़ा नहीं करेंगे जो रब आप के बापदादा के ख़ुदा ने आप को दे दिया है? 4 अब हर क़बीले के तीन तीन आदमियों को चुन लें। उन्हें मैं मुल्क का दौरा करने के लिए भेज दूँगा ताकि वह तमाम क़बाइली इलाक़ों की फ़हरिस्त तय्यार करें। इस के बाद वह मेरे पास वापस आ कर 5 मुल्क को सात इलाक़ों में तक़्सीम करें। लेकिन ध्यान रखें कि जुनूब में यहूदाह का इलाक़ा और शिमाल में इफ़्राईम और मनस्सी का इलाक़ा है। उन की सरहद्दें मत छेड़ना! 6 वह आदमी लिख लें कि सात नए क़बाइली इलाक़ों की सरहद्दें कहाँ कहाँ तक हैं और फिर इन की फ़हरिस्तें पेश करें। फिर मैं रब आप के ख़ुदा के हुज़ूर मुक़द्दस क़ुरआ डाल कर हर एक की ज़मीन मुक़र्रर करूँगा। 7 याद रहे कि लावियों को कोई इलाक़ा नहीं मिलना है। उन का हिस्सा यह है कि वह रब के इमाम हैं। और जद, रूबिन और मनस्सी के आधे क़बीले को भी मज़ीद कुछ नहीं मिलना है, क्यूँकि उन्हें रब के ख़ादिम मूसा से दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में उन का हिस्सा मिल चुका है।"

8 तब वह आदमी रवाना होने के लिए तय्यार हुए जिन्हें मुल्क का दौरा करने के लिए चुना गया था।

यशूअ ने उन्हें हुक्म दिया, “पूरे मुल्क में से गुज़र
कर तमाम शहरों की फ़हरिस्त बनाएँ। जब फ़हरिस्त
मुकम्मल हो जाए तो उसे मेरे पास ले आएँ। फिर
मैं सैला में रब के हुज़ूर आप के लिए क़ुरआ डाल
दूँगा।” 9 आदमी चले गए और पूरे मुल्क में से गुज़र
कर तमाम शहरों की फ़हरिस्त बना ली। उन्हों ने
मुल्क को सात हिस्सों में तक़्सीम करके तमाम
तफ़्सीलात किताब में दर्ज कीं और यह किताब सैला
की ख़ैमागाह में यशूअ को दे दी। 10 फिर यशूअ ने
रब के हुज़ूर क़ुरआ डाल कर यह इलाक़े बाक़ी सात
क़बीलों और उन के कुंबों में तक़्सीम कर दिए।

बिनयमीन का इलाक़ा

11 जब क़ुरआ डाला गया तो बिनयमीन के क़बीले
और उस के कुंबों को पहला हिस्सा मिल गया।
उस की ज़मीन यहूदाह और यूसुफ़ के क़बीलों के
दरमियान थी। 12 उस की शिमाली सरहद दरया-ए-
यर्दन से शुरू हुई और यरीहू के शिमाल में पहाड़ी
ढलान पर चढ़ कर पहाड़ी इलाक़े में से मग़रिब की
तरफ़ गुज़री। बैत-आवन के बयाबान को पहुँचने पर
13 वह लूज़ यानी बैत-एल की तरफ़ बढ़ कर शहर
के जुनूब में पहाड़ी ढलान पर चलती चलती आगे
निकल गई। वहाँ से वह अतारात-अद्दार और उस
पहाड़ी तक पहुँची जो नशेबी बैत-हौरून के जुनूब
में है। 14 फिर वह जुनूब की तरफ़ मुड़ कर मग़रिबी
सरहद के तौर पर क़िर्यत-बाल यानी क़िर्यत-यारीम
के पास आई जो यहूदाह के क़बीले की मिलकियत
थी। 15 बिनयमीन की जुनूबी सरहद क़िर्यत-यारीम के
मग़रिबी किनारे से शुरू हो कर निफ़्तूह चश्मा तक
पहुँची। 16 फिर वह उस पहाड़ के दामन पर उतर आई
जो वादी-ए-बिन-हिन्नूम के मग़रिब में और मैदान-ए-
रफ़ाईम के शिमाल में वाक़े है। इस के बाद सरहद
यबूसियों के शहर के जुनूब में से गुज़री और यूँ वादी-
ए-हिन्नूम को पार करके ऐन-राजिल के पास आई।
17 फिर वह शिमाल की तरफ़ मुड़ कर ऐन-शम्स के
पास से गुज़री और दर्रा-ए-अदुम्मीम के मुक़ाबिल
शहर जलीलोत तक पहुँच कर रूबिन के बेटे बोहन
के पत्थर के पास उतर आई। 18 वहाँ से वह उस
ढलान के शिमाली रुख़ पर से गुज़री जो वादी-ए-यर्दन
के मग़रिबी किनारे पर है। फिर वह वादी में उतर कर
19 बैत-हुज्लाह की शिमाली पहाड़ी ढलान से गुज़री
और बहीरा-ए-मुर्दार के शिमाली किनारे पर ख़त्म हुई,
वहाँ जहाँ दरया-ए-यर्दन उस में बहता है। यह थी
बिनयमीन की जुनूबी सरहद। 20 उस की मशरिक़ी
सरहद दरया-ए-यर्दन थी। यही वह इलाक़ा था जो
बिनयमीन के क़बीले को उस के कुंबों के मुताबिक़
दिया गया।

21 ज़ैल के शहर इस इलाक़े में शामिल थे : यरीहू,
बैत-हुज्लाह, इमक़-क़सीस, 22 बैत-अराबा, समरैम,
बैत-एल, 23 अव्वीम, फ़ारा, उफ़्रा, 24 कफ़र-उल-
अम्मोनी, उफ़्नी और जिबा। यह कुल 12 शहर थे।
हर शहर के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के
साथ गिनी जाती थीं। 25 इन के इलावा यह शहर
भी थे : जिबऊन, रामा, बैरोत, 26 मिस्फ़ाह, कफ़ीरा,
मौज़ा, 27 रक़म, इर्फ़एल, तराला, 28 ज़िला, अलिफ़,
यबूसियों का शहर यरूशलम, जिबिआ और क़िर्यत-
यारीम। इन शहरों की तादाद 14 थी। हर शहर के
गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी
जाती थीं। यह तमाम शहर बिनयमीन और उस के
कुंबों की मिलकियत थे।

शमाऊन का इलाक़ा

19 1 जब क़ुरआ डाला गया तो शमाऊन के
क़बीले और उस के कुंबों को दूसरा हिस्सा
मिल गया। उस की ज़मीन यहूदाह के क़बीले के
इलाक़े के दरमियान थी। 2 उसे यह शहर मिल
गए : बैर-सबा (सबा), मोलादा, 3 हसार-सूआल,
बाला, अज़म, 4 इल्तोलद, बतूल, हुर्मा, 5 सिक़्लाज,
बैत-मर्कबोत, हसार-सूसा, 6 बैत-लबाओत और
सारूहन। इन शहरों की तादाद 13 थी। हर शहर
के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी
जाती थीं। 7 इन के इलावा यह चार शहर भी शमाऊन

के थे : ऐन, रिम्मोन, इतर और असन। हर शहर
के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी
जाती थीं। 8 इन शहरों के गिर्द-ओ-नवाह की तमाम
आबादियाँ बालत-बैर यानी नजब के रामा तक उन
के साथ गिनी जाती थीं। यह थी शमाऊन और उस के
कुंबों की मिलकियत। 9 यह जगहें इस लिए यहूदाह
के क़बीले के इलाक़े से ली गईं कि यहूदाह का
इलाक़ा उस के लिए बहुत ज़्यादा था। यही वजह
है कि शमाऊन का इलाक़ा यहूदाह के बीच में है।

ज़बूलून का इलाक़ा

10–12 जब क़ुरआ डाला गया तो ज़बूलून के क़बीले
और उस के कुंबों को तीसरा हिस्सा मिल गया। उस
की जुनूबी सरहद युक़्निआम की नदी से शुरू हुई और
फिर मशरिक़ की तरफ़ दबासत, मरअला और सारीद
से हो कर किस्लोत-तबूर के इलाक़े तक पहुँची।
इस के बाद वह मुड़ कर मशरिक़ी सरहद के तौर
पर दाबरत के पास आई और चढ़ती चढ़ती यफ़ीअ
पहुँची। 13 वहाँ से वह मज़ीद मशरिक़ की तरफ़
बढ़ती हुई जात-हिफ़र, एत-क़ाज़ीन और रिम्मोन से
हो कर नेआ के पास आई। 14 ज़बूलून की शिमाली
और मग़रिबी सरहद हन्नातोन में से गुज़रती गुज़रती
वादी-ए-इफ़्ताह-एल पर ख़त्म हुई। 15 बारह शहर उन
के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों समेत ज़बूलून की
मिलकियत में आए जिन में क़त्तात, नहलाल, सिम्रोन,
इदाला और बैत-लहम शामिल थे। 16 ज़बूलून के
क़बीले को यही कुछ उस के कुंबों के मुताबिक़ मिल
गया।

इश्कार का इलाक़ा

17 जब क़ुरआ डाला गया तो इश्कार के क़बीले
और उस के कुंबों को चौथा हिस्सा मिल गया। 18 उस
का इलाक़ा यज़्रएल से ले कर शिमाल की तरफ़
फैल गया। यह शहर उस में शामिल थे : कसूलोत,
शूनीम, 19 हफ़ारैम, शियून, अनाख़रत, 20 रब्बीत,
क़िसियोन, इबज़, 21 रैमत, ऐन-जन्नीम, ऐन-हद्दा और
बैत-फ़स्सीस। 22 शिमाल में यह सरहद तबूर पहाड़
से शुरू हुई और शख़सूमा और बैत-शम्स से हो
कर दरया-ए-यर्दन तक उतर आई। 16 शहर उन
के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों समेत इश्कार की
मिलकियत में आए। 23 उसे यह पूरा इलाक़ा उस के
कुंबों के मुताबिक़ मिल गया।

आशर का इलाक़ा

24 जब क़ुरआ डाला गया तो आशर के क़बीले
और उस के कुंबों को पाँचवाँ हिस्सा मिल गया।
25 उस के इलाक़े में यह शहर शामिल थे : ख़िल्क़त,
हली, बतन, अक्शाफ़, 26 अलम्मलिक, अमआद
और मिसाल। उस की सरहद समुन्दर के साथ साथ
चलती हुई कर्मिल के पहाड़ी सिलसिले के दामन में से
गुज़री और उतरती उतरती सैहूर-लिब्नात तक पहुँची।
27 वहाँ वह मशरिक़ में बैत-दजून की तरफ़ मुड़ कर
ज़बूलून के इलाक़े तक पहुँची और उस की मग़रिबी
सरहद के साथ चलती चलती शिमाल में वादी-ए-
इफ़्ताह-एल तक पहुँची। आगे बढ़ती हुई वह बैत-
इमक़ और नईएल से हो कर शिमाल की तरफ़ मुड़ी
जहाँ काबूल था। 28 फिर वह इब्रून, रहोब, हम्मून
और क़ाना से हो कर बड़े शहर सैदा तक पहुँची।
29 इस के बाद आशर की सरहद रामा की तरफ़ मुड़
कर फ़सीलदार शहर सूर के पास आई। वहाँ वह हूसा
की तरफ़ मुड़ी और चलती चलती अक्ज़ीब के क़रीब
समुन्दर पर ख़त्म हुई। 30 22 शहर उन के गिर्द-ओ-
नवाह की आबादियों समेत आशर की मिलकियत में
आए। इन में उम्मा, अफ़ीक़ और रहोब शामिल थे।
31 आशर को उस के कुंबों के मुताबिक़ यही कुछ
मिला।

नफ़्ताली का इलाक़ा

32 जब क़ुरआ डाला गया तो नफ़्ताली के क़बीले
और उस के कुंबों को छटा हिस्सा मिल गया।
33–34 जुनूब में उस की सरहद दरया-ए-यर्दन पर
लक़्क़ूम से शुरू हुई और मग़रिब की तरफ़ चलती

चलती यब्निएल, अदामी-नक़ब, ऐलोन-ज़ाननीम
और हलफ़ से हो कर अज़्नूत-तबूर तक पहुँची। वहाँ
से वह मग़रिबी सरहद की हैसियत से हुक़्क़ोक़ के
पास आई। नफ़ताली की जुनूबी सरहद ज़बूलून की
शिमाली सरहद और मग़रिब में आशर की मशरिक़ी
सरहद थी। दरया-ए-यर्दन और यहूदाह [r]उस की
मशरिक़ी सरहद थी। 35 ज़ैल के फ़सीलदार शहर
नफ़ताली की मिलकियत में आए : सद्दीम, सैर, हम्मत,
रक़्क़त, किन्नरत, 36 अदामा, रामा, हसूर, 37 क़ादिस,
इद्रई, ऐन-हसूर, 38 इरून, मिज्दल-एल, हुरीम, बैत-
अनात और बैत-शम्स। ऐसे 19 शहर थे। हर शहर के
गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ भी उस के साथ गिनी
जाती थीं। 39 नफ़ताली को यही कुछ उस के कुंबों के
मुताबिक़ मिला।

दान का इलाक़ा

40 जब क़ुरआ डाला गया तो दान के क़बीले और
उस के कुंबों को सातवाँ हिस्सा मिला। 41 उस के
इलाक़े में यह शहर शामिल थे : सुरआ, इस्ताल, ईर-
शम्स, 42 शालब्बीन, अय्यालोन, इत्ला, 43 ऐलोन,
तिम्नत, अक्रून, 44 इल्तक़िह, जिब्बतून, बालात,
45 यहूद, बनी-बरक़, जात-रिम्मोन, 46 मे-यर्क़ून और
रक़्क़ून उस इलाक़े समेत जो याफ़ा के मुक़ाबिल है।
47 अफ़्सोस, दान का क़बीला अपने इस इलाक़े पर
क़ब्ज़ा करने में कामयाब न हुआ, इस लिए उस के
मर्दों ने लशम शहर पर हम्ला करके उस पर फ़त्ह पाई
और उस के बाशिन्दों को तलवार से मार डाला। फिर
वह ख़ुद वहाँ आबाद हुए। उस वक़्त लशम शहर
का नाम दान में तब्दील हुआ। (दान उन के क़बीले
का बाप था।) 48 लेकिन यशूअ के ज़माने में दान के
क़बीले को उस के कुंबों के मुताबिक़ मज़कूरा तमाम
शहर और उन के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ मिल
गईं।

यशूअ को भी ज़मीन मिलती है

49 पूरे मुल्क को तक़्सीम करने के बाद इस्राईलियों
ने यशूअ बिन नून को भी अपने दरमियान कुछ
मौरूसी ज़मीन दे दी। 50 रब के हुक्म पर उन्हों ने
उसे इफ़्राईम का शहर तिम्नत-सिरह दे दिया। यशूअ
ने ख़ुद इस की दरख़्वास्त की थी। वहाँ जा कर उस
ने शहर को अज़ सर-ए-नौ तामीर किया और उस में
आबाद हुआ।

51 ग़रज़ यह वह तमाम ज़मीनें हैं जो इलीअज़र
इमाम, यशूअ बिन नून और क़बीलों के आबाई
घरानों के सरबराहों ने सैला में मुलाक़ात के ख़ैमे
के दरवाज़े पर क़ुरआ डाल कर तक़्सीम की थीं। यूँ
तक़्सीम करने का यह काम मुकम्मल हुआ।

पनाह के छः शहर

20 1 रब ने यशूअ से कहा, 2 "इस्राईलियों को
हुक्म दे कि उन हिदायात के मुताबिक़
पनाह के शहर चुन लो जिन्हें मैं तुम्हें मूसा की
मारिफ़त दे चुका हूँ। 3 इन शहरों में वह लोग फ़रार
हो सकते हैं जिन से कोई इत्तिफ़ाक़न यानी ग़ैरइरादी
तौर पर हलाक हुआ हो। यह उन्हें मरे हुए शख़्स के
उन रिश्तेदारों से पनाह देंगे जो बदला लेना चाहेंगे।
4 लाज़िम है कि ऐसा शख़्स पनाह के शहर के पास
पहुँचने पर शहर के दरवाज़े के पास बैठे बुज़ुर्गों को
अपना मुआमला पेश करे। उस की बात सुन कर
बुज़ुर्ग उसे अपने शहर में दाख़िल होने की इजाज़त
दें और उसे अपने दरमियान रहने के लिए जगह दे
दें। 5 अब अगर बदला लेने वाला उस के पीछे पड़
कर वहाँ पहुँचे तो बुज़ुर्ग मुल्ज़िम को उस के हाथ में
न दें, क्यूँकि यह मौत ग़ैरइरादी तौर पर और नफ़रत
रखे बग़ैर हुई है। 6 वह उस वक़्त तक शहर में रहे
जब तक मक़ामी अदालत मुआमले का फ़ैसला न
कर दे। अगर अदालत उसे बेगुनाह क़रार दे तो वह

[r]यहाँ यहूदाह का मतलब मुल्क-ए-बसन हो सकता है जो मनस्सी के इलाक़े में था लेकिन जिस पर यहूदाह के क़बीले के मर्द याईर ने फ़त्ह पाई थी।

उस वक़्त के इमाम-ए-आज़म की मौत तक उस शहर
में रहे। इस के बाद उसे अपने उस शहर और घर को
वापस जाने की इजाज़त है जिस से वह फ़रार हो कर
आया है।”

7 इस्राईलियों ने पनाह के यह शहर चुन लिए :
नफ़्ताली के पहाड़ी इलाक़े में गलील का क़ादिस,
इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े में सिकम और यहूदाह के
पहाड़ी इलाक़े में क़िर्यत-अर्बा यानी हब्रून। 8 दरया-ए-
यर्दन के मशरिक़ में उन्हों ने बसर को चुन लिया जो
यरीहू से काफ़ी दूर मैदान-ए-मुर्तफ़ा में है और रूबिन
के क़बीले की मिलकियत है। मुल्क-ए-जिलिआद में
रामात जो जद के क़बीले का है और बसन में जौलान
जो मनस्सी के क़बीले का है चुना गया।

9 यह शहर तमाम इस्राईलियों और इस्राईल में रहने
वाले अजनबियों के लिए मुक़र्रर किए गए। जिस से
भी ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ उसे इन में
पनाह लेने की इजाज़त थी। इन में वह उस वक़्त
तक बदला लेने वालों से महफ़ूज़ रहता था जब तक
मक़ामी अदालत फ़ैसला नहीं कर देती थी।

लावियों के शहर और चरागाहें

21 1 फिर लावी के क़बीले के आबाई घरानों
के सरबराह इलीअज़र इमाम, यशूअ बिन
नून और इस्राईल के बाक़ी क़बीलों के आबाई घरानों
के सरबराहों के पास आए 2 जो उस वक़्त सैला
में जमा थे। लावियों ने कहा, “रब ने मूसा की
मारिफ़त हुक्म दिया था कि हमें बसने के लिए शहर
और रेवड़ों को चराने के लिए चरागाहें दी जाएँ।”
3 चुनाँचे इस्राईलियों ने रब की यह बात मान कर
अपने इलाक़ों में से शहर और चरागाहें अलग करके
लावियों को दे दीं।

4 क़ुरआ डाला गया तो लावी के घराने क़िहात
को उस के कुंबों के मुताबिक़ पहला हिस्सा मिल
गया। पहले हारून के कुंबे को यहूदाह, शमाऊन और
बिनयमीन के क़बीलों के 13 शहर दिए गए। 5 बाक़ी
क़िहातियों को दान, इफ़्राईम और मग़रिबी मनस्सी
के क़बीलों के 10 शहर मिल गए।

6 जैर्सोन के घराने को इश्कार, आशर, नफ़्ताली
और मनस्सी के क़बीलों के 13 शहर दिए गए। यह
मनस्सी का वह इलाक़ा था जो दरया-ए-यर्दन के
मशरिक़ में मुल्क-ए-बसन में था।

7 मिरारी के घराने को उस के कुंबों के मुताबिक़
रूबिन, जद और ज़बूलून के क़बीलों के 12 शहर
मिल गए।

8 यूँ इस्राईलियों ने क़ुरआ डाल कर लावियों
को मज़कूरा शहर और उन के गिर्द-ओ-नवाह की
चरागाहें दे दीं। वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा की
मारिफ़त हुक्म दिया था।

क़िहात के घराने के शहर

9–10 क़ुरआ डालते वक़्त लावी के घराने क़िहात
में से हारून के कुंबे को पहला हिस्सा मिल गया।
उसे यहूदाह और शमाऊन के क़बीलों के यह शहर
दिए गए : 11 पहला शहर अनाक़ियों के बाप का
शहर क़िर्यत-अर्बा था जो यहूदाह के पहाड़ी इलाक़े
में है और जिस का मौजूदा नाम हब्रून है। उस की
चरागाहें भी दी गईं, 12 लेकिन हब्रून के इर्दगिर्द
की आबादियाँ और खेत कालिब बिन यफ़ुन्ना की
मिलकियत रहे। 13 हारून के कुंबे का यह शहर
पनाह का शहर भी था जिस में हर वह शख़्स
पनाह ले सकता था जिस से कोई ग़ैरइरादी तौर पर
हलाक हुआ था। इस के इलावा हारून के कुंबे
को लिब्ना, 14 यत्तीर, इस्तिमूअ, 15 हौलून, दबीर,
16 ऐन, यूत्ता और बैत-शम्स के शहर भी मिल गए।
उसे यहूदाह और शमाऊन के क़बीलों के कुल 9
शहर उन की चरागाहों समेत मिल गए। 17–18 इन के
इलावा बिनयमीन के क़बीले के चार शहर उस की
मिलकियत में आए यानी जिबऊन, जिबा, अनतोत
और अल्मोन। 19 ग़रज़ हारून के कुंबे को 13 शहर
उन की चरागाहों समेत मिल गए। 20 लावी के क़बीले
के घराने क़िहात के बाक़ी कुंबों को क़ुरआ डालते

वक़्त इफ़्राईम के क़बीले के शहर मिल गए। 21 इन में
इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े का शहर सिकम शामिल
था जिस में हर वह शख़्स पनाह ले सकता था जिस
से कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था, फिर
जज़र, 22 क़िब्ज़ैम और बैत-हौरून। इन चार शहरों
की चरागाहें भी मिल गईं। 23–24 दान के क़बीले ने
भी उन्हें चार शहर उन की चरागाहों समेत दिए यानी
इल्तक़िह, जिब्बतून, अय्यालोन और जात-रिम्मोन।
25 मनस्सी के मग़रिबी हिस्से से उन्हें दो शहर तानक
और जात-रिम्मोन उन की चरागाहों समेत मिल गए।
26 ग़रज़ क़िहात के बाक़ी कुंबों को कुल 10 शहर
उन की चरागाहों समेत मिले।

जैर्सोन के घराने के शहर

27 लावी के क़बीले के घराने जैर्सोन को मनस्सी के
मशरिक़ी हिस्से के दो शहर उन की चरागाहों समेत
दिए गए : मुल्क-ए-बसन में जौलान जिस में हर वह
शख़्स पनाह ले सकता था जिस से कोई ग़ैरइरादी तौर
पर हलाक हुआ था, और बइस्तराह। 28–29 इश्कार
के क़बीले ने उसे चार शहर उन की चरागाहों समेत
दिए : क़िसियोन, दाबरत, यर्मूत और ऐन-जन्नीम।
30–31 इसी तरह उसे आशर के क़बीले के भी चार
शहर उन की चरागाहों समेत दिए गए : मिसाल,
अब्दोन, ख़िल्क़त और रहोब। 32 नफ़्ताली के क़बीले
ने तीन शहर उन की चरागाहों समेत दिए : गलील का
क़ादिस जिस में हर वह शख़्स पनाह ले सकता था
जिस से कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था, फिर
हम्मात-दोर और क़र्तान। 33 ग़रज़ जैर्सोन के घराने को
13 शहर उन की चरागाहों समेत मिल गए।

मिरारी के घराने के शहर

34–35 अब रह गया लावी के क़बीले का घराना
मिरारी। उसे ज़बूलून के क़बीले के चार शहर उन की
चरागाहों समेत मिल गए : युक्निआम, क़र्ता, दिम्ना
और नहलाल। 36–37 इसी तरह उसे रूबिन के क़बीले
के भी चार शहर उन की चरागाहों समेत मिल गए :
बसर, यहज़, क़दीमात और मिफ़ात। 38–39 जद के
क़बीले ने उसे चार शहर उन की चरागाहों समेत दिए
: मुल्क-ए-जिलिआद का रामात जिस में हर वह शख़्स
पनाह ले सकता था जिस से कोई ग़ैरइरादी तौर पर
हलाक हुआ था, फिर महनाइम, हस्बोन और याज़ेर।
40 ग़रज़ मिरारी के घराने को कुल 12 शहर उन की
चरागाहों समेत मिल गए।

41 इस्राईल के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में जो लावियों के
शहर उन की चरागाहों समेत थे उन की कुल तादाद
48 थी। 42 हर शहर के इर्दगिर्द चरागाहें थीं।

अल्लाह ने अपना वादा पूरा किया

43 यूँ रब ने इस्राईलियों को वह पूरा मुल्क दे दिया
जिस का वादा उस ने उन के बापदादा से क़सम खा
कर किया था। वह उस पर क़ब्ज़ा करके उस में
रहने लगे। 44 और रब ने चारों तरफ़ अम्न-ओ-अमान
मुहय्या किया जिस तरह उस ने उन के बापदादा से
क़सम खा कर वादा किया था। उसी की मदद से
इस्राईली तमाम दुश्मनों पर ग़ालिब आए थे। 45 जो
अच्छे वादे रब ने इस्राईल से किए थे उन में से एक
भी नामुकम्मल न रहा बल्कि सब के सब पूरे हो गए।

मशरिक़ी क़बीलों को घर वापस जाने की इजाज़त

22 1 फिर यशूअ ने रूबिन, जद और मनस्सी के
आधे क़बीले के मर्दों को अपने पास बुला
कर 2 कहा, “जो भी हुक्म रब के ख़ादिम मूसा ने आप
को दिया था उसे आप ने पूरा किया। और आप ने मेरी
हर बात मानी है। 3 आप ने काफ़ी अर्से से आज तक
अपने भाइयों को तर्क नहीं किया बल्कि बिलकुल
वही कुछ किया है जो रब की मर्ज़ी थी। 4 अब रब
आप के ख़ुदा ने आप के भाइयों को मौऊदा मुल्क दे
दिया है, और वह सलामती के साथ उस में रह रहे हैं।
इस लिए अब वक़्त आ गया है कि आप अपने घर
वापस चले जाएँ, उस मुल्क में जो रब के ख़ादिम मूसा
ने आप को दरया-ए-यर्दन के पार दे दिया है। 5 लेकिन
ख़बरदार, एहतियात से उन हिदायात पर चलते रहें

जो रब के ख़ादिम मूसा ने आप को दे दीं। रब अपने
ख़ुदा से प्यार करें, उस की तमाम राहों पर चलें, उस
के अह्काम मानें, उस के साथ लिपटे रहें, और पूरे
दिल-ओ-जान से उस की ख़िदमत करें।" 6 यह कह
कर यशूअ ने उन्हें बरकत दे कर रुख़्सत कर दिया,
और वह अपने घर चले गए।

7 मनस्सी के आधे क़बीले को मूसा से मुल्क-ए-
बसन में ज़मीन मिल गई थी। दूसरे हिस्से को यशूअ
से ज़मीन मिल गई थी, यानी दरया-ए-यर्दन के मग़रिब
में जहाँ बाक़ी क़बीले आबाद हुए थे। मनस्सी के मर्दों
को रुख़्सत करते वक़्त यशूअ ने उन्हें बरकत दे कर
8 कहा, "आप बड़ी दौलत के साथ अपने घर लौट रहे
हैं। आप को बड़े रेवड़, सोना, चाँदी, लोहा और बहुत
से कपड़े मिल गए हैं। जब आप अपने घर पहुँचेंगे तो
माल-ए-ग़नीमत उन के साथ बाँटें जो घर में रह गए
हैं।"

9 फिर रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले के
मर्द बाक़ी इस्राईलियों को सैला में छोड़ कर मुल्क-
ए-जिलिआद की तरफ़ रवाना हुए जो दरया-ए-यर्दन
के मशरिक़ में है। वहाँ उन के अपने इलाक़े थे जिन में
उन के क़बीले रब के उस हुक्म के मुताबिक़ आबाद
हुए थे जो उस ने मूसा की मारिफ़त दिया था।

मशरिक़ी क़बीले क़ुर्बानगाह बना लेते हैं

10 यह मर्द चलते चलते दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में
एक जगह पहुँचे जिस का नाम गलीलोत था। वहाँ
यानी मुल्क-ए-कनआन में ही उन्हों ने एक बड़ी और
शानदार क़ुर्बानगाह बनाई। 11 इस्राईलियों को ख़बर
दी गई, "रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले
ने कनआन की सरहद पर गलीलोत में क़ुर्बानगाह
बना ली है। यह क़ुर्बानगाह दरया-ए-यर्दन के मग़रिब
में यानी हमारे ही इलाक़े में है!"

12 तब इस्राईल की पूरी जमाअत मशरिक़ी क़बीलों
से लड़ने के लिए सैला में जमा हुई। 13 लेकिन पहले
उन्हों ने इलीअज़र इमाम के बेटे फ़ीन्हास को मुल्क-
ए-जिलिआद को भेजा जहाँ रूबिन, जद और मनस्सी
का आधा क़बीला आबाद थे। 14 उस के साथ 10
आदमी यानी हर मग़रिबी क़बीले का एक नुमाइन्दा
था। हर एक अपने आबाई घराने और कुंबे का
सरबराह था। 15 जिलिआद में पहुँच कर उन्हों ने
मशरिक़ी क़बीलों से बात की। 16 "रब की पूरी
जमाअत आप से पूछती है कि आप इस्राईल के ख़ुदा
से बेवफ़ा क्यूँ हो गए हैं? आप ने रब से अपना मुँह
फेर कर यह क़ुर्बानगाह क्यूँ बनाई है? इस से आप
ने रब से सरकशी की है। 17 क्या यह काफ़ी नहीं था
कि हम से फ़ग़ूर के बुत की पूजा करने का गुनाह
सरज़द हुआ? हम तो आज तक पूरे तौर पर उस
गुनाह से पाक-साफ़ नहीं हुए गो उस वक़्त रब की
जमाअत को वबा की सूरत में सज़ा मिल गई थी।
18 तो फिर आप क्या कर रहे हैं? आप दुबारा रब से
अपना मुँह फेर कर दूर हो रहे हैं। देखें, अगर आप
आज रब से सरकशी करें तो कल वह इस्राईल की
पूरी जमाअत के साथ नाराज़ होगा। 19 अगर आप
समझते हैं कि आप का मुल्क नापाक है और आप
इस लिए उस में रब की ख़िदमत नहीं कर सकते
तो हमारे पास रब के मुल्क में आएँ जहाँ रब की
सुकूनतगाह है, और हमारी ज़मीनों में शरीक हो जाएँ।
लेकिन रब से या हम से सरकशी मत करना। रब
हमारे ख़ुदा की क़ुर्बानगाह के इलावा अपने लिए कोई
और क़ुर्बानगाह न बनाएँ! 20 क्या इस्राईल की पूरी
जमाअत पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल न हुआ जब
अकन बिन ज़ारह ने माल-ए-ग़नीमत में से कुछ चोरी
किया जो रब के लिए मख़्सूस था? उस के गुनाह की
सज़ा सिर्फ़ उस तक ही मह्दूद न रही बल्कि और भी
हलाक हुए।"

21 रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले के
मर्दों ने इस्राईली कुंबों के सरबराहों को जवाब दिया,
22 "रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा, हाँ रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ ख़ुदा हक़ीक़त जानता है, और इस्राईल भी
यह बात जान ले! न हम सरकश हुए हैं, न रब
से बेवफ़ा। अगर हम झूट बोलें तो आज ही हमें
मार डालें! 23 हम ने यह क़ुर्बानगाह इस लिए नहीं

बनाई कि रब से दूर हो जाएँ। हम उस पर कोई भी क़ुर्बानी चढ़ाना नहीं चाहते, न भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ, न ग़ल्ला की नज़रें और न ही सलामती की क़ुर्बानियाँ। अगर हम झूट बोलें तो रब ख़ुद हमारी अदालत करे। 24 हक़ीक़त में हम ने यह क़ुर्बानगाह इस लिए तामीर की कि हम डरते हैं कि मुस्तक़बिल में किसी दिन आप की औलाद हमारी औलाद से कहे, 'आप का रब इस्राईल के ख़ुदा के साथ क्या वास्ता है? 25 आख़िर रब ने हमारे और आप के दरमियान दरया-ए-यर्दन की सरहद मुक़र्रर की है। चुनाँचे आप को रब की इबादत करने का कोई हक़ नहीं!' ऐसा करने से आप की औलाद हमारी औलाद को रब की ख़िदमत करने से रोकेगी। 26 यही वजह है कि हम ने यह क़ुर्बानगाह बनाई, भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ या ज़बह की कोई और क़ुर्बानी चढ़ाने के लिए नहीं 27 बल्कि आप को और आने वाली नस्लों को इस बात की याद दिलाने के लिए कि हमें भी रब के ख़ैमे में भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ, ज़बह की क़ुर्बानियाँ और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाने का हक़ है। यह क़ुर्बानगाह हमारे और आप के दरमियान गवाह रहेगी। अब आप की औलाद कभी भी हमारी औलाद से नहीं कह सकेगी, 'आप को रब की जमाअत के हुक़ूक़ हासिल नहीं।' 28 और अगर वह किसी वक़्त यह बात करे तो हमारी औलाद कह सकेगी, 'यह क़ुर्बानगाह देखें जो रब की क़ुर्बानगाह की हू-ब-हू नक़ल है। हमारे बापदादा ने इसे बनाया था, लेकिन इस लिए नहीं कि हम इस पर भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ और ज़बह की क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँ बल्कि आप को और हमें गवाही देने के लिए कि हमें मिल कर रब की इबादत करने का हक़ है।' 29 हालात कभी भी यहाँ तक न पहुँचें कि हम रब से सरकशी करके अपना मुँह उस से फेर लें। नहीं, हम ने यह क़ुर्बानगाह भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ, ग़ल्ला की नज़रें और ज़बह की क़ुर्बानियाँ चढ़ाने के लिए नहीं बनाई। हम सिर्फ़ रब अपने ख़ुदा की सुकूनतगाह के सामने की क़ुर्बानगाह पर ही अपनी क़ुर्बानियाँ पेश करना चाहते हैं।"

30 जब फ़ीन्हास और इस्राईली जमाअत के कुंबों के सरबराहों ने जिलिआद में रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले की यह बातें सुनीं तो वह मुत्मइन हुए। 31 फ़ीन्हास ने उन से कहा, "अब हम जानते हैं कि रब आइन्दा भी हमारे दरमियान रहेगा, क्यूँकि आप उस से बेवफ़ा नहीं हुए हैं। आप ने इस्राईलियों को रब की सज़ा से बचा लिया है।"

32 इस के बाद फ़ीन्हास और बाक़ी इस्राईली सरदार रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले को मुल्क-ए-जिलिआद में छोड़ कर मुल्क-ए-कनआन में लौट आए। वहाँ उन्हों ने सब कुछ बताया जो हुआ था। 33 बाक़ी इस्राईलियों को यह बात पसन्द आई, और वह अल्लाह की तम्जीद करके रूबिन और जद से जंग करने और उन का इलाक़ा तबाह करने के इरादे से बाज़ आए। 34 रूबिन और जद के क़बीलों ने नई क़ुर्बानगाह का नाम गवाह रखा, क्यूँकि उन्हों ने कहा, "यह क़ुर्बानगाह हमारे और दूसरे क़बीलों के दरमियान गवाह है कि रब हमारा भी ख़ुदा है।"

यशूअ की आख़िरी नसीहतें

23 1 अब इस्राईली काफ़ी देर से सलामती से अपने मुल्क में रहते थे, क्यूँकि रब ने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों के हम्लों से महफ़ूज़ रखा। जब यशूअ बहुत बूढ़ा हो गया था 2 तो उस ने इस्राईल के तमाम बुज़ुर्गों, सरदारों, क़ाज़ियों और निगहबानों को अपने पास बुला कर कहा, "अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। 3 आप ने अपनी आँखों से देखा कि रब ने इस इलाक़े की तमाम क़ौमों के साथ क्या कुछ किया है। रब आप के ख़ुदा ही ने आप के लिए जंग की। 4 याद रखें कि मैं ने मशरिक़ में दरया-ए-यर्दन से ले कर मग़रिब में समुन्दर तक सारा मुल्क आप के क़बीलों में तक़्सीम कर दिया है। बहुत सी क़ौमों पर मैं ने फ़त्ह पाई, लेकिन चन्द एक अब तक बाक़ी रह गई हैं। 5 लेकिन रब आप का ख़ुदा आप के आगे आगे

चलते हुए उन्हें भी निकाल कर भगा देगा। आप उन
की ज़मीनों पर क़ब्ज़ा कर लेंगे जिस तरह रब आप
के ख़ुदा ने वादा किया है।
6 अब पूरी हिम्मत से हर बात पर अमल करें जो
मूसा की शरीअत की किताब में लिखी हुई है। न दाईं
और न बाईं तरफ़ हटें। 7 उन दीगर क़ौमों से रिश्ता
मत बांधना जो अब तक मुल्क में बाक़ी रह गई हैं।
उन के बुतों के नाम अपनी ज़बान पर न लाना, न
उन के नाम ले कर क़सम खाना। न उन की ख़िदमत
करना, न उन्हें सिज्दा करना। 8 रब अपने ख़ुदा के
साथ यूँ लिपटे रहना जिस तरह आज तक लिपटे रहे
हैं।
9 रब ने आप के आगे आगे चल कर बड़ी बड़ी
और ताक़तवर क़ौमें निकाल दी हैं। आज तक आप
के सामने कोई नहीं खड़ा रह सका। 10 आप में से
एक शख़्स हज़ार दुश्मनों को भगा देता है, क्यूँकि रब
आप का ख़ुदा ख़ुद आप के लिए लड़ता है जिस तरह
उस ने वादा किया था। 11 चुनाँचे सन्जीदगी से ध्यान
दें कि आप रब अपने ख़ुदा से प्यार करें, क्यूँकि आप
की ज़िन्दगी इसी पर मुन्हसिर है। 12 अगर आप उस
से दूर हो कर उन दीगर क़ौमों से लिपट जाएँ जो
अब तक मुल्क में बाक़ी हैं और उन के साथ रिश्ता
बांधें 13 तो रब आप का ख़ुदा यक़ीनन इन क़ौमों को
आप के आगे से नहीं निकालेगा। इस के बजाय यह
आप को फंसाने के लिए फंदा और जाल बनेंगे। यह
यक़ीनन आप की पीठों के लिए कोड़े और आँखों
के लिए काँटे बन जाएंगे। आख़िर में आप उस अच्छे
मुल्क में से मिट जाएंगे जो रब आप के ख़ुदा ने आप
को दे दिया है।
14 आज मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ किसी न किसी
दिन दुनिया के हर शख़्स को जाना होता है। लेकिन
आप ने पूरे दिल-ओ-जान से जान लिया है कि जो भी
वादा रब आप के ख़ुदा ने आप के साथ किया वह
पूरा हुआ है। एक भी अधूरा नहीं रह गया। 15 लेकिन
जिस तरह रब ने हर वादा पूरा किया है बिलकुल
उसी तरह वह तमाम आफ़तें आप पर नाज़िल करेगा
जिन के बारे में उस ने आप को ख़बरदार किया है
अगर आप उस के ताबे न रहें। फिर वह आप को
उस अच्छे मुल्क में से मिटा देगा जो उस ने आप को
दे दिया है। 16 अगर आप उस अह्द को तोड़ें जो उस
ने आप के साथ बांधा है और दीगर माबूदों की पूजा
करके उन्हें सिज्दा करें तो फिर रब का पूरा ग़ज़ब
आप पर नाज़िल होगा और आप जल्द ही उस अच्छे
मुल्क में से मिट जाएंगे जो उस ने आप को दे दिया
है।”

अल्लाह और इस्राईल के दरमियान अह्द की तज्दीद

24 1 फिर यशूअ ने इस्राईल के तमाम क़बीलों
को सिकम शहर में जमा किया। उस
ने इस्राईल के बुज़ुर्गों, सरदारों, क़ाज़ियों और
निगहबानों को बुलाया, और वह मिल कर अल्लाह
के हुज़ूर हाज़िर हुए। 2 फिर यशूअ इस्राईली क़ौम
से मुख़ातिब हुआ। “रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता
है, ‘क़दीम ज़माने में तुम्हारे बापदादा दरया-ए-फ़ुरात
के पार बसते और दीगर माबूदों की पूजा करते थे।
इब्राहीम और नहूर का बाप तारह भी वहाँ आबाद
था। 3 लेकिन मैं तुम्हारे बाप इब्राहीम को वहाँ से
ले कर यहाँ लाया और उसे पूरे मुल्क-ए-कनआन
में से गुज़रने दिया। मैं ने उसे बहुत औलाद दी। मैं
ने उसे इस्हाक़ दिया 4 और इस्हाक़ को याक़ूब और
एसौ। एसौ को मैं ने पहाड़ी इलाक़ा सईर अता किया,
लेकिन याक़ूब अपने बेटों के साथ मिस्र चला गया।
5 बाद में मैं ने मूसा और हारून को मिस्र भेज
दिया और मुल्क पर बड़ी मुसीबतें नाज़िल करके
तुम्हें वहाँ से निकाल लाया। 6 चलते चलते तुम्हारे
बापदादा बहर-ए-क़ुल्ज़ुम पहुँच गए। लेकिन मिस्री
अपने रथों और घुड़सवारों से उन का ताक़्क़ुब करने
लगे। 7 तुम्हारे बापदादा ने मदद के लिए रब को
पुकारा, और मैं ने उन के और मिस्रियों के दरमियान
अंधेरा पैदा किया। मैं समुन्दर उन पर चढ़ा लाया,
और वह उस में ग़र्क़ हो गए। तुम्हारे बापदादा ने

अपनी ही आँखों से देखा कि मैं ने मिस्रियों के साथ
क्या कुछ किया।

तुम बड़े अर्से तक रेगिस्तान में घूमते फिरे।
8 आख़िरकार मैं ने तुम्हें उन अमोरियों के मुल्क में
पहुँचाया जो दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में आबाद थे।
गो उन्हों ने तुम से जंग की, लेकिन मैं ने उन्हें तुम्हारे
हाथ में कर दिया। तुम्हारे आगे आगे चल कर मैं ने
उन्हें नेस्त-ओ-नाबूद कर दिया, इस लिए तुम उन के
मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सके। 9 मोआब के बादशाह
बलक़ बिन सफ़ोर ने भी इस्राईल के साथ जंग छेड़ी।
इस मक़सद के तहत उस ने बलआम बिन बओर
को बुलाया ताकि वह तुम पर लानत भेजे। 10 लेकिन
मैं बलआम की बात मानने के लिए तय्यार नहीं था
बल्कि वह तुम्हें बरकत देने पर मज्बूर हुआ। यूँ मैं ने
तुम्हें उस के हाथ से महफ़ूज़ रखा।

11 फिर तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके यरीहू के
पास पहुँच गए। इस शहर के बाशिन्दे और अमोरी,
फ़रिज़्ज़ी, कनआनी, हित्ती, जिर्जासी, हिव्वी और
यबूसी तुम्हारे ख़िलाफ़ लड़ते रहे, लेकिन मैं ने उन्हें
तुम्हारे क़ब्ज़े में कर दिया। 12 मैं ने तुम्हारे आगे ज़म्बूर
भेज दिए जिन्हों ने अमोरियों के दो बादशाहों को
मुल्क से निकाल दिया।

यह सब कुछ तुम्हारी अपनी तलवार और कमान से
नहीं हुआ बल्कि मेरे ही हाथ से। 13 मैं ने तुम्हें बीज
बोने के लिए ज़मीन दी जिसे तय्यार करने के लिए
तुम्हें मेहनत न करनी पड़ी। मैं ने तुम्हें शहर दिए जो
तुम्हें तामीर करने न पड़े। उन में रह कर तुम अंगूर
और ज़ैतून के ऐसे बाग़ों का फल खाते हो जो तुम ने
नहीं लगाए थे'।"

14 यशूअ ने बात जारी रखते हुए कहा, "चुनाँचे रब
का ख़ौफ़ मानें और पूरी वफ़ादारी के साथ उस की
ख़िदमत करें। उन बुतों को निकाल फैंकें जिन की
पूजा आप के बापदादा दरया-ए-फ़ुरात के पार और
मिस्र में करते रहे। अब रब ही की ख़िदमत करें!
15 लेकिन अगर रब की ख़िदमत करना आप को बुरा
लगे तो आज ही फ़ैसला करें कि किस की ख़िदमत
करेंगे, उन देवताओं की जिन की पूजा आप के
बापदादा ने दरया-ए-फ़ुरात के पार की या अमोरियों
के देवताओं की जिन के मुल्क में आप रह रहे हैं।
लेकिन जहाँ तक मेरा और मेरे ख़ानदान का ताल्लुक़
है हम रब ही की ख़िदमत करेंगे।"

16 अवाम ने जवाब दिया, "ऐसा कभी न हो कि हम
रब को तर्क करके दीगर माबूदों की पूजा करें। 17 रब
हमारा ख़ुदा ही हमारे बापदादा को मिस्र की ग़ुलामी
से निकाल लाया और हमारी आँखों के सामने ऐसे
अज़ीम निशान पेश किए। जब हमें बहुत क़ौमों में से
गुज़रना पड़ा तो उसी ने हर वक़्त हमारी हिफ़ाज़त
की। 18 और रब ही ने हमारे आगे आगे चल कर
इस मुल्क में आबाद अमोरियों और बाक़ी क़ौमों
को निकाल दिया। हम भी उसी की ख़िदमत करेंगे,
क्यूँकि वही हमारा ख़ुदा है!"

19 यह सुन कर यशूअ ने कहा, "आप रब की
ख़िदमत कर ही नहीं सकते, क्यूँकि वह क़ुद्दूस और
ग़यूर ख़ुदा है। वह आप की सरकशी और गुनाहों
को मुआफ़ नहीं करेगा। 20 बेशक वह आप पर
मेहरबानी करता रहा है, लेकिन अगर आप रब को
तर्क करके अजनबी माबूदों की पूजा करें तो वह आप
के ख़िलाफ़ हो कर आप पर बलाएँ लाएगा और आप
को नेस्त-ओ-नाबूद कर देगा।"

21 लेकिन इस्राईलियों ने इसरार किया, "जी नहीं,
हम रब की ख़िदमत करेंगे!" 22 फिर यशूअ ने कहा,
"आप ख़ुद इस के गवाह हैं कि आप ने रब की
ख़िदमत करने का फ़ैसला कर लिया है।" उन्हों
ने जवाब दिया, "जी हाँ, हम इस के गवाह हैं!"
23 यशूअ ने कहा, "तो फिर अपने दरमियान मौजूद
बुतों को तबाह कर दें और अपने दिलों को रब
इस्राईल के ख़ुदा के ताबे रखें।" 24 अवाम ने यशूअ
से कहा, "हम रब अपने ख़ुदा की ख़िदमत करेंगे और
उसी की सुनेंगे।"

25 उस दिन यशूअ ने इस्राईलियों के लिए रब से
अह्द बांधा। वहाँ सिकम में उस ने उन्हें अह्काम
और क़वाइद दे कर 26 अल्लाह की शरीअत की

किताब में दर्ज किए। फिर उस ने एक बड़ा पत्थर
ले कर उसे उस बलूत के साय में खड़ा किया जो
रब के मक़्दिस के पास था। 27 उस ने तमाम लोगों
से कहा, “इस पत्थर को देखें! यह गवाह है, क्यूँकि
इस ने सब कुछ सुन लिया है जो रब ने हमें बता दिया
है। अगर आप कभी अल्लाह का इन्कार करें तो यह
आप के ख़िलाफ़ गवाही देगा।”
28 फिर यशूअ ने इस्राईलियों को फ़ारिग़ कर दिया,
और हर एक अपने अपने क़बाइली इलाक़े में चला
गया।

यशूअ और इलीअज़र का इन्तिक़ाल

29 कुछ देर के बाद रब का ख़ादिम यशूअ बिन नून
फ़ौत हुआ। उस की उम्र 110 साल थी। 30 उसे उस
की मौरूसी ज़मीन में दफ़नाया गया, यानी तिम्नत-
सिरह में जो इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े में जास पहाड़
के शिमाल में है।
31 जब तक यशूअ और वह बुज़ुर्ग ज़िन्दा रहे जिन्हों
ने अपनी आँखों से सब कुछ देखा था जो रब ने
इस्राईल के लिए किया था उस वक़्त तक इस्राईल
रब का वफ़ादार रहा।
32 मिस्र को छोड़ते वक़्त इस्राईली यूसुफ़ की
हड्डियाँ अपने साथ लाए थे। अब उन्हों ने उन्हें सिकम
शहर की उस ज़मीन में दफ़न कर दिया जो याक़ूब ने
सिकम के बाप हमोर की औलाद से चाँदी के सौ
सिक्कों के बदले ख़रीद ली थी। यह ज़मीन यूसुफ़ की
औलाद की विरासत में आ गई थी।
33 इलीअज़र बिन हारून भी फ़ौत हुआ। उसे
जिबिआ में दफ़नाया गया। इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े
का यह शहर उस के बेटे फ़ीन्हास को दिया गया था।

क़ुज़ात

जुनूबी कनआन पर मुकम्मल क़ाबू नहीं पाया जाता

1 1 यशूअ की मौत के बाद इस्राईलियों ने रब
से पूछा, "कौन सा क़बीला पहले निकल कर
कनआनियों पर हम्ला करे?" 2 रब ने जवाब दिया,
"यहूदाह का क़बीला शुरू करे। मैं ने मुल्क को उन
के क़ब्ज़े में कर दिया है।"
3 तब यहूदाह के क़बीले ने अपने भाइयों शमाऊन
के क़बीले से कहा, "आएँ, हमारे साथ निकलें ताकि
हम मिल कर कनआनियों को उस इलाक़े से निकाल
दें जो क़ुरआ ने यहूदाह के क़बीले के लिए मुक़र्रर
किया है। इस के बदले हम बाद में आप की मदद
करेंगे जब आप अपने इलाक़े पर क़ब्ज़ा करने के
लिए निकलेंगे।" चुनाँचे शमाऊन के मर्द यहूदाह के
साथ निकले। 4 जब यहूदाह ने दुश्मन पर हम्ला किया
तो रब ने कनआनियों और फ़रिज़्ज़ियों को उस के
क़ाबू में कर दिया। बज़क़ के पास उन्हों ने उन्हें
शिकस्त दी, गो उन के कुल 10,000 आदमी थे।
5 वहाँ उन का मुक़ाबला एक बादशाह से हुआ
जिस का नाम अदूनी-बज़क़ था। जब उस ने देखा कि
कनआनी और फ़रिज़्ज़ी हार गए हैं 6 तो वह फ़रार
हुआ। लेकिन इस्राईलियों ने उस का ताक़्क़ुब करके
उसे पकड़ लिया और उस के हाथों और पैरों के
अंगूठों को काट लिया। 7 तब अदूनी-बज़क़ ने कहा,
"मैं ने ख़ुद सत्तर बादशाहों के हाथों और पैरों के
अंगूठों को कटवाया, और उन्हें मेरी मेज़ के नीचे गिरे
हुए खाने के रद्दी टुकड़े जमा करने पड़े। अब अल्लाह
मुझे इस का बदला दे रहा है।" उसे यरूशलम लाया
गया जहाँ वह मर गया।
8 यहूदाह के मर्दों ने यरूशलम पर भी हम्ला किया।
उस पर फ़त्ह पा कर उन्हों ने उस के बाशिन्दों को
तलवार से मार डाला और शहर को जला दिया। 9 इस
के बाद वह आगे बढ़ कर उन कनआनियों से लड़ने
लगे जो पहाड़ी इलाक़े, दश्त-ए-नजब और मग़रिब
के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में रहते थे। 10 उन्हों ने हब्रून
शहर पर हम्ला किया जो पहले क़िर्यत-अर्बा कहलाता
था। वहाँ उन्हों ने सीसी, अख़ीमान और तल्मी की
फ़ौजों को शिकस्त दी। 11 फिर वह आगे दबीर के
बाशिन्दों से लड़ने चले गए। दबीर का पुराना नाम
क़िर्यत-सिफ़र था।
12 कालिब ने कहा, "जो क़िर्यत-सिफ़र पर फ़त्ह
पा कर क़ब्ज़ा करेगा उस के साथ मैं अपनी बेटी
अक्सा का रिश्ता बांधूँगा।" 13 कालिब के छोटे भाई
ग़ुतनीएल बिन क़नज़ ने शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया।
चुनाँचे कालिब ने उस के साथ अपनी बेटी अक्सा
की शादी कर दी। 14 जब अक्सा ग़ुतनीएल के हाँ
जा रही थी तो उस ने उसे उभारा कि वह कालिब
से कोई खेत पाने की दरख़्वास्त करे। अचानक वह
गधे से उतर गई। कालिब ने पूछा, "क्या बात है?"
15 अक्सा ने जवाब दिया, "जहेज़ के लिए मुझे एक
चीज़ से नवाज़ें। आप ने मुझे दश्त-ए-नजब में ज़मीन दे
दी है। अब मुझे चश्मे भी दे दीजिए।" चुनाँचे कालिब
ने उसे अपनी मिलकियत में से ऊपर और नीचे वाले
चश्मे भी दे दिए।
16 जब यहूदाह का क़बीला खजूरों के शहर से
रवाना हुआ था तो क़ीनी भी उन के साथ यहूदाह के
रेगिस्तान में आए थे। (क़ीनी मूसा के सुसर यित्रो की
औलाद थे)। वहाँ वह दश्त-ए-नजब में अराद शहर
के क़रीब दूसरे लोगों के दरमियान ही आबाद हुए।
17 यहूदाह का क़बीला अपने भाइयों शमाऊन के
क़बीले के साथ आगे बढ़ा। उन्हों ने कनआनी शहर
सफ़त पर हम्ला किया और उसे अल्लाह के लिए
मख़्सूस करके मुकम्मल तौर पर तबाह कर दिया।
इस लिए उस का नाम हुर्मा यानी अल्लाह के लिए

तबाही पड़ा। 18 फिर यहूदाह के फ़ौजियों ने ग़ज़्ज़ा,
अस्क़लून और अक्रून के शहरों पर उन के गिर्द-ओ-
नवाह की आबादियों समेत फ़त्ह पाई। 19 रब उन के
साथ था, इस लिए वह पहाड़ी इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर
सके। लेकिन वह समुन्दर के साथ के मैदानी इलाक़े
में आबाद लोगों को निकाल न सके। वजह यह थी
कि इन लोगों के पास लोहे के रथ थे। 20 मूसा के वादे
के मुताबिक़ कालिब को हब्रून शहर मिल गया। उस
ने उस में से अनाक़ के तीन बेटों को उन के घरानों
समेत निकाल दिया।

21 लेकिन बिनयमीन का क़बीला यरूशलम के रहने
वाले यबूसियों को निकाल न सका। आज तक यबूसी
वहाँ बिनयमीनियों के साथ आबाद हैं।

शिमाली कनआन पर मुकम्मल क़ाबू नहीं पाया जाता

22–23 इफ़्राईम और मनस्सी के क़बीले बैत-एल पर
क़ब्ज़ा करने के लिए निकले (बैत-एल का पुराना नाम
लूज़ था)। जब उन्हों ने अपने जासूसों को शहर की
तफ़्तीश करने के लिए भेजा तो रब उन के साथ था।
24 उन के जासूसों की मुलाक़ात एक आदमी से हुई
जो शहर से निकल रहा था। उन्हों ने उस से कहा,
“हमें शहर में दाख़िल होने का रास्ता दिखाएँ तो हम
आप पर रहम करेंगे।” 25 उस ने उन्हें अन्दर जाने
का रास्ता दिखाया, और उन्हों ने उस में घुस कर
तमाम बाशिन्दों को तलवार से मार डाला सिवाए
मज़कूरा आदमी और उस के ख़ानदान के। 26 बाद में
वह हित्तियों के मुल्क में गया जहाँ उस ने एक शहर
तामीर करके उस का नाम लूज़ रखा। यह नाम आज
तक राइज है।

27 लेकिन मनस्सी ने हर शहर के बाशिन्दे न
निकाले। बैत-शान, तानक, दोर, इब्लीआम, मजिद्दो
और उन के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ रह गईं।
कनआनी पूरे अज़्म के साथ उन में टिके रहे।
28 बाद में जब इस्राईल की ताक़त बढ़ गई तो
इन कनआनियों को बेगार में काम करना पड़ा।
लेकिन इस्राईलियों ने उस वक़्त भी उन्हें मुल्क से
न निकाला।

29 इसी तरह इफ़्राईम के क़बीले ने भी जज़र के
बाशिन्दों को न निकाला, और यह कनआनी उन के
दरमियान आबाद रहे।

30 ज़बूलून के क़बीले ने भी क़ित्रोन और नहलाल के
बाशिन्दों को न निकाला बल्कि यह उन के दरमियान
आबाद रहे, अलबत्ता उन्हें बेगार में काम करना पड़ा।

31 आशर के क़बीले ने न अक्को के बाशिन्दों
को निकाला, न सैदा, अहलाब, अक्ज़ीब, हिल्बा,
अफ़ीक़ या रहोब के बाशिन्दों को। 32 इस वजह से
आशर के लोग कनआनी बाशिन्दों के दरमियान रहने
लगे।

33 नफ़्ताली के क़बीले ने बैत-शम्स और बैत-
अनात के बाशिन्दों को न निकाला बल्कि वह भी
कनआनियों के दरमियान रहने लगे। लेकिन बैत-
शम्स और बैत-अनात के बाशिन्दों को बेगार में काम
करना पड़ा।

34 दान के क़बीले ने मैदानी इलाक़े पर क़ब्ज़ा करने
की कोशिश तो की, लेकिन अमोरियों ने उन्हें आने
न दिया बल्कि पहाड़ी इलाक़े तक महदूद रखा।
35 अमोरी पूरे अज़्म के साथ हरिस पहाड़, अय्यालोन
और साल्बीम में टिके रहे। लेकिन जब इफ़्राईम और
मनस्सी की ताक़त बढ़ गई तो अमोरियों को बेगार
में काम करना पड़ा।

36 अमोरियों की सरहद दर्रा-ए-अक्रब्बीम से ले कर
सिला से परे तक थी।

रब का फ़रिश्ता इस्राईल को मलामत करता है

2 1 रब का फ़रिश्ता जिल्जाल से चढ़ कर बोकीम
पहुँचा। वहाँ उस ने इस्राईलियों से कहा, “मैं
तुम्हें मिस्र से निकाल कर उस मुल्क में लाया जिस का
वादा मैं ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा से किया
था। उस वक़्त मैं ने कहा कि मैं तुम्हारे साथ अपना
अह्द कभी नहीं तोड़ूँगा। 2 और मैं ने हुक्म दिया, ‘इस
मुल्क की क़ौमों के साथ अह्द मत बांधना बल्कि

उन की क़ुर्बानगाहों को गिरा देना।' लेकिन तुम ने
मेरी न सुनी। यह तुम ने क्या किया? 3 इस लिए अब
मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं उन्हें तुम्हारे आगे से नहीं
निकालूँगा। वह तुम्हारे पहलूओं में काँटे बनेंगे, और
उन के देवता तुम्हारे लिए फंदा बने रहेंगे।"
4 रब के फ़रिश्ते की यह बात सुन कर इस्राईली ख़ूब
रोए। 5 यही वजह है कि उस जगह का नाम बोकीम
यानी रोने वाले पड़ गया। फिर उन्हों ने वहाँ रब के
हुज़ूर क़ुर्बानियाँ पेश कीं।

इस्राईल बेवफ़ा हो जाता है

6 यशूअ के क़ौम को रुख़्सत करने के बाद हर एक
क़बीला अपने इलाक़े पर क़ब्ज़ा करने के लिए रवाना
हुआ था। 7 जब तक यशूअ और वह बुज़ुर्ग ज़िन्दा
रहे जिन्हों ने वह अज़ीम काम देखे हुए थे जो रब ने
इस्राईलियों के लिए किए थे उस वक़्त तक इस्राईली
रब की वफ़ादारी से ख़िदमत करते रहे। 8 फिर रब का
ख़ादिम यशूअ बिन नून इन्तिक़ाल कर गया। उस की
उम्र 110 साल थी। 9 उसे तिम्नत-हरिस में उस की
अपनी मौरूसी ज़मीन में दफ़नाया गया। (यह शहर
इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े में जास पहाड़ के शिमाल
में है।)
10 जब हमअसर इस्राईली सब मर कर अपने
बापदादा से जा मिले तो नई नस्ल उभर आई जो
न तो रब को जानती, न उन कामों से वाक़िफ़ थी
जो रब ने इस्राईल के लिए किए थे। 11 उस वक़्त
वह ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं।
उन्हों ने बाल देवता के बुतों की पूजा करके 12 रब
अपने बापदादा के ख़ुदा को तर्क कर दिया जो उन्हें
मिस्र से निकाल लाया था। वह गिर्द-ओ-नवाह की
क़ौमों के दीगर माबूदों के पीछे लग गए और उन
की पूजा भी करने लगे। इस से रब का ग़ज़ब उन पर
भड़का, 13 क्यूँकि उन्हों ने उस की ख़िदमत छोड़ कर
बाल देवता और अस्तारात देवी की पूजा की। 14 रब
यह देख कर इस्राईलियों से नाराज़ हुआ और उन्हें
डाकुओं के हवाले कर दिया जिन्हों ने उन का माल
लूटा। उस ने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों के हाथ बेच
डाला, और वह उन का मुक़ाबला करने के क़ाबिल
न रहे। 15 जब भी इस्राईली लड़ने के लिए निकले तो
रब का हाथ उन के ख़िलाफ़ था। नतीजतन वह हारते
गए जिस तरह उस ने क़सम खा कर फ़रमाया था।
जब वह इस तरह बड़ी मुसीबत में थे 16 तो रब उन
के दरमियान क़ाज़ी बरपा करता जो उन्हें लूटने वालों
के हाथ से बचाते। 17 लेकिन वह उन की न सुनते
बल्कि ज़िना करके दीगर माबूदों के पीछे लगे और
उन की पूजा करते रहते। गो उन के बापदादा रब के
अह्काम के ताबे रहे थे, लेकिन वह ख़ुद बड़ी जल्दी
से उस राह से हट जाते जिस पर उन के बापदादा
चले थे। 18 लेकिन जब भी वह दुश्मन के ज़ुल्म और
दबाओ तले कराहने लगते तो रब को उन पर तरस
आ जाता, और वह किसी क़ाज़ी को बरपा करता
और उस की मदद करके उन्हें बचाता।
जितने अर्से तक क़ाज़ी ज़िन्दा रहता उतनी देर तक
इस्राईली दुश्मनों के हाथ से मह्फ़ूज़ रहते। 19 लेकिन
उस के मरने पर वह दुबारा अपनी पुरानी राहों पर
चलने लगते, बल्कि जब वह मुड़ कर दीगर माबूदों
की पैरवी और पूजा करने लगते तो उन की रविश
बापदादा की रविश से भी बुरी होती। वह अपनी
शरीर हरकतों और हटधर्म राहों से बाज़ आने के लिए
तय्यार ही न होते। 20 इस लिए अल्लाह को इस्राईल
पर बड़ा ग़ुस्सा आया। उस ने कहा, "इस क़ौम ने
वह अह्द तोड़ दिया है जो मैं ने इस के बापदादा से
बांधा था। यह मेरी नहीं सुनती, 21 इस लिए मैं उन
क़ौमों को नहीं निकालूँगा जो यशूअ की मौत से ले
कर आज तक मुल्क में रह गई हैं। यह क़ौमें इस
में आबाद रहेंगी, 22 और मैं उन से इस्राईलियों को
आज़मा कर देखूँगा कि आया वह अपने बापदादा
की तरह रब की राह पर चलेंगे या नहीं।"
23 चुनाँचे रब ने इन क़ौमों को न यशूअ के हवाले
किया, न फ़ौरन निकाला बल्कि उन्हें मुल्क में ही
रहने दिया।

अल्लाह इस्राईल को कनआनी क़ौमों से आज़माता है

3 1 रब ने कई एक क़ौमों को मुल्क-ए-कनआन
में रहने दिया ताकि उन तमाम इस्राईलियों को
आज़माए जो ख़ुद कनआन की जंगों में शरीक नहीं
हुए थे। 2 नीज़, वह नई नस्ल को जंग करना सिखाना
चाहता था, क्यूँकि वह जंग करने से नावाक़िफ़ थी।
ज़ैल की क़ौमें कनआन में रह गई थीं : 3 फ़िलिस्ती
उन के पाँच हुक्मरानों समेत, तमाम कनआनी, सैदानी
और लुबनान के पहाड़ी इलाक़े में रहने वाले हिव्वी
जो बाल-हर्मून पहाड़ से ले कर लबो-हमात तक
आबाद थे। 4 उन से रब इस्राईलियों को आज़माना
चाहता था। वह देखना चाहता था कि क्या यह मेरे
उन अह्काम पर अमल करते हैं या नहीं जो मैं ने मूसा
की मारिफ़त उन के बापदादा को दिए थे।

ग़ुतनीएल क़ाज़ी

5 चुनाँचे इस्राईली कनआनियों, हित्तियों, अमोरियों,
फ़रिज़्ज़ियों, हिव्वियों और यबूसियों के दरमियान ही
आबाद हो गए। 6 न सिर्फ़ यह बल्कि वह इन क़ौमों
से अपने बेटे-बेटियों का रिश्ता बांध कर उन के
देवताओं की पूजा भी करने लगे। 7 इस्राईलियों ने
ऐसी हरकतें कीं जो रब की नज़र में बुरी थीं। रब को
भूल कर उन्हों ने बाल देवता और यसीरत देवी की
ख़िदमत की।

8 तब रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ, और उस
ने उन्हें मसोपुतामिया के बादशाह कूशन-रिसअतैम
के हवाले कर दिया। इस्राईली आठ साल तक कूशन
के ग़ुलाम रहे। 9 लेकिन जब उन्हों ने मदद के लिए रब
को पुकारा तो उस ने उन के लिए एक नजातदहिन्दा
बरपा किया। कालिब के छोटे भाई ग़ुतनीएल बिन
क़नज़ ने उन्हें दुश्मन के हाथ से बचाया। 10 उस
वक़्त ग़ुतनीएल पर रब का रूह नाज़िल हुआ, और
वह इस्राईल का क़ाज़ी बन गया। जब वह जंग करने
के लिए निकला तो रब ने मसोपुतामिया के बादशाह
कूशन-रिसअतैम को उस के हवाले कर दिया, और
वह उस पर ग़ालिब आ गया।

11 तब मुल्क में चालीस साल तक अम्न-ओ-अमान
क़ाइम रहा। लेकिन जब ग़ुतनीएल बिन क़नज़ फ़ौत
हुआ 12 तो इस्राईली दुबारा वह कुछ करने लगे जो
रब की नज़र में बुरा था। इस लिए उस ने मोआब के
बादशाह इज्लून को इस्राईल पर ग़ालिब आने दिया।
13 इज्लून ने अम्मोनियों और अमालीक़ियों के साथ
मिल कर इस्राईलियों से जंग की और उन्हें शिकस्त
दी। उस ने खजूरों के शहर पर क़ब्ज़ा किया, 14 और
इस्राईल 18 साल तक उस की ग़ुलामी में रहा।

अहूद क़ाज़ी की चालाकी

15 इस्राईलियों ने दुबारा मदद के लिए रब को
पुकारा, और दुबारा उस ने उन्हें नजातदहिन्दा अता
किया यानी बिनयमीन के क़बीले का अहूद बिन जीरा
जो बाएँ हाथ से काम करने का आदी था। इसी
शख़्स को इस्राईलियों ने इज्लून बादशाह के पास
भेज दिया ताकि वह उसे ख़राज के पैसे अदा करे।
16 अहूद ने अपने लिए एक दोधारी तलवार बना ली
जो तक़रीबन डेढ़ फ़ुट लम्बी थी। जाते वक़्त उस
ने उसे अपनी कमर के दाईं तरफ़ बांध कर अपने
लिबास में छुपा लिया। 17 जब वह इज्लून के दरबार
में पहुँच गया तो उस ने मोआब के बादशाह को ख़राज
पेश किया। इज्लून बहुत मोटा आदमी था। 18 फिर
अहूद ने उन आदमियों को रुख़्सत कर दिया जिन्हों
ने उस के साथ ख़राज उठा कर उसे दरबार तक
पहुँचाया था। 19–20 अहूद भी वहाँ से रवाना हुआ,
लेकिन जिल्जाल के बुतों के क़रीब वह मुड़ कर
इज्लून के पास वापस गया।

इज्लून बालाख़ाने में बैठा था जो ज़्यादा ठंडा था
और उस के ज़ाती इस्तेमाल के लिए मख़्सूस था।
अहूद ने अन्दर जा कर बादशाह से कहा, “मेरी
आप के लिए ख़ुफ़िया ख़बर है।” बादशाह ने कहा,
“ख़ामोश!” बाक़ी तमाम हाज़िरीन कमरे से चले गए
तो अहूद ने कहा, “जो ख़बर मेरे पास आप के लिए

है वह अल्लाह की तरफ़ से है!” यह सुन कर इज्लून
खड़ा होने लगा, 21 लेकिन अहूद ने उसी लम्हे अपने
बाएँ हाथ से कमर के दाईं तरफ़ बंधी हुई तलवार
को पकड़ कर उसे मियान से निकाला और इज्लून
के पेट में धंसा दिया। 22 तलवार इतनी धँस गई कि
उस का दस्ता भी चर्बी में ग़ाइब हो गया और उस की
नोक टाँगों में से निकली। तलवार को उस में छोड़
कर 23 अहूद ने कमरे के दरवाज़ों को बन्द करके
कुंडी लगाई और साथ वाले कमरे में से निकल कर
चला गया।

24 थोड़ी देर के बाद बादशाह के नौकरों ने आ
कर देखा कि दरवाज़ों पर कुंडी लगी है। उन्हों ने
एक दूसरे से कहा, “वह हाजत रफ़ा कर रहे होंगे,”
25 इस लिए कुछ देर के लिए ठहरे। लेकिन दरवाज़ा
न खुला। इन्तिज़ार करते करते वह थक गए, लेकिन
बेसूद, बादशाह ने दरवाज़ा न खोला। आख़िरकार
उन्हों ने चाबी ढूँड कर दरवाज़ों को खोल दिया और
देखा कि मालिक की लाश फ़र्श पर पड़ी हुई है।

26 नौकरों के झिजकने की वजह से अहूद बच
निकला और जिल्जाल के बुतों से गुज़र कर सईरा
पहुँच गया जहाँ वह महफ़ूज़ था। 27 वहाँ इफ़्राईम के
पहाड़ी इलाक़े में उस ने नरसिंगा फूँक दिया ताकि
इस्राईली लड़ने के लिए जमा हो जाएँ। वह इकट्ठे हुए
और उस की राहनुमाई में वादी-ए-यर्दन में उतर गए।
28 अहूद बोला, “मेरे पीछे हो लें, क्यूँकि अल्लाह ने
आप के दुश्मन मोआब को आप के हवाले कर दिया
है।” चुनाँचे वह उस के पीछे पीछे वादी में उतर गए।
पहले उन्हों ने दरया-ए-यर्दन के कम-गहरे मक़ामों पर
क़ब्ज़ा करके किसी को दरया पार करने न दिया।
29 उस वक़्त उन्हों ने मोआब के 10,000 ताक़तवर
और जंग करने के क़ाबिल आदमियों को मार डाला।
एक भी न बचा।

30 उस दिन इस्राईल ने मोआब को ज़ेर कर दिया,
और 80 साल तक मुल्क में अम्न-ओ-अमान क़ाइम
रहा।

शम्जर क़ाज़ी

31 अहूद के दौर के बाद इस्राईल का एक और
नजातदहिन्दा उभर आया, शम्जर बिन अनात। उस ने
बैल के आँकुस से 600 फ़िलिस्तियों को मार डाला।

दबोरा नबिया और लश्कर का सरदार बरक़

4 1 जब अहूद फ़ौत हुआ तो इस्राईली दुबारा ऐसी
हरकतें करने लगे जो रब के नज़्दीक बुरी थीं।
2–3 इस लिए रब ने उन्हें कनआन के बादशाह याबीन
के हवाले कर दिया। याबीन का दार-उल-हकूमत
हसूर था, और उस के पास 900 लोहे के रथ थे।
उस के लश्कर का सरदार सीसरा था जो हरूसत-
हगोइम में रहता था। याबीन ने 20 साल इस्राईलियों
पर बहुत ज़ुल्म किया, इस लिए उन्हों ने मदद के लिए
रब को पुकारा।

4 उन दिनों में दबोरा नबिया इस्राईल की क़ाज़ी
थी। उस का शौहर लफ़ीदोत था, 5 और वह ‘दबोरा
के खजूर’ के पास रहती थी जो इफ़्राईम के पहाड़ी
इलाक़े में रामा और बैत-एल के दरमियान था। इस
दरख़्त के साय में वह इस्राईलियों के मुआमलात
के फ़ैसले किया करती थी। 6 एक दिन दबोरा ने
बरक़ बिन अबीनूअम को बुलाया। बरक़ नफ़्ताली
के क़बाइली इलाक़े के शहर क़ादिस में रहता था।
दबोरा ने बरक़ से कहा, “रब इस्राईल का ख़ुदा आप
को हुक्म देता है, ‘नफ़्ताली और ज़बूलून के क़बीलों
में से 10,000 मर्दों को जमा करके उन के साथ तबूर
पहाड़ पर चढ़ जा! 7 मैं याबीन के लश्कर के सरदार
सीसरा को उस के रथों और फ़ौज समेत तेरे क़रीब
की क़ैसोन नदी के पास खैंच लाऊँगा। वहाँ मैं उसे
तेरे हाथ में कर दूँगा’।”

8 बरक़ ने जवाब दिया, “मैं सिर्फ़ इस सूरत में
जाऊँगा कि आप भी साथ जाएँ। आप के बग़ैर मैं
नहीं जाऊँगा।” 9 दबोरा ने कहा, “ठीक है, मैं ज़रूर
आप के साथ जाऊँगी। लेकिन इस सूरत में आप को
सीसरा पर ग़ालिब आने की इज़्ज़त हासिल नहीं होगी

बल्कि एक औरत को। क्यूँकि रब सीसरा को एक औरत के हवाले कर देगा।”

चुनाँचे दबोरा बरक़ के साथ क़ादिस गई। 10 वहाँ बरक़ ने ज़बूलून और नफ़्ताली के क़बीलों को अपने पास बुला लिया। 10,000 आदमी उस की राहनुमाई में तबूर पहाड़ पर चले गए। दबोरा भी साथ गई।

11 उन दिनों में एक क़ीनी बनाम हिबर ने अपना ख़ैमा क़ादिस के क़रीब ऐलोन-ज़ाननीम में लगाया हुआ था। क़ीनी मूसा के साले होबाब की औलाद में से था। लेकिन हिबर दूसरे क़ीनियों से अलग रहता था।

12 अब सीसरा को इत्तिला दी गई कि बरक़ बिन अबीनूअम फ़ौज ले कर पहाड़ तबूर पर चढ़ गया है। 13 यह सुन कर वह हरूसत-हगोइम से रवाना हो कर अपने 900 रथों और बाक़ी लश्कर के साथ क़ैसोन नदी पर पहुँच गया।

14 तब दबोरा ने बरक़ से बात की, “हम्ला के लिए तय्यार हो जाएँ, क्यूँकि रब ने आज ही सीसरा को आप के क़ाबू में कर दिया है। रब आप के आगे आगे चल रहा है।” चुनाँचे बरक़ अपने 10,000 आदमियों के साथ तबूर पहाड़ से उतर आया। 15 जब उन्हों ने दुश्मन पर हम्ला किया तो रब ने कनआनियों के पूरे लश्कर में रथों समेत अफ़्रा-तफ़्री पैदा कर दी। सीसरा अपने रथ से उतर कर पैदल ही फ़रार हो गया।

16 बरक़ के आदमियों ने भागने वाले फ़ौजियों और उन के रथों का ताक़्क़ुब करके उन को हरूसत-हगोइम तक मारते गए। एक भी न बचा।

सीसरा का अन्जाम

17 इतने में सीसरा पैदल चल कर क़ीनी आदमी हिबर की बीवी याएल के ख़ैमे के पास भाग आया था। वजह यह थी कि हसूर के बादशाह याबीन के हिबर के घराने के साथ अच्छे ताल्लुक़ात थे। 18 याएल ख़ैमे से निकल कर सीसरा से मिलने गई। उस ने कहा, “आएँ मेरे आक़ा, अन्दर आएँ और न डरें।” चुनाँचे वह अन्दर आ कर लेट गया, और याएल ने उस पर कम्बल डाल दिया।

19 सीसरा ने कहा, “मुझे प्यास लगी है, कुछ पानी पिला दो।” याएल ने दूध का मश्कीज़ा खोल कर उसे पिला दिया और उसे दुबारा छुपा दिया। 20 सीसरा ने दरख़्वास्त की, “दरवाज़े में खड़ी हो जाओ! अगर कोई आए और पूछे कि क्या ख़ैमे में कोई है तो बोलो कि नहीं, कोई नहीं है।”

21 यह कह कर सीसरा गहरी नींद सो गया, क्यूँकि वह निहायत थका हुआ था। तब याएल ने मेख़ और हथोड़ा पकड़ लिया और दबे पाँओ सीसरा के पास जा कर मेख़ को इतने ज़ोर से उस की कनपटी में ठोंक दिया कि मेख़ ज़मीन में धँस गई और वह मर गया।

22 कुछ देर के बाद बरक़ सीसरा के ताक़्क़ुब में वहाँ से गुज़रा। याएल ख़ैमे से निकल कर उस से मिलने आई और बोली, “आएँ, मैं आप को वह आदमी दिखाती हूँ जिसे आप ढूँड रहे हैं।” बरक़ उस के साथ ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो क्या देखा कि सीसरा की लाश ज़मीन पर पड़ी है और मेख़ उस की कनपटी में से गुज़र कर ज़मीन में गड़ गई है।

23 उस दिन अल्लाह ने कनआनी बादशाह याबीन को इस्राईलियों के सामने ज़ेर कर दिया। 24 इस के बाद उन की ताक़त बढ़ती गई जबकि याबीन कमज़ोर होता गया और आख़िरकार इस्राईलियों के हाथों तबाह हो गया।

दबोरा और बरक़ का गीत

5 1 फ़त्ह के दिन दबोरा ने बरक़ बिन अबीनूअम के साथ यह गीत गाया,

2 “अल्लाह की सताइश हो! क्यूँकि इस्राईल के सरदारों ने राहनुमाई की, और अवाम निकलने के लिए तय्यार हुए।

3 ऐ बादशाहो, सुनो! ऐ हुक्मरानो, मेरी बात पर तवज्जुह दो! मैं रब की तम्जीद में गीत गाऊँगी, रब इस्राईल के ख़ुदा की मद्हसराई करूँगी।

4 ऐ रब, जब तू सईर से निकल आया और अदोम के
खुले मैदान से रवाना हुआ तो ज़मीन काँप उठी और
आसमान से पानी टपकने लगा, बादलों से बारिश
बरसने लगी।
5 कोह-ए-सीना के रब के हुज़ूर पहाड़ हिलने लगे,
रब इस्राईल के ख़ुदा के सामने वह कपकपाने लगे।

6 शम्जर बिन अनात और याएल के दिनों में सफ़र
के पक्के और सीधे रास्ते ख़ाली रहे और मुसाफ़िर उन
से हट कर बल खाते हुए छोटे छोटे रास्तों पर चल
कर अपनी मन्ज़िल तक पहुँचते थे।
7 दीहात की ज़िन्दगी सूनी हो गई। गाँव में रहना
मुश्किल था जब तक मैं, दबोरा जो इस्राईल की माँ
हूँ खड़ी न हुई।
8 शहर के दरवाज़ों पर जंग छिड़ गई जब उन्हों
ने नए माबूदों को चुन लिया। उस वक़्त इस्राईल के
40,000 मर्दों के पास एक भी ढाल या नेज़ा न था।
9 मेरा दिल इस्राईल के सरदारों के साथ है और उन
के साथ जो ख़ुशी से जंग के लिए निकले। रब की
सताइश करो!
10 ऐ तुम जो सफ़ेद गधों पर कपड़े बिछा कर उन
पर सवार हो, अल्लाह की तम्जीद करो! ऐ तुम जो
पैदल चल रहे हो, अल्लाह की तारीफ़ करो!
11 सुनो! जहाँ जानवरों को पानी पिलाया जाता है
वहाँ लोग रब के नजातबख़्श कामों की तारीफ़ कर
रहे हैं, उन नजातबख़्श कामों की जो उस ने इस्राईल
के दीहातियों की ख़ातिर किए। तब रब के लोग शहर
के दरवाज़ों के पास उतर आए।

12 ऐ दबोरा, उठें, उठें! उठें, हाँ उठें और गीत गाएँ!
ऐ बरक़, खड़े हो जाएँ! ऐ अबीनूअम के बेटे, अपने
क़ैदियों को बांध कर ले जाएँ!

13 फिर बचे हुए फ़ौजी पहाड़ी इलाक़े से उतर कर
क़ौम के शुरफ़ा के पास आए, रब की क़ौम सूरमाओं
के साथ मेरे पास उतर आई।
14 इफ़्राईम से जिस की जड़ें अमालीक़ में हैं
वह उतर आए, और बिनयमीन के मर्द उन के
पीछे हो लिए। मकीर से हुक्मरान और ज़बूलून से
सिपहसालार उतर आए।
15 इश्कार के रईस भी दबोरा के साथ थे, और उस
के फ़ौजी बरक़ के पीछे हो कर वादी में दौड़ आए।
लेकिन रूबिन का क़बीला अपने इलाक़े में रह कर
सोच-बिचार में उलझा रहा।
16 तू क्यूँ अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठा
रहा? क्या गल्लों के दरमियान चरवाहों की बाँसरियों
की आवाज़ें सुनने के लिए? रूबिन का क़बीला अपने
इलाक़े में रह कर सोच-बिचार में उलझा रहा।
17 जिलिआद के घराने दरया-ए-यर्दन के मशरिक़
में ठहरे रहे। और दान का क़बीला, वह क्यूँ बहरी
जहाज़ों के पास रहा? आशर का क़बीला भी साहिल
पर बैठा रहा, वह आराम से अपनी बन्दरगाहों के
पास ठहरा रहा,
18 जबकि ज़बूलून और नफ़्ताली अपनी जान पर
खेल कर मैदान-ए-जंग में आ गए।

19 बादशाह आए और लड़े, कनआन के बादशाह
मजिद्दो नदी पर तानक के पास इस्राईल से लड़े।
लेकिन वहाँ से वह चाँदी का लूटा हुआ माल वापस
न लाए।
20 आसमान से सितारों ने सीसरा पर हम्ला किया,
अपनी आसमानी राहों को छोड़ कर वह उस से और
उस की क़ौम से लड़ने आए।
21 क़ैसोन नदी उन्हें उड़ा ले गई, वह नदी जो क़दीम
ज़माने से बहती है। ऐ मेरी जान, मज़बूती से आगे
चलती जा!
22 उस वक़्त टापों का बड़ा शोर सुनाई दिया।
दुश्मन के ज़बरदस्त घोड़े सरपट दौड़ रहे थे।

23 रब के फ़रिश्ते ने कहा, “मीरोज़ शहर पर लानत
करो, उस के बाशिन्दों पर ख़ूब लानत करो! क्यूँकि

वह रब की मदद करने न आए, वह सूरमाओं के
ख़िलाफ़ रब की मदद करने न आए।”

24 हिबर क़ीनी की बीवी मुबारक है! ख़ैमों में रहने
वाली औरतों में से वह सब से मुबारक है!
25 जब सीसरा ने पानी माँगा तो याएल ने उसे दूध
पिलाया। शानदार प्याले में लस्सी डाल कर वह उसे
उस के पास लाई।
26 लेकिन फिर उस ने अपने हाथ से मेख़ और अपने
दहने हाथ से मज़दूरों का हथोड़ा पकड़ कर सीसरा
का सर फोड़ दिया, उस की खोपड़ी टुकड़े टुकड़े
करके उस की कनपटी को छेद दिया।
27 उस के पाँओ में वह तड़प उठा। वह गिर कर
वहीं पड़ा रहा। हाँ, वह उस के पाँओ में गिर कर
हलाक हुआ।
28 सीसरा की माँ ने खिड़की में से झाँका और दरीचे
में से देखती देखती रोती रही, “उस के रथ के पहुँचने
में इतनी देर क्यूँ हो रही है? रथों की आवाज़ अब
तक क्यूँ सुनाई नहीं दे रही?”
29 उस की दानिशमन्द ख़वातीन उसे तसल्ली देती
हैं और वह ख़ुद उन की बात दुहराती है, 30 “वह
लूटा हुआ माल आपस में बाँट रहे होंगे। हर मर्द के
लिए एक दो लड़कियाँ और सीसरा के लिए रंगदार
लिबास होगा। हाँ, वह रंगदार लिबास और मेरी गर्दन
को सजाने के लिए दो नफ़ीस रंगदार कपड़े ला रहे
होंगे।”

31 ऐ रब, तेरे तमाम दुश्मन सीसरा की तरह हलाक
हो जाएँ! लेकिन जो तुझ से प्यार करते हैं वह पूरे
ज़ोर से तुलू होने वाले सूरज की मानिन्द हों।”

बरक़ की इस फ़त्ह के बाद इस्राईल में 40 साल
अम्न-ओ-अमान क़ाइम रहा।

मिदियानी इस्राईलियों को दबाते हैं

6 1 फिर इस्राईली दुबारा वह कुछ करने लगे जो
रब को बुरा लगा, और उस ने उन्हें सात साल
तक मिदियानियों के हवाले कर दिया। 2 मिदियानियों
का दबाओ इतना ज़्यादा बढ़ गया कि इस्राईलियों ने
उन से पनाह लेने के लिए पहाड़ी इलाक़े में शिगाफ़,
ग़ार और गढ़ियाँ बना लीं। 3 क्यूँकि जब भी वह
अपनी फ़सलें लगाते तो मिदियानी, अमालीक़ी और
मशरिक़ के दीगर फ़ौजी उन पर हम्ला करके 4 मुल्क
को घेर लेते और फ़सलों को ग़ज़्ज़ा शहर तक तबाह
करते। वह खाने वाली कोई भी चीज़ नहीं छोड़ते
थे, न कोई भेड़, न कोई बैल, और न कोई गधा।
5 और जब वह अपने मवेशियों और ख़ैमों के साथ
पहुँचते तो टिड्डियों के दलों की मानिन्द थे। इतने मर्द
और ऊँट थे कि उन को गिना नहीं जा सकता था।
यूँ वह मुल्क पर चढ़ आते थे ताकि उसे तबाह करें।
6 इस्राईली मिदियान के सबब से इतने पस्तहाल हुए
कि आख़िरकार मदद के लिए रब को पुकारने लगे।
7–8 तब उस ने उन में एक नबी भेज दिया जिस ने
कहा, “रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं ही
तुम्हें मिस्र की ग़ुलामी से निकाल लाया। 9 मैं ने तुम्हें
मिस्र के हाथ से और उन तमाम ज़ालिमों के हाथ से
बचा लिया जो तुम्हें दबा रहे थे। मैं उन्हें तुम्हारे आगे
आगे निकालता गया और उन की ज़मीन तुम्हें दे दी।
10 उस वक़्त मैं ने तुम्हें बताया, ‘मैं रब तुम्हारा ख़ुदा
हूँ। जिन अमोरियों के मुल्क में तुम रह रहे हो उन के
देवताओं का ख़ौफ़ मत मानना। लेकिन तुम ने मेरी न
सुनी’।”

रब जिदाऊन को बुलाता है

11 एक दिन रब का फ़रिश्ता आया और उफ़्रा में
बलूत के एक दरख़्त के साय में बैठ गया। यह
दरख़्त अबीअज़र के ख़ानदान के एक आदमी का
था जिस का नाम यूआस था। वहाँ अंगूर का रस
निकालने का हौज़ था, और उस में यूआस का बेटा

जिदाऊन छुप कर गन्दुम झाड़ रहा था, हौज़ में इस
लिए कि गन्दुम मिदियानियों से महफ़ूज़ रहे। 12 रब
का फ़रिश्ता जिदाऊन पर ज़ाहिर हुआ और कहा, "ऐ
ज़बरदस्त सूरमे, रब तेरे साथ है!"

13 जिदाऊन ने जवाब दिया, "नहीं जनाब, अगर रब
हमारे साथ हो तो यह सब कुछ हमारे साथ क्यूँ हो
रहा है? उस के वह तमाम मोजिज़े आज कहाँ नज़र
आते हैं जिन के बारे में हमारे बापदादा हमें बताते
रहे हैं? क्या वह नहीं कहते थे कि रब हमें मिस्र से
निकाल लाया? नहीं, जनाब। अब ऐसा नहीं है। अब
रब ने हमें तर्क करके मिदियान के हवाले कर दिया
है।"

14 रब ने उस की तरफ़ मुड़ कर कहा, "अपनी इस
ताक़त में जा और इस्राईल को मिदियान के हाथ से
बचा। मैं ही तुझे भेज रहा हूँ।"

15 लेकिन जिदाऊन ने एतिराज़ किया, "ऐ रब,
मैं इस्राईल को किस तरह बचाऊँ? मेरा ख़ानदान
मनस्सी के क़बीले का सब से कमज़ोर ख़ानदान है,
और मैं अपने बाप के घर में सब से छोटा हूँ।"

16 रब ने जवाब दिया, "मैं तेरे साथ हूँगा, और तू
मिदियानियों को यूँ मारेगा जैसे एक ही आदमी को।"

17 तब जिदाऊन ने कहा, "अगर मुझ पर तेरे करम
की नज़र हो तो मुझे कोई इलाही निशान दिखा ताकि
साबित हो जाए कि वाक़ई रब ही मेरे साथ बात कर
रहा है। 18 मैं अभी जा कर क़ुर्बानी तय्यार करता हूँ
और फिर वापस आ कर उसे तुझे पेश करूँगा। उस
वक़्त तक रवाना न हो जाना।"

रब ने कहा, "ठीक है, मैं तेरी वापसी का इन्तिज़ार
करके ही जाऊँगा।"

19 जिदाऊन चला गया। उस ने बकरी का बच्चा
ज़बह करके तय्यार किया और पूरे 16 किलोग्राम
मैदे से बेख़मीरी रोटी बनाई। फिर गोश्त को टोकरी
में रख कर और उस का शोरबा अलग बर्तन में डाल
कर वह सब कुछ रब के फ़रिश्ते के पास लाया और
उसे बलूत के साय में पेश किया।

20 रब के फ़रिश्ते ने कहा, "गोश्त और बेख़मीरी
रोटी को ले कर इस पत्थर पर रख दे, फिर शोरबा
उस पर उंडेल दे।" जिदाऊन ने ऐसा ही किया। 21 रब
के फ़रिश्ते के हाथ में लाठी थी। अब उस ने लाठी
के सिरे से गोश्त और बेख़मीरी रोटी को छू दिया।
अचानक पत्थर से आग भड़क उठी और ख़ुराक
भस्म हो गई। साथ साथ रब का फ़रिश्ता ओझल
हो गया।

22 फिर जिदाऊन को यक़ीन आया कि यह वाक़ई
रब का फ़रिश्ता था, और वह बोल उठा, "हाय रब
क़ादिर-ए-मुतलक़! मुझ पर अफ़सोस, क्यूँकि मैं ने रब
के फ़रिश्ते को रू-ब-रू देखा है।"

23 लेकिन रब उस से हमकलाम हुआ और कहा,
"तेरी सलामती हो। मत डर, तू नहीं मरेगा।"

24 वहीं जिदाऊन ने रब के लिए क़ुर्बानगाह बनाई
और उस का नाम 'रब सलामत है' रखा। यह आज
तक अबीअज़र के ख़ानदान के शहर उफ़्रा में मौजूद
है।

जिदाऊन बाल की क़ुर्बानगाह गिरा देता है

25 उसी रात रब जिदाऊन से हमकलाम हुआ,
"अपने बाप के बैलों में से दूसरे बैल को जो
सात साल का है चुन ले। फिर अपने बाप की
वह क़ुर्बानगाह गिरा दे जिस पर बाल देवता को
क़ुर्बानियाँ चढ़ाई जाती हैं, और यसीरत देवी का वह
खम्बा काट डाल जो साथ खड़ा है। 26 इस के बाद
उसी पहाड़ी क़िले की चोटी पर रब अपने ख़ुदा के
लिए सहीह क़ुर्बानगाह बना दे। यसीरत के खम्बे की
कटी हुई लकड़ी और बैल को उस पर रख कर मुझे
भस्म होने वाली क़ुर्बानी पेश कर।"

27 चुनाँचे जिदाऊन ने अपने दस नौकरों को साथ ले
कर वह कुछ किया जिस का हुक्म रब ने उसे दिया
था। लेकिन वह अपने ख़ानदान और शहर के लोगों
से डरता था, इस लिए उस ने यह काम दिन के बजाय
रात के वक़्त किया।

28 सुब्ह के वक़्त जब शहर के लोग उठे तो देखा
कि बाल की क़ुर्बानगाह ढा दी गई है और यसीरत
देवी का साथ वाला खम्बा काट दिया गया है। इन की
जगह एक नई क़ुर्बानगाह बनाई गई है जिस पर बैल
को चढ़ाया गया है। 29 उन्हों ने एक दूसरे से पूछा,
"किस ने यह किया?" जब वह इस बात की तफ़्तीश
करने लगे तो किसी ने उन्हें बताया कि जिदाऊन बिन
यूआस ने यह सब कुछ किया है।

30 तब वह यूआस के घर गए और तक़ाज़ा किया,
"अपने बेटे को घर से निकाल लाएँ। लाज़िम है कि
वह मर जाए, क्यूँकि उस ने बाल की क़ुर्बानगाह को
गिरा कर साथ वाला यसीरत देवी का खम्बा भी काट
डाला है।"

31 लेकिन यूआस ने उन से जो उस के सामने खड़े
थे कहा, "क्या आप बाल के दिफ़ा में लड़ना चाहते
हैं? जो भी बाल के लिए लड़ेगा उसे कल सुब्ह तक
मार दिया जाएगा। अगर बाल वाक़ई ख़ुदा है तो वह
ख़ुद अपने दिफ़ा में लड़े जब कोई उस की क़ुर्बानगाह
को ढा दे।"

32 चूँकि जिदाऊन ने बाल की क़ुर्बानगाह गिरा दी
थी इस लिए उस का नाम यरुब्बाल यानी 'बाल उस
से लड़े' पड़ गया।

जिदाऊन अल्लाह से निशान माँगता है

33 कुछ देर के बाद तमाम मिदियानी, अमालीक़ी
और दूसरी मशरिक़ी क़ौमें जमा हुईं और दरया-ए-
यर्दन को पार करके अपने डेरे मैदान-ए-यज़्रएल में
लगाए। 34 फिर रब का रूह जिदाऊन पर नाज़िल
हुआ। उस ने नरसिंगा फूँक कर अबीअज़र के
ख़ानदान के मर्दों को अपने पीछे हो लेने के
लिए बुलाया। 35 साथ साथ उस ने अपने क़ासिदों
को मनस्सी के क़बीले और आशर, ज़बूलून और
नफ़्ताली के क़बीलों के पास भी भेज दिया। तब वह
भी आए और जिदाऊन के मर्दों के साथ मिल कर उस
के पीछे हो लिए।

36 जिदाऊन ने अल्लाह से दुआ की, "अगर तू वाक़ई
इस्राईल को अपने वादे के मुताबिक़ मेरे ज़रीए बचाना
चाहता है 37 तो मुझे यक़ीन दिला। मैं रात को ताज़ा
कतरी हुई ऊन गन्दुम गाहने के फ़र्श पर रख दूँगा।
कल सुब्ह अगर सिर्फ़ ऊन पर ओस पड़ी हो और
इर्दगिर्द का सारा फ़र्श ख़ुश्क हो तो मैं जान लूँगा कि
वाक़ई तू अपने वादे के मुताबिक़ इस्राईल को मेरे
ज़रीए बचाएगा।"

38 वही कुछ हुआ जिस की दरख़्वास्त जिदाऊन ने
की थी। अगले दिन जब वह सुब्ह-सवेरे उठा तो ऊन
ओस से तर थी। जब उस ने उसे निचोड़ा तो इतना
पानी था कि बर्तन भर गया।

39 फिर जिदाऊन ने अल्लाह से कहा, "मुझ से ग़ुस्से
न हो जाना अगर मैं तुझ से एक बार फिर दरख़्वास्त
करूँ। मुझे एक आख़िरी दफ़ा ऊन के ज़रीए तेरी मर्ज़ी
जाँचने की इजाज़त दे। इस दफ़ा ऊन ख़ुश्क रहे और
इर्दगिर्द के सारे फ़र्श पर ओस पड़ी हो।" 40 उस रात
अल्लाह ने ऐसा ही किया। सिर्फ़ ऊन ख़ुश्क रही जबकि
इर्दगिर्द के सारे फ़र्श पर ओस पड़ी थी।

अल्लाह जिदाऊन के साथियों को चुन लेता है

7 1 सुब्ह-सवेरे यरुब्बाल यानी जिदाऊन अपने
तमाम लोगों को साथ ले कर हरोद चश्मे
के पास आया। वहाँ उन्हों ने अपने डेरे लगाए।
मिदियानियों ने अपनी ख़ैमागाह उन के शिमाल में
मोरिह पहाड़ के दामन में लगाई हुई थी।

2 रब ने जिदाऊन से कहा, "तेरे पास ज़्यादा लोग
हैं! मैं इस क़िस्म के बड़े लश्कर को मिदियानियों पर
फ़त्ह नहीं दूँगा, वर्ना इस्राईली मेरे सामने डींगें मार
कर कहेंगे, 'हम ने अपनी ही ताक़त से अपने आप
को बचाया है!' 3 इस लिए लश्करगाह में एलान कर
कि जो डर के मारे परेशान हो वह अपने घर वापस
चला जाए।" जिदाऊन ने यूँ किया तो 22,000 मर्द
वापस चले गए जबकि 10,000 जिदाऊन के पास
रहे।

4 लेकिन रब ने दुबारा जिदाऊन से बात की, “अभी
तक ज़्यादा लोग हैं! इन के साथ उतर कर चश्मे
के पास जा। वहाँ मैं उन्हें जाँच कर उन को मुक़र्रर
करूँगा जिन्हें तेरे साथ जाना है।” 5 चुनाँचे जिदाऊन
अपने आदमियों के साथ चश्मे के पास उतर आया।
रब ने उसे हुक्म दिया, “जो भी अपना हाथ पानी से
भर कर उसे कुत्ते की तरह चाट ले उसे एक तरफ़
खड़ा कर। दूसरी तरफ़ उन्हें खड़ा कर जो घुटने टेक
कर पानी पीते हैं।” 6 300 आदमियों ने अपना हाथ
पानी से भर कर उसे चाट लिया जबकि बाक़ी सब
पीने के लिए झुक गए।

7 फिर रब ने जिदाऊन से फ़रमाया, “मैं इन 300
चाटने वाले आदमियों के ज़रीए इस्राईल को बचा
कर मिदियानियों को तेरे हवाले कर दूँगा। बाक़ी
तमाम मर्दों को फ़ारिग़ कर। वह सब अपने अपने
घर वापस चले जाएँ।” 8 चुनाँचे जिदाऊन ने बाक़ी
तमाम आदमियों को फ़ारिग़ कर दिया। सिर्फ़ मुक़र्ररा
300 मर्द रह गए। अब यह दूसरों की ख़ुराक और
नरसिंगे अपने पास रख कर जंग के लिए तय्यार हुए।
उस वक़्त मिदियानी ख़ैमागाह इस्राईलियों के नीचे
वादी में थी।

मिदियानियों पर जिदाऊन की फ़त्ह

9 जब रात हुई तो रब जिदाऊन से हमकलाम हुआ,
“उठ, मिदियानी ख़ैमागाह के पास उतर कर उस पर
हम्ला कर, क्यूँकि मैं उसे तेरे हाथ में दे दूँगा। 10 लेकिन
अगर तू इस से डरता है तो पहले अपने नौकर फ़ूराह
के साथ उतर कर 11 वह बातें सुन ले जो वहाँ के
लोग कह रहे हैं। तब उन पर हम्ला करने की जुरअत
बढ़ जाएगी।”

जिदाऊन फ़ूराह के साथ ख़ैमागाह के किनारे के
पास उतर आया। 12 मिदियानी, अमालीक़ी और
मशरिक़ के दीगर फ़ौजी टिड्डियों के दल की तरह
वादी में फैले हुए थे। उन के ऊँट साहिल की रेत
की तरह बेशुमार थे। 13 जिदाऊन दबे पाँओ दुश्मन
के इतने क़रीब पहुँच गया कि उन की बातें सुन
सकता था। ऐन उस वक़्त एक फ़ौजी दूसरे को अपना
ख़्वाब सुना रहा था, “मैं ने ख़्वाब में देखा कि जौ की
बड़ी रोटी लुढ़कती लुढ़कती हमारी ख़ैमागाह में उतर
आई। यहाँ वह इतनी शिद्दत से ख़ैमे से टकरा गई
कि ख़ैमा उलट कर ज़मीनबोस हो गया।” 14 दूसरे ने
जवाब दिया, “इस का सिर्फ़ यह मतलब हो सकता है
कि इस्राईली मर्द जिदाऊन बिन यूआस की तलवार
ग़ालिब आएगी! अल्लाह उसे मिदियानियों और पूरी
लश्करगाह पर फ़त्ह देगा।”

15 ख़्वाब और उस की ताबीर सुन कर जिदाऊन
ने अल्लाह को सिज्दा किया। फिर उस ने इस्राईली
ख़ैमागाह में वापस आ कर एलान किया, “उठें! रब
ने मिदियानी लश्करगाह को तुम्हारे हवाले कर दिया
है।” 16 उस ने अपने 300 मर्दों को सौ सौ के तीन
गुरोहों में तक़्सीम करके हर एक को एक नरसिंगा
और एक घड़ा दे दिया। हर घड़े में मशअल थी।
17–18 उस ने हुक्म दिया, “जो कुछ मैं करूँगा उस
पर ग़ौर करके वही कुछ करें। पूरी ख़ैमागाह को घेर
लें और ऐन वही कुछ करें जो मैं करूँगा। जब मैं
अपने सौ लोगों के साथ ख़ैमागाह के किनारे पहुँचूँगा
तो हम अपने नरसिंगों को बजा देंगे। यह सुनते ही
आप भी यही कुछ करें और साथ साथ नारा लगाएँ,
‘रब के लिए और जिदाऊन के लिए’!”

19 तक़रीबन आधी रात को जिदाऊन अपने सौ मर्दों
के साथ मिदियानी ख़ैमागाह के किनारे पहुँच गया।
थोड़ी देर पहले पहरेदार बदल गए थे। अचानक
इस्राईलियों ने अपने नरसिंगों को बजाया और अपने
घड़ों को टुकड़े टुकड़े कर दिया। 20 फ़ौरन सौ सौ के
दूसरे दो गुरोहों ने भी ऐसा ही किया। अपने दहने हाथ
में नरसिंगा और बाएँ हाथ में भड़कती मशअल पकड़
कर वह नारा लगाते रहे, “रब के लिए और जिदाऊन
के लिए!” 21 लेकिन वह ख़ैमागाह में दाख़िल न हुए
बल्कि वहीं उस के इर्दगिर्द खड़े रहे। दुश्मन में बड़ी
अफ़्रा-तफ़्री मच गई। चीख़ते चिल्लाते सब भाग जाने
की कोशिश करने लगे। 22 जिदाऊन के 300 आदमी
अपने नरसिंगे बजाते रहे जबकि रब ने ख़ैमागाह में

ऐसी गड़बड़ पैदा की कि लोग एक दूसरे से लड़ने लगे। आख़िरकार पूरा लश्कर बैत-सित्ता, सरीरात और अबील-महूला की सरहद तक फ़रार हुआ जो तब्बात के क़रीब है।

23 फिर जिदाऊन ने नफ़्ताली, आशर और पूरे मनस्सी के मर्दों को बुला लिया, और उन्हों ने मिल कर मिदियानियों का ताक़्क़ुब किया। 24 उस ने अपने क़ासिदों के ज़रीए इफ़्राईम के पूरे पहाड़ी इलाक़े के बाशिन्दों को भी पैग़ाम भेज दिया, "उतर आएँ और मिदियानियों को भाग जाने से रोकें! बैत-बारा तक उन तमाम जगहों पर क़ब्ज़ा कर लें जहाँ दुश्मन दरया-ए-यर्दन को पा-पयादा पार कर सकता है।"

इफ़्राईमी मान गए, 25 और उन्हों ने दो मिदियानी सरदारों को पकड़ कर उन के सर क़लम कर दिए। सरदारों के नाम ओरेब और ज़एब थे, और जहाँ उन्हें पकड़ा गया उन जगहों के नाम 'ओरेब की चटान' और 'ज़एब का अंगूर का रस निकालने वाला हौज़' पड़ गया। इस के बाद वह दुबारा मिदियानियों का ताक़्क़ुब करने लगे। दरया-ए-यर्दन को पार करने पर उन की मुलाक़ात जिदाऊन से हुई, और उन्हों ने दोनों सरदारों के सर उस के सपुर्द कर दिए।

इफ़्राईम नाराज़ हो जाता है

8 1 लेकिन इफ़्राईम के मर्दों ने शिकायत की, "आप ने हम से कैसा सुलूक किया? आप ने हमें क्यूँ नहीं बुलाया जब मिदियान से लड़ने गए?" ऐसी बातें करते करते उन्हों ने जिदाऊन के साथ सख़्त बह्स की। 2 लेकिन जिदाऊन ने जवाब दिया, "क्या आप मुझ से कहीं ज़्यादा कामयाब न हुए? और जो अंगूर फ़सल जमा करने के बाद इफ़्राईम के बाग़ों में रह जाते हैं क्या वह मेरे छोटे ख़ानदान अबीअज़र की पूरी फ़सल से ज़्यादा नहीं होते? 3 अल्लाह ने तो मिदियान के सरदारों ओरेब और ज़एब को आप के हवाले कर दिया। इस की निस्बत मुझ से क्या कामयाबी हासिल हुई है?" यह सुन कर इफ़्राईम के मर्दों का ग़ुस्सा ठंडा हो गया।

सुक्कात और फ़नूएल जिदाऊन की मदद नहीं करते

4 जिदाऊन अपने 300 मर्दों समेत दरया-ए-यर्दन को पार कर चुका था। दुश्मन का ताक़्क़ुब करते करते वह थक गए थे। 5 इस लिए जिदाऊन ने क़रीब के शहर सुक्कात के बाशिन्दों से गुज़ारिश की, "मेरे फ़ौजियों को कुछ रोटी दे दें। वह थक गए हैं, क्यूँकि हम मिदियानी सरदार ज़िबह और ज़ल्मुन्ना का ताक़्क़ुब कर रहे हैं।" 6 लेकिन सुक्कात के बुज़ुर्गों ने जवाब दिया, "हम आप के फ़ौजियों को रोटी क्यूँ दें? क्या आप ज़िबह और ज़ल्मुन्ना को पकड़ चुके हैं कि हम ऐसा करें?" 7 यह सुन कर जिदाऊन ने कहा, "जूँ ही रब इन दो सरदारों ज़िबह और ज़ल्मुन्ना को मेरे हाथ में कर देगा मैं तुम को रेगिस्तान की काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों से गाह कर तबाह कर दूँगा।"

8 वह आगे निकल कर फ़नूएल शहर पहुँच गया। वहाँ भी उस ने रोटी माँगी, लेकिन फ़नूएल के बाशिन्दों ने सुक्कात का सा जवाब दिया। 9 यह सुन कर उस ने कहा, "जब मैं सलामती से वापस आऊँगा तो तुम्हारा यह बुर्ज गिरा दूँगा!"

मिदियानियों पर पूरी फ़त्ह

10 अब ज़िबह और ज़ल्मुन्ना क़र्क़ूर पहुँच गए थे। 15,000 अफ़राद उन के साथ रह गए थे, क्यूँकि मशरिक़ी इत्तिहादियों के 1,20,000 तलवारों से लेस फ़ौजी हलाक हो गए थे। 11 जिदाऊन ने मिदियानियों के पीछे चलते हुए ख़ानाबदोशों का वह रास्ता इस्तेमाल किया जो नूबह और युगबहा के मशरिक़ में है। इस तरीक़े से उस ने उन की लश्करगाह पर उस वक़्त हम्ला किया जब वह अपने आप को मह्फ़ूज़ समझ रहे थे। 12 दुश्मन में अफ़्रा-तफ़्री पैदा हुई और ज़िबह और ज़ल्मुन्ना फ़रार हो गए। लेकिन जिदाऊन ने उन का ताक़्क़ुब करते करते उन्हें पकड़ लिया।

13 इस के बाद जिदाऊन लौटा। वह अभी हरिस के दर्रा से उतर रहा था 14 कि सुक्कात के एक जवान

आदमी से मिला। जिदाऊन ने उसे पकड़ कर मज्बूर
किया कि वह शहर के राहनुमाओं और बुज़ुर्गों की
फ़हरिस्त लिख कर दे। 77 बुज़ुर्ग थे। 15 जिदाऊन
उन के पास गया और कहा, "देखो, यह हैं ज़िबह
और ज़ल्मुन्ना! तुम ने इन ही की वजह से मेरा मज़ाक़
उड़ा कर कहा था कि हम आप के थकेहारे फ़ौजियों
को रोटी क्यूँ दें? क्या आप ज़िबह और ज़ल्मुन्ना
को पकड़ चुके हैं कि हम ऐसा करें?" 16 फिर
जिदाऊन ने शहर के बुज़ुर्गों को गिरिफ़्तार करके उन्हें
काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों से गाह कर सबक़
सिखाया। 17 फिर वह फ़नूएल गया और वहाँ का बुर्ज
गिरा कर शहर के मर्दों को मार डाला।

18 इस के बाद जिदाऊन ज़िबह और ज़ल्मुन्ना से
मुख़ातिब हुआ। उस ने पूछा, "उन आदमियों का
हुल्या कैसा था जिन्हें तुम ने तबूर पहाड़ पर क़त्ल
किया?"

उन्हों ने जवाब दिया, "वह आप जैसे थे, हर एक
शहज़ादा लग रहा था।"

19 जिदाऊन बोला, "वह मेरे सगे भाई थे। रब की
हयात की क़सम, अगर तुम उन को ज़िन्दा छोड़ते तो
मैं तुम्हें हलाक न करता।"

20 फिर वह अपने पहलौठे यतर से मुख़ातिब हो
कर बोला, "इन को मार डालो!" लेकिन यतर अपनी
तलवार मियान से निकालने से झिजका, क्यूँकि वह
अभी बच्चा था और डरता था। 21 तब ज़िबह और
ज़ल्मुन्ना ने कहा, "आप ही हमें मार दें! क्यूँकि जैसा
आदमी वैसी उस की ताक़त!" जिदाऊन ने खड़े हो
कर उन्हें तलवार से मार डाला और उन के ऊँटों की
गरदनों पर लगे तावीज़ उतार कर अपने पास रखे।

जिदाऊन के सबब से इस्राईल बुतपरस्ती में उलझ जाता है

22 इस्राईलियों ने जिदाऊन के पास आ कर कहा,
"आप ने हमें मिदियानियों से बचा लिया है, इस लिए
हम पर हुकूमत करें, आप, आप के बाद आप का
बेटा और उस के बाद आप का पोता।"

23 लेकिन जिदाऊन ने जवाब दिया, "न मैं आप पर
हुकूमत करूँगा, न मेरा बेटा। रब ही आप पर हुकूमत
करेगा। 24 मेरी सिर्फ़ एक गुज़ारिश है। हर एक मुझे
अपने लूटे हुए माल में से एक एक बाली दे दे।"
बात यह थी कि दुश्मन के तमाम अफ़राद ने सोने की
बालियाँ पहन रखी थीं, क्यूँकि वह इस्माईली थे।

25 इस्राईलियों ने कहा, "हम ख़ुशी से बाली देंगे।"
एक चादर ज़मीन पर बिछा कर हर एक ने एक एक
बाली उस पर फैंक दी। 26 सोने की इन बालियों का
वज़न तक़रीबन 20 किलोग्राम था। इस के इलावा
इस्राईलियों ने मुख़्तलिफ़ तावीज़, कान के आवेज़े,
अर्ग़वानी रंग के शाही लिबास और ऊँटों की गरदनों
में लगी क़ीमती ज़न्जीरें भी दे दीं।

27 इस सोने से जिदाऊन ने एक अफ़ोद [s] बना कर
उसे अपने आबाई शहर उफ़्रा में खड़ा किया जहाँ वह
उस के और तमाम ख़ानदान के लिए फंदा बन गया।
न सिर्फ़ यह बल्कि पूरा इस्राईल ज़िना करके बुत की
पूजा करने लगा।

28 उस वक़्त मिदियान ने ऐसी शिकस्त खाई कि
बाद में इस्राईल के लिए ख़तरे का बाइस न रहा।
और जितनी देर जिदाऊन ज़िन्दा रहा यानी 40 साल
तक मुल्क में अम्न-ओ-अमान क़ाइम रहा।

29 जंग के बाद जिदाऊन बिन यूआस दुबारा उफ़्रा
में रहने लगा। 30 उस की बहुत सी बीवियाँ और 70
बेटे थे। 31 उस की एक दाश्ता भी थी जो सिकम
शहर में रिहाइशपज़ीर थी और जिस के एक बेटा
पैदा हुआ। जिदाऊन ने बेटे का नाम अबीमलिक
रखा। 32 जिदाऊन उम्रसीदा था जब फ़ौत हुआ। उसे
अबीअज़रियों के शहर उफ़्रा में उस के बाप यूआस
की क़ब्र में दफ़नाया गया।

33 जिदाऊन के मरते ही इस्राईली दुबारा ज़िना
करके बाल के बुतों की पूजा करने लगे। वह बाल-

[s] आम तौर पर इब्रानी में अफ़ोद का मतलब इमाम-ए-आज़म का बालापोश था (देखिए ख़ुरूज 28:4), लेकिन यहाँ इस से मुराद बुतपरस्ती की कोई चीज़ है।

बरीत को अपना ख़ास देवता बना कर 34 रब अपने
ख़ुदा को भूल गए जिस ने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों से
बचा लिया था। 35 उन्हों ने यरुब्बाल यानी जिदाऊन
के ख़ानदान को भी उस एह्सान के लिए कोई
मेहरबानी न दिखाई जो जिदाऊन ने उन पर किया
था।

अबीमलिक बादशाह बन जाता है

9 1 एक दिन यरुब्बाल यानी जिदाऊन का बेटा
अबीमलिक अपने मामूओं और माँ के बाक़ी
रिश्तेदारों से मिलने के लिए सिकम गया। उस ने
उन से कहा, 2 "सिकम शहर के तमाम बाशिन्दों
से पूछें, क्या आप अपने आप पर जिदाऊन के 70
बेटों की हुकूमत ज़्यादा पसन्द करेंगे या एक ही
शख़्स की? याद रहे कि मैं आप का ख़ूनी रिश्तेदार
हूँ!" 3 अबीमलिक के मामूओं ने सिकम के तमाम
बाशिन्दों के सामने यह बातें दुहराईं। सिकम के लोगों
ने सोचा, "अबीमलिक हमारा भाई है" इस लिए वह
उस के पीछे लग गए। 4 उन्हों ने उसे बाल-बरीत
देवता के मन्दिर से चाँदी के 70 सिक्के भी दे दिए।

इन पैसों से अबीमलिक ने अपने इर्दगिर्द आवारा
और बदमआश आदमियों का गुरोह जमा किया।
5 उन्हें अपने साथ ले कर वह उफ़्रा पहुँचा जहाँ बाप
का ख़ानदान रहता था। वहाँ उस ने अपने तमाम
भाइयों यानी जिदाऊन के 70 बेटों को एक ही पत्थर
पर क़त्ल कर दिया। सिर्फ़ यूताम जो जिदाऊन का
सब से छोटा बेटा था कहीं छुप कर बच निकला।
6 इस के बाद सिकम और बैत-मिल्लो के तमाम लोग
उस बलूत के साय में जमा हुए जो सिकम के सतून
के पास था। वहाँ उन्हों ने अबीमलिक को अपना
बादशाह मुक़र्रर किया।

यूताम की अबीमलिक और सिकम पर लानत

7 जब यूताम को इस की इत्तिला मिली तो वह
गरिज़ीम पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया और ऊँची
आवाज़ से चिल्लाया, "ऐ सिकम के बाशिन्दो, सुनें
मेरी बात! सुनें अगर आप चाहते हैं कि अल्लाह आप
की भी सुने। 8 एक दिन दरख़्तों ने फ़ैसला किया कि
हम पर कोई बादशाह होना चाहिए। वह उसे चुनने
और मसह करने के लिए निकले। पहले उन्हों ने ज़ैतून
के दरख़्त से बात की, 'हमारे बादशाह बन जाएँ!'
9 लेकिन ज़ैतून के दरख़्त ने जवाब दिया, 'क्या मैं
अपना तेल पैदा करने से बाज़ आऊँ जिस की अल्लाह
और इन्सान इतनी क़दर करते हैं ताकि दरख़्तों
पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!' 10 इस के बाद
दरख़्तों ने अन्जीर के दरख़्त से बात की, 'आएँ, हमारे
बादशाह बन जाएँ!' 11 लेकिन अन्जीर के दरख़्त ने
जवाब दिया, 'क्या मैं अपना मीठा और अच्छा फल
लाने से बाज़ आऊँ ताकि दरख़्तों पर हुकूमत करूँ?
हरगिज़ नहीं!' 12 फिर दरख़्तों ने अंगूर की बेल से
बात की, 'आएँ, हमारे बादशाह बन जाएँ!' 13 लेकिन
अंगूर की बेल ने जवाब दिया, 'क्या मैं अपना रस
पैदा करने से बाज़ आऊँ जिस से अल्लाह और इन्सान
ख़ुश हो जाते हैं ताकि दरख़्तों पर हुकूमत करूँ?
हरगिज़ नहीं!' 14 आख़िरकार दरख़्त काँटेदार झाड़ी
के पास आए और कहा, 'आएँ और हमारे बादशाह
बन जाएँ!' 15 काँटेदार झाड़ी ने जवाब दिया, 'अगर
तुम वाक़ई मुझे मसह करके अपना बादशाह बनाना
चाहते हो तो आओ और मेरे साय में पनाह लो। अगर
तुम ऐसा नहीं करना चाहते तो झाड़ी से आग निकल
कर लुबनान के देवदार के दरख़्तों को भस्म कर दे'।"

16 यूताम ने बात जारी रख कर कहा, "अब मुझे
बताएँ, क्या आप ने वफ़ादारी और सच्चाई का इज़हार
किया जब आप ने अबीमलिक को अपना बादशाह
बना लिया? क्या आप ने जिदाऊन और उस के
ख़ानदान के साथ अच्छा सुलूक किया? क्या आप
ने उस पर शुक्रगुज़ारी का वह इज़हार किया जिस
के लाइक़ वह था? 17 मेरे बाप ने आप की ख़ातिर
जंग की। आप को मिदियानियों से बचाने के लिए
उस ने अपनी जान ख़तरे में डाल दी। 18 लेकिन आज
आप जिदाऊन के घराने के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए
हैं। आप ने उस के 70 बेटों को एक ही पत्थर पर

ज़बह करके उस की लौंडी के बेटे अबीमलिक को
सिकम का बादशाह बना लिया है, और यह सिर्फ़
इस लिए कि वह आप का रिश्तेदार है। 19 अब सुनें!
अगर आप ने जिदाऊन और उस के ख़ानदान के साथ
वफ़ादारी और सच्चाई का इज़हार किया है तो फिर
अल्लाह करे कि अबीमलिक आप के लिए ख़ुशी का
बाइस हो और आप उस के लिए। 20 लेकिन अगर
ऐसा नहीं था तो अल्लाह करे कि अबीमलिक से आग
निकल कर आप सब को भस्म कर दे जो सिकम
और बैत-मिल्लो में रहते हैं! और आग आप से निकल
कर अबीमलिक को भी भस्म कर दे!" 21 यह कह
कर यूताम ने भाग कर बैर में पनाह ली, क्यूँकि वह
अपने भाई अबीमलिक से डरता था।

सिकम के बाशिन्दे अबीमलिक के ख़िलाफ़ हो जाते हैं

22 अबीमलिक की इस्राईल पर हुकूमत तीन साल
तक रही। 23 लेकिन फिर अल्लाह ने एक बुरी रूह भेज
दी जिस ने अबीमलिक और सिकम के बाशिन्दों में
नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा कर दी। नतीजे में सिकम के लोगों
ने बग़ावत की। 24 यूँ अल्लाह ने उसे इस की सज़ा दी
कि उस ने अपने भाइयों यानी जिदाऊन के 70 बेटों
को क़त्ल किया था। सिकम के बाशिन्दों को भी सज़ा
मिली, क्यूँकि उन्हों ने इस में अबीमलिक की मदद
की थी।

25 उस वक़्त सिकम के लोग इर्दगिर्द की चोटियों
पर चढ़ कर अबीमलिक की ताक में बैठ गए। जो
भी वहाँ से गुज़रा उसे उन्हों ने लूट लिया। इस बात
की ख़बर अबीमलिक तक पहुँच गई।

26 उन दिनों में एक आदमी अपने भाइयों के साथ
सिकम आया जिस का नाम जाल बिन अबद था।
सिकम के लोगों से उस का अच्छा-ख़ासा ताल्लुक़ बन
गया, और वह उस पर एतिबार करने लगे। 27 अंगूर
की फ़सल पक गई थी। लोग शहर से निकले और
अपने बाग़ों में अंगूर तोड़ कर उन से रस निकालने
लगे। फिर उन्हों ने अपने देवता के मन्दिर में जश्न
मनाया। जब वह ख़ूब खा पी रहे थे तो अबीमलिक
पर लानत करने लगे। 28 जाल बिन अबद ने कहा,
"सिकम का अबीमलिक के साथ क्या वास्ता कि
हम उस के ताबे रहें? वह तो सिर्फ़ यरुब्बाल का बेटा
है, जिस का नुमाइन्दा ज़बूल है। उस की ख़िदमत मत
करना बल्कि सिकम के बानी हमोर के लोगों की! हम
अबीमलिक की ख़िदमत क्यूँ करें? 29 काश शहर का
इन्तिज़ाम मेरे हाथ में होता! फिर मैं अबीमलिक को
जल्द ही निकाल देता। मैं उसे चैलेंज देता कि आओ,
अपने फ़ौजियों को जमा करके हम से लड़ो!"

अबीमलिक सिकम से लड़ता है

30 जाल बिन अबद की बात सुन कर सिकम
का सरदार ज़बूल बड़े ग़ुस्से में आ गया। 31 अपने
क़ासिदों की मारिफ़त उस ने अबीमलिक को चुपके
से इत्तिला दी, "जाल बिन अबद अपने भाइयों के
साथ सिकम आ गया है जहाँ वह पूरे शहर को आप
के ख़िलाफ़ खड़े हो जाने के लिए उकसा रहा है।
32 अब ऐसा करें कि रात के वक़्त अपने फ़ौजियों
समेत इधर आएँ और खेतों में ताक में रहें। 33 सुब्ह-
सवेरे जब सूरज तुलू होगा तो शहर पर हम्ला करें।
जब जाल अपने आदमियों के साथ आप के ख़िलाफ़
लड़ने आएगा तो उस के साथ वह कुछ करें जो आप
मुनासिब समझते हैं।" 34 यह सुन कर अबीमलिक
रात के वक़्त अपने फ़ौजियों समेत रवाना हुआ। उस
ने उन्हें चार गुरोहों में तक़्सीम किया जो सिकम को
घेर कर ताक में बैठ गए।

35 सुब्ह के वक़्त जब जाल घर से निकल कर शहर
के दरवाज़े में खड़ा हुआ तो अबीमलिक और उस
के फ़ौजी अपनी छुपने की जगहों से निकल आए।
36 उन्हें देख कर जाल ने ज़बूल से कहा, "देखो, लोग
पहाड़ों की चोटियों से उतर रहे हैं!" ज़बूल ने जवाब
दिया, "नहीं, नहीं, जो आप को आदमी लग रहे हैं वह
सिर्फ़ पहाड़ों के साय हैं।" 37 लेकिन जाल को तसल्ली
न हुई। वह दुबारा बोल उठा, "देखो, लोग दुनिया की

नाफ़ [t]से उतर रहे हैं। और एक और गुरोह रम्मालों के
बलूत से हो कर आ रहा है।” 38 फिर ज़बूल ने उस से
कहा, “अब तेरी बड़ी बड़ी बातें कहाँ रहीं? क्या तू
ने नहीं कहा था, ‘अबीमलिक कौन है कि हम उस के
ताबे रहें?’ अब यह लोग आ गए हैं जिन का मज़ाक़
तू ने उड़ाया। जा, शहर से निकल कर उन से लड़!”
39 तब जाल सिकम के मर्दों के साथ शहर से
निकला और अबीमलिक से लड़ने लगा। 40 लेकिन
वह हार गया, और अबीमलिक ने शहर के दरवाज़े
तक उस का ताक़्क़ुब किया। भागते भागते सिकम के
बहुत से अफ़राद रास्ते में गिर कर हलाक हो गए।
41 फिर अबीमलिक अरूमा चला गया जबकि ज़बूल
ने पीछे रह कर जाल और उस के भाइयों को शहर
से निकाल दिया।
42 अगले दिन सिकम के लोग शहर से निकल कर
मैदान में आना चाहते थे। जब अबीमलिक को यह
ख़बर मिली 43–44 तो उस ने अपनी फ़ौज को तीन
गुरोहों में तक़्सीम किया। यह गुरोह दुबारा सिकम को
घेर कर घात में बैठ गए। जब लोग शहर से निकले तो
अबीमलिक अपने गुरोह के साथ छुपने की जगह से
निकल आया और शहर के दरवाज़े में खड़ा हो गया।
बाक़ी दो गुरोह मैदान में मौजूद अफ़राद पर टूट पड़े
और सब को हलाक कर दिया। 45 फिर अबीमलिक
ने शहर पर हम्ला किया। लोग पूरा दिन लड़ते रहे,
लेकिन आख़िरकार अबीमलिक ने शहर पर क़ब्ज़ा
करके तमाम बाशिन्दों को मौत के घाट उतार दिया।
उस ने शहर को तबाह किया और खंडरात पर नमक
बिखेर कर उस की हत्मी तबाही ज़ाहिर कर दी।
46 जब सिकम के बुर्ज के रहने वालों को यह इत्तिला
मिली तो वह एल-बरीत देवता के मन्दिर के तहख़ाने
में छुप गए। 47 जब अबीमलिक को पता चला 48 तो
वह अपने फ़ौजियों समेत ज़ल्मोन पहाड़ पर चढ़
गया। वहाँ उस ने कुल्हाड़ी से शाख़ काट कर अपने
कंधों पर रख ली और अपने फ़ौजियों को हुक्म दिया,
“जल्दी करो! सब ऐसा ही करो।” 49 फ़ौजियों ने भी
शाख़ें काटीं और फिर अबीमलिक के पीछे लग कर
मन्दिर के पास वापस आए। वहाँ उन्हों ने तमाम
लकड़ी तहख़ाने की छत पर जमा करके उसे जला
दिया। यूँ सिकम के बुर्ज के तक़रीबन 1,000 मर्द-
ओ-ख़वातीन सब भस्म हो गए।

अबीमलिक की मौत

50 वहाँ से अबीमलिक तैबिज़ के ख़िलाफ़ बढ़
गया। उस ने शहर का मुहासरा करके उस पर क़ब्ज़ा
कर लिया। 51 लेकिन शहर के बीच में एक मज़बूत
बुर्ज था। तमाम मर्द-ओ-ख़वातीन उस में फ़रार हुए
और बुर्ज के दरवाज़ों पर कुंडी लगा कर छत पर
चढ़ गए।
52 अबीमलिक लड़ते लड़ते बुर्ज के दरवाज़े के
क़रीब पहुँच गया। वह उसे जलाने की कोशिश करने
लगा 53 तो एक औरत ने चक्की का ऊपर का पाट
उस के सर पर फैंक दिया, और उस की खोपड़ी फट
गई। 54 जल्दी से अबीमलिक ने अपने सिलाहबर्दार
को बुलाया। उस ने कहा, “अपनी तलवार खैंच कर
मुझे मार दो! वर्ना लोग कहेंगे कि एक औरत ने मुझे
मार डाला।” चुनाँचे नौजवान ने अपनी तलवार उस
के बदन में से गुज़ार दी और वह मर गया। 55 जब
फ़ौजियों ने देखा कि अबीमलिक मर गया है तो वह
अपने अपने घर चले गए।
56 यूँ अल्लाह ने अबीमलिक को उस बदी का बदला
दिया जो उस ने अपने 70 भाइयों को क़त्ल करके
अपने बाप के ख़िलाफ़ की थी। 57 और अल्लाह ने
सिकम के बाशिन्दों को भी उन की शरीर हरकतों की
मुनासिब सज़ा दी। यूताम बिन यरुब्बाल की लानत
पूरी हुई।

---

[t]मतलब ग़ालिबन कोह-ए-गरिज़ीम है।

तोला और याईर

10 1 अबीमलिक की मौत के बाद तोला बिन
फ़ुव्वा बिन दोदो इस्राईल को बचाने के
लिए उठा। वह इश्कार के क़बीले से था और इफ़्राईम
के पहाड़ी इलाक़े के शहर समीर में रिहाइशपज़ीर था।
2 तोला 23 साल इस्राईल का क़ाज़ी रहा। फिर वह
फ़ौत हुआ और समीर में दफ़नाया गया।

3 उस के बाद जिलिआद का रहने वाला याईर
क़ाज़ी बन गया। उस ने 22 साल इस्राईल की
राहनुमाई की। 4 याईर के 30 बेटे थे। हर बेटे का एक
एक गधा और जिलिआद में एक एक आबादी थी।
आज तक इन का नाम 'हव्वोत-याईर' यानी याईर
की बस्तियाँ है। 5 जब याईर इन्तिक़ाल कर गया तो
उसे क़ामोन में दफ़नाया गया।

इस्राईल दुबारा रब से दूर हो जाता है

6 याईर की मौत के बाद इस्राईली दुबारा ऐसी
हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं। वह कई
देवताओं के पीछे लग गए जिन में बाल देवता,
अस्तारात देवी और शाम, सैदा, मोआब, अम्मोनियों
और फ़िलिस्तियों के देवता शामिल थे। यूँ वह रब
की परस्तिश और ख़िदमत करने से बाज़ आए। 7 तब
उस का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ, और उस ने उन्हें
फ़िलिस्तियों और अम्मोनियों के हवाले कर दिया।
8 उसी साल के दौरान इन क़ौमों ने जिलिआद में
इस्राईलियों के उस इलाक़े पर क़ब्ज़ा किया जिस
में पुराने ज़माने में अमोरी आबाद थे और जो दरया-
ए-यर्दन के मशरिक़ में था। फ़िलिस्ती और अम्मोनी
18 साल तक इस्राईलियों को कुचलते और दबाते
रहे। 9 न सिर्फ़ यह बल्कि अम्मोनियों ने दरया-ए-यर्दन
को पार करके यहूदाह, बिनयमीन और इफ़्राईम के
क़बीलों पर भी हम्ला किया।

जब इस्राईली बड़ी मुसीबत में थे 10 तो आख़िरकार
उन्हों ने मदद के लिए रब को पुकारा और इक़्रार
किया, "हम ने तेरा गुनाह किया है। अपने ख़ुदा
को तर्क करके हम ने बाल के बुतों की पूजा
की है।" 11 रब ने जवाब में कहा, "जब मिस्री,
अमोरी, अम्मोनी, फ़िलिस्ती, 12 सैदानी, अमालीक़ी
और माओनी तुम पर ज़ुल्म करते थे और तुम मदद के
लिए मुझे पुकारने लगे तो क्या मैं ने तुम्हें न बचाया?
13 इस के बावुजूद तुम बार बार मुझे तर्क करके दीगर
माबूदों की पूजा करते रहे हो। इस लिए अब से मैं
तुम्हारी मदद नहीं करूँगा। 14 जाओ, उन देवताओं
के सामने चीख़ते चिल्लाते रहो जिन्हें तुम ने चुन लिया
है! वही तुम्हें मुसीबत से निकालें।"

15 लेकिन इस्राईलियों ने रब से फ़र्याद की, "हम से
ग़लती हुई है। जो कुछ भी तू मुनासिब समझता है
वह हमारे साथ कर। लेकिन तू ही हमें आज बचा।"
16 वह अजनबी माबूदों को अपने बीच में से निकाल
कर रब की दुबारा ख़िदमत करने लगे। तब वह
इस्राईल का दुख बर्दाश्त न कर सका।

इफ़्ताह क़ाज़ी बन जाता है

17 उन दिनों में अम्मोनी अपने फ़ौजियों को जमा
करके जिलिआद में ख़ैमाज़न हुए। जवाब में इस्राईली
भी जमा हुए और मिस्फ़ाह में अपने ख़ैमे लगाए।
18 जिलिआद के राहनुमाओं ने एलान किया, "हमें
ऐसे आदमी की ज़रूरत है जो हमारे आगे चल कर
अम्मोनियों पर हम्ला करे। जो कोई ऐसा करे वह
जिलिआद के तमाम बाशिन्दों का सरदार बनेगा।"

11 1 उस वक़्त जिलिआद में एक ज़बरदस्त
सूरमा बनाम इफ़्ताह था। बाप का नाम
जिलिआद था जबकि माँ कस्बी थी। 2 लेकिन बाप
की बीवी के बेटे भी थे। जब बालिग़ हुए तो उन्हों ने
इफ़्ताह से कहा, "हम मीरास तेरे साथ नहीं बाँटेंगे,
क्यूँकि तू हमारा सगा भाई नहीं है।" उन्हों ने उसे भगा
दिया, 3 और वह वहाँ से हिज्रत करके मुल्क-ए-तोब
में जा बसा। वहाँ कुछ आवारा लोग उस के पीछे हो
लिए जो उस के साथ इधर उधर घूमते फिरते रहे।

4 जब कुछ देर के बाद अम्मोनी फ़ौज इस्राईल से
लड़ने आई 5 तो जिलिआद के बुज़ुर्ग इफ़्ताह को

वापस लाने के लिए मुल्क-ए-तोब में आए। 6 उन्हों ने
गुज़ारिश की, “आएँ, अम्मोनियों से लड़ने में हमारी
राहनुमाई करें।” 7 लेकिन इफ़्ताह ने एतिराज़ किया,
“आप इस वक़्त मेरे पास क्यूँ आए हैं जब मुसीबत
में हैं? आप ही ने मुझ से नफ़रत करके मुझे बाप के
घर से निकाल दिया था।”

8 बुज़ुर्गों ने जवाब दिया, “हम इस लिए आप के
पास वापस आए हैं कि आप अम्मोनियों के साथ
जंग में हमारी मदद करें। अगर आप ऐसा करें तो
हम आप को पूरे जिलिआद का हुक्मरान बना लेंगे।”
9 इफ़्ताह ने पूछा, “अगर मैं आप के साथ अम्मोनियों
के ख़िलाफ़ लड़ूँ और रब मुझे उन पर फ़त्ह दे तो
क्या आप वाक़ई मुझे अपना हुक्मरान बना लेंगे?”
10 उन्हों ने जवाब दिया, “रब हमारा गवाह है! वही
हमें सज़ा दे अगर हम अपना वादा पूरा न करें।”

11 यह सुन कर इफ़्ताह जिलिआद के बुज़ुर्गों के
साथ मिस्फ़ाह गया। वहाँ लोगों ने उसे अपना सरदार
और फ़ौज का कमाँडर बना लिया। मिस्फ़ाह में उस ने
रब के हुज़ूर वह तमाम बातें दुहराईं जिन का फ़ैसला
उस ने बुज़ुर्गों के साथ किया था।

जंग से गुरेज़ करने की कोशिश

12 फिर इफ़्ताह ने अम्मोनी बादशाह के पास अपने
क़ासिदों को भेज कर पूछा, “हमारा आप से क्या
वास्ता कि आप हम से लड़ने आए हैं?” 13 बादशाह
ने जवाब दिया, “जब इस्राईली मिस्र से निकले तो
उन्हों ने अर्नोन, यब्बोक़ और यर्दन के दरयाओं के
दरमियान का इलाक़ा मुझ से छीन लिया। अब उसे
झगड़ा किए बग़ैर मुझे वापस कर दो।”

14 फिर इफ़्ताह ने अपने क़ासिदों को दुबारा
अम्मोनी बादशाह के पास भेज कर 15 कहा,
“इस्राईल ने न तो मोआबियों से और न अम्मोनियों
से ज़मीन छीनी। 16 हक़ीक़त यह है कि जब हमारी
क़ौम मिस्र से निकली तो वह रेगिस्तान में से गुज़र
कर बहर-ए-क़ुल्ज़ुम और वहाँ से हो कर क़ादिस
पहुँच गई। 17 क़ादिस से उन्हों ने अदोम के बादशाह
के पास क़ासिद भेज कर गुज़ारिश की, ‘हमें अपने
मुल्क में से गुज़रने दें।’ लेकिन उस ने इन्कार किया।
फिर इस्राईलियों ने मोआब के बादशाह से दरख़्वास्त
की, लेकिन उस ने भी अपने मुल्क में से गुज़रने की
इजाज़त न दी। इस पर हमारी क़ौम कुछ देर के
लिए क़ादिस में रही। 18 आख़िरकार वह रेगिस्तान
में वापस जा कर अदोम और मोआब के जुनूब में
चलते चलते मोआब के मशरिक़ी किनारे पर पहुँची,
वहाँ जहाँ दरया-ए-अर्नोन उस की सरहद है। लेकिन
वह मोआब के इलाक़े में दाख़िल न हुए बल्कि दरया
के मशरिक़ में ख़ैमाज़न हुए। 19 वहाँ से इस्राईलियों
ने हस्बोन के रहने वाले अमोरी बादशाह सीहोन को
पैग़ाम भिजवाया, ‘हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें
ताकि हम अपने मुल्क में दाख़िल हो सकें।’ 20 लेकिन
सीहोन को शक हुआ। उसे यक़ीन नहीं था कि वह
मुल्क में से गुज़र कर आगे बढ़ेंगे। उस ने न सिर्फ़
इन्कार किया बल्कि अपने फ़ौजियों को जमा करके
यहज़ शहर में ख़ैमाज़न हुआ और इस्राईलियों के साथ
लड़ने लगा।

21 लेकिन रब इस्राईल के ख़ुदा ने सीहोन और उस
के तमाम फ़ौजियों को इस्राईल के हवाले कर दिया।
उन्हों ने उन्हें शिकस्त दे कर अमोरियों के पूरे मुल्क
पर क़ब्ज़ा कर लिया। 22 यह तमाम इलाक़ा जुनूब में
दरया-ए-अर्नोन से ले कर शिमाल में दरया-ए-यब्बोक़
तक और मशरिक़ के रेगिस्तान से ले कर मग़रिब में
दरया-ए-यर्दन तक हमारे क़ब्ज़े में आ गया। 23 देखें,
रब इस्राईल के ख़ुदा ने अपनी क़ौम के आगे आगे
अमोरियों को निकाल दिया है। तो फिर आप का
इस मुल्क पर क़ब्ज़ा करने का क्या हक़ है? 24 आप
भी समझते हैं कि जिसे आप के देवता कमोस ने
आप के आगे से निकाल दिया है उस के मुल्क पर
क़ब्ज़ा करने का आप का हक़ है। इसी तरह जिसे
रब हमारे ख़ुदा ने हमारे आगे आगे निकाल दिया है
उस के मुल्क पर क़ब्ज़ा करने का हक़ हमारा है।
25 क्या आप अपने आप को मोआबी बादशाह बलक़
बिन सफ़ोर से बेहतर समझते हैं? उस ने तो इस्राईल

से लड़ने बल्कि झगड़ने तक की हिम्मत न की।
26 अब इस्राईली 300 साल से हस्बोन और अरोईर के
शहरों में उन के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों समेत
आबाद हैं और इसी तरह दरया-ए-अर्नोन के किनारे
पर के शहरों में। आप ने इस दौरान इन जगहों पर
क़ब्ज़ा क्यूँ न किया? 27 चुनाँचे मैं ने आप से ग़लत
सुलूक नहीं किया बल्कि आप ही मेरे साथ ग़लत
सुलूक कर रहे हैं। क्यूँकि मुझ से जंग छेड़ना ग़लत
है। रब जो मुन्सिफ़ है वही आज इस्राईल और अम्मोन
के झगड़े का फ़ैसला करे!"

28 लेकिन अम्मोनी बादशाह ने इफ़्ताह के पैग़ाम पर
ध्यान न दिया।

इफ़्ताह की फ़त्ह

29 फिर रब का रूह इफ़्ताह पर नाज़िल हुआ, और
वह जिलिआद और मनस्सी में से गुज़र गया, फिर
जिलिआद के मिस्फ़ाह के पास वापस आया। वहाँ से
वह अपनी फ़ौज ले कर अम्मोनियों से लड़ने निकला।

30 पहले उस ने रब के सामने क़सम खाई, "अगर तू
मुझे अम्मोनियों पर फ़त्ह दे 31 और मैं सहीह-सलामत
लौटूँ तो जो कुछ भी पहले मेरे घर के दरवाज़े से
निकल कर मुझ से मिले वह तेरे लिए मख़्सूस किया
जाएगा। मैं उसे भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर
पेश करूँगा।"

32 फिर इफ़्ताह अम्मोनियों से लड़ने गया, और रब
ने उसे उन पर फ़त्ह दी। 33 इफ़्ताह ने अरोईर में
दुश्मन को शिकस्त दी और इसी तरह मिन्नीत और
अबील-करामीम तक मज़ीद बीस शहरों पर क़ब्ज़ा
कर लिया। यूँ इस्राईल ने अम्मोन को ज़ेर कर दिया।

इफ़्ताह की वापसी

34 इस के बाद इफ़्ताह मिस्फ़ाह वापस चला गया।
वह अभी घर के क़रीब था कि उस की इक्लौती
बेटी दफ़ बजाती और नाचती हुई घर से निकल आई।
इफ़्ताह का कोई और बेटा या बेटी नहीं थी। 35 अपनी
बेटी को देख कर वह रंज के मारे अपने कपड़े फाड़
कर चीख़ उठा, "हाय मेरी बेटी! तू ने मुझे ख़ाक में
दबा कर तबाह कर दिया है, क्यूँकि मैं ने रब के सामने
ऐसी क़सम खाई है जो बदली नहीं जा सकती।"

36 बेटी ने कहा, "अब्बू, आप ने क़सम खा कर
रब से वादा किया है, इस लिए लाज़िम है कि
मेरे साथ वह कुछ करें जिस की क़सम आप ने
खाई है। आख़िर उसी ने आप को दुश्मन से बदला
लेने की कामयाबी बख़्श दी है। 37 लेकिन मेरी एक
गुज़ारिश है। मुझे दो माह की मुहलत दें ताकि मैं
अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों में जा कर अपनी
ग़ैरशादीशुदा हालत पर मातम करूँ।"

38 इफ़्ताह ने इजाज़त दी। फिर बेटी दो माह के लिए
अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों में चली गई और
अपनी ग़ैरशादीशुदा हालत पर मातम किया। 39 फिर
वह अपने बाप के पास वापस आई, और उस ने
अपनी क़सम का वादा पूरा किया। बेटी ग़ैरशादीशुदा
थी।

उस वक़्त से इस्राईल में दस्तूर राइज है 40 कि
इस्राईल की जवान औरतें सालाना चार दिन के लिए
अपने घरों से निकल कर इफ़्ताह की बेटी की याद
में जश्न मनाती हैं।

इफ़्राईम का क़बीला इफ़्ताह पर हम्ला करता है

12 1 अम्मोनियों पर फ़त्ह के बाद इफ़्राईम के
क़बीले के आदमी जमा हुए और दरया-ए-
यर्दन को पार करके इफ़्ताह के पास आए जो सफ़ोन
में था। उन्हों ने शिकायत की, "आप क्यूँ हमें बुलाए
बग़ैर अम्मोनियों से लड़ने गए? अब हम आप को
आप के घर समेत जला देंगे!"

2 इफ़्ताह ने एतिराज़ किया, "जब मेरी और मेरी
क़ौम का अम्मोनियों के साथ सख़्त झगड़ा छिड़ गया
तो मैं ने आप को बुलाया, लेकिन आप ने मुझे उन के
हाथ से न बचाया। 3 जब मैं ने देखा कि आप मदद
नहीं करेंगे तो अपनी जान ख़तरे में डाल कर आप के
बग़ैर ही अम्मोनियों से लड़ने गया। और रब ने मुझे

उन पर फ़त्ह बख़्शी। अब मुझे बताएँ कि आप क्यूँ
मेरे पास आ कर मुझ पर हम्ला करना चाहते हैं?”
4 इफ़्राईमियों ने जवाब दिया, “तुम जो जिलिआद
में रहते हो बस इफ़्राईम और मनस्सी के क़बीलों से
निकले हुए भगोड़े हो।” तब इफ़्ताह ने जिलिआद के
मर्दों को जमा किया और इफ़्राईमियों से लड़ कर उन्हें
शिकस्त दी।
5 फिर जिलिआदियों ने दरया-ए-यर्दन के कम-गहरे
मक़ामों पर क़ब्ज़ा कर लिया। जब कोई गुज़रना
चाहता तो वह पूछते, “क्या आप इफ़्राईमी हैं?” अगर
वह इन्कार करता 6 तो जिलिआद के मर्द कहते, “तो
फिर लफ़्ज़ ‘शिब्बोलेत’ [u]बोलें।” अगर वह इफ़्राईमी
होता तो इस के बजाय “सिब्बोलेत” कहता। फिर
जिलिआदी उसे पकड़ कर वहीं मार डालते। उस
वक़्त कुल 42,000 इफ़्राईमी हलाक हुए।
7 इफ़्ताह ने छः साल इस्राईल की राहनुमाई की।
जब फ़ौत हुआ तो उसे जिलिआद के किसी शहर में
दफ़नाया गया।

इब्ज़ान, ऐलोन और अब्दोन

8 इफ़्ताह के बाद इब्ज़ान इस्राईल का क़ाज़ी बना।
वह बैत-लहम में आबाद था, 9 और उस के 30 बेटे
और 30 बेटियाँ थीं। उस की तमाम बेटियाँ शादीशुदा
थीं और इस वजह से बाप के घर में नहीं रहती थीं।
लेकिन उसे 30 बेटों के लिए बीवियाँ मिल गई थीं,
और सब उस के घर में रहते थे। इब्ज़ान ने सात
साल के दौरान इस्राईल की राहनुमाई की। 10 फिर
वह इन्तिक़ाल कर गया और बैत-लहम में दफ़नाया
गया।
11 उस के बाद ऐलोन क़ाज़ी बना। वह ज़बूलून के
क़बीले से था और 10 साल के दौरान इस्राईल की
राहनुमाई करता रहा। 12 जब वह कूच कर गया तो
उसे ज़बूलून के अय्यालोन में दफ़न किया गया।
13 फिर अब्दोन बिन हिल्लेल क़ाज़ी बना। वह शहर
फ़िरआतोन का था। 14 उस के 40 बेटे और 30
पोते थे जो 70 गधों पर सफ़र किया करते थे।
अब्दोन ने आठ साल के दौरान इस्राईल की राहनुमाई
की। 15 फिर वह भी जाँ-ब-हक़ हो गया, और उसे
अमालीक़ियों के पहाड़ी इलाक़े के शहर फ़िरआतोन
में दफ़नाया गया, जो उस वक़्त इफ़्राईम का हिस्सा
था।

सम्सून की पैदाइश की पेशगोई

13 1 फिर इस्राईली दुबारा ऐसी हरकतें करने
लगे जो रब को बुरी लगीं। इस लिए उस ने
उन्हें फ़िलिस्तियों के हवाले कर दिया जो उन्हें 40
साल दबाते रहे। 2 उस वक़्त एक आदमी सुरआ शहर
में रहता था जिस का नाम मनोहा था। दान के क़बीले
का यह आदमी बेऔलाद था, क्यूँकि उस की बीवी
बाँझ थी।
3 एक दिन रब का फ़रिश्ता मनोहा की बीवी पर
ज़ाहिर हुआ और कहा, “गो तुझ से बच्चे पैदा नहीं
हो सकते, अब तू हामिला होगी, और तेरे बेटा पैदा
होगा। 4 मै या कोई और नशाआवर चीज़ मत पीना,
न कोई नापाक चीज़ खाना। 5 क्यूँकि जो बेटा पैदा
होगा वह पैदाइश से ही अल्लाह के लिए मख़्सूस होगा।
लाज़िम है कि उस के बाल कभी न काटे जाएँ। यही
बच्चा इस्राईल को फ़िलिस्तियों से बचाने लगेगा।”
6 बीवी अपने शौहर मनोहा के पास गई और उसे
सब कुछ बताया, “अल्लाह का एक बन्दा मेरे पास
आया। वह अल्लाह का फ़रिश्ता लग रहा था, यहाँ
तक कि मैं सख़्त घबरा गई। मैं ने उस से न पूछा
कि वह कहाँ से है, और ख़ुद उस ने मुझे अपना नाम
न बताया। 7 लेकिन उस ने मुझे बताया, ‘तू हामिला
होगी, और तेरे बेटा पैदा होगा। अब मै या कोई
और नशाआवर चीज़ मत पीना, न कोई नापाक चीज़

[u]यानी नदी।

खाना। क्यूँकि बेटा पैदाइश से ही मौत तक अल्लाह के लिए मख़्सूस होगा'।"

8 यह सुन कर मनोहा ने रब से दुआ की, "ऐ रब, बराह-ए-करम मर्द-ए-ख़ुदा को दुबारा हमारे पास भेज ताकि वह हमें सिखाए कि हम उस बेटे के साथ क्या करें जो पैदा होने वाला है।" 9 अल्लाह ने उस की सुनी और अपने फ़रिश्ते को दुबारा उस की बीवी के पास भेज दिया। उस वक़्त वह शौहर के बग़ैर खेत में थी। 10 फ़रिश्ते को देख कर वह जल्दी से मनोहा के पास आई और उसे इत्तिला दी, "जो आदमी पिछले दिनों में मेरे पास आया वह दुबारा मुझ पर ज़ाहिर हुआ है!"

11 मनोहा उठ कर अपनी बीवी के पीछे पीछे फ़रिश्ते के पास आया। उस ने पूछा, "क्या आप वही आदमी हैं जिस ने पिछले दिनों में मेरी बीवी से बात की थी?" फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "जी, मैं ही था।" 12 फिर मनोहा ने सवाल किया, "जब आप की पेशगोई पूरी हो जाएगी तो हमें बेटे के तर्ज़-ए-ज़िन्दगी और सुलूक के सिलसिले में किन किन बातों का ख़याल करना है?"

13 रब के फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "लाज़िम है कि तेरी बीवी उन तमाम चीज़ों से पर्हेज़ करे जिन का ज़िक्र मैं ने किया। 14 वह अंगूर की कोई भी पैदावार न खाए। न वह मै, न कोई और नशाआवर चीज़ पिए। नापाक चीज़ें खाना भी मना है। वह मेरी हर हिदायत पर अमल करे।"

15 मनोहा ने रब के फ़रिश्ते से गुज़ारिश की, "मेहरबानी करके थोड़ी देर हमारे पास ठहरें ताकि हम बकरी का बच्चा ज़बह करके आप के लिए खाना तय्यार कर सकें।" 16 अब तक मनोहा ने यह बात नहीं पहचानी थी कि मेहमान असल में रब का फ़रिश्ता है। फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "ख़्वाह तू मुझे रोके भी मैं कुछ नहीं खाऊँगा। लेकिन अगर तू कुछ करना चाहे तो बकरी का बच्चा रब को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश कर।"

17 मनोहा ने उस से पूछा, "आप का क्या नाम है? क्यूँकि जब आप की यह बातें पूरी हो जाएँगी तो हम आप की इज़्ज़त करना चाहेंगे।" 18 फ़रिश्ते ने सवाल किया, "तू मेरा नाम क्यूँ जानना चाहता है? वह तो तेरी समझ से बाहर है।" 19 फिर मनोहा ने एक बड़े पत्थर पर रब को बकरी का बच्चा और ग़ल्ला की नज़र पेश की। तब रब ने मनोहा और उस की बीवी के देखते देखते एक हैरतअंगेज़ काम किया। 20 जब आग के शोले आसमान की तरफ़ बुलन्द हुए तो रब का फ़रिश्ता शोले में से ऊपर चढ़ कर ओझल हो गया। मनोहा और उस की बीवी मुँह के बल गिर गए।

21 जब रब का फ़रिश्ता दुबारा मनोहा और उस की बीवी पर ज़ाहिर न हुआ तो मनोहा को समझ आई कि रब का फ़रिश्ता ही था। 22 वह पुकार उठा, "हाय, हम मर जाएंगे, क्यूँकि हम ने अल्लाह को देखा है!" 23 लेकिन उस की बीवी ने एतिराज़ किया, "अगर रब हमें मार डालना चाहता तो वह हमारी क़ुर्बानी क़बूल न करता। फिर न वह हम पर यह सब कुछ ज़ाहिर करता, न हमें ऐसी बातें बताता।"

24 कुछ देर के बाद मनोहा के हाँ बेटा पैदा हुआ। बीवी ने उस का नाम सम्सून रखा। बच्चा बड़ा होता गया, और रब ने उसे बरकत दी। 25 अल्लाह का रूह पहली बार महने-दान में जो सुरआ और इस्ताल के दरमियान है उस पर नाज़िल हुआ।

सम्सून की फ़िलिस्ती औरत से शादी

14 1 एक दिन सम्सून तिम्नत में फ़िलिस्तियों के पास ठहरा हुआ था। वहाँ उस ने एक फ़िलिस्ती औरत देखी जो उसे पसन्द आई। 2 अपने घर लौट कर उस ने अपने वालिदैन को बताया, "मुझे तिम्नत की एक फ़िलिस्ती औरत पसन्द आई है। उस के साथ मेरा रिश्ता बांधने की कोशिश करें।" 3 उस के वालिदैन ने जवाब दिया, "क्या आप के रिश्तेदारों और क़ौम में कोई क़ाबिल-ए-क़बूल औरत नहीं है? आप को नामख़्तून और बेदीन फ़िलिस्तियों के पास

जा कर उन में से कोई औरत ढूँडने की क्या ज़रूरत
थी?” लेकिन सम्सून बज़िद रहा, “उसी के साथ मेरी
शादी कराएँ! वही मुझे ठीक लगती है।”
4 उस के माँ-बाप को मालूम नहीं था कि यह सब
कुछ रब की तरफ़ से है जो फ़िलिस्तियों से लड़ने
का मौक़ा तलाश कर रहा था। क्यूँकि उस वक़्त
फ़िलिस्ती इस्राईल पर हुकूमत कर रहे थे।
5 चुनाँचे सम्सून अपने माँ-बाप समेत तिम्नत के लिए
रवाना हुआ। जब वह तिम्नत के अंगूर के बाग़ों के
क़रीब पहुँचे तो सम्सून अपने माँ-बाप से अलग हो
गया। अचानक एक जवान शेरबबर दहाड़ता हुआ
उस पर टूट पड़ा। 6 तब अल्लाह का रूह इतने ज़ोर
से सम्सून पर नाज़िल हुआ कि उस ने अपने हाथों
से शेर को यूँ फाड़ डाला, जिस तरह आम आदमी
बकरी के छोटे बच्चे को फाड़ डालता है। लेकिन उस
ने अपने वालिदैन को इस के बारे में कुछ न बताया।
7 आगे निकल कर वह तिम्नत पहुँच गया। मज़कूरा
फ़िलिस्ती औरत से बात हुई और वह उसे ठीक लगी।
8 कुछ देर के बाद वह शादी करने के लिए दुबारा
तिम्नत गए। शहर पहुँचने से पहले सम्सून रास्ते से
हट कर शेरबबर की लाश को देखने गया। वहाँ क्या
देखता है कि शहद की मक्खियों ने शेर के पिंजर में
अपना छत्ता बना लिया है। 9 सम्सून ने उस में हाथ
डाल कर शहद को निकाल लिया और उसे खाते हुए
चला। जब वह अपने माँ-बाप के पास पहुँचा तो उस
ने उन्हें भी कुछ दिया, मगर यह न बताया कि कहाँ
से मिल गया है।
10 तिम्नत पहुँच कर सम्सून का बाप दुल्हन के
ख़ानदान से मिला जबकि सम्सून ने दूल्हे की हैसियत
से ऐसी ज़ियाफ़त की जिस तरह उस ज़माने में दस्तूर
था।

फ़िलिस्ती सम्सून को धोका देते हैं

11 जब दुल्हन के घर वालों को पता चला कि
सम्सून तिम्नत पहुँच गया है तो उन्हों ने उस के पास
30 जवान आदमी भेज दिए कि उस के साथ ख़ुशी
मनाएँ। 12 सम्सून ने उन से कहा, “मैं आप से पहेली
पूछता हूँ। अगर आप ज़ियाफ़त के सात दिनों के
दौरान इस का हल बता सकें तो मैं आप को कतान
के 30 क़ीमती कुरते और 30 शानदार सूट दे दूँगा।
13 लेकिन अगर आप मुझे इस का सहीह मतलब न
बता सकें तो आप को मुझे 30 क़ीमती कुरते और
30 शानदार सूट देने पड़ेंगे।” उन्हों ने जवाब दिया,
“अपनी पहेली सुनाएँ।”
14 सम्सून ने कहा, “खाने वाले में से खाना निकला
और ज़ोरावर में से मिठास।”
तीन दिन गुज़र गए। जवान पहेली का मतलब न
बता सके। 15 चौथे दिन उन्हों ने दुल्हन के पास जा
कर उसे धमकी दी, “अपने शौहर को हमें पहेली का
मतलब बताने पर उकसाओ, वर्ना हम तुम्हें तुम्हारे
ख़ानदान समेत जला देंगे। क्या तुम लोगों ने हमें सिर्फ़
इस लिए दावत दी कि हमें लूट लो?”
16 दुल्हन सम्सून के पास गई और आँसू बहा बहा
कर कहने लगी, “तू मुझे प्यार नहीं करता! हक़ीक़त
में तू मुझ से नफ़रत करता है। तू ने मेरी क़ौम के लोगों
से पहेली पूछी है लेकिन मुझे इस का मतलब नहीं
बताया।” सम्सून ने जवाब दिया, “मैं ने अपने माँ-
बाप को भी इस का मतलब नहीं बताया तो तुझे क्यूँ
बताऊँ?” 17 ज़ियाफ़त के पूरे हफ़्ते के दौरान दुल्हन
उस के सामने रोती रही।
सातवें दिन सम्सून दुल्हन की इल्तिजाओं से इतना
तंग आ गया कि उस ने उसे पहेली का हल बता
दिया। तब दुल्हन ने फ़ुरती से सब कुछ फ़िलिस्तियों
को सुना दिया। 18 सूरज के ग़ुरूब होने से पहले पहले
शहर के मर्दों ने सम्सून को पहेली का मतलब बताया,
“क्या कोई चीज़ शहद से ज़्यादा मीठी और शेरबबर
से ज़्यादा ज़ोरावर होती है?” सम्सून ने यह सुन कर
कहा, “आप ने मेरी जवान गाय ले कर हल चलाया
है, वर्ना आप कभी भी पहेली का हल न निकाल
सकते।” 19 फिर रब का रूह उस पर नाज़िल हुआ।
उस ने अस्क़लून शहर में जा कर 30 फ़िलिस्तियों को
मार डाला और उन के लिबास ले कर उन आदमियों

को दे दिए जिन्हों ने उसे पहेली का मतलब बता दिया था।

इस के बाद वह बड़े ग़ुस्से में अपने माँ-बाप के घर चला गया। 20 लेकिन उस की बीवी की शादी सम्सून के शहबाले से कराई गई जो 30 जवान फ़िलिस्तियों में से एक था।

सम्सून फ़िलिस्तियों से बदला लेता है

15 1 कुछ दिन गुज़र गए। जब गन्दुम की कटाई होने लगी तो सम्सून बकरी का बच्चा अपने साथ ले कर अपनी बीवी से मिलने गया। सुसर के घर पहुँच कर उस ने बीवी के कमरे में जाने की दरख़्वास्त की। लेकिन बाप ने इन्कार किया। 2 उस ने कहा, "यह नहीं हो सकता! मैं ने बेटी की शादी आप के शहबाले से करा दी है। असल में मुझे यक़ीन हो गया था कि अब आप उस से सख़्त नफ़रत करते हैं। लेकिन कोई बात नहीं। उस की छोटी बहन से शादी कर लें। वह ज़्यादा ख़ूबसूरत है।"

3 सम्सून बोला, "इस दफ़ा मैं फ़िलिस्तियों से ख़ूब बदला लूँगा, और कोई नहीं कह सकेगा कि मैं हक़ पर नहीं हूँ।" 4 वहाँ से निकल कर उस ने 300 लोमड़ियों को पकड़ लिया। दो दो की दुमों को बांध कर उस ने हर जोड़े की दुमों के साथ मशअल लगा दी 5 और फिर मशअलों को जला कर लोमड़ियों को फ़िलिस्तियों के अनाज के खेतों में भगा दिया। खेतों में पड़े पूले उस अनाज समेत भस्म हुए जो अब तक काटा नहीं गया था। अंगूर और ज़ैतून के बाग़ भी तबाह हो गए।

6 फ़िलिस्तियों ने दरयाफ़्त किया कि यह किस का काम है। पता चला कि सम्सून ने यह सब कुछ किया है, और कि वजह यह है कि तिम्नत में उस के सुसर ने उस की बीवी को उस से छीन कर उस के शहबाले को दे दिया है। यह सुन कर फ़िलिस्ती तिम्नत गए और सम्सून के सुसर को उस की बेटी समेत पकड़ कर जला दिया। 7 तब सम्सून ने उन से कहा, "यह तुम ने क्या किया है! जब तक मैं ने पूरा बदला न लिया मैं नहीं रुकूँगा।" 8 वह इतने ज़ोर से उन पर टूट पड़ा कि बेशुमार फ़िलिस्ती हलाक हुए। फिर वह उस जगह से उतर कर ऐताम की चटान के ग़ार में रहने लगा।

लही में सम्सून फ़िलिस्तियों से लड़ता है

9 जवाब में फ़िलिस्ती फ़ौज यहूदाह के क़बाइली इलाक़े में दाख़िल हुई। वहाँ वह लही शहर के पास ख़ैमाज़न हुए। 10 यहूदाह के बाशिन्दों ने पूछा, "क्या वजह है कि आप हम से लड़ने आए हैं?" फ़िलिस्तियों ने जवाब दिया, "हम सम्सून को पकड़ने आए हैं ताकि उस के साथ वह कुछ करें जो उस ने हमारे साथ किया है।"

11 तब यहूदाह के 3,000 मर्द ऐताम पहाड़ के ग़ार के पास आए और सम्सून से कहा, "यह आप ने हमारे साथ क्या किया? आप को तो पता है कि फ़िलिस्ती हम पर हुकूमत करते हैं।" सम्सून ने जवाब दिया, "मैं ने उन के साथ सिर्फ़ वह कुछ किया जो उन्हों ने मेरे साथ किया था।"

12 यहूदाह के मर्द बोले, "हम आप को बांध कर फ़िलिस्तियों के हवाले करने आए हैं।" सम्सून ने कहा, "ठीक है, लेकिन क़सम खाएँ कि आप ख़ुद मुझे क़त्ल नहीं करेंगे।"

13 उन्हों ने जवाब दिया, "हम आप को हरगिज़ क़त्ल नहीं करेंगे बल्कि आप को सिर्फ़ बांध कर उन के हवाले कर देंगे।" चुनाँचे वह उसे दो ताज़ा ताज़ा रस्सों से बांध कर फ़िलिस्तियों के पास ले गए।

14 सम्सून अभी लही से दूर था कि फ़िलिस्ती नारे लगाते हुए उस की तरफ़ दौड़े आए। तब रब का रूह बड़े ज़ोर से उस पर नाज़िल हुआ। उस के बाज़ूओं से बंधे हुए रस्से सन के जले हुए धागे जैसे कमज़ोर हो गए, और वह पिघल कर हाथों से गिर गए। 15 कहीं से गधे का ताज़ा जबड़ा पकड़ कर उस ने उस के ज़रीए हज़ार अफ़राद को मार डाला।

16 उस वक़्त उस ने नारा लगाया, "गधे के जबड़े से मैं ने उन के ढेर लगाए हैं! गधे के जबड़े से मैं ने

हज़ार मर्दों को मार डाला है!” 17 इस के बाद उस ने
गधे का यह जबड़ा फैंक दिया। उस जगह का नाम
रामत-लही यानी जबड़ा पहाड़ी पड़ गया।
18 सम्सून को वहाँ बड़ी प्यास लगी। उस ने रब को
पुकार कर कहा, “तू ही ने अपने ख़ादिम के हाथ से
इस्राईल को यह बड़ी नजात दिलाई है। लेकिन अब
मैं प्यास से मर कर नामख़्तून दुश्मन के हाथ में आ
जाऊँगा।” 19 तब अल्लाह ने लही में ज़मीन को छेदा,
और गढ़े से पानी फूट निकला। सम्सून उस का पानी
पी कर दुबारा ताज़ादम हो गया। यूँ उस चश्मे का
नाम ऐन-हक़्क़ोरे यानी पुकारने वाले का चश्मा पड़
गया। आज भी वह लही में मौजूद है।
20 फ़िलिस्तियों के दौर में सम्सून 20 साल तक
इस्राईल का क़ाज़ी रहा।

सम्सून ग़ज़्ज़ा का दरवाज़ा उठा ले जाता है

16 1 एक दिन सम्सून फ़िलिस्ती शहर ग़ज़्ज़ा में
आया। वहाँ वह एक कस्बी को देख कर
उस के घर में दाख़िल हुआ। 2 जब शहर के बाशिन्दों
को इत्तिला मिली कि सम्सून शहर में है तो उन्हों ने
कस्बी के घर को घेर लिया। साथ साथ वह रात के
वक़्त शहर के दरवाज़े पर ताक में रहे। फ़ैसला यह
हुआ, “रात के वक़्त हम कुछ नहीं करेंगे, जब पौ
फटेगी तब उसे मार डालेंगे।”
3 सम्सून अब तक कस्बी के घर में सो रहा था।
लेकिन आधी रात को वह उठ कर शहर के दरवाज़े
के पास गया और दोनों किवाड़ों को कुंडे और
दरवाज़े के दोनों बाज़ूओं समेत उखाड़ कर अपने
कंधों पर रख लिया। यूँ चलते चलते वह सब कुछ
उस पहाड़ी की चोटी पर ले गया जो हब्रून के
मुक़ाबिल है।

सम्सून और दलीला

4 कुछ देर के बाद सम्सून एक औरत की मुहब्बत
में गिरिफ़्तार हो गया जो वादी-ए-सूरिक़ में रहती थी।
उस का नाम दलीला था। 5 यह सुन कर फ़िलिस्ती
सरदार उस के पास आए और कहने लगे, “सम्सून
को उकसाएँ कि वह आप को अपनी बड़ी ताक़त
का भेद बताए। हम जानना चाहते हैं कि हम किस
तरह उस पर ग़ालिब आ कर उसे यूँ बांध सकें कि
वह हमारे क़ब्ज़े में रहे। अगर आप यह मालूम कर
सकें तो हम में से हर एक आप को चाँदी के 1,100
सिक्के देगा।”
6 चुनाँचे दलीला ने सम्सून से सवाल किया, “मुझे
अपनी बड़ी ताक़त का भेद बताएँ। क्या आप को
किसी ऐसी चीज़ से बांधा जा सकता है जिसे आप
तोड़ नहीं सकते?” 7 सम्सून ने जवाब दिया, “अगर
मुझे जानवरों की सात ताज़ा नसों से बांधा जाए तो
फिर मैं आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।”
8 फ़िलिस्ती सरदारों ने दलीला को सात ताज़ा नसें
मुहय्या कर दीं, और उस ने सम्सून को उन से
बांध लिया। 9 कुछ फ़िलिस्ती आदमी साथ वाले
कमरे में छुप गए। फिर दलीला चिल्ला उठी, “सम्सून,
फ़िलिस्ती आप को पकड़ने आए हैं!” यह सुन कर
सम्सून ने नसों को यूँ तोड़ दिया जिस तरह डोरी टूट
जाती है जब आग में से गुज़रती है। चुनाँचे उस की
ताक़त का पोल न खुला।
10 दलीला का मुँह लटक गया। “आप ने झूट बोल
कर मुझे बेवुक़ूफ़ बनाया है। अब आएँ, मेहरबानी
करके मुझे बताएँ कि आप को किस तरह बांधा जा
सकता है।” 11 सम्सून ने जवाब दिया, “अगर मुझे
ग़ैरइस्तेमालशुदा रस्सों से बांधा जाए तो फिर ही मैं
आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।” 12 दलीला
ने नए रस्से ले कर उसे उन से बांध लिया। इस मर्तबा
भी फ़िलिस्ती साथ वाले कमरे में छुप गए थे। फिर
दलीला चिल्ला उठी, “सम्सून, फ़िलिस्ती आप को
पकड़ने आए हैं!” लेकिन इस बार भी सम्सून ने रस्सों
को यूँ तोड़ लिया जिस तरह आम आदमी डोरी को
तोड़ लेता है।
13 दलीला ने शिकायत की, “आप बार बार झूट
बोल कर मेरा मज़ाक़ उड़ा रहे हैं। अब मुझे बताएँ कि
आप को किस तरह बांधा जा सकता है।” सम्सून ने

जवाब दिया, “लाज़िम है कि आप मेरी सात ज़ुल्फ़ों
को खड्डी के ताने के साथ बुनें। फिर ही आम आदमी
जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।” 14 जब सम्सून सो रहा
था तो दलीला ने ऐसा ही किया। उस की सात ज़ुल्फ़ों
को ताने के साथ बुन कर उस ने उसे शटल के ज़रीए
खड्डी के साथ लगाया। फिर वह चिल्ला उठी, “सम्सून,
फ़िलिस्ती आप को पकड़ने आए हैं!” सम्सून जाग
उठा और अपने बालों को शटल समेत खड्डी से
निकाल लिया।

15 यह देख कर दलीला ने मुँह फुला कर मलामत
की, “आप किस तरह दावा कर सकते हैं कि मुझ
से मुहब्बत रखते हैं? अब आप ने तीन मर्तबा मेरा
मज़ाक़ उड़ा कर मुझे अपनी बड़ी ताक़त का भेद नहीं
बताया।” 16 रोज़-ब-रोज़ वह अपनी बातों से उस की
नाक में दम करती रही। आख़िरकार सम्सून इतना
तंग आ गया कि उस का जीना दूभर हो गया। 17 फिर
उस ने उसे खुल कर बात बताई, “मैं पैदाइश ही से
अल्लाह के लिए मख़्सूस हूँ, इस लिए मेरे बालों को
कभी नहीं काटा गया। अगर सर को मुंडवाया जाए
तो मेरी ताक़त जाती रहेगी और मैं हर दूसरे आदमी
जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।”

18 दलीला ने जान लिया कि अब सम्सून ने मुझे
पूरी हक़ीक़त बताई है। उस ने फ़िलिस्ती सरदारों को
इत्तिला दी, “आओ, क्यूँकि इस मर्तबा उस ने मुझे
अपने दिल की हर बात बताई है।” यह सुन कर वह
मुक़र्ररा चाँदी अपने साथ ले कर दलीला के पास
आए।

19 दलीला ने सम्सून का सर अपनी गोद में रख कर
उसे सुला दिया। फिर उस ने एक आदमी को बुला
कर सम्सून की सात ज़ुल्फ़ों को मुंडवाया। यूँ वह
उसे पस्त करने लगी, और उस की ताक़त जाती रही।
20 फिर वह चिल्ला उठी, “सम्सून, फ़िलिस्ती आप को
पकड़ने आए हैं!” सम्सून जाग उठा और सोचा, “मैं
पहले की तरह अब भी अपने आप को बचा कर
बंधन को तोड़ दूँगा।” अफ़्सोस, उसे मालूम नहीं था
कि रब ने उसे छोड़ दिया है। 21 फ़िलिस्तियों ने उसे
पकड़ कर उस की आँखें निकाल दीं। फिर वह उसे
ग़ज़्ज़ा ले गए जहाँ उसे पीतल की ज़न्जीरों से बांधा
गया। वहाँ वह क़ैदख़ाने की चक्की पीसा करता था।
22 लेकिन होते होते उस के बाल दुबारा बढ़ने लगे।

सम्सून का आख़िरी इन्तिक़ाम

23 एक दिन फ़िलिस्ती सरदार बड़ा जश्न मनाने
के लिए जमा हुए। उन्हों ने अपने देवता दजून को
जानवरों की बहुत सी क़ुर्बानियाँ पेश करके अपनी
फ़त्ह की ख़ुशी मनाई। वह बोले, “हमारे देवता ने
हमारे दुश्मन सम्सून को हमारे हवाले कर दिया है।”
24 सम्सून को देख कर अवाम ने दजून की तम्जीद
करके कहा, “हमारे देवता ने हमारे दुश्मन को हमारे
हवाले कर दिया है! जिस ने हमारे मुल्क को तबाह
किया और हम में से इतने लोगों को मार डाला वह
अब हमारे क़ाबू में आ गया है!” 25 इस क़िस्म की
बातें करते करते उन की ख़ुशी की इन्तिहा न रही।
तब वह चिल्लाने लगे, “सम्सून को बुलाओ ताकि वह
हमारे दिलों को बहलाए।”

चुनाँचे उसे उन की तफ़रीह के लिए जेल से लाया
गया और दो सतूनों के दरमियान खड़ा कर दिया
गया। 26 सम्सून उस लड़के से मुख़ातिब हुआ जो उस
का हाथ पकड़ कर उस की राहनुमाई कर रहा था,
“मुझे छत को उठाने वाले सतूनों के पास ले जाओ
ताकि मैं उन का सहारा लूँ।” 27 इमारत मर्दों और
औरतों से भरी थी। फ़िलिस्ती सरदार भी सब आए
हुए थे। सिर्फ़ छत पर सम्सून का तमाशा देखने वाले
तक़रीबन 3,000 अफ़राद थे।

28 फिर सम्सून ने दुआ की, “ऐ रब क़ादिर-ए-
मुतलक़, मुझे याद कर। बस एक दफ़ा और मुझे पहले
की तरह क़ुव्वत अता फ़रमा ताकि मैं एक ही वार से
फ़िलिस्तियों से अपनी आँखों का बदला ले सकूँ।”
29 यह कह कर सम्सून ने उन दो मर्कज़ी सतूनों को
पकड़ लिया जिन पर छत का पूरा वज़न था। उन
के दरमियान खड़े हो कर उस ने पूरी ताक़त से ज़ोर
लगाया 30 और दुआ की, “मुझे फ़िलिस्तियों के साथ

मरने दे!” अचानक सतून हिल गए और छत धड़ाम
से फ़िलिस्तियों के तमाम सरदारों और बाक़ी लोगों
पर गिर गई। इस तरह सम्सून ने पहले की निस्बत
मरते वक़्त कहीं ज़्यादा फ़िलिस्तियों को मार डाला।
31 सम्सून के भाई और बाक़ी घर वाले आए और
उस की लाश को उठा कर उस के बाप मनोहा की
क़ब्र के पास ले गए। वहाँ यानी सुरआ और इस्ताल
के दरमियान उन्हों ने उसे दफ़नाया। सम्सून 20 साल
इस्राईल का क़ाज़ी रहा।

मीकाह का बुत

17 1 इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े में एक आदमी
रहता था जिस का नाम मीकाह था। 2 एक
दिन उस ने अपनी माँ से बात की, “आप के चाँदी के
1,100 सिक्के चोरी हो गए थे, ना? उस वक़्त आप ने
मेरे सामने ही चोर पर लानत भेजी थी। अब देखें, वह
पैसे मेरे पास हैं। मैं ही चोर हूँ।” यह सुन कर माँ ने
जवाब दिया, “मेरे बेटे, रब तुझे बरकत दे!” 3 मीकाह
ने उसे तमाम पैसे वापस कर दिए, और माँ ने एलान
किया, “अब से यह चाँदी रब के लिए मख़्सूस हो!
मैं आप के लिए तराशा और ढाला हुआ बुत बनवा
कर चाँदी आप को वापस कर देती हूँ।”
4 चुनाँचे जब बेटे ने पैसे वापस कर दिए तो माँ ने
उस के 200 सिक्के सुनार के पास ले जा कर लकड़ी
का तराशा और ढाला हुआ बुत बनवाया। मीकाह
ने यह बुत अपने घर में खड़ा किया, 5 क्यूँकि उस
का अपना मक़्दिस था। उस ने मज़ीद बुत और एक
अफ़ोद [v] भी बनवाया और फिर एक बेटे को अपना
इमाम बना लिया। 6 उस ज़माने में इस्राईल का कोई
बादशाह नहीं था बल्कि हर कोई वही कुछ करता
जो उसे दुरुस्त लगता था।
7 उन दिनों में लावी के क़बीले का एक जवान
आदमी यहूदाह के क़बीले के शहर बैत-लहम में
आबाद था। 8 अब वह शहर को छोड़ कर रिहाइश
की कोई और जगह तलाश करने लगा। इफ़्राईम के
पहाड़ी इलाक़े में से सफ़र करते करते वह मीकाह
के घर पहुँच गया। 9 मीकाह ने पूछा, “आप कहाँ से
आए हैं?” जवान ने जवाब दिया, “मैं लावी हूँ। मैं
यहूदाह के शहर बैत-लहम का रहने वाला हूँ लेकिन
रिहाइश की किसी और जगह की तलाश में हूँ।”
10 मीकाह बोला, “यहाँ मेरे पास अपना घर बना
कर मेरे बाप और इमाम बनें। तब आप को साल में
चाँदी के दस सिक्के और ज़रूरत के मुताबिक़ कपड़े
और ख़ुराक मिलेगी।”
11 लावी मुत्तफ़िक़ हुआ। वह वहाँ आबाद हुआ,
और मीकाह ने उस के साथ बेटों का सा सुलूक
किया। 12 उस ने उसे इमाम मुक़र्रर करके सोचा,
13 “अब रब मुझ पर मेहरबानी करेगा, क्यूँकि लावी
मेरा इमाम बन गया है।”

दान का क़बीला ज़मीन की तलाश करता है

18 1 उन दिनों में इस्राईल का बादशाह नहीं
था। और अब तक दान के क़बीले को
अपना कोई क़बाइली इलाक़ा नहीं मिला था, इस
लिए उस के लोग कहीं आबाद होने की तलाश में
रहे। 2 उन्हों ने अपने ख़ानदानों में से सुरआ और
इस्ताल के पाँच तजरिबाकार फ़ौजियों को चुन कर
उन्हें मुल्क की तफ़्तीश करने के लिए भेज दिया।
यह मर्द इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े में से गुज़र कर
मीकाह के घर के पास पहुँच गए। जब वह वहाँ रात
के लिए ठहरे हुए थे 3 तो उन्हों ने देखा कि जवान
लावी बैत-लहम की बोली बोलता है। उस के पास
जा कर उन्हों ने पूछा, “कौन आप को यहाँ लाया
है? आप यहाँ क्या करते हैं? और आप का इस घर
में रहने का क्या मक़्सद है?” 4 लावी ने उन्हें अपनी
कहानी सुनाई, “मीकाह ने मुझे नौकरी दे कर अपना
इमाम बना लिया है।” 5 फिर उन्हों ने उस से गुज़ारिश
की, “अल्लाह से दरयाफ़्त करें कि क्या हमारे सफ़र

[v] आम तौर पर इब्रानी में अफ़ोद का मतलब इमाम-ए-आज़म का बालापोश था (देखिए ख़ुरूज 28:4), लेकिन यहाँ इस से मुराद बुतपरस्ती की कोई चीज़ है।

का मक़्सद पूरा हो जाएगा या नहीं?” 6 लावी ने उन्हें
तसल्ली दी, “सलामती से आगे बढ़ें। आप के सफ़र
का मक़्सद रब को क़बूल है, और वह आप के साथ
है।”

7 तब यह पाँच आदमी आगे निकले और सफ़र
करते करते लैस पहुँच गए। उन्हों ने देखा कि वहाँ
के लोग सैदानियों की तरह पुरसुकून और बेफ़िक्र
ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। कोई नहीं था जो उन्हें दबाता
या उन पर ज़ुल्म करता। यह भी मालूम हुआ कि अगर
उन पर हम्ला किया जाए तो उन का इत्तिहादी शहर
सैदा उन से इतनी दूर है कि उन की मदद नहीं कर
सकेगा, और क़रीब कोई इत्तिहादी नहीं है जो उन
का साथ दे। 8 वह पाँच जासूस सुरआ और इस्ताल
वापस चले गए। जब वहाँ पहुँचे तो दूसरों ने पूछा,
“सफ़र कैसा रहा?” 9 जासूसों ने जवाब में कहा,
“आएँ, हम जंग के लिए निकलें! हमें एक बेहतरीन
इलाक़ा मिल गया है। आप क्यूँ झिजक रहे हैं? जल्दी
करें, हम निकलें और उस मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लें!
10 वहाँ के लोग बेफ़िक्र हैं और हमले की तवक़्क़ो
ही नहीं करते। और ज़मीन वसी और ज़रख़ेज़ है, उस
में किसी भी चीज़ की कमी नहीं है। अल्लाह आप को
वह मुल्क देने का इरादा रखता है।”

दान के मर्द मीकाह का बुत इमाम समेत छीन लेते हैं

11 दान के क़बीले के 600 मुसल्लह आदमी सुरआ
और इस्ताल से रवाना हुए। 12 रास्ते में उन्हों ने अपनी
लश्करगाह यहूदाह के शहर क़िर्यत-यारीम के क़रीब
लगाई। इस लिए यह जगह आज तक महने-दान
यानी दान की ख़ैमागाह कहलाती है। 13 वहाँ से वह
इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े में दाख़िल हुए और चलते
चलते मीकाह के घर पहुँच गए।

14 जिन पाँच मर्दों ने लैस की तफ़्तीश की थी उन्हों
ने अपने साथियों से कहा, “क्या आप को मालूम है
कि इन घरों में एक अफ़ोद, एक तराशा और ढाला
हुआ बुत और दीगर कई बुत हैं? अब सोच लें कि
क्या किया जाए।”

15 पाँचों ने मीकाह के घर में दाख़िल हो कर जवान
लावी को सलाम किया 16 जबकि बाक़ी 600 मुसल्लह
मर्द गेट पर खड़े रहे। 17 जब लावी बाहर खड़े मर्दों
के पास गया तो इन पाँचों ने अन्दर घुस कर तराशा
और ढाला हुआ बुत, अफ़ोद और बाक़ी बुत छीन
लिए। 18 यह देख कर लावी चीख़ने लगा, “क्या कर
रहे हो!”

19 उन्हों ने कहा, “चुप! कोई बात न करो बल्कि
हमारे साथ जा कर हमारे बाप और इमाम बनो। हमारे
साथ जाओगे तो पूरे क़बीले के इमाम बनोगे। क्या
यह एक ही ख़ानदान की ख़िदमत करने से कहीं
बेहतर नहीं होगा?” 20 यह सुन कर इमाम ख़ुश हुआ।
वह अफ़ोद, तराशा हुआ बुत और बाक़ी बुतों को ले
कर मुसाफ़िरों में शरीक हो गया। 21 फिर दान के मर्द
रवाना हुए। उन के बाल-बच्चे, मवेशी और क़ीमती
माल-ओ-मता उन के आगे आगे था।

22 जब मीकाह को बात का पता चला तो वह अपने
पड़ोसियों को जमा करके उन के पीछे दौड़ा। इतने
में दान के लोग घर से दूर निकल चुके थे। 23 जब वह
सामने नज़र आए तो मीकाह और उस के साथियों ने
चीख़ते चिल्लाते उन्हें रुकने को कहा। दान के मर्दों ने
पीछे देख कर मीकाह से कहा, “क्या बात है? अपने
इन लोगों को बुला कर क्यूँ ले आए हो?” 24 मीकाह
ने जवाब दिया, “तुम लोगों ने मेरे बुतों को छीन लिया
गो मैं ने उन्हें ख़ुद बनवाया है। मेरे इमाम को भी साथ
ले गए हो। मेरे पास कुछ नहीं रहा तो अब तुम पूछते
हो कि क्या बात है?”

25 दान के अफ़राद बोले, “ख़ामोश! ख़बरदार,
हमारे कुछ लोग तेज़मिज़ाज हैं। ऐसा न हो कि वह
ग़ुस्से में आ कर तुम को तुम्हारे ख़ानदान समेत
मार डालें।” 26 यह कह कर उन्हों ने अपना सफ़र
जारी रखा। मीकाह ने जान लिया कि मैं अपने
थोड़े आदमियों के साथ उन का मुक़ाबला नहीं कर
सकूँगा, इस लिए वह मुड़ कर अपने घर वापस चला
गया। 27 उस के बुत दान के क़ब्ज़े में रहे, और इमाम
भी उन में टिक गया।

लैस पर क़ब्ज़ा और दान की बुतपरस्ती

फिर वह लैस के इलाक़े में दाख़िल हुए जिस के
बाशिन्दे पुरसुकून और बेफ़िक्र ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे।
दान के फ़ौजी उन पर टूट पड़े और सब को तलवार
से क़त्ल करके शहर को भस्म कर दिया। 28 किसी
ने भी उन की मदद न की, क्यूँकि सैदा बहुत दूर था,
और क़रीब कोई इत्तिहादी नहीं था जो उन का साथ
देता। यह शहर बैत-रहोब की वादी में था। दान के
अफ़राद शहर को अज़ सर-ए-नौ तामीर करके उस
में आबाद हुए। 29 और उन्हों ने उस का नाम अपने
क़बीले के बानी के नाम पर दान रखा (दान इस्राईल
का बेटा था)।
30 वहाँ उन्हों ने तराशा हुआ बुत रख कर पूजा के
इन्तिज़ाम पर यूनतन मुक़र्रर किया जो मूसा के बेटे
जैर्सोम की औलाद में से था। जब यूनतन फ़ौत हुआ
तो उस की औलाद क़ौम की जिलावतनी तक दान
के क़बीले में यही ख़िदमत करती रही।
31 मीकाह का बनवाया हुआ बुत तब तक दान में
रहा जब तक अल्लाह का घर सैला में था।

एक लावी की अपनी दाश्ता के साथ सुलह

19 1 उस ज़माने में जब इस्राईल का कोई
बादशाह नहीं था एक लावी ने अपने घर
में दाश्ता रखी जो यहूदाह के शहर बैत-लहम की
रहने वाली थी। आदमी इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े
के किसी दूरदराज़ कोने में आबाद था। 2 लेकिन एक
दिन औरत मर्द से नाराज़ हुई और मैके वापस चली
गई। चार माह के बाद 3 लावी दो गधे और अपने
नौकर को ले कर बैत-लहम के लिए रवाना हुआ
ताकि दाश्ता का ग़ुस्सा ठंडा करके उसे वापस आने
पर आमादा करे।
जब उस की मुलाक़ात दाश्ता से हुई तो वह उसे
अपने बाप के घर में ले गई। उसे देख कर सुसर इतना
ख़ुश हुआ 4 कि उस ने उसे जाने न दिया। दामाद को
तीन दिन वहाँ ठहरना पड़ा जिस दौरान सुसर ने उस
की ख़ूब मेहमान-नवाज़ी की। 5 चौथे दिन लावी सुब्ह-
सवेरे उठ कर अपनी दाश्ता के साथ रवाना होने की
तय्यारियाँ करने लगा। लेकिन सुसर उसे रोक कर
बोला, “पहले थोड़ा बहुत खा कर ताज़ादम हो जाएँ,
फिर चले जाना।” 6 दोनों दुबारा खाने-पीने के लिए
बैठ गए।
सुसर ने कहा, “बराह-ए-करम एक और रात यहाँ
ठहर कर अपना दिल बहलाएँ।” 7 मेहमान जाने की
तय्यारियाँ करने तो लगा, लेकिन सुसर ने उसे एक
और रात ठहरने पर मज्बूर किया। चुनाँचे वह हार
मान कर रुक गया।
8 पाँचवें दिन आदमी सुब्ह-सवेरे उठा और जाने के
लिए तय्यार हुआ। सुसर ने ज़ोर दिया, “पहले कुछ
खाना खा कर ताज़ादम हो जाएँ। आप दोपहर के
वक़्त भी जा सकते हैं।” चुनाँचे दोनों खाने के लिए
बैठ गए।
9 दोपहर के वक़्त लावी अपनी बीवी और नौकर के
साथ जाने के लिए उठा। सुसर एतिराज़ करने लगा,
“अब देखें, दिन ढलने वाला है। रात ठहर कर अपना
दिल बहलाएँ। बेहतर है कि आप कल सुब्ह-सवेरे ही
उठ कर घर के लिए रवाना हो जाएँ।” 10–11 लेकिन
अब लावी किसी भी सूरत में एक और रात ठहरना
नहीं चाहता था। वह अपने गधों पर ज़ीन कस कर
अपनी बीवी और नौकर के साथ रवाना हुआ।
चलते चलते दिन ढलने लगा। वह यबूस यानी
यरूशलम के क़रीब पहुँच गए थे। शहर को देख कर
नौकर ने मालिक से कहा, “आएँ, हम यबूसियों के
इस शहर में जा कर वहाँ रात गुज़ारें।” 12 लेकिन
लावी ने एतिराज़ किया, “नहीं, यह अजनबियों का
शहर है। हमें ऐसी जगह रात नहीं गुज़ारना चाहिए
जो इस्राईली नहीं है। बेहतर है कि हम आगे जा कर
जिबिआ की तरफ़ बढ़ें। 13 अगर हम जल्दी करें तो
हो सकता है कि जिबिआ या उस से आगे रामा तक
पहुँच सकें। वहाँ आराम से रात गुज़ार सकेंगे।”
14 चुनाँचे वह आगे निकले। जब सूरज ग़ुरूब होने
लगा तो वह बिनयमीन के क़बीले के शहर जिबिआ

के क़रीब पहुँच गए 15 और रास्ते से हट कर शहर
में दाख़िल हुए। लेकिन कोई उन की मेहमान-नवाज़ी
नहीं करना चाहता था, इस लिए वह शहर के चौक
में रुक गए।
16 फिर अंधेरे में एक बूढ़ा आदमी वहाँ से गुज़रा।
असल में वह इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े का रहने
वाला था और जिबिआ में अजनबी था, क्यूँकि
बाक़ी बाशिन्दे बिनयमीनी थे। अब वह खेत में अपने
काम से फ़ारिग़ हो कर शहर में वापस आया था।
17 मुसाफ़िरों को चौक में देख कर उस ने पूछा, "आप
कहाँ से आए और कहाँ जा रहे हैं?" 18 लावी ने
जवाब दिया, "हम यहूदाह के बैत-लहम से आए हैं
और इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े के एक दूरदराज़ कोने
तक सफ़र कर रहे हैं। वहाँ मेरा घर है और वहीं से
मैं रवाना हो कर बैत-लहम चला गया था। इस वक़्त
मैं रब के घर जा रहा हूँ। लेकिन यहाँ जिबिआ में
कोई नहीं जो हमारी मेहमान-नवाज़ी करने के लिए
तय्यार हो, 19 हालाँकि हमारे पास खाने की तमाम
चीज़ें मौजूद हैं। गधों के लिए भूसा और चारा है, और
हमारे लिए भी काफ़ी रोटी और मै है। हमें किसी भी
चीज़ की ज़रूरत नहीं है।"
20 बूढ़े ने कहा, "फिर मैं आप को अपने घर में
ख़ुशआमदीद कहता हूँ। अगर आप को कोई चीज़
दरकार हो तो मैं उसे मुहय्या करूँगा। हर सूरत में
चौक में रात मत गुज़ारना।" 21 वह मुसाफ़िरों को
अपने घर ले गया और गधों को चारा खिलाया।
मेहमानों ने अपने पाँओ धो कर खाना खाया और
मै पी।

जिबिआ के लोगों का जुर्म

22 वह यूँ खाने की रिफ़ाक़त से लुत्फ़अन्दोज़ हो
रहे थे कि जिबिआ के कुछ शरीर मर्द घर को घेर
कर दरवाज़े को ज़ोर से खटखटाने लगे। वह चिल्लाए,
"उस आदमी को बाहर ला जो तेरे घर में ठहरा हुआ
है ताकि हम उस से ज़ियादती करें!" 23 बूढ़ा आदमी
बाहर गया ताकि उन्हें समझाए, "नहीं, भाइयो, ऐसा
शैतानी अमल मत करना। यह अजनबी मेरा मेहमान
है। ऐसी शर्मनाक हरकत मत करना! 24 इस से पहले
मैं अपनी कुंवारी बेटी और मेहमान की दाश्ता को
बाहर ले आता हूँ। उन ही से ज़ियादती करें। जो जी
चाहे उन के साथ करें, लेकिन आदमी के साथ ऐसी
शर्मनाक हरकत न करें।"
25 लेकिन बाहर के मर्दों ने उस की न सुनी। तब
लावी अपनी दाश्ता को पकड़ कर बाहर ले गया
और उस के पीछे दरवाज़ा बन्द कर दिया। शहर के
आदमी पूरी रात उस की बेहुरमती करते रहे। जब
पौ फटने लगी तो उन्हों ने उसे फ़ारिग़ कर दिया।
26 सूरज के तुलू होने से पहले औरत उस घर के पास
वापस आई जिस में शौहर ठहरा हुआ था। दरवाज़े
तक तो वह पहुँच गई लेकिन फिर गिर कर वहीं की
वहीं पड़ी रही।
जब दिन चढ़ गया 27 तो लावी जाग उठा और सफ़र
करने की तय्यारियाँ करने लगा। जब दरवाज़ा खोला
तो क्या देखता है कि दाश्ता सामने ज़मीन पर पड़ी है
और हाथ दहलीज़ पर रखे हैं। 28 वह बोला, "उठो,
हम चलते हैं।" लेकिन दाश्ता ने जवाब न दिया। यह
देख कर आदमी ने उसे गधे पर लाद लिया और अपने
घर चला गया।
29 जब पहुँचा तो उस ने छुरी ले कर औरत की लाश
को 12 टुकड़ों में काट लिया, फिर उन्हें इस्राईल की
हर जगह भेज दिया। 30 जिस ने भी यह देखा उस ने
घबरा कर कहा, "ऐसा जुर्म हमारे दरमियान कभी
नहीं हुआ। जब से हम मिस्र से निकल कर आए
हैं ऐसी हरकत देखने में नहीं आई। अब लाज़िम है
कि हम ग़ौर से सोचें और एक दूसरे से मश्वरा करके
अगले क़दम के बारे में फ़ैसला करें।"

जिबिआ को सज़ा देने का फ़ैसला

20 1 तमाम इस्राईली एक दिल हो कर मिस्फ़ाह
में रब के हुज़ूर जमा हुए। शिमाल के दान
से ले कर जुनूब के बैर-सबा तक सब आए। दरया-ए-
यर्दन के पार जिलिआद से भी लोग आए। 2 इस्राईली

क़बीलों के सरदार भी आए। उन्हों ने मिल कर एक
बड़ी फ़ौज तय्यार की, तलवारों से लेस 4,00,000
मर्द जमा हुए। 3 बिनयमीनियों को इस जमाअत के
बारे में इत्तिला मिली।

इस्राईलियों ने पूछा, "हमें बताएँ कि यह हैबतनाक
जुर्म किस तरह सरज़द हुआ?" 4 मक़्तूला के शौहर ने
उन्हें अपनी कहानी सुनाई, "मैं अपनी दाश्ता के साथ
जिबिआ में आ ठहरा जो बिनयमीनियों के इलाक़े में
है। हम वहाँ रात गुज़ारना चाहते थे। 5 यह देख कर
शहर के मर्दों ने मेरे मेज़बान के घर को घेर लिया ताकि
मुझे क़त्ल करें। मैं तो बच गया, लेकिन मेरी दाश्ता से
इतनी ज़ियादती हुई कि वह मर गई। 6 यह देख कर
मैं ने उस की लाश को टुकड़े टुकड़े करके यह टुकड़े
इस्राईल की मीरास की हर जगह भेज दिए ताकि हर
एक को मालूम हो जाए कि हमारे मुल्क में कितना
घिनौना जुर्म सरज़द हुआ है। 7 इस पर आप सब यहाँ
जमा हुए हैं। इस्राईल के मर्दो, अब लाज़िम है कि
आप एक दूसरे से मश्वरा करके फ़ैसला करें कि क्या
करना चाहिए।"

8 तमाम मर्द एक दिल हो कर खड़े हुए। सब का
फ़ैसला था, "हम में से कोई भी अपने घर वापस
नहीं जाएगा 9 जब तक जिबिआ को मुनासिब सज़ा
न दी जाए। लाज़िम है कि हम फ़ौरन शहर पर हम्ला करें
और इस के लिए क़ुरआ डाल कर रब से हिदायत लें।
10 हम यह फ़ैसला भी करें कि कौन कौन हमारी फ़ौज
के लिए खाने-पीने का बन्द-ओ-बस्त कराएगा। इस
काम के लिए हम में से हर दसवाँ आदमी काफ़ी है।
बाक़ी सब लोग सीधे जिबिआ से लड़ने जाएँ ताकि
उस शर्मनाक जुर्म का मुनासिब बदला लें जो इस्राईल
में हुआ है।"

11 यूँ तमाम इस्राईली मुत्तहिद हो कर जिबिआ से
लड़ने के लिए गए। 12 रास्ते में उन्हों ने बिनयमीन के
हर कुंबे को पैग़ाम भिजवाया, "आप के दरमियान
घिनौना जुर्म हुआ है। 13 अब जिबिआ के इन शरीर
आदमियों को हमारे हवाले करें ताकि हम उन्हें सज़ा-
ए-मौत दे कर इस्राईल में से बुराई मिटा दें।"

लेकिन बिनयमीनी इस के लिए तय्यार न हुए।
14 वह पूरे क़बाइली इलाक़े से आ कर जिबिआ
में जमा हुए ताकि इस्राईलियों से लड़ें। 15 उसी
दिन उन्हों ने अपनी फ़ौज का बन्द-ओ-बस्त किया।
जिबिआ के 700 तजरिबाकार फ़ौजियों के इलावा
तलवारों से लेस 26,000 अफ़राद थे। 16 इन फ़ौजियों
में से 700 ऐसे मर्द भी थे जो अपने बाएँ हाथ से
फ़लाख़न चलाने की इतनी महारत रखते थे कि पत्थर
बाल जैसे छोटे निशाने पर भी लग जाता था। 17 दूसरी
तरफ़ इस्राईल के 4,00,000 फ़ौजी खड़े हुए, और हर
एक के पास तलवार थी।

18 पहले इस्राईली बैत-एल चले गए। वहाँ उन्हों ने
अल्लाह से दरयाफ़्त किया, "कौन सा क़बीला हमारे
आगे आगे चले जब हम बिनयमीनियों पर हम्ला करें?"
रब ने जवाब दिया, "यहूदाह सब से आगे चले।"

बिनयमीन के ख़िलाफ़ जंग

19 अगले दिन इस्राईली रवाना हुए और जिबिआ के
क़रीब पहुँच कर अपनी लश्करगाह लगाई। 20 फिर
वह हम्ला के लिए निकले और तर्तीब से लड़ने के
लिए खड़े हो गए। 21 यह देख कर बिनयमीनी शहर
से निकले और उन पर टूट पड़े। नतीजे में 22,000
इस्राईली शहीद हो गए।

22–23 इस्राईली बैत-एल चले गए और शाम तक रब
के हुज़ूर रोते रहे। उन्हों ने रब से पूछा, "क्या हम
दुबारा अपने बिनयमीनी भाइयों से लड़ने जाएँ?"
रब ने जवाब दिया, "हाँ, उन पर हम्ला करो!" यह
सुन कर इस्राईलियों का हौसला बढ़ गया और वह
अगले दिन वहीं खड़े हो गए जहाँ पहले दिन खड़े
हुए थे। 24 लेकिन जब वह शहर के क़रीब पहुँचे 25 तो
बिनयमीनी पहले की तरह शहर से निकल कर उन पर
टूट पड़े। उस दिन तलवार से लेस 18,000 इस्राईली
शहीद हो गए।

26 फिर इस्राईल का पूरा लश्कर बैत-एल चला
गया। वहाँ वह शाम तक रब के हुज़ूर रोते और रोज़ा
रखते रहे। उन्हों ने रब को भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ

और सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश करके 27 उस से
दरयाफ़्त किया कि हम क्या करें। (उस वक़्त अल्लाह
के अह्द का सन्दूक़ बैत-एल में था 28 जहाँ फ़ीन्हास
बिन इलीअज़र बिन हारून इमाम था।) इस्राईलियों
ने पूछा, "क्या हम एक और मर्तबा अपने बिनयमीनी
भाइयों से लड़ने जाएँ या इस से बाज़ आएँ?" रब ने
जवाब दिया, "उन पर हम्ला करो, क्यूँकि कल ही मैं
उन्हें तुम्हारे हवाले कर दूँगा।"

बिनयमीन का सत्यानास

29 इस दफ़ा कुछ इस्राईली जिबिआ के इर्दगिर्द घात
में बैठ गए। 30 बाक़ी अफ़राद पहले दो दिनों की
सी तर्तीब के मुताबिक़ लड़ने के लिए खड़े हो गए।
31 बिनयमीनी दुबारा शहर से निकल कर उन पर टूट
पड़े। जो रास्ते बैत-एल और जिबिआ की तरफ़ ले
जाते हैं उन पर और खुले मैदान में उन्हों ने तक़रीबन
30 इस्राईलियों को मार डाला। यूँ लड़ते लड़ते वह
शहर से दूर होते गए। 32 वह पुकारे, "अब हम उन्हें
पहली दो मर्तबा की तरह शिकस्त देंगे!"

लेकिन इस्राईलियों ने मन्सूबा बांध लिया था, "हम
उन के आगे आगे भागते हुए उन्हें शहर से दूर रास्तों
पर खैंच लेंगे।" 33 यूँ वह भागने लगे और बिनयमीनी
उन के पीछे पड़ गए। लेकिन बाल-तमर के क़रीब
इस्राईली रुक कर मुड़ गए और उन का सामना
करने लगे। अब बाक़ी इस्राईली जो जिबा के इर्दगिर्द
और खुले मैदान में घात में बैठे थे अपनी छुपने
की जगहों से निकल आए। 34 अचानक जिबिआ
के बिनयमीनियों को 10,000 बेहतरीन फ़ौजियों का
सामना करना पड़ा, उन मर्दों का जो पूरे इस्राईल
से चुने गए थे। बिनयमीनी उन से ख़ूब लड़ने लगे,
लेकिन उन की आँखें अभी इस बात के लिए बन्द थीं
कि उन का अन्जाम क़रीब आ गया है। 35 उस दिन
इस्राईलियों ने रब की मदद से फ़त्ह पा कर तलवार
से लेस 25,100 बिनयमीनी फ़ौजियों को मौत के घाट
उतार दिया। 36 तब बिनयमीनियों ने जान लिया कि
दुश्मन हम पर ग़ालिब आ गए हैं। क्यूँकि इस्राईली
फ़ौज ने अपने भाग जाने से उन्हें जिबिआ से दूर खैंच
लिया था ताकि शहर के इर्दगिर्द घात में बैठे मर्दों को
शहर पर हम्ला करने का मौक़ा मुहय्या करें। 37 तब
यह मर्द निकल कर शहर पर टूट पड़े और तलवार से
तमाम बाशिन्दों को मार डाला, 38–39 फिर मन्सूबे के
मुताबिक़ आग लगा कर धुएँ का बड़ा बादल पैदा
किया ताकि भागने वाले इस्राईलियों को इशारा मिल
जाए कि वह मुड़ कर बिनयमीनियों का मुक़ाबला
करें।

उस वक़्त तक बिनयमीनियों ने तक़रीबन 30
इस्राईलियों को मार डाला था, और उन का ख़याल
था कि हम उन्हें पहले की तरह शिकस्त दे रहे हैं।
40 अचानक उन के पीछे धुएँ का बादल आसमान
की तरफ़ उठने लगा। जब बिनयमीनियों ने मुड़ कर
देखा कि शहर के कोने कोने से धुआँ निकल रहा है
41 तो इस्राईल के मर्द रुक गए और पलट कर उन
का सामना करने लगे।

बिनयमीनी सख़्त घबरा गए, क्यूँकि उन्हों ने जान
लिया कि हम तबाह हो गए हैं। 42–43 तब उन्हों
ने मशरिक़ के रेगिस्तान की तरफ़ फ़रार होने की
कोशिश की। लेकिन अब वह मर्द भी उन का ताक़्क़ुब
करने लगे जिन्हों ने घात में बैठ कर जिबिआ पर
हम्ला किया था। यूँ इस्राईलियों ने मफ़रूरों को घेर
कर मार डाला। 44 उस वक़्त बिनयमीन के 18,000
तजरिबाकार फ़ौजी हलाक हुए। 45 जो बच गए वह
रेगिस्तान की चटान रिम्मोन की तरफ़ भाग निकले।
लेकिन इस्राईलियों ने रास्ते में उन के 5,000 अफ़राद
को मौत के घाट उतार दिया। इस के बाद उन्हों
ने जिदओम तक उन का ताक़्क़ुब किया। मज़ीद
2,000 बिनयमीनी हलाक हुए। 46 इस तरह बिनयमीन
के कुल 25,000 तलवार से लेस और तजरिबाकार
फ़ौजी मारे गए।

47 सिर्फ़ 600 मर्द बच कर रिम्मोन की चटान तक
पहुँच गए। वहाँ वह चार महीने तक टिके रहे। 48 तब
इस्राईली ताक़्क़ुब करने से बाज़ आ कर बिनयमीन
के क़बाइली इलाक़े में वापस आए। वहाँ उन्हों ने

जगह-ब-जगह जा कर सब कुछ मौत के घाट उतार दिया। जो भी उन्हें मिला वह तलवार की ज़द में आ गया, ख़्वाह इन्सान था या हैवान। साथ साथ उन्हों ने तमाम शहरों को आग लगा दी।

बिनयमीनियों को औरतें मिलती हैं

21 1 जब इस्राईली मिस्फ़ाह में जमा हुए थे तो सब ने क़सम खा कर कहा था, "हम कभी भी अपनी बेटियों का किसी बिनयमीनी मर्द के साथ रिश्ता नहीं बांधेंगे।" 2 अब वह बैत-एल चले गए और शाम तक अल्लाह के हुज़ूर बैठे रहे। रो रो कर उन्हों ने दुआ की, 3 "ऐ रब, इस्राईल के ख़ुदा, हमारी क़ौम का एक पूरा क़बीला मिट गया है! यह मुसीबत इस्राईल पर क्यूँ आई?"

4 अगले दिन वह सुब्ह-सवेरे उठे और क़ुर्बानगाह बना कर उस पर भस्म होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं। 5 फिर वह एक दूसरे से पूछने लगे, "जब हम मिस्फ़ाह में रब के हुज़ूर जमा हुए तो हमारी क़ौम में से कौन कौन इजतिमा में शरीक न हुआ?" क्यूँकि उस वक़्त उन्हों ने क़सम खा कर एलान किया था, "जिस ने यहाँ रब के हुज़ूर आने से इन्कार किया उसे ज़रूर सज़ा-ए-मौत दी जाएगी।" 6 अब इस्राईलियों को बिनयमीनियों पर अफ़्सोस हुआ। उन्हों ने कहा, "एक पूरा क़बीला मिट गया है। 7 अब हम उन थोड़े बचे-खुचे आदमियों को बीवियाँ किस तरह मुहय्या कर सकते हैं? हम ने तो रब के हुज़ूर क़सम खाई है कि अपनी बेटियों का उन के साथ रिश्ता नहीं बांधेंगे। 8 लेकिन हो सकता है कोई ख़ानदान मिस्फ़ाह के इजतिमा में न आया हो। आओ, हम पता करें।" मालूम हुआ कि यबीस-जिलिआद के बाशिन्दे नहीं आए थे। 9 यह बात फ़ौजियों को गिनने से पता चली, क्यूँकि गिनते वक़्त यबीस-जिलिआद का कोई भी शख़्स फ़ौज में नहीं था।

10 तब उन्हों ने 12,000 फ़ौजियों को चुन कर उन्हें हुक्म दिया, "यबीस-जिलिआद पर हम्ला करके तमाम बाशिन्दों को बाल-बच्चों समेत मार डालो। 11 सिर्फ़ कुंवारियों को ज़िन्दा रहने दो।"

12 फ़ौजियों ने यबीस में 400 कुंवारियाँ पाईं। वह उन्हें सैला ले आए जहाँ इस्राईलियों का लश्कर ठहरा हुआ था। 13 वहाँ से उन्हों ने अपने क़ासिदों को रिम्मोन की चटान के पास भेज कर बिनयमीनियों के साथ सुलह कर ली। 14 फिर बिनयमीन के 600 मर्द रेगिस्तान से वापस आए, और उन के साथ यबीस-जिलिआद की कुंवारियों की शादी हुई। लेकिन यह सब के लिए काफ़ी नहीं थीं।

15 इस्राईलियों को बिनयमीन पर अफ़्सोस हुआ, क्यूँकि रब ने इस्राईल के क़बीलों में ख़ला डाल दिया था। 16 जमाअत के बुज़ुर्गों ने दुबारा पूछा, "हमें बिनयमीन के बाक़ी मर्दों के लिए कहाँ से बीवियाँ मिलेंगी? उन की तमाम औरतें तो हलाक हो गई हैं। 17 लाज़िम है कि उन्हें उन का मौरूसी इलाक़ा वापस मिल जाए। ऐसा न हो कि वह बिलकुल मिट जाएँ। 18 लेकिन हम अपनी बेटियों की उन के साथ शादी नहीं करा सकते, क्यूँकि हम ने क़सम खा कर एलान किया है, 'जो अपनी बेटी का रिश्ता बिनयमीन के किसी मर्द से बांधेगा उस पर अल्लाह की लानत हो'।"

19 यूँ सोचते सोचते उन्हें आख़िरकार यह तरकीब सूझी, "कुछ देर के बाद यहाँ सैला में रब की सालाना ईद मनाई जाएगी। सैला बैत-एल के शिमाल में, लबूना के जुनूब में और उस रास्ते के मशरिक़ में है जो बैत-एल से सिकम तक ले जाता है। 20 अब बिनयमीनी मर्दों के लिए हमारा मश्वरा है कि ईद के दिनों में अंगूर के बाग़ों में छुप कर घात में बैठ जाएँ। 21 जब लड़कियाँ लोकनाच के लिए सैला से निकलेंगी तो फिर बाग़ों से निकल कर उन पर झपट पड़ना। हर आदमी एक लड़की को पकड़ कर उसे अपने घर ले जाए। 22 जब उन के बाप और भाई हमारे पास आ कर आप की शिकायत करेंगे तो हम उन से कहेंगे, 'बिनयमीनियों पर तरस खाएँ, क्यूँकि जब हम ने यबीस पर फ़त्ह पाई तो हम उन के लिए काफ़ी औरतें हासिल न कर सके। आप बेक़ुसूर हैं, क्यूँकि

आप ने उन्हें अपनी बेटियों को इरादतन तो नहीं
दिया'।" 23 बिनयमीनियों ने बुज़ुर्गों की इस हिदायत
पर अमल किया। ईद के दिनों में जब लड़कियाँ नाच
रही थीं तो बिनयमीनियों ने उतनी पकड़ लीं कि उन
की कमी पूरी हो गई। फिर वह उन्हें अपने क़बाइली
इलाक़े में ले गए और शहरों को दुबारा तामीर करके
उन में बसने लगे। 24 बाक़ी इस्राईली भी वहाँ से चले
गए। हर एक अपने क़बाइली इलाक़े में वापस चला
गया। 25 उस ज़माने में इस्राईल में कोई बादशाह नहीं
था। हर एक वही कुछ करता जो उसे मुनासिब लगता
था।

रूत

इलीमलिक मोआब चला जाता है

1 1–2 उन दिनों जब क़ाज़ी क़ौम की राहनुमाई
किया करते थे तो इस्राईल में काल पड़ा।
यहूदाह के शहर बैत-लहम में एक इफ़्राती आदमी
रहता था जिस का नाम इलीमलिक था। काल की
वजह से वह अपनी बीवी नओमी और अपने दो बेटों
महलोन और किल्योन को ले कर मुल्क-ए-मोआब में
जा बसा।
3 लेकिन कुछ देर के बाद इलीमलिक फ़ौत हो गया,
और नओमी अपने दो बेटों के साथ अकेली रह गई।
4 महलोन और किल्योन ने मोआब की दो औरतों से
शादी कर ली। एक का नाम उर्फ़ा था और दूसरी का
रूत। लेकिन तक़रीबन दस साल के बाद 5 दोनों बेटे
भी जाँ-ब-हक़ हो गए। अब नओमी का न शौहर और
न बेटे ही रहे थे।

नओमी रूत के साथ वापस चली जाती है

6–7 एक दिन नओमी को मुल्क-ए-मोआब में ख़बर
मिली कि रब अपनी क़ौम पर रहम करके उसे दुबारा
अच्छी फ़सलें दे रहा है। तब वह अपने वतन यहूदाह
के लिए रवाना हुई। उर्फ़ा और रूत भी साथ चलीं।
जब वह उस रास्ते पर आ गईं जो यहूदाह तक
पहुँचाता है 8 तो नओमी ने अपनी बहूओं से कहा,
"अब अपने माँ-बाप के घर वापस चली जाएँ। रब
आप पर उतना रहम करे जितना आप ने मरहूमों और
मुझ पर किया है। 9 वह आप को नए घर और नए
शौहर मुहय्या करके सुकून दे।"
यह कह कर उस ने उन्हें बोसा दिया। दोनों रो पड़ीं
10 और एतिराज़ किया, "हरगिज़ नहीं, हम आप के
साथ आप की क़ौम के पास जाएँगी।" 11 लेकिन
नओमी ने इसरार किया, "बेटियो, बस करें और
अपने अपने घर वापस चली जाएँ। अब मेरे साथ
जाने का क्या फ़ाइदा? मुझ से तो मज़ीद कोई बेटा
पैदा नहीं होगा जो आप का शौहर बन सके। 12 नहीं
बेटियो, वापस चली जाएँ। मैं तो इतनी बूढ़ी हो चुकी
हूँ कि दुबारा शादी नहीं कर सकती। और अगर इस
की उम्मीद भी होती बल्कि मेरी शादी आज रात को
होती और मेरे हाँ बेटे पैदा होते 13 तो क्या आप उन
के बालिग़ हो जाने तक इन्तिज़ार कर सकतीं? क्या
आप उस वक़्त तक किसी और से शादी करने से
इन्कार करतीं? नहीं, बेटियो। रब ने अपना हाथ मेरे
ख़िलाफ़ उठाया है, तो आप इस लानत की ज़द में
क्यूँ आएँ?"
14 तब उर्फ़ा और रूत दुबारा रो पड़ीं। उर्फ़ा ने
अपनी सास को चूम कर अलविदा कहा, लेकिन
रूत नओमी के साथ लिपटी रही। 15 नओमी ने उसे
समझाने की कोशिश की, "देखें, उर्फ़ा अपनी क़ौम
और अपने देवताओं के पास वापस चली गई है।
अब आप भी ऐसा ही करें।"
16 लेकिन रूत ने जवाब दिया, "मुझे आप को छोड़
कर वापस जाने पर मज्बूर न कीजिए। जहाँ आप
जाएँगी मैं जाऊँगी। जहाँ आप रहेंगी वहाँ मैं भी रहूँगी।
आप की क़ौम मेरी क़ौम और आप का ख़ुदा मेरा ख़ुदा
है। 17 जहाँ आप मरेंगी वहीं मैं मरूँगी और वहीं दफ़न
हो जाऊँगी। सिर्फ़ मौत ही मुझे आप से अलग कर
सकती है। अगर मेरा यह वादा पूरा न हो तो अल्लाह
मुझे सख़्त सज़ा दे!"
18 नओमी ने जान लिया कि रूत का साथ जाने का
पक्का इरादा है, इस लिए वह ख़ामोश हो गई और उसे
समझाने से बाज़ आई। 19 वह चल पड़ीं और चलते
चलते बैत-लहम पहुँच गईं। जब दाख़िल हुईं तो पूरे
शहर में हलचल मच गई। औरतें कहने लगीं, "क्या
यह नओमी नहीं है?"

20 नओमी ने जवाब दिया, “अब मुझे नओमी [w]मत
कहना बल्कि मारा, [x]क्यूँकि क़ादिर-ए-मुतलक़ ने मुझे
सख़्त मुसीबत में डाल दिया है। 21 यहाँ से जाते वक़्त
मेरे हाथ भरे हुए थे, लेकिन अब रब मुझे ख़ाली हाथ
वापस ले आया है। चुनाँचे मुझे नओमी मत कहना।
रब ने ख़ुद मेरे ख़िलाफ़ गवाही दी है, क़ादिर-ए-
मुतलक़ ने मुझे इस मुसीबत में डाला है।”
22 जब नओमी अपनी मोआबी बहू के साथ बैत-
लहम पहुँची तो जौ की फ़सल की कटाई शुरू हो
चुकी थी।

रूत की बोअज़ से मुलाक़ात

2 1 बैत-लहम में नओमी के मरहूम शौहर का
रिश्तेदार रहता था जिस का नाम बोअज़ था।
वह असर-ओ-रसूख़ रखता था, और उस की ज़मीनें
थीं।
2 एक दिन रूत ने अपनी सास से कहा, “मैं खेतों में
जा कर फ़सल की कटाई से बची हुई बालें चुन लूँ।
कोई न कोई तो मुझे इस की इजाज़त देगा।” नओमी
ने जवाब दिया, “ठीक है बेटी, जाएँ।” 3 रूत किसी
खेत में गई और मज़दूरों के पीछे पीछे चलती हुई
बची हुई बालें चुनने लगी। उसे मालूम न था कि खेत
का मालिक सुसर का रिश्तेदार बोअज़ है।
4 इतने में बोअज़ बैत-लहम से पहुँचा। उस ने अपने
मज़दूरों से कहा, “रब आप के साथ हो।” उन्हों ने
जवाब दिया, “और रब आप को भी बरकत दे!”
5 फिर बोअज़ ने मज़दूरों के इंचार्ज से पूछा, “उस
जवान औरत का मालिक कौन है?” 6 आदमी ने
जवाब दिया, “यह मोआबी औरत नओमी के साथ
मुल्क-ए-मोआब से आई है। 7 इस ने मुझ से मज़दूरों
के पीछे चल कर बची हुई बालें चुनने की इजाज़त
ली। यह थोड़ी देर झोंपड़ी के साय में आराम करने
के सिवा सुब्ह से ले कर अब तक काम में लगी रही
है।”
8 यह सुन कर बोअज़ ने रूत से बात की, “बेटी,
मेरी बात सुनें! किसी और खेत में बची हुई बालें चुनने
के लिए न जाएँ बल्कि यहीं मेरी नौकरानियों के साथ
रहें। 9 खेत के उस हिस्से पर ध्यान दें जहाँ फ़सल
की कटाई हो रही है और नौकरानियों के पीछे पीछे
चलती रहें। मैं ने आदमियों को आप को छेड़ने से
मना किया है। जब भी आप को प्यास लगे तो उन
बर्तनों से पानी पीना जो आदमियों ने कुएँ से भर रखे
हैं।”
10 रूत मुँह के बल झुक गई और बोली, “मैं इस
लाइक़ नहीं कि आप मुझ पर इतनी मेहरबानी करें।
मैं तो परदेसी हूँ। आप क्यूँ मेरी क़दर करते हैं?”
11 बोअज़ ने जवाब दिया, “मुझे वह कुछ बताया गया
है जो आप ने अपने शौहर की वफ़ात से ले कर आज
तक अपनी सास के लिए किया है। आप अपने माँ-
बाप और अपने वतन को छोड़ कर एक क़ौम में
बसने आई हैं जिसे पहले से नहीं जानती थीं। 12 आप
रब इस्राईल के ख़ुदा के परों तले पनाह लेने आई
हैं। अब वह आप को आप की नेकी का पूरा अज्र
दे।” 13 रूत ने कहा, “मेरे आक़ा, अल्लाह करे कि मैं
आइन्दा भी आप की मन्ज़ूर-ए-नज़र रहूँ। गो मैं आप
की नौकरानियों की हैसियत भी नहीं रखती तो भी
आप ने मुझ से शफ़क़त भरी बातें करके मुझे तसल्ली
दी है।”
14 खाने के वक़्त बोअज़ ने रूत को बुला कर कहा,
“इधर आ कर रोटी खाएँ और अपना नवाला सिरके
में डुबो दें।” रूत उस के मज़दूरों के साथ बैठ गई,
और बोअज़ ने उसे जौ के भुने हुए दाने दे दिए।
रूत ने जी भर कर खाना खाया। फिर भी कुछ बच
गया। 15 जब वह काम जारी रखने के लिए उठी तो
बोअज़ ने हुक्म दिया, “उसे पूलों के दरमियान भी
बालें जमा करने दो, और अगर वह ऐसा करे तो उस
की बेइज़्ज़ती मत करना। 16 न सिर्फ़ यह बल्कि काम
करते वक़्त इधर उधर पूलों की कुछ बालें ज़मीन पर

[w]ख़ुशगवार, ख़ुशी वाली।

[x]कड़वी।

गिरने दो। जब वह उन्हें जमा करने आए तो उसे मत
झिड़कना!”
17 रूत ने खेत में शाम तक काम जारी रखा। जब
उस ने बालों को कूट लिया तो दानों के तक़रीबन 13
किलोग्राम निकले। 18 फिर वह सब कुछ उठा कर
अपने घर वापस ले आई और सास को दिखाया।
साथ साथ उस ने उसे वह भुने हुए दाने भी दिए जो
दोपहर के खाने से बच गए थे। 19 नओमी ने पूछा,
“आप ने यह सब कुछ कहाँ से जमा किया? बताएँ,
आप कहाँ थीं? अल्लाह उसे बरकत दे जिस ने आप
की इतनी क़दर की है!”
रूत ने कहा, “जिस आदमी के खेत में मैं ने आज
काम किया उस का नाम बोअज़ है।” 20 नओमी
पुकार उठी, “रब उसे बरकत दे! वह तो हमारा
क़रीबी रिश्तेदार है, और शरीअत के मुताबिक़ उस
का हक़ है कि वह हमारी मदद करे। अब मुझे मालूम
हुआ है कि अल्लाह हम पर और हमारे मरहूम शौहरों
पर रहम करने से बाज़ नहीं आया!”
21 रूत बोली, “उस ने मुझ से यह भी कहा कि
कहीं और न जाना बल्कि कटाई के इख़तिताम तक
मेरे मज़दूरों के पीछे पीछे बालें जमा करना।”
22 नओमी ने जवाब में कहा, “बहुत अच्छा। बेटी,
ऐसा ही करें। उस की नौकरानियों के साथ रहने का
यह फ़ाइदा है कि आप महफ़ूज़ रहेंगी। किसी और
के खेत में जाएँ तो हो सकता है कि कोई आप को
तंग करे।”
23 चुनाँचे रूत जौ और गन्दुम की कटाई के पूरे
मौसम में बोअज़ की नौकरानियों के पास जाती और
बची हुई बालें चुनती। शाम को वह अपनी सास के
घर वापस चली जाती थी।

रूत की शादी की कोशिशें

3 1 एक दिन नओमी रूत से मुख़ातिब हुई, “बेटी,
मैं आप के लिए घर का बन्द-ओ-बस्त करना
चाहती हूँ, ऐसी जगह जहाँ आप की ज़रूरियात
आइन्दा भी पूरी होती रहेंगी। 2 अब देखें, जिस
आदमी की नौकरानियों के साथ आप ने बालें चुनी हैं
वह हमारा क़रीबी रिश्तेदार है। आज शाम को बोअज़
गाहने की जगह पर जौ फटकेगा। 3 तो सुन लें, अच्छी
तरह नहा कर ख़ुश्बूदार तेल लगा लें और अपना सब
से ख़ूबसूरत लिबास पहन लें। फिर गाहने की जगह
जाएँ। लेकिन उसे पता न चले कि आप आई हैं। जब
वह खाने-पीने से फ़ारिग़ हो जाएँ 4 तो देख लें कि
बोअज़ सोने के लिए कहाँ लेट जाता है। फिर जब
वह सो जाएगा तो वहाँ जाएँ और कम्बल को उस के
पैरों से उतार कर उन के पास लेट जाएँ। बाक़ी जो
कुछ करना है वह आप को उसी वक़्त बताएगा।”
5 रूत ने जवाब दिया, “ठीक है। जो कुछ भी आप
ने कहा है मैं करूँगी।” 6 वह अपनी सास की हिदायत
के मुताबिक़ तय्यार हुई और शाम के वक़्त गाहने की
जगह पर पहुँची। 7 वहाँ बोअज़ खाने-पीने और ख़ुशी
मनाने के बाद जौ के ढेर के पास लेट कर सो गया।
फिर रूत चुपके से उस के पास आई। उस के पैरों से
कम्बल हटा कर वह उन के पास लेट गई।
8 आधी रात को बोअज़ घबरा गया। टटोल टटोल
कर उसे पता चला कि पैरों के पास औरत पड़ी है।
9 उस ने पूछा, “कौन है?” रूत ने जवाब दिया, “आप
की ख़ादिमा रूत। मेरी एक गुज़ारिश है। चूँकि आप
मेरे क़रीबी रिश्तेदार हैं इस लिए आप का हक़ है
कि मेरी ज़रूरियात पूरी करें। मेहरबानी करके अपने
लिबास का दामन मुझ पर बिछा कर ज़ाहिर करें कि
मेरे साथ शादी करेंगे।”
10 बोअज़ बोला, “बेटी, रब आप को बरकत दे!
अब आप ने अपने सुसराल से वफ़ादारी का पहले
की निस्बत ज़्यादा इज़हार किया है, क्यूँकि आप
जवान आदमियों के पीछे न लगीं, ख़्वाह ग़रीब हों
या अमीर। 11 बेटी, अब फ़िक्र न करें। मैं ज़रूर आप
की यह गुज़ारिश पूरी करूँगा। आख़िर तमाम मक़ामी
लोग जान गए हैं कि आप शरीफ़ औरत हैं। 12 आप
की बात सच है कि मैं आप का क़रीबी रिश्तेदार हूँ
और यह मेरा हक़ है कि आप की ज़रूरियात पूरी
करूँ। लेकिन एक और आदमी है जिस का आप से

ज़्यादा क़रीबी रिश्ता है। 13 रात के लिए यहाँ ठहरें!
कल मैं उस आदमी से बात करूँगा। अगर वह आप
से शादी करके रिश्तेदारी का हक़ अदा करना चाहे
तो ठीक है। अगर नहीं तो रब की क़सम, मैं यह ज़रूर
करूँगा। आप सुब्ह के वक़्त तक यहीं लेटी रहें।"

14 चुनाँचे रूत बोअज़ के पैरों के पास लेटी रही।
लेकिन वह सुब्ह मुँह अंधेरे उठ कर चली गई ताकि
कोई उसे पहचान न सके, क्यूँकि बोअज़ ने कहा था,
"किसी को पता न चले कि कोई औरत यहाँ गाहने
की जगह पर मेरे पास आई है।" 15 रूत के जाने से
पहले बोअज़ बोला, "अपनी चादर बिछा दें!" फिर
उस ने कोई बर्तन छः दफ़ा जौ के दानों से भर कर
चादर में डाल दिया और उसे रूत के सर पर रख
दिया। फिर वह शहर में वापस चला गया।

16 जब रूत घर पहुँची तो सास ने पूछा, "बेटी, वक़्त
कैसा रहा?" रूत ने उसे सब कुछ सुनाया जो बोअज़
ने जवाब में किया था। 17 रूत बोली, "जौ के यह
दाने भी उस की तरफ़ से हैं। वह नहीं चाहता था कि
मैं ख़ाली हाथ आप के पास वापस आऊँ।" 18 यह
सुन कर नओमी ने रूत को तसल्ली दी, "बेटी, जब
तक कोई नतीजा न निकले यहाँ ठहर जाएँ। अब यह
आदमी आराम नहीं करेगा बल्कि आज ही मुआमले
का हल निकालेगा।"

4 1 बोअज़ शहर के दरवाज़े के पास जा कर बैठ
गया जहाँ बुज़ुर्ग फ़ैसले किया करते थे। कुछ देर
के बाद वह रिश्तेदार वहाँ से गुज़रा जिस का ज़िक्र
बोअज़ ने रूत से किया था। बोअज़ उस से मुख़ातिब
हुआ, "दोस्त, इधर आएँ। मेरे पास बैठ जाएँ।"

रिश्तेदार उस के पास बैठ गया 2 तो बोअज़ ने शहर
के दस बुज़ुर्गों को भी साथ बिठाया। 3 फिर उस ने
रिश्तेदार से बात की, "नओमी मुल्क-ए-मोआब से
वापस आ कर अपने शौहर इलीमलिक की ज़मीन
फ़रोख़्त करना चाहती है। 4 यह ज़मीन हमारे ख़ानदान
का मौरूसी हिस्सा है, इस लिए मैं ने मुनासिब समझा
कि आप को इत्तिला दूँ ताकि आप यह ज़मीन ख़रीद
लें। बैत-लहम के बुज़ुर्ग और साथ बैठे राहनुमा इस के
गवाह होंगे। लाज़िम है कि यह ज़मीन हमारे ख़ानदान
का हिस्सा रहे, इस लिए बताएँ कि क्या आप इसे
ख़रीद कर छुड़ाएँगे? आप का सब से क़रीबी रिश्ता
है, इस लिए यह आप ही का हक़ है। अगर आप
ज़मीन ख़रीदना न चाहें तो यह मेरा हक़ बनेगा।"
रिश्तेदार ने जवाब दिया, "ठीक है, मैं इसे ख़रीद
कर छुड़ाऊँगा।" 5 फिर बोअज़ बोला, "अगर आप
नओमी से ज़मीन ख़रीदें तो आप को उस की मोआबी
बहू रूत से शादी करनी पड़ेगी ताकि मरहूम शौहर की
जगह औलाद पैदा करें जो उस का नाम रख कर यह
ज़मीन सँभालें।"

6 यह सुन कर रिश्तेदार ने कहा, "फिर मैं इसे
ख़रीदना नहीं चाहता, क्यूँकि ऐसा करने से मेरी
मौरूसी ज़मीन को नुक़्सान पहुँचेगा। आप ही इसे
ख़रीद कर छुड़ाएँ।"

7 उस ज़माने में अगर ऐसे किसी मुआमले में कोई
ज़मीन ख़रीदने का अपना हक़ किसी दूसरे को
मुन्तक़िल करना चाहता था तो वह अपनी चप्पल
उतार कर उसे दे देता था। इस तरीक़े से फ़ैसला
क़ानूनी तौर पर तै हो जाता था। 8 चुनाँचे रूत के
ज़्यादा क़रीबी रिश्तेदार ने अपनी चप्पल उतार कर
बोअज़ को दे दी और कहा, "आप ही ज़मीन को
ख़रीद लें।" 9 तब बोअज़ ने बुज़ुर्गों और बाक़ी लोगों
के सामने एलान किया, "आज आप गवाह हैं कि मैं ने
नओमी से सब कुछ ख़रीद लिया है जो उस के मरहूम
शौहर इलीमलिक और उस के दो बेटों किल्योन और
महलोन का था। 10 साथ ही मैं ने महलोन की बेवा
मोआबी औरत रूत से शादी करने का वादा किया
है ताकि महलोन के नाम से बेटा पैदा हो। यूँ मरहूम
की मौरूसी ज़मीन ख़ानदान से छिन नहीं जाएगी,
और उस का नाम हमारे ख़ानदान और बैत-लहम के
बाशिन्दों में क़ाइम रहेगा। आज आप सब गवाह हैं!"

11 बुज़ुर्गों और शहर के दरवाज़े पर बैठे दीगर मर्दों
ने इस की तस्दीक़ की, "हम गवाह हैं! रब आप
के घर में आने वाली इस औरत को उन बरकतों
से नवाज़े जिन से उस ने राख़िल और लियाह को

नवाज़ा, जिन से तमाम इस्राईली निकले। रब करे कि
आप की दौलत और इज़्ज़त इफ़्राता यानी बैत-लहम
में बढ़ती जाए। 12 वह आप और आप की बीवी को
उतनी औलाद बख़्शे जितनी तमर और यहूदाह के
बेटे फ़ारस के ख़ानदान को बख़्शी थी।”

13 चुनाँचे रूत बोअज़ की बीवी बन गई। और रब
की मर्ज़ी से रूत शादी के बाद हामिला हुई। जब उस
के बेटा हुआ 14 तो बैत-लहम की औरतों ने नओमी
से कहा, “रब की तम्जीद हो! आप को यह बच्चा
अता करने से उस ने ऐसा शख़्स मुहय्या किया है
जो आप का ख़ानदान सँभालेगा । अल्लाह करे कि
उस की शुहरत पूरे इस्राईल में फैल जाए। 15 उस से
आप ताज़ादम हो जाएँगी, और बुढ़ापे में वह आप
को सहारा देगा। क्यूँकि आप की बहू जो आप को
प्यार करती है और जिस की क़दर-ओ-क़ीमत सात
बेटों से बढ़ कर है उसी ने उसे जन्म दिया है!”

16 नओमी बच्चे को अपनी गोद में बिठा कर उसे
पालने लगी। 17 पड़ोसी औरतों ने उस का नाम ओबेद
यानी ख़िदमत करने वाला रखा। उन्हों ने कहा,
“नओमी के हाँ बेटा पैदा हुआ है!”

ओबेद दाऊद बादशाह के बाप यस्सी का बाप
था। 18 ज़ैल में फ़ारस का दाऊद तक नसबनामा है
: फ़ारस, हस्रोन, 19 राम, अम्मीनदाब, 20 नह्सोन,
सल्मोन, 21 बोअज़, ओबेद, 22 यस्सी और दाऊद।

१-समूएल

हन्ना अल्लाह से बच्चा माँगती है

1 [1] इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े के शहर रामाताइम-
सोफ़ीम यानी रामा में एक इफ़्राईमी रहता था
जिस का नाम इल्क़ाना बिन यरोहाम बिन इलीहू बिन
तूख़ू बिन सूफ़ था। [2] इल्क़ाना की दो बीवियाँ थीं।
एक का नाम हन्ना था और दूसरी का फ़निन्ना। फ़निन्ना
के बच्चे थे, लेकिन हन्ना बेऔलाद थी।

[3] इल्क़ाना हर साल अपने ख़ानदान समेत सफ़र
करके सैला के मक़्दिस के पास जाता ताकि वहाँ
रब्ब-उल-अफ़्वाज के हुज़ूर क़ुर्बानी गुज़राने और उस
की परस्तिश करे। उन दिनों में एली इमाम के दो
बेटे हुफ़्नी और फ़ीन्हास सैला में इमाम की ख़िदमत
अन्जाम देते थे। [4] हर साल इल्क़ाना अपनी क़ुर्बानी
पेश करने के बाद क़ुर्बानी के गोश्त के टुकड़े फ़निन्ना
और उस के बेटे-बेटियों में तक़्सीम करता। [5] हन्ना को
भी गोश्त मिलता, लेकिन जहाँ दूसरों को एक हिस्सा
मिलता वहाँ उसे दो हिस्से मिलते थे। क्यूँकि इल्क़ाना
उस से बहुत मुहब्बत रखता था, अगरचे अब तक रब
की मर्ज़ी नहीं थी कि हन्ना के बच्चे पैदा हों। [6] फ़निन्ना
की हन्ना से दुश्मनी थी, इस लिए वह हर साल हन्ना
के बाँझपन का मज़ाक़ उड़ा कर उसे तंग करती थी।
[7] साल-ब-साल ऐसा ही हुआ करता था। जब भी वह
रब के मक़्दिस के पास जाते तो फ़निन्ना हन्ना को इतना
तंग करती कि वह उस की बातें सुन सुन कर रो पड़ती
और खा पी न सकती। [8] फिर इल्क़ाना पूछता, "हन्ना,
तू क्यूँ रो रही है? तू खाना क्यूँ नहीं खा रही? उदास
होने की क्या ज़रूरत? मैं तो हूँ। क्या यह दस बेटों
से कहीं बेहतर नहीं?"

[9] एक दिन जब वह सैला में थे तो हन्ना खाने-पीने
के बाद दुआ करने के लिए उठी। एली इमाम रब
के मक़्दिस के दरवाज़े के पास कुर्सी पर बैठा था।
[10] हन्ना शदीद परेशानी के आलम में फूट फूट कर रोने
लगी। रब से दुआ करते करते [11] उस ने क़सम खाई,
"ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, मेरी बुरी हालत पर नज़र डाल
कर मुझे याद कर! अपनी ख़ादिमा को मत भूलना
बल्कि बेटा अता फ़रमा! अगर तू ऐसा करे तो मैं उसे
तुझे वापस कर दूँगी। ऐ रब, उस की पूरी ज़िन्दगी
तेरे लिए मख़्सूस होगी! इस का निशान यह होगा कि
उस के बाल कभी नहीं कटवाए जाएंगे।"

[12] हन्ना बड़ी देर तक यूँ दुआ करती रही। एली उस
के मुँह पर ग़ौर करने लगा [13] तो देखा कि हन्ना के
होंट तो हिल रहे हैं लेकिन आवाज़ सुनाई नहीं दे
रही, क्यूँकि हन्ना दिल ही दिल में दुआ कर रही थी।
लेकिन एली को ऐसा लग रहा था कि वह नशे में धुत
है, [14] इस लिए उस ने उसे झिड़कते हुए कहा, "तू
कब तक नशे में धुत रहेगी? मै पीने से बाज़ आ!"

[15] हन्ना ने जवाब दिया, "मेरे आक़ा, ऐसी कोई बात
नहीं है। मैं ने न मै, न कोई और नशाआवर चीज़ चखी
है। बात यह है कि मैं बड़ी रंजीदा हूँ, इस लिए रब
के हुज़ूर अपने दिल की आह-ओ-ज़ारी [y]उंडेल दी है।
[16] यह न समझें कि मैं निकम्मी औरत हूँ, बल्कि मैं
बड़े ग़म और अज़ियत में दुआ कर रही थी।"

[17] यह सुन कर एली ने जवाब दिया, "सलामती से
अपने घर चली जा! इस्राईल का ख़ुदा तेरी दरख़्वास्त
पूरी करे।" [18] हन्ना ने कहा, "अपनी ख़ादिमा पर आप
की नज़र-ए-करम हो।" फिर उस ने जा कर कुछ
खाया, और उस का चिहरा उदास न रहा।

---

[y]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अपनी जान उंडेल दी है।

समूएल की पैदाइश और बचपन

19 अगले दिन पूरा ख़ानदान सुब्ह-सवेरे उठा। उन्हों
ने मक़्दिस में जा कर रब की परस्तिश की, फिर रामा
वापस चले गए जहाँ उन का घर था। और रब ने हन्ना
को याद करके उस की दुआ सुनी। 20 इल्क़ाना और
हन्ना के बेटा पैदा हुआ। हन्ना ने उस का नाम समूएल
यानी 'उस का नाम अल्लाह है' रखा, क्यूँकि उस ने
कहा, "मैं ने उसे रब से माँगा।"
21 अगले साल इल्क़ाना ख़ानदान के साथ मामूल
के मुताबिक़ सैला गया ताकि रब को सालाना क़ुर्बानी
पेश करे और अपनी मन्नत पूरी करे। 22 लेकिन हन्ना
न गई। उस ने अपने शौहर से कहा, "जब बच्चा दूध
पीना छोड़ देगा तब ही मैं उसे ले कर रब के हुज़ूर
पेश करूँगी। उस वक़्त से वह हमेशा वहीं रहेगा।"
23 इल्क़ाना ने जवाब दिया, "वह कुछ कर जो तुझे
मुनासिब लगे। बच्चे का दूध छुड़ाने तक यहाँ रह।
लेकिन रब अपना कलाम क़ाइम रखे।" चुनाँचे हन्ना
बच्चे के दूध छुड़ाने तक घर में रही।
24 जब समूएल ने दूध पीना छोड़ दिया तो हन्ना उसे
सैला में रब के मक़्दिस के पास ले गई, गो बच्चा अभी
छोटा था। क़ुर्बानियों के लिए उस के पास तीन बैल,
मैदे के तक़रीबन 16 किलोग्राम और मै की मश्क थी।
25 बैल को क़ुर्बानगाह पर चढ़ाने के बाद इल्क़ाना
और हन्ना बच्चे को एली के पास ले गए। 26 हन्ना ने
कहा, "मेरे आक़ा, आप की हयात की क़सम, मैं
वही औरत हूँ जो कुछ साल पहले यहाँ आप की
मौजूदगी में खड़ी दुआ कर रही थी। 27 उस वक़्त मैं
ने इल्तिमास की थी कि रब मुझे बेटा अता करे, और
रब ने मेरी सुनी है। 28 चुनाँचे अब मैं अपना वादा पूरा
करके बेटे को रब को वापस कर देती हूँ। उम्र भर
वह रब के लिए मख़्सूस होगा।" तब उस ने रब के
हुज़ूर सिज्दा किया।

हन्ना का गीत

2 1 वहाँ हन्ना ने यह गीत गाया,
"मेरा दिल रब की ख़ुशी मनाता है, क्यूँकि उस
ने मुझे क़ुव्वत अता की है। मेरा मुँह दिलेरी से अपने
दुश्मनों के ख़िलाफ़ बात करता है, क्यूँकि मैं तेरी
नजात के बाइस बाग़ बाग़ हूँ।

2 रब जैसा क़ुद्दूस कोई नहीं है, तेरे सिवा कोई नहीं
है। हमारे ख़ुदा जैसी कोई चटान नहीं है। 3 डींगें मारने
से बाज़ आओ! गुस्ताख़ बातें मत बको! क्यूँकि रब
ऐसा ख़ुदा है जो सब कुछ जानता है, वह तमाम
आमाल को तोल कर परखता है। 4 अब बड़ों की
कमानें टूट गई हैं जबकि गिरने वाले क़ुव्वत से
कमरबस्ता हो गए हैं। 5 जो पहले सेर थे वह रोटी
मिलने के लिए मज़दूरी करते हैं जबकि जो पहले
भूके थे वह सेर हो गए हैं। बेऔलाद औरत के सात
बच्चे पैदा हुए हैं जबकि वाफ़िर बच्चों की माँ मुरझा
रही है।

6 रब एक को मरने देता और दूसरे को ज़िन्दा होने
देता है। वह एक को पाताल में उतरने देता और
दूसरे को वहाँ से निकल आने देता है। 7 रब ही ग़रीब
और अमीर बना देता है, वही पस्त करता और वही
सरफ़राज़ करता है। 8 वह ख़ाक में दबे आदमी को
खड़ा करता है और राख में लेटे ज़रूरतमन्द को
सरफ़राज़ करता है, फिर उन्हें रईसों के साथ इज़्ज़त
की कुर्सी पर बिठा देता है। क्यूँकि दुनिया की बुन्यादें
रब की हैं, और उसी ने उन पर ज़मीन रखी है।

9 वह अपने वफ़ादार पैरोकारों के पाँओ महफ़ूज़
रखेगा जबकि शरीर तारीकी में चुप हो जाएंगे। क्यूँकि
इन्सान अपनी ताक़त से कामयाब नहीं होता। 10 जो
रब से लड़ने की जुरअत करें वह पाश पाश हो जाएंगे।
रब आसमान से उन के ख़िलाफ़ गरज कर दुनिया
की इन्तिहा तक सब की अदालत करेगा। वह अपने

बादशाह को तक़वियत और अपने मसह किए हुए
ख़ादिम को क़ुव्वत अता करेगा।”
11 फिर इल्क़ाना और हन्ना रामा में अपने घर वापस
चले गए। लेकिन उन का बेटा एली इमाम के पास
रहा और मक़्दिस में रब की ख़िदमत करने लगा।

एली के बेटों की बेदीन ज़िन्दगी

12 लेकिन एली के बेटे बदमआश थे। न वह रब को
जानते थे, 13 न इमाम की हैसियत से अपने फ़राइज़
सहीह तौर पर अदा करते थे। क्यूँकि जब भी कोई
आदमी अपनी क़ुर्बानी पेश करके रिफ़ाक़ती खाने के
लिए गोश्त उबालता तो एली के बेटे अपने नौकर को
वहाँ भेज देते। यह नौकर सिहशाख़ा काँटा 14 देग में
डाल कर गोश्त का हर वह टुकड़ा अपने मालिकों
के पास ले जाता जो काँटे से लग जाता। यही उन
का तमाम इस्राईलियों के साथ सुलूक था जो सैला में
क़ुर्बानियाँ चढ़ाने आते थे। 15 न सिर्फ़ यह बल्कि कई
बार नौकर उस वक़्त भी आ जाता जब जानवर की
चर्बी अभी क़ुर्बानगाह पर जलानी होती थी। फिर वह
तक़ाज़ा करता, “मुझे इमाम के लिए कच्चा गोश्त दे
दो! उसे उबला गोश्त मन्ज़ूर नहीं बल्कि सिर्फ़ कच्चा
गोश्त, क्यूँकि वह उसे भूनना चाहता है।” 16 क़ुर्बानी
पेश करने वाला एतिराज़ करता, “पहले तो रब के
लिए चर्बी जलाना है, इस के बाद ही जो जी चाहे ले
लें।” फिर नौकर बदतमीज़ी करता, “नहीं, उसे अभी
दे दो, वर्ना मैं ज़बरदस्ती ले लूँगा।” 17 इन जवान
इमामों का यह गुनाह रब की नज़र में निहायत संगीन
था, क्यूँकि वह रब की क़ुर्बानियाँ हक़ीर जानते थे।

माँ-बाप समूएल से मिलने आते हैं

18 लेकिन छोटा समूएल रब के हुज़ूर ख़िदमत करता
रहा। उसे भी दूसरे इमामों की तरह कतान का
बालापोश दिया गया था। 19 हर साल जब उस की
माँ ख़ावन्द के साथ क़ुर्बानी पेश करने के लिए सैला
आती तो वह नया चोग़ा सी कर उसे दे देती। 20 और
रवाना होने से पहले एली समूएल के माँ-बाप को
बरकत दे कर इल्क़ाना से कहता, “हन्ना ने रब से बच्चा
माँग लिया और जब मिला तो उसे रब को वापस कर
दिया। अब रब आप को इस बच्चे की जगह मज़ीद बच्चे
दे।” इस के बाद वह अपने घर चले जाते। 21 और
वाक़ई, रब ने हन्ना को मज़ीद तीन बेटे और दो बेटियाँ
अता कीं। यह बच्चे घर में रहे, लेकिन समूएल रब के
हुज़ूर ख़िदमत करते करते जवान हो गया।

एली के बेटे बाप की नहीं सुनते

22 एली उस वक़्त बहुत बूढ़ा हो चुका था। बेटों
का तमाम इस्राईल के साथ बुरा सुलूक उस के कानों
तक पहुँच गया था, बल्कि यह भी कि बेटे उन औरतों
से नाजाइज़ ताल्लुक़ात रखते हैं जो मुलाक़ात के ख़ैमे
के दरवाज़े पर ख़िदमत करती हैं। 23 उस ने उन्हें
समझाया भी था, “आप ऐसी हरकतें क्यूँ कर रहे
हैं? मुझे तमाम लोगों से आप के शरीर कामों की
ख़बरें मिलती रहती हैं। 24 बेटो, ऐसा मत करना! जो
बातें आप के बारे में रब की क़ौम में फैल गई हैं
वह अच्छी नहीं। 25 देखें, अगर इन्सान किसी दूसरे
इन्सान का गुनाह करे तो हो सकता है अल्लाह दोनों
का दरमियानी बन कर क़ुसूरवार शख़्स पर रहम करे।
लेकिन अगर कोई रब का गुनाह करे तो फिर कौन
उस का दरमियानी बन कर उसे बचाएगा?”
लेकिन एली के बेटों ने बाप की न सुनी, क्यूँकि
रब की मर्ज़ी थी कि उन्हें सज़ा-ए-मौत मिल जाए।
26 लेकिन समूएल उन से फ़र्क़ था। जितना वह बड़ा
होता गया उतनी उस की रब और इन्सान के सामने
क़बूलियत बढ़ती गई।

एली के घराने को सज़ा मिलने की पेशगोई

27 एक दिन एक नबी एली के पास आया और
कहा, “रब फ़रमाता है, ‘क्या जब तेरा बाप हारून
और उस का घराना मिस्र के बादशाह के ग़ुलाम थे
तो मैं ने अपने आप को उस पर ज़ाहिर न किया?
28 गो इस्राईल के बारह क़बीले थे लेकिन मैं ने मुक़र्रर
किया कि उसी के घराने के मर्द मेरे इमाम बन कर

क़ुर्बानगाह के सामने ख़िदमत करें, बख़ूर जलाएँ और
मेरे हुज़ूर इमाम का बालापोश पहनें। साथ साथ मैं ने
उन्हें क़ुर्बानगाह पर जलने वाली क़ुर्बानियों का एक
हिस्सा मिलने का हक़ दे दिया। 29 तो फिर तुम लोग
ज़बह और ग़ल्ला की वह क़ुर्बानियाँ हक़ीर क्यूँ जानते
हो जो मुझे ही पेश की जाती हैं और जो मैं ने अपनी
सुकूनतगाह के लिए मुक़र्रर की थीं? एली, तू अपने
बेटों का मुझ से ज़्यादा एहतिराम करता है। तुम तो
मेरी क़ौम इस्राईल की हर क़ुर्बानी के बेहतरीन हिस्से
खा खा कर मोटे हो गए हो।'

30 चुनाँचे रब जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है,
वादा तो मैं ने किया था कि लावी के क़बीले का
तेरा घराना हमेशा ही इमाम की ख़िदमत सरअन्जाम
देगा। लेकिन अब मैं एलान करता हूँ कि ऐसा कभी
नहीं होगा! क्यूँकि जो मेरा एहतिराम करते हैं उन का
मैं एहतिराम करूँगा, लेकिन जो मुझे हक़ीर जानते
हैं उन्हें हक़ीर जाना जाएगा। 31 इस लिए सुन! ऐसे
दिन आ रहे हैं जब मैं तेरी और तेरे घराने की ताक़त
यूँ तोड़ डालूँगा कि घर का कोई भी बुज़ुर्ग नहीं
पाया जाएगा। 32 और तू मक़्दिस में मुसीबत देखेगा
हालाँकि मैं इस्राईल के साथ भलाई करता रहूँगा। तेरे
घर में कभी भी बुज़ुर्ग नहीं पाया जाएगा। 33 मैं तुम में
से हर एक को तो अपनी ख़िदमत से निकाल कर
हलाक नहीं करूँगा जब तेरी आँखें धुन्दली सी पड़
जाएँगी और तेरी जान हलकान हो जाएगी। लेकिन
तेरी तमाम औलाद ग़ैरतबई मौत मरेगी। 34 तेरे बेटे
हुफ़्नी और फ़ीन्हास दोनों एक ही दिन हलाक हो
जाएंगे। इस निशान से तुझे यक़ीन आएगा कि जो
कुछ मैं ने फ़रमाया है वह सच है।

35 तब मैं अपने लिए एक इमाम खड़ा करूँगा जो
वफ़ादार रहेगा। जो भी मेरा दिल और मेरी जान
चाहेगी वही वह करेगा। मैं उस के घर की मज़बूत
बुन्यादें रखूँगा, और वह हमेशा तक मेरे मसह किए
हुए ख़ादिम के हुज़ूर आता जाता रहेगा। 36 उस
वक़्त तेरे घर के बचे हुए तमाम अफ़राद उस इमाम
के सामने झुक जाएंगे और पैसे और रोटी माँग
कर इल्तिमास करेंगे, 'मुझे इमाम की कोई न कोई
ज़िम्मादारी दें ताकि रोटी का टुकड़ा मिल जाए'।"

अल्लाह समूएल से हमकलाम होता है

3 1 छोटा समूएल एली के ज़ेर-ए-निगरानी रब के
हुज़ूर ख़िदमत करता था। उन दिनों में रब की
तरफ़ से बहुत कम पैग़ाम या रोयाएँ मिलती थीं।
2 एक रात एली जिस की आँखें इतनी कमज़ोर हो
गई थीं कि देखना तक़रीबन नामुमकिन था मामूल के
मुताबिक़ सो गया था। 3 समूएल भी लेट गया था। वह
रब के मक़्दिस में सो रहा था जहाँ अह्द का सन्दूक़
पड़ा था। शमादान अब तक रब के हुज़ूर जल रहा
था 4–5 कि अचानक रब ने आवाज़ दी, "समूएल!"
समूएल ने जवाब दिया, "जी, मैं अभी आता हूँ।" वह
भाग कर एली के पास गया और कहा, "जी जनाब, मैं
हाज़िर हूँ। आप ने मुझे बुलाया?" एली बोला, "नहीं,
मैं ने तुम्हें नहीं बुलाया। वापस जा कर दुबारा लेट
जाओ।" चुनाँचे समूएल दुबारा लेट गया।

6 लेकिन रब ने एक बार फिर आवाज़ दी,
"समूएल!" लड़का दुबारा उठा और एली के पास
जा कर बोला, "जी जनाब, मैं हाज़िर हूँ। आप ने मुझे
बुलाया?" एली ने जवाब दिया, "नहीं बेटा, मैं ने तुम्हें
नहीं बुलाया। दुबारा सो जाओ।"

7 उस वक़्त समूएल रब की आवाज़ नहीं पहचान
सकता था, क्यूँकि अभी उसे रब का कोई पैग़ाम
नहीं मिला था। 8 चुनाँचे रब ने तीसरी बार आवाज़
दी, "समूएल!" एक और मर्तबा समूएल उठ खड़ा
हुआ और एली के पास जा कर बोला, "जी जनाब,
मैं हाज़िर हूँ। आप ने मुझे बुलाया?" यह सुन कर एली
ने जान लिया कि रब समूएल से हमकलाम हो रहा
है। 9 इस लिए उस ने लड़के को बताया, "अब दुबारा
लेट जाओ, लेकिन अगली दफ़ा जब आवाज़ सुनाई
दे तो तुम्हें कहना है, 'ऐ रब, फ़रमा। तेरा ख़ादिम सुन
रहा है'।"

समूएल एक बार फिर अपने बिस्तर पर लेट गया।
10 रब आ कर वहाँ खड़ा हुआ और पहले की तरह

पुकारा, “समूएल! समूएल!” लड़के ने जवाब दिया,
“ऐ रब, फ़रमा। तेरा ख़ादिम सुन रहा है।” 11 फिर
रब समूएल से हमकलाम हुआ, “देख, मैं इस्राईल
में इतना हौलनाक काम करूँगा कि जिसे भी इस की
ख़बर मिलेगी उस के कान बजने लगेंगे। 12 उस वक़्त
मैं शुरू से ले कर आख़िर तक वह तमाम बातें पूरी
करूँगा जो मैं ने एली और उस के घराने के बारे में
की हैं। 13 मैं एली को आगाह कर चुका हूँ कि उस
का घराना हमेशा तक मेरी अदालत का निशाना बना
रहेगा। क्यूँकि गो उसे साफ़ मालूम था कि उस के
बेटे अपनी ग़लत हरकतों से मेरा ग़ज़ब अपने आप
पर लाएँगे तो भी उस ने उन्हें करने दिया और न रोका।
14 मैं ने क़सम खाई है कि एली के घराने का क़ुसूर
न ज़बह और न ग़ल्ला की किसी क़ुर्बानी से दूर किया
जा सकता है बल्कि इस का कफ़्फ़ारा कभी भी नहीं
दिया जा सकेगा!”

15 इस के बाद समूएल सुब्ह तक अपने बिस्तर पर
लेटा रहा। फिर वह मामूल के मुताबिक़ उठा और रब
के घर के दरवाज़े खोल दिए। वह एली को अपनी
रोया बताने से डरता था, 16 लेकिन एली ने उसे बुला
कर कहा, “समूएल, मेरे बेटे!” समूएल ने जवाब
दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 17 एली ने पूछा, “रब
ने तुम्हें क्या बताया है? कोई भी बात मुझ से मत
छुपाना! अल्लाह तुम्हें सख़्त सज़ा दे अगर तुम एक
लफ़्ज़ भी मुझ से पोशीदा रखो।” 18 फिर समूएल ने
उसे खुल कर सब कुछ बता दिया और एक बात भी
न छुपाई। एली ने कहा, “वही रब है। जो कुछ उस
की नज़र में ठीक है उसे वह करे।”

19 समूएल जवान होता गया, और रब उस के साथ
था। उस ने समूएल की हर बात पूरी होने दी। 20 पूरे
इस्राईल ने दान से ले कर बैर-सबा तक जान लिया
कि रब ने अपने नबी समूएल की तस्दीक़ की है।
21 अगले सालों में भी रब सैला में अपने कलाम से
समूएल पर ज़ाहिर होता रहा।

4 1 यूँ समूएल का कलाम सैला से निकल कर पूरे
इस्राईल में फैल गया।

फ़िलिस्ती अह्द का सन्दूक़ छीन लेते हैं

एक दिन इस्राईल की फ़िलिस्तियों के साथ जंग
छिड़ गई। इस्राईलियों ने लड़ने के लिए निकल
कर अबन-अज़र के पास अपनी लश्करगाह लगाई
जबकि फ़िलिस्तियों ने अफ़ीक़ के पास अपने डेरे
डाले। 2 पहले फ़िलिस्तियों ने इस्राईलियों पर हम्ला
किया। लड़ते लड़ते उन्हों ने इस्राईल को शिकस्त दी।
तक़रीबन 4,000 इस्राईली मैदान-ए-जंग में हलाक
हुए।

3 फ़ौज लश्करगाह में वापस आई तो इस्राईल के
बुज़ुर्ग सोचने लगे, “रब ने फ़िलिस्तियों को हम पर
क्यूँ फ़त्ह पाने दी? आओ, हम रब के अह्द का
सन्दूक़ सैला से ले आएँ ताकि वह हमारे साथ चल
कर हमें दुश्मन से बचाए।”

4 चुनाँचे अह्द का सन्दूक़ जिस के ऊपर रब्ब-उल-
अफ़्वाज करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन
है सैला से लाया गया। एली के दो बेटे हुफ़्नी और
फ़ीन्हास भी साथ आए। 5 जब अह्द का सन्दूक़
लश्करगाह में पहुँचा तो इस्राईली निहायत ख़ुश हो
कर बुलन्द आवाज़ से नारे लगाने लगे। इतना शोर
मच गया कि ज़मीन हिल गई।

6 यह सुन कर फ़िलिस्ती चौंक उठे और एक दूसरे
से पूछने लगे, “यह कैसा शोर है जो इस्राईली
लश्करगाह में हो रहा है?” जब पता चला कि रब के
अह्द का सन्दूक़ इस्राईली लश्करगाह में आ गया
है 7 तो वह घबरा कर चिल्लाए, “उन का देवता उन
की लश्करगाह में आ गया है। हाय, हमारा सत्यानास
हो गया है! पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ है। 8 हम
पर अफ़्सोस! कौन हमें इन ताक़तवर देवताओं से
बचाएगा? क्यूँकि इन ही ने रेगिस्तान में मिस्रियों को
हर क़िस्म की बला से मार कर हलाक कर दिया था।
9 भाइयो, अब दिलेर हो और मर्दानगी दिखाओ, वर्ना
हम उसी तरह इब्रानियों के ग़ुलाम बन जाएंगे जैसे वह
अब तक हमारे ग़ुलाम थे। मर्दानगी दिखा कर लड़ो!”
10 आपस में ऐसी बातें करते करते फ़िलिस्ती लड़ने

के लिए निकले और इस्राईल को शिकस्त दी। हर
तरफ़ क़त्ल-ए-आम नज़र आया, और 30,000 पयादे
इस्राईली काम आए। बाक़ी सब फ़रार हो कर अपने
अपने घरों में छुप गए। 11 एली के दो बेटे हुफ़्नी और
फ़ीन्हास भी उसी दिन हलाक हुए, और अल्लाह के
अह्द का सन्दूक़ फ़िलिस्तियों के क़ब्ज़े में आ गया।

एली की मौत

12 उसी दिन बिनयमीन के क़बीले का एक आदमी
मैदान-ए-जंग से भाग कर सैला पहुँच गया। उस के
कपड़े फटे हुए थे और सर पर ख़ाक थी। 13–15 एली
सड़क के किनारे अपनी कुर्सी पर बैठा था। वह अब
अंधा हो चुका था, क्यूँकि उस की उम्र 98 साल थी।
वह बड़ी बेचैनी से रास्ते पर ध्यान दे रहा था ताकि
जंग की कोई ताज़ा ख़बर मिल जाए, क्यूँकि उसे
इस बात की बड़ी फ़िक्र थी कि अल्लाह का सन्दूक़
लश्करगाह में है।

जब वह आदमी शहर में दाख़िल हुआ और लोगों
को सारा माजरा सुनाया तो पूरा शहर चिल्लाने लगा।
जब एली ने शोर सुना तो उस ने पूछा, "यह क्या
शोर है?" बिनयमीनी दौड़ कर एली के पास आया
और बोला, 16 "मैं मैदान-ए-जंग से आया हूँ। आज
ही मैं वहाँ से फ़रार हुआ।" एली ने पूछा, "बेटा,
क्या हुआ?" 17 क़ासिद ने जवाब दिया, "इस्राईली
फ़िलिस्तियों के सामने फ़रार हुए। फ़ौज को हर तरफ़
शिकस्त माननी पड़ी, और आप के दोनों बेटे हुफ़्नी
और फ़ीन्हास भी मारे गए हैं। अफ़्सोस, अल्लाह का
सन्दूक़ भी दुश्मन के क़ब्ज़े में आ गया है।"

18 अह्द के सन्दूक़ का ज़िक्र सुनते ही एली अपनी
कुर्सी पर से पीछे की तरफ़ गिर गया। चूँकि वह बूढ़ा
और भारी-भरकम था इस लिए उस की गर्दन टूट गई
और वह वहीं मक़्दिस के दरवाज़े के पास ही मर
गया। वह 40 साल इस्राईल का क़ाज़ी रहा था।

फ़ीन्हास की बेवा की मौत

19 उस वक़्त एली की बहू यानी फ़ीन्हास की बीवी
का पाँओ भारी था और बच्चा पैदा होने वाला था।
जब उस ने सुना कि अल्लाह का सन्दूक़ दुश्मन के
हाथ में आ गया है और कि सुसर और शौहर दोनों
मर गए हैं तो उसे इतना सख़्त सदमा पहुँचा कि वह
शदीद दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला हो गई। वह झुक गई,
और बच्चा पैदा हुआ। 20 उस की जान निकलने लगी
तो दाइयों ने उस की हौसलाअफ़्ज़ाई करके कहा,
"डरो मत! तुम्हारे बेटा पैदा हुआ है।" लेकिन माँ ने
न जवाब दिया, न बात पर ध्यान दिया। 21–22 क्यूँकि
वह अल्लाह के सन्दूक़ के छिन जाने और सुसर और
शौहर की मौत के बाइस निहायत बेदिल हो गई थी।
उस ने कहा, "बेटे का नाम यकबोद यानी 'जलाल
कहाँ रहा' है, क्यूँकि अल्लाह के सन्दूक़ के छिन जाने
से अल्लाह का जलाल इस्राईल से जाता रहा है।"

फ़िलिस्तियों में अह्द का सन्दूक़

5 1 फ़िलिस्ती अल्लाह का सन्दूक़ अबन-अज़र से
अश्दूद शहर में ले गए। 2 वहाँ उन्हों ने उसे
अपने देवता दजून के मन्दिर में बुत के क़रीब
रख दिया। 3 अगले दिन सुब्ह-सवेरे जब अश्दूद के
बाशिन्दे मन्दिर में दाख़िल हुए तो क्या देखते हैं कि
दजून का मुजस्समा मुँह के बल रब के सन्दूक़ के
सामने ही पड़ा है। उन्हों ने दजून को उठा कर दुबारा
उस की जगह पर खड़ा किया। 4 लेकिन अगले दिन
जब सुब्ह-सवेरे आए तो दजून दुबारा मुँह के बल
रब के सन्दूक़ के सामने पड़ा हुआ था। लेकिन इस
मर्तबा बुत का सर और हाथ टूट कर दहलीज़ पर पड़े
थे। सिर्फ़ धड़ रह गया था। 5 यही वजह है कि आज
तक दजून का कोई भी पुजारी या मेहमान अश्दूद के
मन्दिर की दहलीज़ पर क़दम नहीं रखता।

6 फिर रब ने अश्दूद और गिर्द-ओ-नवाह के दीहातों
पर सख़्त दबाओ डाल कर बाशिन्दों को परेशान कर
दिया। उन में अचानक अज़ियतनाक फोड़ों की वबा

फैल गई। 7 जब अश्दूद के लोगों ने इस की वजह
जान ली तो वह बोले, “लाज़िम है कि इस्राईल के
ख़ुदा का सन्दूक़ हमारे पास न रहे। क्यूँकि उस का
हम पर और हमारे देवता दजून पर दबाओ नाक़ाबिल-
ए-बर्दाश्त है।”
8 उन्हों ने तमाम फ़िलिस्ती हुक्मरानों को इकट्ठा
करके पूछा, “हम इस्राईल के ख़ुदा के सन्दूक़ के
साथ क्या करें?”
उन्हों ने मश्वरा दिया, “उसे जात शहर में ले जाएँ।”
9 लेकिन जब अह्द का सन्दूक़ जात में छोड़ा गया तो
रब का दबाओ उस शहर पर भी आ गया। बड़ी अफ़्रा-
तफ़्री पैदा हुई, क्यूँकि छोटों से ले कर बड़ों तक सब
को अज़ियतनाक फोड़े निकल आए। 10 तब उन्हों ने
अह्द का सन्दूक़ आगे अक्रून भेज दिया।
लेकिन सन्दूक़ अभी पहुँचने वाला था कि अक्रून
के बाशिन्दे चीख़ने लगे, “वह इस्राईल के ख़ुदा का
सन्दूक़ हमारे पास लाए हैं ताकि हमें हलाक कर
दें!” 11 तमाम फ़िलिस्ती हुक्मरानों को दुबारा बुलाया
गया, और अक्रूनियों ने तक़ाज़ा किया कि सन्दूक़ को
शहर से दूर किया जाए। वह बोले, “इसे वहाँ वापस
भेजा जाए जहाँ से आया है, वर्ना यह हमें बल्कि पूरी
क़ौम को हलाक कर डालेगा।” क्यूँकि शहर पर रब
का सख़्त दबाओ हावी हो गया था। मोहलिक वबा
के बाइस उस में ख़ौफ़-ओ-हिरास की लहर दौड़ गई।
12 जो मरने से बचा उसे कम अज़ कम फोड़े निकल
आए। चारों तरफ़ लोगों की चीख़-पुकार फ़िज़ा में
बुलन्द हुई।

अह्द का सन्दूक़ इस्राईल वापस लाया जाता है

6 1 अल्लाह का सन्दूक़ अब सात महीने
फ़िलिस्तियों के पास रहा था। 2 आख़िरकार
उन्हों ने अपने तमाम पुजारियों और रम्मालों को
बुला कर उन से मश्वरा किया, “अब हम रब के
सन्दूक़ का क्या करें? हमें बताएँ कि इसे किस तरह
इस के अपने मुल्क में वापस भेजें।”
3 पुजारियों और रम्मालों ने जवाब दिया, “अगर
आप उसे वापस भेजें तो वैसे मत भेजना बल्कि क़ुसूर
की क़ुर्बानी साथ भेजना। तब आप को शिफ़ा मिलेगी,
और आप जान लेंगे कि वह आप को सज़ा देने से क्यूँ
नहीं बाज़ आया।”
4 फ़िलिस्तियों ने पूछा, “हम उसे किस क़िस्म की
क़ुसूर की क़ुर्बानी भेजें?”
उन्हों ने जवाब दिया, “फ़िलिस्तियों के पाँच
हुक्मरान हैं, इस लिए सोने के पाँच फोड़े और पाँच
चूहे बनवाएँ, क्यूँकि आप सब इस एक ही वबा
की ज़द में आए हुए हैं, ख़्वाह हुक्मरान हों, ख़्वाह
रआया। 5 सोने के यह फोड़े और मुल्क को तबाह
करने वाले चूहे बना कर इस्राईल के देवता का
एहतिराम करें। शायद वह यह देख कर आप, आप
के देवताओं और मुल्क को सज़ा देने से बाज़ आए।
6 आप क्यूँ पुराने ज़माने के मिस्रियों और उन के
बादशाह की तरह अड़ जाएँ? क्यूँकि उस वक़्त
अल्लाह ने मिस्रियों को इतनी सख़्त मुसीबत में डाल
दिया कि आख़िरकार उन्हें इस्राईलियों को जाने देना
पड़ा।
7 अब बैलगाड़ी बना कर उस के आगे दो गाएँ
जोतें। ऐसी गाएँ हों जिन के दूध पीने वाले बच्चे हों
और जिन पर अब तक जूआ न रखा गया हो। गायों
को बैलगाड़ी के आगे जोतें, लेकिन उन के बच्चों को
साथ जाने न दें बल्कि उन्हें कहीं बन्द रखें। 8 फिर रब
का सन्दूक़ बैलगाड़ी पर रखा जाए और उस के साथ
एक थैला जिस में सोने की वह चीज़ें हों जो आप
क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर भेज रहे हैं। इस के बाद
गायों को खुला छोड़ दें। 9 ग़ौर करें कि वह कौन सा
रास्ता इख़्तियार करेंगी। अगर इस्राईल के बैत-शम्स
की तरफ़ चलें तो फिर मालूम होगा कि रब हम पर
यह बड़ी मुसीबत लाया है। लेकिन अगर वह कहीं
और चलें तो मतलब होगा कि इस्राईल के देवता ने
हमें सज़ा नहीं दी बल्कि सब कुछ इत्तिफ़ाक़ से हुआ
है।”

10 फ़िलिस्तियों ने ऐसा ही किया। उन्हों ने दो गाएँ
नई बैलगाड़ी में जोत कर उन के छोटे बच्चों को कहीं
बन्द रखा। 11 फिर उन्हों ने अह्द का सन्दूक़ उस थैले
समेत जिस में सोने के चूहे और फोड़े थे बैलगाड़ी पर
रखा।

12 जब गायों को छोड़ दिया गया तो वह डकराती
डकराती सीधी बैत-शम्स के रास्ते पर आ गईं और
न दाईं, न बाईं तरफ़ हटीं। फ़िलिस्तियों के सरदार
बैत-शम्स की सरहद तक उन के पीछे चले।

13 उस वक़्त बैत-शम्स के बाशिन्दे नीचे वादी में
गन्दुम की फ़सल काट रहे थे। अह्द का सन्दूक़ देख
कर वह निहायत ख़ुश हुए। 14 बैलगाड़ी एक खेत तक
पहुँची जिस का मालिक बैत-शम्स का रहने वाला
यशूअ था। वहाँ वह एक बड़े पत्थर के पास रुक गई।
लोगों ने बैलगाड़ी की लकड़ी टुकड़े टुकड़े करके उसे
जला दिया और गायों को ज़बह करके रब को भस्म
होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश किया। 15 लावी के
क़बीले के कुछ मर्दों ने रब के सन्दूक़ को बैलगाड़ी
से उठा कर सोने की चीज़ों के थैले समेत पत्थर पर
रख दिया। उस दिन बैत-शम्स के लोगों ने रब को
भस्म होने वाली और ज़बह की क़ुर्बानियाँ पेश कीं।

16 यह सब कुछ देखने के बाद फ़िलिस्ती सरदार
उसी दिन अक्रून वापस चले गए। 17 फ़िलिस्तियों ने
अपना क़ुसूर दूर करने के लिए हर एक शहर के लिए
सोने का एक फोड़ा बना लिया था यानी अश्दूद,
ग़ज़्ज़ा, अस्क़लून, जात और अक्रून के लिए एक एक
फोड़ा। 18 इस के इलावा उन्हों ने हर शहर और उस
के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों के लिए सोने का
एक एक चूहा बना लिया था। जिस बड़े पत्थर पर
अह्द का सन्दूक़ रखा गया वह आज तक यशूअ
बैत-शम्सी के खेत में इस बात की गवाही देता है।

अह्द का सन्दूक़ क़िर्यत-यारीम में

19 लेकिन रब ने बैत-शम्स के बाशिन्दों को सज़ा
दी, क्यूँकि उन में से बाज़ ने अह्द के सन्दूक़ में
नज़र डाली थी। उस वक़्त 70 अफ़राद हलाक हुए।
रब की यह सख़्त सज़ा देख कर बैत-शम्स के लोग
मातम करने लगे। 20 वह बोले, "कौन इस मुक़द्दस
ख़ुदा के हुज़ूर क़ाइम रह सकता है? यह हमारे बस
की बात नहीं, लेकिन हम रब का सन्दूक़ किस के
पास भेजें?" 21 आख़िर में उन्हों ने क़िर्यत-यारीम के
बाशिन्दों को पैग़ाम भेजा, "फ़िलिस्तियों ने रब का
सन्दूक़ वापस कर दिया है। अब आएँ और उसे अपने
पास ले जाएँ!"

7 1 यह सुन कर क़िर्यत-यारीम के मर्द आए और
रब का सन्दूक़ अपने शहर में ले गए। वहाँ उन्हों
ने उसे अबीनदाब के घर में रख दिया जो पहाड़ी पर
था। अबीनदाब के बेटे इलीअज़र को मख़्सूस किया
गया ताकि वह अह्द के सन्दूक़ की पहरादारी करे।

तौबा की वजह से इस्राईली फ़िलिस्तियों पर फ़त्ह पाते हैं

2 अह्द का सन्दूक़ 20 साल के तवील अर्से तक
क़िर्यत-यारीम में पड़ा रहा। इस दौरान तमाम इस्राईल
मातम करता रहा, क्यूँकि लगता था कि रब ने उन्हें
तर्क कर दिया है। 3 फिर समूएल ने तमाम इस्राईलियों
से कहा, "अगर आप वाक़ई रब के पास वापस आना
चाहते हैं तो अजनबी माबूदों और अस्तारात देवी के
बुत दूर कर दें। पूरे दिल के साथ रब के ताबे हो
कर उसी की ख़िदमत करें। फिर ही वह आप को
फ़िलिस्तियों से बचाएगा।"

4 इस्राईलियों ने उस की बात मान ली। वह बाल
और अस्तारात के बुतों को फैंक कर सिर्फ़ रब की
ख़िदमत करने लगे। 5 तब समूएल ने एलान किया,
"पूरे इस्राईल को मिस्फ़ाह में जमा करें तो मैं वहाँ
रब से दुआ करके आप की सिफ़ारिश करूँगा।"
6 चुनाँचे वह सब मिस्फ़ाह में जमा हुए। तौबा का
इज़हार करके उन्हों ने कुएँ से पानी निकाल कर रब
के हुज़ूर उंडेल दिया। साथ साथ उन्हों ने पूरा दिन
रोज़ा रखा और इक़्रार किया, "हम ने रब का गुनाह
किया है।" वहाँ मिस्फ़ाह में समूएल ने इस्राईलियों
के लिए कचहरी लगाई।

7 फ़िलिस्ती हुक्मरानों को पता चला कि इस्राईली
मिस्फ़ाह में जमा हुए हैं तो वह उन से लड़ने के लिए
आए। यह सुन कर इस्राईली सख़्त घबरा गए 8 और
समूएल से मिन्नत की, "दुआ करते रहें! रब हमारे
ख़ुदा से इल्तिमास करने से न रुकें ताकि वह हमें
फ़िलिस्तियों से बचाए।" 9 तब समूएल ने भेड़ का
दूध पीता बच्चा चुन कर रब को भस्म होने वाली
क़ुर्बानी के तौर पर पेश किया। साथ साथ वह रब
से इल्तिमास करता रहा।

और रब ने उस की सुनी। 10 समूएल अभी क़ुर्बानी
पेश कर रहा था कि फ़िलिस्ती वहाँ पहुँच कर
इस्राईलियों पर हम्ला करने के लिए तय्यार हुए।
लेकिन उस दिन रब ने ज़ोर से कड़कती हुई आवाज़
से फ़िलिस्तियों को इतना दहशतज़दा कर दिया कि
वह दर्हम-बर्हम हो गए और इस्राईली आसानी से उन्हें
शिकस्त दे सके। 11 इस्राईलियों ने मिस्फ़ाह से निकल
कर बैत-कार के नीचे तक दुश्मन का ताक़्क़ुब किया।
रास्ते में बहुत से फ़िलिस्ती हलाक हुए।

12 इस फ़त्ह की याद में समूएल ने मिस्फ़ाह और शेन
के दरमियान एक बड़ा पत्थर नसब कर दिया। उस ने
पत्थर का नाम अबन-अज़र यानी 'मदद का पत्थर'
रखा। क्यूँकि उस ने कहा, "यहाँ तक रब ने हमारी
मदद की है।" 13 इस तरह फ़िलिस्तियों को मग़लूब
किया गया, और वह दुबारा इस्राईल के इलाक़े में
न घुसे। जब तक समूएल जीता रहा फ़िलिस्तियों पर
रब का सख़्त दबाओ रहा। 14 और अक्रून से ले कर
जात तक जितनी इस्राईली आबादियाँ फ़िलिस्तियों
के हाथ में आ गई थीं वह सब उन की ज़मीनों समेत
दुबारा इस्राईल के क़ब्ज़े में आ गईं। अमोरियों के
साथ भी सुलह हो गई।

15 समूएल अपने जीते जी इस्राईल का क़ाज़ी और
राहनुमा रहा। 16 हर साल वह बैत-एल, जिल्जाल और
मिस्फ़ाह का दौरा करता, क्यूँकि इन तीन जगहों पर
वह इस्राईलियों के लिए कचहरी लगाया करता था।
17 इस के बाद वह दुबारा रामा अपने घर वापस आ
जाता जहाँ मुस्तक़िल कचहरी थी। वहाँ उस ने रब
के लिए क़ुर्बानगाह भी बनाई थी।

इस्राईल बादशाह का तक़ाज़ा करता है

8 1 जब समूएल बूढ़ा हुआ तो उस ने अपने दो बेटों
को इस्राईल के क़ाज़ी मुक़र्रर किया। 2 बड़े का
नाम योएल था और छोटे का अबियाह। दोनों बैर-
सबा में लोगों की कचहरी लगाते थे। 3 लेकिन वह
बाप के नमूने पर नहीं चलते बल्कि रिश्वत खा कर
ग़लत फ़ैसले करते थे।

4 फिर इस्राईल के बुज़ुर्ग मिल कर समूएल के पास
आए, जो रामा में था। 5 उन्हों ने कहा, "देखें, आप
बूढ़े हो गए हैं और आप के बेटे आप के नमूने पर
नहीं चलते। अब हम पर बादशाह मुक़र्रर करें ताकि
वह हमारी उस तरह राहनुमाई करे जिस तरह दीगर
अक़्वाम में दस्तूर है।"

6 जब बुज़ुर्गों ने राहनुमाई के लिए बादशाह का
तक़ाज़ा किया तो समूएल निहायत नाख़ुश हुआ।
चुनाँचे उस ने रब से हिदायत माँगी। 7 रब ने जवाब
दिया, "जो कुछ भी वह तुझ से माँगते हैं उन्हें दे दे।
इस से वह तुझे रद्द नहीं कर रहे बल्कि मुझे, क्यूँकि
वह नहीं चाहते कि मैं उन का बादशाह रहूँ। 8 जब
से मैं उन्हें मिस्र से निकाल लाया वह मुझे छोड़ कर
दीगर माबूदों की ख़िदमत करते आए हैं। और अब
वह तुझ से भी यही सुलूक कर रहे हैं। 9 उन की बात
मान ले, लेकिन सन्जीदगी से उन्हें उन पर हुकूमत
करने वाले बादशाह के हुक़ूक़ से आगाह कर।"

बादशाह के हुक़ूक़

10 समूएल ने बादशाह का तक़ाज़ा करने वालों को
सब कुछ कह सुनाया जो रब ने उसे बताया था।
11 वह बोला, "जो बादशाह आप पर हुकूमत करेगा
उस के यह हुक़ूक़ होंगे : वह आप के बेटों की भर्ती
करके उन्हें अपने रथों और घोड़ों को सँभालने की
ज़िम्मादारी देगा। उन्हें उस के रथों के आगे आगे
दौड़ना पड़ेगा। 12 कुछ उस की फ़ौज के जनरल और

कप्तान बनेंगे, कुछ उस के खेतों में हल चलाने और
फ़सलें काटने पर मज्बूर हो जाएंगे, और बाज़ को
उस के हथियार और रथ का सामान बनाना पड़ेगा।
13 बादशाह आप की बेटियों को आप से छीन लेगा
ताकि वह उस के लिए खाना पकाएँ, रोटी बनाएँ और
ख़ुश्बू तय्यार करें। 14 वह आप के खेतों और आप
के अंगूर और ज़ैतून के बाग़ों का बेहतरीन हिस्सा
चुन कर अपने मुलाज़िमों को दे देगा। 15 बादशाह
आप के अनाज और अंगूर का दसवाँ हिस्सा ले कर
अपने अफ़सरों और मुलाज़िमों को दे देगा। 16 आप
के नौकर-नौकरानियाँ, आप के मोटे-ताज़े बैल और
गधे उसी के इस्तेमाल में आएँगे। 17 वह आप की
भेड़-बकरियों का दसवाँ हिस्सा तलब करेगा, और
आप ख़ुद उस के ग़ुलाम होंगे।

18 तब आप पछता कर कहेंगे, 'हम ने बादशाह का
तक़ाज़ा क्यूँ किया?' लेकिन जब आप रब के हुज़ूर
चीख़ते चिल्लाते मदद चाहेंगे तो वह आप की नहीं
सुनेगा।"

19 लेकिन लोगों ने समूएल की बात न मानी बल्कि
कहा, "नहीं, तो भी हम बादशाह चाहते हैं, 20 क्यूँकि
फिर ही हम दीगर क़ौमों की मानिन्द होंगे। फिर हमारा
बादशाह हमारी राहनुमाई करेगा और जंग में हमारे
आगे आगे चल कर दुश्मन से लड़ेगा।" 21 समूएल ने
रब के हुज़ूर यह बातें दुहराईं। 22 रब ने जवाब दिया,
"उन का तक़ाज़ा पूरा कर, उन पर बादशाह मुक़र्रर
कर!"

फिर समूएल ने इस्राईल के मर्दों से कहा, "हर एक
अपने अपने शहर वापस चला जाए।"

साऊल बाप की गधियाँ तलाश करता है

9 1 बिनयमीन के क़बाइली इलाक़े में एक
बिनयमीनी बनाम क़ीस रहता था जिस का
अच्छा-ख़ासा असर-ओ-रसूख़ था। बाप का नाम
अबीएल बिन सरोर बिन बकोरत बिन अफ़ीख़ था।
2 क़ीस का बेटा साऊल जवान और ख़ूबसूरत था
बल्कि इस्राईल में कोई और इतना ख़ूबसूरत नहीं
था। साथ साथ वह इतना लम्बा था कि बाक़ी सब
लोग सिर्फ़ उस के कंधों तक आते थे।

3 एक दिन साऊल के बाप क़ीस की गधियाँ गुम हो
गईं। यह देख कर उस ने अपने बेटे साऊल को हुक्म
दिया, "नौकर को अपने साथ ले कर गधियों को ढूँड
लाएँ।" 4 दोनों आदमी इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े और
सलीसा के इलाक़े में से गुज़रे, लेकिन बेसूद। फिर
उन्हों ने सालीम के इलाक़े में खोज लगाया, लेकिन
वहाँ भी गधियाँ न मिलीं। इस के बाद वह बिनयमीन
के इलाक़े में घूमते फिरे, लेकिन बेफ़ाइदा। 5 चलते
चलते वह सूफ़ के क़रीब पहुँच गए। साऊल ने नौकर
से कहा, "आओ, हम घर वापस चलें, ऐसा न हो कि
वालिद गधियों की नहीं बल्कि हमारी फ़िक्र करें।"

6 लेकिन नौकर ने कहा, "इस शहर में एक मर्द-ए-
ख़ुदा है। लोग उस की बड़ी इज़्ज़त करते हैं, क्यूँकि
जो कुछ भी वह कहता है वह पूरा हो जाता है। क्यूँ
न हम उस के पास जाएँ? शायद वह हमें बताए कि
गधियों को कहाँ ढूँडना चाहिए।"

7 साऊल ने पूछा, "लेकिन हम उसे क्या दें? हमारा
खाना ख़त्म हो गया है, और हमारे पास उस के लिए
तुह्फ़ा नहीं है।"

8 नौकर ने जवाब दिया, "कोई बात नहीं, मेरे पास
चाँदी का छोटा सिक्का [z]है। यह मैं मर्द-ए-ख़ुदा को दे
दूँगा ताकि बताए कि हम किस तरफ़ ढूँडें।"

9–11 साऊल ने कहा, "ठीक है, चलें।" वह शहर
की तरफ़ चल पड़े ताकि मर्द-ए-ख़ुदा से बात करें।
जब पहाड़ी ढलान पर शहर की तरफ़ चढ़ रहे थे
तो कुछ लड़कियाँ पानी भरने के लिए निकलीं।
आदमियों ने उन से पूछा, "क्या ग़ैबबीन शहर में है?"
(पुराने ज़माने में नबी ग़ैबबीन कहलाता था। अगर
कोई अल्लाह से कुछ मालूम करना चाहता तो कहता,
"आओ, हम ग़ैबबीन के पास चलें।")

---

[z]लफ़्ज़ी तर्जुमा : चाँदी के सिक्के की एक चौथाई

12–13 लड़कियों ने जवाब दिया, “जी, वह अभी
अभी पहुँचा है, क्यूँकि शहर के लोग आज पहाड़ी
पर क़ुर्बानियाँ चढ़ा कर ईद मना रहे हैं। अगर जल्दी
करें तो पहाड़ी पर चढ़ने से पहले उस से मुलाक़ात
हो जाएगी। उस वक़्त तक ज़ियाफ़त शुरू नहीं होगी
जब तक ग़ैबबीन पहुँच न जाए। क्यूँकि उसे पहले
खाने को बरकत देना है, फिर ही मेहमानों को खाना
खाने की इजाज़त है। अब जाएँ, क्यूँकि इसी वक़्त
आप उस से बात कर सकते हैं।”
14 चुनाँचे साऊल और नौकर शहर की तरफ़ बढ़े।
शहर के दरवाज़े पर ही समूएल से मुलाक़ात हो गई
जो वहाँ से निकल कर क़ुर्बानगाह की पहाड़ी पर
चढ़ने को था।

समूएल साऊल की मेहमान-नवाज़ी करता है

15 रब समूएल को एक दिन पहले पैग़ाम दे चुका
था, 16 “कल मैं इसी वक़्त मुल्क-ए-बिनयमीन का
एक आदमी तेरे पास भेज दूँगा। उसे मसह करके
मेरी क़ौम इस्राईल पर बादशाह मुक़र्रर कर। वह
मेरी क़ौम को फ़िलिस्तियों से बचाएगा। क्यूँकि मैं
ने अपनी क़ौम की मुसीबत पर ध्यान दिया है, और
मदद के लिए उस की चीख़ें मुझ तक पहुँच गई हैं।”
17 अब जब समूएल ने शहर के दरवाज़े से निकलते
हुए साऊल को देखा तो रब समूएल से हमकलाम
हुआ, “देख, यही वह आदमी है जिस का ज़िक्र मैं ने
कल किया था। यही मेरी क़ौम पर हुकूमत करेगा।”
18 वहीं शहर के दरवाज़े पर साऊल समूएल से
मुख़ातिब हुआ, “मेहरबानी करके मुझे बताइए कि
ग़ैबबीन का घर कहाँ है?” 19 समूएल ने जवाब दिया,
“मैं ही ग़ैबबीन हूँ। आएँ, उस पहाड़ी पर चलें जिस
पर ज़ियाफ़त हो रही है, क्यूँकि आज आप मेरे मेहमान
हैं। कल मैं सुब्ह-सवेरे आप को आप के दिल की
बात बता दूँगा। 20 जहाँ तक तीन दिन से गुमशुदा
गधियों का ताल्लुक़ है, उन की फ़िक्र न करें। वह तो
मिल गई हैं। वैसे आप और आप के बाप के घराने को
इस्राईल की हर क़ीमती चीज़ हासिल है।” 21 साऊल
ने पूछा, “यह किस तरह? मैं तो इस्राईल के सब से
छोटे क़बीले बिनयमीन का हूँ, और मेरा ख़ानदान
क़बीले में सब से छोटा है।”
22 समूएल साऊल को नौकर समेत उस हाल में ले
गया जिस में ज़ियाफ़त हो रही थी। तक़रीबन 30
मेहमान थे, लेकिन समूएल ने दोनों आदमियों को सब
से इज़्ज़त की जगह पर बिठा दिया। 23 ख़ानसामे को
उस ने हुक्म दिया, “अब गोश्त का वह टुकड़ा ले
आओ जो मैं ने तुम्हें दे कर कहा था कि उसे अलग
रखना है।” 24 ख़ानसामे ने क़ुर्बानी की रान ला कर
उसे साऊल के सामने रख दिया। समूएल बोला, “यह
आप के लिए महफ़ूज़ रखा गया है। अब खाएँ, क्यूँकि
दूसरों को दावत देते वक़्त मैं ने यह गोश्त आप के
लिए और इस मौक़े के लिए अलग कर लिया था।”
चुनाँचे साऊल ने उस दिन समूएल के साथ खाना
खाया।
25 ज़ियाफ़त के बाद वह पहाड़ी से उतर कर शहर
वापस आए, और समूएल अपने घर की छत पर
साऊल से बातचीत करने लगा। 26 अगले दिन जब पौ
फटने लगी तो समूएल ने नीचे से साऊल को जो छत
पर सो रहा था आवाज़ दी, “उठें! मैं आप को रुख़्सत
करूँ।” साऊल जाग उठा और वह मिल कर रवाना
हुए। 27 जब वह शहर के किनारे पर पहुँचे तो समूएल
ने साऊल से कहा, “अपने नौकर को आगे भेजें।”
जब नौकर चला गया तो समूएल बोला, “ठहर जाएँ,
क्यूँकि मुझे आप को अल्लाह का एक पैग़ाम सुनाना
है।”

साऊल को मसह किया जाता है

10 1 फिर समूएल ने कुप्पी ले कर साऊल के
सर पर ज़ैतून का तेल उंडेल दिया और उसे
बोसा दे कर कहा, “रब ने आप को अपनी ख़ास
मिलकियत पर राहनुमा मुक़र्रर किया है। 2 मेरे पास
से चले जाने के बाद जब आप बिनयमीन की सरहद
के शहर ज़िल्ज़ख़ के क़रीब राख़िल की क़ब्र के पास
से गुज़रेंगे तो आप की मुलाक़ात दो आदमियों से

होगी। वह आप से कहेंगे, 'जो गधियाँ आप ढूँडने
गए वह मिल गई हैं। और अब आप के बाप गधियों
की नहीं बल्कि आप की फ़िक्र कर रहे हैं। वह कह
रहे हैं कि मैं किस तरह अपने बेटे का पता करूँ?'
3 आप आगे जा कर तबूर के बलूत के दरख़्त के
पास पहुँचेंगे। वहाँ तीन आदमी आप से मिलेंगे जो
अल्लाह की इबादत करने के लिए बैत-एल जा रहे
होंगे। एक के पास तीन छोटी बकरियाँ, दूसरे के पास
तीन रोटियाँ और तीसरे के पास मै की मश्क होगी।
4 वह आप को सलाम कह कर दो रोटियाँ देंगे। उन
की यह रोटियाँ क़बूल करें।
5 इस के बाद आप अल्लाह के जिबिआ जाएंगे जहाँ
फ़िलिस्तियों की चौकी है। शहर में दाख़िल होते वक़्त
आप की मुलाक़ात नबियों के एक जुलूस से होगी जो
उस वक़्त पहाड़ी की क़ुर्बानगाह से उतर रहा होगा।
उन के आगे आगे सितार, दफ़, बाँसरियाँ और सरोद
बजाने वाले चलेंगे, और वह नबुव्वत की हालत में
होंगे। 6 रब का रूह आप पर भी नाज़िल होगा, और
आप उन के साथ नबुव्वत करेंगे। उस वक़्त आप
फ़र्क़ शख़्स में तब्दील हो जाएंगे।
7 जब यह तमाम निशान वुजूद में आएँगे तो वह कुछ
करें जो आप के ज़हन में आ जाए, क्यूँकि अल्लाह
आप के साथ होगा। 8 फिर मेरे आगे जिल्जाल चले
जाएँ। मैं भी आऊँगा और वहाँ भस्म होने वाली और
सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश करूँगा। लेकिन आप
को सात दिन मेरा इन्तिज़ार करना है। फिर मैं आ
कर आप को बता दूँगा कि आगे क्या करना है।"
9 साऊल रवाना होने के लिए समूएल के पास से
मुड़ा तो अल्लाह ने उस का दिल तब्दील कर दिया।
जिन निशानों की भी पेशगोई समूएल ने की थी वह
उसी दिन पूरी हुई। 10 जब साऊल और उस का नौकर
जिबिआ पहुँचे तो वहाँ उन की मुलाक़ात मज़कूरा
नबियों के जुलूस से हुई। अल्लाह का रूह साऊल पर
नाज़िल हुआ, और वह उन के दरमियान नबुव्वत
करने लगा। 11 कुछ लोग वहाँ थे जो बचपन से उस
से वाक़िफ़ थे। साऊल को यूँ नबियों के दरमियान
नबुव्वत करते हुए देख कर वह आपस में कहने लगे,
"क़ीस के बेटे के साथ क्या हुआ? क्या साऊल को
भी नबियों में शुमार किया जाता है?" 12 एक मक़ामी
आदमी ने जवाब दिया, "कौन इन का बाप है?" बाद
में यह मुहावरा बन गया, "क्या साऊल को भी नबियों
में शुमार किया जाता है?"
13 नबुव्वत करने के इख़तिताम पर साऊल पहाड़ी
पर चढ़ गया जहाँ क़ुर्बानगाह थी। 14 जब साऊल
नौकर समेत वहाँ पहुँचा तो उस के चचा ने पूछा,
"आप कहाँ थे?" साऊल ने जवाब दिया, "हम
गुमशुदा गधियों को ढूँडने के लिए निकले थे। लेकिन
जब वह न मिलीं तो हम समूएल के पास गए।"
15 चचा बोला, "अच्छा? उस ने आप को क्या
बताया?" 16 साऊल ने जवाब दिया, "ख़ैर, उस ने
कहा कि गधियाँ मिल गई हैं।" लेकिन जो कुछ
समूएल ने बादशाह बनने के बारे में बताया था उस
का ज़िक्र उस ने न किया।

साऊल बादशाह बन जाता है

17 कुछ देर के बाद समूएल ने अवाम को बुला कर
मिस्फ़ाह में रब के हुज़ूर जमा किया। 18 उस ने कहा,
"रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मैं इस्राईल को
मिस्र से निकाल लाया। मैं ने तुम्हें मिस्रियों और उन
तमाम सल्तनतों से बचाया जो तुम पर ज़ुल्म कर रही
थीं। 19 लेकिन गो मैं ने तुम्हें तुम्हारी तमाम मुसीबतों
और तंगियों से छुटकारा दिया तो भी तुम ने अपने
ख़ुदा को मुस्तरद कर दिया। क्यूँकि तुम ने इसरार
किया कि हम पर बादशाह मुक़र्रर करो! अब अपने
अपने क़बीलों और ख़ानदानों की तर्तीब के मुताबिक़
रब के हुज़ूर खड़े हो जाओ'।"
20 यह कह कर समूएल ने तमाम क़बीलों को रब के
हुज़ूर पेश किया। क़ुरआ डाला गया तो बिनयमीन के
क़बीले को चुना गया। 21 फिर समूएल ने बिनयमीन
के क़बीले के सारे ख़ानदानों को रब के हुज़ूर पेश
किया। मत्री के ख़ानदान को चुना गया। यूँ क़ुरआ

डालते डालते साऊल बिन क़ीस को चुना गया।
लेकिन जब साऊल को ढूँडा गया तो वह ग़ाइब था।
22 उन्हों ने रब से दरयाफ़्त किया, “क्या साऊल
यहाँ पहुँच चुका है?” रब ने जवाब दिया, “वह
सामान के बीच में छुप गया है।” 23 कुछ लोग दौड़
कर उसे सामान में से निकाल कर अवाम के पास ले
आए। जब वह लोगों में खड़ा हुआ तो इतना लम्बा
था कि बाक़ी सब लोग सिर्फ़ उस के कंधों तक आते
थे।

24 समूएल ने कहा, “यह आदमी देखो जिसे रब ने
चुन लिया है। अवाम में उस जैसा कोई नहीं है!”
तमाम लोग ख़ुशी के मारे “बादशाह ज़िन्दाबाद!”
का नारा लगाते रहे। 25 समूएल ने बादशाह के हुक़ूक़
तफ़्सील से सुनाए। उस ने सब कुछ किताब में लिख
दिया और उसे रब के मक़्दिस में महफ़ूज़ रखा। फिर
उस ने अवाम को रुख़्सत कर दिया।

26 साऊल भी अपने घर चला गया जो जिबिआ में
था। कुछ फ़ौजी उस के साथ चले जिन के दिलों को
अल्लाह ने छू दिया था। 27 लेकिन ऐसे शरीर लोग भी
थे जिन्हों ने उस का मज़ाक़ उड़ा कर पूछा, “भला
यह किस तरह हमें बचा सकता है?” वह उसे हक़ीर
जानते थे और उसे तुहफ़े पेश करने के लिए भी तय्यार
न हुए। लेकिन साऊल उन की बातें नज़रअन्दाज़
करके ख़ामोश ही रहा।

साऊल अम्मोनियों पर फ़त्ह पाता है

11 1 कुछ देर के बाद अम्मोनी बादशाह नाहस
ने अपनी फ़ौज ले कर यबीस-जिलिआद
का मुहासरा किया। यबीस के तमाम अफ़राद ने
उस से गुज़ारिश की, “हमारे साथ मुआहदा करें तो
हम आइन्दा आप के ताबे रहेंगे।” 2 नाहस ने जवाब
दिया, “ठीक है, लेकिन इस शर्त पर कि मैं हर एक
की दहनी आँख निकाल कर तमाम इस्राईल की
बेइज़्ज़ती करूँगा!” 3 यबीस के बुज़ुर्गों ने दरख़्वास्त
की, “हमें एक हफ़्ते की मुहलत दीजिए ताकि हम
अपने क़ासिदों को इस्राईल की हर जगह भेजें। अगर
कोई हमें बचाने के लिए न आए तो हम हथियार डाल
कर शहर को आप के हवाले कर देंगे।”

4 क़ासिद साऊल के शहर जिबिआ भी पहुँच गए।
जब मक़ामी लोगों ने उन का पैग़ाम सुना तो पूरा शहर
फूट फूट कर रोने लगा। 5 उस वक़्त साऊल अपने
बैलों को खेतों से वापस ला रहा था। उस ने पूछा,
“क्या हुआ है? लोग क्यूँ रो रहे हैं?” उसे क़ासिदों का
पैग़ाम सुनाया गया। 6 तब साऊल पर अल्लाह का रूह
नाज़िल हुआ, और उसे सख़्त ग़ुस्सा आया। 7 उस
ने बैलों का जोड़ा ले कर उन्हें टुकड़े टुकड़े कर
दिया। फिर क़ासिदों को यह टुकड़े पकड़ा कर उस
ने उन्हें यह पैग़ाम दे कर इस्राईल की हर जगह भेज
दिया, “जो साऊल और समूएल के पीछे चल कर
अम्मोनियों से लड़ने नहीं जाएगा उस के बैल इसी
तरह टुकड़े टुकड़े कर दिए जाएंगे!”

यह ख़बर सुन कर लोगों पर रब की दहशत तारी हो
गई, और सब के सब एक दिल हो कर अम्मोनियों से
लड़ने के लिए निकले। 8 बज़क़ के क़रीब साऊल ने
फ़ौज का जाइज़ा लिया। यहूदाह के 30,000 अफ़राद
थे और बाक़ी क़बीलों के 3,00,000।

9 उन्हों ने यबीस-जिलिआद के क़ासिदों को वापस
भेज कर बताया, “कल दोपहर से पहले पहले आप
को बचा लिया जाएगा।” वहाँ के बाशिन्दे यह ख़बर
सुन कर बहुत ख़ुश हुए। 10 उन्हों ने अम्मोनियों को
इत्तिला दी, “कल हम हथियार डाल कर शहर के
दरवाज़े खोल देंगे। फिर वह कुछ करें जो आप को
ठीक लगे।”

11 अगले दिन सुब्ह-सवेरे साऊल ने फ़ौज को तीन
हिस्सों में तक़्सीम किया। सूरज के तुलू होने से पहले
पहले उन्हों ने तीन सिम्तों से दुश्मन की लश्करगाह
पर हम्ला किया। दोपहर तक उन्हों ने अम्मोनियों को
मार मार कर ख़त्म कर दिया। जो थोड़े बहुत लोग
बच गए वह यूँ तित्तर-बित्तर हो गए कि दो भी इकट्ठे
न रहे।

साऊल की दुबारा तस्दीक़

12 फ़त्ह के बाद लोग समूएल के पास आ कर कहने
लगे, “वह लोग कहाँ हैं जिन्हों ने एतिराज़ किया कि
साऊल हम पर हुकूमत करे? उन्हें ले आएँ ताकि
हम उन्हें मार दें।” 13 लेकिन साऊल ने उन्हें रोक
दिया। उस ने कहा, “नहीं, आज तो हम किसी भी
भाई को सज़ा-ए-मौत नहीं देंगे, क्यूँकि इस दिन रब
ने इस्राईल को रिहाई बख़्शी है!” 14 फिर समूएल ने
एलान किया, “आओ, हम जिल्जाल जा कर दुबारा
इस की तस्दीक़ करें कि साऊल हमारा बादशाह है।”
15 चुनाँचे तमाम लोगों ने जिल्जाल जा कर रब के
हुज़ूर इस की तस्दीक़ की कि साऊल हमारा बादशाह
है। इस के बाद उन्हों ने रब के हुज़ूर सलामती की
क़ुर्बानियाँ पेश करके बड़ा जश्न मनाया।

समूएल की अलविदाई तक़रीर

12 1 तब समूएल तमाम इस्राईल से मुख़ातिब
हुआ, “मैं ने आप की हर बात मान कर
आप पर बादशाह मुक़र्रर किया है। 2 अब यही आप
के आगे आगे चल कर आप की राहनुमाई करेगा। मैं
ख़ुद बूढ़ा हूँ, और मेरे बाल सफ़ेद हो गए हैं जबकि
मेरे बेटे आप के दरमियान ही रहते हैं। मैं जवानी से
ले कर आज तक आप की राहनुमाई करता आया
हूँ। 3 अब मैं हाज़िर हूँ। अगर मुझ से कोई ग़लती हुई
है तो रब और उस के मसह किए हुए बादशाह के
सामने इस की गवाही दें। क्या मैं ने किसी का बैल
या गधा लूट लिया? क्या मैं ने किसी से ग़लत फ़ाइदा
उठाया या किसी पर ज़ुल्म किया? क्या मैं ने कभी
किसी से रिश्वत ले कर ग़लत फ़ैसला किया है? अगर
ऐसा हुआ तो मुझे बताएँ! फिर मैं सब कुछ वापस
कर दूँगा।”

4 इजतिमा ने जवाब दिया, “न आप ने हम से ग़लत
फ़ाइदा उठाया, न हम पर ज़ुल्म किया है। आप ने
कभी भी रिश्वत नहीं ली।” 5 समूएल बोला, “आज
रब और उस का मसह किया हुआ बादशाह गवाह हैं
कि आप को मुझ पर इल्ज़ाम लगाने का कोई सबब न
मिला।” अवाम ने कहा, “जी, ऐसा ही है।” 6 समूएल
ने बात जारी रखी, “रब ख़ुद मूसा और हारून को
इस्राईल के राहनुमा बना कर आप के बापदादा को
मिस्र से निकाल लाया। 7 अब यहाँ रब के तख़्त-ए-
अदालत के सामने खड़े हो जाएँ तो मैं आप को उन
तमाम भलाइयों की याद दिलाऊँगा जो रब ने आप
और आप के बापदादा से की हैं।

8 आप का बाप याक़ूब मिस्र आया। जब मिस्री
उस की औलाद को दबाने लगे तो उन्हों ने चीख़ते
चिल्लाते रब से मदद माँगी। तब उस ने मूसा और
हारून को भेज दिया ताकि वह पूरी क़ौम को मिस्र
से निकाल कर यहाँ इस मुल्क में लाएँ। 9 लेकिन
जल्द ही वह रब अपने ख़ुदा को भूल गए, इस लिए
उस ने उन्हें दुश्मन के हवाले कर दिया। कभी हसूर
शहर के बादशाह का कमाँडर सीसरा उन से लड़ा,
कभी फ़िलिस्ती और कभी मोआब का बादशाह।
10 हर दफ़ा आप के बापदादा ने चीख़ते चिल्लाते रब से
मदद माँगी और इक़्रार किया, ‘हम ने गुनाह किया है,
क्यूँकि हम ने रब को तर्क करके बाल और अस्तारात
के बुतों की पूजा की है। लेकिन अब हमें दुश्मनों
से बचा! फिर हम सिर्फ़ तेरी ही ख़िदमत करेंगे।’
11 और हर बार रब ने किसी न किसी को भेज दिया,
कभी जिदाऊन, कभी बरक़, कभी इफ़्ताह और कभी
समूएल को। उन आदमियों की मारिफ़त अल्लाह ने
आप को इर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से बचाया, और
मुल्क में अम्न-ओ-अमान क़ाइम हो गया।

12 लेकिन जब अम्मोनी बादशाह नाहस आप से
लड़ने आया तो आप मेरे पास आ कर तक़ाज़ा करने
लगे कि हमारा अपना बादशाह हो जो हम पर हुकूमत
करे, हालाँकि आप जानते थे कि रब हमारा ख़ुदा
हमारा बादशाह है। 13 अब वह बादशाह देखें जिसे
आप माँग रहे थे! रब ने आप की ख़्वाहिश पूरी करके
उसे आप पर मुक़र्रर किया है। 14 चुनाँचे रब का
ख़ौफ़ मानें, उस की ख़िदमत करें और उस की सुनें।
सरकश हो कर उस के अह्काम की ख़िलाफ़वरज़ी

मत करना। अगर आप और आप का बादशाह रब से
वफ़ादार रहेंगे तो वह आप के साथ होगा। 15 लेकिन
अगर आप उस के ताबे न रहें और सरकश हो कर
उस के अह्काम की ख़िलाफ़वरज़ी करें तो वह आप
की मुख़ालफ़त करेगा, जिस तरह उस ने आप के
बापदादा की भी मुख़ालफ़त की।
16 अब खड़े हो कर देखें कि रब क्या करने वाला
है। वह आप की आँखों के सामने ही बड़ा मोजिज़ा
करेगा। 17 इस वक़्त गन्दुम की कटाई का मौसम है।
गो इन दिनों में बारिश नहीं होती, लेकिन मैं दुआ
करूँगा तो रब गरजते बादल और बारिश भेजेगा।
तब आप जान लेंगे कि आप ने बादशाह का तक़ाज़ा
करते हुए रब के नज़्दीक कितनी बुरी बात की है।"
18 समूएल ने पुकार कर रब से दुआ की, और उस
दिन रब ने गरजते बादल और बारिश भेज दी। यह
देख कर इजतिमा सख़्त घबरा कर समूएल और रब
से डरने लगा। 19 सब ने समूएल से इल्तिमास की,
"रब अपने ख़ुदा से दुआ करके हमारी सिफ़ारिश करें
ताकि हम मर न जाएँ। क्यूँकि बादशाह का तक़ाज़ा
करने से हम ने अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा किया है।"
20 समूएल ने लोगों को तसल्ली दे कर कहा, "मत
डरें। बेशक आप से ग़लती हुई है, लेकिन आइन्दा
ख़याल रखें कि आप रब से दूर न हो जाएँ बल्कि
पूरे दिल से उस की ख़िदमत करें। 21 बेमानी बुतों के
पीछे मत पड़ना। न वह फ़ाइदे का बाइस हैं, न आप
को बचा सकते हैं। उन की कोई हैसियत नहीं है।
22 रब अपने अज़ीम नाम की ख़ातिर अपनी क़ौम को
नहीं छोड़ेगा, क्यूँकि उस ने आप को अपनी क़ौम
बनाने का फ़ैसला किया है। 23 जहाँ तक मेरा ताल्लुक़
है, मैं इस में रब का गुनाह नहीं करूँगा कि आप की
सिफ़ारिश करने से बाज़ आऊँ। और आइन्दा भी मैं
आप को अच्छे और सहीह रास्ते की तालीम देता
रहूँगा। 24 लेकिन ध्यान से रब का ख़ौफ़ मानें और
पूरे दिल और वफ़ादारी से उस की ख़िदमत करें।
याद रहे कि उस ने आप के लिए कितने अज़ीम काम
किए हैं। 25 लेकिन अगर आप ग़लत काम करने पर
तुले रहें तो आप अपने बादशाह समेत दुनिया में से
मिट जाएंगे।"

फ़िलिस्तियों से जंग

13 1 साऊल 30 साल का था जब तख़्तनशीन
हुआ। दो साल हुकूमत करने के बाद 2 उस
ने अपनी फ़ौज के लिए 3,000 इस्राईली चुन लिए।
जंग लड़ने के क़ाबिल बाक़ी आदमियों को उस
ने फ़ारिग़ कर दिया। 2,000 फ़ौजियों की ड्यूटी
मिक्मास और बैत-एल के पहाड़ी इलाक़े में लगाई गई
जहाँ साऊल ख़ुद था। बाक़ी 1,000 अफ़राद यूनतन
के पास बिनयमीन के शहर जिबिआ में थे।
3 एक दिन यूनतन ने जिबिआ की फ़िलिस्ती चौकी
पर हम्ला करके उसे शिकस्त दी। जल्द ही यह ख़बर
दूसरे फ़िलिस्तियों तक पहुँच गई। साऊल ने मुल्क
के कोने कोने में क़ासिद भेज दिए, और वह नरसिंगा
बजाते बजाते लोगों को यूनतन की फ़त्ह सुनाते
गए। 4 तमाम इस्राईल में ख़बर फैल गई, "साऊल
ने जिबिआ की फ़िलिस्ती चौकी को तबाह कर दिया
है, और अब इस्राईल फ़िलिस्तियों की ख़ास नफ़रत
का निशाना बन गया है।" साऊल ने तमाम मर्दों को
फ़िलिस्तियों से लड़ने के लिए जिल्जाल में बुलाया।
5 फ़िलिस्ती भी इस्राईलियों से लड़ने के लिए जमा
हुए। उन के 30,000 रथ, 6,000 घुड़सवार और
साहिल की रेत जैसे बेशुमार पियादा फ़ौजी थे। उन्हों
ने बैत-आवन के मशरिक़ में मिक्मास के क़रीब अपने
ख़ैमे लगाए। 6 इस्राईलियों ने देखा कि हम बड़े ख़तरे
में आ गए हैं, और दुश्मन हम पर बहुत दबाओ डाल
रहा है तो परेशानी के आलम में कुछ ग़ारों और दराड़ों
में और कुछ पत्थरों के दरमियान या क़ब्रों और हौज़ों
में छुप गए। 7 कुछ इतने डर गए कि वह दरया-ए-यर्दन
को पार करके जद और जिलिआद के इलाक़े में चले
गए।

साऊल की बेसब्री

साऊल अब तक जिल्जाल में था, लेकिन जो आदमी उस के साथ रहे थे वह ख़ौफ़ के मारे थरथरा रहे थे। 8 समूएल ने साऊल को हिदायत दी थी कि सात दिन मेरा इन्तिज़ार करें। लेकिन सात दिन गुज़र गए, और समूएल न आया। साऊल के फ़ौजी मुन्तशिर होने लगे 9 तो साऊल ने हुक्म दिया, "भस्म होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ ले आओ।" फिर उस ने ख़ुद क़ुर्बानियाँ पेश कीं।

10 वह अभी इस काम से फ़ारिग़ ही हुआ था कि समूएल पहुँच गया। साऊल उसे ख़ुशआमदीद कहने के लिए निकला। 11 लेकिन समूएल ने पूछा, "आप ने क्या किया?"

साऊल ने जवाब दिया, "लोग मुन्तशिर हो रहे थे, और आप वक़्त पर न आए। जब मैं ने देखा कि फ़िलिस्ती मिक्मास के क़रीब जमा हो रहे हैं 12 तो मैं ने सोचा, 'फ़िलिस्ती यहाँ जिल्जाल में आ कर मुझ पर हम्ला करने को हैं, हालाँकि मैं ने अभी रब से दुआ नहीं की कि वह हम पर मेहरबानी करे।' इस लिए मैं ने जुरअत करके ख़ुद क़ुर्बानियाँ पेश कीं।"

13 समूएल बोला, "यह कैसी अहमक़ाना हरकत थी! आप ने रब अपने ख़ुदा का हुक्म न माना। रब तो आप और आप की औलाद को हमेशा के लिए इस्राईल पर मुक़र्रर करना चाहता था। 14 लेकिन अब आप की बादशाहत क़ाइम नहीं रहेगी। चूँकि आप ने उस की न सुनी इस लिए रब ने किसी और को चुन कर अपनी क़ौम का राहनुमा मुक़र्रर किया है, एक ऐसे आदमी को जो उस की सोच रखेगा।"

15 फिर समूएल जिल्जाल से चला गया।

जंग की तय्यारियाँ

बचे हुए इस्राईली साऊल के पीछे दुश्मन से लड़ने गए। वह जिल्जाल से रवाना हो कर जिबिआ पहुँच गए। जब साऊल ने वहाँ फ़ौज का जाइज़ा लिया तो बस 600 अफ़राद रह गए थे। 16 साऊल, यूनतन और उन की फ़ौज बिनयमीन के शहर जिबिआ में टिक गए जबकि फ़िलिस्ती मिक्मास के पास ख़ैमाज़न थे। 17 कुछ देर के बाद फ़िलिस्तियों के तीन दस्ते मुल्क को लूटने के लिए निकले। एक सूआल के इलाक़े के शहर उफ़्रा की तरफ़ चल पड़ा, 18 दूसरा बैत-हौरून की तरफ़ और तीसरा उस पहाड़ी सिलसिले की तरफ़ जहाँ से वादी-ए-ज़बोईम और रेगिस्तान देखा जा सकता है।

19 उन दिनों में पूरे मुल्क-ए-इस्राईल में लोहार नहीं था, क्यूँकि फ़िलिस्ती नहीं चाहते थे कि इस्राईली तलवारें या नेज़े बनाएँ। 20 अपने हलों, कुदालों, कुल्हाड़ियों या दरान्तियों को तेज़ करवाने के लिए तमाम इस्राईलियों को फ़िलिस्तियों के पास जाना पड़ता था। 21 फ़िलिस्ती हलों, कुदालों, काँटों और कुल्हाड़ियों को तेज़ करने के लिए और आँकुसों की नोक ठीक करने के लिए चाँदी के सिक्के की दो तिहाई लेते थे। 22 नतीजे में उस दिन साऊल और यूनतन के सिवा किसी भी इस्राईली के पास तलवार या नेज़ा नहीं था।

यूनतन फ़िलिस्तियों पर हम्ला करता है

23 फ़िलिस्तियों ने मिक्मास के दर्रे पर क़ब्ज़ा करके वहाँ चौकी क़ाइम की थी।

14 1 एक दिन यूनतन ने अपने जवान सिलाहबर्दार से कहा, "आओ, हम परली तरफ़ जाएँ जहाँ फ़िलिस्ती फ़ौज की चौकी है।" लेकिन उस ने अपने बाप को इत्तिला न दी।

2 साऊल उस वक़्त अनार के दरख़्त के साय में बैठा था जो जिबिआ के क़रीब के मिज़्रोन में था। 600 मर्द उस के पास थे। 3 अख़ियाह इमाम भी साथ था जो इमाम का बालापोश पहने हुए था। अख़ियाह यकबोद के भाई अख़ीतूब का बेटा था। उस का दादा फ़ीन्हास और परदादा एली था, जो पुराने ज़माने में सैला में रब का इमाम था। किसी को भी मालूम न था कि यूनतन चला गया है।

4–5 फ़िलिस्ती चौकी तक पहुँचने के लिए यूनतन
ने एक तंग रास्ता इख़तियार किया जो दो कड़ाड़ों
के दरमियान से गुज़रता था। पहले का नाम बोसीस
था, और वह शिमाल में मिक्मास के मुक़ाबिल था।
दूसरे का नाम सना था, और वह जुनूब में जिबा के
मुक़ाबिल था। 6 यूनतन ने अपने जवान सिलाहबर्दार
से कहा, "आओ, हम परली तरफ़ जाएँ जहाँ इन
नामख़्तूनों की चौकी है। शायद रब हमारी मदद करे,
क्यूँकि उस के नज़्दीक कोई फ़र्क़ नहीं कि हम ज़्यादा
हों या कम।" 7 उस का सिलाहबर्दार बोला, "जो कुछ
आप ठीक समझते हैं, वही करें। ज़रूर जाएँ। जो कुछ
भी आप कहेंगे, मैं हाज़िर हूँ।" 8 यूनतन बोला, "ठीक
है। फिर हम यूँ दुश्मनों की तरफ़ बढ़ते जाएंगे, कि
हम उन्हें साफ़ नज़र आएँ। 9 अगर वह हमें देख कर
पुकारें, 'रुक जाओ, वर्ना हम तुम्हें मार देंगे!' तो हम
अपने मन्सूबे से बाज़ आ कर उन के पास नहीं जाएंगे।
10 लेकिन अगर वह पुकारें, 'आओ, हमारे पास आ
जाओ!' तो हम ज़रूर उन के पास चढ़ जाएंगे। क्यूँकि
यह इस का निशान होगा कि रब उन्हें हमारे क़ब्ज़े में
कर देगा।"

11 चुनाँचे वह चलते चलते फ़िलिस्ती चौकी को
नज़र आए। फ़िलिस्ती शोर मचाने लगे, "देखो,
इस्राईली अपने छुपने के बिलों से निकल रहे
हैं!" 12 चौकी के फ़ौजियों ने दोनों को चैलेंज
किया, "आओ, हमारे पास आओ तो हम तुम्हें
सबक़ सिखाएँगे।" यह सुन कर यूनतन ने अपने
सिलाहबर्दार को आवाज़ दी, "आओ, मेरे पीछे
चलो! रब ने उन्हें इस्राईल के हवाले कर दिया है।"
13 दोनों अपने हाथों और पैरों के बल चढ़ते चढ़ते
चौकी तक जा पहुँचे। जब यूनतन आगे आगे चल
कर फ़िलिस्तियों के पास पहुँच गया तो वह उस के
सामने गिरते गए। साथ साथ सिलाहबर्दार पीछे से
लोगों को मारता गया।

14 इस पहले हमले के दौरान उन्हों ने तक़रीबन 20
आदमियों को मार डाला। उन की लाशें आध एकड़
ज़मीन पर बिखरी पड़ी थीं। 15 अचानक पूरी फ़ौज
में दहशत फैल गई, न सिर्फ़ लश्करगाह बल्कि खुले
मैदान में भी। चौकी के मर्द और लूटने वाले दस्ते
भी थरथराने लगे। साथ साथ ज़ल्ज़ला आया। रब ने
तमाम फ़िलिस्ती फ़ौजियों के दिलों में दहशत पैदा
की।

रब फ़िलिस्तियों पर फ़त्ह देता है

16 साऊल के जो पहरेदार जिबिआ से दुश्मन की
हरकतों पर ग़ौर कर रहे थे उन्हों ने अचानक देखा
कि फ़िलिस्ती फ़ौज में हलचल मच गई है, अफ़्रा-
तफ़्री कभी इस तरफ़, कभी उस तरफ़ बढ़ रही है।
17 साऊल ने फ़ौरन हुक्म दिया, "फ़ौजियों को गिन
कर मालूम करो कि कौन चला गया है।" मालूम हुआ
कि यूनतन और उस का सिलाहबर्दार मौजूद नहीं हैं।
18 साऊल ने अख़ियाह को हुक्म दिया, "अह्द का
सन्दूक़ ले आएँ।" क्यूँकि वह उन दिनों में इस्राईली
कैम्प में था। 19 लेकिन साऊल अभी अख़ियाह से
बात कर रहा था कि फ़िलिस्ती लश्करगाह में हंगामा
और शोर बहुत ज़्यादा बढ़ गया। साऊल ने इमाम से
कहा, "कोई बात नहीं, रहने दें।" 20 वह अपने 600
अफ़राद को ले कर फ़ौरन दुश्मन पर टूट पड़ा। जब
उन तक पहुँच गए तो मालूम हुआ कि फ़िलिस्ती एक
दूसरे को क़त्ल कर रहे हैं, और हर तरफ़ हंगामा ही
हंगामा है।

21 फ़िलिस्तियों ने काफ़ी इस्राईलियों को अपनी
फ़ौज में शामिल कर लिया था। अब यह लोग
फ़िलिस्तियों को छोड़ कर साऊल और यूनतन के
पीछे हो लिए। 22 इन के इलावा जो इस्राईली इफ़्राईम
के पहाड़ी इलाक़े में इधर उधर छुप गए थे, जब उन्हें
ख़बर मिली कि फ़िलिस्ती भाग रहे हैं तो वह भी उन
का ताक़्क़ुब करने लगे। 23 लड़ते लड़ते मैदान-ए-जंग
बैत-आवन तक फैल गया। इस तरह रब ने उस दिन
इस्राईलियों को बचा लिया।

साऊल की बेसोचे-समझे लानत

24 उस दिन इस्राईली सख़्त लड़ाई के बाइस बड़ी
मुसीबत में थे। इस लिए साऊल ने क़सम खा कर
कहा, "उस पर लानत जो शाम से पहले खाना खाए।
पहले मैं अपने दुश्मन से इन्तिक़ाम लूँगा, फिर ही सब
खा पी सकते हैं।" इस वजह से किसी ने रोटी को हाथ
तक न लगाया। 25 पूरी फ़ौज जंगल में दाख़िल हुई तो
वहाँ ज़मीन पर शहद के छत्ते थे। 26 तमाम लोग जब
उन के पास से गुज़रे तो देखा कि उन से शहद टपक
रहा है। लेकिन किसी ने थोड़ा भी ले कर खाने की
जुरअत न की, क्यूँकि सब साऊल की लानत से डरते
थे।

27 यूनतन को लानत का इल्म न था, इस लिए उस
ने अपनी लाठी का सिरा किसी छत्ते में डाल कर उसे
चाट लिया। उस की आँखें फ़ौरन चमक उठीं, और
वह ताज़ादम हो गया। 28 किसी ने देख कर यूनतन
को बताया, "आप के बाप ने फ़ौज से क़सम खिला
कर एलान किया है कि उस पर लानत जो इस दिन
कुछ खाए। इसी वजह से हम सब इतने निढाल हो
गए हैं।" 29 यूनतन ने जवाब दिया, "मेरे बाप ने मुल्क
को मुसीबत में डाल दिया है! देखो, इस थोड़े से शहद
को चखने से मेरी आँखें कितनी चमक उठीं और मैं
कितना ताज़ादम हो गया। 30 बेहतर होता कि हमारे
लोग दुश्मन से लूटे हुए माल में से कुछ न कुछ खा
लेते। लेकिन इस हालत में हम फ़िलिस्तियों को किस
तरह ज़्यादा नुक़्सान पहुँचा सकते हैं?"

31 उस दिन इस्राईली फ़िलिस्तियों को मिक्मास से
मार मार कर अय्यालोन तक पहुँच गए। लेकिन शाम
के वक़्त वह निहायत निढाल हो गए थे। 32 फिर वह
लूटे हुए रेवड़ों पर टूट पड़े। उन्हों ने जल्दी जल्दी भेड़-
बकरियों, गाय-बैलों और बछड़ों को ज़बह किया।
भूक की शिद्दत की वजह से उन्हों ने ख़ून को सहीह
तौर से निकलने न दिया बल्कि जानवरों को ज़मीन
पर छोड़ कर गोश्त को ख़ून समेत खाने लगे।

33 किसी ने साऊल को इत्तिला दी, "देखें, लोग
रब का गुनाह कर रहे हैं, क्यूँकि वह गोश्त खा रहे
हैं जिस में अब तक ख़ून है।" यह सुन कर साऊल
पुकार उठा, "आप रब से वफ़ादार नहीं रहे!" फिर
उस ने साथ वाले आदमियों को हुक्म दिया, "कोई
बड़ा पत्थर लुढ़का कर इधर ले आएँ! 34 फिर तमाम
आदमियों के पास जा कर उन्हें बता देना, 'अपने
जानवरों को मेरे पास ले आएँ ताकि उन्हें पत्थर पर
ज़बह करके खाएँ। वर्ना आप ख़ूनआलूदा गोश्त खा
कर रब का गुनाह करेंगे'।"

सब मान गए। उस शाम वह साऊल के पास आए
और अपने जानवरों को पत्थर पर ज़बह किया।
35 वहाँ साऊल ने पहली दफ़ा रब की ताज़ीम में
क़ुर्बानगाह बनाई।

36 फिर उस ने एलान किया, "आएँ, हम अभी
इसी रात फ़िलिस्तियों का ताक़्क़ुब करके उन में
लूट-मार का सिलसिला जारी रखें ताकि एक भी
न बचे।" फ़ौजियों ने जवाब दिया, "ठीक है, वह
कुछ करें जो आप को मुनासिब लगे।" लेकिन इमाम
बोला, "पहले हम अल्लाह से हिदायत लें।" 37 चुनाँचे
साऊल ने अल्लाह से पूछा, "क्या हम फ़िलिस्तियों का
ताक़्क़ुब जारी रखें? क्या तू उन्हें इस्राईल के हवाले
कर देगा?" लेकिन इस मर्तबा अल्लाह ने जवाब न
दिया।

38 यह देख कर साऊल ने फ़ौज के तमाम
राहनुमाओं को बुला कर कहा, "किसी ने गुनाह
किया है। मालूम करने की कोशिश करें कि कौन
क़ुसूरवार है। 39 रब की हयात की क़सम जो इस्राईल
का नजातदहिन्दा है, क़ुसूरवार को फ़ौरन सज़ा-ए-
मौत दी जाएगी, ख़्वाह वह मेरा बेटा यूनतन क्यूँ न
हो।" लेकिन सब ख़ामोश रहे।

40 तब साऊल ने दुबारा एलान किया, "पूरी फ़ौज
एक तरफ़ खड़ी हो जाए और यूनतन और मैं दूसरी
तरफ़।" लोगों ने जवाब दिया, "जो आप को मुनासिब
लगे वह करें।" 41 फिर साऊल ने रब इस्राईल के ख़ुदा

से दुआ की, “ऐ रब, हमें दिखा कि कौन क़ुसूरवार है!”

जब क़ुरआ डाला गया तो यूनतन और साऊल के गुरोह को क़ुसूरवार क़रार दिया गया और बाक़ी फ़ौज को बेक़ुसूर। 42 फिर साऊल ने हुक्म दिया, “अब क़ुरआ डाल कर पता करें कि मैं क़ुसूरवार हूँ या यूनतन।” जब क़ुरआ डाला गया तो यूनतन क़ुसूरवार ठहरा। 43 साऊल ने पूछा, “बताएँ, आप ने क्या किया?” यूनतन ने जवाब दिया, “मैं ने सिर्फ़ थोड़ा सा शहद चख लिया जो मेरी लाठी के सिरे पर लगा था। लेकिन मैं मरने के लिए तय्यार हूँ।” 44 साऊल ने कहा, “यूनतन, अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं आप को इस के लिए सज़ा-ए-मौत न दूँ।” 45 लेकिन फ़ौजियों ने एतिराज़ किया, “यह कैसी बात है? यूनतन ही ने अपने ज़बरदस्त हमले से इस्राईल को आज बचा लिया है। उसे किस तरह सज़ा-ए-मौत दी जा सकती है? कभी नहीं! अल्लाह की हयात की क़सम, उस का एक बाल भी बीका नहीं होगा, क्यूँकि आज उस ने अल्लाह की मदद से फ़त्ह पाई है।” यूँ फ़ौजियों ने यूनतन को मौत से बचा लिया।

46 तब साऊल ने फ़िलिस्तियों का ताक़्क़ुब करना छोड़ दिया और अपने घर चला गया। फ़िलिस्ती भी अपने मुल्क में वापस चले गए।

साऊल की जंगें

47 जब साऊल तख़्तनशीन हुआ तो वह मुल्क के इर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से लड़ा। इन में मोआब, अम्मोन, अदोम, ज़ोबाह के बादशाह और फ़िलिस्ती शामिल थे। और जहाँ भी जंग छिड़ी वहाँ उस ने फ़त्ह पाई। 48 वह निहायत बहादुर था। उस ने अमालीक़ियों को भी शिकस्त दी और यूँ इस्राईल को उन तमाम दुश्मनों से बचा लिया जो बार बार मुल्क की लूट-मार करते थे।

साऊल का ख़ानदान

49 साऊल के तीन बेटे थे, यूनतन, इस्वी और मल्कीशूअ। उस की बड़ी बेटी मीरब और छोटी बेटी मीकल थी। 50 बीवी का नाम अख़ीनूअम बिन्त अख़ीमाज़ था। साऊल की फ़ौज का कमाँडर अबिनैर था, जो साऊल के चचा नैर का बेटा था। 51 साऊल का बाप क़ीस और अबिनैर का बाप नैर सगे भाई थे जिन का बाप अबीएल था।

52 साऊल के जीते जी फ़िलिस्तियों से सख़्त जंग जारी रही। इस लिए जब भी कोई बहादुर और लड़ने के क़ाबिल आदमी नज़र आया तो साऊल ने उसे अपनी फ़ौज में भर्ती कर लिया।

तमाम अमालीक़ियों को हलाक करने का हुक्म

15 1 एक दिन समूएल ने साऊल के पास आ कर उस से बात की, “रब ही ने मुझे आप को मसह करके इस्राईल पर मुक़र्रर करने का हुक्म दिया था। अब रब का पैग़ाम सुन लें! 2 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, ‘मैं अमालीक़ियों का मेरी क़ौम के साथ सुलूक नहीं भूल सकता। उस वक़्त जब इस्राईली मिस्र से निकल कर कनआन की तरफ़ सफ़र कर रहे थे तो अमालीक़ियों ने रास्ता बन्द कर दिया था। 3 अब वक़्त आ गया है कि तू उन पर हम्ला करे। सब कुछ तबाह करके मेरे हवाले कर दे। कुछ भी बचने न दे, बल्कि तमाम मर्दों, औरतों, बच्चों शीरख़्वारों समेत, गाय-बैलों, भेड़-बकरियों, ऊँटों और गधों को मौत के घाट उतार दे।’”

4 साऊल ने अपने फ़ौजियों को बुला कर तलाइम में उन का जाइज़ा लिया। कुल 2,00,000 पयादे फ़ौजी थे, नीज़ यहूदाह के 10,000 अफ़राद। 5 अमालीक़ियों के शहर के पास पहुँच कर साऊल वादी में ताक में बैठ गया। 6 लेकिन पहले उस ने क़ीनियों को ख़बर भेजी, “अमालीक़ियों से अलग हो कर उन के पास से चले जाएँ, वर्ना आप उन के साथ हलाक हो जाएंगे। क्यूँकि जब इस्राईली मिस्र

से निकल कर रेगिस्तान में सफ़र कर रहे थे तो आप
ने उन पर मेहरबानी की थी।” यह ख़बर मिलते ही
क़ीनी अमालीक़ियों से अलग हो कर चले गए। 7 तब
साऊल ने अमालीक़ियों पर हम्ला करके उन्हें हवीला
से ले कर मिस्र की मशरिक़ी सरहद शूर तक शिकस्त
दी। 8 पूरी क़ौम को तलवार से मारा गया, सिर्फ़ उन
का बादशाह अजाज ज़िन्दा पकड़ा गया। 9 साऊल
और उस के फ़ौजियों ने उसे ज़िन्दा छोड़ दिया।
इसी तरह सब से अच्छी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों,
मोटे-ताज़े बछड़ों और चीदा भेड़ के बच्चों को भी
छोड़ दिया गया। जो भी अच्छा था बच गया, क्यूँकि
इस्राईलियों का दिल नहीं करता था कि तन्दुरुस्त
और मोटे-ताज़े जानवरों को हलाक करें। उन्हों ने
सिर्फ़ उन तमाम कमज़ोर जानवरों को ख़त्म किया
जिन की क़दर-ओ-क़ीमत न थी।

फ़रमाँबरदारी क़ुर्बानियों से अहम है

10 फिर रब समूएल से हमकलाम हुआ, 11 “मुझे
दुख है कि मैं ने साऊल को बादशाह बना लिया
है, क्यूँकि उस ने मुझ से दूर हो कर मेरा हुक्म
नहीं माना।” समूएल को इतना ग़ुस्सा आया कि वह
पूरी रात बुलन्द आवाज़ से रब से फ़र्याद करता
रहा। 12 अगले दिन वह उठ कर साऊल से मिलने
गया। किसी ने उसे बताया, “साऊल कर्मिल चला
गया। वहाँ अपने लिए यादगार खड़ा करके वह आगे
जिल्जाल चला गया है।” 13 जब समूएल जिल्जाल
पहुँचा तो साऊल ने कहा, “मुबारक हो! मैं ने रब
का हुक्म पूरा कर दिया है।” 14 समूएल ने पूछा,
“जानवरों का यह शोर कहाँ से आ रहा है? भेड़-
बकरियाँ ममया रही और गाय-बैल डकरा रहे हैं।”
15 साऊल ने जवाब दिया, “यह अमालीक़ियों के हाँ
से लाए गए हैं। फ़ौजियों ने सब से अच्छे गाय-बैलों
और भेड़-बकरियों को ज़िन्दा छोड़ दिया ताकि उन्हें
रब आप के ख़ुदा के हुज़ूर क़ुर्बान करें। लेकिन हम
ने बाक़ी सब को रब के हवाले करके मार दिया।”
16 समूएल बोला, “ख़ामोश! पहले वह बात सुन
लें जो रब ने मुझे पिछली रात फ़रमाई।” साऊल ने
जवाब दिया, “बताएँ।” 17 समूएल ने कहा, “जब
आप तमाम क़ौम के राहनुमा बन गए तो एहसास-
ए-कमतरी का शिकार थे। तो भी रब ने आप को
मसह करके इस्राईल का बादशाह बना दिया। 18 और
उस ने आप को भेज कर हुक्म दिया, ‘जा और
अमालीक़ियों को पूरे तौर पर हलाक करके मेरे
हवाले कर। उस वक़्त तक इन शरीर लोगों से लड़ता
रह जब तक वह सब के सब मिट न जाएँ।’ 19 अब
मुझे बताएँ कि आप ने रब की क्यूँ न सुनी? आप लूटे
हुए माल पर क्यूँ टूट पड़े? यह तो रब के नज़्दीक
गुनाह है।”
20 साऊल ने एतिराज़ किया, “लेकिन मैं ने ज़रूर
रब की सुनी। जिस मक़्सद के लिए रब ने मुझे भेजा
वह मैं ने पूरा कर दिया है, क्यूँकि मैं अमालीक़ के
बादशाह अजाज को गिरिफ़्तार करके यहाँ ले आया
और बाक़ी सब को मौत के घाट उतार कर रब के
हवाले कर दिया। 21 मेरे फ़ौजी लूटे हुए माल में से
सिर्फ़ सब से अच्छी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल चुन
कर ले आए, क्यूँकि वह उन्हें यहाँ जिल्जाल में रब
आप के ख़ुदा के हुज़ूर क़ुर्बान करना चाहते थे।”
22 लेकिन समूएल ने जवाब दिया, “रब को क्या
बात ज़्यादा पसन्द है, आप की भस्म होने वाली और
ज़बह की क़ुर्बानियाँ या यह कि आप उस की सुनते
हैं? सुनना क़ुर्बानी से कहीं बेहतर और ध्यान देना
मेंढे की चर्बी से कहीं उम्दा है। 23 सरकशी ग़ैबदानी
के गुनाह के बराबर है और ग़ुरूर बुतपरस्ती के गुनाह
से कम नहीं होता। आप ने रब का हुक्म रद्द किया
है, इस लिए उस ने आप को रद्द करके बादशाह का
उह्दा आप से छीन लिया है।”
24 तब साऊल ने इक़्रार किया, “मुझ से गुनाह हुआ
है। मैं ने आप की हिदायत और रब के हुक्म की
ख़िलाफ़वरज़ी की है। मैं ने लोगों से डर कर उन
की बात मान ली। 25 लेकिन अब मेहरबानी करके
मुझे मुआफ़ करें और मेरे साथ वापस आएँ ताकि मैं

आप की मौजूदगी में रब की परस्तिश कर सकूँ।”
26 लेकिन समूएल ने जवाब दिया, “मैं आप के साथ
वापस नहीं चलूँगा। आप ने रब का कलाम रद्द किया
है, इस लिए रब ने आप को रद्द करके बादशाह का
उह्दा आप से छीन लिया है।”
27 समूएल मुड़ कर वहाँ से चलने लगा, लेकिन
साऊल ने उस के चोग़े का दामन इतने ज़ोर से पकड़
लिया कि वह फट कर उस के हाथ में रह गया।
28 समूएल बोला, “जिस तरह कपड़ा फट कर आप
के हाथ में रह गया बिलकुल उसी तरह रब ने आज
ही इस्राईल पर आप का इख़तियार आप से छीन कर
किसी और को दे दिया है, ऐसे शख़्स को जो आप से
कहीं बेहतर है। 29 जो इस्राईल की शान-ओ-शौकत है
वह न झूट बोलता, न कभी अपनी सोच को बदलता
है, क्यूँकि वह इन्सान नहीं कि एक बात कह कर
बाद में उसे बदले।”
30 साऊल ने दुबारा मिन्नत की, “बेशक मैं ने गुनाह
किया है। लेकिन बराह-ए-करम कम अज़ कम मेरी
क़ौम के बुज़ुर्गों और इस्राईल के सामने तो मेरी
इज़्ज़त करें। मेरे साथ वापस आएँ ताकि मैं आप
की मौजूदगी में रब आप के ख़ुदा की परस्तिश कर
सकूँ।”
31 तब समूएल मान गया और साऊल के साथ दूसरों
के पास वापस आया। साऊल ने रब की परस्तिश
की, 32 फिर समूएल ने एलान किया, “अमालीक़ के
बादशाह अजाज को मेरे पास ले आओ!” अजाज
इत्मीनान से समूएल के पास आया, क्यूँकि उस
ने सोचा, “बेशक मौत का ख़तरा टल गया है।”
33 लेकिन समूएल बोला, “तेरी तलवार से बेशुमार
माएँ अपने बच्चों से महरूम हो गई हैं। अब तेरी माँ
भी बेऔलाद हो जाएगी।” यह कह कर समूएल ने
वहीं जिल्जाल में रब के हुज़ूर अजाज को तलवार से
टुकड़े टुकड़े कर दिया।
34 फिर वह रामा वापस चला गया, और साऊल
अपने घर गया जो जिबिआ में था। 35 इस के बाद
समूएल जीते जी साऊल से कभी न मिला, क्यूँकि
वह साऊल का मातम करता रहा। लेकिन रब को
दुख था कि मैं ने साऊल को इस्राईल पर क्यूँ मुक़र्रर
किया।

नए बादशाह दाऊद को मुक़र्रर किया जाता है

16 1 एक दिन रब समूएल से हमकलाम हुआ,
“तू कब तक साऊल का मातम करेगा? मैं
ने तो उसे रद्द करके बादशाह का उह्दा उस से ले
लिया है। अब मेंढे का सींग ज़ैतून के तेल से भर कर
बैत-लहम चला जा। वहाँ एक आदमी से मिल जिस
का नाम यस्सी है। क्यूँकि मैं ने उस के बेटों में से एक
को चुन लिया है कि वह नया बादशाह बन जाए।”
2 लेकिन समूएल ने एतिराज़ किया, “मैं किस तरह जा
सकता हूँ? साऊल यह सुन कर मुझे मार डालेगा।”
रब ने जवाब दिया, “एक जवान गाय अपने साथ ले
कर लोगों को बता दे कि मैं इसे रब के हुज़ूर क़ुर्बान
करने के लिए आया हूँ। 3 यस्सी को दावत दे कि
वह क़ुर्बानी की ज़ियाफ़त में शरीक हो जाए। आगे मैं
तुझे बताऊँगा कि क्या करना है। मैं तुझे दिखाऊँगा
कि किस बेटे को मेरे लिए मसह करके चुन लेना है।”
4 समूएल मान गया। जब वह बैत-लहम पहुँच गया
तो लोग चौंक उठे। लरज़ते लरज़ते शहर के बुज़ुर्ग उस
से मिलने आए और पूछा, “ख़ैरियत तो है कि आप
हमारे पास आ गए हैं?” 5 समूएल ने उन्हें तसल्ली दे
कर कहा, “ख़ैरियत है। मैं रब के हुज़ूर क़ुर्बानी पेश
करने के लिए आया हूँ। अपने आप को रब के लिए
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करें और फिर मेरे साथ क़ुर्बानी
की ज़ियाफ़त में शरीक हो जाएँ।” समूएल ने यस्सी
और उस के बेटों को भी दावत दी और उन्हें अपने
आप को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करने को कहा।
6 जब यस्सी अपने बेटों समेत क़ुर्बानी की ज़ियाफ़त
के लिए आया तो समूएल की नज़र इलियाब पर पड़ी।
उस ने सोचा, “बेशक यह वह है जिसे रब मसह
करके बादशाह बनाना चाहता है।” 7 लेकिन रब ने
फ़रमाया, “इस की शक्ल-ओ-सूरत और लम्बे क़द
से मुतअस्सिर न हो, क्यूँकि यह मुझे नामन्ज़ूर है।

मैं इन्सान की नज़र से नहीं देखता। क्यूँकि इन्सान
ज़ाहिरी सूरत पर ग़ौर करके फ़ैसला करता है जबकि
रब को हर एक का दिल साफ़ साफ़ नज़र आता है।”
8 फिर यस्सी ने अपने दूसरे बेटे अबीनदाब को बुला
कर समूएल के सामने से गुज़रने दिया। समूएल बोला,
“नहीं, रब ने इसे भी नहीं चुना।” 9 इस के बाद यस्सी
ने तीसरे बेटे सम्मा को पेश किया। लेकिन यह भी
नहीं चुना गया था। 10 यूँ यस्सी ने अपने सात बेटों को
एक एक करके समूएल के सामने से गुज़रने दिया।
इन में से कोई रब का चुना हुआ बादशाह न निकला।
11 आख़िरकार समूएल ने पूछा, “इन के इलावा कोई
और बेटा तो नहीं है?” यस्सी ने जवाब दिया, “सब
से छोटा बेटा अभी बाक़ी रह गया है, लेकिन वह
बाहर खेतों में भेड़-बकरियों की निगरानी कर रहा
है।” समूएल ने कहा, “उसे फ़ौरन बुला लें। उस के
आने तक हम खाने के लिए नहीं बैठेंगे।”
12 चुनाँचे यस्सी छोटे को बुला कर अन्दर ले आया।
यह बेटा गोरा था। उस की आँखें ख़ूबसूरत और
शक्ल-ओ-सूरत क़ाबिल-ए-तारीफ़ थी। रब ने समूएल
को बताया, “यही है। उठ कर इसे मसह कर।”
13 समूएल ने तेल से भरा हुआ मेंढे का सींग ले कर
उसे दाऊद के सर पर उंडेल दिया। सब भाई मौजूद
थे। उसी वक़्त रब का रूह दाऊद पर नाज़िल हुआ
और उस की सारी उम्र उस पर ठहरा रहा। फिर
समूएल रामा वापस चला गया।

दाऊद साऊल को बदरुह से आराम दिलाता है

14 लेकिन रब के रूह ने साऊल को छोड़ दिया
था। इस के बजाय रब की तरफ़ से एक बुरी रूह
उसे दहशतज़दा करने लगी। 15 एक दिन साऊल के
मुलाज़िमों ने उस से कहा, “अल्लाह की तरफ़ से एक
बुरी रूह आप के दिल में दहशत पैदा कर रही है।
16 हमारा आक़ा अपने ख़ादिमों को हुक्म दे कि वह
किसी को ढूँड लाएँ जो सरोद बजा सके। जब भी
अल्लाह की तरफ़ से यह बुरी रूह आप पर आए तो वह
अपना साज़ बजा कर आप को सुकून दिलाएगा।”
17 साऊल ने जवाब दिया, “ठीक है, ऐसा ही करो।
किसी को बुला लाओ जो साज़ बजाने में माहिर हो।”
18 एक मुलाज़िम बोला, “मैं ने एक आदमी को देखा
है जो ख़ूब बजा सकता है। वह बैत-लहम के रहने
वाले यस्सी का बेटा है। वह न सिर्फ़ महारत से सरोद
बजा सकता है बल्कि बड़ा जंगजू भी है। यह भी उस
की एक ख़ूबी है कि वह हर मौक़े पर समझदारी से
बात कर सकता है। और वह ख़ूबसूरत भी है। रब
उस के साथ है।”
19 साऊल ने फ़ौरन अपने क़ासिदों को यस्सी के
पास भेज कर उसे इत्तिला दी, “अपने बेटे दाऊद को
जो भेड़-बकरियों को सँभालता है मेरे पास भेज देना।”
20 यह सुन कर यस्सी ने रोटी, मै का मश्कीज़ा और
एक जवान बकरी गधे पर लाद कर दाऊद के हवाले
कर दी और उसे साऊल के दरबार में भेज दिया।
21 इस तरह दाऊद साऊल की ख़िदमत में हाज़िर
हो गया। वह बादशाह को बहुत पसन्द आया
बल्कि साऊल को इतना प्यारा लगा कि उसे अपना
सिलाहबर्दार बना लिया। 22 साऊल ने यस्सी को
इत्तिला भेजी, “दाऊद मुझे बहुत पसन्द आया है,
इस लिए उसे मुस्तक़िल तौर पर मेरी ख़िदमत करने
की इजाज़त दें।” 23 और जब भी बुरी रूह साऊल
पर आती तो दाऊद अपना सरोद बजाने लगता। तब
साऊल को सुकून मिलता और बुरी रूह उस पर से
दूर हो जाती।

जाती जालूत

17 1 एक दिन फ़िलिस्तियों ने अपनी फ़ौज को
यहूदाह के शहर सोका के क़रीब जमा
किया। वह इफ़स-दम्मीम में ख़ैमाज़न हुए जो सोका
और अज़ीक़ा के दरमियान है। 2 जवाब में साऊल
ने अपनी फ़ौज को बुला कर वादी-ए-ऐला में जमा
किया। वहाँ इस्राईल के मर्द जंग के लिए तर्तीब से
खड़े हुए। 3 यूँ फ़िलिस्ती एक पहाड़ी पर खड़े थे और
इस्राईली दूसरी पहाड़ी पर। उन के बीच में वादी थी।

4 फिर फ़िलिस्ती सफ़ों से जात शहर का पहलवान
निकल कर इस्राईलियों के सामने खड़ा हुआ। उस
का नाम जालूत था और वह 9 फ़ुट से ज़्यादा लम्बा
था। 5 उस ने हिफ़ाज़त के लिए पीतल की कई चीज़ें
पहन रखी थीं : सर पर ख़ोद, धड़ पर ज़िराबक्तर जो
57 किलोग्राम वज़नी था 6 और पिंडलियों पर बक्तर।
कंधों पर पीतल की शम्शीर लटकी हुई थी। 7 जो नेज़ा
वह पकड़ कर चल रहा था उस का दस्ता खड्डी के
शहतीर जैसा मोटा और लम्बा था, और उस के लोहे
की नोक का वज़न 7 किलोग्राम से ज़्यादा था। जालूत
के आगे आगे एक आदमी उस की ढाल उठाए चल
रहा था।

8 जालूत इस्राईली सफ़ों के सामने रुक कर गरजा,
"तुम सब क्यूँ लड़ने के लिए सफ़आरा हो गए हो?
क्या मैं फ़िलिस्ती नहीं हूँ जबकि तुम सिर्फ़ साऊल के
नौकर-चाकर हो? चलो, एक आदमी को चुन कर उसे
यहाँ नीचे मेरे पास भेज दो। 9 अगर वह मुझ से लड़
सके और मुझे मार दे तो हम तुम्हारे ग़ुलाम बन जाएंगे।
लेकिन अगर मैं उस पर ग़ालिब आ कर उसे मार डालूँ
तो तुम हमारे ग़ुलाम बन जाओगे। 10 आज मैं इस्राईली
सफ़ों की बदनामी करके उन्हें चैलेंज करता हूँ कि
मुझे एक आदमी दो जो मेरे साथ लड़े।" 11 जालूत
की यह बातें सुन कर साऊल और तमाम इस्राईली
घबरा गए, और उन पर दहशत तारी हो गई।

दाऊद भाइयों से मिलने के लिए फ़ौज के पास जाता है

12 उस वक़्त दाऊद का बाप यस्सी काफ़ी बूढ़ा हो
चुका था। उस के कुल 8 बेटे थे, और वह इफ़्राता के
इलाक़े के बैत-लहम में रहता था। 13 लेकिन उस के
तीन सब से बड़े बेटे फ़िलिस्तियों से लड़ने के लिए
साऊल की फ़ौज में भर्ती हो गए थे। सब से बड़े का
नाम इलियाब, दूसरे का अबीनदाब और तीसरे का
सम्मा था। 14–15 दाऊद तो सब से छोटा भाई था।
वह दूसरों की तरह पूरा वक़्त साऊल के पास न
गुज़ार सका, क्यूँकि उसे बाप की भेड़-बकरियों को
सँभालने की ज़िम्मादारी दी गई थी। इस लिए वह
आता जाता रहा। चुनाँचे वह मौजूद नहीं था 16 जब
जालूत 40 दिन सुब्ह-ओ-शाम इस्राईलियों की सफ़ों
के सामने खड़े हो कर उन्हें चैलेंज करता रहा।

17 एक दिन यस्सी ने दाऊद से कहा, "बेटा, अपने
भाइयों के पास कैम्प में जा कर उन का पता करो।
भुने हुए अनाज के यह 16 किलोग्राम और यह दस
रोटियाँ अपने साथ ले कर जल्दी जल्दी उधर पहुँच
जाओ। 18 पनीर की यह दस टिक्कियाँ उन के कप्तान
को दे देना। भाइयों का हाल मालूम करके उन की
कोई चीज़ वापस ले आओ ताकि मुझे तसल्ली हो
जाए कि वह ठीक हैं। 19 वह वादी-ए-ऐला में साऊल
और इस्राईली फ़ौज के साथ फ़िलिस्तियों से लड़
रहे हैं।" 20 अगले दिन सुब्ह-सवेरे दाऊद ने रेवड़
को किसी और के सपुर्द करके सामान उठाया और
यस्सी की हिदायत के मुताबिक़ चला गया। जब वह
कैम्प के पास पहुँच गया तो इस्राईली फ़ौजी नारे लगा
लगा कर मैदान-ए-जंग के लिए निकल रहे थे। 21 वह
लड़ने के लिए तर्तीब से खड़े हो गए, और दूसरी
तरफ़ फ़िलिस्ती सफ़ें भी तय्यार हुईं। 22 यह देख कर
दाऊद ने अपनी चीज़ें उस आदमी के पास छोड़ दीं
जो लश्कर के सामान की निगरानी कर रहा था, फिर
भाग कर मैदान-ए-जंग में भाइयों से मिलने चला गया।

वह अभी उन का हाल पूछ ही रहा था 23 कि जाती
जालूत मामूल के मुताबिक़ फ़िलिस्तियों की सफ़ों
से निकल कर इस्राईलियों के सामने वही तन्ज़ की
बातें बकने लगा। दाऊद ने भी उस की बातें सुनीं।
24 जालूत को देखते ही इस्राईलियों के रोंगटे खड़े हो
गए, और वह भाग कर 25 आपस में कहने लगे, "क्या
आप ने इस आदमी को हमारी तरफ़ बढ़ते हुए देखा?
सुनें कि वह किस तरह हमारी बदनामी करके हमें
चैलेंज कर रहा है। बादशाह ने एलान किया है कि जो
शख़्स इसे मार दे उसे बड़ा अज्र मिलेगा। शहज़ादी
से उस की शादी होगी, और आइन्दा उस के पाप के
ख़ानदान को टैक्स नहीं देना पड़ेगा।"

26 दाऊद ने साथ वाले फ़ौजियों से पूछा, "क्या कह
रहे हैं? उस आदमी को क्या इनआम मिलेगा जो इस

फ़िलिस्ती को मार कर हमारी क़ौम की रुस्वाई दूर
करेगा? यह नामख़्तून फ़िलिस्ती कौन है कि ज़िन्दा
ख़ुदा की फ़ौज की बदनामी करके उसे चैलेंज करे!”
27 लोगों ने दुबारा दाऊद को बताया कि बादशाह उस
आदमी को क्या देगा जो जालूत को मार डालेगा।
28 जब दाऊद के बड़े भाई इलियाब ने दाऊद की
बातें सुनीं तो उसे ग़ुस्सा आया और वह उसे झिड़कने
लगा, “तू क्यूँ आया है? बयाबान में अपनी चन्द एक
भेड़-बकरियों को किस के पास छोड़ आया है? मैं
तेरी शोख़ी और दिल की शरारत ख़ूब जानता हूँ। तू
सिर्फ़ जंग का तमाशा देखने आया है!” 29 दाऊद ने
पूछा, “अब मुझ से क्या ग़लती हुई? मैं ने तो सिर्फ़
सवाल पूछा।” 30 वह उस से मुड़ कर किसी और के
पास गया और वही बात पूछने लगा। वही जवाब
मिला।

हथियार का चुनाओ

31 दाऊद की यह बातें सुन कर किसी ने साऊल को
इत्तिला दी। साऊल ने उसे फ़ौरन बुलाया। 32 दाऊद
ने बादशाह से कहा, “किसी को इस फ़िलिस्ती
की वजह से हिम्मत नहीं हारना चाहिए। मैं उस
से लड़ूँगा।” 33 साऊल बोला, “आप? आप जैसा
लड़का किस तरह उस का मुक़ाबला कर सकता
है? आप तो अभी बच्चे से हो जबकि वह तजरिबाकार
जंगजू है जो जवानी से हथियार इस्तेमाल करता आया
है।”
34 लेकिन दाऊद ने इसरार किया, “मैं अपने बाप
की भेड़-बकरियों की निगरानी करता हूँ। जब कभी
कोई शेरबबर या रीछ रेवड़ का जानवर छीन कर
भाग जाता 35 तो मैं उस के पीछे जाता और उसे मार
मार कर भेड़ को उस के मुँह से छुड़ा लेता था। अगर
शेर या रीछ जवाब में मुझ पर हम्ला करता तो मैं उस के
सर के बालों को पकड़ कर उसे मार देता था। 36 इस
तरह आप के ख़ादिम ने कई शेरों और रीछों को
मार डाला है। यह नामख़्तून भी उन की तरह हलाक
हो जाएगा, क्यूँकि उस ने ज़िन्दा ख़ुदा की फ़ौज की
बदनामी करके उसे चैलेंज किया है। 37 जिस रब ने
मुझे शेर और रीछ के पंजे से बचा लिया है वह मुझे
इस फ़िलिस्ती के हाथ से भी बचाएगा।”
साऊल बोला, “ठीक है, जाएँ और रब आप के
साथ हो।” 38 उस ने दाऊद को अपना ज़िराबक्तर और
पीतल का ख़ोद पहनाया। 39 फिर दाऊद ने साऊल
की तलवार बांध कर चलने की कोशिश की। लेकिन
उसे बहुत मुश्किल लग रहा था। उस ने साऊल से
कहा, “मैं यह चीज़ें पहन कर नहीं लड़ सकता,
क्यूँकि मैं इन का आदी नहीं हूँ।” उन्हें उतार कर
40 उस ने नदी से पाँच चिकने चिकने पत्थर चुन कर
उन्हें अपनी चरवाहे की थैली में डाल लिया। फिर
चरवाहे की अपनी लाठी और फ़लाख़न पकड़ कर
वह फ़िलिस्ती से लड़ने के लिए इस्राईली सफ़ों से
निकला।

दाऊद की फ़त्ह

41 जालूत दाऊद की जानिब बढ़ा। ढाल को उठाने
वाला उस के आगे आगे चल रहा था। 42 उस ने
हिक़ारतआमेज़ नज़रों से दाऊद का जाइज़ा लिया,
क्यूँकि वह गोरा और ख़ूबसूरत नौजवान था। 43 वह
गरजा, “क्या मैं कुत्ता हूँ कि तू लाठी ले कर मेरा
मुक़ाबला करने आया है?” अपने देवताओं के नाम
ले कर वह दाऊद पर लानत भेज कर 44 चिल्लाया,
“इधर आ ताकि मैं तेरा गोश्त परिन्दों और जंगली
जानवरों को खिलाऊँ।”
45 दाऊद ने जवाब दिया, “आप तलवार, नेज़ा और
शम्शीर ले कर मेरा मुक़ाबला करने आए हैं, लेकिन
मैं रब्ब-उल-अफ़्वाज का नाम ले कर आता हूँ, उसी
का नाम जो इस्राईली फ़ौज का ख़ुदा है। क्यूँकि आप
ने उसी को चैलेंज किया है। 46 आज ही रब आप को
मेरे हाथ में कर देगा, और मैं आप का सर क़लम
कर दूँगा। इसी दिन मैं फ़िलिस्ती फ़ौजियों की लाशें
परिन्दों और जंगली जानवरों को खिला दूँगा। तब
तमाम दुनिया जान लेगी कि इस्राईल का ख़ुदा है।
47 सब जो यहाँ मौजूद हैं जान लेंगे कि रब को हमें

बचाने के लिए तलवार या नेज़े की ज़रूरत नहीं होती।
वह ख़ुद ही जंग कर रहा है, और वही आप को हमारे
क़ब्ज़े में कर देगा।”
48 जालूत दाऊद पर हम्ला करने के लिए आगे बढ़ा,
और दाऊद भी उस की तरफ़ दौड़ा। 49 चलते चलते
उस ने अपनी थैली से पत्थर निकाला और उसे
फ़लाख़न में रख कर ज़ोर से चलाया। पत्थर उड़ता
उड़ता फ़िलिस्ती के माथे पर जा लगा। वह खोपड़ी
में धँस गया, और पहलवान मुँह के बल गिर गया।
50–51 यूँ दाऊद फ़लाख़न और पत्थर से फ़िलिस्ती पर
ग़ालिब आया। उस के हाथ में तलवार नहीं थी। तब
उस ने जालूत की तरफ़ दौड़ कर उसी की तलवार
मियान से खैंच कर फ़िलिस्ती का सर काट डाला।
जब फ़िलिस्तियों ने देखा कि हमारा पहलवान
हलाक हो गया है तो वह भाग निकले। 52 इस्राईल
और यहूदाह के मर्द फ़त्ह के नारे लगा लगा कर
फ़िलिस्तियों पर टूट पड़े। उन का ताक़्क़ुब करते
करते वह जात और अक्रून के दरवाज़ों तक पहुँच
गए। जो रास्ता शारैम से जात और अक्रून तक जाता
है उस पर हर तरफ़ फ़िलिस्तियों की लाशें नज़र आईं।
53 फिर इस्राईलियों ने वापस आ कर फ़िलिस्तियों की
छोड़ी हुई लश्करगाह को लूट लिया।
54 बाद में दाऊद जालूत का सर यरूशलम को ले
आया। फ़िलिस्ती के हथियार उस ने अपने ख़ैमे में
रख लिए।

साऊल दाऊद के ख़ानदान का पता करता है

55 जब दाऊद जालूत से लड़ने गया तो साऊल
ने फ़ौज के कमाँडर अबिनैर से पूछा, “इस जवान
आदमी का बाप कौन है?” अबिनैर ने जवाब दिया,
“आप की हयात की क़सम, मुझे मालूम नहीं।”
56 बादशाह बोला, “फिर पता करें!” 57 जब दाऊद
फ़िलिस्ती का सर क़लम करके वापस आया तो
अबिनैर उसे बादशाह के पास लाया। दाऊद अभी
जालूत का सर उठाए फिर रहा था। 58 साऊल ने पूछा,
“आप का बाप कौन है?” दाऊद ने जवाब दिया, “मैं
बैत-लहम के रहने वाले आप के ख़ादिम यस्सी का
बेटा हूँ।”

दाऊद और यूनतन की दोस्ती

18 1 इस गुफ़्तगु के बाद दाऊद की मुलाक़ात
बादशाह के बेटे यूनतन से हुई। उन में फ़ौरन
गहरी दोस्ती पैदा हो गई, और यूनतन दाऊद को
अपनी जान के बराबर अज़ीज़ रखने लगा। 2 उस दिन
से साऊल ने दाऊद को अपने दरबार में रख लिया
और उसे बाप के घर वापस जाने न दिया। 3 और
यूनतन ने दाऊद से अह्द बांधा, क्यूँकि वह दाऊद
को अपनी जान के बराबर अज़ीज़ रखता था। 4 अह्द
की तस्दीक़ के लिए यूनतन ने अपना चोग़ा उतार
कर उसे अपने ज़िराबक्तर, तलवार, कमान और पेटी
समेत दाऊद को दे दिया।
5 जहाँ भी साऊल ने दाऊद को लड़ने के लिए भेजा
वहाँ वह कामयाब हुआ। यह देख कर साऊल ने उसे
फ़ौज का बड़ा अफ़्सर बना दिया। यह बात अवाम
और साऊल के अफ़्सरों को पसन्द आई।

साऊल दाऊद से हसद करता है

6 जब दाऊद फ़िलिस्तियों को शिकस्त देने से वापस
आया तो तमाम शहरों से औरतें निकल कर साऊल
बादशाह से मिलने आईं। दफ़ और साज़ बजाते हुए
वह ख़ुशी के गीत गा गा कर नाचने लगीं। 7 और
नाचते नाचते वह गाती रहीं, “साऊल ने तो हज़ार
हलाक किए जबकि दाऊद ने दस हज़ार।”
8 साऊल बड़े ग़ुस्से में आ गया, क्यूँकि औरतों का
गीत उसे निहायत बुरा लगा। उस ने सोचा, “उन की
नज़र में दाऊद ने दस हज़ार हलाक किए जबकि मैं
ने सिर्फ़ हज़ार। अब सिर्फ़ यह बात रह गई है कि उसे
बादशाह मुक़र्रर किया जाए।” 9 उस वक़्त से साऊल
दाऊद को शक की नज़र से देखने लगा। 10–11 अगले
दिन अल्लाह ने दुबारा साऊल पर बुरी रूह आने दी,
और वह घर के अन्दर वज्द की हालत में आ गया।
दाऊद मामूल के मुताबिक़ साज़ बजाने लगा ताकि

बादशाह को सुकून मिले। साऊल के हाथ में नेज़ा था। अचानक उस ने उसे फैंक कर दाऊद को दीवार के साथ छेद डालने की कोशिश की। लेकिन दाऊद एक तरफ़ हट कर बच निकला। एक और दफ़ा ऐसा हुआ, लेकिन दाऊद फिर बच गया।

12 यह देख कर साऊल दाऊद से डरने लगा, क्यूँकि उस ने जान लिया कि रब मुझे छोड़ कर दाऊद का हामी बन गया है। 13 आख़िरकार उस ने दाऊद को दरबार से दूर करके हज़ार फ़ौजियों पर मुक़र्रर कर दिया। इन आदमियों के साथ दाऊद मुख़्तलिफ़ जंगों के लिए निकलता रहा। 14 और जो कुछ भी वह करता उस में कामयाब रहता, क्यूँकि रब उस के साथ था। 15 जब साऊल ने देखा कि दाऊद को कितनी ज़्यादा कामयाबी हुई है तो वह उस से मज़ीद डर गया। 16 लेकिन इस्राईल और यहूदाह के बाक़ी लोग दाऊद से बहुत मुहब्बत रखते थे, क्यूँकि वह हर जंग में निकलते वक़्त से ले कर घर वापस आते वक़्त तक उन के आगे आगे चलता था।

दाऊद साऊल का दामाद बन जाता है

17 एक दिन साऊल ने दाऊद से बात की, "मैं अपनी बड़ी बेटी मीरब का रिश्ता आप के साथ बांधना चाहता हूँ। लेकिन पहले साबित करें कि आप अच्छे फ़ौजी हैं, जो रब की जंगों में ख़ूब हिस्सा ले।" लेकिन दिल ही दिल में साऊल ने सोचा, "ख़ुद तो मैं दाऊद पर हाथ नहीं उठाऊँगा, बेहतर है कि वह फ़िलिस्तियों के हाथों मारा जाए।" 18 लेकिन दाऊद ने एतिराज़ किया, "मैं कौन हूँ कि बादशाह का दामाद बनूँ? इस्राईल में तो मेरे ख़ानदान और आबाई कुंबे की कोई हैसियत नहीं।"

19 तो भी शादी की तय्यारियाँ की गईं। लेकिन जब मुक़र्ररा वक़्त आ गया तो साऊल ने मीरब की शादी एक और आदमी बनाम अद्रीएल महूलाती से करवा दी।

20 इतने में साऊल की छोटी बेटी मीकल दाऊद से मुहब्बत करने लगी। जब साऊल को इस की ख़बर मिली तो वह ख़ुश हुआ। 21 उस ने सोचा, "अब मैं बेटी का रिश्ता उस के साथ बांध कर उसे यूँ फंसा दूँगा कि वह फ़िलिस्तियों से लड़ते लड़ते मर जाएगा।" दाऊद से उस ने कहा, "आज आप को मेरा दामाद बनने का दुबारा मौक़ा मिलेगा।"

22 फिर उस ने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया कि वह चुपके से दाऊद को बताएँ, "सुनें, आप बादशाह को पसन्द हैं, और उस के तमाम अफ़्सर भी आप को प्यार करते हैं। आप ज़रूर बादशाह की पेशकश क़बूल करके उस का दामाद बन जाएँ।" 23 लेकिन दाऊद ने एतिराज़ किया, "क्या आप की दानिस्त में बादशाह का दामाद बनना छोटी सी बात है? मैं तो ग़रीब आदमी हूँ, और मेरी कोई हैसियत नहीं।"

24 मुलाज़िमों ने बादशाह के पास वापस जा कर उसे दाऊद के अल्फ़ाज़ बताए। 25 साऊल ने उन्हें फिर दाऊद के पास भेज कर उसे इत्तिला दी, "बादशाह महर के लिए पैसे नहीं माँगता बल्कि यह कि आप उन के दुश्मनों से बदला ले कर 100 फ़िलिस्तियों को क़त्ल कर दें। सबूत के तौर पर आप को उन का ख़तना करके जिल्द का कटा हुआ हिस्सा बादशाह के पास लाना पड़ेगा।" शर्त का मक़्सद यह था कि दाऊद फ़िलिस्तियों के हाथों मारा जाए।

26 जब दाऊद को यह ख़बर मिली तो उसे साऊल की पेशकश पसन्द आई। मुक़र्ररा वक़्त से पहले 27 उस ने अपने आदमियों के साथ निकल कर 200 फ़िलिस्तियों को मार दिया। लाशों का ख़तना करके वह जिल्द के कुल 200 टुकड़े बादशाह के पास लाया ताकि बादशाह का दामाद बने। यह देख कर साऊल ने उस की शादी मीकल से करवा दी।

28 साऊल को मानना पड़ा कि रब दाऊद के साथ है और कि मेरी बेटी मीकल उसे बहुत प्यार करती है। 29 तब वह दाऊद से और भी डरने लगा। इस के बाद वह जीते जी दाऊद का दुश्मन बना रहा। 30 उन दिनों में फ़िलिस्ती सरदार इस्राईल से लड़ते रहे। लेकिन जब भी वह जंग के लिए निकले तो दाऊद साऊल

के बाक़ी अफ़सरों की निस्बत ज़्यादा कामयाब होता
था। नतीजे में उस की शुहरत पूरे मुल्क में फैल गई।

यूनतन दाऊद की सिफ़ारिश करता है

19 1 अब साऊल ने अपने बेटे यूनतन और
तमाम मुलाज़िमों को साफ़ बताया कि
दाऊद को हलाक करना है। लेकिन दाऊद यूनतन
को बहुत प्यारा था, 2 इस लिए उस ने उसे आगाह
किया, "मेरा बाप आप को मार देने के मवाक़े ढूँड
रहा है। कल सुब्ह ख़बरदार रहें। कहीं छुप कर मेरा
इन्तिज़ार करें। 3 फिर मैं अपने बाप के साथ शहर से
निकल कर आप के क़रीब से गुज़रूँगा। वहाँ मैं उन
से आप का मुआमला छेड़ कर मालूम करूँगा कि
वह क्या इरादा रखते हैं। जो कुछ भी वह कहेंगे मैं
आप को बता दूँगा।"

4 अगली सुब्ह जब यूनतन ने अपने बाप से बात
की तो उस ने दाऊद की सिफ़ारिश करके कहा,
"बादशाह अपने ख़ादिम दाऊद का गुनाह न करें,
क्यूँकि उस ने आप का गुनाह नहीं किया बल्कि
हमेशा आप के लिए फ़ाइदामन्द रहा है। 5 उसी ने
अपनी जान को ख़तरे में डाल कर फ़िलिस्ती को मार
डाला, और रब ने उस के वसीले से तमाम इस्राईल
को बड़ी नजात बख़्शी। उस वक़्त आप ख़ुद भी सब
कुछ देख कर ख़ुश हुए। तो फिर आप गुनाह करके
उस जैसे बेक़ुसूर आदमी को क्यूँ बिलावजह मरवाना
चाहते हैं?"

6 यूनतन की बातें सुन कर साऊल मान गया। उस
ने वादा किया, "रब की हयात की क़सम, दाऊद को
मारा नहीं जाएगा।" 7 बाद में यूनतन ने दाऊद को
बुला कर उसे सब कुछ बताया, फिर उसे साऊल के
पास लाया। तब दाऊद पहले की तरह बादशाह की
ख़िदमत करने लगा।

साऊल का दाऊद पर दूसरा हम्ला

8 एक बार फिर जंग छिड़ गई, और दाऊद निकल
कर फ़िलिस्तियों से लड़ा। इस दफ़ा भी उस ने उन्हें
यूँ शिकस्त दी कि वह फ़रार हो गए। 9 लेकिन एक
दिन जब साऊल अपना नेज़ा पकड़े घर में बैठा था तो
अल्लाह की भेजी हुई बुरी रूह उस पर ग़ालिब आई।
उस वक़्त दाऊद सरोद बजा रहा था। 10 अचानक
साऊल ने नेज़े को फैंक कर दाऊद को दीवार के
साथ छेद डालने की कोशिश की। लेकिन वह एक
तरफ़ हट गया और नेज़ा उस के क़रीब से गुज़र कर
दीवार में धँस गया। दाऊद भाग गया और उस रात
साऊल के हाथ से बच गया।

11 साऊल ने फ़ौरन अपने आदमियों को दाऊद के
घर के पास भेज दिया ताकि वह मकान की पहरादारी
करके दाऊद को सुब्ह के वक़्त क़त्ल कर दें। लेकिन
दाऊद की बीवी मीकल ने उस को आगाह कर दिया,
"आज रात को ही यहाँ से चले जाएँ, वर्ना आप
नहीं बचेंगे बल्कि कल सुब्ह ही मार दिए जाएंगे।"
12 चुनाँचे दाऊद घर की खिड़की में से निकला, और
मीकल ने उतरने में उस की मदद की। तब दाऊद
भाग कर बच गया।

13 मीकल ने दाऊद की चारपाई पर बुत रख कर
उस के सर पर बकरियों के बाल लगा दिए और
बाक़ी हिस्से पर कम्बल बिछा दिया। 14 जब साऊल
के आदमी दाऊद को पकड़ने के लिए आए तो मीकल
ने कहा, "वह बीमार है।" 15 फ़ौजियों ने साऊल को
इत्तिला दी तो उस ने उन्हें हुक्म दिया, "उसे चारपाई
समेत ही मेरे पास ले आओ ताकि उसे मार दूँ।"

16 जब वह दाऊद को ले जाने के लिए आए तो क्या
देखते हैं कि उस की चारपाई पर बुत पड़ा है जिस के
सर पर बकरियों के बाल लगे हैं। 17 साऊल ने अपनी
बेटी को बहुत झिड़का, "तू ने मुझे इस तरह धोका दे
कर मेरे दुश्मन की फ़रार होने में मदद क्यूँ की? तेरी
ही वजह से वह बच गया।" मीकल ने जवाब दिया,
"उस ने मुझे धमकी दी कि मैं तुझे क़त्ल कर दूँगा
अगर तू फ़रार होने में मेरी मदद न करे।"

दाऊद रामा में समूएल के पास

18 इस तरह दाऊद बच निकला। वह रामा में
समूएल के पास फ़रार हुआ और उसे सब कुछ
सुनाया जो साऊल ने उस के साथ किया था। फिर
दोनों मिल कर नयोत चले गए। वहाँ वह ठहरे।
19 साऊल को इत्तिला दी गई, "दाऊद रामा के नयोत
में ठहरा हुआ है।" 20 उस ने फ़ौरन अपने आदमियों
को उसे पकड़ने के लिए भेज दिया। जब वह पहुँचे तो
देखा कि नबियों का पूरा गुरोह वहाँ नबुव्वत कर रहा
है, और समूएल ख़ुद उन की राहनुमाई कर रहा है।
उन्हें देखते ही अल्लाह का रूह साऊल के आदमियों
पर नाज़िल हुआ, और वह भी नबुव्वत करने लगे।
21 साऊल को इस बात की ख़बर मिली तो उस ने
मज़ीद आदमियों को रामा भेज दिया। लेकिन वह भी
वहाँ पहुँचते ही नबुव्वत करने लगे। साऊल ने तीसरी
बार आदमियों को भेज दिया, लेकिन यही कुछ उन
के साथ भी हुआ।

22 आख़िर में साऊल ख़ुद रामा के लिए रवाना
हुआ। चलते चलते वह सीकू के बड़े हौज़ पर पहुँचा।
वहाँ उस ने लोगों से पूछा, "दाऊद और समूएल कहाँ
हैं?" उन्हों ने जवाब दिया, "रामा की आबादी नयोत
में।"

23 साऊल अभी नयोत नहीं पहुँचा था कि अल्लाह
का रूह उस पर भी नाज़िल हुआ, और वह नबुव्वत
करते करते नयोत पहुँच गया। 24 वहाँ वह अपने
कपड़ों को उतार कर समूएल के सामने नबुव्वत
करता रहा। नबुव्वत करते करते वह ज़मीन पर लेट
गया और वहाँ पूरे दिन और पूरी रात पड़ा रहा। इसी
वजह से यह क़ौल मश्हूर हुआ, "क्या साऊल को भी
नबियों में शुमार किया जाता है?"

दाऊद और यूनतन अह्द बांधते हैं

20 1 अब दाऊद रामा के नयोत से भी भाग
गया। चुपके से वह यूनतन के पास आया
और पूछा, "मुझ से क्या ग़लती हुई है? मेरा क्या
क़ुसूर है? मुझ से आप के बाप के ख़िलाफ़ क्या जुर्म
सरज़द हुआ है कि वह मुझे क़त्ल करना चाहते हैं?"

2 यूनतन ने एतिराज़ किया, "यह कभी नहीं हो
सकता! आप नहीं मरेंगे। मेरा बाप तो मुझे हमेशा
सब कुछ बता देता है, ख़्वाह बात बड़ी हो या छोटी।
तो फिर वह ऐसा कोई मन्सूबा मुझ से क्यूँ छुपाए?
आप की यह बात सरासर ग़लत है।"

3 लेकिन दाऊद ने क़सम खा कर इसरार किया,
"ज़ाहिर है कि आप को इस के बारे में इल्म नहीं।
आप के बाप को साफ़ मालूम है कि मैं आप को
पसन्द हूँ। 'वह तो सोचते होंगे, यूनतन को इस बात
का इल्म न हो, वर्ना वह दुख महसूस करेगा।' लेकिन
रब की और आप की जान की क़सम, मैं बड़े ख़तरे
में हूँ, और मौत से बचना मुश्किल ही है।"

4 यूनतन ने कहा, "मुझे बताएँ कि मैं क्या करूँ
तो मैं उसे करूँगा।" 5 तब दाऊद ने अपना मन्सूबा
पेश किया। "कल नए चाँद की ईद है, और बादशाह
तवक़्क़ो करेंगे कि मैं उन की ज़ियाफ़त में शरीक हूँ।
लेकिन इस मर्तबा मुझे परसों शाम तक बाहर खुले
मैदान में छुपा रहने की इजाज़त दें। 6 अगर आप के
बाप मेरा पता करें तो उन्हें कह देना, 'दाऊद ने बड़े
ज़ोर से मुझ से अपने शहर बैत-लहम को जाने की
इजाज़त माँगी। उसे बड़ी जल्दी थी, क्यूँकि उस का
पूरा ख़ानदान अपनी सालाना क़ुर्बानी चढ़ाना चाहता
है।' 7 अगर आप के बाप जवाब दें कि ठीक है तो
फिर मालूम होगा कि ख़तरा टल गया है। लेकिन
अगर वह बड़े ग़ुस्से में आ जाएँ तो यक़ीन जानें कि
वह मुझे नुक़्सान पहुँचाने का इरादा रखते हैं। 8 बराह-
ए-करम मुझ पर मेहरबानी करके याद रखें कि आप
ने रब के सामने अपने ख़ादिम से अह्द बांधा है।
अगर मैं वाक़ई क़ुसूरवार ठहरूँ तो आप ख़ुद मुझे
मार डालें। लेकिन किसी सूरत में भी मुझे अपने बाप
के हवाले न करें।"

9 यूनतन ने जवाब दिया, "फ़िक्र न करें, मैं कभी
ऐसा नहीं करूँगा। जब भी मुझे इशारा मिल जाए कि
मेरा बाप आप को क़त्ल करने का इरादा रखता है

तो मैं ज़रूर आप को फ़ौरन इत्तिला दूँगा।” 10 दाऊद
ने पूछा, “अगर आप के बाप ग़ुस्से में जवाब दें तो
कौन मुझे ख़बर पहुँचाएगा?”
11 यूनतन ने जवाब में कहा, “आएँ हम निकल कर
खुले मैदान में जाएँ।” दोनों निकले 12 तो यूनतन ने
दाऊद से कहा, “रब इस्राईल के ख़ुदा की क़सम,
परसों इस वक़्त तक मैं अपने बाप से बात मालूम
कर लूँगा। अगर वह आप के बारे में अच्छी सोच
रखे और मैं आप को इत्तिला न दूँ 13 तो रब मुझे
सख़्त सज़ा दे। लेकिन अगर मुझे पता चले कि मेरा
बाप आप को मार देने पर तुला हुआ है तो मैं आप
को इस की इत्तिला भी दूँगा। इस सूरत में मैं आप
को नहीं रोकूँगा बल्कि आप को सलामती से जाने
दूँगा। रब उसी तरह आप के साथ हो जिस तरह वह
पहले मेरे बाप के साथ था। 14 लेकिन दरख़्वास्त है
कि मेरे जीते जी मुझ पर रब की सी मेहरबानी करें
ताकि मैं मर न जाऊँ। 15 मेरे ख़ानदान पर भी हमेशा
तक मेहरबानी करें। वह कभी भी आप की मेहरबानी
से महरूम न हो जाए, उस वक़्त भी नहीं जब रब ने
आप के तमाम दुश्मनों को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा
दिया होगा।”
16 चुनाँचे यूनतन ने दाऊद से अह्द बांध कर कहा,
“रब दाऊद के दुश्मनों से बदला ले।” 17 वह बोला,
“क़सम खाएँ कि आप यह अह्द उतने पुख़्ता इरादे
से क़ाइम रखेंगे जितनी आप मुझ से मुहब्बत रखते
हैं।” क्यूँकि यूनतन दाऊद को अपनी जान के बराबर
अज़ीज़ रखता था।
18 फिर यूनतन ने अपना मन्सूबा पेश किया। “कल
तो नए चाँद की ईद है। जल्दी से पता चलेगा कि
आप नहीं आए, क्यूँकि आप की कुर्सी ख़ाली रहेगी।
19 इस लिए परसों शाम के वक़्त खुले मैदान में वहाँ
चले जाएँ जहाँ पहले छुप गए थे। पत्थर के ढेर के
क़रीब बैठ जाएँ। 20 उस वक़्त मैं घर से निकल कर
तीन तीर पत्थर के ढेर की तरफ़ चलाऊँगा गोया में
किसी चीज़ को निशाना बना कर मश्क़ कर रहा हूँ।
21 फिर मैं लड़के को तीरों को ले आने के लिए भेज
दूँगा। अगर मैं उसे बता दूँ, ‘तीर उरली तरफ़ पड़े हैं,
उन्हें जा कर ले आओ’ तो आप ख़ौफ़ खाए बग़ैर
छुपने की जगह से निकल कर मेरे पास आ सकेंगे।
रब की हयात की क़सम, इस सूरत में कोई ख़तरा
नहीं होगा। 22 लेकिन अगर मैं लड़के को बता दूँ,
‘तीर परली तरफ़ पड़े हैं’ तो आप को फ़ौरन हिज्रत
करनी पड़ेगी। इस सूरत में रब ख़ुद आप को यहाँ से
भेज रहा होगा। 23 लेकिन जो बातें हम ने आज आपस
में की हैं रब ख़ुद हमेशा तक इन का गवाह रहे।”

साऊल की दाऊद से अलानिया दुश्मनी

24 चुनाँचे दाऊद खुले मैदान में छुप गया। नए चाँद
की ईद आई तो बादशाह ज़ियाफ़त के लिए बैठ गया।
25 मामूल के मुताबिक़ वह दीवार के पास बैठ गया।
अबिनैर उस के साथ बैठा था और यूनतन उस के
मुक़ाबिल। लेकिन दाऊद की जगह ख़ाली रही।
26 उस दिन साऊल ने बात न छेड़ी, क्यूँकि उस ने
सोचा, “दाऊद किसी वजह से नापाक हो गया होगा,
इस लिए नहीं आया।”
27 लेकिन अगले दिन जब दाऊद की जगह फिर
ख़ाली रही तो साऊल ने यूनतन से पूछा, “यस्सी का
बेटा न तो कल, न आज ज़ियाफ़त में शरीक हुआ है।
क्या वजह है?” 28 यूनतन ने जवाब दिया, “दाऊद ने
बड़े ज़ोर से मुझ से बैत-लहम जाने की इजाज़त माँगी।
29 उस ने कहा, ‘मेहरबानी करके मुझे जाने दें, क्यूँकि
मेरा ख़ानदान एक ख़ास क़ुर्बानी चढ़ा रहा है, और मेरे
भाई ने मुझे आने का हुक्म दिया है। अगर आप को
मन्ज़ूर हो तो बराह-ए-करम मुझे अपने भाइयों के पास
जाने की इजाज़त दें।’ यही वजह है कि वह बादशाह
की ज़ियाफ़त में शरीक नहीं हुआ।”
30 यह सुन कर साऊल आपे से बाहर हो गया। वह
गरजा, “हरामज़ादे! मुझे ख़ूब मालूम है कि तू ने दाऊद
का साथ दिया है। शर्म की बात है, तेरे लिए और तेरी
माँ के लिए। 31 जब तक यस्सी का बेटा ज़िन्दा है तब
तक न तू और न तेरी बादशाहत क़ाइम रहेगी। अब
जा, उसे ले आ, क्यूँकि उसे मरना ही है।”

32 यूनतन ने कहा, “क्यूँ? उस ने क्या किया जो
सज़ा-ए-मौत के लाइक़ है?” 33 जवाब में साऊल ने
अपना नेज़ा ज़ोर से यूनतन की तरफ़ फैंक दिया ताकि
उसे मार डाले। यह देख कर यूनतन ने जान लिया
कि साऊल दाऊद को क़त्ल करने का पुख़्ता इरादा
रखता है। 34 बड़े ग़ुस्से के आलम में वह खड़ा हुआ
और चला गया। उस दिन उस ने खाना खाने से इन्कार
किया। उसे बहुत दुख था कि मेरा बाप दाऊद की
इतनी बेइज़्ज़ती कर रहा है।

35 अगले दिन यूनतन सुब्ह के वक़्त घर से निकल
कर खुले मैदान में उस जगह आ गया जहाँ दाऊद
से मिलना था। एक लड़का उस के साथ था। 36 उस
ने लड़के को हुक्म दिया, “चलो, उस तरफ़ भागना
शुरू करो जिस तरफ़ मैं तीरों को चलाऊँगा ताकि तुझे
मालूम हो कि वह कहाँ हैं।” चुनाँचे लड़का दौड़ने
लगा, और यूनतन ने तीर इतने ज़ोर से चलाया कि
वह उस से आगे कहीं दूर जा गिरा। 37 जब लड़का
तीर के क़रीब पहुँच गया तो यूनतन ने आवाज़ दी,
“तीर परली तरफ़ है। 38 जल्दी करो, भाग कर आगे
निकलो और न रुको!” फिर लड़का तीर को उठा
कर अपने मालिक के पास वापस आ गया। 39 वह
नहीं जानता था कि इस के पीछे क्या मक़्सद है। सिर्फ़
यूनतन और दाऊद को इल्म था।

40 फिर यूनतन ने कमान और तीरों को लड़के के
सपुर्द करके उसे हुक्म दिया, “जाओ, सामान ले कर
शहर में वापस चले जाओ।” 41 लड़का चला गया तो
दाऊद पत्थर के ढेर के जुनूब से निकल कर यूनतन के
पास आया। तीन मर्तबा वह यूनतन के सामने मुँह के
बल झुक गया। एक दूसरे को चूम कर दोनों ख़ूब रोए,
ख़ासकर दाऊद। 42 फिर यूनतन बोला, “सलामती
से जाएँ! और कभी वह वादे न भूलें जो हम ने रब
की क़सम खा कर एक दूसरे से किए हैं। यह अह्द
आप के और मेरे और आप की और मेरी औलाद के
दरमियान हमेशा क़ाइम रहे। रब ख़ुद हमारा गवाह
है।”

फिर दाऊद रवाना हुआ, और यूनतन शहर को
वापस चला गया।

दाऊद नोब में अख़ीमलिक के पास ठहरता है

21 1 दाऊद नोब में अख़ीमलिक इमाम के
पास गया। अख़ीमलिक काँपते हुए उस से
मिलने के लिए आया और पूछा, “आप अकेले क्यूँ
आए हैं? कोई आप के साथ नहीं।” 2 दाऊद ने जवाब
दिया, “बादशाह ने मुझे एक ख़ास ज़िम्मादारी दी है
जिस का ज़िक्र तक करना मना है। किसी को भी इस
के बारे में जानना नहीं चाहिए। मैं ने अपने आदमियों
को हुक्म दिया है कि फ़ुलाँ फ़ुलाँ जगह पर मेरा
इन्तिज़ार करें। 3 अब मुझे ज़रा बताएँ कि खाने के
लिए क्या मिल सकता है? मुझे पाँच रोटियाँ दे दें, या
जो कुछ भी आप के पास है।”

4 इमाम ने जवाब दिया, “मेरे पास आम रोटी नहीं
है। मैं आप को सिर्फ़ रब के लिए मख़्सूसशुदा रोटी
दे सकता हूँ। शर्त यह है कि आप के आदमी पिछले
दिनों में औरतों से हमबिसतर न हुए हों।” 5 दाऊद
ने उसे तसल्ली दे कर कहा, “फ़िक्र न करें। पहले की
तरह हमें इस मुहिम्म के दौरान भी औरतों से दूर रहना
पड़ा है। मेरे फ़ौजी आम मुहिम्मों के लिए भी अपने
आप को पाक रखते हैं, तो इस दफ़ा वह कहीं ज़्यादा
पाक-साफ़ हैं।”

6 फिर इमाम ने दाऊद को मख़्सूसशुदा रोटियाँ दीं
यानी वह रोटियाँ जो मुलाक़ात के ख़ैमे में रब के हुज़ूर
रखी जाती थीं और उसी दिन ताज़ा रोटियों से तब्दील
हुई थीं। 7 उस वक़्त साऊल के चरवाहों का अदोमी
इंचार्ज दोएग वहाँ था। वह किसी मज्बूरी के बाइस
रब के हुज़ूर ठहरा हुआ था। उस की मौजूदगी में
8 दाऊद ने अख़ीमलिक से पूछा, “क्या आप के पास
कोई नेज़ा या तलवार है? मुझे बादशाह की मुहिम्म
के लिए इतनी जल्दी से निकलना पड़ा कि अपनी
तलवार या कोई और हथियार साथ लाने के लिए
फ़ुर्सत न मिली।”

9 अख़ीमलिक ने जवाब दिया, “जी है। वादी-ए-
ऐला में आप के हाथों मारे गए फ़िलिस्ती मर्द जालूत
की तलवार मेरे पास है। वह एक कपड़े में लिपटी
मेरे बालापोश के पीछे पड़ी है। अगर आप उसे अपने
साथ ले जाना चाहें तो ले जाएँ। मेरे पास कोई और
हथियार नहीं है।” दाऊद ने कहा, “इस क़िस्म की
तलवार कहीं और नहीं मिलती। मुझे दे दें।”

दाऊद फ़िलिस्ती बादशाह के पास

10 उसी दिन दाऊद आगे निकला ताकि साऊल से
बच सके। इस्राईल को छोड़ कर वह फ़िलिस्ती शहर
जात के बादशाह अकीस के पास गया। 11 लेकिन
अकीस के मुलाज़िमों ने बादशाह को आगाह किया,
“क्या यह मुल्क का बादशाह दाऊद नहीं है? इसी
के बारे में इस्राईली नाच कर गीत गाते हैं, ‘साऊल ने
हज़ार हलाक किए जबकि दाऊद ने दस हज़ार’।”
12 यह सुन कर दाऊद घबरा गया और जात के
बादशाह अकीस से बहुत डरने लगा। 13 अचानक
वह पागल आदमी का रूप भर कर उन के दरमियान
अजीब अजीब हरकतें करने लगा। शहर के दरवाज़े
के पास जा कर उस ने उस पर बेतुके से निशान लगाए
और अपनी दाढ़ी पर राल टपकने दी।
14 यह देख कर अकीस ने अपने मुलाज़िमों को
झिड़का, “तुम इस आदमी को मेरे पास क्यूँ ले आए
हो? तुम ख़ुद देख सकते हो कि यह पागल है। 15 क्या
मेरे पास पागलों की कमी है कि तुम इस को मेरे
सामने ले आए हो ताकि इस तरह की हरकतें करे?
क्या मुझे ऐसे मेहमान की ज़रूरत है?”

अदुल्लाम के ग़ार और मोआब में

22 1 इस तरह दाऊद जात से बच निकला और
अदुल्लाम के ग़ार में छुप गया। जब उस के
भाइयों और बाप के घराने को इस की ख़बर मिली तो
वह बैत-लहम से आ कर वहाँ उस के साथ जा मिले।
2 और लोग भी जल्दी से उस के गिर्द जमा हो गए,
ऐसे जो किसी मुसीबत में फंसे हुए थे या अपना क़र्ज़
अदा नहीं कर सकते थे और ऐसे भी जिन का दिल
तल्ख़ी से भरा हुआ था। होते होते दाऊद तक़रीबन
400 अफ़राद का राहनुमा बन गया।
3 दाऊद अदुल्लाम से रवाना हो कर मुल्क-ए-मोआब
के शहर मिस्फ़ाह चला गया। उस ने मोआबी बादशाह
से गुज़ारिश की, “मेरे माँ-बाप को उस वक़्त तक
यहाँ पनाह दें जब तक मुझे पता न हो कि अल्लाह मेरे
लिए क्या इरादा रखता है।” 4 वह अपने माँ-बाप को
बादशाह के पास ले आया, और वह उतनी देर तक
वहाँ ठहरे जितनी देर दाऊद अपने पहाड़ी क़िले में
रहा।
5 एक दिन जाद नबी ने दाऊद से कहा, “यहाँ
पहाड़ी क़िले में मत रहें बल्कि दुबारा यहूदाह के
इलाक़े में वापस चले जाएँ।” दाऊद उस की सुन
कर हारत के जंगल में जा बसा।

साऊल नोब के इमामों से बदला लेता है

6 साऊल को इत्तिला दी गई कि दाऊद और उस
के आदमी दुबारा यहूदाह में पहुँच गए हैं। उस वक़्त
साऊल अपना नेज़ा पकड़े झाओ के उस दरख़्त के
साय में बैठा था जो जिबिआ की पहाड़ी पर था।
साऊल के इर्दगिर्द उस के मुलाज़िम खड़े थे। 7 वह
पुकार उठा, “बिनयमीन के मर्दो! सुनें, क्या यस्सी
का बेटा आप सब को खेत और अंगूर के बाग़ देगा?
क्या वह फ़ौज में आप को हज़ार हज़ार और सौ सौ
अफ़राद पर मुक़र्रर करेगा? 8 लगता है कि आप इस
की उम्मीद रखते हैं, वर्ना आप यूँ मेरे ख़िलाफ़ साज़िश
न करते। क्यूँकि आप में से किसी ने भी मुझे यह नहीं
बताया कि मेरे अपने बेटे ने इस आदमी के साथ
अह्द बांधा है। आप को मेरी फ़िक्र तक नहीं, वर्ना
मुझे इत्तिला देते कि यूनतन ने मेरे मुलाज़िम दाऊद
को उभारा है कि वह मेरी ताक में बैठ जाए। क्यूँकि
आज तो ऐसा ही हो रहा है।”
9 दोएग अदोमी साऊल के अफ़सरों के साथ वहाँ
खड़ा था। अब वह बोल उठा, “मैं ने यस्सी के बेटे
को देखा है। उस वक़्त वह नोब में अख़ीमलिक बिन

अख़ीतूब से मिलने आया। 10 अख़ीमलिक ने रब से
दरयाफ़्त किया कि दाऊद का अगला क़दम क्या
हो। साथ साथ उस ने उसे सफ़र के लिए खाना और
फ़िलिस्ती मर्द जालूत की तलवार भी दी।”
11 बादशाह ने फ़ौरन अख़ीमलिक बिन अख़ीतूब
और उस के बाप के पूरे ख़ानदान को बुलाया। सब
नोब में इमाम थे। 12 जब पहुँचे तो साऊल बोला,
“अख़ीतूब के बेटे, सुनें।” अख़ीमलिक ने जवाब
दिया, “जी मेरे आक़ा, हुक्म।” 13 साऊल ने इल्ज़ाम
लगा कर कहा, “आप ने यस्सी के बेटे दाऊद के
साथ मेरे ख़िलाफ़ साज़िशें क्यूँ की हैं? बताएँ, आप
ने उसे रोटी और तलवार क्यूँ दी? आप ने अल्लाह से
दरयाफ़्त क्यूँ किया कि दाऊद आगे क्या करे? आप
ही की मदद से वह सरकश हो कर मेरी ताक में बैठ
गया है, क्यूँकि आज तो ऐसा ही हो रहा है।”
14 अख़ीमलिक बोला, “लेकिन मेरे आक़ा, क्या
मुलाज़िमों में से कोई और आप के दामाद दाऊद जैसा
वफ़ादार साबित हुआ है? वह तो आप के मुहाफ़िज़
दस्ते का कप्तान और आप के घराने का मुअज़्ज़ज़
मैम्बर है। 15 और यह पहली बार नहीं था कि मैं ने
उस के लिए अल्लाह से हिदायत माँगी। इस मुआमले में
बादशाह मुझ और मेरे ख़ानदान पर इल्ज़ाम न लगाए।
मैं ने तो किसी साज़िश का ज़िक्र तक नहीं सुना।”
16 लेकिन बादशाह बोला, “अख़ीमलिक, तुझे और
तेरे बाप के पूरे ख़ानदान को मरना है।” 17 उस ने
साथ खड़े अपने मुहाफ़िज़ों को हुक्म दिया, “जा कर
इमामों को मार दो, क्यूँकि यह भी दाऊद के इत्तिहादी
हैं। गो इन को मालूम था कि दाऊद मुझ से भाग रहा
है तो भी इन्हों ने मुझे इत्तिला न दी।”
लेकिन मुहाफ़िज़ों ने रब के इमामों को मार डालने
से इन्कार किया। 18 तब बादशाह ने दोएग अदोमी
को हुक्म दिया, “फिर तुम ही इमामों को मार दो।”
दोएग ने उन के पास जा कर उन सब को क़त्ल
कर दिया। कतान का बालापोश पहनने वाले कुल
85 आदमी उस दिन मारे गए। 19 फिर उस ने जा
कर इमामों के शहर नोब के तमाम बाशिन्दों को
मार डाला। शहर के मर्द, औरतें, बच्चे शीरख़्वारों
समेत, गाय-बैल, गधे और भेड़-बकरियाँ सब उस
दिन हलाक हुए।
20 सिर्फ़ एक ही शख़्स बच गया, अबियातर जो
अख़ीमलिक बिन अख़ीतूब का बेटा था। वह भाग
कर दाऊद के पास आया 21 और उसे इत्तिला दी
कि साऊल ने रब के इमामों को क़त्ल कर दिया है।
22 दाऊद ने कहा, “उस दिन जब मैं ने दोएग अदोमी
को वहाँ देखा तो मुझे मालूम था कि वह ज़रूर
साऊल को ख़बर पहुँचाएगा। यह मेरा ही क़ुसूर है कि
आप के बाप का पूरा ख़ानदान हलाक हो गया है।
23 अब मेरे साथ रहें और मत डरें। जो आदमी आप
को क़त्ल करना चाहता है वह मुझे भी क़त्ल करना
चाहता है। आप मेरे साथ रह कर महफ़ूज़ रहेंगे।”

दाऊद क़ईला को बचाता है

23 1 एक दिन दाऊद को ख़बर मिली कि
फ़िलिस्ती क़ईला शहर पर हम्ला करके
गाहने की जगहों से अनाज लूट रहे हैं। 2 दाऊद ने रब
से दरयाफ़्त किया, “क्या मैं जा कर फ़िलिस्तियों पर
हम्ला करूँ?” रब ने जवाब दिया, “जा, फ़िलिस्तियों
पर हम्ला करके क़ईला को बचा।”
3 लेकिन दाऊद के आदमी एतिराज़ करने लगे, “हम
पहले से यहाँ यहूदाह में लोगों की मुख़ालफ़त से
डरते हैं। जब हम क़ईला जा कर फ़िलिस्तियों पर
हम्ला करेंगे तो फिर हमारा क्या बनेगा?” 4 तब दाऊद
ने रब से दुबारा हिदायत माँगी, और दुबारा उसे यही
जवाब मिला, “क़ईला को जा! मैं फ़िलिस्तियों को
तेरे हवाले कर दूँगा।”
5 चुनाँचे दाऊद अपने आदमियों के साथ क़ईला
चला गया। उस ने फ़िलिस्तियों पर हम्ला करके उन्हें
बड़ी शिकस्त दी और उन की भेड़-बकरियों को छीन
कर क़ईला के बाशिन्दों को बचाया। 6 वहाँ क़ईला
में अबियातर दाऊद के लोगों में शामिल हुआ। उस
के पास इमाम का बालापोश था।

7 जब साऊल को ख़बर मिली कि दाऊद क़ईला
शहर में ठहरा हुआ है तो उस ने सोचा, “अल्लाह ने उसे
मेरे हवाले कर दिया है, क्यूँकि अब वह फ़सीलदार
शहर में जा कर फंस गया है।” 8 वह अपनी पूरी फ़ौज
को जमा करके जंग के लिए तय्यारियाँ करने लगा
ताकि उतर कर क़ईला का मुहासरा करे जिस में
दाऊद अब तक ठहरा हुआ था।
9 लेकिन दाऊद को पता चला कि साऊल उस के
ख़िलाफ़ तय्यारियाँ कर रहा है। उस ने अबियातर
इमाम से कहा, “इमाम का बालापोश ले आएँ ताकि
हम रब से हिदायत माँगें।” 10 फिर उस ने दुआ की,
“ऐ रब इस्राईल के ख़ुदा, मुझे ख़बर मिली है कि
साऊल मेरी वजह से क़ईला पर हम्ला करके उसे
बर्बाद करना चाहता है। 11 क्या शहर के बाशिन्दे
मुझे साऊल के हवाले कर देंगे? क्या साऊल वाक़ई
आएगा? ऐ रब, इस्राईल के ख़ुदा, अपने ख़ादिम
को बता!” रब ने जवाब दिया, “हाँ, वह आएगा।”
12 फिर दाऊद ने मज़ीद दरयाफ़्त किया, “क्या शहर
के बुज़ुर्ग मुझे और मेरे लोगों को साऊल के हवाले
कर देंगे?” रब ने कहा, “हाँ, वह कर देंगे।”
13 लिहाज़ा दाऊद अपने तक़रीबन 600 आदमियों
के साथ क़ईला से चला गया और इधर उधर फिरने
लगा। जब साऊल को इत्तिला मिली कि दाऊद
क़ईला से निकल कर बच गया है तो वहाँ जाने से
बाज़ आया।

यूनतन दाऊद से मिलता है

14 अब दाऊद बयाबान के पहाड़ी क़िलों और दश्त-
ए-ज़ीफ़ के पहाड़ी इलाक़े में रहने लगा। साऊल तो
मुसलसल उस का खोज लगाता रहा, लेकिन अल्लाह
हमेशा दाऊद को साऊल के हाथ से बचाता रहा।
15 एक दिन जब दाऊद होरिश के क़रीब था तो उसे
इत्तिला मिली कि साऊल आप को हलाक करने के
लिए निकला है। 16 उस वक़्त यूनतन ने दाऊद के
पास आ कर उस की हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह
अल्लाह पर भरोसा रखे। 17 उस ने कहा, “डरें मत।
मेरे बाप का हाथ आप तक नहीं पहुँचेगा। एक दिन
आप ज़रूर इस्राईल के बादशाह बन जाएंगे, और
मेरा रुतबा आप के बाद ही आएगा। मेरा बाप भी
इस हक़ीक़त से ख़ूब वाक़िफ़ है।” 18 दोनों ने रब के
हुज़ूर अह्द बांधा। फिर यूनतन अपने घर चला गया
जबकि दाऊद वहाँ होरिश में ठहरा रहा।

दाऊद ज़ीफ़ में बच जाता है

19 दश्त-ए-ज़ीफ़ में आबाद कुछ लोग साऊल के
पास आ गए जो उस वक़्त जिबिआ में था। उन्हों
ने कहा, “हम जानते हैं कि दाऊद कहाँ छुप गया
है। वह होरिश के पहाड़ी क़िलों में है, उस पहाड़ी
पर जिस का नाम हकीला है और जो यशीमोन के
जुनूब में है। 20 ऐ बादशाह, जब भी आप का दिल
चाहे आएँ तो हम उसे पकड़ कर आप के हवाले
कर देंगे।” 21 साऊल ने जवाब दिया, “रब आप को
बरकत बख़्शे कि आप को मुझ पर तरस आया है।
22 अब वापस जा कर मज़ीद तय्यारियाँ करें। पता
करें कि वह कहाँ आता जाता है और किस ने उसे
वहाँ देखा है। क्यूँकि मुझे बताया गया है कि वह
बहुत चालाक है। 23 हर जगह का खोज लगाएँ जहाँ
वह छुप जाता है। जब आप को सारी तफ़्सीलात
मालूम हों तो मेरे पास आएँ। फिर मैं आप के साथ
वहाँ पहुँचूँगा। अगर वह वाक़ई वहाँ कहीं हो तो मैं
उसे ज़रूर ढूँड निकालूँगा, ख़्वाह मुझे पूरे यहूदाह की
छानबीन क्यूँ न करनी पड़े।”
24–25 ज़ीफ़ के आदमी वापस चले गए। थोड़ी देर
के बाद साऊल भी अपनी फ़ौज समेत वहाँ के लिए
निकला। उस वक़्त दाऊद और उस के लोग दश्त-
ए-मऊन में यशीमोन के जुनूब में थे। जब दाऊद को
इत्तिला मिली कि साऊल उस का ताक़्क़ुब कर रहा
है तो वह रेगिस्तान के मज़ीद जुनूब में चला गया,
वहाँ जहाँ बड़ी चटान नज़र आती है। लेकिन साऊल
को पता चला और वह फ़ौरन रेगिस्तान में दाऊद के
पीछे गया।

26 चलते चलते साऊल दाऊद के क़रीब ही पहुँच
गया। आख़िरकार सिर्फ़ एक पहाड़ी उन के दरमियान
रह गई। साऊल पहाड़ी के एक दामन में था जबकि
दाऊद अपने लोगों समेत दूसरे दामन में भागता
हुआ बादशाह से बचने की कोशिश कर रहा था।
साऊल अभी उन्हें घेर कर पकड़ने को था 27 कि
अचानक क़ासिद साऊल के पास पहुँचा जिस ने
कहा, "जल्दी आएँ! फ़िलिस्ती हमारे मुल्क में घुस
आए हैं।" 28 साऊल को दाऊद को छोड़ना पड़ा,
और वह फ़िलिस्तियों से लड़ने गया। उस वक़्त से
पहाड़ी का नाम "अलाहिदगी की चटान" पड़ गया।
29 दाऊद वहाँ से चला गया और ऐन-जदी के पहाड़ी
क़िलों में रहने लगा।

दाऊद साऊल को क़त्ल करने से इन्कार करता है

24 1 जब साऊल फ़िलिस्तियों का ताक़्क़ुब
करने से वापस आया तो उसे ख़बर मिली
कि दाऊद ऐन-जदी के रेगिस्तान में है। 2 वह तमाम
इस्राईल के 3,000 चीदा फ़ौजियों को ले कर पहाड़ी
बकरियों की चटानों के लिए रवाना हुआ ताकि
दाऊद को पकड़ ले।
3 चलते चलते वह भेड़ों के कुछ बाड़ों से गुज़रने
लगे। वहाँ एक ग़ार को देख कर साऊल अन्दर गया
ताकि अपनी हाजत रफ़ा करे। इत्तिफ़ाक़ से दाऊद
और उस के आदमी उसी ग़ार के पिछले हिस्से में
छुपे बैठे थे। 4 दाऊद के आदमियों ने आहिस्ता से
उस से कहा, "रब ने तो आप से वादा किया था, 'मैं
तेरे दुश्मन को तेरे हवाले कर दूँगा, और तू जो जी चाहे
उस के साथ कर सकेगा।' अब यह वक़्त आ गया
है!" दाऊद रेंगते रेंगते आगे साऊल के क़रीब पहुँच
गया। चुपके से उस ने साऊल के लिबास के किनारे
का टुकड़ा काट लिया और फिर वापस आ गया।
5 लेकिन जब अपने लोगों के पास पहुँचा तो उस
का ज़मीर उसे मलामत करने लगा। 6 उस ने अपने
आदमियों से कहा, "रब न करे कि मैं अपने आक़ा
के साथ ऐसा सुलूक करके रब के मसह किए हुए
बादशाह को हाथ लगाऊँ। क्यूँकि रब ने ख़ुद उसे
मसह करके चुन लिया है।" 7 यह कह कर दाऊद ने
उन को समझाया और उन्हें साऊल पर हम्ला करने से
रोक दिया।
थोड़ी देर के बाद साऊल ग़ार से निकल कर आगे
चलने लगा। 8 जब वह कुछ फ़ासिले पर था तो दाऊद
भी निकला और पुकार उठा, "ऐ बादशाह सलामत,
ऐ मेरे आक़ा!" साऊल ने पीछे देखा तो दाऊद मुँह के
बल झुक कर 9 बोला, "जब लोग आप को बताते हैं
कि दाऊद आप को नुक़्सान पहुँचाने पर तुला हुआ
है तो आप क्यूँ ध्यान देते हैं? 10 आज आप अपनी
आँखों से देख सकते हैं कि यह झूट ही झूट है। ग़ार में
आप अल्लाह की मर्ज़ी से मेरे क़ब्ज़े में आ गए थे। मेरे
लोगों ने ज़ोर दिया कि मैं आप को मार दूँ, लेकिन मैं ने
आप को न छेड़ा। मैं बोला, 'मैं कभी भी बादशाह को
नुक़्सान नहीं पहुँचाऊँगा, क्यूँकि रब ने ख़ुद उसे मसह
करके चुन लिया है।' 11 मेरे बाप, यह देखें जो मेरे हाथ
में है! आप के लिबास का यह टुकड़ा मैं काट सका,
और फिर भी मैं ने आप को हलाक न किया। अब
जान लें कि न मैं आप को नुक़्सान पहुँचाने का इरादा
रखता हूँ, न मैं ने आप का गुनाह किया है। फिर भी
आप मेरा ताक़्क़ुब करते हुए मुझे मार डालने के दरपै
हैं। 12 रब ख़ुद फ़ैसला करे कि किस से ग़लती हो रही
है, आप से या मुझ से। वही आप से मेरा बदला ले।
लेकिन ख़ुद मैं कभी आप पर हाथ नहीं उठाऊँगा।
13 क़दीम क़ौल यही बात बयान करता है, 'बदकारों
से बदकारी पैदा होती है।' मेरी नीयत तो साफ़ है,
इस लिए मैं कभी ऐसा नहीं करूँगा। 14 इस्राईल का
बादशाह किस के ख़िलाफ़ निकल आया है? जिस का
ताक़्क़ुब आप कर रहे हैं उस की तो कोई हैसियत
नहीं। वह मुर्दा कुत्ता या पिस्सू ही है। 15 रब हमारा
मुन्सिफ़ हो। वही हम दोनों का फ़ैसला करे। वह मेरे
मुआमले पर ध्यान दे, मेरे हक़ में बात करे और मुझे
बेइल्ज़ाम ठहरा कर आप के हाथ से बचाए।"
16 दाऊद ख़ामोश हुआ तो साऊल ने पूछा, "दाऊद
मेरे बेटे, क्या आप की आवाज़ है?" और वह फूट

फूट कर रोने लगा। 17 उस ने कहा, “आप मुझ से
ज़्यादा रास्तबाज़ हैं। आप ने मुझ से अच्छा सुलूक
किया जबकि मैं आप से बुरा सुलूक करता रहा हूँ।
18 आज आप ने मेरे साथ भलाइ का सबूत दिया,
क्यूँकि गो रब ने मुझे आप के हवाले कर दिया था
तो भी आप ने मुझे हलाक न किया। 19 जब किसी
का दुश्मन उस के क़ब्ज़े में आ जाता है तो वह उसे
जाने नहीं देता। लेकिन आप ने ऐसा ही किया। रब
आप को उस मेहरबानी का अज्र दे जो आप ने आज
मुझ पर की है। 20 अब मैं जानता हूँ कि आप ज़रूर
बादशाह बन जाएंगे, और कि आप के ज़रीए इस्राईल
की बादशाही क़ाइम रहेगी। 21 चुनाँचे रब की क़सम
खा कर मुझ से वादा करें कि न आप मेरी औलाद
को हलाक करेंगे, न मेरे आबाई घराने में से मेरा नाम
मिटा देंगे।”

22 दाऊद ने क़सम खा कर साऊल से वादा किया।
फिर साऊल अपने घर चला गया जबकि दाऊद ने
अपने लोगों के साथ एक पहाड़ी क़िले में पनाह ले
ली।

समूएल की मौत

25 1 उन दिनों में समूएल फ़ौत हुआ। तमाम
इस्राईल रामा में जनाज़े के लिए जमा हुआ।
उस का मातम करते हुए उन्हों ने उसे उस की
ख़ानदानी क़ब्र में दफ़न किया।

नाबाल दाऊद की बेइज़्ज़ती करता है

उन दिनों में दाऊद दश्त-ए-फ़ारान में चला गया।
2–4 मऊन में कालिब के ख़ानदान का एक आदमी
रहता था जिस का नाम नाबाल था। वह निहायत
अमीर था। कर्मिल के क़रीब उस की 3,000 भेड़ें
और 1,000 बकरियाँ थीं। बीवी का नाम अबीजेल
था। वह ज़हीन भी थी और ख़ूबसूरत भी। उस के
मुक़ाबले में नाबाल सख़्तमिज़ाज और कमीना था।
एक दिन नाबाल अपनी भेड़ों के बाल कतरने के लिए
कर्मिल आया।

जब दाऊद को ख़बर मिली 5 तो उस ने 10 जवानों
को भेज कर कहा, “कर्मिल जा कर नाबाल से मिलें
और उसे मेरा सलाम दें। 6 उसे बताना, ‘अल्लाह आप
को तवील ज़िन्दगी अता करे। आप की, आप के
ख़ानदान की और आप की तमाम मिलकियत की
सलामती हो। 7 सुना है कि भेड़ों के बाल कतरने का
वक़्त आ गया है। कर्मिल में आप के चरवाहे हमेशा
हमारे साथ रहे। उस पूरे अर्से में न उन्हें हमारी तरफ़ से
कोई नुक़्सान पहुँचा, न कोई चीज़ चोरी हुई। 8 अपने
लोगों से ख़ुद पूछ लें! वह इस की तस्दीक़ करेंगे।
आज आप ख़ुशी मना रहे हैं, इस लिए मेरे जवानों पर
मेहरबानी करें। जो कुछ आप ख़ुशी से दे सकते हैं
वह उन्हें और अपने बेटे दाऊद को दे दें’।”

9 दाऊद के आदमी नाबाल के पास गए। उसे दाऊद
का सलाम दे कर उन्हों ने उस का पैग़ाम दिया और
फिर जवाब का इन्तिज़ार किया। 10 लेकिन नाबाल
ने करख़्त लहजे में कहा, “यह दाऊद कौन है? कौन
है यस्सी का बेटा? आजकल बहुत से ऐसे ग़ुलाम हैं
जो अपने मालिक से भागे हुए हैं। 11 मैं अपनी रोटी,
अपना पानी और कतरने वालों के लिए ज़बह किया
गया गोश्त ले कर ऐसे आवारा फिरने वालों को क्यूँ
दे दूँ? क्या पता है कि यह कहाँ से आए हैं।”

12 दाऊद के आदमी चले गए और दाऊद को सब
कुछ बता दिया। 13 तब दाऊद ने हुक्म दिया, “अपनी
तलवारें बांध लो!” सब ने अपनी तलवारें बांध लीं।
उस ने भी ऐसा किया और फिर 400 अफ़राद के साथ
कर्मिल के लिए रवाना हुआ। बाक़ी 200 मर्द सामान
के पास रहे।

अबीजेल दाऊद का ग़ुस्सा ठंडा करती है

14 इतने में नाबाल के एक नौकर ने उस की
बीवी को इत्तिला दी, “दाऊद ने रेगिस्तान में से
अपने क़ासिदों को नाबाल के पास भेजा ताकि उसे
मुबारकबाद दें। लेकिन उस ने जवाब में गरज कर
उन्हें गालियाँ दी हैं, 15 हालाँकि उन लोगों का हमारे
साथ सुलूक हमेशा अच्छा रहा है। हम अक्सर रेवड़ों

को चराने के लिए उन के क़रीब फिरते रहे, तो भी
उन्हों ने हमें कभी नुक़्सान न पहुँचाया, न कोई चीज़
चोरी की। 16 जब भी हम उन के क़रीब थे तो वह दिन
रात चारदीवारी की तरह हमारी हिफ़ाज़त करते रहे।
17 अब सोच लें कि क्या किया जाए! क्यूँकि हमारा
मालिक और उस के तमाम घर वाले बड़े ख़तरे में
हैं। वह ख़ुद इतना शरीर है कि उस से बात करने का
कोई फ़ाइदा नहीं।"

18 जितनी जल्दी हो सका अबीजेल ने कुछ सामान
इकट्ठा किया जिस में 200 रोटियाँ, मै की दो मश्कें,
खाने के लिए तय्यार की गई पाँच भेड़ें, भुने हुए
अनाज के साढ़े 27 किलोग्राम, किशमिश की 100
और अन्जीर की 200 टिक्कियाँ शामिल थीं। सब कुछ
गधों पर लाद कर 19 उस ने अपने नौकरों को हुक्म
दिया, "मेरे आगे निकल जाओ, मैं तुम्हारे पीछे पीछे
आऊँगी।" अपने शौहर को उस ने कुछ न बताया।
20 जब अबीजेल पहाड़ की आड़ में उतरने लगी तो
दाऊद अपने आदमियों समेत उस की तरफ़ बढ़ते हुए
नज़र आया। फिर उन की मुलाक़ात हुई। 21 दाऊद तो
अभी तक बड़े ग़ुस्से में था, क्यूँकि वह सोच रहा था,
"इस आदमी की मदद करने का क्या फ़ाइदा था!
हम रेगिस्तान में उस के रेवड़ों की हिफ़ाज़त करते
रहे और उस की कोई भी चीज़ गुम न होने दी। तो भी
उस ने हमारी नेकी के जवाब में हमारी बेइज़्ज़ती की
है। 22 अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं कल सुब्ह
तक उस के एक आदमी को भी ज़िन्दा छोड़ दूँ!"

23–24 दाऊद को देख कर अबीजेल जल्दी से गधे
पर से उतर कर उस के सामने मुँह के बल झुक गई।
उस ने कहा, "मेरे आक़ा, मुझे ही क़ुसूरवार ठहराएँ।
मेहरबानी करके अपनी ख़ादिमा को बोलने दें और
उस की बात सुनें। 25 मेरे मालिक उस शरीर आदमी
नाबाल पर ज़्यादा ध्यान न दें। उस के नाम का मतलब
अहमक़ है और वह है ही अहमक़। अफ़्सोस, मेरी
उन आदमियों से मुलाक़ात नहीं हुई जो आप ने हमारे
पास भेजे थे। 26 लेकिन रब की और आप की हयात
की क़सम, रब ने आप को अपने हाथों से बदला
लेने और क़ातिल बनने से बचाया है। और अल्लाह
करे कि जो भी आप से दुश्मनी रखते और आप को
नुक़्सान पहुँचाना चाहते हैं उन्हें नाबाल की सी सज़ा
मिल जाए। 27 अब गुज़ारिश है कि जो बरकत हमें
मिली है उस में आप भी शरीक हों। जो चीज़ें आप
की ख़ादिमा लाई है उन्हें क़बूल करके उन जवानों
में तक़्सीम कर दें जो मेरे आक़ा के पीछे हो लिए हैं।
28 जो भी ग़लती हुई है अपनी ख़ादिमा को मुआफ़
कीजिए। रब ज़रूर मेरे आक़ा का घराना हमेशा तक
क़ाइम रखेगा, क्यूँकि आप रब के दुश्मनों से लड़ते
हैं। वह आप को जीते जी ग़लतियाँ करने से बचाए
रखे। 29 जब कोई आप का ताक़्क़ुब करके आप को
मार देने की कोशिश करे तो रब आप का ख़ुदा आप
की जान जानदारों की थैली में महफ़ूज़ रखेगा। लेकिन
आप के दुश्मनों की जान वह फ़लाख़न के पत्थर की
तरह दूर फैंक कर हलाक कर देगा। 30 जब रब अपने
तमाम वादे पूरे करके आप को इस्राईल का बादशाह
बना देगा 31 तो कोई ऐसी बात सामने नहीं आएगी
जो ठोकर का बाइस हो। मेरे आक़ा का ज़मीर साफ़
होगा, क्यूँकि आप बदला ले कर क़ातिल नहीं बने
होंगे। गुज़ारिश है कि जब रब आप को कामयाबी दे
तो अपनी ख़ादिमा को भी याद करें।"

32 दाऊद बहुत ख़ुश हुआ। "रब इस्राईल के ख़ुदा
की तारीफ़ हो जिस ने आज आप को मुझ से मिलने
के लिए भेज दिया। 33 आप की बसीरत मुबारक है!
आप मुबारक हैं, क्यूँकि आप ने मुझे इस दिन अपने
हाथों से बदला ले कर क़ातिल बनने से रोक दिया है।
34 रब इस्राईल के ख़ुदा की क़सम जिस ने मुझे आप
को नुक़्सान पहुँचाने से रोक दिया, कल सुब्ह नाबाल
के तमाम आदमी हलाक होते अगर आप इतनी जल्दी
से मुझ से मिलने न आतीं।"

35 दाऊद ने अबीजेल की पेशकरदा चीज़ें क़बूल
करके उसे रुख़्सत किया और कहा, "सलामती से
जाएँ। मैं ने आप की सुनी और आप की बात मन्ज़ूर
कर ली है।"

रब नाबाल को सज़ा देता है

36 जब अबीजेल अपने घर पहुँची तो देखा कि बहुत
रौनक़ है, क्यूँकि नाबाल बादशाह की सी ज़ियाफ़त
करके ख़ुशियाँ मना रहा था। चूँकि वह नशे में धुत था
इस लिए अबीजेल ने उसे उस वक़्त कुछ न बताया।
37 अगली सुब्ह जब नाबाल होश में आ गया तो
अबीजेल ने उसे सब कुछ कह सुनाया। यह सुनते
ही नाबाल को दौरा पड़ गया, और वह पत्थर सा
बन गया। 38 दस दिन के बाद रब ने उसे मरने दिया।
39 जब दाऊद को नाबाल की मौत की ख़बर मिल गई
तो वह पुकारा, "रब की तारीफ़ हो जिस ने मेरे लिए
नाबाल से लड़ कर मेरी बेइज़्ज़ती का बदला लिया
है। उस की मेहरबानी है कि मैं ग़लत काम करने से
बच गया हूँ जबकि नाबाल की बुराई उस के अपने
सर पर आ गई है।"

अबीजेल की दाऊद से शादी

कुछ देर के बाद दाऊद ने अपने लोगों को अबीजेल
के पास भेजा ताकि वह दाऊद की उस के साथ शादी
की दरख़्वास्त पेश करें। 40 चुनाँचे उस के मुलाज़िम
कर्मिल में अबीजेल के पास जा कर बोले, "दाऊद ने
हमें शादी का पैग़ाम दे कर भेजा है।" 41 अबीजेल
खड़ी हुई, फिर मुँह के बल झुक कर बोली, "मैं
उन की ख़िदमत में हाज़िर हूँ। मैं अपने मालिक के
ख़ादिमों के पाँओ धोने तक तय्यार हूँ।"
42 वह जल्दी से तय्यार हुई और गधे पर बैठ
कर दाऊद के मुलाज़िमों के साथ रवाना हुई। पाँच
नौकरानियाँ उस के साथ चली गईं। यूँ अबीजेल
दाऊद की बीवी बन गई।
43 अब दाऊद की दो बीवियाँ थीं, क्यूँकि पहले
उस की शादी अख़ीनूअम से हुई थी जो यज़्रएल से
थी। 44 जहाँ तक साऊल की बेटी मीकल का ताल्लुक़
था साऊल ने उसे दाऊद से ले कर उस की दुबारा
शादी फ़ल्तीएल बिन लैस से करवाई थी जो जल्लीम
का रहने वाला था।

दाऊद साऊल को दूसरी बार बचने देता है

26 1 एक दिन दश्त-ए-ज़ीफ़ के कुछ बाशिन्दे
दुबारा जिबिआ में साऊल के पास आ
गए। उन्हों ने बादशाह को बताया, "हम जानते
हैं कि दाऊद कहाँ छुप गया है। वह उस पहाड़ी
पर है जो हकीला कहलाती है और यशीमोन के
मुक़ाबिल है।" 2 यह सुन कर साऊल इस्राईल के
3,000 चीदा फ़ौजियों को ले कर दश्त-ए-ज़ीफ़ में
गया ताकि दाऊद को ढूँड निकाले। 3 हकीला पहाड़ी
पर यशीमोन के मुक़ाबिल वह रुक गए। जो रास्ता
पहाड़ पर से गुज़रता है उस के पास उन्हों ने अपना
कैम्प लगाया। दाऊद उस वक़्त रेगिस्तान में छुप गया
था। जब उसे ख़बर मिली कि साऊल मेरा ताक़्क़ुब
कर रहा है 4 तो उस ने अपने लोगों को मालूम करने
के लिए भेजा। उन्हों ने वापस आ कर उसे इत्तिला
दी कि बादशाह वाक़ई अपनी फ़ौज समेत रेगिस्तान
में पहुँच गया है। 5 यह सुन कर दाऊद ख़ुद निकल
कर चुपके से उस जगह गया जहाँ साऊल का कैम्प
था। उस को मालूम हुआ कि साऊल और उस का
कमाँडर अबिनैर बिन नैर कैम्प के ऐन बीच में सो
रहे हैं जबकि बाक़ी आदमी दाइरा बना कर उन के
इर्दगिर्द सो रहे हैं।
6 दो मर्द दाऊद के साथ थे, अख़ीमलिक हित्ती और
अबीशै बिन ज़रूयाह। ज़रूयाह योआब का भाई था।
दाऊद ने पूछा, "कौन मेरे साथ कैम्प में घुस कर
साऊल के पास जाएगा?" अबीशै ने जवाब दिया,
"मैं साथ जाऊँगा।" 7 चुनाँचे दोनों रात के वक़्त कैम्प
में घुस आए। सोए हुए फ़ौजियों और अबिनैर से गुज़र
कर वह साऊल तक पहुँच गए जो ज़मीन पर लेटा सो
रहा था। उस का नेज़ा सर के क़रीब ज़मीन में गड़ा
हुआ था। 8 अबीशै ने आहिस्ता से दाऊद से कहा,
"आज अल्लाह ने आप के दुश्मन को आप के क़ब्ज़े
में कर दिया है। अगर इजाज़त हो तो मैं उसे उस के
अपने नेज़े से ज़मीन के साथ छेद दूँ। मैं उसे एक

ही वार में मार दूँगा। दूसरे वार की ज़रूरत ही नहीं
होगी।”
9 दाऊद बोला, “न करो! उसे मत मारना, क्यूँकि
जो रब के मसह किए हुए ख़ादिम को हाथ लगाए
वह क़ुसूरवार ठहरेगा। 10 रब की हयात की क़सम,
रब ख़ुद साऊल की मौत मुक़र्रर करेगा, ख़्वाह वह
बूढ़ा हो कर मर जाए, ख़्वाह जंग में लड़ते हुए। 11 रब
मुझे इस से महफ़ूज़ रखे कि मैं उस के मसह किए हुए
ख़ादिम को नुक़्सान पहुँचाऊँ। नहीं, हम कुछ और
करेंगे। उस का नेज़ा और पानी की सुराही पकड़
लो। आओ, हम यह चीज़ें अपने साथ ले कर यहाँ
से निकल जाते हैं।” 12 चुनाँचे वह दोनों चीज़ें अपने
साथ ले कर चुपके से चले गए। कैम्प में किसी को
भी पता न चला, कोई न जागा। सब सोए रहे, क्यूँकि
रब ने उन्हें गहरी नींद सुला दिया था।
13 दाऊद वादी को पार करके पहाड़ी पर चढ़ गया।
जब साऊल से फ़ासिला काफ़ी था 14 तो दाऊद ने
फ़ौज और अबिनैर को ऊँची आवाज़ से पुकार कर
कहा, “ऐ अबिनैर, क्या आप मुझे जवाब नहीं देंगे?”
अबिनैर पुकारा, “आप कौन हैं कि बादशाह को
इस तरह की ऊँची आवाज़ दें?” 15 दाऊद ने तन्ज़न
जवाब दिया, “क्या आप मर्द नहीं हैं? और इस्राईल
में कौन आप जैसा है? तो फिर आप ने अपने बादशाह
की सहीह हिफ़ाज़त क्यूँ न की जब कोई उसे क़त्ल
करने के लिए कैम्प में घुस आया? 16 जो आप ने
किया वह ठीक नहीं है। रब की हयात की क़सम,
आप और आप के आदमी सज़ा-ए-मौत के लाइक़ हैं,
क्यूँकि आप ने अपने मालिक की हिफ़ाज़त न की, गो
वह रब का मसह किया हुआ बादशाह है। ख़ुद देख
लें, जो नेज़ा और पानी की सुराही बादशाह के सर के
पास थे वह कहाँ हैं?”
17 तब साऊल ने दाऊद की आवाज़ पहचान
ली। वह पुकारा, “मेरे बेटे दाऊद, क्या आप की
आवाज़ है?” 18 दाऊद ने जवाब दिया, “जी, बादशाह
सलामत। मेरे आक़ा, आप मेरा ताक़्क़ुब क्यूँ कर रहे
हैं? मैं तो आप का ख़ादिम हूँ। मैं ने क्या किया? मुझ
से क्या जुर्म सरज़द हुआ है? 19 गुज़ारिश है कि मेरा
आक़ा और बादशाह अपने ख़ादिम की बात सुने।
अगर रब ने आप को मेरे ख़िलाफ़ उकसाया हो तो
वह मेरी ग़ल्ला की नज़र क़बूल करे। लेकिन अगर
इन्सान इस के पीछे हैं तो रब के सामने उन पर
लानत! अपनी हरकतों से उन्हों ने मुझे मेरी मौरूसी
ज़मीन से निकाल दिया है और नतीजे में मैं रब की
क़ौम में नहीं रह सकता। हक़ीक़त में वह कह रहे हैं,
‘जाओ, दीगर माबूदों की पूजा करो!’ 20 ऐसा न हो
कि मैं वतन से और रब के हुज़ूर से दूर मर जाऊँ।
इस्राईल का बादशाह पिस्सू को ढूँड निकालने के
लिए क्यूँ निकल आया है? वह तो पहाड़ों में मेरा
शिकार तीतर के शिकार की तरह कर रहे हैं।”
21 तब साऊल ने इक़्रार किया, “मैं ने गुनाह किया
है। दाऊद मेरे बेटे, वापस आएँ। अब से मैं आप
को नुक़्सान पहुँचाने की कोशिश नहीं करूँगा, क्यूँकि
आज मेरी जान आप की नज़र में क़ीमती थी। मैं बड़ी
बेवुक़ूफ़ी कर गया हूँ, और मुझ से बड़ी ग़लती हुई
है।”
22 दाऊद ने जवाब में कहा, “बादशाह का नेज़ा
यहाँ मेरे पास है। आप का कोई जवान आ कर उसे
ले जाए। 23 रब हर उस शख़्स को अज्र देता है जो
इन्साफ़ करता और वफ़ादार रहता है। आज रब ने
आप को मेरे हवाले कर दिया, लेकिन मैं ने उस के
मसह किए हुए बादशाह को हाथ लगाने से इन्कार
किया। 24 और मेरी दुआ है कि जितनी क़ीमती आप
की जान आज मेरी नज़र में थी, उतनी क़ीमती मेरी
जान भी रब की नज़र में हो। वही मुझे हर मुसीबत
से बचाए रखे।” 25 साऊल ने जवाब दिया, “मेरे बेटे
दाऊद, रब आप को बरकत दे। आइन्दा आप को
बड़ी कामयाबी हासिल होगी।”
इस के बाद दाऊद ने अपनी राह ली और साऊल
अपने घर चला गया।

दाऊद दुबारा अकीस के पास

27 1 इस तजरिबे के बाद दाऊद सोचने लगा,
"अगर मैं यहीं ठहर जाऊँ तो किसी दिन
साऊल मुझे मार डालेगा। बेहतर है कि अपनी
हिफ़ाज़त के लिए फ़िलिस्तियों के मुल्क में चला
जाऊँ। तब साऊल पूरे इस्राईल में मेरा खोज लगाने से
बाज़ आएगा, और मैं महफ़ूज़ रहूँगा।" 2 चुनाँचे वह
अपने 600 आदमियों को ले कर जात के बादशाह
अकीस बिन माओक के पास चला गया। 3 उन के
ख़ानदान साथ थे। दाऊद की दो बीवियाँ अख़ीनूअम
यज़्रएली और नाबाल की बेवा अबीजेल कर्मिली भी
साथ थीं। अकीस ने उन्हें जात शहर में रहने की
इजाज़त दी। 4 जब साऊल को ख़बर मिली कि दाऊद
ने जात में पनाह ली है तो वह उस का खोज लगाने
से बाज़ आया।

5 एक दिन दाऊद ने अकीस से बात की, "अगर
आप की नज़र-ए-करम मुझ पर है तो मुझे दीहात
की किसी आबादी में रहने की इजाज़त दें। क्या
ज़रूरत है कि मैं यहाँ आप के साथ दार-उल-हकूमत
में रहूँ?" 6 अकीस मुत्तफ़िक़ हुआ। उस दिन उस ने
उसे सिक़्लाज शहर दे दिया। यह शहर उस वक़्त
से यहूदाह के बादशाहों की मिलकियत में रहा है।
7 दाऊद एक साल और चार महीने फ़िलिस्ती मुल्क
में ठहरा रहा।

8 सिक़्लाज से दाऊद अपने आदमियों के साथ
मुख़्तलिफ़ जगहों पर हम्ला करने के लिए निकलता
रहा। कभी वह जसूरियों पर धावा बोलते, कभी
जिर्ज़ियों या अमालीक़ियों पर। यह क़बीले क़दीम
ज़माने से यहूदाह के जुनूब में शूर और मिस्र की सरहद
तक रहते थे। 9 जब भी कोई मक़ाम दाऊद के क़ब्ज़े
में आ जाता तो वह किसी भी मर्द या औरत को ज़िन्दा
न रहने देता लेकिन भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, गधों,
ऊँटों और कपड़ों को अपने साथ सिक़्लाज ले जाता।

जब भी दाऊद किसी हमले से वापस आ कर
बादशाह अकीस से मिलता 10 तो वह पूछता,
"आज आप ने किस पर छापा मारा?" फिर दाऊद
जवाब देता, "यहूदाह के जुनूबी इलाक़े पर," या
"यरहमिएलियों के जुनूबी इलाक़े पर," या "क़ीनियों
के जुनूबी इलाक़े पर।" 11 जब भी दाऊद किसी
आबादी पर हम्ला करता तो वह तमाम बाशिन्दों को
मौत के घाट उतार देता और न मर्द, न औरत को
ज़िन्दा छोड़ कर जात लाता। क्यूँकि उस ने सोचा,
"ऐसा न हो कि फ़िलिस्तियों को पता चले कि मैं
असल में इस्राईली आबादियों पर हम्ला नहीं कर
रहा।"

जितना वक़्त दाऊद ने फ़िलिस्ती मुल्क में गुज़ारा
वह ऐसा ही करता रहा। 12 अकीस ने दाऊद पर पूरा
भरोसा किया, क्यूँकि उस ने सोचा, "अब दाऊद
को हमेशा तक मेरी ख़िदमत में रहना पड़ेगा, क्यूँकि
ऐसी हरकतों से उस की अपनी क़ौम उस से सख़्त
मुतनफ़्फ़िर हो गई है।"

28 1 उन दिनों में फ़िलिस्ती इस्राईल से लड़ने
के लिए अपनी फ़ौजें जमा करने लगे।
अकीस ने दाऊद से भी बात की, "तवक़्क़ो है कि
आप अपने फ़ौजियों समेत मेरे साथ मिल कर जंग के
लिए निकलेंगे।"

2 दाऊद ने जवाब दिया, "ज़रूर। अब आप ख़ुद
देखेंगे कि आप का ख़ादिम क्या करने के क़ाबिल
है!" अकीस बोला, "ठीक है। पूरी जंग के दौरान
आप मेरे मुहाफ़िज़ होंगे।"

साऊल जादूगरनी की तरफ़ रुजू करता है

3 उस वक़्त समूएल इन्तिक़ाल कर चुका था, और
पूरे इस्राईल ने उस का मातम करके उसे उस के
आबाई शहर रामा में दफ़नाया था।

उन दिनों में इस्राईल में मुर्दों से राबिता करने वाले
और ग़ैबदान नहीं थे, क्यूँकि साऊल ने उन्हें पूरे मुल्क
से निकाल दिया था।

4 अब फ़िलिस्तियों ने अपनी लश्करगाह शूनीम के
पास लगाई जबकि साऊल ने तमाम इस्राईलियों को
जमा करके जिल्बूअ के पास अपना कैम्प लगाया।

5 फ़िलिस्तियों की बड़ी फ़ौज देख कर वह सख़्त
दहशत खाने लगा। 6 उस ने रब से हिदायत हासिल
करने की कोशिश की, लेकिन कोई जवाब न मिला,
न ख़्वाब, न मुक़द्दस क़ुरआ डालने से और न नबियों
की मारिफ़त। 7 तब साऊल ने अपने मुलाज़िमों को
हुक्म दिया, "मेरे लिए मुर्दों से राबिता करने वाली
ढूँडो ताकि मैं जा कर उस से मालूमात हासिल कर
लूँ।" मुलाज़िमों ने जवाब दिया, "ऐन-दोर में ऐसी
औरत है।"

8 साऊल भेस बदल कर दो आदमियों के साथ ऐन-
दोर के लिए रवाना हुआ।

रात के वक़्त वह जादूगरनी के पास पहुँच गया
और बोला, "मुर्दों से राबिता करके उस रूह को
पाताल से बुला दें जिस का नाम मैं आप को बताता
हूँ।" 9 जादूगरनी ने एतिराज़ किया, "क्या आप मुझे
मरवाना चाहते हैं? आप को पता है कि साऊल ने
तमाम ग़ैबदानों और मुर्दों से राबिता करने वालों को
मुल्क में से मिटा दिया है। आप मुझे क्यूँ फंसाना
चाहते हैं?" 10 तब साऊल ने कहा, "रब की हयात
की क़सम, आप को यह करने के लिए सज़ा नहीं
मिलेगी।" 11 औरत ने पूछा, "मैं किस को बुलाऊँ?"
साऊल ने जवाब दिया, "समूएल को बुला दें।"

12 जब समूएल औरत को नज़र आया तो वह चीख़
उठी, "आप ने मुझे क्यूँ धोका दिया? आप तो साऊल
हैं!" 13 साऊल ने उसे तसल्ली दे कर कहा, "डरें
मत। बताएँ तो सही, क्या देख रही हैं?" औरत ने
जवाब दिया, "मुझे एक रूह नज़र आ रही है जो
चढ़ती चढ़ती ज़मीन में से निकल कर आ रही है।"
14 साऊल ने पूछा, "उस की शक्ल-ओ-सूरत कैसी
है?" जादूगरनी ने कहा, "चोगे में लिपटा हुआ बूढ़ा
आदमी है।"

यह सुन कर साऊल ने जान लिया कि समूएल ही
है। वह मुँह के बल ज़मीन पर झुक गया। 15 समूएल
बोला, "तू ने मुझे पाताल से बुलवा कर क्यूँ मुज़्तरिब
कर दिया है?" साऊल ने जवाब दिया, "मैं बड़ी
मुसीबत में हूँ। फ़िलिस्ती मुझ से लड़ रहे हैं, और
अल्लाह ने मुझे तर्क कर दिया है। न वह नबियों की
मारिफ़त मुझे हिदायत देता है, न ख़्वाब के ज़रीए।
इस लिए मैं ने आप को बुलवाया है ताकि आप मुझे
बताएँ कि मैं क्या करूँ।"

16 लेकिन समूएल ने कहा, "रब ख़ुद ही तुझे छोड़
कर तेरा दुश्मन बन गया है तो फिर मुझ से दरयाफ़्त
करने का क्या फ़ाइदा है? 17 रब इस वक़्त तेरे साथ
वह कुछ कर रहा है जिस की पेशगोई उस ने मेरी
मारिफ़त की थी। उस ने तेरे हाथ से बादशाही छीन
कर किसी और यानी दाऊद को दे दी है। 18 जब रब
ने तुझे अमालीक़ियों पर उस का सख़्त ग़ज़ब नाज़िल
करने का हुक्म दिया था तो तू ने उस की न सुनी।
अब तुझे इस की सज़ा भुगतनी पड़ेगी। 19 रब तुझे
इस्राईल समेत फ़िलिस्तियों के हवाले कर देगा। कल
ही तू और तेरे बेटे यहाँ मेरे पास पहुँचेंगे। रब तेरी पूरी
फ़ौज भी फ़िलिस्तियों के क़ब्ज़े में कर देगा।"

20 यह सुन कर साऊल सख़्त घबरा गया, और वह
गिर कर ज़मीन पर दराज़ हो गया। जिस्म की पूरी
ताक़त ख़त्म हो गई थी, क्यूँकि उस ने पिछले पूरे
दिन और रात रोज़ा रखा था।

21 जब जादूगरनी ने साऊल के पास जा कर देखा
कि उस के रोंगटे खड़े हो गए हैं तो उस ने कहा,
"जनाब, मैं ने आप का हुक्म मान कर अपनी जान
ख़तरे में डाल दी। 22 अब ज़रा मेरी भी सुनें। मुझे
इजाज़त दें कि मैं आप को कुछ खाना खिलाऊँ ताकि
आप तक़वियत पा कर वापस जा सकें।" 23 लेकिन
साऊल ने इन्कार किया, "मैं कुछ नहीं खाऊँगा।"
तब उस के आदमियों ने औरत के साथ मिल कर
उसे बहुत समझाया, और आख़िरकार उस ने उन की
सुनी। वह ज़मीन से उठ कर चारपाई पर बैठ गया।
24 जादूगरनी के पास मोटा-ताज़ा बछड़ा था। उसे उस
ने जल्दी से ज़बह करवा कर तय्यार किया। उस ने
कुछ आटा भी ले कर गूँधा और उस से बेख़मीरी
रोटी बनाई। 25 फिर उस ने खाना साऊल और उस के
मुलाज़िमों के सामने रख दिया, और उन्हों ने खाया।
फिर वह उसी रात दुबारा रवाना हो गए।

फ़िलिस्ती दाऊद पर शक करते हैं

29 1 फ़िलिस्तियों ने अपनी फ़ौजों को अफ़ीक़
के पास जमा किया, जबकि इस्राईलियों
की लश्करगाह यज़्रएल के चश्मे के पास थी।
2 फ़िलिस्ती सरदार जंग के लिए निकलने लगे। उन
के पीछे सौ सौ और हज़ार हज़ार सिपाहियों के गुरोह
हो लिए। आख़िर में दाऊद और उस के आदमी भी
अकीस के साथ चलने लगे।

3 यह देख कर फ़िलिस्ती कमाँडरों ने पूछा, "यह
इस्राईली क्यूँ साथ जा रहे हैं?" अकीस ने जवाब
दिया, "यह दाऊद है, जो पहले इस्राईली बादशाह
साऊल का फ़ौजी अफ़्सर था और अब काफ़ी देर से
मेरे साथ है। जब से वह साऊल को छोड़ कर मेरे
पास आया है मैं ने उस में ऐब नहीं देखा।"

4 लेकिन फ़िलिस्ती कमाँडर ग़ुस्से से बोले, "उसे
उस शहर वापस भेज दें जो आप ने उस के लिए
मुक़र्रर किया है! कहीं ऐसा न हो कि वह हमारे
साथ निकल कर अचानक हम पर ही हम्ला कर दे।
क्या अपने मालिक से सुलह कराने का कोई बेहतर
तरीक़ा है कि वह अपने मालिक को हमारे कटे हुए
सर पेश करे? 5 क्या यह वही दाऊद नहीं जिस के
बारे में इस्राईली नाचते हुए गाते थे, 'साऊल ने हज़ार
हलाक किए जबकि दाऊद ने दस हज़ार'?"

6 चुनाँचे अकीस ने दाऊद को बुला कर कहा, "रब
की हयात की क़सम, आप दियानतदार हैं, और मेरी
ख़्वाहिश थी कि आप इस्राईल से लड़ने के लिए मेरे
साथ निकलें, क्यूँकि जब से आप मेरी ख़िदमत करने
लगे हैं मैं ने आप में ऐब नहीं देखा। लेकिन अफ़्सोस,
आप सरदारों को पसन्द नहीं हैं। 7 इस लिए मेहरबानी
करके सलामती से लौट जाएँ और कुछ न करें जो
उन्हें बुरा लगे।"

8 दाऊद ने पूछा, "मुझ से क्या ग़लती हुई है? क्या
आप ने उस दिन से मुझ में नुक़्स पाया है जब से मैं
आप की ख़िदमत करने लगा हूँ? मैं अपने मालिक
और बादशाह के दुश्मनों से लड़ने के लिए क्यूँ नहीं
निकल सकता?"

9 अकीस ने जवाब दिया, "मेरे नज़्दीक तो आप
अल्लाह के फ़रिश्ते जैसे अच्छे हैं। लेकिन फ़िलिस्ती
कमाँडर इस बात पर बज़िद हैं कि आप इस्राईल से
लड़ने के लिए हमारे साथ न निकलें। 10 चुनाँचे कल
सुब्ह-सवेरे उठ कर अपने आदमियों के साथ रवाना
हो जाना। जब दिन चढ़े तो देर न करना बल्कि जल्दी
से अपने घर चले जाना।"

11 दाऊद और उस के आदमियों ने ऐसा ही किया।
अगले दिन वह सुब्ह-सवेरे उठ कर फ़िलिस्ती मुल्क
में वापस चले गए जबकि फ़िलिस्ती यज़्रएल के लिए
रवाना हुए।

सिक़्लाज की तबाही और दाऊद का बदला

30 1 तीसरे दिन जब दाऊद सिक़्लाज पहुँचा तो
देखा कि शहर का सत्यानास हो गया है।
उन की ग़ैरमौजूदगी में अमालीक़ियों ने दश्त-ए-नजब
में आ कर सिक़्लाज पर भी हम्ला किया था। शहर
को जला कर 2 वह तमाम बाशिन्दों को छोटों से ले
कर बड़ों तक अपने साथ ले गए थे। लेकिन कोई
हलाक नहीं हुआ था बल्कि वह सब को अपने साथ
ले गए थे। 3 चुनाँचे जब दाऊद और उस के आदमी
वापस आए तो देखा कि शहर भस्म हो गया है और
तमाम बाल-बच्चे छिन गए हैं। 4 वह फूट फूट कर रोने
लगे, इतने रोए कि आख़िरकार रोने की सकत ही
न रही। 5 दाऊद की दो बीवियों अख़ीनूअम यज़्रएली
और अबीजेल कर्मिली को भी असीर कर लिया गया
था।

6 दाऊद की जान बड़े ख़तरे में आ गई, क्यूँकि उस
के मर्द ग़म के मारे आपस में उसे संगसार करने की
बातें करने लगे। क्यूँकि बेटे-बेटियों के छिन जाने के
बाइस सब सख़्त रंजीदा थे। लेकिन दाऊद ने रब
अपने ख़ुदा में पनाह ले कर तक़वियत पाई। 7 उस ने
अबियातर बिन अख़ीमलिक को हुक्म दिया, "क़ुरआ
डालने के लिए इमाम का बालापोश ले आएँ।" जब

इमाम बालापोश ले आया 8 तो दाऊद ने रब से
दरयाफ़्त किया, “क्या मैं लुटेरों का ताक़्क़ुब करूँ?
क्या मैं उन को जा लूँगा?” रब ने जवाब दिया, “उन
का ताक़्क़ुब कर! तू न सिर्फ़ उन्हें जा लेगा बल्कि
अपने लोगों को बचा भी लेगा।” 9–10 तब दाऊद
अपने 600 मर्दों के साथ रवाना हुआ। चलते चलते
वह बसोर नदी के पास पहुँच गए। 200 अफ़राद इतने
निढाल हो गए थे कि वह वहीं रुक गए। बाक़ी 400
मर्द नदी को पार करके आगे बढ़े।

11 रास्ते में उन्हें खुले मैदान में एक मिस्री आदमी
मिला और उसे दाऊद के पास ला कर कुछ पानी
पिलाया और कुछ रोटी, 12 अन्जीर की टिक्की का
टुकड़ा और किशमिश की दो टिक्कियाँ खिलाईं। तब
उस की जान में जान आ गई। उसे तीन दिन और
रात से न खाना, न पानी मिला था। 13 दाऊद ने पूछा,
“तुम्हारा मालिक कौन है, और तुम कहाँ के हो?”
उस ने जवाब दिया, “मैं मिस्री ग़ुलाम हूँ, और एक
अमालीक़ी मेरा मालिक है। जब मैं सफ़र के दौरान
बीमार हो गया तो उस ने मुझे यहाँ छोड़ दिया। अब
मैं तीन दिन से यहाँ पड़ा हूँ। 14 पहले हम ने करेतियों
यानी फ़िलिस्तियों के जुनूबी इलाक़े और फिर यहूदाह
के इलाक़े पर हम्ला किया था, ख़ासकर यहूदाह के
जुनूबी हिस्से पर जहाँ कालिब की औलाद आबाद
है। शहर सिक़्लाज को हम ने भस्म कर दिया था।”

15 दाऊद ने सवाल किया, “क्या तुम मुझे बता
सकते हो कि यह लुटेरे किस तरफ़ गए हैं?” मिस्री ने
जवाब दिया, “पहले अल्लाह की क़सम खा कर वादा
करें कि आप मुझे न हलाक करेंगे, न मेरे मालिक
के हवाले करेंगे। फिर मैं आप को उन के पास
ले जाऊँगा।” 16 चुनाँचे वह दाऊद को अमालीक़ी
लुटेरों के पास ले गया। जब वहाँ पहुँचे तो देखा कि
अमालीक़ी इधर उधर बिखरे हुए बड़ा जश्न मना रहे
हैं। वह हर तरफ़ खाना खाते और मै पीते हुए नज़र
आ रहे थे, क्यूँकि जो माल उन्हों ने फ़िलिस्तियों और
यहूदाह के इलाक़े से लूट लिया था वह बहुत ज़्यादा
था।

17 सुब्ह-सवेरे जब अभी थोड़ी रौशनी थी दाऊद ने
उन पर हम्ला किया। लड़ते लड़ते अगले दिन की शाम
हो गई। दुश्मन हार गया और सब के सब हलाक हुए।
सिर्फ़ 400 जवान बच गए जो ऊँटों पर सवार हो कर
फ़रार हो गए। 18 दाऊद ने सब कुछ छुड़ा लिया जो
अमालीक़ियों ने लूट लिया था। उस की दो बीवियाँ
भी सहीह-सलामत मिल गईं। 19 न बच्चा न बुज़ुर्ग, न
बेटा न बेटी, न माल या कोई और लूटी हुई चीज़ रही
जो दाऊद वापस न लाया। 20 अमालीक़ियों के गाय-
बैल और भेड़-बकरियाँ दाऊद का हिस्सा बन गईं,
और उस के लोगों ने उन्हें अपने रेवड़ों के आगे आगे
हाँक कर कहा, “यह लूटे हुए माल में से दाऊद का
हिस्सा है।”

माल-ए-ग़नीमत की तक़्सीम

21 जब दाऊद अपने आदमियों के साथ वापस आ
रहा था तो जो 200 आदमी निढाल होने के बाइस
बसोर नदी से आगे न जा सके वह भी उन से आ
मिले। दाऊद ने सलाम करके उन का हाल पूछा।
22 लेकिन बाक़ी आदमियों में कुछ शरारती लोग
बुड़बुड़ाने लगे, “यह हमारे साथ लड़ने के लिए आगे
न निकले, इस लिए इन्हें लूटे हुए माल का हिस्सा
पाने का हक़ नहीं। बस वह अपने बाल-बच्चों को ले
कर चले जाएँ।”

23 लेकिन दाऊद ने इन्कार किया। “नहीं, मेरे
भाइयो, ऐसा मत करना! यह सब कुछ रब की तरफ़
से है। उसी ने हमें महफ़ूज़ रख कर हम्लाआवर लुटेरों
पर फ़त्ह बख़्शी। 24 तो फिर हम आप की बात किस
तरह मानें? जो पीछे रह कर सामान की हिफ़ाज़त कर
रहा था उसे भी उतना ही मिलेगा जितना कि उसे जो
दुश्मन से लड़ने गया था। हम यह सब कुछ बराबर
बराबर तक़्सीम करेंगे।”

25 उस वक़्त से यह उसूल बन गया। दाऊद ने इसे
इस्राईली क़ानून का हिस्सा बना दिया जो आज तक
जारी है। 26 सिक़्लाज वापस पहुँचने पर दाऊद ने लूटे
हुए माल का एक हिस्सा यहूदाह के बुज़ुर्गों के पास

भेज दिया जो उस के दोस्त थे। साथ साथ उस ने
पैग़ाम भेजा, “आप के लिए यह तुह्फ़ा रब के दुश्मनों
से लूट लिया गया है।” 27 यह तुह्फ़े उस ने ज़ैल के
शहरों में भेज दिए : बैत-एल, रामात-नजब, यत्तीर,
28 अरोईर, सिफ़्मोत, इस्तिमूअ, 29–31 रकल, हुर्मा,
बोर-असान, अताक़ और हब्रून। इस के इलावा उस ने
तुह्फ़े यरहमिएलियों, क़ीनियों और बाक़ी उन तमाम
शहरों को भेज दिए जिन में वह कभी ठहरा था।

साऊल और उस के बेटों का अन्जाम

31 1 इतने में फ़िलिस्तियों और इस्राईलियों के
दरमियान जंग छिड़ गई थी। लड़ते लड़ते
इस्राईली फ़रार होने लगे, लेकिन बहुत से लोग
जिल्बूअ के पहाड़ी सिलसिले पर शहीद हो गए।
2 फिर फ़िलिस्ती साऊल और उस के बेटों यूनतन,
अबीनदाब और मल्कीशूअ के पास जा पहुँचे। तीनों
बेटे हलाक हो गए 3 जबकि लड़ाई साऊल के इर्दगिर्द
उरूज तक पहुँच गई। फिर वह तीरअन्दाज़ों का
निशाना बन कर बुरी तरह ज़ख़्मी हो गया। 4 उस ने
अपने सिलाहबर्दार को हुक्म दिया, “अपनी तलवार
मियान से खैंच कर मुझे मार डाल, वर्ना यह नामख़्तून
मुझे छेद कर बेइज़्ज़त करेंगे।” लेकिन सिलाहबर्दार
ने इन्कार किया, क्यूँकि वह बहुत डरा हुआ था।
आख़िर में साऊल अपनी तलवार ले कर ख़ुद उस
पर गिर गया।
5 जब सिलाहबर्दार ने देखा कि मेरा मालिक मर
गया है तो वह भी अपनी तलवार पर गिर कर मर
गया। 6 यूँ उस दिन साऊल, उस के तीन बेटे, उस
का सिलाहबर्दार और उस के तमाम आदमी हलाक
हो गए।
7 जब मैदान-ए-यज़्रएल के पार और दरया-ए-यर्दन
के पार रहने वाले इस्राईलियों को ख़बर मिली कि
इस्राईली फ़ौज भाग गई और साऊल अपने बेटों समेत
मारा गया है तो वह अपने शहरों को छोड़ कर भाग
निकले, और फ़िलिस्ती छोड़े हुए शहरों पर क़ब्ज़ा
करके उन में बसने लगे।
8 अगले दिन फ़िलिस्ती लाशों को लूटने के लिए
दुबारा मैदान-ए-जंग में आ गए। जब उन्हें जिल्बूअ
के पहाड़ी सिलसिले पर साऊल और उस के तीनों
बेटे मुर्दा मिले 9 तो उन्हों ने साऊल का सर काट कर
उस का ज़िराबक्तर उतार लिया और क़ासिदों को
अपने पूरे मुल्क में भेज कर अपने बुतों के मन्दिर में
और अपनी क़ौम को फ़त्ह की इत्तिला दी। 10 साऊल
का ज़िराबक्तर उन्हों ने अस्तारात देवी के मन्दिर में
मह्फ़ूज़ कर लिया और उस की लाश को बैत-शान
की फ़सील से लटका दिया।
11 जब यबीस-जिलिआद के बाशिन्दों को ख़बर
मिली कि फ़िलिस्तियों ने साऊल की लाश के साथ
क्या कुछ किया है 12 तो शहर के तमाम लड़ने के
क़ाबिल आदमी बैत-शान के लिए रवाना हुए। पूरी
रात चलते हुए वह शहर के पास पहुँच गए। साऊल
और उस के बेटों की लाशों को फ़सील से उतार कर
वह उन्हें यबीस को ले गए। वहाँ उन्हों ने लाशों को
भस्म कर दिया 13 और बची हुई हड्डियों को शहर में
झाओ के दरख़्त के साय में दफ़नाया। उन्हों ने रोज़ा
रख कर पूरे हफ़्ते तक उन का मातम किया।

२-समूएल

दाऊद को साऊल और यूनतन की मौत की ख़बर मिलती है

1 1 जब दाऊद अमालीक़ियों को शिकस्त देने से
वापस आया तो साऊल बादशाह मर चुका था।
वह अभी दो ही दिन सिक़्लाज में ठहरा था 2 कि एक
आदमी साऊल की लश्करगाह से पहुँचा। दुख के
इज़हार के लिए उस ने अपने कपड़ों को फाड़ कर
अपने सर पर ख़ाक डाल रखी थी। दाऊद के पास
आ कर वह बड़े एहतिराम के साथ उस के सामने
झुक गया। 3 दाऊद ने पूछा, "आप कहाँ से आए
हैं?" आदमी ने जवाब दिया, "मैं बाल बाल बच कर
इस्राईली लश्करगाह से आया हूँ।" 4 दाऊद ने पूछा,
"बताएँ, हालात कैसे हैं?" उस ने बताया, "हमारे
बहुत से आदमी मैदान-ए-जंग में काम आए। बाक़ी
भाग गए हैं। साऊल और उस का बेटा यूनतन भी
हलाक हो गए हैं।"

5 दाऊद ने सवाल किया, "आप को कैसे मालूम
हुआ कि साऊल और यूनतन मर गए हैं?" 6 जवान
ने जवाब दिया, "इत्तिफ़ाक़ से मैं जिल्बूअ के पहाड़ी
सिलसिले पर से गुज़र रहा था। वहाँ मुझे साऊल नज़र
आया। वह नेज़े का सहारा ले कर खड़ा था। दुश्मन
के रथ और घुड़सवार तक़रीबन उसे पकड़ने ही वाले
थे 7 कि उस ने मुड़ कर मुझे देखा और अपने पास
बुलाया। मैं ने कहा, 'जी, मैं हाज़िर हूँ।' 8 उस ने पूछा,
'तुम कौन हो?' मैं ने जवाब दिया, 'मैं अमालीक़ी हूँ।'
9 फिर उस ने मुझे हुक्म दिया, 'आओ और मुझे मार
डालो! क्यूँकि गो मैं ज़िन्दा हूँ मेरी जान निकल रही
है।' 10 चुनाँचे मैं ने उसे मार दिया, क्यूँकि मैं जानता
था कि बचने का कोई इम्कान नहीं रहा था। फिर मैं
उस का ताज और बाज़ूबन्द ले कर अपने मालिक के
पास यहाँ ले आया हूँ।"

11 यह सब कुछ सुन कर दाऊद और उस के तमाम
लोगों ने ग़म के मारे अपने कपड़े फाड़ लिए। 12 शाम
तक उन्हों ने रो रो कर और रोज़ा रख कर साऊल,
उस के बेटे यूनतन और रब के उन बाक़ी लोगों का
मातम किया जो मारे गए थे।

13 दाऊद ने उस जवान से जो उन की मौत की ख़बर
लाया था पूछा, "आप कहाँ के हैं?" उस ने जवाब
दिया, "मैं अमालीक़ी हूँ जो अजनबी के तौर पर
आप के मुल्क में रहता हूँ।" 14 दाऊद बोला, "आप
ने रब के मसह किए हुए बादशाह को क़त्ल करने
की जुरअत कैसे की?" 15 उस ने अपने किसी जवान
को बुला कर हुक्म दिया, "इसे मार डालो!" उसी
वक़्त जवान ने अमालीक़ी को मार डाला। 16 दाऊद ने
कहा, "आप ने अपने आप को ख़ुद मुजरिम ठहराया
है, क्यूँकि आप ने अपने मुँह से इक़्रार किया है कि मैं
ने रब के मसह किए हुए बादशाह को मार दिया है।"

साऊल और यूनतन पर मातम का गीत

17 फिर दाऊद ने साऊल और यूनतन पर मातम का
गीत गाया। 18 उस ने हिदायत दी कि यहूदाह के तमाम
बाशिन्दे यह गीत याद करें। गीत का नाम 'कमान का
गीत' है और 'याशर की किताब' में दर्ज है। गीत यह
है,

19 "हाय, ऐ इस्राईल! तेरी शान-ओ-शौकत तेरी
बुलन्दियों पर मारी गई है। हाय, तेरे सूरमे किस तरह
गिर गए हैं!

20 जात में जा कर यह ख़बर मत सुनाना। अस्क़लून
की गलियों में इस का एलान मत करना, वर्ना
फ़िलिस्तियों की बेटियाँ ख़ुशी मनाएँगी, नामख़्तूनों
की बेटियाँ फ़त्ह के नारे लगाएँगी।

21 ऐ जिल्बूअ के पहाड़ो! ऐ पहाड़ी ढलानो!
आइन्दा तुम पर न ओस पड़े, न बारिश बरसे। क्यूँकि

सूरमाओं की ढाल नापाक हो गई है। अब से साऊल
की ढाल तेल मल कर इस्तेमाल नहीं की जाएगी।

22 यूनतन की कमान ज़बरदस्त थी, साऊल की
तलवार कभी ख़ाली हाथ न लौटी। उन के हथियारों
से हमेशा दुश्मन का ख़ून टपकता रहा, वह सूरमाओं
की चर्बी से चमकते रहे।
23 साऊल और यूनतन कितने प्यारे और मेहरबान
थे! जीते जी वह एक दूसरे के क़रीब रहे, और अब
मौत भी उन्हें अलग न कर सकी। वह उक़ाब से तेज़
और शेरबबर से ताक़तवर थे।
24 ऐ इस्राईल की ख़वातीन! साऊल के लिए आँसू
बहाएँ। क्यूँकि उसी ने आप को क़िर्मिज़ी रंग के
शानदार कपड़ों से मुलब्बस किया, उसी ने आप को
सोने के ज़ेवरात से आरास्ता किया।

25 हाय, हमारे सूरमे लड़ते लड़ते शहीद हो गए हैं।
हाय ऐ इस्राईल, यूनतन मुर्दा हालत में तेरी बुलन्दियों
पर पड़ा है।
26 ऐ यूनतन मेरे भाई, मैं तेरे बारे में कितना दुखी
हूँ। तू मुझे कितना अज़ीज़ था। तेरी मुझ से मुहब्बत
अनोखी थी, वह औरतों की मुहब्बत से भी अनोखी
थी।
27 हाय, हाय! हमारे सूरमे किस तरह गिर कर शहीद
हो गए हैं। जंग के हथियार तबाह हो गए हैं।"

दाऊद यहूदाह का बादशाह बन जाता है

2 1 इस के बाद दाऊद ने रब से दरयाफ़्त किया,
"क्या मैं यहूदाह के किसी शहर में वापस चला
जाऊँ?" रब ने जवाब दिया, "हाँ, वापस जा।" दाऊद
ने सवाल किया, "मैं किस शहर में जाऊँ?" रब ने
जवाब दिया, "हब्रून में।" 2 चुनाँचे दाऊद अपनी दो
बीवियों अख़ीनूअम यज़्रएली और नाबाल की बेवा
अबीजेल कर्मिली के साथ हब्रून में जा बसा।
3 दाऊद ने अपने आदमियों को भी उन के ख़ानदानों
समेत हब्रून और गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों में
मुन्तक़िल कर दिया। 4 एक दिन यहूदाह के आदमी
हब्रून में आए और दाऊद को मसह करके अपना
बादशाह बना लिया।

जब दाऊद को ख़बर मिल गई कि यबीस-
जिलिआद के मर्दों ने साऊल को दफ़ना दिया है 5 तो
उस ने उन्हें पैग़ाम भेजा, "रब आप को इस के लिए
बरकत दे कि आप ने अपने मालिक साऊल को दफ़न
करके उस पर मेहरबानी की है। 6 जवाब में रब आप
पर अपनी मेहरबानी और वफ़ादारी का इज़हार करे।
मैं भी इस नेक अमल का अज्र दूँगा। 7 अब मज़बूत
और दिलेर हों। आप का आक़ा साऊल तो फ़ौत हुआ
है, लेकिन यहूदाह के क़बीले ने मुझे उस की जगह
चुन लिया है।"

इश्बोसत इस्राईल का बादशाह बन जाता है

8 इतने में साऊल की फ़ौज के कमाँडर अबिनैर
बिन नैर ने साऊल के बेटे इश्बोसत को महनाइम
शहर में ले जा कर 9 बादशाह मुक़र्रर कर दिया।
जिलिआद, यज़्रएल, आशर, इफ़्राईम, बिनयमीन और
तमाम इस्राईल उस के क़ब्ज़े में रहे। 10 सिर्फ़ यहूदाह
का क़बीला दाऊद के साथ रहा। इश्बोसत 40 साल
की उम्र में बादशाह बना, और उस की हुकूमत दो
साल क़ाइम रही। 11 दाऊद हब्रून में यहूदाह पर साढ़े
सात साल हुकूमत करता रहा।

इस्राईल और यहूदाह के दरमियान जंग

12 एक दिन अबिनैर इश्बोसत बिन साऊल के
मुलाज़िमों के साथ महनाइम से निकल कर जिबऊन
आया। 13 यह देख कर दाऊद की फ़ौज योआब
बिन ज़रूयाह की राहनुमाई में उन से लड़ने के
लिए निकली। दोनों फ़ौजों की मुलाक़ात जिबऊन
के तालाब पर हुई। अबिनैर की फ़ौज तालाब की
उरली तरफ़ रुक गई और योआब की फ़ौज परली
तरफ़। 14 अबिनैर ने योआब से कहा, "आओ, हमारे
चन्द जवान हमारे सामने एक दूसरे का मुक़ाबला
करें।" योआब बोला, "ठीक है।" 15 चुनाँचे हर फ़ौज

ने बारह जवानों को चुन कर मुक़ाबले के लिए पेश
किया। इश्बोसत और बिनयमीन के क़बीले के बारह
जवान दाऊद के बारह जवानों के मुक़ाबले में खड़े
हो गए। 16 जब मुक़ाबला शुरू हुआ तो हर एक ने
एक हाथ से अपने मुख़ालिफ़ के बालों को पकड़
कर दूसरे हाथ से अपनी तलवार उस के पेट में घोंप
दी। सब के सब एक साथ मर गए। बाद में जिबऊन
की इस जगह का नाम ख़िल्क़त-हज़्ज़ूरीम पड़ गया।

17 फिर दोनों फ़ौजों के दरमियान निहायत सख़्त
लड़ाई छिड़ गई। लड़ते लड़ते अबिनैर और उस के
मर्द हार गए। 18 योआब के दो भाई अबीशै और
असाहेल भी लड़ाई में हिस्सा ले रहे थे। असाहेल
ग़ज़ाल की तरह तेज़ दौड़ सकता था। 19 जब अबिनैर
शिकस्त खा कर भागने लगा तो असाहेल सीधा उस
के पीछे पड़ गया और न दाईं, न बाईं तरफ़ हटा।
20 अबिनैर ने पीछे देख कर पूछा, "क्या आप ही हैं,
असाहेल?" उस ने जवाब दिया, "जी, मैं ही हूँ।"
21 अबिनैर बोला, "दाईं या बाईं तरफ़ हट कर किसी
और को पकड़ें! जवानों में से किसी से लड़ कर उस
के हथियार और ज़िराबक्तर उतारें।"

लेकिन असाहेल उस का ताक़्क़ुब करने से बाज़ न
आया। 22 अबिनैर ने उसे आगाह किया, "ख़बरदार।
मेरे पीछे से हट जाएँ, वर्ना आप को मार देने पर
मज्बूर हो जाऊँगा। फिर आप के भाई योआब को
किस तरह मुँह दिखाऊँगा?" 23 तो भी असाहेल ने
पीछा न छोड़ा। यह देख कर अबिनैर ने अपने नेज़े
का दस्ता इतने ज़ोर से उस के पेट में घोंप दिया कि
उस का सिरा दूसरी तरफ़ निकल गया। असाहेल वहीं
गिर कर जाँ-ब-हक़ हो गया। जिस ने भी वहाँ से गुज़र
कर यह देखा वह वहीं रुक गया।

24 लेकिन योआब और अबीशै अबिनैर का
ताक़्क़ुब करते रहे। जब सूरज ग़ुरूब होने लगा तो वह
एक पहाड़ी के पास पहुँच गए जिस का नाम अम्मा
था। यह जियाह के मुक़ाबिल उस रास्ते के पास है
जो मुसाफ़िर को जिबऊन से रेगिस्तान में पहुँचाता
है। 25 बिनयमीन के क़बीले के लोग वहाँ पहाड़ी पर
अबिनैर के पीछे जमा हो कर दुबारा लड़ने के लिए
तय्यार हो गए। 26 अबिनैर ने योआब को आवाज़ दी,
"क्या यह ज़रूरी है कि हम हमेशा तक एक दूसरे को
मौत के घाट उतारते जाएँ? क्या आप को समझ नहीं
आई कि ऐसी हरकतें सिर्फ़ तल्ख़ी पैदा करती हैं?
आप कब अपने मर्दों को हुक्म देंगे कि वह अपने
इस्राईली भाइयों का ताक़्क़ुब करने से बाज़ आएँ?"

27 योआब ने जवाब दिया, "रब की हयात की
क़सम, अगर आप लड़ने का हुक्म न देते तो मेरे लोग
आज सुब्ह ही अपने भाइयों का ताक़्क़ुब करने से
बाज़ आ जाते।" 28 उस ने नरसिंगा बजा दिया, और
उस के आदमी रुक कर दूसरों का ताक़्क़ुब करने से
बाज़ आए। यूँ लड़ाई ख़त्म हो गई।

29 उस पूरी रात के दौरान अबिनैर और उस के
आदमी चलते गए। दरया-ए-यर्दन की वादी में से गुज़र
कर उन्हों ने दरया को पार किया और फिर गहरी
घाटी में से हो कर महनाइम पहुँच गए।

30 योआब भी अबिनैर और उस के लोगों को छोड़
कर वापस चला गया। जब उस ने अपने आदमियों
को जमा करके गिना तो मालूम हुआ कि असाहेल के
इलावा दाऊद के 19 आदमी मारे गए हैं। 31 इस के
मुक़ाबले में अबिनैर के 360 आदमी हलाक हुए थे।
सब बिनयमीन के क़बीले के थे। 32 योआब और उस
के साथियों ने असाहेल की लाश उठा कर उसे बैत-
लहम में उस के बाप की क़ब्र में दफ़न किया। फिर
उसी रात अपना सफ़र जारी रख कर वह पौ फटते
वक़्त हब्रून पहुँच गए।

3 1 साऊल के बेटे इश्बोसत और दाऊद के
दरमियान यह जंग बड़ी देर तक जारी रही।
लेकिन आहिस्ता आहिस्ता दाऊद ज़ोर पकड़ता गया
जबकि इश्बोसत की ताक़त कम होती गई।

दाऊद का ख़ानदान हब्रून में

2 हब्रून में दाऊद के बाज़ बेटे पैदा हुए। पहले का
नाम अम्नोन था। उस की माँ अख़ीनूअम यज़्रएली थी।
3 फिर किलियाब पैदा हुआ जिस की माँ नाबाल की

बेवा अबीजेल कर्मिली थी। तीसरा बेटा अबीसलूम
था। उस की माँ माका थी जो जसूर के बादशाह तल्मी
की बेटी थी। 4 चौथे का नाम अदूनियाह था। उस की
माँ हज्जीत थी। पाँचवाँ बेटा सफ़तियाह था। उस की
माँ अबीताल थी। 5 छटे का नाम इत्रिआम था। उस
की माँ इज्ला थी। यह छः बेटे हब्रून में पैदा हुए।

अबिनैर इश्बोसत से झगड़ता है

6 जितनी देर तक इश्बोसत और दाऊद के दरमियान
जंग रही, उतनी देर तक अबिनैर साऊल के घराने का
वफ़ादार रहा।
7 लेकिन एक दिन इश्बोसत अबिनैर से नाराज़
हुआ, क्यूँकि वह साऊल मरहूम की एक दाश्ता से
हमबिसतर हो गया था। औरत का नाम रिस्फ़ा बिन्त
अय्याह था। इश्बोसत ने शिकायत की, "आप ने
मेरे बाप की दाश्ता से ऐसा सुलूक क्यूँ किया?"
8 अबिनैर बड़े ग़ुस्से में आ कर गरजा, "क्या मैं
यहूदाह का कुत्ता [a]हूँ कि आप मुझे ऐसा रवय्या
दिखाते हैं? आज तक मैं आप के बाप के घराने
और उस के रिश्तेदारों और दोस्तों के लिए लड़ता
रहा हूँ। मेरी ही वजह से आप अब तक दाऊद के
हाथ से बचे रहे हैं। क्या यह इस का मुआवज़ा है?
क्या एक ऐसी औरत के सबब से आप मुझे मुजरिम
ठहरा रहे हैं? 9–10 अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर
अब से हर मुमकिन कोशिश न करूँ कि दाऊद पूरे
इस्राईल और यहूदाह पर बादशाह बन जाए, शिमाल
में दान से ले कर जुनूब में बैर-सबा तक। आख़िर रब
ने ख़ुद क़सम खा कर दाऊद से वादा किया है कि मैं
बादशाही साऊल के घराने से छीन कर तुझे दूँगा।"
11 यह सुन कर इश्बोसत अबिनैर से इतना डर गया
कि मज़ीद कुछ कहने की जुरअत जाती रही।

अबिनैर के दाऊद से मुज़ाकरात

12 अबिनैर ने दाऊद को पैग़ाम भेजा, "मुल्क किस
का है? मेरे साथ मुआहदा कर लें तो मैं पूरे इस्राईल
को आप के साथ मिला दूँगा।"
13 दाऊद ने जवाब दिया, "ठीक है, मैं आप के साथ
मुआहदा करता हूँ। लेकिन एक ही शर्त पर, आप
साऊल की बेटी मीकल को जो मेरी बीवी है मेरे घर
पहुँचाएँ, वर्ना मैं आप से नहीं मिलूँगा।" 14 दाऊद
ने इश्बोसत के पास भी क़ासिद भेज कर तक़ाज़ा
किया, "मुझे मेरी बीवी मीकल जिस से शादी करने
के लिए मैं ने सौ फ़िलिस्तियों को मारा वापस कर
दें।" 15 इश्बोसत मान गया। उस ने हुक्म दिया कि
मीकल को उस के मौजूदा शौहर फ़ल्तीएल बिन लैस
से ले कर दाऊद को भेजा जाए। 16 लेकिन फ़ल्तीएल
उसे छोड़ना नहीं चाहता था। वह रोते रोते बहूरीम
तक अपनी बीवी के पीछे चलता रहा। तब अबिनैर
ने उस से कहा, "अब जाओ! वापस चले जाओ!"
तब वह वापस चला।
17 अबिनैर ने इस्राईल के बुज़ुर्गों से भी बात की,
"आप तो काफ़ी देर से चाहते हैं कि दाऊद आप का
बादशाह बन जाए। 18 अब क़दम उठाने का वक़्त
आ गया है! क्यूँकि रब ने दाऊद से वादा किया है,
'अपने ख़ादिम दाऊद से मैं अपनी क़ौम इस्राईल को
फ़िलिस्तियों और बाक़ी तमाम दुश्मनों के हाथ से
बचाऊँगा'।" 19 यही बात अबिनैर ने बिनयमीन के
बुज़ुर्गों के पास जा कर भी की। इस के बाद वह हब्रून
में दाऊद के पास आया ताकि उस के सामने इस्राईल
और बिनयमीन के बुज़ुर्गों का फ़ैसला पेश करे।
20 बीस आदमी अबिनैर के साथ हब्रून पहुँच गए।
उन का इस्तिक़्बाल करके दाऊद ने ज़ियाफ़त की।
21 फिर अबिनैर ने दाऊद से कहा, "अब मुझे इजाज़त
दें। मैं अपने आक़ा और बादशाह के लिए तमाम
इस्राईल को जमा कर लूँगा ताकि वह आप के साथ

---

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : कुत्ते का सर

अह्द बांध कर आप को अपना बादशाह बना लें।
फिर आप उस पूरे मुल्क पर हुकूमत करेंगे जिस तरह
आप का दिल चाहता है।" फिर दाऊद ने अबिनैर को
सलामती से रुख़्सत कर दिया।

अबिनैर को क़त्ल किया जाता है

22 थोड़ी देर के बाद योआब दाऊद के आदमियों
के साथ किसी लड़ाई से वापस आया। उन के पास
बहुत सा लूटा हुआ माल था। लेकिन अबिनैर हब्रून
में दाऊद के पास नहीं था, क्यूँकि दाऊद ने उसे
सलामती से रुख़्सत कर दिया था। 23 जब योआब
अपने आदमियों के साथ शहर में दाख़िल हुआ तो
उसे इत्तिला दी गई, "अबिनैर बिन नैर बादशाह के
पास था, और बादशाह ने उसे सलामती से रुख़्सत
कर दिया है।" 24 योआब फ़ौरन बादशाह के पास
गया और बोला, "आप ने यह क्या किया है? जब
अबिनैर आप के पास आया तो आप ने उसे क्यूँ
सलामती से रुख़्सत किया? अब उसे पकड़ने का
मौक़ा जाता रहा है। 25 आप तो उसे जानते हैं।
हक़ीक़त में वह इस लिए आया कि आप को मनवा
कर आप के आने जाने और बाक़ी कामों के बारे में
मालूमात हासिल करे।"

26 योआब ने दरबार से निकल कर क़ासिदों को
अबिनैर के पीछे भेज दिया। वह अभी सफ़र करते
करते सीरा के हौज़ पर से गुज़र रहा था कि क़ासिद
उस के पास पहुँच गए। उन की दावत पर वह उन
के साथ वापस गया। लेकिन बादशाह को इस का
इल्म न था। 27 जब अबिनैर दुबारा हब्रून में दाख़िल
होने लगा तो योआब शहर के दरवाज़े में उस का
इस्तिक़्बाल करके उसे एक तरफ़ ले गया जैसे वह
उस के साथ कोई ख़ुफ़िया बात करना चाहता हो।
लेकिन अचानक उस ने अपनी तलवार को मियान
से खैंच कर अबिनैर के पेट में घोंप दिया। इस तरह
योआब ने अपने भाई असाहेल का बदला ले कर
अबिनैर को मार डाला।

28 जब दाऊद को इस की इत्तिला मिली तो उस ने
एलान किया, "मैं रब के सामने क़सम खाता हूँ कि
बेक़ुसूर हूँ। मेरा अबिनैर की मौत में हाथ नहीं था।
इस नाते से मुझ पर और मेरी बादशाही पर कभी भी
इल्ज़ाम न लगाया जाए, 29 क्यूँकि योआब और उस
के बाप का घराना क़ुसूरवार हैं। रब उसे और उस के
बाप के घराने को मुनासिब सज़ा दे। अब से अबद
तक उस की हर नस्ल में कोई न कोई हो जिसे ऐसे
ज़ख़्म लग जाएँ जो भर न पाएँ, किसी को कोढ़ लग
जाए, किसी को बैसाखियों की मदद से चलना पड़े,
कोई ग़ैरतबई मौत मर जाए, या किसी को ख़ुराक
की मुसलसल कमी रहे।" 30 यूँ योआब और उस के
भाई अबीशै ने अपने भाई असाहेल का बदला लिया।
उन्हों ने अबिनैर को इस लिए क़त्ल किया कि उस
ने असाहेल को जिबऊन के क़रीब लड़ते वक़्त मौत
के घाट उतार दिया था।

दाऊद अबिनैर का मातम करता है

31–32 दाऊद ने योआब और उस के साथियों को
हुक्म दिया, "अपने कपड़े फाड़ दो और टाट ओढ़
कर अबिनैर का मातम करो!" जनाज़े का बन्द-ओ-
बस्त हब्रून में किया गया। दाऊद ख़ुद जनाज़े के ऐन
पीछे चला। क़ब्र पर बादशाह ऊँची आवाज़ से रो
पड़ा, और बाक़ी सब लोग भी रोने लगे। 33 फिर
दाऊद ने अबिनैर के बारे में मातमी गीत गाया,

34 "हाय, अबिनैर क्यूँ बेदीन की तरह मारा गया?
तेरे हाथ बंधे हुए न थे, तेरे पाँओ ज़न्जीरों में जकड़े
हुए न थे। जिस तरह कोई शरीरों के हाथ में आ कर
मर जाता है उसी तरह तू हलाक हुआ।"

तब तमाम लोग मज़ीद रोए। 35 दाऊद ने जनाज़े के
दिन रोज़ा रखा। सब ने मिन्नत की कि वह कुछ खाए,
लेकिन उस ने क़सम खा कर कहा, "अल्लाह मुझे
सख़्त सज़ा दे अगर मैं सूरज के ग़ुरूब होने से पहले
रोटी का एक टुकड़ा भी खा लूँ।" 36 बादशाह का
यह रवय्या लोगों को बहुत पसन्द आया। वैसे भी
दाऊद का हर अमल लोगों को पसन्द आता था।

37 यूँ तमाम हाज़िरीन बल्कि तमाम इस्राईलियों ने
जान लिया कि बादशाह का अबिनैर को क़त्ल करने
में हाथ न था। 38 दाऊद ने अपने दरबारियों से कहा,
“क्या आप को समझ नहीं आई कि आज इस्राईल का
बड़ा सूरमा फ़ौत हुआ है? 39 मुझे अभी अभी मसह
करके बादशाह बनाया गया है, इस लिए मेरी इतनी
ताक़त नहीं कि ज़रूयाह के इन दो बेटों योआब और
अबीशै को कंट्रोल करूँ। रब उन्हें उन की इस शरीर
हरकत की मुनासिब सज़ा दे!”

इश्बोसत को क़त्ल किया जाता है

4 1 जब साऊल के बेटे इश्बोसत को इत्तिला मिली
कि अबिनैर को हब्रून में क़त्ल किया गया है
तो वह हिम्मत हार गया, और तमाम इस्राईल सख़्त
घबरा गया। 2 इश्बोसत के दो आदमी थे जिन के
नाम बाना और रैकाब थे। जब कभी इश्बोसत के
फ़ौजी छापा मारने के लिए निकलते तो यह दो भाई
उन पर मुक़र्रर थे। उन का बाप रिम्मोन बिनयमीन के
क़बाइली इलाक़े के शहर बैरोत का रहने वाला था।
बैरोत भी बिनयमीन में शुमार किया जाता है, 3 अगरचे
उस के बाशिन्दों को हिज्रत करके जित्तैम में बसना
पड़ा जहाँ वह आज तक परदेसी की हैसियत से रहते
हैं।

4 यूनतन का एक बेटा ज़िन्दा रह गया था जिस का
नाम मिफ़ीबोसत था। पाँच साल की उम्र में यज़्रएल
से ख़बर आई थी कि साऊल और यूनतन मारे गए
हैं। तब उस की आया उसे ले कर कहीं पनाह लेने
के लिए भाग गई थी। लेकिन जल्दी की वजह से
मिफ़ीबोसत गिर कर लंगड़ा हो गया था। उस वक़्त
से उस की दोनों टाँगें मफ़्लूज थीं।

5 एक दिन रिम्मोन बैरोती के बेटे रैकाब और बाना
दोपहर के वक़्त इश्बोसत के घर गए। गर्मी उरूज पर
थी, इस लिए इश्बोसत आराम कर रहा था। 6–7 दोनों
आदमी यह बहाना पेश करके घर के अन्दरूनी कमरे
में गए कि हम कुछ अनाज ले जाने के लिए आए हैं।
जब इश्बोसत के कमरे में पहुँचे तो वह चारपाई पर
लेटा सो रहा था। यह देख कर उन्हों ने उस के पेट
में तलवार घोंप दी और फिर उस का सर काट कर
वहाँ से सलामती से निकल आए।

पूरी रात सफ़र करते करते वह दरया-ए-यर्दन की
वादी में से गुज़र कर 8 हब्रून पहुँच गए। वहाँ उन्हों ने
दाऊद को इश्बोसत का सर दिखा कर कहा, “यह
देखें, साऊल के बेटे इश्बोसत का सर। आप का
दुश्मन साऊल बार बार आप को मार देने की कोशिश
करता रहा, लेकिन आज रब ने उस से और उस की
औलाद से आप का बदला लिया है।”

दाऊद क़ातिलों को सज़ा देता है

9 लेकिन दाऊद ने जवाब दिया, “रब की हयात
की क़सम जिस ने फ़िद्या दे कर मुझे हर मुसीबत से
बचाया है, 10 जिस आदमी ने मुझे उस वक़्त सिक़्लाज
में साऊल की मौत की इत्तिला दी वह भी समझता
था कि मैं दाऊद को अच्छी ख़बर पहुँचा रहा हूँ।
लेकिन मैं ने उसे पकड़ कर सज़ा-ए-मौत दे दी। यही
था वह अज्र जो उसे ऐसी ख़बर पहुँचाने के इवज़
मिला! 11 अब तुम शरीर लोगों ने इस से बढ़ कर
किया। तुम ने बेक़ुसूर आदमी को उस के अपने घर
में उस की अपनी चारपाई पर क़त्ल कर दिया है। तो
क्या मेरा फ़र्ज़ नहीं कि तुम को इस क़त्ल की सज़ा
दे कर तुम्हें मुल्क में से मिटा दूँ?”

12 दाऊद ने दोनों को मार देने का हुक्म दिया। उस
के मुलाज़िमों ने उन्हें मार कर उन के हाथों और
पैरों को काट डाला और उन की लाशों को हब्रून
के तालाब के क़रीब कहीं लटका दिया। इश्बोसत
के सर को उन्हों ने अबिनैर की क़ब्र में दफ़नाया।

दाऊद पूरे इस्राईल का बादशाह बन जाता है

5 1 उस वक़्त इस्राईल के तमाम क़बीले हब्रून
में दाऊद के पास आए और कहा, “हम आप
ही की क़ौम और आप ही के रिश्तेदार हैं। 2 माज़ी
में भी जब साऊल बादशाह था तो आप ही फ़ौजी
मुहिम्मों में इस्राईल की क़ियादत करते रहे। और रब

ने आप से वादा भी किया है कि तू मेरी क़ौम इस्राईल
का चरवाहा बन कर उस पर हुकूमत करेगा।”
3 जब इस्राईल के तमाम बुज़ुर्ग हब्रून पहुँचे तो दाऊद
बादशाह ने रब के हुज़ूर उन के साथ अह्द बांधा,
और उन्हों ने उसे मसह करके इस्राईल का बादशाह
बना दिया।
4 दाऊद 30 साल की उम्र में बादशाह बन गया। उस
की हुकूमत 40 साल तक जारी रही। 5 पहले साढ़े
सात साल वह सिर्फ़ यहूदाह का बादशाह था और
उस का दार-उल-हकूमत हब्रून रहा। बाक़ी 33 साल
वह यरूशलम में रह कर यहूदाह और इस्राईल दोनों
पर हुकूमत करता रहा।

दाऊद यरूशलम पर क़ब्ज़ा करता है

6 बादशाह बनने के बाद दाऊद अपने फ़ौजियों के
साथ यरूशलम गया ताकि उस पर हम्ला करे। वहाँ
अब तक यबूसी आबाद थे। दाऊद को देख कर
यबूसियों ने उस का मज़ाक़ उड़ाया, “आप हमारे
शहर में कभी दाख़िल नहीं हो पाएँगे! आप को रोकने
के लिए हमारे लंगड़े और अंधे काफ़ी हैं।” उन्हें पूरा
यक़ीन था कि दाऊद शहर में किसी भी तरीक़े से नहीं
आ सकेगा।
7 तो भी दाऊद ने सिय्यून के क़िले पर क़ब्ज़ा कर
लिया जो आजकल ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है।
8 जिस दिन उन्हों ने शहर पर हम्ला किया उस ने एलान
किया, “जो भी यबूसियों पर फ़त्ह पाना चाहे उसे
पानी की सुरंग में से गुज़र कर शहर में घुसना पड़ेगा
ताकि उन लंगड़ों और अंधों को मारे जिन से मेरी जान
नफ़रत करती है।” इस लिए आज तक कहा जाता
है, “लंगड़ों और अंधों को घर में जाने की इजाज़त
नहीं।”
9 यरूशलम पर फ़त्ह पाने के बाद दाऊद क़िले
में रहने लगा। उस ने उसे ‘दाऊद का शहर’ क़रार
दिया और उस के इर्दगिर्द शहर को बढ़ाने लगा। यह
तामीरी काम इर्दगिर्द के चबूतरों से शुरू हुआ और
होते होते क़िले तक पहुँच गया।
10 यूँ दाऊद ज़ोर पकड़ता गया, क्यूँकि रब्ब-उल-
अफ़्वाज उस के साथ था।

दाऊद की तरक़्क़ी

11 एक दिन सूर के बादशाह हीराम ने दाऊद के पास
वफ़द भेजा। बढ़ई और राज भी साथ थे। उन के पास
देवदार की लकड़ी थी, और उन्हों ने दाऊद के लिए
महल बना दिया। 12 यूँ दाऊद ने जान लिया कि रब
ने मुझे इस्राईल का बादशाह बना कर मेरी बादशाही
अपनी क़ौम इस्राईल की ख़ातिर सरफ़राज़ कर दी है।
13 हब्रून से यरूशलम में मुन्तक़िल होने के बाद
दाऊद ने मज़ीद बीवियों और दाश्ताओं से शादी की।
नतीजे में यरूशलम में उस के कई बेटे-बेटियाँ पैदा
हुए। 14 जो बेटे वहाँ पैदा हुए वह यह थे : सम्मूअ,
सोबाब, नातन, सुलेमान, 15 इब्हार, इलीसूअ, नफ़ज,
यफ़ीअ, 16 इलीसमा, इल्यदा और इलीफ़लत।

फ़िलिस्तियों पर फ़त्ह

17 जब फ़िलिस्तियों को इत्तिला मिली कि दाऊद
को मसह करके इस्राईल का बादशाह बनाया गया है
तो उन्हों ने अपने फ़ौजियों को इस्राईल में भेज दिया
ताकि उसे पकड़ लें। लेकिन दाऊद को पता चल
गया, और उस ने एक पहाड़ी क़िले में पनाह ले ली।
18 जब फ़िलिस्ती इस्राईल में पहुँच कर वादी-ए-
रफ़ाईम में फैल गए 19 तो दाऊद ने रब से दरयाफ़्त
किया, “क्या मैं फ़िलिस्तियों पर हम्ला करूँ? क्या तू
मुझे उन पर फ़त्ह बख़्शेगा?” रब ने जवाब दिया,
“हाँ, उन पर हम्ला कर! मैं उन्हें ज़रूर तेरे क़ब्ज़े में
कर दूँगा।” 20 चुनाँचे दाऊद अपने फ़ौजियों को ले
कर बाल-पराज़ीम गया। वहाँ उस ने फ़िलिस्तियों को
शिकस्त दी। बाद में उस ने गवाही दी, “जितने ज़ोर
से बन्द के टूट जाने पर पानी उस से फूट निकलता
है उतने ज़ोर से आज रब मेरे देखते देखते दुश्मन की
सफ़ों में से फूट निकला है।” चुनाँचे उस जगह का
नाम बाल-पराज़ीम यानी ‘फूट निकलने का मालिक’
पड़ गया। 21 फ़िलिस्ती अपने बुत छोड़ कर भाग गए,

और वह दाऊद और उस के आदमियों के क़ब्ज़े में
आ गए।
22 एक बार फिर फ़िलिस्ती आ कर वादी-ए-रफ़ाईम
में फैल गए। 23 जब दाऊद ने रब से दरयाफ़्त किया तो
उस ने जवाब दिया, “इस मर्तबा उन का सामना मत
करना बल्कि उन के पीछे जा कर बका के दरख़्तों
के सामने उन पर हम्ला कर। 24 जब उन दरख़्तों की
चोटियों से क़दमों की चाप सुनाई दे तो ख़बरदार!
यह इस का इशारा होगा कि रब ख़ुद तेरे आगे आगे
चल कर फ़िलिस्तियों को मारने के लिए निकल आया
है।”
25 दाऊद ने ऐसा ही किया और नतीजे में
फ़िलिस्तियों को शिकस्त दे कर जिबऊन से ले कर
जज़र तक उन का ताक़्क़ुब किया।

दाऊद अह्द का सन्दूक़ यरूशलम में ले आता है

6 1 एक बार फिर दाऊद ने इस्राईल के चुनीदा
आदमियों को जमा किया। 30,000 अफ़राद थे।
2 उन के साथ मिल कर वह यहूदाह के बाला पहुँच
गया ताकि अल्लाह का सन्दूक़ उठा कर यरूशलम
ले जाएँ, वही सन्दूक़ जिस पर रब्ब-उल-अफ़्वाज
के नाम का ठप्पा लगा है और जहाँ वह सन्दूक़ के
ऊपर करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है।
3–4 लोगों ने अल्लाह के सन्दूक़ को पहाड़ी पर वाक़े
अबीनदाब के घर से निकाल कर एक नई बैलगाड़ी
पर रख दिया, और अबीनदाब के दो बेटे उज़्ज़ा
और अख़ियो उसे यरूशलम की तरफ़ ले जाने लगे।
अख़ियो गाड़ी के आगे आगे 5 और दाऊद बाक़ी
तमाम लोगों के साथ पीछे चल रहा था। सब रब
के हुज़ूर पूरे ज़ोर से ख़ुशी मनाने और गीत गाने लगे।
मुख़्तलिफ़ साज़ भी बजाए जा रहे थे। फ़िज़ा सितारों,
सरोदों, दफ़ों, ख़न्जरियों [b]और झाँझों की आवाज़ों
से गूँज उठी।
6 वह गन्दुम गाहने की एक जगह पर पहुँच गए जिस
के मालिक का नाम नकोन था। वहाँ बैल अचानक
बेकाबू हो गए। उज़्ज़ा ने जल्दी से अल्लाह का सन्दूक़
पकड़ लिया ताकि वह गिर न जाए। 7 उसी लम्हे रब
का ग़ज़ब उस पर नाज़िल हुआ, क्यूँकि उस ने अल्लाह
के सन्दूक़ को छूने की जुरअत की थी। वहीं अल्लाह
के सन्दूक़ के पास ही उज़्ज़ा गिर कर हलाक हो गया।
8 दाऊद को बड़ा रंज हुआ कि रब का ग़ज़ब उज़्ज़ा
पर यूँ टूट पड़ा है। उस वक़्त से उस जगह का नाम
परज़-उज़्ज़ा यानी ‘उज़्ज़ा पर टूट पड़ना’ है।
9 उस दिन दाऊद को रब से ख़ौफ़ आया। उस ने
सोचा, “रब का सन्दूक़ किस तरह मेरे पास पहुँच
सकेगा?” 10 चुनाँचे उस ने फ़ैसला किया कि हम
रब का सन्दूक़ यरूशलम नहीं ले जाएंगे बल्कि उसे
ओबेद-अदोम जाती के घर में महफ़ूज़ रखेंगे। 11 वहाँ
वह तीन माह तक पड़ा रहा।
इन तीन महीनों के दौरान रब ने ओबेद-अदोम
और उस के पूरे घराने को बरकत दी। 12 एक दिन
दाऊद को इत्तिला दी गई, “जब से अल्लाह का सन्दूक़
ओबेद-अदोम के घर में है उस वक़्त से रब ने उस के
घराने और उस की पूरी मिलकियत को बरकत दी
है।” यह सुन कर दाऊद ओबेद-अदोम के घर गया
और ख़ुशी मनाते हुए अल्लाह के सन्दूक़ को दाऊद
के शहर ले आया। 13 छः क़दमों के बाद दाऊद ने
रब का सन्दूक़ उठाने वालों को रोक कर एक साँड
और एक मोटा-ताज़ा बछड़ा क़ुर्बान किया। 14 जब
जुलूस आगे निकला तो दाऊद पूरे ज़ोर के साथ रब
के हुज़ूर नाचने लगा। वह कतान का बालापोश पहने
हुए था। 15 ख़ुशी के नारे लगा लगा कर और नरसिंगे
फूँक फूँक कर दाऊद और तमाम इस्राईली रब का
सन्दूक़ यरूशलम ले आए।
16 रब का सन्दूक़ दाऊद के शहर में दाख़िल हुआ
तो दाऊद की बीवी मीकल बिन्त साऊल खिड़की में
से जुलूस को देख रही थी। जब बादशाह रब के हुज़ूर

[b]इब्रानी में इस से मराद झुनझुने जैसा कोई साज़ है।

कूदता और नाचता हुआ नज़र आया तो मीकल ने
दिल में उसे हक़ीर जाना।
17 रब का सन्दूक़ उस तम्बू के दरमियान में रखा
गया जो दाऊद ने उस के लिए लगवाया था। फिर
दाऊद ने रब के हुज़ूर भस्म होने वाली और सलामती
की क़ुर्बानियाँ पेश कीं। 18 इस के बाद उस ने क़ौम
को रब्ब-उल-अफ़्वाज के नाम से बरकत दे कर 19 हर
इस्राईली मर्द और औरत को एक रोटी, खजूर की
एक टिक्की और किशमिश की एक टिक्की दे दी। फिर
तमाम लोग अपने अपने घरों को वापस चले गए।
20 दाऊद भी अपने घर लौटा ताकि अपने ख़ानदान
को बरकत दे कर सलाम करे। वह अभी महल के
अन्दर नहीं पहुँचा था कि मीकल निकल कर उस से
मिलने आई। उस ने तन्ज़न कहा, "वाह जी वाह।
आज इस्राईल का बादशाह कितनी शान के साथ
लोगों को नज़र आया है! अपने लोगों की लौंडियों के
सामने ही उस ने अपने कपड़े उतार दिए, बिलकुल
उसी तरह जिस तरह गंवार करते हैं।" 21 दाऊद ने
जवाब दिया, "मैं रब ही के हुज़ूर नाच रहा था, जिस
ने आप के बाप और उस के ख़ानदान को तर्क करके
मुझे चुन लिया और इस्राईल का बादशाह बना दिया
है। उसी की ताज़ीम में मैं आइन्दा भी नाचूँगा। 22 हाँ,
मैं इस से भी ज़्यादा ज़लील होने के लिए तय्यार
हूँ। जहाँ तक लौंडियों का ताल्लुक़ है, वह ज़रूर मेरी
इज़्ज़त करेंगी।"
23 जीते जी मीकल बेऔलाद रही।

रब दाऊद से अबदी बादशाही का वादा करता है

7 1 दाऊद बादशाह सुकून से अपने महल में रहने
लगा, क्यूँकि रब ने इर्दगिर्द के दुश्मनों को उस
पर हम्ला करने से रोक दिया था। 2 एक दिन दाऊद
ने नातन नबी से बात की, "देखें, मैं यहाँ देवदार के
महल में रहता हूँ जबकि अल्लाह का सन्दूक़ अब तक
तम्बू में पड़ा है। यह मुनासिब नहीं है!"
3 नातन ने बादशाह की हौसलाअफ़्ज़ाई की, "जो
कुछ भी आप करना चाहते हैं वह करें। रब आप के
साथ है।"
4 लेकिन उसी रात रब नातन से हमकलाम हुआ,
5 "मेरे ख़ादिम दाऊद के पास जा कर उसे बता दे
कि रब फ़रमाता है, 'क्या तू मेरी रिहाइश के लिए
मकान तामीर करेगा? हरगिज़ नहीं! 6 आज तक मैं
किसी मकान में नहीं रहा। जब से मैं इस्राईलियों को
मिस्र से निकाल लाया उस वक़्त से मैं ख़ैमे में रह कर
जगह-ब-जगह फिरता रहा हूँ। 7 जिस दौरान मैं तमाम
इस्राईलियों के साथ इधर उधर फिरता रहा क्या मैं
ने इस्राईल के उन राहनुमाओं से कभी इस नाते से
शिकायत की जिन्हें मैं ने अपनी क़ौम की गल्लाबानी
करने का हुक्म दिया था? क्या मैं ने उन में से किसी
से कहा कि तुम ने मेरे लिए देवदार का घर क्यूँ नहीं
बनाया?'
8 चुनाँचे मेरे ख़ादिम दाऊद को बता दे, 'रब्ब-उल-
अफ़्वाज फ़रमाता है कि मैं ही ने तुझे चरागाह में भेड़ों
की गल्लाबानी करने से फ़ारिग़ करके अपनी क़ौम
इस्राईल का बादशाह बना दिया है। 9 जहाँ भी तू ने
क़दम रखा वहाँ मैं तेरे साथ रहा हूँ। तेरे देखते देखते
मैं ने तेरे तमाम दुश्मनों को हलाक कर दिया है। अब
मैं तेरा नाम सरफ़राज़ कर दूँगा, वह दुनिया के सब
से अज़ीम आदमियों के नामों के बराबर ही होगा।
10 और मैं अपनी क़ौम इस्राईल के लिए एक वतन
मुहय्या करूँगा, पौदे की तरह उन्हें यूँ लगा दूँगा कि
वह जड़ पकड़ कर महफ़ूज़ रहेंगे और कभी बेचैन
नहीं होंगे। बेदीन क़ौमें उन्हें उस तरह नहीं दबाएँगी
जिस तरह माज़ी में किया करती थीं, 11 उस वक़्त
से जब मैं क़ौम पर क़ाज़ी मुक़र्रर करता था। मैं तेरे
दुश्मनों को तुझ से दूर रख कर तुझे अम्न-ओ-अमान
अता करूँगा। आज रब फ़रमाता है कि मैं ही तेरे लिए
घर बनाऊँगा।
12 जब तू बूढ़ा हो कर कूच कर जाएगा और अपने
बापदादा के साथ आराम करेगा तो मैं तेरी जगह तेरे
बेटों में से एक को तख़्त पर बिठा दूँगा। उस की

बादशाही को मैं मज़बूत बना दूँगा। 13 वही मेरे नाम
के लिए घर तामीर करेगा, और मैं उस की बादशाही
का तख़्त अबद तक क़ाइम रखूँगा। 14 मैं उस का
बाप हूँगा, और वह मेरा बेटा होगा। जब कभी उस
से ग़लती होगी तो मैं उसे यूँ छड़ी से सज़ा दूँगा जिस
तरह इन्सानी बाप अपने बेटे की तर्बियत करता है।
15 लेकिन मेरी नज़र-ए-करम कभी उस से नहीं हटेगी।
उस के साथ मैं वह सुलूक नहीं करूँगा जो मैं ने
साऊल के साथ किया जब उसे तेरे सामने से हटा
दिया। 16 तेरा घराना और तेरी बादशाही हमेशा मेरे
हुज़ूर क़ाइम रहेगी, तेरा तख़्त हमेशा मज़बूत रहेगा'।"

दाऊद की शुक्रगुज़ारी

17 नातन ने दाऊद के पास जा कर उसे सब कुछ
सुनाया जो रब ने उसे रोया में बताया था। 18 तब
दाऊद अह्द के सन्दूक़ के पास गया और रब के
हुज़ूर बैठ कर दुआ करने लगा,

"ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, मैं कौन हूँ और मेरा
ख़ानदान क्या हैसियत रखता है कि तू ने मुझे यहाँ
तक पहुँचाया है? 19 और अब ऐ रब क़ादिर-ए-
मुतलक़, तू मुझे और भी ज़्यादा अता करने को है,
क्यूँकि तू ने अपने ख़ादिम के घराने के मुस्तक़बिल
के बारे में भी वादा किया है। क्या तू आम तौर
पर इन्सान के साथ ऐसा सुलूक करता है? हरगिज़
नहीं! 20 लेकिन मैं मज़ीद क्या कहूँ? ऐ रब क़ादिर-
ए-मुतलक़, तू तो अपने ख़ादिम को जानता है। 21 तू
ने अपने फ़रमान की ख़ातिर और अपनी मर्ज़ी के
मुताबिक़ यह अज़ीम काम करके अपने ख़ादिम को
इत्तिला दी है।

22 ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, तू कितना अज़ीम है!
तुझ जैसा कोई नहीं है। हम ने अपने कानों से सुन
लिया है कि तेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है।
23 दुनिया में कौन सी क़ौम तेरी उम्मत इस्राईल की
मानिन्द है? तू ने इसी एक क़ौम का फ़िद्या दे कर
उसे ग़ुलामी से छुड़ाया और अपनी क़ौम बना लिया।
तू ने इस्राईल के वास्ते बड़े और हैबतनाक काम
करके अपने नाम की शुहरत फैला दी। हमें मिस्र से
रिहा करके तू ने क़ौमों और उन के देवताओं को
हमारे आगे से निकाल दिया। 24 ऐ रब, तू इस्राईल को
हमेशा के लिए अपनी क़ौम बना कर उन का ख़ुदा बन
गया है। 25 चुनाँचे ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, जो बात
तू ने अपने ख़ादिम और उस के घराने के बारे में की
है उसे अबद तक क़ाइम रख और अपना वादा पूरा
कर। 26 तब तेरा नाम अबद तक मश्हूर रहेगा और
लोग तस्लीम करेंगे कि रब्ब-उल-अफ़्वाज इस्राईल
का ख़ुदा है। फिर तेरे ख़ादिम दाऊद का घराना भी
तेरे हुज़ूर क़ाइम रहेगा।

27 ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, इस्राईल के ख़ुदा, तू ने
अपने ख़ादिम के कान को इस बात के लिए खोल
दिया है। तू ही ने फ़रमाया, 'मैं तेरे लिए घर तामीर
करूँगा।' सिर्फ़ इसी लिए तेरे ख़ादिम ने यूँ तुझ से
दुआ करने की जुरअत की है। 28 ऐ रब क़ादिर-ए-
मुतलक़, तू ही ख़ुदा है, और तेरी ही बातों पर एतिमाद
किया जा सकता है। तू ने अपने ख़ादिम से इन अच्छी
चीज़ों का वादा किया है। 29 अब अपने ख़ादिम के
घराने को बरकत देने पर राज़ी हो ताकि वह हमेशा
तक तेरे हुज़ूर क़ाइम रहे। क्यूँकि तू ही ने यह फ़रमाया
है, और चूँकि तू ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने बरकत दी
है इस लिए तेरे ख़ादिम का घराना अबद तक मुबारक
रहेगा।"

दाऊद की जंगें

8 1 फिर ऐसा वक़्त आया कि दाऊद ने
फ़िलिस्तियों को शिकस्त दे कर उन्हें अपने ताबे
कर लिया और हुकूमत की बागडोर उन के हाथों से
छीन ली।

2 उस ने मोआबियों पर भी फ़त्ह पाई। मोआबी
क़ैदियों की क़तार बना कर उस ने उन्हें ज़मीन पर
लिटा दिया। फिर रस्सी का टुकड़ा ले कर उस ने
क़तार का नाप लिया। जितने लोग रस्सी की लम्बाई
में आ गए वह एक गुरोह बन गए। यूँ दाऊद ने लोगों
को गुरोहों में तक़्सीम किया। फिर उस ने गुरोहों के

तीन हिस्से बना कर दो हिस्सों के सर क़लम किए
और एक हिस्से को ज़िन्दा छोड़ दिया। लेकिन जितने
क़ैदी छूट गए वह दाऊद के ताबे रह कर उसे ख़राज
देते रहे।

3 दाऊद ने शिमाली शाम के शहर ज़ोबाह के
बादशाह हददअज़र बिन रहोब को भी हरा दिया जब
हददअज़र दरया-ए-फ़ुरात पर दुबारा क़ाबू पाने के
लिए निकल आया था। 4 दाऊद ने 1,700 घुड़सवारों
और 20,000 पियादा सिपाहियों को गिरिफ़्तार कर
लिया। रथों के 100 घोड़ों को उस ने अपने लिए
महफ़ूज़ रखा, जबकि बाक़ियों की उस ने कोंचें काट
दीं ताकि वह आइन्दा जंग के लिए इस्तेमाल न हो
सकें।

5 जब दमिश्क़ के अरामी बाशिन्दे ज़ोबाह के
बादशाह हददअज़र की मदद करने आए तो दाऊद
ने उन के 22,000 अफ़राद हलाक कर दिए। 6 फिर
उस ने दमिश्क़ के इलाक़े में अपनी फ़ौजी चौकियाँ
क़ाइम कीं। अरामी उस के ताबे हो गए और उसे
ख़राज देते रहे। जहाँ भी दाऊद गया वहाँ रब ने उसे
कामयाबी बख़्शी। 7 सोने की जो ढालें हददअज़र के
अफ़सरों के पास थीं उन्हें दाऊद यरूशलम ले गया।
8 हददअज़र के दो शहरों बताह और बेरोती से उस
ने कस्रत का पीतल छीन लिया।

9 जब हमात के बादशाह तूई को इत्तिला मिली कि
दाऊद ने हददअज़र की पूरी फ़ौज पर फ़त्ह पाई है
10 तो उस ने अपने बेटे यूराम को दाऊद के पास भेजा
ताकि उसे सलाम कहे। यूराम ने दाऊद को हददअज़र
पर फ़त्ह के लिए मुबारकबाद दी, क्यूँकि हददअज़र
तूई का दुश्मन था, और उन के दरमियान जंग रही
थी। यूराम ने दाऊद को सोने, चाँदी और पीतल के
तुह्फ़े भी पेश किए। 11 दाऊद ने यह चीज़ें रब के लिए
मख़्सूस कर दीं। जहाँ भी वह दूसरी क़ौमों पर ग़ालिब
आया वहाँ की सोना-चाँदी उस ने रब के लिए मख़्सूस
कर दी। 12 यूँ अदोम, मोआब, अम्मोन, फिलिस्तिया,
अमालीक़ और ज़ोबाह के बादशाह हददअज़र बिन
रहोब की सोना-चाँदी रब को पेश की गई।

13 जब दाऊद ने नमक की वादी में अदोमियों पर
फ़त्ह पाई तो उस की शुहरत मज़ीद फैल गई। उस जंग
में दुश्मन के 18,000 अफ़राद हलाक हुए। 14 दाऊद
ने अदोम के पूरे मुल्क में अपनी फ़ौजी चौकियाँ
क़ाइम कीं, और तमाम अदोमी दाऊद के ताबे हो
गए। दाऊद जहाँ भी जाता रब उस की मदद करके
उसे फ़त्ह बख़्शता।

दाऊद के आला अफ़सर

15 जितनी देर दाऊद पूरे इस्राईल पर हुकूमत करता
रहा उतनी देर तक उस ने ध्यान दिया कि क़ौम के
हर एक शख़्स को इन्साफ़ मिल जाए। 16 योआब
बिन ज़रूयाह फ़ौज पर मुक़र्रर था। यहूसफ़त बिन
अख़ीलूद बादशाह का मुशीर-ए-ख़ास था। 17 सदोक़
बिन अख़ीतूब और अख़ीमलिक बिन अबियातर
इमाम थे। सिरायाह मीरमुन्शी था। 18 बिनायाह बिन
यहोयदा दाऊद के ख़ास दस्ते बनाम करेती-ओ-
फ़लेती का कप्तान था। दाऊद के बेटे इमाम थे।

दाऊद यूनतन के बेटे पर मेहरबानी करता है

9 1 एक दिन दाऊद पूछने लगा, "क्या साऊल के
ख़ानदान का कोई फ़र्द बच गया है? मैं यूनतन
की ख़ातिर उस पर अपनी मेहरबानी का इज़हार
करना चाहता हूँ।"

2 एक आदमी को बुलाया गया जो साऊल के घराने
का मुलाज़िम था। उस का नाम ज़ीबा था। दाऊद ने
सवाल किया, "क्या आप ज़ीबा हैं?" ज़ीबा ने जवाब
दिया, "जी, आप का ख़ादिम हाज़िर है।" 3 बादशाह
ने दरयाफ़्त किया, "क्या साऊल के ख़ानदान का
कोई फ़र्द ज़िन्दा रह गया है? मैं उस पर अल्लाह की
मेहरबानी का इज़हार करना चाहता हूँ।" ज़ीबा ने
कहा, "यूनतन का एक बेटा अब तक ज़िन्दा है। वह
दोनों टाँगों से मफ़्लूज है।" 4 दाऊद ने पूछा, "वह
कहाँ है?" ज़ीबा ने जवाब दिया, "वह लो-दिबार में
मकीर बिन अम्मीएल के हाँ रहता है।" 5 दाऊद ने
उसे फ़ौरन दरबार में बुला लिया।

6 यूनतन के जिस बेटे का ज़िक्र ज़ीबा ने किया वह
मिफ़ीबोसत था। जब उसे दाऊद के सामने लाया गया
तो उस ने मुँह के बल झुक कर उस की इज़्ज़त की।
दाऊद ने कहा, “मिफ़ीबोसत!” उस ने जवाब दिया,
“जी, आप का ख़ादिम हाज़िर है।” 7 दाऊद बोला,
“डरें मत। आज मैं आप के बाप यूनतन के साथ किया
हुआ वादा पूरा करके आप पर अपनी मेहरबानी का
इज़हार करना चाहता हूँ। अब सुनें! मैं आप को आप
के दादा साऊल की तमाम ज़मीनें वापस कर देता हूँ।
इस के इलावा मैं चाहता हूँ कि आप रोज़ाना मेरे साथ
खाना खाया करें।”
8 मिफ़ीबोसत ने दुबारा झुक कर बादशाह की
ताज़ीम की, “मैं कौन हूँ कि आप मुझ जैसे मुर्दा कुत्ते
पर ध्यान दे कर ऐसी मेहरबानी फ़रमाएँ!” 9 दाऊद
ने साऊल के पुराने मुलाज़िम ज़ीबा को बुला कर
उसे हिदायत दी, “मैं ने आप के मालिक के पोते को
साऊल और उस के ख़ानदान की तमाम मिलकियत
दे दी है। 10 अब आप की ज़िम्मादारी यह है कि आप
अपने बेटों और नौकरों के साथ उस के खेतों को
सँभालें ताकि उस का ख़ानदान ज़मीनों की पैदावार
से गुज़ारा कर सके। लेकिन मिफ़ीबोसत ख़ुद यहाँ रह
कर मेरे बेटों की तरह मेरे साथ खाना खाया करेगा।”
(ज़ीबा के 15 बेटे और 20 नौकर थे)।
11 ज़ीबा ने जवाब दिया, “मैं आप की ख़िदमत में
हाज़िर हूँ। जो भी हुक्म आप देंगे मैं करने के लिए
तय्यार हूँ।” 12–13 उस दिन से ज़ीबा के घराने के
तमाम अफ़राद मिफ़ीबोसत के मुलाज़िम हो गए।
मिफ़ीबोसत ख़ुद जो दोनों टाँगों से मफ़्लूज था
यरूशलम में रिहाइशपज़ीर हुआ और रोज़ाना दाऊद
बादशाह के साथ खाना खाता रहा। उस का एक
छोटा बेटा था जिस का नाम मीका था।

अम्मोनी दाऊद की बेइज़्ज़ती करते हैं

10 1 कुछ देर के बाद अम्मोनियों का बादशाह
फ़ौत हुआ, और उस का बेटा हनून
तख़्तनशीन हुआ। 2 दाऊद ने सोचा, “नाहस ने हमेशा
मुझ पर मेहरबानी की थी, इस लिए अब मैं भी उस
के बेटे हनून पर मेहरबानी करूँगा।” उस ने बाप
की वफ़ात का अफ़्सोस करने के लिए हनून के पास
वफ़द भेजा।
लेकिन जब दाऊद के सफ़ीर अम्मोनियों के दरबार
में पहुँच गए 3 तो उस मुल्क के बुज़ुर्ग हनून बादशाह
के कान में मन्फ़ी बातें भरने लगे, “क्या दाऊद ने
इन आदमियों को वाक़ई सिर्फ़ इस लिए भेजा है
कि वह अफ़्सोस करके आप के बाप का एहतिराम
करें? हरगिज़ नहीं! यह सिर्फ़ बहाना है। असल में
यह जासूस हैं जो हमारे दार-उल-हकूमत के बारे
में मालूमात हासिल करना चाहते हैं ताकि उस
पर क़ब्ज़ा कर सकें।” 4 चुनाँचे हनून ने दाऊद के
आदमियों को पकड़वा कर उन की दाढ़ियों का
आधा हिस्सा मुंडवा दिया और उन के लिबास को
कमर से ले कर पाँओ तक काट कर उतरवाया। इसी
हालत में बादशाह ने उन्हें फ़ारिग़ कर दिया।
5 जब दाऊद को इस की ख़बर मिली तो उस
ने अपने क़ासिदों को उन से मिलने के लिए भेजा
ताकि उन्हें बताएँ, “यरीहू में उस वक़्त तक ठहरे
रहें जब तक आप की दाढ़ियाँ दुबारा बहाल न हो
जाएँ।” क्यूँकि वह अपनी दाढ़ियों की वजह से बड़ी
शर्मिन्दगी महसूस कर रहे थे।

अम्मोनियों से जंग

6 अम्मोनियों को ख़ूब मालूम था कि इस हरकत
से हम दाऊद के दुश्मन बन गए हैं। इस लिए उन्हों
ने किराए पर कई जगहों से फ़ौजी तलब किए।
बैत-रहोब और ज़ोबाह के 20,000 अरामी पियादा
सिपाही, माका का बादशाह 1,000 फ़ौजियों समेत
और मुल्क-ए-तोब के 12,000 सिपाही उन की मदद
करने आए। 7 जब दाऊद को इस का इल्म हुआ
तो उस ने योआब को पूरी फ़ौज के साथ उन
का मुक़ाबला करने के लिए भेज दिया। 8 अम्मोनी
अपने दार-उल-हकूमत रब्बा से निकल कर शहर
के दरवाज़े के सामने ही सफ़आरा हुए जबकि उन

के अरामी इत्तिहादी ज़ोबाह और रहोब मुल्क-ए-तोब
और माका के मर्दों समेत कुछ फ़ासिले पर खुले मैदान
में खड़े हो गए।
9 जब योआब ने जान लिया कि सामने और पीछे
दोनों तरफ़ से हमले का ख़तरा है तो उस ने अपनी
फ़ौज को दो हिस्सों में तक़्सीम कर दिया। सब से
अच्छे फ़ौजियों के साथ वह ख़ुद शाम के सिपाहियों
से लड़ने के लिए तय्यार हुआ। 10 बाक़ी आदमियों
को उस ने अपने भाई अबीशै के हवाले कर दिया
ताकि वह अम्मोनियों से लड़ें। 11 एक दूसरे से अलग
होने से पहले योआब ने अबीशै से कहा, "अगर शाम
के फ़ौजी मुझ पर ग़ालिब आने लगें तो मेरे पास आ
कर मेरी मदद करना। लेकिन अगर आप अम्मोनियों
पर क़ाबू न पा सकें तो मैं आ कर आप की मदद
करूँगा। 12 हौसला रखें! हम दिलेरी से अपनी क़ौम
और अपने ख़ुदा के शहरों के लिए लड़ें। और रब वह
कुछ होने दे जो उस की नज़र में ठीक है।"
13 योआब ने अपनी फ़ौज के साथ शाम के फ़ौजियों
पर हम्ला किया तो वह उस के सामने से भागने लगे।
14 यह देख कर अम्मोनी अबीशै से फ़रार हो कर शहर
में दाख़िल हुए। फिर योआब अम्मोनियों से लड़ने से
बाज़ आया और यरूशलम वापस चला गया।

शाम के ख़िलाफ़ जंग

15 जब शाम के फ़ौजियों को शिकस्त की बेइज़्ज़ती
का एहसास हुआ तो वह दुबारा जमा हो गए।
16 हददअज़र ने दरया-ए-फ़ुरात के पार मसोपुतामिया
में आबाद अरामियों को बुलाया ताकि वह उस की
मदद करें। फिर सब हिलाम पहुँच गए। हददअज़र
की फ़ौज पर मुक़र्रर अफ़सर सोबक उन की राहनुमाई
कर रहा था। 17 जब दाऊद को ख़बर मिली तो उस
ने इस्राईल के तमाम लड़ने के क़ाबिल आदमियों
को जमा किया और दरया-ए-यर्दन को पार करके
हिलाम पहुँच गया। शाम के फ़ौजी सफ़आरा हो कर
इस्राईलियों का मुक़ाबला करने लगे। 18 लेकिन उन्हें
दुबारा शिकस्त मान कर फ़रार होना पड़ा। इस दफ़ा
उन के 700 रथबानों के इलावा 40,000 पियादा
सिपाही हलाक हुए। दाऊद ने फ़ौज के कमाँडर
सोबक को इतना ज़ख़्मी कर दिया कि वह मैदान-
ए-जंग में हलाक हो गया।
19 जो अरामी बादशाह पहले हददअज़र के ताबे थे
उन्हों ने अब हार मान कर इस्राईलियों से सुलह कर
ली और उन के ताबे हो गए। उस वक़्त से अरामियों
ने अम्मोनियों की मदद करने की फिर जुरअत न की।

दाऊद और बत-सबा

11 1 बहार का मौसम आ गया, वह वक़्त जब
बादशाह जंग के लिए निकलते हैं। दाऊद
बादशाह ने भी अपने फ़ौजियों को लड़ने के लिए भेज
दिया। योआब की राहनुमाई में उस के अफ़सर और
पूरी फ़ौज अम्मोनियों से लड़ने के लिए रवाना हुए।
वह दुश्मन को तबाह करके दार-उल-हकूमत रब्बा
का मुहासरा करने लगे। दाऊद ख़ुद यरूशलम में रहा।
2 एक दिन वह दोपहर के वक़्त सो गया। जब शाम
के वक़्त जाग उठा तो महल की छत पर टहलने
लगा। अचानक उस की नज़र एक औरत पर पड़ी जो
अपने सहन में नहा रही थी। औरत निहायत ख़ूबसूरत
थी। 3 दाऊद ने किसी को उस के बारे में मालूमात
हासिल करने के लिए भेज दिया। वापस आ कर
उस ने इत्तिला दी, "औरत का नाम बत-सबा है।
वह इलीआम की बेटी और ऊरियाह हित्ती की बीवी
है।" 4 तब दाऊद ने क़ासिदों को बत-सबा के पास
भेजा ताकि उसे महल में ले आएँ। औरत आई तो
दाऊद उस से हमबिसतर हुआ। फिर बत-सबा अपने
घर वापस चली गई। (थोड़ी देर पहले उस ने वह
रस्म अदा की थी जिस का तक़ाज़ा शरीअत माहवारी
के बाद करती है ताकि औरत दुबारा पाक-साफ़ हो
जाए)।
5 कुछ देर के बाद उसे मालूम हुआ कि मेरा पाँओ
भारी हो गया है। उस ने दाऊद को इत्तिला दी, "मेरा
पाँओ भारी हो गया है।" 6 यह सुनते ही दाऊद ने
योआब को पैग़ाम भेजा, "ऊरियाह हित्ती को मेरे पास

भेज दें!” योआब ने उसे भेज दिया। 7 जब ऊरियाह
दरबार में पहुँचा तो दाऊद ने उस से योआब और
फ़ौज का हाल मालूम किया और पूछा कि जंग किस
तरह चल रही है?
8 फिर उस ने ऊरियाह को बताया, “अब अपने घर
जाएँ और पाँओ धो कर आराम करें।” ऊरियाह अभी
महल से दूर नहीं गया था कि एक मुलाज़िम ने उस
के पीछे भाग कर उसे बादशाह की तरफ़ से तुह्फ़ा
दिया। 9 लेकिन ऊरियाह अपने घर न गया बल्कि रात
के लिए बादशाह के मुहाफ़िज़ों के साथ ठहरा रहा जो
महल के दरवाज़े के पास सोते थे।
10 दाऊद को इस बात का पता चला तो उस ने
अगले दिन उसे दुबारा बुलाया। उस ने पूछा, “क्या
बात है? आप तो बड़ी दूर से आए हैं। आप अपने
घर क्यूँ न गए?” 11 ऊरियाह ने जवाब दिया, “अह्द
का सन्दूक़ और इस्राईल और यहूदाह के फ़ौजी
झोंपड़ियों में रह रहे हैं। योआब और बादशाह के
अफ़्सर भी खुले मैदान में ठहरे हुए हैं तो क्या मुनासिब
है कि मैं अपने घर जा कर आराम से खाऊँ पियूँ
और अपनी बीवी से हमबिसतर हो जाऊँ? हरगिज़
नहीं! आप की हयात की क़सम, मैं कभी ऐसा नहीं
करूँगा।”
12 दाऊद ने उसे कहा, “एक और दिन यहाँ ठहरें।
कल मैं आप को वापस जाने दूँगा।” चुनाँचे ऊरियाह
एक और दिन यरूशलम में ठहरा रहा।
13 शाम के वक़्त दाऊद ने उसे खाने की दावत दी।
उस ने उसे इतनी मै पिलाई कि ऊरियाह नशे में धुत
हो गया, लेकिन इस मर्तबा भी वह अपने घर न गया
बल्कि दुबारा महल में मुहाफ़िज़ों के साथ सो गया।

दाऊद ऊरियाह को क़त्ल करवाता है

14 अगले दिन सुब्ह दाऊद ने योआब को ख़त लिख
कर ऊरियाह के हाथ भेज दिया। 15 उस में लिखा था,
“ऊरियाह को सब से अगली सफ़ में खड़ा करें, जहाँ
लड़ाई सब से सख़्त होती है। फिर अचानक पीछे की
तरफ़ हट कर उसे छोड़ दें ताकि दुश्मन उसे मार दे।”
16 यह पढ़ कर योआब ने ऊरियाह को एक ऐसी
जगह पर खड़ा किया जिस के बारे में उसे इल्म था
कि दुश्मन के सब से ज़बरदस्त फ़ौजी वहाँ लड़ते हैं।
17 जब अम्मोनियों ने शहर से निकल कर उन पर हम्ला
किया तो कुछ इस्राईली शहीद हुए। ऊरियाह हित्ती भी
उन में शामिल था।
18 योआब ने लड़ाई की पूरी रिपोर्ट भेज दी।
19 दाऊद को यह पैग़ाम पहुँचाने वाले को उस ने
बताया, “जब आप बादशाह को तफ़्सील से लड़ाई
का सारा सिलसिला सुनाएँगे 20 तो हो सकता है वह
ग़ुस्से हो कर कहे, ‘आप शहर के इतने क़रीब क्यूँ
गए? क्या आप को मालूम न था कि दुश्मन फ़सील से
तीर चलाएँगे? 21 क्या आप को याद नहीं कि क़दीम
ज़माने में जिदाऊन के बेटे अबीमलिक के साथ क्या
हुआ? तैबिज़ शहर में एक औरत ही ने उसे मार
डाला। और वजह यह थी कि वह क़िले के इतने
क़रीब आ गया था कि औरत दीवार पर से चक्की का
ऊपर का पाट उस पर फैंक सकी। शहर की फ़सील
के इस क़दर क़रीब लड़ने की क्या ज़रूरत थी?’
अगर बादशाह आप पर ऐसे इल्ज़ामात लगाएँ तो
जवाब में बस इतना ही कह देना, ‘ऊरियाह हित्ती भी
मारा गया है’।”
22 क़ासिद रवाना हुआ। जब यरूशलम पहुँचा तो
उस ने दाऊद को योआब का पूरा पैग़ाम सुना दिया,
23 “दुश्मन हम से ज़्यादा ताक़तवर थे। वह शहर से
निकल कर खुले मैदान में हम पर टूट पड़े। लेकिन
हम ने उन का सामना यूँ किया कि वह पीछे हट गए,
बल्कि हम ने उन का ताक़्क़ुब शहर के दरवाज़े तक
किया। 24 लेकिन अफ़्सोस कि फिर कुछ तीरअन्दाज़
हम पर फ़सील पर से तीर बरसाने लगे। आप के
कुछ ख़ादिम खेत आए और ऊरियाह हित्ती भी उन में
शामिल है।” 25 दाऊद ने जवाब दिया, “योआब को
बता देना कि यह मुआमला आप को हिम्मत हारने न
दे। जंग तो ऐसी ही होती है। कभी कोई यहाँ तलवार
का लुक़्मा हो जाता है, कभी वहाँ। पूरे अज़्म के साथ

शहर से जंग जारी रख कर उसे तबाह कर दें। यह कह कर योआब की हौसलाअफ़्ज़ाई करें।”

26 जब बत-सबा को इत्तिला मिली कि ऊरियाह नहीं रहा तो उस ने उस का मातम किया। 27 मातम का वक़्त पूरा हुआ तो दाऊद ने उसे अपने घर बुला कर उस से शादी कर ली। फिर उस के बेटा पैदा हुआ।

लेकिन दाऊद की यह हरकत रब को निहायत बुरी लगी।

नातन दाऊद को मुजरिम ठहराता है

12 1 रब ने नातन नबी को दाऊद के पास भेज दिया। बादशाह के पास पहुँच कर वह कहने लगा, “किसी शहर में दो आदमी रहते थे। एक अमीर था, दूसरा ग़रीब। 2 अमीर की बहुत भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल थे, 3 लेकिन ग़रीब के पास कुछ नहीं था, सिर्फ़ भेड़ की नन्ही सी बच्ची जो उस ने ख़रीद रखी थी। ग़रीब उस की परवरिश करता रहा, और वह घर में उस के बच्चों के साथ साथ बड़ी होती गई। वह उस की प्लेट से खाती, उस के प्याले से पीती और रात को उस के बाज़ूओं में सो जाती। ग़रज़ भेड़ ग़रीब के लिए बेटी की सी हैसियत रखती थी। 4 एक दिन अमीर के हाँ मेहमान आया। जब उस के लिए खाना पकाना था तो अमीर का दिल नहीं करता था कि अपने रेवड़ में से किसी जानवर को ज़बह करे, इस लिए उस ने ग़रीब आदमी से उस की नन्ही सी भेड़ ले कर उसे मेहमान के लिए तय्यार किया।”

5 यह सुन कर दाऊद को बड़ा ग़ुस्सा आया। वह पुकारा, “रब की हयात की क़सम, जिस आदमी ने यह किया वह सज़ा-ए-मौत के लाइक़ है। 6 लाज़िम है कि वह भेड़ की बच्ची के इवज़ ग़रीब को भेड़ के चार बच्चे दे। यही उस की मुनासिब सज़ा है, क्यूँकि उस ने ऐसी हरकत करके ग़रीब पर तरस न खाया।”

7 नातन ने दाऊद से कहा, “आप ही वह आदमी हैं! रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मैं ने तुझे मसह करके इस्राईल का बादशाह बना दिया, और मैं ही ने तुझे साऊल से महफ़ूज़ रखा। 8 साऊल का घराना उस की बीवियों समेत मैं ने तुझे दे दिया। हाँ, पूरा इस्राईल और यहूदाह भी तेरे तहत आ गए हैं। और अगर यह तेरे लिए कम होता तो मैं तुझे मज़ीद देने के लिए भी तय्यार होता। 9 अब मुझे बता कि तू ने मेरी मर्ज़ी को हक़ीर जान कर ऐसी हरकत क्यूँ की है जिस से मुझे नफ़रत है? तू ने ऊरियाह हित्ती को क़त्ल करवाके उस की बीवी को छीन लिया है। हाँ, तू क़ातिल है, क्यूँकि तू ने हुक्म दिया कि ऊरियाह को अम्मोनियों से लड़ते लड़ते मरवाना है। 10 चूँकि तू ने मुझे हक़ीर जान कर ऊरियाह हित्ती की बीवी को उस से छीन लिया इस लिए आइन्दा तलवार तेरे घराने से नहीं हटेगी।’

11 रब फ़रमाता है, ‘मैं होने दूँगा कि तेरे अपने ख़ानदान में से मुसीबत तुझ पर आएगी। तेरे देखते देखते मैं तेरी बीवियों को तुझ से छीन कर तेरे क़रीब के आदमी के हवाले कर दूँगा, और वह अलानिया उन से हमबिसतर होगा। 12 तू ने चुपके से गुनाह किया, लेकिन जो कुछ मैं जवाब में होने दूँगा वह अलानिया और पूरे इस्राईल के देखते देखते होगा’।”

13 तब दाऊद ने इक़्रार किया, “मैं ने रब का गुनाह किया है।” नातन ने जवाब दिया, “रब ने आप को मुआफ़ कर दिया है और आप नहीं मरेंगे। 14 लेकिन इस हरकत से आप ने रब के दुश्मनों को कुफ़्र बकने का मौक़ा फ़राहम किया है, इस लिए बत-सबा से होने वाला बेटा मर जाएगा।”

15 तब नातन अपने घर चला गया।

दाऊद का बेटा मर जाता है

फिर रब ने बत-सबा के बेटे को छू दिया, और वह सख़्त बीमार हो गया। 16 दाऊद ने अल्लाह से इल्तिमास की कि बच्चे को बचने दे। रोज़ा रख कर वह रात के वक़्त नंगे फ़र्श पर सोने लगा। 17 घर के बुज़ुर्ग उस के इर्दगिर्द खड़े कोशिश करते रहे कि वह फ़र्श से उठ जाए, लेकिन बेफ़ाइदा। वह उन के साथ खाने के लिए भी तय्यार नहीं था।

18 सातवें दिन बेटा फ़ौत हो गया। दाऊद के
मुलाज़िमों ने उसे ख़बर पहुँचाने की जुरअत न की,
क्यूँकि उन्हों ने सोचा, “जब बच्चा अभी ज़िन्दा था तो
हम ने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन उस ने
हमारी एक भी न सुनी। अब अगर बच्चे की मौत की
ख़बर दें तो ख़तरा है कि वह कोई नुक़्सानदेह क़दम
उठाए।”
19 लेकिन दाऊद ने देखा कि मुलाज़िम धीमी
आवाज़ में एक दूसरे से बात कर रहे हैं। उस ने पूछा,
“क्या बेटा मर गया है?” उन्हों ने जवाब दिया, “जी,
वह मर गया है।”
20 यह सुन कर दाऊद फ़र्श पर से उठ गया। वह
नहाया और जिस्म को ख़ुश्बूदार तेल से मल कर
साफ़ कपड़े पहन लिए। फिर उस ने रब के घर में
जा कर उस की परस्तिश की। इस के बाद वह महल
में वापस गया और खाना मंगवा कर खाया। 21 उस
के मुलाज़िम हैरान हुए और बोले, “जब बच्चा ज़िन्दा
था तो आप रोज़ा रख कर रोते रहे। अब बच्चा जाँ-ब-
हक़ हो गया है तो आप उठ कर दुबारा खाना खा रहे
हैं। क्या वजह है?” 22 दाऊद ने जवाब दिया, “जब
तक बच्चा ज़िन्दा था तो मैं रोज़ा रख कर रोता रहा।
ख़याल यह था कि शायद रब मुझ पर रहम करके उसे
ज़िन्दा छोड़ दे। 23 लेकिन जब वह कूच कर गया है
तो अब रोज़ा रखने का क्या फ़ाइदा? क्या मैं इस से
उसे वापस ला सकता हूँ? हरगिज़ नहीं! एक दिन मैं
ख़ुद ही उस के पास पहुँचूँगा। लेकिन उस का यहाँ
मेरे पास वापस आना नामुमकिन है।”
24 फिर दाऊद ने अपनी बीवी बत-सबा के पास जा
कर उसे तसल्ली दी और उस से हमबिसतर हुआ।
तब उस के एक और बेटा पैदा हुआ। दाऊद ने उस
का नाम सुलेमान यानी अम्नपसन्द रखा। यह बच्चा
रब को प्यारा था, 25 इस लिए उस ने नातन नबी की
मारिफ़त इत्तिला दी कि उस का नाम यदीदियाह यानी
‘रब को प्यारा’ रखा जाए।

रब्बा शहर पर फ़त्ह

26 अब तक योआब अम्मोनी दार-उल-हकूमत
रब्बा का मुहासरा किए हुए था। फिर वह शहर के
एक हिस्से बनाम ‘शाही शहर’ पर क़ब्ज़ा करने में
कामयाब हो गया। 27 उस ने दाऊद को इत्तिला दी,
“मैं ने रब्बा पर हम्ला करके उस जगह पर क़ब्ज़ा कर
लिया है जहाँ पानी दस्तयाब है। 28 चुनाँचे अब फ़ौज
के बाक़ी अफ़राद को ला कर ख़ुद शहर पर क़ब्ज़ा
कर लें। वर्ना लोग समझेंगे कि मैं ही शहर का फ़ातेह
हूँ।”
29 चुनाँचे दाऊद फ़ौज के बाक़ी अफ़राद को ले कर
रब्बा पहुँचा। जब शहर पर हम्ला किया तो वह उस के
क़ब्ज़े में आ गया। 30 दाऊद ने हनून बादशाह का ताज
उस के सर से उतार कर अपने सर पर रख लिया।
सोने के इस ताज का वज़न 34 किलोग्राम था, और
उस में एक बेशक़ीमत जौहर जड़ा हुआ था। दाऊद
ने शहर से बहुत सा लूटा हुआ माल ले कर 31 उस के
बाशिन्दों को ग़ुलाम बना लिया। उन्हें पत्थर काटने
की आरियाँ, लोहे की कुदालें और कुल्हाड़ियाँ दी
गईं ताकि वह मज़दूरी करें और भट्टों पर काम करें।
यही सुलूक बाक़ी अम्मोनी शहरों के बाशिन्दों के
साथ भी किया गया।
जंग के इख़तिताम पर दाऊद पूरी फ़ौज के साथ
यरूशलम लौट आया।

तमर की इस्मतदरी

13 1 दाऊद के बेटे अबीसलूम की ख़ूबसूरत
बहन थी जिस का नाम तमर था। उस का
सौतेला भाई अम्नोन तमर से शदीद मुहब्बत करने
लगा। 2 वह तमर को इतनी शिद्दत से चाहने लगा कि
रंजिश के बाइस बीमार हो गया, क्यूँकि तमर कुंवारी
थी, और अम्नोन को उस के क़रीब आने का कोई
रास्ता नज़र न आया।
3 अम्नोन का एक दोस्त था जिस का नाम यूनदब
था। वह दाऊद के भाई सिमआ का बेटा था और बड़ा

ज़हीन था। 4 उस ने अम्नोन से पूछा, “बादशाह के
बेटे, क्या मसला है? रोज़-ब-रोज़ आप ज़्यादा बुझे हुए
नज़र आ रहे हैं। क्या आप मुझे नहीं बताएँगे कि बात
क्या है?” अम्नोन बोला, “मैं अबीसलूम की बहन
तमर से शदीद मुहब्बत करता हूँ।” 5 यूनदब ने अपने
दोस्त को मश्वरा दिया, “बिस्तर पर लेट जाएँ और
ऐसा ज़ाहिर करें गोया बीमार हैं। जब आप के वालिद
आप का हाल पूछने आएँगे तो उन से दरख़्वास्त
करना, ‘मेरी बहन तमर आ कर मुझे मरीज़ों का खाना
खिलाए। वह मेरे सामने खाना तय्यार करे ताकि मैं
उसे देख कर उस के हाथ से खाना खाऊँ’।”

6 चुनाँचे अम्नोन ने बिस्तर पर लेट कर बीमार होने
का बहाना किया। जब बादशाह उस का हाल पूछने
आया तो अम्नोन ने गुज़ारिश की, “मेरी बहन तमर
मेरे पास आए और मेरे सामने मरीज़ों का खाना बना
कर मुझे अपने हाथ से खिलाए।”

7 दाऊद ने तमर को इत्तिला दी, “आप का भाई
अम्नोन बीमार है। उस के पास जा कर उस के लिए
मरीज़ों का खाना तय्यार करें।” 8 तमर ने अम्नोन के
पास आ कर उस की मौजूदगी में मैदा गूँधा और खाना
तय्यार करके पकाया। अम्नोन बिस्तर पर लेटा उसे
देखता रहा। 9 जब खाना पक गया तो तमर ने उसे
अम्नोन के पास ला कर पेश किया। लेकिन उस ने
खाने से इन्कार कर दिया। उस ने हुक्म दिया, “तमाम
नौकर कमरे से बाहर निकल जाएँ!” जब सब चले
गए 10 तो उस ने तमर से कहा, “खाने को मेरे सोने
के कमरे में ले आएँ ताकि मैं आप के हाथ से खा
सकूँ।” तमर खाने को ले कर सोने के कमरे में अपने
भाई के पास आई।

11 जब वह उसे खाना खिलाने लगी तो अम्नोन
ने उसे पकड़ कर कहा, “आ मेरी बहन, मेरे साथ
हमबिसतर हो!” 12 वह पुकारी, “नहीं, मेरे भाई! मेरी
इस्मतदरी न करें। ऐसा अमल इस्राईल में मना है।
ऐसी बेदीन हरकत मत करना! 13 और ऐसी बेहुरमती
के बाद मैं कहाँ जाऊँ? जहाँ तक आप का ताल्लुक़ है
इस्राईल में आप की बुरी तरह बदनामी हो जाएगी,
और सब समझेंगे कि आप निहायत शरीर आदमी
हैं। आप बादशाह से बात क्यूँ नहीं करते? यक़ीनन
वह आप को मुझ से शादी करने से नहीं रोकेंगे।”
14 लेकिन अम्नोन ने उस की न सुनी बल्कि उसे पकड़
कर उस की इस्मतदरी की।

15 लेकिन फिर अचानक उस की मुहब्बत सख़्त
नफ़रत में बदल गई। पहले तो वह तमर से शदीद
मुहब्बत करता था, लेकिन अब वह इस से बढ़ कर
उस से नफ़रत करने लगा। उस ने हुक्म दिया, “उठ,
दफ़ा हो जा!” 16 तमर ने इल्तिमास की, “हाय, ऐसा
मत करना। अगर आप मुझे निकालेंगे तो यह पहले
गुनाह से ज़्यादा संगीन जुर्म होगा।” लेकिन अम्नोन
उस की सुनने के लिए तय्यार न था। 17 उस ने अपने
नौकर को बुला कर हुक्म दिया, “इस औरत को यहाँ
से निकाल दो और इस के पीछे दरवाज़ा बन्द करके
कुंडी लगाओ!” 18 नौकर तमर को बाहर ले गया और
फिर उस के पीछे दरवाज़ा बन्द करके कुंडी लगा दी।

तमर एक लम्बे बाज़ूओं वाला फ़्राक पहने हुए
थी। बादशाह की तमाम कुंवारी बेटियाँ यही लिबास
पहना करती थीं। 19 बड़ी रंजिश के आलम में उस
ने अपना यह लिबास फाड़ कर अपने सर पर राख
डाल ली। फिर अपना हाथ सर पर रख कर वह
चीख़ती चिल्लाती वहाँ से चली गई। 20 जब घर पहुँच
गई तो अबीसलूम ने उस से पूछा, “मेरी बहन, क्या
अम्नोन ने आप से ज़ियादती की है? अब ख़ामोश हो
जाएँ। वह तो आप का भाई है। इस मुआमले को हद
से ज़्यादा अहमियत मत देना।” उस वक़्त से तमर
अकेली ही अपने भाई अबीसलूम के घर में रही।

21 जब दाऊद को इस वाकिए की ख़बर मिली तो
उसे सख़्त ग़ुस्सा आया। 22 अबीसलूम ने अम्नोन से
एक भी बात न की। न उस ने उस पर कोई इल्ज़ाम
लगाया, न कोई अच्छी बात की, क्यूँकि तमर की
इस्मतदरी की वजह से वह अपने भाई से सख़्त
नफ़रत करने लगा था।

अबीसलूम का इन्तिक़ाम

23 दो साल गुज़र गए। अबीसलूम की भेड़ें इफ़्राईम
के क़रीब के बाल-हसूर में लाई गईं ताकि उन के बाल
क़तरे जाएँ। इस मौक़े पर अबीसलूम ने बादशाह के
तमाम बेटों को दावत दी कि वह वहाँ ज़ियाफ़त में
शरीक हों। 24 वह दाऊद बादशाह के पास भी गया
और कहा, "इन दिनों में मैं अपनी भेड़ों के बाल
कतरा रहा हूँ। बादशाह और उन के अफ़सरों को भी
मेरे साथ ख़ुशी मनाने की दावत है।"

25 लेकिन दाऊद ने इन्कार किया, "नहीं, मेरे बेटे,
हम सब तो नहीं आ सकते। इतने लोग आप के
लिए बोझ का बाइस बन जाएंगे।" अबीसलूम बहुत
इसरार करता रहा, लेकिन दाऊद ने दावत को क़बूल
न किया बल्कि उसे बरकत दे कर रुख़्सत करना
चाहता था।

26 आख़िरकार अबीसलूम ने दरख़्वास्त की,
"अगर आप हमारे साथ जा न सकें तो फिर कम अज़
कम मेरे भाई अम्नोन को आने दें।" बादशाह ने पूछा,
"ख़ासकर अम्नोन को क्यूँ?" 27 लेकिन अबीसलूम
इतना ज़ोर देता रहा कि दाऊद ने अम्नोन को बाक़ी
बेटों समेत बाल-हसूर जाने की इजाज़त दे दी।

28 ज़ियाफ़त से पहले अबीसलूम ने अपने मुलाज़िमों
को हुक्म दिया, "सुनें! जब अम्नोन मै पी पी कर ख़ुश
हो जाएगा तो मैं आप को अम्नोन को मारने का हुक्म
दूँगा। फिर आप को उसे मार डालना है। डरें मत,
क्यूँकि मैं ही ने आप को यह हुक्म दिया है। मज़बूत
और दिलेर हों!"

29 मुलाज़िमों ने ऐसा ही किया। उन्हों ने अम्नोन को
मार डाला। यह देख कर बादशाह के दूसरे बेटे उठ
कर अपने ख़च्चरों पर सवार हुए और भाग गए। 30 वह
अभी रास्ते में ही थे कि अफ़्वाह दाऊद तक पहुँची,
"अबीसलूम ने आप के तमाम बेटों को क़त्ल कर
दिया है। एक भी नहीं बचा।"

31 बादशाह उठा और अपने कपड़े फाड़ कर फ़र्श
पर लेट गया। उस के दरबारी भी दुख में अपने कपड़े
फाड़ फाड़ कर उस के पास खड़े रहे। 32 फिर दाऊद
का भतीजा यूनदब बोल उठा, "मेरे आक़ा, आप न
सोचें कि उन्हों ने तमाम शहज़ादों को मार डाला
है। सिर्फ़ अम्नोन मर गया होगा, क्यूँकि जब से उस
ने तमर की इस्मतदरी की उस वक़्त से अबीसलूम
का यही इरादा था। 33 लिहाज़ा इस ख़बर को इतनी
अहमियत न दें कि तमाम बेटे हलाक हुए हैं। सिर्फ़
अम्नोन मर गया होगा।"

34 इतने में अबीसलूम फ़रार हो गया था। फिर
यरूशलम की फ़सील पर खड़े पहरेदार ने अचानक
देखा कि मग़रिब से लोगों का बड़ा गुरोह शहर की
तरफ़ बढ़ रहा है। वह पहाड़ी के दामन में चले आ रहे
थे। 35 तब यूनदब ने बादशाह से कहा, "लो, बादशाह
के बेटे आ रहे हैं, जिस तरह आप के ख़ादिम ने कहा
था।" 36 वह अभी अपनी बात ख़त्म कर ही रहा था
कि शहज़ादे अन्दर आए और ख़ूब रो पड़े। बादशाह
और उस के अफ़सर भी रोने लगे।

37 दाऊद बड़ी देर तक अम्नोन का मातम करता
रहा। लेकिन अबीसलूम ने फ़रार हो कर जसूर के
बादशाह तल्मी बिन अम्मीहूद के पास पनाह ली जो
उस का नाना था। 38 वहाँ वह तीन साल तक रहा।
39 फिर एक वक़्त आ गया कि दाऊद का अम्नोन के
लिए दुख दूर हो गया, और उस का अबीसलूम पर
ग़ुस्सा थम गया।

योआब अबीसलूम की सिफ़ारिश करता है

14 1 योआब बिन ज़रूयाह को मालूम हुआ कि
बादशाह अपने बेटे अबीसलूम को चाहता
है, 2 इस लिए उस ने तक़ूअ से एक दानिशमन्द औरत
को बुलाया। योआब ने उसे हिदायत दी, "मातम
का रूप भरें जैसे आप देर से किसी का मातम कर
रही हों। मातम के कपड़े पहन कर ख़ुशबूदार तेल
मत लगाना। 3 बादशाह के पास जा कर उस से बात
करें।" फिर योआब ने औरत को लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ वह
कुछ सिखाया जो उसे बादशाह को बताना था।

4 दाऊद के दरबार में आ कर औरत ने औंधे मुँह
झुक कर इल्तिमास की, “ऐ बादशाह, मेरी मदद
करें!” 5 दाऊद ने दरयाफ़्त किया, “क्या मसला है?”
औरत ने जवाब दिया, “मैं बेवा हूँ, मेरा शौहर फ़ौत हो
गया है। 6 और मेरे दो बेटे थे। एक दिन वह बाहर खेत
में एक दूसरे से उलझ पड़े। और चूँकि कोई मौजूद
नहीं था जो दोनों को अलग करता इस लिए एक ने
दूसरे को मार डाला। 7 उस वक़्त से पूरा कुम्बा मेरे
ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है। वह तक़ाज़ा करते हैं कि
मैं अपने बेटे को उन के हवाले करूँ। वह कहते हैं,
‘उस ने अपने भाई को मार दिया है, इस लिए हम
बदले में उसे सज़ा-ए-मौत देंगे। इस तरह वारिस भी
नहीं रहेगा।’ यूँ वह मेरी उम्मीद की आख़िरी किरन
को ख़त्म करना चाहते हैं। क्यूँकि अगर मेरा यह
बेटा भी मर जाए तो मेरे शौहर का नाम क़ाइम नहीं
रहेगा, और उस का ख़ानदान रू-ए-ज़मीन पर से मिट
जाएगा।” 8 बादशाह ने औरत से कहा, “अपने घर
चली जाएँ और फ़िक्र न करें। मैं मुआमला हल कर
दूँगा।”

9 लेकिन औरत ने गुज़ारिश की, “ऐ बादशाह, डर
है कि लोग फिर भी मुझे मुजरिम ठहराएँगे अगर मेरे
बेटे को सज़ा-ए-मौत न दी जाए। आप पर तो वह
इल्ज़ाम नहीं लगाएँगे।” 10 दाऊद ने इसरार किया,
“अगर कोई आप को तंग करे तो उसे मेरे पास ले
आएँ। फिर वह आइन्दा आप को नहीं सताएगा!”
11 औरत को तसल्ली न हुई। उस ने गुज़ारिश की, “ऐ
बादशाह, बराह-ए-करम रब अपने ख़ुदा की क़सम
खाएँ कि आप किसी को भी मौत का बदला नहीं लेने
देंगे। वर्ना नुक़्सान में इज़ाफ़ा होगा और मेरा दूसरा
बेटा भी हलाक हो जाएगा।” दाऊद ने जवाब दिया,
“रब की हयात की क़सम, आप के बेटे का एक बाल
भी बीका नहीं होगा।”

12 फिर औरत असल बात पर आ गई, “मेरे आक़ा,
बराह-ए-करम अपनी ख़ादिमा को एक और बात
करने की इजाज़त दें।” बादशाह बोला, “करें बात।”
13 तब औरत ने कहा, “आप ख़ुद क्यूँ अल्लाह की
क़ौम के ख़िलाफ़ ऐसा इरादा रखते हैं जिसे आप
ने अभी अभी ग़लत क़रार दिया है? आप ने ख़ुद
फ़रमाया है कि यह ठीक नहीं, और यूँ आप ने अपने
आप को ही मुजरिम ठहराया है। क्यूँकि आप ने
अपने बेटे को रद्द करके उसे वापस आने नहीं दिया।
14 बेशक हम सब को किसी वक़्त मरना है। हम
सब ज़मीन पर उंडेले गए पानी की मानिन्द हैं जिसे
ज़मीन जज़्ब कर लेती है और जो दुबारा जमा नहीं
किया जा सकता। लेकिन अल्लाह हमारी ज़िन्दगी को
बिलावजह मिटा नहीं देता बल्कि ऐसे मन्सूबे तय्यार
रखता है जिन के ज़रीए मर्दूद शख़्स भी उस के पास
वापस आ सके और उस से दूर न रहे। 15 ऐ बादशाह
मेरे आक़ा, मैं इस वक़्त इस लिए आप के हुज़ूर आई
हूँ कि मेरे लोग मुझे डराने की कोशिश कर रहे हैं।
मैं ने सोचा, मैं बादशाह से बात करने की जुरअत
करूँगी, शायद वह मेरी सुनें 16 और मुझे उस आदमी
से बचाएँ जो मुझे और मेरे बेटे को उस मौरूसी ज़मीन
से महरूम रखना चाहता है जो अल्लाह ने हमें दे दी है।
17 ख़याल यह था कि अगर बादशाह मुआमला हल
कर दें तो फिर मुझे दुबारा सुकून मिलेगा, क्यूँकि आप
अच्छी और बुरी बातों का इम्तियाज़ करने में अल्लाह
के फ़रिश्ते जैसे हैं। रब आप का ख़ुदा आप के साथ
हो।”

18 यह सब कुछ सुन कर दाऊद बोल उठा,
“अब मुझे एक बात बताएँ। इस का सहीह जवाब
दें।” औरत ने जवाब दिया, “जी मेरे आक़ा, बात
फ़रमाइए।” दाऊद ने पूछा, “क्या योआब ने आप
से यह काम करवाया?” 19 औरत पुकारी, “बादशाह
की हयात की क़सम, जो कुछ भी मेरे आक़ा फ़रमाते
हैं वह निशाने पर लग जाता है, ख़्वाह बन्दा बाईं
या दाईं तरफ़ हटने की कोशिश क्यूँ न करे। जी हाँ,
आप के ख़ादिम योआब ने मुझे आप के हुज़ूर भेज
दिया। उस ने मुझे लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ सब कुछ बताया
जो मुझे आप को अर्ज़ करना था, 20 क्यूँकि वह आप
को यह बात बराह-ए-रास्त नहीं पेश करना चाहता
था। लेकिन मेरे आक़ा को अल्लाह के फ़रिश्ते की सी

हिक्मत हासिल है। जो कुछ भी मुल्क में वुक़ू में आता है उस का आप को पता चल जाता है।”

अबीसलूम की वापसी

21 दाऊद ने योआब को बुला कर उस से कहा, “ठीक है, मैं आप की दरख़्वास्त पूरी करूँगा। जाएँ, मेरे बेटे अबीसलूम को वापस ले आएँ।” 22 योआब औंधे मुँह झुक गया और बोला, “रब बादशाह को बरकत दे! मेरे आक़ा, आज मुझे मालूम हुआ है कि मैं आप को मन्ज़ूर हूँ, क्यूँकि आप ने अपने ख़ादिम की दरख़्वास्त को पूरा किया है।” 23 योआब रवाना हो कर जसूर चला गया और वहाँ से अबीसलूम को वापस लाया। 24 लेकिन जब वह यरूशलम पहुँचे तो बादशाह ने हुक्म दिया, “उसे अपने घर में रहने की इजाज़त है, लेकिन वह कभी मुझे नज़र न आए।” चुनाँचे अबीसलूम अपने घर में दुबारा रहने लगा, लेकिन बादशाह से कभी मुलाक़ात न हो सकी।

25 पूरे इस्राईल में अबीसलूम जैसा ख़ूबसूरत आदमी नहीं था। सब उस की ख़ास तारीफ़ करते थे, क्यूँकि सर से ले कर पाँओ तक उस में कोई नुक़्स नज़र नहीं आता था। 26 साल में वह एक ही मर्तबा अपने बाल कटवाता था, क्यूँकि इतने में उस के बाल हद से ज़्यादा वज़नी हो जाते थे। जब उन्हें तोला जाता तो उन का वज़न तक़रीबन सवा दो किलोग्राम होता था। 27 अबीसलूम के तीन बेटे और एक बेटी थी। बेटी का नाम तमर था और वह निहायत ख़ूबसूरत थी।

28 दो साल गुज़र गए, फिर भी अबीसलूम को बादशाह से मिलने की इजाज़त न मिली। 29 फिर उस ने योआब को इत्तिला भेजी कि वह उस की सिफ़ारिश करे। लेकिन योआब ने आने से इन्कार किया। अबीसलूम ने उसे दुबारा बुलाने की कोशिश की, लेकिन इस बार भी योआब उस के पास न आया। 30 तब अबीसलूम ने अपने नौकरों को हुक्म दिया, “देखो, योआब का खेत मेरे खेत से मुल्हिक़ है, और उस में जौ की फ़सल पक रही है। जाओ, उसे आग लगा दो!” नौकर गए और ऐसा ही किया।

31 जब खेत में आग लग गई तो योआब भाग कर अबीसलूम के पास आया और शिकायत की, “आप के नौकरों ने मेरे खेत को आग क्यूँ लगाई है?” 32 अबीसलूम ने जवाब दिया, “देखें, आप नहीं आए जब मैं ने आप को बुलाया। क्यूँकि मैं चाहता हूँ कि आप बादशाह के पास जा कर उन से पूछें कि मुझे जसूर से क्यूँ लाया गया। बेहतर होता कि मैं वहीं रहता। अब बादशाह मुझ से मिलें या अगर वह अब तक मुझे क़ुसूरवार ठहराते हैं तो मुझे सज़ा-ए-मौत दें।”

33 योआब ने बादशाह के पास जा कर उसे यह पैग़ाम पहुँचाया। फिर दाऊद ने अपने बेटे को बुलाया। अबीसलूम अन्दर आया और बादशाह के सामने औंधे मुँह झुक गया। फिर बादशाह ने अबीसलूम को बोसा दिया।

अबीसलूम की साज़िश

15 1 कुछ देर के बाद अबीसलूम ने रथ और घोड़े ख़रीदे और साथ साथ 50 मुहाफ़िज़ भी रखे जो उस के आगे आगे दौड़ें। 2 रोज़ाना वह सुब्ह-सवेरे उठ कर शहर के दरवाज़े पर जाता। जब कभी कोई शख़्स इस मक़सद से शहर में दाख़िल होता कि बादशाह उस के किसी मुक़द्दमे का फ़ैसला करे तो अबीसलूम उस से मुख़ातिब हो कर पूछता, “आप किस शहर से हैं?” अगर वह जवाब देता, “मैं इस्राईल के फ़ुलाँ क़बीले से हूँ,” 3 तो अबीसलूम कहता, “बेशक आप इस मुक़द्दमे को जीत सकते हैं, लेकिन अफ़्सोस! बादशाह का कोई भी बन्दा इस पर सहीह ध्यान नहीं देगा।” 4 फिर वह बात जारी रखता, “काश मैं ही मुल्क पर आला क़ाज़ी मुक़र्रर किया गया होता! फिर सब लोग अपने मुक़द्दमे मुझे पेश कर सकते और मैं उन का सहीह इन्साफ़ कर देता।” 5 और अगर कोई क़रीब आ कर अबीसलूम के सामने झुकने लगता तो वह उसे रोक कर उस को

गले लगाता और बोसा देता। 6 यह उस का उन तमाम
इस्राईलियों के साथ सुलूक था जो अपने मुक़द्दमे
बादशाह को पेश करने के लिए आते थे। यूँ उस
ने इस्राईलियों के दिलों को अपनी तरफ़ माइल कर
लिया।

7 यह सिलसिला चार साल जारी रहा। एक दिन
अबीसलूम ने दाऊद से बात की, "मुझे हब्रून जाने की
इजाज़त दीजिए, क्यूँकि मैं ने रब से ऐसी मन्नत मानी
है जिस के लिए ज़रूरी है कि हब्रून जाऊँ। 8 क्यूँकि
जब मैं जसूर में था तो मैं ने क़सम खा कर वादा किया
था, 'ऐ रब, अगर तू मुझे यरूशलम वापस लाए तो मैं
हब्रून में तेरी परस्तिश करूँगा'।" 9 बादशाह ने जवाब
दिया, "ठीक है। सलामती से जाएँ।"

10 लेकिन हब्रून पहुँच कर अबीसलूम ने ख़ुफ़िया
तौर पर अपने क़ासिदों को इस्राईल के तमाम
क़बाइली इलाक़ों में भेज दिया। जहाँ भी वह गए
उन्हों ने एलान किया, "जूँ ही नरसिंगे की आवाज़
सुनाई दे आप सब को कहना है, 'अबीसलूम हब्रून
में बादशाह बन गया है'!" 11 अबीसलूम के साथ 200
मेहमान यरूशलम से हब्रून आए थे। वह बेलौस थे,
और उन्हें इस के बारे में इल्म ही न था।

12 जब हब्रून में क़ुर्बानियाँ चढ़ाई जा रही थीं तो
अबीसलूम ने दाऊद के एक मुशीर को बुलाया जो
जिलोह का रहने वाला था। उस का नाम अख़ीतुफ़ल
जिलोनी था। वह आया और अबीसलूम के साथ मिल
गया। यूँ अबीसलूम के पैरोकारों में इज़ाफ़ा होता गया
और उस की साज़िशें ज़ोर पकड़ने लगीं।

दाऊद यरूशलम से हिज्रत करता है

13 एक क़ासिद ने दाऊद के पास पहुँच कर उसे
इत्तिला दी, "अबीसलूम आप के ख़िलाफ़ उठ खड़ा
हुआ है, और तमाम इस्राईल उस के पीछे लग गया
है।" 14 दाऊद ने अपने मुलाज़िमों से कहा, "आओ,
हम फ़ौरन हिज्रत करें, वर्ना अबीसलूम के क़ब्ज़े में
आ जाएंगे। जल्दी करें ताकि हम फ़ौरन रवाना हो
सकें, क्यूँकि वह कोशिश करेगा कि जितनी जल्दी हो
सके यहाँ पहुँचे। अगर हम उस वक़्त शहर से निकले
न हों तो वह हम पर आफ़त ला कर शहर के बाशिन्दों
को मार डालेगा।" 15 बादशाह के मुलाज़िमों ने जवाब
दिया, "जो भी फ़ैसला हमारे आक़ा और बादशाह करें
हम हाज़िर हैं।"

16 बादशाह अपने पूरे ख़ानदान के साथ रवाना
हुआ। सिर्फ़ दस दाश्ताएँ महल को सँभालने के
लिए पीछे रह गईं। 17 जब दाऊद अपने तमाम लोगों
के साथ शहर के आख़िरी घर तक पहुँचा तो वह
रुक गया। 18 उस ने अपने तमाम पैरोकारों को आगे
निकलने दिया, पहले शाही दस्ते करेती-ओ-फ़लेती
को, फिर उन 600 जाती आदमियों को जो उस के
साथ जात से यहाँ आए थे और आख़िर में बाक़ी
तमाम लोगों को। 19 जब फ़िलिस्ती शहर जात का
आदमी इत्ती दाऊद के सामने से गुज़रने लगा तो
बादशाह उस से मुख़ातिब हुआ, "आप हमारे साथ
क्यूँ जाएँ? नहीं, वापस चले जाएँ और नए बादशाह
के साथ रहें। आप तो ग़ैरमुल्की हैं और इस लिए
इस्राईल में रहते हैं कि आप को जिलावतन कर दिया
गया है। 20 आप को यहाँ आए थोड़ी देर हुई है, तो
क्या मुनासिब है कि आप को दुबारा मेरी वजह से
कभी इधर कभी इधर घूमना पड़े? क्या पता है कि
मुझे कहाँ कहाँ जाना पड़े। इस लिए वापस चले जाएँ,
और अपने हमवतनों को भी अपने साथ ले जाएँ। रब
आप पर अपनी मेहरबानी और वफ़ादारी का इज़हार
करे।"

21 लेकिन इत्ती ने एतिराज़ किया, "मेरे आक़ा, रब
और बादशाह की हयात की क़सम, मैं आप को कभी
नहीं छोड़ सकता, ख़्वाह मुझे अपनी जान भी क़ुर्बान
करनी पड़े।" 22 तब दाऊद मान गया। "चलो, फिर
आगे निकलें!" चुनाँचे इत्ती अपने लोगों और उन के
ख़ानदानों के साथ आगे निकला। 23 आख़िर में दाऊद
ने वादी-ए-क़िद्रोन को पार करके रेगिस्तान की तरफ़
रुख़ किया। गिर्द-ओ-नवाह के तमाम लोग बादशाह
को उस के पैरोकारों समेत रवाना होते हुए देख कर
फूट फूट कर रोने लगे।

24 सदोक़ इमाम और तमाम लावी भी दाऊद के
साथ शहर से निकल आए थे। लावी अह्द का
सन्दूक़ उठाए चल रहे थे। अब उन्हों ने उसे शहर
से बाहर ज़मीन पर रख दिया, और अबियातर वहाँ
क़ुर्बानियाँ चढ़ाने लगा। लोगों के शहर से निकलने
के पूरे अर्से के दौरान वह क़ुर्बानियाँ चढ़ाता रहा।
25 फिर दाऊद सदोक़ से मुख़ातिब हुआ, "अल्लाह
का सन्दूक़ शहर में वापस ले जाएँ। अगर रब की
नज़र-ए-करम मुझ पर हुई तो वह किसी दिन मुझे
शहर में वापस ला कर अह्द के सन्दूक़ और उस
की सुकूनतगाह को दुबारा देखने की इजाज़त देगा।
26 लेकिन अगर वह फ़रमाए कि तू मुझे पसन्द नहीं
है, तो मैं यह भी बर्दाश्त करने के लिए तय्यार हूँ।
वह मेरे साथ वह कुछ करे जो उसे मुनासिब लगे।
27 जहाँ तक आप का ताल्लुक़ है, अपने बेटे
अख़ीमाज़ को साथ ले कर सहीह-सलामत शहर
में वापस चले जाएँ। अबियातर और उस का बेटा
यूनतन भी साथ जाएँ। 28 मैं ख़ुद रेगिस्तान में दरया-ए-
यर्दन की उस जगह रुक जाऊँगा जहाँ हम आसानी से
दरया को पार कर सकेंगे। वहाँ आप मुझे यरूशलम
के हालात के बारे में पैग़ाम भेज सकते हैं। मैं आप
के इन्तिज़ार में रहूँगा।"
29 चुनाँचे सदोक़ और अबियातर अह्द का सन्दूक़
शहर में वापस ले जा कर वहीं रहे। 30 दाऊद रोते रोते
ज़ैतून के पहाड़ पर चढ़ने लगा। उस का सर ढाँपा
हुआ था, और वह नंगे पाँओ चल रहा था। बाक़ी
सब के सर भी ढाँपे हुए थे, सब रोते रोते चढ़ने लगे।
31 रास्ते में दाऊद को इत्तिला दी गई, "अख़ीतुफ़ल
भी अबीसलूम के साथ मिल गया है।" यह सुन कर
दाऊद ने दुआ की, "ऐ रब, बख़्श दे कि अख़ीतुफ़ल
के मश्वरे नाकाम हो जाएँ।"
32 चलते चलते दाऊद पहाड़ की चोटी पर पहुँच
गया जहाँ अल्लाह की परस्तिश की जाती थी। वहाँ
हूसी अर्की उस से मिलने आया। उस के कपड़े फटे
हुए थे, और सर पर ख़ाक थी। 33 दाऊद ने उस से
कहा, "अगर आप मेरे साथ जाएँ तो आप सिर्फ़ बोझ
का बाइस बनेंगे। 34 बेहतर है कि आप लौट कर शहर
में जाएँ और अबीसलूम से कहें, 'ऐ बादशाह, मैं आप
की ख़िदमत में हाज़िर हूँ। पहले मैं आप के बाप की
ख़िदमत करता था, और अब आप ही की ख़िदमत
करूँगा।' अगर आप ऐसा करें तो आप अख़ीतुफ़ल
के मश्वरे नाकाम बनाने में मेरी बड़ी मदद करेंगे।
35–36 आप अकेले नहीं होंगे। दोनों इमाम सदोक़ और
अबियातर भी यरूशलम में पीछे रह गए हैं। दरबार
में जो भी मन्सूबे बांधे जाएंगे वह उन्हें बताएँ। सदोक़
का बेटा अख़ीमाज़ और अबियातर का बेटा यूनतन
मुझे हर ख़बर पहुँचाएँगे, क्यूँकि वह भी शहर में ठहरे
हुए हैं।"
37 तब दाऊद का दोस्त हूसी वापस चला गया। वह
उस वक़्त पहुँच गया जब अबीसलूम यरूशलम में
दाख़िल हो रहा था।

ज़ीबा मिफ़ीबोसत के बारे में झूट बोलता है

16 1 दाऊद अभी पहाड़ की चोटी से कुछ
आगे निकल गया था कि मिफ़ीबोसत का
मुलाज़िम ज़ीबा उस से मिलने आया। उस के पास
दो गधे थे जिन पर ज़ीनें कसी हुई थीं। उन पर
200 रोटियाँ, किशमिश की 100 टिक्कियाँ, 100 ताज़ा
फल और मै की एक मश्क लदी हुई थी। 2 बादशाह
ने पूछा, "आप इन चीज़ों के साथ क्या करना
चाहते हैं?" ज़ीबा ने जवाब दिया, "गधे बादशाह
के ख़ानदान के लिए हैं, वह इन पर बैठ कर सफ़र
करें। रोटी और फल जवानों के लिए हैं, और मै उन
के लिए जो रेगिस्तान में चलते चलते थक जाएँ।"
3 बादशाह ने सवाल किया, "आप के पुराने मालिक
का पोता मिफ़ीबोसत कहाँ है?" ज़ीबा ने कहा, "वह
यरूशलम में ठहरा हुआ है। वह सोचता है कि आज
इस्राईली मुझे बादशाह बना देंगे, क्यूँकि मैं साऊल
का पोता हूँ।" 4 यह सुन कर दाऊद बोला, "आज
ही मिफ़ीबोसत की तमाम मिलकियत आप के नाम
मुन्तक़िल की जाती है!" ज़ीबा ने कहा, "मैं आप
के सामने अपने घुटने टेकता हूँ। रब करे कि मैं

अपने आक़ा और बादशाह का मन्ज़ूर-ए-नज़र रहूँ।”
5 जब दाऊद बादशाह बहूरीम के क़रीब पहुँचा तो
एक आदमी वहाँ से निकल कर उस पर लानतें भेजने
लगा। आदमी का नाम सिमई बिन जीरा था, और वह
साऊल का रिश्तेदार था।

सिमई दाऊद को लान-तान करता है

6 वह दाऊद और उस के अफ़सरों पर पत्थर भी
फैंकने लगा, अगरचे दाऊद के बाएँ और दाएँ हाथ
उस के मुहाफ़िज़ और बेहतरीन फ़ौजी चल रहे थे।
7 लानत करते करते सिमई चीख़ रहा था, “चल,
दफ़ा हो जा! क़ातिल! बदमआश! 8 यह तेरा ही क़ुसूर
था कि साऊल और उस का ख़ानदान तबाह हुए।
अब रब तुझे जो साऊल की जगह तख़्तनशीन हो
गया है इस की मुनासिब सज़ा दे रहा है। उस ने तेरे
बेटे अबीसलूम को तेरी जगह तख़्तनशीन करके तुझे
तबाह कर दिया है। क़ातिल को सहीह मुआवज़ा
मिल गया है!”
9 अबीशै बिन ज़रूयाह बादशाह से कहने लगा,
“यह कैसा मुर्दा कुत्ता है जो मेरे आक़ा बादशाह पर
लानत करे? मुझे इजाज़त दें, तो मैं जा कर उस का
सर क़लम कर दूँ।” 10 लेकिन बादशाह ने उसे रोक
दिया, “मेरा आप और आप के भाई योआब से क्या
वास्ता? नहीं, उसे लानत करने दें। हो सकता है रब
ने उसे यह करने का हुक्म दिया है। तो फिर हम कौन
हैं कि उसे रोकें।” 11 फिर दाऊद तमाम अफ़सरों से
भी मुख़ातिब हुआ, “जबकि मेरा अपना बेटा मुझे
क़त्ल करने की कोशिश कर रहा है तो साऊल का
यह रिश्तेदार ऐसा क्यूँ न करे? इसे छोड़ दो, क्यूँकि
रब ने इसे यह करने का हुक्म दिया है। 12 शायद
रब मेरी मुसीबत का लिहाज़ करके सिमई की लानतें
बरकत में बदल दे।”
13 दाऊद और उस के लोगों ने सफ़र जारी रखा।
सिमई क़रीब की पहाड़ी ढलान पर उस के बराबर
चलते चलते उस पर लानतें भेजता और पत्थर और
मिट्टी के ढेले फैंकता रहा। 14 सब थकेमान्दे दरया-ए-
यर्दन को पहुँच गए। वहाँ दाऊद ताज़ादम हो गया।

अबीसलूम यरूशलम में

15 इतने में अबीसलूम अपने पैरोकारों के साथ
यरूशलम में दाख़िल हुआ था। अख़ीतुफ़ल भी उन
के साथ मिल गया था। 16 थोड़ी देर के बाद दाऊद
का दोस्त हूसी अर्की अबीसलूम के दरबार में हाज़िर
हो कर पुकारा, “बादशाह ज़िन्दाबाद! बादशाह
ज़िन्दाबाद!” 17 यह सुन कर अबीसलूम ने उस से
तन्ज़न कहा, “यह कैसी वफ़ादारी है जो आप अपने
दोस्त दाऊद को दिखा रहे हैं? आप अपने दोस्त के
साथ रवाना क्यूँ न हुए?” 18 हूसी ने जवाब दिया,
“नहीं, जिस आदमी को रब और तमाम इस्राईलियों
ने मुक़र्रर किया है, वही मेरा मालिक है, और उसी की
ख़िदमत में मैं हाज़िर रहूँगा। 19 दूसरे, अगर किसी की
ख़िदमत करनी है तो क्या दाऊद के बेटे की ख़िदमत
करना मुनासिब नहीं है? जिस तरह मैं आप के बाप
की ख़िदमत करता रहा हूँ उसी तरह अब आप की
ख़िदमत करूँगा।”
20 फिर अबीसलूम अख़ीतुफ़ल से मुख़ातिब हुआ,
“आगे क्या करना चाहिए? मुझे अपना मश्वरा पेश
करें।” 21 अख़ीतुफ़ल ने जवाब दिया, “आप के बाप
ने अपनी कुछ दाश्ताओं को महल सँभालने के लिए
यहाँ छोड़ दिया है। उन के साथ हमबिसतर हो जाएँ।
फिर तमाम इस्राईल को मालूम हो जाएगा कि आप
ने अपने बाप की ऐसी बेइज़्ज़ती की है कि सुलह का
रास्ता बन्द हो गया है। यह देख कर सब जो आप के
साथ हैं मज़बूत हो जाएंगे।” 22 अबीसलूम मान गया,
और महल की छत पर उस के लिए ख़ैमा लगाया
गया। उस में वह पूरे इस्राईल के देखते देखते अपने
बाप की दाश्ताओं से हमबिसतर हुआ।
23 उस वक़्त अख़ीतुफ़ल का हर मश्वरा अल्लाह के
फ़रमान जैसा माना जाता था। दाऊद और अबीसलूम
दोनों यूँ ही उस के मश्वरों की क़दर करते थे।

हूसी और अख़ीतुफ़ल

17 1 अख़ीतुफ़ल ने अबीसलूम को एक और
मश्वरा भी दिया। “मुझे इजाज़त दें तो मैं
12,000 फ़ौजियों के साथ इसी रात दाऊद का
ताक़्क़ुब करूँ। 2 मैं उस पर हम्ला करूँगा जब वह
थकामाँदा और बेदिल है। तब वह घबरा जाएगा,
और उस के तमाम फ़ौजी भाग जाएंगे। नतीजतन मैं
सिर्फ़ बादशाह ही को मार दूँगा 3 और बाक़ी तमाम
लोगों को आप के पास वापस लाऊँगा। जो आदमी
आप पकड़ना चाहते हैं उस की मौत पर सब वापस
आ जाएंगे। और क़ौम में अम्न-ओ-अमान क़ाइम हो
जाएगा।”

4 यह मश्वरा अबीसलूम और इस्राईल के तमाम
बुज़ुर्गों को पसन्द आया। 5 ताहम अबीसलूम ने कहा,
“पहले हम हूसी अर्की से भी मश्वरा लें। कोई उसे बुला
लाए।” 6 हूसी आया तो अबीसलूम ने उस के सामने
अख़ीतुफ़ल का मन्सूबा बयान करके पूछा, “आप
का क्या ख़याल है? क्या हमें ऐसा करना चाहिए, या
आप की कोई और राय है?”

7 हूसी ने जवाब दिया, “जो मश्वरा अख़ीतुफ़ल ने
दिया है वह इस दफ़ा ठीक नहीं। 8 आप तो अपने
वालिद और उन के आदमियों से वाक़िफ़ हैं। वह
सब माहिर फ़ौजी हैं। वह उस रीछनी की सी शिद्दत
से लड़ेंगे जिस से उस के बच्चे छीन लिए गए हैं। यह भी
ज़हन में रखना चाहिए कि आप का बाप तजरिबाकार
फ़ौजी है। इम्कान नहीं कि वह रात को अपने फ़ौजियों
के दरमियान गुज़ारेगा। 9 ग़ालिबन वह इस वक़्त भी
गहरी खाई या कहीं और छुप गया है। हो सकता है
वह वहाँ से निकल कर आप के दस्तों पर हम्ला करे
और इब्तिदा ही में आप के थोड़े बहुत अफ़राद मर
जाएँ। फिर अफ़्वाह फैल जाएगी कि अबीसलूम के
दस्तों में क़त्ल-ए-आम शुरू हो गया है। 10 यह सुन
कर आप के तमाम अफ़राद डर के मारे बेदिल हो
जाएंगे, ख़्वाह वह शेरबबर जैसे बहादुर क्यूँ न हों।
क्यूँकि तमाम इस्राईल जानता है कि आप का बाप
बेहतरीन फ़ौजी है और कि उस के साथी भी दिलेर
हैं।

11 यह पेश-ए-नज़र रख कर मैं आप को एक और
मश्वरा देता हूँ। शिमाल में दान से ले कर जुनूब में
बैर-सबा तक लड़ने के क़ाबिल तमाम इस्राईलियों
को बुलाएँ। इतने जमा करें कि वह साहिल की रेत
की मानिन्द होंगे, और आप ख़ुद उन के आगे चल
कर लड़ने के लिए निकलें। 12 फिर हम दाऊद का
खोज लगा कर उस पर हम्ला करेंगे। हम उस तरह
उस पर टूट पड़ेंगे जिस तरह ओस ज़मीन पर गिरती
है। सब के सब हलाक हो जाएंगे, और न वह और
न उस के आदमी बच पाएँगे। 13 अगर दाऊद किसी
शहर में पनाह ले तो तमाम इस्राईली फ़सील के साथ
रस्से लगा कर पूरे शहर को वादी में घसीट ले जाएंगे।
पत्थर पर पत्थर बाक़ी नहीं रहेगा!”

14 अबीसलूम और तमाम इस्राईलियों ने कहा,
“हूसी का मश्वरा अख़ीतुफ़ल के मश्वरे से बेहतर है।”
हक़ीक़त में अख़ीतुफ़ल का मश्वरा कहीं बेहतर था,
लेकिन रब ने उसे नाकाम होने दिया ताकि अबीसलूम
को मुसीबत में डाले।

दाऊद को अबीसलूम का मन्सूबा बताया जाता है

15 हूसी ने दोनों इमामों सदोक़ और अबियातर को
वह मन्सूबा बताया जो अख़ीतुफ़ल ने अबीसलूम
और इस्राईल के बुज़ुर्गों को पेश किया था। साथ साथ
उस ने उन्हें अपने मश्वरे के बारे में भी आगाह किया।
16 उस ने कहा, “अब फ़ौरन दाऊद को इत्तिला दें कि
किसी सूरत में भी इस रात को दरया-ए-यर्दन की उस
जगह पर न गुज़ारें जहाँ लोग दरया को पार करते हैं।
लाज़िम है कि आप आज ही दरया को उबूर कर लें,
वर्ना आप तमाम साथियों समेत बर्बाद हो जाएंगे।”

17 यूनतन और अख़ीमाज़ यरूशलम से बाहर के
चश्मे ऐन-राजिल के पास इन्तिज़ार कर रहे थे, क्यूँकि
वह शहर में दाख़िल हो कर किसी को नज़र आने का
ख़तरा मोल नहीं ले सकते थे। एक नौकरानी शहर
से निकल आई और उन्हें हूसी का पैग़ाम दे दिया

ताकि वह आगे निकल कर उसे दाऊद तक पहुँचाएँ।
18 लेकिन एक जवान ने उन्हें देखा और भाग कर
अबीसलूम को इत्तिला दी। दोनों जल्दी जल्दी वहाँ
से चले गए और एक आदमी के घर में छुप गए जो
बहूरीम में रहता था। उस के सहन में कुआँ था। उस
में वह उतर गए। 19 आदमी की बीवी ने कुएँ के मुँह
पर कपड़ा बिछा कर उस पर अनाज के दाने बिखेर
दिए ताकि किसी को मालूम न हो कि वहाँ कुआँ है।
20 अबीसलूम के सिपाही उस घर में पहुँचे और
औरत से पूछने लगे, "अख़ीमाज़ और यूनतन कहाँ
हैं?" औरत ने जवाब दिया, "वह आगे निकल चुके
हैं, क्यूँकि वह नदी को पार करना चाहते थे।"
सिपाही दोनों आदमियों का खोज लगाते लगाते थक
गए। आख़िरकार वह ख़ाली हाथ यरूशलम लौट
गए।

21 जब चले गए तो अख़ीमाज़ और यूनतन कुएँ से
निकल कर सीधे दाऊद बादशाह के पास चले गए
ताकि उसे पैग़ाम सुनाएँ। उन्हों ने कहा, "लाज़िम
है कि आप दरया को फ़ौरन पार करें!" फिर उन्हों
ने दाऊद को अख़ीतुफ़ल का पूरा मन्सूबा बताया।
22 दाऊद और उस के तमाम साथी जल्द ही रवाना
हुए और उसी रात दरया-ए-यर्दन को उबूर किया। पौ
फटते वक़्त एक भी पीछे नहीं रह गया था।

23 जब अख़ीतुफ़ल ने देखा कि मेरा मश्वरा रद्द किया
गया है तो वह अपने गधे पर ज़ीन कस कर अपने
वतनी शहर वापस चला गया। वहाँ उस ने घर के
तमाम मुआमलात का बन्द-ओ-बस्त किया, फिर जा
कर फाँसी ले ली। उसे उस के बाप की क़ब्र में
दफ़नाया गया।

24 जब दाऊद महनाइम पहुँच गया तो अबीसलूम
इस्राईली फ़ौज के साथ दरया-ए-यर्दन को पार करने
लगा। 25 उस ने अमासा को फ़ौज पर मुक़र्रर किया
था, क्यूँकि योआब तो दाऊद के साथ था। अमासा
एक इस्माईली बनाम इत्रा का बेटा था। उस की माँ
अबीजेल बिन्त नाहस थी, और वह योआब की माँ
ज़रूयाह की बहन थी। 26 अबीसलूम और उस के
साथियों ने मुल्क-ए-जिलिआद में पड़ाओ डाला।

27 जब दाऊद महनाइम पहुँचा तो तीन आदमियों
ने उस का इस्तिक़्बाल किया। सोबी बिन नाहस
अम्मोनियों के दार-उल-हकूमत रब्बा से, मकीर बिन
अम्मीएल लो-दिबार से और बर्ज़िल्ली जिलिआदी
राजिलीम से आए। 28 तीनों ने दाऊद और उस के
लोगों को बिस्तर, बासन, मिट्टी के बर्तन, गन्दुम,
जौ, मैदा, अनाज के भुने हुए दाने, लोबिया, मसूर,
29 शहद, दही, भेड़-बकरियाँ और गाय के दूध का
पनीर मुहय्या किया। क्यूँकि उन्हों ने सोचा, "यह
लोग रेगिस्तान में चलते चलते ज़रूर भूके, प्यासे और
थकेमान्दे हो गए होंगे।"

जंग के लिए तय्यारियाँ

18 1 दाऊद ने अपने फ़ौजियों का मुआइना
करके हज़ार हज़ार और सौ सौ अफ़राद पर
आदमी मुक़र्रर किए। 2 फिर उस ने उन्हें तीन हिस्सों
में तक़्सीम करके एक हिस्से पर योआब को, दूसरे
पर उस के भाई अबीशै बिन ज़रूयाह को और तीसरे
पर इत्ती जाती को मुक़र्रर किया।

उस ने फ़ौजियों को बताया, "मैं ख़ुद भी आप
के साथ लड़ने के लिए निकलूँगा।" 3 लेकिन उन्हों
ने एतिराज़ किया, "ऐसा न करें! अगर हमें भागना
भी पड़े या हमारा आधा हिस्सा मारा भी जाए तो
अबीसलूम के फ़ौजियों के लिए इतना कोई फ़र्क़ नहीं
पड़ेगा। वह आप ही को पकड़ना चाहते हैं, क्यूँकि
आप उन के नज़्दीक हम में से 10,000 अफ़राद से
ज़्यादा अहम हैं। चुनाँचे बेहतर है कि आप शहर ही
में रहें और वहाँ से हमारी हिमायत करें।"

4 बादशाह ने जवाब दिया, "ठीक है, जो कुछ आप
को माक़ूल लगता है वही करूँगा।" वह शहर के
दरवाज़े पर खड़ा हुआ, और तमाम मर्द सौ सौ और
हज़ार हज़ार के गुरोहों में उस के सामने से गुज़र कर
बाहर निकले। 5 योआब, अबीशै और इत्ती को उस ने
हुक्म दिया, "मेरी ख़ातिर जवान अबीसलूम से नर्मी

से पेश आना!” तमाम फ़ौजियों ने तीनों कमाँडरों से
यह बात सुनी।

अबीसलूम की शिकस्त

6 दाऊद के लोग खुले मैदान में इस्राईलियों से लड़ने
गए। इफ़्राईम के जंगल में उन की टक्कर हुई, 7 और
दाऊद के फ़ौजियों ने मुख़ालिफ़ों को शिकस्त-ए-फ़ाश
दी। उन के 20,000 अफ़राद हलाक हुए। 8 लड़ाई पूरे
जंगल में फैलती गई। यह जंगल इतना ख़तरनाक था
कि उस दिन तलवार की निस्बत ज़्यादा लोग उस की
ज़द में आ कर हलाक हो गए।

9 अचानक दाऊद के कुछ फ़ौजियों को अबीसलूम
नज़र आया। वह ख़च्चर पर सवार बलूत के एक बड़े
दरख़्त के साय में से गुज़रने लगा तो उस के बाल
दरख़्त की शाख़ों में उलझ गए। उस का ख़च्चर आगे
निकल गया जबकि अबीसलूम वहीं आसमान-ओ-
ज़मीन के दरमियान लटका रहा। 10 जिन आदमियों
ने यह देखा उन में से एक योआब के पास गया और
इत्तिला दी, “मैं ने अबीसलूम को देखा है। वह बलूत
के एक दरख़्त में लटका हुआ है।”

11 योआब पुकारा, “क्या आप ने उसे देखा? तो
उसे वहीं क्यूँ न मार दिया? फिर मैं आप को
इनआम के तौर पर चाँदी के दस सिक्के और एक
कमरबन्द दे देता।” 12 लेकिन आदमी ने एतिराज़
किया, “अगर आप मुझे चाँदी के हज़ार सिक्के भी देते
तो भी मैं बादशाह के बेटे को हाथ न लगाता। हमारे
सुनते सुनते बादशाह ने आप, अबीशै और इत्ती को
हुक्म दिया, ‘मेरी ख़ातिर अबीसलूम को नुक़्सान न
पहुँचाएँ।’ 13 और अगर मैं चुपके से भी उसे क़त्ल
करता तो भी इस की ख़बर किसी न किसी वक़्त
बादशाह के कानों तक पहुँचती। क्यूँकि कोई भी बात
बादशाह से पोशीदा नहीं रहती। अगर मुझे इस सूरत
में पकड़ा जाता तो आप मेरी हिमायत न करते।”

14 योआब बोला, “मेरा वक़्त मज़ीद ज़ाए मत
करो।” उस ने तीन नेज़े ले कर अबीसलूम के
दिल में घोंप दिए जब वह अभी ज़िन्दा हालत में
दरख़्त से लटका हुआ था। 15 फिर योआब के दस
सिलाहबर्दारों ने अबीसलूम को घेर कर उसे हलाक
कर दिया।

16 तब योआब ने नरसिंगा बजा दिया, और उस
के फ़ौजी दूसरों का ताक़्क़ुब करने से बाज़ आ कर
वापस आ गए। 17 बाक़ी इस्राईली अपने अपने घर
भाग गए। योआब के आदमियों ने अबीसलूम की
लाश को एक गहरे गढ़े में फैंक कर उस पर पत्थरों
का बड़ा ढेर लगा दिया।

18 कुछ देर पहले अबीसलूम इस ख़याल से
बादशाह की वादी में अपनी याद में एक सतून खड़ा
कर चुका था कि मेरा कोई बेटा नहीं है जो मेरा नाम
क़ाइम रखे। आज तक यह ‘अबीसलूम की यादगार’
कहलाता है।

दाऊद को अबीसलूम की मौत की ख़बर मिलती है

19 अख़ीमाज़ बिन सदोक़ ने योआब से दरख़्वास्त
की, “मुझे दौड़ कर बादशाह को ख़ुशख़बरी सुनाने दें
कि रब ने उसे दुश्मनों से बचा लिया है।” 20 लेकिन
योआब ने इन्कार किया, “जो पैग़ाम आप को
बादशाह तक पहुँचाना है वह उस के लिए ख़ुशख़बरी
नहीं है, क्यूँकि उस का बेटा मर गया है। किसी और
वक़्त मैं ज़रूर आप को उस के पास भेज दूँगा, लेकिन
आज नहीं।” 21 उस ने एथोपिया के एक आदमी को
हुक्म दिया, “जाएँ और बादशाह को बताएँ।” आदमी
योआब के सामने औंधे मुँह झुक गया और फिर दौड़
कर चला गया।

22 लेकिन अख़ीमाज़ ख़ुश नहीं था। वह इसरार
करता रहा, “कुछ भी हो जाए, मेहरबानी करके मुझे
उस के पीछे दौड़ने दें!” एक और बार योआब ने उसे
रोकने की कोशिश की, “बेटे, आप जाने के लिए क्यूँ
तड़पते हैं? जो ख़बर पहुँचानी है उस के लिए आप को
इनआम नहीं मिलेगा।” 23 अख़ीमाज़ ने जवाब दिया,
“कोई बात नहीं। कुछ भी हो जाए, मैं हर सूरत में दौड़
कर बादशाह के पास जाना चाहता हूँ।” तब योआब
ने उसे जाने दिया। अख़ीमाज़ ने दरया-ए-यर्दन के खुले

मैदान का रास्ता लिया, इस लिए वह एथोपिया के
आदमी से पहले बादशाह के पास पहुँच गया।
24 उस वक़्त दाऊद शहर के बाहर और अन्दर वाले
दरवाज़ों के दरमियान बैठा इन्तिज़ार कर रहा था।
जब पहरेदार दरवाज़े के ऊपर की फ़सील पर चढ़ा
तो उसे एक तन्हा आदमी नज़र आया जो दौड़ता हुआ
उन की तरफ़ आ रहा था। 25 पहरेदार ने आवाज़ दे
कर बादशाह को इत्तिला दी। दाऊद बोला, "अगर
अकेला हो तो ज़रूर ख़ुशख़बरी ले कर आ रहा
होगा।" यह आदमी भागता भागता क़रीब आ गया,
26 लेकिन इतने में पहरेदार को एक और आदमी नज़र
आया जो शहर की तरफ़ दौड़ता हुआ आ रहा था।
उस ने शहर के दरवाज़े के दरबान को आवाज़ दी,
"एक और आदमी दौड़ता हुआ दिखाई दे रहा है।
वह भी अकेला ही आ रहा है।" दाऊद ने कहा, "वह
भी अच्छी ख़बर ले कर आ रहा है।" 27 फिर पहरेदार
पुकारा, "लगता है कि पहला आदमी अख़ीमाज़ बिन
सदोक़ है, क्यूँकि वही यूँ चलता है।" दाऊद को
तसल्ली हुई, "अख़ीमाज़ अच्छा बन्दा है। वह ज़रूर
अच्छी ख़बर ले कर आ रहा होगा।"
28 दूर से अख़ीमाज़ ने बादशाह को आवाज़ दी,
"बादशाह की सलामती हो!" वह औंधे मुँह बादशाह
के सामने झुक कर बोला, "रब आप के ख़ुदा की
तम्जीद हो! उस ने आप को उन लोगों से बचा लिया है
जो मेरे आक़ा और बादशाह के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए
थे।" 29 दाऊद ने पूछा, "और मेरा बेटा अबीसलूम?
क्या वह महफ़ूज़ है?" अख़ीमाज़ ने जवाब दिया,
"जब योआब ने मुझे और बादशाह के दूसरे ख़ादिम
को आप के पास रुख़्सत किया तो उस वक़्त बड़ी
अफ़रा-तफ़री थी। मुझे तफ़्सील से मालूम न हुआ कि
क्या हो रहा है।" 30 बादशाह ने हुक्म दिया, "एक
तरफ़ हो कर मेरे पास खड़े हो जाएँ!" अख़ीमाज़ ने
ऐसा ही किया।
31 फिर एथोपिया का आदमी पहुँच गया। उस ने
कहा, "मेरे बादशाह, मेरी ख़ुशख़बरी सुनें! आज रब
ने आप को उन सब लोगों से नजात दिलाई है जो
आप के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए थे।" 32 बादशाह ने
सवाल किया, "और मेरा बेटा अबीसलूम? क्या वह
महफ़ूज़ है?" एथोपिया के आदमी ने जवाब दिया,
"मेरे आक़ा, जिस तरह उस के साथ हुआ है, उस
तरह आप के तमाम दुश्मनों के साथ हो जाए, उन
सब के साथ जो आप को नुक़्सान पहुँचाना चाहते
हैं!"
33 यह सुन कर बादशाह लरज़ उठा। शहर के
दरवाज़े के ऊपर की फ़सील पर एक कमरा था।
अब बादशाह रोते रोते सीढ़ियों पर चढ़ने लगा और
चीख़ते चिल्लाते उस कमरे में चला गया, "हाय मेरे बेटे
अबीसलूम! मेरे बेटे, मेरे बेटे अबीसलूम! काश मैं ही
तेरी जगह मर जाता। हाय अबीसलूम, मेरे बेटे, मेरे
बेटे!"

योआब दाऊद को समझाता है

19 1 योआब को इत्तिला दी गई, "बादशाह रोते
रोते अबीसलूम का मातम कर रहा है।"
2 जब फ़ौजियों को ख़बर मिली कि बादशाह अपने
बेटे का मातम कर रहा है तो फ़त्ह पाने पर उन की
सारी ख़ुशी काफ़ूर हो गई। हर तरफ़ मातम और ग़म
का समाँ था। 3 उस दिन दाऊद के आदमी चोरी चोरी
शहर में घुस आए, ऐसे लोगों की तरह जो मैदान-ए-
जंग से फ़रार होने पर शरमाते हुए चुपके से शहर में
आ जाते हैं।
4 बादशाह अभी कमरे में बैठा था। अपने मुँह को
ढाँप कर वह चीख़ता चिल्लाता रहा, "हाय मेरे बेटे
अबीसलूम! हाय अबीसलूम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!"
5 तब योआब उस के पास जा कर उसे समझाने लगा,
"आज आप के ख़ादिमों ने न सिर्फ़ आप की जान
बचाई है बल्कि आप के बेटों, बेटियों, बीवियों और
दाश्ताओं की जान भी। तो भी आप ने उन का मुँह
काला कर दिया है। 6 जो आप से नफ़रत करते हैं उन
से आप मुहब्बत रखते हैं जबकि जो आप से प्यार
करते हैं उन से आप नफ़रत करते हैं। आज आप ने
साफ़ ज़ाहिर कर दिया है कि आप के कमाँडर और

दस्ते आप की नज़र में कोई हैसियत नहीं रखते। हाँ, आज मैं ने जान लिया है कि अगर अबीसलूम ज़िन्दा होता तो आप ख़ुश होते, ख़्वाह हम बाक़ी तमाम लोग हलाक क्यूँ न हो जाते। 7 अब उठ कर बाहर जाएँ और अपने ख़ादिमों की हौसलाअफ़्ज़ाई करें। रब की क़सम, अगर आप बाहर न निकलेंगे तो रात तक एक भी आप के साथ नहीं रहेगा। फिर आप पर ऐसी मुसीबत आएगी जो आप की जवानी से ले कर आज तक आप पर नहीं आई है।"

8 तब दाऊद उठा और शहर के दरवाज़े के पास उतर आया। जब फ़ौजियों को बताया गया कि बादशाह शहर के दरवाज़े में बैठा है तो वह सब उस के सामने जमा हुए। इतने में इस्राईली अपने घर भाग गए थे।

दाऊद यरूशलम वापस आता है

9 इस्राईल के तमाम क़बीलों में लोग आपस में बहस-मुबाहसा करने लगे, "दाऊद बादशाह ने हमें हमारे दुश्मनों से बचाया, और उसी ने हमें फ़िलिस्तियों के हाथ से आज़ाद कर दिया। लेकिन अबीसलूम की वजह से वह मुल्क से हिज्रत कर गया है। 10 अब जब अबीसलूम जिसे हम ने मसह करके बादशाह बनाया था मर गया है तो आप बादशाह को वापस लाने से क्यूँ झिजकते हैं?"

11 दाऊद ने सदोक़ और अबियातर इमामों की मारिफ़त यहूदाह के बुज़ुर्गों को इत्तिला दी, "यह बात मुझ तक पहुँच गई है कि तमाम इस्राईल अपने बादशाह का इस्तिक़्बाल करके उसे महल में वापस लाना चाहता है। तो फिर आप क्यूँ देर कर रहे हैं? क्या आप मुझे वापस लाने में सब से आख़िर में आना चाहते हैं? 12 आप मेरे भाई, मेरे क़रीबी रिश्तेदार हैं। तो फिर आप बादशाह को वापस लाने में आख़िर में क्यूँ आ रहे हैं?" 13 और अबीसलूम के कमाँडर अमासा को दोनों इमामों ने दाऊद का यह पैग़ाम पहुँचाया, "सुनें, आप मेरे भतीजे हैं, इस लिए अब से आप ही योआब की जगह मेरी फ़ौज के कमाँडर होंगे। अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं अपना यह वादा पूरा न करूँ।"

14 इस तरह दाऊद यहूदाह के तमाम दिलों को जीत सका, और सब के सब उस के पीछे लग गए। उन्हों ने उसे पैग़ाम भेजा, "वापस आएँ, आप भी और आप के तमाम लोग भी।" 15 तब दाऊद यरूशलम वापस चलने लगा। जब वह दरया-ए-यर्दन तक पहुँचा तो यहूदाह के लोग जिल्जाल में आए ताकि उस से मिलें और उसे दरया के दूसरे किनारे तक पहुँचाएँ।

दाऊद सिमई को मुआफ़ कर देता है

16 बिनयमीनी शहर बहूरीम का सिमई बिन जीरा भी भाग कर यहूदाह के आदमियों के साथ दाऊद से मिलने आया। 17 बिनयमीन के क़बीले के हज़ार आदमी उस के साथ थे। साऊल का पुराना नौकर ज़ीबा भी अपने 15 बेटों और 20 नौकरों समेत उन में शामिल था। बादशाह के यर्दन के किनारे तक पहुँचने से पहले पहले 18 वह जल्दी से दरया को उबूर करके उस के पास आए ताकि बादशाह के घराने को दरया के दूसरे किनारे तक पहुँचाएँ और हर तरह से बादशाह को ख़ुश रखें।

दाऊद दरया को पार करने को था कि सिमई औंधे मुँह उस के सामने गिर गया। 19 उस ने इल्तिमास की, "मेरे आक़ा, मुझे मुआफ़ करें। जो ज़ियादती मैं ने उस दिन आप से की जब आप को यरूशलम को छोड़ना पड़ा वह याद न करें। बराह-ए-करम यह बात अपने ज़हन से निकाल दें। 20 मैं ने जान लिया है कि मुझ से बड़ा जुर्म सरज़द हुआ है, इस लिए आज मैं यूसुफ़ के घराने के तमाम अफ़राद से पहले ही अपने आक़ा और बादशाह के हुज़ूर आ गया हूँ।"

21 अबीशै बिन ज़रूयाह बोला, "सिमई सज़ा-ए-मौत के लाइक़ है! उस ने रब के मसह किए हुए बादशाह पर लानत की है।" 22 लेकिन दाऊद ने उसे डाँटा, "मेरा आप और आप के भाई योआब के साथ क्या वास्ता? ऐसी बातों से आप इस दिन मेरे मुख़ालिफ़ बन गए हैं! आज तो इस्राईल में किसी को

सज़ा-ए-मौत देने का नहीं बल्कि ख़ुशी का दिन है।
देखें, इस दिन मैं दुबारा इस्राईल का बादशाह बन
गया हूँ!” 23 फिर बादशाह सिमई से मुख़ातिब हुआ,
“रब की क़सम, आप नहीं मरेंगे।”

मिफ़ीबोसत दाऊद से मिलने आता है

24 साऊल का पोता मिफ़ीबोसत भी बादशाह से
मिलने आया। उस दिन से जब दाऊद को यरूशलम
को छोड़ना पड़ा आज तक जब वह सलामती से
वापस पहुँचा मिफ़ीबोसत मातम की हालत में रहा
था। न उस ने अपने पाँओ न अपने कपड़े धोए थे,
न अपनी मूँछों की काँट-छाँट की थी। 25 जब वह
बादशाह से मिलने के लिए यरूशलम से निकला तो
बादशाह ने उस से सवाल किया, “मिफ़ीबोसत, आप
मेरे साथ क्यूँ नहीं गए थे?”
26 उस ने जवाब दिया, “मेरे आक़ा और बादशाह,
मैं जाने के लिए तय्यार था, लेकिन मेरा नौकर ज़ीबा
मुझे धोका दे कर अकेला ही चला गया। मैं ने तो
उसे बताया था, ‘मेरे गधे पर ज़ीन कसो ताकि मैं
बादशाह के साथ रवाना हो सकूँ।’ और मेरा जाने का
कोई और वसीला था नहीं, क्यूँकि मैं दोनों टाँगों से
माज़ूर हूँ। 27 ज़ीबा ने मुझ पर तुहमत लगाई है। लेकिन
मेरे आक़ा और बादशाह अल्लाह के फ़रिश्ते जैसे हैं।
मेरे साथ वही कुछ करें जो आप को मुनासिब लगे।
28 मेरे दादा के पूरे घराने को आप हलाक कर सकते
थे, लेकिन फिर भी आप ने मेरी इज़्ज़त करके उन
मेहमानों में शामिल कर लिया जो रोज़ाना आप की
मेज़ पर खाना खाते हैं। चुनाँचे मेरा क्या हक़ है कि
मैं बादशाह से मज़ीद अपील करूँ।”
29 बादशाह बोला, “अब बस करें। मैं ने फ़ैसला
कर लिया है कि आप की ज़मीनें आप और ज़ीबा में
बराबर तक़्सीम की जाएँ।” 30 मिफ़ीबोसत ने जवाब
दिया, “वह सब कुछ ले ले। मेरे लिए यही काफ़ी है
कि आज मेरे आक़ा और बादशाह सलामती से अपने
महल में वापस आ पहुँचे हैं।”

दाऊद और बर्ज़िल्लै

31 बर्ज़िल्लै जिलिआदी राजिलीम से आया था ताकि
बादशाह के साथ दरया-ए-यर्दन को पार करके उसे
रुख़्सत करे। 32 बर्ज़िल्लै 80 साल का था। महनाइम
में रहते वक़्त उसी ने दाऊद की मेहमान-नवाज़ी की
थी, क्यूँकि वह बहुत अमीर था। 33 अब दाऊद ने
बर्ज़िल्लै को दावत दी, “मेरे साथ यरूशलम जा कर
वहाँ रहें! मैं आप का हर तरह से ख़याल रखूँगा।”
34 लेकिन बर्ज़िल्लै ने इन्कार किया, “मेरी ज़िन्दगी
के थोड़े दिन बाक़ी हैं, मैं क्यूँ यरूशलम में जा बसूँ?
35 मेरी उम्र 80 साल है। न मैं अच्छी और बुरी चीज़ों में
इम्तियाज़ कर सकता, न मुझे खाने-पीने की चीज़ों का
मज़ा आता है। गीत गाने वालों की आवाज़ें भी मुझ
से सुनी नहीं जातीं। नहीं मेरे आक़ा और बादशाह,
अगर मैं आप के साथ जाऊँ तो आप के लिए सिर्फ़
बोझ का बाइस हूँगा। 36 इस की ज़रूरत नहीं कि
आप मुझे इस क़िस्म का मुआवज़ा दें। मैं बस आप
के साथ दरया-ए-यर्दन को पार करूँगा 37 और फिर
अगर इजाज़त हो तो वापस चला जाऊँगा। मैं अपने
ही शहर में मरना चाहता हूँ, जहाँ मेरे माँ-बाप की
क़ब्र है। लेकिन मेरा बेटा किम्हाम आप की ख़िदमत
में हाज़िर है। वह आप के साथ चला जाए तो आप
उस के लिए वह कुछ करें जो आप को मुनासिब
लगे।”
38 दाऊद ने जवाब दिया, “ठीक है, किम्हाम मेरे
साथ जाए। और जो कुछ भी आप चाहेंगे मैं उस के
लिए करूँगा। अगर कोई काम है जो मैं आप के लिए
कर सकता हूँ तो मैं हाज़िर हूँ।”
39 फिर दाऊद ने अपने साथियों समेत दरया को
उबूर किया। बर्ज़िल्लै को बोसा दे कर उस ने उसे
बरकत दी। बर्ज़िल्लै अपने शहर वापस चल पड़ा
40 जबकि दाऊद जिल्जाल की तरफ़ बढ़ गया।
किम्हाम भी साथ गया। इस के इलावा यहूदाह के
सब और इस्राईल के आधे लोग उस के साथ चले।

इस्राईल और यहूदाह आपस में झगड़ते हैं

41 रास्ते में इस्राईल के मर्द बादशाह के पास आ
कर शिकायत करने लगे, “हमारे भाइयों यहूदाह के
लोगों ने आप को आप के घराने और फ़ौजियों समेत
चोरी चोरी क्यूँ दरया-ए-यर्दन के मग़रिबी किनारे तक
पहुँचाया? यह ठीक नहीं है।”
42 यहूदाह के मर्दों ने जवाब दिया, “बात यह है कि
हम बादशाह के क़रीबी रिश्तेदार हैं। आप को यह
देख कर ग़ुस्सा क्यूँ आ गया है? न हम ने बादशाह
का खाना खाया, न उस से कोई तुह्फ़ा पाया है।”
43 तो भी इस्राईल के मर्दों ने एतिराज़ किया, “हमारे
दस क़बीले हैं, इस लिए हमारा बादशाह की ख़िदमत
करने का दस गुना ज़्यादा हक़ है। तो फिर आप हमें
हक़ीर क्यूँ जानते हैं? हम ने तो पहले अपने बादशाह
को वापस लाने की बात की थी।” यूँ बह्स-मुबाहसा
जारी रहा, लेकिन यहूदाह के मर्दों की बातें ज़्यादा
सख़्त थीं।

सबा दाऊद के ख़िलाफ़ उठ खड़ा होता है

20 1 झगड़ने वालों में से एक बदमआश था
जिस का नाम सबा बिन बिक्री था। वह
बिनयमीनी था। अब उस ने नरसिंगा बजा कर एलान
किया, “न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा,
न यस्सी के बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ
इस्राईल, हर एक अपने घर वापस चला जाए!” 2 तब
तमाम इस्राईली दाऊद को छोड़ कर सबा बिन बिक्री
के पीछे लग गए। सिर्फ़ यहूदाह के मर्द अपने बादशाह
के साथ लिपटे रहे और उसे यर्दन से ले कर यरूशलम
तक पहुँचाया।
3 जब दाऊद अपने महल में दाख़िल हुआ तो उस ने
उन दस दाश्ताओं का बन्द-ओ-बस्त कराया जिन को
उस ने महल को सँभालने के लिए पीछे छोड़ दिया
था। वह उन्हें एक ख़ास घर में अलग रख कर उन की
तमाम ज़रूरियात पूरी करता रहा लेकिन उन से कभी
हमबिसतर न हुआ। वह कहीं जा न सकीं, और उन्हें
ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हे तक बेवा की सी ज़िन्दगी
गुज़ारनी पड़ी।
4 फिर दाऊद ने अमासा को हुक्म दिया, “यहूदाह
के तमाम फ़ौजियों को मेरे पास बुला लाएँ। तीन
दिन के अन्दर अन्दर उन के साथ हाज़िर हो जाएँ।”
5 अमासा रवाना हुआ। लेकिन जब तीन दिन के बाद
लौट न आया 6 तो दाऊद अबीशै से मुख़ातिब हुआ,
“आख़िर में सबा बिन बिक्री हमें अबीसलूम की
निस्बत ज़्यादा नुक़्सान पहुँचाएगा। जल्दी करें, मेरे
दस्तों को ले कर उस का ताक़्क़ुब करें। ऐसा न हो
कि वह क़िलाबन्द शहरों को क़ब्ज़े में ले ले और
यूँ हमारा बड़ा नुक़्सान हो जाए।” 7 तब योआब के
सिपाही, बादशाह का दस्ता करेती-ओ-फ़लेती और
तमाम माहिर फ़ौजी यरूशलम से निकल कर सबा
बिन बिक्री का ताक़्क़ुब करने लगे।
8 जब वह जिबऊन की बड़ी चटान के पास पहुँचे
तो उन की मुलाक़ात अमासा से हुई जो थोड़ी देर
पहले वहाँ पहुँच गया था। योआब अपना फ़ौजी
लिबास पहने हुए था, और उस पर उस ने कमर में
अपनी तलवार की पेटी बांधी हुई थी। अब जब वह
अमासा से मिलने गया तो उस ने अपने बाएँ हाथ
से तलवार को चोरी चोरी मियान से निकाल लिया।
9 उस ने सलाम करके कहा, “भाई, क्या सब ठीक
है?” और फिर अपने दहने हाथ से अमासा की दाढ़ी
को यूँ पकड़ लिया जैसे उसे बोसा देना चाहता हो।
10 अमासा ने योआब के दूसरे हाथ में तलवार पर
ध्यान न दिया, और अचानक योआब ने उसे इतने
ज़ोर से पेट में घोंप दिया कि उस की अंतड़ियाँ फूट
कर ज़मीन पर गिर गईं। तलवार को दुबारा इस्तेमाल
करने की ज़रूरत ही नहीं थी, क्यूँकि अमासा फ़ौरन
मर गया।

फिर योआब और अबीशै सबा का ताक़्क़ुब करने
के लिए आगे बढ़े। 11 योआब का एक फ़ौजी अमासा
की लाश के पास खड़ा रहा और गुज़रने वाले
फ़ौजियों को आवाज़ देता रहा, “जो योआब और
दाऊद के साथ है वह योआब के पीछे हो ले!”

12 लेकिन जितने वहाँ से गुज़रे वह अमासा का
ख़ूनआलूदा और तड़पता हुआ जिस्म देख कर रुक
गए। जब आदमी ने देखा कि लाश रुकावट का
बाइस बन गई है तो उस ने उसे रास्ते से हटा कर
खेत में घसीट लिया और उस पर कपड़ा डाल दिया।
13 लाश के ग़ाइब हो जाने पर सब लोग योआब के
पीछे चले गए और सबा का ताक़्क़ुब करने लगे।

14 इतने में सबा पूरे इस्राईल से गुज़रते गुज़रते
शिमाल के शहर अबील-बैत-माका तक पहुँच गया
था। बिक्री के ख़ानदान के तमाम मर्द भी उस के पीछे
लग कर वहाँ पहुँच गए थे। 15 तब योआब और उस
के फ़ौजी वहाँ पहुँच कर शहर का मुहासरा करने
लगे। उन्हों ने शहर की बाहर वाली दीवार के साथ
साथ मिट्टी का बड़ा तोदा लगाया और उस पर से
गुज़र कर अन्दर वाली बड़ी दीवार तक पहुँच गए।
वहाँ वह दीवार की तोड़ फोड़ करने लगे ताकि वह
गिर जाए।

16 तब शहर की एक दानिशमन्द औरत ने फ़सील
से योआब के लोगों को आवाज़ दी, "सुनें! योआब
को यहाँ बुला लें ताकि मैं उस से बात कर सकूँ।"
17 जब योआब दीवार के पास आया तो औरत ने
सवाल किया, "क्या आप योआब हैं?" योआब ने
जवाब दिया, "मैं ही हूँ।" औरत ने दरख़्वास्त की,
"ज़रा मेरी बातों पर ध्यान दें।" योआब बोला, "ठीक
है, मैं सुन रहा हूँ।" 18 फिर औरत ने अपनी बात पेश
की, "पुराने ज़माने में कहा जाता था कि अबील शहर
से मश्वरा लो तो बात बनेगी। 19 देखें, हमारा शहर
इस्राईल का सब से ज़्यादा अम्नपसन्द और वफ़ादार
शहर है। आप एक ऐसा शहर तबाह करने की कोशिश
कर रहे हैं जो 'इस्राईल की माँ' कहलाता है। आप
रब की मीरास को क्यूँ हड़प कर लेना चाहते हैं?"

20 योआब ने जवाब दिया, "अल्लाह न करे कि मैं
आप के शहर को हड़प या तबाह करूँ। 21 मेरे आने
का एक और मक़्सद है। इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े
का एक आदमी दाऊद बादशाह के ख़िलाफ़ उठ
खड़ा हुआ है जिस का नाम सबा बिन बिक्री है। उसे
ढूँड रहे हैं। उसे हमारे हवाले करें तो हम शहर को
छोड़ कर चले जाएंगे।"

औरत ने कहा, "ठीक है, हम दीवार पर से उस का
सर आप के पास फैंक देंगे।" 22 उस ने अबील-बैत-
माका के बाशिन्दों से बात की और अपनी हिक्मत
से उन्हें क़ाइल किया कि ऐसा ही करना चाहिए।
उन्हों ने सबा का सर क़लम करके योआब के पास
फैंक दिया। तब योआब ने नरसिंगा बजा कर शहर
को छोड़ने का हुक्म दिया, और तमाम फ़ौजी अपने
अपने घर वापस चले गए। योआब ख़ुद यरूशलम में
दाऊद बादशाह के पास लौट गया।

दाऊद के आला अफ़्सर

23 योआब पूरी इस्राईली फ़ौज पर, बिनायाह बिन
यहोयदा शाही दस्ते करेती-ओ-फ़लेती पर 24 और
अदोराम बेगारियों पर मुक़र्रर था। यहूसफ़त बिन
अख़ीलूद बादशाह का मुशीर-ए-ख़ास था। 25 सिवा
मीरमुन्शी था और सदोक़ और अबियातर इमाम थे।
26 ईरा याईरी दाऊद का ज़ाती इमाम था।

साऊल के जुर्म का कफ़्फ़ारा

21 1 दाऊद की हुकूमत के दौरान काल पड़
गया जो तीन साल तक जारी रहा। जब
दाऊद ने इस की वजह दरयाफ़्त की तो रब ने जवाब
दिया, "काल इस लिए ख़त्म नहीं हो रहा कि साऊल
ने जिबऊनियों को क़त्ल किया था।"

2 तब बादशाह ने जिबऊनियों को बुला लिया ताकि
उन से बात करे। असल में वह इस्राईली नहीं
बल्कि अमोरियों का बचा-खुचा हिस्सा थे। मुल्क-ए-
कनआन पर क़ब्ज़ा करते वक़्त इस्राईलियों ने क़सम
खा कर वादा किया था कि हम आप को हलाक नहीं
करेंगे। लेकिन साऊल ने इस्राईल और यहूदाह के
लिए जोश में आ कर उन्हें हलाक करने की कोशिश
की थी।

3 दाऊद ने जिबऊनियों से पूछा, "मैं उस ज़ियादती
का कफ़्फ़ारा किस तरह दे सकता हूँ जो आप से हुई

है? मैं आप के लिए क्या करूँ ताकि आप दुबारा उस
ज़मीन को बरकत दें जो रब ने हमें मीरास में दी है?”
4 उन्हों ने जवाब दिया, “जो साऊल ने हमारे और
हमारे ख़ानदानों के साथ किया है उस का इज़ाला
सोने-चाँदी से नहीं किया जा सकता। यह भी मुनासिब
नहीं कि हम इस के इवज़ किसी इस्राईली को मार
दें।” दाऊद ने सवाल किया, “तो फिर मैं आप के
लिए क्या करूँ?” 5 जिबऊनियों ने कहा, “साऊल
ही ने हमें हलाक करने का मन्सूबा बनाया था, वही
हमें तबाह करना चाहता था ताकि हम इस्राईल की
किसी भी जगह क़ाइम न रह सकें। 6 इस लिए साऊल
की औलाद में से सात मर्दों को हमारे हवाले कर दें।
हम उन्हें रब के चुने हुए बादशाह साऊल के वतनी
शहर जिबिआ में रब के पहाड़ पर मौत के घाट उतार
कर उस के हुज़ूर लटका दें।”

बादशाह ने जवाब दिया, “मैं उन्हें आप के हवाले
कर दूँगा।” 7 यूनतन का बेटा मिफ़ीबोसत साऊल का
पोता तो था, लेकिन बादशाह ने उसे न छेड़ा, क्यूँकि
उस ने रब की क़सम खा कर यूनतन से वादा किया
था कि मैं आप की औलाद को कभी नुक़्सान नहीं
पहुँचाऊँगा। 8 चुनाँचे उस ने साऊल की दाश्ता रिस्फ़ा
बिन्त अय्याह के दो बेटों अर्मोनी और मिफ़ीबोसत
को और इस के इलावा साऊल की बेटी मीरब के
पाँच बेटों को चुन लिया। मीरब बर्ज़िल्ली महूलाती के
बेटे अद्रीएल की बीवी थी। 9 इन सात आदमियों को
दाऊद ने जिबऊनियों के हवाले कर दिया।

सातों आदमियों को मज़कूरा पहाड़ पर लाया गया।
वहाँ जिबऊनियों ने उन्हें क़त्ल करके रब के हुज़ूर
लटका दिया। वह सब एक ही दिन मर गए। उस
वक़्त जौ की फ़सल की कटाई शुरू हुई थी।

10 तब रिस्फ़ा बिन्त अय्याह सातों लाशों के पास
गई और पत्थर पर अपने लिए टाट का कपड़ा बिछा
कर लाशों की हिफ़ाज़त करने लगी। दिन के वक़्त
वह परिन्दों को भगाती और रात के वक़्त जंगली
जानवरों को लाशों से दूर रखती रही। वह बहार के
मौसम में फ़सल की कटाई के पहले दिनों से ले कर
उस वक़्त तक वहाँ ठहरी रही जब तक बारिश न
हुई।

11 जब दाऊद को मालूम हुआ कि साऊल की
दाश्ता रिस्फ़ा ने क्या किया है 12–14 तो वह यबीस-
जिलिआद के बाशिन्दों के पास गया और उन से
साऊल और उस के बेटे यूनतन की हड्डियों को ले
कर साऊल के बाप क़ीस की क़ब्र में दफ़नाया।
(जब फ़िलिस्तियों ने जिल्बूअ के पहाड़ी इलाक़े में
इस्राईलियों को शिकस्त दी थी तो उन्हों ने साऊल
और यूनतन की लाशों को बैत-शान के चौक में
लटका दिया था। तब यबीस-जिलिआद के आदमी
चोरी चोरी वहाँ आ कर लाशों को अपने पास ले
गए थे।) दाऊद ने जिबिआ में अब तक लटकी सात
लाशों को भी उतार कर ज़िला में क़ीस की क़ब्र में
दफ़नाया। ज़िला बिनयमीन के क़बीले की आबादी
है।

जब सब कुछ दाऊद के हुक्म के मुताबिक़ किया
गया था तो रब ने मुल्क के लिए दुआएँ सुन लीं।

फ़िलिस्तियों से जंगें

15 एक और बार फ़िलिस्तियों और इस्राईलियों
के दरमियान जंग छिड़ गई। दाऊद अपनी फ़ौज
समेत फ़िलिस्तियों से लड़ने के लिए निकला। जब
वह लड़ता लड़ता निढाल हो गया था 16 तो एक
फ़िलिस्ती ने उस पर हम्ला किया जिस का नाम इश्बी-
बनोब था। यह आदमी देओक़ामत मर्द रफ़ा की नस्ल
से था। उस के पास नई तलवार और इतना लम्बा
नेज़ा था कि सिर्फ़ उस की पीतल की नोक का वज़न
तक़रीबन साढ़े 3 किलोग्राम था। 17 लेकिन अबीशै
बिन ज़रूयाह दौड़ कर दाऊद की मदद करने आया
और फ़िलिस्ती को मार डाला। इस के बाद दाऊद
के फ़ौजियों ने क़सम खाई, “आइन्दा आप लड़ने
के लिए हमारे साथ नहीं निकलेंगे। ऐसा न हो कि
इस्राईल का चराग़ बुझ जाए।”

18 इस के बाद इस्राईलियों को ज़ूब के क़रीब भी
फ़िलिस्तियों से लड़ना पड़ा। वहाँ सिब्बकी हूसाती

ने देओक़ामत म्रद रफ़ा की औलाद में से एक आदमी
को मार डाला जिस का नाम सफ़ था।
19 जूब के क़रीब एक और लड़ाई छिड़ गई। इस
के दौरान बैत-लहम के इल्हनान बिन यारे-उरजीम ने
जाती जालूत को मौत के घाट उतार दिया। जालूत
का नेज़ा खड्डी के शहतीर जैसा बड़ा था। 20 एक और
दफ़ा जात के पास लड़ाई हुई। फ़िलिस्तियों का एक
फ़ौजी जो रफ़ा की नस्ल का था बहुत लम्बा था। उस
के हाथों और पैरों की छः छः उंगलियाँ यानी मिल
कर 24 उंगलियाँ थीं। 21 जब वह इस्राईलियों का
मज़ाक़ उड़ाने लगा तो दाऊद के भाई सिमआ के बेटे
यूनतन ने उसे मार डाला। 22 जात के यह देओक़ामत
मर्द रफ़ा की औलाद थे, और वह दाऊद और उस के
फ़ौजियों के हाथों हलाक हुए।

दाऊद का गीत

22 1 जिस दिन रब ने दाऊद को तमाम दुश्मनों
और साऊल के हाथ से बचाया उस दिन
बादशाह ने गीत गाया,
2 "रब मेरी चटान, मेरा क़िला और मेरा
नजातदहिन्दा है।
3 मेरा ख़ुदा मेरी चटान है जिस में मैं पनाह लेता
हूँ। वह मेरी ढाल, मेरी नजात का पहाड़, मेरा बुलन्द
हिसार और मेरी पनाहगाह है। तू मेरा नजातदहिन्दा
है जो मुझे ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद से बचाता है।
4 मैं रब को पुकारता हूँ, उस की तम्जीद हो! तब
वह मुझे दुश्मनों से छुटकारा देता है।

5 मौत की मौजों ने मुझे घेर लिया, हलाकत के
सैलाब ने मेरे दिल पर दहशत तारी की।
6 पाताल के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया, मौत ने मेरे
रास्ते में अपने फंदे डाल दिए।
7 जब मैं मुसीबत में फंस गया तो मैं ने रब को
पुकारा। मैं ने मदद के लिए अपने ख़ुदा से फ़र्याद की
तो उस ने अपनी सुकूनतगाह से मेरी आवाज़ सुनी,
मेरी चीख़ें उस के कान तक पहुँच गईं।
8 तब ज़मीन लरज़ उठी और थरथराने लगी,
आसमान की बुन्यादें रब के ग़ज़ब के सामने काँपने
और झूलने लगीं।
9 उस की नाक से धुआँ निकल आया, उस के मुँह
से भस्म करने वाले शोले और दहकते कोएले भड़क
उठे।
10 आसमान को झुका कर वह नाज़िल हुआ। जब
उतर आया तो उस के पाँओ के नीचे अंधेरा ही अंधेरा
था।
11 वह करूबी फ़रिश्ते पर सवार हुआ और उड़ कर
हवा के परों पर मंडलाने लगा।
12 उस ने अंधेरे को अपनी छुपने की जगह बनाया,
बारिश के काले और घने बादल ख़ैमे की तरह अपने
इर्दगिर्द लगाए।
13 उस के हुज़ूर की तेज़ रौशनी से शोलाज़न कोएले
फूट निकले।
14 रब आसमान से कड़कने लगा, अल्लाह तआला
की आवाज़ गूँज उठी।
15 उस ने अपने तीर चला दिए तो दुश्मन तित्तर-
बित्तर हो गए। उस की बिजली इधर उधर गिरती गई
तो उन में हलचल मच गई।
16 रब ने डाँटा तो समुन्दर की वादियाँ ज़ाहिर हुईं,
जब वह ग़ुस्से में गरजा तो उस के दम के झोंकों से
ज़मीन की बुन्यादें नज़र आईं।

17 बुलन्दियों पर से अपना हाथ बढ़ा कर उस ने मुझे
पकड़ लिया, गहरे पानी में से खैंच कर मुझे निकाल
लाया।
18 उस ने मुझे मेरे ज़बरदस्त दुश्मन से बचाया, उन
से जो मुझ से नफ़रत करते हैं, जिन पर मैं ग़ालिब न
आ सका।
19 जिस दिन मैं मुसीबत में फंस गया उस दिन उन्हों
ने मुझ पर हम्ला किया, लेकिन रब मेरा सहारा बना
रहा।
20 उस ने मुझे तंग जगह से निकाल कर छुटकारा
दिया, क्यूँकि वह मुझ से ख़ुश था।

21 रब मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र देता है। मेरे हाथ
साफ़ हैं, इस लिए वह मुझे बरकत देता है।
22 क्यूँकि मैं रब की राहों पर चलता रहा हूँ, मैं बदी
करने से अपने ख़ुदा से दूर नहीं हुआ।
23 उस के तमाम अह्काम मेरे सामने रहे हैं, मैं उस
के फ़रमानों से नहीं हटा।
24 उस के सामने ही मैं बेइल्ज़ाम रहा, गुनाह करने
से बाज़ रहा हूँ।
25 इस लिए रब ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र
दिया, क्यूँकि उस की आँखों के सामने ही मैं पाक-
साफ़ साबित हुआ।

26 ऐ अल्लाह, जो वफ़ादार है उस के साथ तेरा सुलूक
वफ़ादारी का है, जो बेइल्ज़ाम है उस के साथ तेरा
सुलूक बेइल्ज़ाम है।
27 जो पाक है उस के साथ तेरा सुलूक पाक है।
लेकिन जो कजरौ है उस के साथ तेरा सुलूक भी
कजरवी का है।
28 तू पस्तहालों को नजात देता है, और तेरी आँखें
मग़ुरूरों पर लगी रहती हैं ताकि उन्हें पस्त करें।

29 ऐ रब, तू ही मेरा चराग़ है, रब ही मेरे अंधेरे को
रौशन करता है।
30 क्यूँकि तेरे साथ मैं फ़ौजी दस्ते पर हम्ला कर
सकता, अपने ख़ुदा के साथ दीवार को फलाँग
सकता हूँ।

31 अल्लाह की राह कामिल है, रब का फ़रमान
ख़ालिस है। जो भी उस में पनाह ले उस की वह ढाल
है।
32 क्यूँकि रब के सिवा कौन ख़ुदा है? हमारे ख़ुदा
के सिवा कौन चटान है?
33 अल्लाह मुझे क़ुव्वत से कमरबस्ता करता, वह
मेरी राह को कामिल कर देता है।
34 वह मेरे पाँओ को हिरन की सी फुरती अता
करता, मुझे मज़बूती से मेरी बुलन्दियों पर खड़ा
करता है।
35 वह मेरे हाथों को जंग करने की तर्बियत देता है।
अब मेरे बाज़ू पीतल की कमान को भी तान लेते हैं।

36 ऐ रब, तू ने मुझे अपनी नजात की ढाल बख़्श दी
है, तेरी नर्मी ने मुझे बड़ा बना दिया है।
37 तू मेरे क़दमों के लिए रास्ता बना देता है, इस
लिए मेरे टख़ने नहीं डगमगाते।
38 मैं ने अपने दुश्मनों का ताक़्क़ुब करके उन्हें
कुचल दिया, मैं बाज़ न आया जब तक वह ख़त्म
न हो गए।
39 मैं ने उन्हें तबाह करके यूँ पाश पाश कर दिया
कि दुबारा उठ न सके बल्कि गिर कर मेरे पाँओ तले
पड़े रहे।
40 क्यूँकि तू ने मुझे जंग करने के लिए क़ुव्वत से
कमरबस्ता कर दिया, तू ने मेरे मुख़ालिफ़ों को मेरे
सामने झुका दिया।
41 तू ने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने से भगा दिया,
और मैं ने नफ़रत करने वालों को तबाह कर दिया।
42 वह मदद के लिए चीख़ते चिल्लाते रहे, लेकिन
बचाने वाला कोई नहीं था। वह रब को पुकारते रहे,
लेकिन उस ने जवाब न दिया।
43 मैं ने उन्हें चूर चूर करके गर्द की तरह हवा में
उड़ा दिया। मैं ने उन्हें गली में मिट्टी की तरह पाँओ
तले रौंद कर रेज़ा रेज़ा कर दिया।

44 तू ने मुझे मेरी क़ौम के झगड़ों से बचा कर
अक़्वाम पर मेरी हुकूमत क़ाइम रखी है। जिस क़ौम
से मैं नावाक़िफ़ था वह मेरी ख़िदमत करती है।
45 परदेसी दबक कर मेरी ख़ुशामद करते हैं। जूँ ही
मैं बात करता हूँ तो वह मेरी सुनते हैं।
46 वह हिम्मत हार कर काँपते हुए अपने क़िलों से
निकल आते हैं।

47 रब ज़िन्दा है! मेरी चटान की तम्जीद हो! मेरे
ख़ुदा की ताज़ीम हो जो मेरी नजात की चटान है।
48 वही ख़ुदा है जो मेरा इन्तिक़ाम लेता, अक़्वाम
को मेरे ताबे कर देता
49 और मुझे मेरे दुश्मनों से छुटकारा देता है।
यक़ीनन तू मुझे मेरे मुख़ालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता,
मुझे ज़ालिमों से बचाए रखता है।

50 ऐ रब, इस लिए मैं अक़्वाम में तेरी हम्द-ओ-सना
करूँगा, तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।
51 क्यूँकि रब अपने बादशाह को बड़ी नजात देता
है, वह अपने मसह किए हुए बादशाह दाऊद और
उस की औलाद पर हमेशा तक मेहरबान रहेगा।"

दाऊद के आख़िरी अल्फ़ाज़

23 1 दर्ज-ए-ज़ैल दाऊद के आख़िरी अल्फ़ाज़
हैं :
"दाऊद बिन यस्सी का फ़रमान जिसे अल्लाह ने
सरफ़राज़ किया, जिसे याक़ूब के ख़ुदा ने मसह
करके बादशाह बना दिया था, और जिस की तारीफ़
इस्राईल के गीत करते हैं,
2 रब के रूह ने मेरी मारिफ़त बात की, उस का
फ़रमान मेरी ज़बान पर था।
3 इस्राईल के ख़ुदा ने फ़रमाया, इस्राईल की चटान
मुझ से हमकलाम हुई, 'जो इन्साफ़ से हुकूमत करता
है, जो अल्लाह का ख़ौफ़ मान कर हुक्मरानी करता है,
4 वह सुब्ह की रौशनी की मानिन्द है, उस तुलू-ए-
आफ़ताब की मानिन्द जब बादल छाए नहीं होते। जब
उस की किरनें बारिश के बाद ज़मीन पर पड़ती हैं तो
पौदे फूट निकलते हैं।'
5 यक़ीनन मेरा घराना मज़बूती से अल्लाह के साथ है,
क्यूँकि उस ने मेरे साथ अबदी अह्द बांधा है, ऐसा
अह्द जिस का हर पहलू मुनज़्ज़म और महफ़ूज़ है।
वह मेरी नजात तक्मील तक पहुँचाएगा और मेरी हर
आर्ज़ू पूरी करेगा।
6 लेकिन बेदीन ख़ारदार झाड़ियों की मानिन्द हैं जो
हवा के झोंकों से इधर उधर बिखर गई हैं। काँटों की
वजह से कोई भी हाथ नहीं लगाता।
7 लोग उन्हें लोहे के औज़ार या नेज़े के दस्ते से जमा
करके वहीं के वहीं जला देते हैं।"

दाऊद के सूरमा

8 दर्ज-ए-ज़ैल दाऊद के सूरमाओं की फ़हरिस्त है।
जो तीन अफ़सर योआब के भाई अबीशै के ऐन बाद
आते थे उन में योशेब-बशेबत तह्कमूनी पहले नम्बर
पर आता था। एक बार उस ने अपने नेज़े से 800
आदमियों को मार दिया।
9 इन तीन अफ़सरों में से दूसरी जगह पर इलीअज़र
बिन दोदो बिन अख़ूही आता था। एक जंग में
जब उन्हों ने फ़िलिस्तियों को चैलेंज दिया था और
इस्राईली बाद में पीछे हट गए तो इलीअज़र दाऊद के
साथ 10 फ़िलिस्तियों का मुक़ाबला करता रहा। उस
दिन वह फ़िलिस्तियों को मारते मारते इतना थक गया
कि आख़िरकार तलवार उठा न सका बल्कि हाथ
तलवार के साथ जम गया। रब ने उस की मारिफ़त
बड़ी फ़त्ह बख़्शी। बाक़ी दस्ते सिर्फ़ लाशों को लूटने
के लिए लौट आए।
11 उस के बाद तीसरी जगह पर सम्मा बिन अजी-
हरारी आता था। एक मर्तबा फ़िलिस्ती लही के क़रीब
मसूर के खेत में इस्राईल के ख़िलाफ़ लड़ रहे थे।
इस्राईली फ़ौजी उन के सामने भागने लगे, 12 लेकिन
सम्मा खेत के दरमियान तक बढ़ गया और वहाँ
लड़ते लड़ते फ़िलिस्तियों को शिकस्त दी। रब ने उस
की मारिफ़त बड़ी फ़त्ह बख़्शी।
13–14 एक और जंग के दौरान दाऊद अदुल्लाम के
ग़ार के पहाड़ी क़िले में था जबकि फ़िलिस्ती फ़ौज
ने वादी-ए-रफ़ाईम में अपनी लश्करगाह लगाई थी।
उन के दस्तों ने बैत-लहम पर भी क़ब्ज़ा कर लिया
था। फ़सल का मौसम था। दाऊद के तीस आला
अफ़सरों में से तीन उस से मिलने आए। 15 दाऊद को
शदीद प्यास लगी, और वह कहने लगा, "कौन मेरे

लिए बैत-लहम के दरवाज़े पर के हौज़ से कुछ पानी
लाएगा?” 16 यह सुन कर तीनों अफ़सर फ़िलिस्तियों
की लश्करगाह पर हम्ला करके उस में घुस गए और
लड़ते लड़ते बैत-लहम के हौज़ तक पहुँच गए। उस
से कुछ पानी भर कर वह उसे दाऊद के पास ले
आए। लेकिन उस ने पीने से इन्कार कर दिया बल्कि
उसे क़ुर्बानी के तौर पर उंडेल कर रब को पेश किया
17 और बोला, “रब न करे कि मैं यह पानी पियूँ।
अगर ऐसा करता तो उन आदमियों का ख़ून पीता जो
अपनी जान पर खेल कर पानी लाए हैं।” इस लिए
वह उसे पीना नहीं चाहता था। यह इन तीन सूरमाओं
के ज़बरदस्त कामों की एक मिसाल है।

18–19 योआब बिन ज़रूयाह का भाई अबीशै
मज़कूरा तीन सूरमाओं पर मुक़र्रर था। एक दफ़ा
उस ने अपने नेज़े से 300 आदमियों को मार डाला।
तीनों की निस्बत उस की दुगनी इज़्ज़त की जाती थी,
लेकिन वह ख़ुद उन में गिना नहीं जाता था।

20 बिनायाह बिन यहोयदा भी ज़बरदस्त फ़ौजी था।
वह क़ब्ज़िएल का रहने वाला था, और उस ने बहुत
दफ़ा अपनी मर्दानगी दिखाई। मोआब के दो बड़े
सूरमा उस के हाथों हलाक हुए। एक बार जब बहुत
बर्फ़ पड़ गई तो उस ने एक हौज़ में उतर कर एक
शेरबबर को मार डाला जो उस में गिर गया था।
21 एक और मौक़े पर उस का वास्ता एक देओक़ामत
मिस्री से पड़ा। मिस्री के हाथ में नेज़ा था जबकि
उस के पास सिर्फ़ लाठी थी। लेकिन बिनायाह ने
उस पर हम्ला करके उस के हाथ से नेज़ा छीन लिया
और उसे उस के अपने हथियार से मार डाला।
22 ऐसी बहादुरी दिखाने की बिना पर बिनायाह बिन
यहोयदा मज़कूरा तीन आदमियों के बराबर मश्हूर
हुआ। 23 तीस अफ़सरों के दीगर मर्दों की निस्बत उस
की ज़्यादा इज़्ज़त की जाती थी, लेकिन वह मज़कूरा
तीन आदमियों में गिना नहीं जाता था। दाऊद ने उसे
अपने मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर किया।

24 ज़ैल के आदमी बादशाह के 30 सूरमाओं में
शामिल थे।

योआब का भाई असाहेल, बैत-लहम का
इल्हनान बिन दोदो, 25 सम्मा हरोदी, इलीक़ा
हरोदी, 26 ख़लिस फ़ल्ती, तक़ूअ का ईरा बिन
अक़्क़ीस, 27 अनतोत का अबीअज़र, मबून्नी हूसाती,
28 ज़ल्मोन अख़ूही, महरी नतूफ़ाती, 29 हलिब बिन
बाना नतूफ़ाती, बिनयमीनी शहर जिबिआ का इत्ती
बिन रीबी, 30 बिनायाह फ़िरआतोनी, नहले-जास का
हिद्दी, 31 अबी-अल्बोन अर्बाती, अज़्मावत बर्हूमी,
32–33 इलियह्बा सालबूनी, बनी यसीन, यूनतन
बिन सम्मा हरारी, अख़ीआम बिन सरार-हरारी,
34 इलीफ़लत बिन अहस्बी माकाती, इलीआम बिन
अख़ीतुफ़ल जिलोनी, 35 हस्रो कर्मिली, फ़ारी अर्बी,
36 ज़ोबाह का इजाल बिन नातन, बानी जादी,
37 सिलक़ अम्मोनी, योआब बिन ज़रूयाह का
सिलाहबर्दार नहरी बैरोती, 38 ईरा इत्री, जरीब इत्री
39 और ऊरियाह हित्ती। आदमियों की कुल तादाद
37 थी।

दाऊद की मर्दुमशुमारी

24 1 एक बार फिर रब को इस्राईल पर ग़ुस्सा
आया, और उस ने दाऊद को उन्हें मुसीबत
में डालने पर उकसा कर उस के ज़हन में मर्दुमशुमारी
करने का ख़याल डाल दिया।

2 चुनाँचे दाऊद ने फ़ौज के कमाँडर योआब को
हुक्म दिया, “दान से ले कर बैर-सबा तक इस्राईल के
तमाम क़बीलों में से गुज़रते हुए जंग करने के क़ाबिल
मर्दों को गिन लें ताकि मालूम हो जाए कि उन की
कुल तादाद क्या है।” 3 लेकिन योआब ने एतिराज़
किया, “ऐ बादशाह मेरे आक़ा, काश रब आप का
ख़ुदा आप के देखते देखते फ़ौजियों की तादाद सौ
गुना बढ़ाए। लेकिन मेरे आक़ा और बादशाह उन की
मर्दुमशुमारी क्यूँ करना चाहते हैं?” 4 लेकिन बादशाह
योआब और फ़ौज के बड़े अफ़सरों के एतिराज़ात के
बावुजूद अपनी बात पर डटा रहा। चुनाँचे वह दरबार
से रवाना हो कर इस्राईल के मर्दों की फ़हरिस्त तय्यार
करने लगे।

5 दरया-ए-यर्दन को उबूर करके उन्हों ने अरोईर
और वादी-ए-अर्नोन के बीच के शहर में शुरू किया।
वहाँ से वह जद और याज़ेर से हो कर 6 जिलिआद
और हित्तियों के मुल्क के शहर क़ादिस तक पहुँचे।
फिर आगे बढ़ते बढ़ते वह दान और सैदा के गिर्द-
ओ-नवाह के इलाक़े 7 और क़िलाबन्द शहर सूर और
हिव्वियों और कनआनियों के तमाम शहरों तक
पहुँच गए। आख़िरकार उन्हों ने यहूदाह के जुनूब की
मर्दुमशुमारी बैर-सबा तक की।

8 यूँ पूरे मुल्क में सफ़र करते करते वह 9 महीनों
और 20 दिनों के बाद यरूशलम वापस आए।
9 योआब ने बादशाह को मर्दुमशुमारी की पूरी रिपोर्ट
पेश की। इस्राईल में तलवार चलाने के क़ाबिल 8
लाख अफ़राद थे जबकि यहूदाह के 5 लाख मर्द थे।

10 लेकिन अब दाऊद का ज़मीर उस को मलामत
करने लगा। उस ने रब से दुआ की, "मुझ से संगीन
गुनाह सरज़द हुआ है। ऐ रब, अब अपने ख़ादिम का
क़ुसूर मुआफ़ कर। मुझ से बड़ी हमाक़त हुई है।"

11 अगले दिन जब दाऊद सुब्ह के वक़्त उठा तो
उस के ग़ैबबीन जाद नबी को रब की तरफ़ से पैग़ाम
मिल गया, 12 "दाऊद के पास जा कर उसे बता देना,
'रब तुझे तीन सज़ाएँ पेश करता है। इन में से एक चुन
ले'।" 13 जाद दाऊद के पास गया और उसे रब का
पैग़ाम सुना दिया। उस ने सवाल किया, "आप किस
सज़ा को तर्जीह देते हैं? अपने मुल्क में सात साल के
दौरान काल? या यह कि आप के दुश्मन आप को
भगा कर तीन माह तक आप का ताक़्क़ुब करते रहें?
या यह कि आप के मुल्क में तीन दिन तक वबा फैल
जाए? ध्यान से इस के बारे में सोचें ताकि मैं उसे
आप का जवाब पहुँचा सकूँ जिस ने मुझे भेजा है।"

14 दाऊद ने जवाब दिया, "हाय, मैं क्या कहूँ? मैं
बहुत परेशान हूँ। लेकिन आदमियों के हाथ में पड़ने
की निस्बत बेहतर है कि मैं रब ही के हाथ में पड़
जाऊँ, क्यूँकि उस का रहम अज़ीम है।"

15 तब रब ने इस्राईल में वबा फैलने दी। वह उसी
सुब्ह शुरू हुई और तीन दिन तक लोगों को मौत
के घाट उतारती गई। शिमाल में दान से ले कर
जुनूब में बैर-सबा तक कुल 70,000 अफ़राद हलाक
हुए। 16 लेकिन जब वबा का फ़रिश्ता चलते चलते
यरूशलम तक पहुँच गया और उस पर हाथ उठाने
लगा तो रब ने लोगों की मुसीबत को देख कर
तरस खाया और तबाह करने वाले फ़रिश्ते को हुक्म
दिया, "बस कर! अब बाज़ आ।" उस वक़्त रब का
फ़रिश्ता वहाँ खड़ा था जहाँ अरौनाह यबूसी अपना
अनाज गाहता था।

17 जब दाऊद ने फ़रिश्ते को लोगों को मारते हुए
देखा तो उस ने रब से इल्तिमास की, "मैं ही ने गुनाह
किया है, यह मेरा ही क़ुसूर है। इन भेड़ों से क्या ग़लती
हुई है? बराह-ए-करम इन को छोड़ कर मुझे और मेरे
ख़ानदान को सज़ा दे।"

18 उसी दिन जाद दाऊद के पास आया और उस
से कहा, "अरौनाह यबूसी की गाहने की जगह के
पास जा कर उस पर रब की क़ुर्बानगाह बना ले।"
19 चुनाँचे दाऊद चढ़ कर गाहने की जगह के पास
आया जिस तरह रब ने जाद की मारिफ़त फ़रमाया
था।

20 जब अरौनाह ने बादशाह और उस के दरबारियों
को अपनी तरफ़ चढ़ता हुआ देखा तो वह निकल
कर बादशाह के सामने औंधे मुँह झुक गया। 21 उस
ने पूछा, "मेरे आक़ा और बादशाह मेरे पास क्यूँ आ
गए?" दाऊद ने जवाब दिया, "मैं आप की गाहने
की जगह ख़रीदना चाहता हूँ ताकि रब के लिए
क़ुर्बानगाह तामीर करूँ। क्यूँकि यह करने से वबा
रुक जाएगी।"

22 अरौनाह ने कहा, "मेरे आक़ा और बादशाह,
जो कुछ आप को अच्छा लगे उसे ले कर चढ़ाएँ।
यह बैल भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए हाज़िर
हैं। और अनाज को गाहने और बैलों को जोतने का
सामान क़ुर्बानगाह पर रख कर जला दें। 23 बादशाह
सलामत, मैं ख़ुशी से आप को यह सब कुछ दे देता
हूँ। दुआ है कि आप रब अपने ख़ुदा को पसन्द
आएँ।"

24 लेकिन बादशाह ने इन्कार किया, “नहीं, मैं ज़रूर
हर चीज़ की पूरी क़ीमत अदा करूँगा। मैं रब अपने
ख़ुदा को ऐसी कोई भस्म होने वाली क़ुर्बानी पेश नहीं
करूँगा जो मुझे मुफ़्त में मिल जाए।”

चुनाँचे दाऊद ने बैलों समेत गाहने की जगह चाँदी
के 50 सिक्कों के इवज़ ख़रीद ली। 25 उस ने वहाँ रब
की ताज़ीम में क़ुर्बानगाह तामीर करके उस पर भस्म
होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं। तब
रब ने मुल्क के लिए दुआ सुन कर वबा को रोक
दिया।

१-सलातीन

अदूनियाह की साज़िश

1 1 दाऊद बादशाह बहुत बूढ़ा हो चुका था। उसे
हमेशा सर्दी लगती थी, और उस पर मज़ीद
बिस्तर डालने से कोई फ़ाइदा न होता था। 2 यह देख
कर मुलाज़िमों ने बादशाह से कहा, "अगर इजाज़त
हो तो हम बादशाह के लिए एक नौजवान कुंवारी
ढूँड लें जो आप की ख़िदमत में हाज़िर रहे और
आप की देख-भाल करे। लड़की आप के साथ लेट
कर आप को गर्म रखे।" 3 चुनाँचे वह पूरे मुल्क में
किसी ख़ूबसूरत लड़की की तलाश करने लगे। ढूँडते
ढूँडते अबीशाग शूनीमी को चुन कर बादशाह के पास
लाया गया। 4 अब से वह उस की ख़िदमत में हाज़िर
होती और उस की देख-भाल करती रही। लड़की
निहायत ख़ूबसूरत थी, लेकिन बादशाह ने कभी उस
से सोह्बत न की।

5–6 उन दिनों में अदूनियाह बादशाह बनने की
साज़िश करने लगा। वह दाऊद की बीवी हज्जीत
का बेटा था। यूँ वह अबीसलूम का सौतेला भाई
और उस के मरने पर दाऊद का सब से बड़ा बेटा
था। शक्ल-ओ-सूरत के लिहाज़ से लोग उस की बड़ी
तारीफ़ किया करते थे, और बचपन से उस के बाप
ने उसे कभी नहीं डाँटा था कि तू क्या कर रहा है।
अब अदूनियाह अपने आप को लोगों के सामने पेश
करके एलान करने लगा, "मैं ही बादशाह बनूँगा।"
इस मक़्सद के तहत उस ने अपने लिए रथ और घोड़े
ख़रीद कर 50 आदमियों को रख लिया ताकि वह
जहाँ भी जाए उस के आगे आगे चलते रहें। 7 उस ने
योआब बिन ज़रूयाह और अबियातर इमाम से बात
की तो वह उस के साथी बन कर उस की हिमायत
करने के लिए तय्यार हुए। 8 लेकिन सदोक़ इमाम,
बिनायाह बिन यहोयदा और नातन नबी उस के साथ
नहीं थे, न सिमई, रेई या दाऊद के मुहाफ़िज़।

9 एक दिन अदूनियाह ने ऐन-राजिल चश्मे के क़रीब
की चटान ज़ुहलत के पास ज़ियाफ़त की। काफ़ी
भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और मोटे-ताज़े बछड़े ज़बह
किए गए। अदूनियाह ने बादशाह के तमाम बेटों और
यहूदाह के तमाम शाही अफ़्सरों को दावत दी थी।
10 कुछ लोगों को जान-बूझ कर इस में शामिल नहीं
किया गया था। उन में उस का भाई सुलेमान, नातन
नबी, बिनायाह और दाऊद के मुहाफ़िज़ शामिल थे।

दाऊद सुलेमान को बादशाह क़रार देता है

11 तब नातन सुलेमान की माँ बत-सबा से मिला
और बोला, "क्या यह ख़बर आप तक नहीं पहुँची कि
हज्जीत के बेटे अदूनियाह ने अपने आप को बादशाह
बना लिया है? और हमारे आक़ा दाऊद को इस का
इल्म तक नहीं! 12 आप की और आप के बेटे सुलेमान
की ज़िन्दगी बड़े ख़तरे में है। इस लिए लाज़िम है
कि आप मेरे मश्वरे पर फ़ौरन अमल करें। 13 दाऊद
बादशाह के पास जा कर उसे बता देना, 'ऐ मेरे आक़ा
और बादशाह, क्या आप ने क़सम खा कर मुझ से
वादा नहीं किया था कि तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद
तख़्तनशीन होगा? तो फिर अदूनियाह क्यूँ बादशाह
बन गया है?' 14 आप की बादशाह से गुफ़्तगु अभी
ख़त्म नहीं होगी कि मैं दाख़िल हो कर आप की बात
की तस्दीक़ करूँगा।"

15 बत-सबा फ़ौरन बादशाह के पास गई जो सोने
के कमरे में लेटा हुआ था। उस वक़्त तो वह बहुत
उम्रसीदा हो चुका था, और अबीशाग उस की देख-
भाल कर रही थी। 16 बत-सबा कमरे में दाख़िल हो
कर बादशाह के सामने मुँह के बल झुक गई। दाऊद
ने पूछा, "क्या बात है?" 17 बत-सबा ने कहा, "मेरे

आक़ा, आप ने तो रब अपने ख़ुदा की क़सम खा
कर मुझ से वादा किया था कि तेरा बेटा सुलेमान
मेरे बाद तख़्तनशीन होगा। 18 लेकिन अब अदूनियाह
बादशाह बन बैठा है और मेरे आक़ा और बादशाह
को इस का इल्म तक नहीं। 19 उस ने ज़ियाफ़त के
लिए बहुत से गाय-बैल, मोटे-ताज़े बछड़े और भेड़-
बकरियाँ ज़बह करके तमाम शहज़ादों को दावत दी
है। अबियातर इमाम और फ़ौज का कमाँडर योआब
भी इन में शामिल हैं, लेकिन आप के ख़ादिम सुलेमान
को दावत नहीं मिली। 20 ऐ बादशाह मेरे आक़ा, इस
वक़्त तमाम इस्राईल की आँखें आप पर लगी हैं। सब
आप से यह जानने के लिए तड़पते हैं कि आप के
बाद कौन तख़्तनशीन होगा। 21 अगर आप ने जल्द
ही क़दम न उठाया तो आप के कूच कर जाने के
फ़ौरन बाद मैं और मेरा बेटा अदूनियाह का निशाना
बन कर मुजरिम ठहरेंगे।"

22–23 बत-सबा अभी बादशाह से बात कर ही रही
थी कि दाऊद को इत्तिला दी गई कि नातन नबी
आप से मिलने आया है। नबी कमरे में दाख़िल
हो कर बादशाह के सामने औंधे मुँह झुक गया।
24 फिर उस ने कहा, "मेरे आक़ा, लगता है कि
आप इस हक़ में हैं कि अदूनियाह आप के बाद
तख़्तनशीन हो। 25 क्यूँकि आज उस ने ऐन-राजिल
जा कर बहुत से गाय-बैल, मोटे-ताज़े बछड़े और
भेड़-बकरियों को ज़बह किया है। ज़ियाफ़त के लिए
उस ने तमाम शहज़ादों, तमाम फ़ौजी अफ़सरों और
अबियातर इमाम को दावत दी है। इस वक़्त वह
उस के साथ खाना खा खा कर और मै पी पी कर
नारा लगा रहे हैं, 'अदूनियाह बादशाह ज़िन्दाबाद!'
26 कुछ लोगों को जान-बूझ कर दावत नहीं दी। उन
में मैं आप का ख़ादिम, सदोक़ इमाम, बिनायाह बिन
यहोयदा और आप का ख़ादिम सुलेमान भी शामिल
हैं। 27 मेरे आक़ा, क्या आप ने वाक़ई इस का हुक्म
दिया है? क्या आप ने अपने ख़ादिमों को इत्तिला
दिए बग़ैर फ़ैसला किया है कि यह शख़्स बादशाह
बनेगा?"

28 जवाब में दाऊद ने कहा, "बत-सबा को बुलाएँ!"
वह वापस आई और बादशाह के सामने खड़ी हो
गई। 29 बादशाह बोला, "रब की हयात की क़सम
जिस ने फ़िद्या दे कर मुझे हर मुसीबत से बचाया
है, 30 आप का बेटा सुलेमान मेरे बाद बादशाह होगा
बल्कि आज ही मेरे तख़्त पर बैठ जाएगा। हाँ, आज
ही मैं वह वादा पूरा करूँगा जो मैं ने रब इस्राईल के
ख़ुदा की क़सम खा कर आप से किया था।" 31 यह
सुन कर बत-सबा औंधे मुँह झुक गई और कहा, "मेरा
मालिक दाऊद बादशाह ज़िन्दाबाद!"

32 फिर दाऊद ने हुक्म दिया, "सदोक़ इमाम, नातन
नबी और बिनायाह बिन यहोयदा को बुला लाएँ।"
तीनों आए 33 तो बादशाह उन से मुख़ातिब हुआ,
"मेरे बेटे सुलेमान को मेरे ख़च्चर पर बिठाएँ। फिर
मेरे अफ़सरों को साथ ले कर उसे जैहून चश्मे तक
पहुँचा दें। 34 वहाँ सदोक़ और नातन उसे मसह करके
इस्राईल का बादशाह बना दें। नरसिंगे को बजा बजा
कर नारा लगाना, 'सुलेमान बादशाह ज़िन्दाबाद!'
35 इस के बाद मेरे बेटे के साथ यहाँ वापस आ जाना।
वह महल में दाख़िल हो कर मेरे तख़्त पर बैठ जाए
और मेरी जगह हुकूमत करे, क्यूँकि मैं ने उसे इस्राईल
और यहूदाह का हुक्मरान मुक़र्रर किया है।"

36 बिनायाह बिन यहोयदा ने जवाब दिया, "आमीन,
ऐसा ही हो! रब मेरे आक़ा का ख़ुदा इस फ़ैसले पर
अपनी बरकत दे। 37 और जिस तरह रब आप के साथ
रहा उसी तरह वह सुलेमान के साथ भी हो, बल्कि
वह उस के तख़्त को आप के तख़्त से कहीं ज़्यादा
सरबुलन्द करे!" 38 फिर सदोक़ इमाम, नातन नबी,
बिनायाह बिन यहोयदा और बादशाह के मुहाफ़िज़
करेतियों और फ़लेतियों ने सुलेमान को बादशाह के
ख़च्चर पर बिठा कर उसे जैहून चश्मे तक पहुँचा
दिया। 39 सदोक़ के पास तेल से भरा मेंढे का वह
सींग था जो मुक़द्दस ख़ैमे में पड़ा रहता था। अब
उस ने यह तेल ले कर सुलेमान को मसह किया।
फिर नरसिंगा बजाया गया और लोग मिल कर नारा
लगाने लगे, "सुलेमान बादशाह ज़िन्दाबाद! सुलेमान

बादशाह ज़िन्दाबाद!” 40 तमाम लोग बाँसरी बजाते
और ख़ुशी मनाते हुए सुलेमान के पीछे चलने लगे।
जब वह दुबारा यरूशलम में दाख़िल हुआ तो इतना
शोर था कि ज़मीन लरज़ उठी।

अदूनियाह की शिकस्त

41 लोगों की यह आवाज़ें अदूनियाह और उस के
मेहमानों तक भी पहुँच गईं। थोड़ी देर पहले वह
खाने से फ़ारिग़ हुए थे। नरसिंगे की आवाज़ सुन कर
योआब चौंक उठा और पूछा, “यह क्या है? शहर
से इतना शोर क्यूँ सुनाई दे रहा है?” 42 वह अभी
यह बात कर ही रहा था कि अबियातर का बेटा
यूनतन पहुँच गया। योआब बोला, “हमारे पास आएँ।
आप जैसे लाइक़ आदमी अच्छी ख़बर ले कर आ रहे
होंगे।”

43 यूनतन ने जवाब दिया, “अफ़्सोस, ऐसा नहीं है।
हमारे आक़ा दाऊद बादशाह ने सुलेमान को बादशाह
बना दिया है। 44 उस ने उसे सदोक़ इमाम, नातन नबी,
बिनायाह बिन यहोयदा और बादशाह के मुहाफ़िज़
करेतियों और फ़लेतियों के साथ जैहून चश्मे के पास
भेज दिया है। सुलेमान बादशाह के ख़च्चर पर सवार
था। 45 जैहून चश्मे के पास सदोक़ इमाम और नातन
नबी ने उसे मसह करके बादशाह बना दिया। फिर वह
ख़ुशी मनाते हुए शहर में वापस चले गए। पूरे शहर
में हलचल मच गई। यही वह शोर है जो आप को
सुनाई दे रहा है। 46 अब सुलेमान तख़्त पर बैठ चुका
है, 47 और दरबारी हमारे आक़ा दाऊद बादशाह को
मुबारकबाद देने के लिए उस के पास पहुँच गए हैं।
वह कह रहे हैं, ‘आप का ख़ुदा करे कि सुलेमान का
नाम आप के नाम से भी ज़्यादा मश्हूर हो जाए। उस
का तख़्त आप के तख़्त से कहीं ज़्यादा सरबुलन्द
हो।’ बादशाह ने अपने बिस्तर पर झुक कर अल्लाह
की परस्तिश की 48 और कहा, ‘रब इस्राईल के ख़ुदा
की तम्जीद हो जिस ने मेरे बेटों में से एक को मेरी
जगह तख़्त पर बिठा दिया है। उस का शुक्र है कि मैं
अपनी आँखों से यह देख सका’।”

49 यूनतन के मुँह से यह ख़बर सुन कर अदूनियाह
के तमाम मेहमान घबरा गए। सब उठ कर चारों तरफ़
मुन्तशिर हो गए। 50 अदूनियाह सुलेमान से ख़ौफ़ खा
कर मुक़द्दस ख़ैमे के पास गया और क़ुर्बानगाह के
सींगों से लिपट गया। 51 किसी ने सुलेमान के पास
जा कर उसे इत्तिला दी, “अदूनियाह को सुलेमान
बादशाह से ख़ौफ़ है, इस लिए वह क़ुर्बानगाह के
सींगों से लिपटे हुए कह रहा है, ‘सुलेमान बादशाह
पहले क़सम खाए कि वह मुझे मौत के घाट नहीं
उतारेगा’।” 52 सुलेमान ने वादा किया, “अगर वह
लाइक़ साबित हो तो उस का एक बाल भी बीका
नहीं होगा। लेकिन जब भी उस में बदी पाई जाए वह
ज़रूर मरेगा।”

53 सुलेमान ने अपने लोगों को अदूनियाह के पास
भेज दिया ताकि वह उसे बादशाह के पास पहुँचाएँ।
अदूनियाह आया और सुलेमान के सामने औंधे मुँह
झुक गया। सुलेमान बोला, “अपने घर चले जाओ!”

दाऊद की आख़िरी हिदायात

2 1 जब दाऊद को महसूस हुआ कि कूच कर जाने
का वक़्त क़रीब है तो उस ने अपने बेटे सुलेमान
को हिदायत की, 2 “अब मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ
दुनिया के हर शख़्स को जाना होता है। चुनाँचे मज़बूत
हों और मर्दानगी दिखाएँ। 3 जो कुछ रब आप का
ख़ुदा आप से चाहता है वह करें और उस की राहों पर
चलते रहें। अल्लाह की शरीअत में दर्ज हर हुक्म और
हिदायत पर पूरे तौर पर अमल करें। फिर जो कुछ भी
करेंगे और जहाँ भी जाएंगे आप को कामयाबी नसीब
होगी। 4 फिर रब मेरे साथ अपना वादा पूरा करेगा।
क्यूँकि उस ने फ़रमाया है, ‘अगर तेरी औलाद अपने
चाल-चलन पर ध्यान दे कर पूरे दिल-ओ-जान से मेरी
वफ़ादार रहे तो इस्राईल पर उस की हुकूमत हमेशा
तक क़ाइम रहेगी।’

5 दो एक और बातें भी हैं। आप को ख़ूब मालूम है
कि योआब बिन ज़रूयाह ने मेरे साथ कैसा सुलूक
किया है। इस्राईल के दो कमाँडरों अबिनैर बिन नैर

और अमासा बिन यतर को उस ने क़त्ल किया। जब
जंग नहीं थी उस ने जंग का ख़ून बहा कर अपनी पेटी
और जूतों को बेक़ुसूर ख़ून से आलूदा कर लिया है।
6 उस के साथ वह कुछ करें जो आप को मुनासिब
लगे। योआब बूढ़ा तो है, लेकिन ध्यान दें कि वह
तबई मौत न मरे। 7 ताहम बर्ज़िल्ली जिलिआदी के बेटों
पर मेहरबानी करें। वह आप की मेज़ के मुस्तक़िल
मेहमान रहें, क्यूँकि उन्हों ने मेरे साथ भी ऐसा ही
सुलूक किया जब मैं ने आप के भाई अबीसलूम
की वजह से यरूशलम से हिज्रत की। 8 बहूरीम के
बिनयमीनी सिमई बिन जीरा पर भी ध्यान दें। जिस
दिन मैं हिज्रत करते हुए महनाइम से गुज़र रहा था
तो उस ने मुझ पर लानतें भेजीं। लेकिन मेरी वापसी
पर वह दरया-ए-यर्दन पर मुझ से मिलने आया और
मैं ने रब की क़सम खा कर उस से वादा किया कि
उसे मौत के घाट नहीं उतारूँगा। 9 लेकिन आप उस
का जुर्म नज़रअन्दाज़ न करें बल्कि उस की मुनासिब
सज़ा दें। आप दानिशमन्द हैं, इस लिए आप ज़रूर
सज़ा देने का कोई न कोई तरीक़ा ढूँड निकालेंगे।
वह बूढ़ा तो है, लेकिन ध्यान दें कि वह तबई मौत न
मरे।"

10 फिर दाऊद मर कर अपने बापदादा से जा मिला।
उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न किया गया जो
'दाऊद का शहर' कहलाता है। 11 वह कुल 40 साल
तक इस्राईल का बादशाह रहा, सात साल हब्रून में
और 33 साल यरूशलम में। 12 सुलेमान अपने बाप
दाऊद के बाद तख़्तनशीन हुआ। उस की हुकूमत
मज़बूती से क़ाइम हुई।

अदूनियाह की मौत

13 एक दिन दाऊद की बीवी हज्जीत का बेटा
अदूनियाह सुलेमान की माँ बत-सबा के पास आया।
बत-सबा ने पूछा, "क्या आप अम्नपसन्द इरादा रख
कर आए हैं?" अदूनियाह बोला, "जी, 14 बल्कि मेरी
आप से गुज़ारिश है।"

बत-सबा ने जवाब दिया, "तो फिर बताएँ!"
15 अदूनियाह ने कहा, "आप तो जानती हैं कि
असल में बादशाह बनने का हक़ मेरा था। और यह
तमाम इस्राईल की तवक़्क़ो भी थी। लेकिन अब
तो हालात बदल गए हैं। मेरा भाई बादशाह बन
गया है, क्यूँकि यही रब की मर्ज़ी थी। 16 अब मेरी
आप से दरख़्वास्त है। इस से इन्कार न करें।" बत-
सबा बोली, "बताएँ।" 17 अदूनियाह ने कहा, "मैं
अबीशाग शूनीमी से शादी करना चाहता हूँ। बराह-ए-
करम सुलेमान बादशाह के सामने मेरी सिफ़ारिश करें
ताकि बात बन जाए। अगर आप बात करें तो वह
इन्कार नहीं करेगा।" 18 बत-सबा राज़ी हुई, "चलें,
ठीक है। मैं आप का यह मुआमला बादशाह को पेश
करूँगी।"

19 चुनाँचे बत-सबा सुलेमान बादशाह के पास गई
ताकि उसे अदूनियाह का मुआमला पेश करे। जब
दरबार में पहुँची तो बादशाह उठ कर उस से मिलने
आया और उस के सामने झुक गया। फिर वह दुबारा
तख़्त पर बैठ गया और हुक्म दिया कि माँ के लिए
भी तख़्त रखा जाए। बादशाह के दहने हाथ बैठ कर
20 उस ने अपना मुआमला पेश किया, "मेरी आप से
एक छोटी सी गुज़ारिश है। इस से इन्कार न करें।"
बादशाह ने जवाब दिया, "अम्मी, बताएँ अपनी बात,
मैं इन्कार नहीं करूँगा।" 21 बत-सबा बोली, "अपने
भाई अदूनियाह को अबीशाग शूनीमी से शादी करने
दें।"

22 यह सुन कर सुलेमान भड़क उठा, "अदूनियाह
की अबीशाग से शादी!! यह कैसी बात है जो आप
पेश कर रही हैं? अगर आप यह चाहती हैं तो क्यूँ न
बराह-ए-रास्त तक़ाज़ा करें कि अदूनियाह मेरी जगह
तख़्त पर बैठ जाए। आख़िर वह मेरा बड़ा भाई है,
और अबियातर इमाम और योआब बिन ज़रूयाह भी
उस का साथ दे रहे हैं।" 23 फिर सुलेमान बादशाह
ने रब की क़सम खा कर कहा, "इस दरख़्वास्त से
अदूनियाह ने अपनी मौत पर मुहर लगाई है। अल्लाह
मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं उसे मौत के घाट न

उतारूँ। 24 रब की क़सम जिस ने मेरी तस्दीक़ करके
मुझे मेरे बाप दाऊद के तख़्त पर बिठा दिया और
अपने वादे के मुताबिक़ मेरे लिए घर तामीर किया है,
अदूनियाह को आज ही मरना है!”
25 फिर सुलेमान बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा
को हुक्म दिया कि वह अदूनियाह को मौत के घाट
उतार दे। चुनाँचे वह निकला और उसे मार डाला।

योआब और अबियातर की सज़ा

26 अबियातर इमाम से बादशाह ने कहा, “अब
यहाँ से चले जाएँ। अनतोत में अपने घर में रहें और
वहाँ अपनी ज़मीनें सँभालें। गो आप सज़ा-ए-मौत के
लाइक़ हैं तो भी मैं इस वक़्त आप को नहीं मार दूँगा,
क्यूँकि आप मेरे बाप दाऊद के सामने रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ के अह्द का सन्दूक़ उठाए हर जगह उन के
साथ गए। आप मेरे बाप के तमाम तक्लीफ़दिह और
मुश्किलतरीन लमहात में शरीक रहे हैं।” 27 यह कह
कर सुलेमान ने अबियातर का रब के हुज़ूर इमाम की
ख़िदमत सरअन्जाम देने का हक़ मन्सूख़ कर दिया।
यूँ रब की वह पेशगोई पूरी हुई जो उस ने सैला में
एली के घराने के बारे में की थी।
28 योआब को जल्द ही पता चला कि अदूनियाह
और अबियातर से क्या कुछ हुआ है। वह अबीसलूम
की साज़िशों में तो शरीक नहीं हुआ था लेकिन बाद में
अदूनियाह का साथी बन गया था। इस लिए अब वह
भाग कर रब के मुक़द्दस ख़ैमे में दाख़िल हुआ और
क़ुर्बानगाह के सींगों को पकड़ लिया। 29 सुलेमान
बादशाह को इत्तिला दी गई, “योआब भाग कर रब
के मुक़द्दस ख़ैमे में गया है। अब वह वहाँ क़ुर्बानगाह
के पास खड़ा है।” यह सुन कर सुलेमान ने बिनायाह
बिन यहोयदा को हुक्म दिया, “जाओ, योआब को
मार दो!”
30 बिनायाह रब के ख़ैमे में जा कर योआब से
मुख़ातिब हुआ, “बादशाह फ़रमाता है कि ख़ैमे से
निकल आओ!” लेकिन योआब ने जवाब दिया,
“नहीं, अगर मरना है तो यहीं मरूँगा।” बिनायाह
बादशाह के पास वापस आया और उसे योआब
का जवाब सुनाया। 31 तब बादशाह ने हुक्म दिया,
“चलो, उस की मर्ज़ी! उसे वहीं मार कर दफ़न कर
दो ताकि मैं और मेरे बाप का घराना उन क़त्लों के
जवाबदिह न ठहरें जो उस ने बिलावजह किए हैं।
32 रब उसे उन दो आदमियों के क़त्ल की सज़ा दे
जो उस से कहीं ज़्यादा शरीफ़ और अच्छे थे यानी
इस्राईली फ़ौज का कमाँडर अबिनैर बिन नैर और
यहूदाह की फ़ौज का कमाँडर अमासा बिन यतर।
योआब ने दोनों को तलवार से मार डाला, हालाँकि
मेरे बाप को इस का इल्म नहीं था। 33 योआब और
उस की औलाद हमेशा तक इन क़त्लों के क़ुसूरवार
ठहरें। लेकिन रब दाऊद, उस की औलाद, घराने और
तख़्त को हमेशा तक सलामती अता करे।”
34 तब बिनायाह ने मुक़द्दस ख़ैमे में जा कर योआब
को मार दिया। उसे यहूदाह के बयाबान में उस की
अपनी ज़मीन में दफ़ना दिया गया। 35 योआब की
जगह बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा को फ़ौज
का कमाँडर बना दिया। अबियातर का उह्दा उस ने
सदोक़ इमाम को दे दिया।

सिमई की मौत

36 इस के बाद बादशाह ने सिमई को बुला कर
उसे हुक्म दिया, “यहाँ यरूशलम में अपना घर बना
कर रहना। आइन्दा आप को शहर से निकलने की
इजाज़त नहीं है, ख़्वाह आप कहीं भी जाना चाहें।
37 यक़ीन जानें कि जूँ ही आप शहर के दरवाज़े से
निकल कर वादी-ए-क़िद्रोन को पार करेंगे तो आप
को मार दिया जाएगा। तब आप ख़ुद अपनी मौत के
ज़िम्मादार ठहरेंगे।” 38 सिमई ने जवाब दिया, “ठीक
है, जो कुछ मेरे आक़ा ने फ़रमाया है मैं करूँगा।”
सिमई देर तक बादशाह के हुक्म के मुताबिक़
यरूशलम में रहा। 39 तीन साल यूँ ही गुज़र गए।
लेकिन एक दिन उस के दो ग़ुलाम भाग गए। चलते
चलते वह जात के बादशाह अकीस बिन माका के
पास पहुँच गए। किसी ने सिमई को इत्तिला दी, “आप

के ग़ुलाम जात में ठहरे हुए हैं।” 40 वह फ़ौरन अपने
गधे पर ज़ीन कस कर ग़ुलामों को ढूँडने के लिए जात
में अकीस के पास चला गया। दोनों ग़ुलाम अब तक
वहीं थे तो सिमई उन्हें पकड़ कर यरूशलम वापस
ले आया।
41 सुलेमान को ख़बर मिली कि सिमई जात जा कर
लौट आया है। 42 तब उस ने उसे बुला कर पूछा,
“क्या मैं ने आप को आगाह करके नहीं कहा था कि
यक़ीन जानें कि जूँ ही आप यरूशलम से निकलेंगे
आप को मार दिया जाएगा, ख़्वाह आप कहीं भी
जाना चाहें। और क्या आप ने जवाब में रब की
क़सम खा कर नहीं कहा था, ‘ठीक है, मैं ऐसा ही
करूँगा?’ 43 लेकिन अब आप ने अपनी क़सम तोड़
कर मेरे हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की है। यह आप ने
क्यूँ किया है?” 44 फिर बादशाह ने कहा, “आप ख़ूब
जानते हैं कि आप ने मेरे बाप दाऊद के साथ कितना
बुरा सुलूक किया। अब रब आप को इस की सज़ा
देगा। 45 लेकिन सुलेमान बादशाह को वह बरकत
देता रहेगा, और दाऊद का तख़्त रब के हुज़ूर अबद
तक क़ाइम रहेगा।”
46 फिर बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा को हुक्म
दिया कि वह सिमई को मार दे। बिनायाह ने उसे
बाहर ले जा कर तलवार से मार दिया। यूँ सुलेमान
की इस्राईल पर हुकूमत मज़बूत हो गई।

सुलेमान रब से हिक्मत माँगता है

3 1 सुलेमान फ़िरऔन की बेटी से शादी करके
मिस्री बादशाह का दामाद बन गया। शुरू में उस
की बीवी शहर के उस हिस्से में रहती थी जो ‘दाऊद
का शहर’ कहलाता था। क्यूँकि उस वक़्त नया महल,
रब का घर और शहर की फ़सील ज़ेर-ए-तामीर थे।
2 उन दिनों में रब के नाम का घर तामीर नहीं हुआ
था, इस लिए इस्राईली अपनी क़ुर्बानियाँ मुख़्तलिफ़
ऊँची जगहों पर चढ़ाते थे। 3 सुलेमान रब से प्यार
करता था और इस लिए अपने बाप दाऊद की तमाम
हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता था। लेकिन
वह भी जानवरों की अपनी क़ुर्बानियाँ और बख़ूर ऐसे
ही मक़ामों पर रब को पेश करता था।
4 एक दिन बादशाह जिबऊन गया और वहाँ भस्म
होने वाली 1,000 क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं, क्यूँकि उस शहर
की ऊँची जगह क़ुर्बानियाँ चढ़ाने का सब से अहम
मर्कज़ थी। 5 जब वह वहाँ ठहरा हुआ था तो रब
ख़्वाब में उस पर ज़ाहिर हुआ और फ़रमाया, “तेरा
दिल क्या चाहता है? मुझे बता दे तो मैं तेरी ख़्वाहिश
पूरी करूँगा।”
6 सुलेमान ने जवाब दिया, “तू मेरे बाप दाऊद पर
बड़ी मेहरबानी कर चुका है। वजह यह थी कि तेरा
ख़ादिम वफ़ादारी, इन्साफ़ और ख़ुलूसदिली से तेरे
हुज़ूर चलता रहा। तेरी उस पर मेहरबानी आज तक
जारी रही है, क्यूँकि तू ने उस का बेटा उस की जगह
तख़्तनशीन कर दिया है। 7 ऐ रब मेरे ख़ुदा, तू ने अपने
ख़ादिम को मेरे बाप दाऊद की जगह तख़्त पर बिठा
दिया है। लेकिन मैं अभी छोटा बच्चा हूँ जिसे अपनी
ज़िम्मादारियाँ सहीह तौर पर सँभालने का तजरिबा
नहीं हुआ। 8 तो भी तेरे ख़ादिम को तेरी चुनी हुई क़ौम
के बीच में खड़ा किया गया है, इतनी अज़ीम क़ौम
के दरमियान कि उसे गिना नहीं जा सकता। 9 चुनाँचे
मुझे सुनने वाला दिल अता फ़रमा ताकि मैं तेरी क़ौम
का इन्साफ़ करूँ और सहीह और ग़लत बातों में
इम्तियाज़ कर सकूँ। क्यूँकि कौन तेरी इस अज़ीम
क़ौम का इन्साफ़ कर सकता है?”
10 सुलेमान की यह दरख़्वास्त रब को पसन्द आई,
11 इस लिए उस ने जवाब दिया, “मैं ख़ुश हूँ कि तू ने
न उम्र की दराज़ी, न दौलत और न अपने दुश्मनों की
हलाकत बल्कि इम्तियाज़ करने की सलाहियत माँगी
है ताकि सुन कर इन्साफ़ कर सके। 12 इस लिए मैं
तेरी दरख़्वास्त पूरी करके तुझे इतना दानिशमन्द और
समझदार बना दूँगा कि उतना न माज़ी में कोई था, न
मुस्तक़बिल में कभी कोई होगा। 13 बल्कि तुझे वह
कुछ भी दे दूँगा जो तू ने नहीं माँगा, यानी दौलत और
इज़्ज़त। तेरे जीते जी कोई और बादशाह तेरे बराबर
नहीं पाया जाएगा। 14 अगर तू मेरी राहों पर चलता

रहे और अपने बाप दाऊद की तरह मेरे अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे तो फिर मैं तेरी उम्र दराज़ करूँगा।”

15 सुलेमान जाग उठा तो मालूम हुआ कि मैं ने ख़्वाब देखा है। वह यरूशलम को वापस चला गया और रब के अह्द के सन्दूक़ के सामने खड़ा हुआ। वहाँ उस ने भस्म होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश कीं, फिर बड़ी ज़ियाफ़त की जिस में तमाम दरबारी शरीक हुए।

दो कस्बियों के बच्चे के बारे में सुलेमान का फ़ैसला

16 एक दिन दो कस्बियाँ बादशाह के पास आईं। 17 एक बात करने लगी, “मेरे आक़ा, हम दोनों एक ही घर में बसती हैं। कुछ देर पहले इस की मौजूदगी में घर में मेरे बच्चा पैदा हुआ। 18 दो दिन के बाद इस के भी बचा हुआ। हम अकेली ही थीं, हमारे सिवा घर में कोई और नहीं था। 19 एक रात को मेरी साथी का बच्चा मर गया। माँ ने सोते में करवटें बदलते बदलते अपने बच्चे को दबा दिया था। 20 रातों रात इसे मालूम हुआ कि बेटा मर गया है। मैं अभी गहरी नींद सो रही थी। यह देख कर इस ने मेरे बच्चे को उठाया और अपने मुर्दे बेटे को मेरी गोद में रख दिया। फिर वह मेरे बेटे के साथ सो गई। 21 सुब्ह के वक़्त जब मैं अपने बेटे को दूध पिलाने के लिए उठी तो देखा कि उस से जान निकल गई है। लेकिन जब दिन मज़ीद चढ़ा और मैं ग़ौर से उसे देख सकी तो क्या देखती हूँ कि यह वह बच्चा नहीं है जिसे मैं ने जन्म दिया है!”

22 दूसरी औरत ने उस की बात काट कर कहा, “हरगिज़ नहीं! यह झूट है। मेरा बेटा ज़िन्दा है और तेरा तो मर गया है।” पहली औरत चीख़ उठी, “कभी भी नहीं! ज़िन्दा बच्चा मेरा और मुर्दा बच्चा तेरा है।” ऐसी बातें करते करते दोनों बादशाह के सामने झगड़ती रहीं।

23 फिर बादशाह बोला, “सीधी सी बात यह है कि दोनों ही दावा करती हैं कि ज़िन्दा बच्चा मेरा है और मुर्दा बच्चा दूसरी का है। 24 ठीक है, फिर मेरे पास तलवार ले आएँ!” उस के पास तलवार लाई गई। 25 तब उस ने हुक्म दिया, “ज़िन्दा बच्चे को बराबर के दो हिस्सों में काट कर हर औरत को एक एक हिस्सा दे दें।” 26 यह सुन कर बच्चे की हक़ीक़ी माँ ने जिस का दिल अपने बेटे के लिए तड़पता था बादशाह से इल्तिमास की, “नहीं मेरे आक़ा, उसे मत मारें! बराह-ए-करम उसे इसी को दे दीजिए।”

लेकिन दूसरी औरत बोली, “ठीक है, उसे काट दें। अगर यह मेरा नहीं होगा तो कम अज़ कम तेरा भी नहीं होगा।”

27 यह देख कर बादशाह ने हुक्म दिया, “रुकें! बच्चे पर तलवार मत चलाएँ बल्कि उसे पहली औरत को दे दें जो चाहती है कि ज़िन्दा रहे। वही उस की माँ है।” 28 जल्द ही सुलेमान के इस फ़ैसले की ख़बर पूरे मुल्क में फैल गई, और लोगों पर बादशाह का ख़ौफ़ छा गया, क्यूँकि उन्हों ने जान लिया कि अल्लाह ने उसे इन्साफ़ करने की ख़ास हिक्मत अता की है।

सुलेमान के सरकारी अफ़सरों की फ़हरिस्त

4 1 अब सुलेमान पूरे इस्राईल पर हुकूमत करता था। 2 यह उस के आला अफ़सर थे :

इमाम-ए-आज़म : अज़रियाह बिन सदोक़,

3 मीरमुन्शी : सीसा के बेटे इलीहूरिफ़ और अख़ियाह,

बादशाह का मुशीर-ए-ख़ास : यहूसफ़त बिन अख़ीलूद,

4 फ़ौज का कमाँडर : बिनायाह बिन यहोयदा,

इमाम : सदोक़ और अबियातर,

5 ज़िलओं पर मुक़र्रर अफ़सरों का सरदार : अज़रियाह बिन नातन,

बादशाह का क़रीबी मुशीर : इमाम ज़बूद बिन नातन,

6 महल का इंचार्ज : अख़ीसर,

बेगारियों का इंचार्ज : अदूनीराम बिन अब्दा

7 सुलेमान ने मुल्क-ए-इस्राईल को बारह ज़िलओं में तक़्सीम करके हर ज़िला पर एक अफ़सर मुक़र्रर

किया था। इन अफ़सरों की एक ज़िम्मादारी यह थी
कि दरबार की ज़रूरियात पूरी करें। हर अफ़सर को
साल में एक माह की ज़रूरियात पूरी करनी थीं।
8 दर्ज-ए-ज़ैल इन अफ़सरों और उन के इलाक़ों की
फ़हरिस्त है। बिन हूर : इफ़्राईम का पहाड़ी इलाक़ा,
9 बिन दिक़र : मक़स, साल्बीम, बैत-शम्स और
ऐलोन-बैत-हनान,
10 बिन हसद : अरुब्बोत, सोका और हिफ़र का
इलाक़ा,
11 सुलेमान की बेटी ताफ़त का शौहर बिन
अबीनदाब : साहिली शहर दोर का पहाड़ी इलाक़ा,
12 बाना बिन अख़ीलूद : तानक, मजिद्दो और उस
बैत-शान का पूरा इलाक़ा जो ज़र्तान के पड़ोस में
यज़्रएल के नीचे वाक़े है, नीज़ बैत-शान से ले
कर अबील-महूला तक का पूरा इलाक़ा बशमूल
युक़्मिआम,
13 बिन जबर : जिलिआद में रामात का इलाक़ा
बशमूल याईर बिन मनस्सी की बस्तियाँ, फिर बसन
में अर्जूब का इलाक़ा। इस में 60 ऐसे फ़सीलदार शहर
शामिल थे जिन के दरवाज़ों पर पीतल के कुंडे लगे
थे,
14 अख़ीनदाब बिन इद्दू : महनाइम,
15 सुलेमान की बेटी बासमत का शौहर अख़ीमाज़
: नफ़्ताली का क़बाइली इलाक़ा,
16 बाना बिन हूसी : आशर का क़बाइली इलाक़ा
और बालोत,
17 यहूसफ़त बिन फ़रूह : इश्कार का क़बाइली
इलाक़ा,
18 सिमई बिन ऐला : बिनयमीन का क़बाइली
इलाक़ा,
19 जबर बिन ऊरी जिलिआद का वह इलाक़ा जिस
पर पहले अमोरी बादशाह सीहोन और बसन के
बादशाह ओज की हुकूमत थी। इस पूरे इलाक़े पर
सिर्फ़ यही एक अफ़सर मुक़र्रर था।

सुलेमान की हुकूमत की अज़मत

20 उस ज़माने में इस्राईल और यहूदाह के लोग
साहिल की रेत की मानिन्द बेशुमार थे। लोगों को
खाने और पीने की सब चीज़ें दस्तयाब थीं, और वह
ख़ुश थे।
21 सुलेमान दरया-ए-फ़ुरात से ले कर फ़िलिस्तियों
के इलाक़े और मिस्री सरहद तक तमाम ममालिक
पर हुकूमत करता था। उस के जीते जी यह ममालिक
उस के ताबे रहे और उसे ख़राज देते थे।
22 सुलेमान के दरबार की रोज़ाना ज़रूरियात यह
थीं : तक़रीबन 5,000 किलोग्राम बारीक मैदा,
तक़रीबन 10,000 किलोग्राम आम मैदा, 23 10 मोटे-
ताज़े बैल, चरागाहों में पले हुए 20 आम बैल, 100
भेड़-बकरियाँ, और इस के इलावा हिरन, ग़ज़ाल, मृग
और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मोटे-ताज़े मुर्ग़।
24 जितने ममालिक दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिब में थे
उन सब पर सुलेमान की हुकूमत थी, यानी तिफ़्सह
से ले कर ग़ज़्ज़ा तक। किसी भी पड़ोसी मुल्क से
उस का झगड़ा नहीं था, बल्कि सब के साथ सुलह
थी। 25 उस के जीते जी पूरे यहूदाह और इस्राईल में
सुलह-सलामती रही। शिमाल में दान से ले कर जुनूब
में बैर-सबा तक हर एक सलामती से अंगूर की अपनी
बेल और अन्जीर के अपने दरख़्त के साय में बैठ
सकता था।
26 अपने रथों के घोड़ों के लिए सुलेमान ने 4,000
थान बनवाए। उस के 12,000 घोड़े थे। 27 बारह
ज़िलओं पर मुक़र्रर अफ़सर बाक़ाइदगी से सुलेमान
बादशाह और उस के दरबार की ज़रूरियात पूरी
करते रहे। हर एक को साल में एक माह के लिए सब
कुछ मुहय्या करना था। उन की मेहनत की वजह से
दरबार में कोई कमी न हुई। 28 बादशाह की हिदायत
के मुताबिक़ वह रथों के घोड़ों और दूसरे घोड़ों के
लिए दरकार जौ और भूसा बराह-ए-रास्त उन के थानों
तक पहुँचाते थे।

29 अल्लाह ने सुलेमान को बहुत ज़्यादा हिक्मत और
समझ अता की। उसे साहिल की रेत जैसा वसी इल्म
हासिल हुआ। 30 उस की हिक्मत इस्राईल के मशरिक़
में रहने वाले और मिस्र के आलिमों से कहीं ज़्यादा
थी। 31 इस लिहाज़ से कोई भी उस के बराबर नहीं
था। वह ऐतान इज़्राही और महोल के बेटों हैमान,
कल्कूल और दर्दा पर भी सब्क़त ले गया था। उस
की शुहरत इर्दगिर्द के तमाम ममालिक में फैल गई।
32 उस ने 3,000 कहावतें और 1,005 गीत लिख
दिए। 33 वह तफ़्सील से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के पौदों के
बारे में बात कर सकता था, लुबनान में देवदार के बड़े
दरख़्त से ले कर छोटे पौदे ज़ूफ़ा तक जो दीवार की
दराड़ों में उगता है। वह महारत से चौपाइयों, परिन्दों,
रेंगने वाले जानवरों और मछलियों की तफ़्सीलात भी
बयान कर सकता था। 34 चुनाँचे तमाम ममालिक के
बादशाहों ने अपने सफ़ीरों को सुलेमान के पास भेज
दिया ताकि उस की हिक्मत सुनें।

हीराम बादशाह के साथ सुलेमान का मुआहदा

5 1 सूर का बादशाह हीराम हमेशा दाऊद का
अच्छा दोस्त रहा था। जब उसे ख़बर मिली कि
दाऊद के बाद सुलेमान को मसह करके बादशाह
बनाया गया है तो उस ने अपने सफ़ीरों को उसे
मुबारकबाद देने के लिए भेज दिया। 2 तब सुलेमान
ने हीराम को पैग़ाम भेजा, 3 "आप जानते हैं कि मेरे
बाप दाऊद रब अपने ख़ुदा के नाम के लिए घर तामीर
करना चाहते थे। लेकिन यह उन के बस की बात नहीं
थी, क्यूँकि उन के जीते जी इर्दगिर्द के ममालिक उन
से जंग करते रहे। गो रब ने दाऊद को तमाम दुश्मनों
पर फ़त्ह बख़्शी थी, लेकिन लड़ते लड़ते वह रब का
घर न बना सके। 4 अब हालात फ़र्क़ हैं : रब मेरे ख़ुदा
ने मुझे पूरा सुकून अता किया है। चारों तरफ़ न कोई
मुख़ालिफ़ नज़र आता है, न कोई ख़तरा। 5 इस लिए
मैं रब अपने ख़ुदा के नाम के लिए घर तामीर करना
चाहता हूँ। क्यूँकि मेरे बाप दाऊद के जीते जी रब
ने उन से वादा किया था, 'तेरे जिस बेटे को मैं तेरे
बाद तख़्त पर बिठाऊँगा वही मेरे नाम के लिए घर
बनाएगा।' 6 अब गुज़ारिश है कि आप के लकड़हारे
लुबनान में मेरे लिए देवदार के दरख़्त काट दें। मेरे
लोग उन के साथ मिल कर काम करेंगे। आप के
लोगों की मज़दूरी मैं ही अदा करूँगा। जो कुछ भी
आप कहेंगे मैं उन्हें दूँगा। आप तो ख़ूब जानते हैं कि
हमारे हाँ सैदा के लक्कड़हारों जैसे माहिर नहीं हैं।"
7 जब हीराम को सुलेमान का पैग़ाम मिला तो वह
बहुत ख़ुश हो कर बोल उठा, "आज रब की हम्द
हो जिस ने दाऊद को इस बड़ी क़ौम पर हुकूमत
करने के लिए इतना दानिशमन्द बेटा अता किया है!"
8 सुलेमान को हीराम ने जवाब भेजा, "मुझे आप का
पैग़ाम मिल गया है, और मैं आप की ज़रूर मदद
करूँगा। देवदार और जूनीपर की जितनी लकड़ी
आप को चाहिए वह मैं आप के पास पहुँचा दूँगा।
9 मेरे लोग दरख़्तों के तने लुबनान के पहाड़ी इलाक़े
से नीचे साहिल तक लाएँगे जहाँ हम उन के बेड़े
बांध कर समुन्दर पर उस जगह पहुँचा देंगे जो आप
मुक़र्रर करेंगे। वहाँ हम तनों के रस्से खोल देंगे, और
आप उन्हें ले जा सकेंगे। मुआवज़े में आप मुझे इतनी
ख़ुराक मुहय्या करें कि मेरे दरबार की ज़रूरियात पूरी
हो जाएँ।"
10 चुनाँचे हीराम ने सुलेमान को देवदार और
जूनीपर की उतनी लकड़ी मुहय्या की जितनी
उसे ज़रूरत थी। 11 मुआवज़े में सुलेमान उसे
सालाना तक़रीबन 32,50,000 किलोग्राम गन्दुम
और तक़रीबन 4,40,000 लिटर ज़ैतून का तेल भेजता
रहा। 12 इस के इलावा सुलेमान और हीराम ने आपस
में सुलह का मुआहदा किया। यूँ रब ने सुलेमान को
हिक्मत अता की जिस तरह उस ने उस से वादा किया
था।

रब का घर बनाने की पहली तय्यारियाँ

13–14 सुलेमान बादशाह ने लुबनान में यह काम
करने के लिए इस्राईल में से 30,000 आदमियों
की बेगार पर भर्ती की। उस ने अदूनीराम को उन

पर मुक़र्रर किया। हर माह वह बारी बारी 10,000
अफ़राद को लुबनान में भेजता रहा। यूँ हर मज़दूर एक
माह लुबनान में और दो माह घर में रहता। 15 सुलेमान
ने 80,000 आदमियों को कानों में लगाया ताकि
वह पत्थर निकालें। 70,000 अफ़राद यह पत्थर
यरूशलम लाते थे। 16 उन लोगों पर 3,300 निगरान
मुक़र्रर थे। 17 बादशाह के हुक्म पर वह कानों से
बेहतरीन पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े निकाल लाए और
उन्हें तराश कर रब के घर की बुन्याद के लिए तय्यार
किया। 18 जबल के कारीगरों ने सुलेमान और हीराम
के कारीगरों की मदद की। उन्हों ने मिल कर पत्थर
के बड़े बड़े टुकड़े और लकड़ी को तराश कर रब के
घर की तामीर के लिए तय्यार किया।

रब के घर की तामीर

6 1 सुलेमान ने अपनी हुकूमत के चौथे साल के
दूसरे महीने ज़ीब में रब के घर की तामीर शुरू
की। इस्राईल को मिस्र से निकले 480 साल गुज़र
चुके थे।

2 इमारत की लम्बाई 90 फ़ुट, चौड़ाई 30 फ़ुट और
ऊँचाई 45 फ़ुट थी। 3 सामने एक बरामदा बनाया गया
जो इमारत जितना चौड़ा यानी 30 फ़ुट और आगे
की तरफ़ 15 फ़ुट लम्बा था। 4 इमारत की दीवारों
में खिड़कियाँ थीं जिन पर जंगले लगे थे। 5 इमारत
से बाहर आ कर सुलेमान ने दाएँ बाएँ की दीवारों
और पिछली दीवार के साथ एक ढाँचा खड़ा किया
जिस की तीन मन्ज़िलें थीं और जिस में मुख़्तलिफ़
कमरे थे। 6 निचली मन्ज़िल की अन्दर की चौड़ाई
साढ़े 7 फ़ुट, दरमियानी मन्ज़िल की 9 फ़ुट और ऊपर
की मन्ज़िल की साढ़े 10 फ़ुट थी। वजह यह थी कि
रब के घर की बैरूनी दीवार की मोटाई मन्ज़िल-ब-
मन्ज़िल कम होती गई। इस तरीक़े से बैरूनी ढाँचे
की दूसरी और तीसरी मन्ज़िल के शहतीरों के लिए
रब के घर की दीवार में सूराख़ बनाने की ज़रूरत
नहीं थी बल्कि उन्हें दीवार पर ही रखा गया। यानी
दरमियानी मन्ज़िल की इमारत वाली दीवार निचली
की दीवार की निस्बत कम मोटी और ऊपर वाली
मन्ज़िल की इमारत वाली दीवार दरमियानी मन्ज़िल
की दीवार की निस्बत कम मोटी थी। यूँ इस ढाँचे की
छतों के शहतीरों को इमारत की दीवार तोड़ कर उस
में लगाने की ज़रूरत नहीं थी बल्कि उन्हें इमारत की
दीवार पर ही रखा गया।

7 जो पत्थर रब के घर की तामीर के लिए इस्तेमाल
हुए उन्हें पत्थर की कान के अन्दर ही तराश कर
तय्यार किया गया। इस लिए जब उन्हें ज़ेर-ए-तामीर
इमारत के पास ला कर जोड़ा गया तो न हथौड़ों, न
छैनी न लोहे के किसी और औज़ार की आवाज़ सुनाई
दी।

8 इस ढाँचे में दाख़िल होने के लिए इमारत की दहनी
दीवार में दरवाज़ा बनाया गया। वहाँ से एक सीढ़ी
परस्तार को दरमियानी और ऊपर की मन्ज़िल तक
पहुँचाती थी। 9 यूँ सुलेमान ने इमारत को तक्मील तक
पहुँचाया। छत को देवदार के शहतीरों और तख़्तों
से बनाया गया। 10 जो ढाँचा इमारत के तीनों तरफ़
खड़ा किया गया उसे देवदार के शहतीरों से इमारत
की बाहर वाली दीवार के साथ जोड़ा गया। उस की
तीनों मन्ज़िलों की ऊँचाई साढ़े सात सात फ़ुट थी।

11 एक दिन रब सुलेमान से हमकलाम हुआ,
12 "जहाँ तक मेरी सुकूनतगाह का ताल्लुक़ है जो तू
मेरे लिए बना रहा है, अगर तू मेरे तमाम अह्काम
और हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे तो मैं तेरे
लिए वह कुछ करूँगा जिस का वादा मैं ने तेरे बाप
दाऊद से किया है। 13 तब मैं इस्राईल के दरमियान
रहूँगा और अपनी क़ौम को कभी तर्क नहीं करूँगा।"

रब के घर का अन्दरूनी हिस्सा

14 जब इमारत की दीवारें और छत मुकम्मल हुईं
15 तो अन्दरूनी दीवारों पर फ़र्श से ले कर छत तक
देवदार के तख़्ते लगाए गए। फ़र्श पर जूनीपर के
तख़्ते लगाए गए। 16 अब तक इमारत का एक ही
कमरा था, लेकिन अब उस ने देवदार के तख़्तों से
फ़र्श से ले कर छत तक दीवार खड़ी करके पिछले

हिस्से में अलग कमरा बना दिया जिस की लम्बाई
30 फ़ुट थी। यह मुक़द्दसतरीन कमरा बन गया। 17 जो
हिस्सा सामने रह गया उसे मुक़द्दस कमरा मुक़र्रर
किया गया। उस की लम्बाई 60 फ़ुट थी। 18 इमारत
की तमाम अन्दरूनी दीवारों पर देवदार के तख़्ते यूँ
लगे थे कि कहीं भी पत्थर नज़र न आया। तख़्तों पर
तूँबे और फूल कन्दा किए गए थे।

19 पिछले कमरे में रब के अह्द का सन्दूक़ रखना
था। 20 इस कमरे की लम्बाई 30 फ़ुट, चौड़ाई 30
फ़ुट और ऊँचाई 30 फ़ुट थी। सुलेमान ने इस की
तमाम दीवारों और फ़र्श पर ख़ालिस सोना चढ़ाया।
मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने देवदार की क़ुर्बानगाह
थी। उस पर भी सोना मंढा गया 21 बल्कि इमारत के
सामने वाले कमरे की दीवारों, छत और फ़र्श पर भी
सोना मंढा गया। मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े पर
सोने की ज़न्जीरें लगाई गईं। 22 चुनाँचे इमारत की
तमाम अन्दरूनी दीवारों, छत और फ़र्श पर सोना
मंढा गया, और इसी तरह मुक़द्दसतरीन कमरे के
सामने की क़ुर्बानगाह पर भी।

23 फिर सुलेमान ने ज़ैतून की लकड़ी से दो करूबी
फ़रिश्ते बनवाए जिन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में रखा
गया। इन मुजस्समों का क़द 15 फ़ुट था। 24–25 दोनों
शक्ल-ओ-सूरत में एक जैसे थे। हर एक के दो पर
थे, और हर पर की लम्बाई साढ़े सात सात फ़ुट थी।
चुनाँचे एक पर के सिरे से दूसरे पर के सिरे तक का
फ़ासिला 15 फ़ुट था। 26 हर एक का क़द 15 फ़ुट
था। 27 उन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में यूँ एक दूसरे के
साथ खड़ा किया गया कि हर फ़रिश्ते का एक पर
दूसरे के पर से लगता जबकि दाईं और बाईं तरफ़ हर
एक का दूसरा पर दीवार के साथ लगता था। 28 इन
फ़रिश्तों पर भी सोना मंढा गया।

29 मुक़द्दस और मुक़द्दसतरीन कमरों की दीवारों पर
करूबी फ़रिश्ते, खजूर के दरख़्त और फूल कन्दा
किए गए। 30 दोनों कमरों के फ़र्श पर भी सोना मंढा
गया। 31 सुलेमान ने मुक़द्दसतरीन कमरे का दरवाज़ा
ज़ैतून की लकड़ी से बनवाया। उस के दो किवाड़ थे,
और चौखट की लकड़ी के पाँच कोने थे। 32 दरवाज़े
के किवाड़ों पर करूबी फ़रिश्ते, खजूर के दरख़्त
और फूल कन्दा किए गए। इन किवाड़ों पर भी
फ़रिश्तों और खजूर के दरख़्तों समेत सोना मंढा गया।
33 सुलेमान ने इमारत में दाख़िल होने वाले दरवाज़े के
लिए भी ज़ैतून की लकड़ी से चौखट बनवाई, लेकिन
उस की लकड़ी के चार कोने थे। 34 इस दरवाज़े के
दो किवाड़ जूनीपर की लकड़ी के बने हुए थे। दोनों
किवाड़ दीवार तक घूम सकते थे। 35 इन किवाड़ों
पर भी करूबी फ़रिश्ते, खजूर के दरख़्त और फूल
कन्दा किए गए थे। फिर उन पर सोना यूँ मंढा गया
कि वह अच्छी तरह इन बेल-बूटों के साथ लग गया।

36 इमारत के सामने एक अन्दरूनी सहन बनाया
गया जिस की चारदीवारी यूँ तामीर हुई कि पत्थर के
हर तीन रद्दों के बाद देवदार के शहतीरों का एक रद्दा
लगाया गया।

37 रब के घर की बुन्याद सुलेमान की हुकूमत के
चौथे साल के दूसरे महीने ज़ीब में डाली गई, 38 और
उस की हुकूमत के ग्यारवें साल के आठवें महीने
बूल में इमारत मुकम्मल हुई। सब कुछ नक़्शे के ऐन
मुताबिक़ बना। इस काम पर कुल सात साल सर्फ़
हुए।

सुलेमान का महल

7 1 जो महल सुलेमान ने बनवाया वह 13 साल के
बाद मुकम्मल हुआ।

2–3 उस की एक इमारत का नाम ‘लुबनान का
जंगल’ था। इमारत की लम्बाई 150 फ़ुट, चौड़ाई
75 फ़ुट और ऊँचाई 45 फ़ुट थी। निचली मन्ज़िल
एक बड़ा हाल था जिस के देवदार की लकड़ी के
45 सतून थे। पंद्रह पंद्रह सतूनों को तीन क़तारों में
खड़ा किया गया था। सतूनों पर शहतीर थे जिन पर
दूसरी मन्ज़िल के फ़र्श के लिए देवदार के तख़्ते लगाए
गए थे। दूसरी मन्ज़िल के मुख़्तलिफ़ कमरे थे, और
छत भी देवदार की लकड़ी से बनाई गई थी। 4 हाल
की दोनों लम्बी दीवारों में तीन तीन खिड़कियाँ थीं,

और एक दीवार की खिड़कियाँ दूसरी दीवार की
खिड़कियों के बिलकुल मुक़ाबिल थीं। 5 इन दीवारों
के तीन तीन दरवाज़े भी एक दूसरे के मुक़ाबिल थे।
उन की चौखटों की लकड़ी के चार चार कोने थे।
6 इस के इलावा सुलेमान ने सतूनों का हाल
बनवाया जिस की लम्बाई 75 फ़ुट और चौड़ाई 45
फ़ुट थी। हाल के सामने सतूनों का बरामदा था।
7 उस ने दीवान भी तामीर किया जो दीवान-ए-अदल
कहलाता था। उस में उस का तख़्त था, और वहाँ
वह लोगों की अदालत करता था। दीवान की चारों
दीवारों पर फ़र्श से ले कर छत तक देवदार के तख़्ते
लगे हुए थे।
8 दीवान के पीछे सहन था जिस में बादशाह का
रिहाइशी महल था। महल का डिज़ाइन दीवान जैसा
था। उस की मिस्री बीवी फ़िरऔन की बेटी का महल
भी डिज़ाइन में दीवान से मुताबिक़त रखता था।
9 यह तमाम इमारतें बुन्यादों से ले कर छत तक
और बाहर से ले कर बड़े सहन तक आला क़िस्म
के पत्थरों से बनी हुई थीं, ऐसे पत्थरों से जो चारों
तरफ़ आरी से नाप के ऐन मुताबिक़ काटे गए थे।
10 बुन्यादों के लिए उम्दा क़िस्म के बड़े बड़े पत्थर
इस्तेमाल हुए। बाज़ की लम्बाई 12 और बाज़ की
15 फ़ुट थी। 11 इन पर आला क़िस्म के पत्थरों की
दीवारें खड़ी की गईं। दीवारों में देवदार के शहतीर
भी लगाए गए। 12 बड़े सहन की चारदीवारी यूँ बनाई
गई कि पत्थरों के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के
शहतीरों का एक रद्दा लगाया गया था। जो अन्दरूनी
सहन रब के घर के इर्दगिर्द था उस की चारदीवारी
भी इसी तरह ही बनाई गई, और इसी तरह रब के
घर के बरामदे की दीवारें भी।

रब के घर के सामने के दो ख़ास सतून

13 फिर सुलेमान बादशाह ने सूर के एक आदमी
को बुलाया जिस का नाम हीराम था। 14 उस की माँ
इस्राईली क़बीले नफ़्ताली की बेवा थी जबकि उस
का बाप सूर का रहने वाला और पीतल का कारीगर
था। हीराम बड़ी हिक्मत, समझदारी और महारत से
पीतल की हर चीज़ बना सकता था। इस क़िस्म का
काम करने के लिए वह सुलेमान बादशाह के पास
आया।
15 पहले उस ने पीतल के दो सतून ढाल दिए। हर
सतून की ऊँचाई 27 फ़ुट और घेरा 18 फ़ुट था।
16 फिर उस ने हर सतून के लिए पीतल का बालाई
हिस्सा ढाल दिया जिस की ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट थी।
17 हर बालाई हिस्से को एक दूसरे के साथ ख़ूबसूरती
से मिलाई गई सात ज़न्जीरों से आरास्ता किया गया।
18–20 इन ज़न्जीरों के ऊपर हीराम ने हर बालाई हिस्से
को पीतल के 200 अनारों से सजाया जो दो क़तारों
में लगाए गए। फिर बालाई हिस्से सतूनों पर लगाए
गए। बालाई हिस्सों की सोसन के फूल की सी शक्ल
थी, और यह फूल 6 फ़ुट ऊँचे थे। 21 हीराम ने दोनों
सतून रब के घर के बरामदे के सामने खड़े किए। दहने
हाथ के सतून का नाम उस ने 'यकीन' और बाएँ हाथ
के सतून का नाम 'बोअज़' रखा। 22 बालाई हिस्से
सोसन-नुमा थे। चुनाँचे काम मुकम्मल हुआ।

पीतल का हौज़

23 इस के बाद हीराम ने पीतल का बड़ा गोल हौज़
ढाल दिया जिस का नाम 'समुन्दर' रखा गया। उस की
ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट, उस का मुँह 15 फ़ुट चौड़ा और
उस का घेरा तक़रीबन 45 फ़ुट था। 24 हौज़ के किनारे
के नीचे तूँबों की दो क़तारें थीं। फ़ी फ़ुट तक़रीबन 6
तूँबे थे। तूँबे और हौज़ मिल कर ढाले गए थे। 25 हौज़
को बैलों के 12 मुजस्समों पर रखा गया। तीन बैलों
का रुख़ शिमाल की तरफ़, तीन का रुख़ मग़रिब
की तरफ़, तीन का रुख़ जुनूब की तरफ़ और तीन
का रुख़ मशरिक़ की तरफ़ था। उन के पिछले हिस्से
हौज़ की तरफ़ थे, और हौज़ उन के कंधों पर पड़ा था।
26 हौज़ का किनारा प्याले बल्कि सोसन के फूल की
तरह बाहर की तरफ़ मुड़ा हुआ था। उस की दीवार
तक़रीबन तीन इंच मोटी थी, और हौज़ में पानी के
तक़रीबन 44,000 लिटर समा जाते थे।

पानी के बासन उठाने की हथगाड़ियाँ

27 फिर हीराम ने पानी के बासन उठाने के लिए
पीतल की हथगाड़ियाँ बनाईं। हर गाड़ी की लम्बाई 6
फ़ुट, चौड़ाई 6 फ़ुट और ऊँचाई साढ़े 4 फ़ुट थी। 28 हर
गाड़ी का ऊपर का हिस्सा सरियों से मज़बूत किया
गया फ्रेम था। 29 फ्रेम के बैरूनी पहलू शेरबबरों, बैलों
और करूबी फ़रिश्तों से सजे हुए थे। शेरों और बैलों
के ऊपर और नीचे पीतल के सेहरे लगे हुए थे। 30 हर
गाड़ी के चार पहिए और दो धुरे थे। यह भी पीतल
के थे। चारों कोनों पर पीतल के ऐसे टुकड़े लगे थे
जिन पर बासन रखे जाते थे। यह टुकड़े भी सेहरों से
सजे हुए थे। 31 फ्रेम के अन्दर जिस जगह बासन को
रखा जाता था वह गोल थी। उस की ऊँचाई डेढ़ फ़ुट
थी, और उस का मुँह सवा दो फ़ुट चौड़ा था। उस
के बैरूनी पहलू पर चीज़ें कन्दा की गई थीं। गाड़ी
का फ्रेम गोल नहीं बल्कि चौरस था। 32 गाड़ी के फ्रेम
के नीचे मज़कूरा चार पहिए थे जो धुरों से जुड़े थे।
धुरे फ्रेम के साथ ही ढल गए थे। हर पहिया सवा दो
फ़ुट चौड़ा था। 33 पहिए रथों के पहियों की मानिन्द
थे। उन के धुरे, किनारे, तार और नाभें सब के सब
पीतल से ढाले गए थे। 34 गाड़ियों के चार कोनों पर
दस्ते लगे थे जो फ्रेम के साथ मिल कर ढाले गए
थे। 35–36 हर गाड़ी के ऊपर का किनारा नौ इंच ऊँचा
था। कोनों पर लगे दस्ते और फ्रेम के पहलू हर जगह
करूबी फ़रिश्तों, शेरबबरों और खजूर के दरख़्तों से
सजे हुए थे। चारों तरफ़ सेहरे भी कन्दा किए गए।
37 हीराम ने दसों गाड़ियों को एक ही साँचे में ढाला,
इस लिए सब एक जैसी थीं।

38 हीराम ने हर गाड़ी के लिए पीतल का बासन ढाल
दिया। हर बासन 6 फ़ुट चौड़ा था, और उस में 880
लिटर पानी समा जाता था। 39 उस ने पाँच गाड़ियाँ
रब के घर के दाएँ हाथ और पाँच उस के बाएँ हाथ
खड़ी कीं। हौज़ बनाम समुन्दर को उस ने रब के घर
के जुनूब-मशरिक़ में रख दिया।

उस सामान की फ़हरिस्त जो हीराम ने बनाया

40 हीराम ने बासन, बेलचे और छिड़काओ के
कटोरे भी बनाए। यूँ उस ने रब के घर में वह सारा
काम मुकम्मल किया जिस के लिए सुलेमान बादशाह
ने उसे बुलाया था। उस ने ज़ैल की चीज़ें बनाईं :

41 दो सतून,
सतूनों पर लगे प्यालानुमा बालाई हिस्से,
बालाई हिस्सों पर लगी ज़न्जीरों का डिज़ाइन,
42 ज़न्जीरों के ऊपर लगे अनार (फ़ी बालाई हिस्सा
200 अदद),
43 10 हथगाड़ियाँ,
इन पर के पानी के 10 बासन,
44 हौज़ बनाम समुन्दर,
इसे उठाने वाले बैल के 12 मुजस्समे,
45 बालटियाँ, बेलचे और छिड़काओ के कटोरे।

यह तमाम सामान जो हीराम ने सुलेमान के हुक्म
पर रब के घर के लिए बनाया पीतल से ढाल कर
पालिश किया गया था। 46 बादशाह ने उसे वादी-ए-
यर्दन में सुक्कात और ज़र्तान के दरमियान ढलवाया।
वहाँ एक फ़ौंडरी थी जहाँ हीराम ने गारे के साँचे बना
कर हर चीज़ ढाल दी। 47 इस सामान के लिए सुलेमान
बादशाह ने इतना ज़्यादा पीतल इस्तेमाल किया कि
उस का कुल वज़न मालूम न हो सका।

रब के घर के अन्दर सोने का सामान

48 रब के घर के अन्दर के लिए सुलेमान ने दर्ज-ए-
ज़ैल सामान बनवाया :

सोने की क़ुर्बानगाह,
सोने की वह मेज़ जिस पर रब के लिए मख़्सूस
रोटियाँ पड़ी रहती थीं,
49 ख़ालिस सोने के 10 शमादान जो मुक़द्दसतरीन
कमरे के सामने रखे गए, पाँच दरवाज़े के दहने हाथ
और पाँच उस के बाएँ हाथ,
सोने के वह फूल जिन से शमादान आरास्ता थे,
सोने के चराग़ और बत्ती को बुझाने के औज़ार,

50 ख़ालिस सोने के बासन, चराग़ को कतरने के
औज़ार, छिड़काओ के कटोरे और प्याले,
जलते हुए कोएले के लिए ख़ालिस सोने के बर्तन,
मुक़द्दसतरीन कमरे और बड़े हाल के दरवाज़ों के
क़ब्ज़े।
51 रब के घर की तक्मील पर सुलेमान बादशाह ने
वह सोना-चाँदी और बाक़ी तमाम क़ीमती चीज़ें रब
के घर के ख़ज़ानों में रखवा दीं जो उस के बाप दाऊद
ने रब के लिए मख़्सूस की थीं।

अह्द का सन्दूक़ रब के घर में लाया जाता है

8 1 फिर सुलेमान ने इस्राईल के तमाम बुज़ुर्गों और
क़बीलों और कुंबों के तमाम सरपरस्तों को
अपने पास यरूशलम में बुलाया, क्यूँकि रब के अह्द
का सन्दूक़ अब तक यरूशलम के उस हिस्से में
था जो 'दाऊद का शहर' या सिय्यून कहलाता है।
सुलेमान चाहता था कि क़ौम के नुमाइन्दे हाज़िर हों
जब सन्दूक़ को वहाँ से रब के घर में पहुँचाया जाए।
2 चुनाँचे इस्राईल के तमाम मर्द साल के सातवें महीने
इतानीम [c]में सुलेमान बादशाह के पास यरूशलम में
जमा हुए। इसी महीने में झोंपड़ियों की ईद मनाई जाती
थी।
3 जब सब जमा हुए तो इमाम रब के सन्दूक़ को
उठा कर 4 रब के घर में लाए। लावियों के साथ
मिल कर उन्हों ने मुलाक़ात के ख़ैमे को भी उस के
तमाम मुक़द्दस सामान समेत रब के घर में पहुँचाया।
5 वहाँ सन्दूक़ के सामने सुलेमान बादशाह और बाक़ी
तमाम जमा हुए इस्राईलियों ने इतनी भेड़-बकरियाँ
और गाय-बैल क़ुर्बान किए कि उन की तादाद गिनी
नहीं जा सकती थी।
6 इमामों ने रब के अह्द का सन्दूक़ पिछले यानी
मुक़द्दसतरीन कमरे में ला कर करूबी फ़रिश्तों के
परों के नीचे रख दिया। 7 फ़रिश्तों के पर पूरे सन्दूक़
पर उस की उठाने की लकड़ियों समेत फैले रहे। 8 तो
भी उठाने की यह लकड़ियाँ इतनी लम्बी थीं कि उन
के सिरे सामने वाले यानी मुक़द्दस कमरे से नज़र आते
थे। लेकिन वह बाहर से देखे नहीं जा सकते थे। आज
तक वह वहीं मौजूद हैं। 9 सन्दूक़ में सिर्फ़ पत्थर की
वह दो तख़्तियाँ थीं जिन को मूसा ने होरिब यानी
कोह-ए-सीना के दामन में उस में रख दिया था, उस
वक़्त जब रब ने मिस्र से निकले हुए इस्राईलियों के
साथ अह्द बांधा था।
10–11 जब इमाम मुक़द्दस कमरे से निकल कर सहन
में आए तो रब का घर एक बादल से भर गया। इमाम
अपनी ख़िदमत अन्जाम न दे सके, क्यूँकि रब का
घर उस के जलाल के बादल से मामूर हो गया था।
12 यह देख कर सुलेमान ने दुआ की, "रब ने फ़रमाया
है कि मैं घने बादल के अंधेरे में रहूँगा। 13 यक़ीनन मैं
ने तेरे लिए अज़ीम सुकूनतगाह बनाई है, एक मक़ाम
जो तेरी अबदी सुकूनत के लाइक़ है।"

रब के घर की मख़्सूसियत पर सुलेमान की तक़रीर

14 फिर बादशाह ने मुड़ कर रब के घर के सामने
खड़ी इस्राईल की पूरी जमाअत की तरफ़ रुख़ किया।
उस ने उन्हें बरकत दे कर कहा,
15 "रब इस्राईल के ख़ुदा की तारीफ़ हो जिस ने वह
वादा पूरा किया है जो उस ने मेरे बाप दाऊद से किया
था। क्यूँकि उस ने फ़रमाया, 16 'जिस दिन मैं अपनी
क़ौम इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया उस दिन से
ले कर आज तक मैं ने कभी न फ़रमाया कि इस्राईली
क़बीलों के किसी शहर में मेरे नाम की ताज़ीम में
घर बनाया जाए। लेकिन मैं ने दाऊद को अपनी क़ौम
इस्राईल का बादशाह बनाया है।'
17 मेरे बाप दाऊद की बड़ी ख़्वाहिश थी कि रब
इस्राईल के ख़ुदा के नाम की ताज़ीम में घर बनाए।
18 लेकिन रब ने एतिराज़ किया, 'मैं ख़ुश हूँ कि तू
मेरे नाम की ताज़ीम में घर तामीर करना चाहता है,
19 लेकिन तू नहीं बल्कि तेरा बेटा ही उसे बनाएगा।'

---

[c]सितम्बर ता अक्तूबर

20 और वाक़ई, रब ने अपना वादा पूरा किया है। मैं
रब के वादे के ऐन मुताबिक़ अपने बाप दाऊद की
जगह इस्राईल का बादशाह बन कर तख़्त पर बैठ
गया हूँ। और अब मैं ने रब इस्राईल के ख़ुदा के नाम
की ताज़ीम में घर भी बनाया है। 21 उस में मैं ने उस
सन्दूक़ के लिए मक़ाम तय्यार कर रखा है जिस में
शरीअत की तख़्तियाँ पड़ी हैं, उस अह्द की तख़्तियाँ
जो रब ने हमारे बापदादा से मिस्र से निकालते वक़्त
बांधा था।”

रब के घर की मख़्सूसियत पर सुलेमान की दुआ

22 फिर सुलेमान इस्राईल की पूरी जमाअत के देखते
देखते रब की क़ुर्बानगाह के सामने खड़ा हुआ। उस
ने अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठा कर 23 दुआ
की,

“ऐ रब इस्राईल के ख़ुदा, तुझ जैसा कोई ख़ुदा नहीं
है, न आसमान और न ज़मीन पर। तू अपना वह अह्द
क़ाइम रखता है जिसे तू ने अपनी क़ौम के साथ बांधा
है और अपनी मेहरबानी उन सब पर ज़ाहिर करता है
जो पूरे दिल से तेरी राह पर चलते हैं। 24 तू ने अपने
ख़ादिम दाऊद से किया हुआ वादा पूरा किया है।
जो बात तू ने अपने मुँह से मेरे बाप से की वह तू ने
अपने हाथ से आज ही पूरी की है। 25 ऐ रब इस्राईल
के ख़ुदा, अब अपनी दूसरी बात भी पूरी कर जो तू
ने अपने ख़ादिम दाऊद से की थी। क्यूँकि तू ने मेरे
बाप से वादा किया था, ‘अगर तेरी औलाद तेरी तरह
अपने चाल-चलन पर ध्यान दे कर मेरे हुज़ूर चलती
रहे तो इस्राईल पर उस की हुकूमत हमेशा तक क़ाइम
रहेगी।’ 26 ऐ इस्राईल के ख़ुदा, अब बराह-ए-करम
अपना यह वादा पूरा कर जो तू ने अपने ख़ादिम मेरे
बाप दाऊद से किया है।

27 लेकिन क्या अल्लाह वाक़ई ज़मीन पर सुकूनत
करेगा? नहीं, तू तो बुलन्दतरीन आसमान में भी समा
नहीं सकता! तो फिर यह मकान जो मैं ने बनाया है
किस तरह तेरी सुकूनतगाह बन सकता है? 28 ऐ रब
मेरे ख़ुदा, तो भी अपने ख़ादिम की दुआ और इल्तिजा
सुन जब मैं आज तेरे हुज़ूर पुकारते हुए इल्तिमास
करता हूँ 29 कि बराह-ए-करम दिन रात इस इमारत
की निगरानी कर! क्यूँकि यह वह जगह है जिस के
बारे में तू ने ख़ुद फ़रमाया, ‘यहाँ मेरा नाम सुकूनत
करेगा।’ चुनाँचे अपने ख़ादिम की गुज़ारिश सुन जो मैं
इस मक़ाम की तरफ़ रुख़ किए हुए करता हूँ। 30 जब
हम इस मक़ाम की तरफ़ रुख़ करके दुआ करें तो
अपने ख़ादिम और अपनी क़ौम की इल्तिजा सुन।
आसमान पर अपने तख़्त से हमारी सुन। और जब
सुनेगा तो हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर!

31 अगर किसी पर इल्ज़ाम लगाया जाए और
उसे यहाँ तेरी क़ुर्बानगाह के सामने लाया जाए
ताकि हलफ़ उठा कर वादा करे कि मैं बेक़ुसूर हूँ
32 तो बराह-ए-करम आसमान पर से सुन कर अपने
ख़ादिमों का इन्साफ़ कर। क़ुसूरवार को मुजरिम
ठहरा कर उस के अपने सर पर वह कुछ आने दे जो
उस से सरज़द हुआ है, और बेक़ुसूर को बेइल्ज़ाम
क़रार दे कर उस की रास्तबाज़ी का बदला दे।

33 हो सकता है किसी वक़्त तेरी क़ौम इस्राईल तेरा
गुनाह करे और नतीजे में दुश्मन के सामने शिकस्त
खाए। अगर इस्राईली आख़िरकार तेरे पास लौट आएँ
और तेरे नाम की तम्जीद करके यहाँ इस घर में तुझ
से दुआ और इल्तिमास करें 34 तो आसमान पर से
उन की फ़र्याद सुन लेना। अपनी क़ौम इस्राईल का
गुनाह मुआफ़ करके उन्हें दुबारा उस मुल्क में वापस
लाना जो तू ने उन के बापदादा को दे दिया था।

35 हो सकता है इस्राईली तेरा इतना संगीन गुनाह
करें कि काल पड़े और बड़ी देर तक बारिश न बरसे।
अगर वह आख़िरकार इस घर की तरफ़ रुख़ करके
तेरे नाम की तम्जीद करें और तेरी सज़ा के बाइस
अपना गुनाह छोड़ कर लौट आएँ 36 तो आसमान
पर से उन की फ़र्याद सुन लेना। अपने ख़ादिमों और
अपनी क़ौम इस्राईल को मुआफ़ कर, क्यूँकि तू ही
उन्हें अच्छी राह की तालीम देता है। तब उस मुल्क
पर दुबारा बारिश बरसा दे जो तू ने अपनी क़ौम को
मीरास में दे दिया है।

37 हो सकता है इस्राईल में काल पड़ जाए, अनाज
की फ़सल किसी बीमारी, फफूँदी, टिड्डियों या कीड़ों
से मुतअस्सिर हो जाए, या दुश्मन किसी शहर का
मुहासरा करे। जो भी मुसीबत या बीमारी हो, 38 अगर
कोई इस्राईली या तेरी पूरी क़ौम उस का सबब जान
कर अपने हाथों को इस घर की तरफ़ बढ़ाए और तुझ
से इल्तिमास करे 39 तो आसमान पर अपने तख़्त से
उन की फ़र्याद सुन लेना। उन्हें मुआफ़ करके वह
कुछ कर जो ज़रूरी है। हर एक को उस की तमाम
हरकतों का बदला दे, क्यूँकि सिर्फ़ तू ही हर इन्सान
के दिल को जानता है। 40 फिर जितनी देर वह उस
मुल्क में ज़िन्दगी गुज़ारेंगे जो तू ने हमारे बापदादा को
दिया था उतनी देर वह तेरा ख़ौफ़ मानेंगे।

41 आइन्दा परदेसी भी तेरे नाम के सबब से दूरदराज़
ममालिक से आएँगे। अगरचे वह तेरी क़ौम इस्राईल
के नहीं होंगे 42 तो भी वह तेरे अज़ीम नाम, तेरी बड़ी
क़ुदरत और तेरे ज़बरदस्त कामों के बारे में सुन कर
आएँगे और इस घर की तरफ़ रुख़ करके दुआ करेंगे।
43 तब आसमान पर से उन की फ़र्याद सुन लेना। जो
भी दरख़्वास्त वह पेश करें वह पूरी करना ताकि
दुनिया की तमाम अक़्वाम तेरा नाम जान कर तेरी
क़ौम इस्राईल की तरह ही तेरा ख़ौफ़ मानें और जान
लें कि जो इमारत मैं ने तामीर की है उस पर तेरे ही
नाम का ठप्पा लगा है।

44 हो सकता है तेरी क़ौम के मर्द तेरी हिदायत के
मुताबिक़ अपने दुश्मन से लड़ने के लिए निकलें।
अगर वह तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत की
तरफ़ रुख़ करके दुआ करें जो मैं ने तेरे नाम के लिए
तामीर की है 45 तो आसमान पर से उन की दुआ और
इल्तिमास सुन कर उन के हक़ में इन्साफ़ क़ाइम
रखना।

46 हो सकता है वह तेरा गुनाह करें, ऐसी हरकतें तो
हम सब से सरज़द होती रहती हैं, और नतीजे में तू
नाराज़ हो कर उन्हें दुश्मन के हवाले कर दे जो उन्हें
क़ैद करके अपने किसी दूरदराज़ या क़रीबी मुल्क
में ले जाए। 47 शायद वह जिलावतनी में तौबा करके
दुबारा तेरी तरफ़ रुजू करें और तुझ से इल्तिमास
करें, 'हम ने गुनाह किया है, हम से ग़लती हुई है,
हम ने बेदीन हरकतें की हैं।' 48 अगर वह ऐसा करके
दुश्मन के मुल्क में अपने पूरे दिल-ओ-जान से दुबारा
तेरी तरफ़ रुजू करें और तेरी तरफ़ से बापदादा को
दिए गए मुल्क, तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत
की तरफ़ रुख़ करके दुआ करें जो मैं ने तेरे नाम के
लिए तामीर की है 49 तो आसमान पर अपने तख़्त
से उन की दुआ और इल्तिमास सुन लेना। उन के
हक़ में इन्साफ़ क़ाइम करना, 50 और अपनी क़ौम के
गुनाहों को मुआफ़ कर देना। जिस भी जुर्म से उन्हों
ने तेरा गुनाह किया है वह मुआफ़ कर देना। बख़्श
दे कि उन्हें गिरिफ़्तार करने वाले उन पर रहम करें।
51 क्यूँकि यह तेरी ही क़ौम के अफ़राद हैं, तेरी ही
मीरास जिसे तू मिस्र के भड़कते भट्टे से निकाल लाया।

52 ऐ अल्लाह, तेरी आँखें मेरी इल्तिजाओं और तेरी
क़ौम इस्राईल की फ़र्यादों के लिए खुली रहें। जब भी
वह मदद के लिए तुझे पुकारें तो उन की सुन लेना!
53 क्यूँकि तू, ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने इस्राईल को
दुनिया की तमाम क़ौमों से अलग करके अपनी ख़ास
मिलकियत बना लिया है। हमारे बापदादा को मिस्र से
निकालते वक़्त तू ने मूसा की मारिफ़त इस हक़ीक़त
का एलान किया।"

आख़िरी दुआ और बरकत

54 इस दुआ के बाद सुलेमान खड़ा हुआ, क्यूँकि
दुआ के दौरान उस ने रब की क़ुर्बानगाह के सामने
अपने घुटने टेके और अपने हाथ आसमान की तरफ़
उठाए हुए थे। 55 अब वह इस्राईल की पूरी जमाअत
के सामने खड़ा हुआ और बुलन्द आवाज़ से उसे
बरकत दी,

56 "रब की तम्जीद हो जिस ने अपने वादे के ऐन
मुताबिक़ अपनी क़ौम इस्राईल को आराम-ओ-सुकून
फ़राहम किया है। जितने भी ख़ूबसूरत वादे उस ने
अपने ख़ादिम मूसा की मारिफ़त किए हैं वह सब के
सब पूरे हो गए हैं। 57 जिस तरह रब हमारा ख़ुदा हमारे

बापदादा के साथ था उसी तरह वह हमारे साथ भी
रहे। न वह हमें छोड़े, न तर्क करे 58 बल्कि हमारे
दिलों को अपनी तरफ़ माइल करे ताकि हम उस की
तमाम राहों पर चलें और उन तमाम अह्काम और
हिदायात के ताबे रहें जो उस ने हमारे बापदादा को
दी हैं।

59 रब के हुज़ूर मेरी यह फ़र्याद दिन रात रब हमारे
ख़ुदा के क़रीब रहे ताकि वह मेरा और अपनी
क़ौम का इन्साफ़ क़ाइम रखे और हमारी रोज़ाना
ज़रूरियात पूरी करे। 60 तब तमाम अक़्वाम जान लेंगी
कि रब ही ख़ुदा है और कि उस के सिवा कोई और
माबूद नहीं है।

61 लेकिन लाज़िम है कि आप रब हमारे ख़ुदा के पूरे
दिल से वफ़ादार रहें। हमेशा उस की हिदायात और
अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें, बिलकुल उसी
तरह जिस तरह आप आज कर रहे हैं।"

रब के घर की मख़्सूसियत पर जश्न

62–63 फिर बादशाह और तमाम इस्राईल ने रब के
हुज़ूर क़ुर्बानियाँ पेश करके रब के घर को मख़्सूस
किया। इस सिलसिले में सुलेमान ने 22,000 गाय-
बैलों और 1,20,000 भेड़-बकरियों को सलामती
की क़ुर्बानियों के तौर पर ज़बह किया। 64 उसी दिन
बादशाह ने सहन का दरमियानी हिस्सा क़ुर्बानियाँ
चढ़ाने के लिए मख़्सूस किया। वजह यह थी कि
पीतल की क़ुर्बानगाह इतनी क़ुर्बानियाँ पेश करने के
लिए छोटी थी, क्यूँकि भस्म होने वाली क़ुर्बानियों
और ग़ल्ला की नज़रों की तादाद बहुत ज़्यादा थी। इस
के इलावा सलामती की बेशुमार क़ुर्बानियों की चर्बी
को भी जलाना था।

65 ईद 14 दिन तक मनाई गई। पहले हफ़्ते में
सुलेमान और तमाम इस्राईल ने रब के घर की
मख़्सूसियत मनाई और दूसरे हफ़्ते में झोंपड़ियों की
ईद। बहुत ज़्यादा लोग शरीक हुए। वह दूरदराज़
इलाक़ों से यरूशलम आए थे, शिमाल में लबो-हमात
से ले कर जुनूब में उस वादी तक जो मिस्र की सरहद
थी। 66 दो हफ़्तों के बाद सुलेमान ने इस्राईलियों को
रुख़्सत किया। बादशाह को बरकत दे कर वह अपने
अपने घर चले गए। सब शादमान और दिल से ख़ुश
थे कि रब ने अपने ख़ादिम दाऊद और अपनी क़ौम
इस्राईल पर इतनी मेहरबानी की है।

रब सुलेमान से हमकलाम होता है

9 1 चुनाँचे सुलेमान ने रब के घर और शाही महल
को तक्मील तक पहुँचाया। जो कुछ भी उस
ने ठान लिया था वह पूरा हुआ। 2 उस वक़्त रब
दुबारा उस पर ज़ाहिर हुआ, उस तरह जिस तरह वह
जिबऊन में उस पर ज़ाहिर हुआ था। 3 उस ने सुलेमान
से कहा,

"जो दुआ और इल्तिजा तू ने मेरे हुज़ूर की उसे मैं ने
सुन कर इस इमारत को जो तू ने बनाई है अपने लिए
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर लिया है। उस में मैं अपना
नाम अबद तक क़ाइम रखूँगा। मेरी आँखें और दिल
अबद तक वहाँ हाज़िर रहेंगे। 4 जहाँ तक तेरा ताल्लुक़
है, अपने बाप दाऊद की तरह दयानतदारी और रास्ती
से मेरे हुज़ूर चलता रह। क्यूँकि अगर तू मेरे तमाम
अह्काम और हिदायात की पैरवी करता रहे 5 तो मैं
तेरी इस्राईल पर हुकूमत हमेशा तक क़ाइम रखूँगा।
फिर मेरा वह वादा क़ाइम रहेगा जो मैं ने तेरे बाप
दाऊद से किया था कि इस्राईल पर तेरी औलाद की
हुकूमत हमेशा तक क़ाइम रहेगी।

6 लेकिन ख़बरदार! अगर तू या तेरी औलाद मुझ
से दूर हो कर मेरे दिए गए अह्काम और हिदायात
के ताबे न रहे बल्कि दीगर माबूदों की तरफ़ रुजू
करके उन की ख़िदमत और परस्तिश करे 7 तो मैं
इस्राईल को उस मुल्क में से मिटा दूँगा जो मैं ने उन
को दे दिया था। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं इस घर को
भी रद्द कर दूँगा जो मैं ने अपने नाम के लिए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस कर लिया है। उस वक़्त इस्राईल तमाम
अक़्वाम में मज़ाक़ और लान-तान का निशाना बन
जाएगा। 8 इस शानदार घर की बुरी हालत देख कर
यहाँ से गुज़रने वाले तमाम लोगों के रोंगटे खड़े हो

जाएंगे, और वह अपनी हिक़ारत का इज़हार करके
पूछेंगे, 'रब ने इस मुल्क और इस घर से ऐसा सुलूक
क्यूँ किया?' 9 तब लोग जवाब देंगे, 'इस लिए कि गो
रब उन का ख़ुदा उन के बापदादा को मिस्र से निकाल
कर यहाँ लाया तो भी यह लोग उसे तर्क करके दीगर
माबूदों से चिमट गए हैं। चूँकि वह उन की परस्तिश
और ख़िदमत करने से बाज़ न आए इस लिए रब ने
उन्हें इस सारी मुसीबत में डाल दिया है'।"

हीराम की मदद का सिला

10 रब के घर और शाही महल को तामीर करने में
20 साल सर्फ़ हुए थे। 11 उस दौरान सूर का बादशाह
हीराम सुलेमान को देवदार और जूनीपर की उतनी
लकड़ी और उतना सोना भेजता रहा जितना सुलेमान
चाहता था। जब इमारतें तक्मील तक पहुँच गईं तो
सुलेमान ने हीराम को मुआवज़े में गलील के 20 शहर
दे दिए। 12 लेकिन जब हीराम उन का मुआइना करने
के लिए सूर से गलील आया तो वह उसे पसन्द न
आए। 13 उस ने सवाल किया, "मेरे भाई, यह कैसे
शहर हैं जो आप ने मुझे दिए हैं?" और उस ने उस
इलाक़े का नाम काबूल यानी 'कुछ भी नहीं' रखा।
यह नाम आज तक राइज है। 14 बात यह थी कि
हीराम ने इस्राईल के बादशाह को तक़रीबन 4,000
किलोग्राम सोना भेजा था।

सुलेमान की मुख़्तलिफ़ मुहिम्मात

15 सुलेमान ने अपने तामीरी काम के लिए बेगारी
लगाए। ऐसे ही लोगों की मदद से उस ने न सिर्फ़
रब का घर, अपना महल, इर्दगिर्द के चबूतरे और
यरूशलम की फ़सील बनवाई बल्कि तीनों शहर
हसूर, मजिद्दो और जज़र को भी।

16 जज़र शहर पर मिस्र के बादशाह फ़िरऔन ने
हम्ला करके क़ब्ज़ा कर लिया था। उस के कनआनी
बाशिन्दों को क़त्ल करके उस ने पूरे शहर को जला
दिया था। जब सुलेमान की फ़िरऔन की बेटी से शादी
हुई तो मिस्री बादशाह ने जहेज़ के तौर पर उसे यह
इलाक़ा दे दिया। 17 अब सुलेमान ने जज़र का शहर
दुबारा तामीर किया। इस के इलावा उस ने नशेबी
बैत-हौरून, 18 बालात और रेगिस्तान के शहर तदमूर
में बहुत सा तामीरी काम कराया।

19 सुलेमान ने अपने गोदामों के लिए और अपने
रथों और घोड़ों को रखने के लिए भी शहर बनवाए।
जो कुछ भी वह यरूशलम, लुबनान या अपनी
सल्तनत की किसी और जगह बनवाना चाहता था
वह उस ने बनवाया।

20–21 जिन आदमियों की सुलेमान ने बेगार पर
भर्ती की वह इस्राईली नहीं थे बल्कि अमोरी, हित्ती,
फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी यानी कनआन के पहले
बाशिन्दों की वह औलाद थे जो बाक़ी रह गए थे।
मुल्क पर क़ब्ज़ा करते वक़्त इस्राईली इन क़ौमों को
पूरे तौर पर मिटा न सके, और आज तक इन की
औलाद को इस्राईल के लिए बेगार में काम करना
पड़ता है। 22 लेकिन सुलेमान ने इस्राईलियों में से
किसी को भी ऐसे काम करने पर मज्बूर न किया
बल्कि वह उस के फ़ौजी, सरकारी अफ़्सर, फ़ौज के
अफ़्सर और रथों के फ़ौजी बन गए, और उन्हें उस
के रथों और घोड़ों पर मुक़र्रर किया गया। 23 सुलेमान
के तामीरी काम पर भी 550 इस्राईली मुक़र्रर थे जो
ज़िलओं पर मुक़र्रर अफ़्सरों के ताबे थे। यह लोग
तामीरी काम करने वालों की निगरानी करते थे।

24 जब फ़िरऔन की बेटी यरूशलम के पुराने हिस्से
बनाम 'दाऊद का शहर' से उस महल में मुन्तक़िल हुई
जो सुलेमान ने उस के लिए तामीर किया था तो वह
इर्दगिर्द के चबूतरे बनवाने लगा। 25 सुलेमान साल में
तीन बार रब को भस्म होने वाली और सलामती की
क़ुर्बानियाँ पेश करता था। वह उन्हें रब के घर की
उस क़ुर्बानगाह पर चढ़ाता था जो उस ने रब के लिए
बनवाई थी। साथ साथ वह बख़ूर भी जलाता था। यूँ
उस ने रब के घर को तक्मील तक पहुँचाया।

26 इस के इलावा सुलेमान बादशाह ने बहरी जहाज़ों
का बेड़ा भी बनवाया। इस काम का मर्कज़ ऐलात
के क़रीब शहर अस्यून-जाबर था। यह बन्दरगाह

मुल्क-ए-अदोम में बहर-ए-क़ुल्ज़ुम के साहिल पर है।
27 हीराम बादशाह ने उसे तजरिबाकार मल्लाह भेजे
ताकि वह सुलेमान के आदमियों के साथ मिल कर
जहाज़ों को चलाएँ। 28 उन्हों ने ओफ़ीर तक सफ़र
किया और वहाँ से तक़रीबन 14,000 किलोग्राम
सोना सुलेमान के पास ले आए।

सबा की मलिका सुलेमान से मिलती है

10 1 सुलेमान की शुहरत सबा की मलिका तक
पहुँच गई। जब उस ने उस के बारे में सुना
और यह भी कि उस ने रब के नाम के लिए क्या कुछ
किया है तो वह सुलेमान से मिलने के लिए रवाना
हुई ताकि उसे मुश्किल पहेलियाँ पेश करके उस की
दानिशमन्दी जाँच ले। 2 वह निहायत बड़े क़ाफ़िले के
साथ यरूशलम पहुँची जिस के ऊँट बल्सान, कस्रत
के सोने और क़ीमती जवाहिर से लदे हुए थे।

मलिका की सुलेमान से मुलाक़ात हुई तो उस ने
उस से वह तमाम मुश्किल सवालात पूछे जो उस के
ज़हन में थे। 3 सुलेमान उस के हर सवाल का जवाब
दे सका। कोई भी बात इतनी पेचीदा नहीं थी कि
बादशाह उस का मतलब मलिका को बता न सकता।
4 सबा की मलिका सुलेमान की वसी हिक्मत और
उस के नए महल से बहुत मुतअस्सिर हुई। 5 उस ने
बादशाह की मेज़ों पर के मुख़्तलिफ़ खाने देखे और
यह कि उस के अफ़्सर किस तर्तीब से उस पर बिठाए
जाते थे। उस ने बैरों की ख़िदमत, उन की शानदार
वर्दियों और साक़ियों पर भी ग़ौर किया। जब उस ने
इन बातों के इलावा भस्म होने वाली वह क़ुर्बानियाँ
भी देखीं जो सुलेमान रब के घर में चढ़ाता था तो
मलिका हक्का-बक्का रह गई।

6 वह बोल उठी, “वाक़ई, जो कुछ मैं ने अपने
मुल्क में आप के शाहकारों और हिक्मत के बारे में
सुना था वह दुरुस्त है। 7 जब तक मैं ने ख़ुद आ कर
यह सब कुछ अपनी आँखों से न देखा मुझे यक़ीन
नहीं आता था। बल्कि हक़ीक़त में मुझे आप के बारे
में आधा भी नहीं बताया गया था। आप की हिक्मत
और दौलत उन रिपोर्टों से कहीं ज़्यादा है जो मुझ तक
पहुँची थीं। 8 आप के लोग कितने मुबारक हैं! आप
के अफ़्सर कितने मुबारक हैं जो मुसलसल आप के
सामने खड़े रहते और आप की दानिश भरी बातें सुनते
हैं! 9 रब आप के ख़ुदा की तम्जीद हो जिस ने आप
को पसन्द करके इस्राईल के तख़्त पर बिठाया है।
रब इस्राईल से अबदी मुहब्बत रखता है, इसी लिए
उस ने आप को बादशाह बना दिया है ताकि इन्साफ़
और रास्तबाज़ी क़ाइम रखें।”

10 फिर मलिका ने सुलेमान को तक़रीबन 4,000
किलोग्राम सोना, बहुत ज़्यादा बल्सान और जवाहिर
दिए। बाद में कभी भी उतना बल्सान इस्राईल में नहीं
लाया गया जितना उस वक़्त सबा की मलिका लाई।

11 हीराम के जहाज़ ओफ़ीर से न सिर्फ़ सोना लाए
बल्कि उन्हों ने क़ीमती लकड़ी और जवाहिर भी
बड़ी मिक़्दार में इस्राईल तक पहुँचाए। 12 जितनी
क़ीमती लकड़ी उन दिनों में दरआमद हुई उतनी आज
तक कभी यहूदाह में नहीं लाई गई। इस लकड़ी से
बादशाह ने रब के घर और अपने महल के लिए
कटहरे बनवाए। यह मौसीक़ारों के सरोद और सितार
बनाने के लिए भी इस्तेमाल हुई।

13 सुलेमान बादशाह ने अपनी तरफ़ से सबा की
मलिका को बहुत से तुह्फ़े दिए। नीज़, जो कुछ भी
मलिका चाहती थी या उस ने माँगा वह उसे दिया
गया। फिर वह अपने नौकर-चाकरों और अफ़्सरों के
हमराह अपने वतन वापस चली गई।

सुलेमान की दौलत और शुहरत

14 जो सोना सुलेमान को सालाना मिलता था उस
का वज़न तक़रीबन 23,000 किलोग्राम था। 15 इस में
वह टैक्स शामिल नहीं थे जो उसे सौदागरों, ताजिरों,
अरब बादशाहों और ज़िलओं के अफ़्सरों से मिलते
थे।

16–17 सुलेमान बादशाह ने 200 बड़ी और 300
छोटी ढालें बनवाईं। उन पर सोना मंढा गया। हर बड़ी
ढाल के लिए तक़रीबन 7 किलोग्राम सोना इस्तेमाल

हुआ और हर छोटी ढाल के लिए तक़रीबन साढ़े
3 किलोग्राम। सुलेमान ने उन्हें 'लुबनान का जंगल'
नामी महल में महफ़ूज़ रखा।

18 इन के इलावा बादशाह ने हाथीदाँत से आरास्ता
एक बड़ा तख़्त बनवाया जिस पर ख़ालिस सोना
चढ़ाया गया। 19–20 तख़्त की पुश्त का ऊपर का
हिस्सा गोल था, और उस के हर बाज़ू के साथ
शेरबबर का मुजस्समा था। तख़्त कुछ ऊँचा था, और
बादशाह छः पाए वाली सीढ़ी पर चढ़ कर उस पर
बैठता था। दाईं और बाईं तरफ़ हर पाए पर शेरबबर
का मुजस्समा था। इस क़िस्म का तख़्त किसी और
सल्तनत में नहीं पाया जाता था।

21 सुलेमान के तमाम प्याले सोने के थे, बल्कि
'लुबनान का जंगल' नामी महल में तमाम बर्तन
ख़ालिस सोने के थे। कोई भी चीज़ चाँदी की नहीं
थी, क्यूँकि सुलेमान के ज़माने में चाँदी की कोई क़दर
नहीं थी। 22 बादशाह के अपने बहरी जहाज़ थे जो
हीराम के जहाज़ों के साथ मिल कर मुख़्तलिफ़ जगहों
पर जाते थे। हर तीन साल के बाद वह सोने-चाँदी,
हाथीदाँत, बन्दरों और मोरों से लदे हुए वापस आते
थे।

23 सुलेमान की दौलत और हिक्मत दुनिया के तमाम
बादशाहों से कहीं ज़्यादा थी। 24 पूरी दुनिया उस से
मिलने की कोशिश करती रही ताकि वह हिक्मत सुन
ले जो अल्लाह ने उस के दिल में डाल दी थी। 25 साल-
ब-साल जो भी सुलेमान के दरबार में आता वह कोई
न कोई तुहफ़ा लाता। यूँ उसे सोने-चाँदी के बर्तन,
क़ीमती लिबास, हथियार, बल्सान, घोड़े और ख़च्चर
मिलते रहे।

26 सुलेमान के 1,400 रथ और 12,000 घोड़े थे।
कुछ उस ने रथों के लिए मख़्सूस किए गए शहरों में
और कुछ यरूशलम में अपने पास रखे। 27 बादशाह
की सरगर्मियों के बाइस चाँदी पत्थर जैसी आम
हो गई और देवदार की क़ीमती लकड़ी यहूदाह के
मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े की अन्जीर-तूत की
सस्ती लकड़ी जैसी आम हो गई। 28 बादशाह अपने
घोड़े मिस्र और कूए यानी किलिकिया से दरआमद
करता था। उस के ताजिर इन जगहों पर जा कर उन्हें
ख़रीद लाते थे। 29 बादशाह के रथ मिस्र से दरआमद
होते थे। हर रथ की क़ीमत चाँदी के 600 सिक्के और
हर घोड़े की क़ीमत चाँदी के 150 सिक्के थी। सुलेमान
के ताजिर यह घोड़े बरआमद करते हुए तमाम हित्ती
और अरामी बादशाहों तक भी पहुँचाते थे।

सुलेमान रब से दूर हो जाता है

11 1 लेकिन सुलेमान बहुत सी ग़ैरमुल्की
ख़वातीन से मुहब्बत करता था। फ़िरऔन
की बेटी के इलावा उस की शादी मोआबी, अम्मोनी,
अदोमी, सैदानी और हित्ती औरतों से हुई। 2 इन क़ौमों
के बारे में रब ने इस्राईलियों को हुक्म दिया था, "न
तुम इन के घरों में जाओ और न यह तुम्हारे घरों
में आएँ, वर्ना यह तुम्हारे दिल अपने देवताओं की
तरफ़ माइल कर देंगे।" तो भी सुलेमान बड़े प्यार से
अपनी इन बीवियों से लिपटा रहा। 3 उस की शाही
ख़ानदानों से ताल्लुक़ रखने वाली 700 बीवियाँ और
300 दाश्ताएँ थीं। इन औरतों ने आख़िरकार उस का
दिल रब से दूर कर दिया। 4 जब वह बूढ़ा हो गया तो
उन्हों ने उस का दिल दीगर माबूदों की तरफ़ माइल
कर दिया। यूँ वह बुढ़ापे में अपने बाप दाऊद की
तरह पूरे दिल से रब का वफ़ादार न रहा 5 बल्कि
सैदानियों की देवी अस्तारात और अम्मोनियों के
देवता मिल्कूम की पूजा करने लगा। 6 ग़रज़ उस
ने ऐसा काम किया जो रब को नापसन्द था। वह
वफ़ादारी न रही जिस से उस के बाप दाऊद ने रब
की ख़िदमत की थी।

7 यरूशलम के मशरिक़ में सुलेमान ने एक पहाड़ी
पर दो मन्दिर बनाए, एक मोआब के घिनौने देवता
कमोस के लिए और एक अम्मोन के घिनौने देवता
मलिक यानी मिल्कूम के लिए। 8 ऐसे मन्दिर उस ने
अपनी तमाम ग़ैरमुल्की बीवियों के लिए तामीर किए
ताकि वह अपने देवताओं को बख़ूर और ज़बह की
क़ुर्बानियाँ पेश कर सकें।

9 रब को सुलेमान पर बड़ा ग़ुस्सा आया, क्यूँकि
वह इस्राईल के ख़ुदा से दूर हो गया था, हालाँकि
रब उस पर दो बार ज़ाहिर हुआ था। 10 गो उस ने
उसे दीगर माबूदों की पूजा करने से साफ़ मना किया
था तो भी सुलेमान ने उस का हुक्म न माना। 11 इस
लिए रब ने उस से कहा, "चूँकि तू मेरे अह्द और
अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं गुज़ारता, इस
लिए मैं बादशाही को तुझ से छीन कर तेरे किसी
अफ़्सर को दूँगा। यह बात यक़ीनी है। 12 लेकिन
तेरे बाप दाऊद की ख़ातिर मैं यह तेरे जीते जी नहीं
करूँगा बल्कि बादशाही को तेरे बेटे ही से छीनूँगा।
13 और मैं पूरी मम्लकत उस के हाथ से नहीं लूँगा
बल्कि अपने ख़ादिम दाऊद और अपने चुने हुए शहर
यरूशलम की ख़ातिर उस के लिए एक क़बीला छोड़
दूँगा।"

सुलेमान के दुश्मन हदद और रज़ून

14 फिर रब ने अदोम के शाही ख़ानदान में से एक
आदमी बनाम हदद को बरपा किया जो सुलेमान का
सख़्त मुख़ालिफ़ बन गया। 15 वह यूँ सुलेमान का
दुश्मन बन गया कि चन्द साल पहले जब दाऊद ने
अदोम को शिकस्त दी तो उस का फ़ौजी कमाँडर
योआब मैदान-ए-जंग में पड़ी तमाम इस्राईली लाशों
को दफ़नाने के लिए अदोम आया। जहाँ भी गया वहाँ
उस ने हर अदोमी मर्द को मार डाला। 16 वह छः
माह तक अपने फ़ौजियों के साथ हर जगह फिरा
और तमाम अदोमी मर्दों को मारता गया। 17 हदद
उस वक़्त बच गया और अपने बाप के चन्द एक
सरकारी अफ़्सरों के साथ फ़रार हो कर मिस्र में पनाह
ले सका।

18 रास्ते में उन्हें दश्त-ए-फ़ारान के मुल्क-ए-
मिदियान से गुज़रना पड़ा। वहाँ वह मज़ीद कुछ
आदमियों को जमा कर सके और सफ़र करते करते
मिस्र पहुँच गए। हदद मिस्र के बादशाह फ़िरऔन
के पास गया तो उस ने उसे घर, कुछ ज़मीन और
ख़ुराक मुहय्या की। 19 हदद फ़िरऔन को इतना
पसन्द आया कि उस ने उस की शादी अपनी बीवी
मलिका तह्फ़नीस की बहन के साथ कराई। 20 इस
बहन के बेटा पैदा हुआ जिस का नाम जनूबत रखा
गया। तह्फ़नीस ने उसे शाही महल में पाला जहाँ वह
फ़िरऔन के बेटों के साथ परवान चढ़ा।

21 एक दिन हदद को ख़बर मिली कि दाऊद और
उस का कमाँडर योआब फ़ौत हो गए हैं। तब उस
ने फ़िरऔन से इजाज़त माँगी, "मैं अपने मुल्क
लौट जाना चाहता हूँ, बराह-ए-करम मुझे जाने दें।"
22 फ़िरऔन ने एतिराज़ किया, "यहाँ क्या कमी है
कि तुम अपने मुल्क वापस जाना चाहते हो?" हदद
ने जवाब दिया, "मैं किसी भी चीज़ से महरूम नहीं
रहा, लेकिन फिर भी मुझे जाने दीजिए।"

23 अल्लाह ने एक और आदमी को भी सुलेमान के
ख़िलाफ़ बरपा किया। उस का नाम रज़ून बिन इल्यदा
था। पहले वह ज़ोबाह के बादशाह हददअज़र की
ख़िदमत अन्जाम देता था, लेकिन एक दिन उस ने
अपने मालिक से भाग कर 24 कुछ आदमियों को
अपने गिर्द जमा किया और डाकुओं के जथ्थे का
सरग़ना बन गया। जब दाऊद ने ज़ोबाह को शिकस्त
दे दी तो रज़ून अपने आदमियों के साथ दमिश्क़ गया
और वहाँ आबाद हो कर अपनी हुकूमत क़ाइम कर
ली। 25 होते होते वह पूरे शाम का हुक्मरान बन गया।
वह इस्राईलियों से नफ़रत करता था और सुलेमान
के जीते जी इस्राईल का ख़ास दुश्मन बना रहा। हदद
की तरह वह भी इस्राईल को तंग करता रहा।

यरुबिआम और अख़ियाह नबी

26 सुलेमान का एक सरकारी अफ़्सर भी उस के
ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ। उस का नाम यरुबिआम
बिन नबात था, और वह इफ़्राईम के शहर सरीदा का
था। उस की माँ सरूआ बेवा थी। 27 जब यरुबिआम
बाग़ी हुआ तो उन दिनों में सुलेमान इर्दगिर्द के चबूतरे
और फ़सील का आख़िरी हिस्सा तामीर कर रहा था।
28 उस ने देखा कि यरुबिआम माहिर और मेहनती
जवान है, इस लिए उस ने उसे इफ़्राईम और मनस्सी

के क़बीलों के तमाम बेगार में काम करने वालों पर
मुक़र्रर किया।
29 एक दिन यरुबिआम शहर से निकल रहा था तो
उस की मुलाक़ात सैला के नबी अख़ियाह से हुई।
अख़ियाह नई चादर ओढ़े फिर रहा था। खुले मैदान में
जहाँ कोई और नज़र न आया 30 अख़ियाह ने अपनी
चादर को पकड़ कर बारह टुकड़ों में फाड़ लिया
31 और यरुबिआम से कहा,
"चादर के दस टुकड़े अपने पास रखें! क्यूँकि रब
इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है, इस वक़्त मैं इस्राईल
की बादशाही को सुलेमान से छीनने वाला हूँ। जब
ऐसा होगा तो मैं उस के दस क़बीले तेरे हवाले कर
दूँगा। 32 एक ही क़बीला उस के पास रहेगा, और
यह भी सिर्फ़ उस के बाप दाऊद और उस शहर की
ख़ातिर जिसे मैं ने तमाम क़बीलों में से चुन लिया है।
33 इस तरह मैं सुलेमान को सज़ा दूँगा, क्यूँकि वह
और उस के लोग मुझे तर्क करके सैदानियों की देवी
अस्तारात की, मोआबियों के देवता कमोस की और
अम्मोनियों के देवता मिल्कूम की पूजा करने लगे हैं।
वह मेरी राहों पर नहीं चलते बल्कि वही कुछ करते
हैं जो मुझे बिलकुल नापसन्द है। जिस तरह दाऊद
मेरे अह्काम और हिदायात की पैरवी करता था उस
तरह उस का बेटा नहीं करता।
34 लेकिन मैं इस वक़्त पूरी बादशाही सुलेमान के
हाथ से नहीं छीनूँगा। अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर
जिसे मैं ने चुन लिया और जो मेरे अह्काम और
हिदायात के ताबे रहा मैं सुलेमान के जीते जी यह
नहीं करूँगा। वह ख़ुद बादशाह रहेगा, 35 लेकिन
उस के बेटे से मैं बादशाही छीन कर दस क़बीले
तेरे हवाले कर दूँगा। 36 सिर्फ़ एक क़बीला सुलेमान
के बेटे के सपुर्द रहेगा ताकि मेरे ख़ादिम दाऊद का
चराग़ हमेशा मेरे हुज़ूर यरूशलम में जलता रहे, उस
शहर में जो मैं ने अपने नाम की सुकूनत के लिए चुन
लिया है। 37 लेकिन तुझे, ऐ यरुबिआम, मैं इस्राईल
पर बादशाह बना दूँगा। जो कुछ भी तेरा जी चाहता
है उस पर तू हुकूमत करेगा। 38 उस वक़्त अगर तू
मेरे ख़ादिम दाऊद की तरह मेरी हर बात मानेगा, मेरी
राहों पर चलेगा और मेरे अह्काम और हिदायात के
ताबे रह कर वह कुछ करेगा जो मुझे पसन्द है तो फिर
मैं तेरे साथ रहूँगा। फिर मैं तेरा शाही ख़ानदान उतना
ही क़ाइम-ओ-दाइम कर दूँगा जितना मैं ने दाऊद का
किया है, और इस्राईल तेरे ही हवाले रहेगा।
39 यूँ मैं सुलेमान के गुनाह के बाइस दाऊद की
औलाद को सज़ा दूँगा, अगरचे यह अबदी सज़ा नहीं
होगी।"
40 इस के बाद सुलेमान ने यरुबिआम को मरवाने
की कोशिश की, लेकिन यरुबिआम ने फ़रार हो कर
मिस्र के बादशाह सीसक़ के पास पनाह ली। वहाँ
वह सुलेमान की मौत तक रहा।

सुलेमान की मौत

41 सुलेमान की ज़िन्दगी और हिक्मत के बारे में
मज़ीद बातें 'सुलेमान के आमाल' की किताब में
बयान की गई हैं। 42 सुलेमान 40 साल पूरे इस्राईल
पर हुकूमत करता रहा। उस का दार-उल-हकूमत
यरूशलम था। 43 जब वह मर कर अपने बापदादा
से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न
किया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर
उस का बेटा रहुबिआम तख़्तनशीन हुआ।

शिमाली क़बीले अलग हो जाते हैं

12 1 रहुबिआम सिकम गया, क्यूँकि वहाँ
तमाम इस्राईली उसे बादशाह मुक़र्रर करने
के लिए जमा हो गए थे। 2 यरुबिआम बिन नबात
यह ख़बर सुनते ही मिस्र से जहाँ उस ने सुलेमान
बादशाह से भाग कर पनाह ली थी इस्राईल वापस
आया। 3 इस्राईलियों ने उसे बुलाया ताकि उस के
साथ सिकम जाएँ। जब पहुँचा तो इस्राईल की पूरी
जमाअत यरुबिआम के साथ मिल कर रहुबिआम
से मिलने गई। उन्हों ने बादशाह से कहा, 4 "जो
जूआ आप के बाप ने हम पर डाल दिया था उसे
उठाना मुश्किल था, और जो वक़्त और पैसे हमें

बादशाह की ख़िदमत में सर्फ़ करने थे वह नाक़ाबिल-
ए-बर्दाश्त थे। अब दोनों को कम कर दें। फिर हम
ख़ुशी से आप की ख़िदमत करेंगे।”
5 रहुबिआम ने जवाब दिया, “मुझे तीन दिन की
मुहलत दें, फिर दुबारा मेरे पास आएँ।” चुनाँचे लोग
चले गए।
6 फिर रहुबिआम बादशाह ने उन बुज़ुर्गों से मश्वरा
किया जो सुलेमान के जीते जी बादशाह की ख़िदमत
करते रहे थे। उस ने पूछा, “आप का क्या ख़याल है?
मैं इन लोगों को क्या जवाब दूँ?” 7 बुज़ुर्गों ने जवाब
दिया, “हमारा मश्वरा है कि इस वक़्त उन का ख़ादिम
बन कर उन की ख़िदमत करें और उन्हें नर्म जवाब दें।
अगर आप ऐसा करें तो वह हमेशा आप के वफ़ादार
ख़ादिम बने रहेंगे।”
8 लेकिन रहुबिआम ने बुज़ुर्गों का मश्वरा रद्द करके
उस की ख़िदमत में हाज़िर उन जवानों से मश्वरा किया
जो उस के साथ परवान चढ़े थे। 9 उस ने पूछा, “मैं
इस क़ौम को क्या जवाब दूँ? यह तक़ाज़ा कर रहे हैं
कि मैं वह जूआ हल्का कर दूँ जो मेरे बाप ने उन पर
डाल दिया।” 10 जो जवान उस के साथ परवान चढ़े
थे उन्हों ने कहा, “अच्छा, यह लोग तक़ाज़ा कर रहे
हैं कि आप के बाप का जूआ हल्का किया जाए?
उन्हें बता देना, ‘मेरी छोटी उंगली मेरे बाप की कमर
से ज़्यादा मोटी है! 11 बेशक जो जूआ उस ने आप
पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन मेरा
जूआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आप को
कोड़े लगाए वहाँ मैं आप की बिच्छूओं से तादीब
करूँगा’!”
12 तीन दिन के बाद जब यरुबिआम तमाम
इस्राईलियों के साथ रहुबिआम का फ़ैसला सुनने के
लिए वापस आया 13 तो बादशाह ने उन्हें सख़्त जवाब
दिया। बुज़ुर्गों का मश्वरा रद्द करके 14 उस ने उन्हें
जवानों का जवाब दिया, “बेशक जो जूआ मेरे बाप ने
आप पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन
मेरा जूआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आप
को कोड़े लगाए वहाँ मैं आप की बिच्छूओं से तादीब
करूँगा!” 15 यूँ रब की मर्ज़ी पूरी हुई कि रहुबिआम
लोगों की बात नहीं मानेगा। क्यूँकि अब रब की
वह पेशगोई पूरी हुई जो सैला के नबी अख़ियाह ने
यरुबिआम बिन नबात को बताई थी।
16 जब इस्राईलियों ने देखा कि बादशाह हमारी बात
सुनने के लिए तय्यार नहीं है तो उन्हों ने उस से कहा,
“न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा, न यस्सी के
बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ इस्राईल, सब
अपने अपने घर वापस चलें! ऐ दाऊद, अब अपना
घर ख़ुद सँभाल लो!” यह कह कर वह सब चले गए।
17 सिर्फ़ यहूदाह के क़बीले के शहरों में रहने वाले
इस्राईली रहुबिआम के तहत रहे। 18 फिर रहुबिआम
बादशाह ने बेगारियों पर मुक़र्रर अफ़्सर अदूनीराम
को शिमाली क़बीलों के पास भेज दिया, लेकिन उसे
देख कर तमाम लोगों ने उसे संगसार किया। तब
रहुबिआम जल्दी से अपने रथ पर सवार हुआ और
भाग कर यरूशलम पहुँच गया। 19 यूँ इस्राईल के
शिमाली क़बीले दाऊद के शाही घराने से अलग हो
गए और आज तक उस की हुकूमत नहीं मानते।
20 जब ख़बर शिमाली इस्राईल में फैली कि
यरुबिआम मिस्र से वापस आ गया है तो लोगों
ने क़ौमी इज्लास मुनअक़िद करके उसे बुलाया
और वहाँ उसे अपना बादशाह बना लिया। सिर्फ़
यहूदाह का क़बीला रहुबिआम और उस के घराने
का वफ़ादार रहा।

रहुबिआम को इस्राईल से जंग करने की इजाज़त नहीं मिलती

21 जब रहुबिआम यरूशलम पहुँचा तो उस ने
यहूदाह और बिनयमीन के क़बीलों के चीदा चीदा
फ़ौजियों को इस्राईल से जंग करने के लिए बुलाया।
1,80,000 मर्द जमा हुए ताकि रहुबिआम बिन
सुलेमान के लिए इस्राईल पर दुबारा क़ाबू पाएँ।
22 लेकिन ऐन उस वक़्त मर्द-ए-ख़ुदा समायाह को
अल्लाह की तरफ़ से पैग़ाम मिला, 23 “यहूदाह के
बादशाह रहुबिआम बिन सुलेमान, यहूदाह और

बिनयमीन के तमाम अफ़राद और बाक़ी लोगों को
इत्तिला दे, 24 ‘रब फ़रमाता है कि अपने इस्राईली
भाइयों से जंग मत करना। हर एक अपने अपने घर
वापस चला जाए, क्यूँकि जो कुछ हुआ है वह मेरे
हुक्म पर हुआ है’।”
तब वह रब की सुन कर अपने अपने घर वापस
चले गए।

यरुबिआम के सोने के बछड़े

25 यरुबिआम इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े के शहर
सिकम को मज़बूत करके वहाँ आबाद हुआ। बाद
में उस ने फ़नूएल शहर की भी क़िलाबन्दी की और
वहाँ मुन्तक़िल हुआ। 26 लेकिन दिल में अन्देशा रहा
कि कहीं इस्राईल दुबारा दाऊद के घराने के हाथ
में न आ जाए। 27 उस ने सोचा, “लोग बाक़ाइदगी
से यरूशलम आते जाते हैं ताकि वहाँ रब के घर
में अपनी क़ुर्बानियाँ पेश करें। अगर यह सिलसिला
तोड़ा न जाए तो आहिस्ता आहिस्ता उन के दिल
दुबारा यहूदाह के बादशाह रहुबिआम की तरफ़
माइल हो जाएंगे। आख़िरकार वह मुझे क़त्ल करके
रहुबिआम को अपना बादशाह बना लेंगे।”
28 अपने अफ़्सरों के मश्वरे पर उस ने सोने के दो
बछड़े बनवाए। लोगों के सामने उस ने एलान किया,
“हर क़ुर्बानी के लिए यरूशलम जाना मुश्किल है!
ऐ इस्राईल देख, यह तेरे देवता हैं जो तुझे मिस्र से
निकाल लाए।” 29 एक बुत उस ने जुनूबी शहर बैत-
एल में खड़ा किया और दूसरा शिमाली शहर दान में।
30 यूँ यरुबिआम ने इस्राईलियों को गुनाह करने पर
उकसाया। लोग दान तक सफ़र किया करते थे ताकि
वहाँ के बुत की पूजा करें।
31 इस के इलावा यरुबिआम ने बहुत सी ऊँची
जगहों पर मन्दिर बनवाए। उन्हें सँभालने के लिए उस
ने ऐसे लोग मुक़र्रर किए जो लावी के क़बीले के नहीं
बल्कि आम लोग थे। 32 उस ने एक नई ईद भी राइज
की जो यहूदाह में मनाने वाली झोंपड़ियों की ईद की
मानिन्द थी। यह ईद आठवें माह [d]के पंद्रहवें दिन
मनाई जाती थी। बैत-एल में उस ने ख़ुद क़ुर्बानगाह
पर जा कर अपने बनवाए हुए बछड़ों को क़ुर्बानियाँ
पेश कीं, और वहीं उस ने अपने उन मन्दिरों के इमामों
को मुक़र्रर किया जो उस ने ऊँची जगहों पर तामीर
किए थे।

नबी यरुबिआम को बुरी ख़बर पहुँचाता है

33 चुनाँचे यरुबिआम के मुक़र्ररकरदा दिन यानी
आठवें महीने के पंद्रहवें दिन इस्राईलियों ने बैत-एल
में ईद मनाई। तमाम मेहमानों के सामने यरुबिआम
क़ुर्बानगाह पर चढ़ गया ताकि क़ुर्बानियाँ पेश करे।

13 1 वह अभी क़ुर्बानगाह के पास खड़ा अपनी
क़ुर्बानियाँ पेश करना ही चाहता था कि
एक मर्द-ए-ख़ुदा आन पहुँचा। रब ने उसे यहूदाह
से बैत-एल भेज दिया था। 2 बुलन्द आवाज़ से वह
क़ुर्बानगाह से मुख़ातिब हुआ, “ऐ क़ुर्बानगाह! ऐ
क़ुर्बानगाह! रब फ़रमाता है, ‘दाऊद के घराने से बेटा
पैदा होगा जिस का नाम यूसियाह होगा। तुझ पर वह
उन इमामों को क़ुर्बान कर देगा जो ऊँची जगहों के
मन्दिरों में ख़िदमत करते और यहाँ क़ुर्बानियाँ पेश
करने के लिए आते हैं। तुझ पर इन्सानों की हड्डियाँ
जलाई जाएँगी’।” 3 फिर मर्द-ए-ख़ुदा ने इलाही निशान
भी पेश किया। उस ने एलान किया, “एक निशान
साबित करेगा कि रब मेरी मारिफ़त बात कर रहा है!
यह क़ुर्बानगाह फट जाएगी, और इस पर मौजूद चर्बी
मिली राख ज़मीन पर बिखर जाएगी।”
4 यरुबिआम बादशाह अब तक क़ुर्बानगाह के पास
खड़ा था। जब उस ने बैत-एल की क़ुर्बानगाह के
ख़िलाफ़ मर्द-ए-ख़ुदा की बात सुनी तो वह हाथ से
उस की तरफ़ इशारा करके गरजा, “उसे पकड़ो!”
लेकिन जूँ ही बादशाह ने अपना हाथ बढ़ाया वह सूख
गया, और वह उसे वापस न खैंच सका। 5 उसी लम्हे

[d]अक्तूबर ता नवम्बर

क़ुर्बानगाह फट गई और उस पर मौजूद राख ज़मीन
पर बिखर गई। बिलकुल वही कुछ हुआ जिस का
एलान मर्द-ए-ख़ुदा ने रब की तरफ़ से किया था।
6 तब बादशाह इल्तिमास करने लगा, "रब अपने
ख़ुदा का ग़ुस्सा ठंडा करके मेरे लिए दुआ करें ताकि
मेरा हाथ बहाल हो जाए।" मर्द-ए-ख़ुदा ने उस की
शफ़ाअत की तो यरुबिआम का हाथ फ़ौरन बहाल
हो गया।
7 तब यरुबिआम बादशाह ने मर्द-ए-ख़ुदा को दावत
दी, "आएँ, मेरे घर में खाना खा कर ताज़ादम हो जाएँ।
मैं आप को तुहफ़ा भी दूँगा।" 8 लेकिन उस ने इन्कार
किया, "मैं आप के पास नहीं आऊँगा, चाहे आप
मुझे अपनी मिलकियत का आधा हिस्सा क्यूँ न दें।
मैं यहाँ न रोटी खाऊँगा, न कुछ पियूँगा। 9 क्यूँकि रब
ने मुझे हुक्म दिया है, 'रास्ते में न कुछ खा और न कुछ
पी। और वापस जाते वक़्त वह रास्ता न ले जिस पर
से तू बैत-एल पहुँचा है'।"
10 यह कह कर वह फ़र्क़ रास्ता इख़तियार करके
अपने घर के लिए रवाना हुआ।

नबी की नाफ़रमानी

11 बैत-एल में एक बूढ़ा नबी रहता था। जब उस के
बेटे उस दिन घर वापस आए तो उन्हों ने उसे सब
कुछ कह सुनाया जो मर्द-ए-ख़ुदा ने बैत-एल में किया
और यरुबिआम बादशाह को बताया था। 12 बाप
ने पूछा, "वह किस तरफ़ गया?" बेटों ने उसे वह
रास्ता बताया जो यहूदाह के मर्द-ए-ख़ुदा ने लिया था।
13 बाप ने हुक्म दिया, "मेरे गधे पर जल्दी से ज़ीन
कसो!" बेटों ने ऐसा किया तो वह उस पर बैठ कर
14 मर्द-ए-ख़ुदा को ढूँडने गया।
चलते चलते मर्द-ए-ख़ुदा बलूत के दरख़्त के साय
में बैठा नज़र आया। बुज़ुर्ग ने पूछा, "क्या आप वही
मर्द-ए-ख़ुदा हैं जो यहूदाह से बैत-एल आए थे?" उस
ने जवाब दिया, "जी, मैं वही हूँ।" 15 बुज़ुर्ग नबी ने
उसे दावत दी, "आएँ, मेरे साथ। मैं घर में आप को
कुछ खाना खिलाता हूँ।"
16 लेकिन मर्द-ए-ख़ुदा ने इन्कार किया, "नहीं, न मैं
आप के साथ वापस जा सकता हूँ, न मुझे यहाँ खाने-
पीने की इजाज़त है। 17 क्यूँकि रब ने मुझे हुक्म दिया,
'रास्ते में न कुछ खा और न कुछ पी। और वापस जाते
वक़्त वह रास्ता न ले जिस पर से तू बैत-एल पहुँचा
है'।"
18 बुज़ुर्ग नबी ने एतिराज़ किया, "मैं भी आप जैसा
नबी हूँ! एक फ़रिश्ते ने मुझे रब का नया पैग़ाम
पहुँचा कर कहा, 'उसे अपने साथ घर ले जा कर
रोटी खिला और पानी पिला'।" बुज़ुर्ग झूट बोल रहा
था, 19 लेकिन मर्द-ए-ख़ुदा उस के साथ वापस गया
और उस के घर में कुछ खाया और पिया।
20 वह अभी वहाँ बैठे खाना खा रहे थे कि बुज़ुर्ग
पर रब का कलाम नाज़िल हुआ। 21 उस ने बुलन्द
आवाज़ से यहूदाह के मर्द-ए-ख़ुदा से कहा, "रब
फ़रमाता है, 'तू ने रब के कलाम की ख़िलाफ़वरज़ी
की है! जो हुक्म रब तेरे ख़ुदा ने तुझे दिया था वह तू ने
नज़रअन्दाज़ किया है। 22 गो उस ने फ़रमाया था कि
यहाँ न कुछ खा और न कुछ पी तो भी तू ने वापस
आ कर यहाँ रोटी खाई और पानी पिया है। इस लिए
मरते वक़्त तुझे तेरे बापदादा की क़ब्र में दफ़नाया
नहीं जाएगा'।"
23 खाने के बाद बुज़ुर्ग के गधे पर ज़ीन कसा गया
और मर्द-ए-ख़ुदा को उस पर बिठाया गया। 24 वह
दुबारा रवाना हुआ तो रास्ते में एक शेरबबर ने उस
पर हम्ला करके उसे मार डाला। लेकिन उस ने लाश
को न छेड़ा बल्कि वह वहीं रास्ते में पड़ी रही जबकि
गधा और शेर दोनों ही उस के पास खड़े रहे।
25 कुछ लोग वहाँ से गुज़रे। जब उन्हों ने लाश को
रास्ते में पड़े और शेरबबर को उस के पास खड़े देखा
तो उन्हों ने बैत-एल जहाँ बुज़ुर्ग नबी रहता था आ
कर लोगों को इत्तिला दी। 26 जब बुज़ुर्ग को ख़बर
मिली तो उस ने कहा, "वही मर्द-ए-ख़ुदा है जिस ने
रब के फ़रमान की ख़िलाफ़वरज़ी की। अब वह कुछ
हुआ है जो रब ने उसे फ़रमाया था यानी उस ने उसे
शेरबबर के हवाले कर दिया ताकि वह उसे फाड़ कर

मार डाले।” 27 बुज़ुर्ग ने अपने बेटों को गधे पर ज़ीन
कसने का हुक्म दिया, 28 और वह उस पर बैठ कर
रवाना हुआ। जब वहाँ पहुँचा तो देखा कि लाश अब
तक रास्ते में पड़ी है और गधा और शेर दोनों ही उस
के पास खड़े हैं। शेरबबर ने न लाश को छेड़ा और न
गधे को फाड़ा था।
29 बुज़ुर्ग नबी ने लाश को उठा कर अपने गधे पर
रखा और उसे बैत-एल लाया ताकि उस का मातम
करके उसे वहाँ दफ़नाए। 30 उस ने लाश को अपनी
ख़ानदानी क़ब्र में दफ़न किया, और लोगों ने “हाय,
मेरे भाई” कह कर उस का मातम किया। 31 जनाज़े
के बाद बुज़ुर्ग नबी ने अपने बेटों से कहा, “जब मैं
कूच कर जाऊँगा तो मुझे मर्द-ए-ख़ुदा की क़ब्र में
दफ़नाना। मेरी हड्डियों को उस की हड्डियों के पास
ही रखें। 32 क्यूँकि जो बातें उस ने रब के हुक्म पर
बैत-एल की क़ुर्बानगाह और सामरिया के शहरों की
ऊँची जगहों के मन्दिरों के बारे में की हैं वह यक़ीनन
पूरी हो जाएँगी।”

यरुबिआम फिर भी नाफ़रमान रहता है

33 इन वाक़िआत के बावुजूद यरुबिआम अपनी
शरीर हरकतों से बाज़ न आया। आम लोगों को
इमाम बनाने का सिलसिला जारी रहा। जो कोई
भी इमाम बनना चाहता उसे वह ऊँची जगहों के
मन्दिरों में ख़िदमत करने के लिए मख़्सूस करता था।
34 यरुबिआम के घराने के इस संगीन गुनाह की वजह
से वह आख़िरकार तबाह हुआ और रू-ए-ज़मीन पर
से मिट गया।

यरुबिआम को इलाही सज़ा मिलती है

14 1 एक दिन यरुबिआम का बेटा अबियाह
बहुत बीमार हुआ। 2 तब यरुबिआम ने
अपनी बीवी से कहा, “जा कर अपना भेस बदलें
ताकि कोई न पहचाने कि आप मेरी बीवी हैं। फिर
सैला जाएँ। वहाँ अख़ियाह नबी रहता है जिस ने मुझे
इत्तिला दी थी कि मैं इस क़ौम का बादशाह बन
जाऊँगा। 3 उस के पास दस रोटियाँ, कुछ बिस्कुट
और शहद का मर्तबान ले जाएँ। वह आदमी आप को
ज़रूर बता देगा कि लड़के के साथ क्या हो जाएगा।”
4 चुनाँचे यरुबिआम की बीवी अपना भेस बदल कर
रवाना हुई और चलते चलते सैला में अख़ियाह के
घर पहुँच गई। अख़ियाह उम्रसीदा होने के बाइस
देख नहीं सकता था। 5 लेकिन रब ने उसे आगाह कर
दिया, “यरुबिआम की बीवी तुझ से मिलने आ रही
है ताकि अपने बीमार बेटे के बारे में मालूमात हासिल
करे। लेकिन वह अपना भेस बदल कर आएगी ताकि
उसे पहचाना न जाए।” फिर रब ने नबी को बताया
कि उसे क्या जवाब देना है।
6 जब अख़ियाह ने औरत के क़दमों की आहट सुनी
तो बोला, “यरुबिआम की बीवी, अन्दर आएँ! रूप
भरने की क्या ज़रूरत? मुझे आप को बुरी ख़बर
पहुँचानी है। 7 जाएँ, यरुबिआम को रब इस्राईल के
ख़ुदा की तरफ़ से पैग़ाम दें, ‘मैं ने तुझे लोगों में से
चुन कर खड़ा किया और अपनी क़ौम इस्राईल पर
बादशाह बना दिया। 8 मैं ने बादशाही को दाऊद के
घराने से छीन कर तुझे दे दिया। लेकिन अफ़सोस, तू
मेरे ख़ादिम दाऊद की तरह ज़िन्दगी नहीं गुज़ारता जो
मेरे अहकाम के ताबे रह कर पूरे दिल से मेरी पैरवी
करता रहा और हमेशा वह कुछ करता था जो मुझे
पसन्द था। 9 जो तुझ से पहले थे उन की निस्बत तू ने
कहीं ज़्यादा बदी की, क्यूँकि तू ने बुत ढाल कर अपने
लिए दीगर माबूद बनाए हैं और यूँ मुझे तैश दिलाया।
चूँकि तू ने अपना मुँह मुझ से फेर लिया 10 इस लिए मैं
तेरे ख़ानदान को मुसीबत में डाल दूँगा। इस्राईल में मैं
यरुबिआम के तमाम मर्दों को हलाक कर दूँगा, ख़्वाह
वह बच्चे हों या बालिग़। जिस तरह गोबर को झाड़ू
दे कर दूर किया जाता है उसी तरह यरुबिआम के
घराने का नाम-ओ-निशान मिट जाएगा। 11 तुम में से
जो शहर में मरेंगे उन्हें कुत्ते खा जाएंगे, और जो खुले
मैदान में मरेंगे उन्हें परिन्दे चट कर जाएंगे। क्यूँकि
यह रब का फ़रमान है’।”

12 फिर अख़ियाह ने यरुबिआम की बीवी से कहा,
“आप अपने घर वापस चली जाएँ। जूँ ही आप शहर
में दाख़िल होंगी लड़का फ़ौत हो जाएगा। 13 पूरा
इस्राईल उस का मातम करके उसे दफ़न करेगा।
वह आप के ख़ानदान का वाहिद फ़र्द होगा जिसे
सहीह तौर से दफ़नाया जाएगा। क्यूँकि रब इस्राईल
के ख़ुदा ने सिर्फ़ उसी में कुछ पाया जो उसे पसन्द
था। 14 रब इस्राईल पर एक बादशाह मुक़र्रर करेगा
जो यरुबिआम के ख़ानदान को हलाक करेगा। आज
ही से यह सिलसिला शुरू हो जाएगा। 15 रब इस्राईल
को भी सज़ा देगा, क्यूँकि वह यसीरत देवी के खम्बे
बना कर उन की पूजा करते हैं। चूँकि वह रब को
तैश दिलाते रहे हैं, इस लिए वह उन्हें मारेगा, और
वह पानी में सरकंडे की तरह हिल जाएंगे। रब उन्हें
इस अच्छे मुल्क से उखाड़ कर दरया-ए-फ़ुरात के
पार मुन्तशिर कर देगा। 16 यूँ वह इस्राईल को उन
गुनाहों के बाइस तर्क करेगा जो यरुबिआम ने किए
और इस्राईल को करने पर उकसाया है।”
17 यरुबिआम की बीवी तिर्ज़ा में अपने घर वापस
चली गई। और घर के दरवाज़े में दाख़िल होते ही उस
का बेटा मर गया। 18 तमाम इस्राईल ने उसे दफ़ना कर
उस का मातम किया। सब कुछ वैसे हुआ जैसे रब ने
अपने ख़ादिम अख़ियाह नबी की मारिफ़त फ़रमाया
था।

यरुबिआम की मौत

19 बाक़ी जो कुछ यरुबिआम की ज़िन्दगी के बारे
में लिखा है वह ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’ की
किताब में दर्ज है। उस किताब में पढ़ा जा सकता
है कि वह किस तरह हुकूमत करता था और उस
ने कौन कौन सी जंगें कीं। 20 यरुबिआम 22 साल
बादशाह रहा। जब वह मर कर अपने बापदादा से
जा मिला तो उस का बेटा नदब तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह रहुबिआम

21 यहूदाह में रहुबिआम बिन सुलेमान हुकूमत
करता था। उस की माँ नामा अम्मोनी थी। 41 साल
की उम्र में वह तख़्तनशीन हुआ और 17 साल
बादशाह रहा। उस का दार-उल-हकूमत यरूशलम
था, वह शहर जिसे रब ने तमाम इस्राईली क़बीलों में
से चुन लिया ताकि उस में अपना नाम क़ाइम करे।
22 लेकिन यहूदाह के बाशिन्दे भी ऐसी हरकतें करते
थे जो रब को नापसन्द थीं। अपने गुनाहों से वह
उसे तैश दिलाते रहे, क्यूँकि उन के यह गुनाह उन
के बापदादा के गुनाहों से कहीं ज़्यादा संगीन थे।
23 उन्हों ने भी ऊँची जगहों पर मन्दिर बनाए। हर
ऊँची पहाड़ी पर और हर घने दरख़्त के साय में
उन्हों ने मख़्सूस पत्थर या यसीरत देवी के खम्बे खड़े
किए, 24 यहाँ तक कि मन्दिरों में जिस्मफ़रोश मर्द
और औरतें थे। ग़रज़, उन्हों ने उन क़ौमों के तमाम
घिनौने रस्म-ओ-रिवाज अपना लिए जिन को रब ने
इस्राईलियों के आगे आगे निकाल दिया था।
25 रहुबिआम बादशाह की हुकूमत के पाँचवें साल
में मिस्र के बादशाह सीसक़ ने यरूशलम पर हम्ला
करके 26 रब के घर और शाही महल के तमाम ख़ज़ाने
लूट लिए। सोने की वह ढालें भी छीन ली गईं जो
सुलेमान ने बनवाई थीं। 27 इन की जगह रहुबिआम
ने पीतल की ढालें बनवाईं और उन्हें उन मुहाफ़िज़ों
के अफ़सरों के सपुर्द किया जो शाही महल के दरवाज़े
की पहरादारी करते थे। 28 जब भी बादशाह रब के
घर में जाता तब मुहाफ़िज़ यह ढालें उठा कर साथ
ले जाते। इस के बाद वह उन्हें पहरेदारों के कमरे में
वापस ले जाते थे।
29 बाक़ी जो कुछ रहुबिआम बादशाह की हुकूमत
के दौरान हुआ और जो कुछ उस ने किया वह
‘शाहान-ए-यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज
है। 30 दोनों बादशाहों रहुबिआम और यरुबिआम के
जीते जी उन के दरमियान जंग जारी रही। 31 जब
रहुबिआम मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो

उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’
कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। उस
की माँ नामा अम्मोनी थी। फिर रहुबिआम का बेटा
अबियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अबियाह

15 1 अबियाह इस्राईल के बादशाह यरुबिआम
बिन नबात की हुकूमत के 18वें साल में
यहूदाह का बादशाह बना। 2 वह तीन साल बादशाह
रहा, और उस का दार-उल-हकूमत यरूशलम था।
उस की माँ माका बिन्त अबीसलूम थी। 3 अबियाह
से वही गुनाह सरज़द हुए जो उस के बाप ने किए थे,
और वह पूरे दिल से रब अपने ख़ुदा का वफ़ादार न
रहा। गो वह इस में अपने परदादा दाऊद से फ़र्क़ था
4 तो भी रब उस के ख़ुदा ने अबियाह का यरूशलम
में चराग़ जलने दिया। दाऊद की ख़ातिर उस ने उसे
जानशीन अता किया और यरूशलम को क़ाइम रखा,
5 क्यूँकि दाऊद ने वह कुछ किया था जो रब को
पसन्द था। जीते जी वह रब के अह्काम के ताबे
रहा, सिवाए उस जुर्म के जब उस ने ऊरियाह हित्ती
के सिलसिले में ग़लत क़दम उठाए थे।

6 रहुबिआम और यरुबिआम के दरमियान की जंग
अबियाह की हुकूमत के दौरान भी जारी रही। 7 बाक़ी
जो कुछ अबियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और
जो कुछ उस ने किया वह ‘शाहान-ए-यहूदाह की
तारीख़’ की किताब में दर्ज है। 8 जब वह मर कर
अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के
उस हिस्से में दफ़न किया गया जो ‘दाऊद का शहर’
कहलाता है। फिर उस का बेटा आसा तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह का बादशाह आसा

9 आसा इस्राईल के बादशाह यरुबिआम के 20वें
साल में यहूदाह का बादशाह बन गया। 10 उस की
हुकूमत का दौरानिया 41 साल था, और उस का दार-
उल-हकूमत यरूशलम था। माँ का नाम माका था,
और वह अबीसलूम की बेटी थी। 11 अपने परदादा
दाऊद की तरह आसा भी वह कुछ करता रहा जो रब
को पसन्द था। 12 उस ने उन जिस्मफ़रोश मर्दों और
औरतों को निकाल दिया जो मन्दिरों में नाम-निहाद
ख़िदमत करते थे और उन तमाम बुतों को तबाह कर
दिया जो उस के बापदादा ने बनाए थे। 13 और गो उस
की माँ बादशाह की माँ होने के बाइस बहुत असर-
ओ-रसूख़ रखती थी, ताहम आसा ने यह उह्दा ख़त्म
कर दिया जब माँ ने यसीरत देवी का घिनौना खम्बा
बनवा लिया। आसा ने यह बुत कटवा कर वादी-ए-
क़िद्रोन में जला दिया। 14 अफ़सोस कि उस ने ऊँची
जगहों के मन्दिरों को दूर न किया। तो भी आसा जीते
जी पूरे दिल से रब का वफ़ादार रहा। 15 सोना-चाँदी
और बाक़ी जितनी चीज़ें उस के बाप और उस ने रब
के लिए मख़्सूस की थीं उन सब को वह रब के घर
में लाया।

16 यहूदाह के बादशाह आसा और इस्राईल के
बादशाह बाशा के दरमियान ज़िन्दगी भर जंग जारी
रही। 17 एक दिन बाशा बादशाह ने यहूदाह पर हम्ला
करके रामा शहर की क़िलाबन्दी की। मक़्सद यह
था कि न कोई यहूदाह के मुल्क में दाख़िल हो सके,
न कोई वहाँ से निकल सके। 18 जवाब में आसा ने
शाम के बादशाह बिन-हदद के पास वफ़द भेजा।
बिन-हदद का बाप ताबरिम्मोन बिन हज़्यून था, और
उस का दार-उल-हकूमत दमिश्क़ था। आसा ने रब
के घर और शाही महल के ख़ज़ानों का तमाम बचा
हुआ सोना और चाँदी वफ़द के सपुर्द करके दमिश्क़
के बादशाह को पैग़ाम भेजा, 19 “मेरा आप के साथ
अह्द है जिस तरह मेरे बाप का आप के बाप के साथ
अह्द था। गुज़ारिश है कि आप सोने-चाँदी का यह
तुह्फ़ा क़बूल करके इस्राईल के बादशाह बाशा के
साथ अपना अह्द मन्सूख़ कर दें ताकि वह मेरे मुल्क
से निकल जाए।”

20 बिन-हदद मुत्तफ़िक़ हुआ। उस ने अपने फ़ौजी
अफ़सरों को इस्राईल के शहरों पर हम्ला करने के लिए
भेज दिया तो उन्हों ने ऐय्यून, दान, अबील-बैत-माका,

तमाम किन्नरत और नफ़्ताली पर क़ब्ज़ा कर लिया।
21 जब बाशा को इस की ख़बर मिली तो वह रामा की
क़िलाबन्दी करने से बाज़ आया और तिर्ज़ा वापस
चला गया।
22 फिर आसा बादशाह ने यहूदाह के तमाम मर्दों
की भर्ती करके उन्हें रामा भेज दिया ताकि वह उन
तमाम पत्थरों और शहतीरों को उठा कर ले जाएँ
जिन से बाशा बादशाह रामा की क़िलाबन्दी करना
चाहता था। तमाम मर्दों को वहाँ जाना पड़ा, एक को
भी छुट्टी न मिली। इस सामान से आसा ने बिनयमीन
के शहर जिबा और मिस्फ़ाह की क़िलाबन्दी की।
23 बाक़ी जो कुछ आसा की हुकूमत के दौरान हुआ
और जो कुछ उस ने किया वह 'शाहान-ए-यहूदाह
की तारीख़' की किताब में दर्ज है। उस में उस की
कामयाबियों और उस के तामीर किए गए शहरों का
ज़िक्र है। बुढ़ापे में उस के पाँओ को बीमारी लग
गई। 24 जब वह मर कर अपने बापदादा से जा मिला
तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का
शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया।
फिर उस का बेटा यहूसफ़त उस की जगह तख़्तनशीन
हुआ।

इस्राईल का बादशाह नदब

25 नदब बिन यरुबिआम यहूदाह के बादशाह आसा
की हुकूमत के दूसरे साल में इस्राईल का बादशाह
बना। उस की हुकूमत का दौरानिया दो साल था।
26 उस का तर्ज़-ए-ज़िन्दगी रब को पसन्द नहीं था,
क्यूँकि वह अपने बाप के नमूने पर चलता रहा। जो
बदी यरुबिआम ने इस्राईल को करने पर उकसाया
था उस से नदब भी दूर न हुआ।
27–28 एक दिन जब नदब इस्राईली फ़ौज के साथ
फ़िलिस्ती शहर जिब्बतून का मुहासरा किए हुए था
तो इश्कार के क़बीले के बाशा बिन अख़ियाह ने
उस के ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे मार डाला और
ख़ुद इस्राईल का बादशाह बन गया। यह यहूदाह के
बादशाह आसा की हुकूमत के तीसरे साल में हुआ।
29 तख़्त पर बैठते ही बाशा ने यरुबिआम के पूरे
ख़ानदान को मरवा दिया। उस ने एक को भी ज़िन्दा
न छोड़ा। यूँ वह बात पूरी हुई जो रब ने सैला के रहने
वाले अपने ख़ादिम अख़ियाह की मारिफ़त फ़रमाई
थी। 30 क्यूँकि जो गुनाह यरुबिआम ने किए और
इस्राईल को करने पर उकसाया था उन से उस ने
रब इस्राईल के ख़ुदा को तैश दिलाया था।
31 बाक़ी जो कुछ नदब की हुकूमत के दौरान हुआ
और जो कुछ उस ने किया वह 'शाहान-ए-इस्राईल
की तारीख़' की किताब में दर्ज है।

इस्राईल का बादशाह बाशा

32–33 बाशा बिन अख़ियाह यहूदाह के बादशाह
आसा की हुकूमत के तीसरे साल में इस्राईल का
बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 24
साल था, और उस का दार-उल-हकूमत तिर्ज़ा रहा।
उस के और यहूदाह के बादशाह आसा के दरमियान
ज़िन्दगी भर जंग जारी रही। 34 लेकिन वह भी ऐसा
काम करता था जो रब को नापसन्द था, क्यूँकि उस
ने यरुबिआम के नमूने पर चल कर वह गुनाह जारी
रखे जो करने पर यरुबिआम ने इस्राईल को उकसाया
था।

16 1 एक दिन रब ने याहू बिन हनानी को बाशा
के पास भेज कर फ़रमाया, 2 "पहले तू कुछ
नहीं था, लेकिन मैं ने तुझे ख़ाक में से उठा कर
अपनी क़ौम इस्राईल का हुक्मरान बना दिया। तो
भी तू ने यरुबिआम के नमूने पर चल कर मेरी क़ौम
इस्राईल को गुनाह करने पर उकसाया और मुझे तैश
दिलाया है। 3 इस लिए मैं तेरे घराने के साथ वही कुछ
करूँगा जो यरुबिआम बिन नबात के घराने के साथ
किया था। बाशा की पूरी नस्ल हलाक हो जाएगी।
4 ख़ानदान के जो अफ़राद शहर में मरेंगे उन्हें कुत्ते
खा जाएंगे, और जो खुले मैदान में मरेंगे उन्हें परिन्दे
चट कर जाएंगे।"
5 बाक़ी जो कुछ बाशा की हुकूमत के दौरान हुआ,
जो कुछ उस ने किया और जो कामयाबियाँ उसे

हासिल हुईं वह 'शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़' की
किताब में दर्ज हैं। 6 जब वह मर कर अपने बापदादा
से जा मिला तो उसे तिर्ज़ा में दफ़न किया गया। फिर
उस का बेटा ऐला तख़्तनशीन हुआ। 7 रब की सज़ा
का जो पैग़ाम हनानी के बेटे याहू नबी ने बाशा और
उस के ख़ानदान को सुनाया उस की दो वुजूहात थीं।
पहले, बाशा ने यरुबिआम के ख़ानदान की तरह वह
कुछ किया जो रब को नापसन्द था और उसे तैश
दिलाया। दूसरे, उस ने यरुबिआम के पूरे ख़ानदान
को हलाक कर दिया था।

इस्राईल का बादशाह ऐला

8 ऐला बिन बाशा यहूदाह के बादशाह आसा की
हुकूमत के 26वें साल में इस्राईल का बादशाह बना।
उस की हुकूमत के दो साल के दौरान उस का दार-
उल-हकूमत तिर्ज़ा रहा। 9 ऐला का एक अफ़सर बनाम
ज़िम्री था। ज़िम्री रथों के आधे हिस्से पर मुक़र्रर था।
अब वह बादशाह के ख़िलाफ़ साज़िशें करने लगा।
एक दिन ऐला तिर्ज़ा में महल के इंचार्ज अर्ज़ा के घर
में बैठा मै पी रहा था। जब नशे में धुत हुआ 10 तो
ज़िम्री ने अन्दर जा कर उसे मार डाला। फिर वह ख़ुद
तख़्त पर बैठ गया। यह यहूदाह के बादशाह आसा
की हुकूमत के 27वें साल में हुआ।

11 तख़्त पर बैठते ही ज़िम्री ने बाशा के पूरे ख़ानदान
को हलाक कर दिया। उस ने किसी भी मर्द को ज़िन्दा
न छोड़ा, ख़्वाह वह दूर का रिश्तेदार था, ख़्वाह
दोस्त। 12 यूँ वही कुछ हुआ जो रब ने याहू नबी की
मारिफ़त बाशा को फ़रमाया था। 13 क्यूँकि बाशा और
उस के बेटे ऐला से संगीन गुनाह सरज़द हुए थे, और
साथ साथ उन्हों ने इस्राईल को भी यह करने पर
उकसाया था। अपने बातिल देवताओं से उन्हों ने
रब इस्राईल के ख़ुदा को तैश दिलाया था।

14 बाक़ी जो कुछ ऐला की हुकूमत के दौरान हुआ
और जो कुछ उस ने किया वह 'शाहान-ए-इस्राईल
की तारीख़' की किताब में दर्ज है।

इस्राईल का बादशाह ज़िम्री

15 ज़िम्री यहूदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के
27वें साल में इस्राईल का बादशाह बना। लेकिन
तिर्ज़ा में उस की हुकूमत सिर्फ़ सात दिन तक
क़ाइम रही। उस वक़्त इस्राईली फ़ौज फ़िलिस्ती
शहर जिब्बतून का मुहासरा कर रही थी। 16 जब
फ़ौज में ख़बर फैल गई कि ज़िम्री ने बादशाह के
ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे क़त्ल किया है तो तमाम
इस्राईलियों ने लश्करगाह में आ कर उसी दिन अपने
कमाँडर उम्री को बादशाह बना दिया। 17 तब उम्री
तमाम फ़ौजियों के साथ जिब्बतून को छोड़ कर तिर्ज़ा
का मुहासरा करने लगा। 18 जब ज़िम्री को पता चला
कि शहर दूसरों के क़ब्ज़े में आ गया है तो उस ने
महल के बुर्ज में जा कर उसे आग लगाई। यूँ वह
जल कर मर गया।

19 इस तरह उसे भी मुनासिब सज़ा मिल गई, क्यूँकि
उस ने भी वह कुछ किया था जो रब को नापसन्द था।
यरुबिआम के नमूने पर चल कर उस ने वह तमाम
गुनाह किए जो यरुबिआम ने किए और इस्राईल को
करने पर उकसाया था। 20 जो कुछ ज़िम्री की हुकूमत
के दौरान हुआ और जो साज़िशें उस ने कीं वह
'शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़' की किताब में दर्ज
हैं।

इस्राईल का बादशाह उम्री

21 ज़िम्री की मौत के बाद इस्राईली दो फ़िर्क़ों में
बट गए। एक फ़िर्क़ा तिब्नी बिन जीनत को बादशाह
बनाना चाहता था, दूसरा उम्री को। 22 लेकिन उम्री का
फ़िर्क़ा तिब्नी के फ़िर्क़े की निस्बत ज़्यादा ताक़तवर
निकला। चुनाँचे तिब्नी मर गया और उम्री पूरी क़ौम
पर बादशाह बन गया।

23 उम्री यहूदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के
31वें साल में इस्राईल का बादशाह बना। उस की
हुकूमत का दौरानिया 12 साल था। पहले छः साल
दार-उल-हकूमत तिर्ज़ा रहा। 24 इस के बाद उस ने

एक आदमी बनाम समर को चाँदी के 6,000 सिक्के दे
कर उस से सामरिया पहाड़ी ख़रीद ली और वहाँ
अपना नया दार-उल-हकूमत तामीर किया। पहले
मालिक समर की याद में उस ने शहर का नाम
सामरिया रखा।
25 लेकिन उम्री ने भी वही कुछ किया जो रब को
नापसन्द था, बल्कि उस ने माज़ी के बादशाहों की
निस्बत ज़्यादा बदी की। 26 उस ने यरुबिआम बिन
नबात के नमूने पर चल कर वह तमाम गुनाह किए
जो यरुबिआम ने किए और इस्राईल को करने पर
उकसाया था। नतीजे में इस्राईली रब अपने ख़ुदा को
अपने बातिल देवताओं से तैश दिलाते रहे। 27 बाक़ी
जो कुछ उम्री की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ
उस ने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं
वह 'शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़' की किताब में
बयान की गई हैं। 28 जब उम्री मर कर अपने बापदादा
से जा मिला तो उसे सामरिया में दफ़नाया गया। फिर
उस का बेटा अख़ियब तख़्तनशीन हुआ।

इस्राईल का बादशाह अख़ियब

29 अख़ियब बन उम्री यहूदाह के बादशाह आसा
के 38वें साल में इस्राईल का बादशाह बना। उस की
हुकूमत का दौरानिया 22 साल था, और उस का दार-
उल-हकूमत सामरिया रहा। 30 अख़ियब ने भी ऐसे
काम किए जो रब को नापसन्द थे, बल्कि माज़ी के
बादशाहों की निस्बत उस के गुनाह ज़्यादा संगीन
थे। 31 यरुबिआम के नमूने पर चलना उस के लिए
काफ़ी नहीं था बल्कि उस ने इस से बढ़ कर सैदा
के बादशाह इत्ब□ल की बेटी ईज़बिल से शादी भी
की। नतीजे में वह उस के देवता बाल के सामने झुक
कर उस की पूजा करने लगा। 32 सामरिया में उस ने
बाल का मन्दिर तामीर किया और देवता के लिए
क़ुर्बानगाह बना कर उस में रख दिया। 33 अख़ियब ने
यसीरत देवी का बुत भी बनवा दिया। यूँ उस ने अपने
घिनौने कामों से माज़ी के तमाम इस्राईली बादशाहों
की निस्बत कहीं ज़्यादा रब इस्राईल के ख़ुदा को तैश
दिलाया।
34 अख़ियब की हुकूमत के दौरान बैत-एल के रहने
वाले हीएल ने यरीहू शहर को नए सिरे से तामीर
किया। जब उस की बुन्याद रखी गई तो उस का
सब से बड़ा बेटा अबीराम मर गया, और जब उस ने
शहर के दरवाज़े लगा दिए तो उस के सब से छोटे
बेटे सजूब को अपनी जान देनी पड़ी। यूँ रब की वह
बात पूरी हुई जो उस ने यशूअ बिन नून की मारिफ़त
फ़रमाई थी।

कव्वे इल्यास नबी को खाना खिलाते हैं

17 1 एक दिन इल्यास नबी ने जो जिलिआद
के शहर तिश्बी का था अख़ियब बादशाह
से कहा, "रब इस्राईल के ख़ुदा की क़सम जिस की
ख़िदमत मैं करता हूँ, आने वाले सालों में न ओस, न
बारिश पड़ेगी जब तक मैं न कहूँ।"
2 फिर रब ने इल्यास से कहा, 3 "यहाँ से चला जा!
मशरिक़ की तरफ़ सफ़र करके वादी-ए-करीत में छुप
जा जिस की नदी दरया-ए-यर्दन में बहती है। 4 पानी तू
नदी से पी सकता है, और मैं ने कव्वों को तुझे वहाँ
खाना खिलाने का हुक्म दिया है।" 5 इल्यास रब की
सुन कर रवाना हुआ और वादी-ए-करीत में रहने लगा
जिस की नदी दरया-ए-यर्दन में बहती है। 6 सुब्ह-ओ-
शाम कव्वे उसे रोटी और गोश्त पहुँचाते रहे, और
पानी वह नदी से पीता था।

इल्यास सारपत की बेवा के पास

7 इस पूरे अर्से में बारिश न हुई, इस लिए नदी
आहिस्ता आहिस्ता सूख गई। जब उस का पानी
बिलकुल ख़त्म हो गया 8 तो रब दुबारा इल्यास से
हमकलाम हुआ, 9 "यहाँ से रवाना हो कर सैदा के
शहर सारपत में जा बस। मैं ने वहाँ की एक बेवा
को तुझे खाना खिलाने का हुक्म दिया है।" 10 चुनाँचे
इल्यास सारपत के लिए रवाना हुआ।

सफ़र करते करते वह शहर के दरवाज़े के पास
पहुँच गया। वहाँ एक बेवा जलाने के लिए लकड़ियाँ
चुन कर जमा कर रही थी। उसे बुला कर इल्यास ने
कहा, “ज़रा किसी बर्तन में पानी भर कर मुझे थोड़ा
सा पिलाएँ।”
11 वह अभी पानी लाने जा रही थी कि इल्यास ने
उस के पीछे आवाज़ दे कर कहा, “मेरे लिए रोटी
का टुकड़ा भी लाना!” 12 यह सुन कर बेवा रुक गई
और बोली, “रब आप के ख़ुदा की क़सम, मेरे पास
कुछ नहीं है। बस, एक बर्तन में मुट्ठी भर मैदा और
दूसरे में थोड़ा सा तेल रह गया है। अब मैं जलाने
के लिए चन्द एक लकड़ियाँ चुन रही हूँ ताकि अपने
और अपने बेटे के लिए आख़िरी खाना पकाऊँ। इस
के बाद हमारी मौत यक़ीनी है।”
13 इल्यास ने उसे तसल्ली दी, “डरें मत! बेशक वह
कुछ करें जो आप ने कहा है। लेकिन पहले मेरे लिए
छोटी सी रोटी बना कर मेरे पास ले आएँ। फिर जो
बाक़ी रह गया हो उस से अपने और अपने बेटे के
लिए रोटी बनाएँ। 14 क्यूँकि रब इस्राईल का ख़ुदा
फ़रमाता है, ‘जब तक रब बारिश बरसने न दे तब
तक मैदे और तेल के बर्तन ख़ाली नहीं होंगे’।”
15–16 औरत ने जा कर वैसा ही किया जैसा इल्यास
ने उसे कहा था। वाक़ई मैदा और तेल कभी ख़त्म न
हुआ। रोज़-ब-रोज़ इल्यास, बेवा और उस के बेटे के
लिए खाना दस्तयाब रहा। सब कुछ वैसा ही हुआ
जैसा रब ने इल्यास की मारिफ़त फ़रमाया था।
17 एक दिन बेवा का बेटा बीमार हो गया। उस की
तबीअत बहुत ख़राब हुई, और होते होते उस की जान
निकल गई। 18 तब बेवा इल्यास से शिकायत करने
लगी, “मर्द-ए-ख़ुदा, मेरा आप के साथ क्या वास्ता?
आप तो सिर्फ़ इस मक़्सद से यहाँ आए हैं कि रब को
मेरे गुनाह की याद दिला कर मेरे बेटे को मार डालें!”
19 इल्यास ने जवाब में कहा, “अपने बेटे को मुझे
दे दें।” वह लड़के को औरत की गोद में से उठा कर
छत पर अपने कमरे में ले गया और वहाँ उसे चारपाई
पर रख कर 20 दुआ करने लगा, “ऐ रब मेरे ख़ुदा, तू
ने इस बेवा को जिस का मेहमान मैं हूँ ऐसी मुसीबत
में क्यूँ डाल दिया है? तू ने उस के बेटे को मरने क्यूँ
दिया?” 21 वह तीन बार लाश पर दराज़ हुआ और
साथ साथ रब से इल्तिमास करता रहा, “ऐ रब मेरे
ख़ुदा, बराह-ए-करम बच्चे की जान को उस में वापस
आने दे!”
22 रब ने इल्यास की सुनी, और लड़के की जान
उस में वापस आई। 23 इल्यास उसे उठा कर नीचे ले
आया और उसे उस की माँ को वापस दे कर बोला,
“देखें, आप का बेटा ज़िन्दा है!” 24 औरत ने जवाब
दिया, “अब मैं ने जान लिया है कि आप अल्लाह के
पैग़म्बर हैं और कि जो कुछ आप रब की तरफ़ से
बोलते हैं वह सच है।”

इल्यास इस्राईल वापस जाता है

18 1 बहुत दिन गुज़र गए। फिर काल के तीसरे
साल में रब इल्यास से हमकलाम हुआ,
“अब जा कर अपने आप को अख़ियब के सामने
पेश कर। मैं बारिश का सिलसिला दुबारा शुरू कर
दूँगा।”
2 चुनाँचे इल्यास अख़ियब से मिलने के लिए
इस्राईल चला गया। उस वक़्त सामरिया काल की
सख़्त गिरिफ़्त में था, 3 इस लिए अख़ियब ने महल
के इंचार्ज अबदियाह को बुलाया। (अबदियाह रब
का ख़ौफ़ मानता था। 4 जब ईज़बिल ने रब के तमाम
नबियों को क़त्ल करने की कोशिश की थी तो
अबदियाह ने 100 नबियों को दो ग़ारों में छुपा दिया
था। हर ग़ार में 50 नबी रहते थे, और अबदियाह
उन्हें खाने-पीने की चीज़ें पहुँचाता रहता था।) 5 अब
अख़ियब ने अबदियाह को हुक्म दिया, “पूरे मुल्क में
से गुज़र कर तमाम चश्मों और वादियों का मुआइना
करें। शायद कहीं कुछ घास मिल जाए जो हम अपने
घोड़ों और ख़च्चरों को खिला कर उन्हें बचा सकें।
ऐसा न हो कि हमें खाने की क़िल्लत के बाइस कुछ
जानवरों को ज़बह करना पड़े।”

6 उन्हों ने मुक़र्रर किया कि अख़ियब कहाँ जाएगा
और अबदियाह कहाँ, फिर दोनों एक दूसरे से अलग
हो गए। 7 चलते चलते अबदियाह को अचानक
इल्यास उस की तरफ़ आते हुए नज़र आया। जब
अबदियाह ने उसे पहचाना तो वह मुँह के बल झुक
कर बोला, "मेरे आक़ा इल्यास, क्या आप ही हैं?"
8 इल्यास ने जवाब दिया, "जी, मैं ही हूँ। जाएँ, अपने
मालिक को इत्तिला दें कि इल्यास आ गया है।"
9 अबदियाह ने एतिराज़ किया, "मुझ से क्या ग़लती
हुई है कि आप मुझे अख़ियब से मरवाना चाहते हैं?
10 रब आप के ख़ुदा की क़सम, बादशाह ने अपने
बन्दों को हर क़ौम और मुल्क में भेज दिया है ताकि
आप को ढूँड निकालें। और जहाँ जवाब मिला कि
इल्यास यहाँ नहीं है वहाँ लोगों को क़सम खानी पड़ी
कि हम इल्यास का खोज लगाने में नाकाम रहे हैं।
11 और अब आप चाहते हैं कि मैं बादशाह के पास जा
कर उसे बताऊँ कि इल्यास यहाँ है? 12 ऐन मुमकिन
है कि जब मैं आप को छोड़ कर चला जाऊँ तो रब
का रूह आप को उठा कर किसी नामालूम जगह
ले जाए। अगर बादशाह मेरी यह इत्तिला सुन कर
यहाँ आए और आप को न पाए तो मुझे मार डालेगा।
याद रहे कि मैं जवानी से ले कर आज तक रब का
ख़ौफ़ मानता आया हूँ। 13 क्या मेरे आक़ा तक यह
ख़बर नहीं पहुँची कि जब ईज़बिल रब के नबियों को
क़त्ल कर रही थी तो मैं ने क्या किया? मैं दो ग़ारों
में पचास पचास नबियों को छुपा कर उन्हें खाने-
पीने की चीज़ें पहुँचाता रहा। 14 और अब आप चाहते
हैं कि मैं अख़ियब के पास जा कर उसे इत्तिला दूँ
कि इल्यास यहाँ आ गया है? वह मुझे ज़रूर मार
डालेगा।"
15 इल्यास ने कहा, "रब्ब-उल-अफ़्वाज की हयात
की क़सम जिस की ख़िदमत मैं करता हूँ, आज मैं
अपने आप को ज़रूर बादशाह को पेश करूँगा।"
16 तब अबदियाह चला गया और बादशाह को
इल्यास की ख़बर पहुँचाई। यह सुन कर अख़ियब
इल्यास से मिलने के लिए आया।

क्या बाल हक़ीक़ी माबूद है या रब?

17 इल्यास को देखते ही अख़ियब बोला, "ऐ
इस्राईल को मुसीबत में डालने वाले, क्या आप
वापस आ गए हैं?" 18 इल्यास ने एतिराज़ किया, "मैं
तो इस्राईल के लिए मुसीबत का बाइस नहीं बना
बल्कि आप और आप के बाप का घराना। आप रब
के अह्काम छोड़ कर बाल के बुतों के पीछे लग गए
हैं। 19 अब मैं आप को चैलेंज देता हूँ, तमाम इस्राईल
को बुला कर कर्मिल पहाड़ पर जमा करें। साथ साथ
बाल देवता के 450 नबियों को और ईज़बिल की मेज़
पर शरीक होने वाले यसीरत देवी के 400 नबियों को
भी बुलाएँ।"
20 अख़ियब मान गया। उस ने तमाम इस्राईलियों
और नबियों को बुलाया। जब वह कर्मिल पहाड़ पर
जमा हो गए 21 तो इल्यास उन के सामने जा खड़ा
हुआ और कहा, "आप कब तक कभी इस तरफ़,
कभी उस तरफ़ लंगड़ाते रहेंगे? [e]अगर रब ख़ुदा है तो
सिर्फ़ उसी की पैरवी करें, लेकिन अगर बाल वाहिद
ख़ुदा है तो उसी के पीछे लग जाएँ।"
लोग ख़ामोश रहे। 22 इल्यास ने बात जारी रखी,
"रब के नबियों में से सिर्फ़ मैं ही बाक़ी रह गया
हूँ। दूसरी तरफ़ बाल देवता के यह 450 नबी खड़े
हैं। 23 अब दो बैल ले आएँ। बाल के नबी एक को
पसन्द करें और फिर उसे टुकड़े टुकड़े करके अपनी
क़ुर्बानगाह की लकड़ियों पर रख दें। लेकिन वह
लकड़ियों को आग न लगाएँ। मैं दूसरे बैल को तय्यार
करके अपनी क़ुर्बानगाह की लकड़ियों पर रख दूँगा।
लेकिन मैं भी उन्हें आग नहीं लगाऊँगा। 24 फिर आप
अपने देवता का नाम पुकारें जबकि मैं रब का नाम
पुकारूँगा। जो माबूद क़ुर्बानी को जला कर जवाब

---

[e]देखिए आयत 26।

देगा वही ख़ुदा है।” तमाम लोग बोले, “आप ठीक
कहते हैं।”
25 फिर इल्यास ने बाल के नबियों से कहा, “शुरू
करें, क्यूँकि आप बहुत हैं। एक बैल को चुन कर
उसे तय्यार करें। लेकिन उसे आग मत लगाना बल्कि
अपने देवता का नाम पुकारें ताकि वह आग भेज दे।”
26 उन्हों ने बैलों में से एक को चुन कर उसे तय्यार
किया, फिर बाल का नाम पुकारने लगे। सुब्ह से ले
कर दोपहर तक वह मुसलसल चीख़ते चिल्लाते रहे,
“ऐ बाल, हमारी सुन!” साथ साथ वह उस क़ुर्बानगाह
के इर्दगिर्द नाचते रहे [f]जो उन्हों ने बनाई थी। लेकिन
न कोई आवाज़ सुनाई दी, न किसी ने जवाब दिया।
27 दोपहर के वक़्त इल्यास उन का मज़ाक़ उड़ाने
लगा, “ज़्यादा ऊँची आवाज़ से बोलें! शायद वह
सोचों में ग़र्क़ हो या अपनी हाजत रफ़ा करने के लिए
एक तरफ़ गया हो। यह भी हो सकता है कि वह कहीं
सफ़र कर रहा हो। या शायद वह गहरी नींद सो गया
हो और उसे जगाने की ज़रूरत है।”
28 तब वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से चीख़ने-चिल्लाने
लगे। मामूल के मुताबिक़ वह छुरियों और नेज़ों से
अपने आप को ज़ख़्मी करने लगे, यहाँ तक कि ख़ून
बहने लगा। 29 दोपहर गुज़र गई, और वह शाम के
उस वक़्त तक वज्द में रहे जब ग़ल्ला की नज़र पेश
की जाती है। लेकिन कोई आवाज़ न सुनाई दी। न
किसी ने जवाब दिया, न उन के तमाशे पर तवज्जुह
दी।
30 फिर इल्यास इस्राईलियों से मुख़ातिब हुआ,
“आएँ, सब यहाँ मेरे पास आएँ!” सब क़रीब आए।
वहाँ रब की एक क़ुर्बानगाह थी जो गिराई गई थी।
अब इल्यास ने वह दुबारा खड़ी की। 31 उस ने याक़ूब
से निकले हर क़बीले के लिए एक एक पत्थर चुन
लिया। (बाद में रब ने याक़ूब का नाम इस्राईल रखा
था)। 32 इन बारह पत्थरों को ले कर इल्यास ने रब
के नाम की ताज़ीम में क़ुर्बानगाह बनाई। इस के
इर्दगिर्द उस ने इतना चौड़ा गढ़ा खोदा कि उस में
तक़रीबन 15 लिटर पानी समा सकता था। 33 फिर
उस ने क़ुर्बानगाह पर लकड़ियों का ढेर लगाया और
बैल को टुकड़े टुकड़े करके लकड़ियों पर रख दिया।
इस के बाद उस ने हुक्म दिया, “चार घड़े पानी से भर
कर क़ुर्बानी और लकड़ियों पर उंडेल दें!” 34 जब
उन्हों ने ऐसा किया तो उस ने दुबारा ऐसा करने का
हुक्म दिया, फिर तीसरी बार। 35 आख़िरकार इतना
पानी था कि उस ने चारों तरफ़ क़ुर्बानगाह से टपक
कर गढ़े को भर दिया।
36 शाम के वक़्त जब ग़ल्ला की नज़र पेश की जाती
है इल्यास ने क़ुर्बानगाह के पास जा कर बुलन्द
आवाज़ से दुआ की, “ऐ रब, ऐ इब्राहीम, इस्हाक़
और इस्राईल के ख़ुदा, आज लोगों पर ज़ाहिर कर
कि इस्राईल में तू ही ख़ुदा है और कि मैं तेरा ख़ादिम
हूँ। साबित कर कि मैं ने यह सब कुछ तेरे हुक्म के
मुताबिक़ किया है। 37 ऐ रब, मेरी दुआ सुन! मेरी सुन
ताकि यह लोग जान लें कि तू, ऐ रब, ख़ुदा है और
कि तू ही उन के दिलों को दुबारा अपनी तरफ़ माइल
कर रहा है।”
38 अचानक आसमान से रब की आग नाज़िल हुई।
आग ने न सिर्फ़ क़ुर्बानी और लकड़ी को भस्म कर
दिया बल्कि क़ुर्बानगाह के पत्थरों और उस के नीचे
की मिट्टी को भी। गढ़े में पानी भी एक दम सूख गया।
39 यह देख कर इस्राईली औंधे मुँह गिर कर पुकारने
लगे, “रब ही ख़ुदा है! रब ही ख़ुदा है!” 40 फिर
इल्यास ने उन्हें हुक्म दिया, “बाल के नबियों को
पकड़ लें। एक भी बचने न पाए!” लोगों ने उन्हें पकड़
लिया तो इल्यास उन्हें नीचे वादी-ए-क़ैसोन में ले गया
और वहाँ सब को मौत के घाट उतार दिया।

बारिश होती है

41 फिर इल्यास ने अख़ियब से कहा, “अब जा कर
कुछ खाएँ और पिएँ, क्यूँकि मूसलाधार बारिश का

[f]लफ़्ज़ी तर्जुमा : लंगड़ाते हुए नाचते रहे। ग़ालिबन बाल की ताज़ीम में एक ख़ास क़िस्म का रक़्स। लिहाज़ा आयत 21 में इल्यास का सवाल, “आप कब तक . . . लंगड़ाते रहेंगे?”

शोर सुनाई दे रहा है।” 42 चुनाँचे अख़ियब खाने-पीने
के लिए चला गया जबकि इल्यास कर्मिल पहाड़ की
चोटी पर चढ़ गया। वहाँ उस ने झुक कर अपने सर
को दोनों घुटनों के बीच में छुपा लिया। 43 अपने
नौकर को उस ने हुक्म दिया, “जाओ, समुन्दर की
तरफ़ देखो।”

नौकर गया और समुन्दर की तरफ़ देखा, फिर
वापस आ कर इल्यास को इत्तिला दी, “कुछ भी नज़र
नहीं आता।” लेकिन इल्यास ने उसे दुबारा देखने
के लिए भेज दिया। इस दफ़ा भी कुछ मालूम न हो
सका। सात बार इल्यास ने नौकर को देखने के लिए
भेजा। 44 आख़िरकार जब नौकर सातवीं दफ़ा गया
तो उस ने वापस आ कर इत्तिला दी, “एक छोटा सा
बादल समुन्दर में से निकल कर ऊपर चढ़ रहा है।
वह आदमी के हाथ के बराबर है।”

तब इल्यास ने हुक्म दिया, “जाओ, अख़ियब
को इत्तिला दो, ‘घोड़ों को फ़ौरन रथ में जोत कर
घर चले जाएँ, वर्ना बारिश आप को रोक लेगी’।”
45 नौकर इत्तिला देने चला गया तो जल्द ही आँधी
आई, आसमान पर काले काले बादल छा गए और
मूसलाधार बारिश बरसने लगी। अख़ियब जल्दी से
रथ पर सवार हो कर यज़्रएल के लिए रवाना हो
गया। 46 उस वक़्त रब ने इल्यास को ख़ास ताक़त
दी। सफ़र के लिए कमरबस्ता हो कर वह अख़ियब
के रथ के आगे आगे दौड़ कर उस से पहले यज़्रएल
पहुँच गया।

इल्यास भाग जाता है

19 1 अख़ियब ने ईज़बिल को सब कुछ सुनाया
जो इल्यास ने कहा था, यह भी कि उस ने
बाल के नबियों को किस तरह तलवार से मार दिया
था। 2 तब ईज़बिल ने क़ासिद को इल्यास के पास
भेज कर उसे इत्तिला दी, “देवता मुझे सख़्त सज़ा दें
अगर मैं कल इस वक़्त तक आप को उन नबियों की
सी सज़ा न दूँ।”

3 इल्यास सख़्त डर गया और अपनी जान बचाने
के लिए भाग गया। चलते चलते वह यहूदाह के शहर
बैर-सबा तक पहुँच गया। वहाँ वह अपने नौकर को
छोड़ कर 4 आगे रेगिस्तान में जा निकला। एक दिन
के सफ़र के बाद वह सींक की झाड़ी के पास पहुँच
गया और उस के साय में बैठ कर दुआ करने लगा,
“ऐ रब, मुझे मरने दे। बस अब काफ़ी है। मेरी जान
ले ले, क्यूँकि मैं अपने बापदादा से बेहतर नहीं हूँ।”
5 फिर वह झाड़ी के साय में लेट कर सो गया।

अचानक एक फ़रिश्ते ने उसे छू कर कहा, “उठ,
खाना खा ले!” 6 जब उस ने अपनी आँखें खोलीं तो
देखा कि सिरहाने के क़रीब कोएलों पर बनाई गई
रोटी और पानी की सुराही पड़ी है। उस ने रोटी खाई,
पानी पिया और दुबारा सो गया। 7 लेकिन रब का
फ़रिश्ता एक बार फिर आया और उसे हाथ लगा
कर कहा, “उठ, खाना खा ले, वर्ना आगे का लम्बा
सफ़र तेरे बस की बात नहीं होगी।”

8 तब इल्यास ने उठ कर दुबारा खाना खाया और
पानी पिया। इस ख़ुराक ने उसे इतनी तक़वियत दी
कि वह चालीस दिन और चालीस रात सफ़र करते
करते अल्लाह के पहाड़ होरिब यानी सीना तक पहुँच
गया। 9 वहाँ वह रात गुज़ारने के लिए एक ग़ार में
चला गया।

रब इल्यास की हौसलाअफ़ज़ाई करता है

ग़ार में रब उस से हमकलाम हुआ। उस ने पूछा,
“इल्यास, तू यहाँ क्या कर रहा है?” 10 इल्यास
ने जवाब दिया, “मैं ने रब, आसमानी लश्करों के
ख़ुदा की ख़िदमत करने की सिरतोड़ कोशिश की है,
क्यूँकि इस्राईलियों ने तेरे अह्द को तर्क कर दिया है।
उन्हों ने तेरी क़ुर्बानगाहों को गिरा कर तेरे नबियों को
तलवार से क़त्ल कर दिया है। मैं अकेला ही बचा
हूँ, और वह मुझे भी मार डालने के दरपै हैं।”

11 जवाब में रब ने फ़रमाया, “ग़ार से निकल कर
पहाड़ पर रब के सामने खड़ा हो जा!” फिर रब वहाँ
से गुज़रा। उस के आगे आगे बड़ी और ज़बरदस्त

आँधी आई जिस ने पहाड़ों को चीर कर चटानों को
टुकड़े टुकड़े कर दिया। लेकिन रब आँधी में नहीं था।
12 इस के बाद ज़ल्ज़ला आया, लेकिन रब ज़ल्ज़ले में
नहीं था। 13 ज़ल्ज़ले के बाद भड़कती हुई आग वहाँ
से गुज़री, लेकिन रब आग में भी नहीं था। फिर नर्म
हवा की धीमी धीमी आवाज़ सुनाई दी। यह आवाज़
सुन कर इल्यास ने अपने चिहरे को चादर से ढाँप
लिया और निकल कर ग़ार के मुँह पर खड़ा हो गया।
एक आवाज़ उस से मुख़ातिब हुई, "इल्यास, तू यहाँ
क्या कर रहा है?" 14 इल्यास ने जवाब दिया, "मैं ने
रब, आसमानी लश्करों के ख़ुदा की ख़िदमत करने
की सिरतोड़ कोशिश की है, क्यूँकि इस्राईलियों ने तेरे
अह्द को तर्क कर दिया है। उन्हों ने तेरी क़ुर्बानगाहों
को गिरा कर तेरे नबियों को तलवार से क़त्ल कर
दिया है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार
डालने के दरपै हैं।"

15 रब ने जवाब में कहा, "रेगिस्तान में उस रास्ते से
हो कर वापस जा जिस ने तुझे यहाँ पहुँचाया है। फिर
दमिश्क़ चला जा। वहाँ हज़ाएल को तेल से मसह
करके शाम का बादशाह क़रार दे। 16 इसी तरह याहू
बिन निम्सी को मसह करके इस्राईल का बादशाह
क़रार दे और अबील-महूला के रहने वाले इलीशा
बिन साफ़त को मसह करके अपना जानशीन मुक़र्रर
कर। 17 जो हज़ाएल की तलवार से बच जाएगा उसे
याहू मार देगा, और जो याहू की तलवार से बच
जाएगा उसे इलीशा मार देगा। 18 लेकिन मैं ने अपने
लिए इस्राईल में 7,000 अफ़राद को बचा लिया है,
उन तमाम लोगों को जो अब तक न बाल देवता के
सामने झुके, न उस के बुत को बोसा दिया है।"

इल्यास इलीशा को अपना जानशीन मुक़र्रर करता है

19 इल्यास वहाँ से चला गया। इस्राईल में वापस
आ कर उसे इलीशा बिन साफ़त मिला जो बैलों की
बारह जोड़ियों की मदद से हल चला रहा था। ख़ुद
वह बारहवीं जोड़ी के साथ चल रहा था। इल्यास ने
उस के पास आ कर अपनी चादर उस के कंधों पर
डाल दी और रुके बग़ैर आगे निकल गया।

20 इलीशा फ़ौरन अपने बैलों को छोड़ कर इल्यास
के पीछे भागा। उस ने कहा, "पहले मुझे अपने माँ-
बाप को बोसा दे कर ख़ैरबाद कहने दीजिए। फिर
मैं आप के पीछे हो लूँगा।" इल्यास ने जवाब दिया,
"चलें, वापस जाएँ। लेकिन वह कुछ याद रहे जो मैं
ने आप के साथ किया है।" 21 तब इलीशा वापस
चला गया। बैलों की एक जोड़ी को ले कर उस ने
दोनों को ज़बह किया। हल चलाने का सामान उस ने
गोश्त पकाने के लिए जला दिया। जब गोश्त तय्यार
था तो उस ने उसे लोगों में तक़्सीम करके उन्हें खिला
दिया। इस के बाद इलीशा इल्यास के पीछे हो कर
उस की ख़िदमत करने लगा।

शाम की फ़ौज सामरिया का मुहासरा करती है

20 1 एक दिन शाम के बादशाह बिन-हदद
ने अपनी पूरी फ़ौज को जमा किया। 32
इत्तिहादी बादशाह भी अपने रथों और घोड़ों को
ले कर आए। इस बड़ी फ़ौज के साथ बिन-हदद ने
सामरिया का मुहासरा करके इस्राईल से जंग का
एलान किया। 2 उस ने अपने क़ासिदों को शहर में
भेज कर इस्राईल के बादशाह अख़ियब को इत्तिला
दी, 3 "अब से आप का सोना, चाँदी, ख़वातीन और
बेटे मेरे ही हैं।" 4 इस्राईल के बादशाह ने जवाब दिया,
"मेरे आक़ा और बादशाह, आप की मर्ज़ी। मैं और जो
कुछ मेरा है आप की मिलकियत है।"

5 थोड़ी देर के बाद क़ासिद बिन-हदद की नई ख़बर
ले कर आए, "मैं ने आप से सोने, चाँदी, ख़वातीन
और बेटों का तक़ाज़ा किया है। 6 अब ग़ौर करें! कल
इस वक़्त मैं अपने मुलाज़िमों को आप के पास भेज
दूँगा, और वह आप के महल और आप के अफ़सरों
के घरों की तलाशी लेंगे। जो कुछ भी आप को प्यारा
है उसे वह ले जाएंगे।"

7 तब अख़ियब बादशाह ने मुल्क के तमाम बुज़ुर्गों
को बुला कर उन से बात की, "देखें यह आदमी

कितना बुरा इरादा रखता है। जब उस ने मेरी
ख़वातीन, बेटों, सोने और चाँदी का तक़ाज़ा किया
तो मैं ने इन्कार न किया।” 8 बुज़ुर्गों और बाक़ी लोगों
ने मिल कर मश्वरा दिया, “उस की न सुनें, और जो
कुछ वह माँगता है उस पर राज़ी न हो जाएँ।” 9 चुनाँचे
बादशाह ने क़ासिदों से कहा, “मेरे आक़ा बादशाह
को जवाब देना, जो कुछ आप ने पहली मर्तबा माँग
लिया वह मैं आप को देने के लिए तय्यार हूँ, लेकिन
यह आख़िरी तक़ाज़ा मैं पूरा नहीं कर सकता।”

जब क़ासिदों ने बिन-हदद को यह ख़बर पहुँचाई
10 तो उस ने अख़ियब को फ़ौरन ख़बर भेज दी,
“देवता मुझे सख़्त सज़ा दें अगर मैं सामरिया को
नेस्त-ओ-नाबूद न कर दूँ। इतना भी नहीं रहेगा कि
मेरा हर फ़ौजी मुट्ठी भर ख़ाक अपने साथ वापस ले
जा सके!” 11 इस्राईल के बादशाह ने क़ासिदों को
जवाब दिया, “उसे बता देना कि जो अभी जंग की
तय्यारियाँ कर रहा है वह फ़त्ह के नारे न लगाए।”

12 जब बिन-हदद को यह इत्तिला मिली तो वह
लश्करगाह में अपने इत्तिहादी बादशाहों के साथ मै
पी रहा था। उस ने अपने अफ़सरों को हुक्म दिया,
“हम्ला करने के लिए तय्यारियाँ करो!” चुनाँचे वह
शहर पर हम्ला करने की तय्यारियाँ करने लगे।

शाम की फ़ौज से पहली जंग

13 इस दौरान एक नबी अख़ियब बादशाह के पास
आया और कहा, “रब फ़रमाता है, ‘क्या तुझे दुश्मन
की यह बड़ी फ़ौज नज़र आ रही है? तो भी मैं इसे
आज ही तेरे हवाले कर दूँगा। तब तू जान लेगा कि
मैं ही रब हूँ’।”

14 अख़ियब ने सवाल किया, “रब यह किस के
वसीले से करेगा?” नबी ने जवाब दिया, “रब
फ़रमाता है कि ज़िलओं पर मुक़र्रर अफ़सरों के जवान
यह फ़त्ह पाएँगे।” बादशाह ने मज़ीद पूछा, “लड़ाई
में कौन पहला क़दम उठाए?” नबी ने कहा, “तू ही।”

15 चुनाँचे अख़ियब ने ज़िलओं पर मुक़र्रर अफ़सरों
के जवानों को बुलाया। 232 अफ़राद थे। फिर उस ने
बाक़ी इस्राईलियों को जमा किया। 7,000 अफ़राद
थे। 16–17 दोपहर को वह लड़ने के लिए निकले।
ज़िलओं पर मुक़र्रर अफ़सरों के जवान सब से आगे
थे। बिन-हदद और 32 इत्तिहादी बादशाह लश्करगाह
में बैठे नशे में धुत मै पी रहे थे कि अचानक शहर का
जाइज़ा लेने के लिए बिन-हदद के भेजे गए सिपाही
अन्दर आए और कहने लगे, “सामरिया से आदमी
निकल रहे हैं।” 18 बिन-हदद ने हुक्म दिया, “हर सूरत
में उन्हें ज़िन्दा पकड़ें, ख़्वाह वह अम्नपसन्द इरादा
रखते हों या न।”

19 लेकिन उन्हें यह करने का मौक़ा न मिला, क्यूँकि
इस्राईल के ज़िलओं पर मुक़र्रर अफ़सरों और बाक़ी
फ़ौजियों ने शहर से निकल कर 20 फ़ौरन उन पर हम्ला
कर दिया। और जिस भी दुश्मन का मुक़ाबला हुआ
उसे मारा गया। तब शाम की पूरी फ़ौज भाग गई।
इस्राईलियों ने उन का ताक़्क़ुब किया, लेकिन शाम
का बादशाह बिन-हदद घोड़े पर सवार हो कर चन्द
एक घुड़सवारों के साथ बच निकला। 21 उस वक़्त
इस्राईल का बादशाह जंग के लिए निकला और घोड़ों
और रथों को तबाह करके अरामियों को ज़बरदस्त
शिकस्त दी।

शाम की फ़ौज से दूसरी जंग

22 बाद में मज़कूरा नबी दुबारा इस्राईल के बादशाह
के पास आया। वह बोला, “अब मज़बूत हो कर
बड़े ध्यान से सोचें कि आने वाले दिनों में क्या
क्या तय्यारियाँ करनी चाहिएँ, क्यूँकि अगले बहार
के मौसम में शाम का बादशाह दुबारा आप पर हम्ला
करेगा।”

23 शाम के बादशाह को भी मश्वरा दिया गया। उस
के बड़े अफ़सरों ने ख़याल पेश किया, “इस्राईलियों
के देवता पहाड़ी देवता हैं, इस लिए वह हम पर
ग़ालिब आ गए हैं। लेकिन अगर हम मैदानी इलाक़े में
उन से लड़ें तो हर सूरत में जीतेंगे। 24 लेकिन हमारा
एक और मश्वरा भी है। 32 बादशाहों को हटा कर
उन की जगह अपने अफ़सरों को मुक़र्रर करें। 25 फिर

एक नई फ़ौज तय्यार करें जो तबाहशुदा पुरानी फ़ौज जैसी ताक़तवर हो। उस के उतने ही रथ और घोड़े हों जितने पहले थे। फिर जब हम मैदानी इलाक़े में उन से लड़ेंगे तो उन पर ज़रूर ग़ालिब आएँगे।"

बादशाह उन की बात मान कर तय्यारियाँ करने लगा। 26 जब बहार का मौसम आया तो वह शाम के फ़ौजियों को जमा करके इस्राईल से लड़ने के लिए अफ़ीक़ शहर गया। 27 इस्राईली फ़ौज भी लड़ने के लिए जमा हुई। खाने-पीने की अश्या का बन्द-ओ-बस्त किया गया, और वह दुश्मन से लड़ने के लिए निकले। जब वहाँ पहुँचे तो उन्हों ने अपने ख़ैमों को दो जगहों पर लगाया। यह दो गुरोह शाम की वसी फ़ौज के मुक़ाबले में बकरियों के दो छोटे रेवड़ों जैसे लग रहे थे, क्यूँकि पूरा मैदान शाम के फ़ौजियों से भरा था।

28 फिर मर्द-ए-ख़ुदा ने अख़ियब के पास आ कर कहा, "रब फ़रमाता है, 'शाम के लोग ख़याल करते हैं कि रब पहाड़ी देवता है इस लिए मैदानी इलाक़े में नाकाम रहेगा। चुनाँचे मैं उन की ज़बरदस्त फ़ौज को तेरे हवाले कर दूँगा। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ'।"

29 सात दिन तक दोनों फ़ौजें एक दूसरे के मुक़ाबिल सफ़आरा रहीं। सातवें दिन लड़ाई का आग़ाज़ हुआ। इस्राईली इस मर्तबा भी शाम की फ़ौज पर ग़ालिब आए। उस दिन उन्हों ने उन के एक लाख पियादा फ़ौजियों को मार दिया। 30 बाक़ी फ़रार हो कर अफ़ीक़ शहर में घुस गए। तक़रीबन 27,000 आदमी थे। लेकिन अचानक शहर की फ़सील उन पर गिर गई, तो वह भी हलाक हो गए।

अख़ियब शाम के बादशाह पर रहम करता है

बिन-हदद बादशाह भी अफ़ीक़ में फ़रार हुआ था। अब वह कभी इस कमरे में, कभी उस में खिसक कर छुपने की कोशिश कर रहा था। 31 फिर उस के अफ़सरों ने उसे मश्वरा दिया, "सुना है कि इस्राईल के बादशाह नर्मदिल होते हैं। क्यूँ न हम टाट ओढ़ कर और अपनी गरदनों में रस्से डाल कर इस्राईल के बादशाह के पास जाएँ? शायद वह आप को ज़िन्दा छोड़ दे।"

32 चुनाँचे बिन-हदद के अफ़सर टाट ओढ़ कर और अपनी गरदनों में रस्से डाल कर इस्राईल के बादशाह के पास आए। उन्हों ने कहा, "आप का ख़ादिम बिन-हदद गुज़ारिश करता है कि मुझे ज़िन्दा छोड़ दें।" अख़ियब ने सवाल किया, "क्या वह अब तक ज़िन्दा है? वह तो मेरा भाई है!" 33 जब बिन-हदद के अफ़सरों ने जान लिया कि अख़ियब का रुज्हान किस तरफ़ है तो उन्हों ने जल्दी से इस की तस्दीक़ की, "जी, बिन-हदद आप का भाई है!" अख़ियब ने हुक्म दिया, "जा कर उसे बुला लाएँ।"

तब बिन-हदद निकल आया, और अख़ियब ने उसे अपने रथ पर सवार होने की दावत दी। 34 बिन-हदद ने अख़ियब से कहा, "मैं आप को वह तमाम शहर वापस कर देता हूँ जो मेरे बाप ने आप के बाप से छीन लिए थे। आप हमारे दार-उल-हकूमत दमिश्क़ में तिजारती मराकिज़ भी क़ाइम कर सकते हैं, जिस तरह मेरे बाप ने पहले सामरिया में किया था।" अख़ियब बोला, "ठीक है। इस के बदले में मैं आप को रिहा कर दूँगा।" उन्हों ने मुआहदा किया, फिर अख़ियब ने शाम के बादशाह को रिहा कर दिया।

नबी अख़ियब को मलामत करता है

35 उस वक़्त रब ने नबियों में से एक को हिदायत की, "जा कर अपने साथी को कह दे कि वह तुझे मारे।" नबी ने ऐसा किया, लेकिन साथी ने इन्कार किया। 36 फिर नबी बोला, "चूँकि आप ने रब की नहीं सुनी, इस लिए जूँ ही आप मुझ से चले जाएंगे शेरबबर आप को फाड़ डालेगा।" और ऐसा ही हुआ। जब साथी वहाँ से निकला तो शेरबबर ने उस पर हम्ला करके उसे फाड़ डाला।

37 नबी की मुलाक़ात किसी और से हुई तो उस ने उस से भी कहा, "मेहरबानी करके मुझे मारें!" उस आदमी ने नबी को मार मार कर ज़ख़्मी कर दिया।

38 तब नबी ने अपनी आँखों पर पट्टी बांधी ताकि उसे
पहचाना न जाए, फिर रास्ते के किनारे पर अख़ियब
बादशाह के इन्तिज़ार में खड़ा हो गया।
39 जब बादशाह वहाँ से गुज़रा तो नबी चिल्ला कर
उस से मुख़ातिब हुआ, "जनाब, मैं मैदान-ए-जंग में
लड़ रहा था कि अचानक किसी आदमी ने मेरे पास
आ कर अपने क़ैदी को मेरे हवाले कर दिया। उस ने
कहा, 'इस की निगरानी करना। अगर यह किसी भी
वजह से भाग जाए तो आप को उस की जान के इवज़
अपनी जान देनी पड़ेगी या आप को एक मन चाँदी
अदा करनी पड़ेगी।' 40 लेकिन मैं इधर उधर मसरूफ़
रहा, और इतने में क़ैदी ग़ाइब हो गया।" अख़ियब
बादशाह ने जवाब दिया, "आप ने ख़ुद अपने बारे
में फ़ैसला दिया है। अब आप को इस का नतीजा
भुगतना पड़ेगा।"
41 फिर नबी ने जल्दी से पट्टी को अपनी आँखों पर
से उतार दिया, और बादशाह ने पहचान लिया कि यह
नबियों में से एक है। 42 नबी ने कहा, "रब फ़रमाता
है, 'मैं ने मुक़र्रर किया था कि बिन-हदद को मेरे लिए
मख़्सूस करके हलाक करना है, लेकिन तू ने उसे रिहा
कर दिया है। अब उस की जगह तू ही मरेगा, और उस
की क़ौम की जगह तेरी क़ौम को नुक़्सान पहुँचेगा'।"
43 इस्राईल का बादशाह बड़े ग़ुस्से और बदमिज़ाजी
के आलम में सामरिया में अपने महल में चला गया।

ईज़बिल के हाथों नबोत का क़त्ल

21 1 इस के बाद एक और क़ाबिल-ए-ज़िक्र
बात हुई। यज़्रएल में सामरिया के बादशाह
अख़ियब का एक महल था। महल की ज़मीन के साथ
साथ अंगूर का बाग़ था। मालिक का नाम नबोत था।
2 एक दिन अख़ियब ने नबोत से बात की, "अंगूर का
आप का बाग़ मेरे महल के क़रीब ही है। उसे मुझे
दे दें, क्यूँकि मैं उस में सब्ज़ियाँ लगाना चाहता हूँ।
मुआवज़े में मैं आप को उस से अच्छा अंगूर का बाग़
दे दूँगा। लेकिन अगर आप पैसे को तर्जीह दें तो आप
को उस की पूरी रक़म अदा कर दूँगा।"
3 लेकिन नबोत ने जवाब दिया, "अल्लाह न करे कि
मैं आप को वह मौरूसी ज़मीन दूँ जो मेरे बापदादा ने
मेरे सपुर्द की है!"
4 अख़ियब बड़े ग़ुस्से में अपने घर वापस चला
गया। वह बेज़ार था कि नबोत अपने बापदादा की
मौरूसी ज़मीन बेचना नहीं चाहता। वह पलंग पर लेट
गया और अपना मुँह दीवार की तरफ़ करके खाना
खाने से इन्कार किया। 5 उस की बीवी ईज़बिल उस
के पास आई और पूछने लगी, "क्या बात है? आप
क्यूँ इतने बेज़ार हैं कि खाना भी नहीं खाना चाहते?"
6 अख़ियब ने जवाब दिया, "यज़्रएल का रहने वाला
नबोत मुझे अंगूर का बाग़ नहीं देना चाहता। गो मैं
उसे पैसे देना चाहता था बल्कि उसे इस की जगह
कोई और बाग़ देने के लिए तय्यार था तो भी वह
बज़िद रहा।"
7 ईज़बिल बोली, "क्या आप इस्राईल के बादशाह
हैं कि नहीं? अब उठें! खाएँ, पिएँ और अपना दिल
बहलाएँ। मैं ही आप को नबोत यज़्रएली का अंगूर का
बाग़ दिला दूँगी।" 8 उस ने अख़ियब के नाम से ख़ुतूत
लिख कर उन पर बादशाह की मुहर लगाई और उन्हें
नबोत के शहर के बुज़ुर्गों और शुरफ़ा को भेज दिया।
9 ख़तों में ज़ैल की ख़बर लिखी थी,
"शहर में एलान करें कि एक दिन का रोज़ा रखा
जाए। जब लोग उस दिन जमा हो जाएंगे तो नबोत
को लोगों के सामने इज़्ज़त की कुर्सी पर बिठा दें।
10 लेकिन उस के मुक़ाबिल दो बदमआशों को बिठा
देना। इजतिमा के दौरान यह आदमी सब के सामने
नबोत पर इल्ज़ाम लगाएँ, 'इस शख़्स ने अल्लाह और
बादशाह पर लानत भेजी है! हम इस के गवाह हैं।'
फिर उसे शहर से बाहर ले जा कर संगसार करें।"
11 यज़्रएल के बुज़ुर्गों और शुरफ़ा ने ऐसा ही किया।
12 उन्हों ने रोज़े के दिन का एलान किया। जब लोग
मुक़र्ररा दिन जमा हुए तो नबोत को लोगों के सामने
इज़्ज़त की कुर्सी पर बिठा दिया गया। 13 फिर दो
बदमआश आए और उस के मुक़ाबिल बैठ गए।
इजतिमा के दौरान यह आदमी सब के सामने नबोत

पर इल्ज़ाम लगाने लगे, “इस शख़्स ने अल्लाह और बादशाह पर लानत भेजी है! हम इस के गवाह हैं।” तब नबोत को शहर से बाहर ले जा कर संगसार कर दिया गया। 14 फिर शहर के बुज़ुर्गों ने ईज़बिल को इत्तिला दी, “नबोत मर गया है, उसे संगसार किया गया है।”

15 यह ख़बर मिलते ही ईज़बिल ने अख़ियब से बात की, “जाएँ, नबोत यज़्रएली के उस बाग़ पर क़ब्ज़ा करें जो वह आप को बेचने से इन्कार कर रहा था। अब वह आदमी ज़िन्दा नहीं रहा बल्कि मर गया है।”

16 यह सुन कर अख़ियब फ़ौरन नबोत के अंगूर के बाग़ पर क़ब्ज़ा करने के लिए रवाना हुआ।

इल्यास अख़ियब को सज़ा सुनाता है

17 तब रब इल्यास तिश्बी से हमकलाम हुआ, 18 “इस्राईल के बादशाह अख़ियब से जो सामरिया में रहता है मिलने जा। इस वक़्त वह नबोत के अंगूर के बाग़ में है, क्यूँकि वह उस पर क़ब्ज़ा करने के लिए वहाँ पहुँचा है। 19 उसे बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि तू ने एक आदमी को बिलावजह क़त्ल करके उस की मिलकियत पर क़ब्ज़ा कर लिया है। रब फ़रमाता है कि जहाँ कुत्तों ने नबोत का ख़ून चाटा है वहाँ वह तेरा ख़ून भी चाटेंगे’।”

20 जब इल्यास अख़ियब के पास पहुँचा तो बादशाह बोला, “मेरे दुश्मन, क्या आप ने मुझे ढूँड निकाला है?” इल्यास ने जवाब दिया, “जी, मैं ने आप को ढूँड निकाला है, क्यूँकि आप ने अपने आप को बदी के हाथ में बेच कर ऐसा काम किया है जो रब को नापसन्द है। 21 अब सुनें रब का फ़रमान, ‘मैं तुझे यूँ मुसीबत में डाल दूँगा कि तेरा नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा। मैं इस्राईल में से तेरे ख़ानदान के हर मर्द को मिटा दूँगा, ख़्वाह वह बालिग़ हो या बच्चा। 22 तू ने मुझे बड़ा तैश दिलाया और इस्राईल को गुनाह करने पर उकसाया है। इस लिए मेरा तेरे घराने के साथ वही सुलूक होगा जो मैं ने यरुबिआम बिन नबात और बाशा बिन अख़ियाह के साथ किया है।’ 23 ईज़बिल पर भी रब की सज़ा आएगी। रब फ़रमाता है, ‘कुत्ते यज़्रएल की फ़सील के पास ईज़बिल को खा जाएंगे। 24 अख़ियब के ख़ानदान में से जो शहर में मरेंगा उन्हें कुत्ते खा जाएंगे, और जो खुले मैदान में मरेंगे उन्हें परिन्दे चट कर जाएंगे’।”

25 और यह हक़ीक़त है कि अख़ियब जैसा ख़राब शख़्स कोई नहीं था। क्यूँकि ईज़बिल के उकसाने पर उस ने अपने आप को बदी के हाथ में बेच कर ऐसा काम किया जो रब को नापसन्द था। 26 सब से घिनौनी बात यह थी कि वह बुतों के पीछे लगा रहा, बिलकुल उन अमोरियों की तरह जिन्हें रब ने इस्राईल से निकाल दिया था।

27 जब अख़ियब ने इल्यास की यह बातें सुनीं तो उस ने अपने कपड़े फाड़ कर टाट ओढ़ लिया। रोज़ा रख कर वह ग़मगीन हालत में फिरता रहा। टाट उस ने सोते वक़्त भी न उतारा। 28 तब रब दुबारा इल्यास तिश्बी से हमकलाम हुआ, 29 “क्या तू ने ग़ौर किया है कि अख़ियब ने अपने आप को मेरे सामने कितना पस्त कर दिया है? चूँकि उस ने अपनी आजिज़ी का इज़हार किया है इस लिए मैं उस के जीते जी उस के ख़ानदान को मज़कूरा मुसीबत में नहीं डालूँगा बल्कि उस वक़्त जब उस का बेटा तख़्त पर बैठेगा।”

झूटे नबियों और मीकायाह का मुक़ाबला

22 1 तीन साल तक शाम और इस्राईल के दरमियान सुलह रही। 2 तीसरे साल यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त इस्राईल के बादशाह अख़ियब से मिलने गया। 3 उस वक़्त इस्राईल के बादशाह ने अपने अफ़सरों से बात की, “देखें, रामात-जिलिआद हमारा ही शहर है। तो फिर हम क्यूँ कुछ नहीं कर रहे? हमें उसे शाम के बादशाह के क़ब्ज़े से छुड़वाना चाहिए।” 4 उस ने यहूसफ़त से सवाल किया, “क्या आप मेरे साथ रामात-जिलिआद जाएंगे ताकि उस पर क़ब्ज़ा करें?” यहूसफ़त ने जवाब दिया, “जी ज़रूर। हम तो भाई हैं। मेरी क़ौम को अपनी क़ौम और

मेरे घोड़ों को अपने घोड़े समझें! 5 लेकिन मेहरबानी
करके पहले रब की मर्ज़ी मालूम कर लें।”
6 इस्राईल के बादशाह ने तक़रीबन 400 नबियों को
बुला कर उन से पूछा, “क्या मैं रामात-जिलिआद
पर हम्ला करूँ या इस इरादे से बाज़ रहूँ?” नबियों ने
जवाब दिया, “जी करें, क्यूँकि रब उसे बादशाह के
हवाले कर देगा।”
7 लेकिन यहूसफ़त मुत्मइन न हुआ। उस ने पूछा,
“क्या यहाँ रब का कोई नबी नहीं जिस से हम
दरयाफ़्त कर सकें?” 8 इस्राईल का बादशाह बोला,
“हाँ, एक तो है जिस के ज़रीए हम रब की मर्ज़ी मालूम
कर सकते हैं। लेकिन मैं उस से नफ़रत करता हूँ,
क्यूँकि वह मेरे बारे में कभी भी अच्छी पेशगोई नहीं
करता। वह हमेशा बुरी पेशगोइयाँ सुनाता है। उस का
नाम मीकायाह बिन इम्ला है।” यहूसफ़त ने एतिराज़
किया, “बादशाह ऐसी बात न कहे!” 9 तब इस्राईल
के बादशाह ने किसी मुलाज़िम को बुला कर हुक्म
दिया, “मीकायाह बिन इम्ला को फ़ौरन हमारे पास
पहुँचा देना!”
10 अख़ियब और यहूसफ़त अपने शाही लिबास
पहने हुए सामरिया के दरवाज़े के क़रीब अपने अपने
तख़्त पर बैठे थे। यह ऐसी खुली जगह थी जहाँ
अनाज गाहा जाता था। तमाम 400 नबी वहाँ उन
के सामने अपनी पेशगोइयाँ पेश कर रहे थे। 11 एक
नबी बनाम सिदक़ियाह बिन कनआना ने अपने लिए
लोहे के सींग बना कर एलान किया, “रब फ़रमाता है
कि इन सींगों से तू शाम के फ़ौजियों को मार मार कर
हलाक कर देगा।” 12 दूसरे नबी भी इस क़िस्म की
पेशगोइयाँ कर रहे थे, “रामात-जिलिआद पर हम्ला
करें, क्यूँकि आप ज़रूर कामयाब हो जाएंगे। रब शहर
को आप के हवाले कर देगा।”
13 जिस मुलाज़िम को मीकायाह को बुलाने के लिए
भेजा गया था उस ने रास्ते में उसे समझाया, “देखें,
बाक़ी तमाम नबी मिल कर कह रहे हैं कि बादशाह
को कामयाबी हासिल होगी। आप भी ऐसी ही बातें
करें, आप भी फ़त्ह की पेशगोई करें!” 14 लेकिन
मीकायाह ने एतिराज़ किया, “रब की हयात की
क़सम, मैं बादशाह को सिर्फ़ वही कुछ बताऊँगा जो
रब मुझे फ़रमाएगा।”
15 जब मीकायाह अख़ियब के सामने खड़ा हुआ
तो बादशाह ने पूछा, “मीकायाह, क्या हम रामात-
जिलिआद पर हम्ला करें या मैं इस इरादे से बाज़
रहूँ?” मीकायाह ने जवाब दिया, “उस पर हम्ला करें,
क्यूँकि रब शहर को आप के हवाले करके आप
को कामयाबी बख़्शेगा।” 16 बादशाह नाराज़ हुआ,
“मुझे कितनी दफ़ा आप को समझाना पड़ेगा कि आप
क़सम खा कर मुझे रब के नाम में सिर्फ़ वह कुछ
सुनाएँ जो हक़ीक़त है।”
17 तब मीकायाह ने जवाब में कहा, “मुझे तमाम
इस्राईल गल्लाबान से महरूम भेड़-बकरियों की तरह
पहाड़ों पर बिखरा हुआ नज़र आया। फिर रब मुझ से
हमकलाम हुआ, ‘इन का कोई मालिक नहीं है। हर
एक सलामती से अपने घर वापस चला जाए’।”
18 इस्राईल के बादशाह ने यहूसफ़त से कहा, “लो,
क्या मैं ने आप को नहीं बताया था कि यह शख़्स
हमेशा मेरे बारे में बुरी पेशगोइयाँ करता है?”
19 लेकिन मीकायाह ने अपनी बात जारी रखी, “रब
का फ़रमान सुनें! मैं ने रब को उस के तख़्त पर
बैठे देखा। आसमान की पूरी फ़ौज उस के दाएँ और
बाएँ हाथ खड़ी थी। 20 रब ने पूछा, ‘कौन अख़ियब
को रामात-जिलिआद पर हम्ला करने पर अकसाएगा
ताकि वह वहाँ जा कर मर जाए?’ एक ने यह
मश्वरा दिया, दूसरे ने वह। 21 आख़िरकार एक रूह
रब के सामने खड़ी हुई और कहने लगी, ‘मैं उसे
उकसाऊँगी।’ 22 रब ने सवाल किया, ‘किस तरह?’
रूह ने जवाब दिया, ‘मैं निकल कर उस के तमाम
नबियों पर यूँ क़ाबू पाऊँगी कि वह झूट ही बोलेंगे।’
रब ने फ़रमाया, ‘तू कामयाब होगी। जा और यूँ ही
कर!’ 23 ऐ बादशाह, रब ने आप पर आफ़त लाने का
फ़ैसला कर लिया है, इस लिए उस ने झूटी रूह को
आप के इन तमाम नबियों के मुँह में डाल दिया है।”

24 तब सिदक़ियाह बिन कनआना ने आगे बढ़ कर
मीकायाह के मुँह पर थप्पड़ मारा और बोला, “रब
का रूह किस तरह मुझ से निकल गया ताकि तुझ
से बात करे?” 25 मीकायाह ने जवाब दिया, “जिस
दिन आप कभी इस कमरे में, कभी उस में खिसक
कर छुपने की कोशिश करेंगे उस दिन आप को पता
चलेगा।”
26 तब अख़ियब बादशाह ने हुक्म दिया, “मीकायाह
को शहर पर मुक़र्रर अफ़सर अमून और मेरे बेटे
यूआस के पास वापस भेज दो! 27 उन्हें बता देना,
‘इस आदमी को जेल में डाल कर मेरे सहीह-सलामत
वापस आने तक कम से कम रोटी और पानी दिया
करें’।” 28 मीकायाह बोला, “अगर आप सहीह-
सलामत वापस आएँ तो मतलब होगा कि रब ने मेरी
मारिफ़त बात नहीं की।” फिर वह साथ खड़े लोगों
से मुख़ातिब हुआ, “तमाम लोग ध्यान दें!”

अख़ियब रामात के क़रीब मर जाता है

29 इस के बाद इस्राईल का बादशाह अख़ियब और
यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त मिल कर रामात-
जिलिआद पर हम्ला करने के लिए रवाना हुए। 30 जंग
से पहले अख़ियब ने यहूसफ़त से कहा, “मैं अपना
भेस बदल कर मैदान-ए-जंग में जाऊँगा। लेकिन
आप अपना शाही लिबास न उतारें।” चुनाँचे इस्राईल
का बादशाह अपना भेस बदल कर मैदान-ए-जंग में
आया। 31 शाम के बादशाह ने रथों पर मुक़र्रर अपने
32 अफ़सरों को हुक्म दिया था, “सिर्फ़ और सिर्फ़
बादशाह पर हम्ला करें। किसी और से मत लड़ना,
ख़्वाह वह छोटा हो या बड़ा।”
32 जब लड़ाई छिड़ गई तो रथों के अफ़सर
यहूसफ़त पर टूट पड़े, क्यूँकि उन्हों ने कहा,
“यक़ीनन यही इस्राईल का बादशाह है!” लेकिन जब
यहूसफ़त मदद के लिए चिल्ला उठा 33 तो दुश्मनों
को मालूम हुआ कि यह अख़ियब बादशाह नहीं
है, और वह उस का ताक़्क़ुब करने से बाज़ आए।
34 लेकिन किसी ने ख़ास निशाना बांधे बग़ैर अपना
तीर चलाया तो वह अख़ियब को ऐसी जगह जा
लगा जहाँ ज़िराबक्तर का जोड़ था। बादशाह ने अपने
रथबान को हुक्म दिया, “रथ को मोड़ कर मुझे मैदान-
ए-जंग से बाहर ले जाओ! मुझे चोट लग गई है।”
35 लेकिन चूँकि उस पूरे दिन शदीद क़िस्म की लड़ाई
जारी रही, इस लिए बादशाह अपने रथ में टेक लगा
कर दुश्मन के मुक़ाबिल खड़ा रहा। ख़ून ज़ख़्म से रथ
के फ़र्श पर टपकता रहा, और शाम के वक़्त अख़ियब
मर गया। 36 जब सूरज ग़ुरूब होने लगा तो इस्राईली
फ़ौज में बुलन्द आवाज़ से एलान किया गया, “हर
एक अपने शहर और अपने इलाक़े में वापस चला
जाए!”
37 बादशाह की मौत के बाद उस की लाश को
सामरिया ला कर दफ़नाया गया। 38 शाही रथ को
सामरिया के एक तालाब के पास लाया गया जहाँ
कस्बियों की नहाने की जगह थी। वहाँ उसे धोया
गया। कुत्ते भी आ कर ख़ून को चाटने लगे। यूँ रब
का फ़रमान पूरा हुआ।
39 बाक़ी जो कुछ अख़ियब की हुकूमत के दौरान
हुआ वह ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’ की किताब
में दर्ज है। उस में बादशाह का तामीरकरदा हाथीदाँत
का महल और वह शहर बयान किए गए हैं जिन की
क़िलाबन्दी उस ने की। 40 जब वह मर कर अपने
बापदादा से जा मिला तो उस का बेटा अख़ज़ियाह
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त

41 आसा का बेटा यहूसफ़त इस्राईल के बादशाह
अख़ियब की हुकूमत के चौथे साल में यहूदाह का
बादशाह बना। 42 उस वक़्त उस की उम्र 35 साल थी।
उस का दार-उल-हकूमत यरूशलम रहा, और उस
की हुकूमत का दौरानिया 25 साल था। माँ का नाम
अज़ूबा बिन्त सिल्ही था। 43 वह हर काम में अपने
बाप आसा के नमूने पर चलता और वह कुछ करता
रहा जो रब को पसन्द था। लेकिन उस ने भी ऊँचे
मक़ामों के मन्दिरों को ख़त्म न किया। ऐसी जगहों

पर जानवरों को क़ुर्बान करने और बख़ूर जलाने का
इन्तिज़ाम जारी रहा। 44 यहूसफ़त और इस्राईल के
बादशाह के दरमियान सुलह क़ाइम रही।

45 बाक़ी जो कुछ यहूसफ़त की हुकूमत के दौरान
हुआ वह 'शाहान-ए-यहूदाह की तारीख़' की किताब
में दर्ज है। उस की कामयाबियाँ और जंगें सब उस में
बयान की गई हैं। 46 जो जिस्मफ़रोश मर्द और औरतें
आसा के ज़माने में बच गए थे उन्हें यहूसफ़त ने मुल्क
में से मिटा दिया। 47 उस वक़्त मुल्क-ए-अदोम का
बादशाह न था बल्कि यहूदाह का एक अफ़सर उस
पर हुक्मरानी करता था।

48 यहूसफ़त ने बहरी जहाज़ों का बेड़ा बनवाया
ताकि वह तिजारत करके ओफ़ीर से सोना लाएँ।
लेकिन वह कभी इस्तेमाल न हुए बल्कि अपनी ही
बन्दरगाह अस्यून-जाबर में तबाह हो गए। 49 तबाह
होने से पहले इस्राईल के बादशाह अख़ज़ियाह बिन
अख़ियब ने यहूसफ़त से दरख़्वास्त की थी कि
इस्राईल के कुछ लोग जहाज़ों पर साथ चलें। लेकिन
यहूसफ़त ने इन्कार किया था।

50 जब यहूसफ़त मर कर अपने बापदादा से जा
मिला तो उसे यरूशलम के हिस्से में जो 'दाऊद का
शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया।
फिर उस का बेटा यहूराम तख़्तनशीन हुआ।

इस्राईल का बादशाह अख़ज़ियाह

51 अख़ियब का बेटा अख़ज़ियाह यहूदाह के
बादशाह यहूसफ़त की हुकूमत के 17वें साल में
इस्राईल का बादशाह बना। वह दो साल तक इस्राईल
पर हुक्मरान रहा। सामरिया उस का दार-उल-हकूमत
था। 52 जो कुछ उस ने किया वह रब को नापसन्द था,
क्यूँकि वह अपने माँ-बाप और यरुबिआम बिन नबात
के नमूने पर चलता रहा, उसी यरुबिआम के नमूने पर
जिस ने इस्राईल को गुनाह करने पर उकसाया था।
53 अपने बाप की तरह बाल देवता की ख़िदमत और
पूजा करने से उस ने रब, इस्राईल के ख़ुदा को तैश
दिलाया।

२-सलातीन

अख़ज़ियाह के लिए इल्यास का पैग़ाम

1 [1] अख़ियब की मौत के बाद मोआब का मुल्क
बाग़ी हो कर इस्राईल के ताबे न रहा।
[2] सामरिया के शाही महल के बालाख़ाने की एक
दीवार में जंगला लगा था। एक दिन अख़ज़ियाह
बादशाह जंगले के साथ लग गया तो वह टूट गया
और बादशाह ज़मीन पर गिर कर बहुत ज़ख़्मी हुआ।
उस ने क़ासिदों को फ़िलिस्ती शहर अक्रून भेज कर
कहा, "जा कर अक्रून के देवता बाल-ज़बूब से पता
करें कि मेरी सेहत बहाल हो जाएगी कि नहीं।" [3] तब
रब के फ़रिश्ते ने इल्यास तिश्बी को हुक्म दिया,
"उठ, सामरिया के बादशाह के क़ासिदों से मिलने
जा। उन से पूछ, 'आप दरयाफ़्त करने के लिए अक्रून
के देवता बाल-ज़बूब के पास क्यूँ जा रहे हैं? क्या
इस्राईल में कोई ख़ुदा नहीं है? [4] चुनाँचे रब फ़रमाता
है कि ऐ अख़ज़ियाह, जिस बिस्तर पर तू पड़ा है उस
से तू कभी नहीं उठने का। तू यक़ीनन मर जाएगा'।"
इल्यास जा कर क़ासिदों से मिला। [5] उस का पैग़ाम
सुन कर क़ासिद बादशाह के पास वापस गए। उस ने
पूछा, "आप इतनी जल्दी वापस क्यूँ आए?" [6] उन्हों
ने जवाब दिया, "एक आदमी हम से मिलने आया
जिस ने हमें आप के पास वापस भेज कर आप को
यह ख़बर पहुँचाने को कहा, 'रब फ़रमाता है कि तू
अपने बारे में दरयाफ़्त करने के लिए अपने बन्दों को
अक्रून के देवता बाल-ज़बूब के पास क्यूँ भेज रहा
है? क्या इस्राईल में कोई ख़ुदा नहीं है? चूँकि तू ने
यह किया है इस लिए जिस बिस्तर पर तू पड़ा है उस
से तू कभी नहीं उठने का। तू यक़ीनन मर जाएगा'।"
[7] अख़ज़ियाह ने पूछा, "यह किस क़िस्म का
आदमी था जिस ने आप से मिल कर आप को यह
बात बताई?" [8] उन्हों ने जवाब दिया, "उस के लम्बे
बाल थे, और कमर में चमड़े की पेटी बंधी हुई थी।"
बादशाह बोल उठा, "यह तो इल्यास तिश्बी था!"

आसमान से आग

[9] फ़ौरन उस ने एक अफ़्सर को 50 फ़ौजियों समेत
इल्यास के पास भेज दिया। जब फ़ौजी इल्यास के
पास पहुँचे तो वह एक पहाड़ी की चोटी पर बैठा
था। अफ़्सर बोला, "ऐ मर्द-ए-ख़ुदा, बादशाह कहते
हैं कि नीचे उतर आएँ!" [10] इल्यास ने जवाब दिया,
"अगर मैं मर्द-ए-ख़ुदा हूँ तो आसमान से आग नाज़िल
हो कर आप और आप के 50 फ़ौजियों को भस्म कर
दे।" फ़ौरन आसमान से आग नाज़िल हुई और अफ़्सर
को उस के लोगों समेत भस्म कर दिया। [11] बादशाह
ने एक और अफ़्सर को इल्यास के पास भेज दिया।
उस के साथ भी 50 फ़ौजी थे। उस के पास पहुँच
कर अफ़्सर बोला, "ऐ मर्द-ए-ख़ुदा, बादशाह कहते
हैं कि फ़ौरन उतर आएँ।" [12] इल्यास ने दुबारा पुकारा,
"अगर मैं मर्द-ए-ख़ुदा हूँ तो आसमान से आग नाज़िल
हो कर आप और आप के 50 फ़ौजियों को भस्म कर
दे।" फ़ौरन आसमान से अल्लाह की आग नाज़िल हुई
और अफ़्सर को उस के 50 फ़ौजियों समेत भस्म कर
दिया।
[13] फिर बादशाह ने तीसरी बार एक अफ़्सर को 50
फ़ौजियों के साथ इल्यास के पास भेज दिया। लेकिन
यह अफ़्सर इल्यास के पास ऊपर चढ़ आया और
उस के सामने घुटने टेक कर इल्तिमास करने लगा,
"ऐ मर्द-ए-ख़ुदा, मेरी और अपने इन 50 ख़ादिमों
की जानों की क़दर करें। [14] देखें, आग ने आसमान
से नाज़िल हो कर पहले दो अफ़्सरों को उन के
आदमियों समेत भस्म कर दिया है। लेकिन बराह-
ए-करम हमारे साथ ऐसा न करें। मेरी जान की क़दर
करें।"

15 तब रब के फ़रिश्ते ने इल्यास से कहा, “इस
से मत डरना बल्कि इस के साथ उतर जा!” चुनाँचे
इल्यास उठा और अफ़सर के साथ उतर कर बादशाह
के पास गया। 16 उस ने बादशाह से कहा, “रब
फ़रमाता है, ‘तू ने अपने क़ासिदों को अक्रून के देवता
बाल-ज़बूब से दरयाफ़्त करने के लिए क्यूँ भेजा? क्या
इस्राईल में कोई ख़ुदा नहीं है? चूँकि तू ने यह किया
है इस लिए जिस बिस्तर पर तू पड़ा है उस से तू कभी
नहीं उठने का। तू यक़ीनन मर जाएगा’।”

अख़ज़ियाह की मौत

17 वैसा ही हुआ जैसा रब ने इल्यास की मारिफ़त
फ़रमाया था, अख़ज़ियाह मर गया। चूँकि उस का
बेटा नहीं था इस लिए उस का भाई यहूराम यहूदाह
के बादशाह यूराम बिन यहूसफ़त की हुकूमत के
दूसरे साल में तख़्तनशीन हुआ। 18 बाक़ी जो कुछ
अख़ज़ियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ
उस ने किया वह ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’ की
किताब में बयान किया गया है।

इल्यास को आसमान पर उठा लिया जाता है

2 1 फिर वह दिन आया जब रब ने इल्यास को
आँधी में आसमान पर उठा लिया। उस दिन
इल्यास और इलीशा जिल्जाल शहर से रवाना हो
कर सफ़र कर रहे थे। 2 रास्ते में इल्यास इलीशा से
कहने लगा, “यहीं ठहर जाएँ, क्यूँकि रब ने मुझे बैत-
एल भेजा है।” लेकिन इलीशा ने इन्कार किया, “रब
और आप की हयात की क़सम, मैं आप को नहीं
छोड़ूँगा।”

चुनाँचे दोनों चलते चलते बैत-एल पहुँच गए।
3 नबियों का जो गुरोह वहाँ रहता था वह शहर से
निकल कर उन से मिलने आया। इलीशा से मुख़ातिब
हो कर उन्हों ने पूछा, “क्या आप को मालूम है
कि आज रब आप के आक़ा को आप के पास से
उठा ले जाएगा?” इलीशा ने जवाब दिया, “जी, मुझे
पता है। ख़ामोश!” 4 दुबारा इल्यास अपने साथी से
कहने लगा, “इलीशा, यहीं ठहर जाएँ, क्यूँकि रब ने
मुझे यरीहू भेजा है।” इलीशा ने जवाब दिया, “रब
और आप की हयात की क़सम, मैं आप को नहीं
छोड़ूँगा।”

चुनाँचे दोनों चलते चलते यरीहू पहुँच गए। 5 नबियों
का जो गुरोह वहाँ रहता था उस ने भी इलीशा के पास
आ कर उस से पूछा, “क्या आप को मालूम है कि
आज रब आप के आक़ा को आप के पास से उठा
ले जाएगा?” इलीशा ने जवाब दिया, “जी, मुझे पता
है। ख़ामोश!”

6 इल्यास तीसरी बार इलीशा से कहने लगा, “यहीं
ठहर जाएँ, क्यूँकि रब ने मुझे दरया-ए-यर्दन के पास
भेजा है।” इलीशा ने जवाब दिया, “रब और आप की
हयात की क़सम, मैं आप को नहीं छोड़ूँगा।”

चुनाँचे दोनों आगे बढ़े। 7 पचास नबी भी उन के
साथ चल पड़े। जब इल्यास और इलीशा दरया-ए-
यर्दन के किनारे पर पहुँचे तो दूसरे उन से कुछ दूर
खड़े हो गए। 8 इल्यास ने अपनी चादर उतार कर उसे
लपेट लिया और उस के साथ पानी पर मारा। पानी
तक़्सीम हुआ, और दोनों आदमी ख़ुश्क ज़मीन पर
चलते हुए दरया में से गुज़र गए। 9 दूसरे किनारे पर
पहुँच कर इल्यास ने इलीशा से कहा, “मेरे आप के
पास से उठा लिए जाने से पहले मुझे बताएँ कि आप
के लिए क्या करूँ?” इलीशा ने जवाब दिया, “मुझे
आप की रूह का दुगना हिस्सा मीरास में मिले।”
[8]10 इल्यास बोला, “जो दरख़्वास्त आप ने की है उसे
पूरा करना मुश्किल है। अगर आप मुझे उस वक़्त
देख सकेंगे जब मुझे आप के पास से उठा लिया
जाएगा तो मतलब होगा कि आप की दरख़्वास्त पूरी
हो गई है, वर्ना नहीं।” 11 दोनों आपस में बातें करते
हुए चल रहे थे कि अचानक एक आतिशीं रथ नज़र
आया जिसे आतिशीं घोड़े खैंच रहे थे। रथ ने दोनों को

[8]इलीशा पहलौठे का हिस्सा माँग रहा है जो दूसरे वारिसों की निस्बत दुगना होता है।

अलग कर दिया, और इल्यास को आँधी में आसमान
पर उठा लिया गया। 12 यह देख कर इलीशा चिल्ला
उठा, “हाय मेरे बाप, मेरे बाप! इस्राईल के रथ और
उस के घोड़े!”

इल्यास इलीशा की नज़रों से ओझल हुआ तो
इलीशा ने ग़म के मारे अपने कपड़ों को फाड़ डाला।
13 इल्यास की चादर ज़मीन पर गिर गई थी। इलीशा
उसे उठा कर दरया-ए-यर्दन के पास वापस चला।
14 चादर को पानी पर मार कर वह बोला, “रब और
इल्यास का ख़ुदा कहाँ है?” पानी तक़्सीम हुआ और
वह बीच में से गुज़र गया।

15 यरीहू से आए नबी अब तक दरया के मग़रिबी
किनारे पर खड़े थे। जब उन्हों ने इलीशा को अपने
पास आते हुए देखा तो पुकार उठे, “इल्यास की रूह
इलीशा पर ठहरी हुई है!” वह उस से मिलने गए और
औंधे मुँह उस के सामने झुक कर 16 बोले, “हमारे 50
ताक़तवर आदमी ख़िदमत के लिए हाज़िर हैं। अगर
इजाज़त हो तो हम उन्हें भेज देंगे ताकि वह आप के
आक़ा को तलाश करें। हो सकता है रब के रूह ने
उसे उठा कर किसी पहाड़ या वादी में रख छोड़ा
हो।”

इलीशा ने मना करने की कोशिश की, “नहीं, उन्हें
मत भेजना।” 17 लेकिन उन्हों ने यहाँ तक इसरार
किया कि आख़िरकार वह मान गया और कहा,
“चलो, उन्हें भेज दें।” उन्हों ने 50 आदमियों को भेज
दिया जो तीन दिन तक इल्यास का खोज लगाते रहे।
लेकिन वह कहीं नज़र न आया। 18 हिम्मत हार कर
वह यरीहू वापस आए जहाँ इलीशा ठहरा हुआ था।
उस ने कहा, “क्या मैं ने नहीं कहा था कि न जाएँ?”

इलीशा के मोजिज़े

19 एक दिन यरीहू के आदमी इलीशा के पास आ
कर शिकायत करने लगे, “हमारे आक़ा, आप ख़ुद
देख सकते हैं कि इस शहर में अच्छा गुज़ारा होता
है। लेकिन पानी ख़राब है, और नतीजे में बहुत दफ़ा
बच्चे माँ के पेट में ही मर जाते हैं।”

20 इलीशा ने हुक्म दिया, “एक ग़ैरइस्तेमालशुदा
बर्तन में नमक डाल कर उसे मेरे पास ले आएँ।”
जब बर्तन उस के पास लाया गया 21 तो वह उसे ले
कर शहर से निकला और चश्मे के पास गया। वहाँ
उस ने नमक को पानी में डाल दिया और साथ साथ
कहा, “रब फ़रमाता है कि मैं ने इस पानी को बहाल
कर दिया है। अब से यह कभी मौत या बच्चों के ज़ाए
होने का बाइस नहीं बनेगा।”

22 उसी लम्हे पानी बहाल हो गया। इलीशा के कहने
के मुताबिक़ यह आज तक ठीक रहा है।

23 यरीहू से इलीशा बैत-एल को वापस चला गया।
जब वह रास्ते पर चलते हुए शहर से गुज़र रहा था
तो कुछ लड़के शहर से निकल आए और उस का
मज़ाक़ उड़ा कर चिल्लाने लगे, “ओए गंजे, इधर आ!
ओए गंजे, इधर आ!” 24 इलीशा मुड़ गया और उन
पर नज़र डाल कर रब के नाम में उन पर लानत भेजी।
तब दो रीछनयाँ जंगल से निकल कर लड़कों पर टूट
पड़ीं और कुल 42 लड़कों को फाड़ डाला।

25 इल्यास आगे निकला और चलते चलते कर्मिल
पहाड़ के पास आया। वहाँ से वापस आ कर
सामरिया पहुँच गया।

इस्राईल का बादशाह यूराम

3 1 अख़ियब का बेटा यूराम यहूदाह के बादशाह
यहूसफ़त के 18वें साल में इस्राईल का बादशाह
बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 12 साल था और
उस का दार-उल-हकूमत सामरिया रहा। 2 उस का
चाल-चलन रब को नापसन्द था, अगरचे वह अपने
माँ-बाप की निस्बत कुछ बेहतर था। क्यूँकि उस ने
बाल देवता का वह सतून दूर कर दिया जो उस के
बाप ने बनवाया था। 3 तो भी वह यरुबिआम बिन
नबात के उन गुनाहों के साथ लिपटा रहा जो करने पर
यरुबिआम ने इस्राईल को उकसाया था। वह कभी
उन से दूर न हुआ।

मोआब के ख़िलाफ़ जंग

4 मोआब का बादशाह मेसा भेड़ें रखता था, और
सालाना उसे भेड़ के एक लाख बच्चे और एक लाख
मेंढे उन की ऊन समेत इस्राईल के बादशाह को
ख़राज के तौर पर अदा करने पड़ते थे। 5 लेकिन जब
अख़ियब फ़ौत हुआ तो मोआब का बादशाह ताबे न
रहा।
6 तब यूराम बादशाह ने सामरिया से निकल कर
तमाम इस्राईलियों की भर्ती की। 7 साथ साथ उस
ने यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त को इत्तिला दी,
"मोआब का बादशाह सरकश हो गया है। क्या आप
मेरे साथ उस से लड़ने जाएंगे?" यहूसफ़त ने जवाब
भेजा, "जी, मैं आप के साथ जाऊँगा। हम तो भाई हैं।
मेरी क़ौम को अपनी क़ौम और मेरे घोड़ों को अपने
घोड़े समझें। 8 हम किस रास्ते से जाएँ?" यूराम ने
जवाब दिया, "हम अदोम के रेगिस्तान से हो कर
जाएंगे।"
9 चुनाँचे इस्राईल का बादशाह यहूदाह के बादशाह
के साथ मिल कर रवाना हुआ। मुल्क-ए-अदोम का
बादशाह भी साथ था। अपने मन्सूबे के मुताबिक़
उन्हों ने रेगिस्तान का रास्ता इख़तियार किया।
लेकिन चूँकि वह सीधे नहीं बल्कि मुतबादिल रास्ते
से हो कर गए इस लिए सात दिन के सफ़र के बाद
उन के पास पानी न रहा, न उन के लिए, न जानवरों
के लिए।
10 इस्राईल का बादशाह बोला, "हाय, रब हमें इस
लिए यहाँ बुला लाया है कि हम तीनों बादशाहों को
मोआब के हवाले करे।"
11 लेकिन यहूसफ़त ने सवाल किया, "क्या यहाँ
रब का कोई नबी नहीं है जिस की मारिफ़त हम रब
की मर्ज़ी जान सकें?" इस्राईल के बादशाह के किसी
अफ़्सर ने जवाब दिया, "एक तो है, इलीशा बिन
साफ़त जो इल्यास का क़रीबी शागिर्द था, वह उस
के हाथों पर पानी डालने की ख़िदमत अन्जाम दिया
करता था।" 12 यहूसफ़त बोला, "रब का कलाम उस
के पास है।" तीनों बादशाह इलीशा के पास गए।
13 लेकिन इलीशा ने इस्राईल के बादशाह से कहा,
"मेरा आप के साथ क्या वास्ता? अगर कोई बात हो
तो अपने माँ-बाप के नबियों के पास जाएँ।" इस्राईल
के बादशाह ने जवाब दिया, "नहीं, हम इस लिए यहाँ
आए हैं कि रब ही हम तीनों को यहाँ बुला लाया
है ताकि हमें मोआब के हवाले करे।" 14 इलीशा ने
कहा, "रब्ब-उल-अफ़्वाज की हयात की क़सम जिस
की ख़िदमत मैं करता हूँ, अगर यहूदाह का बादशाह
यहाँ मौजूद न होता तो फिर मैं आप का लिहाज़ न
करता बल्कि आप की तरफ़ देखता भी न। लेकिन
मैं यहूसफ़त का ख़याल करता हूँ, 15 इस लिए किसी
को बुलाएँ जो सरोद बजा सके।"
कोई सरोद बजाने लगा तो रब का हाथ इलीशा पर
आ ठहरा, 16 और उस ने एलान किया, "रब फ़रमाता
है कि इस वादी में हर तरफ़ गढ़ों की खुदाई करो।
17 गो तुम न हवा और न बारिश देखोगे तो भी वादी
पानी से भर जाएगी। पानी इतना होगा कि तुम, तुम्हारे
रेवड़ और बाक़ी तमाम जानवर पी सकेंगे। 18 लेकिन
यह रब के नज़्दीक कुछ नहीं है, वह मोआब को भी
तुम्हारे हवाले कर देगा। 19 तुम तमाम क़िलाबन्द और
मर्कज़ी शहरों पर फ़त्ह पाओगे। तुम मुल्क के तमाम
अच्छे दरख़्तों को काट कर तमाम चश्मों को बन्द
करोगे और तमाम अच्छे खेतों को पत्थरों से ख़राब
करोगे।"
20 अगली सुब्ह तक़रीबन उस वक़्त जब ग़ल्ला की
नज़र पेश की जाती है मुल्क-ए-अदोम की तरफ़ से
सैलाब आया, और नतीजे में वादी के तमाम गढ़े पानी
से भर गए।

मोआब पर फ़त्ह

21 इतने में तमाम मोआबियों को पता चल गया था
कि तीनों बादशाह हम से लड़ने आ रहे हैं। छोटों से ले
कर बड़ों तक जो भी अपनी तलवार चला सकता था
उसे बुला कर सरहद की तरफ़ भेजा गया। 22 सुब्ह-

सवेरे जब मोआबी लड़ने के लिए तय्यार हुए तो तुलू-
ए-आफ़ताब की सुर्ख़ रौशनी में वादी का पानी ख़ून की
तरह सुर्ख़ नज़र आया। 23 मोआबी चिल्लाने लगे, "यह
तो ख़ून है! तीनों बादशाहों ने आपस में लड़ कर एक
दूसरे को मार दिया होगा। आओ, हम उन को लूट
लें!"

24 लेकिन जब वह इस्राईली लश्करगाह के क़रीब
पहुँचे तो इस्राईली उन पर टूट पड़े और उन्हें मार कर
भगा दिया। फिर उन्हों ने उन के मुल्क में दाख़िल हो
कर मोआब को शिकस्त दी। 25 चलते चलते उन्हों
ने तमाम शहरों को बर्बाद किया। जब भी वह किसी
अच्छे खेत से गुज़रे तो हर सिपाही ने एक पत्थर उस
पर फैंक दिया। यूँ तमाम खेत पत्थरों से भर गए।
इस्राईलियों ने तमाम चश्मों को भी बन्द कर दिया
और हर अच्छे दरख़्त को काट डाला।

आख़िर में सिर्फ़ क़ीर-हरासत क़ाइम रहा। लेकिन
फ़लाख़न चलाने वाले उस का मुहासरा करके उस पर
हम्ला करने लगे। 26 जब मोआब के बादशाह ने जान
लिया कि मैं शिकस्त खा रहा हूँ तो उस ने तलवारों से
लेस 700 आदमियों को अपने साथ लिया और अदोम
के बादशाह के क़रीब दुश्मन का मुहासरा तोड़ कर
निकलने की कोशिश की, लेकिन बेफ़ाइदा। 27 फिर
उस ने अपने पहलौठे को जिसे उस के बाद बादशाह
बनना था ले कर फ़सील पर अपने देवता के लिए
क़ुर्बान करके जला दिया। तब इस्राईलियों पर बड़ा
ग़ज़ब नाज़िल हुआ, और वह शहर को छोड़ कर
अपने मुल्क वापस चले गए।

इलीशा और बेवा का तेल

4 1 एक दिन एक बेवा इलीशा के पास आई
जिस का शौहर जब ज़िन्दा था नबियों के गुरोह
में शामिल था। बेवा चीख़ती चिल्लाती इलीशा से
मुख़ातिब हुई, "आप जानते हैं कि मेरा शौहर जो
आप की ख़िदमत करता था अल्लाह का ख़ौफ़ मानता
था। अब जब वह फ़ौत हो गया है तो उस का एक
साहूकार आ कर धमकी दे रहा है कि अगर क़र्ज़
अदा न किया गया तो मैं तेरे दो बेटों को ग़ुलाम बना
कर ले जाऊँगा।"

2 इलीशा ने पूछा, "मैं किस तरह आप की मदद
करूँ? बताएँ, घर में आप के पास क्या है?" बेवा
ने जवाब दिया, "कुछ नहीं, सिर्फ़ ज़ैतून के तेल
का छोटा सा बर्तन।" 3 इलीशा बोला, "जाएँ, अपनी
तमाम पड़ोसनों से ख़ाली बर्तन माँगें। लेकिन ध्यान
रखें कि थोड़े बर्तन न हों! 4 फिर अपने बेटों के
साथ घर में जा कर दरवाज़े पर कुंडी लगाएँ। तेल
का अपना बर्तन ले कर तमाम ख़ाली बर्तनों में तेल
उंडेलती जाएँ। जब एक भर जाए तो उसे एक तरफ़
रख कर दूसरे को भरना शुरू करें।"

5 बेवा ने जा कर ऐसा ही किया। वह अपने बेटों के
साथ घर में गई और दरवाज़े पर कुंडी लगाई। बेटे
उसे ख़ाली बर्तन देते गए और माँ उन में तेल उंडेलती
गई। 6 बर्तनों में तेल डलते डलते सब लबालब भर
गए। माँ बोली, "मुझे एक और बर्तन दे दो" तो एक
लड़के ने जवाब दिया, "और कोई नहीं है।" तब तेल
का सिलसिला रुक गया।

7 जब बेवा ने मर्द-ए-ख़ुदा के पास जा कर उसे
इत्तिला दी तो इलीशा ने कहा, "अब जा कर तेल
को बेच दें और कर्ज़े के पैसे अदा करें। जो बच जाए
उसे आप और आप के बेटे अपनी ज़रूरियात पूरी
करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।"

इलीशा शूनीम में लड़के को ज़िन्दा कर देता है

8 एक दिन इलीशा शूनीम गया। वहाँ एक अमीर
औरत रहती थी जिस ने ज़बरदस्ती उसे अपने घर
बिठा कर खाना खिलाया। बाद में जब कभी इलीशा
वहाँ से गुज़रता तो वह खाने के लिए उस औरत के
घर ठहर जाता। 9 एक दिन औरत ने अपने शौहर से
बात की, "मैं ने जान लिया है कि जो आदमी हमारे
हाँ आता रहता है वह अल्लाह का मुक़द्दस पैग़म्बर है।
10 क्यूँ न हम उस के लिए छत पर छोटा सा कमरा
बना कर उस में चारपाई, मेज़, कुर्सी और शमादान

रखें। फिर जब भी वह हमारे पास आए तो वह उस
में ठहर सकता है।”
11 एक दिन जब इलीशा आया तो वह अपने कमरे
में जा कर बिस्तर पर लेट गया। 12 उस ने अपने
नौकर जैहाज़ी से कहा, “शूनीमी मेज़बान को बुला
लाओ।” जब वह आ कर उस के सामने खड़ी हुई
13 तो इलीशा ने जैहाज़ी से कहा, “उसे बता देना कि
आप ने हमारे लिए बहुत तक्लीफ़ उठाई है। अब हम
आप के लिए क्या कुछ करें? क्या हम बादशाह या
फ़ौज के कमाँडर से बात करके आप की सिफ़ारिश
करें?” औरत ने जवाब दिया, “नहीं, इस की ज़रूरत
नहीं। मैं अपने ही लोगों के दरमियान रहती हूँ।”
14 बाद में इलीशा ने जैहाज़ी से बात की, “हम
उस के लिए क्या करें?” जैहाज़ी ने जवाब दिया,
“एक बात तो है। उस का कोई बेटा नहीं, और उस
का शौहर काफ़ी बूढ़ा है।” 15 इलीशा बोला, “उसे
वापस बुलाओ।” औरत वापस आ कर दरवाज़े में
खड़ी हो गई। इलीशा ने उस से कहा, 16 “अगले
साल इसी वक़्त आप का अपना बेटा आप की गोद
में होगा।” शूनीमी औरत ने एतिराज़ किया, “नहीं
नहीं, मेरे आक़ा। मर्द-ए-ख़ुदा ऐसी बातें करके अपनी
ख़ादिमा को झूटी तसल्ली मत दें।”
17 लेकिन ऐसा ही हुआ। कुछ देर के बाद औरत
का पाँओ भारी हो गया, और ऐन एक साल के बाद
उस के हाँ बेटा पैदा हुआ। सब कुछ वैसा ही हुआ
जैसा इलीशा ने कहा था। 18 बच्चा परवान चढ़ा, और
एक दिन वह घर से निकल कर खेत में अपने बाप
के पास गया जो फ़सल की कटाई करने वालों के
साथ काम कर रहा था। 19 अचानक लड़का चीख़ने
लगा, “हाय मेरा सर, हाय मेरा सर!” बाप ने किसी
मुलाज़िम को बताया, “लड़के को उठा कर माँ के
पास ले जाओ।” 20 नौकर उसे उठा कर ले गया, और
वह अपनी माँ की गोद में बैठा रहा। लेकिन दोपहर
को वह मर गया।
21 माँ लड़के की लाश को ले कर छत पर चढ़ गई।
मर्द-ए-ख़ुदा के कमरे में जा कर उस ने उसे उस के
बिस्तर पर लिटा दिया। फिर दरवाज़े को बन्द करके
वह बाहर निकली 22 और अपने शौहर को बुलवा
कर कहा, “ज़रा एक नौकर और एक गधी मेरे पास
भेज दें। मुझे फ़ौरन मर्द-ए-ख़ुदा के पास जाना है। मैं
जल्द ही वापस आ जाऊँगी।” 23 शौहर ने हैरान हो
कर पूछा, “आज उस के पास क्यूँ जाना है? न तो नए
चाँद की ईद है, न सबत का दिन।” बीवी ने कहा,
“सब ख़ैरियत है।” 24 गधी पर ज़ीन कस कर उस ने
नौकर को हुक्म दिया, “गधी को तेज़ चला ताकि हम
जल्दी पहुँच जाएँ। जब मैं कहूँगी तब ही रुकना है,
वर्ना नहीं।”
25 चलते चलते वह कर्मिल पहाड़ के पास पहुँच
गए जहाँ मर्द-ए-ख़ुदा इलीशा था। उसे दूर से देख
कर इलीशा जैहाज़ी से कहने लगा, “देखो, शूनीम की
औरत आ रही है! 26 भाग कर उस के पास जाओ और
पूछो कि क्या आप, आप का शौहर और बच्चा ठीक
हैं?” जैहाज़ी ने जा कर उस का हाल पूछा तो औरत
ने जवाब दिया, “जी, सब ठीक है।” 27 लेकिन जूँ ही
वह पहाड़ के पास पहुँच गई तो इलीशा के सामने गिर
कर उस के पाँओ से चिमट गई। यह देख कर जैहाज़ी
उसे हटाने के लिए क़रीब आया, लेकिन मर्द-ए-ख़ुदा
बोला, “छोड़ दो! कोई बात इसे बहुत तक्लीफ़ दे
रही है, लेकिन रब ने वजह मुझ से छुपाए रखी है।
उस ने मुझे इस के बारे में कुछ नहीं बताया।”
28 फिर शूनीमी औरत बोल उठी, “मेरे आक़ा, क्या
मैं ने आप से बेटे की दरख़्वास्त की थी? क्या मैं
ने नहीं कहा था कि मुझे ग़लत उम्मीद न दिलाएँ?”
29 तब इलीशा ने नौकर को हुक्म दिया, “जैहाज़ी,
सफ़र के लिए कमरबस्ता हो कर मेरी लाठी को ले
लो और भाग कर शूनीम पहुँचो। अगर रास्ते में किसी
से मिलो तो उसे सलाम तक न करना, और अगर
कोई सलाम कहे तो उसे जवाब मत देना। जब वहाँ
पहुँचोगे तो मेरी लाठी लड़के के चिहरे पर रख देना।”
30 लेकिन माँ ने एतिराज़ किया, “रब की और आप
की हयात की क़सम, आप के बग़ैर मैं घर वापस नहीं
जाऊँगी।”

चुनाँचे इलीशा भी उठा और औरत के पीछे पीछे
चल पड़ा। 31 जैहाज़ी भाग भाग कर उन से पहले
पहुँच गया और लाठी को लड़के के चिहरे पर रख
दिया। लेकिन कुछ न हुआ। न कोई आवाज़ सुनाई
दी, न कोई हरकत हुई। वह इलीशा के पास वापस
आया और बोला, "लड़का अभी तक मुर्दा ही है।"
32 जब इलीशा पहुँच गया तो लड़का अब तक मुर्दा
हालत में उस के बिस्तर पर पड़ा था। 33 वह अकेला
ही अन्दर गया और दरवाज़े पर कुंडी लगा कर रब
से दुआ करने लगा। 34 फिर वह लड़के पर लेट गया,
यूँ कि उस का मुँह बच्चे के मुँह से, उस की आँखें बच्चे
की आँखों से और उस के हाथ बच्चे के हाथों से लग
गए। और जूँ ही वह लड़के पर झुक गया तो उस का
जिस्म गर्म होने लगा। 35 इलीशा खड़ा हुआ और घर
में इधर उधर फिरने लगा। फिर वह एक और मर्तबा
लड़के पर लेट गया। इस दफ़ा लड़के ने सात बार
छींकें मार कर अपनी आँखें खोल दीं।
36 इलीशा ने जैहाज़ी को आवाज़ दे कर कहा,
"शूनीमी औरत को बुला लाओ।" वह कमरे में
दाख़िल हुई तो इलीशा बोला, "आएँ, अपने बेटे
को उठा कर ले जाएँ।" 37 वह आई और इलीशा के
सामने औंधे मुँह झुक गई, फिर अपने बेटे को उठा
कर कमरे से बाहर चली गई।

इलीशा ज़हरीले सालन को खाने के क़ाबिल बना देता है

38 इलीशा जिल्जाल को लौट आया। उन दिनों में
मुल्क काल की गिरिफ़्त में था। एक दिन जब नबियों
का गुरोह उस के सामने बैठा था तो उस ने अपने
नौकर को हुक्म दिया, "बड़ी देग ले कर नबियों के
लिए कुछ पका लो।"
39 एक आदमी बाहर निकल कर खुले मैदान में कद्दू
ढूँडने गया। कहीं एक बेल नज़र आई जिस पर कद्दू
जैसी कोई सब्ज़ी लगी थी। इन कद्दूओं से अपनी
चादर भर कर वह वापस आया और उन्हें काट काट
कर देग में डाल दिया, हालाँकि किसी को भी मालूम
नहीं था कि क्या चीज़ है।
40 सालन पक कर नबियों में तक़्सीम हुआ। लेकिन
उसे चखते ही वह चीख़ने लगे, "मर्द-ए-ख़ुदा, सालन
में ज़हर है! इसे खा कर बन्दा मर जाएगा।" वह उसे
बिलकुल न खा सके। 41 इलीशा ने हुक्म दिया, "मुझे
कुछ मैदा ला कर दें।" फिर उसे देग में डाल कर
बोला, "अब इसे लोगों को खिला दें।" अब खाना
खाने के क़ाबिल था और उन्हें नुक़्सान न पहुँचा
सका।

100 आदमियों के लिए खाना

42 एक और मौक़े पर किसी आदमी ने बाल-सलीसा
से आ कर मर्द-ए-ख़ुदा को नई फ़सल के जौ की 20
रोटियाँ और कुछ अनाज दे दिया। इलीशा ने जैहाज़ी
को हुक्म दिया, "इसे लोगों को खिला दो।"
43 जैहाज़ी हैरान हो कर बोला, "यह कैसे मुमकिन
है? यह तो 100 आदमियों के लिए काफ़ी नहीं
है।" लेकिन इलीशा ने इसरार किया, "इसे लोगों में
तक़्सीम कर दो, क्यूँकि रब फ़रमाता है कि वह जी
भर कर खाएँगे बल्कि कुछ बच भी जाएगा।"
44 और ऐसा ही हुआ। जब नौकर ने आदमियों में
खाना तक़्सीम किया तो उन्हों ने जी भर कर खाया,
बल्कि कुछ खाना बच भी गया। वैसा ही हुआ जैसा
रब ने फ़रमाया था।

नामान की शिफ़ा

5 1 उस वक़्त शाम की फ़ौज का कमाँडर नामान
था। बादशाह उस की बहुत क़दर करता था,
और दूसरे भी उस की ख़ास इज़्ज़त करते थे, क्यूँकि
रब ने उस की मारिफ़त शाम के दुश्मनों पर फ़त्ह
बख़्शी थी। लेकिन ज़बरदस्त फ़ौजी होने के बावुजूद
वह संगीन जिल्दी बीमारी का मरीज़ था। 2 नामान के
घर में एक इस्राईली लड़की रहती थी। किसी वक़्त
जब शाम के फ़ौजियों ने इस्राईल पर छापा मारा था
तो वह उसे गिरिफ़्तार करके यहाँ ले आए थे। अब

लड़की नामान की बीवी की ख़िदमत करती थी।
3 एक दिन उस ने अपनी मालिकन से बात की, “काश
मेरा आक़ा उस नबी से मिलने जाता जो सामरिया में
रहता है। वह उसे ज़रूर शिफ़ा देता।”
4 यह सुन कर नामान ने बादशाह के पास जा कर
लड़की की बात दुहराई। 5 बादशाह बोला, “ज़रूर
जाएँ और उस नबी से मिलें। मैं आप के हाथ
इस्राईल के बादशाह को सिफ़ारिशी ख़त भेज दूँगा।”
चुनाँचे नामान रवाना हुआ। उस के पास तक़रीबन
340 किलोग्राम चाँदी, 68 किलोग्राम सोना और 10
क़ीमती सूट थे। 6 जो ख़त वह साथ ले कर गया उस
में लिखा था, “जो आदमी आप को यह ख़त पहुँचा
रहा है वह मेरा ख़ादिम नामान है। मैं ने उसे आप के
पास भेजा है ताकि आप उसे उस की जिल्दी बीमारी
से शिफ़ा दें।”
7 ख़त पढ़ कर यूराम ने रंजिश के मारे अपने कपड़े
फाड़े और पुकारा, “इस आदमी ने मरीज़ को मेरे पास
भेज दिया है ताकि मैं उसे शिफ़ा दूँ! क्या मैं अल्लाह
हूँ कि किसी को जान से मारूँ या उसे ज़िन्दा करूँ?
अब ग़ौर करें और देखें कि वह किस तरह मेरे साथ
झगड़ने का मौक़ा ढूँड रहा है।”
8 जब इलीशा को ख़बर मिली कि बादशाह ने घबरा
कर अपने कपड़े फाड़ लिए हैं तो उस ने यूराम को
पैग़ाम भेजा, “आप ने अपने कपड़े क्यूँ फाड़ लिए?
आदमी को मेरे पास भेज दें तो वह जान लेगा कि
इस्राईल में नबी है।”
9 तब नामान अपने रथ पर सवार इलीशा के घर
के दरवाज़े पर पहुँच गया। 10 इलीशा ख़ुद न निकला
बल्कि किसी को बाहर भेज कर इत्तिला दी, “जा
कर सात बार दरया-ए-यर्दन में नहा लें। फिर आप
के जिस्म को शिफ़ा मिलेगी और आप पाक-साफ़ हो
जाएंगे।”
11 यह सुन कर नामान को ग़ुस्सा आया और वह यह
कह कर चला गया, “मैं ने सोचा कि वह कम अज़
कम बाहर आ कर मुझ से मिलेगा। होना यह चाहिए
था कि वह मेरे सामने खड़े हो कर रब अपने ख़ुदा का
नाम पुकारता और अपना हाथ बीमार जगह के ऊपर
हिला हिला कर मुझे शिफ़ा देता। 12 क्या दमिश्क़ के
दरया अबाना और फ़र्फ़र तमाम इस्राईली दरयाओं से
बेहतर नहीं हैं? अगर नहाने की ज़रूरत है तो मैं क्यूँ
न उन में नहा कर पाक-साफ़ हो जाऊँ?”
यूँ बुड़बुड़ाते हुए वह बड़े ग़ुस्से में चला गया।
13 लेकिन उस के मुलाज़िमों ने उसे समझाने की
कोशिश की। “हमारे आक़ा, अगर नबी आप से
किसी मुश्किल काम का तक़ाज़ा करता तो क्या आप
वह करने के लिए तय्यार न होते? अब जबकि उस ने
सिर्फ़ यह कहा है कि नहा कर पाक-साफ़ हो जाएँ तो
आप को यह ज़रूर करना चाहिए।” 14 आख़िरकार
नामान मान गया और यर्दन की वादी में उतर गया।
दरया पर पहुँच कर उस ने सात बार उस में डुबकी
लगाई और वाक़ई उस का जिस्म लड़के के जिस्म
जैसा सेहतमन्द और पाक-साफ़ हो गया।
15 तब नामान अपने तमाम मुलाज़िमों के साथ मर्द-
ए-ख़ुदा के पास वापस गया। उस के सामने खड़े हो
कर उस ने कहा, “अब मैं जान गया हूँ कि इस्राईल के
ख़ुदा के सिवा पूरी दुनिया में ख़ुदा नहीं है। ज़रा अपने
ख़ादिम से तुह्फ़ा क़बूल करें।” 16 लेकिन इलीशा ने
इन्कार किया, “रब की हयात की क़सम जिस की
ख़िदमत मैं करता हूँ, मैं कुछ नहीं लूँगा।” नामान
इसरार करता रहा, तो भी वह कुछ लेने के लिए
तय्यार न हुआ।
17 आख़िरकार नामान मान गया। उस ने कहा,
“ठीक है, लेकिन मुझे ज़रा एक काम करने की
इजाज़त दें। मैं यहाँ से इतनी मिट्टी अपने घर ले जाना
चाहता हूँ जितनी दो ख़च्चर उठा कर ले जा सकते हैं।
क्यूँकि आइन्दा मैं उस पर रब को भस्म होने वाली
और ज़बह की क़ुर्बानियाँ चढ़ाना चाहता हूँ। अब से
मैं किसी और माबूद को क़ुर्बानियाँ पेश नहीं करूँगा।
18 लेकिन रब मुझे एक बात के लिए मुआफ़ करे। जब
मेरा बादशाह पूजा करने के लिए रिम्मोन के मन्दिर
में जाता है तो मेरे बाज़ू का सहारा लेता है। यूँ मुझे
भी उस के साथ झुक जाना पड़ता है जब वह बुत के

सामने औंधे मुँह झुक जाता है। रब मेरी यह हरकत
मुआफ़ कर दे।”
19 इलीशा ने जवाब दिया, “सलामती से जाएँ।”

जैहाज़ी का लालच

नामान रवाना हुआ 20 तो कुछ देर के बाद इलीशा
का नौकर जैहाज़ी सोचने लगा, “मेरे आक़ा ने शाम
के इस बन्दे नामान पर हद से ज़्यादा नर्मदिली का
इज़हार किया है। चाहिए तो था कि वह उस के तुह्फ़े
क़बूल कर लेता। रब की हयात की क़सम, मैं उस
के पीछे दौड़ कर कुछ न कुछ उस से ले लूँगा।”
21 चुनाँचे जैहाज़ी नामान के पीछे भागा। जब नामान
ने उसे देखा तो वह रथ से उतर कर जैहाज़ी से मिलने
गया और पूछा, “क्या सब ख़ैरियत है?” 22 जैहाज़ी
ने जवाब दिया, “जी, सब ख़ैरियत है। मेरे आक़ा ने
मुझे आप को इत्तिला देने भेजा है कि अभी अभी
नबियों के गुरोह के दो जवान इफ़्राईम के पहाड़ी
इलाक़े से मेरे पास आए हैं। मेहरबानी करके उन्हें 34
किलोग्राम चाँदी और दो क़ीमती सूट दे दें।” 23 नामान
बोला, “ज़रूर, बल्कि 68 किलोग्राम चाँदी ले लें।”
इस बात पर वह बज़िद रहा। उस ने 68 किलोग्राम
चाँदी बोरियों में लपेट ली, दो सूट चुन लिए और सब
कुछ अपने दो नौकरों को दे दिया ताकि वह सामान
जैहाज़ी के आगे आगे ले चलें।
24 जब वह उस पहाड़ के दामन में पहुँचे जहाँ
इलीशा रहता था तो जैहाज़ी ने सामान नौकरों से ले
कर अपने घर में रख छोड़ा, फिर दोनों को रुख़्सत
कर दिया। 25 फिर वह जा कर इलीशा के सामने खड़ा
हो गया। इलीशा ने पूछा, “जैहाज़ी, तुम कहाँ से आए
हो?” उस ने जवाब दिया, “मैं कहीं नहीं गया था।”
26 लेकिन इलीशा ने एतिराज़ किया, “क्या मेरी रूह
तुम्हारे साथ नहीं थी जब नामान अपने रथ से उतर
कर तुम से मिलने आया? क्या आज चाँदी, कपड़े,
ज़ैतून और अंगूर के बाग़, भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल,
नौकर और नौकरानियाँ हासिल करने का वक़्त था?
27 अब नामान की जिल्दी बीमारी हमेशा तक तुम्हें
और तुम्हारी औलाद को लगी रहेगी।”
जब जैहाज़ी कमरे से निकला तो जिल्दी बीमारी उसे
लग चुकी थी। वह बर्फ़ की तरह सफ़ेद हो गया था।

कुल्हाड़ी का लोहा पानी की सतह पर तैरता है

6 1 एक दिन कुछ नबी इलीशा के पास आ कर
शिकायत करने लगे, “जिस तंग जगह पर हम
आप के पास आ कर ठहरे हैं उस में हमारे लिए रहना
मुश्किल है। 2 क्यूँ न हम दरया-ए-यर्दन पर जाएँ और
हर आदमी वहाँ से शहतीर ले आए ताकि हम रहने
की नई जगह बना सकें।” इलीशा बोला, “ठीक है,
जाएँ।” 3 किसी ने गुज़ारिश की, “बराह-ए-करम हमारे
साथ चलें।” नबी राज़ी हो कर 4 उन के साथ रवाना
हुआ।
दरया-ए-यर्दन के पास पहुँचते ही वह दरख़्त काटने
लगे। 5 काटते काटते अचानक किसी की कुल्हाड़ी
का लोहा पानी में गिर गया। वह चिल्ला उठा, “हाय
मेरे आक़ा! यह मेरा नहीं था, मैं ने तो उसे किसी से
उधार लिया था।” 6 इलीशा ने सवाल किया, “लोहा
कहाँ पानी में गिरा?” आदमी ने उसे जगह दिखाई
तो नबी ने किसी दरख़्त से शाख़ काट कर पानी में
फैंक दी। अचानक लोहा पानी की सतह पर आ कर
तैरने लगा। 7 इलीशा बोला, “इसे पानी से निकाल
लो!” आदमी ने अपना हाथ बढ़ा कर लोहे को पकड़
लिया।

शाम के जंगी मन्सूबे इलीशा के बाइस नाकाम रहते हैं

8 शाम और इस्राईल के दरमियान जंग थी। जब
कभी बादशाह अपने अफ़्सरों से मश्वरा करके कहता,
“हम फ़ुलाँ फ़ुलाँ जगह अपनी लश्करगाह लगा
लेंगे” 9 तो फ़ौरन मर्द-ए-ख़ुदा इस्राईल के बादशाह
को आगाह करता, “फ़ुलाँ जगह से मत गुज़रना,
क्यूँकि शाम के फ़ौजी वहाँ घात में बैठे हैं।” 10 तब
इस्राईल का बादशाह अपने लोगों को मज़कूरा जगह

पर भेजता और वहाँ से गुज़रने से मुह्तात रहता था। ऐसा न सिर्फ़ एक या दो दफ़ा बल्कि कई मर्तबा हुआ।

11 आख़िरकार शाम के बादशाह ने बहुत रंजीदा
हो कर अपने अफ़्सरों को बुलाया और पूछा, "क्या
कोई मुझे बता सकता है कि हम में से कौन इस्राईल
के बादशाह का साथ देता है?" 12 किसी अफ़्सर ने
जवाब दिया, "मेरे आक़ा और बादशाह, हम में से
कोई नहीं है। मसला यह है कि इस्राईल का नबी
इलीशा इस्राईल के बादशाह को वह बातें भी बता
देता है जो आप अपने सोने के कमरे में बयान करते
हैं।" 13 बादशाह ने हुक्म दिया, "जाएँ, उस का पता
करें ताकि हम अपने फ़ौजियों को भेज कर उसे पकड़
लें।"

बादशाह को इत्तिला दी गई कि इलीशा दूतैन नामी
शहर में है। 14 उस ने फ़ौरन एक बड़ी फ़ौज रथों और
घोड़ों समेत वहाँ भेज दी। उन्हों ने रात के वक़्त पहुँच
कर शहर को घेर लिया। 15 जब इलीशा का नौकर
सुब्ह-सवेरे जाग उठा और घर से निकला तो क्या
देखता है कि पूरा शहर एक बड़ी फ़ौज से घिरा हुआ
है जिस में रथ और घोड़े भी शामिल हैं। उस ने इलीशा
से कहा, "हाय मेरे आक़ा, हम क्या करें?" 16 लेकिन
इलीशा ने उसे तसल्ली दी, "डरो मत! जो हमारे साथ
हैं वह उन की निस्बत कहीं ज़्यादा हैं जो दुश्मन के
साथ हैं।" 17 फिर उस ने दुआ की, "ऐ रब, नौकर की
आँखें खोल ताकि वह देख सके।" रब ने इलीशा के
नौकर की आँखें खोल दीं तो उस ने देखा कि पहाड़
पर इलीशा के इर्दगिर्द आतिशीं घोड़े और रथ फैले
हुए हैं।

18 जब दुश्मन इलीशा की तरफ़ बढ़ने लगा तो उस
ने दुआ की, "ऐ रब, इन को अंधा कर दे!" रब ने
इलीशा की सुनी और उन्हें अंधा कर दिया। 19 फिर
इलीशा उन के पास गया और कहा, "यह रास्ता
सहीह नहीं। आप ग़लत शहर के पास पहुँच गए हैं।
मेरे पीछे हो लें तो मैं आप को उस आदमी के पास
पहुँचा दूँगा जिसे आप ढूँड रहे हैं।" यह कह कर वह
उन्हें सामरिया ले गया।

20 जब वह शहर में दाख़िल हुए तो इलीशा ने दुआ
की, "ऐ रब, फ़ौजियों की आँखें खोल दे ताकि वह
देख सकें।" तब रब ने उन की आँखें खोल दीं, और
उन्हें मालूम हुआ कि हम सामरिया में फंस गए हैं।

21 जब इस्राईल के बादशाह ने अपने दुश्मनों को
देखा तो उस ने इलीशा से पूछा, "मेरे बाप, क्या मैं
उन्हें मार दूँ? क्या मैं उन्हें मार दूँ?" 22 लेकिन इलीशा
ने मना किया, "ऐसा मत करें। क्या आप अपने जंगी
क़ैदियों को मार देते हैं? नहीं, उन्हें खाना खिलाएँ,
पानी पिलाएँ और फिर उन के मालिक के पास वापस
भेज दें।"

23 चुनाँचे बादशाह ने उन के लिए बड़ी ज़ियाफ़त
का एहतिमाम किया और खाने-पीने से फ़ारिग़ होने
पर उन्हें उन के मालिक के पास वापस भेज दिया।
इस के बाद इस्राईल पर शाम की तरफ़ से लूट-मार
के छापे बन्द हो गए।

सामरिया का मुहासरा

24 कुछ देर के बाद शाम का बादशाह बिन-हदद
अपनी पूरी फ़ौज जमा करके इस्राईल पर चढ़ आया
और सामरिया का मुहासरा किया। 25 नतीजे में शहर
में शदीद काल पड़ा। आख़िर में गधे का सर चाँदी
के 80 सिक्कों में और कबूतर की मुट्ठी भर बीट चाँदी
के 5 सिक्कों में मिलती थी।

26 एक दिन इस्राईल का बादशाह यूराम शहर की
फ़सील पर सैर कर रहा था तो एक औरत ने उस
से इल्तिमास की, "ऐ मेरे आक़ा और बादशाह, मेरी
मदद कीजिए।" 27 बादशाह ने जवाब दिया, "अगर
रब आप की मदद नहीं करता तो मैं किस तरह आप
की मदद करूँ? न मैं गाहने की जगह जा कर आप
को अनाज दे सकता हूँ, न अंगूर का रस निकालने की
जगह जा कर आप को रस पहुँचा सकता हूँ। 28 फिर
भी मुझे बताएँ, मसला क्या है?" औरत बोली, "इस
औरत ने मुझ से कहा था, 'आएँ, आज आप अपने
बेटे को क़ुर्बान करें ताकि हम उसे खा लें, तो फिर
कल हम मेरे बेटे को खा लेंगे।' 29 चुनाँचे हम ने मेरे

बेटे को पका कर खा लिया। अगले दिन मैं ने उस
से कहा, 'अब अपने बेटे को दे दें ताकि उसे भी खा
लें।' लेकिन उस ने उसे छुपाए रखा।"
30 यह सुन कर बादशाह ने रंजिश के मारे अपने
कपड़े फाड़ डाले। चूँकि वह अभी तक फ़सील पर
खड़ा था इस लिए सब लोगों को नज़र आया कि
कपड़ों के नीचे वह टाट पहने हुए था। 31 उस ने
पुकारा, "अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं इलीशा
बिन साफ़त का आज ही सर क़लम न करूँ!"
32 उस ने एक आदमी को इलीशा के पास भेजा
और ख़ुद भी उस के पीछे चल पड़ा। इलीशा उस
वक़्त घर में था, और शहर के बुज़ुर्ग उस के पास
बैठे थे। बादशाह का क़ासिद अभी रास्ते में था कि
इलीशा बुज़ुर्गों से कहने लगा, "अब ध्यान करें, इस
क़ातिल बादशाह ने किसी को मेरा सर क़लम करने
के लिए भेज दिया है। उसे अन्दर आने न दें बल्कि
दरवाज़े पर कुंडी लगाएँ। उस के पीछे पीछे उस के
मालिक के क़दमों की आहट भी सुनाई दे रही है।"
33 इलीशा अभी बात कर ही रहा था कि क़ासिद
पहुँच गया और उस के पीछे बादशाह भी। बादशाह
बोला, "रब ही ने हमें इस मुसीबत में फंसा दिया है।
मैं मज़ीद उस की मदद के इन्तिज़ार में क्यूँ रहूँ?"
7 1 तब इलीशा बोला, "रब का फ़रमान सुनें!
रब फ़रमाता है कि कल इसी वक़्त शहर के
दरवाज़े पर साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 11
किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के लिए बिकेगा।"
2 जिस अफ़सर के बाज़ू का सहारा बादशाह लेता था
वह मर्द-ए-ख़ुदा की बात सुन कर बोल उठा, "यह
नामुमकिन है, ख़्वाह रब आसमान के दरीचे क्यूँ
न खोल दे।" इलीशा ने जवाब दिया, "आप अपनी
आँखों से इस का मुशाहदा करेंगे, लेकिन ख़ुद उस में
से कुछ न खाएँगे।"

शाम के फ़ौजी फ़रार हो जाते हैं

3 शहर से बाहर दरवाज़े के क़रीब कोढ़ के चार
मरीज़ बैठे थे। अब यह आदमी एक दूसरे से कहने
लगे, "हम यहाँ बैठ कर मौत का इन्तिज़ार क्यूँ
करें? 4 शहर में काल है। अगर उस में जाएँ तो भूके
मर जाएंगे, लेकिन यहाँ रहने से भी कोई फ़र्क़ नहीं
पड़ता। तो क्यूँ न हम शाम की लश्करगाह में जा कर
अपने आप को उन के हवाले करें। अगर वह हमें
ज़िन्दा रहने दें तो अच्छा रहेगा, और अगर वह हमें
क़त्ल भी कर दें तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। यहाँ रह
कर भी हमें मरना ही है।"
5 शाम के धुन्दल्के में वह रवाना हुए। लेकिन जब
लश्करगाह के किनारे तक पहुँचे तो एक भी आदमी
नज़र न आया। 6 क्यूँकि रब ने शाम के फ़ौजियों
को रथों, घोड़ों और एक बड़ी फ़ौज का शोर सुना
दिया था। वह एक दूसरे से कहने लगे, "इस्राईल के
बादशाह ने हित्ती और मिस्री बादशाहों को उजरत पर
बुलाया ताकि वह हम पर हम्ला करें!" 7 डर के मारे
वह शाम के धुन्दल्के में फ़रार हो गए थे। उन के
ख़ैमे, घोड़े, गधे बल्कि पूरी लश्करगाह पीछे रह गई
थी जबकि वह अपनी जान बचाने के लिए भाग गए
थे।
8 जब कौड़ी लश्करगाह में दाख़िल हुए तो उन्हों ने
एक ख़ैमे में जा कर जी भर कर खाना खाया और मै
पी। फिर उन्हों ने सोना, चाँदी और कपड़े उठा कर
कहीं छुपा दिए। वह वापस आ कर किसी और ख़ैमे
में गए और उस का सामान जमा करके उसे भी छुपा
दिया। 9 लेकिन फिर वह आपस में कहने लगे, "जो
कुछ हम कर रहे हैं ठीक नहीं। आज ख़ुशी का दिन
है, और हम यह ख़ुशख़बरी दूसरों तक नहीं पहुँचा
रहे। अगर हम सुब्ह तक इन्तिज़ार करें तो क़ुसूरवार
ठहरेंगे। आएँ, हम फ़ौरन वापस जा कर बादशाह के
घराने को इत्तिला दें।"
10 चुनाँचे वह शहर के दरवाज़े के पास गए और
पहरेदारों को आवाज़ दे कर उन्हें सब कुछ सुनाया,
"हम शाम की लश्करगाह में गए तो वहाँ न कोई
दिखाई दिया, न किसी की आवाज़ सुनाई दी। घोड़े
और गधे बंधे हुए थे और ख़ैमे तर्तीब से खड़े थे,
लेकिन आदमी एक भी मौजूद नहीं था!"

11 दरवाज़े के पहरेदारों ने आवाज़ दे कर दूसरों को
ख़बर पहुँचाई तो शहर के अन्दर बादशाह के घराने
को इत्तिला दी गई। 12 गो रात का वक़्त था तो भी
बादशाह ने उठ कर अपने अफ़सरों को बुलाया और
कहा, "मैं आप को बताता हूँ कि शाम के फ़ौजी क्या
कर रहे हैं। वह तो ख़ूब जानते हैं कि हम भूके मर
रहे हैं। अब वह अपनी लश्करगाह को छोड़ कर
खुले मैदान में छुप गए हैं, क्यूँकि वह समझते हैं
कि इस्राईली ख़ाली लश्करगाह को देख कर शहर
से ज़रूर निकलेंगे और फिर हम उन्हें ज़िन्दा पकड़
कर शहर में दाख़िल हो जाएंगे।"

13 लेकिन एक अफ़सर ने मश्वरा दिया, "बेहतर है
कि हम चन्द एक आदमियों को पाँच बचे हुए घोड़ों
के साथ लश्करगाह में भेजें। अगर वह पकड़े जाएँ
तो कोई बात नहीं। क्यूँकि अगर वह यहाँ रहें तो फिर
भी उन्हें हमारे साथ मरना ही है।"

14 चुनाँचे दो रथों को घोड़ों समेत तय्यार किया
गया, और बादशाह ने उन्हें शाम की लश्करगाह में
भेज दिया। रथबानों को उस ने हुक्म दिया, "जाएँ
और पता करें कि क्या हुआ है।" 15 वह रवाना हुए
और शाम के फ़ौजियों के पीछे पीछे चलने लगे।
रास्ते में हर तरफ़ कपड़े और सामान बिखरा पड़ा था,
क्यूँकि फ़ौजियों ने भागते भागते सब कुछ फैंक कर
रास्ते में छोड़ दिया था। इस्राईली रथसवार दरया-ए-
यर्दन तक पहुँचे और फिर बादशाह के पास वापस
आ कर सब कुछ कह सुनाया।

16 तब सामरिया के बाशिन्दे शहर से निकल आए
और शाम की लश्करगाह में जा कर सब कुछ लूट
लिया। यूँ वह कुछ पूरा हुआ जो रब ने फ़रमाया
था कि साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 11
किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के लिए बिकेगा।

17 जिस अफ़सर के बाज़ू का सहारा बादशाह लेता
था उसे उस ने दरवाज़े की निगरानी करने के लिए भेज
दिया था। लेकिन जब लोग बाहर निकले तो अफ़सर
उन की ज़द में आ कर उन के पैरों तले कुचला गया।
यूँ वैसा ही हुआ जैसा मर्द-ए-ख़ुदा ने उस वक़्त कहा
था जब बादशाह उस के घर आया था। 18 क्यूँकि
इलीशा ने बादशाह को बताया था, "कल इसी वक़्त
शहर के दरवाज़े पर साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरीन
मैदा और 11 किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के
लिए बिकेगा।" 19 अफ़सर ने एतिराज़ किया था, "यह
नामुमकिन है, ख़्वाह रब आसमान के दरीचे क्यूँ न
खोल दे।" और मर्द-ए-ख़ुदा ने जवाब दिया था, "आप
अपनी आँखों से इस का मुशाहदा करेंगे, लेकिन ख़ुद
उस में से कुछ नहीं खाएँगे।"

20 अब यह पेशगोई पूरी हुई, क्यूँकि बेकाबू लोगों
ने उसे शहर के दरवाज़े पर पाँओ तले कुचल दिया,
और वह मर गया।

यूराम बादशाह शूनीमी औरत की ज़मीन वापस कर देता है

8 1 एक दिन इलीशा ने उस औरत को जिस का
बेटा उस ने ज़िन्दा किया था मश्वरा दिया, "अपने
ख़ानदान को ले कर आरिज़ी तौर पर बैरून-ए-मुल्क
चली जाएँ, क्यूँकि रब ने हुक्म दिया है कि मुल्क में
सात साल तक काल होगा।" 2 शूनीम की औरत ने
मर्द-ए-ख़ुदा की बात मान ली। अपने ख़ानदान को ले
कर वह चली गई और सात साल फ़िलिस्ती मुल्क
में रही। 3 सात साल गुज़र गए तो वह उस मुल्क से
वापस आई। लेकिन किसी और ने उस के घर और
ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर रखा था, इस लिए वह मदद
के लिए बादशाह के पास गई।

4 ऐन उस वक़्त जब वह दरबार में पहुँची तो
बादशाह मर्द-ए-ख़ुदा इलीशा के नौकर जैहाज़ी से
गुफ़्तगु कर रहा था। बादशाह ने उस से दरख़्वास्त
की थी, "मुझे वह तमाम बड़े काम सुना दो जो इलीशा
ने किए हैं।" 5 और अब जब जैहाज़ी सुना रहा था कि
इलीशा ने मुर्दा लड़के को किस तरह ज़िन्दा कर दिया
तो उस की माँ अन्दर आ कर बादशाह से इल्तिमास
करने लगी, "घर और ज़मीन वापस मिलने में मेरी
मदद कीजिए।" उसे देख कर जैहाज़ी ने बादशाह से
कहा, "मेरे आक़ा और बादशाह, यह वही औरत

है और यह उस का वही बेटा है जिसे इलीशा ने
ज़िन्दा कर दिया था।” 6 बादशाह ने औरत से सवाल
किया, “क्या यह सहीह है?” औरत ने तस्दीक़ में
उसे दुबारा सब कुछ सुनाया। तब उस ने औरत का
मुआमला किसी दरबारी अफ़्सर के सपुर्द करके हुक्म
दिया, “ध्यान दें कि इसे पूरी मिलकियत वापस मिल
जाए! और जितने पैसे क़ब्ज़ा करने वाला औरत की
ग़ैरमौजूदगी में ज़मीन की फ़सलों से कमा सका वह
भी औरत को दे दिए जाएँ।”

बिन-हदद की मौत की पेशगोई

7 एक दिन इलीशा दमिश्क़ आया। उस वक़्त शाम
का बादशाह बिन-हदद बीमार था। जब उसे इत्तिला
मिली कि मर्द-ए-ख़ुदा आया है 8 तो उस ने अपने
अफ़्सर हज़ाएल को हुक्म दिया, “मर्द-ए-ख़ुदा के लिए
तुह्फ़ा ले कर उसे मिलने जाएँ। वह रब से दरयाफ़्त
करे कि क्या मैं बीमारी से शिफ़ा पाऊँगा या नहीं?”
9 हज़ाएल 40 ऊँटों पर दमिश्क़ की बेहतरीन
पैदावार लाद कर इलीशा से मिलने गया। उस के
पास पहुँच कर वह उस के सामने खड़ा हुआ और
कहा, “आप के बेटे शाम के बादशाह बिन-हदद ने
मुझे आप के पास भेजा है। वह यह जानना चाहता है
कि क्या मैं अपनी बीमारी से शिफ़ा पाऊँगा या नहीं?”
10 इलीशा ने जवाब दिया, “जाएँ और उसे इत्तिला
दें, ‘आप ज़रूर शिफ़ा पाएँगे।’ लेकिन रब ने मुझ पर
ज़ाहिर किया है कि वह हक़ीक़त में मर जाएगा।”
11 इलीशा ख़ामोश हो गया और टिकटिकी बांध
कर बड़ी देर तक उसे घूरता रहा, फिर रोने लगा।
12 हज़ाएल ने पूछा, “मेरे आक़ा, आप क्यूँ रो रहे
हैं?” इलीशा ने जवाब दिया, “मुझे मालूम है कि आप
इस्राईलियों को कितना नुक़्सान पहुँचाएँगे। आप उन
की क़िलाबन्द आबादियों को आग लगा कर उन के
जवानों को तलवार से क़त्ल कर देंगे, उन के छोटे
बच्चों को ज़मीन पर पटख़ देंगे और उन की हामिला
औरतों के पेट चीर डालेंगे।” 13 हज़ाएल बोला, “मुझ
जैसे कुत्ते की क्या हैसियत है कि इतना बड़ा काम
करूँ?” इलीशा ने कहा, “रब ने मुझे दिखा दिया है
कि आप शाम के बादशाह बन जाएंगे।”
14 इस के बाद हज़ाएल चला गया और अपने
मालिक के पास वापस आया। बादशाह ने पूछा,
“इलीशा ने आप को क्या बताया?” हज़ाएल ने
जवाब दिया, “उस ने मुझे यक़ीन दिलाया कि आप
शिफ़ा पाएँगे।” 15 लेकिन अगले दिन हज़ाएल ने
कम्बल ले कर पानी में भिगो दिया और उसे बादशाह
के मुँह पर रख दिया। बादशाह का साँस रुक गया
और वह मर गया। फिर हज़ाएल तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यहूराम

16 यहूराम बिन यहूसफ़त इस्राईल के बादशाह
यूराम की हुकूमत के पाँचवें साल में यहूदाह का
बादशाह बना। शुरू में वह अपने बाप के साथ
हुकूमत करता था। 17 यहूराम 32 साल की उम्र में
बादशाह बना, और वह यरूशलम में रह कर 8 साल
तक हुकूमत करता रहा। 18 उस की शादी इस्राईल
के बादशाह अख़ियब की बेटी से हुई थी, और वह
इस्राईल के बादशाहों और ख़ासकर अख़ियब के
ख़ानदान के बुरे नमूने पर चलता रहा। उस का चाल-
चलन रब को नापसन्द था। 19 तो भी वह अपने
ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर यहूदाह को तबाह नहीं
करना चाहता था, क्यूँकि उस ने दाऊद से वादा किया
था कि तेरा और तेरी औलाद का चराग़ हमेशा तक
जलता रहेगा।
20 यहूराम की हुकूमत के दौरान अदोमियों ने
बग़ावत की और यहूदाह की हुकूमत को रद्द करके
अपना बादशाह मुक़र्रर किया। 21 तब यहूराम अपने
तमाम रथों को ले कर ज़ईर के क़रीब आया। जब
जंग छिड़ गई तो अदोमियों ने उसे और उस के रथों
पर मुक़र्रर अफ़्सरों को घेर लिया। रात को बादशाह
घेरने वालों की सफ़ों को तोड़ने में कामयाब हो गया,
लेकिन उस के फ़ौजी उसे छोड़ कर अपने अपने घर
भाग गए। 22 इस वजह से मुल्क-ए-अदोम आज तक
दुबारा यहूदाह की हुकूमत के तहत नहीं आया। उसी

वक़्त लिब्ना शहर भी सरकश हो कर ख़ुदमुख़्तार हो गया।

23 बाक़ी जो कुछ यहूराम की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उस ने किया वह 'शाहान-ए-यहूदा की तारीख़' की किताब में बयान किया गया है। 24 जब यहूराम मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उस का बेटा अख़ज़ियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह

25 अख़ज़ियाह बिन यहूराम इस्राईल के बादशाह यूराम बिन अख़ियब की हुकूमत के 12वें साल में यहूदाह का बादशाह बना। 26 वह 22 साल की उम्र में तख़्तनशीन हुआ और यरूशलम में रह कर एक साल बादशाह रहा। उस की माँ अतलियाह इस्राईल के बादशाह उम्री की पोती थी। 27 अख़ज़ियाह भी अख़ियब के ख़ानदान के बुरे नमूने पर चल पड़ा। अख़ियब के घराने की तरह उस का चाल-चलन रब को नापसन्द था। वजह यह थी कि उस का रिश्ता अख़ियब के ख़ानदान के साथ बंध गया था। 28 एक दिन अख़ज़ियाह बादशाह यूराम बिन अख़ियब के साथ मिल कर रामात-जिलिआद गया ताकि शाम के बादशाह हज़ाएल से लड़े। जब जंग छिड़ गई तो यूराम शाम के फ़ौजियों के हाथों ज़ख़्मी हुआ 29 और मैदान-ए-जंग को छोड़ कर यज़्रएल वापस आया ताकि ज़ख़्म भर जाएँ। जब वह वहाँ ठहरा हुआ था तो यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह बिन यहूराम उस का हाल पूछने के लिए यज़्रएल आया।

इलीशा याहू को मसह करता है

9 1 एक दिन इलीशा नबी ने नबियों के गुरोह में से एक को बुला कर कहा, "सफ़र के लिए कमरबस्ता हो कर रामात-जिलिआद के लिए रवाना हो जाएँ। ज़ैतून के तेल की यह कुप्पी अपने साथ ले जाएँ। 2 वहाँ पहुँच कर याहू बिन यहूसफ़त बिन निम्सी को तलाश करें। जब उस से मुलाक़ात हो तो उसे उस के साथियों से अलग करके किसी अन्दरूनी कमरे में ले जाएँ। 3 वहाँ कुप्पी ले कर याहू के सर पर तेल उंडेल दें और कहें, 'रब फ़रमाता है कि मैं तुझे तेल से मसह करके इस्राईल का बादशाह बना देता हूँ।' इस के बाद देर न करें बल्कि फ़ौरन दरवाज़े को खोल कर भाग जाएँ!"

4 चुनाँचे जवान नबी रामात-जिलिआद के लिए रवाना हुआ। 5 जब वहाँ पहुँचा तो फ़ौजी अफ़्सर मिल कर बैठे हुए थे। वह उन के क़रीब गया और बोला, "मेरे पास कमाँडर के लिए पैग़ाम है।" याहू ने सवाल किया, "हम में से किस के लिए?" नबी ने जवाब दिया, "आप ही के लिए।"

6 याहू खड़ा हुआ और उस के साथ घर में गया। वहाँ नबी ने याहू के सर पर तेल उंडेल कर कहा, "रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मैं ने तुझे मसह करके अपनी क़ौम का बादशाह बना दिया है। 7 तुझे अपने मालिक अख़ियब के पूरे ख़ानदान को हलाक करना है। यूँ मैं उन नबियों का इन्तिक़ाम लूँगा जो मेरी ख़िदमत करते हुए शहीद हो गए हैं। हाँ, मैं रब के उन तमाम ख़ादिमों का बदला लूँगा जिन्हें ईज़बिल ने क़त्ल किया है। 8 अख़ियब का पूरा घराना तबाह हो जाएगा। मैं उस के ख़ानदान के हर मर्द को हलाक कर दूँगा, ख़्वाह वह बालिग़ हो या बच्चा। 9 मेरा अख़ियब के ख़ानदान के साथ वही सुलूक होगा जो मैं ने यरुबिआम बिन नबात और बाशा बिन अख़ियाह के ख़ानदानों के साथ किया। 10 जहाँ तक ईज़बिल का ताल्लुक़ है उसे दफ़नाया नहीं जाएगा बल्कि कुत्ते उसे यज़्रएल की ज़मीन पर खा जाएंगे'।" यह कह कर नबी दरवाज़ा खोल कर भाग गया।

11 जब याहू निकल कर अपने साथी अफ़्सरों के पास वापस आया तो उन्हों ने पूछा, "क्या सब ख़ैरियत है? यह दीवाना आप से क्या चाहता था?" याहू बोला, "ख़ैर, आप तो इस क़िस्म के लोगों को जानते हैं कि किस तरह की गप्पें हाँकते हैं।" 12 लेकिन उस के साथी इस जवाब से मुत्मइन न हुए,

"झूट! सहीह बात बताएँ।" फिर याहू ने उन्हें खुल कर बात बताई, "आदमी ने कहा, 'रब फ़रमाता है कि मैं ने तुझे मसह करके इस्राईल का बादशाह बना दिया है'।"

13 यह सुन कर अफ़सरों ने जल्दी जल्दी अपनी चादरों को उतार कर उस के सामने सीढ़ियों पर बिछा दिया। फिर वह नरसिंगा बजा बजा कर नारा लगाने लगे, "याहू बादशाह ज़िन्दाबाद!"

यूराम और अख़ज़ियाह का अन्जाम

14 याहू बिन यहूसफ़त बिन निम्सी फ़ौरन यूराम बादशाह को तख़्त से उतारने के मन्सूबे बांधने लगा। यूराम उस वक़्त पूरी इस्राईली फ़ौज समेत रामात-जिलिआद के क़रीब दमिश्क़ के बादशाह हज़ाएल से लड़ रहा था। लेकिन शहर का दिफ़ा करते करते 15 बादशाह शाम के फ़ौजियों के हाथों ज़ख़्मी हो गया था और मैदान-ए-जंग को छोड़ कर यज़्रएल वापस आया था ताकि ज़ख़्म भर जाएँ। अब याहू ने अपने साथी अफ़सरों से कहा, "अगर आप वाक़ई मेरे साथ हैं तो किसी को भी शहर से निकलने न दें, वर्ना ख़तरा है कि कोई यज़्रएल जा कर बादशाह को इत्तिला दे दे।" 16 फिर वह रथ पर सवार हो कर यज़्रएल चला गया जहाँ यूराम आराम कर रहा था। उस वक़्त यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह भी यूराम से मिलने के लिए यज़्रएल आया हुआ था।

17 जब यज़्रएल के बुर्ज पर खड़े पहरेदार ने याहू के ग़ोल को शहर की तरफ़ आते हुए देखा तो उस ने बादशाह को इत्तिला दी। यूराम ने हुक्म दिया, "एक घुड़सवार को उन की तरफ़ भेज कर उन से मालूम करें कि सब ख़ैरियत है या नहीं।" 18 घुड़सवार शहर से निकला और याहू के पास आ कर कहा, "बादशाह पूछते हैं कि क्या सब ख़ैरियत है?" याहू ने जवाब दिया, "इस से आप का क्या वास्ता? आएँ, मेरे पीछे हो लें।" बुर्ज पर के पहरेदार ने बादशाह को इत्तिला दी, "क़ासिद उन तक पहुँच गया है, लेकिन वह वापस नहीं आ रहा।"

19 तब बादशाह ने एक और घुड़सवार को भेज दिया। याहू के पास पहुँच कर उस ने भी कहा, "बादशाह पूछते हैं कि क्या सब ख़ैरियत है?" याहू ने जवाब दिया, "इस से आप का क्या वास्ता? मेरे पीछे हो लें।" 20 बुर्ज पर के पहरेदार ने यह देख कर बादशाह को इत्तिला दी, "हमारा क़ासिद उन तक पहुँच गया है, लेकिन यह भी वापस नहीं आ रहा। ऐसा लगता है कि उन का राहनुमा याहू बिन निम्सी है, क्यूँकि वह अपने रथ को दीवाने की तरह चला रहा है।"

21 यूराम ने हुक्म दिया, "मेरे रथ को तय्यार करो!" फिर वह और यहूदाह का बादशाह अपने अपने रथ में सवार हो कर याहू से मिलने के लिए शहर से निकले। उन की मुलाक़ात उस बाग़ के पास हुई जो नबोत यज़्रएली से छीन लिया गया था। 22 याहू को पहचान कर यूराम ने पूछा, "याहू, क्या सब ख़ैरियत है?" याहू बोला, "ख़ैरियत कैसे हो सकती है जब तेरी माँ ईज़बिल की बुतपरस्ती और जादूगरी हर तरफ़ फैली हुई है?" 23 यूराम बादशाह चिल्ला उठा, "ऐ अख़ज़ियाह, ग़द्दारी!" और मुड़ कर भागने लगा।

24 याहू ने फ़ौरन अपनी कमान खैंच कर तीर चलाया जो सीधा यूराम के कंधों के दरमियान यूँ लगा कि दिल में से गुज़र गया। बादशाह एक दम अपने रथ में गिर पड़ा। 25 याहू ने अपने साथ वाले अफ़सर बिद्क़र से कहा, "इस की लाश उठा कर उस बाग़ में फैंक दें जो नबोत यज़्रएली से छीन लिया गया था। क्यूँकि वह दिन याद करें जब हम दोनों अपने रथों को इस के बाप अख़ियब के पीछे चला रहे थे और रब ने अख़ियब के बारे में एलान किया, 26 'यक़ीन जान कि कल नबोत और उस के बेटों का क़त्ल मुझ से छुपा न रहा। इस का मुआवज़ा मैं तुझे नबोत की इसी ज़मीन पर दूँगा।' चुनाँचे अब यूराम को उठा कर उस ज़मीन पर फैंक दें ताकि रब की बात पूरी हो जाए।"

27 जब यहूदाह के बादशाह अख़ज़ियाह ने यह देखा तो वह बैत-गान का रास्ता ले कर फ़रार हो गया। याहू उस का ताक़्क़ुब करते हुए चिल्लाया, "उसे भी

मार दो!” इब्लीआम के क़रीब जहाँ रास्ता जूर की
तरफ़ चढ़ता है अख़ज़ियाह अपने रथ में चलते चलते
ज़ख़्मी हुआ। वह बच तो निकला लेकिन मजिद्दो
पहुँच कर मर गया। 28 उस के मुलाज़िम लाश को
रथ पर रख कर यरूशलम लाए। वहाँ उसे यरूशलम
के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता
है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। 29 अख़ज़ियाह
यूराम बिन अख़ियब की हुकूमत के 11वें साल में
यहूदाह का बादशाह बन गया था।

ईज़बिल का अन्जाम

30 इस के बाद याहू यज़्रएल चला गया। जब
ईज़बिल को इत्तिला मिली तो उस ने अपनी आँखों में
सुरमा लगा कर अपने बालों को ख़ूबसूरती से संवारा
और फिर खिड़की से बाहर झाँकने लगी। 31 जब याहू
महल के गेट में दाख़िल हुआ तो ईज़बिल चिल्लाई,
“ऐ ज़िम्री जिस ने अपने मालिक को क़त्ल कर दिया
है, क्या सब ख़ैरियत है?” 32 याहू ने ऊपर देख कर
आवाज़ दी, “कौन मेरे साथ है, कौन?” दो या तीन
ख़्वाजासराओं ने खिड़की से बाहर देख कर उस पर
नज़र डाली 33 तो याहू ने उन्हें हुक्म दिया, “उसे नीचे
फैंक दो!”

तब उन्हों ने मलिका को नीचे फैंक दिया। वह इतने
ज़ोर से ज़मीन पर गिरी कि ख़ून के छींटे दीवार और
घोड़ों पर पड़ गए। याहू और उस के लोगों ने अपने
रथों को उस के ऊपर से गुज़रने दिया। 34 फिर याहू
महल में दाख़िल हुआ और खाया और पिया। इस के
बाद उस ने हुक्म दिया, “कोई जाए और उस लानती
औरत को दफ़न करे, क्यूँकि वह बादशाह की बेटी
थी।”

35 लेकिन जब मुलाज़िम उसे दफ़न करने के लिए
बाहर निकले तो देखा कि सिर्फ़ उस की खोपड़ी, हाथ
और पाँओ बाक़ी रह गए हैं। 36 याहू के पास वापस
जा कर उन्हों ने उसे आगाह किया। तब उस ने कहा,
“अब सब कुछ पूरा हुआ है जो रब ने अपने ख़ादिम
इल्यास तिश्बी की मारिफ़त फ़रमाया था, ‘यज़्रएल
की ज़मीन पर कुत्ते ईज़बिल की लाश खा जाएंगे।
37 उस की लाश यज़्रएल की ज़मीन पर गोबर की
तरह पड़ी रहेगी ताकि कोई यक़ीन से न कह सके
कि वह कहाँ है’।”

याहू अख़ियब की औलाद को हलाक करता है

10 1 सामरिया में अख़ियब के 70 बेटे थे। अब
याहू ने ख़त लिख कर सामरिया भेज दिए।
यज़्रएल के अफ़सरों, शहर के बुज़ुर्गों और अख़ियब
के बेटों के सरपरस्तों को यह ख़त मिल गए, और
उन में ज़ैल की ख़बर लिखी थी,

2 “आप के मालिक के बेटे आप के पास हैं। आप
क़िलाबन्द शहर में रहते हैं, और आप के पास
हथियार, रथ और घोड़े भी हैं। इस लिए मैं आप को
चैलेंज देता हूँ कि यह ख़त पढ़ते ही 3 अपने मालिक
के सब से अच्छे और लाइक़ बेटे को चुन कर उसे
उस के बाप के तख़्त पर बिठा दें। फिर अपने मालिक
के ख़ानदान के लिए लड़ें!”

4 लेकिन सामरिया के बुज़ुर्ग बेहद सहम गए और
आपस में कहने लगे, “अगर दो बादशाह उस का
मुक़ाबला न कर सके तो हम क्या कर सकते हैं?”
5 इस लिए महल के इंचार्ज, सामरिया पर मुक़र्रर
अफ़सर, शहर के बुज़ुर्गों और अख़ियब के बेटों के
सरपरस्तों ने याहू को पैग़ाम भेजा, “हम आप के
ख़ादिम हैं और जो कुछ आप कहेंगे हम करने के
लिए तय्यार हैं। हम किसी को बादशाह मुक़र्रर नहीं
करेंगे। जो कुछ आप मुनासिब समझते हैं वह करें।”

6 यह पढ़ कर याहू ने एक और ख़त लिख कर
सामरिया भेजा। उस में लिखा था, “अगर आप वाक़ई
मेरे साथ हैं और मेरे ताबे रहना चाहते हैं तो अपने
मालिक के बेटों के सरों को काट कर कल इस वक़्त
तक यज़्रएल में मेरे पास ले आएँ।” क्यूँकि अख़ियब
के 70 बेटे सामरिया के बड़ों के पास रह कर परवरिश
पा रहे थे। 7 जब ख़त उन के पास पहुँच गया तो इन
आदमियों ने 70 के 70 शहज़ादों को ज़बह कर दिया

और उन के सरों को टोकरों में रख कर यज़्रएल में
याहू के पास भेज दिया।
8 एक क़ासिद ने याहू के पास आ कर इत्तिला दी,
"वह बादशाह के बेटों के सर ले कर आए हैं।" तब
याहू ने हुक्म दिया, "शहर के दरवाज़े पर उन के दो
ढेर लगा दो और उन्हें सुब्ह तक वहीं रहने दो।"
9 अगले दिन याहू सुब्ह के वक़्त निकला और दरवाज़े
के पास खड़े हो कर लोगों से मुख़ातिब हुआ, "यूराम
की मौत के नाते से आप बेइल्ज़ाम हैं। मैं ही ने अपने
मालिक के ख़िलाफ़ मन्सूबे बांध कर उसे मार डाला।
लेकिन किस ने इन तमाम बेटों का सर क़लम कर
दिया? 10 चुनाँचे आज जान लें कि जो कुछ भी रब ने
अख़ियब और उस के ख़ानदान के बारे में फ़रमाया
है वह पूरा हो जाएगा। जिस का एलान रब ने अपने
ख़ादिम इल्यास की मारिफ़त किया है वह उस ने कर
लिया है।" 11 इस के बाद याहू ने यज़्रएल में रहने वाले
अख़ियब के बाक़ी तमाम रिश्तेदारों, बड़े अफ़्सरों,
क़रीबी दोस्तों और पुजारियों को हलाक कर दिया।
एक भी न बचा।
12 फिर वह सामरिया के लिए रवाना हुआ। रास्ते
में जब बैत-इक़द-रोईम के क़रीब पहुँच गया 13 तो
उस की मुलाक़ात यहूदाह के बादशाह अख़ज़ियाह
के चन्द एक रिश्तेदारों से हुई। याहू ने पूछा, "आप
कौन हैं?" उन्हों ने जवाब दिया, "हम अख़ज़ियाह
के रिश्तेदार हैं और सामरिया का सफ़र कर रहे हैं।
वहाँ हम बादशाह और मलिका के बेटों से मिलना
चाहते हैं।" 14 तब याहू ने हुक्म दिया, "उन्हें ज़िन्दा
पकड़ो!" उन्हों ने उन्हें ज़िन्दा पकड़ कर बैत-इक़द
के हौज़ के पास मार डाला। 42 आदमियों में से एक
भी न बचा।
15 उस जगह को छोड़ कर याहू आगे निकला।
चलते चलते उस की मुलाक़ात यूनदब बिन रैकाब
से हुई जो उस से मिलने आ रहा था। याहू ने सलाम
करके कहा, "क्या आप का दिल मेरे बारे में मुख़लिस
है जैसा कि मेरा दिल आप के बारे में है?" यूनदब ने
जवाब दिया, "जी हाँ।" याहू बोला, "अगर ऐसा है,
तो मेरे साथ हाथ मिलाएँ।" यूनदब ने उस के साथ
हाथ मिलाया तो याहू ने उसे अपने रथ पर सवार होने
दिया। 16 फिर याहू ने कहा, "आएँ मेरे साथ और मेरी
रब के लिए जिद्द-ओ-जह्द देखें।" चुनाँचे यूनदब याहू
के साथ सामरिया चला गया।
17 सामरिया पहुँच कर याहू ने अख़ियब के ख़ानदान
के जितने अफ़राद अब तक बच गए थे हलाक कर
दिए। जिस तरह रब ने इल्यास को फ़रमाया था उसी
तरह अख़ियब का पूरा घराना मिट गया।

याहू बाल के तमाम पुजारियों को क़त्ल करता है

18 इस के बाद याहू ने तमाम लोगों को जमा करके
एलान किया, "अख़ियब ने बाल देवता की परस्तिश
थोड़ी की है। मैं कहीं ज़्यादा उस की पूजा करूँगा!
19 अब जा कर बाल के तमाम नबियों, ख़िदमतगुज़ारों
और पुजारियों को बुला लाएँ। ख़याल करें कि एक
भी दूर न रहे, क्यूँकि मैं बाल को बड़ी क़ुर्बानी पेश
करूँगा। जो भी आने से इन्कार करे उसे सज़ा-ए-मौत
दी जाएगी।"
इस तरह याहू ने बाल के ख़िदमतगुज़ारों के लिए
जाल बिछा दिया ताकि वह उस में फंस कर हलाक
हो जाएँ। 20–21 उस ने पूरे इस्राईल में क़ासिद भेज
कर एलान किया, "बाल देवता के लिए मुक़द्दस ईद
मनाएँ!" चुनाँचे बाल के तमाम पुजारी आए, और एक
भी इजतिमा से दूर न रहा। इतने जमा हुए कि बाल
का मन्दिर एक सिरे से दूसरे सिरे तक भर गया।
22 याहू ने ईद के कपड़ों के इंचार्ज को हुक्म दिया,
"बाल के तमाम पुजारियों को ईद के लिबास दे
देना।" चुनाँचे सब को लिबास दिए गए। 23 फिर याहू
और यूनदब बिन रैकाब बाल के मन्दिर में दाख़िल
हुए, और याहू ने बाल के ख़िदमतगुज़ारों से कहा,
"ध्यान दें कि यहाँ आप के साथ रब का कोई ख़ादिम
मौजूद न हो। सिर्फ़ बाल के पुजारी होने चाहिएँ।"
24 दोनों आदमी सामने गए ताकि ज़बह की और
भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश करें। इतने में याहू के
80 आदमी बाहर मन्दिर के इर्दगिर्द खड़े हो गए। याहू

ने उन्हें हुक्म दे कर कहा था, “ख़बरदार! जो पूजा करने वालों में से किसी को बचने दे उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी।”

25 जूँ ही याहू भस्म होने वाली क़ुर्बानी को चढ़ाने से फ़ारिग़ हुआ तो उस ने अपने मुहाफ़िज़ों और अफ़्सरों
को हुक्म दिया, “अन्दर जा कर सब को मार देना।
एक भी बचने न पाए।” वह दाख़िल हुए और अपनी
तलवारों को खैंच कर सब को मार डाला। लाशों को
उन्हों ने बाहर फैंक दिया। फिर वह मन्दिर के सब से
अन्दर वाले कमरे में गए 26 जहाँ बुत था। उसे उन्हों
ने निकाल कर जला दिया 27 और बाल का सतून भी
टुकड़े टुकड़े कर दिया। बाल का पूरा मन्दिर ढा दिया
गया, और वह जगह बैत-उल-ख़ला बन गई। आज
तक वह इस के लिए इस्तेमाल होता है।

याहू की हुकूमत

28 इस तरह याहू ने इस्राईल में बाल देवता की पूजा
ख़त्म कर दी। 29 तो भी वह यरुबिआम बिन नबात के
उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरुबिआम
ने इस्राईल को उकसाया था। बैत-एल और दान में
क़ाइम सोने के बछड़ों की पूजा ख़त्म न हुई।

30 एक दिन रब ने याहू से कहा, “जो कुछ मुझे
पसन्द है उसे तू ने अच्छी तरह सरअन्जाम दिया है,
क्यूँकि तू ने अख़ियब के घराने के साथ सब कुछ
किया है जो मेरी मर्ज़ी थी। इस वजह से तेरी औलाद
चौथी पुश्त तक इस्राईल पर हुकूमत करती रहेगी।”
31 लेकिन याहू ने पूरे दिल से रब इस्राईल के ख़ुदा
की शरीअत के मुताबिक़ ज़िन्दगी न गुज़ारी। वह उन
गुनाहों से बाज़ आने के लिए तय्यार नहीं था जो करने
पर यरुबिआम ने इस्राईल को उकसाया था।

32 याहू की हुकूमत के दौरान रब इस्राईल का
इलाक़ा छोटा करने लगा। शाम के बादशाह हज़ाएल
ने इस्राईल के उस पूरे इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया
33 जो दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में था। जद, रूबिन
और मनस्सी का इलाक़ा जिलिआद बसन से ले
कर दरया-ए-अर्नोन पर वाक़े अरोईर तक शाम के
बादशाह के हाथ में आ गया।

34 बाक़ी जो कुछ याहू की हुकूमत के दौरान हुआ,
जो उस ने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल
हुईं वह ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’ की किताब
में बयान किया गया है। 35–36 वह 28 साल सामरिया
में बादशाह रहा। वहाँ वह दफ़न भी हुआ। जब वह
मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उस का बेटा
यहूआख़ज़ तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह में अतलियाह की ज़ालिमाना हुकूमत

11 1 जब अख़ज़ियाह की माँ अतलियाह को
मालूम हुआ कि मेरा बेटा मर गया है तो
वह अख़ज़ियाह की तमाम औलाद को क़त्ल करने
लगी। 2 लेकिन अख़ज़ियाह की सगी बहन यहूसबा
ने अख़ज़ियाह के छोटे बेटे यूआस को चुपके से उन
शहज़ादों में से निकाल लिया जिन्हें क़त्ल करना था
और उसे उस की दाया के साथ एक स्टोर में छुपा
दिया जिस में बिस्तर वग़ैरा महफ़ूज़ रखे जाते थे। इस
तरह वह बच गया। 3 बाद में यूआस को रब के घर में
मुन्तक़िल किया गया जहाँ वह उस के साथ उन छः
सालों के दौरान छुपा रहा जब अतलियाह मलिका
थी।

अतलियाह का अन्जाम और यूआस बादशाह बन जाता है

4 अतलियाह की हुकूमत के सातवें साल में
यहोयदा इमाम ने सौ सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर
अफ़्सरों, कारी नामी दस्तों और शाही मुहाफ़िज़ों को
रब के घर में बुला लिया। वहाँ उस ने क़सम खिला
कर उन से अह्द बांधा। फिर उस ने बादशाह के बेटे
यूआस को पेश करके 5 उन्हें हिदायत की, “अगले
सबत के दिन आप में से जितने ड्यूटी पर आएँगे वह
तीन हिस्सों में तक़्सीम हो जाएँ। एक हिस्सा शाही
महल पर पहरा दे, 6 दूसरा सूर नामी दरवाज़े पर और
तीसरा शाही मुहाफ़िज़ों के पीछे के दरवाज़े पर। यूँ

आप रब के घर की हिफ़ाज़त करेंगे। 7 दूसरे दो गुरोह
जो सबत के दिन ड्यूटी नहीं करते उन्हें रब के घर
में आ कर यूआस बादशाह की पहरादारी करनी है।
8 वह उस के इर्दगिर्द दाइरा बना कर अपने हथियारों
को पकड़े रखें और जहाँ भी वह जाए उसे घेरे रखें।
जो भी इस दाइरे में घुसने की कोशिश करे उसे मार
डालना।"

9 सो सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़्सरों ने ऐसा ही
किया। अगले सबत के दिन वह सब अपने फ़ौजियों
समेत यहोयदा इमाम के पास आए। वह भी आए जो
ड्यूटी पर थे और वह भी जिन की अब छुट्टी थी।
10 इमाम ने अफ़्सरों को दाऊद बादशाह के वह नेज़े
और ढालें दीं जो अब तक रब के घर में मह्फ़ूज़
रखी हुई थीं। 11 फिर मुहाफ़िज़ हथियारों को हाथ
में पकड़े बादशाह के गिर्द खड़े हो गए। क़ुर्बानगाह
और रब के घर के दरमियान उन का दाइरा रब के घर
की जुनूबी दीवार से ले कर उस की शिमाली दीवार
तक फैला हुआ था। 12 फिर यहोयदा बादशाह के बेटे
यूआस को बाहर लाया और उस के सर पर ताज रख
कर उसे क़वानीन की किताब दे दी। यूँ यूआस को
बादशाह बना दिया गया। उन्हों ने उसे मसह करके
तालियाँ बजाईं और बुलन्द आवाज़ से नारा लगाने
लगे, "बादशाह ज़िन्दाबाद!"

13 जब मुहाफ़िज़ों और बाक़ी लोगों का शोर
अतलियाह तक पहुँचा तो वह रब के घर के सहन में
उन के पास आई। 14 वहाँ पहुँच कर वह क्या देखती
है कि नया बादशाह उस सतून के पास खड़ा है जहाँ
बादशाह रिवाज के मुताबिक़ खड़ा होता है, और वह
अफ़्सरों और तुरम बजाने वालों से घिरा हुआ है।
तमाम उम्मत भी साथ खड़ी तुरम बजा बजा कर ख़ुशी
मना रही है। अतलियाह रंजिश के मारे अपने कपड़े
फाड़ कर चीख़ उठी, "ग़द्दारी, ग़द्दारी!"

15 यहोयदा इमाम ने सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर उन
अफ़्सरों को बुलाया जिन के सपुर्द फ़ौज की गई थी
और उन्हें हुक्म दिया, "उसे बाहर ले जाएँ, क्यूँकि
मुनासिब नहीं कि उसे रब के घर के पास मारा जाए।
और जो भी उस के पीछे आए उसे तलवार से मार
देना।"

16 वह अतलियाह को पकड़ कर उस रास्ते पर ले
गए जिस पर चलते हुए घोड़े महल के पास पहुँचते हैं।
वहाँ उसे मार दिया गया। 17 फिर यहोयदा ने बादशाह
और क़ौम के साथ मिल कर रब से अह्द बांध कर
वादा किया कि हम रब की क़ौम रहेंगे। इस के इलावा
बादशाह ने यहोयदा की मारिफ़त क़ौम से भी अह्द
बांधा। 18 इस के बाद उम्मत के तमाम लोग बाल
के मन्दिर पर टूट पड़े और उसे ढा दिया। उस की
क़ुर्बानगाहों और बुतों को टुकड़े टुकड़े करके उन्हों
ने बाल के पुजारी मत्तान को क़ुर्बानगाहों के सामने
ही मार डाला। रब के घर पर पहरेदार खड़े करने के
बाद 19 यहोयदा सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़्सरों,
कारी नामी दस्तों, महल के मुहाफ़िज़ों और बाक़ी
पूरी उम्मत के हमराह जुलूस निकाल कर बादशाह
को रब के घर से महल में ले गया। वह मुहाफ़िज़ों
के दरवाज़े से हो कर दाख़िल हुए। बादशाह शाही
तख़्त पर बैठ गया, 20 और तमाम उम्मत ख़ुशी मनाती
रही। यूँ यरूशलम शहर को सुकून मिला, क्यूँकि
अतलियाह को महल के पास तलवार से मार दिया
गया था।

यहूदाह का बादशाह यूआस

21 यूआस सात साल का था जब तख़्तनशीन हुआ।

12 1 वह इस्राईल के बादशाह याहू की हुकूमत
के सातवें साल में यहूदाह का बादशाह
बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया
40 साल था। उस की माँ ज़िबियाह बैर-सबा की
रहने वाली थी। 2 जब तक यहोयदा उस की राहनुमाई
करता था यूआस वह कुछ करता रहा जो रब को
पसन्द था। 3 तो भी ऊँची जगहों के मन्दिर दूर न
किए गए। अवाम मामूल के मुताबिक़ वहाँ अपनी
क़ुर्बानियाँ पेश करते और बख़ूर जलाते रहे।

यूआस रब के घर की मरम्मत करवाता है

4 एक दिन यूआस ने इमामों को हुक्म दिया, “रब
के लिए मख़्सूस जितने भी पैसे रब के घर में लाए
जाते हैं उन सब को जमा करें, चाहे वह मर्दुमशुमारी
के टैक्स [h]या किसी मन्नत के ज़िम्न में दिए गए हों,
चाहे रज़ाकाराना तौर पर अदा किए गए हों। 5 यह
तमाम पैसे इमामों के सपुर्द किए जाएँ। इन से आप
को जहाँ भी ज़रूरत है रब के घर की दराड़ों की
मरम्मत करवानी है।” 6 लेकिन यूआस की हुकूमत
के 23वें साल में उस ने देखा कि अब तक रब के घर
की दराड़ों की मरम्मत नहीं हुई। 7 तब उस ने यहोयदा
और बाक़ी इमामों को बुला कर पूछा, “आप रब के
घर की मरम्मत क्यूँ नहीं करा रहे? अब से आप को
इन पैसों से आप की अपनी ज़रूरियात पूरी करने
की इजाज़त नहीं बल्कि तमाम पैसे रब के घर की
मरम्मत के लिए इस्तेमाल करने हैं।”

8 इमाम मान गए कि अब से हम लोगों से हदिया
नहीं लेंगे और कि इस के बदले हमें रब के घर की
मरम्मत नहीं करवानी पड़ेगी। 9 फिर यहोयदा इमाम
ने एक सन्दूक़ ले कर उस के ढकने में सूराख़ बना
दिया। इस सन्दूक़ को उस ने क़ुर्बानगाह के पास
रख दिया, उस दरवाज़े के दहनी तरफ़ जिस में से
परस्तार रब के घर के सहन में दाख़िल होते थे। जब
लोग अपने हदियाजात रब के घर में पेश करते तो
दरवाज़े की पहरादारी करने वाले इमाम तमाम पैसों
को सन्दूक़ में डाल देते। 10 जब कभी पता चलता
कि सन्दूक़ भर गया है तो बादशाह का मीरमुन्शी
और इमाम-ए-आज़म आते और तमाम पैसे गिन कर
थैलियों में डाल देते थे। 11 फिर यह गिने हुए पैसे उन
ठेकेदारों को दिए जाते जिन के सपुर्द रब के घर की
मरम्मत का काम किया गया था। इन पैसों से वह
मरम्मत करने वाले कारीगरों की उजरत अदा करते
थे। इन में बढ़ई, इमारत पर काम करने वाले, 12 राज
और पत्थर तराशने वाले शामिल थे। इस के इलावा
उन्हों ने यह पैसे दराड़ों की मरम्मत के लिए दरकार
लकड़ी और तराशे हुए पत्थरों के लिए भी इस्तेमाल
किए। बाक़ी जितने अख़्राजात रब के घर को बहाल
करने के लिए ज़रूरी थे वह सब इन पैसों से पूरे किए
गए। 13 लेकिन इन हदियाजात से सोने या चाँदी की
चीज़ें न बनवाई गईं, न चाँदी के बासन, बत्ती कतरने
के औज़ार, छिड़काओ के कटोरे या तुरम। 14 यह
सिर्फ़ और सिर्फ़ ठेकेदारों को दिए गए ताकि वह रब
के घर की मरम्मत कर सकें। 15 ठेकेदारों से हिसाब न
लिया गया जब उन्हें कारीगरों को पैसे देने थे, क्यूँकि
वह क़ाबिल-ए-एतिमाद थे।

16 महज़ वह पैसे जो क़ुसूर और गुनाह की
क़ुर्बानियों के लिए मिलते थे रब के घर की मरम्मत
के लिए इस्तेमाल न हुए। वह इमामों का हिस्सा रहे।

ख़राज मिलने पर हज़ाएल यरूशलम को छोड़ता है

17 उन दिनों में शाम के बादशाह हज़ाएल ने जात पर
हम्ला करके उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस के बाद
वह मुड़ कर यरूशलम की तरफ़ बढ़ने लगा ताकि
उस पर भी हम्ला करे। 18 यह देख कर यहूदाह के
बादशाह यूआस ने उन तमाम हदियाजात को इकट्ठा
किया जो उस के बापदादा यहूसफ़त, यहूराम और
अख़ज़ियाह ने रब के घर के लिए मख़्सूस किए थे।
उस ने वह भी जमा किए जो उस ने ख़ुद रब के घर
के लिए मख़्सूस किए थे। यह चीज़ें उस सारे सोने
के साथ मिला कर जो रब के घर और शाही महल
के ख़ज़ानों में था उस ने सब कुछ हज़ाएल को भेज
दिया। तब हज़ाएल यरूशलम को छोड़ कर चला
गया।

यूआस की मौत

19 बाक़ी जो कुछ यूआस की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया उस का ज़िक्र

---

[h]देखिए ख़ुरूज 30:11-16

‘शाहान-ए-यहूदाह’ की किताब में किया गया है।
20 एक दिन उस के अफ़सरों ने उस के ख़िलाफ़
साज़िश करके उसे क़त्ल कर दिया जब वह बैत-मिल्लो
के पास उस रास्ते पर था जो सिल्ला की तरफ़ उतर
जाता था। 21 क़ातिलों के नाम यूज़बद बिन सिमआत
और यहूज़बद बिन शूमीर थे। यूआस को यरूशलम
के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है
ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उस का बेटा
अमसियाह तख़्तनशीन हुआ।

इस्राईल का बादशाह यहूआख़ज़

13 1 यहूआख़ज़ बिन याहू यहूदाह के बादशाह
यूआस बिन अख़ज़ियाह की हुकूमत के
23वें साल में इस्राईल का बादशाह बना। उस की
हुकूमत का दौरानिया 17 साल था, और उस का दार-
उल-हकूमत सामरिया रहा। 2 उस का चाल-चलन रब
को नापसन्द था, क्यूँकि वह भी यरुबिआम बिन
नबात के बुरे नमूने पर चलता रहा। उस ने वह गुनाह
जारी रखे जो करने पर यरुबिआम ने इस्राईल को
उकसाया था। उस बुतपरस्ती से वह कभी बाज़ न
आया। 3 इस वजह से रब इस्राईल से बहुत नाराज़
हुआ, और वह शाम के बादशाह हज़ाएल और उस
के बेटे बिन-हदद के वसीले से उन्हें बार बार दबाता
रहा।

4 लेकिन फिर यहूआख़ज़ ने रब का ग़ज़ब ठंडा
किया, और रब ने उस की मिन्नतें सुनीं, क्यूँकि उसे
मालूम था कि शाम का बादशाह इस्राईल पर कितना
ज़ुल्म कर रहा है। 5 रब ने किसी को भेज दिया जिस
ने उन्हें शाम के ज़ुल्म से आज़ाद करवाया। इस के
बाद वह पहले की तरह सुकून के साथ अपने घरों में
रह सकते थे। 6 तो भी वह उन गुनाहों से बाज़ न आए
जो करने पर यरुबिआम ने उन्हें उकसाया था बल्कि
उन की यह बुतपरस्ती जारी रही। यसीरत देवी का
बुत भी सामरिया से हटाया न गया।

7 आख़िर में यहूआख़ज़ के सिर्फ़ 50 घुड़सवार, 10
रथ और 10,000 पियादा सिपाही रह गए। फ़ौज का
बाक़ी हिस्सा शाम के बादशाह ने तबाह कर दिया
था। उस ने इस्राईली फ़ौजियों को कुचल कर यूँ उड़ा
दिया था जिस तरह धूल अनाज को गाहते वक़्त उड़
जाती है।

8 बाक़ी जो कुछ यहूआख़ज़ की हुकूमत के दौरान
हुआ, जो कुछ उस ने किया और जो कामयाबियाँ उसे
हासिल हुईं वह ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’ की
किताब में बयान की गई हैं। 9 जब वह मर कर अपने
बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में दफ़नाया
गया। फिर उस का बेटा यहूआस तख़्तनशीन हुआ।

इस्राईल का बादशाह यहूआस

10 यहूआस बिन यहूआख़ज़ यहूदाह के बादशाह
यूआस की हुकूमत के 37वें साल में इस्राईल का
बादशाह बना। 11 यहूआस का चाल-चलन रब को
नापसन्द था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया
जो करने पर यरुबिआम बिन नबात ने इस्राईल
को उकसाया था बल्कि यह बुतपरस्ती जारी रही।
12 बाक़ी जो कुछ यहूआस की हुकूमत के दौरान
हुआ, जो कुछ उस ने किया और जो कामयाबियाँ
उसे हासिल हुईं वह ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’
की किताब में दर्ज हैं। उस में उस की यहूदाह के
बादशाह अमसियाह के साथ जंग का ज़िक्र भी है।

13 जब यहूआस मर कर अपने बापदादा से जा मिला
तो उसे सामरिया में शाही क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर
यरुबिआम दुवुम तख़्त पर बैठ गया।

बिस्तर-ए-मर्ग पर यहूआस की इलीशा से मुलाक़ात

14 यहूआस के दौर-ए-हुकूमत में इलीशा शदीद
बीमार हो गया। जब वह मरने को था तो इस्राईल का
बादशाह यहूआस उस से मिलने गया। उस के ऊपर
झुक कर वह ख़ूब रो पड़ा और चिल्लाया, “हाय, मेरे
बाप, मेरे बाप। इस्राईल के रथ और उस के घोड़े!”
15 इलीशा ने उसे हुक्म दिया, “एक कमान और कुछ
तीर ले आएँ।” बादशाह कमान और तीर इलीशा के
पास ले आया। 16 फिर इलीशा बोला, “कमान को

पकड़ें।” जब बादशाह ने कमान को पकड़ लिया तो
इलीशा ने अपने हाथ उस के हाथों पर रख दिए।
17 फिर उस ने हुक्म दिया, “मशरिक़ी खिड़की को
खोल दें।” बादशाह ने उसे खोल दिया। इलीशा
ने कहा, “तीर चलाएँ!” बादशाह ने तीर चलाया।
इलीशा पुकारा, “यह रब का फ़त्ह दिलाने वाला तीर
है, शाम पर फ़त्ह का तीर! आप अफ़ीक़ के पास शाम
की फ़ौज को मुकम्मल तौर पर तबाह कर देंगे।”
18 फिर उस ने बादशाह को हुक्म दिया, “अब बाक़ी
तीरों को पकड़ें।” बादशाह ने उन्हें पकड़ लिया।
फिर इलीशा बोला, “इन को ज़मीन पर पटख़ दें।”
बादशाह ने तीन मर्तबा तीरों को ज़मीन पर पटख़
दिया और फिर रुक गया। 19 यह देख कर मर्द-ए-
ख़ुदा ग़ुस्से हो गया और बोला, “आप को तीरों को
पाँच या छः मर्तबा ज़मीन पर पटख़ना चाहिए था।
अगर ऐसा करते तो शाम की फ़ौज को शिकस्त दे
कर मुकम्मल तौर पर तबाह कर देते। लेकिन अब
आप उसे सिर्फ़ तीन मर्तबा शिकस्त देंगे।”
20 थोड़ी देर के बाद इलीशा फ़ौत हुआ और उसे
दफ़न किया गया। उन दिनों में मोआबी लुटेरे हर
साल मौसम-ए-बहार के दौरान मुल्क में घुस आते
थे। 21 एक दिन किसी का जनाज़ा हो रहा था तो
अचानक यह लुटेरे नज़र आए। मातम करने वाले
लाश को क़रीब की इलीशा की क़ब्र में फैंक कर
भाग गए। लेकिन जूँ ही लाश इलीशा की हड्डियों से
टकराई उस में जान आ गई और वह आदमी खड़ा
हो गया।

इलीशा के आख़िरी अल्फ़ाज़ पूरे हो जाते हैं

22 यहूआख़ज़ के जीते जी शाम का बादशाह
हज़ाएल इस्राईल को दबाता रहा। 23 तो भी रब को
अपनी क़ौम पर तरस आया। उस ने उन पर रहम
किया, क्यूँकि उसे वह अह्द याद रहा जो उस ने
इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से बांधा था। आज
तक वह उन्हें तबाह करने या अपने हुज़ूर से ख़ारिज
करने के लिए तय्यार नहीं हुआ।
24 जब शाम का बादशाह हज़ाएल फ़ौत हुआ तो उस
का बेटा बिन-हदद तख़्तनशीन हुआ। 25 तब यहूआस
बिन यहूआख़ज़ ने बिन-हदद से वह इस्राईली शहर
दुबारा छीन लिए जिन पर बिन-हदद के बाप हज़ाएल
ने क़ब्ज़ा कर लिया था। तीन बार यहूआस ने बिन-
हदद को शिकस्त दे कर इस्राईली शहर वापस ले
लिए।

यहूदाह का बादशाह अमसियाह

14 1 अमसियाह बिन यूआस इस्राईल के
बादशाह यहूआस बिन यहूआख़ज़ के दूसरे
साल में यहूदाह का बादशाह बना। 2 उस वक़्त वह
25 साल का था। वह यरूशलम में रह कर 29 साल
हुकूमत करता रहा। उस की माँ यहूअद्दान यरूशलम
की रहने वाली थी। 3 जो कुछ अमसियाह ने किया
वह रब को पसन्द था, अगरचे वह उतनी वफ़ादारी
से रब की पैरवी नहीं करता था जितनी उस के बाप
दाऊद ने की थी। हर काम में वह अपने बाप यूआस
के नमूने पर चला, 4 लेकिन उस ने भी ऊँची जगहों के
मन्दिरों को दूर न किया। आम लोग अब तक वहाँ
क़ुर्बानियाँ चढ़ाते और बख़ूर जलाते रहे।
5 जूँ ही अमसियाह के पाँओ मज़बूती से जम गए उस
ने उन अफ़सरों को सज़ा-ए-मौत दी जिन्हों ने बाप को
क़त्ल कर दिया था। 6 लेकिन उन के बेटों को उस
ने ज़िन्दा रहने दिया और यूँ मूसवी शरीअत के ताबे
रहा जिस में रब फ़रमाता है, “वालिदैन को उन के
बच्चों के जराइम के सबब से सज़ा-ए-मौत न दी जाए,
न बच्चों को उन के वालिदैन के जराइम के सबब से।
अगर किसी को सज़ा-ए-मौत देनी हो तो उस गुनाह
के सबब से जो उस ने ख़ुद किया है।”
7 अमसियाह ने अदोमियों को नमक की वादी में
शिकस्त दी। उस वक़्त उन के 10,000 फ़ौजी उस से
लड़ने आए थे। जंग के दौरान उस ने सिला शहर पर
क़ब्ज़ा कर लिया और उस का नाम युक़्तिएल रखा।
यह नाम आज तक राइज है।

अमसियाह इस्राईल के बादशाह यहूआस से लड़ता है

8 इस फ़त्ह के बाद अमसियाह ने इस्राईल के
बादशाह यहूआस बिन यहूआख़ज़ को पैग़ाम भेजा,
"आएँ, हम एक दूसरे का मुक़ाबला करें!" 9 लेकिन
इस्राईल के बादशाह यहूआस ने जवाब दिया,
"लुबनान में एक काँटेदार झाड़ी ने देवदार के एक
दरख़्त से बात की, 'मेरे बेटे के साथ अपनी बेटी का
रिश्ता बान्धो।' लेकिन उसी वक़्त लुबनान के जंगली
जानवरों ने उस के ऊपर से गुज़र कर उसे पाँओ तले
कुचल डाला। 10 मुल्क-ए-अदोम पर फ़त्ह पाने के
सबब से आप का दिल मग़ुरूर हो गया है। लेकिन
मेरा मश्वरा है कि आप अपने घर में रह कर फ़त्ह में
हासिल हुई शुहरत का मज़ा लेने पर इकतिफ़ा करें।
आप ऐसी मुसीबत को क्यूँ दावत देते हैं जो आप
और यहूदाह की तबाही का बाइस बन जाए?"
11 लेकिन अमसियाह मानने के लिए तय्यार नहीं
था, इस लिए यहूआस अपनी फ़ौज ले कर यहूदाह
पर चढ़ आया। बैत-शम्स के पास उस का यहूदाह
के बादशाह के साथ मुक़ाबला हुआ। 12 इस्राईल
की फ़ौज ने यहूदाह की फ़ौज को शिकस्त दी, और
हर एक अपने अपने घर भाग गया। 13 इस्राईल के
बादशाह यहूआस ने यहूदाह के बादशाह अमसियाह
बिन यूआस बिन अख़ज़ियाह को वहीं बैत-शम्स
में गिरिफ़्तार कर लिया। फिर वह यरूशलम गया
और शहर की फ़सील इफ़्राईम नामी दरवाज़े से कोने
के दरवाज़े तक गिरा दी। इस हिस्से की लम्बाई
तक़रीबन 600 फ़ुट थी। 14 जितना भी सोना, चाँदी
और क़ीमती सामान रब के घर और शाही महल के
ख़ज़ानों में था उसे उस ने पूरे का पूरा छीन लिया।
लूटा हुआ माल और बाज़ यरग़मालों को ले कर वह
सामरिया वापस चला गया।

इस्राईल के बादशाह यहूआस की मौत

15 बाक़ी जो कुछ यहूआस की हुकूमत के दौरान
हुआ, जो कुछ उस ने किया और जो कामयाबियाँ
उसे हासिल हुईं वह शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़
की किताब में दर्ज हैं। उस में उस की यहूदाह के
बादशाह अमसियाह के साथ जंग का ज़िक्र भी है।
16 जब यहूआस मर कर अपने बापदादा से जा मिला
तो उसे सामरिया में इस्राईल के बादशाहों की क़ब्र में
दफ़नाया गया। फिर उस का बेटा यरुबिआम दुवुम
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह के बादशाह अमसियाह की मौत

17 इस्राईल के बादशाह यहूआस बिन यहूआख़ज़
की मौत के बाद यहूदाह का बादशाह अमसियाह बिन
यूआस मज़ीद 15 साल जीता रहा। 18 बाक़ी जो कुछ
अमसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ वह 'शाहान-
ए-यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। 19 एक
दिन लोग यरूशलम में उस के ख़िलाफ़ साज़िश करने
लगे। आख़िरकार उस ने फ़रार हो कर लकीस में
पनाह ली, लेकिन साज़िश करने वालों ने अपने लोगों
को उस के पीछे भेजा, और वह वहाँ उसे क़त्ल करने
में कामयाब हो गए। 20 उस की लाश घोड़े पर उठा
कर यरूशलम लाई गई जहाँ उसे शहर के उस हिस्से
में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र
में दफ़नाया गया।
21 यहूदाह के तमाम लोगों ने अमसियाह के बेटे
उज़्ज़ियाह [i]को बाप के तख़्त पर बिठा दिया। उस
की उम्र 16 साल थी 22 जब उस का बाप मर कर
अपने बापदादा से जा मिला। बादशाह बनने के बाद
उज़्ज़ियाह ने ऐलात शहर पर क़ब्ज़ा करके उसे दुबारा
यहूदाह का हिस्सा बना लिया। उस ने शहर में बहुत
तामीरी काम करवाया।

---

[i]यहाँ कई जगहों पर इब्रानी में उज़्ज़ियाह का दूसरा नाम अज़रियाह मुस्तामल है।

इस्राईल का बादशाह यरुबिआम दुवुम

23 यहूदाह के बादशाह अमसियाह बिन यूआस के
15वें साल में यरुबिआम बिन यहूआस इस्राईल का
बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 41
साल था, और उस का दार-उल-हकूमत सामरिया
रहा। 24 उस का चाल-चलन रब को नापसन्द था। वह
उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर नबात के
बेटे यरुबिआम अव्वल ने इस्राईल को उकसाया था।
25 यरुबिआम दुवुम लबो-हमात से ले कर बहीरा-ए-
मुर्दार तक उन तमाम इलाक़ों पर दुबारा क़ब्ज़ा कर
सका जो पहले इस्राईल के थे। यूँ वह वादा पूरा हुआ
जो रब इस्राईल के ख़ुदा ने अपने ख़ादिम जात-हिफ़र
के रहने वाले नबी यूनुस बिन अमित्ती की मारिफ़त
किया था। 26 क्यूँकि रब ने इस्राईल की निहायत बुरी
हालत पर ध्यान दिया था। उसे मालूम था कि छोटे
बड़े सब हलाक होने वाले हैं और कि उन्हें छुड़ाने
वाला कोई नहीं है। 27 रब ने कभी नहीं कहा था कि
मैं इस्राईल क़ौम का नाम-ओ-निशान मिटा दूँगा, इस
लिए उस ने उन्हें यरुबिआम बिन यहूआस के वसीले
से नजात दिलाई।

28 बाक़ी जो कुछ यरुबिआम दुवुम की हुकूमत
के दौरान हुआ, जो कुछ उस ने किया और जो
जंगी कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं उन का ज़िक्र
'शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़' की किताब में हुआ
है। उस में यह भी बयान किया गया है कि उस ने
किस तरह दमिश्क़ और हमात पर दुबारा क़ब्ज़ा कर
लिया। 29 जब यरुबिआम मर कर अपने बापदादा
से जा मिला तो उसे सामरिया में बादशाहों की क़ब्र
में दफ़नाया गया। फिर उस का बेटा ज़करियाह
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह उज़्ज़ियाह

15 1 उज़्ज़ियाह बिन अमसियाह इस्राईल के
बादशाह यरुबिआम दुवुम की हुकूमत के
27वें साल में यहूदाह का बादशाह बना। 2 उस वक़्त
उस की उम्र 16 साल थी, और वह यरूशलम में
रह कर 52 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ
यकूलियाह यरूशलम की रहने वाली थी। 3 अपने
बाप अमसियाह की तरह उस का चाल-चलन रब
को पसन्द था, 4 लेकिन ऊँची जगहों को दूर न किया
गया, और आम लोग वहाँ अपनी क़ुर्बानियाँ चढ़ाते
और बख़ूर जलाते रहे।

5 एक दिन रब ने बादशाह को सज़ा दी कि उसे कोढ़
लग गया। उज़्ज़ियाह जीते जी इस बीमारी से शिफ़ा
न पा सका, और उसे अलाहिदा घर में रहना पड़ा।
उस के बेटे यूताम को महल पर मुक़र्रर किया गया,
और वही उम्मत पर हुकूमत करने लगा।

6 बाक़ी जो कुछ उज़्ज़ियाह की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया वह 'शाहान-ए-
यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। 7 जब वह
मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम
के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है
ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उस का बेटा
यूताम तख़्तनशीन हुआ।

इस्राईल का बादशाह ज़करियाह

8 ज़करियाह बिन यरुबिआम यहूदाह के बादशाह
उज़्ज़ियाह की हुकूमत के 38वें साल में इस्राईल का
बादशाह बना। उस का दार-उल-हकूमत भी सामरिया
था, लेकिन छः माह के बाद उस की हुकूमत ख़त्म
हो गई। 9 अपने बापदादा की तरह ज़करियाह का
चाल-चलन भी रब को नापसन्द था। वह उन गुनाहों
से बाज़ न आया जो करने पर यरुबिआम बिन नबात
ने इस्राईल को उकसाया था। 10 सल्लूम बिन यबीस ने
उस के ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे सब के सामने
क़त्ल किया। फिर वह उस की जगह बादशाह बन
गया।

11 बाक़ी जो कुछ ज़करियाह की हुकूमत के दौरान
हुआ उस का ज़िक्र 'शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़'
की किताब में किया गया है।

12 यूँ रब का वह वादा पूरा हुआ जो उस ने याहू से
किया था, “तेरी औलाद चौथी पुश्त तक इस्राईल पर
हुकूमत करती रहेगी।”

इस्राईल का बादशाह सल्लूम

13 सल्लूम बिन यबीस यहूदाह के बादशाह उज़्ज़ियाह
के 39वें साल में इस्राईल का बादशाह बना। वह
सामरिया में रह कर सिर्फ़ एक माह तक तख़्त पर
बैठ सका। 14 फिर मनाहिम बिन जादी ने तिर्ज़ा से
आ कर सल्लूम को सामरिया में क़त्ल कर दिया। इस
के बाद वह ख़ुद तख़्त पर बैठ गया।
15 बाक़ी जो कुछ सल्लूम की हुकूमत के दौरान हुआ
और जो साज़िशें उस ने कीं वह ‘शाहान-ए-इस्राईल
की तारीख़’ की किताब में बयान किया गया है।
16 उस वक़्त मनाहिम ने तिर्ज़ा से आ कर शहर
तिफ़्सह को उस के तमाम बाशिन्दों और गिर्द-ओ-
नवाह के इलाक़े समेत तबाह किया। वजह यह थी
कि उस के बाशिन्दे अपने दरवाज़ों को खोल कर उस
के ताबे हो जाने के लिए तय्यार नहीं थे। जवाब में
मनाहिम ने उन को मारा और तमाम हामिला औरतों
के पेट चीर डाले।

इस्राईल का बादशाह मनाहिम

17 मनाहिम बिन जादी यहूदाह के बादशाह
उज़्ज़ियाह की हुकूमत के 39वें साल में इस्राईल का
बादशाह बना। सामरिया उस का दार-उल-हकूमत
था, और उस की हुकूमत का दौरानिया 10 साल था।
18 उस का चाल-चलन रब को नापसन्द था, और वह
ज़िन्दगी भर उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर
यरुबिआम बिन नबात ने इस्राईल को उकसाया था।
19–20 मनाहिम के दौर-ए-हुकूमत में असूर का
बादशाह पूल यानी तिग्लत-पिलेसर मुल्क से लड़ने
आया। मनाहिम ने उसे 34,000 किलोग्राम चाँदी दे दी
ताकि वह उस की हुकूमत मज़बूत करने में मदद करे।
तब असूर का बादशाह इस्राईल को छोड़ कर अपने
मुल्क वापस चला गया। चाँदी के यह पैसे मनाहिम ने
अमीर इस्राईलियों से जमा किए। हर एक को चाँदी
के 50 सिक्के अदा करने पड़े।
21 बाक़ी जो कुछ मनाहिम की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया वह ‘शाहान-ए-
इस्राईल की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। 22 जब
वह मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उस का
बेटा फ़िक़हियाह तख़्त पर बैठ गया।

इस्राईल का बादशाह फ़िक़हियाह

23 फ़िक़हियाह बिन मनाहिम यहूदाह के बादशाह
उज़्ज़ियाह के 50वें साल में इस्राईल का बादशाह
बना। सामरिया में रह कर उस की हुकूमत का
दौरानिया दो साल था। 24 फ़िक़हियाह का चाल-
चलन रब को नापसन्द था। वह उन गुनाहों से बाज़ न
आया जो करने पर यरुबिआम बिन नबात ने इस्राईल
को उकसाया था।
25 एक दिन फ़ौज के आला अफ़्सर फ़िक़ह बिन
रमलियाह ने उस के ख़िलाफ़ साज़िश की। जिलिआद
के 50 आदमियों को अपने साथ ले कर उस ने
फ़िक़हियाह को सामरिया के महल के बुर्ज में मार
डाला। उस वक़्त दो और अफ़्सर बनाम अर्जूब और
अरिया भी उस की ज़द में आ कर मर गए। इस के
बाद फ़िक़ह तख़्त पर बैठ गया।
26 बाक़ी जो कुछ फ़िक़हियाह की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया वह ‘शाहान-ए-
इस्राईल की तारीख़’ की किताब में बयान किया गया
है।

इस्राईल का बादशाह फ़िक़ह

27 फ़िक़ह बिन रमलियाह यहूदाह के बादशाह
उज़्ज़ियाह की हुकूमत के 52वें साल में इस्राईल का
बादशाह बना। सामरिया में रह कर वह 20 साल तक
हुकूमत करता रहा। 28 फ़िक़ह का चाल-चलन रब
को नापसन्द था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया
जो करने पर यरुबिआम बिन नबात ने इस्राईल को
उकसाया था।

29 फ़िक़ह के दौर-ए-हुकूमत में असूर के बादशाह
तिग्लत-पिलेसर ने इस्राईल पर हम्ला किया। ज़ैल के
तमाम शहर उस के क़ब्ज़े में आ गए : ऐय्यून, अबील-
बैत-माका, यानूह, क़ादिस और हसूर। जिलिआद
और गलील के इलाक़े भी नफ़्ताली के पूरे क़बाइली
इलाक़े समेत उस की गिरिफ़्त में आ गए। असूर
का बादशाह इन तमाम जगहों में आबाद लोगों को
गिरिफ़्तार करके अपने मुल्क असूर ले गया।
30 एक दिन होसेअ बिन ऐला ने फ़िक़ह के ख़िलाफ़
साज़िश करके उसे मौत के घाट उतार दिया। फिर
वह ख़ुद तख़्त पर बैठ गया। यह यहूदाह के बादशाह
यूताम बिन उज़्ज़ियाह की हुकूमत के 20वें साल में
हुआ।
31 बाक़ी जो कुछ फ़िक़ह की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया वह 'शाहान-ए-
इस्राईल की तारीख़' की किताब में दर्ज है।

यहूदाह का बादशाह यूताम

32 उज़्ज़ियाह का बेटा यूताम इस्राईल के बादशाह
फ़िक़ह की हुकूमत के दूसरे साल में यहूदाह का
बादशाह बना। 33 वह 25 साल की उम्र में बादशाह
बना और यरूशलम में रह कर 16 साल हुकूमत
करता रहा। उस की माँ यरूसा बिन्त सदोक़ थी।
34 वह अपने बाप उज़्ज़ियाह की तरह वह कुछ करता
रहा जो रब को पसन्द था। 35 तो भी ऊँची जगहों
के मन्दिर हटाए न गए। लोग वहाँ अपनी क़ुर्बानियाँ
चढ़ाने और बख़ूर जलाने से बाज़ न आए। यूताम ने
रब के घर का बालाई दरवाज़ा तामीर किया।
36 बाक़ी जो कुछ यूताम की हुकूमत के दौरान हुआ
और जो कुछ उस ने किया वह 'शाहान-ए-यहूदाह की
तारीख़' की किताब में क़लमबन्द है। 37 उन दिनों
में रब शाम के बादशाह रज़ीन और फ़िक़ह बिन
रमलियाह को यहूदाह के ख़िलाफ़ भेजने लगा ताकि
उस से लड़ें। 38 जब यूताम मर कर अपने बापदादा
से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में
जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में
दफ़नाया गया। फिर उस का बेटा आख़ज़ तख़्त पर
बैठ गया।

यहूदाह का बादशाह आख़ज़

16 1 आख़ज़ बिन यूताम इस्राईल के बादशाह
फ़िक़ह बिन रमलियाह की हुकूमत के 17वें
साल में यहूदाह का बादशाह बना। 2 उस वक़्त
आख़ज़ 20 साल का था, और वह यरूशलम में रह
कर 16 साल हुकूमत करता रहा। वह अपने बाप
दाऊद के नमूने पर न चला बल्कि वह कुछ करता
रहा जो रब को नापसन्द था। 3 क्यूँकि उस ने इस्राईल
के बादशाहों का चाल-चलन अपनाया, यहाँ तक कि
उस ने अपने बेटे को क़ुर्बानी के तौर पर जला दिया।
यूँ वह उन क़ौमों के घिनौने रस्म-ओ-रिवाज अदा
करने लगा जिन्हें रब ने इस्राईलियों के आगे मुल्क से
निकाल दिया था। 4 आख़ज़ बख़ूर जला कर अपनी
क़ुर्बानियाँ ऊँचे मक़ामों, पहाड़ियों की चोटियों और
हर घने दरख़्त के साय में चढ़ाता था।

आख़ज़ असूर के बादशाह से मदद लेता है

5 एक दिन शाम का बादशाह रज़ीन और इस्राईल
का बादशाह फ़िक़ह बिन रमलियाह यरूशलम पर
हम्ला करने के लिए यहूदाह में घुस आए। उन्हों ने
शहर का मुहासरा तो किया लेकिन उस पर क़ब्ज़ा
करने में नाकाम रहे। 6 उन ही दिनों में रज़ीन ने ऐलात
पर दुबारा क़ब्ज़ा करके शाम का हिस्सा बना लिया।
यहूदाह के लोगों को वहाँ से निकाल कर उस ने वहाँ
अदोमियों को बसा दिया। यह अदोमी आज तक वहाँ
आबाद हैं।
7 आख़ज़ ने अपने क़ासिदों को असूर के बादशाह
तिग्लत-पिलेसर के पास भेज कर उसे इत्तिला दी, "मैं
आप का ख़ादिम और बेटा हूँ। मेहरबानी करके आएँ
और मुझे शाम और इस्राईल के बादशाहों से बचाएँ
जो मुझ पर हम्ला कर रहे हैं।" 8 साथ साथ आख़ज़
ने वह चाँदी और सोना जमा किया जो रब के घर
और शाही महल के ख़ज़ानों में था और उसे तुह्फ़े के

तौर पर असूर के बादशाह को भेज दिया। 9 तिग्लत-
पिलेसर राज़ी हो गया। उस ने दमिश्क़ पर हम्ला करके
शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया और उस के बाशिन्दों को
गिरिफ़्तार करके क़ीर को ले गया। रज़ीन को उस ने
क़त्ल कर दिया।

आख़ज़ रब के घर की बेहुरमती करता है

10 आख़ज़ बादशाह असूर के बादशाह तिग्लत-
पिलेसर से मिलने के लिए दमिश्क़ गया। वहाँ एक
क़ुर्बानगाह थी जिस का नमूना आख़ज़ ने बना कर
ऊरियाह इमाम को भेज दिया। साथ साथ उस ने
डिज़ाइन की तमाम तफ़सीलात भी यरूशलम भेज दीं।
11 जब ऊरियाह को हिदायात मिलीं तो उस ने उन
ही के मुताबिक़ यरूशलम में एक क़ुर्बानगाह बनाई।
आख़ज़ के दमिश्क़ से वापस आने से पहले पहले
उसे तय्यार कर लिया गया।

12 जब बादशाह वापस आया तो उस ने नई
क़ुर्बानगाह का मुआइना किया। फिर उस की सीढ़ी
पर चढ़ कर 13 उस ने ख़ुद क़ुर्बानियाँ उस पर पेश
कीं। भस्म होने वाली क़ुर्बानी और ग़ल्ला की नज़र
जला कर उस ने मै की नज़र क़ुर्बानगाह पर उंडेल दी
और सलामती की क़ुर्बानियों का ख़ून उस पर छिड़क
दिया।

14 रब के घर और नई क़ुर्बानगाह के दरमियान अब
तक पीतल की पुरानी क़ुर्बानगाह थी। अब आख़ज़
ने उसे उठा कर रब के घर के सामने से मुन्तक़िल
करके नई क़ुर्बानगाह के पीछे यानी शिमाल की
तरफ़ रखवा दिया। 15 ऊरियाह इमाम को उस ने
हुक्म दिया, "अब से आप को तमाम क़ुर्बानियों
को नई क़ुर्बानगाह पर पेश करना है। इन में सुब्ह-
ओ-शाम की रोज़ाना क़ुर्बानियाँ भी शामिल हैं और
बादशाह और उम्मत की मुख़्तलिफ़ क़ुर्बानियाँ भी,
मसलन भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ और ग़ल्ला और
मै की नज़रें। क़ुर्बानियों के तमाम ख़ून को भी सिर्फ़
नई क़ुर्बानगाह पर छिड़कना है। आइन्दा पीतल की
पुरानी क़ुर्बानगाह सिर्फ़ मेरे ज़ाती इस्तेमाल के लिए
होगी जब मुझे अल्लाह से कुछ दरयाफ़्त करना होगा।"
16 ऊरियाह इमाम ने वैसा ही किया जैसा बादशाह ने
उसे हुक्म दिया।

17 लेकिन आख़ज़ बादशाह रब के घर में मज़ीद
तब्दीलियाँ भी लाया। हथगाड़ियों के जिन फ़्रेमों पर
बासन रखे जाते थे उन्हें तोड़ कर उस ने बासनों
को दूर कर दिया। इस के इलावा उस ने 'समुन्दर'
नामी बड़े हौज़ को पीतल के उन बैलों से उतार दिया
जिन पर वह शुरू से पड़ा था और उसे पत्थर के एक
चबूतरे पर रखवा दिया। 18 उस ने असूर के बादशाह
को ख़ुश रखने के लिए एक और काम भी किया। उस
ने रब के घर से वह चबूतरा दूर कर दिया जिस पर
बादशाह का तख़्त रखा जाता था और वह दरवाज़ा
बन्द कर दिया जो बादशाह रब के घर में दाख़िल
होने के लिए इस्तेमाल करता था।

19 बाक़ी जो कुछ आख़ज़ की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया वह 'शाहान-ए-
यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। 20 जब वह
मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम
के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है
ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उस का बेटा
हिज़क़ियाह तख़्तनशीन हुआ।

इस्राईल का आख़िरी बादशाह होसेअ

17 1 होसेअ बिन ऐला यहूदाह के बादशाह
आख़ज़ की हुकूमत के 12वें साल में
इस्राईल का बादशाह बना। सामरिया उस का दार-
उल-हकूमत रहा, और उस की हुकूमत का दौरानिया
9 साल था। 2 होसेअ का चाल-चलन रब को नापसन्द
था, लेकिन इस्राईल के उन बादशाहों की निस्बत जो
उस से पहले थे वह कुछ बेहतर था।

3 एक दिन असूर के बादशाह सल्मनसर ने इस्राईल
पर हम्ला किया। तब होसेअ शिकस्त मान कर उस के
ताबे हो गया। उसे असूर को ख़राज अदा करना पड़ा।
4 लेकिन चन्द साल के बाद वह सरकश हो गया। उस
ने ख़राज का सालाना सिलसिला बन्द करके अपने

सफ़ीरों को मिस्र के बादशाह सो के पास भेजा ताकि उस से मदद हासिल करे। जब असूर के बादशाह को पता चला तो उस ने उसे पकड़ कर जेल में डाल दिया।

सामरिया का अन्जाम

5 सल्मनसर पूरे मुल्क में से गुज़र कर सामरिया तक पहुँच गया। तीन साल तक उसे शहर का मुहासरा करना पड़ा, 6 लेकिन आख़िरकार वह होसेअ की हुकूमत के नवें साल में कामयाब हुआ और शहर पर क़ब्ज़ा करके इस्राईलियों को जिलावतन कर दिया। उन्हें असूर ला कर उस ने कुछ ख़लह के इलाक़े में, कुछ जौज़ान के दरया-ए-ख़ाबूर के किनारे पर और कुछ मादियों के शहरों में बसाए।

7 यह सब कुछ इस लिए हुआ कि इस्राईलियों ने रब अपने ख़ुदा का गुनाह किया था, हालाँकि वह उन्हें मिस्री बादशाह फ़िरऔन के क़ब्ज़े से रिहा करके मिस्र से निकाल लाया था। वह दीगर माबूदों की पूजा करते 8 और उन क़ौमों के रस्म-ओ-रिवाज की पैरवी करते जिन को रब ने उन के आगे से निकाल दिया था। साथ साथ वह उन रस्मों से भी लिपटे रहे जो इस्राईल के बादशाहों ने शुरू की थीं। 9 इस्राईलियों को रब अपने ख़ुदा के ख़िलाफ़ बहुत तरकीबें सूझीं जो ठीक नहीं थीं। सब से छोटी चौकी से ले कर बड़े से बड़े क़िलाबन्द शहर तक उन्हों ने अपने तमाम शहरों की ऊँची जगहों पर मन्दिर बनाए। 10 हर पहाड़ी की चोटी पर और हर घने दरख़्त के साय में उन्हों ने पत्थर के अपने देवताओं के सतून और यसीरत देवी के खम्बे खड़े किए। 11 हर ऊँची जगह पर वह बख़ूर जला देते थे, बिलकुल उन अक़्वाम की तरह जिन्हें रब ने उन के आगे से निकाल दिया था। ग़रज़ इस्राईलियों से बहुत सी ऐसी शरीर हरकतें सरज़द हुईं जिन को देख कर रब को ग़ुस्सा आया। 12 वह बुतों की परस्तिश करते रहे अगरचे रब ने इस से मना किया था।

13 बार बार रब ने अपने नबियों और ग़ैबबीनों को इस्राईल और यहूदाह के पास भेजा था ताकि उन्हें आगाह करें, "अपनी शरीर राहों से बाज़ आओ। मेरे अह्काम और क़वाइद के ताबे रहो। उस पूरी शरीअत की पैरवी करो जो मैं ने तुम्हारे बापदादा को अपने ख़ादिमों यानी नबियों के वसीले से दे दी थी।"

14 लेकिन वह सुनने के लिए तय्यार नहीं थे बल्कि अपने बापदादा की तरह अड़ गए, क्यूँकि वह भी रब अपने ख़ुदा पर भरोसा नहीं करते थे। 15 उन्हों ने उस के अह्काम और उस अह्द को रद्द किया जो उस ने उन के बापदादा से बांधा था। जब भी उस ने उन्हें किसी बात से आगाह किया तो उन्हों ने उसे हक़ीर जाना। बेकार बुतों की पैरवी करते करते वह ख़ुद बेकार हो गए। वह गिर्द-ओ-नवाह की क़ौमों के नमूने पर चल पड़े हालाँकि रब ने इस से मना किया था। 16 रब अपने ख़ुदा के तमाम अह्काम को मुस्तरद करके उन्हों ने अपने लिए बछड़ों के दो मुजस्समे ढाल लिए और यसीरत देवी का खम्बा खड़ा कर दिया। वह सूरज, चाँद बल्कि आसमान के पूरे लश्कर के सामने झुक गए और बाल देवता की परस्तिश करने लगे। 17 अपने बेटे-बेटियों को उन्हों ने अपने बुतों के लिए क़ुर्बान करके जला दिया। नुजूमियों से मश्वरा लेना और जादूगरी करना आम हो गया। ग़रज़ उन्हों ने अपने आप को बदी के हाथ में बेच कर ऐसा काम किया जो रब को नापसन्द था और जो उसे ग़ुस्सा दिलाता रहा।

18 तब रब का ग़ज़ब इस्राईल पर नाज़िल हुआ, और उस ने उन्हें अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया। सिर्फ़ यहूदाह का क़बीला मुल्क में बाक़ी रह गया।

19 लेकिन यहूदाह के अफ़राद भी रब अपने ख़ुदा के अह्काम के ताबे रहने के लिए तय्यार नहीं थे। वह भी उन बुरे रस्म-ओ-रिवाज की पैरवी करते रहे जो इस्राईल ने शुरू किए थे। 20 फिर रब ने पूरी की पूरी क़ौम को रद्द कर दिया। उन्हें तंग करके वह उन्हें लुटेरों के हवाले करता रहा, और एक दिन उस ने उन्हें भी अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया।

21 रब ने ख़ुद इस्राईल के शिमाली क़बीलों को दाऊद के घराने से अलग कर दिया था, और उन्हों ने

यरुबिआम बिन नबात को अपना बादशाह बना लिया था। लेकिन यरुबिआम ने इस्राईल को एक संगीन गुनाह करने पर उकसा कर रब की पैरवी करने से दूर किए रखा। 22 इस्राईली यरुबिआम के बुरे नमूने पर चलते रहे और कभी इस से बाज़ न आए।

23 यही वजह है कि जो कुछ रब ने अपने ख़ादिमों यानी नबियों की मारिफ़त फ़रमाया था वह पूरा हुआ। उस ने उन्हें अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया, और दुश्मन उन्हें क़ैदी बना कर असूर ले गया जहाँ वह आज तक ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

सामरिया में अजनबी क़ौमों को आबाद किया जाता है

24 असूर के बादशाह ने बाबल, कूता, अव्वा, हमात और सिफ़र्वाइम से लोगों को इस्राईल में ला कर सामरिया के इस्राईलियों से ख़ाली किए गए शहरों में बसा दिया। यह लोग सामरिया पर क़ब्ज़ा करके उस के शहरों में बसने लगे। 25 लेकिन आते वक़्त वह रब की परस्तिश नहीं करते थे, इस लिए रब ने उन के दरमियान शेरबबर भेज दिए जिन्हों ने कई एक को फाड़ डाला।

26 असूर के बादशाह को इत्तिला दी गई, "जिन लोगों को आप ने जिलावतन करके सामरिया के शहरों में बसा दिया है वह नहीं जानते कि उस मुल्क का देवता किन किन बातों का तक़ाज़ा करता है। नतीजे में उस ने उन के दरमियान शेरबबर भेज दिए हैं जो उन्हें फाड़ रहे हैं। और वजह यही है कि वह उस की सहीह पूजा करने से वाक़िफ़ नहीं हैं।" 27 यह सुन कर असूर के बादशाह ने हुक्म दिया, "सामरिया से यहाँ लाए गए इमामों में से एक को चुन लो जो अपने वतन लौट कर वहाँ दुबारा आबाद हो जाए और लोगों को सिखाए कि उस मुल्क का देवता अपनी पूजा के लिए किन किन बातों का तक़ाज़ा करता है।"

28 तब एक इमाम जिलावतनी से वापस आया। बैत-एल में आबाद हो कर उस ने नए बाशिन्दों को सिखाया कि रब की मुनासिब इबादत किस तरह की जाती है। 29 लेकिन साथ साथ वह अपने ज़ाती देवताओं की पूजा भी करते रहे। शहर-ब-शहर हर क़ौम ने अपने अपने बुत बना कर उन तमाम ऊँची जगहों के मन्दिरों में खड़े किए जो सामरिया के लोगों ने बना छोड़े थे। 30 बाबल के बाशिन्दों ने सुक्कात-बनात के बुत, कूता के लोगों ने नैर्गल के मुजस्समे, हमात वालों ने असीमा के बुत 31 और अव्वा के लोगों ने निब्हाज़ और तर्ताक़ के मुजस्समे खड़े किए। सिफ़र्वाइम के बाशिन्दे अपने बच्चों को अपने देवताओं अद्रम्मलिक और अनम्मलिक के लिए क़ुर्बान करके जला देते थे। 32 ग़रज़ सब रब की परस्तिश के साथ साथ अपने देवताओं की पूजा भी करते और अपने लोगों में से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अफ़राद को चुन कर पुजारी मुक़र्रर करते थे ताकि वह ऊँची जगहों के मन्दिरों को सँभालें। 33 वह रब की इबादत भी करते और साथ साथ अपने देवताओं की उन क़ौमों के रिवाजों के मुताबिक़ इबादत भी करते थे जिन में से उन्हें यहाँ लाया गया था।

34 यह सिलसिला आज तक जारी है। सामरिया के बाशिन्दे अपने उन पुराने रिवाजों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और सिर्फ़ रब की परस्तिश करने के लिए तय्यार नहीं होते। वह उस की हिदायात और अह्काम की पर्वा नहीं करते और उस शरीअत की पैरवी नहीं करते जो रब ने याक़ूब की औलाद को दी थी। (रब ने याक़ूब का नाम इस्राईल में बदल दिया था।) 35 क्यूँकि रब ने इस्राईल की क़ौम के साथ अह्द बांध कर उसे हुक्म दिया था,

"दूसरे किसी भी माबूद की इबादत मत करना! उन के सामने झुक कर उन की ख़िदमत मत करना, न उन्हें क़ुर्बानियाँ पेश करना। 36 सिर्फ़ रब की परस्तिश करो जो बड़ी क़ुदरत और अज़ीम काम दिखा कर तुम्हें मिस्र से निकाल लाया। सिर्फ़ उसी के सामने झुक जाओ, सिर्फ़ उसी को अपनी क़ुर्बानियाँ पेश करो। 37 लाज़िम है कि तुम ध्यान से उन तमाम हिदायात, अह्काम और क़वाइद की पैरवी करो

जो मैं ने तुम्हारे लिए क़लमबन्द कर दिए हैं। किसी
और देवता की पूजा मत करना। 38 वह अह्द मत
भूलना जो मैं ने तुम्हारे साथ बांध लिया है, और दीगर
माबूदों की परस्तिश न करो। 39 सिर्फ़ और सिर्फ़ रब
अपने ख़ुदा की इबादत करो। वही तुम्हें तुम्हारे तमाम
दुश्मनों के हाथ से बचा लेगा।”
40 लेकिन लोग यह सुनने के लिए तय्यार नहीं थे
बल्कि अपने पुराने रस्म-ओ-रिवाज के साथ लिपटे
रहे। 41 चुनाँचे रब की इबादत के साथ ही सामरिया
के नए बाशिन्दे अपने बुतों की पूजा करते रहे। आज
तक उन की औलाद यही कुछ करती आई है।

यहूदाह का बादशाह हिज़क़ियाह

18 1 इस्राईल के बादशाह होसेअ बिन ऐला की
हुकूमत के तीसरे साल में हिज़क़ियाह बिन
आख़ज़ यहूदाह का बादशाह बना। 2 उस वक़्त उस
की उम्र 25 साल थी, और वह यरूशलम में रह कर
29 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ अबी बिन्त
ज़करियाह थी। 3 अपने बाप दाऊद की तरह उस ने
ऐसा काम किया जो रब को पसन्द था। 4 उस ने
ऊँची जगहों के मन्दिरों को गिरा दिया, पत्थर के
उन सतूनों को टुकड़े टुकड़े कर दिया जिन की पूजा
की जाती थी और यसीरत देवी के खम्बों को काट
डाला। पीतल का जो साँप मूसा ने बनाया था उसे भी
बादशाह ने टुकड़े टुकड़े कर दिया, क्यूँकि इस्राईली
उन अय्याम तक उस के सामने बख़ूर जलाने आते
थे। (साँप नख़ुश्तान कहलाता था।)
5 हिज़क़ियाह रब इस्राईल के ख़ुदा पर भरोसा
रखता था। यहूदाह में न इस से पहले और न इस के
बाद ऐसा बादशाह हुआ। 6 वह रब के साथ लिपटा
रहा और उस की पैरवी करने से कभी भी बाज़ न
आया। वह उन अह्काम पर अमल करता रहा जो
रब ने मूसा को दिए थे। 7 इस लिए रब उस के साथ
रहा। जब भी वह किसी मक़्सद के लिए निकला तो
उसे कामयाबी हासिल हुई।
चुनाँचे वह असूर की हुकूमत से आज़ाद हो गया
और उस के ताबे न रहा। 8 फ़िलिस्तियों को उस ने
सब से छोटी चौकी से ले कर बड़े से बड़े क़िलाबन्द
शहर तक शिकस्त दी और उन्हें मारते मारते ग़ज़्ज़ा
शहर और उस के इलाक़े तक पहुँच गया।

असूरी इस्राईल पर क़ब्ज़ा करते हैं

9 हिज़क़ियाह की हुकूमत के चौथे साल में और
इस्राईल के बादशाह होसेअ की हुकूमत के सातवें
साल में असूर के बादशाह सल्मनसर ने इस्राईल पर
हम्ला किया। सामरिया शहर का मुहासरा करके 10 वह
तीन साल के बाद उस पर क़ब्ज़ा करने में कामयाब
हुआ। यह हिज़क़ियाह की हुकूमत के छटे साल और
इस्राईल के बादशाह होसेअ की हुकूमत के नवें साल
में हुआ। 11 असूर के बादशाह ने इस्राईलियों को
जिलावतन करके कुछ ख़लह के इलाक़े में, कुछ
जौज़ान के दरया-ए-ख़ाबूर के किनारे पर और कुछ
मादियों के शहरों में बसाए।
12 यह सब कुछ इस लिए हुआ कि वह रब अपने
ख़ुदा के ताबे न रहे बल्कि उस के उन के साथ
बंधे हुए अह्द को तोड़ कर उन तमाम अह्काम के
फ़रमाँबरदार न रहे जो रब के ख़ादिम मूसा ने उन्हें
दिए थे। न वह उन की सुनते और न उन पर अमल
करते थे।

असूरी यरूशलम का मुहासरा करते हैं

13 हिज़क़ियाह बादशाह की हुकूमत के 14वें साल
में असूर के बादशाह सन्हेरिब ने यहूदाह के तमाम
क़िलाबन्द शहरों पर धावा बोल कर उन पर क़ब्ज़ा
कर लिया। 14 जब असूर का बादशाह लकीस के
आस-पास पहुँचा तो यहूदाह के बादशाह हिज़क़ियाह
ने उसे इत्तिला दी, “मुझ से ग़लती हुई है। मुझे छोड़
दें तो जो कुछ भी आप मुझ से तलब करेंगे मैं आप
को अदा करूँगा।”
तब सन्हेरिब ने हिज़क़ियाह से चाँदी के तक़रीबन
10,000 किलोग्राम और सोने के तक़रीबन 1,000

किलोग्राम माँग लिया। 15 हिज़क़ियाह ने उसे वह
तमाम चाँदी दे दी जो रब के घर और शाही महल के
ख़ज़ानों में पड़ी थी। 16 सोने का तक़ाज़ा पूरा करने
के लिए उस ने रब के घर के दरवाज़ों और चौखटों
पर लगा सोना उतरवा कर उसे असूर के बादशाह
को भेज दिया। यह सोना उस ने ख़ुद दरवाज़ों और
चौखटों पर चढ़वाया था।

17 फिर भी असूर का बादशाह मुत्मइन न हुआ। उस
ने अपने सब से आला अफ़सरों को बड़ी फ़ौज के
साथ लकीस से यरूशलम को भेजा (उन की अपनी
ज़बान में अफ़सरों के उह्दों के नाम तर्तान, रब-सारिस
और रबशाक़ी थे)। यरूशलम पहुँच कर वह उस नाले
के पास रुक गए जो पानी को ऊपर वाले तालाब तक
पहुँचाता है (यह तालाब उस रास्ते पर है जो धोबियों
के घाट तक ले जाता है)। 18 इन तीन असूरी अफ़सरों
ने इत्तिला दी कि बादशाह हम से मिलने आए,
लेकिन हिज़क़ियाह ने महल के इंचार्ज इलियाक़ीम
बिन ख़िलक़ियाह, मीरमुन्शी शब्नाह और मुशीर-ए-
ख़ास यूआख़ बिन आसफ़ को उन के पास भेजा।
19 रबशाक़ी ने उन के हाथ हिज़क़ियाह को पैग़ाम
भेजा,

"असूर के अज़ीम बादशाह फ़रमाते हैं, तुम्हारा
भरोसा किस चीज़ पर है? 20 तुम समझते हो कि
ख़ाली बातें करना फ़ौजी हिकमत-ए-अमली और
ताक़त के बराबर है। यह कैसी बात है? तुम किस पर
एतिमाद कर रहे हो कि मुझ से सरकश हो गए हो?
21 क्या तुम मिस्र पर भरोसा करते हो? वह तो टूटा
हुआ सरकंडा ही है। जो भी उस पर टेक लगाए उस
का हाथ वह चीर कर ज़ख़्मी कर देगा। यही कुछ उन
सब के साथ हो जाएगा जो मिस्र के बादशाह फ़िरऔन
पर भरोसा करें! 22 शायद तुम कहो, 'हम रब अपने
ख़ुदा पर तवक्कुल करते हैं।' लेकिन यह किस तरह
हो सकता है? हिज़क़ियाह ने तो उस की बेहुरमती
की है। क्यूँकि उस ने ऊँची जगहों के मन्दिरों और
क़ुर्बानगाहों को ढा कर यहूदाह और यरूशलम से
कहा है कि सिर्फ़ यरूशलम की क़ुर्बानगाह के सामने
परस्तिश करें।

23 आओ, मेरे आक़ा असूर के बादशाह से सौदा
करो। मैं तुम्हें 2,000 घोड़े दूँगा बशर्तेकि तुम उन
के लिए सवार मुहय्या कर सको। लेकिन अफ़सोस,
तुम्हारे पास इतने घुड़सवार हैं ही नहीं! 24 तुम मेरे
आक़ा असूर के बादशाह के सब से छोटे अफ़सर
का भी मुक़ाबला नहीं कर सकते। लिहाज़ा मिस्र के
रथों पर भरोसा रखने का क्या फ़ाइदा? 25 शायद तुम
समझते हो कि मैं रब की मर्ज़ी के बग़ैर ही इस जगह
पर हम्ला करने आया हूँ ताकि सब कुछ बर्बाद करूँ।
लेकिन ऐसा हरगिज़ नहीं है! रब ने ख़ुद मुझे कहा कि
इस मुल्क पर धावा बोल कर इसे तबाह कर दे।"

26 यह सुन कर इलियाक़ीम बिन ख़िलक़ियाह,
शब्नाह और यूआख़ ने रबशाक़ी की तक़रीर में दख़ल
दे कर कहा, "बराह-ए-करम अरामी ज़बान में अपने
ख़ादिमों के साथ गुफ़्तगु कीजिए, क्यूँकि हम यह
अच्छी तरह बोल लेते हैं। इब्रानी ज़बान इस्तेमाल न
करें, वर्ना शहर की फ़सील पर खड़े लोग आप की
बातें सुन लेंगे।" 27 लेकिन रबशाक़ी ने जवाब दिया,
"क्या तुम समझते हो कि मेरे मालिक ने यह पैग़ाम
सिर्फ़ तुम्हें और तुम्हारे मालिक को भेजा है? हरगिज़
नहीं! वह चाहते हैं कि तमाम लोग यह बातें सुन लें।
क्यूँकि वह भी तुम्हारी तरह अपना फ़ुज़्ला खाने और
अपना पेशाब पीने पर मज्बूर हो जाएंगे।"

28 फिर वह फ़सील की तरफ़ मुड़ कर बुलन्द
आवाज़ से इब्रानी ज़बान में अवाम से मुख़ातिब हुआ,
"सुनो, शहन्शाह, असूर के बादशाह के फ़रमान पर
ध्यान दो! 29 बादशाह फ़रमाते हैं कि हिज़क़ियाह
तुम्हें धोका न दे। वह तुम्हें मेरे हाथ से बचा
नहीं सकता। 30 बेशक वह तुम्हें तसल्ली दिलाने की
कोशिश करके कहता है, 'रब हमें ज़रूर छुटकारा
देगा, यह शहर कभी भी असूरी बादशाह के क़ब्ज़े में
नहीं आएगा।' लेकिन इस क़िस्म की बातों से तसल्ली
पा कर रब पर भरोसा मत करना। 31 हिज़क़ियाह
की बातें न मानो बल्कि असूर के बादशाह की।

क्यूँकि वह फ़रमाते हैं, मेरे साथ सुलह करो और
शहर से निकल कर मेरे पास आ जाओ। फिर तुम
में से हर एक अंगूर की अपनी बेल और अन्जीर के
अपने दरख़्त का फल खाएगा और अपने हौज़ का
पानी पिएगा। 32 फिर कुछ देर के बाद मैं तुम्हें एक
ऐसे मुल्क में ले जाऊँगा जो तुम्हारे अपने मुल्क की
मानिन्द होगा। उस में भी अनाज, नई मै, रोटी और
अंगूर के बाग़, ज़ैतून के दरख़्त और शहद है। ग़रज़,
मौत की राह इख़तियार न करना बल्कि ज़िन्दगी की
राह। हिज़क़ियाह की मत सुनना। जब वह कहता
है, 'रब हमें बचाएगा' तो वह तुम्हें धोका दे रहा है।
33 क्या दीगर अक़्वाम के देवता अपने मुल्कों को
शाह-ए-असूर से बचाने के क़ाबिल रहे हैं? 34 हमात
और अर्फ़ाद के देवता कहाँ रह गए हैं? सिफ़र्वाइम,
हेना और इव्वा के देवता क्या कर सके? और क्या
किसी देवता ने सामरिया को मेरी गिरिफ़्त से बचाया?
35 नहीं, कोई भी देवता अपना मुल्क मुझ से बचा न
सका। तो फिर रब यरूशलम को किस तरह मुझ से
बचाएगा?"

36 फ़सील पर खड़े लोग ख़ामोश रहे। उन्हों ने कोई
जवाब न दिया, क्यूँकि बादशाह ने हुक्म दिया था
कि जवाब में एक लफ़्ज़ भी न कहें। 37 फिर महल
का इंचार्ज इलियाक़ीम बिन ख़िलक़ियाह, मीरमुन्शी
शब्नाह और मुशीर-ए-ख़ास यूआख़ बिन आसफ़
रंजिश के मारे अपने लिबास फाड़ कर हिज़क़ियाह
के पास वापस गए। दरबार में पहुँच कर उन्हों ने
बादशाह को सब कुछ कह सुनाया जो रबशाक़ी ने
उन्हें कहा था।

रब हिज़क़ियाह को तसल्ली देता है

19 1 यह बातें सुन कर हिज़क़ियाह ने अपने
कपड़े फाड़े और टाट का मातमी लिबास
पहन कर रब के घर में गया। 2 साथ साथ उस ने
महल के इंचार्ज इलियाक़ीम, मीरमुन्शी शब्नाह और
इमामों के बुज़ुर्गों को आमूस के बेटे यसायाह नबी
के पास भेजा। सब टाट के मातमी लिबास पहने हुए
थे। 3 नबी के पास पहुँच कर उन्हों ने हिज़क़ियाह का
पैग़ाम सुनाया, "आज हम बड़ी मुसीबत में हैं। सज़ा
के इस दिन असूरियों ने हमारी सख़्त बेइज़्ज़ती की
है। हमारा हाल दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला उस औरत का
सा है जिस के पेट से बच्चा निकलने को है, लेकिन जो
इस लिए नहीं निकल सकता कि माँ की ताक़त जाती
रही है। 4 लेकिन शायद रब आप के ख़ुदा ने रबशाक़ी
की वह तमाम बातें सुनी हों जो उस के आक़ा असूर
के बादशाह ने ज़िन्दा ख़ुदा की तौहीन में भेजी हैं। हो
सकता है रब आप का ख़ुदा उस की बातें सुन कर
उसे सज़ा दे। बराह-ए-करम हमारे लिए जो अब तक
बचे हुए हैं दुआ करें।"

5 जब हिज़क़ियाह के अफ़सरों ने यसायाह को
बादशाह का पैग़ाम पहुँचाया 6 तो नबी ने जवाब दिया,
"अपने आक़ा को बता देना कि रब फ़रमाता है, 'उन
धमकियों से ख़ौफ़ मत खा जो असूरी बादशाह के
मुलाज़िमों ने मेरी इहानत करके दी हैं। 7 देख, मैं उस
का इरादा बदल दूँगा। वह अफ़्वाह सुन कर इतना
मुज़्तरिब हो जाएगा कि अपने ही मुल्क वापस चला
जाएगा। वहाँ मैं उसे तलवार से मरवा दूँगा'।"

सन्हेरिब की धमकियाँ और हिज़क़ियाह की दुआ

8 रबशाक़ी यरूशलम को छोड़ कर असूर के
बादशाह के पास वापस चला गया जो उस वक़्त
लकीस से रवाना हो कर लिब्ना पर चढ़ाई कर रहा
था।

9 फिर सन्हेरिब को इत्तिला मिली, "एथोपिया का
बादशाह तिर्हाक़ा आप से लड़ने आ रहा है।" तब
उस ने अपने क़ासिदों को दुबारा यरूशलम भेज
दिया ताकि हिज़क़ियाह को पैग़ाम पहुँचाएँ, 10 "जिस
देवता पर तुम भरोसा रखते हो उस से फ़रेब न
खाओ जब वह कहता है कि यरूशलम कभी असूरी
बादशाह के क़ब्ज़े में नहीं आएगा। 11 तुम तो सुन
चुके हो कि असूर के बादशाहों ने जहाँ भी गए क्या
कुछ किया है। हर मुल्क को उन्हों ने मुकम्मल तौर
पर तबाह कर दिया है। तो फिर तुम किस तरह बच

जाओगे? 12 क्या जौज़ान, हारान और रसफ़ के देवता
उन की हिफ़ाज़त कर पाए? क्या मुल्क-ए-अदन में
तिलस्सार के बाशिन्दे बच सके? नहीं, कोई भी
देवता उन की मदद न कर सका जब मेरे बापदादा ने
उन्हें तबाह किया। 13 ध्यान दो, अब हमात, अर्फ़ाद,
सिफ़र्वाइम शहर, हेना और इव्वा के बादशाह कहाँ
हैं?"

14 ख़त मिलने पर हिज़क़ियाह ने उसे पढ़ लिया और
फिर रब के घर के सहन में गया। ख़त को रब के
सामने बिछा कर 15 उस ने रब से दुआ की,

"ऐ रब इस्राईल के ख़ुदा जो करूबी फ़रिश्तों के
दरमियान तख़्तनशीन है, तू अकेला ही दुनिया के
तमाम ममालिक का ख़ुदा है। तू ही ने आसमान-ओ-
ज़मीन को ख़ल्क़ किया है। 16 ऐ रब, मेरी सुन! अपनी
आँखें खोल कर देख! सन्हेरिब की उन बातों पर
ध्यान दे जो उस ने इस मक़सद से हम तक पहुँचाई
हैं कि ज़िन्दा ख़ुदा की इहानत करे। 17 ऐ रब, यह
बात सच है कि असूरी बादशाहों ने इन क़ौमों को
उन के मुल्कों समेत तबाह कर दिया है। 18 वह तो
उन के बुतों को आग में फैंक कर भस्म कर सकते थे,
क्यूँकि वह ज़िन्दा नहीं बल्कि सिर्फ़ इन्सान के हाथों
से बने हुए लकड़ी और पत्थर के बुत थे। 19 ऐ रब
हमारे ख़ुदा, अब मैं तुझ से इल्तिमास करता हूँ कि
हमें असूरी बादशाह के हाथ से बचा ताकि दुनिया के
तमाम ममालिक जान लें कि तू ऐ रब, वाहिद ख़ुदा
है।"

असूरी की लान-तान पर अल्लाह का जवाब

20 फिर यसायाह बिन आमूस ने हिज़क़ियाह को
पैग़ाम भेजा, "रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि
मैं ने असूरी बादशाह सन्हेरिब के बारे में तेरी दुआ
सुनी है। 21 अब रब का उस के ख़िलाफ़ फ़रमान सुन,

कुंवारी सिय्यून बेटी तुझे हक़ीर जानती है,
हाँ यरूशलम बेटी अपना सर हिला हिला कर
हिक़ारतआमेज़ नज़र से तेरे पीछे देखती है। 22 क्या
तू नहीं जानता कि किस को गालियाँ दीं और किस
की इहानत की है? क्या तुझे नहीं मालूम कि तू ने
किस के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द की है? जिस की
तरफ़ तू ग़ुरूर की नज़र से देख रहा है वह इस्राईल
का क़ुद्दूस है!

23 अपने क़ासिदों के ज़रीए तू ने रब की इहानत की
है। तू डींगें मार कर कहता है, 'मैं अपने बेशुमार रथों
से पहाड़ों की चोटियों और लुबनान की इन्तिहा तक
चढ़ गया हूँ। मैं देवदार के बड़े बड़े और जूनीपर के
बेहतरीन दरख़्तों को काट कर लुबनान के दूरतरीन
कोनों तक, उस के सब से घने जंगल तक पहुँच गया
हूँ। 24 मैं ने ग़ैरमुल्कों में कुएँ खुदवा कर उन का पानी
पी लिया है। मेरे तल्वों तले मिस्र की तमाम नदियाँ
ख़ुश्क हो गईं।'

25 ऐ असूरी बादशाह, क्या तू ने नहीं सुना कि बड़ी
देर से मैं ने यह सब कुछ मुक़र्रर किया? क़दीम ज़माने
में ही मैं ने इस का मन्सूबा बांध लिया, और अब मैं
इसे वुजूद में लाया। मेरी मर्ज़ी थी कि तू क़िलाबन्द
शहरों को ख़ाक में मिला कर पत्थर के ढेरों में बदल
दे। 26 इसी लिए उन के बाशिन्दों की ताक़त जाती
रही, वह घबराए और शर्मिन्दा हुए। वह घास की
तरह कमज़ोर थे, छत पर उगने वाली उस हरियाली
की मानिन्द जो थोड़ी देर के लिए फलती फूलती तो
है, लेकिन लू चलते वक़्त एक दम मुरझा जाती है।
27 मैं तो तुझ से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ। मुझे मालूम है कि
तू कहाँ ठहरा हुआ है, और तेरा आना जाना मुझ से
पोशीदा नहीं रहता। मुझे पता है कि तू मेरे ख़िलाफ़
कितने तैश में आ गया है। 28 तेरा तैश और ग़ुरूर देख
कर मैं तेरी नाक में नकेल और तेरे मुँह में लगाम डाल
कर तुझे उस रास्ते पर से वापस घसीट ले जाऊँगा
जिस पर से तू यहाँ आ पहुँचा है।

29 ऐ हिज़क़ियाह, मैं इस निशान से तुझे तसल्ली
दिलाऊँगा कि इस साल और आने वाले साल तुम
वह कुछ खाओगे जो खेतों में ख़ुद-ब-ख़ुद उगेगा।
लेकिन तीसरे साल तुम बीज बो कर फ़सलें काटोगे
और अंगूर के बाग़ लगा कर उन का फल खाओगे।
30 यहूदाह के बचे हुए बाशिन्दे एक बार फिर जड़

पकड़ कर फल लाएँगे। 31 क्यूँकि यरूशलम से क़ौम
का बक़िया निकल आएगा, और कोह-ए-सिय्यून का
बचा-खुचा हिस्सा दुबारा मुल्क में फैल जाएगा। रब्ब-
उल-अफ़्वाज की ग़ैरत यह कुछ सरअन्जाम देगी।
32 जहाँ तक असूरी बादशाह का ताल्लुक़ है रब
फ़रमाता है कि वह इस शहर में दाख़िल नहीं होगा।
वह एक तीर तक उस में नहीं चलाएगा। न वह ढाल
ले कर उस पर हम्ला करेगा, न शहर की फ़सील
के साथ मिट्टी का ढेर लगाएगा। 33 जिस रास्ते से
बादशाह यहाँ आया उसी रास्ते पर से वह अपने
मुल्क वापस चला जाएगा। इस शहर में वह घुसने
नहीं पाएगा। यह रब का फ़रमान है। 34 क्यूँकि मैं
अपनी और अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर इस शहर
का दिफ़ा करके इसे बचाऊँगा।"
35 उसी रात रब का फ़रिश्ता निकल आया और
असूरी लश्करगाह में से गुज़र कर 1,85,000
फ़ौजियों को मार डाला। जब लोग सुब्ह-सवेरे उठे
तो चारों तरफ़ लाशें ही लाशें नज़र आईं।
36 यह देख कर सन्हेरिब अपने ख़ैमे उखाड़ कर
अपने मुल्क वापस चला गया। नीनवा शहर पहुँच
कर वह वहाँ ठहर गया। 37 एक दिन जब वह अपने
देवता निस्रूक के मन्दिर में पूजा कर रहा था तो उस
के बेटों अद्रम्मलिक और शराज़र ने उसे तलवार से
क़त्ल कर दिया और फ़रार हो कर मुल्क-ए-अरारात
में पनाह ली। फिर उस का बेटा असर्हद्दून तख़्तनशीन
हुआ।

अल्लाह हिज़क़ियाह को शिफ़ा देता है

20 1 उन दिनों में हिज़क़ियाह इतना बीमार
हुआ कि मरने की नौबत आ पहुँची। आमूस
का बेटा यसायाह नबी उस से मिलने आया और
कहा, "रब फ़रमाता है कि अपने घर का बन्द-ओ-
बस्त कर ले, क्यूँकि तुझे मरना है। तू इस बीमारी से
शिफ़ा नहीं पाएगा।"
2 यह सुन कर हिज़क़ियाह ने अपना मुँह दीवार की
तरफ़ फेर कर दुआ की, 3 "ऐ रब, याद कर कि मैं
वफ़ादारी और ख़ुलूसदिली से तेरे सामने चलता रहा
हूँ, कि मैं वह कुछ करता आया हूँ जो तुझे पसन्द
है।" फिर वह फूट फूट कर रोने लगा।
4 इतने में यसायाह चला गया था। लेकिन वह अभी
अन्दरूनी सहन से निकला नहीं था कि उसे रब का
कलाम मिला, 5 "मेरी क़ौम के राहनुमा हिज़क़ियाह
के पास वापस जा कर उसे बता देना कि रब तेरे बाप
दाऊद का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मैं ने तेरी दुआ सुन ली
और तेरे आँसू देखे हैं। मैं तुझे शिफ़ा दूँगा। परसों तू
दुबारा रब के घर में जाएगा। 6 मैं तेरी ज़िन्दगी में 15
साल का इज़ाफ़ा करूँगा। साथ साथ मैं तुझे और इस
शहर को असूर के बादशाह से बचा लूँगा। मैं अपनी
और अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर शहर का दिफ़ा
करूँगा'।"
7 फिर यसायाह ने हुक्म दिया, "अन्जीर की टिक्की
ला कर बादशाह के नासूर पर बांध दो!" जब ऐसा
किया गया तो हिज़क़ियाह को शिफ़ा मिली। 8 पहले
हिज़क़ियाह ने यसायाह से पूछा था, "रब मुझे कौन
सा निशान देगा जिस से मुझे यक़ीन आए कि वह मुझे
शिफ़ा देगा और कि मैं परसों दुबारा रब के घर की
इबादत में शरीक हूँगा?" 9 यसायाह ने जवाब दिया,
"रब धूपघड़ी का साया दस दर्जे आगे करेगा या दस
दर्जे पीछे। इस से आप जान लेंगे कि वह अपना
वादा पूरा करेगा। आप क्या चाहते हैं, क्या साया दस
दर्जे आगे चले या दस दर्जे पीछे?" 10 हिज़क़ियाह ने
जवाब दिया, "यह करवाना कि साया दस दर्जे आगे
चले आसान काम है। नहीं, वह दस दर्जे पीछे जाए।"
11 तब यसायाह नबी ने रब से दुआ की, और रब
ने आख़ज़ की बनाई हुई धूपघड़ी का साया दस दर्जे
पीछे कर दिया।

हिज़क़ियाह से संगीन ग़लती होती है

12 थोड़ी देर के बाद बाबल के बादशाह मरूदक-
बलदान बिन बलदान ने हिज़क़ियाह की बीमारी की
ख़बर सुन कर वफ़द के हाथ ख़त और तुह्फ़े भेजे।
13 हिज़क़ियाह ने वफ़द का इस्तिक़्बाल करके उसे

वह तमाम ख़ज़ाने दिखाए जो ज़ख़ीराख़ाने में महफ़ूज़
रखे गए थे यानी तमाम सोना-चाँदी, बल्सान का तेल
और बाक़ी क़ीमती तेल। उस ने अस्लिहाख़ाना और
बाक़ी सब कुछ भी दिखाया जो उस के ख़ज़ानों में
था। पूरे महल और पूरे मुल्क में कोई ख़ास चीज़
न रही जो उस ने उन्हें न दिखाई। 14 तब यसायाह
नबी हिज़क़ियाह बादशाह के पास आया और पूछा,
"इन आदमियों ने क्या कहा? कहाँ से आए हैं?"
हिज़क़ियाह ने जवाब दिया, "दूरदराज़ मुल्क बाबल
से आए हैं।" 15 यसायाह बोला, "उन्हों ने महल में
क्या कुछ देखा?" हिज़क़ियाह ने कहा, "उन्हों ने
महल में सब कुछ देख लिया है। मेरे ख़ज़ानों में कोई
चीज़ न रही जो मैं ने उन्हें नहीं दिखाई।"

16 तब यसायाह ने कहा, "रब का फ़रमान सुनें!
17 एक दिन आने वाला है कि तेरे महल का तमाम
माल छीन लिया जाएगा। जितने भी ख़ज़ाने तू और
तेरे बापदादा ने आज तक जमा किए हैं उन सब को
दुश्मन बाबल ले जाएगा। रब फ़रमाता है कि एक
भी चीज़ पीछे नहीं रहेगी। 18 तेरे बेटों में से भी बाज़
छीन लिए जाएंगे, ऐसे जो अब तक पैदा नहीं हुए।
तब वह ख़्वाजासरा बन कर शाह-ए-बाबल के महल
में ख़िदमत करेंगे।"

19 हिज़क़ियाह बोला, "रब का जो पैग़ाम आप ने
मुझे दिया है वह ठीक है।" क्यूँकि उस ने सोचा,
"बड़ी बात यह है कि मेरे जीते जी अम्न-ओ-अमान
होगा।"

हिज़क़ियाह की मौत

20 बाक़ी जो कुछ हिज़क़ियाह की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह
'शाहान-ए-यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज हैं।
वहाँ यह भी बयान किया गया है कि उस ने किस
तरह तालाब बनवा कर वह सुरंग खुदवाई जिस के
ज़रीए चश्मे का पानी शहर तक पहुँचता है। 21 जब
हिज़क़ियाह मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो
उस का बेटा मनस्सी तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह मनस्सी

21 1 मनस्सी 12 साल की उम्र में बादशाह
बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का
दौरानिया 55 साल था। उस की माँ हिफ़्सीबाह थी।
2 मनस्सी का चाल-चलन रब को नापसन्द था। उस ने
उन क़ौमों के क़ाबिल-ए-घिन रस्म-ओ-रिवाज अपना
लिए जिन्हें रब ने इस्राईलियों के आगे से निकाल
दिया था। 3 ऊँची जगहों के जिन मन्दिरों को उस के
बाप हिज़क़ियाह ने ढा दिया था उन्हें उस ने नए सिरे
से तामीर किया। उस ने बाल देवता की क़ुर्बानगाहें
बनवाईं और यसीरत देवी का खम्बा खड़ा किया,
बिलकुल उसी तरह जिस तरह इस्राईल के बादशाह
अख़ियब ने किया था। इन के इलावा वह सूरज, चाँद
बल्कि आसमान के पूरे लश्कर को सिज्दा करके
उन की ख़िदमत करता था। 4 उस ने रब के घर में
भी अपनी क़ुर्बानगाहें खड़ी कीं, हालाँकि रब ने इस
मक़ाम के बारे में फ़रमाया था, "मैं यरूशलम में
अपना नाम क़ाइम करूँगा।" 5 लेकिन मनस्सी ने पर्वा
न की बल्कि रब के घर के दोनों सहनों में आसमान
के पूरे लश्कर के लिए क़ुर्बानगाहें बनवाईं। 6 यहाँ
तक कि उस ने अपने बेटे को भी क़ुर्बान करके जला
दिया। जादूगरी और ग़ैबदानी करने के इलावा वह
मुर्दों की रूहों से राबिता करने वालों और रम्मालों से
भी मश्वरा करता था।

ग़रज़ उस ने बहुत कुछ किया जो रब को नापसन्द
था और उसे तैश दिलाया। 7 यसीरत देवी का खम्बा
बनवा कर उस ने उसे रब के घर में खड़ा किया,
हालाँकि रब ने दाऊद और उस के बेटे सुलेमान
से कहा था, "इस घर और इस शहर यरूशलम में
जो मैं ने तमाम इस्राईली क़बीलों में से चुन लिया
है मैं अपना नाम अबद तक क़ाइम रखूँगा। 8 अगर
इस्राईली एहतियात से मेरे उन तमाम अह्काम की
पैरवी करें जो मूसा ने शरीअत में उन्हें दिए तो मैं
कभी नहीं होने दूँगा कि इस्राईलियों को उस मुल्क से
जिलावतन कर दिया जाए जो मैं ने उन के बापदादा

को अता किया था।” 9 लेकिन लोग रब के ताबे न
रहे, और मनस्सी ने उन्हें ऐसे ग़लत काम करने पर
उकसाया जो उन क़ौमों से भी सरज़द नहीं हुए थे
जिन्हें रब ने मुल्क में दाख़िल होते वक़्त उन के आगे
से तबाह कर दिया था।

10 आख़िरकार रब ने अपने ख़ादिमों यानी नबियों
की मारिफ़त एलान किया, 11 “यहूदाह के बादशाह
मनस्सी से क़ाबिल-ए-घिन गुनाह सरज़द हुए हैं। उस
की हरकतें मुल्क में इस्राईल से पहले रहने वाले
अमोरियों की निस्बत कहीं ज़्यादा शरीर हैं। अपने
बुतों से उस ने यहूदाह के बाशिन्दों को गुनाह करने
पर उकसाया है। 12 चुनाँचे रब इस्राईल का ख़ुदा
फ़रमाता है, ‘मैं यरूशलम और यहूदाह पर ऐसी
आफ़त नाज़िल करूँगा कि जिसे भी इस की ख़बर
मिलेगी उस के कान बजने लगेंगे। 13 मैं यरूशलम को
उसी नाप से नापूँगा जिस से सामरिया को नाप चुका
हूँ। मैं उसे उस तराज़ू में रख कर तोलूँगा जिस में
अख़ियब का घराना तोल चुका हूँ। जिस तरह बर्तन
सफ़ाई करते वक़्त पोंछ कर उलटे रखे जाते हैं उसी
तरह मैं यरूशलम का सफ़ाया कर दूँगा। 14 उस वक़्त
मैं अपनी मीरास का बचा-खुचा हिस्सा भी तर्क कर
दूँगा। मैं उन्हें उन के दुश्मनों के हवाले कर दूँगा जो
उन की लूट-मार करेंगे। 15 और वजह यही होगी कि
उन से ऐसी हरकतें सरज़द हुई हैं जो मुझे नापसन्द
हैं। उस दिन से ले कर जब उन के बापदादा मिस्र से
निकल आए आज तक वह मुझे तैश दिलाते रहे हैं’।”

16 लेकिन मनस्सी ने न सिर्फ़ यहूदाह के बाशिन्दों
को बुतपरस्ती और ऐसे काम करने पर उकसाया जो
रब को नापसन्द थे बल्कि उस ने बेशुमार बेक़ुसूर
लोगों को क़त्ल भी किया। उन के ख़ून से यरूशलम
एक सिरे से दूसरे सिरे तक भर गया।

17 बाक़ी जो कुछ मनस्सी की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया वह ‘शाहान-ए-
यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। उस में
उस के गुनाहों का ज़िक्र भी किया गया है। 18 जब
वह मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे उस
के महल के बाग़ में दफ़नाया गया जो उज़्ज़ा का बाग़
कहलाता है। फिर उस का बेटा अमून तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह का बादशाह अमून

19 अमून 22 साल की उम्र में बादशाह बना और
दो साल तक यरूशलम में हुकूमत करता रहा। उस
की माँ मसुल्लिमत बिन्त हरूस युत्बा की रहने वाली
थी। 20 अपने बाप मनस्सी की तरह अमून ऐसा ग़लत
काम करता रहा जो रब को नापसन्द था। 21 वह हर
तरह से अपने बाप के बुरे नमूने पर चल कर उन बुतों
की ख़िदमत और पूजा करता रहा जिन की पूजा उस
का बाप करता आया था। 22 रब अपने बापदादा के
ख़ुदा को उस ने तर्क किया, और वह उस की राहों
पर नहीं चलता था।

23 एक दिन अमून के कुछ अफ़सरों ने उस के
ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे महल में क़त्ल कर दिया।
24 लेकिन उम्मत ने तमाम साज़िश करने वालों को
मार डाला और अमून के बेटे यूसियाह को बादशाह
बना दिया।

25 बाक़ी जो कुछ अमून की हुकूमत के दौरान हुआ
और जो कुछ उस ने किया वह ‘शाहान-ए-यहूदाह की
तारीख़’ की किताब में बयान किया गया है। 26 उसे
उज़्ज़ा के बाग़ में उस की अपनी क़ब्र में दफ़न किया
गया। फिर उस का बेटा यूसियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यूसियाह

22 1 यूसियाह 8 साल की उम्र में बादशाह बना,
और यरूशलम में रह कर उस की हुकूमत
का दौरानिया 31 साल था। उस की माँ यदीदा बिन्त
अदायाह बुस्क़त की रहने वाली थी। 2 यूसियाह वह
कुछ करता रहा जो रब को पसन्द था। वह हर बात
में अपने बाप दाऊद के अच्छे नमूने पर चलता रहा
और उस से न दाईं, न बाईं तरफ़ हटा।

3 अपनी हुकूमत के 18वें साल में यूसियाह बादशाह
ने अपने मीरमुन्शी साफ़न बिन असलियाह बिन

मसुल्लाम को रब के घर के पास भेज कर कहा,
4 “इमाम-ए-आज़म ख़िलक़ियाह के पास जा कर उसे
बता देना कि उन तमाम पैसों को गिन लें जो दरबानों
ने लोगों से जमा किए हैं। 5–6 फिर पैसे उन ठेकेदारों
को दे दें जो रब के घर की मरम्मत करवा रहे हैं
ताकि वह कारीगरों, तामीर करने वालों और राजों
की उजरत अदा कर सकें। इन पैसों से वह दराड़ों
को ठीक करने के लिए दरकार लकड़ी और तराशे
हुए पत्थर भी ख़रीदें। 7 ठेकेदारों को अख़्राजात का
हिसाब-किताब देने की ज़रूरत नहीं है, क्यूँकि वह
क़ाबिल-ए-एतिमाद हैं।”

रब के घर से शरीअत की किताब मिल जाती है

8 जब मीरमुन्शी साफ़न ख़िलक़ियाह के पास पहुँचा
तो इमाम-ए-आज़म ने उसे एक किताब दिखा कर
कहा, “मुझे रब के घर में शरीअत की किताब मिली
है।” उस ने उसे साफ़न को दे दिया जिस ने उसे पढ़
लिया। 9 तब साफ़न बादशाह के पास गया और उसे
इत्तिला दी, “हम ने रब के घर में जमाशुदा पैसे मरम्मत
पर मुक़र्रर ठेकेदारों और बाक़ी काम करने वालों को
दे दिए हैं।” 10 फिर साफ़न ने बादशाह को बताया,
“ख़िलक़ियाह ने मुझे एक किताब दी है।” किताब
को खोल कर वह बादशाह की मौजूदगी में उस की
तिलावत करने लगा।

11 किताब की बातें सुन कर बादशाह ने रंजीदा
हो कर अपने कपड़े फाड़ लिए। 12 उस ने
ख़िलक़ियाह इमाम, अख़ीक़ाम बिन साफ़न, अक्बोर
बिन मीकायाह, मीरमुन्शी साफ़न और अपने ख़ास
ख़ादिम असायाह को बुला कर उन्हें हुक्म दिया,
13 “जा कर मेरी और क़ौम बल्कि तमाम यहूदाह की
ख़ातिर रब से इस किताब में दर्ज बातों के बारे में
दरयाफ़्त करें। रब का जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल होने
वाला है वह निहायत सख़्त है, क्यूँकि हमारे बापदादा
न किताब के फ़रमानों के ताबे रहे, न उन हिदायात
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी है जो उस में हमारे लिए
दर्ज की गई हैं।”

14 चुनाँचे ख़िलक़ियाह इमाम, अख़ीक़ाम, अक्बोर,
साफ़न और असायाह ख़ुल्दा नबिया को मिलने गए।
ख़ुल्दा का शौहर सल्लूम बिन तिक़्वा बिन ख़र्ख़स रब
के घर के कपड़े सँभालता था। वह यरूशलम के नए
इलाक़े में रहते थे। 15–16 ख़ुल्दा ने उन्हें जवाब दिया,
“रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि जिस आदमी
ने तुम्हें भेजा है उसे बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि मैं
इस शहर और उस के बाशिन्दों पर आफ़त नाज़िल
करूँगा। वह तमाम बातें पूरी हो जाएँगी जो यहूदाह के
बादशाह ने किताब में पढ़ी हैं। 17 क्यूँकि मेरी क़ौम ने
मुझे तर्क करके दीगर माबूदों को क़ुर्बानियाँ पेश की
हैं और अपने हाथों से बुत बना कर मुझे तैश दिलाया
है। मेरा ग़ज़ब इस मक़ाम पर नाज़िल हो जाएगा और
कभी ख़त्म नहीं होगा।’

18 लेकिन यहूदाह के बादशाह के पास जाएँ जिस
ने आप को रब से दरयाफ़्त करने के लिए भेजा है
और उसे बता दें कि रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता
है, ‘मेरी बातें सुन कर 19 तेरा दिल नर्म हो गया है।
जब तुझे पता चला कि मैं ने इस मक़ाम और इस
के बाशिन्दों के बारे में फ़रमाया है कि वह लानती
और तबाह हो जाएंगे तो तू ने अपने आप को रब
के सामने पस्त कर दिया। तू ने रंजीदा हो कर अपने
कपड़े फाड़ लिए और मेरे हुज़ूर फूट फूट कर रोया।
रब फ़रमाता है कि यह देख कर मैं ने तेरी सुनी है।
20 जब तू मेरे कहने पर मर कर अपने बापदादा से जा
मिलेगा तो सलामती से दफ़न होगा। जो आफ़त मैं
शहर पर नाज़िल करूँगा वह तू ख़ुद नहीं देखेगा’।”

अफ़्सर बादशाह के पास वापस गए और उसे
ख़ुल्दा का जवाब सुना दिया।

यूसियाह रब से अह्द बांधता है

23 1 तब बादशाह यहूदाह और यरूशलम के
तमाम बुज़ुर्गों को बुला कर 2 रब के घर में
गया। सब लोग छोटे से ले कर बड़े तक उस के साथ
गए यानी यहूदाह के आदमी, यरूशलम के बाशिन्दे,
इमाम और नबी। वहाँ पहुँच कर जमाअत के सामने

अह्द की उस पूरी किताब की तिलावत की गई जो
रब के घर में मिली थी।
3 फिर बादशाह ने सतून के पास खड़े हो कर रब
के हुज़ूर अह्द बांधा और वादा किया, “हम रब
की पैरवी करेंगे, हम पूरे दिल-ओ-जान से उस के
अह्काम और हिदायात पूरी करके इस किताब में
दर्ज अह्द की बातें क़ाइम रखेंगे।” पूरी क़ौम अह्द
में शरीक हुई।

यूसियाह बुतपरस्ती को ख़त्म करता है

4 अब बादशाह ने इमाम-ए-आज़म ख़िलक़ियाह,
दूसरे दर्जे पर मुक़र्रर इमामों और दरबानों को हुक्म
दिया, “रब के घर में से वह तमाम चीज़ें निकाल
दें जो बाल देवता, यसीरत देवी और आसमान के
पूरे लश्कर की पूजा के लिए इस्तेमाल हुई हैं।” फिर
उस ने यह सारा सामान यरूशलम के बाहर वादी-
ए-क़िद्रोन के खुले मैदान में जला दिया और उस
की राख उठा कर बैत-एल ले गया। 5 उस ने उन
बुतपरस्त पुजारियों को भी हटा दिया जिन्हें यहूदाह
के बादशाहों ने यहूदाह के शहरों और यरूशलम के
गिर्द-ओ-नवाह के मन्दिरों में क़ुर्बानियाँ पेश करने
के लिए मुक़र्रर किया था। यह पुजारी न सिर्फ़ बाल
देवता को अपने नज़राने पेश करते थे बल्कि सूरज,
चाँद, झुर्मटों और आसमान के पूरे लश्कर को भी।
6 यसीरत देवी का खम्बा यूसियाह ने रब के घर से
निकाल कर शहर के बाहर वादी-ए-क़िद्रोन में जला
दिया। फिर उस ने उसे पीस कर उस की राख ग़रीब
लोगों की क़ब्रों पर बिखेर दी। 7 रब के घर के पास
ऐसे मकान थे जो जिस्मफ़रोश मर्दों और औरतों के
लिए बनाए गए थे। उन में औरतें यसीरत देवी के
लिए कपड़े भी बुनती थीं। अब बादशाह ने उन को
भी गिरा दिया।
8 फिर यूसियाह तमाम इमामों को यरूशलम वापस
लाया। साथ साथ उस ने यहूदाह के शिमाल में जिबा
से ले कर जुनूब में बैर-सबा तक ऊँची जगहों के उन
तमाम मन्दिरों की बेहुरमती की जहाँ इमाम पहले
क़ुर्बानियाँ पेश करते थे। यरूशलम के उस दरवाज़े
के पास भी दो मन्दिर थे जो शहर के सरदार यशूअ
के नाम से मश्हूर था। इन को भी यूसियाह ने ढा
दिया। (शहर में दाख़िल होते वक़्त यह मन्दिर बाईं
तरफ़ नज़र आते थे।) 9 जिन इमामों ने ऊँची जगहों
पर ख़िदमत की थी उन्हें यरूशलम में रब के हुज़ूर
क़ुर्बानियाँ पेश करने की इजाज़त नहीं थी। लेकिन
वह बाक़ी इमामों की तरह बेख़मीरी रोटी के लिए
मख़्सूस रोटी खा सकते थे। 10 बिन-हिन्नूम की वादी
की क़ुर्बानगाह बनाम तूफ़त को भी बादशाह ने ढा
दिया ताकि आइन्दा कोई भी अपने बेटे या बेटी को
जला कर मलिक देवता को क़ुर्बान न कर सके।
11 घोड़े के जो मुजस्समे यहूदाह के बादशाहों ने सूरज
देवता की ताज़ीम में खड़े किए थे उन्हें भी यूसियाह
ने गिरा दिया और उन के रथों को जला दिया। यह
घोड़े रब के घर के सहन में दरवाज़े के साथ खड़े
थे, वहाँ जहाँ दरबारी अफ़्सर बनाम नातन-मलिक
का कमरा था। 12 आख़ज़ बादशाह ने अपनी छत पर
एक कमरा बनाया था जिस की छत पर भी मुख़्तलिफ़
बादशाहों की बनी हुई क़ुर्बानगाहें थीं। अब यूसियाह
ने इन को भी ढा दिया और उन दो क़ुर्बानगाहों को
भी जो मनस्सी ने रब के घर के दो सहनों में खड़ी
की थीं। इन को टुकड़े टुकड़े करके उस ने मल्बा
वादी-ए-क़िद्रोन में फैंक दिया। 13 नीज़, बादशाह ने
यरूशलम के मशरिक़ में ऊँची जगहों के मन्दिरों की
बेहुरमती की। यह मन्दिर हलाकत के पहाड़ के जुनूब
में थे, और सुलेमान बादशाह ने उन्हें तामीर किया
था। उस ने उन्हें सैदा की शर्मनाक देवी अस्तारात,
मोआब के मकरूह देवता कमोस और अम्मोन के
क़ाबिल-ए-घिन देवता मिल्कूम के लिए बनाया था।
14 यूसियाह ने देवताओं के लिए मख़्सूस किए गए
सतूनों को टुकड़े टुकड़े करके यसीरत देवी के खम्बे
कटवा दिए और मक़ामात पर इन्सानी हड्डियाँ बिखेर
कर उन की बेहुरमती की।

यूसियाह बैत-एल और सामरिया के मन्दिरों को गिरा देता है

15–16 बैत-एल में अब तक ऊँची जगह पर वह
मन्दिर और क़ुर्बानगाह पड़ी थी जो यरुबिआम बिन
नबात ने तामीर की थी। यरुबिआम ही ने इस्राईल को
गुनाह करने पर उकसाया था। जब यूसियाह ने देखा
कि जिस पहाड़ पर क़ुर्बानगाह है उस की ढलानों पर
बहुत सी क़ब्रें हैं तो उस ने हुक्म दिया कि उन की
हड्डियाँ निकाल कर क़ुर्बानगाह पर जला दी जाएँ।
यूँ क़ुर्बानगाह की बेहुरमती बिलकुल उसी तरह हुई
जिस तरह रब ने मर्द-ए-ख़ुदा की मारिफ़त फ़रमाया
था। इस के बाद यूसियाह ने मन्दिर और क़ुर्बानगाह
को गिरा दिया। उस ने यसीरत देवी का मुजस्समा
कूट कूट कर आख़िर में सब कुछ जला दिया।
17 फिर यूसियाह को एक और क़ब्र नज़र आई। उस
ने शहर के बाशिन्दों से पूछा, "यह किस की क़ब्र
है?" उन्हों ने जवाब दिया, "यह यहूदाह के उस मर्द-
ए-ख़ुदा की क़ब्र है जिस ने बैत-एल की क़ुर्बानगाह
के बारे में ऐन वह पेशगोई की थी जो आज आप के
वसीले से पूरी हुई है।" 18 यह सुन कर बादशाह ने
हुक्म दिया, "इसे छोड़ दो! कोई भी इस की हड्डियों
को न छेड़े।" चुनाँचे उस की और उस नबी की हड्डियाँ
बच गईं जो सामरिया से उस से मिलने आया और बाद
में उस की क़ब्र में दफ़नाया गया था।
19 जिस तरह यूसियाह ने बैत-एल के मन्दिर को
तबाह किया उसी तरह उस ने सामरिया के तमाम
शहरों के मन्दिरों के साथ किया। उन्हें ऊँची जगहों
पर बना कर इस्राईल के बादशाहों ने रब को तैश
दिलाया था। 20 इन मन्दिरों के पुजारियों को उस ने
उन की अपनी अपनी क़ुर्बानगाहों पर सज़ा-ए-मौत दी
और फिर इन्सानी हड्डियाँ उन पर जला कर उन की
बेहुरमती की। इस के बाद वह यरूशलम लौट गया।

फ़सह की ईद मनाई जाती है

21 यरूशलम में आ कर बादशाह ने हुक्म दिया,
"पूरी क़ौम रब अपने ख़ुदा की ताज़ीम में फ़सह की
ईद मनाए, जिस तरह अह्द की किताब में फ़रमाया
गया है।" 22 उस ज़माने से ले कर जब क़ाज़ी इस्राईल
की राहनुमाई करते थे यूसियाह के दिनों तक फ़सह
की ईद इस तरह नहीं मनाई गई थी। इस्राईल और
यहूदाह के बादशाहों के अय्याम में भी ऐसी ईद नहीं
मनाई गई थी। 23 यूसियाह की हुकूमत के 18वें साल
में पहली दफ़ा रब की ताज़ीम में ऐसी ईद यरूशलम
में मनाई गई।

यूसियाह की फ़रमाँबरदारी

24 यूसियाह उन तमाम हिदायात के ताबे रहा जो
शरीअत की उस किताब में दर्ज थीं जो ख़िलक़ियाह
इमाम को रब के घर में मिली थी। चुनाँचे उस ने मुर्दों
की रूहों से राबिता करने वालों, रम्मालों, घरेलू बुतों,
दूसरे बुतों और बाक़ी तमाम मकरूह चीज़ों को ख़त्म
कर दिया। 25 न यूसियाह से पहले, न उस के बाद उस
जैसा कोई बादशाह हुआ जिस ने उस तरह पूरे दिल,
पूरी जान और पूरी ताक़त के साथ रब के पास वापस
आ कर मूसवी शरीअत के हर फ़रमान के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारी हो। 26 तो भी रब यहूदाह पर अपने
ग़ुस्से से बाज़ न आया, क्यूँकि मनस्सी ने अपनी ग़लत
हरकतों से उसे हद से ज़्यादा तैश दिलाया था। 27 इसी
लिए रब ने फ़रमाया, "जो कुछ मैं ने इस्राईल के साथ
किया वही कुछ यहूदाह के साथ भी करूँगा। मैं उसे
अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दूँगा। अपने चुने हुए शहर
यरूशलम को मैं रद्द करूँगा और साथ साथ उस घर
को भी जिस के बारे में मैं ने कहा, 'वहाँ मेरा नाम
होगा'।"
28 बाक़ी जो कुछ यूसियाह की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया वह 'शाहान-ए-
यहूदाह की तारीख़' की किताब में बयान किया गया
है।

29 यूसियाह की हुकूमत के दौरान मिस्र का बादशाह
निकोह फ़िरऔन दरया-ए-फ़ुरात के लिए रवाना हुआ
ताकि असूर के बादशाह से लड़े। रास्ते में यूसियाह
उस से लड़ने के लिए निकला। लेकिन जब मजिद्दो
के क़रीब उन का एक दूसरे के साथ मुक़ाबला हुआ
तो निकोह ने उसे मार दिया। 30 यूसियाह के मुलाज़िम
उस की लाश रथ पर रख कर मजिद्दो से यरूशलम
ले आए जहाँ उसे उस की अपनी क़ब्र में दफ़न किया
गया। फिर उम्मत ने उस के बेटे यहूआख़ज़ को मसह
करके बाप के तख़्त पर बिठा दिया।

यहूदाह का बादशाह यहूआख़ज़

31 यहूआख़ज़ 23 साल की उम्र में बादशाह बना,
और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया तीन
माह था। उस की माँ हमूतल बिन्त यरमियाह लिब्ना
की रहने वाली थी। 32 अपने बापदादा की तरह
वह भी ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसन्द
था। 33 निकोह फ़िरऔन ने मुल्क-ए-हमात के शहर
रिब्ला में उसे गिरिफ़्तार कर लिया, और उस की
हुकूमत ख़त्म हुई। मुल्क-ए-यहूदाह को ख़राज के
तौर पर तक़रीबन 3,400 किलोग्राम चाँदी और 34
किलोग्राम सोना अदा करना पड़ा। 34 यहूआख़ज़ की
जगह फ़िरऔन ने यूसियाह के एक और बेटे को तख़्त
पर बिठाया। उस के नाम इलियाक़ीम को उस ने
यहूयक़ीम में बदल दिया। यहूआख़ज़ को वह अपने
साथ मिस्र ले गया जहाँ वह बाद में मरा भी।

35 मतलूबा चाँदी और सोने की रक़म अदा करने
के लिए यहूयक़ीम ने लोगों से ख़ास टैक्स लिया।
उम्मत को अपनी दौलत के मुताबिक़ पैसे देने पड़े।
इस तरीक़े से यहूयक़ीम फ़िरऔन को ख़राज अदा
कर सका।

यहूदाह का बादशाह यहूयक़ीम

36 यहूयक़ीम 25 साल की उम्र में बादशाह बना,
और वह यरूशलम में रह कर 11 साल हुकूमत करता
रहा। उस की माँ ज़बूदा बिन्त फ़िदायाह रूमाह की
रहने वाली थी। 37 बापदादा की तरह उस का चाल-
चलन भी रब को नापसन्द था।

24 1 यहूयक़ीम की हुकूमत के दौरान बाबल के
बादशाह नबूकद्नज़्ज़र ने यहूदाह पर हम्ला
किया। नतीजे में यहूयक़ीम उस के ताबे हो गया।
लेकिन तीन साल के बाद वह सरकश हो गया। 2 तब
रब ने बाबल, शाम, मोआब और अम्मोन से डाकुओं
के जथ्थे भेज दिए ताकि उसे तबाह करें। वैसा ही
हुआ जिस तरह रब ने अपने ख़ादिमों यानी नबियों
की मारिफ़त फ़रमाया था। 3 यह आफ़तें इस लिए
यहूदाह पर आईं कि रब ने इन का हुक्म दिया था।
वह मनस्सी के संगीन गुनाहों की वजह से यहूदाह
को अपने हुज़ूर से ख़ारिज करना चाहता था।

4 वह यह हक़ीक़त भी नज़रअन्दाज़ न कर सका
कि मनस्सी ने यरूशलम को बेक़ुसूर लोगों के ख़ून
से भर दिया था। रब यह मुआफ़ करने के लिए तय्यार
नहीं था। 5 बाक़ी जो कुछ यहूयक़ीम की हुकूमत के
दौरान हुआ और जो कुछ उस ने किया वह 'शाहान-
ए-यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। 6 जब
वह मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उस का
बेटा यहूयाकीन तख़्तनशीन हुआ। 7 उस वक़्त मिस्र
का बादशाह दुबारा अपने मुल्क से निकल न सका,
क्यूँकि बाबल के बादशाह ने मिस्र की सरहद बनाम
वादी-ए-मिस्र से ले कर दरया-ए-फ़ुरात तक का सारा
इलाक़ा मिस्र के क़ब्ज़े से छीन लिया था।

यहूयाकीन की हुकूमत और यरूशलम पर बाबल का क़ब्ज़ा

8 यहूयाकीन 18 साल की उम्र में बादशाह बना, और
यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया तीन माह
था। उस की माँ नहुश्ता बिन्त इल्नातन यरूशलम की
रहने वाली थी। 9 अपने बाप की तरह यहूयाकीन भी
ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसन्द था।

10 उस की हुकूमत के दौरान बाबल के बादशाह
नबूकद्नज़्ज़र की फ़ौज यरूशलम तक बढ़ कर उस
का मुहासरा करने लगी। 11 नबूकद्नज़्ज़र ख़ुद शहर

के मुहासरे के दौरान पहुँच गया। 12 तब यहूयाकीन
ने शिकस्त मान कर अपने आप को अपनी माँ,
मुलाज़िमों, अफ़्सरों और दरबारियों समेत बाबल
के बादशाह के हवाले कर दिया। बादशाह ने उसे
गिरिफ़्तार कर लिया।

यह नबूकद्नज़्ज़र की हुकूमत के आठवें साल में
हुआ। 13 जिस का एलान रब ने पहले किया था वह
अब पूरा हुआ, नबूकद्नज़्ज़र ने रब के घर और शाही
महल के तमाम ख़ज़ाने छीन लिए। उस ने सोने का
वह सारा सामान भी लूट लिया जो सुलेमान ने रब
के घर के लिए बनवाया था। 14 और जितने खाते-
पीते लोग यरूशलम में थे उन सब को बादशाह ने
जिलावतन कर दिया। उन में तमाम अफ़्सर, फ़ौजी,
दस्तकार और धातों का काम करने वाले शामिल
थे, कुल 10,000 अफ़राद। उम्मत के सिर्फ़ ग़रीब
लोग पीछे रह गए। 15 नबूकद्नज़्ज़र यहूयाकीन को
भी क़ैदी बना कर बाबल ले गया और उस की माँ,
बीवियों, दरबारियों और मुल्क के तमाम असर-ओ-
रसूख़ रखने वालों को भी। 16 उस ने फ़ौजियों के
7,000 अफ़राद और 1,000 दस्तकारों और धातों
का काम करने वालों को जिलावतन करके बाबल में
बसा दिया। यह सब माहिर और जंग करने के क़ाबिल
आदमी थे। 17 यरूशलम में बाबल के बादशाह ने
यहूयाकीन की जगह उस के चचा मत्तनियाह को
तख़्त पर बिठा कर उस का नाम सिदक़ियाह में बदल
दिया।

यहूदाह का बादशाह सिदक़ियाह

18 सिदक़ियाह 21 साल की उम्र में बादशाह बना,
और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया
11 साल था। उस की माँ हमूतल बिन्त यरमियाह
लिब्ना शहर की रहने वाली थी। 19 यहूयक़ीम की
तरह सिदक़ियाह ऐसा काम करता रहा जो रब
को नापसन्द था। 20 रब यरूशलम और यहूदाह के
बाशिन्दों से इतना नाराज़ हुआ कि आख़िर में उस ने
उन्हें अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया।

सिदक़ियाह का फ़रार और गिरिफ़्तारी

एक दिन सिदक़ियाह बाबल के बादशाह से सरकश
हुआ,

25 1 इस लिए शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र
तमाम फ़ौज को अपने साथ ले कर दुबारा
यरूशलम पहुँचा ताकि उस पर हम्ला करे।

सिदक़ियाह की हुकूमत के नवें साल में बाबल की
फ़ौज यरूशलम का मुहासरा करने लगी। यह काम
दसवें महीने के दसवें दिन [j]शुरू हुआ। पूरे शहर के
इर्दगिर्द बादशाह ने पुश्ते बनवाए। 2 सिदक़ियाह की
हुकूमत के 11वें साल तक यरूशलम क़ाइम रहा।
3 लेकिन फिर काल ने शहर में ज़ोर पकड़ा, और
अवाम के लिए खाने की चीज़ें न रहीं।

चौथे महीने के नवें दिन [k]4 बाबल के फ़ौजियों ने
फ़सील में रख़ना डाल दिया। उसी रात सिदक़ियाह
अपने तमाम फ़ौजियों समेत फ़रार होने में कामयाब
हुआ, अगरचे शहर दुश्मन से घिरा हुआ था। वह
फ़सील के उस दरवाज़े से निकले जो शाही बाग़ के
साथ मुल्हिक़ दो दीवारों के बीच में था। वह वादी-
ए-यर्दन की तरफ़ भागने लगे, 5 लेकिन बाबल की
फ़ौज ने बादशाह का ताक़्क़ुब करके उसे यरीहू के
मैदान में पकड़ लिया। उस के फ़ौजी उस से अलग
हो कर चारों तरफ़ मुन्तशिर हो गए, 6 और वह ख़ुद
गिरिफ़्तार हो गया।

फिर उसे रिब्ला में शाह-ए-बाबल के पास लाया
गया, और वहीं सिदक़ियाह पर फ़ैसला सादिर किया
गया। 7 सिदक़ियाह के देखते देखते उस के बेटों को
क़त्ल किया गया। इस के बाद फ़ौजियों ने उस की
आँखें निकाल कर उसे पीतल की ज़न्जीरों में जकड़
लिया और बाबल ले गए।

---

[j]यानी 15 जन्वरी

[k]यानी 18 जुलाई

यरूशलम और रब के घर की तबाही

8 शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र की हुकूमत के 19वें
साल में बादशाह का ख़ास अफ़्सर नबूज़रादान
यरूशलम पहुँचा। वह शाही मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर
था। पाँचवें महीने के सातवें दिन [l]उस ने आ कर 9 रब
के घर, शाही महल और यरूशलम के तमाम मकानों
को जला दिया। हर बड़ी इमारत भस्म हो गई। 10 उस
ने अपने तमाम फ़ौजियों से शहर की फ़सील को भी
गिरा दिया। 11 फिर नबूज़रादान ने सब को जिलावतन
कर दिया जो यरूशलम और यहूदाह में पीछे रह गए
थे। वह भी उन में शामिल थे जो जंग के दौरान ग़द्दारी
करके शाह-ए-बाबल के पीछे लग गए थे। 12 लेकिन
नबूज़रादान ने सब से निचले तब्क़े के बाज़ लोगों
को मुल्क-ए-यहूदाह में छोड़ दिया ताकि वह अंगूर
के बाग़ों और खेतों को सँभालें।

13 बाबल के फ़ौजियों ने रब के घर में जा कर
पीतल के दोनों सतूनों, पानी के बासनों को उठाने
वाली हथगाड़ियों और समुन्दर नामी पीतल के हौज़
को तोड़ दिया और सारा पीतल उठा कर बाबल ले
गए। 14 वह रब के घर की ख़िदमत सरअन्जाम देने
के लिए दरकार सामान भी ले गए यानी बालटियाँ,
बेलचे, बत्ती कतरने के औज़ार, बर्तन और पीतल का
बाक़ी सारा सामान। 15 ख़ालिस सोने और चाँदी के
बर्तन भी इस में शामिल थे यानी जलते हुए कोएले
के बर्तन और छिड़काओ के कटोरे। शाही मुहाफ़िज़ों
का अफ़्सर सारा सामान उठा कर बाबल ले गया।
16 जब दोनों सतूनों, समुन्दर नामी हौज़ और बासनों
को उठाने वाली हथगाड़ियों का पीतल तुड़वाया गया
तो वह इतना वज़नी था कि उसे तोला न जा सका।
सुलेमान बादशाह ने यह चीज़ें रब के घर के लिए
बनवाई थीं। 17 हर सतून की ऊँचाई 27 फ़ुट थी। उन
के बालाई हिस्सों की ऊँचाई साढ़े चार फ़ुट थी, और
वह पीतल की जाली और अनारों से सजे हुए थे।

18 शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़्सर नबूज़रादान ने ज़ैल
के क़ैदियों को अलग कर दिया : इमाम-ए-आज़म
सिरायाह, उस के बाद आने वाला इमाम सफ़नियाह,
रब के घर के तीन दरबानों, 19 शहर के बचे हुओं में
से उस अफ़्सर को जो शहर के फ़ौजियों पर मुक़र्रर
था, सिदक़ियाह बादशाह के पाँच मुशीरों, उम्मत की
भर्ती करने वाले अफ़्सर और शहर में मौजूद उस के
60 मर्दों को। 20 नबूज़रादान इन सब को अलग करके
सूबा हमात के शहर रिब्ला ले गया जहाँ बाबल का
बादशाह था। 21 वहाँ नबूकद्नज़्ज़र ने उन्हें सज़ा-ए-
मौत दी।

यूँ यहूदाह के बाशिन्दों को जिलावतन कर दिया
गया।

जिदलियाह की हुकूमत

22 जिन लोगों को बाबल के बादशाह नबूकद्नज़्ज़र
ने यहूदाह में पीछे छोड़ दिया था, उन पर उस
ने जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम बिन साफ़न मुक़र्रर
किया। 23 जब फ़ौज के बचे हुए अफ़्सरों और उन
के दस्तों को ख़बर मिली कि जिदलियाह को गवर्नर
मुक़र्रर किया गया है तो वह मिस्फ़ाह में उस के
पास आए। अफ़्सरों के नाम इस्माईल बिन नतनियाह,
यूहनान बिन क़रीह, सिरायाह बिन तन्हूमत नतूफ़ाती
और याज़नियाह बिन माकाती थे। उन के फ़ौजी भी
साथ आए।

24 जिदलियाह ने क़सम खा कर उन से वादा किया,
“बाबल के अफ़्सरों से मत डरना! मुल्क में रह कर
बाबल के बादशाह की ख़िदमत करें तो आप की
सलामती होगी।”

25 लेकिन उस साल के सातवें महीने में इस्माईल
बिन नतनियाह बिन इलीसमा ने दस साथियों के
साथ मिस्फ़ाह आ कर धोके से जिदलियाह को क़त्ल
किया। इस्माईल शाही नस्ल का था। जिदलियाह के
इलावा उन्हों ने उस के साथ रहने वाले यहूदाह और

---

[l]यानी 14 अगस्त

बाबल के तमाम लोगों को भी क़त्ल किया। 26 यह
देख कर यहूदाह के तमाम बाशिन्दे छोटे से ले कर
बड़े तक फ़ौजी अफ़्सरों समेत हिज्रत करके मिस्र चले
गए, क्यूँकि वह बाबल के इन्तिक़ाम से डरते थे।

यहूयाकीन को आज़ाद किया जाता है

27 यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन की जिलावतनी
के 37वें साल में अवील-मरूदक बाबल का बादशाह
बना। उसी साल के 12वें महीने के 27वें दिन उस ने
यहूयाकीन को क़ैदख़ाने से आज़ाद कर दिया। 28 उस
ने उस से नर्म बातें करके उसे इज़्ज़त की ऐसी कुर्सी
पर बिठाया जो बाबल में जिलावतन किए गए बाक़ी
बादशाहों की निस्बत ज़्यादा अहम थी। 29 यहूयाकीन
को क़ैदियों के कपड़े उतारने की इजाज़त मिली, और
उसे ज़िन्दगी भर बादशाह की मेज़ पर बाक़ाइदगी
से शरीक होने का शरफ़ हासिल रहा। 30 बादशाह
ने मुक़र्रर किया कि यहूयाकीन को उम्र भर इतना
वज़ीफ़ा मिलता रहे कि उस की रोज़मर्रा ज़रूरियात
पूरी होती रहें।

१-तवारीख़

आदम से इब्राहीम तक का नसबनामा

1 [1] नूह तक आदम की औलाद सेत, अनूस,
[2] क़ीनान, महलल-एल, यारिद, [3] हनूक,
मतूसिलह, लमक, [4] और नूह थी।

नूह के तीन बेटे सिम, हाम और याफ़त थे। [5] याफ़त
के बेटे जुमर, माजूज, मादी, यावान, तूबल, मसक
और तीरास थे। [6] जुमर के बेटे अश्कनाज़, रीफ़त और
तुजर्मा थे। [7] यावान के बेटे इलीसा और तरसीस थे।
कित्ती और रोदानी भी उस की औलाद हैं।

[8] हाम के बेटे कूश, मिस्र, फ़ूत और कनआन थे।
[9] कूश के बेटे सिबा, हवीला, सब्ता, रामा और
सब्तका थे। रामा के बेटे सबा और ददान थे।
[10] नमरूद भी कूश का बेटा था। वह ज़मीन पर पहला
सूरमा था। [11] मिस्र ज़ैल की क़ौमों का बाप था : लूदी,
अनामी, लिहाबी, नफ़्तूही, [12] फ़त्रूसी, कस्लूही (जिन
से फ़िलिस्ती निकले) और कफ़्तूरी। [13] कनआन का
पहलौठा सैदा था। कनआन इन क़ौमों का बाप भी
था : हित्ती [14] यबूसी, अमोरी, जिर्जासी, [15] हिव्वी,
अर्क़ी, सीनी, [16] अर्वादी, समारी और हमाती।

[17] सिम के बेटे ऐलाम, असूर, अर्फ़क्सद, लूद और
अराम थे। अराम के बेटे ऊज़, हूल, जतर और मसक
थे। [18] अर्फ़क्सद का बेटा सिलह और सिलह का
बेटा इबर था। [19] इबर के दो बेटे पैदा हुए। एक का
नाम फ़लज यानी तक़्सीम था, क्यूँकि उन अय्याम
में दुनिया तक़्सीम हुई। फ़लज के भाई का नाम
युक़्तान था। [20] युक़्तान के बेटे अल्मूदाद, सलफ़,
हसरमावत, इराख़, [21] हदूराम, ऊज़ाल, दिक़्ला,
[22] ऊबाल, अबीमाएल, सबा, [23] ओफ़ीर, हवीला
और यूबाब थे। यह सब उस के बेटे थे।

[24] सिम का यह नसबनामा है : सिम, अर्फ़क्सद,
सिलह, [25] इबर, फ़लज, रऊ, [26] सरूज, नहूर, तारह
[27] और अब्राम यानी इब्राहीम।

इब्राहीम का नसबनामा

[28] इब्राहीम के बेटे इस्हाक़ और इस्माईल थे। [29] उन
की दर्ज-ए-ज़ैल औलाद थी :

इस्माईल का पहलौठा नबायोत था। उस के बाक़ी
बेटे क़ीदार, अदबिएल, मिब्साम, [30] मिश्मा, दूमा,
मस्सा, हदद, तैमा, [31] यतूर, नफ़ीस और क़िदमा थे।
सब इस्माईल के हाँ पैदा हुए।

[32] इब्राहीम की दाश्ता क़तूरा के बेटे ज़िम्रान,
युक़्सान, मिदान, मिदियान, इस्बाक़ और सूख़ थे।
युक़्सान के दो बेटे सबा और ददान पैदा हुए [33] जबकि
मिदियान के बेटे ऐफ़ा, इफ़र, हनूक, अबीदा और
इल्दआ थे। सब क़तूरा की औलाद थे।

[34] इब्राहीम के बेटे इस्हाक़ के दो बेटे पैदा हुए,
एसौ और इस्राईल। [35] एसौ के बेटे इलीफ़ज़, रऊएल,
यऊस, यालाम और क़ोरह थे। [36] इलीफ़ज़ के बेटे
तेमान, ओमर, सफ़ी, जाताम, क़नज़ और अमालीक़
थे। अमालीक़ की माँ तिमना थी। [37] रऊएल के बेटे
नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज़्ज़ा थे।

सईर यानी अदोम का नसबनामा

[38] सईर के बेटे लोतान, सोबल, सिबओन, अना,
दीसोन, एसर और दीसान थे। [39] लोतान के दो बेटे
होरी और होमाम थे। (तिमना लोतान की बहन थी।)
[40] सोबल के बेटे अल्यान, मानहत, ऐबाल, सफ़ी
और ओनाम थे। सिबओन के बेटे अय्याह और अना
थे। [41] अना के एक बेटा दीसोन पैदा हुआ। दीसोन
के चार बेटे हम्रान, इश्बान, यित्रान और किरान थे।

42 एसर के तीन बेटे बिल्हान, ज़ावान और अक़ान
थे। दीसान के दो बेटे ऊज़ और अरान थे।

अदोम के बादशाह

43 इस से पहले कि इस्राईलियों का कोई बादशाह
था ज़ैल के बादशाह यके बाद दीगरे मुल्क-ए-अदोम
में हुकूमत करते थे : बाला बिन बअोर जो दिन्हाबा
शहर का था।
44 उस की मौत पर यूबाब बिन ज़ारह जो बुस्रा शहर
का था।
45 उस की मौत पर हुशाम जो तेमानियों के मुल्क
का था।
46 उस की मौत पर हदद बिन बिदद जिस ने
मुल्क-ए-मोआब में मिदियानियों को शिकस्त दी। वह
अवीत शहर का था।
47 उस की मौत पर सम्ला जो मस्रिक़ा शहर का था।
48 उस की मौत पर साऊल जो दरया-ए-फ़ुरात पर
रहोबोत शहर का था।
49 उस की मौत पर बाल-हनान बिन अक्बोर।
50 उस की मौत पर हदद जो फ़ाऊ शहर का
था। (बीवी का नाम महेतब-एल बिन्त मत्रिद बिन्त
मेज़ाहाब था।) 51 फिर हदद मर गया।
अदोमी क़बीलों के सरदार तिमना, अल्या, यतेत,
52 उहलीबामा, ऐला, फ़ीनोन, 53 क़नज़, तेमान,
मिब्सार, 54 मज्दीएल और इराम थे। यही अदोम के
सरदार थे।

याक़ूब यानी इस्राईल के बेटे

2 1 इस्राईल के बारह बेटे रूबिन, शमाऊन,
लावी, यहूदाह, इश्कार, ज़बूलून, 2 दान, यूसुफ़,
बिनयमीन, नफ़्ताली, जद और आशर थे।

यहूदाह का नसबनामा

3 यहूदाह की शादी कनआनी औरत से हुई जो सूअ
की बेटी थी। उन के तीन बेटे एर, ओनान और सेला
पैदा हुए। यहूदाह का पहलौठा एर रब के नज़्दीक
शरीर था, इस लिए उस ने उसे मरने दिया। 4 यहूदाह
के मज़ीद दो बेटे उस की बहू तमर से पैदा हुए। उन
के नाम फ़ारस और ज़ारह थे। यूँ यहूदाह के कुल पाँच
बेटे थे।
5 फ़ारस के दो बेटे हस्रोन और हमूल थे।
6 ज़ारह के पाँच बेटे ज़िम्री, ऐतान, हैमान, कल्कूल
और दारा थे। 7 कर्मी बिन ज़िम्री का बेटा वही अकर
यानी अकन था जिस ने उस लूटे हुए माल में से कुछ
लिया जो रब के लिए मख़्सूस था। 8 ऐतान के बेटे का
नाम अज़रियाह था।
9 हस्रोन के तीन बेटे यरहमिएल, राम और कलूबी
यानी कालिब थे।

राम की औलाद

10 राम के हाँ अम्मीनदाब और अम्मीनदाब के हाँ
यहूदाह के क़बीले के सरदार नह्सोन पैदा हुआ।
11 नह्सोन सल्मोन का और सल्मोन बोअज़ का बाप
था। 12 बोअज़ ओबेद का और ओबेद यस्सी का
बाप था। 13 बड़े से ले कर छोटे तक यस्सी के बेटे
इलियाब, अबीनदाब, सिमआ, 14 नतनीएल, रद्दी,
15 ओज़म और दाऊद थे। कुल सात भाई थे। 16 उन
की दो बहनें ज़रूयाह और अबीजेल थीं। ज़रूयाह
के तीन बेटे अबीशै, योआब और असाहेल थे।
17 अबीजेल के एक बेटा अमासा पैदा हुआ। बाप
यतर इस्माईली था।

कालिब की औलाद

18 कालिब बिन हस्रोन की बीवी अज़ूबा के हाँ
बेटी बनाम यरीओत पैदा हुई। यरीओत के बेटे यशर,
सोबाब और अर्दून थे। 19 अज़ूबा के वफ़ात पाने पर
कालिब ने इफ़्रात से शादी की। उन के बेटा हूर पैदा
हुआ। 20 हूर ऊरी का और ऊरी बज़लीएल का बाप
था।
21 60 साल की उम्र में कालिब के बाप हस्रोन
ने दुबारा शादी की। बीवी जिलिआद के बाप
मकीर की बेटी थी। इस रिश्ते से बेटा सज़ूब पैदा

हुआ। 22–23 सजूब का बेटा वह याईर था जिस की
जिलिआद के इलाक़े में 23 बस्तियाँ बनाम 'याईर
की बस्तियाँ' थीं। लेकिन बाद में जसूर और शाम के
फ़ौजियों ने उन पर क़ब्ज़ा कर लिया। उस वक़्त उन्हें
क़नात भी गिर्द-ओ-नवाह के इलाक़े समेत हासिल
हुआ। उन दिनों में कुल 60 आबादियाँ उन के हाथ
में आ गईं। इन के तमाम बाशिन्दे जिलिआद के
बाप मकीर की औलाद थे। 24 हस्रोन जिस की बीवी
अबियाह थी फ़ौत हुआ तो कालिब और इफ़्राता के
हाँ बेटा अश्हूर पैदा हुआ। बाद में अश्हूर तक़ूअ शहर
का बानी बन गया।

यरहमिएल की औलाद

25 हस्रोन के पहलौठे यरहमिएल के बेटे बड़े से
ले कर छोटे तक राम, बूना, ओरन, ओज़म और
अख़ियाह थे। 26 यरहमिएल की दूसरी बीवी अतारा
का एक बेटा ओनाम था।

27 यरहमिएल के पहलौठे राम के बेटे माज़, यमीन
और एकर थे। 28 ओनाम के दो बेटे सम्मी और
यदा थे। सम्मी के दो बेटे नदब और अबीसूर थे।
29 अबीसूर की बीवी अबीख़ैल के दो बेटे अख़्बान
और मोलिद पैदा हुए। 30 नदब के दो बेटे सिलद और
अफ़्फ़ाइम थे। सिलद बेऔलाद मर गया, 31 लेकिन
अफ़्फ़ाइम के हाँ बेटा यिसई पैदा हुआ। यिसई
सीसान का और सीसान अख़्ली का बाप था।
32 सम्मी के भाई यदा के दो बेटे यतर और यूनतन
थे। यतर बेऔलाद मर गया, 33 लेकिन यूनतन के
दो बेटे फ़लत और ज़ाज़ा पैदा हुए। सब यरहमिएल
की औलाद थे। 34–35 सीसान के बेटे नहीं थे बल्कि
बेटियाँ। एक बेटी की शादी उस ने अपने मिस्री
ग़ुलाम यर्ख़ा से करवाई। उन के बेटा अत्ती पैदा
हुआ। 36 अत्ती के हाँ नातन पैदा हुआ और नातन
के ज़बद, 37 ज़बद के इफ़्लाल, इफ़्लाल के ओबेद,
38 ओबेद के याहू, याहू के अज़रियाह, 39 अज़रियाह
के ख़लिस, ख़लिस के इलिआसा, 40 इलिआसा के
सिस्मी, सिस्मी के सल्लूम, 41 सल्लूम के यक़मियाह और
यक़मियाह के इलीसमा।

कालिब की औलाद का एक और नसबनामा

42 ज़ैल में यरहमिएल के भाई कालिब की औलाद
है : उस का पहलौठा मेसा ज़ीफ़ का बाप था और
दूसरा बेटा मरेसा हब्रून का बाप। 43 हब्रून के चार
बेटे क़ोरह, तफ़्फ़ूअह, रक़म और समा थे। 44 समा
के बेटे रख़म के हाँ युर्क़िआम पैदा हुआ। रक़म सम्मी
का बाप था, 45 सम्मी मऊन का और मऊन बैत-सूर
का।

46 कालिब की दाश्ता ऐफ़ा के बेटे हारान, मौज़ा
और जाज़िज़ पैदा हुए। हारान के बेटे का नाम जाज़िज़
था। 47 यह्दी के बेटे रजम, यूताम, जेसान, फ़लत,
ऐफ़ा और शाफ़ थे।

48 कालिब की दूसरी दाश्ता माका के बेटे शिबर,
तिर्हना, 49 शाफ़ (मदमन्ना का बाप) और सिवा
(मक्बेना और जिबिआ का बाप) पैदा हुए। कालिब
की एक बेटी भी थी जिस का नाम अक्सा था। 50 सब
कालिब की औलाद थे।

इफ़्राता के पहलौठे हूर के बेटे क़िर्यत-यारीम का
बाप सोबल, 51 बैत-लहम का बाप सल्मा और बैत-
जादिर का बाप ख़ारिफ़ थे। 52 क़िर्यत-यारीम के
बाप सोबल से यह घराने निकले : हराई, मानहत
का आधा हिस्सा 53 और क़िर्यत-यारीम के ख़ानदान
उत्तरी, फ़ूती, सुमाती और मिसराई। इन से सुरआती
और इस्ताली निकले हैं।

54 सल्मा से ज़ैल के घराने निकले : बैत-लहम
के बाशिन्दे, नतूफ़ाती, अतरात-बैत-योआब, मानहत
का आधा हिस्सा, सुरई 55 और याबीज़ में आबाद
मुन्शियों के ख़ानदान तिरआती, सिमआती और
सूकाती। यह सब क़ीनी थे जो रैकाबियों के बाप
हम्मत से निकले थे।

दाऊद बादशाह की औलाद

3 1 हब्रून में दाऊद बादशाह के दर्ज-ए-ज़ैल बेटे
पैदा हुए :
पहलौठा अम्नोन था जिस की माँ अख़ीनूअम
यज़्रएली थी। दूसरा दान्याल था जिस की माँ
अबीजेल कर्मिली थी। 2 तीसरा अबीसलूम था। उस
की माँ माका थी जो जसूर के बादशाह तल्मी की बेटी
थी। चौथा अदूनियाह था जिस की माँ हज्जीत थी।
3 पाँचवाँ सफ़तियाह था जिस की माँ अबीताल थी।
छटा इत्रिआम था जिस की माँ इज्ला थी। 4 दाऊद
के यह छः बेटे उन साढ़े सात सालों के दौरान पैदा
हुए जब हब्रून उस का दार-उल-हकूमत था।
इस के बाद वह यरूशलम में मुन्तक़िल हुआ और
वहाँ मज़ीद 33 साल हुकूमत करता रहा। 5 उस
दौरान उस की बीवी बत-सबा बिन्त अम्मीएल के
चार बेटे सिमआ, सोबाब, नातन और सुलेमान पैदा
हुए। 6 मज़ीद बेटे भी पैदा हुए, इब्हार, इलीसूअ,
इलीफ़लत, 7 नौजा, नफ़ज, यफ़ीअ, 8 इलीसमा,
इल्यदा और इलीफ़लत। कुल नौ बेटे थे। 9 तमर उन
की बहन थी। इन के इलावा दाऊद की दाश्ताओं के
बेटे भी थे।
10 सुलेमान के हाँ रहुबिआम पैदा हुआ, रहुबिआम
के अबियाह, अबियाह के आसा, आसा के
यहूसफ़त, 11 यहूसफ़त के यहूराम, यहूराम के
अख़ज़ियाह, अख़ज़ियाह के यूआस, 12 यूआस
के अमसियाह, अमसियाह के अज़रियाह यानी
उज़्ज़ियाह, उज़्ज़ियाह के यूताम, 13 यूताम के आख़ज़,
आख़ज़ के हिज़क़ियाह, हिज़क़ियाह के मनस्सी,
14 मनस्सी के अमून और अमून के यूसियाह।
15 यूसियाह के चार बेटे बड़े से ले कर छोटे तक
यूहनान, यहूयक़ीम, सिदक़ियाह और सल्लूम थे।
16 यहूयक़ीम यहूयाकीन [m]का और यहूयाकीन
सिदक़ियाह का बाप था। 17 यहूयाकीन [n]को बाबल
में जिलावतन कर दिया गया। उस के सात बेटे
सियाल्तीएल, 18 मलकिराम, फ़िदायाह, शेनाज़्ज़र,
यक़मियाह, हूसमा और नदबियाह थे। 19 फ़िदायाह
के दो बेटे ज़रुब्बाबल और सिमई थे।
ज़रुब्बाबल के दो बेटे मसुल्लाम और हननियाह थे।
एक बेटी बनाम सलूमीत भी पैदा हुई। 20 बाक़ी पाँच
बेटों के नाम हसूबा, ओहल, बरकियाह, हसदियाह
और यूसब-हसद थे।
21 हननियाह के दो बेटे फ़लतियाह और यसायाह
थे। यसायाह रिफ़ायाह का बाप था, रिफ़ायाह
अर्नान का, अर्नान अबदियाह का और अबदियाह
सकनियाह का।
22 सकनियाह के बेटे का नाम समायाह था।
समायाह के छः बेटे हत्तूश, इजाल, बरीह, नअरियाह
और साफ़त थे। 23 नअरियाह के तीन बेटे इलियूऐनी,
हिज़क़ियाह और अज़्रीक़ाम पैदा हुए।
24 इलियूऐनी के सात बेटे हूदावियाह, इलियासिब,
फ़िलायाह, अक़्क़ूब, यूहनान, दिलायाह और अनानी
थे।

यहूदाह की औलाद

4 1 फ़ारस, हस्रोन, कर्मी, हूर और सोबल यहूदाह
की औलाद थे।
2 रियायाह बिन सोबल के हाँ यहत, यहत के
अख़ूमी और अख़ूमी के लाहद पैदा हुआ। यह
सुरआती ख़ानदानों के बापदादा थे।
3 ऐताम के तीन बेटे यज़्रएल, इस्मा और इदबास
थे। उन की बहन का नाम हज़्लिल्फ़ोनी था।
4 इफ़्राता का पहलौठा हूर बैत-लहम का बाप था।
उस के दो बेटे जदूर का बाप फ़नूएल और हूसा का
बाप अज़र थे।
5 तक़ूअ के बाप अश्हूर की दो बीवियाँ हीलाह और
नारा थीं।

---

[m]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

[n]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

6 नारा के बेटे अख़ूज़्ज़ाम, हिफ़र, तेमनी और
हख़सतरी थे।
7 हीलाह के बेटे ज़रत, सुहर और इतनान थे।
8 कूज़ के बेटे अनूब और हज़्ज़ोबीबा थे। उस से
अख़रख़ैल बिन हरूम के ख़ानदान भी निकले।
9 याबीज़ की अपने भाइयों की निस्बत ज़्यादा
इज़्ज़त थी। उस की माँ ने उस का नाम याबीज़ यानी
'वह तक्लीफ़ देता है' रखा, क्यूँकि उस ने कहा,
"पैदा होते वक़्त मुझे बड़ी तक्लीफ़ हुई।" 10 याबीज़
ने बुलन्द आवाज़ से इस्राईल के ख़ुदा से इल्तिमास
की, "काश तू मुझे बरकत दे कर मेरा इलाक़ा वसी
कर दे। तेरा हाथ मेरे साथ हो, और मुझे नुक़्सान से
बचा ताकि मुझे तक्लीफ़ न पहुँचे।" और अल्लाह ने
उस की सुनी।
11 सूख़ा के भाई कलूब महीर का और महीर इस्तून
का बाप था।
12 इस्तून के बेटे बैत-रफ़ा, फ़ासह और तख़िन्ना थे।
तख़िन्ना नाहस शहर का बाप था जिस की औलाद
रैका में आबाद है। 13 क़नज़ के बेटे ग़ुतनीएल और
सिरायाह थे। ग़ुतनीएल के बेटों के नाम हतत और
मऊनाती थे।
14 मऊनाती उफ़्रा का बाप था।
सिरायाह योआब का बाप था जो 'वादी-ए-कारीगर'
का बानी था। आबादी का यह नाम इस लिए पड़ गया
कि उस के बाशिन्दे कारीगर थे।
15 कालिब बिन यफ़ुन्ना के बेटे ईरू, ऐला और नाम
थे। ऐला का बेटा क़नज़ था।
16 यहल्लल-एल के चार बेटे ज़ीफ़, ज़ीफ़ा, तीरियाह
और असर-एल थे।
17–18 अज़्रा के चार बेटे यतर, मरद, इफ़र और
यलून थे। मरद की शादी मिस्री बादशाह फ़िरऔन
की बेटी बितियाह से हुई। उस के तीन बच्चे मरियम,
सम्मी और इस्बाह पैदा हुए। इस्बाह इस्तिमूअ का
बाप था। मरद की दूसरी बीवी यहूदाह की थी, और
उस के तीन बेटे जदूर का बाप यरद, सोका का बाप
हिबर और ज़नूह का बाप यक़ूतीएल थे।
19 हूदियाह की बीवी नहम की बहन थी। उस का
एक बेटा क़ईला जर्मी का बाप और दूसरा इस्तिमूअ
माकाती था।
20 सीमून के बेटे अम्नोन, रिन्ना, बिन-हनान और
तीलोन थे। यिसई के बेटे ज़ोहित और बिन-ज़ोहित
थे।
21 सेला बिन यहूदाह की दर्ज-ए-ज़ैल औलाद थी
: लेका का बाप एर, मरेसा का बाप लादा, बैत-
अश्बीअ में आबाद बारीक कतान का काम करने
वालों के ख़ानदान, 22 योक़ीम, कोज़ीबा के बाशिन्दे,
और यूआस और साराफ़ जो क़दीम रिवायत के
मुताबिक़ मोआब पर हुक्मरानी करते थे लेकिन बाद
में बैत-लहम वापस आए। 23 वह नताईम और जदीरा
में रह कर कुम्हार और बादशाह के मुलाज़िम थे।

शमाऊन की औलाद

24 शमाऊन के बेटे यमूएल, यमीन, यरीब, ज़ारह
और साऊल थे। 25 साऊल के हाँ सल्लूम पैदा हुआ,
सल्लूम के मिब्साम, मिब्साम के मिश्मा, 26 मिश्मा के
हम्मूएल, हम्मूएल के ज़क्कूर और ज़क्कूर के सिमई।
27 सिमई के 16 बेटे और छः बेटियाँ थीं, लेकिन उस
के भाइयों के कम बच्चे पैदा हुए। नतीजे में शमाऊन
का क़बीला यहूदाह के क़बीले की निस्बत छोटा
रहा।
28 ज़ैल के शहर उन के गिर्द-ओ-नवाह की
आबादियों समेत शमाऊन का क़बाइली इलाक़ा
था : बैर-सबा, मोलादा, हसार-सूआल, 29 बिल्हाह,
अज़म, तोलद, 30 बतूएल, हुर्मा, सिक़्लाज, 31 बैत-
मर्कबोत, हसार-सूसीम, बैत-बिरी और शारैम। दाऊद
की हुकूमत तक यह क़बीला इन जगहों में आबाद
था, 32 नीज़ ऐताम, ऐन, रिम्मोन, तोकन और असन
में भी। 33 इन पाँच आबादियों के गिर्द-ओ-नवाह के
दीहात भी बाल तक शामिल थे। हर मक़ाम के अपने
अपने तहरीरी नसबनामे थे।
34 शमाऊन के ख़ानदानों के दर्ज-ए-ज़ैल सरपरस्त
थे : मिसोबाब, यम्लीक, यूशा बिन अमसियाह,

35 योएल, याहू बिन यूसिबियाह बिन सिरायाह
बिन असीएल, 36 इलियूऐनी, याक़ूबा, यशूख़ाया,
असायाह, अदीएल, यसीमीएल, बिनायाह, 37 ज़ीज़ा
बिन शिफ़ई बिन अल्लोन बिन यदायाह बिन सिम्री बिन
समायाह।

38 दर्ज-ए-बाला आदमी अपने ख़ानदानों के
सरपरस्त थे। उन के ख़ानदान बहुत बढ़ गए, 39 इस
लिए वह अपने रेवड़ों को चराने की जगहें ढूँडते
ढूँडते वादी के मशरिक़ में जदूर तक फैल गए।
40 वहाँ उन्हें अच्छी और शादाब चरागाहें मिल
गईं। इलाक़ा खुला, पुरसुकून और आरामदिह भी
था। पहले हाम की कुछ औलाद वहाँ आबाद
थी, 41 लेकिन हिज़क़ियाह बादशाह के अय्याम में
शमाऊन के मज़कूरा सरपरस्तों ने वहाँ के रहने वाले
हामियों और मऊनियों पर हम्ला किया और उन के
तम्बूओं को तबाह करके सब को मार दिया। एक
भी न बचा। फिर वह ख़ुद वहाँ आबाद हुए। अब
उन के रेवड़ों के लिए काफ़ी चरागाहें थीं। आज
तक वह इसी इलाक़े में रहते हैं।

42 एक दिन शमाऊन के 500 आदमी यिसई के
चार बेटों फ़लतियाह, नअरियाह, रिफ़ायाह और
उज़्ज़ीएल की राहनुमाई में सईर के पहाड़ी इलाक़े
में घुस गए। 43 वहाँ उन्हों ने उन अमालीक़ियों को
हलाक कर दिया जिन्हों ने बच कर वहाँ पनाह ली
थी। फिर वह ख़ुद वहाँ रहने लगे। आज तक वह
वहीं आबाद हैं।

रूबिन की औलाद

5 1 इस्राईल का पहलौठा रूबिन था। लेकिन चूँकि
उस ने अपने बाप की दाश्ता से हमबिसतर होने
से बाप की बेहुरमती की थी इस लिए पहलौठे का
मौरूसी हक़ उस के भाई यूसुफ़ के बेटों को दिया
गया। इसी वजह से नसबनामे में रूबिन को पहलौठे
की हैसियत से बयान नहीं किया गया। 2 यहूदाह
दीगर भाइयों की निस्बत ज़्यादा ताक़तवर था, और
उस से क़ौम का बादशाह निकला। तो भी यूसुफ़ को
पहलौठे का मौरूसी हक़ हासिल था।

3 इस्राईल के पहलौठे रूबिन के चार बेटे हनूक,
फ़ल्लू, हस्रोन और कर्मी थे।

4 योएल के हाँ समायाह पैदा हुआ, समायाह के
जूज, जूज के सिमई, 5 सिमई के मीकाह, मीकाह के
रियायाह, रियायाह के बाल और 6 बाल के बईरा।
बईरा को असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर ने
जिलावतन कर दिया। बईरा रूबिन के क़बीले का
सरपरस्त था। 7 उन के नसबनामे में उस के भाई उन
के ख़ानदानों के मुताबिक़ दर्ज किए गए हैं, सर-ए-
फ़हरिस्त यईएल, फिर ज़करियाह 8 और बाला बिन
अज़ज़ बिन समा बिन योएल।

रूबिन का क़बीला अरोईर से ले कर नबू और बाल-
मऊन तक के इलाक़े में आबाद हुआ। 9 मशरिक़ की
तरफ़ वह उस रेगिस्तान के किनारे तक फैल गए जो
दरया-ए-फ़ुरात से शुरू होता है। क्यूँकि जिलिआद में
उन के रेवड़ों की तादाद बहुत बढ़ गई थी।

10 साऊल के अय्याम में उन्हों ने हाजिरियों से
लड़ कर उन्हें हलाक कर दिया और ख़ुद उन की
आबादियों में रहने लगे। यूँ जिलिआद के मशरिक़
का पूरा इलाक़ा रूबिन के क़बीले की मिलकियत में
आ गया।

जद की औलाद

11 जद का क़बीला रूबिन के क़बीले के पड़ोसी
मुल्क बसन में सल्का तक आबाद था। 12 उस का
सरबराह योएल था, फिर साफ़म, यानी और साफ़त।
वह सब बसन में आबाद थे। 13 उन के भाई उन
के ख़ानदानों समेत मीकाएल, मसुल्लाम, सबा, यूरी,
याकान, ज़ीअ और इबर थे। 14 यह सात आदमी
अबीख़ैल बिन हूरी बिन यारूह बिन जिलिआद बिन
मीकाएल बिन यसीसी बिन यह्दू बिन बूज़ के बेटे
थे। 15 अख़ी बिन अब्दीएल बिन जूनी इन ख़ानदानों
का सरपरस्त था।

16 जद का क़बीला जिलिआद और बसन के
इलाक़ों की आबादियों में आबाद था। शारून से ले
कर सरहद तक की पूरी चरागाहें भी उन के क़ब्ज़े
में थीं। 17 यह तमाम ख़ानदान यहूदाह के बादशाह
यूताम और इस्राईल के बादशाह यरुबिआम के ज़माने
में नसबनामे में दर्ज किए गए।

दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में क़बीलों की जंग

18 रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले के
44,760 फ़ौजी थे। सब लड़ने के क़ाबिल और
तजरिबाकार आदमी थे, ऐसे लोग जो तीर चला
सकते और ढाल और तलवार से लेस थे। 19 उन्हों
ने हाजिरियों, यतूर, नफ़ीस और नोदब से जंग की।
20 लड़ते वक़्त उन्हों ने अल्लाह से मदद के लिए
फ़र्याद की, तो उस ने उन की सुन कर हाजिरियों
को उन के इत्तिहादियों समेत उन के हवाले कर
दिया। 21 उन्हों ने उन से बहुत कुछ लूट लिया :
50,000 ऊँट, 2,50,000 भेड़-बकरियाँ और 2,000
गधे। साथ साथ उन्हों ने 1,00,000 लोगों को क़ैद
भी कर लिया। 22 मैदान-ए-जंग में बेशुमार दुश्मन मारे
गए, क्यूँकि जंग अल्लाह की थी। जब तक इस्राईलियों
को असूर में जिलावतन न कर दिया गया वह इस
इलाक़े में आबाद रहे।

मनस्सी का आधा क़बीला

23 मनस्सी का आधा क़बीला बहुत बड़ा था। उस
के लोग बसन से ले कर बाल-हर्मून और सनीर यानी
हर्मून के पहाड़ी सिलसिले तक फैल गए। 24 उन के
ख़ानदानी सरपरस्त इफ़र, यिसई, इलीएल, अज़्रीएल,
यरमियाह, हूदावियाह और यह्दीएल थे। सब माहिर
फ़ौजी, मशहूर आदमी और ख़ानदानी सरबराह थे।

मशरिक़ी क़बीलों की जिलावतनी

25 लेकिन यह मशरिक़ी क़बीले अपने बापदादा के
ख़ुदा से बेवफ़ा हो गए। वह ज़िना करके मुल्क के
उन अक़्वाम के देवताओं के पीछे लग गए जिन को
अल्लाह ने उन के आगे से मिटा दिया था। 26 यह
देख कर इस्राईल के ख़ुदा ने असूर के बादशाह
तिग्लत-पिलेसर को उन के ख़िलाफ़ बरपा किया
जिस ने रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले
को जिलावतन कर दिया। वह उन्हें ख़लह, दरया-ए-
ख़ाबूर, हारा और दरया-ए-जौज़ान को ले गया जहाँ
वह आज तक आबाद हैं।

इमाम-ए-आज़म की नस्ल (लावी का क़बीला)

6 1 लावी के बेटे जैर्सोन, क़िहात और मिरारी थे।
2 क़िहात के बेटे अम्राम, इज़हार , हब्रून और
उज़्ज़ीएल थे।
3 अम्राम के बेटे हारून और मूसा थे। बेटी का नाम
मरियम था। हारून के बेटे नदब, अबीहू, इलीअज़र
और इतमर थे।
4 इलीअज़र के हाँ फ़ीन्हास पैदा हुआ, फ़ीन्हास
के अबीसूअ, 5 अबीसूअ के बुक़्क़ी, बुक़्क़ी के
उज़्ज़ी, 6 उज़्ज़ी के ज़रख़ियाह, ज़रख़ियाह के
मिरायोत, 7 मिरायोत के अमरियाह, अमरियाह
के अख़ीतूब, 8 अख़ीतूब के सदोक़, सदोक़ के
अख़ीमाज़, 9 अख़ीमाज़ के अज़रियाह, अज़रियाह
के यूहनान 10 और यूहनान के अज़रियाह। यही
अज़रियाह रब के उस घर का पहला इमाम-ए-
आज़म था जो सुलेमान ने यरूशलम में बनवाया
था। 11 उस के हाँ अमरियाह पैदा हुआ, अमरियाह
के अख़ीतूब, 12 अख़ीतूब के सदोक़, सदोक़ के
सल्लूम, 13 सल्लूम के ख़िलक़ियाह, ख़िलक़ियाह के
अज़रियाह, 14 अज़रियाह के सिरायाह और सिरायाह
के यहूसदक़। 15 जब रब ने नबूकद्नज़्ज़र के हाथ
से यरूशलम और पूरे यहूदाह के बाशिन्दों को
जिलावतन कर दिया तो यहूसदक़ भी उन में शामिल
था।

लावी की औलाद

16 लावी के तीन बेटे जैर्सोम, क़िहात और मिरारी
थे। 17 जैर्सोम के दो बेटे लिब्नी और सिमई थे।

18 क़िहात के चार बेटे अम्राम, इज़हार , हब्रून और
उज़्ज़ीएल थे। 19 मिरारी के दो बेटे महली और मूशी
थे।

ज़ैल में लावी के ख़ानदानों की फ़हरिस्त उन के
बानियों के मुताबिक़ दर्ज है।

20 जैर्सोम के हाँ लिब्नी पैदा हुआ, लिब्नी के यहत,
यहत के ज़िम्मा, 21 ज़िम्मा के यूआख़, यूआख़ के इद्दू,
इद्दू के ज़ारह और ज़ारह के यतरी।

22 क़िहात के हाँ अम्मीनदाब पैदा हुआ,
अम्मीनदाब के क़ोरह, क़ोरह के अस्सीर, 23 अस्सीर
के इल्क़ाना, इल्क़ाना के अबियासफ़, अबियासफ़
के अस्सीर, 24 अस्सीर के तहत, तहत के ऊरीएल,
ऊरीएल के उज़्ज़ियाह और उज़्ज़ियाह के साऊल।
25 इल्क़ाना के बेटे अमासी, अख़ीमोत 26 और
इल्क़ाना थे। इल्क़ाना के हाँ ज़ूफ़ी पैदा हुआ,
ज़ूफ़ी के नहत, 27 नहत के इलियाब, इलियाब के
यरोहाम, यरोहाम के इल्क़ाना और इल्क़ाना के
समूएल। 28 समूएल का पहला बेटा योएल और
दूसरा अबियाह था।

29 मिरारी के हाँ महली पैदा हुआ, महली के लिब्नी,
लिब्नी के सिमई, सिमई के उज़्ज़ा, 30 उज़्ज़ा के
सिमआ, सिमआ के हज्जियाह और हजयाह के
असायाह।

लावी की ज़िम्मादारियाँ

31 जब अह्द का सन्दूक़ यरूशलम में लाया गया
ताकि आइन्दा वहाँ रहे तो दाऊद बादशाह ने कुछ
लावियों को रब के घर में गीत गाने की ज़िम्मादारी
दी। 32 इस से पहले कि सुलेमान ने रब का घर
बनवाया यह लोग अपनी ख़िदमत मुलाक़ात के ख़ैमे
के सामने सरअन्जाम देते थे। वह सब कुछ मुक़र्ररा
हिदायात के मुताबिक़ अदा करते थे। 33 ज़ैल में उन
के नाम उन के बेटों के नामों समेत दर्ज हैं।

क़िहात के ख़ानदान का हैमान पहला गुलूकार था।
उस का पूरा नाम यह था : हैमान बिन योएल बिन
समूएल 34 बिन इल्क़ाना बिन यरोहाम बिन इलीएल
बिन तूख़ 35 बिन सूफ़ बिन इल्क़ाना बिन महत बिन
अमासी 36 बिन इल्क़ाना बिन योएल बिन अज़रियाह
बिन सफ़नियाह 37 बिन तहत बिन अस्सीर बिन
अबियासफ़ बिन क़ोरह 38 बिन इज़हार बिन क़िहात
बिन लावी बिन इस्राईल।

39 हैमान के दहने हाथ आसफ़ खड़ा होता था।
उस का पूरा नाम यह था : आसफ़ बिन बरकियाह
बिन सिमआ 40 बिन मीकाएल बिन बासियाह बिन
मल्कियाह 41 बिन अत्नी बिन ज़ारह बिन अदायाह
42 बिन ऐतान बिन ज़िम्मा बिन सिमई 43 बिन यहत
बिन जैर्सोम बिन लावी।

44 हैमान के बाएँ हाथ ऐतान खड़ा होता था। वह
मिरारी के ख़ानदान का फ़र्द था। उस का पूरा नाम
यह था : ऐतान बिन क़ीसी बिन अब्दी बिन मल्लूक
45 बिन हसबियाह बिन अमसियाह बिन ख़िलक़ियाह
46 बिन अम्सी बिन बानी बिन समर 47 बिन महली
बिन मूशी बिन मिरारी बिन लावी।

48 दूसरे लावियों को अल्लाह की सुकूनतगाह में
बाक़ीमान्दा ज़िम्मादारियाँ दी गई थीं।

49 लेकिन सिर्फ़ हारून और उस की औलाद भस्म
होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश करते और बख़ूर की
क़ुर्बानगाह पर बख़ूर जलाते थे। वही मुक़द्दसतरीन
कमरे में हर ख़िदमत सरअन्जाम देते थे। इस्राईल का
कफ़्फ़ारा देना उन ही की ज़िम्मादारी थी। वह सब
कुछ ऐन उन हिदायात के मुताबिक़ अदा करते थे जो
अल्लाह के ख़ादिम मूसा ने उन्हें दी थीं।

50 हारून के हाँ इलीअज़र पैदा हुआ, इलीअज़र
के फ़ीन्हास, फ़ीन्हास के अबीसूअ, 51 अबीसूअ
के बुक़्क़ी, बुक़्क़ी के उज़्ज़ी, उज़्ज़ी के ज़रख़ियाह,
52 ज़रख़ियाह के मिरायोत, मिरायोत के अमरियाह,
अमरियाह के अख़ीतूब, 53 अख़ीतूब के सदोक़,
सदोक़ के अख़ीमाज़।

लावियों की आबादियाँ

54 ज़ैल में वह आबादियाँ और चरागाहें दर्ज हैं जो
लावियों को क़ुरआ डाल कर दी गईं।

क़ुरआ डालते वक़्त पहले हारून के बेटे क़िहात
की औलाद को जगहें मिल गईं। 55 उसे यहूदाह के
क़बीले से हब्रून शहर उस की चरागाहों समेत मिल
गया। 56 लेकिन गिर्द-ओ-नवाह के खेत और दीहात
कालिब बिन यफ़ुन्ना को दिए गए। 57 हब्रून उन शहरों
में शामिल था जिन में हर वह पनाह ले सकता था
जिस के हाथों ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ
हो। हब्रून के इलावा हारून की औलाद को ज़ैल के
मक़ाम उन की चरागाहों समेत दिए गए : लिब्ना,
यत्तीर, इस्तिमूअ, 58 हौलून, दबीर, 59 असन, और
बैत-शम्स। 60 बिनयमीन के क़बीले से उन्हें जिबऊन,
जिबा, अलमत और अनतोत उन की चरागाहों समेत
दिए गए। इस तरह हारून के ख़ानदान को 13 शहर
मिल गए।

61 क़िहात के बाक़ी ख़ानदानों को मनस्सी के
मग़रिबी हिस्से के दस शहर मिल गए।

62 जैर्सोम की औलाद को इश्कार, आशर, नफ़्ताली
और मनस्सी के क़बीलों के 13 शहर दिए गए। यह
मनस्सी का वह इलाक़ा था जो दरया-ए-यर्दन के
मशरिक़ में मुल्क-ए-बसन में था।

63 मिरारी की औलाद को रूबिन, जद और ज़बूलून
के क़बीलों के 12 शहर मिल गए।

64–65 यूँ इस्राईलियों ने क़ुरआ डाल कर लावियों
को मज़कूरा शहर दे दिए। सब यहूदाह, शमाऊन और
बिनयमीन के क़बाइली इलाक़ों में थे।

66 क़िहात के चन्द एक ख़ानदानों को इफ़्राईम के
क़बीले से शहर उन की चरागाहों समेत मिल गए।
67 इन में इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े का शहर सिकम
शामिल था जिस में हर वह पनाह ले सकता था जिस
से कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ होता था, फिर
जज़र, 68 युक़्मिआम, बैत-हौरून, 69 अय्यालोन और
जात-रिम्मोन। 70 क़िहात के बाक़ी कुंबों को मनस्सी
के मग़रिबी हिस्से के दो शहर आनेर और बलआम
उन की चरागाहों समेत मिल गए।

71 जैर्सोम की औलाद को ज़ैल के शहर भी उन की
चरागाहों समेत मिल गए : मनस्सी के मशरिक़ी हिस्से
से जौलान जो बसन में है और अस्तारात। 72 इश्कार
के क़बीले से क़ादिस, दाबरत, 73 रामात और
आनीम। 74 आशर के क़बीले से मिसाल, अब्दोन,
75 हुक़ूक़ और रहोब। 76 और नफ़्ताली के क़बीले से
गलील का क़ादिस, हम्मून और क़िर्यताइम।

77 मिरारी के बाक़ी ख़ानदानों को ज़ैल के शहर उन
की चरागाहों समेत मिल गए : ज़बूलून के क़बीले
से रिम्मोन और तबूर। 78–79 रूबिन के क़बीले से
रेगिस्तान का बसर, यहज़, क़दीमात और मिफ़ात
(यह शहर दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में यरीहू के
मुक़ाबिल वाक़े हैं)। 80 जद के क़बीले से जिलिआद
का रामात, महनाइम, 81 हस्बोन और याज़ेर।

इश्कार की औलाद

7 1 इश्कार के चार बेटे तोला, फ़ुव्वा, यसूब और
सिम्रोन थे।

2 तोला के पाँच बेटे उज़्ज़ी, रिफ़ायाह, यरीएल,
यहमी, इब्साम और समूएल थे। सब अपने ख़ानदानों
के सरपरस्त थे। नसबनामे के मुताबिक़ दाऊद के
ज़माने में तोला के ख़ानदान के 22,600 अफ़राद जंग
करने के क़ाबिल थे।

3 उज़्ज़ी का बेटा इज़्रख़ियाह था जो अपने चार
भाइयों मीकाएल, अबदियाह, योएल और यिस्सियाह
के साथ ख़ानदानी सरपरस्त था। 4 नसबनामे के
मुताबिक़ उन के 36,000 अफ़राद जंग करने के
क़ाबिल थे। इन की तादाद इस लिए ज़्यादा थी कि
उज़्ज़ी की औलाद के बहुत बाल-बच्चे थे। 5 इश्कार
के क़बीले के ख़ानदानों के कुल 87,000 आदमी जंग
करने के क़ाबिल थे। सब नसबनामे में दर्ज थे।

बिनयमीन और नफ़्ताली की औलाद

6 बिनयमीन के तीन बेटे बाला, बकर और
यदीअएल थे। 7 बाला के पाँच बेटे इस्बून, उज़्ज़ी,
उज़्ज़ीएल, यरीमोत और ईरी थे। सब अपने ख़ानदानों
के सरपरस्त थे। उन के नसबनामे के मुताबिक़ उन
के 22,034 मर्द जंग करने के क़ाबिल थे।

8 बकर के 9 बेटे ज़मीरा, यूआस, इलीअज़र,
इलियूऐनी, उम्री, यरीमोत, अबियाह, अनतोत और
अलमत थे। 9 उन के नसबनामे में उन के सरपरस्त
और 20,200 जंग करने के क़ाबिल मर्द बयान किए
गए हैं।

10 बिल्हान बिन यदीअएल के सात बेटे यऊस,
बिनयमीन, अहूद, कनआना, ज़ैतान, तरसीस और
अख़ीसहर थे। 11 सब अपने ख़ानदानों के सरपरस्त
थे। उन के 17,200 जंग करने के क़ाबिल मर्द थे।

12 सुफ़्फ़ी और हुफ़्फ़ी ईर की और हुशी अख़ीर की
औलाद थे।

13 नफ़्ताली के चार बेटे यहसीएल, जूनी, यिसर
और सल्लूम थे। सब बिल्हाह की औलाद थे।

मनस्सी की औलाद

14 मनस्सी की अरामी दाश्ता के दो बेटे अस्रीएल
और जिलिआद का बाप मकीर पैदा हुए। 15 मकीर ने
हुफ़्फ़ियों और सुफ़्फ़ियों की एक औरत से शादी की।
बहन का नाम माका था। मकीर के दूसरे बेटे का नाम
सिलाफ़िहाद था जिस के हाँ सिर्फ़ बेटियाँ पैदा हुईं।

16 मकीर की बीवी माका के मज़ीद दो बेटे फ़रस
और शरस पैदा हुए। शरस के दो बेटे औलाम और
रक़म थे। 17 औलाम के बेटे का नाम बिदान था। यही
जिलिआद बिन मकीर बिन मनस्सी की औलाद थे।

18 जिलिआद की बहन मूलिकत के तीन बेटे इश्हूद,
अबीअज़र और महलाह थे। 19 समीदा के चार बेटे
अख़ियान, सिकम, लिक़्ही और अनीआम थे।

इफ़्राईम की औलाद

20 इफ़्राईम के हाँ सूतलह पैदा हुआ, सूतलह के
बरद, बरद के तहत, तहत के इलिअदा, इलिअदा
के तहत, 21 तहत के ज़बद और ज़बद के सूतलह।

इफ़्राईम के मज़ीद दो बेटे अज़र और इलिअद थे।
यह दो मर्द एक दिन जात गए ताकि वहाँ के रेवड़
लूट लें। लेकिन मक़ामी लोगों ने उन्हें पकड़ कर मार
डाला। 22 उन का बाप इफ़्राईम काफ़ी अर्से तक उन
का मातम करता रहा, और उस के रिश्तेदार उस से
मिलने आए ताकि उसे तसल्ली दें। 23 जब इस के बाद
उस की बीवी के बेटा पैदा हुआ तो उस ने उस का
नाम बरीआ यानी मुसीबत रखा, क्यूँकि उस वक़्त
ख़ानदान मुसीबत में आ गया था। 24 इफ़्राईम की बेटी
सैरा ने बालाई और नशेबी बैत-हौरून और ऊज़्ज़न-
सैरा को बनवाया।

25 इफ़्राईम के मज़ीद दो बेटे रफ़ह और रसफ़ थे।
रसफ़ के हाँ तिलह पैदा हुआ, तिलह के तहन,
26 तहन के लादान, लादान के अम्मीहूद, अम्मीहूद
के इलीसमा, 27 इलीसमा के नून, नून के यशूअ।

28 इफ़्राईम की औलाद के इलाक़े में ज़ैल के मक़ाम
शामिल थे : बैत-एल गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों
समेत, मशरिक़ में नारान तक, मग़रिब में जज़र
तक गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों समेत, शिमाल
में सिकम और अय्याह तक गिर्द-ओ-नवाह की
आबादियों समेत। 29 बैत-शान, तानक, मजिद्दो और
दोर गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों समेत मनस्सी की
औलाद की मिलकियत बन गए। इन तमाम मक़ामों
में यूसुफ़ बिन इस्राईल की औलाद रहती थी।

आशर की औलाद

30 आशर के चार बेटे यिम्ना, इस्वाह, इस्वी और
बरीआ थे। उन की बहन सिरह थी।

31 बरीआ के बेटे हिबर और बिर्ज़ाइत का बाप
मल्कीएल थे।

32 हिबर के तीन बेटे यफ़्लीत, शूमीर और ख़ूताम
थे। उन की बहन सूअ थी।

33 यफ़्लीत के तीन बेटे फ़ासक, बिम्हाल और
अस्वात थे। 34 शूमीर के चार बेटे अख़ी, रूह्जा,
हुब्बा और अराम थे। 35 उस के भाई हीलम के चार
बेटे सूफ़ह, इम्ना, सलस और अमल थे।

36 सूफ़ह के 11 बेटे सूह, हर्नफ़र, सूआल, बैरी,
इम्राह,

37 बसर, हूद, सम्मा, सिल्सा, यित्रान और बईरा थे।

38 यतर के तीन बेटे यफ़ुन्ना, फ़िस्फ़ाह और अरा थे।

39 उल्ला के तीन बेटे अरख़, हन्नीएल और रिज़ियाह
थे।
40 आशर के दर्ज-ए-बाला तमाम अफ़राद अपने
अपने ख़ानदानों के सरपरस्त थे। सब चीदा मर्द,
माहिर फ़ौजी और सरदारों के सरबराह थे। नसबनामे
में 26,000 जंग करने के क़ाबिल मर्द दर्ज हैं।

बिनयमीन की औलाद

8 1 बिनयमीन के पाँच बेटे बड़े से ले कर छोटे
तक बाला, अश्बेल, अख़्रख़, 2 नूहा और रफ़ा
थे।
3 बाला के बेटे अद्दार, जीरा, अबीहूद, 4 अबीसूअ,
नामान, अख़ूह, 5 जीरा, सफ़ूफ़ान और हूराम थे।
6–7 अहूद के तीन बेटे नामान, अख़ियाह और जीरा
थे। यह उन ख़ानदानों के सरपरस्त थे जो पहले जिबा
में रहते थे लेकिन जिन्हें बाद में जिलावतन करके
मानहत में बसाया गया। उज़्ज़ा और अख़ीहूद का बाप
जीरा उन्हें वहाँ ले कर गया था।
8–9 सहरैम अपनी दो बीवियों हुशीम और बारा को
तलाक़ दे कर मोआब चला गया। वहाँ उस की बीवी
हूदस के सात बेटे यूबाब, ज़िबिया, मेसा, मल्काम,
10 यऊज़, सकियाह और मिर्मा पैदा हुए। सब बाद
में अपने ख़ानदानों के सरपरस्त बन गए। 11 पहली
बीवी हुशीम के दो बेटे अबीतूब और इल्फ़ाल पैदा
हुए।
12–14 इल्फ़ाल के आठ बेटे इबर, मिशआम, समद,
बरीआ, समा, अख़ियो, शाशक़ और यरीमोत थे।
समद ओनू, लूद और गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों
का बानी था। बरीआ और समा अय्यालोन के
बाशिन्दों के सरबराह थे। उन ही ने जात के बाशिन्दों
को निकाल दिया।
15–16 बरीआ के बेटे ज़बदियाह, अराद, इदर,
मीकाएल, इस्फ़ाह और यूख़ा थे।
17 इल्फ़ाल के मज़ीद बेटे ज़बदियाह, मसुल्लाम,
हिज़्क़ी, हिबर, 18 यिस्मरी, यिज़्लियाह और यूबाब
थे।
19–21 सिमई के बेटे यक़ीम, ज़िक्री, ज़बदी,
इलीऐनी, ज़िल्लती, इलीएल, अदायाह, बिरायाह और
सिम्रात थे।
22–25 शाशक़ के बेटे इस्फ़ान, इबर, इलीएल,
अब्दोन, ज़िक्री, हनान, हननियाह, ऐलाम,
अनतोतियाह, यफ़्दियाह और फ़नूएल थे।
26–27 यरोहाम के बेटे सम्सरी, शहारियाह,
अतलियाह, यारसियाह, इल्यास और ज़िक्री थे।
28 यह तमाम ख़ानदानी सरपरस्त नसबनामे में दर्ज
थे और यरूशलम में रहते थे।

जिबऊन में साऊल का ख़ानदान

29 जिबऊन का बाप यईएल जिबऊन में रहता था।
उस की बीवी का नाम माका था। 30 बड़े से ले कर
छोटे तक उन के बेटे अब्दोन, सूर, क़ीस, बाल,
नदब, 31 जदूर, अख़ियो, ज़कर 32 और मिक़्लोत
थे। मिक़्लोत का बेटा सिमाह था। वह भी अपने
रिश्तेदारों के साथ यरूशलम में रहते थे।
33 नैर क़ीस का बाप था और क़ीस साऊल का।
साऊल के चार बेटे यूनतन, मल्कीशूअ, अबीनदाब
और इश्बाल थे।
34 यूनतन मरीब्बाल का बाप था और मरीब्बाल
मीकाह का।
35 मीकाह के चार बेटे फ़ीतून, मलिक, तारीअ और
आख़ज़ थे।
36 आख़ज़ का बेटा यहूअद्दा था जिस के तीन बेटे
अलमत, अज़्मावत और ज़िम्री थे। ज़िम्री के हाँ मौज़ा
पैदा हुआ, 37 मौज़ा के बिनआ, बिनआ के राफ़ा,
राफ़ा के इलिआसा और इलिआसा के असील।
38 असील के छः बेटे अज़्रीक़ाम, बोकिरू,
इस्माईल, सअरियाह, अबदियाह और हनान थे।
39 असील के भाई ईशक़ के तीन बेटे बड़े से ले कर
छोटे तक औलाम, यऊस और इलीफ़लत थे।
40 औलाम के बेटे तजरिबाकार फ़ौजी थे जो महारत
से तीर चला सकते थे। उन के बहुत से बेटे और पोते

थे, कुल 150 अफ़राद। तमाम मज़कूरा आदमी उन के ख़ानदानों समेत बिनयमीन की औलाद थे।

जिलावतनी के बाद यरूशलम के बाशिन्दे

9 1 तमाम इस्राईल शाहान-ए-इस्राईल की किताब के नसबनामों में दर्ज है।

फिर यहूदाह के बाशिन्दों को बेवफ़ाई के बाइस बाबल में जिलावतन कर दिया गया। 2 जो लोग पहले वापस आ कर दुबारा शहरों में अपनी मौरूसी ज़मीन पर रहने लगे वह इमाम, लावी, रब के घर के ख़िदमतगार और बाक़ी चन्द एक इस्राईली थे। 3 यहूदाह, बिनयमीन, इफ़्राईम और मनस्सी के क़बीलों के कुछ लोग यरूशलम में जा बसे।

4 यहूदाह के क़बीले के दर्ज-ए-ज़ैल ख़ानदानी सरपरस्त वहाँ आबाद हुए :

ऊती बिन अम्मीहूद बिन उम्री बिन इम्री बिन बानी। बानी फ़ारस बिन यहूदाह की औलाद में से था।

5 सैला के ख़ानदान का पहलौठा असायाह और उस के बेटे।

6 ज़ारह के ख़ानदान का यऊएल। यहूदाह के इन ख़ानदानों की कुल तादाद 690 थी।

7–8 बिनयमीन के क़बीले के दर्ज-ए-ज़ैल ख़ानदानी सरपरस्त यरूशलम में आबाद हुए :

सल्लू बिन मसुल्लाम बिन हूदावियाह बिन सनूआह।

इबनियाह बिन यरोहाम।

ऐला बिन उज़्ज़ी बिन मिक्री।

मसुल्लाम बिन सफ़तियाह बिन रऊएल बिन इबनियाह।

9 नसबनामे के मुताबिक़ बिनयमीन के इन ख़ानदानों की कुल तादाद 956 थी।

10 जो इमाम जिलावतनी से वापस आ कर यरूशलम में आबाद हुए वह ज़ैल में दर्ज हैं :

यदायाह, यहूयरीब, यकीन, 11 अल्लाह के घर का इंचार्ज अज़रियाह बिन ख़िलक़ियाह बिन मसुल्लाम बिन सदोक़ बिन मिरायोत बिन अख़ीतूब, 12 अदायाह बिन यरोहाम बिन फ़श्हूर बिन मल्कियाह और मासी बिन अदीएल बिन यह्ज़ीराह बिन मसुल्लाम बिन मसिल्लिमित बिन इम्मेर। 13 इमामों के इन ख़ानदानों की कुल तादाद 1,760 थी। उन के मर्द रब के घर में ख़िदमत सरअन्जाम देने के क़ाबिल थे।

14 जो लावी जिलावतनी से वापस आ कर यरूशलम में आबाद हुए वह दर्ज-ए-ज़ैल हैं :

मिरारी के ख़ानदान का समायाह बिन हस्सूब बिन अज़्रीक़ाम बिन हसबियाह, 15 बक़्बक़्क़र, हरस, जलाल, मत्तनियाह बिन मीका बिन ज़िक्री बिन आसफ़, 16 अबदियाह बिन समायाह बिन जलाल बिन यदूतून और बरकियाह बिन आसा बिन इल्क़ाना। बरकियाह नतूफ़ातियों की आबादियों का रहने वाला था।

17 ज़ैल के दरबान भी वापस आए : सल्लूम, अक़्क़ूब, तल्मून, अख़ीमान और उन के भाई। सल्लूम उन का इंचार्ज था। 18 आज तक उस का ख़ानदान रब के घर के मशरिक़ में शाही दरवाज़े की पहरादारी करता है। यह दरबान लावियों के ख़ैमों के अफ़राद थे। 19 सल्लूम बिन क़ोरे बिन अबियासफ़ बिन क़ोरह अपने भाइयों के साथ क़ोरह के ख़ानदान का था। जिस तरह उन के बापदादा की ज़िम्मादारी रब की ख़ैमागाह में मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े की पहरादारी करनी थी उसी तरह उन की ज़िम्मादारी मक़्दिस के दरवाज़े की पहरादारी करनी थी। 20 क़दीम ज़माने में फ़ीन्हास बिन इलीअज़र उन पर मुक़र्रर था, और रब उस के साथ था। 21 बाद में ज़करियाह बिन मसलमियाह मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े का दरबान था।

22 कुल 212 मर्दों को दरबान की ज़िम्मादारी दी गई थी। उन के नाम उन की मक़ामी जगहों के नसबनामे में दर्ज थे। दाऊद और समूएल ग़ैबबीन ने उन के बापदादा को यह ज़िम्मादारी दी थी। 23 वह और उन की औलाद पहले रब के घर यानी मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़ों पर पहरादारी करते थे। 24 यह दरबान रब के घर के चारों तरफ़ के दरवाज़ों की पहरादारी करते थे।

25 लावी के अक्सर लोग यरूशलम में नहीं रहते
थे बल्कि बारी बारी एक हफ़्ते के लिए दीहात
से यरूशलम आते थे ताकि वहाँ अपनी ख़िदमत
सरअन्जाम दें। 26 सिर्फ़ दरबानों के चार इंचार्ज
मुसलसल यरूशलम में रहते थे। यह चार लावी
अल्लाह के घर के कमरों और ख़ज़ानों को भी सँभालते
27 और रात को भी अल्लाह के घर के इर्दगिर्द गुज़ारते
थे, क्यूँकि उन ही को उस की हिफ़ाज़त करना और
सुब्ह के वक़्त उस के दरवाज़ों को खोलना था।

28 बाज़ दरबान इबादत का सामान सँभालते थे।
जब भी उसे इस्तेमाल के लिए अन्दर और बाद
में दुबारा बाहर लाया जाता तो वह हर चीज़ को
गिन कर चैक करते थे। 29 बाज़ बाक़ी सामान और
मक़्दिस में मौजूद चीज़ों को सँभालते थे। रब के घर
में मुस्तामल बारीक मैदा, मै, ज़ैतून का तेल, बख़ूर
और बल्सान के मुख़्तलिफ़ तेल भी इन में शामिल थे।
30 लेकिन बल्सान के तेलों को तय्यार करना इमामों
की ज़िम्मादारी थी। 31 क़ोरह के ख़ानदान का लावी
मत्तितियाह जो सल्लूम का पहलौठा था क़ुर्बानी के
लिए मुस्तामल रोटी बनाने का इन्तिज़ाम चलाता था।
32 क़िहात के ख़ानदान के बाज़ लावियों के हाथ में
वह रोटियाँ बनाने का इन्तिज़ाम था जो हर हफ़्ते के
दिन को रब के लिए मख़्सूस करके रब के घर के
मुक़द्दस कमरे की मेज़ पर रखी जाती थीं।

33 मौसीक़ार भी लावी थे। उन के सरबराह बाक़ी
तमाम ख़िदमत में हिस्सा नहीं लेते थे, क्यूँकि उन्हें
हर वक़्त अपनी ही ख़िदमत सरअन्जाम देने के लिए
तय्यार रहना पड़ता था। इस लिए वह रब के घर के
कमरों में रहते थे।

34 लावियों के यह तमाम ख़ानदानी सरपरस्त
नसबनामे में दर्ज थे और यरूशलम में रहते थे।

जिबऊन में साऊल के ख़ानदान

35 जिबऊन का बाप यईएल जिबऊन में रहता था।
उस की बीवी का नाम माका था। 36 बड़े से ले कर
छोटे तक उन के बेटे अब्दोन, सूर, क़ीस, बाल, नैर,
नदब, 37 जदूर, अख़ियो, ज़करियाह और मिक़्लोत
थे। 38 मिक़्लोत का बेटा सिमाह था। वह भी अपने
भाइयों के मुक़ाबिल यरूशलम में रहते थे।

39 नैर क़ीस का बाप था और क़ीस साऊल का।
साऊल के चार बेटे यूनतन, मल्कीशूअ, अबीनदाब
और इश्बाल थे।

40 यूनतन मरीब्बाल का बाप था और मरीब्बाल
मीकाह का। 41 मीकाह के चार बेटे फ़ीतून, मलिक,
तहरेअ और आख़ज़ थे। 42 आख़ज़ का बेटा यारा
था। यारा के तीन बेटे अलमत, अज़्मावत और
ज़िम्री थे। ज़िम्री के हाँ मौज़ा पैदा हुआ, 43 मौज़ा के
बिनआ, बना के रिफ़ायाह, रिफ़ायाह के इलिआसा
और इलिआसा के असील।

44 असील के छः बेटे अज़्रीक़ाम, बोकिरू,
इस्माईल, सअरियाह, अबदियाह और हनान थे।

साऊल और अप्स के बेटों की मौत

10 1 जिल्बूअ के पहाड़ी सिलसिले पर
फ़िलिस्तियों और इस्राईलियों के दरमियान
जंग छिड़ गई। लड़ते लड़ते इस्राईली फ़रार होने
लगे, लेकिन बहुत लोग वहीं शहीद हो गए।

2 फिर फ़िलिस्ती साऊल और उस के बेटों यूनतन,
अबीनदाब और मल्कीशूअ के पास जा पहुँचे। तीनों
बेटे हलाक हो गए, 3 जबकि लड़ाई साऊल के
इर्दगिर्द उरूज तक पहुँच गई। फिर वह तीरअन्दाज़ों
का निशाना बन कर ज़ख़्मी हो गया। 4 उस ने अपने
सिलाहबर्दार को हुक्म दिया, "अपनी तलवार मियान
से खैंच कर मुझे मार डाल! वर्ना यह नामख़्तून
मुझे बेइज़्ज़त करेंगे।" लेकिन सिलाहबर्दार ने इन्कार
किया, क्यूँकि वह बहुत डरा हुआ था। आख़िर में
साऊल अपनी तलवार ले कर ख़ुद उस पर गिर गया।

5 जब सिलाहबर्दार ने देखा कि मेरा मालिक मर
गया है तो वह भी अपनी तलवार पर गिर कर मर
गया। 6 यूँ उस दिन साऊल, उस के तीन बेटे और
उस का तमाम घराना हलाक हो गए। 7 जब मैदान-ए-
यज़्रएल के इस्राईलियों को ख़बर मिली कि इस्राईली

फ़ौज भाग गई और साऊल अपने बेटों समेत मारा गया है तो वह अपने शहरों को छोड़ कर भाग निकले, और फ़िलिस्ती छोड़े हुए शहरों पर क़ब्ज़ा करके उन में बसने लगे।

8 अगले दिन फ़िलिस्ती लाशों को लूटने के लिए दुबारा मैदान-ए-जंग में आ गए। जब उन्हें जिल्बूअ के पहाड़ी सिलसिले पर साऊल और उस के तीनों बेटे मुर्दा मिले 9 तो उन्हों ने साऊल का सर काट कर उस का ज़िराबक्तर उतार लिया और क़ासिदों को अपने पूरे मुल्क में भेज कर अपने बुतों और अपनी क़ौम को फ़त्ह की इत्तिला दी। 10 साऊल का ज़िराबक्तर उन्हों ने अपने देवताओं के मन्दिर में मह्फ़ूज़ कर लिया और उस के सर को दजून देवता के मन्दिर में लटका दिया।

11 जब यबीस-जिलिआद के बाशिन्दों को ख़बर मिली कि फ़िलिस्तियों ने साऊल की लाश के साथ क्या कुछ किया है 12 तो शहर के तमाम लड़ने के क़ाबिल आदमी बैत-शान के लिए रवाना हुए। वहाँ पहुँच कर वह साऊल और उस के बेटों की लाशों को उतार कर यबीस ले गए जहाँ उन्हों ने उन की हड्डियों को यबीस के बड़े दरख़्त के साय में दफ़नाया। उन्हों ने रोज़ा रख कर पूरे हफ़्ते तक उन का मातम किया।

13 साऊल को इस लिए मारा गया कि वह रब का वफ़ादार न रहा। उस ने उस की हिदायात पर अमल न किया, यहाँ तक कि उस ने मुर्दों की रूह से राबिता करने वाली जादूगरनी से मश्वरा किया, 14 हालाँकि उसे रब से दरयाफ़्त करना चाहिए था। यही वजह है कि रब ने उसे सज़ा-ए-मौत दे कर सल्तनत को दाऊद बिन यस्सी के हवाले कर दिया।

दाऊद पूरे इस्राईल का बादशाह बन जाता है

11 1 उस वक़्त तमाम इस्राईल हब्रून में दाऊद के पास आया और कहा, "हम आप ही की क़ौम और आप ही के रिश्तेदार हैं। 2 माज़ी में भी जब साऊल बादशाह था तो आप ही फ़ौजी मुहिम्मों में इस्राईल की क़ियादत करते रहे। और रब आप के ख़ुदा ने आप से वादा भी किया है कि तू मेरी क़ौम इस्राईल का चरवाहा बन कर उस पर हुकूमत करेगा।"

3 जब इस्राईल के तमाम बुज़ुर्ग हब्रून पहुँचे तो दाऊद बादशाह ने रब के हुज़ूर उन के साथ अह्द बांधा, और उन्हों ने उसे मसह करके इस्राईल का बादशाह बना दिया। यूँ रब का समूएल की मारिफ़त किया हुआ वादा पूरा हुआ।

दाऊद यरूशलम पर क़ब्ज़ा करता है

4 बादशाह बनने के बाद दाऊद तमाम इस्राईलियों के साथ यरूशलम गया ताकि उस पर हम्ला करे। उस ज़माने में उस का नाम यबूस था, और यबूसी उस में बसते थे। 5 दाऊद को देख कर यबूसियों ने उस से कहा, "आप हमारे शहर में कभी दाख़िल नहीं हो पाएँगे!"

तो भी दाऊद ने सिय्यून के क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया जो आजकल 'दाऊद का शहर' कहलाता है। 6 यबूस पर हम्ला करने से पहले दाऊद ने कहा था, "जो भी यबूसियों पर हम्ला करने में राहनुमाई करे वह फ़ौज का कमाँडर बनेगा।" तब योआब बिन ज़रूयाह ने पहले शहर पर चढ़ाई की। चुनाँचे उसे कमाँडर मुक़र्रर किया गया।

7 यरूशलम पर फ़त्ह पाने के बाद दाऊद क़िले में रहने लगा। उस ने उसे 'दाऊद का शहर' क़रार दिया 8 और उस के इर्दगिर्द शहर को बढ़ाने लगा। दाऊद का यह तामीरी काम इर्दगिर्द के चबूतरों से शुरू हुआ और चारों तरफ़ फैलता गया जबकि योआब ने शहर का बाक़ी हिस्सा बहाल कर दिया। 9 यूँ दाऊद ज़ोर पकड़ता गया, क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज उस के साथ था।

दाऊद के मश्हूर फ़ौजी

10 दर्ज-ए-ज़ैल दाऊद के सूरमाओं की फ़हरिस्त है। पूरे इस्राईल के साथ उन्हों ने मज़बूती से उस

की बादशाही की हिमायत करके दाऊद को रब के
फ़रमान के मुताबिक़ अपना बादशाह बना दिया।

11 जो तीन अफ़्सर योआब के भाई अबीशै के ऐन
बाद आते थे उन में यसूबिआम हक्मूनी पहले नम्बर
पर आता था। एक बार उस ने अपने नेज़े से 300
आदमियों को मार दिया। 12 इन तीन अफ़्सरों में से
दूसरी जगह पर इलीअज़र बिन दोदो बिन अख़ूही
आता था। 13 यह फ़स-दम्मीम में दाऊद के साथ
था जब फ़िलिस्ती वहाँ लड़ने के लिए जमा हो गए
थे। मैदान-ए-जंग में जौ का खेत था, और लड़ते
लड़ते इस्राईली फ़िलिस्तियों के सामने भागने लगे।
14 लेकिन इलीअज़र दाऊद के साथ खेत के बीच में
फ़िलिस्तियों का मुक़ाबला करता रहा। फ़िलिस्तियों
को मारते मारते उन्हों ने खेत का दिफ़ा करके रब की
मदद से बड़ी फ़त्ह पाई।

15–16 एक और जंग के दौरान दाऊद अदुल्लाम के
ग़ार के पहाड़ी क़िले में था जबकि फ़िलिस्ती फ़ौज
ने वादी-ए-रफ़ाईम में अपनी लश्करगाह लगाई थी।
उन के दस्तों ने बैत-लहम पर भी क़ब्ज़ा कर लिया
था। दाऊद के तीस आला अफ़्सरों में से तीन उस से
मिलने आए। 17 दाऊद को शदीद प्यास लगी, और
वह कहने लगा, "कौन मेरे लिए बैत-लहम के दरवाज़े
पर के हौज़ से कुछ पानी लाएगा?"

18 यह सुन कर तीनों अफ़्सर फ़िलिस्तियों की
लश्करगाह पर हम्ला करके उस में घुस गए और लड़ते
लड़ते बैत-लहम के हौज़ तक पहुँच गए। उस से कुछ
पानी भर कर वह उसे दाऊद के पास ले आए। लेकिन
उस ने पीने से इन्कार कर दिया बल्कि उसे क़ुर्बानी के
तौर पर उंडेल कर रब को पेश किया 19 और बोला,
"अल्लाह न करे कि मैं यह पानी पियूँ। अगर ऐसा
करता तो उन आदमियों का ख़ून पीता जो अपनी जान
पर खेल कर पानी लाए हैं।" इस लिए वह उसे पीना
नहीं चाहता था। यह इन तीन सूरमाओं के ज़बरदस्त
कामों की एक मिसाल है।

20–21 योआब का भाई अबीशै मज़्कूरा तीन
सूरमाओं पर मुक़र्रर था। एक दफ़ा उस ने अपने नेज़े
से 300 आदमियों को मार डाला। तीनों की निस्बत
उस की ज़्यादा इज़्ज़त की जाती थी, लेकिन वह ख़ुद
इन में गिना नहीं जाता था।

22 बिनायाह बिन यहोयदा भी ज़बरदस्त फ़ौजी था।
वह क़ब्ज़िएल का रहने वाला था, और उस ने बहुत
दफ़ा अपनी मर्दानगी दिखाई। मोआब के दो बड़े
सूरमा उस के हाथों हलाक हुए। एक बार जब बहुत
बर्फ़ पड़ गई तो उस ने एक हौज़ में उतर कर एक
शेरबबर को मार डाला जो उस में गिर गया था।
23 एक और मौक़े पर उस का वास्ता एक मिस्री से
पड़ा जिस का क़द साढ़े सात फ़ुट था। मिस्री के
हाथ में खड्डी के शहतीर जैसा बड़ा नेज़ा था जबकि
उस के अपने पास सिर्फ़ लाठी थी। लेकिन बिनायाह
ने उस पर हम्ला करके उस के हाथ से नेज़ा छीन
लिया और उसे उस के अपने हथियार से मार डाला।
24 ऐसी बहादुरी दिखाने की बिना पर बिनायाह बिन
यहोयदा मज़्कूरा तीन आदमियों के बराबर मश्हूर
हुआ। 25 तीस अफ़्सरों के दीगर मर्दों की निस्बत उस
की ज़्यादा इज़्ज़त की जाती थी, लेकिन वह मज़्कूरा
तीन आदमियों में गिना नहीं जाता था। दाऊद ने उसे
अपने मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर किया।

26 ज़ैल के आदमी बादशाह के सूरमाओं में शामिल
थे।

योआब का भाई असाहेल, बैत-लहम का इल्हनान
बिन दोदो, 27 सम्मोत हरोरी, ख़लिस फ़लूनी,
28 तक़ूअ का ईरा बिन अक़्क़ीस, अनतोत का
अबीअज़र, 29 सिब्बकी हूसाती, ईली अख़ूही,
30 महरी नतूफ़ाती, हलिद बिन बाना नतूफ़ाती,
31 बिनयमीनी शहर जिबिआ का इत्ती बिन रीबी,
बिनायाह फ़िरआतोनी 32 नहले-जास का हूरी,
अबीएल अर्बाती, 33 अज़्मावत बहरूमी, इलियह्बा
सालबूनी, 34 हशीम जिज़ूनी के बेटे, यूनतन बिन शजी
हरारी, 35 अख़ीआम बिन सकार हरारी, इलीफ़ल
बिन ऊर, 36 हिफ़र मकीराती, अख़ियाह फ़लूनी,
37 हस्रो कर्मिली, नारी बिन अज़्बी, 38 नातन का भाई
योएल, मिब्ख़ार बिन हाजिरी, 39 सिलक़ अम्मोनी,

योआब बिन ज़रूयाह का सिलाहबर्दार नहरी बैरोती,
40 ईरा इत्री, जरीब इत्री, 41 ऊरियाह हित्ती, ज़बद
बिन अख़्ली, 42 अदीना बिन सीज़ा (रूबिन के
क़बीले का यह सरदार 30 फ़ौजियों पर मुक़र्रर था),
43 हनान बिन माका, यूसफ़त मित्नी, 44 उज़्ज़ियाह
अस्तराती, ख़ूताम अरोईरी के बेटे समा और यईएल,
45 यदीअएल बिन सिम्री, उस का भाई यूख़ा तीसी,
46 इलीएल महावी, इल्नाम के बेटे यरीबी और
यूसावियाह, यित्मा मोआबी, 47 इलीएल, ओबेद और
यासीएल मज़ोबाई।

साऊल के दौर-ए-हकूमत में दाऊद के पैरोकार

12 1 ज़ैल के आदमी सिक़्लाज में दाऊद के
साथ मिल गए, उस वक़्त जब वह साऊल
बिन क़ीस से छुपा रहता था। यह उन फ़ौजियों में
से थे जो जंग में दाऊद के साथ मिल कर लड़ते थे
2 और बेहतरीन तीरअन्दाज़ थे, क्यूँकि यह न सिर्फ़
दहने बल्कि बाएँ हाथ से भी महारत से तीर और
फ़लाख़न का पत्थर चला सकते थे। इन आदमियों
में से दर्ज-ए-ज़ैल बिनयमीन के क़बीले और साऊल
के ख़ानदान से थे।

3 उन का राहनुमा अख़ीअज़र, फिर यूआस (दोनों
समाआह जिबिआती के बेटे थे), यज़ीएल और फ़लत
(दोनों अज़्मावत के बेटे थे), बराका, याहू अनतोती,
4 इस्मायाह जिबऊनी जो दाऊद के 30 अफ़्सरों का
एक सूरमा और लीडर था, यरमियाह, यहज़ीएल,
यूहनान, यूज़बद जदीराती, 5 इलिऊज़ी, यरीमोत,
बालियाह, समरियाह और सफ़तियाह ख़रूफ़ी।

6 क़ोरह के ख़ानदान में से इल्क़ाना, यिस्सियाह,
अज़रेल, यूअज़र और यसूबिआम दाऊद के साथ थे।

7 इन के इलावा यरोहाम जदूरी के बेटे यूईला और
ज़बदियाह भी थे।

8 जद के क़बीले से भी कुछ बहादुर और
तजरिबाकार फ़ौजी साऊल से अलग हो कर दाऊद
के साथ मिल गए जब वह रेगिस्तान के क़िले में
था। यह मर्द महारत से ढाल और नेज़ा इस्तेमाल
कर सकते थे। उन के चिहरे शेरबबर के चिहरों की
मानिन्द थे, और वह पहाड़ी इलाक़े में ग़ज़ालों की
तरह तेज़ चल सकते थे।

9 उन का लीडर अज़र ज़ैल के दस आदमियों
पर मुक़र्रर था : अबदियाह, इलियाब, 10 मिस्मन्ना,
यरमियाह, 11 अत्ती, इलीएल, 12 यूहनान, इल्ज़बद,
13 यरमियाह और मक्बन्नी।

14 जद के यह मर्द सब आला फ़ौजी अफ़्सर बन
गए। उन में से सब से कमज़ोर आदमी सौ आम
फ़ौजियों का मुक़ाबला कर सकता था जबकि सब
से ताक़तवर आदमी हज़ार का मुक़ाबला कर सकता
था। 15 इन ही ने बहार के मौसम में दरया-ए-यर्दन को
पार किया, जब वह किनारों से बाहर आ गया था,
और मशरिक़ और मग़रिब की वादियों को बन्द कर
रखा।

16 बिनयमीन और यहूदाह के क़बीलों के कुछ मर्द
दाऊद के पहाड़ी क़िले में आए। 17 दाऊद बाहर
निकल कर उन से मिलने गया और पूछा, “क्या
आप सलामती से मेरे पास आए हैं? क्या आप मेरी
मदद करना चाहते हैं? अगर ऐसा है तो मैं आप का
अच्छा साथी रहूँगा। लेकिन अगर आप मुझे दुश्मनों
के हवाले करने के लिए आए हैं हालाँकि मुझ से कोई
भी ज़ुल्म नहीं हुआ है तो हमारे बापदादा का ख़ुदा इसे
देख कर आप को सज़ा दे।”

18 फिर रूह-उल-क़ुद्स 30 अफ़्सरों के राहनुमा
अमासी पर नाज़िल हुआ, और उस ने कहा, “ऐ
दाऊद, हम तेरे ही लोग हैं। ऐ यस्सी के बेटे, हम
तेरे साथ हैं। सलामती, सलामती तुझे हासिल हो,
और सलामती उन्हें हासिल हो जो तेरी मदद करते
हैं। क्यूँकि तेरा ख़ुदा तेरी मदद करेगा।” यह सुन कर
दाऊद ने उन्हें क़बूल करके अपने छापामार दस्तों
पर मुक़र्रर किया।

19 मनस्सी के क़बीले के कुछ मर्द भी साऊल से
अलग हो कर दाऊद के पास आए। उस वक़्त वह
फ़िलिस्तियों के साथ मिल कर साऊल से लड़ने जा
रहा था, लेकिन बाद में उसे मैदान-ए-जंग में आने की

इजाज़त न मिली। क्यूँकि फ़िलिस्ती सरदारों ने आपस में मश्वरा करने के बाद उसे यह कह कर वापस भेज दिया कि ख़तरा है कि यह हमें मैदान-ए-जंग में छोड़ कर अपने पुराने मालिक साऊल से दुबारा मिल जाए। फिर हम तबाह हो जाएंगे।

20 जब दाऊद सिक़्लाज वापस जा रहा था तो मनस्सी के क़बीले के दर्ज-ए-ज़ैल अफ़्सर साऊल से अलग हो कर उस के साथ हो लिए : अदना, यूज़बद, यदीअएल, मीकाएल, यूज़बद, इलीहू और ज़िल्लती। मनस्सी में हर एक को हज़ार हज़ार फ़ौजियों पर मुक़र्रर किया गया था। 21 उन्हों ने लूटने वाले अमालीक़ी दस्तों को पकड़ने में दाऊद की मदद की, क्यूँकि वह सब दिलेर और क़ाबिल फ़ौजी थे। सब उस की फ़ौज में अफ़्सर बन गए।

22 रोज़-ब-रोज़ लोग दाऊद की मदद करने के लिए आते रहे, और होते होते उस की फ़ौज अल्लाह की फ़ौज जैसी बड़ी हो गई।

हब्रून में दाऊद की फ़ौज

23 दर्ज-ए-ज़ैल उन तमाम फ़ौजियों की फ़हरिस्त है जो हब्रून में दाऊद के पास आए ताकि उसे साऊल की जगह बादशाह बनाएँ, जिस तरह रब ने हुक्म दिया था।

24 यहूदाह के क़बीले के ढाल और नेज़े से लेस 6,800 मर्द थे।

25 शमाऊन के क़बीले के 7,100 तजरिबाकार फ़ौजी थे।

26 लावी के क़बीले के 4,600 मर्द थे। 27 उन में हारून के ख़ानदान का सरपरस्त यहोयदा भी शामिल था जिस के साथ 3,700 आदमी थे। 28 सदोक़ नामी एक दिलेर और जवान फ़ौजी भी शामिल था। उस के साथ उस के अपने ख़ानदान के 22 अफ़्सर थे।

29 साऊल के क़बीले बिनयमीन के भी 3,000 मर्द थे, लेकिन इस क़बीले के अक्सर फ़ौजी अब तक साऊल के ख़ानदान के साथ लिपटे रहे।

30 इफ़्राईम के क़बीले के 20,800 फ़ौजी थे। सब अपने ख़ानदानों में असर-ओ-रसूख़ रखने वाले थे।

31 मनस्सी के आधे क़बीले के 18,000 मर्द थे। उन्हें दाऊद को बादशाह बनाने के लिए चुन लिया गया था।

32 इश्कार के क़बीले के 200 अफ़्सर अपने दस्तों के साथ थे। यह लोग वक़्त की ज़रूरत समझ कर जानते थे कि इस्राईल को क्या करना है।

33 ज़बूलून के क़बीले के 50,000 तजरिबाकार फ़ौजी थे। वह हर हथियार से लेस और पूरी वफ़ादारी से दाऊद के लिए लड़ने के लिए तय्यार थे।

34 नफ़्ताली के क़बीले के 1,000 अफ़्सर थे। उन के तहत ढाल और नेज़े से मुसल्लह 37,000 आदमी थे।

35 दान के क़बीले के 28,600 मर्द थे जो सब लड़ने के लिए मुस्तइद थे।

36 आशर के क़बीले के 40,000 मर्द थे जो सब लड़ने के लिए तय्यार थे।

37 दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में आबाद क़बीलों रूबिन, जद और मनस्सी के आधे हिस्से के 1,20,000 मर्द थे। हर एक हर क़िस्म के हथियार से लेस था।

38 सब तर्तीब से हब्रून आए ताकि पूरे अज़्म के साथ दाऊद को पूरे इस्राईल का बादशाह बनाएँ। बाक़ी तमाम इस्राईली भी मुत्तफ़िक़ थे कि दाऊद हमारा बादशाह बन जाए। 39 यह फ़ौजी तीन दिन तक दाऊद के पास रहे जिस दौरान उन के क़बाइली भाई उन्हें खाने-पीने की चीज़ें मुहय्या करते रहे। 40 क़रीब के रहने वालों ने भी इस में उन की मदद की। इश्कार, ज़बूलून और नफ़्ताली तक के लोग अपने गधों, ऊँटों, ख़च्चरों और बैलों पर खाने की चीज़ें लाद कर वहाँ पहुँचे। मैदा, अन्जीर और किशमिश की टिक्कियाँ, मै, तेल, बैल और भेड़-बकरियाँ बड़ी मिक़्दार में हब्रून लाई गईं, क्यूँकि तमाम इस्राईली ख़ुशी मना रहे थे।

दाऊद अह्द का सन्दूक़ यरूशलम में लाना चाहता है

13 1 दाऊद ने तमाम अफ़सरों से मश्वरा किया।
उन में हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर
मुक़र्रर अफ़सर शामिल थे। 2 फिर उस ने इस्राईल की
पूरी जमाअत से कहा, "अगर आप को मन्ज़ूर हो और
रब हमारे ख़ुदा की मर्ज़ी हो तो आएँ हम पूरे मुल्क के
इस्राईली भाइयों को दावत दें कि आ कर हमारे साथ
जमा हो जाएँ। वह इमाम और लावी भी शरीक हों जो
अपने अपने शहरों और चरागाहों में बसते हैं। 3 फिर
हम अपने ख़ुदा के अह्द का सन्दूक़ दुबारा अपने
पास वापस लाएँ, क्यूँकि साऊल के दौर-ए-हुकूमत
में हम उस की फ़िक्र नहीं करते थे।"

4 पूरी जमाअत मुत्तफ़िक़ हुई, क्यूँकि यह मन्सूबा
सब को दुरुस्त लगा। 5 चुनाँचे दाऊद ने पूरे इस्राईल
को जुनूब में मिस्र के सैहूर से ले कर शिमाल में
लबो-हमात तक बुलाया ताकि सब मिल कर अल्लाह
के अह्द का सन्दूक़ क़िर्यत-यारीम से यरूशलम ले
जाएँ। 6 फिर वह उन के साथ यहूदाह के बाला यानी
क़िर्यत-यारीम गया ताकि रब ख़ुदा का सन्दूक़ उठा
कर यरूशलम ले जाएँ, वही सन्दूक़ जिस पर रब
के नाम का ठप्पा लगा है और जहाँ वह सन्दूक़
के ऊपर करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन
है। 7 क़िर्यत-यारीम पहुँच कर लोगों ने अल्लाह के
सन्दूक़ को अबीनदाब के घर से निकाल कर एक नई
बैलगाड़ी पर रख दिया, और उज़्ज़ा और अख़ियो उसे
यरूशलम की तरफ़ ले जाने लगे। 8 दाऊद और तमाम
इस्राईली गाड़ी के पीछे चल पड़े। सब अल्लाह के हुज़ूर
पूरे ज़ोर से ख़ुशी मनाने लगे। जूनीपर की लकड़ी के
मुख़्तलिफ़ साज़ भी बजाए जा रहे थे। फ़िज़ा सितारों,
सरोदों, दफ़ों, झाँझों और तुरमों की आवाज़ों से गूँज
उठी।

9 वह गन्दुम गाहने की एक जगह पर पहुँच गए जिस
के मालिक का नाम कैदून था। वहाँ बैल अचानक
बेकाबू हो गए। उज़्ज़ा ने जल्दी से अह्द का सन्दूक़
पकड़ लिया ताकि वह गिर न जाए। 10 उसी लम्हे रब
का ग़ज़ब उस पर नाज़िल हुआ, क्यूँकि उस ने अह्द
के सन्दूक़ को छूने की जुरअत की थी। वहीं अल्लाह
के हुज़ूर उज़्ज़ा गिर कर हलाक हुआ। 11 दाऊद को
बड़ा रंज हुआ कि रब का ग़ज़ब उज़्ज़ा पर यूँ टूट
पड़ा है। उस वक़्त से उस जगह का नाम परज़-उज़्ज़ा
यानी 'उज़्ज़ा पर टूट पड़ना' है।

12 उस दिन दाऊद को अल्लाह से ख़ौफ़ आया। उस
ने सोचा, "मैं किस तरह अल्लाह का सन्दूक़ अपने
पास पहुँचा सकूँगा?" 13 चुनाँचे उस ने फ़ैसला किया
कि हम अहद का सन्दूक़ यरूशलम नहीं ले जाएंगे
बल्कि उसे ओबेद-अदोम जाती के घर में महफ़ूज़
रखेंगे। 14 वहाँ वह तीन माह तक पड़ा रहा। इन तीन
महीनों के दौरान रब ने ओबेद-अदोम के घराने और
उस की पूरी मिलकियत को बरकत दी।

दाऊद की तरक़्क़ी

14 1 एक दिन सूर के बादशाह हीराम ने दाऊद
के पास वफ़द भेजा। राज और बढ़ई भी
साथ थे। उन के पास देवदार की लकड़ी थी ताकि
दाऊद के लिए महल बनाएँ। 2 यूँ दाऊद ने जान
लिया कि रब ने मुझे इस्राईल का बादशाह बना कर
मेरी बादशाही अपनी क़ौम इस्राईल की ख़ातिर बहुत
सरफ़राज़ कर दी है।

3 यरूशलम में जा बसने के बाद दाऊद ने
मज़ीद बीवियों से शादी की। नतीजे में यरूशलम
में उस के कई बेटे-बेटियाँ पैदा हुए। 4 जो बेटे
वहाँ पैदा हुए वह यह थे : सम्मूअ, सोबाब,
नातन, सुलेमान, 5 इब्हार, इलीसूअ, इल्फ़लत,
6 नौजा, नफ़ज, यफ़ीअ, 7 इलीसमा, बाल-यदा और
इलीफ़लत।

फ़िलिस्तियों पर फ़त्ह

8 जब फ़िलिस्तियों को इत्तिला मिली कि दाऊद को
मसह करके इस्राईल का बादशाह बनाया गया है तो
उन्हों ने अपने फ़ौजियों को इस्राईल में भेज दिया
ताकि उसे पकड़ लें। जब दाऊद को पता चल गया

तो वह उन का मुक़ाबला करने के लिए गया। 9 जब
फ़िलिस्ती इस्राईल में पहुँच कर वादी-ए-रफ़ाईम में
फैल गए 10 तो दाऊद ने रब से दरयाफ़्त किया,
“क्या मैं फ़िलिस्तियों पर हम्ला करूँ? क्या तू मुझे
उन पर फ़त्ह बख़्शेगा?” रब ने जवाब दिया, “हाँ,
उन पर हम्ला कर! मैं उन्हें तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा।”
11 चुनाँचे दाऊद अपने फ़ौजियों को ले कर बाल-
पराज़ीम गया। वहाँ उस ने फ़िलिस्तियों को शिकस्त
दी। बाद में उस ने गवाही दी, “जितने ज़ोर से बन्द
के टूट जाने पर पानी उस से फूट निकलता है उतने
ज़ोर से आज अल्लाह मेरे वसीले से दुश्मन की सफ़ों में
से फूट निकला है।” चुनाँचे उस जगह का नाम बाल-
पराज़ीम यानी ‘फूट निकलने का मालिक’ पड़ गया।
12 फ़िलिस्ती अपने देवताओं को छोड़ कर भाग गए,
और दाऊद ने उन्हें जला देने का हुक्म दिया।

13 एक बार फिर फ़िलिस्ती आ कर वादी-ए-रफ़ाईम
में फैल गए। 14 इस दफ़ा जब दाऊद ने अल्लाह से
दरयाफ़्त किया तो उस ने जवाब दिया, “इस मर्तबा
उन का सामना मत करना बल्कि उन के पीछे जा
कर बका के दरख़्तों के सामने उन पर हम्ला कर।
15 जब उन दरख़्तों की चोटियों से क़दमों की चाप
सुनाई दे तो ख़बरदार! यह इस का इशारा होगा कि
अल्लाह ख़ुद तेरे आगे आगे चल कर फ़िलिस्तियों को
मारने के लिए निकल आया है।” 16 दाऊद ने ऐसा
ही किया और नतीजे में फ़िलिस्तियों को शिकस्त दे
कर जिबऊन से ले कर जज़र तक उन का ताक़्क़ुब
किया।

17 दाऊद की शुहरत तमाम ममालिक में फैल गई।
रब ने तमाम क़ौमों के दिलों में दाऊद का ख़ौफ़ डाल
दिया।

यरूशलम में अह्द के सन्दूक़ के लिए तय्यारियाँ

15 1 यरूशलम के उस हिस्से में जिस का नाम
‘दाऊद का शहर’ पड़ गया था दाऊद ने
अपने लिए चन्द इमारतें बनवाईं। उस ने अल्लाह के
सन्दूक़ के लिए भी एक जगह तय्यार करके वहाँ
ख़ैमा लगा दिया। 2 फिर उस ने हुक्म दिया, “सिवाए
लावियों के किसी को भी अल्लाह का सन्दूक़ उठाने
की इजाज़त नहीं। क्यूँकि रब ने इन ही को रब का
सन्दूक़ उठाने और हमेशा के लिए उस की ख़िदमत
करने के लिए चुन लिया है।”

3 इस के बाद दाऊद ने तमाम इस्राईल को यरूशलम
बुलाया ताकि वह मिल कर रब का सन्दूक़ उस जगह
ले जाएँ जो उस ने उस के लिए तय्यार कर रखी थी।
4 बादशाह ने हारून और बाक़ी लावियों की औलाद
को भी बुलाया। 5 दर्ज-ए-ज़ैल उन लावी सरपरस्तों
की फ़हरिस्त है जो अपने रिश्तेदारों को ले कर आए।

क़िहात के ख़ानदान से ऊरीएल 120 मर्दों समेत,
6 मिरारी के ख़ानदान से असायाह 220 मर्दों समेत,
7 जैर्सोम के ख़ानदान से योएल 130 मर्दों समेत,
8 इलीसफ़न के ख़ानदान से समायाह 200 मर्दों
समेत,
9 हब्रून के ख़ानदान से इलीएल 80 मर्दों समेत,
10 उज़्ज़ीएल के ख़ानदान से अम्मीनदाब 112 मर्दों
समेत।

11 दाऊद ने दोनों इमामों सदोक़ और अबियातर
को मज़कूरा छः लावी सरपरस्तों समेत अपने पास
बुला कर 12 उन से कहा, “आप लावियों के सरबराह
हैं। लाज़िम है कि आप अपने क़बाइली भाइयों के
साथ अपने आप को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करके रब
इस्राईल के ख़ुदा के सन्दूक़ को उस जगह ले जाएँ
जो मैं ने उस के लिए तय्यार कर रखी है। 13 पहली
मर्तबा जब हम ने उसे यहाँ लाने की कोशिश की तो
यह आप लावियों के ज़रीए न हुआ, इस लिए रब
हमारे ख़ुदा का क़हर हम पर टूट पड़ा। उस वक़्त हम
ने उस से दरयाफ़्त नहीं किया था कि उसे उठा कर
ले जाने का क्या मुनासिब तरीक़ा है।” 14 तब इमामों
और लावियों ने अपने आप को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
करके रब इस्राईल के ख़ुदा के सन्दूक़ को यरूशलम
लाने के लिए तय्यार किया। 15 फिर लावी अल्लाह के
सन्दूक़ को उठाने की लकड़ियों से अपने कंधों पर

यूँ ही रख कर चल पड़े जिस तरह मूसा ने रब के
कलाम के मुताबिक़ फ़रमाया था।
16 दाऊद ने लावी सरबराहों को यह हुक्म भी
दिया, “अपने क़बीले में से ऐसे आदमियों को चुन
लें जो साज़, सितार, सरोद और झाँझ बजाते हुए
ख़ुशी के गीत गाएँ।” 17 उस ज़िम्मादारी के लिए
लावियों ने ज़ैल के आदमियों को मुक़र्रर किया
: हैमान बिन योएल, उस का भाई आसफ़ बिन
बरकियाह और मिरारी के ख़ानदान का ऐतान बिन
कौसायाह। 18 दूसरे मक़ाम पर उन के यह भाई
आए : ज़करियाह, याज़ीएल, समीरामोत, यहीएल,
उन्नी, इलियाब, बिनायाह, मासियाह, मत्तितियाह,
इलीफ़लेहू, मिक़्निया, ओबेद-अदोम और यईएल।
यह दरबान थे। 19 हैमान, आसफ़ और ऐतान
गुलूकार थे, और उन्हें पीतल के झाँझ बजाने
की ज़िम्मादारी दी गई। 20 ज़करियाह, अज़ीएल,
समीरामोत, यहीएल, उन्नी, इलियाब, मासियाह और
बिनायाह को अलामूत के तर्ज़ पर सितार बजाना
था। 21 मत्तितियाह, इलीफ़लेहू, मिक़्निया, ओबेद-
अदोम, यईएल और अज़ज़ियाह को शमीनीत के तर्ज़
पर सरोद बजाने के लिए चुना गया।
22 कननियाह ने लावियों की कवाइर की राहनुमाई
की, क्यूँकि वह इस में माहिर था।
23–24 बरकियाह, इल्क़ाना, ओबेद-अदोम और
यहियाह अह्द के सन्दूक़ के दरबान थे। सबनियाह,
यूसफ़त, नतनीएल, अमासी, ज़करियाह, बिनायाह
और इलीअज़र को तुरम बजा कर अल्लाह के सन्दूक़
के आगे आगे चलने की ज़िम्मादारी दी गई। सातों
इमाम थे।

दाऊद अह्द का सन्दूक़ यरूशलम में ले आता है

25 फिर दाऊद, इस्राईल के बुज़ुर्ग और हज़ार हज़ार
फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़्सर ख़ुशी मनाते हुए निकल
कर ओबेद-अदोम के घर गए ताकि रब के अह्द
का सन्दूक़ वहाँ से ले कर यरूशलम पहुँचाएँ।
26 जब ज़ाहिर हुआ कि अल्लाह अह्द के सन्दूक़ को
उठाने वाले लावियों की मदद कर रहा है तो सात
जवान साँडों और सात मेंढों को क़ुर्बान किया गया।
27 दाऊद बारीक कतान का लिबास पहने हुए था,
और इस तरह अह्द का सन्दूक़ उठाने वाले लावी,
गुलूकार और कवाइर का लीडर कननियाह भी। इस
के इलावा दाऊद कतान का बालापोश पहने हुए
था। 28 तमाम इस्राईली ख़ुशी के नारे लगा लगा कर,
नरसिंगे और तुरम फूँक फूँक कर और झाँझ, सितार
और सरोद बजा बजा कर रब के अह्द का सन्दूक़
यरूशलम लाए।
29 रब का अह्द का सन्दूक़ दाऊद के शहर में
दाख़िल हुआ तो दाऊद की बीवी मीकल बिन्त
साऊल खिड़की में से जुलूस को देख रही थी। जब
बादशाह कूदता और नाचता हुआ नज़र आया तो
मीकल ने उसे हक़ीर जाना।

16 1 अल्लाह का सन्दूक़ उस तम्बू के दरमियान
में रखा गया जो दाऊद ने उस के लिए
लगवाया था। फिर उन्हों ने अल्लाह के हुज़ूर भस्म होने
वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश कीं। 2 इस के
बाद दाऊद ने क़ौम को रब के नाम से बरकत दे कर
3 हर इस्राईली मर्द और औरत को एक रोटी, खजूर
की एक टिक्की और किशमिश की एक टिक्की दे दी।
4 उस ने कुछ लावियों को रब के सन्दूक़ के सामने
ख़िदमत करने की ज़िम्मादारी दी। उन्हें रब इस्राईल
के ख़ुदा की तम्जीद और हम्द-ओ-सना करनी थी।
5 उन का सरबराह आसफ़ झाँझ बजाता था। उस
का नाइब ज़करियाह था। फिर यईएल, समीरामोत,
यहीएल, मत्तितियाह, इलियाब, बिनायाह, ओबेद-
अदोम और यईएल थे जो सितार और सरोद बजाते
थे। 6 बिनायाह और यहज़ीएल इमामों की ज़िम्मादारी
अल्लाह के अह्द के सन्दूक़ के सामने तुरम बजाना
थी।

शुक्र का गीत

7 उस दिन दाऊद ने पहली दफ़ा आसफ़ और उस
के साथी लावियों के हवाले ज़ैल का गीत करके उन्हें
रब की सताइश करने की ज़िम्मादारी दी।

8 "रब का शुक्र करो और उस का नाम पुकारो!
अक़्वाम में उस के कामों का एलान करो।
9 साज़ बजा कर उस की मद्हसराई करो। उस के
तमाम अजाइब के बारे में लोगों को बताओ।
10 उस के मुक़द्दस नाम पर फ़ख़र करो। रब के
तालिब दिल से ख़ुश हों।
11 रब और उस की क़ुदरत की दरयाफ़्त करो, हर
वक़्त उस के चिहरे के तालिब रहो।
12 जो मोजिज़े उस ने किए उन्हें याद करो। उस के
इलाही निशान और उस के मुँह के फ़ैसले दुहराते
रहो।
13 तुम जो उस के ख़ादिम इस्राईल की औलाद और
याक़ूब के फ़र्ज़न्द हो, जो उस के बर्गुज़ीदा लोग हो,
तुम्हें सब कुछ याद रहे!

14 वही रब हमारा ख़ुदा है, वही पूरी दुनिया की
अदालत करता है।
15 वह हमेशा अपने अह्द का ख़याल रखता है, उस
कलाम का जो उस ने हज़ार पुश्तों के लिए फ़रमाया
था।
16 यह वह अह्द है जो उस ने इब्राहीम से बांधा,
वह वादा जो उस ने क़सम खा कर इस्हाक़ से किया
था।
17 उस ने उसे याक़ूब के लिए क़ाइम किया ताकि
वह उस के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे, उस ने तस्दीक़
की कि यह मेरा इस्राईल से अबदी अह्द है।
18 साथ साथ उस ने फ़रमाया, 'मैं तुझे मुल्क-ए-
कनआन दूँगा। यह तेरी मीरास का हिस्सा होगा।'
19 उस वक़्त वह तादाद में कम और थोड़े ही थे
बल्कि मुल्क में अजनबी ही थे।
20 अब तक वह मुख़्तलिफ़ क़ौमों और सल्तनतों
में घूमते फिरते थे।
21 लेकिन अल्लाह ने उन पर किसी को ज़ुल्म करने
न दिया, और उन की ख़ातिर उस ने बादशाहों को
डाँटा,
22 'मेरे मसह किए हुए ख़ादिमों को मत छेड़ना, मेरे
नबियों को नुक़्सान मत पहुँचाना।'

23 ऐ पूरी दुनिया, रब की तम्जीद में गीत गा! रोज़-
ब-रोज़ उस की नजात की ख़ुशख़बरी सुना।
24 क़ौमों में उस का जलाल और तमाम उम्मतों में
उस के अजाइब बयान करो।
25 क्यूँकि रब अज़ीम और सताइश के बहुत लाइक़
है। वह तमाम माबूदों से महीब है।
26 क्यूँकि दीगर क़ौमों के तमाम माबूद बुत ही हैं
जबकि रब ने आसमान को बनाया।
27 उस के हुज़ूर शान-ओ-शौकत, उस की
सुकूनतगाह में क़ुदरत और जलाल है।
28 ऐ क़ौमों के क़बीलो, रब की तम्जीद करो, रब
के जलाल और क़ुदरत की सताइश करो।
29 रब के नाम को जलाल दो। क़ुर्बानी ले कर उस
के हुज़ूर आओ। मुक़द्दस लिबास से आरास्ता हो कर
रब को सिज्दा करो।
30 पूरी दुनिया उस के सामने लरज़ उठे। यक़ीनन
दुनिया मज़बूती से क़ाइम है और नहीं डगमगाएगी।
31 आसमान शादमान हो, और ज़मीन जश्न मनाए।
क़ौमों में कहा जाए कि रब बादशाह है।
32 समुन्दर और जो कुछ उस में है ख़ुशी से गरज
उठे, मैदान और जो कुछ उस में है बाग़ बाग़ हो।
33 फिर जंगल के दरख़्त रब के सामने शादियाना
बजाएंगे, क्यूँकि वह आ रहा है, वह ज़मीन की
अदालत करने आ रहा है।

34 रब का शुक्र करो, क्यूँकि वह भला है, और उस
की शफ़क़त अबदी है।

35 उस से इल्तिमास करो, ‘ऐ हमारी नजात के ख़ुदा,
हमें बचा! हमें जमा करके दीगर क़ौमों के हाथ से
छुड़ा। तब ही हम तेरे मुक़द्दस नाम की सताइश करेंगे
और तेरे क़ाबिल-ए-तारीफ़ कामों पर फ़ख़्र करेंगे।’
36 अज़ल से अबद तक रब, इस्राईल के ख़ुदा की
हम्द हो!”

तब पूरी क़ौम ने “आमीन” और “रब की हम्द हो”
कहा।

लावियों की ज़िम्मादारियाँ

37 दाऊद ने आसफ़ और उस के साथी लावियों को
रब के अह्द के सन्दूक़ के सामने छोड़ कर कहा,
“आइन्दा यहाँ बाक़ाइदगी से रोज़ाना की ज़रूरी
ख़िदमत करते जाएँ।”
38 इस गुरोह में ओबेद-अदोम और मज़ीद 68 लावी
शामिल थे। ओबेद-अदोम बिन यदूतून और हूसा
दरबान बन गए।
39 लेकिन सदोक़ इमाम और उस के साथी इमामों
को दाऊद ने रब की उस सुकूनतगाह के पास छोड़
दिया जो जिबऊन की पहाड़ी पर थी। 40 क्यूँकि
लाज़िम था कि वह वहाँ हर सुब्ह और शाम को
भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश करें और बाक़ी तमाम
हिदायात पर अमल करें जो रब की तरफ़ से इस्राईल
के लिए शरीअत में बयान की गई हैं। 41 दाऊद ने
हैमान, यदूतून और मज़ीद कुछ चीदा लावियों को
भी जिबऊन में उन के पास छोड़ दिया। वहाँ उन की
ख़ास ज़िम्मादारी रब की हम्द-ओ-सना करना थी,
क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है। 42 उन के पास
तुरम, झाँझ और बाक़ी ऐसे साज़ थे जो अल्लाह की
तारीफ़ में गाए जाने वाले गीतों के साथ बजाए जाते
थे। यदूतून के बेटों को दरबान बनाया गया।
43 जश्न के बाद सब लोग अपने अपने घर चले गए।
दाऊद भी अपने घर लौटा ताकि अपने ख़ानदान को
बरकत दे कर सलाम करे।

रब दाऊद के लिए अबदी बादशाही का वादा करता है

17 1 दाऊद बादशाह सलामती से अपने महल
में रहने लगा। एक दिन उस ने नातन नबी
से बात की, “देखें, मैं यहाँ देवदार के महल में रहता
हूँ जबकि रब के अह्द का सन्दूक़ अब तक तम्बू में
पड़ा है। यह मुनासिब नहीं!” 2 नातन ने बादशाह की
हौसलाअफ़्ज़ाई की, “जो कुछ भी आप करना चाहते
हैं वह करें। अल्लाह आप के साथ है।”

रब दाऊद के लिए अबदी बादशाही का वादा करता है

3 लेकिन उसी रात अल्लाह नातन से हमकलाम हुआ,
4 “मेरे ख़ादिम दाऊद के पास जा कर उसे बता दे
कि रब फ़रमाता है, ‘तू मेरी रिहाइश के लिए मकान
तामीर नहीं करेगा। 5 आज तक मैं किसी मकान में
नहीं रहा। जब से मैं इस्राईलियों को मिस्र से निकाल
लाया उस वक़्त से मैं ख़ैमे में रह कर जगह-ब-जगह
फिरता रहा हूँ। 6 जिस दौरान मैं तमाम इस्राईलियों के
साथ इधर उधर फिरता रहा क्या मैं ने इस्राईल के उन
राहनुमाओं से कभी इस नाते से शिकायत की जिन्हें
मैं ने अपनी क़ौम की गल्लाबानी करने का हुक्म दिया
था? क्या मैं ने उन में से किसी से कहा कि तुम ने मेरे
लिए देवदार का घर क्यूँ नहीं बनाया?’
7 चुनाँचे मेरे ख़ादिम दाऊद को बता दे, ‘रब्ब-उल-
अफ़्वाज फ़रमाता है कि मैं ही ने तुझे चरागाह में भेड़ों
की गल्लाबानी करने से फ़ारिग़ करके अपनी क़ौम
इस्राईल का बादशाह बना दिया है। 8 जहाँ भी तू ने
क़दम रखा वहाँ मैं तेरे साथ रहा हूँ। तेरे देखते देखते
मैं ने तेरे तमाम दुश्मनों को हलाक कर दिया है। अब
मैं तेरा नाम सरफ़राज़ कर दूँगा, वह दुनिया के सब
से अज़ीम आदमियों के नामों के बराबर ही होगा।
9 और मैं अपनी क़ौम इस्राईल के लिए एक वतन
मुहय्या करूँगा, पौदे की तरह उन्हें यूँ लगा दूँगा कि
वह जड़ पकड़ कर महफ़ूज़ रहेंगे और कभी बेचैन

नहीं होंगे। बेदीन क़ौमें उन्हें उस तरह नहीं दबाएँगी
जिस तरह माज़ी में किया करती थीं, 10 उस वक़्त
से जब मैं क़ौम पर क़ाज़ी मुक़र्रर करता था। मैं तेरे
दुश्मनों को ख़ाक में मिला दूँगा। आज मैं फ़रमाता
हूँ कि रब ही तेरे लिए घर बनाएगा। 11 जब तू बूढ़ा
हो कर कूच कर जाएगा और अपने बापदादा से जा
मिलेगा तो मैं तेरी जगह तेरे बेटों में से एक को तख़्त
पर बिठा दूँगा। उस की बादशाही को मैं मज़बूत बना
दूँगा। 12 वही मेरे लिए घर तामीर करेगा, और मैं उस
का तख़्त अबद तक क़ाइम रखूँगा। 13 मैं उस का
बाप हूँगा और वह मेरा बेटा होगा। मेरी नज़र-ए-करम
साऊल पर न रही, लेकिन मैं उसे तेरे बेटे से कभी नहीं
हटाऊँगा कभी नहीं होने दूँगा कि वह तेरे बेटे से दूर
हो जाए। 14 मैं उसे अपने घराने और अपनी बादशाही
पर हमेशा क़ाइम रखूँगा, उस का तख़्त हमेशा मज़बूत
रहेगा'।"

दाऊद की शुक्रगुज़ारी

15 नातन ने दाऊद के पास जा कर उसे सब कुछ
सुनाया जो रब ने उसे रोया में बताया था। 16 तब
दाऊद अह्द के सन्दूक़ के पास गया और रब के
हुज़ूर बैठ कर दुआ करने लगा,

"ऐ रब ख़ुदा, मैं कौन हूँ और मेरा ख़ानदान क्या
हैसियत रखता है कि तू ने मुझे यहाँ तक पहुँचाया है?
17 और अब ऐ अल्लाह, तू मुझे और भी ज़्यादा अता
करने को है, क्यूँकि तू ने अपने ख़ादिम के घराने के
मुस्तक़बिल के बारे में भी वादा किया है। ऐ रब ख़ुदा,
तू ने यूँ मुझ पर निगाह डाली है गोया कि मैं कोई बहुत
अहम बन्दा हूँ। 18–19 लेकिन मैं मज़ीद क्या कहूँ जब
तू ने यूँ अपने ख़ादिम की इज़्ज़त की है? ऐ रब, तू
तो अपने ख़ादिम को जानता है। तू ने अपने ख़ादिम
की ख़ातिर और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ यह अज़ीम
काम करके इन अज़ीम वादों की इत्तिला दी है।

20 ऐ रब, तुझ जैसा कोई नहीं है। हम ने अपने कानों
से सुन लिया है कि तेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है।
21 दुनिया में कौन सी क़ौम तेरी उम्मत इस्राईल की
मानिन्द है? तू ने इसी एक क़ौम का फ़िद्या दे कर उसे
ग़ुलामी से छुड़ाया और अपनी क़ौम बना लिया। तू
ने इस्राईल के वास्ते बड़े और हैबतनाक काम करके
अपने नाम की शुहरत फैला दी। हमें मिस्र से रिहा
करके तू ने क़ौमों को हमारे आगे से निकाल दिया।
22 ऐ रब, तू इस्राईल को हमेशा के लिए अपनी क़ौम
बना कर उन का ख़ुदा बन गया है।

23 चुनाँचे ऐ रब, जो बात तू ने अपने ख़ादिम और
उस के घराने के बारे में की है उसे अबद तक क़ाइम
रख और अपना वादा पूरा कर। 24 तब वह मज़बूत
रहेगा और तेरा नाम अबद तक मश्हूर रहेगा। फिर
लोग तस्लीम करेंगे कि इस्राईल का ख़ुदा रब्ब-उल-
अफ़्वाज वाक़ई इस्राईल का ख़ुदा है, और तेरे ख़ादिम
दाऊद का घराना भी अबद तक तेरे हुज़ूर क़ाइम
रहेगा। 25 ऐ मेरे ख़ुदा, तू ने अपने ख़ादिम के कान को
इस बात के लिए खोल दिया है। तू ही ने फ़रमाया,
'मैं तेरे लिए घर तामीर करूँगा।' सिर्फ़ इसी लिए तेरे
ख़ादिम ने यूँ तुझ से दुआ करने की जुरअत की है।
26 ऐ रब, तू ही ख़ुदा है। तू ने अपने ख़ादिम से इन
अच्छी चीज़ों का वादा किया है। 27 अब तू अपने
ख़ादिम के घराने को बरकत देने पर राज़ी हो गया है
ताकि वह हमेशा तक तेरे सामने क़ाइम रहे। क्यूँकि
तू ही ने उसे बरकत दी है, इस लिए वह अबद तक
मुबारक रहेगा।"

दाऊद की जंगें

18 1 फिर ऐसा वक़्त आया कि दाऊद ने
फ़िलिस्तियों को शिकस्त दे कर उन्हें अपने
ताबे कर लिया और जात शहर पर गिर्द-ओ-नवाह की
आबादियों समेत क़ब्ज़ा कर लिया।

2 उस ने मोआबियों पर भी फ़त्ह पाई, और वह उस
के ताबे हो कर उसे ख़राज देने लगे।

3 दाऊद ने शिमाली शाम के शहर ज़ोबाह के
बादशाह हददअज़र को भी हमात के क़रीब हरा
दिया जब हददअज़र दरया-ए-फ़ुरात पर क़ाबू पाने
के लिए निकल आया था। 4 दाऊद ने 1,000 रथों,

7,000 घुड़सवारों और 20,000 पियादा सिपाहियों
को गिरिफ़्तार कर लिया। रथों के 100 घोड़ों को उस
ने अपने लिए महफ़ूज़ रखा जबकि बाक़ियों की उस
ने कोंचें काट दीं ताकि वह आइन्दा जंग के लिए
इस्तेमाल न हो सकें।

5 जब दमिश्क़ के अरामी बाशिन्दे ज़ोबाह के
बादशाह हददअज़र की मदद करने आए तो दाऊद
ने उन के 22,000 अफ़राद हलाक कर दिए। 6 फिर
उस ने दमिश्क़ के इलाक़े में अपनी फ़ौजी चौकियाँ
क़ाइम कीं। अरामी उस के ताबे हो गए और उसे
ख़राज देते रहे। जहाँ भी दाऊद गया वहाँ रब ने उसे
कामयाबी बख़्शी। 7 सोने की जो ढालें हददअज़र के
अफ़सरों के पास थीं उन्हें दाऊद यरूशलम ले गया।
8 हददअज़र के दो शहरों कून और तिब्ख़त से उस
ने कस्रत का पीतल छीन लिया। बाद में सुलेमान ने
यह पीतल रब के घर में 'समुन्दर' नामी पीतल का
हौज़, सतून और पीतल का मुख़्तलिफ़ सामान बनाने
के लिए इस्तेमाल किया।

9 जब हमात के बादशाह तूई को इत्तिला मिली कि
दाऊद ने ज़ोबाह के बादशाह हददअज़र की पूरी
फ़ौज पर फ़त्ह पाई है 10 तो उस ने अपने बेटे हदूराम
को दाऊद के पास भेजा ताकि उसे सलाम कहे।
हदूराम ने दाऊद को हददअज़र पर फ़त्ह के लिए
मुबारकबाद दी, क्यूँकि हददअज़र तूई का दुश्मन था,
और उन के दरमियान जंग रही थी। हदूराम ने दाऊद
को सोने, चाँदी और पीतल के बहुत से तुह्फ़े भी
पेश किए। 11 दाऊद ने यह चीज़ें रब के लिए मख़्सूस
कर दीं। जहाँ भी वह दूसरी क़ौमों पर ग़ालिब आया
वहाँ की सोना-चाँदी उस ने रब के लिए मख़्सूस कर
दी। यूँ अदोम, मोआब, अम्मोन, फिलिस्तिया और
अमालीक़ की सोना-चाँदी रब को पेश की गई।

12 अबीशै बिन ज़रूयाह ने नमक की वादी में
अदोमियों पर फ़त्ह पा कर 18,000 अफ़राद हलाक
कर दिए। 13 उस ने अदोम के पूरे मुल्क में अपनी
फ़ौजी चौकियाँ क़ाइम कीं, और तमाम अदोमी दाऊद
के ताबे हो गए। दाऊद जहाँ भी जाता रब उस की
मदद करके उसे फ़त्ह बख़्शता।

दाऊद के आला अफ़सर

14 जितनी देर दाऊद पूरे इस्राईल पर हुकूमत करता
रहा उतनी देर तक उस ने ध्यान दिया कि क़ौम के
हर एक शख़्स को इन्साफ़ मिल जाए। 15 योआब
बिन ज़रूयाह फ़ौज पर मुक़र्रर था। यहूसफ़त बिन
अख़ीलूद बादशाह का मुशीर-ए-ख़ास था। 16 सदोक़
बिन अख़ीतूब और अबीमलिक बिन अबियातर
इमाम थे। शौशा मीरमुन्शी था। 17 बिनायाह बिन
यहोयदा दाऊद के ख़ास दस्ते बनाम करेती और
फ़लेती का कप्तान मुक़र्रर था। दाऊद के बेटे आला
अफ़सर थे।

अम्मोनी दाऊद की बेइज़्ज़ती करते हैं

19 1 कुछ देर के बाद अम्मोनियों का बादशाह
नाहस फ़ौत हुआ, और उस का बेटा
तख़्तनशीन हुआ। 2 दाऊद ने सोचा, "नाहस ने हमेशा
मुझ पर मेहरबानी की थी, इस लिए अब मैं भी उस
के बेटे हनून पर मेहरबानी करूँगा।" उस ने बाप
की वफ़ात का अफ़सोस करने के लिए हनून के पास
वफ़द भेजा।

लेकिन जब दाऊद के सफ़ीर अम्मोनियों के दरबार
में पहुँच गए ताकि हनून के सामने अफ़सोस का
इज़हार करें 3 तो उस मुल्क के बुज़ुर्ग हनून बादशाह
के कान में मन्फ़ी बातें भरने लगे, "क्या दाऊद ने
इन आदमियों को वाक़ई सिर्फ़ इस लिए भेजा है
कि वह अफ़सोस करके आप के बाप का एहतिराम
करें? हरगिज़ नहीं! यह सिर्फ़ बहाना है। असल में यह
जासूस हैं जो हमारे मुल्क के बारे में मालूमात हासिल
करना चाहते हैं ताकि उस पर क़ब्ज़ा कर सकें।"
4 चुनाँचे हनून ने दाऊद के आदमियों को पकड़वा
कर उन की दाढ़ियाँ मुंडवा दीं और उन के लिबास
को कमर से ले कर पाँओ तक काट कर उतरवाया।
इसी हालत में बादशाह ने उन्हें फ़ारिग़ कर दिया।

5 जब दाऊद को इस की ख़बर मिली तो उस
ने अपने क़ासिदों को उन से मिलने के लिए भेजा
ताकि उन्हें बताएँ, “यरीहू में उस वक़्त तक ठहरे
रहें जब तक आप की दाढ़ियाँ दुबारा बहाल न हो
जाएँ।” क्यूँकि वह अपनी दाढ़ियों की वजह से बड़ी
शर्मिन्दगी महसूस कर रहे थे।

अम्मोनियों से जंग

6 अम्मोनियों को ख़ूब मालूम था कि इस हरकत
से हम दाऊद के दुश्मन बन गए हैं। इस लिए हनून
और अम्मोनियों ने मसोपुतामिया, अराम-माका और
ज़ोबाह को चाँदी के 34,000 किलोग्राम भेज कर
किराए पर रथ और रथसवार मंगवाए। 7 यूँ उन्हें
32,000 रथ उन के सवारों समेत मिल गए। माका
का बादशाह भी अपने दस्तों के साथ उन से मुत्तहिद
हुआ। मीदबा के क़रीब उन्हों ने अपनी लश्करगाह
लगाई। अम्मोनी भी अपने शहरों से निकल कर जंग
के लिए जमा हुए। 8 जब दाऊद को इस का इल्म
हुआ तो उस ने योआब को पूरी फ़ौज के साथ उन
का मुक़ाबला करने के लिए भेज दिया। 9 अम्मोनी
अपने दार-उल-हकूमत रब्बा से निकल कर शहर
के दरवाज़े के सामने ही सफ़आरा हुए जबकि दूसरे
ममालिक से आए हुए बादशाह कुछ फ़ासिले पर खुले
मैदान में खड़े हो गए।

10 जब योआब ने जान लिया कि सामने और पीछे
दोनों तरफ़ से हमले का ख़तरा है तो उस ने अपनी
फ़ौज को दो हिस्सों में तक़्सीम कर दिया। सब से
अच्छे फ़ौजियों के साथ वह ख़ुद शाम के सिपाहियों
से लड़ने के लिए तय्यार हुआ। 11 बाक़ी आदमियों
को उस ने अपने भाई अबीशै के हवाले कर दिया
ताकि वह अम्मोनियों से लड़ें। 12 एक दूसरे से अलग
होने से पहले योआब ने अबीशै से कहा, “अगर शाम
के फ़ौजी मुझ पर ग़ालिब आने लगें तो मेरे पास आ
कर मेरी मदद करना। लेकिन अगर आप अम्मोनियों
पर क़ाबू न पा सकें तो मैं आ कर आप की मदद
करूँगा। 13 हौसला रखें! हम दिलेरी से अपनी क़ौम
और अपने ख़ुदा के शहरों के लिए लड़ें। और रब वह
कुछ होने दे जो उस की नज़र में ठीक है।”

14 योआब ने अपनी फ़ौज के साथ शाम के फ़ौजियों
पर हम्ला किया तो वह उस के सामने से भागने लगे।
15 यह देख कर अम्मोनी भी उस के भाई अबीशै
से फ़रार हो कर शहर में दाख़िल हुए। तब योआब
यरूशलम वापस चला गया।

शाम के ख़िलाफ़ जंग

16 जब शाम के फ़ौजियों को शिकस्त की बेइज़्ज़ती
का एहसास हुआ तो उन्हों ने दरया-ए-फ़ुरात के पार
मसोपुतामिया में आबाद अरामियों के पास क़ासिद
भेजे ताकि वह भी लड़ने में मदद करें। हददअज़र का
कमाँडर सोफ़क उन पर मुक़र्रर हुआ। 17 जब दाऊद
को ख़बर मिली तो उस ने इस्राईल के तमाम लड़ने के
क़ाबिल आदमियों को जमा किया और दरया-ए-यर्दन
को पार करके उन के मुक़ाबिल सफ़आरा हुआ। जब
वह यूँ उन से लड़ने के लिए तय्यार हुआ तो अरामी
उस का मुक़ाबला करने लगे। 18 लेकिन उन्हें दुबारा
शिकस्त मान कर फ़रार होना पड़ा। इस दफ़ा उन के
7,000 रथबानों के इलावा 40,000 पियादा सिपाही
हलाक हुए। दाऊद ने फ़ौज के कमाँडर सोफ़क को
भी मार डाला।

19 जो अरामी पहले हददअज़र के ताबे थे उन्हों
ने अब हार मान कर इस्राईलियों से सुलह कर ली
और उन के ताबे हो गए। उस वक़्त से अरामियों ने
अम्मोनियों की मदद करने की फिर जुरअत न की।

रब्बा शहर पर फ़त्ह

20 1 बहार का मौसम आ गया, वह वक़्त जब
बादशाह जंग के लिए निकलते हैं। तब
योआब ने फ़ौज ले कर अम्मोनियों का मुल्क तबाह
कर दिया। लड़ते लड़ते वह रब्बा तक पहुँच गया
और उस का मुहासरा करने लगा। लेकिन दाऊद
ख़ुद यरूशलम में रहा। फिर योआब ने रब्बा को
भी शिकस्त दे कर ख़ाक में मिला दिया। 2 दाऊद

ने हनून बादशाह का ताज उस के सर से उतार कर
अपने सर पर रख लिया। सोने के इस ताज का वज़न
34 किलोग्राम था, और उस में एक बेशक़ीमत जौहर
जड़ा हुआ था। दाऊद ने शहर से बहुत सा लूटा हुआ
माल ले कर 3 उस के बाशिन्दों को ग़ुलाम बना लिया।
उन्हें पत्थर काटने की आरियाँ, लोहे की कुदालें
और कुल्हाड़ियाँ दी गईं ताकि वह मज़दूरी करें। यही
सुलूक बाक़ी अम्मोनी शहरों के बाशिन्दों के साथ भी
किया गया। जंग के इख़तिताम पर दाऊद पूरी फ़ौज
के साथ यरूशलम लौट आया।

फ़िलिस्तियों से जंग

4 इस के बाद इस्राईलियों को जज़र के क़रीब
फ़िलिस्तियों से लड़ना पड़ा। वहाँ सिब्बकी हूसाती
ने देओक़ामत मर्द रफ़ा की औलाद में से एक
आदमी को मार डाला जिस का नाम सफ़्फ़ी था। यूँ
फ़िलिस्तियों को ताबे कर लिया गया। 5 उन से एक
और लड़ाई के दौरान इल्हनान बिन याईर ने जाती
जालूत के भाई लहमी को मौत के घाट उतार दिया।
उस का नेज़ा खड्डी के शहतीर जैसा बड़ा था। 6 एक
और दफ़ा जात के पास लड़ाई हुई। फ़िलिस्तियों का
एक फ़ौजी जो रफ़ा की नस्ल का था बहुत लम्बा
था। उस के हाथों और पैरों की छः छः उंगलियाँ यानी
मिल कर 24 उंगलियाँ थीं। 7 जब वह इस्राईलियों का
मज़ाक़ उड़ाने लगा तो दाऊद के भाई सिमआ के बेटे
यूनतन ने उसे मार डाला। 8 जात के यह देओक़ामत
मर्द रफ़ा की औलाद थे, और वह दाऊद और उस के
फ़ौजियों के हाथों हलाक हुए।

दाऊद की मर्दुमशुमारी

21 1 एक दिन इब्लीस इस्राईल के ख़िलाफ़ उठ
खड़ा हुआ और दाऊद को इस्राईल की
मर्दुमशुमारी करने पर उकसाया। 2 दाऊद ने योआब
और क़ौम के बुज़ुर्गों को हुक्म दिया, "दान से ले
कर बैर-सबा तक इस्राईल के तमाम क़बीलों में से
गुज़रते हुए जंग करने के क़ाबिल मर्दों को गिन लें।
फिर वापस आ कर मुझे इत्तिला दें ताकि मालूम हो
जाए कि उन की कुल तादाद क्या है।"

3 लेकिन योआब ने एतिराज़ किया, "ऐ बादशाह
मेरे आक़ा, काश रब अपने फ़ौजियों की तादाद सौ
गुना बढ़ा दे। क्यूँकि यह तो सब आप के ख़ादिम
हैं। लेकिन मेरे आक़ा उन की मर्दुमशुमारी क्यूँ करना
चाहते हैं? इस्राईल आप के सबब से क्यूँ क़ुसूरवार
ठहरे?"

4 लेकिन बादशाह योआब के एतिराज़ात के
बावुजूद अपनी बात पर डटा रहा। चुनाँचे योआब
दरबार से रवाना हुआ और पूरे इस्राईल में से गुज़र
कर उस की मर्दुमशुमारी की। इस के बाद वह
यरूशलम वापस आ गया। 5 वहाँ उस ने दाऊद
को मर्दुमशुमारी की पूरी रिपोर्ट पेश की। इस्राईल
में 11,00,000 तलवार चलाने के क़ाबिल अफ़राद
थे जबकि यहूदाह के 4,70,000 मर्द थे। 6 हालाँकि
योआब ने लावी और बिनयमीन के क़बीलों को
मर्दुमशुमारी में शामिल नहीं किया था, क्यूँकि उसे
यह काम करने से घिन आती थी।

7 अल्लाह को दाऊद की यह हरकत बुरी लगी, इस
लिए उस ने इस्राईल को सज़ा दी। 8 तब दाऊद ने
अल्लाह से दुआ की, "मुझ से संगीन गुनाह सरज़द
हुआ है। अब अपने ख़ादिम का क़ुसूर मुआफ़ कर।
मुझ से बड़ी हमाक़त हुई है।" 9 तब रब दाऊद के
ग़ैबबीन जाद नबी से हमकलाम हुआ, 10 "दाऊद के
पास जा कर उसे बता देना, 'रब तुझे तीन सज़ाएँ पेश
करता है। इन में से एक चुन ले'।"

11 जाद दाऊद के पास गया और उसे रब का पैग़ाम
सुना दिया। उस ने सवाल किया, "आप किस सज़ा
को तर्जीह देते हैं? 12 सात साल के दौरान काल?
या यह कि आप के दुश्मन तीन माह तक आप को
तलवार से मार मार कर आप का ताक़्क़ुब करते रहें?
या यह कि रब की तलवार इस्राईल में से गुज़रे? इस
सूरत में रब का फ़रिश्ता मुल्क में वबा फैला कर पूरे
इस्राईल का सत्यानास कर देगा।"

13 दाऊद ने जवाब दिया, “हाय मैं क्या कहूँ? मैं
बहुत परेशान हूँ। लेकिन आदमियों के हाथों में पड़
जाने की निस्बत बेहतर है कि हम रब ही के हाथों में
पड़ जाएँ, क्यूँकि उस का रहम निहायत अज़ीम है।”
14 तब रब ने इस्राईल में वबा फैलने दी। मुल्क
में 70,000 अफ़राद हलाक हुए। 15 अल्लाह ने अपने
फ़रिश्ते को यरूशलम को तबाह करने के लिए भी
भेजा। लेकिन फ़रिश्ता अभी इस के लिए तय्यार हो
रहा था कि रब ने लोगों की मुसीबत को देख कर
तरस खाया और तबाह करने वाले फ़रिश्ते को हुक्म
दिया, “बस कर! अब बाज़ आ।” उस वक़्त रब का
फ़रिश्ता वहाँ खड़ा था जहाँ उर्नान यानी अरौनाह
यबूसी अपना अनाज गाहता था। 16 दाऊद ने अपनी
निगाह उठा कर रब के फ़रिश्ते को आसमान-ओ-
ज़मीन के दरमियान खड़े देखा। अपनी तलवार मियान
से खैंच कर उस ने उसे यरूशलम की तरफ़ बढ़ाया
था कि दाऊद बुज़ुर्गों समेत मुँह के बल गिर गया। सब
टाट का लिबास ओढ़े हुए थे। 17 दाऊद ने अल्लाह से
इल्तिमास की, “मैं ही ने हुक्म दिया कि लड़ने के
क़ाबिल मर्दों को गिना जाए। मैं ही ने गुनाह किया है,
यह मेरा ही क़ुसूर है। इन भेड़ों से क्या ग़लती हुई है?
ऐ रब मेरे ख़ुदा, बराह-ए-करम इन को छोड़ कर मुझे
और मेरे ख़ानदान को सज़ा दे। अपनी क़ौम से वबा
दूर कर!”
18 फिर रब के फ़रिश्ते ने जाद की मारिफ़त दाऊद
को पैग़ाम भेजा, “अरौनाह यबूसी की गाहने की जगह
के पास जा कर उस पर रब की क़ुर्बानगाह बना ले।”
19 चुनाँचे दाऊद चढ़ कर गाहने की जगह के पास
आया जिस तरह रब ने जाद की मारिफ़त फ़रमाया
था। 20 उस वक़्त अरौनाह अपने चार बेटों के साथ
गन्दुम गाह रहा था। जब उस ने पीछे देखा तो फ़रिश्ता
नज़र आया। अरौनाह के बेटे भाग कर छुप गए।
21 इतने में दाऊद आ पहुँचा। उसे देखते ही अरौनाह
गाहने की जगह को छोड़ कर उस से मिलने गया और
उस के सामने औंधे मुँह झुक गया। 22 दाऊद ने उस
से कहा, “मुझे अपनी गाहने की जगह दे दें ताकि मैं
यहाँ रब के लिए क़ुर्बानगाह तामीर करूँ। क्यूँकि यह
करने से वबा रुक जाएगी। मुझे इस की पूरी क़ीमत
बताएँ।”
23 अरौनाह ने दाऊद से कहा, “मेरे आक़ा और
बादशाह, इसे ले कर वह कुछ करें जो आप को
अच्छा लगे। देखें, मैं आप को अपने बैलों को भस्म
होने वाली क़ुर्बानियों के लिए दे देता हूँ। अनाज को
गाहने का सामान क़ुर्बानगाह पर रख कर जला दें।
मेरा अनाज ग़ल्ला की नज़र के लिए हाज़िर है। मैं ख़ुशी
से आप को यह सब कुछ दे देता हूँ।” 24 लेकिन
दाऊद बादशाह ने इन्कार किया, “नहीं, मैं ज़रूर हर
चीज़ की पूरी क़ीमत अदा करूँगा। जो आप की है
उसे मैं ले कर रब को पेश नहीं करूँगा, न मैं ऐसी कोई
भस्म होने वाली क़ुर्बानी चढ़ाऊँगा जो मुझे मुफ़्त में
मिल जाए।”
25 चुनाँचे दाऊद ने अरौनाह को उस जगह के लिए
सोने के 600 सिक्के दे दिए। 26 उस ने वहाँ रब की
ताज़ीम में क़ुर्बानगाह तामीर करके उस पर भस्म होने
वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं। जब उस
ने रब से इल्तिमास की तो रब ने उस की सुनी और
जवाब में आसमान से भस्म होने वाली क़ुर्बानी पर
आग भेज दी। 27 फिर रब ने मौत के फ़रिश्ते को हुक्म
दिया, और उस ने अपनी तलवार को दुबारा मियान
में डाल दिया।
28 यूँ दाऊद ने जान लिया कि रब ने अरौनाह यबूसी
की गहने की जगह पर मेरी सुनी जब मैं ने यहाँ
क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं। 29 उस वक़्त रब का वह मुक़द्दस
ख़ैमा जो मूसा ने रेगिस्तान में बनवाया था जिबऊन की
पहाड़ी पर था। क़ुर्बानियों को जलाने की क़ुर्बानगाह
भी वहीं थी। 30 लेकिन अब दाऊद में वहाँ जा कर
रब के हुज़ूर उस की मर्ज़ी दरयाफ़्त करने की जुरअत
न रही, क्यूँकि रब के फ़रिश्ते की तलवार को देख
कर उस पर इतनी शदीद दहशत तारी हुई कि वह जा
ही नहीं सकता था।

22 1 इस लिए दाऊद ने फ़ैसला किया, “रब
हमारे ख़ुदा का घर गाहने की इस जगह

पर होगा, और यहाँ वह क़ुर्बानगाह भी होगी जिस
पर इस्राईल के लिए भस्म होने वाली क़ुर्बानी जलाई
जाती है।”

दाऊद रब का घर बनाने की तय्यारियाँ करता है

2 चुनाँचे उस ने इस्राईल में रहने वाले परदेसियों को
बुला कर उन्हें अल्लाह के घर के लिए दरकार तराशे
हुए पत्थर तय्यार करने की ज़िम्मादारी दी। 3 इस के
इलावा दाऊद ने दरवाज़ों के किवाड़ों की कीलों
और कड़ों के लिए लोहे के बड़े ढेर लगाए। साथ
साथ इतना पीतल इकट्ठा किया गया कि आख़िरकार
उसे तोला न जा सका। 4 इसी तरह देवदार की बहुत
ज़्यादा लकड़ी यरूशलम लाई गई। सैदा और सूर के
बाशिन्दों ने उसे दाऊद तक पहुँचाया। 5 यह सामान
जमा करने के पीछे दाऊद का यह ख़याल था, “मेरा
बेटा सुलेमान जवान है, और उस का अभी इतना
तजरिबा नहीं है, हालाँकि जो घर रब के लिए बनवाना
है उसे इतना बड़ा और शानदार होने की ज़रूरत है
कि तमाम दुनिया हक्का-बक्का रह कर उस की तारीफ़
करे। इस लिए मैं ख़ुद जहाँ तक हो सके उसे बनवाने
की तय्यारियाँ करूँगा।” यही वजह थी कि दाऊद ने
अपनी मौत से पहले इतना सामान जमा कराया।

दाऊद सुलेमान को रब का घर बनवाने की ज़िम्मादारी देता है

6 फिर दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को बुला कर
उसे रब इस्राईल के ख़ुदा के लिए सुकूनतगाह बनवाने
की ज़िम्मादारी दे कर 7 कहा, “मेरे बेटे, मैं ख़ुद रब
अपने ख़ुदा के नाम के लिए घर बनाना चाहता था।
8 लेकिन मुझे इजाज़त नहीं मिली, क्यूँकि रब मुझ से
हमकलाम हुआ, ‘तू ने शदीद क़िस्म की जंगें लड़ कर
बेशुमार लोगों को मार दिया है। नहीं, तू मेरे नाम के
लिए घर तामीर नहीं करेगा, क्यूँकि मेरे देखते देखते तू
बहुत ख़ूँरेज़ी का सबब बना है। 9 लेकिन तेरे एक बेटा
पैदा होगा जो अम्नपसन्द होगा। उसे मैं अम्न-ओ-
अमान मुहय्या करूँगा, उसे चारों तरफ़ के दुश्मनों
से लड़ना नहीं पड़ेगा। उस का नाम सुलेमान होगा,
और उस की हुकूमत के दौरान मैं इस्राईल को अम्न-
ओ-अमान अता करूँगा। 10 वही मेरे नाम के लिए
घर बनाएगा। वह मेरा बेटा होगा और मैं उस का
बाप हूँगा। और मैं इस्राईल पर उस की बादशाही का
तख़्त हमेशा तक क़ाइम रखूँगा’।”

11 दाऊद ने बात जारी रख कर कहा, “मेरे बेटे, रब
आप के साथ हो ताकि आप को कामयाबी हासिल
हो और आप रब अपने ख़ुदा का घर उस के वादे के
मुताबिक़ तामीर कर सकें। 12 आप को इस्राईल पर
मुक़र्रर करते वक़्त रब आप को हिक्मत और समझ
अता करे ताकि आप रब अपने ख़ुदा की शरीअत
पर अमल कर सकें। 13 अगर आप एहतियात से उन
हिदायात और अह्काम पर अमल करें जो रब ने
मूसा की मारिफ़त इस्राईल को दे दिए तो आप को
ज़रूर कामयाबी हासिल होगी। मज़बूत और दिलेर
हों। डरें मत और हिम्मत न हारें। 14 देखें, मैं ने बड़ी
जिद्द-ओ-जह्द के साथ रब के घर के लिए सोने के
34,00,000 किलोग्राम और चाँदी के 3,40,00,000
किलोग्राम तय्यार कर रखे हैं। इस के इलावा मैं ने
इतना पीतल और लोहा इकट्ठा किया कि उसे तोला
नहीं जा सकता, नीज़ लकड़ी और पत्थर का ढेर
लगाया, अगरचे आप और भी जमा करेंगे। 15 आप
की मदद करने वाले कारीगर बहुत हैं। उन में पत्थर
को तराशने वाले, राज, बढ़ई और ऐसे कारीगर
शामिल हैं जो महारत से हर क़िस्म की चीज़ बना
सकते हैं, 16 ख़्वाह वह सोने, चाँदी, पीतल या लोहे
की क्यूँ न हो। बेशुमार ऐसे लोग तय्यार खड़े हैं। अब
काम शुरू करें, और रब आप के साथ हो!”

17 फिर दाऊद ने इस्राईल के तमाम राहनुमाओं को
अपने बेटे सुलेमान की मदद करने का हुक्म दिया।
18 उस ने उन से कहा, “रब आप का ख़ुदा आप के
साथ है। उस ने आप को पड़ोसी क़ौमों से मह्फ़ूज़
रख कर अम्न-ओ-अमान अता किया है। मुल्क के
बाशिन्दों को उस ने मेरे हवाले कर दिया, और अब
यह मुल्क रब और उस की क़ौम के ताबे हो गया है।

19 अब दिल-ओ-जान से रब अपने ख़ुदा के तालिब
रहें। रब अपने ख़ुदा के मक़्दिस की तामीर शुरू करें
ताकि आप जल्दी से अह्द का सन्दूक़ और मुक़द्दस
ख़ैमे के सामान को उस घर में ला सकें जो रब के
नाम की ताज़ीम में तामीर होगा।”

23 1 जब दाऊद उम्ररसीदा था तो उस ने अपने
बेटे सुलेमान को इस्राईल का बादशाह बना
दिया।

ख़िदमत के लिए लावियों के गुरोह

2 दाऊद ने इस्राईल के तमाम राहनुमाओं को इमामों
और लावियों समेत अपने पास बुला लिया। 3 तमाम
उन लावियों को गिना गया जिन की उम्र तीस साल
या इस से ज़ाइद थी। उन की कुल तादाद 38,000
थी। 4 इन्हें दाऊद ने मुख़्तलिफ़ ज़िम्मादारियाँ सौंपीं।
24,000 अफ़राद रब के घर की तामीर के निगरान,
6,000 अफ़्सर और क़ाज़ी, 5 4,000 दरबान और
4,000 ऐसे मौसीक़ार बन गए जिन्हें दाऊद के
बनवाए हुए साज़ों को बजा कर रब की हम्द-ओ-सना
करनी थी।

6 दाऊद ने लावियों को लावी के तीन बेटों जैर्सोन,
क़िहात और मिरारी के मुताबिक़ तीन गुरोहों में
तक़्सीम किया।

7 जैर्सोन के दो बेटे लादान और सिमई थे। 8 लादान
के तीन बेटे यहीएल, ज़ैताम और योएल थे। 9 सिमई
के तीन बेटे सलूमीत, हज़ीएल और हारान थे। यह
लादान के घरानों के सरबराह थे। 10–11 सिमई के
चार बेटे बड़े से ले कर छोटे तक यहत, ज़ीज़ा, यऊस
और बरीआ थे। चूँकि यऊस और बरीआ के कम बेटे
थे इस लिए उन की औलाद मिल कर ख़िदमत के
लिहाज़ से एक ही ख़ानदान और गुरोह की हैसियत
रखती थी।

12 क़िहात के चार बेटे अम्राम, इज़हार , हब्रून और
उज़्ज़ीएल थे। 13 अम्राम के दो बेटे हारून और मूसा
थे। हारून और उस की औलाद को अलग किया
गया ताकि वह हमेशा तक मुक़द्दसतरीन चीज़ों को
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रखें, रब के हुज़ूर क़ुर्बानियाँ पेश
करें, उस की ख़िदमत करें और उस के नाम से लोगों
को बरकत दें। 14 मर्द-ए-ख़ुदा मूसा के बेटों को बाक़ी
लावियों में शुमार किया जाता था। 15 मूसा के दो
बेटे जैर्सोम और इलीअज़र थे। 16 जैर्सोम के पहलौठे
का नाम सबूएल था। 17 इलीअज़र का सिर्फ़ एक
बेटा रहबियाह था। लेकिन रहबियाह की बेशुमार
औलाद थी। 18 इज़हार के पहलौठे का नाम सलूमीत
था। 19 हब्रून के चार बेटे बड़े से ले कर छोटे तक
यरियाह, अमरियाह, यहज़ीएल और यक़मिआम थे।
20 उज़्ज़ीएल का पहलौठा मीकाह था। दूसरे का नाम
यिस्सियाह था।

21 मिरारी के दो बेटे महली और मूशी थे। महली के
दो बेटे इलीअज़र और क़ीस थे। 22 जब इलीअज़र
फ़ौत हुआ तो उस की सिर्फ़ बेटियाँ थीं। इन बेटियों
की शादी क़ीस के बेटों यानी चचाज़ाद भाइयों से
हुई। 23 मूशी के तीन बेटे महली, इदर और यरीमोत
थे।

24 ग़रज़ यह लावी के क़बीले के ख़ानदान और
सरपरस्त थे। हर एक को ख़ानदानी रजिस्टर में दर्ज
किया गया था। इन में से जो रब के घर में ख़िदमत
करते थे हर एक की उम्र कम अज़ कम 20 साल थी।

25–27 क्यूँकि दाऊद ने मरने से पहले पहले हुक्म
दिया था कि जितने लावियों की उम्र कम अज़ कम
20 साल है, वह ख़िदमत के लिए रजिस्टर में दर्ज
किए जाएँ। इस नाते से उस ने कहा था,

“रब इस्राईल के ख़ुदा ने अपनी क़ौम को अम्न-
ओ-अमान अता किया है, और अब वह हमेशा के
लिए यरूशलम में सुकूनत करेगा। अब से लावियों
को मुलाक़ात का ख़ैमा और उस का सामान उठा
कर जगह-ब-जगह ले जाने की ज़रूरत नहीं रही।
28 अब से वह इमामों की मदद करें जब यह रब
के घर में ख़िदमत करते हैं। वह सहनों और छोटे
कमरों को सँभालें और ध्यान दें कि रब के घर के
लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस की गई चीज़ें पाक-साफ़
रहें। उन्हें अल्लाह के घर में कई और ज़िम्मादारियाँ

भी सौंपी जाएँ। 29 ज़ैल की चीज़ें सँभालना सिर्फ़
उन ही की ज़िम्मादारी है : मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस की
गई रोटियाँ, ग़ल्ला की नज़रों के लिए मुस्तामल मैदा,
बेख़मीरी रोटियाँ पकाने और गूँधने का इन्तिज़ाम।
लाज़िम है कि वही तमाम लवाज़िमात को अच्छी
तरह तोलें और नापें। 30 हर सुब्ह और शाम को उन
के गुलूकार रब की हम्द-ओ-सना करें। 31 जब भी रब
को भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश की जाएँ तो लावी
मदद करें, ख़्वाह सबत को, ख़्वाह नए चाँद की ईद
या किसी और ईद के मौक़े पर हो। लाज़िम है कि
वह रोज़ाना मुक़र्ररा तादाद के मुताबिक़ ख़िदमत के
लिए हाज़िर हो जाएँ।”

32 इस तरह लावी पहले मुलाक़ात के ख़ैमे में और
बाद में रब के घर में अपनी ख़िदमत सरअन्जाम देते
रहे। वह रब के घर की ख़िदमत में अपने क़बाइली
भाइयों यानी इमामों की मदद करते थे।

ख़िदमत के लिए इमामों के गुरोह

24 1 हारून की औलाद को भी मुख़्तलिफ़
गुरोहों में तक़्सीम किया गया। हारून के
चार बेटे नदब, अबीहू, इलीअज़र और इतमर थे।
2 नदब और अबीहू अपने बाप से पहले मर गए, और
उन के बेटे नहीं थे। इलीअज़र और इतमर इमाम बन
गए। 3 दाऊद ने इमामों को ख़िदमत के मुख़्तलिफ़
गुरोहों में तक़्सीम किया। सदोक़ और अख़ीमलिक
ने इस में दाऊद की मदद की (सदोक़ इलीअज़र की
औलाद में से और अख़ीमलिक इतमर की औलाद
में से था)। 4 इलीअज़र की औलाद को 16 गुरोहों
में और इतमर की औलाद को 8 गुरोहों में तक़्सीम
किया गया, क्यूँकि इलीअज़र की औलाद के इतने ही
ज़्यादा ख़ानदानी सरपरस्त थे। 5 तमाम ज़िम्मादारियाँ
क़ुरआ डाल कर इन मुख़्तलिफ़ गुरोहों में तक़्सीम की
गईं, क्यूँकि इलीअज़र और इतमर दोनों ख़ानदानों के
बहुत सारे ऐसे अफ़्सर थे जो पहले से मक़्दिस में रब
की ख़िदमत करते थे।

6 यह ज़िम्मादारियाँ तक़्सीम करने के लिए
इलीअज़र और इतमर की औलाद बारी बारी क़ुरआ
डालते रहे। क़ुरआ डालते वक़्त बादशाह, इस्राईल
के बुज़ुर्ग, सदोक़ इमाम, अख़ीमलिक बिन अबियातर
और इमामों और लावियों के ख़ानदानी सरपरस्त
हाज़िर थे। मीरमुन्शी समायाह बिन नतनीएल ने जो
ख़ुद लावी था ख़िदमत के इन गुरोहों की फ़हरिस्त
ज़ैल की तर्तीब से लिख ली जिस तरह वह क़ुरआ
डालने से मुक़र्रर किए गए,

7 1. यहूयरीब,
2. यदायाह,
8 3. हारिम,
4. सऊरीम,
9 5. मल्कियाह,
6. मियामीन,
10 7. हक़्क़ूज़,
8. अबियाह,
11 9. यशूअ,
10. सकनियाह,
12 11. इलियासिब,
12. यक़ीम,
13 13. ख़ुफ़्फ़ाह,
14. यस्बिआब,
14 15. बिल्जा,
16. इम्मेर,
15 17. ख़ज़ीर,
18. फ़िज़्ज़ीज़,
16 19. फ़तहियाह,
20. यहिज़्क़ेल,
17 21. यकीन,
22. जमूल,
18 23. दिलायाह,
24. माज़ियाह।

19 इमामों को इसी तर्तीब के मुताबिक़ रब के घर
में आ कर अपनी ख़िदमत सरअन्जाम देनी थी, उन

हिदायात के मुताबिक़ जो रब इस्राईल के ख़ुदा ने उन्हें उन के बाप हारून की मारिफ़त दी थीं।

ख़िदमत के लिए लावियों के मज़ीद गुरोह

20 ज़ैल के लावियों के मज़ीद ख़ानदानी सरपरस्त हैं :
अम्राम की औलाद में से सूबाएल,
सूबाएल की औलाद में से यहदियाह
21 रहबियाह की औलाद में से यिस्सियाह सरपरस्त था,
22 इज़हार की औलाद में से सलूमीत,
सलूमीत की औलाद में से यहत,
23 हब्रून की औलाद में से बड़े से ले कर छोटे तक यरियाह, अमरियाह, यहज़ीएल और यक़मिआम,
24 उज़्ज़ीएल की औलाद में से मीकाह,
मीकाह की औलाद में से समीर,
25 मीकाह का भाई यिस्सियाह,
यिस्सियाह की औलाद में से ज़करियाह,
26 मिरारी की औलाद में से महली और मूशी,
उस के बेटे याज़ियाह की औलाद,
27 मिरारी के बेटे याज़ियाह की औलाद में से सूहम, ज़क्कूर और इब्री,
28–29 महली की औलाद में से इलीअज़र और क़ीस। इलीअज़र बेऔलाद था जबकि क़ीस के हाँ यरहमिएल पैदा हुआ।
30 मूशी की औलाद में से महली, इदर और यरीमोत भी लावियों के इन मज़ीद ख़ानदानी सरपरस्तों में शामिल थे।
31 इमामों की तरह उन की ज़िम्मादारियाँ भी क़ुरआ-अन्दाज़ी से मुक़र्रर की गईं। इस सिलसिले में सब से छोटे भाई के ख़ानदान के साथ और सब से बड़े भाई के ख़ानदान के साथ सुलूक बराबर था। इस कार-रवाई के लिए भी दाऊद बादशाह, सदोक़, अख़ीमलिक और इमामों और लावियों के ख़ानदानी सरपरस्त हाज़िर थे।

रब के घर में मौसीक़ारों के गुरोह

25 1 दाऊद ने फ़ौज के आला अफ़्सरों के साथ आसफ़, हैमान और यदूतून की औलाद को एक ख़ास ख़िदमत के लिए अलग कर दिया। उन्हें नबुव्वत की रूह में सरोद, सितार और झाँझ बजाना था। ज़ैल के आदमियों को मुक़र्रर किया गया :
2 आसफ़ के ख़ानदान से आसफ़ के बेटे ज़क्कूर, यूसुफ़, नतनियाह और असरेलाह। उन का बाप गुरोह का राहनुमा था, और वह बादशाह की हिदायात के मुताबिक़ नबुव्वत की रूह में साज़ बजाता था।
3 यदूतून के ख़ानदान से यदूतून के बेटे जिदलियाह, ज़री, यसायाह, सिमई, हसबियाह, और मत्तितियाह। उन का बाप गुरोह का राहनुमा था, और वह नबुव्वत की रूह में रब की हम्द-ओ-सना करते हुए सितार बजाता था।
4 हैमान के ख़ानदान से हैमान के बेटे बुक्क़ियाह, मत्तनियाह, उज़्ज़ीएल, सबूएल, यरीमोत, हननियाह, हनानी, इलियाता, जिद्दाल्ती, रूमम्ती-अज़र, यस्बिक़ाशा, मल्लूती, हौतीर और महाज़ियोत। 5 इन सब का बाप हैमान दाऊद बादशाह का ग़ैबबीन था। अल्लाह ने हैमान से वादा किया था कि मैं तेरी ताक़त बढ़ा दूँगा, इस लिए उस ने उसे 14 बेटे और तीन बेटियाँ अता की थीं।
6 यह सब अपने अपने बाप यानी आसफ़, यदूतून और हैमान की राहनुमाई में साज़ बजाते थे। जब कभी रब के घर में गीत गाए जाते थे तो यह मौसीक़ार साथ साथ झाँझ, सितार और सरोद बजाते थे। वह अपनी ख़िदमत बादशाह की हिदायात के मुताबिक़ सरअन्जाम देते थे। 7 अपने भाइयों समेत जो रब की ताज़ीम में गीत गाते थे उन की कुल तादाद 288 थी। सब के सब माहिर थे। 8 उन की मुख़्तलिफ़ ज़िम्मादारियाँ भी करआ के ज़रीए मुक़र्रर की गईं। इस में सब के साथ सुलूक एक जैसा था, ख़्वाह जवान थे या बूढ़े, ख़्वाह उस्ताद थे या शागिर्द।

9 क़ुरआ डाल कर 24 गुरोहों को मुक़र्रर किया
गया। हर गुरोह के बारह बारह आदमी थे। यूँ ज़ैल
के आदमियों के गुरोहों ने तश्कील पाई :
1. आसफ़ के ख़ानदान का यूसुफ़,
2. जिदलियाह,
10 3. ज़क्कूर,
11 4. ज़री,
12 5. नतनियाह,
13 6. बुक़्क़ियाह,
14 7. यसरेलाह,
15 8. यसायाह,
16 9. मत्तनियाह,
17 10. सिमई,
18 11. अज़रेल,
19 12. हसबियाह,
20 13. सूबाएल,
21 14. मत्तितियाह,
22 15. यरीमोत,
23 16. हननियाह,
24 17. यस्बिक़ाशा,
25 18. हनानी,
26 19. मल्लूती,
27 20. इलियाता,
28 21. हौतीर,
29 22. जिद्दाल्ती,
30 23. महाज़ियोत,
31 24. रूमम्ती-अज़र।

हर गुरोह में राहनुमा के बेटे और कुछ रिश्तेदार
शामिल थे।

रब के घर के दरबान

26 1 रब के घर के सहन के दरवाज़ों पर
पहरादारी करने के गुरोह भी मुक़र्रर किए
गए। उन में ज़ैल के आदमी शामिल थे :

क़ोरह के ख़ानदान का फ़र्द मसलमियाह बिन क़ोरे
जो आसफ़ की औलाद में से था। 2 मसलमियाह
के सात बेटे बड़े से ले कर छोटे तक ज़करियाह,
यदीअएल, ज़बदियाह, यत्नीएल, 3 ऐलाम, यूहनान
और इलीहूऐनी थे।

4–5 ओबेद-अदोम भी दरबान था। अल्लाह ने उसे
बरकत दे कर आठ बेटे दिए थे। बड़े से ले कर
छोटे तक उन के नाम समायाह, यहूज़बद, यूआख़,
सकार, नतनीएल, अम्मीएल, इश्कार और फ़ऊल्लती
थे। 6 समायाह बिन ओबेद-अदोम के बेटे ख़ानदानी
सरबराह थे, क्यूँकि वह काफ़ी असर-ओ-रसूख़
रखते थे। 7 उन के नाम उत्नी, रफ़ाएल, ओबेद
और इल्ज़बद थे। समायाह के रिश्तेदार इलीहू और
समकियाह भी गुरोह में शामिल थे, क्यूँकि वह भी
ख़ास हैसियत रखते थे। 8 ओबेद-अदोम से निकले
यह तमाम आदमी लाइक़ थे। वह अपने बेटों और
रिश्तेदारों समेत कुल 62 अफ़राद थे और सब महारत
से अपनी ख़िदमत सरअन्जाम देते थे।

9 मसलमियाह के बेटे और रिश्तेदार कुल 18
आदमी थे। सब लाइक़ थे।

10 मिरारी के ख़ानदान का फ़र्द हूसा के चार बेटे
सिम्री, ख़िलक़ियाह, तबलियाह और ज़करियाह थे।
हूसा ने सिम्री को ख़िदमत के गुरोह का सरबराह बना
दिया था अगरचे वह पहलौठा नहीं था। 11 दूसरे बेटे
बड़े से ले कर छोटे तक ख़िलक़ियाह, तबलियाह
और ज़करियाह थे। हूसा के कुल 13 बेटे और
रिश्तेदार थे।

12 दरबानों के इन गुरोहों में ख़ानदानी सरपरस्त
और तमाम आदमी शामिल थे। बाक़ी लावियों की
तरह यह भी रब के घर में अपनी ख़िदमत सरअन्जाम
देते थे। 13 क़ुरआ-अन्दाज़ी से मुक़र्रर किया गया
कि कौन सा गुरोह सहन के किस दरवाज़े की
पहरादारी करे। इस सिलसिले में बड़े और छोटे
ख़ानदानों में इम्तियाज़ न किया गया। 14 यूँ जब
क़ुरआ डाला गया तो मसलमियाह के ख़ानदान का
नाम मशरिक़ी दरवाज़े की पहरादारी करने के लिए
निकला। ज़करियाह बिन मसलमियाह के ख़ानदान
का नाम शिमाली दरवाज़े की पहरादारी करने के लिए

निकला। ज़करियाह अपने दाना मश्वरों के लिए मश्हूर था। 15 जब क़ुरआ जुनूबी दरवाज़े की पहरादारी के लिए डाला गया तो ओबेद-अदोम का नाम निकला। उस के बेटों को गोदाम की पहरादारी करने की ज़िम्मादारी दी गई। 16 जब मग़रिबी दरवाज़े और सल्कत दरवाज़े के लिए क़ुरआ डाला गया तो सुफ़्फ़ीम और हूसा के नाम निकले। सल्कत दरवाज़ा चढ़ने वाले रास्ते पर है।

पहरादारी की ख़िदमत यूँ बाँटी गई :

17 रोज़ाना मशरिक़ी दरवाज़े पर छः लावी पहरा देते थे, शिमाली और जुनूबी दरवाज़ों पर चार चार अफ़राद और गोदाम पर दो। 18 रब के घर के सहन के मग़रिबी दरवाज़े पर छः लावी पहरा देते थे, चार रास्ते पर और दो सहन में।

19 यह सब दरबानों के गुरोह थे। सब क़ोरह और मिरारी के ख़ानदानों की औलाद थे।

ख़िदमत के लिए लावियों के मज़ीद गुरोह

20 दूसरे कुछ लावी अल्लाह के घर के ख़ज़ानों और रब के लिए मख़्सूस की गई चीज़ें सँभालते थे।

21–22 दो भाई ज़ैताम और योएल रब के घर के ख़ज़ानों की पहरादारी करते थे। वह यहीएल के ख़ानदान के सरपरस्त थे और यूँ लादान जैर्सोनी की औलाद थे। 23 अम्राम, इज़हार , हब्रून और उज़्ज़ीएल के ख़ानदानों की यह ज़िम्मादारियाँ थीं :

24 सबूएल बिन जैर्सोम बिन मूसा ख़ज़ानों का निगरान था। 25 जैर्सोम के भाई इलीअज़र का बेटा रहबियाह था। रहबियाह का बेटा यसायाह, यसायाह का बेटा यूराम, यूराम का बेटा ज़िक्री और ज़िक्री का बेटा सलूमीत था। 26 सलूमीत अपने भाइयों के साथ उन मुक़द्दस चीज़ों को सँभालता था जो दाऊद बादशाह, ख़ानदानी सरपरस्तों, हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़्सरों और दूसरे आला अफ़्सरों ने रब के लिए मख़्सूस की थीं। 27 यह चीज़ें जंगों में लूटे हुए माल में से ले कर रब के घर को मज़बूत करने के लिए मख़्सूस की गई थीं। 28 इन में वह सामान भी शामिल था जो समूएल ग़ैबबीन, साऊल बिन क़ीस, अबिनैर बिन नैर और योआब बिन ज़रूयाह ने मक़्दिस के लिए मख़्सूस किया था। सलूमीत और उस के भाई इन तमाम चीज़ों को सँभालते थे।

29 इज़हार के ख़ानदान के अफ़राद यानी कनन्याह और उस के बेटों को रब के घर से बाहर की ज़िम्मादारियाँ दी गईं। उन्हें निगरानों और क़ाज़ियों की हैसियत से इस्राईल पर मुक़र्रर किया गया। 30 हब्रून के ख़ानदान के अफ़राद यानी हसबियाह और उस के भाइयों को दरया-ए-यर्दन के मग़रिब के इलाक़े को सँभालने की ज़िम्मादारी दी गई। वहाँ वह रब के घर से मुताल्लिक़ कामों के इलावा बादशाह की ख़िदमत भी सरअन्जाम देते थे। इन लाइक़ आदमियों की कुल तादाद 1,700 थी।

31 दाऊद बादशाह की हुकूमत के 40वें साल में नसबनामे की तहक़ीक़ की गई ताकि हब्रून के ख़ानदान के बारे में मालूमात हासिल हो जाएँ। पता चला कि उस के कई लाइक़ रुकन जिलिआद के इलाक़े के शहर याज़ेर में आबाद हैं। यरियाह उन का सरपरस्त था। 32 दाऊद बादशाह ने उसे रूबिन, जद और मनस्सी के मशरिक़ी इलाक़े को सँभालने की ज़िम्मादारी दी। यरियाह की इस ख़िदमत में उस के ख़ानदान के मज़ीद 2,700 अफ़राद भी शामिल थे। सब लाइक़ और अपने अपने ख़ानदानों के सरपरस्त थे। उस इलाक़े में वह रब के घर से मुताल्लिक़ कामों के इलावा बादशाह की ख़िदमत भी सरअन्जाम देते थे।

फ़ौज के गुरोह

27 1 दर्ज-ए-ज़ैल उन ख़ानदानी सरपरस्तों, हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़्सरों और सरकारी अफ़्सरों की फ़हरिस्त है जो बादशाह के मुलाज़िम थे।

फ़ौज 12 गुरोहों पर मुश्तमिल थी, और हर गुरोह के 24,000 अफ़राद थे। हर गुरोह की ड्यूटी साल में

एक माह के लिए लगती थी। 2 जो अफ़सर इन गुरोहों
पर मुक़र्रर थे वह यह थे :
पहला माह : यसूबिआम बिन ज़ब्दीएल। 3 वह
फ़ारस के ख़ानदान का था और उस गुरोह पर मुक़र्रर
था जिस की ड्यूटी पहले महीने में होती थी।
4 दूसरा माह : दोदी अख़ूही। उस के गुरोह के आला
अफ़सर का नाम मिक़्लोत था।
5 तीसरा माह : यहोयदा इमाम का बेटा बिनायाह।
6 यह दाऊद के बेहतरीन दस्ते बनाम 'तीस' पर
मुक़र्रर था और ख़ुद ज़बरदस्त फ़ौजी था। उस के
गुरोह का आला अफ़सर उस का बेटा अम्मीज़बद
था।
7 चौथा माह : योआब का भाई असाहेल। उस की
मौत के बाद असाहेल का बेटा ज़बदियाह उस की
जगह मुक़र्रर हुआ।
8 पाँचवाँ माह : सम्हूत इज़्राख़ी।
9 छटा माह : ईरा बिन अक़्क़ीस तक़ूई।
10 सातवाँ माह : ख़लिस फ़लूनी इफ़्राईमी।
11 आठवाँ माह : ज़ारह के ख़ानदान का सिब्बकी
हूसाती।
12 नवाँ माह : बिनयमीन के क़बीले का अबीअज़र
अनतोती।
13 दसवाँ माह : ज़ारह के ख़ानदान का महरी
नतूफ़ाती।
14 ग्यारहवाँ माह : इफ़्राईम के क़बीले का बिनायाह
फ़िरआतोनी।
15 बारहवाँ माह : ग़ुतनीएल के ख़ानदान का ख़ल्दी
नतूफ़ाती।

क़बीलों के सरपरस्त

16 ज़ैल के आदमी इस्राईली क़बीलों के सरपरस्त
थे :
रूबिन का क़बीला : इलीअज़र बिन ज़िक्री।
शमाऊन का क़बीला : सफ़तियाह बिन माका।
17 लावी का क़बीला : हसबियाह बिन क़मूएल।
हारून के ख़ानदान का सरपरस्त सदोक़ था।
18 यहूदाह का क़बीला : दाऊद का भाई इलीहू।
इश्कार का क़बीला : उम्री बिन मीकाएल।
19 ज़बूलून का क़बीला : इस्मायाह बिन
अबदियाह।
नफ़्ताली का क़बीला : यरीमोत बिन अज़्रीएल।
20 इफ़्राईम का क़बीला : होसेअ बिन अज़ज़ियाह।
मग़रिबी मनस्सी का क़बीला : योएल बिन
फ़िदायाह।
21 मशरिक़ी मनस्सी का क़बीला जो जिलिआद में
था : यिद्दू बिन ज़करियाह।
बिनयमीन का क़बीला : यासीएल बिन अबिनैर।
22 दान का क़बीला : अज़रेल बिन यरोहाम।
यह बारह लोग इस्राईली क़बीलों के सरबराह थे।
23 जितने इस्राईली मर्दों की उम्र 20 साल या इस
से कम थी उन्हें दाऊद ने शुमार नहीं किया, क्यूँकि
रब ने उस से वादा किया था कि मैं इस्राईलियों को
आसमान पर के सितारों जैसा बेशुमार बना दूँगा।
24 नीज़, योआब बिन ज़रूयाह ने मर्दुमशुमारी को
शुरू तो किया लेकिन उसे इख़तिताम तक नहीं
पहुँचाया था, क्यूँकि अल्लाह का ग़ज़ब मर्दुमशुमारी
के बाइस इस्राईल पर नाज़िल हुआ था। नतीजे में
दाऊद बादशाह की तारीख़ी किताब में इस्राईलियों
की कुल तादाद कभी नहीं दर्ज हुई।

शाही मिलकियत के इंचार्ज

25 अज़्मावत बिन अदीएल यरूशलम के शाही
गोदामों का इंचार्ज था।
जो गोदाम देही इलाक़े, बाक़ी शहरों, गाँव और
क़िलों में थे उन को यूनतन बिन उज़्ज़ियाह सँभालता
था।
26 अज़री बिन कलूब शाही ज़मीनों की काश्तकारी
करने वालों पर मुक़र्रर था।
27 सिमई रामाती अंगूर के बाग़ों की निगरानी करता
जबकि ज़ब्दी शिफ़्मी इन बाग़ों की मै के गोदामों का
इंचार्ज था।

28 बाल-हनान जदीरी ज़ैतून और अन्जीर-तूत के उन
बाग़ों पर मुक़र्रर था जो मग़रिब के नशेबी पहाड़ी
इलाक़े में थे। यूआस ज़ैतून के तेल के गोदामों की
निगरानी करता था।
29 शारून के मैदान में चरने वाले गाय-बैल सित्री
शारूनी के ज़ेर-ए-निगरानी थे जबकि साफ़त बिन
अद्ली वादियों में चरने वाले गाय-बैलों को सँभालता
था। 30 ओबिल इस्माईली ऊँटों पर मुक़र्रर था,
यहदियाह मरूनोती गधियों पर 31 और याज़ीज़
हाजिरी भेड़-बकरियों पर।
यह सब शाही मिलकियत के निगरान थे।

बादशाह के क़रीबी मुशीर

32 दाऊद का समझदार और आलिम चचा यूनतन
बादशाह का मुशीर था। यहीएल बिन हक्मूनी
बादशाह के बेटों की तर्बियत के लिए ज़िम्मादार था।
33 अख़ीतुफ़ल दाऊद का मुशीर जबकि हूसी अर्की
दाऊद का दोस्त था। 34 अख़ीतुफ़ल के बाद यहोयदा
बिन बिनायाह और अबियातर बादशाह के मुशीर बन
गए। योआब शाही फ़ौज का कमाँडर था।

इस्राईल के बुज़ुर्गों के सामने दाऊद की तक़रीर

28 1 दाऊद ने इस्राईल के तमाम बुज़ुर्गों को
यरूशलम बुलाया। इन में क़बीलों के
सरपरस्त, फ़ौजी डिवीझ़नों पर मुक़र्रर अफ़्सर, हज़ार
हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़्सर, शाही
मिलकियत और रेवड़ों के इंचार्ज, बादशाह के बेटों
की तर्बियत करने वाले अफ़्सर, दरबारी, मुल्क के
सूरमा और बाक़ी तमाम साहिब-ए-हैसियत शामिल
थे।
2 दाऊद बादशाह उन के सामने खड़े हो कर उन से
मुख़ातिब हुआ,
"मेरे भाइयो और मेरी क़ौम, मेरी बात पर ध्यान दें!
काफ़ी देर से मैं एक ऐसा मकान तामीर करना चाहता
था जिस में रब के अह्द का सन्दूक़ मुस्तक़िल तौर
पर रखा जा सके। आख़िर यह तो हमारे ख़ुदा की
चौकी है। इस मक़्सद से मैं तय्यारियाँ करने लगा।
3 लेकिन फिर अल्लाह मुझ से हमकलाम हुआ, 'मेरे
नाम के लिए मकान बनाना तेरा काम नहीं है, क्यूँकि
तू ने जंगजू होते हुए बहुत ख़ून बहाया है।'
4 रब इस्राईल के ख़ुदा ने मेरे पूरे ख़ानदान में से
मुझे चुन कर हमेशा के लिए इस्राईल का बादशाह
बना दिया, क्यूँकि उस की मर्ज़ी थी कि यहूदाह का
क़बीला हुकूमत करे। यहूदाह के ख़ानदानों में से उस
ने मेरे बाप के ख़ानदान को चुन लिया, और इसी
ख़ानदान में से उस ने मुझे पसन्द करके पूरे इस्राईल
का बादशाह बना दिया। 5 रब ने मुझे बहुत बेटे अता
किए हैं। उन में से उस ने मुक़र्रर किया कि सुलेमान
मेरे बाद तख़्त पर बैठ कर रब की उम्मत पर हुकूमत
करे। 6 रब ने मुझे बताया, 'तेरा बेटा सुलेमान ही मेरा
घर और उस के सहन तामीर करेगा। क्यूँकि मैं ने उसे
चुन कर फ़रमाया है कि वह मेरा बेटा होगा और मैं
उस का बाप हूँगा। 7 अगर वह आज की तरह आइन्दा
भी मेरे अह्काम और हिदायात पर अमल करता रहे
तो मैं उस की बादशाही अबद तक क़ाइम रखूँगा।'
8 अब मेरी हिदायत पर ध्यान दें, पूरा इस्राईल यानी
रब की जमाअत और हमारा ख़ुदा इस के गवाह हैं।
रब अपने ख़ुदा के तमाम अह्काम के ताबे रहें! फिर
आइन्दा भी यह अच्छा मुल्क आप की मिलकियत
और हमेशा तक आप की औलाद की मौरूसी ज़मीन
रहेगा। 9 ऐ सुलेमान मेरे बेटे, अपने बाप के ख़ुदा
को तस्लीम करके पूरे दिल-ओ-जान और ख़ुशी से
उस की ख़िदमत करें। क्यूँकि रब तमाम दिलों की
तहक़ीक़ कर लेता है, और वह हमारे ख़यालों के
तमाम मन्सूबों से वाक़िफ़ है। उस के तालिब रहें तो
आप उसे पा लेंगे। लेकिन अगर आप उसे तर्क करें
तो वह आप को हमेशा के लिए रद्द कर देगा। 10 याद
रहे, रब ने आप को इस लिए चुन लिया है कि आप
उस के लिए मुक़द्दस घर तामीर करें। मज़बूत रह कर
इस काम में लगे रहें!"

रब के घर का नक़्शा

11 फिर दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को रब के घर
का नक़्शा दे दिया जिस में तमाम तफ़्सीलात दर्ज थीं
यानी उस के बरामदे, ख़ज़ानों के कमरे, बालाख़ाने,
अन्दरूनी कमरे, वह मुक़द्दसतरीन कमरा जिस में
अह्द के सन्दूक़ को उस के कफ़्फ़ारे के ढकने समेत
रखना था, 12 रब के घर के सहन, उस के इर्दगिर्द
के कमरे और वह कमरे जिन में रब के लिए मख़्सूस
किए गए सामान को महफ़ूज़ रखना था।

दाऊद ने रूह की हिदायत से यह पूरा नक़्शा तय्यार
किया था। 13 उस ने रब के घर की ख़िदमत के
लिए दरकार इमामों और लावियों के गुरोहों को भी
मुक़र्रर किया, और साथ साथ रब के घर में बाक़ी
तमाम ज़िम्मादारियाँ भी। इस के इलावा उस ने रब
के घर की ख़िदमत के लिए दरकार तमाम सामान
की फ़हरिस्त भी तय्यार की थी। 14 उस ने मुक़र्रर
किया कि मुख़्तलिफ़ चीज़ों के लिए कितना सोना
और कितनी चाँदी इस्तेमाल करनी है। इन में ज़ैल की
चीज़ें शामिल थीं : 15 सोने और चाँदी के चराग़दान
और उन के चराग़ (मुख़्तलिफ़ चराग़दानों के वज़न
फ़र्क़ थे, क्यूँकि हर एक का वज़न उस के मक़्सद
पर मुन्हसिर था), 16 सोने की वह मेज़ें जिन पर रब
के लिए मख़्सूस रोटियाँ रखनी थीं, चाँदी की मेज़ें,
17 ख़ालिस सोने के काँटे, छिड़काओ के कटोरे और
सुराही, सोने-चाँदी के प्याले 18 और बख़ूर जलाने की
क़ुर्बानगाह पर मंढा हुआ ख़ालिस सोना। दाऊद ने रब
के रथ का नक़्शा भी सुलेमान के हवाले कर दिया,
यानी उन करूबी फ़रिश्तों का नक़्शा जो अपने परों
को फैला कर रब के अह्द के सन्दूक़ को ढाँप देते
हैं।

19 दाऊद ने कहा, "मैं ने यह तमाम तफ़्सीलात वैसे
ही क़लमबन्द कर दी हैं जैसे रब ने मुझे हिक्मत और
समझ अता की है।"

20 फिर वह अपने बेटे सुलेमान से मुख़ातिब हुआ,
"मज़बूत और दिलेर हों! डरें मत और हिम्मत मत
हारना, क्यूँकि रब ख़ुदा मेरा ख़ुदा आप के साथ है।
न वह आप को छोड़ेगा, न तर्क करेगा बल्कि रब के
घर की तक्मील तक आप की मदद करता रहेगा।
21 ख़िदमत के लिए मुक़र्रर इमामों और लावियों के
गुरोह भी आप का सहारा बन कर रब के घर में अपनी
ख़िदमत सरअन्जाम देंगे। तामीर के लिए जितने भी
माहिर कारीगरों की ज़रूरत है वह ख़िदमत के लिए
तय्यार खड़े हैं। बुज़ुर्गों से ले कर आम लोगों तक
सब आप की हर हिदायत की तामील करने के लिए
मुस्तइद हैं।"

रब के घर की तामीर के लिए नज़राने

29 1 फिर दाऊद दुबारा पूरी जमाअत से
मुख़ातिब हुआ, "अल्लाह ने मेरे बेटे सुलेमान
को चुन कर मुक़र्रर किया है कि वह अगला बादशाह
बने। लेकिन वह अभी जवान और नातजरिबाकार है,
और यह तामीरी काम बहुत वसी है। उसे तो यह महल
इन्सान के लिए नहीं बनाना है बल्कि रब हमारे ख़ुदा
के लिए। 2 मैं पूरी जाँफ़िशानी से अपने ख़ुदा के घर
की तामीर के लिए सामान जमा कर चुका हूँ। इस
में सोना-चाँदी, पीतल, लोहा, लकड़ी, अक़ीक़-ए-
अह्मर, [o]मुख़्तलिफ़ जड़े हुए जवाहिर और पच्चीकारी
के मुख़्तलिफ़ पत्थर बड़ी मिक़्दार में शामिल हैं।
3 और चूँकि मुझ में अपने ख़ुदा का घर बनाने के लिए
बोझ है इस लिए मैं ने इन चीज़ों के इलावा अपने
ज़ाती ख़ज़ानों से भी सोना और चाँदी दी है 4 यानी
तक़रीबन 1,00,000 किलोग्राम ख़ालिस सोना और
2,35,000 किलोग्राम ख़ालिस चाँदी। मैं चाहता हूँ
कि यह कमरों की दीवारों पर चढ़ाई जाए। 5 कुछ
कारीगरों के बाक़ी कामों के लिए भी इस्तेमाल हो
सकता है। अब मैं आप से पूछता हूँ, आज कौन

---

[o]carnelian

मेरी तरह ख़ुशी से रब के काम के लिए कुछ देने को तय्यार है?”

6 यह सुन कर वहाँ हाज़िर ख़ानदानी सरपरस्तों, क़बीलों के बुज़ुर्गों, हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों और बादशाह के आला सरकारी अफ़सरों ने ख़ुशी से काम के लिए हदिए दिए। 7 उस दिन रब के घर के लिए तक़रीबन 1,70,000 किलोग्राम सोना, सोने के 10,000 सिक्के, 3,40,000 किलोग्राम चाँदी, 6,10,000 किलोग्राम पीतल और 34,00,000 किलोग्राम लोहा जमा हुआ। 8 जिस के पास जवाहिर थे उस ने उन्हें यहीएल जैर्सोनी के हवाले कर दिया जो ख़ज़ान्ची था और जिस ने उन्हें रब के घर के ख़ज़ाने में महफ़ूज़ कर लिया। 9 पूरी क़ौम इस फ़राख़दिली को देख कर ख़ुश हुई, क्यूँकि सब ने दिली ख़ुशी और फ़य्याज़ी से अपने हदिए रब को पेश किए। दाऊद बादशाह भी निहायत ख़ुश हुआ।

दाऊद की दुआ

10 इस के बाद दाऊद ने पूरी जमाअत के सामने रब की तम्जीद करके कहा,

“ऐ रब हमारे बाप इस्राईल के ख़ुदा, अज़ल से अबद तक तेरी हम्द हो। 11 ऐ रब, अज़मत, क़ुदरत, जलाल और शान-ओ-शौकत तेरे ही हैं, क्यूँकि जो कुछ भी आसमान और ज़मीन में है वह तेरा ही है। ऐ रब, सल्तनत तेरे हाथ में है, और तू तमाम चीज़ों पर सरफ़राज़ है। 12 दौलत और इज़्ज़त तुझ से मिलती है, और तू सब पर हुक्मरान है। तेरे हाथ में ताक़त और क़ुदरत है, और हर इन्सान को तू ही ताक़तवर और मज़बूत बना सकता है। 13 ऐ हमारे ख़ुदा, यह देख कर हम तेरी सताइश और तेरे जलाली नाम की तारीफ़ करते हैं।

14 मेरी और मेरी क़ौम की क्या हैसियत है कि हम इतनी फ़य्याज़ी से यह चीज़ें दे सके? आख़िर हमारी तमाम मिलकियत तेरी तरफ़ से है। जो कुछ भी हम ने तुझे दे दिया वह हमें तेरे हाथ से मिला है। 15 अपने बापदादा की तरह हम भी तेरे नज़्दीक परदेसी और ग़ैरशहरी हैं। दुनिया में हमारी ज़िन्दगी साय की तरह आरिज़ी है, और मौत से बचने की कोई उम्मीद नहीं। 16 ऐ रब हमारे ख़ुदा, हम ने यह सारा तामीरी सामान इस लिए इकट्ठा किया है कि तेरे मुक़द्दस नाम के लिए घर बनाया जाए। लेकिन हक़ीक़त में यह सब कुछ पहले से तेरे हाथ से हासिल हुआ है। यह पहले से तेरा ही है। 17 ऐ मेरे ख़ुदा, मैं जानता हूँ कि तू इन्सान का दिल जाँच लेता है, कि दयानतदारी तुझे पसन्द है। जो कुछ भी मैं ने दिया है वह मैं ने ख़ुशी से और अच्छी नीयत से दिया है। अब मुझे यह देख कर ख़ुशी है कि यहाँ हाज़िर तेरी क़ौम ने भी इतनी फ़य्याज़ी से तुझे हदिए दिए हैं।

18 ऐ रब हमारे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और इस्राईल के ख़ुदा, गुज़ारिश है कि तू हमेशा तक अपनी क़ौम के दिलों में ऐसी ही तड़प क़ाइम रख। अता कर कि उन के दिल तेरे साथ लिपटे रहें। 19 मेरे बेटे सुलेमान की भी मदद कर ताकि वह पूरे दिल-ओ-जान से तेरे अह्काम और हिदायात पर अमल करे और उस महल को तक्मील तक पहुँचा सके जिस के लिए मैं ने तय्यारियाँ की हैं।”

20 फिर दाऊद ने पूरी जमाअत से कहा, “आएँ, रब अपने ख़ुदा की सताइश करें!” चुनाँचे सब रब अपने बापदादा के ख़ुदा की तम्जीद करके रब और बादशाह के सामने मुँह के बल झुक गए।

21 अगले दिन तमाम इस्राईल के लिए भस्म होने वाली बहुत सी क़ुर्बानियाँ उन की मै की नज़रों समेत रब को पेश की गईं। इस के लिए 1,000 जवान बैलों, 1,000 मेंढों और 1,000 भेड़ के बच्चों को चढ़ाया गया। साथ साथ ज़बह की बेशुमार क़ुर्बानियाँ भी पेश की गईं। 22 उस दिन उन्हों ने रब के हुज़ूर खाते-पीते हुए बड़ी ख़ुशी मनाई। फिर उन्हों ने दुबारा इस की तस्दीक़ की कि दाऊद का बेटा सुलेमान हमारा बादशाह है। तेल से उसे मसह करके उन्हों ने उसे रब के हुज़ूर बादशाह और सदोक़ को इमाम क़रार दिया।

सुलेमान की ज़बरदस्त हुकूमत

23 यूँ सुलेमान अपने बाप दाऊद की जगह रब के
तख़्त पर बैठ गया। उसे कामयाबी हासिल हुई, और
तमाम इस्राईल उस के ताबे रहा। 24 तमाम आला
अफ़्सर, बड़े बड़े फ़ौजी और दाऊद के बाक़ी बेटों
ने भी अपनी ताबेदारी का इज़हार किया। 25 इस्राईल
के देखते देखते रब ने सुलेमान को बहुत सरफ़राज़
किया। उस ने उस की सल्तनत को ऐसी शान-ओ-
शौकत से नवाज़ा जो माज़ी में इस्राईल के किसी भी
बादशाह को हासिल नहीं हुई थी।

दाऊद की वफ़ात

26–27 दाऊद बिन यस्सी कुल 40 साल तक इस्राईल
का बादशाह रहा, 7 साल हब्रून में और 33 साल
यरूशलम में। 28 वह बहुत उम्ररसीदा और उम्र, दौलत
और इज़्ज़त से आसूदा हो कर इन्तिक़ाल कर गया।
फिर सुलेमान तख़्तनशीन हुआ।

29 बाक़ी जो कुछ दाऊद की हुकूमत के दौरान हुआ
वह तीनों किताबों 'समूएल ग़ैबबीन की तारीख़,'
'नातन नबी की तारीख़' और 'जाद ग़ैबबीन की
तारीख़' में दर्ज है। 30 इन में उस की हुकूमत और
असर-ओ-रसूख़ की तफ़्सीलात बयान की गई हैं,
नीज़ वह कुछ जो उस के साथ, इस्राईल के साथ
और गिर्द-ओ-नवाह के ममालिक के साथ हुआ।

२- तवारीख़

सुलेमान रब से हिक्मत माँगता है

1 [1] सुलेमान बिन दाऊद की हुकूमत मज़बूत हो
गई। रब उस का ख़ुदा उस के साथ था, और
वह उस की ताक़त बढ़ाता रहा।
[2] एक दिन सुलेमान ने तमाम इस्राईल को अपने पास
बुलाया। उन में हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर
मुक़र्रर अफ़्सर, क़ाज़ी, तमाम बुज़ुर्ग और कुंबों के
सरपरस्त शामिल थे। [3] फिर सुलेमान उन के साथ
जिबऊन की उस पहाड़ी पर गया जहाँ अल्लाह का
मुलाक़ात का ख़ैमा था, वही जो रब के ख़ादिम मूसा
ने रेगिस्तान में बनवाया था। [4] अह्द का सन्दूक़ उस
में नहीं था, क्यूँकि दाऊद ने उसे क़िर्यत-यारीम से
यरूशलम ला कर एक ख़ैमे में रख दिया था जो उस
ने वहाँ उस के लिए तय्यार कर रखा था। [5] लेकिन
पीतल की जो क़ुर्बानगाह बज़लीएल बिन ऊरी बिन
हूर ने बनाई थी वह अब तक जिबऊन में रब के
ख़ैमे के सामने थी। अब सुलेमान और इस्राईल उस
के सामने जमा हुए ताकि रब की मर्ज़ी दरयाफ़्त
करें। [6] वहाँ रब के हुज़ूर सुलेमान ने पीतल की उस
क़ुर्बानगाह पर भस्म होने वाली 1,000 क़ुर्बानियाँ
चढ़ाईं।
[7] उसी रात रब सुलेमान पर ज़ाहिर हुआ और
फ़रमाया, "तेरा दिल क्या चाहता है? मुझे बता दे तो
मैं तेरी ख़्वाहिश पूरी करूँगा।" [8] सुलेमान ने जवाब
दिया, "तू मेरे बाप दाऊद पर बड़ी मेहरबानी कर
चुका है, और अब तू ने उस की जगह मुझे तख़्त पर
बिठा दिया है। [9] तू ने मुझे एक ऐसी क़ौम पर बादशाह
बना दिया है जो ज़मीन की ख़ाक की तरह बेशुमार
है। चुनाँचे ऐ रब ख़ुदा, वह वादा पूरा कर जो तू ने मेरे
बाप दाऊद से किया है। [10] मुझे हिक्मत और समझ
अता फ़रमा ताकि मैं इस क़ौम की राहनुमाई कर
सकूँ। क्यूँकि कौन तेरी इस अज़ीम क़ौम का इन्साफ़
कर सकता है?"
[11] अल्लाह ने सुलेमान से कहा, "मैं ख़ुश हूँ कि तू
दिल से यही कुछ चाहता है। तू ने न माल-ओ-दौलत,
न इज़्ज़त, न अपने दुश्मनों की हलाकत और न उम्र
की दराज़ी बल्कि हिक्मत और समझ माँगी है ताकि
मेरी उस क़ौम का इन्साफ़ कर सके जिस पर मैं
ने तुझे बादशाह बना दिया है। [12] इस लिए मैं तेरी
यह दरख़्वास्त पूरी करके तुझे हिक्मत और समझ
अता करूँगा। साथ साथ मैं तुझे उतना माल-ओ-
दौलत और उतनी इज़्ज़त दूँगा जितनी न माज़ी में
किसी बादशाह को हासिल थी, न मुस्तक़बिल में
कभी किसी को हासिल होगी।"
[13] इस के बाद सुलेमान जिबऊन की उस पहाड़ी से
उतरा जिस पर मुलाक़ात का ख़ैमा था और यरूशलम
वापस चला गया जहाँ वह इस्राईल पर हुकूमत करता
था।

सुलेमान की दौलत

[14] सुलेमान के 1,400 रथ और 12,000 घोड़े थे।
कुछ उस ने रथों के लिए मख़्सूस किए गए शहरों में
और कुछ यरूशलम में अपने पास रखे। [15] बादशाह
की सरगर्मियों के बाइस चाँदी पत्थर जैसी आम
हो गई और देवदार की क़ीमती लकड़ी मग़रिब
के नशेबी पहाड़ी इलाक़े की अन्जीर-तूत की सस्ती
लकड़ी जैसी आम हो गई। [16] बादशाह अपने घोड़े
मिस्र और कूए यानी किलिकिया से दरआमद करता
था। उस के ताजिर इन जगहों पर जा कर उन्हें ख़रीद
लाते थे। [17] बादशाह के रथ मिस्र से दरआमद होते
थे। हर रथ की क़ीमत चाँदी के 600 सिक्के और हर
घोड़े की क़ीमत चाँदी के 150 सिक्के थी। सुलेमान के

ताजिर यह घोड़े बरआमद करते हुए तमाम हित्ती और अरामी बादशाहों तक भी पहुँचाते थे।

रब के घर की तामीर की तय्यारियाँ

2 1 फिर सुलेमान ने रब के लिए घर और अपने लिए शाही महल बनाने का हुक्म दिया। 2 इस के लिए उस ने 1,50,000 आदमियों की भर्ती की। 80,000 को उस ने पहाड़ी कानों में लगाया ताकि वह पत्थर निकालें जबकि 70,000 अफ़राद की ज़िम्मादारी यह पत्थर यरूशलम लाना थी। इन सब पर सुलेमान ने 3,600 निगरान मुक़र्रर किए। 3 उस ने सूर के बादशाह हीराम को इत्तिला दी, "जिस तरह आप मेरे बाप दाऊद को देवदार की लकड़ी भेजते रहे जब वह अपने लिए महल बना रहे थे उसी तरह मुझे भी देवदार की लकड़ी भेजें। 4 मैं एक घर तामीर करके उसे रब अपने ख़ुदा के नाम के लिए मख़्सूस करना चाहता हूँ। क्यूँकि हमें ऐसी जगह की ज़रूरत है जिस में उस के हुज़ूर ख़ुश्बूदार बख़ूर जलाया जाए, रब के लिए मख़्सूस रोटियाँ बाक़ाइदगी से मेज़ पर रखी जाएँ और ख़ास मौक़ों पर भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश की जाएँ यानी हर सुब्ह-ओ-शाम, सबत के दिन, नए चाँद की ईदों और रब हमारे ख़ुदा की दीगर मुक़र्ररा ईदों पर। यह इस्राईल का दाइमी फ़र्ज़ है।

5 जिस घर को मैं बनाने को हूँ वह निहायत अज़ीम होगा, क्यूँकि हमारा ख़ुदा दीगर तमाम माबूदों से कहीं अज़ीम है। 6 लेकिन कौन उस के लिए ऐसा घर बना सकता है जो उस के लाइक़ हो? बुलन्दतरीन आसमान भी उस की रिहाइश के लिए छोटा है। तो फिर मेरी क्या हैसियत है कि उस के लिए घर बनाऊँ? मैं सिर्फ़ ऐसी जगह बना सकता हूँ जिस में उस के लिए क़ुर्बानियाँ चढ़ाई जा सकें।

7 चुनाँचे मेरे पास किसी ऐसे समझदार कारीगर को भेज दें जो महारत से सोने-चाँदी, पीतल और लोहे का काम जानता हो। वह नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का कपड़ा बनाने और कन्दाकारी का उस्ताद भी हो। ऐसा शख़्स यरूशलम और यहूदाह में मेरे उन कारीगरों का इंचार्ज बने जिन्हें मेरे बाप दाऊद ने काम पर लगाया है। 8 इस के इलावा मुझे लुबनान से देवदार, जूनीपर और दीगर क़ीमती दरख़्तों की लकड़ी भेज दें। क्यूँकि मैं जानता हूँ कि आप के लोग उम्दा क़िस्म के लकड़हारे हैं। मेरे आदमी आप के लोगों के साथ मिल कर काम करेंगे। 9 हमें बहुत सी लकड़ी की ज़रूरत होगी, क्यूँकि जो घर मैं बनाना चाहता हूँ वह बड़ा और शानदार होगा। 10 आप के लक्कड़हारों के काम के मुआवज़े में मैं 32,75,000 किलोग्राम गन्दुम, 27,00,000 किलोग्राम जौ, 4,40,000 लिटर मै और 4,40,000 लिटर ज़ैतून का तेल दूँगा।"

11 सूर के बादशाह हीराम ने ख़त लिख कर सुलेमान को जवाब दिया, "रब अपनी क़ौम को प्यार करता है, इस लिए उस ने आप को उस का बादशाह बनाया है। 12 रब इस्राईल के ख़ुदा की हम्द हो जिस ने आसमान-ओ-ज़मीन को ख़ल्क़ किया है कि उस ने दाऊद बादशाह को इतना दानिशमन्द बेटा अता किया है। उस की तम्जीद हो कि यह अक़लमन्द और समझदार बेटा रब के लिए घर और अपने लिए महल तामीर करेगा। 13 मैं आप के पास एक माहिर और समझदार कारीगर को भेज देता हूँ जिस का नाम हीराम-अबी है। 14 उस की इस्राईली माँ, दान के क़बीले की है जबकि उस का बाप सूर का है। हीराम सोने-चाँदी, पीतल, लोहे, पत्थर और लकड़ी की चीज़ें बनाने में महारत रखता है। वह नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का कपड़ा और कतान का बारीक कपड़ा बना सकता है। वह हर क़िस्म की कन्दाकारी में भी माहिर है। जो भी मन्सूबा उसे पेश किया जाए उसे वह पाया-ए-तक्मील तक पहुँचा सकता है। यह आदमी आप के और आप के मुअज़्ज़ज़ बाप दाऊद के कारीगरों के साथ मिल कर काम करेगा। 15 चुनाँचे जिस गन्दुम, जौ, ज़ैतून के तेल और मै का ज़िक्र मेरे आक़ा ने किया वह अपने ख़ादिमों को भेज दें। 16 मुआवज़े में हम आप के लिए दरकार दरख़्तों को

लुबनान में कटवाएँगे और उन के बेड़े बांध कर
समुन्दर के ज़रीए याफ़ा शहर तक पहुँचा देंगे। वहाँ
से आप उन्हें यरूशलम ले जा सकेंगे।”
17 सुलेमान ने इस्राईल में आबाद तमाम ग़ैरमुल्कियों
की मर्दुमशुमारी करवाई। (उस के बाप दाऊद ने
भी उन की मर्दुमशुमारी करवाई थी।) मालूम हुआ
कि इस्राईल में 1,53,600 ग़ैरमुल्की रहते हैं। 18 इन
में से उस ने 80,000 को पहाड़ी कानों में लगाया
ताकि वह पत्थर निकालें जबकि 70,000 अफ़राद
की ज़िम्मादारी यह पत्थर यरूशलम लाना थी। इन
सब पर सुलेमान ने 3,600 निगरान मुक़र्रर किए।

रब के घर की तामीर

3 1 सुलेमान ने रब के घर को यरूशलम की पहाड़ी
मोरियाह पर तामीर किया। उस का बाप दाऊद
यह मक़ाम मुक़र्रर कर चुका था। यहीं जहाँ पहले
उर्नान यानी अरौनाह यबूसी अपना अनाज गाहता था
रब दाऊद पर ज़ाहिर हुआ था। 2 तामीर का यह काम
सुलेमान की हुकूमत के चौथे साल के दूसरे माह और
उस के दूसरे दिन शुरू हुआ।
3 मकान की लम्बाई 90 फ़ुट और चौड़ाई 30 फ़ुट
थी। 4 सामने एक बरामदा बनाया गया जो इमारत
जितना चौड़ा यानी 30 फ़ुट और 30 फ़ुट ऊँचा था।
उस की अन्दरूनी दीवारों पर उस ने ख़ालिस सोना
चढ़ाया। 5 बड़े हाल की दीवारों पर उस ने ऊपर
से ले कर नीचे तक जूनीपर की लकड़ी के तख़्ते
लगाए, फिर तख़्तों पर ख़ालिस सोना मंढवा कर
उन्हें खजूर के दरख़्तों और ज़न्जीरों की तस्वीरों
से आरास्ता किया। 6 सुलेमान ने रब के घर को
जवाहिर से भी सजाया। जो सोना इस्तेमाल हुआ वह
पर्वाइम से मंगवाया गया था। 7 सोना मकान, तमाम
शहतीरों, दहलीज़ों, दीवारों और दरवाज़ों पर मंढा
गया। दीवारों पर करूबी फ़रिश्तों की तस्वीरें भी
कन्दा की गईं।

मुक़द्दसतरीन कमरा

8 इमारत का सब से अन्दरूनी कमरा बनाम
मुक़द्दसतरीन कमरा इमारत जैसा चौड़ा यानी 30 फ़ुट
था। उस की लम्बाई भी 30 फ़ुट थी। इस कमरे की
तमाम दीवारों पर 20,000 किलोग्राम से ज़ाइद सोना
मंढा गया। 9 सोने की कीलों का वज़न तक़रीबन 600
ग्राम था। बालाख़ानों की दीवारों पर भी सोना मंढा
गया।
10 फिर सुलेमान ने करूबी फ़रिश्तों के दो मुजस्समे
बनवाए जिन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में रखा गया। उन
पर भी सोना चढ़ाया गया। 11–13 जब दोनों फ़रिश्तों
को एक दूसरे के साथ मुक़द्दसतरीन कमरे में खड़ा
किया गया तो उन के चार परों की मिल कर लम्बाई
30 फ़ुट थी। हर एक के दो पर थे, और हर पर की
लम्बाई साढ़े सात सात फ़ुट थी। उन्हें मुक़द्दसतरीन
कमरे में यूँ एक दूसरे के साथ खड़ा किया गया कि
हर फ़रिश्ते का एक पर दूसरे के पर से लगता जबकि
दाईं और बाईं तरफ़ हर एक का दूसरा पर दीवार
के साथ लगता था। वह अपने पाँओ पर खड़े बड़े
हाल की तरफ़ देखते थे। 14 मुक़द्दसतरीन कमरे के
दरवाज़े पर सुलेमान ने बारीक कतान से बुना हुआ
पर्दा लगवाया। वह नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी
रंग के धागे से सजा हुआ था, और उस पर करूबी
फ़रिश्तों की तस्वीरें थीं।

रब के घर के दरवाज़े पर दो सतून

15 सुलेमान ने दो सतून ढलवा कर रब के घर के
दरवाज़े के सामने खड़े किए। हर एक 27 फ़ुट लम्बा
था, और हर एक पर एक बालाई हिस्सा रखा गया
जिस की ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट थी। 16 इन बालाई
हिस्सों को ज़न्जीरों से सजाया गया जिन से सौ अनार
लटके हुए थे। 17 दोनों सतूनों को सुलेमान ने रब के
घर के दरवाज़े के दाईं और बाईं तरफ़ खड़ा किया।
दहने हाथ के सतून का नाम उस ने ‘यकीन’ और बाएँ
हाथ के सतून का नाम ‘बोअज़’ रखा।

क़ुर्बानगाह और समुन्दर नामी हौज़

4 1 सुलेमान ने पीतल की एक क़ुर्बानगाह भी
बनवाई जिस की लम्बाई 30 फ़ुट, चौड़ाई 30
फ़ुट और ऊँचाई 15 फ़ुट थी।
2 इस के बाद उस ने पीतल का बड़ा गोल हौज़
ढलवाया जिस का नाम 'समुन्दर' रखा गया। उस की
ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट, उस का मुँह 15 फ़ुट चौड़ा और
उस का घेरा तक़रीबन 45 फ़ुट था। 3 हौज़ के किनारे
के नीचे बैलों की दो क़तारें थीं। फ़ी फ़ुट तक़रीबन 6
बैल थे। बैल और हौज़ मिल कर ढाले गए थे। 4 हौज़
को बैलों के 12 मुजस्समों पर रखा गया। तीन बैलों
का रुख़ शिमाल की तरफ़, तीन का रुख़ मग़रिब
की तरफ़, तीन का रुख़ जुनूब की तरफ़ और तीन
का रुख़ मशरिक़ की तरफ़ था। उन के पिछले हिस्से
हौज़ की तरफ़ थे, और हौज़ उन के कंधों पर पड़ा था।
5 हौज़ का किनारा प्याले बल्कि सोसन के फूल की
तरह बाहर की तरफ़ मुड़ा हुआ था। उस की दीवार
तक़रीबन तीन इंच मोटी थी, और हौज़ में पानी के
तक़रीबन 66,000 लिटर समा जाते थे।
6 सुलेमान ने 10 बासन ढलवाए। पाँच को रब के
घर के दाएँ हाथ और पाँच को उस के बाएँ हाथ
खड़ा किया गया। इन बासनों में गोश्त के वह टुकड़े
धोए जाते जिन्हें भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर
जलाना था। लेकिन 'समुन्दर' नामी हौज़ इमामों के
इस्तेमाल के लिए था। उस में वह नहाते थे।

सोने के शमादान और मेज़ें

7 सुलेमान ने सोने के 10 शमादान मुक़र्ररा
तफ़्सीलात के मुताबिक़ बनवा कर रब के घर में रख
दिए, पाँच को दाईं तरफ़ और पाँच को बाईं तरफ़।
8 दस मेज़ें भी बना कर रब के घर में रखी गईं, पाँच
को दाईं तरफ़ और पाँच को बाईं तरफ़। इन चीज़ों
के इलावा सुलेमान ने छिड़काओ के सोने के 100
कटोरे बनवाए।

सहन

9 फिर सुलेमान ने वह अन्दरूनी सहन बनवाया
जिस में सिर्फ़ इमामों को दाख़िल होने की इजाज़त
थी। उस ने बड़ा सहन भी उस के दरवाज़ों समेत
बनवाया। दरवाज़ों के किवाड़ों पर पीतल चढ़ाया
गया। 10 'समुन्दर' नामी हौज़ को सहन के जुनूब-
मशरिक़ में रखा गया।

उस सामान की फ़हरिस्त जो हीराम ने तय्यार किया

11 हीराम ने बासन, बेलचे और छिड़काओ के
कटोरे भी बनाए। यूँ उस ने अल्लाह के घर में वह सारा
काम मुकम्मल किया जिस के लिए सुलेमान बादशाह
ने उसे बुलाया था। उस ने ज़ैल की चीज़ें बनाईं :
12 दो सतून,
सतूनों पर लगे प्यालानुमा बालाई हिस्से,
बालाई हिस्सों पर लगी ज़न्जीरों का डिज़ाइन,
13 ज़न्जीरों के ऊपर लगे अनार (फ़ी बालाई हिस्सा
200 अदद),
14 हथगाड़ियाँ,
इन पर के पानी के बासन,
15 हौज़ बनाम समुन्दर,
इसे उठाने वाले बैल के 12 मुजस्समे,
16 बालटियाँ, बेलचे, गोश्त के काँटे।
तमाम सामान जो हीराम-अबी ने सुलेमान के हुक्म
पर रब के घर के लिए बनाया पीतल से ढाल कर
पालिश किया गया था। 17 बादशाह ने उसे वादी-ए-
यर्दन में सुक्कात और ज़र्तान के दरमियान ढलवाया।
वहाँ एक फ़ौंडरी थी जहाँ हीराम ने गारे से साँचे बना
कर हर चीज़ ढाल दी। 18 इस सामान के लिए सुलेमान
बादशाह ने इतना ज़्यादा पीतल इस्तेमाल किया कि
उस का कुल वज़न मालूम न हो सका।

रब के घर के अन्दर सोने का सामान

19 अल्लाह के घर के अन्दर के लिए सुलेमान ने दर्ज-
ए-ज़ैल सामान बनवाया :

सोने की क़ुर्बानगाह,
सोने की वह मेज़ें जिन पर रब के लिए मख़्सूस
रोटियाँ पड़ी रहती थीं,
20 ख़ालिस सोने के वह शमादान और चराग़ जिन
को क़वाइद के मुताबिक़ मुक़द्दसतरीन कमरे के
सामने जलना था,
21 ख़ालिस सोने के वह फूल जिन से शमादान
आरास्ता थे,
ख़ालिस सोने के चराग़ और बत्ती को बुझाने के
औज़ार,
22 चराग़ को कतरने के ख़ालिस सोने के औज़ार,
छिड़काओ के ख़ालिस सोने के कटोरे और प्याले,
जलते हुए कोएले के लिए ख़ालिस सोने के बर्तन,
मुक़द्दसतरीन कमरे और बड़े हाल के दरवाज़े।

5 1 रब के घर की तक्मील पर सुलेमान ने वह
सोना-चाँदी और बाक़ी तमाम क़ीमती चीज़ें रब
के घर के ख़ज़ानों में रखवा दीं जो उस के बाप दाऊद
ने अल्लाह के लिए मख़्सूस की थीं।

अह्द का सन्दूक़ रब के घर में लाया जाता है

2 फिर सुलेमान ने इस्राईल के तमाम बुज़ुर्गों और
क़बीलों और कुंबों के तमाम सरपरस्तों को अपने
पास यरूशलम में बुलाया, क्यूँकि रब के अह्द का
सन्दूक़ अब तक यरूशलम के उस हिस्से में था जो
'दाऊद का शहर' या सिय्यून कहलाता है। सुलेमान
चाहता था कि क़ौम के नुमाइन्दे हाज़िर हों जब
सन्दूक़ को वहाँ से रब के घर में पहुँचाया जाए।
3 चुनाँचे इस्राईल के तमाम मर्द साल के सातवें महीने
[p]में बादशाह के पास यरूशलम में जमा हुए। इसी
महीने में झोंपड़ियों की ईद मनाई जाती थी।
4 जब सब जमा हुए तो लावी रब के सन्दूक़ को
उठा कर 5 रब के घर में लाए। इमामों के साथ मिल
कर उन्हों ने मुलाक़ात के ख़ैमे को भी उस के तमाम
मुक़द्दस सामान समेत रब के घर में पहुँचाया। 6 वहाँ
सन्दूक़ के सामने सुलेमान बादशाह और बाक़ी तमाम
जमाशुदा इस्राईलियों ने इतनी भेड़-बकरियाँ और
गाय-बैल क़ुर्बान किए कि उन की तादाद गिनी नहीं
जा सकती थी।
7 इमामों ने रब के अह्द का सन्दूक़ पिछले यानी
मुक़द्दसतरीन कमरे में ला कर करूबी फ़रिश्तों के
परों के नीचे रख दिया। 8 फ़रिश्तों के पर पूरे सन्दूक़
पर उस की उठाने की लकड़ियों समेत फैले रहे। 9 तो
भी उठाने की यह लकड़ियाँ इतनी लम्बी थीं कि उन
के सिरे सामने वाले यानी मुक़द्दस कमरे से नज़र आते
थे। लेकिन वह बाहर से देखे नहीं जा सकते थे। आज
तक वह वहीं मौजूद हैं। 10 सन्दूक़ में सिर्फ़ पत्थर
की वह दो तख़्तियाँ थीं जिन को मूसा ने होरिब यानी
कोह-ए-सीना के दामन में उस में रख दिया था, उस
वक़्त जब रब ने मिस्र से निकले हुए इस्राईलियों के
साथ अह्द बांधा था। 11 फिर इमाम मुक़द्दस कमरे
से निकल कर सहन में आए।

जितने इमाम आए थे उन सब ने अपने आप को
पाक-साफ़ किया हुआ था, ख़्वाह उस वक़्त उन
के गुरोह की रब के घर में ड्यूटी थी या नहीं।
12 लावियों के तमाम गुलूकार भी हाज़िर थे। उन के
राहनुमा आसफ़, हैमान और यदूतून अपने बेटों और
रिश्तेदारों समेत सब बारीक कतान के लिबास पहने
हुए क़ुर्बानगाह के मशरिक़ में खड़े थे। वह झाँझ,
सितार और सरोद बजा रहे थे, जबकि उन के साथ
120 इमाम तुरम फूँक रहे थे। 13 गाने वाले और तुरम
बजाने वाले मिल कर रब की सताइश कर रहे थे।
तुरमों, झाँझों और बाक़ी साज़ों के साथ उन्हों ने
बुलन्द आवाज़ से रब की तम्जीद में गीत गाया, "वह
भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।"

तब रब का घर एक बादल से भर गया। 14 इमाम रब
के घर में अपनी ख़िदमत अन्जाम न दे सके, क्यूँकि
अल्लाह का घर उस के जलाल के बादल से मामूर हो
गया था।

---

[p]सितम्बर ता अक्तूबर

6 1 यह देख कर सुलेमान ने दुआ की, “रब ने
फ़रमाया है कि मैं घने बादल के अंधेरे में रहूँगा।
2 मैं ने तेरे लिए अज़ीम सुकूनतगाह बनाई है, एक
मक़ाम जो तेरी अबदी सुकूनत के लाइक़ है।”

रब के घर की मख़्सूसियत पर सुलेमान की तक़रीर

3 फिर बादशाह ने मुड़ कर रब के घर के सामने
खड़ी इस्राईल की पूरी जमाअत की तरफ़ रुख़ किया।
उस ने उन्हें बरकत दे कर कहा,
4 “रब इस्राईल के ख़ुदा की तारीफ़ हो जिस ने वह
वादा पूरा किया है जो उस ने मेरे बाप दाऊद से
किया था। क्यूँकि उस ने फ़रमाया, 5 ‘जिस दिन मैं
अपनी क़ौम को मिस्र से निकाल लाया उस दिन से
ले कर आज तक मैं ने न कभी फ़रमाया कि इस्राईली
क़बीलों के किसी शहर में मेरे नाम की ताज़ीम में
घर बनाया जाए, न किसी को मेरी क़ौम इस्राईल पर
हुकूमत करने के लिए मुक़र्रर किया। 6 लेकिन अब
मैं ने यरूशलम को अपने नाम की सुकूनतगाह और
दाऊद को अपनी क़ौम इस्राईल का बादशाह बनाया
है।’
7 मेरे बाप दाऊद की बड़ी ख़्वाहिश थी कि रब
इस्राईल के ख़ुदा के नाम की ताज़ीम में घर बनाए।
8 लेकिन रब ने एतिराज़ किया, ‘मैं ख़ुश हूँ कि तू
मेरे नाम की ताज़ीम में घर तामीर करना चाहता है,
9 लेकिन तू नहीं बल्कि तेरा बेटा ही उसे बनाएगा।’
10 और वाक़ई, रब ने अपना वादा पूरा किया है।
मैं रब के वादे के ऐन मुताबिक़ अपने बाप दाऊद
की जगह इस्राईल का बादशाह बन कर तख़्त पर
बैठ गया हूँ। और अब मैं ने रब इस्राईल के ख़ुदा
के नाम की ताज़ीम में घर भी बनाया है। 11 उस में
मैं ने वह सन्दूक़ रख दिया है जिस में शरीअत की
तख़्तियाँ पड़ी हैं, उस अह्द की तख़्तियाँ जो रब ने
इस्राईलियों से बांधा था।”

रब के घर की मख़्सूसियत पर सुलेमान की दुआ

12 फिर सुलेमान ने इस्राईल की पूरी जमाअत के
देखते देखते रब की क़ुर्बानगाह के सामने खड़े हो
कर अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठाए। 13 उस
ने इस मौक़े के लिए पीतल का एक चबूतरा बनवा
कर उसे बैरूनी सहन के बीच में रखवा दिया था।
चबूतरा साढ़े 7 फ़ुट लम्ब, साढ़े 7 फ़ुट चौड़ा और
साढ़े 4 फ़ुट ऊँचा था। अब सुलेमान उस पर चढ़ कर
पूरी जमाअत के देखते देखते झुक गया। अपने हाथों
को आसमान की तरफ़ उठा कर 14 उस ने दुआ की,
“ऐ रब इस्राईल के ख़ुदा, तुझ जैसा कोई ख़ुदा नहीं
है, न आसमान और न ज़मीन पर। तू अपना वह अह्द
क़ाइम रखता है जिसे तू ने अपनी क़ौम के साथ बांधा
है और अपनी मेहरबानी उन सब पर ज़ाहिर करता है
जो पूरे दिल से तेरी राह पर चलते हैं। 15 तू ने अपने
ख़ादिम दाऊद से किया हुआ वादा पूरा किया है।
जो बात तू ने अपने मुँह से मेरे बाप से की वह तू ने
अपने हाथ से आज ही पूरी की है। 16 ऐ रब इस्राईल
के ख़ुदा, अब अपनी दूसरी बात भी पूरी कर जो तू
ने अपने ख़ादिम दाऊद से की थी। क्यूँकि तू ने मेरे
बाप से वादा किया था, ‘अगर तेरी औलाद तेरी तरह
अपने चाल-चलन पर ध्यान दे कर मेरी शरीअत के
मुताबिक़ मेरे हुज़ूर चलती रहे तो इस्राईल पर उस की
हुकूमत हमेशा तक क़ाइम रहेगी।’ 17 ऐ रब इस्राईल
के ख़ुदा, अब बराह-ए-करम अपना यह वादा पूरा
कर जो तू ने अपने ख़ादिम दाऊद से किया है।
18 लेकिन क्या अल्लाह वाक़ई ज़मीन पर इन्सान के
दरमियान सुकूनत करेगा? नहीं, तू तो बुलन्दतरीन
आसमान में भी समा नहीं सकता! तो फिर यह मकान
जो मैं ने बनाया है किस तरह तेरी सुकूनतगाह बन
सकता है? 19 ऐ रब मेरे ख़ुदा, तो भी अपने ख़ादिम
की दुआ और इल्तिजा सुन जब मैं तेरे हुज़ूर पुकारते
हुए इल्तिमास करता हूँ 20 कि बराह-ए-करम दिन रात
इस इमारत की निगरानी कर! क्यूँकि यह वह जगह
है जिस के बारे में तू ने ख़ुद फ़रमाया, ‘यहाँ मेरा नाम

सुकूनत करेगा।' चुनाँचे अपने ख़ादिम की गुज़ारिश
सुन जो मैं इस मक़ाम की तरफ़ रुख़ किए हुए करता
हूँ। 21 जब हम इस मक़ाम की तरफ़ रुख़ करके दुआ
करें तो अपने ख़ादिम और अपनी क़ौम की इल्तिजाएँ
सुन। आसमान पर अपने तख़्त से हमारी सुन। और
जब सुनेगा तो हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर!

22 अगर किसी पर इल्ज़ाम लगाया जाए और
उसे यहाँ तेरी क़ुर्बानगाह के सामने लाया जाए
ताकि हलफ़ उठा कर वादा करे कि मैं बेक़ुसूर हूँ
23 तो बराह-ए-करम आसमान पर से सुन कर अपने
ख़ादिमों का इन्साफ़ कर। क़ुसूरवार को सज़ा दे कर
उस के अपने सर पर वह कुछ आने दे जो उस से
सरज़द हुआ है, और बेक़ुसूर को बेइल्ज़ाम क़रार दे
और उस की रास्तबाज़ी का बदला दे।

24 हो सकता है किसी वक़्त तेरी क़ौम इस्राईल तेरा
गुनाह करे और नतीजे में दुश्मन के सामने शिकस्त
खाए। अगर इस्राईली आख़िरकार तेरे पास लौट आएँ
और तेरे नाम की तम्जीद करके यहाँ इस घर में तेरे
हुज़ूर दुआ और इल्तिमास करें 25 तो आसमान पर से
उन की फ़र्याद सुन लेना। अपनी क़ौम इस्राईल का
गुनाह मुआफ़ करके उन्हें दुबारा उस मुल्क में वापस
लाना जो तू ने उन्हें और उन के बापदादा को दे दिया
था।

26 हो सकता है इस्राईली तेरा इतना संगीन गुनाह
करें कि काल पड़े और बड़ी देर तक बारिश न बरसे।
अगर वह आख़िरकार इस घर की तरफ़ रुख़ करके
तेरे नाम की तम्जीद करें और तेरी सज़ा के बाइस
अपना गुनाह छोड़ कर लौट आएँ 27 तो आसमान
पर से उन की फ़र्याद सुन लेना। अपने ख़ादिमों और
अपनी क़ौम इस्राईल को मुआफ़ कर, क्यूँकि तू ही
उन्हें अच्छी राह की तालीम देता है। तब उस मुल्क
पर दुबारा बारिश बरसा दे जो तू ने अपनी क़ौम को
मीरास में दे दिया है।

28 हो सकता है इस्राईल में काल पड़ जाए, अनाज
की फ़सल किसी बीमारी, फफूँदी, टिड्डियों या कीड़ों
से मुतअस्सिर हो जाए, या दुश्मन किसी शहर का
मुहासरा करे। जो भी मुसीबत या बीमारी हो, 29 अगर
कोई इस्राईली या तेरी पूरी क़ौम उस का सबब जान
कर अपने हाथों को इस घर की तरफ़ बढ़ाए और
तुझ से इल्तिमास करे 30 तो आसमान पर अपने तख़्त
से उन की फ़र्याद सुन लेना। उन्हें मुआफ़ करके हर
एक को उस की तमाम हरकतों का बदला दे, क्यूँकि
सिर्फ़ तू ही हर इन्सान के दिल को जानता है। 31 फिर
जितनी देर वह उस मुल्क में ज़िन्दगी गुज़ारेंगे जो तू ने
हमारे बापदादा को दिया था उतनी देर वह तेरा ख़ौफ़
मान कर तेरी राहों पर चलते रहेंगे।

32 आइन्दा परदेसी भी तेरे अज़ीम नाम, तेरी बड़ी
क़ुदरत और तेरे ज़बरदस्त कामों के सबब से आएँगे
और इस घर की तरफ़ रुख़ करके दुआ करेंगे।
अगरचे वह तेरी क़ौम इस्राईल के नहीं होंगे 33 तो
भी आसमान पर से उन की फ़र्याद सुन लेना। जो
भी दरख़्वास्त वह पेश करें वह पूरी करना ताकि
दुनिया की तमाम अक़्वाम तेरा नाम जान कर तेरी
क़ौम इस्राईल की तरह ही तेरा ख़ौफ़ मानें और जान
लें कि जो इमारत मैं ने तामीर की है उस पर तेरे ही
नाम का ठप्पा लगा है।

34 हो सकता है तेरी क़ौम के मर्द तेरी हिदायत के
मुताबिक़ अपने दुश्मन से लड़ने के लिए निकलें।
अगर वह तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत की
तरफ़ रुख़ करके दुआ करें जो मैं ने तेरे नाम के लिए
तामीर की है 35 तो आसमान पर से उन की दुआ और
इल्तिमास सुन कर उन के हक़ में इन्साफ़ क़ाइम
रखना।

36 हो सकता है वह तेरा गुनाह करें, ऐसी हरकतें
तो हम सब से सरज़द होती रहती हैं, और नतीजे में
तू नाराज़ हो कर उन्हें दुश्मन के हवाले कर दे जो
उन्हें क़ैद करके किसी दूरदराज़ या क़रीबी मुल्क
में ले जाए। 37 शायद वह जिलावतनी में तौबा करके
दुबारा तेरी तरफ़ रुजू करें और तुझ से इल्तिमास करें,
'हम ने गुनाह किया है, हम से ग़लती हुई है, हम ने
बेदीन हरकतें की हैं।'

38 अगर वह ऐसा करके अपनी क़ैद के मुल्क में
अपने पूरे दिल-ओ-जान से दुबारा तेरी तरफ़ रुजू करें
और तेरी तरफ़ से बापदादा को दिए गए मुल्क, तेरे
चुने हुए शहर और उस इमारत की तरफ़ रुख़ करके
दुआ करें जो मैं ने तेरे नाम के लिए तामीर की है
39 तो आसमान पर अपने तख़्त से उन की दुआ और
इल्तिमास सुन लेना। उन के हक़ में इन्साफ़ क़ाइम
करना, और अपनी क़ौम के गुनाहों को मुआफ़ कर
देना। 40 ऐ मेरे ख़ुदा, तेरी आँखें और तेरे कान उन
दुआओं के लिए खुले रहें जो इस जगह पर की जाती
हैं।

41 ऐ रब ख़ुदा, उठ कर अपनी आरामगाह के पास
आ, तू और अह्द का सन्दूक़ जो तेरी क़ुदरत का
इज़हार है। ऐ रब ख़ुदा, तेरे इमाम नजात से मुलब्बस
हो जाएँ, और तेरे ईमानदार तेरी भलाई की ख़ुशी
मनाएँ। 42 ऐ रब ख़ुदा, अपने मसह किए हुए ख़ादिम
को रद्द न कर बल्कि उस शफ़क़त को याद कर जो तू
ने अपने ख़ादिम दाऊद पर की है।"

रब के घर की मख़्सूसियत पर जश्न

7 1 सुलेमान की इस दुआ के इख़तिताम पर आग
ने आसमान पर से नाज़िल हो कर भस्म होने
वाली और ज़बह की क़ुर्बानियों को भस्म कर दिया।
साथ साथ रब का घर उस के जलाल से यूँ मामूर
हुआ 2 कि इमाम उस में दाख़िल न हो सके। 3 जब
इस्राईलियों ने देखा कि आसमान पर से आग नाज़िल
हुई है और घर रब के जलाल से मामूर हो गया है तो
वह मुँह के बल झुक कर रब की हम्द-ओ-सना करके
गीत गाने लगे, "वह भला है, और उस की शफ़क़त
अबदी है।"

4–5 फिर बादशाह और तमाम क़ौम ने रब के
हुज़ूर क़ुर्बानियाँ पेश करके अल्लाह के घर को
मख़्सूस किया। इस सिलसिले में सुलेमान ने
22,000 गाय-बैलों और 1,20,000 भेड़-बकरियों को
क़ुर्बान किया। 6 इमाम और लावी अपनी अपनी
ज़िम्मादारियों के मुताबिक़ खड़े थे। लावी उन साज़ों
को बजा रहे थे जो दाऊद ने रब की सताइश करने
के लिए बनवाए थे। साथ साथ वह हम्द का वह
गीत गा रहे थे जो उन्हों ने दाऊद से सीखा था, "उस
की शफ़क़त अबदी है।" लावियों के मुक़ाबिल इमाम
तुरम बजा रहे थे जबकि बाक़ी तमाम लोग खड़े थे।
7 सुलेमान ने सहन का दरमियानी हिस्सा क़ुर्बानियाँ
चढ़ाने के लिए मख़्सूस किया। वजह यह थी कि
पीतल की क़ुर्बानगाह इतनी क़ुर्बानियाँ पेश करने के
लिए छोटी थी, क्यूँकि भस्म होने वाली क़ुर्बानियों
और ग़ल्ला की नज़रों की तादाद बहुत ज़्यादा थी। इस
के इलावा सलामती की बेशुमार क़ुर्बानियों की चर्बी
को भी जलाना था।

8–9 ईद 14 दिनों तक मनाई गई। पहले हफ़्ते
में सुलेमान और तमाम इस्राईल ने क़ुर्बानगाह की
मख़्सूसियत मनाई और दूसरे हफ़्ते में झोंपड़ियों की
ईद। इस ईद में बहुत ज़्यादा लोग शरीक हुए। वह
दूरदराज़ इलाक़ों से यरूशलम आए थे, शिमाल में
लबो-हमात से ले कर जुनूब में उस वादी तक जो
मिस्र की सरहद थी। आख़िरी दिन पूरी जमाअत
ने इख़तितामी जश्न मनाया। 10 यह सातवें माह के
23वें दिन वुक़ूपज़ीर हुआ। इस के बाद सुलेमान ने
इस्राईलियों को रुख़्सत किया। सब शादमान और
दिल से ख़ुश थे कि रब ने दाऊद, सुलेमान और अपनी
क़ौम इस्राईल पर इतनी मेहरबानी की है।

रब सुलेमान से हमकलाम होता है

11 चुनाँचे सुलेमान ने रब के घर और शाही महल को
तक्मील तक पहुँचाया। जो कुछ भी उस ने ठान लिया
था वह पूरा हुआ। 12 एक रात रब उस पर ज़ाहिर हुआ
और कहा,

"मैं ने तेरी दुआ को सुन कर तै कर लिया है कि यह
घर वही जगह हो जहाँ तुम मुझे क़ुर्बानियाँ पेश कर
सको। 13 जब कभी मैं बारिश का सिलसिला रोकूँ, या
फ़सलें ख़राब करने के लिए टिड्डियाँ भेजूँ या अपनी
क़ौम में वबा फैलने दूँ 14 तो अगर मेरी क़ौम जो मेरे
नाम से कहलाती है अपने आप को पस्त करे और

दुआ करके मेरे चिहरे की तालिब हो और अपनी
शरीर राहों से बाज़ आए तो फिर मैं आसमान पर से
उस की सुन कर उस के गुनाहों को मुआफ़ कर दूँगा
और मुल्क को बहाल करूँगा। 15 अब से जब भी यहाँ
दुआ माँगी जाए तो मेरी आँखें खुली रहेंगी और मेरे
कान उस पर ध्यान देंगे। 16 क्यूँकि मैं ने इस घर को
चुन कर मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर रखा है ताकि मेरा
नाम हमेशा तक यहाँ क़ाइम रहे। मेरी आँखें और दिल
हमेशा इस में हाज़िर रहेंगे। 17 जहाँ तक तेरा ताल्लुक़
है, अपने बाप दाऊद की तरह मेरे हुज़ूर चलता रह।
क्यूँकि अगर तू मेरे तमाम अह्काम और हिदायात
की पैरवी करता रहे 18 तो मैं तेरी इस्राईल पर हुकूमत
क़ाइम रखूँगा। फिर मेरा वह वादा क़ाइम रहेगा जो
मैं ने तेरे बाप दाऊद से अह्द बांध कर किया था
कि इस्राईल पर तेरी औलाद की हुकूमत हमेशा तक
क़ाइम रहेगी।

19 लेकिन ख़बरदार! अगर तू मुझ से दूर हो कर
मेरे दिए गए अह्काम और हिदायात को तर्क करे
बल्कि दीगर माबूदों की तरफ़ रुजू करके उन की
ख़िदमत और परस्तिश करे 20 तो मैं इस्राईल को जड़
से उखाड़ कर उस मुल्क से निकाल दूँगा जो मैं ने
उन को दे दिया है। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं इस घर को
भी रद्द कर दूँगा जो मैं ने अपने नाम के लिए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस कर लिया है। उस वक़्त मैं इस्राईल को
तमाम अक़्वाम में मज़ाक़ और लान-तान का निशाना
बना दूँगा। 21 इस शानदार घर की बुरी हालत देख
कर यहाँ से गुज़रने वाले तमाम लोगों के रोंगटे खड़े
हो जाएंगे, और वह पूछेंगे, 'रब ने इस मुल्क और इस
घर से ऐसा सुलूक क्यूँ किया?' 22 तब लोग जवाब
देंगे, 'इस लिए कि गो रब उन के बापदादा का ख़ुदा
उन्हें मिस्र से निकाल कर यहाँ लाया तो भी यह लोग
उसे तर्क करके दीगर माबूदों से चिमट गए हैं। चूँकि
वह उन की परस्तिश और ख़िदमत करने से बाज़ न
आए इस लिए उस ने उन्हें इस सारी मुसीबत में डाल
दिया है'।"

सुलेमान की मुख़्तलिफ़ मुहिम्मात

8 1 रब के घर और शाही महल को तामीर करने
में 20 साल लग गए थे। 2 इस के बाद सुलेमान
ने वह आबादियाँ नए सिरे से तामीर कीं जो हीराम
ने उसे दे दी थीं। इन में उस ने इस्राईलियों को बसा
दिया।

3 एक फ़ौजी मुहिम्म के दौरान उस ने हमात-ज़ोबाह
पर हम्ला करके उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। 4 इस के
इलावा उस ने हमात के इलाक़े में गोदाम के शहर
बनाए। रेगिस्तान के शहर तदमूर में उस ने बहुत सा
तामीरी काम कराया 5–6 और इसी तरह बालाई और
नशेबी बैत-हौरून और बालात में भी। इन शहरों के
लिए उस ने फ़सील और कुंडे वाले दरवाज़े बनवाए।
सुलेमान ने अपने गोदामों के लिए और अपने रथों
और घोड़ों को रखने के लिए भी शहर बनवाए।

जो कुछ भी वह यरूशलम, लुबनान या अपनी
सल्तनत की किसी और जगह बनवाना चाहता था
वह उस ने बनवाया। 7–8 जिन आदमियों की सुलेमान
ने बेगार पर भर्ती की वह इस्राईली नहीं थे बल्कि
हित्ती, अमोरी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी यानी
कनआन के पहले बाशिन्दों की वह औलाद थे जो
बाक़ी रह गए थे। मुल्क पर क़ब्ज़ा करते वक़्त
इस्राईली इन क़ौमों को पूरे तौर पर मिटा न सके,
और आज तक इन की औलाद को इस्राईल के लिए
बेगार में काम करना पड़ता है। 9 लेकिन सुलेमान ने
इस्राईलियों को ऐसे काम करने पर मज्बूर न किया
बल्कि वह उस के फ़ौजी और रथों के फ़ौजियों के
अफ़सर बन गए, और उन्हें रथों और घोड़ों पर मुक़र्रर
किया गया। 10 सुलेमान के तामीरी काम पर भी 250
इस्राईली मुक़र्रर थे जो ज़िलओं पर मुक़र्रर अफ़सरों
के ताबे थे। यह लोग तामीरी काम करने वालों की
निगरानी करते थे।

11 फ़िरऔन की बेटी यरूशलम के पुराने हिस्से
बनाम 'दाऊद का शहर' से उस महल में मुन्तक़िल हुई
जो सुलेमान ने उस के लिए तामीर किया था, क्यूँकि

सुलेमान ने कहा, “लाज़िम है कि मेरी अहलिया इस्राईल के बादशाह दाऊद के महल में न रहे। चूँकि रब का सन्दूक़ यहाँ से गुज़रा है, इस लिए यह जगह मुक़द्दस है।”

रब के घर में ख़िदमत की तर्तीब

12 उस वक़्त से सुलेमान रब को रब के घर के बड़े
हाल के सामने की क़ुर्बानगाह पर भस्म होने वाली
क़ुर्बानियाँ पेश करता था। 13 जो कुछ भी मूसा ने
रोज़ाना की क़ुर्बानियों के मुताल्लिक़ फ़रमाया था उस
के मुताबिक़ बादशाह क़ुर्बानियाँ चढ़ाता था। इन में
वह क़ुर्बानियाँ भी शामिल थीं जो सबत के दिन, नए
चाँद की ईद पर और साल की तीन बड़ी ईदों पर
यानी फ़सह की ईद, हफ़्तों की ईद और झोंपड़ियों
की ईद पर पेश की जाती थीं। 14 सुलेमान ने इमामों
के मुख़्तलिफ़ गुरोहों को वह ज़िम्मादारियाँ सौंपीं
जो उस के बाप दाऊद ने मुक़र्रर की थीं। लावियों
की ज़िम्मादारियाँ भी मुक़र्रर की गईं। उन की एक
ज़िम्मादारी रब की हम्द-ओ-सना करने में परस्तारों
की राहनुमाई करनी थी। नीज़, उन्हें रोज़ाना की
ज़रूरियात के मुताबिक़ इमामों की मदद करनी थी।
रब के घर के दरवाज़ों की पहरादारी भी लावियों की
एक ख़िदमत थी। हर दरवाज़े पर एक अलग गुरोह
की ड्यूटी लगाई गई। यह भी मर्द-ए-ख़ुदा दाऊद की
हिदायात के मुताबिक़ हुआ। 15 जो भी हुक्म दाऊद
ने इमामों, लावियों और ख़ज़ानों के मुताल्लिक़ दिया
था वह उन्हों ने पूरा किया।

16 यूँ सुलेमान के तमाम मन्सूबे रब के घर की
बुन्याद रखने से ले कर उस की तक्मील तक पूरे
हुए।

17 बाद में सुलेमान अस्यून-जाबर और ऐलात गया।
यह शहर अदोम के साहिल पर वाक़े थे। 18 वहाँ
हीराम बादशाह ने अपने जहाज़ और तजरिबाकार
मल्लाह भेजे ताकि वह सुलेमान के आदमियों के साथ
मिल कर जहाज़ों को चलाएँ। उन्हों ने ओफ़ीर तक
सफ़र किया और वहाँ से सुलेमान के लिए तक़रीबन
15,000 किलोग्राम सोना ले कर आए।

सबा की मलिका सुलेमान से मिलती है

9 1 सुलेमान की शुहरत सबा की मलिका तक
पहुँच गई। जब उस ने उस के बारे में सुना
तो वह सुलेमान से मिलने के लिए रवाना हुई
ताकि उसे मुश्किल पहेलियाँ पेश करके उस की
दानिशमन्दी जाँच ले। वह निहायत बड़े क़ाफ़िले के
साथ यरूशलम पहुँची जिस के ऊँट बल्सान, कस्रत
के सोने और क़ीमती जवाहिर से लदे हुए थे।

मलिका की सुलेमान से मुलाक़ात हुई तो उस ने
उस से वह तमाम मुश्किल सवालात पूछे जो उस के
ज़हन में थे। 2 सुलेमान उस के हर सवाल का जवाब
दे सका। कोई भी बात इतनी पेचीदा नहीं थी कि वह
उस का मतलब मलिका को बता न सकता। 3 सबा
की मलिका सुलेमान की हिक्मत और उस के नए
महल से बहुत मुतअस्सिर हुई। 4 उस ने बादशाह की
मेज़ों पर के मुख़्तलिफ़ खाने देखे और यह कि उस
के अफ़्सर किस तर्तीब से उस पर बिठाए जाते थे।
उस ने बैरों की ख़िदमत, उन की शानदार वर्दियों
और साक़ियों की शानदार वर्दियों पर भी ग़ौर किया।
जब उस ने इन बातों के इलावा भस्म होने वाली वह
क़ुर्बानियाँ भी देखीं जो सुलेमान रब के घर में चढ़ाता
था तो मलिका हक्का-बक्का रह गई।

5 वह बोल उठी, “वाक़ई, जो कुछ मैं ने अपने
मुल्क में आप के शाहकारों और हिक्मत के बारे में
सुना था वह दुरुस्त है। 6 जब तक मैं ने ख़ुद आ कर
यह सब कुछ अपनी आँखों से न देखा मुझे यक़ीन
नहीं आता था। लेकिन हक़ीक़त में मुझे आप की
ज़बरदस्त हिक्मत के बारे में आधा भी नहीं बताया
गया था। वह उन रिपोर्टों से कहीं ज़्यादा है जो मुझ
तक पहुँची थीं। 7 आप के लोग कितने मुबारक हैं!
आप के अफ़्सर कितने मुबारक हैं जो मुसलसल आप
के सामने खड़े रहते और आप की दानिश भरी बातें
सुनते हैं! 8 रब आप के ख़ुदा की तम्जीद हो जिस

ने आप को पसन्द करके अपने तख़्त पर बिठाया
ताकि रब अपने ख़ुदा की ख़ातिर हुकूमत करें। आप
का ख़ुदा इस्राईल से मुहब्बत रखता है, और वह उसे
अबद तक क़ाइम रखना चाहता है, इसी लिए उस ने
आप को उन का बादशाह बना दिया है ताकि इन्साफ़
और रास्तबाज़ी क़ाइम रखें।”
9 फिर मलिका ने सुलेमान को तक़रीबन 4,000
किलोग्राम सोना, बहुत ज़्यादा बल्सान और जवाहिर
दे दिए। पहले कभी भी उतना बल्सान इस्राईल में नहीं
लाया गया था जितना उस वक़्त सबा की मलिका
लाई।
10 हीराम और सुलेमान के आदमी ओफ़ीर से न
सिर्फ़ सोना लाए बल्कि उन्हों ने क़ीमती लकड़ी
और जवाहिर भी इस्राईल तक पहुँचाए। 11 जितनी
क़ीमती लकड़ी उन दिनों में यहूदाह में दरआमद
हुई उतनी पहले कभी वहाँ लाई नहीं गई थी। इस
लकड़ी से बादशाह ने रब के घर और अपने महल
के लिए सीढ़ियाँ बनवाईं। यह मौसीक़ारों के सरोद
और सितार बनाने के लिए भी इस्तेमाल हुई।
12 सुलेमान बादशाह ने अपनी तरफ़ से सबा की
मलिका को बहुत से तुह्फ़े दिए। यह उन चीज़ों से
ज़्यादा थे जो मलिका अपने मुल्क से उस के पास लाई
थी। जो भी मलिका चाहती थी या उस ने माँगा वह
उसे दिया गया। फिर वह अपने नौकर-चाकरों और
अफ़्सरों के हमराह अपने वतन वापस चली गई।

सुलेमान की दौलत और शुहरत

13 जो सोना सुलेमान को सालाना मिलता था उस
का वज़न तक़रीबन 23,000 किलोग्राम था। 14 इस में
वह टैक्स शामिल नहीं थे जो उसे सौदागरों, ताजिरों,
अरब बादशाहों और ज़िलओं के अफ़्सरों से मिलते
थे। यह उसे सोना और चाँदी देते थे।
15–16 सुलेमान बादशाह ने 200 बड़ी और 300
छोटी ढालें बनवाईं। उन पर सोना मंढा गया। हर बड़ी
ढाल के लिए तक़रीबन 7 किलोग्राम सोना इस्तेमाल
हुआ और हर छोटी ढाल के लिए साढ़े 3 किलोग्राम।
सुलेमान ने उन्हें ‘लुबनान का जंगल’ नामी महल में
मह्फ़ूज़ रखा।
17 इन के इलावा बादशाह ने हाथीदाँत से आरास्ता
एक बड़ा तख़्त बनवाया जिस पर ख़ालिस सोना
चढ़ाया गया। 18–19 उस के हर बाज़ू के साथ शेरबबर
का मुजस्समा था। तख़्त कुछ ऊँचा था, और बादशाह
छः पाए वाली सीढ़ी पर चढ़ कर उस पर बैठता
था। दाईं और बाईं तरफ़ हर पाए पर शेरबबर का
मुजस्समा था। पाँओ के लिए सोने की चौकी बनाई
गई थी। इस क़िस्म का तख़्त किसी और सल्तनत में
नहीं पाया जाता था।
20 सुलेमान के तमाम प्याले सोने के थे, बल्कि
‘लुबनान का जंगल’ नामी महल में तमाम बर्तन
ख़ालिस सोने के थे। कोई भी चीज़ चाँदी की नहीं थी,
क्यूँकि सुलेमान के ज़माने में चाँदी की कोई क़दर नहीं
थी। 21 बादशाह के अपने बहरी जहाज़ थे जो हीराम
के बन्दों के साथ मिल कर मुख़्तलिफ़ जगहों पर जाते
थे। हर तीन साल के बाद वह सोने-चाँदी, हाथीदाँत,
बन्दरों और मोरों से लदे हुए वापस आते थे।
22 सुलेमान की दौलत और हिक्मत दुनिया के तमाम
बादशाहों से कहीं ज़्यादा थी। 23 दुनिया के तमाम
बादशाह उस से मिलने की कोशिश करते रहे ताकि
वह हिक्मत सुन लें जो अल्लाह ने उस के दिल में डाल
दी थी। 24 साल-ब-साल जो भी सुलेमान के दरबार में
आता वह कोई न कोई तुह्फ़ा लाता। यूँ उसे सोने-
चाँदी के बर्तन, क़ीमती लिबास, हथियार, बल्सान,
घोड़े और ख़च्चर मिलते रहे।
25 घोड़ों और रथों को रखने के लिए सुलेमान के
4,000 थान थे। उस के 12,000 घोड़े थे। कुछ उस
ने रथों के लिए मख़्सूस किए गए शहरों में और
कुछ यरूशलम में अपने पास रखे। 26 सुलेमान उन
तमाम बादशाहों का हुक्मरान था जो दरया-ए-फ़ुरात
से ले कर फ़िलिस्तियों के मुल्क की मिस्री सरहद
तक हुकूमत करते थे। 27 बादशाह की सरगर्मियों के
बाइस चाँदी पत्थर जैसी आम हो गई और देवदार
की क़ीमती लकड़ी मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े

की अन्जीर-तूत की सस्ती लकड़ी जैसी आम हो गई।
28 बादशाह के घोड़े मिस्र और दीगर कई मुल्कों से
दरआमद होते थे।

सुलेमान की मौत

29 सुलेमान की ज़िन्दगी के बारे में मज़ीद बातें शुरू
से ले कर आख़िर तक 'नातन नबी की तारीख़,'
सैला के रहने वाले नबी अख़ियाह की किताब
'अख़ियाह की नबुव्वत' और यरुबिआम बिन नबात
से मुताल्लिक़ किताब 'इद्दू ग़ैबबीन की रोयाएँ' में दर्ज
हैं।
30 सुलेमान 40 साल के दौरान पूरे इस्राईल
पर हुकूमत करता रहा। उस का दार-उल-हकूमत
यरूशलम था। 31 जब वह मर कर अपने बापदादा
से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न
किया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर
उस का बेटा रहुबिआम तख़्तनशीन हुआ।

शिमाली क़बीले अलग हो जाते हैं

10 1 रहुबिआम सिकम गया, क्यूँकि वहाँ
तमाम इस्राईली उसे बादशाह मुक़र्रर करने
के लिए जमा हो गए थे। 2 यरुबिआम बिन नबात
यह ख़बर सुनते ही मिस्र से जहाँ उस ने सुलेमान
बादशाह से भाग कर पनाह ली थी इस्राईल वापस
आया। 3 इस्राईलियों ने उसे बुलाया ताकि उस के
साथ सिकम जाएँ। जब पहुँचा तो इस्राईल की पूरी
जमाअत यरुबिआम के साथ मिल कर रहुबिआम
से मिलने गई। उन्हों ने बादशाह से कहा, 4 "जो
जूआ आप के बाप ने हम पर डाल दिया था उसे
उठाना मुश्किल था, और जो वक़्त और पैसे हमें
बादशाह की ख़िदमत में सर्फ़ करने थे वह नाक़ाबिल-
ए-बर्दाश्त थे। अब दोनों को कम कर दें। फिर हम
ख़ुशी से आप की ख़िदमत करेंगे।"
5 रहुबिआम ने जवाब दिया, "मुझे तीन दिन की
मुहलत दें, फिर दुबारा मेरे पास आएँ।" चुनाँचे लोग
चले गए। 6 फिर रहुबिआम बादशाह ने उन बुज़ुर्गों से
मश्वरा किया जो सुलेमान के जीते जी बादशाह की
ख़िदमत करते रहे थे। उस ने पूछा, "आप का क्या
ख़याल है? मैं इन लोगों को क्या जवाब दूँ?" 7 बुज़ुर्गों
ने जवाब दिया, "हमारा मश्वरा है कि इस वक़्त उन
से मेहरबानी से पेश आ कर उन से अच्छा सुलूक
करें और नर्म जवाब दें। अगर आप ऐसा करें तो वह
हमेशा आप के वफ़ादार ख़ादिम बने रहेंगे।"
8 लेकिन रहुबिआम ने बुज़ुर्गों का मश्वरा रद्द करके
उस की ख़िदमत में हाज़िर उन जवानों से मश्वरा किया
जो उस के साथ परवान चढ़े थे। 9 उस ने पूछा, "मैं
इस क़ौम को क्या जवाब दूँ? यह तक़ाज़ा कर रहे हैं
कि मैं वह जूआ हल्का कर दूँ जो मेरे बाप ने उन पर
डाल दिया।" 10 जो जवान उस के साथ परवान चढ़े
थे उन्हों ने कहा, "अच्छा, यह लोग तक़ाज़ा कर रहे
हैं कि आप के बाप का जूआ हल्का किया जाए?
उन्हें बता देना, 'मेरी छोटी उंगली मेरे बाप की कमर
से ज़्यादा मोटी है! 11 बेशक जो जूआ उस ने आप
पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन मेरा
जूआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आप को
कोड़े लगाए वहाँ मैं आप की बिच्छूओं से तादीब
करूँगा'!"
12 तीन दिन के बाद जब यरुबिआम तमाम
इस्राईलियों के साथ रहुबिआम का फ़ैसला सुनने के
लिए वापस आया 13 तो बादशाह ने उन्हें सख़्त जवाब
दिया। बुज़ुर्गों का मश्वरा रद्द करके 14 उस ने उन्हें
जवानों का जवाब दिया, "बेशक जो जूआ मेरे बाप ने
आप पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन
मेरा जूआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आप
को कोड़े लगाए वहाँ मैं आप की बिच्छूओं से तादीब
करूँगा!" 15 यूँ रब की मर्ज़ी पूरी हुई कि रहुबिआम
लोगों की बात नहीं मानेगा। क्यूँकि अब रब की
वह पेशगोई पूरी हुई जो सैला के नबी अख़ियाह ने
यरुबिआम बिन नबात को बताई थी।
16 जब इस्राईलियों ने देखा कि बादशाह हमारी बात
सुनने के लिए तय्यार नहीं है तो उन्हों ने उस से कहा,
"न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा, न यस्सी के

बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ इस्राईल, सब
अपने अपने घर वापस चलें! ऐ दाऊद, अब अपना
घर ख़ुद सँभाल लो!” यह कह कर वह सब चले गए।
17 सिर्फ़ यहूदाह के क़बीले के शहरों में रहने वाले
इस्राईली रहुबिआम के तहत रहे। 18 फिर रहुबिआम
बादशाह ने बेगारियों पर मुक़र्रर अफ़सर अदूनीराम
को शिमाली क़बीलों के पास भेज दिया, लेकिन उसे
देख कर लोगों ने उसे संगसार किया। तब रहुबिआम
जल्दी से अपने रथ पर सवार हुआ और भाग कर
यरूशलम पहुँच गया।
19 यूँ इस्राईल के शिमाली क़बीले दाऊद के शाही
घराने से अलग हो गए और आज तक उस की
हुकूमत नहीं मानते।

रहुबिआम को इस्राईल से लड़ने की इजाज़त नहीं मिलती

11 1 जब रहुबिआम यरूशलम पहुँचा तो उस
ने यहूदाह और बिनयमीन के क़बीलों के
चीदा चीदा फ़ौजियों को इस्राईल से जंग करने
के लिए बुलाया। 1,80,000 मर्द जमा हुए ताकि
रहुबिआम के लिए इस्राईल पर दुबारा क़ाबू पाएँ।
2 लेकिन ऐन उस वक़्त मर्द-ए-ख़ुदा समायाह को रब
की तरफ़ से पैग़ाम मिला, 3 “यहूदाह के बादशाह
रहुबिआम बिन सुलेमान और यहूदाह और बिनयमीन
के तमाम अफ़राद को इत्तिला दे, 4 ‘रब फ़रमाता है
कि अपने भाइयों से जंग मत करना। हर एक अपने
अपने घर वापस चला जाए, क्यूँकि जो कुछ हुआ है
वह मेरे हुक्म पर हुआ है’।”
तब वह रब की सुन कर यरुबिआम से लड़ने से
बाज़ आए।

रहुबिआम की क़िलाबन्दी

5 रहुबिआम का दार-उल-हकूमत यरूशलम रहा।
यहूदाह में उस ने ज़ैल के शहरों की क़िलाबन्दी
की : 6 बैत-लहम, ऐताम, तक़ूअ, 7 बैत-सूर, सोका,
अदुल्लाम, 8 जात, मरेसा, ज़ीफ़, 9 अदूराईम, लकीस,
अज़ीक़ा, 10 सुरआ, अय्यालोन और हब्रून। यहूदाह
और बिनयमीन के इन क़िलाबन्द शहरों को
11 मज़बूत करके रहुबिआम ने हर शहर पर अफ़सर
मुक़र्रर किए। उन में उस ने ख़ुराक, ज़ैतून के तेल
और मै का ज़ख़ीरा कर लिया 12 और साथ साथ उन
में ढालें और नेज़े भी रखे। इस तरह उस ने उन्हें बहुत
मज़बूत बना कर यहूदाह और बिनयमीन पर अपनी
हुकूमत महफ़ूज़ कर ली।

इमाम और लावी यहूदाह में मुन्तक़िल हो जाते हैं

13 गो इमाम और लावी तमाम इस्राईल में बिखरे
रहते थे तो भी उन्हों ने रहुबिआम का साथ दिया।
14 अपनी चरागाहों और मिलकियत को छोड़ कर
वह यहूदाह और यरूशलम में आबाद हुए, क्यूँकि
यरुबिआम और उस के बेटों ने उन्हें इमाम की
हैसियत से रब की ख़िदमत करने से रोक दिया था।
15 उन की जगह उस ने अपने ज़ाती इमाम मुक़र्रर
किए जो ऊँची जगहों पर के मन्दिरों को सँभालते हुए
बकरे के देवताओं और बछड़े के बुतों की ख़िदमत
करते थे। 16 लावियों की तरह तमाम क़बीलों के
बहुत से ऐसे लोग यहूदाह में मुन्तक़िल हुए जो पूरे
दिल से रब इस्राईल के ख़ुदा के तालिब रहे थे। वह
यरूशलम आए ताकि रब अपने बापदादा के ख़ुदा
को क़ुर्बानियाँ पेश कर सकें। 17 यहूदाह की सल्तनत
ने ऐसे लोगों से तक़वियत पाई। वह रहुबिआम
बिन सुलेमान के लिए तीन साल तक मज़बूती का
सबब थे, क्यूँकि तीन साल तक यहूदाह दाऊद और
सुलेमान के अच्छे नमूने पर चलता रहा।

रहुबिआम का ख़ानदान

18 रहुबिआम की शादी महलत से हुई जो यरीमोत
और अबीख़ैल की बेटी थी। यरीमोत दाऊद का
बेटा और अबीख़ैल इलियाब बिन यस्सी की बेटी
थी। 19 महलत के तीन बेटे यऊस, समरियाह और
ज़हम पैदा हुए। 20 बाद में रहुबिआम की माका
बिन्त अबीसलूम से शादी हुई। इस रिश्ते से चार

बेटे अबियाह, अत्ती, ज़ीज़ा और सलूमीत पैदा हुए।
21 रहुबिआम की 18 बीवियाँ और 60 दाश्ताएँ थीं।
इन के कुल 28 बेटे और 60 बेटियाँ पैदा हुईं।
लेकिन माका बिन्त अबीसलूम रहुबिआम को सब
से ज़्यादा प्यारी थी। 22 उस ने माका के पहलौठे
अबियाह को उस के भाइयों का सरबराह बना दिया
और मुक़र्रर किया कि यह बेटा मेरे बाद बादशाह
बनेगा। 23 रहुबिआम ने अपने बेटों से बड़ी समझदारी
के साथ सुलूक किया, क्यूँकि उस ने उन्हें अलग
अलग करके यहूदाह और बिनयमीन के पूरे क़बाइली
इलाक़े और तमाम क़िलाबन्द शहरों में बसा दिया।
साथ साथ वह उन्हें कस्रत की ख़ुराक और बीवियाँ
मुहय्या करता रहा।

मिस्र की यहूदाह पर फ़त्ह

12 1 जब रहुबिआम की सल्तनत ज़ोर पकड़
कर मज़बूत हो गई तो उस ने तमाम इस्राईल
समेत रब की शरीअत को तर्क कर दिया। 2 उन
की रब से बेवफ़ाई का नतीजा यह निकला कि
रहुबिआम की हुकूमत के पाँचवें साल में मिस्र के
बादशाह सीसक़ ने यरूशलम पर हम्ला किया। 3 उस
की फ़ौज बहुत बड़ी थी। 1,200 रथों के इलावा
60,000 घुड़सवार और लिबिया, सुक्कियों के मुल्क
और एथोपिया के बेशुमार पियादा सिपाही थे। 4 यके
बाद दीगरे यहूदाह के क़िलाबन्द शहरों पर क़ब्ज़ा
करते करते मिस्री बादशाह यरूशलम तक पहुँच
गया।

5 तब समायाह नबी रहुबिआम और यहूदाह के उन
बुज़ुर्गों के पास आया जिन्हों ने सीसक़ के आगे आगे
भाग कर यरूशलम में पनाह ली थी। उस ने उन से
कहा, "रब फ़रमाता है, 'तुम ने मुझे तर्क कर दिया है,
इस लिए अब मैं तुम्हें तर्क करके सीसक़ के हवाले
कर दूँगा'।" 6 यह पैग़ाम सुन कर रहुबिआम और
यहूदाह के बुज़ुर्गों ने बड़ी इनकिसारी के साथ तस्लीम
किया कि रब ही आदिल है। 7 उन की यह आजिज़ी
देख कर रब ने समायाह से कहा, "चूँकि उन्हों ने बड़ी
ख़ाकसारी से अपना ग़लत रवय्या तस्लीम कर लिया
है इस लिए मैं उन्हें तबाह नहीं करूँगा बल्कि जल्द
ही उन्हें रिहा करूँगा। मेरा ग़ज़ब सीसक़ के ज़रीए
यरूशलम पर नाज़िल नहीं होगा। 8 लेकिन वह इस
क़ौम को ज़रूर अपने ताबे कर रखेगा। तब वह समझ
लेंगे कि मेरी ख़िदमत करने और दीगर ममालिक के
बादशाहों की ख़िदमत करने में क्या फ़र्क़ है।"

9 मिस्र के बादशाह सीसक़ ने यरूशलम पर हम्ला
करते वक़्त रब के घर और शाही महल के तमाम
ख़ज़ाने लूट लिए। सोने की वह ढालें भी छीन ली
गईं जो सुलेमान ने बनवाई थीं। 10 इन की जगह
रहुबिआम ने पीतल की ढालें बनवाईं और उन्हें
उन मुहाफ़िज़ों के अफ़्सरों के सपुर्द किया जो शाही
महल के दरवाज़े की पहरादारी करते थे। 11 जब
भी बादशाह रब के घर में जाता तब मुहाफ़िज़ यह
ढालें उठा कर साथ ले जाते। इस के बाद वह उन्हें
पहरेदारों के कमरे में वापस ले जाते थे।

12 चूँकि रहुबिआम ने बड़ी इनकिसारी से अपना
ग़लत रवय्या तस्लीम किया इस लिए रब का उस पर
ग़ज़ब ठंडा हो गया, और वह पूरे तौर पर तबाह न
हुआ। दरहक़ीक़त यहूदाह में अब तक कुछ न कुछ
पाया जाता था जो अच्छा था।

रहुबिआम की मौत

13 रहुबिआम की सल्तनत ने दुबारा तक़वियत पाई,
और यरूशलम में रह कर वह अपनी हुकूमत जारी
रख सका। 41 साल की उम्र में वह तख़्तनशीन
हुआ था, और वह 17 साल बादशाह रहा। उस
का दार-उल-हकूमत यरूशलम था, वह शहर जिसे
रब ने तमाम इस्राईली क़बीलों में से चुन लिया
ताकि उस में अपना नाम क़ाइम करे। उस की माँ
नामा अम्मोनी थी। 14 रहुबिआम ने अच्छी ज़िन्दगी
न गुज़ारी, क्यूँकि वह पूरे दिल से रब का तालिब न
रहा था।

15 बाक़ी जो कुछ रहुबिआम की हुकूमत के दौरान
शुरू से ले कर आख़िर तक हुआ उस का समायाह

नबी और ग़ैबबीन इद्दू की तारीख़ी किताब में बयान है। वहाँ उस के नसबनामे का ज़िक्र भी है। दोनों बादशाहों रहुबिआम और यरुबिआम के जीते जी उन के दरमियान जंग जारी रही। 16 जब रहुबिआम मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़नाया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर उस का बेटा अबियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अबियाह

13 1 अबियाह इस्राईल के बादशाह यरुबिआम अव्वल की हुकूमत के 18वें साल में यहूदाह का बादशाह बना। 2 वह तीन साल बादशाह रहा, और उस का दार-उल-हकूमत यरूशलम था। उस की माँ माका बिन्त ऊरीएल जिबिआ की रहने वाली थी।

एक दिन अबियाह और यरुबिआम के दरमियान जंग छिड़ गई। 3 4,00,000 तजरिबाकार फ़ौजियों को जमा करके अबियाह यरुबिआम से लड़ने के लिए निकला। यरुबिआम 8,00,000 तजरिबाकार फ़ौजियों के साथ उस के मुक़ाबिल सफ़आरा हुआ। 4 फिर अबियाह ने इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े के पहाड़ समरैम पर चढ़ कर बुलन्द आवाज़ से पुकारा,

"यरुबिआम और तमाम इस्राईलियो, मेरी बात सुनें! 5 क्या आप को नहीं मालूम कि रब इस्राईल के ख़ुदा ने दाऊद से नमक का अबदी अह्द बांध कर उसे और उस की औलाद को हमेशा के लिए इस्राईल की सल्तनत अता की है? 6 तो भी सुलेमान बिन दाऊद का मुलाज़िम यरुबिआम बिन नबात अपने मालिक के ख़िलाफ़ उठ कर बाग़ी हो गया। 7 उस के इर्दगिर्द कुछ बदमआश जमा हुए और रहुबिआम बिन सुलेमान की मुख़ालफ़त करने लगे। उस वक़्त वह जवान और नातजरिबाकार था, इस लिए उन का सहीह मुक़ाबला न कर सका।

8 और अब आप वाक़ई समझते हैं कि हम रब की बादशाही पर फ़त्ह पा सकते हैं, उसी बादशाही पर जो दाऊद की औलाद के हाथ में है। आप समझते हैं कि आप की फ़ौज बहुत ही बड़ी है, और कि सोने के बछड़े आप के साथ हैं, वही बुत जो यरुबिआम ने आप की पूजा के लिए तय्यार कर रखे हैं। 9 लेकिन आप ने रब के इमामों यानी हारून की औलाद को लावियों समेत मुल्क से निकाल कर उन की जगह ऐसे पुजारी ख़िदमत के लिए मुक़र्रर किए जैसे बुतपरस्त क़ौमों में पाए जाते हैं। जो भी चाहता है कि उसे मख़्सूस करके इमाम बनाया जाए उसे सिर्फ़ एक जवान बैल और सात मेंढे पेश करने की ज़रूरत है। यह इन नाम-निहाद ख़ुदाओं का पुजारी बनने के लिए काफ़ी है।

10 लेकिन जहाँ तक हमारा ताल्लुक़ है रब ही हमारा ख़ुदा है। हम ने उसे तर्क नहीं किया। सिर्फ़ हारून की औलाद ही हमारे इमाम हैं। सिर्फ़ यह और लावी रब की ख़िदमत करते हैं। 11 यही सुब्ह-शाम उसे भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ और ख़ुश्बूदार बख़ूर पेश करते हैं। पाक मेज़ पर रब के लिए मख़्सूस रोटियाँ रखना और सोने के शमादान के चराग़ जलाना इन ही की ज़िम्मादारी रही है। ग़रज़, हम रब अपने ख़ुदा की हिदायात पर अमल करते हैं जबकि आप ने उसे तर्क कर दिया है। 12 चुनाँचे अल्लाह हमारे साथ है। वही हमारा राहनुमा है, और उस के इमाम तुरम बजा कर आप से लड़ने का एलान करेंगे। इस्राईल के मर्दो, ख़बरदार! रब अपने बापदादा के ख़ुदा से मत लड़ना। यह जंग आप जीत ही नहीं सकते!"

13 इतने में यरुबिआम ने चुपके से कुछ दस्तों को यहूदाह की फ़ौज के पीछे भेज दिया ताकि वहाँ ताक में बैठ जाएँ। यूँ उस की फ़ौज का एक हिस्सा यहूदाह की फ़ौज के सामने और दूसरा हिस्सा उस के पीछे था। 14 अचानक यहूदाह के फ़ौजियों को पता चला कि दुश्मन सामने और पीछे से हम पर हम्ला कर रहा है। चीख़ते चिल्लाते हुए उन्हों ने रब से मदद माँगी। इमामों ने अपने तुरम बजाय 15 और यहूदाह के मर्दों ने जंग का नारा लगाया। जब उन की आवाज़ें बुलन्द हुईं तो अल्लाह ने यरुबिआम और तमाम इस्राईलियों

को शिकस्त दे कर अबियाह और यहूदाह की फ़ौज
के सामने से भगा दिया। 16 इस्राईली फ़रार हुए,
लेकिन अल्लाह ने उन्हें यहूदाह के हवाले कर दिया।
17 अबियाह और उस के लोग उन्हें बड़ा नुक़्सान
पहुँचा सके। इस्राईल के 5,00,000 तजरिबाकार
फ़ौजी मैदान-ए-जंग में मारे गए। 18 उस वक़्त इस्राईल
की बड़ी बेइज़्ज़ती हुई जबकि यहूदाह को तक़वियत
मिली। क्यूँकि वह रब अपने बापदादा के ख़ुदा पर
भरोसा रखते थे।

19 अबियाह ने यरुबिआम का ताक़्क़ुब करते करते
उस से तीन शहर गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों समेत
छीन लिए, बैत-एल, यसाना और इफ़्रोन। 20 अबियाह
के जीते जी यरुबिआम दुबारा तक़वियत न पा सका,
और थोड़ी देर के बाद रब ने उसे मार दिया। 21 उस
के मुक़ाबले में अबियाह की ताक़त बढ़ती गई। उस
की 14 बीवियों के 22 बेटे और 16 बेटियाँ पैदा हुईं।

22 बाक़ी जो कुछ अबियाह की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया और कहा, वह इद्दू
नबी की किताब में बयान किया गया है।

14 1 जब अबियाह मर कर अपने बापदादा से
जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से
में दफ़नाया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है।
फिर उस का बेटा आसा तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह आसा

आसा की हुकूमत के तहत मुल्क में 10 साल तक
अम्न-ओ-अमान क़ाइम रहा। 2 आसा वह कुछ करता
रहा जो रब उस के ख़ुदा के नज़्दीक अच्छा और
ठीक था। 3 उस ने अजनबी माबूदों की क़ुर्बानगाहों
को ऊँची जगहों के मन्दिरों समेत गिरा कर देवताओं
के लिए मख़्सूस किए गए सतूनों को टुकड़े टुकड़े
कर दिया और यसीरत देवी के खम्बे काट डाले।
4 साथ साथ उस ने यहूदाह के बाशिन्दों को हिदायत
दी कि वह रब अपने बापदादा के ख़ुदा के तालिब
हों और उस के अह्काम के ताबे रहें। 5 यहूदाह के
तमाम शहरों से उस ने बख़ूर की क़ुर्बानगाहें और
ऊँची जगहों के मन्दिर दूर कर दिए। चुनाँचे उस की
हुकूमत के दौरान बादशाही में सुकून रहा।

6 अम्न-ओ-अमान के इन सालों के दौरान आसा
यहूदाह में कई शहरों की क़िलाबन्दी कर सका। जंग
का ख़तरा नहीं था, क्यूँकि रब ने उसे सुकून मुहय्या
किया। 7 बादशाह ने यहूदाह के बाशिन्दों से कहा,
"आएँ, हम इन शहरों की क़िलाबन्दी करें! हम इन
के इर्दगिर्द फ़सीलें बना कर उन्हें बुर्जों, दरवाज़ों और
कुंडों से मज़बूत करें। क्यूँकि अब तक मुल्क हमारे
हाथ में है। चूँकि हम रब अपने ख़ुदा के तालिब रहे
हैं इस लिए उस ने हमें चारों तरफ़ सुलह-सलामती
मुहय्या की है।" चुनाँचे क़िलाबन्दी का काम शुरू
हुआ बल्कि तक्मील तक पहुँच सका।

एथोपिया पर फ़त्ह

8 आसा की फ़ौज में बड़ी ढालों और नेज़ों से लेस
यहूदाह के 3,00,000 अफ़राद थे। इस के इलावा
छोटी ढालों और कमानों से मुसल्लह बिनयमीन के
2,80,000 अफ़राद थे। सब तजरिबाकार फ़ौजी थे।

9 एक दिन एथोपिया के बादशाह ज़ारह ने यहूदाह
पर हम्ला किया। उस के बेशुमार फ़ौजी और 300 रथ
थे। बढ़ते बढ़ते वह मरेसा तक पहुँच गया। 10 आसा
उस का मुक़ाबला करने के लिए निकला। वादी-ए-
सफ़ाता में दोनों फ़ौजें लड़ने के लिए सफ़आरा हुईं।
11 आसा ने रब अपने ख़ुदा से इल्तिमास की, "ऐ रब,
सिर्फ़ तू ही बेबसों को ताक़तवरों के हम्लों से मह्फ़ूज़
रख सकता है। ऐ रब हमारे ख़ुदा, हमारी मदद कर!
क्यूँकि हम तुझ पर भरोसा रखते हैं। तेरा ही नाम ले
कर हम इस बड़ी फ़ौज का मुक़ाबला करने के लिए
निकले हैं। ऐ रब, तू ही हमारा ख़ुदा है। ऐसा न होने
दे कि इन्सान तेरी मर्ज़ी की ख़िलाफ़वरज़ी करने में
कामयाब हो जाए।"

12 तब रब ने आसा और यहूदाह के देखते देखते
दुश्मन को शिकस्त दी। एथोपिया के फ़ौजी फ़रार
हुए, 13 और आसा ने अपने फ़ौजियों के साथ जिरार
तक उन का ताक़्क़ुब किया। दुश्मन के इतने अफ़राद

हलाक हुए कि उस की फ़ौज बाद में बहाल न हो सकी। रब ख़ुद और उस की फ़ौज ने दुश्मन को तबाह कर दिया था। यहूदाह के मर्दों ने बहुत सा माल लूट लिया। 14 वह जिरार के इर्दगिर्द के शहरों पर भी क़ब्ज़ा करने में कामयाब हुए, क्यूँकि मक़ामी लोगों में रब की दहशत फैल गई थी। नतीजे में इन शहरों से भी बहुत सा माल छीन लिया गया। 15 इस मुहिम्म के दौरान उन्हों ने गल्लाबानों की ख़ैमागाहों पर भी हम्ला किया और उन से कस्रत की भेड़-बकरियाँ और ऊँट लूट कर अपने साथ यरूशलम ले आए।

आसा रब से अह्द की तज्दीद करता है

15 1 अल्लाह का रूह अज़रियाह बिन ओदीद पर नाज़िल हुआ, 2 और वह आसा से मिलने के लिए निकला और कहा, "ऐ आसा और यहूदाह और बिनयमीन के तमाम बाशिन्दो, मेरी बात सुनो! रब तुम्हारे साथ है अगर तुम उसी के साथ रहो। अगर तुम उस के तालिब रहो तो उसे पा लोगे। लेकिन जब भी तुम उसे तर्क करो तो वह तुम ही को तर्क करेगा। 3 लम्बे अर्से तक इस्राईली हक़ीक़ी ख़ुदा के बग़ैर ज़िन्दगी गुज़ारते रहे। न कोई इमाम था जो उन्हें अल्लाह की राह सिखाता, न शरीअत। 4 लेकिन जब कभी वह मुसीबत में फंस जाते तो दुबारा रब इस्राईल के ख़ुदा के पास लौट आते। वह उसे तलाश करते और नतीजे में उसे पा लेते। 5 उस ज़माने में सफ़र करना ख़तरनाक होता था, क्यूँकि अम्न-ओ-अमान कहीं नहीं था। 6 एक क़ौम दूसरी क़ौम के साथ और एक शहर दूसरे के साथ लड़ता रहता था। इस के पीछे अल्लाह का हाथ था। वही उन्हें हर क़िस्म की मुसीबत में डालता रहा। 7 लेकिन जहाँ तक तुम्हारा ताल्लुक़ है, मज़बूत हो और हिम्मत न हारो। अल्लाह ज़रूर तुम्हारी मेहनत का अज्र देगा।"

8 जब आसा ने ओदीद के बेटे अज़रियाह नबी की पेशगोई सुनी तो उस का हौसला बढ़ गया, और उस ने अपने पूरे इलाक़े के घिनौने बुतों को दूर कर दिया। इस में यहूदाह और बिनयमीन के इलावा इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े के वह शहर शामिल थे जिन पर उस ने क़ब्ज़ा कर लिया था। साथ साथ उस ने उस क़ुर्बानगाह की मरम्मत करवाई जो रब के घर के दरवाज़े के सामने थी। 9 फिर उस ने यहूदाह और बिनयमीन के तमाम लोगों को यरूशलम बुलाया। उन इस्राईलियों को भी दावत मिली जो इफ़्राईम, मनस्सी और शमाऊन के क़बाइली इलाक़ों से मुन्तक़िल हो कर यहूदाह में आबाद हुए थे। क्यूँकि बेशुमार लोग यह देख कर कि रब आसा का ख़ुदा उस के साथ है इस्राईल से निकल कर यहूदाह में जा बसे थे।

10 आसा बादशाह की हुकूमत के 15वें साल और तीसरे महीने में सब यरूशलम में जमा हुए। 11 वहाँ उन्हों ने लूटे हुए माल में से रब को 700 बैल और 7,000 भेड़-बकरियाँ क़ुर्बान कर दीं। 12 उन्हों ने अह्द बांधा, 'हम पूरे दिल-ओ-जान से रब अपने बापदादा के ख़ुदा के तालिब रहेंगे। 13 और जो रब इस्राईल के ख़ुदा का तालिब नहीं रहेगा उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी, ख़्वाह वह छोटा हो या बड़ा, मर्द हो या औरत।' 14 बुलन्द आवाज़ से उन्हों ने क़सम खा कर रब से अपनी वफ़ादारी का एलान किया। साथ साथ तुरम और नरसिंगे बजते रहे। 15 यह अह्द तमाम यहूदाह के लिए ख़ुशी का बाइस था, क्यूँकि उन्हों ने पूरे दिल से क़सम खा कर उसे बांधा था। और चूँकि वह पूरे दिल से ख़ुदा के तालिब थे इस लिए वह उसे पा भी सके। नतीजे में रब ने उन्हें चारों तरफ़ अम्न-ओ-अमान मुहय्या किया।

16 आसा की माँ माका बादशाह की माँ होने के बाइस बहुत असर-ओ-रसूख़ रखती थी। लेकिन आसा ने यह उह्दा ख़त्म कर दिया जब माँ ने यसीरत देवी का घिनौना खम्बा बनवा लिया। आसा ने यह बुत कटवा कर टुकड़े टुकड़े कर दिया और वादी-ए-क़िद्रोन में जला दिया। 17 अफ़्सोस कि उस ने इस्राईल की ऊँची जगहों के मन्दिरों को दूर न किया। तो भी आसा अपने जीते जी पूरे दिल से रब का वफ़ादार रहा। 18 सोना-चाँदी और बाक़ी जितनी चीज़ें उस के

बाप और उस ने रब के लिए मख़्सूस की थीं उन सब
को वह रब के घर में लाया।
19 आसा की हुकूमत के 35वें साल तक जंग दुबारा
न छिड़ी।

शाम के साथ आसा का मुआहदा

16 1 आसा की हुकूमत के 36वें साल में
इस्राईल के बादशाह बाशा ने यहूदाह पर
हम्ला करके रामा शहर की क़िलाबन्दी की। मक़्सद
यह था कि न कोई यहूदाह के मुल्क में दाख़िल हो
सके, न कोई वहाँ से निकल सके।
2 जवाब में आसा ने शाम के बादशाह बिन-हदद के
पास वफ़द भेजा जिस का दार-उल-हकूमत दमिश्क़
था। उस ने रब के घर और शाही महल के ख़ज़ानों
की सोना-चाँदी वफ़द के सपुर्द करके दमिश्क़ के
बादशाह को पैग़ाम भेजा, 3 "मेरा आप के साथ अह्द
है जिस तरह मेरे बाप का आप के बाप के साथ अह्द
था। गुज़ारिश है कि आप सोने-चाँदी का यह तुह्फ़ा
क़बूल करके इस्राईल के बादशाह बाशा के साथ
अपना अह्द मन्सूख़ कर दें ताकि वह मेरे मुल्क से
निकल जाए।"
4 बिन-हदद मुत्तफ़िक़ हुआ। उस ने अपने फ़ौजी
अफ़्सरों को इस्राईल के शहरों पर हम्ला करने के लिए
भेज दिया तो उन्हों ने ऐय्यून, दान, अबील-माइम और
नफ़्ताली के उन तमाम शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया
जिन में शाही गोदाम थे। 5 जब बाशा को इस की
ख़बर मिली तो उस ने रामा की क़िलाबन्दी करने से
बाज़ आ कर अपनी यह मुहिम्म छोड़ दी।
6 फिर आसा बादशाह ने यहूदाह के तमाम मर्दों की
भर्ती करके उन्हें रामा भेज दिया ताकि वह उन तमाम
पत्थरों और शहतीरों को उठा कर ले जाएँ जिन से
बाशा बादशाह रामा की क़िलाबन्दी करना चाहता
था। इस सामान से आसा ने जिबा और मिस्फ़ाह
शहरों की क़िलाबन्दी की।

आसा के आख़िरी साल और मौत

7 उस वक़्त हनानी ग़ैबबीन यहूदाह के बादशाह
आसा को मिलने आया। उस ने कहा, "अफ़्सोस कि
आप ने रब अपने ख़ुदा पर एतिमाद न किया बल्कि
अराम के बादशाह पर, क्यूँकि इस का बुरा नतीजा
निकला है। रब शाम के बादशाह की फ़ौज को आप
के हवाले करने के लिए तय्यार था, लेकिन अब
यह मौक़ा जाता रहा है। 8 क्या आप भूल गए हैं कि
एथोपिया और लिबिया की कितनी बड़ी फ़ौज आप
से लड़ने आई थी? उन के साथ कस्रत के रथ और
घुड़सवार भी थे। लेकिन उस वक़्त आप ने रब पर
एतिमाद किया, और जवाब में उस ने उन्हें आप के
हवाले कर दिया। 9 रब तो अपनी नज़र पूरी रू-ए-
ज़मीन पर दौड़ाता रहता है ताकि उन की तक़वियत
करे जो पूरी वफ़ादारी से उस से लिपटे रहते हैं। आप
की अहमक़ाना हरकत की वजह से आप को अब
से मुतवातिर जंगें तंग करती रहेंगी।" 10 यह सुन कर
आसा ग़ुस्से से लाल-पीला हो गया। आपे से बाहर हो
कर उस ने हुक्म दिया कि नबी को गिरिफ़्तार करके
उस के पाँओ काठ में ठोंको। उस वक़्त से आसा
अपनी क़ौम के कई लोगों पर ज़ुल्म करने लगा।
11 बाक़ी जो कुछ शुरू से ले कर आख़िर तक आसा
की हुकूमत के दौरान हुआ वह 'शाहान-ए-यहूदाह-
ओ-इस्राईल की तारीख़' की किताब में बयान किया
गया है। 12 हुकूमत के 39वें साल में उस के पाँओ को
बीमारी लग गई। गो उस की बुरी हालत थी तो भी उस
ने रब को तलाश न किया बल्कि सिर्फ़ डाक्टरों के
पीछे पड़ गया। 13 हुकूमत के 41वें साल में आसा मर
कर अपने बापदादा से जा मिला। 14 उस ने यरूशलम
के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है
अपने लिए चटान में क़ब्र तराशी थी। अब उसे इस में
दफ़न किया गया। जनाज़े के वक़्त लोगों ने लाश को
एक पलंग पर लिटा दिया जो बल्सान के तेल और
मुख़्तलिफ़ क़िस्म के ख़ुश्बूदार मर्हमों से ढाँपा गया

था। फिर उस के एहतिराम में लकड़ी का ज़बरदस्त ढेर जलाया गया।

यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त

17 1 आसा के बाद उस का बेटा यहूसफ़त तख़्तनशीन हुआ। उस ने यहूदाह की ताक़त बढ़ाई ताकि वह इस्राईल का मुक़ाबला कर सके। 2 यहूदाह के तमाम क़िलाबन्द शहरों में उस ने दस्ते बिठाए। यहूदाह के पूरे क़बाइली इलाक़े में उस ने चौकियाँ तय्यार कर रखीं और इसी तरह इफ़्राईम के उन शहरों में भी जो उस के बाप आसा ने इस्राईल से छीन लिए थे। 3 रब यहूसफ़त के साथ था, क्यूँकि वह दाऊद के नमूने पर चलता था और बाल देवताओं के पीछे न लगा। 4 इस्राईल के बादशाहों के बरअक्स वह अपने बाप के ख़ुदा का तालिब रहा और उस के अह्काम पर अमल करता रहा। 5 इसी लिए रब ने यहूदाह पर यहूसफ़त की हुकूमत को ताक़तवर बना दिया। लोग तमाम यहूदाह से आ कर उसे तुह्फ़े देते रहे, और उसे बड़ी दौलत और इज़्ज़त मिली। 6 रब की राहों पर चलते चलते उसे बड़ा हौसला हुआ और नतीजे में उस ने ऊँची जगहों के मन्दिरों और यसीरत देवी के खम्बों को यहूदाह से दूर कर दिया।

7 अपनी हुकूमत के तीसरे साल के दौरान यहूसफ़त ने अपने मुलाज़िमों को यहूदाह के तमाम शहरों में भेजा ताकि वह लोगों को रब की शरीअत की तालीम दें। इन अफ़्सरों में बिन-ख़ैल, अबदियाह, ज़करियाह, नतनीएल और मीकायाह शामिल थे। 8 उन के साथ 9 लावी बनाम समायाह, नतनियाह, ज़बदियाह, असाहेल, समीरामोत, यहूनतन, अदूनियाह, तूबियाह, और तूब-अदूनियाह थे। इमामों की तरफ़ से इलीसमा और यहूराम साथ गए। 9 रब की शरीअत की किताब अपने साथ ले कर इन आदमियों ने यहूदाह में शहर-ब-शहर जा कर लोगों को तालीम दी।

10 उस वक़्त यहूदाह के पड़ोसी ममालिक पर रब का ख़ौफ़ छा गया, और उन्हों ने यहूसफ़त से जंग करने की जुरअत न की। 11 ख़राज के तौर पर उसे फ़िलिस्तियों से हदिए और चाँदी मिलती थी, जबकि अरब उसे 7,700 मेंढे और 7,700 बकरे दिया करते थे। 12 यूँ यहूसफ़त की ताक़त बढ़ती गई। यहूदाह की कई जगहों पर उस ने क़िले और शाही गोदाम के शहर तामीर किए। 13 साथ साथ उस ने यहूदाह के शहरों में ज़रूरियात-ए-ज़िन्दगी के बड़े ज़ख़ीरे जमा किए और यरूशलम में तजरिबाकार फ़ौजी रखे।

14 यहूसफ़त की फ़ौज को कुंबों के मुताबिक़ तर्तीब दिया गया था। यहूदाह के क़बीले का कमाँडर अदना था। उस के तहत 3,00,000 तजरिबाकार फ़ौजी थे। 15 उस के इलावा यूहनान था जिस के तहत 2,80,000 अफ़राद थे 16 और अमसियाह बिन ज़िक्री जिस के तहत 2,00,000 अफ़राद थे। अमसियाह ने अपने आप को रज़ाकाराना तौर पर रब की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर दिया था। 17 बिनयमीन के क़बीले का कमाँडर इल्यदा था जो ज़बरदस्त फ़ौजी था। उस के तहत कमान और ढालों से लेस 2,00,000 फ़ौजी थे। 18 उस के इलावा यहूज़बद था जिस के 1,80,000 मुसल्लह आदमी थे।

19 सब फ़ौज में बादशाह की ख़िदमत सरअन्जाम देते थे। उन में वह फ़ौजी नहीं शुमार किए जाते थे जिन्हें बादशाह ने पूरे यहूदाह के क़िलाबन्द शहरों में रखा हुआ था।

झूटे नबियों और मीकायाह का मुक़ाबला

18 1 ग़रज़ यहूसफ़त को बड़ी दौलत और इज़्ज़त हासिल हुई। उस ने अपने पहलौठे की शादी इस्राईल के बादशाह अख़ियब की बेटी से कराई।

2 कुछ साल के बाद वह अख़ियब से मिलने के लिए सामरिया गया। इस्राईल के बादशाह ने यहूसफ़त और उस के साथियों के लिए बहुत सी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल ज़बह किए। फिर उस ने यहूसफ़त को अपने साथ रामात-जिलिआद से जंग करने पर उकसाया। 3 अख़ियब ने यहूसफ़त से सवाल किया,

“क्या आप मेरे साथ रामात-जिलिआद जाएंगे ताकि
उस पर क़ब्ज़ा करें?” उस ने जवाब दिया, “जी
ज़रूर, हम तो भाई हैं, मेरी क़ौम को अपनी क़ौम
समझें! हम आप के साथ मिल कर लड़ने के लिए
निकलेंगे। 4 लेकिन मेहरबानी करके पहले रब की
मर्ज़ी मालूम कर लें।”

5 इस्राईल के बादशाह ने 400 नबियों को बुला कर
उन से पूछा, “क्या हम रामात-जिलिआद पर हम्ला करें
या मैं इस इरादे से बाज़ रहूँ?” नबियों ने जवाब दिया,
“जी, करें, क्यूँकि अल्लाह उसे बादशाह के हवाले कर
देगा।”

6 लेकिन यहूसफ़त मुत्मइन न हुआ। उस ने पूछा,
“क्या यहाँ रब का कोई नबी नहीं जिस से हम
दरयाफ़्त कर सकें?” 7 इस्राईल का बादशाह बोला,
“हाँ, एक तो है जिस के ज़रीए हम रब की मर्ज़ी मालूम
कर सकते हैं। लेकिन मैं उस से नफ़रत करता हूँ,
क्यूँकि वह मेरे बारे में कभी भी अच्छी पेशगोई नहीं
करता। वह हमेशा बुरी पेशगोइयाँ सुनाता है। उस का
नाम मीकायाह बिन इम्ला है।” यहूसफ़त ने एतिराज़
किया, “बादशाह ऐसी बात न कहे!” 8 तब इस्राईल
के बादशाह ने किसी मुलाज़िम को बुला कर हुक्म
दिया, “मीकायाह बिन इम्ला को फ़ौरन हमारे पास
पहुँचा देना!”

9 अख़ियब और यहूसफ़त अपने शाही लिबास पहने
हुए सामरिया के दरवाज़े के क़रीब अपने अपने तख़्त
पर बैठे थे। यह ऐसी खुली जगह थी जहाँ अनाज
गाहा जाता था। तमाम 400 नबी वहाँ उन के सामने
अपनी पेशगोइयाँ पेश कर रहे थे। 10 एक नबी बनाम
सिदक़ियाह बिन कनआना ने अपने लिए लोहे के
सींग बना कर एलान किया, “रब फ़रमाता है कि इन
सींगों से तू शाम के फ़ौजियों को मार मार कर हलाक
कर देगा।”

11 दूसरे नबी भी इस क़िस्म की पेशगोइयाँ कर रहे
थे, “रामात-जिलिआद पर हम्ला करें, क्यूँकि आप
ज़रूर कामयाब हो जाएंगे। रब शहर को आप के
हवाले कर देगा।”

12 जिस मुलाज़िम को मीकायाह को बुलाने के लिए
भेजा गया था उस ने रास्ते में उसे समझाया, “देखें,
बाक़ी तमाम नबी मिल कर कह रहे हैं कि बादशाह
को कामयाबी हासिल होगी। आप भी ऐसी ही बातें
करें, आप भी फ़त्ह की पेशगोई करें!” 13 लेकिन
मीकायाह ने एतिराज़ किया, “रब की हयात की
क़सम, मैं बादशाह को सिर्फ़ वही कुछ बताऊँगा जो
मेरा ख़ुदा फ़रमाएगा।”

14 जब मीकायाह अख़ियब के सामने खड़ा हुआ
तो बादशाह ने पूछा, “मीकायाह, क्या हम रामात-
जिलिआद पर हम्ला करें या मैं इस इरादे से बाज़ रहूँ?”
मीकायाह ने जवाब दिया, “उस पर हम्ला करें,
क्यूँकि उन्हें आप के हवाले कर दिया जाएगा,
और आप को कामयाबी हासिल होगी।” 15 बादशाह
नाराज़ हुआ, “मुझे कितनी दफ़ा आप को समझाना
पड़ेगा कि आप क़सम खा कर मुझे रब के नाम में
सिर्फ़ वह कुछ सुनाएँ जो हक़ीक़त है।”

16 तब मीकायाह ने जवाब में कहा, “मुझे तमाम
इस्राईल गल्लाबान से महरूम भेड़-बकरियों की तरह
पहाड़ों पर बिखरा हुआ नज़र आया। फिर रब मुझ से
हमकलाम हुआ, ‘इन का कोई मालिक नहीं है। हर
एक सलामती से अपने घर वापस चला जाए’।”

17 इस्राईल के बादशाह ने यहूसफ़त से कहा, “लो,
क्या मैं ने आप को नहीं बताया था कि यह शख़्स
हमेशा मेरे बारे में बुरी पेशगोइयाँ करता है?”

18 लेकिन मीकायाह ने अपनी बात जारी रखी, “रब
का फ़रमान सुनें! मैं ने रब को उस के तख़्त पर
बैठे देखा। आसमान की पूरी फ़ौज उस के दाएँ
और बाएँ हाथ खड़ी थी। 19 रब ने पूछा, ‘कौन
इस्राईल के बादशाह अख़ियब को रामात-जिलिआद
पर हम्ला करने पर अकसाएगा ताकि वह वहाँ जा
कर मर जाए?’ एक ने यह मश्वरा दिया, दूसरे ने
वह। 20 आख़िरकार एक रूह रब के सामने खड़ी
हुई और कहने लगी, ‘मैं उसे उकसाऊँगी’। रब ने
सवाल किया, ‘किस तरह?’ 21 रूह ने जवाब दिया,
‘मैं निकल कर उस के तमाम नबियों पर यूँ क़ाबू

पाऊँगी कि वह झूट ही बोलेंगे।' रब ने फ़रमाया, 'तू
कामयाब होगी। जा और यूँ ही कर!' 22 ऐ बादशाह,
रब ने आप पर आफ़त लाने का फ़ैसला कर लिया
है, इस लिए उस ने झूटी रूह को आप के इन तमाम
नबियों के मुँह में डाल दिया है।"

23 तब सिदक़ियाह बिन कनआना ने आगे बढ़ कर
मीकायाह के मुँह पर थप्पड़ मारा और बोला, "रब
का रूह किस तरह मुझ से निकल गया ताकि तुझ
से बात करे?" 24 मीकायाह ने जवाब दिया, "जिस
दिन आप कभी इस कमरे में, कभी उस में खिसक
कर छुपने की कोशिश करेंगे उस दिन आप को पता
चलेगा।"

25 तब अख़ियब बादशाह ने हुक्म दिया, "मीकायाह
को शहर पर मुक़र्रर अफ़सर अमून और मेरे बेटे
यूआस के पास वापस भेज दो! 26 उन्हें बता देना,
'इस आदमी को जेल में डाल कर मेरे सहीह-सलामत
वापस आने तक कम से कम रोटी और पानी दिया
करें'।" 27 मीकायाह बोला, "अगर आप सहीह-
सलामत वापस आएँ तो मतलब होगा कि रब ने मेरी
मारिफ़त बात नहीं की।" फिर वह साथ खड़े लोगों
से मुख़ातिब हुआ, "तमाम लोग ध्यान दें!"

अख़ियब रामात के क़रीब मर जाता है

28 इस के बाद इस्राईल का बादशाह अख़ियब और
यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त मिल कर रामात-
जिलिआद पर हम्ला करने के लिए रवाना हुए। 29 जंग
से पहले अख़ियब ने यहूसफ़त से कहा, "मैं अपना
भेस बदल कर मैदान-ए-जंग में जाऊँगा। लेकिन
आप अपना शाही लिबास न उतारें।" चुनाँचे इस्राईल
का बादशाह अपना भेस बदल कर मैदान-ए-जंग
में आया। 30 शाम के बादशाह ने रथों पर मुक़र्रर
अपने अफ़सरों को हुक्म दिया था, "सिर्फ़ और सिर्फ़
बादशाह पर हम्ला करें। किसी और से मत लड़ना,
ख़्वाह वह छोटा हो या बड़ा।"

31 जब लड़ाई छिड़ गई तो रथों के अफ़सर
यहूसफ़त पर टूट पड़े, क्यूँकि उन्हों ने कहा, "यही
इस्राईल का बादशाह है!" लेकिन जब यहूसफ़त मदद
के लिए चिल्ला उठा तो रब ने उस की सुनी। उस ने
उन का ध्यान यहूसफ़त से खैंच लिया, 32 क्यूँकि जब
दुश्मनों को मालूम हुआ कि यह अख़ियब बादशाह
नहीं है तो वह उस का ताक़्क़ुब करने से बाज़ आए।
33 लेकिन किसी ने ख़ास निशाना बांधे बग़ैर अपना
तीर चलाया तो वह अख़ियब को ऐसी जगह जा
लगा जहाँ ज़िराबक्तर का जोड़ था। बादशाह ने अपने
रथबान को हुक्म दिया, "रथ को मोड़ कर मुझे मैदान-
ए-जंग से बाहर ले जाओ! मुझे चोट लग गई है।"
34 लेकिन चूँकि उस पूरे दिन शदीद क़िस्म की लड़ाई
जारी रही, इस लिए बादशाह अपने रथ में टेक लगा
कर दुश्मन के मुक़ाबिल खड़ा रहा। जब सूरज ग़ुरूब
होने लगा तो वह मर गया।

19 1 लेकिन यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त
सहीह-सलामत यरूशलम और अपने महल
में पहुँचा। 2 उस वक़्त याहू बिन हनानी जो ग़ैबबीन था
उसे मिलने के लिए निकला और बादशाह से कहा,
"क्या यह ठीक है कि आप शरीर की मदद करें? आप
क्यूँ उन को प्यार करते हैं जो रब से नफ़रत करते हैं?
यह देख कर रब का ग़ज़ब आप पर नाज़िल हुआ है।
3 तो भी आप में अच्छी बातें भी पाई जाती हैं। आप ने
यसीरत देवी के खम्बों को मुल्क से दूर करके अल्लाह
के तालिब होने का पक्का इरादा कर रखा है।"

यहूसफ़त क़ानूनी कार-रवाई की इस्लाह करता है

4 इस के बाद यहूसफ़त यरूशलम में रहा। लेकिन
एक दिन वह दुबारा निकला। इस बार उस ने जुनूब
में बैर-सबा से ले कर शिमाल में इफ़्राईम के पहाड़ी
इलाक़े तक पूरे यहूदाह का दौरा किया। हर जगह
वह लोगों को रब उन के बापदादा के ख़ुदा के पास
वापस लाया। 5 उस ने यहूदाह के तमाम क़िलाबन्द
शहरों में क़ाज़ी भी मुक़र्रर किए। 6 उन्हें समझाते हुए
उस ने कहा, "अपनी रविश पर ध्यान दें! याद रहे
कि आप इन्सान के जवाबदिह नहीं हैं बल्कि रब
के। वही आप के साथ होगा जब आप फ़ैसले करेंगे।

7 चुनाँचे अल्लाह का ख़ौफ़ मान कर एहतियात से लोगों
का इन्साफ़ करें। क्यूँकि जहाँ रब हमारा ख़ुदा है वहाँ
बेइन्साफ़ी, जानिबदारी और रिश्वतखोरी हो ही नहीं
सकती।”

8 यरूशलम में यहूसफ़त ने कुछ लावियों, इमामों
और ख़ानदानी सरपरस्तों को इन्साफ़ करने की
ज़िम्मादारी दी। रब की शरीअत से मुताल्लिक़ किसी
मुआमले या यरूशलम के बाशिन्दों के दरमियान
झगड़े की सूरत में उन्हें फ़ैसला करना था। 9 यहूसफ़त
ने उन्हें समझाते हुए कहा, “रब का ख़ौफ़ मान
कर अपनी ख़िदमत को वफ़ादारी और पूरे दिल से
सरअन्जाम दें। 10 आप के भाई शहरों से आ कर
आप के सामने अपने झगड़े पेश करेंगे ताकि आप
उन का फ़ैसला करें। आप को क़त्ल के मुक़द्दमों का
फ़ैसला करना पड़ेगा। ऐसे मुआमलात भी होंगे जो
रब की शरीअत, किसी हुक्म, हिदायत या उसूल से
ताल्लुक़ रखेंगे। जो भी हो, लाज़िम है कि आप उन्हें
समझाएँ ताकि वह रब का गुनाह न करें। वर्ना उस का
ग़ज़ब आप और आप के भाइयों पर नाज़िल होगा।
अगर आप यह करें तो आप बेक़ुसूर रहेंगे। 11 इमाम-
ए-आज़म अमरियाह रब की शरीअत से ताल्लुक़
रखने वाले मुआमलात का हत्मी फ़ैसला करेगा। जो
मुक़द्दमे बादशाह से ताल्लुक़ रखते हैं उन का हत्मी
फ़ैसला यहूदाह के क़बीले का सरबराह ज़बदियाह
बिन इस्माईल करेगा। अदालत का इन्तिज़ाम चलाने
में लावी आप की मदद करेंगे। अब हौसला रख कर
अपनी ख़िदमत सरअन्जाम दें। जो भी सहीह काम
करेगा उस के साथ रब होगा।”

अम्मोनियों का यहूदाह पर हम्ला

20 1 कुछ देर के बाद मोआबी, अम्मोनी और
कुछ मऊनी यहूसफ़त से जंग करने के
लिए निकले। 2 एक क़ासिद ने आ कर बादशाह को
इत्तिला दी, “मुल्क-ए-अदोम से एक बड़ी फ़ौज आप
से लड़ने के लिए आ रही है। वह बहीरा-ए-मुर्दार के
दूसरे किनारे से बढ़ती बढ़ती इस वक़्त हससून-तमर
पहुँच चुकी है” (हससून ऐन-जदी का दूसरा नाम है)।
3 यह सुन कर यहूसफ़त घबरा गया। उस ने रब से
राहनुमाई माँगने का फ़ैसला करके एलान किया कि
तमाम यहूदाह रोज़ा रखे। 4 यहूदाह के तमाम शहरों
से लोग यरूशलम आए ताकि मिल कर मदद के लिए
रब से दुआ माँगें। 5 वह रब के घर के नए सहन में
जमा हुए और यहूसफ़त ने सामने आ कर 6 दुआ की,
“ऐ रब, हमारे बापदादा के ख़ुदा! तू ही आसमान
पर तख़्तनशीन ख़ुदा है, और तू ही दुनिया के तमाम
ममालिक पर हुकूमत करता है। तेरे हाथ में क़ुदरत
और ताक़त है। कोई भी तेरा मुक़ाबला नहीं कर
सकता। 7 ऐ हमारे ख़ुदा, तू ने इस मुल्क के पुराने
बाशिन्दों को अपनी क़ौम इस्राईल के आगे से
निकाल दिया। इब्राहीम तेरा दोस्त था, और उस की
औलाद को तू ने यह मुल्क हमेशा के लिए दे दिया।
8 इस में तेरी क़ौम आबाद हुई। तेरे नाम की ताज़ीम
में मक़्दिस बना कर उन्हों ने कहा, 9 ‘जब भी आफ़त
हम पर आए तो हम यहाँ तेरे हुज़ूर आ सकेंगे, चाहे
जंग, वबा, काल या कोई और सज़ा हो। अगर हम
उस वक़्त इस घर के सामने खड़े हो कर मदद के
लिए तुझे पुकारें तो तू हमारी सुन कर हमें बचाएगा,
क्यूँकि इस इमारत पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।’
10 अब अम्मोन, मोआब और पहाड़ी मुल्क सईर
की हरकतों को देख! जब इस्राईल मिस्र से निकला
तो तू ने उसे इन क़ौमों पर हम्ला करने और इन के
इलाक़े में से गुज़रने की इजाज़त न दी। इस्राईल को
मुतबादिल रास्ता इख़तियार करना पड़ा, क्यूँकि उसे
इन्हें हलाक करने की इजाज़त न मिली। 11 अब ध्यान
दे कि यह बदले में क्या कर रहे हैं। यह हमें उस
मौरूसी ज़मीन से निकालना चाहते हैं जो तू ने हमें दी
थी। 12 ऐ हमारे ख़ुदा, क्या तू उन की अदालत नहीं
करेगा? हम तो इस बड़ी फ़ौज के मुक़ाबले में बेबस
हैं। इस के हमले से बचने का रास्ता हमें नज़र नहीं
आता, लेकिन हमारी आँखें मदद के लिए तुझ पर
लगी हैं।”

13 यहूदाह के तमाम मर्द, औरतें और बच्चे वहाँ
रब के हुज़ूर खड़े रहे। 14 तब रब का रूह एक
लावी बनाम यहज़ीएल पर नाज़िल हुआ जब वह
जमाअत के दरमियान खड़ा था। यह आदमी आसफ़
के ख़ानदान का था, और उस का पूरा नाम
यहज़ीएल बिन ज़करियाह बिन बिनायाह बिन यईएल
बिन मत्तनियाह था। 15 उस ने कहा, "यहूदाह और
यरूशलम के लोगो, मेरी बात सुनें! ऐ बादशाह, आप
भी इस पर ध्यान दें। रब फ़रमाता है कि डरो मत, और
इस बड़ी फ़ौज को देख कर मत घबराना। क्यूँकि यह
जंग तुम्हारा नहीं बल्कि मेरा मुआमला है। 16 कल उन
के मुक़ाबले के लिए निकलो। उस वक़्त वह दर्रा-ए-
सीस से हो कर तुम्हारी तरफ़ बढ़ रहे होंगे। तुम्हारा
उन से मुक़ाबला उस वादी के सिरे पर होगा जहाँ
यरूएल का रेगिस्तान शुरू होता है। 17 लेकिन तुम्हें
लड़ने की ज़रूरत नहीं होगी। बस दुश्मन के आमने-
सामने खड़े हो कर रुक जाओ और देखो कि रब
किस तरह तुम्हें छुटकारा देगा। लिहाज़ा मत डरो,
ऐ यहूदाह और यरूशलम, और दहशत मत खाओ।
कल उन का सामना करने के लिए निकलो, क्यूँकि
रब तुम्हारे साथ होगा।"

18 यह सुन कर यहूसफ़त मुँह के बल झुक गया।
यहूदाह और यरूशलम के तमाम लोगों ने भी औंधे
मुँह झुक कर रब की परस्तिश की। 19 फिर क़िहात
और क़ोरह के ख़ानदानों के कुछ लावी खड़े हो कर
बुलन्द आवाज़ से रब इस्राईल के ख़ुदा की हम्द-ओ-
सना करने लगे।

अम्मोनियों पर फ़त्ह

20 अगले दिन सुब्ह-सवेरे यहूदाह की फ़ौज तक़ूअ
के रेगिस्तान के लिए रवाना हुई। निकलते वक़्त
यहूसफ़त ने उन के सामने खड़े हो कर कहा, "यहूदाह
और यरूशलम के मर्दो, मेरी बात सुनें! रब अपने
ख़ुदा पर भरोसा रखें तो आप क़ाइम रहेंगे। उस
के नबियों की बातों का यक़ीन करें तो आप को
कामयाबी हासिल होगी।" 21 लोगों से मश्वरा करके
यहूसफ़त ने कुछ मर्दों को रब की ताज़ीम में गीत गाने
के लिए मुक़र्रर किया। मुक़द्दस लिबास पहने हुए वह
फ़ौज के आगे आगे चल कर हम्द-ओ-सना का यह
गीत गाते रहे, "रब की सताइश करो, क्यूँकि उस की
शफ़क़त अबदी है।"

22 उस वक़्त रब हम्लाआवर फ़ौज के मुख़ालिफ़ों
को खड़ा कर चुका था। अब जब यहूदाह के मर्द
हम्द के गीत गाने लगे तो वह ताक में से निकल
कर बढ़ती हुई फ़ौज पर टूट पड़े और उसे शिकस्त
दी। 23 फिर अम्मोनियों और मोआबियों ने मिल कर
पहाड़ी मुल्क सईर के मर्दों पर हम्ला किया ताकि उन्हें
मुकम्मल तौर पर ख़त्म कर दें। जब यह हलाक हुए
तो अम्मोनी और मोआबी एक दूसरे को मौत के घाट
उतारने लगे। 24 यहूदाह के फ़ौजियों को इस का इल्म
नहीं था। चलते चलते वह उस मक़ाम तक पहुँच गए
जहाँ से रेगिस्तान नज़र आता है। वहाँ वह दुश्मन
को तलाश करने लगे, लेकिन लाशें ही लाशें ज़मीन
पर बिखरी नज़र आईं। एक भी दुश्मन नहीं बचा था।
25 यहूसफ़त और उस के लोगों के लिए सिर्फ़ दुश्मन
को लूटने का काम बाक़ी रह गया था। कस्रत के
जानवर, क़िस्म क़िस्म का सामान, कपड़े और कई
क़ीमती चीज़ें थीं। इतना सामान था कि वह उसे एक
वक़्त में उठा कर अपने साथ ले जा नहीं सकते थे।
सारा माल जमा करने में तीन दिन लगे।

26 चौथे दिन वह क़रीब की एक वादी में जमा हुए
ताकि रब की तारीफ़ करें। उस वक़्त से वादी का नाम
'तारीफ़ की वादी' पड़ गया। 27 इस के बाद यहूदाह
और यरूशलम के तमाम मर्द यहूसफ़त की राहनुमाई
में ख़ुशी मनाते हुए यरूशलम वापस आए। क्यूँकि रब
ने उन्हें दुश्मन की शिकस्त से ख़ुशी का सुनहरा मौक़ा
अता किया था। 28 सितार, सरोद और तुरम बजाते
हुए वह यरूशलम में दाख़िल हुए और रब के घर के
पास जा पहुँचे। 29 जब इर्दगिर्द के ममालिक ने सुना
कि किस तरह रब इस्राईल के दुश्मनों से लड़ा है तो
उन में अल्लाह की दहशत फैल गई। 30 उस वक़्त से
यहूसफ़त सुकून से हुकूमत कर सका, क्यूँकि अल्लाह

ने उसे चारों तरफ़ के ममालिक के हम्लों से महफ़ूज़ रखा था।

यहूसफ़त के आख़िरी साल और मौत

31 यहूसफ़त 35 साल की उम्र में बादशाह बना, और
वह यरूशलम में रह कर 25 साल हुकूमत करता
रहा। उस की माँ अज़ूबा बिन्त सिल्ही थी। 32 वह
अपने बाप आसा के नमूने पर चलता और वह कुछ
करता रहा जो रब को पसन्द था। 33 लेकिन उस ने
भी ऊँचे मक़ामों के मन्दिरों को ख़त्म न किया, और
लोगों के दिल अपने बापदादा के ख़ुदा की तरफ़
माइल न हुए।

34 बाक़ी जो कुछ यहूसफ़त की हुकूमत के दौरान
हुआ वह शुरू से ले कर आख़िर तक याहू बिन हनानी
की तारीख़ में बयान किया गया है। बाद में सब कुछ
'शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़' की किताब में दर्ज
किया गया।

35 बाद में यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त ने इस्राईल
के बादशाह अख़ज़ियाह से इत्तिहाद किया, गो उस
का रवय्या बेदीनी का था। 36 दोनों ने मिल कर
तिजारती जहाज़ों का ऐसा बेड़ा बनवाया जो तरसीस
तक पहुँच सके। जब यह जहाज़ बन्दरगाह अस्यून-
जाबर में तय्यार हुए 37 तो मरेसा का रहने वाला
इलीअज़र बिन दूदावाहू ने यहूसफ़त के ख़िलाफ़
पेशगोई की, "चूँकि आप अख़ज़ियाह के साथ
मुत्तहिद हो गए हैं इस लिए रब आप का काम तबाह
कर देगा!" और वाक़ई, यह जहाज़ कभी अपनी
मन्ज़िल-ए-मक़सूद तरसीस तक पहुँच न सके, क्यूँकि
वह पहले ही टुकड़े टुकड़े हो गए।

21 1 जब यहूसफ़त मर कर अपने बापदादा से
जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से
में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र
में दफ़न किया गया। फिर उस का बेटा यहूराम
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यहूराम

2 यहूसफ़त के बाक़ी बेटे अज़रियाह, यहीएल,
ज़करियाह, अज़रियाहू, मीकाएल और सफ़तियाह
थे। 3 यहूसफ़त ने उन्हें बहुत सोना-चाँदी और दीगर
क़ीमती चीज़ें दे कर यहूदाह के क़िलाबन्द शहरों पर
मुक़र्रर किया था। लेकिन यहूराम को उस ने पहलौठा
होने के बाइस अपना जानशीन बनाया था। 4 बादशाह
बनने के बाद जब यहूदाह की हुकूमत मज़बूती से उस
के हाथ में थी तो यहूराम ने अपने तमाम भाइयों को
यहूदाह के कुछ राहनुमाओं समेत क़त्ल कर दिया।

5 यहूराम 32 साल की उम्र में बादशाह बना, और
वह यरूशलम में रह कर 8 साल तक हुकूमत करता
रहा। 6 उस की शादी इस्राईल के बादशाह अख़ियब
की बेटी से हुई थी, और वह इस्राईल के बादशाहों
और ख़ासकर अख़ियब के ख़ानदान के बुरे नमूने पर
चलता रहा। उस का चाल-चलन रब को नापसन्द
था। 7 तो भी वह दाऊद के घराने को तबाह नहीं
करना चाहता था, क्यूँकि उस ने दाऊद से अह्द बांध
कर वादा किया था कि तेरा और तेरी औलाद का
चराग़ हमेशा तक जलता रहेगा।

8 यहूराम की हुकूमत के दौरान अदोमियों ने बग़ावत
की और यहूदाह की हुकूमत को रद्द करके अपना
बादशाह मुक़र्रर किया। 9 तब यहूराम अपने अफ़्सरों
और तमाम रथों को ले कर उन के पास पहुँचा। जब
जंग छिड़ गई तो अदोमियों ने उसे और उस के रथों
पर मुक़र्रर अफ़्सरों को घेर लिया, लेकिन रात को
बादशाह घेरने वालों की सफ़ों को तोड़ने में कामयाब
हो गया। 10 तो भी मुल्क-ए-अदोम आज तक दुबारा
यहूदाह की हुकूमत के तहत नहीं आया। उसी वक़्त
लिब्ना शहर भी सरकश हो कर ख़ुदमुख़्तार हो गया।
यह सब कुछ इस लिए हुआ कि यहूराम ने रब अपने
बापदादा के ख़ुदा को तर्क कर दिया था, 11 यहाँ तक
कि उस ने यहूदाह के पहाड़ी इलाक़े में कई ऊँची
जगहों पर मन्दिर बनवाए और यरूशलम के बाशिन्दों

को रब से बेवफ़ा हो जाने पर उकसाया। पूरे यहूदाह
को वह बुतपरस्ती की ग़लत राह पर ले आया।
12 तब यहूराम को इल्यास नबी से ख़त मिला जिस
में लिखा था, “रब आप के बाप दाऊद का ख़ुदा
फ़रमाता है, ‘तू अपने बाप यहूसफ़त और अपने
दादा आसा बादशाह के अच्छे नमूने पर नहीं चला
13 बल्कि इस्राईल के बादशाहों की ग़लत राहों पर।
बिलकुल अख़ियब के ख़ानदान की तरह तू यरूशलम
और पूरे यहूदाह के बाशिन्दों को बुतपरस्ती की राह
पर लाया है। और यह तेरे लिए काफ़ी नहीं था, बल्कि
तू ने अपने सगे भाइयों को भी जो तुझ से बेहतर थे
क़त्ल कर दिया। 14 इस लिए रब तेरी क़ौम, तेरे बेटों
और तेरी बीवियों को तेरी पूरी मिलकियत समेत बड़ी
मुसीबत में डालने को है। 15 तू ख़ुद बीमार हो जाएगा।
लाइलाज मर्ज़ की ज़द में आ कर तुझे बड़ी देर तक
तक्लीफ़ होगी। आख़िरकार तेरी अंतड़ियाँ जिस्म से
निकलेंगी’।”
16 उन दिनों में रब ने फ़िलिस्तियों और एथोपिया
के पड़ोस में रहने वाले अरब क़बीलों को यहूराम पर
हम्ला करने की तहरीक दी। 17 यहूदाह में घुस कर वह
यरूशलम तक पहुँच गए और बादशाह के महल को
लूटने में कामयाब हुए। तमाम माल-ओ-अस्बाब के
इलावा उन्हों ने बादशाह के बेटों और बीवियों को
भी छीन लिया। सिर्फ़ सब से छोटा बेटा यहूआख़ज़
यानी अख़ज़ियाह बच निकला।
18 इस के बाद रब का ग़ज़ब बादशाह पर नाज़िल
हुआ। उसे लाइलाज बीमारी लग गई जिस से उस
की अंतड़ियाँ मुतअस्सिर हुईं। 19 बादशाह की हालत
बहुत ख़राब होती गई। दो साल के बाद अंतड़ियाँ
जिस्म से निकल गईं। यहूराम शदीद दर्द की हालत
में कूच कर गया। जनाज़े पर उस की क़ौम ने उस के
एहतिराम में लकड़ी का बड़ा ढेर न जलाया, गो उन्हों
ने यह उस के बापदादा के लिए किया था।
20 यहूराम 32 साल की उम्र में बादशाह बना और
यरूशलम में रह कर 8 साल तक हुकूमत करता रहा
था। जब फ़ौत हुआ तो किसी को भी अफ़सोस न
हुआ। उसे यरूशलम शहर के उस हिस्से में दफ़न तो
किया गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है, लेकिन
शाही क़ब्रों में नहीं।

यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह

22 1 यरूशलम के बाशिन्दों ने यहूराम के सब
से छोटे बेटे अख़ज़ियाह को तख़्त पर बिठा
दिया। बाक़ी तमाम बेटों को उन लुटेरों ने क़त्ल किया
था जो अरबों के साथ शाही लश्करगाह में घुस आए
थे। यही वजह थी कि यहूदाह के बादशाह यहूराम
का बेटा अख़ज़ियाह बादशाह बना। 2 वह 22 साल
की उम्र में तख़्तनशीन हुआ और यरूशलम में रह
कर एक साल बादशाह रहा। उस की माँ अतलियाह
इस्राईल के बादशाह उम्री की पोती थी। 3 अख़ज़ियाह
भी अख़ियब के ख़ानदान के ग़लत नमूने पर चल
पड़ा, क्यूँकि उस की माँ उसे बेदीन राहों पर चलने
पर उभारती रही। 4 बाप की वफ़ात पर वह अख़ियब
के घराने के मश्वरे पर चलने लगा। नतीजे में उस का
चाल-चलन रब को नापसन्द था। आख़िरकार यही
लोग उस की हलाकत का सबब बन गए।
5 इन ही के मश्वरे पर वह इस्राईल के बादशाह यूराम
बिन अख़ियब के साथ मिल कर शाम के बादशाह
हज़ाएल से लड़ने के लिए निकला। जब रामात-
जिलिआद के क़रीब जंग छिड़ गई तो यूराम शाम
के फ़ौजियों के हाथों ज़ख़्मी हुआ 6 और मैदान-ए-
जंग को छोड़ कर यज़्रएल वापस आया ताकि ज़ख़्म
भर जाएँ। जब वह वहाँ ठहरा हुआ था तो यहूदाह
का बादशाह अख़ज़ियाह बिन यहूराम उस का हाल
पूछने के लिए यज़्रएल आया। 7 लेकिन अल्लाह की
मर्ज़ी थी कि यह मुलाक़ात अख़ज़ियाह की हलाकत
का बाइस बने। वहाँ पहुँच कर वह यूराम के साथ
याहू बिन निम्सी से मिलने के लिए निकला, वही
याहू जिसे रब ने मसह करके अख़ियब के ख़ानदान
को नेस्त-ओ-नाबूद करने के लिए मख़्सूस किया था।
8 अख़ियब के ख़ानदान की अदालत करते करते
याहू की मुलाक़ात यहूदाह के कुछ अफ़सरों और

अख़ज़ियाह के बाज़ रिश्तेदारों से हुई जो अख़ज़ियाह
की ख़िदमत में उस के साथ आए थे। इन्हें क़त्ल
करके 9 याहू अख़ज़ियाह को ढूँडने लगा। पता चला
कि वह सामरिया शहर में छुप गया है। उसे याहू के
पास लाया गया जिस ने उसे क़त्ल कर दिया। तो भी
उसे इज़्ज़त के साथ दफ़न किया गया, क्यूँकि लोगों
ने कहा, "आख़िर वह यहूसफ़त का पोता है जो पूरे
दिल से रब का तालिब रहा।" उस वक़्त अख़ज़ियाह
के ख़ानदान में कोई न पाया गया जो बादशाह का
काम सँभाल सकता।

अतलियाह की ज़ालिमाना हुकूमत

10 जब अख़ज़ियाह की माँ अतलियाह को मालूम
हुआ कि मेरा बेटा मर गया है तो वह यहूदाह के
पूरे शाही ख़ानदान को क़त्ल करने लगी। 11 लेकिन
अख़ज़ियाह की सगी बहन यहूसबा ने अख़ज़ियाह
के छोटे बेटे यूआस को चुपके से उन शहज़ादों में
से निकाल लिया जिन्हें क़त्ल करना था और उसे
उस की दाया के साथ एक स्टोर में छुपा दिया जिस
में बिस्तर वग़ैरा महफ़ूज़ रखे जाते थे। वहाँ वह
अतलियाह की गिरिफ़्त से महफ़ूज़ रहा। यहूसबा
यहोयदा इमाम की बीवी थी। 12 बाद में यूआस को
रब के घर में मुन्तक़िल किया गया जहाँ वह उन
के साथ उन छः सालों के दौरान छुपा रहा जब
अतलियाह मलिका थी।

अतलियाह का अन्जाम और यूआस की हुकूमत

23 1 अतलियाह की हुकूमत के सातवें साल में
यहोयदा ने जुरअत करके सौ सौ फ़ौजियों
पर मुक़र्रर पाँच अफ़्सरों से अह्द बांधा। उन के
नाम अज़रियाह बिन यरोहाम, इस्माईल बिन यूहनान,
अज़रियाह बिन ओबेद, मासियाह बिन अदायाह और
इलीसाफ़त बिन ज़िक्री थे। 2 इन आदमियों ने चुपके
से यहूदाह के तमाम शहरों में से गुज़र कर लावियों
और इस्राईली ख़ानदानों के सरपरस्तों को जमा किया
और फिर उन के साथ मिल कर यरूशलम आए।
3 अल्लाह के घर में पूरी जमाअत ने जवान बादशाह
यूआस के साथ अह्द बांधा।

यहोयदा उन से मुख़ातिब हुआ, "हमारे बादशाह
का बेटा ही हम पर हुकूमत करे, क्यूँकि रब ने
मुक़र्रर किया है कि दाऊद की औलाद यह ज़िम्मादारी
सँभाले। 4 चुनाँचे अगले सबत के दिन आप इमामों
और लावियों में से जितने ड्यूटी पर आएँगे वह तीन
हिस्सों में तक़्सीम हो जाएँ। एक हिस्सा रब के घर
के दरवाज़ों पर पहरा दे, 5 दूसरा शाही महल पर और
तीसरा बुन्याद नामी दरवाज़े पर। बाक़ी सब आदमी
रब के घर के सहनों में जमा हो जाएँ। 6 ख़िदमत करने
वाले इमामों और लावियों के सिवा कोई और रब के
घर में दाख़िल न हो। सिर्फ़ यही अन्दर जा सकते
हैं, क्यूँकि रब ने उन्हें इस ख़िदमत के लिए मख़्सूस
किया है। लाज़िम है कि पूरी क़ौम रब की हिदायात
पर अमल करे। 7 बाक़ी लावी बादशाह के इर्दगिर्द
दाइरा बना कर अपने हथियारों को पकड़े रखें और
जहाँ भी वह जाए उसे घेरे रखें। जो भी रब के घर में
घुसने की कोशिश करे उसे मार डालना।"

8 लावी और यहूदाह के इन तमाम मर्दों ने ऐसा ही
किया। अगले सबत के दिन सब अपने बन्दों समेत
उस के पास आए, वह भी जिन की ड्यूटी थी और
वह भी जिन की अब छुट्टी थी। क्यूँकि यहोयदा ने
ख़िदमत करने वालों में से किसी को भी जाने की
इजाज़त नहीं दी थी। 9 इमाम ने सौ सौ फ़ौजियों पर
मुक़र्रर अफ़्सरों को दाऊद बादशाह के वह नेज़े और
छोटी और बड़ी ढालें दीं जो अब तक रब के घर
में महफ़ूज़ रखी हुई थीं। 10 फिर उस ने फ़ौजियों
को बादशाह के इर्दगिर्द खड़ा किया। हर एक अपने
हथियार पकड़े तय्यार था। क़ुर्बानगाह और रब के
घर के दरमियान उन का दाइरा रब के घर की जुनूबी
दीवार से ले कर उस की शिमाली दीवार तक फैला
हुआ था। 11 फिर वह यूआस को बाहर लाए और उस
के सर पर ताज रख कर उसे क़वानीन की किताब दे
दी। यूँ यूआस को बादशाह बना दिया गया। उन्हों ने

उसे मसह किया और बुलन्द आवाज़ से नारा लगाने लगे, “बादशाह ज़िन्दाबाद!”

12 लोगों का शोर अतलियाह तक पहुँचा, क्यूँकि सब दौड़ कर जमा हो रहे और बादशाह की ख़ुशी में नारे लगा रहे थे। वह रब के घर के सहन में उन के पास आई 13 तो क्या देखती है कि नया बादशाह दरवाज़े के क़रीब उस सतून के पास खड़ा है जहाँ बादशाह रिवाज के मुताबिक़ खड़ा होता है, और वह अफ़सरों और तुरम बजाने वालों से घिरा हुआ है। तमाम उम्मत भी साथ खड़ी तुरम बजा बजा कर ख़ुशी मना रही है। साथ साथ गुलूकार अपने साज़ बजा कर हम्द के गीत गाने में राहनुमाई कर रहे हैं। अतलियाह रंजिश के मारे अपने कपड़े फाड़ कर चीख़ उठी, “ग़द्दारी, ग़द्दारी!”

14 यहोयदा इमाम ने सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर उन अफ़सरों को बुलाया जिन के सपुर्द फ़ौज की गई थी और उन्हें हुक्म दिया, “उसे बाहर ले जाएँ, क्यूँकि मुनासिब नहीं कि उसे रब के घर के पास मारा जाए। और जो भी उस के पीछे आए उसे तलवार से मार देना।” 15 वह अतलियाह को पकड़ कर वहाँ से बाहर ले गए और उसे घोड़ों के दरवाज़े पर मार दिया जो शाही महल के पास था।

16 फिर यहोयदा ने क़ौम और बादशाह के साथ मिल कर रब से अह्द बांध कर वादा किया कि हम रब की क़ौम रहेंगे। 17 इस के बाद सब बाल के मन्दिर पर टूट पड़े और उसे ढा दिया। उस की क़ुर्बानगाहों और बुतों को टुकड़े टुकड़े करके उन्हों ने बाल के पुजारी मत्तान को क़ुर्बानगाहों के सामने ही मार डाला।

18 यहोयदा ने इमामों और लावियों को दुबारा रब के घर को सँभालने की ज़िम्मादारी दी। दाऊद ने उन्हें ख़िदमत के लिए गुरोहों में तक़्सीम किया था। उस की हिदायात के मुताबिक़ उन ही को ख़ुशी मनाते और गीत गाते हुए भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश करनी थीं, जिस तरह मूसा की शरीअत में लिखा है। 19 रब के घर के दरवाज़ों पर यहोयदा ने दरबान खड़े किए ताकि ऐसे लोगों को अन्दर आने से रोका जाए जो किसी भी वजह से नापाक हों।

20 फिर वह सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों, असर-ओ-रसूख़ वालों, क़ौम के हुक्मरानों और बाक़ी पूरी उम्मत के हमराह जुलूस निकाल कर बादशाह को बालाई दरवाज़े से हो कर शाही महल में ले गया। वहाँ उन्हों ने बादशाह को तख़्त पर बिठा दिया, 21 और तमाम उम्मत ख़ुशी मनाती रही। यूँ यरूशलम शहर को सुकून मिला, क्यूँकि अतलियाह को तलवार से मार दिया गया था।

यूआस रब के घर की मरम्मत करवाता है

24 1 यूआस 7 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 40 साल था। उस की माँ ज़िबियाह बैर-सबा की रहने वाली थी। 2 यहोयदा के जीते जी यूआस वह कुछ करता रहा जो रब को पसन्द था। 3 यहोयदा ने उस की शादी दो ख़वातीन से कराई जिन के बेटे-बेटियाँ पैदा हुए।

4 कुछ देर के बाद यूआस ने रब के घर की मरम्मत कराने का फ़ैसला किया। 5 इमामों और लावियों को अपने पास बुला कर उस ने उन्हें हुक्म दिया, “यहूदाह के शहरों में से गुज़र कर तमाम लोगों से पैसे जमा करें ताकि आप साल-ब-साल अपने ख़ुदा के घर की मरम्मत करवाएँ। अब जा कर जल्दी करें।” लेकिन लावियों ने बड़ी देर लगाई।

6 तब बादशाह ने इमाम-ए-आज़म यहोयदा को बुला कर पूछा, “आप ने लावियों से मुतालबा क्यूँ नहीं किया कि वह यहूदाह के शहरों और यरूशलम से रब के घर की मरम्मत के पैसे जमा करें? यह तो कोई नई बात नहीं है, क्यूँकि रब का ख़ादिम मूसा भी मुलाक़ात का ख़ैमा ठीक रखने के लिए इस्राईली जमाअत से टैक्स लेता रहा। 7 आप को ख़ुद मालूम है कि उस बेदीन औरत अतलियाह ने अपने पैरोकारों के साथ रब के घर में नक़ब लगा कर रब के लिए

मख़्सूस हदिए छीन लिए और बाल के अपने बुतों की ख़िदमत के लिए इस्तेमाल किए थे।”

8 बादशाह के हुक्म पर एक सन्दूक़ बनवाया गया
जो बाहर, रब के घर के सहन के दरवाज़े पर रखा
गया। 9 पूरे यहूदाह और यरूशलम में एलान किया
गया कि रब के लिए वह टैक्स अदा किया जाए जिस
का ख़ुदा के ख़ादिम मूसा ने रेगिस्तान में इस्राईलियों
से मुतालबा किया था। 10 यह सुन कर तमाम राहनुमा
बल्कि पूरी क़ौम ख़ुश हुई। अपने हदिए रब के घर
के पास ला कर वह उन्हें सन्दूक़ में डालते रहे।
जब कभी वह भर जाता 11 तो लावी उसे उठा कर
बादशाह के अफ़्सरों के पास ले जाते। अगर उस
में वाक़ई बहुत पैसे होते तो बादशाह का मीरमुन्शी
और इमाम-ए-आज़म का एक अफ़्सर आ कर उसे
ख़ाली कर देते। फिर लावी उसे उस की जगह वापस
रख देते थे। यह सिलसिला रोज़ाना जारी रहा, और
आख़िरकार बहुत बड़ी रक़म इकट्ठी हो गई।

12 बादशाह और यहोयदा यह पैसे उन ठेकेदारों को
दिया करते थे जो रब के घर की मरम्मत करवाते
थे। यह पैसे पत्थर तराशने वालों, बढ़इयों और उन
कारीगरों की उजरत के लिए सर्फ़ हुए जो लोहे और
पीतल का काम करते थे। 13 रब के घर की मरम्मत
के निगरानों ने मेहनत से काम किया, और उन के ज़ेर-
ए-निगरानी तरक़्क़ी होती गई। आख़िर में रब के घर
की हालत पहले की सी हो गई थी बल्कि उन्हों ने उसे
मज़ीद मज़बूत बना दिया। 14 काम के इख़तिताम पर
ठेकेदार बाक़ी पैसे यूआस बादशाह और यहोयदा के
पास लाए। इन से उन्हों ने रब के घर की ख़िदमत
के लिए दरकार प्याले, सोने और चाँदी के बर्तन
और दीगर कई चीज़ें जो क़ुर्बानियाँ चढ़ाने के लिए
इस्तेमाल होती थीं बनवाईं। यहोयदा के जीते जी रब
के घर में बाक़ाइदगी से भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ
पेश की जाती रहीं।

15 यहोयदा निहायत बूढ़ा हो गया। 130 साल की
उम्र में वह फ़ौत हुआ। 16 उसे यरूशलम के उस हिस्से
में शाही क़ब्रिस्तान में दफ़नाया गया जो ‘दाऊद का
शहर’ कहलाता है, क्यूँकि उस ने इस्राईल में अल्लाह
और उस के घर की अच्छी ख़िदमत की थी।

यूआस बादशाह रब को तर्क करता है

17 यहोयदा की मौत के बाद यहूदाह के बुज़ुर्ग
यूआस के पास आ कर मुँह के बल झुक गए। उस
वक़्त से वह उन के मश्वरों पर अमल करने लगा।
18 इस का एक नतीजा यह निकला कि वह उन के
साथ मिल कर रब अपने बाप के ख़ुदा के घर को
छोड़ कर यसीरत देवी के खम्बों और बुतों की पूजा
करने लगा। इस गुनाह की वजह से अल्लाह का ग़ज़ब
यहूदाह और यरूशलम पर नाज़िल हुआ। 19 उस ने
अपने नबियों को लोगों के पास भेजा ताकि वह उन्हें
समझा कर रब के पास वापस लाएँ। लेकिन कोई भी
उन की बात सुनने के लिए तय्यार न हुआ। 20 फिर
अल्लाह का रूह यहोयदा इमाम के बेटे ज़करियाह पर
नाज़िल हुआ, और उस ने क़ौम के सामने खड़े हो कर
कहा, “अल्लाह फ़रमाता है, ‘तुम रब के अह्काम की
ख़िलाफ़वरज़ी क्यूँ करते हो? तुम्हें कामयाबी हासिल
नहीं होगी। चूँकि तुम ने रब को तर्क कर दिया है इस
लिए उस ने तुम्हें तर्क कर दिया है’!”

21 जवाब में लोगों ने ज़करियाह के ख़िलाफ़
साज़िश करके उसे बादशाह के हुक्म पर रब के घर
के सहन में संगसार कर दिया। 22 यूँ यूआस बादशाह
ने उस मेहरबानी का ख़याल न किया जो यहोयदा ने
उस पर की थी बल्कि उसे नज़रअन्दाज़ करके उस के
बेटे को क़त्ल किया। मरते वक़्त ज़करियाह बोला,
“रब ध्यान दे कर मेरा बदला ले!”

23 अगले साल के आग़ाज़ में शाम की फ़ौज यूआस
से लड़ने आई। यहूदाह में घुस कर उन्हों ने यरूशलम
पर फ़त्ह पाई और क़ौम के तमाम बुज़ुर्गों को मार
डाला। सारा लूटा हुआ माल दमिश्क़ को भेजा गया
जहाँ बादशाह था। 24 अगरचे शाम की फ़ौज यहूदाह
की फ़ौज की निस्बत बहुत छोटी थी तो भी रब ने उसे
फ़त्ह बख़्शी। चूँकि यहूदाह ने रब अपने बापदादा
के ख़ुदा को तर्क कर दिया था इस लिए यूआस

को शाम के हाथों सज़ा मिली। 25 जंग के दौरान
यहूदाह का बादशाह शदीद ज़ख़्मी हुआ। जब दुश्मन
ने मुल्क को छोड़ दिया तो यूआस के अफ़सरों ने
उस के ख़िलाफ़ साज़िश की। यहोयदा इमाम के बेटे
के क़त्ल का इन्तिक़ाम ले कर उन्हों ने उसे मार
डाला जब वह बीमार हालत में बिस्तर पर पड़ा था।
बादशाह को यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न किया
गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। लेकिन शाही
क़ब्रिस्तान में नहीं दफ़नाया गया। 26 साज़िश करने
वालों के नाम ज़बद और यहूज़बद थे। पहले की माँ
सिमआत अम्मोनी थी जबकि दूसरे की माँ सिमरीत
मोआबी थी।

27 यूआस के बेटों, उस के ख़िलाफ़ नबियों के
फ़रमानों और अल्लाह के घर की मरम्मत के बारे
में मज़ीद मालूमात 'शाहान की किताब' में दर्ज हैं।
यूआस के बाद उस का बेटा अमसियाह तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह का बादशाह अमसियाह

25 1 अमसियाह 25 साल की उम्र में बादशाह
बना और यरूशलम में उस की हुकूमत
का दौरानिया 29 साल था। उस की माँ यहूअद्दान
यरूशलम की रहने वाली थी। 2 जो कुछ अमसियाह
ने किया वह रब को पसन्द था, लेकिन वह पूरे दिल
से रब की पैरवी नहीं करता था। 3 जूँ ही उस के
पाँओ मज़बूती से जम गए उस ने उन अफ़सरों को
सज़ा-ए-मौत दी जिन्हों ने बाप को क़त्ल कर दिया
था। 4 लेकिन उन के बेटों को उस ने ज़िन्दा रहने
दिया और यूँ मूसवी शरीअत के ताबे रहा जिस में रब
फ़रमाता है, "वालिदैन को उन के बच्चों के जराइम के
सबब से सज़ा-ए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उन के
वालिदैन के जराइम के सबब से। अगर किसी को
सज़ा-ए-मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब से जो
उस ने ख़ुद किया है।"

अदोम से जंग

5 अमसियाह ने यहूदाह और बिनयमीन के क़बीलों
के तमाम मर्दों को बुला कर उन्हें ख़ानदानों के
मुताबिक़ तर्तीब दिया। उस ने हज़ार हज़ार और सौ
सौ फ़ौजियों पर अफ़सर मुक़र्रर किए। जितने भी मर्द
20 या इस से ज़ाइद साल के थे उन सब की भर्ती हुई।
इस तरह 3,00,000 फ़ौजी जमा हुए। सब बड़ी ढालों
और नेज़ों से लेस थे। 6 इस के इलावा अमसियाह
ने इस्राईल के 1,00,000 तजरिबाकार फ़ौजियों को
उजरत पर भर्ती किया ताकि वह जंग में मदद करें।
उन्हें उस ने चाँदी के तक़रीबन 3,400 किलोग्राम
दिए।

7 लेकिन एक मर्द-ए-ख़ुदा ने अमसियाह के पास
आ कर उसे समझाया, "बादशाह सलामत, लाज़िम
है कि यह इस्राईली फ़ौजी आप के साथ मिल कर
लड़ने के लिए न निकलें। क्यूँकि रब उन के साथ
नहीं है, वह इफ़्राईम के किसी भी रहने वाले के साथ
नहीं है। 8 अगर आप उन के साथ मिल कर निकलें
ताकि मज़बूती से दुश्मन से लड़ीं तो अल्लाह आप
को दुश्मन के सामने गिरा देगा। क्यूँकि अल्लाह को
आप की मदद करने और आप को गिराने की क़ुदरत
हासिल है।" 9 अमसियाह ने एतिराज़ किया, "लेकिन
मैं इस्राईलियों को चाँदी के 3,400 किलोग्राम अदा
कर चुका हूँ। इन पैसों का क्या बनेगा?" मर्द-ए-
ख़ुदा ने जवाब दिया, "रब आप को इस से कहीं
ज़्यादा अता कर सकता है।" 10 चुनाँचे अमसियाह ने
इफ़्राईम से आए हुए तमाम फ़ौजियों को फ़ारिग़ करके
वापस भेज दिया, और वह यहूदाह से बहुत नाराज़
हुए। हर एक बड़े तैश में अपने अपने घर चला गया।

11 तो भी अमसियाह जुरअत करके जंग के लिए
निकला। अपनी फ़ौज को नमक की वादी में ले जा
कर उस ने अदोमियों पर फ़त्ह पाई। उन के 10,000
मर्द मैदान-ए-जंग में मारे गए। 12 दुश्मन के मज़ीद
10,000 आदमियों को गिरिफ़्तार कर लिया गया।
यहूदाह के फ़ौजियों ने क़ैदियों को एक ऊँची चटान

की चोटी पर ले जा कर नीचे गिरा दिया। इस तरह सब पाश पाश हो कर हलाक हुए।

13 इतने में फ़ारिग़ किए गए इस्राईली फ़ौजियों ने सामरिया और बैत-हौरून के बीच में वाक़े यहूदाह के शहरों पर हम्ला किया था। लड़ते लड़ते उन्हों ने 3,000 मर्दों को मौत के घाट उतार दिया और बहुत सा माल लूट लिया था।

अमसियाह की बुतपरस्ती

14 अदोमियों को शिकस्त देने के बाद अमसियाह सईर के बाशिन्दों के बुतों को लूट कर अपने घर वापस लाया। वहाँ उस ने उन्हें खड़ा किया और उन के सामने औंधे मुँह झुक कर उन्हें क़ुर्बानियाँ पेश कीं। 15 यह देख कर रब उस से बहुत नाराज़ हुआ। उस ने एक नबी को उस के पास भेजा जिस ने कहा, "तू इन देवताओं की तरफ़ क्यूँ रुजू कर रहा है? यह तो अपनी क़ौम को तुझ से नजात न दिला सके।" 16 अमसियाह ने नबी की बात काट कर कहा, "हम ने कब से तुझे बादशाह का मुशीर बना दिया है? ख़ामोश, वर्ना तुझे मार दिया जाएगा।" नबी ने ख़ामोश हो कर इतना ही कहा, "मुझे मालूम है कि अल्लाह ने आप को आप की इन हरकतों की वजह से और इस लिए कि आप ने मेरा मश्वरा क़बूल नहीं किया तबाह करने का फ़ैसला कर लिया है।"

अमसियाह इस्राईल के बादशाह यूआस से लड़ता है

17 एक दिन यहूदाह के बादशाह अमसियाह ने अपने मुशीरों से मश्वरा करने के बाद यूआस बिन यहूआख़ज़ बिन याहू को पैग़ाम भेजा, "आएँ, हम एक दूसरे का मुक़ाबला करें!" 18 लेकिन इस्राईल के बादशाह यूआस ने जवाब दिया, "लुबनान में एक काँटेदार झाड़ी ने देवदार के एक दरख़्त से बात की, 'मेरे बेटे के साथ अपनी बेटी का रिश्ता बान्धो।' लेकिन उसी वक़्त लुबनान के जंगली जानवरों ने उस के ऊपर से गुज़र कर उसे पाँओ तले कुचल डाला। 19 अदोम पर फ़त्ह पाने के सबब से आप का दिल मग़रूर हो कर मज़ीद शुहरत हासिल करना चाहता है। लेकिन मेरा मश्वरा है कि आप अपने घर में रहें। आप ऐसी मुसीबत को क्यूँ दावत देते हैं जो आप और यहूदाह की तबाही का बाइस बन जाए?" 20 लेकिन अमसियाह मानने के लिए तय्यार नहीं था। अल्लाह उसे और उस की क़ौम को इस्राईलियों के हवाले करना चाहता था, क्यूँकि उन्हों ने अदोमियों के देवताओं की तरफ़ रुजू किया था।

21 तब इस्राईल का बादशाह यूआस अपनी फ़ौज ले कर यहूदाह पर चढ़ आया। बैत-शम्स के पास उस का यहूदाह के बादशाह अमसियाह के साथ मुक़ाबला हुआ। 22 इस्राईली फ़ौज ने यहूदाह की फ़ौज को शिकस्त दी, और हर एक अपने अपने घर भाग गया। 23 इस्राईल के बादशाह यूआस ने यहूदाह के बादशाह अमसियाह बिन यूआस बिन अख़ज़ियाह को वहीं बैत-शम्स में गिरिफ़्तार कर लिया। फिर वह उसे यरूशलम लाया और शहर की फ़सील इफ़्राईम नामी दरवाज़े से ले कर कोने के दरवाज़े तक गिरा दी। इस हिस्से की लम्बाई तक़रीबन 600 फ़ुट थी। 24 जितना भी सोना, चाँदी और क़ीमती सामान रब के घर और शाही महल के ख़ज़ानों में था उसे उस ने पूरे का पूरा छीन लिया। उस वक़्त ओबेद-अदोम रब के घर के ख़ज़ाने सँभालता था। यूआस लूटा हुआ माल और बाज़ यरग़मालों को ले कर सामरिया वापस चला गया।

अमसियाह की मौत

25 इस्राईल के बादशाह यूआस बिन यहूआख़ज़ की मौत के बाद यहूदाह का बादशाह अमसियाह बिन यूआस मज़ीद 15 साल जीता रहा। 26 बाक़ी जो कुछ अमसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ वह शुरू से ले कर आख़िर तक 'शाहान-ए-इस्राईल-ओ-यहूदाह' की किताब में दर्ज है। 27 जब से वह रब की पैरवी करने से बाज़ आया उस वक़्त से लोग यरूशलम में उस के ख़िलाफ़ साज़िश करने लगे। आख़िरकार उस ने फ़रार हो कर लकीस में पनाह ली, लेकिन

साज़िश करने वालों ने अपने लोगों को उस के पीछे
भेजा, और वह वहाँ उसे क़त्ल करने में कामयाब हो
गए। 28 उस की लाश घोड़े पर उठा कर यहूदाह के
शहर यरूशलम लाई गई जहाँ उसे ख़ानदानी क़ब्र में
दफ़नाया गया।

यहूदाह का बादशाह उज़्ज़ियाह

26 1 यहूदाह के तमाम लोगों ने अमसियाह की
जगह उस के बेटे उज़्ज़ियाह को तख़्त पर
बिठा दिया। उस की उम्र 16 साल थी 2 जब उस का
बाप मर कर अपने बापदादा से जा मिला। बादशाह
बनने के बाद उज़्ज़ियाह ने ऐलात शहर पर क़ब्ज़ा
करके उसे दुबारा यहूदाह का हिस्सा बना लिया। उस
ने शहर में बहुत तामीरी काम करवाया।

3 उज़्ज़ियाह 16 साल की उम्र में बादशाह बना
और यरूशलम में रह कर 52 साल हुकूमत करता
रहा। उस की माँ यकूलियाह यरूशलम की रहने
वाली थी। 4 अपने बाप अमसियाह की तरह उस
का चाल-चलन रब को पसन्द था। 5 इमाम-ए-आज़म
ज़करियाह के जीते जी उज़्ज़ियाह रब का तालिब रहा,
क्यूँकि ज़करियाह उसे अल्लाह का ख़ौफ़ मानने की
तालीम देता रहा। जब तक बादशाह रब का तालिब
रहा उस वक़्त तक अल्लाह उसे कामयाबी बख़्शता
रहा।

6 उज़्ज़ियाह ने फ़िलिस्तियों से जंग करके जात,
यब्ना और अश्दूद की फ़सीलों को ढा दिया। दीगर
कई शहरों को उस ने नए सिरे से तामीर किया जो
अश्दूद के क़रीब और फ़िलिस्तियों के बाक़ी इलाक़े
में थे। 7 लेकिन अल्लाह ने न सिर्फ़ फ़िलिस्तियों से
लड़ते वक़्त उज़्ज़ियाह की मदद की बल्कि उस वक़्त
भी जब ज़ूर-बाल में रहने वाले अरबों और मऊनियों
से जंग छिड़ गई। 8 अम्मोनियों को उज़्ज़ियाह को
ख़राज अदा करना पड़ा, और वह इतना ताक़तवर
बना कि उस की शुहरत मिस्र तक फैल गई।

9 यरूशलम में उज़्ज़ियाह ने कोने के दरवाज़े, वादी
के दरवाज़े और फ़सील के मोड़ पर मज़बूत बुर्ज
बनवाए। 10 उस ने बयाबान में भी बुर्ज तामीर किए
और साथ साथ पत्थर के बेशुमार हौज़ तराशे, क्यूँकि
मग़रिबी यहूदाह के नशेबी पहाड़ी इलाक़े और मैदानी
इलाक़े में उस के बड़े बड़े रेवड़ चरते थे। बादशाह
को काश्तकारी का काम ख़ास पसन्द था। बहुत लोग
पहाड़ी इलाक़ों और ज़रख़ेज़ वादियों में उस के खेतों
और अंगूर के बाग़ों की निगरानी करते थे।

11 उज़्ज़ियाह की ताक़तवर फ़ौज थी। बादशाह के
आला अफ़्सर हननियाह की राहनुमाई में मीरमुन्शी
यईएल ने अफ़्सर मासियाह के साथ फ़ौज की भर्ती
करके उसे तर्तीब दिया था। 12 इन दस्तों पर कुंबों
के 2,600 सरपरस्त मुक़र्रर थे। 13 फ़ौज 3,07,500
जंग लड़ने के क़ाबिल मर्दों पर मुश्तमिल थी। जंग
में बादशाह उन पर पूरा भरोसा कर सकता था।
14 उज़्ज़ियाह ने अपने तमाम फ़ौजियों को ढालों,
नेज़ों, ख़ोदों, ज़िराबक्तरों, कमानों और फ़लाख़न के
सामान से मुसल्लह किया। 15 और यरूशलम के बुर्जों
और फ़सील के कोनों पर उस ने ऐसी मशीनें लगाएँ
जो तीर चला सकती और बड़े बड़े पत्थर फैंक सकती
थीं।

उज़्ज़ियाह मग़रूर हो जाता है

ग़रज़, अल्लाह की मदद से उज़्ज़ियाह की शुहरत दूर
दूर तक फैल गई, और उस की ताक़त बढ़ती गई।

16 लेकिन इस ताक़त ने उसे मग़रूर कर दिया, और
नतीजे में वह ग़लत राह पर आ गया। रब अपने ख़ुदा
का बेवफ़ा हो कर वह एक दिन रब के घर में घुस
गया ताकि बख़ूर की क़ुर्बानगाह पर बख़ूर जलाए।
17 लेकिन इमाम-ए-आज़म अज़रियाह रब के मज़ीद
80 बहादुर इमामों को अपने साथ ले कर उस के पीछे
पीछे गया। 18 उन्हों ने बादशाह उज़्ज़ियाह का सामना
करके कहा, “मुनासिब नहीं कि आप रब को बख़ूर
की क़ुर्बानी पेश करें। यह हारून की औलाद यानी
इमामों की ज़िम्मादारी है जिन्हें इस के लिए मख़्सूस
किया गया है। मक़्दिस से निकल जाएँ, क्यूँकि आप
अल्लाह से बेवफ़ा हो गए हैं, और आप की यह हरकत

रब ख़ुदा के सामने इज़्ज़त का बाइस नहीं बनेगी।”
19 उज़्ज़ियाह बख़ूरदान को पकड़े बख़ूर को पेश करने
को था कि इमामों की बातें सुन कर आग-बगूला हो
गया। लेकिन उसी लम्हे उस के माथे पर कोढ़ फूट
निकला। 20 यह देख कर इमाम-ए-आज़म अज़रियाह
और दीगर इमामों ने उसे जल्दी से रब के घर से
निकाल दिया। उज़्ज़ियाह ने ख़ुद भी वहाँ से निकलने
की जल्दी की, क्यूँकि रब ही ने उसे सज़ा दी थी।

21 उज़्ज़ियाह जीते जी इस बीमारी से शिफ़ा न पा
सका। उसे अलाहिदा घर में रहना पड़ा, और उसे
रब के घर में दाख़िल होने की इजाज़त नहीं थी। उस
के बेटे यूताम को महल पर मुक़र्रर किया गया, और
वही उम्मत पर हुकूमत करने लगा।

22 बाक़ी जो कुछ उज़्ज़ियाह की हुकूमत के दौरान
शुरू से ले कर आख़िर तक हुआ वह आमूस के
बेटे यसायाह नबी ने क़लमबन्द किया है। 23 जब
उज़्ज़ियाह मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो
उसे कोढ़ की वजह से दूसरे बादशाहों के साथ नहीं
दफ़नाया गया बल्कि क़रीब के एक खेत में जो शाही
ख़ानदान का था। फिर उस का बेटा यूताम तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह का बादशाह यूताम

27 1 यूताम 25 साल की उम्र में बादशाह बना
और यरूशलम में रह कर 16 साल तक
हुकूमत करता रहा। उस की माँ यरूसा बिन्त सदोक़
थी। 2 यूताम ने वह कुछ किया जो रब को पसन्द था।
वह अपने बाप उज़्ज़ियाह के नमूने पर चलता रहा,
अगरचे उस ने कभी भी बाप की तरह रब के घर
में घुस जाने की कोशिश न की। लेकिन आम लोग
अपनी ग़लत राहों से न हटे।

3 यूताम ने रब के घर का बालाई दरवाज़ा तामीर
किया। ओफ़ल पहाड़ी जिस पर रब का घर था उस
की दीवार को उस ने बहुत जगहों पर मज़बूत बना
दिया। 4 यहूदाह के पहाड़ी इलाक़े में उस ने शहर
तामीर किए और जंगली इलाक़ों में क़िले और बुर्ज
बनाए। 5 जब अम्मोनी बादशाह के साथ जंग छिड़ गई
तो उस ने अम्मोनियों को शिकस्त दी। तीन साल तक
उन्हें उसे सालाना ख़राज के तौर पर तक़रीबन 3,400
किलोग्राम चाँदी, 16,00,000 किलोग्राम गन्दुम और
13,50,000 किलोग्राम जौ अदा करना पड़ा। 6 यूँ
यूताम की ताक़त बढ़ती गई। और वजह यह थी कि
वह साबितक़दमी से रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर चलता
रहा।

7 बाक़ी जो कुछ यूताम की हुकूमत के दौरान हुआ
वह ‘शाहान-ए-इस्राईल-ओ-यहूदाह’ की किताब में
क़लमबन्द है। उस में उस की तमाम जंगों और बाक़ी
कामों का ज़िक्र है। 8 वह 25 साल की उम्र में बादशाह
बना और यरूशलम में रह कर 16 साल हुकूमत
करता रहा। 9 जब वह मर कर अपने बापदादा से जा
मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद
का शहर’ कहलाता है दफ़नाया गया। फिर उस का
बेटा आख़ज़ तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह आख़ज़

28 1 आख़ज़ 20 साल की उम्र में बादशाह बना
और यरूशलम में रह कर 16 साल हुकूमत
करता रहा। वह अपने बाप दाऊद के नमूने पर न चला
बल्कि वह कुछ करता रहा जो रब को नापसन्द था।
2 क्यूँकि उस ने इस्राईल के बादशाहों का चाल-चलन
अपनाया। बाल के बुत ढलवा कर 3 उस ने न सिर्फ़
वादी-ए-बिन-हिन्नूम में बुतों को क़ुर्बानियाँ पेश कीं
बल्कि अपने बेटों को भी क़ुर्बानी के तौर पर जला
दिया। यूँ वह उन क़ौमों के घिनौने रस्म-ओ-रिवाज
अदा करने लगा जिन्हें रब ने इस्राईलियों के आगे
मुल्क से निकाल दिया था। 4 आख़ज़ बख़ूर जला कर
अपनी क़ुर्बानियाँ ऊँचे मक़ामों, पहाड़ियों की चोटियों
और हर घने दरख़्त के साय में चढ़ाता था।

5 इसी लिए रब उस के ख़ुदा ने उसे शाम के बादशाह
के हवाले कर दिया। शाम की फ़ौज ने उसे शिकस्त
दी और यहूदाह के बहुत से लोगों को क़ैदी बना कर
दमिश्क़ ले गई। आख़ज़ को इस्राईल के बादशाह

फ़िक़्रह बिन रमलियाह के हवाले भी कर दिया गया
जिस ने उसे शदीद नुक़्सान पहुँचाया। 6 एक ही दिन में
यहूदाह के 1,20,000 तजरिबाकार फ़ौजी शहीद हुए।
यह सब कुछ इस लिए हुआ कि क़ौम ने रब अपने
बापदादा के ख़ुदा को तर्क कर दिया था। 7 उस वक़्त
इफ़्राईम के क़बीले के पहलवान ज़िक्री ने आख़ज़
के बेटे मासियाह, महल के इंचार्ज अज़्रीक़ाम और
बादशाह के बाद सब से आला अफ़्सर इल्क़ाना को
मार डाला। 8 इस्राईलियों ने यहूदाह की 2,00,000
औरतें और बच्चे छीन लिए और कस्रत का माल लूट
कर सामरिया ले गए।

इस्राईल क़ैदियों को रिहा कर देता है

9 सामरिया में रब का एक नबी बनाम ओदीद रहता
था। जब इस्राईली फ़ौजी मैदान-ए-जंग से वापस आए
तो ओदीद उन से मिलने के लिए निकला। उस ने
उन से कहा, "देखें, रब आप के बापदादा का ख़ुदा
यहूदाह से नाराज़ था, इस लिए उस ने उन्हें आप के
हवाले कर दिया। लेकिन आप लोग तैश में आ कर
उन पर यूँ टूट पड़े कि उन का क़त्ल-ए-आम आसमान
तक पहुँच गया है। 10 लेकिन यह काफ़ी नहीं था। अब
आप यहूदाह और यरूशलम के बचे हुओं को अपने
ग़ुलाम बनाना चाहते हैं। क्या आप समझते हैं कि हम
उन से अच्छे हैं? नहीं, आप से भी रब अपने ख़ुदा
के ख़िलाफ़ गुनाह सरज़द हुए हैं। 11 चुनाँचे मेरी बात
सुनें! इन क़ैदियों को वापस करें जो आप ने अपने
भाइयों से छीन लिए हैं। क्यूँकि रब का सख़्त ग़ज़ब
आप पर नाज़िल होने वाला है।"

12 इफ़्राईम के क़बीले के कुछ सरपरस्तों ने
भी फ़ौजियों का सामना किया। उन के नाम
अज़रियाह बिन यूहनान, बरकियाह बिन मसिल्लमोत,
यहिज़क़ियाह बिन सल्लूम और अमासा बिन ख़द्दली
थे। 13 उन्हों ने कहा, "इन क़ैदियों को यहाँ मत ले
आएँ, वर्ना हम रब के सामने क़ुसूरवार ठहरेंगे। क्या
आप चाहते हैं कि हम अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा करें?
हमारा क़ुसूर पहले ही बहुत बड़ा है। हाँ, रब इस्राईल
पर सख़्त ग़ुस्से है।"

14 तब फ़ौजियों ने अपने क़ैदियों को आज़ाद करके
उन्हें लूटे हुए माल के साथ बुज़ुर्गों और पूरी जमाअत
के हवाले कर दिया। 15 मज़कूरा चार आदमियों ने
सामने आ कर क़ैदियों को अपने पास महफ़ूज़ रखा।
लूटे हुए माल में से कपड़े निकाल कर उन्हों ने उन्हें
उन में तक़्सीम किया जो बरहना थे। इस के बाद उन्हों
ने तमाम क़ैदियों को कपड़े और जूते दे दिए, उन्हें
खाना खिलाया, पानी पिलाया और उन के ज़ख़्मों की
मर्हम-पट्टी की। जितने थकावट की वजह से चल न
सकते थे उन्हें उन्हों ने गधों पर बिठाया, फिर चलते
चलते सब को खजूर के शहर यरीहू तक पहुँचाया
जहाँ उन के अपने लोग थे। फिर वह सामरिया लौट
आए।

आख़ज़ असूर के बादशाह से मदद लेता है

16 उस वक़्त आख़ज़ बादशाह ने असूर के बादशाह
से इल्तिमास की, "हमारी मदद करने आएँ।"
17 क्यूँकि अदोमी यहूदाह में घुस कर कुछ लोगों
को गिरिफ़्तार करके अपने साथ ले गए थे। 18 साथ
साथ फ़िलिस्ती मग़रिबी यहूदाह के नशेबी पहाड़ी
इलाक़े और जुनूबी इलाक़े में घुस आए थे और ज़ैल
के शहरों पर क़ब्ज़ा करके उन में रहने लगे थे : बैत-
शम्स, अय्यालोन, जदीरोत, नीज़ सोका, तिम्नत और
जिम्ज़ू गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों समेत। 19 इस
तरह रब ने यहूदाह को आख़ज़ की वजह से ज़ेर
कर दिया, क्यूँकि बादशाह ने यहूदाह में बेलगाम
बेराहरवी फैलने दी और रब से अपनी बेवफ़ाई का
साफ़ इज़हार किया था।

20 असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर अपनी फ़ौज
ले कर मुल्क में आया, लेकिन आख़ज़ की मदद करने
के बजाय उस ने उसे तंग किया। 21 आख़ज़ ने रब
के घर, शाही महल और अपने आला अफ़्सरों के
ख़ज़ानों को लूट कर सारा माल असूर के बादशाह

को भेज दिया, लेकिन बेफ़ाइदा। इस से उसे सहीह मदद न मिली।

22 गो वह उस वक़्त बड़ी मुसीबत में था तो भी रब से और दूर हो गया। 23 वह शाम के देवताओं को क़ुर्बानियाँ पेश करने लगा, क्यूँकि उस का ख़याल था कि इन ही ने मुझे शिकस्त दी है। उस ने सोचा, "शाम के देवता अपने बादशाहों की मदद करते हैं! अब से मैं उन्हें क़ुर्बानियाँ पेश करूँगा ताकि वह मेरी भी मदद करें।" लेकिन यह देवता बादशाह आख़ज़ और पूरी क़ौम के लिए तबाही का बाइस बन गए। 24 आख़ज़ ने हुक्म दिया कि अल्लाह के घर का सारा सामान निकाल कर टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए। फिर उस ने रब के घर के दरवाज़ों पर ताला लगा दिया। उस की जगह उस ने यरूशलम के कोने कोने में क़ुर्बानगाहें खड़ी कर दीं। 25 साथ साथ उस ने दीगर माबूदों को क़ुर्बानियाँ पेश करने के लिए यहूदाह के हर शहर की ऊँची जगहों पर मन्दिर तामीर किए। ऐसी हरकतों से वह रब अपने बापदादा के ख़ुदा को तैश दिलाता रहा।

26 बाक़ी जो कुछ उस की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उस ने किया वह शुरू से ले कर आख़िर तक 'शाहान-ए-यहूदाह-ओ-इस्राईल' की किताब में दर्ज है। 27 जब आख़ज़ मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम में दफ़न किया गया, लेकिन शाही क़ब्रिस्तान में नहीं। फिर उस का बेटा हिज़क़ियाह तख़्तनशीन हुआ।

हिज़क़ियाह बादशाह रब के घर को दुबारा खोल देता है

29 1 जब हिज़क़ियाह बादशाह बना तो उस की उम्र 25 साल थी। यरूशलम में रह कर वह 29 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ अबियाह बिन्त ज़करियाह थी।

2 अपने बाप दाऊद की तरह उस ने ऐसा काम किया जो रब को पसन्द था। 3 अपनी हुकूमत के पहले साल के पहले महीने में उस ने रब के घर के दरवाज़ों को खोल कर उन की मरम्मत करवाई। 4 लावियों और इमामों को बुला कर उस ने उन्हें रब के घर के मशरिक़ी सहन में जमा किया 5 और कहा,

"ऐ लावियो, मेरी बात सुनें! अपने आप को ख़िदमत के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करें, और रब अपने बापदादा के ख़ुदा के घर को भी मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करें। तमाम नापाक चीज़ें मक़्दिस से निकालें! 6 हमारे बापदादा बेवफ़ा हो कर वह कुछ करते गए जो रब हमारे ख़ुदा को नापसन्द था। उन्हों ने उसे छोड़ दिया, अपने मुँह को रब की सुकूनतगाह से फेर कर दूसरी तरफ़ चल पड़े। 7 रब के घर के सामने वाले बरामदे के दरवाज़ों पर उन्हों ने ताला लगा कर चराग़ों को बुझा दिया। न इस्राईल के ख़ुदा के लिए बख़ूर जलाया जाता, न भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ मक़्दिस में पेश की जाती थीं। 8 इसी वजह से रब का ग़ज़ब यहूदाह और यरूशलम पर नाज़िल हुआ है। हमारी हालत को देख कर लोग घबरा गए, उन के रोंगटे खड़े हो गए हैं। हम दूसरों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गए हैं। आप ख़ुद इस के गवाह हैं। 9 हमारी बेवफ़ाई की वजह से हमारे बाप तलवार की ज़द में आ कर मारे गए और हमारे बेटे-बेटियाँ और बीवियाँ हम से छीन ली गई हैं। 10 लेकिन अब मैं रब इस्राईल के ख़ुदा के साथ अह्द बांधना चाहता हूँ ताकि उस का सख़्त क़हर हम से टल जाए। 11 मेरे बेटो, अब सुस्ती न दिखाएँ, क्यूँकि रब ने आप को चुन कर अपने ख़ादिम बनाया है। आप को उस के हुज़ूर खड़े हो कर उस की ख़िदमत करने और बख़ूर जलाने की ज़िम्मादारी दी गई है।"

12 फिर ज़ैल के लावी ख़िदमत के लिए तय्यार हुए :

क़िहात के ख़ानदान का महत बिन अमासी और योएल बिन अज़रियाह,

मिरारी के ख़ानदान का क़ीस बिन अब्दी और अज़रियाह बिन यहल्लल-एल,

जैर्सोन के ख़ानदान का यूआख़ बिन ज़िम्मा और अदन बिन यूआख़,

13 इलीसफ़न के ख़ानदान का सिम्री और यईएल,
आसफ़ के ख़ानदान का ज़करियाह और मत्तनियाह,
14 हैमान के ख़ानदान का यहीएल और सिमई,
यदूतून के ख़ानदान का समायाह और उज़्ज़ीएल।
15 बाक़ी लावियों को बुला कर उन्हों ने अपने आप
को रब की ख़िदमत के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
किया। फिर वह बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ रब
के घर को पाक-साफ़ करने लगे। काम करते करते
उन्हों ने इस का ख़याल किया कि सब कुछ रब की
हिदायात के मुताबिक़ हो रहा हो। 16 इमाम रब के
घर में दाख़िल हुए और उस में से हर नापाक चीज़
निकाल कर उसे सहन में लाए। वहाँ से लावियों ने
सब कुछ उठा कर शहर से बाहर वादी-ए-क़िद्रोन
में फैंक दिया। 17 रब के घर की क़ुद्दूसियत बहाल
करने का काम पहले महीने के पहले दिन शुरू हुआ,
और एक हफ़्ते के बाद वह सामने वाले बरामदे तक
पहुँच गए थे। एक और हफ़्ता पूरे घर को मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस करने में लग गया।

पहले महीने के 16वें दिन काम मुकम्मल हुआ।
18 हिज़क़ियाह बादशाह के पास जा कर उन्हों ने
कहा, “हम ने रब के पूरे घर को पाक-साफ़ कर दिया
है। इस में जानवरों को जलाने की क़ुर्बानगाह उस
के सामान समेत और वह मेज़ जिस पर रब के लिए
मख़्सूस रोटियाँ रखी जाती हैं उस के सामान समेत
शामिल है। 19 और जितनी चीज़ें आख़ज़ ने बेवफ़ा बन
कर अपनी हुकूमत के दौरान रद्द कर दी थीं उन सब
को हम ने ठीक करके दुबारा मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
कर दिया है। अब वह रब की क़ुर्बानगाह के सामने
पड़ी हैं।”

रब के घर की दुबारा मख़्सूसियत

20 अगले दिन हिज़क़ियाह बादशाह सुब्ह-सवेरे
शहर के तमाम बुज़ुर्गों को बुला कर उन के साथ
रब के घर के पास गया। 21 सात जवान बैल, सात
मेंढे और भेड़ के सात बच्चे भस्म होने वाली क़ुर्बानी
के लिए सहन में लाए गए, नीज़ सात बकरे जिन्हें
गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर शाही ख़ानदान, मक़्दिस
और यहूदाह के लिए पेश करना था। हिज़क़ियाह
ने हारून की औलाद यानी इमामों को हुक्म दिया
कि इन जानवरों को रब की क़ुर्बानगाह पर चढ़ाएँ।
22 पहले बैलों को ज़बह किया गया। इमामों ने उन
का ख़ून जमा करके उसे क़ुर्बानगाह पर छिड़का।
इस के बाद मेंढों को ज़बह किया गया। इस बार
भी इमामों ने उन का ख़ून क़ुर्बानगाह पर छिड़का।
भेड़ के बच्चों के ख़ून के साथ भी यही कुछ किया
गया। 23 आख़िर में गुनाह की क़ुर्बानी के लिए मख़्सूस
बकरों को बादशाह और जमाअत के सामने लाया
गया, और उन्हों ने अपने हाथों को बकरों के सरों
पर रख दिया। 24 फिर इमामों ने उन्हें ज़बह करके
उन का ख़ून गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर क़ुर्बानगाह
पर छिड़का ताकि इस्राईल का कफ़्फ़ारा दिया जाए।
क्यूँकि बादशाह ने हुक्म दिया था कि भस्म होने वाली
और गुनाह की क़ुर्बानी तमाम इस्राईल के लिए पेश
की जाए।

25 हिज़क़ियाह ने लावियों को झाँझ, सितार और
सरोद थमा कर उन्हें रब के घर में खड़ा किया। सब
कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ हुआ जो रब ने दाऊद
बादशाह, उस के ग़ैबबीन जाद और नातन नबी की
मारिफ़त दी थीं। 26 लावी उन साज़ों के साथ खड़े हो
गए जो दाऊद ने बनवाए थे, और इमाम अपने तुरमों
को थामे उन के साथ खड़े हुए। 27 फिर हिज़क़ियाह ने
हुक्म दिया कि भस्म होने वाली क़ुर्बानी क़ुर्बानगाह
पर पेश की जाए। जब इमाम यह काम करने लगे
तो लावी रब की तारीफ़ में गीत गाने लगे। साथ
साथ तुरम और दाऊद बादशाह के बनवाए हुए साज़
बजने लगे। 28 तमाम जमाअत औंधे मुँह झुक गई
जबकि लावी गीत गाते और इमाम तुरम बजाते रहे।
यह सिलसिला इस क़ुर्बानी की तक्मील तक जारी
रहा। 29 इस के बाद हिज़क़ियाह और तमाम हाज़िरीन
दुबारा मुँह के बल झुक गए। 30 बादशाह और बुज़ुर्गों
ने लावियों को कहा, “दाऊद और आसफ़ ग़ैबबीन के
ज़बूर गा कर रब की सताइश करें।” चुनाँचे लावियों

ने बड़ी ख़ुशी से हम्द-ओ-सना के गीत गाए । वह भी औंधे मुँह झुक गए।

31 फिर हिज़क़ियाह लोगों से मुख़ातिब हुआ, “आज आप ने अपने आप को रब के लिए वक़्फ़ कर दिया है। अब वह कुछ रब के घर के पास ले आएँ जो आप ज़बह और सलामती की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करना चाहते हैं।” तब लोग ज़बह और सलामती की अपनी क़ुर्बानियाँ ले आए। नीज़, जिस का भी दिल चाहता था वह भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ लाया। 32 इस तरह भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए 70 बैल, 100 मेंढे और भेड़ के 200 बच्चे जमा करके रब को पेश किए गए। 33 उन के इलावा 600 बैल और 3,000 भेड़-बकरियाँ रब के घर के लिए मख़्सूस की गईं। 34 लेकिन इतने जानवरों की खालों को उतारने के लिए इमाम कम थे, इस लिए लावियों को उन की मदद करनी पड़ी। इस काम के इख़तिताम तक बल्कि जब तक मज़ीद इमाम ख़िदमत के लिए तय्यार और पाक नहीं हो गए थे लावी मदद करते रहे। इमामों की निस्बत ज़्यादा लावी पाक-साफ़ हो गए थे, क्यूँकि उन्हों ने ज़्यादा लगन से अपने आप को रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया था। 35 भस्म होने वाली बेशुमार क़ुर्बानियों के इलावा इमामों ने सलामती की क़ुर्बानियों की चर्बी भी जलाई। साथ साथ उन्हों ने मै की नज़रें पेश कीं।

यूँ रब के घर में ख़िदमत का नए सिरे से आग़ाज़ हुआ। 36 हिज़क़ियाह और पूरी क़ौम ने ख़ुशी मनाई कि अल्लाह ने यह सब कुछ इतनी जल्दी से हमें मुहय्या किया है।

फ़सह की ईद के लिए दावत

30 1 हिज़क़ियाह ने इस्राईल और यहूदाह की हर जगह अपने क़ासिदों को भेज कर लोगों को रब के घर में आने की दावत दी, क्यूँकि वह उन के साथ रब इस्राईल के ख़ुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाना चाहता था। उस ने इफ़्राईम और मनस्सी के क़बीलों को भी दावतनामे भेजे। 2 बादशाह ने अपने अफ़्सरों और यरूशलम की पूरी जमाअत के साथ मिल कर फ़ैसला किया कि हम यह ईद दूसरे महीने में मनाएँगे। 3 आम तौर पर यह पहले महीने में मनाई जाती थी, लेकिन उस वक़्त तक ख़िदमत के लिए तय्यार इमाम काफ़ी नहीं थे। क्यूँकि अब तक सब अपने आप को पाक-साफ़ न कर सके। दूसरी बात यह थी कि लोग इतनी जल्दी से यरूशलम में जमा न हो सके। 4 इन बातों के पेश-ए-नज़र बादशाह और तमाम हाज़िरीन इस पर मुत्तफ़िक़ हुए कि फ़सह की ईद मुल्तवी की जाए। 5 उन्हों ने फ़ैसला किया कि हम तमाम इस्राईलियों को जुनूब में बैर-सबा से ले कर शिमाल में दान तक दावत देंगे। सब यरूशलम आएँ ताकि हम मिल कर रब इस्राईल के ख़ुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाएँ। असल में यह ईद बड़ी देर से हिदायात के मुताबिक़ नहीं मनाई गई थी।

6 बादशाह के हुक्म पर क़ासिद इस्राईल और यहूदाह में से गुज़रे। हर जगह उन्हों ने लोगों को बादशाह और उस के अफ़्सरों के ख़त पहुँचा दिए। ख़त में लिखा था,

“ऐ इस्राईलियो, रब इब्राहीम, इस्हाक़ और इस्राईल के ख़ुदा के पास वापस आएँ! फिर वह भी आप के पास जो असूरी बादशाहों के हाथ से बच निकले हैं वापस आएगा। 7 अपने बापदादा और भाइयों की तरह न बनें जो रब अपने बापदादा के ख़ुदा से बेवफ़ा हो गए थे। यही वजह है कि उस ने उन्हें ऐसी हालत में छोड़ दिया कि जिस ने भी उन्हें देखा उस के रोंगटे खड़े हो गए। आप ख़ुद इस के गवाह हैं। 8 उन की तरह अड़े न रहें बल्कि रब के ताबे हो जाएँ। उस के मक़्दिस में आएँ, जो उस ने हमेशा के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर दिया है। रब अपने ख़ुदा की ख़िदमत करें ताकि आप उस के सख़्त ग़ज़ब का निशाना न रहें। 9 अगर आप रब के पास लौट आएँ तो जिन्हों ने आप के भाइयों और उन के बाल-बच्चों को क़ैद कर लिया है वह उन पर रहम करके उन्हें इस मुल्क में वापस आने देंगे। क्यूँकि रब आप का ख़ुदा मेहरबान

और रहीम है। अगर आप उस के पास वापस आएँ
तो वह अपना मुँह आप से नहीं फेरेगा।”
10 क़ासिद इफ़्राईम और मनस्सी के पूरे क़बाइली
इलाक़े में से गुज़रे और हर शहर को यह पैग़ाम
पहुँचाया। फिर चलते चलते वह ज़बूलून तक पहुँच
गए। लेकिन अक्सर लोग उन की बात सुन कर हंस
पड़े और उन का मज़ाक़ उड़ाने लगे। 11 सिर्फ़ आशर,
मनस्सी और ज़बूलून के चन्द एक आदमी फ़रोतनी
का इज़हार करके मान गए और यरूशलम आए।
12 यहूदाह में अल्लाह ने लोगों को तहरीक दी कि
उन्हों ने यकदिली से उस हुक्म पर अमल किया जो
बादशाह और बुज़ुर्गों ने रब के फ़रमान के मुताबिक़
दिया था।

हिज़क़ियाह और क़ौम फ़सह की ईद मनाते हैं

13 दूसरे महीने में बहुत ज़्यादा लोग बेख़मीरी रोटी
की ईद मनाने के लिए यरूशलम पहुँचे। 14 पहले
उन्हों ने शहर से बुतों की तमाम क़ुर्बानगाहों को दूर
कर दिया। बख़ूर जलाने की छोटी क़ुर्बानगाहों को
भी उन्हों ने उठा कर वादी-ए-क़िद्रोन में फैंक दिया।
15 दूसरे महीने के 14वें दिन फ़सह के लेलों को ज़बह
किया गया। इमामों और लावियों ने शर्मिन्दा हो कर
अपने आप को ख़िदमत के लिए पाक-साफ़ कर रखा
था, और अब उन्हों ने भस्म होने वाली क़ुर्बानियों को
रब के घर में पेश किया। 16 वह ख़िदमत के लिए यूँ
खड़े हो गए जिस तरह मर्द-ए-ख़ुदा मूसा की शरीअत
में फ़रमाया गया है। लावी क़ुर्बानियों का ख़ून इमामों
के पास लाए जिन्हों ने उसे क़ुर्बानगाह पर छिड़का।
17 लेकिन हाज़िरीन में से बहुत से लोगों ने अपने
आप को सहीह तौर पर पाक-साफ़ नहीं किया
था। उन के लिए लावियों ने फ़सह के लेलों को
ज़बह किया ताकि उन की क़ुर्बानियों को भी रब के
लिए मख़्सूस किया जा सके। 18 ख़ासकर इफ़्राईम,
मनस्सी, ज़बूलून और इश्कार के अक्सर लोगों ने
अपने आप को सहीह तौर पर पाक-साफ़ नहीं किया
था। चुनाँचे वह फ़सह के खाने में उस हालत में शरीक
न हुए जिस का तक़ाज़ा शरीअत करती है। लेकिन
हिज़क़ियाह ने उन की शफ़ाअत करके दुआ की, “रब
जो मेहरबान है हर एक को मुआफ़ करे 19 जो पूरे दिल
से रब अपने बापदादा के ख़ुदा का तालिब रहने का
इरादा रखता है, ख़्वाह उसे मक़्दिस के लिए दरकार
पाकीज़गी हासिल न भी हो।” 20 रब ने हिज़क़ियाह
की दुआ सुन कर लोगों को बहाल कर दिया।
21 यरूशलम में जमाशुदा इस्राईलियों ने बड़ी ख़ुशी
से सात दिन तक बेख़मीरी रोटी की ईद मनाई। हर
दिन लावी और इमाम अपने साज़ बजा कर बुलन्द
आवाज़ से रब की सताइश करते रहे। 22 लावियों ने
रब की ख़िदमत करते वक़्त बड़ी समझदारी दिखाई,
और हिज़क़ियाह ने इस में उन की हौसलाअफ़ज़ाई
की।

पूरे हफ़्ते के दौरान इस्राईली रब को सलामती की
क़ुर्बानियाँ पेश करके क़ुर्बानी का अपना हिस्सा खाते
और रब अपने बापदादा के ख़ुदा की तम्जीद करते
रहे।
23 इस हफ़्ते के बाद पूरी जमाअत ने फ़ैसला किया
कि ईद को मज़ीद सात दिन मनाया जाए। चुनाँचे
उन्हों ने ख़ुशी से एक और हफ़्ते के दौरान ईद मनाई।
24 तब यहूदाह के बादशाह हिज़क़ियाह ने जमाअत
के लिए 1,000 बैल और 7,000 भेड़-बकरियाँ पेश
कीं जबकि बुज़ुर्गों ने जमाअत के लिए 1,000 बैल
और 10,000 भेड़-बकरियाँ चढ़ाईं। इतने में मज़ीद
बहुत से इमामों ने अपने आप को रब की ख़िदमत
के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर लिया था।
25 जितने भी आए थे ख़ुशी मना रहे थे, ख़्वाह
वह यहूदाह के बाशिन्दे थे, ख़्वाह इमाम, लावी,
इस्राईली या इस्राईल और यहूदाह में रहने वाले
परदेसी मेहमान। 26 यरूशलम में बड़ी शादमानी थी,
क्यूँकि ऐसी ईद दाऊद बादशाह के बेटे सुलेमान के
ज़माने से ले कर उस वक़्त तक यरूशलम में मनाई
नहीं गई थी।
27 ईद के इख़तिताम पर इमामों और लावियों ने
खड़े हो कर क़ौम को बरकत दी। और अल्लाह ने उन

की सुनी, उन की दुआ आसमान पर उस की मुक़द्दस सुकूनतगाह तक पहुँची।

पूरे यहूदाह में बुतपरस्ती का ख़ातमा

31 1 ईद के बाद जमाअत के तमाम इस्राईलियों ने यहूदाह के शहरों में जा कर पत्थर के बुतों को टुकड़े टुकड़े कर दिया, यसीरत देवी के खम्बों को काट डाला, ऊँची जगहों के मन्दिरों को ढा दिया और ग़लत क़ुर्बानगाहों को ख़त्म कर दिया। जब तक उन्हों ने यह काम यहूदाह, बिनयमीन, इफ़्राईम और मनस्सी के पूरे इलाक़ों में तक्मील तक नहीं पहुँचाया था उन्हों ने आराम न किया। इस के बाद वह सब अपने अपने शहरों और घरों को चले गए।

रब के घर में इन्तिज़ाम की इस्लाह

2 हिज़क़ियाह ने इमामों और लावियों को दुबारा ख़िदमत के वैसे ही गुरोहों में तक़्सीम किया जैसे पहले थे। उन की ज़िम्मादारियाँ भस्म होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाना, रब के घर में मुख़्तलिफ़ क़िस्म की ख़िदमात अन्जाम देना और हम्द-ओ-सना के गीत गाना थीं।

3 जो जानवर बादशाह अपनी मिलकियत से रब के घर को देता रहा वह भस्म होने वाली उन क़ुर्बानियों के लिए मुक़र्रर थे जिन को रब की शरीअत के मुताबिक़ हर सुब्ह-शाम, सबत के दिन, नए चाँद की ईद और दीगर ईदों पर रब के घर में पेश की जाती थीं।

4 हिज़क़ियाह ने यरूशलम के बाशिन्दों को हुक्म दिया कि अपनी मिलकियत में से इमामों और लावियों को कुछ दें ताकि वह अपना वक़्त रब की शरीअत की तक्मील के लिए वक़्फ़ कर सकें। 5 बादशाह का यह एलान सुनते ही इस्राईली फ़राख़दिली से ग़ल्ला, अंगूर के रस, ज़ैतून के तेल, शहद और खेतों की बाक़ी पैदावार का पहला फल रब के घर में लाए। बहुत कुछ इकट्ठा हुआ, क्यूँकि लोगों ने अपनी पैदावार का पूरा दसवाँ हिस्सा वहाँ पहुँचाया। 6 यहूदाह के बाक़ी शहरों के बाशिन्दे भी साथ रहने वाले इस्राईलियों समेत अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा रब के घर में लाए। जो भी बैल, भेड़-बकरियाँ और बाक़ी चीज़ें उन्हों ने रब अपने ख़ुदा के लिए वक़्फ़ की थीं वह रब के घर में पहुँचीं जहाँ लोगों ने उन्हें बड़े ढेर लगा कर इकट्ठा किया। 7 चीज़ें जमा करने का यह सिलसिला तीसरे महीने में शुरू हुआ और सातवें महीने में इख़तिताम को पहुँचा। 8 जब हिज़क़ियाह और उस के अफ़सरों ने आ कर देखा कि कितनी चीज़ें इकट्ठी हो गई हैं तो उन्हों ने रब और उस की क़ौम इस्राईल को मुबारक कहा।

9 जब हिज़क़ियाह ने इमामों और लावियों से इन ढेरों के बारे में पूछा 10 तो सदोक़ के ख़ानदान का इमाम-ए-आज़म अज़रियाह ने जवाब दिया, “जब से लोग अपने हदिए यहाँ ले आते हैं उस वक़्त से हम जी भर कर खा सकते हैं बल्कि काफ़ी कुछ बच भी जाता है। क्यूँकि रब ने अपनी क़ौम को इतनी बरकत दी है कि यह सब कुछ बाक़ी रह गया है।”

11 तब हिज़क़ियाह ने हुक्म दिया कि रब के घर में गोदाम बनाए जाएँ। जब ऐसा किया गया 12 तो रज़ाकाराना हदिए, पैदावार का दसवाँ हिस्सा और रब के लिए मख़्सूस किए गए अतियात उन में रखे गए। कूननियाह लावी इन चीज़ों का इंचार्ज बना जबकि उस का भाई सिमई उस का मददगार मुक़र्रर हुआ। 13 इमाम-ए-आज़म अज़रियाह रब के घर के पूरे इन्तिज़ाम का इंचार्ज था, इस लिए हिज़क़ियाह बादशाह ने उस के साथ मिल कर दस निगरान मुक़र्रर किए जो कूननियाह और सिमई के तहत ख़िदमत अन्जाम दें। उन के नाम यहीएल, अज़ज़ियाह, नहत, असाहेल, यरीमोत, यूज़बद, इलीएल, इस्माकियाह, महत और बिनायाह थे।

14 जो लावी मशरिक़ी दरवाज़े का दरबान था उस का नाम क़ोरे बिन यिम्ना था। अब उसे रब को रज़ाकाराना तौर पर दिए गए हदिए और उस के लिए मख़्सूस किए गए अतीए तक़्सीम करने का निगरान

बनाया गया। 15 अदन, मिन्यमीन, यशूअ, समायाह,
अमरियाह और सकनियाह उस के मददगार थे। उन
की ज़िम्मादारी लावियों के शहरों में रहने वाले इमामों
को उन का हिस्सा देना थी। बड़ी वफ़ादारी से वह
ख़याल रखते थे कि ख़िदमत के मुख़्तलिफ़ गुरोहों के
तमाम इमामों को वह हिस्सा मिल जाए जो उन का
हक़ बनता था, ख़्वाह वह बड़े थे या छोटे। 16 जो
अपने गुरोह के साथ रब के घर में ख़िदमत करता
था उसे उस का हिस्सा बराह-ए-रास्त मिलता था।
इस सिलसिले में लावी के क़बीले के जितने मर्दों
और लड़कों की उम्र तीन साल या इस से ज़ाइद
थी उन की फ़हरिस्त बनाई गई। 17 इन फ़हरिस्तों में
इमामों को उन के कुंबों के मुताबिक़ दर्ज किया गया।
इसी तरह 20 साल या इस से ज़ाइद के लावियों को
उन ज़िम्मादारियों और ख़िदमत के मुताबिक़ जो वह
अपने गुरोहों में सँभालते थे फ़हरिस्तों में दर्ज किया
गया। 18 ख़ानदानों की औरतें और बेटे-बेटियाँ छोटे
बच्चों समेत भी इन फ़हरिस्तों में दर्ज थीं। चूँकि उन
के मर्द वफ़ादारी से रब के घर में ख़िदमत करते थे,
इस लिए यह दीगर अफ़राद भी मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
समझे जाते थे। 19 जो इमाम शहरों से बाहर उन
चरागाहों में रहते थे जो उन्हें हारून की औलाद की
हैसियत से मिली थीं उन्हें भी हिस्सा मिलता था। हर
शहर के लिए आदमी चुने गए जो इमामों के ख़ानदानों
के मर्दों और फ़हरिस्त में दर्ज तमाम लावियों को वह
हिस्सा दिया करें जो उन का हक़ था।

20 हिज़क़ियाह बादशाह ने हुक्म दिया कि पूरे
यहूदाह में ऐसा ही किया जाए। उस का काम रब
के नज़्दीक अच्छा, मुन्सिफ़ाना और वफ़ादाराना था।
21 जो कुछ उस ने अल्लाह के घर में इन्तिज़ाम दुबारा
चलाने और शरीअत को क़ाइम करने के सिलसिले
में किया उस के लिए वह पूरे दिल से अपने ख़ुदा का
तालिब रहा। नतीजे में उसे कामयाबी हासिल हुई।

असूरी यहूदाह में घुस आते हैं

32 1 हिज़क़ियाह ने वफ़ादारी से यह तमाम
मन्सूबे तक्मील तक पहुँचाए। फिर एक
दिन असूर का बादशाह सन्हेरिब अपनी फ़ौज के
साथ यहूदाह में घुस आया और क़िलाबन्द शहरों
का मुहासरा करने लगा ताकि उन पर क़ब्ज़ा करे।
2 जब हिज़क़ियाह को इत्तिला मिली कि सन्हेरिब आ
कर यरूशलम पर हम्ला करने की तय्यारियाँ कर रहा
है 3 तो उस ने अपने सरकारी और फ़ौजी अफ़सरों
से मश्वरा किया। ख़याल यह पेश किया गया कि
यरूशलम शहर के बाहर तमाम चश्मों को मल्बे से
बन्द किया जाए। सब मुत्तफ़िक़ हो गए, 4 क्यूँकि
उन्हों ने कहा, "असूर के बादशाह को यहाँ आ कर
कस्रत का पानी क्यूँ मिले?" बहुत से आदमी जमा
हुए और मिल कर चश्मों को मल्बे से बन्द कर दिया।
उन्हों ने उस ज़मीनदोज़ नाले का मुँह भी बन्द कर
दिया जिस के ज़रीए पानी शहर में पहुँचता था।

5 इस के इलावा हिज़क़ियाह ने बड़ी मेहनत से
फ़सील के टूटे-फूटे हिस्सों की मरम्मत करवा कर
उस पर बुर्ज बनवाए। फ़सील के बाहर उस ने एक
और चारदीवारी तामीर की जबकि यरूशलम के
उस हिस्से के चबूतरे मज़ीद मज़बूत करवाए जो
'दाऊद का शहर' कहलाता है। साथ साथ उस ने बड़ी
मिक़्दार में हथियार और ढालें बनवाईं। 6 हिज़क़ियाह
ने लोगों पर फ़ौजी अफ़सर मुक़र्रर किए।

फिर उस ने सब को दरवाज़े के साथ वाले चौक पर
इकट्ठा करके उन की हौसलाअफ़्ज़ाई की, 7 "मज़बूत
और दिलेर हों! असूर के बादशाह और उस की बड़ी
फ़ौज को देख कर मत डरें, क्यूँकि जो ताक़त हमारे
साथ है वह उसे हासिल नहीं है। 8 असूर के बादशाह
के लिए सिर्फ़ ख़ाकी आदमी लड़ रहे हैं जबकि रब
हमारा ख़ुदा हमारे साथ है। वही हमारी मदद करके
हमारे लिए लड़ेगा!" हिज़क़ियाह बादशाह के इन
अल्फ़ाज़ से लोगों की बड़ी हौसलाअफ़्ज़ाई हुई।

असूरी यरूशलम का मुहासरा करते हैं

9 जब असूर का बादशाह सन्हेरिब अपनी पूरी फ़ौज
के साथ लकीस का मुहासरा कर रहा था तो उस ने
वहाँ से यरूशलम को वफ़द भेजा ताकि यहूदाह के
बादशाह हिज़क़ियाह और यहूदाह के तमाम बाशिन्दों
को पैग़ाम पहुँचाए,
10 "शाह-ए-असूर सन्हेरिब फ़रमाते हैं, तुम्हारा
भरोसा किस चीज़ पर है कि तुम मुहासरे के
वक़्त यरूशलम को छोड़ना नहीं चाहते? 11 जब
हिज़क़ियाह कहता है, 'रब हमारा ख़ुदा हमें असूर
के बादशाह से बचाएगा' तो वह तुम्हें ग़लत राह पर
ला रहा है। इस का सिर्फ़ यह नतीजा निकलेगा कि
तुम भूके और प्यासे मर जाओगे। 12 हिज़क़ियाह ने
तो इस ख़ुदा की बेहुरमती की है। क्यूँकि उस ने
उस की ऊँची जगहों के मन्दिरों और क़ुर्बानगाहों
को ढा कर यहूदाह और यरूशलम से कहा है कि
एक ही क़ुर्बानगाह के सामने परस्तिश करें, एक ही
क़ुर्बानगाह पर क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँ। 13 क्या तुम्हें इल्म
नहीं कि मैं और मेरे बापदादा ने दीगर ममालिक की
तमाम क़ौमों के साथ क्या कुछ किया? क्या इन
क़ौमों के देवता अपने मुल्कों को मुझ से बचाने के
क़ाबिल रहे हैं? हरगिज़ नहीं! 14 मेरे बापदादा ने इन
सब को तबाह कर दिया, और कोई भी देवता अपनी
क़ौम को मुझ से बचा न सका। तो फिर तुम्हारा देवता
तुम्हें किस तरह मुझ से बचाएगा? 15 हिज़क़ियाह से
फ़रेब न खाओ! वह इस तरह तुम्हें ग़लत राह पर न
लाए। उस की बात पर एतिमाद मत करना, क्यूँकि
अब तक किसी भी क़ौम या सल्तनत का देवता
अपनी क़ौम को मेरे या मेरे बापदादा के क़ब्ज़े से
छुटकारा न दिला सका। तो फिर तुम्हारा देवता तुम्हें
मेरे क़ब्ज़े से किस तरह बचाएगा?"
16 ऐसी बातें करते करते सन्हेरिब के अफ़सर रब
इस्राईल के ख़ुदा और उस के ख़ादिम हिज़क़ियाह
पर कुफ़्र बकते गए।
17 असूर के बादशाह ने वफ़द के हाथ ख़त भी भेजा
जिस में उस ने रब इस्राईल के ख़ुदा की इहानत की।
ख़त में लिखा था, "जिस तरह दीगर ममालिक के
देवता अपनी क़ौमों को मुझ से महफ़ूज़ न रख सके
उसी तरह हिज़क़ियाह का देवता भी अपनी क़ौम को
मेरे क़ब्ज़े से नहीं बचाएगा।"
18 असूरी अफ़सरों ने बुलन्द आवाज़ से इब्रानी
ज़बान में बादशाह का पैग़ाम फ़सील पर खड़े
यरूशलम के बाशिन्दों तक पहुँचाया ताकि उन
में ख़ौफ़-ओ-हिरास फैल जाए और यूँ शहर पर
क़ब्ज़ा करने में आसानी हो जाए। 19 इन अफ़सरों
ने यरूशलम के ख़ुदा का यूँ तमस्ख़ुर उड़ाया जैसा
वह दुनिया की दीगर क़ौमों के देवताओं का उड़ाया
करते थे, हालाँकि दीगर माबूद सिर्फ़ इन्सानी हाथों
की पैदावार थे।

रब सन्हेरिब को सज़ा देता है

20 फिर हिज़क़ियाह बादशाह और आमूस के बेटे
यसायाह नबी ने चिल्लाते हुए आसमान पर तख़्तनशीन
ख़ुदा से इल्तिमास की। 21 जवाब में रब ने असूरियों
की लश्करगाह में एक फ़रिश्ता भेजा जिस ने तमाम
बेहतरीन फ़ौजियों को अफ़सरों और कमाँडरों समेत
मौत के घाट उतार दिया। चुनाँचे सन्हेरिब शर्मिन्दा
हो कर अपने मुल्क लौट गया। वहाँ एक दिन जब
वह अपने देवता के मन्दिर में दाख़िल हुआ तो उस
के कुछ बेटों ने उसे तलवार से क़त्ल कर दिया।
22 इस तरह रब ने हिज़क़ियाह और यरूशलम के
बाशिन्दों को शाह-ए-असूर सन्हेरिब से छुटकारा
दिलाया। उस ने उन्हें दूसरी क़ौमों के हम्लों से भी
महफ़ूज़ रखा, और चारों तरफ़ अम्न-ओ-अमान फैल
गया। 23 बेशुमार लोग यरूशलम आए ताकि रब को
क़ुर्बानियाँ पेश करें और हिज़क़ियाह बादशाह को
क़ीमती तुहफ़े दें। उस वक़्त से तमाम क़ौमें उस का
बड़ा एहतिराम करने लगीं।

हिज़क़ियाह के आख़िरी साल

24 उन दिनों में हिज़क़ियाह इतना बीमार हुआ कि
मरने की नौबत आ पहुँची। तब उस ने रब से दुआ की,
और रब ने उस की सुन कर एक इलाही निशान से
इस की तस्दीक़ की। 25 लेकिन हिज़क़ियाह मग़रूर
हुआ, और उस ने इस मेहरबानी का मुनासिब जवाब
न दिया। नतीजे में रब उस से और यहूदाह और
यरूशलम से नाराज़ हुआ। 26 फिर हिज़क़ियाह और
यरूशलम के बाशिन्दों ने पछता कर अपना ग़ुरूर
छोड़ दिया, इस लिए रब का ग़ज़ब हिज़क़ियाह के
जीते जी उन पर नाज़िल न हुआ।

27 हिज़क़ियाह को बहुत दौलत और इज़्ज़त हासिल
हुई, और उस ने अपनी सोने-चाँदी, जवाहिर, बल्सान
के क़ीमती तेल, ढालों और बाक़ी क़ीमती चीज़ों के
लिए ख़ास ख़ज़ाने बनवाए। 28 उस ने ग़ल्ला, अंगूर
का रस और ज़ैतून का तेल महफ़ूज़ रखने के लिए
गोदाम तामीर किए और अपने गाय-बैलों और भेड़-
बकरियों को रखने की बहुत सी जगहें भी बनवा लीं।
29 उस के गाय-बैलों और भेड़-बकरियों में इज़ाफ़ा
होता गया, और उस ने कई नए शहरों की बुन्याद
रखी, क्यूँकि अल्लाह ने उसे निहायत ही अमीर बना
दिया था। 30 हिज़क़ियाह ही ने जैहून चश्मे का मुँह
बन्द करके उस का पानी सुरंग के ज़रीए मग़रिब की
तरफ़ यरूशलम के उस हिस्से में पहुँचाया जो 'दाऊद
का शहर' कहलाता है। जो भी काम उस ने शुरू
किया उस में वह कामयाब रहा। 31 एक दिन बाबल
के हुक्मरानों ने उस के पास वफ़द भेजा ताकि उस
इलाही निशान के बारे में मालूमात हासिल करें जो
यहूदाह में हुआ था। उस वक़्त अल्लाह ने उसे अकेला
छोड़ दिया ताकि उस के दिल की हक़ीक़ी हालत
जाँच ले।

32 बाक़ी जो कुछ हिज़क़ियाह की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो नेक काम उस ने किया वह 'आमूस
के बेटे यसायाह नबी की रोया' में क़लमबन्द है जो
'शाहान-ए-यहूदाह-ओ-इस्राईल' की किताब में दर्ज
है। 33 जब वह मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो
उसे शाही क़ब्रिस्तान की एक ऊँची जगह पर दफ़नाया
गया। जब जनाज़ा निकला तो यहूदाह और यरूशलम
के तमाम बाशिन्दों ने उस का एहतिराम किया। फिर
उस का बेटा मनस्सी तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह मनस्सी

33 1 मनस्सी 12 साल की उम्र में बादशाह
बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का
दौरानिया 55 साल था। 2 मनस्सी का चाल-चलन रब
को नापसन्द था। उस ने उन क़ौमों के क़ाबिल-ए-घिन
रस्म-ओ-रिवाज अपना लिए जिन्हें रब ने इस्राईलियों
के आगे से निकाल दिया था। 3 ऊँची जगहों के जिन
मन्दिरों को उस के बाप हिज़क़ियाह ने ढा दिया था
उन्हें उस ने नए सिरे से तामीर किया। उस ने बाल
देवताओं की क़ुर्बानगाहें बनवाईं और यसीरत देवी
के खम्बे खड़े किए। इन के इलावा वह सूरज, चाँद
बल्कि आसमान के पूरे लश्कर को सिज्दा करके
उन की ख़िदमत करता था। 4 उस ने रब के घर में
भी अपनी क़ुर्बानगाहें खड़ी कीं, हालाँकि रब ने इस
मक़ाम के बारे में फ़रमाया था, "यरूशलम में मेरा नाम
अबद तक क़ाइम रहेगा।" 5 लेकिन मनस्सी ने पर्वा
न की बल्कि रब के घर के दोनों सहनों में आसमान
के पूरे लश्कर के लिए क़ुर्बानगाहें बनवाईं। 6 यहाँ
तक कि उस ने वादी-ए-बिन-हिन्नूम में अपने बेटों
को भी क़ुर्बान करके जला दिया। जादूगरी, ग़ैबदानी
और अफ़्सूँगरी करने के इलावा वह मुर्दों की रूहों से
राबिता करने वालों और रम्मालों से भी मश्वरा करता
था।

ग़रज़ उस ने बहुत कुछ किया जो रब को नापसन्द
था और उसे तैश दिलाया। 7 देवी का बुत बनवा कर
उस ने उसे अल्लाह के घर में खड़ा किया, हालाँकि
रब ने दाऊद और उस के बेटे सुलेमान से कहा था,
"इस घर और इस शहर यरूशलम में जो मैं ने तमाम
इस्राईली क़बीलों में से चुन लिया है मैं अपना नाम
अबद तक क़ाइम रखूँगा। 8 अगर इस्राईली एहतियात

से मेरे उन तमाम अह्काम और हिदायात की पैरवी करें जो मूसा ने शरीअत में उन्हें दिए तो मैं कभी नहीं होने दूँगा कि इस्राईलियों को उस मुल्क से जिलावतन कर दिया जाए जो मैं ने उन के बापदादा को अता किया था।” 9 लेकिन मनस्सी ने यहूदाह और यरूशलम के बाशिन्दों को ऐसे ग़लत काम करने पर उकसाया जो उन क़ौमों से भी सरज़द नहीं हुए थे जिन्हें रब ने मुल्क में दाख़िल होते वक़्त उन के आगे से तबाह कर दिया था।

10 गो रब ने मनस्सी और अपनी क़ौम को समझाया, लेकिन उन्हों ने पर्वा न की। 11 तब रब ने असूरी बादशाह के कमाँडरों को यहूदाह पर हम्ला करने दिया। उन्हों ने मनस्सी को पकड़ कर उस की नाक में नकेल डाली और उसे पीतल की ज़न्जीरों में जकड़ कर बाबल ले गए। 12 जब वह यूँ मुसीबत में फंस गया तो मनस्सी रब अपने ख़ुदा का ग़ज़ब ठंडा करने की कोशिश करने लगा और अपने आप को अपने बापदादा के ख़ुदा के हुज़ूर पस्त कर दिया।

13 और रब ने उस की इल्तिमास पर ध्यान दे कर उस की सुनी। उसे यरूशलम वापस ला कर उस ने उस की हुकूमत बहाल कर दी। तब मनस्सी ने जान लिया कि रब ही ख़ुदा है।

14 इस के बाद उस ने ‘दाऊद के शहर’ की बैरूनी फ़सील नए सिरे से बनवाई। यह फ़सील जैहून चश्मे के मग़रिब से शुरू हुई और वादी-ए-क़िद्रोन में से गुज़र कर मछली के दरवाज़े तक पहुँच गई। इस दीवार ने रब के घर की पूरी पहाड़ी बनाम ओफ़ल का इहाता कर लिया और बहुत बुलन्द थी। इस के इलावा बादशाह ने यहूदाह के तमाम क़िलाबन्द शहरों पर फ़ौजी अफ़सर मुक़र्रर किए। 15 उस ने अजनबी माबूदों को बुत समेत रब के घर से निकाल दिया। जो क़ुर्बानगाहें उस ने रब के घर की पहाड़ी और बाक़ी यरूशलम में खड़ी की थीं उन्हें भी उस ने ढा कर शहर से बाहर फैंक दिया। 16 फिर उस ने रब की क़ुर्बानगाह को नए सिरे से तामीर करके उस पर सलामती और शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं। साथ साथ उस ने यहूदाह के बाशिन्दों से कहा कि रब इस्राईल के ख़ुदा की ख़िदमत करें। 17 गो लोग इस के बाद भी ऊँची जगहों पर अपनी क़ुर्बानियाँ पेश करते थे, लेकिन अब से वह इन्हें सिर्फ़ रब अपने ख़ुदा को पेश करते थे।

18 बाक़ी जो कुछ मनस्सी की हुकूमत के दौरान हुआ वह ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। वहाँ उस की अपने ख़ुदा से दुआ भी बयान की गई है और वह बातें भी जो ग़ैबबीनों ने रब इस्राईल के ख़ुदा के नाम में उसे बताई थीं। 19 ग़ैबबीनों की किताब में भी मनस्सी की दुआ बयान की गई है और यह कि अल्लाह ने किस तरह उस की सुनी। वहाँ उस के तमाम गुनाहों और बेवफ़ाई का ज़िक्र है, नीज़ उन ऊँची जगहों की फ़हरिस्त दर्ज है जहाँ उस ने अल्लाह के ताबे हो जाने से पहले मन्दिर बना कर यसीरत देवी के खम्बे और बुत खड़े किए थे। 20 जब मनस्सी मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे उस के महल में दफ़न किया गया। फिर उस का बेटा अमून तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अमून

21 अमून 22 साल की उम्र में बादशाह बना और दो साल तक यरूशलम में हुकूमत करता रहा। 22 अपने बाप मनस्सी की तरह वह ऐसा ग़लत काम करता रहा जो रब को नापसन्द था। जो बुत उस के बाप ने बनवाए थे उन ही की पूजा वह करता और उन ही को क़ुर्बानियाँ पेश करता था। 23 लेकिन उस में और मनस्सी में यह फ़र्क़ था कि बेटे ने अपने आप को रब के सामने पस्त न किया बल्कि उस का क़ुसूर मज़ीद संगीन होता गया। 24 एक दिन अमून के कुछ अफ़सरों ने उस के ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे महल में क़त्ल कर दिया। 25 लेकिन उम्मत ने तमाम साज़िश करने वालों को मार डाला और अमून की जगह उस के बेटे यूसियाह को बादशाह बना दिया।

यूसियाह बादशाह बुतपरस्ती की मुख़ालफ़त करता है

34 1 यूसियाह 8 साल की उम्र में बादशाह बना,
और यरूशलम में रह कर उस की हुकूमत
का दौरानिया 31 साल था। 2 यूसियाह वह कुछ
करता रहा जो रब को पसन्द था। वह अपने बाप
दाऊद के अच्छे नमूने पर चलता रहा और उस से न
दाईं, न बाईं तरफ़ हटा।
3 अपनी हुकूमत के आठवें साल में वह अपने बाप
दाऊद के ख़ुदा की मर्ज़ी तलाश करने लगा, गो उस
वक़्त वह जवान ही था। अपनी हुकूमत के 12वें साल
में वह ऊँची जगहों के मन्दिरों, यसीरत देवी के खम्बों
और तमाम तराशे और ढाले हुए बुतों को पूरे मुल्क
से दूर करने लगा। यूँ तमाम यरूशलम और यहूदाह
इन चीज़ों से पाक-साफ़ हो गया। 4 बादशाह के ज़ेर-
ए-निगरानी बाल देवताओं की क़ुर्बानगाहों को ढा
दिया गया। बख़ूर की जो क़ुर्बानगाहें उन के ऊपर
थीं उन्हें उस ने टुकड़े टुकड़े कर दिया। यसीरत देवी
के खम्बों और तराशे और ढाले हुए बुतों को ज़मीन
पर पटख़ कर उस ने उन्हें पीस कर उन की क़ब्रों
पर बिखेर दिया जिन्हों ने जीते जी उन को क़ुर्बानियाँ
पेश की थीं। 5 बुतपरस्त पुजारियों की हड्डियों को उन
की अपनी क़ुर्बानगाहों पर जलाया गया। इस तरह से
यूसियाह ने यरूशलम और यहूदाह को पाक-साफ़
कर दिया। 6–7 यह उस ने न सिर्फ़ यहूदाह बल्कि
मनस्सी, इफ़्राईम, शमाऊन और नफ़्ताली तक के
शहरों में इर्दगिर्द के खंडरात समेत भी किया। उस
ने क़ुर्बानगाहों को गिरा कर यसीरत देवी के खम्बों
और बुतों को टुकड़े टुकड़े करके चिकनाचूर कर
दिया। तमाम इस्राईल की बख़ूर की क़ुर्बानगाहों को
उस ने ढा दिया। इस के बाद वह यरूशलम वापस
चला गया।

रब के घर की मरम्मत

8 अपनी हुकूमत के 18वें साल में यूसियाह ने साफ़न
बिन असलियाह, यरूशलम पर मुक़र्रर अफ़्सर
मासियाह और बादशाह के मुशीर-ए-ख़ास यूआख़
बिन यूआख़ज़ को रब अपने ख़ुदा के घर के पास भेजा
ताकि उस की मरम्मत करवाएँ। उस वक़्त मुल्क और
रब के घर को पाक-साफ़ करने की मुहिम्म जारी थी।
9 इमाम-ए-आज़म ख़िलक़ियाह के पास जा कर उन्हों
ने उसे वह पैसे दिए जो लावी के दरबानों ने रब के
घर में जमा किए थे। यह हदिए मनस्सी और इफ़्राईम
के बाशिन्दों, इस्राईल के तमाम बचे हुए लोगों और
यहूदाह, बिनयमीन और यरूशलम के रहने वालों की
तरफ़ से पेश किए गए थे।
10 अब यह पैसे उन ठेकेदारों के हवाले कर दिए
गए जो रब के घर की मरम्मत करवा रहे थे। इन
पैसों से ठेकेदारों ने उन कारीगरों की उजरत अदा
की जो रब के घर की मरम्मत करके उसे मज़बूत कर
रहे थे। 11 कारीगरों और तामीर करने वालों ने इन
पैसों से तराशे हुए पत्थर और शहतीरों की लकड़ी भी
ख़रीदी। इमारतों में शहतीरों को बदलने की ज़रूरत
थी, क्यूँकि यहूदाह के बादशाहों ने उन पर ध्यान नहीं
दिया था, लिहाज़ा वह गल गए थे। 12 इन आदमियों ने
वफ़ादारी से ख़िदमत सरअन्जाम दी। चार लावी इन
की निगरानी करते थे जिन में यहत और अबदियाह
मिरारी के ख़ानदान के थे जबकि ज़करियाह और
मसुल्लाम क़िहात के ख़ानदान के थे। जितने लावी
साज़ बजाने में माहिर थे 13 वह मज़दूरों और तमाम
दीगर कारीगरों पर मुक़र्रर थे। कुछ और लावी मुन्शी,
निगरान और दरबान थे।

रब के घर में शरीअत की किताब मिल जाती है

14 जब वह पैसे बाहर लाए गए जो रब के घर में जमा
हुए थे तो ख़िलक़ियाह को शरीअत की वह किताब
मिली जो रब ने मूसा की मारिफ़त दी थी। 15 उसे
मीरमुन्शी साफ़न को दे कर उस ने कहा, “मुझे रब के
घर में शरीअत की किताब मिली है।” 16 तब साफ़न
किताब को ले कर बादशाह के पास गया और उसे
इत्तिला दी, “जो भी ज़िम्मादारी आप के मुलाज़िमों
को दी गई उन्हें वह अच्छी तरह पूरा कर रहे हैं।

17 उन्हों ने रब के घर में जमाशुदा पैसे मरम्मत पर
मुक़र्रर ठेकेदारों और बाक़ी काम करने वालों को
दे दिए हैं।” 18 फिर साफ़न ने बादशाह को बताया,
“ख़िलक़ियाह ने मुझे एक किताब दी है।” किताब
को खोल कर वह बादशाह की मौजूदगी में उस की
तिलावत करने लगा।
19 किताब की बातें सुन कर बादशाह ने रंजीदा हो
कर अपने कपड़े फाड़ लिए। 20 उस ने ख़िलक़ियाह,
अख़ीक़ाम बिन साफ़न, अब्दोन बिन मीकाह,
मीरमुन्शी साफ़न और अपने ख़ास ख़ादिम असायाह
को बुला कर उन्हें हुक्म दिया, 21 “जा कर मेरी और
इस्राईल और यहूदाह के बचे हुए अफ़राद की ख़ातिर
रब से इस किताब में दर्ज बातों के बारे में दरयाफ़्त
करें। रब का जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल होने वाला है
वह निहायत सख़्त है, क्यूँकि हमारे बापदादा न रब
के फ़रमान के ताबे रहे, न उन हिदायात के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारी है जो किताब में दर्ज की गई हैं।”
22 चुनाँचे ख़िलक़ियाह बादशाह के भेजे हुए चन्द
आदमियों के साथ ख़ुल्दा नबिया को मिलने गया।
ख़ुल्दा का शौहर सल्लूम बिन तोक़हत बिन ख़स्रा रब
के घर के कपड़े सँभालता था। वह यरूशलम के नए
इलाक़े में रहते थे। 23–24 ख़ुल्दा ने उन्हें जवाब दिया,
“रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि जिस आदमी
ने तुम्हें भेजा है उसे बता देना, ‘रब फ़रमाता है
कि मैं इस शहर और इस के बाशिन्दों पर आफ़त
नाज़िल करूँगा। वह तमाम लानतें पूरी हो जाएँगी
जो बादशाह के हुज़ूर पढ़ी गई किताब में बयान की
गई हैं। 25 क्यूँकि मेरी क़ौम ने मुझे तर्क करके दीगर
माबूदों को क़ुर्बानियाँ पेश की हैं और अपने हाथों
से बुत बना कर मुझे तैश दिलाया है। मेरा ग़ज़ब इस
मक़ाम पर नाज़िल हो जाएगा और कभी ख़त्म नहीं
होगा।’ 26 लेकिन यहूदाह के बादशाह के पास जाएँ
जिस ने आप को रब से दरयाफ़्त करने के लिए भेजा
है और उसे बता दें कि रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता
है, ‘मेरी बातें सुन कर 27 तेरा दिल नर्म हो गया है।
जब तुझे पता चला कि मैं ने इस मक़ाम और इस
के बाशिन्दों के ख़िलाफ़ बात की है तो तू ने अपने
आप को अल्लाह के सामने पस्त कर दिया। तू ने बड़ी
इनकिसारी से रंजीदा हो कर अपने कपड़े फाड़ लिए
और मेरे हुज़ूर फूट फूट कर रोया। रब फ़रमाता है कि
यह देख कर मैं ने तेरी सुनी है। 28 जब तू मेरे कहने पर
मर कर अपने बापदादा से जा मिलेगा तो सलामती से
दफ़न होगा। जो आफ़त मैं शहर और उस के बाशिन्दों
पर नाज़िल करूँगा वह तू ख़ुद नहीं देखेगा’।”
अफ़सर बादशाह के पास वापस गए और उसे
ख़ुल्दा का जवाब सुना दिया।

यूसियाह रब से अह्द बांधता है

29 तब बादशाह यहूदाह और यरूशलम के तमाम
बुज़ुर्गों को बुला कर 30 रब के घर में गया। सब लोग
छोटे से ले कर बड़े तक उस के साथ गए यानी यहूदाह
के आदमी, यरूशलम के बाशिन्दे, इमाम और लावी।
वहाँ पहुँच कर जमाअत के सामने अह्द की उस पूरी
किताब की तिलावत की गई जो रब के घर में मिली
थी।
31 फिर बादशाह ने अपने सतून के पास खड़े हो
कर रब के हुज़ूर अह्द बांधा और वादा किया, “हम
रब की पैरवी करेंगे, हम पूरे दिल-ओ-जान से उस
के अह्काम और हिदायात पूरी करके इस किताब
में दर्ज अह्द की बातें क़ाइम रखेंगे।” 32 यूसियाह
ने मुतालबा किया कि यरूशलम और यहूदाह के
तमाम बाशिन्दे अह्द में शरीक हो जाएँ। उस वक़्त
से यरूशलम के बाशिन्दे अपने बापदादा के ख़ुदा के
अह्द के साथ लिपटे रहे।
33 यूसियाह ने इस्राईल के पूरे मुल्क से तमाम घिनौने
बुतों को दूर कर दिया। इस्राईल के तमाम बाशिन्दों
को उस ने ताकीद की, “रब अपने ख़ुदा की ख़िदमत
करें।” चुनाँचे यूसियाह के जीते जी वह रब अपने
बापदादा की राह से दूर न हुए।

यूसियाह फ़सह की ईद मनाता है

35 1 फिर यूसियाह ने रब की ताज़ीम में फ़सह
की ईद मनाई। पहले महीने के 14वें दिन
फ़सह का लेला ज़बह किया गया। 2 बादशाह ने
इमामों को काम पर लगा कर उन की हौसलाअफ़्ज़ाई
की कि वह रब के घर में अपनी ख़िदमत अच्छी
तरह अन्जाम दें। 3 लावियों को तमाम इस्राईलियों
को शरीअत की तालीम देने की ज़िम्मादारी दी गई
थी, और साथ साथ उन्हें रब की ख़िदमत के लिए
मख़्सूस किया गया था। उन से यूसियाह ने कहा,

"मुक़द्दस सन्दूक़ को उस इमारत में रखें जो
इस्राईल के बादशाह दाऊद के बेटे सुलेमान ने तामीर
किया। उसे अपने कंधों पर उठा कर इधर उधर
ले जाने की ज़रूरत नहीं है बल्कि अब से अपना
वक़्त रब अपने ख़ुदा और उस की क़ौम इस्राईल
की ख़िदमत में सर्फ़ करें। 4 उन ख़ानदानी गुरोहों के
मुताबिक़ ख़िदमत के लिए तय्यार रहें जिन की तर्तीब
दाऊद बादशाह और उस के बेटे सुलेमान ने लिख
कर मुक़र्रर की थी। 5 फिर मक़्दिस में उस जगह खड़े
हो जाएँ जो आप के ख़ानदानी गुरोह के लिए मुक़र्रर
है और उन ख़ानदानों की मदद करें जो क़ुर्बानियाँ
चढ़ाने के लिए आते हैं और जिन की ख़िदमत करने
की ज़िम्मादारी आप को दी गई है। 6 अपने आप को
ख़िदमत के लिए मख़्सूस करें और फ़सह के लेले
ज़बह करके अपने हमवतनों के लिए इस तरह तय्यार
करें जिस तरह रब ने मूसा की मारिफ़त हुक्म दिया
था।"

7 ईद की ख़ुशी में यूसियाह ने ईद मनाने वालों को
अपनी मिलकियत में से 30,000 भेड़-बकरियों के
बच्चे दिए। यह जानवर फ़सह की क़ुर्बानी के तौर
पर चढ़ाए गए जबकि बादशाह की तरफ़ से 3,000
बैल दीगर क़ुर्बानियों के लिए इस्तेमाल हुए। 8 इस
के इलावा बादशाह के अफ़्सरों ने भी अपनी ख़ुशी
से क़ौम, इमामों और लावियों को जानवर दिए।
अल्लाह के घर के सब से आला अफ़्सरों ख़िलक़ियाह,
ज़करियाह और यहीएल ने दीगर इमामों को फ़सह
की क़ुर्बानी के लिए 2,600 भेड़-बकरियों के बच्चे
दिए, नीज़ 300 बैल। 9 इसी तरह लावियों के
राहनुमाओं ने दीगर लावियों को फ़सह की क़ुर्बानी
के लिए 5,000 भेड़-बकरियों के बच्चे दिए, नीज़ 500
बैल। उन में से तीन भाई बनाम कूननियाह, समायाह
और नतनीएल थे जबकि दूसरों के नाम हसबियाह,
यईएल और यूज़बद थे। 10 जब हर एक ख़िदमत के
लिए तय्यार था तो इमाम अपनी अपनी जगह पर और
लावी अपने अपने गुरोहों के मुताबिक़ खड़े हो गए
जिस तरह बादशाह ने हिदायत दी थी। 11 लावियों ने
फ़सह के लेलों को ज़बह करके उन की खालें उतारीं
जबकि इमामों ने लावियों से जानवरों का ख़ून ले कर
क़ुर्बानगाह पर छिड़का। 12 जो कुछ भस्म होने वाली
क़ुर्बानियों के लिए मुक़र्रर था उसे क़ौम के मुख़्तलिफ़
ख़ानदानों के लिए एक तरफ़ रख दिया गया ताकि
वह उसे बाद में रब को क़ुर्बानी के तौर पर पेश कर
सकें, जिस तरह मूसा की शरीअत में लिखा है। बैलों
के साथ भी ऐसा ही किया गया। 13 फ़सह के लेलों
को हिदायात के मुताबिक़ आग पर भूना गया जबकि
बाक़ी गोश्त को मुख़्तलिफ़ क़िस्म की देगों में उबाला
गया। जूँ ही गोश्त पक गया तो लावियों ने उसे जल्दी
से हाज़िरीन में तक़्सीम किया। 14 इस के बाद उन्हों
ने अपने और इमामों के लिए फ़सह के लेले तय्यार
किए, क्यूँकि हारून की औलाद यानी इमाम भस्म
होने वाली क़ुर्बानियों और चर्बी को चढ़ाने में रात
तक मसरूफ़ रहे।

15 ईद के पूरे दौरान आसफ़ के ख़ानदान के गुलूकार
अपनी अपनी जगह पर खड़े रहे, जिस तरह दाऊद,
आसफ़, हैमान और बादशाह के ग़ैबबीन यदूतून ने
हिदायत दी थी। दरबान भी रब के घर के दरवाज़ों
पर मुसलसल खड़े रहे। उन्हें अपनी जगहों को छोड़ने
की ज़रूरत भी नहीं थी, क्यूँकि बाक़ी लावियों ने उन
के लिए भी फ़सह के लेले तय्यार कर रखे। 16 यूँ उस
दिन यूसियाह के हुक्म पर क़ुर्बानियों के पूरे इन्तिज़ाम
को तर्तीब दिया गया ताकि आइन्दा फ़सह की ईद

मनाई जाए और भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ रब की
क़ुर्बानगाह पर पेश की जाएँ।
17 यरूशलम में जमा हुए इस्राईलियों ने फ़सह की
ईद और बेख़मीरी रोटी की ईद एक हफ़्ते के दौरान
मनाई। 18 फ़सह की ईद इस्राईल में समूएल नबी के
ज़माने से ले कर उस वक़्त तक इस तरह नहीं मनाई
गई थी। इस्राईल के किसी भी बादशाह ने उसे यूँ
नहीं मनाया था जिस तरह यूसियाह ने उसे उस वक़्त
इमामों, लावियों, यरूशलम और तमाम यहूदाह और
इस्राईल से आए हुए लोगों के साथ मिल कर मनाई।
19 यूसियाह बादशाह की हुकूमत के 18वें साल में
पहली दफ़ा रब की ताज़ीम में ऐसी ईद मनाई गई।

यूसियाह की मौत

20 रब के घर की बहाली की तक्मील के बाद
एक दिन मिस्र का बादशाह निकोह दरया-ए-फ़ुरात
पर के शहर कर्किमीस के लिए रवाना हुआ ताकि
वहाँ दुश्मन से लड़े। लेकिन रास्ते में यूसियाह उस
का मुक़ाबला करने के लिए निकला। 21 निकोह ने
अपने क़ासिदों को यूसियाह के पास भेज कर उसे
इत्तिला दी, "ऐ यहूदाह के बादशाह, मेरा आप से क्या
वास्ता? इस वक़्त मैं आप पर हम्ला करने के लिए नहीं
निकला बल्कि उस शाही ख़ानदान पर जिस के साथ
मेरा झगड़ा है। अल्लाह ने फ़रमाया है कि मैं जल्दी
करूँ। वह तो मेरे साथ है। चुनाँचे उस का मुक़ाबला
करने से बाज़ आएँ, वर्ना वह आप को हलाक कर
देगा।"
22 लेकिन यूसियाह बाज़ न आया बल्कि लड़ने के
लिए तय्यार हुआ। उस ने निकोह की बात न मानी गो
अल्लाह ने उसे उस की मारिफ़त आगाह किया था।
चुनाँचे वह भेस बदल कर फ़िरऔन से लड़ने के लिए
मजिद्दो के मैदान में पहुँचा। 23 जब लड़ाई छिड़ गई
तो यूसियाह तीरों से ज़ख़्मी हुआ, और उस ने अपने
मुलाज़िमों को हुक्म दिया, "मुझे यहाँ से ले जाओ,
क्यूँकि मैं सख़्त ज़ख़्मी हो गया हूँ।" 24 लोगों ने उसे
उस के अपने रथ पर से उठा कर उस के एक और
रथ में रखा जो उसे यरूशलम ले गया। लेकिन उस ने
वफ़ात पाई, और उसे अपने बापदादा के ख़ानदानी
क़ब्रिस्तान में दफ़न किया गया। पूरे यहूदाह और
यरूशलम ने उस का मातम किया।
25 यरमियाह ने यूसियाह की याद में मातमी गीत
लिखे, और आज तक गीत गाने वाले मर्द-ओ-
ख़वातीन यूसियाह की याद में मातमी गीत गाते हैं,
यह पक्का दस्तूर बन गया है। यह गीत 'नोहा की
किताब' में दर्ज हैं।
26–27 बाक़ी जो कुछ शुरू से ले कर आख़िर तक
यूसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ वह 'शाहान-
ए-यहूदाह-ओ-इस्राईल' की किताब में बयान किया
गया है। वहाँ उस के नेक कामों का ज़िक्र है और
यह कि उस ने किस तरह शरीअत के अह्काम पर
अमल किया।

यहूदाह का बादशाह यहूआख़ज़

36 1 उम्मत ने यूसियाह के बेटे यहूआख़ज़ को
बाप के तख़्त पर बिठा दिया। 2 यहूआख़ज़
23 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में
उस की हुकूमत का दौरानिया तीन माह था। 3 फिर
मिस्र के बादशाह ने उसे तख़्त से उतार दिया, और
मुल्क-ए-यहूदाह को तक़रीबन 3,400 किलोग्राम
चाँदी और 34 किलोग्राम सोना ख़राज के तौर पर
अदा करना पड़ा। 4 मिस्र के बादशाह ने यहूआख़ज़
के सगे भाई इलियाक़ीम को यहूदाह और यरूशलम
का नया बादशाह बना कर उस का नाम यहूयक़ीम
में बदल दिया। यहूआख़ज़ को वह क़ैद करके अपने
साथ मिस्र ले गया।

यहूदाह का बादशाह यहूयक़ीम

5 यहूयक़ीम 25 साल की उम्र में बादशाह बना,
और यरूशलम में रह कर वह 11 साल तक हुकूमत
करता रहा। उस का चाल-चलन रब उस के ख़ुदा
को नापसन्द था। 6 एक दिन बाबल के नबूकद्नज़्ज़र
ने यहूदाह पर हम्ला किया और यहूयक़ीम को

पीतल की ज़न्जीरों में जकड़ कर बाबल ले गया।
7 नबूकद्नज़्ज़र रब के घर की कई क़ीमती चीज़ें भी
छीन कर अपने साथ बाबल ले गया और वहाँ अपने
मन्दिर में रख दीं।

8 बाक़ी जो कुछ यहूयक़ीम की हुकूमत के
दौरान हुआ वह 'शाहान-ए-यहूदाह-ओ-इस्राईल' की
किताब में दर्ज है। वहाँ यह बयान किया गया है
कि उस ने कैसी घिनौनी हरकतें कीं और कि क्या
कुछ उस के साथ हुआ। उस के बाद उस का बेटा
यहूयाकीन तख़्तनशीन हुआ।

यहूयाकीन की हुकूमत

9 यहूयाकीन 18 साल की उम्र में बादशाह बना,
और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया तीन
माह और दस दिन था। उस का चाल-चलन रब को
नापसन्द था। 10 बहार के मौसम में नबूकद्नज़्ज़र
बादशाह ने हुक्म दिया कि उसे गिरिफ़्तार करके
बाबल ले जाया जाए। साथ साथ फ़ौजियों ने रब के
घर की क़ीमती चीज़ें भी छीन कर बाबल पहुँचाईं।
यहूयाकीन की जगह नबूकद्नज़्ज़र ने यहूयाकीन के
चचा सिदक़ियाह को यहूदाह और यरूशलम का
बादशाह बना दिया।

सिदक़ियाह बादशाह और यरूशलम की तबाही

11 सिदक़ियाह 21 साल की उम्र में तख़्तनशीन
हुआ, और यरूशलम में उस की हुकूमत का
दौरानिया 11 साल था। 12 उस का चाल-चलन रब
उस के ख़ुदा को नापसन्द था। जब यरमियाह नबी ने
उसे रब की तरफ़ से आगाह किया तो उस ने अपने
आप को नबी के सामने पस्त न किया। 13 सिदक़ियाह
को अल्लाह की क़सम खा कर नबूकद्नज़्ज़र बादशाह
का वफ़ादार रहने का वादा करना पड़ा। तो भी वह
कुछ देर के बाद सरकश हो गया। वह अड़ गया,
और उस का दिल इतना सख़्त हो गया कि वह रब
इस्राईल के ख़ुदा की तरफ़ दुबारा रुजू करने के लिए
तय्यार नहीं था।

14 लेकिन यहूदाह के राहनुमाओं, इमामों और क़ौम
की बेवफ़ाई भी बढ़ती गई। पड़ोसी क़ौमों के घिनौने
रस्म-ओ-रिवाज अपना कर उन्हों ने रब के घर को
नापाक कर दिया, गो उस ने यरूशलम में यह इमारत
अपने लिए मख़्सूस की थी।

15 बार बार रब उन के बापदादा का ख़ुदा अपने
पैग़म्बरों को उन के पास भेज कर उन्हें समझाता रहा,
क्यूँकि उसे अपनी क़ौम और सुकूनतगाह पर तरस
आता था। 16 लेकिन लोगों ने अल्लाह के पैग़म्बरों
का मज़ाक़ उड़ाया, उन के पैग़ाम हक़ीर जाने और
नबियों को लान-तान की। आख़िरकार रब का ग़ज़ब
उन पर नाज़िल हुआ, और बचने का कोई रास्ता न
रहा। 17 उस ने बाबल के बादशाह नबूकद्नज़्ज़र को
उन के ख़िलाफ़ भेजा तो दुश्मन यहूदाह के जवानों
को तलवार से क़त्ल करने के लिए मक़्दिस में घुसने
से भी न झिजके। किसी पर भी रहम न किया गया,
ख़्वाह जवान मर्द या जवान ख़ातून, ख़्वाह बुज़ुर्ग या
उम्ररसीदा हो। रब ने सब को नबूकद्नज़्ज़र के हवाले
कर दिया। 18 नबूकद्नज़्ज़र ने अल्लाह के घर की
तमाम चीज़ें छीन लीं, ख़्वाह वह बड़ी थीं या छोटी।
वह रब के घर, बादशाह और उस के आला अफ़्सरों
के तमाम ख़ज़ाने भी बाबल ले गया। 19 फ़ौजियों ने
रब के घर और तमाम महलों को जला कर यरूशलम
की फ़सील को गिरा दिया। जितनी भी क़ीमती चीज़ें
रह गई थीं वह तबाह हुईं। 20 और जो तलवार से बच
गए थे उन्हें बाबल का बादशाह क़ैद करके अपने
साथ बाबल ले गया। वहाँ उन्हें उस की और उस
की औलाद की ख़िदमत करनी पड़ी। उन की यह
हालत उस वक़्त तक जारी रही जब तक फ़ार्सी क़ौम
की सल्तनत शुरू न हुई।

21 यूँ वह कुछ पूरा हुआ जिस की पेशगोई रब ने
यरमियाह नबी की मारिफ़त की थी, क्यूँकि ज़मीन
को आख़िरकार सबत का वह आराम मिल गया जो
बादशाहों ने उसे नहीं दिया था। जिस तरह नबी ने
कहा था, अब ज़मीन 70 साल तक तबाह और वीरान
रही।

जिलावतनी से वापसी

22 फ़ार्स के बादशाह ख़ोरस की हुकूमत के पहले
साल में रब ने वह कुछ पूरा होने दिया जिस की
पेशगोई उस ने यरमियाह की मारिफ़त की थी। उस ने
ख़ोरस को ज़ैल का एलान करने की तहरीक दी। यह
एलान ज़बानी और तहरीरी तौर पर पूरी बादशाही में
किया गया।

23 "फ़ार्स का बादशाह ख़ोरस फ़रमाता है, रब
आसमान के ख़ुदा ने दुनिया के तमाम ममालिक मेरे
हवाले कर दिए हैं। उस ने मुझे यहूदाह के शहर
यरूशलम में उस के लिए घर बनाने की ज़िम्मादारी
दी है। आप में से जितने उस की क़ौम के हैं यरूशलम
के लिए रवाना हो जाएँ। रब आप का ख़ुदा आप के
साथ हो।"

अज़्रा

जिलावतनी से वापसी

1 1 फ़ार्स के बादशाह ख़ोरस की हुकूमत के पहले
साल में रब ने वह कुछ पूरा होने दिया जिस की
पेशगोई उस ने यरमियाह की मारिफ़त की थी। उस ने
ख़ोरस को ज़ैल का एलान करने की तहरीक दी। यह
एलान ज़बानी और तहरीरी तौर पर पूरी बादशाही में
किया गया।

2 "फ़ार्स का बादशाह ख़ोरस फ़रमाता है, रब
आसमान के ख़ुदा ने दुनिया के तमाम ममालिक मेरे
हवाले कर दिए हैं। उस ने मुझे यहूदाह के शहर
यरूशलम में उस के लिए घर बनाने की ज़िम्मादारी दी
है। 3 आप में से जितने उस की क़ौम के हैं यरूशलम
के लिए रवाना हो जाएँ ताकि वहाँ रब इस्राईल
के ख़ुदा के लिए घर बनाएँ, उस ख़ुदा के लिए जो
यरूशलम में सुकूनत करता है। आप का ख़ुदा आप
के साथ हो। 4 जहाँ भी इस्राईली क़ौम के बचे हुए
लोग रहते हैं, वहाँ उन के पड़ोसियों का फ़र्ज़ है
कि वह सोने-चाँदी और माल-मवेशी से उन की मदद
करें। इस के इलावा वह अपनी ख़ुशी से यरूशलम
में अल्लाह के घर के लिए हदिए भी दें।"

5 तब कुछ इस्राईली रवाना हो कर यरूशलम में रब
के घर को तामीर करने की तय्यारियाँ करने लगे। उन
में यहूदाह और बिनयमीन के ख़ानदानी सरपरस्त,
इमाम और लावी शामिल थे यानी जितने लोगों को
अल्लाह ने तहरीक दी थी। 6 उन के तमाम पड़ोसियों
ने उन्हें सोना-चाँदी और माल-मवेशी दे कर उन की
मदद की। इस के इलावा उन्हों ने अपनी ख़ुशी से भी
रब के घर के लिए हदिए दिए।

7 ख़ोरस बादशाह ने वह चीज़ें वापस कर दीं जो
नबूकद्नज़्ज़र ने यरूशलम में रब के घर से लूट कर
अपने देवता के मन्दिर में रख दी थीं। 8 उन्हें निकाल
कर फ़ार्स के बादशाह ने मित्रदात ख़ज़ान्ची के हवाले
कर दिया जिस ने सब कुछ गिन कर यहूदाह के बुज़ुर्ग
शेस्बज़्ज़र को दे दिया। 9 जो फ़हरिस्त उस ने लिखी
उस में ज़ैल की चीज़ें थीं :

सोने के 30 बासन,
चाँदी के 1,000 बासन,
29 छुरियाँ,
10 सोने के 30 प्याले,
चाँदी के 410 प्याले,
बाक़ी चीज़ें 1,000 अदद।

11 सोने और चाँदी की कुल 5,400 चीज़ें थीं।
शेस्बज़्ज़र यह सब कुछ अपने साथ ले गया जब वह
जिलावतनों के साथ बाबल से यरूशलम के लिए
रवाना हुआ।

वापस आए हुए इस्राईलियों की फ़हरिस्त

2 1 ज़ैल में यहूदाह के उन लोगों की फ़हरिस्त
है जो जिलावतनी से वापस आए। बाबल का
बादशाह नबूकद्नज़्ज़र उन्हें क़ैद करके बाबल ले
गया था, लेकिन अब वह यरूशलम और यहूदाह
के उन शहरों में फिर जा बसे जहाँ उन के ख़ानदान
पहले रहते थे। 2 उन के राहनुमा ज़रुब्बाबल, यशूअ,
नहमियाह, सिरायाह, रालायाह, मर्दकी, बिल्शान,
मिस्फ़ार, बिग्वई, रहूम और बाना थे। ज़ैल की
फ़हरिस्त में वापस आए हुए ख़ानदानों के मर्द बयान
किए गए हैं।

3 परऊस का ख़ानदान : 2,172,
4 सफ़तियाह का ख़ानदान : 372,
5 अरख़ का ख़ानदान : 775,
6 पख़त-मोआब का ख़ानदान यानी यशूअ और
योआब की औलाद : 2,812,
7 ऐलाम का ख़ानदान : 1,254,

8 ज़त्तू का ख़ानदान : 945,
9 ज़क्क़ी का ख़ानदान : 760,
10 बानी का ख़ानदान : 642,
11 बबी का ख़ानदान : 623,
12 अज़्जाद का ख़ानदान : 1,222,
13 अदूनिक़ाम का ख़ानदान : 666,
14 बिग्वई का ख़ानदान : 2,056,
15 अदीन का ख़ानदान : 454,
16 अतीर का ख़ानदान यानी हिज़क़ियाह की औलाद : 98,
17 बज़ी का ख़ानदान : 323,
18 यूरा का ख़ानदान : 112,
19 हाशूम का ख़ानदान : 223,
20 जिब्बार का ख़ानदान : 95,
21 बैत-लहम के बाशिन्दे : 123,
22 नतूफ़ा के 56 बाशिन्दे,
23 अनतोत के बाशिन्दे : 128,
24 अज़्मावत के बाशिन्दे : 42,
25 क़िर्यत-यारीम, कफ़ीरा और बैरोत के बाशिन्दे : 743,
26 रामा और जिबा के बाशिन्दे : 621,
27 मिक्मास के बाशिन्दे : 122,
28 बैत-एल और अई के बाशिन्दे : 223,
29 नबू के बाशिन्दे : 52,
30 मज्बीस के बाशिन्दे : 156,
31 दूसरे ऐलाम के बाशिन्दे : 1,254,
32 हारिम के बाशिन्दे : 320,
33 लूद, हादीद और ओनू के बाशिन्दे : 725,
34 यरीहू के बाशिन्दे : 345,
35 सनाआह के बाशिन्दे : 3,630।
36 ज़ैल के इमाम जिलावतनी से वापस आए।
यदायाह का ख़ानदान जो यशूअ की नस्ल का था : 973,
37 इम्मेर का ख़ानदान : 1,052,
38 फ़श्हूर का ख़ानदान : 1,247,
39 हारिम का ख़ानदान : 1,017,
40 ज़ैल के लावी जिलावतनी से वापस आए। यशूअ और क़दमीएल का ख़ानदान यानी हूदावियाह की औलाद : 74,
41 गुलूकार : आसफ़ के ख़ानदान के 128 आदमी,
42 रब के घर के दरबान : सल्लूम, अतीर, तल्मून, अक़्क़ूब, ख़तीता और सोबी के ख़ानदानों के 139 आदमी।
43 रब के घर के ख़िदमतगारों के दर्ज-ए-ज़ैल ख़ानदान जिलावतनी से वापस आए।
ज़ीहा, हसूफ़ा, तब्बाओत, 44 क़रूस, सीआहा, फ़दून, 45 लिबाना, हजाबा, अक़्क़ूब, 46 हजाब, शल्मी, हनान, 47 जिद्देल, जहर, रियायाह, 48 रज़ीन, नक़ूदा, जज़्ज़ाम, 49 उज़्ज़ा, फ़ासिह, बसी, 50 अस्ना, मऊनीम, नफ़ूसीम, 51 बक़्बूक़, हक़ूफ़ा, हर्हूर, 52 बज़्लूत, महीदा, हर्शा, 53 बर्क़ूस, सीसरा, तामह, 54 नज़ियाह और ख़तीफ़ा।
55 सुलेमान के ख़ादिमों के दर्ज-ए-ज़ैल ख़ानदान जिलावतनी से वापस आए।
सूती, सूफ़िरत, फ़रूदा, 56 याला, दर्क़ून, जिद्देल, 57 सफ़तियाह, ख़त्तील, फ़ूकिरत-ज़बाइम और अमी।
58 रब के घर के ख़िदमतगारों और सुलेमान के ख़ादिमों के ख़ानदानों में से वापस आए हुए मर्दों की तादाद 392 थी। 59–60 वापस आए हुए ख़ानदानों दिलायाह, तूबियाह और नक़ूदा के 652 मर्द साबित न कर सके कि इस्राईल की औलाद हैं, गो वह तल-मिलह, तल-हर्शा, करूब, अद्दून और इम्मेर के रहने वाले थे।
61–62 हबायाह, हक़्क़ूज़ और बर्ज़िल्ली के ख़ानदानों के कुछ इमाम भी वापस आए, लेकिन उन्हें रब के घर में ख़िदमत करने की इजाज़त न मिली। क्यूँकि गो उन्हों ने नसबनामे में अपने नाम तलाश किए उन का कहीं ज़िक्र न मिला, इस लिए उन्हें नापाक क़रार दिया गया। (बर्ज़िल्ली के ख़ानदान के बानी ने बर्ज़िल्ली जिलिआदी की बेटी से शादी करके अपने सुसर का नाम अपना लिया था।) 63 यहूदाह के गवर्नर ने हुक्म दिया कि इन तीन ख़ानदानों के इमाम फ़िलहाल

क़ुर्बानियों का वह हिस्सा खाने में शरीक न हों जो इमामों के लिए मुक़र्रर है। जब दुबारा इमाम-ए-आज़म मुक़र्रर किया जाए तो वही ऊरीम और तुम्मीम नामी क़ुरआ डाल कर मुआमला हल करे।

64 कुल 42,360 इस्राईली अपने वतन लौट आए,
65 नीज़ उन के 7,337 ग़ुलाम और लौंडियाँ और 200
गुलूकार जिन में मर्द-ओ-ख़वातीन शामिल थे।

66 इस्राईलियों के पास 736 घोड़े, 245 ख़च्चर,
67 435 ऊँट और 6,720 गधे थे।

68 जब वह यरूशलम में रब के घर के पास पहुँचे तो कुछ ख़ानदानी सरपरस्तों ने अपनी ख़ुशी से हदिए दिए ताकि अल्लाह का घर नए सिरे से उस जगह तामीर किया जा सके जहाँ पहले था। 69 हर एक ने उतना दे दिया जितना दे सका। उस वक़्त सोने के कुल 61,000 सिक्के, चाँदी के 2,800 किलोग्राम और इमामों के 100 लिबास जमा हुए।

70 इमाम, लावी, गुलूकार, रब के घर के दरबान और ख़िदमतगार, और अवाम के कुछ लोग अपनी अपनी आबाई आबादियों में दुबारा जा बसे। यूँ तमाम इस्राईली दुबारा अपने अपने शहरों में रहने लगे।

नई क़ुर्बानगाह पर क़ुर्बानियाँ

3 1 सातवें महीने की इब्तिदा में पूरी क़ौम यरूशलम में जमा हुई। उस वक़्त इस्राईली अपनी आबादियों में दुबारा आबाद हो गए थे। 2 जमा होने का मक़्सद इस्राईल के ख़ुदा की क़ुर्बानगाह को नए सिरे से तामीर करना था ताकि मर्द-ए-ख़ुदा मूसा की शरीअत के मुताबिक़ उस पर भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश की जा सकें। चुनाँचे यशूअ बिन यूसदक़ और ज़रुब्बाबल बिन सियाल्तीएल काम में लग गए। यशूअ के इमाम भाइयों और ज़रुब्बाबल के भाइयों ने उन की मदद की। 3 गो वह मुल्क में रहने वाली दीगर क़ौमों से सहमे हुए थे ताहम उन्हों ने क़ुर्बानगाह को उस की पुरानी बुन्याद पर तामीर किया और सुब्ह-शाम उस पर रब को भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश करने लगे। 4 झोंपड़ियों की ईद उन्हों ने शरीअत की हिदायत के मुताबिक़ मनाई। उस हफ़्ते के हर दिन उन्हों ने भस्म होने वाली उतनी क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं जितनी ज़रूरी थीं।

5 उस वक़्त से इमाम भस्म होने वाली तमाम दरकार क़ुर्बानियाँ बाक़ाइदगी से पेश करने लगे, नीज़ नए चाँद की ईदों और रब की बाक़ी मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस ईदों की क़ुर्बानियाँ। क़ौम अपनी ख़ुशी से भी रब को क़ुर्बानियाँ पेश करती थी। 6 गो रब के घर की बुन्याद अभी डाली नहीं गई थी तो भी इस्राईली सातवें महीने के पहले दिन से रब को भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश करने लगे। 7 फिर उन्हों ने राजों और कारीगरों को पैसे दे कर काम पर लगाया और सूर और सैदा के बाशिन्दों से देवदार की लकड़ी मंगवाई। यह लकड़ी लुबनान के पहाड़ी इलाक़े से समुन्दर तक लाई गई और वहाँ से समुन्दर के रास्ते याफ़ा पहुँचाई गई। इस्राईलियों ने मुआवज़े में खाने-पीने की चीज़ें और ज़ैतून का तेल दे दिया। फ़ार्स के बादशाह ख़ोरस ने उन्हें यह करवाने की इजाज़त दी थी।

रब के घर की तामीर-ए-नौ

8 जिलावतनी से वापस आने के दूसरे साल के दूसरे महीने में रब के घर की नए सिरे से तामीर शुरू हुई। इस काम में ज़रुब्बाबल बिन सियाल्तीएल, यशूअ बिन यूसदक़, दीगर इमाम और लावी और वतन में वापस आए हुए बाक़ी तमाम इस्राईली शरीक हुए। तामीरी काम की निगरानी उन लावियों के ज़िम्मे लगा दी गई जिन की उम्र 20 साल या इस से ज़ाइद थी।

9 ज़ैल के लोग मिल कर रब का घर बनाने वालों की निगरानी करते थे : यशूअ अपने बेटों और भाइयों समेत, क़दमीएल और उस के बेटे जो हूदावियाह की औलाद थे और हनदाद के ख़ानदान के लावी।

10 रब के घर की बुन्याद रखते वक़्त इमाम अपने मुक़द्दस लिबास पहने हुए साथ खड़े हो गए और तुरम बजाने लगे। आसफ़ के ख़ानदान के लावी साथ साथ झाँझ बजाने और रब की सताइश करने लगे। सब कुछ इस्राईल के बादशाह दाऊद की हिदायात के

मुताबिक़ हुआ। 11 वह हम्द-ओ-सना के गीत से रब
की तारीफ़ करने लगे, “वह भला है, और इस्राईल पर
उस की शफ़क़त अबदी है!” जब हाज़िरीन ने देखा कि
रब के घर की बुन्याद रखी जा रही है तो सब रब की
ख़ुशी में ज़ोरदार नारे लगाने लगे।

12 लेकिन बहुत से इमाम, लावी और ख़ानदानी
सरपरस्त हाज़िर थे जिन्हों ने रब का पहला घर देखा
हुआ था। जब उन के देखते देखते रब के नए घर की
बुन्याद रखी गई तो वह बुलन्द आवाज़ से रोने लगे
जबकि बाक़ी बहुत सारे लोग ख़ुशी के नारे लगा रहे
थे। 13 इतना शोर था कि ख़ुशी के नारों और रोने की
आवाज़ों में इम्तियाज़ न किया जा सका। शोर दूर दूर
तक सुनाई दिया।

रब के घर की तामीर की मुख़ालफ़त

4 1 यहूदाह और बिनयमीन के दुश्मनों को पता
चला कि वतन में वापस आए हुए इस्राईली
रब इस्राईल के ख़ुदा के लिए घर तामीर कर रहे
हैं। 2 ज़रुब्बाबल और ख़ानदानी सरपरस्तों के पास
आ कर उन्हों ने दरख़्वास्त की, “हम भी आप के
साथ मिल कर रब के घर को तामीर करना चाहते
हैं। क्यूँकि जब से असूर के बादशाह असर्हद्दून ने हमें
यहाँ ला कर बसाया है उस वक़्त से हम आप के ख़ुदा
के तालिब रहे और उसे क़ुर्बानियाँ पेश करते आए
हैं।” 3 लेकिन ज़रुब्बाबल, यशूअ और इस्राईल के
बाक़ी ख़ानदानी सरपरस्तों ने इन्कार किया, “नहीं,
इस में आप का हमारे साथ कोई वास्ता नहीं। हम
अकेले ही रब इस्राईल के ख़ुदा के लिए घर बनाएँगे,
जिस तरह फ़ार्स के बादशाह ख़ोरस ने हमें हुक्म दिया
है।”

4 यह सुन कर मुल्क की दूसरी क़ौमें यहूदाह
के लोगों की हौसलाशिकनी और उन्हें डराने की
कोशिश करने लगीं ताकि वह इमारत बनाने से बाज़
आएँ। 5 यहाँ तक कि वह फ़ार्स के बादशाह ख़ोरस के
कुछ मुशीरों को रिश्वत दे कर काम रोकने में कामयाब
हो गए। यूँ रब के घर की तामीर ख़ोरस बादशाह के
दौर-ए-हुकूमत से ले कर दारा बादशाह की हुकूमत
तक रुकी रही।

6 बाद में जब अख़स्वेरुस बादशाह की हुकूमत शुरू
हुई तो इस्राईल के दुश्मनों ने यहूदाह और यरूशलम
के बाशिन्दों पर इल्ज़ाम लगा कर शिकायती ख़त
लिखा।

7 फिर अर्तख़्शस्ता बादशाह के दौर-ए-हुकूमत में
उसे यहूदाह के दुश्मनों की तरफ़ से शिकायती ख़त
भेजा गया। ख़त के पीछे ख़ासकर बिश्लाम, मित्रदात
और ताबिएल थे। पहले उसे अरामी ज़बान में लिखा
गया, और बाद में उस का तर्जुमा हुआ। 8 सामरिया के
गवर्नर रहूम और उस के मीरमुन्शी शम्सी ने शहन्शाह
को ख़त लिख दिया जिस में उन्हों ने यरूशलम पर
इल्ज़ामात लगाए। पते में लिखा था,

9 अज़ : रहूम गवर्नर और मीरमुन्शी शम्सी, नीज़ उन
के हमख़िदमत क़ाज़ी, सफ़ीर और तर्पल, सिप्पर,
अरक, बाबल और सोसन यानी ऐलाम के मर्द,
10 नीज़ बाक़ी तमाम क़ौमें जिन को अज़ीम और
अज़ीज़ बादशाह अशूर्बनीपाल ने उठा कर सामरिया
और दरया-ए-फ़ुरात के बाक़ीमान्दा मग़रिबी इलाक़े
में बसा दिया था।

11 ख़त में लिखा था,

“शहन्शाह अर्तख़्शस्ता के नाम,

अज़ : आप के ख़ादिम जो दरया-ए-फ़ुरात के
मग़रिब में रहते हैं।

12 शहन्शाह को इल्म हो कि जो यहूदी आप के
हुज़ूर से हमारे पास यरूशलम पहुँचे हैं वह इस वक़्त
उस बाग़ी और शरीर शहर को नए सिरे से तामीर
कर रहे हैं। वह फ़सील को बहाल करके बुन्यादों
की मरम्मत कर रहे हैं। 13 शहन्शाह को इल्म हो कि
अगर शहर नए सिरे से तामीर हो जाए और उस की
फ़सील तक्मील तक पहुँचे तो यह लोग टैक्स, ख़राज
और महसूल अदा करने से इन्कार कर देंगे। तब
बादशाह को नुक़्सान पहुँचेगा। 14 हम तो नमकहराम
नहीं हैं, न शहन्शाह की तौहीन बर्दाश्त कर सकते
हैं। इस लिए हम गुज़ारिश करते हैं 15 कि आप अपने

बापदादा की तारीख़ी दस्तावेज़ात से यरूशलम के बारे में मालूमात हासिल करें, क्यूँकि उन में इस बात की तस्दीक़ मिलेगी कि यह शहर माज़ी में सरकश रहा। हक़ीक़त में शहर को इसी लिए तबाह किया गया कि वह बादशाहों और सूबों को तंग करता रहा और क़दीम ज़माने से ही बग़ावत का मम्बा रहा है। 16 ग़रज़ हम शहन्शाह को इत्तिला देते हैं कि अगर यरूशलम को दुबारा तामीर किया जाए और उस की फ़सील तक्मील तक पहुँचे तो दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े पर आप का क़ाबू जाता रहेगा।"

17 शहन्शाह ने जवाब में लिखा,

"मैं यह ख़त रहूम गवर्नर, शम्सी मीरमुन्शी और सामरिया और दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिब में रहने वाले उन के हमख़िदमत अफ़सरों को लिख रहा हूँ।

आप को सलाम! 18 आप के ख़त का तर्जुमा मेरी मौजूदगी में हुआ है और उसे मेरे सामने पढ़ा गया है। 19 मेरे हुक्म पर यरूशलम के बारे में मालूमात हासिल की गई हैं। मालूम हुआ कि वाक़ई यह शहर क़दीम ज़माने से बादशाहों की मुख़ालफ़त करके सरकशी और बग़ावत का मम्बा रहा है। 20 नीज़, यरूशलम ताक़तवर बादशाहों का दार-उल-हकूमत रहा है। उन की इतनी ताक़त थी कि दरया-ए-फ़ुरात के पूरे मग़रिबी इलाक़े को उन्हें मुख़्तलिफ़ क़िस्म के टैक्स और ख़राज अदा करना पड़ा। 21 चुनाँचे अब हुक्म दें कि यह आदमी शहर की तामीर करने से बाज़ आएँ। जब तक मैं ख़ुद हुक्म न दूँ उस वक़्त तक शहर को नए सिरे से तामीर करने की इजाज़त नहीं है। 22 ध्यान दें कि इस हुक्म की तक्मील में सुस्ती न की जाए, ऐसा न हो कि शहन्शाह को बड़ा नुक़्सान पहुँचे।"

23 जूँ ही ख़त की कापी रहूम, शम्सी और उन के हमख़िदमत अफ़सरों को पढ़ कर सुनाई गई तो वह यरूशलम के लिए रवाना हुए और यहूदियों को ज़बरदस्ती काम जारी रखने से रोक दिया।

24 चुनाँचे यरूशलम में अल्लाह के घर का तामीरी काम रुक गया, और वह फ़ार्स के बादशाह दारा की हुकूमत के दूसरे साल तक रुका रहा।

रब के घर की तामीर दुबारा शुरू होती है

5 1 एक दिन दो नबी बनाम हज्जी और ज़करियाह बिन इद्दू उठ कर इस्राईल के ख़ुदा के नाम में जो उन के ऊपर था यहूदाह और यरूशलम के यहूदियों के सामने नबुव्वत करने लगे। 2 उन के हौसलाअफ़ज़ा अल्फ़ाज़ सुन कर ज़रुब्बाबल बिन सियाल्तीएल और यशूअ बिन यूसदक़ ने फ़ैसला किया कि हम दुबारा यरूशलम में अल्लाह के घर की तामीर शुरू करेंगे। दोनों नबी इस में उन के साथ थे और उन की मदद करते रहे।

3 लेकिन जूँ ही काम शुरू हुआ तो दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर तत्तनी और शतर-बोज़नी अपने हमख़िदमत अफ़सरों समेत यरूशलम पहुँचे। उन्हों ने पूछा, "किस ने आप को यह घर बनाने और इस का ढाँचा तक्मील तक पहुँचाने की इजाज़त दी? 4 इस काम के लिए ज़िम्मादार आदमियों के नाम हमें बताएँ!" 5 लेकिन उन का ख़ुदा यहूदाह के बुज़ुर्गों की निगरानी कर रहा था, इस लिए उन्हें रोका न गया। क्यूँकि लोगों ने सोचा कि पहले दारा बादशाह को इत्तिला दी जाए। जब तक वह फ़ैसला न करे उस वक़्त तक काम रोका न जाए।

6 फिर दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर तत्तनी, शतर-बोज़नी और उन के हमख़िदमत अफ़सरों ने दारा बादशाह को ज़ैल का ख़त भेजा,

7 "दारा बादशाह को दिल की गहराइयों से सलाम कहते हैं! 8 शहन्शाह को इल्म हो कि सूबा यहूदाह में जा कर हम ने देखा कि वहाँ अज़ीम ख़ुदा का घर बनाया जा रहा है। उस के लिए बड़े तराशे हुए पत्थर इस्तेमाल हो रहे हैं और दीवारों में शहतीर लगाए जा रहे हैं। लोग बड़ी जाँफ़िशानी से काम कर रहे हैं, और मकान उन की मेहनत के बाइस तेज़ी से बन रहा है। 9 हम ने बुज़ुर्गों से पूछा, 'किस ने आप को यह घर

बनाने और इस का ढाँचा तक्मील तक पहुँचाने की
इजाज़त दी है?' 10 हम ने उन के नाम भी मालूम किए
ताकि लिख कर आप को भेज सकें। 11 उन्हों ने हमें
जवाब दिया,

'हम आसमान-ओ-ज़मीन के ख़ुदा के ख़ादिम हैं,
और हम उस घर को अज़ सर-ए-नौ तामीर कर रहे
हैं जो बहुत साल पहले यहाँ क़ाइम था। इस्राईल के
एक अज़ीम बादशाह ने उसे क़दीम ज़माने में बना कर
तक्मील तक पहुँचाया था। 12 लेकिन हमारे बापदादा
ने आसमान के ख़ुदा को तैश दिलाया, और नतीजे
में उस ने उन्हें बाबल के बादशाह नबूकद्नज़्ज़र के
हवाले कर दिया जिस ने रब के घर को तबाह कर
दिया और क़ौम को क़ैद करके बाबल में बसा दिया।
13 लेकिन बाद में जब ख़ोरस बादशाह बन गया तो
उस ने अपनी हुकूमत के पहले साल में हुक्म दिया
कि अल्लाह के इस घर को दुबारा तामीर किया जाए।
14 साथ साथ उस ने सोने-चाँदी की वह चीज़ें वापस
कर दीं जो नबूकद्नज़्ज़र ने यरूशलम में अल्लाह के
घर से लूट कर बाबल के मन्दिर में रख दी थीं।
ख़ोरस ने यह चीज़ें एक आदमी के सपुर्द कर दीं जिस
का नाम शेस्बज़्ज़र था और जिसे उस ने यहूदाह का
गवर्नर मुक़र्रर किया था। 15 उस ने उसे हुक्म दिया कि
सामान को यरूशलम ले जाओ और रब के घर को
पुरानी जगह पर अज़ सर-ए-नौ तामीर करके यह चीज़ें
उस में महफ़ूज़ रखो। 16 तब शेस्बज़्ज़र ने यरूशलम
आ कर अल्लाह के घर की बुन्याद रखी। उसी वक़्त
से यह इमारत ज़ेर-ए-तामीर है, अगरचे यह आज तक
मुकम्मल नहीं हुई।'

17 चुनाँचे अगर शहन्शाह को मन्ज़ूर हो तो वह
तफ़्तीश करें कि क्या बाबल के शाही दफ़्तर में कोई
ऐसी दस्तावेज़ मौजूद है जो इस बात की तस्दीक़ करे
कि ख़ोरस बादशाह ने यरूशलम में रब के घर को
अज़ सर-ए-नौ तामीर करने का हुक्म दिया। गुज़ारिश
है कि शहन्शाह हमें अपना फ़ैसला पहुँचा दें।"

दारा बादशाह यहूदियों की मदद करता है

6 1 तब दारा बादशाह ने हुक्म दिया कि बाबल
के ख़ज़ाने के दफ़्तर में तफ़्तीश की जाए। इस
का खोज लगाते लगाते 2 आख़िरकार मादी शहर
इक्बताना के क़िले में तूमार मिल गया जिस में लिखा
था,

3 "ख़ोरस बादशाह की हुकूमत के पहले साल में
शहन्शाह ने हुक्म दिया कि यरूशलम में अल्लाह के घर
को उस की पुरानी जगह पर नए सिरे से तामीर किया
जाए ताकि वहाँ दुबारा क़ुर्बानियाँ पेश की जा सकें।
उस की बुन्याद रखने के बाद उस की ऊँचाई 90 और
चौड़ाई 90 फ़ुट हो। 4 दीवारों को यूँ बनाया जाए कि
तराशे हुए पत्थरों के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के
शहतीरों का एक रद्दा लगाया जाए। अख़्राजात शाही
ख़ज़ाने से पूरे किए जाएँ। 5 नीज़ सोने-चाँदी की जो
चीज़ें नबूकद्नज़्ज़र यरूशलम के इस घर से निकाल
कर बाबल लाया वह वापस पहुँचाई जाएँ। हर चीज़
अल्लाह के घर में उस की अपनी जगह पर वापस रख
दी जाए।"

6 यह ख़बर पढ़ कर दारा ने दरया-ए-फ़ुरात के
मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर तत्तनी, शतर-बोज़नी और
उन के हमख़िदमत अफ़्सरों को ज़ैल का जवाब भेज
दिया,

"अल्लाह के इस घर की तामीर में मुदाख़लत मत
करना! 7 लोगों को काम जारी रखने दें। यहूदियों का
गवर्नर और उन के बुज़ुर्ग अल्लाह का यह घर उस की
पुरानी जगह पर तामीर करें।

8 न सिर्फ़ यह बल्कि मैं हुक्म देता हूँ कि आप
इस काम में बुज़ुर्गों की मदद करें। तामीर के तमाम
अख़्राजात वक़्त पर मुहय्या करें ताकि काम न रुके।
यह पैसे शाही ख़ज़ाने यानी दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिबी
इलाक़े से जमा किए गए टैक्सों में से अदा किए जाएँ।
9 रोज़-ब-रोज़ इमामों को भस्म होने वाली क़ुर्बानियों
के लिए दरकार तमाम चीज़ें मुहय्या करते रहें, ख़्वाह
वह जवान बैल, मेंढे, भेड़ के बच्चे, गन्दुम, नमक,

मै या ज़ैतून का तेल क्यूँ न माँगें। इस में सुस्ती न
करें 10 ताकि वह आसमान के ख़ुदा को पसन्दीदा
क़ुर्बानियाँ पेश करके शहन्शाह और उस के बेटों की
सलामती के लिए दुआ कर सकें।

11 इस के इलावा मैं हुक्म देता हूँ कि जो भी इस
फ़रमान की ख़िलाफ़वरज़ी करे उस के घर से शहतीर
निकाल कर खड़ा किया जाए और उसे उस पर
मस्लूब किया जाए। साथ साथ उस के घर को मल्बे
का ढेर बनाया जाए। 12 जिस ख़ुदा ने वहाँ अपना नाम
बसाया है वह हर बादशाह और क़ौम को हलाक करे
जो मेरे इस हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी करके यरूशलम
के घर को तबाह करने की जुरअत करे। मैं, दारा ने
यह हुक्म दिया है। इसे हर तरह से पूरा किया जाए।”

रब के घर की मख़्सूसियत

13 दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर
तत्तनी, शतर-बोज़नी और उन के हमख़िदमत अफ़्सरों
ने हर तरह से दारा बादशाह के हुक्म की तामील
की। 14 चुनाँचे यहूदी बुज़ुर्ग रब के घर पर काम जारी
रख सके। दोनों नबी हज्जी और ज़करियाह बिन इद्दू
अपनी नबुव्वतों से उन की हौसलाअफ़्ज़ाई करते रहे,
और यूँ सारा काम इस्राईल के ख़ुदा और फ़ार्स के
बादशाहों ख़ोरस, दारा और अर्तख़्शस्ता के हुक्म के
मुताबिक़ ही मुकम्मल हुआ।

15 रब का घर दारा बादशाह की हुकूमत के छटे
साल में तक्मील तक पहुँचा। अदार के महीने का
तीसरा दिन [q]था। 16 इस्राईलियों ने इमामों, लावियों
और जिलावतनी से वापस आए हुए इस्राईलियों
समेत बड़ी ख़ुशी से रब के घर की मख़्सूसियत की ईद
मनाई। 17 उन्हों ने 100 बैल, 200 मेंढे और भेड़ के
400 बच्चे क़ुर्बान किए। पूरे इस्राईल के लिए गुनाह
की क़ुर्बानी भी पेश की गई, और इस के लिए फ़ी
क़बीला एक बकरा यानी मिल कर 12 बकरे चढ़ाए
गए। 18 फिर इमामों और लावियों को रब के घर की
ख़िदमत के मुख़्तलिफ़ गुरोहों में तक़्सीम किया गया,
जिस तरह मूसा की शरीअत हिदायत देती है।

इस्राईली फ़सह की ईद मनाते हैं

19 पहले महीने के 14वें दिन [r]जिलावतनी से वापस
आए हुए इस्राईलियों ने फ़सह की ईद मनाई। 20 तमाम
इमामों और लावियों ने अपने आप को पाक-साफ़
कर रखा था। सब के सब पाक थे। लावियों ने फ़सह
के लेले जिलावतनी से वापस आए हुए इस्राईलियों,
उन के भाइयों यानी इमामों और अपने लिए ज़बह
किए। 21 लेकिन न सिर्फ़ जिलावतनी से वापस आए
हुए इस्राईली इस खाने में शरीक हुए बल्कि मुल्क के
वह तमाम लोग भी जो ग़ैरयहूदी क़ौमों की नापाक
राहों से अलग हो कर उन के साथ रब इस्राईल के
ख़ुदा के तालिब हुए थे। 22 उन्हों ने सात दिन बड़ी
ख़ुशी से बेख़मीरी रोटी की ईद मनाई। रब ने उन के
दिलों को ख़ुशी से भर दिया था, क्यूँकि उस ने फ़ार्स
के बादशाह का दिल उन की तरफ़ माइल कर दिया
था ताकि उन्हें इस्राईल के ख़ुदा के घर को तामीर
करने में मदद मिले।

अज़्रा इमाम को यरूशलम भेजा जाता है

7 1 इन वाक़िआत के काफ़ी अर्से बाद एक
आदमी बनाम अज़्रा बाबल को छोड़ कर
यरूशलम आया। उस वक़्त फ़ार्स के बादशाह
अर्तख़्शस्ता की हुकूमत थी। आदमी का पूरा
नाम अज़्रा बिन सिरायाह बिन अज़रियाह बिन
ख़िलक़ियाह 2 बिन सल्लूम बिन सदोक़ बिन अख़ीतूब
3 बिन अमरियाह बिन अज़रियाह बिन मिरायोत 4 बिन
ज़रख़ियाह बिन उज़्ज़ी बिन बुक़्क़ी 5 बिन अबीसूअ
बिन फ़ीन्हास बिन इलीअज़र बिन हारून था। (हारून
इमाम-ए-आज़म था)।

6 अज़्रा पाक नविश्तों का उस्ताद और उस शरीअत
का आलिम था जो रब इस्राईल के ख़ुदा ने मूसा

[q]12 मार्च।

[r]21 अप्रैल।

की मारिफ़त दी थी। जब अज़्रा बाबल से यरूशलम
के लिए रवाना हुआ तो शहन्शाह ने उस की हर
ख़्वाहिश पूरी की, क्यूँकि रब उस के ख़ुदा का
शफ़ीक़ हाथ उस पर था। 7 कई इस्राईली उस के
साथ गए। इमाम, लावी, गुलूकार और रब के घर
के दरबान और ख़िदमतगार भी उन में शामिल थे।
यह अर्तख़्शस्ता बादशाह की हुकूमत के सातवें साल
में हुआ। 8–9 क़ाफ़िला पहले महीने के पहले दिन
[s]बाबल से रवाना हुआ और पाँचवें महीने के पहले
दिन [t]सहीह-सलामत यरूशलम पहुँचा, क्यूँकि अल्लाह
का शफ़ीक़ हाथ अज़्रा पर था। 10 वजह यह थी
कि अज़्रा ने अपने आप को रब की शरीअत की
तफ़्तीश करने, उस के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने और
इस्राईलियों को उस के अह्काम और हिदायात की
तालीम देने के लिए वक़्फ़ किया था।

शहन्शाह अज़्रा को मुख़्तारनामा देता है

11 अर्तख़्शस्ता बादशाह ने अज़्रा इमाम को ज़ैल का
मुख़्तारनामा दे दिया, उसी अज़्रा को जो पाक नविश्तों
का उस्ताद और उन अह्काम और हिदायात का
आलिम था जो रब ने इस्राईल को दी थीं। मुख़्तारनामे
में लिखा था,

12 "अज़ : शहन्शाह अर्तख़्शस्ता

अज़्रा इमाम को जो आसमान के ख़ुदा की शरीअत
का आलिम है, सलाम! 13 मैं हुक्म देता हूँ कि अगर
मेरी सल्तनत में मौजूद कोई भी इस्राईली आप के
साथ यरूशलम जा कर वहाँ रहना चाहे तो वह जा
सकता है। इस में इमाम और लावी भी शामिल हैं,
14 शहन्शाह और उस के सात मुशीर आप को यहूदाह
और यरूशलम भेज रहे हैं ताकि आप अल्लाह की
उस शरीअत की रौशनी में जो आप के हाथ में है
यहूदाह और यरूशलम का हाल जाँच लें। 15 जो
सोना-चाँदी शहन्शाह और उस के मुशीरों ने अपनी
ख़ुशी से यरूशलम में सुकूनत करने वाले इस्राईल के
ख़ुदा के लिए क़ुर्बान की है उसे अपने साथ ले जाएँ।
16 नीज़, जितनी भी सोना-चाँदी आप को सूबा बाबल
से मिल जाएगी और जितने भी हदिए क़ौम और इमाम
अपनी ख़ुशी से अपने ख़ुदा के घर के लिए जमा करें
उन्हें अपने साथ ले जाएँ। 17 उन पैसों से बैल, मेंढे,
भेड़ के बच्चे और उन की क़ुर्बानियों के लिए दरकार
ग़ल्ला और मै की नज़रें ख़रीद लें, और उन्हें यरूशलम
में अपने ख़ुदा के घर की क़ुर्बानगाह पर क़ुर्बान करें।
18 जो पैसे बच जाएँ उन को आप और आप के भाई
वैसे ख़र्च कर सकते हैं जैसे आप को मुनासिब लगे।
शर्त यह है कि आप के ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़
हो। 19 यरूशलम में अपने ख़ुदा को वह तमाम चीज़ें
पहुँचाएँ जो आप को रब के घर में ख़िदमत के लिए
दी जाएँगी। 20 बाक़ी जो कुछ भी आप को अपने ख़ुदा
के घर के लिए ख़रीदना पड़े उस के पैसे शाही ख़ज़ाना
अदा करेगा।

21 मैं, अर्तख़्शस्ता बादशाह दरया-ए-फ़ुरात के
मग़रिब में रहने वाले तमाम ख़ज़ानचियों को हुक्म
देता हूँ कि हर तरह से अज़्रा इमाम की माली मदद
करें। जो भी आसमान के ख़ुदा की शरीअत का
यह उस्ताद माँगे वह उसे दिया जाए। 22 उसे 3,400
किलोग्राम चाँदी, 16,000 किलोग्राम गन्दुम, 2,200
लिटर मै और 2,200 लिटर ज़ैतून का तेल तक देना।
नमक उसे उतना मिले जितना वह चाहे। 23 ध्यान से
सब कुछ मुहय्या करें जो आसमान का ख़ुदा अपने
घर के लिए माँगे। ऐसा न हो कि शहन्शाह और उस
के बेटों की सल्तनत उस के ग़ज़ब का निशाना बन
जाए। 24 नीज़, आप को इल्म हो कि आप को अल्लाह
के इस घर में ख़िदमत करने वाले किसी शख़्स से भी
ख़राज या किसी क़िस्म का टैक्स लेने की इजाज़त
नहीं है, ख़्वाह वह इमाम, लावी, गुलूकार, रब के घर
का दरबान या उस का ख़िदमतगार हो।

25 ऐ अज़्रा, जो हिक्मत आप के ख़ुदा ने आप को
अता की है उस के मुताबिक़ मजिस्ट्रेट और क़ाज़ी

[s]8 अप्रैल।

[t]4 अगस्त।

मुक़र्रर करें जो आप की क़ौम के उन लोगों का
इन्साफ़ करें जो दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिब में रहते
हैं। जितने भी आप के ख़ुदा के अह्काम जानते हैं
वह इस में शामिल हैं। और जितने इन अह्काम से
वाक़िफ़ नहीं हैं उन्हें आप को तालीम देनी है। 26 जो
भी आप के ख़ुदा की शरीअत और शहन्शाह के
क़ानून की ख़िलाफ़वरज़ी करे उसे सख़्ती से सज़ा दी
जाए। जुर्म की सन्जीदगी का लिहाज़ करके उसे या
तो सज़ा-ए-मौत दी जाए या जिलावतन किया जाए,
उस की मिलकियत ज़ब्त की जाए या उसे जेल में
डाला जाए।”

अज़्रा की सताइश

27 रब हमारे बापदादा के ख़ुदा की तम्जीद हो जिस
ने शहन्शाह के दिल को यरूशलम में रब के घर
को शानदार बनाने की तहरीक दी है। 28 उसी ने
शहन्शाह, उस के मुशीरों और तमाम असर-ओ-रसूख़
रखने वाले अफ़सरों के दिलों को मेरी तरफ़ माइल
कर दिया है। चूँकि रब मेरे ख़ुदा का शफ़ीक़ हाथ
मुझ पर था इस लिए मेरा हौसला बढ़ गया, और मैं
ने इस्राईल के ख़ानदानी सरपरस्तों को अपने साथ
इस्राईल वापस जाने के लिए जमा किया।

अज़्रा के साथ जिलावतनी से वापस आने वालों की फ़हरिस्त

8 1 दर्ज-ए-ज़ैल उन ख़ानदानी सरपरस्तों की
फ़हरिस्त है जो अर्तख़्शस्ता बादशाह की
हुकूमत के दौरान मेरे साथ बाबल से यरूशलम के
लिए रवाना हुए। हर ख़ानदान के मर्दों की तादाद भी
दर्ज है :

2–3 फ़ीन्हास के ख़ानदान का जैर्सोम,
इतमर के ख़ानदान का दान्याल,
दाऊद के ख़ानदान का हत्तूश बिन सकनियाह,
परऊस के ख़ानदान का ज़करियाह। 150 मर्द उस
के साथ नसबनामे में दर्ज थे।

4 पख़त-मोआब के ख़ानदान का इलीहूऐनी बिन
ज़रख़ियाह 200 मर्दों के साथ,
5 ज़त्तू के ख़ानदान का सकनियाह बिन यहज़ीएल
300 मर्दों के साथ,
6 अदीन के ख़ानदान का अबद बिन यूनतन 50 मर्दों
के साथ,
7 ऐलाम के ख़ानदान का यसायाह बिन अतलियाह
70 मर्दों के साथ,
8 सफ़तियाह के ख़ानदान का ज़बदियाह बिन
मीकाएल 80 मर्दों के साथ,
9 योआब के ख़ानदान का अबदियाह बिन यहीएल
218 मर्दों के साथ,
10 बानी के ख़ानदान का सलूमीत बिन यूसिफ़याह
160 मर्दों के साथ,
11 बबी के ख़ानदान का ज़करियाह बिन बबी 28
मर्दों के साथ,
12 अज़्जाद के ख़ानदान का यूहनान बिन हक़्क़ातान
110 मर्दों के साथ,
13 अदूनिक़ाम के ख़ानदान के आख़िरी लोग
इलीफ़लत, यईएल और समायाह 60 मर्दों के साथ,
14 बिग्वई का ख़ानदान का ऊती और ज़बूद 70 मर्दों
के साथ।

15 मैं यानी अज़्रा ने मज़कूरा लोगों को उस नहर के
पास जमा किया जो अहावा की तरफ़ बहती है। वहाँ
हम ख़ैमे लगा कर तीन दिन ठहरे रहे। इस दौरान मुझे
पता चला कि गो आम लोग और इमाम आ गए हैं
लेकिन एक भी लावी हाज़िर नहीं है। 16 चुनाँचे मैं
ने इलीअज़र, अरीएल, समायाह, इल्नातन, यरीब,
इल्नातन, नातन, ज़करियाह और मसुल्लाम को अपने
पास बुला लिया। यह सब ख़ानदानी सरपरस्त थे
जबकि शरीअत के दो उस्ताद बनाम यूयारीब और
इल्नातन भी साथ थे। 17 मैं ने उन्हें लावियों की
आबादी कासिफ़ियाह के बुज़ुर्ग इद्दू के पास भेज कर
वह कुछ बताया जो उन्हें इद्दू, उस के भाइयों और

रब के घर के ख़िदमतगारों को बताना था ताकि वह
हमारे ख़ुदा के घर के लिए ख़िदमतगार भेजें।
18 अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ हम पर था, इस लिए
उन्हों ने हमें महली बिन लावी बिन इस्राईल के
ख़ानदान का समझदार आदमी सरिबियाह भेज दिया।
सरिबियाह अपने बेटों और भाइयों के साथ पहुँचा।
कुल 18 मर्द थे। 19 इन के इलावा मिरारी के ख़ानदान
के हसबियाह और यसायाह को भी उन के बेटों और
भाइयों के साथ हमारे पास भेजा गया। कुल 20 मर्द
थे। 20 उन के साथ रब के घर के 220 ख़िदमतगार थे।
इन के तमाम नाम नसबनामे में दर्ज थे। दाऊद और
उस के मुलाज़िमों ने उन के बापदादा को लावियों
की ख़िदमत करने की ज़िम्मादारी दी थी।

यरूशलम के लिए रवानगी की तय्यारियाँ

21 वहीं अहावा की नहर के पास ही मैं ने एलान
किया कि हम सब रोज़ा रख कर अपने आप को
अपने ख़ुदा के सामने पस्त करें और दुआ करें कि वह
हमें हमारे बाल-बच्चों और सामान के साथ सलामती
से यरूशलम पहुँचाए। 22 क्यूँकि हमारे साथ फ़ौजी
और घुड़सवार नहीं थे जो हमें रास्ते में डाकुओं से
महफ़ूज़ रखते। बात यह थी कि मैं शहन्शाह से यह
माँगने से शर्म महसूस कर रहा था, क्यूँकि हम ने उसे
बताया था, "हमारे ख़ुदा का शफ़ीक़ हाथ हर एक पर
ठहरता है जो उस का तालिब रहता है। लेकिन जो
भी उसे तर्क करे उस पर उस का सख़्त ग़ज़ब नाज़िल
होता है।" 23 चुनाँचे हम ने रोज़ा रख कर अपने ख़ुदा
से इल्तिमास की कि वह हमारी हिफ़ाज़त करे, और
उस ने हमारी सुनी।
24 फिर मैं ने इमामों के 12 राहनुमाओं को चुन
लिया, नीज़ सरिबियाह, हसबियाह और मज़ीद 10
लावियों को। 25 उन की मौजूदगी में मैं ने सोना-चाँदी
और बाक़ी तमाम सामान तोल लिया जो शहन्शाह,
उस के मुशीरों और अफ़्सरों और वहाँ के तमाम
इस्राईलियों ने हमारे ख़ुदा के घर के लिए अता किया
था।
26 मैं ने तोल कर ज़ैल का सामान उन के हवाले
कर दिया : तक़रीबन 22,000 किलोग्राम चाँदी, चाँदी
का कुछ सामान जिस का कुल वज़न तकरीन 3,400
किलोग्राम था, 3,400 किलोग्राम सोना, 27 सोने के
20 प्याले जिन का कुल वज़न तक़रीबन साढ़े 8
किलोग्राम था, और पीतल के दो पालिश किए हुए
प्याले जो सोने के प्यालों जैसे क़ीमती थे।
28 मैं ने आदमियों से कहा, "आप और यह तमाम
चीज़ें रब के लिए मख़्सूस हैं। लोगों ने अपनी ख़ुशी
से यह सोना-चाँदी रब आप के बापदादा के ख़ुदा के
लिए क़ुर्बान की है। 29 सब कुछ एहतियात से महफ़ूज़
रखें, और जब आप यरूशलम पहुँचेंगे तो इसे रब
के घर के ख़ज़ाने तक पहुँचा कर राहनुमा इमामों,
लावियों और ख़ानदानी सरपरस्तों की मौजूदगी में
दुबारा तोलना।"
30 फिर इमामों और लावियों ने सोना-चाँदी और
बाक़ी सामान ले कर उसे यरूशलम में हमारे ख़ुदा
के घर में पहुँचाने के लिए महफ़ूज़ रखा।

यरूशलम तक सफ़र

31 हम पहले महीने के 12वें दिन [u]अहावा नहर से
यरूशलम के लिए रवाना हुए। अल्लाह का शफ़ीक़
हाथ हम पर था, और उस ने हमें रास्ते में दुश्मनों
और डाकुओं से महफ़ूज़ रखा। 32 हम यरूशलम
पहुँचे तो पहले तीन दिन आराम किया। 33 चौथे
दिन हम ने अपने ख़ुदा के घर में सोना-चाँदी और
बाक़ी मख़्सूस सामान तोल कर इमाम मरीमोत बिन
ऊरियाह के हवाले कर दिया। उस वक़्त इलीअज़र
बिन फ़ीन्हास और दो लावी बनाम यूज़बद बिन
यशूअ और नौअदियाह बिन बिन्नूई उस के साथ थे।
34 हर चीज़ गिनी और तोली गई, फिर उस का पूरा
वज़न फ़हरिस्त में दर्ज किया गया।

---

[u] 19 अप्रैल।

35 इस के बाद जिलावतनी से वापस आए हुए
तमाम लोगों ने इस्राईल के ख़ुदा को भस्म होने वाली
क़ुर्बानियाँ पेश कीं। इस नाते से उन्हों ने पूरे इस्राईल
के लिए 12 बैल, 96 मेंढे, भेड़ के 77 बच्चे और गुनाह
की क़ुर्बानी के 12 बकरे क़ुर्बान किए।
36 मुसाफ़िरों ने दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े
के गवर्नरों और हाकिमों को शहन्शाह की हिदायात
पहुँचाईं। इन को पढ़ कर उन्हों ने इस्राईली क़ौम और
अल्लाह के घर की हिमायत की।

ग़ैरयहूदी बीवियों पर अफ़्सोस

9 1–2 कुछ देर बाद क़ौम के राहनुमा मेरे पास
आए और कहने लगे, "क़ौम के आम लोगों,
इमामों और लावियों ने अपने आप को मुल्क की
दीगर क़ौमों से अलग नहीं रखा, गो यह घिनौने
रस्म-ओ-रिवाज के पैरोकार हैं। उन की औरतों से
शादी करके उन्हों ने अपने बेटों की भी शादी उन
की बेटियों से कराई है। यूँ अल्लाह की मुक़द्दस
क़ौम कनआनियों, हित्तियों, फ़रिज़्ज़ियों, यबूसियों,
अम्मोनियों, मोआबियों, मिस्रियों और अमोरियों से
आलूदा हो गई है। और बुज़ुर्गों और अफ़्सरों ने इस
बेवफ़ाई में पहल की है!"
3 यह सुन कर मैं ने रंजीदा हो कर अपने कपड़ों को
फाड़ लिया और सर और दाढ़ी के बाल नोच नोच कर
नंगे फ़र्श पर बैठ गया। 4 वहाँ मैं शाम की क़ुर्बानी तक
बेहिस्स-ओ-हरकत बैठा रहा। इतने में बहुत से लोग
मेरे इर्दगिर्द जमा हो गए। वह जिलावतनी से वापस
आए हुए लोगों की बेवफ़ाई के बाइस थरथरा रहे थे,
क्यूँकि वह इस्राईल के ख़ुदा के जवाब से निहायत
ख़ौफ़ज़दा थे। 5 शाम की क़ुर्बानी के वक़्त मैं वहाँ से
उठ खड़ा हुआ जहाँ मैं तौबा की हालत में बैठा हुआ
था। वही फटे हुए कपड़े पहने हुए मैं घुटने टेक कर
झुक गया और अपने हाथों को आसमान की तरफ़
उठाए हुए रब अपने ख़ुदा से दुआ करने लगा,
6 "ऐ मेरे ख़ुदा, मैं निहायत शर्मिन्दा हूँ। अपना मुँह
तेरी तरफ़ उठाने की मुझ में जुरअत नहीं रही। क्यूँकि
हमारे गुनाहों का इतना बड़ा ढेर लग गया है कि वह
हम से ऊँचा है, बल्कि हमारा क़ुसूर आसमान तक
पहुँच गया है। 7 हमारे बापदादा के ज़माने से ले कर
आज तक हमारा क़ुसूर सन्जीदा रहा है। इसी वजह
से हम बार बार परदेसी हुक्मरानों के क़ब्ज़े में आए
हैं जिन्हों ने हमें और हमारे बादशाहों और इमामों
को क़त्ल किया, गिरिफ़्तार किया, लूट लिया और
हमारी बेहुरमती की। बल्कि आज तक हमारी हालत
यही रही है।
8 लेकिन इस वक़्त रब हमारे ख़ुदा ने थोड़ी देर के
लिए हम पर मेहरबानी की है। हमारी क़ौम के बचे-
खुचे हिस्से को उस ने रिहाई दे कर अपने मुक़द्दस
मक़ाम पर महफ़ूज़ रखा है। यूँ हमारे ख़ुदा ने हमारी
आँखों में दुबारा चमक पैदा की और हमें कुछ सुकून
मुहय्या किया है, गो हम अब तक ग़ुलामी में हैं।
9 बेशक हम ग़ुलाम हैं, तो भी अल्लाह ने हमें तर्क नहीं
किया बल्कि फ़ार्स के बादशाह को हम पर मेहरबानी
करने की तहरीक दी है। उस ने हमें अज़ सर-ए-नौ
ज़िन्दगी अता की है ताकि हम अपने ख़ुदा का घर
दुबारा तामीर और उस के खंडरात बहाल कर सकें।
अल्लाह ने हमें यहूदाह और यरूशलम में एक महफ़ूज़
चारदीवारी से घेर रखा है।
10 लेकिन ऐ हमारे ख़ुदा, अब हम क्या कहें? अपनी
इन हरकतों के बाद हम क्या जवाब दें? हम ने तेरे
उन अहकाम को नज़रअन्दाज़ किया है 11 जो तू ने
अपने ख़ादिमों यानी नबियों की मारिफ़त दिए थे।
तू ने फ़रमाया, 'जिस मुल्क में तुम दाख़िल हो रहे
हो ताकि उस पर क़ब्ज़ा करो वह उस में रहने वाली
क़ौमों के घिनौने रस्म-ओ-रिवाज के सबब से नापाक
है। मुल्क एक सिरे से दूसरे सिरे तक उन की नापाकी
से भर गया है। 12 लिहाज़ा अपनी बेटियों की उन
के बेटों के साथ शादी मत करवाना, न अपने बेटों
का उन की बेटियों के साथ रिश्ता बांधना। कुछ न
करो जिस से उन की सलामती और कामयाबी बढ़ती
जाए। तब ही तुम ताक़तवर हो कर मुल्क की अच्छी

पैदावार खाओगे, और तुम्हारी औलाद हमेशा तक
मुल्क की अच्छी चीज़ें विरासत में पाती रहेगी।'
13 अब हम अपनी शरीर हरकतों और बड़े क़ुसूर
की सज़ा भुगत रहे हैं, गो ऐ अल्लाह, तू ने हमें इतनी
सख़्त सज़ा नहीं दी जितनी हमें मिलनी चाहिए थी।
तू ने हमारा यह बचा-खुचा हिस्सा ज़िन्दा छोड़ा है।
14 तो क्या यह ठीक है कि हम तेरे अह्काम की
ख़िलाफ़वरज़ी करके ऐसी क़ौमों से रिश्ता बांधें जो
इस क़िस्म की घिनौनी हरकतें करती हैं? हरगिज़
नहीं! क्या इस का यह नतीजा नहीं निकलेगा कि
तेरा ग़ज़ब हम पर नाज़िल हो कर सब कुछ तबाह
कर देगा और यह बचा-खुचा हिस्सा भी ख़त्म हो
जाएगा? 15 ऐ रब इस्राईल के ख़ुदा, तू ही आदिल है।
आज हम बचे हुए हिस्से की हैसियत से तेरे हुज़ूर खड़े
हैं। हम क़ुसूरवार हैं और तेरे सामने क़ाइम नहीं रह
सकते।"

बुतपरस्त बीवियों को तलाक़

10 1 जब अज़्रा इस तरह दुआ कर रहा और
अल्लाह के घर के सामने पड़े हुए और रोते
हुए क़ौम के क़ुसूर का इक़्रार कर रहा था तो उस
के इर्दगिर्द इस्राईली मर्दों, औरतों और बच्चों का बड़ा
हुजूम जमा हो गया। वह भी फूट फूट कर रोने लगे।
2 फिर ऐलाम के ख़ानदान के सकनियाह बिन
यहीएल ने अज़्रा से कहा,
"वाक़ई हम ने पड़ोसी क़ौमों की औरतों से शादी
करके अपने ख़ुदा से बेवफ़ाई की है। तो भी अब तक
इस्राईल के लिए उम्मीद की किरन बाक़ी है। 3 आएँ,
हम अपने ख़ुदा से अह्द बांध कर वादा करें कि हम
उन तमाम औरतों को उन के बच्चों समेत वापस भेज
देंगे। जो भी मश्वरा आप और अल्लाह के अह्काम का
ख़ौफ़ मानने वाले दीगर लोग हमें देंगे वह हम करेंगे।
सब कुछ शरीअत के मुताबिक़ किया जाए। 4 अब
उठें! क्यूँकि यह मुआमला दुरुस्त करना आप ही का
फ़र्ज़ है। हम आप के साथ हैं, इस लिए हौसला रखें
और वह कुछ करें जो ज़रूरी है।"
5 तब अज़्रा उठा और राहनुमा इमामों, लावियों और
तमाम क़ौम को क़सम खिलाई कि हम सकनियाह के
मश्वरे पर अमल करेंगे। 6 फिर अज़्रा अल्लाह के घर के
सामने से चला गया और यूहनान बिन इलियासिब के
कमरे में दाख़िल हुआ। वहाँ उस ने पूरी रात कुछ
खाए पिए बग़ैर गुज़ारी। अब तक वह जिलावतनी से
वापस आए हुए लोगों की बेवफ़ाई पर मातम कर
रहा था।
7–8 सरकारी अफ़्सरों और बुज़ुर्गों ने फ़ैसला किया
कि यरूशलम और पूरे यहूदाह में एलान किया जाए,
"लाज़िम है कि जितने भी इस्राईली जिलावतनी से
वापस आए हैं वह सब तीन दिन के अन्दर अन्दर
यरूशलम में जमा हो जाएँ। जो भी इस दौरान
हाज़िर न हो उसे जिलावतनों की जमाअत से ख़ारिज
कर दिया जाएगा और उस की तमाम मिलकियत
ज़ब्त हो जाएगी।" 9 तब यहूदाह और बिनयमीन के
क़बीलों के तमाम आदमी तीन दिन के अन्दर अन्दर
यरूशलम पहुँचे। नवें महीने के बीसवें दिन [v]सब लोग
अल्लाह के घर के सहन में जमा हुए। सब मुआमले
की सन्जीदगी और मौसम के सबब से काँप रहे थे,
क्यूँकि बारिश हो रही थी।
10 अज़्रा इमाम खड़े हो कर कहने लगा, "आप
अल्लाह से बेवफ़ा हो गए हैं। ग़ैरयहूदी औरतों से रिश्ता
बांधने से आप ने इस्राईल के क़ुसूर में इज़ाफ़ा कर
दिया है। 11 अब रब अपने बापदादा के ख़ुदा के हुज़ूर
अपने गुनाहों का इक़्रार करके उस की मर्ज़ी पूरी करें।
पड़ोसी क़ौमों और अपनी परदेसी बीवियों से अलग
हो जाएँ।"
12 पूरी जमाअत ने बुलन्द आवाज़ से जवाब दिया,
"आप ठीक कहते हैं! लाज़िम है कि हम आप की
हिदायत पर अमल करें। 13 लेकिन यह कोई ऐसा
मुआमला नहीं है जो एक या दो दिन में दुरुस्त

[v] 19 सितम्बर।

किया जा सके। क्यूँकि हम बहुत लोग हैं और हम
से सन्जीदा गुनाह सरज़द हुआ है। नीज़, इस वक़्त
बरसात का मौसम है, और हम ज़्यादा देर तक
बाहर नहीं ठहर सकते। 14 बेहतर है कि हमारे बुज़ुर्ग
पूरी जमाअत की नुमाइन्दगी करें। फिर जितने भी
आदमियों की ग़ैरयहूदी बीवियाँ हैं वह एक मुक़र्ररा
दिन मक़ामी बुज़ुर्गों और क़ाज़ियों को साथ ले कर
यहाँ आएँ और मुआमला दुरुस्त करें। और लाज़िम
है कि यह सिलसिला उस वक़्त तक जारी रहे जब
तक रब का ग़ज़ब ठंडा न हो जाए।”

15 तमाम लोग मुत्तफ़िक़ हुए, सिर्फ़ यूनतन बिन
असाहेल और यहज़ियाह बिन तिक़्वा ने फ़ैसले की
मुख़ालफ़त की जबकि मसुल्लाम और सब्बती लावी
उन के हक़ में थे। 16–17 तो भी इस्राईलियों ने मन्सूबे
पर अमल किया। अज़्रा इमाम ने चन्द एक ख़ानदानी
सरपरस्तों के नाम ले कर उन्हें यह ज़िम्मादारी दी कि
जहाँ भी किसी यहूदी मर्द की ग़ैरयहूदी औरत से शादी
हुई है वहाँ वह पूरे मुआमले की तहक़ीक़ करें। उन
का काम दसवें महीने के पहले दिन [w]शुरू हुआ और
पहले महीने के पहले दिन [x]तक्मील तक पहुँचा।

18–19 दर्ज-ए-ज़ैल उन आदमियों की फ़हरिस्त है
जिन्हों ने ग़ैरयहूदी औरतों से शादी की थी। उन्हों
ने क़सम खा कर वादा किया कि हम अपनी बीवियों
से अलग हो जाएंगे। साथ साथ हर एक ने क़ुसूर की
क़ुर्बानी के तौर पर मेंढा क़ुर्बान किया।

इमामों में से क़ुसूरवार :

यशूअ बिन यूसदक़ और उस के भाई मासियाह,
इलीअज़र, यरीब और जिदलियाह,

20 इम्मेर के ख़ानदान का हनानी और ज़बदियाह,

21 हारिम के ख़ानदान का मासियाह, इल्यास,
समायाह, यहीएल और उज़्ज़ियाह,

22 फ़श्हूर के ख़ानदान का इलियूऐनी, मासियाह,
इस्माईल, नतनीएल, यूज़बद और इलिआसा।

23 लावियों में से क़ुसूरवार :

यूज़बद, सिमई, क़िलायाह यानी क़लीता,
फ़तहियाह, यहूदाह और इलीअज़र।

24 गुलूकारों में से क़ुसूरवार :

इलियासिब।

रब के घर के दरबानों में से क़ुसूरवार :

सल्लूम, तलम और ऊरी।

25 बाक़ी क़ुसूरवार इस्राईली :

परऊस के ख़ानदान का रमियाह, यज़्ज़ियाह,
मल्कियाह, मियामीन, इलीअज़र, मल्कियाह और
बिनायाह।

26 ऐलाम के ख़ानदान का मत्तनियाह, ज़करियाह,
यहीएल, अब्दी, यरीमोत और इल्यास,

27 ज़त्तू के ख़ानदान का इलियूऐनी, इलियासिब,
मत्तनियाह, यरीमोत, ज़बद और अज़ीज़ा।

28 बबी के ख़ानदान का यूहनान, हननियाह, ज़ब्बी
और अत्ली।

29 बानी के ख़ानदान का मसुल्लाम, मल्लूक, अदायाह,
यसूब, सियाल और यरीमोत।

30 पख़त-मोआब के ख़ानदान का अदना, किलाल,
बिनायाह, मासियाह, मत्तनियाह, बज़लीएल, बिन्नूई
और मनस्सी।

31 हारिम के ख़ानदान का इलीअज़र, यिस्सियाह,
मल्कियाह, समायाह, शमाऊन, 32 बिनयमीन, मल्लूक
और समरियाह।

33 हाशूम के ख़ानदान का मत्तनी, मत्तत्ताह, ज़बद,
इलीफ़लत, यरेमी, मनस्सी और सिमई।

34 बानी के ख़ानदान का मादी, अम्राम, ऊएल,
35 बिनायाह, बदियाह, कलूही, 36 वनियाह, मरीमोत,
इलियासिब, 37 मत्तनियाह, मत्तनी और यासी।

38 बिन्नूई के ख़ानदान का सिमई, 39 सलमियाह,
नातन, अदायाह, 40 मक्नदबी, सासी, सारी,
41 अज़रेल, सलमियाह, समरियाह, 42 सल्लूम,
अमरियाह और यूसुफ़।

---

[w] 29 दिसम्बर।

[x] 27 मार्च।

43 नबू के ख़ानदान का यईएल, मत्तितियाह, ज़बद,
ज़बीना, यद्दी, योएल और बिनायाह।

44 इन तमाम आदमियों की ग़ैरयहूदी औरतों से
शादी हुई थी, और उन के हाँ बच्चे पैदा हुए थे।

नहमियाह

नहमियाह यरूशलम के लिए दुआ करता है

1 [1] ज़ैल में नहमियाह बिन हकलियाह की रिपोर्ट
दर्ज है।
मैं अर्तख़्शस्ता बादशाह की हुकूमत के 20वें साल
किस्लेव के महीने में सोसन के क़िले में था [2] कि
एक दिन मेरा भाई हनानी मुझ से मिलने आया। उस
के साथ यहूदाह के चन्द एक आदमी थे। मैं ने उन
से पूछा, "जो यहूदी बच कर जिलावतनी से यहूदाह
वापस गए हैं उन का क्या हाल है? और यरूशलम
शहर का क्या हाल है?" [3] उन्हों ने जवाब दिया,
"जो यहूदी बच कर जिलावतनी से यहूदाह वापस
गए हैं उन का बहुत बुरा और ज़िल्लतआमेज़ हाल है।
यरूशलम की फ़सील अब तक ज़मीनबोस है, और
उस के तमाम दरवाज़े राख हो गए हैं।"
[4] यह सुन कर मैं बैठ कर रोने लगा। कई दिन मैं
रोज़ा रख कर मातम करता और आसमान के ख़ुदा
से दुआ करता रहा,
[5] "ऐ रब, आसमान के ख़ुदा, तू कितना अज़ीम और
महीब ख़ुदा है! जो तुझे प्यार और तेरे अह्काम की
पैरवी करते हैं उन के साथ तू अपना अह्द क़ाइम
रखता और उन पर मेहरबानी करता है। [6] मेरी बात
सुन कर ध्यान दे कि तेरा ख़ादिम किस तरह तुझ
से इल्तिमास कर रहा है। दिन रात मैं इस्राईलियों
के लिए जो तेरे ख़ादिम हैं दुआ करता हूँ। मैं इक़्रार
करता हूँ कि हम ने तेरा गुनाह किया है। इस में मैं
और मेरे बाप का घराना भी शामिल है। [7] हम ने तेरे
ख़िलाफ़ निहायत शरीर क़दम उठाए हैं, क्यूँकि जो
अह्काम और हिदायात तू ने अपने ख़ादिम मूसा को
दी थीं हम उन के ताबे न रहे। [8] लेकिन अब वह कुछ
याद कर जो तू ने अपने ख़ादिम को फ़रमाया, 'अगर
तुम बेवफ़ा हो जाओ तो मैं तुम्हें मुख़्तलिफ़ क़ौमों
में मुन्तशिर कर दूँगा, [9] लेकिन अगर तुम मेरे पास
वापस आ कर दुबारा मेरे अह्काम के ताबे हो जाओ
तो मैं तुम्हें तुम्हारे वतन में वापस लाऊँगा, ख़्वाह
तुम ज़मीन की इन्तिहा तक क्यूँ न पहुँच गए हो। मैं
तुम्हें उस जगह वापस लाऊँगा जिसे मैं ने चुन लिया
है ताकि मेरा नाम वहाँ सुकूनत करे।' [10] ऐ रब, यह
लोग तो तेरे अपने ख़ादिम हैं, तेरी अपनी क़ौम जिसे
तू ने अपनी अज़ीम क़ुदरत और क़वी हाथ से फ़िद्या
दे कर छुड़ाया है। [11] ऐ रब, अपने ख़ादिम और उन
तमाम ख़ादिमों की इल्तिमास सुन जो पूरे दिल से
तेरे नाम का ख़ौफ़ मानते हैं। जब तेरा ख़ादिम आज
शहन्शाह के पास होगा तो उसे कामयाबी अता कर।
बख़्श दे कि वह मुझ पर रहम करे।"
मैं ने यह इस लिए कहा कि मैं शहन्शाह का साक़ी
था।

नहमियाह को यरूशलम जाने की इजाज़त मिलती है

2 [1] चार महीने गुज़र गए। नीसान के महीने के एक
दिन जब मैं शहन्शाह अर्तख़्शस्ता को मै पिला
रहा था तो मेरी मायूसी उसे नज़र आई। पहले उस
ने मुझे कभी उदास नहीं देखा था, [2] इस लिए उस ने
पूछा, "आप इतने ग़मगीन क्यूँ दिखाई दे रहे हैं? आप
बीमार तो नहीं लगते बल्कि कोई बात आप के दिल
को तंग कर रही है।"
मैं सख़्त घबरा गया [3] और कहा, "शहन्शाह अबद
तक जीता रहे! मैं किस तरह ख़ुश हो सकता हूँ? जिस
शहर में मेरे बापदादा को दफ़नाया गया है वह मल्बे
का ढेर है, और उस के दरवाज़े राख हो गए हैं।"
[4] शहन्शाह ने पूछा, "तो फिर मैं किस तरह आप
की मदद करूँ?" ख़ामोशी से आसमान के ख़ुदा से
दुआ करके [5] मैं ने शहन्शाह से कहा, "अगर बात
आप को मन्ज़ूर हो और आप अपने ख़ादिम से ख़ुश

हों तो फिर बराह-ए-करम मुझे यहूदाह के उस शहर
भेज दीजिए जिस में मेरे बापदादा दफ़न हुए हैं ताकि
मैं उसे दुबारा तामीर करूँ।”
6 उस वक़्त मलिका भी साथ बैठी थी। शहन्शाह ने
सवाल किया, “सफ़र के लिए कितना वक़्त दरकार
है? आप कब तक वापस आ सकते हैं?” मैं ने
उसे बताया कि मैं कब तक वापस आऊँगा तो वह
मुत्तफ़िक़ हुआ। 7 फिर मैं ने गुज़ारिश की, “अगर बात
आप को मन्ज़ूर हो तो मुझे दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिबी
इलाक़े के गवर्नरों के लिए ख़त दीजिए ताकि वह
मुझे अपने इलाक़ों में से गुज़रने दें और मैं सलामती
से यहूदाह तक पहुँच सकूँ। 8 इस के इलावा शाही
जंगलात के निगरान आसफ़ के लिए ख़त लिखवाएँ
ताकि वह मुझे लकड़ी दे। जब मैं रब के घर के
साथ वाले क़िले के दरवाज़े, फ़सील और अपना घर
बनाऊँगा तो मुझे शहतीरों की ज़रूरत होगी।” अल्लाह
का शफ़ीक़ हाथ मुझ पर था, इस लिए शहन्शाह ने
मुझे यह ख़त दे दिए।
9 शहन्शाह ने फ़ौजी अफ़्सर और घुड़सवार भी
मेरे साथ भेजे। यूँ रवाना हो कर मैं दरया-ए-फ़ुरात
के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नरों के पास पहुँचा और
उन्हें शहन्शाह के ख़त दिए। 10 जब गवर्नर सन्बल्लत
हौरूनी और अम्मोनी अफ़्सर तूबियाह को मालूम
हुआ कि कोई इस्राईलियों की बहबूदी के लिए आ
गया है तो वह निहायत नाख़ुश हुए।

नहमियाह फ़सील का मुआइना करता है

11 सफ़र करते करते मैं यरूशलम पहुँच गया। तीन
दिन के बाद 12 मैं रात के वक़्त शहर से निकला।
मेरे साथ चन्द एक आदमी थे, और हमारे पास सिर्फ़
वही जानवर था जिस पर मैं सवार था। अब तक मैं ने
किसी को भी उस बोझ के बारे में नहीं बताया था जो
मेरे ख़ुदा ने मेरे दिल पर यरूशलम के लिए डाल दिया
था। 13 चुनाँचे मैं अंधेरे में वादी के दरवाज़े से शहर
से निकला और जुनूब की तरफ़ अज़दहे के चश्मे
से हो कर कचरे के दरवाज़े तक पहुँचा। हर जगह
मैं ने गिरी हुई फ़सील और भस्म हुए दरवाज़ों का
मुआइना किया। 14 फिर मैं शिमाल यानी चश्मे के
दरवाज़े और शाही तालाब की तरफ़ बढ़ा, लेकिन
मल्बे की कस्रत की वजह से मेरे जानवर को गुज़रने
का रास्ता न मिला, 15 इस लिए मैं वादी-ए-क़िद्रोन में
से गुज़रा। अब तक अंधेरा ही अंधेरा था। वहाँ भी मैं
फ़सील का मुआइना करता गया। फिर मैं मुड़ा और
वादी के दरवाज़े में से दुबारा शहर में दाख़िल हुआ।

फ़सील को तामीर करने का फ़ैसला

16 यरूशलम के अफ़्सरों को मालूम नहीं था कि मैं
कहाँ गया और क्या कर रहा था। अब तक मैं ने न
उन्हें और न इमामों या दीगर उन लोगों को अपने
मन्सूबे से आगाह किया था जिन्हें तामीर का यह
काम करना था। 17 लेकिन अब मैं उन से मुख़ातिब
हुआ, “आप को ख़ुद हमारी मुसीबत नज़र आती है।
यरूशलम मल्बे का ढेर बन गया है, और उस के
दरवाज़े राख हो गए हैं। आएँ, हम फ़सील को नए
सिरे से तामीर करें ताकि हम दूसरों के मज़ाक़ का
निशाना न बने रहें।” 18 मैं ने उन्हें बताया कि अल्लाह
का शफ़ीक़ हाथ किस तरह मुझ पर रहा था और
कि शहन्शाह ने मुझ से किस क़िस्म का वादा किया
था। यह सुन कर उन्हों ने जवाब दिया, “ठीक है,
आएँ हम तामीर का काम शुरू करें!” चुनाँचे वह इस
अच्छे काम में लग गए।
19 जब सन्बल्लत हौरूनी, अम्मोनी अफ़्सर तूबियाह
और जशम अरबी को इस की ख़बर मिली तो उन्हों
ने हमारा मज़ाक़ उड़ा कर हिक़ारतआमेज़ लहजे
में कहा, “यह तुम लोग क्या कर रहे हो? क्या
तुम शहन्शाह से ग़द्दारी करना चाहते हो?” 20 मैं ने
जवाब दिया, “आसमान का ख़ुदा हमें कामयाबी
अता करेगा। हम जो उस के ख़ादिम हैं तामीर का
काम शुरू करेंगे। जहाँ तक यरूशलम का ताल्लुक़ है,
न आज और न माज़ी में आप का कभी कोई हिस्सा
या हक़ था।”

फ़सील की तामीर-ए-नौ

3 1 इमाम-ए-आज़म इलियासिब बाक़ी इमामों के
साथ मिल कर तामीरी काम में लग गया। उन्हों
ने भेड़ के दरवाज़े को नए सिरे से बना दिया और उसे
मख़्सूस करके उस के किवाड़ लगा दिए। उन्हों ने
फ़सील के साथ वाले हिस्से को भी मिया बुर्ज और
हनन-एल के बुर्ज तक बना कर मख़्सूस किया।
2 यरीहू के आदमियों ने फ़सील के अगले हिस्से को
खड़ा किया जबकि ज़क्कूर बिन इम्री ने उन के हिस्से
से मुल्हिक़ हिस्से को तामीर किया।
3 मछली का दरवाज़ा सनाआह के ख़ानदान की
ज़िम्मादारी थी। उसे शहतीरों से बना कर उन्हों ने
किवाड़, चटख़्नियाँ और कुंडे लगा दिए।
4 अगले हिस्से की मरम्मत मरीमोत बिन ऊरियाह
बिन हक़्क़ूज़ ने की। अगला हिस्सा मसुल्लाम बिन
बरकियाह बिन मशेज़ब-एल की ज़िम्मादारी थी।
सदोक़ बिन बाना ने अगले हिस्से को तामीर किया।
5 अगला हिस्सा तक़ूअ के बाशिन्दों ने बनाया।
लेकिन शहर के बड़े लोग अपने बुज़ुर्गों के तहत काम
करने के लिए तय्यार न थे।
6 यसाना का दरवाज़ा योयदा बिन फ़ासिह और
मसुल्लाम बिन बसूदियाह की ज़िम्मादारी थी। उसे
शहतीरों से बना कर उन्हों ने किवाड़, चटख़्नियाँ
और कुंडे लगा दिए।
7 अगला हिस्सा मलतियाह जिबऊनी और यदून
मरूनोती ने खड़ा किया। यह लोग जिबऊन और
मिस्फ़ाह के थे, वही मिस्फ़ाह जहाँ दरया-ए-फ़ुरात
के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर का दार-उल-हकूमत
था।
8 अगले हिस्से की मरम्मत एक सुनार बनाम
उज़्ज़ीएल बिन हर्हियाह के हाथ में थी।
अगले हिस्से पर एक इत्रसाज़ बनाम हननियाह
मुक़र्रर था। इन लोगों ने फ़सील की मरम्मत 'मोटी
दीवार' तक की।
9 अगले हिस्से को रिफ़ायाह बिन हूर ने खड़ा
किया। यह आदमी ज़िला यरूशलम के आधे हिस्से
का अफ़्सर था।
10 यदायाह बिन हरूमफ़ ने अगले हिस्से की
मरम्मत की जो उस के घर के मुक़ाबिल था।
अगले हिस्से को हत्तूश बिन हसब्नियाह ने तामीर
किया।
11 अगले हिस्से को तनूरों के बुर्ज तक मल्कियाह
बिन हारिम और हस्सूब बिन पख़त-मोआब ने खड़ा
किया।
12 अगला हिस्सा सल्लूम बिन हल्लूहेश की ज़िम्मादारी
थी। यह आदमी ज़िला यरूशलम के दूसरे आधे
हिस्से का अफ़्सर था। उस की बेटियों ने उस की
मदद की।
13 हनून ने ज़नूह के बाशिन्दों समेत वादी के दरवाज़े
को तामीर किया। शहतीरों से उसे बना कर उन्हों
ने किवाड़, चटख़्नियाँ और कुंडे लगाए। इस के
इलावा उन्हों ने फ़सील को वहाँ से कचरे के दरवाज़े
तक खड़ा किया। इस हिस्से का फ़ासिला तक़रीबन
1,500 फ़ुट यानी आधा किलोमीटर था।
14 कचरे का दरवाज़ा मल्कियाह बिन रैकाब की
ज़िम्मादारी थी। यह आदमी ज़िला बैत-करम का
अफ़्सर था। उस ने उसे बना कर किवाड़, चटख़्नियाँ
और कुंडे लगाए।
15 चश्मे के दरवाज़े की तामीर सल्लून बिन कुल्होज़ा
के हाथ में थी जो ज़िला मिस्फ़ाह का अफ़्सर था।
उस ने दरवाज़े पर छत बना कर उस के किवाड़,
चटख़्नियाँ और कुंडे लगा दिए। साथ साथ उस ने
फ़सील के उस हिस्से की मरम्मत की जो शाही बाग़
के पास वाले तालाब से गुज़रता है। यह वही तालाब
है जिस में पानी नाले के ज़रीए पहुँचता है। सल्लून ने
फ़सील को उस सीढ़ी तक तामीर किया जो यरूशलम
के उस हिस्से से उतरती है जो 'दाऊद का शहर'
कहलाता है।
16 अगला हिस्सा नहमियाह बिन अज़्बुक की
ज़िम्मादारी थी जो ज़िला बैत-सूर के आधे हिस्से का

अफ़सर था। फ़सील का यह हिस्सा दाऊद बादशाह
के क़ब्रिस्तान के मुक़ाबिल था और मस्नूई तालाब
और सूरमाओं के कमरों पर ख़त्म हुआ।
17 ज़ैल के लावियों ने अगले हिस्सों को खड़ा किया
: पहले रहूम बिन बानी का हिस्सा था।
ज़िला क़ईला के आधे हिस्से के अफ़सर हसबियाह
ने अगले हिस्से की मरम्मत की। 18 अगले हिस्से
को लावियों ने बिन्नूई बिन हनदाद के ज़ेर-ए-निगरानी
खड़ा किया जो ज़िला क़ईला के दूसरे आधे हिस्से
पर मुक़र्रर था।
19 अगला हिस्सा मिस्फ़ाह के सरदार अज़र बिन
यशूअ की ज़िम्मादारी थी। यह हिस्सा फ़सील के
उस मोड़ पर था जहाँ रास्ता असलिहाख़ाने की तरफ़
चढ़ता है।
20 अगले हिस्से को बारूक बिन ज़ब्बी ने बड़ी
मेहनत से तामीर किया। यह हिस्सा फ़सील के मोड़
से शुरू हो कर इमाम-ए-आज़म इलियासिब के घर
के दरवाज़े पर ख़त्म हुआ।
21 अगला हिस्सा मरीमोत बिन ऊरियाह बिन
हक़्क़ूज़ की ज़िम्मादारी थी और इलियासिब के घर
के दरवाज़े से शुरू हो कर उस के कोने पर ख़त्म
हुआ।
22 ज़ैल के हिस्से उन इमामों ने तामीर किए जो शहर
के गिर्द-ओ-नवाह में रहते थे।
23 अगले हिस्से की तामीर बिनयमीन और हस्सूब
के ज़ेर-ए-निगरानी थी। यह हिस्सा उन के घरों के
सामने था।
अज़रियाह बिन मासियाह बिन अननियाह ने अगले
हिस्से की मरम्मत की। यह हिस्सा उस के घर के
पास ही था।
24 अगला हिस्सा बिन्नूई बिन हनदाद की ज़िम्मादारी
थी। यह अज़रियाह के घर से शुरू हुआ और मुड़ते
मुड़ते कोने पर ख़त्म हुआ।
25 अगला हिस्सा फ़ालाल बिन ऊज़ी की ज़िम्मादारी
थी। यह हिस्सा मोड़ से शुरू हुआ, और ऊपर का
जो बुर्ज शाही महल से उस जगह निकलता है जहाँ
मुहाफ़िज़ों का सहन है वह भी इस में शामिल था।
अगला हिस्सा फ़िदायाह बिन परऊस 26 और
ओफ़ल पहाड़ी पर रहने वाले रब के घर के
ख़िदमतगारों के ज़िम्मे था। यह हिस्सा पानी के
दरवाज़े और वहाँ से निकले हुए बुर्ज पर ख़त्म हुआ।
27 अगला हिस्सा इस बुर्ज से ले कर ओफ़ल पहाड़ी
की दीवार तक था। तक़ूअ के बाशिन्दों ने उसे तामीर
किया।
28 घोड़े के दरवाज़े से आगे इमामों ने फ़सील की
मरम्मत की। हर एक ने अपने घर के सामने का हिस्सा
खड़ा किया।
29 उन के बाद सदोक़ बिन इम्मेर का हिस्सा आया।
यह भी उस के घर के मुक़ाबिल था।
अगला हिस्सा समायाह बिन सकनियाह ने खड़ा
किया। यह आदमी मशरिक़ी दरवाज़े का पहरेदार
था।
30 अगला हिस्सा हननियाह बिन सलमियाह और
सलफ़ के छटे बेटे हनून के ज़िम्मे था।
अगला हिस्सा मसुल्लाम बिन बरकियाह ने तामीर
किया जो उस के घर के मुक़ाबिल था।
31 एक सुनार बनाम मल्कियाह ने अगले हिस्से की
मरम्मत की। यह हिस्सा रब के घर के ख़िदमतगारों
और ताजिरों के उस मकान पर ख़त्म हुआ जो पहरे
के दरवाज़े के सामने था। फ़सील के कोने पर वाक़े
बालाखाना भी इस में शामिल था।
32 आख़िरी हिस्सा भेड़ के दरवाज़े पर ख़त्म हुआ।
सुनारों और ताजिरों ने उसे खड़ा किया।

सन्बल्लत यहूदियों का मज़ाक़ उड़ाता है

4 1 जब सन्बल्लत को पता चला कि हम फ़सील
को दुबारा तामीर कर रहे हैं तो वह आग-
बगूला हो गया। हमारा मज़ाक़ उड़ा उड़ा कर 2 उस
ने अपने हमख़िदमत अफ़सरों और सामरिया के
फ़ौजियों की मौजूदगी में कहा, “यह ज़ईफ़ यहूदी
क्या कर रहे हैं? क्या यह वाक़ई यरूशलम की

क़िलाबन्दी करना चाहते हैं? क्या यह समझते हैं कि
चन्द एक क़ुर्बानियाँ पेश करके हम फ़सील को आज
ही खड़ा करेंगे? वह इन जले हुए पत्थरों और मल्बे
के इस ढेर से किस तरह नई दीवार बना सकते हैं?”
3 अम्मोनी अफ़सर तूबियाह उस के साथ खड़ा था।
वह बोला, “उन्हें करने दो! दीवार इतनी कमज़ोर
होगी कि अगर लोमड़ी भी उस पर छलाँग लगाए तो
गिर जाएगी।”

4 ऐ हमारे ख़ुदा, हमारी सुन, क्यूँकि लोग हमें हक़ीर
जानते हैं। जिन बातों से उन्हों ने हमें ज़लील किया है
वह उन की ज़िल्लत का बाइस बन जाएँ। बख़्श दे कि
लोग उन्हें लूट लें और उन्हें क़ैद करके जिलावतन
कर दें। 5 उन का क़ुसूर नज़रअन्दाज़ न कर बल्कि
उन के गुनाह तुझे याद रहें। क्यूँकि उन्हों ने फ़सील
को तामीर करने वालों को ज़लील करने से तुझे तैश
दिलाया है।

6 मुख़ालफ़त के बावुजूद हम फ़सील की मरम्मत
करते रहे, और होते होते पूरी दीवार की आधी ऊँचाई
खड़ी हुई, क्यूँकि लोग पूरी लगन से काम कर रहे थे।

दुश्मन के हम्लों की मुदाफ़अत

7 जब सन्बल्लत, तूबियाह, अरबों, अम्मोनियों और
अश्दूद के बाशिन्दों को इत्तिला मिली कि यरूशलम
की फ़सील की तामीर में तरक़्क़ी हो रही है बल्कि जो
हिस्से अब तक खड़े न हो सके थे वह भी बन्द होने
लगे हैं तो वह बड़े ग़ुस्से में आ गए। 8 सब मुत्तहिद
हो कर यरूशलम पर हम्ला करने और उस में गड़बड़
पैदा करने की साज़िशें करने लगे। 9 लेकिन हम ने
अपने ख़ुदा से इल्तिमास करके पहरेदार लगाए जो
हमें दिन रात उन से बचाए रखें।

10 उस वक़्त यहूदाह के लोग कराहने लगे,
“मज़दूरों की ताक़त ख़त्म हो रही है, और अभी तक
मल्बे के बड़े ढेर बाक़ी हैं। फ़सील को बनाना हमारे
बस की बात नहीं है।”

11 दूसरी तरफ़ दुश्मन कह रहे थे, “हम अचानक
उन पर टूट पड़ेंगे। उन को उस वक़्त पता चलेगा जब
हम उन के बीच में होंगे। तब हम उन्हें मार देंगे और
काम रुक जाएगा।”

12 जो यहूदी उन के क़रीब रहते थे वह बार बार
हमारे पास आ कर हमें इत्तिला देते रहे, “दुश्मन चारों
तरफ़ से आप पर हम्ला करने के लिए तय्यार खड़ा है।”

13 तब मैं ने लोगों को फ़सील के पीछे एक जगह
खड़ा कर दिया जहाँ दीवार सब से नीची थी, और वह
तलवारों, नेज़ों और कमानों से लेस अपने ख़ानदानों
के मुताबिक़ खुले मैदान में खड़े हो गए। 14 लोगों का
जाइज़ा ले कर मैं खड़ा हुआ और कहने लगा, “उन
से मत डरें! रब को याद करें जो अज़ीम और महीब
है। ज़हन में रखें कि हम अपने भाइयों, बेटों बेटियों,
बीवियों और घरों के लिए लड़ रहे हैं।”

15 जब हमारे दुश्मनों को मालूम हुआ कि उन की
साज़िशों की ख़बर हम तक पहुँच गई है और कि
अल्लाह ने उन के मन्सूबे को नाकाम होने दिया तो हम
सब अपनी अपनी जगह पर दुबारा तामीर के काम
में लग गए। 16 लेकिन उस दिन से मेरे जवानों का
सिर्फ़ आधा हिस्सा तामीरी काम में लगा रहा। बाक़ी
लोग नेज़ों, ढालों, कमानों और ज़िराबक्तर से लेस
पहरा देते रहे। अफ़सर यहूदाह के उन तमाम लोगों
के पीछे खड़े रहे 17 जो दीवार को तामीर कर रहे थे।
सामान उठाने वाले एक हाथ से हथियार पकड़े काम
करते थे। 18 और जो भी दीवार को खड़ा कर रहा
था उस की तलवार कमर में बंधी रहती थी। जिस
आदमी को तुरम बजा कर ख़तरे का एलान करना
था वह हमेशा मेरे साथ रहा। 19 मैं ने शुरफ़ा, बुज़ुर्गों
और बाक़ी लोगों से कहा, “यह काम बहुत ही बड़ा
और वसी है, इस लिए हम एक दूसरे से दूर और
बिखरे हुए काम कर रहे हैं। 20 जूँ ही आप को तुरम
की आवाज़ सुनाई दे तो भाग कर आवाज़ की तरफ़
चले आएँ। हमारा ख़ुदा हमारे लिए लड़ेगा!”

21 हम पौ फटने से ले कर उस वक़्त तक काम में
मसरूफ़ रहते जब तक सितारे नज़र न आते, और हर
वक़्त आदमियों का आधा हिस्सा नेज़े पकड़े पहरा
देता था। 22 उस वक़्त मैं ने सब को यह हुक्म भी

दिया, “हर आदमी अपने मददगारों के साथ रात का
वक़्त यरूशलम में गुज़ारे। फिर आप रात के वक़्त
पहरादारी में भी मदद करेंगे और दिन के वक़्त तामीरी
काम में भी।” 23 उन तमाम दिनों के दौरान न मैं, न मेरे
भाइयों, न मेरे जवानों और न मेरे पहरेदारों ने कभी
अपने कपड़े उतारे। नीज़, हर एक अपना हथियार
पकड़े रहा।

ग़रीबों का क़र्ज़ा मन्सूख़

5 1 कुछ देर बाद कुछ मर्द-ओ-ख़वातीन मेरे पास
आ कर अपने यहूदी भाइयों की शिकायत करने
लगे। 2 बाज़ ने कहा, “हमारे बहुत ज़्यादा बेटे-बेटियाँ
हैं, इस लिए हमें मज़ीद अनाज मिलना चाहिए, वर्ना
हम ज़िन्दा नहीं रहेंगे।” 3 दूसरों ने शिकायत की,
“काल के दौरान हमें अपने खेतों, अंगूर के बाग़ों
और घरों को गिरवी रखना पड़ा ताकि अनाज मिल
जाए।” 4 कुछ और बोले, “हमें अपने खेतों और अंगूर
के बाग़ों पर बादशाह का टैक्स अदा करने के लिए
उधार लेना पड़ा। 5 हम भी दूसरों की तरह यहूदी क़ौम
के हैं, और हमारे बच्चे उन से कम हैसियत नहीं रखते।
तो भी हमें अपने बच्चों को ग़ुलामी में बेचना पड़ता है
ताकि गुज़ारा हो सके। हमारी कुछ बेटियाँ लौंडियाँ
बन चुकी हैं। लेकिन हम ख़ुद बेबस हैं, क्यूँकि हमारे
खेत और अंगूर के बाग़ दूसरों के क़ब्ज़े में हैं।”

6 उन का वावैला और शिकायतें सुन कर मुझे
बड़ा ग़ुस्सा आया। 7 बहुत सोच-बिचार के बाद मैं
ने शुरफ़ा और अफ़सरों पर इल्ज़ाम लगाया, “आप
अपने हमवतन भाइयों से ग़ैरमुनासिब सूद ले रहे
हैं!” मैं ने उन से निपटने के लिए एक बड़ी जमाअत
इकट्ठी करके 8 कहा, “हमारे कई हमवतन भाइयों
को ग़ैरयहूदियों को बेचा गया था। जहाँ तक मुमकिन
था हम ने उन्हें वापस ख़रीद कर आज़ाद करने की
कोशिश की। और अब आप ख़ुद अपने हमवतन
भाइयों को बेच रहे हैं। क्या हम अब उन्हें दुबारा
वापस ख़रीदें?” वह ख़ामोश रहे और कोई जवाब न
दे सके।

9 मैं ने बात जारी रखी, “आप का यह सुलूक ठीक
नहीं। आप को हमारे ख़ुदा का ख़ौफ़ मान कर ज़िन्दगी
गुज़ारना चाहिए ताकि हम अपने ग़ैरयहूदी दुश्मनों की
लान-तान का निशाना न बनें। 10 मैं, मेरे भाइयों और
मुलाज़िमों ने भी दूसरों को उधार के तौर पर पैसे और
अनाज दिया है। लेकिन आएँ, हम उन से सूद न लें!
11 आज ही अपने क़र्ज़दारों को उन के खेत, घर और
अंगूर और ज़ैतून के बाग़ वापस कर दें। जितना सूद
आप ने लगाया था उसे भी वापस कर दें, ख़्वाह उसे
पैसों, अनाज, ताज़ा मै या ज़ैतून के तेल की सूरत में
अदा करना हो।” 12 उन्हों ने जवाब दिया, “हम उसे
वापस कर देंगे और आइन्दा उन से कुछ नहीं माँगेंगे।
जो कुछ आप ने कहा वह हम करेंगे।”

तब मैं ने इमामों को अपने पास बुलाया ताकि
शुरफ़ा और बुज़ुर्ग उन की मौजूदगी में कस्म खाएँ
कि हम ऐसा ही करेंगे। 13 फिर मैं ने अपने लिबास
की तहें झाड़ झाड़कर कहा, “जो भी अपनी क़सम
तोड़े उसे अल्लाह इसी तरह झाड़ कर उस के घर और
मिलकियत से महरूम कर दे!”

तमाम जमाशुदा लोग बोले, “आमीन, ऐसा ही हो!”
और रब की तारीफ़ करने लगे। सब ने अपने वादे पूरे
किए। 14

नहमियाह का अच्छा नमूना

मैं कुल बारह साल सूबा यहूदाह का गवर्नर रहा
यानी अर्तख़्शस्ता बादशाह की हुकूमत के 20वें साल
से उस के 32वें साल तक। इस पूरे अर्से में न मैं ने
और न मेरे भाइयों ने वह आम्दनी ली जो हमारे लिए
मुक़र्रर की गई थी। 15 असल में माज़ी के गवर्नरों ने
क़ौम पर बड़ा बोझ डाल दिया था। उन्हों ने रआया
से न सिर्फ़ रोटी और मै बल्कि फ़ी दिन चाँदी के 40
सिक्के भी लिए थे। उन के अफ़सरों ने भी आम लोगों से
ग़लत फ़ाइदा उठाया था। लेकिन चूँकि मैं अल्लाह का
ख़ौफ़ मानता था, इस लिए मैं ने उन से ऐसा सुलूक
न किया। 16 मेरी पूरी ताक़त फ़सील की तक्मील में
सर्फ़ हुई, और मेरे तमाम मुलाज़िम भी इस काम में

शरीक रहे। हम में से किसी ने भी ज़मीन न ख़रीदी।
17 मैं ने कुछ न माँगा हालाँकि मुझे रोज़ाना यहूदाह के
150 अफ़्सरों की मेहमान-नवाज़ी करनी पड़ती थी।
उन में वह तमाम मेहमान शामिल नहीं हैं जो गाहे-ब-
गाहे पड़ोसी ममालिक से आते रहे। 18 रोज़ाना एक
बैल, छः बेहतरीन भेड़-बकरियाँ और बहुत से परिन्दे
मेरे लिए ज़बह करके तय्यार किए जाते, और दस दस
दिन के बाद हमें कई क़िस्म की बहुत सी मै ख़रीदनी
पड़ती थी। इन अख़्राजात के बावुजूद मैं ने गवर्नर के
लिए मुक़र्ररा वज़ीफ़ा न माँगा, क्यूँकि क़ौम पर बोझ
वैसे भी बहुत ज़्यादा था।

19 ऐ मेरे ख़ुदा, जो कुछ मैं ने इस क़ौम के लिए
किया है उस के बाइस मुझ पर मेहरबानी कर।

नहमियाह के ख़िलाफ़ साज़िश

6 1 सन्बल्लत, तूबियाह, जशम अरबी और हमारे
बाक़ी दुश्मनों को पता चला कि मैं ने फ़सील
को तक्मील तक पहुँचाया है और दीवार में कहीं
भी ख़ाली जगह नज़र नहीं आती। सिर्फ़ दरवाज़ों के
किवाड़ अब तक लगाए नहीं गए थे। 2 तब सन्बल्लत
और जशम ने मुझे पैग़ाम भेजा, "हम वादी-ए-ओनू के
शहर कफ़ीरीम में आप से मिलना चाहते हैं।" लेकिन
मुझे मालूम था कि वह मुझे नुक़्सान पहुँचाना चाहते
हैं। 3 इस लिए मैं ने क़ासिदों के हाथ जवाब भेजा, "मैं
इस वक़्त एक बड़ा काम तक्मील तक पहुँचा रहा हूँ,
इस लिए मैं आ नहीं सकता। अगर मैं आप से मिलने
आऊँ तो पूरा काम रुक जाएगा।"

4 चार दफ़ा उन्हों ने मुझे यही पैग़ाम भेजा और हर
बार मैं ने वही जवाब दिया। 5 पाँचवें मर्तबा जब
सन्बल्लत ने अपने मुलाज़िम को मेरे पास भेजा तो
उस के हाथ में एक खुला ख़त था। 6 ख़त में लिखा
था, "पड़ोसी ममालिक में अफ़्वाह फैल गई है कि
आप और बाक़ी यहूदी बग़ावत की तय्यारियाँ कर
रहे हैं। जशम ने इस बात की तस्दीक़ की है। लोग
कहते हैं कि इसी वजह से आप फ़सील बना रहे हैं।
इन रिपोर्टों के मुताबिक़ आप उन के बादशाह बनेंगे।
7 कहा जाता है कि आप ने नबियों को मुक़र्रर किया
है जो यरूशलम में एलान करें कि आप यहूदाह के
बादशाह हैं। बेशक ऐसी अफ़्वाहें शहन्शाह तक भी
पहुँचेंगी। इस लिए आएँ, हम मिल कर एक दूसरे से
मश्वरा करें कि क्या करना चाहिए।"

8 मैं ने उसे जवाब भेजा, "जो कुछ आप कह रहे हैं
वह झूट ही झूट है। कुछ नहीं हो रहा, बल्कि आप
ने फ़र्ज़ी कहानी घड़ ली है!" 9 असल में दुश्मन हमें
डराना चाहते थे। उन्हों ने सोचा, "अगर हम ऐसी बातें
कहें तो वह हिम्मत हार कर काम से बाज़ आएँगे।"
लेकिन अब मैं ने ज़्यादा अज़्म के साथ काम जारी
रखा।

10 एक दिन मैं समायाह बिन दिलायाह बिन महेतब-
एल से मिलने गया जो ताला लगा कर घर में बैठा
था। उस ने मुझ से कहा, "आएँ, हम अल्लाह के घर
में जमा हो जाएँ और दरवाज़ों को अपने पीछे बन्द
करके कुंडी लगाएँ। क्यूँकि लोग इसी रात आप को
क़त्ल करने के लिए आएँगे।"

11 मैं ने एतिराज़ किया, "क्या यह ठीक है कि मुझ
जैसा आदमी भाग जाए? या क्या मुझ जैसा शख़्स जो
इमाम नहीं है रब के घर में दाख़िल हो कर ज़िन्दा रह
सकता है? हरगिज़ नहीं! मैं ऐसा नहीं करूँगा!" 12 मैं
ने जान लिया कि समायाह की यह बात अल्लाह की
तरफ़ से नहीं है। सन्बल्लत और तूबियाह ने उसे रिश्वत
दी थी, इसी लिए उस ने मेरे बारे में ऐसी पेशगोई
की थी। 13 इस से वह मुझे डरा कर गुनाह करने पर
उकसाना चाहते थे ताकि वह मेरी बदनामी करके
मुझे मज़ाक़ का निशाना बना सकें।

14 ऐ मेरे ख़ुदा, तूबियाह और सन्बल्लत की यह बुरी
हरकतें मत भूलना! नौअदियाह नबिया और बाक़ी
उन नबियों को याद रख जिन्हों ने मुझे डराने की
कोशिश की है।

फ़सील की तक्मील

15 फ़सील इलूल के महीने के 25वें दिन [y]यानी 52
दिनों में मुकम्मल हुई। 16 जब हमारे दुश्मनों को यह
ख़बर मिली तो पड़ोसी ममालिक सहम गए, और
वह एहसास-ए-कमतरी का शिकार हो गए। उन्हों ने
जान लिया कि अल्लाह ने ख़ुद यह काम तक्मील तक
पहुँचाया है।
17 उन 52 दिनों के दौरान यहूदाह के शुरफ़ा तूबियाह
को ख़त भेजते रहे और उस से जवाब मिलते रहे थे।
18 असल में यहूदाह के बहुत से लोगों ने क़सम खा
कर उस की मदद करने का वादा किया था। वजह
यह थी कि वह सकनियाह बिन अरख़ का दामाद
था, और उस के बेटे यूहनान की शादी मसुल्लाम बिन
बरकियाह की बेटी से हुई थी। 19 तूबियाह के यह
मददगार मेरे सामने उस के नेक कामों की तारीफ़
करते रहे और साथ साथ मेरी हर बात उसे बताते
रहे। फिर तूबियाह मुझे ख़त भेजता ताकि मैं डर कर
काम से बाज़ आऊँ।

7 1 फ़सील की तक्मील पर मैं ने दरवाज़ों के
किवाड़ लगवाए। फिर रब के घर के दरबान,
गुलूकार और ख़िदमतगुज़ार लावी मुक़र्रर किए गए।
2 मैं ने दो आदमियों को यरूशलम के हुक्मरान
बनाया। एक मेरा भाई हनानी और दूसरा क़िले का
कमाँडर हननियाह था। हननियाह को मैं ने इस लिए
चुन लिया कि वह वफ़ादार था और अक्सर लोगों
की निस्बत अल्लाह का ज़्यादा ख़ौफ़ मानता था। 3 मैं
ने दोनों से कहा, "यरूशलम के दरवाज़े दोपहर के
वक़्त जब धूप की शिद्दत है खुले न रहें, और पहरा
देते वक़्त भी उन्हें बन्द करके कुंडे लगाएँ। यरूशलम
के आदमियों को पहरादारी के लिए मुक़र्रर करें जिन
में से कुछ फ़सील पर और कुछ अपने घरों के सामने
ही पहरा दें।"

जिलावतनी से वापस आए हुओं की फ़हरिस्त

4 गो यरूशलम शहर बड़ा और वसी था, लेकिन
उस में आबादी थोड़ी थी। ढाए गए मकान अब तक
दुबारा तामीर नहीं हुए थे। 5 चुनाँचे मेरे ख़ुदा ने मेरे
दिल को शुरफ़ा, अफ़्सरों और अवाम को इकट्ठा
करने की तहरीक दी ताकि ख़ानदानों की रजिस्ट्री
तय्यार करूँ। इस सिलसिले में मुझे एक किताब मिल
गई जिस में उन लोगों की फ़हरिस्त दर्ज थी जो हम से
पहले जिलावतनी से वापस आए थे। उस में लिखा
था,
6 "ज़ैल में यहूदाह के उन लोगों की फ़हरिस्त है
जो जिलावतनी से वापस आए। बाबल का बादशाह
नबूकद्नज़्ज़र उन्हें क़ैद करके बाबल ले गया था,
लेकिन अब वह यरूशलम और यहूदाह के उन शहरों
में फिर जा बसे जहाँ पहले रहते थे।
7 उन के राहनुमा ज़रुब्बाबल, यशूअ, नहमियाह,
अज़रियाह, रामियाह, नहमानी, मर्दकी, बिल्शान,
मिस्फ़रत, बिग्वई, नहूम और बाना थे।
ज़ैल की फ़हरिस्त में वापस आए हुए ख़ानदानों के
मर्द बयान किए गए हैं।
8 परऊस का ख़ानदान : 2,172,
9 सफ़तियाह का ख़ानदान : 372,
10 अरख़ का ख़ानदान : 652,
11 पख़त-मोआब का ख़ानदान यानी यशूअ और
योआब की औलाद : 2,818,
12 ऐलाम का ख़ानदान : 1,254,
13 ज़त्तू का ख़ानदान : 845,
14 ज़क्की का ख़ानदान : 760,
15 बिन्नूई का ख़ानदान : 648,
16 बबी का ख़ानदान : 628,
17 अज़्जाद का ख़ानदान : 2,322,
18 अदूनिक़ाम का ख़ानदान : 667,
19 बिग्वई का ख़ानदान : 2,067,

---

[y] 2 अक्तूबर।

20 अदीन का ख़ानदान : 655,
21 अतीर का ख़ानदान यानी हिज़क़ियाह की औलाद : 98,
22 हाशूम का ख़ानदान : 328,
23 बज़ी का ख़ानदान : 324,
24 ख़ारिफ़ का ख़ानदान : 112,
25 जिबऊन का ख़ानदान : 95,
26 बैत-लहम और नतूफ़ा के बाशिन्दे : 188,
27 अनतोत के बाशिन्दे : 128,
28 बैत-अज़्मावत के बाशिन्दे : 42,
29 क़िर्यत-यारीम, कफ़ीरा और बैरोत के बाशिन्दे : 743,
30 रामा और जिबा के बाशिन्दे : 621,
31 मिक्मास के बाशिन्दे : 122,
32 बैत-एल और अई के बाशिन्दे : 123,
33 दूसरे नबू के बाशिन्दे : 52,
34 दूसरे ऐलाम के बाशिन्दे : 1,254,
35 हारिम के बाशिन्दे : 320,
36 यरीहू के बाशिन्दे : 345,
37 लूद, हादीद और ओनू के बाशिन्दे : 721,
38 सनाआह के बाशिन्दे : 3,930,
39 ज़ैल के इमाम जिलावतनी से वापस आए।
यदायाह का ख़ानदान जो यशूअ की नस्ल का था : 973,
40 इम्मेर का ख़ानदान : 1,052,
41 फ़श्हूर का ख़ानदान : 1,247,
42 हारिम का ख़ानदान : 1,017,
43 ज़ैल के लावी जिलावतनी से वापस आए।
यशूअ और क़दमीएल का ख़ानदान यानी हूदावियाह की औलाद : 74,
44 गुलूकार : आसफ़ के ख़ानदान के 148 आदमी,
45 रब के घर के दरबान : सल्लूम, अतीर, तल्मून, अक़्क़ूब, ख़तीता और सोबी के ख़ानदानों के 138 आदमी।
46 रब के घर के ख़िदमतगारों के दर्ज-ए-ज़ैल ख़ानदान जिलावतनी से वापस आए।
ज़ीहा, हसूफ़ा, तब्बाओत, 47 क़रूस, सीआ, फ़दून, 48 लिबाना, हजाबा, शल्मी, 49 हनान, जिद्देल, जहर, 50 रियायाह, रज़ीन, नक़ूदा, 51 जज़्ज़ाम, उज़्ज़ा, फ़ासिह, 52 बसी, मऊनीम, नफ़ूसीम, 53 बक़्बूक़, हक़ूफ़ा, हर्हूर, 54 बज़्लूत, महीदा, हर्शा, 55 बर्क़ूस, सीसरा, तामह, 56 नज़ियाह और ख़तीफ़ा।
57 सुलेमान के ख़ादिमों के दर्ज-ए-ज़ैल ख़ानदान जिलावतनी से वापस आए।
सूती, सूफ़िरत, फ़रूदा, 58 याला, दर्क़ून, जिद्देल, 59 सफ़तियाह, ख़त्तील, फ़ूकिरत-ज़बाइम और अमून।
60 रब के घर के ख़िदमतगारों और सुलेमान के ख़ादिमों के ख़ानदानों में से वापस आए हुए मर्दों की तादाद 392 थी।

61–62 वापस आए हुए ख़ानदानों में से दिलायाह, तूबियाह और नक़ूदा के 642 मर्द साबित न कर सके कि इस्राईल की औलाद हैं, गो वह तल-मिलह, तल-हर्शा, करूब, अद्दून और इम्मेर के रहने वाले थे।
63–64 हबायाह, हक़्क़ूज़ और बर्ज़िल्ली के ख़ानदानों के कुछ इमाम भी वापस आए, लेकिन उन्हें रब के घर में ख़िदमत करने की इजाज़त न मिली। क्यूँकि गो उन्हों ने नसबनामे में अपने नाम तलाश किए लेकिन उन का कहीं ज़िक्र न मिला, इस लिए उन्हें नापाक क़रार दिया गया। (बर्ज़िल्ली के ख़ानदान के बानी ने बर्ज़िल्ली जिलिआदी की बेटी से शादी करके अपने सुसर का नाम अपना लिया था।) 65 यहूदाह के गवर्नर ने हुक्म दिया कि इन तीन ख़ानदानों के इमाम फ़िलहाल क़ुर्बानियों का वह हिस्सा खाने में शरीक न हों जो इमामों के लिए मुक़र्रर है। जब दुबारा इमाम-ए-आज़म मुक़र्रर किया जाए तो वही ऊरीम और तुम्मीम नामी क़ुरआ डाल कर मुआमला हल करे।
66 कुल 42,360 इस्राईली अपने वतन लौट आए, 67 नीज़ उन के 7,337 ग़ुलाम और लौंडियाँ और 245 गुलूकार जिन में मर्द-ओ-ख़वातीन शामिल थे।

68 इस्राईलियों के पास 736 घोड़े, 245 ख़च्चर,
69 435 ऊँट और 6,720 गधे थे।

70 कुछ ख़ानदानी सरपरस्तों ने रब के घर की तामीर-ए-नौ के लिए अपनी ख़ुशी से हदिए दिए। गवर्नर ने सोने के 1,000 सिक्के, 50 कटोरे और इमामों के 530 लिबास दिए। 71 कुछ ख़ानदानी सरपरस्तों ने ख़ज़ाने में सोने के 20,000 सिक्के और चाँदी के 1,200 किलोग्राम डाल दिए। 72 बाक़ी लोगों ने सोने के 20,000 सिक्के, चाँदी के 1,100 किलोग्राम और इमामों के 67 लिबास अता किए।

73 इमाम, लावी, रब के घर के दरबान और ख़िदमतगार, गुलूकार और अवाम के कुछ लोग अपनी अपनी आबाई आबादियों में दुबारा जा बसे। यूँ तमाम इस्राईली दुबारा अपने अपने शहरों में रहने लगे।"

अज़्रा शरीअत की तिलावत करता है

8 सातवें महीने यानी अक्तूबर में जब इस्राईली अपने अपने शहरों में दुबारा आबाद हो गए थे 1 तो सब लोग मिल कर पानी के दरवाज़े के चौक में जमा हो गए। उन्हों ने शरीअत के आलिम अज़्रा से दरख़्वास्त की कि वह शरीअत ले आएँ जो रब ने मूसा की मारिफ़त इस्राईली क़ौम को दे दी थी। 2 चुनाँचे अज़्रा ने हाज़िरीन के सामने शरीअत की तिलावत की। सातवें महीने का पहला दिन [z]था। न सिर्फ़ मर्द बल्कि औरतें और शरीअत की बातें समझने के क़ाबिल तमाम बच्चे भी जमा हुए थे। 3 सुब्ह-सवेरे से ले कर दोपहर तक अज़्रा पानी के दरवाज़े के चौक में पढ़ता रहा, और तमाम जमाअत ध्यान से शरीअत की बातें सुनती रही।

4 अज़्रा लकड़ी के एक चबूतरे पर खड़ा था जो ख़ासकर इस मौक़े के लिए बनाया गया था। उस के दाएँ हाथ मत्तितियाह, समा, अनायाह, ऊरियाह, ख़िलक़ियाह और मासियाह खड़े थे। उस के बाएँ हाथ फ़िदायाह, मीसाएल, मल्कियाह, हाशूम, हस्बद्दाना, ज़करियाह और मसुल्लाम खड़े थे।

5 चूँकि अज़्रा ऊँची जगह पर खड़ा था इस लिए वह सब को नज़र आया। चुनाँचे जब उस ने किताब को खोल दिया तो सब लोग खड़े हो गए। 6 अज़्रा ने रब अज़ीम ख़ुदा की सताइश की, और सब ने अपने हाथ उठा कर जवाब में कहा, "आमीन, आमीन।" फिर उन्हों ने झुक कर रब को सिज्दा किया।

7 कुछ लावी हाज़िर थे जिन्हों ने लोगों के लिए शरीअत की तश्रीह की। उन के नाम यशूअ, बानी, सरिबियाह, यमीन, अक़्क़ूब, सब्बती, हूदियाह, मासियाह, क़लीता, अज़रियाह, यूज़बद, हनान और फ़िलायाह थे। हाज़िरीन अब तक खड़े थे। 8 शरीअत की तिलावत के साथ साथ मज़कूरा लावी क़दम-ब-क़दम उस की तश्रीह यूँ करते गए कि लोग उसे अच्छी तरह समझ सके।

9 शरीअत की बातें सुन सुन कर वह रोने लगे। लेकिन नहमियाह गवर्नर, शरीअत के आलिम अज़्रा इमाम और शरीअत की तश्रीह करने वाले लावियों ने उन्हें तसल्ली दे कर कहा, "उदास न हों और मत रोएँ! आज रब आप के ख़ुदा के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस ईद है। 10 अब जाएँ, उम्दा खाना खा कर और पीने की मीठी चीज़ें पी कर ख़ुशी मनाएँ। जो अपने लिए कुछ तय्यार न कर सकें उन्हें अपनी ख़ुशी में शरीक करें। यह दिन हमारे रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है। उदास न हों, क्यूँकि रब की ख़ुशी आप की पनाहगाह है।"

11 लावियों ने भी तमाम लोगों को सुकून दिला कर कहा, "उदास न हों, क्यूँकि यह दिन रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है।"

12 फिर सब अपने अपने घर चले गए। वहाँ उन्हों ने बड़ी ख़ुशी से खा पी कर जश्न मनाया। साथ साथ उन्हों ने दूसरों को भी अपनी ख़ुशी में शरीक किया।

---

[z]8 अक्तूबर।

उन की बड़ी ख़ुशी का सबब यह था कि अब उन्हें
उन बातों की समझ आई थी जो उन्हें सुनाई गई थीं।

झोंपड़ियों की ईद

13 अगले दिन [a]ख़ानदानी सरपरस्त, इमाम और
लावी दुबारा शरीअत के आलिम अज़्रा के पास जमा
हुए ताकि शरीअत की मज़ीद तालीम पाएँ। 14 जब
वह शरीअत का मुतालआ कर रहे थे तो उन्हें पता
चला कि रब ने मूसा की मारिफ़त हुक्म दिया था कि
इस्राईली सातवें महीने की ईद के दौरान झोंपड़ियों में
रहें। 15 चुनाँचे उन्हों ने यरूशलम और बाक़ी तमाम
शहरों में एलान किया, "पहाड़ों पर से ज़ैतून, आस,
[b]खजूर और बाक़ी सायादार दरख़्तों की शाख़ें तोड़
कर अपने घर ले जाएँ। वहाँ उन से झोंपड़ियाँ बनाएँ,
जिस तरह शरीअत ने हिदायत दी है।"

16 लोगों ने ऐसा ही किया। वह घरों से निकले और
दरख़्तों की शाख़ें तोड़ कर ले आए। उन से उन्हों
ने अपने घरों की छतों पर और सहनों में झोंपड़ियाँ
बना लीं। बाज़ ने अपनी झोंपड़ियों को रब के घर
के सहनों, पानी के दरवाज़े के चौक और इफ़्राईम
के दरवाज़े के चौक में भी बनाया। 17 जितने भी
जिलावतनी से वापस आए थे वह सब झोंपड़ियाँ बना
कर उन में रहने लगे। यशूअ बिन नून के ज़माने से ले
कर उस वक़्त तक यह ईद इस तरह नहीं मनाई गई
थी। सब निहायत ही ख़ुश थे। 18 ईद के हर दिन अज़्रा
ने अल्लाह की शरीअत की तिलावत की। सात दिन
इस्राईलियों ने ईद मनाई, और आठवें दिन सब लोग
इजतिमा के लिए इकट्ठे हुए, बिलकुल उन हिदायात
के मुताबिक़ जो शरीअत में दी गई हैं।

इस्राईली अपने गुनाहों का इक़्रार करते हैं

9 1 उसी महीने के 24वें दिन [c]इस्राईली रोज़ा रखने
के लिए जमा हुए। टाट के लिबास पहने हुए और
सर पर ख़ाक डाल कर वह यरूशलम आए। 2 अब
वह तमाम ग़ैरयहूदियों से अलग हो कर उन गुनाहों
का इक़्रार करने के लिए हाज़िर हुए जो उन से और
उन के बापदादा से सरज़द हुए थे। 3 तीन घंटे वह खड़े
रहे, और उस दौरान रब उन के ख़ुदा की शरीअत की
तिलावत की गई। फिर वह रब अपने ख़ुदा के सामने
मुँह के बल झुक कर मज़ीद तीन घंटे अपने गुनाहों
का इक़्रार करते रहे।

4 यशूअ, बानी, क़दमीएल, सबनियाह, बुन्नी,
सरिबियाह, बानी और कनानी जो लावी थे एक
चबूतरे पर खड़े हुए और बुलन्द आवाज़ से रब अपने
ख़ुदा से दुआ की।

5 फिर यशूअ, क़दमीएल, बानी, हसब्नियाह,
सरिबियाह, हूदियाह, सबनियाह और फ़तहियाह जो
लावी थे बोल उठे, "खड़े हो कर रब अपने ख़ुदा की
जो अज़ल से अबद तक है सताइश करें!"

उन्हों दुआ की,

"तेरे जलाली नाम की तम्जीद हो, जो हर
मुबारकबादी और तारीफ़ से कहीं बढ़ कर है। 6 ऐ
रब, तू ही वाहिद ख़ुदा है! तू ने आसमान को एक
सिरे से दूसरे सिरे तक उस के लश्कर समेत ख़ल्क़
किया। ज़मीन और जो कुछ उस पर है, समुन्दर और
जो कुछ उस में है सब कुछ तू ही ने बनाया है। तू ने
सब को ज़िन्दगी बख़्शी है, और आसमानी लश्कर
तुझे सिज्दा करता है।

7 तू ही रब और वह ख़ुदा है जिस ने अब्राम को
चुन लिया और कस्दियों के शहर ऊर से बाहर ला
कर इब्राहीम का नाम रखा। 8 तू ने उस का दिल
वफ़ादार पाया और उस से अह्द बांध कर वादा
किया, 'मैं तेरी औलाद को कनआनियों, हित्तियों,
अमोरियों, फ़रिज़्ज़ियों, यबूसियों और जिर्जासियों का

---

[a] 9 अक्तूबर।

[b] myrtle।

[c] 31 अक्तूबर।

मुल्क अता करूँगा।' और तू अपने वादे पर पूरा
उतरा, क्यूँकि तू क़ाबिल-ए-एतिमाद और आदिल है।

9 तू ने हमारे बापदादा के मिस्र में बुरे हाल पर ध्यान
दिया, और बहर-ए-क़ुल्ज़ुम के किनारे पर मदद के
लिए उन की चीख़ें सुनीं। 10 तू ने इलाही निशानों और
मोजिज़ों से फ़िरऔन, उस के अफ़सरों और उस के
मुल्क की क़ौम को सज़ा दी, क्यूँकि तू जानता था
कि मिस्री हमारे बापदादा से कैसा गुस्ताखाना सुलूक
करते रहे हैं। यूँ तेरा नाम मश्हूर हुआ और आज तक
याद रहा है। 11 क़ौम के देखते देखते तू ने समुन्दर
को दो हिस्सों में तक़्सीम कर दिया, और वह ख़ुश्क
ज़मीन पर चल कर उस में से गुज़र सके। लेकिन उन
का ताक़्क़ुब करने वालों को तू ने मुतलातिम पानी
में फैंक दिया, और वह पत्थरों की तरह समुन्दर की
गहराइयों में डूब गए।

12 दिन के वक़्त तू ने बादल के सतून से और
रात के वक़्त आग के सतून से अपनी क़ौम की
राहनुमाई की। यूँ वह रास्ता अंधेरे में भी रौशन रहा
जिस पर उन्हें चलना था। 13 तू कोह-ए-सीना पर
उतर आया और आसमान से उन से हमकलाम हुआ।
तू ने उन्हें साफ़ हिदायात और क़ाबिल-ए-एतिमाद
अह्काम दिए, ऐसे क़वाइद जो अच्छे हैं। 14 तू ने
उन्हें सबत के दिन के बारे में आगाह किया, उस
दिन के बारे में जो तेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है।
अपने ख़ादिम मूसा की मारिफ़त तू ने उन्हें अह्काम
और हिदायात दीं। 15 जब वह भूके थे तो तू ने उन्हें
आसमान से रोटी खिलाई, और जब प्यासे थे तो तू
ने उन्हें चटान से पानी पिलाया। तू ने हुक्म दिया,
'जाओ, मुल्क में दाख़िल हो कर उस पर क़ब्ज़ा कर
लो, क्यूँकि मैं ने हाथ उठा कर क़सम खाई है कि
तुम्हें यह मुल्क दूँगा।'

16 अफ़्सोस, हमारे बापदादा मग़रूर और ज़िद्दी हो
गए। वह तेरे अह्काम के ताबे न रहे। 17 उन्हों ने तेरी
सुनने से इन्कार किया और वह मोजिज़ात याद न
रखे जो तू ने उन के दरमियान किए थे। वह यहाँ तक
अड़ गए कि उन्हों ने एक राहनुमा को मुक़र्रर किया
जो उन्हें मिस्र की ग़ुलामी में वापस ले जाए। लेकिन तू
मुआफ़ करने वाला ख़ुदा है जो मेहरबान और रहीम,
तहम्मुल और शफ़क़त से भरपूर है। तू ने उन्हें तर्क न
किया, 18 उस वक़्त भी नहीं जब उन्हों ने अपने लिए
सोने का बछड़ा ढाल कर कहा, 'यह तेरा ख़ुदा है जो
तुझे मिस्र से निकाल लाया।' इस क़िस्म का सन्जीदा
कुफ़्र वह बकते रहे। 19 लेकिन तू बहुत रहमदिल है,
इस लिए तू ने उन्हें रेगिस्तान में न छोड़ा। दिन के
वक़्त बादल का सतून उन की राहनुमाई करता रहा,
और रात के वक़्त आग का सतून वह रास्ता रौशन
करता रहा जिस पर उन्हें चलना था। 20 न सिर्फ़ यह
बल्कि तू ने उन्हें अपना नेक रूह अता किया जो
उन्हें तालीम दे। जब उन्हें भूक और प्यास थी तो तू
उन्हें मन खिलाने और पानी पिलाने से बाज़ न आया।
21 चालीस साल वह रेगिस्तान में फिरते रहे, और उस
पूरे अर्से में तू उन की ज़रूरियात को पूरा करता रहा।
उन्हें कोई भी कमी नहीं थी। न उन के कपड़े घिस
कर फटे और न उन के पाँओ सूजे।

22 तू ने ममालिक और क़ौमें उन के हवाले कर दीं,
मुख़्तलिफ़ इलाक़े यके बाद दीगरे उन के क़ब्ज़े में
आए। यूँ वह सीहोन बादशाह के मुल्क हस्बोन और
ओज बादशाह के मुल्क बसन पर फ़त्ह पा सके।
23 उन की औलाद तेरी मर्ज़ी से आसमान पर के
सितारों जैसी बेशुमार हुई, और तू उन्हें उस मुल्क में
लाया जिस का वादा तू ने उन के बापदादा से किया
था। 24 वह मुल्क में दाख़िल हो कर उस के मालिक
बन गए। तू ने कनआन के बाशिन्दों को उन के आगे
आगे ज़ेर कर दिया। मुल्क के बादशाह और क़ौमें
उन के क़ब्ज़े में आ गईं, और वह अपनी मर्ज़ी के
मुताबिक़ उन से निपट सके। 25 क़िलाबन्द शहर और
ज़रख़ेज़ ज़मीनें तेरी क़ौम के क़ाबू में आ गईं, नीज़
हर क़िस्म की अच्छी चीज़ों से भरे घर, तय्यारशुदा

हौज़, अंगूर के बाग़ और कस्रत के ज़ैतून और दीगर फलदार दरख़्त। वह जी भर कर खाना खा कर मोटे हो गए और तेरी बरकतों से लुत्फ़अन्दोज़ होते रहे।

26 इस के बावुजूद वह ताबे न रहे बल्कि सरकश हुए। उन्हों ने अपना मुँह तेरी शरीअत से फेर लिया। और जब तेरे नबी उन्हें समझा समझा कर तेरे पास वापस लाना चाहते थे तो उन्हों ने बड़े कुफ़्र बक कर उन्हें क़त्ल कर दिया। 27 यह देख कर तू ने उन्हें उन के दुश्मनों के हवाले कर दिया जो उन्हें तंग करते रहे। जब वह मुसीबत में फंस गए तो वह चीख़ें मार मार कर तुझ से फ़र्याद करने लगे। और तू ने आसमान पर से उन की सुनी। बड़ा तरस खा कर तू ने उन के पास ऐसे लोगों को भेज दिया जिन्हों ने उन्हें दुश्मनों के हाथ से छुड़ाया। 28 लेकिन जूँ ही इस्राईलियों को सुकून मिलता वह दुबारा ऐसी हरकतें करने लगते जो तुझे नापसन्द थीं। नतीजे में तू उन्हें दुबारा उन के दुश्मनों के हाथ में छोड़ देता। जब वह उन की हुकूमत के तहत पिसने लगते तो वह एक बार फिर चिल्ला चिल्ला कर तुझ से इल्तिमास करने लगते। इस बार भी तू आसमान पर से उन की सुनता। हाँ, तू इतना रहमदिल है कि तू उन्हें बार बार छुटकारा देता रहा! 29 तू उन्हें समझाता रहा ताकि वह दुबारा तेरी शरीअत की तरफ़ रुजू करें, लेकिन वह मग़रूर थे और तेरे अह्काम के ताबे न हुए। उन्हों ने तेरी हिदायात की ख़िलाफ़वरज़ी की, हालाँकि इन ही पर चलने से इन्सान को ज़िन्दगी हासिल होती है। लेकिन उन्हों ने पर्वा न की बल्कि अपना मुँह तुझ से फेर कर अड़ गए और सुनने के लिए तय्यार न हुए।

30 उन की हरकतों के बावुजूद तू बहुत सालों तक सब्र करता रहा। तेरा रूह उन्हें नबियों के ज़रीए समझाता रहा, लेकिन उन्हों ने ध्यान न दिया। तब तू ने उन्हें ग़ैरक़ौमों के हवाले कर दिया। 31 ताहम तेरा रहम से भरा दिल उन्हें तर्क करके तबाह नहीं करना चाहता था। तू कितना मेहरबान और रहीम ख़ुदा है!

32 ऐ हमारे ख़ुदा, ऐ अज़ीम, क़वी और महीब ख़ुदा जो अपना अह्द और अपनी शफ़्क़त क़ाइम रखता है, इस वक़्त हमारी मुसीबत पर ध्यान दे और उसे कम न समझ! क्यूँकि हमारे बादशाह, बुज़ुर्ग, इमाम और नबी बल्कि हमारे बापदादा और पूरी क़ौम असूरी बादशाहों के पहले हम्लों से ले कर आज तक सख़्त मुसीबत बर्दाश्त करते रहे हैं। 33 हक़ीक़त तो यह है कि जो भी मुसीबत हम पर आई है उस में तू रास्त साबित हुआ है। तू वफ़ादार रहा है, गो हम क़ुसूरवार ठहरे हैं। 34 हमारे बादशाह और बुज़ुर्ग, हमारे इमाम और बापदादा, उन सब ने तेरी शरीअत की पैरवी न की। जो अह्काम और तम्बीह तू ने उन्हें दी उस पर उन्हों ने ध्यान ही न दिया। 35 तू ने उन्हें उन की अपनी बादशाही, कस्रत की अच्छी चीज़ों और एक वसी और ज़रख़ेज़ मुल्क से नवाज़ा था। तो भी वह तेरी ख़िदमत करने के लिए तय्यार न थे और अपनी ग़लत राहों से बाज़ न आए।

36 इस का अन्जाम यह हुआ है कि आज हम उस मुल्क में ग़ुलाम हैं जो तू ने हमारे बापदादा को अता किया था ताकि वह उस की पैदावार और दौलत से लुत्फ़अन्दोज़ हो जाएँ। 37 मुल्क की वाफ़िर पैदावार उन बादशाहों तक पहुँचती है जिन्हें तू ने हमारे गुनाहों की वजह से हम पर मुक़र्रर किया है। अब वही हम पर और हमारे मवेशियों पर हुकूमत करते हैं। उन ही की मर्ज़ी चलती है। चुनाँचे हम बड़ी मुसीबत में फंसे हैं।

क़ौम का अह्दनामा

38 यह तमाम बातें मद्द-ए-नज़र रख कर हम अहद बांध कर उसे क़लमबन्द कर रहे हैं। हमारे बुज़ुर्ग, लावी और इमाम दस्तख़त करके अह्दनामे पर मुहर लगा रहे हैं।”

10 1 ज़ैल के लोगों ने दस्तख़त किए। गवर्नर नहमियाह बिन हकलियाह, सिदक़ियाह, 2 सिरायाह, अज़रियाह, यरमियाह,

3 फ़श्हूर, अमरियाह, मल्कियाह, 4 हत्तूश,
सबनियाह, मल्लूक, 5 हारिम, मरीमोत, अबदियाह,
6 दान्याल, जिन्नतून, बारूक, 7 मसुल्लाम, अबियाह,
मियामीन, 8 माज़ियाह, बिल्जी और समायाह।
सिरायाह से ले कर समायाह तक इमाम थे।
9 फिर ज़ैल के लावियों ने दस्तख़त किए।
यशूअ बिन अज़नियाह, हनदाद के ख़ानदान
का बिन्नूई, क़दमीएल, 10 उन के भाई सबनियाह,
हूदियाह, क़लीता, फ़िलायाह, हनान, 11 मीका,
रहोब, हसबियाह, 12 ज़क्कूर, सरिबियाह, सबनियाह,
13 हूदियाह, बानी और बनीनू।
14 इन के बाद ज़ैल के क़ौमी बुज़ुर्गों ने दस्तख़त
किए।
परऊस, पख़त-मोआब, ऐलाम, ज़त्तू, बानी 15 बुन्नी,
अज़्जाद, बबी, 16 अदूनियाह, बिग्वई, अदीन,
17 अतीर, हिज़क़ियाह, अज़्ज़ूर, 18 हूदियाह, हाशूम,
बज़ी, 19 ख़ारिफ़, अनतोत, नेबी, 20 मग्फ़ीआस,
मसुल्लाम, हिज़ीर 21 मशेज़ब-एल, सदोक़, यद्दू,
22 फ़लतियाह, हनान, अनायाह, 23 होसेअ,
हननियाह, हस्सूब, 24 हल्लूहेश, फ़िल्हा, सोबेक़,
25 रहूम, हसब्नाह, मासियाह, 26 अख़ियाह, हनान,
अनान, 27 मल्लूक, हारिम और बाना।
28 क़ौम के बाक़ी लोग भी अह्द में शरीक हुए
यानी बाक़ी इमाम, लावी, रब के घर के दरबान और
ख़िदमतगार, गुलूकार, नीज़ सब जो ग़ैरयहूदी क़ौमों
से अलग हो गए थे ताकि रब की शरीअत की पैरवी
करें। उन की बीवियाँ और वह बेटे-बेटियाँ भी शरीक
हुए जो अह्द को समझ सकते थे। 29 अपने बुज़ुर्ग
भाइयों के साथ मिल कर उन्हों ने क़सम खा कर
वादा किया, "हम उस शरीअत की पैरवी करेंगे जो
अल्लाह ने हमें अपने ख़ादिम मूसा की मारिफ़त दी है।
हम एहतियात से रब अपने आक़ा के तमाम अह्काम
और हिदायात पर अमल करेंगे।"
30 नीज़, उन्हों ने क़सम खा कर वादा किया,
"हम अपने बेटे-बेटियों की शादी ग़ैरयहूदियों से
नहीं कराएँगे ।
31 जब ग़ैरयहूदी हमें सबत के दिन या रब के लिए
मख़्सूस किसी और दिन अनाज या कोई और माल
बेचने की कोशिश करें तो हम कुछ नहीं ख़रीदेंगे।
हर सातवें साल हम ज़मीन की खेतीबाड़ी नहीं
करेंगे और तमाम कर्ज़े मन्सूख़ करेंगे।
32 हम सालाना रब के घर की ख़िदमत के लिए
चाँदी का छोटा सिक्का [d]देंगे। इस ख़िदमत में ज़ैल की
चीज़ें शामिल हैं : 33 अल्लाह के लिए मख़्सूस रोटी,
ग़ल्ला की नज़र और भस्म होने वाली वह क़ुर्बानियाँ जो
रोज़ाना पेश की जाती हैं, सबत के दिन, नए चाँद की
ईद और बाक़ी ईदों पर पेश की जाने वाली क़ुर्बानियाँ,
ख़ास मुक़द्दस क़ुर्बानियाँ, इस्राईल का कफ़्फ़ारा देने
वाली गुनाह की क़ुर्बानियाँ, और हमारे ख़ुदा के घर
का हर काम।
34 हम ने क़ुरआ डाल कर मुक़र्रर किया है कि
इमामों, लावियों और बाक़ी क़ौम के कौन कौन से
ख़ानदान साल में किन किन मुक़र्ररा मौक़ों पर रब के
घर में लकड़ी पहुँचाएँ। यह लकड़ी हमारे ख़ुदा की
क़ुर्बानगाह पर क़ुर्बानियाँ जलाने के लिए इस्तेमाल
की जाएगी, जिस तरह शरीअत में लिखा है।
35 हम सालाना अपने खेतों और दरख़्तों का पहला
फल रब के घर में पहुँचाएँगे।
36 जिस तरह शरीअत में दर्ज है, हम अपने पहलौठों
को रब के घर में ला कर अल्लाह के लिए मख़्सूस
करेंगे। गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहले बच्चे
हम ख़िदमतगुज़ार इमामों को क़ुर्बान करने के लिए
देंगे। 37 उन्हें हम साल के पहले ग़ल्ला से गूँधा हुआ
आटा, अपने दरख़्तों का पहला फल, अपनी नई मै
और ज़ैतून के नए तेल का पहला हिस्सा दे कर रब
के घर के गोदामों में पहुँचाएँगे।
दीहात में हम लावियों को अपनी फ़सलों का दसवाँ
हिस्सा देंगे, क्यूँकि वही दीहात में यह हिस्सा जमा

[d]चाँदी के तक़रीबन 4 ग्राम।

करते हैं। 38 दसवाँ हिस्सा मिलते वक़्त कोई इमाम
यानी हारून के ख़ानदान का कोई मर्द लावियों के
साथ होगा, और लावी माल का दसवाँ हिस्सा हमारे
ख़ुदा के घर के गोदामों में पहुँचाएँगे। 39 आम लोग
और लावी वहाँ ग़ल्ला, नई मै और ज़ैतून का तेल
लाएँगे। इन कमरों में मक़्दिस की ख़िदमत के लिए
दरकार तमाम सामान महफ़ूज़ रखा जाएगा। इस के
इलावा वहाँ इमामों, दरबानों और गुलूकारों के कमरे
होंगे।

हम अपने ख़ुदा के घर में तमाम फ़राइज़ सरअन्जाम
देने में ग़फ़लत नहीं बरतेंगे।”

यरूशलम और यहूदाह के बाशिन्दे

11 1 क़ौम के बुज़ुर्ग यरूशलम में आबाद हुए
थे। फ़ैसला किया गया कि बाक़ी लोगों के
हर दसवें ख़ानदान को मुक़द्दस शहर यरूशलम में
बसना है। यह ख़ानदान क़ुरआ डाल कर मुक़र्रर किए
गए। बाक़ी ख़ानदानों को उन की मक़ामी जगहों में
रहने की इजाज़त थी। 2 लेकिन जितने लोग अपनी
ख़ुशी से यरूशलम जा बसे उन्हें दूसरों ने मुबारकबाद
दी।

3 ज़ैल में सूबे के उन बुज़ुर्गों की फ़हरिस्त है जो
यरूशलम में आबाद हुए। (अक्सर लोग यहूदाह के
बाक़ी शहरों और दीहात में अपनी मौरूसी ज़मीन पर
बसते थे। इन में आम इस्राईली, इमाम, लावी, रब
के घर के ख़िदमतगार और सुलेमान के ख़ादिमों की
औलाद शामिल थे। 4 लेकिन यहूदाह और बिनयमीन
के चन्द एक लोग यरूशलम में जा बसे।)

यहूदाह का क़बीला :

फ़ारस के ख़ानदान का अतायाह बिन उज़्ज़ियाह
बिन ज़करियाह बिन अमरियाह बिन सफ़तियाह बिन
महलल-एल,

5 सिलोनी के ख़ानदान का मासियाह बिन बारूक
बिन कुल्होज़ा बिन हज़ायाह बिन अदायाह बिन
यूयारीब बिन ज़करियाह।

6 फ़ारस के ख़ानदान के 468 असर-ओ-रसूख़ रखने
वाले आदमी अपने ख़ानदानों समेत यरूशलम में
रिहाइशपज़ीर थे।

7 बिनयमीन का क़बीला :

सल्लू बिन मसुल्लाम बिन योएद बिन फ़िदायाह
बिन क़ौलायाह बिन मासियाह बिन ईतीएल बिन
यसायाह।

8 सल्लू के साथ जब्बी और सल्ली थे। कुल 928
आदमी थे। 9 इन पर योएल बिन ज़िक्री मुक़र्रर था
जबकि यहूदाह बिन सनूआह शहर की इन्तिज़ामिया
में दूसरे नम्बर पर आता था।

10 यरूशलम में ज़ैल के इमाम रहते थे।

यदायाह, यूयारीब, यकीन 11 और सिरायाह बिन
ख़िलक़ियाह बिन मसुल्लाम बिन सदोक़ बिन मिरायोत
बिन अख़ीतूब। सिरायाह अल्लाह के घर का मुन्तज़िम
था।

12 इन इमामों के 822 भाई रब के घर में ख़िदमत
करते थे।

नीज़, अदायाह बिन यरोहाम बिन फ़िललियाह बिन
अम्सी बिन ज़करियाह बिन फ़श्हूर बिन मल्कियाह।
13 उस के साथ 242 भाई थे जो अपने अपने ख़ानदानों
के सरपरस्त थे।

इन के इलावा अमश्सी बिन अज़रेल बिन अख़्ज़ी
बिन मसिल्लमोत बिन इम्मेर। 14 उस के साथ 128
असर-ओ-रसूख़ रखने वाले भाई थे। ज़ब्दीएल बिन
हज्जदूलीम उन का इंचार्ज था।

15 ज़ैल के लावी यरूशलम में रिहाइशपज़ीर थे।
समायाह बिन हस्सूब बिन अज़्रीक़ाम बिन हसबियाह
बिन बुन्नी,

16 नीज़ सब्बती और यूज़बद जो अल्लाह के घर से
बाहर के काम पर मुक़र्रर थे,

17 नीज़ शुक्रगुज़ारी का राहनुमा मत्तनियाह बिन
मीका बिन ज़ब्दी बिन आसफ़ था जो दुआ करते
वक़्त हम्द-ओ-सना की राहनुमाई करता था,

नीज़ उस का मददगार मत्तनियाह का भाई
बक़्बूक़ियाह,

और आख़िर में अब्दा बिन सम्मूअ बिन जलाल
बिन यदूतून।
18 लावियों के कुल 284 मर्द मुक़द्दस शहर में रहते
थे।
19 रब के घर के दरबानों के दर्ज-ए-ज़ैल मर्द
यरूशलम में रहते थे।
अक़्क़ूब और तल्मून अपने भाइयों समेत दरवाज़ों
के पहरेदार थे। कुल 172 मर्द थे।

20 क़ौम के बाक़ी लोग, इमाम और लावी यरूशलम
से बाहर यहूदाह के दूसरे शहरों में आबाद थे। हर एक
अपनी आबाई ज़मीन पर रहता था।
21 रब के घर के ख़िदमतगार ओफ़ल पहाड़ी पर
बसते थे। ज़ीहा और जिस्फ़ा उन पर मुक़र्रर थे।
22 यरूशलम में रहने वाले लावियों का निगरान
उज़्ज़ी बिन बानी बिन हसबियाह बिन मत्तनियाह बिन
मीका था। वह आसफ़ के ख़ानदान का था, उस
ख़ानदान का जिस के गुलूकार अल्लाह के घर में
ख़िदमत करते थे। 23 बादशाह ने मुक़र्रर किया था
कि आसफ़ के ख़ानदान के किन किन आदमियों को
किस किस दिन रब के घर में गीत गाने की ख़िदमत
करनी है।
24 फ़तहियाह बिन मशेज़ब-एल इस्राईली मुआमलों
में फ़ार्स के बादशाह की नुमाइन्दगी करता था। वह
ज़ारह बिन यहूदाह के ख़ानदान का था।
25 यहूदाह के क़बीले के अफ़राद ज़ैल के शहरों में
आबाद थे।
क़िर्यत-अर्बा, दीबोन और क़ब्ज़िएल गिर्द-ओ-
नवाह की आबादियों समेत, 26 यशूअ, मोलादा, बैत-
फ़लत, 27 हसार-सूआल, बैर-सबा गिर्द-ओ-नवाह
की आबादियों समेत, 28 सिक़्लाज, मकूनाह गिर्द-
ओ-नवाह की आबादियों समेत, 29 ऐन-रिम्मोन,
सुरआ, यर्मूत, 30 ज़नूह, अदुल्लाम गिर्द-ओ-नवाह की
हवेलियों समेत, लकीस गिर्द-ओ-नवाह के खेतों
समेत और अज़ीक़ा गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों
समेत। ग़ारज़, वह जुनूब में बैर-सबा से ले कर शिमाल
में वादी-ए-हिन्नूम तक आबाद थे।
31 बिनयमीन के क़बीले की रिहाइश ज़ैल के
मक़ामों में थी।
जिबा, मिक्मास, अय्याह, बैत-एल गिर्द-ओ-नवाह
की आबादियों समेत, 32 अनतोत, नोब, अननियाह,
33 हसूर, रामा, जित्तैम, 34 हादीद, ज़बोईम, नबल्लात,
35 लूद, ओनू और कारीगरों की वादी।
36 लावी क़बीले के कुछ ख़ानदान जो पहले यहूदाह
में रहते थे अब बिनयमीन के क़बाइली इलाक़े में
आबाद हुए।

इमामों और लावियों की फ़हरिस्त

12 1 दर्ज-ए-ज़ैल उन इमामों और लावियों
की फ़हरिस्त है जो ज़रुब्बाबल बिन
सियाल्तीएल और यशूअ के साथ जिलावतनी से
वापस आए।
इमाम :
सिरायाह, यरमियाह, अज़्रा,
2 अमरियाह, मल्लूक, हत्तूश, 3 सकनियाह, रहूम,
मरीमोत, 4 इद्दू, जिन्नतून, अबियाह, 5 मियामीन,
मुअदियाह, बिल्जा, 6 समायाह, यूयारीब, यदायाह,
7 सल्लू, अमूक़, ख़िलक़ियाह, और यदायाह। यह
यशूअ के ज़माने में इमामों और उन के भाइयों के
राहनुमा थे।
8 लावी :
यशूअ, बिन्नूई, क़दमीएल, सरिबियाह, यहूदाह और
मत्तनियाह। मत्तनियाह अपने भाइयों के साथ रब के
घर में हम्द-ओ-सना के गीत गाने में राहनुमाई करता
था। 9 बक़्बूक़ियाह और उन्नी अपने भाइयों के साथ
इबादत के दौरान उन के मुक़ाबिल खड़े होते थे।
10 इमाम-ए-आज़म यशूअ की औलाद :
यशूअ यूयक़ीम का बाप था, यूयक़ीम इलियासिब
का, इलियासिब योयदा का, 11 योयदा यूनतन का,
यूनतन यद्दू का।

12 जब यूयक़ीम इमाम-ए-आज़म था तो ज़ैल के
इमाम अपने ख़ानदानों के सरपरस्त थे।
सिरायाह के ख़ानदान का मिरायाह,
यरमियाह के ख़ानदान का हननियाह,
13 अज़्रा के ख़ानदान का मसुल्लाम,
अमरियाह के ख़ानदान का यूहनान,
14 मल्लूक के ख़ानदान का यूनतन,
सबनियाह के ख़ानदान का यूसुफ़,
15 हारिम के ख़ानदान का अदना,
मिरायोत के ख़ानदान का ख़िल्क़ी,
16 इद्दू के ख़ानदान का ज़करियाह,
जिन्नतून के ख़ानदान का मसुल्लाम,
17 अबियाह के ख़ानदान का ज़िक्री,
मिन्यमीन के ख़ानदान का एक आदमी,
मुअदियाह के ख़ानदान का फ़िल्ती,
18 बिल्जा के ख़ानदान का सम्मूअ,
समायाह के ख़ानदान का यहूनतन,
19 यूयारीब के ख़ानदान का मत्तनी,
यदायाह के ख़ानदान का उज़्ज़ी,
20 सल्ली के ख़ानदान का क़ल्ली,
अमूक़ के ख़ानदान का इबर,
21 ख़िलक़ियाह के ख़ानदान का हसबियाह,
यदायाह के ख़ानदान का नतनीएल।

22 जब इलियासिब, योयदा, यूहनान और यद्दू इमाम-ए-आज़म थे तो लावी के सरपरस्तों की फ़हरिस्त तय्यार की गई और इसी तरह फ़ार्स के बादशाह दारा के ज़माने में इमामों के ख़ानदानी सरपरस्तों की फ़हरिस्त।

23 लावी के ख़ानदानी सरपरस्तों के नाम इमाम-ए-आज़म यूहनान बिन इलियासिब के ज़माने तक तारीख़ की किताब में दर्ज किए गए।

24–25 लावी के ख़ानदानी सरपरस्त हसबियाह, सरिबियाह, यशूअ, बिन्नूई और क़दमीएल ख़िदमत के उन गुरोहों की राहनुमाई करते थे जो रब के घर में हम्द-ओ-सना के गीत गाते थे। उन के मुक़ाबिल मत्तनियाह, बक़्बूक़ियाह और अबदियाह अपने गुरोहों के साथ खड़े होते थे। गीत गाते वक़्त कभी यह गुरोह और कभी उस के मुक़ाबिल का गुरोह गाता था। सब कुछ उस तर्तीब से हुआ जो मर्द-ए-ख़ुदा दाऊद ने मुक़र्रर की थी।

मसुल्लाम, तल्मून और अक़्क़ूब दरबान थे जो रब के घर के दरवाज़ों के साथ वाक़े गोदामों की पहरादारी करते थे।

26 यह आदमी इमाम-ए-आज़म यूयक़ीम बिन यशूअ बिन यूसदक़, नहमियाह गवर्नर और शरीअत के आलिम अज़्रा इमाम के ज़माने में अपनी ख़िदमत सरअन्जाम देते थे।

फ़सील की मख़्सूसियत

27 फ़सील की मख़्सूसियत के लिए पूरे मुल्क के लावियों को यरूशलम बुलाया गया ताकि वह ख़ुशी मनाने में मदद करके हम्द-ओ-सना के गीत गाएँ और झाँझ, सितार और सरोद बजाएँ। 28 गुलूकार यरूशलम के गिर्द-ओ-नवाह से, नतूफ़ातियों के दीहात, 29 बैत-जिल्जाल और जिबा और अज़्मावत के इलाक़े से आए। क्यूँकि गुलूकारों ने अपनी अपनी आबादियाँ यरूशलम के इर्दगिर्द बनाई थीं। 30 पहले इमामों और लावियों ने अपने आप को जश्न के लिए पाक-साफ़ किया, फिर उन्हों ने आम लोगों, दरवाज़ों और फ़सील को भी पाक-साफ़ कर दिया।

31 इस के बाद मैं ने यहूदाह के क़बीले के बुज़ुर्गों को फ़सील पर चढ़ने दिया और गुलूकारों को शुक्रगुज़ारी के दो बड़े गुरोहों में तक़्सीम किया। पहला गुरोह फ़सील पर चलते चलते जुनूब में वाक़े कचरे के दरवाज़े की तरफ़ बढ़ गया। 32 इन गुलूकारों के पीछे हूसायाह यहूदाह के आधे बुज़ुर्गों के साथ चला 33 जबकि इन के पीछे अज़रियाह, अज़्रा, मसुल्लाम, 34 यहूदाह, बिनयमीन, समायाह और यरमियाह चले। 35 आख़िरी गुरोह इमाम थे जो तुरम बजाते रहे। इन के पीछे ज़ैल के मौसीक़ार आए : ज़करियाह बिन यूनतन बिन समायाह बिन मत्तनियाह बिन मीकायाह

बिन ज़क्कूर बिन आसफ़ 36 और उस के भाई समायाह,
अज़रेल, मिलली, जिलली, माई, नतनीएल, यहूदाह
और हनानी। यह आदमी मर्द-ए-ख़ुदा दाऊद के साज़
बजाते रहे। शरीअत के आलिम अज़्रा ने जुलूस की
राहनुमाई की। 37 चश्मे के दरवाज़े के पास आ कर
वह सीधे उस सीढ़ी पर चढ़ गए जो यरूशलम के उस
हिस्से तक पहुँचाती है जो 'दाऊद का शहर' कहलाता
है। फिर दाऊद के महल के पीछे से गुज़र कर वह
शहर के मग़रिब में वाक़े पानी के दरवाज़े तक पहुँच
गए।

38 शुक्रगुज़ारी का दूसरा गुरोह फ़सील पर चलते
चलते शिमाल में वाक़े तनूरों के बुर्ज और 'मोटी
दीवार' की तरफ़ बढ़ गया, और मैं बाक़ी लोगों
के साथ उस के पीछे हो लिया। 39 हम इफ़्राईम
के दरवाज़े, यसाना के दरवाज़े, मछली के दरवाज़े,
हनन-एल के बुर्ज, मिया बुर्ज और भेड़ के दरवाज़े से
हो कर मुहाफ़िज़ों के दरवाज़े तक पहुँच गए जहाँ हम
रुक गए।

40 फिर शुक्रगुज़ारी के दोनों गुरोह रब के घर
के पास खड़े हो गए। मैं भी बुज़ुर्गों के आधे
हिस्से 41 और ज़ैल के तुरम बजाने वाले इमामों
के साथ रब के घर के सहन में खड़ा हुआ
: इलियाक़ीम, मासियाह, मिन्यमीन, मीकायाह,
इलियूऐनी, ज़करियाह और हननियाह। 42 मासियाह,
समायाह, इलीअज़र, उज़्ज़ी, यूहनान, मल्कियाह,
ऐलाम और अज़र भी हमारे साथ थे। गुलूकार
इज़्रख़ियाह की राहनुमाई में हम्द-ओ-सना के गीत
गाते रहे।

43 उस दिन ज़बह की बड़ी बड़ी क़ुर्बानियाँ पेश की
गईं, क्यूँकि अल्लाह ने हम सब को बाल-बच्चों समेत
बड़ी ख़ुशी दिलाई थी। ख़ुशियों का इतना शोर मच
गया कि उस की आवाज़ दूरदराज़ इलाक़ों तक पहुँच
गई।

रब के घर के गोदामों की ज़िम्मादारी

44 उस वक़्त कुछ आदमियों को उन गोदामों के
निगरान बनाया गया जिन में हदिए, फ़सलों का पहला
फल और पैदावार का दसवाँ हिस्सा महफ़ूज़ रखा
जाता था। उन में शहरों की फ़सलों का वह हिस्सा
जमा करना था जो शरीअत ने इमामों और लावियों
के लिए मुक़र्रर किया था। क्यूँकि यहूदाह के बाशिन्दे
ख़िदमत करने वाले इमामों और लावियों से ख़ुश थे
45 जो अपने ख़ुदा की ख़िदमत तहारत के रस्म-ओ-
रिवाज समेत अच्छी तरह अन्जाम देते थे। रब के
घर के गुलूकार और दरबान भी दाऊद और उस के
बेटे सुलेमान की हिदायात के मुताबिक़ ही ख़िदमत
करते थे। 46 क्यूँकि दाऊद और आसफ़ के ज़माने से
ही गुलूकारों के लीडर अल्लाह की हम्द-ओ-सना के
गीतों में राहनुमाई करते थे।

47 चुनाँचे ज़रुब्बाबल और नहमियाह के दिनों में
तमाम इस्राईल रब के घर के गुलूकारों और दरबानों
की रोज़ाना ज़रूरियात पूरी करता था। लावियों को
वह हिस्सा दिया जाता जो उन के लिए मख़्सूस था,
और लावी उस में से इमामों को वह हिस्सा दिया
करते थे जो उन के लिए मख़्सूस था।

मोआबियों और अम्मोनियों से अलाहिदगी

13 1 उस दिन क़ौम के सामने मूसा की शरीअत
की तिलावत की गई। पढ़ते पढ़ते मालूम
हुआ कि अम्मोनियों और मोआबियों को कभी भी
अल्लाह की क़ौम में शरीक होने की इजाज़त नहीं।
2 वजह यह है कि इन क़ौमों ने मिस्र से निकलते वक़्त
इस्राईलियों को खाना खिलाने और पानी पिलाने
से इन्कार किया था। न सिर्फ़ यह बल्कि उन्हों ने
बलआम को पैसे दिए थे ताकि वह इस्राईली क़ौम पर
लानत भेजे, अगरचे हमारे ख़ुदा ने लानत को बरकत
में तब्दील किया। 3 जब हाज़िरीन ने यह हुक्म सुना
तो उन्हों ने तमाम ग़ैरयहूदियों को जमाअत से ख़ारिज
कर दिया।

रब के घर के इन्तिज़ाम की इस्लाह

4 इस वाकिए से पहले रब के घर के गोदामों पर
मुक़र्रर इमाम इलियासिब ने अपने रिश्तेदार तूबियाह
5 के लिए एक बड़ा कमरा ख़ाली कर दिया था जिस
में पहले ग़ल्ला की नज़रें, बख़ूर और कुछ आलात रखे
जाते थे। नीज़, ग़ल्ला, नई मै और ज़ैतून के तेल का जो
दसवाँ हिस्सा लावियों, गुलूकारों और दरबानों के
लिए मुक़र्रर था वह भी उस कमरे में रखा जाता था
और साथ साथ इमामों के लिए मुक़र्रर हिस्सा भी।
6 उस वक़्त मैं यरूशलम में नहीं था, क्यूँकि बाबल
के बादशाह अर्तख़्शस्ता की हुकूमत के 32वें साल में
मैं उस के दरबार में वापस आ गया था। कुछ देर बाद
मैं शहन्शाह से इजाज़त ले कर दुबारा यरूशलम के
लिए रवाना हुआ। 7 वहाँ पहुँच कर मुझे पता चला
कि इलियासिब ने कितनी बुरी हरकत की है, कि
उस ने अपने रिश्तेदार तूबियाह के लिए रब के घर
के सहन में कमरा ख़ाली कर दिया है। 8 यह बात मुझे
निहायत ही बुरी लगी, और मैं ने तूबियाह का सारा
सामान कमरे से निकाल कर फैंक दिया। 9 फिर मैं ने
हुक्म दिया कि कमरे नए सिरे से पाक-साफ़ कर दिए
जाएँ। जब ऐसा हुआ तो मैं ने रब के घर का सामान,
ग़ल्ला की नज़रें और बख़ूर दुबारा वहाँ रख दिया।

10 मुझे यह भी मालूम हुआ कि लावी और गुलूकार
रब के घर में अपनी ख़िदमत को छोड़ कर अपने
खेतों में काम कर रहे हैं। वजह यह थी कि उन्हें
वह हिस्सा नहीं मिल रहा था जो उन का हक़ था।
11 तब मैं ने ज़िम्मादार अफ़सरों को झिड़क कर कहा,
"आप अल्लाह के घर का इन्तिज़ाम इतनी बेपर्वाई
से क्यूँ चला रहे हैं?" मैं ने लावियों और गुलूकारों
को वापस बुला कर दुबारा उन की ज़िम्मादारियों पर
लगाया। 12 यह देख कर तमाम यहूदाह ग़ल्ला, नई मै
और ज़ैतून के तेल का दसवाँ हिस्सा गोदामों में लाने
लगा। 13 गोदामों की निगरानी मैं ने सलमियाह इमाम,
सदोक़ मुन्शी और फ़िदायाह लावी के सपुर्द करके
हनान बिन ज़क्कूर बिन मत्तनियाह को उन का मददगार
मुक़र्रर किया, क्यूँकि चारों को क़ाबिल-ए-एतिमाद
समझा जाता था। उन ही को इमामों और लावियों में
उन के मुक़र्ररा हिस्से तक़्सीम करने की ज़िम्मादारी
दी गई।

14 ऐ मेरे ख़ुदा, इस काम के बाइस मुझे याद कर!
वह सब कुछ न भूल जो मैं ने वफ़ादारी से अपने ख़ुदा
के घर और उस के इन्तिज़ाम के लिए किया है।

सबत की बहाली

15 उस वक़्त मैं ने यहूदाह में कुछ लोगों को देखा
जो सबत के दिन अंगूर का रस निचोड़ कर मै बना
रहे थे। दूसरे ग़ल्ला ला कर मै, अंगूर, अन्जीर और
दीगर मुख़्तलिफ़ क़िस्म की पैदावार के साथ गधों
पर लाद रहे और यरूशलम पहुँचा रहे थे। यह सब
कुछ सबत के दिन हो रहा था। मैं ने उन्हें तम्बीह की
कि सबत के दिन ख़ुराक फ़रोख़्त न करना। 16 सूर
के कुछ आदमी भी जो यरूशलम में रहते थे सबत
के दिन मछली और दीगर कई चीज़ें यरूशलम में ला
कर यहूदाह के लोगों को बेचते थे। 17 यह देख कर मैं
ने यहूदाह के शुरफ़ा को डाँट कर कहा, "यह कितनी
बुरी बात है! आप तो सबत के दिन की बेहुरमती कर
रहे हैं। 18 जब आप के बापदादा ने ऐसा किया तो
अल्लाह यह सारी आफ़त हम पर और इस शहर पर
लाया। अब आप सबत के दिन की बेहुरमती करने
से अल्लाह का इस्राईल पर ग़ज़ब मज़ीद बढ़ा रहे हैं।"

19 मैं ने हुक्म दिया कि जुमए को यरूशलम के
दरवाज़े शाम के उस वक़्त बन्द किए जाएँ जब
दरवाज़े साइयों में डूब जाएँ, और कि वह सबत
के पूरे दिन बन्द रहें। सबत के इख़तिताम तक उन्हें
खोलने की इजाज़त नहीं थी। मैं ने अपने कुछ लोगों
को दरवाज़ों पर खड़ा भी किया ताकि कोई भी अपना
सामान सबत के दिन शहर में न लाए। 20 यह देख
कर ताजिरों और बेचने वालों ने कई मर्तबा सबत
की रात शहर से बाहर गुज़ारी और वहाँ अपना माल
बेचने की कोशिश की। 21 तब मैं ने उन्हें तम्बीह की,
"आप सबत की रात क्यूँ फ़सील के पास गुज़ारते

हैं? अगर आप दुबारा ऐसा करें तो आप को हवाला-
ए-पुलिस किया जाएगा।” उस वक़्त से वह सबत के
दिन आने से बाज़ आए। 22 लावियों को मैं ने हुक्म
दिया कि अपने आप को पाक-साफ़ करके शहर के
दरवाज़ों की पहरादारी करें ताकि अब से सबत का
दिन मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रहे।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे इस नेकी के बाइस याद करके
अपनी अज़ीम शफ़क़त के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी
कर।

ग़ैरयहूदियों से रिश्ता बांधना मना है

23 उस वक़्त मुझे यह भी मालूम हुआ कि बहुत से
यहूदी मर्दों की शादी अश्दूद, अम्मोन और मोआब
की औरतों से हुई है। 24 उन के आधे बच्चे सिर्फ़
अश्दूद की ज़बान या कोई और ग़ैरमुल्की ज़बान बोल
लेते थे। हमारी ज़बान से वह नावाक़िफ़ ही थे। 25 तब
मैं ने उन्हें झिड़का और उन पर लानत भेजी। बाज़ एक
के बाल नोच नोच कर मैं ने उन की पिटाई की। मैं
ने उन्हें अल्लाह की क़सम खिलाने पर मज्बूर किया
कि हम अपने बेटे-बेटियों की शादी ग़ैरमुल्कियों से
नहीं कराएँगे । 26 मैं ने कहा, “इस्राईल के बादशाह
सुलेमान को याद करें। ऐसी ही शादियों ने उसे गुनाह
करने पर उकसाया। उस वक़्त उस के बराबर कोई
बादशाह नहीं था। अल्लाह उसे प्यार करता था और
उसे पूरे इस्राईल का बादशाह बनाया। लेकिन उसे
भी ग़ैरमुल्की बीवियों की तरफ़ से गुनाह करने पर
उकसाया गया। 27 अब आप के बारे में भी यही कुछ
सुनना पड़ता है! आप से भी यही बड़ा गुनाह सरज़द
हो रहा है। ग़ैरमुल्की औरतों से शादी करने से आप
हमारे ख़ुदा से बेवफ़ा हो गए हैं!”

28 इमाम-ए-आज़म इलियासिब के बेटे योयदा के
एक बेटे की शादी सन्बल्लत हौरूनी की बेटी से हुई
थी, इस लिए मैं ने बेटे को यरूशलम से भगा दिया।

29 ऐ मेरे ख़ुदा, उन्हें याद कर, क्यूँकि उन्हों ने इमाम
के उह्दे और इमामों और लावियों के अह्द की
बेहुरमती की है।

30 चुनाँचे मैं ने इमामों और लावियों को हर
ग़ैरमुल्की चीज़ से पाक-साफ़ करके उन्हें उन की
ख़िदमत और मुख़्तलिफ़ ज़िम्मादारियों के लिए
हिदायात दीं।

31 नीज़, मैं ने ध्यान दिया कि फ़सल की पहली
पैदावार और क़ुर्बानियों को जलाने की लकड़ी वक़्त
पर रब के घर में पहुँचाई जाए।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे याद करके मुझ पर मेहरबानी
कर!।

आस्तर

अख़स्वेरुस जश्न मनाता है

1 [1] अख़स्वेरुस बादशाह की सल्तनत भारत से
ले कर एथोपिया तक 127 सूबों पर मुश्तमिल
थी। [2] जिन वाक़िआत का ज़िक्र है वह उस वक़्त
हुए जब वह सोसन शहर के क़िले से हुकूमत करता
था। [3] अपनी हुकूमत के तीसरे साल में उस ने अपने
तमाम बुज़ुर्गों और अफ़सरों की ज़ियाफ़त की। फ़ार्स
और मादी के फ़ौजी अफ़सर और सूबों के शुरफ़ा और
रईस सब शरीक हुए। [4] शहन्शाह ने पूरे 180 दिन
तक अपनी सल्तनत की ज़बरदस्त दौलत और अपनी
क़ुव्वत की शान-ओ-शौकत का मुज़ाहरा किया।

[5] इस के बाद उस ने सोसन के क़िले में रहने वाले
तमाम लोगों की छोटे से ले कर बड़े तक ज़ियाफ़त
की। यह जश्न सात दिन तक शाही बाग़ के सहन में
मनाया गया। [6] मरमर [e]के सतूनों के दरमियान कतान
के सफ़ेद और क़िर्मिज़ी रंग के क़ीमती पर्दे लटकाए
गए थे, और वह सफ़ेद और अर्ग़वानी रंग की डोरियों
के ज़रीए सतूनों में लगे चाँदी के छल्लों के साथ बंधे
हुए थे। मेहमानों के लिए सोने और चाँदी के सोफ़े
पच्चीकारी के ऐसे फ़र्श पर रखे हुए थे जिस में मरमर
के इलावा मज़ीद तीन क़ीमती पत्थर इस्तेमाल हुए
थे। [7] मै सोने के प्यालों में पिलाई गई। हर प्याला
फ़र्क़ और लासानी था, और बादशाह की फ़य्याज़ी के
मुताबिक़ शाही मै की कस्रत थी। [8] हर कोई जितनी
जी चाहे पी सकता था, क्यूँकि बादशाह ने हुक्म दिया
था कि साक़ी मेहमानों की हर ख़्वाहिश पूरी करें।

वश्ती मलिका की बरतरफ़ी

[9] इस दौरान वश्ती मलिका ने महल के अन्दर
ख़वातीन की ज़ियाफ़त की। [10] सातवें दिन जब
बादशाह का दिल मै पी पी कर बहल गया था तो उस
ने उन सात ख़्वाजासराओं को बुलाया जो ख़ास उस
की ख़िदमत करते थे। उन के नाम महूमान, बिज़्ज़ता,
ख़र्बूना, बिग्ता, अबग्ता, ज़ितार और कर्कस थे।
[11] उस ने हुक्म दिया, "वश्ती मलिका को शाही ताज
पहना कर मेरे हुज़ूर ले आओ ताकि शुरफ़ा और बाक़ी
मेहमानों को उस की ख़ूबसूरती मालूम हो जाए।"
क्यूँकि वश्ती निहायत ख़ूबसूरत थी। [12] लेकिन जब
ख़्वाजासरा मलिका के पास गए तो उस ने आने से
इन्कार कर दिया।

यह सुन कर बादशाह आग-बगूला हो गया [13] और
दानाओं से बात की जो औक़ात के आलिम थे,
क्यूँकि दस्तूर यह था कि बादशाह क़ानूनी मुआमलों
में उलमा से मश्वरा करे। [14] आलिमों के नाम का
कार्शीना, सितार, अदमाता, तरसीस, मरस, मर्सिना
और ममूकान थे। फ़ार्स और मादी के यह सात शुरफ़ा
आज़ादी से बादशाह के हुज़ूर आ सकते थे और
सल्तनत में सब से आला उह्दा रखते थे।

[15] अख़स्वेरुस ने पूछा, "क़ानून के लिहाज़ से वश्ती
मलिका के साथ क्या सुलूक किया जाए? क्यूँकि उस
ने ख़्वाजासराओं के हाथ भेजे हुए शाही हुक्म को नहीं
माना।"

[16] ममूकान ने बादशाह और दीगर शुरफ़ा की
मौजूदगी में जवाब दिया, "वश्ती मलिका ने इस से
न सिर्फ़ बादशाह का बल्कि उस के तमाम शुरफ़ा
और सल्तनत के तमाम सूबों में रहने वाली क़ौमों का

---

[e]लफ़्ज़ी तर्जुमा : संग-ए-जर्राहत, alabaster।

भी गुनाह किया है। 17 क्यूँकि जो कुछ उस ने किया
है वह तमाम ख़वातीन को मालूम हो जाएगा। फिर
वह अपने शौहरों को हक़ीर जान कर कहेंगी, 'गो
बादशाह ने वश्ती मलिका को अपने हुज़ूर आने का
हुक्म दिया तो भी उस ने उस के हुज़ूर आने से इन्कार
किया।' 18 आज ही फ़ार्स और मादी के शुरफ़ा की
बीवियाँ मलिका की यह बात सुन कर अपने शौहरों
से ऐसा ही सुलूक करेंगी। तब हम ज़िल्लत और ग़ुस्से
के जाल में उलझ जाएंगे। 19 अगर बादशाह को मन्ज़ूर
हो तो वह एलान करें कि वश्ती मलिका को फिर
कभी अख़स्वेरुस बादशाह के हुज़ूर आने की इजाज़त
नहीं। और लाज़िम है कि यह एलान फ़ार्स और मादी
के क़वानीन में दर्ज किया जाए ताकि उसे मन्सूख़ न
किया जा सके। फिर बादशाह किसी और को मलिका
का उह्दा दें, ऐसी औरत को जो ज़्यादा लाइक़ हो।
20 जब एलान पूरी सल्तनत में किया जाएगा तो तमाम
औरतें अपने शौहरों की इज़्ज़त करेंगी, ख़्वाह वह
छोटे हों या बड़े।"

21 यह बात बादशाह और उस के शुरफ़ा को पसन्द
आई। ममूकान के मश्वरे के मुताबिक़ 22 अख़स्वेरुस
ने सल्तनत के तमाम सूबों में ख़त भेजे। हर सूबे को
उस के अपने तर्ज़-ए-तहरीर में और हर क़ौम को उस
की अपनी ज़बान में ख़त मिल गया कि हर मर्द अपने
घर का सरपरस्त है और कि हर ख़ानदान में शौहर
की ज़बान बोली जाए।

नई मलिका की तलाश

2 1 बाद में जब बादशाह का ग़ुस्सा ठंडा हो गया
तो मलिका उसे दुबारा याद आने लगी। जो कुछ
वश्ती ने किया था और जो फ़ैसला उस के बारे में
हुआ था वह भी उस के ज़हन में घूमता रहा। 2 फिर
उस के मुलाज़िमों ने ख़याल पेश किया, "क्यूँ न पूरी
सल्तनत में शहन्शाह के लिए ख़ूबसूरत कुंवारियाँ
तलाश की जाएँ? 3 बादशाह अपनी सल्तनत के हर
सूबे में अफ़्सर मुक़र्रर करें जो यह ख़ूबसूरत कुंवारियाँ
चुन कर सोसन के क़िले के ज़नानख़ाने में लाएँ। उन्हें
ज़नानख़ाने के इंचार्ज हैजा ख़्वाजासरा की निगरानी में
दे दिया जाए और उन की ख़ूबसूरती बढ़ाने के लिए
रंग निखारने का हर ज़रूरी तरीक़ा इस्तेमाल किया
जाए। 4 फिर जो लड़की बादशाह को सब से ज़्यादा
पसन्द आए वह वश्ती की जगह मलिका बन जाए।"

यह मन्सूबा बादशाह को अच्छा लगा, और उस ने
ऐसा ही किया।

5 उस वक़्त सोसन के क़िले में बिनयमीन के
क़बीले का एक यहूदी रहता था जिस का नाम
मर्दकी बिन याईर बिन सिमई बिन क़ीस था। 6 मर्दकी
का ख़ानदान उन इस्राईलियों में शामिल था जिन
को बाबल का बादशाह नबूकद्नज़्ज़र यहूदाह के
बादशाह यहूयाकीन [f]के साथ जिलावतन करके
अपने साथ ले गया था। 7 मर्दकी के चचा की
एक निहायत ख़ूबसूरत बेटी बनाम हदस्साह थी जो
आस्तर भी कहलाती थी। उस के वालिदैन के मरने
पर मर्दकी ने उसे ले कर अपनी बेटी की हैसियत से
पाल लिया था।

8 जब बादशाह का हुक्म सादिर हुआ तो बहुत सी
लड़कियों को सोसन के क़िले में ला कर ज़नानख़ाने
के इंचार्ज हैजा के सपुर्द कर दिया गया। आस्तर
भी उन लड़कियों में शामिल थी। 9 वह हैजा को
पसन्द आई बल्कि उसे उस की ख़ास मेहरबानी
हासिल हुई। ख़्वाजासरा ने जल्दी जल्दी बनाओ-
सिंगार का सिलसिला शुरू किया, खाने-पीने का
मुनासिब इन्तिज़ाम करवाया और शाही महल की
सात चुनीदा नौकरानियाँ आस्तर के हवाले कर दीं।
रिहाइश के लिए आस्तर और उस की लड़कियों को
ज़नानख़ाने के सब से अच्छे कमरे दिए गए।

10 आस्तर ने किसी को नहीं बताया था कि मैं यहूदी
औरत हूँ, क्यूँकि मर्दकी ने उसे हुक्म दिया था कि इस
के बारे में ख़ामोश रहे। 11 हर दिन मर्दकी ज़नानख़ाने

[f]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

के सहन से गुज़रता ताकि आस्तर के हाल का पता
करे और यह कि उस के साथ क्या क्या हो रहा है।
12–13 अख़स्वेरुस बादशाह से मिलने से पहले हर
कुंवारी को बारह महीनों का मुक़र्ररा बनाओ-सिंगार
करवाना था, छः माह मुर के तेल से और छः माह
बल्सान के तेल और रंग निखारने के दीगर तरीक़ों से।
जब उसे बादशाह के महल में जाना था तो ज़नानख़ाने
की जो भी चीज़ वह अपने साथ लेना चाहती उसे दी
जाती।
14 शाम के वक़्त वह महल में जाती और अगले दिन
उसे सुब्ह के वक़्त दूसरे ज़नानख़ाने में लाया जाता
जहाँ बादशाह की दाश्ताएँ शाशजज़ ख़्वाजासरा की
निगरानी में रहती थीं। इस के बाद वह फिर कभी
बादशाह के पास न आती। उसे सिर्फ़ इसी सूरत में
वापस लाया जाता कि वह बादशाह को ख़ास पसन्द
आती और वह उस का नाम ले कर उसे बुलाता।

आस्तर मलिका बन जाती है

15 होते होते आस्तर बिन्त अबीख़ैल की बारी आई
(अबीख़ैल मर्दकी का चचा था, और मर्दकी ने उस
की बेटी को लेपालक बना लिया था)। जब आस्तर
से पूछा गया कि आप ज़नानख़ाने की क्या चीज़ें अपने
साथ ले जाना चाहती हैं तो उस ने सिर्फ़ वह कुछ ले
लिया जो हैजा ख़्वाजासरा ने उस के लिए चुना। और
जिस ने भी उसे देखा उस ने उसे सराहा। 16 चुनाँचे
उसे बादशाह की हुकूमत के सातवें साल के दसवें
महीने बनाम तेबत में अख़स्वेरुस के पास महल में
लाया गया।
17 बादशाह को आस्तर दूसरी लड़कियों की
निस्बत कहीं ज़्यादा प्यारी लगी। दीगर तमाम
कुंवारियों की निस्बत उसे उस की ख़ास क़बूलियत
और मेहरबानी हासिल हुई। चुनाँचे बादशाह ने उस
के सर पर ताज रख कर उसे वश्ती की जगह मलिका
बना दिया। 18 इस मौक़े की ख़ुशी में उस ने आस्तर
के एज़ाज़ में बड़ी ज़ियाफ़त की। तमाम शुरफ़ा और
अफ़सरों को दावत दी गई। साथ साथ सूबों में
कुछ टैक्सों की मुआफ़ी का एलान किया गया और
फ़य्याज़ी से तुह्फ़े तक़्सीम किए गए।

मर्दकी बादशाह को बचाता है

19 जब कुंवारियों को एक बार फिर जमा किया
गया तो मर्दकी शाही सहन के दरवाज़े में बैठा था।
g20 आस्तर ने अब तक किसी को नहीं बताया था कि
मैं यहूदी हूँ, क्यूँकि मर्दकी ने यह बताने से मना किया
था। पहले की तरह जब वह उस के घर में रहती थी
अब भी आस्तर उस की हर बात मानती थी।
21 एक दिन जब मर्दकी शाही सहन के दरवाज़े में
बैठा था तो दो ख़्वाजासरा बनाम बिग्तान और तरश
ग़ुस्से में आ कर अख़स्वेरुस को क़त्ल करने की
साज़िशें करने लगे। दोनों शाही कमरों के पहरेदार
थे। 22 मर्दकी को पता चला तो उस ने आस्तर को
ख़बर पहुँचाई जिस ने मर्दकी का नाम ले कर बादशाह
को इत्तिला दी। 23 मुआमले की तफ़्तीश की गई तो
दुरुस्त साबित हुआ, और दोनों मुलाज़िमों को फाँसी
दे दी गई। यह वाक़िआ बादशाह की मौजूदगी में उस
किताब में दर्ज किया गया जिस में रोज़ाना उस की
हुकूमत के अहम वाक़िआत लिखे जाते थे।

हामान यहूदी क़ौम को हलाक करना चाहता है

3 1 कुछ देर के बाद बादशाह ने हामान बिन
हम्मदाता अजाजी को सरफ़राज़ करके दरबार
में सब से आला उह्दा दिया। 2 जब कभी हामान आ
मौजूद होता तो शाही सहन के दरवाज़े के तमाम शाही
अफ़सर मुँह के बल झुक जाते, क्यूँकि बादशाह ने
ऐसा करने का हुक्म दिया था। लेकिन मर्दकी ऐसा
नहीं करता था।

---

gशाही सहन के दरवाज़े में शाही इन्तिज़ामिया थी, इस लिए ऐन मुमकिन है कि मर्दकी शाही मुलाज़िम हो।

3 यह देख कर दीगर शाही मुलाज़िमों ने उस से पूछा,
“आप बादशाह के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी क्यूँ कर
रहे हैं?”
4 उस ने जवाब दिया, “मैं तो यहूदी हूँ।” रोज़-ब-
रोज़ दूसरे उसे समझाते रहे, लेकिन वह न माना।
आख़िरकार उन्हों ने हामान को इत्तिला दी, क्यूँकि
वह देखना चाहते थे कि क्या वह मर्दकी का जवाब
क़बूल करेगा या नहीं।
5 जब हामान ने ख़ुद देखा कि मर्दकी मेरे सामने मुँह
के बल नहीं झुकता तो वह आग-बगूला हो गया।
6 वह फ़ौरन मर्दकी को क़त्ल करने के मन्सूबे बनाने
लगा। लेकिन यह उस के लिए काफ़ी नहीं था। चूँकि
उसे बताया गया था कि मर्दकी यहूदी है इस लिए
वह फ़ार्सी सल्तनत में रहने वाले तमाम यहूदियों को
हलाक करने का रास्ता ढूँडने लगा।
7 चुनाँचे अख़स्वेरुस बादशाह की हुकूमत के 12वें
साल के पहले महीने नीसान [h]में हामान की मौजूदगी
में क़ुरआ डाला गया। क़ुरआ डालने से हामान
यहूदियों को क़त्ल करने की सब से मुबारक तारीख़
मालूम करना चाहता था। (क़ुरआ के लिए ‘पूर’ कहा
जाता था।) इस तरीक़े से 12वें महीने अदार का 13वाँ
दिन [i]निकला। 8 तब हामान ने बादशाह से बात की,
“आप की सल्तनत के तमाम सूबों में एक क़ौम
बिखरी हुई है जो अपने आप को दीगर क़ौमों से
अलग रखती है। उस के क़वानीन दूसरी तमाम क़ौमों
से मुख़्तलिफ़ हैं, और उस के अफ़राद बादशाह के
क़वानीन को नहीं मानते। मुनासिब नहीं कि बादशाह
उन्हें बर्दाश्त करें!
9 अगर बादशाह को मन्ज़ूर हो तो एलान करें कि
इस क़ौम को हलाक कर दिया जाए। तब मैं शाही
ख़ज़ानों में 3,35,000 किलोग्राम चाँदी जमा करा
दूँगा।”
10 बादशाह ने अपनी उंगली से वह अंगूठी उतारी
जो शाही मुहर लगाने के लिए इस्तेमाल होती थी और
उसे यहूदियों के दुश्मन हामान बिन हम्मदाता अजाजी
को दे कर 11 कहा, “चाँदी और क़ौम आप ही की हैं,
उस के साथ वह कुछ करें जो आप को अच्छा लगे।”
12 पहले महीने के 13वें दिन [j]हामान ने शाही मुहर्रिरों
को बुलाया ताकि वह उस की तमाम हिदायात के
मुताबिक़ ख़त लिख कर बादशाह के गवर्नरों, सूबों
के दीगर हाकिमों और तमाम क़ौमों के बुज़ुर्गों को
भेजें। यह ख़त हर क़ौम के अपने तर्ज़-ए-तहरीर और
अपनी ज़बान में क़लमबन्द हुए। उन्हें बादशाह का
नाम ले कर लिखा गया, फिर शाही अंगूठी की मुहर
उन पर लगाई गई। उन में ज़ैल का एलान किया गया।
13 “एक ही दिन में तमाम यहूदियों को हलाक और
पूरे तौर पर तबाह करना है, ख़्वाह छोटे हों या बड़े,
बच्चे हों या औरतें। साथ साथ उन की मिलकियत भी
ज़ब्त कर ली जाए।” इस के लिए 12वें महीने अदार
का 13वाँ दिन [k]मुक़र्रर किया गया।
यह एलान तेज़रौ क़ासिदों के ज़रीए सल्तनत के
तमाम सूबों में पहुँचाया गया 14 ताकि उस की
तस्दीक़ क़ानूनी तौर पर की जाए और तमाम क़ौमें
मुक़र्ररा दिन के लिए तय्यार हों।
15 बादशाह के हुक्म पर क़ासिद चल निकले। यह
एलान सोसन के क़िले में भी किया गया। फिर
बादशाह और हामान खाने-पीने के लिए बैठ गए।
लेकिन पूरे शहर में हलचल मच गई।

मर्दकी आस्तर से मदद माँगता है

4 1 जब मर्दकी को मालूम हुआ कि क्या हुआ है
तो उस ने रंजिश से अपने कपड़ों को फाड़ कर
टाट का लिबास पहन लिया और सर पर राख डाल
ली। फिर वह निकल कर बुलन्द आवाज़ से गिर्या-

[h]अप्रैल ता मई।

[i]7 मार्च, 473 क़ म।

[j]17 अप्रैल।

[k]7 मार्च।

ओ-ज़ारी करते करते शहर में से गुज़रा। 2 वह शाही
सहन के दरवाज़े तक पहुँच गया लेकिन दाख़िल न
हुआ, क्यूँकि मातमी कपड़े पहन कर दाख़िल होने
की इजाज़त नहीं थी। 3 सल्तनत के तमाम सूबों में
जहाँ जहाँ बादशाह का एलान पहुँचा वहाँ यहूदी ख़ूब
मातम करने और रोज़ा रख कर रोने और गिर्या-ओ-
ज़ारी करने लगे। बहुत से लोग टाट का लिबास पहन
कर राख में लेट गए।

4 जब आस्तर की नौकरानियों और ख़्वाजासराओं
ने आ कर उसे इत्तिला दी तो वह सख़्त घबरा गई।
उस ने मर्दकी को कपड़े भेज दिए जो वह अपने
मातमी कपड़ों के बदले पहन ले, लेकिन उस ने उन्हें
क़बूल न किया। 5 तब आस्तर ने हताक ख़्वाजासरा
को मर्दकी के पास भेजा ताकि वह मालूम करे कि
क्या हुआ है, मर्दकी ऐसी हरकतें क्यूँ कर रहा है।
(बादशाह ने हताक को आस्तर की ख़िदमत करने
की ज़िम्मादारी दी थी।)

6 हताक शाही सहन के दरवाज़े से निकल कर
मर्दकी के पास आया जो अब तक साथ वाले चौक में
था। 7 मर्दकी ने उसे हामान का पूरा मन्सूबा सुना कर
यह भी बताया कि हामान ने यहूदियों को हलाक करने
के लिए शाही ख़ज़ाने को कितने पैसे देने का वादा
किया है। 8 इस के इलावा मर्दकी ने ख़्वाजासरा को
उस शाही फ़रमान की कापी दी जो सोसन में सादिर
हुआ था और जिस में यहूदियों को नेस्त-ओ-नाबूद
करने का एलान किया गया था। उस ने गुज़ारिश की,
"यह एलान आस्तर को दिखा कर उन्हें तमाम हालात
से बाख़बर कर दें। उन्हें हिदायत दें कि बादशाह के
हुज़ूर जाएँ और उस से इल्तिजा करके अपनी क़ौम
की सिफ़ारिश करें।"

9 हताक वापस आया और मर्दकी की बातों की
ख़बर दी। 10 यह सुन कर आस्तर ने उसे दुबारा मर्दकी
के पास भेजा ताकि उसे बताए, 11 "बादशाह के
तमाम मुलाज़िम बल्कि सूबों के तमाम बाशिन्दे जानते
हैं कि जो भी बुलाए बग़ैर महल के अन्दरूनी सहन में
बादशाह के पास आए उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी,
ख़्वाह वह मर्द हो या औरत। वह सिर्फ़ इस सूरत में
बच जाएगा कि बादशाह सोने का अपना असा उस
की तरफ़ बढ़ाए। बात यह भी है कि बादशाह को मुझे
बुलाए 30 दिन हो गए हैं।"

12 आस्तर का पैग़ाम सुन कर 13 मर्दकी ने जवाब
वापस भेजा, "यह न सोचना कि मैं शाही महल में
रहती हूँ, इस लिए गो दीगर तमाम यहूदी हलाक हो
जाएँ मैं बच जाऊँगी। 14 अगर आप इस वक़्त ख़ामोश
रहेंगी तो यहूदी कहीं और से रिहाई और छुटकारा
पा लेंगे जबकि आप और आप के बाप का घराना
हलाक हो जाएंगे। क्या पता है, शायद आप इसी लिए
मलिका बन गई हैं कि ऐसे मौक़े पर यहूदियों की मदद
करें।"

15 आस्तर ने मर्दकी को जवाब भेजा, 16 "ठीक है,
फिर जाएँ और सोसन में रहने वाले तमाम यहूदियों
को जमा करें। मेरे लिए रोज़ा रख कर तीन दिन
और तीन रात न कुछ खाएँ, न पिएँ। मैं भी अपनी
नौकरानियों के साथ मिल कर रोज़ा रखूँगी। इस के
बाद बादशाह के पास जाऊँगी, गो यह क़ानून के
ख़िलाफ़ है। अगर मरना है तो मर ही जाऊँगी।"

17 तब मर्दकी चला गया और वैसा ही किया जैसा
आस्तर ने उसे हिदायत की थी।

आस्तर बादशाह और हामान को दावत देती है

5 1 तीसरे दिन आस्तर मलिका अपना शाही
लिबास पहने हुए महल के अन्दरूनी सहन में
दाख़िल हुई। यह सहन उस हाल के सामने था जिस
में तख़्त लगा था। उस वक़्त बादशाह दरवाज़े के
मुक़ाबिल अपने तख़्त पर बैठा था। 2 आस्तर को
सहन में खड़ी देख कर वह ख़ुश हुआ और सोने
के शाही असा को उस की तरफ़ बढ़ा दिया। तब
आस्तर क़रीब आई और असा के सिरे को छू दिया।
3 बादशाह ने उस से पूछा, "आस्तर मलिका, क्या
बात है? आप क्या चाहती हैं? मैं उसे देने के लिए
तय्यार हूँ, ख़्वाह सल्तनत का आधा हिस्सा क्यूँ न
हो!"

4 आस्तर ने जवाब दिया, “मैं ने आज के लिए
ज़ियाफ़त की तय्यारियाँ की हैं। अगर बादशाह को
मन्ज़ूर हो तो वह हामान को अपने साथ ले कर उस
में शिर्कत करें।”
5 बादशाह ने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया,
“जल्दी करो! हामान को बुलाओ ताकि हम आस्तर
की ख़्वाहिश पूरी कर सकें।” चुनाँचे बादशाह और
हामान आस्तर की तय्यारशुदा ज़ियाफ़त में शरीक
हुए। 6 मै पी पी कर बादशाह ने आस्तर से पूछा,
“अब मुझे बताएँ, आप क्या चाहती हैं? वह आप
को दिया जाएगा। अपनी दरख़्वास्त पेश करें, क्यूँकि
मैं सल्तनत के आधे हिस्से तक आप को देने के लिए
तय्यार हूँ।”
7 आस्तर ने जवाब दिया, “मेरी दरख़्वास्त और
आर्ज़ू यह है, 8 अगर बादशाह मुझ से ख़ुश हों और
उन्हें मेरी गुज़ारिश और दरख़्वास्त पूरी करना मन्ज़ूर
हो तो वह कल एक बार फिर हामान के साथ एक
ज़ियाफ़त में शिर्कत करें जो मैं आप के लिए तय्यार
करूँ। फिर मैं बादशाह को जवाब दूँगी।”

मर्दकी को क़त्ल करने के लिए हामान की तय्यारियाँ

9 उस दिन जब हामान महल से निकला तो वह बड़ा
ख़ुश और ज़िन्दादिल था। लेकिन फिर उस की नज़र
मर्दकी पर पड़ गई जो शाही सहन के दरवाज़े के
पास बैठा था। न वह खड़ा हुआ, न हामान को देख
कर काँप गया। हामान लाल-पीला हो गया, 10 लेकिन
अपने आप पर क़ाबू रख कर वह चला गया।
घर पहुँच कर वह अपने दोस्तों और अपनी बीवी
ज़रिश को अपने पास बुला कर 11 उन के सामने
अपनी ज़बरदस्त दौलत और मुतअद्दिद बेटों पर शेख़ी
मारने लगा। उस ने उन्हें उन सारे मौक़ों की फ़हरिस्त
सुनाई जिन पर बादशाह ने उस की इज़्ज़त की थी
और फ़ख़र किया कि बादशाह ने मुझे तमाम बाक़ी
शुरफ़ा और अफ़सरों से ज़्यादा ऊँचा उहदा दिया है।
12 हामान ने कहा, “न सिर्फ़ यह, बल्कि आज आस्तर
मलिका ने ऐसी ज़ियाफ़त की जिस में बादशाह के
इलावा सिर्फ़ मैं ही शरीक था। और मुझे मलिका से
कल के लिए भी दावत मिली है कि बादशाह के साथ
ज़ियाफ़त में शिर्कत करूँ। 13 लेकिन जब तक मर्दकी
यहूदी शाही महल के सहन के दरवाज़े पर बैठा नज़र
आता है मैं चैन का साँस नहीं लूँगा।”
14 उस की बीवी ज़रिश और बाक़ी अज़ीज़ों ने
मश्वरा दिया, “सूली बनवाएँ जिस की ऊँचाई 75 फ़ुट
हो। फिर कल सुब्ह-सवेरे बादशाह के पास जा कर
गुज़ारिश करें कि मर्दकी को उस से लटकाया जाए।
इस के बाद आप तसल्ली से बादशाह के साथ जा कर
ज़ियाफ़त के मज़े ले सकते हैं।” यह मन्सूबा हामान
को अच्छा लगा, और उस ने सूली तय्यार करवाई।

बादशाह मर्दकी की इज़्ज़त करता है

6 1 उस रात बादशाह को नींद न आई, इस लिए
उस ने हुक्म दिया कि वह किताब लाई जाए
जिस में रोज़ाना हुकूमत के अहम वाक़िआत लिखे
जाते हैं। उस में से पढ़ा गया 2 तो इस का भी
ज़िक्र हुआ कि मर्दकी ने किस तरह बादशाह को
दोनों ख़्वाजासराओं बिग्ताना और तरश के हाथ से
बचाया था, कि जब शाही कमरों के इन पहरेदारों
ने अख़स्वेरुस को क़त्ल करने की साज़िश की तो
मर्दकी ने बादशाह को इत्तिला दी थी। 3 जब यह
वाक़िआ पढ़ा गया तो बादशाह ने पूछा, “इस के
इवज़ मर्दकी को क्या एज़ाज़ दिया गया?” मुलाज़िमों
ने जवाब दिया, “कुछ भी नहीं दिया गया।”
4 उसी लम्हे हामान महल के बैरूनी सहन में आ
पहुँचा था ताकि बादशाह से मर्दकी को उस सूली से
लटकाने की इजाज़त माँगे जो उस ने उस के लिए
बनवाई थी। बादशाह ने सवाल किया, “बाहर सहन
में कौन है?” 5 मुलाज़िमों ने जवाब दिया, “हामान
है।” बादशाह ने हुक्म दिया, “उसे अन्दर आने दो।”
6 हामान दाख़िल हुआ तो बादशाह ने उस से पूछा,
“उस आदमी के लिए क्या किया जाए जिस की
बादशाह ख़ास इज़्ज़त करना चाहे?” हामान ने सोचा,
“वह मेरी ही बात कर रहा है! क्यूँकि मेरी निस्बत

कौन है जिस की बादशाह ज़्यादा इज़्ज़त करना
चाहता है?" 7 चुनाँचे उस ने जवाब दिया, "जिस
आदमी की बादशाह ख़ास इज़्ज़त करना चाहें 8 उस
के लिए शाही लिबास चुना जाए जो बादशाह ख़ुद
पहन चुके हों। एक घोड़ा भी लाया जाए जिस का
सर शाही सजावट से सजा हुआ हो और जिस पर
बादशाह ख़ुद सवार हो चुके हों। 9 यह लिबास और
घोड़ा बादशाह के आलातरीन अफ़सरों में से एक
के सपुर्द किया जाए। वही उस शख़्स को जिस की
बादशाह ख़ास इज़्ज़त करना चाहते हैं कपड़े पहनाए
और उसे घोड़े पर बिठा कर शहर के चौक में से
गुज़ारे। साथ साथ वह उस के आगे आगे चल कर
एलान करे, 'यही उस के साथ किया जाता है जिस
की इज़्ज़त बादशाह करना चाहते हैं'।"

10 अख़स्वेरुस ने हामान से कहा, "फिर जल्दी करें,
मर्दकी यहूदी शाही सहन के दरवाज़े के पास बैठा है।
शाही लिबास और घोड़ा मंगवा कर उस के साथ ऐसा
ही सुलूक करें। जो भी करने का मश्वरा आप ने दिया
वही कुछ करें, और ध्यान दें कि इस में किसी भी
चीज़ की कमी न हो!"

11 हामान को ऐसा ही करना पड़ा। शाही लिबास को
चुन कर उस ने उसे मर्दकी को पहना दिया। फिर उसे
बादशाह के अपने घोड़े पर बिठा कर उस ने उसे शहर
के चौक में से गुज़ारा। साथ साथ वह उस के आगे
आगे चल कर एलान करता रहा, "यही उस शख़्स के
साथ किया जाता है जिस की इज़्ज़त बादशाह करना
चाहता है।" 12 फिर मर्दकी शाही सहन के दरवाज़े के
पास वापस आया।

लेकिन हामान उदास हो कर जल्दी से अपने घर
चला गया। शर्म के मारे उस ने मुँह पर कपड़ा डाल
लिया था। 13 उस ने अपनी बीवी ज़रिश और अपने
दोस्तों को सब कुछ सुनाया जो उस के साथ हुआ
था। तब उस के मुशीरों और बीवी ने उस से कहा,
"आप का बेड़ा ग़र्क़ हो गया है, क्यूँकि मर्दकी यहूदी
है और आप उस के सामने शिकस्त खाने लगे हैं।
आप उस का मुक़ाबला नहीं कर सकेंगे।"

14 वह अभी उस से बात कर ही रहे थे कि बादशाह
के ख़्वाजासरा पहुँच गए और उसे ले कर जल्दी
जल्दी आस्तर के पास पहुँचाया। ज़ियाफ़त तय्यार
थी।

हामान का सत्यानास

7 1 चुनाँचे बादशाह और हामान आस्तर मलिका
की ज़ियाफ़त में शरीक हुए। 2 मै पीते वक़्त
बादशाह ने पहले दिन की तरह अब भी पूछा,
"आस्तर मलिका, अब बताएँ, आप क्या चाहती हैं?
वह आप को दिया जाएगा। अपनी दरख़्वास्त पेश
करें, क्यूँकि मैं सल्तनत के आधे हिस्से तक आप
को देने के लिए तय्यार हूँ।"

3 मलिका ने जवाब दिया, "अगर बादशाह मुझ से
ख़ुश हों और उन्हें मेरी बात मन्ज़ूर हो तो मेरी गुज़ारिश
पूरी करें कि मेरी और मेरी क़ौम की जान बची रहे।
4 क्यूँकि मुझे और मेरी क़ौम को उन के हाथ बेच
डाला गया है जो हमें तबाह और हलाक करके नेस्त-
ओ-नाबूद करना चाहते हैं। अगर हम बिक कर ग़ुलाम
और लौंडियाँ बन जाते तो मैं ख़ामोश रहती। ऐसी
कोई मुसीबत बादशाह को तंग करने के लिए काफ़ी
न होती।"

5 यह सुन कर अख़स्वेरुस ने आस्तर से सवाल
किया, "कौन ऐसी हरकत करने की जुरअत करता
है? वह कहाँ है?" 6 आस्तर ने जवाब दिया, "हमारा
दुश्मन और मुख़ालिफ़ यह शरीर आदमी हामान है!"

तब हामान बादशाह और मलिका से दहशत खाने
लगा। 7 बादशाह आग-बगूला हो कर खड़ा हो गया
और मै को छोड़ कर महल के बाग़ में टहलने लगा।
हामान पीछे रह कर आस्तर से इल्तिजा करने लगा,
"मेरी जान बचाएँ" क्यूँकि उसे अन्दाज़ा हो गया था
कि बादशाह ने मुझे सज़ा-ए-मौत देने का फ़ैसला कर
लिया है।

8 जब बादशाह वापस आया तो क्या देखता है कि
हामान उस सोफ़े पर गिर गया है जिस पर आस्तर
टेक लगाए बैठी है। बादशाह गरजा, "क्या यह

आदमी यहीं महल में मेरे हुज़ूर मलिका की इस्मतदरी
करना चाहता है?” जूँ ही बादशाह ने यह अल्फ़ाज़
कहे मुलाज़िमों ने हामान के मुँह पर कपड़ा डाल
दिया। 9 बादशाह का ख़्वाजासरा ख़र्बूनाह बोल उठा,
“हामान ने अपने घर के क़रीब सूली तय्यार करवाई
है जिस की ऊँचाई 75 फ़ुट है। वह मर्दकी के लिए
बनवाई गई है, उस शख़्स के लिए जिस ने बादशाह
की जान बचाई।” बादशाह ने हुक्म दिया, “हामान
को उस से लटका दो।”
10 चुनाँचे हामान को उसी सूली से लटका दिया गया
जो उस ने मर्दकी के लिए बनवाई थी। तब बादशाह
का ग़ुस्सा ठंडा हो गया।

अख़स्वेरुस यहूदियों की मदद करता है

8 1 उसी दिन अख़स्वेरुस ने आस्तर मलिका को
यहूदियों के दुश्मन हामान का घर दे दिया। फिर
मर्दकी को बादशाह के सामने लाया गया, क्यूँकि
आस्तर ने उसे बता दिया था कि वह मेरा रिश्तेदार
है। 2 बादशाह ने अपनी उंगली से वह अंगूठी उतारी
जो मुहर लगाने के लिए इस्तेमाल होती थी और जिसे
उस ने हामान से वापस ले लिया था। अब उस ने उसे
मर्दकी के हवाले कर दिया। उस वक़्त आस्तर ने उसे
हामान की मिलकियत का निगरान भी बना दिया।
3 एक बार फिर आस्तर बादशाह के सामने गिर
गई और रो रो कर इल्तिमास करने लगी, “जो शरीर
मन्सूबा हामान अजाजी ने यहूदियों के ख़िलाफ़ बांध
लिया है उसे रोक दें।” 4 बादशाह ने सोने का अपना
असा आस्तर की तरफ़ बढ़ाया, तो वह उठ कर
उस के सामने खड़ी हो गई। 5 उस ने कहा, “अगर
बादशाह को बात अच्छी और मुनासिब लगे, अगर
मुझे उन की मेहरबानी हासिल हो और वह मुझ से
ख़ुश हों तो वह हामान बिन हम्मदाता अजाजी के उस
फ़रमान को मन्सूख़ करें जिस के मुताबिक़ सल्तनत
के तमाम सूबों में रहने वाले यहूदियों को हलाक
करना है। 6 अगर मेरी क़ौम और नस्ल मुसीबत में
फंस कर हलाक हो जाए तो मैं यह किस तरह बर्दाश्त
करूँगी?”
7 तब अख़स्वेरुस ने आस्तर और मर्दकी यहूदी से
कहा, “मैं ने आस्तर को हामान का घर दे दिया। उसे
ख़ुद मैं ने यहूदियों पर हम्ला करने की वजह से फाँसी
दी है। 8 लेकिन जो भी फ़रमान बादशाह के नाम में
सादिर हुआ है और जिस पर उस की अंगूठी की मुहर
लगी है उसे मन्सूख़ नहीं किया जा सकता। लेकिन
आप एक और काम कर सकते हैं। मेरे नाम में एक
और फ़रमान जारी करें जिस पर मेरी मुहर लगी हो।
उसे अपनी तसल्ली के मुताबिक़ यूँ लिखें कि यहूदी
महफ़ूज़ हो जाएँ।”
9 उसी वक़्त बादशाह के मुहर्रिर बुलाए गए। तीसरे
महीने सीवान का 23वाँ दिन [l]था। उन्हों ने मर्दकी
की तमाम हिदायात के मुताबिक़ फ़रमान लिख दिया
जिसे यहूदियों और तमाम 127 सूबों के गवर्नरों,
हाकिमों और रईसों को भेजना था। भारत से ले कर
एथोपिया तक यह फ़रमान हर सूबे के अपने तर्ज़-ए-
तहरीर और हर क़ौम की अपनी ज़बान में क़लमबन्द
था। यहूदी क़ौम को भी उस के अपने तर्ज़-ए-तहरीर
और उस की अपनी ज़बान में फ़रमान मिल गया।
10 मर्दकी ने यह फ़रमान बादशाह के नाम में लिख कर
उस पर शाही मुहर लगाई। फिर उस ने उसे शाही डाक
के तेज़रफ़्तार घोड़ों पर सवार क़ासिदों के हवाले कर
दिया। फ़रमान में लिखा था,
11 “बादशाह हर शहर के यहूदियों को अपने दिफ़ा
के लिए जमा होने की इजाज़त देते हैं। अगर
मुख़्तलिफ़ क़ौमों और सूबों के दुश्मन उन पर हम्ला
करें तो यहूदियों को उन्हें बाल-बच्चों समेत तबाह
करने और हलाक करके नेस्त-ओ-नाबूद करने की
इजाज़त है। नीज़, वह उन की मिलकियत पर क़ब्ज़ा
कर सकते हैं। 12 एक ही दिन यानी 12वें महीने अदार

[l] 25 जून।

के 13वें दिन [m]यहूदियों को बादशाह के तमाम सूबों
में यह कुछ करने की इजाज़त है।”
13 हर सूबे में फ़रमान की क़ानूनी तस्दीक़ करनी थी
और हर क़ौम को इस की ख़बर पहुँचानी थी ताकि
मुक़र्ररा दिन यहूदी अपने दुश्मनों से इन्तिक़ाम लेने
के लिए तय्यार हों। 14 बादशाह के हुक्म पर तेज़रौ
क़ासिद शाही डाक के बेहतरीन घोड़ों पर सवार हो
कर चल पड़े। फ़रमान का एलान सोसन के क़िले में
भी हुआ।
15 मर्दकी क़िर्मिज़ी और सफ़ेद रंग का शाही
लिबास, नफ़ीस कतान और अर्ग़वानी रंग की चादर
और सर पर सोने का बड़ा ताज पहने हुए महल
से निकला। तब सोसन के बाशिन्दे नारे लगा लगा
कर ख़ुशी मनाने लगे। 16 यहूदियों के लिए आब-
ओ-ताब, ख़ुशी-ओ-शादमानी और इज़्ज़त-ओ-जलाल
का ज़माना शुरू हुआ। 17 हर सूबे और हर शहर में
जहाँ भी बादशाह का नया फ़रमान पहुँच गया, वहाँ
यहूदियों ने ख़ुशी के नारे लगा लगा कर एक दूसरे
की ज़ियाफ़त की और जश्न मनाया। उस वक़्त दूसरी
क़ौमों के बहुत से लोग यहूदी बन गए, क्यूँकि उन पर
यहूदियों का ख़ौफ़ छा गया था।

यहूदी बदला लेते हैं

9 1 फिर 12वें महीने अदार का 13वाँ दिन [n]आ
गया जब बादशाह के फ़रमान पर अमल करना
था। दुश्मनों ने उस दिन यहूदियों पर ग़ालिब आने
की उम्मीद रखी थी, लेकिन अब इस के उलट हुआ,
यहूदी ख़ुद उन पर ग़ालिब आए जो उन से नफ़रत
रखते थे। 2 सल्तनत के तमाम सूबों में वह अपने
अपने शहरों में जमा हुए ताकि उन पर हम्ला करें
जो उन्हें नुक़्सान पहुँचाना चाहते थे। कोई उन का
मुक़ाबला न कर सका, क्यूँकि दीगर तमाम क़ौमों
के लोग उन से डर गए थे। 3 साथ साथ सूबों के
शुरफ़ा, गवर्नरों, हाकिमों और दीगर शाही अफ़सरों
ने यहूदियों की मदद की, क्यूँकि मर्दकी का ख़ौफ़
उन पर तारी हो गया था, 4 और दरबार में उस के
ऊँचे उह्दे और उस के बढ़ते हुए असर-ओ-रसूख़
की ख़बर तमाम सूबों में फैल गई थी।
5 उस दिन यहूदियों ने अपने दुश्मनों को तलवार
से मार डाला और हलाक करके नेस्त-ओ-नाबूद कर
दिया। जो भी उन से नफ़रत रखता था उस के साथ
उन्हों ने जो जी चाहा सुलूक किया। 6 सोसन के क़िले
में उन्हों ने 500 आदमियों को मार डाला, 7–10 नीज़
यहूदियों के दुश्मन हामान के 10 बेटों को भी।
उन के नाम पर्शन्दाता, दल्फ़ून, अस्पाता, पोराता,
अदलियाह, अरीदाता, पर्मश्ता, अरीसी, अरिदी और
वैज़ाता थे। लेकिन यहूदियों ने उन का माल न लूटा।
11 उसी दिन बादशाह को इत्तिला दी गई कि सोसन
के क़िले में कितने अफ़राद हलाक हुए थे। 12 तब
उस ने आस्तर मलिका से कहा, “सिर्फ़ यहाँ सोसन
के क़िले में यहूदियों ने हामान के 10 बेटों के इलावा
500 आदमियों को मौत के घाट उतार दिया है। तो
फिर उन्हों ने दीगर सूबों में क्या कुछ न किया होगा!
अब मुझे बताएँ, आप मज़ीद क्या चाहती हैं? वह
आप को दिया जाएगा। अपनी दरख़्वास्त पेश करें,
क्यूँकि वह पूरी की जाएगी।” 13 आस्तर ने जवाब
दिया, “अगर बादशाह को मन्ज़ूर हो तो सोसन के
यहूदियों को इजाज़त दी जाए कि वह आज की तरह
कल भी अपने दुश्मनों पर हम्ला करें। और हामान के
10 बेटों की लाशें सूली से लटकाई जाएँ।”
14 बादशाह ने इजाज़त दी तो सोसन में इस का
एलान किया गया। तब हामान के 10 बेटों को सूली
से लटका दिया गया, 15 और अगले दिन यानी महीने
के 14वें दिन [o]शहर के यहूदी दुबारा जमा हुए। इस
बार उन्हों ने 300 आदमियों को क़त्ल किया। लेकिन
उन्हों ने किसी का माल न लूटा।

---

[m] 7 मार्च।

[n] 7 मार्च।

[o] 8 मार्च।

16–17 सल्तनत के सूबों के बाक़ी यहूदी भी महीने
के 13वें दिन [p]अपने दिफ़ा के लिए जमा हुए थे। उन्हों
ने 75,000 दुश्मनों को क़त्ल किया लेकिन किसी का
माल न लूटा था। अब वह दुबारा चैन का साँस ले
कर आराम से ज़िन्दगी गुज़ार सकते थे। अगले दिन
उन्हों ने एक दूसरे की ज़ियाफ़त करके ख़ुशी का बड़ा
जश्न मनाया। 18 सोसन के यहूदियों ने महीने के 13वें
और 14वें दिन जमा हो कर अपने दुश्मनों पर हम्ला
किया था, इस लिए उन्हों ने 15वें दिन ख़ुशी का बड़ा
जश्न मनाया। 19 यही वजह है कि दीहात और खुले
शहरों में रहने वाले यहूदी आज तक 12वें महीने के
14वें दिन [q]जश्न मनाते हुए एक दूसरे की ज़ियाफ़त
करते और एक दूसरे को तुह्फ़े देते हैं।

ईद-ए-पूरीम की इब्तिदा

20 जो कुछ उस वक़्त हुआ था उसे मर्दकी ने
क़लमबन्द कर दिया। साथ साथ उस ने फ़ार्सी
सल्तनत के क़रीबी और दूरदराज़ के तमाम सूबों में
आबाद यहूदियों को ख़त लिख दिए 21 जिन में उस ने
एलान किया, "अब से सालाना अदार महीने के 14वें
और 15वें दिन जश्न मनाना है। 22 ख़ुशी मनाते हुए
एक दूसरे की ज़ियाफ़त करना, एक दूसरे को तुह्फ़े
देना और ग़रीबों में ख़ैरात तक़्सीम करना, क्यूँकि
इन दिनों के दौरान आप को अपने दुश्मनों से सुकून
हासिल हुआ है, आप का दुख सुख में और आप का
मातम शादमानी में बदल गया।"

23 मर्दकी की इन हिदायात के मुताबिक़ इन दो दिनों
का जश्न दस्तूर बन गया।

24–26 ईद का नाम 'पूरीम' पड़ गया, क्यूँकि जब
यहूदियों का दुश्मन हामान बिन हम्मदाता अजाजी
उन सब को हलाक करने का मन्सूबा बांध रहा था
तो उस ने यहूदियों को मारने का सब से मुबारक दिन
मालूम करने के लिए क़ुरआ बनाम पूर डाल दिया।
जब अख़स्वेरुस को सब कुछ मालूम हुआ तो उस
ने हुक्म दिया कि हामान को वह सज़ा दी जाए जिस
की तय्यारियाँ उस ने यहूदियों के लिए की थीं। तब
उसे उस के बेटों समेत फाँसी से लटकाया गया।

चूँकि यहूदी इस तजरिबे से गुज़रे थे और मर्दकी
ने हिदायत दी थी 27 इस लिए वह मुत्तफ़िक़ हुए कि
हम सालाना इसी वक़्त यह दो दिन ऐन हिदायात के
मुताबिक़ मनाएँगे। यह दस्तूर न सिर्फ़ हमारा फ़र्ज़ है,
बल्कि हमारी औलाद और उन ग़ैरयहूदियों का भी
जो यहूदी मज़्हब में शरीक हो जाएंगे। 28 लाज़िम है
कि जो कुछ हुआ है हर नस्ल और हर ख़ानदान उसे
याद करके मनाता रहे, ख़्वाह वह किसी भी सूबे या
शहर में क्यूँ न हो। ज़रूरी है कि यहूदी पूरीम की ईद
मनाने का दस्तूर कभी न भूलें, कि उस की याद उन
की औलाद में से कभी भी मिट न जाए।

29 मलिका आस्तर बिन्त अबीख़ैल और मर्दकी
यहूदी ने पूरे इख़तियार के साथ पूरीम की ईद के बारे
में एक और ख़त लिख दिया ताकि उस की तस्दीक़
हो जाए। 30 यह ख़त फ़ार्सी सल्तनत के 127 सूबों
में आबाद तमाम यहूदियों को भेजा गया। सलामती
की दुआ और अपनी वफ़ादारी का इज़हार करने के
बाद 31 मलिका और मर्दकी ने उन्हें दुबारा हिदायत
की, "जिस तरह हम ने फ़रमाया है, यह ईद लाज़िमन
मुतअय्यिन औक़ात के ऐन मुताबिक़ मनानी है। इसे
मनाने के लिए यूँ मुत्तफ़िक़ हो जाएँ जिस तरह आप ने
अपने और अपनी औलाद के लिए रोज़ा रखने और
मातम करने के दिन मुक़र्रर किए हैं।" 32 अपने इस
फ़रमान से आस्तर ने पूरीम की ईद और उसे मनाने के
क़वाइद की तस्दीक़ की, और यह तारीख़ी किताब
में दर्ज किया गया।

मर्दकी अपनी क़ौम का सहारा बना रहता है

10 1 बादशाह ने पूरी सल्तनत के तमाम
ममालिक पर साहिली इलाक़ों तक टैक्स
लगाया। 2 उस की तमाम ज़बरदस्त कामयाबियों

[p]7 मार्च।

[q]फ़र्वरी ता मार्च।

का बयान ‘शाहान-ए-मादी-ओ-फ़ार्स की तारीख़’ की किताब में किया गया है। वहाँ इस का भी पूरा ज़िक्र है कि उस ने मर्दकी को किस ऊँचे उह्दे पर फ़ाइज़ किया था। [3]मर्दकी बादशाह के बाद सल्तनत का सब से आला अफ़्सर था। यहूदियों में वह मुअज़्ज़ज़ था, और वह उस की बड़ी क़दर करते थे, क्यूँकि वह अपनी क़ौम की बहबूदी का तालिब रहता और तमाम यहूदियों के हक़ में बात करता था।

अय्यूब

अय्यूब की दीनदारी

1 [1] मुल्क-ए-ऊज़ में एक बेइल्ज़ाम आदमी रहता
था जिस का नाम अय्यूब था। वह सीधी राह
पर चलता, अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और हर बुराई
से दूर रहता था। [2] उस के सात बेटे और तीन बेटियाँ
पैदा हुईं। [3] साथ साथ उस के बहुत माल-मवेशी थे
: 7,000 भेड़-बकरियाँ, 3,000 ऊँट, बैलों की 500
जोड़ियाँ और 500 गधियाँ। उस के बेशुमार नौकर-
नौकरानियाँ भी थे। ग़रज़ मशरिक़ के तमाम बाशिन्दों
में इस आदमी की हैसियत सब से बड़ी थी।

[4] उस के बेटों का दस्तूर था कि बारी बारी अपने
घरों में ज़ियाफ़त करें। इस के लिए वह अपनी तीन
बहनों को भी अपने साथ खाने और पीने की दावत
देते थे। [5] हर दफ़ा जब ज़ियाफ़त के दिन इख़तिताम
तक पहुँचते तो अय्यूब अपने बच्चों को बुला कर
उन्हें पाक-साफ़ कर देता और सुब्ह-सवेरे उठ कर
हर एक के लिए भस्म होने वाली एक एक क़ुर्बानी
पेश करता। क्यूँकि वह कहता था, "हो सकता है मेरे
बच्चों ने गुनाह करके दिल में अल्लाह पर लानत की
हो।" चुनाँचे अय्यूब हर ज़ियाफ़त के बाद ऐसा ही
करता था।

अय्यूब के किरदार पर इल्ज़ाम

[6] एक दिन फ़रिश्ते [r]अपने आप को रब के हुज़ूर पेश
करने आए। इब्लीस भी उन के दरमियान मौजूद था।
[7] रब ने इब्लीस से पूछा, "तू कहाँ से आया है?"
इब्लीस ने जवाब दिया, "मैं दुनिया में इधर उधर
घूमता फिरता रहा।"

[8] रब बोला, "क्या तू ने मेरे बन्दा अय्यूब पर
तवज्जुह दी? दुनिया में उस जैसा कोई और नहीं।
क्यूँकि वह बेइल्ज़ाम है, वह सीधी राह पर चलता,
अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और हर बुराई से दूर रहता
है।"

[9] इब्लीस ने रब को जवाब दिया, "बेशक, लेकिन
क्या अय्यूब यूँ ही अल्लाह का ख़ौफ़ मानता है? [10] तू
ने तो उस के, उस के घराने के और उस की तमाम
मिलकियत के इर्दगिर्द हिफ़ाज़ती बाड़ लगाई है। और
जो कुछ उस के हाथ ने किया उस पर तू ने बरकत
दी, नतीजे में उस की भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल
पूरे मुल्क में फैल गए हैं। [11] लेकिन वह क्या करेगा
अगर तू अपना हाथ ज़रा बढ़ा कर सब कुछ तबाह
करे जो उसे हासिल है। तब वह तेरे मुँह पर ही तुझ
पर लानत करेगा।"

[12] रब ने इब्लीस से कहा, "ठीक है, जो कुछ भी
उस का है वह तेरे हाथ में है। लेकिन उस के बदन
को हाथ न लगाना।" इब्लीस रब के हुज़ूर से चला
गया।

[13] एक दिन अय्यूब के बेटे-बेटियाँ मामूल के
मुताबिक़ ज़ियाफ़त कर रहे थे। वह बड़े भाई के घर
में खाना खा रहे और मै पी रहे थे। [14] अचानक एक
क़ासिद अय्यूब के पास पहुँच कर कहने लगा, "बैल
खेत में हल चला रहे थे और गधियाँ साथ वाली
ज़मीन पर चर रही थीं [15] कि सबा के लोगों ने हम
पर हम्ला करके सब कुछ छीन लिया। उन्हों ने तमाम
मुलाज़िमों को तलवार से मार डाला, सिर्फ़ मैं ही आप
को यह बताने के लिए बच निकला हूँ।"

[16] वह अभी बात कर ही रहा था कि एक और
क़ासिद पहुँचा जिस ने इत्तिला दी, "अल्लाह की आग

---

[r]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अल्लाह के फ़र्ज़न्द।

ने आसमान से गिर कर आप की तमाम भेड़-बकरियों
और मुलाज़िमों को भस्म कर दिया। सिर्फ़ मैं ही आप
को यह बताने के लिए बच निकला हूँ।”
17 वह अभी बात कर ही रहा था कि तीसरा क़ासिद
पहुँचा। वह बोला, “बाबल के कस्दियों ने तीन गुरोहों
में तक़्सीम हो कर हमारे ऊँटों पर हम्ला किया और
सब कुछ छीन लिया। तमाम मुलाज़िमों को उन्हों ने
तलवार से मार डाला, सिर्फ़ मैं ही आप को यह बताने
के लिए बच निकला हूँ।”
18 वह अभी बात कर ही रहा था कि चौथा क़ासिद
पहुँचा। उस ने कहा, “आप के बेटे-बेटियाँ अपने बड़े
भाई के घर में खाना खा रहे और मै पी रहे थे 19 कि
अचानक रेगिस्तान की जानिब से एक ज़ोरदार आँधी
आई जो घर के चारों कोनों से यूँ टकराई कि वह
जवानों पर गिर पड़ा। सब के सब हलाक हो गए।
सिर्फ़ मैं ही आप को यह बताने के लिए बच निकला
हूँ।”
20 यह सब कुछ सुन कर अय्यूब उठा। अपना
लिबास फाड़ कर उस ने अपने सर के बाल मुंडवाए।
फिर उस ने ज़मीन पर गिर कर औंधे मुँह रब को
सिज्दा किया। 21 वह बोला, “मैं नंगी हालत में माँ के
पेट से निकला और नंगी हालत में कूच कर जाऊँगा।
रब ने दिया, रब ने लिया, रब का नाम मुबारक हो!”
22 इस सारे मुआमले में अय्यूब ने न गुनाह किया,
न अल्लाह के बारे में कुफ़्र बका।

अय्यूब पर बीमारी का हम्ला

2 1 एक दिन फ़रिश्ते [s]दुबारा अपने आप को रब
के हुज़ूर पेश करने आए। इब्लीस भी उन के
दरमियान मौजूद था। 2 रब ने इब्लीस से पूछा, “तू
कहाँ से आया है?” इब्लीस ने जवाब दिया, “मैं
दुनिया में इधर उधर घूमता फिरता रहा।” 3 रब बोला,
“क्या तू ने मेरे बन्दे अय्यूब पर तवज्जुह दी? ज़मीन
पर उस जैसा कोई और नहीं। वह बेइल्ज़ाम है,
वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का ख़ौफ़ मानता
और हर बुराई से दूर रहता है। अभी तक वह अपने
बेइल्ज़ाम किरदार पर क़ाइम है हालाँकि तू ने मुझे
उसे बिलावजह तबाह करने पर उकसाया।”
4 इब्लीस ने जवाब दिया, “खाल का बदला खाल
ही होता है! इन्सान अपनी जान को बचाने के लिए
अपना सब कुछ दे देता है। 5 लेकिन वह क्या करेगा
अगर तू अपना हाथ ज़रा बढ़ा कर उस का जिस्म [t]छू
दे? तब वह तेरे मुँह पर ही तुझ पर लानत करेगा।”
6 रब ने इब्लीस से कहा, “ठीक है, वह तेरे हाथ में
है। लेकिन उस की जान को मत छेड़ना।” 7 इब्लीस
रब के हुज़ूर से चला गया और अय्यूब को सताने
लगा। चाँद से ले कर तल्वे तक अय्यूब के पूरे जिस्म
पर बदतरीन क़िस्म के फोड़े निकल आए। 8 तब
अय्यूब राख में बैठ गया और ठीकरे से अपनी जिल्द
को खुरचने लगा।
9 उस की बीवी बोली, “क्या तू अब तक अपने
बेइल्ज़ाम किरदार पर क़ाइम है? अल्लाह पर लानत
करके दम छोड़ दे!” 10 लेकिन उस ने जवाब दिया,
“तू अहमक़ औरत की सी बातें कर रही है। अल्लाह
की तरफ़ से भलाई तो हम क़बूल करते हैं, तो क्या
मुनासिब नहीं कि उस के हाथ से मुसीबत भी क़बूल
करें?” इस सारे मुआमले में अय्यूब ने अपने मुँह से
गुनाह न किया।

अय्यूब के तीन दोस्त

11 अय्यूब के तीन दोस्त थे। उन के नाम इलीफ़ज़
तेमानी, बिल्दद सूख़ी और ज़ूफ़र नामाती थे। जब
उन्हें इत्तिला मिली कि अय्यूब पर यह तमाम आफ़त
आ गई है तो हर एक अपने घर से रवाना हुआ। उन्हों
ने मिल कर फ़ैसला किया कि इकट्ठे अफ़्सोस करने
और अय्यूब को तसल्ली देने जाएंगे। 12 जब उन्हों ने
दूर से अपनी नज़र उठा कर अय्यूब को देखा तो उस
की इतनी बुरी हालत थी कि वह पहचाना नहीं जाता

[s]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अल्लाह के फ़र्ज़न्द।

[t]लफ़्ज़ी तर्जुमा : गोश्त-पोस्त और हड्डियाँ।

था। तब वह ज़ार-ओ-क़तार रोने लगे। अपने कपड़े
फाड़ कर उन्हों ने अपने सरों पर ख़ाक डाली। 13 फिर
वह उस के साथ ज़मीन पर बैठ गए। सात दिन और
सात रात वह इसी हालत में रहे। इस पूरे अर्से में
उन्हों ने अय्यूब से एक भी बात न की, क्यूँकि उन्हों
ने देखा कि वह शदीद दर्द का शिकार है।

अय्यूब की आह-ओ-ज़ारी

3 1 तब अय्यूब बोल उठा और अपने जन्म दिन
पर लानत करने लगा। 2 उस ने कहा,
3 "वह दिन मिट जाए जब मैं ने जन्म लिया, वह रात
जिस ने कहा, 'पेट में लड़का पैदा हुआ है!' 4 वह
दिन अंधेरा ही अंधेरा हो जाए, एक किरन भी उसे
रौशन न करे। अल्लाह भी जो बुलन्दियों पर है उस का
ख़याल न करे। 5 तारीकी और घना अंधेरा उस पर
क़ब्ज़ा करे, काले काले बादल उस पर छाए रहें, हाँ
वह रौशनी से महरूम हो कर सख़्त दहशतज़दा हो
जाए। 6 घना अंधेरा उस रात को छीन ले जब मैं माँ
के पेट में पैदा हुआ। उसे न साल, न किसी महीने के
दिनों में शुमार किया जाए। 7 वह रात बाँझ रहे, उस में
ख़ुशी का नारा न लगाया जाए। 8 जो दिनों पर लानत
भेजते और लिवियातान अज़दहे को तहरीक में लाने
के क़ाबिल होते हैं वही उस रात पर लानत करें। 9 उस
रात के धुन्दल्के में टिमटिमाने वाले सितारे बुझ जाएँ,
फ़ज्र का इन्तिज़ार करना बेफ़ाइदा ही रहे बल्कि वह
रात तुलू-ए-सुब्ह की पलकें [u]भी न देखे। 10 क्यूँकि
उस ने मेरी माँ को मुझे जन्म देने से न रोका, वर्ना यह
तमाम मुसीबत मेरी आँखों से छुपी रहती।
11 मैं पैदाइश के वक़्त क्यूँ मर न गया, माँ के पेट
से निकलते वक़्त जान क्यूँ न दे दी? 12 माँ के घुटनों
ने मुझे ख़ुशआमदीद क्यूँ कहा, उस की छातियों ने
मुझे दूध क्यूँ पिलाया? 13 अगर यह न होता तो इस
वक़्त मैं सुकून से लेटा रहता, आराम से सोया होता।
14 मैं उन ही के साथ होता जो पहले बादशाह और
दुनिया के मुशीर थे, जिन्हों ने खंडरात अज़ सर-ए-
नौ तामीर किए। 15 मैं उन के साथ होता जो पहले
हुक्मरान थे और अपने घरों को सोने-चाँदी से भर
लेते थे। 16 मुझे ज़ाए हो जाने वाले बच्चे की तरह क्यूँ
न ज़मीन में दबा दिया गया? मुझे उस बच्चे की तरह
क्यूँ न दफ़नाया गया जिस ने कभी रौशनी न देखी?
17 उस जगह बेदीन अपनी बेलगाम हरकतों से बाज़
आते और वह आराम करते हैं जो तग-ओ-दौ करते
करते थक गए थे। 18 वहाँ क़ैदी इत्मीनान से रहते हैं,
उन्हें उस ज़ालिम की आवाज़ नहीं सुननी पड़ती जो
उन्हें जीते जी हाँकता रहा। 19 उस जगह छोटे और
बड़े सब बराबर होते हैं, ग़ुलाम अपने मालिक से
आज़ाद रहता है।
20 अल्लाह मुसीबतज़दों को रौशनी और
शिकस्तादिलों को ज़िन्दगी क्यूँ अता करता है?
21 वह तो मौत के इन्तिज़ार में रहते हैं लेकिन
बेफ़ाइदा। वह खोद खोद कर उसे यूँ तलाश करते
हैं जिस तरह किसी पोशीदा ख़ज़ाने को। 22 अगर
उन्हें क़ब्र नसीब हो तो वह बाग़ बाग़ हो कर जश्न
मनाते हैं। 23 अल्लाह उस को ज़िन्दा क्यूँ रखता जिस
की नज़रों से रास्ता ओझल हो गया है और जिस के
चारों तरफ़ उस ने बाड़ लगाई है। 24 क्यूँकि जब
मुझे रोटी खानी है तो हाय हाय करता हूँ, मेरी आहें
पानी की तरह मुँह से फूट निकलती हैं। 25 जिस
चीज़ से मैं डरता था वह मुझ पर आई, जिस से मैं
ख़ौफ़ खाता था उस से मेरा वास्ता पड़ा। 26 न मुझे
इत्मीनान हुआ, न सुकून या आराम बल्कि मुझ पर
बेचैनी ग़ालिब आई।"

इलीफ़ज़ का एतिराज़ : इन्सान अल्लाह के हुज़ूर रास्त नहीं ठहर सकता

4 1 यह कुछ सुन कर इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब
दिया,

---

[u]पलकों से मुराद पहली किरनें है।

2 “क्या तुझ से बात करने का कोई फ़ाइदा है? तू
तो यह बर्दाश्त नहीं कर सकता। लेकिन दूसरी तरफ़
कौन अपने अल्फ़ाज़ रोक सकता है? 3 ज़रा सोच
ले, तू ने ख़ुद बहुतों को तर्बियत दी, कई लोगों के
थकेमान्दे हाथों को तक़वियत दी है। 4 तेरे अल्फ़ाज़
ने ठोकर खाने वाले को दुबारा खड़ा किया, डगमगाते
हुए घुटने तू ने मज़बूत किए। 5 लेकिन अब जब
मुसीबत तुझ पर आ गई तो तू उसे बर्दाश्त नहीं कर
सकता, अब जब ख़ुद उस की ज़द में आ गया तो
तेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं। 6 क्या तेरा एतिमाद इस पर
मुन्हसिर नहीं है कि तू अल्लाह का ख़ौफ़ माने, तेरी
उम्मीद इस पर नहीं कि तू बेइल्ज़ाम राहों पर चले?
7 सोच ले, क्या कभी कोई बेगुनाह हलाक हुआ है?
हरगिज़ नहीं! जो सीधी राह पर चलते हैं वह कभी
रू-ए-ज़मीन पर से मिट नहीं गए। 8 जहाँ तक मैं ने
देखा, जो नाइन्साफ़ी का हल चलाए और नुक़्सान
का बीज बोए वह इस की फ़सल काटता है। 9 ऐसे
लोग अल्लाह की एक फूँक से तबाह, उस के क़हर
के एक झोंके से हलाक हो जाते हैं। 10 शेरबबर की
दहाड़ें ख़ामोश हो गईं, जवान शेर के दाँत झड़ गए
हैं। 11 शिकार न मिलने की वजह से शेर हलाक हो
जाता और शेरनी के बच्चे परागन्दा हो जाते हैं।
12 एक बार एक बात चोरी-छुपे मेरे पास पहुँची, उस
के चन्द अल्फ़ाज़ मेरे कान तक पहुँच गए। 13 रात को
ऐसी रोयाएँ पेश आईं जो उस वक़्त देखी जाती हैं जब
इन्सान गहरी नींद सोया होता है। इन से मैं परेशानकुन
ख़यालात में मुब्तला हुआ। 14 मुझ पर दहशत और
थरथराहट ग़ालिब आई, मेरी तमाम हड्डियाँ लरज़
उठीं। 15 फिर मेरे चिहरे के सामने से हवा का झोंका
गुज़र गया और मेरे तमाम रोंगटे खड़े हो गए। 16 एक
हस्ती मेरे सामने खड़ी हुई जिसे मैं पहचान न सका,
एक शक्ल मेरी आँखों के सामने दिखाई दी। ख़ामोशी
थी, फिर एक आवाज़ ने फ़रमाया, 17 ‘क्या इन्सान
अल्लाह के हुज़ूर रास्तबाज़ ठहर सकता है, क्या
इन्सान अपने ख़ालिक़ के सामने पाक-साफ़ ठहर
सकता है?’ 18 देख, अल्लाह अपने ख़ादिमों पर भरोसा
नहीं करता, अपने फ़रिश्तों को वह अहमक़ ठहराता
है। 19 तो फिर वह इन्सान पर क्यूँ भरोसा रखे जो
मिट्टी के घर में रहता, ऐसे मकान में जिस की बुन्याद
ख़ाक पर ही रखी गई है। उसे पतंगे की तरह कुचला
जाता है। 20 सुब्ह को वह ज़िन्दा है लेकिन शाम तक
पाश पाश हो जाता, अबद तक हलाक हो जाता है,
और कोई भी ध्यान नहीं देता। 21 उस के ख़ैमे के
रस्से ढीले करो तो वह हिक्मत हासिल किए बग़ैर
इन्तिक़ाल कर जाता है।

अल्लाह की तादीब तस्लीम कर

5 1 बेशक आवाज़ दे, लेकिन कौन जवाब देगा?
कोई नहीं! मुक़द्दसीन में से तू किस की तरफ़
रुजू कर सकता है? 2 क्यूँकि अहमक़ की रंजीदगी
उसे मार डालती, सादालौह की सरगर्मी उसे मौत के
घाट उतार देती है। 3 मैं ने ख़ुद एक अहमक़ को जड़
पकड़ते देखा, लेकिन मैं ने फ़ौरन ही उस के घर पर
लानत भेजी। 4 उस के फ़र्ज़न्द नजात से दूर रहते।
उन्हें शहर के दरवाज़े में रौंदा जाता है, और बचाने
वाला कोई नहीं। 5 भूके उस की फ़सल खा जाते,
काँटेदार बाड़ों में महफ़ूज़ माल भी छीन लेते हैं। प्यासे
अफ़राद हाँपते हुए उस की दौलत के पीछे पड़ जाते
हैं। 6 क्यूँकि बुराई ख़ाक से नहीं निकलती और दुख-
दर्द मिट्टी से नहीं फूटता 7 बल्कि इन्सान ख़ुद इस का
बाइस है, दुख-दर्द उस की विरासत में ही पाया जाता
है। यह इतना यक़ीनी है जितना यह कि आग की
चिंगारियाँ ऊपर की तरफ़ उड़ती हैं।
8 लेकिन अगर मैं तेरी जगह होता तो अल्लाह से
दरयाफ़्त करता, उसे ही अपना मुआमला पेश करता।
9 वही इतने अज़ीम काम करता है कि कोई उन
की तह तक नहीं पहुँच सकता, इतने मोजिज़े कि
कोई उन्हें गिन नहीं सकता। 10 वही रू-ए-ज़मीन को
बारिश अता करता, खुले मैदान पर पानी बरसा देता
है। 11 पस्तहालों को वह सरफ़राज़ करता और मातम
करने वालों को उठा कर महफ़ूज़ मक़ाम पर रख
देता है। 12 वह चालाकों के मन्सूबे तोड़ देता है

ताकि उन के हाथ नाकाम रहें। 13 वह दानिशमन्दों
को उन की अपनी चालाकी के फंदे में फंसा देता है
तो होश्यारों की साज़िशें अचानक ही ख़त्म हो जाती
हैं। 14 दिन के वक़्त उन पर अंधेरा छा जाता, और
दोपहर के वक़्त भी वह टटोल टटोल कर फिरते हैं।
15 अल्लाह ज़रूरतमन्दों को उन के मुँह की तलवार
और ज़बरदस्त के क़ब्ज़े से बचा लेता है। 16 यूँ
पस्तहालों को उम्मीद दी जाती और नाइन्साफ़ी का
मुँह बन्द किया जाता है।

17 मुबारक है वह इन्सान जिस की मलामत अल्लाह
करता है! चुनाँचे क़ादिर-ए-मुतलक़ की तादीब को
हक़ीर न जान। 18 क्यूँकि वह ज़ख़्मी करता लेकिन
मर्हम-पट्टी भी लगा देता है, वह ज़र्ब लगाता लेकिन
अपने हाथों से शिफ़ा भी बख़्शता है। 19 वह तुझे छः
मुसीबतों से छुड़ाएगा, और अगर इस के बाद भी
कोई आए तो तुझे नुक़्सान नहीं पहुँचेगा। 20 अगर
काल पड़े तो वह फ़िद्या दे कर तुझे मौत से बचाएगा,
जंग में तुझे तलवार की ज़द में आने नहीं देगा।
21 तू ज़बान के कोड़ों से महफ़ूज़ रहेगा, और जब
तबाही आए तो डरने की ज़रूरत नहीं होगी। 22 तू
तबाही और काल की हंसी उड़ाएगा, ज़मीन के वहशी
जानवरों से ख़ौफ़ नहीं खाएगा। 23 क्यूँकि तेरा खुले
मैदान के पत्थरों के साथ अह्द होगा, इस लिए उस
के जंगली जानवर तेरे साथ सलामती से ज़िन्दगी
गुज़ारेंगे। 24 तू जान लेगा कि तेरा ख़ैमा महफ़ूज़ है।
जब तू अपने घर का मुआइना करे तो मालूम होगा
कि कुछ गुम नहीं हुआ। 25 तू देखेगा कि तेरी औलाद
बढ़ती जाएगी, तेरे फ़र्ज़न्द ज़मीन पर घास की तरह
फैलते जाएंगे। 26 तू वक़्त पर जमाशुदा पूलों की तरह
उम्ररसीदा हो कर क़ब्र में उतरेगा।

27 हम ने तहक़ीक़ करके मालूम किया है कि ऐसा
ही है। चुनाँचे हमारी बात सुन कर उसे अपना ले!”

अय्यूब का जवाब : साबित करो कि मुझ से क्या ग़लती हुई है

6 1 तब अय्यूब ने जवाब दे कर कहा,
2 “काश मेरी रंजीदगी का वज़न किया जा
सके और मेरी मुसीबत तराज़ू में तोली जा सके!
3 क्यूँकि वह समुन्दर की रेत से ज़्यादा भारी हो गई है।
इसी लिए मेरी बातें बेतुकी सी लग रही हैं। 4 क्यूँकि
क़ादिर-ए-मुतलक़ के तीर मुझ में गड़ गए हैं, मेरी
रूह उन का ज़हर पी रही है। हाँ, अल्लाह के हौलनाक
हमले मेरे ख़िलाफ़ सफ़आरा हैं। 5 क्या जंगली गधा
ढीनचूँ ढीनचूँ करता है जब उसे घास दस्तयाब हो?
या क्या बैल डकराता है जब उसे चारा हासिल हो?
6 क्या फीका खाना नमक के बग़ैर खाया जाता, या
अंडे की सफेदी [v]में ज़ाइक़ा है? 7 ऐसी चीज़ को मैं
छूता भी नहीं, ऐसी ख़ुराक से मुझे घिन ही आती है।

8 काश मेरी गुज़ारिश पूरी हो जाए, अल्लाह मेरी आर्ज़ू
पूरी करे! 9 काश वह मुझे कुचल देने के लिए तय्यार
हो जाए, वह अपना हाथ बढ़ा कर मुझे हलाक करे।
10 फिर मुझे कम अज़ कम तसल्ली होती बल्कि मैं
मुस्तक़िल दर्द के मारे पेच-ओ-ताब खाने के बावुजूद
ख़ुशी मनाता कि मैं ने क़ुद्दूस ख़ुदा के फ़रमानों का
इन्कार नहीं किया।

11 मेरी इतनी ताक़त नहीं कि मज़ीद इन्तिज़ार करूँ,
मेरा क्या अच्छा अन्जाम है कि सब्र करूँ? 12 क्या
मैं पत्थरों जैसा ताक़तवर हूँ? क्या मेरा जिस्म पीतल
जैसा मज़बूत है? 13 नहीं, मुझ से हर सहारा छीन
लिया गया है, मेरे साथ ऐसा सुलूक हुआ है कि
कामयाबी का इम्कान ही नहीं रहा।

14 जो अपने दोस्त पर मेहरबानी करने से इन्कार
करे वह अल्लाह का ख़ौफ़ तर्क करता है। 15 मेरे
भाइयों ने वादी की उन नदियों जैसी बेवफ़ाई की है जो
बरसात के मौसम में अपने किनारों से बाहर आ जाती
हैं। 16 उस वक़्त वह बर्फ़ से भर कर गदली हो जाती

---

[v]या ख़त्मी का रस।

हैं, 17 लेकिन उरूज तक पहुँचते ही वह सूख जाती,
तपती गर्मी में ओझल हो जाती हैं। 18 तब क़ाफ़िले
अपनी राहों से हट जाते हैं ताकि पानी मिल जाए,
लेकिन बेफ़ाइदा। वह रेगिस्तान में पहुँच कर तबाह
हो जाते हैं। 19 तैमा के क़ाफ़िले इस पानी की तलाश
में रहते, सबा के सफ़र करने वाले ताजिर उस पर
उम्मीद रखते हैं, 20 लेकिन बेसूद। जिस पर उन्हों ने
एतिमाद किया वह उन्हें मायूस कर देता है। जब वहाँ
पहुँचते हैं तो शर्मिन्दा हो जाते हैं।

21 तुम भी इतने ही बेकार साबित हुए हो। तुम
हौलनाक बात देख कर दहशतज़दा हो गए हो।
22 क्या मैं ने कहा, 'मुझे तुहफ़ा दे दो, अपनी दौलत
में से मेरी ख़ातिर रिश्वत दो, 23 मुझे दुश्मन के हाथ से
छुड़ाओ, फ़िद्या दे कर ज़ालिम के क़ब्ज़े से बचाओ'?
24 मुझे साफ़ हिदायत दो तो मैं मान कर ख़ामोश हो
जाऊँगा। मुझे बताओ कि किस बात में मुझ से ग़लती
हुई है। 25 सीधी राह की बातें कितनी तक्लीफ़दिह
हो सकती हैं! लेकिन तुम्हारी मलामत से मुझे किस
क़िस्म की तर्बियत हासिल होगी? 26 क्या तुम समझते
हो कि ख़ाली अल्फ़ाज़ मुआमले को हल करेंगे, गो
तुम मायूसी में मुब्तला आदमी की बात नज़रअन्दाज़
करते हो? 27 क्या तुम यतीम के लिए भी क़ुरआ
डालते, अपने दोस्त के लिए भी सौदाबाज़ी करते हो?
28 लेकिन अब ख़ुद फ़ैसला करो, मुझ पर नज़र
डाल कर सोच लो। अल्लाह की क़सम, मैं तुम्हारे
रू-ब-रू झूट नहीं बोलता। 29 अपनी ग़लती तस्लीम
करो ताकि नाइन्साफ़ी न हो। अपनी ग़लती मान लो,
क्यूँकि अब तक मैं हक़ पर हूँ। 30 क्या मेरी ज़बान
झूट बोलती है? क्या मैं फ़रेबदिह बातें पहचान नहीं
सकता?

अल्लाह मुझे क्यूँ नहीं छोड़ता?

7 1 इन्सान दुनिया में सख़्त ख़िदमत करने पर
मज्बूर होता है, जीते जी वह मज़दूर की सी
ज़िन्दगी गुज़ारता है। 2 ग़ुलाम की तरह वह शाम के
साय का आरज़ूमन्द होता, मज़दूर की तरह मज़दूरी
के इन्तिज़ार में रहता है। 3 मुझे भी बेमानी महीने और
मुसीबत की रातें नसीब हुई हैं। 4 जब बिस्तर पर
लेट जाता तो सोचता हूँ कि कब उठ सकता हूँ?
लेकिन लगता है कि रात कभी ख़त्म नहीं होगी, और
मैं फ़ज्र तक बेचैनी से करवटें बदलता रहता हूँ। 5 मेरे
जिस्म की हर जगह कीड़े और खुरंड फैल गए हैं,
मेरी सुकड़ी हुई जिल्द में पीप पड़ गई है। 6 मेरे दिन
जूलाहे की नाल [w]से कहीं ज़्यादा तेज़ी से गुज़र गए
हैं। वह अपने अन्जाम तक पहुँच गए हैं, धागा ख़त्म
हो गया है।

7 ऐ अल्लाह, ख़याल रख कि मेरी ज़िन्दगी दम भर
की ही है! मेरी आँखें आइन्दा कभी ख़ुशहाली नहीं
देखेंगी। 8 जो मुझे इस वक़्त देखे वह आइन्दा मुझे
नहीं देखेगा। तू मेरी तरफ़ देखेगा, लेकिन मैं हूँगा नहीं।
9 जिस तरह बादल ओझल हो कर ख़त्म हो जाता है
उसी तरह पाताल में उतरने वाला वापस नहीं आता।
10 वह दुबारा अपने घर वापस नहीं आएगा, और उस
का मक़ाम उसे नहीं जानता।

11 चुनाँचे मैं वह कुछ रोक नहीं सकता जो मेरे
मुँह से निकलना चाहता है। मैं रंजीदा हालत में बात
करूँगा, अपने दिल की तल्ख़ी का इज़हार करके
आह-ओ-ज़ारी करूँगा। 12 ऐ अल्लाह, क्या मैं समुन्दर
या समुन्दरी अज़दहा हूँ कि तू ने मुझे नज़रबन्द कर
रखा है? 13 जब मैं कहता हूँ, 'मेरा बिस्तर मुझे तसल्ली
दे, सोने से मेरा ग़म हल्का हो जाए' 14 तो तू मुझे
हौलनाक ख़्वाबों से हिम्मत हारने देता, रोयाओं से
मुझे दहशत खिलाता है। 15 मेरी इतनी बुरी हालत
हो गई है कि सोचता हूँ, काश कोई मेरा गला घूँट
कर मुझे मार डाले, काश मैं ज़िन्दा न रहूँ बल्कि दम
छोड़ूँ। 16 मैं ने ज़िन्दगी को रद्द कर दिया है, अब मैं
ज़्यादा देर तक ज़िन्दा नहीं रहूँगा। मुझे छोड़, क्यूँकि
मेरे दिन दम भर के ही हैं।

---

[w]यानी शटल।

17 इन्सान क्या है कि तू उस की इतनी क़दर करे,
उस पर इतना ध्यान दे? 18 वह इतना अहम तो नहीं
है कि तू हर सुब्ह उस का मुआइना करे, हर लम्हा
उस की जाँच-पड़ताल करे। 19 क्या तू मुझे तकने से
कभी नहीं बाज़ आएगा? क्या तू मुझे इतना सुकून
भी नहीं देगा कि पल भर के लिए थूक निगलूँ? 20 ऐ
इन्सान के पहरेदार, अगर मुझ से ग़लती हुई भी तो
इस से मैं ने तेरा क्या नुक़्सान किया? तू ने मुझे अपने
ग़ज़ब का निशाना क्यूँ बनाया? मैं तेरे लिए बोझ क्यूँ
बन गया हूँ? 21 तू मेरा जुर्म मुआफ़ क्यूँ नहीं करता,
मेरा क़ुसूर दरगुज़र क्यूँ नहीं करता? क्यूँकि जल्द ही
मैं ख़ाक हो जाऊँगा। अगर तू मुझे तलाश भी करे तो
नहीं मिलूँगा, क्यूँकि मैं हूँगा नहीं।"

बिल्दद का जवाब : अपने गुनाह से तौबा कर!

8 1 तब बिल्दद सूख़ी ने जवाब दे कर कहा,
2 "तू कब तक इस क़िस्म की बातें करेगा?
कब तक तेरे मुँह से आँधी के झोंके निकलेंगे? 3 क्या
अल्लाह इन्साफ़ का ख़ून कर सकता, क्या क़ादिर-ए-
मुतलक़ रास्ती को आगे पीछे कर सकता है? 4 तेरे
बेटों ने उस का गुनाह किया है, इस लिए उस ने उन्हें
उन के जुर्म के क़ब्ज़े में छोड़ दिया। 5 अब तेरे लिए
लाज़िम है कि तू अल्लाह का तालिब हो और क़ादिर-ए-
मुतलक़ से इल्तिजा करे, 6 कि तू पाक हो और सीधी
राह पर चले। फिर वह अब भी तेरी ख़ातिर जोश में
आ कर तेरी रास्तबाज़ी की सुकूनतगाह को बहाल
करेगा। 7 तब तेरा मुस्तक़बिल निहायत अज़ीम होगा,
ख़्वाह तेरी इब्तिदाई हालत कितनी पस्त क्यूँ न हो।
8 गुज़श्ता नस्ल से ज़रा पूछ ले, उस पर ध्यान दे जो
उन के बापदादा ने तहक़ीक़ात के बाद मालूम किया।
9 क्यूँकि हम ख़ुद कल ही पैदा हुए और कुछ नहीं
जानते, ज़मीन पर हमारे दिन साय जैसे आरिज़ी हैं।
10 लेकिन यह तुझे तालीम दे कर बात बता सकते
हैं, यह तुझे अपने दिल में जमाशुदा इल्म पेश कर
सकते हैं। 11 क्या आबी नर्सल वहाँ उगता है जहाँ
दलदल नहीं? क्या सरकंडा वहाँ फलता फूलता है
जहाँ पानी नहीं? 12 उस की कोंपलें अभी निकल रही
हैं और उसे तोड़ा नहीं गया कि अगर पानी न मिले
तो बाक़ी हरियाली से पहले ही सूख जाता है। 13 यह
है उन का अन्जाम जो अल्लाह को भूल जाते हैं, इसी
तरह बेदीन की उम्मीद जाती रहती है। 14 जिस पर वह
एतिमाद करता है वह निहायत ही नाज़ुक है, जिस पर
उस का भरोसा है वह मकड़ी के जाले जैसा कमज़ोर
है। 15 जब वह जाले पर टेक लगाए तो खड़ा नहीं
रहता, जब उसे पकड़ ले तो क़ाइम नहीं रहता।
16 बेदीन धूप में शादाब बेल की मानिन्द है। उस की
कोंपलें चारों तरफ़ फैल जाती, 17 उस की जड़ें पत्थर
के ढेर पर छा कर उन में टिक जाती हैं। 18 लेकिन
अगर उसे उखाड़ा जाए तो जिस जगह पहले उग रही
थी वह उस का इन्कार करके कहेगी, 'मैं ने तुझे कभी
देखा भी नहीं।' 19 यह है उस की राह की नाम-निहाद
ख़ुशी! जहाँ पहले था वहाँ दीगर पौदे ज़मीन से फूट
निकलेंगे।
20 यक़ीनन अल्लाह बेइल्ज़ाम आदमी को मुस्तरद
नहीं करता, यक़ीनन वह शरीर आदमी के हाथ
मज़बूत नहीं करता। 21 वह एक बार फिर तुझे ऐसी
ख़ुशी बख़्शेगा कि तू हंस उठेगा और शादमानी के
नारे लगाएगा। 22 जो तुझ से नफ़रत करते हैं वह शर्म
से मुलब्बस हो जाएंगे, और बेदीनों के ख़ैमे नेस्त-ओ-
नाबूद होंगे।"

अय्यूब का जवाब : सालिस के बग़ैर मैं रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता

9 1 अय्यूब ने जवाब दे कर कहा,
2 "मैं ख़ूब जानता हूँ कि तेरी बात दुरुस्त है।
लेकिन अल्लाह के हुज़ूर इन्सान किस तरह रास्तबाज़
ठहर सकता है? 3 अगर वह अदालत में अल्लाह के
साथ लड़ना चाहे तो उस के हज़ार सवालात पर एक
का भी जवाब नहीं दे सकेगा। 4 अल्लाह का दिल
दानिशमन्द और उस की क़ुदरत अज़ीम है। कौन
कभी उस से बह्स-मुबाहसा करके कामयाब रहा है?

5 अल्लाह पहाड़ों को खिसका देता है, और उन्हें पता
ही नहीं चलता। वह ग़ुस्से में आ कर उन्हें उलटा देता
है। 6 वह ज़मीन को हिला देता है तो वह लरज़ कर
अपनी जगह से हट जाती है, उस के बुन्यादी सतून
काँप उठते हैं। 7 वह सूरज को हुक्म देता है तो तुलू
नहीं होता, सितारों पर मुहर लगाता है तो उन की
चमक-दमक बन्द हो जाती है।

8 अल्लाह ही आसमान को ख़ैमे की तरह तान देता,
वही समुन्दरी अज़दहे की पीठ को पाँओ तले कुचल
देता है। 9 वही दुब्ब-ए-अक्बर, जौज़े, ख़ोशा-ए-पर्वीन
और जुनूबी सितारों के झुर्मटों का ख़ालिक़ है। 10 वह
इतने अज़ीम काम करता है कि कोई उन की तह तक
नहीं पहुँच सकता, इतने मोजिज़े करता है कि कोई
उन्हें गिन नहीं सकता। 11 जब वह मेरे सामने से गुज़रे
तो मैं उसे नहीं देखता, जब वह मेरे क़रीब से फिरे तो
मुझे मालूम नहीं होता। 12 अगर वह कुछ छीन ले तो
कौन उसे रोकेगा? कौन उस से कहेगा, 'तू क्या कर
रहा है?' 13 अल्लाह तो अपना ग़ज़ब नाज़िल करने से
बाज़ नहीं आता। उस के रोब तले रहब अज़दहे के
मददगार भी दबक गए।

14 तो फिर मैं किस तरह उसे जवाब दूँ, किस तरह
उस से बात करने के मुनासिब अल्फ़ाज़ चुन लूँ?
15 अगर मैं हक़ पर होता भी तो अपना दिफ़ा न
कर सकता। इस मुख़ालिफ़ से मैं इल्तिजा करने के
इलावा और कुछ नहीं कर सकता। 16 अगर वह मेरी
चीख़ों का जवाब देता भी तो मुझे यक़ीन न आता कि
वह मेरी बात पर ध्यान देगा।

17 थोड़ी सी ग़लती के जवाब में वह मुझे पाश पाश
करता, बिलावजह मुझे बार बार ज़ख़्मी करता है।
18 वह मुझे साँस भी नहीं लेने देता बल्कि कड़वे ज़हर
से सेर कर देता है। 19 जहाँ ताक़त की बात है तो
वही क़वी है, जहाँ इन्साफ़ की बात है तो कौन उसे
पेशी के लिए बुला सकता है? 20 गो मैं बेगुनाह हूँ
तो भी मेरा अपना मुँह मुझे क़ुसूरवार ठहराएगा, गो
बेइल्ज़ाम हूँ तो भी वह मुझे मुजरिम क़रार देगा।

21 जो कुछ भी हो, मैं बेइल्ज़ाम हूँ! मैं अपनी जान
की पर्वा ही नहीं करता, अपनी ज़िन्दगी हक़ीर जानता
हूँ। 22 ख़ैर, एक ही बात है, इस लिए मैं कहता हूँ,
'अल्लाह बेइल्ज़ाम और बेदीन दोनों को ही हलाक कर
देता है।' 23 जब कभी अचानक कोई आफ़त इन्सान
को मौत के घाट उतारे तो अल्लाह बेगुनाह की परेशानी
पर हँसता है। 24 अगर कोई मुल्क बेदीन के हवाले
किया जाए तो अल्लाह उस के क़ाज़ियों की आँखें बन्द
कर देता है। अगर यह उस की तरफ़ से नहीं तो फिर
किस की तरफ़ से है?

25 मेरे दिन दौड़ने वाले आदमी से कहीं ज़्यादा तेज़ी
से बीत गए, ख़ुशी देखे बग़ैर भाग निकले हैं। 26 वह
सरकंडे के बहरी जहाज़ों की तरह गुज़र गए हैं, उस
उक़ाब की तरह जो अपने शिकार पर झपट्टा मारता
है। 27 अगर मैं कहूँ, 'आओ मैं अपनी आहें भूल जाऊँ,
अपने चिहरे की उदासी दूर करके ख़ुशी का इज़हार
करूँ' 28 तो फिर भी मैं उन तमाम तकालीफ़ से डरता
हूँ जो मुझे बर्दाश्त करनी हैं। क्यूँकि मैं जानता हूँ कि
तू मुझे बेगुनाह नहीं ठहराता।

29 जो कुछ भी हो मुझे क़ुसूरवार ही क़रार दिया
गया है, चुनाँचे इस का क्या फ़ाइदा कि मैं बेमानी
तग-ओ-दौ में मसरूफ़ रहूँ? 30 गो मैं साबुन से नहा
लूँ और अपने हाथ सोडे [x]से धो लूँ 31 ताहम तू मुझे
गढ़े की कीचड़ में यूँ धंसने देता है कि मुझे अपने
कपड़ों से घिन आती है।

32 अल्लाह तो मुझ जैसा इन्सान नहीं कि मैं जवाब में
उस से कहूँ, 'आओ हम अदालत में जा कर एक दूसरे
का मुक़ाबला करें।' 33 काश हमारे दरमियान सालिस
हो जो हम दोनों पर हाथ रखे, 34 जो मेरी पीठ पर
से अल्लाह का डंडा हटाए ताकि उस का ख़ौफ़ मुझे
दहशतज़दा न करे। 35 तब मैं अल्लाह से ख़ौफ़ खाए
बग़ैर बोलता, क्यूँकि फ़ित्री तौर पर मैं ऐसा नहीं हूँ।

---

[x]लफ़्ज़ी मतलब : क़लियाब, लाई (lye)।

मुझे अपनी जान से घिन आती है

10 1 मुझे अपनी जान से घिन आती है। मैं
आज़ादी से आह-ओ-ज़ारी करूँगा, खुले
तौर पर अपना दिली ग़म बयान करूँगा। 2 मैं अल्लाह
से कहूँगा कि मुझे मुजरिम न ठहरा बल्कि बता कि
तेरा मुझ पर क्या इल्ज़ाम है। 3 क्या तू ज़ुल्म करके
मुझे रद्द करने में ख़ुशी महसूस करता है हालाँकि तेरे
अपने ही हाथों ने मुझे बनाया? साथ साथ तू बेदीनों
के मन्सूबों पर अपनी मन्ज़ूरी का नूर चमकाता है।
क्या यह तुझे अच्छा लगता है? 4 क्या तेरी आँखें
इन्सानी हैं? क्या तू सिर्फ़ इन्सान की सी नज़र से
देखता है? 5 क्या तेरे दिन और साल फ़ानी इन्सान
जैसे महदूद हैं? हरगिज़ नहीं! 6 तो फिर क्या ज़रूरत
है कि तू मेरे क़ुसूर की तलाश और मेरे गुनाह की
तहक़ीक़ करता रहे? 7 तू तो जानता है कि मैं बेक़ुसूर
हूँ और कि तेरे हाथ से कोई बचा नहीं सकता।

8 तेरे अपने हाथों ने मुझे तश्कील दे कर बनाया।
और अब तू ने मुड़ कर मुझे तबाह कर दिया है।
9 ज़रा इस का ख़याल रख कि तू ने मुझे मिट्टी से
बनाया। अब तू मुझे दुबारा ख़ाक में तब्दील कर रहा
है। 10 तू ने ख़ुद मुझे दूध की तरह उंडेल कर पनीर
की तरह जमने दिया। 11 तू ही ने मुझे जिल्द और
गोश्त-पोस्त से मुलब्बस किया, हड्डियों और नसों से
तय्यार किया। 12 तू ही ने मुझे ज़िन्दगी और अपनी
मेहरबानी से नवाज़ा, और तेरी देख-भाल ने मेरी रूह
को महफ़ूज़ रखा।

13 लेकिन एक बात तू ने अपने दिल में छुपाए रखी,
हाँ मुझे तेरा इरादा मालूम हो गया है। 14 वह यह है
कि 'अगर अय्यूब गुनाह करे तो मैं उस की पहरादारी
करूँगा। मैं उसे उस के क़ुसूर से बरी नहीं करूँगा।'

15 अगर मैं क़ुसूरवार हूँ तो मुझ पर अफ़सोस! और
अगर मैं बेगुनाह भी हूँ ताहम मैं अपना सर उठाने की
जुरअत नहीं करता, क्यूँकि मैं शर्म खा खा कर सेर
हो गया हूँ। मुझे ख़ूब मुसीबत पिलाई गई है। 16 और
अगर मैं खड़ा भी हो जाऊँ तो तू शेरबबर की तरह मेरा
शिकार करता और मुझ पर दुबारा अपनी मोजिज़ाना
क़ुदरत का इज़हार करता है। 17 तू मेरे ख़िलाफ़ नए
गवाहों को खड़ा करता और मुझ पर अपने ग़ज़ब में
इज़ाफ़ा करता है, तेरे लश्कर सफ़-दर-सफ़ मुझ पर
हम्ला करते हैं। 18 तू मुझे मेरी माँ के पेट से क्यूँ निकाल
लाया? बेहतर होता कि मैं उसी वक़्त मर जाता और
किसी को नज़र न आता। 19 यूँ होता जैसा मैं कभी
ज़िन्दा ही न था, मुझे सीधा माँ के पेट से क़ब्र में
पहुँचाया जाता। 20 क्या मेरे दिन थोड़े नहीं हैं? मुझे
तन्हा छोड़! मुझ से अपना मुँह फेर ले ताकि मैं चन्द
एक लम्हों के लिए ख़ुश हो सकूँ, 21 क्यूँकि जल्द ही
मुझे कूच करके वहाँ जाना है जहाँ से कोई वापस
नहीं आता, उस मुल्क में जिस में तारीकी और घने
साय रहते हैं। 22 वह मुल्क अंधेरा ही अंधेरा और
काला ही काला है, उस में घने साय और बेतर्तीबी
है। वहाँ रौशनी भी अंधेरा ही है।"

ज़ूफ़र का जवाब : तौबा कर

11 1 फिर ज़ूफ़र नामाती ने जवाब दे कर कहा,
2 "क्या इन तमाम बातों का जवाब नहीं
देना चाहिए? क्या यह आदमी अपनी ख़ाली बातों की
बिना पर ही रास्तबाज़ ठहरेगा? 3 क्या तेरी बेमानी
बातें लोगों के मुँह यूँ बन्द करेंगी कि तू आज़ादी से
लान-तान करता जाए और कोई तुझे शर्मिन्दा न कर
सके? 4 अल्लाह से तू कहता है, 'मेरी तालीम पाक है,
और तेरी नज़र में मैं पाक-साफ़ हूँ।'

5 काश अल्लाह ख़ुद तेरे साथ हमकलाम हो, वह
अपने होंटों को खोल कर तुझ से बात करे! 6 काश
वह तेरे लिए हिक्मत के भेद खोले, क्यूँकि वह इन्सान
की समझ के नज़्दीक मोजिज़े से हैं। तब तू जान लेता
कि अल्लाह तेरे गुनाह का काफ़ी हिस्सा दरगुज़र कर
रहा है।

7 क्या तू अल्लाह का राज़ खोल सकता है? क्या तू
क़ादिर-ए-मुतलक़ के कामिल इल्म तक पहुँच सकता
है? 8 वह तो आसमान से बुलन्द है, चुनाँचे तू क्या
कर सकता है? वह पाताल से गहरा है, चुनाँचे तू क्या

जान सकता है? 9 उस की लम्बाई ज़मीन से बड़ी और
चौड़ाई समुन्दर से ज़्यादा है।
10 अगर वह कहीं से गुज़र कर किसी को गिरिफ़्तार
करे या अदालत में उस का हिसाब करे तो कौन उसे
रोकेगा? 11 क्यूँकि वह फ़रेबदिह आदमियों को जान
लेता है, जब भी उसे बुराई नज़र आए तो वह उस पर
ख़ूब ध्यान देता है। 12 अक़्ल से ख़ाली आदमी किस
तरह समझ पा सकता है? यह उतना ही नामुमकिन
है जितना यह कि जंगली गधे से इन्सान पैदा हो।
13 ऐ अय्यूब, अपना दिल पूरे ध्यान से अल्लाह की
तरफ़ माइल कर और अपने हाथ उस की तरफ़ उठा!
14 अगर तेरे हाथ गुनाह में मुलव्वस हों तो उसे दूर
कर और अपने ख़ैमे में बुराई बसने न दे! 15 तब तू
बेइल्ज़ाम हालत में अपना चिहरा उठा सकेगा, तू
मज़बूती से खड़ा रहेगा और डरेगा नहीं। 16 तू अपना
दुख-दर्द भूल जाएगा, और वह सिर्फ़ गुज़रे सैलाब
की तरह याद रहेगा। 17 तेरी ज़िन्दगी दोपहर की तरह
चमकदार, तेरी तारीकी सुब्ह की मानिन्द रौशन हो
जाएगी। 18 चूँकि उम्मीद होगी इस लिए तू महफ़ूज़
होगा और सलामती से लेट जाएगा। 19 तू आराम
करेगा, और कोई तुझे दहशतज़दा नहीं करेगा बल्कि
बहुत लोग तेरी नज़र-ए-इनायत हासिल करने की
कोशिश करेंगे। 20 लेकिन बेदीनों की आँखें नाकाम
हो जाएँगी, और वह बच नहीं सकेंगे। उन की उम्मीद
मायूसकुन होगी।” [y]

अय्यूब का जवाब : मैं मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ

12 1 अय्यूब ने जवाब दे कर कहा,
2 “लगता है कि तुम ही वाहिद
दानिशमन्द हो, कि हिक्मत तुम्हारे साथ ही मर
जाएगी। 3 लेकिन मुझे समझ है, इस नाते से मैं तुम
से अदना नहीं हूँ। वैसे भी कौन ऐसी बातें नहीं
जानता? 4 मैं तो अपने दोस्तों के लिए मज़ाक़ का
निशाना बन गया हूँ, मैं जिस की दुआएँ अल्लाह
सुनता था। हाँ, मैं जो बेगुनाह और बेइल्ज़ाम हूँ
दूसरों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ!
5 जो सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारता है वह मुसीबतज़दा
को हक़ीर जानता है। वह कहता है, ‘आओ, हम
उसे ठोकर मारें जिस के पाँओ डगमगाने लगे हैं।’
6 ग़ारतगरों के ख़ैमों में आराम-ओ-सुकून है, और
अल्लाह को तैश दिलाने वाले हिफ़ाज़त से रहते हैं,
गो वह अल्लाह के हाथ में हैं।
7 ताहम तुम कहते हो कि जानवरों से पूछ ले तो वह
तुझे सहीह बात सिखाएँगे। परिन्दों से पता कर तो
वह तुझे दुरुस्त जवाब देंगे। 8 ज़मीन से बात कर तो
वह तुझे तालीम देगी, बल्कि समुन्दर की मछलियाँ
भी तुझे इस का मफ़्हूम सुनाएँगी। 9 इन में से एक भी
नहीं जो न जानता हो कि रब के हाथ ने यह सब कुछ
किया है। 10 उसी के हाथ में हर जानदार की जान,
तमाम इन्सानों का दम है। 11 कान तो अल्फ़ाज़ की
यूँ जाँच-पड़ताल करता है जिस तरह ज़बान खानों में
इम्तियाज़ करती है। 12 और हिक्मत उन में पाई जाती
है जो उम्रसीदा हैं, समझ मुतअद्दिद दिन गुज़रने के
बाद ही आती है।
13 हिक्मत और क़ुदरत अल्लाह की है, वही मस्लहत
और समझ का मालिक है। 14 जो कुछ वह ढा दे वह
दुबारा तामीर नहीं होगा, जिसे वह गिरिफ़्तार करे उसे
आज़ाद नहीं किया जाएगा। 15 जब वह पानी रोके तो
काल पड़ता है, जब उसे खुला छोड़े तो वह मुल्क में
तबाही मचा देता है।
16 उस के पास क़ुव्वत और दानाई है। भटकने
और भटकाने वाला दोनों ही उस के हाथ में हैं।
17 मुशीरों को वह नंगे पाँओ अपने साथ ले जाता
है, क़ाज़ियों को अहमक़ साबित करता है। 18 वह
बादशाहों का पटका खोल कर उन की कमरों में
रस्सा बांधता है। 19 इमामों को वह नंगे पाँओ अपने
साथ ले जाता है, मज़बूती से खड़े आदमियों को
तबाह करता है। 20 क़ाबिल-ए-एतिमाद अफ़राद से

---

[y] या उन की वाहिद उम्मीद इस में होगी कि दम छोड़ें।

वह बोलने की क़ाबिलियत और बुज़ुर्गों से इम्तियाज़
करने की लियाक़त छीन लेता है। 21 वह शुरफ़ा
पर अपनी हिक़ारत का इज़हार करके ज़ोरावरों का
पटका खोल देता है।

22 वह अंधेरे के पोशीदा भेद खोल देता और गहरी
तारीकी को रौशनी में लाता है। 23 वह क़ौमों को
बड़ा भी बनाता और तबाह भी करता है, उम्मतों को
मुन्तशिर भी करता और उन की क़ियादत भी करता
है। 24 वह मुल्क के राहनुमाओं को अक़्ल से महरूम
करके उन्हें ऐसे बयाबान में आवारा फिरने देता है
जहाँ रास्ता ही नहीं। 25 तब वह अंधेरे में रौशनी के
बग़ैर टटोल टटोल कर घूमते हैं। अल्लाह ही उन्हें नशे
में धुत शराबियों की तरह भटकने देता है।

13 1 यह सब कुछ मैं ने अपनी आँखों से देखा,
अपने कानों से सुन कर समझ लिया है।
2 इल्म के लिहाज़ से मैं तुम्हारे बराबर हूँ। इस नाते
से मैं तुम से कम नहीं हूँ। 3 लेकिन मैं क़ादिर-ए-
मुतलक़ से ही बात करना चाहता हूँ, अल्लाह के साथ
ही मुबाहसा करने की आर्ज़ू रखता हूँ।

4 जहाँ तक तुम्हारा ताल्लुक़ है, तुम सब फ़रेबदिह
लेप लगाने वाले और बेकार डाक्टर हो। 5 काश तुम
सरासर ख़ामोश रहते! ऐसा करने से तुम्हारी हिक्मत
कहीं ज़्यादा ज़ाहिर होती। 6 मुबाहिसे में ज़रा मेरा
मौक़िफ़ सुनो, अदालत में मेरे बयानात पर ग़ौर करो!

7 क्या तुम अल्लाह की ख़ातिर कजरौ बातें पेश करते
हो, क्या उसी की ख़ातिर झूट बोलते हो? 8 क्या तुम
उस की जानिबदारी करना चाहते हो, अल्लाह के हक़
में लड़ना चाहते हो? 9 सोच लो, अगर वह तुम्हारी
जाँच करे तो क्या तुम्हारी बात बनेगी? क्या तुम उसे
यूँ धोका दे सकते हो जिस तरह इन्सान को धोका
दिया जाता है?

10 अगर तुम ख़ुफ़िया तौर पर भी जानिबदारी
दिखाओ तो वह तुम्हें ज़रूर सख़्त सज़ा देगा। 11 क्या
उस का रोब तुम्हें ख़ौफ़ज़दा नहीं करेगा? क्या तुम
उस से सख़्त दहशत नहीं खाओगे? 12 फिर जिन
कहावतों की याद तुम दिलाते रहते हो वह राख की
अम्साल साबित होंगी, पता चलेगा कि तुम्हारी बातें
मिट्टी के अल्फ़ाज़ हैं।

13 ख़ामोश हो कर मुझ से बाज़ आओ! जो कुछ
भी मेरे साथ हो जाए, मैं बात करना चाहता हूँ। 14 मैं
अपने आप को ख़तरे में डालने के लिए तय्यार हूँ, मैं
अपनी जान पर खेलूँगा। 15 शायद वह मुझे मार डाले।
कोई बात नहीं, क्यूँकि मेरी उम्मीद जाती रही है। जो
कुछ भी हो में उसी के सामने अपनी राहों का दिफ़ा
करूँगा। 16 और इस में मैं पनाह लेता हूँ कि बेदीन
उस के हुज़ूर आने की जुरअत नहीं करता।

17 ध्यान से मेरे अल्फ़ाज़ सुनो, अपने कान मेरे
बयानात पर धरो। 18 तुम्हें पता चलेगा कि मैं ने
एहतियात और तर्तीब से अपना मुआमला तय्यार
किया है। मुझे साफ़ मालूम है कि मैं हक़ पर हूँ!
19 अगर कोई मुझे मुजरिम साबित कर सके तो मैं
चुप हो जाऊँगा, दम छोड़ने तक ख़ामोश रहूँगा।

अय्यूब की मायूसी में दुआ

20 ऐ अल्लाह, मेरी सिर्फ़ दो दरख़्वास्तें मन्ज़ूर कर
ताकि मुझे तुझ से छुप जाने की ज़रूरत न हो।
21 पहले, अपना हाथ मुझ से दूर कर ताकि तेरा ख़ौफ़
मुझे दहशतज़दा न करे। 22 दूसरे, इस के बाद मुझे
बुला ताकि मैं जवाब दूँ, या मुझे पहले बोलने दे और
तू ही इस का जवाब दे।

23 मुझ से कितने गुनाह और ग़लतियाँ हुई हैं? मुझ
पर मेरा जुर्म और मेरा गुनाह ज़ाहिर कर! 24 तू अपना
चिहरा मुझ से छुपाए क्यूँ रखता है? तू मुझे क्यूँ अपना
दुश्मन समझता है? 25 क्या तू हवा के झोंकों के उड़ाए
हुए पत्ते को दहशत खिलाना चाहता, ख़ुश्क भूसे का
ताक़्क़ुब करना चाहता है?

26 यह तेरा ही फ़ैसला है कि मैं तल्ख़ तजरिबों से
गुज़रूँ, तेरी ही मर्ज़ी है कि मैं अपनी जवानी के गुनाहों

की सज़ा पाऊँ। [z]27 तू मेरे पाँओ को काठ में ठोंक कर
मेरी तमाम राहों की पहरादारी करता है। तू मेरे हर
एक नक़्श-ए-क़दम पर ध्यान देता है, 28 गो मैं मै की
घिसी फटी मश्क और कीड़ों का ख़राब किया हुआ
लिबास हूँ।

14 1 औरत से पैदा हुआ इन्सान चन्द एक
दिन ज़िन्दा रहता है, और उस की ज़िन्दगी
बेचैनी से भरी रहती है। 2 फूल की तरह वह चन्द
लम्हों के लिए फूट निकलता, फिर मुरझा जाता है।
साय की तरह वह थोड़ी देर के बाद ओझल हो जाता
और क़ाइम नहीं रहता। 3 क्या तू वाक़ई एक ऐसी
मख़्लूक़ का इतने ग़ौर से मुआइना करना चाहता है?
मैं कौन हूँ कि तू मुझे पेशी के लिए अपने हुज़ूर लाए?
4 कौन नापाक चीज़ को पाक-साफ़ कर सकता है?
कोई नहीं! 5 इन्सान की उम्र तो मुक़र्रर हुई है, उस के
महीनों की तादाद तुझे मालूम है, क्यूँकि तू ही ने उस
के दिनों की वह हद बांधी है जिस से आगे वह बढ़
नहीं सकता। 6 चुनाँचे अपनी निगाह उस से फेर ले
और उसे छोड़ दे ताकि वह मज़दूर की तरह अपने
थोड़े दिनों से कुछ मज़ा ले सके।
7 अगर दरख़्त को काटा जाए तो उसे थोड़ी बहुत
उम्मीद बाक़ी रहती है, क्यूँकि ऐन मुमकिन है कि मुढ
से कोंपलें फूट निकलें और उस की नई शाख़ें उगती
जाएँ। 8 बेशक उस की जड़ें पुरानी हो जाएँ और उस
का मुढ मिट्टी में ख़त्म होने लगे, 9 लेकिन पानी की
ख़ुश्बू सूँघते ही वह कोंपलें निकालने लगेगा, और
पनीरी की सी टहनियाँ उस से फूटने लगेंगी।
10 लेकिन इन्सान फ़र्क़ है। मरते वक़्त उस की हर
तरह की ताक़त जाती रहती है, दम छोड़ते वक़्त
उस का नाम-ओ-निशान तक नहीं रहता। 11 वह उस
झील की मानिन्द है जिस का पानी ओझल हो जाए,
उस नदी की मानिन्द जो सुकड़ कर ख़ुश्क हो जाए।
12 वफ़ात पाने वाले का यही हाल है। वह लेट जाता
और कभी नहीं उठेगा। जब तक आसमान क़ाइम है
न वह जाग उठेगा, न उसे जगाया जाएगा।
13 काश तू मुझे पाताल में छुपा देता, मुझे वहाँ उस
वक़्त तक पोशीदा रखता जब तक तेरा क़हर ठंडा
न हो जाता! काश तू एक वक़्त मुक़र्रर करे जब तू
मेरा दुबारा ख़याल करेगा। 14 (क्यूँकि अगर इन्सान
मर जाए तो क्या वह दुबारा ज़िन्दा हो जाएगा?)
फिर मैं अपनी सख़्त ख़िदमत के तमाम दिन बर्दाश्त
करता, उस वक़्त तक इन्तिज़ार करता जब तक मेरी
सबुकदोशी न हो जाती। 15 तब तू मुझे आवाज़ देता
और मैं जवाब देता, तू अपने हाथों के काम का
आरज़ूमन्द होता। 16 उस वक़्त भी तू मेरे हर क़दम
का शुमार करता, लेकिन न सिर्फ़ इस मक़्सद से कि
मेरे गुनाहों पर ध्यान दे। 17 तू मेरे जराइम थैले में बांध
कर उस पर मुहर लगा देता, मेरी हर ग़लती को ढाँक
देता।
18 लेकिन अफ़्सोस! जिस तरह पहाड़ गिर कर चूर
चूर हो जाता और चटान खिसक जाती है, 19 जिस
तरह बहता पानी पत्थर को रगड़ रगड़ कर ख़त्म
करता और सैलाब मिट्टी को बहा ले जाता है उसी
तरह तू इन्सान की उम्मीद ख़ाक में मिला देता है।
20 तू मुकम्मल तौर पर उस पर ग़ालिब आ जाता तो
वह कूच कर जाता है, तू उस का चिहरा बिगाड़ कर
उसे फ़ारिग़ कर देता है। 21 अगर उस के बच्चों को
सरफ़राज़ किया जाए तो उसे पता नहीं चलता, अगर
उन्हें पस्त किया जाए तो यह भी उस के इल्म में नहीं
आता। 22 वह सिर्फ़ अपने ही जिस्म का दर्द महसूस
करता और अपने लिए ही मातम करता है।”

इलीफ़ज़ का जवाब : अय्यूब कुफ़्र बक रहा है

15 1 तब इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब दे कर
कहा,
2 “क्या दानिशमन्द को जवाब में बेहूदा ख़यालात
पेश करने चाहिएँ? क्या उसे अपना पेट तपती

---

[z]लफ़्ज़ी तर्जुमा : मीरास में पाऊँ।

मशरिक़ी हवा से भरना चाहिए? 3 क्या मुनासिब है
कि वह फ़ुज़ूल बह्स-मुबाहसा करे, ऐसी बातें करे
जो बेफ़ाइदा हैं? हरगिज़ नहीं!
4 लेकिन तेरा रवय्या इस से कहीं बुरा है। तू अल्लाह
का ख़ौफ़ छोड़ कर उस के हुज़ूर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करने
का फ़र्ज़ हक़ीर जानता है। 5 तेरा क़ुसूर ही तेरे मुँह
को ऐसी बातें करने की तहरीक दे रहा है, इसी लिए
तू ने चालाकों की ज़बान अपना ली है। 6 मुझे तुझे
क़ुसूरवार ठहराने की ज़रूरत ही नहीं, क्यूँकि तेरा
अपना ही मुँह तुझे मुजरिम ठहराता है, तेरे अपने ही
होंट तेरे ख़िलाफ़ गवाही देते हैं।
7 क्या तू सब से पहले पैदा हुआ इन्सान है? क्या तू
ने पहाड़ों से पहले ही जन्म लिया? 8 जब अल्लाह की
मजलिस मुनअक़िद हो जाए तो क्या तू भी उन की
बातें सुनता है? क्या सिर्फ़ तुझे ही हिक्मत हासिल
है? 9 तू क्या जानता है जो हम नहीं जानते? तुझे किस
बात की समझ आई है जिस का इल्म हम नहीं रखते?
10 हमारे दरमियान भी उम्ररसीदा बुज़ुर्ग हैं, ऐसे आदमी
जो तेरे वालिद से भी बूढ़े हैं।
11 ऐ अय्यूब, क्या तेरी नज़र में अल्लाह की तसल्ली
देने वाली बातों की कोई अहमियत नहीं? क्या तू इस
की क़दर नहीं कर सकता कि नर्मी से तुझ से बात
की जा रही है? 12 तेरे दिल के जज़्बात तुझे यूँ उड़ा
कर क्यूँ ले जाएँ, तेरी आँखें क्यूँ इतनी चमक उठें
13 कि आख़िरकार तू अपना ग़ुस्सा अल्लाह पर उतार
कर ऐसी बातें अपने मुँह से उगल दे?
14 भला इन्सान क्या है कि पाक-साफ़ ठहरे? औरत
से पैदा हुई मख़्लूक़ क्या है कि रास्तबाज़ साबित हो?
कुछ भी नहीं! 15 अल्लाह तो अपने मुक़द्दस ख़ादिमों
पर भी भरोसा नहीं रखता, बल्कि आसमान भी उस
की नज़र में पाक नहीं है। 16 तो फिर वह इन्सान पर
भरोसा क्यूँ रखे जो क़ाबिल-ए-घिन और बिगड़ा हुआ
है, जो बुराई को पानी की तरह पी लेता है।
17 मेरी बात सुन, मैं तुझे कुछ सुनाना चाहता हूँ। मैं
तुझे वह कुछ बयान करूँगा जो मुझ पर ज़ाहिर हुआ
है, 18 वह कुछ जो दानिशमन्दों ने पेश किया और जो
उन्हें अपने बापदादा से मिला था। उन से कुछ छुपाया
नहीं गया था। 19 (बापदादा से मुराद वह वाहिद लोग
हैं जिन्हें उस वक़्त मुल्क दिया गया जब कोई भी
परदेसी उन में नहीं फिरता था)।
20 वह कहते थे, बेदीन अपने तमाम दिन डर के
मारे तड़पता रहता, और जितने भी साल ज़ालिम के
लिए मह्फ़ूज़ रखे गए हैं उतने ही साल वह पेच-ओ-
ताब खाता रहता है। 21 दह्शतनाक आवाज़ें उस के
कानों में गूँजती रहती हैं, और अम्न-ओ-अमान के
वक़्त ही तबाही मचाने वाला उस पर टूट पड़ता है।
22 उसे अंधेरे से बचने की उम्मीद ही नहीं, क्यूँकि उसे
तलवार के लिए तय्यार रखा गया है।
23 वह मारा मारा फिरता है, आख़िरकार वह गिद्धों
की ख़ोराक बनेगा। उसे ख़ुद इल्म है कि तारीकी
का दिन क़रीब ही है। 24 तंगी और मुसीबत उसे
दह्शत खिलाती, हम्लाआवर बादशाह की तरह उस
पर ग़ालिब आती हैं। 25 और वजह क्या है? यह
कि उस ने अपना हाथ अल्लाह के ख़िलाफ़ उठाया,
क़ादिर-ए-मुतलक़ के सामने तकब्बुर दिखाया है।
26 अपनी मोटी और मज़बूत ढाल की पनाह में अकड़
कर वह तेज़ी से अल्लाह पर हम्ला करता है।
27 गो इस वक़्त उस का चिहरा चर्बी से चमकता
और उस की कमर मोटी है, 28 लेकिन आइन्दा वह
तबाहशुदा शहरों में बसेगा, ऐसे मकानों में जो सब के
छोड़े हुए हैं और जो जल्द ही पत्थर के ढेर बन जाएंगे।
29 वह अमीर नहीं होगा, उस की दौलत क़ाइम नहीं
रहेगी, उस की जायदाद मुल्क में फैली नहीं रहेगी।
30 वह तारीकी से नहीं बचेगा। शोला उस की
कोंपलों को मुरझाने देगा, और अल्लाह उसे अपने मुँह
की एक फूँक से उड़ा कर तबाह कर देगा। 31 वह
धोके पर भरोसा न करे, वर्ना वह भटक जाएगा और
उस का अज्र धोका ही होगा। 32 वक़्त से पहले ही
उसे इस का पूरा मुआवज़ा मिलेगा, उस की कोंपल
कभी नहीं फले फूलेगी।
33 वह अंगूर की उस बेल की मानिन्द होगा जिस
का फल कच्ची हालत में ही गिर जाए, ज़ैतून के उस

दरख़्त की मानिन्द जिस के तमाम फूल झड़ जाएँ।
34 क्यूँकि बेदीनों का जथ्था बंजर रहेगा, और आग
रिश्वतख़ोरों के ख़ैमों को भस्म करेगी। 35 उन के पाँओ
दुख-दर्द से भारी हो जाते, और वह बुराई को जन्म
देते हैं। उन का पेट धोका ही पैदा करता है।”

अय्यूब का जवाब : मैं बेगुनाह हूँ

16 1 अय्यूब ने जवाब दे कर कहा,
2 “इस तरह की मैं ने बहुत सी बातें सुनी
हैं, तुम्हारी तसल्ली सिर्फ़ दुख-दर्द का बाइस है। 3 क्या
तुम्हारी लफ़्फ़ाज़ी कभी ख़त्म नहीं होगी? तुझे क्या
चीज़ बेचैन कर रही है कि तू मुझे जवाब देने पर
मज्बूर है? 4 अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैं भी
तुम्हारी जैसी बातें कर सकता। फिर मैं भी तुम्हारे
ख़िलाफ़ पुरअल्फ़ाज़ तक़रीरें पेश करके तौबा तौबा
कह सकता। 5 लेकिन मैं ऐसा न करता। मैं तुम्हें
अपनी बातों से तक़वियत देता, अफ़सोस के इज़हार
से तुम्हें तस्कीन देता। 6 लेकिन मेरे साथ ऐसा सुलूक
नहीं हो रहा। अगर मैं बोलूँ तो मुझे सुकून नहीं
मिलता, अगर चुप रहूँ तो मेरा दर्द दूर नहीं होता।
7 लेकिन अब अल्लाह ने मुझे थका दिया है, उस ने
मेरे पूरे घराने को तबाह कर दिया है। 8 उस ने मुझे
सुकड़ने दिया है, और यह बात मेरे ख़िलाफ़ गवाह
बन गई है। मेरी दुबली-पतली हालत खड़ी हो कर
मेरे ख़िलाफ़ गवाही देती है। 9 अल्लाह का ग़ज़ब मुझे
फाड़ रहा है, वह मेरा दुश्मन और मेरा मुख़ालिफ़
बन गया है जो मेरे ख़िलाफ़ दाँत पीस पीस कर मुझे
अपनी आँखों से छेद रहा है। [a]10 लोग गला फाड़ कर
मेरा मज़ाक़ उड़ाते, मेरे गाल पर थप्पड़ मार कर मेरी
बेइज़्ज़ती करते हैं। सब के सब मेरे ख़िलाफ़ मुत्तहिद
हो गए हैं। 11 अल्लाह ने मुझे शरीरों के हवाले कर
दिया, मुझे बेदीनों के चंगुल में फंसा दिया है। 12 मैं
सुकून से ज़िन्दगी गुज़ार रहा था कि उस ने मुझे पाश
पाश कर दिया, मुझे गले से पकड़ कर ज़मीन पर
पटख़ दिया। उस ने मुझे अपना निशाना बना लिया,
13 फिर उस के तीरअन्दाज़ों ने मुझे घेर लिया। उस ने
बेरहमी से मेरे गुर्दों को चीर डाला, मेरा पित ज़मीन
पर उंडेल दिया। 14 बार बार वह मेरी क़िलाबन्दी में
रख़ना डालता रहा, पहलवान की तरह मुझ पर हम्ला
करता रहा।
15 मैं ने टाँके लगा कर अपनी जिल्द के साथ टाट
का लिबास जोड़ लिया है, अपनी शान-ओ-शौकत
ख़ाक में मिलाई है। 16 रो रो कर मेरा चिहरा सूज
गया है, मेरी पलकों पर घना अंधेरा छा गया है।
17 लेकिन वजह क्या है? मेरे हाथ तो ज़ुल्म से बरी
रहे, मेरी दुआ पाक-साफ़ रही है। 18 ऐ ज़मीन, मेरे
ख़ून को मत ढाँपना! मेरी आह-ओ-ज़ारी कभी आराम
की जगह न पाए बल्कि गूँजती रहे। 19 अब भी मेरा
गवाह आसमान पर है, मेरे हक़ में गवाही देने वाला
बुलन्दियों पर है। 20 मेरी आह-ओ-ज़ारी मेरा तर्जुमान
है, मैं बेख़्वाबी से अल्लाह के इन्तिज़ार में रहता हूँ।
21 मेरी आहें अल्लाह के सामने फ़ानी इन्सान के हक़ में
बात करेंगी, उस तरह जिस तरह कोई अपने दोस्त के
हक़ में बात करे। 22 क्यूँकि थोड़े ही सालों के बाद मैं
उस रास्ते पर रवाना हो जाऊँगा जिस से वापस नहीं
आऊँगा।

अल्लाह से इल्तिजा

17 1 मेरी रूह शिकस्ता हो गई, मेरे दिन बुझ
गए हैं। क़ब्रिस्तान ही मेरे इन्तिज़ार में है।
2 मेरे चारों तरफ़ मज़ाक़ ही मज़ाक़ सुनाई देता, मेरी
आँखें लोगों का हटधर्म रवय्या देखते देखते थक
गई हैं। 3 ऐ अल्लाह, मेरी ज़मानत मेरे अपने हाथों से
क़बूल फ़रमा, क्यूँकि और कोई नहीं जो उसे दे। 4 उन
के ज़हनों को तू ने बन्द कर दिया, इस लिए तो उन से
इज़्ज़त नहीं पाएगा। 5 वह उस आदमी की मानिन्द हैं
जो अपने दोस्तों को ज़ियाफ़त की दावत दे, हालाँकि
उस के अपने बच्चे भूके मर रहे हों।

---

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अपनी आँखें मेरे ख़िलाफ़ तेज़ करता है।

6 अल्लाह ने मुझे मज़ाक़ का यूँ निशाना बनाया है
कि मैं क़ौमों में इब्रतअंगेज़ मिसाल बन गया हूँ। मुझे
देखते ही लोग मेरे मुँह पर थूकते हैं। 7 मेरी आँखें ग़म
खा खा कर धुन्दला गई हैं, मेरे आज़ा यहाँ तक सूख
गए कि साया ही रह गया है। 8 यह देख कर सीधी राह
पर चलने वालों के रोंगटे खड़े हो जाते और बेगुनाह
बेदीनों के ख़िलाफ़ मुश्तइल हो जाते हैं। 9 रास्तबाज़
अपनी राह पर क़ाइम रहते, और जिन के हाथ पाक
हैं वह तक़वियत पाते हैं। 10 लेकिन जहाँ तक तुम
सब का ताल्लुक़ है, आओ दुबारा मुझ पर हम्ला करो!
मुझे तुम में एक भी दाना आदमी नहीं मिलेगा।

11 मेरे दिन गुज़र गए हैं। मेरे वह मन्सूबे और दिल
की आर्ज़ूएँ ख़ाक में मिल गई हैं 12 जिन से रात दिन
में बदल गई और रौशनी अंधेरे को दूर करके क़रीब
आई थी। 13 अगर मैं सिर्फ़ इतनी ही उम्मीद रखूँ कि
पाताल मेरा घर होगा तो यह कैसी उम्मीद होगी?
अगर मैं अपना बिस्तर तारीकी में बिछा कर 14 क़ब्र
से कहूँ, 'तू मेरा बाप है' और कीड़े से, 'ऐ मेरी अम्मी,
ऐ मेरी बहन' 15 तो फिर यह कैसी उम्मीद होगी? कौन
कहेगा, 'मुझे तेरे लिए उम्मीद नज़र आती है'? 16 तब
मेरी उम्मीद मेरे साथ पाताल में उतरेगी, और हम मिल
कर ख़ाक में धँस जाएंगे।"

बिल्दद : अल्लाह बेदीनों को सज़ा देता है

18 1 बिल्दद सूख़ी ने जवाब दे कर कहा,
2 "तू कब तक ऐसी बातें करेगा? इन से
बाज़ आ कर होश में आ! तब ही हम सहीह बात
कर सकेंगे। 3 तू हमें डंगर जैसे अहमक़ क्यूँ समझता
है? 4 गो तू आग-बगूला हो कर अपने आप को फाड़
रहा है, लेकिन क्या तेरे बाइस ज़मीन को वीरान होना
चाहिए और चटानों को अपनी जगह से खिसक्ना
चाहिए? हरगिज़ नहीं!

5 यक़ीनन बेदीन का चराग़ बुझ जाएगा, उस की
आग का शोला आइन्दा नहीं चमकेगा। 6 उस के ख़ैमे
में रौशनी अंधेरा हो जाएगी, उस के ऊपर की शमा
बुझ जाएगी। 7 उस के लम्बे क़दम रुक रुक कर आगे
बढ़ेंगे, और उस का अपना मन्सूबा उसे पटख़ देगा।

8 उस के अपने पाँओ उसे जाल में फंसा देते हैं,
वह दाम पर ही चलता फिरता है। 9 फंदा उस की
एड़ी पकड़ लेता, कमन्द उसे जकड़ लेती है। 10 उसे
फंसाने का रस्सा ज़मीन में छुपा हुआ है, रास्ते में फंदा
बिछा है।

11 वह ऐसी चीज़ों से घिरा रहता है जो उसे क़दम-
ब-क़दम दहशत खिलाती और उस की नाक में दम
करती हैं। 12 आफ़त उसे हड़प कर लेना चाहती है,
तबाही तय्यार खड़ी है ताकि उसे गिरते वक़्त ही
पकड़ ले। 13 बीमारी उस की जिल्द को खा जाती,
मौत का पहलौठा उस के आज़ा को निगल लेता है।
14 उसे उस के ख़ैमे की हिफ़ाज़त से छीन लिया जाता
और घसीट कर दहशतों के बादशाह के सामने लाया
जाता है।

15 उस के ख़ैमे में आग बसती, उस के घर पर गंधक
बिखर जाती है। 16 नीचे उस की जड़ें सूख जाती, ऊपर
उस की शाख़ें मुरझा जाती हैं। 17 ज़मीन पर से उस की
याद मिट जाती है, कहीं भी उस का नाम-ओ-निशान
नहीं रहता।

18 उसे रौशनी से तारीकी में धकेला जाता, दुनिया से
भगा कर ख़ारिज किया जाता है। 19 क़ौम में उस की न
औलाद न नस्ल रहेगी, जहाँ पहले रहता था वहाँ कोई
नहीं बचेगा। 20 उस का अन्जाम देख कर मग़रिब के
बाशिन्दों के रोंगटे खड़े हो जाते और मशरिक़ के
बाशिन्दे दहशतज़दा हो जाते हैं। 21 यही है बेदीन के
घर का अन्जाम, उसी के मक़ाम का जो अल्लाह को
नहीं जानता।"

अय्यूब : मैं जानता हूँ कि मेरा नजातदहिन्दा ज़िन्दा है

19 1 तब अय्यूब ने जवाब में कहा,
2 "तुम कब तक मुझ पर तशद्दुद करना
चाहते हो, कब तक मुझे अल्फ़ाज़ से टुकड़े टुकड़े
करना चाहते हो? 3 अब तुम ने दस बार मुझे मलामत
की है, तुम ने शर्म किए बग़ैर मेरे साथ बदसुलूकी की

है। 4 अगर यह बात सहीह भी हो कि मैं ग़लत राह
पर आ गया हूँ तो मुझे ही इस का नतीजा भुगतना है।
5 लेकिन चूँकि तुम मुझ पर अपनी सब्क़त दिखाना
चाहते और मेरी रुस्वाई मुझे डाँटने के लिए इस्तेमाल
कर रहे हो 6 तो फिर जान लो, अल्लाह ने ख़ुद मुझे
ग़लत राह पर ला कर अपने दाम से घेर लिया है।

7 गो मैं चीख़ कर कहूँ, 'मुझ पर ज़ुल्म हो रहा है,'
लेकिन जवाब कोई नहीं मिलता। गो मैं मदद के लिए
पुकारूँ, लेकिन इन्साफ़ नहीं पाता। 8 उस ने मेरे रास्ते
में ऐसी दीवार खड़ी कर दी कि मैं गुज़र नहीं सकता,
उस ने मेरी राहों पर अंधेरा ही छा जाने दिया है। 9 उस
ने मेरी इज़्ज़त मुझ से छीन कर मेरे सर से ताज उतार
दिया है। 10 चारों तरफ़ से उस ने मुझे ढा दिया तो मैं
तबाह हुआ। उस ने मेरी उम्मीद को दरख़्त की तरह
जड़ से उखाड़ दिया है। 11 उस का क़हर मेरे ख़िलाफ़
भड़क उठा है, और वह मुझे अपने दुश्मनों में शुमार
करता है। 12 उस के दस्ते मिल कर मुझ पर हम्ला करने
आए हैं। उन्हों ने मेरी फ़सील के साथ मिट्टी का ढेर
लगाया है ताकि उस में रख़ना डालें। उन्हों ने चारों
तरफ़ से मेरे ख़ैमे का मुहासरा किया है।

13 मेरे भाइयों को उस ने मुझ से दूर कर दिया,
और मेरे जानने वालों ने मेरा हुक़्क़ा-पानी बन्द कर
दिया है। 14 मेरे रिश्तेदारों ने मुझे तर्क कर दिया, मेरे
क़रीबी दोस्त मुझे भूल गए हैं। 15 मेरे दामनगीर और
नौकरानियाँ मुझे अजनबी समझते हैं। उन की नज़र
में मैं अजनबी हूँ। 16 मैं अपने नौकर को बुलाता हूँ
तो वह जवाब नहीं देता। गो मैं अपने मुँह से उस से
इल्तिजा करूँ तो भी वह नहीं आता।

17 मेरी बीवी मेरी जान से घिन खाती है, मेरे सगे भाई
मुझे मकरूह समझते हैं। 18 यहाँ तक कि छोटे बच्चे
भी मुझे हक़ीर जानते हैं। अगर मैं उठने की कोशिश
करूँ तो वह अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेर लेते हैं। 19 मेरे
दिली दोस्त मुझे कराहियत की निगाह से देखते हैं,
जो मुझे प्यारे थे वह मेरे मुख़ालिफ़ हो गए हैं। 20 मेरी
जिल्द सुकड़ कर मेरी हड्डियों के साथ जा लगी है। मैं
मौत से बाल बाल बच गया हूँ। [b]

21 मेरे दोस्तो, मुझ पर तरस खाओ, मुझ पर तरस
खाओ। क्यूँकि अल्लाह ही के हाथ ने मुझे मारा है।
22 तुम क्यूँ अल्लाह की तरह मेरे पीछे पड़ गए हो, क्यूँ
मेरा गोश्त खा खा कर सेर नहीं होते?

23 काश मेरी बातें क़लमबन्द हो जाएँ! काश वह
यादगार पर कन्दा की जाएँ, 24 लोहे की छैनी और
सीसे से हमेशा के लिए पत्थर में नक़्श की जाएँ!
25 लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरा छुड़ाने वाला ज़िन्दा
है और आख़िरकार मेरे हक़ में ज़मीन पर खड़ा हो
जाएगा, 26 गो मेरी जिल्द यूँ उतारी भी गई हो। लेकिन
मेरी आर्ज़ू है कि जिस्म में होते हुए अल्लाह को देखूँ,
27 कि मैं ख़ुद ही उसे देखूँ, न कि अजनबी बल्कि
अपनी ही आँखों से उस पर निगाह करूँ। इस आर्ज़ू
की शिद्दत से मेरा दिल तबाह हो रहा है।

28 तुम कहते हो, 'हम कितनी सख़्ती से अय्यूब का
ताक़्क़ुब करेंगे' और मसले की जड़ तो उसी में पिनहाँ
है। 29 लेकिन तुम्हें ख़ुद तलवार से डरना चाहिए,
क्यूँकि तुम्हारा ग़ुस्सा तलवार की सज़ा के लाइक़
है, तुम्हें जानना चाहिए कि अदालत आने वाली है।"

ज़ूफ़र : ग़लत काम की मुन्सिफ़ाना सज़ा दी जाएगी

20 1 तब ज़ूफ़र नामाती ने जवाब दे कर कहा,
2 "यक़ीनन मेरे मुज़्तरिब ख़यालात और
वह एहसासात जो मेरे अन्दर से उभर रहे हैं मुझे
जवाब देने पर मज्बूर कर रहे हैं। 3 मुझे ऐसी नसीहत
सुननी पड़ी जो मेरी बेइज़्ज़ती का बाइस थी, लेकिन
मेरी समझ मुझे जवाब देने की तहरीक दे रही है।

4 क्या तुझे मालूम नहीं कि क़दीम ज़माने से यानी
जब से इन्सान को ज़मीन पर रखा गया 5 शरीर का
फ़त्हमन्द नारा आरिज़ी और बेदीन की ख़ुशी पल
भर की साबित हुई है? 6 गो उस का क़द-ओ-क़ामत
आसमान तक पहुँचे और उस का सर बादलों को छुए

[b] लफ़्ज़ी तर्जुमा : 'मेरे दाँतों की जिल्द ही बच गई है।' मतलब मुब्हम सा है।

7 ताहम वह अपने फ़ुज़्ले की तरह अबद तक तबाह
हो जाएगा। जिन्हों ने उसे पहले देखा था वह पूछेंगे,
'अब वह कहाँ है?'
8 वह ख़्वाब की तरह उड़ जाता और आइन्दा कहीं
नहीं पाया जाएगा, उसे रात की रोया की तरह भुला
दिया जाता है। 9 जिस आँख ने उसे देखा वह उसे
आइन्दा कभी नहीं देखेगी। उस का घर दुबारा उस
का मुशाहदा नहीं करेगा। 10 उस की औलाद को
ग़रीबों से भीक माँगनी पड़ेगी, उस के अपने हाथों
को दौलत वापस देनी पड़ेगी। 11 जवानी की जिस
ताक़त से उस की हड्डियाँ भरी हैं वह उस के साथ ही
ख़ाक में मिल जाएगी।
12 बुराई बेदीन के मुँह में मीठी है। वह उसे अपनी
ज़बान तले छुपाए रखता, 13 उसे महफ़ूज़ रख कर
जाने नहीं देता। 14 लेकिन उस की ख़ुराक पेट में आ
कर ख़राब हो जाती बल्कि साँप का ज़हर बन जाती
है। 15 जो दौलत उस ने निगल ली उसे वह उगल
देगा, अल्लाह ही यह चीज़ें उस के पेट से ख़ारिज
करेगा। 16 उस ने साँप का ज़हर चूस लिया, और
साँप ही की ज़बान उसे मार डालेगी। 17 वह नदियों
से लुत्फ़अन्दोज़ नहीं होगा, शहद और बालाई की
नहरों से मज़ा नहीं लेगा। 18 जो कुछ उस ने हासिल
किया उसे वह हज़म नहीं करेगा बल्कि सब कुछ
वापस करेगा। जो दौलत उस ने अपने कारोबार से
कमाई उस से वह लुत्फ़ नहीं उठाएगा। 19 क्यूँकि
उस ने पस्तहालों पर ज़ुल्म करके उन्हें तर्क किया
है, उस ने ऐसे घरों को छीन लिया है जिन्हें उस ने
तामीर नहीं किया था। 20 उस ने पेट में कभी सुकून
महसूस नहीं किया बल्कि जो कुछ भी चाहता था उसे
बचने नहीं दिया। 21 जब वह खाना खाता है तो कुछ
नहीं बचता, इस लिए उस की ख़ुशहाली क़ाइम नहीं
रहेगी। 22 जूँ ही उसे कसरत की चीज़ें हासिल होंगी
वह मुसीबत में फंस जाएगा। तब दुख-दर्द का पूरा
ज़ोर उस पर आएगा। 23 काश अल्लाह बेदीन का पेट
भर कर अपना भड़कता क़हर उस पर नाज़िल करे,
काश वह अपना ग़ज़ब उस पर बरसाए।
24 गो वह लोहे के हथियार से भाग जाए, लेकिन
पीतल का तीर उसे चीर डालेगा। 25 जब वह उसे
अपनी पीठ से निकाले तो तीर की नोक उस के
कलेजे में से निकलेगी। उसे दहशतनाक वाक़िआत
पेश आएँगे। 26 गहरी तारीकी उस के ख़ज़ानों की
ताक में बैठी रहेगी। ऐसी आग जो इन्सानों ने नहीं
लगाई उसे भस्म करेगी। उस के ख़ैमे के जितने लोग
बच निकले उन्हें वह खा जाएगी। 27 आसमान उसे
मुजरिम ठहराएगा, ज़मीन उस के ख़िलाफ़ गवाही देने
के लिए खड़ी हो जाएगी। 28 सैलाब उस का घर उड़ा
ले जाएगा, ग़ज़ब के दिन शिद्दत से बहता हुआ पानी
उस पर से गुज़रेगा। 29 यह है वह अज्र जो अल्लाह
बेदीनों को देगा, वह विरासत जिसे अल्लाह ने उन के
लिए मुक़र्रर की है।"

अय्यूब : बहुत दफ़ा बेदीनों को सज़ा नहीं मिलती

21 1 फिर अय्यूब ने जवाब में कहा,
2 "ध्यान से मेरे अल्फ़ाज़ सुनो! यही करने
से मुझे तसल्ली दो! 3 जब तक मैं अपनी बात पेश
न करूँ मुझे बर्दाश्त करो, इस के बाद अगर चाहो
तो मेरा मज़ाक़ उड़ाओ। 4 क्या मैं किसी इन्सान से
एहतिजाज कर रहा हूँ? हरगिज़ नहीं! तो फिर क्या
अजब कि मेरी रूह इतनी तंग आ गई है। 5 मुझ पर
नज़र डालो तो तुम्हारे रोंगटे खड़े हो जाएंगे और तुम
हैरानी से अपना हाथ मुँह पर रखोगे।
6 जब कभी मुझे वह ख़याल याद आता है जो मैं पेश
करना चाहता हूँ तो मैं दहशतज़दा हो जाता हूँ, मेरे
जिस्म पर थरथराहट तारी हो जाती है। 7 ख़याल यह
है कि बेदीन क्यूँ जीते रहते हैं? न सिर्फ़ वह उम्ररसीदा
हो जाते बल्कि उन की ताक़त बढ़ती रहती है।
8 उन के बच्चे उन के सामने क़ाइम हो जाते, उन की
औलाद उन की आँखों के सामने मज़बूत हो जाती है।
9 उन के घर महफ़ूज़ हैं। न कोई चीज़ उन्हें डराती, न
अल्लाह की सज़ा उन पर नाज़िल होती है। 10 उन का
साँड नस्ल बढ़ाने में कभी नाकाम नहीं होता, उन की

गाय वक़्त पर जन्म देती, और उस के बच्चे कभी ज़ाए
नहीं होते।
11 वह अपने बच्चों को बाहर खेलने के लिए भेजते
हैं तो वह भेड़-बकरियों के रेवड़ की तरह घर से
निकलते हैं। उन के लड़के कूदते फाँदते नज़र आते
हैं। 12 वह दफ़ और सरोद बजा कर गीत गाते और
बाँसरी की सुरीली आवाज़ निकाल कर अपना दिल
बहलाते हैं। 13 उन की ज़िन्दगी ख़ुशहाल रहती है,
वह हर दिन से पूरा लुत्फ़ उठाते और आख़िरकार
बड़े सुकून से पाताल में उतर जाते हैं।
14 और यह वह लोग हैं जो अल्लाह से कहते हैं,
'हम से दूर हो जा, हम तेरी राहों को जानना नहीं
चाहते। 15 क़ादिर-ए-मुतलक़ कौन है कि हम उस की
ख़िदमत करें? उस से दुआ करने से हमें क्या फ़ाइदा
होगा?' 16 क्या उन की ख़ुशहाली उन के अपने हाथ
में नहीं होती? क्या बेदीनों के मन्सूबे अल्लाह से दूर
नहीं रहते?
17 ऐसा लगता है कि बेदीनों का चराग़ कभी नहीं
बुझता। क्या उन पर कभी मुसीबत आती है? क्या
अल्लाह कभी क़हर में आ कर उन पर वह तबाही
नाज़िल करता है जो उन का मुनासिब हिस्सा है?
18 क्या हवा के झोंके कभी उन्हें भूसे की तरह
और आँधी कभी उन्हें तूड़ी की तरह उड़ा ले जाती
है? अफ़सोस, ऐसा नहीं होता। 19 शायद तुम कहो,
'अल्लाह उन्हें सज़ा देने के बजाय उन के बच्चों को सज़ा
देगा।' लेकिन मैं कहता हूँ कि उसे बाप को ही सज़ा
देनी चाहिए ताकि वह अपने गुनाहों का नतीजा ख़ूब
जान ले। 20 उस की अपनी ही आँखें उस की तबाही
देखें, वह ख़ुद क़ादिर-ए-मुतलक़ के ग़ज़ब का प्याला
पी ले। 21 क्यूँकि जब उस की ज़िन्दगी के मुक़र्ररा दिन
इख़तिताम तक पहुँचें तो उसे क्या पर्वा होगी कि मेरे
बाद घर वालों के साथ क्या होगा।
22 लेकिन कौन अल्लाह को इल्म सिखा सकता है?
वह तो बुलन्दियों पर रहने वालों की भी अदालत
करता है। 23 एक शख़्स वफ़ात पाते वक़्त ख़ूब
तन्दुरुस्त होता है। जीते जी वह बड़े सुकून और
इत्मीनान से ज़िन्दगी गुज़ार सका। 24 उस के बर्तन
दूध से भरे रहे, उस की हड्डियों का गूदा तर-ओ-ताज़ा
रहा। 25 दूसरा शख़्स शिकस्ता हालत में मर जाता
है और उसे कभी ख़ुशहाली का लुत्फ़ नसीब नहीं
हुआ। 26 अब दोनों मिल कर ख़ाक में पड़े रहते हैं,
दोनों कीड़े-मकोड़ों से ढाँपे रहते हैं।
27 सुनो, मैं तुम्हारे ख़यालात और उन साज़िशों से
वाक़िफ़ हूँ जिन से तुम मुझ पर ज़ुल्म करना चाहते
हो। 28 क्यूँकि तुम कहते हो, 'रईस का घर कहाँ
है? वह ख़ैमा किधर गया जिस में बेदीन बसते थे?
वह अपने गुनाहों के सबब से ही तबाह हो गए हैं।'
29 लेकिन उन से पूछ लो जो इधर उधर सफ़र करते
रहते हैं। तुम्हें उन की गवाही तस्लीम करनी चाहिए
30 कि आफ़त के दिन शरीर को सहीह-सलामत छोड़ा
जाता है, कि ग़ज़ब के दिन उसे रिहाई मिलती है।
31 कौन उस के रू-ब-रू उस के चाल-चलन की
मलामत करता, कौन उसे उस के ग़लत काम का
मुनासिब अज्र देता है? 32 लोग उस के जनाज़े में
शरीक हो कर उसे क़ब्र तक ले जाते हैं। उस की क़ब्र
पर चौकीदार लगाया जाता है। 33 वादी की मिट्टी के
ढेले उसे मीठे लगते हैं। जनाज़े के पीछे पीछे तमाम
दुनिया, उस के आगे आगे अनगिनत हुजूम चलता
है। 34 चुनाँचे तुम मुझे अबस बातों से क्यूँ तसल्ली दे
रहे हो? तुम्हारे जवाबों में तुम्हारी बेवफ़ाई ही नज़र
आती है।"

इलीफ़ज़ : अय्यूब शरीर है

22 1 फिर इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब दे कर
कहा,
2 "क्या अल्लाह इन्सान से फ़ाइदा उठा सकता है?
हरगिज़ नहीं! उस के लिए दानिशमन्द भी फ़ाइदे का
बाइस नहीं। 3 अगर तू रास्तबाज़ हो भी तो क्या वह
इस से अपने लिए नफ़ा उठा सकता है? हरगिज़ नहीं!
अगर तू बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारे तो क्या उसे कुछ
हासिल होता है? 4 अल्लाह तुझे तेरी ख़ुदातरस ज़िन्दगी
के सबब से मलामत नहीं कर रहा। यह न सोच कि

वह इसी लिए अदालत में तुझ से जवाब तलब कर
रहा है। 5 नहीं, वजह तेरी बड़ी बदकारी, तेरे ला-
मह्दूद गुनाह हैं।
6 जब तेरे भाइयों ने तुझ से क़र्ज़ लिया तो तू ने
बिलावजह वह चीज़ें अपना ली होंगी जो उन्हों ने
तुझे ज़मानत के तौर पर दी थीं, तू ने उन्हें उन के
कपड़ों से महरूम कर दिया होगा। 7 तू ने थकेमान्दों
को पानी पिलाने से और भूके मरने वालों को खाना
खिलाने से इन्कार किया होगा। 8 बेशक तेरा रवय्या
इस ख़याल पर मब्नी था कि पूरा मुल्क ताक़तवरों
की मिलकियत है, कि सिर्फ़ बड़े लोग उस में रह
सकते हैं। 9 तू ने बेवाओं को ख़ाली हाथ मोड़ दिया
होगा, यतीमों की ताक़त पाश पाश की होगी। 10 इसी
लिए तू फंदों से घिरा रहता है, अचानक ही तुझे
दह्शतनाक वाक़िआत डराते हैं। 11 यही वजह है
कि तुझ पर ऐसा अंधेरा छा गया है कि तू देख नहीं
सकता, कि सैलाब ने तुझे डुबो दिया है।
12 क्या अल्लाह आसमान की बुलन्दियों पर नहीं
होता? वह तो सितारों पर नज़र डालता है, ख़्वाह
वह कितने ही ऊँचे क्यूँ न हों। 13 तो भी तू कहता
है, 'अल्लाह क्या जानता है? क्या वह काले बादलों
में से देख कर अदालत कर सकता है? 14 वह घने
बादलों में छुपा रहता है, इस लिए जब वह आसमान
के गुम्बद पर चलता है तो उसे कुछ नज़र नहीं आता।'
15 क्या तू उस क़दीम राह से बाज़ नहीं आएगा जिस
पर बदकार चलते रहे हैं? 16 वह तो अपने मुक़र्ररा
वक़्त से पहले ही सुकड़ गए, उन की बुन्यादें सैलाब
से ही उड़ा ली गईं। 17 उन्हों ने अल्लाह से कहा, 'हम से
दूर हो जा,' और 'क़ादिर-ए-मुतलक़ हमारे लिए क्या
कुछ कर सकता है?' 18 लेकिन अल्लाह ही ने उन के
घरों को भरपूर ख़ुशहाली से नवाज़ा, गो बेदीनों के
बुरे मन्सूबे उस से दूर ही दूर रहते हैं। 19 रास्तबाज़
उन की तबाही देख कर ख़ुश हुए, बेक़ुसूरों ने उन
की हंसी उड़ा कर कहा, 20 'लो, यह देखो, उन की
जायदाद किस तरह मिट गई, उन की दौलत किस
तरह भस्म हो गई है!'
21 ऐ अय्यूब, अल्लाह से सुलह करके सलामती
हासिल कर, तब ही तू ख़ुशहाली पाएगा। 22 अल्लाह
के मुँह की हिदायत अपना ले, उस के फ़रमान अपने
दिल में मह्फ़ूज़ रख। 23 अगर तू क़ादिर-ए-मुतलक़ के
पास वापस आए तो बहाल हो जाएगा, और तेरे ख़ैमे
से बदी दूर ही रहेगी। 24 सोने को ख़ाक के बराबर,
ओफ़ीर का ख़ालिस सोना वादी के पत्थर के बराबर
समझ ले 25 तो क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुद तेरा सोना
होगा, वही तेरे लिए चाँदी का ढेर होगा। 26 तब तू
क़ादिर-ए-मुतलक़ से लुत्फ़अन्दोज़ होगा और अल्लाह
के हुज़ूर अपना सर उठा सकेगा। 27 तू उस से इल्तिजा
करेगा तो वह तेरी सुनेगा और तू अपनी मन्नतें बढ़ा
सकेगा। 28 जो कुछ भी तू करने का इरादा रखे उस में
तुझे कामयाबी होगी, तेरी राहों पर रौशनी चमकेगी।
29 क्यूँकि जो शेख़ी बघारता है उसे अल्लाह पस्त करता
जबकि जो पस्तहाल है उसे वह नजात देता है। 30 वह
बेक़ुसूर को छुड़ाता है, चुनाँचे अगर तेरे हाथ पाक
हों तो वह तुझे छुड़ाएगा।"

अय्यूब : काश मैं अल्लाह को कहीं पाता

23 1 अय्यूब ने जवाब में कहा,
2 "बेशक आज मेरी शिकायत सरकशी
का इज़हार है, हालाँकि मैं अपनी आहों पर क़ाबू
पाने की कोशिश कर रहा हूँ।
3 काश मैं उसे पाने का इल्म रखूँ ताकि उस
की सुकूनतगाह तक पहुँच सकूँ। 4 फिर मैं अपना
मुआमला तर्तीबवार उस के सामने पेश करता, मैं
अपना मुँह दलाइल से भर लेता। 5 तब मुझे उस के
जवाबों का पता चलता, मैं उस के बयानात पर ग़ौर
कर सकता। 6 क्या वह अपनी अज़ीम क़ुव्वत मुझ
से लड़ने पर सर्फ़ करता? हरगिज़ नहीं! वह यक़ीनन
मुझ पर तवज्जुह देता। 7 अगर मैं वहाँ उस के हुज़ूर
आ सकता तो दियानतदार आदमी की तरह उस के
साथ मुक़द्दमा लड़ता। तब मैं हमेशा के लिए अपने
मुन्सिफ़ से बच निकलता!

8 लेकिन अफ़सोस, अगर मैं मशरिक़ की तरफ़ जाऊँ
तो वह वहाँ नहीं होता, मग़रिब की जानिब बढ़ूँ तो
वहाँ भी नहीं मिलता। 9 शिमाल मैं उसे ढूँडूँ तो वह
दिखाई नहीं देता, जुनूब की तरफ़ रुख़ करूँ तो वहाँ
भी पोशीदा रहता है। 10 क्यूँकि वह मेरी राह को
जानता है। अगर वह मेरी जाँच-पड़ताल करता तो
मैं ख़ालिस सोना साबित होता। 11 मेरे क़दम उस की
राह में रहे हैं, मैं राह से न बाईं, न दाईं तरफ़ हटा
बल्कि सीधा उस पर चलता रहा। 12 मैं उस के होंटों
के फ़रमान से बाज़ नहीं आया बल्कि अपने दिल में
ही उस के मुँह की बातें महफ़ूज़ रखी हैं।

13 अगर वह फ़ैसला करे तो कौन उसे रोक सकता
है? जो कुछ भी वह करना चाहे उसे अमल में लाता
है। 14 जो भी मन्सूबा उस ने मेरे लिए बांधा उसे
वह ज़रूर पूरा करेगा। और उस के ज़हन में मज़ीद
बहुत से ऐसे मन्सूबे हैं। 15 इसी लिए मैं उस के हुज़ूर
दहशतज़दा हूँ। जब भी मैं इन बातों पर ध्यान दूँ तो
उस से डरता हूँ। 16 अल्लाह ने ख़ुद मुझे शिकस्तादिल
किया, क़ादिर-ए-मुतलक़ ही ने मुझे दहशत खिलाई
है। 17 क्यूँकि न मैं तारीकी से तबाह हो रहा हूँ, न इस
लिए कि घने अंधेरे ने मेरे चिहरे को ढाँप दिया है।

ज़मीन पर कितनी नाइन्साफ़ी पाई जाती है

24 1 क़ादिर-ए-मुतलक़ अदालत के औक़ात
क्यूँ नहीं मुक़र्रर करता? जो उसे जानते हैं
वह ऐसे दिन क्यूँ नहीं देखते? 2 बेदीन अपनी ज़मीनों
की हुदूद को आगे पीछे करते और दूसरों के रेवड़
लूट कर अपनी चरागाहों में ले जाते हैं। 3 वह यतीमों
का गधा हाँक कर ले जाते और इस शर्त पर बेवा को
क़र्ज़ देते हैं कि वह उन्हें ज़मानत के तौर पर अपना
बैल दे। 4 वह ज़रूरतमन्दों को रास्ते से हटाते हैं,
चुनाँचे मुल्क के ग़रीबों को सरासर छुप जाना पड़ता
है।

5 ज़रूरतमन्द बयाबान में जंगली गधों की तरह
काम करने के लिए निकलते हैं। ख़ुराक का खोज
लगा लगा कर वह इधर उधर घूमते फिरते हैं बल्कि
रेगिस्तान ही उन्हें उन के बच्चों के लिए खाना मुहय्या
करता है। 6 जो खेत उन के अपने नहीं हैं उन में वह
फ़सल काटते हैं, और बेदीनों के अंगूर के बाग़ों में
जा कर वह दो चार अंगूर चुन लेते हैं जो फ़सल चुनने
के बाद बाक़ी रह गए थे। 7 कपड़ों से महरूम रह कर
वह रात को बरहना हालत में गुज़ारते हैं। सर्दी में उन
के पास कम्बल तक नहीं होता। 8 पहाड़ों की बारिश
से वह भीग जाते और पनाहगाह न होने के बाइस
पत्थरों के साथ लिपट जाते हैं।

9 बेदीन बाप से महरूम बच्चे को माँ की गोद से छीन
लेते हैं बल्कि इस शर्त पर मुसीबतज़दा को क़र्ज़ देते
हैं कि वह उन्हें ज़मानत के तौर पर अपना शीरख़्वार
बच्चा दे। 10 ग़रीब बरहना हालत में और कपड़े पहने
बग़ैर फिरते हैं, वह भूके होते हुए पूले उठाए चलते हैं।
11 ज़ैतून के जो दरख़्त बेदीनों ने सफ़-दर-सफ़ लगाए
थे उन के दरमियान ग़रीब ज़ैतून का तेल निकालते
हैं। प्यासी हालत में वह शरीरों के हौज़ों में अंगूर
को पाँओ तले कुचल कर उस का रस निकालते हैं।
12 शहर से मरने वालों की आहें निकलती हैं और
ज़ख़्मी लोग मदद के लिए चीख़ते चिल्लाते हैं। इस के
बावुजूद अल्लाह किसी को भी मुजरिम नहीं ठहराता।

13 यह बेदीन उन में से हैं जो नूर से सरकश हो
गए हैं। न वह उस की राहों से वाक़िफ़ हैं, न उन
में रहते हैं। 14 सुब्ह-सवेरे क़ातिल उठता है ताकि
मुसीबतज़दा और ज़रूरतमन्द को क़त्ल करे। रात
को चोर चक्कर काटता है। 15 ज़िनाकार की आँखें
शाम के धुन्दल्के के इन्तिज़ार में रहती हैं, यह सोच
कर कि उस वक़्त मैं किसी को नज़र नहीं आऊँगा।
निकलते वक़्त वह अपने मुँह को ढाँप लेता है।
16 डाकू अंधेरे में घरों में नक़ब लगाते जबकि दिन
के वक़्त वह छुप कर अपने पीछे कुंडी लगा लेते
हैं। नूर को वह जानते ही नहीं। 17 गहरी तारीकी ही
उन की सुब्ह होती है, क्यूँकि उन की घने अंधेरे की
दहशतों से दोस्ती हो गई है।

18 लेकिन बेदीन पानी की सतह पर झाग हैं, मुल्क
में उन का हिस्सा मलऊन है और उन के अंगूर के

बाग़ों की तरफ़ कोई रुजू नहीं करता। 19 जिस तरह
काल और झुलसती गर्मी बर्फ़ का पानी छीन लेती हैं
उसी तरह पाताल गुनाहगारों को छीन लेता है। 20 माँ
का रहम उन्हें भूल जाता, कीड़ा उन्हें चूस लेता और
उन की याद जाती रहती है। यक़ीनन बेदीनी लकड़ी
की तरह टूट जाती है। 21 बेदीन बाँझ औरत पर
ज़ुल्म और बेवाओं से बदसुलूकी करते हैं, 22 लेकिन
अल्लाह ज़बरदस्तों को अपनी क़ुदरत से घसीट कर
ले जाता है। वह मज़बूती से खड़े भी हों तो भी कोई
यक़ीन नहीं कि ज़िन्दा रहेंगे। 23 अल्लाह उन्हें हिफ़ाज़त
से आराम करने देता है, लेकिन उस की आँखें उन की
राहों की पहरादारी करती रहती हैं। 24 लम्हा भर के
लिए वह सरफ़राज़ होते, लेकिन फिर नेस्त-ओ-नाबूद
हो जाते हैं। उन्हें ख़ाक में मिला कर सब की तरह
जमा किया जाता है, वह गन्दुम की कटी हुई बालों
की तरह मुरझा जाते हैं।

25 क्या ऐसा नहीं है? अगर कोई मुत्तफ़िक़ नहीं तो
वह साबित करे कि मैं ग़लती पर हूँ, वह दिखाए कि
मेरे दलाइल बातिल हैं।"

बिल्दद : अल्लाह के सामने कोई रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता

25 1 फिर बिल्दद सूख़ी ने जवाब दे कर कहा,
2 "अल्लाह की हुकूमत दहशतनाक है।
वही अपनी बुलन्दियों पर सलामती क़ाइम रखता है।
3 क्या कोई उस के दस्तों की तादाद गिन सकता है?
उस का नूर किस पर नहीं चमकता? 4 तो फिर इन्सान
अल्लाह के सामने किस तरह रास्तबाज़ ठहर सकता
है? जो औरत से पैदा हुआ वह किस तरह पाक-साफ़
साबित हो सकता है? 5 उस की नज़र में न चाँद पुरनूर
है, न सितारे पाक हैं। 6 तो फिर इन्सान किस तरह
पाक ठहर सकता है जो कीड़ा ही है? आदमज़ाद तो
मकोड़ा ही है।"

अय्यूब : तू ने मुझे कितने अच्छे मश्वरे दिए हैं!

26 1 अय्यूब ने जवाब दे कर कहा,
2 "वाह जी वाह! तू ने क्या ख़ूब उसे
सहारा दिया जो बेबस है, क्या ख़ूब उस बाज़ू को
मज़बूत कर दिया जो बेताक़त है! 3 तू ने उसे कितने
अच्छे मश्वरे दिए जो हिक्मत से महरूम है, अपनी
समझ की कितनी गहरी बातें उस पर ज़ाहिर की हैं।
4 तू ने किस की मदद से यह कुछ पेश किया है? किस
ने तेरी रूह में वह बातें डालीं जो तेरे मुँह से निकल
आई हैं?

कौन अल्लाह की अज़मत का अन्दाज़ा लगा सकता है?

5 अल्लाह के सामने वह तमाम मुर्दा अर्वाह जो पानी
और उस में रहने वालों के नीचे बसती हैं डर के मारे
तड़प उठती हैं। 6 हाँ, उस के सामने पाताल बरहना
और उस की गहराइयाँ बेनिक़ाब हैं।

7 अल्लाह ही ने शिमाल को वीरान-ओ-सुन्सान जगह
के ऊपर तान लिया, उसी ने ज़मीन को यूँ लगा दिया
कि वह किसी चीज़ से लटकी हुई नहीं है। 8 उस ने
अपने बादलों में पानी लपेट लिया, लेकिन वह बोझ
तले न फटे। 9 उस ने अपना तख़्त नज़रों से छुपा कर
अपना बादल उस पर छा जाने दिया। 10 उस ने पानी
की सतह पर दाइरा बनाया जो रौशनी और अंधेरे के
दरमियान हद बन गया।

11 आसमान के सतून लरज़ उठे। उस की धमकी
पर वह दहशतज़दा हुए। 12 अपनी क़ुदरत से अल्लाह
ने समुन्दर को थमा दिया, अपनी हिक्मत से रहब
अज़दहे को टुकड़े टुकड़े कर दिया। 13 उस के रूह
ने आसमान को साफ़ किया, उस के हाथ ने फ़रार
होने वाले साँप को छेद डाला। 14 लेकिन ऐसे काम
उस की राहों के किनारे पर ही किए जाते हैं। जो कुछ
हम उस के बारे में सुनते हैं वह धीमी धीमी आवाज़
से हमारे कान तक पहुँचता है। तो फिर कौन उस की
क़ुदरत की कड़कती आवाज़ समझ सकता है?"

मैं बेक़ुसूर हूँ

27 1 फिर अय्यूब ने अपनी बात जारी रखी,
2 “अल्लाह की हयात की क़सम जिस
ने मेरा इन्साफ़ करने से इन्कार किया, क़ादिर-ए-
मुतलक़ की क़सम जिस ने मेरी ज़िन्दगी तल्ख़ कर
दी है, 3 मेरे जीते जी, हाँ जब तक अल्लाह का दम मेरी
नाक में है 4 मेरे होंट झूट नहीं बोलेंगे, मेरी ज़बान
धोका बयान नहीं करेगी। 5 मैं कभी तस्लीम नहीं
करूँगा कि तुम्हारी बात दुरुस्त है। मैं बेइल्ज़ाम हूँ
और मरते दम तक इस के उलट नहीं कहूँगा। 6 मैं
इसरार करता हूँ कि रास्तबाज़ हूँ और इस से कभी
बाज़ नहीं आऊँगा। मेरा दिल मेरे किसी भी दिन के
बारे में मुझे मलामत नहीं करता।

7 अल्लाह करे कि मेरे दुश्मन के साथ वही सुलूक
किया जाए जो बेदीनों के साथ किया जाएगा, कि मेरे
मुख़ालिफ़ का वह अन्जाम हो जो बदकारों को पेश
आएगा। 8 क्यूँकि उस वक़्त शरीर की क्या उम्मीद
रहेगी जब उसे इस ज़िन्दगी से मुन्क़ते किया जाएगा,
जब अल्लाह उस की जान उस से तलब करेगा? 9 क्या
अल्लाह उस की चीख़ें सुनेगा जब वह मुसीबत में
फंस कर मदद के लिए पुकारेगा? 10 या क्या वह
क़ादिर-ए-मुतलक़ से लुत्फ़अन्दोज़ होगा और हर
वक़्त अल्लाह को पुकारेगा?

11 अब मैं तुम्हें अल्लाह की क़ुदरत के बारे में
तालीम दूँगा, क़ादिर-ए-मुतलक़ का इरादा तुम से
नहीं छुपाऊँगा। 12 देखो, तुम सब ने इस का मुशाहदा
किया है। तो फिर इस क़िस्म की बातिल बातें क्यूँ
करते हो?

बेदीन ज़िन्दा नहीं रहेगा

13 बेदीन अल्लाह से क्या अज्र पाएगा, ज़ालिम को
क़ादिर-ए-मुतलक़ से मीरास में क्या मिलेगा? 14 गो
उस के बच्चे मुतअद्दिद हों, लेकिन आख़िरकार वह
तलवार की ज़द में आएँगे। उस की औलाद भूकी
रहेगी। 15 जो बच जाएँ उन्हें मोहलिक बीमारी से क़ब्र
में पहुँचाया जाएगा, और उन की बेवाएँ मातम नहीं
कर पाएँगी। 16 बेशक वह ख़ाक की तरह चाँदी का
ढेर लगाए और मिट्टी की तरह नफ़ीस कपड़ों का तोदा
इकट्ठा करे, 17 लेकिन जो कपड़े वह जमा करे उन्हें
रास्तबाज़ पहन लेगा, और जो चाँदी वह इकट्ठी करे
उसे बेक़ुसूर तक़्सीम करेगा। 18 जो घर बेदीन बना ले
वह घोंसले की मानिन्द है, उस आरिज़ी झोंपड़ी की
मानिन्द जो चौकीदार अपने लिए बना लेता है। 19 वह
अमीर हालत में सो जाता है, लेकिन आख़िरी दफ़ा।
जब अपनी आँखें खोल लेता तो तमाम दौलत जाती
रही है। 20 उस पर हौलनाक वाक़िआत का सैलाब
टूट पड़ता, उसे रात के वक़्त आँधी छीन लेती है।
21 मशरिक़ी लू उसे उड़ा ले जाती, उसे उठा कर उस
के मक़ाम से दूर फैंक देती है। 22 बेरहमी से वह उस
पर यूँ झपट्टा मारती रहती है कि उसे बार बार भागना
पड़ता है। 23 वह तालियाँ बजा कर अपनी हिक़ारत
का इज़हार करती, अपनी जगह से आवाज़े कसती
है।

हिक्मत कहाँ पाई जाती है?

28 1 यक़ीनन चाँदी की कानें होती हैं और ऐसी
जगहें जहाँ सोना ख़ालिस किया जाता है।
2 लोहा ज़मीन से निकाला जाता और लोग पत्थर
पिघला कर ताँबा बना लेते हैं। 3 इन्सान अंधेरे को
ख़त्म करके ज़मीन की गहरी गहरी जगहों तक कच्ची
धात का खोज लगाता है, ख़्वाह वह कितने अंधेरे में
क्यूँ न हो। 4 एक अजनबी क़ौम सुरंग लगाती है। जब
रस्सों से लटके हुए काम करते और इन्सानों से दूर
कान में झूमते हैं तो ज़मीन पर गुज़रने वालों को उन
की याद ही नहीं रहती। 5 ज़मीन की सतह पर ख़ुराक
पैदा होती है जबकि उस की गहराइयाँ यूँ तब्दील हो
जाती हैं जैसे उस में आग लगी हो। 6 पत्थरों से संग-
ए-लाजवर्द निकाला जाता है जिस में सोने के ज़र्रे भी
पाए जाते हैं।

7 यह ऐसे रास्ते हैं जो कोई भी शिकारी परिन्दा नहीं
जानता, जो किसी भी बाज़ ने नहीं देखा। 8 जंगल के

रोबदार जानवरों में से कोई भी इन राहों पर नहीं
चला, किसी भी शेरबबर ने इन पर क़दम नहीं रखा।
9 इन्सान संग-ए-चक़्माक़ पर हाथ लगा कर पहाड़ों
को जड़ से उलटा देता है। 10 वह पत्थर में सुरंग
लगा कर हर क़िस्म की क़ीमती चीज़ देख लेता
11 और ज़मीनदोज़ नदियों को बन्द करके पोशीदा
चीज़ें रौशनी में लाता है।

12 लेकिन हिक्मत कहाँ पाई जाती है, समझ कहाँ
से मिलती है? 13 इन्सान उस तक जाने वाली राह
नहीं जानता, क्यूँकि उसे मुल्क-ए-हयात में पाया नहीं
जाता। 14 समुन्दर कहता है, 'हिक्मत मेरे पास नहीं
है,' और उस की गहराइयाँ बयान करती हैं, 'यहाँ भी
नहीं है।'

15 हिक्मत को न ख़ालिस सोने, न चाँदी से ख़रीदा
जा सकता है। 16 उसे पाने के लिए न ओफ़ीर का
सोना, न बेशक़ीमत अक़ीक़-ए-अह्मर [c]या संग-ए-
लाजवर्द [d]काफ़ी हैं। 17 सोना और शीशा उस का
मुक़ाबला नहीं कर सकते, न वह सोने के ज़ेवरात
के इवज़ मिल सकती है। 18 उस की निस्बत मूँगा
और बिल्लौर की क्या क़दर है? हिक्मत से भरी थैली
मोतियों से कहीं ज़्यादा क़ीमती है। 19 एथोपिया का
ज़बर्जद [e]उस का मुक़ाबला नहीं कर सकता, उसे
ख़ालिस सोने के लिए ख़रीदा नहीं जा सकता।

20 हिक्मत कहाँ से आती, समझ कहाँ से मिल
सकती है? 21 वह तमाम जानदारों से पोशीदा रहती
बल्कि परिन्दों से भी छुपी रहती है। 22 पाताल और
मौत उस के बारे में कहते हैं, 'हम ने उस के बारे में
सिर्फ़ अफ़्वाहें सुनी हैं।'

23 लेकिन अल्लाह उस तक जाने वाली राह को
जानता है, उसे मालूम है कि कहाँ मिल सकती
है। 24 क्यूँकि उसी ने ज़मीन की हुदूद तक देखा,
आसमान तले सब कुछ पर नज़र डाली 25 ताकि हवा
का वज़न मुक़र्रर करे और पानी की पैमाइश करके
उस की हुदूद मुतअय्यिन करे। 26 उसी ने बारिश के
लिए फ़रमान जारी किया और बादल की कड़कती
बिजली के लिए रास्ता तय्यार किया। 27 उसी वक़्त
उस ने हिक्मत को देख कर उस की जाँच-पड़ताल
की। उस ने उसे क़ाइम भी किया और उस की तह
तक तहक़ीक़ भी की। 28 इन्सान से उस ने कहा,
'सुनो, अल्लाह का ख़ौफ़ मानना ही हिक्मत और बुराई
से दूर रहना ही समझ है'।"

काश मेरी ज़िन्दगी पहले की तरह हो

29 1 अय्यूब ने अपनी बात जारी रख कर कहा,
2 "काश मैं दुबारा माज़ी के वह दिन
गुज़ार सकूँ जब अल्लाह मेरी देख-भाल करता था,
3 जब उस की शमा मेरे सर के ऊपर चमकती रही और
मैं उस की रौशनी की मदद से अंधेरे में चलता था।
4 उस वक़्त मेरी जवानी उरूज पर थी और मेरा ख़ैमा
अल्लाह के साय में रहता था। 5 क़ादिर-ए-मुतलक़ मेरे
साथ था, और मैं अपने बेटों से घिरा रहता था।
6 कस्रत के बाइस मेरे क़दम दही से धोए रहते और
चटान से तेल की नदियाँ फूट कर निकलती थीं।

7 जब कभी मैं शहर के दरवाज़े से निकल कर चौक
में अपनी कुर्सी पर बैठ जाता 8 तो जवान आदमी मुझे
देख कर पीछे हट कर छुप जाते, बुज़ुर्ग उठ कर खड़े
रहते, 9 रईस बोलने से बाज़ आ कर मुँह पर हाथ
रखते, 10 शुरफ़ा की आवाज़ दब जाती और उन की
ज़बान तालू से चिपक जाती थी।

11 जिस कान ने मेरी बातें सुनीं उस ने मुझे मुबारक
कहा, जिस आँख ने मुझे देखा उस ने मेरे हक़ में
गवाही दी। 12 क्यूँकि जो मुसीबत में आ कर आवाज़
देता उसे मैं बचाता, बेसहारा यतीम को छुटकारा
देता था। 13 तबाह होने वाले मुझे बरकत देते थे। मेरे
बाइस बेवाओं के दिलों से ख़ुशी के नारे उभर आते
थे। 14 मैं रास्तबाज़ी से मुलब्बस और रास्तबाज़ी मुझ

---

[c]carnelian

[d]lapis lazuli

[e]peridot

से मुलब्बस रहती थी, इन्साफ़ मेरा चोग़ा और पगड़ी
था।
15 अंधों के लिए मैं आँखें, लंगड़ों के लिए पाँओ
बना रहता था। 16 मैं ग़रीबों का बाप था, और जब
कभी अजनबी को मुक़द्दमा लड़ना पड़ा तो मैं ग़ौर से
उस के मुआमले का मुआइना करता था ताकि उस
का हक़ मारा न जाए। 17 मैं ने बेदीन का जबड़ा तोड़
कर उस के दाँतों में से शिकार छुड़ाया।
18 उस वक़्त मेरा ख़याल था, 'मैं अपने ही घर में
वफ़ात पाऊँगा, सीमुर्ग़ की तरह अपनी ज़िन्दगी के
दिनों में इज़ाफ़ा करूँगा। 19 मेरी जड़ें पानी तक फैली
और मेरी शाख़ें ओस से तर रहेंगी। 20 मेरी इज़्ज़त हर
वक़्त ताज़ा रहेगी, और मेरे हाथ की कमान को नई
तक़वियत मिलती रहेगी।'
21 लोग मेरी सुन कर ख़ामोशी से मेरे मश्वरों के
इन्तिज़ार में रहते थे। 22 मेरे बात करने पर वह जवाब
में कुछ न कहते बल्कि मेरे अल्फ़ाज़ हल्की सी बूँदा-
बाँदी की तरह उन पर टपकते रहते। 23 जिस तरह
इन्सान शिद्दत से बारिश के इन्तिज़ार में रहता है उसी
तरह वह मेरे इन्तिज़ार में रहते थे। वह मुँह पसार कर
बहार की बारिश की तरह मेरे अल्फ़ाज़ को जज़्ब कर
लेते थे। 24 जब मैं उन से बात करते वक़्त मुस्कुराता
तो उन्हें यक़ीन नहीं आता था, मेरी उन पर मेहरबानी
उन के नज़्दीक निहायत क़ीमती थी। 25 मैं उन की
राह उन के लिए चुन कर उन की क़ियादत करता,
उन के दरमियान यूँ बसता था जिस तरह बादशाह
अपने दस्तों के दरमियान। मैं उस की मानिन्द था जो
मातम करने वालों को तसल्ली देता है।

मुझे रद्द किया गया है

30 1 लेकिन अब वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं,
हालाँकि उन की उम्र मुझ से कम है और
मैं उन के बापों को अपनी भेड़-बकरियों की देख-
भाल करने वाले कुत्तों के साथ काम पर लगाने के
भी लाइक़ नहीं समझता था। 2 मेरे लिए उन के हाथों
की मदद का क्या फ़ाइदा था? उन की पूरी ताक़त तो
जाती रही थी। 3 ख़ुराक की कमी और शदीद भूक के
मारे वह ख़ुश्क ज़मीन की थोड़ी बहुत पैदावार कतर
कतर कर खाते हैं। हर वक़्त वह तबाही और वीरानी
के दामन में रहते हैं। 4 वह झाड़ियों से ख़त्मी का फल
तोड़ कर खाते, झाड़ियों [f]की जड़ें आग तापने के लिए
इकट्ठी करते हैं। 5 उन्हें आबादियों से ख़ारिज किया
गया है, और लोग 'चोर चोर' चिल्ला कर उन्हें भगा
देते हैं। 6 उन्हें घाटियों की ढलानों पर बसना पड़ता,
वह ज़मीन के ग़ारों में और पत्थरों के दरमियान ही
रहते हैं। 7 झाड़ियों के दरमियान वह आवाज़ें देते और
मिल कर ऊँटकटारों तले दबक जाते हैं। 8 इन कमीने
और बेनाम लोगों को मार मार कर मुल्क से भगा
दिया गया है।
9 और अब मैं इन ही का निशाना बन गया हूँ। अपने
गीतों में वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं, मेरी बुरी हालत
उन के लिए मज़्हकाख़ेज़ मिसाल बन गई है। 10 वह
घिन खा कर मुझ से दूर रहते और मेरे मुँह पर थूकने
से नहीं रुकते। 11 चूँकि अल्लाह ने मेरी कमान की
ताँत खोल कर मेरी रुस्वाई की है, इस लिए वह मेरी
मौजूदगी में बेलगाम हो गए हैं। 12 मेरे दहने हाथ हुजूम
खड़े हो कर मुझे ठोकर खिलाते और मेरी फ़सील
के साथ मिट्टी के ढेर लगाते हैं ताकि उस में रख़्ना
डाल कर मुझे तबाह करें। 13 वह मेरी क़िलाबन्दियाँ
ढा कर मुझे ख़ाक में मिलाने में कामयाब हो जाते हैं।
किसी और की मदद दरकार ही नहीं। 14 वह रख़्ने में
दाख़िल होते और जौक़-दर-जौक़ तबाहशुदा फ़सील
में से गुज़र कर आगे बढ़ते हैं। 15 हौलनाक वाक़िआत
मेरे ख़िलाफ़ खड़े हो गए हैं, और वह तेज़ हवा की
तरह मेरे वक़ार को उड़ा ले जा रहे हैं। मेरी सलामती
बादल की तरह ओझल हो गई है।
16 और अब मेरी जान निकल रही है, मैं मुसीबत के
दिनों के क़ाबू में आ गया हूँ। 17 रात को मेरी हड्डियों

[f]यानी झाड़ी बनाम broom, सींक क़िस्म की झाड़ी जिस के फूल ज़र्द होते हैं।

को छेदा जाता है, कतरने वाला दर्द मुझे कभी नहीं
छोड़ता। 18 अल्लाह बड़े ज़ोर से मेरा कपड़ा पकड़
कर गिरीबान की तरह मुझे अपनी सख़्त गिरिफ़्त में
रखता है। 19 उस ने मुझे कीचड़ में फैंक दिया है, और
देखने में मैं ख़ाक और मिट्टी ही बन गया हूँ। 20 मैं
तुझे पुकारता, लेकिन तू जवाब नहीं देता। मैं खड़ा
हो जाता, लेकिन तू मुझे घूरता ही रहता है। 21 तू मेरे
साथ अपना सुलूक बदल कर मुझ पर ज़ुल्म करने
लगा, अपने हाथ के पूरे ज़ोर से मुझे सताने लगा है।
22 तू मुझे उड़ा कर हवा पर सवार होने देता, गरजते
तूफ़ान में घुलने देता है। 23 हाँ, अब मैं जानता हूँ कि
तू मुझे मौत के हवाले करेगा, उस घर में पहुँचाएगा
जहाँ एक दिन तमाम जानदार जमा हो जाते हैं।

24 यक़ीनन मैं ने कभी भी अपना हाथ किसी
ज़रूरतमन्द के ख़िलाफ़ नहीं उठाया जब उस ने
अपनी मुसीबत में आवाज़ दी। 25 बल्कि जब किसी
का बुरा हाल था तो मैं हमदर्दी से रोने लगा, ग़रीबों
की हालत देख कर मेरा दिल ग़म खाने लगा।
26 ताहम मुझ पर मुसीबत आई, अगरचे मैं भलाई
की उम्मीद रख सकता था। मुझ पर घना अंधेरा छा
गया, हालाँकि मैं रौशनी की तवक़्क़ो कर सकता था।
27 मेरे अन्दर सब कुछ मुज़्तरिब है और कभी आराम
नहीं कर सकता, मेरा वास्ता तक्लीफ़दिह दिनों से
पड़ता है। 28 मैं मातमी लिबास में फिरता हूँ और कोई
मुझे तसल्ली नहीं देता, हालाँकि मैं जमाअत में खड़े
हो कर मदद के लिए आवाज़ देता हूँ। 29 मैं गीदड़ों
का भाई और उक़ाबी उल्लूओं का साथी बन गया हूँ।
30 मेरी जिल्द काली हो गई, मेरी हड्डियाँ तपती गर्मी
के सबब से झुलस गई हैं। 31 अब मेरा सरोद सिर्फ़
मातम करने और मेरी बाँसरी सिर्फ़ रोने वालों के लिए
इस्तेमाल होती है।

मेरी आख़िरी बात : मैं बेगुनाह हूँ

31 1 मैं ने अपनी आँखों से अह्द बांधा है।
तो फिर मैं किस तरह किसी कुंवारी पर
नज़र डाल सकता हूँ? 2 क्यूँकि इन्सान को आसमान
पर रहने वाले ख़ुदा की तरफ़ से क्या नसीब है, उसे
बुलन्दियों पर बसने वाले क़ादिर-ए-मुतलक़ से क्या
विरासत पाना है? 3 क्या ऐसा नहीं है कि नारास्त
शख़्स के लिए आफ़त और बदकार के लिए तबाही
मुक़र्रर है? 4 मेरी राहें तो अल्लाह को नज़र आती हैं,
वह मेरा हर क़दम गिन लेता है।

5 न मैं कभी धोके से चला, न मेरे पाँओ ने कभी
फ़रेब देने के लिए फुरती की। अगर इस में ज़रा भी
शक हो 6 तो अल्लाह मुझे इन्साफ़ के तराज़ू में तोल
ले, अल्लाह मेरी बेइल्ज़ाम हालत मालूम करे। 7 अगर
मेरे क़दम सहीह राह से हट गए, मेरी आँखें मेरे दिल
को ग़लत राह पर ले गईं या मेरे हाथ दाग़दार हुए 8 तो
फिर जो बीज मैं ने बोया उस की पैदावार कोई और
खाए, जो फ़सलें मैं ने लगाईं उन्हें उखाड़ा जाए।

9 अगर मेरा दिल किसी औरत से नाजाइज़
ताल्लुक़ात रखने पर उकसाया गया और मैं इस मक़्सद
से अपने पड़ोसी के दरवाज़े पर ताक लगाए बैठा
10 तो फिर अल्लाह करे कि मेरी बीवी किसी और
आदमी की गन्दुम पीसे, कि कोई और उस पर झुक
जाए। 11 क्यूँकि ऐसी हरकत शर्मनाक होती, ऐसा
जुर्म सज़ा के लाइक़ होता है। 12 ऐसे गुनाह की आग
पाताल तक सब कुछ भस्म कर देती है। अगर वह
मुझ से सरज़द होता तो मेरी तमाम फ़सल जड़ों तक
राख कर देता।

13 अगर मेरा नौकर-नौकरानियों के साथ झगड़ा
था और मैं ने उन का हक़ मारा 14 तो मैं क्या करूँ
जब अल्लाह अदालत में खड़ा हो जाए? जब वह मेरी
पूछगछ करे तो मैं उसे क्या जवाब दूँ? 15 क्यूँकि
जिस ने मुझे मेरी माँ के पेट में बनाया उस ने उन्हें
भी बनाया। एक ही ने उन्हें भी और मुझे भी रहम में
तश्कील दिया।

16 क्या मैं ने पस्तहालों की ज़रूरियात पूरी करने से
इन्कार किया या बेवा की आँखों को बुझने दिया?
हरगिज़ नहीं! 17 क्या मैं ने अपनी रोटी अकेले ही खाई
और यतीम को उस में शरीक न किया? 18 हरगिज़
नहीं, बल्कि अपनी जवानी से ले कर मैं ने उस का

बाप बन कर उस की परवरिश की, अपनी पैदाइश
से ही बेवा की राहनुमाई की। 19 जब कभी मैं ने देखा
कि कोई कपड़ों की कमी के बाइस हलाक हो रहा
है, कि किसी ग़रीब के पास कम्बल तक नहीं 20 तो
मैं ने उसे अपनी भेड़ों की कुछ ऊन दी ताकि वह गर्म
हो सके। ऐसे लोग मुझे दुआ देते थे। 21 मैं ने कभी भी
यतीमों के ख़िलाफ़ हाथ नहीं उठाया, उस वक़्त भी
नहीं जब शहर के दरवाज़े में बैठे बुज़ुर्ग मेरे हक़ में थे।
22 अगर ऐसा न था तो अल्लाह करे कि मेरा शाना कंधे
से निकल कर गिर जाए, कि मेरा बाज़ू जोड़ से फाड़ा
जाए! 23 ऐसी हरकतें मेरे लिए नामुमकिन थीं, क्यूँकि
अगर मैं ऐसा करता तो मैं अल्लाह से दहशत खाता
रहता, मैं उस से डर के मारे क़ाइम न रह सकता।

24 क्या मैं ने सोने पर अपना पूरा भरोसा रखा या
ख़ालिस सोने से कहा, 'तुझ पर ही मेरा एतिमाद है'?
हरगिज़ नहीं! 25 क्या मैं इस लिए ख़ुश था कि मेरी
दौलत ज़्यादा है और मेरे हाथ ने बहुत कुछ हासिल
किया है? हरगिज़ नहीं! 26 क्या सूरज की चमक-
दमक और चाँद की पुरवक़ार रविश देख कर 27 मेरे
दिल को कभी चुपके से ग़लत राह पर लाया गया?
क्या मैं ने कभी उन का एहतिराम किया? [g]28 हरगिज़
नहीं, क्यूँकि यह भी सज़ा के लाइक़ जुर्म है। अगर
मैं ऐसा करता तो बुलन्दियों पर रहने वाले ख़ुदा का
इन्कार करता।

29 क्या मैं कभी ख़ुश हुआ जब मुझ से नफ़रत करने
वाला तबाह हुआ? क्या मैं बाग़ बाग़ हुआ जब उस
पर मुसीबत आई? हरगिज़ नहीं! 30 मैं ने अपने मुँह
को इजाज़त न दी कि गुनाह करके उस की जान
पर लानत भेजे। 31 बल्कि मेरे ख़ैमे के आदमियों को
तस्लीम करना पड़ा, 'कोई नहीं है जो अय्यूब के
गोश्त से सेर न हुआ।' 32 अजनबी को बाहर गली
में रात गुज़ारनी नहीं पड़ती थी बल्कि मेरा दरवाज़ा
मुसाफ़िरों के लिए खुला रहता था। 33 क्या मैं ने कभी
आदम की तरह अपना गुनाह छुपा कर अपना क़ुसूर
दिल में पोशीदा रखा, 34 इस लिए कि हुजूम से डरता
और अपने रिश्तेदारों से दहशत खाता था? हरगिज़
नहीं! मैं ने कभी भी ऐसा काम न किया जिस के बाइस
मुझे डर के मारे चुप रहना पड़ता और घर से निकल
नहीं सकता था।

35 काश कोई मेरी सुने! देखो, यहाँ मेरी बात पर मेरे
दस्तख़त हैं, अब क़ादिर-ए-मुतलक़ मुझे जवाब दे।
काश मेरे मुख़ालिफ़ लिख कर मुझे वह इल्ज़ामात
बताएँ जो उन्हों ने मुझ पर लगाए हैं! 36 अगर
इल्ज़ामात का काग़ज़ मिलता तो मैं उसे उठा कर
अपने कंधे पर रखता, उसे पगड़ी की तरह अपने सर
पर बांध लेता। 37 मैं अल्लाह को अपने क़दमों का पूरा
हिसाब-किताब दे कर रईस की तरह उस के क़रीब
पहुँचता।

38 क्या मेरी ज़मीन ने मदद के लिए पुकार कर मुझ
पर इल्ज़ाम लगाया है? क्या उस की रेघारयाँ मेरे
सबब से मिल कर रो पड़ी हैं? 39 क्या मैं ने उस
की पैदावार अज्र दिए बग़ैर खाई, उस पर मेहनत-
मशक़्क़त करने वालों के लिए आहें भरने का बाइस
बन गया? हरगिज़ नहीं! 40 अगर मैं इस में क़ुसूरवार
ठहरूँ तो गन्दुम के बजाय ख़ारदार झाड़ियाँ और
जौ के बजाय धतूरा [h]उगे।" यूँ अय्यूब की बातें
इख़तिताम को पहुँच गईं।

चौथे साथी इलीहू की तक़रीर

32 1 तब मज़कूरा तीनों आदमी अय्यूब को
जवाब देने से बाज़ आए, क्यूँकि वह अब
तक समझता था कि मैं रास्तबाज़ हूँ। 2 यह देख कर
इलीहू बिन बरकेल ग़ुस्से हो गया। बूज़ शहर के रहने
वाले इस आदमी का ख़ानदान राम था। एक तरफ़
तो वह अय्यूब से ख़फ़ा था, क्यूँकि यह अपने आप
को अल्लाह के सामने रास्तबाज़ ठहराता था। 3 दूसरी
तरफ़ वह तीनों दोस्तों से भी नाराज़ था, क्यूँकि न वह
अय्यूब को सहीह जवाब दे सके, न साबित कर सके

[g]लफ़्ज़ी तर्जुमा : हाथ से उन्हें बोसा दिया।

[h]एक बदबूदार पौदा।

कि मुजरिम है। 4 इलीहू ने अब तक अय्यूब से बात
नहीं की थी। जब तक दूसरों ने बात पूरी नहीं की
थी वह ख़ामोश रहा, क्यूँकि वह बुज़ुर्ग थे। 5 लेकिन
अब जब उस ने देखा कि तीनों आदमी मज़ीद कोई
जवाब नहीं दे सकते तो वह भड़क उठा 6 और जवाब
में कहा,

"मैं कमउम्र हूँ जबकि आप सब उम्ररसीदा हैं, इस
लिए मैं कुछ शर्मीला था, मैं आप को अपनी राय
बताने से डरता था। 7 मैं ने सोचा, चलो वह बोलें
जिन के ज़्यादा दिन गुज़रे हैं, वह तालीम दें जिन्हें
मुतअद्दिद सालों का तजरिबा हासिल है।

8 लेकिन जो रूह इन्सान में है यानी जो दम क़ादिर-
ए-मुतलक़ ने उस में फूँक दिया वही इन्सान को समझ
अता करता है। 9 न सिर्फ़ बूढ़े लोग दानिशमन्द हैं, न
सिर्फ़ वह इन्साफ़ समझते हैं जिन के बाल सफ़ेद हैं।
10 चुनाँचे मैं गुज़ारिश करता हूँ कि ज़रा मेरी बात सुनें,
मुझे भी अपनी राय पेश करने दीजिए।

11 मैं आप के अल्फ़ाज़ के इन्तिज़ार में रहा। जब
आप मौज़ूँ जवाब तलाश कर रहे थे तो मैं आप की
दानिशमन्द बातों पर ग़ौर करता रहा। 12 मैं ने आप
पर पूरी तवज्जुह दी, लेकिन आप में से कोई अय्यूब
को ग़लत साबित न कर सका, कोई उस के दलाइल
का मुनासिब जवाब न दे पाया। 13 अब ऐसा न हो
कि आप कहें, 'हम ने अय्यूब में हिक्मत पाई है,
इन्सान उसे शिकस्त दे कर भगा नहीं सकता बल्कि
सिर्फ़ अल्लाह ही।' 14 क्यूँकि अय्यूब ने अपने दलाइल
की तर्तीब से मेरा मुक़ाबला नहीं किया, और जब मैं
जवाब दूँगा तो आप की बातें नहीं दुहराऊँगा।

15 आप घबरा कर जवाब देने से बाज़ आए हैं,
अब आप कुछ नहीं कह सकते। 16 क्या मैं मज़ीद
इन्तिज़ार करूँ, गो आप ख़ामोश हो गए हैं, आप रुक
कर मज़ीद जवाब नहीं दे सकते? 17 मैं भी जवाब
देने में हिस्सा लेना चाहता हूँ, मैं भी अपनी राय पेश
करूँगा। 18 क्यूँकि मेरे अन्दर से अल्फ़ाज़ छलक रहे
हैं, मेरी रूह मेरे अन्दर मुझे मज्बूर कर रही है।

19 हक़ीक़त में मैं अन्दर से उस नई मै की मानिन्द हूँ
जो बन्द रखी गई हो, मैं नई मै से भरी हुई नई मश्कों
की तरह फटने को हूँ। 20 मुझे बोलना है ताकि आराम
पाऊँ, लाज़िम ही है कि मैं अपने होंटों को खोल कर
जवाब दूँ। 21 यक़ीनन न मैं किसी की जानिबदारी, न
किसी की चापलूसी करूँगा। 22 क्यूँकि मैं ख़ुशामद
कर ही नहीं सकता, वर्ना मेरा ख़ालिक़ मुझे जल्द ही
उड़ा ले जाएगा।

अल्लाह कई तरीक़ों से इन्सान से हमकलाम होता है

33 1 ऐ अय्यूब, मेरी तक़रीर सुनें, मेरी तमाम
बातों पर कान धरें! 2 अब मैं अपना मुँह
खोल देता हूँ, मेरी ज़बान बोलती है। 3 मेरे अल्फ़ाज़
सीधी राह पर चलने वाले दिल से उभर आते हैं, मेरे
होंट दयानतदारी से वह कुछ बयान करते हैं जो मैं
जानता हूँ। 4 अल्लाह के रूह ने मुझे बनाया, क़ादिर-
ए-मुतलक़ के दम ने मुझे ज़िन्दगी बख़्शी।

5 अगर आप इस क़ाबिल हों तो मुझे जवाब दें और
अपनी बातें तर्तीत से पेश करके मेरा मुक़ाबला करें।
6 अल्लाह की नज़र में मैं तो आप के बराबर हूँ, मुझे भी
मिट्टी से ले कर तश्कील दिया गया है। 7 चुनाँचे मुझे
आप के लिए दहशत का बाइस नहीं होना चाहिए,
मेरी तरफ़ से आप पर भारी बोझ नहीं आएगा।

8 आप ने मेरे सुनते ही कहा बल्कि आप के
अल्फ़ाज़ अभी तक मेरे कानों में गूँज रहे हैं, 9 'मैं पाक
हूँ, मुझ से जुर्म सरज़द नहीं हुआ, मैं बेगुनाह हूँ, मेरा
कोई क़ुसूर नहीं। 10 तो भी अल्लाह मुझ से झगड़ने के
मवाक़े ढूँडता और मुझे अपना दुश्मन समझता है।
11 वह मेरे पाँओ को काठ में डाल कर मेरी तमाम
राहों की पहरादारी करता है।'

12 लेकिन आप की यह बात दुरुस्त नहीं, क्यूँकि
अल्लाह इन्सान से आला है। 13 आप उस से झगड़
कर क्यूँ कहते हैं, 'वह मेरी किसी भी बात का जवाब
नहीं देता'? 14 शायद इन्सान को अल्लाह नज़र न आए,
लेकिन वह ज़रूर कभी इस तरीक़े, कभी उस तरीक़े
से उस से हमकलाम होता है।

15 कभी वह ख़्वाब या रात की रोया में उस से बात
करता है। जब लोग बिस्तर पर लेट कर गहरी नींद
सो जाते हैं 16 तो अल्लाह उन के कान खोल कर अपनी
नसीहतों से उन्हें दहशतज़दा कर देता है। 17 यूँ वह
इन्सान को ग़लत काम करने और मग़रूर होने से
बाज़ रख कर 18 उस की जान गढ़े में उतरने और
दरया-ए-मौत को उबूर करने से रोक देता है।

19 कभी अल्लाह इन्सान की बिस्तर पर दर्द के ज़रीए
तर्बियत करता है। तब उस की हड्डियों में लगातार जंग
होती है। 20 उस की जान को ख़ुराक से घिन आती
बल्कि उसे लज़ीज़तरीन खाने से भी नफ़रत होती है।
21 उस का गोश्त-पोस्त सुकड़ कर ग़ाइब हो जाता है
जबकि जो हड्डियाँ पहले छुपी हुई थीं वह नुमायाँ तौर
पर नज़र आती हैं। 22 उस की जान गढ़े के क़रीब, उस
की ज़िन्दगी हलाक करने वालों के नज़्दीक पहुँचती
है।

23 लेकिन अगर कोई फ़रिश्ता, हज़ारों में से कोई
सालिस उस के पास हो जो इन्सान को सीधी राह
दिखाए 24 और उस पर तरस खा कर कहे, 'उसे गढ़े
में उतरने से छुड़ा, मुझे फ़िद्या मिल गया है, 25 अब
उस का जिस्म जवानी की निस्बत ज़्यादा तर-ओ-
ताज़ा हो जाए और वह दुबारा जवानी की सी ताक़त
पाए' 26 तो फिर वह शख़्स अल्लाह से इल्तिजा करेगा,
और अल्लाह उस पर मेहरबान होगा। तब वह बड़ी
ख़ुशी से अल्लाह का चिहरा तकता रहेगा। इसी तरह
अल्लाह इन्सान की रास्तबाज़ी बहाल करता है।

27 ऐसा शख़्स लोगों के सामने गाएगा और कहेगा,
'मैं ने गुनाह करके सीधी राह टेढ़ी-मेढ़ी कर दी, और
मुझे कोई फ़ाइदा न हुआ। 28 लेकिन उस ने फ़िद्या दे
कर मेरी जान को मौत के गढ़े में उतरने से छुड़ाया।
अब मेरी ज़िन्दगी नूर से लुत्फ़अन्दोज़ होगी।'

29 अल्लाह इन्सान के साथ यह सब कुछ दो चार
मर्तबा करता है 30 ताकि उस की जान गढ़े से वापस
आए और वह ज़िन्दगी के नूर से रौशन हो जाए।

31 ऐ अय्यूब, ध्यान से मेरी बात सुनें, ख़ामोश हो
जाएँ ताकि मैं बात करूँ। 32 अगर आप जवाब में
कुछ बताना चाहें तो बताएँ। बोलें, क्यूँकि मैं आप
को रास्तबाज़ ठहराने की आर्ज़ू रखता हूँ। 33 लेकिन
अगर आप कुछ बयान नहीं कर सकते तो मेरी सुनें,
चुप रहें ताकि मैं आप को हिक्मत की तालीम दूँ।"

अल्लाह हर एक को मुनासिब अज्र देता है

34 1 फिर इलीहू ने बात जारी रख कर कहा,
2 "ऐ दानिशमन्दो, मेरे अल्फ़ाज़ सुनें!
ऐ आलिमो, मुझ पर कान धरें! 3 क्यूँकि कान यूँ
अल्फ़ाज़ की जाँच-पड़ताल करता है जिस तरह
ज़बान ख़ुराक को चख लेती है। 4 आएँ, हम अपने
लिए वह कुछ चुन लें जो दुरुस्त है, आपस में जान लें
कि क्या कुछ अच्छा है। 5 अय्यूब ने कहा है, 'गो मैं
बेगुनाह हूँ तो भी अल्लाह ने मुझे मेरे हुक़ूक़ से महरूम
कर रखा है। 6 जो फ़ैसला मेरे बारे में किया गया है उसे
मैं झूट क़रार देता हूँ। गो मैं बेक़ुसूर हूँ तो भी तीर ने
मुझे यूँ ज़ख़्मी कर दिया कि उस का इलाज मुमकिन
ही नहीं।' 7 अब मुझे बताएँ, क्या कोई अय्यूब जैसा
बुरा है? वह तो कुफ़्र की बातें पानी की तरह पीते,
8 बदकारों की सोहबत में चलते और बेदीनों के साथ
अपना वक़्त गुज़ारते हैं। 9 क्यूँकि वह दावा करते
हैं कि अल्लाह से लुत्फ़अन्दोज़ होना इन्सान के लिए
बेफ़ाइदा है।

10 चुनाँचे ऐ समझदार मर्दो, मेरी बात सुनें! यह कैसे
हो सकता है कि अल्लाह शरीर काम करे? यह तो
मुमकिन ही नहीं कि क़ादिर-ए-मुतलक़ नाइन्साफ़ी
करे। 11 यक़ीनन वह इन्सान को उस के आमाल का
मुनासिब अज्र दे कर उस पर वह कुछ लाता है जिस
का तक़ाज़ा उस का चाल-चलन करता है। 12 यक़ीनन
अल्लाह बेदीन हरकतें नहीं करता, क़ादिर-ए-मुतलक़
इन्साफ़ का ख़ून नहीं करता। 13 किस ने ज़मीन को
अल्लाह के हवाले किया? किस ने उसे पूरी दुनिया
पर इख़तियार दिया? कोई नहीं! 14 अगर वह कभी
इरादा करे कि अपनी रूह और अपना दम इन्सान
से वापस ले 15 तो तमाम लोग दम छोड़ कर दुबारा
ख़ाक हो जाएंगे।

16 ऐ अय्यूब, अगर आप को समझ है तो सुनें,
मेरी बातों पर ध्यान दें। 17 जो इन्साफ़ से नफ़रत
करे क्या वह हुकूमत कर सकता है? क्या आप उसे
मुजरिम ठहराना चाहते हैं जो रास्तबाज़ और क़ादिर-
ए-मुतलक़ है, 18 जो बादशाह से कह सकता है, 'ऐ
बदमआश!' और शुरफ़ा से, 'ऐ बेदीनो!'? 19 वह
तो न रईसों की जानिबदारी करता, न उह्देदारों को
पस्तहालों पर तर्जीह देता है, क्यूँकि सब ही को उस
के हाथों ने बनाया है। 20 वह पल भर में, आधी रात
ही मर जाते हैं। शुरफ़ा को हिलाया जाता है तो वह
कूच कर जाते हैं, ताक़तवरों को बग़ैर किसी तग-
ओ-दौ के हटाया जाता है।

21 क्यूँकि अल्लाह की आँखें इन्सान की राहों पर
लगी रहती हैं, आदमज़ाद का हर क़दम उसे नज़र
आता है। 22 कहीं इतनी तारीकी या घना अंधेरा नहीं
होता कि बदकार उस में छुप सके। 23 और अल्लाह
किसी भी इन्सान को उस वक़्त से आगाह नहीं करता
जब उसे इलाही तख़्त-ए-अदालत के सामने आना
है। 24 उसे तहक़ीक़ात की ज़रूरत ही नहीं बल्कि
वह ज़ोरावरों को पाश पाश करके दूसरों को उन की
जगह खड़ा कर देता है। 25 वह तो उन की हरकतों से
वाक़िफ़ है और उन्हें रात के वक़्त यूँ तह-ओ-बाला
कर सकता है कि चूर चूर हो जाएँ। 26 उन की बेदीनी
के जवाब में वह उन्हें सब की नज़रों के सामने पटख़
देता है। 27 उस की पैरवी से हटने और उस की राहों
का लिहाज़ न करने का यही नतीजा है। 28 क्यूँकि उन
की हरकतों के बाइस पस्तहालों की चीख़ें अल्लाह के
सामने और मुसीबतज़दों की इल्तिजाएँ उस के कान
तक पहुँचीं। 29 लेकिन अगर वह ख़ामोश भी रहे तो
कौन उसे मुजरिम क़रार दे सकता है? अगर वह अपने
चिहरे को छुपाए रखे तो कौन उसे देख सकता है?
वह तो क़ौम पर बल्कि हर फ़र्द पर हुकूमत करता है
30 ताकि शरीर हुकूमत न करें और क़ौम फंस न जाए।

31 बेहतर है कि आप अल्लाह से कहें, 'मुझे ग़लत
राह पर लाया गया है, आइन्दा मैं दुबारा बुरा काम
नहीं करूँगा। 32 जो कुछ मुझे नज़र नहीं आता वह
मुझे सिखा, अगर मुझ से नाइन्साफ़ी हुई है तो
आइन्दा ऐसा नहीं करूँगा।' 33 क्या अल्लाह को आप
को वह अज्र देना चाहिए जो आप की नज़र में
मुनासिब है, गो आप ने उसे रद्द कर दिया है? लाज़िम
है कि आप ख़ुद ही फ़ैसला करें, न कि मैं। लेकिन ज़रा
वह कुछ पेश करें जो कुछ आप सहीह समझते हैं।
34 समझदार लोग बल्कि हर दानिशमन्द जो मेरी बात
सुने फ़रमाएगा, 35 'अय्यूब इल्म के साथ बात नहीं
कर रहा, उस के अल्फ़ाज़ फ़हम से ख़ाली हैं। 36 काश
अय्यूब की पूरी जाँच-पड़ताल की जाए, क्यूँकि वह
शरीरों के से जवाब पेश करता, 37 वह अपने गुनाह
में इज़ाफ़ा करके हमारे रू-ब-रू अपने जुर्म पर शक
डालता और अल्लाह पर मुतअद्दिद इल्ज़ामात लगाता
है'।"

अपने आप को रास्तबाज़ मत ठहराना

35 1 फिर इलीहू ने अपनी बात जारी रखी,
2 "आप कहते हैं, 'मैं अल्लाह से ज़्यादा
रास्तबाज़ हूँ।' क्या आप यह बात दुरुस्त समझते हैं
3 या यह कि 'मुझे क्या फ़ाइदा है, गुनाह न करने से
मुझे क्या नफ़ा होता है?' 4 मैं आप को और साथी
दोस्तों को इस का जवाब बताता हूँ।

5 अपनी निगाह आसमान की तरफ़ उठाएँ,
बुलन्दियों के बादलों पर ग़ौर करें। 6 अगर आप
ने गुनाह किया तो अल्लाह को क्या नुक़्सान पहुँचा
है? गो आप से मुतअद्दिद जराइम भी सरज़द हुए
हों ताहम वह मुतअस्सिर नहीं होगा। 7 रास्तबाज़
ज़िन्दगी गुज़ारने से आप उसे क्या दे सकते हैं? आप
के हाथों से अल्लाह को क्या हासिल हो सकता है?
कुछ भी नहीं! 8 आप के हमजिन्स इन्सान ही आप
की बेदीनी से मुतअस्सिर होते हैं, और आदमज़ाद ही
आप की रास्तबाज़ी से फ़ाइदा उठाते हैं।

9 जब लोगों पर सख़्त ज़ुल्म होता है तो वह चीख़ते
चिल्लाते और बड़ों की ज़ियादती के बाइस मदद के
लिए आवाज़ देते हैं। 10 लेकिन कोई नहीं कहता,
'अल्लाह, मेरा ख़ालिक़ कहाँ है? वह कहाँ है जो

रात के दौरान नग़मे अता करता, 11 जो हमें ज़मीन
पर चलने वाले जानवरों की निस्बत ज़्यादा तालीम
देता, हमें परिन्दों से ज़्यादा दानिशमन्द बनाता है?'
12 उन की चीख़ों के बावुजूद अल्लाह जवाब नहीं देता,
क्यूँकि वह घमंडी और बुरे हैं।

13 यक़ीनन अल्लाह ऐसी बातिल फ़र्याद नहीं सुनता,
क़ादिर-ए-मुतलक़ उस पर ध्यान ही नहीं देता। 14 तो
फिर वह आप पर क्यूँ तवज्जुह दे जब आप दावा
करते हैं, 'मैं उसे नहीं देख सकता,' और 'मेरा
मुआमला उस के सामने ही है, मैं अब तक उस का
इन्तिज़ार कर रहा हूँ'? 15 वह आप की क्यूँ सुने जब
आप कहते हैं, 'अल्लाह का ग़ज़ब कभी सज़ा नहीं
देता, उसे बुराई की पर्वा ही नहीं'? 16 जब अय्यूब मुँह
खोलता है तो बेमानी बातें निकलती हैं। जो मुतअद्दिद
अल्फ़ाज़ वह पेश करता है वह इल्म से ख़ाली हैं।"

अल्लाह कितना अज़ीम है

36 1 इलीहू ने अपनी बात जारी रखी,
2 "थोड़ी देर के लिए सब्र करके मुझे इस
की तश्रीह करने दें, क्यूँकि मज़ीद बहुत कुछ है जो
अल्लाह के हक़ में कहना है। 3 मैं दूर दूर तक फिरूँगा
ताकि वह इल्म हासिल करूँ जिस से मेरे ख़ालिक़ की
रास्ती साबित हो जाए। 4 यक़ीनन जो कुछ मैं कहूँगा
वह फ़रेबदिह नहीं होगा। एक ऐसा आदमी आप के
सामने खड़ा है जिस ने ख़ुलूसदिली से अपना इल्म
हासिल किया है।

5 गो अल्लाह अज़ीम क़ुदरत का मालिक है ताहम
वह ख़ुलूसदिलों को रद्द नहीं करता। 6 वह बेदीन को
ज़्यादा देर तक जीने नहीं देता, लेकिन मुसीबतज़दों
का इन्साफ़ करता है। 7 वह अपनी आँखों को
रास्तबाज़ों से नहीं फेरता बल्कि उन्हें बादशाहों
के साथ तख़्तनशीन करके बुलन्दियों पर सरफ़राज़
करता है।

8 फिर अगर उन्हें ज़न्जीरों में जकड़ा जाए, उन्हें
मुसीबत के रस्सों में गिरिफ़्तार किया जाए 9 तो वह
उन पर ज़ाहिर करता है कि उन से क्या कुछ सरज़द
हुआ है, वह उन्हें उन के जराइम पेश करके उन्हें
दिखाता है कि उन का तकब्बुर का रवय्या है। 10 वह
उन के कानों को तर्बियत के लिए खोल कर उन्हें
हुक्म देता है कि अपनी नाइन्साफ़ी से बाज़ आ कर
वापस आओ। 11 अगर वह मान कर उस की ख़िदमत
करने लगें तो फिर वह जीते जी अपने दिन ख़ुशहाली
में और अपने साल सुकून से गुज़ारेंगे। 12 लेकिन अगर
न मानें तो उन्हें दरया-ए-मौत को उबूर करना पड़ेगा,
वह इल्म से महरूम रह कर मर जाएंगे।

13 बेदीन अपनी हरकतों से अपने आप पर इलाही
ग़ज़ब लाते हैं। अल्लाह उन्हें बांध भी ले, लेकिन
वह मदद के लिए नहीं पुकारते। 14 जवानी में ही
उन की जान निकल जाती, उन की ज़िन्दगी मुक़द्दस
फ़रिश्तों के हाथों ख़त्म हो जाती है। 15 लेकिन अल्लाह
मुसीबतज़दा को उस की मुसीबत के ज़रीए नजात
देता, उस पर होने वाले ज़ुल्म की मारिफ़त उस का
कान खोल देता है।

16 वह आप को भी मुसीबत के मुँह से निकलने की
तरग़ीब दिला कर एक ऐसी खुली जगह पर लाना
चाहता है जहाँ रुकावट नहीं है, जहाँ आप की मेज़
उम्दा खानों से भरी रहेगी। 17 लेकिन इस वक़्त आप
अदालत का वह प्याला पी कर सेर हो गए हैं जो
बेदीनों के नसीब में है, इस वक़्त अदालत और
इन्साफ़ ने आप को अपनी सख़्त गिरिफ़्त में ले लिया
है। 18 ख़बरदार कि यह बात आप को कुफ़्र बकने पर
न उकसाए, ऐसा न हो कि तावान की बड़ी रक़म आप
को ग़लत राह पर ले जाए। 19 क्या आप की दौलत
आप का दिफ़ा करके आप को मुसीबत से बचाएगी?
या क्या आप की सिरतोड़ कोशिशें यह सरअन्जाम
दे सकती हैं? हरगिज़ नहीं! 20 रात की आर्ज़ू न करें,
उस वक़्त की जब क़ौमें जहाँ भी हों नेस्त-ओ-नाबूद
हो जाती हैं। 21 ख़बरदार रहें कि नाइन्साफ़ी की तरफ़
रुजू न करें, क्यूँकि आप को इसी लिए मुसीबत से
आज़माया जा रहा है।

22 अल्लाह अपनी क़ुदरत में सरफ़राज़ है। कौन उस
जैसा उस्ताद है? 23 किस ने मुक़र्रर किया कि उसे

किस राह पर चलना है? कौन कह सकता है, 'तू ने
ग़लत काम किया'? कोई नहीं! 24 उस के काम की
तम्जीद करना न भूलें, उस सारे काम की जिस की
लोगों ने अपने गीतों में हम्द-ओ-सना की है। 25 हर
शख़्स ने यह काम देख लिया, इन्सान ने दूर दूर से
उस का मुलाहज़ा किया है।

26 अल्लाह अज़ीम है और हम उसे नहीं जानते,
उस के सालों की तादाद मालूम नहीं कर सकते।
27 क्यूँकि वह पानी के क़तरे ऊपर खैंच कर धुन्द
से बारिश निकाल लेता है, 28 वह बारिश जो बादल
ज़मीन पर बरसा देते और जिस की बौछाड़ें इन्सान
पर पड़ती हैं। 29 कौन समझ सकता है कि बादल
किस तरह छा जाते, कि अल्लाह के मस्कन से
बिजलियाँ किस तरह कड़कती हैं? 30 वह अपने
इर्दगिर्द रौशनी फैला कर समुन्दर की जड़ों तक
सब कुछ रौशन करता है। 31 यूँ वह बादलों से
क़ौमों की परवरिश करता, उन्हें कस्रत की ख़ुराक
मुहय्या करता है। 32 वह अपनी मुट्ठियों को बादल
की बिजलियों से भर कर हुक्म देता है कि क्या चीज़
अपना निशाना बनाएँ। 33 उस के बादलों की गरजती
आवाज़ उस के ग़ज़ब का एलान करती, नाइन्साफ़ी
पर उस के शदीद क़हर को ज़ाहिर करती है।

37 1 यह सोच कर मेरा दिल लरज़ कर अपनी
जगह से उछल पड़ता है। 2 सुनें और उस
की ग़ज़बनाक आवाज़ पर ग़ौर करें, उस ग़ुर्राती
आवाज़ पर जो उस के मुँह से निकलती है।
3 आसमान तले हर मक़ाम पर बल्कि ज़मीन की
इन्तिहा तक वह अपनी बिजली चमकने देता है।
4 इस के बाद कड़कती आवाज़ सुनाई देती, अल्लाह
की रोबदार आवाज़ गरज उठती है। और जब उस
की आवाज़ सुनाई देती है तो वह बिजलियों को नहीं
रोकता।

5 अल्लाह अनोखे तरीक़े से अपनी आवाज़ गरजने
देता है। साथ साथ वह ऐसे अज़ीम काम करता है
जो हमारी समझ से बाहर हैं। 6 क्यूँकि वह बर्फ़ को
फ़रमाता है, 'ज़मीन पर पड़ जा' और मूसलाधार
बारिश को, 'अपना पूरा ज़ोर दिखा।' 7 यूँ वह हर
इन्सान को उस के घर में रहने पर मज्बूर करता है
ताकि सब जान लें कि अल्लाह काम में मसरूफ़ है।
8 तब जंगली जानवर भी अपने भटों में छुप जाते,
अपने घरों में पनाह लेते हैं।

9 तूफ़ान अपने कमरे से निकल आता, शिमाली हवा
मुल्क में ठंड फैला देती है। 10 अल्लाह फूँक मारता तो
पानी जम जाता, उस की सतह दूर दूर तक मुन्जमिद
हो जाती है। 11 अल्लाह बादलों को नमी से बोझल
करके उन के ज़रीए दूर तक अपनी बिजली चमकाता
है। 12 उस की हिदायत पर वह मंडलाते हुए उस का
हर हुक्म तक्मील तक पहुँचाते हैं। 13 यूँ वह उन्हें
लोगों की तर्बियत करने, अपनी ज़मीन को बरकत
देने या अपनी शफ़क़त दिखाने के लिए भेज देता है।

14 ऐ अय्यूब, मेरी इस बात पर ध्यान दें, रुक कर
अल्लाह के अज़ीम कामों पर ग़ौर करें। 15 क्या आप
को मालूम है कि अल्लाह अपने कामों को कैसे तर्तीब
देता है, कि वह अपने बादलों से बिजली किस तरह
चमकने देता है? 16 क्या आप बादलों की नक़ल-
ओ-हरकत जानते हैं? क्या आप को उस के अनोखे
कामों की समझ आती है जो कामिल इल्म रखता है?
17 जब ज़मीन जुनूबी लू की ज़द में आ कर चुप हो
जाती और आप के कपड़े तपने लगते हैं 18 तो क्या
आप अल्लाह के साथ मिल कर आसमान को ठोंक
ठोंक कर पीतल के आईने की मानिन्द सख़्त बना
सकते हैं? हरगिज़ नहीं!

19 हमें बताएँ कि अल्लाह से क्या कहें! अफ़सोस,
अंधेरे के बाइस हम अपने ख़यालात को तर्तीब नहीं
दे सकते। 20 अगर मैं अपनी बात पेश करूँ तो क्या
उसे कुछ मालूम हो जाएगा जिस का पहले इल्म न
था? क्या कोई भी कुछ बयान कर सकता है जो
उसे पहले मालूम न हो? कभी नहीं! 21 एक वक़्त
धूप नज़र नहीं आती और बादल ज़मीन पर साया
डालते हैं, फिर हवा चलने लगती और मौसम साफ़
हो जाता है। 22 शिमाल से सुनहरी चमक क़रीब आती
और अल्लाह रोबदार शान-ओ-शौकत से घिरा हुआ

आ पहुँचता है। 23 हम तो क़ादिर-ए-मुतलक़ तक
नहीं पहुँच सकते। उस की क़ुदरत आला और रास्ती
ज़ोरावर है, वह कभी इन्साफ़ का ख़ून नहीं करता।
24 इस लिए आदमज़ाद उस से डरते और दिल के
दानिशमन्द उस का ख़ौफ़ मानते हैं।”

अल्लाह का जवाब

38 1 फिर अल्लाह ख़ुद अय्यूब से हमकलाम
हुआ। तूफ़ान में से उस ने उसे जवाब दिया,
2 “यह कौन है जो समझ से ख़ाली बातें करने से मेरे
मन्सूबे के सहीह मतलब पर पर्दा डालता है? 3 मर्द
की तरह कमरबस्ता हो जा! मैं तुझ से सवाल करता
हूँ, और तू मुझे तालीम दे।
4 तू कहाँ था जब मैं ने ज़मीन की बुन्याद रखी?
अगर तुझे इस का इल्म हो तो मुझे बता! 5 किस ने
उस की लम्बाई और चौड़ाई मुक़र्रर की? क्या तुझे
मालूम है? किस ने नाप कर उस की पैमाइश की?
6 उस के सतून किस चीज़ पर लगाए गए? किस ने
उस के कोने का बुन्यादी पत्थर रखा, 7 उस वक़्त
जब सुब्ह के सितारे मिल कर शादियाना बजा रहे,
तमाम फ़रिश्ते ख़ुशी के नारे लगा रहे थे?
8 जब समुन्दर रहम से फूट निकला तो किस ने
दरवाज़े बन्द करके उस पर क़ाबू पाया? 9 उस वक़्त
मैं ने बादलों को उस का लिबास बनाया और उसे घने
अंधेरे में यूँ लपेटा जिस तरह नौज़ाद को पोतड़ों में
लपेटा जाता है। 10 उस की हुदूद मुक़र्रर करके मैं ने
उसे रोकने के दरवाज़े और कुंडे लगाए। 11 मैं बोला,
‘तुझे यहाँ तक आना है, इस से आगे न बढ़ना, तेरी
रोबदार लहरों को यहीं रुकना है।’
12 क्या तू ने कभी सुब्ह को हुक्म दिया या उसे तुलू
होने की जगह दिखाई 13 ताकि वह ज़मीन के किनारों
को पकड़ कर बेदीनों को उस से झाड़ दे? 14 उस की
रौशनी में ज़मीन यूँ तश्कील पाती है जिस तरह मिट्टी
जिस पर मुहर लगाई जाए। सब कुछ रंगदार लिबास
पहने नज़र आता है। 15 तब बेदीनों की रौशनी रोकी
जाती, उन का उठाया हुआ बाज़ू तोड़ा जाता है।
16 क्या तू समुन्दर के सरचश्मों तक पहुँच कर उस
की गहराइयों में से गुज़रा है? 17 क्या मौत के दरवाज़े
तुझ पर ज़ाहिर हुए, तुझे घने अंधेरे के दरवाज़े नज़र
आए हैं? 18 क्या तुझे ज़मीन के वसी मैदानों की पूरी
समझ आई है? मुझे बता अगर यह सब कुछ जानता
है!
19 रौशनी के मम्बा तक ले जाने वाला रास्ता कहाँ
है? अंधेरे की रिहाइशगाह कहाँ है? 20 क्या तू उन्हें
उन के मक़ामों तक पहुँचा सकता है? क्या तू उन के
घरों तक ले जाने वाली राहों से वाक़िफ़ है? 21 बेशक
तू इस का इल्म रखता है, क्यूँकि तू उस वक़्त जन्म
ले चुका था जब यह पैदा हुए। तू तो क़दीम ज़माने से
ही ज़िन्दा है!
22 क्या तू वहाँ तक पहुँच गया है जहाँ बर्फ़ के
ज़ख़ीरे जमा होते हैं? क्या तू ने ओलों के गोदामों को
देख लिया है? 23 मैं उन्हें मुसीबत के वक़्त के लिए
महफ़ूज़ रखता हूँ, ऐसे दिनों के लिए जब लड़ाई और
जंग छिड़ जाए। 24 मुझे बता, उस जगह तक किस
तरह पहुँचना है जहाँ रौशनी तक़्सीम होती है, या उस
जगह जहाँ से मशरिक़ी हवा निकल कर ज़मीन पर
बिखर जाती है?
25 किस ने मूसलाधार बारिश के लिए रास्ता और
गरजते तूफ़ान के लिए राह बनाई 26 ताकि इन्सान से
ख़ाली ज़मीन और ग़ैरआबाद रेगिस्तान की आबपाशी
हो जाए, 27 ताकि वीरान-ओ-सुन्सान बयाबान की
प्यास बुझ जाए और उस से हरियाली फूट निकले?
28 क्या बारिश का बाप है? कौन शबनम के क़तरों
का वालिद है?
29 बर्फ़ किस माँ के पेट से पैदा हुई? जो पाला
आसमान से आ कर ज़मीन पर पड़ता है किस ने
उसे जन्म दिया? 30 जब पानी पत्थर की तरह सख़्त
हो जाए बल्कि गहरे समुन्दर की सतह भी जम जाए
तो कौन यह सरअन्जाम देता है? 31 क्या तू ख़ोशा-ए-
पर्वीन को बांध सकता या जौज़े की ज़न्जीरों को खोल
सकता है? 32 क्या तू करवा सकता है कि सितारों के
मुख़्तलिफ़ झुर्मट उन के मुक़र्ररा औक़ात के मुताबिक़

निकल आएँ? क्या तू दुब्ब-ए-अक्बर की उस के
बच्चों समेत क़ियादत करने के क़ाबिल है? 33 क्या
तू आसमान के क़वानीन जानता या उस की ज़मीन
पर हुकूमत मुतअय्यिन करता है?
34 क्या जब तू बुलन्द आवाज़ से बादलों को हुक्म
दे तो वह तुझ पर मूसलाधार बारिश बरसाते हैं?
35 क्या तू बादल की बिजली ज़मीन पर भेज सकता
है? क्या वह तेरे पास आ कर कहती है, 'मैं ख़िदमत
के लिए हाज़िर हूँ'? 36 किस ने मिस्र के लक़्लक़ को
हिक्मत दी, मुर्ग़ को समझ अता की? 37 किस को
इतनी दानाई हासिल है कि वह बादलों को गिन
सके? कौन आसमान के इन घड़ों को उस वक़्त
उंडेल सकता है 38 जब मिट्टी ढाले हुए लोहे की तरह
सख़्त हो जाए और ढेले एक दूसरे के साथ चिपक
जाएँ? कोई नहीं!
39 क्या तू ही शेरनी के लिए शिकार करता या शेरों
को सेर करता है 40 जब वह अपनी छुपने की जगहों
में दबक जाएँ या गुंजान जंगल में कहीं ताक लगाए
बैठे हों? 41 कौन कव्वे को ख़ुराक मुहय्या करता है
जब उस के बच्चे भूक के बाइस अल्लाह को आवाज़
दें और मारे मारे फिरें?

39 1 क्या तुझे मालूम है कि पहाड़ी बकरियों के
बच्चे कब पैदा होते हैं? जब हिरनी अपना
बच्चा जन्म देती है तो क्या तू इस को मुलाहज़ा करता
है? 2 क्या तू वह महीने गिनता रहता है जब बच्चे
हिरनियों के पेट में हों? क्या तू जानता है कि किस
वक़्त बच्चे जन्म देती हैं? 3 उस दिन वह दबक जाती,
बच्चे निकल आते और दर्द-ए-ज़ह ख़त्म हो जाता है।
4 उन के बच्चे ताक़तवर हो कर खुले मैदान में फलते
फूलते, फिर एक दिन चले जाते हैं और अपनी माँ के
पास वापस नहीं आते।
5 किस ने जंगली गधे को खुला छोड़ दिया? किस
ने उस के रस्से खोल दिए? 6 मैं ही ने बयाबान उस
का घर बना दिया, मैं ही ने मुक़र्रर किया कि बंजर
ज़मीन उस की रिहाइशगाह हो। 7 वह शहर का शोर-
शराबा देख कर हंस उठता, और उसे हाँकने वाले
की आवाज़ सुननी नहीं पड़ती। 8 वह चरने के लिए
पहाड़ी इलाक़े में इधर उधर घूमता और हरियाली
का खोज लगाता रहता है।
9 क्या जंगली बैल तेरी ख़िदमत करने के लिए
तय्यार होगा? क्या वह कभी रात को तेरी चरनी के
पास गुज़ारेगा? 10 क्या तू उसे बांध कर हल चला
सकता है? क्या वह वादी में तेरे पीछे चल कर सुहागा
फेरेगा? 11 क्या तू उस की बड़ी ताक़त देख कर उस
पर एतिमाद करेगा? क्या तू अपना सख़्त काम उस
के सपुर्द करेगा? 12 क्या तू भरोसा कर सकता है कि
वह तेरा अनाज जमा करके गाहने की जगह पर ले
आए? हरगिज़ नहीं!
13 शुतुरमुर्ग़ ख़ुशी से अपने परों को फड़फड़ाता है।
लेकिन क्या उस का शाहपर लक़्लक़ या बाज़ के
शाहपर की मानिन्द है? 14 वह तो अपने अंडे ज़मीन
पर अकेले छोड़ता है, और वह मिट्टी ही पर पकते हैं।
15 शुतुरमुर्ग़ को ख़याल तक नहीं आता कि कोई उन्हें
पाँओ तले कुचल सकता या कोई जंगली जानवर
उन्हें रौंद सकता है। 16 लगता नहीं कि उस के अपने
बच्चे हैं, क्यूँकि उस का उन के साथ सुलूक इतना
सख़्त है। अगर उस की मेहनत नाकाम निकले तो
उसे पर्वा ही नहीं, 17 क्यूँकि अल्लाह ने उसे हिक्मत से
महरूम रख कर उसे समझ से न नवाज़ा। 18 तो भी
वह इतनी तेज़ी से उछल कर भाग जाता है कि घोड़े
और घुड़सवार की दौड़ देख कर हँसने लगता है।
19 क्या तू घोड़े को उस की ताक़त दे कर उस की
गर्दन को अयाल से आरास्ता करता है? 20 क्या तू ही
उसे टिड्डी की तरह फलाँगने देता है? जब वह ज़ोर से
अपने नथनों को फुला कर आवाज़ निकालता है तो
कितना रोबदार लगता है! 21 वह वादी में सुम मार
मार कर अपनी ताक़त की ख़ुशी मनाता, फिर भाग
कर मैदान-ए-जंग में आ जाता है। 22 वह ख़ौफ़ का
मज़ाक़ उड़ाता और किसी से भी नहीं डरता, तलवार
के रू-ब-रू भी पीछे नहीं हटता। 23 उस के ऊपर
तर्कश खड़खड़ाता, नेज़ा और शम्शीर चमकती है।
24 वह बड़ा शोर मचा कर इतनी तेज़ी और जोश-ओ-

ख़ुरोश से दुश्मन पर हम्ला करता है कि बिगुल बजते
वक़्त भी रोका नहीं जाता। 25 जब भी बिगुल बजे
वह ज़ोर से हिनहिनाता और दूर ही से मैदान-ए-जंग,
कमाँडरों का शोर और जंग के नारे सूँघ लेता है।
26 क्या बाज़ तेरी ही हिक्मत के ज़रीए हवा में उड़
कर अपने परों को जुनूब की जानिब फैला देता
है? 27 क्या उक़ाब तेरे ही हुक्म पर बुलन्दियों पर
मंडलाता और ऊँची ऊँची जगहों पर अपना घोंसला
बना लेता है? 28 वह चटान पर रहता, उस के टूटे-
फूटे किनारों और क़िलाबन्द जगहों पर बसेरा करता
है। 29 वहाँ से वह अपने शिकार का खोज लगाता है,
उस की आँखें दूर दूर तक देखती हैं। 30 उस के बच्चे
ख़ून के लालच में रहते, और जहाँ भी लाश हो वहाँ
वह हाज़िर होता है।”

अय्यूब रब को जवाब नहीं दे सकता

40 1 रब ने अय्यूब से पूछा,
2 “क्या मलामत करने वाला अदालत में
क़ादिर-ए-मुतलक़ से झगड़ना चाहता है? अल्लाह की
सरज़निश करने वाला उसे जवाब दे!”
3 तब अय्यूब ने जवाब दे कर रब से कहा,
4 “मैं तो नालाइक़ हूँ, मैं किस तरह तुझे जवाब दूँ?
मैं अपने मुँह पर हाथ रख कर ख़ामोश रहूँगा। 5 एक
बार मैं ने बात की और इस के बाद मज़ीद एक दफ़ा,
लेकिन अब से मैं जवाब में कुछ नहीं कहूँगा।”

अल्लाह का जवाब : क्या तुझे मेरी जैसी क़ुदरत हासिल है?

6 तब अल्लाह तूफ़ान में से अय्यूब से हमकलाम
हुआ,
7 “मर्द की तरह कमरबस्ता हो जा! मैं तुझ से सवाल
करूँ और तू मुझे तालीम दे। 8 क्या तू वाक़ई मेरा
इन्साफ़ मन्सूख़ करके मुझे मुजरिम ठहराना चाहता
है ताकि ख़ुद रास्तबाज़ ठहरे? 9 क्या तेरा बाज़ू अल्लाह
के बाज़ू जैसा ज़ोरावर है? क्या तेरी आवाज़ उस की
आवाज़ की तरह कड़कती है। 10 आ, अपने आप को
शान-ओ-शौकत से आरास्ता कर, इज़्ज़त-ओ-जलाल
से मुलब्बस हो जा! 11 ब-यक-वक़्त अपना शदीद
क़हर मुख़्तलिफ़ जगहों पर नाज़िल कर, हर मग़ुरूर
को अपना निशाना बना कर उसे ख़ाक में मिला दे।
12 हर मुतकब्बिर पर ग़ौर करके उसे पस्त कर। जहाँ
भी बेदीन हो वहीं उसे कुचल दे। 13 उन सब को मिट्टी
में छुपा दे, उन्हें रस्सों में जकड़ कर किसी ख़ुफ़िया
जगह गिरिफ़्तार कर। 14 तब ही मैं तेरी तारीफ़ करके
मान जाऊँगा कि तेरा दहना हाथ तुझे नजात दे सकता
है।

अल्लाह की क़ुदरत और हिक्मत की दो मिसालें

15 बहेमोत [i]पर ग़ौर कर जिसे मैं ने तुझे ख़ल्क़ करते
वक़्त बनाया और जो बैल की तरह घास खाता है।
16 उस की कमर में कितनी ताक़त, उस के पेट के
पट्ठों में कितनी क़ुव्वत है। 17 वह अपनी दुम को
देवदार के दरख़्त की तरह लटकने देता है, उस की
रानों की नसें मज़बूती से एक दूसरी से जुड़ी हुई
हैं। 18 उस की हड्डियाँ पीतल के से पाइप, लोहे के
से सरीए हैं। 19 वह अल्लाह के कामों में से अव्वल
है, उस के ख़ालिक़ ही ने उसे उस की तलवार दी।
20 पहाड़ियाँ उसे अपनी पैदावार पेश करती, खुले
मैदान के तमाम जानवर वहाँ खेलते कूदते हैं। 21 वह
काँटेदार झाड़ियों के नीचे आराम करता, सरकंडों
और दलदल में छुपा रहता है। 22 ख़ारदार झाड़ियाँ
उस पर साया डालती और नदी के सफ़ेदा के दरख़्त
उसे घेरे रखते हैं। 23 जब दरया सैलाब की सूरत
इख़तियार करे तो वह नहीं भागता। गो दरया-ए-यर्दन
उस के मुँह पर फूट पड़े तो भी वह अपने आप को
महफ़ूज़ समझता है। 24 क्या कोई उस की आँखों में
उंगलियाँ डाल कर उसे पकड़ सकता है? अगर उसे

[i]साईन्सदान मुत्तफ़िक़ नहीं कि यह कौन सा जानवर था।

फंदे में पकड़ा भी जाए तो क्या कोई उस की नाक
को छेद सकता है? हरगिज़ नहीं!

41 1 क्या तू लिवियातान [j]अज़दहे को मछली
के काँटे से पकड़ सकता या उस की ज़बान
को रस्से से बांध सकता है? 2 क्या तू उस की नाक
छेद कर उस में से रस्सा गुज़ार सकता या उस के
जबड़े को काँटे से चीर सकता है? 3 क्या वह कभी
तुझ से बार बार रहम माँगेगा या नर्म नर्म अल्फ़ाज़
से तेरी ख़ुशामद करेगा? 4 क्या वह कभी तेरे साथ
अह्द करेगा कि तू उसे अपना ग़ुलाम बनाए रखे?
हरगिज़ नहीं! 5 क्या तू परिन्दे की तरह उस के साथ
खेल सकता या उसे बांध कर अपनी लड़कियों को
दे सकता है ताकि वह उस के साथ खेलें? 6 क्या
सौदागर कभी उस का सौदा करेंगे या उसे ताजिरों में
तक़्सीम करेंगे? कभी नहीं! 7 क्या तू उस की खाल
को भालों से या उस के सर को हार्पूनों से भर सकता
है? 8 एक दफ़ा उसे हाथ लगाया तो यह लड़ाई तुझे
हमेशा याद रहेगी, और तू आइन्दा ऐसी हरकत कभी
नहीं करेगा!

9 यक़ीनन उस पर क़ाबू पाने की हर उम्मीद
फ़रेबदिह साबित होगी, क्यूँकि उसे देखते ही इन्सान
गिर जाता है। 10 कोई इतना बेधड़क नहीं है कि उसे
मुश्तइल करे। तो फिर कौन मेरा सामना कर सकता
है? 11 किस ने मुझे कुछ दिया है कि मैं उस का
मुआवज़ा दूँ। आसमान तले हर चीज़ मेरी ही है!

12 मैं तुझे उस के आज़ा के बयान से महरूम
नहीं रखूँगा, कि वह कितना बड़ा, ताक़तवर और
ख़ूबसूरत है। 13 कौन उस की खाल [k]उतार सकता,
कौन उस के ज़िराबक्तर की दो तहों के अन्दर तक
पहुँच सकता है? 14 कौन उस के मुँह का दरवाज़ा
खोलने की जुरअत करे? उस के हौलनाक दाँत देख
कर इन्सान के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। 15 उस की
पीठ पर एक दूसरी से ख़ूब जुड़ी हुई ढालों की
क़तारें होती हैं। 16 वह इतनी मज़बूती से एक दूसरी
से लगी होती हैं कि उन के दरमियान से हवा भी नहीं
गुज़र सकती, 17 बल्कि यूँ एक दूसरी से चिमटी और
लिपटी रहती हैं कि उन्हें एक दूसरी से अलग नहीं
किया जा सकता।

18 जब छींकें मारे तो बिजली चमक उठती है। उस
की आँखें तुलू-ए-सुब्ह की पलकों की मानिन्द हैं।
19 उस के मुँह से मशअलें और चिंगारियाँ ख़ारिज
होती हैं, 20 उस के नथनों से धुआँ यूँ निकलता है
जिस तरह भड़कती और दहकती आग पर रखी गई
देग से। 21 जब फूँक मारे तो कोएले दहक उठते और
उस के मुँह से शोले निकलते हैं।

22 उस की गर्दन में इतनी ताक़त है कि जहाँ भी
जाए वहाँ उस के आगे आगे मायूसी फैल जाती है।
23 उस के गोश्त-पोस्त की तहें एक दूसरी से ख़ूब
जुड़ी हुई हैं, वह ढाले हुए लोहे की तरह मज़बूत और
बेलचक हैं। 24 उस का दिल पत्थर जैसा सख़्त, चक्की
के निचले पाट जैसा मुस्तह्कम है।

25 जब उठे तो ज़ोरावर डर जाते और दह्शत खा
कर पीछे हट जाते हैं। 26 हथियारों का उस पर कोई
असर नहीं होता, ख़्वाह कोई तलवार, नेज़े, बरछी या
तीर से उस पर हम्ला क्यूँ न करे। 27 वह लोहे को भूसा
और पीतल को गली सड़ी लकड़ी समझता है। 28 तीर
उसे नहीं भगा सकते, और अगर ग़ुलेल के पत्थर
उस पर चलाओ तो उन का असर भूसे के बराबर है।
29 डंडा उसे तिनका सा लगता है, और वह शम्शीर
का शोर-शराबा सुन कर हंस उठता है। 30 उस के
पेट पर तेज़ ठीकरे से लगे हैं, और जिस तरह अनाज
पर गाहने का आला चलाया जाता है उसी तरह वह
कीचड़ पर चलता है। 31 जब समुन्दर की गहराइयों
में से गुज़रे तो पानी उबलती देग की तरह खौलने
लगता है। वह मर्हम के मुख़्तलिफ़ अजज़ा को मिला
मिला कर तय्यार करने वाले अत्तार की तरह समुन्दर
को हरकत में लाता है। 32 अपने पीछे वह चमकता
दमकता रास्ता छोड़ता है। तब लगता है कि समुन्दर

[j]साईन्सदान मुत्तफ़िक़ नहीं कि यह कौन सा जानवर था।

[k]लफ़्ज़ी तर्जुमा : बैरूनी लिबास।

की गहराइयों के सफ़ेद बाल हैं। 33 दुनिया में उस
जैसा कोई मख़्लूक़ नहीं, ऐसा बनाया गया है कि कभी
न डरे। 34 जो भी आला हो उस पर वह हिक़ारत की
निगाह से देखता है, वह तमाम रोबदार जानवरों का
बादशाह है।”

अय्यूब की आख़िरी बात

42 1 तब अय्यूब ने जवाब में रब से कहा,
2 “मैं ने जान लिया है कि तू सब कुछ
कर पाता है, कि तेरा कोई भी मन्सूबा रोका नहीं जा
सकता। 3 तू ने फ़रमाया, ‘यह कौन है जो समझ से
ख़ाली बातें करने से मेरे मन्सूबे के सहीह मतलब
पर पर्दा डालता है?’ यक़ीनन मैं ने ऐसी बातें बयान
कीं जो मेरी समझ से बाहर हैं, ऐसी बातें जो इतनी
अनोखी हैं कि मैं उन का इल्म रख ही नहीं सकता।
4 तू ने फ़रमाया, ‘सुन मेरी बात तो मैं बोलूँगा। मैं तुझ
से सवाल करता हूँ, और तू मुझे तालीम दे।’ 5 पहले मैं
ने तेरे बारे में सिर्फ़ सुना था, लेकिन अब मेरी अपनी
आँखों ने तुझे देखा है। 6 इस लिए मैं अपनी बातें
मुस्तरद करता, अपने आप पर ख़ाक और राख डाल
कर तौबा करता हूँ।”

अय्यूब अपने दोस्तों की शफ़ाअत करता है

7 अय्यूब से यह तमाम बातें कहने के बाद रब
इलीफ़ज़ तेमानी से हमकलाम हुआ, “मैं तुझ से और
तेरे दो दोस्तों से ग़ुस्से हूँ, क्यूँकि गो मेरे बन्दे अय्यूब
ने मेरे बारे में दुरुस्त बातें कीं मगर तुम ने ऐसा नहीं
किया। 8 चुनाँचे अब सात जवान बैल और सात मेंढे
ले कर मेरे बन्दे अय्यूब के पास जाओ और अपनी
ख़ातिर भस्म होने वाली क़ुर्बानी पेश करो। लाज़िम
है कि अय्यूब तुम्हारी शफ़ाअत करे, वर्ना मैं तुम्हें
तुम्हारी हमाक़त का पूरा अज्र दूँगा। लेकिन उस की
शफ़ाअत पर मैं तुम्हें मुआफ़ करूँगा, क्यूँकि मेरे बन्दे
अय्यूब ने मेरे बारे में वह कुछ बयान किया जो सहीह
है जबकि तुम ने ऐसा नहीं किया।”
9 इलीफ़ज़ तेमानी, बिल्दद सूख़ी और ज़ूफ़र नामाती
ने वह कुछ किया जो रब ने उन्हें करने को कहा था
तो रब ने अय्यूब की सुनी।
10 और जब अय्यूब ने दोस्तों की शफ़ाअत की तो
रब ने उसे इतनी बरकत दी कि आख़िरकार उसे पहले
की निस्बत दुगनी दौलत हासिल हुई। 11 तब उस के
तमाम भाई-बहनें और पुराने जानने वाले उस के पास
आए और घर में उस के साथ खाना खा कर उस
आफ़त पर अफ़्सोस किया जो रब अय्यूब पर लाया
था। हर एक ने उसे तसल्ली दे कर उसे एक सिक्का और
सोने का एक छल्ला दे दिया।
12 अब से रब ने अय्यूब को पहले की निस्बत कहीं
ज़्यादा बरकत दी। उसे 14,000 बकरियाँ, 6,000
ऊँट, बैलों की 1,000 जोड़ियाँ और 1,000 गधियाँ
हासिल हुईं। 13 नीज़, उस के मज़ीद सात बेटे और
तीन बेटियाँ पैदा हुईं। 14 उस ने बेटियों के यह नाम
रखे : पहली का नाम यमीमा, दूसरी का क़सीअह और
तीसरी का क़रन-हप्पूक। 15 तमाम मुल्क में अय्यूब
की बेटियों जैसी ख़ूबसूरत ख़वातीन पाई नहीं जाती
थीं। अय्यूब ने उन्हें भी मीरास में मिलकियत दी, ऐसी
मिलकियत जो उन के भाइयों के दरमियान ही थी।
16 अय्यूब मज़ीद 140 साल ज़िन्दा रहा, इस लिए
वह अपनी औलाद को चौथी पुश्त तक देख सका।
17 फिर वह दराज़ ज़िन्दगी से आसूदा हो कर
इन्तिक़ाल कर गया।

ज़बूर

पहली किताब : 1-41

दो राहें

1 1 मुबारक है वह जो न बेदीनों के मश्वरे पर
चलता, न गुनाहगारों की राह पर क़दम रखता,
और न तानाज़नों के साथ बैठता है
2 बल्कि रब की शरीअत से लुत्फ़अन्दोज़ होता और
दिन रात उसी पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करता रहता है।
3 वह नहरों के किनारे पर लगे दरख़्त की मानिन्द
है। वक़्त पर वह फल लाता, और उस के पत्ते नहीं
मुरझाते। जो कुछ भी करे उस में वह कामयाब है।

4 बेदीनों का यह हाल नहीं होता। वह भूसे की
मानिन्द हैं जिसे हवा उड़ा ले जाती है।
5 इस लिए बेदीन अदालत में क़ाइम नहीं रहेंगे, और
गुनाहगार का रास्तबाज़ों की मजलिस में मक़ाम नहीं
होगा।
6 क्यूँकि रब रास्तबाज़ों की राह की पहरादारी
करता है जबकि बेदीनों की राह तबाह हो जाएगी।

अल्लाह का मसीह

2 1 अक़्वाम क्यूँ तैश में आ गई हैं? उम्मतें क्यूँ
बेकार साज़िशें कर रही हैं?
2 दुनिया के बादशाह उठ खड़े हुए, हुक्मरान रब
और उस के मसीह के ख़िलाफ़ जमा हो गए हैं।
3 वह कहते हैं, "आओ, हम उन की ज़न्जीरों को
तोड़ कर आज़ाद हो जाएँ, उन के रस्सों को दूर तक
फैंक दें।"
4 लेकिन जो आसमान पर तख़्तनशीन है वह हँसता
है, रब उन का मज़ाक़ उड़ाता है।
5 फिर वह ग़ुस्से से उन्हें डाँटता, अपना शदीद ग़ज़ब
उन पर नाज़िल करके उन्हें डराता है।
6 वह फ़रमाता है, "मैं ने ख़ुद अपने बादशाह को
अपने मुक़द्दस पहाड़ सिय्यून पर मुक़र्रर किया है!"

7 आओ, मैं रब का फ़रमान सुनाऊँ। उस ने मुझ से
कहा, "तू मेरा बेटा है, आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।
8 मुझ से माँग तो मैं तुझे मीरास में तमाम अक़्वाम
अता करूँगा, दुनिया की इन्तिहा तक सब कुछ बख़्श
दूँगा।
9 तू उन्हें लोहे के शाही असा से पाश पाश करेगा,
उन्हें मिट्टी के बर्तनों की तरह चिकनाचूर करेगा।"
10 चुनाँचे ऐ बादशाहो, समझ से काम लो! ऐ दुनिया
के हुक्मरानो, तर्बियत क़बूल करो!
11 ख़ौफ़ करते हुए रब की ख़िदमत करो, लरज़ते
हुए ख़ुशी मनाओ।
12 बेटे को बोसा दो, ऐसा न हो कि वह ग़ुस्से हो
जाए और तुम रास्ते में ही हलाक हो जाओ। क्यूँकि
वह एक दम तैश में आ जाता है। मुबारक हैं वह सब
जो उस में पनाह लेते हैं।

सुब्ह को मदद के लिए दुआ

3 1 दाऊद का ज़बूर। उस वक़्त जब उसे अपने
बेटे अबीसलूम से भागना पड़ा।
ऐ रब, मेरे दुश्मन कितने ज़्यादा हैं, कितने लोग मेरे
ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं!
2 मेरे बारे में बहुतेरे कह रहे हैं, "अल्लाह इसे
छुटकारा नहीं देगा।" (सिलाह) [1]

---

[1] सिलाह ग़ालिबन गाने बजाने के बारे में कोई हिदायत है। मुफ़स्सिरीन में इस के मतलब के बारे में इत्तिफ़ाक़-ए-राय नहीं होती।

3 लेकिन तू ऐ रब, चारों तरफ़ मेरी हिफ़ाज़त करने
वाली ढाल है। तू मेरी इज़्ज़त है जो मेरे सर को उठाए
रखता है।
4 मैं बुलन्द आवाज़ से रब को पुकारता हूँ, और वह
अपने मुक़द्दस पहाड़ से मेरी सुनता है। (सिलाह)
5 मैं आराम से लेट कर सो गया, फिर जाग उठा,
क्यूँकि रब ख़ुद मुझे सँभाले रखता है।
6 उन हज़ारों से मैं नहीं डरता जो मुझे घेरे रखते हैं।
7 ऐ रब, उठ! ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे रिहा कर! क्यूँकि
तू ने मेरे तमाम दुश्मनों के मुँह पर थप्पड़ मारा, तू ने
बेदीनों के दाँतों को तोड़ दिया है।
8 रब के पास नजात है। तेरी बरकत तेरी क़ौम पर
आए। (सिलाह)

शाम को मदद के लिए दुआ

4 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।
ऐ मेरी रास्ती के ख़ुदा, मेरी सुन जब मैं तुझे पुकारता
हूँ। ऐ तू जो मुसीबत में मेरी मख़्लसी रहा है मुझ पर
मेहरबानी करके मेरी इल्तिजा सुन!

2 ऐ आदमज़ादो, मेरी इज़्ज़त कब तक ख़ाक में
मिलाई जाती रहेगी? तुम कब तक बातिल चीज़ों से
लिपटे रहोगे, कब तक झूट की तलाश में रहोगे?
(सिलाह)
3 जान लो कि रब ने ईमानदार को अपने लिए अलग
कर रखा है। रब मेरी सुनेगा जब मैं उसे पुकारूँगा।
4 ग़ुस्से में आते वक़्त गुनाह मत करना। अपने
बिस्तर पर लेट कर मुआमले पर सोच-बिचार करो,
लेकिन दिल में, ख़ामोशी से। (सिलाह)
5 रास्ती की क़ुर्बानियाँ पेश करो, और रब पर
भरोसा रखो।
6 बहुतेरे शक कर रहे हैं, "कौन हमारे हालात ठीक
करेगा?" ऐ रब, अपने चिहरे का नूर हम पर चमका!
7 तू ने मेरे दिल को ख़ुशी से भर दिया है, ऐसी ख़ुशी
से जो उन के पास भी नहीं होती जिन के पास कस्रत
का अनाज और अंगूर है।
8 मैं आराम से लेट कर सो जाता हूँ, क्यूँकि तू ही ऐ
रब मुझे हिफ़ाज़त से बसने देता है।

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

5 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। इसे बाँसरी के साथ गाना है।
ऐ रब, मेरी बातें सुन, मेरी आहों पर ध्यान दे!
2 ऐ मेरे बादशाह, मेरे ख़ुदा, मदद के लिए मेरी चीख़ें
सुन, क्यूँकि मैं तुझ ही से दुआ करता हूँ।
3 ऐ रब, सुब्ह को तू मेरी आवाज़ सुनता है, सुब्ह
को मैं तुझे सब कुछ तर्तीब से पेश करके जवाब का
इन्तिज़ार करने लगता हूँ।

4 क्यूँकि तू ऐसा ख़ुदा नहीं है जो बेदीनी से ख़ुश हो।
जो बुरा है वह तेरे हुज़ूर नहीं ठहर सकता।
5 मग़रूर तेरे हुज़ूर खड़े नहीं हो सकते, बदकार से
तू नफ़रत करता है।
6 झूट बोलने वालों को तू तबाह करता, ख़ूँख़ार और
धोकेबाज़ से रब घिन खाता है।

7 लेकिन मुझ पर तू ने बड़ी मेहरबानी की है, इस
लिए मैं तेरे घर में दाख़िल हो सकता, मैं तेरा ख़ौफ़
मान कर तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह के सामने सिज्दा
करता हूँ।
8 ऐ रब, अपनी रास्त राह पर मेरी राहनुमाई कर
ताकि मेरे दुश्मन मुझ पर ग़ालिब न आएँ। अपनी राह
को मेरे आगे हमवार कर।

9 क्यूँकि उन के मुँह से एक भी क़ाबिल-ए-एतिमाद
बात नहीं निकलती। उन का दिल तबाही से भरा
रहता, उन का गला खुली क़ब्र है, और उन की ज़बान
चिकनी-चुपड़ी बातें उगलती रहती है।

10 ऐ रब, उन्हें उन के ग़लत काम का अज्र दे। उन
की साज़िशें उन की अपनी तबाही का बाइस बनें।
उन्हें उन के मुतअद्दिद गुनाहों के बाइस निकाल कर
मुन्तशिर कर दे, क्यूँकि वह तुझ से सरकश हो गए
हैं।

11 लेकिन जो तुझ में पनाह लेते हैं वह सब ख़ुश
हों, वह अबद तक शादियाना बजाएँ, क्यूँकि तू उन्हें
महफ़ूज़ रखता है। तेरे नाम को प्यार करने वाले तेरा
जश्न मनाएँ।
12 क्यूँकि तू ऐ रब, रास्तबाज़ को बरकत देता है,
तू अपनी मेहरबानी की ढाल से उस की चारों तरफ़
हिफ़ाज़त करता है।

मुसीबत में दुआ (तौबा का पहला ज़बूर)

6 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।
ऐ रब, ग़ुस्से में मुझे सज़ा न दे, तैश में मुझे तम्बीह
न कर।
2 ऐ रब, मुझ पर रहम कर, क्यूँकि मैं निढाल हूँ। ऐ
रब, मुझे शिफ़ा दे, क्यूँकि मेरे आज़ा दहशतज़दा हैं।
3 मेरी जान निहायत ख़ौफ़ज़दा है। ऐ रब, तू कब
तक देर करेगा?
4 ऐ रब, वापस आ कर मेरी जान को बचा। अपनी
शफ़क़त की ख़ातिर मुझे छुटकारा दे।
5 क्यूँकि मुर्दा तुझे याद नहीं करता। पाताल में कौन
तेरी सताइश करेगा?

6 मैं कराहते कराहते थक गया हूँ। पूरी रात रोने से
बिस्तर भीग गया है, मेरे आँसूओं से पलंग गल गया
है।
7 ग़म के मारे मेरी आँखें सूज गई हैं, मेरे मुख़ालिफ़ों
के हम्लों से वह ज़ाए होती जा रही हैं।
8 ऐ बदकारो, मुझ से दूर हो जाओ, क्यूँकि रब ने
मेरी आह-ओ-बुका सुनी है।
9 रब ने मेरी इल्तिजाओं को सुन लिया है, मेरी दुआ
रब को क़बूल है।
10 मेरे तमाम दुश्मनों की रुस्वाई हो जाएगी, और
वह सख़्त घबरा जाएंगे। वह मुड़ कर अचानक ही
शर्मिन्दा हो जाएंगे।

इन्साफ़ के लिए दुआ

7 1 दाऊद का वह मातमी गीत जो उस ने कूश
बिनयमीनी की बातों पर रब की तम्जीद में
गाया।
ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं तुझ में पनाह लेता हूँ। मुझे उन
सब से बचा कर छुटकारा दे जो मेरा ताक़्क़ुब कर
रहे हैं,
2 वर्ना वह शेरबबर की तरह मुझे फाड़ कर टुकड़े
टुकड़े कर देंगे, और बचाने वाला कोई नहीं होगा।

3 ऐ रब मेरे ख़ुदा, अगर मुझ से यह कुछ सरज़द
हुआ और मेरे हाथ क़ुसूरवार हों,
4 अगर मैं ने उस से बुरा सुलूक किया जिस का मेरे
साथ झगड़ा नहीं था या अपने दुश्मन को ख़्वाह-म-
ख़्वाह लूट लिया हो
5 तो फिर मेरा दुश्मन मेरे पीछे पड़ कर मुझे पकड़
ले। वह मेरी जान को मिट्टी में कुचल दे, मेरी इज़्ज़त
को ख़ाक में मिलाए। (सिलाह)

6 ऐ रब, उठ और अपना ग़ज़ब दिखा! मेरे दुश्मनों
के तैश के ख़िलाफ़ खड़ा हो जा। मेरी मदद करने के
लिए जाग उठ! तू ने ख़ुद अदालत का हुक्म दिया है।
7 अक़्वाम तेरे इर्दगिर्द जमा हो जाएँ जब तू उन के
ऊपर बुलन्दियों पर तख़्तनशीन हो जाए।
8 रब अक़्वाम की अदालत करता है। ऐ रब, मेरी
रास्तबाज़ी और बेगुनाही का लिहाज़ करके मेरा
इन्साफ़ कर।
9 ऐ रास्त ख़ुदा, जो दिल की गहराइयों को तह
तक जाँच लेता है, बेदीनों की शरारतें ख़त्म कर और
रास्तबाज़ को क़ाइम रख।

10 अल्लाह मेरी ढाल है। जो दिल से सीधी राह पर
चलते हैं उन्हें वह रिहाई देता है।
11 अल्लाह आदिल मुन्सिफ़ है, ऐसा ख़ुदा जो रोज़ाना
लोगों की सरज़निश करता है।

12 यक़ीनन इस वक़्त भी दुश्मन अपनी तलवार को
तेज़ कर रहा, अपनी कमान को तान कर निशाना
बांध रहा है।
13 लेकिन जो मोहलिक हथियार और जलते हुए तीर
उस ने तय्यार कर रखे हैं उन की ज़द में वह ख़ुद ही
आ जाएगा।
14 देख, बुराई का बीज उस में उग आया है। अब
वह शरारत से हामिला हो कर फिरता और झूट के
बच्चे जन्म देता है।
15 लेकिन जो गढ़ा उस ने दूसरों को फंसाने के लिए
खोद खोद कर तय्यार किया उस में ख़ुद गिर पड़ा है।
16 वह ख़ुद अपनी शरारत की ज़द में आएगा, उस
का ज़ुल्म उस के अपने सर पर नाज़िल होगा।

17 मैं रब की सताइश करूँगा, क्यूँकि वह रास्त है।
मैं रब तआला के नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।

मख़्लूक़ात का ताज

8 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तर्ज़ : गित्तीत।
ऐ रब हमारे आक़ा, तेरा नाम पूरी दुनिया में कितना
शानदार है! तू ने आसमान पर ही अपना जलाल
ज़ाहिर कर दिया है।
2 अपने मुख़ालिफ़ों के जवाब में तू ने छोटे बच्चों
और शीरख़्वारों की ज़बान को तय्यार किया है ताकि
वह तेरी क़ुव्वत से दुश्मन और कीनापर्वर को ख़त्म
करें।
3 जब मैं तेरे आसमान का मुलाहज़ा करता हूँ जो
तेरी उंगलियों का काम है, चाँद और सितारों पर ग़ौर
करता हूँ जिन को तू ने अपनी अपनी जगह पर क़ाइम
किया
4 तो इन्सान कौन है कि तू उसे याद करे या
आदमज़ाद कि तू उस का ख़याल रखे?
5 तू ने उसे फ़रिश्तों से कुछ ही कम बनाया, [m]तू ने
उसे जलाल और इज़्ज़त का ताज पहनाया।
6 तू ने उसे अपने हाथों के कामों पर मुक़र्रर किया,
सब कुछ उस के पाँओ के नीचे कर दिया,
7 ख़्वाह भेड़-बकरियाँ हों ख़्वाह गाय-बैल, जंगली
जानवर,
8 परिन्दे, मछलियाँ या समुन्दरी राहों पर चलने
वाले बाक़ी तमाम जानवर।

9 ऐ रब हमारे आक़ा, पूरी दुनिया में तेरा नाम कितना
शानदार है!

अल्लाह की क़ुदरत और इन्साफ़

9 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तर्ज़ : अलामूत-लब्बीन।
ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश करूँगा, तेरे तमाम
मोजिज़ात का बयान करूँगा।
2 मैं शादमान हो कर तेरी ख़ुशी मनाऊँगा। ऐ अल्लाह
तआला, मैं तेरे नाम की तम्जीद में गीत गाऊँगा।
3 जब मेरे दुश्मन पीछे हट जाएंगे तो वह ठोकर खा
कर तेरे हुज़ूर तबाह हो जाएंगे।
4 क्यूँकि तू ने मेरा इन्साफ़ किया है, तू तख़्त पर
बैठ कर रास्त मुन्सिफ़ साबित हुआ है।
5 तू ने अक़्वाम को मलामत करके बेदीनों को
हलाक कर दिया, उन का नाम-ओ-निशान हमेशा के
लिए मिटा दिया है।

---

[m]एक और मुमकिना तर्जुमा : तू ने उसे थोड़ी देर के लिए फ़रिश्तों से कम कर दिया (देखिए इब्रानियों 2:7,9)।

6 दुश्मन तबाह हो गया, अबद तक मल्बे का ढेर
बन गया है। तू ने शहरों को जड़ से उखाड़ दिया है,
और उन की याद तक बाक़ी नहीं रहेगी।

7 लेकिन रब हमेशा तक तख़्तनशीन रहेगा, और
उस ने अपने तख़्त को अदालत करने के लिए खड़ा
किया है।
8 वह रास्ती से दुनिया की अदालत करेगा, इन्साफ़
से उम्मतों का फ़ैसला करेगा।
9 रब मज़्लूमों की पनाहगाह है, एक क़िला जिस में
वह मुसीबत के वक़्त महफ़ूज़ रहते हैं।

10 ऐ रब, जो तेरा नाम जानते वह तुझ पर भरोसा
रखते हैं। क्यूँकि जो तेरे तालिब हैं उन्हें तू ने कभी
तर्क नहीं किया।
11 रब की तम्जीद में गीत गाओ जो सिय्यून पहाड़
पर तख़्तनशीन है, उम्मतों में वह कुछ सुनाओ जो
उस ने किया है।
12 क्यूँकि जो मक़्तूलों का इन्तिक़ाम लेता है वह
मुसीबतज़दों की चीख़ें नज़रअन्दाज़ नहीं करता।

13 ऐ रब, मुझ पर रहम कर! मेरी उस तक्लीफ़ पर
ग़ौर कर जो नफ़रत करने वाले मुझे पहुँचा रहे हैं। मुझे
मौत के दरवाज़ों में से निकाल कर उठा ले
14 ताकि मैं सिय्यून बेटी के दरवाज़ों में तेरी सताइश
करके वह कुछ सुनाऊँ जो तू ने मेरे लिए किया है,
ताकि मैं तेरी नजात की ख़ुशी मनाऊँ।

15 अक़्वाम उस गढ़े में ख़ुद गिर गई हैं जो उन्हों ने
दूसरों को पकड़ने के लिए खोदा था। उन के अपने
पाँओ उस जाल में फंस गए हैं जो उन्हों ने दूसरों को
फंसाने के लिए बिछा दिया था।
16 रब ने इन्साफ़ करके अपना इज़हार किया तो
बेदीन अपने हाथ के फंदे में उलझ गया। (हिग्गायून
का तर्ज़। सिलाह)

17 बेदीन पाताल में उतरेंगे, जो उम्मतें अल्लाह को
भूल गई हैं वह सब वहाँ जाएँगी।
18 क्यूँकि वह ज़रूरतमन्दों को हमेशा तक नहीं
भूलेगा, मुसीबतज़दों की उम्मीद अबद तक जाती
नहीं रहेगी।

19 ऐ रब, उठ खड़ा हो ताकि इन्सान ग़ालिब न
आए। बख़्श दे कि तेरे हुज़ूर अक़्वाम की अदालत
की जाए।
20 ऐ रब, उन्हें दहशतज़दा कर ताकि अक़्वाम जान
लें कि इन्सान ही हैं। (सिलाह)

इन्साफ़ के लिए दुआ

10 1 ऐ रब, तू इतना दूर क्यूँ खड़ा है? मुसीबत
के वक़्त तू अपने आप को पोशीदा क्यूँ
रखता है?

2 बेदीन तकब्बुर से मुसीबतज़दों के पीछे
लग गए हैं, और अब बेचारे उन के जालों में उलझने
लगे हैं।
3 क्यूँकि बेदीन अपनी दिली आर्ज़ूओं पर शेख़ी
मारता है, और नाजाइज़ नफ़ा कमाने वाला लानत
करके रब को हक़ीर जानता है।
4 बेदीन ग़ुरूर से फूल कर कहता है, "अल्लाह मुझ से
जवाबतलबी नहीं करेगा।" उस के तमाम ख़यालात
इस बात पर मब्नी हैं कि कोई ख़ुदा नहीं है।
5 जो कुछ भी करे उस में वह कामयाब है। तेरी
अदालतें उसे बुलन्दियों में कहीं दूर लगती हैं जबकि
वह अपने तमाम मुख़ालिफ़ों के ख़िलाफ़ फुंकारता
है।
6 दिल में वह सोचता है, "मैं कभी नहीं
डगमगाऊँगा, नस्ल-दर-नस्ल मुसीबत के पंजों से
बचा रहूँगा।"
7 उस का मुँह लानतों, फ़रेब और ज़ुल्म से भरा
रहता, उस की ज़बान नुक़्सान और आफ़त पहुँचाने
के लिए तय्यार रहती है।

8 वह आबादियों के क़रीब ताक में बैठ कर चुपके
से बेगुनाहों को मार डालता है, उस की आँखें
बदक़िस्मतों की घात में रहती हैं।
9 जंगल में बैठे शेरबबर की तरह ताक में रह कर
वह मुसीबतज़दा पर हम्ला करने का मौक़ा ढूँडता है।
जब उसे पकड़ ले तो उसे अपने जाल में घसीट कर
ले जाता है।
10 उस के शिकार पाश पाश हो कर झुक जाते हैं,
बेचारे उस की ज़बरदस्त ताक़त की ज़द में आ कर
गिर जाते हैं।
11 तब वह दिल में कहता है, "अल्लाह भूल गया है,
उस ने अपना चिहरा छुपा लिया है, उसे यह कभी
नज़र नहीं आएगा।"

12 ऐ रब, उठ! ऐ अल्लाह, अपना हाथ उठा कर
नाचारों की मदद कर और उन्हें न भूल।
13 बेदीन अल्लाह की तह्क़ीर क्यूँ करे, वह दिल में
क्यूँ कहे, "अल्लाह मुझ से जवाब तलब नहीं करेगा"?
14 ऐ अल्लाह, हक़ीक़त में तू यह सब कुछ देखता
है। तू हमारी तक्लीफ़ और परेशानी पर ध्यान दे कर
मुनासिब जवाब देगा। नाचार अपना मुआमला तुझ
पर छोड़ देता है, क्यूँकि तू यतीमों का मददगार है।
15 शरीर और बेदीन आदमी का बाज़ू तोड़ दे! उस
से उस की शरारतों की जवाबतलबी कर ताकि उस
का पूरा असर मिट जाए।

16 रब अबद तक बादशाह है। उस के मुल्क से
दीगर अक़्वाम ग़ाइब हो गई हैं।
17 ऐ रब, तू ने नाचारों की आर्ज़ू सुन ली है। तू उन
के दिलों को मज़बूत करेगा और उन पर ध्यान दे कर
18 यतीमों और मज़्लूमों का इन्साफ़ करेगा ताकि
आइन्दा कोई भी इन्सान मुल्क में दह्शत न फैलाए।

रब पर भरोसा

11 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।

मैं ने रब में पनाह ली है। तो फिर तुम किस तरह
मुझ से कहते हो, "चल, परिन्दे की तरह फड़फड़ा
कर पहाड़ों में भाग जा"?
2 क्यूँकि देखो, बेदीन कमान तान कर तीर को ताँत
पर लगा चुके हैं। अब वह अंधेरे में बैठ कर इस
इन्तिज़ार में हैं कि दिल से सीधी राह पर चलने वालों
पर चलाएँ।
3 रास्तबाज़ क्या करे? उन्हों ने तो बुन्याद को ही
तबाह कर दिया है।

4 लेकिन रब अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह में है, रब
का तख़्त आसमान पर है। वहाँ से वह देखता है,
वहाँ से उस की आँखें आदमज़ादों को परखती हैं।
5 रब रास्तबाज़ को परखता तो है, लेकिन बेदीन
और ज़ालिम से नफ़रत ही करता है।
6 बेदीनों पर वह जलते हुए कोएले और शोलाज़न
गंधक बरसा देगा। झुलसने वाली आँधी उन का
हिस्सा होगी।
7 क्यूँकि रब रास्त है, और उसे इन्साफ़ प्यारा है।
सिर्फ़ सीधी राह पर चलने वाले उस का चिहरा
देखेंगे।

मदद के लिए दुआ

12 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तर्ज़ : शमीनीत।

ऐ रब, मदद फ़रमा! क्यूँकि ईमानदार ख़त्म हो गए
हैं। दियानतदार इन्सानों में से मिट गए हैं।
2 आपस में सब झूट बोलते हैं। उन की ज़बान पर
चिकनी-चुपड़ी बातें होती हैं जबकि दिल में कुछ और
ही होता है।
3 रब तमाम चिकनी-चुपड़ी और शेख़ीबाज़ ज़बानों
को काट डाले!
4 वह उन सब को मिटा दे जो कहते हैं, "हम अपनी
लाइक़ ज़बान के बाइस ताक़तवर हैं। हमारे होंट हमें
सहारा देते हैं तो कौन हमारा मालिक होगा? कोई
नहीं!"

5 लेकिन रब फ़रमाता है, “नाचारों पर तुम्हारे ज़ुल्म
की ख़बर और ज़रूरतमन्दों की कराहती आवाज़ें मेरे
सामने आई हैं। अब मैं उठ कर उन्हें उन से छुटकारा
दूँगा जो उन के ख़िलाफ़ फुंकारते हैं।”

6 रब के फ़रमान पाक हैं, वह भट्टी में सात बार साफ़
की गई चाँदी की मानिन्द ख़ालिस हैं।
7 ऐ रब, तू ही उन्हें महफ़ूज़ रखेगा, तू ही उन्हें अबद
तक इस नस्ल से बचाए रखेगा,
8 गो बेदीन आज़ादी से इधर उधर फिरते हैं, और
इन्सानों के दरमियान कमीनापन का राज है।

मदद के लिए दुआ

13 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
ऐ रब, कब तक? क्या तू मुझे अबद तक भूला
रहेगा? तू कब तक अपना चिहरा मुझ से छुपाए
रखेगा?
2 मेरी जान कब तक परेशानियों में मुब्तला रहे,
मेरा दिल कब तक रोज़-ब-रोज़ दुख उठाता रहे? मेरा
दुश्मन कब तक मुझ पर ग़ालिब रहेगा?

3 ऐ रब मेरे ख़ुदा, मुझ पर नज़र डाल कर मेरी सुन!
मेरी आँखों को रौशन कर, वर्ना मैं मौत की नींद सो
जाऊँगा।
4 तब मेरा दुश्मन कहेगा, “मैं उस पर ग़ालिब आ
गया हूँ!” और मेरे मुख़ालिफ़ शादियाना बजाएंगे कि
मैं हिल गया हूँ।

5 लेकिन मैं तेरी शफ़क़त पर भरोसा रखता हूँ, मेरा
दिल तेरी नजात देख कर ख़ुशी मनाएगा।
6 मैं रब की तम्जीद में गीत गाऊँगा, क्यूँकि उस ने
मुझ पर एहसान किया है।

बेदीन की हमाक़त

14 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
अहमक़ दिल में कहता है, “अल्लाह है ही नहीं!” ऐसे
लोग बदचलन हैं, उन की हरकतें क़ाबिल-ए-घिन हैं।
एक भी नहीं है जो अच्छा काम करे।
2 रब ने आसमान से इन्सान पर नज़र डाली ताकि
देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई अल्लाह
का तालिब है?
3 अफ़्सोस, सब सहीह राह से भटक गए, सब के
सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई करता हो,
एक भी नहीं।

4 क्या जो बदी करके मेरी क़ौम को रोटी की तरह
खा लेते हैं उन में से एक को भी समझ नहीं आती?
वह तो रब को पुकारते ही नहीं।

5 तब उन पर सख़्त दहशत छा गई, क्यूँकि अल्लाह
रास्तबाज़ की नस्ल के साथ है।
6 तुम नाचार के मन्सूबों को ख़ाक में मिलाना चाहते
हो, लेकिन रब ख़ुद उस की पनाहगाह है।

7 काश कोह-ए-सिय्यून से इस्राईल की नजात
निकले! जब रब अपनी क़ौम को बहाल करेगा तो
याक़ूब ख़ुशी के नारे लगाएगा, इस्राईल बाग़ बाग़
होगा।

कौन अल्लाह के हुज़ूर क़ाइम रह सकता है?

15 1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, कौन तेरे ख़ैमे में ठहर सकता है?
किस को तेरे मुक़द्दस पहाड़ पर रहने की इजाज़त है?
2 वह जिस का चाल-चलन बेगुनाह है, जो रास्तबाज़
ज़िन्दगी गुज़ार कर दिल से सच बोलता है।

3 ऐसा शख़्स अपनी ज़बान से किसी पर तुहमत नहीं
लगाता। न वह अपने पड़ोसी पर ज़ियादती करता, न
उस की बेइज़्ज़ती करता है।
4 वह मर्दूद को हक़ीर जानता लेकिन ख़ुदातरस
की इज़्ज़त करता है। जो वादा उस ने क़सम खा
कर किया उसे पूरा करता है, ख़्वाह उसे कितना ही
नुक़्सान क्यूँ न पहुँचे।
5 वह सूद लिए बग़ैर उधार देता है और उस की
रिश्वत क़बूल नहीं करता जो बेगुनाह का हक़ मारना
चाहता है। ऐसा शख़्स कभी डाँवाँडोल नहीं होगा।

एतिमाद की दुआ

16 1 दाऊद का एक सुनहरा ज़बूर।
ऐ अल्लाह, मुझे महफ़ूज़ रख, क्यूँकि तुझ
में मैं पनाह लेता हूँ।
2 मैं ने रब से कहा, "तू मेरा आक़ा है, तू ही मेरी
ख़ुशहाली का वाहिद सरचश्मा है।"
3 मुल्क में जो मुक़द्दसीन हैं वही मेरे सूरमे हैं, उन
ही को मैं पसन्द करता हूँ।
4 लेकिन जो दीगर माबूदों के पीछे भागे रहते हैं उन
की तक्लीफ़ बढ़ती जाएगी। न मैं उन की ख़ून की
क़ुर्बानियों को पेश करूँगा, न उन के नामों का ज़िक्र
तक करूँगा।

5 ऐ रब, तू मेरी मीरास और मेरा हिस्सा है। मेरा
नसीब तेरे हाथ में है।
6 जब क़ुरआ डाला गया तो मुझे ख़ुशगवार ज़मीन
मिल गई। यक़ीनन मेरी मीरास मुझे बहुत पसन्द है।
7 मैं रब की सताइश करूँगा जिस ने मुझे मश्वरा दिया
है। रात को भी मेरा दिल मेरी हिदायत करता है।
8 रब हर वक़्त मेरी आँखों के सामने रहता है। वह
मेरे दहने हाथ रहता है, इस लिए मैं नहीं डगमगाऊँगा।
9 इस लिए मेरा दिल शादमान है, मेरी जान ख़ुशी
के नारे लगाती है। हाँ, मेरा बदन पुरसुकून ज़िन्दगी
गुज़ारेगा।
10 क्यूँकि तू मेरी जान को पाताल में नहीं छोड़ेगा,
और न अपने मुक़द्दस को गलने सड़ने की नौबत तक
पहुँचने देगा।
11 तू मुझे ज़िन्दगी की राह से आगाह करता है।
तेरे हुज़ूर से भरपूर ख़ुशियाँ, तेरे दहने हाथ से अबदी
मसर्रतें हासिल होती हैं।

बेगुनाह शख़्स की दुआ

17 1 दाऊद की दुआ।
ऐ रब, इन्साफ़ के लिए मेरी फ़र्याद सुन,
मेरी आह-ओ-ज़ारी पर ध्यान दे। मेरी दुआ पर ग़ौर
कर, क्यूँकि वह फ़रेबदिह होंटों से नहीं निकलती।
2 तेरे हुज़ूर मेरा इन्साफ़ किया जाए, तेरी आँखें उन
बातों का मुशाहदा करें जो सच हैं।
3 तू ने मेरे दिल को जाँच लिया, रात को मेरा
मुआइना किया है। तू ने मुझे भट्टी में डाल दिया ताकि
नापाक चीज़ें दूर करे, गो ऐसी कोई चीज़ नहीं मिली।
क्यूँकि मैं ने पूरा इरादा कर लिया है कि मेरे मुँह से
बुरी बात नहीं निकलेगी।
4 जो कुछ भी दूसरे करते हैं मैं ने ख़ुद तेरे मुँह के
फ़रमान के ताबे रह कर अपने आप को ज़ालिमों की
राहों से दूर रखा है।
5 मैं क़दम-ब-क़दम तेरी राहों में रहा, मेरे पाँओ
कभी न डगमगाए।
6 ऐ अल्लाह, मैं तुझे पुकारता हूँ, क्यूँकि तू मेरी
सुनेगा। कान लगा कर मेरी दुआ को सुन।
7 तू जो अपने दहने हाथ से उन्हें रिहाई देता है जो
अपने मुख़ालिफ़ों से तुझ में पनाह लेते हैं, मोजिज़ाना
तौर पर अपनी शफ़क़त का इज़हार कर।
8 आँख की पुतली की तरह मेरी हिफ़ाज़त कर,
अपने परों के साय में मुझे छुपा ले।
9 उन बेदीनों से मुझे महफ़ूज़ रख जो मुझ पर
तबाहकुन हमले कर रहे हैं, उन दुश्मनों से जो मुझे
घेर कर मार डालने की कोशिश कर रहे हैं।
10 वह सरकश हो गए हैं, उन के मुँह घमंड की बातें
करते हैं।

11 जिधर भी हम क़दम उठाएँ वहाँ वह भी पहुँच
जाते हैं। अब उन्हों ने हमें घेर लिया है, वह घूर घूर
कर हमें ज़मीन पर पटख़ने का मौक़ा ढूँड रहे हैं।
12 वह उस शेरबबर की मानिन्द हैं जो शिकार को
फाड़ने के लिए तड़पता है, उस जवान शेर की मानिन्द
जो ताक में बैठा है।

13 ऐ रब, उठ और उन का सामना कर, उन्हें ज़मीन
पर पटख़ दे! अपनी तलवार से मेरी जान को बेदीनों
से बचा।
14 ऐ रब, अपने हाथ से मुझे इन से छुटकारा दे।
उन्हें तो इस दुनिया में अपना हिस्सा मिल चुका है।
क्यूँकि तू ने उन के पेट को अपने माल से भर दिया,
बल्कि उन के बेटे भी सेर हो गए हैं और इतना बाक़ी
है कि वह अपनी औलाद के लिए भी काफ़ी कुछ
छोड़ जाएंगे।
15 लेकिन मैं ख़ुद रास्तबाज़ साबित हो कर तेरे
चिहरे का मुशाहदा करूँगा, मैं जाग कर तेरी सूरत
से सेर हो जाऊँगा।

दाऊद का फ़त्ह का गीत

18 1 रब के ख़ादिम दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी
के राहनुमा के लिए। दाऊद ने रब के लिए
यह गीत गाया जब रब ने उसे तमाम दुश्मनों और
साऊल से बचाया। वह बोला,
ऐ रब मेरी क़ुव्वत, मैं तुझे प्यार करता हूँ।
2 रब मेरी चटान, मेरा क़िला और मेरा नजातदहिन्दा
है। मेरा ख़ुदा मेरी चटान है जिस में मैं पनाह लेता हूँ।
वह मेरी ढाल, मेरी नजात का पहाड़, मेरा बुलन्द
हिसार है।
3 मैं रब को पुकारता हूँ, उस की तम्जीद हो! तब
वह मुझे दुश्मनों से छुटकारा देता है।

4 मौत के रस्सों ने मुझे घेर लिया, हलाकत के
सैलाब ने मेरे दिल पर दहशत तारी की।
5 पाताल के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया, मौत ने मेरे
रास्ते में अपने फंदे डाल दिए।
6 जब मैं मुसीबत में फंस गया तो मैं ने रब को
पुकारा। मैं ने मदद के लिए अपने ख़ुदा से फ़र्याद की
तो उस ने अपनी सुकूनतगाह से मेरी आवाज़ सुनी,
मेरी चीख़ें उस के कान तक पहुँच गईं।

7 तब ज़मीन लरज़ उठी और थरथराने लगी, पहाड़ों
की बुन्यादें रब के ग़ज़ब के सामने काँपने और झूलने
लगीं।
8 उस की नाक से धुआँ निकल आया, उस के मुँह
से भस्म करने वाले शोले और दहकते कोएले भड़क
उठे।
9 आसमान को झुका कर वह नाज़िल हुआ। जब
उतर आया तो उस के पाँओ के नीचे अंधेरा ही अंधेरा
था।
10 वह करूबी फ़रिश्ते पर सवार हुआ और उड़ कर
हवा के परों पर मंडलाने लगा।
11 उस ने अंधेरे को अपनी छुपने की जगह बनाया,
बारिश के काले और घने बादल ख़ैमे की तरह अपने
गिर्दागिर्द लगाए।
12 उस के हुज़ूर की तेज़ रौशनी से उस के बादल
ओले और शोलाज़न कोएले ले कर निकल आए।
13 रब आसमान से कड़कने लगा, अल्लाह तआला
की आवाज़ गूँज उठी। तब ओले और शोलाज़न
कोएले बरसने लगे।
14 उस ने अपने तीर चलाए तो दुश्मन तित्तर-बित्तर
हो गए। उस की तेज़ बिजली इधर उधर गिरती गई
तो उन में हलचल मच गई।
15 ऐ रब, तू ने डाँटा तो समुन्दर की वादियाँ ज़ाहिर
हुईं, जब तू ग़ुस्से में गरजा तो तेरे दम के झोंकों से
ज़मीन की बुन्यादें नज़र आईं।

16 बुलन्दियों पर से अपना हाथ बढ़ा कर उस ने मुझे
पकड़ लिया, मुझे गहरे पानी में से खैंच कर निकाल
लाया।

17 उस ने मुझे मेरे ज़बरदस्त दुश्मन से बचाया, उन
से जो मुझ से नफ़रत करते हैं, जिन पर मैं ग़ालिब न
आ सका।
18 जिस दिन मैं मुसीबत में फंस गया उस दिन उन्हों
ने मुझ पर हम्ला किया, लेकिन रब मेरा सहारा बना
रहा।
19 उस ने मुझे तंग जगह से निकाल कर छुटकारा
दिया, क्यूँकि वह मुझ से ख़ुश था।
20 रब मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र देता है। मेरे हाथ
साफ़ हैं, इस लिए वह मुझे बरकत देता है।
21 क्यूँकि मैं रब की राहों पर चलता रहा हूँ, मैं बदी
करने से अपने ख़ुदा से दूर नहीं हुआ।
22 उस के तमाम अह्काम मेरे सामने रहे हैं, मैं ने
उस के फ़रमानों को रद्द नहीं किया।
23 उस के सामने ही मैं बेइल्ज़ाम रहा, गुनाह करने
से बाज़ रहा हूँ।
24 इस लिए रब ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र
दिया, क्यूँकि उस की आँखों के सामने ही में पाक-
साफ़ साबित हुआ।

25 ऐ अल्लाह, जो वफ़ादार है उस के साथ तेरा सुलूक
वफ़ादारी का है, जो बेइल्ज़ाम है उस के साथ तेरा
सुलूक बेइल्ज़ाम है।
26 जो पाक है उस के साथ तेरा सुलूक पाक है।
लेकिन जो कजरौ है उस के साथ तेरा सुलूक भी
कजरवी का है।
27 क्यूँकि तू पस्तहालों को नजात देता और मग़ुरूर
आँखों को पस्त करता है।

28 ऐ रब, तू ही मेरा चराग़ जलाता, मेरा ख़ुदा ही मेरे
अंधेरे को रौशन करता है।
29 क्यूँकि तेरे साथ मैं फ़ौजी दस्ते पर हम्ला कर
सकता, अपने ख़ुदा के साथ दीवार को फलाँग
सकता हूँ।
30 अल्लाह की राह कामिल है, रब का फ़रमान
ख़ालिस है। जो भी उस में पनाह ले उस की वह ढाल
है।
31 क्यूँकि रब के सिवा कौन ख़ुदा है? हमारे ख़ुदा
के सिवा कौन चटान है?
32 अल्लाह मुझे क़ुव्वत से कमरबस्ता करता, वह
मेरी राह को कामिल कर देता है।
33 वह मेरे पाँओ को हिरन की सी फुरती अता
करता, मुझे मज़बूती से मेरी बुलन्दियों पर खड़ा
करता है।
34 वह मेरे हाथों को जंग करने की तर्बियत देता है।
अब मेरे बाज़ू पीतल की कमान को भी तान लेते हैं।

35 ऐ रब, तू ने मुझे अपनी नजात की ढाल बख़्श
दी है। तेरे दहने हाथ ने मुझे क़ाइम रखा, तेरी नर्मी ने
मुझे बड़ा बना दिया है।
36 तू मेरे क़दमों के लिए रास्ता बना देता है, इस
लिए मेरे टख़ने नहीं डगमगाते।
37 मैं ने अपने दुश्मनों का ताक़्क़ुब करके उन्हें
पकड़ लिया, मैं बाज़ न आया जब तक वह ख़त्म
न हो गए।
38 मैं ने उन्हें यूँ पाश पाश कर दिया कि दुबारा उठ
न सके बल्कि गिर कर मेरे पाँओ तले पड़े रहे।
39 क्यूँकि तू ने मुझे जंग करने के लिए क़ुव्वत से
कमरबस्ता कर दिया, तू ने मेरे मुख़ालिफ़ों को मेरे
सामने झुका दिया।
40 तू ने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने से भगा दिया,
और मैं ने नफ़रत करने वालों को तबाह कर दिया।
41 वह मदद के लिए चीख़ते चिल्लाते रहे, लेकिन
बचाने वाला कोई नहीं था। वह रब को पुकारते रहे,
लेकिन उस ने जवाब न दिया।
42 मैं ने उन्हें चूर चूर करके गर्द की तरह हवा में
उड़ा दिया। मैं ने उन्हें कचरे की तरह गली में फैंक
दिया।

43 तू ने मुझे क़ौम के झगड़ों से बचा कर अक़्वाम
का सरदार बना दिया है। जिस क़ौम से मैं नावाक़िफ़
था वह मेरी ख़िदमत करती है।
44 जूँ ही मैं बात करता हूँ तो लोग मेरी सुनते हैं।
परदेसी दबक कर मेरी ख़ुशामद करते हैं।
45 वह हिम्मत हार कर काँपते हुए अपने क़िलों से
निकल आते हैं।

46 रब ज़िन्दा है! मेरी चटान की तम्जीद हो! मेरी
नजात के ख़ुदा की ताज़ीम हो!
47 वही ख़ुदा है जो मेरा इन्तिक़ाम लेता, अक़्वाम
को मेरे ताबे कर देता
48 और मुझे मेरे दुश्मनों से छुटकारा देता है।
यक़ीनन तू मुझे मेरे मुख़ालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता,
मुझे ज़ालिमों से बचाए रखता है।
49 ऐ रब, इस लिए मैं अक़्वाम में तेरी हम्द-ओ-सना
करूँगा, तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।
50 क्यूँकि रब अपने बादशाह को बड़ी नजात देता
है, वह अपने मसह किए हुए बादशाह दाऊद और
उस की औलाद पर हमेशा तक मेहरबान रहेगा।

मख़्लूक़ात में अल्लाह का जलाल

19 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
आसमान अल्लाह के जलाल का एलान करते हैं,
आसमानी गुम्बद उस के हाथों का काम बयान करता
है।
2 एक दिन दूसरे को इत्तिला देता, एक रात दूसरी
को ख़बर पहुँचाती है,
3 लेकिन ज़बान से नहीं। गो उन की आवाज़ सुनाई
नहीं देती,
4 तो भी उन की आवाज़ निकल कर पूरी दुनिया में
सुनाई देती, उन के अल्फ़ाज़ दुनिया की इन्तिहा तक
पहुँच जाते हैं। वहाँ अल्लाह ने आफ़ताब के लिए ख़ैमा
लगाया है।
5 जिस तरह दूल्हा अपनी ख़्वाबगाह से निकलता
है उसी तरह सूरज निकल कर पहलवान की तरह
अपनी दौड़ दौड़ने पर ख़ुशी मनाता है।
6 आसमान के एक सिरे से चढ़ कर उस का चक्कर
दूसरे सिरे तक लगता है। उस की तपती गर्मी से कोई
भी चीज़ पोशीदा नहीं रहती।

7 रब की शरीअत कामिल है, उस से जान में जान
आ जाती है। रब के अह्काम क़ाबिल-ए-एतिमाद हैं,
उन से सादालौह दानिशमन्द हो जाता है।
8 रब की हिदायात बा-इन्साफ़ हैं, उन से दिल बाग़
बाग़ हो जाता है। रब के अह्काम पाक हैं, उन से
आँखें चमक उठती हैं।
9 रब का ख़ौफ़ पाक है और अबद तक क़ाइम
रहेगा। रब के फ़रमान सच्चे और सब के सब रास्त
हैं।
10 वह सोने बल्कि ख़ालिस सोने के ढेर से ज़्यादा
मर्ग़ूब हैं। वह शहद बल्कि छत्ते के ताज़ा शहद से
ज़्यादा मीठे हैं।

11 उन से तेरे ख़ादिम को आगाह किया जाता है,
उन पर अमल करने से बड़ा अज्र मिलता है।
12 जो ख़ताएँ बेख़बरी में सरज़द हुईं कौन उन्हें
जानता है? मेरे पोशीदा गुनाहों को मुआफ़ कर!
13 अपने ख़ादिम को गुस्ताख़ों से मह्फ़ूज़ रख ताकि
वह मुझ पर हुकूमत न करें। तब मैं बेइल्ज़ाम हो कर
संगीन गुनाह से पाक रहूँगा।

14 ऐ रब, बख़्श दे कि मेरे मुँह की बातें और मेरे
दिल की सोच-बिचार तुझे पसन्द आए। तू ही मेरी
चटान और मेरा छुड़ाने वाला है।

फ़त्ह के लिए दुआ

20 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।

मुसीबत के दिन रब तेरी सुने, याक़ूब के ख़ुदा का
नाम तुझे महफ़ूज़ रखे।
2 वह मक़्दिस से तेरी मदद भेजे, वह सिय्यून से तेरा
सहारा बने।
3 वह तेरी ग़ल्ला की नज़रें याद करे, तेरी भस्म होने
वाली क़ुर्बानियाँ क़बूल फ़रमाए। (सिलाह)
4 वह तेरे दिल की आर्ज़ू पूरी करे, तेरे तमाम मन्सूबों
को कामयाबी बख़्शे।
5 तब हम तेरी नजात की ख़ुशी मनाएँगे, हम अपने
ख़ुदा के नाम में फ़त्ह का झंडा गाड़ेंगे। रब तेरी तमाम
गुज़ारिशें पूरी करे।

6 अब मैं ने जान लिया है कि रब अपने मसह किए
हुए बादशाह की मदद करता है। वह अपने मुक़द्दस
आसमान से उस की सुन कर अपने दहने हाथ की
क़ुदरत से उसे छुटकारा देगा।
7 बाज़ अपने रथों पर, बाज़ अपने घोड़ों पर फ़ख़र
करते हैं, लेकिन हम रब अपने ख़ुदा के नाम पर फ़ख़र
करेंगे।
8 हमारे दुश्मन झुक कर गिर जाएंगे, लेकिन हम उठ
कर मज़बूती से खड़े रहेंगे।

9 ऐ रब, हमारी मदद फ़रमा! बादशाह हमारी सुने
जब हम मदद के लिए पुकारें।

बादशाह के लिए अल्लाह की मदद

21 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
ऐ रब, बादशाह तेरी क़ुव्वत देख कर शादमान है,
वह तेरी नजात की कितनी बड़ी ख़ुशी मनाता है।
2 तू ने उस की दिली ख़्वाहिश पूरी की और इन्कार
न किया जब उस की आर्ज़ू ने होंटों पर अल्फ़ाज़ का
रूप धारा। (सिलाह)
3 क्यूँकि तू अच्छी अच्छी बरकतें अपने साथ ले
कर उस से मिलने आया, तू ने उसे ख़ालिस सोने का
ताज पहनाया।
4 उस ने तुझ से ज़िन्दगी पाने की आर्ज़ू की तो तू ने
उसे उम्र की दराज़ी बख़्शी, मज़ीद इतने दिन कि उन
की इन्तिहा नहीं।
5 तेरी नजात से उसे बड़ी इज़्ज़त हासिल हुई, तू ने
उसे शान-ओ-शौकत से आरास्ता किया।
6 क्यूँकि तू उसे अबद तक बरकत देता, उसे अपने
चिहरे के हुज़ूर ला कर निहायत ख़ुश कर देता है।
7 क्यूँकि बादशाह रब पर एतिमाद करता है, अल्लाह
तआला की शफ़क़त उसे डगमगाने से बचाएगी।

8 तेरे दुश्मन तेरे क़ब्ज़े में आ जाएंगे, जो तुझ से
नफ़रत करते हैं उन्हें तेरा दहना हाथ पकड़ लेगा।
9 जब तू उन पर ज़ाहिर होगा तो वह भड़कती भट्टी
की सी मुसीबत में फंस जाएंगे। रब अपने ग़ज़ब में
उन्हें हड़प कर लेगा, और आग उन्हें खा जाएगी।
10 तू उन की औलाद को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा
डालेगा, इन्सानों में उन का नाम-ओ-निशान तक नहीं
रहेगा।
11 गो वह तेरे ख़िलाफ़ साज़िशें करते हैं तो भी उन
के बुरे मन्सूबे नाकाम रहेंगे।
12 क्यूँकि तू उन्हें भगा कर उन के चिहरों को अपने
तीरों का निशाना बना देगा।
13 ऐ रब, उठ और अपनी क़ुदरत का इज़हार कर
ताकि हम तेरी क़ुदरत की तम्जीद में साज़ बजा कर
गीत गाएँ।

रास्तबाज़ का दुख

22 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तर्ज़ : तुलू-ए-सुब्ह की हिरनी।
ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तू ने मुझे क्यूँ तर्क कर
दिया है? मैं चीख़ रहा हूँ, लेकिन मेरी नजात नज़र
नहीं आती।
2 ऐ मेरे ख़ुदा, दिन को मैं चिल्लाता हूँ, लेकिन तू
जवाब नहीं देता। रात को पुकारता हूँ, लेकिन आराम
नहीं पाता।

3 लेकिन तू क़ुद्दूस है, तू जो इस्राईल की मद्हसराई
पर तख़्तनशीन होता है।
4 तुझ पर हमारे बापदादा ने भरोसा रखा, और जब
भरोसा रखा तो तू ने उन्हें रिहाई दी।
5 जब उन्हों ने मदद के लिए तुझे पुकारा तो बचने
का रास्ता खुल गया। जब उन्हों ने तुझ पर एतिमाद
किया तो शर्मिन्दा न हुए।

6 लेकिन मैं कीड़ा हूँ, मुझे इन्सान नहीं समझा
जाता। लोग मेरी बेइज़्ज़ती करते, मुझे हक़ीर जानते
हैं।
7 सब मुझे देख कर मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं। वह मुँह
बना कर तौबा तौबा करते और कहते हैं,
8 "उस ने अपना मुआमला रब के सपुर्द किया है।
अब रब ही उसे बचाए। वही उसे छुटकारा दे, क्यूँकि
वही उस से ख़ुश है।"

9 यक़ीनन तू मुझे माँ के पेट से निकाल लाया। मैं
अभी माँ का दूध पीता था कि तू ने मेरे दिल में भरोसा
पैदा किया।
10 जूँ ही मैं पैदा हुआ मुझे तुझ पर छोड़ दिया गया।
माँ के पेट से ही तू मेरा ख़ुदा रहा है।
11 मुझ से दूर न रह। क्यूँकि मुसीबत ने मेरा दामन
पकड़ लिया है, और कोई नहीं जो मेरी मदद करे।
12 मुतअद्दिद बैलों ने मुझे घेर लिया, बसन के
ताक़तवर साँड चारों तरफ़ जमा हो गए हैं।
13 मेरे ख़िलाफ़ उन्हों ने अपने मुँह खोल दिए हैं, उस
दहाड़ते हुए शेरबबर की तरह जो शिकार को फाड़ने
के जोश में आ गया है।
14 मुझे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेला गया है,
मेरी तमाम हड्डियाँ अलग अलग हो गई हैं, जिस्म के
अन्दर मेरा दिल मोम की तरह पिघल गया है।
15 मेरी ताक़त ठीकरे की तरह ख़ुश्क हो गई, मेरी
ज़बान तालू से चिपक गई है। हाँ, तू ने मुझे मौत की
ख़ाक में लिटा दिया है।
16 कुत्तों ने मुझे घेर रखा, शरीरों के जथ्थे ने मेरा
इहाता किया है। उन्हों ने मेरे हाथों और पाँओ को
छेद डाला है।
17 मैं अपनी हड्डियों को गिन सकता हूँ। लोग घूर
घूर कर मेरी मुसीबत से ख़ुश होते हैं।
18 वह आपस में मेरे कपड़े बाँट लेते और मेरे
लिबास पर क़ुरआ डालते हैं।

19 लेकिन तू ऐ रब, दूर न रह! ऐ मेरी क़ुव्वत, मेरी
मदद करने के लिए जल्दी कर!
20 मेरी जान को तलवार से बचा, मेरी ज़िन्दगी को
कुत्ते के पंजे से छुड़ा।
21 शेर के मुँह से मुझे मख़्लसी दे, जंगली बैलों के
सींगों से रिहाई अता कर।

ऐ रब, तू ने मेरी सुनी है!
22 मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का एलान
करूँगा, जमाअत के दरमियान तेरी मद्हसराई
करूँगा।
23 तुम जो रब का ख़ौफ़ मानते हो, उस की तम्जीद
करो! ऐ याक़ूब की तमाम औलाद, उस का एहतिराम
कर! ऐ इस्राईल के तमाम फ़र्ज़न्दो, उस से ख़ौफ़
खाओ!
24 क्यूँकि न उस ने मुसीबतज़दा का दुख हक़ीर
जाना, न उस की तक्लीफ़ से घिन खाई। उस ने अपना
मुँह उस से न छुपाया बल्कि उस की सुनी जब वह
मदद के लिए चीख़ने-चिल्लाने लगा।
25 ऐ ख़ुदा, बड़े इजतिमा में मैं तेरी सताइश करूँगा,
ख़ुदातरसों के सामने अपनी मन्नत पूरी करूँगा।
26 नाचार जी भर कर खाएँगे, रब के तालिब उस की
हम्द-ओ-सना करेंगे। तुम्हारे दिल अबद तक ज़िन्दा
रहें!
27 लोग दुनिया की इन्तिहा तक रब को याद करके
उस की तरफ़ रुजू करेंगे। ग़ैरअक़्वाम के तमाम
ख़ानदान उसे सिज्दा करेंगे।

28 क्यूँकि रब को ही बादशाही का इख़तियार
हासिल है, वही अक़्वाम पर हुकूमत करता है।

29 दुनिया के तमाम बड़े लोग उस के हुज़ूर खाएँगे
और सिज्दा करेंगे। ख़ाक में उतरने वाले सब उस के
सामने झुक जाएंगे, वह सब जो अपनी ज़िन्दगी को
ख़ुद क़ाइम नहीं रख सकते।
30 उस के फ़र्ज़न्द उस की ख़िदमत करेंगे। एक आने
वाली नस्ल को रब के बारे में सुनाया जाएगा।
31 हाँ, वह आ कर उस की रास्ती एक क़ौम को
सुनाएँगे जो अभी पैदा नहीं हुई, क्यूँकि उस ने यह
कुछ किया है।

अच्छा चरवाहा

23 1 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरा चरवाहा है, मुझे कमी न होगी।
2 वह मुझे शादाब चरागाहों में चराता और पुरसुकून
चश्मों के पास ले जाता है।
3 वह मेरी जान को ताज़ादम करता और अपने नाम
की ख़ातिर रास्ती की राहों पर मेरी क़ियादत करता
है।
4 गो मैं तारीकतरीन वादी में से गुज़रूँ मैं मुसीबत
से नहीं डरूँगा, क्यूँकि तू मेरे साथ है, तेरी लाठी और
तेरा असा मुझे तसल्ली देते हैं।

5 तू मेरे दुश्मनों के रू-ब-रू मेरे सामने मेज़ बिछा
कर मेरे सर को तेल से तर-ओ-ताज़ा करता है। मेरा
प्याला तेरी बरकत से छलक उठता है।
6 यक़ीनन भलाई और शफ़क़त उम्र भर मेरे साथ
साथ रहेंगी, और मैं जीते जी रब के घर में सुकूनत
करूँगा।

बादशाह का इस्तिक़्बाल

24 1 दाऊद का ज़बूर।
ज़मीन और जो कुछ उस पर है रब का
है, दुनिया और उस के बाशिन्दे उसी के हैं। 2 क्यूँकि
उस ने ज़मीन की बुन्याद समुन्दरों पर रखी और उसे
दरयाओं पर क़ाइम किया।

3 किस को रब के पहाड़ पर चढ़ने की इजाज़त है?
कौन उस के मुक़द्दस मक़ाम में खड़ा हो सकता है?
4 वह जिस के हाथ पाक और दिल साफ़ हैं, जो न
फ़रेब का इरादा रखता, न क़सम खा कर झूट बोलता
है।
5 वह रब से बरकत पाएगा, उसे अपनी नजात के
ख़ुदा से रास्ती मिलेगी।
6 यह होगा उन लोगों का हाल जो अल्लाह की मर्ज़ी
दरयाफ़्त करते, जो तेरे चिहरे के तालिब होते हैं, ऐ
याक़ूब के ख़ुदा। (सिलाह)

7 ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ क़दीम दरवाज़ो, पूरे
तौर पर खुल जाओ ताकि जलाल का बादशाह
दाख़िल हो जाए।
8 जलाल का बादशाह कौन है? रब जो क़वी और
क़ादिर है, रब जो जंग में ज़ोरावर है।
9 ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ क़दीम दरवाज़ो, पूरे
तौर पर खुल जाओ ताकि जलाल का बादशाह
दाख़िल हो जाए।
10 जलाल का बादशाह कौन है? रब्ब-उल-
अफ़्वाज, वही जलाल का बादशाह है। (सिलाह)

मुआफ़ी और राहनुमाई के लिए दुआ

25 1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं तेरा आरज़ूमन्द हूँ।
2 ऐ मेरे ख़ुदा, तुझ पर मैं भरोसा रखता हूँ। मुझे
शर्मिन्दा न होने दे कि मेरे दुश्मन मुझ पर शादियाना
बजाएँ।
3 क्यूँकि जो भी तुझ पर उम्मीद रखे वह शर्मिन्दा
नहीं होगा जबकि जो बिलावजह बेवफ़ा होते हैं वही
शर्मिन्दा हो जाएंगे।

4 ऐ रब, अपनी राहें मुझे दिखा, मुझे अपने रास्तों
की तालीम दे।
5 अपनी सच्चाई के मुताबिक़ मेरी राहनुमाई कर,
मुझे तालीम दे। क्यूँकि तू मेरी नजात का ख़ुदा है।
दिन भर मैं तेरे इन्तिज़ार में रहता हूँ।
6 ऐ रब, अपना वह रहम और मेहरबानी याद कर
जो तू क़दीम ज़माने से करता आया है।
7 ऐ रब, मेरी जवानी के गुनाहों और मेरी बेवफ़ा
हरकतों को याद न कर बल्कि अपनी भलाई की
ख़ातिर और अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरा ख़याल
रख।

8 रब भला और आदिल है, इस लिए वह गुनाहगारों
को सहीह राह पर चलने की तल्क़ीन करता है।
9 वह फ़रोतनों की इन्साफ़ की राह पर राहनुमाई
करता, हलीमों को अपनी राह की तालीम देता है।
10 जो रब के अह्द और अह्काम के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारें उन्हें रब मेहरबानी और वफ़ादारी की
राहों पर ले चलता है।
11 ऐ रब, मेरा क़ुसूर संगीन है, लेकिन अपने नाम
की ख़ातिर उसे मुआफ़ कर।
12 रब का ख़ौफ़ मानने वाला कहाँ है? रब ख़ुद उसे
उस राह की तालीम देगा जो उसे चुनना है।
13 तब वह ख़ुशहाल रहेगा, और उस की औलाद
मुल्क को मीरास में पाएगी।
14 जो रब का ख़ौफ़ मानें उन्हें वह अपने हमराज़
बना कर अपने अह्द की तालीम देता है।

15 मेरी आँखें रब को तकती रहती हैं, क्यूँकि वही
मेरे पाँओ को जाल से निकाल लेता है।
16 मेरी तरफ़ माइल हो जा, मुझ पर मेहरबानी कर!
क्यूँकि मैं तन्हा और मुसीबतज़दा हूँ।
17 मेरे दिल की परेशानियाँ दूर कर, मुझे मेरी
तकालीफ़ से रिहाई दे।
18 मेरी मुसीबत और तंगी पर नज़र डाल कर मेरी
ख़ताओं को मुआफ़ कर।
19 देख, मेरे दुश्मन कितने ज़्यादा हैं, वह कितना
ज़ुल्म करके मुझ से नफ़रत करते हैं।
20 मेरी जान को महफ़ूज़ रख, मुझे बचा! मुझे
शर्मिन्दा न होने दे, क्यूँकि मैं तुझ में पनाह लेता हूँ।
21 बेगुनाही और दयानतदारी मेरी पहरादारी करें,
क्यूँकि मैं तेरे इन्तिज़ार में रहता हूँ।
22 ऐ अल्लाह, फ़िद्या दे कर इस्राईल को उस की
तमाम तकालीफ़ से आज़ाद कर!

बेगुनाह का इक़्रार और इल्तिजा

26 1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मेरा इन्साफ़ कर, क्यूँकि मेरा
चाल-चलन बेक़ुसूर है। मैं ने रब पर भरोसा रखा है,
और मैं डाँवाँडोल नहीं हो जाऊँगा।

2 ऐ रब, मुझे जाँच ले, मुझे आज़मा कर दिल की
तह तक मेरा मुआइना कर।
3 क्यूँकि तेरी शफ़क़त मेरी आँखों के सामने रही है,
मैं तेरी सच्ची राह पर चलता रहा हूँ।
4 न मैं धोकेबाज़ों की मजलिस में बैठता, न चालाक
लोगों से रिफ़ाक़त रखता हूँ।
5 मुझे शरीरों के इजतिमाओं से नफ़रत है, बेदीनों
के साथ मैं बैठता भी नहीं।
6 ऐ रब, मैं अपने हाथ धो कर अपनी बेगुनाही का
इज़हार करता हूँ। मैं तेरी क़ुर्बानगाह के गिर्द फिर कर
7 बुलन्द आवाज़ से तेरी हम्द-ओ-सना करता, तेरे
तमाम मोजिज़ात का एलान करता हूँ।
8 ऐ रब, तेरी सुकूनतगाह मुझे प्यारी है, जिस जगह
तेरा जलाल ठहरता है वह मुझे अज़ीज़ है।

9 मेरी जान को मुझ से छीन कर मुझे गुनाहगारों
में शामिल न कर! मेरी ज़िन्दगी को मिटा कर मुझे
ख़ूँख़्वारों में शुमार न कर,
10 ऐसे लोगों में जिन के हाथ शर्मनाक हरकतों से
आलूदा हैं, जो हर वक़्त रिश्वत खाते हैं।

11 क्यूँकि मैं बेगुनाह ज़िन्दगी गुज़ारता हूँ। फ़िद्या दे
कर मुझे छुटकारा दे! मुझ पर मेहरबानी कर!

12 मेरे पाँओ हमवार ज़मीन पर क़ाइम हो गए हैं,
और मैं इजतिमाओं में रब की सताइश करूँगा।

अल्लाह से रिफ़ाक़त

27 1 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरी रौशनी और मेरी नजात है, मैं
किस से डरूँ? रब मेरी जान की पनाहगाह है, मैं
किस से दह्शत खाऊँ?
2 जब शरीर मुझ पर हम्ला करें ताकि मुझे हड़प कर
लें, जब मेरे मुख़ालिफ़ और दुश्मन मुझ पर टूट पड़ें
तो वह ठोकर खा कर गिर जाएंगे।
3 गो फ़ौज मुझे घेर ले मेरा दिल ख़ौफ़ नहीं खाएगा,
गो मेरे ख़िलाफ़ जंग छिड़ जाए मेरा भरोसा क़ाइम
रहेगा।

4 रब से मेरी एक गुज़ारिश है, मैं एक ही बात चाहता
हूँ। यह कि जीते जी रब के घर में रह कर उस
की शफ़क़त से लुत्फ़अन्दोज़ हो सकूँ, कि उस की
सुकूनतगाह में ठहर कर महव-ए-ख़याल रह सकूँ।
5 क्यूँकि मुसीबत के दिन वह मुझे अपनी
सुकूनतगाह में पनाह देगा, मुझे अपने ख़ैमे में छुपा
लेगा, मुझे उठा कर ऊँची चटान पर रखेगा।
6 अब मैं अपने दुश्मनों पर सरबुलन्द हूँगा, अगरचे
उन्हों ने मुझे घेर रखा है। मैं उस के ख़ैमे में ख़ुशी के
नारे लगा कर क़ुर्बानियाँ पेश करूँगा, साज़ बजा कर
रब की मद्हसराई करूँगा।

7 ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन जब मैं तुझे पुकारूँ, मुझ
पर मेहरबानी करके मेरी सुन।
8 मेरा दिल तुझे याद दिलाता है कि तू ने ख़ुद
फ़रमाया, "मेरे चिहरे के तालिब रहो!" ऐ रब, मैं तेरे
ही चिहरे का तालिब रहा हूँ।
9 अपने चिहरे को मुझ से छुपाए न रख, अपने
ख़ादिम को ग़ुस्से से अपने हुज़ूर से न निकाल। क्यूँकि
तू ही मेरा सहारा रहा है। ऐ मेरी नजात के ख़ुदा, मुझे
न छोड़, मुझे तर्क न कर।
10 क्यूँकि मेरे माँ-बाप ने मुझे तर्क कर दिया है,
लेकिन रब मुझे क़बूल करके अपने घर में लाएगा।
11 ऐ रब, मुझे अपनी राह की तर्बियत दे, हमवार
रास्ते पर मेरी राहनुमाई कर ताकि अपने दुश्मनों से
मह्फ़ूज़ रहूँ।
12 मुझे मुख़ालिफ़ों के लालच में न आने दे, क्यूँकि
झूटे गवाह मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं जो तशद्दुद
करने के लिए तय्यार हैं।
13 लेकिन मेरा पूरा ईमान यह है कि मैं ज़िन्दों के
मुल्क में रह कर रब की भलाई देखूँगा।

14 रब के इन्तिज़ार में रह! मज़बूत और दिलेर हो,
और रब के इन्तिज़ार में रह!

मदद के लिए दुआ और जवाब के लिए शुक्रगुज़ारी

28 1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं तुझे पुकारता हूँ। ऐ मेरी चटान,
ख़ामोशी से अपना मुँह मुझ से न फेर। क्यूँकि अगर तू
चुप रहे तो मैं मौत के गढ़े में उतरने वालों की मानिन्द
हो जाऊँगा।
2 मेरी इल्तिजाएँ सुन जब मैं चीख़ते चिल्लाते तुझ से
मदद माँगता हूँ, जब मैं अपने हाथ तेरी सुकूनतगाह
के मुक़द्दसतरीन कमरे की तरफ़ उठाता हूँ।
3 मुझे उन बेदीनों के साथ घसीट कर सज़ा न दे जो
ग़लत काम करते हैं, जो अपने पड़ोसियों से बज़ाहिर
दोस्ताना बातें करते, लेकिन दिल में उन के ख़िलाफ़
बुरे मन्सूबे बांधते हैं।
4 उन्हें उन की हरकतों और बुरे कामों का बदला
दे। जो कुछ उन के हाथों से सरज़द हुआ है उस की
पूरी सज़ा दे। उन्हें उतना ही नुक़्सान पहुँचा दे जितना
उन्हों ने दूसरों को पहुँचाया है।

5 क्यूँकि न वह रब के आमाल पर, न उस के हाथों
के काम पर तवज्जुह देते हैं। अल्लाह उन्हें ढा देगा
और दुबारा कभी तामीर नहीं करेगा।

6 रब की तम्जीद हो, क्यूँकि उस ने मेरी इल्तिजा
सुन ली।
7 रब मेरी क़ुव्वत और मेरी ढाल है। उस पर मेरे
दिल ने भरोसा रखा, उस से मुझे मदद मिली है। मेरा
दिल शादियाना बजाता है, मैं गीत गा कर उस की
सताइश करता हूँ।
8 रब अपनी क़ौम की क़ुव्वत और अपने मसह
किए हुए ख़ादिम का नजातबख़्श क़िला है।
9 ऐ रब, अपनी क़ौम को नजात दे! अपनी मीरास
को बरकत दे! उन की गल्लाबानी करके उन्हें हमेशा
तक उठाए रख।

रब के जलाल की तम्जीद

29 1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ अल्लाह के फ़र्ज़न्दो, रब की तम्जीद
करो! रब के जलाल और क़ुदरत की सताइश करो!
2 रब के नाम को जलाल दो। मुक़द्दस लिबास से
आरास्ता हो कर रब को सिज्दा करो।
3 रब की आवाज़ समुन्दर के ऊपर गूँजती है।
जलाल का ख़ुदा गरजता है, रब गहरे पानी के ऊपर
गरजता है।
4 रब की आवाज़ ज़ोरदार है, रब की आवाज़
पुरजलाल है।
5 रब की आवाज़ देवदार के दरख़्तों को तोड़
डालती है, रब लुबनान के देवदार के दरख़्तों को
टुकड़े टुकड़े कर देता है।
6 वह लुबनान को बछड़े और कोह-ए-सिर्यून [n]को
जंगली बैल के बच्चे की तरह कूदने फाँदने देता है।
7 रब की आवाज़ आग के शोले भड़का देती है।
8 रब की आवाज़ रेगिस्तान को हिला देती है, रब
दश्त-ए-क़ादिस को काँपने देता है।
9 रब की आवाज़ सुन कर हिरनी दर्द-ए-ज़ह में
मुब्तला हो जाती और जंगलों के पत्ते झड़ जाते
हैं। लेकिन उस की सुकूनतगाह में सब पुकारते हैं,
“जलाल!”
10 रब सैलाब के ऊपर तख़्तनशीन है, रब बादशाह
की हैसियत से अबद तक तख़्तनशीन है।
11 रब अपनी क़ौम को तक़वियत देगा, रब अपने
लोगों को सलामती की बरकत देगा।

मौत से छुटकारे पर शुक्रगुज़ारी

30 1 दाऊद का ज़बूर। रब के घर की
मख़्सूसियत के मौक़े पर गीत।
ऐ रब, मैं तेरी सताइश करता हूँ, क्यूँकि तू ने मुझे
गहराइयों में से खैंच निकाला। तू ने मेरे दुश्मनों को
मुझ पर बग़लें बजाने का मौक़ा नहीं दिया।
2 ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं ने चीख़ते चिल्लाते हुए तुझ से
मदद माँगी, और तू ने मुझे शिफ़ा दी।
3 ऐ रब, तू मेरी जान को पाताल से निकाल लाया,
तू ने मेरी जान को मौत के गढ़े में उतरने से बचाया
है।
4 ऐ ईमानदारो, साज़ बजा कर रब की तारीफ़ में
गीत गाओ। उस के मुक़द्दस नाम की हम्द-ओ-सना
करो।
5 क्यूँकि वह लम्हा भर के लिए ग़ुस्से होता, लेकिन
ज़िन्दगी भर के लिए मेहरबानी करता है। गो शाम को
रोना पड़े, लेकिन सुब्ह को हम ख़ुशी मनाएँगे।

6 जब हालात पुरसुकून थे तो मैं बोला, “मैं कभी
नहीं डगमगाऊँगा।”
7 ऐ रब, जब तू मुझ से ख़ुश था तो तू ने मुझे मज़बूत
पहाड़ पर रख दिया। लेकिन जब तू ने अपना चिहरा
मुझ से छुपा लिया तो मैं सख़्त घबरा गया।

---

[n]सिर्यून हर्मून का दूसरा नाम है।

8 ऐ रब, मैं ने तुझे पुकारा, हाँ ख़ुदावन्द से मैं ने
इल्तिजा की,
9 “क्या फ़ाइदा है अगर मैं हलाक हो कर मौत के
गढ़े में उतर जाऊँ? क्या ख़ाक तेरी सताइश करेगी?
क्या वह लोगों को तेरी वफ़ादारी के बारे में बताएगी?
10 ऐ रब, मेरी सुन, मुझ पर मेहरबानी कर। ऐ रब,
मेरी मदद करने के लिए आ!”

11 तू ने मेरा मातम ख़ुशी के नाच में बदल दिया,
तू ने मेरे मातमी कपड़े उतार कर मुझे शादमानी से
मुलब्बस किया।
12 क्यूँकि तू चाहता है कि मेरी जान ख़ामोश न हो
बल्कि गीत गा कर तेरी तम्जीद करती रहे। ऐ रब मेरे
ख़ुदा, मैं अबद तक तेरी हम्द-ओ-सना करूँगा।

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

31 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
ऐ रब, मैं ने तुझ में पनाह ली है। मुझे कभी शर्मिन्दा
न होने दे बल्कि अपनी रास्ती के मुताबिक़ मुझे बचा!
2 अपना कान मेरी तरफ़ झुका, जल्द ही मुझे
छुटकारा दे। चटान का मेरा बुर्ज हो, पहाड़ का क़िला
जिस में मैं पनाह ले कर नजात पा सकूँ।

3 क्यूँकि तू मेरी चटान, मेरा क़िला है, अपने नाम
की ख़ातिर मेरी राहनुमाई, मेरी क़ियादत कर।
4 मुझे उस जाल से निकाल दे जो मुझे पकड़ने के
लिए चुपके से बिछाया गया है। क्यूँकि तू ही मेरी
पनाहगाह है।
5 मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ। ऐ रब, ऐ
वफ़ादार ख़ुदा, तू ने फ़िद्या दे कर मुझे छुड़ाया है!

6 मैं उन से नफ़रत रखता हूँ जो बेकार बुतों से लिपटे
रहते हैं। मैं तो रब पर भरोसा रखता हूँ।
7 मैं बाग़ बाग़ हूँगा और तेरी शफ़क़त की ख़ुशी
मनाऊँगा, क्यूँकि तू ने मेरी मुसीबत देख कर मेरी
जान की परेशानी का ख़याल किया है।
8 तू ने मुझे दुश्मन के हवाले नहीं किया बल्कि मेरे
पाँओ को खुले मैदान में क़ाइम कर दिया है।

9 ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्यूँकि मैं मुसीबत
में हूँ। ग़म के मारे मेरी आँखें सूज गई हैं, मेरी जान
और जिस्म गल रहे हैं।
10 मेरी ज़िन्दगी दुख की चक्की में पिस रही है, मेरे
साल आहें भरते भरते ज़ाए हो रहे हैं। मेरे क़ुसूर की
वजह से मेरी ताक़त जवाब दे गई, मेरी हड्डियाँ गलने
सड़ने लगी हैं।
11 मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन
गया हूँ बल्कि मेरे हमसाय भी मुझे लान-तान करते,
मेरे जानने वाले मुझ से दहशत खाते हैं। गली में जो
भी मुझे देखे मुझ से भाग जाता है।
12 मैं मुर्दों की मानिन्द उन की याददाश्त से मिट
गया हूँ, मुझे ठीकरे की तरह फैंक दिया गया है।
13 बहुतों की अफ़्वाहें मुझ तक पहुँच गई हैं, चारों
तरफ़ से हौलनाक ख़बरें मिल रही हैं। वह मिल कर
मेरे ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे, मुझे क़त्ल करने के
मन्सूबे बांध रहे हैं।

14 लेकिन मैं ऐ रब, तुझ पर भरोसा रखता हूँ। मैं
कहता हूँ, “तू मेरा ख़ुदा है!”
15 मेरी तक़्दीर [o]तेरे हाथ में है। मुझे मेरे दुश्मनों के
हाथ से बचा, उन से जो मेरे पीछे पड़ गए हैं।
16 अपने चिहरे का नूर अपने ख़ादिम पर चमका,
अपनी मेहरबानी से मुझे नजात दे।
17 ऐ रब, मुझे शर्मिन्दा न होने दे, क्यूँकि मैं ने तुझे
पुकारा है। मेरे बजाय बेदीनों के मुँह काले हो जाएँ,
वह पाताल में उतर कर चुप हो जाएँ।

---

[o]लफ़्ज़ी तर्जुमा : मेरे औक़ात।

18 उन के फ़रेबदिह होंट बन्द हो जाएँ, क्यूँकि वह
तकब्बुर और हिक़ारत से रास्तबाज़ के ख़िलाफ़ कुफ़्र
बकते हैं।

19 तेरी भलाई कितनी अज़ीम है! तू उसे उन के लिए
तय्यार रखता है जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं, उसे उन्हें
दिखाता है जो इन्सानों के सामने से तुझ में पनाह
लेते हैं।
20 तू उन्हें अपने चिहरे की आड़ में लोगों के हम्लों से
छुपा लेता, उन्हें ख़ैमे में ला कर इल्ज़ामतराश ज़बानों
से महफ़ूज़ रखता है।
21 रब की तम्जीद हो, क्यूँकि जब शहर का मुहासरा
हो रहा था तो उस ने मोजिज़ाना तौर पर मुझ पर
मेहरबानी की।
22 उस वक़्त मैं घबरा कर बोला, "हाय, मैं तेरे हुज़ूर
से मुन्क़ते हो गया हूँ!" लेकिन जब मैं ने चीख़ते
चिल्लाते हुए तुझ से मदद माँगी तो तू ने मेरी इल्तिजा
सुन ली।

23 ऐ रब के तमाम ईमानदारो, उस से मुहब्बत रखो!
रब वफ़ादारों को महफ़ूज़ रखता, लेकिन मग़रूरों को
उन के रवय्ये का पूरा अज्र देगा।
24 चुनाँचे मज़बूत और दिलेर हो, तुम सब जो रब
के इन्तिज़ार में हो।

मुआफ़ी की बरकत (तौबा का दूसरा ज़बूर)

32 1 दाऊद का ज़बूर। हिक्मत का गीत।
मुबारक है वह जिस के जराइम मुआफ़
किए गए, जिस के गुनाह ढाँपे गए हैं।
2 मुबारक है वह जिस का गुनाह रब हिसाब में नहीं
लाएगा और जिस की रूह में फ़रेब नहीं है।

3 जब मैं चुप रहा तो दिन भर आहें भरने से मेरी
हड्डियाँ गलने लगीं।
4 क्यूँकि दिन रात मैं तेरे हाथ के बोझ तले पिसता
रहा, मेरी ताक़त गोया मौसम-ए-गर्मा की झुलसती
तपिश में जाती रही। (सिलाह)
5 तब मैं ने तेरे सामने अपना गुनाह तस्लीम किया,
मैं अपना गुनाह छुपाने से बाज़ आया। मैं बोला, "मैं
रब के सामने अपने जराइम का इक़्रार करूँगा।" तब
तू ने मेरे गुनाह को मुआफ़ कर दिया। (सिलाह)

6 इस लिए तमाम ईमानदार उस वक़्त तुझ से दुआ
करें जब तू मिल सकता है। यक़ीनन जब बड़ा सैलाब
आए तो उन तक नहीं पहुँचेगा।

7 तू मेरी छुपने की जगह है, तू मुझे परेशानी से
महफ़ूज़ रखता, मुझे नजात के नग़मों से घेर लेता है।
(सिलाह)
8 "मैं तुझे तालीम दूँगा, तुझे वह राह दिखाऊँगा
जिस पर तुझे जाना है। मैं तुझे मश्वरा दे कर तेरी देख-
भाल करूँगा।
9 नासमझ घोड़े या ख़च्चर की मानिन्द न हो, जिन
पर क़ाबू पाने के लिए लगाम और दहाने की ज़रूरत
है, वर्ना वह तेरे पास नहीं आएँगे।"

10 बेदीन की मुतअद्दिद परेशानियाँ होती हैं, लेकिन
जो रब पर भरोसा रखे उसे वह अपनी शफ़क़त से घेरे
रखता है।
11 ऐ रास्तबाज़ो, रब की ख़ुशी में जश्न मनाओ! ऐ
तमाम दियानतदारो, शादमानी के नारे लगाओ!

अल्लाह की हुकूमत और मदद की तारीफ़

33 1 ऐ रास्तबाज़ो, रब की ख़ुशी मनाओ!
क्यूँकि मुनासिब है कि सीधी राह पर चलने
वाले उस की सताइश करें।
2 सरोद बजा कर रब की हम्द-ओ-सना करो। उस
की तम्जीद में दस तारों वाला साज़ बजाओ।
3 उस की तम्जीद में नया गीत गाओ, महारत से
साज़ बजा कर ख़ुशी के नारे लगाओ।

4 क्यूँकि रब का कलाम सच्चा है, और वह हर काम
वफ़ादारी से करता है।
5 उसे रास्तबाज़ी और इन्साफ़ प्यारे हैं, दुनिया रब
की शफ़्क़त से भरी हुई है।
6 रब के कहने पर आसमान ख़ल्क़ हुआ, उस के
मुँह के दम से सितारों का पूरा लश्कर वुजूद में आया।
7 वह समुन्दर के पानी का बड़ा ढेर जमा करता,
पानी की गहराइयों को गोदामों में महफ़ूज़ रखता है।
8 कुल दुनिया रब का ख़ौफ़ माने, ज़मीन के तमाम
बाशिन्दे उस से दहशत खाएँ।
9 क्यूँकि उस ने फ़रमाया तो फ़ौरन वुजूद में आया,
उस ने हुक्म दिया तो उसी वक़्त क़ाइम हुआ।
10 रब अक़्वाम का मन्सूबा नाकाम होने देता, वह
उम्मतों के इरादों को शिकस्त देता है।
11 लेकिन रब का मन्सूबा हमेशा तक कामयाब
रहता, उस के दिल के इरादे पुश्त-दर-पुश्त क़ाइम
रहते हैं।

12 मुबारक है वह क़ौम जिस का ख़ुदा रब है, वह
क़ौम जिसे उस ने चुन कर अपनी मीरास बना लिया
है।

13 रब आसमान से नज़र डाल कर तमाम इन्सानों
का मुलाहज़ा करता है।
14 अपने तख़्त से वह ज़मीन के तमाम बाशिन्दों का
मुआइना करता है।
15 जिस ने उन सब के दिलों को तश्कील दिया वह
उन के तमाम कामों पर ध्यान देता है।

16 बादशाह की बड़ी फ़ौज उसे नहीं छुड़ाती, और
सूरमे की बड़ी ताक़त उसे नहीं बचाती।
17 घोड़ा भी मदद नहीं कर सकता। जो उस पर
उम्मीद रखे वह धोका खाएगा। उस की बड़ी ताक़त
छुटकारा नहीं देती।

18 यक़ीनन रब की आँख उन पर लगी रहती है
जो उस का ख़ौफ़ मानते और उस की मेहरबानी के
इन्तिज़ार में रहते हैं,
19 कि वह उन की जान मौत से बचाए और काल
में महफ़ूज़ रखे।

20 हमारी जान रब के इन्तिज़ार में है। वही हमारा
सहारा, हमारी ढाल है।
21 हमारा दिल उस में ख़ुश है, क्यूँकि हम उस के
मुक़द्दस नाम पर भरोसा रखते हैं।

22 ऐ रब, तेरी मेहरबानी हम पर रहे, क्यूँकि हम तुझ
पर उम्मीद रखते हैं।

अल्लाह की हिफ़ाज़त

34 1 दाऊद का यह ज़बूर उस वक़्त से
मुताल्लिक़ है जब उस ने फ़िलिस्ती बादशाह
अबीमलिक के सामने पागल बनने का रूप भर
लिया। यह देख कर बादशाह ने उसे भगा दिया। चले
जाने के बाद दाऊद ने यह गीत गाया।
हर वक़्त मैं रब की तम्जीद करूँगा, उस की हम्द-
ओ-सना हमेशा ही मेरे होंटों पर रहेगी।
2 मेरी जान रब पर फ़ख़र करेगी। मुसीबतज़दा यह
सुन कर ख़ुश हो जाएँ।
3 आओ, मेरे साथ रब की ताज़ीम करो। आओ, हम
मिल कर उस का नाम सरबुलन्द करें।

4 मैं ने रब को तलाश किया तो उस ने मेरी सुनी।
जिन चीज़ों से मैं दहशत खा रहा था उन सब से उस
ने मुझे रिहाई दी।
5 जिन की आँखें उस पर लगी रहें वह ख़ुशी से
चमकेंगे, और उन के मुँह शर्मिन्दा नहीं होंगे।
6 इस नाचार ने पुकारा तो रब ने उस की सुनी, उस
ने उसे उस की तमाम मुसीबतों से नजात दी।

7 जो रब का ख़ौफ़ मानें उन के इर्दगिर्द उस का
फ़रिश्ता ख़ैमाज़न हो कर उन को बचाए रखता है।
8 रब की भलाई का तजरिबा करो। मुबारक है वह
जो उस में पनाह ले।
9 ऐ रब के मुक़द्दसीन, उस का ख़ौफ़ मानो, क्यूँकि
जो उस का ख़ौफ़ मानें उन्हें कमी नहीं।
10 जवान शेरबबर कभी ज़रूरतमन्द और भूके होते
हैं, लेकिन रब के तालिबों को किसी भी अच्छी चीज़
की कमी नहीं होगी।
11 ऐ बच्चो, आओ, मेरी बातें सुनो! मैं तुम्हें रब के
ख़ौफ़ की तालीम दूँगा।
12 कौन मज़े से ज़िन्दगी गुज़ारना और अच्छे दिन
देखना चाहता है?
13 वह अपनी ज़बान को शरीर बातें करने से रोके
और अपने होंटों को झूट बोलने से।
14 वह बुराई से मुँह फेर कर नेक काम करे, सुलह-
सलामती का तालिब हो कर उस के पीछे लगा रहे।
15 रब की आँखें रास्तबाज़ों पर लगी रहती हैं, और
उस के कान उन की इल्तिजाओं की तरफ़ माइल हैं।
16 लेकिन रब का चिहरा उन के ख़िलाफ़ है जो
ग़लत काम करते हैं। उन का ज़मीन पर नाम-ओ-
निशान तक नहीं रहेगा।
17 जब रास्तबाज़ फ़र्याद करें तो रब उन की सुनता,
वह उन्हें उन की तमाम मुसीबत से छुटकारा देता है।
18 रब शिकस्तादिलों के क़रीब होता है, वह उन्हें
रिहाई देता है जिन की रूह को ख़ाक में कुचला गया
हो।
19 रास्तबाज़ की मुतअद्दिद तकालीफ़ होती हैं,
लेकिन रब उसे उन सब से बचा लेता है।
20 वह उस की तमाम हड्डियों की हिफ़ाज़त करता
है, एक भी नहीं तोड़ी जाएगी।
21 बुराई बेदीन को मार डालेगी, और जो रास्तबाज़
से नफ़रत करे उसे मुनासिब अज्र मिलेगा।
22 लेकिन रब अपने ख़ादिमों की जान का फ़िद्या
देगा। जो भी उस में पनाह ले उसे सज़ा नहीं मिलेगी।

शरीरों के हम्लों से रिहाई के लिए दुआ

35 1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, उन से झगड़ जो मेरे साथ झगड़ते
हैं, उन से लड़ जो मेरे साथ लड़ते हैं।
2 लम्बी और छोटी ढाल पकड़ ले और उठ कर मेरी
मदद करने आ।
3 नेज़े और बरछी को निकाल कर उन्हें रोक दे जो
मेरा ताक़्क़ुब कर रहे हैं! मेरी जान से फ़रमा, "मैं तेरी
नजात हूँ!"
4 जो मेरी जान के लिए कोशाँ हैं उन का मुँह काला
हो जाए, वह रुसवा हो जाएँ। जो मुझे मुसीबत में
डालने के मन्सूबे बांध रहे हैं वह पीछे हट कर
शर्मिन्दा हों।
5 वह हवा में भूसे की तरह उड़ जाएँ जब रब का
फ़रिश्ता उन्हें भगा दे।
6 उन का रास्ता तारीक और फिसलना हो जब रब
का फ़रिश्ता उन के पीछे पड़ जाए।
7 क्यूँकि उन्हों ने बेसबब और चुपके से मेरे रास्ते
में जाल बिछाया, बिलावजह मुझे पकड़ने का गढ़ा
खोदा है।
8 इस लिए तबाही अचानक ही उन पर आ पड़े,
पहले उन्हें पता ही न चले। जो जाल उन्हों ने चुपके
से बिछाया उस में वह ख़ुद उलझ जाएँ, जिस गढ़े
को उन्हों ने खोदा उस में वह ख़ुद गिर कर तबाह हो
जाएँ।
9 तब मेरी जान रब की ख़ुशी मनाएगी और उस की
नजात के बाइस शादमान होगी।
10 मेरे तमाम आज़ा कह उठेंगे, "ऐ रब, कौन तेरी
मानिन्द है? कोई भी नहीं! क्यूँकि तू ही मुसीबतज़दा
को ज़बरदस्त आदमी से छुटकारा देता, तू ही नाचार
और ग़रीब को लूटने वाले के हाथ से बचा लेता है।"

11 ज़ालिम गवाह मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हो रहे हैं।
वह ऐसी बातों के बारे में मेरी पूछगछ कर रहे हैं जिन
से मैं वाक़िफ़ ही नहीं।
12 वह मेरी नेकी के इवज़ मुझे नुक़्सान पहुँचा रहे
हैं। अब मेरी जान तन-ए-तनहा है।
13 जब वह बीमार हुए तो मैं ने टाट ओढ़ कर और
रोज़ा रख कर अपनी जान को दुख दिया। काश मेरी
दुआ मेरी गोद में वापस आए!
14 मैं ने यूँ मातम किया जैसे मेरा कोई दोस्त या भाई
हो। मैं मातमी लिबास पहन कर यूँ ख़ाक में झुक गया
जैसे अपनी माँ का जनाज़ा हो।

15 लेकिन जब मैं ख़ुद ठोकर खाने लगा तो वह ख़ुश
हो कर मेरे ख़िलाफ़ जमा हुए। वह मुझ पर हम्ला करने
के लिए इकट्ठे हुए, और मुझे मालूम ही नहीं था। वह
मुझे फाड़ते रहे और बाज़ न आए।
16 मुसलसल कुफ़्र बक बक कर वह मेरा मज़ाक़
उड़ाते, मेरे ख़िलाफ़ दाँत पीसते थे।
17 ऐ रब, तू कब तक ख़ामोशी से देखता रहेगा?
मेरी जान को उन की तबाहकुन हरकतों से बचा,
मेरी ज़िन्दगी को जवान शेरों से छुटकारा दे।
18 तब मैं बड़ी जमाअत में तेरी सताइश और बड़े
हुजूम में तेरी तारीफ़ करूँगा।
19 उन्हें मुझ पर बग़लें बजाने न दे जो बेसबब मेरे
दुश्मन हैं। उन्हें मुझ पर नाक-भौं चढ़ाने न दे जो
बिलावजह मुझ से कीना रखते हैं।
20 क्यूँकि वह ख़ैर और सलामती की बातें नहीं
करते बल्कि उन के ख़िलाफ़ फ़रेबदिह मन्सूबे बांधते
हैं जो अम्न और सुकून से मुल्क में रहते हैं।
21 वह मुँह फाड़ कर कहते हैं, "लो जी, हम ने
अपनी आँखों से उस की हरकतें देखी हैं!"
22 ऐ रब, तुझे सब कुछ नज़र आया है। ख़ामोश न
रह! ऐ रब, मुझ से दूर न हो।
23 ऐ रब मेरे ख़ुदा, जाग उठ! मेरे दिफ़ा में उठ कर
उन से लड़!
24 ऐ रब मेरे ख़ुदा, अपनी रास्ती के मुताबिक़ मेरा
इन्साफ़ कर। उन्हें मुझ पर बग़लें बजाने न दे।
25 वह दिल में न सोचें, "लो जी, हमारा इरादा पूरा
हुआ है!" वह न बोलें, "हम ने उसे हड़प कर लिया
है।"
26 जो मेरा नुक़्सान देख कर ख़ुश हुए उन सब का
मुँह काला हो जाए, वह शर्मिन्दा हो जाएँ। जो मुझे
दबा कर अपने आप पर फ़ख़र करते हैं वह शर्मिन्दगी
और रुस्वाई से मुलब्बस हो जाएँ।

27 लेकिन जो मेरे इन्साफ़ के आरज़ूमन्द हैं वह ख़ुश
हों और शादियाना बजाएँ। वह कहें, "रब की बड़ी
तारीफ़ हो, जो अपने ख़ादिम की ख़ैरियत चाहता है।"
28 तब मेरी ज़बान तेरी रास्ती बयान करेगी, वह
सारा दिन तेरी तम्जीद करती रहेगी।

अल्लाह की मेहरबानी की तारीफ़

36 1 रब के ख़ादिम दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी
के राहनुमा के लिए।
बदकारी बेदीन के दिल ही में उस से बात करती
है। उस की आँखों के सामने अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं
होता,
2 क्यूँकि उस की नज़र में यह बात फ़ख़र का बाइस
है कि उसे क़ुसूरवार पाया गया, कि वह नफ़रत करता
है।
3 उस के मुँह से शरारत और फ़रेब निकलता है, वह
समझदार होने और नेक काम करने से बाज़ आया है।
4 अपने बिस्तर पर भी वह शरारत के मन्सूबे बांधता
है। वह मज़बूती से बुरी राह पर खड़ा रहता और बुराई
को मुस्तरद नहीं करता।

5 ऐ रब, तेरी शफ़क़त आसमान तक, तेरी वफ़ादारी
बादलों तक पहुँचती है।
6 तेरी रास्ती बुलन्दतरीन पहाड़ों की मानिन्द, तेरा
इन्साफ़ समुन्दर की गहराइयों जैसा है। ऐ रब, तू
इन्सान-ओ-हैवान की मदद करता है।

7 ऐ अल्लाह, तेरी शफ़क़त कितनी बेशक़ीमत है!
आदमज़ाद तेरे परों के साय में पनाह लेते हैं।
8 वह तेरे घर के उम्दा खाने से तर-ओ-ताज़ा हो जाते
हैं, और तू उन्हें अपनी ख़ुशियों की नदी में से पिलाता
है।
9 क्यूँकि ज़िन्दगी का सरचश्मा तेरे ही पास है, और
हम तेरे नूर में रह कर नूर का मुशाहदा करते हैं।
10 अपनी शफ़क़त उन पर फैलाए रख जो तुझे जानते
हैं, अपनी रास्ती उन पर जो दिल से दियानतदार हैं।
11 मग़रूरों का पाँओ मुझ तक न पहुँचे, बेदीनों का
हाथ मुझे बेघर न बनाए।
12 देखो, बदकार गिर गए हैं! उन्हें ज़मीन पर पटख़
दिया गया है, और वह दुबारा कभी नहीं उठेंगे।

बेदीनों की बज़ाहिर ख़ुशहाली

37 1 दाऊद का ज़बूर।
शरीरों के बाइस बेचैन न हो जा, बदकारों
पर रश्क न कर।
2 क्यूँकि वह घास की तरह जल्द ही मुरझा जाएंगे,
हरियाली की तरह जल्द ही सूख जाएंगे।
3 रब पर भरोसा रख कर भलाई कर, मुल्क में रह
कर वफ़ादारी की परवरिश कर।
4 रब से लुत्फ़अन्दोज़ हो तो जो तेरा दिल चाहे वह
तुझे देगा।
5 अपनी राह रब के सपुर्द कर। उस पर भरोसा रख
तो वह तुझे कामयाबी बख़्शेगा।
6 तब वह तेरी रास्तबाज़ी सूरज की तरह तुलू होने
देगा और तेरा इन्साफ़ दोपहर की रौशनी की तरह
चमकने देगा।
7 रब के हुज़ूर चुप हो कर सब्र से उस का इन्तिज़ार
कर। बेक़रार न हो अगर साज़िशें करने वाला
कामयाब हो।
8 ख़फ़ा होने से बाज़ आ, ग़ुस्से को छोड़ दे। रंजीदा
न हो, वर्ना बुरा ही नतीजा निकलेगा।
9 क्यूँकि शरीर मिट जाएंगे जबकि रब से उम्मीद
रखने वाले मुल्क को मीरास में पाएँगे।
10 मज़ीद थोड़ी देर सब्र कर तो बेदीन का नाम-
ओ-निशान मिट जाएगा। तू उस का खोज लगाएगा,
लेकिन कहीं नहीं पाएगा।
11 लेकिन हलीम मुल्क को मीरास में पा कर बड़े
अम्न और सुकून से लुत्फ़अन्दोज़ होंगे।
12 बेशक बेदीन दाँत पीस पीस कर रास्तबाज़ के
ख़िलाफ़ साज़िशें करता रहे।
13 लेकिन रब उस पर हँसता है, क्यूँकि वह जानता
है कि उस का अन्जाम क़रीब ही है।
14 बेदीनों ने तलवार को खैंचा और कमान को तान
लिया है ताकि नाचारों और ज़रूरतमन्दों को गिरा दें
और सीधी राह पर चलने वालों को क़त्ल करें।
15 लेकिन उन की तलवार उन के अपने दिल में
घोंपी जाएगी, उन की कमान टूट जाएगी।

16 रास्तबाज़ को जो थोड़ा बहुत हासिल है वह
बहुत बेदीनों की दौलत से बेहतर है।
17 क्यूँकि बेदीनों का बाज़ू टूट जाएगा जबकि रब
रास्तबाज़ों को सँभालता है।
18 रब बेइल्ज़ामों के दिन जानता है, और उन की
मौरूसी मिलकियत हमेशा के लिए क़ाइम रहेगी।
19 मुसीबत के वक़्त वह शर्मसार नहीं होंगे, काल
भी पड़े तो सेर होंगे।
20 लेकिन बेदीन हलाक हो जाएंगे, और रब के
दुश्मन चरागाहों की शान की तरह नेस्त हो जाएंगे,
धुएँ की तरह ग़ाइब हो जाएंगे।
21 बेदीन क़र्ज़ लेता और उसे नहीं उतारता, लेकिन
रास्तबाज़ मेहरबान है और फ़य्याज़ी से देता है।
22 क्यूँकि जिन्हें रब बरकत दे वह मुल्क को मीरास
में पाएँगे, लेकिन जिन पर वह लानत भेजे उन का
नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा।
23 अगर किसी के पाँओ जम जाएँ तो यह रब की
तरफ़ से है। ऐसे शख़्स की राह को वह पसन्द करता
है।

24 अगर गिर भी जाए तो पड़ा नहीं रहेगा, क्यूँकि
रब उस के हाथ का सहारा बना रहेगा।

25 मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया हूँ। लेकिन
मैं ने कभी नहीं देखा कि रास्तबाज़ को तर्क किया
गया या उस के बच्चों को भीक माँगनी पड़ी।
26 वह हमेशा मेहरबान और क़र्ज़ देने के लिए तय्यार
है। उस की औलाद बरकत का बाइस होगी।

27 बुराई से बाज़ आ कर भलाई कर। तब तू हमेशा
के लिए मुल्क में आबाद रहेगा,
28 क्यूँकि रब को इन्साफ़ प्यारा है, और वह अपने
ईमानदारों को कभी तर्क नहीं करेगा। वह अबद तक
महफ़ूज़ रहेंगे जबकि बेदीनों की औलाद का नाम-ओ-
निशान तक नहीं रहेगा।
29 रास्तबाज़ मुल्क को मीरास में पा कर उस में
हमेशा बसेंगे।
30 रास्तबाज़ का मुँह हिक्मत बयान करता और उस
की ज़बान से इन्साफ़ निकलता है।
31 अल्लाह की शरीअत उस के दिल में है, और उस
के क़दम कभी नहीं डगमगाएँगे।
32 बेदीन रास्तबाज़ की ताक में बैठ कर उसे मार
डालने का मौक़ा ढूँडता है।
33 लेकिन रब रास्तबाज़ को उस के हाथ में नहीं
छोड़ेगा, वह उसे अदालत में मुजरिम नहीं ठहरने
देगा।
34 रब के इन्तिज़ार में रह और उस की राह पर
चलता रह। तब वह तुझे सरफ़राज़ करके मुल्क का
वारिस बनाएगा, और तू बेदीनों की हलाकत देखेगा।

35 मैं ने एक बेदीन और ज़ालिम आदमी को देखा
जो फलते फूलते देवदार के दरख़्त की तरह आसमान
से बातें करने लगा।
36 लेकिन थोड़ी देर के बाद जब मैं दुबारा वहाँ से
गुज़रा तो वह था नहीं। मैं ने उस का खोज लगाया,
लेकिन कहीं न मिला।
37 बेइल्ज़ाम पर ध्यान दे और दियानतदार पर
ग़ौर कर, क्यूँकि आख़िरकार उसे अम्न और सुकून
हासिल होगा।
38 लेकिन मुजरिम मिल कर तबाह हो जाएंगे, और
बेदीनों को आख़िरकार रू-ए-ज़मीन पर से मिटाया
जाएगा।
39 रास्तबाज़ों की नजात रब की तरफ़ से है,
मुसीबत के वक़्त वही उन का क़िला है।
40 रब ही उन की मदद करके उन्हें छुटकारा देगा,
वही उन्हें बेदीनों से बचा कर नजात देगा। क्यूँकि
उन्हों ने उस में पनाह ली है।

सज़ा से बचने की इल्तिजा (तौबा का तीसरा ज़बूर)

38 1 दाऊद का ज़बूर। याददाश्त के लिए।
ऐ रब, अपने ग़ज़ब में मुझे सज़ा न दे,
क़हर में मुझे तम्बीह न कर!
2 क्यूँकि तेरे तीर मेरे जिस्म में लग गए हैं, तेरा हाथ
मुझ पर भारी है।
3 तेरी लानत के बाइस मेरा पूरा जिस्म बीमार है, मेरे
गुनाह के बाइस मेरी तमाम हड्डियाँ गलने लगी हैं।
4 क्यूँकि मैं अपने गुनाहों के सैलाब में डूब गया हूँ,
वह नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त बोझ बन गए हैं।
5 मेरी हमाक़त के बाइस मेरे ज़ख़्मों से बदबू आने
लगी, वह गलने लगे हैं।
6 मैं कुबड़ा बन कर ख़ाक में दब गया हूँ, पूरा दिन
मातमी लिबास पहने फिरता हूँ।
7 मेरी कमर में शदीद सोज़िश है, पूरा जिस्म बीमार
है।
8 मैं निढाल और पाश पाश हो गया हूँ। दिल के
अज़ाब के बाइस मैं चीख़ता चिल्लाता हूँ।

9 ऐ रब, मेरी तमाम आर्ज़ू तेरे सामने है, मेरी आहें
तुझ से पोशीदा नहीं रहतीं।
10 मेरा दिल ज़ोर से धड़कता, मेरी ताक़त जवाब दे
गई बल्कि मेरी आँखों की रौशनी भी जाती रही है।

11 मेरे दोस्त और साथी मेरी मुसीबत देख कर मुझ
से गुरेज़ करते, मेरे क़रीब के रिश्तेदार दूर खड़े रहते
हैं।
12 मेरे जानी दुश्मन फंदे बिछा रहे हैं, जो मुझे
नुक़्सान पहुँचाना चाहते हैं वह धमकियाँ दे रहे और
सारा सारा दिन फ़रेबदिह मन्सूबे बांध रहे हैं।
13 और मैं? मैं तो गोया बहरा हूँ, मैं नहीं सुनता। मैं
गूँगे की मानिन्द हूँ जो अपना मुँह नहीं खोलता।
14 मैं ऐसा शख़्स बन गया हूँ जो न सुनता, न जवाब
में एतिराज़ करता है।

15 क्यूँकि ऐ रब, मैं तेरे इन्तिज़ार में हूँ। ऐ रब मेरे
ख़ुदा, तू ही मेरी सुनेगा।
16 मैं बोला, "ऐसा न हो कि वह मेरा नुक़्सान देख
कर बग़लें बजाएँ, वह मेरे पाँओ के डगमगाने पर मुझे
दबा कर अपने आप पर फ़ख़र करें।"
17 क्यूँकि मैं लड़खड़ाने को हूँ, मेरी अज़ियत
मुतवातिर मेरे सामने रहती है।
18 चुनाँचे मैं अपना क़ुसूर तस्लीम करता हूँ, मैं
अपने गुनाह के बाइस ग़मगीन हूँ।
19 मेरे दुश्मन ज़िन्दा और ताक़तवर हैं, और जो
बिलावजह मुझ से नफ़रत करते हैं वह बहुत हैं।
20 वह नेकी के बदले बदी करते हैं। वह इस लिए
मेरे दुश्मन हैं कि मैं भलाई के पीछे लगा रहता हूँ।

21 ऐ रब, मुझे तर्क न कर! ऐ अल्लाह, मुझ से दूर न
रह!
22 ऐ रब मेरी नजात, मेरी मदद करने में जल्दी कर!

इन्सान के फ़ानी होने के पेश-ए-नज़र इल्तिजा

39 1 दाऊद का ज़बूर। यदूतून के लिए।
मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
मैं बोला, "मैं अपनी राहों पर ध्यान दूँगा ताकि
अपनी ज़बान से गुनाह न करूँ। जब तक बेदीन मेरे
सामने रहे उस वक़्त तक अपने मुँह को लगाम दिए
रहूँगा।"
2 मैं चुप-चाप हो गया और अच्छी चीज़ों से दूर रह
कर ख़ामोश रहा। तब मेरी अज़ियत बढ़ गई।
3 मेरा दिल परेशानी से तपने लगा, मेरे कराहते
कराहते मेरे अन्दर बेचैनी की आग सी भड़क उठी।
तब बात ज़बान पर आ गई,
4 "ऐ रब, मुझे मेरा अन्जाम और मेरी उम्र की हद
दिखा ताकि मैं जान लूँ कि कितना फ़ानी हूँ।
5 देख, मेरी ज़िन्दगी का दौरानिया तेरे सामने लम्हा
भर का है। मेरी पूरी उम्र तेरे नज़्दीक कुछ भी नहीं है।
हर इन्सान दम भर का ही है, ख़्वाह वह कितनी ही
मज़बूती से खड़ा क्यूँ न हो। (सिलाह)
6 जब वह इधर उधर घूमे फिरे तो साया ही है। उस
का शोर-शराबा बातिल है, और गो वह दौलत जमा
करने में मसरूफ़ रहे तो भी उसे मालूम नहीं कि बाद
में किस के क़ब्ज़े में आएगी।"

7 चुनाँचे ऐ रब, मैं किस के इन्तिज़ार में रहूँ? तू ही
मेरी वाहिद उम्मीद है!
8 मेरे तमाम गुनाहों से मुझे छुटकारा दे। अहमक़
को मेरी रुस्वाई करने न दे।
9 मैं ख़ामोश हो गया हूँ और कभी अपना मुँह नहीं
खोलता, क्यूँकि यह सब कुछ तेरे ही हाथ से हुआ
है।
10 अपना अज़ाब मुझ से दूर कर! तेरे हाथ की ज़र्बों
से मैं हलाक हो रहा हूँ।
11 जब तू इन्सान को उस के क़ुसूर की मुनासिब
सज़ा दे कर उस को तम्बीह करता है तो उस की
ख़ूबसूरती कीड़ा लगे कपड़े की तरह जाती रहती है।
हर इन्सान दम भर का ही है। (सिलाह)

12 ऐ रब, मेरी दुआ सुन और मदद के लिए मेरी
आहों पर तवज्जुह दे। मेरे आँसूओं को देख कर
ख़ामोश न रह। क्यूँकि मैं तेरे हुज़ूर रहने वाला परदेसी,
अपने तमाम बापदादा की तरह तेरे हुज़ूर बसने वाला
ग़ैरशहरी हूँ।

13 मुझ से बाज़ आ ताकि मैं कूच करके नेस्त हो
जाने से पहले एक बार फिर हश्शाश-बश्शाश हो
जाऊँ।

शुक्र और दरख़्वास्त

40 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
मैं सब्र से रब के इन्तिज़ार में रहा तो वह मेरी
तरफ़ माइल हुआ और मदद के लिए मेरी चीख़ों पर
तवज्जुह दी।
2 वह मुझे तबाही के गढ़े से खैंच लाया, दलदल
और कीचड़ से निकाल लाया। उस ने मेरे पाँओ को
चटान पर रख दिया, और अब मैं मज़बूती से चल
फिर सकता हूँ।
3 उस ने मेरे मुँह में नया गीत डाल दिया, हमारे ख़ुदा
की हम्द-ओ-सना का गीत उभरने दिया। बहुत से लोग
यह देखेंगे और ख़ौफ़ खा कर रब पर भरोसा रखेंगे।
4 मुबारक है वह जो रब पर पूरा भरोसा रखता है,
जो तंग करने वालों और फ़रेब में उलझे हुओं की
तरफ़ रुख़ नहीं करता।
5 ऐ रब मेरे ख़ुदा, बार बार तू ने हमें अपने मोजिज़े
दिखाए, जगह-ब-जगह अपने मन्सूबे वुजूद में ला कर
हमारी मदद की। तुझ जैसा कोई नहीं है। तेरे अज़ीम
काम बेशुमार हैं, मैं उन की पूरी फ़हरिस्त बता भी
नहीं सकता।

6 तू क़ुर्बानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था, लेकिन
तू ने मेरे कानों को खोल दिया। तू ने भस्म होने वाली
क़ुर्बानियों और गुनाह की क़ुर्बानियों का तक़ाज़ा न
किया।
7 फिर मैं बोल उठा, "मैं हाज़िर हूँ जिस तरह मेरे
बारे में कलाम-ए-मुक़द्दस [P]में लिखा है।
8 ऐ मेरे ख़ुदा, मैं ख़ुशी से तेरी मर्ज़ी पूरी करता हूँ,
तेरी शरीअत मेरे दिल में टिक गई है।"

9 मैं ने बड़े इजतिमा में रास्ती की ख़ुशख़बरी सुनाई
है। ऐ रब, यक़ीनन तू जानता है कि मैं ने अपने होंटों
को बन्द न रखा।
10 मैं ने तेरी रास्ती अपने दिल में छुपाए न रखी
बल्कि तेरी वफ़ादारी और नजात बयान की। मैं ने
बड़े इजतिमा में तेरी शफ़क़त और सदाक़त की एक
बात भी पोशीदा न रखी।

11 ऐ रब, तू मुझे अपने रहम से महरूम नहीं
रखेगा, तेरी मेहरबानी और वफ़ादारी मुसलसल मेरी
निगहबानी करेंगी।
12 क्यूँकि बेशुमार तकलीफों ने मुझे घेर रखा है,
मेरे गुनाहों ने आख़िरकार मुझे आ पकड़ा है। अब मैं
नज़र भी नहीं उठा सकता। वह मेरे सर के बालों से
ज़्यादा हैं, इस लिए मैं हिम्मत हार गया हूँ।

13 ऐ रब, मेहरबानी करके मुझे बचा! ऐ रब, मेरी
मदद करने में जल्दी कर!
14 मेरे जानी दुश्मन सब शर्मिन्दा हो जाएँ, उन की
सख़्त रुस्वाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत देखने से
लुत्फ़ उठाते हैं वह पीछे हट जाएँ, उन का मुँह काला
हो जाए।
15 जो मेरी मुसीबत देख कर क़हक़हा लगाते हैं वह
शर्म के मारे तबाह हो जाएँ।

16 लेकिन तेरे तालिब शादमान हो कर तेरी ख़ुशी
मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह हमेशा कहें,
"रब अज़ीम है!"
17 मैं नाचार और ज़रूरतमन्द हूँ, लेकिन रब मेरा
ख़याल रखता है। तू ही मेरा सहारा और मेरा
नजातदहिन्दा है। ऐ मेरे ख़ुदा, देर न कर!

[P]लफ़्ज़ी तर्जुमा : किताब के तूमार में।

मरीज़ की दुआ

41 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

मुबारक है वह जो पस्तहाल का ख़याल रखता है। मुसीबत के दिन रब उसे छुटकारा देगा।

2 रब उस की हिफ़ाज़त करके उस की ज़िन्दगी को महफ़ूज़ रखेगा, वह मुल्क में उसे बरकत दे कर उसे उस के दुश्मनों के लालच के हवाले नहीं करेगा।

3 बीमारी के वक़्त रब उस को बिस्तर पर सँभालेगा। तू उस की सेहत पूरी तरह बहाल करेगा।

4 मैं बोला, "ऐ रब, मुझ पर रहम कर! मुझे शिफ़ा दे, क्यूँकि मैं ने तेरा ही गुनाह किया है।"

5 मेरे दुश्मन मेरे बारे में ग़लत बातें करके कहते हैं, "वह कब मरेगा? उस का नाम-ओ-निशान कब मिटेगा?"

6 जब कभी कोई मुझ से मिलने आए तो उस का दिल झूट बोलता है। पस-ए-पर्दा वह ऐसी नुक़्सानदेह मालूमात जमा करता है जिन्हें बाद में बाहर जा कर गलियों में फैला सके।

7 मुझ से नफ़रत करने वाले सब आपस में मेरे ख़िलाफ़ फुसफुसाते हैं। वह मेरे ख़िलाफ़ बुरे मन्सूबे बांध कर कहते हैं,

8 "उसे मोहलिक मर्ज़ लग गया है। वह कभी अपने बिस्तर पर से दुबारा नहीं उठेगा।"

9 मेरा दोस्त भी मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है। जिस पर मैं एतिमाद करता था और जो मेरी रोटी खाता था, उस ने मुझ पर लात उठाई है।

10 लेकिन तू ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर! मुझे दुबारा उठा खड़ा कर ताकि उन्हें उन के सुलूक का बदला दे सकूँ।

11 इस से मैं जानता हूँ कि तू मुझ से ख़ुश है कि मेरा दुश्मन मुझ पर फ़त्ह के नारे नहीं लगाता।

12 तू ने मुझे मेरी दयानतदारी के बाइस क़ाइम रखा और हमेशा के लिए अपने हुज़ूर खड़ा किया है।

13 रब की हम्द हो जो इस्राईल का ख़ुदा है। अज़ल से अबद तक उस की तम्जीद हो। आमीन, फिर आमीन।

दूसरी किताब 42-72

परदेस में अल्लाह का आरज़ूमन्द

42 1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिक्मत का गीत। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह, जिस तरह हिरनी नदियों के ताज़ा पानी के लिए तड़पती है उसी तरह मेरी जान तेरे लिए तड़पती है।

2 मेरी जान ख़ुदा, हाँ ज़िन्दा ख़ुदा की प्यासी है। मैं कब जा कर अल्लाह का चिहरा देखूँगा?

3 दिन रात मेरे आँसू मेरी ग़िज़ा रहे हैं। क्यूँकि पूरा दिन मुझ से कहा जाता है, "तेरा ख़ुदा कहाँ है?"

4 पहले हालात याद करके मैं अपने सामने अपने दिल की आह-ओ-ज़ारी उंडेल देता हूँ। [1]कितना मज़ा आता था जब हमारा जुलूस निकलता था, जब मैं हुजूम के बीच में ख़ुशी और शुक्रगुज़ारी के नारे लगाते हुए अल्लाह की सुकूनतगाह की जानिब बढ़ता जाता था। कितना शोर मच जाता था जब हम जश्न मनाते हुए घूमते फिरते थे।

5 ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यूँ खा रही है, बेचैनी से क्यूँ तड़प रही है? अल्लाह के इन्तिज़ार में रह, क्यूँकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा ख़ुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

---

[1]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अपनी जान उंडेल देता हूँ।

6 मेरी जान ग़म के मारे पिघल रही है। इस लिए मैं
तुझे यर्दन के मुल्क, हर्मून के पहाड़ी सिलसिले और
कोह-ए-मिसआर से याद करता हूँ।
7 जब से तेरे आबशारों की आवाज़ बुलन्द हुई तो
एक सैलाब दूसरे को पुकारने लगा है। तेरी तमाम
मौजें और लहरें मुझ पर से गुज़र गई हैं।
8 दिन के वक़्त रब अपनी शफ़क़त भेजेगा, और रात
के वक़्त उस का गीत मेरे साथ होगा, मैं अपनी हयात
के ख़ुदा से दुआ करूँगा।
9 मैं अल्लाह अपनी चटान से कहूँगा, "तू मुझे क्यूँ
भूल गया है? मैं अपने दुश्मन के ज़ुल्म के बाइस क्यूँ
मातमी लिबास पहने फिरूँ?"
10 मेरे दुश्मनों की लान-तान से मेरी हड्डियाँ टूट रही
हैं, क्यूँकि पूरा दिन वह कहते हैं, "तेरा ख़ुदा कहाँ
है?"

11 ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यूँ खा रही है, बेचैनी से क्यूँ
तड़प रही है? अल्लाह के इन्तिज़ार में रह, क्यूँकि मैं
दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा ख़ुदा है और
मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

43 1 ऐ अल्लाह, मेरा इन्साफ़ कर! मेरे लिए
ग़ैरईमानदार क़ौम से लड़, मुझे धोकेबाज़
और शरीर आदमियों से बचा।
2 क्यूँकि तू मेरी पनाह का ख़ुदा है। तू ने मुझे क्यूँ
रद्द किया है? मैं अपने दुश्मन के ज़ुल्म के बाइस क्यूँ
मातमी लिबास पहने फिरूँ?
3 अपनी रौशनी और सच्चाई को भेज ताकि वह मेरी
राहनुमाई करके मुझे तेरे मुक़द्दस पहाड़ और तेरी
सुकूनतगाह के पास पहुँचाएँ।
4 तब मैं अल्लाह की क़ुर्बानगाह के पास आऊँगा,
उस ख़ुदा के पास जो मेरी ख़ुशी और फ़र्हत है। ऐ
अल्लाह मेरे ख़ुदा, वहाँ मैं सरोद बजा कर तेरी सताइश
करूँगा।

5 ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यूँ खा रही है, बेचैनी से क्यूँ
तड़प रही है? अल्लाह के इन्तिज़ार में रह, क्यूँकि मैं
दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा ख़ुदा है और
मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

क्या अल्लाह ने अपनी क़ौम को रद्द किया है?

44 1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिक्मत का
गीत। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह, जो कुछ तू ने हमारे बापदादा के अय्याम
में यानी क़दीम ज़माने में किया वह हम ने अपने कानों
से उन से सुना है।
2 तू ने ख़ुद अपने हाथ से दीगर क़ौमों को निकाल
कर हमारे बापदादा को मुल्क में पौदे की तरह लगा
दिया। तू ने ख़ुद दीगर उम्मतों को शिकस्त दे कर
हमारे बापदादा को मुल्क में फलने फूलने दिया।
3 उन्हों ने अपनी ही तलवार के ज़रीए मुल्क पर
क़ब्ज़ा नहीं किया, अपने ही बाज़ू से फ़त्ह नहीं पाई
बल्कि तेरे दहने हाथ, तेरे बाज़ू और तेरे चिहरे के नूर
ने यह सब कुछ किया। क्यूँकि वह तुझे पसन्द थे।
4 तू मेरा बादशाह, मेरा ख़ुदा है। तेरे ही हुक्म पर
याक़ूब को मदद हासिल होती है।
5 तेरी मदद से हम अपने दुश्मनों को ज़मीन पर
पटख़ देते, तेरा नाम ले कर अपने मुख़ालिफ़ों को
कुचल देते हैं।
6 क्यूँकि मैं अपनी कमान पर एतिमाद नहीं करता,
और मेरी तलवार मुझे नहीं बचाएगी
7 बल्कि तू ही हमें दुश्मन से बचाता, तू ही उन्हें
शर्मिन्दा होने देता है जो हम से नफ़रत करते हैं।
8 पूरा दिन हम अल्लाह पर फ़ख़र करते हैं, और हम
हमेशा तक तेरे नाम की तम्जीद करेंगे। (सिलाह)

9 लेकिन अब तू ने हमें रद्द कर दिया, हमें शर्मिन्दा
होने दिया है। जब हमारी फ़ौजें लड़ने के लिए
निकलती हैं तो तू उन का साथ नहीं देता।
10 तू ने हमें दुश्मन के सामने पसपा होने दिया, और
जो हम से नफ़रत करते हैं उन्हों ने हमें लूट लिया है।

11 तू ने हमें भेड़-बकरियों की तरह क़स्साब के हाथ
में छोड़ दिया, हमें मुख़्तलिफ़ क़ौमों में मुन्तशिर कर
दिया है।
12 तू ने अपनी क़ौम को ख़फ़ीफ़ सी रक़म के लिए
बेच डाला, उसे फ़रोख़्त करने से नफ़ा हासिल न
हुआ।
13 यह तेरी तरफ़ से हुआ कि हमारे पड़ोसी हमें
रुसवा करते, गिर्द-ओ-नवाह के लोग हमें लान-तान
करते हैं।
14 हम अक़्वाम में इब्रतअंगेज़ मिसाल बन गए हैं।
लोग हमें देख कर तौबा तौबा कहते हैं।
15 दिन भर मेरी रुस्वाई मेरी आँखों के सामने रहती
है। मेरा चिहरा शर्मसार ही रहता है,
16 क्यूँकि मुझे उन की गालियाँ और कुफ़्र सुनना
पड़ता है, दुश्मन और इन्तिक़ाम लेने पर तुले हुए को
बर्दाश्त करना पड़ता है।

17 यह सब कुछ हम पर आ गया है, हालाँकि न हम
तुझे भूल गए और न तेरे अह्द से बेवफ़ा हुए हैं।
18 न हमारा दिल बाग़ी हो गया, न हमारे क़दम तेरी
राह से भटक गए हैं।
19 ताहम तू ने हमें चूर चूर करके गीदड़ों के
दरमियान छोड़ दिया, तू ने हमें गहरी तारीकी में डूबने
दिया है।
20 अगर हम अपने ख़ुदा का नाम भूल कर अपने
हाथ किसी और माबूद की तरफ़ उठाते
21 तो क्या अल्लाह को यह बात मालूम न हो जाती?
ज़रूर! वह तो दिल के राज़ों से वाक़िफ़ होता है।
22 लेकिन तेरी ख़ातिर हमें दिन भर मौत का सामना
करना पड़ता है, लोग हमें ज़बह होने वाली भेड़ों के
बराबर समझते हैं।

23 ऐ रब, जाग उठ! तू क्यूँ सोया हुआ है? हमें
हमेशा के लिए रद्द न कर बल्कि हमारी मदद करने
के लिए खड़ा हो जा।
24 तू अपना चिहरा हम से पोशीदा क्यूँ रखता है,
हमारी मुसीबत और हम पर होने वाले ज़ुल्म को
नज़रअन्दाज़ क्यूँ करता है?
25 हमारी जान ख़ाक में दब गई, हमारा बदन मिट्टी
से चिमट गया है।
26 उठ कर हमारी मदद कर! अपनी शफ़क़त की
ख़ातिर फ़िद्या दे कर हमें छुड़ा!

बादशाह की शादी

45 1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिक्मत
और मुहब्बत का गीत। तर्ज़ : सोसन के
फूल। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
मेरे दिल से ख़ूबसूरत गीत छलक रहा है, मैं उसे
बादशाह को पेश करूँगा। मेरी ज़बान माहिर कातिब
के क़लम की मानिन्द हो!

2 तू आदमियों में सब से ख़ूबसूरत है! तेरे होंट
शफ़क़त से मसह किए हुए हैं, इस लिए अल्लाह ने
तुझे अबदी बरकत दी है।
3 ऐ सूरमे, अपनी तलवार से कमरबस्ता हो, अपनी
शान-ओ-शौकत से मुलब्बस हो जा!
4 ग़ल्बा और कामयाबी हासिल कर। सच्चाई,
इनकिसारी और रास्ती की ख़ातिर लड़ने के लिए
निकल आ। तेरा दहना हाथ तुझे हैरतअंगेज़ काम
दिखाए।
5 तेरे तेज़ तीर बादशाह के दुश्मनों के दिलों को छेद
डालें। क़ौमें तेरे पाँओ में गिर जाएँ।
6 ऐ अल्लाह, तेरा तख़्त अज़ल से अबद तक क़ाइम-
ओ-दाइम रहेगा, और इन्साफ़ का शाही असा तेरी
बादशाही पर हुकूमत करेगा।
7 तू ने रास्तबाज़ी से मुहब्बत और बेदीनी से नफ़रत
की, इस लिए अल्लाह तेरे ख़ुदा ने तुझे ख़ुशी के तेल
से मसह करके तुझे तेरे साथियों से कहीं ज़्यादा
सरफ़राज़ कर दिया।

8 मुर, ऊद और अमलतास की बेशक़ीमत ख़ुश्बू
तेरे तमाम कपड़ों से फैलती है। हाथीदाँत के महलों
में तारदार मौसीक़ी तेरा दिल बहलाती है।
9 बादशाहों की बेटियाँ तेरे ज़ेवरात से सजी फिरती
हैं। मलिका ओफ़ीर का सोना पहने हुए तेरे दहने हाथ
खड़ी है।

10 ऐ बेटी, सुन मेरी बात! ग़ौर कर और कान लगा।
अपनी क़ौम और अपने बाप का घर भूल जा।
11 बादशाह तेरे हुस्न का आरज़ूमन्द है, क्यूँकि वह
तेरा आक़ा है। चुनाँचे झुक कर उस का एहतिराम
कर।
12 सूर की बेटी तुह्फ़ा ले कर आएगी, क़ौम के
अमीर तेरी नज़र-ए-करम हासिल करने की कोशिश
करेंगे।
13 बादशाह की बेटी कितनी शानदार चीज़ों से
आरास्ता है। उस का लिबास सोने के धागों से बुना
हुआ है।
14 उसे नफ़ीस रंगदार कपड़े पहने बादशाह के पास
लाया जाता है। जो कुंवारी सहेलियाँ उस के पीछे
चलती हैं उन्हें भी तेरे सामने लाया जाता है।
15 लोग शादमान हो कर और ख़ुशी मनाते हुए उन्हें
वहाँ पहुँचाते हैं, और वह शाही महल में दाख़िल होती
हैं।

16 ऐ बादशाह, तेरे बेटे तेरे बापदादा की जगह खड़े
हो जाएंगे, और तू उन्हें रईस बना कर पूरी दुनिया में
ज़िम्मादारियाँ देगा।
17 पुश्त-दर-पुश्त मैं तेरे नाम की तम्जीद करूँगा,
इस लिए क़ौमें हमेशा तक तेरी सताइश करेंगी।

अल्लाह हमारी क़ुव्वत है

46 1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए। गीत का तर्ज़ : कुंवारियाँ।
अल्लाह हमारी पनाहगाह और क़ुव्वत है। मुसीबत
के वक़्त वह हमारा मज़बूत सहारा साबित हुआ है।
2 इस लिए हम ख़ौफ़ नहीं खाएँगे, गो ज़मीन लरज़
उठे और पहाड़ झूम कर समुन्दर की गहराइयों में गिर
जाएँ,
3 गो समुन्दर शोर मचा कर ठाठें मारे और पहाड़
उस की दहाड़ों से काँप उठें। (सिलाह)

4 दरया की शाख़ें अल्लाह के शहर को ख़ुश करती
हैं, उस शहर को जो अल्लाह तआला की मुक़द्दस
सुकूनतगाह है।
5 अल्लाह उस के बीच में है, इस लिए शहर नहीं
डगमगाएगा। सुब्ह-सवेरे ही अल्लाह उस की मदद
करेगा।
6 क़ौमें शोर मचाने, सल्तनतें लड़खड़ाने लगीं।
अल्लाह ने आवाज़ दी तो ज़मीन लरज़ उठी।

7 रब्ब-उल-अफ़्वाज हमारे साथ है, याक़ूब का ख़ुदा
हमारा क़िला है। (सिलाह)

8 आओ, रब के अज़ीम कामों पर नज़र डालो! उसी
ने ज़मीन पर हौलनाक तबाही नाज़िल की है।
9 वही दुनिया की इन्तिहा तक जंगें रोक देता, वही
कमान को तोड़ देता, नेज़े को टुकड़े टुकड़े करता
और ढाल को जला देता है।
10 वह फ़रमाता है, "अपनी हरकतों से बाज़ आओ!
जान लो कि मैं ख़ुदा हूँ। मैं अक़्वाम में सरबुलन्द और
दुनिया में सरफ़राज़ हूँगा।"

11 रब्ब-उल-अफ़्वाज हमारे साथ है। याक़ूब का
ख़ुदा हमारा क़िला है। (सिलाह)

अल्लाह तमाम क़ौमों का बादशाह है

47 1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
ऐ तमाम क़ौमो, ताली बजाओ! ख़ुशी के नारे लगा
कर अल्लाह की मद्हसराई करो!

2 क्यूँकि रब तआला पुरजलाल है, वह पूरी दुनिया
का अज़ीम बादशाह है।
3 उस ने क़ौमों को हमारे तहत कर दिया, उम्मतों
को हमारे पाँओ तले रख दिया।
4 उस ने हमारे लिए हमारी मीरास को चुन लिया,
उसी को जो उस के प्यारे बन्दे याक़ूब के लिए फ़ख़र
का बाइस था। (सिलाह)

5 अल्लाह ने सऊद फ़रमाया तो साथ साथ ख़ुशी का
नारा बुलन्द हुआ, रब बुलन्दी पर चढ़ गया तो साथ
साथ नरसिंगा बजता रहा।
6 मद्हसराई करो, अल्लाह की मद्हसराई करो!
मद्हसराई करो, हमारे बादशाह की मद्हसराई करो!
7 क्यूँकि अल्लाह पूरी दुनिया का बादशाह है। हिक्मत
का गीत गा कर उस की सताइश करो।
8 अल्लाह क़ौमों पर हुकूमत करता है, अल्लाह अपने
मुक़द्दस तख़्त पर बैठा है।
9 दीगर क़ौमों के शुरफ़ा इब्राहीम के ख़ुदा की क़ौम
के साथ जमा हो गए हैं, क्यूँकि वह दुनिया के
हुक्मरानों का मालिक है। वह निहायत ही सरबुलन्द
है।

अल्लाह का शहर यरूशलम

48 1 गीत। क़ोरह की औलाद का ज़बूर।
रब अज़ीम और बड़ी तारीफ़ के लाइक़
है। उस का मुक़द्दस पहाड़ हमारे ख़ुदा के शहर में है।
2 कोह-ए-सिय्यून की बुलन्दी ख़ूबसूरत है, पूरी
दुनिया उस से ख़ुश होती है। कोह-ए-सिय्यून दूरतरीन
शिमाल का इलाही पहाड़ ही है, वह अज़ीम बादशाह
का शहर है।
3 अल्लाह उस के महलों में है, वह उस की पनाहगाह
साबित हुआ है।
4 क्यूँकि देखो, बादशाह जमा हो कर यरूशलम से
लड़ने आए।
5 लेकिन उसे देखते ही वह हैरान हुए, वह दहशत
खा कर भाग गए।
6 वहाँ उन पर कपकपी तारी हुई, और वह दर्द-
ए-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेच-ओ-ताब खाने
लगे।
7 जिस तरह मशरिक़ी आँधी तरसीस के शानदार
जहाज़ों को टुकड़े टुकड़े कर देती है उसी तरह तू ने
उन्हें तबाह कर दिया।

8 जो कुछ हम ने सुना है वह हमारे देखते देखते
रब्ब-उल-अफ़्वाज हमारे ख़ुदा के शहर पर सादिक़
आया है, अल्लाह उसे अबद तक क़ाइम रखेगा।
(सिलाह)
9 ऐ अल्लाह, हम ने तेरी सुकूनतगाह में तेरी शफ़क़त
पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ किया है।
10 ऐ अल्लाह, तेरा नाम इस लाइक़ है कि तेरी तारीफ़
दुनिया की इन्तिहा तक की जाए। तेरा दहना हाथ
रास्ती से भरा रहता है।
11 कोह-ए-सिय्यून शादमान हो, यहूदाह की बेटियाँ
[r]तेरे मुन्सिफ़ाना फ़ैसलों के बाइस ख़ुशी मनाएँ।

12 सिय्यून के इर्दगिर्द घूमो फिरो, उस की फ़सील
के साथ साथ चल कर उस के बुर्ज गिन लो।
13 उस की क़िलाबन्दी पर ख़ूब ध्यान दो, उस के
महलों का मुआइना करो ताकि आने वाली नस्ल को
सब कुछ सुना सको।
14 यक़ीनन अल्लाह हमारा ख़ुदा हमेशा तक ऐसा ही
है। वह अबद तक हमारी राहनुमाई करेगा।

अमीरों की शान सराब ही है

49 1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
ऐ तमाम क़ौमो, सुनो! दुनिया के तमाम बाशिन्दो,
ध्यान दो!

---

[r]यहाँ यहूदाह की बेटियों से मुराद उस के शहर भी हो सकते हैं।

2 छोटे और बड़े, अमीर और ग़रीब सब तवज्जुह
दें।
3 मेरा मुँह हिक्मत बयान करेगा और मेरे दिल का
ग़ौर-ओ-ख़ौज़ समझ अता करेगा।
4 मैं अपना कान एक कहावत की तरफ़ झुकाऊँगा,
सरोद बजा कर अपनी पहेली का हल बताऊँगा।

5 मैं ख़ौफ़ क्यूँ खाऊँ जब मुसीबत के दिन आएँ और
मक्कारों का बुरा काम मुझे घेर ले?
6 ऐसे लोग अपनी मिलकियत पर एतिमाद और
अपनी बड़ी दौलत पर फ़ख़र करते हैं।
7 कोई भी फ़िद्या दे कर अपने भाई की जान को नहीं
छुड़ा सकता। वह अल्लाह को इस क़िस्म का तावान
नहीं दे सकता।
8 क्यूँकि इतनी बड़ी रक़म देना उस के बस की बात
नहीं। आख़िरकार उसे हमेशा के लिए ऐसी कोशिशों
से बाज़ आना पड़ेगा।
9 चुनाँचे कोई भी हमेशा के लिए ज़िन्दा नहीं रह
सकता, आख़िरकार हर एक मौत के गढ़े में उतरेगा।
10 क्यूँकि हर एक देख सकता है कि दानिशमन्द भी
वफ़ात पाते और अहमक़ और नासमझ भी मिल कर
हलाक हो जाते हैं। सब को अपनी दौलत दूसरों के
लिए छोड़नी पड़ती है।
11 उन की क़ब्रें अबद तक उन के घर बनी रहेंगी,
पुश्त-दर-पुश्त वह उन में बसे रहेंगे, गो उन्हें ज़मीनें
हासिल थीं जो उन के नाम पर थीं।

12 इन्सान अपनी शान-ओ-शौकत के बावुजूद
क़ाइम नहीं रहता, उसे जानवरों की तरह हलाक होना
है।
13 यह उन सब की तक़्दीर है जो अपने आप पर
एतिमाद रखते हैं, और उन सब का अन्जाम जो उन
की बातें पसन्द करते हैं। (सिलाह)
14 उन्हें भेड़-बकरियों की तरह पाताल में लाया
जाएगा, और मौत उन्हें चराएगी। क्यूँकि सुब्ह के
वक़्त दियानतदार उन पर हुकूमत करेंगे। तब उन की
शक्ल-ओ-सूरत घिसे फटे कपड़े की तरह गल सड़
जाएगी, पाताल ही उन की रिहाइशगाह होगा।
15 लेकिन अल्लाह मेरी जान का फ़िद्या देगा, वह
मुझे पकड़ कर पाताल की गिरिफ़्त से छुड़ाएगा।
(सिलाह)

16 मत घबरा जब कोई अमीर हो जाए, जब उस के
घर की शान-ओ-शौकत बढ़ती जाए।
17 मरते वक़्त तो वह अपने साथ कुछ नहीं ले
जाएगा, उस की शान-ओ-शौकत उस के साथ पाताल
में नहीं उतरेगी।
18 बेशक वह जीते जी अपने आप को मुबारक
कहेगा, और दूसरे भी खाते-पीते आदमी की तारीफ़
करेंगे।
19 फिर भी वह आख़िरकार अपने बापदादा की
नस्ल के पास उतरेगा, उन के पास जो दुबारा कभी
रौशनी नहीं देखेंगे।

20 जो इन्सान अपनी शान-ओ-शौकत के बावुजूद
नासमझ है, उसे जानवरों की तरह हलाक होना है।

सहीह इबादत

50 1 आसफ़ का ज़बूर।
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा बोल उठा है,
उस ने तुलू-ए-सुब्ह से ले कर ग़ुरूब-ए-आफ़ताब तक
पूरी दुनिया को बुलाया है।
2 अल्लाह का नूर सिय्यून से चमक उठा है, उस
पहाड़ से जो कामिल हुस्न का इज़हार है।
3 हमारा ख़ुदा आ रहा है, वह ख़ामोश नहीं रहेगा।
उस के आगे आगे सब कुछ भस्म हो रहा है, उस के
इर्दगिर्द तेज़ आँधी चल रही है।
4 वह आसमान-ओ-ज़मीन को आवाज़ देता है,
"अब मैं अपनी क़ौम की अदालत करूँगा।
5 मेरे ईमानदारों को मेरे हुज़ूर जमा करो, उन्हें जिन्हों
ने क़ुर्बानियाँ पेश करके मेरे साथ अह्द बांधा है।"

6 आसमान उस की रास्ती का एलान करेंगे, क्यूँकि
अल्लाह ख़ुद इन्साफ़ करने वाला है। (सिलाह)
7 "ऐ मेरी क़ौम, सुन! मुझे बात करने दे। ऐ इस्राईल,
मैं तेरे ख़िलाफ़ गवाही दूँगा। मैं अल्लाह तेरा ख़ुदा हूँ।
8 मैं तुझे तेरी ज़बह की क़ुर्बानियों के बाइस मलामत
नहीं कर रहा। तेरी भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ तो
मुसलसल मेरे सामने हैं।
9 न मैं तेरे घर से बैल लूँगा, न तेरे बाड़ों से बकरे।
10 क्यूँकि जंगल के तमाम जानदार मेरे ही हैं, हज़ारों
पहाड़ियों पर बसने वाले जानवर मेरे ही हैं।
11 मैं पहाड़ों के हर परिन्दे को जानता हूँ, और जो
भी मैदानों में हरकत करता है वह मेरा है।
12 अगर मुझे भूक लगती तो मैं तुझे न बताता,
क्यूँकि ज़मीन और जो कुछ उस पर है मेरा है।
13 क्या तू समझता है कि मैं साँडों का गोश्त खाना
या बकरों का ख़ून पीना चाहता हूँ?
14 अल्लाह को शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानी पेश कर, और
वह मन्नत पूरी कर जो तू ने अल्लाह तआला के हुज़ूर
मानी है।
15 मुसीबत के दिन मुझे पुकार। तब मैं तुझे नजात
दूँगा और तू मेरी तम्जीद करेगा।"

16 लेकिन बेदीन से अल्लाह फ़रमाता है, "मेरे
अह्काम सुनाने और मेरे अह्द का ज़िक्र करने का
तेरा क्या हक़ है?
17 तू तो तर्बियत से नफ़रत करता और मेरे फ़रमान
कचरे की तरह अपने पीछे फैंक देता है।
18 किसी चोर को देखते ही तू उस का साथ देता है,
तू ज़िनाकारों से रिफ़ाक़त रखता है।
19 तू अपने मुँह को बुरे काम के लिए इस्तेमाल
करता, अपनी ज़बान को धोका देने के लिए तय्यार
रखता है।
20 तू दूसरों के पास बैठ कर अपने भाई के ख़िलाफ़
बोलता है, अपनी ही माँ के बेटे पर तुहमत लगाता
है।
21 यह कुछ तू ने किया है, और मैं ख़ामोश रहा। तब
तू समझा कि मैं बिलकुल तुझ जैसा हूँ। लेकिन मैं
तुझे मलामत करूँगा, तेरे सामने ही मुआमला तर्तीब
से सुनाऊँगा।
22 तुम जो अल्लाह को भूले हुए हो, बात समझ लो,
वर्ना मैं तुम्हें फाड़ डालूँगा। उस वक़्त कोई नहीं होगा
जो तुम्हें बचाए।

23 जो शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानी पेश करे वह मेरी
ताज़ीम करता है। जो मुसम्मम इरादे से ऐसी राह पर
चले उसे मैं अल्लाह की नजात दिखाऊँगा।"

मुझ जैसे गुनाहगार पर रहम कर! (तौबा का चौथा ज़बूर)

51 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। यह गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है
जब दाऊद के बत-सबा के साथ ज़िना करने के बाद
नातन नबी उस के पास आया।
ऐ अल्लाह, अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मुझ पर
मेहरबानी कर, अपने बड़े रहम के मुताबिक़ मेरी
सरकशी के दाग़ मिटा दे।
2 मुझे धो दे ताकि मेरा क़ुसूर दूर हो जाए, जो गुनाह
मुझ से सरज़द हुआ है उस से मुझे पाक कर।
3 क्यूँकि मैं अपनी सरकशी को मानता हूँ, और मेरा
गुनाह हमेशा मेरे सामने रहता है।
4 मैं ने तेरे, सिर्फ़ तेरे ही ख़िलाफ़ गुनाह किया,
मैं ने वह कुछ किया जो तेरी नज़र में बुरा है।
क्यूँकि लाज़िम है कि तू बोलते वक़्त रास्त ठहरे और
अदालत करते वक़्त पाकीज़ा साबित हो जाए।

5 यक़ीनन मैं गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ। जूँ
ही मैं माँ के पेट में वुजूद में आया तो गुनाहगार था।
6 यक़ीनन तू बातिन की सच्चाई पसन्द करता और
पोशीदगी में मुझे हिक्मत की तालीम देता है।

7 ज़ूफ़ा ले कर मुझ से गुनाह दूर कर ताकि पाक-
साफ़ हो जाऊँ। मुझे धो दे ताकि बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद
हो जाऊँ।
8 मुझे दुबारा ख़ुशी और शादमानी सुनने दे ताकि
जिन हड्डियों को तू ने कुचल दिया वह शादियाना
बजाएँ।
9 अपने चिहरे को मेरे गुनाहों से फेर ले, मेरा तमाम
क़ुसूर मिटा दे।
10 ऐ अल्लाह, मेरे अन्दर पाक दिल पैदा कर, मुझ में
नए सिरे से साबितक़दम रूह क़ाइम कर।
11 मुझे अपने हुज़ूर से ख़ारिज न कर, न अपने
मुक़द्दस रूह को मुझ से दूर कर।
12 मुझे दुबारा अपनी नजात की ख़ुशी दिला, मुझे
मुस्तइद रूह अता करके सँभाले रख।
13 तब मैं उन्हें तेरी राहों की तालीम दूँगा जो तुझ
से बेवफ़ा हो गए हैं, और गुनाहगार तेरे पास वापस
आएँगे।

14 ऐ अल्लाह, मेरी नजात के ख़ुदा, क़त्ल का क़ुसूर
मुझ से दूर करके मुझे बचा। तब मेरी ज़बान तेरी
रास्ती की हम्द-ओ-सना करेगी।
15 ऐ रब, मेरे होंटों को खोल ताकि मेरा मुँह तेरी
सताइश करे।
16 क्यूँकि तू ज़बह की क़ुर्बानी नहीं चाहता, वर्ना
मैं वह पेश करता। भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ तुझे
पसन्द नहीं।
17 अल्लाह को मन्ज़ूर क़ुर्बानी शिकस्ता रूह है। ऐ
अल्लाह, तू शिकस्ता और कुचले हुए दिल को हक़ीर
नहीं जानेगा।

18 अपनी मेहरबानी का इज़हार करके सिय्यून को
ख़ुशहाली बख़्श, यरूशलम की फ़सील तामीर कर।
19 तब तुझे हमारी सहीह क़ुर्बानियाँ, हमारी भस्म
होने वाली और मुकम्मल क़ुर्बानियाँ पसन्द आएँगी ।
तब तेरी क़ुर्बानगाह पर बैल चढ़ाए जाएंगे।

ज़ुल्म के बावुजूद तसल्ली

52 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। हिक्मत का यह गीत उस वक़्त से
मुताल्लिक़ है जब दोएग अदोमी साऊल बादशाह के
पास गया और उसे बताया, “दाऊद अख़ीमलिक
इमाम के घर में गया है।”
ऐ सूरमे, तू अपनी बदी पर क्यूँ फ़ख़र करता है?
अल्लाह की शफ़क़त दिन भर क़ाइम रहती है।
2 ऐ धोकेबाज़, तेरी ज़बान तेज़ उस्तरे की तरह
चलती हुई तबाही के मन्सूबे बांधती है।
3 तुझे भलाई की निस्बत बुराई ज़्यादा प्यारी है, सच
बोलने की निस्बत झूट ज़्यादा पसन्द है। (सिलाह)
4 ऐ फ़रेबदिह ज़बान, तू हर तबाहकुन बात से प्यार
करती है।
5 लेकिन अल्लाह तुझे हमेशा के लिए ख़ाक में
मिलाएगा। वह तुझे मार मार कर तेरे ख़ैमे से निकाल
देगा, तुझे जड़ से उखाड़ कर ज़िन्दों के मुल्क से
ख़ारिज कर देगा। (सिलाह)

6 रास्तबाज़ यह देख कर ख़ौफ़ खाएँगे। वह उस पर
हंस कर कहेंगे,
7 “लो, यह वह आदमी है जिस ने अल्लाह में पनाह न
ली बल्कि अपनी बड़ी दौलत पर एतिमाद किया, जो
अपने तबाहकुन मन्सूबों से ताक़तवर हो गया था।”

8 लेकिन मैं अल्लाह के घर में ज़ैतून के फलते फूलते
दरख़्त की मानिन्द हूँ। मैं हमेशा के लिए अल्लाह की
शफ़क़त पर भरोसा रखूँगा।
9 मैं अबद तक उस के लिए तेरी सताइश करूँगा
जो तू ने किया है। मैं तेरे ईमानदारों के सामने ही तेरे
नाम के इन्तिज़ार में रहूँगा, क्यूँकि वह भला है।

बेदीन की हमाक़त

53 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। हिक्मत का गीत। तर्ज़ : महलत।

अहमक़ दिल में कहता है, “अल्लाह है ही नहीं!” ऐसे
लोग बदचलन हैं, उन की हरकतें क़ाबिल-ए-घिन हैं।
एक भी नहीं है जो अच्छा काम करे।
2 अल्लाह ने आसमान से इन्सान पर नज़र डाली
ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई
अल्लाह का तालिब है?
3 अफ़्सोस, सब सहीह राह से भटक गए, सब के
सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई करता हो,
एक भी नहीं।

4 क्या जो बदी करके मेरी क़ौम को रोटी की तरह
खा लेते हैं उन्हें समझ नहीं आती? वह तो अल्लाह को
पुकारते ही नहीं।
5 तब उन पर सख़्त दहशत वहाँ छा गई जहाँ पहले
दहशत का सबब नहीं था। जिन्हों ने तुझे घेर रखा
था अल्लाह ने उन की हड्डियाँ बिखेर दीं। तू ने उन को
रुसवा किया, क्यूँकि अल्लाह ने उन्हें रद्द किया है।

6 काश कोह-ए-सिय्यून से इस्राईल की नजात
निकले! जब रब अपनी क़ौम को बहाल करेगा तो
याक़ूब ख़ुशी के नारे लगाएगा, इस्राईल बाग़ बाग़
होगा।

ख़तरे में फंसे हुए शख़्स की इल्तिजा

54 1 दाऊद का ज़बूर। हिक्मत का यह गीत
तारदार साज़ों के साथ गाना है। यह उस
वक़्त से मुताल्लिक़ है जब ज़ीफ़ के बाशिन्दों ने साऊल
के पास जा कर कहा, “दाऊद हमारे पास छुपा हुआ
है।”
ऐ अल्लाह, अपने नाम के ज़रीए से मुझे छुटकारा दे!
अपनी क़ुदरत के ज़रीए से मेरा इन्साफ़ कर!
2 ऐ अल्लाह, मेरी इल्तिजा सुन, मेरे मुँह के अल्फ़ाज़
पर ध्यान दे।
3 क्यूँकि परदेसी मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं,
ज़ालिम जो अल्लाह का लिहाज़ नहीं करते मेरी जान
लेने के दरपै हैं। (सिलाह)
4 लेकिन अल्लाह मेरा सहारा है, रब मेरी ज़िन्दगी
क़ाइम रखता है।
5 वह मेरे दुश्मनों की शरारत उन पर वापस लाएगा।
चुनाँचे अपनी वफ़ादारी दिखा कर उन्हें तबाह कर दे!
6 मैं तुझे रज़ाकाराना क़ुर्बानी पेश करूँगा। ऐ रब,
मैं तेरे नाम की सताइश करूँगा, क्यूँकि वह भला है।
7 क्यूँकि उस ने मुझे सारी मुसीबत से रिहाई दी,
और अब मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देख कर ख़ुश
हूँगा।

झूटे भाइयों पर शिकायत

55 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। हिक्मत का यह गीत तारदार साज़ों
के साथ गाना है।
ऐ अल्लाह, मेरी दुआ पर ध्यान दे, अपने आप को
मेरी इल्तिजा से छुपाए न रख।
2 मुझ पर ग़ौर कर, मेरी सुन। मैं बेचैनी से इधर उधर
घूमते हुए आहें भर रहा हूँ।
3 क्यूँकि दुश्मन शोर मचा रहा, बेदीन मुझे तंग कर
रहा है। वह मुझ पर आफ़त लाने पर तुले हुए हैं, ग़ुस्से
में मेरी मुख़ालफ़त कर रहे हैं।
4 मेरा दिल मेरे अन्दर तड़प रहा है, मौत की दहशत
मुझ पर छा गई है।
5 ख़ौफ़ और लरज़िश मुझ पर तारी हुई, हैबत मुझ
पर ग़ालिब आ गई है।

6 मैं बोला, “काश मेरे कबूतर के से पर हों ताकि
उड़ कर आराम-ओ-सुकून पा सकूँ!
7 तब मैं दूर तक भाग कर रेगिस्तान में बसेरा करता,
8 मैं जल्दी से कहीं पनाह लेता जहाँ तेज़ आँधी और
तूफ़ान से महफ़ूज़ रहता।” (सिलाह)

9 ऐ रब, उन में अब्तरी पैदा कर, उन की ज़बान
में इख़तिलाफ़ डाल! क्यूँकि मुझे शहर में हर तरफ़
ज़ुल्म और झगड़े नज़र आते हैं।

10 दिन रात वह फ़सील पर चक्कर काटते हैं, और
शहर फ़साद और ख़राबी से भरा रहता है।
11 उस के बीच में तबाही की हुकूमत है, और ज़ुल्म
और फ़रेब उस के चौक को नहीं छोड़ते।

12 अगर कोई दुश्मन मेरी रुस्वाई करता तो
क़ाबिल-ए-बर्दाश्त होता। अगर मुझ से नफ़रत करने
वाला मुझे दबा कर अपने आप को सरफ़राज़ करता
तो मैं उस से छुप जाता।
13 लेकिन तू ही ने यह किया, तू जो मुझ जैसा है,
जो मेरा क़रीबी दोस्त और हमराज़ है।
14 मेरी तेरे साथ कितनी अच्छी रिफ़ाक़त थी जब
हम हुजूम के साथ अल्लाह के घर की तरफ़ चलते गए!

15 मौत अचानक ही उन्हें अपनी गिरिफ़्त में ले ले।
ज़िन्दा ही वह पाताल में उतर जाएँ, क्यूँकि बुराई ने
उन में अपना घर बना लिया है।
16 लेकिन मैं पुकार कर अल्लाह से मदद माँगता हूँ,
और रब मुझे नजात देगा।
17 मैं हर वक़्त आह-ओ-ज़ारी करता और कराहता
रहता हूँ, ख़्वाह सुब्ह हो, ख़्वाह दोपहर या शाम।
और वह मेरी सुनेगा।
18 वह फ़िद्या दे कर मेरी जान को उन से छुड़ाएगा
जो मेरे ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं। गो उन की तादाद बड़ी
है वह मुझे आराम-ओ-सुकून देगा।
19 अल्लाह जो अज़ल से तख़्तनशीन है मेरी सुन कर
उन्हें मुनासिब जवाब देगा। (सिलाह) क्यूँकि न वह
तब्दील हो जाएंगे, न कभी अल्लाह का ख़ौफ़ मानेंगे।

20 उस शख़्स ने अपना हाथ अपने दोस्तों के
ख़िलाफ़ उठाया, उस ने अपना अह्द तोड़ लिया है।
21 उस की ज़बान पर मक्खन की सी चिकनी-चुपड़ी
बातें और दिल में जंग है। उस के तेल से ज़्यादा नर्म
अल्फ़ाज़ हक़ीक़त में खैंची हुई तलवारें हैं।

22 अपना बोझ रब पर डाल तो वह तुझे सँभालेगा
। वह रास्तबाज़ को कभी डगमगाने नहीं देगा।
23 लेकिन ऐ अल्लाह, तू उन्हें तबाही के गढ़े में उतरने
देगा। ख़ूँख़ार और धोकेबाज़ आधी उम्र भी नहीं पाएँगे
बल्कि जल्दी मरेंगे। लेकिन मैं तुझ पर भरोसा रखता
हूँ।

मुसीबत में भरोसा

56 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तर्ज़ : दूरदराज़ जज़ीरों का कबूतर।
यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब
फ़िलिस्तियों ने उसे जात में पकड़ लिया।
ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर! क्यूँकि लोग मुझे
तंग कर रहे हैं, लड़ने वाला दिन भर मुझे सता रहा
है।
2 दिन भर मेरे दुश्मन मेरे पीछे लगे हैं, क्यूँकि वह
बहुत हैं और ग़ुरूर से मुझ से लड़ रहे हैं।
3 लेकिन जब ख़ौफ़ मुझे अपनी गिरिफ़्त में ले ले तो
मैं तुझ पर ही भरोसा रखता हूँ।

4 अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, अल्लाह पर
मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं, क्यूँकि फ़ानी इन्सान
मुझे क्या नुक़्सान पहुँचा सकता है?

5 दिन भर वह मेरे अल्फ़ाज़ को तोड़-मरोड़ कर
ग़लत मानी निकालते, अपने तमाम मन्सूबों से मुझे
ज़रर पहुँचाना चाहते हैं।
6 वह हम्लाआवर हो कर ताक में बैठ जाते और
मेरे हर क़दम पर ग़ौर करते हैं। क्यूँकि वह मुझे मार
डालने पर तुले हुए हैं।
7 जो ऐसी शरीर हरकतें करते हैं, क्या उन्हें बचना
चाहिए? हरगिज़ नहीं! ऐ अल्लाह, अक़्वाम को ग़ुस्से
में ख़ाक में मिला दे।
8 जितने भी दिन मैं बेघर फिरा हूँ उन का तू ने पूरा
हिसाब रखा है। ऐ अल्लाह, मेरे आँसू अपने मश्कीज़े में

डाल ले! क्या वह पहले से तेरी किताब में क़लमबन्द
नहीं हैं? ज़रूर!
9 फिर जब मैं तुझे पुकारूँगा तो मेरे दुश्मन मुझ से
बाज़ आएँगे। यह मैं ने जान लिया है कि अल्लाह मेरे
साथ है!
10 अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, रब के
कलाम पर मेरा फ़ख़र है।
11 अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं, क्यूँकि
फ़ानी इन्सान मुझे क्या नुक़्सान पहुँचा सकता है?

12 ऐ अल्लाह, तेरे हुज़ूर मैं ने मन्नतें मानी हैं, और अब
मैं तुझे शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानियाँ पेश करूँगा।
13 क्यूँकि तू ने मेरी जान को मौत से बचाया और मेरे
पाँओ को ठोकर खाने से महफ़ूज़ रखा ताकि ज़िन्दगी
की रौशनी में अल्लाह के हुज़ूर चलूँ।

आज़माइश में अल्लाह पर एतिमाद

57 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तर्ज़ : तबाह न कर। यह सुनहरा गीत
उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब वह साऊल से भाग
कर ग़ार में छुप गया।
ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर, मुझ पर मेहरबानी
कर! क्यूँकि मेरी जान तुझ में पनाह लेती है। जब तक
आफ़त मुझ पर से गुज़र न जाए मैं तेरे परों के साय
में पनाह लूँगा।
2 मैं अल्लाह तआला को पुकारता हूँ, अल्लाह से जो
मेरा मुआमला ठीक करेगा।
3 वह आसमान से मदद भेज कर मुझे छुटकारा देगा
और उन की रुस्वाई करेगा जो मुझे तंग कर रहे हैं।
(सिलाह) अल्लाह अपना करम और वफ़ादारी भेजेगा।
4 मैं इन्सान को हड़प करने वाले शेरबबरों के बीच
में लेटा हुआ हूँ, उन के दरमियान जिन के दाँत नेज़े
और तीर हैं और जिन की ज़बान तेज़ तलवार है।

5 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरबुलन्द हो जा! तेरा
जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए!

6 उन्हों ने मेरे क़दमों के आगे फंदा बिछा दिया,
और मेरी जान ख़ाक में दब गई है। उन्हों ने मेरे सामने
गढ़ा खोद लिया, लेकिन वह ख़ुद उस में गिर गए हैं।
(सिलाह)

7 ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़बूत, मेरा दिल
साबितक़दम है। मैं साज़ बजा कर तेरी मद्हसराई
करूँगा।
8 ऐ मेरी जान, जाग उठ! ऐ सितार और सरोद, जाग
उठो! आओ, मैं तुलू-ए-सुब्ह को जगाऊँ।
9 ऐ रब, क़ौमों में मैं तेरी सताइश, उम्मतों में तेरी
मद्हसराई करूँगा।
10 क्यूँकि तेरी अज़ीम शफ़क़त आसमान जितनी
बुलन्द है, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।
11 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज़ हो! तेरा
जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।

इन्तिक़ाम की दुआ

58 1 दाऊद का सुनहरा गीत। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर।
ए हुक्मरानो, क्या तुम वाक़ई मुन्सिफ़ाना फ़ैसला
करते, क्या दयानतदारी से आदमज़ादों की अदालत
करते हो?
2 हरगिज़ नहीं, तुम दिल में बदी करते और मुल्क
में अपने ज़ालिम हाथों के लिए रास्ता बनाते हो।
3 बेदीन पैदाइश से ही सहीह राह से दूर हो गए हैं,
झूट बोलने वाले माँ के पेट से ही भटक गए हैं।
4 वह साँप की तरह ज़हर उगलते हैं, उस बहरे नाग
की तरह जो अपने कानों को बन्द कर रखता है
5 ताकि न जादूगर की आवाज़ सुने, न माहिर सपेरे
के मंत्र।

6 ऐ अल्लाह, उन के मुँह के दाँत तोड़ डाल! ऐ रब,
जवान शेरबबरों के जबड़े को पाश पाश कर!

7 वह उस पानी की तरह ज़ाए हो जाएँ जो बह कर
ग़ाइब हो जाता है। उन के चलाए हुए तीर बेअसर
रहें।
8 वह धूप में घोंगे की मानिन्द हों जो चलता चलता
पिघल जाता है। उन का अन्जाम उस बच्चे का सा हो
जो माँ के पेट में ज़ाए हो कर कभी सूरज नहीं देखेगा।
9 इस से पहले कि तुम्हारी देगें काँटेदार टहनियों
की आग महसूस करें अल्लाह उन सब को आँधी में
उड़ा कर ले जाएगा।

10 आख़िरकार दुश्मन को सज़ा मिलेगी। यह देख
कर रास्तबाज़ ख़ुश होगा, और वह अपने पाँओ को
बेदीनों के ख़ून में धो लेगा।
11 तब लोग कहेंगे, "वाक़ई रास्तबाज़ को अज्र
मिलता है, वाक़ई अल्लाह है जो दुनिया में लोगों की
अदालत करता है!"

दुश्मन के दरमियान दुआ

59 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर। यह सुनहरा
गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब साऊल ने अपने
आदमियों को दाऊद के घर की पहरादारी करने के
लिए भेजा ताकि जब मौक़ा मिले उसे क़त्ल करें।
ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे मेरे दुश्मनों से बचा। उन से मेरी
हिफ़ाज़त कर जो मेरे ख़िलाफ़ उठे हैं।
2 मुझे बदकारों से छुटकारा दे, ख़ूँख़्वारों से रिहा
कर।
3 देख, वह मेरी ताक में बैठे हैं। ऐ रब, ज़बरदस्त
आदमी मुझ पर हम्लाआवर हैं, हालाँकि मुझ से न ख़ता
हुई न गुनाह।
4 मैं बेक़ुसूर हूँ, ताहम वह दौड़ दौड़ कर मुझ से
लड़ने की तय्यारियाँ कर रहे हैं। चुनाँचे जाग उठ,
मेरी मदद करने आ, जो कुछ हो रहा है उस पर नज़र
डाल।
5 ऐ रब, लश्करों और इस्राईल के ख़ुदा, दीगर
तमाम क़ौमों को सज़ा देने के लिए जाग उठ! उन सब
पर करम न फ़रमा जो शरीर और ग़द्दार हैं। (सिलाह)

6 हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों की
तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घूमते फिरते हैं।
7 देख, उन के मुँह से राल टपक रही है, उन के
होंटों से तलवारें निकल रही हैं। क्यूँकि वह समझते
हैं, "कौन सुनेगा?"

8 लेकिन तू ऐ रब, उन पर हँसता है, तू तमाम क़ौमों
का मज़ाक़ उड़ाता है।
9 ऐ मेरी क़ुव्वत, मेरी आँखें तुझ पर लगी रहेंगी,
क्यूँकि अल्लाह मेरा क़िला है।
10 मेरा ख़ुदा अपनी मेहरबानी के साथ मुझ से मिलने
आएगा, अल्लाह बख़्श देगा कि मैं अपने दुश्मनों की
शिकस्त देख कर ख़ुश हूँगा।

11 ऐ अल्लाह हमारी ढाल, उन्हें हलाक न कर, वर्ना
मेरी क़ौम तेरा काम भूल जाएगी। अपनी क़ुदरत का
इज़हार यूँ कर कि वह इधर उधर लड़खड़ा कर गिर
जाएँ।
12 जो कुछ भी उन के मुँह से निकलता है वह गुनाह
है, वह लानतें और झूट ही सुनाते हैं। चुनाँचे उन्हें उन
के तकब्बुर के जाल में फंसने दे।
13 ग़ुस्से में उन्हें तबाह कर! उन्हें यूँ तबाह कर कि
उन का नाम-ओ-निशान तक न रहे। तब लोग दुनिया
की इन्तिहा तक जान लेंगे कि अल्लाह याक़ूब की
औलाद पर हुकूमत करता है। (सिलाह)

14 हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों की
तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घूमते फिरते हैं।
15 वह इधर उधर गश्त लगा कर खाने की चीज़ें
ढूँडते हैं। अगर पेट न भरे तो ग़ुर्राते रहते हैं।

16 लेकिन मैं तेरी क़ुदरत की मद्हसराई करूँगा,
सुब्ह को ख़ुशी के नारे लगा कर तेरी शफ़क़त की
सताइश करूँगा। क्यूँकि तू मेरा क़िला और मुसीबत
के वक़्त मेरी पनाहगाह है।
17 ऐ मेरी क़ुव्वत, मैं तेरी मद्हसराई करूँगा, क्यूँकि
अल्लाह मेरा क़िला और मेरा मेहरबान ख़ुदा है।

मर्दूद क़ौम की दुआ

60 1 दाऊद का ज़बूर। तर्ज़ : अह्द का सोसन।
तालीम के लिए यह सुनहरा गीत उस वक़्त
से मुताल्लिक़ है जब दाऊद ने मसोपुतामिया के
अरामियों और ज़ोबाह के अरामियों से जंग की।
वापसी पर योआब ने नमक की वादी में 12,000
अदोमियों को मार डाला।
ऐ अल्लाह, तू ने हमें रद्द किया, हमारी क़िलाबन्दी
में रख़ना डाल दिया है। लेकिन अब अपने ग़ज़ब से
बाज़ आ कर हमें बहाल कर।
2 तू ने ज़मीन को ऐसे झटके दिए कि उस में दराड़ें
पड़ गईं। अब उस के शिगाफ़ों को शिफ़ा दे, क्यूँकि
वह अभी तक थरथरा रही है।
3 तू ने अपनी क़ौम को तल्ख़ तजरिबों से दोचार होने
दिया, हमें ऐसी तेज़ मै पिला दी कि हम डगमगाने लगे
हैं।
4 लेकिन जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं उन के लिए तू ने
झंडा गाड़ दिया जिस के इर्दगिर्द वह जमा हो कर
तीरों से पनाह ले सकते हैं। (सिलाह)
5 अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन ताकि
जो तुझे प्यारे हैं वह नजात पाएँ।

6 अल्लाह ने अपने मक़्दिस में फ़रमाया है, “मैं फ़त्ह
मनाते हुए सिकम को तक़्सीम करूँगा और वादी-ए-
सुक्कात को नाप कर बाँट दूँगा।
7 जिलिआद मेरा है और मनस्सी मेरा है। इफ़्राईम
मेरा ख़ोद और यहूदाह मेरा शाही असा है।
8 मोआब मेरा ग़ुसल का बर्तन है, और अदोम पर
मैं अपना जूता फैंक दूँगा। ऐ फ़िलिस्ती मुल्क, मुझे
देख कर ज़ोरदार नारे लगा!”

9 कौन मुझे क़िलाबन्द शहर में लाएगा? कौन मेरी
राहनुमाई करके मुझे अदोम तक पहुँचाएगा?
10 ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो तू ने हमें
रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी फ़ौजों का साथ नहीं
देता जब वह लड़ने के लिए निकलती हैं।
11 मुसीबत में हमें सहारा दे, क्यूँकि इस वक़्त
इन्सानी मदद बेकार है।
12 अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम करेंगे,
क्यूँकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।

दूर से दरख़्वास्त

61 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तारदार साज़ के साथ गाना है।
ऐ अल्लाह, मेरी आह-ओ-ज़ारी सुन, मेरी दुआ पर
तवज्जुह दे।
2 मैं तुझे दुनिया की इन्तिहा से पुकार रहा हूँ, क्यूँकि
मेरा दिल निढाल हो गया है। मेरी राहनुमाई करके मुझे
उस चटान पर पहुँचा दे जो मुझ से बुलन्द है।

3 क्यूँकि तू मेरी पनाहगाह रहा है, एक मज़बूत बुर्ज
जिस में मैं दुश्मन से महफ़ूज़ हूँ।
4 मैं हमेशा के लिए तेरे ख़ैमे में रहना, तेरे परों तले
पनाह लेना चाहता हूँ। (सिलाह)

5 क्यूँकि ऐ अल्लाह, तू ने मेरी मन्नतों पर ध्यान दिया,
तू ने मुझे वह मीरास बख़्शी जो उन सब को मिलती
है जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं।
6 बादशाह को उम्र की दराज़ी बख़्श दे। वह पुश्त-
दर-पुश्त जीता रहे।
7 वह हमेशा तक अल्लाह के हुज़ूर तख़्तनशीन रहे।
शफ़क़त और वफ़ादारी उस की हिफ़ाज़त करें।

8 तब मैं हमेशा तक तेरे नाम की मद्हसराई करूँगा,
रोज़-ब-रोज़ अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।

ख़ामोशी से अल्लाह का इन्तिज़ार कर

62 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। यदूतून के लिए।
मेरी जान ख़ामोशी से अल्लाह ही के इन्तिज़ार में है।
उसी से मुझे मदद मिलती है।
2 वही मेरी चटान, मेरी नजात और मेरा क़िला है,
इस लिए मैं ज़्यादा नहीं डगमगाऊँगा।

3 तुम कब तक उस पर हम्ला करोगे जो पहले ही
झुकी हुई दीवार की मानिन्द है? तुम सब कब तक
उसे क़त्ल करने पर तुले रहोगे जो पहले ही गिरने
वाली चारदीवारी जैसा है?
4 उन के मन्सूबों का एक ही मक़्सद है, कि उसे
उस के ऊँचे उह्दे से उतारें। उन्हें झूट से मज़ा आता
है। मुँह से वह बरकत देते, लेकिन अन्दर ही अन्दर
लानत करते हैं। (सिलाह)

5 लेकिन तू ऐ मेरी जान, ख़ामोशी से अल्लाह ही के
इन्तिज़ार में रह। क्यूँकि उसी से मुझे उम्मीद है।
6 सिर्फ़ वही मेरी जान की चटान, मेरी नजात और
मेरा क़िला है, इस लिए मैं नहीं डगमगाऊँगा।

7 मेरी नजात और इज़्ज़त अल्लाह पर मब्नी है, वही
मेरी मह्फ़ूज़ चटान है। अल्लाह में मैं पनाह लेता हूँ।
8 ऐ उम्मत, हर वक़्त उस पर भरोसा रख! उस के
हुज़ूर अपने दिल का रंज-ओ-अलम पानी की तरह
उंडेल दे। अल्लाह ही हमारी पनाहगाह है। (सिलाह)

9 इन्सान दम भर का ही है, और बड़े लोग फ़रेब ही
हैं। अगर उन्हें तराज़ू में तोला जाए तो मिल कर उन
का वज़न एक फूँक से भी कम है।

10 ज़ुल्म पर एतिमाद न करो, चोरी करने पर फ़ुज़ूल
उम्मीद न रखो। और अगर दौलत बढ़ जाए तो तुम्हारा
दिल उस से लिपट न जाए।
11 अल्लाह ने एक बात फ़रमाई बल्कि दो बार मैं ने
सुनी है कि अल्लाह ही क़ादिर है।
12 ऐ रब, यक़ीनन तू मेहरबान है, क्यूँकि तू हर एक
को उस के आमाल का बदला देता है।

अल्लाह के लिए आर्ज़ू

63 1 दाऊद का ज़बूर। यह उस वक़्त से
मुताल्लिक़ है जब वह यहूदाह के रेगिस्तान
में था।
ऐ अल्लाह, तू मेरा ख़ुदा है जिसे मैं ढूँडता हूँ। मेरी
जान तेरी प्यासी है, मेरा पूरा जिस्म तेरे लिए तरसता
है। मैं उस ख़ुश्क और निढाल मुल्क की मानिन्द हूँ
जिस में पानी नहीं है।
2 चुनाँचे मैं मक़्दिस में तुझे देखने के इन्तिज़ार में रहा
ताकि तेरी क़ुदरत और जलाल का मुशाहदा करूँ।
3 क्यूँकि तेरी शफ़क़त ज़िन्दगी से कहीं बेहतर है,
मेरे होंट तेरी मद्हसराई करेंगे।
4 चुनाँचे मैं जीते जी तेरी सताइश करूँगा, तेरा नाम
ले कर अपने हाथ उठाऊँगा।
5 मेरी जान उम्दा ग़िज़ा से सेर हो जाएगी, मेरा मुँह
ख़ुशी के नारे लगा कर तेरी हम्द-ओ-सना करेगा।
6 बिस्तर पर मैं तुझे याद करता, पूरी रात के दौरान
तेरे बारे में सोचता रहता हूँ।
7 क्यूँकि तू मेरी मदद करने आया, और मैं तेरे परों
के साय में ख़ुशी के नारे लगाता हूँ।
8 मेरी जान तेरे साथ लिपटी रहती, और तेरा दहना
हाथ मुझे सँभालता है।

9 लेकिन जो मेरी जान लेने पर तुले हुए हैं वह तबाह
हो जाएंगे, वह ज़मीन की गहराइयों में उतर जाएंगे।
10 उन्हें तलवार के हवाले किया जाएगा, और वह
गीदड़ों की ख़ुराक बन जाएंगे।

11 लेकिन बादशाह अल्लाह की ख़ुशी मनाएगा। जो
भी अल्लाह की क़सम खाता है वह फ़ख़र करेगा,
क्यूँकि झूट बोलने वालों के मुँह बन्द हो जाएंगे।

शरीअत के पोशीदा हम्लों से हिफ़ाज़त की दुआ

64 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।

ऐ अल्लाह, सुन जब मैं अपनी आह-ओ-ज़ारी पेश
करता हूँ। मेरी ज़िन्दगी दुश्मन की दहशत से महफ़ूज़
रख।

2 मुझे बदमआशों की साज़िशों से छुपाए रख, उन
की हलचल से जो ग़लत काम करते हैं।

3 वह अपनी ज़बान को तलवार की तरह तेज़ करते
और अपने ज़हरीले अल्फ़ाज़ को तीरों की तरह
तय्यार रखते हैं

4 ताकि ताक में बैठ कर उन्हें बेक़ुसूर पर चलाएँ।
वह अचानक और बेबाकी से उन्हें उस पर बरसा देते
हैं।

5 वह बुरा काम करने में एक दूसरे की
हौसलाअफ़्ज़ाई करते, एक दूसरे से मश्वरा लेते हैं
कि हम अपने फंदे किस तरह छुपा कर लगाएँ? वह
कहते हैं, "यह किसी को भी नज़र नहीं आएँगे।"

6 वह बड़ी बारीकी से बुरे मन्सूबों की तय्यारियाँ
करते, फिर कहते हैं, "चलो, बात बन गई है, मन्सूबा
सोच-बिचार के बाद तय्यार हुआ है।" यक़ीनन
इन्सान के बातिन और दिल की तह तक पहुँचना
मुश्किल ही है।

7 लेकिन अल्लाह उन पर तीर बरसाएगा, और
अचानक ही वह ज़ख़्मी हो जाएंगे।

8 वह अपनी ही ज़बान से ठोकर खा कर गिर
जाएंगे। जो भी उन्हें देखेगा वह "तौबा तौबा" कहेगा।

9 तब तमाम लोग ख़ौफ़ खा कर कहेंगे, "अल्लाह ही
ने यह किया!" उन्हें समझ आएगी कि यह उसी का
काम है।

10 रास्तबाज़ अल्लाह की ख़ुशी मना कर उस में पनाह
लेगा, और जो दिल से दियानतदार हैं वह सब फ़ख़र
करेंगे।

रुहानी और जिस्मानी बरकतों के लिए शुक्रगुज़ारी

65 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए गीत।

ऐ अल्लाह, तू ही इस लाइक़ है कि इन्सान कोह-
ए-सिय्यून पर ख़ामोशी से तेरे इन्तिज़ार में रहे, तेरी
तम्जीद करे और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी करे।

2 तू दुआओं को सुनता है, इस लिए तमाम इन्सान
तेरे हुज़ूर आते हैं।

3 गुनाह मुझ पर ग़ालिब आ गए हैं, तू ही हमारी
सरकश हरकतों को मुआफ़ कर।

4 मुबारक है वह जिसे तू चुन कर क़रीब आने देता
है, जो तेरी बारगाहों में बस सकता है। बख़्श दे कि
हम तेरे घर, तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की अच्छी
चीज़ों से सेर हो जाएँ।

5 ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हैबतनाक कामों से
अपनी रास्ती क़ाइम करके हमारी सुन! क्यूँकि तू
ज़मीन की तमाम हुदूद और दूरदराज़ समुन्दरों तक
सब की उम्मीद है।

6 तू अपनी क़ुदरत से पहाड़ों की मज़बूत बुन्यादें
डालता और क़ुव्वत से कमरबस्ता रहता है।

7 तू मुतलातिम समुन्दरों को थमा देता है, तू उन की
गरजती लहरों और उम्मतों का शोर-शराबा ख़त्म कर
देता है।

8 दुनिया की इन्तिहा के बाशिन्दे तेरे निशानात से
ख़ौफ़ खाते हैं, और तू तुलू-ए-सुब्ह और ग़ुरूब-ए-
आफ़ताब को ख़ुशी मनाने देता है।

9 तू ज़मीन की देख-भाल करके उसे पानी की कस्रत
और ज़रख़ेज़ी से नवाज़ता है, चुनाँचे अल्लाह की नदी
पानी से भरी रहती है। ज़मीन को यूँ तय्यार करके तू

इन्सान को अनाज की अच्छी फ़सल मुहय्या करता है।

10 तू खेत की रेघारियों को शराबोर करके उस के
ढेलों को हमवार करता है। तू बारिश की बौछाड़ों
से ज़मीन को नर्म करके उस की फ़सलों को बरकत
देता है।

11 तू साल को अपनी भलाई का ताज पहना देता है,
और तेरे नक़्श-ए-क़दम तेल की फ़रावानी से टपकते
हैं।

12 बयाबान की चरागाहें तेल [s]की कस्रत से टपकती
हैं, और पहाड़ियाँ भरपूर ख़ुशी से मुलब्बस हो जाती
हैं।

13 सब्ज़ाज़ार भेड़-बकरियों से आरास्ता हैं, वादियाँ
अनाज से ढकी हुई हैं। सब ख़ुशी के नारे लगा रहे हैं,
सब गीत गा रहे हैं!

अल्लाह की मोजिज़ाना मदद की तारीफ़

66 1 मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। ज़बूर।
गीत।

ऐ सारी ज़मीन, ख़ुशी के नारे लगा कर अल्लाह की
मद्हसराई कर!

2 उस के नाम के जलाल की तम्जीद करो, उस की
सताइश उरूज तक ले जाओ!

3 अल्लाह से कहो, "तेरे काम कितने पुरजलाल हैं।
तेरी बड़ी क़ुदरत के सामने तेरे दुश्मन दबक कर तेरी
ख़ुशामद करने लगते हैं।

4 तमाम दुनिया तुझे सिज्दा करे! वह तेरी तारीफ़ में
गीत गाए, तेरे नाम की सताइश करे।" (सिलाह)

5 आओ, अल्लाह के काम देखो! आदमज़ाद की
ख़ातिर उस ने कितने पुरजलाल मोजिज़े किए हैं!

6 उस ने समुन्दर को ख़ुश्क ज़मीन में बदल दिया।
जहाँ पहले पानी का तेज़ बहाओ था वहाँ से लोग
पैदल ही गुज़रे। चुनाँचे आओ, हम उस की ख़ुशी
मनाएँ।

7 अपनी क़ुदरत से वह अबद तक हुकूमत करता
है। उस की आँखें क़ौमों पर लगी रहती हैं ताकि
सरकश उस के ख़िलाफ़ न उठें। (सिलाह)

8 ऐ उम्मतो, हमारे ख़ुदा की हम्द करो। उस की
सताइश दूर तक सुनाई दे।

9 क्यूँकि वह हमारी ज़िन्दगी क़ाइम रखता, हमारे
पाँओ को डगमगाने नहीं देता।

10 क्यूँकि ऐ अल्लाह, तू ने हमें आज़माया। जिस तरह
चाँदी को पिघला कर साफ़ किया जाता है उसी तरह
तू ने हमें पाक-साफ़ कर दिया है।

11 तू ने हमें जाल में फंसा दिया, हमारी कमर पर
अज़ियतनाक बोझ डाल दिया।

12 तू ने लोगों के रथों को हमारे सरों पर से गुज़रने
दिया, और हम आग और पानी की ज़द में आ
गए। लेकिन फिर तू ने हमें मुसीबत से निकाल कर
फ़रावानी की जगह पहुँचाया।

13 मैं भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ ले कर तेरे घर में
आऊँगा और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी करूँगा,

14 वह मन्नतें जो मेरे मुँह ने मुसीबत के वक़्त मानी
थीं।

15 भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर मैं तुझे मोटी-
ताज़ी भेड़ें और मेंढों का धुआँ पेश करूँगा, साथ
साथ बैल और बकरे भी चढ़ाऊँगा। (सिलाह)

16 ऐ अल्लाह का ख़ौफ़ मानने वालो, आओ और
सुनो! जो कुछ अल्लाह ने मेरी जान के लिए किया वह
तुम्हें सुनाऊँगा।

17 मैं ने अपने मुँह से उसे पुकारा, लेकिन मेरी ज़बान
उस की तारीफ़ करने के लिए तय्यार थी।

---

[s]लफ़्ज़ी तर्जुमा : 'चर्बी,' जो फ़रावानी का निशान था।

18 अगर मैं दिल में गुनाह की परवरिश करता तो
रब मेरी न सुनता।
19 लेकिन यक़ीनन रब ने मेरी सुनी, उस ने मेरी
इल्तिजा पर तवज्जुह दी।
20 अल्लाह की हम्द हो, जिस ने न मेरी दुआ रद्द की,
न अपनी शफ़क़त मुझ से बाज़ रखी।

तमाम क़ौमें अल्लाह की तारीफ़ करें

67 1 ज़बूर। तारदार साज़ों के साथ गाना है।
मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
अल्लाह हम पर मेहरबानी करे और हमें बरकत दे।
वह अपने चिहरे का नूर हम पर चमकाए (सिलाह)
2 ताकि ज़मीन पर तेरी राह और तमाम क़ौमों में तेरी
नजात मालूम हो जाए।

3 ऐ अल्लाह, क़ौमें तेरी सताइश करें, तमाम क़ौमें
तेरी सताइश करें।

4 उम्मतें शादमान हो कर ख़ुशी के नारे लगाएँ,
क्यूँकि तू इन्साफ़ से क़ौमों की अदालत करेगा और
ज़मीन पर उम्मतों की क़ियादत करेगा। (सिलाह)

5 ऐ अल्लाह, क़ौमें तेरी सताइश करें, तमाम क़ौमें
तेरी सताइश करें।

6 ज़मीन अपनी फ़सलें देती है। अल्लाह हमारा ख़ुदा
हमें बरकत दे!
7 अल्लाह हमें बरकत दे, और दुनिया की इन्तिहाएँ
सब उस का ख़ौफ़ मानें।

अल्लाह की फ़त्ह

68 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए गीत।
अल्लाह उठे तो उस के दुश्मन तित्तर-बित्तर हो
जाएंगे, उस से नफ़रत करने वाले उस के सामने से
भाग जाएंगे।
2 वह धुएँ की तरह बिखर जाएंगे। जिस तरह मोम
आग के सामने पिघल जाता है उसी तरह बेदीन
अल्लाह के हुज़ूर हलाक हो जाएंगे।
3 लेकिन रास्तबाज़ ख़ुश-ओ-ख़ुर्रम होंगे, वह अल्लाह
के हुज़ूर जश्न मना कर फूले न समाएँगे।

4 अल्लाह की ताज़ीम में गीत गाओ, उस के नाम की
मद्हसराई करो! जो रथ पर सवार बयाबान में से
गुज़र रहा है उस के लिए रास्ता तय्यार करो। रब उस
का नाम है, उस के हुज़ूर ख़ुशी मनाओ!
5 अल्लाह अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह में यतीमों का
बाप और बेवाओं का हामी है।
6 अल्लाह बेघरों को घरों में बसा देता और क़ैदियों
को क़ैद से निकाल कर ख़ुशहाली अता करता है।
लेकिन जो सरकश हैं वह झुलसे हुए मुल्क में रहेंगे।

7 ऐ अल्लाह, जब तू अपनी क़ौम के आगे आगे
निकला, जब तू रेगिस्तान में क़दम-ब-क़दम आगे
बढ़ा (सिलाह)
8 तो ज़मीन लरज़ उठी और आसमान से बारिश
टपकने लगी। हाँ, अल्लाह के हुज़ूर जो कोह-ए-सीना
और इस्राईल का ख़ुदा है ऐसा ही हुआ।
9 ऐ अल्लाह, तू ने कस्रत की बारिश बरसने दी। जब
कभी तेरा मौरूसी मुल्क निढाल हुआ तो तू ने उसे
ताज़ादम किया।
10 यूँ तेरी क़ौम उस में आबाद हुई। ऐ अल्लाह, अपनी
भलाई से तू ने उसे ज़रूरतमन्दों के लिए तय्यार
किया।

11 रब फ़रमान सादिर करता है तो ख़ुशख़बरी सुनाने
वाली औरतों का बड़ा लश्कर निकलता है,
12 "फ़ौजों के बादशाह भाग रहे हैं। वह भाग रहे हैं
और औरतें लूट का माल तक़्सीम कर रही हैं।
13 तुम क्यूँ अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठे
रहते हो? देखो, कबूतर के परों पर चाँदी और उस
के शाहपरों पर पीला सोना चढ़ाया गया है।"

14 जब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने वहाँ के बादशाहों को
मुन्तशिर कर दिया तो कोह-ए-ज़ल्मोन पर बर्फ़ पड़ी।

15 कोह-ए-बसन इलाही पहाड़ है, कोह-ए-बसन की
मुतअद्दिद चोटियाँ हैं।
16 ऐ पहाड़ की मुतअद्दिद चोटियो, तुम उस पहाड़
को क्यूँ रश्क की निगाह से देखती हो जिसे अल्लाह ने
अपनी सुकूनतगाह के लिए पसन्द किया है? यक़ीनन
रब वहाँ हमेशा के लिए सुकूनत करेगा।
17 अल्लाह के बेशुमार रथ और अनगिनत फ़ौजी हैं।
ख़ुदावन्द उन के दरमियान है, सीना का ख़ुदा मक़्दिस
में है।
18 तू ने बुलन्दी पर चढ़ कर क़ैदियों का हुजूम
गिरिफ़्तार कर लिया, तुझे इन्सानों से तुह्फ़े मिले,
उन से भी जो सरकश हो गए थे। यूँ ही रब ख़ुदा वहाँ
सुकूनतपज़ीर हुआ।

19 रब की तम्जीद हो जो रोज़-ब-रोज़ हमारा बोझ
उठाए चलता है। अल्लाह हमारी नजात है। (सिलाह)
20 हमारा ख़ुदा वह ख़ुदा है जो हमें बार बार नजात
देता है, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ हमें बार बार मौत से
बचने के रास्ते मुहय्या करता है।
21 यक़ीनन अल्लाह अपने दुश्मनों के सरों को कुचल
देगा। जो अपने गुनाहों से बाज़ नहीं आता उस की
खोपड़ी वह पाश पाश करेगा।
22 रब ने फ़रमाया, "मैं उन्हें बसन से वापस
लाऊँगा, समुन्दर की गहराइयों से वापस पहुँचाऊँगा।
23 तब तू अपने पाँओ को दुश्मन के ख़ून में धो
लेगा, और तेरे कुत्ते उसे चाट लेंगे।"

24 ऐ अल्लाह, तेरे जुलूस नज़र आ गए हैं, मेरे ख़ुदा
और बादशाह के जुलूस मक़्दिस में दाख़िल होते हुए
नज़र आ गए हैं।
25 आगे गुलूकार, फिर साज़ बजाने वाले चल रहे
हैं। उन के आस-पास कुंवारियाँ दफ़ बजाते हुए फिर
रही हैं।
26 "जमाअतों में अल्लाह की सताइश करो! जितने
भी इस्राईल के सरचश्मे से निकले हुए हो रब की
तम्जीद करो!"
27 वहाँ सब से छोटा भाई बिनयमीन आगे चल रहा
है, फिर यहूदाह के बुज़ुर्गों का पुरशोर हुजूम ज़बूलून
और नफ़्ताली के बुज़ुर्गों के साथ चल रहा है।

28 ऐ अल्लाह, अपनी क़ुदरत ब-रू-ए कार ला! ऐ
अल्लाह, जो क़ुदरत तू ने पहले भी हमारी ख़ातिर
दिखाई उसे दुबारा दिखा!
29 उसे यरूशलम के ऊपर अपनी सुकूनतगाह से
दिखा। तब बादशाह तेरे हुज़ूर तुह्फ़े लाएँगे।
30 सरकंडों में छुपे हुए दरिन्दे को मलामत कर!
साँडों का जो ग़ोल बछड़ों जैसी क़ौमों में रहता है उसे
डाँट! उन्हें कुचल दे जो चाँदी को प्यार करते हैं। उन
क़ौमों को मुन्तशिर कर जो जंग करने से लुत्फ़अन्दोज़
होती हैं।
31 मिस्र से सफ़ीर आएँगे, एथोपिया अपने हाथ
अल्लाह की तरफ़ उठाएगा।

32 ऐ दुनिया की सल्तनतो, अल्लाह की ताज़ीम में
गीत गाओ! रब की मद्हसराई करो (सिलाह)
33 जो अपने रथ पर सवार हो कर क़दीम ज़माने के
बुलन्दतरीन आसमानों में से गुज़रता है। सुनो उस की
आवाज़ जो ज़ोर से गरज रहा है।
34 अल्लाह की क़ुदरत को तस्लीम करो! उस की
अज़मत इस्राईल पर छाई रहती और उस की क़ुदरत
आसमान पर है।
35 ऐ अल्लाह, तू अपने मक़्दिस से ज़ाहिर होते वक़्त
कितना महीब है। इस्राईल का ख़ुदा ही क़ौम को
क़ुव्वत और ताक़त अता करता है। अल्लाह की
तम्जीद हो!

आज़माइश से नजात की दुआ

69 1 दाऊद का ज़बूर। तर्ज़ : सोसन के फूल।
मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह, मुझे बचा! क्यूँकि पानी मेरे गले तक
पहुँच गया है।
2 मैं गहरी दलदल में धँस गया हूँ, कहीं पाँओ जमाने
की जगह नहीं मिलती। मैं पानी की गहराइयों में आ
गया हूँ, सैलाब मुझ पर ग़ालिब आ गया है।
3 मैं चिल्लाते चिल्लाते थक गया हूँ। मेरा गला बैठ गया
है। अपने ख़ुदा का इन्तिज़ार करते करते मेरी आँखें
धुन्दला गईं।
4 जो बिलावजह मुझ से कीना रखते हैं वह मेरे सर
के बालों से ज़्यादा हैं, जो बेसबब मेरे दुश्मन हैं और
मुझे तबाह करना चाहते हैं वह ताक़तवर हैं। जो कुछ
मैं ने नहीं लूटा उसे मुझ से तलब किया जाता है।

5 ऐ अल्लाह, तू मेरी हमाक़त से वाक़िफ़ है, मेरा
क़ुसूर तुझ से पोशीदा नहीं है।
6 ऐ क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज, जो तेरे
इन्तिज़ार में रहते हैं वह मेरे बाइस शर्मिन्दा न हों। ऐ
इस्राईल के ख़ुदा, मेरे बाइस तेरे तालिब की रुस्वाई
न हो।
7 क्यूँकि तेरी ख़ातिर मैं शर्मिन्दगी बर्दाश्त कर रहा
हूँ, तेरी ख़ातिर मेरा चिहरा शर्मसार ही रहता है।
8 मैं अपने सगे भाइयों के नज़्दीक अजनबी और
अपनी माँ के बेटों के नज़्दीक परदेसी बन गया हूँ।
9 क्यूँकि तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा गई है, जो तुझे
गालियाँ देते हैं उन की गालियाँ मुझ पर आ गई हैं।
10 जब मैं रोज़ा रख कर रोता था तो लोग मेरा
मज़ाक़ उड़ाते थे।
11 जब मातमी लिबास पहने फिरता था तो उन के
लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल बन गया।
12 जो बुज़ुर्ग शहर के दरवाज़े पर बैठे हैं वह मेरे बारे
में गप्पें हाँकते हैं। शराबी मुझे अपने तन्ज़ भरे गीतों
का निशाना बनाते हैं।

13 लेकिन ऐ रब, मेरी तुझ से दुआ है कि मैं तुझे
दुबारा मन्ज़ूर हो जाऊँ। ऐ अल्लाह, अपनी अज़ीम
शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी सुन, अपनी यक़ीनी नजात
के मुताबिक़ मुझे बचा।
14 मुझे दलदल से निकाल ताकि ग़र्क़ न हो जाऊँ।
मुझे उन से छुटकारा दे जो मुझ से नफ़रत करते हैं।
पानी की गहराइयों से मुझे बचा।
15 सैलाब मुझ पर ग़ालिब न आए, समुन्दर की
गहराई मुझे हड़प न कर ले, गढ़ा मेरे ऊपर अपना
मुँह बन्द न कर ले।
16 ऐ रब, मेरी सुन, क्यूँकि तेरी शफ़क़त भली है।
अपने अज़ीम रहम के मुताबिक़ मेरी तरफ़ रुजू कर।
17 अपना चिहरा अपने ख़ादिम से छुपाए न रख,
क्यूँकि मैं मुसीबत में हूँ। जल्दी से मेरी सुन!
18 क़रीब आ कर मेरी जान का फ़िद्या दे, मेरे दुश्मनों
के सबब से इवज़ाना दे कर मुझे छुड़ा।

19 तू मेरी रुस्वाई, मेरी शर्मिन्दगी और तज़्लील से
वाक़िफ़ है। तेरी आँखें मेरे तमाम दुश्मनों पर लगी
रहती हैं।
20 उन के तानों से मेरा दिल टूट गया है, मैं बीमार
पड़ गया हूँ। मैं हमदर्दी के इन्तिज़ार में रहा, लेकिन
बेफ़ाइदा। मैं ने तवक़्क़ो की कि कोई मुझे दिलासा
दे, लेकिन एक भी न मिला।
21 उन्हों ने मेरी ख़ुराक में कड़वा ज़हर मिलाया,
मुझे सिरका पिलाया जब प्यासा था।

22 उन की मेज़ उन के लिए फंदा और उन के
साथियों के लिए जाल बन जाए।
23 उन की आँखें तारीक हो जाएँ ताकि वह देख न
सकें। उन की कमर हमेशा तक डगमगाती रहे।
24 अपना पूरा ग़ुस्सा उन पर उतार, तेरा सख़्त ग़ज़ब
उन पर आ पड़े।
25 उन की रिहाइशगाह सुन्सान हो जाए और कोई
उन के ख़ैमों में आबाद न हो,
26 क्यूँकि जिसे तू ही ने सज़ा दी उसे वह सताते हैं,
जिसे तू ही ने ज़ख़्मी किया उस का दुख दूसरों को
सुना कर ख़ुश होते हैं।

27 उन के क़ुसूर का सख़्ती से हिसाब-किताब कर,
वह तेरे सामने रास्तबाज़ न ठहरें।
28 उन्हें किताब-ए-हयात से मिटाया जाए, उन का
नाम रास्तबाज़ों की फ़हरिस्त में दर्ज न हो।

29 हाय, मैं मुसीबत में फंसा हुआ हूँ, मुझे बहुत दर्द
है। ऐ अल्लाह, तेरी नजात मुझे महफ़ूज़ रखे।
30 मैं अल्लाह के नाम की मद्हसराई करूँगा,
शुक्रगुज़ारी से उस की ताज़ीम करूँगा।
31 यह रब को बैल या सींग और खुर रखने वाले
साँड से कहीं ज़्यादा पसन्द आएगा।
32 हलीम अल्लाह का काम देख कर ख़ुश हो जाएंगे।
ऐ अल्लाह के तालिबो, तसल्ली पाओ!
33 क्यूँकि रब मुहताजों की सुनता और अपने
क़ैदियों को हक़ीर नहीं जानता।

34 आसमान-ओ-ज़मीन उस की तम्जीद करें,
समुन्दर और जो कुछ उस में हरकत करता है उस
की सताइश करे।
35 क्यूँकि अल्लाह सिय्यून को नजात दे कर यहूदाह
के शहरों को तामीर करेगा, और उस के ख़ादिम उन
पर क़ब्ज़ा करके उन में आबाद हो जाएंगे।
36 उन की औलाद मुल्क को मीरास में पाएगी, और
उस के नाम से मुहब्बत रखने वाले उस में बसे रहेंगे।

दुश्मन से नजात की दुआ

70 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। याददाश्त के लिए।
ऐ अल्लाह, जल्दी से आ कर मुझे बचा! ऐ रब, मेरी
मदद करने में जल्दी कर!
2 मेरे जानी दुश्मन शर्मिन्दा हो जाएँ, उन की सख़्त
रुस्वाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत देखने से लुत्फ़
उठाते हैं वह पीछे हट जाएँ, उन का मुँह काला हो
जाए।
3 जो मेरी मुसीबत देख कर क़हक़हा लगाते हैं वह
शर्म के मारे पुश्त दिखाएँ।
4 लेकिन तेरे तालिब शादमान हो कर तेरी ख़ुशी
मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह हमेशा कहें,
"अल्लाह अज़ीम है!"
5 लेकिन मैं नाचार और मुहताज हूँ। ऐ अल्लाह,
जल्दी से मेरे पास आ! तू ही मेरा सहारा और मेरा
नजातदहिन्दा है। ऐ रब, देर न कर!

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

71 1 ऐ रब, मैं ने तुझ में पनाह ली है। मुझे कभी
शर्मिन्दा न होने दे।
2 अपनी रास्ती से मुझे बचा कर छुटकारा दे। अपना
कान मेरी तरफ़ झुका कर मुझे नजात दे।
3 मेरे लिए चटान पर महफ़ूज़ घर हो जिस में मैं हर
वक़्त पनाह ले सकूँ। तू ने फ़रमाया है कि मुझे नजात
देगा, क्यूँकि तू ही मेरी चटान और मेरा क़िला है।

4 ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे बेदीन के हाथ से बचा, उस के
क़ब्ज़े से जो बेइन्साफ़ और ज़ालिम है।

5 क्यूँकि तू ही मेरी उम्मीद है। ऐ रब क़ादिर-ए-
मुतलक़, तू मेरी जवानी ही से मेरा भरोसा रहा है।
6 पैदाइश से ही मैं ने तुझ पर तकिया किया है, माँ
के पेट से तू ने मुझे सँभाला है। मैं हमेशा तेरी हम्द-
ओ-सना करूँगा।

7 बहुतों के नज़्दीक मैं बदशुगूनी हूँ, लेकिन तू मेरी
मज़बूत पनाहगाह है।
8 दिन भर मेरा मुँह तेरी तम्जीद और ताज़ीम से
लबरेज़ रहता है।

9 बुढ़ापे में मुझे रद्द न कर, ताक़त के ख़त्म होने पर
मुझे तर्क न कर।
10 क्यूँकि मेरे दुश्मन मेरे बारे में बातें कर रहे हैं, जो
मेरी जान की ताक लगाए बैठे हैं वह एक दूसरे से
सलाह-मश्वरा कर रहे हैं।

11 वह कहते हैं, “अल्लाह ने उसे तर्क कर दिया है।
उस के पीछे पड़ कर उसे पकड़ो, क्यूँकि कोई नहीं
जो उसे बचाए।”

12 ऐ अल्लाह, मुझ से दूर न हो। ऐ मेरे ख़ुदा, मेरी
मदद करने में जल्दी कर।
13 मेरे हरीफ़ शर्मिन्दा हो कर फ़ना हो जाएँ, जो
मुझे नुक़्सान पहुँचाने के दरपै हैं वह लान-तान और
रुस्वाई तले दब जाएँ।
14 लेकिन मैं हमेशा तेरे इन्तिज़ार में रहूँगा, हमेशा
तेरी सताइश करता रहूँगा।
15 मेरा मुँह तेरी रास्ती सुनाता रहेगा, सारा दिन तेरे
नजातबख़्श कामों का ज़िक्र करता रहेगा, गो मैं उन
की पूरी तादाद गिन भी नहीं सकता।
16 मैं रब क़ादिर-ए-मुतलक़ के अज़ीम काम सुनाते
हुए आऊँगा, मैं तेरी, सिर्फ़ तेरी ही रास्ती याद करूँगा।

17 ऐ अल्लाह, तू मेरी जवानी से मुझे तालीम देता रहा
है, और आज तक मैं तेरे मोजिज़ात का एलान करता
आया हूँ।
18 ऐ अल्लाह, ख़्वाह मैं बूढ़ा हो जाऊँ और मेरे बाल
सफ़ेद हो जाएँ मुझे तर्क न कर जब तक मैं आने वाली
पुश्त के तमाम लोगों को तेरी क़ुव्वत और क़ुदरत के
बारे में बता न लूँ।

19 ऐ अल्लाह, तेरी रास्ती आसमान से बातें करती
है। ऐ अल्लाह, तुझ जैसा कौन है जिस ने इतने अज़ीम
काम किए हैं?
20 तू ने मुझे मुतअद्दिद तल्ख़ तजरिबों में से गुज़रने
दिया है, लेकिन तू मुझे दुबारा ज़िन्दा भी करेगा, तू
मुझे ज़मीन की गहराइयों में से वापस लाएगा।
21 मेरा रुतबा बढ़ा दे, मुझे दुबारा तसल्ली दे।
22 ऐ मेरे ख़ुदा, मैं सितार बजा कर तेरी सताइश
और तेरी वफ़ादारी की तम्जीद करूँगा। ऐ इस्राईल
के क़ुद्दूस, मैं सरोद बजा कर तेरी तारीफ़ में गीत
गाऊँगा।
23 जब मैं तेरी मद्हसराई करूँगा तो मेरे होंट ख़ुशी
के नारे लगाएँगे, और मेरी जान जिसे तू ने फ़िद्या दे
कर छुड़ाया है शादियाना बजायगी।
24 मेरी ज़बान भी दिन भर तेरी रास्ती बयान करेगी,
क्यूँकि जो मुझे नुक़्सान पहुँचाना चाहते थे वह
शर्मसार और रुसवा हो गए हैं।

सलामती का बादशाह

72 1 सुलेमान का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, बादशाह को अपना इन्साफ़
अता कर, बादशाह के बेटे को अपनी रास्ती बख़्श
दे
2 ताकि वह रास्ती से तेरी क़ौम और इन्साफ़ से तेरे
मुसीबतज़दों की अदालत करे।
3 पहाड़ क़ौम को सलामती और पहाड़ियाँ रास्ती
पहुँचाएँ।
4 वह क़ौम के मुसीबतज़दों का इन्साफ़ करे और
मुह्ताजों की मदद करके ज़ालिमों को कुचल दे।
5 तब लोग पुश्त-दर-पुश्त तेरा ख़ौफ़ मानेंगे जब तक
सूरज चमके और चाँद रौशनी दे।
6 वह कटी हुई घास के खेत पर बरसने वाली
बारिश की तरह उतर आए, ज़मीन को तर करने वाली
बौछाड़ों की तरह नाज़िल हो जाए।
7 उस के दौर-ए-हुकूमत में रास्तबाज़ फले फूलेगा,
और जब तक चाँद नेस्त न हो जाए सलामती का
ग़ल्बा होगा।
8 वह एक समुन्दर से दूसरे समुन्दर तक और दरया-
ए-फ़ुरात से दुनिया की इन्तिहा तक हुकूमत करे।
9 रेगिस्तान के बाशिन्दे उस के सामने झुक जाएँ,
उस के दुश्मन ख़ाक चाटें।
10 तरसीस और साहिली इलाक़ों के बादशाह उसे
ख़राज पहुँचाएँ, सबा और सिबा उसे बाज पेश करें।
11 तमाम बादशाह उसे सिज्दा करें, सब अक़्वाम
उस की ख़िदमत करें।

12 क्यूँकि जो ज़रूरतमन्द मदद के लिए पुकारे उसे
वह छुटकारा देगा, जो मुसीबत में है और जिस की
मदद कोई नहीं करता उसे वह रिहाई देगा।
13 वह पस्तहालों और ग़रीबों पर तरस खाएगा,
मुह्ताजों की जान को बचाएगा।
14 वह इवज़ाना दे कर उन्हें ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद से
छुड़ाएगा, क्यूँकि उन का ख़ून उस की नज़र में क़ीमती
है।

15 बादशाह ज़िन्दाबाद! सबा का सोना उसे दिया
जाए। लोग हमेशा उस के लिए दुआ करें, दिन भर
उस के लिए बरकत चाहें।
16 मुल्क में अनाज की कस्रत हो, पहाड़ों की
चोटियों पर भी उस की फ़सलें लहलहाएँ। उस का
फल लुबनान के फल जैसा उम्दा हो, शहरों के
बाशिन्दे हरियाली की तरह फलें फूलें।
17 बादशाह का नाम अबद तक क़ाइम रहे, जब
तक सूरज चमके उस का नाम फले फूले। तमाम
अक़्वाम उस से बरकत पाएँ, और वह उसे मुबारक
कहें।

18 रब ख़ुदा की तम्जीद हो जो इस्राईल का ख़ुदा है।
सिर्फ़ वही मोजिज़े करता है!
19 उस के जलाली नाम की अबद तक तम्जीद हो,
पूरी दुनिया उस के जलाल से भर जाए। आमीन, फिर
आमीन।

20 यहाँ दाऊद बिन यस्सी की दुआएँ ख़त्म होती हैं।

तीसरी किताब 73-89

बेदीनों की कामयाबी के बावुजूद तसल्ली

73 1 आसफ़ का ज़बूर।
यक़ीनन अल्लाह इस्राईल पर मेहरबान है,
उन पर जिन के दिल पाक हैं।
2 लेकिन मैं फिसलने को था, मेरे क़दम लग़्ज़िश
खाने को थे।
3 क्यूँकि शेख़ीबाज़ों को देख कर मैं बेचैन हो गया,
इस लिए कि बेदीन इतने ख़ुशहाल हैं।
4 मरते वक़्त उन को कोई तक्लीफ़ नहीं होती, और
उन के जिस्म मोटे-ताज़े रहते हैं।
5 आम लोगों के मसाइल से उन का वास्ता नहीं
पड़ता। जिस दर्द-ओ-करब में दूसरे मुब्तला रहते हैं
उस से वह आज़ाद होते हैं।
6 इस लिए उन के गले में तकब्बुर का हार है, वह
ज़ुल्म का लिबास पहने फिरते हैं।
7 चर्बी के बाइस उन की आँखें उभर आई हैं। उन
के दिल बेलगाम वहमों की गिरिफ़्त में रहते हैं।
8 वह मज़ाक़ उड़ा कर बुरी बातें करते हैं, अपने
ग़ुरूर में ज़ुल्म की धमकियाँ देते हैं।
9 वह समझते हैं कि जो कुछ हमारे मुँह से निकलता
है वह आसमान से है, जो बात हमारी ज़बान पर आ
जाती है वह पूरी ज़मीन के लिए अहमियत रखती है।
10 चुनाँचे अवाम उन की तरफ़ रुजू होते हैं, क्यूँकि
उन के हाँ कस्रत का पानी पिया जाता है।
11 वह कहते हैं, “अल्लाह को क्या पता है? अल्लाह
तआला को इल्म ही नहीं।”
12 देखो, यही है बेदीनों का हाल। वह हमेशा सुकून
से रहते, हमेशा अपनी दौलत में इज़ाफ़ा करते हैं।
13 यक़ीनन मैं ने बेफ़ाइदा अपना दिल पाक रखा
और अबस अपने हाथ ग़लत काम करने से बाज़
रखे।
14 क्यूँकि दिन भर मैं दर्द-ओ-करब में मुब्तला रहता
हूँ, हर सुब्ह मुझे सज़ा दी जाती है।

15 अगर मैं कहता, “मैं भी उन की तरह बोलूँगा,”
तो तेरे फ़र्ज़न्दों की नस्ल से ग़द्दारी करता।
16 मैं सोच-बिचार में पड़ गया ताकि बात समझूँ,
लेकिन सोचते सोचते थक गया, अज़ियत में सिर्फ़
इज़ाफ़ा हुआ।

17 तब मैं अल्लाह के मक़्दिस में दाख़िल हो कर
समझ गया कि उन का अन्जाम क्या होगा।
18 यक़ीनन तू उन्हें फिसलनी जगह पर रखेगा, उन्हें
फ़रेब में फंसा कर ज़मीन पर पटख़ देगा।
19 अचानक ही वह तबाह हो जाएंगे, दहशतनाक
मुसीबत में फंस कर मुकम्मल तौर पर फ़ना हो जाएंगे।
20 ऐ रब, जिस तरह ख़्वाब जाग उठते वक़्त
ग़ैरहक़ीक़ी साबित होता है उसी तरह तू उठते वक़्त
उन्हें वहम क़रार दे कर हक़ीर जानेगा।

21 जब मेरे दिल में तल्ख़ी पैदा हुई और मेरे बातिन
में सख़्त दर्द था
22 तो मैं अहमक़ था। मैं कुछ नहीं समझता था
बल्कि तेरे सामने मवेशी की मानिन्द था।
23 तो भी मैं हमेशा तेरे साथ लिपटा रहूँगा, क्यूँकि
तू मेरा दहना हाथ थामे रखता है।
24 तू अपने मश्वरे से मेरी क़ियादत करके आख़िर में
इज़्ज़त के साथ मेरा ख़ैरमक़्दम करेगा।
25 जब तू मेरे साथ है तो मुझे आसमान पर क्या
कमी होगी? जब तू मेरे साथ है तो मैं ज़मीन की कोई
भी चीज़ नहीं चाहूँगा।
26 ख़्वाह मेरा जिस्म और मेरा दिल जवाब दे जाएँ,
लेकिन अल्लाह हमेशा तक मेरे दिल की चटान और
मेरी मीरास है।

27 यक़ीनन जो तुझ से दूर हैं वह हलाक हो जाएंगे,
जो तुझ से बेवफ़ा हैं उन्हें तू तबाह कर देगा।
28 लेकिन मेरे लिए अल्लाह की क़ुर्बत सब कुछ है। मैं
ने रब क़ादिर-ए-मुतलक़ को अपनी पनाहगाह बनाया
है, और मैं लोगों को तेरे तमाम काम सुनाऊँगा।

रब के घर की बेहुरमती पर अफ़्सोस

74 1 आसफ़ का ज़बूर। हिक्मत का गीत।
ऐ अल्लाह, तू ने हमें हमेशा के लिए क्यूँ
रद्द किया है? अपनी चरागाह की भेड़ों पर तेरा क़हर
क्यूँ भड़कता रहता है?
2 अपनी जमाअत को याद कर जिसे तू ने क़दीम
ज़माने में ख़रीदा और इवज़ाना दे कर छुड़ाया ताकि
तेरी मीरास का क़बीला हो। कोह-ए-सिय्यून को याद
कर जिस पर तू सुकूनतपज़ीर रहा है।
3 अपने क़दम इन दाइमी खंडरात की तरफ़ बढ़ा।
दुश्मन ने मक़्दिस में सब कुछ तबाह कर दिया है।
4 तेरे मुख़ालिफ़ों ने गरजते हुए तेरी जल्सागाह में
अपने निशान गाड़ दिए हैं।
5 उन्हों ने गुंजान जंगल में लक्कड़हारों की तरह अपने
कुल्हाड़े चलाए,
6 अपने कुल्हाड़ों और कुदालों से उस की तमाम
कन्दाकारी को टुकड़े टुकड़े कर दिया है।
7 उन्हों ने तेरे मक़्दिस को भस्म कर दिया, फ़र्श तक
तेरे नाम की सुकूनतगाह की बेहुरमती की है।
8 अपने दिल में वह बोले, "आओ, हम उन सब को
ख़ाक में मिलाएँ!" उन्हों ने मुल्क में अल्लाह की हर
इबादतगाह नज़र-ए-आतिश कर दी है।
9 अब हम पर कोई इलाही निशान ज़ाहिर नहीं
होता। न कोई नबी हमारे पास रह गया, न कोई और
मौजूद है जो जानता हो कि ऐसे हालात कब तक
रहेंगे।
10 ऐ अल्लाह, हरीफ़ कब तक लान-तान करेगा,
दुश्मन कब तक तेरे नाम की तक्फ़ीर करेगा?
11 तू अपना हाथ क्यूँ हटाता, अपना दहना हाथ दूर
क्यूँ रखता है? उसे अपनी चादर से निकाल कर उन्हें
तबाह कर दे!

12 अल्लाह क़दीम ज़माने से मेरा बादशाह है, वही
दुनिया में नजातबख़्श काम अन्जाम देता है।
13 तू ही ने अपनी क़ुदरत से समुन्दर को चीर कर
पानी में अज़दहाओं के सरों को तोड़ डाला।
14 तू ही ने लिवियातान के सरों को चूर चूर करके
उसे जंगली जानवरों को खिला दिया।
15 एक जगह तू ने चश्मे और नदियाँ फूटने दीं, दूसरी
जगह कभी न सूखने वाले दरया सूखने दिए।

16 दिन भी तेरा है, रात भी तेरी ही है। चाँद और
सूरज तेरे ही हाथ से क़ाइम हुए।
17 तू ही ने ज़मीन की हुदूद मुक़र्रर कीं, तू ही ने
गर्मियों और सर्दियों के मौसम बनाए।

18 ऐ रब, दुश्मन की लान-तान याद कर। ख़याल
कर कि अहमक़ क़ौम तेरे नाम पर कुफ़्र बकती है।
19 अपने कबूतर की जान को वहशी जानवरों के
हवाले न कर, हमेशा तक अपने मुसीबतज़दों की
ज़िन्दगी को न भूल।
20 अपने अह्द का लिहाज़ कर, क्यूँकि मुल्क के
तारीक कोने ज़ुल्म के मैदानों से भर गए हैं।
21 होने न दे कि मज़्लूमों को शर्मिन्दा हो कर पीछे
हटना पड़े बल्कि बख़्श दे कि मुसीबतज़दा और
ग़रीब तेरे नाम पर फ़ख़र कर सकें।
22 ऐ अल्लाह, उठ कर अदालत में अपने मुआमले
का दिफ़ा कर। याद रहे कि अहमक़ दिन भर तुझे
लान-तान करता है।
23 अपने दुश्मनों के नारे न भूल बल्कि अपने
मुख़ालिफ़ों का मुसलसल बढ़ता हुआ शोर-शराबा
याद कर।

अल्लाह मग़रूरों की अदालत करता है

75 1 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर।
ऐ अल्लाह, तेरा शुक्र हो, तेरा शुक्र! तेरा नाम उन के
क़रीब है जो तेरे मोजिज़े बयान करते हैं।

2 अल्लाह फ़रमाता है, “जब मेरा वक़्त आएगा तो मैं
इन्साफ़ से अदालत करूँगा।
3 गो ज़मीन अपने बाशिन्दों समेत डगमगाने लगे,
लेकिन मैं ही ने उस के सतूनों को मज़बूत कर दिया
है। (सिलाह)
4 शेख़ीबाज़ों से मैं ने कहा, ‘डींगें मत मारो,’ और
बेदीनों से, ‘अपने आप पर फ़ख़र मत करो। [t]
5 न अपनी ताक़त पर शेख़ी मारो, [u]न अकड़ कर
कुफ़्र बको’।”
6 क्यूँकि सरफ़राज़ी न मशरिक़ से, न मग़रिब से और
न बयाबान से आती है
7 बल्कि अल्लाह से जो मुन्सिफ़ है। वही एक को
पस्त कर देता है और दूसरे को सरफ़राज़।
8 क्यूँकि रब के हाथ में झागदार और मसालेदार
मै का प्याला है जिसे वह लोगों को पिला देता है।
यक़ीनन दुनिया के तमाम बेदीनों को इसे आख़िरी
क़तरे तक पीना है।

9 लेकिन मैं हमेशा अल्लाह के अज़ीम काम
सुनाऊँगा, हमेशा याक़ूब के ख़ुदा की मद्हसराई
करूँगा।

10 अल्लाह फ़रमाता है, “मैं तमाम बेदीनों की कमर
तोड़ दूँगा जबकि रास्तबाज़ सरफ़राज़ होगा।” [v]

अल्लाह मुन्सिफ़ है

76 1 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।
अल्लाह यहूदाह में मश्हूर है, उस का नाम इस्राईल
में अज़ीम है।
2 उस ने अपनी मान्द सालिम [w]में और अपना भट
कोह-ए-सिय्यून पर बना लिया है।

---

[t]लफ़्ज़ी तर्जुमा : सींग मत उठाओ।

[u]लफ़्ज़ी मतलब : न अपना सींग उठाओ।

[v]लफ़्ज़ी तर्जुमा : बेदीनों के तमाम सींगों को काट डालूँगा जबकि रास्तबाज़ों का सींग सरफ़राज़ हो जाएगा।

[w]सालिम से मुराद यरूशलम है।

3 वहाँ उस ने जलते हुए तीरों को तोड़ डाला और
ढाल, तलवार और जंग के हथियारों को चूर चूर कर
दिया है। (सिलाह)
4 ऐ अल्लाह, तू दरख़्शाँ है, तू शिकार के पहाड़ों से
आया हुआ अज़ीमु-श्शान सूरमा है।

5 बहादुरों को लूट लिया गया है, वह मौत की नींद
सो गए हैं। फ़ौजियों में से एक भी हाथ नहीं उठा
सकता।
6 ऐ याक़ूब के ख़ुदा, तेरे डाँटने पर घोड़े और रथबान
बेहिस्स-ओ-हरकत हो गए हैं।
7 तू ही महीब है। जब तू झिड़के तो कौन तेरे हुज़ूर
क़ाइम रहेगा?
8 तू ने आसमान से फ़ैसले का एलान किया। ज़मीन
सहम कर चुप हो गई
9 जब अल्लाह अदालत करने के लिए उठा, जब वह
तमाम मुसीबतज़दों को नजात देने के लिए आया।
(सिलाह)
10 क्यूँकि इन्सान का तैश भी तेरी तम्जीद का बाइस
है। उस के तैश का आख़िरी नतीजा तेरा जलाल ही
है। [x]

11 रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर मन्नतें मान कर उन्हें पूरा
करो। जितने भी उस के इर्दगिर्द हैं वह पुरजलाल ख़ुदा
के हुज़ूर हदिए लाएँ।
12 वह हुक्मरानों को शिकस्ता रूह कर देता है, उसी
से दुनिया के बादशाह दहशत खाते हैं।

अल्लाह के अज़ीम कामों से तसल्ली मिलती है

77 1 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। यदूतून के लिए।
मैं अल्लाह से फ़र्याद करके मदद के लिए चिल्लाता
हूँ, मैं अल्लाह को पुकारता हूँ कि मुझ पर ध्यान दे।
2 अपनी मुसीबत में मैं ने रब को तलाश किया। रात
के वक़्त मेरे हाथ बिलानाग़ा उस की तरफ़ उठे रहे।
मेरी जान ने तसल्ली पाने से इन्कार किया।

3 मैं अल्लाह को याद करता हूँ तो आहें भरने लगता
हूँ, मैं सोच-बिचार में पड़ जाता हूँ तो रूह निढाल हो
जाती है। (सिलाह)
4 तू मेरी आँखों को बन्द होने नहीं देता। मैं इतना
बेचैन हूँ कि बोल भी नहीं सकता।

5 मैं क़दीम ज़माने पर ग़ौर करता हूँ, उन सालों पर
जो बड़ी देर हुए गुज़र गए हैं।
6 रात को मैं अपना गीत याद करता हूँ। मेरा दिल
महव-ए-ख़याल रहता और मेरी रूह तफ़तीश करती
रहती है।
7 "क्या रब हमेशा के लिए रद्द करेगा, क्या आइन्दा
हमें कभी पसन्द नहीं करेगा?
8 क्या उस की शफ़क़त हमेशा के लिए जाती रही
है? क्या उस के वादे अब से जवाब दे गए हैं?
9 क्या अल्लाह मेहरबानी करना भूल गया है? क्या
उस ने ग़ुस्से में अपना रहम बाज़ रखा है?" (सिलाह)
10 मैं बोला, "इस से मुझे दुख है कि अल्लाह तआला
का दहना हाथ बदल गया है।"

11 मैं रब के काम याद करूँगा, हाँ क़दीम ज़माने के
तेरे मोजिज़े याद करूँगा।
12 जो कुछ तू ने किया उस के हर पहलू पर ग़ौर-ओ-
ख़ौज़ करूँगा, तेरे अज़ीम कामों में महव-ए-ख़याल
रहूँगा।
13 ऐ अल्लाह, तेरी राह क़ुद्दूस है। कौन सा माबूद
हमारे ख़ुदा जैसा अज़ीम है?
14 तू ही मोजिज़े करने वाला ख़ुदा है। अक़्वाम के
दरमियान तू ने अपनी क़ुदरत का इज़हार किया है।

---

[x] लफ़्ज़ी तर्जुमा : तू बचे हुए तैश से कमरबस्ता हो जाता है।

15 बड़ी क़ुव्वत से तू ने इवज़ाना दे कर अपनी क़ौम,
याक़ूब और यूसुफ़ की औलाद को रिहा कर दिया है।
(सिलाह)
16 ऐ अल्लाह, पानी ने तुझे देखा, पानी ने तुझे देखा
तो तड़पने लगा, गहराइयों तक लरज़ने लगा।
17 मूसलाधार बारिश बरसी, बादल गरज उठे और
तेरे तीर इधर उधर चलने लगे।
18 आँधी में तेरी आवाज़ कड़कती रही, दुनिया
बिजलियों से रौशन हुई, ज़मीन काँपती काँपती उछल
पड़ी।
19 तेरी राह समुन्दर में से, तेरा रास्ता गहरे पानी में
से गुज़रा, तो भी तेरे नक़्श-ए-क़दम किसी को नज़र
न आए।
20 मूसा और हारून के हाथ से तू ने रेवड़ की तरह
अपनी क़ौम की राहनुमाई की।

इस्राईल की तारीख़ में इलाही सज़ा और रहम

78 1 आसफ़ का ज़बूर। हिक्मत का गीत।
ऐ मेरी क़ौम, मेरी हिदायत पर ध्यान दे,
मेरे मुँह की बातों पर कान लगा।
2 मैं तम्सीलों में बात करूँगा, क़दीम ज़माने के
मुअम्मे बयान करूँगा।
3 जो कुछ हम ने सुन लिया और हमें मालूम हुआ
है, जो कुछ हमारे बापदादा ने हमें सुनाया है
4 उसे हम उन की औलाद से नहीं छुपाएँगे। हम
आने वाली पुश्त को रब के क़ाबिल-ए-तारीफ़ काम
बताएँगे, उस की क़ुदरत और मोजिज़ात बयान करेंगे।
5 क्यूँकि उस ने याक़ूब की औलाद को शरीअत दी,
इस्राईल में अह्काम क़ाइम किए। उस ने फ़रमाया
कि हमारे बापदादा यह अह्काम अपनी औलाद को
सिखाएँ
6 ताकि आने वाली पुश्त भी उन्हें अपनाए, वह बच्चे
जो अभी पैदा नहीं हुए थे। फिर उन्हें भी अपने बच्चों
को सुनाना था।
7 क्यूँकि अल्लाह की मर्ज़ी है कि इस तरह हर पुश्त
अल्लाह पर एतिमाद रख कर उस के अज़ीम काम न
भूले बल्कि उस के अह्काम पर अमल करे।
8 वह नहीं चाहता कि वह अपने बापदादा की
मानिन्द हों जो ज़िद्दी और सरकश नस्ल थे, ऐसी नस्ल
जिस का दिल साबितक़दम नहीं था और जिस की
रूह वफ़ादारी से अल्लाह से लिपटी न रही।

9 चुनाँचे इफ़्राईम के मर्द गो कमानों से लेस थे जंग
के वक़्त फ़रार हुए।
10 वह अल्लाह के अह्द के वफ़ादार न रहे, उस की
शरीअत पर अमल करने के लिए तय्यार नहीं थे।
11 जो कुछ उस ने किया था, जो मोजिज़े उस ने उन्हें
दिखाए थे, इफ़्राईमी वह सब कुछ भूल गए।
12 मुल्क-ए-मिस्र के इलाक़े ज़ुअन में उस ने उन के
बापदादा के देखते देखते मोजिज़े किए थे।
13 समुन्दर को चीर कर उस ने उन्हें उस में से गुज़रने
दिया, और दोनों तरफ़ पानी मज़बूत दीवार की तरह
खड़ा रहा।
14 दिन को उस ने बादल के ज़रीए और रात भर
चमकदार आग से उन की क़ियादत की।
15 रेगिस्तान में उस ने पत्थरों को चाक करके उन्हें
समुन्दर की सी कस्रत का पानी पिलाया।
16 उस ने होने दिया कि चटान से नदियाँ फूट निकलें
और पानी दरयाओं की तरह बहने लगे।

17 लेकिन वह उस का गुनाह करने से बाज़ न आए
बल्कि रेगिस्तान में अल्लाह तआला से सरकश रहे।
18 जान-बूझ कर उन्हों ने अल्लाह को आज़मा कर
वह ख़ुराक माँगी जिस का लालच करते थे।
19 अल्लाह के ख़िलाफ़ कुफ़्र बक कर वह बोले,
“क्या अल्लाह रेगिस्तान में हमारे लिए मेज़ बिछा
सकता है?
20 बेशक जब उस ने चटान को मारा तो पानी फूट
निकला और नदियाँ बहने लगीं। लेकिन क्या वह

रोटी भी दे सकता है, अपनी क़ौम को गोश्त भी
मुहय्या कर सकता है? यह तो नामुमकिन है।”
21 यह सुन कर रब तैश में आ गया। याक़ूब के
ख़िलाफ़ आग भड़क उठी, और उस का ग़ज़ब
इस्राईल पर नाज़िल हुआ।
22 क्यूँ? इस लिए कि उन्हें अल्लाह पर यक़ीन नहीं
था, वह उस की नजात पर भरोसा नहीं रखते थे।

23 इस के बावुजूद अल्लाह ने उन के ऊपर बादलों
को हुक्म दे कर आसमान के दरवाज़े खोल दिए।
24 उस ने खाने के लिए उन पर मन बरसाया, उन्हें
आसमान से रोटी खिलाई।
25 हर एक ने फ़रिश्तों की यह रोटी खाई बल्कि
अल्लाह ने इतना खाना भेजा कि उन के पेट भर गए।
26 फिर उस ने आसमान पर मशरिक़ी हवा चलाई
और अपनी क़ुदरत से जुनूबी हवा पहुँचाई।
27 उस ने गर्द की तरह उन पर गोश्त बरसाया,
समुन्दर की रेत जैसे बेशुमार परिन्दे उन पर गिरने
दिए।
28 ख़ैमागाह के बीच में ही वह गिर पड़े, उन के घरों
के इर्दगिर्द ही ज़मीन पर आ गिरे।
29 तब वह खा खा कर ख़ूब सेर हो गए, क्यूँकि
जिस का लालच वह करते थे वह अल्लाह ने उन्हें
मुहय्या किया था।
30 लेकिन उन का लालच अभी पूरा नहीं हुआ था
और गोश्त अभी उन के मुँह में था
31 कि अल्लाह का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ। क़ौम
के खाते-पीते लोग हलाक हुए, इस्राईल के जवान
ख़ाक में मिल गए।

32 इन तमाम बातों के बावुजूद वह अपने गुनाहों में
इज़ाफ़ा करते गए और उस के मोजिज़ात पर ईमान न
लाए।
33 इस लिए उस ने उन के दिन नाकामी में गुज़रने
दिए, और उन के साल दहशत की हालत में
इख़तितामपज़ीर हुए।
34 जब कभी अल्लाह ने उन में क़त्ल-ओ-ग़ारत होने
दी तो वह उसे ढूँडने लगे, वह मुड़ कर अल्लाह को
तलाश करने लगे।
35 तब उन्हें याद आया कि अल्लाह हमारी चटान,
अल्लाह तआला हमारा छुड़ाने वाला है।
36 लेकिन वह मुँह से उसे धोका देते, ज़बान से उसे
झूट पेश करते थे।
37 न उन के दिल साबितक़दमी से उस के साथ
लिपटे रहे, न वह उस के अह्द के वफ़ादार रहे।

38 तो भी अल्लाह रहमदिल रहा। उस ने उन्हें तबाह
न किया बल्कि उन का क़ुसूर मुआफ़ करता रहा।
बार बार वह अपने ग़ज़ब से बाज़ आया, बार बार
अपना पूरा क़हर उन पर उतारने से गुरेज़ किया।
39 क्यूँकि उसे याद रहा कि वह फ़ानी इन्सान हैं,
हवा का एक झोंका जो गुज़र कर कभी वापस नहीं
आता।

40 रेगिस्तान में वह कितनी दफ़ा उस से सरकश
हुए, कितनी मर्तबा उसे दुख पहुँचाया।
41 बार बार उन्हों ने अल्लाह को आज़माया, बार बार
इस्राईल के क़ुद्दूस को रंजीदा किया।
42 उन्हें उस की क़ुदरत याद न रही, वह दिन जब
उस ने फ़िद्या दे कर उन्हें दुश्मन से छुड़ाया,

43 वह दिन जब उस ने मिस्र में अपने इलाही निशान
दिखाए, ज़ुअन के इलाक़े में अपने मोजिज़े किए।
44 उस ने उन की नहरों का पानी ख़ून में बदल दिया,
और वह अपनी नदियों का पानी पी न सके।
45 उस ने उन के दरमियान जूओं के ग़ोल भेजे जो
उन्हें खा गईं, मेंढ़क जो उन पर तबाही लाए।
46 उन की पैदावार उस ने जवान टिड्डियों के हवाले
की, उन की मेहनत का फल बालिग़ टिड्डियों के सपुर्द
किया।
47 उन की अंगूर की बेलें उस ने ओलों से, उन के
अन्जीर-तूत के दरख़्त सैलाब से तबाह कर दिए।

48 उन के मवेशी उस ने ओलों के हवाले किए, उन
के रेवड़ बिजली के सपुर्द किए।
49 उस ने उन पर अपना शोलाज़न ग़ज़ब नाज़िल
किया। क़हर, ख़फ़गी और मुसीबत यानी तबाही लाने
वाले फ़रिश्तों का पूरा दस्ता उन पर हम्लाआवर हुआ।
50 उस ने अपने ग़ज़ब के लिए रास्ता तय्यार करके
उन्हें मौत से न बचाया बल्कि मोहलिक वबा की ज़द
में आने दिया।
51 मिस्र में उस ने तमाम पहलौठों को मार डाला
और हाम के ख़ैमों में मर्दानगी का पहला फल तमाम
कर दिया।
52 फिर वह अपनी क़ौम को भेड़-बकरियों की तरह
मिस्र से बाहर ला कर रेगिस्तान में रेवड़ की तरह लिए
फिरा।
53 वह हिफ़ाज़त से उन की क़ियादत करता रहा।
उन्हें कोई डर नहीं था जबकि उन के दुश्मन समुन्दर
में डूब गए।
54 यूँ अल्लाह ने उन्हें मुक़द्दस मुल्क तक पहुँचाया,
उस पहाड़ तक जिसे उस के दहने हाथ ने हासिल
किया था।
55 उन के आगे आगे वह दीगर क़ौमें निकालता
गया। उन की ज़मीन उस ने तक़्सीम करके
इस्राईलियों को मीरास में दी, और उन के ख़ैमों में
उस ने इस्राईली क़बीले बसाए।

56 इस के बावुजूद वह अल्लाह तआला को आज़माने
से बाज़ न आए बल्कि उस से सरकश हुए और उस
के अह्काम के ताबे न रहे।
57 अपने बापदादा की तरह वह ग़द्दार बन कर
बेवफ़ा हुए। वह ढीली कमान की तरह नाकाम हो
गए।
58 उन्हों ने ऊँची जगहों की ग़लत क़ुर्बानगाहों से
अल्लाह को ग़ुस्सा दिलाया और अपने बुतों से उसे
रंजीदा किया।
59 जब अल्लाह को ख़बर मिली तो वह ग़ज़बनाक
हुआ और इस्राईल को मुकम्मल तौर पर मुस्तरद कर
दिया।
60 उस ने सैला में अपनी सुकूनतगाह छोड़ दी, वह
ख़ैमा जिस में वह इन्सान के दरमियान सुकूनत करता
था।
61 अह्द का सन्दूक़ उस की क़ुदरत और जलाल
का निशान था, लेकिन उस ने उसे दुश्मन के हवाले
करके जिलावतनी में जाने दिया।
62 अपनी क़ौम को उस ने तलवार की ज़द में
आने दिया, क्यूँकि वह अपनी मौरूसी मिलकियत
से निहायत नाराज़ था।
63 क़ौम के जवान नज़र-ए-आतिश हुए, और उस
की कुंवारियों के लिए शादी के गीत गाए न गए।
64 उस के इमाम तलवार से क़त्ल हुए, और उस की
बेवाओं ने मातम न किया।

65 तब रब जाग उठा, उस आदमी की तरह जिस की
नींद उचाट हो गई हो, उस सूरमे की मानिन्द जिस से
नशे का असर उतर गया हो।
66 उस ने अपने दुश्मनों को मार मार कर भगा दिया
और उन्हें हमेशा के लिए शर्मिन्दा कर दिया।
67 उस वक़्त उस ने यूसुफ़ का ख़ैमा रद्द किया और
इफ़्राईम के क़बीले को न चुना
68 बल्कि यहूदाह के क़बीले और कोह-ए-सिय्यून
को चुन लिया जो उसे प्यारा था।
69 उस ने अपना मक़्दिस बुलन्दियों की मानिन्द
बनाया, ज़मीन की मानिन्द जिसे उस ने हमेशा के
लिए क़ाइम किया है।
70 उस ने अपने ख़ादिम दाऊद को चुन कर भेड़-
बकरियों के बाड़ों से बुलाया।
71 हाँ, उस ने उसे भेड़ों [y]की देख-भाल से बुलाया
ताकि वह उस की क़ौम याक़ूब, उस की मीरास
इस्राईल की गल्लाबानी करे।

---

[y]इब्रानी मतन से मुराद वह भेड़ है जो अभी अपने बच्चों को दूध पिलाती है।

72 दाऊद ने ख़ुलूसदिली से उन की गल्लाबानी की,
बड़ी महारत से उस ने उन की राहनुमाई की।

जंग की मुसीबत में क़ौम की दुआ

79 1 आसफ़ का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, अजनबी क़ौमें तेरी मौरूसी
ज़मीन में घुस आई हैं। उन्हों ने तेरी मुक़द्दस
सुकूनतगाह की बेहुरमती करके यरूशलम को मल्बे
का ढेर बना दिया है।
2 उन्हों ने तेरे ख़ादिमों की लाशें परिन्दों को और
तेरे ईमानदारों का गोश्त जंगली जानवरों को खिला
दिया है।
3 यरूशलम के चारों तरफ़ उन्हों ने ख़ून की नदियाँ
बहाईं, और कोई बाक़ी न रहा जो मुर्दों को दफ़नाता।
4 हमारे पड़ोसियों ने हमें मज़ाक़ का निशाना बना
लिया है, इर्दगिर्द की क़ौमें हमारी हंसी उड़ाती और
लान-तान करती हैं।

5 ऐ रब, कब तक? क्या तू हमेशा तक ग़ुस्से होगा?
तेरी ग़ैरत कब तक आग की तरह भड़कती रहेगी?
6 अपना ग़ज़ब उन अक़्वाम पर नाज़िल कर जो तुझे
तस्लीम नहीं करतीं, उन सल्तनतों पर जो तेरे नाम को
नहीं पुकारतीं।
7 क्यूँकि उन्हों ने याक़ूब को हड़प करके उस की
रिहाइशगाह तबाह कर दी है।
8 हमें उन गुनाहों के क़ुसूरवार न ठहरा जो हमारे
बापदादा से सरज़द हुए। हम पर रहम करने में जल्दी
कर, क्यूँकि हम बहुत पस्तहाल हो गए हैं।
9 ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हमारी मदद कर ताकि
तेरे नाम को जलाल मिले। हमें बचा, अपने नाम की
ख़ातिर हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर।
10 दीगर अक़्वाम क्यूँ कहें, "उन का ख़ुदा कहाँ
है?" हमारे देखते देखते उन्हें दिखा कि तू अपने
ख़ादिमों के ख़ून का बदला लेता है।
11 क़ैदियों की आहें तुझ तक पहुँचीं, जो मरने को
हैं उन्हें अपनी अज़ीम क़ुदरत से महफ़ूज़ रख।
12 ऐ रब, जो लान-तान हमारे पड़ोसियों ने तुझ पर
बरसाई है उसे सात गुना उन के सरों पर वापस ला।
13 तब हम जो तेरी क़ौम और तेरी चरागाह की भेड़ें
हैं अबद तक तेरी सताइश करेंगे, पुश्त-दर-पुश्त तेरी
हम्द-ओ-सना करेंगे।

अंगूर की बेल की बहाली के लिए दुआ

80 1 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। तर्ज़ : अह्द के सोसन।
ऐ इस्राईल के गल्लाबान, हम पर ध्यान दे! तू जो
यूसुफ़ की रेवड़ की तरह राहनुमाई करता है, हम पर
तवज्जुह कर! तू जो करूबी फ़रिश्तों के दरमियान
तख़्तनशीन है, अपना नूर चमका!
2 इफ़्राईम, बिनयमीन और मनस्सी के सामने अपनी
क़ुदरत को हरकत में ला। हमें बचाने आ!

3 ऐ अल्लाह, हमें बहाल कर। अपने चिहरे का नूर
चमका तो हम नजात पाएँगे।

4 ऐ रब, लश्करों के ख़ुदा, तेरा ग़ज़ब कब तक
भड़कता रहेगा, हालाँकि तेरी क़ौम तुझ से इल्तिजा
कर रही है?
5 तू ने उन्हें आँसूओं की रोटी खिलाई और आँसूओं
का प्याला ख़ूब पिलाया।
6 तू ने हमें पड़ोसियों के झगड़ों का निशाना बनाया।
हमारे दुश्मन हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं।

7 ऐ लश्करों के ख़ुदा, हमें बहाल कर। अपने चिहरे
का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

8 अंगूर की जो बेल मिस्र में उग रही थी उसे तू
उखाड़ कर मुल्क-ए-कनआन लाया। तू ने वहाँ की
अक़्वाम को भगा कर यह बेल उन की जगह लगाई।
9 तू ने उस के लिए ज़मीन तय्यार की तो वह जड़
पकड़ कर पूरे मुल्क में फैल गई।

10 उस का साया पहाड़ों पर छा गया, और उस की
शाख़ों ने देवदार के अज़ीम दरख़्तों को ढाँक लिया।
11 उस की टहनियाँ मग़रिब में समुन्दर तक फैल
गईं, उस की डालियाँ मशरिक़ में दरया-ए-फ़ुरात तक
पहुँच गईं।
12 तू ने उस की चारदीवारी क्यूँ गिरा दी? अब हर
गुज़रने वाला उस के अंगूर तोड़ लेता है।
13 जंगल के सूअर उसे खा खा कर तबाह करते,
खुले मैदान के जानवर वहाँ चरते हैं।

14 ऐ लश्करों के ख़ुदा, हमारी तरफ़ दुबारा रुजू
फ़रमा! आसमान से नज़र डाल कर हालात पर ध्यान
दे। इस बेल की देख-भाल कर।

15 उसे महफ़ूज़ रख जिसे तेरे दहने हाथ ने ज़मीन में
लगाया, उस बेटे को जिसे तू ने अपने लिए पाला है।
16 इस वक़्त वह कट कर नज़र-ए-आतिश हुआ है।
तेरे चिहरे की डाँट-डपट से लोग हलाक हो जाते हैं।
17 तेरा हाथ अपने दहने हाथ के बन्दे को पनाह दे,
उस आदमज़ाद को जिसे तू ने अपने लिए पाला था।
18 तब हम तुझ से दूर नहीं हो जाएंगे। बख़्श दे कि
हमारी जान में जान आए तो हम तेरा नाम पुकारेंगे।

19 ऐ रब, लश्करों के ख़ुदा, हमें बहाल कर। अपने
चिहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

हक़ीक़ी इबादत क्या है?

81 1 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। तर्ज़ : गित्तीत।
अल्लाह हमारी क़ुव्वत है। उस की ख़ुशी में
शादियाना बजाओ, याक़ूब के ख़ुदा की ताज़ीम में
ख़ुशी के नारे लगाओ।
2 गीत गाना शुरू करो। दफ़ बजाओ, सरोद और
सितार की सुरीली आवाज़ निकालो।
3 नए चाँद के दिन नरसिंगा फूँको, पूरे चाँद के जिस
दिन हमारी ईद होती है उसे फूँको।
4 क्यूँकि यह इस्राईल का फ़र्ज़ है, यह याक़ूब के
ख़ुदा का फ़रमान है।
5 जब यूसुफ़ मिस्र के ख़िलाफ़ निकला तो अल्लाह ने
ख़ुद यह मुक़र्रर किया।

मैं ने एक ज़बान सुनी, जो मैं अब तक नहीं जानता
था,
6 "मैं ने उस के कंधे पर से बोझ उतारा और उस
के हाथ भारी टोकरी उठाने से आज़ाद किए।
7 मुसीबत में तू ने आवाज़ दी तो मैं ने तुझे बचाया।
गरजते बादल में से मैं ने तुझे जवाब दिया और तुझे
मरीबा के पानी पर आज़माया। (सिलाह)
8 ऐ मेरी क़ौम, सुन, तो मैं तुझे आगाह करूँगा। ऐ
इस्राईल, काश तू मेरी सुने!
9 तेरे दरमियान कोई और ख़ुदा न हो, किसी
अजनबी माबूद को सिज्दा न कर।
10 मैं ही रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्क-ए-मिस्र से
निकाल लाया। अपना मुँह ख़ूब खोल तो मैं उसे भर
दूँगा।

11 लेकिन मेरी क़ौम ने मेरी न सुनी, इस्राईल मेरी
बात मानने के लिए तय्यार न था।
12 चुनाँचे मैं ने उन्हें उन के दिलों की ज़िद के हवाले
कर दिया, और वह अपने ज़ाती मश्वरों के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारने लगे।
13 काश मेरी क़ौम सुने, इस्राईल मेरी राहों पर चले!
14 तब मैं जल्दी से उस के दुश्मनों को ज़ेर करता,
अपना हाथ उस के मुख़ालिफ़ों के ख़िलाफ़ उठाता।
15 तब रब से नफ़रत करने वाले दबक कर उस की
ख़ुशामद करते, उन की शिकस्त अबदी होती।
16 लेकिन इस्राईल को मैं बेहतरीन गन्दुम खिलाता,
मैं चटान में से शहद निकाल कर उसे सेर करता।"

सब से आला मुन्सिफ़

82 1 आसफ़ का ज़बूर।
अल्लाह इलाही मजलिस में खड़ा है,
माबूदों के दरमियान वह अदालत करता है,
2 "तुम कब तक अदालत में ग़लत फ़ैसले करके
बेदीनों की जानिबदारी करोगे? (सिलाह)
3 पस्तहालों और यतीमों का इन्साफ़ करो,
मुसीबतज़दों और ज़रूरतमन्दों के हुक़ूक़ क़ाइम
रखो।
4 पस्तहालों और ग़रीबों को बचा कर बेदीनों के
हाथ से छुड़ाओ।"

5 लेकिन वह कुछ नहीं जानते, उन्हें समझ ही नहीं
आती। वह तारीकी में टटोल टटोल कर घूमते फिरते
हैं जबकि ज़मीन की तमाम बुन्यादें झूमने लगी हैं।
6 बेशक मैं ने कहा, "तुम ख़ुदा हो, सब अल्लाह
तआला के फ़र्ज़न्द हो।
7 लेकिन तुम फ़ानी इन्सान की तरह मर जाओगे,
तुम दीगर हुक्मरानों की तरह गिर जाओगे।"

8 ऐ अल्लाह, उठ कर ज़मीन की अदालत कर!
क्यूँकि तमाम अक़्वाम तेरी ही मौरूसी मिलकियत
हैं।

क़ौम के दुश्मनों के ख़िलाफ़ दुआ

83 1 गीत। आसफ़ का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, ख़ामोश न रह! ऐ अल्लाह, चुप
न रह!
2 देख, तेरे दुश्मन शोर मचा रहे हैं, तुझ से नफ़रत
करने वाले अपना सर तेरे ख़िलाफ़ उठा रहे हैं।
3 तेरी क़ौम के ख़िलाफ़ वह चालाक मन्सूबे बांध
रहे हैं, जो तेरी आड़ में छुप गए हैं उन के ख़िलाफ़
साज़िशें कर रहे हैं।
4 वह कहते हैं, "आओ, हम उन्हें मिटा दें ताकि
क़ौम नेस्त हो जाए और इस्राईल का नाम-ओ-निशान
बाक़ी न रहे।"
5 क्यूँकि वह आपस में सलाह-मश्वरा करने के बाद
दिली तौर पर मुत्तहिद हो गए हैं, उन्हों ने तेरे ही
ख़िलाफ़ अह्द बांधा है।
6 उन में अदोम के ख़ैमे, इस्माईली, मोआब,
हाजिरी,
7 जबाल, अम्मोन, अमालीक़, फिलिस्तिया और
सूर के बाशिन्दे शामिल हो गए हैं।
8 असूर भी उन में शरीक हो कर लूत की औलाद
को सहारा दे रहा है। (सिलाह)

9 उन के साथ वही सुलूक कर जो तू ने मिदियानियों
से यानी क़ैसोन नदी पर सीसरा और याबीन से किया।
10 क्यूँकि वह ऐन-दोर के पास हलाक हो कर खेत
में गोबर बन गए।
11 उन के शुरफ़ा के साथ वही बरताओ कर जो तू
ने ओरेब और ज़एब से किया। उन के तमाम सरदार
ज़िबह और ज़ल्मुन्ना की मानिन्द बन जाएँ,
12 जिन्हों ने कहा, "आओ, हम अल्लाह की चरागाहों
पर क़ब्ज़ा करें।"
13 ऐ मेरे ख़ुदा, उन्हें लुढ़कबूटी और हवा में उड़ते
हुए भूसे की मानिन्द बना दे।
14 जिस तरह आग पूरे जंगल में फैल जाती और एक
ही शोला पहाड़ों को झुलसा देता है,
15 उसी तरह अपनी आँधी से उन का ताक़्क़ुब कर,
अपने तूफ़ान से उन को दह्शतज़दा कर दे।
16 ऐ रब, उन का मुँह काला कर ताकि वह तेरा नाम
तलाश करें।
17 वह हमेशा तक शर्मिन्दा और हवासबाख़्ता रहें,
वह शर्मसार हो कर हलाक हो जाएँ।
18 तब ही वह जान लेंगे कि तू ही जिस का नाम रब
है अल्लाह तआला यानी पूरी दुनिया का मालिक है।

रब के घर पर ख़ुशी

84 1 क़ोरह ख़ानदान का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए। तर्ज़ : गित्तीत।
ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, तेरी सुकूनतगाह कितनी
प्यारी है!
2 मेरी जान रब की बारगाहों के लिए तड़पती हुई
निढाल है। मेरा दिल बल्कि पूरा जिस्म ज़िन्दा ख़ुदा
को ज़ोर से पुकार रहा है।
3 ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, ऐ मेरे बादशाह और ख़ुदा,
तेरी क़ुर्बानगाहों के पास परिन्दे को भी घर मिल गया,
अबाबील को भी अपने बच्चों को पालने का घोंसला
मिल गया है।

4 मुबारक हैं वह जो तेरे घर में बसते हैं, वह हमेशा
ही तेरी सताइश करेंगे। (सिलाह)
5 मुबारक हैं वह जो तुझ में अपनी ताक़त पाते, जो
दिल से तेरी राहों में चलते हैं।
6 वह बुका की ख़ुश्क वादी [z]में से गुज़रते हुए उसे
शादाब जगह बना लेते हैं, और बारिशें उसे बरकतों
से ढाँप देती हैं।
7 वह क़दम-ब-क़दम तक़वियत पाते हुए आगे
बढ़ते, सब कोह-ए-सिय्यून पर अल्लाह के सामने
हाज़िर हो जाते हैं।
8 ऐ रब, ऐ लश्करों के ख़ुदा, मेरी दुआ सुन! ऐ
याक़ूब के ख़ुदा, ध्यान दे! (सिलाह)
9 ऐ अल्लाह, हमारी ढाल पर करम की निगाह डाल।
अपने मसह किए हुए ख़ादिम के चिहरे पर नज़र कर।

10 तेरी बारगाहों में एक दिन किसी और जगह पर
हज़ार दिनों से बेहतर है। मुझे अपने ख़ुदा के घर के
दरवाज़े पर हाज़िर रहना बेदीनों के घरों में बसने से
कहीं ज़्यादा पसन्द है।

11 क्यूँकि रब ख़ुदा आफ़ताब और ढाल है, वही हमें
फ़ज़्ल और इज़्ज़त से नवाज़ता है। जो दयानतदारी से
चलें उन्हें वह किसी भी अच्छी चीज़ से महरूम नहीं
रखता।
12 ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, मुबारक है वह जो तुझ पर
भरोसा रखता है!

नए सिरे से बरकत पाने के लिए दुआ

85 1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
ऐ रब, पहले तू ने अपने मुल्क को पसन्द किया,
पहले याक़ूब को बहाल किया।
2 पहले तू ने अपनी क़ौम का क़ुसूर मुआफ़ किया,
उस का तमाम गुनाह ढाँप दिया। (सिलाह)
3 जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल हो रहा था उस का
सिलसिला तू ने रोक दिया, जो क़हर हमारे ख़िलाफ़
भड़क रहा था उसे छोड़ दिया।

4 ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हमें दुबारा बहाल कर।
हम से नाराज़ होने से बाज़ आ।
5 क्या तू हमेशा तक हम से ग़ुस्से रहेगा? क्या तू
अपना क़हर पुश्त-दर-पुश्त क़ाइम रखेगा?
6 क्या तू दुबारा हमारी जान को ताज़ादम नहीं करेगा
ताकि तेरी क़ौम तुझ से ख़ुश हो जाए?
7 ऐ रब, अपनी शफ़क़त हम पर ज़ाहिर कर, अपनी
नजात हमें अता फ़रमा।

8 मैं वह कुछ सुनूँगा जो ख़ुदा रब फ़रमाएगा। क्यूँकि
वह अपनी क़ौम और अपने ईमानदारों से सलामती
का वादा करेगा, अलबत्ता लाज़िम है कि वह दुबारा
हमाक़त में उलझ न जाएँ।
9 यक़ीनन उस की नजात उन के क़रीब है जो उस
का ख़ौफ़ मानते हैं ताकि जलाल हमारे मुल्क में
सुकूनत करे।

---

[z]या रोने वाली यानी आँसूओं की वादी।

10 शफ़क़त और वफ़ादारी एक दूसरे के गले लग
गए हैं, रास्ती और सलामती ने एक दूसरे को बोसा
दिया है।
11 सच्चाई ज़मीन से फूट निकलेगी और रास्ती
आसमान से ज़मीन पर नज़र डालेगी।
12 अल्लाह ज़रूर वह कुछ देगा जो अच्छा है, हमारी
ज़मीन ज़रूर अपनी फ़सलें पैदा करेगी।
13 रास्ती उस के आगे आगे चल कर उस के क़दमों
के लिए रास्ता तय्यार करेगी।

मुसीबत में दुआ

86 1 दाऊद की दुआ।
ऐ रब, अपना कान झुका कर मेरी सुन,
क्यूँकि मैं मुसीबतज़दा और मुह्ताज हूँ।
2 मेरी जान को मह्फ़ूज़ रख, क्यूँकि मैं ईमानदार हूँ।
अपने ख़ादिम को बचा जो तुझ पर भरोसा रखता है।
तू ही मेरा ख़ुदा है!
3 ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्यूँकि दिन भर मैं
तुझे पुकारता हूँ।
4 अपने ख़ादिम की जान को ख़ुश कर, क्यूँकि मैं
तेरा आरज़ूमन्द हूँ।
5 क्यूँकि तू ऐ रब भला है, तू मुआफ़ करने के लिए
तय्यार है। जो भी तुझे पुकारते हैं उन पर तू बड़ी
शफ़क़त करता है।
6 ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी इल्तिजाओं पर
तवज्जुह कर।
7 मुसीबत के दिन मैं तुझे पुकारता हूँ, क्यूँकि तू मेरी
सुनता है।

8 ऐ रब, माबूदों में से कोई तेरी मानिन्द नहीं है। जो
कुछ तू करता है कोई और नहीं कर सकता।
9 ऐ रब, जितनी भी क़ौमें तू ने बनाईं वह आ कर तेरे
हुज़ूर सिज्दा करेंगी और तेरे नाम को जलाल देंगी।
10 क्यूँकि तू ही अज़ीम है और मोजिज़े करता है। तू
ही ख़ुदा है।
11 ऐ रब, मुझे अपनी राह सिखा ताकि तेरी
वफ़ादारी में चलूँ। बख़्श दे कि मैं पूरे दिल से तेरा
ख़ौफ़ मानूँ।
12 ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं पूरे दिल से तेरा शुक्र करूँगा,
हमेशा तक तेरे नाम की ताज़ीम करूँगा।
13 क्यूँकि तेरी मुझ पर शफ़क़त अज़ीम है, तू ने मेरी
जान को पाताल की गहराइयों से छुड़ाया है।

14 ऐ अल्लाह, मग़रूर मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं,
ज़ालिमों का जथ्था मेरी जान लेने के दरपै है। यह
लोग तेरा लिहाज़ नहीं करते।
15 लेकिन तू, ऐ रब, रहीम और मेहरबान ख़ुदा है।
तू तहम्मुल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर है।
16 मेरी तरफ़ रुजू फ़रमा, मुझ पर मेहरबानी कर!
अपने ख़ादिम को अपनी क़ुव्वत अता कर, अपनी
ख़ादिमा के बेटे को बचा।
17 मुझे अपनी मेहरबानी का कोई निशान दिखा।
मुझ से नफ़रत करने वाले यह देख कर शर्मिन्दा हो
जाएँ कि तू रब ने मेरी मदद करके मुझे तसल्ली दी है।

सिय्यून अक़्वाम की माँ है

87 1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। गीत।
उस की बुन्याद मुक़द्दस पहाड़ों पर रखी
गई है।
2 रब सिय्यून के दरवाज़ों को याक़ूब की दीगर
आबादियों से कहीं ज़्यादा प्यार करता है।

3 ऐ अल्लाह के शहर, तेरे बारे में शानदार बातें सुनाई
जाती हैं। (सिलाह)
4 रब फ़रमाता है, “मैं मिस्र और बाबल को
उन लोगों में शुमार करूँगा जो मुझे जानते हैं।”
फिलिस्तिया, सूर और एथोपिया के बारे में भी कहा
जाएगा, “इन की पैदाइश यहीं हुई है।”

5 लेकिन सिय्यून के बारे में कहा जाएगा, “हर एक
बाशिन्दा उस में पैदा हुआ है। अल्लाह तआला ख़ुद
उसे क़ाइम रखेगा।”
6 जब रब अक़्वाम को किताब में दर्ज करेगा तो वह
साथ साथ यह भी लिखेगा, “यह सिय्यून में पैदा हुई
हैं।” (सिलाह)
7 और लोग नाचते हुए गाएँगे, “मेरे तमाम चश्मे तुझ
में हैं।”

तर्क किए गए शख़्स के लिए दुआ

88 1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए। तर्ज़ : महलत लअन्नोत।
हैमान इज़्राही का हिक्मत का गीत।
ऐ रब, ऐ मेरी नजात के ख़ुदा, दिन रात मैं तेरे हुज़ूर
चीख़ता चिल्लाता हूँ।
2 मेरी दुआ तेरे हुज़ूर पहुँचे, अपना कान मेरी चीख़ों
की तरफ़ झुका।
3 क्यूँकि मेरी जान दुख से भरी है, और मेरी टाँगें
क़ब्र में लटकी हुई हैं।
4 मुझे उन में शुमार किया जाता है जो पाताल में
उतर रहे हैं। मैं उस मर्द की मानिन्द हूँ जिस की तमाम
ताक़त जाती रही है।
5 मुझे मुर्दों में तन्हा छोड़ा गया है, क़ब्र में उन
मक़्तूलों की तरह जिन का तू अब ख़याल नहीं रखता
और जो तेरे हाथ के सहारे से मुन्क़ते हो गए हैं।
6 तू ने मुझे सब से गहरे गढ़े में, तारीकतरीन
गहराइयों में डाल दिया है।
7 तेरे ग़ज़ब का पूरा बोझ मुझ पर आ पड़ा है, तू
ने मुझे अपनी तमाम मौजों के नीचे दबा दिया है।
(सिलाह)
8 तू ने मेरे क़रीबी दोस्तों को मुझ से दूर कर दिया
है, और अब वह मुझ से घिन खाते हैं। मैं फंसा हुआ
हूँ और निकल नहीं सकता।
9 मेरी आँखें ग़म के मारे पझमुर्दा हो गई हैं। ऐ रब,
दिन भर मैं तुझे पुकारता, अपने हाथ तेरी तरफ़ उठाए
रखता हूँ।
10 क्या तू मुर्दों के लिए मोजिज़े करेगा? क्या पाताल
के बाशिन्दे उठ कर तेरी तम्जीद करेंगे? (सिलाह)
11 क्या लोग क़ब्र में तेरी शफ़क़त या पाताल में तेरी
वफ़ा बयान करेंगे?
12 क्या तारीकी में तेरे मोजिज़े या मुल्क-ए-फ़रामोश
में तेरी रास्ती मालूम हो जाएगी?

13 लेकिन ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता हूँ,
मेरी दुआ सुब्ह-सवेरे तेरे सामने आ जाती है।
14 ऐ रब, तू मेरी जान को क्यूँ रद्द करता, अपने
चिहरे को मुझ से पोशीदा क्यूँ रखता है?
15 मैं मुसीबतज़दा और जवानी से मौत के क़रीब
रहा हूँ। तेरे दहशतनाक हमले बर्दाश्त करते करते मैं
जान से हाथ धो बैठा हूँ।
16 तेरा भड़कता क़हर मुझ पर से गुज़र गया, तेरे
हौलनाक कामों ने मुझे नाबूद कर दिया है।
17 दिन भर वह मुझे सैलाब की तरह घेरे रखते हैं,
हर तरफ़ से मुझ पर हम्लाआवर होते हैं।
18 तू ने मेरे दोस्तों और पड़ोसियों को मुझ से दूर
कर रखा है। तारीकी ही मेरी क़रीबी दोस्त बन गई
है।

इस्राईल की मुसीबत और दाऊद से वादा

89 1 ऐतान इज़्राही का हिक्मत का गीत।
मैं अबद तक रब की मेहरबानियों की
मद्हसराई करूँगा, पुश्त-दर-पुश्त मुँह से तेरी वफ़ा
का एलान करूँगा।
2 क्यूँकि मैं बोला, “तेरी शफ़क़त हमेशा तक क़ाइम
है, तू ने अपनी वफ़ा की मज़बूत बुन्याद आसमान पर
ही रखी है।”
3 तू ने फ़रमाया, “मैं ने अपने चुने हुए बन्दे से अह्द
बांधा, अपने ख़ादिम दाऊद से क़सम खा कर वादा
किया है,
4 ‘मैं तेरी नस्ल को हमेशा तक क़ाइम रखूँगा, तेरा
तख़्त हमेशा तक मज़बूत रखूँगा’।” (सिलाह)

5 ऐ रब, आसमान तेरे मोजिज़ों की सताइश करेंगे,
मुक़द्दसीन की जमाअत में ही तेरी वफ़ादारी की
तम्जीद करेंगे।
6 क्यूँकि बादलों में कौन रब की मानिन्द है? इलाही
हस्तियों में से कौन रब की मानिन्द है?
7 जो भी मुक़द्दसीन की मजलिस में शामिल हैं वह
अल्लाह से ख़ौफ़ खाते हैं। जो भी उस के इर्दगिर्द होते
हैं उन पर उस की अज़मत और रोब छाया रहता है।
8 ऐ रब, ऐ लश्करों के ख़ुदा, कौन तेरी मानिन्द है?
ऐ रब, तू क़वी और अपनी वफ़ा से घिरा रहता है।
9 तू ठाठें मारते हुए समुन्दर पर हुकूमत करता है।
जब वह मौजज़न हो तो तू उसे थमा देता है।
10 तू ने समुन्दरी अज़दहे रहब को कुचल दिया,
और वह मक़्तूल की मानिन्द बन गया। अपने क़वी
बाज़ू से तू ने अपने दुश्मनों को तित्तर-बित्तर कर
दिया।
11 आसमान-ओ-ज़मीन तेरे ही हैं। दुनिया और जो
कुछ उस में है तू ने क़ाइम किया।
12 तू ने शिमाल-ओ-जुनूब को ख़ल्क़ किया। तबूर
और हर्मून तेरे नाम की ख़ुशी में नारे लगाते हैं।
13 तेरा बाज़ू क़वी और तेरा हाथ ताक़तवर है। तेरा
दहना हाथ अज़ीम काम करने के लिए तय्यार है।
14 रास्ती और इन्साफ़ तेरे तख़्त की बुन्याद हैं।
शफ़क़त और वफ़ा तेरे आगे आगे चलती हैं।

15 मुबारक है वह क़ौम जो तेरी ख़ुशी के नारे लगा
सके। ऐ रब, वह तेरे चिहरे के नूर में चलेंगे।
16 रोज़ाना वह तेरे नाम की ख़ुशी मनाएँगे और तेरी
रास्ती से सरफ़राज़ होंगे।
17 क्यूँकि तू ही उन की ताक़त की शान है, और तू
अपने करम से हमें सरफ़राज़ करेगा।
18 क्यूँकि हमारी ढाल रब ही की है, हमारा बादशाह
इस्राईल के क़ुद्दूस ही का है।

19 माज़ी में तू रोया में अपने ईमानदारों से हमकलाम
हुआ। उस वक़्त तू ने फ़रमाया, “मैं ने एक सूरमे को
ताक़त से नवाज़ा है, क़ौम में से एक को चुन कर
सरफ़राज़ किया है।
20 मैं ने अपने ख़ादिम दाऊद को पा लिया और उसे
अपने मुक़द्दस तेल से मसह किया है।
21 मेरा हाथ उसे क़ाइम रखेगा, मेरा बाज़ू उसे
तक़वियत देगा।
22 दुश्मन उस पर ग़ालिब नहीं आएगा, शरीर उसे
ख़ाक में नहीं मिलाएँगे।
23 उस के आगे आगे मैं उस के दुश्मनों को पाश
पाश करूँगा। जो उस से नफ़रत रखते हैं उन्हें ज़मीन
पर पटख़ दूँगा।
24 मेरी वफ़ा और मेरी शफ़क़त उस के साथ रहेंगी,
मेरे नाम से वह सरफ़राज़ होगा।
25 मैं उस के हाथ को समुन्दर पर और उस के दहने
हाथ को दरयाओं पर हुकूमत करने दूँगा।
26 वह मुझे पुकार कर कहेगा, ‘तू मेरा बाप, मेरा
ख़ुदा और मेरी नजात की चटान है।’
27 मैं उसे अपना पहलौठा और दुनिया का सब से
आला बादशाह बनाऊँगा।
28 मैं उसे हमेशा तक अपनी शफ़क़त से नवाज़ता
रहूँगा, मेरा उस के साथ अह्द कभी तमाम नहीं होगा।
29 मैं उस की नस्ल हमेशा तक क़ाइम रखूँगा, जब
तक आसमान क़ाइम है उस का तख़्त क़ाइम रखूँगा।
30 अगर उस के बेटे मेरी शरीअत तर्क करके मेरे
अह्काम पर अमल न करें,
31 अगर वह मेरे फ़रमानों की बेहुरमती करके मेरी
हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी न गुज़ारें
32 तो मैं लाठी ले कर उन की तादीब करूँगा और
मोहलिक वबाओं से उन के गुनाहों की सज़ा दूँगा।
33 लेकिन मैं उसे अपनी शफ़क़त से महरूम नहीं
करूँगा, अपनी वफ़ा का इन्कार नहीं करूँगा।
34 न मैं अपने अह्द की बेहुरमती करूँगा, न वह
कुछ तब्दील करूँगा जो मैं ने फ़रमाया है।
35 मैं ने एक बार सदा के लिए अपनी क़ुद्दूसियत
की क़सम खा कर वादा किया है, और मैं दाऊद को
कभी धोका नहीं दूँगा।

36 उस की नस्ल अबद तक क़ाइम रहेगी, उस का
तख़्त आफ़्ताब की तरह मेरे सामने खड़ा रहेगा।
37 चाँद की तरह वह हमेशा तक बरक़रार रहेगा,
और जो गवाह बादलों में है वह वफ़ादार है।”
(सिलाह)

38 लेकिन अब तू ने अपने मसह किए हुए ख़ादिम
को ठुकरा कर रद्द किया, तू उस से ग़ज़बनाक हो
गया है।
39 तू ने अपने ख़ादिम का अह्द नामन्ज़ूर किया और
उस का ताज ख़ाक में मिला कर उस की बेहुरमती
की है।
40 तू ने उस की तमाम फ़सीलें ढा कर उस के क़िलों
को मल्बे के ढेर बना दिया है।
41 जो भी वहाँ से गुज़रे वह उसे लूट लेता है। वह
अपने पड़ोसियों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया
है।
42 तू ने उस के मुख़ालिफ़ों का दहना हाथ सरफ़राज़
किया, उस के तमाम दुश्मनों को ख़ुश कर दिया है।
43 तू ने उस की तलवार की तेज़ी बेअसर करके
उसे जंग में फ़त्ह पाने से रोक दिया है।
44 तू ने उस की शान ख़त्म करके उस का तख़्त
ज़मीन पर पटख़ दिया है।
45 तू ने उस की जवानी के दिन मुख़्तसर करके उसे
रुस्वाई की चादर में लपेटा है। (सिलाह)

46 ऐ रब, कब तक? क्या तू अपने आप को हमेशा
तक छुपाए रखेगा? क्या तेरा क़हर अबद तक आग
की तरह भड़कता रहेगा?
47 याद रहे कि मेरी ज़िन्दगी कितनी मुख़्तसर है, कि
तू ने तमाम इन्सान कितने फ़ानी ख़ल्क़ किए हैं।
48 कौन है जिस का मौत से वास्ता न पड़े, कौन है
जो हमेशा ज़िन्दा रहे? कौन अपनी जान को मौत के
क़ब्ज़े से बचाए रख सकता है? (सिलाह)

49 ऐ रब, तेरी वह पुरानी मेहरबानियाँ कहाँ हैं जिन
का वादा तू ने अपनी वफ़ा की क़सम खा कर दाऊद
से किया?
50 ऐ रब, अपने ख़ादिमों की ख़जालत याद कर।
मेरा सीना मुतअद्दिद क़ौमों की लान-तान से दुखता
है,
51 क्यूँकि ऐ रब, तेरे दुश्मनों ने मुझे लान-तान की,
उन्हों ने तेरे मसह किए हुए ख़ादिम को हर क़दम पर
लान-तान की है!

52 अबद तक रब की हम्द हो! आमीन, फिर
आमीन।

चौथी किताब 90-106

फ़ानी इन्सान अल्लाह में पनाह ले

90 1 मर्द-ए-ख़ुदा मूसा की दुआ।
ऐ रब, पुश्त-दर-पुश्त तू हमारी पनाहगाह
रहा है।
2 इस से पहले कि पहाड़ पैदा हुए और तू ज़मीन
और दुनिया को वुजूद में लाया तू ही था। ऐ अल्लाह,
तू अज़ल से अबद तक है।
3 तू इन्सान को दुबारा ख़ाक होने देता है। तू
फ़रमाता है, ‘ऐ आदमज़ादो, दुबारा ख़ाक में मिल
जाओ!’
4 क्यूँकि तेरी नज़र में हज़ार साल कल के गुज़रे हुए
दिन के बराबर या रात के एक पहर की मानिन्द हैं।
5 तू लोगों को सैलाब की तरह बहा ले जाता है, वह
नींद और उस घास की मानिन्द हैं जो सुब्ह को फूट
निकलती है।
6 वह सुब्ह को फूट निकलती और उगती है, लेकिन
शाम को मुरझा कर सूख जाती है।

7 क्यूँकि हम तेरे ग़ज़ब से फ़ना हो जाते और तेरे
क़हर से हवासबाख़्ता हो जाते हैं।

8 तू ने हमारी ख़ताओं को अपने सामने रखा, हमारे
पोशीदा गुनाहों को अपने चिहरे के नूर में लाया है।
9 चुनाँचे हमारे तमाम दिन तेरे क़हर के तहत घटते
घटते ख़त्म हो जाते हैं। जब हम अपने सालों के
इख़तिताम पर पहुँचते हैं तो ज़िन्दगी सर्द आह के
बराबर ही होती है।
10 हमारी उम्र 70 साल या अगर ज़्यादा ताक़त हो
तो 80 साल तक पहुँचती है, और जो दिन फ़ख़र का
बाइस थे वह भी तक्लीफ़दिह और बेकार हैं। जल्द
ही वह गुज़र जाते हैं, और हम परिन्दों की तरह उड़
कर चले जाते हैं।
11 कौन तेरे ग़ज़ब की पूरी शिद्दत जानता है? कौन
समझता है कि तेरा क़हर हमारी ख़ुदातरसी की कमी
के मुताबिक़ ही है?
12 चुनाँचे हमें हमारे दिनों का सहीह हिसाब करना
सिखा ताकि हमारे दिल दानिशमन्द हो जाएँ।

13 ऐ रब, दुबारा हमारी तरफ़ रुजू फ़रमा! तू कब
तक दूर रहेगा? अपने ख़ादिमों पर तरस खा!
14 सुब्ह को हमें अपनी शफ़्क़त से सेर कर! तब
हम ज़िन्दगी भर बाग़ बाग़ होंगे और ख़ुशी मनाएँगे।
15 हमें उतने ही दिन ख़ुशी दिला जितने तू ने हमें
पस्त किया है, उतने ही साल जितने हमें दुख सहना
पड़ा है।
16 अपने ख़ादिमों पर अपने काम और उन की
औलाद पर अपनी अज़मत ज़ाहिर कर।
17 रब हमारा ख़ुदा हमें अपनी मेहरबानी दिखाए।
हमारे हाथों का काम मज़बूत कर, हाँ हमारे हाथों
का काम मज़बूत कर!

अल्लाह की पनाह में

91 1 जो अल्लाह तआला की पनाह में रहे
वह क़ादिर-ए-मुतलक़ के साय में सुकूनत
करेगा।
2 मैं कहूँगा, "ऐ रब, तू मेरी पनाह और मेरा क़िला
है, मेरा ख़ुदा जिस पर मैं भरोसा रखता हूँ।"
3 क्यूँकि वह तुझे चिड़ीमार के फंदे और मोहलिक
मर्ज़ से छुड़ाएगा।
4 वह तुझे अपने शाहपरों के नीचे ढाँप लेगा, और तू
उस के परों तले पनाह ले सकेगा। उस की वफ़ादारी
तेरी ढाल और पुश्ता रहेगी।
5 रात की दहशतों से ख़ौफ़ मत खा, न उस तीर से
जो दिन के वक़्त चले।
6 उस मोहलिक मर्ज़ से दहशत मत खा जो तारीकी
में घूमे फिरे, न उस वबाई बीमारी से जो दोपहर के
वक़्त तबाही फैलाए।
7 गो तेरे साथ खड़े हज़ार अफ़राद हलाक हो जाएँ
और तेरे दहने हाथ दस हज़ार मर जाएँ, लेकिन तू उस
की ज़द में नहीं आएगा।
8 तू अपनी आँखों से इस का मुलाहज़ा करेगा, तू
ख़ुद बेदीनों की सज़ा देखेगा।
9 क्यूँकि तू ने कहा है, "रब मेरी पनाहगाह है," तू
अल्लाह तआला के साय में छुप गया है।
10 इस लिए तेरा किसी बला से वास्ता नहीं पड़ेगा,
कोई आफ़त भी तेरे ख़ैमे के क़रीब फटकने नहीं
पाएगी।

11 क्यूँकि वह अपने फ़रिश्तों को हर राह पर तेरी
हिफ़ाज़त करने का हुक्म देगा,
12 और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे
पाँओ को पत्थर से ठेस न लगे।
13 तू शेरबबरों और ज़हरीले साँपों पर क़दम रखेगा,
तू जवान शेरों और अज़दहाओं को कुचल देगा।
14 रब फ़रमाता है, "चूँकि वह मुझ से लिपटा रहता
है इस लिए मैं उसे बचाऊँगा। चूँकि वह मेरा नाम
जानता है इस लिए मैं उसे महफ़ूज़ रखूँगा।
15 वह मुझे पुकारेगा तो मैं उस की सुनूँगा। मुसीबत
में मैं उस के साथ हूँगा। मैं उसे छुड़ा कर उस की
इज़्ज़त करूँगा।
16 मैं उसे उम्र की दराज़ी बख़्शूँगा और उस पर
अपनी नजात ज़ाहिर करूँगा।"

अल्लाह की सताइश करने की ख़ुशी

92 1 ज़बूर। सबत के लिए गीत।
रब का शुक्र करना भला है। ऐ अल्लाह
तआला, तेरे नाम की मद्हसराई करना भला है।
2 सुब्ह को तेरी शफ़क़त और रात को तेरी वफ़ा का
एलान करना भला है,
3 ख़ासकर जब साथ साथ दस तारों वाला साज़,
सितार और सरोद बजते हैं।

4 क्यूँकि ऐ रब, तू ने मुझे अपने कामों से ख़ुश किया
है, और तेरे हाथों के काम देख कर मैं ख़ुशी के नारे
लगाता हूँ।
5 ऐ रब, तेरे काम कितने अज़ीम, तेरे ख़यालात
कितने गहरे हैं।
6 नादान यह नहीं जानता, अहमक़ को इस की
समझ नहीं आती।
7 गो बेदीन घास की तरह फूट निकलते और
बदकार सब फलते फूलते हैं, लेकिन आख़िरकार
वह हमेशा के लिए हलाक हो जाएंगे।
8 मगर तू, ऐ रब, अबद तक सरबुलन्द रहेगा।

9 क्यूँकि तेरे दुश्मन, ऐ रब, तेरे दुश्मन यक़ीनन
तबाह हो जाएंगे, बदकार सब तित्तर-बित्तर हो जाएंगे।

10 तू ने मुझे जंगली बैल की सी ताक़त दे कर ताज़ा
तेल से मसह किया है।
11 मेरी आँख अपने दुश्मनों की शिकस्त से और मेरे
कान उन शरीरों के अन्जाम से लुत्फ़अन्दोज़ हुए हैं
जो मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं।

12 रास्तबाज़ खजूर के दरख़्त की तरह फले फूलेगा,
वह लुबनान के देवदार के दरख़्त की तरह बढ़ेगा।
13 जो पौदे रब की सुकूनतगाह में लगाए गए हैं वह
हमारे ख़ुदा की बारगाहों में फलें फूलेंगे।
14 वह बुढ़ापे में भी फल लाएँगे और तर-ओ-ताज़ा
और हरे-भरे रहेंगे।
15 उस वक़्त भी वह एलान करेंगे, "रब रास्त है।
वह मेरी चटान है, और उस में नारास्ती नहीं होती।"

अल्लाह अबदी बादशाह है

93 1 रब बादशाह है, वह जलाल से मुलब्बस
है। रब जलाल से मुलब्बस और क़ुदरत से
कमरबस्ता है। यक़ीनन दुनिया मज़बूत बुन्याद पर
क़ाइम है, और वह नहीं डगमगाएगी।

2 तेरा तख़्त क़दीम ज़माने से क़ाइम है, तू
अज़ल से मौजूद है।
3 ऐ रब, सैलाब गरज उठे, सैलाब शोर मचा कर
गरज उठे, सैलाब ठाठें मार कर गरज उठे।
4 लेकिन एक है जो गहरे पानी के शोर से ज़्यादा
ज़ोरावर, जो समुन्दर की ठाठों से ज़्यादा ताक़तवर
है। रब जो बुलन्दियों पर रहता है कहीं ज़्यादा अज़ीम
है।

5 ऐ रब, तेरे अह्काम हर तरह से क़ाबिल-ए-
एतिमाद हैं। तेरा घर हमेशा तक क़ुद्दूसियत से
आरास्ता रहेगा।

क़ौम पर ज़ुल्म करने वालों से रिहाई के लिए दुआ

94 1 ऐ रब, ऐ इन्तिक़ाम लेने वाले ख़ुदा!
ऐ इन्तिक़ाम लेने वाले ख़ुदा, अपना नूर
चमका।
2 ऐ दुनिया के मुन्सिफ़, उठ कर मग़ुरूरों को उन के
आमाल की मुनासिब सज़ा दे।
3 ऐ रब, बेदीन कब तक, हाँ कब तक फ़त्ह के नारे
लगाएँगे?

4 वह कुफ़्र की बातें उगलते रहते, तमाम बदकार
शेख़ी मारते रहते हैं।

5 ऐ रब, वह तेरी क़ौम को कुचल रहे, तेरी मौरूसी
मिलकियत पर ज़ुल्म कर रहे हैं।
6 बेवाओं और अजनबियों को वह मौत के घाट
उतार रहे, यतीमों को क़त्ल कर रहे हैं।
7 वह कहते हैं, "यह रब को नज़र नहीं आता,
याक़ूब का ख़ुदा ध्यान ही नहीं देता।"

8 ऐ क़ौम के नादानो, ध्यान दो! ऐ अहमक़ो, तुम्हें
कब समझ आएगी?
9 जिस ने कान बनाया, क्या वह नहीं सुनता? जिस
ने आँख को तश्कील दिया क्या वह नहीं देखता?
10 जो अक़्वाम को तम्बीह करता और इन्सान को
तालीम देता है क्या वह सज़ा नहीं देता?
11 रब इन्सान के ख़यालात जानता है, वह जानता
है कि वह दम भर के ही हैं।

12 ऐ रब, मुबारक है वह जिसे तू तर्बियत देता है,
जिसे तू अपनी शरीअत की तालीम देता है
13 ताकि वह मुसीबत के दिनों से आराम पाए और
उस वक़्त तक सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारे जब तक
बेदीनों के लिए गढ़ा तय्यार न हो।
14 क्यूँकि रब अपनी क़ौम को रद्द नहीं करेगा, वह
अपनी मौरूसी मिलकियत को तर्क नहीं करेगा।
15 फ़ैसले दुबारा इन्साफ़ पर मब्नी होंगे, और तमाम
दियानतदार दिल उस की पैरवी करेंगे।

16 कौन शरीरों के सामने मेरा दिफ़ा करेगा? कौन
मेरे लिए बदकारों का सामना करेगा?
17 अगर रब मेरा सहारा न होता तो मेरी जान जल्द
ही ख़ामोशी के मुल्क में जा बसती।
18 ऐ रब, जब मैं बोला, "मेरा पाँओ डगमगाने लगा
है" तो तेरी शफ़्क़त ने मुझे सँभाला।
19 जब तश्वीशनाक ख़यालात मुझे बेचैन करने लगे
तो तेरी तसल्लियों ने मेरी जान को ताज़ादम किया।

20 ऐ अल्लाह, क्या तबाही की हुकूमत तेरे साथ
मुत्तहिद हो सकती है, ऐसी हुकूमत जो अपने फ़रमानों
से ज़ुल्म करती है? हरगिज़ नहीं!
21 वह रास्तबाज़ की जान लेने के लिए आपस में
मिल जाते और बेक़ुसूरों को क़ातिल ठहराते हैं।
22 लेकिन रब मेरा क़िला बन गया है, और मेरा ख़ुदा
मेरी पनाह की चटान साबित हुआ है।
23 वह उन की नाइन्साफ़ी उन पर वापस आने देगा
और उन की शरीर हरकतों के जवाब में उन्हें तबाह
करेगा। रब हमारा ख़ुदा उन्हें नेस्त करेगा।

परस्तिश और फ़रमाँबरदारी की दावत

95 1 आओ, हम शादियाना बजा कर रब की
मद्हसराई करें, ख़ुशी के नारे लगा कर
अपनी नजात की चटान की तम्जीद करें!
2 आओ, हम शुक्रगुज़ारी के साथ उस के हुज़ूर
आएँ, गीत गा कर उस की सताइश करें।
3 क्यूँकि रब अज़ीम ख़ुदा और तमाम माबूदों पर
अज़ीम बादशाह है।
4 उस के हाथ में ज़मीन की गहराइयाँ हैं, और पहाड़
की बुलन्दियाँ भी उसी की हैं।
5 समुन्दर उस का है, क्यूँकि उस ने उसे ख़ल्क़
किया। ख़ुश्की उस की है, क्यूँकि उस के हाथों ने
उसे तश्कील दिया।
6 आओ हम सिज्दा करें और रब अपने ख़ालिक़ के
सामने झुक कर घुटने टेकें।
7 क्यूँकि वह हमारा ख़ुदा है और हम उस की
चरागाह की क़ौम और उस के हाथ की भेड़ें हैं। अगर
तुम आज उस की आवाज़ सुनो
8 "तो अपने दिलों को सख़्त न करो जिस तरह
मरीबा में हुआ, जिस तरह रेगिस्तान में मस्सा में हुआ।
9 वहाँ तुम्हारे बापदादा ने मुझे आज़माया और
जाँचा, हालाँकि उन्हों ने मेरे काम देख लिए थे।
10 चालीस साल मैं उस नस्ल से घिन खाता रहा। मैं
बोला, 'उन के दिल हमेशा सहीह राह से हट जाते हैं,
और वह मेरी राहें नहीं जानते।'

11 अपने ग़ज़ब में मैं ने क़सम खाई, ‘यह कभी
उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे जहाँ मैं उन्हें सुकून
देता’।”

दुनिया का ख़ालिक़ और मुन्सिफ़

96 1 रब की तम्जीद में नया गीत गाओ, ऐ पूरी
दुनिया, रब की मद्हसराई करो।
2 रब की तम्जीद में गीत गाओ, उस के नाम
की सताइश करो, रोज़-ब-रोज़ उस की नजात की
ख़ुशख़बरी सुनाओ।
3 क़ौमों में उस का जलाल और तमाम उम्मतों में
उस के अजाइब बयान करो।
4 क्यूँकि रब अज़ीम और सताइश के बहुत लाइक़
है। वह तमाम माबूदों से महीब है।
5 क्यूँकि दीगर क़ौमों के तमाम माबूद बुत ही हैं
जबकि रब ने आसमान को बनाया।
6 उस के हुज़ूर शान-ओ-शौकत, उस के मक़्दिस में
क़ुदरत और जलाल है।
7 ऐ क़ौमों के क़बीलो, रब की तम्जीद करो, रब के
जलाल और क़ुदरत की सताइश करो।
8 रब के नाम को जलाल दो। क़ुर्बानी ले कर उस
की बारगाहों में दाख़िल हो जाओ।
9 मुक़द्दस लिबास से आरास्ता हो कर रब को
सिज्दा करो। पूरी दुनिया उस के सामने लरज़ उठे।
10 क़ौमों में एलान करो, “रब ही बादशाह है!
यक़ीनन दुनिया मज़बूती से क़ाइम है और नहीं
डगमगाएगी। वह इन्साफ़ से क़ौमों की अदालत
करेगा।”

11 आसमान ख़ुश हो, ज़मीन जश्न मनाए! समुन्दर
और जो कुछ उस में है ख़ुशी से गरज उठे।
12 मैदान और जो कुछ उस में है बाग़ बाग़ हो। फिर
जंगल के दरख़्त शादियाना बजाएंगे।
13 वह रब के सामने शादियाना बजाएंगे, क्यूँकि वह
आ रहा है, वह दुनिया की अदालत करने आ रहा है।
वह इन्साफ़ से दुनिया की अदालत करेगा और अपनी
सदाक़त से अक़्वाम का फ़ैसला करेगा।

अल्लाह की सल्तनत पर ख़ुशी

97 1 रब बादशाह है! ज़मीन जश्न मनाए,
साहिली इलाक़े दूर दूर तक ख़ुश हों।
2 वह बादलों और गहरे अंधेरे से घिरा रहता है,
रास्ती और इन्साफ़ उस के तख़्त की बुन्याद हैं।
3 आग उस के आगे आगे भड़क कर चारों तरफ़
उस के दुश्मनों को भस्म कर देती है।
4 उस की कड़कती बिजलियों ने दुनिया को रौशन
कर दिया तो ज़मीन यह देख कर पेच-ओ-ताब खाने
लगी।
5 रब के आगे आगे, हाँ पूरी दुनिया के मालिक के
आगे आगे पहाड़ मोम की तरह पिघल गए।
6 आसमानों ने उस की रास्ती का एलान किया, और
तमाम क़ौमों ने उस का जलाल देखा।

7 तमाम बुतपरस्त, हाँ सब जो बुतों पर फ़ख़र करते
हैं शर्मिन्दा हों। ऐ तमाम माबूदो, उसे सिज्दा करो!
8 कोह-ए-सिय्यून सुन कर ख़ुश हुआ। ऐ रब, तेरे
फ़ैसलों के बाइस यहूदाह की बेटियाँ [a]बाग़ बाग़ हुईं।
9 क्यूँकि तू ऐ रब, पूरी दुनिया पर सब से आला है,
तू तमाम माबूदों से सरबुलन्द है।

10 तुम जो रब से मुहब्बत रखते हो, बुराई से नफ़रत
करो! रब अपने ईमानदारों की जान को महफ़ूज़
रखता है, वह उन्हें बेदीनों के क़ब्ज़े से छुड़ाता है।
11 रास्तबाज़ के लिए नूर का और दिल के
दियानतदारों के लिए शादमानी का बीज बोया गया
है।

---

[a]एक और मुमकिना तर्जुमा : यहूदाह की आबादियाँ।

12 ऐ रास्तबाज़ो, रब से ख़ुश हो, उस के मुक़द्दस
नाम की सताइश करो।

पूरी दुनिया का शाही मुन्सिफ़

98 1 रब की तम्जीद में नया गीत गाओ, क्यूँकि
उस ने मोजिज़े किए हैं। अपने दहने हाथ
और मुक़द्दस बाज़ू से उस ने नजात दी है।
2 रब ने अपनी नजात का एलान किया और अपनी
रास्ती क़ौमों के रू-ब-रू ज़ाहिर की है।
3 उस ने इस्राईल के लिए अपनी शफ़क़त और वफ़ा
याद की है। दुनिया की इन्तिहाओं ने सब हमारे ख़ुदा
की नजात देखी है।
4 ऐ पूरी दुनिया, नारे लगा कर रब की मद्हसराई
करो! आपे में न समाओ और जश्न मना कर हम्द के
गीत गाओ!
5 सरोद बजा कर रब की मद्हसराई करो, सरोद
और गीत से उस की सताइश करो।
6 तुरम और नरसिंगा फूँक कर रब बादशाह के हुज़ूर
ख़ुशी के नारे लगाओ!
7 समुन्दर और जो कुछ उस में है, दुनिया और उस
के बाशिन्दे ख़ुशी से गरज उठें।
8 दरया तालियाँ बजाएँ, पहाड़ मिल कर ख़ुशी
मनाएँ,
9 वह रब के सामने ख़ुशी मनाएँ। क्यूँकि वह ज़मीन
की अदालत करने आ रहा है। वह इन्साफ़ से दुनिया
की अदालत करेगा, रास्ती से क़ौमों का फ़ैसला
करेगा।

क़ुद्दूस ख़ुदा

99 1 रब बादशाह है, अक़्वाम लरज़ उठें! वह
करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन
है, दुनिया डगमगाए!
2 कोह-ए-सिय्यून पर रब अज़ीम है, तमाम अक़्वाम
पर सरबुलन्द है।
3 वह तेरे अज़ीम और पुरजलाल नाम की सताइश
करें, क्यूँकि वह क़ुद्दूस है।
4 वह बादशाह की क़ुदरत की तम्जीद करें जो
इन्साफ़ से प्यार करता है। ऐ अल्लाह, तू ही ने अदल
क़ाइम किया, तू ही ने याक़ूब में इन्साफ़ और रास्ती
पैदा की है।
5 रब हमारे ख़ुदा की ताज़ीम करो, उस के पाँओ की
चौकी के सामने सिज्दा करो, क्यूँकि वह क़ुद्दूस है।

6 मूसा और हारून उस के इमामों में से थे। समूएल
भी उन में से था जो उस का नाम पुकारते थे। उन्हों
ने रब को पुकारा, और उस ने उन की सुनी।
7 वह बादल के सतून में से उन से हमकलाम हुआ,
और वह उन अह्काम और फ़रमानों के ताबे रहे जो
उस ने उन्हें दिए थे।
8 ऐ रब हमारे ख़ुदा, तू ने उन की सुनी। तू जो अल्लाह
है उन्हें मुआफ़ करता रहा, अलबत्ता उन्हें उन की बुरी
हरकतों की सज़ा भी देता रहा।
9 रब हमारे ख़ुदा की ताज़ीम करो और उस के
मुक़द्दस पहाड़ पर सिज्दा करो, क्यूँकि रब हमारा
ख़ुदा क़ुद्दूस है।

अल्लाह की सताइश करो!

100 1 शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानी के लिए
ज़बूर।
ऐ पूरी दुनिया, ख़ुशी के नारे लगा कर रब की
मद्हसराई करो!
2 ख़ुशी से रब की इबादत करो, जश्न मनाते हुए
उस के हुज़ूर आओ!
3 जान लो कि रब ही ख़ुदा है। उसी ने हमें ख़ल्क़
किया, और हम उस के हैं, उस की क़ौम और उस
की चरागाह की भेड़ें।

4 शुक्र करते हुए उस के दरवाज़ों में दाख़िल हो,
सताइश करते हुए उस की बारगाहों में हाज़िर हो।
उस का शुक्र करो, उस के नाम की तम्जीद करो!
5 क्यूँकि रब भला है। उस की शफ़क़त अबदी है,
और उस की वफ़ादारी पुश्त-दर-पुश्त क़ाइम है।

बादशाह की हुकूमत कैसी होनी चाहिए?

101 1 दाऊद का ज़बूर।
मैं शफ़क़त और इन्साफ़ का गीत
गाऊँगा। ऐ रब, मैं तेरी मद्हसराई करूँगा।
2 मैं बड़ी एहतियात से बेइल्ज़ाम राह पर चलूँगा।
लेकिन तू कब मेरे पास आएगा? मैं ख़ुलूसदिली से
अपने घर में ज़िन्दगी गुज़ारूँगा।
3 मैं शरारत की बात अपने सामने नहीं रखता और
बुरी हरकतों से नफ़रत करता हूँ। ऐसी चीज़ें मेरे साथ
लिपट न जाएँ।
4 झूटा दिल मुझ से दूर रहे। मैं बुराई को जानना ही
नहीं चाहता।
5 जो चुपके से अपने पड़ोसी पर तुहमत लगाए उसे
मैं ख़ामोश कराऊँगा, जिस की आँखें मग़रूर और
दिल मुतकब्बिर हो उसे बर्दाश्त नहीं करूँगा।
6 मेरी आँखें मुल्क के वफ़ादारों पर लगी रहती हैं
ताकि वह मेरे साथ रहें। जो बेइल्ज़ाम राह पर चले
वही मेरी ख़िदमत करे।
7 धोकेबाज़ मेरे घर में न ठहरे, झूट बोलने वाला
मेरी मौजूदगी में क़ाइम न रहे।
8 हर सुब्ह को मैं मुल्क के तमाम बेदीनों को ख़ामोश
कराऊँगा ताकि तमाम बदकारों को रब के शहर में
से मिटाया जाए।

सिय्यून की बहाली के लिए दुआ (तौबा का पाँचवाँ ज़बूर)

102 1 मुसीबतज़दा की दुआ, उस वक़्त
जब वह निढाल हो कर रब के सामने
अपनी आह-ओ-ज़ारी उंडेल देता है।
ऐ रब, मेरी दुआ सुन! मदद के लिए मेरी आहें तेरे
हुज़ूर पहुँचें।
2 जब मैं मुसीबत में हूँ तो अपना चिहरा मुझ से
छुपाए न रख बल्कि अपना कान मेरी तरफ़ झुका।
जब मैं पुकारूँ तो जल्द ही मेरी सुन।
3 क्यूँकि मेरे दिन धुएँ की तरह ग़ाइब हो रहे हैं, मेरी
हड्डियाँ कोएलों की तरह दहक रही हैं।
4 मेरा दिल घास की तरह झुलस कर सूख गया है,
और मैं रोटी खाना भी भूल गया हूँ।
5 आह-ओ-ज़ारी करते करते मेरा जिस्म सुकड़ गया
है, जिल्द और हड्डियाँ ही रह गई हैं।
6 मैं रेगिस्तान में दश्ती उल्लू और खंडरात में छोटे
उल्लू की मानिन्द हूँ।
7 मैं बिस्तर पर जागता रहता हूँ, छत पर तन्हा
परिन्दे की मानिन्द हूँ।
8 दिन भर मेरे दुश्मन मुझे लान-तान करते हैं। जो
मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं वह मेरा नाम ले कर लानत
करते हैं।
9 राख मेरी रोटी है, और जो कुछ पीता हूँ उस में
मेरे आँसू मिले होते हैं।
10 क्यूँकि मुझ पर तेरी लानत और तेरा ग़ज़ब
नाज़िल हुआ है। तू ने मुझे उठा कर ज़मीन पर पटख़
दिया है।
11 मेरे दिन शाम के ढलने वाले साय की मानिन्द हैं।
मैं घास की तरह सूख रहा हूँ।

12 लेकिन तू ऐ रब अबद तक तख़्तनशीन है, तेरा
नाम पुश्त-दर-पुश्त क़ाइम रहता है।
13 अब आ, कोह-ए-सिय्यून पर रहम कर। क्यूँकि
उस पर मेहरबानी करने का वक़्त आ गया है, मुक़र्ररा
वक़्त आ गया है।
14 क्यूँकि तेरे ख़ादिमों को उस का एक एक पत्थर
प्यारा है, और वह उस के मल्बे पर तरस खाते हैं।
15 तब ही क़ौमें रब के नाम से डरेंगी, और दुनिया
के तमाम बादशाह तेरे जलाल का ख़ौफ़ खाएँगे।
16 क्यूँकि रब सिय्यून को अज़ सर-ए-नौ तामीर
करेगा, वह अपने पूरे जलाल के साथ ज़ाहिर हो
जाएगा।
17 मुफ़लिसों की दुआ पर वह ध्यान देगा और उन
की फ़र्यादों को हक़ीर नहीं जानेगा।

18 आने वाली नस्ल के लिए यह क़लमबन्द हो
जाए ताकि जो क़ौम अभी पैदा नहीं हुई वह रब की
सताइश करे।
19 क्यूँकि रब ने अपने मक़्दिस की बुलन्दियों से
झाँका है, उस ने आसमान से ज़मीन पर नज़र डाली
है
20 ताकि क़ैदियों की आह-ओ-ज़ारी सुने और मरने
वालों की ज़न्जीरें खोले।
21 क्यूँकि उस की मर्ज़ी है कि वह कोह-ए-सिय्यून
पर रब के नाम का एलान करें और यरूशलम में उस
की सताइश करें,
22 कि क़ौमें और सल्तनतें मिल कर जमा हो जाएँ
और रब की इबादत करें।

23 रास्ते में ही अल्लाह ने मेरी ताक़त तोड़ कर मेरे
दिन मुख़्तसर कर दिए हैं।
24 मैं बोला, “ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे ज़िन्दों के मुल्क से
दूर न कर, मेरी ज़िन्दगी तो अधूरी रह गई है। लेकिन
तेरे साल पुश्त-दर-पुश्त क़ाइम रहते हैं।
25 तू ने क़दीम ज़माने में ज़मीन की बुन्याद रखी,
और तेरे ही हाथों ने आसमानों को बनाया।
26 यह तो तबाह हो जाएंगे, लेकिन तू क़ाइम रहेगा।
यह सब कपड़े की तरह घिस फट जाएंगे। तू उन्हें
पुराने लिबास की तरह बदल देगा, और वह जाते
रहेंगे।
27 लेकिन तू वही का वही रहता है, और तेरी
ज़िन्दगी कभी ख़त्म नहीं होती।
28 तेरे ख़ादिमों के फ़र्ज़न्द तेरे हुज़ूर बसते रहेंगे, और
उन की औलाद तेरे सामने क़ाइम रहेगी।”

रब की शफ़क़त की सताइश

103 1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर!
मेरा रग-ओ-रेशा उस के क़ुद्दूस नाम की हम्द करे!
2 ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर और जो कुछ
उस ने तेरे लिए किया है उसे भूल न जा।
3 क्यूँकि वह तेरे तमाम गुनाहों को मुआफ़ करता,
तुझे तमाम बीमारियों से शिफ़ा देता है।
4 वह इवज़ाना दे कर तेरी जान को मौत के गढ़े से
छुड़ा लेता, तेरे सर को अपनी शफ़क़त और रहमत
के ताज से आरास्ता करता है।
5 वह तेरी ज़िन्दगी को अच्छी चीज़ों से सेर करता
है, और तू दुबारा जवान हो कर उक़ाब की सी
तक़वियत पाता है।

6 रब तमाम मज़्लूमों के लिए रास्ती और इन्साफ़
क़ाइम करता है।
7 उस ने अपनी राहें मूसा पर और अपने अज़ीम
काम इस्राईलियों पर ज़ाहिर किए।
8 रब रहीम और मेहरबान है, वह तहम्मुल और
शफ़क़त से भरपूर है।
9 न वह हमेशा डाँटता रहेगा, न अबद तक नाराज़
रहेगा।
10 न वह हमारी ख़ताओं के मुताबिक़ सज़ा देता, न
हमारे गुनाहों का मुनासिब अज्र देता है।
11 क्यूँकि जितना बुलन्द आसमान है, उतनी ही
अज़ीम उस की शफ़क़त उन पर है जो उस का ख़ौफ़
मानते हैं।
12 जितनी दूर मशरिक़ मग़रिब से है उतना ही उस
ने हमारे क़ुसूर हम से दूर कर दिए हैं।
13 जिस तरह बाप अपने बच्चों पर तरस खाता है
उसी तरह रब उन पर तरस खाता है जो उस का ख़ौफ़
मानते हैं।

14 क्यूँकि वह हमारी साख़्त जानता है, उसे याद है
कि हम ख़ाक ही हैं।
15 इन्सान के दिन घास की मानिन्द हैं, और वह
जंगली फूल की तरह ही फलता फूलता है।
16 जब उस पर से हवा गुज़रे तो वह नहीं रहता, और
उस के नाम-ओ-निशान का भी पता नहीं चलता।

17 लेकिन जो रब का ख़ौफ़ मानें उन पर वह हमेशा
तक मेहरबानी करेगा, वह अपनी रास्ती उन के पोतों
और नवासों पर भी ज़ाहिर करेगा।
18 शर्त यह है कि वह उस के अह्द के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारें और ध्यान से उस के अह्काम पर
अमल करें।

19 रब ने आसमान पर अपना तख़्त क़ाइम किया है,
और उस की बादशाही सब पर हुकूमत करती है।
20 ऐ रब के फ़रिश्तो, उस के ताक़तवर सूरमाओ,
जो उस के फ़रमान पूरे करते हो ताकि उस का कलाम
माना जाए, रब की सताइश करो!
21 ऐ तमाम लश्करो, तुम सब जो उस के ख़ादिम
हो और उस की मर्ज़ी पूरी करते हो, रब की सताइश
करो!
22 तुम सब जिन्हें उस ने बनाया, रब की सताइश
करो! उस की सल्तनत की हर जगह पर उस की
तम्जीद करो। ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर!

ख़ालिक़ की हम्द-ओ-सना

104 1 ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर! ऐ
रब मेरे ख़ुदा, तू निहायत ही अज़ीम है,
तू जाह-ओ-जलाल से आरास्ता है।
2 तेरी चादर नूर है जिसे तू ओढ़े रहता है। तू
आसमान को ख़ैमे की तरह तान कर
3 अपना बालाखाना उस के पानी के बीच में तामीर
करता है। बादल तेरा रथ है, और तू हवा के परों पर
सवार होता है।
4 तू हवाओं को अपने क़ासिद और आग के शोलों
को अपने ख़ादिम बना देता है।

5 तू ने ज़मीन को मज़बूत बुन्याद पर रखा ताकि वह
कभी न डगमगाए।
6 सैलाब ने उसे लिबास की तरह ढाँप दिया, और
पानी पहाड़ों के ऊपर ही खड़ा हुआ।
7 लेकिन तेरे डाँटने पर पानी फ़रार हुआ, तेरी
गरजती आवाज़ सुन कर वह एक दम भाग गया।
8 तब पहाड़ ऊँचे हुए और वादियाँ उन जगहों पर
उतर आईं जो तू ने उन के लिए मुक़र्रर की थीं।
9 तू ने एक हद बांधी जिस से पानी बढ़ नहीं सकता।
आइन्दा वह कभी पूरी ज़मीन को नहीं ढाँकने का।
10 तू वादियों में चश्मे फूटने देता है, और वह पहाड़ों
में से बह निकलते हैं।
11 बहते बहते वह खुले मैदान के तमाम जानवरों
को पानी पिलाते हैं। जंगली गधे आ कर अपनी प्यास
बुझाते हैं।
12 परिन्दे उन के किनारों पर बसेरा करते, और उन
की चहचहाती आवाज़ें घने बेल-बूटों में से सुनाई देती
हैं।
13 तू अपने बालाख़ाने से पहाड़ों को तर करता है,
और ज़मीन तेरे हाथ से सेर हो कर हर तरह का फल
लाती है।
14 तू जानवरों के लिए घास फूटने और इन्सान
के लिए पौदे उगने देता है ताकि वह ज़मीन की
काश्तकारी करके रोटी हासिल करे।
15 तेरी मै इन्सान का दिल ख़ुश करती, तेरा तेल
उस का चिहरा रौशन कर देता, तेरी रोटी उस का
दिल मज़बूत करती है।
16 रब के दरख़्त यानी लुबनान में उस के लगाए हुए
देवदार के दरख़्त सेराब रहते हैं।
17 परिन्दे उन में अपने घोंसले बना लेते हैं, और
लक़्लक़ जूनीपर के दरख़्त में अपना आशियाना।
18 पहाड़ों की बुलन्दियों पर पहाड़ी बकरों का राज
है, चटानों में बिज्जू पनाह लेते हैं।
19 तू ने साल को महीनों में तक़्सीम करने के लिए
चाँद बनाया, और सूरज को ग़ुरूब होने के औक़ात
मालूम हैं।
20 तू अंधेरा फैलने देता है तो दिन ढल जाता है और
जंगली जानवर हरकत में आ जाते हैं।

21 जवान शेरबबर दहाड़ कर शिकार के पीछे पड़
जाते और अल्लाह से अपनी ख़ुराक का मुतालबा करते
हैं।
22 फिर सूरज तुलू होने लगता है, और वह खिसक
कर अपने भटों में छुप जाते हैं।
23 उस वक़्त इन्सान घर से निकल कर अपने काम
में लग जाता और शाम तक मसरूफ़ रहता है।

24 ऐ रब, तेरे अनगिनत काम कितने अज़ीम हैं! तू
ने हर एक को हिक्मत से बनाया, और ज़मीन तेरी
मख़्लूक़ात से भरी पड़ी है।

25 समुन्दर को देखो, वह कितना बड़ा और वसी
है। उस में बेशुमार जानदार हैं, बड़े भी और छोटे भी।
26 उस की सतह पर जहाज़ इधर उधर सफ़र करते
हैं, उस की गहराइयों में लिवियातान फिरता है, वह
अज़दहा जिसे तू ने उस में उछलने कूदने के लिए
तश्कील दिया था।
27 सब तेरे इन्तिज़ार में रहते हैं कि तू उन्हें वक़्त
पर खाना मुहय्या करे।
28 तू उन में ख़ुराक तक़्सीम करता है तो वह उसे
इकट्ठा करते हैं। तू अपनी मुट्ठी खोलता है तो वह
अच्छी चीज़ों से सेर हो जाते हैं।
29 जब तू अपना चिहरा छुपा लेता है तो उन के
हवास गुम हो जाते हैं। जब तू उन का दम निकाल
लेता है तो वह नेस्त हो कर दुबारा ख़ाक में मिल जाते
हैं।
30 तू अपना दम भेज देता है तो वह पैदा हो जाते
हैं। तू ही रू-ए-ज़मीन को बहाल करता है।

31 रब का जलाल अबद तक क़ाइम रहे! रब अपने
काम की ख़ुशी मनाए!
32 वह ज़मीन पर नज़र डालता है तो वह लरज़
उठती है। वह पहाड़ों को छू देता है तो वह धुआँ
छोड़ते हैं।
33 मैं उम्र भर रब की तम्जीद में गीत गाऊँगा, जब
तक ज़िन्दा हूँ अपने ख़ुदा की मद्हसराई करूँगा।
34 मेरी बात उसे पसन्द आए! मैं रब से कितना ख़ुश
हूँ!
35 गुनाहगार ज़मीन से मिट जाएँ और बेदीन नेस्त-
ओ-नाबूद हो जाएँ। ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर!
रब की हम्द हो!

माज़ी में रब की नजात की हम्द

105 1 रब का शुक्र करो और उस का नाम
पुकारो! अक़्वाम में उस के कामों का
एलान करो।
2 साज़ बजा कर उस की मद्हसराई करो। उस के
तमाम अजाइब के बारे में लोगों को बताओ।
3 उस के मुक़द्दस नाम पर फ़ख़र करो। रब के
तालिब दिल से ख़ुश हों।
4 रब और उस की क़ुदरत की दरयाफ़्त करो, हर
वक़्त उस के चिहरे के तालिब रहो।
5 जो मोजिज़े उस ने किए उन्हें याद करो। उस के
इलाही निशान और उस के मुँह के फ़ैसले दुहराते
रहो।
6 तुम जो उस के ख़ादिम इब्राहीम की औलाद और
याक़ूब के फ़र्ज़न्द हो, जो उस के बर्गुज़ीदा लोग हो,
तुम्हें सब कुछ याद रहे!
7 वही रब हमारा ख़ुदा है, वही पूरी दुनिया की
अदालत करता है।
8 वह हमेशा अपने अह्द का ख़याल रखता है, उस
कलाम का जो उस ने हज़ार पुश्तों के लिए फ़रमाया
था।
9 यह वह अह्द है जो उस ने इब्राहीम से बांधा, वह
वादा जो उस ने क़सम खा कर इस्हाक़ से किया था।
10 उस ने उसे याक़ूब के लिए क़ाइम किया ताकि
वह उस के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे, उस ने तस्दीक़
की कि यह मेरा इस्राईल से अबदी अह्द है।
11 साथ साथ उस ने फ़रमाया, “मैं तुझे मुल्क-ए-
कनआन दूँगा। यह तेरी मीरास का हिस्सा होगा।”

12 उस वक़्त वह तादाद में कम और थोड़े ही थे
बल्कि मुल्क में अजनबी ही थे।
13 अब तक वह मुख़्तलिफ़ क़ौमों और सल्तनतों
में घूमते फिरते थे।
14 लेकिन अल्लाह ने उन पर किसी को ज़ुल्म करने
न दिया, और उन की ख़ातिर उस ने बादशाहों को
डाँटा,
15 "मेरे मसह किए हुए ख़ादिमों को मत छेड़ना, मेरे
नबियों को नुक़्सान मत पहुँचाना।"

16 फिर अल्लाह ने मुल्क-ए-कनआन में काल पड़ने
दिया और ख़ुराक का हर ज़ख़ीरा ख़त्म किया।
17 लेकिन उस ने उन के आगे आगे एक आदमी को
मिस्र भेजा यानी यूसुफ़ को जो ग़ुलाम बन कर फ़रोख़्त
हुआ।
18 उस के पाँओ और गर्दन ज़न्जीरों में जकड़े रहे
19 जब तक वह कुछ पूरा न हुआ जिस की पेशगोई
यूसुफ़ ने की थी, जब तक रब के फ़रमान ने उस की
तस्दीक़ न की।
20 तब मिस्री बादशाह ने अपने बन्दों को भेज कर
उसे रिहाई दी, क़ौमों के हुक्मरान ने उसे आज़ाद
किया।
21 उस ने उसे अपने घराने पर निगरान और अपनी
तमाम मिलकियत पर हुक्मरान मुक़र्रर किया।
22 यूसुफ़ को फ़िरऔन के रईसों को अपनी मर्ज़ी के
मुताबिक़ चलाने और मिस्री बुज़ुर्गों को हिक्मत की
तालीम देने की ज़िम्मादारी भी दी गई।

23 फिर याक़ूब का ख़ानदान मिस्र आया, और
इस्राईल हाम के मुल्क में अजनबी की हैसियत से
बसने लगा।
24 वहाँ अल्लाह ने अपनी क़ौम को बहुत फलने
फूलने दिया, उस ने उसे उस के दुश्मनों से ज़्यादा
ताक़तवर बना दिया।
25 साथ साथ उस ने मिस्रियों का रवय्या बदल
दिया, तो वह उस की क़ौम इस्राईल से नफ़रत करके
रब के ख़ादिमों से चालाकियाँ करने लगे।

26 तब अल्लाह ने अपने ख़ादिम मूसा और अपने चुने
हुए बन्दे हारून को मिस्र में भेजा।
27 मुल्क-ए-हाम में आ कर उन्हों ने उन के दरमियान
अल्लाह के इलाही निशान और मोजिज़े दिखाए।
28 अल्लाह के हुक्म पर मिस्र पर तारीकी छा गई,
मुल्क में अंधेरा हो गया। लेकिन उन्हों ने उस के
फ़रमान न माने।
29 उस ने उन का पानी ख़ून में बदल कर उन की
मछलियों को मरवा दिया।
30 मिस्र के मुल्क पर मेंढ़कों के ग़ोल छा गए जो उन
के हुक्मरानों के अन्दरूनी कमरों तक पहुँच गए।
31 अल्लाह के हुक्म पर मिस्र के पूरे इलाक़े में
मक्खियों और जूओं के ग़ोल फैल गए।
32 बारिश की बजाय उस ने उन के मुल्क पर ओले
और दहकते शोले बरसाए।
33 उस ने उन की अंगूर की बेलें और अन्जीर के
दरख़्त तबाह कर दिए, उन के इलाक़े के दरख़्त तोड़
डाले।
34 उस के हुक्म पर अनगिनत टिड्डियाँ अपने बच्चों
समेत मुल्क पर हम्लाआवर हुईं।
35 वह उन के मुल्क की तमाम हरियाली और उन
के खेतों की तमाम पैदावार चट कर गईं।
36 फिर अल्लाह ने मिस्र में तमाम पहलौठों को मार
डाला, उन की मर्दानगी का पहला फल तमाम हुआ।

37 इस के बाद वह इस्राईल को चाँदी और सोने से
नवाज़ कर मिस्र से निकाल लाया। उस वक़्त उस के
क़बीलों में ठोकर खाने वाला एक भी नहीं था।
38 मिस्र ख़ुश था जब वह रवाना हुए, क्यूँकि उन पर
इस्राईल की दहशत छा गई थी।

39 दिन को अल्लाह ने उन के ऊपर बादल कम्बल
की तरह बिछा दिया, रात को आग मुहय्या की ताकि
रौशनी हो।
40 जब उन्हों ने ख़ुराक माँगी तो उस ने उन्हें बटेर
पहुँचा कर आसमानी रोटी से सेर किया।
41 उस ने चटान को चाक किया तो पानी फूट
निकला, और रेगिस्तान में पानी की नदियाँ बहने
लगीं।

42 क्यूँकि उस ने उस मुक़द्दस वादे का ख़याल रखा
जो उस ने अपने ख़ादिम इब्राहीम से किया था।
43 चुनाँचे वह अपनी चुनी हुई क़ौम को मिस्र से
निकाल लाया, और वह ख़ुशी और शादमानी के नारे
लगा कर निकल आए।
44 उस ने उन्हें दीगर अक़्वाम के ममालिक दिए,
और उन्हों ने दीगर उम्मतों की मेहनत के फल पर
क़ब्ज़ा किया।
45 क्यूँकि वह चाहता था कि वह उस के अह्काम
और हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें। रब की
हम्द हो।

अल्लाह का फ़ज़्ल और इस्राईल की सरकशी

106 1 रब की हम्द हो! रब का शुक्र करो,
क्यूँकि वह भला है, और उस की
शफ़क़त अबदी है।
2 कौन रब के तमाम अज़ीम काम सुना सकता, कौन
उस की मुनासिब तम्जीद कर सकता है?

3 मुबारक हैं वह जो इन्साफ़ क़ाइम रखते, जो हर
वक़्त रास्त काम करते हैं।
4 ऐ रब, अपनी क़ौम पर मेहरबानी करते वक़्त मेरा
ख़याल रख, नजात देते वक़्त मेरी भी मदद कर
5 ताकि मैं तेरे चुने हुए लोगों की ख़ुशहाली देख सकूँ
और तेरी क़ौम की ख़ुशी में शरीक हो कर तेरी मीरास
के साथ सताइश कर सकूँ।
6 हम ने अपने बापदादा की तरह गुनाह किया है,
हम से नाइन्साफ़ी और बेदीनी सरज़द हुई है।
7 जब हमारे बापदादा मिस्र में थे तो उन्हें तेरे
मोजिज़ों की समझ न आई और तेरी मुतअद्दिद
मेहरबानियाँ याद न रहीं बल्कि वह समुन्दर यानी
बहर-ए-क़ुल्ज़ुम पर सरकश हुए।

8 तो भी उस ने उन्हें अपने नाम की ख़ातिर बचाया,
क्यूँकि वह अपनी क़ुदरत का इज़हार करना चाहता
था।
9 उस ने बहर-ए-क़ुल्ज़ुम को झिड़का तो वह ख़ुश्क
हो गया। उस ने उन्हें समुन्दर की गहराइयों में से यूँ
गुज़रने दिया जिस तरह रेगिस्तान में से।
10 उस ने उन्हें नफ़रत करने वाले के हाथ से छुड़ाया
और इवज़ाना दे कर दुश्मन के हाथ से रिहा किया।
11 उन के मुख़ालिफ़ पानी में डूब गए। एक भी न
बचा।
12 तब उन्हों ने अल्लाह के फ़रमानों पर ईमान ला
कर उस की मद्हसराई की।

13 लेकिन जल्द ही वह उस के काम भूल गए। वह
उस की मर्ज़ी का इन्तिज़ार करने के लिए तय्यार न
थे।
14 रेगिस्तान में शदीद लालच में आ कर उन्हों ने
वहीं बयाबान में अल्लाह को आज़माया।
15 तब उस ने उन की दरख़्वास्त पूरी की, लेकिन
साथ साथ मोहलिक वबा भी उन में फैला दी।
16 ख़ैमागाह में वह मूसा और रब के मुक़द्दस इमाम
हारून से हसद करने लगे।
17 तब ज़मीन खुल गई, और उस ने दातन को हड़प
कर लिया, अबीराम के जथ्थे को अपने अन्दर दफ़न
कर लिया।
18 आग उन के जथ्थे में भड़क उठी, और बेदीन
नज़र-ए-आतिश हुए।

19 वह कोह-ए-होरिब यानी सीना के दामन में बछड़े
का बुत ढाल कर उस के सामने औंधे मुँह हो गए।
20 उन्हों ने अल्लाह को जलाल देने के बजाय घास
खाने वाले बैल की पूजा की।
21 वह अल्लाह को भूल गए, हालाँकि उसी ने उन्हें
छुड़ाया था, उसी ने मिस्र में अज़ीम काम किए थे।
22 जो मोजिज़े हाम के मुल्क में हुए और जो जलाली
वाक़िआत बहर-ए-क़ुल्ज़ुम पर पेश आए थे वह सब
अल्लाह के हाथ से हुए थे।
23 चुनाँचे अल्लाह ने फ़रमाया कि मैं उन्हें नेस्त-ओ-
नाबूद करूँगा। लेकिन उस का चुना हुआ ख़ादिम
मूसा रख़्ने में खड़ा हो गया ताकि उस के ग़ज़ब को
इस्राईलियों को मिटाने से रोके। सिर्फ़ इस वजह से
अल्लाह अपने इरादे से बाज़ आया।

24 फिर उन्हों ने कनआन के ख़ुशगवार मुल्क को
हक़ीर जाना। उन्हें यक़ीन नहीं था कि अल्लाह अपना
वादा पूरा करेगा।
25 वह अपने ख़ैमों में बुड़बुड़ाने लगे और रब की
आवाज़ सुनने के लिए तय्यार न हुए।
26 तब उस ने अपना हाथ उन के ख़िलाफ़ उठाया
ताकि उन्हें वहीं रेगिस्तान में हलाक करे
27 और उन की औलाद को दीगर अक़्वाम में फैंक
कर मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुन्तशिर कर दे।

28 वह बाल-फ़ग़ूर देवता से लिपट गए और मुर्दों के
लिए पेश की गई क़ुर्बानियों का गोश्त खाने लगे।
29 उन्हों ने अपनी हरकतों से रब को तैश दिलाया
तो उन में मोहलिक बीमारी फैल गई।
30 लेकिन फ़ीन्हास ने उठ कर उन की अदालत की।
तब वबा रुक गई।
31 इसी बिना पर अल्लाह ने उसे पुश्त-दर-पुश्त और
अबद तक रास्तबाज़ क़रार दिया।

32 मरीबा के चश्मे पर भी उन्हों ने रब को ग़ुस्सा
दिलाया। उन ही के बाइस मूसा का बुरा हाल हुआ।
33 क्यूँकि उन्हों ने उस के दिल में इतनी तल्ख़ी पैदा
की कि उस के मुँह से बेजा बातें निकलीं।

34 जो दीगर क़ौमें मुल्क में थीं उन्हें उन्हों ने नेस्त न
किया, हालाँकि रब ने उन्हें यह करने को कहा था।
35 न सिर्फ़ यह बल्कि वह ग़ैरक़ौमों से रिश्ता बांध
कर उन में घुल मिल गए और उन के रस्म-ओ-रिवाज
अपना लिए।
36 वह उन के बुतों की पूजा करने में लग गए, और
यह उन के लिए फंदे का बाइस बन गए।
37 वह अपने बेटे-बेटियों को बदरूहों के हुज़ूर
क़ुर्बान करने से भी न कतराए।
38 हाँ, उन्हों ने अपने बेटे-बेटियों को कनआन के
देवताओं के हुज़ूर पेश करके उन का मासूम ख़ून
बहाया। इस से मुल्क की बेहुरमती हुई।
39 वह अपनी ग़लत हरकतों से नापाक और अपने
ज़िनाकाराना कामों से अल्लाह से बेवफ़ा हुए।

40 तब अल्लाह अपनी क़ौम से सख़्त नाराज़ हुआ,
और उसे अपनी मौरूसी मिलकियत से घिन आने
लगी।
41 उस ने उन्हें दीगर क़ौमों के हवाले किया, और
जो उन से नफ़रत करते थे वह उन पर हुकूमत करने
लगे।
42 उन के दुश्मनों ने उन पर ज़ुल्म करके उन को
अपना मुती बना लिया।
43 अल्लाह बार बार उन्हें छुड़ाता रहा, हालाँकि वह
अपने सरकश मन्सूबों पर तुले रहे और अपने क़ुसूर
में डूबते गए।
44 लेकिन उस ने मदद के लिए उन की आहें सुन
कर उन की मुसीबत पर ध्यान दिया।
45 उस ने उन के साथ अपना अह्द याद किया, और
वह अपनी बड़ी शफ़क़त के बाइस पछताया।
46 उस ने होने दिया कि जिस ने भी उन्हें गिरिफ़्तार
किया उस ने उन पर तरस खाया।

47 ऐ रब हमारे ख़ुदा, हमें बचा! हमें दीगर क़ौमों से
निकाल कर जमा कर। तब ही हम तेरे मुक़द्दस नाम
की सताइश करेंगे और तेरे क़ाबिल-ए-तारीफ़ कामों
पर फ़ख़र करेंगे।
48 अज़ल से अबद तक रब, इस्राईल के ख़ुदा की
हम्द हो। तमाम क़ौम कहे, "आमीन! रब की हम्द
हो!"

पाँचवीं किताब 107-15

नजातयाफ़्ता की शुक्रगुज़ारी

107 1 रब का शुक्र करो, क्यूँकि वह भला
है, और उस की शफ़क़त अबदी है।
2 रब के नजातयाफ़्ता जिन को उस ने इवज़ाना दे
कर दुश्मन के क़ब्ज़े से छुड़ाया है सब यह कहें।
3 उस ने उन्हें मशरिक़ से मग़रिब तक और शिमाल
से जुनूब तक दीगर ममालिक से इकट्ठा किया है।

4 बाज़ रेगिस्तान में सहीह रास्ता भूल कर वीरान
रास्ते पर मारे मारे फिरे, और कहीं भी आबादी न
मिली।
5 भूक और प्यास के मारे उन की जान निढाल हो
गई।
6 तब उन्हों ने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा,
और उस ने उन्हें उन की तमाम परेशानियों से
छुटकारा दिया।
7 उस ने उन्हें सहीह राह पर ला कर ऐसी आबादी
तक पहुँचाया जहाँ रह सकते थे।
8 वह रब का शुक्र करें कि उस ने अपनी शफ़क़त
और अपने मोजिज़े इन्सान पर ज़ाहिर किए हैं।
9 क्यूँकि वह प्यासी जान को आसूदा करता और
भूकी जान को कस्रत की अच्छी चीज़ों से सेर करता
है।
10 दूसरे ज़न्जीरों और मुसीबत में जकड़े हुए अंधेरे
और गहरी तारीकी में बसते थे,
11 क्यूँकि वह अल्लाह के फ़रमानों से सरकश हुए
थे, उन्हों ने अल्लाह तआला का फ़ैसला हक़ीर जाना
था।
12 इस लिए अल्लाह ने उन के दिल को तक्लीफ़ में
मुब्तला करके पस्त कर दिया। जब वह ठोकर खा
कर गिर गए और मदद करने वाला कोई न रहा था
13 तो उन्हों ने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा,
और उस ने उन्हें उन की तमाम परेशानियों से
छुटकारा दिया।
14 वह उन्हें अंधेरे और गहरी तारीकी से निकाल
लाया और उन की ज़न्जीरें तोड़ डालीं।
15 वह रब का शुक्र करें कि उस ने अपनी शफ़क़त
और अपने मोजिज़े इन्सान पर ज़ाहिर किए हैं।
16 क्यूँकि उस ने पीतल के दरवाज़े तोड़ डाले, लोहे
के कुंडे टुकड़े टुकड़े कर दिए हैं।

17 कुछ लोग अहमक़ थे, वह अपने सरकश चाल-
चलन और गुनाहों के बाइस परेशानियों में मुब्तला
हुए।
18 उन्हें हर ख़ुराक से घिन आने लगी, और वह मौत
के दरवाज़ों के क़रीब पहुँचे।
19 तब उन्हों ने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा,
और उस ने उन्हें उन की तमाम परेशानियों से
छुटकारा दिया।
20 उस ने अपना कलाम भेज कर उन्हें शिफ़ा दी
और उन्हें मौत के गढ़े से बचाया।
21 वह रब का शुक्र करें कि उस ने अपनी शफ़क़त
और मोजिज़े इन्सान पर ज़ाहिर किए हैं।
22 वह शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानियाँ पेश करें और
ख़ुशी के नारे लगा कर उस के कामों का चर्चा करें।

23 बाज़ बहरी जहाज़ में बैठ गए और तिजारत के
सिलसिले में समुन्दर पर सफ़र करते करते दूरदराज़
इलाक़ों तक पहुँचे।

24 उन्हों ने रब के अज़ीम काम और समुन्दर की
गहराइयों में उस के मोजिज़े देखे हैं।
25 क्यूँकि रब ने हुक्म दिया तो आँधी चली जो
समुन्दर की मौजें बुलन्दियों पर लाई।
26 वह आसमान तक चढ़ीं और गहराइयों तक
उतरीं। परेशानी के बाइस मल्लाहों की हिम्मत जवाब
दे गई।
27 वह शराब में धुत आदमी की तरह लड़खड़ाते
और डगमगाते रहे। उन की तमाम हिक्मत नाकाम
साबित हुई।
28 तब उन्हों ने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा,
और उस ने उन्हें तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।
29 उस ने समुन्दर को थमा दिया और ख़ामोशी फैल
गई, लहरें साकित हो गईं।
30 मुसाफ़िर पुरसुकून हालात देख कर ख़ुश
हुए, और अल्लाह ने उन्हें मन्ज़िल-ए-मक़सूद तक
पहुँचाया।
31 वह रब का शुक्र करें कि उस ने अपनी शफ़क़त
और अपने मोजिज़े इन्सान पर ज़ाहिर किए हैं।
32 वह क़ौम की जमाअत में उस की ताज़ीम करें,
बुज़ुर्गों की मजलिस में उस की हम्द करें।

33 कई जगहों पर वह दरयाओं को रेगिस्तान में और
चश्मों को प्यासी ज़मीन में बदल देता है।
34 बाशिन्दों की बुराई देख कर वह ज़रख़ेज़ ज़मीन
को कल्लर के बयाबान में बदल देता है।
35 दूसरी जगहों पर वह रेगिस्तान को झील में और
प्यासी ज़मीन को चश्मों में बदल देता है।
36 वहाँ वह भूकों को बसा देता है ताकि आबादियाँ
क़ाइम करें।
37 तब वह खेत और अंगूर के बाग़ लगाते हैं जो
ख़ूब फल लाते हैं।
38 अल्लाह उन्हें बरकत देता है तो उन की तादाद
बहुत बढ़ जाती है। वह उन के रेवड़ों को भी कम
होने नहीं देता।

39 जब कभी उन की तादाद कम हो जाती और वह
मुसीबत और दुख के बोझ तले ख़ाक में दब जाते हैं
40 तो वह शुरफ़ा पर अपनी हिक़ारत उंडेल देता
और उन्हें रेगिस्तान में भगा कर सहीह रास्ते से दूर
फिरने देता है।
41 लेकिन मुह्ताज को वह मुसीबत की दलदल से
निकाल कर सरफ़राज़ करता और उस के ख़ानदानों
को भेड़-बकरियों की तरह बढ़ा देता है।

42 सीधी राह पर चलने वाले यह देख कर ख़ुश होंगे,
लेकिन बेइन्साफ़ का मुँह बन्द किया जाएगा।
43 कौन दानिशमन्द है? वह इस पर ध्यान दे, वह
रब की मेहरबानियों पर ग़ौर करे।

जंग में रब पर उम्मीद

108 1 दाऊद का ज़बूर। गीत।
ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़बूत है। मैं
साज़ बजा कर तेरी मद्हसराई करूँगा। ऐ मेरी जान,
जाग उठ!
2 ऐ सितार और सरोद, जाग उठो! मैं तुलू-ए-सुब्ह
को जगाऊँगा।
3 ऐ रब, मैं क़ौमों में तेरी सताइश, उम्मतों में तेरी
मद्हसराई करूँगा।
4 क्यूँकि तेरी शफ़क़त आसमान से कहीं बुलन्द है,
तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।
5 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज़ हो! तेरा जलाल
पूरी दुनिया पर छा जाए।
6 अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन ताकि
जो तुझे प्यारे हैं नजात पाएँ।

7 अल्लाह ने अपने मक़्दिस में फ़रमाया है, “मैं फ़त्ह
मनाते हुए सिकम को तक़्सीम करूँगा और वादी-ए-
सुक्कात को नाप कर बाँट दूँगा।
8 जिलिआद मेरा है और मनस्सी मेरा है। इफ़्राईम
मेरा ख़ोद और यहूदाह मेरा शाही असा है।

9 मोआब मेरा ग़ुसल का बर्तन है, और अदोम पर
मैं अपना जूता फैंक दूँगा। मैं फ़िलिस्ती मुल्क पर
ज़ोरदार नारे लगाऊँगा!”

10 कौन मुझे क़िलाबन्द शहर में लाएगा? कौन मेरी
राहनुमाई करके मुझे अदोम तक पहुँचाएगा?
11 ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो तू ने हमें
रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी फ़ौजों का साथ नहीं
देता जब वह लड़ने के लिए निकलती हैं।
12 मुसीबत में हमें सहारा दे, क्यूँकि इस वक़्त
इन्सानी मदद बेकार है।
13 अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम करेंगे,
क्यूँकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।

बेरहम मुख़ालिफ़ के सामने अल्लाह से दुआ

109 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह मेरे फ़ख़र, ख़ामोश न रह!
2 क्यूँकि उन्हों ने अपना बेदीन और फ़रेबदिह मुँह
मेरे ख़िलाफ़ खोल कर झूटी ज़बान से मेरे साथ बात
की है।
3 वह मुझे नफ़रत के अल्फ़ाज़ से घेर कर
बिलावजह मुझ से लड़े हैं।
4 मेरी मुहब्बत के जवाब में वह मुझ पर अपनी
दुश्मनी का इज़हार करते हैं। लेकिन दुआ ही मेरा
सहारा है।
5 मेरी नेकी के इवज़ वह मुझे नुक़्सान पहुँचाते और
मेरे प्यार के बदले मुझ से नफ़रत करते हैं।

6 ऐ अल्लाह, किसी बेदीन को मुक़र्रर कर जो मेरे
दुश्मन के ख़िलाफ़ गवाही दे, कोई मुख़ालिफ़ उस के
दहने हाथ खड़ा हो जाए जो उस पर इल्ज़ाम लगाए।
7 मुक़द्दमे में उसे मुजरिम ठहराया जाए। उस की
दुआएँ भी उस के गुनाहों में शुमार की जाएँ।
8 उस की ज़िन्दगी मुख़्तसर हो, कोई और उस की
ज़िम्मादारी उठाए।
9 उस की औलाद यतीम और उस की बीवी बेवा
बन जाए।
10 उस के बच्चे आवारा फिरें और भीक माँगने पर
मज्बूर हो जाएँ। उन्हें उन के तबाहशुदा घरों से निकल
कर इधर उधर रोटी ढूँडनी पड़े।
11 जिस से उस ने क़र्ज़ा लिया था वह उस के तमाम
माल पर क़ब्ज़ा करे, और अजनबी उस की मेहनत
का फल लूट लें।
12 कोई न हो जो उस पर मेहरबानी करे या उस के
यतीमों पर रहम करे।
13 उस की औलाद को मिटाया जाए, अगली पुश्त
में उन का नाम-ओ-निशान तक न रहे।
14 रब उस के बापदादा की नाइन्साफ़ी का लिहाज़
करे, और वह उस की माँ की ख़ता भी दरगुज़र न
करे।
15 उन का बुरा किरदार रब के सामने रहे, और वह
उन की याद रू-ए-ज़मीन पर से मिटा डाले।
16 क्यूँकि उस को कभी मेहरबानी करने का ख़याल
न आया बल्कि वह मुसीबतज़दा, मुह्ताज और
शिकस्तादिल का ताक़्क़ुब करता रहा ताकि उसे मार
डाले।
17 उसे लानत करने का शौक़ था, चुनाँचे लानत
उसी पर आए! उसे बरकत देना पसन्द नहीं था,
चुनाँचे बरकत उस से दूर रहे।
18 उस ने लानत चादर की तरह ओढ़ ली, चुनाँचे
लानत पानी की तरह उस के जिस्म में और तेल की
तरह उस की हड्डियों में सिरायत कर जाए।
19 वह कपड़े की तरह उस से लिपटी रहे, पटके की
तरह हमेशा उस से कमरबस्ता रहे।

20 रब मेरे मुख़ालिफ़ों को और उन्हें जो मेरे ख़िलाफ़
बुरी बातें करते हैं यही सज़ा दे।
21 लेकिन तू ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, अपने नाम
की ख़ातिर मेरे साथ मेहरबानी का सुलूक कर। मुझे
बचा, क्यूँकि तेरी ही शफ़क़त तसल्लीबख़्श है।

22 क्यूँकि मैं मुसीबतज़दा और ज़रूरतमन्द हूँ। मेरा
दिल मेरे अन्दर मजरूह है।
23 शाम के ढलते साय की तरह मैं ख़त्म होने वाला
हूँ। मुझे टिड्डी की तरह झाड़ कर दूर कर दिया गया
है।
24 रोज़ा रखते रखते मेरे घुटने डगमगाने लगे और
मेरा जिस्म सूख गया है।
25 मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना
बन गया हूँ। मुझे देख कर वह सर हिला कर "तौबा
तौबा" कहते हैं।
26 ऐ रब मेरे ख़ुदा, मेरी मदद कर! अपनी शफ़क़त
का इज़हार करके मुझे छुड़ा!
27 उन्हें पता चले कि यह तेरे हाथ से पेश आया है,
कि तू रब ही ने यह सब कुछ किया है।
28 जब वह लानत करें तो मुझे बरकत दे! जब वह
मेरे ख़िलाफ़ उठें तो बख़्श दे कि शर्मिन्दा हो जाएँ
जबकि तेरा ख़ादिम ख़ुश हो।
29 मेरे मुख़ालिफ़ रुस्वाई से मुलब्बस हो जाएँ, उन्हें
शर्मिन्दगी की चादर ओढ़नी पड़े।

30 मैं ज़ोर से रब की सताइश करूँगा, बहुतों के
दरमियान उस की हम्द करूँगा।
31 क्यूँकि वह मुहताज के दहने हाथ खड़ा रहता है
ताकि उसे उन से बचाए जो उसे मुजरिम ठहराते हैं।

अबदी बादशाह और इमाम

110 1 दाऊद का ज़बूर।
रब ने मेरे रब से कहा, "मेरे दहने हाथ
बैठ, जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँओ की चौकी
न बना दूँ।"
2 रब सिय्यून से तेरी सल्तनत की सरहद्दें बढ़ा कर
कहेगा, "आस-पास के दुश्मनों पर हुकूमत कर!"
3 जिस दिन तू अपनी फ़ौज को खड़ा करेगा तेरी
क़ौम ख़ुशी से तेरे पीछे हो लेगी। तू मुक़द्दस शान-ओ-
शौकत से आरास्ता हो कर तुलू-ए-सुब्ह के बातिन से
अपनी जवानी की ओस पाएगा।
4 रब ने क़सम खाई है और इस से पछताएगा नहीं,
"तू अबद तक इमाम है, ऐसा इमाम जैसा मलिक-ए-
सिद्क़ था।"
5 रब तेरे दहने हाथ पर रहेगा और अपने ग़ज़ब के
दिन दीगर बादशाहों को चूर चूर करेगा।
6 वह क़ौमों में अदालत करके मैदान को लाशों से
भर देगा और दूर तक सरों को पाश पाश करेगा।
7 रास्ते में वह नदी से पानी पी लेगा, इस लिए अपना
सर उठाए फिरेगा।

अल्लाह के फ़ज़्ल की तम्जीद

111 1 रब की हम्द हो! मैं पूरे दिल
से दियानतदारों की मजलिस और
जमाअत में रब का शुक्र करूँगा।
2 रब के काम अज़ीम हैं। जो उन से लुत्फ़अन्दोज़
होते हैं वह उन का ख़ूब मुतालआ करते हैं।

3 उस का काम शानदार और जलाली है, उस की
रास्ती अबद तक क़ाइम रहती है।
4 वह अपने मोजिज़े याद कराता है। रब मेहरबान
और रहीम है।
5 जो उस का ख़ौफ़ मानते हैं उन्हें उस ने ख़ुराक
मुहय्या की है। वह हमेशा तक अपने अह्द का
ख़याल रखेगा।
6 उस ने अपनी क़ौम को अपने ज़बरदस्त कामों
का एलान करके कहा, "मैं तुम्हें ग़ैरक़ौमों की मीरास
अता करूँगा।"
7 जो भी काम उस के हाथ करें वह सच्चे और रास्त
हैं। उस के तमाम अह्काम क़ाबिल-ए-एतिमाद हैं।
8 वह अज़ल से अबद तक क़ाइम हैं, और उन पर
सच्चाई और दयानतदारी से अमल करना है।
9 उस ने अपनी क़ौम का फ़िद्या भेज कर उसे छुड़ाया
है। उस ने फ़रमाया, "मेरा क़ौम के साथ अह्द अबद
तक क़ाइम रहे।" उस का नाम क़ुद्दूस और पुरजलाल
है।

10 हिक्मत इस से शुरू होती है कि हम रब का ख़ौफ़
मानें। जो भी उस के अह्काम पर अमल करे उसे
अच्छी समझ हासिल होगी। उस की हम्द हमेशा तक
क़ाइम रहेगी।

अल्लाह के ख़ौफ़ की तारीफ़

112 1 रब की हम्द हो! मुबारक है वह जो
अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और उस के
अह्काम से बहुत लुत्फ़अन्दोज़ होता है।
2 उस के फ़र्ज़न्द मुल्क में ताक़तवर होंगे, और
दियानतदार की नस्ल को बरकत मिलेगी।
3 दौलत और ख़ुशहाली उस के घर में रहेगी, और
उस की रास्तबाज़ी अबद तक क़ाइम रहेगी।
4 अंधेरे में चलते वक़्त दियानतदारों पर रौशनी
चमकती है। वह रास्तबाज़, मेहरबान और रहीम है।

5 मेहरबानी करना और क़र्ज़ देना बाबरकत है। जो
अपने मुआमलों को इन्साफ़ से हल करे वह अच्छा
करेगा,
6 क्यूँकि वह अबद तक नहीं डगमगाएगा।
रास्तबाज़ हमेशा ही याद रहेगा।
7 वह बुरी ख़बर मिलने से नहीं डरता। उस का दिल
मज़बूत है, और वह रब पर भरोसा रखता है।
8 उस का दिल मुस्तह्कम है। वह सहमा हुआ नहीं
रहता, क्यूँकि वह जानता है कि एक दिन मैं अपने
दुश्मनों की शिकस्त देख कर ख़ुश हूँगा।
9 वह फ़य्याज़ी से ज़रूरतमन्दों में ख़ैरात बिखेर देता
है। उस की रास्तबाज़ी हमेशा क़ाइम रहेगी, और उसे
इज़्ज़त के साथ सरफ़राज़ किया जाएगा।
10 बेदीन यह देख कर नाराज़ हो जाएगा, वह दाँत
पीस पीस कर नेस्त हो जाएगा। जो कुछ बेदीन चाहते
हैं वह जाता रहेगा।

अल्लाह की अज़मत और मेहरबानी

113 1 रब की हम्द हो! ऐ रब के ख़ादिमो,
रब के नाम की सताइश करो, रब के
नाम की तारीफ़ करो।
2 रब के नाम की अब से अबद तक तम्जीद हो।
3 तुलू-ए-सुब्ह से ग़ुरूब-ए-आफ़ताब तक रब के नाम
की हम्द हो।
4 रब तमाम अक़्वाम से सरबुलन्द है, उस का
जलाल आसमान से अज़ीम है।
5 कौन रब हमारे ख़ुदा की मानिन्द है जो बुलन्दियों
पर तख़्तनशीन है
6 और आसमान-ओ-ज़मीन को देखने के लिए नीचे
झुकता है?
7 पस्तहाल को वह ख़ाक में से उठा कर पाँओ
पर खड़ा करता, मुह्ताज को राख से निकाल कर
सरफ़राज़ करता है।
8 वह उसे शुरफ़ा के साथ, अपनी क़ौम के शुरफ़ा
के साथ बिठा देता है।
9 बाँझ को वह औलाद अता करता है ताकि वह
घर में ख़ुशी से ज़िन्दगी गुज़ार सके। रब की हम्द हो!

मिस्र में अल्लाह के मोजिज़ात

114 1 जब इस्राईल मिस्र से रवाना हुआ
और याक़ूब का घराना अजनबी ज़बान
बोलने वाली क़ौम से निकल आया
2 तो यहूदाह अल्लाह का मक़्दिस बन गया और
इस्राईल उस की बादशाही।
3 यह देख कर समुन्दर भाग गया और दरया-ए-यर्दन
पीछे हट गया।
4 पहाड़ मेंढों की तरह कूदने और पहाड़ियाँ जवान
भेड़-बकरियों की तरह फाँदने लगीं।

5 ऐ समुन्दर, क्या हुआ कि तू भाग गया है? ऐ यर्दन,
क्या हुआ कि तू पीछे हट गया है?

6 ऐ पहाड़ो, क्या हुआ कि तुम मेंढों की तरह कूदने
लगे हो? ऐ पहाड़ियो, क्या हुआ कि तुम जवान भेड़-
बकरियों की तरह फाँदने लगी हो?
7 ऐ ज़मीन, रब के हुज़ूर, याक़ूब के ख़ुदा के हुज़ूर
लरज़ उठ,
8 उस के सामने थरथरा जिस ने चटान को जोहड़
में और सख़्त पत्थर को चश्मे में बदल दिया।

अल्लाह ही की हम्द हो

115 1 ऐ रब, हमारी ही इज़्ज़त की ख़ातिर
काम न कर बल्कि इस लिए कि तेरे
नाम को जलाल मिले, इस लिए कि तू मेहरबान और
वफ़ादार ख़ुदा है।
2 दीगर अक़्वाम क्यूँ कहें, "उन का ख़ुदा कहाँ है?"
3 हमारा ख़ुदा तो आसमान पर है, और जो जी चाहे
करता है।

4 उन के बुत सोने-चाँदी के हैं, इन्सान के हाथ ने
उन्हें बनाया है।
5 उन के मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते। उन
की आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।
6 उन के कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते, उन
की नाक है लेकिन वह सूँघ नहीं सकते।
7 उन के हाथ हैं, लेकिन वह छू नहीं सकते। उन के
पाँओ हैं, लेकिन वह चल नहीं सकते। उन के गले से
आवाज़ नहीं निकलती।
8 जो बुत बनाते हैं वह उन की मानिन्द हो जाएँ,
जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे बेहिस्स-ओ-
हरकत हो जाएँ।

9 ऐ इस्राईल, रब पर भरोसा रख! वही तेरा सहारा
और तेरी ढाल है।
10 ऐ हारून के घराने, रब पर भरोसा रख! वही तेरा
सहारा और तेरी ढाल है।
11 ऐ रब का ख़ौफ़ मानने वालो, रब पर भरोसा
रखो! वही तुम्हारा सहारा और तुम्हारी ढाल है।
12 रब ने हमारा ख़याल किया है, और वह हमें
बरकत देगा। वह इस्राईल के घराने को बरकत देगा,
वह हारून के घराने को बरकत देगा।
13 वह रब का ख़ौफ़ मानने वालों को बरकत देगा,
ख़्वाह छोटे हों या बड़े।
14 रब तुम्हारी तादाद में इज़ाफ़ा करे, तुम्हारी भी
और तुम्हारी औलाद की भी।
15 रब जो आसमान-ओ-ज़मीन का ख़ालिक़ है तुम्हें
बरकत से मालामाल करे।
16 आसमान तो रब का है, लेकिन ज़मीन को उस
ने आदमज़ादों को बख़्श दिया है।
17 ऐ रब, मुर्दे तेरी सताइश नहीं करते, ख़ामोशी के
मुल्क में उतरने वालों में से कोई भी तेरी तम्जीद नहीं
करता।
18 लेकिन हम रब की सताइश अब से अबद तक
करेंगे। रब की हम्द हो!

मौत से नजात पर शुक्रगुज़ारी

116 1 मैं रब से मुहब्बत रखता हूँ, क्यूँकि
उस ने मेरी आवाज़ और मेरी इल्तिजा
सुनी है।
2 उस ने अपना कान मेरी तरफ़ झुकाया है, इस लिए
मैं उम्र भर उसे पुकारूँगा।

3 मौत ने मुझे अपनी ज़न्जीरों में जकड़ लिया, और
पाताल की परेशानियाँ मुझ पर ग़ालिब आईं। मैं
मुसीबत और दुख में फंस गया।
4 तब मैं ने रब का नाम पुकारा, "ऐ रब, मेहरबानी
करके मुझे बचा!"
5 रब मेहरबान और रास्त है, हमारा ख़ुदा रहीम है।
6 रब सादा लोगों की हिफ़ाज़त करता है। जब मैं
पस्तहाल था तो उस ने मुझे बचाया।
7 ऐ मेरी जान, अपनी आरामगाह के पास वापस
आ, क्यूँकि रब ने तेरे साथ भलाई की है।

8 क्यूँकि ऐ रब, तू ने मेरी जान को मौत से, मेरी
आँखों को आँसू बहाने से और मेरे पाँओ को फिसलने
से बचाया है।
9 अब मैं ज़िन्दों की ज़मीन में रह कर रब के हुज़ूर
चलूँगा।
10 मैं ईमान लाया और इस लिए बोला, “मैं शदीद
मुसीबत में फंस गया हूँ।”
11 मैं सख़्त घबरा गया और बोला, “तमाम इन्सान
दरोग़गो हैं।”
12 जो भलाइयाँ रब ने मेरे साथ की हैं उन सब के
इवज़ मैं क्या दूँ?
13 मैं नजात का प्याला उठा कर रब का नाम
पुकारूँगा।
14 मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क़ौम के सामने ही
अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।

15 रब की निगाह में उस के ईमानदारों की मौत
गिराँक़दर है।
16 ऐ रब, यक़ीनन मैं तेरा ख़ादिम, हाँ तेरा ख़ादिम
और तेरी ख़ादिमा का बेटा हूँ। तू ने मेरी ज़न्जीरों को
तोड़ डाला है।
17 मैं तुझे शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानी पेश करके तेरा
नाम पुकारूँगा।
18 मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क़ौम के सामने ही
अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।
19 मैं रब के घर की बारगाहों में, ऐ यरूशलम तेरे
बीच में ही उन्हें पूरा करूँगा। रब की हम्द हो।

तमाम अक़्वाम अल्लाह की हम्द करें

117 1 ऐ तमाम अक़्वाम, रब की तम्जीद
करो! ऐ तमाम उम्मतो, उस की
मद्हसराई करो!
2 क्यूँकि उस की हम पर शफ़क़त अज़ीम है, और
रब की वफ़ादारी अबदी है। रब की हम्द हो!

अल्लाह की मदद पर शुक्रगुज़ारी

118 1 रब का शुक्र करो, क्यूँकि वह भला
है, और उस की शफ़क़त अबदी है।
2 इस्राईल कहे, “उस की शफ़क़त अबदी है।”
3 हारून का घराना कहे, “उस की शफ़क़त अबदी
है।”
4 रब का ख़ौफ़ मानने वाले कहें, “उस की शफ़क़त
अबदी है।”

5 मुसीबत में मैं ने रब को पुकारा तो रब ने मेरी सुन
कर मेरे पाँओ को खुले मैदान में क़ाइम कर दिया है।
6 रब मेरे हक़ में है, इस लिए मैं नहीं डरूँगा। इन्सान
मेरा क्या बिगाड़ सकता है?
7 रब मेरे हक़ में है और मेरा सहारा है, इस लिए मैं
उन की शिकस्त देख कर ख़ुश हूँगा जो मुझ से नफ़रत
करते हैं।

8 रब में पनाह लेना इन्सान पर एतिमाद करने से
कहीं बेहतर है।
9 रब में पनाह लेना शुरफ़ा पर एतिमाद करने से
कहीं बेहतर है।

10 तमाम अक़्वाम ने मुझे घेर लिया, लेकिन मैं ने
अल्लाह का नाम ले कर उन्हें भगा दिया।
11 उन्हों ने मुझे घेर लिया, हाँ चारों तरफ़ से घेर
लिया, लेकिन मैं ने अल्लाह का नाम ले कर उन्हें भगा
दिया।
12 वह शहद की मक्खियों की तरह चारों तरफ़ से
मुझ पर हम्लाआवर हुए, लेकिन काँटेदार झाड़ियों की
आग की तरह जल्द ही बुझ गए। मैं ने रब का नाम
ले कर उन्हें भगा दिया।
13 दुश्मन ने मुझे धक्का दे कर गिराने की कोशिश
की, लेकिन रब ने मेरी मदद की।
14 रब मेरी क़ुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नजात
बन गया है।

15 ख़ुशी और फ़त्ह के नारे रास्तबाज़ों के ख़ैमों में
गूँजते हैं, “रब का दहना हाथ ज़बरदस्त काम करता
है!
16 रब का दहना हाथ सरफ़राज़ करता है, रब का
दहना हाथ ज़बरदस्त काम करता है!”
17 मैं नहीं मरूँगा बल्कि ज़िन्दा रह कर रब के काम
बयान करूँगा।
18 गो रब ने मेरी सख़्त तादीब की है, उस ने मुझे
मौत के हवाले नहीं किया।

19 रास्ती के दरवाज़े मेरे लिए खोल दो ताकि मैं उन
में दाख़िल हो कर रब का शुक्र करूँ।
20 यह रब का दरवाज़ा है, इसी में रास्तबाज़
दाख़िल होते हैं।

21 मैं तेरा शुक्र करता हूँ, क्यूँकि तू ने मेरी सुन कर
मुझे बचाया है।
22 जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने रद्द किया
वह कोने का बुन्यादी पत्थर बन गया।
23 यह रब ने किया और देखने में कितना हैरतअंगेज़
है।
24 इसी दिन रब ने अपनी क़ुदरत दिखाई है। आओ,
हम शादियाना बजा कर उस की ख़ुशी मनाएँ।
25 ऐ रब, मेहरबानी करके हमें बचा! ऐ रब,
मेहरबानी करके कामयाबी अता फ़रमा!

26 मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है। रब
की सुकूनतगाह से हम तुम्हें बरकत देते हैं।
27 रब ही ख़ुदा है, और उस ने हमें रौशनी बख़्शी
है। आओ, ईद की क़ुर्बानी रस्सियों से क़ुर्बानगाह के
सींगों के साथ बान्धो।

28 तू मेरा ख़ुदा है, और मैं तेरा शुक्र करता हूँ। ऐ मेरे
ख़ुदा, मैं तेरी ताज़ीम करता हूँ।
29 रब की सताइश करो, क्यूँकि वह भला है और
उस की शफ़क़त अबदी है।

अल्लाह के कलाम की शान

1

119 1 मुबारक हैं वह जिन का चाल-चलन
बेइल्ज़ाम है, जो रब की शरीअत के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।
2 मुबारक हैं वह जो उस के अह्काम पर अमल
करते और पूरे दिल से उस के तालिब रहते हैं,
3 जो बदी नहीं करते बल्कि उस की राहों पर चलते
हैं।
4 तू ने हमें अपने अह्काम दिए हैं, और तू चाहता
है कि हम हर लिहाज़ से उन के ताबे रहें।
5 काश मेरी राहें इतनी पुख़्ता हों कि मैं
साबितक़दमी से तेरे अह्काम पर अमल करूँ!
6 तब मैं शर्मिन्दा नहीं हूँगा, क्यूँकि मेरी आँखें तेरे
तमाम अह्काम पर लगी रहेंगी।
7 जितना मैं तेरे बा-इन्साफ़ फ़ैसलों के बारे में
सीखूँगा उतना ही दियानतदार दिल से तेरी सताइश
करूँगा।
8 तेरे अह्काम पर मैं हर वक़्त अमल करूँगा। मुझे
पूरी तरह तर्क न कर!

2

9 नौजवान अपनी राह को किस तरह पाक रखे?
इस तरह कि तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे।
10 मैं पूरे दिल से तेरा तालिब रहा हूँ। मुझे अपने
अह्काम से भटकने न दे।
11 मैं ने तेरा कलाम अपने दिल में मह्फ़ूज़ रखा है
ताकि तेरा गुनाह न करूँ।
12 ऐ रब, तेरी हम्द हो! मुझे अपने अह्काम सिखा।
13 अपने होंटों से मैं दूसरों को तेरे मुँह की तमाम
हिदायात सुनाता हूँ।
14 मैं तेरे अह्काम की राह से उतना लुत्फ़अन्दोज़
होता हूँ जितना कि हर तरह की दौलत से।

15 मैं तेरी हिदायात में महव-ए-ख़याल रहूँगा और
तेरी राहों को तकता रहूँगा।
16 मैं तेरे फ़रमानों से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ और तेरा
कलाम नहीं भूलता।

3

17 अपने ख़ादिम से भलाई कर ताकि मैं ज़िन्दा रहूँ
और तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारूँ।
18 मेरी आँखों को खोल ताकि तेरी शरीअत के
अजाइब देखूँ।
19 दुनिया में मैं परदेसी ही हूँ। अपने अह्काम मुझ
से छुपाए न रख!
20 मेरी जान हर वक़्त तेरी हिदायात की आर्ज़ू करते
करते निढाल हो रही है।
21 तू मग़ुरूरों को डाँटता है। उन पर लानत जो तेरे
अह्काम से भटक जाते हैं!
22 मुझे लोगों की तौहीन और तह्क़ीर से रिहाई दे,
क्यूँकि मैं तेरे अह्काम के ताबे रहा हूँ।
23 गो बुज़ुर्ग मेरे ख़िलाफ़ मन्सूबे बांधने के लिए बैठ
गए हैं, तेरा ख़ादिम तेरे अह्काम में महव-ए-ख़याल
रहता है।
24 तेरे अह्काम से ही मैं लुत्फ़ उठाता हूँ, वही मेरे
मुशीर हैं।

4

25 मेरी जान ख़ाक में दब गई है। अपने कलाम के
मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
26 मैं ने अपनी राहें बयान कीं तो तू ने मेरी सुनी।
मुझे अपने अह्काम सिखा।
27 मुझे अपने अह्काम की राह समझने के क़ाबिल
बना ताकि तेरे अजाइब में महव-ए-ख़याल रहूँ।
28 मेरी जान दुख के मारे निढाल हो गई है। मुझे
अपने कलाम के मुताबिक़ तक़वियत दे।
29 फ़रेब की राह मुझ से दूर रख और मुझे अपनी
शरीअत से नवाज़।
30 मैं ने वफ़ा की राह इख़तियार करके तेरे आईन
अपने सामने रखे हैं।
31 मैं तेरे अह्काम से लिपटा रहता हूँ। ऐ रब, मुझे
शर्मिन्दा न होने दे।
32 मैं तेरे फ़रमानों की राह पर दौड़ता हूँ, क्यूँकि तू
ने मेरे दिल को कुशादगी बख़्शी है।

5

33 ऐ रब, मुझे अपने आईन की राह सिखा तो मैं उम्र
भर उन पर अमल करूँगा।
34 मुझे समझ अता कर ताकि तेरी शरीअत के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारूँ और पूरे दिल से उस के
ताबे रहूँ।
35 अपने अह्काम की राह पर मेरी राहनुमाई कर,
क्यूँकि यही मैं पसन्द करता हूँ।
36 मेरे दिल को लालच में आने न दे बल्कि उसे
अपने फ़रमानों की तरफ़ माइल कर।
37 मेरी आँखों को बातिल चीज़ों से फेर ले, और मुझे
अपनी राहों पर सँभाल कर मेरी जान को ताज़ादम
कर।
38 जो वादा तू ने अपने ख़ादिम से किया वह पूरा
कर ताकि लोग तेरा ख़ौफ़ मानें।
39 जिस रुस्वाई से मुझे ख़ौफ़ है उस का ख़तरा दूर
कर, क्यूँकि तेरे अह्काम अच्छे हैं।
40 मैं तेरी हिदायात का शदीद आरज़ूमन्द हूँ, अपनी
रास्ती से मेरी जान को ताज़ादम कर।

6

41 ऐ रब, तेरी शफ़क़त और वह नजात जिस का
वादा तू ने किया है मुझ तक पहुँचे
42 ताकि मैं बेइज़्ज़ती करने वाले को जवाब दे सकूँ।
क्यूँकि मैं तेरे कलाम पर भरोसा रखता हूँ।
43 मेरे मुँह से सच्चाई का कलाम न छीन, क्यूँकि मैं
तेरे फ़रमानों के इन्तिज़ार में हूँ।
44 मैं हर वक़्त तेरी शरीअत की पैरवी करूँगा, अब
से अबद तक उस में क़ाइम रहूँगा।

45 मैं खुले मैदान में चलता फिरूँगा, क्यूँकि तेरे
आईन का तालिब रहता हूँ।
46 मैं शर्म किए बग़ैर बादशाहों के सामने तेरे
अह्काम बयान करूँगा।
47 मैं तेरे फ़रमानों से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ, वह मुझे
प्यारे हैं।
48 मैं अपने हाथ तेरे फ़रमानों की तरफ़ उठाऊँगा,
क्यूँकि वह मुझे प्यारे हैं। मैं तेरी हिदायात में महव-
ए-ख़याल रहूँगा।

7

49 उस बात का ख़याल रख जो तू ने अपने ख़ादिम
से की और जिस से तू ने मुझे उम्मीद दिलाई है।
50 मुसीबत में यही तसल्ली का बाइस रहा है कि तेरा
कलाम मेरी जान को ताज़ादम करता है।
51 मग़रूर मेरा हद से ज़्यादा मज़ाक़ उड़ाते हैं,
लेकिन मैं तेरी शरीअत से दूर नहीं होता।
52 ऐ रब, मैं तेरे क़दीम फ़रमान याद करता हूँ तो
मुझे तसल्ली मिलती है।
53 बेदीनों को देख कर मैं आग-बगूला हो जाता हूँ,
क्यूँकि उन्हों ने तेरी शरीअत को तर्क किया है।
54 जिस घर में मैं परदेसी हूँ उस में मैं तेरे अह्काम
के गीत गाता रहता हूँ।
55 ऐ रब, रात को मैं तेरा नाम याद करता हूँ, तेरी
शरीअत पर अमल करता रहता हूँ।
56 यह तेरी बख़्शिश है कि मैं तेरे आईन की पैरवी
करता हूँ।

8

57 रब मेरी मीरास है। मैं ने तेरे फ़रमानों पर अमल
करने का वादा किया है।
58 मैं पूरे दिल से तेरी शफ़क़त का तालिब रहा हूँ।
अपने वादे के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी कर।
59 मैं ने अपनी राहों पर ध्यान दे कर तेरे अह्काम
की तरफ़ क़दम बढ़ाए हैं।
60 मैं नहीं झिजकता बल्कि भाग कर तेरे अह्काम
पर अमल करने की कोशिश करता हूँ।
61 बेदीनों के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया है, लेकिन
मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।
62 आधी रात को मैं जाग उठता हूँ ताकि तेरे रास्त
फ़रमानों के लिए तेरा शुक्र करूँ।
63 मैं उन सब का साथी हूँ जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं,
उन सब का दोस्त जो तेरी हिदायात पर अमल करते
हैं।
64 ऐ रब, दुनिया तेरी शफ़क़त से मामूर है। मुझे अपने
अह्काम सिखा!

9

65 ऐ रब, तू ने अपने कलाम के मुताबिक़ अपने
ख़ादिम से भलाई की है।
66 मुझे सहीह इम्तियाज़ और इर्फ़ान सिखा, क्यूँकि
मैं तेरे अह्काम पर ईमान रखता हूँ।
67 इस से पहले कि मुझे पस्त किया गया मैं आवारा
फिरता था, लेकिन अब मैं तेरे कलाम के ताबे रहता
हूँ।
68 तू भला है और भलाई करता है। मुझे अपने
आईन सिखा!
69 मग़रूरों ने झूट बोल कर मुझ पर कीचड़
उछाली है, लेकिन मैं पूरे दिल से तेरी हिदायात की
फ़रमाँबरदारी करता हूँ।
70 उन के दिल अकड़ कर बेहिस्स हो गए हैं, लेकिन
मैं तेरी शरीअत से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ।
71 मेरे लिए अच्छा था कि मुझे पस्त किया गया,
क्यूँकि इस तरह मैं ने तेरे अह्काम सीख लिए।
72 जो शरीअत तेरे मुँह से सादिर हुई है वह मुझे
सोने-चाँदी के हज़ारों सिक्कों से ज़्यादा पसन्द है।

10

73 तेरे हाथों ने मुझे बना कर मज़बूत बुन्याद पर रख
दिया है। मुझे समझ अता फ़रमा ताकि तेरे अह्काम
सीख लूँ।

74 जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं वह मुझे देख कर ख़ुश हो
जाएँ, क्यूँकि मैं तेरे कलाम के इन्तिज़ार में रहता हूँ।
75 ऐ रब, मैं ने जान लिया है कि तेरे फ़ैसले रास्त
हैं। यह भी तेरी वफ़ादारी का इज़हार है कि तू ने मुझे
पस्त किया है।
76 तेरी शफ़क़त मुझे तसल्ली दे, जिस तरह तू ने अपने
ख़ादिम से वादा किया है।
77 मुझ पर अपने रहम का इज़हार कर ताकि
मेरी जान में जान आए, क्यूँकि मैं तेरी शरीअत से
लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ।
78 जो मग़ुरूर मुझे झूट से पस्त कर रहे हैं वह
शर्मिन्दा हो जाएँ। लेकिन मैं तेरे फ़रमानों में महव-
ए-ख़याल रहूँगा।
79 काश जो तेरा ख़ौफ़ मानते और तेरे अह्काम
जानते हैं वह मेरे पास वापस आएँ!
80 मेरा दिल तेरे आईन की पैरवी करने में बेइल्ज़ाम
रहे ताकि मेरी रुस्वाई न हो जाए।

11

81 मेरी जान तेरी नजात की आर्ज़ू करते करते
निढाल हो रही है, मैं तेरे कलाम के इन्तिज़ार में हूँ।
82 मेरी आँखें तेरे वादे की राह देखते देखते धुन्दला
रही हैं। तू मुझे कब तसल्ली देगा?
83 मैं धुएँ में सुकड़ी हुई मश्क की मानिन्द हूँ लेकिन
तेरे फ़रमानों को नहीं भूलता।
84 तेरे ख़ादिम को मज़ीद कितनी देर इन्तिज़ार
करना पड़ेगा? तू मेरा ताक़्क़ुब करने वालों की
अदालत कब करेगा?
85 जो मग़ुरूर तेरी शरीअत के ताबे नहीं होते उन्हों
ने मुझे फंसाने के लिए गढ़े खोद लिए हैं।
86 तेरे तमाम अह्काम पुरवफ़ा हैं। मेरी मदद कर,
क्यूँकि वह झूट का सहारा ले कर मेरा ताक़्क़ुब कर
रहे हैं।
87 वह मुझे रू-ए-ज़मीन पर से मिटाने के क़रीब ही
हैं, लेकिन मैं ने तेरे आईन को तर्क नहीं किया।
88 अपनी शफ़क़त का इज़हार करके मेरी जान को
ताज़ादम कर ताकि तेरे मुँह के फ़रमानों पर अमल
करूँ।

12

89 ऐ रब, तेरा कलाम अबद तक आसमान पर
क़ाइम-ओ-दाइम है।
90 तेरी वफ़ादारी पुश्त-दर-पुश्त रहती है। तू ने
ज़मीन की बुन्याद रखी, और वह वहीं की वहीं
बरक़रार रहती है।
91 आज तक आसमान-ओ-ज़मीन तेरे फ़रमानों को
पूरा करने के लिए हाज़िर रहते हैं, क्यूँकि तमाम चीज़ें
तेरी ख़िदमत करने के लिए बनाई गई हैं।
92 अगर तेरी शरीअत मेरी ख़ुशी न होती तो मैं अपनी
मुसीबत में हलाक हो गया होता।
93 मैं तेरी हिदायात कभी नहीं भूलूँगा, क्यूँकि उन
ही के ज़रीए तू मेरी जान को ताज़ादम करता है।
94 मैं तेरा ही हूँ, मुझे बचा! क्यूँकि मैं तेरे अह्काम
का तालिब रहा हूँ।
95 बेदीन मेरी ताक में बैठ गए हैं ताकि मुझे मार
डालें, लेकिन मैं तेरे आईन पर ध्यान देता रहूँगा।
96 मैं ने देखा है कि हर कामिल चीज़ की हद होती
है, लेकिन तेरे फ़रमान की कोई हद नहीं होती।

13

97 तेरी शरीअत मुझे कितनी प्यारी है! दिन भर मैं
उस में महव-ए-ख़याल रहता हूँ।
98 तेरा फ़रमान मुझे मेरे दुश्मनों से ज़्यादा
दानिशमन्द बना देता है, क्यूँकि वह हमेशा तक मेरा
ख़ज़ाना है।
99 मुझे अपने तमाम उस्तादों से ज़्यादा समझ
हासिल है, क्यूँकि मैं तेरे आईन में महव-ए-ख़याल
रहता हूँ।
100 मुझे बुज़ुर्गों से ज़्यादा समझ हासिल है, क्यूँकि
मैं वफ़ादारी से तेरे अह्काम की पैरवी करता हूँ।

101 मैं ने हर बुरी राह पर क़दम रखने से गुरेज़ किया
है ताकि तेरे कलाम से लिपटा रहूँ।
102 मैं तेरे फ़रमानों से दूर नहीं हुआ, क्यूँकि तू ही
ने मुझे तालीम दी है।
103 तेरा कलाम कितना लज़ीज़ है, वह मेरे मुँह में
शहद से ज़्यादा मीठा है।
104 तेरे अह्काम से मुझे समझ हासिल होती है, इस
लिए मैं झूट की हर राह से नफ़रत करता हूँ।

14

105 तेरा कलाम मेरे पाँओ के लिए चराग़ है जो मेरी
राह को रौशन करता है।
106 मैं ने क़सम खाई है कि तेरे रास्त फ़रमानों की
पैरवी करूँगा, और मैं यह वादा पूरा भी करूँगा।
107 मुझे बहुत पस्त किया गया है। ऐ रब, अपने
कलाम के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
108 ऐ रब, मेरे मुँह की रज़ाकाराना क़ुर्बानियों को
पसन्द कर और मुझे अपने आईन सिखा!
109 मेरी जान हमेशा ख़तरे में है, लेकिन मैं तेरी
शरीअत नहीं भूलता।
110 बेदीनों ने मेरे लिए फंदा तय्यार कर रखा है,
लेकिन मैं तेरे फ़रमानों से नहीं भटका।
111 तेरे अह्काम मेरी अबदी मीरास बन गए हैं,
क्यूँकि उन से मेरा दिल ख़ुशी से उछलता है।
112 मैं ने अपना दिल तेरे अह्काम पर अमल करने
की तरफ़ माइल किया है, क्यूँकि इस का अज्र अबदी
है।

15

113 मैं दोदिलों से नफ़रत लेकिन तेरी शरीअत से
मुहब्बत करता हूँ।
114 तू मेरी पनाहगाह और मेरी ढाल है, मैं तेरे
कलाम के इन्तिज़ार में रहता हूँ।
115 ऐ बदकारो, मुझ से दूर हो जाओ, क्यूँकि मैं
अपने ख़ुदा के अह्काम से लिपटा रहूँगा।
116 अपने फ़रमान के मुताबिक़ मुझे सँभाल ताकि
ज़िन्दा रहूँ। मेरी आस टूटने न दे ताकि शर्मिन्दा न हो
जाऊँ।
117 मेरा सहारा बन ताकि बच कर हर वक़्त तेरे
आईन का लिहाज़ रखूँ।
118 तू उन सब को रद्द करता है जो तेरे अह्काम से
भटके फिरते हैं, क्यूँकि उन की धोकेबाज़ी फ़रेब ही
है।
119 तू ज़मीन के तमाम बेदीनों को नापाक चाँदी से
ख़ारिज की हुई मैल की तरह फैंक कर नेस्त कर देता
है, इस लिए तेरे फ़रमान मुझे प्यारे हैं।
120 मेरा जिस्म तुझ से दह्शत खा कर थरथराता है,
और मैं तेरे फ़ैसलों से डरता हूँ।

16

121 मैं ने रास्त और बा-इन्साफ़ काम किया है,
चुनाँचे मुझे उन के हवाले न कर जो मुझ पर ज़ुल्म
करते हैं।
122 अपने ख़ादिम की ख़ुशहाली का ज़ामिन बन कर
मग़रूरों को मुझ पर ज़ुल्म करने न दे।
123 मेरी आँखें तेरी नजात और तेरे रास्त वादे की
राह देखते देखते रह गई हैं।
124 अपने ख़ादिम से तेरा सुलूक तेरी शफ़क़त के
मुताबिक़ हो। मुझे अपने अह्काम सिखा।
125 मैं तेरा ही ख़ादिम हूँ। मुझे फ़हम अता फ़रमा
ताकि तेरे आईन की पूरी समझ आए।
126 अब वक़्त आ गया है कि रब क़दम उठाए,
क्यूँकि लोगों ने तेरी शरीअत को तोड़ डाला है।
127 इस लिए मैं तेरे अह्काम को सोने बल्कि
ख़ालिस सोने से ज़्यादा प्यार करता हूँ।
128 इस लिए मैं एहतियात से तेरे तमाम आईन के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता हूँ। मैं हर फ़रेबदिह राह
से नफ़रत करता हूँ।

17

129 तेरे अह्काम ताज्जुबअंगेज़ हैं, इस लिए मेरी
जान उन पर अमल करती है।
130 तेरे कलाम का इन्किशाफ़ रौशनी बख़्शता और
सादालौह को समझ अता करता है।
131 मैं तेरे फ़रमानों के लिए इतना प्यासा हूँ कि मुँह
खोल कर हाँप रहा हूँ।
132 मेरी तरफ़ रुजू फ़रमा और मुझ पर वही
मेहरबानी कर जो तू उन सब पर करता है जो तेरे
नाम से प्यार करते हैं।
133 अपने कलाम से मेरे क़दम मज़बूत कर, किसी
भी गुनाह को मुझ पर हुकूमत न करने दे।
134 फ़िद्या दे कर मुझे इन्सान के ज़ुल्म से छुटकारा
दे ताकि मैं तेरे अह्काम के ताबे रहूँ।
135 अपने चिहरे का नूर अपने ख़ादिम पर चमका
और मुझे अपने अह्काम सिखा।
136 मेरी आँखों से आँसूओं की नदियाँ बह रही हैं,
क्यूँकि लोग तेरी शरीअत के ताबे नहीं रहते।

18

137 ऐ रब, तू रास्त है, और तेरे फ़ैसले दुरुस्त हैं।
138 तू ने रास्ती और बड़ी वफ़ादारी के साथ अपने
फ़रमान जारी किए हैं।
139 मेरी जान ग़ैरत के बाइस तबाह हो गई है, क्यूँकि
मेरे दुश्मन तेरे फ़रमान भूल गए हैं।
140 तेरा कलाम आज़मा कर पाक-साफ़ साबित
हुआ है, तेरा ख़ादिम उसे प्यार करता है।
141 मुझे ज़लील और हक़ीर जाना जाता है, लेकिन
मैं तेरे आईन नहीं भूलता।
142 तेरी रास्ती अबदी है, और तेरी शरीअत सच्चाई
है।
143 मुसीबत और परेशानी मुझ पर ग़ालिब आ गई
हैं, लेकिन मैं तेरे अह्काम से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ।
144 तेरे अह्काम अबद तक रास्त हैं। मुझे समझ
अता फ़रमा ताकि मैं जीता रहूँ।

19

145 मैं पूरे दिल से पुकारता हूँ, "ऐ रब, मेरी सुन! मैं
तेरे आईन के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारूँगा।"
146 मैं पुकारता हूँ, "मुझे बचा! मैं तेरे अह्काम की
पैरवी करूँगा।"
147 पौ फटने से पहले पहले मैं उठ कर मदद के
लिए पुकारता हूँ। मैं तेरे कलाम के इन्तिज़ार में हूँ।
148 रात के वक़्त ही मेरी आँखें खुल जाती हैं ताकि
तेरे कलाम पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करूँ।
149 अपनी शफ़्क़त के मुताबिक़ मेरी आवाज़ सुन!
ऐ रब, अपने फ़रमानों के मुताबिक़ मेरी जान को
ताज़ादम कर।
150 जो चालाकी से मेरा ताक़्क़ुब कर रहे हैं वह
क़रीब पहुँच गए हैं। लेकिन वह तेरी शरीअत से
इन्तिहाई दूर हैं।
151 ऐ रब, तू क़रीब ही है, और तेरे अह्काम सच्चाई
हैं।
152 बड़ी देर पहले मुझे तेरे फ़रमानों से मालूम हुआ
है कि तू ने उन्हें हमेशा के लिए क़ाइम रखा है।

20

153 मेरी मुसीबत का ख़याल करके मुझे बचा!
क्यूँकि मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।
154 अदालत में मेरे हक़ में लड़ कर मेरा इवज़ाना
दे ताकि मेरी जान छूट जाए। अपने वादे के मुताबिक़
मेरी जान को ताज़ादम कर।
155 नजात बेदीनों से बहुत दूर है, क्यूँकि वह तेरे
अह्काम के तालिब नहीं होते।
156 ऐ रब, तू मुतअद्दिद तरीक़ों से अपने रहम का
इज़हार करता है। अपने आईन के मुताबिक़ मेरी जान
को ताज़ादम कर।
157 मेरा ताक़्क़ुब करने वालों और मेरे दुश्मनों की
बड़ी तादाद है, लेकिन मैं तेरे अह्काम से दूर नहीं
हुआ।

158 बेवफ़ाओं को देख कर मुझे घिन आती है,
क्यूँकि वह तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं
गुज़ारते।
159 देख, मुझे तेरे अह्काम से प्यार है। ऐ रब, अपनी
शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
160 तेरे कलाम का लुब्ब-ए-लुबाब सच्चाई है, तेरे
तमाम रास्त फ़रमान अबद तक क़ाइम हैं।

21

161 सरदार बिलावजह मेरा पीछा करते हैं, लेकिन
मेरा दिल तेरे कलाम से ही डरता है।
162 मैं तेरे कलाम की ख़ुशी उस की तरह मनाता हूँ
जिसे कस्रत का माल-ए-ग़नीमत मिल गया हो।
163 मैं झूट से नफ़रत करता बल्कि घिन खाता हूँ,
लेकिन तेरी शरीअत मुझे प्यारी है।
164 मैं दिन में सात बार तेरी सताइश करता हूँ,
क्यूँकि तेरे अह्काम रास्त हैं।
165 जिन्हें शरीअत प्यारी है उन्हें बड़ा सुकून हासिल
है, वह किसी भी चीज़ से ठोकर खा कर नहीं गिरेंगे।
166 ऐ रब, मैं तेरी नजात के इन्तिज़ार में रहते हुए
तेरे अह्काम की पैरवी करता हूँ।
167 मेरी जान तेरे फ़रमानों से लिपटी रहती है, वह
उसे निहायत प्यारे हैं।
168 मैं तेरे आईन और हिदायात की पैरवी करता हूँ,
क्यूँकि मेरी तमाम राहें तेरे सामने हैं।

22

169 ऐ रब, मेरी आहें तेरे सामने आएँ, मुझे अपने
कलाम के मुताबिक़ समझ अता फ़रमा।
170 मेरी इल्तिजाएँ तेरे सामने आएँ, मुझे अपने
कलाम के मुताबिक़ छुड़ा!
171 मेरे होंटों से हम्द-ओ-सना फूट निकले, क्यूँकि
तू मुझे अपने अह्काम सिखाता है।
172 मेरी ज़बान तेरे कलाम की मद्हसराई करे,
क्यूँकि तेरे तमाम फ़रमान रास्त हैं।
173 तेरा हाथ मेरी मदद करने के लिए तय्यार रहे,
क्यूँकि मैं ने तेरे अह्काम इख़्तियार किए हैं।
174 ऐ रब, मैं तेरी नजात का आरज़ूमन्द हूँ, तेरी
शरीअत से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ।
175 मेरी जान ज़िन्दा रहे ताकि तेरी सताइश कर
सके। तेरे आईन मेरी मदद करें।
176 मैं भटकी हुई भेड़ की तरह आवारा फिर रहा हूँ।
अपने ख़ादिम को तलाश कर, क्यूँकि मैं तेरे अह्काम
नहीं भूलता।

तुहमत लगाने वालों से रिहाई के लिए दुआ

120 1 ज़ियारत का गीत।
मुसीबत में मैं ने रब को पुकारा, और
उस ने मेरी सुनी।
2 ऐ रब, मेरी जान को झूटे होंटों और फ़रेबदिह
ज़बान से बचा।
3 ऐ फ़रेबदिह ज़बान, वह तेरे साथ किया करे,
मज़ीद तुझे क्या दे?
4 वह तुझ पर जंगजू के तेज़ तीर और दहकते कोएले
बरसाए!

5 मुझ पर अफ़्सोस! मुझे अजनबी मुल्क मसक में,
क़ीदार के ख़ैमों के पास रहना पड़ता है।
6 इतनी देर से अम्न के दुश्मनों के पास रहने से मेरी
जान तंग आ गई है।
7 मैं तो अम्न चाहता हूँ, लेकिन जब कभी बोलूँ तो
वह जंग करने पर तुले होते हैं।

इन्सान का वफ़ादार मुहाफ़िज़

121 1 ज़ियारत का गीत।
मैं अपनी आँखों को पहाड़ों की तरफ़
उठाता हूँ। मेरी मदद कहाँ से आती है?
2 मेरी मदद रब से आती है, जो आसमान-ओ-ज़मीन
का ख़ालिक़ है।

3 वह तेरा पाँओ फिसलने नहीं देगा। तेरा मुहाफ़िज़
ऊँघने का नहीं।
4 यक़ीनन इस्राईल का मुहाफ़िज़ न ऊँघता है, न
सोता है।
5 रब तेरा मुहाफ़िज़ है, रब तेरे दहने हाथ पर
सायबान है।
6 न दिन को सूरज, न रात को चाँद तुझे ज़रर
पहुँचाएगा।
7 रब तुझे हर नुक़्सान से बचाएगा, वह तेरी जान
को महफ़ूज़ रखेगा।
8 रब अब से अबद तक तेरे आने जाने की पहरादारी
करेगा।

यरूशलम पर बरकत

122 1 दाऊद का ज़ियारत का गीत।
मैं उन से ख़ुश हुआ जिन्हों ने मुझ से
कहा, "आओ, हम रब के घर चलें।"
2 ऐ यरूशलम, अब हमारे पाँओ तेरे दरवाज़ों में खड़े
हैं।
3 यरूशलम शहर यूँ बनाया गया है कि उस के
तमाम हिस्से मज़बूती से एक दूसरे के साथ जुड़े हुए
हैं।
4 वहाँ क़बीले, हाँ रब के क़बीले हाज़िर होते हैं
ताकि रब के नाम की सताइश करें जिस तरह इस्राईल
को फ़रमाया गया है।
5 क्यूँकि वहाँ तख़्त-ए-अदालत करने के लिए
लगाए गए हैं, वहाँ दाऊद के घराने के तख़्त हैं।
6 यरूशलम के लिए सलामती माँगो! "जो तुझ से
प्यार करते हैं वह सुकून पाएँ।
7 तेरी फ़सील में सलामती और तेरे महलों में सुकून
हो।"
8 अपने भाइयों और हमसायों की ख़ातिर मैं कहूँगा,
"तेरे अन्दर सलामती हो!"
9 रब हमारे ख़ुदा के घर की ख़ातिर मैं तेरी ख़ुशहाली
का तालिब रहूँगा।

अल्लाह हम पर मेहरबानी करे

123 1 ज़ियारत का गीत।
मैं अपनी आँखों को तेरी तरफ़
उठाता हूँ, तेरी तरफ़ जो आसमान पर तख़्तनशीन
है।
2 जिस तरह ग़ुलाम की आँखें अपने मालिक के हाथ
की तरफ़ और लौंडी की आँखें अपनी मालिकन के
हाथ की तरफ़ लगी रहती हैं उसी तरह हमारी आँखें
रब अपने ख़ुदा पर लगी रहती हैं, जब तक वह हम
पर मेहरबानी न करे।
3 ऐ रब, हम पर मेहरबानी कर, हम पर मेहरबानी
कर! क्यूँकि हम हद से ज़्यादा हिक़ारत का निशाना
बन गए हैं।
4 सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारने वालों की लान-तान
और मग़रूरों की तहक़ीर से हमारी जान दूभर हो गई
है।

मुसीबत में अल्लाह हमारा सहारा है

124 1 दाऊद का ज़ियारत का गीत।
इस्राईल कहे, "अगर रब हमारे साथ
न होता,
2 अगर रब हमारे साथ न होता जब लोग हमारे
ख़िलाफ़ उठे
3 और आग-बगूला हो कर अपना पूरा ग़ुस्सा हम
पर उतारा, तो वह हमें ज़िन्दा हड़प कर लेते।
4 फिर सैलाब हम पर टूट पड़ता, नदी का तेज़ धारा
हम पर ग़ालिब आ जाता
5 और मुतलातिम पानी हम पर से गुज़र जाता।"
6 रब की हम्द हो जिस ने हमें उन के दाँतों के हवाले
न किया, वर्ना वह हमें फाड़ खाते।
7 हमारी जान उस चिड़िया की तरह छूट गई है जो
चिड़ीमार के फंदे से निकल कर उड़ गई है। फंदा टूट
गया है, और हम बच निकले हैं।
8 रब का नाम, हाँ उसी का नाम हमारा सहारा है जो
आसमान-ओ-ज़मीन का ख़ालिक़ है।

चारों तरफ़ से क़ौम की हिफ़ाज़त

125 1 ज़ियारत का गीत।
जो रब पर भरोसा रखते हैं वह कोह-
ए-सिय्यून की मानिन्द हैं जो कभी नहीं डगमगाता
बल्कि अबद तक क़ाइम रहता है।
2 जिस तरह यरूशलम पहाड़ों से घिरा रहता है उसी
तरह रब अपनी क़ौम को अब से अबद तक चारों
तरफ़ से महफ़ूज़ रखता है।
3 क्यूँकि बेदीनों की रास्तबाज़ों की मीरास पर
हुकूमत नहीं रहेगी, ऐसा न हो कि रास्तबाज़ बदकारी
करने की आज़माइश में पड़ जाएँ।
4 ऐ रब, उन से भलाई कर जो नेक हैं, जो दिल से
सीधी राह पर चलते हैं।
5 लेकिन जो भटक कर अपनी टेढ़ी-मेढ़ी राहों पर
चलते हैं उन्हें रब बदकारों के साथ ख़ारिज कर दे।
इस्राईल की सलामती हो!

रब अपने क़ैदियों को रिहाई देता है

126 1 ज़ियारत का गीत।
जब रब ने सिय्यून को बहाल किया
तो ऐसा लग रहा था कि हम ख़वाब देख रहे हैं।
2 तब हमारा मुँह हंसी-ख़ुशी से भर गया, और हमारी
ज़बान शादमानी के नारे लगाने से रुक न सकी।
तब दीगर क़ौमों में कहा गया, "रब ने उन के लिए
ज़बरदस्त काम किया है।"
3 रब ने वाक़ई हमारे लिए ज़बरदस्त काम किया है।
हम कितने ख़ुश थे, कितने ख़ुश!

4 ऐ रब, हमें बहाल कर। जिस तरह मौसम-ए-
बरसात में दश्त-ए-नजब के ख़ुश्क नाले पानी से भर
जाते हैं उसी तरह हमें बहाल कर।
5 जो आँसू बहा बहा कर बीज बोएँ वह ख़ुशी के
नारे लगा कर फ़सल काटेंगे।
6 वह रोते हुए बीज बोने के लिए निकलेंगे, लेकिन
जब फ़सल पक जाए तो ख़ुशी के नारे लगा कर पूले
उठाए अपने घर लौटेंगे।

अल्लाह ही हमारा घर तामीर करता है

127 1 सुलेमान का ज़ियारत का गीत।
अगर रब घर को तामीर न करे तो
उस पर काम करने वालों की मेहनत अबस है। अगर
रब शहर की पहरादारी न करे तो इन्सानी पहरेदारों
की निगहबानी अबस है।
2 यह भी अबस है कि तुम सुब्ह-सवेरे उठो और पूरे
दिन मेहनत-मशक़्क़त के साथ रोज़ी कमा कर रात
गए सो जाओ। क्यूँकि जो अल्लाह को प्यारे हैं उन्हें
वह उन की ज़रूरियात उन के सोते में पूरी कर देता
है।

3 बच्चे ऐसी नेमत हैं जो हम मीरास में रब से पाते हैं,
औलाद एक अज्र है जो वही हमें देता है।
4 जवानी में पैदा हुए बेटे सूरमे के हाथ में तीरों की
मानिन्द हैं।
5 मुबारक है वह आदमी जिस का तर्कश उन से
भरा है। जब वह शहर के दरवाज़े पर अपने दुश्मनों
से झगड़ेगा तो शर्मिन्दा नहीं होगा।

जिस ख़ानदान को अल्लाह बरकत देता है

128 1 ज़ियारत का गीत।
मुबारक है वह जो रब का ख़ौफ़ मान
कर उस की राहों पर चलता है।
2 यक़ीनन तू अपनी मेहनत का फल खाएगा।
मुबारक हो, क्यूँकि तू कामयाब होगा।
3 घर में तेरी बीवी अंगूर की फलदार बेल की
मानिन्द होगी, और तेरे बेटे मेज़ के इर्दगिर्द बैठ कर
ज़ैतून की ताज़ा शाख़ों [b]की मानिन्द होंगे।

---

[b]इस से मुराद है पैवन्दकारी के लिए दरख़्त से काटी गई टहनियाँ।

4 जो आदमी रब का ख़ौफ़ माने उसे ऐसी ही बरकत
मिलेगी।
5 रब तुझे कोह-ए-सिय्यून से बरकत दे। वह करे
कि तू जीते जी यरूशलम की ख़ुशहाली देखे,
6 कि तू अपने पोतों-नवासों को भी देखे। इस्राईल
की सलामती हो!

मदद के लिए इस्राईल की दुआ

129 1 ज़ियारत का गीत।
इस्राईल कहे, "मेरी जवानी से ही मेरे
दुश्मन बार बार मुझ पर हम्लाआवर हुए हैं।
2 मेरी जवानी से ही वह बार बार मुझ पर हम्लाआवर
हुए हैं। तो भी वह मुझ पर ग़ालिब न आए।"
3 हल चलाने वालों ने मेरी पीठ पर हल चला कर
उस पर अपनी लम्बी लम्बी रेघारयाँ बनाई हैं।
4 रब रास्त है। उस ने बेदीनों के रस्से काट कर मुझे
आज़ाद कर दिया है।

5 अल्लाह करे कि जितने भी सिय्यून से नफ़रत रखें
वह शर्मिन्दा हो कर पीछे हट जाएँ।
6 वह छतों पर की घास की मानिन्द हों जो सहीह
तौर पर बढ़ने से पहले ही मुरझा जाती है
7 और जिस से न फ़सल काटने वाला अपना हाथ,
न पूले बांधने वाला अपना बाज़ू भर सके।
8 जो भी उन से गुज़रे वह न कहे, "रब तुम्हें बरकत
दे।"
हम रब का नाम ले कर तुम्हें बरकत देते हैं!

बड़ी मुसीबत से रिहाई की दुआ (तौबा का छटा ज़बूर)

130 1 ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, मैं तुझे गहराइयों से पुकारता
हूँ।
2 ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन! कान लगा कर मेरी
इल्तिजाओं पर ध्यान दे!
3 ऐ रब, अगर तू हमारे गुनाहों का हिसाब करे तो
कौन क़ाइम रहेगा? कोई भी नहीं!
4 लेकिन तुझ से मुआफ़ी हासिल होती है ताकि तेरा
ख़ौफ़ माना जाए।

5 मैं रब के इन्तिज़ार में हूँ, मेरी जान शिद्दत से
इन्तिज़ार करती है। मैं उस के कलाम से उम्मीद
रखता हूँ।
6 पहरेदार जिस शिद्दत से पौ फटने के इन्तिज़ार में
रहते हैं, मेरी जान उस से भी ज़्यादा शिद्दत के साथ,
हाँ ज़्यादा शिद्दत के साथ रब की मुन्तज़िर रहती है।

7 ऐ इस्राईल, रब की राह देखता रह! क्यूँकि रब के
पास शफ़्क़त और फ़िद्या का ठोस बन्द-ओ-बस्त है।
8 वह इस्राईल के तमाम गुनाहों का फ़िद्या दे कर
उसे नजात देगा।

बच्चे का सा ईमान

131 1 ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, न मेरा दिल घमंडी है, न
मेरी आँखें मग़रूर हैं। जो बातें इतनी अज़ीम और
हैरानकुन हैं कि मैं उन से निपट नहीं सकता उन्हें मैं
नहीं छेड़ता।
2 यक़ीनन मैं ने अपनी जान को राहत और सुकून
दिलाया है, और अब वह माँ की गोद में बैठे छोटे बच्चे
की मानिन्द है, हाँ मेरी जान छोटे बच्चे [e]की मानिन्द
है।
3 ऐ इस्राईल, अब से अबद तक रब के इन्तिज़ार
में रह!

---

[e]जिस बच्चे ने माँ का दूध पीना छोड़ दिया है।

दाऊद का घराना और सिय्यून पर मक़्दिस

132 1 ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, दाऊद का ख़याल रख, उस
की तमाम मुसीबतों को याद कर।
2 उस ने क़सम खा कर रब से वादा किया और
याक़ूब के क़वी ख़ुदा के हुज़ूर मन्नत मानी,
3 "न मैं अपने घर में दाख़िल हूँगा, न बिस्तर पर
लेटूँगा,
4 न मैं अपनी आँखों को सोने दूँगा, न अपने पपोटों
को ऊँघने दूँगा
5 जब तक रब के लिए मक़ाम और याक़ूब के सूरमे
के लिए सुकूनतगाह न मिले।"

6 हम ने इफ़्राता में अह्द के सन्दूक़ की ख़बर सुनी
और यार के खुले मैदान में उसे पा लिया।
7 आओ, हम उस की सुकूनतगाह में दाख़िल हो
कर उस के पाँओ की चौकी के सामने सिज्दा करें।

8 ऐ रब, उठ कर अपनी आरामगाह के पास आ,
तू और अह्द का सन्दूक़ जो तेरी क़ुदरत का इज़हार
है।
9 तेरे इमाम रास्ती से मुलब्बस हो जाएँ, और तेरे
ईमानदार ख़ुशी के नारे लगाएँ।

10 ऐ अल्लाह, अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर अपने
मसह किए हुए बन्दे के चिहरे को रद्द न कर।
11 रब ने क़सम खा कर दाऊद से वादा किया है,
और वह उस से कभी नहीं फिरेगा, "मैं तेरी औलाद
में से एक को तेरे तख़्त पर बिठाऊँगा।
12 अगर तेरे बेटे मेरे अह्द के वफ़ादार रहें और उन
अह्काम की पैरवी करें जो मैं उन्हें सिखाऊँगा तो उन
के बेटे भी हमेशा तक तेरे तख़्त पर बैठेंगे।"
13 क्यूँकि रब ने कोह-ए-सिय्यून को चुन लिया है,
और वही वहाँ सुकूनत करने का आरज़ूमन्द था।
14 उस ने फ़रमाया, "यह हमेशा तक मेरी आरामगाह
है, और यहाँ मैं सुकूनत करूँगा, क्यूँकि मैं इस का
आरज़ूमन्द हूँ।
15 मैं सिय्यून की ख़ुराक को कस्रत की बरकत दे
कर उस के ग़रीबों को रोटी से सेर करूँगा।
16 मैं उस के इमामों को नजात से मुलब्बस करूँगा,
और उस के ईमानदार ख़ुशी से ज़ोरदार नारे लगाएँगे।
17 यहाँ मैं दाऊद की ताक़त बढ़ा दूँगा, [d]और यहाँ
मैं ने अपने मसह किए हुए ख़ादिम के लिए चराग़
तय्यार कर रखा है।
18 मैं उस के दुश्मनों को शर्मिन्दगी से मुलब्बस
करूँगा जबकि उस के सर का ताज चमकता रहेगा।"

भाइयों की यगानगत की बरकत

133 1 दाऊद का ज़बूर। ज़ियारत का गीत।
जब भाई मिल कर और यगानगत से
रहते हैं यह कितना अच्छा और प्यारा है।
2 यह उस नफ़ीस तेल की मानिन्द है जो हारून
इमाम के सर पर उंडेला जाता है और टपक टपक
कर उस की दाढ़ी और लिबास के गिरीबान पर आ
जाता है।
3 यह उस ओस की मानिन्द है जो कोह-ए-हर्मून
से सिय्यून के पहाड़ों पर पड़ती है। क्यूँकि रब ने
फ़रमाया है, "वहीं हमेशा तक बरकत और ज़िन्दगी
मिलेगी।"

रब के घर में रात की सताइश

134 1 ज़ियारत का गीत।
आओ, रब की सताइश करो, ऐ रब
के तमाम ख़ादिमो जो रात के वक़्त रब के घर में खड़े
हो।

---

[d]लफ़्ज़ी तर्जुमा : मैं दाऊद का सींग फूटने दूँगा।

2 मक़्दिस में अपने हाथ उठा कर रब की तम्जीद
करो!
3 रब सिय्यून से तुझे बरकत दे, आसमान-ओ-ज़मीन
का ख़ालिक़ तुझे बरकत दे।

अल्लाह की परस्तिश

135 1 रब की हम्द हो! रब के नाम की
सताइश करो! उस की तम्जीद करो,
ऐ रब के तमाम ख़ादिमो,
2 जो रब के घर में, हमारे ख़ुदा की बारगाहों में खड़े
हो।
3 रब की हम्द करो, क्यूँकि रब भला है। उस के
नाम की मद्हसराई करो, क्यूँकि वह प्यारा है।
4 क्यूँकि रब ने याक़ूब को अपने लिए चुन लिया,
इस्राईल को अपनी मिलकियत बना लिया है।

5 हाँ, मैं ने जान लिया है कि रब अज़ीम है, कि हमारा
रब दीगर तमाम माबूदों से ज़्यादा अज़ीम है।
6 रब जो जी चाहे करता है, ख़्वाह आसमान पर हो
या ज़मीन पर, ख़्वाह समुन्दरों में हो या गहराइयों में
कहीं भी हो।
7 वह ज़मीन की इन्तिहा से बादल चढ़ने देता और
बिजली बारिश के लिए पैदा करता है, वह हवा अपने
गोदामों से निकाल लाता है।
8 मिस्र में उस ने इन्सान-ओ-हैवान के तमाम
पहलौठों को मार डाला।
9 ऐ मिस्र, उस ने अपने इलाही निशान और
मोजिज़ात तेरे दरमियान ही किए। तब फ़िरऔन और
उस के तमाम मुलाज़िम उन का निशाना बन गए।

10 उस ने मुतअद्दिद क़ौमों को शिकस्त दे कर
ताक़तवर बादशाहों को मौत के घाट उतार दिया।
11 अमोरियों का बादशाह सीहोन, बसन का
बादशाह ओज और मुल्क-ए-कनआन की तमाम
सल्तनतें न रहीं।
12 उस ने उन का मुल्क इस्राईल को दे कर फ़रमाया
कि आइन्दा यह मेरी क़ौम की मौरूसी मिलकियत
होगा।

13 ऐ रब, तेरा नाम अबदी है। ऐ रब, तुझे पुश्त-दर-
पुश्त याद किया जाएगा।
14 क्यूँकि रब अपनी क़ौम का इन्साफ़ करके अपने
ख़ादिमों पर तरस खाएगा।

15 दीगर क़ौमों के बुत सोने-चाँदी के हैं, इन्सान के
हाथ ने उन्हें बनाया।
16 उन के मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते, उन
की आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।
17 उन के कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते, उन
के मुँह में साँस ही नहीं होती।
18 जो बुत बनाते हैं वह उन की मानिन्द हो जाएँ,
जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे बेहिस्स-ओ-
हरकत हो जाएँ।

19 ऐ इस्राईल के घराने, रब की सताइश कर। ऐ
हारून के घराने, रब की तम्जीद कर।
20 ऐ लावी के घराने, रब की हम्द-ओ-सना कर। ऐ
रब का ख़ौफ़ मानने वालो, रब की सताइश करो।
21 सिय्यून से रब की हम्द हो। उस की हम्द हो जो
यरूशलम में सुकूनत करता है। रब की हम्द हो!

तख़्लीक़ और क़ौम की तारीख़ में अल्लाह के मोजिज़े

136 1 रब का शुक्र करो, क्यूँकि वह भला
है, और उस की शफ़क़त अबदी है।
2 ख़ुदाओं के ख़ुदा का शुक्र करो, क्यूँकि उस की
शफ़क़त अबदी है।
3 मालिकों के मालिक का शुक्र करो, क्यूँकि उस
की शफ़क़त अबदी है।
4 जो अकेला ही अज़ीम मोजिज़े करता है उस का
शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

5 जिस ने हिक्मत के साथ आसमान बनाया उस का
शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।
6 जिस ने ज़मीन को मज़बूती से पानी के ऊपर लगा
दिया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त
अबदी है।
7 जिस ने आसमान की रौशनियों को ख़ल्क़ किया
उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी
है।
8 जिस ने सूरज को दिन के वक़्त हुकूमत करने
के लिए बनाया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की
शफ़क़त अबदी है।
9 जिस ने चाँद और सितारों को रात के वक़्त
हुकूमत करने के लिए बनाया उस का शुक्र करो,
क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।
10 जिस ने मिस्र में पहलौठों को मार डाला उस का
शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।
11 जो इस्राईल को मिस्रियों में से निकाल लाया उस
का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।
12 जिस ने उस वक़्त बड़ी ताक़त और क़ुदरत का
इज़हार किया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की
शफ़क़त अबदी है।
13 जिस ने बहर-ए-क़ुल्ज़ुम को दो हिस्सों में तक़्सीम
कर दिया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त
अबदी है।
14 जिस ने इस्राईल को उस के बीच में से गुज़रने
दिया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त
अबदी है।
15 जिस ने फ़िरऔन और उस की फ़ौज को बहर-
ए-क़ुल्ज़ुम में बहा कर ग़र्क़ कर दिया उस का शुक्र
करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।
16 जिस ने रेगिस्तान में अपनी क़ौम की क़ियादत
की उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी
है।
17 जिस ने बड़े बादशाहों को शिकस्त दी उस का
शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।
18 जिस ने ताक़तवर बादशाहों को मार डाला उस
का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।
19 जिस ने अमोरियों के बादशाह सीहोन को मौत
के घाट उतारा उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की
शफ़क़त अबदी है।
20 जिस ने बसन के बादशाह ओज को हलाक कर
दिया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त
अबदी है।
21 जिस ने उन का मुल्क इस्राईल को मीरास में दिया
उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।
22 जिस ने उन का मुल्क अपने ख़ादिम इस्राईल की
मौरूसी मिलकियत बनाया उस का शुक्र करो, क्यूँकि
उस की शफ़क़त अबदी है।
23 जिस ने हमारा ख़याल किया जब हम ख़ाक में
दब गए थे उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त
अबदी है।
24 जिस ने हमें उन के क़ब्ज़े से छुड़ाया जो हम पर
ज़ुल्म कर रहे थे उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की
शफ़क़त अबदी है।
25 जो तमाम जानदारों को ख़ुराक मुहय्या करता है
उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी
है।
26 आसमान के ख़ुदा का शुक्र करो, क्यूँकि उस की
शफ़क़त अबदी है।

बाबल में जिलावतनों की आह-ओ-ज़ारी

137 1 जब सिय्यून की याद आई तो हम
बाबल की नहरों के किनारे ही बैठ कर
रो पड़े।
2 हम ने वहाँ के सफ़ेदा के दरख़्तों से अपने सरोद
लटका दिए,
3 क्यूँकि जिन्हों ने हमें गिरिफ़्तार किया था उन्हों ने
हमें वहाँ गीत गाने को कहा, और जो हमारा मज़ाक़
उड़ाते हैं उन्हों ने ख़ुशी का मुतालबा किया, “हमें
सिय्यून का कोई गीत सुनाओ!”

4 लेकिन हम अजनबी मुल्क में किस तरह रब का
गीत गाएँ?
5 ऐ यरूशलम, अगर मैं तुझे भूल जाऊँ तो मेरा दहना
हाथ सूख जाए।
6 अगर मैं तुझे याद न करूँ और यरूशलम को
अपनी अज़ीमतरीन ख़ुशी से ज़्यादा क़ीमती न समझूँ
तो मेरी ज़बान तालू से चिपक जाए।

7 ऐ रब, वह कुछ याद कर जो अदोमियों ने उस
दिन किया जब यरूशलम दुश्मन के क़ब्ज़े में आया।
उस वक़्त वह बोले, "उसे ढा दो! बुन्यादों तक उसे
गिरा दो!"
8 ऐ बाबल बेटी जो तबाह करने पर तुली हुई है,
मुबारक है वह जो तुझे उस का बदला दे जो तू ने
हमारे साथ किया है।
9 मुबारक है वह जो तेरे बच्चों को पकड़ कर पत्थर
पर पटख़ दे।

अल्लाह की मदद के लिए शुक्रगुज़ारी

138 1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश
करूँगा, माबूदों के सामने ही तेरी तम्जीद करूँगा।
2 मैं तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की तरफ़ रुख़ करके
सिज्दा करूँगा, तेरी मेहरबानी और वफ़ादारी के
बाइस तेरा शुक्र करूँगा। क्यूँकि तू ने अपने नाम और
कलाम को तमाम चीज़ों पर सरफ़राज़ किया है।
3 जिस दिन मैं ने तुझे पुकारा तू ने मेरी सुन कर मेरी
जान को बड़ी तक़वियत दी।

4 ऐ रब, दुनिया के तमाम हुक्मरान तेरे मुँह के
फ़रमान सुन कर तेरा शुक्र करें।
5 वह रब की राहों की मद्हसराई करें, क्यूँकि रब
का जलाल अज़ीम है।
6 क्यूँकि गो रब बुलन्दियों पर है वह पस्तहाल का
ख़याल करता और मग़रूरों को दूर से ही पहचान
लेता है।
7 जब कभी मुसीबत मेरा दामन नहीं छोड़ती तो तू
मेरी जान को ताज़ादम करता है, तू अपना दहना हाथ
बढ़ा कर मुझे मेरे दुश्मनों के तैश से बचाता है।
8 रब मेरी ख़ातिर बदला लेगा। ऐ रब, तेरी शफ़क़त
अबदी है। उन्हें न छोड़ जिन को तेरे हाथों ने बनाया
है!

अल्लाह सब कुछ जानता और हर जगह मौजूद है

139 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
ऐ रब, तू मेरा मुआइना करता और मुझे ख़ूब जानता
है।
2 मेरा उठना बैठना तुझे मालूम है, और तू दूर से ही
मेरी सोच समझता है।
3 तू मुझे जाँचता है, ख़्वाह मैं रास्ते में हूँ या आराम
करूँ। तू मेरी तमाम राहों से वाक़िफ़ है।
4 क्यूँकि जब भी कोई बात मेरी ज़बान पर आए तू
ऐ रब पहले ही उस का पूरा इल्म रखता है।
5 तू मुझे चारों तरफ़ से घेरे रखता है, तेरा हाथ मेरे
ऊपर ही रहता है।
6 इस का इल्म इतना हैरानकुन और अज़ीम है कि
मैं इसे समझ नहीं सकता।

7 मैं तेरे रूह से कहाँ भाग जाऊँ, तेरे चिहरे से कहाँ
फ़रार हो जाऊँ?
8 अगर आसमान पर चढ़ जाऊँ तो तू वहाँ मौजूद
है, अगर उतर कर अपना बिस्तर पाताल में बिछाऊँ
तो तू वहाँ भी है।
9 गो मैं तुलू-ए-सुब्ह के परों पर उड़ कर समुन्दर की
दूरतरीन हद पर जा बसूँ,
10 वहाँ भी तेरा हाथ मेरी क़ियादत करेगा, वहाँ भी
तेरा दहना हाथ मुझे थामे रखेगा।
11 अगर मैं कहूँ, "तारीकी मुझे छुपा दे, और मेरे
इर्दगिर्द की रौशनी रात में बदल जाए," तो भी कोई
फ़र्क़ नहीं पड़ेगा।

12 तेरे सामने तारीकी भी तारीक नहीं होती, तेरे
हुज़ूर रात दिन की तरह रौशन होती है बल्कि रौशनी
और अंधेरा एक जैसे होते हैं।

13 क्यूँकि तू ने मेरा बातिन बनाया है, तू ने मुझे माँ
के पेट में तश्कील दिया है।
14 मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि मुझे जलाली और
मोजिज़ाना तौर से बनाया गया है। तेरे काम
हैरतअंगेज़ हैं, और मेरी जान यह ख़ूब जानती है।
15 मेरा ढाँचा तुझ से छुपा नहीं था जब मुझे
पोशीदगी में बनाया गया, जब मुझे ज़मीन की
गहराइयों में तश्कील दिया गया।
16 तेरी आँखों ने मुझे उस वक़्त देखा जब मेरे जिस्म
की शक्ल अभी नामुकम्मल थी। जितने भी दिन मेरे
लिए मुक़र्रर थे वह सब तेरी किताब में उस वक़्त दर्ज
थे, जब एक भी नहीं गुज़रा था।

17 ऐ अल्लाह, तेरे ख़यालात समझना मेरे लिए कितना
मुश्किल है! उन की कुल तादाद कितनी अज़ीम है।
18 अगर मैं उन्हें गिन सकता तो वह रेत से ज़्यादा
होते। मैं जाग उठता हूँ तो तेरे ही साथ होता हूँ।

19 ऐ अल्लाह, काश तू बेदीन को मार डाले, कि
ख़ूँख़ार मुझ से दूर हो जाएँ।
20 वह फ़रेब से तेरा ज़िक्र करते हैं, हाँ तेरे मुख़ालिफ़
झूट बोलते हैं।
21 ऐ रब, क्या मैं उन से नफ़रत न करूँ जो तुझ से
नफ़रत करते हैं? क्या मैं उन से घिन न खाऊँ जो तेरे
ख़िलाफ़ उठे हैं?
22 यक़ीनन मैं उन से सख़्त नफ़रत करता हूँ। वह
मेरे दुश्मन बन गए हैं।

23 ऐ अल्लाह, मेरा मुआइना करके मेरे दिल का हाल
जान ले, मुझे जाँच कर मेरे बेचैन ख़यालात को जान
ले।
24 मैं नुक़्सानदेह राह पर तो नहीं चल रहा? अबदी
राह पर मेरी क़ियादत कर!

दुश्मन से रिहाई की दुआ

140 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
ऐ रब, मुझे शरीरों से छुड़ा और ज़ालिमों से महफ़ूज़
रख।
2 दिल में वह बुरे मन्सूबे बांधते, रोज़ाना जंग छेड़ते
हैं।
3 उन की ज़बान साँप की ज़बान जैसी तेज़ है, और
उन के होंटों में साँप का ज़हर है। (सिलाह)
4 ऐ रब, मुझे बेदीन के हाथों से महफ़ूज़ रख, ज़ालिम
से मुझे बचाए रख, उन से जो मेरे पाँओ को ठोकर
खिलाने के मन्सूबे बांध रहे हैं।
5 मग़रूरों ने मेरे रास्ते में फंदा और रस्से छुपाए हैं,
उन्हों ने जाल बिछा कर रास्ते के किनारे किनारे मुझे
पकड़ने के फंदे लगाए हैं। (सिलाह)

6 मैं रब से कहता हूँ, “तू ही मेरा ख़ुदा है, मेरी
इल्तिजाओं की आवाज़ सुन!”
7 ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, ऐ मेरी क़वी नजात! जंग
के दिन तू अपनी ढाल से मेरे सर की हिफ़ाज़त करता
है।
8 ऐ रब, बेदीन का लालच पूरा न कर। उस का
इरादा कामयाब होने न दे, ऐसा न हो कि यह लोग
सरफ़राज़ हो जाएँ। (सिलाह)
9 उन्हों ने मुझे घेर लिया है, लेकिन जो आफ़त उन
के होंट मुझ पर लाना चाहते हैं वह उन के अपने सरों
पर आए!
10 दहकते कोएले उन पर बरसें, और उन्हें आग
में, अथाह गढ़ों में फैंका जाए ताकि आइन्दा कभी न
उठें।
11 तुहमत लगाने वाला मुल्क में क़ाइम न रहे, और
बुराई ज़ालिम को मार मार कर उस का पीछा करे।

12 मैं जानता हूँ कि रब अदालत में मुसीबतज़दा का
दिफ़ा करेगा। वही ज़रूरतमन्द का इन्साफ़ करेगा।
13 यक़ीनन रास्तबाज़ तेरे नाम की सताइश करेंगे,
और दियानतदार तेरे हुज़ूर बसेंगे।

हिफ़ाज़त की गुज़ारिश

141 1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं तुझे पुकार रहा हूँ, मेरे पास
आने में जल्दी कर! जब मैं तुझे आवाज़ देता हूँ तो
मेरी फ़र्याद पर ध्यान दे!
2 मेरी दुआ तेरे हुज़ूर बख़ूर की क़ुर्बानी की तरह
क़बूल हो, मेरे तेरी तरफ़ उठाए हुए हाथ शाम की
ग़ल्ला की नज़र की तरह मन्ज़ूर हों।
3 ऐ रब, मेरे मुँह पर पहरा बिठा, मेरे होंटों के
दरवाज़े की निगहबानी कर।
4 मेरे दिल को ग़लत बात की तरफ़ माइल न होने
दे, ऐसा न हो कि मैं बदकारों के साथ मिल कर बुरे
काम में मुलव्वस हो जाऊँ और उन के लज़ीज़ खानों
में शिर्कत करूँ।

5 रास्तबाज़ शफ़क़त से मुझे मारे और मुझे तम्बीह
करे। मेरा सर इस से इन्कार नहीं करेगा, क्यूँकि
यह उस के लिए शिफ़ाबख़्श तेल की मानिन्द होगा।
लेकिन मैं हर वक़्त शरीरों की हरकतों के ख़िलाफ़
दुआ करता हूँ।
6 जब वह गिर कर उस चटान के हाथ में आएँगे जो
उन का मुन्सिफ़ है तो वह मेरी बातों पर ध्यान देंगे,
और उन्हें समझ आएगी कि वह कितनी प्यारी हैं।

7 ऐ अल्लाह, हमारी हड्डियाँ उस ज़मीन की मानिन्द
हैं जिस पर किसी ने इतने ज़ोर से हल चलाया है कि
ढेले उड़ कर इधर उधर बिखर गए हैं। हमारी हड्डियाँ
पाताल के मुँह तक बिखर गई हैं।
8 ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, मेरी आँखें तुझ पर लगी
रहती हैं, और मैं तुझ में पनाह लेता हूँ। मुझे मौत के
हवाले न कर।
9 मुझे उस जाल से महफ़ूज़ रख जो उन्हों ने मुझे
पकड़ने के लिए बिछाया है। मुझे बदकारों के फंदों
से बचाए रख।
10 बेदीन मिल कर उन के अपने जालों में उलझ
जाएँ जबकि मैं बच कर आगे निकलूँ।

सख़्त मुसीबत में मदद की पुकार

142 1 हिक्मत का गीत। दुआ जो दाऊद ने
की जब वह ग़ार में था।
मैं मदद के लिए चीख़ता चिल्लाता रब को पुकारता
हूँ, मैं ज़ोरदार आवाज़ से रब से इल्तिजा करता हूँ।
2 मैं अपनी आह-ओ-ज़ारी उस के सामने उंडेल देता,
अपनी तमाम मुसीबत उस के हुज़ूर पेश करता हूँ।
3 जब मेरी रूह मेरे अन्दर निढाल हो जाती है तो तू
ही मेरी राह जानता है। जिस रास्ते में मैं चलता हूँ उस
में लोगों ने फंदा छुपाया है।
4 मैं दहनी तरफ़ नज़र डाल कर देखता हूँ, लेकिन
कोई नहीं है जो मेरा ख़याल करे। मैं बच नहीं सकता,
कोई नहीं है जो मेरी जान की फ़िक्र करे।

5 ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता हूँ। मैं कहता
हूँ, "तू मेरी पनाहगाह और ज़िन्दों के मुल्क में मेरा
मौरूसी हिस्सा है।"
6 मेरी चीख़ों पर ध्यान दे, क्यूँकि मैं बहुत पस्त हो
गया हूँ। मुझे उन से छुड़ा जो मेरा पीछा कर रहे हैं,
क्यूँकि मैं उन पर क़ाबू नहीं पा सकता।
7 मेरी जान को क़ैदख़ाने से निकाल ला ताकि तेरे
नाम की सताइश करूँ। जब तू मेरे साथ भलाई करेगा
तो रास्तबाज़ मेरे इर्दगिर्द जमा हो जाएंगे।

बचाओ और क़ियादत की गुज़ारिश (तौबा का सातवाँ ज़बूर)

143 1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी
इल्तिजाओं पर ध्यान दे। अपनी वफ़ादारी और
रास्ती की ख़ातिर मेरी सुन!

2 अपने ख़ादिम को अपनी अदालत में न ला,
क्यूँकि तेरे हुज़ूर कोई भी जानदार रास्तबाज़ नहीं ठहर
सकता।
3 क्यूँकि दुश्मन ने मेरी जान का पीछा करके उसे
ख़ाक में कुचल दिया है। उस ने मुझे उन लोगों की
तरह तारीकी में बसा दिया है जो बड़े अर्से से मुर्दा
हैं।
4 मेरे अन्दर मेरी रूह निढाल है, मेरे अन्दर मेरा दिल
दहशत के मारे बेहिस्स-ओ-हरकत हो गया है।

5 मैं क़दीम ज़माने के दिन याद करता और तेरे कामों
पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करता हूँ। जो कुछ तेरे हाथों ने
किया उस में मैं महव-ए-ख़याल रहता हूँ।
6 मैं अपने हाथ तेरी तरफ़ उठाता हूँ, मेरी जान
ख़ुश्क ज़मीन की तरह तेरी प्यासी है। (सिलाह)

7 ऐ रब, मेरी सुनने में जल्दी कर। मेरी जान तो ख़त्म
होने वाली है। अपना चिहरा मुझ से छुपाए न रख,
वर्ना मैं गढ़े में उतरने वालों की मानिन्द हो जाऊँगा।
8 सुब्ह के वक़्त मुझे अपनी शफ़क़त की ख़बर
सुना, क्यूँकि मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ। मुझे वह
राह दिखा जिस पर मुझे जाना है, क्यूँकि मैं तेरा ही
आरज़ूमन्द हूँ।
9 ऐ रब, मुझे मेरे दुश्मनों से छुड़ा, क्यूँकि मैं तुझ में
पनाह लेता हूँ।
10 मुझे अपनी मर्ज़ी पूरी करना सिखा, क्यूँकि तू
मेरा ख़ुदा है। तेरा नेक रूह हमवार ज़मीन पर मेरी
राहनुमाई करे।
11 ऐ रब, अपने नाम की ख़ातिर मेरी जान को
ताज़ादम कर। अपनी रास्ती से मेरी जान को मुसीबत
से बचा।
12 अपनी शफ़क़त से मेरे दुश्मनों को हलाक कर।
जो भी मुझे तंग कर रहे हैं उन्हें तबाह कर! क्यूँकि मैं
तेरा ख़ादिम हूँ।

नजात और ख़ुशहाली की दुआ

144 1 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरी चटान की हम्द हो, जो मेरे
हाथों को लड़ने और मेरी उंगलियों को जंग करने की
तर्बियत देता है।
2 वह मेरी शफ़क़त, मेरा क़िला, मेरा नजातदहिन्दा
और मेरी ढाल है। उसी में मैं पनाह लेता हूँ, और वही
दीगर अक़्वाम को मेरे ताबे कर देता है।

3 ऐ रब, इन्सान कौन है कि तू उस का ख़याल रखे?
आदमज़ाद कौन है कि तू उस का लिहाज़ करे?
4 इन्सान दम भर का ही है, उस के दिन तेज़ी से
गुज़रने वाले साय की मानिन्द हैं।

5 ऐ रब, अपने आसमान को झुका कर उतर आ!
पहाड़ों को छू ताकि वह धुआँ छोड़ें।
6 बिजली भेज कर उन्हें मुन्तशिर कर, अपने तीर
चला कर उन्हें दर्हम-बर्हम कर।
7 अपना हाथ बुलन्दियों से नीचे बढ़ा और मुझे छुड़ा
कर पानी की गहराइयों और परदेसियों के हाथ से
बचा,
8 जिन का मुँह झूट बोलता और दहना हाथ फ़रेब
देता है।

9 ऐ अल्लाह, मैं तेरी तम्जीद में नया गीत गाऊँगा, दस
तारों का सितार बजा कर तेरी मद्हसराई करूँगा।
10 क्यूँकि तू बादशाहों को नजात देता और अपने
ख़ादिम दाऊद को मोहलिक तलवार से बचाता है।

11 मुझे छुड़ा कर परदेसियों के हाथ से बचा, जिन
का मुँह झूट बोलता और दहना हाथ फ़रेब देता है।
12 हमारे बेटे जवानी में फलने फूलने वाले पौदों की
मानिन्द हों, हमारी बेटियाँ महल को सजाने के लिए
तराशे हुए कोने के सतून की मानिन्द हों।

13 हमारे गोदाम भरे रहें और हर क़िस्म की ख़ुराक
मुहय्या करें। हमारी भेड़-बकरियाँ हमारे मैदानों में
हज़ारों बल्कि बेशुमार बच्चे जन्म दें।
14 हमारे गाय-बैल मोटे-ताज़े हों, और न कोई ज़ाए
हो जाए, न किसी को नुक़्सान पहुँचे। हमारे चौकों में
आह-ओ-ज़ारी की आवाज़ सुनाई न दे।
15 मुबारक है वह क़ौम जिस पर यह सब कुछ
सादिक़ आता है, मुबारक है वह क़ौम जिस का ख़ुदा
रब है!

अल्लाह की अबदी शफ़क़त

145 1 दाऊद का ज़बूर। हम्द-ओ-सना का
गीत।
ऐ मेरे ख़ुदा, मैं तेरी ताज़ीम करूँगा। ऐ बादशाह, मैं
हमेशा तक तेरे नाम की सताइश करूँगा।
2 रोज़ाना मैं तेरी तम्जीद करूँगा, हमेशा तक तेरे
नाम की हम्द करूँगा।
3 रब अज़ीम और बड़ी तारीफ़ के लाइक़ है। उस
की अज़मत इन्सान की समझ से बाहर है।
4 एक पुश्त अगली पुश्त के सामने वह कुछ सराहे
जो तू ने किया है, वह दूसरों को तेरे ज़बरदस्त काम
सुनाएँ।
5 मैं तेरे शानदार जलाल की अज़मत और तेरे
मोजिज़ों में महव-ए-ख़याल रहूँगा।
6 लोग तेरे हैबतनाक कामों की क़ुदरत पेश करें,
और मैं भी तेरी अज़मत बयान करूँगा।
7 वह जोश से तेरी बड़ी भलाई को सराहें और ख़ुशी
से तेरी रास्ती की मद्हसराई करें।
8 रब मेहरबान और रहीम है। वह तहम्मुल और
शफ़क़त से भरपूर है।
9 रब सब के साथ भलाई करता है, वह अपनी
तमाम मख़्लूक़ात पर रहम करता है।

10 ऐ रब, तेरी तमाम मख़्लूक़ात तेरा शुक्र करें। तेरे
ईमानदार तेरी तम्जीद करें।
11 वह तेरी बादशाही के जलाल पर फ़ख़र करें और
तेरी क़ुदरत बयान करें
12 ताकि आदमज़ाद तेरे क़वी कामों और तेरी
बादशाही की जलाली शान-ओ-शौकत से आगाह हो
जाएँ।
13 तेरी बादशाही की कोई इन्तिहा नहीं, और तेरी
सल्तनत पुश्त-दर-पुश्त हमेशा तक क़ाइम रहेगी।

14 रब तमाम गिरने वालों का सहारा है। जो भी दब
जाए उसे वह उठा खड़ा करता है।
15 सब की आँखें तेरे इन्तिज़ार में रहती हैं, और तू
हर एक को वक़्त पर उस का खाना मुहय्या करता
है।
16 तू अपनी मुट्ठी खोल कर हर जानदार की
ख़्वाहिश पूरी करता है।
17 रब अपनी तमाम राहों में रास्त और अपने तमाम
कामों में वफ़ादार है।
18 रब उन सब के क़रीब है जो उसे पुकारते हैं, जो
दयानतदारी से उसे पुकारते हैं।
19 जो उस का ख़ौफ़ मानें उन की आर्ज़ू वह पूरी
करता है। वह उन की फ़र्यादें सुन कर उन की मदद
करता है।
20 रब उन सब को महफ़ूज़ रखता है जो उसे प्यार
करते हैं, लेकिन बेदीनों को वह हलाक करता है।

21 मेरा मुँह रब की तारीफ़ बयान करे, तमाम
मख़्लूक़ात हमेशा तक उस के मुक़द्दस नाम की
सताइश करें।

अल्लाह की अबदी वफ़ादारी

146 1 रब की हम्द हो! ऐ मेरी जान, रब की
हम्द कर।
2 जीते जी मैं रब की सताइश करूँगा, उम्र भर अपने
ख़ुदा की मद्हसराई करूँगा।

3 शुरफ़ा पर भरोसा न रखो, न आदमज़ाद पर जो
नजात नहीं दे सकता।
4 जब उस की रूह निकल जाए तो वह दुबारा ख़ाक
में मिल जाता है, उसी वक़्त उस के मन्सूबे अधूरे रह
जाते हैं।

5 मुबारक है वह जिस का सहारा याक़ूब का ख़ुदा
है, जो रब अपने ख़ुदा के इन्तिज़ार में रहता है।
6 क्यूँकि उस ने आसमान-ओ-ज़मीन, समुन्दर और
जो कुछ उन में है बनाया है। वह हमेशा तक वफ़ादार
है।
7 वह मज़्लूमों का इन्साफ़ करता और भूकों को
रोटी खिलाता है। रब क़ैदियों को आज़ाद करता है।
8 रब अंधों की आँखें बहाल करता और ख़ाक में
दबे हुओं को उठा खड़ा करता है, रब रास्तबाज़ को
प्यार करता है।
9 रब परदेसियों की देख-भाल करता, यतीमों और
बेवाओं को क़ाइम रखता है। लेकिन वह बेदीनों की
राह को टेढ़ा बना कर कामयाब होने नहीं देता।

10 रब अबद तक हुकूमत करेगा। ऐ सिय्यून, तेरा
ख़ुदा पुश्त-दर-पुश्त बादशाह रहेगा। रब की हम्द हो।

काइनात और तारीख़ में रब का बन्द-ओ-बस्त

147 1 रब की हम्द हो! अपने ख़ुदा की
मद्हसराई करना कितना भला है, उस
की तम्जीद करना कितना प्यारा और ख़ूबसूरत है।
2 रब यरूशलम को तामीर करता और इस्राईल के
मुन्तशिर जिलावतनों को जमा करता है।
3 वह दिलशिकस्तों को शिफ़ा दे कर उन के ज़ख़्मों
पर मर्हम-पट्टी लगाता है।
4 वह सितारों की तादाद गिन लेता और हर एक
का नाम ले कर उन्हें बुलाता है।
5 हमारा रब अज़ीम है, और उस की क़ुदरत
ज़बरदस्त है। उस की हिक्मत की कोई इन्तिहा नहीं।
6 रब मुसीबतज़दों को उठा खड़ा करता लेकिन
बदकारों को ख़ाक में मिला देता है।

7 रब की तम्जीद में शुक्र का गीत गाओ, हमारे ख़ुदा
की ख़ुशी में सरोद बजाओ।
8 क्यूँकि वह आसमान पर बादल छाने देता, ज़मीन
को बारिश मुहय्या करता और पहाड़ों पर घास फूटने
देता है।
9 वह मवेशी को चारा और कव्वे के बच्चों को वह
कुछ खिलाता है जो वह शोर मचा कर माँगते हैं।

10 न वह घोड़े की ताक़त से लुत्फ़अन्दोज़ होता, न
आदमी की मज़बूत टाँगों से ख़ुश होता है।
11 रब उन ही से ख़ुश होता है जो उस का ख़ौफ़
मानते और उस की शफ़क़त के इन्तिज़ार में रहते हैं।

12 ऐ यरूशलम, रब की मद्हसराई कर! ऐ सिय्यून,
अपने ख़ुदा की हम्द कर!
13 क्यूँकि उस ने तेरे दरवाज़ों के कुंडे मज़बूत करके
तेरे दरमियान बसने वाली औलाद को बरकत दी है।
14 वही तेरे इलाक़े में अम्न और सुकून क़ाइम रखता
और तुझे बेहतरीन गन्दुम से सेर करता है।
15 वह अपना फ़रमान ज़मीन पर भेजता है तो उस
का कलाम तेज़ी से पहुँचता है।
16 वह ऊन जैसी बर्फ़ मुहय्या करता और पाला राख
की तरह चारों तरफ़ बिखेर देता है।
17 वह अपने ओले कंकरों की तरह ज़मीन पर फैंक
देता है। कौन उस की शदीद सर्दी बर्दाश्त कर सकता
है?
18 वह एक बार फिर अपना फ़रमान भेजता है तो
बर्फ़ पिघल जाती है। वह अपनी हवा चलने देता है
तो पानी टपकने लगता है।

19 उस ने याक़ूब को अपना कलाम सुनाया,
इस्राईल पर अपने अह्काम और आईन ज़ाहिर किए
हैं।

20 ऐसा सुलूक उस ने किसी और क़ौम से नहीं
किया। दीगर अक़्वाम तो तेरे अह्काम नहीं जानतीं।
रब की हम्द हो!

आसमान-ओ-ज़मीन पर अल्लाह की तम्जीद

148 1 रब की हम्द हो! आसमान से रब की
सताइश करो, बुलन्दियों पर उस की
तम्जीद करो!
2 ऐ उस के तमाम फ़रिश्तो, उस की हम्द करो! ऐ
उस के तमाम लश्करो, उस की तारीफ़ करो!
3 ऐ सूरज और चाँद, उस की हम्द करो! ऐ तमाम
चमकदार सितारो, उस की सताइश करो!
4 ऐ बुलन्दतरीन आसमानो और आसमान के ऊपर
के पानी, उस की हम्द करो!

5 वह रब के नाम की सताइश करें, क्यूँकि उस ने
फ़रमाया तो वह वुजूद में आए।
6 उस ने नाक़ाबिल-ए-मन्सूख़ फ़रमान जारी करके
उन्हें हमेशा के लिए क़ाइम किया है।

7 ऐ समुन्दर के अज़दहाओ और तमाम गहराइयो,
ज़मीन से रब की तम्जीद करो!
8 ऐ आग, ओलो, बर्फ़, धुन्द और उस के हुक्म पर
चलने वाली आँधियो, उस की हम्द करो!
9 ऐ पहाड़ो और पहाड़ियो, फलदार दरख़्तो और
तमाम देवदारो, उस की तारीफ़ करो!
10 ऐ जंगली जानवरो, मवीशियो, रेंगने वाली
मख़्लूक़ात और परनदो, उस की हम्द करो!
11 ऐ ज़मीन के बादशाहो और तमाम क़ौमो, सरदारो
और ज़मीन के तमाम हुक्मरानो, उस की तम्जीद
करो!
12 ऐ नौजवानो और कुंवारियो, बुज़ुर्गो और बच्चो,
उस की हम्द करो!
13 सब रब के नाम की सताइश करें, क्यूँकि सिर्फ़
उसी का नाम अज़ीम है, उस की अज़मत आसमान-
ओ-ज़मीन से आला है।
14 उस ने अपनी क़ौम को सरफ़राज़ करके
[e]अपने तमाम ईमानदारों की शुहरत बढ़ाई है, यानी
इस्राईलियों की शुहरत, उस क़ौम की जो उस के
क़रीब रहती है। रब की हम्द हो!

सिय्यून रब की हम्द करे!

149 1 रब की हम्द हो! रब की तम्जीद
में नया गीत गाओ, ईमानदारों की
जमाअत में उस की तारीफ़ करो।
2 इस्राईल अपने ख़ालिक़ से ख़ुश हो, सिय्यून के
फ़र्ज़न्द अपने बादशाह की ख़ुशी मनाएँ।
3 वह नाच कर उस के नाम की सताइश करें, दफ़
और सरोद से उस की मद्हसराई करें।

4 क्यूँकि रब अपनी क़ौम से ख़ुश है। वह
मुसीबतज़दों को अपनी नजात की शान-ओ-शौकत
से आरास्ता करता है।
5 ईमानदार इस शान-ओ-शौकत के बाइस ख़ुशी
मनाएँ, वह अपने बिस्तरों पर शादमानी के नारे
लगाएँ।
6 उन के मुँह में अल्लाह की हम्द-ओ-सना और उन
के हाथों में दोधारी तलवार हो
7 ताकि दीगर अक़्वाम से इन्तिक़ाम लें और उम्मतों
को सज़ा दें।
8 वह उन के बादशाहों को ज़न्जीरों में और उन के
शुरफ़ा को बेड़ियों में जकड़ लेंगे
9 ताकि उन्हें वह सज़ा दें जिस का फ़ैसला
क़लमबन्द हो चुका है। यह इज़्ज़त अल्लाह के तमाम
ईमानदारों को हासिल है। रब की हम्द हो!

---

[e]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अपनी क़ौम का सींग बुलन्द करके।

रब की हम्द-ओ-सना

150 1 रब की हम्द हो! अल्लाह के मक़्दिस में
उस की सताइश करो। उस की क़ुदरत
के बने हुए आसमानी गुम्बद में उस की तम्जीद करो।
2 उस के अज़ीम कामों के बाइस उस की हम्द करो।
उस की ज़बरदस्त अज़मत के बाइस उस की सताइश
करो।
3 नरसिंगा फूँक कर उस की हम्द करो, सितार और
सरोद बजा कर उस की तम्जीद करो।
4 दफ़ और लोकनाच से उस की हम्द करो। तारदार
साज़ और बाँसरी बजा कर उस की सताइश करो।
5 झाँझों की झंकारती आवाज़ से उस की हम्द करो,
गूँजती झाँझ से उस की तारीफ़ करो।
6 जिस में भी साँस है वह रब की सताइश करे। रब
की हम्द हो!।

अम्साल

किताब का मक़्सद

1 1 ज़ैल में इस्राईल के बादशाह सुलेमान बिन
दाऊद की अम्साल क़लमबन्द हैं।
2 इन से तू हिक्मत और तर्बियत हासिल करेगा,
बसीरत के अल्फ़ाज़ समझने के क़ाबिल हो
जाएगा, 3 और दानाई दिलाने वाली तर्बियत, रास्ती,
इन्साफ़ और दयानतदारी अपनाएगा। 4 यह अम्साल
सादालौह को होश्यारी और नौजवान को इल्म और
तमीज़ सिखाती हैं। 5 जो दाना है वह सुन कर अपने
इल्म में इज़ाफ़ा करे, जो समझदार है वह राहनुमाई
करने का फ़न सीख ले। 6 तब वह अम्साल और
तम्सीलें, दानिशमन्दों की बातें और उन के मुअम्मे
समझ लेगा।
7 हिक्मत इस से शुरू होती है कि हम रब का ख़ौफ़
मानें। सिर्फ़ अहमक़ हिक्मत और तर्बियत को हक़ीर
जानते हैं।

ग़लत साथियों से ख़बरदार

8 मेरे बेटे, अपने बाप की तर्बियत के ताबे रह,
और अपनी माँ की हिदायत मुस्तरद न कर। 9 क्यूँकि
यह तेरे सर पर दिलकश सेहरा और तेरे गले में
गुलूबन्द हैं। 10 मेरे बेटे, जब ख़ताकार तुझे फुसलाने
की कोशिश करें तो उन के पीछे न हो ले। 11 उन की
बात न मान जब वह कहें, "आ, हमारे साथ चल! हम
ताक में बैठ कर किसी को क़त्ल करें, बिलावजह
किसी बेक़ुसूर की घात लगाएँ। 12 हम उन्हें पाताल
की तरह ज़िन्दा निगल लें, उन्हें मौत के गढ़े में उतरने
वालों की तरह एक दम हड़प कर लें। 13 हम हर
क़िस्म की क़ीमती चीज़ हासिल करेंगे, अपने घरों
को लूट के माल से भर लेंगे। 14 आ, जुरअत करके
हम में शरीक हो जा, हम लूट का तमाम माल बराबर
तक़्सीम करेंगे।"
15 मेरे बेटे, उन के साथ मत जाना, अपना पाँओ
उन की राहों पर रखने से रोक लेना। 16 क्यूँकि उन के
पाँओ ग़लत काम के पीछे दौड़ते, ख़ून बहाने के लिए
भागते हैं। 17 जब चिड़ीमार अपना जाल लगा कर उस
पर परिन्दों को फाँसने के लिए रोटी के टुकड़े बिखेर
देता है तो परिन्दों की नज़र में यह बेमक़्सद है। 18 यह
लोग भी एक दिन फंस जाएंगे। जब ताक में बैठ जाते
हैं तो अपने आप को तबाह करते हैं, जब दूसरों की
घात लगाते हैं तो अपनी ही जान को नुक़्सान पहुँचाते
हैं। 19 यही उन सब का अन्जाम है जो नारवा नफ़ा के
पीछे भागते हैं। नाजाइज़ नफ़ा अपने मालिक की जान
छीन लेता है।

हिक्मत की पुकार

20 हिक्मत गली में ज़ोर से आवाज़ देती, चौकों
में बुलन्द आवाज़ से पुकारती है। 21 जहाँ सब से
ज़्यादा शोर-शराबा है वहाँ वह चिल्ला चिल्ला कर
बोलती, शहर के दरवाज़ों पर ही अपनी तक़रीर
करती है, 22 "ऐ सादालौह लोगो, तुम कब तक
अपनी सादालौही से मुहब्बत रखोगे? मज़ाक़ उड़ाने
वाले कब तक अपने मज़ाक़ से लुत्फ़ उठाएँगे,
अहमक़ कब तक इल्म से नफ़रत करेंगे? 23 आओ,
मेरी सरज़निश पर ध्यान दो। तब मैं अपनी रूह का
चश्मा तुम पर फूटने दूँगी, तुम्हें अपनी बातें सुनाऊँगी।
24 लेकिन जब मैं ने आवाज़ दी तो तुम ने इन्कार
किया, जब मैं ने अपना हाथ तुम्हारी तरफ़ बढ़ाया
तो किसी ने भी तवज्जुह न दी। 25 तुम ने मेरे किसी
मश्वरे की पर्वा न की, मेरी मलामत तुम्हारे नज़्दीक
क़ाबिल-ए-क़बूल नहीं थी। 26 इस लिए जब तुम पर
आफ़त आएगी तो मैं क़हक़हा लगाऊँगी, जब तुम

हौलनाक मुसीबत में फंस जाओगे तो तुम्हारा मज़ाक़
उड़ाऊँगी। 27 उस वक़्त तुम पर दहशतनाक आँधी
टूट पड़ेगी, आफ़त तूफ़ान की तरह तुम पर आएगी,
और तुम मुसीबत और तक्लीफ़ के सैलाब में डूब
जाओगे। 28 तब वह मुझे आवाज़ देंगे, लेकिन मैं उन
की नहीं सुनूँगी, वह मुझे ढूँडेंगे पर पाएँगे नहीं।

29 क्यूँकि वह इल्म से नफ़रत करके रब का ख़ौफ़
मानने के लिए तय्यार नहीं थे। 30 मेरा मश्वरा उन्हें
क़बूल नहीं था बल्कि वह मेरी हर सरज़निश को
हक़ीर जानते थे। 31 चुनाँचे अब वह अपने चाल-
चलन का फल खाएँ, अपने मन्सूबों की फ़सल खा
खा कर सेर हो जाएँ।

32 क्यूँकि सहीह राह से दूर होने का अमल
सादालौह को मार डालता है, और अहमक़ों की
बेपर्वाई उन्हें तबाह करती है। 33 लेकिन जो मेरी सुने
वह सुकून से बसेगा, हौलनाक मुसीबत उसे परेशान
नहीं करेगी।”

हिक्मत की अहमियत

2 1 मेरे बेटे, मेरी बात क़बूल करके मेरे अहकाम
अपने दिल में महफ़ूज़ रख। 2 अपना कान
हिक्मत पर धर, अपना दिल समझ की तरफ़ माइल
कर। 3 बसीरत के लिए आवाज़ दे, चिल्ला कर समझ
माँग। 4 उसे यूँ तलाश कर गोया चाँदी हो, उस का
यूँ खोज लगा गोया पोशीदा ख़ज़ाना हो। 5 अगर तू
ऐसा करे तो तुझे रब के ख़ौफ़ की समझ आएगी
और अल्लाह का इर्फ़ान हासिल होगा। 6 क्यूँकि रब
ही हिक्मत अता करता, उसी के मुँह से इर्फ़ान और
समझ निकलती है। 7 वह सीधी राह पर चलने वालों
को कामयाबी फ़राहम करता और बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी
गुज़ारने वालों की ढाल बना रहता है। 8 क्यूँकि वह
इन्साफ़ पसन्दों की राहों की पहरादारी करता है।
जहाँ भी उस के ईमानदार चलते हैं वहाँ वह उन की
हिफ़ाज़त करता है।

9 तब तुझे रास्ती, इन्साफ़, दयानतदारी और हर
अच्छी राह की समझ आएगी। 10 क्यूँकि तेरे दिल में
हिक्मत दाख़िल हो जाएगी, और इल्म-ओ-इर्फ़ान तेरी
जान को प्यारा हो जाएगा। 11 तमीज़ तेरी हिफ़ाज़त
और समझ तेरी चौकीदारी करेगी। 12 हिक्मत तुझे
ग़लत राह और कजरौ बातें करने वाले से बचाए
रखेगी। 13 ऐसे लोग सीधी राह को छोड़ देते हैं ताकि
तारीक रास्तों पर चलें, 14 वह बुरी हरकतें करने से
ख़ुश हो जाते हैं, ग़लत काम की कजरवी देख कर
जश्न मनाते हैं। 15 उन की राहें टेढ़ी हैं, और वह जहाँ
भी चलें आवारा फिरते हैं।

16 हिक्मत तुझे नाजाइज़ औरत से छुड़ाती है, उस
अजनबी औरत से जो चिकनी-चुपड़ी बातें करती,
17 जो अपने जीवनसाथी को तर्क करके अपने ख़ुदा
का अहद भूल जाती है। 18 क्यूँकि उस के घर में
दाख़िल होने का अन्जाम मौत, उस की राहों की
मन्ज़िल-ए-मक़सूद पाताल है। 19 जो भी उस के पास
जाए वह वापस नहीं आएगा, वह ज़िन्दगीबख़्श राहों
पर दुबारा नहीं पहुँचेगा।

20 चुनाँचे अच्छे लोगों की राह पर चल फिर,
ध्यान दे कि तेरे क़दम रास्तबाज़ों के रास्ते पर रहें।
21 क्यूँकि सीधी राह पर चलने वाले मुल्क में आबाद
होंगे, आख़िरकार बेइल्ज़ाम ही उस में बाक़ी रहेंगे।
22 लेकिन बेदीन मुल्क से मिट जाएंगे, और बेवफ़ाओं
को उखाड़ कर मुल्क से ख़ारिज कर दिया जाएगा।

अल्लाह के ख़ौफ़ और हिक्मत की बरकत

3 1 मेरे बेटे, मेरी हिदायत मत भूलना। मेरे अहकाम
तेरे दिल में महफ़ूज़ रहें। 2 क्यूँकि इन ही से
तेरी ज़िन्दगी के दिनों और सालों में इज़ाफ़ा होगा
और तेरी ख़ुशहाली बढ़ेगी। 3 शफ़क़त और वफ़ा तेरा
दामन न छोड़ें। उन्हें अपने गले से बांधना, अपने दिल
की तख़्ती पर कन्दा करना। 4 तब तुझे अल्लाह और
इन्सान के सामने मेहरबानी और क़बूलियत हासिल
होगी।

5 पूरे दिल से रब पर भरोसा रख, और अपनी अक़्ल
पर तकिया न कर। 6 जहाँ भी तू चले सिर्फ़ उसी को
जान ले, फिर वह ख़ुद तेरी राहों को हमवार करेगा।
7 अपने आप को दानिशमन्द मत समझना बल्कि रब
का ख़ौफ़ मान कर बुराई से दूर रह। 8 इस से तेरा
बदन सेहत पाएगा और तेरी हड्डियाँ तर-ओ-ताज़ा
हो जाएँगी। 9 अपनी मिलकियत और अपनी तमाम
पैदावार के पहले फल से रब का एहतिराम कर,
10 फिर तेरे गोदाम अनाज से भर जाएंगे और तेरे बर्तन
मै से छलक उठेंगे।

11 मेरे बेटे, रब की तर्बियत को रद्द न कर, जब वह
तुझे डाँटे तो रंजीदा न हो। 12 क्यूँकि जो रब को प्यारा
है उस की वह तादीब करता है, जिस तरह बाप उस
बेटे को तम्बीह करता है जो उसे पसन्द है।

हक़ीक़ी दौलत

13 मुबारक है वह जो हिक्मत पाता है, जिसे समझ
हासिल होती है। 14 क्यूँकि हिक्मत चाँदी से कहीं
ज़्यादा सूदमन्द है, और उस से सोने से कहीं ज़्यादा
क़ीमती चीज़ें हासिल होती हैं। 15 हिक्मत मोतियों से
ज़्यादा नफ़ीस है, तेरे तमाम ख़ज़ाने उस का मुक़ाबला
नहीं कर सकते। 16 उस के दहने हाथ में उम्र की
दराज़ी और बाएँ हाथ में दौलत और इज़्ज़त है। 17 उस
की राहें ख़ुशगवार, उस के तमाम रास्ते पुरअम्न हैं।
18 जो उस का दामन पकड़ ले उस के लिए वह
ज़िन्दगी का दरख़्त है। मुबारक है वह जो उस से
लिपटा रहे। 19 रब ने हिक्मत के वसीले से ही ज़मीन
की बुन्याद रखी, समझ के ज़रीए ही आसमान को
मज़बूती से लगाया। 20 उस के इर्फ़ान से ही गहराइयों
का पानी फूट निकला और आसमान से शबनम टपक
कर ज़मीन पर पड़ती है।

21 मेरे बेटे, दानाई और तमीज़ अपने पास महफ़ूज़
रख और उन्हें अपनी नज़र से दूर न होने दे। 22 उन
से तेरी जान तर-ओ-ताज़ा और तेरा गला आरास्ता
रहेगा। 23 तब तू चलते वक़्त महफ़ूज़ रहेगा, और
तेरा पाँओ ठोकर नहीं खाएगा। 24 तू पाँओ फैला कर
सो सकेगा, कोई सदमा तुझे नहीं पहुँचेगा बल्कि तू
लेट कर गहरी नींद सोएगा। 25 नागहाँ आफ़त से मत
डरना, न उस तबाही से जो बेदीन पर ग़ालिब आती
है, 26 क्यूँकि रब पर तेरा एतिमाद है, वही तेरे पाँओ
को फंस जाने से महफ़ूज़ रखेगा।

दूसरों की मदद करने की नसीहत

27 अगर कोई ज़रूरतमन्द हो और तू उस की मदद
कर सके तो उस के साथ भलाई करने से इन्कार न
कर। 28 अगर तू आज कुछ दे सके तो अपने पड़ोसी
से मत कहना, "कल आना तो मैं आप को कुछ दे
दूँगा।" 29 जो पड़ोसी बेफ़िक्र तेरे साथ रहता है उस
के ख़िलाफ़ बुरे मन्सूबे मत बांधना। 30 जिस ने तुझे
नुक़्सान नहीं पहुँचाया अदालत में उस पर बेबुन्याद
इल्ज़ाम न लगाना।

31 न ज़ालिम से हसद कर, न उस की कोई राह
इख़्तियार कर। 32 क्यूँकि बुरी राह पर चलने वाले से
रब घिन खाता है जबकि सीधी राह पर चलने वालों
को वह अपने राज़ों से आगाह करता है। 33 बेदीन
के घर पर रब की लानत आती जबकि रास्तबाज़
के घर को वह बरकत देता है। 34 मज़ाक़ उड़ाने
वालों का वह मज़ाक़ उड़ाता, लेकिन फ़रोतनों पर
मेहरबानी करता है। 35 दानिशमन्द मीरास में इज़्ज़त
पाएँगे जबकि अहमक़ के नसीब में शर्मिन्दगी होगी।

बाप की नसीहत

4 1 ऐ बेटो, बाप की नसीहत सुनो, ध्यान दो ताकि
तुम सीख कर समझ हासिल कर सको। 2 मैं
तुम्हें अच्छी तालीम देता हूँ, इस लिए मेरी हिदायत
को तर्क न करो। 3 मैं अभी अपने बाप के घर में
नाज़ुक लड़का था, अपनी माँ का वाहिद बच्चा, 4 तो
मेरे बाप ने मुझे तालीम दे कर कहा,

"पूरे दिल से मेरे अल्फ़ाज़ अपना ले और हर वक़्त
मेरे अह्काम पर अमल कर तो तू जीता रहेगा।
5 हिक्मत हासिल कर, समझ अपना ले! यह चीज़ें मत
भूलना, मेरे मुँह के अल्फ़ाज़ से दूर न होना। 6 हिक्मत

तर्क न कर तो वह तुझे महफ़ूज़ रखेगी। उस से
मुहब्बत रख तो वह तेरी देख-भाल करेगी। 7 हिक्मत
इस से शुरू होती है कि तू हिक्मत अपना ले।
समझ हासिल करने के लिए बाक़ी तमाम मिलकियत
क़ुर्बान करने के लिए तय्यार हो। 8 उसे अज़ीज़ रख
तो वह तुझे सरफ़राज़ करेगी, उसे गले लगा तो वह
तुझे इज़्ज़त बख़्शेगी। 9 तब वह तेरे सर को ख़ूबसूरत
सेहरे से आरास्ता करेगी और तुझे शानदार ताज से
नवाज़ेगी।”

10 मेरे बेटे, मेरी सुन! मेरी बातें अपना ले तो तेरी
उम्र दराज़ होगी। 11 मैं तुझे हिक्मत की राह पर चलने
की हिदायत देता, तुझे सीधी राहों पर फिरने देता हूँ।
12 जब तू चलेगा तो तेरे क़दमों को किसी भी चीज़ से
रोका नहीं जाएगा, और दौड़ते वक़्त तू ठोकर नहीं
खाएगा। 13 तर्बियत का दामन थामे रह! उसे न छोड़
बल्कि महफ़ूज़ रख, क्यूँकि वह तेरी ज़िन्दगी है।

14 बेदीनों की राह पर क़दम न रख, शरीरों के रास्ते
पर मत जा। 15 उस से गुरेज़ कर, उस पर सफ़र न कर
बल्कि उस से कतरा कर आगे निकल जा। 16 क्यूँकि
जब तक उन से बुरा काम सरज़द न हो जाए वह सो
ही नहीं सकते, जब तक उन्हों ने किसी को ठोकर
खिला कर ख़ाक में मिला न दिया हो वह नींद से
महरूम रहते हैं। 17 वह बेदीनी की रोटी खाते और
ज़ुल्म की मै पीते हैं। 18 लेकिन रास्तबाज़ की राह
तुलू-ए-सुब्ह की पहली रौशनी की मानिन्द है जो दिन
के उरूज तक बढ़ती रहती है। 19 इस के मुक़ाबले में
बेदीन का रास्ता गहरी तारीकी की मानिन्द है, उन्हें
पता ही नहीं चलता कि किस चीज़ से ठोकर खा कर
गिर गए हैं।

20 मेरे बेटे, मेरी बातों पर ध्यान दे, मेरे अल्फ़ाज़ पर
कान धर। 21 उन्हें अपनी नज़र से ओझल न होने दे
बल्कि अपने दिल में महफ़ूज़ रख। 22 क्यूँकि जो यह
बातें अपनाएँ वह ज़िन्दगी और पूरे जिस्म के लिए
शिफ़ा पाते हैं। 23 तमाम चीज़ों से पहले अपने दिल
की हिफ़ाज़त कर, क्यूँकि यही ज़िन्दगी का सरचश्मा
है। 24 अपने मुँह से झूट और अपने होंटों से कजगोई
दूर कर। 25 ध्यान दे कि तेरी आँखें सीधा आगे की
तरफ़ देखें, कि तेरी नज़र उस रास्ते पर लगी रहे जो
सीधा है। 26 अपने पाँओ का रास्ता चलने के क़ाबिल
बना दे, ध्यान दे कि तेरी राहें मज़बूत हैं। 27 न दाईं, न
बाईं तरफ़ मुड़ बल्कि अपने पाँओ को ग़लत क़दम
उठाने से बाज़ रख।

ज़िनाकारी से ख़बरदार

5 1 मेरे बेटे, मेरी हिक्मत पर ध्यान दे, मेरी समझ
की बातों पर कान धर। 2 फिर तू तमीज़ का
दामन थामे रहेगा, और तेरे होंट इल्म-ओ-इर्फ़ान
महफ़ूज़ रखेंगे। 3 क्यूँकि ज़िनाकार औरत के होंटों
से शहद टपकता है, उस की बातें तेल की तरह
चिकनी-चुपड़ी होती हैं। 4 लेकिन अन्जाम में वह
ज़हर जैसी कड़वी और दोधारी तलवार जैसी तेज़
साबित होती है। 5 उस के पाँओ मौत की तरफ़ उतरते,
उस के क़दम पाताल की जानिब बढ़ते जाते हैं। 6 उस
के रास्ते कभी इधर कभी इधर फिरते हैं ताकि तू
ज़िन्दगी की राह पर तवज्जुह न दे और उस की
आवारगी को जान न ले।

7 चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो और मेरे मुँह की बातों
से दूर न हो जाओ। 8 अपने रास्ते उस से दूर रख, उस
के घर के दरवाज़े के क़रीब भी न जा। 9 ऐसा न हो
कि तू अपनी ताक़त किसी और के लिए सर्फ़ करे
और अपने साल ज़ालिम के लिए ज़ाए करे। 10 ऐसा
न हो कि परदेसी तेरी मिलकियत से सेर हो जाएँ, कि
जो कुछ तू ने मेहनत-मशक़्क़त से हासिल किया वह
किसी और के घर में आए। 11 तब आख़िरकार तेरा
बदन और गोश्त घुल जाएंगे, और तू आहें भर भर कर
12 कहेगा, “हाय, मैं ने क्यूँ तर्बियत से नफ़रत की, मेरे
दिल ने क्यूँ सरज़निश को हक़ीर जाना? 13 हिदायत
करने वालों की मैं ने न सुनी, अपने उस्तादों की बातों
पर कान न धरा। 14 जमाअत के दरमियान ही रहते
हुए मुझ पर ऐसी आफ़त आई कि मैं तबाही के दहाने
तक पहुँच गया हूँ।”

15 अपने ही हौज़ का पानी और अपने ही कुएँ से
फूटने वाला पानी पी ले। 16 क्या मुनासिब है कि
तेरे चश्मे गलियों में और तेरी नदियाँ चौकों में बह
निकलें? 17 जो पानी तेरा अपना है वह तुझ तक
मह्दूद रहे, अजनबी उस में शरीक न हो जाए। 18 तेरा
चश्मा मुबारक हो। हाँ, अपनी बीवी से ख़ुश रह।
19 वही तेरी मनमोहन हिरनी और दिलरुबा ग़ज़ाल
[f]है। उसी का प्यार तुझे तर-ओ-ताज़ा करे, उसी की
मुहब्बत तुझे हमेशा मस्त रखे।
20 मेरे बेटे, तू अजनबी औरत से क्यूँ मस्त हो जाए,
किसी दूसरे की बीवी से क्यूँ लिपट जाए? 21 ख़याल
रख, इन्सान की राहें रब को साफ़ दिखाई देती हैं,
जहाँ भी वह चले उस पर वह तवज्जुह देता है।
22 बेदीन की अपनी ही हरकतें उसे फंसा देती हैं, वह
अपने ही गुनाह के रस्सों में जकड़ा रहता है। 23 वह
तर्बियत की कमी के सबब से हलाक हो जाएगा,
अपनी बड़ी हमाक़त के बाइस डगमगाते हुए अपने
अन्जाम को पहुँचेगा।

ज़मानत देने, काहिली और झूट से ख़बरदार

6 1 मेरे बेटे, क्या तू अपने पड़ोसी का ज़ामिन बना
है? क्या तू ने हाथ मिला कर वादा किया है
कि मैं किसी दूसरे का ज़िम्मादार ठहरूँगा? 2 क्या तू
अपने वादे से बंधा हुआ, अपने मुँह के अल्फ़ाज़ से
फंसा हुआ है? 3 ऐसा करने से तू अपने पड़ोसी के
हाथ में आ गया है, इस लिए अपनी जान को छुड़ाने
के लिए उस के सामने औंधे मुँह हो कर उसे अपनी
मिन्नत-समाजत से तंग कर। 4 अपनी आँखों को सोने
न दे, अपने पपोटों को ऊँघने न दे जब तक तू इस
ज़िम्मादारी से फ़ारिग़ न हो जाए। 5 जिस तरह ग़ज़ाल
शिकारी के हाथ से और परिन्दा चिड़ीमार के हाथ से
छूट जाता है उसी तरह सिरतोड़ कोशिश कर ताकि
तेरी जान छूट जाए।
6 ऐ काहिल, चियूँटी के पास जा कर उस की राहों
पर ग़ौर कर! उस के नमूने से हिक्मत सीख ले। 7 उस
पर न सरदार, न अफ़्सर या हुक्मरान मुक़र्रर है, 8 तो
भी वह गर्मियों में सर्दियों के लिए खाने का ज़ख़ीरा
कर रखती, फ़सल के दिनों में ख़ूब ख़ुराक इकट्ठी
करती है। 9 ऐ काहिल, तू मज़ीद कब तक सोया
रहेगा, कब जाग उठेगा? 10 तू कहता है, "मुझे थोड़ी
देर सोने दे, थोड़ी देर ऊँघने दे, थोड़ी देर हाथ पर
हाथ धरे बैठने दे ताकि आराम कर सकूँ।" 11 लेकिन
ख़बरदार, जल्द ही ग़ुर्बत राहज़न की तरह तुझ पर
आएगी, मुफ़लिसी हथियार से लेस डाकू की तरह
तुझ पर टूट पड़ेगी।
12 बदमआश और कमीना किस तरह पहचाना
जाता है? वह मुँह में झूट लिए फिरता है, 13 अपनी
आँखों, पाँओ और उंगलियों से इशारा करके तुझे
फ़रेब के जाल में फंसाने की कोशिश करता है। 14 उस
के दिल में कजी है, और वह हर वक़्त बुरे मन्सूबे
बांधने में लगा रहता है। जहाँ भी जाए वहाँ झगड़े
छिड़ जाते हैं। 15 लेकिन ऐसे शख़्स पर अचानक ही
आफ़त आएगी। एक ही लम्हे में वह पाश पाश हो
जाएगा। तब उस का इलाज नामुमकिन होगा।
16 रब छः चीज़ों से नफ़रत बल्कि सात चीज़ों से
घिन खाता है,
17 वह आँखें जो ग़ुरूर से देखती हैं, वह ज़बान जो
झूट बोलती है, वह हाथ जो बेगुनाहों को क़त्ल करते
हैं, 18 वह दिल जो बुरे मन्सूबे बांधता है, वह पाँओ जो
दूसरों को नुक़्सान पहुँचाने के लिए भागते हैं, 19 वह
गवाह जो अदालत में झूट बोलता और वह जो भाइयों
में झगड़ा पैदा करता है।

ज़िना करने से ख़बरदार

20 मेरे बेटे, अपने बाप के हुक्म से लिपटा रह,
और अपनी माँ की हिदायत नज़रअन्दाज़ न कर।
21 उन्हें यूँ अपने दिल के साथ बांधे रख कि कभी

[f]लफ़्ज़ी तर्जुमा : पहाड़ी बकरी।

दूर न हो जाएँ। उन्हें हार की तरह अपने गले में डाल
ले। 22 चलते वक़्त वह तेरी राहनुमाई करें, आराम
करते वक़्त तेरी पहरादारी करें, जागते वक़्त तुझ से
हमकलाम हों। 23 क्यूँकि बाप का हुक्म चराग़ और
माँ की हिदायत रौशनी है, तर्बियत की डाँट-डपट
ज़िन्दगीबख़्श राह है। 24 यूँ तू बदकार औरत और
दूसरे की ज़िनाकार बीवी की चिकनी-चुपड़ी बातों
से महफ़ूज़ रहेगा। 25 दिल में उस के हुस्न का लालच
न कर, ऐसा न हो कि वह पलक मार मार कर तुझे
पकड़ ले। 26 क्यूँकि गो कस्बी आदमी को उस के
पैसे से महरूम करती है, लेकिन दूसरे की ज़िनाकार
बीवी उस की क़ीमती जान का शिकार करती है।

27 क्या इन्सान अपनी झोली में भड़कती आग यूँ
उठा कर फिर सकता है कि उस के कपड़े न जलें?
28 या क्या कोई दहकते कोएलों पर यूँ फिर सकता
है कि उस के पाँओ झुलस न जाएँ? 29 इसी तरह जो
किसी दूसरे की बीवी से हमबिसतर हो जाए उस का
अन्जाम बुरा है, जो भी दूसरे की बीवी को छेड़े उसे
सज़ा मिलेगी। 30 जो भूक के मारे अपना पेट भरने के
लिए चोरी करे उसे लोग हद से ज़्यादा हक़ीर नहीं
जानते, 31 हालाँकि उसे चोरी किए हुए माल को सात
गुना वापस करना है और उस के घर की दौलत जाती
रहेगी। 32 लेकिन जो किसी दूसरे की बीवी के साथ
ज़िना करे वह बेअक़्ल है। जो अपनी जान को तबाह
करना चाहे वही ऐसा करता है। 33 उस की पिटाई
और बेइज़्ज़ती की जाएगी, और उस की शर्मिन्दगी
कभी नहीं मिटेगी। 34 क्यूँकि शौहर ग़ैरत खा कर और
तैश में आ कर बेरहमी से बदला लेगा। 35 न वह
कोई मुआवज़ा क़बूल करेगा, न रिश्वत लेगा, ख़्वाह
कितनी ज़्यादा क्यूँ न हो।

बेवफ़ा बीवी

7 1 मेरे बेटे, मेरे अल्फ़ाज़ की पैरवी कर, मेरे
अहकाम अपने अन्दर महफ़ूज़ रख। 2 मेरे
अहकाम के ताबे रह तो जीता रहेगा। अपनी आँख
की पुतली की तरह मेरी हिदायत की हिफ़ाज़त कर।
3 उन्हें अपनी उंगली के साथ बांध, अपने दिल की
तख़्ती पर कन्दा कर। 4 हिक्मत से कह, "तू मेरी बहन
है," और समझ से, "तू मेरी क़रीबी रिश्तेदार है।"
5 यही तुझे ज़िनाकार औरत से महफ़ूज़ रखेंगी, दूसरे
की उस बीवी से जो अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से
तुझे फुसलाने की कोशिश करती है।

6 एक दिन मैं ने अपने घर की खिड़की [8] में से बाहर
झाँका 7 तो क्या देखता हूँ कि वहाँ कुछ सादालौह
नौजवान खड़े हैं। उन में से एक बेअक़्ल जवान नज़र
आया। 8 वह गली में से गुज़र कर ज़िनाकार औरत
के कोने की तरफ़ टहलने लगा। चलते चलते वह
उस रास्ते पर आ गया जो औरत के घर तक ले जाता
है। 9 शाम का धुन्दल्का था, दिन ढलने और रात का
अंधेरा छाने लगा था। 10 तब एक औरत कस्बी का
लिबास पहने हुए चालाकी से उस से मिलने आई।
11 यह औरत इतनी बेलगाम और ख़ुदसर है कि उस
के पाँओ उस के घर में नहीं टिकते। 12 कभी वह गली
में, कभी चौकों में होती है, हर कोने पर वह ताक में
बैठी रहती है।

13 अब उस ने नौजवान को पकड़ कर उसे बोसा
दिया। बेहया नज़र उस पर डाल कर उस ने कहा,
14 "मुझे सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश करनी थीं, और
आज ही मैं ने अपनी मन्नतें पूरी कीं। 15 इस लिए मैं
निकल कर तुझ से मिलने आई, मैं ने तेरा पता किया
और अब तू मुझे मिल गया है। 16 मैं ने अपने बिस्तर
पर मिस्र के रंगीन कम्बल बिछाए, 17 उस पर मुर,
ऊद और दारचीनी की ख़ुश्बू छिड़की है। 18 आओ,
हम सुब्ह तक मुहब्बत का प्याला तह तक पी लें,
हम इश्क़बाज़ी से लुत्फ़अन्दोज़ हों! 19 क्यूँकि मेरा
ख़ावन्द घर में नहीं है, वह लम्बे सफ़र के लिए रवाना
हुआ है। 20 वह बटवे में पैसे डाल कर चला गया है
और पूरे चाँद तक वापस नहीं आएगा।"

---

[8] लफ़्ज़ी तर्जुमा : घर की खिड़की के जंगले।

21 ऐसी बातें करते करते औरत ने नौजवान को
तरग़ीब दे कर अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से
वरग़लाया। 22 नौजवान सीधा उस के पीछे यूँ हो
लिया जिस तरह बैल ज़बह होने के लिए जाता या
हिरन उछल कर फंदे में फंस जाता है। 23 क्यूँकि एक
वक़्त आएगा कि तीर उस का दिल चीर डालेगा।
लेकिन फ़िलहाल उस की हालत उस चिड़िया की
मानिन्द है जो उड़ कर जाल में आ जाती और ख़याल
तक नहीं करती कि मेरी जान ख़तरे में है।
24 चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो, मेरे मुँह की बातों पर
ध्यान दो! 25 तेरा दिल भटक कर उस तरफ़ रुख़
न करे जहाँ ज़िनाकार औरत फिरती है, ऐसा न हो
कि तू आवारा हो कर उस की राहों में उलझ जाए।
26 क्यूँकि उन की तादाद बड़ी है जिन्हें उस ने गिरा
कर मौत के घाट उतारा है, उस ने मुतअद्दिद लोगों
को मार डाला है। 27 उस का घर पाताल का रास्ता है
जो लोगों को मौत की कोठड़ियों तक पहुँचाता है।

हिक्मत की दावत और वादा

8 1 सुनो! क्या हिक्मत आवाज़ नहीं देती? हाँ,
समझ ऊँची आवाज़ से एलान करती है। 2 वह
बुलन्दियों पर खड़ी है, उस जगह जहाँ तमाम रास्ते
एक दूसरे से मिलते हैं। 3 शहर के दरवाज़ों पर जहाँ
लोग निकलते और दाख़िल होते हैं वहाँ हिक्मत
ज़ोरदार आवाज़ से पुकारती है,

4 "ऐ मर्दो, मैं तुम ही को पुकारती हूँ, तमाम
इन्सानों को आवाज़ देती हूँ।
5 ऐ सादालौहो, होश्यारी सीख लो! ऐ अहमक़ो,
समझ अपना लो!
6 सुनो, क्यूँकि मैं शराफ़त की बातें करती हूँ, और
मेरे होंट सच्चाई पेश करते हैं।
7 मेरा मुँह सच बोलता है, क्यूँकि मेरे होंट बेदीनी से
घिन खाते हैं।
8 जो भी बात मेरे मुँह से निकले वह रास्त है, एक
भी पेचदार या टेढ़ी नहीं है।
9 समझदार जानता है कि मेरी बातें सब दुरुस्त हैं,
इल्म रखने वाले को मालूम है कि वह सहीह हैं।
10 चाँदी की जगह मेरी तर्बियत और ख़ालिस सोने
के बजाय इल्म-ओ-इर्फ़ान अपना लो।
11 क्यूँकि हिक्मत मोतियों से कहीं बेहतर है, कोई
भी ख़ज़ाना उस का मुक़ाबला नहीं कर सकता।

12 मैं जो हिक्मत हूँ होश्यारी के साथ बसती हूँ, और
मैं तमीज़ का इल्म रखती हूँ।
13 जो रब का ख़ौफ़ मानता है वह बुराई से नफ़रत
करता है। मुझे ग़ुरूर, तकब्बुर, ग़लत चाल-चलन
और टेढ़ी बातों से नफ़रत है।
14 मेरे पास अच्छा मश्वरा और कामयाबी है। मेरा
दूसरा नाम समझ है, और मुझे क़ुव्वत हासिल है।
15 मेरे वसीले से बादशाह सल्तनत और हुक्मरान
रास्त फ़ैसले करते हैं।
16 मेरे ज़रीए रईस और शुरफ़ा बल्कि तमाम आदिल
मुन्सिफ़ हुकूमत करते हैं।
17 जो मुझे प्यार करते हैं उन्हें मैं प्यार करती हूँ,
और जो मुझे ढूँडते हैं वह मुझे पा लेते हैं।
18 मेरे पास इज़्ज़त-ओ-दौलत, शानदार माल और
रास्ती है।
19 मेरा फल सोने बल्कि ख़ालिस सोने से कहीं
बेहतर है, मेरी पैदावार ख़ालिस चाँदी पर सब्क़त
रखती है।
20 मैं रास्ती की राह पर ही चलती हूँ, वहीं जहाँ
इन्साफ़ है।
21 जो मुझ से मुहब्बत रखते हैं उन्हें मैं मीरास में
दौलत मुहय्या करती हूँ। उन के गोदाम भरे रहते हैं।

हिक्मत का तख़्लीक़ में हिस्सा

22 जब रब तख़्लीक़ का सिलसिला अमल में लाया
तो पहले उस ने मुझे ही बनाया। क़दीम ज़माने में मैं
उस के दीगर कामों से पहले ही वुजूद में आई।
23 मुझे अज़ल से मुक़र्रर किया गया, इब्तिदा ही से
जब दुनिया अभी पैदा नहीं हुई थी।

24 न समुन्दर की गहराइयाँ, न कस्रत से फूटने वाले
चश्मे थे जब मैं ने जन्म लिया।
25 न पहाड़ अपनी अपनी जगह पर क़ाइम हुए थे,
न पहाड़ियाँ थीं जब मैं पैदा हुई।
26 उस वक़्त अल्लाह ने न ज़मीन, न उस के मैदान,
और न दुनिया के पहले ढेले बनाए थे।
27 जब उस ने आसमान को उस की जगह पर
लगाया और समुन्दर की गहराइयों पर ज़मीन का
इलाक़ा मुक़र्रर किया तो मैं साथ थी।
28 जब उस ने आसमान पर बादलों और गहराइयों
में सरचश्मों का इन्तिज़ाम मज़बूत किया तो मैं साथ
थी।
29 जब उस ने समुन्दर की हद्दें मुक़र्रर कीं और हुक्म
दिया कि पानी उन से तजावुज़ न करे, जब उस ने
ज़मीन की बुन्यादें अपनी अपनी जगह पर रखीं
30 तो मैं माहिर कारीगर की हैसियत से उस के साथ
थी। रोज़-ब-रोज़ मैं लुत्फ़ का बाइस थी, हर वक़्त उस
के हुज़ूर रंगरलियाँ मनाती रही।
31 मैं उस की ज़मीन की सतह पर रंगरलियाँ मनाती
और इन्सान से लुत्फ़अन्दोज़ होती रही।

32 चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो, क्यूँकि मुबारक हैं वह
जो मेरी राहों पर चलते हैं।
33 मेरी तर्बियत मान कर दानिशमन्द बन जाओ, उसे
नज़रअन्दाज़ मत करना।
34 मुबारक है वह जो मेरी सुने, जो रोज़-ब-रोज़ मेरे
दरवाज़े पर चौकस खड़ा रहे, रोज़ाना मेरी चौखट पर
हाज़िर रहे।
35 क्यूँकि जो मुझे पाए वह ज़िन्दगी और रब की
मन्ज़ूरी पाता है।
36 लेकिन जो मुझे पाने से क़ासिर रहे वह अपनी
जान पर ज़ुल्म करता है, जो भी मुझ से नफ़रत करे
उसे मौत प्यारी है।”

हिक्मत की ज़ियाफ़त

9 1 हिक्मत ने अपना घर तामीर करके अपने लिए
सात सतून तराश लिए हैं।
2 अपने जानवरों को ज़बह करने और अपनी मै
तय्यार करने के बाद उस ने अपनी मेज़ बिछाई है।
3 अब उस ने अपनी नौकरानियों को भेजा है, और
ख़ुद भी लोगों को शहर की बुलन्दियों से ज़ियाफ़त
करने की दावत देती है,
4 “जो सादालौह है, वह मेरे पास आए।” नासमझ
लोगों से वह कहती है, 5 “आओ, मेरी रोटी खाओ,
वह मै पियो जो मैं ने तय्यार कर रखी है। 6 अपनी
सादालौह राहों से बाज़ आओ तो जीते रहोगे, समझ
की राह पर चल पड़ो।”

7 जो लान-तान करने वाले को तालीम दे उस की
अपनी रुस्वाई हो जाएगी, और जो बेदीन को डाँटे
उसे नुक़्सान पहुँचेगा। 8 लान-तान करने वाले की
मलामत न कर वर्ना वह तुझ से नफ़रत करेगा।
दानिशमन्द की मलामत कर तो वह तुझ से मुहब्बत
करेगा। 9 दानिशमन्द को हिदायत दे तो उस की
हिक्मत मज़ीद बढ़ेगी, रास्तबाज़ को तालीम दे तो
वह अपने इल्म में इज़ाफ़ा करेगा।
10 रब का ख़ौफ़ मानने से ही हिक्मत शुरू होती
है, क़ुद्दूस ख़ुदा को जानने से ही समझ हासिल होती
है। 11 मुझ से ही तेरी उम्र के दिनों और सालों में
इज़ाफ़ा होगा। 12 अगर तू दानिशमन्द हो तो ख़ुद इस
से फ़ाइदा उठाएगा, अगर लान-तान करने वाला हो
तो तुझे ही इस का नुक़्सान झेलना पड़ेगा।

हमाक़त बीबी की ज़ियाफ़त

13 हमाक़त बीबी बेलगाम और नासमझ है, वह
कुछ नहीं जानती। 14 उस का घर शहर की बुलन्दी
पर वाक़े है। दरवाज़े के पास कुर्सी पर बैठी 15 वह
गुज़रने वालों को जो सीधी राह पर चलते हैं ऊँची

आवाज़ से दावत देती है, 16 “जो सादालौह है वह
मेरे पास आए।”
जो नासमझ हैं उन से वह कहती है, 17 “चोरी का
पानी मीठा और पोशीदगी में खाई गई रोटी लज़ीज़
होती है।”
18 लेकिन उन्हें मालूम नहीं कि हमाक़त बीबी के
घर में सिर्फ़ मुर्दों की रूहें बसती हैं, कि उस के
मेहमान पाताल की गहराइयों में रहते हैं।

सुलेमान की हिक्मत भरी हिदायात

10 1 ज़ैल में सुलेमान की अम्साल क़लमबन्द
हैं।

ज़िन्दगीबख़्श बातें

दानिशमन्द बेटा अपने बाप को ख़ुशी दिलाता
जबकि अहमक़ बेटा अपनी माँ को दुख पहुँचाता
है।
2 ख़ज़ानों का कोई फ़ाइदा नहीं अगर वह बेदीन
तरीक़ों से जमा हो गए हों, लेकिन रास्तबाज़ी मौत से
बचाए रखती है।
3 रब रास्तबाज़ को भूके मरने नहीं देता, लेकिन
बेदीनों का लालच रोक देता है।
4 ढीले हाथ ग़ुर्बत और मेहनती हाथ दौलत की
तरफ़ ले जाते हैं।
5 जो गर्मियों में फ़सल जमा करता है वह दानिशमन्द
बेटा है जबकि जो फ़सल की कटाई के वक़्त सोया
रहता है वह वालिदैन के लिए शर्म का बाइस है।
6 रास्तबाज़ का सर बरकत के ताज से आरास्ता
रहता है जबकि बेदीनों के मुँह पर ज़ुल्म का पर्दा
पड़ा रहता है।
7 लोग रास्तबाज़ को याद करके उसे मुबारक कहते
हैं, लेकिन बेदीन का नाम सड़ कर मिट जाएगा।
8 जो दिल से दानिशमन्द है वह अह्काम क़बूल
करता है, लेकिन बकवासी तबाह हो जाएगा।
9 जिस का चाल-चलन बेइल्ज़ाम है वह सुकून से
ज़िन्दगी गुज़ारता है, लेकिन जो टेढ़ा रास्ता इख़्तियार
करे उसे पकड़ा जाएगा।
10 आँख मारने वाला दुख पहुँचाता है, और
बकवासी तबाह हो जाएगा।
11 रास्तबाज़ का मुँह ज़िन्दगी का सरचश्मा है,
लेकिन बेदीन के मुँह पर ज़ुल्म का पर्दा पड़ा रहता
है।
12 नफ़रत झगड़े छेड़ती रहती जबकि मुहब्बत
तमाम ख़ताओं पर पर्दा डाल देती है।
13 समझदार के होंटों पर हिक्मत पाई जाती है,
लेकिन नासमझ सिर्फ़ डंडे का पैग़ाम समझता है।
14 दानिशमन्द अपना इल्म मह्फ़ूज़ रखते हैं, लेकिन
अहमक़ का मुँह जल्द ही तबाही की तरफ़ ले जाता
है।
15 अमीर की दौलत क़िलाबन्द शहर है जिस में वह
मह्फ़ूज़ है जबकि ग़रीब की ग़ुर्बत उस की तबाही का
बाइस है।
16 जो कुछ रास्तबाज़ कमा लेता है वह ज़िन्दगी का
बाइस है, लेकिन बेदीन अपनी रोज़ी गुनाह करने के
लिए इस्तेमाल करता है।
17 जो तर्बियत क़बूल करे वह दूसरों को ज़िन्दगी
की राह पर लाता है, जो नसीहत नज़रअन्दाज़ करे
वह दूसरों को सहीह राह से दूर ले जाता है।
18 जो अपनी नफ़रत छुपाए रखे वह झूट बोलता है,
जो दूसरों के बारे में ग़लत ख़बरें फैलाए वह अहमक़
है।
19 जहाँ बहुत बातें की जाती हैं वहाँ गुनाह भी आ
मौजूद होता है, जो अपनी ज़बान को क़ाबू में रखे वह
दानिशमन्द है।
20 रास्तबाज़ की ज़बान उम्दा चाँदी है जबकि बेदीन
के दिल की कोई क़दर नहीं।

21 रास्तबाज़ की ज़बान बहुतों की परवरिश करती
है, [h]लेकिन अहमक़ अपनी बेअक़्ली के बाइस
हलाक हो जाते हैं।
22 रब की बरकत दौलत का बाइस है, हमारी
अपनी मेहनत-मशक़्क़त इस में इज़ाफ़ा नहीं करती।
23 अहमक़ ग़लत काम से अपना दिल बहलाता,
लेकिन समझदार हिक्मत से लुत्फ़अन्दोज़ होता है।
24 जिस चीज़ से बेदीन दहशत खाता है वही उस पर
आएगी, लेकिन रास्तबाज़ की आर्ज़ू पूरी हो जाएगी।
25 जब तूफ़ान आते हैं तो बेदीन का नाम-ओ-निशान
मिट जाता जबकि रास्तबाज़ हमेशा तक क़ाइम रहता
है।
26 जिस तरह दाँत सिरके से और आँखें धुएँ से तंग
आ जाती हैं उसी तरह वह तंग आ जाता है जो सुस्त
आदमी से काम करवाता है।
27 जो रब का ख़ौफ़ माने उस की ज़िन्दगी के दिनों
में इज़ाफ़ा होता है जबकि बेदीन की ज़िन्दगी वक़्त
से पहले ही ख़त्म हो जाती है।
28 रास्तबाज़ आख़िरकार ख़ुशी मनाएँगे, क्यूँकि उन
की उम्मीद बर आएगी। लेकिन बेदीनों की उम्मीद
जाती रहेगी।
29 रब की राह बेइल्ज़ाम शख़्स के लिए पनाहगाह,
लेकिन बदकार के लिए तबाही का बाइस है।
30 रास्तबाज़ कभी डाँवाँडोल नहीं होगा, लेकिन
बेदीन मुल्क में आबाद नहीं रहेंगे।
31 रास्तबाज़ का मुँह हिक्मत का फल लाता रहता
है, लेकिन कजगो ज़बान को काट डाला जाएगा।
32 रास्तबाज़ के होंट जानते हैं कि अल्लाह को क्या
पसन्द है, लेकिन बेदीन का मुँह टेढ़ी बातें ही जानता
है।

11 1 रब ग़लत तराज़ू से घिन खाता है, वह
सहीह तराज़ू ही से ख़ुश होता है।
2 जहाँ तकब्बुर है वहाँ बदनामी भी क़रीब ही रहती
है, लेकिन जो हलीम है उस के दामन में हिक्मत रहती
है।
3 सीधी राह पर चलने वालों की दयानतदारी
उन की राहनुमाई करती जबकि बेवफ़ाओं की
नमकहरामी उन्हें तबाह करती है।
4 ग़ज़ब के दिन दौलत का कोई फ़ाइदा नहीं जबकि
रास्तबाज़ी लोगों की जान को छुड़ाती है।
5 बेइल्ज़ाम की रास्तबाज़ी उस का रास्ता हमवार
बना देती है जबकि बेदीन की बुरी हरकतें उसे गिरा
देती हैं।
6 सीधी राह पर चलने वालों की रास्तबाज़ी उन्हें
छुड़ा देती जबकि बेवफ़ाओं का लालच उन्हें फंसा
देता है।
7 दम तोड़ते वक़्त बेदीन की सारी उम्मीद जाती
रहती है, जिस दौलत की तवक़्क़ो उस ने की वह
जाती रहती है।
8 रास्तबाज़ की जान मुसीबत से छूट जाती है, और
उस की जगह बेदीन फंस जाता है।
9 काफ़िर अपने मुँह से अपने पड़ोसी को तबाह
करता है, लेकिन रास्तबाज़ों का इल्म उन्हें छुड़ाता
है।
10 जब रास्तबाज़ कामयाब हों तो पूरा शहर जश्न
मनाता है, जब बेदीन हलाक हों तो ख़ुशी के नारे
बुलन्द हो जाते हैं।
11 सीधी राह पर चलने वालों की बरकत से शहर
तरक़्क़ी करता है, लेकिन बेदीन के मुँह से वह
मिस्मार हो जाता है।
12 नासमझ आदमी अपने पड़ोसी को हक़ीर जानता
है जबकि समझदार आदमी ख़ामोश रहता है।
13 तुहमत लगाने वाला दूसरों के राज़ फ़ाश करता
है, लेकिन क़ाबिल-ए-एतिमाद शख़्स वह भेद पोशीदा
रखता है जो उस के सपुर्द किया गया हो।

---

[h]लफ़्ज़ी तर्जुमा : रास्तबाज़ के होंट बहुतों को चराते हैं।

14 जहाँ क़ियादत की कमी है वहाँ क़ौम का
तनज़्ज़ुल यक़ीनी है, जहाँ मुशीरों की कस्रत है वहाँ
क़ौम फ़त्हयाब रहेगी।
15 जो अजनबी का ज़ामिन हो जाए उसे यक़ीनन
नुक़्सान पहुँचेगा, जो ज़ामिन बनने से इन्कार करे वह
महफ़ूज़ रहेगा।
16 नेक औरत इज़्ज़त से और ज़ालिम आदमी दौलत
से लिपटे रहते हैं।
17 शफ़ीक़ का अच्छा सुलूक उसी के लिए
फ़ाइदामन्द है जबकि ज़ालिम का बुरा सुलूक उसी
के लिए नुक़्सानदेह है।
18 जो कुछ बेदीन कमाता है वह फ़रेबदिह है,
लेकिन जो रास्ती का बीज बोए उस का अज्र यक़ीनी
है।
19 रास्तबाज़ी का फल ज़िन्दगी है जबकि बुराई के
पीछे भागने वाले का अन्जाम मौत है।
20 रब कजदिलों से घिन खाता है, वह बेइल्ज़ाम
राह पर चलने वालों ही से ख़ुश होता है।
21 यक़ीन करो, बदकार सज़ा से नहीं बचेगा जबकि
रास्तबाज़ों के फ़र्ज़न्द छूट जाएंगे।
22 जिस तरह सूअर की थूथनी में सोने का छल्ला
खटकता है उसी तरह ख़ूबसूरत औरत की बेतमीज़ी
खटकती है।
23 अल्लाह रास्तबाज़ों की आर्ज़ू अच्छी चीज़ों से पूरी
करता है, लेकिन उस का ग़ज़ब बेदीनों की उम्मीद
पर नाज़िल होता है।
24 एक आदमी की दौलत में इज़ाफ़ा होता है, गो वह
फ़य्याज़दिली से तक़्सीम करता है। दूसरे की ग़ुर्बत में
इज़ाफ़ा होता है, गो वह हद से ज़्यादा कंजूस है।
25 फ़य्याज़दिल ख़ुशहाल रहेगा, जो दूसरों को तर-
ओ-ताज़ा करे वह ख़ुद ताज़ादम रहेगा।
26 लोग गन्दुम के ज़ख़ीराअन्दोज़ पर लानत भेजते
हैं, लेकिन जो गन्दुम को बाज़ार में आने देता है उस
के सर पर बरकत आती है।
27 जो भलाई की तलाश में रहे वह अल्लाह की
मन्ज़ूरी चाहता है, लेकिन जो बुराई की तलाश में
रहे वह ख़ुद बुराई के फंदे में फंस जाएगा।
28 जो अपनी दौलत पर भरोसा रखे वह गिर जाएगा,
लेकिन रास्तबाज़ हरे-भरे पत्तों की तरह फलें फूलेंगे।
29 जो अपने घर में गड़बड़ पैदा करे वह मीरास
में हवा ही पाएगा। अहमक़ दानिशमन्द का नौकर
बनेगा।
30 रास्तबाज़ का फल ज़िन्दगी का दरख़्त है, और
दानिशमन्द आदमी जानें जीतता है।
31 रास्तबाज़ को ज़मीन पर ही अज्र मिलता है। तो
फिर बेदीन और गुनाहगार सज़ा क्यूँ न पाएँ?

12 1 जिसे इल्म-ओ-इर्फ़ान प्यारा है उसे
तर्बियत भी प्यारी है, जिसे नसीहत से
नफ़रत है वह बेअक़्ल है।
2 रब अच्छे आदमी से ख़ुश होता है जबकि वह
साज़िश करने वाले को क़ुसूरवार ठहराता है।
3 इन्सान बेदीनी की बुन्याद पर क़ाइम नहीं रह
सकता जबकि रास्तबाज़ की जड़ें उखाड़ी नहीं जा
सकतीं।
4 सुघड़ बीवी अपने शौहर का ताज है, लेकिन जो
शौहर की रुस्वाई का बाइस है वह उस की हड्डियों
में सड़ाहट की मानिन्द है।
5 रास्तबाज़ के ख़यालात मुन्सिफ़ाना हैं जबकि
बेदीनों के मन्सूबे फ़रेबदिह हैं।
6 बेदीनों के अल्फ़ाज़ लोगों को क़त्ल करने की
ताक में रहते हैं जबकि सीधी राह पर चलने वालों
की बातें लोगों को छुड़ा लेती हैं।
7 बेदीनों को ख़ाक में यूँ मिलाया जाता है कि उन का
नाम-ओ-निशान तक नहीं रहता, लेकिन रास्तबाज़
का घर क़ाइम रहता है।
8 किसी की जितनी अक़्ल-ओ-समझ है उतना ही
लोग उस की तारीफ़ करते हैं, लेकिन जिस के ज़हन
में फ़ुतूर है उसे हक़ीर जाना जाता है।

9 निचले तब्क़े का जो आदमी अपनी ज़िम्मादारियाँ
अदा करता है वह उस आदमी से कहीं बेहतर है जो
नख़रा बघारता है गो उस के पास रोटी भी नहीं है।
10 रास्तबाज़ अपने मवेशी का भी ख़याल करता है
जबकि बेदीन का दिल ज़ालिम ही ज़ालिम है।
11 जो अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी करे उस के पास
कस्रत का खाना होगा, लेकिन जो फ़ुज़ूल चीज़ों के
पीछे पड़ जाए वह नासमझ है।
12 बेदीन दूसरों को जाल में फंसाने से अपना दिल
बहलाता है, लेकिन रास्तबाज़ की जड़ फलदार होती
है।
13 शरीर अपनी ग़लत बातों के जाल में उलझ जाता
जबकि रास्तबाज़ मुसीबत से बच जाता है।
14 इन्सान अपने मुँह के फल से ख़ूब सेर हो जाता
है, और जो काम उस के हाथों ने किया उस का अज्र
उसे ज़रूर मिलेगा।
15 अहमक़ की नज़र में उस की अपनी राह ठीक
है, लेकिन दानिशमन्द दूसरों के मश्वरे पर ध्यान देता
है।
16 अहमक़ एक दम अपनी नाराज़ी का इज़हार
करता है, लेकिन दाना अपनी बदनामी छुपाए रखता
है।
17 दियानतदार गवाह खुले तौर पर सच्चाई बयान
करता है जबकि झूटा गवाह धोका ही धोका पेश
करता है।
18 गप्पें हाँकने वाले की बातें तलवार की तरह
ज़ख़्मी कर देती हैं जबकि दानिशमन्द की ज़बान
शिफ़ा देती है।
19 सच्चे होंट हमेशा तक क़ाइम रहते हैं जबकि झूटी
ज़बान एक ही लम्हे के बाद ख़त्म हो जाती है।
20 बुरे मन्सूबे बांधने वाले का दिल धोके से भरा
रहता जबकि सलामती के मश्वरे देने वाले का दिल
ख़ुशी से छलकता है।
21 कोई भी आफ़त रास्तबाज़ पर नहीं आएगी
जबकि दुख तक्लीफ़ बेदीनों का दामन कभी नहीं
छोड़ेगी।
22 रब फ़रेबदिह होंटों से घिन खाता है, लेकिन जो
वफ़ादारी से ज़िन्दगी गुज़ारते हैं उन से वह ख़ुश होता
है।
23 समझदार अपना इल्म छुपाए रखता जबकि
अहमक़ अपने दिल की हमाक़त बुलन्द आवाज़ से
सब को पेश करता है।
24 जिस के हाथ मेहनती हैं वह हुकूमत करेगा,
लेकिन जिस के हाथ ढीले हैं उसे बेगार में काम करना
पड़ेगा।
25 जिस के दिल में परेशानी है वह दबा रहता है,
लेकिन कोई भी अच्छी बात उसे ख़ुशी दिलाती है।
26 रास्तबाज़ अपनी चरागाह मालूम कर लेता है,
लेकिन बेदीनों की राह उन्हें आवारा फिरने देती है।
27 ढीला आदमी अपना शिकार नहीं पकड़ सकता
जबकि मेहनती शख़्स कस्रत का माल हासिल कर
लेता है।
28 रास्ती की राह में ज़िन्दगी है, लेकिन ग़लत राह
मौत तक पहुँचाती है।

13 1 दानिशमन्द बेटा अपने बाप की तर्बियत
क़बूल करता है, लेकिन तानाज़न पर्वा ही
नहीं करता अगर कोई उसे डाँटे।
2 इन्सान अपने मुँह के अच्छे फल से ख़ूब सेर हो
जाता है, लेकिन बेवफ़ा के दिल में ज़ुल्म का लालच
रहता है।
3 जो अपनी ज़बान क़ाबू में रखे वह अपनी ज़िन्दगी
महफ़ूज़ रखता है, जो अपनी ज़बान को बेलगाम छोड़
दे वह तबाह हो जाएगा।
4 काहिल आदमी लालच करता है, लेकिन उसे
कुछ नहीं मिलता जबकि मेहनती शख़्स की आर्ज़ू
पूरी हो जाती है।
5 रास्तबाज़ झूट से नफ़रत करता है, लेकिन बेदीन
शर्म और रुस्वाई का बाइस है।
6 रास्ती बेइल्ज़ाम की हिफ़ाज़त करती जबकि
बेदीनी गुनाहगार को तबाह कर देती है।

7 कुछ लोग अमीर का रूप भर कर फिरते हैं गो
ग़रीब हैं। दूसरे ग़रीब का रूप भर कर फिरते हैं गो
अमीरतरीन हैं।
8 कभी अमीर को अपनी जान छुड़ाने के लिए ऐसा
तावान देना पड़ता है कि तमाम दौलत जाती रहती
है, लेकिन ग़रीब की जान इस क़िस्म की धमकी से
बची रहती है।
9 रास्तबाज़ की रौशनी चमकती रहती [i]जबकि
बेदीन का चराग़ बुझ जाता है।
10 मग़ुरूरों में हमेशा झगड़ा होता है जबकि
दानिशमन्द सलाह-मश्वरे के मुताबिक़ ही चलते हैं।
11 जल्दबाज़ी से हासिलशुदा दौलत जल्द ही ख़त्म
हो जाती है जबकि जो रफ़्ता रफ़्ता अपना माल जमा
करे वह उसे बढ़ाता रहेगा।
12 जो उम्मीद वक़्त पर पूरी न हो जाए वह दिल को
बीमार कर देती है, लेकिन जो आर्ज़ू पूरी हो जाए वह
ज़िन्दगी का दरख़्त है।
13 जो अच्छी हिदायत को हक़ीर जाने उसे नुक़्सान
पहुँचेगा, लेकिन जो हुक्म माने उसे अज्र मिलेगा।
14 दानिशमन्द की हिदायत ज़िन्दगी का सरचश्मा
है जो इन्सान को मोहलिक फंदों से बचाए रखती है।
15 अच्छी समझ मन्ज़ूरी अता करती है, लेकिन
बेवफ़ा की राह अबदी तबाही का बाइस है।
16 ज़हीन हर काम सोच समझ कर करता, लेकिन
अहमक़ तमाम नज़रों के सामने ही अपनी हमाक़त
की नुमाइश करता है।
17 बेदीन क़ासिद मुसीबत में फंस जाता जबकि
वफ़ादार क़ासिद शिफ़ा का बाइस है।
18 जो तर्बियत की पर्वा न करे उसे ग़ुर्बत और
शर्मिन्दगी हासिल होगी, लेकिन जो दूसरे की नसीहत
मान जाए उस का एहतिराम किया जाएगा।
19 जो आर्ज़ू पूरी हो जाए वह दिल को तर-ओ-ताज़ा
करती है, लेकिन अहमक़ बुराई से दरेग़ करने से घिन
खाता है।
20 जो दानिशमन्दों के साथ चले वह ख़ुद
दानिशमन्द हो जाएगा, लेकिन जो अहमक़ों के साथ
चले उसे नुक़्सान पहुँचेगा।
21 मुसीबत गुनाहगार का पीछा करती है जबकि
रास्तबाज़ों का अज्र ख़ुशहाली है।
22 नेक आदमी के बेटे और पोते उस की मीरास
पाएँगे, लेकिन गुनाहगार की दौलत रास्तबाज़ के लिए
महफ़ूज़ रखी जाएगी।
23 ग़रीब का खेत कस्रत की फ़सलें मुहय्या कर
सकता है, लेकिन जहाँ इन्साफ़ नहीं वहाँ सब कुछ
छीन लिया जाता है।
24 जो अपने बेटे को तम्बीह नहीं करता वह उस से
नफ़रत करता है। जो उस से मुहब्बत रखे वह वक़्त
पर उस की तर्बियत करता है।
25 रास्तबाज़ जी भर कर खाना खाता है, लेकिन
बेदीन का पेट ख़ाली रहता है।

14 1 हिक्मत बीबी अपना घर तामीर करती है,
लेकिन हमाक़त बीबी अपने ही हाथों से
उसे ढा देती है।
2 जो सीधी राह पर चलता है वह अल्लाह का ख़ौफ़
मानता है, लेकिन जो ग़लत राह पर चलता है वह उसे
हक़ीर जानता है।
3 अहमक़ की बातों से वह डंडा निकलता है जो उसे
उस के तकब्बुर की सज़ा देता है, लेकिन दानिशमन्द
के होंट उसे महफ़ूज़ रखते हैं।
4 जहाँ बैल नहीं वहाँ चरनी ख़ाली रहती है, बैल
की ताक़त ही से कस्रत की फ़सलें पैदा होती हैं।
5 वफ़ादार गवाह झूट नहीं बोलता, लेकिन झूटे
गवाह के मुँह से झूट निकलता है।
6 तानाज़न हिक्मत को ढूँडता है, लेकिन बेफ़ाइदा।
समझदार के इल्म में आसानी से इज़ाफ़ा होता है।
7 अहमक़ से दूर रह, क्यूँकि तू उस की बातों में
इल्म नहीं पाएगा।

---

[i]लफ़्ज़ी तर्जुमा : ख़ुशी मनाती।

8 ज़हीन की हिक्मत इस में है कि वह सोच समझ
कर अपनी राह पर चले, लेकिन अहमक़ की हमाक़त
सरासर धोका ही है।
9 अहमक़ अपने क़ुसूर का मज़ाक़ उड़ाते हैं, लेकिन
सीधी राह पर चलने वाले रब को मन्ज़ूर हैं।
10 हर दिल की अपनी ही तल्ख़ी होती है जिस से
सिर्फ़ वही वाक़िफ़ है, और उस की ख़ुशी में भी कोई
और शरीक नहीं हो सकता।
11 बेदीन का घर तबाह हो जाएगा, लेकिन सीधी
राह पर चलने वाले का ख़ैमा फले फूलेगा।
12 ऐसी राह भी होती है जो देखने में ठीक तो लगती
है गो उस का अन्जाम मौत है।
13 दिल हंसते वक़्त भी रंजीदा हो सकता है, और
ख़ुशी के इख़तिताम पर दुख ही बाक़ी रह जाता है।
14 जिस का दिल बेवफ़ा है वह जी भर कर अपने
चाल-चलन का कड़वा फल खाएगा जबकि नेक
आदमी अपने आमाल के मीठे फल से सेर हो जाएगा।
15 सादालौह हर एक की बात मान लेता है जबकि
ज़हीन आदमी अपना हर क़दम सोच समझ कर
उठाता है।
16 दानिशमन्द डरते डरते ग़लत काम से दरेग़ करता
है, लेकिन अहमक़ ख़ुदएतिमाद है और एक दम
मुश्तइल हो जाता है।
17 ग़ुसीला आदमी अहमक़ाना हरकतें करता है,
और लोग साज़िशी शख़्स से नफ़रत करते हैं।
18 सादालौह मीरास में हमाक़त पाता है जबकि
ज़हीन आदमी का सर इल्म के ताज से आरास्ता रहता
है।
19 शरीरों को नेकों के सामने झुकना पड़ेगा, और
बेदीनों को रास्तबाज़ के दरवाज़े पर औंधे मुँह होना
पड़ेगा।
20 ग़रीब के हमसाय भी उस से नफ़रत करते हैं
जबकि अमीर के बेशुमार दोस्त होते हैं।
21 जो अपने पड़ोसी को हक़ीर जाने वह गुनाह
करता है। मुबारक है वह जो ज़रूरतमन्द पर तरस
खाता है।
22 बुरे मन्सूबे बांधने वाले सब आवारा फिरते हैं।
लेकिन अच्छे मन्सूबे बांधने वाले शफ़क़त और वफ़ा
पाएँगे।
23 मेहनत-मशक़्क़त करने में हमेशा फ़ाइदा होता है,
जबकि ख़ाली बातें करने से लोग ग़रीब हो जाते हैं।
24 दानिशमन्दों का अज्र दौलत का ताज है जबकि
अहमक़ों का अज्र हमाक़त ही है।
25 सच्चा गवाह जानें बचाता है जबकि झूटा गवाह
फ़रेबदिह है।
26 जो रब का ख़ौफ़ माने उस के पास महफ़ूज़ क़िला
है जिस में उस की औलाद भी पनाह ले सकती है।
27 रब का ख़ौफ़ ज़िन्दगी का सरचश्मा है जो इन्सान
को मोहलिक फंदों से बचाए रखता है।
28 जितनी आबादी मुल्क में है उतनी ही बादशाह
की शान-ओ-शौकत है। रआया की कमी हुक्मरान
के तनज़्ज़ुल का बाइस है।
29 तहम्मुल करने वाला बड़ी समझदारी का मालिक
है, लेकिन ग़ुसीला आदमी अपनी हमाक़त का इज़हार
करता है।
30 पुरसुकून दिल जिस्म को ज़िन्दगी दिलाता
जबकि हसद हड्डियों को गलने देता है।
31 जो पस्तहाल पर ज़ुल्म करे वह उस के ख़ालिक़
की तहक़ीर करता है जबकि जो ज़रूरतमन्द पर तरस
खाए वह अल्लाह का एहतिराम करता है।
32 बेदीन की बुराई उसे ख़ाक में मिला देती है,
लेकिन रास्तबाज़ मरते वक़्त भी अल्लाह में पनाह लेता
है।
33 हिक्मत समझदार के दिल में आराम करती है,
और वह अहमक़ों के दरमियान भी ज़ाहिर हो जाती
है।
34 रास्ती से हर क़ौम सरफ़राज़ होती है जबकि
गुनाह से उम्मतें रुसवा हो जाती हैं।
35 बादशाह दानिशमन्द मुलाज़िम से ख़ुश होता है,
लेकिन शर्मनाक काम करने वाला मुलाज़िम उस के
ग़ुस्से का निशाना बन जाता है।

15 1 नर्म जवाब ग़ुस्सा ठंडा करता, लेकिन
तुरश बात तैश दिलाती है।
2 दानिशमन्दों की ज़बान इल्म-ओ-इर्फ़ान फैलाती है
जबकि अहमक़ का मुँह हमाक़त का ज़ोर से उबलने
वाला चश्मा है।
3 रब की आँखें हर जगह मौजूद हैं, वह बुरे और
भले सब पर ध्यान देती हैं।
4 नर्म ज़बान ज़िन्दगी का दरख़्त है जबकि फ़रेबदिह
ज़बान शिकस्तादिल कर देती है।
5 अहमक़ अपने बाप की तर्बियत को हक़ीर जानता
है, लेकिन जो नसीहत माने वह दानिशमन्द है।
6 रास्तबाज़ के घर में बड़ा ख़ज़ाना होता है, लेकिन
जो कुछ बेदीन हासिल करता है वह तबाही का
बाइस है।
7 दानिशमन्दों के होंट इल्म-ओ-इर्फ़ान का बीज
बिखेर देते हैं, लेकिन अहमक़ों का दिल ऐसा नहीं
करता।
8 रब बेदीनों की क़ुर्बानी से घिन खाता, लेकिन
सीधी राह पर चलने वालों की दुआ से ख़ुश होता
है।
9 रब बेदीन की राह से घिन खाता, लेकिन रास्ती
का पीछा करने वाले से प्यार करता है।
10 जो सहीह राह को तर्क करे उस की सख़्त
तादीब की जाएगी, जो नसीहत से नफ़रत करे वह
मर जाएगा।
11 पाताल और आलम-ए-अर्वाह रब को साफ़ नज़र
आते हैं। तो फिर इन्सानों के दिल उसे क्यूँ न साफ़
दिखाई दें?
12 तानाज़न को दूसरों की नसीहत पसन्द नहीं
आती, इस लिए वह दानिशमन्दों के पास नहीं जाता।
13 जिस का दिल ख़ुश है उस का चिहरा खुला रहता
है, लेकिन जिस का दिल परेशान है उस की रूह
शिकस्ता रहती है।
14 समझदार का दिल इल्म-ओ-इर्फ़ान की तलाश में
रहता, लेकिन अहमक़ हमाक़त की चरागाह में चरता
रहता है।
15 मुसीबतज़दा के तमाम दिन बुरे हैं, लेकिन जिस
का दिल ख़ुश है वह रोज़ाना जश्न मनाता है।
16 जो ग़रीब रब का ख़ौफ़ मानता है उस का हाल
उस करोड़पती से कहीं बेहतर है जो बड़ी बेचैनी से
ज़िन्दगी गुज़ारता है।
17 जहाँ मुहब्बत है वहाँ सब्ज़ी का सालन बहुत है,
जहाँ नफ़रत है वहाँ मोटे-ताज़े बछड़े की ज़ियाफ़त
भी बेफ़ाइदा है।
18 ग़ुसीला आदमी झगड़े छेड़ता रहता जबकि
तहम्मुल करने वाला लोगों के ग़ुस्से को ठंडा कर
देता है।
19 काहिल का रास्ता काँटेदार बाड़ की मानिन्द है,
लेकिन दियानतदारों की राह पक्की सड़क ही है।
20 दानिशमन्द बेटा अपने बाप के लिए ख़ुशी का
बाइस है, लेकिन अहमक़ अपनी माँ को हक़ीर
जानता है।
21 नासमझ आदमी हमाक़त से लुत्फ़अन्दोज़ होता,
लेकिन समझदार आदमी सीधी राह पर चलता है।
22 जहाँ सलाह-मश्वरा नहीं होता वहाँ मन्सूबे
नाकाम रह जाते हैं, जहाँ बहुत से मुशीर होते हैं वहाँ
कामयाबी होती है।
23 इन्सान मौज़ूँ जवाब देने से ख़ुश हो जाता है, वक़्त
पर मुनासिब बात कितनी अच्छी होती है।
24 ज़िन्दगी की राह चढ़ती रहती है ताकि समझदार
उस पर चलते हुए पाताल में उतरने से बच जाए।
25 रब मुतकब्बिर का घर ढा देता, लेकिन बेवा की
ज़मीन की हुदूद महफ़ूज़ रखता है।
26 रब बुरे मन्सूबों से घिन खाता है, और मेहरबान
अल्फ़ाज़ उस के नज़्दीक पाक हैं।
27 जो नाजाइज़ नफ़ा कमाए वह अपने घर पर
आफ़त लाता है, लेकिन जो रिश्वत से नफ़रत रखे
वह जीता रहेगा।
28 रास्तबाज़ का दिल सोच समझ कर जवाब देता
है, लेकिन बेदीन का मुँह ज़ोर से उबलने वाला चश्मा
है जिस से बुरी बातें निकलती रहती हैं।

29 रब बेदीनों से दूर रहता, लेकिन रास्तबाज़ की
दुआ सुनता है।
30 चमकती आँखें दिल को ख़ुशी दिलाती हैं, अच्छी
ख़बर पूरे जिस्म को तर-ओ-ताज़ा कर देती है।
31 जो ज़िन्दगीबख़्श नसीहत पर ध्यान दे वह
दानिशमन्दों के दरमियान ही सुकूनत करेगा।
32 जो तर्बियत की पर्वा न करे वह अपने आप को
हक़ीर जानता है, लेकिन जो नसीहत पर ध्यान दे उस
की समझ में इज़ाफ़ा होता है।
33 रब का ख़ौफ़ ही वह तर्बियत है जिस से इन्सान
हिक्मत सीखता है। पहले फ़रोतनी अपना ले, क्यूँकि
यही इज़्ज़त पाने का पहला क़दम है।

16 1 इन्सान दिल में मन्सूबे बांधता है, लेकिन
ज़बान का जवाब रब की तरफ़ से आता है।
2 इन्सान की नज़र में उस की तमाम राहें पाक-साफ़
हैं, लेकिन रब ही रूहों की जाँच-पड़ताल करता है।
3 जो कुछ भी तू करना चाहे उसे रब के सपुर्द कर।
तब ही तेरे मन्सूबे कामयाब होंगे।
4 रब ने सब कुछ अपने ही मक़ासिद पूरे करने के
लिए बनाया है। वह दिन भी पहले से मुक़र्रर है जब
बेदीन पर आफ़त आएगी।
5 रब हर मग़ुरूर दिल से घिन खाता है। यक़ीनन वह
सज़ा से नहीं बचेगा।
6 शफ़क़त और वफ़ादारी गुनाह का कफ़्फ़ारा देती
हैं। रब का ख़ौफ़ मानने से इन्सान बुराई से दूर रहता
है।
7 अगर रब किसी इन्सान की राहों से ख़ुश हो तो
वह उस के दुश्मनों को भी उस से सुलह कराने देता
है।
8 इन्साफ़ से थोड़ा बहुत कमाना नाइन्साफ़ी से बहुत
दौलत जमा करने से कहीं बेहतर है।
9 इन्सान अपने दिल में मन्सूबे बांधता रहता है,
लेकिन रब ही मुक़र्रर करता है कि वह आख़िरकार
किस राह पर चल पड़े।
10 बादशाह के होंट गोया इलाही फ़ैसले पेश करते
हैं, उस का मुँह अदालत करते वक़्त बेवफ़ा नहीं
होता।
11 रब दुरुस्त तराज़ू का मालिक है, उसी ने तमाम
बाटों का इन्तिज़ाम क़ाइम किया।
12 बादशाह बेदीनी से घिन खाता है, क्यूँकि उस का
तख़्त रास्तबाज़ी की बुन्याद पर मज़बूत रहता है।
13 बादशाह रास्तबाज़ होंटों से ख़ुश होता और साफ़
बात करने वाले से मुहब्बत रखता है।
14 बादशाह का ग़ुस्सा मौत का पेशख़ैमा है, लेकिन
दानिशमन्द उसे ठंडा करने के तरीक़े जानता है।
15 जब बादशाह का चिहरा खिल उठे तो मतलब
ज़िन्दगी है। उस की मन्ज़ूरी मौसम-ए-बहार के तर-
ओ-ताज़ा करने वाले बादल की मानिन्द है।
16 हिक्मत का हुसूल सोने से कहीं बेहतर और
समझ पाना चाँदी से कहीं बढ़ कर है।
17 दियानतदार की मज़बूत राह बुरे काम से दूर
रहती है, जो अपनी राह की पहरादारी करे वह अपनी
जान बचाए रखता है।
18 तबाही से पहले ग़ुरूर और गिरने से पहले
तकब्बुर आता है।
19 फ़रोतनी से ज़रूरतमन्दों के दरमियान बसना
घमंडियों के लूटे हुए माल में शरीक होने से कहीं
बेहतर है।
20 जो कलाम पर ध्यान दे वह ख़ुशहाल होगा,
मुबारक है वह जो रब पर भरोसा रखे।
21 जो दिल से दानिशमन्द है उसे समझदार क़रार
दिया जाता है, और मीठे अल्फ़ाज़ तालीम में इज़ाफ़ा
करते हैं।
22 फ़हम अपने मालिक के लिए ज़िन्दगी का
सरचश्मा है, लेकिन अहमक़ की अपनी ही हमाक़त
उसे सज़ा देती है।
23 दानिशमन्द का दिल समझ की बातें ज़बान पर
लाता और तालीम देने में होंटों का सहारा बनता है।

24 मेहरबान अल्फ़ाज़ ख़ालिस शहद हैं, वह जान के
लिए शीरीं और पूरे जिस्म को तर-ओ-ताज़ा कर देते
हैं।
25 ऐसी राह भी होती है जो देखने में तो ठीक लगती
है गो उस का अन्जाम मौत है।
26 मज़दूर का ख़ाली पेट उसे काम करने पर मज्बूर
करता, उस की भूक उसे हाँकती रहती है।
27 शरीर कुरेद कुरेद कर ग़लत काम निकाल लेता,
उस के होंटों पर झुलसाने वाली आग रहती है।
28 कजरौ आदमी झगड़े छेड़ता रहता, और तुहमत
लगाने वाला दिली दोस्तों में भी रख़ना डालता है।
29 ज़ालिम अपने पड़ोसी को वरग़ला कर ग़लत राह
पर ले जाता है।
30 जो आँख मारे वह ग़लत मन्सूबे बांध रहा है, जो
अपने होंट चबाए वह ग़लत काम करने पर तुला हुआ
है।
31 सफ़ेद बाल एक शानदार ताज हैं जो रास्तबाज़
ज़िन्दगी गुज़ारने से हासिल होते हैं।
32 तहम्मुल करने वाला सूरमे से सब्क़त लेता है, जो
अपने आप को क़ाबू में रखे वह शहर को शिकस्त
देने वाले से बरतर है।
33 इन्सान तो क़ुरआ डालता है, लेकिन उस का हर
फ़ैसला रब की तरफ़ से है।

17 1 जिस घर में रोटी का बासी टुकड़ा सुकून
के साथ खाया जाए वह उस घर से कहीं
बेहतर है जिस में लड़ाई-झगड़ा है, ख़्वाह उस में
कितनी शानदार ज़ियाफ़त क्यूँ न हो रही हो।
2 समझदार मुलाज़िम मालिक के उस बेटे पर क़ाबू
पाएगा जो शर्म का बाइस है, और जब भाइयों में
मौरूसी मिलकियत तक़्सीम की जाए तो उसे भी
हिस्सा मिलेगा।
3 सोना-चाँदी कुठाली में पिघला कर पाक-साफ़ की
जाती है, लेकिन रब ही दिल की जाँच-पड़ताल करता
है।
4 बदकार शरीर होंटों पर ध्यान और धोकेबाज़
तबाहकुन ज़बान पर तवज्जुह देता है।
5 जो ग़रीब का मज़ाक़ उड़ाए वह उस के ख़ालिक़
की तह्क़ीर करता है, जो दूसरे की मुसीबत देख कर
ख़ुश हो जाए वह सज़ा से नहीं बचेगा।
6 पोते बूढ़ों का ताज और वालिदैन अपने बच्चों के
ज़ेवर हैं।
7 अहमक़ के लिए बड़ी बड़ी बातें करना मौज़ूँ
नहीं, लेकिन शरीफ़ होंटों पर फ़रेब कहीं ज़्यादा
ग़ैरमुनासिब है।
8 रिश्वत देने वाले की नज़र में रिश्वत जादू की
मानिन्द है। जिस दरवाज़े पर भी खटखटाए वह खुल
जाता है।
9 जो दूसरे की ग़लती को दरगुज़र करे वह मुहब्बत
को फ़रोग़ देता है, लेकिन जो माज़ी की ग़लतियाँ
दुहराता रहे वह क़रीबी दोस्तों में निफ़ाक़ पैदा करता
है।
10 अगर समझदार को डाँटा जाए तो वह ख़ूब सीख
लेता है, लेकिन अगर अहमक़ को सौ बार मारा जाए
तो भी वह इतना नहीं सीखता।
11 शरीर सरकशी पर तुला रहता है, लेकिन उस के
ख़िलाफ़ ज़ालिम क़ासिद भेजा जाएगा।
12 जो अहमक़ अपनी हमाक़त में उलझा हुआ हो
उस से दरेग़ कर, क्यूँकि उस से मिलने से बेहतर यह
है कि तेरा उस रीछनी से वास्ता पड़े जिस के बच्चे
उस से छीन लिए गए हों।
13 जो भलाई के इवज़ बुराई करे उस के घर से बुराई
कभी दूर नहीं होगी।
14 लड़ाई-झगड़ा छेड़ना बन्द में रख़ना डालने के
बराबर है। इस से पहले कि मुक़द्दमाबाज़ी शुरू हो
उस से बाज़ आ।
15 जो बेदीन को बेक़ुसूर और रास्तबाज़ को मुजरिम
ठहराए उस से रब घिन खाता है।
16 अहमक़ के हाथ में पैसों का क्या फ़ाइदा है? क्या
वह हिक्मत ख़रीद सकता है जबकि उस में अक़्ल
नहीं? हरगिज़ नहीं!

17 पड़ोसी वह है जो हर वक़्त मुहब्बत रखता है,
भाई वह है जो मुसीबत में सहारा देने के लिए पैदा
हुआ है।
18 जो हाथ मिला कर अपने पड़ोसी का ज़ामिन होने
का वादा करे वह नासमझ है।
19 जो लड़ाई-झगड़े से मुहब्बत रखे वह गुनाह से
मुहब्बत रखता है, जो अपना दरवाज़ा हद से ज़्यादा
बड़ा बनाए वह तबाही को दाख़िल होने की दावत
देता है।
20 जिस का दिल टेढ़ा है वह ख़ुशहाली नहीं पाएगा,
और जिस की ज़बान चालाक है वह मुसीबत में उलझ
जाएगा।
21 जिस के हाँ अहमक़ बेटा पैदा हो जाए उसे दुख
पहुँचता है, और अक़्ल से ख़ाली बेटा बाप के लिए
ख़ुशी का बाइस नहीं होता।
22 ख़ुशबाश दिल पूरे जिस्म को शिफ़ा देता है,
लेकिन शिकस्ता रूह हड्डियों को ख़ुश्क कर देती है।
23 बेदीन चुपके से रिश्वत ले कर इन्साफ़ की राहों
को बिगाड़ देता है।
24 समझदार अपनी नज़र के सामने हिक्मत रखता
है, लेकिन अहमक़ की नज़रें दुनिया की इन्तिहा तक
आवारा फिरती हैं।
25 अहमक़ बेटा बाप के लिए रंज का बाइस और
माँ के लिए तल्ख़ी का सबब है।
26 बेक़ुसूर पर जुर्माना लगाना ग़लत है, और शरीफ़
को उस की दयानतदारी के सबब से कोड़े लगाना
बुरा है।
27 जो अपनी ज़बान को क़ाबू में रखे वह इल्म-ओ-
इर्फ़ान का मालिक है, जो ठंडे दिल से बात करे वह
समझदार है।
28 अगर अहमक़ ख़ामोश रहे तो वह भी दानिशमन्द
लगता है। जब तक वह बात न करे लोग उसे
समझदार क़रार देते हैं।

18 1 जो दूसरों से अलग हो जाए वह अपने
ज़ाती मक़ासिद पूरे करना चाहता और
समझ की हर बात पर झगड़ने लगता है।
2 अहमक़ समझ से लुत्फ़अन्दोज़ नहीं होता बल्कि
सिर्फ़ अपने दिल की बातें दूसरों पर ज़ाहिर करने से।
3 जहाँ बेदीन आए वहाँ हिक़ारत भी आ मौजूद
होती, और जहाँ रुस्वाई हो वहाँ तानाज़नी भी होती
है।
4 इन्सान के अल्फ़ाज़ गहरा पानी हैं, हिक्मत का
सरचश्मा बहती हुई नदी है।
5 बेदीन की जानिबदारी करके रास्तबाज़ का हक़
मारना ग़लत है।
6 अहमक़ के होंट लड़ाई-झगड़ा पैदा करते हैं, उस
का मुँह ज़ोर से पिटाई का मुतालबा करता है।
7 अहमक़ का मुँह उस की तबाही का बाइस है,
उस के होंट ऐसा फंदा हैं जिस में उस की अपनी जान
उलझ जाती है।
8 तुहमत लगाने वाले की बातें लज़ीज़ खाने के
लुक़्मों की मानिन्द हैं, वह दिल की तह तक उतर
जाती हैं।
9 जो अपने काम में ज़रा भी ढीला हो जाए, उसे याद
रहे कि ढीलेपन का भाई तबाही है।
10 रब का नाम मज़बूत बुर्ज है जिस में रास्तबाज़
भाग कर मह्फ़ूज़ रहता है।
11 अमीर समझता है कि मेरी दौलत मेरा क़िलाबन्द
शहर और मेरी ऊँची चारदीवारी है जिस में मैं मह्फ़ूज़
हूँ।
12 तबाह होने से पहले इन्सान का दिल मग़रूर हो
जाता है, इज़्ज़त मिलने से पहले लाज़िम है कि वह
फ़रोतन हो जाए।
13 दूसरे की बात सुनने से पहले जवाब देना हमाक़त
है। जो ऐसा करे उस की रुस्वाई हो जाएगी।
14 बीमार होते वक़्त इन्सान की रूह जिस्म की
परवरिश करती है, लेकिन अगर रूह शिकस्ता हो
तो फिर कौन उस को सहारा देगा?
15 समझदार का दिल इल्म अपनाता और
दानिशमन्द का कान इर्फ़ान का खोज लगाता रहता
है।

16 तुह्फ़ा रास्ता खोल कर देने वाले को बड़ों तक
पहुँचा देता है।
17 जो अदालत में पहले अपना मौक़िफ़ पेश करे
वह उस वक़्त तक हक़-ब-जानिब लगता है जब तक
दूसरा फ़रीक़ सामने आ कर उस की हर बात की
तहक़ीक़ न करे।
18 क़ुरआ डालने से झगड़े ख़त्म हो जाते और बड़ों
का एक दूसरे से लड़ने का ख़तरा दूर हो जाता है।
19 जिस भाई को एक दफ़ा मायूस कर दिया जाए
उसे दुबारा जीत लेना क़िलाबन्द शहर पर फ़त्ह पाने
से ज़्यादा दुश्वार है। झगड़े हल करना बुर्ज के कुंडे
तोड़ने की तरह मुश्किल है।
20 इन्सान अपने मुँह के फल से सेर हो जाएगा, वह
अपने होंटों की पैदावार को जी भर कर खाएगा।
21 ज़बान का ज़िन्दगी और मौत पर इख़तियार है,
जो उसे प्यार करे वह उस का फल भी खाएगा।
22 जिसे बीवी मिली उसे अच्छी नेमत मिली, और
उसे रब की मन्ज़ूरी हासिल हुई।
23 ग़रीब मिन्नत करते करते अपना मुआमला पेश
करता है, लेकिन अमीर का जवाब सख़्त होता है।
24 कई दोस्त तुझे तबाह करते हैं, लेकिन ऐसे भी हैं
जो तुझ से भाई से ज़्यादा लिपटे रहते हैं।

19 1 जो ग़रीब बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारे वह
टेढ़ी बातें करने वाले अहमक़ से कहीं
बेहतर है।
2 अगर इल्म साथ न हो तो सरगर्मी का कोई फ़ाइदा
नहीं। जल्दबाज़ ग़लत राह पर आता रहता है।
3 गो इन्सान की अपनी हमाक़त उसे भटका देती है
तो भी उस का दिल रब से नाराज़ होता है।
4 दौलतमन्द के दोस्तों में इज़ाफ़ा होता है, लेकिन
ग़रीब का एक दोस्त भी उस से अलग हो जाता है।
5 झूटा गवाह सज़ा से नहीं बचेगा, जो झूटी गवाही
दे उस की जान नहीं छूटेगी।
6 मुतअद्दिद लोग बड़े आदमी की ख़ुशामद करते
हैं, और हर एक उस आदमी का दोस्त है जो तुह्फ़े
देता है।
7 ग़रीब के तमाम भाई उस से नफ़रत करते हैं, तो
फिर उस के दोस्त उस से क्यूँ दूर न रहें। वह बातें
करते करते उन का पीछा करता है, लेकिन वह ग़ाइब
हो जाते हैं।
8 जो हिक्मत अपना ले वह अपनी जान से मुहब्बत
रखता है, जो समझ की परवरिश करे उसे कामयाबी
होगी।
9 झूटा गवाह सज़ा से नहीं बचेगा, झूटी गवाही देने
वाला तबाह हो जाएगा।
10 अहमक़ के लिए ऐश-ओ-इश्रत से ज़िन्दगी
गुज़ारना मौज़ूँ नहीं, लेकिन ग़ुलाम की हुक्मरानों पर
हुकूमत कहीं ज़्यादा ग़ैरमुनासिब है।
11 इन्सान की हिक्मत उसे तहम्मुल सिखाती है,
और दूसरों के जराइम से दरगुज़र करना उस का
फ़ख़र है।
12 बादशाह का तैश जवान शेरबबर की दहाड़ों की
मानिन्द है जबकि उस की मन्ज़ूरी घास पर शबनम
की तरह तर-ओ-ताज़ा करती है।
13 अहमक़ बेटा बाप की तबाही और झगड़ालू
बीवी मुसलसल टपकने वाली छत है।
14 मौरूसी घर और मिलकियत बापदादा की तरफ़
से मिलती है, लेकिन समझदार बीवी रब की तरफ़
से है।
15 सुस्त होने से इन्सान गहरी नींद सो जाता है,
लेकिन ढीला शख़्स भूके मरेगा।
16 जो वफ़ादारी से हुक्म पर अमल करे वह अपनी
जान महफ़ूज़ रखता है, लेकिन जो अपनी राहों की
पर्वा न करे वह मर जाएगा।
17 जो ग़रीब पर मेहरबानी करे वह रब को उधार
देता है, वही उसे अज्र देगा।
18 जब तक उम्मीद की किरन बाक़ी हो अपने बेटे
की तादीब कर, लेकिन इतने जोश में न आ कि वह
मर जाए।
19 जो हद से ज़्यादा तैश में आए उसे जुर्माना देना
पड़ेगा। उसे बचाने की कोशिश मत कर वर्ना उस का
तैश और बढ़ेगा।

20 अच्छा मश्वरा अपना और तर्बियत क़बूल कर
ताकि आइन्दा दानिशमन्द हो।
21 इन्सान दिल में मुतअद्दिद मन्सूबे बांधता रहता
है, लेकिन रब का इरादा हमेशा पूरा हो जाता है।
22 इन्सान का लालच उस की रुस्वाई का बाइस
है, और ग़रीब दरोग़गो से बेहतर है।
23 रब का ख़ौफ़ ज़िन्दगी का मम्बा है। ख़ुदातरस
आदमी सेर हो कर सुकून से सो जाता और मुसीबत
से महफ़ूज़ रहता है।
24 काहिल अपना हाथ खाने के बर्तन में डाल कर
उसे मुँह तक नहीं ला सकता।
25 तानाज़न को मार तो सादालौह सबक़ सीखेगा,
समझदार को डाँट तो उस के इल्म में इज़ाफ़ा होगा।
26 जो अपने बाप पर ज़ुल्म करे और अपनी माँ को
निकाल दे वह वालिदैन के लिए शर्म और रुस्वाई का
बाइस है।
27 मेरे बेटे, तर्बियत पर ध्यान देने से बाज़ न आ,
वर्ना तू इल्म-ओ-इर्फ़ान की राह से भटक जाएगा।
28 शरीर गवाह इन्साफ़ का मज़ाक़ उड़ाता है, और
बेदीन का मुँह आफ़त की ख़बरें फैलाता है।
29 तानाज़न के लिए सज़ा और अहमक़ की पीठ के
लिए कोड़ा तय्यार है।

20 1 मै तानाज़न का बाप और शराब शोर-
शराबा की माँ है। जो यह पी पी कर
डगमगाने लगे वह दानिशमन्द नहीं।
2 बादशाह का क़हर जवान शेरबबर की दहाड़ों की
मानिन्द है, जो उसे तैश दिलाए वह अपनी जान पर
खेलता है।
3 लड़ाई-झगड़े से बाज़ रहना इज़्ज़त का तुर्रा-ए-
इम्तियाज़ है जबकि हर अहमक़ झगड़ने के लिए
तय्यार रहता है।
4 काहिल वक़्त पर हल नहीं चलाता, चुनाँचे जब
वह फ़सल पकते वक़्त अपने खेत पर निगाह करे तो
कुछ नज़र नहीं आएगा।
5 इन्सान के दिल का मन्सूबा गहरे पानी की मानिन्द
है, लेकिन समझदार आदमी उसे निकाल कर अमल
में लाता है।
6 बहुत से लोग अपनी वफ़ादारी पर फ़ख़र करते हैं,
लेकिन क़ाबिल-ए-एतिमाद शख़्स कहाँ पाया जाता
है?
7 जो रास्तबाज़ बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारे उस की
औलाद मुबारक है।
8 जब बादशाह तख़्त-ए-अदालत पर बैठ जाए तो
वह अपनी आँखों से सब कुछ छानकर हर ग़लत
बात एक तरफ़ कर लेता है।
9 कौन कह सकता है, “मैं ने अपने दिल को पाक-
साफ़ कर रखा है, मैं अपने गुनाह से पाक हो गया
हूँ”?
10 ग़लत बाट और ग़लत पैमाइश, रब दोनों से घिन
खाता है।
11 लड़के का किरदार उस के सुलूक से मालूम होता
है। इस से पता चलता है कि उस का चाल-चलन पाक
और रास्त है या नहीं।
12 सुनने वाले कान और देखने वाली आँखें दोनों
ही रब ने बनाई हैं।
13 नींद को प्यार न कर वर्ना ग़रीब हो जाएगा।
अपनी आँखों को खुला रख तो जी भर कर खाना
खाएगा।
14 गाहक दुकानदार से कहता है, “यह कैसी
नाक़िस चीज़ है!” लेकिन फिर जा कर दूसरों के
सामने अपने सौदे पर शेख़ी मारता है।
15 सोना और कस्रत के मोती पाए जा सकते हैं,
लेकिन समझदार होंट उन से कहीं ज़्यादा क़ीमती हैं।
16 ज़मानत का वह लिबास वापस न कर जो किसी
ने परदेसी का ज़ामिन बन कर दिया है। अगर वह
अजनबी का ज़ामिन हो तो उस ज़मानत पर ज़रूर
क़ब्ज़ा कर जो उस ने दी थी।
17 धोके से हासिल की हुई रोटी आदमी को मीठी
लगती है, लेकिन उस का अन्जाम कंकरों से भरा मुँह
है।

18 मन्सूबे सलाह-मश्वरे से मज़बूत हो जाते हैं, और
जंग करने से पहले दूसरों की हिदायात पर ध्यान दे।
19 अगर तू बुह्तान लगाने वाले को हमराज़ बनाए
तो वह इधर उधर फिर कर बात फैलाएगा। चुनाँचे
बातूनी से गुरेज़ कर।
20 जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उस का
चराग़ घने अंधेरे में बुझ जाएगा।
21 जो मीरास शुरू में बड़ी जल्दी से मिल जाए वह
आख़िर में बरकत का बाइस नहीं होगी।
22 मत कहना, "मैं ग़लत काम का इन्तिक़ाम
लूँगा।" रब के इन्तिज़ार में रह तो वही तेरी मदद
करेगा।
23 रब झूटे बाटों से घिन खाता है, और ग़लत तराज़ू
उसे अच्छा नहीं लगता।
24 रब हर एक के क़दम मुक़र्रर करता है। तो फिर
इन्सान किस तरह अपनी राह समझ सकता है?
25 इन्सान अपने लिए फंदा तय्यार करता है जब वह
जल्दबाज़ी से मन्नत मानता और बाद में ही मन्नत के
नताइज पर ग़ौर करने लगता है।
26 दानिशमन्द बादशाह बेदीनों को छान छानकर
उड़ा लेता है, हाँ वह गाहने का आला ही उन पर से
गुज़रने देता है।
27 आदमज़ाद की रूह रब का चराग़ है जो इन्सान
के बातिन की तह तक सब कुछ की तहक़ीक़ करता
है।
28 शफ़क़त और वफ़ा बादशाह को मह्फ़ूज़ रखती
हैं, शफ़क़त से वह अपना तख़्त मुस्तह्कम कर लेता
है।
29 नौजवानों का फ़ख़र उन की ताक़त और बुज़ुर्गों
की शान उन के सफ़ेद बाल हैं।
30 ज़ख़्म और चोटें बुराई को दूर कर देती हैं, ज़र्बें
बातिन की तह तक सब कुछ साफ़ कर देती हैं।

21 1 बादशाह का दिल रब के हाथ में नहर की
मानिन्द है। वह जिधर चाहे उस का रुख़
फेर देता है।
2 हर आदमी की राह उस की अपनी नज़र में ठीक
लगती है, लेकिन रब ही दिलों की जाँच-पड़ताल
करता है।
3 रास्तबाज़ी और इन्साफ़ करना रब को ज़बह की
क़ुर्बानियों से कहीं ज़्यादा पसन्द है।
4 मग़रूर आँखें और मुतकब्बिर दिल जो बेदीनों का
चराग़ हैं गुनाह हैं।
5 मेहनती शख़्स के मन्सूबे नफ़ा का बाइस हैं,
लेकिन जल्दबाज़ी ग़ुर्बत तक पहुँचा देती है।
6 फ़रेबदिह ज़बान से जमा किया हुआ ख़ज़ाना
बिखर जाने वाला धुआँ और मोहलिक फंदा है।
7 बेदीनों का ज़ुल्म ही उन्हें घसीट कर ले जाता है,
क्यूँकि वह इन्साफ़ करने से इन्कार करते हैं।
8 क़ुसूरवार की राह पेचदार है जबकि पाक शख़्स
सीधी राह पर चलता है।
9 झगड़ालू बीवी के साथ एक ही घर में रहने की
निस्बत छत के किसी कोने में गुज़ारा करना बेहतर
है।
10 बेदीन ग़लत काम करने के लालच में रहता है
और अपने किसी भी पड़ोसी पर तरस नहीं खाता।
11 तानाज़न पर जुर्माना लगा तो सादालौह सबक़
सीखेगा, दानिशमन्द को तालीम दे तो उस के इल्म
में इज़ाफ़ा होगा।
12 अल्लाह जो रास्त है बेदीन के घर को ध्यान में
रखता है, वही बेदीन को ख़ाक में मिला देता है।
13 जो कान में उंगली डाल कर ग़रीब की मदद के
लिए चीख़ें नहीं सुनता वह भी एक दिन चीख़ें मारेगा,
और उस की भी सुनी नहीं जाएगी।
14 पोशीदगी में सिला देने से दूसरे का ग़ुस्सा ठंडा
हो जाता, किसी की जेब गर्म करने से उस का सख़्त
तैश दूर हो जाता है।
15 जब इन्साफ़ किया जाए तो रास्तबाज़ ख़ुश हो
जाता, लेकिन बदकार दह्शत खाने लगता है।
16 जो समझ की राह से भटक जाए वह एक दिन
मुर्दों की जमाअत में आराम करेगा।

17 जो ऐश-ओ-इश्रत की ज़िन्दगी पसन्द करे वह
ग़रीब हो जाएगा, जिसे मै और तेल प्यारा हो वह
अमीर नहीं हो जाएगा।
18 जब रास्तबाज़ का फ़िद्या देना है तो बेदीन को
दिया जाएगा, और दियानतदार की जगह बेवफ़ा को
दिया जाएगा।
19 झगड़ालू और तंग करने वाली बीवी के साथ
बसने की निस्बत रेगिस्तान में गुज़ारा करना बेहतर
है।
20 दानिशमन्द के घर में उम्दा ख़ज़ाना और तेल
होता है, लेकिन अहमक़ अपना सारा माल हड़प कर
लेता है।
21 जो इन्साफ़ और शफ़क़त का ताक़्क़ुब करता रहे
वह ज़िन्दगी, रास्ती और इज़्ज़त पाएगा।
22 दानिशमन्द आदमी ताक़तवर फ़ौजियों के शहर
पर हम्ला करके वह क़िलाबन्दी ढा देता है जिस पर
उन का पूरा एतिमाद था।
23 जो अपने मुँह और ज़बान की पहरादारी करे वह
अपनी जान को मुसीबत से बचाए रखता है।
24 मग़रूर और घमंडी का नाम 'तानाज़न' है, हर
काम वह बेहद तकब्बुर के साथ करता है।
25 काहिल का लालच उसे मौत के घाट उतार देता
है, क्यूँकि उस के हाथ काम करने से इन्कार करते
हैं।
26 लालची पूरा दिन लालच करता रहता है, लेकिन
रास्तबाज़ फ़य्याज़दिली से देता है।
27 बेदीनों की क़ुर्बानी क़ाबिल-ए-घिन है, ख़ासकर
जब उसे बुरे मक़्सद से पेश किया जाए।
28 झूटा गवाह तबाह हो जाएगा, लेकिन जो दूसरे
की ध्यान से सुने उस की बात हमेशा तक क़ाइम
रहेगी।
29 बेदीन आदमी गुस्ताख़ अन्दाज़ से पेश आता है,
लेकिन सीधी राह पर चलने वाला सोच समझ कर
अपनी राह पर चलता है।
30 किसी की भी हिक्मत, समझ या मन्सूबा रब का
सामना नहीं कर सकता।
31 घोड़े को जंग के दिन के लिए तय्यार तो किया
जाता है, लेकिन फ़त्ह रब के हाथ में है।

22 1 नेक नाम बड़ी दौलत से क़ीमती, और
मन्ज़ूर-ए-नज़र होना सोने-चाँदी से बेहतर
है।
2 अमीर और ग़रीब एक दूसरे से मिलते जुलते हैं,
रब उन सब का ख़ालिक़ है।
3 ज़हीन आदमी ख़तरा पहले से भाँप कर छुप जाता
है, जबकि सादालौह आगे बढ़ कर उस की लपेट में
आ जाता है।
4 फ़रोतनी और रब का ख़ौफ़ मानने का फल दौलत,
एहतिराम और ज़िन्दगी है।
5 बेदीन की राह में काँटे और फंदे होते हैं। जो अपनी
जान महफ़ूज़ रखना चाहे वह उन से दूर रहता है।
6 छोटे बच्चे को सहीह राह पर चलने की तर्बियत
कर तो वह बूढ़ा हो कर भी उस से नहीं हटेगा।
7 अमीर ग़रीब पर हुकूमत करता, और क़र्ज़दार
क़र्ज़ख़्वाह का ग़ुलाम होता है।
8 जो नाइन्साफ़ी का बीज बोए वह आफ़त की
फ़सल काटेगा, तब उस की ज़ियादती की लाठी टूट
जाएगी।
9 फ़य्याज़दिल को बरकत मिलेगी, क्यूँकि वह
पस्तहाल को अपने खाने में शरीक करता है।
10 तानाज़न को भगा दे तो लड़ाई-झगड़ा घर से
निकल जाएगा, तू तू मैं मैं और एक दूसरे की
बेइज़्ज़ती करने का सिलसिला ख़त्म हो जाएगा।
11 जो दिल की पाकीज़गी को प्यार करे और
मेहरबान ज़बान का मालिक हो वह बादशाह का
दोस्त बनेगा।
12 रब की आँखें इल्म-ओ-इर्फ़ान की देख-भाल
करती हैं, लेकिन वह बेवफ़ा की बातों को तबाह
होने देता है।
13 काहिल कहता है, "गली में शेर है, अगर बाहर
जाऊँ तो मुझे किसी चौक में फाड़ खाएगा।"
14 ज़िनाकार औरत का मुँह गहरा गढ़ा है। जिस से
रब नाराज़ हो वह उस में गिर जाता है।

15 बच्चे के दिल में हमाक़त टिकती है, लेकिन
तर्बियत की छड़ी उसे भगा देती है।
16 एक पस्तहाल पर ज़ुल्म करता है ताकि दौलत
पाए, दूसरा अमीर को तुह्फ़े देता है लेकिन ग़रीब हो
जाता है।

दानिशमन्दों की 30 कहावतें

17 कान लगा कर दानाओं की बातों पर ध्यान दे,
दिल से मेरी तालीम अपना ले! 18 क्यूँकि अच्छा है
कि तू उन्हें अपने दिल में मह्फ़ूज़ रखे, वह सब तेरे
होंटों पर मुस्तइद रहें। 19 आज मैं तुझे, हाँ तुझे ही
तालीम दे रहा हूँ ताकि तेरा भरोसा रब पर रहे। 20 मैं
ने तेरे लिए 30 कहावतें क़लमबन्द की हैं, ऐसी बातें
जो मश्वरों और इल्म से भरी हुई हैं। 21 क्यूँकि मैं तुझे
सच्चाई की क़ाबिल-ए-एतिमाद बातें सिखाना चाहता
हूँ ताकि तू उन्हें क़ाबिल-ए-एतिमाद जवाब दे सके
जिन्हों ने तुझे भेजा है।

-१-

22 पस्तहाल को इस लिए न लूट कि वह पस्तहाल
है, मुसीबतज़दा को अदालत में मत कुचलना।
23 क्यूँकि रब ख़ुद उन का दिफ़ा करके उन्हें लूट लेगा
जो उन्हें लूट रहे हैं।

-२-

24 ग़ुसीले शख़्स का दोस्त न बन, न उस से ज़्यादा
ताल्लुक़ रख जो जल्दी से आग-बगूला हो जाता है।
25 ऐसा न हो कि तू उस का चाल-चलन अपना कर
अपनी जान के लिए फंदा लगाए।

-३-

26 कभी हाथ मिला कर वादा न कर कि मैं दूसरे के
कर्ज़े का ज़ामिन हूँगा। 27 क़र्ज़दार के पैसे वापस न
करने पर अगर तू भी पैसे अदा न कर सके तो तेरी
चारपाई भी तेरे नीचे से छीन ली जाएगी।

-४-

28 ज़मीन की जो हुदूद तेरे बापदादा ने मुक़र्रर कीं
उन्हें आगे पीछे मत करना।

-५-

29 क्या तुझे ऐसा आदमी नज़र आता है जो अपने
काम में माहिर है? वह निचले तब्क़े के लोगों की
ख़िदमत नहीं करेगा बल्कि बादशाहों की।

-६-

23 1 अगर तू किसी हुक्मरान के खाने में शरीक
हो जाए तो ख़ूब ध्यान दे कि तू किस के
हुज़ूर है। 2 अगर तू पेटू हो तो अपने गले पर छुरी रख।
3 उस की उम्दा चीज़ों का लालच मत कर, क्यूँकि यह
खाना फ़रेबदिह है।

-७-

4 अपनी पूरी ताक़त अमीर बनने में सर्फ़ न कर,
अपनी हिक्मत ऐसी कोशिशों से ज़ाए मत कर। 5 एक
नज़र दौलत पर डाल तो वह ओझल हो जाती है, और
पर लगा कर उक़ाब की तरह आसमान की तरफ़ उड़
जाती है।

-८-

6 जलने वाले की रोटी मत खा, उस के लज़ीज़ खानों
का लालच न कर। 7 क्यूँकि यह गले में बाल की तरह
होगा। वह तुझ से कहेगा, “खाओ, पियो!” लेकिन
उस का दिल तेरे साथ नहीं है। 8 जो लुक़्मा तू ने
खा लिया उस से तुझे क़ै आएगी, और तेरी उस से
दोस्ताना बातें ज़ाए हो जाएँगी।

-९-

9 अहमक़ से बात न कर, क्यूँकि वह तेरी
दानिशमन्द बातें हक़ीर जानेगा।

-१०-

10 ज़मीन की जो हुदूद क़दीम ज़माने में मुक़र्रर हुईं
उन्हें आगे पीछे मत करना, और यतीमों के खेतों पर
क़ब्ज़ा न कर। 11 क्यूँकि उन का छुड़ाने वाला क़वी
है, वह उन के हक़ में ख़ुद तेरे ख़िलाफ़ लड़ेगा।

-११-

12 अपना दिल तर्बियत के हवाले कर और अपने
कान इल्म की बातों पर लगा।

-१२-

13 बच्चे को तर्बियत से महरूम न रख, छड़ी से उसे
सज़ा देने से वह नहीं मरेगा। 14 छड़ी से उसे सज़ा दे
तो उस की जान मौत से छूट जाएगी।

-१३-

15 मेरे बेटे, अगर तेरा दिल दानिशमन्द हो तो मेरा
दिल भी ख़ुश होगा। 16 मैं अन्दर ही अन्दर ख़ुशी
मनाऊँगा जब तेरे होंट दियानतदार बातें करेंगे।

-१४-

17 तेरा दिल गुनाहगारों को देख कर कुढ़ता न रहे
बल्कि पूरे दिन रब का ख़ौफ़ रखने में सरगर्म रहे।
18 क्यूँकि तेरी उम्मीद जाती नहीं रहेगी बल्कि तेरा
मुस्तक़बिल यक़ीनन अच्छा होगा।

-१५-

19 मेरे बेटे, सुन कर दानिशमन्द हो जा और सहीह
राह पर अपने दिल की राहनुमाई कर। 20 शराबी और
पेटू से दरेग़ कर, 21 क्यूँकि शराबी और पेटू ग़रीब हो
जाएंगे, और काहिली उन्हें चीथड़े पहनाएगी।

-१६-

22 अपने बाप की सुन जिस ने तुझे पैदा किया, और
अपनी माँ को हक़ीर न जान जब बूढ़ी हो जाए।
23 सच्चाई ख़रीद ले और कभी फ़रोख़्त न कर, उस
में शामिल हिक्मत, तर्बियत और समझ अपना ले।
24 रास्तबाज़ का बाप बड़ी ख़ुशी मनाता है, और
दानिशमन्द बेटे का वालिद उस से लुत्फ़अन्दोज़ होता
है।
25 चुनाँचे अपने माँ-बाप के लिए ख़ुशी का बाइस
हो, ऐसी ज़िन्दगी गुज़ार कि तेरी माँ जश्न मना सके।

-१७-

26 मेरे बेटे, अपना दिल मेरे हवाले कर, तेरी आँखें
मेरी राहें पसन्द करें। 27 क्यूँकि कस्बी गहरा गढ़ा
और ज़िनाकार औरत तंग कुआँ है, 28 डाकू की
तरह वह ताक लगाए बैठ कर मर्दों में बेवफ़ाओं का
इज़ाफ़ा करती है।

-१८-

29 कौन आहें भरता है? कौन हाय हाय करता
और लड़ाई-झगड़े में मुलव्वस रहता है? किस को
बिलावजह चोटें लगती, किस की आँखें धुन्दली
सी रहती हैं? 30 वह जो रात गए तक मै पीने और
मसालेदार मै से मज़ा लेने में मसरूफ़ रहता है। 31 मै
को तकता न रह, ख़्वाह उस का सुर्ख़ रंग कितनी
ख़ूबसूरती से प्याले में क्यूँ न चमके, ख़्वाह उसे बड़े
मज़े से क्यूँ न पिया जाए। 32 अन्जामकार वह तुझे
साँप की तरह काटेगी, नाग की तरह डसेगी। 33 तेरी
आँखें अजीब-ओ-ग़रीब मन्ज़र देखेंगी और तेरा दिल
बेतुकी बातें हकलाएगा। 34 तू समुन्दर के बीच में
लेटने वाले की मानिन्द होगा, उस जैसा जो मस्तूल
पर चढ़ कर लेट गया हो। 35 तू कहेगा, “मेरी पिटाई
हुई लेकिन दर्द महसूस न हुआ, मुझे मारा गया लेकिन
मालूम न हुआ। मैं कब जाग उठूँगा ताकि दुबारा
शराब की तरफ़ रुख़ कर सकूँ?”

-१९-

24 1 शरीरों से हसद न कर, न उन से सोहबत
रखने की आर्ज़ू रख, 2 क्यूँकि उन का दिल

ज़ुल्म करने पर तुला रहता है, उन के होंट दूसरों को
दुख पहुँचाते हैं।

-२०-

3 हिक्मत घर को तामीर करती, समझ उसे मज़बूत
बुन्याद पर खड़ा कर देती, 4 और इल्म-ओ-इर्फ़ान उस
के कमरों को बेशक़ीमत और मनमोहन चीज़ों से भर
देता है।

-२१-

5 दानिशमन्द को ताक़त हासिल होती और इल्म
रखने वाले की क़ुव्वत बढ़ती रहती है, 6 क्यूँकि
जंग करने के लिए हिदायत और फ़त्ह पाने के लिए
मुतअद्दिद मुशीरों की ज़रूरत होती है।

-२२-

7 हिक्मत इतनी बुलन्द-ओ-बाला है कि अहमक़
उसे पा नहीं सकता। जब बुज़ुर्ग शहर के दरवाज़े में
फ़ैसला करने के लिए जमा होते हैं तो वह कुछ नहीं
कह सकता।

-२३-

8 बुरे मन्सूबे बांधने वाला साज़िशी कहलाता है।
9 अहमक़ की चालाकियाँ गुनाह हैं, और लोग
तानाज़न से घिन खाते हैं।

-२४-

10 अगर तू मुसीबत के दिन हिम्मत हार कर ढीला
हो जाए तो तेरी ताक़त जाती रहेगी।

-२५-

11 जिन्हें मौत के हवाले किया जा रहा है उन्हें छुड़ा,
जो क़साई की तरफ़ डगमगाते हुए जा रहे हैं उन्हें रोक
दे। 12 शायद तू कहे, "हमें तो इस के बारे में इल्म नहीं
था।" लेकिन यक़ीन जान, जो दिल की जाँच-पड़ताल
करता है वह बात समझता है, जो तेरी जान की देख-
भाल करता है उसे मालूम है। वह इन्सान को उस के
आमाल का बदला देता है।

-२६-

13 मेरे बेटे, शहद खा क्यूँकि वह अच्छा है, छत्ते का
ख़ालिस शहद मीठा है। 14 जान ले कि हिक्मत इसी
तरह तेरी जान के लिए मीठी है। अगर तू उसे पाए तो
तेरी उम्मीद जाती नहीं रहेगी बल्कि तेरा मुस्तक़बिल
अच्छा होगा।

-२७-

15 ऐ बेदीन, रास्तबाज़ के घर की ताक लगाए मत
बैठना, उस की रिहाइशगाह तबाह न कर। 16 क्यूँकि
गो रास्तबाज़ सात बार गिर जाए तो भी हर बार दुबारा
उठ खड़ा होगा जबकि बेदीन एक बार ठोकर खा कर
मुसीबत में फंसा रहेगा।

-२८-

17 अगर तेरा दुश्मन गिर जाए तो ख़ुश न हो, अगर
वह ठोकर खाए तो तेरा दिल जश्न न मनाए। 18 ऐसा
न हो कि रब यह देख कर तेरा रवय्या पसन्द न करे
और अपना ग़ुस्सा दुश्मन पर उतारने से बाज़ आए।

-२९-

19 बदकारों को देख कर मुश्तइल न हो जा, बेदीनों
के बाइस कुढ़ता न रह। 20 क्यूँकि शरीरों का कोई
मुस्तक़बिल नहीं, बेदीनों का चराग़ बुझ जाएगा।

-३०-

21 मेरे बेटे, रब और बादशाह का ख़ौफ़ मान, और
सरकशों में शरीक न हो। 22 क्यूँकि अचानक ही उन
पर आफ़त आएगी, किसी को पता ही नहीं चलेगा
जब दोनों उन पर हम्ला करके उन्हें तबाह कर देंगे।

दानिशमन्दों की मज़ीद कहावतें

23 ज़ैल में दानिशमन्दों की मज़ीद कहावतें
क़लमबन्द हैं।
अदालत में जानिबदारी दिखाना बुरी बात है। 24 जो
क़ुसूरवार से कहे, "तू बेक़ुसूर है" उस पर क़ौमें
लानत भेजेंगी, उस की सरज़निश उम्मतें करेंगी।
25 लेकिन जो क़ुसूरवार को मुजरिम ठहराए वह
ख़ुशहाल होगा, उसे कस्रत की बरकत मिलेगी।
26 सच्चा जवाब दोस्त के बोसे की मानिन्द है।
27 पहले बाहर का काम मुकम्मल करके अपने
खेतों को तय्यार कर, फिर ही अपना घर तामीर कर।
28 बिलावजह अपने पड़ोसी के ख़िलाफ़ गवाही मत
दे। या क्या तू अपने होंटों से धोका देना चाहता है?
29 मत कहना, "जिस तरह उस ने मेरे साथ किया
उसी तरह मैं उस के साथ करूँगा, मैं उस के हर फ़ेल
का मुनासिब जवाब दूँगा।"

30 एक दिन मैं सुस्त और नासमझ आदमी के खेत
और अंगूर के बाग़ में से गुज़रा। 31 हर जगह काँटेदार
झाड़ियाँ फैली हुई थीं, ख़ुदरौ पौदे पूरी ज़मीन पर छा
गए थे। उस की चारदीवारी भी गिर गई थी। 32 यह
देख कर मैं ने दिल से ध्यान दिया और सबक़ सीख
लिया,
33 अगर तू कहे, "मुझे थोड़ी देर सोने दे, थोड़ी देर
ऊँघने दे, थोड़ी देर हाथ पर हाथ धरे बैठने दे ताकि
मैं आराम कर सकूँ" 34 तो ख़बरदार, जल्द ही ग़ुर्बत
राहज़न की तरह तुझ पर आएगी, मुफ़लिसी हथियार
से लेस डाकू की तरह तुझ पर आ पड़ेगी।

सुलेमान की मज़ीद कहावतें

25 1 ज़ैल में सुलेमान की मज़ीद कहावतें दर्ज
हैं जिन्हें यहूदाह के बादशाह हिज़क़ियाह
के लोगों ने जमा किया।
2 अल्लाह का जलाल इस में ज़ाहिर होता
है कि वह मुआमला पोशीदा रखता है, बादशाह का
जलाल इस में कि वह मुआमले की तहक़ीक़ करता
है।
3 जितना आसमान बुलन्द और ज़मीन गहरी है
उतना ही बादशाहों के दिल का खोज नहीं लगाया
जा सकता।
4 चाँदी से मैल दूर करो तो सुनार बर्तन बनाने में
कामयाब हो जाएगा, 5 बेदीन को बादशाह के हुज़ूर
से दूर करो तो उस का तख़्त रास्ती की बुन्याद पर
क़ाइम रहेगा।
6 बादशाह के हुज़ूर अपने आप पर फ़ख़र न कर, न
इज़्ज़त की उस जगह पर खड़ा हो जा जो बुज़ुर्गों के
लिए मख़्सूस है। 7 इस से पहले कि शुरफ़ा के सामने
ही तेरी बेइज़्ज़ती हो जाए बेहतर है कि तू पीछे खड़ा
हो जा और बाद में कोई तुझ से कहे, "यहाँ सामने
आ जाएँ।"
जो कुछ तेरी आँखों ने देखा उसे अदालत में पेश
करने में 8 जल्दबाज़ी न कर, क्यूँकि तू क्या करेगा
अगर तेरा पड़ोसी तेरे मुआमले को झुटला कर तुझे
शर्मिन्दा करे?
9 अदालत में अपने पड़ोसी से लड़ते वक़्त वह बात
बयान न कर जो किसी ने पोशीदगी में तेरे सपुर्द की,
10 ऐसा न हो कि सुनने वाला तेरी बेइज़्ज़ती करे। तब
तेरी बदनामी कभी नहीं मिटेगी।
11 वक़्त पर मौज़ूँ बात चाँदी के बर्तन में सोने के
सेब की मानिन्द है। 12 दानिशमन्द की नसीहत क़बूल
करने वाले के लिए सोने की बाली और ख़ालिस सोने
के गुलूबन्द की मानिन्द है।
13 क़ाबिल-ए-एतिमाद क़ासिद भेजने वाले के लिए
फ़सल काटते वक़्त बर्फ़ की ठंडक जैसा है, इस तरह
वह अपने मालिक की जान को तर-ओ-ताज़ा कर देता
है।
14 जो शेख़ी मार कर तुह्फ़ों का वादा करे लेकिन
कुछ न दे वह उन तूफ़ानी बादलों की मानिन्द है जो
बरसे बग़ैर गुज़र जाते हैं।

15 हुक्मरान को तहम्मुल से क़ाइल किया जा
सकता, और नर्म ज़बान हड्डियाँ तोड़ने के क़ाबिल
है।
16 अगर शहद मिल जाए तो ज़रूरत से ज़्यादा मत
खा, हद से ज़्यादा खाने से तुझे क़ै आएगी।
17 अपने पड़ोसी के घर में बार बार जाने से अपने
क़दमों को रोक, वर्ना वह तंग आ कर तुझ से नफ़रत
करने लगेगा।
18 जो अपने पड़ोसी के ख़िलाफ़ झूटी गवाही दे वह
हथौड़े, तलवार और तेज़ तीर जैसा नुक़्सानदेह है।
19 मुसीबत के वक़्त बेवफ़ा पर एतिबार करना
ख़राब दाँत या डगमगाते पाँओ की तरह तक्लीफ़दिह
है।
20 दुखते दिल के लिए गीत गाना उतना ही ग़ैरमौज़ूँ
है जितना सर्दियों के मौसम में क़मीस उतारना या
सोडे पर सिरका डालना।
21 अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो उसे खाना खिला,
अगर प्यासा हो तो पानी पिला। 22 क्यूँकि ऐसा करने
से तू उस के सर पर जलते हुए कोएलों का ढेर
लगाएगा, और रब तुझे अज्र देगा।
23 जिस तरह काले बादल लाने वाली हवा बारिश
पैदा करती है उसी तरह बातूनी की चुपके से की गई
बातों से लोगों के मुँह बिगड़ जाते हैं।
24 झगड़ालू बीवी के साथ एक ही घर में रहने की
निस्बत छत के किसी कोने में गुज़ारा करना बेहतर
है।
25 दूरदराज़ मुल्क की ख़ुशख़बरी प्यासे गले में ठंडा
पानी है।
26 जो रास्तबाज़ बेदीन के सामने डगमगाने लगे,
वह गदला चश्मा और आलूदा कुआँ है।
27 ज़्यादा शहद खाना अच्छा नहीं, और न ही ज़्यादा
अपनी इज़्ज़त की फ़िक्र करना।
28 जो अपने आप पर क़ाबू न पा सके वह उस शहर
की मानिन्द है जिस की फ़सील ढा दी गई है।

26 1 अहमक़ की इज़्ज़त करना उतना ही
ग़ैरमौज़ूँ है जितना मौसम-ए-गर्मा में बर्फ़ या
फ़सल काटते वक़्त बारिश।
2 बिलावजह भेजी हुई लानत फड़फड़ाती चिड़िया
या उड़ती हुई अबाबील की तरह ओझल हो कर
बेअसर रह जाती है।
3 घोड़े को छड़ी से, गधे को लगाम से और अहमक़
की पीठ को लाठी से तर्बियत दे।
4 जब अहमक़ अहमक़ाना बातें करे तो उसे जवाब
न दे, वर्ना तू उसी के बराबर हो जाएगा।
5 जब अहमक़ अहमक़ाना बातें करे तो उसे जवाब
दे, वर्ना वह अपनी नज़र में दानिशमन्द ठहरेगा।
6 जो अहमक़ के हाथ पैग़ाम भेजे वह उस की
मानिन्द है जो अपने पाँओ पर कुल्हाड़ी मार कर
अपने आप से ज़ियादती करता है।[j]
7 अहमक़ के मुँह में हिक्मत की बात मफ़्लूज की
बेहरकत लटकती टाँगों की तरह बेकार है।
8 अहमक़ का एहतिराम करना ग़ुलेल के साथ
पत्थर बांधने के बराबर है।
9 अहमक़ के मुँह में हिक्मत की बात नशे में धुत
शराबी के हाथ में काँटेदार झाड़ी की मानिन्द है।
10 जो अहमक़ या हर किसी गुज़रने वाले को काम
पर लगाए वह सब को ज़ख़्मी करने वाले तीरअन्दाज़
की मानिन्द है।
11 जो अहमक़ अपनी हमाक़त दुहराए वह अपनी
क़ै के पास वापस आने वाले कुत्ते की मानिन्द है।
12 क्या कोई दिखाई देता है जो अपने आप को
दानिशमन्द समझता है? उस की निस्बत अहमक़ के
सुधरने की ज़्यादा उम्मीद है।
13 काहिल कहता है, “रास्ते में शेर है, हाँ चौकों में
शेर फिर रहा है!”
14 जिस तरह दरवाज़ा क़ब्ज़े पर घूमता है उसी तरह
काहिल अपने बिस्तर पर करवटें बदलता है।

---

[j]लफ़्ज़ी तर्जुमा : ज़ियादती का प्याला पीता है।

15 जब काहिल अपना हाथ खाने के बर्तन में डाल
दे तो वह इतना सुस्त है कि उसे मुँह तक वापस नहीं
ला सकता।
16 काहिल अपनी नज़र में हिक्मत से जवाब देने
वाले सात आदमियों से कहीं ज़्यादा दानिशमन्द है।
17 जो गुज़रते वक़्त दूसरों के झगड़े में मुदाख़लत
करे वह उस आदमी की मानिन्द है जो कुत्ते को कानों
से पकड़ ले।
18–19 जो अपने पड़ोसी को फ़रेब दे कर बाद में
कहे, "मैं सिर्फ़ मज़ाक़ कर रहा था" वह उस दीवाने
की मानिन्द है जो लोगों पर जलते हुए और मोहलिक
तीर बरसाता है।
20 लकड़ी के ख़त्म होने पर आग बुझ जाती है,
तुहमत लगाने वाले के चले जाने पर झगड़ा बन्द हो
जाता है।
21 अंगारों में कोएले और आग में लकड़ी डाल तो
आग भड़क उठेगी। झगड़ालू को कहीं भी खड़ा कर
तो लोग मुश्तइल हो जाएंगे।
22 तुहमत लगाने वाले की बातें लज़ीज़ खाने के
लुक़्मों जैसी हैं, वह दिल की तह तक उतर जाती हैं।
23 जलने वाले होंट और शरीर दिल मिट्टी के उस
बर्तन की मानिन्द हैं जिसे चमकदार बनाया गया हो।
24 नफ़रत करने वाला अपने होंटों से अपना असली
रूप छुपा लेता है, लेकिन उस का दिल फ़रेब से भरा
रहता है। 25 जब वह मेहरबान बातें करे तो उस पर
यक़ीन न कर, क्यूँकि उस के दिल में सात मकरूह
बातें हैं। 26 गो उस की नफ़रत फ़िलहाल फ़रेब से
छुपी रहे, लेकिन एक दिन उस का ग़लत किरदार
पूरी जमाअत के सामने ज़ाहिर हो जाएगा।
27 जो दूसरों को फंसाने के लिए गढ़ा खोदे वह उस
में ख़ुद गिर जाएगा, जो पत्थर लुढ़का कर दूसरों पर
फैंकना चाहे उस पर ही पत्थर वापस लुढ़क आएगा।
28 झूटी ज़बान उन से नफ़रत करती है जिन्हें वह
कुचल देती है, ख़ुशामद करने वाला मुँह तबाही मचा
देता है।

27 1 उस पर शेख़ी न मार जो तू कल करेगा,
तुझे क्या मालूम कि कल का दिन क्या कुछ
फ़राहम करेगा?
2 तेरा अपना मुँह और अपने होंट तेरी तारीफ़ न करें
बल्कि वह जो तुझ से वाक़िफ़ भी न हो।
3 पत्थर भारी और रेत वज़नी है, लेकिन जो अहमक़
तुझे तंग करे वह ज़्यादा नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त है।
4 ग़ुस्सा ज़ालिम होता और तैश सैलाब की तरह
इन्सान पर आ जाता है, लेकिन कौन हसद का
मुक़ाबला कर सकता है?
5 खुली मलामत छुपी हुई मुहब्बत से बेहतर है।
6 प्यार करने वाले की ज़र्बें वफ़ा का सबूत हैं,
लेकिन नफ़रत करने वाले के मुतअद्दिद बोसों से
ख़बरदार रह।
7 जो सेर है वह शहद को भी पाँओ तले रौंद देता
है, लेकिन भूके को कड़वी चीज़ें भी मीठी लगती हैं।
8 जो आदमी अपने घर से निकल कर मारा मारा
फिरे वह उस परिन्दे की मानिन्द है जो अपने घोंसले
से भाग कर कभी इधर कभी इधर फड़फड़ाता रहता
है।
9 तेल और बख़ूर दिल को ख़ुश करते हैं, लेकिन
दोस्त अपने अच्छे मश्वरों से ख़ुशी दिलाता है।
10 अपने दोस्तों को कभी न छोड़, न अपने ज़ाती
दोस्तों को न अपने बाप के दोस्तों को। तब तुझे
मुसीबत के दिन अपने भाई से मदद नहीं माँगनी
पड़ेगी। क्यूँकि क़रीब का पड़ोसी दूर के भाई से
बेहतर है।
11 मेरे बेटे, दानिशमन्द बन कर मेरे दिल को ख़ुश
कर ताकि मैं अपने हक़ीर जानने वाले को जवाब दे
सकूँ।
12 ज़हीन आदमी ख़तरा पहले से भाँप कर छुप
जाता है, जबकि सादालौह आगे बढ़ कर उस की
लपेट में आ जाता है।
13 ज़मानत का वह लिबास वापस न कर जो किसी
ने परदेसी का ज़ामिन बन कर दिया है। अगर वह

अजनबी औरत का ज़ामिन हो तो उस ज़मानत पर
ज़रूर क़ब्ज़ा कर जो उस ने दी थी।
14 जो सुब्ह-सवेरे बुलन्द आवाज़ से अपने पड़ोसी
को बरकत दे उस की बरकत लानत ठहराई जाएगी।
15 झगड़ालू बीवी मूसलाधार बारिश के बाइस
मुसलसल टपकने वाली छत की मानिन्द है। 16 उसे
रोकना हवा को रोकने या तेल को पकड़ने के बराबर
है।
17 लोहा लोहे को और इन्सान इन्सान के ज़हन को
तेज़ करता है।
18 जो अन्जीर के दरख़्त की देख-भाल करे वह उस
का फल खाएगा, जो अपने मालिक की वफ़ादारी से
ख़िदमत करे उस का एहतिराम किया जाएगा।
19 जिस तरह पानी चिहरे को मुनअकिस करता है
उसी तरह इन्सान का दिल इन्सान को मुनअकिस
करता है।
20 न मौत और न पाताल कभी सेर होते हैं, न इन्सान
की आँखें।
21 सोना और चाँदी कुठाली में पिघला कर पाक-
साफ़ कर, लेकिन इन्सान का किरदार इस से मालूम
कर कि लोग उस की कितनी क़दर करते हैं।
22 अगर अहमक़ को अनाज की तरह ओखली और
मूसल से कूटा भी जाए तो भी उस की हमाक़त दूर
नहीं हो जाएगी।
23 एहतियात से अपनी भेड़-बकरियों की हालत पर
ध्यान दे, अपने रेवड़ों पर ख़ूब तवज्जुह दे। 24 क्यूँकि
कोई भी दौलत हमेशा तक क़ाइम नहीं रहती, कोई
भी ताज नस्ल-दर-नस्ल बरक़रार नहीं रहता। 25 खुले
मैदान में घास काट कर जमा कर ताकि नई घास उग
सके, चारा पहाड़ों से भी इकट्ठा कर। 26 तब तू भेड़ों
की ऊन से कपड़े बना सकेगा, बकरों की फ़रोख़्त से
खेत ख़रीद सकेगा, 27 और बकरियाँ इतना दूध देंगी
कि तेरे, तेरे ख़ानदान और तेरे नौकर-चाकरों के लिए
काफ़ी होगा।

28 1 बेदीन फ़रार हो जाता है हालाँकि ताक़्क़ुब
करने वाला कोई नहीं होता, लेकिन
रास्तबाज़ अपने आप को जवान शेरबबर की तरह
महफ़ूज़ समझता है।
2 मुल्क की ख़ताकारी के सबब से उस की हुकूमत
की यगानगत क़ाइम नहीं रहेगी, लेकिन समझदार
और दानिशमन्द आदमी उसे बड़ी देर तक क़ाइम
रखेगा।
3 जो ग़रीब ग़रीबों पर ज़ुल्म करे वह उस मूसलाधार
बारिश की मानिन्द है जो सैलाब ला कर फ़सलों को
तबाह कर देती है।
4 जिस ने शरीअत को तर्क किया वह बेदीन की
तारीफ़ करता है, लेकिन जो शरीअत के ताबे रहता
है वह उस की मुख़ालफ़त करता है।
5 शरीर इन्साफ़ नहीं समझते, लेकिन रब के तालिब
सब कुछ समझते हैं।
6 बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारने वाला ग़रीब टेढ़ी राहों
पर चलने वाले अमीर से बेहतर है।
7 जो शरीअत की पैरवी करे वह समझदार बेटा है,
लेकिन अय्याशों का साथी अपने बाप की बेइज़्ज़ती
करता है।
8 जो अपनी दौलत नाजाइज़ सूद से बढ़ाए वह उसे
किसी और के लिए जमा कर रहा है, ऐसे शख़्स के
लिए जो ग़रीबों पर रहम करेगा।
9 जो अपने कान में उंगली डाले ताकि शरीअत की
बातें न सुने उस की दुआएँ भी क़ाबिल-ए-घिन हैं।
10 जो सीधी राह पर चलने वालों को ग़लत राह
पर लाए वह अपने ही गढ़े में गिर जाएगा, लेकिन
बेइल्ज़ाम अच्छी मीरास पाएँगे।
11 अमीर अपने आप को दानिशमन्द समझता है,
लेकिन जो ज़रूरतमन्द समझदार है वह उस का
असली किरदार मालूम कर लेता है।
12 जब रास्तबाज़ फ़त्हयाब हों तो मुल्क की शान-
ओ-शौकत बढ़ जाती है, लेकिन जब बेदीन उठ खड़े
हों तो लोग छुप जाते हैं।
13 जो अपने गुनाह छुपाए वह नाकाम रहेगा, लेकिन
जो उन्हें तस्लीम करके तर्क करे वह रहम पाएगा।

14 मुबारक है वह जो हर वक़्त रब का ख़ौफ़ माने,
लेकिन जो अपना दिल सख़्त करे वह मुसीबत में फंस
जाएगा।
15 पस्तहाल क़ौम पर हुकूमत करने वाला बेदीन
ग़ुर्राते हुए शेरबबर और हम्लाआवर रीछ की मानिन्द
है।
16 जहाँ नासमझ हुक्मरान है वहाँ ज़ुल्म होता है,
लेकिन जिसे ग़लत नफ़ा से नफ़रत हो उस की उम्र
दराज़ होगी।
17 जो किसी को क़त्ल करे वह मौत तक अपने
क़ुसूर के नीचे दबा हुआ मारा मारा फिरेगा। ऐसे शख़्स
का सहारा न बन!
18 जो बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारे वह बचा रहेगा,
लेकिन जो टेढ़ी राह पर चले वह अचानक ही गिर
जाएगा।
19 जो अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी करे वह जी भर
कर रोटी खाएगा, लेकिन जो फ़ुज़ूल चीज़ों के पीछे
पड़ जाए वह ग़ुर्बत से सेर हो जाएगा।
20 क़ाबिल-ए-एतिमाद आदमी को कस्रत की
बरकतें हासिल होंगी, लेकिन जो भाग भाग कर
दौलत जमा करने में मसरूफ़ रहे वह सज़ा से नहीं
बचेगा।
21 जानिबदारी बुरी बात है, लेकिन इन्सान रोटी का
टुकड़ा हासिल करने के लिए मुजरिम बन जाता है।
22 लालची भाग भाग कर दौलत जमा करता है, उसे
मालूम ही नहीं कि इस का अन्जाम ग़ुर्बत ही है।
23 आख़िरकार नसीहत देने वाला चापलूसी करने
वाले से ज़्यादा मन्ज़ूर होता है।
24 जो अपने बाप या माँ को लूट कर कहे, "यह
जुर्म नहीं है" वह मोहलिक क़ातिल का शरीक-ए-
कार होता है।
25 लालची झगड़ों का मम्बा रहता है, लेकिन जो
रब पर भरोसा रखे वह ख़ुशहाल रहेगा।
26 जो अपने दिल पर भरोसा रखे वह बेवुक़ूफ़ है,
लेकिन जो हिक्मत की राह पर चले वह महफ़ूज़
रहेगा।
27 ग़रीबों को देने वाला ज़रूरतमन्द नहीं होगा,
लेकिन जो अपनी आँखें बन्द करके उन्हें
नज़रअन्दाज़ करे उस पर बहुत लानतें आएँगी ।
28 जब बेदीन उठ खड़े हों तो लोग छुप जाते हैं,
लेकिन जब हलाक हो जाएँ तो रास्तबाज़ों की तादाद
बढ़ जाती है।

29 1 जो मुतअद्दिद नसीहतों के बावुजूद
हटधर्म रहे वह अचानक ही बर्बाद हो
जाएगा, और शिफ़ा का इम्कान ही नहीं होगा।
2 जब रास्तबाज़ बहुत हैं तो क़ौम ख़ुश होती, लेकिन
जब बेदीन हुकूमत करे तो क़ौम आहें भर्ती है।
3 जिसे हिक्मत प्यारी हो वह अपने बाप को ख़ुशी
दिलाता है, लेकिन कस्बियों का साथी अपनी दौलत
उड़ा देता है।
4 बादशाह इन्साफ़ से मुल्क को मुस्तहकम करता,
लेकिन हद से ज़्यादा टैक्स लेने से उसे तबाह करता
है।
5 जो अपने पड़ोसी की चापलूसी करे वह उस के
क़दमों के आगे जाल बिछाता है।
6 शरीर जुर्म करते वक़्त अपने आप को फंसा देता,
लेकिन रास्तबाज़ ख़ुशी मना कर शादमान रहता है।
7 रास्तबाज़ पस्तहालों के हुक़ूक़ का ख़याल रखता
है, लेकिन बेदीन पर्वा ही नहीं करता।
8 तानाज़न शहर में अफ़्रा-तफ़्री मचा देते जबकि
दानिशमन्द ग़ुस्सा ठंडा कर देते हैं।
9 जब दानिशमन्द आदमी अदालत में अहमक़ से
लड़े तो अहमक़ तैश में आ जाता या क़हक़हा लगाता
है, सुकून का इम्कान ही नहीं होता।
10 ख़ूँख़ार आदमी बेइल्ज़ाम शख़्स से नफ़रत
करता, लेकिन सीधी राह पर चलने वाला उस की
बेहतरी चाहता है।
11 अहमक़ अपना पूरा ग़ुस्सा उतारता, लेकिन
दानिशमन्द उसे रोक कर क़ाबू में रखता है।
12 जो हुक्मरान झूट पर ध्यान दे उस के तमाम
मुलाज़िम बेदीन होंगे।

13 जब ग़रीब और ज़ालिम की मुलाक़ात होती है तो
दोनों की आँखों को रौशन करने वाला रब ही है।
14 जो बादशाह दयानतदारी से ज़रूरतमन्द की
अदालत करे उस का तख़्त हमेशा तक क़ाइम रहेगा।
15 छड़ी और नसीहत हिक्मत पैदा करती हैं। जिसे
बेलगाम छोड़ा जाए वह अपनी माँ के लिए शर्मिन्दगी
का बाइस होगा।
16 जब बेदीन फलें फूलें तो गुनाह भी फलता फूलता
है, लेकिन रास्तबाज़ उन की शिकस्त के गवाह होंगे।
17 अपने बेटे की तर्बियत कर तो वह तुझे सुकून
और ख़ुशी दिलाएगा।
18 जहाँ रोया नहीं वहाँ क़ौम बेलगाम हो जाती है,
लेकिन मुबारक है वह जो शरीअत के ताबे रहता है।
19 नौकर सिर्फ़ अल्फ़ाज़ से नहीं सुधरता। अगर वह
बात समझे भी तो भी ध्यान नहीं देगा।
20 क्या कोई दिखाई देता है जो बात करने में
जल्दबाज़ है? उस की निस्बत अहमक़ के सुधरने
की ज़्यादा उम्मीद है।
21 जो ग़ुलाम जवानी से नाज़-ओ-नेमत में पल कर
बिगड़ जाए उस का बुरा अन्जाम होगा।
22 ग़ज़बआलूद आदमी झगड़े छेड़ता रहता है,
ग़ुसीले शख़्स से मुतअद्दिद गुनाह सरज़द होते हैं।
23 तकब्बुर अपने मालिक को पस्त कर देगा
जबकि फ़रोतन शख़्स इज़्ज़त पाएगा।
24 जो चोर का साथी हो वह अपनी जान से नफ़रत
रखता है। गो उस से हलफ़ उठवाया जाए कि चोरी
के बारे में गवाही दे तो भी कुछ नहीं बताता बल्कि
हलफ़ की लानत की ज़द में आ जाता है।
25 जो इन्सान से ख़ौफ़ खाए वह फंदे में फंस जाएगा,
लेकिन जो रब का ख़ौफ़ माने वह महफ़ूज़ रहेगा।
26 बहुत लोग हुक्मरान की मन्ज़ूरी के तालिब रहते
हैं, लेकिन इन्साफ़ रब ही की तरफ़ से मिलता है।
27 रास्तबाज़ बदकार से और बेदीन सीधी राह पर
चलने वाले से घिन खाता है।

अजूर की कहावतें

30 1 ज़ैल में अजूर बिन याक़ा की कहावतें
हैं। वह मस्सा का रहने वाला था। उस ने
फ़रमाया,
ऐ अल्लाह, मैं थक गया हूँ, ऐ अल्लाह, मैं थक गया हूँ,
यह मेरे बस की बात नहीं रही। 2 यक़ीनन मैं इन्सानों
में सब से ज़्यादा नादान हूँ, मुझे इन्सान की समझ
हासिल नहीं। 3 न मैं ने हिक्मत सीखी, न क़ुद्दूस ख़ुदा
के बारे में इल्म रखता हूँ।

4 कौन आसमान पर चढ़ कर वापस उतर आया?
किस ने हवा को अपने हाथों में जमा किया? किस ने
गहरे पानी को चादर में लपेट लिया? किस ने ज़मीन
की हुदूद को अपनी अपनी जगह पर क़ाइम किया
है? उस का नाम क्या है, उस के बेटे का क्या नाम
है? अगर तुझे मालूम हो तो मुझे बता!

5 अल्लाह की हर बात आज़मूदा है, जो उस में पनाह
ले उस के लिए वह ढाल है।
6 उस की बातों में इज़ाफ़ा मत कर, वर्ना वह तुझे
डाँटेगा और तू झूटा ठहरेगा।

7 ऐ रब, मैं तुझ से दो चीज़ें माँगता हूँ, मेरे मरने से
पहले इन से इन्कार न कर। 8 पहले, दरोग़गोई और
झूट मुझ से दूर रख। दूसरे, न ग़ुर्बत न दौलत मुझे दे
बल्कि उतनी ही रोटी जितनी मेरा हक़ है, 9 ऐसा न
हो कि मैं दौलत के बाइस सेर हो कर तेरा इन्कार
करूँ और कहूँ, “रब कौन है?” ऐसा भी न हो कि मैं
ग़ुर्बत के बाइस चोरी करके अपने ख़ुदा के नाम की
बेहुरमती करूँ।
10 मालिक के सामने मुलाज़िम पर तुहमत न लगा,
ऐसा न हो कि वह तुझ पर लानत भेजे और तुझे इस
का बुरा नतीजा भुगतना पड़े।

11 ऐसी नस्ल भी है जो अपने बाप पर लानत करती
और अपनी माँ को बरकत नहीं देती।
12 ऐसी नस्ल भी है जो अपनी नज़र में पाक-साफ़
है, गो उस की ग़िलाज़त दूर नहीं हुई।
13 ऐसी नस्ल भी है जिस की आँखें बड़े तकब्बुर से
देखती हैं, जो अपनी पलकें बड़े घमंड से मारती है।
14 ऐसी नस्ल भी है जिस के दाँत तलवारें और जबड़े
छुरियाँ हैं ताकि दुनिया के मुसीबतज़दों को खा जाएँ,
मुआशरे के ज़रूरतमन्दों को हड़प कर लें।

15 जोंक की दो बेटियाँ हैं, चूसने के दो आज़ा जो
चीख़ते रहते हैं, "और दो, और दो"
तीन चीज़ें हैं जो कभी सेर नहीं होतीं बल्कि चार हैं
जो कभी नहीं कहतीं, "अब बस करो, अब काफ़ी
है," 16 पाताल, बाँझ का रहम, ज़मीन जिस की प्यास
कभी नहीं बुझती और आग जो कभी नहीं कहती,
"अब बस करो, अब काफ़ी है।"
17 जो आँख बाप का मज़ाक़ उड़ाए और माँ की
हिदायत को हक़ीर जाने उसे वादी के कव्वे अपनी
चोंचों से निकालेंगे और गिद्ध के बच्चे खा जाएंगे।
18 तीन बातें मुझे हैरतज़दा करती हैं बल्कि चार
हैं जिन की मुझे समझ नहीं आती, 19 आसमान की
बुलन्दियों पर उक़ाब की राह, चटान पर साँप की
राह, समुन्दर के बीच में जहाज़ की राह और वह राह
जो मर्द कुंवारी के साथ चलता है।
20 ज़िनाकार औरत की यह राह है, वह खा लेती
और फिर अपना मुँह पोंछ कर कहती है, "मुझ से
कोई ग़लती नहीं हुई।"
21 ज़मीन तीन चीज़ों से लरज़ उठती है बल्कि चार
चीज़ें बर्दाश्त नहीं कर सकती, 22 वह ग़ुलाम जो
बादशाह बन जाए, वह अहमक़ जो जी भर कर खाना
खा सके, 23 वह नफ़रतअंगेज़ [k]औरत जिस की शादी
हो जाए और वह नौकरानी जो अपनी मालिकन की
मिलकियत पर क़ब्ज़ा करे।
24 ज़मीन की चार मख़्लूक़ात निहायत ही
दानिशमन्द हैं हालाँकि छोटी हैं। 25 च्यूँटियाँ
कमज़ोर नस्ल हैं लेकिन गर्मियों के मौसम में सर्दियों
के लिए ख़ुराक जमा करती हैं, 26 बिज्जू कमज़ोर
नस्ल हैं लेकिन चटानों में ही अपने घर बना लेते हैं,
27 टिड्डियों का बादशाह नहीं होता ताहम सब परे
बांध कर निकलती हैं, 28 छिपकलियाँ गो हाथ से
पकड़ी जाती हैं, ताहम शाही महलों में पाई जाती हैं।
29 तीन बल्कि चार जानदार पुरवक़ार अन्दाज़ में
चलते हैं। 30 पहले, शेरबबर जो जानवरों में ज़ोरावर
है और किसी से भी पीछे नहीं हटता, 31 दूसरे, मुर्ग़ा
जो अकड़ कर चलता है, तीसरे, बकरा और चौथे
अपनी फ़ौज के साथ चलने वाला बादशाह।
32 अगर तू ने मग़रूर हो कर हमाक़त की या बुरे
मन्सूबे बांधे तो अपने मुँह पर हाथ रख कर ख़ामोश
हो जा, 33 क्यूँकि दूध बिलोने से मक्खन, नाक को
मरोड़ने [l]से ख़ून और किसी को ग़ुस्सा दिलाने से
लड़ाई-झगड़ा पैदा होता है।

लमूएल की कहावतें

31 1 ज़ैल में मस्सा के बादशाह लमूएल की
कहावतें हैं। उस की माँ ने उसे यह तालीम
दी,
2 ऐ मेरे बेटे, मेरे पेट के फल, जो मेरी मन्नतों से
पैदा हुआ, मैं तुझे क्या बताऊँ? 3 अपनी पूरी ताक़त
औरतों पर ज़ाए न कर, उन पर जो बादशाहों की
तबाही का बाइस हैं।
4 ऐ लमूएल, बादशाहों के लिए मै पीना मुनासिब
नहीं, हुक्मरानों के लिए शराब की आर्ज़ू रखना मौज़ूँ
नहीं। 5 ऐसा न हो कि वह पी पी कर क़वानीन भूल
जाएँ और तमाम मज़्लूमों का हक़ मारें। 6 शराब उन्हें
पिला जो तबाह होने वाले हैं, मै उन्हें पिला जो
ग़म खाते हैं, 7 ऐसे ही पी पी कर अपनी ग़ुर्बत और
मुसीबत भूल जाएँ।

---

[k]लफ़्ज़ी तर्जुमा : जिस से नफ़रत की जाती है।

[l]लफ़्ज़ी तर्जुमा : दबाओ डालने।

8 अपना मुँह उन के लिए खोल जो बोल नहीं सकते,
उन के हक़ में जो ज़रूरतमन्द हैं। 9 अपना मुँह खोल
कर इन्साफ़ से अदालत कर और मुसीबतज़दा और
ग़रीबों के हुक़ूक़ महफ़ूज़ रख।

सुघड़ बीवी की तारीफ़

10 सुघड़ बीवी कौन पा सकता है? ऐसी औरत
मोतियों से कहीं ज़्यादा बेशक़ीमत है। 11 उस पर
उस के शौहर को पूरा एतिमाद है, और वह नफ़ा से
महरूम नहीं रहेगा। 12 उम्र भर वह उसे नुक़्सान नहीं
पहुँचाएगी बल्कि बरकत का बाइस होगी।
13 वह ऊन और सन चुन कर बड़ी मेहनत से धागा
बना लेती है। 14 तिजारती जहाज़ों की तरह वह
दूरदराज़ इलाक़ों से अपनी रोटी ले आती है।
15 वह पौ फटने से पहले ही जाग उठती है
ताकि अपने घर वालों के लिए खाना और अपनी
नौकरानियों के लिए उन का हिस्सा तय्यार करे।
16 सोच-बिचार के बाद वह खेत ख़रीद लेती, अपने
कमाए हुए पैसों से अंगूर का बाग़ लगा लेती है।
17 ताक़त से कमरबस्ता हो कर वह अपने बाज़ूओं
को मज़बूत करती है। 18 वह महसूस करती है, "मेरा
कारोबार फ़ाइदामन्द है," इस लिए उस का चराग़
रात के वक़्त भी नहीं बुझता। 19 उस के हाथ हर
वक़्त ऊन और कतान कातने में मसरूफ़ रहते हैं।
20 वह अपनी मुट्ठी मुसीबतज़दों और ग़रीबों के लिए
खोल कर उन की मदद करती है। 21 जब बर्फ़ पड़े तो
उसे घर वालों के बारे में कोई डर नहीं, क्यूँकि सब
गर्म गर्म कपड़े पहने हुए हैं। 22 अपने बिस्तर के लिए
वह अच्छे कम्बल बना लेती, और ख़ुद वह बारीक
कतान और अर्ग़वानी रंग के लिबास पहने फिरती है।
23 शहर के दरवाज़े में बैठे मुल्क के बुज़ुर्ग उस के
शौहर से ख़ूब वाक़िफ़ हैं, और जब कभी कोई फ़ैसला
करना हो तो वह भी शूरा में शरीक होता है।
24 बीवी कपड़ों की सिलाई करके उन्हें फ़रोख़्त
करती है, सौदागर उस के कमरबन्द ख़रीद लेते हैं।
25 वह ताक़त और वक़ार से मुलब्बस रहती और
हंस कर आने वाले दिनों का सामना करती है। 26 वह
हिक्मत से बात करती, और उस की ज़बान पर
शफ़ीक़ तालीम रहती है। 27 वह सुस्ती की रोटी नहीं
खाती बल्कि अपने घर में हर मुआमले की देख-भाल
करती है।
28 उस के बेटे खड़े हो कर उसे मुबारक कहते हैं,
उस का शौहर भी उस की तारीफ़ करके कहता है,
29 "बहुत सी औरतें सुघड़ साबित हुई हैं, लेकिन तू
उन सब पर सब्क़त रखती है!"
30 दिलफ़रेबी, धोका और हुस्न पल भर का है,
लेकिन जो औरत अल्लाह का ख़ौफ़ माने वह क़ाबिल-
ए-तारीफ़ है। 31 उसे उस की मेहनत का अज्र दो! शहर
के दरवाज़ों में उस के काम उस की सताइश करें!।

वाइज़

हर दुनियावी चीज़ बातिल है

1 1 ज़ैल में वाइज़ के अल्फ़ाज़ क़लमबन्द हैं,
उस के जो दाऊद का बेटा और यरूशलम में
बादशाह है,
2 वाइज़ फ़रमाता है, "बातिल ही बातिल, बातिल
ही बातिल, सब कुछ बातिल ही बातिल है!" 3 सूरज
तले जो मेहनत-मशक़्क़त इन्सान करे उस का क्या
फ़ाइदा है? कुछ नहीं! 4 एक पुश्त आती और दूसरी
जाती है, लेकिन ज़मीन हमेशा तक क़ाइम रहती है।
5 सूरज तुलू और ग़ुरूब हो जाता है, फिर सुरअत से
उसी जगह वापस चला जाता है जहाँ से दुबारा तुलू
होता है। 6 हवा जुनूब की तरफ़ चलती, फिर मुड़ कर
शिमाल की तरफ़ चलने लगती है। यूँ चक्कर काट काट
कर वह बार बार नुक़्ता-ए-आग़ाज़ पर वापस आती
है। 7 तमाम दरया समुन्दर में जा मिलते हैं, तो भी
समुन्दर की सतह वही रहती है, क्यूँकि दरयाओं का
पानी मुसलसल उन सरचश्मों के पास वापस आता
है जहाँ से बह निकला है। 8 इन्सान बातें करते करते
थक जाता है और सहीह तौर से कुछ बयान नहीं
कर सकता। आँख कभी इतना नहीं देखती कि कहे,
"अब बस करो, काफ़ी है।" कान कभी इतना नहीं
सुनता कि और न सुनना चाहे। 9 जो कुछ पेश आया
वही दुबारा पेश आएगा, जो कुछ किया गया वही
दुबारा किया जाएगा। सूरज तले कोई भी बात नई
नहीं। 10 क्या कोई बात है जिस के बारे में कहा जा
सके, "देखो, यह नई है"? हरगिज़ नहीं, यह भी हम
से बहुत देर पहले ही मौजूद थी। 11 जो पहले ज़िन्दा
थे उन्हें कोई याद नहीं करता, और जो आने वाले हैं
उन्हें भी वह याद नहीं करेंगे जो उन के बाद आएँगे।

हिक्मत हासिल करना बातिल है

12 मैं जो वाइज़ हूँ यरूशलम में इस्राईल का
बादशाह था। 13 मैं ने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त इस
पर लगाई कि जो कुछ आसमान तले किया जाता
है उस की हिक्मत के ज़रीए तफ़्तीश-ओ-तहक़ीक़
करूँ। यह काम नागवार है गो अल्लाह ने ख़ुद इन्सान
को इस में मेहनत-मशक़्क़त करने की ज़िम्मादारी दी
है।
14 मैं ने तमाम कामों का मुलाहज़ा किया जो सूरज
तले होते हैं, तो नतीजा यह निकला किसब कुछ
बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है। 15 जो
पेचदार है वह सीधा नहीं हो सकता, जिस की कमी
है उसे गिना नहीं जा सकता।
16 मैं ने दिल में कहा, "हिक्मत में मैं ने इतना इज़ाफ़ा
किया और इतनी तरक़्क़ी की कि उन सब से सब्क़त
ले गया जो मुझ से पहले यरूशलम पर हुकूमत करते
थे। मेरे दिल ने बहुत हिक्मत और इल्म अपना लिया
है।" 17 मैं ने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त इस पर लगाई
कि हिक्मत समझूँ, नीज़ कि मुझे दीवानगी और
हमाक़त की समझ भी आए। लेकिन मुझे मालूम हुआ
कि यह भी हवा को पकड़ने के बराबर है। 18 क्यूँकि
जहाँ हिक्मत बहुत है वहाँ रंजीदगी भी बहुत है। जो
इल्म-ओ-इर्फ़ान में इज़ाफ़ा करे, वह दुख में इज़ाफ़ा
करता है।

दुनिया की ख़ुशियाँ बातिल हैं

2 1 मैं ने अपने आप से कहा, "आ, ख़ुशी को
आज़मा कर अच्छी चीज़ों का तजरिबा कर!"
लेकिन यह भी बातिल ही निकला। 2 मैं बोला,
"हंसना बेहूदा है, और ख़ुशी से क्या हासिल होता
है?" 3 मैं ने दिल में अपना जिस्म मै से तर-ओ-ताज़ा

करने और हमाक़त अपनाने के तरीक़े ढूँड निकाले।
इस के पीछे भी मेरी हिक्मत मालूम करने की कोशिश
थी, क्यूँकि मैं देखना चाहता था कि जब तक इन्सान
आसमान तले जीता रहे उस के लिए क्या कुछ करना
मुफ़ीद है।

4 मैं ने बड़े बड़े काम अन्जाम दिए, अपने लिए
मकान तामीर किए, ताकिस्तान लगाए, 5 मुतअद्दिद
बाग़ और पार्क लगा कर उन में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के
फलदार दरख़्त लगाए। 6 फलने फूलने वाले जंगल
की आबपाशी के लिए मैं ने तालाब बनवाए। 7 मैं ने
ग़ुलाम और लौंडियाँ ख़रीद लीं। ऐसे ग़ुलाम भी बहुत
थे जो घर में पैदा हुए थे। मुझे उतने गाय-बैल और
भेड़-बकरियाँ मिलीं जितनी मुझ से पहले यरूशलम
में किसी को हासिल न थीं। 8 मैं ने अपने लिए सोना-
चाँदी और बादशाहों और सूबों के ख़ज़ाने जमा किए।
मैं ने गुलूकार मर्द-ओ-ख़वातीन हासिल किए, साथ
साथ कस्रत की ऐसी चीज़ें जिन से इन्सान अपना
दिल बहलाता है।

9 यूँ मैं ने बहुत तरक़्क़ी करके उन सब पर सब्क़त
हासिल की जो मुझ से पहले यरूशलम में थे। और हर
काम में मेरी हिक्मत मेरे दिल में क़ाइम रही। 10 जो
कुछ भी मेरी आँखें चाहती थीं वह मैं ने उन के लिए
मुहय्या किया, मैं ने अपने दिल से किसी भी ख़ुशी
का इन्कार न किया। मेरे दिल ने मेरे हर काम से
लुत्फ़ उठाया, और यह मेरी तमाम मेहनत-मशक़्क़त
का अज्र रहा।

11 लेकिन जब मैं ने अपने हाथों के तमाम कामों
का जाइज़ा लिया, उस मेहनत-मशक़्क़त का जो मैं ने
की थी तो नतीजा यही निकला कि सब कुछ बातिल
और हवा को पकड़ने के बराबर है। सूरज तले किसी
भी काम का फ़ाइदा नहीं होता।

सब का एक ही अन्जाम है

12 फिर मैं हिक्मत, बेहुदगी और हमाक़त पर ग़ौर
करने लगा। मैं ने सोचा, जो आदमी बादशाह की
वफ़ात पर तख़्तनशीन होगा वह क्या करेगा? वही
कुछ जो पहले भी किया जा चुका है!

13 मैं ने देखा कि जिस तरह रौशनी अंधेरे से
बेहतर है उसी तरह हिक्मत हमाक़त से बेहतर है।
14 दानिशमन्द के सर में आँखें हैं जबकि अहमक़
अंधेरे ही में चलता है। लेकिन मैं ने यह भी जान
लिया कि दोनों का एक ही अन्जाम है। 15 मैं ने दिल
में कहा, "अहमक़ का सा अन्जाम मेरा भी होगा।
तो फिर इतनी ज़्यादा हिक्मत हासिल करने का क्या
फ़ाइदा है? यह भी बातिल है।" 16 क्यूँकि अहमक़
की तरह दानिशमन्द की याद भी हमेशा तक नहीं
रहेगी। आने वाले दिनों में सब की याद मिट जाएगी।
अहमक़ की तरह दानिशमन्द को भी मरना ही है!

17 यूँ सोचते सोचते मैं ज़िन्दगी से नफ़रत करने
लगा। जो भी काम सूरज तले किया जाता है वह
मुझे बुरा लगा, क्यूँकि सब कुछ बातिल और हवा
को पकड़ने के बराबर है। 18 सूरज तले मैं ने जो कुछ
भी मेहनत-मशक़्क़त से हासिल किया था उस से मुझे
नफ़रत हो गई, क्यूँकि मुझे यह सब कुछ उस के लिए
छोड़ना है जो मेरे बाद मेरी जगह आएगा। 19 और क्या
मालूम कि वह दानिशमन्द या अहमक़ होगा? लेकिन
जो भी हो, वह उन तमाम चीज़ों का मालिक होगा जो
हासिल करने के लिए मैं ने सूरज तले अपनी पूरी
ताक़त और हिक्मत सर्फ़ की है। यह भी बातिल है।

20 तब मेरा दिल मायूस हो कर हिम्मत हारने लगा,
क्यूँकि जो भी मेहनत-मशक़्क़त मैं ने सूरज तले की
थी वह बेकार सी लगी। 21 क्यूँकि ख़्वाह इन्सान
अपना काम हिक्मत, इल्म और महारत से क्यूँ न करे,
आख़िरकार उसे सब कुछ किसी के लिए छोड़ना है
जिस ने उस के लिए एक उंगली भी नहीं हिलाई।
यह भी बातिल और बड़ी मुसीबत है। 22 क्यूँकि
आख़िर में इन्सान के लिए क्या कुछ क़ाइम रहता
है, जबकि उस ने सूरज तले इतनी मेहनत-मशक़्क़त
और कोशिशों के साथ सब कुछ हासिल कर लिया
है? 23 उस के तमाम दिन दुख और रंजीदगी से भरे

रहते हैं, रात को भी उस का दिल आराम नहीं पाता।
यह भी बातिल ही है।

24 इन्सान के लिए सब से अच्छी बात यह है कि
खाए पिए और अपनी मेहनत-मशक़्क़त के फल से
लुत्फ़अन्दोज़ हो। लेकिन मैं ने यह भी जान लिया कि
अल्लाह ही यह सब कुछ मुहय्या करता है। 25 क्यूँकि
उस के बग़ैर कौन खा कर ख़ुश हो सकता है? कोई
नहीं! 26 जो इन्सान अल्लाह को मन्ज़ूर हो उसे वह
हिक्मत, इल्म-ओ-इर्फ़ान और ख़ुशी अता करता है,
लेकिन गुनाहगार को वह जमा करने और ज़ख़ीरा
करने की ज़िम्मादारी देता है ताकि बाद में यह दौलत
अल्लाह को मन्ज़ूर शख़्स के हवाले की जाए। यह भी
बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

हर बात का अपना वक़्त है

3 1 हर चीज़ की अपनी घड़ी होती, आसमान तले
हर मुआमले का अपना वक़्त होता है,
2 जन्म लेने और मरने का,
पौदा लगाने और उखाड़ने का,
3 मार देने और शिफ़ा देने का,
ढा देने और तामीर करने का,
4 रोने और हँसने का,
आहें भरने और रक़्स करने का,
5 पत्थर फैंकने और पत्थर जमा करने का,
गले मिलने और इस से बाज़ रहने का,
6 तलाश करने और खो देने का,
महफ़ूज़ रखने और फैंकने का,
7 फाड़ने और सी कर जोड़ने का,
ख़ामोश रहने और बोलने का,
8 प्यार करने और नफ़रत करने का,
जंग लड़ने और सलामती से ज़िन्दगी गुज़ारने का,

9 चुनाँचे क्या फ़ाइदा है कि काम करने वाला
मेहनत-मशक़्क़त करे?

10 मैं ने वह तक्लीफ़दिह काम-काज देखा जो
अल्लाह ने इन्सान के सपुर्द किया ताकि वह उस में
उलझा रहे। 11 उस ने हर चीज़ को यूँ बनाया है कि
वह अपने वक़्त के लिए ख़ूबसूरत और मुनासिब हो।
उस ने इन्सान के दिल में जाविदानी भी डाली है, गो
वह शुरू से ले कर आख़िर तक उस काम की तह
तक नहीं पहुँच सकता जो अल्लाह ने किया है। 12 मैं
ने जान लिया कि इन्सान के लिए इस से बेहतर कुछ
नहीं है कि वह ख़ुश रहे और जीते जी ज़िन्दगी का
मज़ा ले। 13 क्यूँकि अगर कोई खाए पिए और तमाम
मेहनत-मशक़्क़त के साथ साथ ख़ुशहाल भी हो तो
यह अल्लाह की बख़्शिश है।

14 मुझे समझ आई कि जो कुछ अल्लाह करे वह
अबद तक क़ाइम रहेगा। उस में न इज़ाफ़ा हो सकता
है न कमी। अल्लाह यह सब कुछ इस लिए करता है
कि इन्सान उस का ख़ौफ़ माने। 15 जो हाल में पेश
आ रहा है वह माज़ी में पेश आ चुका है, और जो
मुस्तक़बिल में पेश आएगा वह भी पेश आ चुका है।
हाँ, जो कुछ गुज़र चुका है उसे अल्लाह दुबारा वापस
लाता है।

इन्सान फ़ानी है

16 मैं ने सूरज तले मज़ीद देखा, जहाँ अदालत
करनी है वहाँ नाइन्साफ़ी है, जहाँ इन्साफ़ करना है
वहाँ बेदीनी है। 17 लेकिन मैं दिल में बोला, "अल्लाह
रास्तबाज़ और बेदीन दोनों की अदालत करेगा,
क्यूँकि हर मुआमले और काम का अपना वक़्त होता
है।"

18 मैं ने यह भी सोचा, "जहाँ तक इन्सानों का
ताल्लुक़ है अल्लाह उन की जाँच-पड़ताल करता है
ताकि उन्हें पता चले कि वह जानवरों की मानिन्द
हैं। 19 क्यूँकि इन्सान-ओ-हैवान का एक ही अन्जाम
है। दोनों दम छोड़ते, दोनों में एक सा दम है, इस लिए
इन्सान को हैवान की निस्बत ज़्यादा फ़ाइदा हासिल
नहीं होता। सब कुछ बातिल ही है। 20 सब कुछ एक
ही जगह चला जाता है, सब कुछ ख़ाक से बना है
और सब कुछ दुबारा ख़ाक में मिल जाएगा। 21 कौन
यक़ीन से कह सकता है कि इन्सान की रूह ऊपर

की तरफ़ जाती और हैवान की रूह नीचे ज़मीन में
उतरती है?”
22 ग़रज़ मैं ने जान लिया कि इन्सान के लिए इस से
बेहतर कुछ नहीं है कि वह अपने कामों में ख़ुश रहे,
यही उस के नसीब में है। क्यूँकि कौन उसे वह देखने
के क़ाबिल बनाएगा जो उस के बाद पेश आएगा?
कोई नहीं!

मुर्दों का हाल बेहतर है

4 1 मैं ने एक बार फिर नज़र डाली तो मुझे वह
तमाम ज़ुल्म नज़र आया जो सूरज तले होता है।
मज़्लूमों के आँसू बहते हैं, और तसल्ली देने वाला कोई
नहीं होता। ज़ालिम उन से ज़ियादती करते हैं, और
तसल्ली देने वाला कोई नहीं होता। 2 यह देख कर मैं ने
मुर्दों को मुबारक कहा, हालाँकि वह अर्से से वफ़ात
पा चुके थे। मैं ने कहा, “वह हाल के ज़िन्दा लोगों
से कहीं मुबारक हैं। 3 लेकिन इन से ज़्यादा मुबारक
वह है जो अब तक वुजूद में नहीं आया, जिस ने वह
तमाम बुराइयाँ नहीं देखीं जो सूरज तले होती हैं।”

ग़ुर्बत में सुकून बेहतर है

4 मैं ने यह भी देखा कि सब लोग इस लिए मेहनत-
मशक़्क़त और महारत से काम करते हैं कि एक
दूसरे से हसद करते हैं। यह भी बातिल और हवा
को पकड़ने के बराबर है। 5 एक तरफ़ तो अहमक़
हाथ पर हाथ धरे बैठने के बाइस अपने आप को
तबाही तक पहुँचाता है। 6 लेकिन दूसरी तरफ़ अगर
कोई मुट्ठी भर रोज़ी कमा कर सुकून के साथ ज़िन्दगी
गुज़ार सके तो यह इस से बेहतर है कि दोनों मुट्ठियाँ
सिरतोड़ मेहनत और हवा को पकड़ने की कोशिशों
के बाद ही भरें।

तन्हाई की निस्बत मिल कर रहना बेहतर है

7 मैं ने सूरज तले मज़ीद कुछ देखा जो बातिल है।
8 एक आदमी अकेला ही था। न उस के बेटा था, न
भाई। वह बेहद मेहनत-मशक़्क़त करता रहा, लेकिन
उस की आँखें कभी अपनी दौलत से मुत्मइन न थीं।
सवाल यह रहा, “मैं इतनी सिरतोड़ कोशिश किस
के लिए कर रहा हूँ? मैं अपनी जान को ज़िन्दगी के
मज़े लेने से क्यूँ महरूम रख रहा हूँ?” यह भी बातिल
और नागवार मुआमला है।
9 दो एक से बेहतर हैं, क्यूँकि उन्हें अपने काम-काज
का अच्छा अज्र मिलेगा। 10 अगर एक गिर जाए तो
उस का साथी उसे दुबारा खड़ा करेगा। लेकिन उस
पर अफ़्सोस जो गिर जाए और कोई साथी न हो जो
उसे दुबारा खड़ा करे। 11 नीज़, जब दो सर्दियों के
मौसम में मिल कर बिस्तर पर लेट जाएँ तो वह गर्म
रहते हैं। जो तन्हा है वह किस तरह गर्म हो जाएगा?
12 एक शख़्स पर क़ाबू पाया जा सकता है जबकि दो
मिल कर अपना दिफ़ा कर सकते हैं। तीन लड़ियों
वाली रस्सी जल्दी से नहीं टूटती।

क़ौम की क़बूलियत फ़ुज़ूल है

13 जो लड़का ग़रीब लेकिन दानिशमन्द है वह उस
बुज़ुर्ग लेकिन अहमक़ बादशाह से कहीं बेहतर है जो
तम्बीह मानने से इन्कार करे। 14 क्यूँकि गो वह बूढ़े
बादशाह की हुकूमत के दौरान ग़ुर्बत में पैदा हुआ था
तो भी वह जेल से निकल कर बादशाह बन गया।
15 लेकिन फिर मैं ने देखा कि सूरज तले तमाम लोग
एक और लड़के के पीछे हो लिए जिसे पहले की
जगह तख़्तनशीन होना था। 16 उन तमाम लोगों की
इन्तिहा नहीं थी जिन की क़ियादत वह करता था।
तो भी जो बाद में आएँगे वह उस से ख़ुश नहीं होंगे।
यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

अल्लाह का ख़ौफ़ मानना

5 1 अल्लाह के घर में जाते वक़्त अपने क़दमों का
ख़याल रख और सुनने के लिए तय्यार रह। यह
अहमक़ों की क़ुर्बानियों से कहीं बेहतर है, क्यूँकि
वह जानते ही नहीं कि ग़लत काम कर रहे हैं।
2 बोलने में जल्दबाज़ी न कर, तेरा दिल अल्लाह
के हुज़ूर कुछ बयान करने में जल्दी न करे। अल्लाह

आसमान पर है जबकि तू ज़मीन पर ही है। लिहाज़ा बेहतर है कि तू कम बातें करे। 3 क्यूँकि जिस तरह हद से ज़्यादा मेहनत-मशक़्क़त से ख़्वाब आने लगते हैं उसी तरह बहुत बातें करने से आदमी की हमाक़त ज़ाहिर होती है।

4 अगर तू अल्लाह के हुज़ूर मन्नत माने तो उसे पूरा करने में देर मत कर। वह अहमक़ों से ख़ुश नहीं होता, चुनाँचे अपनी मन्नत पूरी कर। 5 मन्नत न मानना मन्नत मान कर उसे पूरा न करने से बेहतर है।

6 अपने मुँह को इजाज़त न दे कि वह तुझे गुनाह में फंसाए, और अल्लाह के पैग़म्बर के सामने न कह, "मुझ से ग़ैरइरादी ग़लती हुई है।" क्या ज़रूरत है कि अल्लाह तेरी बात से नाराज़ हो कर तेरी मेहनत का काम तबाह करे?

7 जहाँ बहुत ख़्वाब देखे जाते हैं वहाँ फ़ुज़ूल बातें और बेशुमार अल्फ़ाज़ होते हैं। चुनाँचे अल्लाह का ख़ौफ़ मान!

ज़ालिमों का ज़ुल्म

8 क्या तुझे सूबे में ऐसे लोग नज़र आते हैं जो ग़रीबों पर ज़ुल्म करते, उन का हक़ मारते और उन्हें इन्साफ़ से महरूम रखते हैं? ताज्जुब न कर, क्यूँकि एक सरकारी मुलाज़िम दूसरे की निगहबानी करता है, और उन पर मज़ीद मुलाज़िम मुक़र्रर होते हैं। 9 चुनाँचे मुल्क के लिए हर लिहाज़ से फ़ाइदा इस में है कि ऐसा बादशाह उस पर हुकूमत करे जो काश्तकारी की फ़िक्र करता है।

दौलत ख़ुशहाली की ज़मानत नहीं दे सकती

10 जिसे पैसे प्यारे हों वह कभी मुत्मइन नहीं होगा, ख़्वाह उस के पास कितने ही पैसे क्यूँ न हों। जो ज़रदोसत हो वह कभी आसूदा नहीं होगा, ख़्वाह उस के पास कितनी ही दौलत क्यूँ न हो। यह भी बातिल ही है। 11 जितना माल में इज़ाफ़ा हो उतना ही उन की तादाद बढ़ती है जो उसे खा जाते हैं। उस के मालिक को उस का क्या फ़ाइदा है सिवाए इस के कि वह उसे देख देख कर मज़ा ले? 12 काम-काज करने वाले की नींद मीठी होती है, ख़्वाह उस ने कम या ज़्यादा खाना खाया हो, लेकिन अमीर की दौलत उसे सोने नहीं देती।

13 मुझे सूरज तले एक निहायत बुरी बात नज़र आई। जो दौलत किसी ने अपने लिए महफ़ूज़ रखी वह उस के लिए नुक़्सान का बाइस बन गई। 14 क्यूँकि जब यह दौलत किसी मुसीबत के बाइस तबाह हो गई और आदमी के हाँ बेटा पैदा हुआ तो उस के हाथ में कुछ नहीं था। 15 माँ के पेट से निकलते वक़्त वह नंगा था, और इसी तरह कूच करके चला भी जाएगा। उस की मेहनत का कोई फल नहीं होगा जिसे वह अपने साथ ले जा सके।

16 यह भी बहुत बुरी बात है कि जिस तरह इन्सान आया उसी तरह कूच करके चला भी जाता है। उसे क्या फ़ाइदा हुआ है कि उस ने हवा के लिए मेहनत-मशक़्क़त की हो? 17 जीते जी वह हर दिन तारीकी में खाना खाते हुए गुज़ारता, ज़िन्दगी भर वह बड़ी रंजीदगी, बीमारी और ग़ुस्से में मुब्तला रहता है।

18 तब मैं ने जान लिया कि इन्सान के लिए अच्छा और मुनासिब है कि वह जितने दिन अल्लाह ने उसे दिए हैं खाए पिए और सूरज तले अपनी मेहनत-मशक़्क़त के फल का मज़ा ले, क्यूँकि यही उस के नसीब में है। 19 क्यूँकि जब अल्लाह किसी शख़्स को माल-ओ-मता अता करके उसे इस क़ाबिल बनाए कि उस का मज़ा ले सके, अपना नसीब क़बूल कर सके और मेहनत-मशक़्क़त के साथ साथ ख़ुश भी हो सके तो यह अल्लाह की बख़्शिश है। 20 ऐसे शख़्स को ज़िन्दगी के दिनों पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करने का कम ही वक़्त मिलता है, क्यूँकि अल्लाह उसे दिल में ख़ुशी दिला कर मसरूफ़ रखता है।

6 1 मुझे सूरज तले एक और बुरी बात नज़र आई जो इन्सान को अपने बोझ तले दबाए रखती है।

2 अल्लाह किसी आदमी को माल-ओ-मता और इज़्ज़त अता करता है। ग़रज़ उस के पास सब कुछ है जो उस का दिल चाहे। लेकिन अल्लाह उसे इन चीज़ों

से लुत्फ़ उठाने नहीं देता बल्कि कोई अजनबी उस
का मज़ा लेता है। यह बातिल और एक बड़ी मुसीबत
है। 3 हो सकता है कि किसी आदमी के सौ बच्चे पैदा
हों और वह उम्ररसीदा भी हो जाए, लेकिन ख़्वाह वह
कितना बूढ़ा क्यूँ न हो जाए, अगर अपनी ख़ुशहाली
का मज़ा न ले सके और आख़िरकार सहीह रुसूमात
के साथ दफ़नाया न जाए तो इस का क्या फ़ाइदा?
मैं कहता हूँ कि उस की निस्बत माँ के पेट में ज़ाए
हो गए बच्चे का हाल बेहतर है। 4 बेशक ऐसे बच्चे का
आना बेमानी है, और वह अंधेरे में ही कूच करके
चला जाता बल्कि उस का नाम तक अंधेरे में छुपा
रहता है। 5 लेकिन गो उस ने न कभी सूरज देखा, न
उसे कभी मालूम हुआ कि ऐसी चीज़ है ताहम उसे
मज़कूरा आदमी से कहीं ज़्यादा आराम-ओ-सुकून
हासिल है। 6 और अगर वह दो हज़ार साल तक जीता
रहे, लेकिन अपनी ख़ुशहाली से लुत्फ़अन्दोज़ न हो
सके तो क्या फ़ाइदा है? सब को तो एक ही जगह
जाना है।

7 इन्सान की तमाम मेहनत-मशक़्क़त का यह
मक़्सद है कि पेट भर जाए, तो भी उस की भूक कभी
नहीं मिटती। 8 दानिशमन्द को क्या हासिल है जिस
के बाइस वह अहमक़ से बरतर है? इस का क्या
फ़ाइदा है कि ग़रीब आदमी ज़िन्दों के साथ मुनासिब
सुलूक करने का फ़न सीख ले? 9 दूरदराज़ चीज़ों के
आरज़ूमन्द रहने की निस्बत बेहतर यह है कि इन्सान
उन चीज़ों से लुत्फ़ उठाए जो आँखों के सामने ही हैं।
यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

अल्लाह का मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता

10 जो कुछ भी पेश आता है उस का नाम पहले
ही रखा गया है, जो भी इन्सान वुजूद में आता है
वह पहले ही मालूम था। कोई भी इन्सान उस का
मुक़ाबला नहीं कर सकता जो उस से ताक़तवर है।
11 क्यूँकि जितनी भी बातें इन्सान करे उतना ही ज़्यादा
मालूम होगा कि बातिल हैं। इन्सान के लिए इस का
क्या फ़ाइदा?
12 किस को मालूम है कि उन थोड़े और बेकार दिनों
के दौरान जो साय की तरह गुज़र जाते हैं इन्सान के
लिए क्या कुछ फ़ाइदामन्द है? कौन उसे बता सकता
है कि उस के चले जाने पर सूरज तले क्या कुछ पेश
आएगा?

अच्छा क्या है?

7 1 अच्छा नाम ख़ुश्बूदार तेल से और मौत का
दिन पैदाइश के दिन से बेहतर है।
2 ज़ियाफ़त करने वालों के घर में जाने की निस्बत
मातम करने वालों के घर में जाना बेहतर है, क्यूँकि
हर इन्सान का अन्जाम मौत ही है। जो ज़िन्दा हैं वह
इस बात पर ख़ूब ध्यान दें। 3 दुख हंसी से बेहतर है,
उतरा हुआ चिहरा दिल की बेहतरी का बाइस है।
4 दानिशमन्द का दिल मातम करने वालों के घर में
ठहरता जबकि अहमक़ का दिल ऐश-ओ-इश्रत करने
वालों के घर में टिक जाता है।
5 अहमक़ों के गीत सुनने की निस्बत दानिशमन्द
की झिड़कियों पर ध्यान देना बेहतर है। 6 अहमक़
के क़हक़हे देगची तले चटख़ने वाले काँटों की आग
की मानिन्द हैं। यह भी बातिल ही है।
7 नारवा नफ़ा दानिशमन्द को अहमक़ बना देता,
रिश्वत दिल को बिगाड़ देती है।
8 किसी मुआमले का अन्जाम उस की इब्तिदा से
बेहतर है, सब्र करना मग़रूर होने से बेहतर है।
9 ग़ुस्सा करने में जल्दी न कर, क्यूँकि ग़ुस्सा
अहमक़ों की गोद में ही आराम करता है।
10 यह न पूछ कि आज की निस्बत पुराना ज़माना
बेहतर क्यूँ था, क्यूँकि यह हिक्मत की बात नहीं।
11 अगर हिक्मत के इलावा मीरास में मिलकियत
भी मिल जाए तो यह अच्छी बात है, यह उन के
लिए सूदमन्द है जो सूरज देखते हैं। 12 क्यूँकि हिक्मत
पैसों की तरह पनाह देती है, लेकिन हिक्मत का ख़ास
फ़ाइदा यह है कि वह अपने मालिक की जान बचाए
रखती है।

13 अल्लाह के काम का मुलाहज़ा कर। जो कुछ उस
ने पेचदार बनाया कौन उसे सुलझा सकता है?
14 ख़ुशी के दिन ख़ुश हो, लेकिन मुसीबत के दिन
ख़याल रख कि अल्लाह ने यह दिन भी बनाया और
वह भी इस लिए कि इन्सान अपने मुस्तक़बिल के
बारे में कुछ मालूम न कर सके।

इन्तिहापसन्दों से दरेग़ कर

15 अपनी अबस ज़िन्दगी के दौरान मैं ने दो बातें
देखी हैं। एक तरफ़ रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी के
बावुजूद तबाह हो जाता जबकि दूसरी तरफ़ बेदीन
अपनी बेदीनी के बावुजूद उम्ररसीदा हो जाता है।
16 न हद से ज़्यादा रास्तबाज़ी दिखा, न हद से ज़्यादा
दानिशमन्दी। अपने आप को तबाह करने की क्या
ज़रूरत है? 17 न हद से ज़्यादा बेदीनी, न हद से ज़्यादा
हमाक़त दिखा। मुक़र्ररा वक़्त से पहले मरने की क्या
ज़रूरत है? 18 अच्छा है कि तू यह बात थामे रखे
और दूसरी भी न छोड़े। जो अल्लाह का ख़ौफ़ माने
वह दोनों खतरों से बच निकलेगा।
19 हिक्मत दानिशमन्द को शहर के दस हुक्मरानों
से ज़्यादा ताक़तवर बना देती है। 20 दुनिया में कोई
भी इन्सान इतना रास्तबाज़ नहीं कि हमेशा अच्छा
काम करे और कभी गुनाह न करे।
21 लोगों की हर बात पर ध्यान न दे, ऐसा न हो
कि तू नौकर की लानत भी सुन ले जो वह तुझ पर
करता है। 22 क्यूँकि दिल में तू जानता है कि तू ने ख़ुद
मुतअद्दिद बार दूसरों पर लानत भेजी है।

कौन दानिशमन्द है?

23 हिक्मत के ज़रीए मैं ने इन तमाम बातों की जाँच-
पड़ताल की। मैं बोला, "मैं दानिशमन्द बनना चाहता
हूँ," लेकिन हिक्मत मुझ से दूर रही। 24 जो कुछ
मौजूद है वह दूर और निहायत गहरा है। कौन उस की
तह तक पहुँच सकता है? 25 चुनाँचे मैं रुख़ बदल कर
पूरे ध्यान से इस की तहक़ीक़-ओ-तफ़्तीश करने लगा
कि हिक्मत और मुख़्तलिफ़ बातों के सहीह नताइज
क्या हैं। नीज़, मैं बेदीनी की हमाक़त और बेहुदगी
की दीवानगी मालूम करना चाहता था।
26 मुझे मालूम हुआ कि मौत से कहीं तल्ख़ वह
औरत है जो फंदा है, जिस का दिल जाल और हाथ
ज़न्जीरें हैं। जो आदमी अल्लाह को मन्ज़ूर हो वह बच
निकलेगा, लेकिन गुनाहगार उस के जाल में उलझ
जाएगा।
27 वाइज़ फ़रमाता है, "यह सब कुछ मुझे मालूम
हुआ जब मैं ने मुख़्तलिफ़ बातें एक दूसरे के साथ
मुन्सलिक कीं ताकि सहीह नताइज तक पहुँचूँ।
28 लेकिन जिसे मैं ढूँडता रहा वह न मिला। हज़ार
अफ़राद में से मुझे सिर्फ़ एक ही दियानतदार मर्द
मिला, लेकिन एक भी दियानतदार औरत नहीं। [m]
29 मुझे सिर्फ़ इतना ही मालूम हुआ कि गो अल्लाह
ने इन्सानों को दियानतदार बनाया, लेकिन वह कई
क़िस्म की चालाकियाँ ढूँड निकालते हैं।"

8 1 कौन दानिशमन्द की मानिन्द है? कौन बातों
की सहीह तश्रीह करने का इल्म रखता है?
हिक्मत इन्सान का चिहरा रौशन और उस के मुँह
का सख़्त अन्दाज़ नर्म कर देती है।

हुक्मरान का इख़तियार

2 मैं कहता हूँ, बादशाह के हुक्म पर चल, क्यूँकि
तू ने अल्लाह के सामने हलफ़ उठाया है। 3 बादशाह
के हुज़ूर से दूर होने में जल्दबाज़ी न कर। किसी बुरे
मुआमले में मुब्तला न हो जा, क्यूँकि उसी की मर्ज़ी
चलती है। 4 बादशाह के फ़रमान के पीछे उस का
इख़तियार है, इस लिए कौन उस से पूछे, "तू क्या
कर रहा है?" 5 जो उस के हुक्म पर चले उस का
किसी बुरे मुआमले से वास्ता नहीं पड़ेगा, क्यूँकि
दानिशमन्द दिल मुनासिब वक़्त और इन्साफ़ की राह
जानता है।

---

[m] 'दियानतदार' इज़ाफ़ा है ताकि आयत का जो ग़ालिबन मतलब है वह साफ़ हो जाए।

6 क्यूँकि हर मुआमले के लिए मुनासिब वक़्त और
इन्साफ़ की राह होती है। लेकिन मुसीबत इन्सान
को दबाए रखती है, 7 क्यूँकि वह नहीं जानता कि
मुस्तक़बिल कैसा होगा। कोई उसे यह नहीं बता
सकता है। 8 कोई भी इन्सान हवा को बन्द रखने के
क़ाबिल नहीं। [n]इसी तरह किसी को भी अपनी मौत
का दिन मुक़र्रर करने का इख़तियार नहीं। यह उतना
यक़ीनी है जितना यह कि फ़ौजियों को जंग के दौरान
फ़ारिग़ नहीं किया जाता और बेदीनी बेदीन को नहीं
बचाती।

9 मैं ने यह सब कुछ देखा जब पूरे दिल से उन तमाम
बातों पर ध्यान दिया जो सूरज तले होती हैं, जहाँ
इस वक़्त एक आदमी दूसरे को नुक़्सान पहुँचाने का
इख़तियार रखता है।

दुनिया में नाइन्साफ़ी

10 फिर मैं ने देखा कि बेदीनों को इज़्ज़त के साथ
दफ़नाया गया। यह लोग मक़्दिस के पास आते जाते
थे! लेकिन जो रास्तबाज़ थे उन की याद शहर में मिट
गई। यह भी बातिल ही है।

11 मुजरिमों को जल्दी से सज़ा नहीं दी जाती, इस
लिए लोगों के दिल बुरे काम करने के मन्सूबों से भर
जाते हैं। 12 गुनाहगार से सौ गुनाह सरज़द होते हैं, तो
भी उम्ररसीदा हो जाता है।

बेशक मैं यह भी जानता हूँ कि ख़ुदातरस लोगों की
ख़ैर होगी, उन की जो अल्लाह के चिहरे से डरते हैं।
13 बेदीन की ख़ैर नहीं होगी, क्यूँकि वह अल्लाह का
ख़ौफ़ नहीं मानता। उस की ज़िन्दगी के दिन ज़्यादा
नहीं बल्कि साय जैसे आरिज़ी होंगे। 14 तो भी एक
और बात दुनिया में पेश आती है जो बातिल है,
रास्तबाज़ों को वह सज़ा मिलती है जो बेदीनों को
मिलनी चाहिए, और बेदीनों को वह अज्र मिलता है
जो रास्तबाज़ों को मिलना चाहिए। यह देख कर मैं
बोला, "यह भी बातिल ही है।"

15 चुनाँचे मैं ने ख़ुशी की तारीफ़ की, क्यूँकि सूरज
तले इन्सान के लिए इस से बेहतर कुछ नहीं है कि
वह खाए पिए और ख़ुश रहे। फिर मेहनत-मशक़्क़त
करते वक़्त ख़ुशी उतने ही दिन उस के साथ रहेगी
जितने अल्लाह ने सूरज तले उस के लिए मुक़र्रर किए
हैं।

जो कुछ अल्लाह करता है वह नाक़ाबिल-ए-फ़हम है

16 मैं ने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त इस पर लगाई कि
हिक्मत जान लूँ और ज़मीन पर इन्सान की मेहनतों
का मुआइना कर लूँ, ऐसी मेहनतें कि उसे दिन रात
नींद नहीं आती। 17 तब मैं ने अल्लाह का सारा काम
देख कर जान लिया कि इन्सान उस तमाम काम की
तह तक नहीं पहुँच सकता जो सूरज तले होता है।
ख़्वाह वह उस की कितनी तहक़ीक़ क्यूँ न करे तो
भी वह तह तक नहीं पहुँच सकता। हो सकता है
कोई दानिशमन्द दावा करे, "मुझे इस की पूरी समझ
आई है," लेकिन ऐसा नहीं है, वह तह तक नहीं पहुँच
सकता।

9 1 इन तमाम बातों पर मैं ने दिल से ग़ौर किया।
इन के मुआइने के बाद मैं ने नतीजा निकाला
कि रास्तबाज़ और दानिशमन्द और जो कुछ वह
करें अल्लाह के हाथ में हैं। ख़्वाह मुहब्बत हो ख़्वाह
नफ़रत, इस की भी समझ इन्सान को नहीं आती,
दोनों की जड़ें उस से पहले माज़ी में हैं। 2 सब
के नसीब में एक ही अन्जाम है, रास्तबाज़ और
बेदीन के, नेक और बद के, पाक और नापाक के,
क़ुर्बानियाँ पेश करने वाले के और उस के जो कुछ
नहीं पेश करता। अच्छे शख़्स और गुनाहगार का एक
ही अन्जाम है, हलफ़ उठाने वाले और इस से डर कर
गुरेज़ करने वाले की एक ही मन्ज़िल है।

3 सूरज तले हर काम की यही मुसीबत है कि हर
एक के नसीब में एक ही अन्जाम है। इन्सान का
मुलाहज़ा कर। उस का दिल बुराई से भरा रहता

---

[n]एक और मुमकिना तर्जुमा : कोई भी इन्सान अपनी जान को निकलने से नहीं रोक सकता।

बल्कि उम्र भर उस के दिल में बेहुदगी रहती है।
लेकिन आख़िरकार उसे मुर्दों में ही जा मिलना है।
4 जो अब तक ज़िन्दों में शरीक है उसे उम्मीद है।
क्यूँकि ज़िन्दा कुत्ते का हाल मुर्दा शेर से बेहतर है।
5 कम अज़ कम जो ज़िन्दा हैं वह जानते हैं कि हम
मरेंगे। लेकिन मुर्दे कुछ नहीं जानते, उन्हें मज़ीद कोई
अज्र नहीं मिलना है। उन की यादें भी मिट जाती हैं।
6 उन की मुहब्बत, नफ़रत और ग़ैरत सब कुछ बड़ी
देर से जाती रही है। अब वह कभी भी उन कामों में
हिस्सा नहीं लेंगे जो सूरज तले होते हैं।

ज़िन्दगी के मज़े ले!

7 चुनाँचे जा कर अपना खाना ख़ुशी के साथ खा,
अपनी मै ज़िन्दादिली से पी, क्यूँकि अल्लाह काफ़ी
देर से तेरे कामों से ख़ुश है। 8 तेरे कपड़े हर वक़्त
सफ़ेद [o]हों, तेरा सर तेल से महरूम न रहे। 9 अपने
जीवनसाथी के साथ जो तुझे प्यारा है ज़िन्दगी के
मज़े लेता रह। सूरज तले की बातिल ज़िन्दगी के
जितने दिन अल्लाह ने तुझे बख़्श दिए हैं उन्हें इसी तरह
गुज़ार! क्यूँकि ज़िन्दगी में और सूरज तले तेरी मेहनत-
मशक़्क़त में यही कुछ तेरे नसीब में है। 10 जिस काम
को भी हाथ लगाए उसे पूरे जोश-ओ-ख़ुरोश से कर,
क्यूँकि पाताल में जहाँ तू जा रहा है न कोई काम है,
न मन्सूबा, न इल्म और न हिक्मत।

दुनिया में हिक्मत की क़दर नहीं की जाती

11 मैं ने सूरज तले मज़ीद कुछ देखा। यक़ीनी बात
नहीं कि मुक़ाबले में सब से तेज़ दौड़ने वाला जीत
जाए, कि जंग में पहलवान फ़त्ह पाए, कि दानिशमन्द
को ख़ुराक हासिल हो, कि समझदार को दौलत मिले
या कि आलिम मन्ज़ूरी पाए। नहीं, सब कुछ मौक़े
और इत्तिफ़ाक़ पर मुन्हसिर होता है। 12 नीज़, कोई
भी इन्सान नहीं जानता कि मुसीबत का वक़्त कब
उस पर आएगा। जिस तरह मछलियाँ ज़ालिम जाल में
उलझ जाती या परिन्दे फंदे में फंस जाते हैं उसी तरह
इन्सान मुसीबत में फंस जाता है। मुसीबत अचानक
ही उस पर आ जाती है।
13 सूरज तले मैं ने हिक्मत की एक और मिसाल
देखी जो मुझे अहम लगी।
14 कहीं कोई छोटा शहर था जिस में थोड़े से
अफ़राद बसते थे। एक दिन एक ताक़तवर बादशाह
उस से लड़ने आया। उस ने उस का मुहासरा किया
और इस मक़्सद से उस के इर्दगिर्द बड़े बड़े बुर्ज
खड़े किए। 15 शहर में एक आदमी रहता था जो
दानिशमन्द अलबत्ता ग़रीब था। इस शख़्स ने अपनी
हिक्मत से शहर को बचा लिया। लेकिन बाद में किसी
ने भी ग़रीब को याद न किया। 16 यह देख कर मैं
बोला, "हिक्मत ताक़त से बेहतर है," लेकिन ग़रीब
की हिक्मत हक़ीर जानी जाती है। कोई भी उस की
बातों पर ध्यान नहीं देता। 17 दानिशमन्द की जो बातें
आराम से सुनी जाएँ वह अहमक़ों के दरमियान रहने
वाले हुक्मरान के ज़ोरदार एलानात से कहीं बेहतर हैं।
18 हिक्मत जंग के हथियारों से बेहतर है, लेकिन एक
ही गुनाहगार बहुत कुछ जो अच्छा है तबाह करता
है।

मुख़्तलिफ़ हिदायात

10 1 मरी हुई मक्खियाँ ख़ुश्बूदार तेल ख़राब
करती हैं, और हिक्मत और इज़्ज़त की
निस्बत थोड़ी सी हमाक़त का ज़्यादा असर होता है।
2 दानिशमन्द का दिल सहीह राह चुन लेता है
जबकि अहमक़ का दिल ग़लत राह पर आ जाता है।
3 रास्ते पर चलते वक़्त भी अहमक़ समझ से ख़ाली
है, जिस से भी मिले उसे बताता है कि वह बेवुक़ूफ़
है। [p]
4 अगर हुक्मरान तुझ से नाराज़ हो जाए तो अपनी
जगह मत छोड़, क्यूँकि पुरसुकून रवय्या बड़ी बड़ी
ग़लतियाँ दूर कर देता है।

---

[o]यानी ख़ुशी मनाने के कपड़े।

[p]इब्रानी ज़ूमानी है। दूसरा मतलब 'कि मैं बेवुक़ूफ़ हूँ' हो सकता है।

5 मुझे सूरज तले एक ऐसी बुरी बात नज़र आई जो
अक्सर हुक्मरानों से सरज़द होती है। 6 अहमक़ को
बड़े उह्दों पर फ़ाइज़ किया जाता है जबकि अमीर
छोटे उह्दों पर ही रहते हैं। 7 मैं ने ग़ुलामों को घोड़े
पर सवार और हुक्मरानों को ग़ुलामों की तरह पैदल
चलते देखा है।

8 जो गढ़ा खोदे वह ख़ुद उस में गिर सकता है, जो
दीवार गिरा दे हो सकता है कि साँप उसे डसे। 9 जो
कान से पत्थर निकाले उसे चोट लग सकती है, जो
लकड़ी चीर डाले वह ज़ख़्मी हो जाने के ख़तरे में है।
10 अगर कुल्हाड़ी कुन्द हो और कोई उसे तेज़ न
करे तो ज़्यादा ताक़त दरकार है। लिहाज़ा हिक्मत
को सहीह तौर से अमल में ला, तब ही कामयाबी
हासिल होगी।

11 अगर इस से पहले कि सपेरा साँप पर क़ाबू पाए
वह उसे डसे तो फिर सपेरा होने का क्या फ़ाइदा?

12 दानिशमन्द अपने मुँह की बातों से दूसरों की
मेहरबानी हासिल करता है, लेकिन अहमक़ के अपने
ही होंट उसे हड़प कर लेते हैं। 13 उस का बयान
अहमक़ाना बातों से शुरू और ख़तरनाक बेवुक़ूफ़ियों
से ख़त्म होता है। 14 ऐसा शख़्स बातें करने से बाज़
नहीं आता, गो इन्सान मुस्तक़बिल के बारे में कुछ
नहीं जानता। कौन उसे बता सकता है कि उस के बाद
क्या कुछ होगा? 15 अहमक़ का काम उसे थका देता
है, और वह शहर का रास्ता भी नहीं जानता।

16 उस मुल्क पर अफ़्सोस जिस का बादशाह बच्चा
है और जिस के बुज़ुर्ग सुब्ह ही ज़ियाफ़त करने लगते
हैं। 17 मुबारक है वह मुल्क जिस का बादशाह शरीफ़
है और जिस के बुज़ुर्ग नशे में धुत नहीं रहते बल्कि
मुनासिब वक़्त पर और नज़्म-ओ-ज़ब्त के साथ खाना
खाते हैं।

18 जो सुस्त है उस के घर के शहतीर झुकने लगते
हैं, जिस के हाथ ढीले हैं उस की छत से पानी टपकने
लगता है।

19 ज़ियाफ़त करने से हंसी-ख़ुशी और मै पीने से
ज़िन्दादिली पैदा होती है, लेकिन पैसा ही सब कुछ
मुहय्या करता है।

20 ख़यालों में भी बादशाह पर लानत न कर, अपने
सोने के कमरे में भी अमीर पर लानत न भेज, ऐसा
न हो कि कोई परिन्दा तेरे अल्फ़ाज़ ले कर उस तक
पहुँचाए।

मेहनत का फ़ाइदा

11 1 अपनी रोटी पानी पर फैंक कर जाने दे
तो मुतअद्दिद दिनों के बाद वह तुझे फिर
मिल जाएगी। 2 अपनी मिलकियत सात बल्कि आठ
मुख़्तलिफ़ कामों में लगा दे, क्यूँकि तुझे क्या मालूम
कि मुल्क किस किस मुसीबत से दोचार होगा।

3 अगर बादल पानी से भरे हों तो ज़मीन पर बारिश
ज़रूर होगी। दरख़्त जुनूब या शिमाल की तरफ़ गिर
जाए तो उसी तरफ़ पड़ा रहेगा।

4 जो हर वक़्त हवा का रुख़ देखता रहे वह कभी
बीज नहीं बोएगा। जो बादलों को तकता रहे वह
कभी फ़सल की कटाई नहीं करेगा।

5 जिस तरह न तुझे हवा के चक्कर मालूम हैं, न यह
कि माँ के पेट में बच्चा किस तरह तश्कील पाता है
उसी तरह तू अल्लाह का काम नहीं समझ सकता, जो
सब कुछ अमल में लाता है।

6 सुब्ह के वक़्त अपना बीज बो और शाम को भी
काम में लगा रह, क्यूँकि क्या मालूम कि किस काम
में कामयाबी होगी, इस में, उस में या दोनों में।

अपनी जवानी से लुत्फ़अन्दोज़ हो

7 रौशनी कितनी भली है, और सूरज आँखों के लिए
कितना ख़ुशगवार है। 8 जितने भी साल इन्सान ज़िन्दा
रहे उतने साल वह ख़ुशबाश रहे। साथ साथ उसे याद
रहे कि तारीक दिन भी आने वाले हैं, और कि उन
की बड़ी तादाद होगी। जो कुछ आने वाला है वह
बातिल ही है।

9 ऐ नौजवान, जब तक तू जवान है ख़ुश रह और
जवानी के मज़े लेता रह। जो कुछ तेरा दिल चाहे और
तेरी आँखों को पसन्द आए वह कर, लेकिन याद रहे
कि जो कुछ भी तू करे उस का जवाब अल्लाह तुझ से
तलब करेगा। 10 चुनाँचे अपने दिल से रंजीदगी और
अपने जिस्म से दुख-दर्द दूर रख, क्यूँकि जवानी और
काले बाल दम भर के ही हैं।

12 1 जवानी में ही अपने ख़ालिक़ को याद रख,
इस से पहले कि मुसीबत के दिन आएँ, वह
साल क़रीब आएँ जिन के बारे में तू कहेगा, "यह मुझे
पसन्द नहीं।" 2 उसे याद रख इस से पहले कि रौशनी
तेरे लिए ख़त्म हो जाए, सूरज, चाँद और सितारे अंधेरे
हो जाएँ और बारिश के बाद बादल लौट आएँ। 3 उसे
याद रख, इस से पहले कि घर के पहरेदार थरथराने
लगें, ताक़तवर आदमी कुबड़े हो जाएँ, गन्दुम पीसने
वाली नौकरानियाँ कम होने के बाइस काम करना
छोड़ दें और खिड़कियों में से देखने वाली ख़वातीन
धुन्दला जाएँ। 4 उसे याद रख, इस से पहले कि गली
में पहुँचाने वाला दरवाज़ा बन्द हो जाए और चक्की की
आवाज़ आहिस्ता हो जाए। जब चिड़ियाँ चहचहाने
लगेंगी तो तू जाग उठेगा, लेकिन तमाम गीतों की
आवाज़ दबी सी सुनाई देगी। 5 उसे याद रख, इस से
पहले कि तू ऊँची जगहों और गलियों के खतरों से
डरने लगे। गो बादाम का फूल खिल जाए, टिड्डी बोझ
तले दब जाए और करीर का फूल फूट निकले, लेकिन
तू कूच करके अपने अबदी घर में चला जाएगा, और
मातम करने वाले गलियों में घूमते फिरेंगे।

6 अल्लाह को याद रख, इस से पहले कि चाँदी का
रस्सा टूट जाए, सोने का बर्तन टुकड़े टुकड़े हो जाए,
चश्मे के पास घड़ा पाश पाश हो जाए और कुएँ का
पानी निकालने वाला पहिया टूट कर उस में गिर जाए।
7 तब तेरी ख़ाक दुबारा उस ख़ाक में मिल जाएगी
जिस से निकल आई और तेरी रूह उस ख़ुदा के पास
लौट जाएगी जिस ने उसे बख़्शा था।

8 वाइज़ फ़रमाता है, "बातिल ही बातिल! सब कुछ
बातिल ही बातिल है!"

ख़ातमा

9 दानिशमन्द होने के इलावा वाइज़ क़ौम को इल्म-
ओ-इर्फ़ान की तालीम देता रहा। उस ने मुतअद्दिद
अम्साल को सहीह वज़न दे कर उन की जाँच-
पड़ताल की और उन्हें तर्तीबवार जमा किया।
10 वाइज़ की कोशिश थी कि मुनासिब अल्फ़ाज़
इस्तेमाल करे और दयानतदारी से सच्ची बातें लिखे।

11 दानिशमन्दों के अल्फ़ाज़ आँकुस की मानिन्द हैं,
तर्तीब से जमाशुदा अम्साल लकड़ी में मज़बूती से
ठोंकी गई कीलों जैसी हैं। यह एक ही गल्लाबान की
दी हुई हैं।

12 मेरे बेटे, इस के इलावा ख़बरदार रह। किताबें
लिखने का सिलसिला कभी ख़त्म नहीं हो जाएगा,
और हद से ज़्यादा कुतुबबीनी से जिस्म थक जाता
है।

13 आओ, इख़तिताम पर हम तमाम तालीम के
ख़ुलासे पर ध्यान दें। रब का ख़ौफ़ मान और उस
के अहकाम की पैरवी कर। यह हर इन्सान का फ़र्ज़
है। 14 क्यूँकि अल्लाह हर काम को ख़्वाह वह छुपा ही
हो, ख़्वाह बुरा या भला हो अदालत में लाएगा।

ग़ज़ल-उल-ग़ज़लात

तू मेरा बादशाह है

1 1 सुलेमान की ग़ज़ल-उल-ग़ज़लात।

2 वह मुझे अपने मुँह से बोसे दे, क्यूँकि तेरी
मुहब्बत मै से कहीं ज़्यादा राहतबख़्श है।

3 तेरी इत्र की ख़ुश्बू कितनी मनमोहन है, तेरा
नाम छिड़का गया महकदार तेल ही है। इस लिए
कुंवारियाँ तुझे प्यार करती हैं।

4 आ, मुझे खैंच कर अपने साथ ले जा! आ, हम
दौड़ कर चले जाएँ! बादशाह मुझे अपने कमरों में ले
जाए, और हम बाग़ बाग़ हो कर तेरी ख़ुशी मनाएँ।
हम मै की निस्बत तेरे प्यार की ज़्यादा तारीफ़ करें।
मुनासिब है कि लोग तुझ से मुहब्बत करें।

मुझे हक़ीर न जानो

5 ऐ यरूशलम की बेटियो, मैं सियाहफ़ाम लेकिन
मनमोहन हूँ, मैं क़ीदार के ख़ैमों जैसी, सुलेमान के
ख़ैमों के पर्दों जैसी ख़ूबसूरत हूँ। 6 इस लिए मुझे हक़ीर
न जानो कि मैं सियाहफ़ाम हूँ, कि मेरी जिल्द धूप से
झुलस गई है। मेरे सगे भाई मुझ से नाराज़ थे, इस
लिए उन्हों ने मुझे अंगूर के बाग़ों की देख-भाल करने
की ज़िम्मादारी दी, अंगूर के अपने ज़ाती बाग़ की
देख-भाल मैं कर न सकी।

तू कहाँ है?

7 ऐ तू जो मेरी जान का प्यारा है, मुझे बता कि भेड़-
बकरियाँ कहाँ चरा रहा है? तू उन्हें दोपहर के वक़्त
कहाँ आराम करने बिठाता है? मैं क्यूँ निक़ाबपोश
की तरह तेरे साथियों के रेवड़ों के पास ठहरी रहूँ?

8 क्या तू नहीं जानती, तू जो औरतों में सब से
ख़ूबसूरत है? फिर घर से निकल कर खोज लगा कि
मेरी भेड़-बकरियाँ किस तरफ़ चली गई हैं, अपने
मेमनों को गल्लाबानों के ख़ैमों के पास चरा।

तू कितनी ख़ूबसूरत है

9 मेरी मह्बूबा, मैं तुझे किस चीज़ से तश्बीह दूँ? तू
फ़िरऔन का शानदार रथ खैंचने वाली घोड़ी है!
10 तेरे गाल बालियों से कितने आरास्ता, तेरी गर्दन
मोती के गुलूबन्द से कितनी दिलफ़रेब लगती है।
11 हम तेरे लिए सोने का ऐसा हार बनवा लेंगे जिस
में चाँदी के मोती लगे होंगे।

12 जितनी देर बादशाह ज़ियाफ़त में शरीक था मेरे
बालछड़ की ख़ुश्बू चारों तरफ़ फैलती रही।
13 मेरा मह्बूब गोया मुर की डिबिया है, जो मेरी
छातियों के दरमियान पड़ी रहती है।
14 मेरा मह्बूब मेरे लिए मेहंदी के फूलों का गुच्छा
है, जो ऐन-जदी के अंगूर के बाग़ों से लाया गया है।

15 मेरी मह्बूबा, तू कितनी ख़ूबसूरत है, कितनी
हसीन! तेरी आँखें कबूतर ही हैं।

16 मेरे मह्बूब, तू कितना ख़ूबसूरत है, कितना
दिलरुबा! सायादार हरियाली हमारा बिस्तर 17 और
देवदार के दरख़्त हमारे घर के शहतीर हैं। जूनीपर के
दरख़्त तख़्तों का काम देते हैं।

तू लासानी है

2 1 मैं मैदान-ए-शारून का फूल और वादियों की
सोसन हूँ।

2 लड़कियों के दरमियान मेरी मह्बूबा
काँटेदार पौदों में सोसन की मानिन्द है।

3 जवान आदमियों में मेरा मह्बूब जंगल में सेब के
दरख़्त की मानिन्द है। मैं उस के साय में बैठने की
कितनी आरज़ूमन्द हूँ, उस का फल मुझे कितना मीठा
लगता है।

मैं इश्क़ के मारे बीमार हो गई हूँ

4 वह मुझे मैकदे [1]में लाया है, मेरे ऊपर उस का
झंडा मुहब्बत है।
5 किशमिश की टिक्कियों से मुझे तर-ओ-ताज़ा करो,
सेबों से मुझे तक़वियत दो, क्यूँकि मैं इश्क़ के मारे
बीमार हो गई हूँ।
6 उस का बायाँ बाज़ू मेरे सर के नीचे होता और
दहना बाज़ू मुझे गले लगाता है।
7 ऐ यरूशलम की बेटियो, ग़ज़ालों और खुले मैदान
की हिरनियों की क़सम खाओ कि जब तक मुहब्बत
ख़ुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न बेदार करोगी।

बहार आ गई है

8 सुनो, मेरा मह्बूब आ रहा है। वह देखो, वह
पहाड़ों पर फलाँगता और टीलों पर से उछलता
कूदता आ रहा है।
9 मेरा मह्बूब ग़ज़ाल या जवान हिरन की मानिन्द
है। अब वह हमारे घर की दीवार के सामने रुक कर
खिड़कियों में से झाँक रहा, जंगले में से तक रहा है।

10 वह मुझ से कहता है, "ऐ मेरी ख़ूबसूरत मह्बूबा,
उठ कर मेरे साथ चल!
11 देख, सर्दियों का मौसम गुज़र गया है, बारिशें भी
ख़त्म हो गई हैं।
12 ज़मीन से फूल फूट निकले हैं और गीत का वक़्त
आ गया है, कबूतरों की ग़ूँ ग़ूँ हमारे मुल्क में सुनाई
देती है।
13 अन्जीर के दरख़्तों पर पहली फ़सल का फल
पक रहा है, और अंगूर की बेलों के फूल ख़ुश्बू फैला
रहे हैं। चुनाँचे आ मेरी हसीन मह्बूबा, उठ कर आ
जा!
14 ऐ मेरी कबूतरी, चटान की दराड़ों में छुपी न रह,
पहाड़ी पत्थरों में पोशीदा न रह बल्कि मुझे अपनी
शक्ल दिखा, मुझे अपनी आवाज़ सुनने दे, क्यूँकि
तेरी आवाज़ शीरीं, तेरी शक्ल ख़ूबसूरत है।"

15 हमारे लिए लोमड़ियों को पकड़ लो, उन छोटी
लोमड़ियों को जो अंगूर के बाग़ों को तबाह करती
हैं। क्यूँकि हमारी बेलों से फूल फूट निकले हैं।

16 मेरा मह्बूब मेरा ही है, और मैं उसी की हूँ, उसी
की जो सोसनों में चरता है।
17 ऐ मेरे मह्बूब, इस से पहले कि शाम की हवा
चले और साय लम्बे हो कर फ़रार हो जाएँ ग़ज़ाल या
जवान हिरन की तरह संगलाख़ पहाड़ों का रुख़ कर!

रात को मह्बूब की आर्ज़ू

3 1 रात को जब मैं बिस्तर पर लेटी थी तो मैं ने
उसे ढूँडा जो मेरी जान का प्यारा है, मैं ने उसे
ढूँडा लेकिन न पाया।
2 मैं बोली, "अब मैं उठ कर शहर में घूमती, उस
की गलियों और चौकों में फिर कर उसे तलाश करती
हूँ जो मेरी जान का प्यारा है।" मैं ढूँडती रही लेकिन
वह न मिला।
3 जो चौकीदार शहर में गश्त करते हैं उन्हों ने मुझे
देखा। मैं ने पूछा, "क्या आप ने उसे देखा है जो मेरी
जान का प्यारा है?"

---

[1]मैकदे से मुराद ग़ालिबन महल का वह हिस्सा है जिस में बादशाह ज़ियाफ़त करता था।

4 आगे निकलते ही मुझे वह मिल गया जो मेरी जान
का प्यारा है। मैं ने उसे पकड़ लिया। अब मैं उसे नहीं
छोड़ूँगी जब तक उसे अपनी माँ के घर में न ले जाऊँ,
उस के कमरे में न पहुँचाऊँ जिस ने मुझे जन्म दिया
था।

5 ऐ यरूशलम की बेटियो, ग़ज़ालों और खुले मैदान
की हिरनियों की क़सम खाओ कि जब तक मुहब्बत
ख़ुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न बेदार करोगी।

दूल्हा अपने लोगों के साथ आता है

6 यह कौन है जो धुएँ के सतून की तरह सीधा हमारे
पास चला आ रहा है? उस से चारों तरफ़ मुर, बख़ूर
और ताजिर की तमाम ख़ूशबूएँ फैल रही हैं।
7 यह तो सुलेमान की पालकी है जो इस्राईल के 60
पहलवानों से घिरी हुई है।
8 सब तलवार से लेस और तजरिबाकार फ़ौजी हैं।
हर एक ने अपनी तलवार को रात के हौलनाक खतरों
का सामना करने के लिए तय्यार कर रखा है।
9 सुलेमान बादशाह ने ख़ुद यह पालकी लुबनान के
देवदार की लकड़ी से बनवाई।
10 उस ने उस के पाए चाँदी से, पुश्त सोने से, और
निशस्त अर्ग़वानी रंग के कपड़े से बनवाई। यरूशलम
की बेटियों ने बड़े प्यार से उस का अन्दरूनी हिस्सा
मुरस्साकारी से आरास्ता किया है।

11 ऐ सिय्यून की बेटियो, निकल आओ और
सुलेमान बादशाह को देखो। उस के सर पर वह ताज
है जो उस की माँ ने उस की शादी के दिन उस के सर
पर पहनाया, उस दिन जब उस का दिल बाग़ बाग़
हुआ।

तू कितनी हसीन है!

4 1 मेरी मह्बूबा, तू कितनी ख़ूबसूरत, कितनी
हसीन है! निक़ाब के पीछे तेरी आँखों की
झलक कबूतरों की मानिन्द है। तेरे बाल उन बकरियों
की मानिन्द हैं जो उछलती कूदती कोह-ए-जिलिआद
से उतरती हैं।
2 तेरे दाँत अभी अभी कतरी और नहलाई हुई भेड़ों
जैसे सफ़ेद हैं। हर दाँत का जुड़वाँ है, एक भी गुम
नहीं हुआ।
3 तेरे होंट क़िर्मिज़ी रंग का डोरा हैं, तेरा मुँह कितना
प्यारा है। निक़ाब के पीछे तेरे गालों की झलक अनार
के टुकड़ों की मानिन्द दिखाई देती है।
4 तेरी गर्दन दाऊद के बुर्ज जैसी दिलरुबा है। जिस
तरह इस गोल और मज़बूत बुर्ज से पहलवानों की
हज़ार ढालें लटकी हैं उस तरह तेरी गर्दन भी ज़ेवरात
से आरास्ता है।
5 तेरी छातियाँ सोसनों में चरने वाले ग़ज़ाल के
जुड़वाँ बच्चों की मानिन्द हैं।
6 इस से पहले कि शाम की हवा चले और साय
लम्बे हो कर फ़रार हो जाएँ मैं मुर के पहाड़ और
बख़ूर की पहाड़ी के पास चलूँगा।
7 मेरी मह्बूबा, तेरा हुस्न कामिल है, तुझ में कोई
नुक़्स नहीं है।

दुल्हन का जादू

8 आ मेरी दुल्हन, लुबनान से मेरे साथ आ! हम
कोह-ए-अमाना की चोटी से, सनीर और हर्मून की
चोटियों से उतरें, शेरों की मान्दों और चीतों के पहाड़ों
से उतरें।

9 मेरी बहन, मेरी दुल्हन, तू ने मेरा दिल चुरा लिया
है, अपनी आँखों की एक ही नज़र से, अपने गुलूबन्द
के एक ही जौहर से तू ने मेरा दिल चुरा लिया है।

10 मेरी बहन, मेरी दुल्हन, तेरी मुहब्बत कितनी
मनमोहन है! तेरा प्यार मै से कहीं ज़्यादा पसन्दीदा है।
बल्सान की कोई भी ख़ुश्बू तेरी महक का मुक़ाबला
नहीं कर सकती।

11 मेरी दुल्हन, जिस तरह शहद छत्ते से टपकता है
उसी तरह तेरे होंटों से मिठास टपकती है। दूध और
शहद तेरी ज़बान तले रहते हैं। तेरे कपड़ों की ख़ुश्बू
सूँघ कर लुबनान की ख़ुश्बू याद आती है।

दुल्हन नफ़ीस बाग़ है

12 मेरी बहन, मेरी दुल्हन, तू एक बाग़ है जिस की
चारदीवारी किसी और को अन्दर आने नहीं देती,
एक बन्द किया गया चश्मा जिस पर मुहर लगी है।
13 बाग़ में अनार के दरख़्त लगे हैं जिन पर लज़ीज़
फल पक रहा है। मेहंदी के पौदे भी उग रहे हैं।
14 बालछड़, ज़ाफ़रान, ख़ुश्बूदार बेद, दारचीनी,
बख़ूर की हर क़िस्म का दरख़्त, मुर, ऊद और हर
क़िस्म का बल्सान बाग़ में फलता फूलता है।
15 तू बाग़ का उबलता चश्मा है, एक ऐसा मम्बा
जिस का ताज़ा पानी लुबनान से बह कर आता है।

16 ऐ शिमाली हवा, जाग उठ! ऐ जुनूबी हवा, आ!
मेरे बाग़ में से गुज़र जा ताकि वहाँ से चारों तरफ़
बल्सान की ख़ुश्बू फैल जाए। मेरा मह्बूब अपने बाग़
में आ कर उस के लज़ीज़ फलों से खाए।

5 1 मेरी बहन, मेरी दुल्हन, अब मैं अपने बाग़
में दाख़िल हो गया हूँ। मैं ने अपना मुर अपने
बल्सान समेत चुन लिया, अपना छत्ता शहद समेत खा
लिया, अपनी मै अपने दूध समेत पी ली है। खाओ,
मेरे दोस्तो, खाओ और पियो, मुहब्बत से सरशार हो
जाओ!

रात को मह्बूब की तलाश

2 मैं सो रही थी, लेकिन मेरा दिल बेदार रहा। सुन!
मेरा मह्बूब दस्तक दे रहा है,
"ऐ मेरी बहन, मेरी साथी, मेरे लिए दरवाज़ा खोल
दे! ऐ मेरी कबूतरी, मेरी कामिल साथी, मेरा सर ओस
से तर हो गया है, मेरी ज़ुल्फ़ें रात की शबनम से भीग
गई हैं।"

3 "मैं अपना लिबास उतार चुकी हूँ, अब मैं किस
तरह उसे दुबारा पहन लूँ? मैं अपने पाँओ धो चुकी
हूँ, अब मैं उन्हें किस तरह दुबारा मैला करूँ?"

4 मेरे मह्बूब ने अपना हाथ दीवार के सूराख़ में से
अन्दर डाल दिया। तब मेरा दिल तड़प उठा।
5 मैं उठी ताकि अपने मह्बूब के लिए दरवाज़ा
खोलूँ। मेरे हाथ मुर से, मेरी उंगलियाँ मुर की ख़ुश्बू
से टपक रही थीं जब मैं कुंडी खोलने आई।
6 मैं ने अपने मह्बूब के लिए दरवाज़ा खोल दिया,
लेकिन वह मुड़ कर चला गया था। मुझे सख़्त सदमा
हुआ। मैं ने उसे तलाश किया लेकिन न मिला। मैं ने
उसे आवाज़ दी, लेकिन जवाब न मिला।
7 जो चौकीदार शहर में गश्त करते हैं उन से मेरा
वास्ता पड़ा, उन्हों ने मेरी पिटाई करके मुझे ज़ख़्मी
कर दिया। फ़सील के चौकीदारों ने मेरी चादर भी
छीन ली।
8 ऐ यरूशलम की बेटियो, क़सम खाओ कि अगर
मेरा मह्बूब मिला तो उसे इत्तिला दोगी, मैं मुहब्बत
के मारे बीमार हो गई हूँ।
9 तू जो औरतों में सब से हसीन है, हमें बता, तेरे
मह्बूब की क्या ख़ासियत है जो दूसरों में नहीं है?
तेरा मह्बूब दूसरों से किस तरह सब्क़त रखता है
कि तू हमें ऐसी क़सम खिलाना चाहती है?
10 मेरे मह्बूब की जिल्द गुलाबी और सफ़ेद है।
हज़ारों के साथ उस का मुक़ाबला करो तो उस का
आला किरदार नुमायाँ तौर पर नज़र आएगा।
11 उस का सर ख़ालिस सोने का है, उस के बाल
खजूर के फूलदार गुच्छों [r]की मानिन्द और कव्वे की
तरह सियाह हैं।

---

[r]इब्रानी लफ़्ज़ का मतलब मुब्हम सा है।

12 उस की आँखें नदियों के किनारे के कबूतरों की
मानिन्द हैं, जो दूध में नहलाए और कस्रत के पानी
के पास बैठे हैं।
13 उस के गाल बल्सान की क्यारी की मानिन्द, उस
के होंट मुर से टपकते सोसन के फूलों जैसे हैं।
14 उस के बाज़ू सोने की सलाखें हैं जिन में पुखराज
[s]जड़े हुए हैं, उस का जिस्म हाथीदाँत का शाहकार है
जिस में संग-ए-लाजवर्द [t]के पत्थर लगे हैं।
15 उस की रानें मरमर के सतून हैं जो ख़ालिस सोने
के पाइयों पर लगे हैं। उस का हुल्या लुबनान और
देवदार के दरख़्तों जैसा उम्दा है।
16 उस का मुँह मिठास ही है, ग़रज़ वह हर लिहाज़
से पसन्दीदा है।

ए यरूशलम की बेटियो, यह है मेरा मह्बूब, मेरा
दोस्त।

6 1 ऐ तू जो औरतों में सब से ख़ूबसूरत है, तेरा
मह्बूब किधर चला गया है? उस ने कौन सी
सिम्त इख़तियार की ताकि हम तेरे साथ उस का खोज
लगाएँ?

2 मेरा मह्बूब यहाँ से उतर कर अपने बाग़ में
चला गया है, वह बल्सान की क्यारियों के पास गया
है ताकि बाग़ों में चरे और सोसन के फूल चुने।
3 मैं अपने मह्बूब की ही हूँ, और वह मेरा ही है,
वह जो सोसनों में चरता है।

तू कितनी ख़ूबसूरत है

4 मेरी मह्बूबा, तू तिर्ज़ा शहर जैसी हसीन,
यरूशलम जैसी ख़ूबसूरत और अलमबरदार दस्तों
जैसी रोबदार है।

5 अपनी नज़रों को मुझ से हटा ले, क्यूँकि वह मुझ
में उलझन पैदा कर रही हैं।
तेरे बाल उन बकरियों की मानिन्द हैं जो उछलती
कूदती कोह-ए-जिलिआद से उतरती हैं।
6 तेरे दाँत अभी अभी नहलाई हुई भेड़ों जैसे सफ़ेद
हैं। हर दाँत का जुड़वाँ है, एक भी गुम नहीं हुआ।
7 निक़ाब के पीछे तेरे गालों की झलक अनार के
टुकड़ों की मानिन्द दिखाई देती है।

8 गो बादशाह की 60 बीवियाँ, 80 दाश्ताएँ और
बेशुमार कुंवारियाँ हों 9 लेकिन मेरी कबूतरी, मेरी
कामिल साथी लासानी है। वह अपनी माँ की वाहिद
बेटी है, जिस ने उसे जन्म दिया उस की पाक लाडली
है। बेटियों ने उसे देख कर उसे मुबारक कहा, रानियों
और दाश्ताओं ने उस की तारीफ़ की,
10 "यह कौन है जो तुलू-ए-सुब्ह की तरह चमक
उठी, जो चाँद जैसी ख़ूबसूरत, आफ़ताब जैसी पाक
और अलमबरदार दस्तों जैसी रोबदार है?"

मह्बूबा के लिए आर्ज़ू

11 मैं अख़रोट के बाग़ में उतर आया ताकि वादी
में फूटने वाले पौदों का मुआइना करूँ। मैं यह भी
मालूम करना चाहता था कि क्या अंगूर की कोंपलें
निकल आई या अनार के फूल लग गए हैं।
12 लेकिन चलते चलते न जाने क्या हुआ, मेरी आर्ज़ू
ने मुझे मेरी शरीफ़ क़ौम के रथों के पास पहुँचाया।

मह्बूबा की दिलकशी

13 ऐ शूलम्मीत, लौट आ, लौट आ! मुड़ कर लौट
आ ताकि हम तुझ पर नज़र करें।

तुम शूलम्मीत को क्यूँ देखना चाहती हो? हम
लश्करगाह का लोकनाच देखना चाहती हैं!

7 1 ऐ रईस की बेटी, जूतों में चलने का तेरा
अन्दाज़ कितना मनमोहन है! तेरी ख़ुशवज़ा रानें
माहिर कारीगर के ज़ेवरात की मानिन्द हैं।

---

[s]topas

[t]lapis lazuli

2 तेरी नाफ़ प्याला है जो मै से कभी नहीं महरूम
रहती। तेरा जिस्म गन्दुम का ढेर है जिस का इहाता
सोसन के फूलों से किया गया है।
3 तेरी छातियाँ ग़ज़ाल के जुड़वाँ बच्चों की मानिन्द
हैं।
4 तेरी गर्दन हाथीदाँत का मीनार, तेरी आँखें हस्बोन
शहर के तालाब हैं, वह जो बत-रब्बीम के दरवाज़े
के पास हैं। तेरी नाक मीनार-ए-लुबनान की मानिन्द
है जिस का मुँह दमिश्क़ की तरफ़ है।
5 तेरा सर कोह-ए-कर्मिल की मानिन्द है, तेरे खुले
बाल अर्ग़वान की तरह क़ीमती और दिलकश हैं।
बादशाह तेरी ज़ुल्फ़ों की ज़न्जीरों में जकड़ा रहता है।

मह्बूबा के लिए आर्ज़ू

6 ऐ ख़ुशियों से लबरेज़ मुहब्बत, तू कितनी हसीन
है, कितनी दिलरुबा!
7 तेरा क़द-ओ-क़ामत खजूर के दरख़्त सा, तेरी
छातियाँ अंगूर के गुच्छों जैसी हैं।
8 मैं बोला, "मैं खजूर के दरख़्त पर चढ़ कर उस के
फूलदार गुच्छों [u]पर हाथ लगाऊँगा।" तेरी छातियाँ
अंगूर के गुच्छों की मानिन्द हों, तेरे साँस की ख़ुश्बू
सेबों की ख़ुश्बू जैसी हो।
9 तेरा मुँह बेहतरीन मै हो, ऐसी मै जो सीधी मेरे
मह्बूब के मुँह में जा कर नर्मी से होंटों और दाँतों में
से गुज़र जाए।

मह्बूब के लिए आर्ज़ू

10 मैं अपने मह्बूब की ही हूँ, और वह मुझे चाहता
है।
11 आ, मेरे मह्बूब, हम शहर से निकल कर दीहात
में रात गुज़ारें।
12 आ, हम सुब्ह-सवेरे अंगूर के बाग़ों में जा कर
मालूम करें कि क्या बेलों से कोंपलें निकल आई हैं
और फूल लगे हैं, कि क्या अनार के दरख़्त खिल
रहे हैं। वहाँ मैं तुझ पर अपनी मुहब्बत का इज़हार
करूँगी।
13 मर्दुमगयाह [v]की ख़ुश्बू फैल रही, और हमारे
दरवाज़े पर हर क़िस्म का लज़ीज़ फल है, नई फ़सल
का भी और गुज़री का भी। क्यूँकि मैं ने यह चीज़ें तेरे
लिए, अपने मह्बूब के लिए मह्फ़ूज़ रखी हैं।

काश हम अकेले हों

8 1 काश तू मेरा सगा भाई [w]होता, तब अगर बाहर
तुझ से मुलाक़ात होती तो मैं तुझे बोसा देती और
कोई न होता जो यह देख कर मुझे हक़ीर जानता।
2 मैं तेरी राहनुमाई करके तुझे अपनी माँ के घर में ले
जाती, उस के घर में जिस ने मुझे तालीम दी। वहाँ मैं
तुझे मसालेदार मै और अपने अनारों का रस पिलाती।

3 उस का बायाँ बाज़ू मेरे सर के नीचे होता और
दायाँ बाज़ू मुझे गले लगाता है।
4 ऐ यरूशलम की बेटियो, क़सम खाओ कि जब
तक मुहब्बत ख़ुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न
बेदार करोगी।

मह्बूब की आख़िरी बात

5 यह कौन है जो अपने मह्बूब का सहारा ले कर
रेगिस्तान से चढ़ी आ रही है?

सेब के दरख़्त तले मैं ने तुझे जगा दिया, वहाँ जहाँ
तेरी माँ ने तुझे जन्म दिया, जहाँ उस ने दर्द-ए-ज़ह में
मुब्तला हो कर तुझे पैदा किया।

6 मुझे मुहर की तरह अपने दिल पर, अपने बाज़ू
पर लगाए रख! क्यूँकि मुहब्बत मौत जैसी ताक़तवर,

---

[u]इब्रानी लफ़्ज़ का मतलब मुब्हम सा है।

[v]एक पौदा जिस के बारे में सोचा जाता था कि उसे खा कर बाँझ औरत भी बच्चे को जन्म देगी।

[w]लफ़्ज़ी तर्जुमा : मेरा भाई होता, जिसे मेरी माँ ने दूध पिलाया होता।

और उस की सरगर्मी पाताल जैसी बेलचक है। वह
दहकती आग, रब का भड़कता शोला है।
7 पानी का बड़ा सैलाब भी मुहब्बत को बुझा नहीं
सकता, बड़े दरया भी उसे बहा कर ले जा नहीं
सकते। और अगर कोई मुहब्बत को पाने के लिए
अपने घर की तमाम दौलत पेश भी करे तो भी उसे
जवाब में हक़ीर ही जाना जाएगा।

महबूबा की आख़िरी बात

8 हमारी छोटी बहन की छातियाँ नहीं हैं। हम अपनी
बहन के लिए क्या करें अगर कोई उस से रिश्ता
बांधने आए?
9 अगर वह दीवार हो तो हम उस पर चाँदी का
क़िलाबन्द इन्तिज़ाम बनाएँगे। अगर वह दरवाज़ा हो
तो हम उसे देवदार के तख़्ते से महफ़ूज़ रखेंगे।

10 मैं दीवार हूँ, और मेरी छातियाँ मज़बूत मीनार हैं।
अब मैं उस की नज़र में ऐसी ख़ातून बन गई हूँ जिसे
सलामती हासिल हुई है।

सुलेमान से ज़्यादा दौलतमन्द

11 बाल-हामून में सुलेमान का अंगूर का बाग़ था।
इस बाग़ को उस ने पहरेदारों के हवाले कर दिया।
हर एक को उस की फ़सल के लिए चाँदी के हज़ार
सिक्के देने थे।

12 लेकिन मेरा अपना अंगूर का बाग़ मेरे सामने ही
मौजूद है। ऐ सुलेमान, चाँदी के हज़ार सिक्के तेरे लिए
हैं, और 200 सिक्के उन के लिए जो उस की फ़सल
की पहरादारी करते हैं।

मुझे ही पुकार

13 ऐ बाग़ में बसने वाली, मेरे साथी तेरी आवाज़
पर तवज्जुह दे रहे हैं। मुझे ही अपनी आवाज़ सुनने
दे।

14 ऐ मेरे महबूब, ग़ज़ाल या जवान हिरन की तरह
बल्सान के पहाड़ों की जानिब भाग जा!।

यसायाह

1 1 ज़ैल में वह रोयाएँ दर्ज हैं जो यसायाह बिन
आमूस ने यहूदाह और यरूशलम के बारे में देखीं
और जो उन सालों में मुन्कशिफ़ हुईं जब उज़्ज़ियाह,
यूताम, आख़ज़ और हिज़क़ियाह यहूदाह के बादशाह
थे।

इस्राईली अपने आक़ा को जानने से इन्कार करते हैं

2 ऐ आसमान, मेरी बात सुन! ऐ ज़मीन, मेरे अल्फ़ाज़
पर कान धर! क्यूँकि रब ने फ़रमाया है,
"जिन बच्चों की परवरिश मैं ने की है और जो मेरे
ज़ेर-ए-निगरानी परवान चढ़े हैं, उन्हों ने मुझ से रिश्ता
तोड़ लिया है। 3 बैल अपने मालिक को जानता और
गधा अपने आक़ा की चरनी को पहचानता है, लेकिन
इस्राईल इतना नहीं जानता, मेरी क़ौम समझ से ख़ाली
है।"
4 ऐ गुनाहगार क़ौम, तुझ पर अफ़सोस! ऐ संगीन
क़ुसूर में फंसी हुई उम्मत, तुझ पर अफ़सोस! शरीर
नस्ल, बदचलन बच्चे! उन्हों ने रब को तर्क कर दिया
है। हाँ, उन्हों ने इस्राईल के क़ुद्दूस को हक़ीर जान कर
रद्द किया, अपना मुँह उस से फेर लिया है। 5 अब तुम्हें
मज़ीद कहाँ पीटा जाए? तुम्हारी ज़िद तो मज़ीद बढ़ती
जा रही है गो पूरा सर ज़ख़्मी और पूरा दिल बीमार
है। 6 चाँद से ले कर तल्वे तक पूरा जिस्म मजरूह है,
हर जगह चोटें, घाओ और ताज़ा ताज़ा ज़र्बें लगी हैं।
और न उन्हें साफ़ किया गया, न उन की मर्हम-पट्टी
की गई है।
7 तुम्हारा मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान हो गया है,
तुम्हारे शहर भस्म हो गए हैं। तुम्हारे देखते देखते
परदेसी तुम्हारे खेतों को लूट रहे हैं, उन्हें यूँ उजाड़
रहे हैं जिस तरह परदेसी ही कर सकते हैं। 8 सिर्फ़
यरूशलम ही बाक़ी रह गया है, सिय्यून बेटी अंगूर
के बाग़ में झोंपड़ी की तरह अकेली रह गई है। अब
दुश्मन से घिरा हुआ यह शहर खीरे के खेत में लगे
छप्पर की मानिन्द है। 9 अगर रब्ब-उल-अफ़्वाज हम
में से चन्द एक को ज़िन्दा न छोड़ता तो हम सदूम की
तरह मिट जाते, हमारा अमूरा की तरह सत्यानास हो
जाता।
10 ऐ सदूम के सरदारो, रब का फ़रमान सुन लो! ऐ
अमूरा के लोगो, हमारे ख़ुदा की हिदायत पर ध्यान
दो! 11 रब फ़रमाता है, "अगर तुम बेशुमार क़ुर्बानियाँ
पेश करो तो मुझे क्या? मैं तो भस्म होने वाले मेंढों
और मोटे-ताज़े बछड़ों की चर्बी से उकता गया हूँ।
बैलों, लेलों और बकरों का जो ख़ून मुझे पेश किया
जाता है वह मुझे पसन्द नहीं। 12 किस ने तुम से
तक़ाज़ा किया कि मेरे हुज़ूर आते वक़्त मेरी बारगाहों
को पाँओ तले रौंदो? 13 रुक जाओ! अपनी बेमानी
क़ुर्बानियाँ मत पेश करो! तुम्हारे बख़ूर से मुझे घिन
आती है। नए चाँद की ईद और सबत का दिन मत
मनाओ, लोगों को इबादत के लिए जमा न करो! मैं
तुम्हारे बेदीन इजतिमा बर्दाश्त ही नहीं कर सकता।
14 जब तुम नए चाँद की ईद और बाक़ी तक़्रीबात
मनाते हो तो मेरे दिल में नफ़रत पैदा होती है। यह मेरे
लिए भारी बोझ बन गई हैं जिन से मैं तंग आ गया हूँ।
15 बेशक अपने हाथों को दुआ के लिए उठाते
जाओ, मैं ध्यान नहीं दूँगा। गो तुम बहुत ज़्यादा नमाज़
भी पढ़ो, मैं तुम्हारी नहीं सुनूँगा, क्यूँकि तुम्हारे हाथ
ख़ूनआलूदा हैं। 16 पहले नहा कर अपने आप को
पाक-साफ़ करो। अपनी शरीर हरकतों से बाज़ आओ
ताकि वह मुझे नज़र न आएँ। अपनी ग़लत राहों को
छोड़ कर 17 नेक काम करना सीख लो। इन्साफ़ के
तालिब रहो, मज़्लूमों का सहारा बनो, यतीमों का
इन्साफ़ करो और बेवाओं के हक़ में लड़ो!"

अल्लाह अपनी क़ौम की अदालत करता है

18 रब फ़रमाता है, “आओ हम अदालत में जा कर
एक दूसरे से मुक़द्दमा लड़ें। अगर तुम्हारे गुनाहों का
रंग क़िर्मिज़ी हो जाए तो क्या वह दुबारा बर्फ़ जैसे
उजले हो जाएंगे? अगर उन का रंग अर्ग़वानी हो
जाए तो क्या वह दुबारा ऊन जैसे सफ़ेद हो जाएंगे?
19 अगर तुम सुनने के लिए तय्यार हो तो मुल्क की
बेहतरीन पैदावार से लुत्फ़अन्दोज़ होगे। 20 लेकिन
अगर इन्कार करके सरकश हो जाओ तो तलवार
की ज़द में आ कर मर जाओगे। इस बात का यक़ीन
करो, क्यूँकि रब ने यह कुछ फ़रमाया है।”

21 यह कैसे हो गया है कि जो शहर पहले इतना
वफ़ादार था वह अब कस्बी बन गया है? पहले
यरूशलम इन्साफ़ से मामूर था, और रास्ती उस में
सुकूनत करती थी। लेकिन अब हर तरफ़ क़ातिल
ही क़ातिल हैं! 22 ऐ यरूशलम, तेरी ख़ालिस चाँदी
ख़ाम चाँदी में बदल गई है, तेरी बेहतरीन मै में पानी
मिलाया गया है। 23 तेरे बुज़ुर्ग हटधर्म और चोरों के
यार हैं। यह रिश्वतख़ोर सब लोगों के पीछे पड़े रहते
हैं ताकि चाय-पानी मिल जाए। न वह पर्वा करते हैं
कि यतीमों को इन्साफ़ मिले, न बेवाओं की फ़र्याद
उन तक पहुँचती है।

24 इस लिए क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज
जो इस्राईल का ज़बरदस्त सूरमा है फ़रमाता है,
“आओ, मैं अपने मुख़ालिफ़ों और दुश्मनों से
इन्तिक़ाम ले कर सुकून पाऊँ। 25 मैं तेरे ख़िलाफ़
हाथ उठाऊँगा और ख़ाम चाँदी की तरह तुझे पोटाश
के साथ पिघला कर तमाम मैल से पाक-साफ़
कर दूँगा। 26 मैं तुझे दुबारा क़दीम ज़माने के से
क़ाज़ी और इब्तिदा के से मुशीर अता करूँगा।
फिर यरूशलम दुबारा दार-उल-इन्साफ़ और वफ़ादार
शहर कहलाएगा।”

27 अल्लाह सिय्यून की अदालत करके उस का
फ़िद्या देगा, जो उस में तौबा करेंगे उन का वह इन्साफ़
करके उन्हें छुड़ाएगा। 28 लेकिन बाग़ी और गुनाहगार
सब के सब पाश पाश हो जाएंगे, रब को तर्क करने
वाले हलाक हो जाएंगे।

29 बलूत के जिन दरख़्तों की पूजा से तुम
लुत्फ़अन्दोज़ होते हो उन के बाइस तुम शर्मसार होगे,
और जिन बाग़ों को तुम ने अपनी बुतपरस्ती के लिए
चुन लिया है उन के बाइस तुम्हें शर्म आएगी। 30 तुम
उस बलूत के दरख़्त की मानिन्द होगे जिस के पत्ते
मुरझा गए हों, तुम्हारी हालत उस बाग़ की सी होगी
जिस में पानी नायाब हो। 31 ज़बरदस्त आदमी फूस
और उस की ग़लत हरकतें चिंगारी जैसी होंगी। दोनों
मिल कर यूँ भड़क उठेंगे कि कोई भी बुझा नहीं
सकेगा।

यरूशलम अबदी अम्न-ओ-अमान का मर्कज़ होगा

2 1 यसायाह बिन आमूस ने यहूदाह और
यरूशलम के बारे में ज़ैल की रोया देखी,

2 आख़िरी अय्याम में रब के घर का पहाड़ मज़बूती
से क़ाइम होगा। सब से बड़ा यह पहाड़ दीगर तमाम
बुलन्दियों से कहीं ज़्यादा सरफ़राज़ होगा। तब तमाम
क़ौमें जौक़-दर-जौक़ उस के पास पहुँचेंगी, 3 और
बेशुमार उम्मतें आ कर कहेंगी, “आओ, हम रब के
पहाड़ पर चढ़ कर याक़ूब के ख़ुदा के घर के पास
जाएँ ताकि वह हमें अपनी मर्ज़ी की तालीम दे और
हम उस की राहों पर चलें।”

क्यूँकि सिय्यून पहाड़ से रब की हिदायत निकलेगी,
और यरूशलम से उस का कलाम सादिर होगा।
4 रब बैन-उल-अक़्वामी झगड़ों को निपटाएगा और
बेशुमार क़ौमों का इन्साफ़ करेगा। तब वह अपनी
तलवारों को कूट कर फाले बनाएँगी और अपने नेज़ों
को काँट-छाँट के औज़ार में तब्दील करेंगी। अब से
न एक क़ौम दूसरी पर हम्ला करेगी, न लोग जंग करने
की तर्बियत हासिल करेंगे।

5 ऐ याक़ूब के घराने, आओ हम रब के नूर में चलें!

अल्लाह की हैबतनाक अदालत

6 ऐ अल्लाह, तू ने अपनी क़ौम, याक़ूब के घराने
को तर्क कर दिया है। और क्या अजब! क्यूँकि वह
मशरिक़ी जादूगरी से भर गए हैं। फ़िलिस्तियों की
तरह हमारे लोग भी क़िस्मत का हाल पूछते हैं, वह
परदेसियों के साथ बग़लगीर रहते हैं। 7 इस्राईल सोने-
चाँदी से भर गया है, उस के ख़ज़ानों की हद ही नहीं
रही। हर तरफ़ घोड़े ही घोड़े नज़र आते हैं, और उन के
रथ गिने नहीं जा सकते। 8 लेकिन साथ साथ उन का
मुल्क बुतों से भी भर गया है। जो चीज़ें उन के हाथों
ने बनाईं उन के सामने वह झुक जाते हैं, जो कुछ
उन की उंगलियों ने तश्कील दिया उसे वह सिज्दा
करते हैं। 9 चुनाँचे अब उन्हें ख़ुद झुकाया जाएगा,
उन्हें पस्त किया जाएगा। ऐ रब, उन्हें मुआफ़ न कर!
10 चटानों में घुस जाओ! ख़ाक में छुप जाओ!
क्यूँकि रब का दहशतअंगेज़ और शानदार जलाल
आने को है। 11 तब इन्सान की मग़रूर आँखों को
नीचा किया जाएगा, मर्दों का तकब्बुर ख़ाक में
मिलाया जाएगा। उस दिन सिर्फ़ रब ही सरफ़राज़
होगा। 12 क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज ने एक ख़ास दिन
ठहराया है जिस में सब कुछ जो मग़रूर, बुलन्द या
सरफ़राज़ हो ज़ेर किया जाएगा। 13 लुबनान में देवदार
के तमाम बुलन्द-ओ-बाला दरख़्त, बसन के कुल
बलूत, 14 तमाम आली पहाड़ और ऊँची पहाड़ियाँ,
15 हर अज़ीम बुर्ज और क़िलाबन्द दीवार, 16 समुन्दर
का हर अज़ीम तिजारती और शानदार जहाज़ ज़ेर
हो जाएगा। 17 चुनाँचे इन्सान का ग़ुरूर ख़ाक में
मिलाया जाएगा और मर्दों का तकब्बुर नीचा कर
दिया जाएगा। उस दिन सिर्फ़ रब ही सरफ़राज़ होगा,
18 और बुत सब के सब फ़ना हो जाएंगे।

19 जब रब ज़मीन को दहशतज़दा करने के लिए
उठ खड़ा होगा तो लोग मिट्टी के गढ़ों में खिसक
जाएंगे। रब की महीब और शानदार तजल्ली को देख
कर वह चटानों के ग़ारों में छुप जाएंगे। 20 उस दिन
इन्सान सोने-चाँदी के उन बुतों को फैंक देगा जिन्हें
उस ने सिज्दा करने के लिए बना लिया था। उन्हें चूहों
और चमगादड़ों के आगे फैंक कर 21 वह चटानों के
शिगाफ़ों और दराड़ों में घुस जाएंगे ताकि रब की
महीब और शानदार तजल्ली से बच जाएँ जब वह
ज़मीन को दहशतज़दा करने के लिए उठ खड़ा होगा।
22 चुनाँचे इन्सान पर एतिमाद करने से बाज़ आओ
जिस की ज़िन्दगी दम भर की है। उस की क़दर ही
क्या है?

यहूदाह की तबाही

3 1 क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज
यरूशलम और यहूदाह से सब कुछ छीनने को
है जिस पर लोग इन्हिसार करते हैं। रोटी का हर
लुक़्मा और पानी का हर क़तरा, 2 सूरमे और फ़ौजी,
क़ाज़ी और नबी, क़िस्मत का हाल बताने वाले
और बुज़ुर्ग, 3 फ़ौजी अफ़्सर और असर-ओ-रसूख़
वाले, मुशीर, जादूगर और मंत्र फूँकने वाले, सब के
सब छीन लिए जाएंगे। 4 मैं लड़के उन पर मुक़र्रर
करूँगा, और मुतलव्विनमिज़ाज ज़ालिम उन पर
हुकूमत करेंगे। 5 अवाम एक दूसरे पर ज़ुल्म करेंगे,
और हर एक अपने पड़ोसी को दबाएगा। नौजवान
बुज़ुर्गों पर और कमीने, इज़्ज़तदारों पर हम्ला करेंगे।
6 तब कोई अपने बाप के घर में अपने भाई को
पकड़ कर उस से कहेगा, "तेरे पास अब तक चादर
है, इस लिए आ, हमारा सरबराह बन जा! खंडरात
के इस ढेर को सँभालने की ज़िम्मादारी उठा ले!"
7 लेकिन वह चीख़ कर इन्कार करेगा, "नहीं, मैं
तुम्हारा मुआलजा कर ही नहीं सकता! मेरे घर में
न रोटी है, न चादर। मुझे अवाम का सरबराह मत
बनाना!"
8 यरूशलम डगमगा रहा है, यहूदाह धड़ाम से गिर
गया है। और वजह यह है कि वह अपनी बातों
और हरकतों से रब की मुख़ालफ़त करते हैं। उस के
जलाली हुज़ूर ही में वह सरकशी का इज़हार करते
हैं। 9 उन की जानिबदारी उन के ख़िलाफ़ गवाही देती
है। और वह सदूम के बाशिन्दों की तरह अलानिया

अपने गुनाहों पर फ़ख़र करते हैं, वह उन्हें छुपाने
की कोशिश ही नहीं करते। उन पर अफ़सोस! वह तो
अपने आप को मुसीबत में डाल रहे हैं।
10 रास्तबाज़ों को मुबारकबाद दो, क्यूँकि वह
अपने आमाल के अच्छे फल से लुत्फ़अन्दोज़ होंगे।
11 लेकिन बेदीनों पर अफ़सोस! उन का अन्जाम बुरा
होगा, क्यूँकि उन्हें ग़लत काम की मुनासिब सज़ा
मिलेगी।
12 हाय, मेरी क़ौम! मुतलव्विनमिज़ाज तुझ पर
ज़ुल्म करते और औरतें तुझ पर हुकूमत करती हैं।
ऐ मेरी क़ौम, तेरे राहनुमा तुझे गुमराह कर रहे हैं,
वह तुझे उलझा कर सहीह राह से भटका रहे हैं।

रब अपनी क़ौम की अदालत करता है

13 रब अदालत में मुक़द्दमा लड़ने के लिए खड़ा
हुआ है, वह क़ौमों की अदालत करने के लिए उठा
है। 14 रब अपनी क़ौम के बुज़ुर्गों और रईसों का
फ़ैसला करने के लिए सामने आ कर फ़रमाता है,
"तुम ही अंगूर के बाग़ में चरते हुए सब कुछ खा गए
हो, तुम्हारे घर ज़रूरतमन्दों के लूटे हुए माल से भरे
पड़े हैं। 15 यह तुम ने कैसी गुस्ताख़ी कर दिखाई?
यह मेरी ही क़ौम है जिसे तुम कुचल रहे हो। तुम
मुसीबतज़दों के चिहरों को चक्की में पीस रहे हो।"
क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज यूँ फ़रमाता है।

यरूशलम की ख़वातीन की अदालत

16 रब ने फ़रमाया, "सिय्यून की बेटियाँ कितनी
मग़ुरूर हैं। जब आँख मार मार कर चलती हैं तो
अपनी गरदनों को कितनी शोख़ी से इधर उधर
घुमाती हैं। और जब मटक मटक कर क़दम उठाती
हैं तो पाँओ पर बंधे हुए घुंघरू बोलते हैं टन टन, टन
टन।"
17 जवाब में रब उन के सरों पर फोड़े पैदा करके
उन के माथों को गंजा होने देगा। 18 उस दिन
रब उन का तमाम सिंगार उतार देगा : उन के
घुंघरू, सूरज और चाँद के ज़ेवरात, 19 आवेज़े, कड़े,
दोपट्टे, 20 सजीली टोपियाँ, पायल, ख़ुश्बू की बोतलें,
तावीज़, 21 अंगूठियाँ, नथ, 22 शानदार कपड़े, चादरें,
बटवे, 23 आईने, नफ़ीस लिबास, सरबन्द और शाल।
24 ख़ुश्बू की बजाय बदबू होगी, कमरबन्द के
बजाय रस्सी, सुलझे हुए बालों के बजाय गंजापन,
शानदार लिबास के बजाय टाट, ख़ूबसूरती की बजाय
शर्मिन्दगी।
25 हाय, यरूशलम! तेरे मर्द तलवार की ज़द में आ
कर मरेंगे, तेरे सूरमे लड़ते लड़ते शहीद हो जाएंगे।
26 शहर के दरवाज़े आहें भर भर कर मातम करेंगे,
सिय्यून बेटी तन्हा रह कर ख़ाक में बैठ जाएगी।
4 1 तब सात औरतें एक ही मर्द से लिपट कर
कहेंगी, "हम से शादी करें! बेशक हम ख़ुद ही
रोज़मर्रा की ज़रूरियात पूरी करेंगी, ख़्वाह खाना हो
या कपड़ा। लेकिन हम आप के नाम से कहलाएँ
ताकि हमारी शर्मिन्दगी दूर हो जाए।"

यरूशलम की बहाली

2 उस दिन जो कुछ रब फूटने देगा वह शानदार और
जलाली होगा, मुल्क की पैदावार बचे हुए इस्राईलियों
के लिए फ़ख़र और आब-ओ-ताब का बाइस होगी।
3 तब जो भी सिय्यून में बाक़ी रह गए होंगे वह
मुक़द्दस कहलाएँगे। यरूशलम के जिन बाशिन्दों के
नाम ज़िन्दों की फ़हरिस्त में दर्ज किए गए हैं वह बच
कर मुक़द्दस कहलाएँगे। 4 रब सिय्यून की फ़ुज़्ला से
लतपत बेटियों को धो कर पाक-साफ़ करेगा, वह
अदालत और तबाही की रूह से यरूशलम की ख़ूँरेज़ी
के धब्बे दूर कर देगा। 5 फिर रब होने देगा कि दिन
को बादल सिय्यून के पूरे पहाड़ और उस पर जमा
होने वालों पर साया डाले जबकि रात को धुआँ और
दहकती आग की चमक-दमक उस पर छाई रहे।
यूँ उस पूरे शानदार इलाक़े पर सायबान होगा 6 जो
उसे झुलसती धूप से महफ़ूज़ रखेगा और तूफ़ान और
बारिश से पनाह देगा।

बेफल अंगूर का बाग़

5 1 आओ, मैं अपने मह्बूब के लिए गीत गाऊँ,
एक गीत जो उस के अंगूर के बाग़ के बारे में
है।

मेरे प्यारे का बाग़ था। अंगूर का यह बाग़ ज़रख़ेज़
पहाड़ी पर था। 2 उस ने गोडी करते करते उस में
से तमाम पत्थर निकाल दिए, फिर बेहतरीन अंगूर
की क़लमें लगाईं। बीच में उस ने मीनार खड़ा किया
ताकि उस की सहीह चौकीदारी कर सके। साथ साथ
उस ने अंगूर का रस निकालने के लिए पत्थर में हौज़
तराश लिया। फिर वह पहली फ़सल का इन्तिज़ार
करने लगा। बड़ी उम्मीद थी कि अच्छे मीठे अंगूर
मिलेंगे। लेकिन अफ़्सोस! जब फ़सल पक गई तो
छोटे और खट्टे अंगूर ही निकले थे।

3 "ऐ यरूशलम और यहूदाह के बाशिन्दो, अब ख़ुद
फ़ैसला करो कि मैं उस बाग़ के साथ क्या करूँ।
4 क्या मैं ने बाग़ के लिए हर मुमकिन कोशिश नहीं
की थी? क्या मुनासिब नहीं था कि मैं अच्छी फ़सल
की उम्मीद रखूँ? क्या वजह है कि सिर्फ़ छोटे और
खट्टे अंगूर निकले?

5 पता है कि मैं अपने बाग़ के साथ क्या करूँगा?
मैं उस की काँटेदार बाड़ को ख़त्म करूँगा और उस
की चारदीवारी गिरा दूँगा। उस में जानवर घुस आएँगे
और चर कर सब कुछ तबाह करेंगे, सब कुछ पाँओ
तले रौंद डालेंगे!

6 मैं उस की ज़मीन बंजर बना दूँगा। न उस की
बेलों की काँट-छाँट होगी, न गोडी की जाएगी। वहाँ
काँटेदार और ख़ुदरौ पौदे उगेंगे। न सिर्फ़ यह बल्कि
मैं बादलों को भी उस पर बरसने से रोक दूँगा।"

7 सुनो, इस्राईली क़ौम अंगूर का बाग़ है जिस का
मालिक रब्ब-उल-अफ़्वाज है। यहूदाह के लोग उस
के लगाए हुए पौदे हैं जिन से वह लुत्फ़अन्दोज़
होना चाहता है। वह उम्मीद रखता था कि इन्साफ़
की फ़सल पैदा होगी, लेकिन अफ़्सोस! उन्हों ने
ग़ैरक़ानूनी हरकतें कीं। रास्ती की तवक़्क़ो थी,
लेकिन मज़्लूमों की चीख़ें ही सुनाई दीं।

लोगों की ग़ैरक़ानूनी हरकतें

8 तुम पर अफ़्सोस जो यके बाद दीगरे घरों
और खेतों को अपनाते जा रहे हो। आख़िरकार
दीगर तमाम लोगों को निकलना पड़ेगा और तुम
मुल्क में अकेले ही रहोगे। 9 रब्ब-उल-अफ़्वाज ने
मेरी मौजूदगी में ही क़सम खाई है, "यक़ीनन यह
मुतअद्दिद मकान वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएंगे, इन
बड़े और आलीशान घरों में कोई नहीं बसेगा। 10 दस
एकड़ [x]ज़मीन के अंगूरों से मै के सिर्फ़ 22 लिटर
बनेंगे, और बीज के 160 किलोग्राम से ग़ल्ला के सिर्फ़
16 किलोग्राम पैदा होंगे।"

11 तुम पर अफ़्सोस जो सुब्ह-सवेरे उठ कर शराब
के पीछे पड़ जाते और रात भर मै पी पी कर मस्त
हो जाते हो। 12 तुम्हारी ज़ियाफ़तों में कितनी रौनक़
होती है! तुम्हारे मेहमान मै पी पी कर सरोद, सितार,
दफ़ और बाँसरी की सुरीली आवाज़ों से अपना दिल
बहलाते हैं। लेकिन अफ़्सोस, तुम्हें ख़याल तक नहीं
आता कि रब क्या कर रहा है। जो कुछ रब के हाथों
हो रहा है उस का तुम लिहाज़ ही नहीं करते। 13 इसी
लिए मेरी क़ौम जिलावतन हो जाएगी, क्यूँकि वह
समझ से ख़ाली है। उस के बड़े अफ़्सर भूके मरेंगे,
और अवाम प्यास के मारे सूख जाएंगे। 14 पाताल ने
अपना मुँह फाड़ कर खोला है ताकि क़ौम की तमाम
शान-ओ-शौकत, शोर-शराबा, हंगामा और शादमान
अफ़राद उस के गले में उतर जाएँ। 15 इन्सान को
पस्त करके ख़ाक में मिलाया जाएगा, और मग़रूर
की आँखें नीची हो जाएँगी।

16 लेकिन रब्ब-उल-अफ़्वाज की अदालत उस की
अज़मत दिखाएगी, और क़ुद्दूस ख़ुदा की रास्ती
ज़ाहिर करेगी कि वह क़ुद्दूस है। 17 उन दिनों में लेले

---

[x]लफ़्ज़ी मतलब : जितनी ज़मीन पर बैलों की दस जोड़ियाँ एक दिन में हल चला सकती हैं।

और मोटी-ताज़ी भेड़ें जिलावतनों के खंडरात में यूँ
चरेंगी जिस तरह अपनी चरागाहों में।
18 तुम पर अफ़सोस जो अपने क़ुसूर को धोकेबाज़
रस्सों के साथ अपने पीछे खैंचते और अपने गुनाह
को बैलगाड़ी की तरह अपने पीछे घसीटते हो। 19 तुम
कहते हो, "अल्लाह जल्दी जल्दी अपना काम निपटाए
ताकि हम इस का मुआइना करें। जो मन्सूबा इस्राईल
का क़ुद्दूस रखता है वह जल्दी सामने आए ताकि हम
उसे जान लें।"
20 तुम पर अफ़सोस जो बुराई को भुला और भलाई
को बुरा क़रार देते हो, जो कहते हो कि तारीकी
रौशनी और रौशनी तारीकी है, कि कड़वाहट मीठी
और मिठास कड़वी है।
21 तुम पर अफ़सोस जो अपनी नज़र में दानिशमन्द
हो और अपने आप को होश्यार समझते हो।
22 तुम पर अफ़सोस जो मै पीने में पहलवान हो और
शराब मिलाने में अपनी बहादुरी दिखाते हो।
23 तुम रिश्वत खा कर मुजरिमों को बरी करते और
बेक़ुसूरों के हुक़ूक़ मारते हो। 24 अब तुम्हें इस की
सज़ा भुगतनी पड़ेगी। जिस तरह भूसा आग की लपेट
में आ कर राख हो जाता और सूखी घास आग के
शोले में चुरमुर हो जाती है उसी तरह तुम ख़त्म हो
जाओगे। तुम्हारी जड़ें सड़ जाएँगी और तुम्हारे फूल
गर्द की तरह उड़ जाएंगे, क्यूँकि तुम ने रब्ब-उल-
अफ़्वाज की शरीअत को रद्द किया है, तुम ने इस्राईल
के क़ुद्दूस का फ़रमान हक़ीर जाना है।

असूरी फ़ौज का हम्ला

25 यही वजह है कि रब का ग़ज़ब उस की क़ौम पर
नाज़िल हुआ है, कि उस ने अपना हाथ बढ़ा कर उन
पर हम्ला किया है। पहाड़ लरज़ रहे और गलियों में
लाशें कचरे की तरह बिखरी हुई हैं। ताहम उस का
ग़ुस्सा ठंडा नहीं होगा बल्कि उस का हाथ मारने के
लिए उठा ही रहेगा।
26 वह एक दूरदराज़ क़ौम के लिए फ़ौजी झंडा गाड़
कर उसे अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ खड़ा करेगा, वह
सीटी बजा कर उसे दुनिया की इन्तिहा से बुलाएगा।
वह देखो, दुश्मन भागते हुए आ रहे हैं! 27 उन में से
कोई नहीं जो थकामाँदा हो या लड़खड़ा कर चले।
कोई नहीं ऊँघता या सोया हुआ है। किसी का भी
पटका ढीला नहीं, किसी का भी तस्मा टूटा नहीं।
28 उन के तीर तेज़ और कमान तने हुए हैं। उन के
घोड़ों के खुर चक़्माक़ जैसे, उन के रथों के पहिए
आँधी जैसे हैं। 29 वह शेरनी की तरह गरजते हैं बल्कि
जवान शेरबबर की तरह दहाड़ते और ग़ुर्राते हुए
अपना शिकार छीन कर वहाँ ले जाते हैं जहाँ उसे
कोई नहीं बचा सकता।
30 उस दिन दुश्मन ग़ुर्राते और मुतलातिम समुन्दर
का सा शोर मचाते हुए इस्राईल पर टूट पड़ेंगे। जहाँ
भी देखो वहाँ अंधेरा ही अंधेरा और मुसीबत ही
मुसीबत। बादल छा जाने के सबब से रौशनी तारीक
हो जाएगी।

यसायाह की बुलाहट

6 1 जिस साल उज़्ज़ियाह बादशाह ने वफ़ात पाई
उस साल मैं ने रब को आला और जलाली तख़्त
पर बैठे देखा। उस के लिबास के दामन से रब का
घर भर गया। 2 सराफ़ीम फ़रिश्ते उस के ऊपर खड़े
थे। हर एक के छः पर थे। दो से वह अपने मुँह को
और दो से अपने पाँओ को ढाँप लेते थे जबकि दो
से वह उड़ते थे। 3 बुलन्द आवाज़ से वह एक दूसरे
को पुकार रहे थे, "क़ुद्दूस, क़ुद्दूस, क़ुद्दूस है रब्ब-
उल-अफ़्वाज। तमाम दुनिया उस के जलाल से मामूर
है।"
4 उन की आवाज़ों से दहलीज़ें [y]हिल गईं और रब
का घर धुएँ से भर गया। 5 मैं चिल्ला उठा, "मुझ पर
अफ़सोस, मैं बर्बाद हो गया हूँ! क्यूँकि गो मेरे होंट
नापाक हैं, और जिस क़ौम के दरमियान रहता हूँ उस

[y]लफ़्ज़ी मतलब : दहलीज़ों में घूमने वाली दरवाज़ों की चूलें।

के होंट भी नजिस हैं तो भी मैं ने अपनी आँखों से
बादशाह रब्ब-उल-अफ़्वाज को देखा है।”
6 तब सराफ़ीम फ़रिश्तों में से एक उड़ता हुआ मेरे
पास आया। उस के हाथ में दमकता कोएला था जो
उस ने चिमटे से क़ुर्बानगाह से लिया था। 7 इस से
उस ने मेरे मुँह को छू कर फ़रमाया, “देख, कोएले ने
तेरे होंटों को छू दिया है। अब तेरा क़ुसूर दूर हो गया,
तेरे गुनाह का कफ़्फ़ारा दिया गया है।”
8 फिर मैं ने रब की आवाज़ सुनी। उस ने पूछा, “मैं
किस को भेजूँ? कौन हमारी तरफ़ से जाए?” मैं बोला,
“मैं हाज़िर हूँ। मुझे ही भेज दे।” 9 तब रब ने फ़रमाया,
“जा, इस क़ौम को बता, ‘अपने कानों से सुनो मगर
कुछ न समझना। अपनी आँखों से देखो, मगर कुछ
न जानना!’ 10 इस क़ौम के दिल को बेहिस्स कर दे,
उन के कानों और आँखों को बन्द कर। ऐसा न हो
कि वह अपनी आँखों से देखें, अपने कानों से सुनें,
मेरी तरफ़ रुजू करें और शिफ़ा पाएँ।”
11 मैं ने सवाल किया, “ऐ रब, कब तक?” उस
ने जवाब दिया, “उस वक़्त तक कि मुल्क के शहर
वीरान-ओ-सुन्सान, उस के घर ग़ैरआबाद और उस
के खेत बंजर न हों। 12 पहले लाज़िम है कि रब लोगों
को दूर दूर तक भगा दे, कि पूरा मुल्क तन-ए-तनहा
और बेकस रह जाए। 13 अगर क़ौम का दसवाँ हिस्सा
मुल्क में बाक़ी भी रहे लेकिन उसे भी जला दिया
जाएगा। वह किसी बलूत या दीगर लम्बे-चौड़े दरख़्त
की तरह यूँ कट जाएगा कि मुढ ही बाक़ी रहेगा।
ताहम यह मुढ एक मुक़द्दस बीज होगा जिस से नए
सिरे से ज़िन्दगी फूट निकलेगी।”

अल्लाह आख़ज़ को तसल्ली देता है

7 1 जब आख़ज़ बिन यूताम बिन उज़्ज़ियाह,
यहूदाह का बादशाह था तो शाम का बादशाह
रज़ीन और इस्राईल का बादशाह फ़िक़ह बिन
रमलियाह यरूशलम के साथ लड़ने के लिए निकले।
लेकिन वह शहर पर क़ब्ज़ा करने में नाकाम रहे।
2 जब दाऊद के शाही घराने को इत्तिला मिली कि
शाम की फ़ौज ने इफ़्राईम के इलाक़े में अपनी
लश्करगाह लगाई है तो आख़ज़ बादशाह और उस
की क़ौम लरज़ उठे। उन के दिल आँधी के झोंकों से
हिलने वाले दरख़्तों की तरह थरथराने लगे।
3 तब रब यसायाह से हमकलाम हुआ, “अपने
बेटे शयार-याशूब [z]को अपने साथ ले कर आख़ज़
बादशाह से मिलने के लिए निकल जा। वह उस नाले
के सिरे के पास रुका हुआ है जो पानी को ऊपर वाले
तालाब तक पहुँचाता है (यह तालाब उस रास्ते पर है
जो धोबियों के घाट तक ले जाता है)। 4 उसे बता कि
मुह्तात रह कर सुकून का दामन मत छोड़। मत डर।
तेरा दिल रज़ीन, शाम और बिन रमलियाह का तैश
देख कर हिम्मत न हारे। यह बस जली हुई लकड़ी के
दो बचे हुए टुकड़े हैं जो अब तक कुछ धुआँ छोड़
रहे हैं। 5 बेशक शाम और इस्राईल के बादशाहों ने
तेरे ख़िलाफ़ बुरे मन्सूबे बांधे हैं, और वह कहते हैं,
6 ‘आओ हम यहूदाह पर हम्ला करें। हम वहाँ दह्शत
फैला कर उस पर फ़त्ह पाएँ और फिर ताबिएल
के बेटे को उस का बादशाह बनाएँ।’ 7 लेकिन रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि उन का मन्सूबा
नाकाम हो जाएगा। बात नहीं बनेगी! 8 क्यूँकि शाम
का सर दमिश्क़ और दमिश्क़ का सर महज़ रज़ीन
है। जहाँ तक मुल्क-ए-इस्राईल का ताल्लुक़ है, 65
साल के अन्दर अन्दर वह चिकनाचूर हो जाएगा,
और क़ौम नेस्त-ओ-नाबूद हो जाएगी। 9 इस्राईल का
सर सामरिया और सामरिया का सर महज़ रमलियाह
का बेटा है।
अगर ईमान में क़ाइम न रहो, तो ख़ुद क़ाइम नहीं
रहोगे।”

---

[z]शयार-याशूब से मुराद है ‘एक बचा-खुचा हिस्सा वापस आएगा।’

रब आख़ज़ को निशान देता है

10 रब आख़ज़ बादशाह से एक बार फिर हमकलाम
हुआ, 11 "इस की तस्दीक़ के लिए रब अपने ख़ुदा
से कोई इलाही निशान माँग ले, ख़्वाह आसमान पर
हो या पाताल में।"
12 लेकिन आख़ज़ ने इन्कार किया, "नहीं, मैं
निशान माँग कर रब को नहीं आज़माऊँगा।"
13 तब यसायाह ने कहा, "फिर मेरी बात सुनो, ऐ
दाऊद के ख़ानदान! क्या यह काफ़ी नहीं कि तुम
इन्सान को थका दो? क्या लाज़िम है कि अल्लाह को
भी थकाने पर मुसिर रहो? 14 चलो, फिर रब अपनी
ही तरफ़ से तुम्हें निशान देगा। निशान यह होगा कि
कुंवारी उम्मीद से हो जाएगी। जब बेटा पैदा होगा
तो उस का नाम इम्मानूएल [a]रखेगी। 15 जिस वक़्त
बच्चा इतना बड़ा होगा कि ग़लत काम रद्द करने और
अच्छा काम चुनने का इल्म रखेगा उस वक़्त से
बालाई और शहद खाएगा। 16 क्यूँकि इस से पहले
कि लड़का ग़लत काम रद्द करने और अच्छा काम
चुनने का इल्म रखे वह मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान हो
जाएगा जिस के दोनों बादशाहों से तू दहशत खाता
है।

यहूदाह भी तबाह हो जाएगा

17 रब तुझे भी तेरे आबाई ख़ानदान और क़ौम
समेत बड़ी मुसीबत में डालेगा। क्यूँकि वह असूर
के बादशाह को तुम्हारे ख़िलाफ़ भेजेगा। उस वक़्त
तुम्हें ऐसे मुश्किल दिनों का सामना करना पड़ेगा कि
इस्राईल के यहूदाह से अलग हो जाने से ले कर आज
तक नहीं गुज़रे।"
18 उस दिन रब सीटी बजा कर दुश्मन को बुलाएगा।
कुछ मक्खियों के ग़ोल की तरह दरया-ए-नील की
दूरदराज़ शाख़ों से आएँगे, और कुछ शहद की
मक्खियों की तरह असूर से रवाना हो कर मुल्क पर
धावा बोल देंगे। 19 हर जगह वह टिक जाएंगे, गहरी
घाटियों और चटानों की दराड़ों में, तमाम काँटेदार
झाड़ियों में और हर जोहड़ के पास। 20 उस दिन
क़ादिर-ए-मुतलक़ दरया-ए-फ़ुरात के परली तरफ़ एक
उस्तरा किराए पर ले कर तुम पर चलाएगा। यानी
असूर के बादशाह के ज़रीए वह तुम्हारे सर और टाँगों
को मुंडवाएगा। हाँ, वह तुम्हारी दाढ़ी-मूँछ का भी
सफ़ाया करेगा।
21 उस दिन जो आदमी एक जवान गाय और दो
भेड़-बकरियाँ रख सके वह ख़ुशक़िसमत होगा। 22 तो
भी वह इतना दूध देंगी कि वह बालाई खाता रहेगा।
हाँ, जो भी मुल्क में बाक़ी रह गया होगा वह बालाई
और शहद खाएगा।
23 उस दिन जहाँ जहाँ हाल में अंगूर के हज़ार
पौदे चाँदी के हज़ार सिक्कों के लिए बिकते हैं वहाँ
काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटारे ही उगेंगे। 24 पूरा
मुल्क काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों के सबब
से इतना जंगली होगा कि लोग तीर और कमान ले
कर उस में शिकार खेलने के लिए जाएंगे। 25 जिन
बुलन्दियों पर इस वक़्त खेतीबाड़ी की जाती है वहाँ
लोग काँटेदार पौदों और ऊँटकटारों की वजह से
जा नहीं सकेंगे। गाय-बैल उन पर चरेंगे, और भेड़-
बकरियाँ सब कुछ पाँओ तले रौंदेंगी।

जल्द ही लूट-खसूट

8 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, "एक बड़ा तख़्ता
ले कर उस पर साफ़ अल्फ़ाज़ में लिख दे,
'जल्द ही लूट-खसूट, सुरअत से ग़ारतगरी'।" 2 मैं ने
ऊरियाह इमाम और ज़करियाह बिन यबरकियाह की
मौजूदगी में ऐसा ही लिख दिया, क्यूँकि दोनों मोतबर
गवाह थे।
3 उस वक़्त जब मैं अपनी बीवी नबिया के पास गया
तो वह उम्मीद से हुई। बेटा पैदा हुआ, और रब ने
मुझे हुक्म दिया, "इस का नाम 'जल्द ही लूट-खसूट,

---

[a]इम्मानूएल से मुराद है 'अल्लाह हमारे साथ है।'

सुरअत से ग़ारतगरी' रख। 4 क्यूँकि इस से पहले
कि लड़का 'अब्बू' या 'अम्मी' कह सके दमिश्क़
की दौलत और सामरिया का माल-ओ-अस्बाब छीन
लिया गया होगा, असूर के बादशाह ने सब कुछ लूट
लिया होगा।"

शिलोख़ का पानी रद्द करने का बुरा अन्जाम

5 एक बार फिर रब मुझ से हमकलाम हुआ, 6 "यह
लोग यरूशलम में आराम से बहने वाले शिलोख़
नाले का पानी मुस्तरद करके रज़ीन और फ़िक़ह
बिन रमलियाह से ख़ुश हैं। 7 इस लिए रब उन पर
दरया-ए-फ़ुरात का ज़बरदस्त सैलाब लाएगा, असूर
का बादशाह अपनी तमाम शान-ओ-शौकत के साथ
उन पर टूट पड़ेगा। उस की तमाम दरयाई शाख़ें अपने
किनारों से निकल कर 8 सैलाब की सूरत में यहूदाह
पर से गुज़रेंगी। ऐ इम्मानूएल, पानी परिन्दे की तरह
अपने परों को फैला कर तेरे पूरे मुल्क को ढाँप लेगा,
और लोग गले तक उस में डूब जाएंगे।"
9 ऐ क़ौमो, बेशक जंग के नारे लगाओ। तुम फिर
भी चिकनाचूर हो जाओगी। ऐ दूरदराज़ ममालिक
के तमाम बाशिन्दो, ध्यान दो! बेशक जंग के लिए
तय्यारियाँ करो। तुम फिर भी पाश पाश हो जाओगे।
क्यूँकि जंग के लिए तय्यारियाँ करने के बावुजूद भी
तुम्हें कुचला जाएगा। 10 जो भी मन्सूबा तुम बान्धो,
बात नहीं बनेगी। आपस में जो भी फ़ैसला करो, तुम
नाकाम हो जाओगे, क्यूँकि अल्लाह हमारे साथ है। [b]

रब नबी को क़ौम के बारे में आगाह करता है

11 जिस वक़्त रब ने मुझे मज़बूती से पकड़ लिया
उस वक़्त उस ने मुझे इस क़ौम की राहों पर चलने
से ख़बरदार किया। उस ने फ़रमाया, 12 "हर बात को
साज़िश मत समझना जो यह क़ौम साज़िश समझती
है। जिस से यह लोग डरते हैं उस से न डरना, न
दहशत खाना 13 बल्कि रब्ब-उल-अफ़्वाज से डरो।
उसी से दहशत खाओ और उसी को क़ुद्दूस मानो।
14 तब वह इस्राईल और यहूदाह का मक़्दिस होगा,
एक ऐसा पत्थर जो ठोकर का बाइस बनेगा, एक
चटान जो ठेस लगने का सबब होगी। यरूशलम के
बाशिन्दे उस के फंदे और जाल में उलझ जाएंगे।
15 उन में से बहुत सारे ठोकर खाएँगे। वह गिर कर
पाश पाश हो जाएंगे और फंदे में फंस कर पकड़े
जाएंगे।"

रब का कलाम शागिर्दों के हवाले करना है

16 मुझे मुकाशफ़े को लिफाफे में डाल कर महफ़ूज़
रखना है, अपने शागिर्दों के दरमियान ही अल्लाह
की हिदायत पर मुहर लगानी है। 17 मैं ख़ुद रब के
इन्तिज़ार में रहूँगा जिस ने अपने चिहरे को याक़ूब के
घराने से छुपा लिया है। उसी से मैं उम्मीद रखूँगा।
18 अब मैं हाज़िर हूँ, मैं और वह बच्चे जो अल्लाह ने
मुझे दिए हैं, हम इस्राईल में इलाही और मोजिज़ाना
निशान हैं जिन से रब्ब-उल-अफ़्वाज जो कोह-ए-
सिय्यून पर सुकूनत करता है लोगों को आगाह कर
रहा है।
19 लोग तुम्हें मश्वरा देते हैं, "जाओ, मुर्दों से राबिता
करने वालों और क़िस्मत का हाल बताने वालों से
पता करो, उन से जो बारीक आवाज़ें निकालते और
बुड़बुड़ाते हुए जवाब देते हैं।" लेकिन उन से कहो,
"क्या मुनासिब नहीं कि क़ौम अपने ख़ुदा से मश्वरा
करे? हम ज़िन्दों की ख़ातिर मर्दों से बात क्यूँ करें?"
20 अल्लाह की हिदायत और मुकाशफ़ा की तरफ़
रुजू करो! जो इन्कार करे उस पर सुब्ह की
रौशनी कभी नहीं चमकेगी। 21 ऐसे लोग मायूस और
फ़ाक़ाकश हालत में मुल्क में मारे मारे फिरेंगे। और
जब भूके मरने को होंगे तो झुँझला कर अपने बादशाह
और अपने ख़ुदा पर लानत करेंगे। वह ऊपर आसमान
22 और नीचे ज़मीन की तरफ़ देखेंगे, लेकिन जहाँ
भी नज़र पड़े वहाँ मुसीबत, अंधेरा और हौलनाक

---

[b] इब्रानी में 'इम्मानूएल' लिखा है, देखिए 7:14 का फ़ुटनोट।

तारीकी ही दिखाई देगी। उन्हें तारीकी ही तारीकी में डाल दिया जाएगा।

आने वाले मसीह की रौशनी

9 1 लेकिन मुसीबतज़दा तारीकी में नहीं रहेंगे। गो पहले ज़बूलून का इलाक़ा और नफ़ताली का इलाक़ा पस्त हुआ है, लेकिन आइन्दा झील के साथ का रास्ता, दरया-ए-यर्दन के पार, ग़ैरयहूदियों का गलील सरफ़राज़ होगा।

2 अंधेरे में चलने वाली क़ौम ने एक तेज़ रौशनी देखी, मौत के साय में डूबे हुए मुल्क के बाशिन्दों पर रौशनी चमकी। 3 तू ने क़ौम को बढ़ा कर उसे बड़ी ख़ुशी दिलाई है। तेरे हुज़ूर वह यूँ ख़ुशी मनाते हैं जिस तरह फ़सल काटते और लूट का माल बाँटते वक़्त मनाई जाती है। 4 तू ने अपनी क़ौम को उस दिन की तरह छुटकारा दिया जब तू ने मिदियान को शिकस्त दी थी। उसे दबाने वाला जूआ टूट गया, और उस पर ज़ुल्म करने वाले की लाठी टुकड़े टुकड़े हो गई है। 5 ज़मीन पर ज़ोर से मारे गए फ़ौजी जूते और ख़ून में लतपत फ़ौजी वर्दियाँ सब हवाला-ए-आतिश हो कर भस्म हो जाएँगी।

6 क्यूँकि हमारे हाँ बच्चा पैदा हुआ, हमें बेटा बख़्शा गया है। उस के कंधों पर हुकूमत का इख़तियार ठहरा रहेगा। वह अनोखा मुशीर, क़वी ख़ुदा, अबदी बाप और सुलह-सलामती का शहज़ादा कहलाएगा। 7 उस की हुकूमत ज़ोर पकड़ती जाएगी, और अम्न-ओ-अमान की इन्तिहा नहीं होगी। वह दाऊद के तख़्त पर बैठ कर उस की सल्तनत पर हुकूमत करेगा, वह उसे अदल-ओ-इन्साफ़ से मज़बूत करके अब से अबद तक क़ाइम रखेगा। रब्ब-उल-अफ़्वाज की ग़ैरत ही इसे अन्जाम देगी।

रब का ग़ज़ब नाज़िल होगा

8 रब ने याक़ूब के ख़िलाफ़ पैग़ाम भेजा, और वह इस्राईल पर नाज़िल हो गया है। 9 इस्राईल और सामरिया के तमाम बाशिन्दे इसे जल्द ही जान जाएंगे, हालाँकि वह इस वक़्त बड़ी शेख़ी मार कर कहते हैं, 10 "बेशक हमारी ईंटों की दीवारें गिर गई हैं, लेकिन हम उन्हें तराशे हुए पत्थरों से दुबारा तामीर कर लेंगे। बेशक हमारे अन्जीर-तूत के दरख़्त कट गए हैं, लेकिन कोई बात नहीं, हम उन की जगह देवदार के दरख़्त लगा लेंगे।" 11 लेकिन रब इस्राईल के दुश्मन रज़ीन को तक़वियत दे कर उस के ख़िलाफ़ भेजेगा बल्कि इस्राईल के तमाम दुश्मनों को उस पर हम्ला करने के लिए उभारेगा। 12 शाम के फ़ौजी मशरिक़ से और फ़िलिस्ती मग़रिब से मुँह फाड़ कर इस्राईल को हड़प कर लेंगे। ताहम रब का ग़ज़ब ठंडा नहीं होगा बल्कि उस का हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

13 क्यूँकि इस के बावुजूद भी लोग सज़ा देने वाले के पास वापस नहीं आएँगे और रब्ब-उल-अफ़्वाज के तालिब नहीं होंगे। 14 नतीजे में रब एक ही दिन में इस्राईल का न सिर्फ़ सर बल्कि उस की दुम भी काटेगा, न सिर्फ़ खजूर की शानदार शाख़ बल्कि मामूली सा सरकंडा भी तोड़ेगा। 15 बुज़ुर्ग और असर-ओ-रसूख़ वाले इस्राईल का सर हैं जबकि झूटी तालीम देने वाले नबी उस की दुम हैं। 16 क्यूँकि क़ौम के राहनुमा लोगों को ग़लत राह पर ले गए हैं, और जिन की राहनुमाई वह कर रहे हैं उन के दिमाग़ में फ़ुतूर आ गया है। 17 इस लिए रब न क़ौम के जवानों से ख़ुश होगा, न यतीमों और बेवाओं पर रहम करेगा। क्यूँकि सब के सब बेदीन और शरीर हैं, हर मुँह कुफ़्र बकता है। ताहम रब का ग़ज़ब ठंडा नहीं होगा बल्कि उस का हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

18 क्यूँकि उन की बेदीनी की भड़कती हुई आग काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटारे भस्म कर देती है, बल्कि गुंजान जंगल भी उस की ज़द में आ कर धुएँ के काले बादल छोड़ता है। 19 रब्ब-उल-अफ़्वाज के ग़ज़ब से मुल्क झुलस जाएगा और उस के बाशिन्दे आग का लुक़्मा बन जाएंगे। यहाँ तक कि कोई भी अपने भाई पर तरस नहीं खाएगा। 20 और गो हर एक दाईं तरफ़ मुड़ कर सब कुछ हड़प कर जाए तो भी भूका रहेगा, गो बाईं तरफ़ रुख़ करके सब कुछ

निगल जाए तो भी सेर नहीं होगा। हर एक अपने
पड़ोसी को खाएगा, 21 मनस्सी इफ़्राईम को और
इफ़्राईम मनस्सी को। और दोनों मिल कर यहूदाह
पर हम्ला करेंगे। ताहम रब का ग़ज़ब ठंडा नहीं होगा
बल्कि उस का हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

10 1 तुम पर अफ़्सोस जो ग़लत क़वानीन
सादिर करते और ज़ालिम फ़त्वे देते हो
2 ताकि ग़रीबों का हक़ मारो और मज़्लूमों के हुक़ूक़
पामाल करो। बेवाएँ तुम्हारा शिकार होती हैं, और
तुम यतीमों को लूट लेते हो। 3 लेकिन अदालत के
दिन तुम क्या करोगे, जब दूर दूर से ज़बरदस्त तूफ़ान
तुम पर आन पड़ेगा तो तुम मदद के लिए किस
के पास भागोगे और अपना माल-ओ-दौलत कहाँ
महफ़ूज़ रख छोड़ोगे? 4 जो झुक कर क़ैदी न बने वह
गिर कर हलाक हो जाएगा। ताहम रब का ग़ज़ब ठंडा
नहीं होगा बल्कि उस का हाथ मारने के लिए उठा ही
रहेगा।

असूर की भी अदालत होगी

5 असूर पर अफ़्सोस जो मेरे ग़ज़ब का आला है,
जिस के हाथ में मेरे क़हर की लाठी है। 6 मैं उसे एक
बेदीन क़ौम के ख़िलाफ़ भेज रहा हूँ, एक क़ौम के
ख़िलाफ़ जो मुझे ग़ुस्सा दिलाती है। मैं ने असूर को
हुक्म दिया है कि उसे लूट कर गली की कीचड़ की
तरह पामाल कर।

7 लेकिन उस का अपना इरादा फ़र्क़ है। वह ऐसी
सोच नहीं रखता बल्कि सब कुछ तबाह करने पर
तुला हुआ है, बहुत क़ौमों को नेस्त-ओ-नाबूद करने
पर आमादा है। 8 वह फ़ख़र करता है, "मेरे तमाम
अफ़्सर तो बादशाह हैं। 9 फिर हमारी फ़ुतूहात पर ग़ौर
करो। कर्किमीस, कल्नो, अर्फ़ाद, हमात, दमिश्क़
और सामरिया जैसे तमाम शहर यके बाद दीगरे मेरे
क़ब्ज़े में आ गए हैं। 10 मैं ने कई सल्तनतों पर क़ाबू
पा लिया है जिन के बुत यरूशलम और सामरिया के
बुतों से कहीं बेहतर थे। 11 सामरिया और उस के बुतों
को मैं बर्बाद कर चुका हूँ, और अब मैं यरूशलम
और उस के बुतों के साथ भी ऐसा ही करूँगा!"

12 लेकिन कोह-ए-सिय्यून पर और यरूशलम में
अपने तमाम मक़ासिद पूरे करने के बाद रब
फ़रमाएगा, "मैं शाह-ए-असूर को भी सज़ा दूँगा,
क्यूँकि उस के मग़ुरूर दिल से कितना बुरा काम उभर
आया है, और उस की आँखें कितने ग़ुरूर से देखती
हैं। 13 वह शेख़ी मार कर कहता है, 'मैं ने अपने ही
ज़ोर-ए-बाज़ू और हिक्मत से यह सब कुछ कर लिया
है, क्यूँकि मैं समझदार हूँ। मैं ने क़ौमों की हुदूद ख़त्म
करके उन के ख़ज़ानों को लूट लिया और ज़बरदस्त
साँड की तरह उन के बादशाहों को मार मार कर
ख़ाक में मिला दिया है। 14 जिस तरह कोई अपना
हाथ घोंसले में डाल कर अंडे निकाल लेता है उसी
तरह मैं ने क़ौमों की दौलत छीन ली है। आम आदमी
परिन्दों को भगा कर उन के छोड़े हुए अंडे इकट्ठे कर
लेता है जबकि मैं ने यही सुलूक दुनिया के तमाम
ममालिक के साथ किया। जब मैं उन्हें अपने क़ब्ज़े
में लाया तो एक ने भी अपने परों को फड़फड़ाने या
चोंच खोल कर चीं चीं करने की जुरअत न की'।"

15 लेकिन क्या कुल्हाड़ी उस के सामने शेख़ी
बघारती जो उसे चलाता है? क्या आरी उस के सामने
अपने आप पर फ़ख़र करती जो उसे इस्तेमाल करता
है? यह उतना ही नामुमकिन है जितना यह कि लाठी
पकड़ने वाले को घुमाए या डंडा आदमी को उठाए।

16 चुनाँचे क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज
असूर के मोटे-ताज़े फ़ौजियों में एक मर्ज़ फैला देगा
जो उन के जिस्मों को रफ़्ता रफ़्ता ज़ाए करेगा।
असूर की शान-ओ-शौकत के नीचे एक भड़कती हुई
आग लगाई जाएगी। 17 उस वक़्त इस्राईल का नूर
आग और इस्राईल का क़ुद्दूस शोला बन कर असूर
की काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों को एक
ही दिन में भस्म कर देगा। 18 वह उस के शानदार
जंगलों और बाग़ों को मुकम्मल तौर पर तबाह कर
देगा, और वह मरीज़ की तरह घुल घुल कर ज़ाइल

हो जाएंगे। 19 जंगलों के इतने कम दरख़्त बचेंगे कि
बच्चा भी उन्हें गिन कर किताब में दर्ज कर सकेगा।

इस्राईल का छोटा सा हिस्सा बच जाएगा

20 उस दिन से इस्राईल का बक़िया यानी याक़ूब के
घराने का बचा-खुचा हिस्सा उस पर मज़ीद इन्हिसार
नहीं करेगा जो उसे मारता रहा था, बल्कि वह
पूरी वफ़ादारी से इस्राईल के क़ुद्दूस, रब पर भरोसा
रखेगा। 21 बक़िया वापस आएगा, याक़ूब का बचा-
खुचा हिस्सा क़वी ख़ुदा के हुज़ूर लौट आएगा। 22 ऐ
इस्राईल, गो तू साहिल पर की रेत जैसा बेशुमार क्यूँ न
हो तो भी सिर्फ़ एक बचा हुआ हिस्सा वापस आएगा।
तेरे बर्बाद होने का फ़ैसला हो चुका है, और इन्साफ़
का सैलाब मुल्क पर आने वाला है। 23 क्यूँकि इस
का अटल फ़ैसला हो चुका है कि क़ादिर-ए-मुतलक़
रब्ब-उल-अफ़्वाज पूरे मुल्क पर हलाकत लाने को
है।

24 इस लिए क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है, "ऐ सिय्यून में बसने वाली मेरी क़ौम,
असूर से मत डरना जो लाठी से तुझे मारता है और
तेरे ख़िलाफ़ लाठी यूँ उठाता है जिस तरह पहले मिस्र
किया करता था। 25 मेरा तुझ पर ग़ुस्सा जल्द ही
ठंडा हो जाएगा और मेरा ग़ज़ब असूरियों पर नाज़िल
हो कर उन्हें ख़त्म करेगा।" 26 जिस तरह रब्ब-उल-
अफ़्वाज ने मिदियानियों को मारा जब जिदाऊन ने
ओरेब की चटान पर उन्हें शिकस्त दी उसी तरह वह
असूरियों को भी कोड़े से मारेगा। और जिस तरह रब
ने अपनी लाठी मूसा के ज़रीए समुन्दर के ऊपर उठाई
और नतीजे में मिस्र की फ़ौज उस में डूब गई बिलकुल
उसी तरह वह असूरियों के साथ भी करेगा। 27 उस
दिन असूर का बोझ तेरे कंधों पर से उतर जाएगा,
और उस का जूआ तेरी गर्दन पर से दूर हो कर टूट
जाएगा।

यरूशलम की तरफ़ फ़ातेह की तरक़्क़ी

फ़ातेह ने यशीमोन की तरफ़ से चढ़ कर 28 अय्यात
पर हम्ला किया है। उस ने मिग्रोन में से गुज़र कर
मिक्मास में अपना लश्करी सामान छोड़ रखा है।
29 दर्रे को पार करके वह कहते हैं, "आज हम रात
को जिबा में गुज़ारेंगे।" रामा थरथरा रहा और साऊल
का शहर जिबिआ भाग गया है। 30 ऐ जल्लीम बेटी,
ज़ोर से चीख़ें मार! ऐ लैसा, ध्यान दे! ऐ अनतोत, उसे
जवाब दे! 31 मदमीना फ़रार हो गया और जेबीम के
बाशिन्दों ने दूसरी जगहों में पनाह ली है। 32 आज ही
फ़ातेह नोब के पास रुक कर सिय्यून बेटी के पहाड़
यानी कोह-ए-यरूशलम के ऊपर हाथ हिलाएगा। [c]

33 देखो, क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज बड़े
ज़ोर से शाख़ों को तोड़ने वाला है। तब ऊँचे ऊँचे
दरख़्त कट कर गिर जाएंगे, और जो सरफ़राज़ हैं
उन्हें ख़ाक में मिलाया जाएगा। 34 वह कुल्हाड़ी ले
कर घने जंगल को काट डालेगा बल्कि लुबनान भी
ज़ोरावर के हाथों गिर जाएगा।

मसीह की पुरअम्न सल्तनत

11 1 यस्सी [d]के मुढ में से कोंपल फूट
निकलेगी, और उस की बची हुई जड़ों
से शाख़ निकल कर फल लाएगी। 2 रब का रूह
उस पर ठहरेगा यानी हिक्मत और समझ का रूह,
मश्वरत और क़ुव्वत का रूह, इर्फ़ान और रब के
ख़ौफ़ का रूह। 3 रब का ख़ौफ़ उसे अज़ीज़ होगा।
न वह दिखावे की बिना पर फ़ैसला करेगा, न सुनी-
सुनाई बातों की बिना पर फ़त्वा देगा 4 बल्कि इन्साफ़
से बेबसों की अदालत करेगा और ग़ैरजानिबदारी
से मुल्क के मुसीबतज़दों का फ़ैसला करेगा। अपने
कलाम की लाठी से वह ज़मीन को मारेगा और अपने
मुँह की फूँक से बेदीन को हलाक करेगा। 5 वह

---

[c]एक और मुमकिना तर्जुमा : आज ही फ़ातेह नोब के पास रुक कर कोह-ए-यरूशलम के ऊपर हाथ हिलाएगा ताकि उसे बड़ा बनाए।

[d]यस्सी से मुराद हज़रत दाऊद की नस्ल है (यस्सी हज़रत दाऊद का बाप था)।

रास्तबाज़ी के पटके और वफ़ादारी के ज़ेरजामे से
मुलब्बस रहेगा।
6 भेड़िया उस वक़्त भेड़ के बच्चे के पास ठहरेगा,
और चीता भेड़ के बच्चे के पास आराम करेगा।
बछड़ा, जवान शेरबबर और मोटा-ताज़ा बैल मिल
कर रहेंगे, और छोटा लड़का उन्हें हाँक कर सँभालेगा
। 7 गाय रीछ के साथ चरेगी, और उन के बच्चे एक
दूसरे के साथ आराम करेंगे। शेरबबर बैल की तरह
भूसा खाएगा। 8 शीरख़्वार बच्चा नाग की बाँबी के
क़रीब खेलेगा, और जवान बच्चा अपना हाथ ज़हरीले
साँप के बिल में डालेगा।
9 मेरे तमाम मुक़द्दस पहाड़ पर न ग़लत और न
तबाहकुन काम किया जाएगा। क्यूँकि मुल्क रब के
इर्फ़ान से यूँ मामूर होगा जिस तरह समुन्दर पानी से
भरा रहता है। 10 उस दिन यस्सी [e] की जड़ से फूटी
हुई कोंपल उम्मतों के लिए झंडा होगा। क़ौमें उस
की तालिब होंगी, और उस की सुकूनतगाह जलाली
होगी।

रब अपनी क़ौम को वापस लाएगा

11 उस दिन रब एक बार फिर अपना हाथ बढ़ाएगा
ताकि अपनी क़ौम का वह बचा-खुचा हिस्सा दुबारा
हासिल करे जो असूर, शिमाली और जुनूबी मिस्र,
एथोपिया, ऐलाम, बाबल, हमात और साहिली
इलाक़ों में मुन्तशिर होगा। 12 वह क़ौमों के लिए झंडा
गाड़ कर इस्राईल के जिलावतनों को इकट्ठा करेगा।
हाँ, वह यहूदाह के बिखरे अफ़राद को दुनिया के
चारों कोनों से ला कर जमा करेगा। 13 तब इस्राईल
का हसद ख़त्म हो जाएगा, और यहूदाह के दुश्मन
नेस्त-ओ-नाबूद हो जाएंगे। न इस्राईल यहूदाह से
हसद करेगा, न यहूदाह इस्राईल से दुश्मनी रखेगा।
14 फिर दोनों मग़रिब में फ़िलिस्ती मुल्क पर झपट
पड़ेंगे और मिल कर मशरिक़ के बाशिन्दों को लूट
लेंगे। अदोम और मोआब उन के क़ब्ज़े में आएँगे,
और अम्मोन उन के ताबे हो जाएगा। 15 रब बहर-
ए-क़ुल्ज़ुम को ख़ुश्क करेगा और साथ साथ दरया-
ए-फ़ुरात के ऊपर हाथ हिला कर उस पर ज़ोरदार
हवा चलाएगा। तब दरया सात ऐसी नहरों में बट
जाएगा जो पैदल ही पार की जा सकेंगी। 16 एक ऐसा
रास्ता बनेगा जो रब के बचे हुए अफ़राद को असूर
से इस्राईल तक पहुँचाएगा, बिलकुल उस रास्ते की
तरह जिस ने इस्राईलियों को मिस्र से निकलते वक़्त
इस्राईल तक पहुँचाया था।

बचे हुओं की हम्द-ओ-सना

12 1 उस दिन तुम गीत गाओगे,
"ऐ रब, मैं तेरी सताइश करूँगा! यक़ीनन
तू मुझ से नाराज़ था, लेकिन अब तेरा ग़ज़ब मुझ पर
से दूर हो जाए और तू मुझे तसल्ली दे।
2 अल्लाह मेरी नजात है। उस पर भरोसा रख कर मैं
दहशत नहीं खाऊँगा। क्यूँकि रब ख़ुदा मेरी क़ुव्वत
और मेरा गीत है, वह मेरी नजात बन गया है।"
3 तुम शादमानी से नजात के चश्मों से पानी भरोगे।
4 उस दिन तुम कहोगे, "रब की सताइश करो! उस
का नाम ले कर उसे पुकारो! जो कुछ उस ने किया
है दुनिया को बताओ, उस के नाम की अज़मत का
एलान करो।
5 रब की तम्जीद का गीत गाओ, क्यूँकि उस ने
ज़बरदस्त काम किया है, और इस का इल्म पूरी
दुनिया तक पहुँचे।
6 ऐ यरूशलम की रहने वाली, शादियाना बजा कर
ख़ुशी के नारे लगा! क्यूँकि इस्राईल का क़ुद्दूस अज़ीम
है, और वह तेरे दरमियान ही सुकूनत करता है।

बाबल के ख़िलाफ़ एलान

13 1 दर्ज-ए-ज़ैल बाबल के बारे में वह एलान है
जो यसायाह बिन आमूस ने रोया में देखा।

---

[e] यस्सी से मुराद हज़रत दाऊद की नस्ल है (यस्सी हज़रत दाऊद का बाप था)।

2 नंगे पहाड़ पर झंडा गाड़ दो। उन्हें बुलन्द आवाज़
दो, हाथ हिला कर उन्हें शुरफ़ा के दरवाज़ों में दाख़िल
होने का हुक्म दो। 3 मैं ने अपने मुक़द्दसीन को काम
पर लगा दिया है, मैं ने अपने सूरमाओं को जो मेरी
अज़मत की ख़ुशी मनाते हैं बुला लिया है ताकि मेरे
ग़ज़ब का आला-ए-कार बनें।
4 सुनो! पहाड़ों पर बड़े हुजूम का शोर मच रहा
है। सुनो! मुतअद्दिद ममालिक और जमा होने वाली
क़ौमों का ग़ुल-ग़पाड़ा सुनाई दे रहा है। रब्ब-उल-
अफ़्वाज जंग के लिए फ़ौज जमा कर रहा है। 5 उस के
फ़ौजी दूरदराज़ इलाक़ों बल्कि आसमान की इन्तिहा
से आ रहे हैं। क्यूँकि रब अपने ग़ज़ब के आलात के
साथ आ रहा है ताकि तमाम मुल्क को बर्बाद कर
दे।
6 वावैला करो, क्यूँकि रब का दिन क़रीब ही
है, वह दिन जब क़ादिर-ए-मुतलक़ की तरफ़ से
तबाही मचेगी। 7 तब तमाम हाथ बेहिस्स-ओ-हरकत
हो जाएंगे, और हर एक का दिल हिम्मत हार देगा।
8 दहशत उन पर छा जाएगी, और वह जाँकनी और
दर्द-ए-ज़ह की सी गिरिफ़्त में आ कर जन्म देने वाली
औरत की तरह तड़पेंगे। एक दूसरे को डर के मारे
घूर घूर कर उन के चिहरे आग की तरह तमतमा रहे
होंगे।
9 देखो, रब का बेरहम दिन आ रहा है जब उस
का क़हर और शदीद ग़ज़ब नाज़िल होगा। उस वक़्त
मुल्क तबाह हो जाएगा और गुनाहगार को उस में से
मिटा दिया जाएगा। 10 आसमान के सितारे और उन
के झुर्मट नहीं चमकेंगे, सूरज तुलू होते वक़्त तारीक
ही रहेगा, और चाँद की रौशनी ख़त्म होगी।
11 मैं दुनिया को उस की बदकारी का अज्र और
बेदीनों को उन के गुनाहों की सज़ा दूँगा, मैं शोख़ों
का घमंड ख़त्म कर दूँगा और ज़ालिमों का ग़ुरूर
ख़ाक में मिला दूँगा। 12 लोग ख़ालिस सोने से कहीं
ज़्यादा नायाब होंगे, इन्सान ओफ़ीर के क़ीमती सोने
की निस्बत कहीं ज़्यादा कमयाब होगा।
13 क्यूँकि आसमान रब्ब-उल-अफ़्वाज के क़हर के
सामने काँप उठेगा, उस के शदीद ग़ज़ब के नाज़िल
होने पर ज़मीन लरज़ कर अपनी जगह से खिसक
जाएगी। 14 बाबल के तमाम बाशिन्दे शिकारी के
सामने दौड़ने वाले ग़ज़ाल और चरवाहे से महरूम
भेड़-बकरियों की तरह इधर उधर भाग कर अपने
मुल्क और अपनी क़ौम में वापस आने की कोशिश
करेंगे। 15 जो भी दुश्मन के क़ाबू में आएगा उसे छेदा
जाएगा, जिसे भी पकड़ा जाएगा उसे तलवार से मारा
जाएगा। 16 उन के देखते देखते दुश्मन उन के बच्चों
को ज़मीन पर पटख़ देगा और उन के घरों को लूट
कर उन की औरतों की इस्मतदरी करेगा।
17 मैं मादियों को उन पर चढ़ा लाऊँगा, ऐसे लोगों
को जिन्हें रिश्वत से नहीं आज़माया जा सकता, जो
सोने-चाँदी की पर्वा ही नहीं करते। 18 उन के तीर
नौजवानों को मार देंगे। न वह शीरख़्वारों पर तरस
खाएँगे, न बच्चों पर रहम करेंगे।

बाबल जंगली जानवरों का घर बन जाएगा

19 अल्लाह बाबल को जो तमाम ममालिक का ताज
और बाबलियों का ख़ास फ़ख़र है रू-ए-ज़मीन पर
से मिटा डालेगा। उस दिन वह सदूम और अमूरा की
तरह तबाह हो जाएगा। 20 आइन्दा उसे कभी दुबारा
बसाया नहीं जाएगा, नस्ल-दर-नस्ल वह वीरान ही
रहेगा। न बदू अपना तम्बू वहाँ लगाएगा, और न
गल्लाबान अपने रेवड़ उस में ठहराएगा। 21 सिर्फ़
रेगिस्तान के जानवर खंडरात में जा बसेंगे। शहर
के घर उन की आवाज़ों से गूँज उठेंगे, उक़ाबी उल्लू
वहाँ ठहरेंगे, और बकरानुमा जिन उस में रक़्स करेंगे।
22 जंगली कुत्ते उस के महलों में रोएँगे, और गीदड़
ऐश-ओ-इश्रत के क़सरों में अपनी दर्द भरी आवाज़ें
निकालेंगे। बाबल का ख़ातमा क़रीब ही है, अब देर
नहीं लगेगी।

इस्राईली वापस आएँगे

14 1 क्यूँकि रब याक़ूब पर तरस खाएगा, वह
दुबारा इस्राईलियों को चुन कर उन्हें उन के
अपने मुल्क में बसा देगा। परदेसी भी उन के साथ
मिल जाएंगे, वह याक़ूब के घराने से मुन्सलिक हो
जाएंगे। 2 दीगर क़ौमें इस्राईलियों को ले कर उन के
वतन में वापस पहुँचा देंगी। तब इस्राईल का घराना
इन परदेसियों को विरसे में पाएगा, और यह रब
के मुल्क में उन के नौकर-नौकरानियाँ बन कर उन
की ख़िदमत करेंगे। जिन्हों ने उन्हें जिलावतन किया
था उन ही को वह जिलावतन किए रखेंगे, जिन्हों
ने उन पर ज़ुल्म किया था उन ही पर वह हुकूमत
करेंगे। 3 जिस दिन रब तुझे मुसीबत, बेचैनी और
ज़ालिमाना ग़ुलामी से आराम देगा 4 उस दिन तू बाबल
के बादशाह पर तन्ज़ का गीत गाएगा,

बाबल पर तन्ज़ का गीत

"यह कैसी बात है? ज़ालिम नेस्त-ओ-नाबूद और
उस के हमले ख़त्म हो गए हैं। 5 रब ने बेदीनों की
लाठी तोड़ कर हुक्मरानों का वह शाही असा टुकड़े
टुकड़े कर दिया है 6 जो तैश में आ कर क़ौमों को
मुसलसल मारता रहा और ग़ुस्से से उन पर हुकूमत
करता, बेरहमी से उन के पीछे पड़ा रहा। 7 अब पूरी
दुनिया को आराम-ओ-सुकून हासिल हुआ है, अब
हर तरफ़ ख़ुशी के नारे सुनाई दे रहे हैं। 8 जूनीपर के
दरख़्त और लुबनान के देवदार भी तेरे अन्जाम पर
ख़ुश हो कर कहते हैं, 'शुक्र है! जब से तू गिरा दिया
गया कोई यहाँ चढ़ कर हमें काटने नहीं आता।'

9 पाताल तेरे उतरने के बाइस हिल गया है। तेरे
इन्तिज़ार में वह मुर्दा रूहों को हरकत में ला रहा है।
वहाँ दुनिया के तमाम रईस और अक़्वाम के तमाम
बादशाह अपने तख़्तों से खड़े हो कर तेरा इस्तिक़्बाल
करेंगे। 10 सब मिल कर तुझ से कहेंगे, 'अब तू भी हम
जैसा कमज़ोर हो गया है, तू भी हमारे बराबर हो गया
है!' 11 तेरी तमाम शान-ओ-शौकत पाताल में उतर गई
है, तेरे सितार ख़ामोश हो गए हैं। अब कीड़े तेरा गद्दा
और केच्चे तेरा कम्बल होंगे।

12 ऐ सितारा-ए-सुब्ह, ऐ इब्न-ए-सहर, तू आसमान
से किस तरह गिर गया है! जिस ने दीगर ममालिक
को शिकस्त दी थी वह अब ख़ुद पाश पाश हो गया
है। 13 दिल में तू ने कहा, 'मैं आसमान पर चढ़ कर
अपना तख़्त अल्लाह के सितारों के ऊपर लगा लूँगा, मैं
इन्तिहाई शिमाल में उस पहाड़ पर जहाँ देवता जमा
होते हैं तख़्तनशीन हूँगा। 14 मैं बादलों की बुलन्दियों
पर चढ़ कर क़ादिर-ए-मुतलक़ के बिलकुल बराबर
हो जाऊँगा।' 15 लेकिन तुझे तो पाताल में उतारा
जाएगा, उस के सब से गहरे गढ़े में गिराया जाएगा।

16 जो भी तुझ पर नज़र डालेगा वह ग़ौर से देख
कर पूछेगा, 'क्या यही वह आदमी है जिस ने ज़मीन
को हिला दिया, जिस के सामने दीगर ममालिक काँप
उठे? 17 क्या इसी ने दुनिया को वीरान कर दिया और
उस के शहरों को ढा कर क़ैदियों को घर वापस जाने
की इजाज़त न दी?'

18 दीगर ममालिक के तमाम बादशाह बड़ी इज़्ज़त
के साथ अपने अपने मक़बरों में पड़े हुए हैं। 19 लेकिन
तुझे अपनी क़ब्र से दूर किसी बेकार कोंपल की तरह
फैंक दिया जाएगा। तुझे मक़्तूलों से ढाँका जाएगा,
उन से जिन को तलवार से छेदा गया है, जो पथरीले
गढ़ों में उतर गए हैं। तू पाँओ तले रौंदी हुई लाश जैसा
होगा, 20 और तद्फ़ीन के वक़्त तू दीगर बादशाहों से
जा नहीं मिलेगा। क्यूँकि तू ने अपने मुल्क को तबाह
और अपनी क़ौम को हलाक कर दिया है। चुनाँचे अब
से अबद तक इन बेदीनों की औलाद का ज़िक्र तक
नहीं किया जाएगा। 21 इस आदमी के बेटों को फाँसी
देने की जगह तय्यार करो! क्यूँकि उन के बापदादा
का क़ुसूर इतना संगीन है कि उन्हें मरना ही है। ऐसा
न हो कि वह दुबारा उठ कर दुनिया पर क़ब्ज़ा कर
लें, कि रू-ए-ज़मीन उन के शहरों से भर जाए।"

रब के हाथों बाबल का अन्जाम

22 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, “मैं उन के ख़िलाफ़ यूँ उठूँगा कि बाबल का नाम-ओ-निशान
तक नहीं रहेगा। मैं उस की औलाद को रू-ए-ज़मीन
पर से मिटा दूँगा, और एक भी नहीं बचने का।
23 बाबल ख़ारपुश्त का मस्कन और दलदल का
इलाक़ा बन जाएगा, क्यूँकि मैं ख़ुद उस में तबाही का
झाड़ू फेर दूँगा।” यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान
है।

असूरी फ़ौज की तबाही

24 रब्ब-उल-अफ़्वाज ने क़सम खा कर फ़रमाया
है, “यक़ीनन सब कुछ मेरे मन्सूबे के मुताबिक़ ही
होगा, मेरा इरादा ज़रूर पूरा हो जाएगा। 25 मैं असूर
को अपने मुल्क में चिकनाचूर कर दूँगा और उसे
अपने पहाड़ों पर कुचल डालूँगा। तब उस का जूआ
मेरी क़ौम पर से दूर हो जाएगा, और उस का बोझ
उस के कंधों पर से उतर जाएगा।” 26 पूरी दुनिया के
बारे में यह मन्सूबा अटल है, और रब अपना हाथ
तमाम क़ौमों के ख़िलाफ़ बढ़ा चुका है। 27 रब्ब-उल-
अफ़्वाज ने फ़ैसला कर लिया है, तो कौन इसे मन्सूख़
करेगा? उस ने अपना हाथ बढ़ा दिया है, तो कौन उसे
रोकेगा?

फ़िलिस्तियों का अन्जाम क़रीब है

28 ज़ैल का कलाम उस साल नाज़िल हुआ जब
आख़ज़ बादशाह ने वफ़ात पाई।
29 ऐ तमाम फ़िलिस्ती मुल्क, इस पर ख़ुशी मत मना
कि हमें मारने वाली लाठी टूट गई है। क्यूँकि साँप
की बची हुई जड़ से ज़हरीला साँप फूट निकलेगा,
और उस का फल शोलाफ़िशाँ उड़नअज़दहा होगा।
30 तब ज़रूरतमन्दों को चरागाह मिलेगी, और ग़रीब
महफ़ूज़ जगह पर आराम करेंगे। लेकिन तेरी जड़ को
मैं काल से मार दूँगा, और जो बच जाएँ उन्हें भी
हलाक कर दूँगा।
31 ऐ शहर के दरवाज़े, वावैला कर! ऐ शहर,
ज़ोर से चीख़ें मार! ऐ फ़िलिस्तियो, हिम्मत हार कर
लड़खड़ाते जाओ। क्यूँकि शिमाल से तुम्हारी तरफ़
धुआँ बढ़ रहा है, और उस की सफ़ों में पीछे रहने
वाला कोई नहीं है। 32 तो फिर हमारे पास भेजे हुए
क़ासिदों को हम क्या जवाब दें? यह कि रब ने
सिय्यून को क़ाइम रखा है, कि उस की क़ौम के
मज़्लूम उसी में पनाह लेंगे।

मोआब के अन्जाम का एलान

15 1 मोआब के बारे में रब का फ़रमान :
एक ही रात में मोआब का शहर आर
तबाह हो गया है। एक ही रात में मोआब का शहर
क़ीर बर्बाद हो गया है। 2 अब दीबोन के बाशिन्दे
मातम करने के लिए अपने मन्दिर और पहाड़ी
क़ुर्बानगाहों की तरफ़ चढ़ रहे हैं। मोआब अपने
शहरों नबू और मीदबा पर वावैला कर रहा है। हर
सर मुंडा हुआ और हर दाढ़ी कट गई है। 3 गलियों
में वह टाट से मुलब्बस फिर रहे हैं, छतों पर और
चौकों में सब रो रो कर आह-ओ-बुका कर रहे हैं।
4 हस्बोन और इलीआली मदद के लिए पुकार रहे हैं,
और उन की आवाज़ें यहज़ तक सुनाई दे रही हैं। इस
लिए मोआब के मुसल्लह मर्द जंग के नारे लगा रहे हैं,
गो वह अन्दर ही अन्दर काँप रहे हैं।
5 मेरा दिल मोआब को देख कर रो रहा है। उस के
मुहाजिरीन भाग कर ज़ुग़र और इज्लत-शलीशियाह
तक पहुँच रहे हैं। लोग रो रो कर लूहीत की तरफ़
चढ़ रहे हैं, वह होरोनाइम तक जाने वाले रास्ते पर
चलते हुए अपनी तबाही पर गिर्या-ओ-ज़ारी कर रहे
हैं। 6 निम्रीम का पानी सूख गया है, घास झुलस गई है,
तमाम हरियाली ख़त्म हो गई है, सब्ज़ाज़ारों का नाम-
ओ-निशान तक नहीं रहा। 7 इस लिए लोग अपना
सारा जमाशुदा सामान समेट कर वादी-ए-सफ़ेदा को
उबूर कर रहे हैं। 8 चीख़ें मोआब की हुदूद तक गूँज
रही हैं, हाय हाय की आवाज़ें इज्लाइम और बैर-
एलीम तक सुनाई दे रही हैं। 9 लेकिन गो दीमोन की

नहर ख़ून से सुर्ख़ हो गई है, ताहम मैं उस पर मज़ीद
मुसीबत लाऊँगा। मैं शेरबबर भेजूँगा जो उन पर भी
धावा बोलेंगे जो मोआब से बच निकले होंगे और उन
पर भी जो मुल्क में पीछे रह गए होंगे।

मोआब इस्राईलियों से मदद माँगेगा

16 1 मुल्क का जो हुक्मरान रेगिस्तान के पार
सिला में है उस की तरफ़ से सिय्यून बेटी
के पहाड़ पर मेंढा भेज दो। 2 मोआब की बेटियाँ
घोंसले से भगाए हुए परिन्दों की तरह दरया-ए-अर्नोन
के पायाब मक़ामों पर इधर उधर फड़फड़ा रही हैं।
3 "हमें कोई मश्वरा दे, कोई फ़ैसला पेश कर। हम
पर साया डाल ताकि दोपहर की तपती धूप हम पर
न पड़े बल्कि रात जैसा अंधेरा हो। मफ़रूरों को
छुपा दे, दुश्मन को पनाहगुज़ीनों के बारे में इत्तिला
न दे। 4 मोआबी मुहाजिरों को अपने पास ठहरने दे,
मोआबी मफ़रूरों के लिए पनाहगाह हो ताकि वह
हलाकू के हाथ से बच जाएँ।"

लेकिन ज़ालिम का अन्जाम आने वाला है। तबाही
का सिलसिला ख़त्म हो जाएगा, और कुचलने वाला
मुल्क से ग़ाइब हो जाएगा। 5 तब अल्लाह अपने फ़ज़्ल
से दाऊद के घराने के लिए तख़्त क़ाइम करेगा। और
जो उस पर बैठेगा वह वफ़ादारी से हुकूमत करेगा।
वह इन्साफ़ का तालिब रह कर अदालत करेगा और
रास्ती क़ाइम रखने में माहिर होगा।

मोआब की मुनासिब सज़ा पर अफ़सोस

6 हम ने मोआब के तकब्बुर के बारे में सुना है,
क्यूँकि वह हद से ज़्यादा मुतकब्बिर, मग़रूर, घमंडी
और शोख़चशम है। लेकिन उस की डींगें अबस हैं।
7 इस लिए मोआबी अपने आप पर आह-ओ-ज़ारी
कर रहे, सब मिल कर आहें भर रहे हैं। वह सिसक
सिसक कर क़ीर-हरासत की किशमिश की टिक्कियाँ
याद कर रहे हैं, उन का निहायत बुरा हाल हो गया
है। 8 हस्बोन के बाग़ मुरझा गए, सिब्माह के अंगूर
ख़त्म हो गए हैं। पहले तो उन की अनोखी बेलें याज़ेर
बल्कि रेगिस्तान तक फैली हुई थीं, उन की कोंपलें
समुन्दर को भी पार करती थीं। लेकिन अब ग़ैरक़ौम
हुक्मरानों ने यह उम्दा बेलें तोड़ डाली हैं। 9 इस लिए
मैं याज़ेर के साथ मिल कर सिब्माह के अंगूरों के लिए
आह-ओ-ज़ारी कर रहा हूँ। ऐ हस्बोन, ऐ इलीआली,
तुम्हारी हालत देख कर मेरे बेहद आँसू बह रहे हैं।
क्यूँकि जब तुम्हारा फल पक गया और तुम्हारी फ़सल
तय्यार हुई तब जंग के नारे तुम्हारे इलाक़े में गूँज उठे।
10 अब ख़ुशी-ओ-शादमानी बाग़ों से ग़ाइब हो गई है,
अंगूर के बाग़ों में गीत और ख़ुशी के नारे बन्द हो गए
हैं। कोई नहीं रहा जो हौज़ों में अंगूर को रौंद कर रस
निकाले, क्यूँकि मैं ने फ़सल की ख़ुशियाँ ख़त्म कर
दी हैं।

11 मेरा दिल सरोद के मातमी सुर निकाल कर
मोआब के लिए नोहा कर रहा है, मेरी जान क़ीर-
हरासत के लिए आहें भर रही है। 12 जब मोआब
अपनी पहाड़ी क़ुर्बानगाह के सामने हाज़िर हो कर
सिज्दा करता है तो बेकार मेहनत करता है। जब वह
पूजा करने के लिए अपने मन्दिर में दाख़िल होता है
तो फ़ाइदा कोई नहीं होता।

13 रब ने माज़ी में इन बातों का एलान किया।
14 लेकिन अब वह मज़ीद फ़रमाता है, "तीन साल
के अन्दर अन्दर [f]मोआब की तमाम शान-ओ-शौकत
और धूमधाम जाती रहेगी। जो थोड़े बहुत बचेंगे, वह
निहायत ही कम होंगे।"

शाम और इस्राईल की तबाही

17 1 दमिश्क़ शहर के बारे में अल्लाह का
फ़रमान :

"दमिश्क़ मिट जाएगा, मल्बे का ढेर ही रह जाएगा।
2 अरोईर के शहर भी वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएंगे।
तब रेवड़ ही उन की गलियों में चरेंगे और आराम

[f]लफ़्ज़ी तर्जुमा : मज़दूर के से तीन साल के अन्दर अन्दर।

करेंगे। कोई नहीं होगा जो उन्हें भगाए। 3 इस्राईल
के क़िलाबन्द शहर नेस्त-ओ-नाबूद हो जाएंगे, और
दमिश्क़ की सल्तनत जाती रहेगी। शाम के जो लोग
बच निकलेंगे उन का और इस्राईल की शान-ओ-
शौकत का एक ही अन्जाम होगा।" यह है रब्ब-उल-
अफ़्वाज का फ़रमान।

4 उस दिन याक़ूब की शान-ओ-शौकत कम और
उस का मोटा-ताज़ा जिस्म लाग़र होता जाएगा।
5 फ़सल की कटाई की सी हालत होगी। जिस तरह
काटने वाला एक हाथ से गन्दुम के डंठल को
पकड़ कर दूसरे से बालों को काटता है उसी तरह
इस्राईलियों को काटा जाएगा। और जिस तरह वादी-
ए-रफ़ाईम में ग़रीब लोग फ़सल काटने वालों के पीछे
पीछे चल कर बची हुई बालियों को चुनते हैं उसी
तरह इस्राईल के बचे हुओं को चुना जाएगा। 6 ताहम
कुछ न कुछ बचा रहेगा, उन दो चार ज़ैतूनों की तरह
जो चुनते वक़्त दरख़्त की चोटी पर रह जाते हैं।
दरख़्त को डंडे से झाड़ने के बावुजूद कहीं न कहीं
चन्द एक लगे रहेंगे।" यह है रब, इस्राईल के ख़ुदा
का फ़रमान।

7 तब इन्सान अपनी नज़र अपने ख़ालिक़ की तरफ़
उठाएगा, और उस की आँखें इस्राईल के क़ुद्दूस की
तरफ़ देखेंगी। 8 आइन्दा न वह अपने हाथों से बनी
हुई क़ुर्बानगाहों को तकेगा, न अपनी उंगलियों से बने
हुए यसीरत देवी के खम्बों और बख़ूर की क़ुर्बानगाहों
पर ध्यान देगा।

9 उस वक़्त इस्राईली अपने क़िलाबन्द शहरों को
यूँ छोड़ेंगे जिस तरह कनआनियों ने अपने जंगलों
और पहाड़ों की चोटियों को इस्राईलियों के आगे
आगे छोड़ा था। सब कुछ वीरान-ओ-सुन्सान होगा।
10 अफ़्सोस, तू अपनी नजात के ख़ुदा को भूल गया
है। तुझे वह चटान याद न रही जिस पर तू पनाह
ले सकता है। चुनाँचे अपने प्यारे देवताओं के बाग़
लगाता जा, और उन में परदेसी अंगूर की क़लमें
लगाता जा। 11 शायद ही वह लगाते वक़्त तेज़ी से
उगने लगें, शायद ही उन के फूल उसी सुब्ह खिलने
लगें। तो भी तेरी मेहनत अबस है। तू कभी भी उन के
फल से लुत्फ़अन्दोज़ नहीं होगा बल्कि महज़ बीमारी
और लाइलाज दर्द की फ़सल काटेगा।

दीगर क़ौमों के बेकार हमले

12 बेशुमार क़ौमों का शोर-शराबा सुनो जो तूफ़ानी
समुन्दर की सी ठाठें मार रही हैं। उम्मतों का ग़ुल-
ग़पाड़ा सुनो जो थपेड़े मारने वाली मौजों की तरह
गरज रही हैं। 13 क्यूँकि ग़ैरक़ौमें पहाड़नुमा लहरों की
तरह मुतलातिम हैं। लेकिन रब उन्हें डाँटेगा तो वह
दूर दूर भाग जाएँगी। जिस तरह पहाड़ों पर भूसा हवा
के झोंकों से उड़ जाता और लुढ़कबूटी आँधी में
चक्कर खाने लगती है उसी तरह वह फ़रार हो जाएँगी।
14 शाम को इस्राईल सख़्त घबरा जाएगा, लेकिन पौ
फटने से पहले पहले उस के दुश्मन मर गए होंगे।
यही हमें लूटने वालों का नसीब, हमारी ग़ारतगरी
करने वालों का अन्जाम होगा।

एथोपिया की अदालत

18 1 फड़फड़ाते बादबानों [8] के मुल्क पर
अफ़्सोस! एथोपिया पर अफ़्सोस जहाँ कूश
के दरया बहते हैं, 2 और जो अपने क़ासिदों को आबी
नर्सल की कश्तियों में बिठा कर समुन्दरी सफ़रों पर
भेजता है। ऐ तेज़रौ क़ासिदो, लम्बे क़द और चिकनी-
चुपड़ी जिल्द वाली क़ौम के पास जाओ। उस क़ौम
के पास पहुँचो जिस से दीगर क़ौमें दूरदराज़ इलाक़ों
तक डरती हैं, जो ज़बरदस्ती सब कुछ पाँओ तले
कुचल देती है, और जिस का मुल्क दरयाओं से बटा
हुआ है।

3 ऐ दुनिया के तमाम बाशिन्दो, ज़मीन के तमाम
बसने वालो! जब पहाड़ों पर झंडा गाढ़ा जाए तो उस
पर ध्यान दो! जब नरसिंगा बजाया जाए तो उस पर

---

[8] एक और मुमकिना तर्जुमा : फड़फड़ाती टिड्डियों।

ग़ौर करो! 4 क्यूँकि रब मुझ से हमकलाम हुआ है,
“मैं अपनी सुकूनतगाह से ख़ामोशी से देखता रहूँगा।
लेकिन मेरी यह ख़ामोशी दोपहर की चिलचिलाती
धूप या मौसम-ए-गर्मा में धुन्द के बादल की मानिन्द
होगी।” 5 क्यूँकि अंगूर की फ़सल के पकने से पहले
ही रब अपना हाथ बढ़ा देगा। फूलों के ख़त्म होने
पर जब अंगूर पक रहे होंगे वह कोंपलों को छुरी से
काटेगा, फैलती हुई शाख़ों को तोड़ तोड़ कर उन की
काँट-छाँट करेगा। 6 यही एथोपिया की हालत होगी।
उस की लाशों को पहाड़ों के शिकारी परिन्दों और
जंगली जानवरों के हवाले किया जाएगा। मौसम-ए-
गर्मा के दौरान शिकारी परिन्दे उन्हें खाते जाएंगे, और
सर्दियों में जंगली जानवर लाशों से सेर हो जाएंगे।

7 उस वक़्त लम्बे क़द और चिकनी-चुपड़ी जिल्द
वाली यह क़ौम रब्ब-उल-अफ़्वाज के हुज़ूर तुह्फ़ा
लाएगी। हाँ, जिन लोगों से दीगर क़ौमें दूरदराज़
इलाक़ों तक डरती हैं और जो ज़बरदस्ती सब कुछ
पाँओ तले कुचल देते हैं वह दरयाओं से बटे हुए
अपने मुल्क से आ कर अपना तुह्फ़ा सिय्यून पहाड़
पर पेश करेंगे, वहाँ जहाँ रब्ब-उल-अफ़्वाज का नाम
सुकूनत करता है।

मिस्र की अदालत

19 1 मिस्र के बारे में अल्लाह का फ़रमान :
रब तेज़रौ बादल पर सवार हो कर मिस्र
आ रहा है। उस के सामने मिस्र के बुत थरथरा रहे
हैं और मिस्र की हिम्मत टूट गई है। 2 “मैं मिस्रियों
को एक दूसरे के साथ लड़ने पर उकसा दूँगा। भाई
भाई के साथ, पड़ोसी पड़ोसी के साथ, शहर शहर के
साथ, और बादशाही बादशाही के साथ जंग करेगी।
3 मिस्र की रूह मुज़्तरिब हो जाएगी, और मैं उन के
मन्सूबों को दर्हम-बर्हम कर दूँगा। गो वह बुतों, मुर्दों
की रूहों, उन से राबिता करने वालों और क़िस्मत
का हाल बताने वालों से मश्वरा करेंगे, 4 लेकिन मैं
उन्हें एक ज़ालिम मालिक के हवाले कर दूँगा, और
एक सख़्त बादशाह उन पर हुकूमत करेगा।” यह है
क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान।

5 दरया-ए-नील का पानी ख़त्म हो जाएगा, वह
बिलकुल सूख जाएगा। 6 मिस्र की नहरों से बदबू
फैलेगी बल्कि मिस्र के नाले घटते घटते ख़ुश्क हो
जाएंगे। नर्सल और सरकंडे मुरझा जाएंगे। 7 दरया-ए-
नील के दहाने तक जितनी भी हरियाली और फ़सलें
किनारे पर उगती हैं वह सब पज़्मुर्दा हो जाएँगी और
हवा में बिखर कर ग़ाइब हो जाएँगी। 8 मछेरे आह-
ओ-ज़ारी करेंगे, दरया में काँटा और जाल डालने
वाले घटते जाएंगे। 9 सन के रेशों से धागा बनाने
वालों को शर्म आएगी, और जूलाहों का रंग फ़क़
पड़ जाएगा। 10 कपड़ा बनाने वाले सख़्त मायूस होंगे,
तमाम मज़दूर दिल-बर्दाश्ता होंगे।

11 ज़ुअन के अफ़्सर नासमझ ही हैं, फ़िरऔन के
दाना मुशीर उसे अहमक़ाना मश्वरे दे रहे हैं। तुम मिस्री
बादशाह के सामने किस तरह दावा कर सकते हो,
“मैं दानिशमन्दों के हल्क़े में शामिल और क़दीम
बादशाहों का वारिस हूँ”? 12 ऐ फ़िरऔन, अब तेरे
दानिशमन्द कहाँ हैं? वह मालूम करके तुझे बताएँ
कि रब्ब-उल-अफ़्वाज मिस्र के साथ क्या कुछ करने
का इरादा रखता है। 13 ज़ुअन के अफ़्सर अहमक़ बन
बैठे हैं, मेम्फ़िस के बुज़ुर्गों ने धोका खाया है। उस के
क़बाइली सरदारों के फ़रेब से मिस्र डगमगाने लगा
है। 14 क्यूँकि रब ने उन में अब्तरी की रूह डाल दी है।
जिस तरह नशे में धुत शराबी अपनी क़ै में लड़खड़ाता
रहता है उसी तरह मिस्र उन के मश्वरों से डाँवाँडोल हो
गया है, ख़्वाह वह क्या कुछ क्यूँ न करे। 15 उस की
कोई बात नहीं बनती, ख़्वाह सर हो या दुम, कोंपल
हो या तना।

16 मिस्री उस दिन औरतों जैसे कमज़ोर होंगे। जब
रब्ब-उल-अफ़्वाज उन्हें मारने के लिए अपना हाथ
उठाएगा तो वह घबरा कर काँप उठेंगे। 17 मुल्क-
ए-यहूदाह मिस्रियों के लिए शर्म का बाइस बनेगा।
जब भी उस का ज़िक्र होगा तो वह दह्शत खाएँगे,

क्यूँकि उन्हें वह मन्सूबा याद आएगा जो रब ने उन
के ख़िलाफ़ बांधा है।

मिस्र, असूर और इस्राईल मिल कर इबादत करेंगे

18 उस दिन मिस्र के पाँच शहर कनआन की ज़बान
अपना कर रब्ब-उल-अफ़्वाज के नाम पर क़सम
खाएँगे। उन में से एक 'तबाही का शहर' कहलाएगा।
[h]
19 उस दिन मुल्क-ए-मिस्र के बीच में रब के लिए
क़ुर्बानगाह मख़्सूस की जाएगी, और उस की सरहद
पर रब की याद में सतून खड़ा किया जाएगा। 20 यह
दोनों रब्ब-उल-अफ़्वाज की हुज़ूरी की निशानदिही
करेंगे और गवाही देंगे कि वह मौजूद है। चुनाँचे जब
उन पर ज़ुल्म किया जाएगा तो वह चिल्ला कर उस
से फ़र्याद करेंगे, और रब उन के पास नजातदहिन्दा
भेज देगा जो उन की ख़ातिर लड़ कर उन्हें बचाएगा।
21 यूँ रब अपने आप को मिस्रियों पर ज़ाहिर करेगा।
उस दिन वह रब को जान लेंगे, और ज़बह और ग़ल्ला
की क़ुर्बानियाँ चढ़ा कर उस की परस्तिश करेंगे। वह
रब के लिए मन्नतें मान कर उन को पूरा करेंगे। 22 रब
मिस्र को मारेगा भी और उसे शिफ़ा भी देगा। मिस्री
रब की तरफ़ रुजू करेंगे तो वह उन की इल्तिजाओं
के जवाब में उन्हें शिफ़ा देगा।

23 उस दिन एक पक्की सड़क मिस्र को असूर के साथ
मुन्सलिक कर देगी। असूरी और मिस्री आज़ादी से
एक दूसरे के मुल्क में आएँगे, और दोनों मिल कर
अल्लाह की इबादत करेंगे। 24 उस दिन इस्राईल भी
मिस्र और असूर के इत्तिहाद में शरीक हो कर तमाम
दुनिया के लिए बरकत का बाइस होगा। 25 क्यूँकि
रब्ब-उल-अफ़्वाज उन्हें बरकत दे कर फ़रमाएगा,
"मेरी क़ौम मिस्र पर बरकत हो, मेरे हाथों से बने
मुल्क असूर पर मेरी बरकत हो, मेरी मीरास इस्राईल
पर बरकत हो।"

यसायाह की बरहनगी और मिस्र और एथोपिया का अन्जाम

20 1 एक दिन असूरी बादशाह सर्जून ने अपने
कमाँडर को अश्दूद से लड़ने भेजा। जब
असूरियों ने उस फ़िलिस्ती शहर पर हम्ला किया तो
वह उन के क़ब्ज़े में आ गया।

2 तीन साल पहले रब यसायाह बिन आमूस से
हमकलाम हुआ था, "जा, टाट का जो लिबास तू
पहने रहा है उतार। अपने जूतों को भी उतार।" नबी
ने ऐसा ही किया और इसी हालत में फिरता रहा था।
3 जब अश्दूद असूरियों के क़ब्ज़े में आ गया तो रब
ने फ़रमाया, "मेरे ख़ादिम यसायाह को बरहना और
नंगे पाँओ फिरते तीन साल हो गए हैं। इस से उस
ने अलामती तौर पर इस की निशानदिही की है कि
मिस्र और एथोपिया का क्या अन्जाम होगा। 4 शाह-
ए-असूर मिस्री क़ैदियों और एथोपिया के जिलावतनों
को इसी हालत में अपने आगे आगे हाँकेगा। नौजवान
और बुज़ुर्ग सब बरहना और नंगे पाँओ फिरेंगे, वह
कमर से ले कर पाँओ तक बरहना होंगे। मिस्र कितना
शर्मिन्दा होगा।

5 यह देख कर फ़िलिस्ती दहशत खाएँगे। उन्हें शर्म
आएगी, क्यूँकि वह एथोपिया से उम्मीद रखते और
अपने मिस्री इत्तिहादी पर फ़ख़र करते थे। 6 उस वक़्त
इस साहिली इलाक़े के बाशिन्दे कहेंगे, 'देखो उन
लोगों की हालत जिन से हम उम्मीद रखते थे। उन ही
के पास हम भाग कर आए ताकि मदद और असूरी
बादशाह से छुटकारा मिल जाए। अगर उन के साथ
ऐसा हुआ तो हम किस तरह बचेंगे'?"

बाबल की तबाही का एलान

21 1 दलदल के इलाक़े [i]के बारे में अल्लाह का
फ़रमान :

---

[h]ग़ालिबन इस से मुराद सूरज का शहर यानी Heliopolis है।

[i]यानी बाबल।

जिस तरह दश्त-ए-नजब में तूफ़ान के तेज़ झोंके
बार बार आ पड़ते हैं उसी तरह आफ़त बयाबान से
आएगी, दुश्मन दह्शतनाक मुल्क से आ कर तुझ पर
टूट पड़ेगा। 2 रब ने हौलनाक रोया में मुझ पर ज़ाहिर
किया है कि नमकहराम और हलाकू हरकत में आ
गए हैं। ऐ ऐलाम चल, बाबल पर हम्ला कर! ऐ मादी
उठ, शहर का मुहासरा कर! मैं होने दूँगा कि बाबल
के मज़्लूमों की आहें बन्द हो जाएँगी।
3 इस लिए मेरी कमर शिद्दत से लरज़ने लगी है।
दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत की सी घबराहट मेरी
अंतड़ियों को मरोड़ रही है। जो कुछ मैं ने सुना है
उस से मैं तड़प उठा हूँ, और जो कुछ मैं ने देखा है,
उस से मैं हवासबाख़्ता हो गया हूँ। 4 मेरा दिल धड़क
रहा है, कपकपी मुझ पर तारी हो गई है। पहले शाम
का धुन्दल्का मुझे प्यारा लगता था, लेकिन अब रोया
को देख कर वह मेरे लिए दह्शत का बाइस बन गया
है।
5 ताहम बाबल में लोग मेज़ लगा कर क़ालीन बिछा
रहे हैं। बेपर्वाई से वह खाना खा रहे और मै पी रहे
हैं। ऐ अफ़्सरो, उठो! अपनी ढालों पर तेल लगा कर
लड़ने के लिए तय्यार हो जाओ!
6 रब ने मुझे हुक्म दिया, "जा कर पहरेदार खड़ा
कर दे जो तुझे हर नज़र आने वाली चीज़ की इत्तिला
दे। 7 जूँ ही दो घोड़ों वाले रथ या गधों और ऊँटों पर
सवार आदमी दिखाई दें तो ख़बरदार! पहरेदार पूरी
तवज्जुह दे।"
8 तब पहरेदार शेरबबर की तरह पुकार उठा, "मेरे
आक़ा, रोज़-ब-रोज़ मैं पूरी वफ़ादारी से अपनी बुर्जी
पर खड़ा रहा हूँ, और रातों मैं तय्यार रह कर यहाँ
पहरादारी करता आया हूँ। 9 अब वह देखो! दो घोड़ों
वाला रथ आ रहा है जिस पर आदमी सवार है। अब
वह जवाब में कह रहा है, 'बाबल गिर गया, वह गिर
गया है! उस के तमाम बुत चिकनाचूर हो कर ज़मीन
पर बिखर गए हैं'।"
10 ऐ गाहने की जगह पर कुचली हुई [j]मेरी क़ौम!
जो कुछ इस्राईल के ख़ुदा, रब्ब-उल-अफ़्वाज ने मुझे
फ़रमाया है उसे मैं ने तुम्हें सुना दिया है।

अदोम की हालत : सुब्ह होने में कितनी देर है?

11 अदोम के बारे में रब का फ़रमान : सईर
के पहाड़ी इलाक़े से कोई मुझे आवाज़ देता है,
"ऐ पहरेदार, सुब्ह होने में कितनी देर बाक़ी है?
ऐ पहरेदार, सुब्ह होने में कितनी देर बाक़ी है?"
12 पहरेदार जवाब देता है, "सुब्ह होने वाली है,
लेकिन रात भी। अगर आप मज़ीद पूछना चाहें तो
दुबारा आ कर पूछ लें।"

मुल्क-ए-अरब का अन्जाम

13 मुल्क-ए-अरब [k]के बारे में रब का फ़रमान : ऐ
ददानियों के क़ाफ़िलो, मुल्क-ए-अरब के जंगल में
रात गुज़ारो। 14 ऐ मुल्क-ए-तैमा के बाशिन्दो, पानी ले
कर प्यासों से मिलने जाओ! पनाहगुज़ीनों के पास
जा कर उन्हें रोटी खिलाओ! 15 क्यूँकि वह तलवार
से लेस दुश्मन से भाग रहे हैं, ऐसे लोगों से जो तलवार
थामे और कमान ताने उन से सख़्त लड़ाई लड़े हैं।
16 क्यूँकि रब ने मुझ से फ़रमाया, "एक साल
के अन्दर अन्दर [l]क़ीदार की तमाम शान-ओ-
शौकत ख़त्म हो जाएगी। 17 क़ीदार के ज़बरदस्त
तीरअन्दाज़ों में से थोड़े ही बच पाएँगे।" यह रब,
इस्राईल के ख़ुदा का फ़रमान है।

यरूशलम का अन्जाम

22 1 रोया की वादी यरूशलम के बारे में रब
का फ़रमान :

---

[j]लफ़्ज़ी तर्जुमा : गाही गई।

[k]या बयाबान।

[l]लफ़्ज़ी तर्जुमा : मज़दूर के से एक साल के अन्दर अन्दर।

क्या हुआ है? सब छतों पर क्यूँ चढ़ गए हैं? 2 हर
तरफ़ शोर-शराबा मच रहा है, पूरा शहर बग़लें बजा
रहा है। यह कैसी बात है? तेरे मक़्तूल न तलवार से,
न मैदान-ए-जंग में मरे। 3 क्यूँकि तेरे तमाम लीडर मिल
कर फ़रार हुए और फिर तीर चलाए बग़ैर पकड़े गए।
बाक़ी जितने लोग तुझ में थे वह भी दूर दूर भागना
चाहते थे, लेकिन उन्हें भी क़ैद किया गया।

4 इस लिए मैं ने कहा, "अपना मुँह मुझ से फेर कर
मुझे ज़ार ज़ार रोने दो। मुझे तसल्ली देने पर बज़िद न
रहो जबकि मेरी क़ौम तबाह हो रही है।" 5 क्यूँकि
क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज रोया की वादी
पर हौलनाक दिन लाया है। हर तरफ़ घबराहट,
कुचले हुए लोग और अब्तरी नज़र आती है। शहर
की चारदीवारी टूटने लगी है, पहाड़ों में चीख़ें गूँज
रही हैं।

6 ऐलाम के फ़ौजी अपने तर्कश उठा कर रथों,
आदमियों और घोड़ों के साथ आ गए हैं। क़ीर के
मर्द भी अपनी ढालें ग़िलाफ़ से निकाल कर तुझ से
लड़ने के लिए निकल आए हैं। 7 यरूशलम के गिर्द-
ओ-नवाह की बेहतरीन वादियाँ दुश्मन के रथों से भर
गई हैं, और उस के घुड़सवार शहर के दरवाज़े पर
हम्ला करने के लिए उस के सामने खड़े हो गए हैं।
8 जो भी बन्द-ओ-बस्त यहूदाह ने अपने तहफ़्फ़ुज़ के
लिए कर लिया था वह ख़त्म हो गया है।

उस दिन तुम लोगों ने क्या किया? तुम 'जंगलघर'
नामी सिलाहख़ाने में जा कर असलिहा का मुआइना
करने लगे। 9–11 तुम ने उन मुतअद्दिद दराड़ों का
जाइज़ा लिया जो दाऊद के शहर की फ़सील में पड़
गई थीं। उसे मज़बूत करने के लिए तुम ने यरूशलम
के मकानों को गिन कर उन में से कुछ गिरा दिए।
साथ साथ तुम ने निचले तालाब का पानी जमा किया।
ऊपर के पुराने तालाब से निकलने वाला पानी जमा
करने के लिए तुम ने अन्दरूनी और बैरूनी फ़सील
के दरमियान एक और तालाब बना लिया। लेकिन
अफ़्सोस, तुम उस की पर्वा नहीं करते जो यह सारा
सिलसिला अमल में लाया। उस पर तुम तवज्जुह ही
नहीं देते जिस ने बड़ी देर पहले इसे तश्कील दिया
था।

12 उस वक़्त क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज
ने हुक्म दिया कि गिर्या-ओ-ज़ारी करो, अपने बालों
को मुंडवा कर टाट का लिबास पहन लो। 13 लेकिन
क्या हुआ? तमाम लोग शादियाना बजा कर ख़ुशी
मना रहे हैं। हर तरफ़ बैलों और भेड़-बकरियों को
ज़बह किया जा रहा है। सब गोश्त और मै से
लुत्फ़अन्दोज़ हो कर कह रहे हैं, "आओ, हम खाएँ
पिएँ, क्यूँकि कल तो मर ही जाना है।"

14 लेकिन रब्ब-उल-अफ़्वाज ने मेरी मौजूदगी में ही
ज़ाहिर किया है कि यक़ीनन यह क़ुसूर तुम्हारे मरते
दम तक मुआफ़ नहीं किया जाएगा। [m]यह क़ादिर-ए-
मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान है।

रब शब्नाह की जगह इलियाक़ीम को महल का निगरान मुक़र्रर करेगा

15 क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता
है, "उस निगरान शब्नाह के पास चल जो महल का
इंचार्ज है। उसे पैग़ाम पहुँचा दे, 16 तू यहाँ क्या कर
रहा है? किस ने तुझे यहाँ अपने लिए मक़्बरा तराशने
की इजाज़त दी? तू कौन है कि बुलन्दी पर अपने लिए
मज़ार बनवाए, चटान में आरामगाह खुदवाए? 17 ऐ
मर्द, ख़बरदार! रब तुझे ज़ोर से दूर दूर तक फैंकने
वाला है। वह तुझे पकड़ लेगा 18 और मरोड़ मरोड़
कर गेंद की तरह एक वसी मुल्क में फैंक देगा। वहीं
तू मरेगा, वहीं तेरे शानदार रथ पड़े रहेंगे। क्यूँकि तू
अपने मालिक के घराने के लिए शर्म का बाइस बना
है। 19 मैं तुझे बरतरफ़ करूँगा, और तू ज़बरदस्ती
अपने उह्दे और मन्सब से फ़ारिग़ कर दिया जाएगा।

20 उस दिन मैं अपने ख़ादिम इलियाक़ीम बिन
ख़िलक़ियाह को बुलाऊँगा। 21 मैं उसे तेरा ही

---

[m]लफ़्ज़ी तर्जुमा : यक़ीनन इस क़ुसूर का कफ़्फ़ारा तुम्हारे मरते दम तक नहीं दिया जाएगा।

सरकारी लिबास और कमरबन्द पहना कर तेरा
इख़्तियार उसे दे दूँगा। उस वक़्त वह यहूदाह के
घराने और यरूशलम के तमाम बाशिन्दों का बाप
बनेगा। 22 मैं उस के कंधे पर दाऊद के घराने की
चाबी रख दूँगा। जो दरवाज़ा वह खोलेगा उसे कोई
बन्द नहीं कर सकेगा, और जो दरवाज़ा वह बन्द
करेगा उसे कोई खोल नहीं सकेगा। 23 वह खूँटी की
मानिन्द होगा जिस को मैं ज़ोर से ठोंक कर मज़बूत
दीवार में लगा दूँगा। उस से उस के बाप के घराने को
शराफ़त का ऊँचा मक़ाम हासिल होगा।

24 लेकिन फिर आबाई घराने का पूरा बोझ उस के
साथ लटक जाएगा। तमाम औलाद और रिश्तेदार,
तमाम छोटे बर्तन प्यालों से ले कर मर्तबानों तक
उस के साथ लटक जाएंगे। 25 रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है कि उस वक़्त मज़बूत दीवार में लगी यह
खूँटी निकल जाएगी। उसे तोड़ा जाएगा तो वह गिर
जाएगी, और उस के साथ लटका सारा सामान टूट
जाएगा।" यह रब का फ़रमान है।

सूर और सैदा की तबाही

23 1 सूर के बारे में अल्लाह का फ़रमान :
ए तरसीस के उम्दा जहाज़ो, [n]वावैला
करो! क्यूँकि सूर तबाह हो गया है, वहाँ टिकने की
जगह तक नहीं रही। जज़ीरा-ए-क़ुब्रुस से वापस आते
वक़्त उन्हें इत्तिला दी गई। 2 ऐ साहिली इलाक़े में
बसने वालो, आह-ओ-ज़ारी करो! ऐ सैदा के ताजिरो,
मातम करो! तेरे क़ासिद समुन्दर को पार करते थे,
3 वह गहरे पानी पर सफ़र करते हुए मिस्र [o]का ग़ल्ला
तुझ तक पहुँचाते थे, क्यूँकि तू ही दरया-ए-नील की
फ़सल से नफ़ा कमाता था। यूँ तू तमाम क़ौमों का
तिजारती मर्कज़ बना।

4 लेकिन अब शर्मसार हो, ऐ सैदा, क्यूँकि समुन्दर
का क़िलाबन्द शहर सूर कहता है, "हाय, सब कुछ
तबाह हो गया है। अब ऐसा लगता है कि मैं ने न कभी
दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला हो कर बच्चे जन्म दिए, न कभी
बेटे-बेटियाँ पाले।"

5 जब यह ख़बर मिस्र तक पहुँचेगी तो वहाँ के
बाशिन्दे तड़प उठेंगे।

6 चुनाँचे समुन्दर को पार करके तरसीस तक
पहुँचो! ऐ साहिली इलाक़े के बाशिन्दो, गिर्या-ओ-
ज़ारी करो! 7 क्या यह वाक़ई तुम्हारा वह शहर है
जिस की रंगरलियाँ मश्हूर थीं, वह क़दीम शहर जिस
के पाँओ उसे दूरदराज़ इलाक़ों तक ले गए ताकि वहाँ
नई आबादियाँ क़ाइम करे? 8 किस ने सूर के ख़िलाफ़
यह मन्सूबा बांधा? यह शहर तो पहले बादशाहों को
तख़्त पर बिठाया करता था, और उस के सौदागर
रईस थे, उस के ताजिर दुनिया के शुरफ़ा में गिने जाते
थे। 9 रब्ब-उल-अफ़्वाज ने यह मन्सूबा बांधा ताकि
तमाम शान-ओ-शौकत का घमंड पस्त और दुनिया
के तमाम उह्देदार ज़ेर हो जाएँ।

10 ऐ तरसीस बेटी, अब से अपनी ज़मीन की
खेतीबाड़ी कर, उन किसानों की तरह काश्तकारी
कर जो दरया-ए-नील के किनारे अपनी फ़सलें लगाते
हैं, क्यूँकि तेरी बन्दरगाह जाती रही है। 11 रब ने अपने
हाथ को समुन्दर के ऊपर उठा कर ममालिक को
हिला दिया। उस ने हुक्म दिया है कि कनआन [p]के
क़िले बर्बाद हो जाएँ। 12 उस ने फ़रमाया, "ऐ सैदा
बेटी, अब से तेरी रंगरलियाँ बन्द रहेंगी। ऐ कुंवारी
जिस की इस्मतदरी हुई है, उठ और समुन्दर को पार
करके क़ुब्रुस में पनाह ले। लेकिन वहाँ भी तू आराम
नहीं कर पाएगी।"

13 मुल्क-ए-बाबल पर नज़र डालो। यह क़ौम तो
नेस्त-ओ-नाबूद हो गई, उस का मुल्क जंगली

---

[n]'तरसीस का जहाज़' न सिर्फ़ मुल्क-ए-तरसीस के जहाज़ के लिए बल्कि हर उम्दा क़िस्म के तिजारती जहाज़ के लिए इस्तेमाल होता था। देखिए आयत 14।

[o]इब्रानी में 'सैहूर' मुस्तामल है जो दरया-ए-नील की एक शाख़ है।

[p]कनआन से मुराद लुबनान यानी क़दीम ज़माने का Phoenicia है।

जानवरों का घर बन गया है। असूरियों ने बुर्ज बना
कर उसे घेर लिया और उस के क़िलों को ढा दिया।
मल्बे का ढेर ही रह गया है।
14 ऐ तरसीस के उम्दा जहाज़ो, हाय हाय करो,
क्यूँकि तुम्हारा क़िला तबाह हो गया है!
15 तब सूर इन्सान की याद से उतर जाएगा। लेकिन
70 साल यानी एक बादशाह की मुद्दत-उल-उम्र के
बाद सूर उस तरह बहाल हो जाएगा जिस तरह गीत
में कस्बी के बारे में गाया जाता है,
16 "ऐ फ़रामोश कस्बी, चल! अपना सरोद पकड़
कर गलियों में फिर! सरोद को ख़ूब बजा, कई एक
गीत गा ताकि लोग तुझे याद करें।"
17 क्यूँकि 70 साल के बाद रब सूर को बहाल
करेगा। कस्बी दुबारा पैसे कमाएगी, दुनिया के तमाम
ममालिक उस के गाहक बनेंगे। 18 लेकिन जो पैसे वह
कमाएगी वह रब के लिए मख़्सूस होंगे। वह ज़ख़ीरा
करने के लिए जमा नहीं होंगे बल्कि रब के हुज़ूर
ठहरने वालों को दिए जाएंगे ताकि जी भर कर खा
सकें और शानदार कपड़े पहन सकें।

रब तमाम दुनिया की अदालत करता है

24 1 देखो, रब दुनिया को वीरान-ओ-सुन्सान
कर देगा, रू-ए-ज़मीन को उलट-पलट
करके उस के बाशिन्दों को मुन्तशिर कर देगा।
2 किसी को भी छोड़ा नहीं जाएगा, ख़्वाह इमाम हो
या आम शख़्स, मालिक या नौकर, मालिकन या
नौकरानी, बेचने वाला या ख़रीदार, उधार लेने या देने
वाला, क़र्ज़दार या क़र्ज़ख़्वाह। 3 ज़मीन मुकम्मल तौर
पर उजड़ जाएगी, उसे सरासर लूटा जाएगा। रब ही
ने यह सब कुछ फ़रमाया है। 4 ज़मीन सूख सूख कर
सुकड़ जाएगी, दुनिया ख़ुश्क हो कर मुरझा जाएगी।
उस के बड़े बड़े लोग भी निढाल हो जाएंगे। 5 ज़मीन
के अपने बाशिन्दों ने उस की बेहुरमती की है, क्यूँकि
वह शरीअत के ताबे न रहे बल्कि उस के अह्काम
को तब्दील करके अल्लाह के साथ का अबदी अह्द
तोड़ दिया है।
6 इसी लिए ज़मीन लानत का लुक़्मा बन गई है, उस
पर बसने वाले अपनी सज़ा भुगत रहे हैं। इसी लिए
दुनिया के बाशिन्दे भस्म हो रहे हैं और कम ही बाक़ी
रह गए हैं। 7 अंगूर का ताज़ा रस सूख कर ख़त्म हो
रहा, अंगूर की बेलें मुरझा रही हैं। जो पहले ख़ुशबाश
थे वह आहें भरने लगे हैं। 8 दफ़ों की ख़ुशकुन आवाज़ें
बन्द, रंगरलियाँ मनाने वालों का शोर बन्द, सरोदों के
सुरीले नग़मे बन्द हो गए हैं। 9 अब लोग गीत गा गा
कर मै नहीं पीते बल्कि शराब उन्हें कड़वी ही लगती
है। 10 वीरान-ओ-सुन्सान शहर तबाह हो गया है, हर
घर के दरवाज़े पर कुंडी लगी है ताकि अन्दर घुसने
वालों से मह्फ़ूज़ रहे। 11 गलियों में लोग गिर्या-ओ-
ज़ारी कर रहे हैं कि मै ख़त्म है। हर ख़ुशी दूर हो गई
है, हर शादमानी ज़मीन से ग़ाइब है। 12 शहर में मल्बे
के ढेर ही रह गए हैं, उस के दरवाज़े टुकड़े टुकड़े हो
गए हैं।
13 क्यूँकि मुल्क के दरमियान और अक़्वाम के बीच
में यही सूरत-ए-हाल होगी कि चन्द एक ही बच
पाएँगे, बिलकुल उन दो चार ज़ैतूनों की मानिन्द जो
दरख़्त को झाड़ने के बावुजूद उस पर रह जाते हैं,
या उन दो चार अंगूरों की तरह जो फ़सल चुनने के
बावुजूद बेलों पर लगे रहते हैं। 14 लेकिन यह चन्द
एक ही पुकार कर ख़ुशी के नारे लगाएँगे। मग़रिब
से वह रब की अज़मत की सताइश करेंगे। 15 चुनाँचे
मशरिक़ में रब को जलाल दो, जज़ीरों में इस्राईल के
ख़ुदा के नाम की ताज़ीम करो। 16 हमें दुनिया की
इन्तिहा से गीत सुनाई दे रहे हैं, "रास्त ख़ुदा की
तारीफ़ हो!"
लेकिन मैं बोल उठा, "हाय, मैं घुल घुल कर मर
रहा हूँ, मैं घुल घुल कर मर रहा हूँ! मुझ पर अफ़सोस,
क्यूँकि बेवफ़ा अपनी बेवफ़ाई दिखा रहे हैं, बेवफ़ा
खुले तौर पर अपनी बेवफ़ाई दिखा रहे हैं!" 17 ऐ
दुनिया के बाशिन्दो, तुम दह्शतनाक मुसीबत, गढ़ों
और फंदों में फंस जाओगे। 18 तब जो हौलनाक
आवाज़ों से भाग कर बच जाए वह गढ़े में गिर
जाएगा, और जो गढ़े से निकल जाए वह फंदे में

फंस जाएगा। क्यूँकि आसमान के दरीचे खुल रहे और
ज़मीन की बुन्यादें हिल रही हैं। 19 ज़मीन कड़क से
फ़ट रही है। वह डगमगा रही, झूम रही, 20 नशे में आए
शराबी की तरह लड़खड़ा रही और कच्ची झोंपड़ी की
तरह झूल रही है। आख़िरकार वह अपनी बेवफ़ाई के
बोझ तले इतने धड़ाम से गिरेगी कि आइन्दा कभी
नहीं उठने की।

21 उस दिन रब आसमान के लश्कर और ज़मीन
के बादशाहों से जवाब तलब करेगा। 22 तब वह
गिरिफ़्तार हो कर गढ़े में जमा होंगे, उन्हें क़ैदख़ाने
में डाल कर मुतअद्दिद दिनों के बाद सज़ा मिलेगी।
23 उस वक़्त चाँद नादिम होगा और सूरज शर्म
खाएगा, क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज कोह-ए-सिय्यून
पर तख़्तनशीन होगा। वहाँ यरूशलम में वह बड़ी
शान-ओ-शौकत के साथ अपने बुज़ुर्गों के सामने
हुकूमत करेगा।

नजात के लिए अल्लाह की तारीफ़

25 1 ऐ रब, तू मेरा ख़ुदा है, मैं तेरी ताज़ीम और
तेरे नाम की तारीफ़ करूँगा। क्यूँकि तू ने
बड़ी वफ़ादारी से अनोखा काम करके क़दीम ज़माने
में बंधे हुए मन्सूबों को पूरा किया है।

2 तू ने शहर को मल्बे का ढेर बना कर हम्लों से
महफ़ूज़ आबादी को खंडरात में तब्दील कर दिया।
ग़ैरमुल्कियों का क़िलाबन्द महल यूँ ख़ाक में मिलाया
गया कि आइन्दा कभी शहर नहीं कहलाएगा, कभी
अज़ सर-ए-नौ तामीर नहीं होगा।

3 यह देख कर एक ज़ोरावर क़ौम तेरी ताज़ीम
करेगी, ज़बरदस्त अक़्वाम के शहर तेरा ख़ौफ़
मानेंगे। 4 क्यूँकि तू पस्तहालों के लिए क़िला और
मुसीबतज़दा ग़रीबों के लिए पनाहगाह साबित हुआ
है। तेरी आड़ में इन्सान तूफ़ान और गर्मी की शिद्दत
से महफ़ूज़ रहता है। गो ज़बरदस्तों की फूँकें बारिश
की बौछाड़ 5 या रेगिस्तान में तपिश जैसी क्यूँ न हों,
ताहम तू ग़ैरमुल्कियों की गरज को रोक देता है। जिस
तरह बादल के साय से झुलसती गर्मी जाती रहती है,
उसी तरह ज़बरदस्तों की शेख़ी को तू बन्द कर देता
है।

यरूशलम में बैन-उल-अक़्वामी ज़ियाफ़त

6 यहीं कोह-ए-सिय्यून पर रब्ब-उल-अफ़्वाज तमाम
अक़्वाम की ज़बरदस्त ज़ियाफ़त करेगा। बेहतरीन
क़िस्म की क़दीम और साफ़-शफ़्फ़ाफ़ मै पी जाएगी,
उम्दा और लज़ीज़तरीन खाना खाया जाएगा।

7 इसी पहाड़ पर वह तमाम उम्मतों पर का निक़ाब
उतारेगा और तमाम अक़्वाम पर का पर्दा हटा देगा।
8 मौत इलाही फ़त्ह का लुक़्मा हो कर अबद तक
नेस्त-ओ-नाबूद रहेगी। तब रब क़ादिर-ए-मुतलक़ हर
चिहरे के आँसू पोंछ कर तमाम दुनिया में से अपनी
क़ौम की रुस्वाई दूर करेगा। रब ही ने यह सब कुछ
फ़रमाया है। 9 उस दिन लोग कहेंगे, "यही हमारा ख़ुदा
है जिस की नजात के इन्तिज़ार में हम रहे। यही है रब
जिस से हम उम्मीद रखते रहे। आओ, हम शादियाना
बजा कर उस की नजात की ख़ुशी मनाएँ।"

रब मोआब के क़िलों को ढा देगा

10 रब का हाथ इस पहाड़ पर ठहरा रहेगा। लेकिन
मोआब को वह यूँ रौंदेगा जिस तरह भूसा गोबर में
मिलाने के लिए रौंदा जाता है। 11 और गो मोआब हाथ
फैला कर उस में तैरने की कोशिश करे तो भी रब उस
का ग़ुरूर गोबर में दबाए रखेगा, चाहे वह कितनी
महारत से हाथ-पाँओ मारने की कोशिश क्यूँ न करे।
12 ऐ मोआब, वह तेरी बुलन्द और क़िलाबन्द दीवारों
को गिराएगा, उन्हें ढा कर ख़ाक में मिलाएगा।

हमारा ख़ुदा मज़बूत चटान है

26 1 उस दिन मुल्क-ए-यहूदाह में गीत गाया
जाएगा,

"हमारा शहर मज़बूत है, क्यूँकि हम अल्लाह की
नजात देने वाली चारदीवारी और पुश्तों से घिरे हुए
हैं।

2 शहर के दरवाज़ों को खोलो ताकि रास्त क़ौम
दाख़िल हो, वह क़ौम जो वफ़ादार रही है।
3 ऐ रब, जिस का इरादा मज़बूत है उसे तू महफ़ूज़
रखता है। उसे पूरी सलामती हासिल है, क्यूँकि वह
तुझ पर भरोसा रखता है।
4 रब पर अबद तक एतिमाद रखो! क्यूँकि रब ख़ुदा
अबदी चटान है।
5 वह बुलन्दियों पर रहने वालों को ज़ेर और ऊँचे
शहर को नीचा करके ख़ाक में मिला देता है।
6 ज़रूरतमन्द और पस्तहाल उसे पाँओ तले कुचल
देते हैं।”

दुआ

7 ऐ अल्लाह, रास्तबाज़ की राह हमवार है, क्यूँकि तू
उस का रास्ता चलने के क़ाबिल बना देता है।
8 ऐ रब, हम तेरे इन्तिज़ार में रहते हैं, उस वक़्त भी
जब तू हमारी अदालत करता है। हम तेरे नाम और
तेरी तम्जीद के आरज़ूमन्द रहते हैं।
9 रात के वक़्त मेरी रूह तेरे लिए तड़पती, मेरा दिल
तेरा तालिब रहता है। क्यूँकि दुनिया के बाशिन्दे उस
वक़्त इन्साफ़ का मतलब सीखते हैं जब तू दुनिया
की अदालत करता है।

10 अफ़सोस, जब बेदीन पर रहम किया जाता है तो
वह इन्साफ़ का मतलब नहीं सीखता बल्कि इन्साफ़
के मुल्क में भी ग़लत काम करने से बाज़ नहीं रहता,
वहाँ भी रब की अज़मत का लिहाज़ नहीं करता।
11 ऐ रब, गो तेरा हाथ उन्हें मारने के लिए उठा हुआ
है तो भी वह ध्यान नहीं देते। लेकिन एक दिन उन
की आँखें खुल जाएँगी, और वह तेरी अपनी क़ौम
के लिए ग़ैरत को देख कर शर्मिन्दा हो जाएंगे। तब तू
अपनी भस्म करने वाली आग उन पर नाज़िल करेगा।

12 ऐ रब, तू हमें अम्न-ओ-अमान मुहय्या करता
है बल्कि हमारी तमाम कामयाबियाँ तेरे ही हाथ से
हासिल हुई हैं।
13 ऐ रब हमारे ख़ुदा, गो तेरे सिवा दीगर मालिक
हम पर हुकूमत करते आए हैं तो भी हम तेरे ही फ़ज़्ल
से तेरे नाम को याद कर पाए। 14 अब यह लोग मर
गए हैं और आइन्दा कभी ज़िन्दा नहीं होंगे, उन की
रूहें कूच कर गई हैं और आइन्दा कभी वापस नहीं
आएँगी । क्यूँकि तू ने उन्हें सज़ा दे कर हलाक कर
दिया, उन का नाम-ओ-निशान मिटा डाला है।

15 ऐ रब, तू ने अपनी क़ौम को फ़रोग़ दिया है। तू
ने अपनी क़ौम को बड़ा बना कर अपने जलाल का
इज़हार किया है। तेरे हाथ से उस की सरहद्दें चारों
तरफ़ बढ़ गई हैं।

16 ऐ रब, वह मुसीबत में फंस कर तुझे तलाश करने
लगे, तेरी तादीब के बाइस मंत्र फूँकने लगे।
17 ऐ रब, तेरे हुज़ूर हम दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत
की तरह तड़पते और चीख़ते चिल्लाते रहे। 18 जनने
का दर्द महसूस करके हम पेच-ओ-ताब खा रहे थे।
लेकिन अफ़सोस, हवा ही पैदा हुई। न हम ने मुल्क
को नजात दी, न दुनिया के नए बाशिन्दे पैदा हुए।

19 लेकिन तेरे मुर्दे दुबारा ज़िन्दा होंगे, उन की लाशें
एक दिन जी उठेंगी। ऐ ख़ाक में बसने वालो, जाग
उठो और ख़ुशी के नारे लगाओ! क्यूँकि तेरी ओस
नूरों की शबनम है, और ज़मीन मुर्दा रूहों को जन्म
देगी।

रब इस्राईल के दुश्मनों से बदला लेगा

20 ऐ मेरी क़ौम, जा और थोड़ी देर के लिए अपने
कमरों में छुप कर कुंडी लगा ले। जब तक रब का
ग़ज़ब ठंडा न हो वहाँ ठहरी रह। 21 क्यूँकि देख, रब
अपनी सुकूनतगाह से निकलने को है ताकि दुनिया
के बाशिन्दों को सज़ा दे। तब ज़मीन अपने आप पर
बहाया हुआ ख़ून फ़ाश करेगी और अपने मक़्तूलों
को मज़ीद छुपाए नहीं रखेगी।

27 1 उस दिन रब उस भागने और पेच-ओ-
ताब खाने वाले साँप को सज़ा देगा जो
लिवियातान कहलाता है। अपनी सख़्त, अज़ीम और
ताक़तवर तलवार से वह समुन्दर के अज़दहे को मार
डालेगा।

अंगूर के बाग़ का नया गीत

2 उस दिन कहा जाएगा,
"अंगूर का कितना ख़ूबसूरत बाग़ है! उस की
तारीफ़ में गीत गाओ! 3 मैं, रब ख़ुद ही उसे सँभालता,
उसे मुसलसल पानी देता रहता हूँ। दिन रात मैं उस
की पहरादारी करता हूँ ताकि कोई उसे नुक़्सान न
पहुँचाए।
4 अब मेरा ग़ुस्सा ठंडा हो गया है। लेकिन अगर
बाग़ में ऊँटकटारे और ख़ारदार झाड़ियाँ मिल जाएँ
तो मैं उन से निपट लूँगा, मैं उन से जंग करके सब
को जला दूँगा। 5 लेकिन अगर वह मान जाएँ तो मेरे
पास आ कर पनाह लें। वह मेरे साथ सुलह करें, हाँ
मेरे साथ सुलह करें।"

सज़ा के बावुजूद इस्राईल पर रहम

6 एक वक़्त आएगा कि याक़ूब जड़ पकड़ेगा।
इस्राईल को फूल लग जाएंगे, उस की कोंपलें
निकलेंगी और दुनिया उस के फल से भर जाएगी।
7 क्या रब ने अपनी क़ौम को यूँ मारा जिस तरह उस
ने इस्राईल को मारने वालों को मारा है? हरगिज़ नहीं!
या क्या इस्राईल को यूँ क़त्ल किया गया जिस तरह
उस के क़ातिलों को क़त्ल किया गया है? 8 नहीं,
बल्कि तू ने उसे डरा कर और भगा कर उस से जवाब
तलब किया, तू ने उस के ख़िलाफ़ मशरिक़ से तेज़
आँधी भेज कर उसे अपने हुज़ूर से निकाल दिया।
9 इस तरह याक़ूब के क़ुसूर का कफ़्फ़ारा दिया
जाएगा। और जब इस्राईल का गुनाह दूर हो जाएगा
तो नतीजे में वह तमाम ग़लत क़ुर्बानगाहों को चूने के
पत्थरों की तरह चिकनाचूर करेगा। न यसीरत देवी
के खम्बे, न बख़ूर जलाने की ग़लत क़ुर्बानगाहें खड़ी
रहेंगी। 10 क्यूँकि क़िलाबन्द शहर तन्हा रह गया है।
लोगों ने उसे वीरान छोड़ कर रेगिस्तान की तरह तर्क
कर दिया है। अब से उस में बछड़े ही चरेंगे। वही
उस की गलियों में आराम करके उस की टहनियों
को चबा लेंगे। 11 तब उस की शाख़ें सूख जाएँगी और
औरतें उन्हें तोड़ तोड़ कर जलाएँगी। क्यूँकि यह क़ौम
समझ से ख़ाली है, लिहाज़ा उस का ख़ालिक़ उस पर
तरस नहीं खाएगा, जिस ने उसे तश्कील दिया वह
उस पर मेहरबानी नहीं करेगा।
12 उस दिन तुम इस्राईली ग़ल्ला जैसे होगे, और
रब तुम्हारी बालियों को दरया-ए-फ़ुरात से ले कर
मिस्र की शिमाली सरहद पर वाक़े वादी-ए-मिस्र
तक काटेगा। फिर वह तुम्हें गाह कर दाना-ब-दाना
तमाम ग़ल्ला इकट्ठा करेगा। 13 उस दिन नरसिंगा बुलन्द
आवाज़ से बजेगा। तब असूर में तबाह होने वाले और
मिस्र में भगाए हुए लोग वापस आ कर यरूशलम के
मुक़द्दस पहाड़ पर रब को सिज्दा करेंगे।

मग़ुरूर शहर सामरिया मुरझाने वाला फूल है

28 1 सामरिया पर अफ़्सोस जो इस्राईली
शराबियों का शानदार ताज है। उस शहर
पर अफ़्सोस जो इस्राईल की शान-ओ-शौकत था
लेकिन अब मुरझाने वाला फूल है। उस आबादी पर
अफ़्सोस जो नशे में धुत लोगों की ज़रख़ेज़ वादी
के ऊपर तख़्तनशीन है। 2 देखो, रब एक ज़बरदस्त
सूरमा भेजेगा जो ओलों के तूफ़ान, तबाहकुन आँधी
और सैलाब पैदा करने वाली मूसलाधार बारिश
की तरह सामरिया पर टूट पड़ेगा और ज़ोर से उसे
ज़मीन पर पटख़ देगा। 3 तब इस्राईली शराबियों का
शानदार ताज सामरिया पाँओ तले रौंदा जाएगा। 4 तब
यह मुरझाने वाला फूल जो ज़रख़ेज़ वादी के ऊपर
तख़्तनशीन है और उस की शान-ओ-शौकत ख़त्म हो
जाएगी। उस का हाल फ़सल से पहले पकने वाले
अन्जीर जैसा होगा। क्यूँकि जूँ ही कोई उसे देखे वह
उसे तोड़ कर हड़प कर लेगा।

5 उस दिन रब्ब-उल-अफ़्वाज ख़ुद इस्राईल का
शानदार ताज होगा, वह अपनी क़ौम के बचे हुओं
का जलाली सेहरा होगा। 6 वह अदालत करने वाले
को इन्साफ़ की रूह दिलाएगा और शहर के दरवाज़े
पर दुश्मन को पीछे धकेलने वालों के लिए ताक़त
का बाइस होगा।

यरूशलम के मत्वाले नबी

7 लेकिन यह लोग भी मै के असर से डगमगा रहे
और शराब पी पी कर लड़खड़ा रहे हैं। इमाम और
नबी नशे में झूम रहे हैं। मै पीने से उन के दिमाग़ों में
ख़लल आ गया है, शराब पी पी कर वह चक्कर खा रहे
हैं। रोया देखते वक़्त वह झूमते, फ़ैसले करते वक़्त
झूलते हैं। 8 तमाम मेज़ें उन की क़ै से गन्दी हैं, उन की
ग़िलाज़त हर तरफ़ नज़र आती है।

9 वह आपस में कहते हैं, "यह शख़्स हमारे साथ
इस क़िस्म की बातें क्यूँ करता है? हमें तालीम देते
और इलाही पैग़ाम का मतलब सुनाते वक़्त वह हमें
यूँ समझाता है गोया हम छोटे बच्चे हों जिन का दूध
अभी अभी छुड़ाया गया हो। 10 क्यूँकि यह कहता है,
'सव लासव सव लासव, क़व लाक़व क़व लाक़व,
थोड़ा सा इस तरफ़ थोड़ा सा उस तरफ़'।"

11 चुनाँचे अब अल्लाह हकलाते हुए होंटों और
ग़ैरज़बानों की मारिफ़त इस क़ौम से बात करेगा।
12 गो उस ने उन से फ़रमाया था, "यह आराम की
जगह है। थकेमान्दों को आराम दो, क्यूँकि यहीं वह
सुकून पाएँगे।" लेकिन वह सुनने के लिए तय्यार नहीं
थे। 13 इस लिए आइन्दा रब उन से इन ही अल्फ़ाज़
से हमकलाम होगा, "सव लासव सव लासव, क़व
लाक़व कव लाक़व, थोड़ा सा इस तरफ़, थोड़ा सा
उस तरफ़।" क्यूँकि लाज़िम है कि वह चल कर
ठोकर खाएँ, और धड़ाम से अपनी पुश्त पर गिर
जाएँ, कि वह ज़ख़्मी हो जाएँ और फंदे में फंस कर
गिरिफ़्तार हो जाएँ।

अल्लाह का वाज़िह पैग़ाम

14 चुनाँचे अब रब का कलाम सुन लो, ऐ मज़ाक़
उड़ाने वालो, जो यरूशलम में बसने वाली इस क़ौम
पर हुकूमत करते हो। 15 तुम शेख़ी मार कर कहते हो,
"हम ने मौत से अह्द बांधा और पाताल से मुआहदा
किया है। इस लिए जब सज़ा का सैलाब हम पर से
गुज़रे तो हमें नुक़्सान नहीं पहुँचाएगा। क्यूँकि हम ने
झूट में पनाह ली और धोके में छुप गए हैं।" 16 इस के
जवाब में रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "देखो,
मैं सिय्यून में एक पत्थर रख देता हूँ, कोने का एक
आज़मूदा और क़ीमती पत्थर जो मज़बूत बुन्याद पर
लगा है। जो ईमान लाएगा वह कभी नहीं हिलेगा।
17 इन्साफ़ मेरा फ़ीता और रास्ती मेरी साहूल की डोरी
होगी। इन से मैं सब कुछ परखूँगा।

ओले उस झूट का सफ़ाया करेंगे जिस में तुम ने
पनाह ली है, और सैलाब तुम्हारी छुपने की जगह
उड़ा कर अपने साथ बहा ले जाएगा। 18 तब तुम्हारा
मौत के साथ अह्द मन्सूख़ हो जाएगा, और तुम्हारा
पाताल के साथ मुआहदा क़ाइम नहीं रहेगा। सज़ा
का सैलाब तुम पर से गुज़र कर तुम्हें पामाल करेगा।
19 वह सुब्ह-ब-सुब्ह और दिन रात गुज़रेगा, और जब
भी गुज़रेगा तो तुम्हें अपने साथ बहा ले जाएगा। उस
वक़्त लोग दह्शतज़दा हो कर कलाम का मतलब
समझेंगे।" 20 चारपाई इतनी छोटी होगी कि तुम पाँओ
फैला कर सो नहीं सकोगे। बिस्तर की चौड़ाई इतनी
कम होगी कि तुम उसे लपेट कर आराम नहीं कर
सकोगे।

21 क्यूँकि रब उठ कर यूँ तुम पर झपट पड़ेगा जिस
तरह पराज़ीम पहाड़ के पास फ़िलिस्तियों पर झपट
पड़ा। जिस तरह वादी-ए-जिबऊन में अमोरियों पर
टूट पड़ा उसी तरह वह तुम पर टूट पड़ेगा। और
जो काम वह करेगा वह अजीब होगा, जो क़दम
वह उठाएगा वह मामूल से हट कर होगा। 22 चुनाँचे
अपनी तानाज़नी से बाज़ आओ, वर्ना तुम्हारी ज़न्जीरें
मज़ीद ज़ोर से कस दी जाएँगी। क्यूँकि मुझे क़ादिर-

ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज से पैग़ाम मिला है कि तमाम दुनिया की तबाही मुतअय्यिन है।

माहिर किसान की तम्सील

23 ग़ौर से मेरी बात सुनो! ध्यान से उस पर कान धरो
जो मैं कह रहा हूँ! 24 जब किसान खेत को बीज बोने
के लिए तय्यार करता है तो क्या वह पूरा दिन हल
चलाता रहता है? क्या वह अपना पूरा वक़्त ज़मीन
खोदने और ढेले तोड़ने में सर्फ़ करता है? 25 हरगिज़
नहीं! जब पूरे खेत की सतह हमवार और तय्यार है
तो वह अपनी अपनी जगह पर सियाह ज़ीरा और
सफ़ेद ज़ीरा, गन्दुम, बाजरा और जो का बीज बोता
है। आख़िर में वह किनारे पर चारे का बीज बोता
है। 26 किसान को ख़ूब मालूम है कि क्या क्या करना
होता है, क्यूँकि उस के ख़ुदा ने उसे तालीम दे कर
सहीह तरीक़ा सिखाया। 27 चुनाँचे सियाह ज़ीरा और
सफ़ेद ज़ीरा को अनाज की तरह गाहा नहीं जाता। दाने
निकालने के लिए उन पर वज़नी चीज़ नहीं चलाई
जाती बल्कि उन्हें डंडे से मारा जाता है। 28 और क्या
अनाज को गाह गाह कर पीसा जाता है? हरगिज़
नहीं! किसान उसे हद से ज़्यादा नहीं गाहता। गो उस
के घोड़े कोई वज़नी चीज़ खैंचते हुए बालियों पर से
गुज़रते हैं ताकि दाने निकलें ताहम किसान ध्यान देता
है कि दाने पिस न जाएँ। 29 उसे यह इल्म भी रब्ब-
उल-अफ़्वाज से मिला है जो ज़बरदस्त मश्वरों और
कामिल हिक्मत का मम्बा है।

यरूशलम ख़बरदार रहे

29 1 ऐ अरीएल, अरीएल, [q]तुझ पर अफ़्सोस!
ऐ शहर जिस में दाऊद ख़ैमाज़न था, तुझ पर
अफ़्सोस! चलो, साल-ब-साल अपने तहवार मनाते
रहो। 2 लेकिन मैं अरीएल को यूँ घेर कर तंग करूँगा
कि उस में आह-ओ-ज़ारी सुनाई देगी। तब यरूशलम
मेरे नज़्दीक सहीह मानों में अरीएल साबित होगा।
3 क्यूँकि मैं तुझे हर तरफ़ से पुश्ताबन्दी से घेर
कर बन्द रखूँगा, तेरे मुहासरे का पूरा बन्द-ओ-बस्त
करूँगा। 4 तब तू इतना पस्त होगा कि ख़ाक में से
बोलेगा, तेरी दबी दबी आवाज़ गर्द में से निकलेगी।
जिस तरह मुर्दा रूह ज़मीन के अन्दर से सरगोशी
करती है उसी तरह तेरी धीमी धीमी आवाज़ ज़मीन
में से निकलेगी।

5 लेकिन अचानक तेरे मुतअद्दिद दुश्मन बारीक
धूल की तरह उड़ जाएंगे, ज़ालिमों का ग़ोल हवा
में भूसे की तरह तित्तर-बित्तर हो जाएगा। क्यूँकि
अचानक, एक ही लम्हे में 6 रब्ब-उल-अफ़्वाज उन
पर टूट पड़ेगा। वह बिजली की कड़कती आवाज़ें,
ज़ल्ज़ला, बड़ा शोर, तेज़ आँधी, तूफ़ान और भस्म
करने वाली आग के शोले अपने साथ ले कर शहर
की मदद करने आएगा। 7 तब अरीएल से लड़ने
वाली तमाम क़ौमों के ग़ोल ख़्वाब जैसे लगेंगे। जो
यरूशलम पर हम्ला करके उस का मुहासरा कर रहे
और उसे तंग कर रहे थे वह रात में रोया जैसे
ग़ैरहक़ीक़ी लगेंगे। 8 तुम्हारे दुश्मन उस भूके आदमी
की मानिन्द होंगे जो ख़्वाब में देखता है कि मैं खाना
खा रहा हूँ, लेकिन फिर जाग कर जान लेता है कि मैं
वैसे का वैसा भूका हूँ। तुम्हारे मुख़ालिफ़ उस प्यासे
आदमी की मानिन्द होंगे जो ख़्वाब में देखता है कि
मैं पानी पी रहा हूँ, लेकिन फिर जाग कर जान लेता
है कि मैं वैसे का वैसा निढाल और प्यासा हूँ। यही
उन तमाम बैन-उल-अक़्वामी ग़ोलों का हाल होगा जो
कोह-ए-सिय्यून से जंग करेंगे।

अल्लाह का कलाम क़ौम की समझ से बाहर है

9 हैरतज़दा हो कर हक्का-बक्का रह जाओ! अंधे हो
कर नाबीना हो जाओ! मत्वाले हो जाओ, लेकिन मै
से नहीं। लड़खड़ाते जाओ, लेकिन शराब से नहीं।
10 क्यूँकि रब ने तुम्हें गहरी नींद सुला दिया है, उस
ने तुम्हारी आँखों यानी नबियों को बन्द किया और

---

[q]मुराद है यरूशलम। अरीएल का एक मतलब 'अल्लाह का शेरबबर' और दूसरा 'भस्म होने वाली क़ुर्बानियों की क़ुर्बानगाह' है। यहाँ दोनों मतलब मुमकिन हैं।

तुम्हारे सरों यानी रोया देखने वालों पर पर्दा डाल दिया है।

11 इस लिए जो भी कलाम नाज़िल हुआ है वह तुम्हारे लिए सर-ब-मुहर किताब ही है। अगर उसे किसी पढ़े-लिखे आदमी को दिया जाए ताकि पढ़े तो वह जवाब देगा, "यह पढ़ा नहीं जा सकता, क्यूँकि इस पर मुहर है।" 12 और अगर उसे किसी अनपढ़ आदमी को दिया जाए तो वह कहेगा, "मैं अनपढ़ हूँ।"

13 रब फ़रमाता है, "यह क़ौम मेरे हुज़ूर आ कर अपनी ज़बान और होंटों से तो मेरा एहतिराम करती है, लेकिन उस का दिल मुझ से दूर है। उन की ख़ुदातरसी सिर्फ़ इन्सान ही के रटे-रटाए अह्काम पर मब्नी है। 14 इस लिए आइन्दा भी मेरा इस क़ौम के साथ सुलूक हैरतअंगेज़ होगा। हाँ, मेरा सुलूक अजीब-ओ-ग़रीब होगा। तब उस के दानिशमन्दों की दानिश जाती रहेगी, और उस के समझदारों की समझ ग़ाइब हो जाएगी।"

15 उन पर अफ़सोस जो अपना मन्सूबा ज़मीन की गहराइयों में दबा कर रब से छुपाने की कोशिश करते हैं, जो तारीकी में अपने काम करके कहते हैं, "कौन हमें देख लेगा, कौन हमें पहचान लेगा?" 16 तुम्हारी कजरवी पर लानत! क्या कुम्हार को उस के गारे के बराबर समझा जाता है? क्या बनी हुई चीज़ बनाने वाले के बारे में कहती है, "उस ने मुझे नहीं बनाया"? या क्या जिस को तश्कील दिया गया है वह तश्कील देने वाले के बारे में कहता है, "वह कुछ नहीं समझता"? हरगिज़ नहीं!

बड़ी तब्दीलियाँ आने वाली हैं

17 थोड़ी ही देर के बाद लुबनान का जंगल फलते फूलते बाग़ में तब्दील होगा जबकि फलता फूलता बाग़ जंगल सा लगेगा। 18 उस दिन बहरे किताब की तिलावत सुनेंगे, और अंधों की आँखें अंधेरे और तारीकी में से निकल कर देख सकेंगी। 19 एक बार फिर फ़रोतन रब की ख़ुशी मनाएँगे, और मुह्ताज इस्राईल के क़ुद्दूस के बाइस शादियाना बजाएंगे। 20 ज़ालिम का नाम-ओ-निशान नहीं रहेगा, तानाज़न ख़त्म हो जाएंगे, और दूसरों की ताक में बैठने वाले सब के सब रू-ए-ज़मीन पर से मिट जाएंगे। 21 यही उन का अन्जाम होगा जो अदालत में दूसरों को क़ुसूरवार ठहराते, शहर के दरवाज़े में अदालत करने वाले क़ाज़ी को फंसाने की कोशिश करते और झूटी गवाहियों से बेक़ुसूर का हक़ मारते हैं।

22 चुनाँचे रब जिस ने पहले इब्राहीम का भी फ़िद्या दे कर उसे छुड़ाया था याक़ूब के घराने से फ़रमाता है, "अब से याक़ूब शर्मिन्दा नहीं होगा, अब से इस्राईलियों का रंग फ़क़ नहीं पड़ जाएगा। 23 जब वह अपने दरमियान अपने बच्चों को जो मेरे हाथों का काम हैं देखेंगे तो वह मेरे नाम को मुक़द्दस मानेंगे। वह याक़ूब के क़ुद्दूस को मुक़द्दस जानेंगे और इस्राईल के ख़ुदा का ख़ौफ़ मानेंगे। 24 उस वक़्त जिन की रूह आवारा है वह समझ हासिल करेंगे, और बुड़बुड़ाने वाले तालीम क़बूल करेंगे।"

मिस्र के वादे बेकार हैं

30 1 रब फ़रमाता है, "ऐ ज़िद्दी बच्चो, तुम पर अफ़सोस! क्यूँकि तुम मेरे बग़ैर मन्सूबे बांधते और मेरे रूह के बग़ैर मुआहदे कर लेते हो। गुनाहों में इज़ाफ़ा करते करते 2 तुम ने मुझ से मश्वरा लिए बग़ैर मिस्र की तरफ़ रुजू किया ताकि फ़िरऔन की आड़ में पनाह लो और मिस्र के साय में हिफ़ाज़त पाओ। 3 लेकिन ख़बरदार! फ़िरऔन का तहफ़्फ़ुज़ तुम्हारे लिए शर्म का बाइस बनेगा, मिस्र के साय में पनाह लेने से तुम्हारी रुस्वाई हो जाएगी। 4 क्यूँकि गो उस के अफ़सर ज़ुअन में हैं और उस के एलची हनीस तक पहुँच गए हैं 5 तो भी सब इस क़ौम से शर्मिन्दा हो जाएंगे, क्यूँकि इस के साथ मुआहदा बेकार होगा। इस से न मदद और न फ़ाइदा हासिल होगा बल्कि यह शर्म और ख़जालत का बाइस ही होगी।"

6 दश्त-ए-नजब के जानवरों के बारे में रब का फ़रमान :

यहूदाह के सफ़ीर एक तक्लीफ़दिह और
परेशानकुन मुल्क में से गुज़र रहे हैं जिस में शेरबबर,
शेरनी, ज़हरीले और उड़नसाँप बसते हैं। उन के गधे
और ऊँट यहूदाह की दौलत और ख़ज़ानों से लदे हुए
हैं, और वह सब कुछ मिस्र के पास पहुँचा रहे हैं,
गो इस क़ौम का कोई फ़ाइदा नहीं। 7 मिस्र की मदद
फ़ुज़ूल ही है! इस लिए मैं ने मिस्र का नाम 'रहब
अज़दहा जिस का मुँह बन्द कर दिया गया है' रखा
है।

8 अब दूसरों के पास जा कर सब कुछ तख़्ते पर
लिख। उसे किताब की सूरत में क़लमबन्द कर ताकि
मेरे अल्फ़ाज़ आने वाले दिनों में हमेशा तक गवाही
दें। 9 क्यूँकि यह क़ौम सरकश है, यह लोग धोकेबाज़
बच्चे हैं जो रब की हिदायात को मानने के लिए तय्यार
ही नहीं। 10 ग़ैबबीनों को वह कहते हैं, "रोया से बाज़
आओ।" और रोया देखने वालों को वह हुक्म देते
हैं, "हमें सच्ची रोया मत बताना बल्कि हमारी ख़ुशामद
करने वाली बातें। फ़रेबदिह रोया देख कर हमारे आगे
बयान करो! 11 सहीह रास्ते से हट जाओ, सीधी राह
को छोड़ दो। हमारे सामने इस्राईल के क़ुद्दूस का
ज़िक्र करने से बाज़ आओ!"

12 जवाब में इस्राईल का क़ुद्दूस फ़रमाता है, "तुम
ने यह कलाम रद्द करके ज़ुल्म और चालाकी पर
भरोसा बल्कि पूरा एतिमाद किया है। 13 अब यह
गुनाह तुम्हारे लिए उस ऊँची दीवार की मानिन्द होगा
जिस में दराड़ें पड़ गई हैं। दराड़ें फैलती हैं और दीवार
बैठी जाती है। फिर अचानक एक ही लम्हे में वह
धड़ाम से ज़मीनबोस हो जाती है। 14 वह टुकड़े टुकड़े
हो जाती है, बिलकुल मिट्टी के उस बर्तन की तरह जो
बेरहमी से चिकनाचूर किया जाता है और जिस का
एक टुकड़ा भी आग से कोएले उठा कर ले जाने या
हौज़ से थोड़ा बहुत पानी निकालने के क़ाबिल नहीं
रह जाता।"

सब्र के साथ रब पर भरोसा रखो

15 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ जो इस्राईल का क़ुद्दूस है
फ़रमाता है, "वापस आ कर सुकून पाओ, तब ही
तुम्हें नजात मिलेगी। ख़ामोश रह कर मुझ पर भरोसा
रखो, तब ही तुम्हें तक़वियत मिलेगी। लेकिन तुम
इस के लिए तय्यार ही नहीं थे।

16 चूँकि तुम जवाब में बोले, 'हरगिज़ नहीं, हम
अपने घोड़ों पर सवार हो कर भागेंगे' इस लिए तुम
भाग जाओगे। चूँकि तुम ने कहा, 'हम तेज़ घोड़ों
पर सवार हो कर बच निकलेंगे' इस लिए तुम्हारा
ताक़्क़ुब करने वाले कहीं ज़्यादा तेज़ होंगे। 17 तुम्हारे
हज़ार मर्द एक ही आदमी की धमकी पर भाग जाएंगे।
और जब दुश्मन के पाँच अफ़राद तुम्हें धमकाएँगे तो
तुम सब के सब फ़रार हो जाओगे। आख़िरकार जो
बचेंगे वह पहाड़ की चोटी पर पर्चम के डंडे की तरह
तन्हा रह जाएंगे, पहाड़ी पर झंडे की तरह अकेले
होंगे।"

18 लेकिन रब तुम्हें मेहरबानी दिखाने के इन्तिज़ार
में है, वह तुम पर रहम करने के लिए उठ खड़ा हुआ
है। क्यूँकि रब इन्साफ़ का ख़ुदा है। मुबारक हैं वह
जो उस के इन्तिज़ार में रहते हैं।

19 ऐ सिय्यून के बाशिन्दो जो यरूशलम में रहते हो,
आइन्दा तुम नहीं रोओगे। जब तुम फ़र्याद करोगे तो
वह ज़रूर तुम पर मेहरबानी करेगा। तुम्हारी सुनते ही
वह जवाब देगा। 20 गो माज़ी में रब ने तुम्हें तंगी की
रोटी खिलाई और ज़ुल्म का पानी पिलाया, लेकिन
अब तेरा उस्ताद छुपा नहीं रहेगा बल्कि तेरी अपनी
ही आँखें उसे देखेंगी। 21 अगर दाईं या बाईं तरफ़
मुड़ना है तो तुम्हें पीछे से हिदायत मिलेगी, "यही
रास्ता सहीह है, इसी पर चलो!" तुम्हारे अपने कान
यह सुनेंगे। 22 उस वक़्त तुम चाँदी और सोने से सजे
हुए अपने बुतों की बेहुरमती करोगे। तुम "उफ़, गन्दी
चीज़!" कह कर उन्हें नापाक कचरे की तरह बाहर
फैंकोगे।

23 बीज बोते वक़्त रब तेरे खेतों पर बारिश भेज कर
बेहतरीन फ़सलें पकने देगा, ग़िज़ाइयतबख़्श ख़ुराक
मुहय्या करेगा। उस दिन तेरी भेड़-बकरियाँ और गाय-
बैल वसी चरागाहों में चरेंगे। 24 खेतीबाड़ी के लिए
मुस्तामल बैलों और गधों को छाज और दोशाख़े के
ज़रीए साफ़ की गई बेहतरीन ख़ुराक मिलेगी। 25 उस
दिन जब दुश्मन हलाक हो जाएगा और उस के बुर्ज
गिर जाएंगे तो हर ऊँचे पहाड़ से नहरें और हर बुलन्दी
से नाले बहेंगे। 26 चाँद सूरज की मानिन्द चमकेगा
जबकि सूरज की रौशनी सौ गुना ज़्यादा तेज़ होगी।
एक दिन की रौशनी सात आम दिनों की रौशनी के
बराबर होगी। उस दिन रब अपनी क़ौम के ज़ख़्मों पर
मर्हम-पट्टी करके उसे शिफ़ा देगा।

रब असूरियों की अदालत करता है

27 वह देखो, रब का नाम दूरदराज़ इलाक़े से आ
रहा है। वह ग़ैज़-ओ-ग़ज़ब से और बड़े रोब के साथ
क़रीब पहुँच रहा है। उस के होंट क़हर से हिल रहे हैं,
उस की ज़बान के आगे आगे सब कुछ राख हो रहा
है। 28 उस का दम किनारों से बाहर आने वाली नदी
है जो सब कुछ गले तक डुबो देती है। वह अक़्वाम
को हलाकत की छलनी में छान छानकर उन के मुँह
में दहाना डालता है ताकि वह भटक कर तबाहकुन
राह पर आएँ।

29 लेकिन तुम गीत गाओगे, ऐसे गीत जैसे मुक़द्दस
ईद की रात गाए जाते हैं। इतनी रौनक़ होगी कि
तुम्हारे दिल फूले न समाएँगे। तुम्हारी ख़ुशी उन
ज़ाइरीन की मानिन्द होगी जो बाँसरी बजाते हुए रब
के पहाड़ पर चढ़ते और इस्राईल की चटान के हुज़ूर
आते हैं।

30 तब रब अपनी बारोब आवाज़ से लोगों पर
अपनी क़ुदरत का इज़हार करेगा। उस का सख़्त
ग़ज़ब और भस्म करने वाली आग नाज़िल होगी,
साथ साथ बारिश की तेज़ बौछाड़ और ओलों का
तूफ़ान उन पर टूट पड़ेगा। 31 रब की आवाज़ असूर
को पाश पाश कर देगी, उस की लाठी उसे मारती
रहेगी। 32 और जूँ जूँ रब सज़ा के लठ से असूर को
ज़र्ब लगाएगा तूँ तूँ दफ़ और सरोद बजेंगे। अपने
ज़ोरावर बाज़ू से वह असूर से लड़ेगा। 33 क्यूँकि बड़ी
देर से वह गढ़ा तय्यार है जहाँ असूरी बादशाह की
लाश को जलाना है। उसे गहरा और चौड़ा बनाया
गया है, और उस में लकड़ी का बड़ा ढेर है। रब का
दम ही उसे गंधक की तरह जलाएगा।

मिस्र की मदद बेकार है

31 1 उन पर अफ़सोस जो मदद के लिए मिस्र
जाते हैं। उन की पूरी उम्मीद घोड़ों से
है, और वह अपने मुतअद्दिद रथों और ताक़तवर
घुड़सवारों पर एतिमाद रखते हैं। अफ़सोस, न वह
इस्राईल के क़ुद्दूस की तरफ़ नज़र उठाते, न रब की
मर्ज़ी दरयाफ़्त करते हैं। 2 लेकिन अल्लाह भी दाना
है। वह तुम पर आफ़त लाएगा और अपना फ़रमान
मन्सूख़ नहीं करेगा बल्कि शरीरों के घर और उन
के मुआविनों के ख़िलाफ़ उठ खड़ा होगा। 3 मिस्री
तो ख़ुदा नहीं बल्कि इन्सान हैं। और उन के घोड़े
आलम-ए-अर्वाह के नहीं बल्कि फ़ानी दुनिया के हैं।
जहाँ भी रब अपना हाथ बढ़ाए वहाँ मदद करने वाले
मदद मिलने वालों समेत ठोकर खा कर गिर जाते हैं,
सब मिल कर हलाक हो जाते हैं।

4 रब मुझ से हमकलाम हुआ, "सिय्यून पर उतरते
वक़्त मैं उस जवान शेरबबर की तरह हूँगा जो बकरी
मार कर उस के ऊपर खड़ा ग़ुर्राता है। गो मुतअद्दिद
गल्लाबानों को उसे भगाने के लिए बुलाया जाए तो
भी वह उन की चीख़ों से दहशत नहीं खाता, न उन
के शोर-शराबा से डर कर दबक जाता है। रब्ब-उल-
अफ़्वाज इसी तरह ही कोह-ए-सिय्यून पर उतर कर
लड़ेगा। 5 रब्ब-उल-अफ़्वाज पर फैलाए हुए परिन्दे
की तरह यरूशलम को पनाह देगा, वह उसे महफ़ूज़
रख कर छुटकारा देगा, उसे सज़ा देने के बजाय रिहा
करेगा।"

6 ऐ इस्राईलियो, जिस से तुम सरकश हो कर इतने
दूर हो गए हो उस के पास वापस आ जाओ। 7 अब

तक तुम अपने हाथों से बने हुए सोने-चाँदी के बुतों
की पूजा करते हो, अब तक तुम इस गुनाह में
मुलव्वस हो। लेकिन वह दिन आने वाला है जब
हर एक अपने बुतों को रद्द करेगा।
8 "असूर तलवार की ज़द में आ कर गिर जाएगा।
लेकिन यह किसी मर्द की तलवार नहीं होगी। जो
तलवार असूर को खा जाएगी वह फ़ानी इन्सान की
नहीं होगी। असूर तलवार के आगे आगे भागेगा, और
उस के जवानों को बेगार में काम करना पड़ेगा। 9 उस
की चटान डर के मारे जाती रहेगी, उस के अफ़सर
लश्करी झंडे को देख कर दहशत खाएँगे।" यह रब
का फ़रमान है जिस की आग सिय्यून में भड़कती और
जिस का तनूर यरूशलम में तपता है।

रास्त बादशाह की आमद

32 1 एक बादशाह आने वाला है जो इन्साफ़ से
हुकूमत करेगा। उस के अफ़सर भी सदाक़त
से हुक्मरानी करेंगे। 2 हर एक आँधी और तूफ़ान से
पनाह देगा, हर एक रेगिस्तान में नदियों की तरह तर-
ओ-ताज़ा करेगा, हर एक तपती धूप में बड़ी चटान
का सा साया देगा।
3 तब देखने वालों की आँखें अंधी नहीं रहेंगी, और
सुनने वालों के कान ध्यान देंगे। 4 जल्दबाज़ों के दिल
समझदार हो जाएंगे, और हक्लों की ज़बान रवानी
से साफ़ बात करेगी। 5 उस वक़्त न अहमक़ शरीफ़
कहलाएगा, न बदमआश को मुम्ताज़ क़रार दिया
जाएगा। 6 क्यूँकि अहमक़ हमाक़त बयान करता है,
और उस का ज़हन शरीर मन्सूबे बांधता है। वह बेदीन
हरकतें करके रब के बारे में कुफ़्र बकता है। भूके
को वह भूका छोड़ता और प्यासे को पानी पीने से
रोकता है। 7 बदमआश के तरीक़-ए-कार शरीर हैं।
वह ज़रूरतमन्द को झूट से तबाह करने के मन्सूबे
बांधता रहता है, ख़्वाह ग़रीब हक़ पर क्यूँ न हो।
8 उस के मुक़ाबले में शरीफ़ आदमी शरीफ़ मन्सूबे
बांधता और शरीफ़ काम करने में साबितक़दम रहता
है।

बेपरवा ज़िन्दगी ख़त्म होने वाली है

9 ऐ बेपरवा औरतो, उठ कर मेरी बात सुनो! ऐ
बेटियो जो अपने आप को महफ़ूज़ समझती हो,
मेरे अल्फ़ाज़ पर ध्यान दो! 10 एक साल और चन्द
एक दिनों के बाद तुम जो अपने आप को महफ़ूज़
समझती हो काँप उठोगी। क्यूँकि अंगूर की फ़सल
ज़ाए हो जाएगी, और फल की फ़सल पकने नहीं
पाएगी। 11 ऐ बेपरवा औरतो, लरज़ उठो! ऐ बेटियो
जो अपने आप को महफ़ूज़ समझती हो, थरथराओ!
अपने अच्छे कपड़ों को उतार कर टाट के लिबास
पहन लो। 12 अपने सीनों को पीट पीट कर अपने
ख़ुशगवार खेतों और अंगूर के फलदार बाग़ों पर
मातम करो। 13 मेरी क़ौम की ज़मीन पर आह-ओ-
ज़ारी करो, क्यूँकि उस पर ख़ारदार झाड़ियाँ छा गई
हैं। रंगरलियाँ मनाने वाले शहर के तमाम ख़ुशबाश
घरों पर ग़म खाओ। 14 महल वीरान होगा, रौनक़दार
शहर सुन्सान होगा। क़िला और बुर्ज हमेशा के लिए
ग़ार बनेंगे जहाँ जंगली गधे अपने दिल बहलाएँगे और
भेड़-बकरियाँ चरेंगी।

अल्लाह के रूह से बहाली

15 जब तक अल्लाह अपना रूह हम पर नाज़िल न
करे उस वक़्त तक हालात ऐसे ही रहेंगे। लेकिन
फिर रेगिस्तान बाग़ में तब्दील हो जाएगा, और
बाग़ के फलदार दरख़्त जंगल जैसे घने हो जाएंगे।
16 तब इन्साफ़ रेगिस्तान में बसेगा, और सदाक़त
फलते फूलते बाग़ में सुकूनत करेगी। 17 इन्साफ़ का
फल अम्न-ओ-अमान होगा, और सदाक़त का असर
अबदी सुकून और हिफ़ाज़त होगी।
18 मेरी क़ौम पुरसुकून और महफ़ूज़ आबादियों में
बसेगी, उस के घर आरामदिह और पुरअम्न होंगे।
19 गो जंगल तबाह और शहर ज़मीनबोस क्यूँ न हो,
20 लेकिन तुम मुबारक हो जो हर नदी के पास बीज
बो सकोगे और आज़ादी से अपने गाय-बैलों और
गधों को चरा सकोगे।

या रब, मदद!

33 1 तुझ पर अफ़्सोस, जो दूसरों को बर्बाद
करने के बावुजूद बर्बाद नहीं हुआ। तुझ
पर अफ़्सोस, जो दूसरों से बेवफ़ा था, हालाँकि तेरे
साथ बेवफ़ाई नहीं हुई। लेकिन तेरी बारी भी आएगी।
बर्बादी का काम तक्मील तक पहुँचाने पर तू ख़ुद
बर्बाद हो जाएगा। बेवफ़ाई का काम तक्मील तक
पहुँचाने पर तेरे साथ भी बेवफ़ाई की जाएगी।
2 ऐ रब, हम पर मेहरबानी कर! हम तुझ से उम्मीद
रखते हैं। हर सुब्ह हमारी ताक़त बन, मुसीबत के
वक़्त हमारी रिहाई का बाइस हो।
3 तेरी गरजती आवाज़ सुन कर क़ौमें भाग जाती हैं,
तेरे उठ खड़े होने पर वह चारों तरफ़ बिखर जाती
हैं। 4 ऐ क़ौमो, जो माल तुम ने लूट लिया वह दूसरे
छीन लेंगे। जिस तरह टिड्डियों के ग़ोल फ़सलों पर
झपट कर सब कुछ चट कर जाते हैं उसी तरह दूसरे
तुम्हारी पूरी मिलकियत पर टूट पड़ेंगे।
5 रब सरफ़राज़ है और बुलन्दियों पर सुकूनत
करता है। वही सिय्यून को इन्साफ़ और सदाक़त
से मालामाल करेगा। 6 उन दिनों में वह तेरी हिफ़ाज़त
की ज़मानत होगा। तुझे नजात, हिक्मत और दानाई
का ज़ख़ीरा हासिल होगा, और रब का ख़ौफ़ तेरा
ख़ज़ाना होगा।

दुश्मन से धोका, रब से रिहाई

7 सुनो, उन के सूरमे गलियों में चीख़ रहे हैं, अम्न
के सफ़ीर तल्ख़ आहें भर रहे हैं। 8 सड़कें वीरान-ओ-
सुन्सान हैं, और मुसाफ़िर उन पर नज़र ही नहीं आते।
मुआहदे को तोड़ा गया है, लोगों ने उस के गवाहों को
रद्द करके इन्सान को हक़ीर जाना है। 9 ज़मीन ख़ुश्क
हो कर मुरझा गई है, लुबनान कुमला कर शर्मिन्दा हो
गया है। शारून का मैदान बेशजर बयाबान सा बन
गया है, बसन और कर्मिल अपने पत्ते झाड़ रहे हैं।
10 लेकिन रब फ़रमाता है, "अब मैं उठ खड़ा हूँगा,
अब मैं सरफ़राज़ हो कर अपनी क़ुव्वत का इज़हार
करूँगा। 11 तुम उम्मीद से हो, लेकिन पेट में सूखी
घास ही है, और जन्म देते वक़्त भूसा ही पैदा होगा।
जब तुम फूँक मारोगे तो तुम्हारा दम आग बन कर तुम
ही को राख कर देगा। 12 अक़्वाम यूँ भस्म हो जाएँगी
कि चूना ही रह जाएगा, वह ख़ारदार झाड़ियों की
तरह कट कर जल जाएँगी। 13 ऐ दूरदराज़ इलाक़ों के
बाशिन्दो, वह कुछ सुनो जो मैं ने किया है। ऐ क़रीब
के बसने वालो, मेरी क़ुदरत जान लो।"
14 सिय्यून में गुनाहगार घबरा गए हैं, बेदीन परेशानी
के आलम में थरथराते हुए चिल्ला रहे हैं, "हम में से
कौन भस्म करने वाली इस आग के सामने ज़िन्दा
रह सकता है? हम में से कौन हमेशा तक भड़कने
वाली इस अंगीठी के क़रीब क़ाइम रह सकता है?"
15 लेकिन वह शख़्स क़ाइम रहेगा जो रास्त ज़िन्दगी
गुज़ारे और सच्चाई बोले, जो ग़ैरक़ानूनी नफ़ा और
रिश्वत लेने से इन्कार करे, जो क़ातिलाना साज़िशों
और ग़लत काम से गुरेज़ करे। 16 वही बुलन्दियों पर
बसेगा और पहाड़ के क़िले में महफ़ूज़ रहेगा। उसे
रोटी मिलती रहेगी, और पानी की कभी कमी न होगी।

पुरजलाल बादशाह का मुल्क

17 तेरी आँखें बादशाह और उस की पूरी ख़ूबसूरती
का मुशाहदा करेंगी, वह एक वसी और दूर दूर
तक फैला हुआ मुल्क देखेंगी। 18 तब तू गुज़रे हुए
हौलनाक वक़्त पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करके पूछेगा,
"दुश्मन के बड़े अफ़्सर किधर हैं? टैक्स लेने वाला
कहाँ ग़ाइब हुआ? वह अफ़्सर किधर है जो बुर्जों
का हिसाब-किताब करता था?" 19 आइन्दा तुझे
यह गुस्ताख़ क़ौम नज़र नहीं आएगी, यह लोग जो
नाक़ाबिल-ए-फ़हम ज़बान बोलते और हकलाते हुए
ऐसी बातें करते हैं जो समझ में नहीं आतीं।
20 हमारी ईदों के शहर सिय्यून पर नज़र डाल! तेरी
आँखें यरूशलम को देखेंगी। उस वक़्त वह महफ़ूज़
सुकूनतगाह होगा, एक ख़ैमा जो आइन्दा कभी नहीं
हटेगा, जिस की मेख़ें कभी नहीं निकलेंगी, और जिस
का एक रस्सा भी नहीं टूटेगा।

21 वहाँ रब ही हमारा ज़ोरावर आक़ा होगा, और
शहर दरयाओं का मक़ाम होगा, ऐसी चौड़ी नदियों
का मक़ाम जिन पर न चप्पू वाली कश्ती, न शानदार
जहाज़ चलेगा। 22 क्यूँकि रब ही हमारा क़ाज़ी, रब ही
हमारा सरदार और रब ही हमारा बादशाह है। वही
हमें छुटकारा देगा। 23 दुश्मन का बेड़ा ग़र्क़ होने वाला
है। बादबान के रस्से ढीले हैं, और न वह मस्तूल को
मज़बूत रखने, न बादबान को फैलाए रखने में मदद
देते हैं। उस वक़्त कस्रत का लूटा हुआ माल बटेगा,
बल्कि इतना माल होगा कि लंगड़े भी लूटने में शिर्कत
करेंगे। 24 सिय्यून का कोई भी फ़र्द नहीं कहेगा, "मैं
कमज़ोर हूँ," क्यूँकि उस के बाशिन्दों के गुनाह बख़्शे
गए होंगे।

अदोम पर अदालत का एलान

34 1 ऐ क़ौमो, क़रीब आ कर सुन लो! ऐ
उम्मतो, ध्यान दो! दुनिया और जो भी उस
में है कान लगाए, ज़मीन और जो कुछ उस में से
फूट निकला है तवज्जुह दे! 2 क्यूँकि रब को तमाम
उम्मतों पर ग़ुस्सा आ गया है, और उस का ग़ज़ब
उन के तमाम लश्करों पर नाज़िल हो रहा है। वह
उन्हें मुकम्मल तौर पर तबाह करेगा, इन्हें सफ़्फ़ाक
के हवाले करेगा। 3 उन के मक़्तूलों को बाहर फैंका
जाएगा, और लाशों की बदबू चारों तरफ़ फैलेगी।
पहाड़ उन के ख़ून से शराबोर होंगे। 4 तमाम सितारे
गल जाएंगे, और आसमान को तूमार की तरह लपेटा
जाएगा। सितारों का पूरा लश्कर अंगूर के मुरझाए हुए
पत्तों की तरह झड़ जाएगा, वह अन्जीर के दरख़्त की
सूखी हरियाली की तरह गिर जाएगा।

5 क्यूँकि आसमान पर मेरी तलवार ख़ून पी पी कर
मस्त हो गई है। देखो, अब वह अदोम पर नाज़िल
हो रही है ताकि उस की अदालत करे, उस क़ौम की
जिस की मुकम्मल तबाही का फ़ैसला मैं कर चुका हूँ।
6 रब की तलवार ख़ूनआलूदा हो गई है, और उस से
चर्बी टपकती है। भेड़-बकरियों का ख़ून और मेंढों के
गुर्दों की चर्बी उस पर लगी है, क्यूँकि रब बुस्रा शहर
में क़ुर्बानी की ईद और मुल्क-ए-अदोम में क़त्ल-ए-
आम का तहवार मनाएगा। 7 उस वक़्त जंगली बैल
उन के साथ गिर जाएंगे, और बछड़े ताक़तवर साँडों
समेत ख़त्म हो जाएंगे। उन की ज़मीन ख़ून से मस्त
और ख़ाक चर्बी से शराबोर होगी।

8 क्यूँकि वह दिन आ गया है जब रब बदला लेगा,
वह साल जब वह अदोम से इस्राईल का इन्तिक़ाम
लेगा। 9 अदोम की नदियों में तारकोल ही बहेगा, और
गंधक ज़मीन को ढाँपेगी। मुल्क भड़कती हुई राल
से भर जाएगा, 10 जिस की आग न दिन और न रात
बुझेगी बल्कि हमेशा तक धुआँ छोड़ती रहेगी। मुल्क
नस्ल-दर-नस्ल वीरान-ओ-सुन्सान रहेगा, यहाँ तक
कि मुसाफ़िर भी हमेशा तक उस में से गुज़रने से गुरेज़
करेंगे। 11 दश्ती उल्लू और ख़ारपुश्त उस पर क़ब्ज़ा
करेंगे, चिंघाड़ने वाले उल्लू और कव्वे उस में बसेरा
करेंगे। क्यूँकि रब फ़ीते और साहूल से अदोम का पूरा
मुल्क नाप नाप कर उजाड़ और वीरानी के हवाले
करेगा। 12 उस के शुरफ़ा का नाम-ओ-निशान तक
नहीं रहेगा। कुछ नहीं रहेगा जो बादशाही कहलाए,
मुल्क के तमाम रईस जाते रहेंगे। 13 काँटेदार पौदे उस
के महलों पर छा जाएंगे, ख़ुदरौ पौदे और ऊँटकटारे
उस के क़िलाबन्द शहरों में फैल जाएंगे। मुल्क गीदड़
और उक़ाबी उल्लू का घर बनेगा। 14 वहाँ रेगिस्तान के
जानवर जंगली कुत्तों से मिलेंगे, और बकरानुमा जिन
एक दूसरे से मुलाक़ात करेंगे। लीलीत नामी आसेब
भी उस में ठहरेगा, वहाँ उसे भी आरामगाह मिलेगी।
15 मादा साँप उस के साय में बिल बना कर उस में
अपने अंडे देगी और उन्हें से कर पालेगी। शिकारी
परिन्दे भी दो दो हो कर वहाँ जमा होंगे।

16 रब की किताब में पढ़ कर इस की तहक़ीक़
करो! अदोम में यह तमाम चीज़ें मिल जाएँगी। मुल्क
एक से भी महरूम नहीं रहेगा बल्कि सब मिल कर
उस में पाई जाएँगी। क्यूँकि रब ही के मुँह ने इस
का हुक्म दिया है, और उसी का रूह इन्हें इकट्ठा
करेगा। 17 वही सारी ज़मीन की पैमाइश करेगा और
फिर क़ुरआ डाल कर मज़कूरा जानदारों में तक़्सीम

करेगा। तब मुल्क अबद तक उन की मिलकियत में
आएगा, और वह नस्ल-दर-नस्ल उस में आबाद होंगे।

क़ौम की रिहाई

35 1 रेगिस्तान और प्यासी ज़मीन बाग़ बाग़
होंगे, बयाबान ख़ुशी मना कर खिल उठेगा।
उस के फूल सोसन की तरह 2 फूट निकलेंगे, और वह
ज़ोर से शादियाना बजा कर ख़ुशी के नारे लगाएगा।
उसे लुबनान की शान, कर्मिल और शारून का पूरा
हुस्न-ओ-जमाल दिया जाएगा। लोग रब का जलाल
और हमारे ख़ुदा की शान-ओ-शौकत देखेंगे।

3 निढाल हाथों को तक़वियत दो,
डाँवाँडोल घुटनों को मज़बूत करो! 4 धड़कते हुए
दिलों से कहो, "हौसला रखो, मत डरो। देखो,
तुम्हारा ख़ुदा इन्तिक़ाम लेने के लिए आ रहा है। वह
हर एक को जज़ा-ओ-सज़ा दे कर तुम्हें बचाने के लिए
आ रहा है।"

5 तब अंधों की आँखों को और बहरों के कानों को
खोला जाएगा।
6 लंगड़े हिरन की सी छलाँगें लगाएँगे, और गूँगे
ख़ुशी के नारे लगाएँगे। रेगिस्तान में चश्मे फूट
निकलेंगे, और बयाबान में से नदियाँ गुज़रेंगी।
7 झुलसती हुई रेत की जगह जोहड़ बनेगा, और
प्यासी ज़मीन की जगह पानी के सोते फूट निकलेंगे।
जहाँ पहले गीदड़ आराम करते थे वहाँ हरी घास,
सरकंडे और आबी नर्सल की नश्व-ओ-नुमा होगी।

8 मुल्क में से शाहराह गुज़रेगी जो 'शाहराह-ए-
मुक़द्दस' कहलाएगी। नापाक लोग उस पर सफ़र नहीं
करेंगे, क्यूँकि वह सहीह राह पर चलने वालों के लिए
मख़्सूस है। अहमक़ उस पर भटकने नहीं पाएँगे।
9 उस पर न शेरबबर होगा, न कोई और वहशी
जानवर आएगा या पाया जाएगा। सिर्फ़ वह उस पर
चलेंगे जिन्हें अल्लाह ने इवज़ाना दे कर छुड़ा लिया है।
10 जितनों को रब ने फ़िद्या दे कर रिहा किया है वह
वापस आएँगे और गीत गाते हुए सिय्यून में दाख़िल
होंगे। उन के सर पर अबदी ख़ुशी का ताज होगा, और
वह इतने मसरूर और शादमान होंगे कि मातम और
गिर्या-ओ-ज़ारी उन के आगे आगे भाग जाएगी।

असूरी यरूशलम का मुहासरा करते हैं

36 1 हिज़क़ियाह बादशाह की हुकूमत के 14वें
साल में असूर के बादशाह सन्हेरिब ने
यहूदाह के तमाम क़िलाबन्द शहरों पर धावा बोल
कर उन पर क़ब्ज़ा कर लिया। 2 फिर उस ने अपने
आला अफ़्सर रबशाक़ी को बड़ी फ़ौज के साथ
लकीस से यरूशलम को भेजा। यरूशलम पहुँच कर
रबशाक़ी उस नाले के पास रुक गया जो पानी को
ऊपर वाले तालाब तक पहुँचाता है (यह तालाब उस
रास्ते पर है जो धोबियों के घाट तक ले जाता है)।
3 यह देख कर महल का इंचार्ज इलियाक़ीम बिन
ख़िलक़ियाह, मीरमुन्शी शब्नाह और मुशीर-ए-ख़ास
यूआख़ बिन आसफ़ शहर से निकल कर उस से
मिलने आए। 4 रबशाक़ी ने उन के हाथ हिज़क़ियाह
को पैग़ाम भेजा,
"असूर के अज़ीम बादशाह फ़रमाते हैं, तुम्हारा
भरोसा किस चीज़ पर है? 5 तुम समझते हो कि ख़ाली
बातें करना फ़ौजी हिकमत-ए-अमली और ताक़त के
बराबर है। यह कैसी बात है? तुम किस पर एतिमाद
कर रहे हो कि मुझ से सरकश हो गए हो? 6 क्या तुम
मिस्र पर भरोसा करते हो? वह तो टूटा हुआ सरकंडा
ही है। जो भी उस पर टेक लगाए उस का हाथ वह
चीर कर ज़ख़्मी कर देगा। यही कुछ उन सब के साथ
हो जाएगा जो मिस्र के बादशाह फ़िरऔन पर भरोसा
करें! 7 शायद तुम कहो, 'हम रब अपने ख़ुदा पर
तवक्कुल करते हैं।' लेकिन यह किस तरह हो सकता
है? हिज़क़ियाह ने तो उस की बेहुरमती की है। क्यूँकि
उस ने ऊँची जगहों के मन्दिरों और क़ुर्बानगाहों को
ढा कर यहूदाह और यरूशलम से कहा है कि सिर्फ़
यरूशलम की क़ुर्बानगाह के सामने परस्तिश करें।

8 आओ, मेरे आक़ा असूर के बादशाह से सौदा करो।
मैं तुम्हें 2,000 घोड़े दूँगा बशर्तेकि तुम उन के लिए
सवार मुहय्या कर सको। लेकिन अफ़सोस, तुम्हारे
पास इतने घुड़सवार हैं ही नहीं! 9 तुम मेरे आक़ा
असूर के बादशाह के सब से छोटे अफ़सर का भी
मुक़ाबला नहीं कर सकते। लिहाज़ा मिस्र के रथों पर
भरोसा रखने का क्या फ़ाइदा? 10 शायद तुम समझते
हो कि मैं रब की मर्ज़ी के बग़ैर ही इस मुल्क पर हम्ला
करने आया हूँ ताकि सब कुछ बर्बाद करूँ। लेकिन
ऐसा हरगिज़ नहीं है! रब ने ख़ुद मुझे कहा कि इस
मुल्क पर धावा बोल कर इसे तबाह कर दे।"

11 यह सुन कर इलियाक़ीम, शब्नाह और यूआख़
ने रबशाक़ी की तक़रीर में दख़ल दे कर कहा,
"बराह-ए-करम अरामी ज़बान में अपने ख़ादिमों के
साथ गुफ़्तगु कीजिए, क्यूँकि हम यह अच्छी तरह
बोल लेते हैं। इब्रानी ज़बान इस्तेमाल न करें, वर्ना
शहर की फ़सील पर खड़े लोग आप की बातें सुन
लेंगे।" 12 लेकिन रबशाक़ी ने जवाब दिया, "क्या तुम
समझते हो कि मेरे मालिक ने यह पैग़ाम सिर्फ़ तुम्हें
और तुम्हारे मालिक को भेजा है? हरगिज़ नहीं! वह
चाहते हैं कि तमाम लोग यह बातें सुन लें। क्यूँकि
वह भी तुम्हारी तरह अपना फ़ुज़्ला खाने और अपना
पेशाब पीने पर मज्बूर हो जाएंगे।"

13 फिर वह फ़सील की तरफ़ मुड़ कर बुलन्द
आवाज़ से इब्रानी ज़बान में अवाम से मुख़ातिब हुआ,
"सुनो! शहन्शाह, असूर के बादशाह के फ़रमान पर
ध्यान दो! 14 बादशाह फ़रमाते हैं कि हिज़क़ियाह
तुम्हें धोका न दे। वह तुम्हें बचा नहीं सकता।
15 बेशक वह तुम्हें तसल्ली दिलाने की कोशिश करके
कहता है, 'रब हमें ज़रूर छुटकारा देगा, यह शहर
कभी भी असूरी बादशाह के क़ब्ज़े में नहीं आएगा।'
लेकिन इस क़िस्म की बातों से तसल्ली पा कर रब पर
भरोसा मत करना। 16 हिज़क़ियाह की बातें न मानो
बल्कि असूर के बादशाह की। क्यूँकि वह फ़रमाते हैं,
मेरे साथ सुलह करो और शहर से निकल कर मेरे पास
आ जाओ। फिर तुम में से हर एक अंगूर की अपनी
बेल और अन्जीर के अपने दरख़्त का फल खाएगा
और अपने हौज़ का पानी पिएगा। 17 फिर कुछ देर के
बाद मैं तुम्हें एक ऐसे मुल्क में ले जाऊँगा जो तुम्हारे
अपने मुल्क की मानिन्द होगा। उस में भी अनाज और
नई मै, रोटी और अंगूर के बाग़ हैं। 18 हिज़क़ियाह की
मत सुनना। जब वह कहता है, 'रब हमें बचाएगा' तो
वह तुम्हें धोका दे रहा है। क्या दीगर अक़्वाम के
देवता अपने मुल्कों को शाह-ए-असूर से बचाने के
क़ाबिल रहे हैं? 19 हमात और अर्फ़ाद के देवता कहाँ
रह गए हैं? सिफ़र्वाइम के देवता क्या कर सके? और
क्या किसी देवता ने सामरिया को मेरी गिरिफ़्त से
बचाया? 20 नहीं, कोई भी देवता अपना मुल्क मुझ
से बचा न सका। तो फिर रब यरूशलम को किस
तरह मुझ से बचाएगा?"

21 फ़सील पर खड़े लोग ख़ामोश रहे। उन्हों ने कोई
जवाब न दिया, क्यूँकि बादशाह ने हुक्म दिया था
कि जवाब में एक लफ़्ज़ भी न कहें। 22 फिर महल
का इंचार्ज इलियाक़ीम बिन ख़िलक़ियाह, मीरमुन्शी
शब्नाह और मुशीर-ए-ख़ास यूआख़ बिन आसफ़
रंजिश के मारे अपने लिबास फाड़ कर हिज़क़ियाह
के पास वापस गए। दरबार में पहुँच कर उन्हों ने
बादशाह को सब कुछ कह सुनाया जो रबशाक़ी ने
उन्हें कहा था।

रब हिज़क़ियाह को तसल्ली देता है

37 1 यह बातें सुन कर हिज़क़ियाह ने अपने
कपड़े फाड़े और टाट का मातमी लिबास
पहन कर रब के घर में गया। 2 साथ साथ उस ने
महल के इंचार्ज इलियाक़ीम, मीरमुन्शी शब्नाह और
इमामों के बुज़ुर्गों को आमूस के बेटे यसायाह नबी
के पास भेजा। सब टाट के मातमी लिबास पहने हुए
थे। 3 नबी के पास पहुँच कर उन्हों ने हिज़क़ियाह का
पैग़ाम सुनाया, "आज हम बड़ी मुसीबत में हैं। सज़ा
के इस दिन असूरियों ने हमारी सख़्त बेइज़्ज़ती की
है। हमारा हाल दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला उस औरत का
सा है जिस के पेट से बच्चा निकलने को है, लेकिन

जो इस लिए नहीं निकल सकता कि माँ की ताक़त
जाती रही है। 4 लेकिन शायद रब आप के ख़ुदा ने
रबशाक़ी की वह बातें सुनी हों जो उस के आक़ा
असूर के बादशाह ने ज़िन्दा ख़ुदा की तौहीन में भेजी
हैं। हो सकता है रब आप का ख़ुदा उस की बातें सुन
कर उसे सज़ा दे। बराह-ए-करम हमारे लिए जो अब
तक बचे हुए हैं दुआ करें।"

5 जब हिज़क़ियाह के अफ़सरों ने यसायाह को
बादशाह का पैग़ाम पहुँचाया 6 तो नबी ने जवाब दिया,
"अपने आक़ा को बता देना कि रब फ़रमाता है, 'उन
धमकियों से ख़ौफ़ मत खा जो असूरी बादशाह के
मुलाज़िमों ने मेरी इहानत करके दी हैं। 7 देख, मैं उस
का इरादा बदल दूँगा। वह अफ़्वाह सुन कर इतना
मुज़्तरिब हो जाएगा कि अपने ही मुल्क को वापस
चला जाएगा। वहाँ मैं उसे तलवार से मरवा दूँगा'।"

सन्हेरिब की धमकियाँ और हिज़क़ियाह की दुआ

8 रबशाक़ी यरूशलम को छोड़ कर असूर के
बादशाह के पास वापस चला गया जो उस वक़्त
लकीस से रवाना हो कर लिब्ना पर चढ़ाई कर रहा
था।

9 फिर सन्हेरिब को इत्तिला मिली, "एथोपिया का
बादशाह तिर्हाक़ा आप से लड़ने आ रहा है।" तब
उस ने अपने क़ासिदों को दुबारा यरूशलम भेज
दिया ताकि हिज़क़ियाह को पैग़ाम पहुँचाएँ, 10 "जिस
देवता पर तुम भरोसा रखते हो उस से फ़रेब न खाओ
जब वह कहता है कि यरूशलम असूरी बादशाह के
क़ब्ज़े में कभी नहीं आएगा। 11 तुम तो सुन चुके हो
कि असूर के बादशाहों ने जहाँ भी गए क्या कुछ
किया है। हर मुल्क को उन्हों ने मुकम्मल तौर पर
तबाह कर दिया है। तो फिर तुम किस तरह बच
जाओगे? 12 क्या जौज़ान, हारान और रसफ़ के देवता
उन की हिफ़ाज़त कर पाए? क्या मुल्क-ए-अदन में
तिलस्सार के बाशिन्दे बच सके? नहीं, कोई भी
देवता उन की मदद न कर सका जब मेरे बापदादा ने
उन्हें तबाह किया। 13 ध्यान दो, अब हमात, अर्फ़ाद,
सिफ़र्वाइम शहर, हेना और इव्वा के बादशाह कहाँ
हैं?"

14 ख़त मिलने पर हिज़क़ियाह ने उसे पढ़ लिया और
फिर रब के घर के सहन में गया। ख़त को रब के
सामने बिछा कर 15 उस ने रब से दुआ की,

16 "ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज इस्राईल के ख़ुदा जो
करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है, तू
अकेला ही दुनिया के तमाम ममालिक का ख़ुदा है। तू
ही ने आसमान-ओ-ज़मीन को ख़ल्क़ किया है। 17 ऐ
रब, मेरी सुन! अपनी आँखें खोल कर देख! सन्हेरिब
की उन तमाम बातों पर ध्यान दे जो उस ने इस मक़्सद
से हम तक पहुँचाई हैं कि ज़िन्दा ख़ुदा की इहानत
करे। 18 ऐ रब, यह बात सच है कि असूरी बादशाहों
ने इन तमाम क़ौमों को उन के मुल्कों समेत तबाह
कर दिया है। 19 वह तो उन के बुतों को आग में
फैंक कर भस्म कर सकते थे, क्यूँकि वह ज़िन्दा नहीं
बल्कि सिर्फ़ इन्सान के हाथों से बने हुए लकड़ी और
पत्थर के बुत थे। 20 ऐ रब हमारे ख़ुदा, अब मैं तुझ से
इल्तिमास करता हूँ कि हमें असूरी बादशाह के हाथ
से बचा ताकि दुनिया के तमाम ममालिक जान लें कि
तू ऐ रब, वाहिद ख़ुदा है।"

असूरी की लान-तान पर अल्लाह का जवाब

21 फिर यसायाह बिन आमूस ने हिज़क़ियाह को
पैग़ाम भेजा, "रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि
मैं ने असूरी बादशाह सन्हेरिब के बारे में तेरी दुआ
सुनी है। 22 अब रब का उस के ख़िलाफ़ फ़रमान सुन,

कुंवारी सिय्यून बेटी तुझे हक़ीर जानती है,
हाँ यरूशलम बेटी अपना सर हिला हिला कर
हिक़ारतआमेज़ नज़र से तेरे पीछे देखती है। 23 क्या
तू नहीं जानता कि किस को गालियाँ दीं और किस
की इहानत की है? क्या तुझे नहीं मालूम कि तू ने
किस के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द की है? जिस की
तरफ़ तू ग़ुरूर की नज़र से देख रहा है वह इस्राईल
का क़ुद्दूस है!

24 अपने क़ासिदों के ज़रीए तू ने रब की इहानत की
है। तू डींगें मार कर कहता है, 'मैं अपने बेशुमार रथों
से पहाड़ों की चोटियों और लुबनान की इन्तिहा तक
चढ़ गया हूँ। मैं देवदार के बड़े बड़े और जूनीपर के
बेहतरीन दरख़्तों को काट कर लुबनान की दूरतरीन
बुलन्दियों तक, उस के सब से घने जंगल तक पहुँच
गया हूँ। 25 मैं ने ग़ैरमुल्कों में कुएँ खुदवा कर उन
का पानी पी लिया है। मेरे तल्वों तले मिस्र की तमाम
नदियाँ ख़ुश्क हो गईं।'

26 ऐ असूरी बादशाह, क्या तू ने नहीं सुना कि बड़ी
देर से मैं ने यह सब कुछ मुक़र्रर किया? क़दीम ज़माने
में ही मैं ने इस का मन्सूबा बांध लिया, और अब मैं
इसे वुजूद में लाया। मेरी मर्ज़ी थी कि तू क़िलाबन्द
शहरों को ख़ाक में मिला कर पत्थर के ढेरों में बदल
दे। 27 इसी लिए उन के बाशिन्दों की ताक़त जाती
रही, वह घबराए और शर्मिन्दा हुए। वह घास की
तरह कमज़ोर थे, छत पर उगने वाली उस हरियाली
की मानिन्द जो थोड़ी देर के लिए फलती फूलती तो
है, लेकिन लू चलते वक़्त एक दम मुरझा जाती है।
28 मैं तो तुझ से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ। मुझे मालूम है कि
तू कहाँ ठहरा हुआ है, और तेरा आना जाना मुझ से
पोशीदा नहीं रहता। मुझे पता है कि तू मेरे ख़िलाफ़
कितने तैश में आ गया है। 29 तेरा तैश और ग़ुरूर देख
कर मैं तेरी नाक में नकेल और तेरे मुँह में लगाम डाल
कर तुझे उस रास्ते पर से वापस घसीट ले जाऊँगा
जिस पर से तू यहाँ आ पहुँचा है।

30 ऐ हिज़क़ियाह, मैं तुझे इस निशान से तसल्ली
दिलाऊँगा कि इस साल और आने वाले साल तुम
वह कुछ खाओगे जो खेतों में ख़ुद-ब-ख़ुद उगेगा।
लेकिन तीसरे साल तुम बीज बो कर फ़सलें काटोगे
और अंगूर के बाग़ लगा कर उन का फल खाओगे।
31 यहूदाह के बचे हुए बाशिन्दे एक बार फिर जड़
पकड़ कर फल लाएँगे। 32 क्यूँकि यरूशलम से क़ौम
का बक़िया निकल आएगा, और कोह-ए-सिय्यून का
बचा-खुचा हिस्सा दुबारा मुल्क में फैल जाएगा। रब्ब-
उल-अफ़्वाज की ग़ैरत यह कुछ सरअन्जाम देगी।

33 जहाँ तक असूरी बादशाह का ताल्लुक़ है रब
फ़रमाता है कि वह इस शहर में दाख़िल नहीं होगा।
वह एक तीर तक उस में नहीं चलाएगा। न वह ढाल
ले कर उस पर हम्ला करेगा, न शहर की फ़सील
के साथ मिट्टी का ढेर लगाएगा। 34 जिस रास्ते से
बादशाह यहाँ आया उसी रास्ते पर से वह अपने
मुल्क वापस चला जाएगा। इस शहर में वह घुसने
नहीं पाएगा। यह रब का फ़रमान है। 35 क्यूँकि मैं
अपनी और अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर इस शहर
का दिफ़ा करके उसे बचाऊँगा।"

36 उसी रात रब का फ़रिश्ता निकल आया और
असूरी लश्करगाह में से गुज़र कर 1,85,000
फ़ौजियों को मार डाला। जब लोग सुब्ह-सवेरे उठे
तो चारों तरफ़ लाशें ही लाशें नज़र आईं।

37 यह देख कर सन्हेरिब अपने ख़ैमे उखाड़ कर
अपने मुल्क वापस चला गया। नीनवा शहर पहुँच
कर वह वहाँ ठहर गया। 38 एक दिन जब वह अपने
देवता निस्रूक के मन्दिर में पूजा कर रहा था तो उस
के बेटों अद्रम्मलिक और शराज़र ने उसे तलवार से
क़त्ल कर दिया और फ़रार हो कर मुल्क-ए-अरारात
में पनाह ली। फिर उस का बेटा असर्हद्दून तख़्तनशीन
हुआ।

अल्लाह हिज़क़ियाह को शिफ़ा देता है

38 1 उन दिनों में हिज़क़ियाह इतना बीमार
हुआ कि मरने की नौबत आ पहुँची। आमूस
का बेटा यसायाह नबी उस से मिलने आया और
कहा, "रब फ़रमाता है कि अपने घर का बन्द-ओ-
बस्त कर ले, क्यूँकि तुझे मरना है। तू इस बीमारी से
शिफ़ा नहीं पाएगा।"

2 यह सुन कर हिज़क़ियाह ने अपना मुँह दीवार की
तरफ़ फेर कर दुआ की, 3 "ऐ रब, याद कर कि मैं
वफ़ादारी और ख़ुलूसदिली से तेरे सामने चलता रहा
हूँ, कि मैं वह कुछ करता आया हूँ जो तुझे पसन्द
है।" फिर वह फूट फूट कर रोने लगा।

4 तब यसायाह नबी को रब का कलाम मिला,
5 “हिज़क़ियाह के पास जा कर उसे बता देना कि
रब तेरे बाप दाऊद का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मैं ने तेरी
दुआ सुन ली और तेरे आँसू देखे हैं। मैं तेरी ज़िन्दगी
में 15 साल का इज़ाफ़ा करूँगा। 6 साथ साथ मैं तुझे
और इस शहर को असूर के बादशाह से बचा लूँगा।
मैं ही इस शहर का दिफ़ा करूँगा’।”
7 यह पैग़ाम हिज़क़ियाह को सुना कर यसायाह ने
मज़ीद कहा, “रब तुझे एक निशान देगा जिस से तू
जान लेगा कि वह अपना वादा पूरा करेगा। 8 मेरे
कहने पर आख़ज़ की बनाई हुई धूपघड़ी का साया
दस दर्जे पीछे जाएगा।” और ऐसा ही हुआ। साया
दस दर्जे पीछे हट गया।

शिफ़ा पाने पर हिज़क़ियाह का गीत

9 यहूदाह के बादशाह हिज़क़ियाह ने शिफ़ा पाने पर
ज़ैल का गीत क़लमबन्द किया,
10 “मैं बोला, क्या मुझे ज़िन्दगी के उरूज पर
पाताल के दरवाज़ों में दाख़िल होना है? बाक़ीमान्दा
साल मुझ से छीन लिए गए हैं।
11 मैं बोला, आइन्दा मैं रब को ज़िन्दों के मुल्क में
नहीं देखूँगा। अब से मैं पाताल के बाशिन्दों के साथ
रह कर इस दुनिया के लोगों पर नज़र नहीं डालूँगा।
12 मेरे घर को गल्लाबानों के ख़ैमे की तरह उतारा
गया है, वह मेरे ऊपर से छीन लिया गया है। मैं ने
अपनी ज़िन्दगी को जूलाहे की तरह इख़तिताम तक
बुन लिया है। अब उस ने मुझे काट कर ताँत के धागों
से अलग कर दिया है। एक दिन के अन्दर अन्दर तू
ने मुझे ख़त्म किया।
13 सुब्ह तक मैं चीख़ कर फ़र्याद करता रहा, लेकिन
उस ने शेरबबर की तरह मेरी तमाम हड्डियाँ तोड़ दीं।
एक दिन के अन्दर अन्दर तू ने मुझे ख़त्म किया।
14 मैं बेजान हो कर अबाबील या बुल्बुल की तरह
चीं चीं करने लगा, ग़ूँ ग़ूँ करके कबूतर की सी आहें
भरने लगा। मेरी आँखें निढाल हो कर आसमान की
तरफ़ तकती रहीं। ऐ रब, मुझ पर ज़ुल्म हो रहा है।
मेरी मदद के लिए आ!

15 लेकिन मैं क्या कहूँ? उस ने ख़ुद मुझ से
हमकलाम हो कर यह किया है। मैं तल्ख़ियों से
मग़लूब हो कर ज़िन्दगी के आख़िर तक दबी हुई
हालत में फिरूँगा।
16 ऐ रब, इन ही चीज़ों के सबब से इन्सान ज़िन्दा
रहता है, मेरी रूह की ज़िन्दगी भी इन ही पर मब्नी
है। तू मुझे बहाल करके जीने देगा।

17 यक़ीनन यह तल्ख़ तजरिबा मेरी बरकत का
बाइस बन गया। तेरी मुहब्बत ने मेरी जान को क़ब्र
से महफ़ूज़ रखा, तू ने मेरे तमाम गुनाहों को अपनी
पीठ के पीछे फैंक दिया है।
18 क्यूँकि पाताल तेरी हम्द-ओ-सना नहीं करता,
और मौत तेरी सताइश में गीत नहीं गाती, ज़मीन की
गहराइयों में उतरे हुए तेरी वफ़ादारी के इन्तिज़ार में
नहीं रहते।
19 नहीं, जो ज़िन्दा है वही तेरी तारीफ़ करता, वही
तेरी तम्जीद करता है, जिस तरह मैं आज कर रहा हूँ।
पुश्त-दर-पुश्त बाप अपने बच्चों को तेरी वफ़ादारी के
बारे में बताते हैं।
20 रब मुझे बचाने के लिए तय्यार था। आओ, हम
उम्र भर रब के घर में तारदार साज़ बजाएँ।”

इलाज का तरीक़-ए-कार

21 यसायाह ने हिदायत दी थी, “अन्जीर की टिक्की
ला कर बादशाह के नासूर पर बांध दो! तब उसे
शिफ़ा मिलेगी।” 22 पहले हिज़क़ियाह ने पूछा था,
“रब कौन सा निशान देगा जिस से मुझे यक़ीन आए
कि मैं दुबारा रब के घर की इबादत में शरीक हूँगा?”

हिज़क़ियाह से संगीन ग़लती होती है

39 1 थोड़ी देर के बाद बाबल के बादशाह
मरूदक-बलदान बिन बलदान ने

हिज़क़ियाह की बीमारी और शिफ़ा की ख़बर
सुन कर वफ़द के हाथ ख़त और तुह्फ़े भेजे।
2 हिज़क़ियाह ने ख़ुशी से वफ़द का इस्तिक़्बाल
करके उसे वह तमाम ख़ज़ाने दिखाए जो ज़ख़ीराख़ाने
में मह्फ़ूज़ रखे गए थे यानी तमाम सोना-चाँदी,
बल्सान का तेल और बाक़ी क़ीमती तेल। उस ने पूरा
अस्लिहाख़ाना और बाक़ी सब कुछ भी दिखाया जो
उस के ख़ज़ानों में था। पूरे महल और पूरे मुल्क में
कोई ख़ास चीज़ न रही जो उस ने उन्हें न दिखाई।
3 तब यसायाह नबी हिज़क़ियाह बादशाह के पास
आया और पूछा, "इन आदमियों ने क्या कहा? कहाँ
से आए हैं?" हिज़क़ियाह ने जवाब दिया, "दूरदराज़
मुल्क बाबल से मेरे पास आए हैं।" 4 यसायाह बोला,
"उन्हों ने महल में क्या कुछ देखा?" हिज़क़ियाह ने
कहा, "उन्हों ने महल में सब कुछ देख लिया है।
मेरे ख़ज़ानों में कोई चीज़ न रही जो मैं ने उन्हें नहीं
दिखाई।"
5 तब यसायाह ने कहा, "रब्ब-उल-अफ़्वाज का
फ़रमान सुनें! 6 एक दिन आने वाला है कि तेरे महल
का तमाम माल छीन लिया जाएगा। जितने भी ख़ज़ाने
तू और तेरे बापदादा ने आज तक जमा किए हैं उन
सब को दुश्मन बाबल ले जाएगा। रब फ़रमाता है
कि एक भी चीज़ पीछे नहीं रहेगी। 7 तेरे बेटों में से
भी बाज़ छीन लिए जाएंगे, ऐसे जो अब तक पैदा नहीं
हुए। तब वह ख़्वाजासरा बन कर शाह-ए-बाबल के
महल में ख़िदमत करेंगे।"
8 हिज़क़ियाह बोला, "रब का जो पैग़ाम आप ने मुझे
दिया है वह ठीक है।" क्यूँकि उस ने सोचा, "बड़ी
बात यह है कि मेरे जीते जी अम्न-ओ-अमान होगा।"

अल्लाह की क़ौम को तसल्ली

40 1 तुम्हारा रब फ़रमाता है, "तसल्ली दो, मेरी
क़ौम को तसल्ली दो! 2 नर्मी से यरूशलम से
बात करो, बुलन्द आवाज़ से उसे बताओ कि तेरी
ग़ुलामी के दिन पूरे हो गए हैं, तेरा क़ुसूर मुआफ़ हो
गया है। क्यूँकि तुझे रब के हाथ से तमाम गुनाहों की
दुगनी सज़ा मिल गई है।"
3 एक आवाज़ पुकार रही है, "रेगिस्तान में रब की
राह तय्यार करो! बयाबान में हमारे ख़ुदा का रास्ता
सीधा बनाओ। 4 लाज़िम है कि हर वादी भर दी जाए,
ज़रूरी है कि हर पहाड़ और बुलन्द जगह मैदान बन
जाए। जो टेढ़ा है उसे सीधा किया जाए, जो नाहमवार
है उसे हमवार किया जाए। 5 तब अल्लाह का जलाल
ज़ाहिर हो जाएगा, और तमाम इन्सान मिल कर उसे
देखेंगे। यह रब के अपने मुँह का फ़रमान है।"
6 एक आवाज़ ने कहा, "ज़ोर से आवाज़ दे!" मैं ने
पूछा, "मैं क्या कहूँ?" "यह कि तमाम इन्सान घास
ही हैं, उन की तमाम शान-ओ-शौकत जंगली फूल
की मानिन्द है। 7 जब रब का साँस उन पर से गुज़रे
तो घास मुरझा जाती और फूल गिर जाता है, क्यूँकि
इन्सान घास ही है। 8 घास तो मुरझा जाती और फूल
गिर जाता है, लेकिन हमारे ख़ुदा का कलाम अबद
तक क़ाइम रहता है।"
9 ऐ सिय्यून, ऐ ख़ुशख़बरी के पैग़म्बर, बुलन्दियों
पर चढ़ जा! ऐ यरूशलम, ऐ ख़ुशख़बरी के पैग़म्बर,
ज़ोर से आवाज़ दे! पुकार कर कह और ख़ौफ़ मत
खा। यहूदाह के शहरों को बता, "वह देखो, तुम्हारा
ख़ुदा!"
10 देखो, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ बड़ी क़ुदरत के
साथ आ रहा है, वह बड़ी ताक़त के साथ हुकूमत
करेगा। देखो, उस का अज्र उस के पास है, और
उस का इनआम उस के आगे आगे चलता है। 11 वह
चरवाहे की तरह अपने गल्ले की गल्लाबानी करेगा। वह
भेड़ के बच्चों को अपने बाज़ूओं में मह्फ़ूज़ रख कर
सीने के साथ लगाए फिरेगा और उन की माओं को
बड़े ध्यान से अपने साथ ले चलेगा।

अल्लाह की नाक़ाबिल-ए-बयान अज़मत

12 किस ने अपने हाथ से दुनिया का पानी नाप लिया
है? किस ने अपने हाथ से आसमान की पैमाइश
की है? किस ने ज़मीन की मिट्टी की मिक़्दार मालूम

की या तराज़ू से पहाड़ों का कुल वज़न मुतअय्यिन
किया है? 13 किस ने रब के रूह की तहक़ीक़ कर
पाई? क्या उस का कोई मुशीर है जो उसे तालीम दे?
14 क्या उसे किसी से मश्वरा लेने की ज़रूरत है ताकि
उसे समझ आ कर रास्त राह की तालीम मिल जाए?
हरगिज़ नहीं! क्या किसी ने कभी उसे इल्म-ओ-इर्फ़ान
या समझदार ज़िन्दगी गुज़ारने का फ़न सिखाया है?
हरगिज़ नहीं!

15 यक़ीनन तमाम अक़्वाम रब के नज़्दीक बाल्टी
के एक क़तरे या तराज़ू में गर्द की मानिन्द हैं। जज़ीरों
को वह रेत के ज़र्रों की तरह उठा लेता है। 16 ख़्वाह
लुबनान के तमाम दरख़्त और जानवर रब के लिए
क़ुर्बान क्यूँ न होते तो भी मुनासिब क़ुर्बानी के लिए
काफ़ी न होते। 17 उस के सामने तमाम अक़्वाम कुछ
भी नहीं हैं। उस की नज़र में वह हेच और नाचीज़ हैं।

18 अल्लाह का मुवाज़ना किस से हो सकता है? उस
का मुक़ाबला किस तस्वीर या मुजस्समे से हो सकता
है? 19 बुत तो यूँ बनता है कि पहले दस्तकार उसे
ढाल देता है, फिर सुनार उस पर सोना चढ़ा कर उसे
चाँदी की ज़न्जीरों से सजा देता है। 20 जो ग़ुर्बत के
बाइस यह नहीं करवा सकता वह कम अज़ कम कोई
ऐसी लकड़ी चुन लेता है जो गल सड़ नहीं जाती। फिर
वह किसी माहिर दस्तकार से बुत को यूँ बनवाता है
कि वह अपनी जगह से न हिले।

21 क्या तुम को मालूम नहीं? क्या तुम ने बात नहीं
सुनी? क्या तुम्हें इब्तिदा से सुनाया नहीं गया? क्या
तुम्हें दुनिया के क़ियाम से ले कर आज तक समझ
नहीं आई? 22 रब रू-ए-ज़मीन के ऊपर बुलन्दियों पर
तख़्तनशीन है जहाँ से इन्सान टिड्डियों जैसे लगते हैं।
वह आसमान को पर्दे की तरह तान कर और हर
तरफ़ खैंच कर रहने के क़ाबिल ख़ैमा बना देता है।
23 वह सरदारों को नाचीज़ और दुनिया के क़ाज़ियों
को हेच बना देता है। 24 वह नए पौदों की मानिन्द हैं
जिन की पनीरी अभी अभी लगी है, बीज अभी अभी
बोए गए हैं, पौदों ने अभी अभी जड़ पकड़ी है कि रब
उन पर फूँक मारता है और वह मुरझा जाते हैं। तब
आँधी उन्हें भूसे की तरह उड़ा ले जाती है।

25 क़ुद्दूस ख़ुदा फ़रमाता है, "तुम मेरा मुवाज़ना किस
से करना चाहते हो? कौन मेरे बराबर है?" 26 अपनी
नज़र उठा कर आसमान की तरफ़ देखो। किस ने यह
सब कुछ ख़ल्क़ किया? वह जो आसमानी लश्कर
की पूरी तादाद बाहर ला कर हर एक को नाम ले कर
बुलाता है। उस की क़ुदरत और ज़बरदस्त ताक़त
इतनी अज़ीम है कि एक भी दूर नहीं रहता।

27 ऐ याक़ूब की क़ौम, तू क्यूँ कहती है कि मेरी
राह रब की नज़र से छुपी रहती है? ऐ इस्राईल, तू
क्यूँ शिकायत करता है कि मेरा मुआमला मेरे ख़ुदा
के इल्म में नहीं आता?

28 क्या तुझे मालूम नहीं, क्या तू ने नहीं सुना कि
रब लाज़वाल ख़ुदा और दुनिया की इन्तिहा तक का
ख़ालिक़ है? वह कभी नहीं थकता, कभी निढाल
नहीं होता। कोई भी उस की समझ की गहराइयों तक
नहीं पहुँच सकता। 29 वह थकेमान्दों को ताज़गी और
बेबसों को तक़वियत देता है। 30 गो नौजवान थक
कर निढाल हो जाएँ और जवान आदमी ठोकर खा
कर गिर जाएँ, 31 लेकिन रब से उम्मीद रखने वाले
नई ताक़त पाएँगे और उक़ाब के से पर फैला कर
बुलन्दियों तक उड़ेंगे। न वह दौड़ते हुए थकेंगे, न
चलते हुए निढाल हो जाएंगे।

दुश्मन के हमले रब ही की तरफ़ से हैं

41 1 "ऐ जज़ीरो, ख़ामोश रह कर मेरी बात
सुनो! अक़्वाम अज़ सर-ए-नौ तक़वियत
पाएँ और मेरे हुज़ूर आएँ, फिर बात करें। आओ, हम
एक दूसरे से मिल कर अदालत में हाज़िर हो जाएँ!

2 कौन उस आदमी को जगा कर मशरिक़ से लाया
है जिस के दामन में इन्साफ़ है? कौन दीगर क़ौमों
को इस शख़्स के हवाले करके बादशाहों को ख़ाक
में मिलाता है? उस की तलवार से वह गर्द हो जाते हैं,
उस की कमान से लोग हवा में भूसे की तरह उड़ कर
बिखर जाते हैं। 3 वह उन का ताक़्क़ुब करके सहीह-

सलामत आगे निकलता है, भागते हुए उस के पाँओ
रास्ते को नहीं छूते। 4 किस ने यह सब कुछ किया,
किस ने यह अन्जाम दिया? उसी ने जो इब्तिदा ही से
नस्लों को बुलाता आया है। मैं, रब अव्वल हूँ, और
आख़िर में आने वालों के साथ भी मैं वही हूँ।"
5 जज़ीरे यह देख कर डर गए, दुनिया के दूरदराज़
इलाक़े काँप उठे हैं। वह क़रीब आते हुए 6 एक
दूसरे को सहारा दे कर कहते हैं, "हौसला रख!"
7 दस्तकार सुनार की हौसलाअफ़्ज़ाई करता है, और
जो बुत की नाहमवारियों को हथौड़े से ठीक करता
है वह अहरन पर काम करने वाले की हिम्मत बढ़ाता
और टाँके का मुआइना करके कहता है, "अब ठीक
है!" फिर मिल कर बुत को कीलों से मज़बूत करते
हैं ताकि हिले न।

मत डरना, क्यूँकि मैं तेरा ख़ुदा हूँ

8 "लेकिन तू मेरे ख़ादिम इस्राईल, तू फ़र्क़ है। ऐ
याक़ूब की क़ौम, मैं ने तुझे चुन लिया, और तू मेरे
दोस्त इब्राहीम की औलाद है। 9 मैं तुझे पकड़ कर
दुनिया की इन्तिहा से लाया, उस के दूरदराज़ कोनों से
बुलाया। मैं ने फ़रमाया, 'तू मेरा ख़ादिम है।' मैं ने तुझे
रद्द नहीं किया बल्कि तुझे चुन लिया है। 10 चुनाँचे मत
डर, क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ। दहशत मत खा, क्यूँकि
मैं तेरा ख़ुदा हूँ। मैं तुझे मज़बूत करता, तेरी मदद
करता, तुझे अपने दहने हाथ के इन्साफ़ से क़ाइम
रखता हूँ। 11 देख, जितने भी तेरे ख़िलाफ़ तैश में आ
गए हैं वह सब शर्मिन्दा हो जाएंगे, उन का मुँह काला
हो जाएगा। तुझ से झगड़ने वाले हेच ही साबित हो
कर हलाक हो जाएंगे। 12 तब तू अपने मुख़ालिफ़ों
का पता करेगा लेकिन उन का नाम-ओ-निशान तक
नहीं मिलेगा। तुझ से लड़ने वाले ख़त्म ही होंगे, ऐसा
ही लगेगा कि वह कभी थे नहीं। 13 क्यूँकि मैं रब तेरा
ख़ुदा हूँ। मैं तेरे दहने हाथ को पकड़ कर तुझे बताता
हूँ, 'मत डरना, मैं ही तेरी मदद करता हूँ।'
14 ऐ कीड़े याक़ूब मत डर, ऐ छोटी क़ौम इस्राईल
ख़ौफ़ मत खा। क्यूँकि मैं ही तेरी मदद करूँगा, और
जो इवज़ाना दे कर तुझे छुड़ा रहा है वह इस्राईल का
क़ुद्दूस है।" यह है रब का फ़रमान। 15 "मेरे हाथ से तू
गाहने का नया और मुतअद्दिद तेज़ नोकें रखने वाला
आला बनेगा। तब तू पहाड़ों को गाह कर रेज़ा रेज़ा
कर देगा, और पहाड़ियाँ भूसे की मानिन्द हो जाएँगी।
16 तू उन्हें उछाल उछाल कर उड़ाएगा तो हवा उन्हें
ले जाएगी, आँधी उन्हें दूर तक बिखेर देगी। लेकिन
तू रब की ख़ुशी मनाएगा और इस्राईल के क़ुद्दूस पर
फ़ख़र करेगा।

अल्लाह रेगिस्तान में पानी मुहय्या करता है

17 ग़रीब और ज़रूरतमन्द पानी की तलाश में हैं,
लेकिन बेफ़ाइदा, उन की ज़बानें प्यास के मारे ख़ुश्क
हो गई हैं। लेकिन मैं, रब उन की सुनूँगा, मैं जो
इस्राईल का ख़ुदा हूँ उन्हें तर्क नहीं करूँगा। 18 मैं
बंजर बुलन्दियों पर नदियाँ जारी करूँगा और वादियों
में चश्मे फूटने दूँगा। मैं रेगिस्तान को जोहड़ में और
सूखी सूखी ज़मीन को पानी के सोतों में बदल दूँगा।
19 मेरे हाथ से रेगिस्तान में देवदार, कीकर, मेहंदी
और ज़ैतून के दरख़्त लगेंगे, बयाबान में जूनीपर,
सनोबर और सर्व के दरख़्त मिल कर उगेंगे। 20 मैं
यह इस लिए करूँगा कि लोग ध्यान दे कर जान लें
कि रब के हाथ ने यह सब कुछ किया है, कि इस्राईल
के क़ुद्दूस ने यह पैदा किया है।"

देवता बेकार हैं

21 रब जो याक़ूब का बादशाह है फ़रमाता है,
"आओ, अदालत में अपना मुआमला पेश करो,
अपने दलाइल बयान करो। 22 आओ, अपने बुतों को
ले आओ ताकि वह हमें बताएँ कि क्या क्या पेश
आना है। माज़ी में क्या क्या हुआ? बताओ, ताकि
हम ध्यान दें। या हमें मुस्तक़बिल की बातें सुनाओ,
23 वह कुछ जो आने वाले दिनों में होगा, ताकि हमें
मालूम हो जाए कि तुम देवता हो। कम अज़ कम
कुछ न कुछ करो, ख़्वाह अच्छा हो या बुरा, ताकि
हम घबरा कर डर जाएँ। 24 तुम तो कुछ भी नहीं हो,

और तुम्हारा काम भी बेकार है। जो तुम्हें चुन लेता है
वह क़ाबिल-ए-घिन है।
25 अब मैं ने शिमाल से एक आदमी को जगा दिया
है, और वह मेरा नाम ले कर मशरिक़ से आ रहा है।
यह शख़्स हुक्मरानों को मिट्टी की तरह कुचल देता
है, उन्हें गारे को नर्म करने वाले कुम्हार की तरह रौंद
देता है। 26 किस ने इब्तिदा से इस का एलान किया
ताकि हमें इल्म हो? किस ने पहले से इस की पेशगोई
की ताकि हम कहें, 'उस ने बिलकुल सहीह कहा है'?
कोई नहीं था जिस ने पहले से इस का एलान करके
इस की पेशगोई की। कोई नहीं था जिस ने तुम्हारे
मुँह से इस के बारे में एक लफ़्ज़ भी सुना। 27 किस ने
सिय्यून को पहले बता दिया, 'वह देखो, तेरा सहारा
आने को है!' मैं ही ने यह फ़रमाया, मैं ही ने यरूशलम
को ख़ुशख़बरी का पैग़म्बर अता किया।
28 लेकिन जब मैं अपने इर्दगिर्द देखता हूँ तो कोई
नहीं है जो मुझे मश्वरा दे, कोई नहीं जो मेरे सवाल का
जवाब दे। 29 देखो, यह सब धोका ही धोका हैं। उन
के काम हेच और उन के ढाले हुए मुजस्समे ख़ाली
हवा ही हैं।

अल्लाह का पैग़म्बर अक़्वाम के लिए मशअल-ए-राह है

42 1 देखो, मेरा ख़ादिम जिसे मैं क़ाइम रखता
हूँ, मेरा बर्गुज़ीदा जो मुझे पसन्द है। मैं अपने
रूह को उस पर डालूँगा, और वह अक़्वाम में इन्साफ़
क़ाइम करेगा। 2 वह न तो चीख़ेगा, न चिल्लाएगा,
गलियों में उस की आवाज़ सुनाई नहीं देगी। 3 न वह
कुचले हुए सरकंडे को तोड़ेगा, न बुझती हुई बत्ती को
बुझाएगा। वफ़ादारी से वह इन्साफ़ क़ाइम करेगा।
4 और जब तक उस ने दुनिया में इन्साफ़ क़ाइम न
कर लिया हो तब तक न उस की बत्ती बुझेगी, न उसे
कुचला जाएगा। जज़ीरे उस की हिदायत से उम्मीद
रखेंगे।"
5 रब ख़ुदा ने आसमान को ख़ल्क़ करके ख़ैमे की
तरह ज़मीन के ऊपर तान लिया। उसी ने ज़मीन को
और जो कुछ उस में से फूट निकलता है तश्कील
दिया, और उसी ने रू-ए-ज़मीन पर बसने और चलने
वालों में दम फूँक कर जान डाली। अब यही ख़ुदा
अपने ख़ादिम से फ़रमाता है, 6 "मैं, रब ने इन्साफ़
से तुझे बुलाया है। मैं तेरे हाथ को पकड़ कर तुझे
महफ़ूज़ रखूँगा। क्यूँकि मैं तुझे क़ौम का अह्द और
दीगर अक़्वाम की रौशनी बना दूँगा 7 ताकि तू अंधों
की आँखें खोले, क़ैदियों को कोठड़ी से रिहा करे
और तारीकी की क़ैद में बसने वालों को छुटकारा दे।
8 मैं रब हूँ, यही मेरा नाम है! मैं बर्दाश्त नहीं करूँगा
कि जो जलाल मुझे मिलना है वह किसी और को
दे दिया जाए, कि लोग बुतों की तम्जीद करें जबकि
उन्हें मेरी तम्जीद करनी चाहिए। 9 देखो, जिस की भी
पेशगोई मैं ने की थी वह वुक़ू में आया है। अब मैं
नई बातों का एलान करता हूँ। इस से पहले कि वह
वुजूद में आएँ मैं उन्हें तुम्हें सुना देता हूँ।"

रब की तम्जीद में गीत गाओ!

10 रब की तम्जीद में गीत गाओ, दुनिया की इन्तिहा
तक उस की मद्हसराई करो! ऐ समुन्दर के मुसाफ़िरो
और जो कुछ उस में है, उस की सताइश करो! ऐ
जज़ीरो, अपने बाशिन्दों समेत उस की तारीफ़ करो!
11 बयाबान और उस के क़स्बे ख़ुशी के नारे लगाएँ,
जिन आबादियों में क़ीदार बसता है वह शादमान
हों। सिला के बाशिन्दे बाग़ बाग़ हो कर पहाड़ों की
चोटियों पर ज़ोर से शादियाना बजाएँ। 12 सब रब को
जलाल दें और जज़ीरों तक उस की तारीफ़ फैलाएँ।
13 रब सूरमे की तरह लड़ने के लिए निकलेगा,
फ़ौजी की तरह जोश में आएगा और जंग के नारे लगा
लगा कर अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आएगा।
14 वह फ़रमाता है, "मैं बड़ी देर से ख़ामोश रहा
हूँ। मैं चुप रहा और अपने आप को रोकता रहा।
लेकिन अब मैं दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह
कराहता हूँ। मेरा साँस फूल जाता और मैं बेताबी
से हाँपता रहता हूँ। 15 मैं पहाड़ों और पहाड़ियों को
तबाह करके उन की तमाम हरियाली झुलसा दूँगा।

दरया ख़ुश्क ज़मीन बन जाएंगे, और जोहड़ सूख
जाएंगे। 16 मैं अंधों को ऐसी राहों पर ले चलूँगा जिन
से वह वाक़िफ़ नहीं होंगे, ग़ैरमानूस रास्तों पर उन की
राहनुमाई करूँगा। उन के आगे मैं अंधेरे को रौशन
और नाहमवार ज़मीन को हमवार करूँगा। यह सब
कुछ मैं सरअन्जाम दूँगा, एक बात भी अधूरी नहीं
रह जाएगी।
17 लेकिन जो बुतों पर भरोसा रख कर उन से कहते
हैं, 'तुम हमारे देवता हो' वह सख़्त शर्म खा कर पीछे
हट जाएंगे।

सज़ा का सबब अंधापन है

18 ऐ बहरो, सुनो! ऐ अंधो, नज़र उठाओ ताकि देख
सको! 19 कौन मेरे ख़ादिम जैसा अंधा है? कौन मेरे
पैग़म्बर जैसा बहरा है, उस जैसा जिसे मैं भेज रहा
हूँ? गो मैं ने उस के साथ अह्द बांधा तो भी रब के
ख़ादिम जैसा अंधा और नाबीना कोई नहीं है। 20 गो
तू ने बहुत कुछ देखा है तू ने तवज्जुह नहीं दी, गो तेरे
कान हर बात सुन लेते हैं तू सुनता नहीं।" 21 रब ने
अपनी रास्ती की ख़ातिर अपनी शरीअत की अज़मत
और जलाल को बढ़ाया है, क्यूँकि यह उस की मर्ज़ी
थी। 22 लेकिन अब उस की क़ौम को ग़ारत किया
गया, सब कुछ लूट लिया गया है। सब के सब गढ़ों
में जकड़े या जेलों में छुपाए हुए हैं। वह लूट का माल
बन गए हैं, और कोई नहीं है जो उन्हें बचाए। उन्हें
छीन लिया गया है, और कोई नहीं है जो कहे, "उन्हें
वापस करो!"
23 काश तुम में से कोई ध्यान दे, कोई आइन्दा के
लिए तवज्जुह दे। 24 सोच लो! किस ने इजाज़त दी
कि याक़ूब की औलाद को ग़ारत किया जाए? किस
ने इस्राईल को लुटेरों के हवाले कर दिया? क्या यह
रब की तरफ़ से नहीं हुआ, जिस के ख़िलाफ़ हम ने
गुनाह किया है? लोग तो उस की राहों पर चलना ही
नहीं चाहते थे, वह उस की शरीअत के ताबे रहने के
लिए तय्यार ही न थे। 25 इसी वजह से उस ने उन पर
अपना सख़्त ग़ज़ब नाज़िल किया, उन्हें शदीद जंग
की ज़द में आने दिया। लेकिन अफ़सोस, गो आग ने
क़ौम को घेर कर झुलसा दिया ताहम उसे समझ नहीं
आई, गो वह भस्म हुई तो भी उस ने दिल से सबक़
नहीं सीखा।

रब क़ौम को वतन में वापस लाएगा

43 1 लेकिन अब रब जिस ने तुझे ऐ याक़ूब
ख़ल्क़ किया और तुझे ऐ इस्राईल तश्कील
दिया फ़रमाता है, "ख़ौफ़ मत खा, क्यूँकि मैं ने
इवज़ाना दे कर तुझे छुड़ाया है, मैं ने तेरा नाम ले कर
तुझे बुलाया है, तू मेरा ही है। 2 पानी की गहराइयों में
से गुज़रते वक़्त मैं तेरे साथ हूँगा, दरयाओं को पार
करते वक़्त तू नहीं डूबेगा। आग में से गुज़रते वक़्त
न तू झुलस जाएगा, न शोलों से भस्म हो जाएगा।
3 क्यूँकि मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ, मैं इस्राईल का क़ुद्दूस
और तेरा नजातदहिन्दा हूँ। तुझे छुड़ाने के लिए मैं
इवज़ाना के तौर पर मिस्र देता, तेरी जगह एथोपिया
और सिबा अदा करता हूँ। 4 तू मेरी नज़र में क़ीमती
और अज़ीज़ है, तू मुझे प्यारा है, इस लिए मैं तेरे बदले
में लोग और तेरी जान के इवज़ क़ौमें अदा करता हूँ।
5 चुनाँचे मत डरना, क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं तेरी
औलाद को मशरिक़ और मग़रिब से जमा करके
वापस लाऊँगा। 6 शिमाल को मैं हुक्म दूँगा, 'मुझे
दो!' और जुनूब को, 'उन्हें मत रोकना!' मेरे बेटे-
बेटियों को दुनिया की इन्तिहा से वापस ले आओ,
7 उन सब को जो मेरा नाम रखते हैं और जिन्हें मैं ने
अपने जलाल की ख़ातिर ख़ल्क़ किया, जिन्हें मैं ने
तश्कील दे कर बनाया है।"
8 उस क़ौम को निकाल लाओ जो आँखें रखने के
बावुजूद देख नहीं सकती, जो कान रखने के बावुजूद
सुन नहीं सकती। 9 तमाम ग़ैरक़ौमें जमा हो जाएँ,
तमाम उम्मतें इकट्ठी हो जाएँ। उन में से कौन इस
की पेशगोई कर सकता, कौन माज़ी की बातें सुना
सकता है? वह अपने गवाहों को पेश करें जो उन्हें
दुरुस्त साबित करें, ताकि लोग सुन कर कहें, "उन
की बात बिलकुल सहीह है।" 10 लेकिन रब फ़रमाता

है, “ऐ इस्राईली क़ौम, तुम ही मेरे गवाह हो, तुम ही
मेरे ख़ादिम हो जिसे मैं ने चुन लिया ताकि तुम जान
लो, मुझ पर ईमान लाओ और पहचान लो कि मैं
ही हूँ। न मुझ से पहले कोई ख़ुदा वुजूद में आया,
न मेरे बाद कोई आएगा। 11 मैं, सिर्फ़ मैं रब हूँ, और
मेरे सिवा कोई और नजातदहिन्दा नहीं है। 12 मैं ही
ने इस का एलान करके तुम्हें छुटकारा दिया, मैं ही
तुम्हें अपना कलाम पहुँचाता रहा। और यह तुम्हारे
दरमियान के किसी अजनबी माबूद से कभी नहीं हुआ
बल्कि सिर्फ़ मुझ ही से। तुम ही मेरे गवाह हो कि मैं
ही ख़ुदा हूँ।” यह रब का फ़रमान है। 13 “अज़ल से
मैं वही हूँ। कोई नहीं है जो मेरे हाथ से छुड़ा सके।
जब मैं कुछ अमल में लाता हूँ तो कौन इसे बदल
सकता है?”

14 रब जो तुम्हारा छुड़ाने वाला और इस्राईल का
क़ुद्दूस है फ़रमाता है, “तुम्हारी ख़ातिर मैं बाबल के
ख़िलाफ़ फ़ौज भेज कर तमाम कुंडे तुड़वा दूँगा। तब
बाबल की शादमानी गिर्या-ओ-ज़ारी में बदल जाएगी।
15 मैं रब हूँ, तुम्हारा क़ुद्दूस जो इस्राईल का ख़ालिक़
और तुम्हारा बादशाह है।”

16 रब फ़रमाता है, “मैं ही ने समुन्दर में से गुज़रने
की राह और गहरे पानी में से रास्ता बना दिया।
17 मेरे कहने पर मिस्र की फ़ौज अपने सूरमाओं, रथों
और घोड़ों समेत लड़ने के लिए निकल आई। अब
वह मिल कर समुन्दर की तह में पड़े हुए हैं और
दुबारा कभी नहीं उठेंगे। वह बत्ती की तरह बुझ
गए। 18 लेकिन माज़ी की बातें छोड़ दो, जो कुछ
गुज़र गया है उस पर ध्यान न दो। 19 क्यूँकि देखो,
मैं एक नया काम वुजूद में ला रहा हूँ जो अभी फूट
निकलने को है। क्या यह तुम्हें नज़र नहीं आ रहा?
मैं रेगिस्तान में रास्ता और बयाबान में नहरें बना
रहा हूँ। 20 जंगली जानवर, गीदड़ और उक़ाबी उल्लू
मेरा एहतिराम करेंगे, क्यूँकि मैं रेगिस्तान में पानी
मुहय्या करूँगा, बयाबान में नहरें बनाऊँगा ताकि
अपनी बर्गुज़ीदा क़ौम को पानी पिलाऊँ। 21 जो क़ौम
मैं ने अपने लिए तश्कील दी है वह मेरे काम सुना कर
मेरी तम्जीद करे।

रब इस्राईल के गुनाहों से तंग आ गया है

22 ऐ याक़ूब की औलाद, ऐ इस्राईल, बात यह नहीं
कि तू ने मुझ से फ़र्याद की, कि तू मेरी मर्ज़ी दरयाफ़्त
करने के लिए कोशाँ रहा। 23 क्यूँकि न तू ने मेरे लिए
अपनी भेड़-बकरियाँ भस्म कीं, न अपनी ज़बह की
क़ुर्बानियों से मेरा एहतिराम किया। न मैं ने ग़ल्ला की
नज़रों से तुझ पर बोझ डाला, न बख़ूर की क़ुर्बानी से
तंग किया। 24 तू ने न मेरे लिए क़ीमती मसाला ख़रीदा,
न मुझे अपनी क़ुर्बानियों की चर्बी से ख़ुश किया। इस
के बरअक्स तू ने अपने गुनाहों से मुझ पर बोझ डाला
और अपनी बुरी हरकतों से मुझे तंग किया। 25 ताहम
मैं, हाँ मैं ही अपनी ख़ातिर तेरे जराइम को मिटा देता
और तेरे गुनाहों को ज़हन से निकाल देता हूँ।

26 जा, कचहरी में मेरे ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दाइर कर!
आ, हम दोनों अदालत में हाज़िर हो जाएँ! अपना
मुआमला पेश कर ताकि तू बेक़ुसूर साबित हो।
27 शुरू में तेरे ख़ानदान के बानी ने गुनाह किया, और
उस वक़्त से ले कर आज तक तेरे नुमाइन्दे मुझ से
बेवफ़ा होते आए हैं। 28 इस लिए मैं मक़्दिस के बुज़ुर्गों
को यूँ रुसवा करूँगा कि उन की मुक़द्दस हालत जाती
रहेगी, मैं याक़ूब की औलाद इस्राईल को मुकम्मल
तबाही और लान-तान के लिए मख़्सूस करूँगा।

रब की क़ौम के लिए नई ज़िन्दगी

44 1 लेकिन अब सुन, ऐ याक़ूब मेरे ख़ादिम!
मेरी बात पर तवज्जुह दे, ऐ इस्राईल जिसे
मैं ने चुन लिया है। 2 रब जिस ने तुझे बनाया और
माँ के पेट से ही तश्कील दे कर तेरी मदद करता
आया है वह फ़रमाता है, ‘ऐ याक़ूब मेरे ख़ादिम,
मत डर! ऐ यसूरून जिसे मैं ने चुन लिया है, ख़ौफ़
न खा। 3 क्यूँकि मैं प्यासी ज़मीन पर पानी डालूँगा
और ख़ुश्की पर नदियाँ बहने दूँगा। मैं अपना रूह
तेरी औलाद पर नाज़िल करूँगा, अपनी बरकत तेरे

बच्चों को बख़्शूँगा। 4 तब वह पानी के दरमियान की
हरियाली की तरह फूट निकलेंगे, नहरों पर सफ़ेदा के
दरख़्तों की तरह फलें फूलेंगे।'
5 एक कहेगा, 'मैं रब का हूँ,' दूसरा याक़ूब का नाम
ले कर पुकारेगा और तीसरा अपने हाथ पर 'रब का
बन्दा' लिख कर इस्राईल का एज़ाज़ी नाम रखेगा।"
6 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का बादशाह और
छुड़ाने वाला है फ़रमाता है, "मैं अव्वल और आख़िर
हूँ। मेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। 7 कौन मेरी
मानिन्द है? वह आवाज़ दे कर बताए और अपने
दलाइल पेश करे। वह तर्तीब से सब कुछ सुनाए जो
उस क़दीम वक़्त से हुआ है जब मैं ने अपनी क़ौम
को क़ाइम किया। वह आने वाली बातों का एलान
करके बताए कि आइन्दा क्या कुछ पेश आएगा।
8 घबरा कर दहशतज़दा न हो। क्या मैं ने बहुत
देर पहले तुझे इत्तिला नहीं दी थी कि यह कुछ पेश
आएगा? तुम ख़ुद मेरे गवाह हो। क्या मेरे सिवा कोई
और ख़ुदा है? हरगिज़ नहीं! और कोई चटान नहीं है,
मैं किसी और को नहीं जानता।"

ख़ुदसाख़्ता देवता

9 बुत बनाने वाले सब हेच ही हैं, और जो चीज़ें उन्हें
प्यारी लगती हैं वह बेफ़ाइदा हैं। उन के गवाह न देख
और न जान सकते हैं, लिहाज़ा आख़िरकार शर्मिन्दा
हो जाएंगे।
10 यह किस तरह के लोग हैं जो अपने लिए देवता
बनाते और बेफ़ाइदा बुत ढाल लेते हैं? 11 उन के
तमाम साथी शर्मिन्दा हो जाएंगे। आख़िर बुत बनाने
वाले इन्सान ही तो हैं। आओ, वह सब जमा हो कर
ख़ुदा के हुज़ूर खड़े हो जाएँ। क्यूँकि वह दहशत खा
कर सख़्त शर्मिन्दा हो जाएंगे।
12 लोहार औज़ार ले कर उसे जलते हुए कोएलों में
इस्तेमाल करता है। फिर वह अपने हथौड़े से ठोंक
ठोंक कर बुत को तश्कील देता है। पूरे ज़ोर से काम
करते करते वह ताक़त के जवाब देने तक भूका हो
जाता, पानी न पीने की वजह से निढाल हो जाता है।
13 जब बुत को लकड़ी से बनाना है तो कारीगर फ़ीते
से नाप कर पैन्सिल से लकड़ी पर ख़ाका खैंचता है।
परकार भी काम आ जाता है। फिर कारीगर लकड़ी
को छुरी से तराश तराश कर आदमी की शक्ल बनाता
है। यूँ शानदार आदमी का मुजस्समा किसी के घर में
लगने के लिए तय्यार हो जाता है।
14 कारीगर बुत बनाने के लिए देवदार का दरख़्त
काट लेता है। कभी कभी वह बलूत या किसी और
क़िस्म का दरख़्त चुन कर उसे जंगल के दीगर दरख़्तों
के बीच में उगने देता है। या वह सनोबर [r]का दरख़्त
लगाता है, और बारिश उसे फलने फूलने देती है।
15 ध्यान दो कि इन्सान लकड़ी को ईंधन के लिए
भी इस्तेमाल करता, कुछ ले कर आग तापता, कुछ
जला कर रोटी पकाता है। बाक़ी हिस्से से वह बुत
बना कर उसे सिज्दा करता, देवता का मुजस्समा
तय्यार करके उस के सामने झुक जाता है। 16 वह
लकड़ी का आधा हिस्सा जला कर उस पर अपना
गोश्त भूनता, फिर जी भर कर खाना खाता है। साथ
साथ वह आग सेंक कर कहता है, "वाह, आग की
गर्मी कितनी अच्छी लग रही है, अब गर्मी महसूस हो
रही है।" 17 लेकिन बाक़ी लकड़ी से वह अपने लिए
देवता का बुत बनाता है जिस के सामने वह झुक कर
पूजा करता है। उस से वह इल्तिमास करता है, "मुझे
बचा, क्यूँकि तू मेरा देवता है।"
18 यह लोग कुछ नहीं जानते, कुछ नहीं समझते।
उन की आँखों और दिलों पर पर्दा पड़ा है, इस लिए
न वह देख सकते, न समझ सकते हैं। 19 वह इस पर
ग़ौर नहीं करते, उन्हें फ़हम और समझ तक नहीं कि
सोचें, "मैं ने लकड़ी का आधा हिस्सा आग में झोंक
कर उस के कोएलों पर रोटी पकाई और गोश्त भून
लिया। यह चीज़ें खाने के बाद मैं बाक़ी लकड़ी से
क़ाबिल-ए-घिन बुत क्यूँ बनाऊँ, लकड़ी के टुकड़े के

---

[r]शायद इब्रानी लफ़्ज़ से मुराद सनोबर नहीं बल्कि laurel हो, एक छोटा सदाबहार काफ़ूरी दरख़्त।

सामने क्यूँ झुक जाऊँ?” 20 जो यूँ राख में मुलव्वस
हो जाए उस ने धोका खाया, उस के दिल ने उसे फ़रेब
दिया है। वह अपनी जान छुड़ा कर नहीं मान सकता
कि जो बुत मैं दहने हाथ में थामे हुए हूँ वह झूट है।

रब अपनी क़ौम को आज़ाद करता है

21 “ऐ याक़ूब की औलाद, ऐ इस्राईल, याद रख कि
तू मेरा ख़ादिम है। मैं ने तुझे तश्कील दिया, तू मेरा
ही ख़ादिम है। ऐ इस्राईल, मैं तुझे कभी नहीं भूलूँगा।
22 मैं ने तेरे जराइम और गुनाहों को मिटा डाला है,
वह धूप में धुन्द या तेज़ हवा से बिखरे बादलों की
तरह ओझल हो गए हैं। अब मेरे पास वापस आ,
क्यूँकि मैं ने इवज़ाना दे कर तुझे छुड़ाया है।”
23 ऐ आसमान, ख़ुशी के नारे लगा, क्यूँकि रब ने
सब कुछ किया है। ऐ ज़मीन की गहराइयो, शादियाना
बजाओ! ऐ पहाड़ो और जंगलो, अपने तमाम दरख़्तों
समेत ख़ुशी के गीत गाओ, क्यूँकि रब ने इवज़ाना दे
कर याक़ूब को छुड़ाया है, इस्राईल में उस ने अपना
जलाल ज़ाहिर किया है।
24 रब तेरा छुड़ाने वाला जिस ने तुझे माँ के पेट से ही
तश्कील दिया फ़रमाता है, “मैं रब हूँ। मैं ही सब कुछ
वुजूद में लाया, मैं ने अकेले ही आसमान को ज़मीन
के ऊपर तान लिया और ज़मीन को बिछाया। 25 मैं
ही क़िस्मत का हाल बताने वालों के अजीब-ओ-
ग़रीब निशान नाकाम होने देता, फ़ाल खोलने वालों
को अहमक़ साबित करता और दानाओं को पीछे
हटा कर उन के इल्म की हमाक़त ज़ाहिर करता हूँ।
26 मैं ही अपने ख़ादिम का कलाम पूरा होने देता और
अपने पैग़म्बरों का मन्सूबा तक्मील तक पहुँचाता हूँ,
मैं ही यरूशलम के बारे में फ़रमाता हूँ, ‘वह दुबारा
आबाद हो जाएगा,’ और यहूदाह के शहरों के बारे में,
‘वह नए सिरे से तामीर हो जाएंगे, मैं उन के खंडरात
दुबारा खड़े करूँगा।’ 27 मैं ही गहरे समुन्दर को हुक्म
देता हूँ, ‘सूख जा, मैं तेरी गहराइयों को ख़ुश्क करता
हूँ।’ 28 और मैं ही ने ख़ोरस के बारे में फ़रमाया, ‘यह
मेरा गल्लाबान है! यही मेरी मर्ज़ी पूरी करके कहेगा कि
यरूशलम दुबारा तामीर किया जाए, रब के घर की
बुन्याद नए सिरे से रखी जाए’!”

ख़ोरस रब का आला-ए-कार है

45 1 रब अपने मसह किए हुए ख़ादिम ख़ोरस
से फ़रमाता है, “मैं ने तेरे दहने हाथ को
पकड़ लिया है, इस लिए जहाँ भी तू जाए वहाँ क़ौमें
तेरे ताबे हो जाएँगी, बादशाहों की ताक़त जाती रहेगी,
दरवाज़े खुल जाएंगे और शहर के दरवाज़े बन्द नहीं
रहेंगे। 2 मैं ख़ुद तेरे आगे आगे जा कर क़िलाबन्दियों
को ज़मीनबोस कर दूँगा। मैं पीतल के दरवाज़े टुकड़े
टुकड़े करके तमाम कुंडे तुड़वा दूँगा। 3 मैं तुझे अंधेरे
में छुपे ख़ज़ाने और पोशीदा माल-ओ-दौलत अता
करूँगा ताकि तू जान ले कि मैं रब हूँ जो तेरा नाम
ले कर तुझे बुलाता है, कि मैं इस्राईल का ख़ुदा हूँ।
4 गो तू मुझे नहीं जानता था, लेकिन अपने ख़ादिम
याक़ूब की ख़ातिर मैं ने तेरा नाम ले कर तुझे बुलाया,
अपने बर्गुज़ीदा इस्राईल के वास्ते तुझे एज़ाज़ी नाम
से नवाज़ा है।
5 मैं ही रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं
है। गो तू मुझे नहीं जानता था तो भी मैं तुझे कमरबस्ता
करता हूँ 6 ताकि मशरिक़ से मग़रिब तक इन्सान जान
लें कि मेरे सिवा कोई और नहीं है। मैं ही रब हूँ,
और मेरे सिवा कोई और नहीं है। 7 मैं ही रौशनी को
तश्कील देता और अंधेरे को वुजूद में लाता हूँ, मैं ही
अच्छे और बुरे हालात पैदा करता, मैं रब ही यह सब
कुछ करता हूँ। 8 ऐ आसमान, रास्ती की बूँदा-बाँदी
से ज़मीन को तर-ओ-ताज़ा कर! ऐ बादलो, सदाक़त
बरसाओ! ज़मीन खुल कर नजात का फल लाए और
रास्ती का पौदा फूटने दे। मैं रब ही उसे वुजूद में लाया
हूँ।”

अपने ख़ालिक़ पर इल्ज़ाम लगाने वाले पर अफ़्सोस

9 उस पर अफ़्सोस जो अपने ख़ालिक़ से झगड़ा
करता है, गो वह मिट्टी के टूटे-फूटे बर्तनों का ठीकरा
ही है। क्या गारा कुम्हार से पूछता है, “तू क्या बना

रहा है?” क्या तेरी बनाई हुई कोई चीज़ तेरे बारे में
शिकायत करती है, “उस की कोई ताक़त नहीं”?
10 उस पर अफ़सोस जो बाप से सवाल करे, “तू क्यूँ
बाप बन रहा है?” या औरत से, “तू क्यूँ बच्चा जन्म
दे रही है?”
11 रब जो इस्राईल का क़ुद्दूस और उसे तश्कील देने
वाला है फ़रमाता है, “तुम किस तरह मेरे बच्चों के बारे
में मेरी पूछगछ कर सकते हो? जो कुछ मेरे हाथों ने
बनाया उस के बारे में तुम कैसे मुझे हुक्म दे सकते
हो? 12 मैं ही ने ज़मीन को बना कर इन्सान को उस
पर ख़ल्क़ किया। मेरे अपने हाथों ने आसमान को
ख़ैमे की तरह उस के ऊपर तान लिया और मैं ही ने
उस के सितारों के पूरे लश्कर को तर्तीब दिया। 13 मैं
ही ने ख़ोरस को इन्साफ़ से जगा दिया, और मैं ही
उस के तमाम रास्ते सीधे बना देता हूँ। वह मेरे शहर
को नए सिरे से तामीर करेगा और मेरे जिलावतनों को
आज़ाद करेगा। और यह सब कुछ मुफ़्त में होगा, न
वह पैसे लेगा, न तुह्फ़े।” यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का
फ़रमान है।

रब वाहिद ख़ुदा है

14 रब फ़रमाता है, “मिस्र की दौलत, एथोपिया का
तिजारती माल और सिबा के दराज़क़द अफ़राद तेरे
मातहत हो कर तेरी मिलकियत बन जाएंगे। वह तेरे
पीछे चलेंगे, ज़न्जीरों में जकड़े तेरे ताबे हो जाएंगे।
तेरे सामने झुक कर वह इल्तिमास करके कहेंगे,
‘यक़ीनन अल्लाह तेरे साथ है। उस के सिवा कोई
और ख़ुदा है नहीं’।” 15 ऐ इस्राईल के ख़ुदा और
नजातदहिन्दा, यक़ीनन तू अपने आप को छुपाए
रखने वाला ख़ुदा है। 16 बुत बनाने वाले सब शर्मिन्दा
हो जाएंगे। उन के मुँह काले हो जाएंगे, और वह मिल
कर शर्मसार हालत में चले जाएंगे। 17 लेकिन इस्राईल
को छुटकारा मिलेगा, रब उसे अबदी नजात देगा।
तब तुम्हारी रुस्वाई कभी नहीं होगी, तुम हमेशा तक
शर्मिन्दा होने से मह्फ़ूज़ रहोगे।
18 क्यूँकि रब फ़रमाता है, “मैं ही रब हूँ, और मेरे
सिवा कोई और नहीं है! जो यह फ़रमाता है वह ख़ुदा
है, जिस ने आसमान को ख़ल्क़ किया और ज़मीन को
तश्कील दे कर मह्फ़ूज़ बुन्याद पर रखा। और ज़मीन
सुन्सान बयाबान न रही बल्कि उस ने उसे बसने के
क़ाबिल बना दिया ताकि जानदार उस में रह सकें।
19 मैं ने पोशीदगी में या दुनिया के किसी तारीक कोने
से बात नहीं की। मैं ने याक़ूब की औलाद से यह भी
नहीं कहा, ‘बेशक मुझे तलाश करो, लेकिन तुम मुझे
नहीं पाओगे।’ नहीं, मैं रब ही हूँ, जो इन्साफ़ बयान
करता, सच्चाई का एलान करता है।
20 तुम जो दीगर अक़्वाम से बच निकले हो आओ,
जमा हो जाओ। मिल कर मेरे हुज़ूर हाज़िर हो जाओ!
जो लकड़ी के बुत उठा कर अपने साथ लिए फिरते
हैं वह कुछ नहीं जानते! जो देवता छुटकारा नहीं दे
सकते उन से वह क्यूँ इल्तिजा करते हैं? 21 आओ,
अपना मुआमला सुनाओ, अपने दलाइल पेश करो!
बेशक पहले एक दूसरे से मश्वरा करो। किस ने बड़ी
देर पहले यह कुछ सुनाया था? क्या मैं, रब ने तवील
अर्सा पहले इस का एलान नहीं किया था? क्यूँकि
मेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। मैं रास्त ख़ुदा और
नजातदहिन्दा हूँ। मेरे सिवा कोई और नहीं है।
22 ऐ ज़मीन की इन्तिहाओ, सब मेरी तरफ़ रुजू
करके नजात पाओ! क्यूँकि मैं ही ख़ुदा हूँ, मेरे सिवा
कोई और नहीं है। 23 मैं ने अपने नाम की क़सम खा
कर फ़रमाया है, और मेरा फ़रमान रास्त है, वह कभी
मन्सूख़ नहीं होगा। फ़रमान यह है कि मेरे सामने हर
घुटना झुकेगा और हर ज़बान मेरी क़सम खा कर
24 कहेगी, ‘रब ही रास्ती और क़ुव्वत का मम्बा है’!”
जो पहले तैश में आ कर रब की मुख़ालफ़त
करते थे वह भी सब शर्मिन्दा हो कर उस के हुज़ूर
आएँगे। 25 लेकिन इस्राईल की तमाम औलाद रब में
रास्तबाज़ ठहर कर उस पर फ़ख़र करेगी।

देवता मदद नहीं कर सकते

46 1 बाबल के देवता बेल और नबू झुक कर
गिर गए हैं, और लादू जानवर उन के बुतों
को उठाए फिर रहे हैं। तुम्हारे जो बुत उठाए जा सकते
हैं थकेहारे जानवरों का बोझ बन गए हैं। 2 क्यूँकि
दोनों देवता झुक कर गिर गए हैं। वह बोझ बनने से
बच न सके, और अब ख़ुद जिलावतनी में जा रहे हैं।
3 "ऐ याक़ूब के घराने, सुनो! ऐ इस्राईल के घराने
के बचे हुए अफ़राद, ध्यान दो! माँ के पेट से ही तुम
मेरे लिए बोझ रहे हो, पैदाइश से पहले ही मैं तुम्हें
उठाए फिर रहा हूँ। 4 तुम्हारे बूढ़े होने तक मैं वही
रहूँगा, तुम्हारे बाल के सफ़ेद हो जाने तक तुम्हें उठाए
फिरूँगा। यह इब्तिदा से मेरा ही काम रहा है, और
आइन्दा भी मैं तुझे उठाए फिरूँगा, आइन्दा भी तेरा
सहारा बन कर तुझे बचाए रखूँगा।
5 तुम मेरा मुक़ाबला किस से करोगे, मुझे किस के
बराबर ठहराओगे? तुम मेरा मुवाज़ना किस से करोगे
जो मेरी मानिन्द हो? 6 लोग बुत बनवाने के लिए बटवे
से कस्रत का सोना निकालते और चाँदी तराज़ू में
तोलते हैं। फिर वह सुनार को बुत बनाने का ठेका
देते हैं। जब तय्यार हो जाए तो वह झुक कर मुँह के
बल उस की पूजा करते हैं। 7 वह उसे अपने कंधों पर
रख कर इधर उधर लिए फिरते हैं, फिर उसे दुबारा
उस की जगह पर रख देते हैं। वहाँ वह खड़ा रहता
है और ज़रा भी नहीं हिलता। लोग चिल्ला कर उस से
फ़र्याद करते हैं, लेकिन वह जवाब नहीं देता, दुआगो
को मुसीबत से नहीं बचाता।
8 ऐ बेवफ़ा लोगो, इस का ख़याल रखो! मर्दानगी
दिखा कर सन्जीदगी से इस पर ध्यान दो! 9 जो कुछ
अज़ल से पेश आया है उसे याद रखो। क्यूँकि मैं ही
रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और नहीं। मैं ही रब हूँ,
और मेरी मानिन्द कोई नहीं।
10 मैं इब्तिदा से अन्जाम का एलान, क़दीम ज़माने
से आने वाली बातों की पेशगोई करता आया हूँ। अब
मैं फ़रमाता हूँ कि मेरा मन्सूबा अटल है, मैं अपनी
मर्ज़ी हर लिहाज़ से पूरी करूँगा। 11 मशरिक़ से मैं
शिकारी परिन्दा बुला रहा हूँ, दूरदराज़ मुल्क से एक
ऐसा आदमी जो मेरा मन्सूबा पूरा करे। ध्यान दो, जो
कुछ मैं ने फ़रमाया वह तक्मील तक पहुँचाऊँगा, जो
मन्सूबा मैं ने बांधा वह पूरा करूँगा।
12 ऐ ज़िद्दी लोगो जो रास्ती से कहीं दूर हो, मेरी
सुनो! 13 मैं अपनी रास्ती क़रीब ही लाया हूँ, वह दूर
नहीं है। मेरी नजात के आने में देर नहीं होगी। मैं
सिय्यून को नजात दूँगा, इस्राईल को अपनी शान-
ओ-शौकत से नवाज़ूँगा।

रब बाबल को सज़ा देगा

47 1 ऐ कुंवारी बाबल बेटी, उतर जा! ख़ाक में
बैठ जा! ऐ बाबलियों की बेटी, ज़मीन पर
बैठ जा जहाँ तख़्त नहीं है! अब से लोग तुझ से नहीं
कहेंगे, 'ऐ मेरी नाज़-पर्वर्दा, ऐ मेरी लाडली!'
2 अब चक्की ले कर आटा पीस! अपना निक़ाब
हटा, अपने लिबास का दामन उठा, अपनी टाँगों को
उरियाँ करके नदियाँ पार कर। 3 तेरी बरहनगी सब पर
ज़ाहिर होगी, सब तेरी शर्मसार हालत देखेंगे। क्यूँकि
मैं बदला ले कर किसी को नहीं छोड़ूँगा।"
4 जिस ने इवज़ाना दे कर हमें छुड़ाया है वही यह
फ़रमाता है, वह जिस का नाम रब्ब-उल-अफ़्वाज है
और जो इस्राईल का क़ुद्दूस है।
5 "ऐ बाबलियों की बेटी, चुपके से बैठ जा! तारीकी
में छुप जा! आइन्दा तू 'ममालिक की मलिका' नहीं
कहलाएगी।
6 जब मुझे अपनी क़ौम पर ग़ुस्सा आया तो मैं ने
उसे यूँ रुसवा किया कि उस की मुक़द्दस हालत जाती
रही, गो वह मेरा मौरूसी हिस्सा थी। उस वक़्त मैं ने
उन्हें तेरे हवाले कर दिया, लेकिन तू ने उन पर रहम
न किया बल्कि बूढ़ों की गर्दन पर भी अपना भारी
जूआ रख दिया। 7 तू बोली, 'मैं अबद तक मलिका
ही रहूँगी!' तू ने सन्जीदगी से ध्यान न दिया, न इस
के अन्जाम पर ग़ौर किया।

8 अब सुन, ऐ अय्याश, तू जो अपने आप को
महफ़ूज़ समझ कर कहती है, 'मैं ही हूँ, मेरे सिवा
कोई और नहीं है। मैं न कभी बेवा, न कभी बेऔलाद
हूँगी।' 9 मैं फ़रमाता हूँ कि एक ही दिन और एक ही
लम्हे में तू बेऔलाद भी बनेगी और बेवा भी। तेरे सारे
ज़बरदस्त जादूमंत्र के बावुजूद यह आफ़त पूरे ज़ोर से
तुझ पर आएगी।

10 तू ने अपनी बदकारी पर एतिमाद करके सोचा,
'कोई नहीं मुझे देखता।' लेकिन तेरी 'हिक्मत' और
'इल्म' तुझे ग़लत राह पर लाया है। उन की बिना पर
तू ने दिल में कहा, 'मैं ही हूँ, मेरे सिवा कोई और नहीं
है।' 11 अब तुझ पर ऐसी आफ़त आएगी जिसे तेरे
जादूमंत्र दूर करने नहीं पाएँगे, तू ऐसी मुसीबत में फंस
जाएगी जिस से निपट नहीं सकेगी। अचानक ही तुझ
पर तबाही नाज़िल होगी, और तू उस के लिए तय्यार
ही नहीं होगी। 12 अब खड़ी हो जा, अपने जादू-टोने
का पूरा ख़ज़ाना खोल कर सब कुछ इस्तेमाल में ला
जो तू ने जवानी से बड़ी मेहनत-मशक़्क़त के साथ
अपना लिया है। शायद फ़ाइदा हो, शायद तू लोगों
को डरा कर भगा सके।

13 लेकिन दूसरों के बेशुमार मश्वरे बेकार हैं, उन्हों ने
तुझे सिर्फ़ थका दिया है। अब तेरे नजूमी खड़े हो जाएँ,
जो सितारों को देख देख कर हर महीने पेशगोइयाँ
करते हैं वह सामने आ कर तुझे उस से बचाएँ जो
तुझ पर आने वाला है। 14 यक़ीनन वह आग में जलने
वाला भूसा ही हैं जो अपनी जान को शोलों से बचा
नहीं सकते। और यह कोएलों की आग नहीं होगी
जिस के सामने इन्सान बैठ कर आग ताप सके।

15 यही उन सब का हाल है जिन पर तू ने मेहनत की
है और जो तेरी जवानी से तेरे साथ तिजारत करते
रहे हैं। हर एक लड़खड़ाते हुए अपनी अपनी राह
इख़तियार करेगा, और एक भी नहीं होगा जो तुझे
बचाए।

रब अपने नाम की ख़ातिर इस्राईल को बचाएगा

48 1 ऐ याक़ूब के घराने, सुनो! तुम जो इस्राईल
कहलाते और यहूदाह के क़बीले के हो,
ध्यान दो! तुम जो रब के नाम की क़सम खा कर
इस्राईल के ख़ुदा को याद करते हो, अगरचे तुम्हारी
बात न सच्चाई, न इन्साफ़ पर मब्नी है, ग़ौर करो! 2 हाँ
तवज्जुह दो, तुम जो मुक़द्दस शहर के लोग कहलाते
और इस्राईल के ख़ुदा पर एतिमाद करते हो, सुनो
कि अल्लाह जिस का नाम रब्ब-उल-अफ़्वाज है क्या
फ़रमाता है।

3 जो कुछ पेश आया है उस का एलान मैं ने बड़ी देर
पहले किया। मेरे ही मुँह से उस की पेशगोई सादिर
हुई, मैं ही ने उस की इत्तिला दी। फिर अचानक ही
मैं उसे अमल में लाया और वह वुक़ूपज़ीर हुआ।
4 मैं जानता था कि तू कितना ज़िद्दी है। तेरे गले की
नसें लोहे जैसी बेलचक और तेरी पेशानी पीतल जैसी
सख़्त है। 5 यह जान कर मैं ने बड़ी देर पहले इन बातों
की पेशगोई की। उन के पेश आने से पहले मैं ने तुझे
उन की ख़बर दी ताकि तू दावा न कर सके, 'मेरे बुत
ने यह कुछ किया, मेरे तराशे और ढाले गए देवता ने
इस का हुक्म दिया।' 6 अब जब तू ने यह सुन लिया
है तो सब कुछ पर ग़ौर कर। तू क्यूँ इन बातों को
मानने के लिए तय्यार नहीं?

अब से मैं तुझे नई नई बातें बताऊँगा, ऐसी पोशीदा
बातें जो तुझे अब तक मालूम न थीं। 7 यह किसी
क़दीम ज़माने में वुजूद में नहीं आईं बल्कि अभी अभी
आज ही तेरे इल्म में आई हैं। क्यूँकि मैं नहीं चाहता
था कि तू कहे, 'मुझे पहले से इस का इल्म था।'
8 चुनाँचे न यह बातें तेरे कान तक पहुँची हैं, न तू इन
का इल्म रखता है, बल्कि क़दीम ज़माने से ही तेरा
कान यह सुन नहीं सकता था। क्यूँकि मैं जानता था
कि तू सरासर बेवफ़ा है, कि पैदाइश से ही नमकहराम
कहलाता है। 9 तो भी मैं अपने नाम की ख़ातिर अपना
ग़ज़ब नाज़िल करने से बाज़ रहता, अपनी तम्जीद
की ख़ातिर अपने आप को तुझे नेस्त-ओ-नाबूद करने

से रोके रखता हूँ। 10 देख, मैं ने तुझे पाक-साफ़ कर
दिया है, लेकिन चाँदी को साफ़ करने की कुठाली में
नहीं बल्कि मुसीबत की भट्टी में। उसी में मैं ने तुझे
आज़माया है। 11 अपनी ख़ातिर, हाँ अपनी ही ख़ातिर
मैं यह सब कुछ करता हूँ, ऐसा न हो कि मेरे नाम की
बेहुरमती हो जाए। क्यूँकि मैं इजाज़त नहीं दूँगा कि
किसी और को वह जलाल दिया जाए जिस का सिर्फ़
मैं हक़दार हूँ।

रब इस्राईल का नजातदहिन्दा है

12 ऐ याक़ूब की औलाद, मेरी सुन! ऐ मेरे बर्गुज़ीदा
इस्राईल, ध्यान दे! मैं ही वही हूँ। मैं ही अव्वल-ओ-
आख़िर हूँ। 13 मेरे ही हाथ ने ज़मीन की बुन्याद रखी,
मेरे ही दहने हाथ ने आसमान को ख़ैमे की तरह तान
लिया। जब मैं आवाज़ देता हूँ तो सब मिल कर खड़े
हो जाते हैं। 14 आओ, सब जमा हो कर सुनो! बुतों
में से किस ने इस की पेशगोई की? किसी ने नहीं!
जिस आदमी को रब प्यार करता है वह बाबल के
ख़िलाफ़ उस की मर्ज़ी पूरी करेगा, बाबलियों पर उस
की क़ुव्वत का इज़हार करेगा। 15 मैं, हाँ मैं ही ने
यह फ़रमाया। मैं ही उसे बुला कर यहाँ लाया हूँ, इस
लिए वह ज़रूर कामयाब होगा। 16 मेरे क़रीब आ कर
सुनो! शुरू से मैं ने अलानिया बात की, जब से यह
पेश आया मैं हाज़िर हूँ।"

और अब रब क़ादिर-ए-मुतलक़ और उस के रूह
ने मुझे भेजा है।

17 रब जो तेरा छुड़ाने वाला और इस्राईल का क़ुद्दूस
है फ़रमाता है, "मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ। मैं तुझे वह
कुछ सिखाता हूँ जो मुफ़ीद है और तुझे उन राहों
पर चलने देता हूँ जिन पर तुझे चलना है। 18 काश तू
मेरे अह्काम पर ध्यान देता! तब तेरी सलामती बहते
दरया जैसी और तेरी रास्तबाज़ी समुन्दर की मौजों
जैसी होती। 19 तेरी औलाद रेत की मानिन्द होती, तेरे
पेट का फल रेत के ज़र्रों जैसा अनगिनत होता। इस
का इम्कान ही न होता कि तेरा नाम-ओ-निशान मेरे
सामने से मिट जाए।"

20 बाबल से निकल जाओ! बाबलियों के बीच में से
हिज्रत करो! ख़ुशी के नारे लगा लगा कर एलान करो,
दुनिया की इन्तिहा तक ख़ुशख़बरी फैलाते जाओ
कि रब ने इवज़ाना दे कर अपने ख़ादिम याक़ूब को
छुड़ाया है। 21 उन्हें प्यास न लगी जब उस ने उन्हें
रेगिस्तान में से गुज़रने दिया। उस के हुक्म पर पत्थर
में से पानी बह निकला। जब उस ने चटान को चीर
डाला तो पानी फूट निकला।

22 लेकिन रब फ़रमाता है कि बेदीन सलामती नहीं
पाएँगे।

रब का पैग़म्बर अक़्वाम का नूर है

49 1 ऐ जज़ीरो, सुनो! ऐ दूरदराज़ क़ौमो, ध्यान
दो! रब ने मुझे पैदाइश से पहले ही बुलाया,
मेरी माँ के पेट से ही मेरे नाम को याद करता आया
है। 2 उस ने मेरे मुँह को तेज़ तलवार बना कर मुझे
अपने हाथ के साय में छुपाए रखा, मुझे तेज़ तीर बना
कर अपने तर्कश में पोशीदा रखा है। 3 वह मुझ से
हमकलाम हुआ, "तू मेरा ख़ादिम इस्राईल है, जिस
के ज़रीए मैं अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा।"

4 मैं तो बोला था, "मेरी मेहनत-मशक़्क़त बेसूद थी,
मैं ने अपनी ताक़त बेफ़ाइदा और बेमक़्सद ज़ाए कर
दी है। ताहम मेरा हक़्क़ अल्लाह के हाथ में है, मेरा
ख़ुदा ही मुझे अज्र देगा।"

5 लेकिन अब रब मुझ से हमकलाम हुआ है, वह
जो माँ के पेट से ही मुझे इस मक़्सद से तश्कील देता
आया है कि मैं उस की ख़िदमत करके याक़ूब की
औलाद को उस के पास वापस लाऊँ और इस्राईल
को उस के हुज़ूर जमा करूँ। रब ही के हुज़ूर मेरा
एहतिराम किया जाएगा, मेरा ख़ुदा ही मेरी क़ुव्वत
होगा। 6 वही फ़रमाता है, "तू मेरी ख़िदमत करके
न सिर्फ़ याक़ूब के क़बीले बहाल करेगा और उन्हें
वापस लाएगा जिन्हें मैं ने मह्फ़ूज़ रखा है बल्कि तू
इस से कहीं बढ़ कर करेगा। क्यूँकि मैं तुझे दीगर
अक़्वाम की रौशनी बना दूँगा ताकि तू मेरी नजात
को दुनिया की इन्तिहा तक पहुँचाए।"

7 रब जो इस्राईल का छुड़ाने वाला और उस का
क़ुद्दूस है उस से हमकलाम हुआ है जिसे लोग हक़ीर
जानते हैं, जिस से दीगर अक़्वाम घिन खाते हैं और जो
हुक्मरानों का ग़ुलाम है। उस से रब फ़रमाता है, "तुझे
देखते ही बादशाह खड़े हो जाएंगे और रईस मुँह के
बल झुक जाएंगे। यह रब की ख़ातिर ही पेश आएगा
जो वफ़ादार है और इस्राईल के क़ुद्दूस के बाइस ही
वुक़ूपज़ीर होगा जिस ने तुझे चुन लिया है।"
8 रब फ़रमाता है, "क़बूलियत के वक़्त मैं तेरी
सुनूँगा, नजात के दिन तेरी मदद करूँगा। तब मैं तुझे
महफ़ूज़ रख कर मुक़र्रर करूँगा कि तू मेरे और क़ौम
के दरमियान अह्द बने, कि तू मुल्क बहाल करके
तबाहशुदा मौरूसी ज़मीन को नए सिरे से तक़्सीम
करे, 9 कि तू क़ैदियों को कहे, 'निकल आओ' और
तारीकी में बसने वालों को, 'रौशनी में आ जाओ!'
तब मेरी भेड़ें रास्तों के किनारे किनारे चरेंगी, और
तमाम बंजर बुलन्दियों पर भी उन की हरी हरी
चरागाहें होंगी। 10 न उन्हें भूक सताएगी न प्यास। न
तपती गर्मी, न धूप उन्हें झुलसाएगी। क्यूँकि जो उन
पर तरस खाता है वह उन की क़ियादत करके उन्हें
चश्मों के पास ले जाएगा। 11 मैं पहाड़ों को हमवार
रास्तों में तब्दील कर दूँगा जबकि मेरी शाहराहें ऊँची
हो जाएँगी। 12 तब वह दूरदराज़ इलाक़ों से आएँगे,
कुछ शिमाल से, कुछ मग़रिब से, और कुछ मिस्र के
जुनूबी शहर अस्वान से भी।"
13 ऐ आसमान, ख़ुशी के नारे लगा! ऐ ज़मीन, बाग़
बाग़ हो जा! ऐ पहाड़ो, शादमानी के गीत गाओ!
क्यूँकि रब ने अपनी क़ौम को तसल्ली दी है, उसे अपने
मुसीबतज़दा लोगों पर तरस आया है।

रब अपनी क़ौम को कभी नहीं भूलेगा

14 लेकिन सिय्यून कहती है, "रब ने मुझे तर्क कर
दिया है, क़ादिर-ए-मुतलक़ मुझे भूल गया है।"
15 "यह कैसे हो सकता है? क्या माँ अपने
शीरख़्वार को भूल सकती है? जिस बच्चे को उस ने
जन्म दिया, क्या वह उस पर तरस नहीं खाएगी?
शायद वह भूल जाए, लेकिन मैं तुझे कभी नहीं
भूलूँगा! 16 देख, मैं ने तुझे अपनी दोनों हथेलियों में
कन्दा कर दिया है, तेरी ज़मीनबोस दीवारें हमेशा मेरे
सामने हैं।
17 जो तुझे नए सिरे से तामीर करना चाहते हैं वह
दौड़ कर वापस आ रहे हैं जबकि जिन लोगों ने तुझे
ढा कर तबाह किया वह तुझ से निकल रहे हैं। 18 ऐ
सिय्यून बेटी, नज़र उठा कर चारों तरफ़ देख! यह
सब जमा हो कर तेरे पास आ रहे हैं। मेरी हयात की
क़सम, यह सब तेरे ज़ेवरात बनेंगे जिन से तू अपने
आप को दुल्हन की तरह आरास्ता करेगी।" यह रब
का फ़रमान है।
19 "फ़िलहाल तेरे मुल्क में चारों तरफ़ खंडरात,
उजाड़ और तबाही नज़र आती है, लेकिन आइन्दा
वह अपने बाशिन्दों की कस्रत के बाइस छोटा होगा।
और जिन्हों ने तुझे हड़प कर लिया था वह दूर रहेंगे।
20 पहले तू बेऔलाद थी, लेकिन अब तेरे इतने बच्चे
होंगे कि वह तेरे पास आ कर कहेंगे, 'मेरे लिए जगह
कम है, मुझे और ज़मीन दें ताकि मैं आराम से ज़िन्दगी
गुज़ार सकूँ।' तू अपने कानों से यह सुनेगी।
21 तब तू हैरान हो कर दिल में सोचेगी, 'किस ने यह
बच्चे मेरे लिए पैदा किए? मैं तो बच्चों से महरूम और
बेऔलाद थी, मुझे जिलावतन करके हटाया गया था।
किस ने इन को पाला? मुझे तो तन्हा ही छोड़ दिया
गया था। तो फिर यह कहाँ से आ गए हैं'?"
22 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "देख, मैं
दीगर क़ौमों को हाथ से इशारा दे कर उन के
सामने अपना झंडा गाड़ दूँगा। तब वह तेरे बेटों
को उठा कर अपने बाज़ूओं में वापस ले आएँगे
और तेरी बेटियों को कंधे पर बिठा कर तेरे पास
पहुँचाएँगे। 23 बादशाह तेरे बच्चों की देख-भाल करेंगे,
और रानियाँ उन की दाइयाँ होंगी। वह मुँह के बल
झुक कर तेरे पाँओ की ख़ाक चाटेंगे। तब तू जान
लेगी कि मैं ही रब हूँ, कि जो भी मुझ से उम्मीद रखे
वह कभी शर्मिन्दा नहीं होगा।"

24 क्या सूरमे का लूटा हुआ माल उस के हाथ से
छीना जा सकता है? या क्या ज़ालिम के क़ैदी उस के
क़ब्ज़े से छूट सकते हैं? मुश्किल ही से। 25 लेकिन रब
फ़रमाता है, "यक़ीनन सूरमे का क़ैदी उस के हाथ से
छीन लिया जाएगा और ज़ालिम का लूटा हुआ माल
उस के क़ब्ज़े से छूट जाएगा। जो तुझ से झगड़े उस
के साथ मैं ख़ुद झगड़ूँगा, मैं ही तेरे बच्चों को नजात
दूँगा। 26 जिन्हों ने तुझ पर ज़ुल्म किया उन्हें मैं उन
का अपना गोश्त खिलाऊँगा, उन का अपना ख़ून यूँ
पिलाऊँगा कि वह उसे नई मै की तरह पी पी कर
मस्त हो जाएंगे। तब तमाम इन्सान जान लेंगे कि मैं
रब तेरा नजातदहिन्दा, तेरा छुड़ाने वाला और याक़ूब
का ज़बरदस्त सूरमा हूँ।"

तुम अपने ज़ाती गुनाहों की सज़ा भुगत रहे हो

50 1 रब फ़रमाता है, "आओ, मुझे वह
तलाक़नामा दिखाओ जो मैं ने दे कर
तुम्हारी माँ को छोड़ दिया था। वह कहाँ है? या मुझे
वह क़र्ज़ख़्वाह दिखाओ जिस के हवाले मैं ने तुम्हें
अपना क़र्ज़ उतारने के लिए किया। वह कहाँ है?
देखो, तुम्हें अपने ही गुनाहों के सबब से फ़रोख़्त
किया गया, तुम्हारे अपने ही गुनाहों के सबब से
तुम्हारी माँ को फ़ारिग़ कर दिया गया।
2 जब मैं आया तो कोई नहीं था। क्या वजह? जब
मैं ने आवाज़ दी तो जवाब देने वाला कोई नहीं था।
क्यूँ? क्या मैं फ़िद्या दे कर तुम्हें छुड़ाने के क़ाबिल
न था? क्या मेरी इतनी ताक़त नहीं कि तुम्हें बचा
सकूँ? मेरी तो एक ही धमकी से समुन्दर ख़ुश्क
हो जाता और दरया रेगिस्तान बन जाते हैं। तब उन
की मछलियाँ पानी से महरूम हो कर गल जाती हैं,
और उन की बदबू चारों तरफ़ फैल जाती है। 3 मैं ही
आसमान को तारीकी का जामा पहनाता, मैं ही उसे
टाट के मातमी लिबास में लपेट देता हूँ।"

रब के पैग़म्बर की रुस्वाई

4 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने मुझे शागिर्द की सी
ज़बान अता की ताकि मैं वह कलाम जान लूँ जिस
से थकामाँदा तक़वियत पाए। सुब्ह-ब-सुब्ह वह मेरे
कान को जगा देता है ताकि मैं शागिर्द की तरह सुन
सकूँ। 5 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने मेरे कान को खोल
दिया, और न मैं सरकश हुआ, न पीछे हट गया। 6 मैं
ने मारने वालों को अपनी पीठ और बाल नोचने वालों
को अपने गाल पेश किए। मैं ने अपना चिहरा उन की
गालियों और थूक से न छुपाया।
7 लेकिन रब क़ादिर-ए-मुतलक़ मेरी मदद करता है,
इस लिए मेरी रुस्वाई नहीं होगी। चुनाँचे मैं ने अपना
मुँह चक़्माक़ की तरह सख़्त कर लिया है, क्यूँकि मैं
जानता हूँ कि मैं शर्मिन्दा नहीं हो जाऊँगा। 8 जो मुझे
रास्त ठहराता है वह क़रीब ही है। तो फिर कौन मेरे
साथ झगड़ेगा? आओ, हम मिल कर अदालत में खड़े
हो जाएँ। कौन मुझ पर इल्ज़ाम लगाने की जुरअत
करेगा? वह आ कर मेरा सामना करे! 9 रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ ही मेरी मदद करता है। तो फिर कौन मुझे
मुजरिम ठहराएगा? यह तो सब पुराने कपड़े की तरह
घिस कर फटेंगे, कीड़े उन्हें खा जाएंगे।
10 तुम में से कौन रब का ख़ौफ़ मानता और उस के
ख़ादिम की सुनता है? जब उसे रौशनी के बग़ैर अंधेरे
में चलना पड़े तो वह रब के नाम पर भरोसा रखे और
अपने ख़ुदा पर इन्हिसार करे। 11 लेकिन तुम बाक़ी
लोग जो आग लगा कर अपने आप को जलते हुए
तीरों से लेस करते हो, अपनी ही आग के शोलों में
चले जाओ! ख़ुद उन तीरों की ज़द में आओ जो तुम
ने दूसरों के लिए जलाए हैं! मेरे हाथ से तुम्हें यही
अज्र मिलेगा, तुम सख़्त अज़ियत का शिकार हो कर
ज़मीन पर तड़पते रहोगे।

रब अपनी क़ौम को तसल्ली देता है

51 1 "तुम जो रास्ती के पीछे लगे रहते, जो रब
के तालिब हो, मेरी बात सुनो! उस चटान

पर ध्यान दो जिस में से तुम्हें तराश कर निकाला गया
है, उस कान पर ग़ौर करो जिस में से तुम्हें खोदा गया
है। 2 यानी अपने बाप इब्राहीम और अपनी माँ सारा
पर तवज्जुह दो, जिस ने दर्द-ए-ज़ह की तक्लीफ़ उठा
कर तुम्हें जन्म दिया। इब्राहीम बेऔलाद था जब मैं
ने उसे बुलाया, लेकिन फिर मैं ने उसे बरकत दे कर
बहुत औलाद बख़्शी।”

3 यक़ीनन रब सिय्यून को तसल्ली देगा। वह उस के
तमाम खंडरात को तशफ़्फ़ी दे कर उस के रेगिस्तान
को बाग़-ए-अदन में और उस की बंजर ज़मीन को रब
के बाग़ में बदल देगा। तब उस में ख़ुशी-ओ-शादमानी
पाई जाएगी, हर तरफ़ शुक्रगुज़ारी और गीतों की
आवाज़ें सुनाई देंगी।

4 “ऐ मेरी क़ौम, मुझ पर ध्यान दे! ऐ मेरी उम्मत,
मुझ पर ग़ौर कर! क्यूँकि हिदायत मुझ से सादिर
होगी, और मेरा इन्साफ़ क़ौमों की रौशनी बनेगा।
5 मेरी रास्ती क़रीब ही है, मेरी नजात रास्ते में है, और
मेरा ज़ोरावर बाज़ू क़ौमों में इन्साफ़ क़ाइम करेगा।
जज़ीरे मुझ से उम्मीद रखेंगे, वह मेरी क़ुदरत देखने
के इन्तिज़ार में रहेंगे। 6 अपनी आँखें आसमान की
तरफ़ उठाओ! नीचे ज़मीन पर नज़र डालो! आसमान
धुएँ की तरह बिखर जाएगा, ज़मीन पुराने कपड़े की
तरह घिसे फटेगी और उस के बाशिन्दे मच्छरों की
तरह मर जाएंगे। लेकिन मेरी नजात अबद तक क़ाइम
रहेगी, और मेरी रास्ती कभी ख़त्म नहीं होगी।

7 ऐ सहीह राह को जानने वालो, ऐ क़ौम जिस के
दिल में मेरी शरीअत है, मेरी बात सुनो! जब लोग
तुम्हारी बेइज़्ज़ती करते हैं तो उन से मत डरना, जब
वह तुम्हें गालियाँ देते हैं तो मत घबराना। 8 क्यूँकि
किरम उन्हें कपड़े की तरह खा जाएगा, कीड़ा उन्हें
ऊन की तरह हज़म करेगा। लेकिन मेरी रास्ती अबद
तक क़ाइम रहेगी, मेरी नजात पुश्त-दर-पुश्त बरक़रार
रहेगी।”

रब की रिहाई

9 ऐ रब के बाज़ू, उठ! जाग उठ और क़ुव्वत का
जामा पहन ले! यूँ अमल में आ जिस तरह क़दीम
ज़माने में आया था, जब तू ने मुतअद्दिद नस्लों पहले
रहब को टुकड़े टुकड़े कर दिया, समुन्दरी अज़दहे
को छेद डाला। 10 क्यूँकि तू ही ने समुन्दर को ख़ुश्क
किया, तू ही ने गहराइयों की तह पर रास्ता बनाया
ताकि वह जिन्हें तू ने इवज़ाना दे कर छुड़ाया था उस
में से गुज़र सकें।

11 जिन्हें रब ने फ़िद्या दे कर छुड़ाया है वह वापस
आएँगे। वह शादियाना बजा कर सिय्यून में दाख़िल
होंगे, और हर एक का सर अबदी ख़ुशी के ताज से
आरास्ता होगा। क्यूँकि ख़ुशी और शादमानी उन पर
ग़ालिब आ कर तमाम ग़म और आह-ओ-ज़ारी भगा
देगी।

12 “मैं, सिर्फ़ मैं ही तुझे तसल्ली देता हूँ। तो फिर तू
फ़ानी इन्सान से क्यूँ डरती है, जो घास की तरह मुरझा
कर ख़त्म हो जाता है? 13 तू रब अपने ख़ालिक़ को
क्यूँ भूल गई है, जिस ने आसमान को ख़ैमे की तरह
तान लिया और ज़मीन की बुन्याद रखी? जब ज़ालिम
तुझे तबाह करने पर तुला रहता है तो तू उस के तैश
से पूरे दिन क्यूँ ख़ौफ़ खाती रहती है? अब उस का
तैश कहाँ रहा? 14 जो ज़न्जीरों में जकड़ा हुआ है वह
जल्द ही आज़ाद हो जाएगा। न वह मर कर क़ब्र में
उतरेगा, न रोटी से महरूम रहेगा। 15 क्यूँकि मैं रब
तेरा ख़ुदा हूँ जो समुन्दर को यूँ हरकत में लाता है कि
वह मुतलातिम हो कर गरजने लगता है। रब्ब-उल-
अफ़्वाज मेरा नाम है। 16 मैं ने अपने अल्फ़ाज़ तेरे मुँह
में डाल कर तुझे अपने हाथ के साय में छुपाए रखा
है ताकि नए सिरे से आसमान को तानूँ, ज़मीन की
बुन्यादें रखूँ और सिय्यून को बताऊँ, ‘तू मेरी क़ौम
है’।”

ऐ यरूशलम, जाग उठ!

17 ऐ यरूशलम, उठ! जाग उठ! ऐ शहर जिस ने
रब के हाथ से उस का ग़ज़ब भरा प्याला पी लिया
है, खड़ी हो जा! अब तू ने लड़खड़ा देने वाले प्याले
को आख़िरी क़तरे तक चाट लिया है। 18 जितने भी
बेटे तू ने जन्म दिए उन में से एक भी नहीं रहा जो
तेरी राहनुमाई करे। जितने भी बेटे तू ने पाले उन में
से एक भी नहीं जो तेरा हाथ पकड़ कर तेरे साथ
चले। 19 तुझ पर दो आफ़तें आईं यानी बर्बादी-ओ-
तबाही, काल और तलवार। लेकिन किस ने हमदर्दी
का इज़हार किया? किस ने तुझे तसल्ली दी? 20 तेरे
बेटे ग़श खा कर गिर गए हैं। हर गली में वह जाल
में फंसे हुए ग़ज़ाल [s]की तरह ज़मीन पर तड़प रहे हैं।
क्यूँकि रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ है, वह
इलाही डाँट-डपट का निशाना बन गए हैं।

21 चुनाँचे मेरी बात सुन, ऐ मुसीबतज़दा क़ौम, ऐ
नशे में मत्वाली उम्मत, गो तू मै के असर से नहीं
डगमगा रही। 22 रब तेरा आक़ा जो तेरा ख़ुदा है और
अपनी क़ौम के लिए लड़ता है वह फ़रमाता है, "देख,
मैं ने तेरे हाथ से वह प्याला दूर कर दिया जो तेरे
लड़खड़ाने का सबब बना। आइन्दा तू मेरा ग़ज़ब भरा
प्याला नहीं पिएगी। 23 अब मैं इसे उन को पकड़ा
दूँगा जिन्हों ने तुझे अज़ियत पहुँचाई है, जिन्हों ने तुझ
से कहा, 'औंधे मुँह झुक जा ताकि हम तुझ पर से
गुज़रें।' उस वक़्त तेरी पीठ ख़ाक में धँस कर दूसरों
के लिए रास्ता बन गई थी।"

ज़न्जीरों को तोड़!

52 1 ऐ सिय्यून, उठ, जाग उठ! अपनी ताक़त
से मुलब्बस हो जा! ऐ मुक़द्दस शहर
यरूशलम, अपने शानदार कपड़े से आरास्ता हो जा!
आइन्दा कभी भी ग़ैरमख़्तून या नापाक शख़्स तुझ
में दाख़िल नहीं होगा। 2 ऐ यरूशलम, अपने आप से
गर्द झाड़कर खड़ी हो जा और तख़्त पर बैठ जा।
ऐ गिरिफ़्तार की हुई सिय्यून बेटी, अपनी गर्दन की
ज़न्जीरों को खोल कर उन से आज़ाद हो जा! 3 क्यूँकि
रब फ़रमाता है, "तुम्हें मुफ़्त में बेचा गया, और अब
तुम्हें पैसे दिए बग़ैर छुड़ाया जाएगा।"

4 क्यूँकि रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "क़दीम
ज़माने में मेरी क़ौम मिस्र चली गई ताकि वहाँ परदेस
में रहे। बाद में असूर ने बिलावजह उस पर ज़ुल्म
किया है।" 5 रब फ़रमाता है, "अब जो ज़ियादती मेरी
क़ौम से हो रही है उस का मेरे साथ क्या वास्ता है?"
रब फ़रमाता है, "मेरी क़ौम तो मुफ़्त में छीन ली गई
है, और उस पर हुकूमत करने वाले शेख़ी मार कर
पूरा दिन मेरे नाम पर कुफ़्र बकते हैं। 6 चुनाँचे मेरी
क़ौम मेरे नाम को जान लेगी, उस दिन वह पहचान
लेगी कि मैं ही वही हूँ जो फ़रमाता है, 'मैं हाज़िर हूँ'!"

7 उस के क़दम कितने प्यारे हैं जो पहाड़ों पर
चलते हुए ख़ुशख़बरी सुनाता है। क्यूँकि वह अम्न-
ओ-अमान, ख़ुशी का पैग़ाम और नजात का एलान
करेगा, वह सिय्यून से कहेगा, "तेरा ख़ुदा बादशाह
है!" 8 सुन! तेरे पहरेदार आवाज़ बुलन्द कर रहे हैं,
वह मिल कर ख़ुशी के नारे लगा रहे हैं। क्यूँकि जब
रब कोह-ए-सिय्यून पर वापस आएगा तो वह अपनी
आँखों से इस का मुशाहदा करेंगे।

9 ऐ यरूशलम के खंडरात, शादियाना बजाओ,
ख़ुशी के गीत गाओ! क्यूँकि रब ने अपनी क़ौम
को तसल्ली दी है, उस ने इवज़ाना दे कर यरूशलम
को छुड़ाया है। 10 रब अपनी मुक़द्दस क़ुदरत तमाम
अक़्वाम पर ज़ाहिर करेगा, दुनिया की इन्तिहा तक
सब हमारे ख़ुदा की नजात देखेंगे।

11 जाओ, चले जाओ! वहाँ से निकल जाओ!
किसी भी नापाक चीज़ को न छूना। जो रब का सामान
उठाए चल रहे हैं वह वहाँ से निकल कर पाक-साफ़
रहें। 12 लेकिन लाज़िम नहीं कि तुम भाग कर रवाना
हो जाओ। तुम्हें अचानक फ़रार होने की ज़रूरत नहीं

---

[s]ग़ज़ाल-ए-अफ़्रीक़ा, oryx।

होगी, क्यूँकि रब तुम्हारे आगे भी चलेगा और तुम्हारे पीछे भी। यूँ इस्राईल का ख़ुदा दोनों तरफ़ से तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा।

रब का पैग़म्बर हमारे गुनाहों को उठाएगा

13 देखो, मेरा ख़ादिम कामयाब होगा। वह सरबुलन्द, मुम्ताज़ और बहुत सरफ़राज़ होगा। 14 तुझे देख कर बहुतों के रोंगटे खड़े हो गए। क्यूँकि उस की शक्ल इतनी ख़राब थी, उस की सूरत किसी भी इन्सान से कहीं ज़्यादा बिगड़ी हुई थी। 15 लेकिन अब बहुत सी क़ौमें उसे देख कर हक्का-बक्का हो जाएँगी, बादशाह दम-ब-ख़ुद रह जाएंगे। क्यूँकि जो कुछ उन्हें नहीं बताया गया उसे वह देखेंगे, और जो कुछ उन्हों ने नहीं सुना उस की उन्हें समझ आएगी।

53 1 लेकिन कौन हमारे पैग़ाम पर ईमान लाया? और रब की क़ुदरत किस पर ज़ाहिर हुई? 2 उस के सामने वह कोंपल की तरह फूट निकला, उस ताज़ा और मुलाइम शिगूफे की तरह जो ख़ुश्क ज़मीन में छुपी हुई जड़ से निकल कर फलने फूलने लगती है। न वह ख़ूबसूरत था, न शानदार। हम ने उसे देखा तो उस की शक्ल-ओ-सूरत में कुछ नहीं था जो हमें पसन्द आता। 3 उसे हक़ीर और मर्दूद समझा जाता था। दुख और बीमारियाँ उस की साथी रहें, और लोग यहाँ तक उस की तहक़ीर करते थे कि उसे देख कर अपना मुँह फेर लेते थे। हम उस की कुछ क़दर नहीं करते थे।

4 लेकिन उस ने हमारी ही बीमारियाँ उठा लीं, हमारा ही दुख भुगत लिया। तो भी हम समझे कि यह उस की मुनासिब सज़ा है, कि अल्लाह ने ख़ुद उसे मार कर ख़ाक में मिला दिया है। 5 लेकिन उसे हमारे ही जराइम के सबब से छेदा गया, हमारे ही गुनाहों की ख़ातिर कुचला गया। उसे सज़ा मिली ताकि हमें सलामती हासिल हो, और उसी के ज़ख़्मों से हमें शिफ़ा मिली। 6 हम सब भेड़-बकरियों की तरह आवारा फिर रहे थे, हर एक ने अपनी अपनी राह इख़तियार की। लेकिन रब ने उसे हम सब के क़ुसूर का निशाना बनाया।

7 उस पर ज़ुल्म हुआ, लेकिन उस ने सब कुछ बर्दाश्त किया और अपना मुँह न खोला, उस भेड़ की तरह जिसे ज़बह करने के लिए ले जाते हैं। जिस तरह लेला बाल कतरने वालों के सामने ख़ामोश रहता है उसी तरह उस ने अपना मुँह न खोला। 8 उसे ज़ुल्म और अदालत के हाथ से छीन लिया गया। अब कौन उस की नस्ल का ख़याल करेगा? क्यूँकि उस का ज़िन्दों के मुल्क से ताल्लुक़ कट गया है। अपनी क़ौम के जुर्म के सबब से वह सज़ा का निशाना बन गया। 9 मुक़र्रर यह हुआ कि उस की क़ब्र बेदीनों के पास हो, कि वह मरते वक़्त एक अमीर के पास दफ़नाया जाए, गो न उस ने तशद्दुद किया, न उस के मुँह में फ़रेब था।

10 लेकिन रब ही की मर्ज़ी थी कि उसे कुचला जाए। उसी ने उसे दुख का निशाना बनाया। और गो रब उस की जान के ज़रीए कफ़्फ़ारा देगा तो भी वह अपने फ़र्ज़न्दों को देखेगा। रब उस के दिनों में इज़ाफ़ा करेगा, और वह रब की मर्ज़ी को पूरा करने में कामयाब होगा। 11 इतनी तक्लीफ़ बर्दाश्त करने के बाद उसे फल नज़र आएगा, और वह सेर हो जाएगा। अपने इल्म से मेरा रास्त ख़ादिम बहुतों का इन्साफ़ क़ाइम करेगा, क्यूँकि वह उन के गुनाहों को अपने ऊपर उठा कर दूर कर देगा।

12 इस लिए मैं उसे बड़ों में हिस्सा दूँगा, और वह ज़ोरावरों के साथ लूट का माल तक़्सीम करेगा। क्यूँकि उस ने अपनी जान को मौत के हवाले कर दिया, और उसे मुजरिमों में शुमार किया गया। हाँ, उस ने बहुतों का गुनाह उठा कर दूर कर दिया और मुजरिमों की शफ़ाअत की।

रब ने यरूशलम को दुबारा क़बूल कर लिया है

54 1 रब फ़रमाता है, “ख़ुशी के नारे लगा, तू जो बेऔलाद है, जो बच्चे को जन्म ही नहीं दे सकती। बुलन्द आवाज़ से शादियाना बजा, तू जिसे पैदाइश का दर्द न हुआ। क्यूँकि अब तर्क की हुई औरत के बच्चे शादीशुदा औरत के बच्चों से ज़्यादा

हैं। 2 अपने ख़ैमे को बड़ा बना, उस के पर्दे हर तरफ़
बिछा! बचत मत करना! ख़ैमे के रस्से लम्बे लम्बे
करके मेख़ें मज़बूती से ज़मीन में ठोंक दे। 3 क्यूँकि
तू तेज़ी से दाईं और बाईं तरफ़ फैल जाएगी, और
तेरी औलाद दीगर क़ौमों पर क़ब्ज़ा करके तबाहशुदा
शहरों को अज़ सर-ए-नौ आबाद करेगी।
4 मत डरना, तेरी रुस्वाई नहीं होगी। शर्मसार न
हो, तेरी बेहुरमती नहीं होगी। अब तू अपनी जवानी
की शर्मिन्दगी भूल जाएगी, तेरे ज़हन से बेवा होने
की ज़िल्लत उतर जाएगी। 5 क्यूँकि तेरा ख़ालिक़ तेरा
शौहर है, रब्ब-उल-अफ़्वाज उस का नाम है, और तेरा
छुड़ाने वाला इस्राईल का क़ुद्दूस है, जो पूरी दुनिया
का ख़ुदा कहलाता है।"
6 तेरा ख़ुदा फ़रमाता है, "तू मतरूका और दिल से
मजरूह बीवी की मानिन्द है, उस औरत की मानिन्द
जिस के शौहर ने उसे रद्द किया, गो उस की शादी
उस वक़्त हुई जब कुंवारी ही थी। लेकिन अब मैं,
रब ने तुझे बुलाया है। 7 एक ही लम्हे के लिए मैं ने
तुझे तर्क किया, लेकिन अब बड़े रहम से तुझे जमा
करूँगा। 8 मैं ने अपने ग़ज़ब का पूरा ज़ोर तुझ पर
नाज़िल करके पल भर के लिए अपना चिहरा तुझ से
छुपा लिया, लेकिन अब अबदी शफ़्क़त से तुझ पर
रहम करूँगा।" रब तेरा छुड़ाने वाला यह फ़रमाता
है।
9 "बड़े सैलाब के बाद मैं ने नूह से क़सम खाई थी
कि आइन्दा सैलाब कभी पूरी ज़मीन पर नहीं आएगा।
इसी तरह अब मैं क़सम खा कर वादा करता हूँ कि
आइन्दा न मैं कभी तुझ से नाराज़ हूँगा, न तुझे मलामत
करूँगा। 10 गो पहाड़ हट जाएँ और पहाड़ियाँ जुम्बिश
खाएँ, लेकिन मेरी शफ़्क़त तुझ पर से कभी नहीं
हटेगी, मेरा सलामती का अह्द कभी नहीं हिलेगा।"
यह रब का फ़रमान है जो तुझ पर तरस खाता है।

नया शहर यरूशलम

11 "बेचारी बेटी यरूशलम! शदीद तूफ़ान तुझ पर से
गुज़र गए हैं, और कोई नहीं है जो तुझे तसल्ली दे। देख,
मैं तेरी दीवारों के पत्थर मज़बूत चूने से जोड़ दूँगा
और तेरी बुन्यादों को संग-ए-लाजवर्द [t]से रख दूँगा।
12 मैं तेरी दीवारों को याक़ूत, तेरे दरवाज़ों को आब-
ए-बहर [u]और तेरी तमाम फ़सील को क़ीमती जवाहिर
से तामीर करूँगा। 13 तेरे तमाम फ़र्ज़न्द रब से तालीम
पाएँगे, और तेरी औलाद की सलामती अज़ीम होगी।
14 तुझे इन्साफ़ की मज़बूत बुन्याद पर रखा जाएगा,
चुनाँचे दूसरों के ज़ुल्म से दूर रह, क्यूँकि डरने की
ज़रूरत नहीं होगी। दह्शतज़दा न हो, क्यूँकि दह्शत
खाने का सबब तेरे क़रीब नहीं आएगा। 15 अगर कोई
तुझ पर हम्ला करे भी तो यह मेरी तरफ़ से नहीं होगा,
इस लिए हर हम्लाआवर शिकस्त खाएगा।
16 देख, मैं ही उस लोहार का ख़ालिक़ हूँ जो हवा
दे कर कोएलों को दहका देता है ताकि काम के लिए
मौज़ूँ हथियार बना ले। और मैं ही ने तबाह करने वाले
को ख़ल्क़ किया ताकि वह बर्बादी का काम अन्जाम
दे। 17 चुनाँचे जो भी हथियार तुझ पर हम्ला करने के
लिए तय्यार हो जाए वह नाकाम होगा, और जो भी
ज़बान तुझ पर इल्ज़ाम लगाए उसे तू मुजरिम साबित
करेगी। यही रब के ख़ादिमों का मौरूसी हिस्सा है,
मैं ही उन की रास्तबाज़ी बरक़रार रखूँगा।" रब ख़ुद
यह फ़रमाता है।

रब के पास आओ ताकि ज़िन्दगी पाओ

55 1 "क्या तुम प्यासे हो? आओ, सब पानी के
पास आओ! क्या तुम्हारे पास पैसे नहीं?
इधर आओ, सौदा ख़रीद कर खाना खाओ। यहाँ
की मै और दूध मुफ़्त है। आओ, उसे पैसे दिए
बग़ैर ख़रीदो। 2 उस पर पैसे क्यूँ ख़र्च करते हो
जो रोटी नहीं है? जो सेर नहीं करता उस के लिए

[t]lapis lazuli

[u]beryl

मेहनत-मशक़्क़त क्यूँ करते हो? सुनो, सुनो मेरी बात!
फिर तुम अच्छी ख़ुराक खाओगे, बेहतरीन खाने से
लुत्फ़अन्दोज़ होगे। 3 कान लगा कर मेरे पास आओ!
सुनो तो जीते रहोगे।
मैं तुम्हारे साथ अबदी अह्द बांधूँगा, तुम्हें उन
अनमिट मेहरबानियों से नवाज़ूँगा जिन का वादा
दाऊद से किया था। 4 देख, मैं ने मुक़र्रर किया कि
वह अक़्वाम के सामने मेरा गवाह हो, कि अक़्वाम
का रईस और हुक्मरान हो। 5 देख, तू ऐसी क़ौम को
बुलाएगा जिसे तू नहीं जानता, और तुझ से नावाक़िफ़
क़ौम रब तेरे ख़ुदा की ख़ातिर तेरे पास दौड़ी चली
आएगी। क्यूँकि जो इस्राईल का क़ुद्दूस है उस ने तुझे
शान-ओ-शौकत अता की है।"

मेरा कलाम बेतासीर नहीं रहता

6 अभी रब को तलाश करो जबकि उसे पाया जा
सकता है। अभी उसे पुकारो जबकि वह क़रीब ही
है। 7 बेदीन अपनी बुरी राह और शरीर अपने बुरे
ख़यालात छोड़े। वह रब के पास वापस आए तो वह
उस पर रहम करेगा। वह हमारे ख़ुदा के पास वापस
आए, क्यूँकि वह फ़राख़दिली से मुआफ़ कर देता है।
8 क्यूँकि रब फ़रमाता है, "मेरे ख़यालात और तुम्हारे
ख़यालात में और मेरी राहों और तुम्हारी राहों में बड़ा
फ़र्क़ है। 9 जितना आसमान ज़मीन से ऊँचा है उतनी
ही मेरी राहें तुम्हारी राहों और मेरे ख़यालात तुम्हारे
ख़यालात से बुलन्द हैं।
10 बारिश और बर्फ़ पर ग़ौर करो! ज़मीन पर पड़ने
के बाद यह ख़ाली हाथ वापस नहीं आती बल्कि
ज़मीन को यूँ सेराब करती है कि पौदे फूटने और
फलने फूलने लगते हैं बल्कि पकते पकते बीज बोने
वाले को बीज और भूके को रोटी मुहय्या करते हैं।
11 मेरे मुँह से निकला हुआ कलाम भी ऐसा ही है। वह
ख़ाली हाथ वापस नहीं आएगा बल्कि मेरी मर्ज़ी पूरी
करेगा और उस में कामयाब होगा जिस के लिए मैं ने
उसे भेजा था।
12 क्यूँकि तुम ख़ुशी से निकलोगे, तुम्हें सलामती से
लाया जाएगा। पहाड़ और पहाड़ियाँ तुम्हारे आने पर
बाग़ बाग़ हो कर शादियाना बजाएँगी, और मैदान के
तमाम दरख़्त तालियाँ बजाएंगे। 13 काँटेदार झाड़ी की
बजाय ज़ूनीपर का दरख़्त उगेगा, और बिच्छूबूटी की
बजाय मेहंदी फले फूलेगी। यूँ रब के नाम को जलाल
मिलेगा, और उस की क़ुदरत का अबदी और अनमिट
निशान क़ाइम होगा।"

हर शख़्स अल्लाह की क़ौम में शामिल हो सकता है

56 1 रब फ़रमाता है, "इन्साफ़ को क़ाइम रखो
और वह कुछ किया करो जो रास्त है,
क्यूँकि मेरी नजात क़रीब ही है, और मेरी रास्ती
ज़ाहिर होने को है। 2 मुबारक है वह जो यूँ रास्ती
से लिपटा रहे। मुबारक है वह जो सबत के दिन की
बेहुरमती न करे बल्कि उसे मनाए, जो हर बुरे काम
से गुरेज़ करे।"
3 जो परदेसी रब का पैरोकार हो गया है वह न कहे
कि बेशक रब मुझे अपनी क़ौम से अलग कर रखेगा।
ख़्वाजासरा भी न सोचे कि हाय, मैं सूखा हुआ दरख़्त
ही हूँ!
4 क्यूँकि रब फ़रमाता है, "जो ख़्वाजासरा मेरे सबत
के दिन मनाएँ, ऐसे क़दम उठाएँ जो मुझे पसन्द हों
और मेरे अह्द के साथ लिपटे रहें वह बेफ़िक्र रहें।
5 क्यूँकि मैं उन्हें अपने घर और उस की चारदीवारी
में ऐसी यादगार और ऐसा नाम अता करूँगा जो बेटे-
बेटियाँ मिलने से कहीं बेहतर होगा। और जो नाम
मैं उन्हें दूँगा वह अबदी होगा, वह कभी नहीं मिटने
का।
6 वह परदेसी भी बेफ़िक्र रहें जो रब के पैरोकार बन
कर उस की ख़िदमत करना चाहते, जो रब का नाम
अज़ीज़ रख कर उस की इबादत करते, जो सबत के
दिन की बेहुरमती नहीं करते बल्कि उसे मनाते और
जो मेरे अह्द के साथ लिपटे रहते हैं। 7 क्यूँकि मैं उन्हें
अपने मुक़द्दस पहाड़ के पास ला कर अपने दुआ के
घर में ख़ुशी दिलाऊँगा। जब वह मेरी क़ुर्बानगाह पर

अपनी भस्म होने वाली और ज़बह की क़ुर्बानियाँ
चढ़ाएँगे तो वह मुझे पसन्द आएँगी । क्यूँकि मेरा घर
तमाम क़ौमों के लिए दुआ का घर कहलाएगा।”
8 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ जो इस्राईल की बिखरी हुई
क़ौम जमा कर रहा है फ़रमाता है, “उन में जो इकट्ठे
हो चुके हैं मैं और भी जमा कर दूँगा।”

क़ौम के राहनुमा सुस्त और लालची कुत्ते हैं

9 ऐ मैदान के तमाम हैवानो, आओ! ऐ जंगल
के तमाम जानवरो, आ कर खाओ! 10 इस्राईल के
पहरेदार अंधे हैं, सब के सब कुछ भी नहीं जानते।
सब के सब बहरे कुत्ते हैं जो भौंक ही नहीं सकते।
फ़र्श पर लेटे हुए वह अच्छे अच्छे ख़्वाब देखते रहते
हैं। ऊँघना उन्हें कितना पसन्द है! 11 लेकिन यह कुत्ते
लालची भी हैं और कभी सेर नहीं होते, हालाँकि
गल्लाबान कहलाते हैं। वह समझ से ख़ाली हैं, और
हर एक अपनी अपनी राह पर ध्यान दे कर अपने ही
नफ़ा की तलाश में रहता है। 12 हर एक आवाज़ देता
है, “आओ, मैं मै ले आता हूँ! आओ, हम जी भर कर
शराब पी लें। और कल भी आज की तरह हो बल्कि
इस से भी ज़्यादा रौनक़ हो!”

रब बेदीनों की अदालत करता है

57 1 रास्तबाज़ हलाक हो जाता है, लेकिन
किसी को पर्वा नहीं। दियानतदार दुनिया से
छीन लिए जाते हैं, लेकिन कोई ध्यान नहीं देता। कोई
नहीं समझता कि रास्तबाज़ को बुराई से बचने के
लिए छीन लिया जाता है। 2 क्यूँकि उस की मन्ज़िल-
ए-मक़सूद सलामती है। सीधी राह पर चलने वाले
मरते वक़्त पाँओ फैला कर आराम करते हैं।
3 “लेकिन ऐ जादूगरनी की औलाद, ज़िनाकार और
फ़ह्हाशी के बच्चो, इधर आओ! 4 तुम किस का
मज़ाक़ उड़ा रहे हो, किस पर ज़बान चला कर मुँह
चिड़ाते हो? तुम मुजरिमों और धोकेबाज़ों के ही बच्चे
हो!
5 तुम बलूत बल्कि हर घने दरख़्त के साय में मस्ती
में आ जाते हो, वादियों और चटानों के शिगाफ़ों में
अपने बच्चों को ज़बह करते हो। 6 वादियों के रगड़े
हुए पत्थर तेरा हिस्सा और तेरा मुक़द्दर बन गए हैं।
क्यूँकि उन ही को तू ने मै और ग़ल्ला की नज़रें पेश कीं।
इस के मद्द-ए-नज़र मैं अपना फ़ैसला क्यूँ बदलों?
7 तू ने अपना बिस्तर ऊँचे पहाड़ पर लगाया, उस पर
चढ़ कर अपनी क़ुर्बानियाँ पेश कीं। 8 अपने घर के
दरवाज़े और चौखट के पीछे तू ने अपनी बुतपरस्ती
के निशान लगाए। मुझे तर्क करके तू अपना बिस्तर
बिछा कर उस पर लेट गई। तू ने उसे इतना बड़ा
बना दिया कि दूसरे भी उस पर लेट सकें। फिर तू ने
इस्मतफ़रोशी के पैसे मुक़र्रर किए। उन की सोह्बत
तुझे कितनी प्यारी थी, उन की बरहनगी से तू कितना
लुत्फ़ उठाती थी! 9 तू कस्रत का तेल और ख़ुश्बूदार
क्रीम ले कर मलिक देवता के पास गई। तू ने अपने
क़ासिदों को दूर दूर बल्कि पाताल तक भेज दिया।
10 गो तू सफ़र करते करते बहुत थक गई तो भी तू ने
कभी न कहा, ‘फ़ुज़ूल है!’ अब तक तुझे तक़वियत
मिलती रही, इस लिए तू निढाल न हुई।
11 तुझे किस से इतना ख़ौफ़-ओ-हिरास था कि तू ने
झूट बोल कर न मुझे याद किया, न पर्वा की? ऐसा
ही है ना, तू इस लिए मेरा ख़ौफ़ नहीं मानती कि मैं
ख़ामोश और छुपा रहा।
12 लेकिन मैं लोगों पर तेरी नाम-निहाद रास्तबाज़ी
और तेरे काम ज़ाहिर करूँगा। यक़ीनन यह तेरे लिए
मुफ़ीद नहीं होंगे। 13 आ, मदद के लिए आवाज़ दे!
देखते हैं कि तेरे बुतों का मज्मूआ तुझे बचा सकेगा
कि नहीं। लेकिन ऐसा नहीं होगा बल्कि उन्हें हवा
उठा ले जाएगी, एक फूँक उन्हें उड़ा देगी।
लेकिन जो मुझ पर भरोसा रखे वह मुल्क को मीरास
में पाएगा, मुक़द्दस पहाड़ उस की मौरूसी मिलकियत
बनेगा।”

रब अपनी क़ौम की मदद करेगा

14 अल्लाह फ़रमाता है, “रास्ता बनाओ, रास्ता
बनाओ! उसे साफ़-सुथरा करके हर रुकावट दूर करो
ताकि मेरी क़ौम आ सके।” 15 क्यूँकि जो अज़ीम
और सरबुलन्द है, जो अबद तक तख़्तनशीन और
जिस का नाम क़ुद्दूस है वह फ़रमाता है, “मैं न सिर्फ़
बुलन्दियों के मक़्दिस में बल्कि शिकस्ताहाल और
फ़रोतन रूह के साथ भी सुकूनत करता हूँ ताकि
फ़रोतन की रूह और शिकस्ताहाल के दिल को नई
ज़िन्दगी बख़्शूँ। 16 क्यूँकि मैं हमेशा तक उन के साथ
नहीं झगड़ूँगा, अबद तक नाराज़ नहीं रहूँगा। वर्ना
उन की रूह मेरे हुज़ूर निढाल हो जाती, उन लोगों
की जान जिन्हें मैं ने ख़ुद ख़ल्क़ किया। 17 मैं इस्राईल
का नाजाइज़ मनाफ़े देख कर तैश में आया और उसे
सज़ा दे कर अपना मुँह छुपाए रखा। तो भी वह अपने
दिल की बर्गश्ता राहों पर चलता रहा। 18 लेकिन गो
मैं उस के चाल-चलन से वाक़िफ़ हूँ मैं उसे फिर
भी शिफ़ा दूँगा, उस की राहनुमाई करके उसे दुबारा
तसल्ली दूँगा। और उस के जितने लोग मातम कर रहे
हैं 19 उन के लिए मैं होंटों का फल पैदा करूँगा।”
क्यूँकि रब फ़रमाता है, “उन की सलामती हो जो दूर
हैं और उन की जो क़रीब हैं। मैं ही उन्हें शिफ़ा दूँगा।”
20 लेकिन बेदीन मुतलातिम समुन्दर की मानिन्द हैं
जो थम नहीं सकता और जिस की लहरें गन्द और
कीचड़ उछालती रहती हैं। 21 मेरा ख़ुदा फ़रमाता है,
“बेदीन सलामती नहीं पाएँगे।

रब को पसन्दीदा रोज़ा

58 1 गला फाड़ कर आवाज़ दे, रुक रुक कर
बात न कर! नरसिंगे की सी बुलन्द आवाज़
के साथ मेरी क़ौम को उस की सरकशी सुना, याक़ूब
के घराने को उस के गुनाहों की फ़हरिस्त बयान कर।
2 रोज़-ब-रोज़ वह मेरी मर्ज़ी दरयाफ़्त करते हैं। हाँ, वह
मेरी राहों के शौक़ीन हैं, उस क़ौम की मानिन्द जिस
ने अपने ख़ुदा के अह्काम को तर्क नहीं किया बल्कि
रास्तबाज़ है। चुनाँचे वह मुझ से मुन्सिफ़ाना फ़ैसले
माँग कर ज़ाहिरन अल्लाह की क़ुर्बत से लुत्फ़अन्दोज़
होते हैं। 3 वह शिकायत करते हैं, ‘जब हम रोज़ा रखते
हैं तो तू तवज्जुह क्यूँ नहीं देता? जब हम अपने आप
को ख़ाकसार बना कर इनकिसारी का इज़हार करते
हैं तो तू ध्यान क्यूँ नहीं देता?’

सुनो! रोज़ा रखते वक़्त तुम अपना कारोबार मामूल
के मुताबिक़ चला कर अपने मज़दूरों को दबाए रखते
हो। 4 न सिर्फ़ यह बल्कि तुम रोज़ा रखने के साथ साथ
झगड़ते और लड़ते भी हो। तुम एक दूसरे को शरारत
के मुक्के मारने से भी नहीं चूकते। यह कैसी बात है?
अगर तुम यूँ रोज़ा रखो तो इस की तवक़्क़ो नहीं कर
सकते कि तुम्हारी बात आसमान तक पहुँचे। 5 क्या
मुझे इस क़िस्म का रोज़ा पसन्द है? क्या यह काफ़ी है
कि बन्दा अपने आप को कुछ देर के लिए ख़ाकसार
बना कर इनकिसारी का इज़हार करे? कि वह अपने
सर को आबी नर्सल की तरह झुका कर टाट और
राख में लेट जाए? क्या तुम वाक़ई समझते हो कि
यह रोज़ा है, कि ऐसा वक़्त रब को पसन्द है?

6 यह किस तरह हो सकता है? जो रोज़ा मैं पसन्द
करता हूँ वह फ़र्क़ है। हक़ीक़ी रोज़ा यह है कि तू
बेइन्साफ़ी की ज़न्जीरों में जकड़े हुओं को रिहा करे,
मज़्लूमों का जूआ हटाए, कुचले हुओं को आज़ाद
करे, हर जूए को तोड़े, 7 भूके को अपने खाने में शरीक
करे, बेघर मुसीबतज़दा को पनाह दे, बरहना को
कपड़े पहनाए और अपने रिश्तेदार की मदद करने
से गुरेज़ न करे!

8 अगर तू ऐसा करे तो तू सुब्ह की पहली किरनों
की तरह चमक उठेगा, और तेरे ज़ख़्म जल्द ही भरेंगे।
तब तेरी रास्तबाज़ी तेरे आगे आगे चलेगी, और रब
का जलाल तेरे पीछे तेरी हिफ़ाज़त करेगा। 9 तब तू
फ़र्याद करेगा और रब जवाब देगा। जब तू मदद के
लिए पुकारेगा तो वह फ़रमाएगा, ‘मैं हाज़िर हूँ।’

अपने दरमियान दूसरों पर जूआ डालने, उंगलियाँ
उठाने और दूसरों की बदनामी करने का सिलसिला
ख़त्म कर! 10 भूके को अपनी रोटी दे और मज़्लूमों

की ज़रूरियात पूरी कर! फिर तेरी रौशनी अंधेरे
में चमक उठेगी और तेरी रात दोपहर की तरह
रौशन होगी। 11 रब हमेशा तेरी क़ियादत करेगा, वह
झुलसते हुए इलाक़ों में भी तेरी जान की ज़रूरियात
पूरी करेगा और तेरे आज़ा को तक़वियत देगा। तब तू
सेराब बाग़ की मानिन्द होगा, उस चश्मे की मानिन्द
जिस का पानी कभी ख़त्म नहीं होता। 12 तेरे लोग
क़दीम खंडरात को नए सिरे से तामीर करेंगे। जो
बुन्यादें गुज़री नस्लों ने रखी थीं उन्हें तू दुबारा रखेगा।
तब तू 'रख़ने को बन्द करने वाला' और 'गलियों को
दुबारा रहने के क़ाबिल बनाने वाला' कहलाएगा।
13 सबत के दिन अपने पैरों को काम करने से रोक।
मेरे मुक़द्दस दिन के दौरान कारोबार मत करना बल्कि
उसे 'राहतबख़्श' और 'मुअज़्ज़ज़' क़रार दे। उस दिन
न मामूल की राहों पर चल, न अपने कारोबार चला,
न ख़ाली गप्पें हाँक। यूँ तू सबत का सहीह एहतिराम
करेगा। 14 तब रब तेरी राहत का मम्बा होगा, और
मैं तुझे रथ में बिठा कर मुल्क की बुलन्दियों पर से
गुज़रने दूँगा, तुझे तेरे बाप याक़ूब की मीरास में से सेर
करूँगा।" रब के मुँह ने यह फ़रमाया है।

तुम्हारे क़ुसूर ने तुम्हें रब से दूर कर दिया है

59 1 यक़ीनन रब का बाज़ू छोटा नहीं कि वह
बचा न सके, उस का कान बहरा नहीं कि
सुन न सके। 2 हक़ीक़त में तुम्हारे बुरे कामों ने तुम्हें
उस से अलग कर दिया, तुम्हारे गुनाहों ने उस का
चिहरा तुम से छुपाए रखा, इस लिए वह तुम्हारी नहीं
सुनता। 3 क्यूँकि तुम्हारे हाथ ख़ूनआलूदा, तुम्हारी
उंगलियाँ गुनाह से नापाक हैं। तुम्हारे होंट झूट
बोलते और तुम्हारी ज़बान शरीर बातें फुसफुसाती है।
4 अदालत में कोई मुन्सिफ़ाना मुक़द्दमा नहीं चलाता,
कोई सच्चे दलाइल पेश नहीं करता। लोग सच्चाई से
ख़ाली बातों पर एतिबार करके झूट बोलते हैं, वह
बदकारी से हामिला हो कर बेदीनी को जन्म देते हैं।
5–6 वह ज़हरीले साँपों के अंडों पर बैठ जाते हैं ताकि
बच्चे निकलें। जो उन के अंडे खाए वह मर जाता है,
और अगर उन के अंडे दबाए तो ज़हरीला साँप निकल
आता है। यह लोग मकड़ी के जाले तान लेते हैं, ऐसा
कपड़ा जो पहनने के लिए बेकार है। अपने हाथों के
बनाए हुए इस कपड़े से वह अपने आप को ढाँप नहीं
सकते। उन के आमाल बुरे ही हैं, उन के हाथ तशद्दुद
ही करते हैं। 7 जहाँ भी ग़लत काम करने का मौक़ा
मिले वहाँ उन के पाँओ भाग कर पहुँच जाते हैं। वह
बेक़ुसूर को क़त्ल करने के लिए तय्यार रहते हैं। उन
के ख़यालात शरीर ही हैं, अपने पीछे वह तबाही-
ओ-बर्बादी छोड़ जाते हैं। 8 न वह सलामती की राह
जानते हैं, न उन के रास्तों में इन्साफ़ पाया जाता है।
क्यूँकि उन्हों ने उन्हें टेढ़ा-मेढ़ा बना रखा है, और जो
भी उन पर चले वह सलामती को नहीं जानता।

तौबा की दुआ

9 इसी लिए इन्साफ़ हम से दूर है, रास्ती हम
तक पहुँचती नहीं। हम रौशनी के इन्तिज़ार में रहते
हैं, लेकिन अफ़सोस, अंधेरा ही अंधेरा नज़र आता
है। हम आब-ओ-ताब की उम्मीद रखते हैं, लेकिन
अफ़सोस, जहाँ भी चलते हैं वहाँ घनी तारीकी छाई
रहती है। 10 हम अंधों की तरह दीवार को हाथ से छू
छू कर रास्ता मालूम करते हैं, आँखों से महरूम लोगों
की तरह टटोल टटोल कर आगे बढ़ते हैं। दोपहर के
वक़्त भी हम ठोकर खा खा कर यूँ फिरते हैं जैसे
धुन्दल्का हो। गो हम तनआवर लोगों के दरमियान
रहते हैं, लेकिन ख़ुद मुर्दों की मानिन्द हैं। 11 हम सब
निढाल हालत में रीछों की तरह ग़ुर्राते, कबूतरों की
मानिन्द ग़ूँ ग़ूँ करते हैं। हम इन्साफ़ के इन्तिज़ार में
रहते हैं, लेकिन बेसूद। हम नजात की उम्मीद रखते
हैं, लेकिन वह हम से दूर ही रहती है।
12 क्यूँकि हमारे मुतअद्दिद जराइम तेरे सामने हैं,
और हमारे गुनाह हमारे ख़िलाफ़ गवाही देते हैं। हमें
मुतवातिर अपने जराइम का एहसास है, हम अपने
गुनाहों से ख़ूब वाक़िफ़ हैं। 13 हम मानते हैं कि रब
से बेवफ़ा रहे बल्कि उस का इन्कार भी किया है।
हम ने अपना मुँह अपने ख़ुदा से फेर कर ज़ुल्म और

धोके की बातें फैलाई हैं। हमारे दिलों में झूट का बीज
बढ़ते बढ़ते मुँह में से निकला। 14 नतीजे में इन्साफ़
पीछे हट गया, और रास्ती दूर खड़ी रहती है। सच्चाई
चौक में ठोकर खा कर गिर गई है, और दयानतदारी
दाख़िल ही नहीं हो सकती। 15 चुनाँचे सच्चाई कहीं भी
पाई नहीं जाती, और ग़लत काम से गुरेज़ करने वाले
को लूटा जाता है।

रब का जवाब

यह सब कुछ रब को नज़र आया, और वह नाख़ुश
था कि इन्साफ़ नहीं है। 16 उस ने देखा कि कोई नहीं
है, वह हैरान हुआ कि मुदाख़लत करने वाला कोई
नहीं है। तब उस के ज़ोरावर बाज़ू ने उस की मदद
की, और उस की रास्ती ने उस को सहारा दिया।
17 रास्ती के ज़िराबक्तर से मुलब्बस हो कर उस ने सर
पर नजात का ख़ोद रखा, इन्तिक़ाम का लिबास पहन
कर उस ने ग़ैरत की चादर ओढ़ ली। 18 हर एक को
वह उस का मुनासिब मुआवज़ा देगा। वह मुख़ालिफ़ों
पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करेगा और दुश्मनों से बदला
लेगा बल्कि जज़ीरों को भी उन की हरकतों का अज्र
देगा। 19 तब इन्सान मग़रिब में रब के नाम का ख़ौफ़
मानेंगे और मशरिक़ में उसे जलाल देंगे। क्यूँकि वह
रब की फूँक से चलाए हुए ज़ोरदार सैलाब की तरह
उन पर टूट पड़ेगा।

20 रब फ़रमाता है, "छुड़ाने वाला कोह-ए-सिय्यून
पर आएगा। वह याक़ूब के उन फ़र्ज़न्दों के पास
आएगा जो अपने गुनाहों को छोड़ कर वापस
आएँगे।"

21 रब फ़रमाता है, "जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, उन
के साथ मेरा यह अह्द है : मेरा रूह जो तुझ पर ठहरा
हुआ है और मेरे अल्फ़ाज़ जो मैं ने तेरे मुँह में डाले हैं
वह अब से अबद तक न तेरे मुँह से, न तेरी औलाद
के मुँह से और न तेरी औलाद की औलाद से हटेंगे।"
यह रब का फ़रमान है।

अक़्वाम यरूशलम के नूर के पास आएँगी

60 1 "उठ, खड़ी हो कर चमक उठ! क्यूँकि
तेरा नूर आ गया है, और रब का जलाल तुझ
पर तुलू हुआ है। 2 क्यूँकि गो ज़मीन पर तारीकी छाई
हुई है और अक़्वाम घने अंधेरे में रहती हैं, लेकिन तुझ
पर रब का नूर तुलू हो रहा है, और उस का जलाल
तुझ पर ज़ाहिर हो रहा है। 3 अक़्वाम तेरे नूर के पास
और बादशाह उस चमकती दमकती रौशनी के पास
आएँगे जो तुझ पर तुलू होगी।

4 अपनी नज़र उठा कर चारों तरफ़ देख! सब के
सब जमा हो कर तेरे पास आ रहे हैं। तेरे बेटे दूर दूर
से पहुँच रहे हैं, और तेरी बेटियों को गोद में उठा कर
क़रीब लाया जा रहा है। 5 उस वक़्त तू यह देख कर
चमक उठेगी। तेरा दिल ख़ुशी के मारे तेज़ी से धड़कने
लगेगा और कुशादा हो जाएगा। क्यूँकि समुन्दर के
ख़ज़ाने तेरे पास लाए जाएंगे, अक़्वाम की दौलत
तेरे पास पहुँचेगी। 6 ऊँटों का ग़ोल बल्कि मिदियान
और ऐफ़ा के जवान ऊँट तेरे मुल्क को ढाँप देंगे।
वह सोने और बख़ूर से लदे हुए और रब की हम्द-
ओ-सना करते हुए मुल्क-ए-सबा से आएँगे। 7 क़ीदार
की तमाम भेड़-बकरियाँ तेरे हवाले की जाएँगी, और
नबायोत के मेंढे तेरी ख़िदमत के लिए हाज़िर होंगे।
उन्हें मेरी क़ुर्बानगाह पर चढ़ाया जाएगा और मैं उन्हें
पसन्द करूँगा। यूँ मैं अपने जलाल के घर को शान-
ओ-शौकत से आरास्ता करूँगा।

8 यह कौन हैं जो बादलों की तरह और काबुक के
पास वापस आने वाले कबूतरों की मानिन्द उड़ कर
आ रहे हैं? 9 यह तरसीस के ज़बरदस्त बहरी जहाज़ हैं
जो तेरे पास पहुँच रहे हैं। क्यूँकि जज़ीरे मुझ से उम्मीद
रखते हैं। यह जहाज़ तेरे बेटों को उन की सोने-चाँदी
समेत दूरदराज़ इलाक़ों से ले कर आ रहे हैं। यूँ रब
तेरे ख़ुदा के नाम और इस्राईल के क़ुद्दूस की ताज़ीम
होगी जिस ने तुझे शान-ओ-शौकत से नवाज़ा है।

10 परदेसी तेरी दीवारें अज़ सर-ए-नौ तामीर करेंगे,
और उन के बादशाह तेरी ख़िदमत करेंगे। क्यूँकि गो

मैं ने अपने ग़ज़ब में तुझे सज़ा दी, लेकिन अब मैं
अपने फ़ज़्ल से तुझ पर रहम करूँगा। 11 तेरी फ़सील
के दरवाज़े हमेशा खुले रहेंगे। उन्हें न दिन को बन्द
किया जाएगा, न रात को ताकि अक़्वाम का माल-
ओ-दौलत और उन के गिरिफ़्तार किए गए बादशाहों
को शहर के अन्दर लाया जा सके। 12 क्यूँकि जो
क़ौम या सल्तनत तेरी ख़िदमत करने से इन्कार करे
वह बर्बाद हो जाएगी, उसे पूरे तौर पर तबाह किया
जाएगा।

13 लुबनान की शान-ओ-शौकत तेरे सामने हाज़िर
होगी। जूनीपर, सनोबर और सर्व के दरख़्त मिल कर
तेरे पास आएँगे ताकि मेरे मक़्दिस को आरास्ता करें।
यूँ मैं अपने पाँओ की चौकी को जलाल दूँगा। 14 तुझ
पर ज़ुल्म करने वालों के बेटे झुक झुक कर तेरे हुज़ूर
आएँगे, तेरी तह्क़ीर करने वाले तेरे पाँओ के सामने
औंधे मुँह हो जाएंगे। वह तुझे 'रब का शहर' और
'इस्राईल के क़ुद्दूस का सिय्यून' क़रार देंगे। 15 पहले
तुझे तर्क किया गया था, लोग तुझ से नफ़रत रखते
थे, और तुझ में से कोई नहीं गुज़रता था। लेकिन अब
मैं तुझे अबदी फ़ख़र का बाइस बना दूँगा, और तमाम
नस्लें तुझे देख कर ख़ुश होंगी।

16 तू अक़्वाम का दूध पिएगी, और बादशाह तुझे
दूध पिलाएँगे। तब तू जान लेगी कि मैं रब तेरा
नजातदहिन्दा हूँ, कि मैं जो याक़ूब का ज़बरदस्त
सूरमा हूँ तेरा छुड़ाने वाला हूँ।

17 मैं तेरे पीतल को सोने में, तेरे लोहे को चाँदी में,
तेरी लकड़ी को पीतल में और तेरे पत्थर को लोहे में
बदलूँगा। मैं सलामती को तेरी मुहाफ़िज़ और रास्ती
को तेरी निगरान बनाऊँगा। 18 अब से तेरे मुल्क में न
तशद्दुद का ज़िक्र होगा, न बर्बादी-ओ-तबाही का।
अब से तेरी चारदीवारी 'नजात' और तेरे दरवाज़े
'हम्द-ओ-सना' कहलाएँगे।

19 आइन्दा तुझे न दिन के वक़्त सूरज, न रात के
वक़्त चाँद की ज़रूरत होगी, क्यूँकि रब ही तेरी
अबदी रौशनी होगा, तेरा ख़ुदा ही तेरी आब-ओ-ताब
होगा। 20 आइन्दा तेरा सूरज कभी ग़ुरूब नहीं होगा,
तेरा चाँद कभी नहीं घटेगा। क्यूँकि रब तेरा अबदी
नूर होगा, और मातम के तेरे दिन ख़त्म हो जाएंगे।

21 तब तेरी क़ौम के तमाम अफ़राद रास्तबाज़ होंगे,
और मुल्क हमेशा तक उन की मिलकियत रहेगा।
क्यूँकि वह मेरे हाथ से लगाई हुई पनीरी होंगे, मेरे हाथ
का काम जिस से मैं अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा।
22 तब सब से छोटे ख़ानदान की तादाद बढ़ कर
हज़ार अफ़राद पर मुश्तमिल होगी, सब से कमज़ोर
कुम्बा ताक़तवर क़ौम बनेगा। मुक़र्ररा वक़्त पर मैं,
रब यह सब कुछ तेज़ी से अन्जाम दूँगा।"

मातम का वक़्त ख़त्म है

61 1 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का रूह मुझ पर
है, क्यूँकि रब ने मुझे तेल से मसह करके
ग़रीबों को ख़ुशख़बरी सुनाने का इख़तियार दिया
है। उस ने मुझे शिकस्तादिलों की मर्हम-पट्टी करने
के लिए और यह एलान करने के लिए भेजा है कि
क़ैदियों को रिहाई मिलेगी और ज़न्जीरों में जकड़े हुए
आज़ाद हो जाएंगे, 2 कि बहाली का साल और हमारे
ख़ुदा के इन्तिक़ाम का दिन आ गया है। उस ने मुझे
भेजा है कि मैं तमाम मातम करने वालों को तसल्ली दूँ
3 और सिय्यून के सोगवारों को दिलासा दे कर राख
के बजाय शानदार ताज, मातम के बजाय ख़ुशी का
तेल और शिकस्ता रूह के बजाय हम्द-ओ-सना का
लिबास मुहय्या करूँ।

तब वह 'रास्ती के दरख़्त' कहलाएँगे, ऐसे पौदे जो
रब ने अपना जलाल ज़ाहिर करने के लिए लगाए हैं।
4 वह क़दीम खंडरात को अज़ सर-ए-नौ तामीर करके
देर से बर्बाद हुए मक़ामों को बहाल करेंगे। वह उन
तबाहशुदा शहरों को दुबारा क़ाइम करेंगे जो नस्ल-
दर-नस्ल वीरान-ओ-सुन्सान रहे हैं। 5 ग़ैरमुल्की खड़े
हो कर तुम्हारी भेड़-बकरियों की गल्लाबानी करेंगे,
परदेसी तुम्हारे खेतों और बाग़ों में काम करेंगे। 6 उस
वक़्त तुम 'रब के इमाम' कहलाओगे, लोग तुम्हें
'हमारे ख़ुदा के ख़ादिम' क़रार देंगे।

तुम अक़्वाम की दौलत से लुत्फ़अन्दोज़ होगे,
उन की शान-ओ-शौकत अपना कर उस पर फ़ख़र
करोगे। 7 तुम्हारी शर्मिन्दगी नहीं रहेगी बल्कि तुम
इज़्ज़त का दुगना हिस्सा पाओगे, तुम्हारी रुस्वाई नहीं
रहेगी बल्कि तुम शानदार हिस्सा मिलने के बाइस
शादियाना बजाओगे। क्यूँकि तुम्हें वतन में दुगना
हिस्सा मिलेगा, और अबदी ख़ुशी तुम्हारी मीरास
होगी।

8 क्यूँकि रब फ़रमाता है, "मुझे इन्साफ़ पसन्द है। मैं
ग़ारतगरी और कजरवी से नफ़रत रखता हूँ। मैं अपने
लोगों को वफ़ादारी से उन का अज्र दूँगा, मैं उन के
साथ अबदी अह्द बांधूँगा। 9 उन की नस्ल अक़्वाम
में और उन की औलाद दीगर उम्मतों में मश्हूर होगी।
जो भी उन्हें देखे वह जान लेगा कि रब ने उन्हें बरकत
दी है।"

10 मैं रब से निहायत ही शादमान हूँ, मेरी जान अपने
ख़ुदा की तारीफ़ में ख़ुशी के गीत गाती है। क्यूँकि
जिस तरह दूल्हा अपना सर इमाम की सी पगड़ी से
सजाता और दुल्हन अपने आप को अपने ज़ेवरात से
आरास्ता करती है उसी तरह अल्लाह ने मुझे नजात
का लिबास पहना कर रास्ती की चादर में लपेटा
है। 11 क्यूँकि जिस तरह ज़मीन अपनी हरियाली को
निकलने देती और बाग़ अपने बीजों को फूटने देता है
उसी तरह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ अक़्वाम के सामने
अपनी रास्ती और सताइश फूटने देगा।

यरूशलम की बहाली

62 1 सिय्यून की ख़ातिर मैं ख़ामोश नहीं रहूँगा,
यरूशलम की ख़ातिर तब तक आराम नहीं
करूँगा जब तक उस की रास्ती तुलू-ए-सुब्ह की तरह
न चमके और उस की नजात मशअल की तरह न
भड़के।

2 अक़्वाम तेरी रास्ती देखेंगी, तमाम बादशाह तेरी
शान-ओ-शौकत का मुशाहदा करेंगे। उस वक़्त तुझे
नया नाम मिलेगा, ऐसा नाम जो रब का अपना मुँह
मुतअय्यिन करेगा। 3 तू रब के हाथ में शानदार ताज
और अपने ख़ुदा के हाथ में शाही कुलाह होगी।
4 आइन्दा लोग तुझे न कभी 'मतरूका' न तेरे मुल्क
को 'वीरान-ओ-सुन्सान' क़रार देंगे बल्कि तू मेरा
लुत्फ़ और तेरा मुल्क ब्याही कहलाएगा। क्यूँकि रब
तुझ से लुत्फ़अन्दोज़ होगा, और तेरा मुल्क शादीशुदा
होगा। 5 जिस तरह जवान आदमी कुंवारी से शादी
करता है उसी तरह तेरे फ़र्ज़न्द तुझे ब्याह लेंगे। और
जिस तरह दूल्हा दुल्हन के बाइस ख़ुशी मनाता है उसी
तरह तेरा ख़ुदा तेरे सबब से ख़ुशी मनाएगा।

6 ऐ यरूशलम, मैं ने तेरी फ़सील पर पहरेदार लगाए
हैं जो दिन रात आवाज़ दें। उन्हें एक लम्हे के लिए
भी ख़ामोश रहने की इजाज़त नहीं है। ऐ रब को याद
दिलाने वालो, उस वक़्त तक न ख़ुद आराम करो,
7 न रब को आराम करने दो जब तक वह यरूशलम
को अज़ सर-ए-नौ क़ाइम न कर ले। जब पूरी दुनिया
शहर की तारीफ़ करेगी तब ही तुम सुकून का साँस
ले सकते हो। 8 रब ने अपने दाएँ हाथ और ज़ोरावर
बाज़ू की क़सम खा कर वादा किया है, "आइन्दा न मैं
तेरा ग़ल्ला तेरे दुश्मनों को खिलाऊँगा, न बड़ी मेहनत
से बनाई गई तेरी मै को अजनबियों को पिलाऊँगा।
9 क्यूँकि आइन्दा फ़सल की कटाई करने वाले ही रब
की सताइश करते हुए उसे खाएँगे, और अंगूर चुनने
वाले ही मेरे मक़्दिस के सहनों में आ कर उन का रस
पिएँगे।"

10 दाख़िल हो जाओ, शहर के दरवाज़ों में दाख़िल
हो जाओ! क़ौम के लिए रास्ता तय्यार करो! रास्ता
बनाओ, रास्ता बनाओ! उसे पत्थरों से साफ़ करो!
तमाम अक़्वाम के ऊपर झंडा गाड़ दो!

11 क्यूँकि रब ने दुनिया की इन्तिहा तक एलान
किया है, "सिय्यून बेटी को बताओ कि देख, तेरी
नजात आने वाली है। देख, उस का अज्र उस के पास
है, उस का इनआम उस के आगे आगे चल रहा है।"
12 तब वह 'मुक़द्दस क़ौम' और 'वह क़ौम जिसे रब ने
इवज़ाना दे कर छुड़ाया है' कहलाएँगे। ऐ यरूशलम
बेटी, तू 'मर्ग़ूब' और 'ग़ैरमतरूका शहर' कहलाएगी।

अल्लाह अपनी क़ौम की अदालत करता है

63 1 यह कौन है जो अदोम से आ रहा है, जो
सुर्ख़ सुर्ख़ कपड़े पहने बुस्रा शहर से पहुँच
रहा है? यह कौन है जो रोब से मुलब्बस बड़ी ताक़त
के साथ आगे बढ़ रहा है? "मैं ही हूँ, वह जो इन्साफ़
से बोलता, जो बड़ी क़ुदरत से तुझे बचाता है।"
2 तेरे कपड़े क्यूँ इतने लाल हैं? लगता है कि तेरा
लिबास हौज़ में अंगूर कुचलने से सुर्ख़ हो गया है।
3 "मैं अंगूरों को अकेला ही कुचलता रहा हूँ,
अक़्वाम में से कोई मेरे साथ नहीं था। मैं ने ग़ुस्से
में आ कर उन्हें कुचला, तैश में उन्हें रौंदा। उन के
ख़ून की छींटें मेरे कपड़ों पर पड़ गईं, मेरा सारा
लिबास आलूदा हुआ। 4 क्यूँकि मेरा दिल इन्तिक़ाम
लेने पर तुला हुआ था, अपनी क़ौम का इवज़ाना देने
का साल आ गया था। 5 मैं ने अपने इर्दगिर्द नज़र
दौड़ाई, लेकिन कोई नहीं था जो मेरी मदद करता। मैं
हैरान था कि किसी ने भी मेरा साथ न दिया। चुनाँचे
मेरे अपने बाज़ू ने मेरी मदद की, और मेरे तैश ने मुझे
सहारा दिया। 6 ग़ुस्से में आ कर मैं ने अक़्वाम को
पामाल किया, तैश में उन्हें मदहोश करके उन का
ख़ून ज़मीन पर गिरा दिया।"

रब की तम्जीद

7 मैं रब की मेहरबानियाँ सुनाऊँगा, उस के क़ाबिल-
ए-तारीफ़ कामों की तम्जीद करूँगा। जो कुछ रब
ने हमारे लिए किया, जो मुतअद्दिद भलाइयाँ उस ने
अपने रहम और बड़े फ़ज़्ल से इस्राईल को दिखाई हैं
उन की सताइश करूँगा।
8 उस ने फ़रमाया, "यक़ीनन यह मेरी क़ौम के हैं,
ऐसे फ़र्ज़न्द जो बेवफ़ा नहीं होंगे।" यह कह कर वह
उन का नजातदहिन्दा बन गया, 9 वह उन की तमाम
मुसीबत में शरीक हुआ, और उस के हुज़ूर के फ़रिश्ते
ने उन्हें छुटकारा दिया। वह उन्हें प्यार करता, उन पर
तरस खाता था, इस लिए उस ने इवज़ाना दे कर उन्हें
छुड़ाया। हाँ, क़दीम ज़माने से आज तक वह उन्हें
उठाए फिरता रहा।
10 लेकिन वह सरकश हुए, उन्हों ने उस के क़ुद्दूस
रूह को दुख पहुँचाया। तब वह मुड़ कर उन का
दुश्मन बन गया। ख़ुद वह उन से लड़ने लगा।
11 फिर उस की क़ौम को वह क़दीम ज़माना याद
आया जब मूसा अपनी क़ौम के दरमियान था, और
वह पुकार उठे, "वह कहाँ है जो अपनी भेड़-बकरियों
को उन के गल्लाबानों समेत समुन्दर में से निकाल
लाया? वह कहाँ है जिस ने अपने रूह-उल-क़ुद्स को
उन के दरमियान नाज़िल किया, 12 जिस की जलाली
क़ुदरत मूसा के दाएँ हाथ हाज़िर रही ताकि उस को
सहारा दे? वह कहाँ है जिस ने पानी को इस्राईलियों
के सामने तक़्सीम करके अपने लिए अबदी शुहरत
पैदा की 13 और उन्हें गहराइयों में से गुज़रने दिया?
उस वक़्त वह खुले मैदान में चलने वाले घोड़े की
तरह आराम से गुज़रे और कहीं भी ठोकर न खाई।
14 जिस तरह गाय-बैल आराम के लिए वादी में उतरते
हैं उसी तरह उन्हें रब के रूह से आराम और सुकून
हासिल हुआ।"
इसी तरह तू ने अपनी क़ौम की राहनुमाई की ताकि
तेरे नाम को जलाल मिले।

तौबा की दुआ

15 ऐ अल्लाह, आसमान से हम पर नज़र डाल,
बुलन्दियों पर अपनी मुक़द्दस और शानदार
सुकूनतगाह से देख! इस वक़्त तेरी ग़ैरत और क़ुदरत
कहाँ है? हम तेरी नर्मी और मेहरबानियों से महरूम
रह गए हैं! 16 तू तो हमारा बाप है। क्यूँकि इब्राहीम
हमें नहीं जानता और इस्राईल हमें नहीं पहचानता,
लेकिन तू, रब हमारा बाप है, क़दीम ज़माने से ही
तेरा नाम 'हमारा छुड़ाने वाला' है। 17 ऐ रब, तू हमें
अपनी राहों से क्यूँ भटकने देता है? तू ने हमारे दिलों
को इतना सख़्त क्यूँ कर दिया कि हम तेरा ख़ौफ़
नहीं मान सकते? हमारी ख़ातिर वापस आ! क्यूँकि
हम तेरे ख़ादिम, तेरी मौरूसी मिलकियत के क़बीले

हैं। 18 तेरा मक़्दिस थोड़ी ही देर के लिए तेरी क़ौम
की मिलकियत रहा, लेकिन अब हमारे मुख़ालिफ़ों
ने उसे पाँओ तले रौंद डाला है। 19 लगता है कि हम
कभी तेरी हुकूमत के तहत नहीं रहे, कि हम पर कभी
तेरे नाम का ठप्पा नहीं लगा था।

64 1 काश तू आसमान को फाड़ कर उतर
आए, कि पहाड़ तेरे सामने थरथराएँ।
2 काश तू डालियों को भड़का देने वाली आग या
पानी को एक दम उबालने वाली आतिश की तरह
नाज़िल हो ताकि तेरे दुश्मन तेरा नाम जान लें और
क़ौमें तेरे सामने लरज़ उठें! 3 क्यूँकि क़दीम ज़माने
में जब तू ख़ौफ़नाक और ग़ैरमुतवक़्क़े काम किया
करता था तो यूँ ही नाज़िल हुआ, और पहाड़ यूँ ही
तेरे सामने काँपने लगे। 4 क़दीम ज़माने से ही किसी
ने तेरे सिवा किसी और ख़ुदा को न देखा न सुना है।
सिर्फ़ तू ही ऐसा ख़ुदा है जो उन की मदद करता है
जो तेरे इन्तिज़ार में रहते हैं।

5 तू उन से मिलता है जो ख़ुशी से रास्त काम
करते, जो तेरी राहों पर चलते हुए तुझे याद करते
हैं! अफ़्सोस, तू हम से नाराज़ हुआ, क्यूँकि हम शुरू
से तेरा गुनाह करके तुझ से बेवफ़ा रहे हैं। तो फिर
हम किस तरह बच जाएंगे? 6 हम सब नापाक हो गए
हैं, हमारे तमाम नाम-निहाद रास्त काम गन्दे चीथड़ों
की मानिन्द हैं। हम सब पत्तों की तरह मुरझा गए हैं,
और हमारे गुनाह हमें हवा के झोंकों की तरह उड़ा
कर ले जा रहे हैं।

7 कोई नहीं जो तेरा नाम पुकारे या तुझ से लिपटने
की कोशिश करे। क्यूँकि तू ने अपना चिहरा हम से
छुपा कर हमें हमारे क़ुसूरों के हवाले छोड़ दिया है।

8 ऐ रब, ताहम तू ही हमारा बाप, हमारा कुम्हार है।
हम सब मिट्टी ही हैं जिसे तेरे हाथ ने तश्कील दिया है।
9 ऐ रब, हद से ज़्यादा हम से नाराज़ न हो! हमारे गुनाह
तुझे हमेशा तक याद न रहें। ज़रा इस का लिहाज़ कर
कि हम सब तेरी क़ौम हैं। 10 तेरे मुक़द्दस शहर वीरान
हो गए हैं, यहाँ तक कि सिय्यून भी बयाबान ही है,
यरूशलम वीरान-ओ-सुन्सान है। 11 हमारा मुक़द्दस
और शानदार घर जहाँ हमारे बापदादा तेरी सताइश
करते थे नज़र-ए-आतिश हो गया है, जो कुछ भी हम
अज़ीज़ रखते थे वह खंडर बन गया है।

12 ऐ रब, क्या तू इन वाक़िआत के बावुजूद भी
अपने आप को हम से दूर रखेगा? क्या तू ख़ामोश
रह कर हमें हद से ज़्यादा पस्त होने देगा?।

रब का ग़ज़ब क़ौम पर नाज़िल होगा

65 1 "जो मेरे बारे में दरयाफ़्त नहीं करते थे
उन्हें मैं ने मुझे ढूँडने का मौक़ा दिया। जो
मुझे तलाश नहीं करते थे उन्हें मैं ने मुझे पाने का
मौक़ा दिया। मैं बोला, 'मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ!'
हालाँकि जिस क़ौम से मैं मुख़ातिब हुआ वह मेरा नाम
नहीं पुकारती थी।

2 दिन भर मैं ने अपने हाथ फैलाए रखे ताकि
एक सरकश क़ौम का इस्तिक़्बाल करूँ, हालाँकि
यह लोग ग़लत राह पर चलते और अपने कजरौ
ख़यालात के पीछे पड़े रहते हैं। 3 यह मुतवातिर और
मेरे रू-ब-रू ही मुझे नाराज़ करते हैं। क्यूँकि यह बाग़ों
में क़ुर्बानियाँ चढ़ा कर ईंटों की क़ुर्बानगाहों पर बख़ूर
जलाते हैं। 4 यह क़ब्रिस्तान में बैठ कर ख़ुफ़िया ग़ारों
में रात गुज़ारते हैं। यह सूअर का गोश्त खाते हैं, उन
की देगों में क़ाबिल-ए-घिन शोरबा होता है। 5 साथ
साथ यह एक दूसरे से कहते हैं, 'मुझ से दूर रहो,
क़रीब मत आना! क्यूँकि मैं तेरी निस्बत कहीं ज़्यादा
मुक़द्दस हूँ।'

इस क़िस्म के लोग मेरी नाक में धुएँ की मानिन्द हैं,
एक आग जो दिन भर जलती रहती है। 6 देखो, यह
बात मेरे सामने ही क़लमबन्द हुई है कि मैं ख़ामोश
नहीं रहूँगा बल्कि पूरा पूरा अज्र दूँगा। मैं उन की झोली
उन के अज्र से भर दूँगा।" 7 रब फ़रमाता है, "उन्हें न
सिर्फ़ उन के अपने गुनाहों की सज़ा मिलेगी बल्कि
बापदादा के गुनाहों की भी। चूँकि उन्हों ने पहाड़ों पर
बख़ूर की क़ुर्बानियाँ चढ़ा कर मेरी तह्क़ीर की इस
लिए मैं उन की झोली उन की हरकतों के मुआवज़े
से भर दूँगा।"

मौत न चुनो बल्कि हयात!

8 रब फ़रमाता है, "जब तक अंगूर में थोड़ा सा रस
बाक़ी हो लोग कहते हैं, 'उसे ज़ाए मत करना, क्यूँकि
अब तक उस में कुछ न कुछ है जो बरकत का बाइस
है।' मैं इस्राईल के साथ भी ऐसा ही करूँगा। क्यूँकि
अपने ख़ादिमों की ख़ातिर मैं सब को नेस्त नहीं
करूँगा। 9 मैं याक़ूब और यहूदाह को ऐसी औलाद
बख़्श दूँगा जो मेरे पहाड़ों को मीरास में पाएगी।
तब पहाड़ मेरे बरगुज़ीदों की मिलकियत होंगे, और
मेरे ख़ादिम उन पर बसेंगे। 10 वादी-ए-शारून में भेड़-
बकरियाँ चरेंगी, वादी-ए-अकूर में गाय-बैल आराम
करेंगे। यह सब कुछ मेरी उस क़ौम को दस्तयाब
होगा जो मेरी तालिब रहेगी।

11 लेकिन तुम जो रब को तर्क करके मेरे मुक़द्दस
पहाड़ को भूल गए हो, ख़बरदार! गो इस वक़्त तुम
ख़ुशक़िसमती के देवता जद के लिए मेज़ बिछाते और
तक़्दीर के देवता मनात के लिए मै का बर्तन भर देते
हो, 12 लेकिन तुम्हारी तक़्दीर और है। मैं ने तुम्हारे
लिए तलवार की तक़्दीर मुक़र्रर की है। तुम सब को
क़साई के सामने झुकना पड़ेगा, क्यूँकि जब मैं ने
तुम्हें बुलाया तो तुम ने जवाब न दिया। जब मैं तुम
से हमकलाम हुआ तो तुम ने न सुना बल्कि वह कुछ
किया जो मुझे बुरा लगा। तुम ने वह कुछ इख़तियार
किया जो मुझे नापसन्द है।"

13 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "मेरे
ख़ादिम खाना खाएँगे, लेकिन तुम भूके रहोगे। मेरे
ख़ादिम पानी पिएँगे, लेकिन तुम प्यासे रहोगे। मेरे
ख़ादिम मसरूर होंगे, लेकिन तुम शर्मसार होगे। 14 मेरे
ख़ादिम ख़ुशी के मारे शादियाना बजाएंगे, लेकिन तुम
रंजीदा हो कर रो पड़ोगे, तुम मायूस हो कर वावैला
करोगे। 15 आख़िरकार तुम्हारा नाम ही मेरे बरगुज़ीदों
के पास बाक़ी रहेगा, और वह भी सिर्फ़ लानत के तौर
पर इस्तेमाल होगा। क़सम खाते वक़्त वह कहेंगे,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ तुम्हें इसी तरह क़त्ल करे।'
लेकिन मेरे ख़ादिमों का एक और नाम रखा जाएगा।
16 मुल्क में जो भी अपने लिए बरकत माँगे या क़सम
खाए वह वफ़ादार ख़ुदा का नाम लेगा। क्यूँकि गुज़री
मुसीबतों की यादें मिट जाएँगी, वह मेरी आँखों से
छुप जाएँगी।

नए ज़माने का आग़ाज़

17 क्यूँकि मैं नया आसमान और नई ज़मीन ख़ल्क़
करूँगा। तब गुज़री चीज़ें याद नहीं आएँगी, उन का
ख़याल तक नहीं आएगा।

18 चुनाँचे ख़ुश-ओ-ख़ुर्रम हो! जो कुछ मैं ख़ल्क़
करूँगा उस की हमेशा तक ख़ुशी मनाओ! क्यूँकि
देखो, मैं यरूशलम को शादमानी का बाइस और उस
के बाशिन्दों को ख़ुशी का सबब बनाऊँगा। 19 मैं ख़ुद
भी यरूशलम की ख़ुशी मनाऊँगा और अपनी क़ौम से
लुत्फ़अन्दोज़ हूँगा।

आइन्दा उस में रोना और वावैला सुनाई नहीं देगा।
20 वहाँ कोई भी पैदाइश के थोड़े दिनों बाद फ़ौत
नहीं होगा, कोई भी वक़्त से पहले नहीं मरेगा। जो
सौ साल का होगा उसे जवान समझा जाएगा, और
जो सौ साल की उम्र से पहले ही फ़ौत हो जाए उसे
मलऊन समझा जाएगा।

21 लोग घर बना कर उन में बसेंगे, वह अंगूर के
बाग़ लगा कर उन का फल खाएँगे। 22 आइन्दा ऐसा
नहीं होगा कि घर बनाने के बाद कोई और उस में
बसे, कि बाग़ लगाने के बाद कोई और उस का
फल खाए। क्यूँकि मेरी क़ौम की उम्र दरख़्तों जैसी
दराज़ होगी, और मेरे बर्गुज़ीदा अपने हाथों के काम
से लुत्फ़अन्दोज़ होंगे। 23 न उन की मेहनत-मशक़्क़त
रायगाँ जाएगी, न उन के बच्चे अचानक तशद्दुद का
निशाना बन कर मरेंगे। क्यूँकि वह रब की मुबारक
नस्ल होंगे, वह ख़ुद और उन की औलाद भी। 24 इस
से पहले कि वह आवाज़ दें मैं जवाब दूँगा, वह अभी
बोल रहे होंगे कि मैं उन की सुनूँगा।"

25 रब फ़रमाता है, "भेड़िया और लेला मिल कर
चरेंगे, शेरबबर बैल की तरह भूसा खाएगा, और साँप
की ख़ुराक ख़ाक ही होगी। मेरे पूरे मुक़द्दस पहाड़ पर

न ग़लत काम किया जाएगा, न किसी को नुक़्सान पहुँचेगा।”

दो मालिकों की ख़िदमत करना नामुमकिन है

66 1 रब फ़रमाता है, “आसमान मेरा तख़्त है
और ज़मीन मेरे पाँओ की चौकी, तो फिर
वह घर कहाँ है जो तुम मेरे लिए बनाओगे? वह जगह
कहाँ है जहाँ मैं आराम करूँगा?” 2 रब फ़रमाता
है, “मेरे हाथ ने यह सब कुछ बनाया, तब ही यह
सब कुछ वुजूद में आया। और मैं उसी का ख़याल
रखता हूँ जो मुसीबतज़दा और शिकस्तादिल है, जो
मेरे कलाम के सामने काँपता है।

3 लेकिन बैल को ज़बह करने वाला क़ातिल के
बराबर और लेले को क़ुर्बान करने वाला कुत्ते की
गर्दन तोड़ने वाले के बराबर है। ग़ल्ला की नज़र पेश
करने वाला सूअर का ख़ून चढ़ाने वाले से बेहतर
नहीं, और बख़ूर जलाने वाला बुतपरस्त की मानिन्द
है। इन लोगों ने अपनी ग़लत राहों को इख़तियार
किया है, और इन की जान अपनी घिनौनी चीज़ों
से लुत्फ़अन्दोज़ होती है। 4 जवाब में मैं भी उन से
बदसुलूकी की राह इख़तियार करूँगा, मैं उन पर वह
कुछ नाज़िल करूँगा जिस से वह दहशत खाते हैं।
क्यूँकि जब मैं ने उन्हें आवाज़ दी तो किसी ने जवाब
न दिया, जब मैं बोला तो उन्हों ने न सुना बल्कि वही
कुछ करते रहे जो मुझे बुरा लगा, वही करने पर तुले
रहे जो मुझे नापसन्द है।”

यरूशलम के साथ ख़ुशी मनाओ

5 ऐ रब के कलाम के सामने लरज़ने वालो, उस का
फ़रमान सुनो! “तुम्हारे अपने भाई तुम से नफ़रत करते
और मेरे नाम के बाइस तुम्हें रद्द करते हैं। वह मज़ाक़
उड़ा कर कहते हैं, ‘रब अपने जलाल का इज़हार
करे ताकि हम तुम्हारी ख़ुशी का मुशाहदा कर सकें।’
लेकिन वह शर्मिन्दा हो जाएंगे।

6 सुनो! शहर में शोर-ओ-ग़ौग़ा हो रहा है। सुनो! रब
के घर से हलचल की आवाज़ सुनाई दे रही है। सुनो!
रब अपने दुश्मनों को उन की मुनासिब सज़ा दे रहा
है।

7 दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला होने से पहले ही यरूशलम
ने बच्चा जन्म दिया, ज़च्चगी की ईज़ा से पहले ही उस
के बेटा पैदा हुआ। 8 किस ने कभी ऐसी बात सुनी
है? किस ने कभी इस क़िस्म का मुआमला देखा है?
क्या कोई मुल्क एक ही दिन के अन्दर अन्दर पैदा
हो सकता है? क्या कोई क़ौम एक ही लम्हे में जन्म
ले सकती है? लेकिन सिय्यून के साथ ऐसा ही हुआ
है। दर्द-ए-ज़ह अभी शुरू ही होना था कि उस के बच्चे
पैदा हुए।” 9 रब फ़रमाता है, “क्या मैं बच्चे को यहाँ
तक लाऊँ कि वह माँ के पेट से निकलने वाला हो
और फिर उसे जन्म लेने न दूँ? हरगिज़ नहीं!” तेरा
ख़ुदा फ़रमाता है, “क्या मैं जो बच्चे को पैदा होने देता
हूँ बच्चे को रोक दूँ? कभी नहीं!”

10 “ऐ यरूशलम को प्यार करने वालो, सब उस के
साथ ख़ुशी मनाओ! ऐ शहर पर मातम करने वालो,
सब उस के साथ शादियाना बजाओ! 11 क्यूँकि
अब तुम उस की तसल्ली दिलाने वाली छाती से
जी भर कर दूध पियोगे, तुम उस के शानदार दूध
की कस्रत से लुत्फ़अन्दोज़ होगे।” 12 क्यूँकि रब
फ़रमाता है, “मैं यरूशलम में सलामती का दरया
बहने दूँगा और उस पर अक़्वाम की शान-ओ-शौकत
का सैलाब आने दूँगा। तब वह तुम्हें अपना दूध
पिला कर उठाए फिरेगी, तुम्हें गोद में बिठा कर प्यार
करेगी। 13 मैं तुम्हें माँ की सी तसल्ली दूँगा, और तुम
यरूशलम को देख कर तसल्ली पाओगे। 14 इन बातों
का मुशाहदा करके तुम्हारा दिल ख़ुश होगा और तुम
ताज़ा हरियाली की तरह फलो फूलोगे।”

उस वक़्त ज़ाहिर हो जाएगा कि रब का हाथ उस
के ख़ादिमों के साथ है जबकि उस के दुश्मन उस
के ग़ज़ब का निशाना बनेंगे। 15 रब आग की सूरत में
आ रहा है, आँधी जैसे रथों के साथ नाज़िल हो रहा
है ताकि दहकते कोएलों से अपना ग़ुस्सा ठंडा करे
और शोलाअफ़्शाँ आग से मलामत करे। 16 क्यूँकि
रब आग और अपनी तलवार के ज़रीए तमाम इन्सानों

की अदालत करके अपने हाथ से मुतअद्दिद लोगों
को हलाक करेगा।
17 रब फ़रमाता है, “जो अपने आप को बुतों के
बाग़ों के लिए मख़्सूस और पाक-साफ़ करते हैं और
दरमियान के राहनुमा की पैरवी करके सूअर, चूहे
और दीगर घिनौनी चीज़ें खाते हैं वह मिल कर हलाक
हो जाएंगे।

दीगर अक़्वाम भी रब की परस्तिश करेंगी

18 चुनाँचे मैं जो उन के आमाल और ख़यालात से
वाक़िफ़ हूँ तमाम अक़्वाम और अलग अलग ज़बानें
बोलने वालों को जमा करने के लिए नाज़िल हो रहा
हूँ। तब वह आ कर मेरे जलाल का मुशाहदा करेंगे।
19 मैं उन के दरमियान इलाही निशान क़ाइम करके
बचे हुओं में से कुछ दीगर अक़्वाम के पास भेज
दूँगा। वह तरसीस, लिबिया, तीर चलाने की माहिर
क़ौम लुदिया, तूबल, यूनान और उन दूरदराज़ जज़ीरों
के पास जाएंगे जिन्हों ने न मेरे बारे में सुना, न मेरे
जलाल का मुशाहदा किया है। इन अक़्वाम में वह
मेरे जलाल का एलान करेंगे।
20 फिर वह तमाम अक़्वाम में रहने वाले तुम्हारे
भाइयों को घोड़ों, रथों, गाड़ियों, ख़च्चरों और ऊँटों
पर सवार करके यरूशलम ले आएँगे। यहाँ मेरे
मुक़द्दस पहाड़ पर वह उन्हें ग़ल्ला की नज़र के तौर
पर पेश करेंगे। क्यूँकि रब फ़रमाता है कि जिस तरह
इस्राईली अपनी ग़ल्ला की नज़रें पाक बर्तनों में रख
कर रब के घर में ले आते हैं उसी तरह वह तुम्हारे
इस्राईली भाइयों को यहाँ पेश करेंगे। 21 उन में से मैं
बाज़ को इमाम और लावी का उह्दा दूँगा।” यह रब
का फ़रमान है।
22 रब फ़रमाता है, “जितने यक़ीन के साथ मेरा
बनाया हुआ नया आसमान और नई ज़मीन मेरे सामने
क़ाइम रहेगा उतने यक़ीन के साथ तुम्हारी नस्ल और
तुम्हारा नाम अबद तक क़ाइम रहेगा। 23 उस वक़्त
तमाम इन्सान मेरे पास आ कर मुझे सिज्दा करेंगे। हर
नए चाँद और हर सबत को वह बाक़ाइदगी से आते
रहेंगे।” यह रब का फ़रमान है। 24 “तब वह शहर से
निकल कर उन की लाशों पर नज़र डालेंगे जो मुझ
से सरकश हुए थे। क्यूँकि न उन्हें खाने वाले कीड़े
कभी मरेंगे, न उन्हें जलाने वाली आग कभी बुझेगी।
तमाम इन्सान उन से घिन खाएँगे।”

यरमियाह

रब का नबी यरमियाह

1 1 ज़ैल में यरमियाह बिन ख़िलक़ियाह के
पैग़ामात क़लमबन्द किए गए हैं। (बिनयमीन
के क़बाइली इलाक़े के शहर अनतोत में कुछ इमाम
रहते थे, और यरमियाह का वालिद उन में से था)।
2 रब का फ़रमान पहली बार यहूदाह के बादशाह
यूसियाह बिन अमून की हुकूमत के 13वें साल में
यरमियाह पर नाज़िल हुआ, 3 और यरमियाह को यह
पैग़ामात यहूयक़ीम बिन यूसियाह के दौर-ए-हुकूमत
से ले कर सिदक़ियाह बिन यूसियाह की हुकूमत के
11वें साल के पाँचवें महीने [v]तक मिलते रहे। उस
वक़्त यरूशलम के बाशिन्दों को जिलावतन कर
दिया गया।

यरमियाह की बुलाहट

4 एक दिन रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,
5 "मैं तुझे माँ के पेट में तश्कील देने से पहले ही
जानता था, तेरी पैदाइश से पहले ही मैं ने तुझे मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस करके अक़्वाम के लिए नबी मुक़र्रर
किया।"
6 मैं ने एतिराज़ किया, "ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़,
अफ़्सोस! मैं तेरा कलाम सुनाने का सहीह इल्म नहीं
रखता, मैं तो बच्चा ही हूँ।" 7 लेकिन रब ने मुझ से
फ़रमाया, "मत कह 'मैं बच्चा ही हूँ।' क्यूँकि जिन के
पास भी मैं तुझे भेजूँगा उन के पास तू जाएगा, और
जो कुछ भी मैं तुझे सुनाने को कहूँगा उसे तू सुनाएगा।
8 लोगों से मत डरना, क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ, मैं तुझे
बचाए रखूँगा।" यह रब का फ़रमान है।
9 फिर रब ने अपना हाथ बढ़ा कर मेरे होंटों को छू
दिया और फ़रमाया, "देख, मैं ने अपने अल्फ़ाज़ को
तेरे मुँह में डाल दिया है। 10 आज मैं तुझे क़ौमों और
सल्तनतों पर मुक़र्रर कर देता हूँ। कहीं तुझे उन्हें जड़
से उखाड़ कर गिरा देना, कहीं बर्बाद करके ढा देना
और कहीं तामीर करके पौदे की तरह लगा देना है।"

बादाम की शाख़ और उबलती देग की रोया

11 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, "ऐ
यरमियाह, तुझे क्या नज़र आ रहा है?" मैं ने जवाब
दिया, "बादाम की एक शाख़, उस दरख़्त की जो
'देखने वाला' कहलाता है।" 12 रब ने फ़रमाया, "तू
ने सहीह देखा है। इस का मतलब है कि मैं अपने
कलाम की देख-भाल कर रहा हूँ, मैं ध्यान दे रहा हूँ
कि वह पूरा हो जाए।"
13 फिर रब का कलाम दुबारा मुझ पर नाज़िल हुआ,
"तुझे क्या नज़र आ रहा है?" मैं ने जवाब दिया,
"शिमाल में देग दिखाई दे रही है। जो कुछ उस में
है वह उबल रहा है, और उस का मुँह हमारी तरफ़
झुका हुआ है।" 14 तब रब ने मुझ से कहा, "इसी
तरह शिमाल से मुल्क के तमाम बाशिन्दों पर आफ़त
टूट पड़ेगी।" 15 क्यूँकि रब फ़रमाता है, "मैं शिमाली
ममालिक के तमाम घरानों को बुला लूँगा, और हर
एक आ कर अपना तख़्त यरूशलम के दरवाज़ों के
सामने ही खड़ा करेगा। हाँ, वह उस की पूरी फ़सील
को घेर कर उस पर बल्कि यहूदाह के तमाम शहरों पर
छापा मारेंगे। 16 यूँ मैं अपनी क़ौम पर फ़ैसले सादिर
करके उन के ग़लत कामों की सज़ा दूँगा। क्यूँकि
उन्हों ने मुझे तर्क करके अजनबी माबूदों के लिए

---

[v]जुलाई ता अगस्त।

बख़ूर जलाया और अपने हाथों से बने हुए बुतों को
सिज्दा किया है।
17 चुनाँचे कमरबस्ता हो जा! उठ कर उन्हें सब
कुछ सुना दे जो मैं फ़रमाऊँगा। उन से दहशत मत
खाना, वर्ना मैं तुझे उन के सामने ही दहशतज़दा कर
दूँगा। 18 देख, आज मैं ने तुझे क़िलाबन्द शहर, लोहे
के सतून और पीतल की चारदीवारी जैसा मज़बूत
बना दिया है ताकि तू पूरे मुल्क का सामना कर सके,
ख़्वाह यहूदाह के बादशाह, अफ़सर, इमाम या अवाम
तुझ पर हम्ला क्यूँ न करें। 19 तुझ से लड़ने के बावुजूद
वह तुझ पर ग़ालिब नहीं आएँगे, क्यूँकि मैं तेरे साथ
हूँ, मैं ही तुझे बचाए रखूँगा।" यह रब का फ़रमान है।

अल्लाह की जवान इस्राईल के लिए फ़िक्र

2 1 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 2 "जा,
ज़ोर से यरूशलम के कान में पुकार कि रब
फ़रमाता है, 'मुझे तेरी जवानी की वफ़ादारी ख़ूब याद
है। जब तेरी शादी क़रीब आई तो तू मुझे कितना
प्यार करती थी, यहाँ तक कि तू रेगिस्तान में भी जहाँ
खेतीबाड़ी नामुमकिन थी मेरे पीछे पीछे चलती रही।
3 उस वक़्त इस्राईल रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
था, वह उस की फ़सल का पहला फल था। जिस ने
भी उस में से कुछ खाया वह मुजरिम ठहरा, और उस
पर आफ़त नाज़िल हुई। यह रब का फ़रमान है'।"

इस्राईल के बापदादा के गुनाह

4 ऐ याक़ूब की औलाद, रब का कलाम सुनो! ऐ
इस्राईल के तमाम घरानो, ध्यान दो! 5 रब फ़रमाता
है, "तुम्हारे बापदादा ने मुझ में कौन सी नाइन्साफ़ी
पाई कि मुझ से इतने दूर हो गए? हेच बुतों के पीछे
हो कर वह ख़ुद हेच हो गए। 6 उन्हों ने पूछा तक
नहीं कि रब कहाँ है जो हमें मिस्र से निकाल लाया
और रेगिस्तान में सहीह राह दिखाई, गो वह इलाक़ा
वीरान-ओ-सुन्सान था। हर तरफ़ घाटियों, पानी की
सख़्त कमी और तारीकी का सामना करना पड़ा।
न कोई उस में से गुज़रता, न कोई वहाँ रहता है।
7 मैं तो तुम्हें बाग़ों से भरे मुल्क में लाया ताकि तुम
उस के फल और अच्छी पैदावार से लुत्फ़अन्दोज़
हो सको। लेकिन तुम ने क्या किया? मेरे मुल्क में
दाख़िल होते ही तुम ने उसे नापाक कर दिया, और
मैं अपनी मौरूसी मिलकियत से घिन खाने लगा। 8 न
इमामों ने पूछा कि रब कहाँ है, न शरीअत को अमल
में लाने वाले मुझे जानते थे। क़ौम के गल्लाबान मुझ
से बेवफ़ा हुए, और नबी बेफ़ाइदा बुतों के पीछे लग
कर बाल देवता के पैग़ामात सुनाने लगे।"

रब का अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा

9 रब फ़रमाता है, "इसी वजह से मैं आइन्दा भी
अदालत में तुम्हारे साथ लड़ूँगा। हाँ, न सिर्फ़ तुम्हारे
साथ बल्कि तुम्हारी आने वाली नस्लों के साथ भी।
10 जाओ, समुन्दर को पार करके जज़ीरा-ए-क़ुब्रुस की
तफ़्तीश करो! अपने क़ासिदों को मुल्क-ए-क़ीदार में
भेज कर ग़ौर से दरयाफ़्त करो कि क्या वहाँ कभी
यहाँ का सा काम हुआ है? 11 क्या किसी क़ौम ने
कभी अपने देवताओं को तब्दील किया, गो वह
हक़ीक़त में ख़ुदा नहीं हैं? हरगिज़ नहीं! लेकिन
मेरी क़ौम अपनी शान-ओ-शौकत के ख़ुदा को छोड़
कर बेफ़ाइदा बुतों की पूजा करने लगी है।" 12 रब
फ़रमाता है, "ऐ आसमान, यह देख कर हैबतज़दा
हो जा, तेरे रोंगटे खड़े हो जाएँ, हक्का-बक्का रह जा!
13 क्यूँकि मेरी क़ौम से दो संगीन जुर्म सरज़द हुए हैं।
एक, उन्हों ने मुझे तर्क किया, गो मैं ज़िन्दगी के पानी
का सरचश्मा हूँ। दूसरे, उन्हों ने अपने ज़ाती हौज़
बनाए हैं जो दराड़ों की वजह से भर ही नहीं सकते।

इस्राईल की बेवफ़ाई के नताइज

14 क्या इस्राईल इब्तिदा से ही ग़ुलाम है? क्या उस
के वालिदैन ग़ुलाम थे कि वह अब तक ग़ुलाम है?
हरगिज़ नहीं! तो फिर वह क्यूँ दूसरों का लूटा हुआ
माल बन गया है? 15 जवान शेरबबर दहाड़ते हुए
उस पर टूट पड़े हैं, गरजते गरजते उन्हों ने मुल्क-ए-
इस्राईल को बर्बाद कर दिया है। उस के शहर नज़र-ए-

आतिश हो कर वीरान-ओ-सुन्सान हो गए हैं। 16 साथ
साथ मेम्फ़िस और तह्फ़न्हीस के लोग भी तेरे सर को
मुंडवा रहे हैं।

17 ऐ इस्राईली क़ौम, क्या यह तेरे ग़लत काम का
नतीजा नहीं? क्यूँकि तू ने रब अपने ख़ुदा को उस
वक़्त तर्क किया जब वह तेरी राहनुमाई कर रहा था।
18 अब मुझे बता कि मिस्र को जा कर दरया-ए-नील
का पानी पीने का क्या फ़ाइदा? मुल्क-ए-असूर में जा
कर दरया-ए-फ़ुरात का पानी पीने से क्या हासिल?
19 तेरा ग़लत काम तुझे सज़ा दे रहा है, तेरी बेवफ़ा
हरकतें ही तेरी सरज़निश कर रही हैं। चुनाँचे जान ले
और ध्यान दे कि रब अपने ख़ुदा को छोड़ कर उस
का ख़ौफ़ न मानने का फल कितना बुरा और कड़वा
है।" यह क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज का
फ़रमान है।

20 "क्यूँकि शुरू से ही तू अपने जूए और रस्सों को
तोड़ कर कहती रही, 'मैं तेरी ख़िदमत नहीं करूँगी!'
तू हर बुलन्दी पर और हर घने दरख़्त के साय में लेट
कर इस्मतफ़रोशी करती रही। 21 पहले तू अंगूर की
मख़्सूस और क़ाबिल-ए-एतिमाद नस्ल की पनीरी थी
जिसे मैं ने ख़ुद ज़मीन में लगाया। तो यह क्या हुआ
कि तू बिगड़ कर जंगली [w]बेल बन गई? 22 अब तेरे
क़ुसूर का दाग़ उतर नहीं सकता, ख़्वाह तू कितना
खारी सोडा और साबुन क्यूँ न इस्तेमाल करे।" यह
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।

23 "तू किस तरह यह कहने की जुरअत कर सकती
है कि मैं ने अपने आप को आलूदा नहीं किया, मैं
बाल देवताओं के पीछे नहीं गई। वादी में अपनी
हरकतों पर तो ग़ौर कर! जान ले कि तुझ से क्या
कुछ सरज़द हुआ है। तू बेमक़्सद इधर उधर भागने
वाली ऊँटनी है। 24 बल्कि तू रेगिस्तान में रहने की
आदी गधी ही है जो शहवत के मारे हाँपती है। मस्ती
के इस आलम में कौन उस पर क़ाबू पा सकता है?
जो भी उस से मिलना चाहे उसे ज़्यादा जिद्द-ओ-जह्द
की ज़रूरत नहीं, क्यूँकि मस्ती के मौसम में वह हर
एक के लिए हाज़िर है। 25 ऐ इस्राईल, इतना न दौड़
कि तेरे जूते घिस कर फट जाएँ और तेरा गला ख़ुश्क
हो जाए। लेकिन अफ़्सोस, तू बज़िद है, 'नहीं, मुझे
छोड़ दे! मैं अजनबी माबूदों को प्यार करती हूँ, और
लाज़िम है कि मैं उन के पीछे भागती जाऊँ।'

26 सुनो! इस्राईली क़ौम के तमाम अफ़राद उन
के बादशाहों, अफ़्सरों, इमामों और नबियों समेत
शर्मिन्दा हो जाएंगे। वह पकड़े हुए चोर की सी शर्म
मह्सूस करेंगे। 27 यह लोग लकड़ी के बुत से कहते
हैं, 'तू मेरा बाप है' और पत्थर के देवता से, 'तू ने
मुझे जन्म दिया।' लेकिन गो यह मेरी तरफ़ रुजू नहीं
करते बल्कि अपना मुँह मुझ से फेर कर चलते हैं तो
भी जूँ ही कोई आफ़त उन पर आ जाए तो यह मुझ से
इल्तिजा करने लगते हैं कि आ कर हमें बचा! 28 अब
यह बुत कहाँ हैं जो तू ने अपने लिए बनाए? वही खड़े
हो कर दिखाएँ कि तुझे मुसीबत से बचा सकते हैं। ऐ
यहूदाह, आख़िर जितने तेरे शहर हैं उतने तेरे देवता
भी हैं।" 29 रब फ़रमाता है, "तुम मुझ पर क्यूँ इल्ज़ाम
लगाते हो? तुम तो सब मुझ से बेवफ़ा हो गए हो।
30 मैं ने तुम्हारे बच्चों को सज़ा दी, लेकिन बेफ़ाइदा।
वह मेरी तर्बियत क़बूल नहीं करते। बल्कि तुम ने
फाड़ने वाले शेरबबर की तरह अपने नबियों पर टूट
कर उन्हें तलवार से क़त्ल किया।

31 ऐ मौजूदा नस्ल, रब के कलाम पर ध्यान दो! क्या
मैं इस्राईल के लिए रेगिस्तान या तारीकतरीन इलाक़े
की मानिन्द था? मेरी क़ौम क्यूँ कहती है, 'अब हम
आज़ादी से इधर उधर फिर सकते हैं, आइन्दा हम
तेरे हुज़ूर नहीं आएँगे?' 32 क्या कुंवारी कभी अपने
ज़ेवरात को भूल सकती है, या दुल्हन अपना उरूसी
लिबास? हरगिज़ नहीं! लेकिन मेरी क़ौम बेशुमार
दिनों से मुझे भूल गई है।

33 तू इश्क़ ढूँडने में कितनी माहिर है! बदकार
औरतें भी तुझ से बहुत कुछ सीख लेती हैं। 34 तेरे

---

[w]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अजनबी।

लिबास का दामन बेगुनाह ग़रीबों के ख़ून से आलूदा
है, गो तू ने उन्हें नक़बज़नी जैसा ग़लत काम करते
वक़्त न पकड़ा। इस सब कुछ के बावुजूद भी 35 तू
बज़िद है कि मैं बेक़ुसूर हूँ, अल्लाह का मुझ पर ग़ुस्सा
ठंडा हो गया है। लेकिन मैं तेरी अदालत करूँगा,
इस लिए कि तू कहती है, 'मुझ से गुनाह सरज़द नहीं
हुआ।'
36 तू कभी इधर, कभी इधर जा कर इतनी आसानी
से अपना रुख़ क्यूँ बदलती है? यक़ीन कर कि
जिस तरह तू अपने इत्तिहादी असूर से मायूस हो कर
शर्मिन्दा हुई है उसी तरह तू नए इत्तिहादी मिस्र से भी
नादिम हो जाएगी। 37 तू उस जगह से भी अपने हाथों
को सर पर रख कर निकलेगी। क्यूँकि रब ने उन्हें
रद्द किया है जिन पर तू भरोसा रखती है। उन से तुझे
मदद हासिल नहीं होगी।"

इस्राईल की रब से बेवफ़ाई

3 1 रब फ़रमाता है, "अगर कोई अपनी बीवी को
तलाक़ दे और अलग होने के बाद बीवी की
किसी और से शादी हो जाए तो क्या पहले शौहर को
उस से दुबारा शादी करने की इजाज़त है? हरगिज़
नहीं, बल्कि ऐसी हरकत से पूरे मुल्क की बेहुरमती
हो जाती है। देख, यही तेरी हालत है। तू ने मुतअद्दिद
आशिक़ों से ज़िना किया है, और अब तू मेरे पास
वापस आना चाहती है। यह कैसी बात है?
2 अपनी नज़र बंजर पहाड़ियों की तरफ़ उठा कर
देख! क्या कोई जगह है जहाँ ज़िना करने से तेरी
बेहुरमती नहीं हुई? रेगिस्तान में तन्हा बैठने वाले
बदू की तरह तू रास्तों के किनारे पर अपने आशिक़ों
की ताक में बैठी रही है। अपनी इस्मतफ़रोशी और
बदकारी से तू ने मुल्क की बेहुरमती की है। 3 इसी
वजह से बहार में बरसात का मौसम रोका गया और
बारिश नहीं पड़ी। लेकिन अफ़सोस, तू कस्बी की
सी पेशानी रखती है, तू शर्म खाने के लिए तय्यार
ही नहीं। 4 इस वक़्त भी तू चीख़ती चिल्लाती आवाज़
देती है, 'ऐ मेरे बाप, जो मेरी जवानी से मेरा दोस्त है,
5 क्या तू हमेशा तक मेरे साथ नाराज़ रहेगा? क्या तेरा
क़हर कभी ठंडा नहीं होगा?' यही तेरे अपने अल्फ़ाज़
हैं, लेकिन साथ साथ तू ग़लत काम करने की हर
मुमकिन कोशिश करती रहती है।"
6 यूसियाह बादशाह की हुकूमत के दौरान रब मुझ
से हमकलाम हुआ, "क्या तू ने वह कुछ देखा जो
बेवफ़ा इस्राईल ने किया है? उस ने हर बुलन्दी पर
और हर घने दरख़्त के साय में ज़िना किया है। 7 मैं
ने सोचा कि यह सब कुछ करने के बाद वह मेरे
पास वापस आएगी। लेकिन अफ़सोस, ऐसा न हुआ।
उस की ग़द्दार बहन यहूदाह भी इन तमाम वाक़िआत
की गवाह थी। 8 बेवफ़ा इस्राईल की ज़िनाकारी
नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त थी, इस लिए मैं ने उसे घर से
निकाल कर तलाक़नामा दे दिया। फिर भी मैं ने देखा
कि उस की ग़द्दार बहन यहूदाह ने ख़ौफ़ न खाया
बल्कि ख़ुद निकल कर ज़िना करने लगी। 9 इस्राईल
को इस जुर्म की सन्जीदगी महसूस न हुई बल्कि उस
ने पत्थर और लकड़ी के बुतों के साथ ज़िना करके
मुल्क की बेहुरमती की। 10 इस के बावुजूद उस की
बेवफ़ा बहन यहूदाह पूरे दिल से नहीं बल्कि सिर्फ़
ज़ाहिरी तौर पर मेरे पास वापस आई।" यह रब का
फ़रमान है।

मेरे पास लौट आ

11 रब मुझ से हमकलाम हुआ, "बेवफ़ा इस्राईल
ग़द्दार यहूदाह की निस्बत ज़्यादा रास्तबाज़ है। 12 जा,
शिमाल की तरफ़ देख कर बुलन्द आवाज़ से एलान
कर, 'ऐ बेवफ़ा इस्राईल, रब फ़रमाता है कि वापस
आ! आइन्दा मैं ग़ुस्से से तेरी तरफ़ नहीं देखूँगा,
क्यूँकि मैं मेहरबान हूँ। मैं हमेशा तक नाराज़ नहीं
रहूँगा। यह रब का फ़रमान है।
13 लेकिन लाज़िम है कि तू अपना क़ुसूर तस्लीम
करे। इक़्रार कर कि मैं रब अपने ख़ुदा से सरकश
हुई। मैं इधर उधर घूम कर हर घने दरख़्त के साय
में अजनबी माबूदों की पूजा करती रही, मैं ने रब की
न सुनी'।" यह रब का फ़रमान है। 14 रब फ़रमाता

है, “ऐ बेवफ़ा बच्चो, वापस आओ, क्यूँकि मैं तुम्हारा
मालिक हूँ। मैं तुम्हें हर जगह से निकाल कर सिय्यून
में वापस लाऊँगा। किसी शहर से मैं एक को निकाल
लाऊँगा, और किसी ख़ानदान से दो अफ़राद को।
15 तब मैं तुम्हें ऐसे गल्लाबानों से नवाज़ूँगा जो मेरी
सोच रखेंगे और जो समझ और अक़्ल के साथ
तुम्हारी गल्लाबानी करेंगे। 16 फिर तुम्हारी तादाद बहुत
बढ़ेगी और तुम चारों तरफ़ फैल जाओगे।” रब
फ़रमाता है, “उन दिनों में रब के अह्द के सन्दूक़ का
ज़िक्र नहीं किया जाएगा। न उस का ख़याल आएगा,
न उसे याद किया जाएगा। न उस की कमी महसूस
होगी, न उसे दुबारा बनाया जाएगा। 17 क्यूँकि उस
वक़्त यरूशलम ‘रब का तख़्त’ कहलाएगा, और उस
में तमाम अक़्वाम रब के नाम की ताज़ीम में जमा
हो जाएँगी। तब वह अपने शरीर और ज़िद्दी दिलों
के मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं गुज़ारेंगी। 18 तब यहूदाह
का घराना इस्राईल के घराने के पास आएगा, और
वह मिल कर शिमाली मुल्क से उस मुल्क में वापस
आएँगे जो मैं ने तुम्हारे बापदादा को मीरास में दिया
था।
19 मैं ने सोचा, काश मैं तेरे साथ बेटों का सा सुलूक
करके तुझे एक ख़ुशगवार मुल्क दे सकूँ, एक ऐसी
मीरास जो दीगर अक़्वाम की निस्बत कहीं शानदार
हो। मैं समझा कि तुम मुझे अपना बाप ठहरा कर
अपना मुँह मुझ से नहीं फेरोगे। 20 लेकिन ऐ इस्राईली
क़ौम, तू मुझ से बेवफ़ा रही है, बिलकुल उस औरत
की तरह जो अपने शौहर से बेवफ़ा हो गई है।” यह
रब का फ़रमान है।
21 “सुनो! बंजर बुलन्दियों पर चीख़ें और इल्तिजाएँ
सुनाई दे रही हैं। इस्राईली रो रहे हैं, इस लिए कि
वह ग़लत राह इख़तियार करके रब अपने ख़ुदा को
भूल गए हैं। 22 ऐ बेवफ़ा बच्चो, वापस आओ ताकि
मैं तुम्हारे बेवफ़ा दिलों को शिफ़ा दे सकूँ।”
“ऐ रब, हम हाज़िर हैं। हम तेरे पास आते हैं,
क्यूँकि तू ही रब हमारा ख़ुदा है। 23 वाक़ई, पहाड़ियों
और पहाड़ों पर बुतपरस्ती का तमाशा फ़रेब ही
है। यक़ीनन रब हमारा ख़ुदा इस्राईल की नजात है।
24 हमारी जवानी से ले कर आज तक शर्मनाक देवता
हमारे बापदादा की मेहनत का फल खाते आए हैं,
ख़्वाह उन की भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल थे, ख़्वाह
उन के बेटे-बेटियाँ। 25 आओ, हम अपनी शर्म के
बिस्तर पर लेट जाएँ और अपनी बेइज़्ज़ती की रज़ाई
में छुप जाएँ। क्यूँकि हम ने अपने बापदादा समेत रब
अपने ख़ुदा का गुनाह किया है। अपनी जवानी से ले
कर आज तक हम ने रब अपने ख़ुदा की नहीं सुनी।”

तौबा करो

4 1 रब फ़रमाता है, “ऐ इस्राईल, अगर तू वापस
आना चाहे तो मेरे पास वापस आ! अगर तू
अपने घिनौने बुतों को मेरे हुज़ूर से दूर करके आवारा
न फिरे 2 और रब की हयात की क़सम खाते वक़्त
दयानतदारी, इन्साफ़ और सदाक़त से अपना वादा
पूरा करे तो ग़ैरअक़्वाम मुझ से बरकत पा कर मुझ
पर फ़ख़र करेंगी।”
3 रब यहूदाह और यरूशलम के बाशिन्दों से
फ़रमाता है, “अपने दिलों की ग़ैरमुस्तामल ज़मीन पर
हल चला कर उसे क़ाबिल-ए-काश्त बनाओ! अपने
बीज काँटेदार झाड़ियों में बो कर ज़ाए मत करना।
4 ऐ यहूदाह और यरूशलम के बाशिन्दो, अपने आप
को रब के लिए मख़्सूस करके अपना ख़तना कराओ
यानी अपने दिलों का ख़तना कराओ, वर्ना मेरा क़हर
तुम्हारे ग़लत कामों के बाइस कभी न बुझने वाली
आग की तरह तुझ पर नाज़िल होगा।

शिमाल से आफ़त का एलान

5 यहूदाह में एलान करो और यरूशलम को इत्तिला
दो, ‘मुल्क भर में नरसिंगा बजाओ!’ गला फाड़ कर
चिल्लाओ, ‘इकट्ठे हो जाओ! आओ, हम क़िलाबन्द
शहरों में पनाह लें!’ 6 झंडा गाड़ दो ताकि लोग उसे
देख कर सिय्यून में पनाह लें। महफ़ूज़ मक़ाम में भाग
जाओ और कहीं न रुको, क्यूँकि मैं शिमाल की तरफ़
से आफ़त ला रहा हूँ, सब कुछ धड़ाम से गिर जाएगा।

7 शेरबबर जंगल में अपनी छुपने की जगह से
निकल आया, क़ौमों को हलाक करने वाला अपने
मक़ाम से रवाना हो चुका है ताकि तेरे मुल्क को
तबाह करे। तेरे शहर बर्बाद हो जाएंगे, और उन में
कोई नहीं रहेगा।
8 चुनाँचे टाट का लिबास पहन कर आह-ओ-ज़ारी
करो, क्यूँकि रब का सख़्त ग़ज़ब अब तक हम पर
नाज़िल हो रहा है।"
9 रब फ़रमाता है, "उस दिन बादशाह और उस के
अफ़सर हिम्मत हारेंगे, इमामों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे
और नबी ख़ौफ़ से सुन हो कर रह जाएंगे।"
10 तब मैं बोल उठा, "हाय, हाय! ऐ रब क़ादिर-ए-
मुतलक़, तू ने इस क़ौम और यरूशलम को कितना
सख़्त फ़रेब दिया जब तू ने फ़रमाया, तुम्हें अम्न-ओ-
अमान हासिल होगा हालाँकि हमारे गलों पर तलवार
फिरने को है।" 11 उस वक़्त इस क़ौम और यरूशलम
को इत्तिला दी जाएगी, "रेगिस्तान के बंजर टीलों से
सब कुछ झुलसाने वाली लू मेरी क़ौम के पास आ
रही है। और यह गन्दुम को फटक कर भूसे से अलग
करने वाली मुफ़ीद हवा नहीं होगी 12 बल्कि आँधी
जैसी तेज़ हवा मेरी तरफ़ से आएगी। क्यूँकि अब मैं
उन पर अपने फ़ैसले सादिर करूँगा।"
13 देखो, दुश्मन तूफ़ानी बादलों की तरह आगे बढ़
रहा है! उस के रथ आँधी जैसे, और उस के घोड़े
उक़ाब से तेज़ हैं। हाय, हम पर अफ़सोस! हमारा
अन्जाम आ गया है।
14 ऐ यरूशलम, अपने दिल को धो कर बुराई से
साफ़ कर ताकि तुझे छुटकारा मिले। तू अन्दर ही
अन्दर कब तक अपने शरीर मन्सूबे बांधती रहेगी?
15 सुनो! दान से बुरी ख़बरें आ रही हैं, इफ़्राईम के
पहाड़ी इलाक़े से आफ़त का पैग़ाम पहुँच रहा है।
16 ग़ैरअक़्वाम को इत्तिला दो और यरूशलम के बारे
में एलान करो, "मुहासरा करने वाले फ़ौजी दूरदराज़
मुल्क से आ रहे हैं! वह जंग के नारे लगा लगा कर
यहूदाह के शहरों पर टूट पड़ेंगे। 17 तब वह खेतों की
चौकीदारी करने वालों की तरह यरूशलम को घेर
लेंगे। क्यूँकि यह शहर मुझ से सरकश हो गया है।"
यह रब का फ़रमान है। 18 "यह तेरे अपने ही चाल-
चलन और हरकतों का नतीजा है। हाय, तेरी बेदीनी
का अन्जाम कितना तल्ख़ और दिलख़राश है!"

यरमियाह का अपनी क़ौम के लिए दुख

19 हाय, मेरी तड़पती जान, मेरी तड़पती जान! मैं
दर्द के मारे पेच-ओ-ताब खा रहा हूँ। हाय, मेरा दिल!
वह बेकाबू हो कर धड़क रहा है। मैं ख़ामोश नहीं
रह सकता, क्यूँकि नरसिंगे की आवाज़ और जंग के
नारे मेरे कान तक पहुँच गए हैं। 20 यके बाद दीगरे
शिकस्तों की ख़बरें मिल रही हैं, चारों तरफ़ मुल्क
की तबाही हुई है। अचानक ही मेरे तम्बू बर्बाद हैं,
एक ही लम्हे में मेरे ख़ैमे ख़त्म हो गए हैं। 21 मुझे कब
तक जंग का झंडा देखना पड़ेगा, कब तक नरसिंगे
की आवाज़ सुननी पड़ेगी?
22 "मेरी क़ौम अहमक़ है और मुझे नहीं जानती। वह
बेवुक़ूफ़ और नासमझ बच्चे हैं। गो वह ग़लत काम
करने में बहुत तेज़ हैं, लेकिन भलाई करना उन की
समझ से बाहर है।"
23 मैं ने मुल्क पर नज़र डाली तो वीरान-ओ-सुन्सान
था। जब आसमान की तरफ़ देखा तो अंधेरा था।
24 मेरी निगाह पहाड़ों पर पड़ी तो थरथरा रहे थे,
तमाम पहाड़ियाँ हिच्कोले खा रही थीं। 25 कहीं कोई
शख़्स नज़र न आया, तमाम परिन्दे भी उड़ कर जा
चुके थे। 26 मैं ने मुल्क पर नज़र दौड़ाई तो क्या देखता
हूँ कि ज़रख़ेज़ ज़मीन रेगिस्तान बन गई है। रब और
उस के शदीद ग़ज़ब के सामने उस के तमाम शहर
नेस्त-ओ-नाबूद हो गए हैं। 27 क्यूँकि रब फ़रमाता है,
"पूरा मुल्क बर्बाद हो जाएगा, अगरचे मैं उसे पूरे तौर
पर ख़त्म नहीं करूँगा। 28 ज़मीन मातम करेगी और
आसमान तारीक हो जाएगा, क्यूँकि मैं यह फ़रमा
चुका हूँ, और मेरा इरादा अटल है। न मैं यह करने से
पछताऊँगा, न इस से बाज़ आऊँगा।"
29 घुड़सवारों और तीर चलाने वालों का शोर-
शराबा सुन कर लोग तमाम शहरों से निकल कर

जंगलों और चटानों में खिसक जाएंगे। तमाम शहर
वीरान-ओ-सुन्सान होंगे, किसी में भी लोग नहीं
बसेंगे।
30 तो फिर तू क्या कर रही है, तू जिसे ख़ाक में
मिला दिया गया है? अब क़िर्मिज़ी लिबास और सोने
के ज़ेवरात पहनने की क्या ज़रूरत है? इस वक़्त
अपनी आँखों को सुरमे से सजाने और अपने आप को
आरास्ता करने का कोई फ़ाइदा नहीं। तेरे आशिक़ तो
तुझे हक़ीर जानते बल्कि तुझे जान से मारने के दरपै
हैं। 31 क्यूँकि मुझे दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत की
आवाज़, पहली बार जन्म देने वाली की आह-ओ-
ज़ारी सुनाई दे रही है। सिय्यून बेटी कराह रही है,
वह अपने हाथ फैलाए हुए कह रही है, "हाय, मुझ
पर अफ़्सोस! मेरी जान क़ातिलों के हाथ में आ कर
निकल रही है।"

अब मुआफ़ी नामुमकिन है

5 1 "यरूशलम की गलियों में घूमो फिरो! हर
जगह का मुलाहज़ा करके पता करो कि क्या
हो रहा है। उस के चौकों की तफ़्तीश भी करो। अगर
तुम्हें एक भी शख़्स मिल जाए जो इन्साफ़ करे और
दयानतदारी का तालिब रहे तो मैं शहर को मुआफ़
कर दूँगा। 2 वह रब की हयात की क़सम खाते वक़्त
भी झूट बोलते हैं।"
3 ऐ रब, तेरी आँखें दयानतदारी देखना चाहती हैं।
तू ने उन्हें मारा, लेकिन उन्हें दुख न हुआ। तू ने
उन्हें कुचल डाला, लेकिन वह तर्बियत पाने के लिए
तय्यार नहीं। उन्हों ने अपने चिहरे को पत्थर से कहीं
ज़्यादा सख़्त बना कर तौबा करने से इन्कार किया है।
4 मैं ने सोचा, "सिर्फ़ ग़रीब लोग ऐसे हैं। यह इस लिए
अहमक़ाना हरकतें कर रहे हैं कि रब की राह और
अपने ख़ुदा की शरीअत से वाक़िफ़ नहीं हैं। 5 आओ,
मैं बुज़ुर्गों के पास जा कर उन से बात करता हूँ। वह
तो ज़रूर रब की राह और अल्लाह की शरीअत को
जानते होंगे।" लेकिन अफ़्सोस, सब के सब ने अपने
जूए और रस्से तोड़ डाले हैं।
6 इस लिए शेरबबर जंगल से निकल कर उन पर
हम्ला करेगा, भेड़िया बयाबान से आ कर उन्हें बर्बाद
करेगा, चीता उन के शहरों के क़रीब ताक में बैठ कर
हर निकलने वाले को फाड़ डालेगा। क्यूँकि वह बार
बार सरकश हुए हैं, मुतअद्दिद दफ़ा उन्हों ने अपनी
बेवफ़ाई का इज़हार किया है।
7 "मैं तुझे कैसे मुआफ़ करूँ? तेरी औलाद ने मुझे
तर्क करके उन की क़सम खाई है जो ख़ुदा नहीं हैं। गो
मैं ने उन की हर ज़रूरत पूरी की तो भी उन्हों ने ज़िना
किया, चक्ले के सामने उन की लम्बी क़तारें लगी
रहीं। 8 यह लोग मोटे-ताज़े घोड़े हैं जो मस्ती में आ
गए हैं। हर एक हिनहिनाता हुआ अपने पड़ोसी की
बीवी को आँख मारता है।" 9 रब फ़रमाता है, "क्या
मैं जवाब में उन्हें सज़ा न दूँ? क्या मैं ऐसी क़ौम से
इन्तिक़ाम न लूँ? 10 जाओ, उस के अंगूर के बाग़ों पर
टूट पड़ो और सब कुछ बर्बाद कर दो। लेकिन उन्हें
मुकम्मल तौर पर ख़त्म मत करना। बेलों की शाख़ों
को दूर करो, क्यूँकि वह रब के लोग नहीं हैं।"

रब अपनी क़ौम से जवाब तलब करेगा

11 क्यूँकि रब फ़रमाता है, "इस्राईल और यहूदाह के
बाशिन्दे हर तरह से मुझ से बेवफ़ा रहे हैं। 12 उन्हों ने
रब का इन्कार करके कहा है, वह कुछ नहीं करेगा।
हम पर मुसीबत नहीं आएगी। हमें न तलवार, न काल
से नुक़्सान पहुँचेगा। 13 नबियों की क्या हैसियत है?
वह तो बकवास ही करते हैं, और रब का कलाम
उन में नहीं है। बल्कि उन ही के साथ ऐसा किया
जाएगा।"
14 इस लिए रब लश्करों का ख़ुदा फ़रमाता है, "ऐ
यरमियाह, चूँकि लोग ऐसी बातें कर रहे हैं इस लिए
तेरे मुँह में मेरे अल्फ़ाज़ आग बन कर इस क़ौम को
लकड़ी की तरह भस्म कर देंगे।" 15 रब फ़रमाता है,
"ऐ इस्राईल, मैं दूर की क़ौम को तेरे ख़िलाफ़ भेजूँगा,
ऐसी पुख़्ता और क़दीम क़ौम जिस की ज़बान तू नहीं
जानता और जिस की बातें तू नहीं समझता। 16 उन
के तर्कश खुली क़ब्रें हैं, सब के सब ज़बरदस्त सूरमे

हैं। 17 वह सब कुछ हड़प कर लेंगे : तेरी फ़सलें, तेरी
ख़ुराक, तेरे बेटे-बेटियाँ, तेरी भेड़-बकरियाँ, तेरे गाय-
बैल, तेरी अंगूर की बेलें और तेरे अन्जीर के दरख़्त।
जिन क़िलाबन्द शहरों पर तुम भरोसा रखते हो उन्हें
वह तलवार से ख़ाक में मिला देंगे।

18 फिर भी मैं उस वक़्त तुम्हें मुकम्मल तौर पर
बर्बाद नहीं करूँगा।" यह रब का फ़रमान है। 19 "ऐ
यरमियाह, अगर लोग तुझ से पूछें, रब हमारे ख़ुदा ने
यह सब कुछ हमारे साथ क्यूँ किया? तो उन्हें बता,
तुम मुझे तर्क करके अपने वतन में अजनबी माबूदों
की ख़िदमत करते रहे हो, इस लिए तुम वतन से दूर
मुल्क में अजनबियों की ख़िदमत करोगे।

20 इस्राईल में एलान करो और यहूदाह को इत्तिला
दो 21 कि ऐ बेवुक़ूफ़ और नासमझ क़ौम, सुनो!
लेकिन अफ़्सोस, उन की आँखें तो हैं लेकिन वह देख
नहीं सकते, उन के कान तो हैं लेकिन वह सुन नहीं
सकते।" 22 रब फ़रमाता है, "क्या तुम्हें मेरा ख़ौफ़
नहीं मानना चाहिए, मेरे हुज़ूर नहीं काँपना चाहिए?
सोच लो! मैं ही ने रेत से समुन्दर की सरहद मुक़र्रर
की, एक ऐसी बाड़ बनाई जिस पर से वह कभी नहीं
गुज़र सकता। गो वह ज़ोर से लहरें मारे तो भी नाकाम
रहता है, गो उस की मौजें ख़ूब गरजें तो भी मुक़र्ररा
हद से आगे नहीं बढ़ सकतीं।

23 लेकिन अफ़्सोस, इस क़ौम का दिल ज़िद्दी और
सरकश है। यह लोग सहीह राह से हट कर अपनी ही
राहों पर चल पड़े हैं। 24 वह दिल में कभी नहीं कहते,
आओ, हम रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें। क्यूँकि
वही हमें वक़्त पर ख़िज़ाँ और बहार के मौसम में
बारिश मुहय्या करता है, वही इस की ज़मानत देता
है कि हमारी फ़सलें बाक़ाइदगी से पक जाएँ। 25 अब
तुम्हारे ग़लत कामों ने तुम्हें इन नेमतों से महरूम कर
दिया, तुम्हारे गुनाहों ने तुम्हें इन अच्छी चीज़ों से रोक
रखा है।

26 क्यूँकि मेरी क़ौम में ऐसे बेदीन अफ़राद पाए जाते
हैं जो दूसरों की ताक लगाए रहते हैं। जिस तरह
शिकारी परिन्दे पकड़ने के लिए झुक कर छुप जाता
है, उसी तरह वह दूसरों की घात में बैठ जाते हैं। वह
फंदे लगा कर लोगों को उन में फंसाते हैं। 27 और
जिस तरह शिकारी अपने पिंजरे को चिड़ियों से भर
देता है उसी तरह इन शरीर लोगों के घर फ़रेब से
भरे रहते हैं। अपनी चालों से वह अमीर, ताक़तवर
28 और मोटे-ताज़े हो गए हैं। उन के ग़लत कामों की
हद नहीं रहती। वह इन्साफ़ करते ही नहीं। न वह
यतीमों की मदद करते हैं ताकि उन्हें वह कुछ मिल
जाए जो उन का हक़ है, न ग़रीबों के हुक़ूक़ क़ाइम
रखते हैं।" 29 रब फ़रमाता है, "अब मुझे बताओ,
क्या मुझे उन्हें इस की सज़ा नहीं देनी चाहिए? क्या
मुझे इस क़िस्म की हरकतें करने वाली क़ौम से
बदला नहीं लेना चाहिए?

30 जो कुछ मुल्क में हुआ है वह हौलनाक और
क़ाबिल-ए-घिन है। 31 क्यूँकि नबी झूटी पेशगोइयाँ
सुनाते और इमाम अपनी ही मर्ज़ी से हुकूमत करते
हैं। और मेरी क़ौम उन का यह रवय्या अज़ीज़ रखती
है। लेकिन मुझे बताओ, जब यह सब कुछ ख़त्म हो
जाएगा तो फिर तुम क्या करोगे?

यरूशलम दुश्मनों से घिरा हुआ है

6 1 ऐ बिनयमीन की औलाद, यरूशलम से निकल
कर कहीं और पनाह लो! तक़ूअ में नरसिंगा
फूँको! बैत-करम में भागने का ऐसा इशारा खड़ा कर
जो सब को नज़र आए! क्यूँकि शिमाल से आफ़त
नाज़िल हो रही है, सब कुछ धड़ाम से गिर जाएगा।

2 सिय्यून बेटी कितनी मनमोहन और नाज़ुक है।
लेकिन मैं उसे हलाक कर दूँगा, 3 और चरवाहे अपने
रेवड़ों को ले कर उस पर टूट पड़ेंगे। वह अपने ख़ैमों
को उस के इर्दगिर्द लगा लेंगे, और हर एक का रेवड़
चर चर कर अपना हिस्सा खा जाएगा।

4 वह कहेंगे, 'आओ, हम उस से लड़ने के लिए
तय्यार हो जाएँ। आओ, हम दोपहर के वक़्त हम्ला
करें! लेकिन अफ़्सोस, दिन ढल रहा है, और शाम
के साय लम्बे होते जा रहे हैं। 5 कोई बात नहीं, रात

के वक़्त ही हम उस पर छापा मारेंगे, उसी वक़्त हम
उस के बुर्जों को गिरा देंगे'।"
6 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "दरख़्तों को
काटो, मिट्टी के ढेरों से यरूशलम का घेराऊ करो!
शहर को सज़ा देनी है, क्यूँकि उस में ज़ुल्म ही
ज़ुल्म पाया जाता है। 7 जिस तरह कुएँ से ताज़ा पानी
निकलता रहता है उसी तरह यरूशलम की बदी भी
ताज़ा ताज़ा उस से निकलती रहती है। ज़ुल्म-ओ-
तशद्दुद की आवाज़ें उस में गूँजती रहती हैं, उस की
बीमार हालत और ज़ख़्म लगातार मेरे सामने रहते हैं।
8 ऐ यरूशलम, मेरी तर्बियत को क़बूल कर, वर्ना
मैं तंग आ कर तुझ से अपना मुँह फेर लूँगा, मैं तुझे
तबाह कर दूँगा और तू ग़ैरआबाद हो जाएगी।"
9 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "जिस तरह अंगूर
चुनने के बाद ग़रीब लोग तमाम बचा-खुचा फल तोड़
लेते हैं उसी तरह इस्राईल का बचा-खुचा हिस्सा भी
एहतियात से तोड़ लिया जाएगा। चुनने वाले की तरह
दुबारा अपने हाथ को अंगूर की शाख़ों पर से गुज़रने
दे।"
10 ऐ रब, मैं किस से बात करूँ, किस को आगाह
करूँ? कौन सुनेगा? देख, उन के कान नामख़्तून हैं,
इस लिए वह सुन ही नहीं सकते। रब का कलाम उन्हें
मज़्हकाख़ेज़ लगता है, वह उन्हें नापसन्द है। 11 इस
लिए मैं रब के ग़ज़ब से भरा हुआ हूँ, मैं उसे बर्दाश्त
करते करते इतना थक गया हूँ कि उसे मज़ीद नहीं
रोक सकता।
"उसे गलियों में खेलने वाले बच्चों और जमाशुदा
नौजवानों पर नाज़िल कर, क्यूँकि सब को गिरिफ़्तार
किया जाएगा, ख़्वाह आदमी हो या औरत, बुज़ुर्ग हो
या उम्रसीदा। 12 उन के घरों को खेतों और बीवियों
समेत दूसरों के हवाले किया जाएगा, क्यूँकि मैं अपना
हाथ मुल्क के बाशिन्दों के ख़िलाफ़ बढ़ाऊँगा।" यह
रब का फ़रमान है। 13 "छोटे से ले कर बड़े तक सब
ग़लत नफ़ा के पीछे पड़े हैं, नबी से ले कर इमाम
तक सब धोकेबाज़ हैं। 14 वह मेरी क़ौम के ज़ख़्म पर
आरिज़ी मर्हम-पट्टी लगा कर कहते हैं, अब सब कुछ
ठीक हो गया है, अब सलामती का दौर आ गया है
हालाँकि सलामती है ही नहीं। 15 ऐसा घिनौना रवय्या
उन के लिए शर्म का बाइस होना चाहिए, लेकिन वह
शर्म नहीं करते बल्कि सरासर बेशर्म हैं। इस लिए जब
सब कुछ गिर जाएगा तो यह लोग भी गिर जाएंगे। जब
मैं इन पर सज़ा नाज़िल करूँगा तो यह ठोकर खा कर
ख़ाक में मिल जाएंगे।" यह रब का फ़रमान है।

सहीह रास्ते की तलाश में रहो

16 रब फ़रमाता है, "रास्तों के पास खड़े हो कर उन
का मुआइना करो! क़दीम राहों की तफ़्तीश करके
पता करो कि उन में से कौन सी अच्छी है, फिर
उस पर चलो। तब तुम्हारी जान को सुकून मिलेगा।
लेकिन अफ़्सोस, तुम इन्कार करके कहते हो, नहीं,
हम यह राह इख़्तियार नहीं करेंगे! 17 देखो, मैं ने तुम
पर पहरेदार मुक़र्रर किए और कहा, 'जब नरसिंगा
फूँका जाएगा तो ध्यान दो!' लेकिन तुम ने इन्कार
किया, 'नहीं, हम तवज्जुह नहीं देंगे।'
18 चुनाँचे ऐ क़ौमो, सुनो! ऐ जमाअत, जान ले कि
उन के साथ क्या कुछ किया जाएगा। 19 ऐ ज़मीन,
ध्यान दे कि मैं इस क़ौम पर क्या आफ़त नाज़िल
करूँगा। और यह उन के अपने मन्सूबों का फल
होगा, क्यूँकि उन्हों ने मेरी बातों पर तवज्जुह न दी
बल्कि मेरी शरीअत को रद्द कर दिया। 20 मुझे सबा
के बख़ूर या दूरदराज़ ममालिक के क़ीमती मसालों
की क्या पर्वा! तुम्हारी भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ
मुझे पसन्द नहीं, तुम्हारी ज़बह की क़ुर्बानियों से मैं
लुत्फ़अन्दोज़ नहीं होता।" 21 रब फ़रमाता है, "मैं इस
क़ौम के रास्ते में ऐसी रुकावटें खड़ी कर दूँगा जिन
से बाप और बेटा ठोकर खा कर गिर जाएंगे। पड़ोसी
और दोस्त मिल कर हलाक हो जाएंगे।"

शिमाल से दुश्मन का हम्ला

22 रब फ़रमाता है, "शिमाली मुल्क से फ़ौज आ
रही है, दुनिया की इन्तिहा से एक अज़ीम क़ौम को
जगाया जा रहा है। 23 उस के ज़ालिम और बेरहम

फ़ौजी कमान और शम्शीर से लेस हैं। सुनो उन का शोर! मुतलातिम समुन्दर की सी आवाज़ सुनाई दे रही है। ऐ सिय्यून बेटी, वह घोड़ों पर सफ़आरा हो कर तुझ पर हम्ला करने आ रहे हैं।"

24 उन के बारे में इत्तिला पा कर हमारे हाथ हिम्मत हार गए हैं। हम पर ख़ौफ़ तारी हो गया है, हमें दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत का सा दर्द हो रहा है। 25 शहर से निकल कर खेत में या सड़क पर मत चलना, क्यूँकि वहाँ दुश्मन तलवार थामे खड़ा है, चारों तरफ़ दह्शत ही दह्शत फैल गई है।

26 ऐ मेरी क़ौम, टाट का लिबास पहन कर राख में लोट-पोट हो जा। यूँ मातम कर जिस तरह इक्लौता बेटा मर गया हो। ज़ोर से वावैला कर, क्यूँकि अचानक ही हलाकू हम पर छापा मारेगा।

यरमियाह क़ौम को आज़माता है

27 रब मुझ से हमकलाम हुआ, "मैं ने तुझे धातों को जाँचने की ज़िम्मादारी दी है, और मेरी क़ौम वह धात है जिस का चाल-चलन तुझे मालूम करके परखना है।" 28 ऐ रब, यह तमाम लोग बदतरीन क़िस्म के सरकश हैं। तुहमत लगाना इन की रोज़ी बन गया है। यह पीतल और लोहा ही हैं, सब के सब तबाही का बाइस हैं। 29 धौंकनी ख़ूब हवा दे रही है ताकि सीसा आग में पिघल कर चाँदी से अलग हो जाए। लेकिन अफ़्सोस, सारी मेहनत रायगाँ है। सीसा यानी बेदीनों को अलग नहीं किया जा सकता, ख़ालिस चाँदी बाक़ी नहीं रहती। 30 चुनाँचे उन्हें 'रद्दी चाँदी' क़रार दिया जाता है, क्यूँकि रब ने उन्हें रद्द कर दिया है।

रब के घर के बारे में पैग़ाम

7 1 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ, 2 "रब के घर के सहन के दरवाज़े पर खड़ा हो कर एलान कर कि ऐ यहूदाह के तमाम बाशिन्दो, रब का कलाम सुनो! जितने भी रब की परस्तिश करने के लिए इन दरवाज़ों में दाख़िल होते हैं वह सब तवज्जुह दें! 3 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि अपनी ज़िन्दगी और चाल-चलन दुरुस्त करो तो मैं आइन्दा भी तुम्हें इस मक़ाम पर बसने दूँगा। 4 उन के फ़रेबदिह अल्फ़ाज़ पर एतिमाद मत करो जो कहते हैं, 'यहाँ हम मह्फ़ूज़ हैं क्यूँकि यह रब का घर, रब का घर, रब का घर है।' 5 सुनो, शर्त तो यह है कि तुम अपनी ज़िन्दगी और चाल-चलन दुरुस्त करो और एक दूसरे के साथ इन्साफ़ का सुलूक करो, 6 कि तुम परदेसी, यतीम और बेवा पर ज़ुल्म न करो, इस जगह बेक़ुसूर का ख़ून न बहाओ और अजनबी माबूदों के पीछे लग कर अपने आप को नुक़्सान न पहुँचाओ। 7 अगर तुम ऐसा करो तो मैं आइन्दा भी तुम्हें इस जगह बसने दूँगा, उस मुल्क में जो मैं ने तुम्हारे बापदादा को हमेशा के लिए बख़्श दिया था।

8 लेकिन अफ़्सोस, तुम फ़रेबदिह अल्फ़ाज़ पर भरोसा रखते हो जो फ़ुज़ूल ही हैं। 9 तुम चोर, क़ातिल और ज़िनाकार हो। नीज़ तुम झूटी क़सम खाते, बाल देवता के हुज़ूर बख़ूर जलाते और अजनबी माबूदों के पीछे लग जाते हो, ऐसे देवताओं के पीछे जिन से तुम पहले वाक़िफ़ नहीं थे। 10 लेकिन साथ साथ तुम यहाँ मेरे हुज़ूर भी आते हो। जिस मकान पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा है उसी में तुम खड़े हो कर कहते हो, 'हम मह्फ़ूज़ हैं।' तुम रब के घर में इबादत करने के साथ साथ किस तरह यह तमाम घिनौनी हरकतें जारी रख सकते हो?"

11 रब फ़रमाता है, "क्या तुम्हारे नज़्दीक यह मकान जिस पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा है डाकुओं का अड्डा बन गया है? ख़बरदार! यह सब कुछ मुझे भी नज़र आता है। 12 सैला शहर का चक्कर लगाओ जहाँ मैं ने पहले अपना नाम बसाया था। मालूम करो कि मैं ने अपनी क़ौम इस्राईल की बेदीनी के सबब से उस शहर के साथ क्या किया।" 13 रब फ़रमाता है, "तुम यह शरीर हरकतें करते रहे, और मैं बार बार तुम से हमकलाम होता रहा, लेकिन तुम ने मेरी न सुनी। मैं तुम्हें बुलाता रहा, लेकिन तुम जवाब देने के लिए तय्यार न हुए। 14 इस लिए अब मैं इस घर के

साथ वह कुछ करूँगा जो मैं ने सैला के साथ किया
था, गो इस पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा है, यह
वह मकान है जिस पर तुम एतिमाद रखते हो और
जिसे मैं ने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को अता किया
था। 15 मैं तुम्हें अपने हुज़ूर से निकाल दूँगा, बिलकुल
उसी तरह जिस तरह मैं ने तुम्हारे तमाम भाइयों यानी
इस्राईल [x]की औलाद को निकाल दिया था।

लोगों की नाफ़रमानी

16 ऐ यरमियाह, इस क़ौम के लिए दुआ मत कर।
इस के लिए न इल्तिजा कर, न मिन्नत। इन लोगों की
ख़ातिर मुझे तंग न कर, क्यूँकि मैं तेरी नहीं सुनूँगा।
17 क्या तुझे वह कुछ नज़र नहीं आ रहा जो यह
यहूदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों में कर
रहे हैं? 18 और सब इस में मुलव्वस हैं। बच्चे लकड़ी
चुन कर ढेर बनाते हैं, फिर बाप उसे आग लगाते हैं
जबकि औरतें आटा गूँध गूँध कर आग पर आसमान
की मलिका नामी देवी के लिए टिक्कियाँ पकाती हैं।
मुझे तंग करने के लिए वह अजनबी माबूदों को मै
की नज़रें भी पेश करते हैं।

19 लेकिन हक़ीक़त में यह मुझे उतना तंग नहीं
कर रहे जितना अपने आप को। ऐसी हरकतों से
वह अपनी ही रुस्वाई कर रहे हैं।" 20 रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "मेरा क़हर और ग़ज़ब इस
मक़ाम पर, इन्सान-ओ-हैवान पर, खुले मैदान के
दरख़्तों पर और ज़मीन की पैदावार पर नाज़िल होगा।
सब कुछ नज़र-ए-आतिश हो जाएगा, और कोई उसे
बुझा नहीं सकेगा।"

21 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, "भस्म होने वाली क़ुर्बानियों को मुझे पेश
न करो, बल्कि उन का गोश्त दीगर क़ुर्बानियों समेत
ख़ुद खा लो। 22 क्यूँकि जिस दिन मैं तुम्हारे बापदादा
को मिस्र से निकाल लाया उस दिन मैं ने उन्हें भस्म
होने वाली क़ुर्बानियाँ और दीगर क़ुर्बानियाँ चढ़ाने का
हुक्म न दिया। 23 मैं ने उन्हें सिर्फ़ यह हुक्म दिया कि
मेरी सुनो! तब ही मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँगा और तुम मेरी
क़ौम होगे। पूरे तौर पर उस राह पर चलते रहो जो मैं
तुम्हें दिखाता हूँ। तब ही तुम्हारी ख़ैर होगी। 24 लेकिन
उन्हों ने मेरी न सुनी, न ध्यान दिया बल्कि अपने
शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने
लगे। उन्हों ने मेरी तरफ़ रुजू न किया बल्कि अपना
मुँह मुझ से फेर लिया। 25 जब से तुम्हारे बापदादा
मिस्र से निकल आए आज तक मैं रोज़-ब-रोज़ और
बार बार अपने ख़ादिमों यानी नबियों को तुम्हारे पास
भेजता रहा। 26 तो भी उन्हों ने न मेरी सुनी, न तवज्जुह
दी। वह बज़िद रहे बल्कि अपने बापदादा की निस्बत
ज़्यादा बुरे थे।

27 ऐ यरमियाह, तू उन्हें यह तमाम बातें बताएगा,
लेकिन वह तेरी नहीं सुनेंगे। तू उन्हें बुलाएगा, लेकिन
वह जवाब नहीं देंगे। 28 तब तू उन्हें बताएगा, 'इस
क़ौम ने न रब अपने ख़ुदा की आवाज़ सुनी, न उस
की तर्बियत क़बूल की। दयानतदारी ख़त्म हो कर
उन के मुँह से मिट गई है।'

वादी-ए-बिन-हिन्नूम में क़ाबिल-ए-घिन रुसूम

29 अपने बालों को काट कर फैंक दे! जा, बंजर
टीलों पर मातम का गीत गा, क्यूँकि यह नस्ल रब
के ग़ज़ब का निशाना बन गई है, और उस ने इसे रद्द
करके छोड़ दिया है।"

30 क्यूँकि रब फ़रमाता है, "जो कुछ यहूदाह के
बाशिन्दों ने किया वह मुझे बहुत बुरा लगता है। उन्हों
ने अपने घिनौने बुतों को मेरे नाम के लिए मख़्सूस घर
में रख कर उस की बेहुरमती की है। 31 साथ साथ
उन्हों ने वादी-ए-बिन-हिन्नूम में वाक़े तूफ़त की ऊँची
जगहें तामीर कीं ताकि अपने बेटे-बेटियों को जला
कर क़ुर्बान करें। मैं ने कभी भी ऐसी रस्म अदा करने
का हुक्म नहीं दिया बल्कि इस का ख़याल मेरे ज़हन
में आया तक नहीं।

---

[x]लफ़्ज़ी तर्जुमा : इफ़्राईम।

32 चुनाँचे रब का कलाम सुनो! वह दिन आने वाले
हैं जब यह मक़ाम 'तूफ़त' या 'वादी-ए-बिन-हिन्नूम'
नहीं कहलाएगा बल्कि 'क़त्ल-ओ-ग़ारत की वादी।'
उस वक़्त लोग तूफ़त में इतनी लाशें दफ़नाएँगे कि
आख़िरकार ख़ाली जगह नहीं रहेगी। 33 तब इस क़ौम
की लाशें परिन्दों और जंगली जानवरों की ख़ुराक
बन जाएँगी, और कोई नहीं होगा जो उन्हें भगा दे।
34 मैं यहूदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों
में ख़ुशी-ओ-शादमानी की आवाज़ें ख़त्म कर दूँगा,
दूल्हा दुल्हन की आवाज़ें बन्द हो जाएँगी। क्यूँकि
मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएगा।"

8 1 रब फ़रमाता है, "उस वक़्त दुश्मन क़ब्रों
को खोल कर यहूदाह के बादशाहों, अफ़सरों,
इमामों, नबियों और यरूशलम के आम बाशिन्दों की
हड्डियों को निकालेगा 2 और ज़मीन पर बिखेर देगा।
वहाँ वह उन के सामने पड़ी रहेंगी जो उन्हें प्यारे थे
यानी सूरज, चाँद और सितारों के तमाम लश्कर के
सामने। क्यूँकि वह उन ही की ख़िदमत करते, उन ही
के पीछे चलते, उन ही के तालिब रहते, और उन ही
को सिज्दा करते थे। उन की हड्डियाँ दुबारा न इकट्ठी
की जाएँगी, न दफ़न की जाएँगी बल्कि खेत में गोबर
की तरह बिखरी पड़ी रहेंगी। 3 और जहाँ भी मैं इस
शरीर क़ौम के बचे हुओं को मुन्तशिर करूँगा वहाँ
वह सब कहेंगे कि काश हम भी ज़िन्दा न रहें बल्कि
मर जाएँ।" यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान है।

क़ौम तबाहकुन राह से हटने के लिए तय्यार नहीं

4 "उन्हें बता, रब फ़रमाता है कि जब कोई गिर
जाता है तो क्या दुबारा उठने की कोशिश नहीं
करता? ज़रूर। और जब कोई सहीह रास्ते से दूर
हो जाता है तो क्या वह दुबारा वापस आ जाने की
कोशिश नहीं करता? बेशक। 5 तो फिर यरूशलम
के यह लोग सहीह राह से बार बार क्यूँ भटक जाते
हैं? यह फ़रेब के साथ लिपटे रहते और वापस आने
से इन्कार ही करते हैं। 6 मैं ने ध्यान दे कर देखा है
कि यह झूट ही बोलते हैं। कोई भी पछता कर नहीं
कहता, 'यह कैसा ग़लत काम है जो मैं ने किया!'
जिस तरह जंग में घोड़े दुश्मन पर टूट पड़ते हैं उसी
तरह हर एक सीधा अपनी ग़लत राह पर दौड़ता रहता
है। 7 फ़िज़ा में उड़ने वाले लक़्लक़ पर ग़ौर करो जिसे
आने जाने के मुक़र्ररा औक़ात ख़ूब मालूम होते हैं।
फ़ाख़ता, अबाबील और बुल्बुल पर भी ध्यान दो
जो सर्दियों के मौसम में कहीं और होते हैं, गर्मियों
के मौसम में कहीं और। वह मुक़र्ररा औक़ात से
कभी नहीं हटते। लेकिन अफ़्सोस, मेरी क़ौम रब की
शरीअत नहीं जानती।

8 तुम किस तरह कह सकते हो, 'हम दानिशमन्द
हैं, क्यूँकि हमारे पास रब की शरीअत है'? हक़ीक़त
में क़ातिबों के फ़रेबदिह क़लम ने इसे तोड़-मरोड़
कर बयान किया है। 9 सुनो, दानिशमन्दों की रुस्वाई
हो जाएगी, वह दहशतज़दा हो कर पकड़े जाएंगे।
देखो, रब का कलाम रद्द करने के बाद उन की अपनी
हिक्मत कहाँ रही?

10 इस लिए मैं उन की बीवियों को परदेसियों के
हवाले कर दूँगा और उन के खेतों को ऐसे लोगों के
सपुर्द जो उन्हें निकाल देंगे। क्यूँकि छोटे से ले कर
बड़े तक सब के सब नाजाइज़ नफ़ा के पीछे पड़े
हैं, नबियों से ले कर इमामों तक सब धोकेबाज़ हैं।
11 वह मेरी क़ौम के ज़ख़्म पर आरिज़ी मर्हम-पट्टी लगा
कर कहते हैं, 'अब सब कुछ ठीक हो गया है, अब
सलामती का दौर आ गया है' हालाँकि सलामती है
ही नहीं।

12 गो ऐसा घिनौना रवय्या उन के लिए शर्म का
बाइस होना चाहिए, लेकिन वह शर्म नहीं करते
बल्कि सरासर बेशर्म हैं। इस लिए जब सब कुछ गिर
जाएगा तो यह लोग भी गिर जाएंगे। जब मैं इन पर
सज़ा नाज़िल करूँगा तो यह ठोकर खा कर ख़ाक में
मिल जाएंगे।" यह रब का फ़रमान है।

13 रब फ़रमाता है, "मैं उन की पूरी फ़सल छीन
लूँगा। अंगूर की बेल पर एक दाना भी नहीं रहेगा,
अन्जीर के तमाम दरख़्त फल से महरूम हो जाएंगे

बल्कि तमाम पत्ते भी झड़ जाएंगे। जो कुछ भी मैं ने
उन्हें अता किया था वह उन से छीन लिया जाएगा।
14 तब तुम कहोगे, 'हम यहाँ क्यूँ बैठे रहें? आओ,
हम क़िलाबन्द शहरों में पनाह ले कर वहीं हलाक
हो जाएँ। हम ने रब अपने ख़ुदा का गुनाह किया है,
और अब हम इस का नतीजा भुगत रहे हैं। क्यूँकि
उसी ने हमें हलाकत के हवाले करके हमें ज़हरीला
पानी पिला दिया है। 15 हम सलामती के इन्तिज़ार में
रहे, लेकिन हालात ठीक न हुए। हम शिफ़ा पाने की
उम्मीद रखते थे, लेकिन इस के बजाय हम पर दहशत
छा गई। 16 सुनो! दुश्मन के घोड़े नथने फुला रहे हैं।
दान से उन का शोर हम तक पहुँच रहा है। उन के
हिनहिनाने से पूरा मुल्क थरथरा रहा है, क्यूँकि आते
वक़्त यह पूरे मुल्क को उस के शहरों और बाशिन्दों
समेत हड़प कर लेंगे'।"

अपनी क़ौम पर यरमियाह का नोहा

17 रब फ़रमाता है, "मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ अफ़ई भेज
दूँगा, ऐसे ज़हरीले साँप जिन के ख़िलाफ़ हर जादूमंत्र
बेअसर रहेगा। यह तुम्हें काटेंगे।" 18 लाइलाज ग़म
मुझ पर हावी हो गया, मेरा दिल निढाल हो गया है।
19 सुनो! मेरी क़ौम दूरदराज़ मुल्क से चीख़ चीख़ कर
मदद के लिए आवाज़ दे रही है। लोग पूछते हैं, "क्या
रब सिय्यून में नहीं है, क्या यरूशलम का बादशाह
अब से वहाँ सुकूनत नहीं करता?" "सुनो, उन्हों ने
अपने मुजस्समों और बेकार अजनबी बुतों की पूजा
करके मुझे क्यूँ तैश दिलाया?"
20 लोग आहें भर भर कर कहते हैं, "फ़सल कट
गई है, फल चुना गया है, लेकिन अब तक हमें नजात
हासिल नहीं हुई।"
21 मेरी क़ौम की मुकम्मल तबाही देख कर मेरा दिल
टूट गया है। मैं मातम कर रहा हूँ, क्यूँकि उस की
हालत इतनी बुरी है कि मेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं।
22 क्या जिलिआद में मर्हम नहीं? क्या वहाँ डाक्टर
नहीं मिलता? मुझे बताओ, मेरी क़ौम का ज़ख़्म क्यूँ
नहीं भरता?

9 1 काश मेरा सर पानी का मम्बा और मेरी आँखें
आँसूओं का चश्मा हों ताकि मैं दिन रात अपनी
क़ौम के मक़्तूलों पर आह-ओ-ज़ारी कर सकूँ।

धोकेबाज़ों की क़ौम

2 काश रेगिस्तान में कहीं मुसाफ़िरों के लिए सराय
हो ताकि मैं अपनी क़ौम को छोड़ कर वहाँ चला
जाऊँ। क्यूँकि सब ज़िनाकार, सब ग़द्दारों का जथ्था
हैं।
3 रब फ़रमाता है, "वह अपनी ज़बान से झूट के तीर
चलाते हैं, और मुल्क में उन की ताक़त दयानतदारी
पर मब्नी नहीं होती। नीज़, वह बदतर होते जा रहे हैं।
मुझे तो वह जानते ही नहीं। 4 हर एक अपने पड़ोसी
से ख़बरदार रहे, और अपने किसी भी भाई पर भरोसा
मत रखना। क्यूँकि हर भाई चालाकी करने में माहिर
है, और हर पड़ोसी तुहमत लगाने पर तुला रहता है।
5 हर एक अपने पड़ोसी को धोका देता है, कोई भी
सच नहीं बोलता। उन्हों ने अपनी ज़बान को झूट
बोलना सिखाया है, और अब वह ग़लत काम करते
करते थक गए हैं। 6 ऐ यरमियाह, तू फ़रेब से घिरा
रहता है, और यह लोग फ़रेब के बाइस ही मुझे जानने
से इन्कार करते हैं।"
7 इस लिए रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "देखो,
मैं उन्हें ख़ाम चाँदी की तरह पिघला कर आज़माऊँगा,
क्यूँकि मैं अपनी क़ौम, अपनी बेटी के साथ और क्या
कर सकता हूँ? 8 उन की ज़बानें मोहलिक तीर हैं। उन
के मुँह पड़ोसी से सुलह-सलामती की बातें करते हैं
जबकि अन्दर ही अन्दर वह उस की ताक में बैठे
हैं।" 9 रब फ़रमाता है, "क्या मुझे उन्हें इस की सज़ा
नहीं देनी चाहिए? क्या मुझे ऐसी क़ौम से बदला नहीं
लेना चाहिए?"

नोहा करो!

10 मैं पहाड़ों के बारे में आह-ओ-ज़ारी करूँगा,
बयाबान की चरागाहों पर मातम का गीत गाऊँगा।
क्यूँकि वह यूँ तबाह हो गए हैं कि न कोई उन में

से गुज़रता, न रेवड़ों की आवाज़ें उन में सुनाई देती
हैं। परिन्दे और जानवर सब भाग कर चले गए हैं।
11 "यरूशलम को मैं मल्बे का ढेर बना दूँगा, और
आइन्दा गीदड़ उस में जा बसेंगे। यहूदाह के शहरों
को मैं वीरान-ओ-सुन्सान कर दूँगा। एक भी उन में
नहीं बसेगा।"

12 कौन इतना दानिशमन्द है कि यह समझ सके?
किस को रब से इतनी हिदायत मिली है कि वह बयान
कर सके कि मुल्क क्यूँ बर्बाद हो गया है? वह क्यूँ
रेगिस्तान जैसा बन गया है, इतना वीरान कि उस में
से कोई नहीं गुज़रता?

13 रब ने फ़रमाया, "वजह यह है कि उन्हों ने मेरी
शरीअत को तर्क किया, वह हिदायत जो मैं ने ख़ुद
उन्हें दी थी। न उन्हों ने मेरी सुनी, न मेरी शरीअत की
पैरवी की। 14 इस के बजाय वह अपने ज़िद्दी दिलों
की पैरवी करके बाल देवताओं के पीछे लग गए हैं।
उन्हों ने वही कुछ किया जो उन के बापदादा ने उन्हें
सिखाया था।"

15 इस लिए रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का
ख़ुदा है फ़रमाता है, "देखो, मैं इस क़ौम को कड़वा
खाना खिला कर ज़हरीला पानी पिला दूँगा। 16 मैं
उन्हें ऐसी क़ौमों में मुन्तशिर कर दूँगा जिन से न वह
और न उन के बापदादा वाक़िफ़ थे। मेरी तलवार उस
वक़्त तक उन के पीछे पड़ी रहेगी जब तक हलाक न
हो जाएँ।" 17 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "ध्यान
दे कर गिर्या करने वाली औरतों को बुलाओ। जो
जनाज़ों पर वावैला करती हैं उन में से सब से माहिर
औरतों को बुलाओ।

18 वह जल्द आ कर हम पर आह-ओ-ज़ारी करें
ताकि हमारी आँखों से आँसू बह निकलें, हमारी
पलकों से पानी ख़ूब टपकने लगे।

19 क्यूँकि सिय्यून से गिर्या की आवाज़ें बुलन्द हो
रही हैं, 'हाय, हमारे साथ कैसी ज़ियादती हुई है,
हमारी कैसी रुस्वाई हुई है! हम मुल्क को छोड़ने पर
मज्बूर हैं, क्यूँकि दुश्मन ने हमारे घरों को ढा दिया
है'।"

20 ऐ औरतो, रब का पैग़ाम सुनो। अपने कानों को
उस की हर बात पर धरो! अपनी बेटियों को नोहा
करने की तालीम दो, एक दूसरी को मातम का यह
गीत सिखाओ,

21 "मौत फलाँग कर हमारी खिड़कियों में से घुस
आई और हमारे क़िलों में दाख़िल हुई है। अब वह
बच्चों को गलियों में से और नौजवानों को चौकों में
से मिटा डालने जा रही है।"

22 रब फ़रमाता है, "नाशें खेतों में गोबर की तरह
इधर उधर बिखरी पड़ी रहेंगी। जिस तरह कटा हुआ
गन्दुम फ़सल काटने वाले के पीछे इधर उधर पड़ा
रहता है उसी तरह लाशें इधर उधर पड़ी रहेंगी।
लेकिन उन्हें इकट्ठा करने वाला कोई नहीं होगा।"

23 रब फ़रमाता है, "न दानिशमन्द अपनी हिक्मत
पर फ़ख़र करे, न ज़ोरावर अपने ज़ोर पर या अमीर
अपनी दौलत पर। 24 फ़ख़र करने वाला फ़ख़र करे
कि उसे समझ हासिल है, कि वह रब को जानता है
और कि मैं रब हूँ जो दुनिया में मेहरबानी, इन्साफ़
और रास्ती को अमल में लाता हूँ। क्यूँकि यही चीज़ें
मुझे पसन्द हैं।"

25 रब फ़रमाता है, "ऐसा वक़्त आ रहा है जब मैं
उन सब को सज़ा दूँगा जिन का सिर्फ़ जिस्मानी ख़तना
हुआ है। 26 इन में मिस्र, यहूदाह, अदोम, अम्मोन,
मोआब और वह शामिल हैं जो रेगिस्तान के किनारे
किनारे रहते हैं। क्यूँकि गो यह तमाम अक़्वाम ज़ाहिरी
तौर पर ख़तना की रस्म अदा करती हैं, लेकिन उन
का ख़तना बातिनी तौर पर नहीं हुआ। ध्यान दो कि
इस्राईल की भी यही हालत है।"

बुत बेफ़ाइदा हैं

10 1 ऐ इस्राईल के घराने, रब का पैग़ाम सुन!
2 रब फ़रमाता है, "दीगर अक़्वाम की
बुतपरस्ती मत अपनाना। यह लोग इल्म-ए-नुजूम
से मुस्तक़बिल जान लेने की कोशिश करते करते
परेशान हो जाते हैं, लेकिन तुम उन की बातों से
परेशान न हो जाओ। 3 क्यूँकि दीगर क़ौमों के रस्म-

ओ-रिवाज फ़ुज़ूल ही हैं। जंगल में दरख़्त कट जाता
है, फिर कारीगर उसे अपने औज़ार से तश्कील देता
है। 4 लोग उसे अपनी सोना-चाँदी से सजा कर कीलों
से कहीं लगा देते हैं ताकि हिले न। 5 बुत उन पुतलों
की मानिन्द हैं जो खीरे के खेत में खड़े किए जाते हैं
ताकि परिन्दों को भगा दें। न वह बोल सकते, न चल
सकते हैं, इस लिए लोग उन्हें उठा कर अपने साथ
ले जाते हैं। उन से मत डरना, क्यूँकि न वह नुक़्सान
का बाइस हैं, न भलाई का।”

6 ऐ रब, तुझ जैसा कोई नहीं है, तू अज़ीम है,
तेरे नाम की अज़मत ज़ोरदार तरीक़े से ज़ाहिर हुई
है। 7 ऐ अक़्वाम के बादशाह, कौन तेरा ख़ौफ़ नहीं
मानेगा? क्यूँकि तू इस लाइक़ है। अक़्वाम के तमाम
दानिशमन्दों और उन के तमाम ममालिक में तुझ
जैसा कोई नहीं है। 8 सब अहमक़ और बेवुक़ूफ़
साबित हुए हैं, क्यूँकि उन की तर्बियत लकड़ी के
बेकार बुतों से हासिल हुई है। 9 तरसीस से चाँदी की
चादरें और ऊफ़ाज़ से सोना लाया जाता है। उन से
कारीगर और सुनार बुत बना देते हैं जिसे क़िर्मिज़ी
और अर्ग़वानी रंग के कपड़े पहनाए जाते हैं। सब
कुछ माहिर उस्तादों के हाथ से बनाया जाता है।

10 लेकिन रब ही हक़ीक़ी ख़ुदा है। वही ज़िन्दा ख़ुदा
और अबदी बादशाह है। जब वह नाराज़ हो जाता है
तो ज़मीन लरज़ने लगती है। अक़्वाम उस का क़हर
बर्दाश्त नहीं कर सकतीं।

11 बुतपरस्तों को बताओ कि देवताओं ने न
आसमान को बनाया और न ज़मीन को, उन का नाम-
ओ-निशान तो आसमान-ओ-ज़मीन से मिट जाएगा।
12 देखो, अल्लाह ही ने अपनी क़ुदरत से ज़मीन को
ख़ल्क़ किया, उसी ने अपनी हिक्मत से दुनिया की
बुन्याद रखी, और उसी ने अपनी समझ के मुताबिक़
आसमान को ख़ैमे की तरह तान लिया। 13 उस के
हुक्म पर आसमान पर पानी के ज़ख़ीरे गरजने लगते
हैं। वह दुनिया की इन्तिहा से बादल चढ़ने देता,
बारिश के साथ बिजली कड़कने देता और अपने
गोदामों से हवा निकलने देता है।

14 तमाम इन्सान अहमक़ और समझ से ख़ाली हैं।
हर सुनार अपने बुतों के बाइस शर्मिन्दा हुआ है। उस
के बुत धोका ही हैं, उन में दम नहीं। 15 वह फ़ुज़ूल
और मज़्हकाख़ेज़ हैं। अदालत के वक़्त वह नेस्त हो
जाएंगे। 16 अल्लाह जो याक़ूब का मौरूसी हिस्सा है
इन की मानिन्द नहीं है। वह सब का ख़ालिक़ है,
और इस्राईली क़ौम उस का मौरूसी हिस्सा है। रब्ब-
उल-अफ़्वाज ही उस का नाम है।

आने वाली जिलावतनी

17 ऐ मुहासराशुदा शहर, अपना सामान समेट कर
मुल्क से निकलने की तय्यारियाँ कर ले। 18 क्यूँकि
रब फ़रमाता है, “इस बार मैं मुल्क के बाशिन्दों को
बाहर फैंक दूँगा। मैं उन्हें तंग करूँगा ताकि उन्हें
पकड़ा जाए।”

19 हाय, मेरा बेड़ा ग़र्क़ हो गया है! हाय, मेरा ज़ख़्म
भर नहीं सकता। पहले मैं ने सोचा कि यह ऐसी
बीमारी है जिसे मुझे बर्दाश्त ही करना है। 20 लेकिन
अब मेरा ख़ैमा तबाह हो गया है, उस के तमाम रस्से
टूट गए हैं। मेरे बेटे मेरे पास से चले गए हैं, एक भी
नहीं रहा। कोई नहीं है जो मेरा ख़ैमा दुबारा लगाए, जो
उस के पर्दे नए सिरे से लटकाए। 21 क्यूँकि क़ौम के
गल्लाबान अहमक़ हो गए हैं, उन्हों ने रब को तलाश
नहीं किया। इस लिए वह कामयाब नहीं रहे, और
उन का पूरा रेवड़ तित्तर-बित्तर हो गया है।

22 सुनो! एक ख़बर पहुँच रही है, शिमाली मुल्क से
शोर-ओ-ग़ौग़ा सुनाई दे रहा है। यहूदाह के शहर उस
की ज़द में आ कर बर्बाद हो जाएंगे। आइन्दा गीदड़
ही उन में बसेंगे।

23 ऐ रब, मैं ने जान लिया है कि इन्सान की राह उस
के अपने हाथ में नहीं होती। अपनी मर्ज़ी से न वह
चलता, न क़दम उठाता है। 24 ऐ रब, मेरी तम्बीह कर,
लेकिन मुनासिब हद तक। तैश में आ कर मेरी तम्बीह
न कर, वर्ना मैं भस्म हो जाऊँगा। 25 अपना ग़ज़ब उन
अक़्वाम पर नाज़िल कर जो तुझे नहीं जानतीं, उन
उम्मतों पर जो तेरा नाम ले कर तुझे नहीं पुकारतीं।

क्यूँकि उन्हों ने याक़ूब को हड़प कर लिया है। उन्हों ने उसे मुकम्मल तौर पर निगल कर उस की चरागाह को तबाह कर दिया है।

क़ौम की अह्दशिकनी

11 1 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ, 2 "यरूशलम और यहूदाह के बाशिन्दों से कह कि उस अह्द की शराइत पर ध्यान दो जो मैं ने तुम्हारे साथ बांधा था। 3 रब जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि उस पर लानत जो उस अह्द की शराइत पूरी न करे 4 जो मैं ने तुम्हारे बापदादा से बांधा था जब उन्हें मिस्र से निकाल लाया, उस मक़ाम से जो लोहा पिघलाने वाली भट्टी की मानिन्द था। उस वक़्त मैं बोला, 'मेरी सुनो और मेरे हर हुक्म पर अमल करो तो तुम मेरी क़ौम होगे और मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँगा। 5 फिर मैं वह वादा पूरा करूँगा जो मैं ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा से किया था, मैं तुम्हें वह मुल्क दूँगा जिस में दूध और शहद की कस्रत है।' आज तुम उसी मुल्क में रह रहे हो।"

मैं, यरमियाह ने जवाब दिया, "ऐ रब, आमीन, ऐसा ही हो!"

6 तब रब ने मुझे हुक्म दिया कि यहूदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों में फिर कर यह तमाम बातें सुना दे। एलान कर, "अह्द की शराइत पर ध्यान दे कर उन पर अमल करो। 7 तुम्हारे बापदादा को मिस्र से निकालते वक़्त मैं ने उन्हें आगाह किया कि मेरी सुनो। आज तक मैं बार बार यही बात दुहराता रहा, 8 लेकिन उन्हों ने न मेरी सुनी, न ध्यान दिया बल्कि हर एक अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता रहा। अह्द की जिन बातों पर मैं ने उन्हें अमल करने का हुक्म दिया था उन पर उन्हों ने अमल न किया। नतीजे में मैं उन पर वह तमाम लानतें लाया जो अह्द में बयान की गई हैं।"

9 रब मज़ीद मुझ से हमकलाम हुआ, "यहूदाह और यरूशलम के बाशिन्दों ने मेरे ख़िलाफ़ साज़िश की है। 10 उन से वही गुनाह सरज़द हुए हैं जो उन के बापदादा ने किए थे। क्यूँकि यह भी मेरी बातें सुनने के लिए तय्यार नहीं हैं, यह भी अजनबी माबूदों के पीछे हो लिए हैं ताकि उन की ख़िदमत करें। इस्राईल और यहूदाह ने मिल कर वह अह्द तोड़ा है जो मैं ने उन के बापदादा से बांधा था।

11 इस लिए रब फ़रमाता है कि मैं उन पर ऐसी आफ़त नाज़िल करूँगा जिस से वह बच नहीं सकेंगे। तब वह मदद के लिए मुझ से फ़र्याद करेंगे, लेकिन मैं उन की नहीं सुनूँगा। 12 फिर यहूदाह और यरूशलम के बाशिन्दे अपने शहरों से निकल कर चीख़ते चिल्लाते उन देवताओं से मिन्नत करेंगे जिन के सामने बख़ूर जलाते रहे हैं। लेकिन अब जब वह मुसीबत में मुब्तला होंगे तो यह उन्हें नहीं बचाएँगे। 13 ऐ यहूदाह, तेरे देवता तेरे शहरों जैसे बेशुमार हो गए हैं। शर्मनाक देवता बाल के लिए बख़ूर जलाने की इतनी क़ुर्बानगाहें खड़ी की गई हैं जितनी यरूशलम में गलियाँ होती हैं। 14 ऐ यरमियाह, इस क़ौम के लिए दुआ मत करना! इस के लिए न मिन्नत कर, न समाजत। क्यूँकि जब आफ़त उन पर आएगी और वह चिल्ला कर मुझ से फ़र्याद करेंगे तो मैं उन की नहीं सुनूँगा।

15 मेरी प्यारी क़ौम मेरे घर में क्यूँ हाज़िर होती है? वह तो अपनी बेशुमार साज़िशों से बाज़ ही नहीं आती। क्या आने वाली आफ़त क़ुर्बानी का मुक़द्दस गोश्त पेश करने से रुक जाएगी? अगर ऐसा होता तो तू ख़ुशी मना सकती।

16 रब ने तेरा नाम 'ज़ैतून का फलता फूलता दरख़्त जिस का ख़ूबसूरत फल है' रखा, लेकिन अब वह ज़बरदस्त आँधी का शोर मचा कर दरख़्त को आग लगाएगा। तब उस की तमाम डालियाँ भस्म हो जाएँगी। 17 ऐ इस्राईल और यहूदाह, रब्ब-उल-अफ़्वाज ने ख़ुद तुम्हें ज़मीन में लगाया। लेकिन अब उस ने तुम पर आफ़त लाने का फ़ैसला किया है। क्यूँ? तुम्हारे ग़लत काम की वजह से, और इस लिए कि तुम ने बाल देवता को बख़ूर की क़ुर्बानियाँ पेश करके मुझे तैश दिलाया है।"

यरमियाह के लिए जान का ख़तरा

18 रब ने मुझे इत्तिला दी तो मुझे मालूम हुआ। हाँ,
उस वक़्त तू ही ने मुझे उन के मन्सूबों से आगाह
किया। 19 पहले मैं उस भूले-भाले भेड़ के बच्चे की
मानिन्द था जिसे क़साई के पास लाया जा रहा हो।
मुझे क्या पता था कि यह मेरे ख़िलाफ़ साज़िशें कर
रहे हैं। आपस में वह कह रहे थे, "आओ, हम दरख़्त
को फल समेत ख़त्म करें, आओ हम उसे ज़िन्दों के
मुल्क में से मिटाएँ ताकि उस का नाम-ओ-निशान
तक याद न रहे।"
20 ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, तू आदिल मुन्सिफ़ है जो
लोगों के सब से गहरे ख़यालात और राज़ जाँच
लेता है। अब बख़्श दे कि मैं अपनी आँखों से वह
इन्तिक़ाम देखूँ जो तू मेरे मुख़ालिफ़ों से लेगा। क्यूँकि
मैं ने अपना मुआमला तेरे ही सपुर्द कर दिया है।
21 रब फ़रमाता है, "अनतोत के आदमी तुझे क़त्ल
करना चाहते हैं। वह कहते हैं, 'रब का नाम ले कर
नबुव्वत मत करना, वर्ना तू हमारे हाथों मार दिया
जाएगा'।" 22 चूँकि यह लोग ऐसी बातें करते हैं इस
लिए रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "मैं उन्हें सज़ा
दूँगा! उन के जवान आदमी तलवार से और उन के
बेटे-बेटियाँ काल से हलाक हो जाएंगे। 23 उन में से
एक भी नहीं बचेगा। क्यूँकि जिस साल उन की सज़ा
नाज़िल होगी, उस वक़्त मैं अनतोत के आदमियों पर
सख़्त आफ़त लाऊँगा।"

बेदीनों को इतनी कामयाबी क्यूँ हासिल होती है?

12 1 ऐ रब, तू हमेशा हक़ पर है, लिहाज़ा
अदालत में तुझ से शिकायत करने का क्या
फ़ाइदा? ताहम मैं अपना मुआमला तुझे पेश करना
चाहता हूँ। बेदीनों को इतनी कामयाबी क्यूँ हासिल
होती है? ग़द्दार इतने सुकून से ज़िन्दगी क्यूँ गुज़ारते
हैं? 2 तू ने उन्हें ज़मीन में लगा दिया, और अब वह
जड़ पकड़ कर ख़ूब उगने लगे बल्कि फल भी ला रहे
हैं। गो तेरा नाम उन की ज़बान पर रहता है, लेकिन उन
का दिल तुझ से दूर है। 3 लेकिन ऐ रब, तू मुझे जानता
है। तू मेरा मुलाहज़ा करके मेरे दिल को परखता रहता
है। गुज़ारिश है कि तू उन्हें भेड़ों की तरह घसीट कर
ज़बह करने के लिए ले जा। उन्हें क़त्ल-ओ-ग़ारत के
दिन के लिए मख़्सूस कर!
4 मुल्क कब तक काल की गिरिफ़्त में रहेगा? खेतों
में हरियाली कब तक मुरझाई हुई नज़र आएगी?
बाशिन्दों की बुराई के बाइस जानवर और परिन्दे
ग़ाइब हो गए हैं। क्यूँकि लोग कहते हैं, "अल्लाह को
नहीं मालूम कि हमारे साथ क्या हो जाएगा।"
5 रब मुझ से हमकलाम हुआ, "पैदल चलने वालों
से दौड़ का मुक़ाबला करना तुझे थका देता है,
तो फिर तू किस तरह घोड़ों का मुक़ाबला करेगा?
तू अपने आप को सिर्फ़ वहाँ महफ़ूज़ समझता है
जहाँ चारों तरफ़ अम्न-ओ-अमान फैला हुआ है, तो
फिर तू दरया-ए-यर्दन के गुंजान जंगल से किस तरह
निपटेगा? 6 क्यूँकि तेरे सगे भाई, हाँ तेरे बाप का घर
भी तुझ से बेवफ़ा हो गया है। यह भी बुलन्द आवाज़
से तेरे पीछे तुझे गालियाँ देते हैं। उन पर एतिमाद मत
करना, ख़्वाह वह तेरे साथ अच्छी बातें क्यूँ न करें।

अल्लाह अपने मुल्क पर मातम करता है

7 मैं ने अपने घर इस्राईल को तर्क कर दिया है।
जो मेरी मौरूसी मिलकियत थी उसे मैं ने रद्द किया
है। मैं ने अपने लख़्त-ए-जिगर को उस के दुश्मनों
के हवाले कर दिया है। 8 क्यूँकि मेरी क़ौम जो मेरी
मौरूसी मिलकियत है मेरे साथ बुरा सुलूक करती है।
जंगल में शेरबबर की तरह वह मेरे ख़िलाफ़ दहाड़ती
है, इस लिए मैं उस से नफ़रत करता हूँ। 9 अब मेरी
मौरूसी मिलकियत उस रंगीन शिकारी परिन्दे की
मानिन्द है जिसे दीगर शिकारी परिन्दों ने घेर रखा है।
जाओ, तमाम दरिन्दों को इकट्ठा करो ताकि वह आ
कर उसे खा जाएँ। 10 मुतअद्दिद गल्लाबानों ने मेरे अंगूर
के बाग़ को ख़राब कर दिया है। मेरे प्यारे खेत को
उन्हों ने पाँओ तले रौंद कर रेगिस्तान में बदल दिया
है। 11 अब वह बंजर ज़मीन बन कर उजाड़ हालत

में मेरे सामने मातम करता है। पूरा मुल्क वीरान-ओ-
सुन्सान है, लेकिन कोई पर्वा नहीं करता।
12 तबाहकुन फ़ौजी बयाबान की बंजर बुलन्दियों
पर से उतर कर क़रीब पहुँच रहे हैं। क्यूँकि रब की
तलवार मुल्क के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सब
कुछ खा जाएगी। कोई भी नहीं बचेगा।
13 इस क़ौम ने गन्दुम का बीज बोया, लेकिन काँटों
की फ़सल पक गई। ख़ूब मेहनत-मशक़्क़त करने के
बावुजूद भी कुछ हासिल न हुआ, क्यूँकि रब का
सख़्त ग़ज़ब क़ौम पर नाज़िल हो रहा है। चुनाँचे अब
रुस्वाई की फ़सल काटो!”

अल्लाह का पड़ोसी ममालिक के लिए पैग़ाम

14 रब फ़रमाता है, “मैं उन तमाम शरीर पड़ोसी
ममालिक को जड़ से उखाड़ दूँगा जो मेरी क़ौम
इस्राईल की मिलकियत को छीनने की कोशिश कर
रहे हैं, वह मिलकियत जो मैं ने ख़ुद उन्हें मीरास
में दी थी। साथ साथ मैं यहूदाह को भी जड़ से
उन के दरमियान से निकाल दूँगा। 15 लेकिन बाद
में मैं उन पर तरस खा कर हर एक को फिर उस
की अपनी मौरूसी ज़मीन और अपने मुल्क में पहुँचा
दूँगा। 16 पहले उन दीगर क़ौमों ने मेरी क़ौम को बाल
देवता की क़सम खाने का तर्ज़ सिखाया। लेकिन अब
अगर वह मेरी क़ौम की राहें अच्छी तरह सीख कर
मेरे ही नाम और मेरी ही हयात की क़सम खाएँ तो
मेरी क़ौम के दरमियान रह कर अज़ सर-ए-नौ क़ाइम
हो जाएँगी। 17 लेकिन जो क़ौम मेरी नहीं सुनेगी उसे
मैं हत्मी तौर पर जड़ से उखाड़ कर नेस्त कर दूँगा।”
यह रब का फ़रमान है।

गली सड़ी लँगोटी

13 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, “जा, कतान
की लँगोटी ख़रीद कर उसे बांध ले। लेकिन
वह भीग न जाए।” 2 मैं ने ऐसा ही किया। लँगोटी
ख़रीद कर मैं ने उसे बांध लिया। 3 तब रब का कलाम
दुबारा मुझ पर नाज़िल हुआ, 4 “अब वह लँगोटी ले
जो तू ने ख़रीद कर बांध ली है। दरया-ए-फ़ुरात के
पास जा कर उसे किसी चटान की दराड़ में छुपा दे।”
5 चुनाँचे मैं रवाना हो कर दरया-ए-फ़ुरात के किनारे
पहुँच गया। वहाँ मैं ने लँगोटी को कहीं छुपा दिया
जिस तरह रब ने हुक्म दिया था। 6 बहुत दिन गुज़र
गए। फिर रब मुझ से एक बार फिर हमकलाम हुआ,
“उठ, दरया-ए-फ़ुरात के पास जा कर वह लँगोटी
निकाल ला जो मैं ने तुझे वहाँ छुपाने को कहा था।”
7 चुनाँचे मैं रवाना हो कर दरया-ए-फ़ुरात के पास
पहुँच गया। वहाँ मैं ने खोद कर लँगोटी को उस
जगह से निकाल लिया जहाँ मैं ने उसे छुपा दिया
था। लेकिन अफ़्सोस, वह गल सड़ गई थी, बिलकुल
बेकार हो गई थी।
8 तब रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 9 “जिस
तरह यह कपड़ा ज़मीन में दब कर गल सड़ गया उसी
तरह मैं यहूदाह और यरूशलम का बड़ा घमंड ख़ाक
में मिला दूँगा। 10 यह ख़राब लोग मेरी बातें सुनने के
लिए तय्यार नहीं बल्कि अपने शरीर दिल की ज़िद
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। अजनबी माबूदों
के पीछे लग कर यह उन ही की ख़िदमत और पूजा
करते हैं। लेकिन इन का अन्जाम लँगोटी की मानिन्द
ही होगा। यह बेकार हो जाएंगे। 11 क्यूँकि जिस तरह
लँगोटी आदमी की कमर के साथ लिपटी रहती है
उसी तरह मैं ने पूरे इस्राईल और पूरे यहूदाह को अपने
साथ लिपटने का मौक़ा फ़राहम किया ताकि वह मेरी
क़ौम और मेरी शुहरत, तारीफ़ और इज़्ज़त का बाइस
बन जाएँ। लेकिन अफ़्सोस, वह सुनने के लिए तय्यार
नहीं थे।” यह रब का फ़रमान है।

मै के घड़े भरे हुए हैं

12 “उन्हें बता दे कि रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता
है, ‘हर घड़े को मै से भरना है।’ वह जवाब में कहेंगे,
‘हम तो ख़ुद जानते हैं कि हर घड़े को मै से भरना
है।’ 13 तब उन्हें इस का मतलब बता। ‘रब फ़रमाता
है कि इस मुल्क के तमाम बाशिन्दे घड़े हैं जिन्हें
मैं मै से भर दूँगा। दाऊद के तख़्त पर बैठने वाले

बादशाह, इमाम, नबी और यरूशलम के तमाम रहने
वाले सब के सब भर भर कर नशे में धुत हो जाएंगे।
14 तब मैं उन्हें एक दूसरे के साथ टकरा दूँगा, और
बाप बेटों के साथ मिल कर टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे।
न मैं तरस खाऊँगा, न उन पर रहम करूँगा बल्कि
हमदर्दी दिखाए बग़ैर उन्हें तबाह करूँगा'।" यह रब
का फ़रमान है।

क़ैद की हैबतनाक हालत

15 ध्यान से सुनो! मग़ुरूर न हो, क्यूँकि रब ने ख़ुद
फ़रमाया है। 16 इस से पहले कि तारीकी फैल जाए
और तुम्हारे पाँओ धुन्दलेपन में पहाड़ों के साथ
ठोकर खाएँ, रब अपने ख़ुदा को जलाल दो! क्यूँकि
उस वक़्त गो तुम रौशनी के इन्तिज़ार में रहोगे, लेकिन
अल्लाह अंधेरे को मज़ीद बढ़ाएगा, गहरी तारीकी तुम
पर छा जाएगी। 17 लेकिन अगर तुम न सुनो तो मैं
तुम्हारे तकब्बुर को देख कर पोशीदगी में गिर्या-ओ-
ज़ारी करूँगा। मैं ज़ार ज़ार रोऊँगा, मेरी आँखों से
आँसू ज़ोर से टपकेंगे, क्यूँकि दुश्मन रब के रेवड़ को
पकड़ कर जिलावतन कर देगा।

18 बादशाह और उस की माँ को इत्तिला दे, "अपने
तख़्तों से उतर कर ज़मीन पर बैठ जाओ, क्यूँकि
तुम्हारी शान का ताज तुम्हारे सरों से गिर गया है।"
19 दश्त-ए-नजब के शहर बन्द किए जाएंगे, और
उन्हें खोलने वाला कोई नहीं होगा। पूरे यहूदाह को
जिलावतन कर दिया जाएगा, एक भी नहीं बचेगा।

20 ऐ यरूशलम, अपनी नज़र उठा कर उन्हें देख
जो शिमाल से आ रहे हैं। अब वह रेवड़ कहाँ रहा
जो तेरे सपुर्द किया गया, तेरी शानदार भेड़-बकरियाँ
किधर हैं? 21 तू उस दिन क्या कहेगी जब रब उन्हें
तुझ पर मुक़र्रर करेगा जिन्हें तू ने अपने क़रीबी दोस्त
बनाया था? जन्म देने वाली औरत का सा दर्द तुझ
पर ग़ालिब आएगा। 22 और अगर तेरे दिल में सवाल
उभर आए कि मेरे साथ यह क्यूँ हो रहा है तो सुन! यह
तेरे संगीन गुनाहों की वजह से हो रहा है। इन ही की
वजह से तेरे कपड़े उतारे गए हैं और तेरी इस्मतदरी
हुई है।

23 क्या काला आदमी अपनी जिल्द का रंग या चीता
अपनी खाल के धब्बे बदल सकता है? हरगिज़ नहीं!
तुम भी बदल नहीं सकते। तुम ग़लत काम के इतने
आदी हो गए हो कि सहीह काम कर ही नहीं सकते।

24 "जिस तरह भूसा रेगिस्तान की तेज़ हवा में उड़
कर तित्तर-बित्तर हो जाता है उसी तरह मैं तेरे बाशिन्दों
को मुन्तशिर कर दूँगा।" 25 रब फ़रमाता है, "यही तेरा
अन्जाम होगा, मैं ने ख़ुद मुक़र्रर किया है कि तुझे यह
अज्र मिलना है। क्यूँकि तू ने मुझे भूल कर झूट पर
भरोसा रखा है। 26 मैं ख़ुद तेरे कपड़े उतारूँगा ताकि
तेरी बरहनगी सब को नज़र आए। 27 मैं ने पहाड़ी और
मैदानी इलाक़ों में तेरी घिनौनी हरकतों पर ख़ूब ध्यान
दिया है। तेरी ज़िनाकारी, तेरा मस्ताना हिनहिनाना,
तेरी बेशर्म इस्मतफ़रोशी, सब कुछ मुझे नज़र आता
है। ऐ यरूशलम, तुझ पर अफ़्सोस! तू पाक-साफ़
हो जाने के लिए तय्यार नहीं। मज़ीद कितनी देर
लगेगी?"

काल के दौरान रब का पैग़ाम

14 1 काल के दौरान रब यरमियाह से
हमकलाम हुआ,

2 "यहूदाह मातम कर रहा है, उस के दरवाज़ों की
हालत क़ाबिल-ए-रहम है। लोग सोगवार हालत में
फ़र्श पर बैठे हैं, और यरूशलम की चीख़ें आसमान
तक बुलन्द हो रही हैं। 3 अमीर अपने नौकरों को
पानी भरने भेजते हैं, लेकिन हौज़ों के पास पहुँच कर
पता चलता है कि पानी नहीं है, इस लिए वह ख़ाली
हाथ वापस आ जाते हैं। शर्मिन्दगी और नदामत के
मारे वह अपने सरों को ढाँप लेते हैं। 4 बारिश न होने
की वजह से ज़मीन में दराड़ें पड़ गई हैं। खेतों में काम
करने वाले भी शर्म के मारे अपने सरों को ढाँप लेते
हैं। 5 घास नहीं है, इस लिए हिरनी अपने नौमौलूद
बच्चे को छोड़ देती है। 6 जंगली गधे बंजर टीलों पर

खड़े गीदड़ों की तरह हाँपते हैं। हरियाली न मिलने
की वजह से वह बेजान हो रहे हैं।”
7 ऐ रब, हमारे गुनाह हमारे ख़िलाफ़ गवाही दे रहे
हैं। तो भी अपने नाम की ख़ातिर हम पर रहम कर।
हम मानते हैं कि बुरी तरह बेवफ़ा हो गए हैं, हम ने तेरा
ही गुनाह किया है। 8 ऐ अल्लाह, तू इस्राईल की उम्मीद
है, तू ही मुसीबत के वक़्त उसे छुटकारा देता है। तो
फिर हमारे साथ तेरा सुलूक मुल्क में अजनबी का
सा क्यूँ है? तू रात को कभी इधर कभी इधर ठहरने
वाले मुसाफ़िर जैसा क्यूँ है? 9 तू क्यूँ उस आदमी की
मानिन्द है जो अचानक दम-ब-ख़ुद हो जाता है, उस
सूरमे की मानिन्द जो बेबस हो कर बचा नहीं सकता।
ऐ रब, तू तो हमारे दरमियान ही रहता है, और हम पर
तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है। हमें तर्क न कर!

इस क़ौम के लिए दुआ मत करना

10 लेकिन रब इस क़ौम के बारे में फ़रमाता है,
“यह लोग आवारा फिरने के शौक़ीन हैं, यह अपने
पाँओ को रोक ही नहीं सकते। मैं उन से नाख़ुश
हूँ। अब मुझे उन के ग़लत काम याद रहेंगे, अब मैं
उन के गुनाहों की सज़ा दूँगा।” 11 रब मज़ीद मुझ से
हमकलाम हुआ, “इस क़ौम की बहबूदी के लिए दुआ
मत करना। 12 गो यह रोज़ा भी रखें तो भी मैं इन की
इल्तिजाओं पर ध्यान नहीं दूँगा। गो यह भस्म होने
वाली और ग़ल्ला की क़ुर्बानियाँ पेश भी करें तो भी मैं
इन से ख़ुश नहीं हूँगा बल्कि इन्हें काल, तलवार और
बीमारियों से नेस्त-ओ-नाबूद कर दूँगा।”
13 यह सुन कर मैं ने एतिराज़ किया, “ऐ रब क़ादिर-
ए-मुतलक़, नबी इन्हें बताते आए हैं, ‘न क़त्ल-ओ-
ग़ारत का ख़तरा होगा, न काल पड़ेगा बल्कि मैं यहीं
तुम्हारे लिए अम्न-ओ-अमान का पक्का बन्द-ओ-बस्त
कर लूँगा’।”
14 रब ने जवाब दिया, “नबी मेरा नाम ले कर झूटी
पेशगोइयाँ बयान कर रहे हैं। मैं ने न उन्हें भेजा, न
उन्हें कोई ज़िम्मादारी दी और न उन से हमकलाम
हुआ। यह तुम्हें झूटी रोयाएँ, फ़ुज़ूल पेशगोइयाँ और
अपने दिल के वहम सुनाते रहे हैं।” 15 चुनाँचे रब
फ़रमाता है, “यह नबी तलवार और काल की ज़द में
आ कर मर जाएंगे। क्यूँकि गो मैं ने उन्हें नहीं भेजा
तो भी यह मेरे नाम में नबुव्वत करके कहते हैं कि
मुल्क में न क़त्ल-ओ-ग़ारत का ख़तरा होगा, न काल
पड़ेगा। 16 और जिन लोगों को वह अपनी नबुव्वतें
सुनाते रहे हैं वह तलवार और काल का शिकार बन
जाएंगे, उन की लाशें यरूशलम की गलियों में फैंक
दी जाएँगी। उन्हें दफ़नाने वाला कोई नहीं होगा, न
उन को, न उन की बीवियों को और न उन के बेटे-
बेटियों को। यूँ मैं उन पर उन की अपनी बदकारी
नाज़िल करूँगा।

ऐ रब, हमें मुआफ़ कर!

17 ऐ यरमियाह, उन्हें यह कलाम सुना, ‘दिन रात
मेरे आँसू बह रहे हैं। वह रुक नहीं सकते, क्यूँकि
मेरी क़ौम, मेरी कुंवारी बेटी को गहरी चोट लग गई
है, ऐसा ज़ख़्म जो भर नहीं सकता। 18 दीहात में जा
कर मुझे वह सब नज़र आते हैं जो तलवार से क़त्ल
किए गए हैं। जब मैं शहर में वापस आता हूँ तो चारों
तरफ़ काल के बुरे असरात दिखाई देते हैं। नबी और
इमाम मुल्क में मारे मारे फिर रहे हैं, और उन्हें मालूम
नहीं कि क्या करें’।”
19 ऐ रब, क्या तू ने यहूदाह को सरासर रद्द किया
है? क्या तुझे सिय्यून से इतनी घिन आती है? तू ने
हमें इतनी बार क्यूँ मारा कि हमारा इलाज नामुमकिन
हो गया है? हम अम्न-ओ-अमान के इन्तिज़ार में
रहे, लेकिन हालात ठीक न हुए। हम शिफ़ा पाने की
उम्मीद रखते थे, लेकिन इस के बजाय हम पर दहशत
छा गई।
20 ऐ रब, हम अपनी बेदीनी और अपने बापदादा
का क़ुसूर तस्लीम करते हैं। हम ने तेरा ही गुनाह
किया है। 21 अपने नाम की ख़ातिर हमें हक़ीर न
जान, अपने जलाली तख़्त की बेहुरमती होने न दे!
हमारे साथ अपना अह्द याद कर, उसे मन्सूख़ न
कर। 22 क्या दीगर अक़्वाम के देवताओं में से कोई

है जो बारिश बरसा सके? या क्या आसमान ख़ुद ही
बारिशें ज़मीन पर भेज देता है? हरगिज़ नहीं, बल्कि
तू ही यह सब कुछ करता है, ऐ रब हमारे ख़ुदा। इसी
लिए हम तुझ पर उम्मीद रखते हैं। तू ही ने यह सारा
इन्तिज़ाम क़ाइम किया है।

सज़ा ज़रूर आएगी, क्यूँकि देर हो गई है

15 1 फिर रब मुझ से हमकलाम हुआ, "अब
से मेरा दिल इस क़ौम की तरफ़ माइल नहीं
होगा, ख़्वाह मूसा और समूएल मेरे सामने आ कर उन
की शफ़ाअत क्यूँ न करें। उन्हें मेरे हुज़ूर से निकाल दे,
वह चले जाएँ! 2 अगर वह तुझ से पूछें, 'हम किधर
जाएँ?' तो उन्हें जवाब दे, 'रब फ़रमाता है कि जिसे
मरना है वह मरे, जिसे तलवार की ज़द में आना है
वह तलवार का लुक़्मा बने, जिसे भूके मरना है वह
भूके मरे, जिसे क़ैद में जाना है वह क़ैद हो जाए'।"
3 रब फ़रमाता है, "मैं उन्हें चार क़िस्म की सज़ा दूँगा।
एक, तलवार उन्हें क़त्ल करेगी। दूसरे, कुत्ते उन की
लाशें घसीट कर ले जाएंगे। तीसरे और चौथे, परिन्दे
और दरिन्दे उन्हें खा खा कर ख़त्म कर देंगे। 4 जब
मैं अपनी क़ौम से निपट लूँगा तो दुनिया के तमाम
ममालिक उस की हालत देख कर काँप उठेंगे। उन
के रोंगटे खड़े हो जाएंगे जब वह यहूदाह के बादशाह
मनस्सी बिन हिज़क़ियाह की उन शरीर हरकतों का
अन्जाम देखेंगे जो उस ने यरूशलम में की हैं।

5 ऐ यरूशलम, कौन तुझ पर तरस खाएगा, कौन
हमदर्दी का इज़हार करेगा? कौन तेरे घर आ कर तेरा
हाल पूछेगा?" 6 रब फ़रमाता है, "तू ने मुझे रद्द किया,
अपना मुँह मुझ से फेर लिया है। अब मैं अपना हाथ
तेरे ख़िलाफ़ बढ़ा कर तुझे तबाह कर दूँगा। क्यूँकि
मैं हमदर्दी दिखाते दिखाते तंग आ गया हूँ।

7 जिस तरह गन्दुम को हवा में उछाल कर भूसे
से अलग किया जाता है उसी तरह मैं उन्हें मुल्क
के दरवाज़ों के सामने फटकूँगा। चूँकि मेरी क़ौम ने
अपने ग़लत रास्तों को तर्क न किया इस लिए मैं उसे
बेऔलाद बना कर बर्बाद कर दूँगा। 8 उस की बेवाएँ
समुन्दर की रेत जैसी बेशुमार होंगी। दोपहर के वक़्त
ही मैं नौजवानों की माओं पर तबाही नाज़िल करूँगा,
अचानक ही उन पर पेच-ओ-ताब और दहशत छा
जाएगी। 9 सात बच्चों की माँ निढाल हो कर जान से
हाथ धो बैठेगी। दिन के वक़्त ही उस का सूरज डूब
जाएगा, उस का फ़ख़र और इज़्ज़त जाती रहेगी। जो
लोग बच जाएंगे उन्हें मैं दुश्मन के आगे आगे तलवार
से मार डालूँगा।" यह रब का फ़रमान है।

यरमियाह रब से शिकायत करता है

10 ऐ मेरी माँ, मुझ पर अफ़्सोस! अफ़्सोस कि तू
ने मुझ जैसे शख़्स को जन्म दिया जिस के साथ पूरा
मुल्क झगड़ता और लड़ता है। गो मैं ने न उधार दिया
न लिया तो भी सब मुझ पर लानत करते हैं। 11 रब ने
जवाब दिया, "यक़ीनन मैं तुझे मज़बूत करके अपना
अच्छा मक़्सद पूरा करूँगा। यक़ीनन मैं होने दूँगा कि
मुसीबत के वक़्त दुश्मन तुझ से मिन्नत करे।

12 क्यूँकि कोई उस लोहे को तोड़ नहीं सकेगा जो
शिमाल से आएगा, हाँ लोहे और पीतल का वह
सरिया तोड़ा नहीं जाएगा। 13 मैं तेरे ख़ज़ाने दुश्मन को
मुफ़्त में दूँगा। तुझे तमाम गुनाहों का अज्र मिलेगा जब
वह पूरे मुल्क में तेरी दौलत लूटने आएगा। 14 तब मैं
तुझे दुश्मन के ज़रीए एक मुल्क में पहुँचा दूँगा जिस
से तू नावाक़िफ़ है। क्यूँकि मेरे ग़ज़ब की भड़कती
आग तुझे भस्म कर देगी।"

15 ऐ रब, तू सब कुछ जानता है। मुझे याद कर, मेरा
ख़याल कर, ताक़्क़ुब करने वालों से मेरा इन्तिक़ाम
ले! उन्हें यहाँ तक बर्दाश्त न कर कि आख़िरकार मेरा
सफ़ाया हो जाए। इसे ध्यान में रख कि मेरी रुस्वाई
तेरी ही ख़ातिर हो रही है। 16 ऐ रब, लश्करों के ख़ुदा,
जब भी तेरा कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ तो मैं ने उसे
हज़म किया, और मेरा दिल उस से ख़ुश-ओ-ख़ुर्रम
हुआ। क्यूँकि मुझ पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।
17 जब दीगर लोग रंगरलियों में अपने दिल बहलाते
थे तो मैं कभी उन के साथ न बैठा, कभी उन की बातों
से लुत्फ़अन्दोज़ न हुआ। नहीं, तेरा हाथ मुझ पर था,

इस लिए मैं दूसरों से दूर ही बैठा रहा। क्यूँकि तू ने
मेरे दिल को क़ौम पर क़हर से भर दिया था। 18 क्या
वजह है कि मेरा दर्द कभी ख़त्म नहीं होता, कि मेरा
ज़ख़्म लाइलाज है और कभी नहीं भरता? तू मेरे लिए
फ़रेबदिह चश्मा बन गया है, ऐसी नदी जिस के पानी
पर एतिमाद नहीं किया जा सकता।

19 रब जवाब में फ़रमाता है, "अगर तू मेरे पास
वापस आए तो मैं तुझे वापस आने दूँगा, और तू
दुबारा मेरे सामने हाज़िर हो सकेगा। और अगर तू
फ़ुज़ूल बातें न करे बल्कि मेरे लाइक़ अल्फ़ाज़ बोले
तो मेरा तर्जुमान होगा। लाज़िम है कि लोग तेरी तरफ़
रुजू करें, लेकिन ख़बरदार, कभी उन की तरफ़ रुजू न
कर!" 20 रब फ़रमाता है, "मैं तुझे पीतल की मज़बूत
दीवार बना दूँगा ताकि तू इस क़ौम का सामना कर
सके। यह तुझ से लड़ेंगे लेकिन तुझ पर ग़ालिब नहीं
आएँगे, क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ, मैं तेरी मदद करके
तुझे बचाए रखूँगा। 21 मैं तुझे बेदीनों के हाथ से
बचाऊँगा और फ़िद्या दे कर ज़ालिमों की गिरिफ़्त
से छुड़ाऊँगा।"

यरमियाह को शादी करने की इजाज़त नहीं

16 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "इस
मक़ाम में न तेरी शादी हो, न तेरे बेटे-बेटियाँ
पैदा हो जाएँ।" 3 क्यूँकि रब यहाँ पैदा होने वाले बेटे-
बेटियों और उन के माँ-बाप के बारे में फ़रमाता है,
4 "वह मोहलिक बीमारियों से मर कर खेतों में गोबर
की तरह पड़े रहेंगे। न कोई उन पर मातम करेगा, न
उन्हें दफ़नाएगा, क्यूँकि वह तलवार और काल से
हलाक हो जाएंगे, और उन की लाशें परिन्दों और
दरिन्दों की ख़ुराक बन जाएँगी।"

5 रब फ़रमाता है, "ऐसे घर में मत जाना जिस में
कोई फ़ौत हो गया है। [y]उस में न मातम करने के लिए,
न अफ़सोस करने के लिए दाख़िल होना। क्यूँकि अब
से मैं इस क़ौम पर अपनी सलामती, मेहरबानी और
रहम का इज़हार नहीं करूँगा।" यह रब का फ़रमान
है। 6 "इस मुल्क के बाशिन्दे मर जाएंगे, ख़्वाह बड़े
हों या छोटे। और न कोई उन्हें दफ़नाएगा, न मातम
करेगा। कोई नहीं होगा जो ग़म के मारे अपनी जिल्द
को काटे या अपने सर को मुंडवाए। 7 किसी का बाप
या माँ भी इन्तिक़ाल कर जाए तो भी लोग मातम करने
वाले घर में नहीं जाएंगे, न तसल्ली देने के लिए जनाज़े
के खाने-पीने में शरीक होंगे। 8 ऐसे घर में भी दाख़िल
न होना जहाँ लोग ज़ियाफ़त कर रहे हैं। उन के साथ
खाने-पीने के लिए मत बैठना।" 9 क्यूँकि रब्ब-उल-
अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, "तुम्हारे
जीते जी, हाँ तुम्हारे देखते देखते मैं यहाँ ख़ुशी-ओ-
शादमानी की आवाज़ें बन्द कर दूँगा। अब से दूल्हा
दुल्हन की आवाज़ें ख़ामोश हो जाएँगी।

10 जब तू इस क़ौम को यह सब कुछ बताएगा तो
लोग पूछेंगे, 'रब इतनी बड़ी आफ़त हम पर लाने पर
क्यूँ तुला हुआ है? हम से क्या जुर्म हुआ है? हम ने
रब अपने ख़ुदा का क्या गुनाह किया है?' 11 उन्हें
जवाब दे, 'वजह यह है कि तुम्हारे बापदादा ने मुझे
तर्क कर दिया। वह मेरी शरीअत के ताबे न रहे बल्कि
मुझे छोड़ कर अजनबी माबूदों के पीछे लग गए और
उन ही की ख़िदमत और पूजा करने लगे। 12 लेकिन
तुम अपने बापदादा की निस्बत कहीं ज़्यादा ग़लत
काम करते हो। देखो, मेरी कोई नहीं सुनता बल्कि हर
एक अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ज़िन्दगी
गुज़ारता है। 13 इस लिए मैं तुम्हें इस मुल्क से निकाल
कर एक ऐसे मुल्क में फैंक दूँगा जिस से न तुम
और न तुम्हारे बापदादा वाक़िफ़ थे। वहाँ तुम दिन
रात अजनबी माबूदों की ख़िदमत करोगे, क्यूँकि उस
वक़्त मैं तुम पर रहम नहीं करूँगा'।"

जिलावतनी से वापसी

14 लेकिन रब यह भी फ़रमाता है, "ऐसा वक़्त आने
वाला है कि लोग क़सम खाते वक़्त नहीं कहेंगे, 'रब

---

[y]लफ़्ज़ी तर्जुमा : जिस में जनाज़े का खाना खिलाया जा रहा है।

की हयात की क़सम जो इस्राईलियों को मिस्र से
निकाल लाया।' 15 इस के बजाय वह कहेंगे, 'रब की
हयात की क़सम जो इस्राईलियों को शिमाली मुल्क
और उन दीगर ममालिक से निकाल लाया जिन में
उस ने उन्हें मुन्तशिर कर दिया था।' क्यूँकि मैं उन्हें
उस मुल्क में वापस लाऊँगा जो मैं ने उन के बापदादा
को दिया था।"

आने वाली सज़ा

16 लेकिन मौजूदा हाल के बारे में रब फ़रमाता है,
"मैं बहुत से माहीगीर भेज दूँगा जो जाल डाल कर
उन्हें पकड़ेंगे। इस के बाद मैं मुतअद्दिद शिकारी
भेज दूँगा जो उन का ताक़्क़ुब करके उन्हें हर जगह
पकड़ेंगे, ख़्वाह वह किसी पहाड़ या टीले पर छुप
गए हों, ख़्वाह चटानों की किसी दराड़ में। 17 क्यूँकि
उन की तमाम हरकतें मुझे नज़र आती हैं। मेरे सामने
वह छुप नहीं सकते, और उन का क़ुसूर मेरे सामने
पोशीदा नहीं है। 18 अब मैं उन्हें उन के गुनाहों की
दुगनी सज़ा दूँगा, क्यूँकि उन्हों ने अपने बेजान बुतों
और घिनौनी चीज़ों से मेरी मौरूसी ज़मीन को भर कर
मेरे मुल्क की बेहुरमती की है।"

यरमियाह का रब पर एतिमाद

19 ऐ रब, तू मेरी क़ुव्वत और मेरा क़िला है, मुसीबत
के दिन मैं तुझ में पनाह लेता हूँ। दुनिया की इन्तिहा
से अक़्वाम तेरे पास आ कर कहेंगी, "हमारे बापदादा
को मीरास में झूट ही मिला, ऐसे बेकार बुत जो उन
की मदद न कर सके। 20 इन्सान किस तरह अपने
लिए ख़ुदा बना सकता है? उस के बुत तो ख़ुदा नहीं
हैं।"

21 रब फ़रमाता है, "चुनाँचे इस बार मैं उन्हें सहीह
पहचान अता करूँगा। वह मेरी क़ुव्वत और ताक़त
को पहचान लेंगे, और वह जान लेंगे कि मेरा नाम रब
है।

यहूदाह का गुनाह और उस की सज़ा

17 1 ऐ यहूदाह के लोगो, तुम्हारा गुनाह तुम्हारी
ज़िन्दगियों का अनमिट हिस्सा बन गया है।
उसे हीरे की नोक रखने वाले लोहे के आले से तुम्हारे
दिलों की तख़्तियों और तुम्हारी क़ुर्बानगाहों के सींगों
पर कन्दा किया गया है। 2 न सिर्फ़ तुम बल्कि तुम्हारे
बच्चे भी अपनी क़ुर्बानगाहों और असीरत देवी के
खम्बों को याद करते हैं, ख़्वाह वह घने दरख़्तों के
साय में या ऊँची जगहों पर क्यूँ न हों। 3 ऐ मेरे पहाड़
जो दीहात से घिरा हुआ है, तेरे पूरे मुल्क पर गुनाह
का असर है, इस लिए मैं होने दूँगा कि सब कुछ लूट
लिया जाएगा। तेरा माल, तेरे ख़ज़ाने और तेरी ऊँची
जगहों की क़ुर्बानगाहें सब छीन ली जाएँगी।

4 अपने क़ुसूर के सबब से तुझे अपनी मौरूसी
मिलकियत छोड़नी पड़ेगी, वह मिलकियत जो तुझे
मेरी तरफ़ से मिली थी। मैं तुझे तेरे दुश्मनों का ग़ुलाम
बना दूँगा, और तू एक नामालूम मुल्क में बसेगा।
क्यूँकि तुम लोगों ने मुझे तैश दिलाया है, और अब
तुम पर मेरा ग़ज़ब कभी न बुझने वाली आग की तरह
भड़कता रहेगा।"

मुख़्तलिफ़ फ़रमान

5 रब फ़रमाता है, "उस पर लानत जिस का दिल रब
से दूर हो कर सिर्फ़ इन्सान और उसी की ताक़त पर
भरोसा रखता है। 6 वह रेगिस्तान में झाड़ी की मानिन्द
होगा, उसे किसी भी अच्छी चीज़ का तजरिबा नहीं
होगा बल्कि वह बयाबान के ऐसे पथरीले और कल्लर
वाले इलाक़ों में बसेगा जहाँ कोई और नहीं रहता।
7 लेकिन मुबारक है वह जो रब पर भरोसा रखता है,
जिस का एतिमाद उसी पर है। 8 वह पानी के किनारे
पर लगे उस दरख़्त की मानिन्द है जिस की जड़ें नहर
तक फैली हुई हैं। झुलसाने वाली गर्मी भी आए तो
उसे डर नहीं, बल्कि उस के पत्ते हरे-भरे रहते हैं।
काल भी पड़े तो वह परेशान नहीं होता बल्कि वक़्त
पर फल लाता रहता है।

9 दिल हद से ज़्यादा फ़रेबदिह है, और उस का
इलाज नामुमकिन है। कौन उस का सहीह इल्म रखता
है? 10 मैं, रब ही दिल की तफ़्तीश करता हूँ। मैं हर
एक की बातिनी हालत जाँच कर उसे उस के चाल-
चलन और अमल का मुनासिब अज्र देता हूँ।
11 जिस शख़्स ने ग़लत तरीक़े से दौलत जमा की
है वह उस तीतर की मानिन्द है जो किसी दूसरे के
अंडों पर बैठ जाता है। क्यूँकि ज़िन्दगी के उरूज पर
उसे सब कुछ छोड़ना पड़ेगा, और आख़िरकार उस
की हमाक़त सब पर ज़ाहिर हो जाएगी।"
12 हमारा मक़्दिस अल्लाह का जलाली तख़्त है जो
अज़ल से अज़ीम है। 13 ऐ रब, तू ही इस्राईल की
उम्मीद है। तुझे तर्क करने वाले सब शर्मिन्दा हो
जाएंगे। तुझ से दूर होने वाले ख़ाक में मिलाए जाएंगे,
क्यूँकि उन्हों ने रब को छोड़ दिया है जो ज़िन्दगी के
पानी का सरचश्मा है।

मदद के लिए यरमियाह की दरख़्वास्त

14 ऐ रब, तू ही मुझे शिफ़ा दे तो मुझे शिफ़ा मिलेगी।
तू ही मुझे बचा तो मैं बचूँगा। क्यूँकि तू ही मेरा फ़ख़र
है। 15 लोग मुझ से पूछते रहते हैं, "रब का जो कलाम
तू ने पेश किया वह कहाँ है? उसे पूरा होने दे!" 16 ऐ
अल्लाह, तू ने मुझे अपनी क़ौम का गल्लाबान बनाया है,
और मैं ने यह ज़िम्मादारी कभी नहीं छोड़ी। मैं ने कभी
ख़्वाहिश नहीं रखी कि मुसीबत का दिन आए। तू यह
सब कुछ जानता है, जो भी बात मेरे मुँह से निकली है
वह तेरे सामने है। 17 अब मेरे लिए दहशत का बाइस
न बन! मुसीबत के दिन मैं तुझ में ही पनाह लेता हूँ।
18 मेरा ताक़्क़ुब करने वाले शर्मिन्दा हो जाएँ, लेकिन
मेरी रुस्वाई न हो। उन पर दहशत छा जाए, लेकिन
मैं इस से बचा रहूँ। उन पर मुसीबत का दिन नाज़िल
कर, उन को दो बार कुचल कर ख़ाक में मिला दे।

सबत का दिन मनाओ

19 रब मुझ से हमकलाम हुआ, "शहर के अवामी
दरवाज़े में खड़ा हो जा, जिसे यहूदाह के बादशाह
इस्तेमाल करते हैं जब शहर में आते और उस से
निकलते हैं। इसी तरह यरूशलम के दीगर दरवाज़ों
में भी खड़ा हो जा। 20 वहाँ लोगों से कह, 'ऐ दरवाज़ों
में से गुज़रने वालो, रब का कलाम सुनो! ऐ यहूदाह
के बादशाहो और यहूदाह और यरूशलम के तमाम
बाशिन्दो, मेरी तरफ़ कान लगाओ!
21 रब फ़रमाता है कि अपनी जान ख़तरे में न डालो
बल्कि ध्यान दो कि तुम सबत के दिन माल-ओ-
अस्बाब शहर में न लाओ और उसे उठा कर शहर
के दरवाज़ों में दाख़िल न हो। 22 न सबत के दिन
बोझ उठा कर अपने घर से कहीं और ले जाओ, न
कोई और काम करो, बल्कि उसे इस तरह मनाना
कि मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो। मैं ने तुम्हारे बापदादा
को यह करने का हुक्म दिया था, 23 लेकिन उन्हों ने
मेरी न सुनी, न तवज्जुह दी बल्कि अपने मौक़िफ़ पर
अड़े रहे और न मेरी सुनी, न मेरी तर्बियत क़बूल की।
24 रब फ़रमाता है कि अगर तुम वाक़ई मेरी सुनो
और सबत के दिन अपना माल-ओ-अस्बाब इस शहर
में न लाओ बल्कि आराम करने से यह दिन मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस मानो 25 तो फिर आइन्दा भी दाऊद की
नस्ल के बादशाह और सरदार इस शहर के दरवाज़ों
में से गुज़रेंगे। तब वह घोड़ों और रथों पर सवार हो
कर अपने अफ़सरों और यहूदाह और यरूशलम के
बाशिन्दों के साथ शहर में आते जाते रहेंगे। अगर
तुम सबत को मानो तो यह शहर हमेशा तक आबाद
रहेगा। 26 फिर पूरे मुल्क से लोग यहाँ आएँगे। यहूदाह
के शहरों और यरूशलम के गिर्द-ओ-नवाह के दीहात
से, बिनयमीन के क़बाइली इलाक़े से, मग़रिब के
नशेबी पहाड़ी इलाक़े से, पहाड़ी इलाक़े से और दश्त-
ए-नजब से सब अपनी क़ुर्बानियाँ ला कर रब के घर में
पेश करेंगे। उन की तमाम भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ,
ज़बह, ग़ल्ला, बख़ूर और सलामती की क़ुर्बानियाँ रब
के घर में चढ़ाई जाएँगी। 27 लेकिन अगर तुम मेरी न
सुनो और सबत का दिन मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस न मानो
तो फिर तुम्हें सख़्त सज़ा मिलेगी। अगर तुम सबत
के दिन अपना माल-ओ-अस्बाब शहर में लाओ तो

मैं इन ही दरवाज़ों में एक न बुझने वाली आग लगा
दूँगा जो जलती जलती यरूशलम के महलों को भस्म
कर देगी'।"

अल्लाह अज़ीम कुम्हार है

18 1 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ, 2 "उठ
और कुम्हार के घर में जा! वहाँ मैं तुझ
से हमकलाम हूँगा।" 3 चुनाँचे मैं कुम्हार के घर में
पहुँच गया। उस वक़्त वह चाक पर काम कर रहा
था। 4 लेकिन मिट्टी का जो बर्तन वह अपने हाथों से
तश्कील दे रहा था वह ख़राब हो गया। यह देख कर
कुम्हार ने उसी मिट्टी से नया बर्तन बना दिया जो उसे
ज़्यादा पसन्द था।

5 तब रब मुझ से हमकलाम हुआ, 6 "ऐ इस्राईल,
क्या मैं तुम्हारे साथ वैसा सुलूक नहीं कर सकता
जैसा कुम्हार अपने बर्तन से करता है? जिस तरह
मिट्टी कुम्हार के हाथ में तश्कील पाती है उसी तरह
तुम मेरे हाथ में तश्कील पाते हो।" यह रब का
फ़रमान है। 7 "कभी मैं एलान करता हूँ कि किसी
क़ौम या सल्तनत को जड़ से उखाड़ दूँगा, उसे गिरा
कर तबाह कर दूँगा। 8 लेकिन कई बार यह क़ौम
अपनी ग़लत राह को तर्क कर देती है। इस सूरत में
मैं पछता कर उस पर वह आफ़त नहीं लाता जो मैं ने
लाने को कहा था। 9 कभी मैं किसी क़ौम या सल्तनत
को पनीरी की तरह लगाने और तामीर करने का
एलान भी करता हूँ। 10 लेकिन अफ़सोस, कई दफ़ा
यह क़ौम मेरी नहीं सुनती बल्कि ऐसा काम करने
लगती है जो मुझे नापसन्द है। इस सूरत में मैं पछता
कर उस पर वह मेहरबानी नहीं करता जिस का एलान
मैं ने किया था।

11 अब यहूदाह और यरूशलम के बाशिन्दों से
मुख़ातिब हो कर कह, 'रब फ़रमाता है कि मैं तुम
पर आफ़त लाने की तय्यारियाँ कर रहा हूँ, मैं ने
तुम्हारे ख़िलाफ़ मन्सूबा बांध लिया है। चुनाँचे हर
एक अपनी ग़लत राह से हट कर वापस आए, हर एक
अपना चाल-चलन और अपना रवय्या दुरुस्त करे।'
12 लेकिन अफ़सोस, यह एतिराज़ करेंगे, 'दफ़ा करो!
हम अपने ही मन्सूबे जारी रखेंगे। हर एक अपने शरीर
दिल की ज़िद के मुताबिक़ ही ज़िन्दगी गुज़ारेगा'।"

क़ौम रब को भूल गई है

13 इस लिए रब फ़रमाता है, "दीगर अक़्वाम से
दरयाफ़्त करो कि उन में कभी ऐसी बात सुनने में आई
है। कुंवारी इस्राईल से निहायत घिनौना जुर्म हुआ है!
14 क्या लुबनान की पथरीली चोटियों की बर्फ़ कभी
पिघल कर ख़त्म हो जाती है? क्या दूरदराज़ चश्मों
से बहने वाला बर्फ़ीला पानी कभी थम जाता है?
15 लेकिन मेरी क़ौम मुझे भूल गई है। यह लोग बातिल
बुतों के सामने बख़ूर जलाते हैं, उन चीज़ों के सामने
जिन के बाइस वह ठोकर खा कर क़दीम राहों से हट
गए हैं और अब कच्चे रास्तों पर चल रहे हैं। 16 इस
लिए उन का मुल्क वीरान हो जाएगा, एक ऐसी जगह
जिसे दूसरे अपने मज़ाक़ का निशाना बनाएँगे। जो भी
गुज़रे उस के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, वह अफ़सोस से
अपना सर हिलाएगा। 17 दुश्मन आएगा तो मैं अपनी
क़ौम को उस के आगे आगे मुन्तशिर करूँगा। जिस
तरह गर्द मशरिक़ी हवा के तेज़ झोंकों से उड़ कर
बिखर जाती है उसी तरह वह तित्तर-बित्तर हो जाएंगे।
जब आफ़त उन पर नाज़िल होगी तो मैं उन की तरफ़
रुजू नहीं करूँगा बल्कि अपना मुँह उन से फेर लूँगा।"

यरमियाह के ख़िलाफ़ साज़िश

18 यह सुन कर लोग आपस में कहने लगे, "आओ,
हम यरमियाह के ख़िलाफ़ मन्सूबे बांधें, क्यूँकि उस
की बातें सहीह नहीं हैं। न इमाम शरीअत की हिदायत
से, न दानिशमन्द अच्छे मश्वरों से, और न नबी अल्लाह
के कलाम से महरूम हो जाएगा। आओ, हम ज़बानी
उस पर हम्ला करें और उस की बातों पर ध्यान न दें,
ख़्वाह वह कुछ भी क्यूँ न कहे।"

19 ऐ रब, मुझ पर तवज्जुह दे और उस पर ग़ौर कर
जो मेरे मुख़ालिफ़ कह रहे हैं। 20 क्या इन्सान को नेक
काम के बदले में बुरा काम करना चाहिए? क्यूँकि

उन्हों ने मुझे फंसाने के लिए गढ़ा खोद कर तय्यार कर रखा है। याद कर कि मैं ने तेरे हुज़ूर खड़े हो कर उन के लिए शफ़ाअत की ताकि तेरा ग़ज़ब उन पर नाज़िल न हो। 21 अब होने दे कि उन के बच्चे भूके मर जाएँ और वह ख़ुद तलवार की ज़द में आएँ। उन की बीवियाँ बेऔलाद और शौहरों से महरूम हो जाएँ। उन के आदमियों को मौत के घाट उतारा जाए, उन के नौजवान जंग में लड़ते लड़ते हलाक हो जाएँ। 22 अचानक उन पर जंगी दस्ते ला ताकि उन के घरों से चीख़ों की आवाज़ें बुलन्द हों। क्यूँकि उन्हों ने मुझे पकड़ने के लिए गढ़ा खोदा है, उन्हों ने मेरे पाँओ को फंसाने के लिए मेरे रास्ते में फंदे छुपा रखे हैं।

23 ऐ रब, तू उन की मुझे क़त्ल करने की तमाम साज़िशें जानता है। उन का क़ुसूर मुआफ़ न कर, और उन के गुनाहों को न मिटा बल्कि उन्हें हमेशा याद कर। होने दे कि वह ठोकर खा कर तेरे सामने गिर जाएँ। जब तेरा ग़ज़ब नाज़िल होगा तो उन से भी निपट ले।

क़ौम मिट्टी के टूटे हुए बर्तन की मानिन्द होगी

19 1 रब ने हुक्म दिया, "कुम्हार के पास जा कर मिट्टी का बर्तन ख़रीद ले। फिर अवाम के कुछ बुज़ुर्गों और चन्द एक बुज़ुर्ग इमामों को अपने साथ ले कर 2 शहर से निकल जा। वादी-ए-बिन-हिन्नूम में चला जा जो शहर के दरवाज़े बनाम 'ठीकरे का दरवाज़ा' के सामने है। वहाँ वह कलाम सुना जो मैं तुझे सुनाने को कहूँगा। 3 उन्हें बता,

'ऐ यहूदाह के बादशाहो और यरूशलम के बाशिन्दो, रब का कलाम सुनो! रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि मैं इस मक़ाम पर ऐसी आफ़त नाज़िल करूँगा कि जिसे भी इस की ख़बर मिलेगी उस के कान बजेंगे। 4 क्यूँकि उन्हों ने मुझे तर्क करके इस मक़ाम को अजनबी माबूदों के हवाले कर दिया है। जिन बुतों से न उन के बापदादा और न यहूदाह के बादशाह कभी वाक़िफ़ थे उन के हुज़ूर उन्हों ने क़ुर्बानियाँ पेश कीं। नीज़, उन्हों ने इस जगह को बेक़ुसूरों के ख़ून से भर दिया है। 5 उन्हों ने ऊँची जगहों पर बाल देवता के लिए क़ुर्बानगाहें तामीर कीं ताकि अपने बेटों को उन पर जला कर उसे पेश करें। मैं ने यह करने का कभी हुक्म नहीं दिया था। न मैं ने कभी इस का ज़िक्र किया, न कभी मेरे ज़हन में इस का ख़याल तक आया।

6 चुनाँचे ख़बरदार! रब फ़रमाता है कि ऐसा वक़्त आने वाला है जब यह वादी "तूफ़त" या "बिन-हिन्नूम" नहीं कहलाएगी बल्कि "वादी-ए-क़त्ल-ओ-ग़ारत।" 7 इस जगह मैं यहूदाह और यरूशलम के मन्सूबे ख़ाक में मिला दूँगा। मैं होने दूँगा कि उन के दुश्मन उन्हें मौत के घाट उतारें, कि जो उन्हें जान से मारना चाहें वह इस में कामयाब हो जाएँ। तब मैं उन की लाशों को परिन्दों और दरिन्दों को खिला दूँगा। 8 मैं इस शहर को हौलनाक तरीक़े से तबाह करूँगा। तब दूसरे उसे अपने मज़ाक़ का निशाना बनाएँगे। जो भी गुज़रे उस के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। उस की तबाहशुदा हालत देख कर वह "तौबा तौबा" कहेगा। 9 जब उन का जानी दुश्मन शहर का मुहासरा करेगा तो इतना सख़्त काल पड़ेगा कि बाशिन्दे अपने बच्चों और एक दूसरे को खा जाएंगे।'

10 फिर साथ वालों की मौजूदगी में मिट्टी के बर्तन को ज़मीन पर पटख़ दे। 11 साथ साथ उन्हें बता, 'रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि जिस तरह मिट्टी का बर्तन पाश पाश हो गया है और उस की मरम्मत नामुमकिन है उसी तरह मैं इस क़ौम और शहर को भी पाश पाश कर दूँगा। उस वक़्त लाशों को तूफ़त में दफ़नाया जाएगा, क्यूँकि कहीं और जगह नहीं मिलेगी। 12 इस शहर और इस के बाशिन्दों के साथ मैं यही सुलूक करूँगा। मैं इस शहर को तूफ़त की मानिन्द बना दूँगा। यह रब का फ़रमान है। 13 यरूशलम के घर यहूदाह के शाही महलों समेत तूफ़त की तरह नापाक हो जाएंगे। हाँ, वह तमाम घर नापाक हो जाएंगे जिन की छतों पर तमाम आसमानी लश्कर के लिए बख़ूर जलाया जाता और अजनबी माबूदों को मै की नज़रें पेश की जाती थीं'।"

14 इस के बाद यरमियाह वादी-ए-तूफ़त से वापस
आया जहाँ रब ने उसे नबुव्वत करने के लिए भेजा
था। फिर वह रब के घर के सहन में खड़े हो कर तमाम
लोगों से मुख़ातिब हुआ, 15 "रब्ब-उल-अफ़्वाज जो
इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि सुनो! मैं इस शहर
और यहूदाह के दीगर शहरों पर वह तमाम मुसीबत
लाने को हूँ जिस का एलान मैं ने किया है। क्यूँकि
तुम अड़ गए हो और मेरी बातें सुनने के लिए तय्यार
ही नहीं।"

यरमियाह फ़श्हूर इमाम से टकरा जाता है

20 1 उस वक़्त एक इमाम रब के घर में था
जिस का नाम फ़श्हूर बिन इम्मेर था। वह
रब के घर का आला अफ़्सर था। जब यरमियाह की
यह पेशगोइयाँ उस के कानों तक पहुँच गईं 2 तो उस
ने यरमियाह नबी की पिटाई करवा कर उस के पाँओ
काठ में ठोंक दिए। यह काठ रब के घर से मुल्हिक़
शहर के ऊपर वाले दरवाज़े बनाम बिनयमीन में था।
3 अगले दिन फ़श्हूर ने उसे आज़ाद कर दिया। तब
यरमियाह ने उस से कहा, "रब ने आप का एक नया
नाम रखा है। अब से आप का नाम फ़श्हूर नहीं है
बल्कि 'चारों तरफ़ दह्शत ही दह्शत।' 4 क्यूँकि रब
फ़रमाता है, 'मैं होने दूँगा कि तू अपने लिए और अपने
तमाम दोस्तों के लिए दह्शत की अलामत बनेगा।
क्यूँकि तू अपनी आँखों से अपने दोस्तों की क़त्ल-
ओ-ग़ारत देखेगा। मैं यहूदाह के तमाम बाशिन्दों को
बाबल के बादशाह के क़ब्ज़े में कर दूँगा जो बाज़ को
मुल्क-ए-बाबल में ले जाएगा और बाज़ को मौत के
घाट उतार देगा। 5 मैं इस शहर की सारी दौलत दुश्मन
के हवाले कर दूँगा, और वह इस की तमाम पैदावार,
क़ीमती चीज़ें और शाही ख़ज़ाने लूट कर मुल्क-ए-
बाबल ले जाएगा। 6 ऐ फ़श्हूर, तू भी अपने घर वालों
समेत मुल्क-ए-बाबल में जिलावतन होगा। वहाँ तू
मर कर दफ़नाया जाएगा। और न सिर्फ़ तू बल्कि तेरे
वह सारे दोस्त भी जिन्हें तू ने झूटी पेशगोइयाँ सुनाई
हैं'।"

यरमियाह की रब से शिकायत

7 ऐ रब, तू ने मुझे मनवाया, और मैं मान गया। तू
मुझे अपने क़ाबू में ला कर मुझ पर ग़ालिब आया।
अब मैं पूरा दिन मज़ाक़ का निशाना बना रहता हूँ।
हर एक मेरी हंसी उड़ाता रहता है। 8 क्यूँकि जब भी
मैं अपना मुँह खोलता हूँ तो मुझे चिल्ला कर 'ज़ुल्म-
ओ-तबाही' का नारा लगाना पड़ता है। चुनाँचे मैं रब
के कलाम के बाइस पूरा दिन गालियों और मज़ाक़
का निशाना बना रहता हूँ। 9 लेकिन अगर मैं कहूँ,
"आइन्दा मैं न रब का ज़िक्र करूँगा, न उस का नाम
ले कर बोलूँगा" तो फिर उस का कलाम आग की
तरह मेरे दिल में भड़कने लगता है। और यह आग
मेरी हड्डियों में बन्द रहती और कभी नहीं निकलती।
मैं इसे बर्दाश्त करते करते थक गया हूँ, यह मेरे बस
की बात नहीं रही। 10 मुतअद्दिद लोगों की सरगोशियाँ
मेरे कानों तक पहुँचती हैं। वह कहते हैं, "चारों तरफ़
दह्शत ही दह्शत? यह क्या कह रहा है? उस की
रपट लिखवाओ! आओ, हम उस की रिपोर्ट करें।"
मेरे तमाम नाम-निहाद दोस्त इस इन्तिज़ार में हैं कि मैं
फिसल जाऊँ। वह कहते हैं, "शायद वह धोका खा
कर फंस जाए और हम उस पर ग़ालिब आ कर उस
से इन्तिक़ाम ले सकें।"
11 लेकिन रब ज़बरदस्त सूरमे की तरह मेरे साथ है,
इस लिए मेरा ताक़्क़ुब करने वाले मुझ पर ग़ालिब
नहीं आएँगे बल्कि ख़ुद ठोकर खा कर गिर जाएंगे।
उन के मुँह काले हो जाएंगे, क्यूँकि वह नाकाम
हो जाएंगे। उन की रुस्वाई हमेशा ही याद रहेगी
और कभी नहीं मिटेगी। 12 ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, तू
रास्तबाज़ का मुआइना करके दिल और ज़हन को
परखता है। अब बख़्श दे कि मैं अपनी आँखों से
वह इन्तिक़ाम देखूँ जो तू मेरे मुख़ालिफ़ों से लेगा।
क्यूँकि मैं ने अपना मुआमला तेरे ही सपुर्द कर दिया
है। 13 रब की मद्हसराई करो! रब की तम्जीद करो!
क्यूँकि उस ने ज़रूरतमन्द की जान को शरीरों के हाथ
से बचा लिया है।

मैं क्यूँ पैदा हुआ?

14 उस दिन पर लानत जब मैं पैदा हुआ! वह दिन
मुबारक न हो जब मेरी माँ ने मुझे जन्म दिया। 15 उस
आदमी पर लानत जिस ने मेरे बाप को बड़ी ख़ुशी
दिला कर इत्तिला दी कि तेरे बेटा पैदा हुआ है! 16 वह
उन शहरों की मानिन्द हो जिन को रब ने बेरहमी
से ख़ाक में मिला दिया। अल्लाह करे कि सुब्ह के
वक़्त उसे चीख़ें सुनाई दें और दोपहर के वक़्त जंग
के नारे। 17 क्यूँकि उसे मुझे उसी वक़्त मार डालना
चाहिए था जब मैं अभी माँ के पेट में था। फिर मेरी माँ
मेरी क़ब्र बन जाती, उस का पाँओ हमेशा तक भारी
रहता। 18 मैं क्यूँ माँ के पेट में से निकला? क्या सिर्फ़
इस लिए कि मुसीबत और ग़म देखूँ और ज़िन्दगी के
इख़तिताम तक रुस्वाई की ज़िन्दगी गुज़ारूँ?

बाबल की फ़ौज यरूशलम पर फ़त्ह पाएगी

21 1 एक दिन सिदक़ियाह बादशाह ने फ़श्हूर
बिन मल्कियाह और मासियाह के बेटे
सफ़नियाह इमाम को यरमियाह के पास भेज दिया।
उस के पास पहुँच कर उन्हों ने कहा, 2 "बाबल
का बादशाह नबूकद्नज़्ज़र हम पर हम्ला कर रहा है।
शायद जिस तरह रब ने माज़ी में कई बार किया
इस दफ़ा भी हमारी मदद करके नबूकद्नज़्ज़र को
मोजिज़ाना तौर पर यरूशलम को छोड़ने पर मज्बूर
करे। रब से इस के बारे में दरयाफ़्त करें।"

तब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ,
3 और उस ने दोनों आदमियों से कहा, "सिदक़ियाह
को बताओ कि 4 रब जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता
है, 'बेशक शहर से निकल कर बाबल की मुहासरा
करने वाली फ़ौज और उस के बादशाह से लड़ो।
लेकिन मैं तुम्हें पीछे धकेल कर शहर में पनाह लेने
पर मज्बूर करूँगा। वहाँ उस के बीच में ही तुम अपने
हथियारों समेत जमा हो जाओगे। 5 मैं ख़ुद अपना
हाथ बढ़ा कर बड़ी क़ुदरत से तुम्हारे साथ लड़ूँगा, मैं
अपने ग़ुस्से और तैश का पूरा इज़हार करूँगा, मेरा
सख़्त ग़ज़ब तुम पर नाज़िल होगा। 6 शहर के बाशिन्दे
मेरे हाथ से हलाक हो जाएंगे, ख़्वाह इन्सान हों या
हैवान। मोहलिक वबा उन्हें मौत के घाट उतार देगी।'
7 रब फ़रमाता है, 'इस के बाद मैं यहूदाह के बादशाह
सिदक़ियाह को उस के अफ़्सरों और बाक़ी बाशिन्दों
समेत बाबल के बादशाह नबूकद्नज़्ज़र के हवाले
कर दूँगा। वबा, तलवार और काल से बचने वाले
सब अपने जानी दुश्मन के क़ाबू में आ जाएंगे। तब
नबूकद्नज़्ज़र बेरहमी से उन्हें तलवार से मार देगा। न
उसे उन पर तरस आएगा, न वह हमदर्दी का इज़हार
करेगा।'

8 इस क़ौम को बता कि रब फ़रमाता है, 'मैं तुम्हें
अपनी जान को बचाने का मौक़ा फ़राहम करता हूँ।
इस से फ़ाइदा उठाओ, वर्ना तुम मरोगे। 9 अगर तुम
तलवार, काल या वबा से मरना चाहो तो इस शहर में
रहो। लेकिन अगर तुम अपनी जान को बचाना चाहो
तो शहर से निकल कर अपने आप को बाबल की
मुहासरा करने वाली फ़ौज के हवाले करो। जो कोई
यह करे उस की जान छूट जाएगी।' [z]

10 रब फ़रमाता है, 'मैं ने अटल फ़ैसला किया है
कि इस शहर पर मेहरबानी नहीं करूँगा बल्कि इसे
नुक़्सान पहुँचाऊँगा। इसे शाह-ए-बाबल के हवाले
कर दिया जाएगा जो इसे आग लगा कर तबाह
करेगा।'

11 यहूदाह के शाही ख़ानदान से कह, 'रब का
कलाम सुनो! 12 ऐ दाऊद के घराने, रब फ़रमाता है
कि हर सुब्ह लोगों का इन्साफ़ करो। जिसे लूट लिया
गया हो उसे ज़ालिम के हाथ से बचाओ! ऐसा न हो
कि मेरा ग़ज़ब तुम्हारी शरीर हरकतों की वजह से
तुम पर नाज़िल हो कर आग की तरह भड़क उठे
और कोई न हो जो उसे बुझा सके।

---

[z] लफ़्ज़ी तर्जुमा : वह ग़नीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

13 रब फ़रमाता है कि ऐ यरूशलम, तू वादी के ऊपर
ऊँची चटान पर रह कर फ़ख़र करती है कि कौन
हम पर हम्ला करेगा, कौन हमारे घरों में घुस सकता
है? लेकिन अब मैं ख़ुद तुझ से निपट लूँगा। 14 रब
फ़रमाता है कि मैं तुम्हारी हरकतों का पूरा अज्र दूँगा।
मैं यरूशलम के जंगल में ऐसी आग लगा दूँगा जो
इर्दगिर्द सब कुछ भस्म कर देगी'।"

शाही महल नज़र-ए-आतिश हो जाएगा

22 1 रब ने फ़रमाया, "शाह-ए-यहूदाह के महल
के पास जा कर मेरा यह कलाम सुना, 2 'ऐ
यहूदाह के बादशाह, रब का फ़रमान सुन! ऐ तू जो
दाऊद के तख़्त पर बैठा है, अपने मुलाज़िमों और
महल के दरवाज़ों में आने वाले लोगों समेत मेरी बात
पर ग़ौर कर! 3 रब फ़रमाता है कि इन्साफ़ और रास्ती
क़ाइम रखो। जिसे लूट लिया गया है उसे ज़ालिम के
हाथ से छुड़ाओ। परदेसी, यतीम और बेवा को मत
दबाना, न उन से ज़ियादती करना, और इस जगह
बेक़ुसूर लोगों की ख़ूँरेज़ी मत करना। 4 अगर तुम
एहतियात से इस पर अमल करो तो आइन्दा भी
दाऊद की नस्ल के बादशाह अपने अफ़सरों और
रआया के साथ रथों और घोड़ों पर सवार हो कर
इस महल में दाख़िल होंगे। 5 लेकिन अगर तुम मेरी
इन बातों की न सुनो तो मेरे नाम की क़सम! यह महल
मल्बे का ढेर बन जाएगा। यह रब का फ़रमान है।

6 क्यूँकि रब शाह-ए-यहूदाह के महल के बारे में
फ़रमाता है कि तू जिलिआद जैसा ख़ुशगवार और
लुबनान की चोटी जैसा ख़ूबसूरत था। लेकिन अब मैं
तुझे बयाबान में बदल दूँगा, तू ग़ैरआबाद शहर की
मानिन्द हो जाएगा। 7 मैं आदमियों को तुझे तबाह
करने के लिए मख़्सूस करके हर एक को हथियार से
लेस करूँगा, और वह देवदार के तेरे उम्दा शहतीरों
को काट कर आग में झोंक देंगे। 8 तब मुतअद्दिद
क़ौमों के अफ़राद यहाँ से गुज़र कर पूछेंगे कि रब ने
इस जैसे बड़े शहर के साथ ऐसा सुलूक क्यूँ किया?
9 उन्हें जवाब दिया जाएगा, वजह यह है कि इन्हों ने
रब अपने ख़ुदा का अह्द तर्क करके अजनबी माबूदों
की पूजा और ख़िदमत की है'।"

यहूआख़ज़ बादशाह वापस नहीं आएगा

10 इस लिए गिर्या-ओ-ज़ारी न करो कि यूसियाह
बादशाह कूच कर गया है बल्कि उस पर मातम करो
जिसे जिलावतन किया गया है, क्यूँकि वह कभी
वापस नहीं आएगा, कभी अपना वतन दुबारा नहीं
देखेगा।

11 क्यूँकि रब यूसियाह के बेटे और जानशीन सल्लूम
यानी यहूआख़ज़ के बारे में फ़रमाता है, "यहूआख़ज़
यहाँ से चला गया है और कभी वापस नहीं आएगा।
12 जहाँ उसे गिरिफ़्तार करके पहुँचाया गया है वहीं
वह वफ़ात पाएगा। वह यह मुल्क दुबारा कभी नहीं
देखेगा।

यहूयक़ीम पर इल्ज़ाम

13 यहूयक़ीम बादशाह पर अफ़्सोस जो नाजाइज़
तरीक़े से अपना घर तामीर कर रहा है, जो नाइन्साफ़ी
से उस की दूसरी मन्ज़िल बना रहा है। क्यूँकि वह
अपने हमवतनों को मुफ़्त में काम करने पर मज्बूर
कर रहा है और उन्हें उन की मेहनत का मुआवज़ा
नहीं दे रहा। 14 वह कहता है, 'मैं अपने लिए कुशादा
महल बनवा लूँगा जिस की दूसरी मन्ज़िल पर बड़े
बड़े कमरे होंगे। मैं घर में बड़ी खिड़कियाँ बनवा कर
दीवारों को देवदार की लकड़ी से ढाँप दूँगा। इस के
बाद मैं उसे सुर्ख़ रंग से आरास्ता करूँगा।' 15 क्या
देवदार की शानदार इमारतें बनवाने से यह साबित
होता है कि तू बादशाह है? हरगिज़ नहीं! तेरे बाप
को भी खाने-पीने की हर चीज़ मुयस्सर थी, लेकिन
उस ने इस का ख़याल किया कि इन्साफ़ और रास्ती
क़ाइम रहे। नतीजे में उसे बरकत मिली। 16 उस ने
तवज्जुह दी कि ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों का हक़
मारा न जाए, इसी लिए उसे कामयाबी हासिल हुई।"
रब फ़रमाता है, "जो इसी तरह ज़िन्दगी गुज़ारे वही
मुझे सहीह तौर पर जानता है। 17 लेकिन तू फ़र्क़ है।

तेरी आँखें और दिल नाजाइज़ नफ़ा कमाने पर तुले
रहते हैं। न तू बेक़ुसूर को क़त्ल करने से, न ज़ुल्म
करने या जब्रन कुछ लेने से झिजकता है।”
18 चुनाँचे रब यहूदाह के बादशाह यहूयक़ीम बिन
यूसियाह के बारे में फ़रमाता है, “लोग उस पर मातम
नहीं करेंगे कि ‘हाय मेरे भाई, हाए मेरी बहन,’ न
वह रो कर कहेंगे, ‘हाय, मेरे आक़ा! हाय, उस की
शान जाती रही है।’ 19 इस के बजाय उसे गधे की
तरह दफ़नाया जाएगा। लोग उसे घसीट कर बाहर
यरूशलम के दरवाज़ों से कहीं दूर फैंक देंगे।

यहूयाकीन बादशाह को दुश्मन के हवाले किया जाएगा

20 ऐ यरूशलम, लुबनान पर चढ़ कर ज़ार-ओ-
क़तार रो! बसन की बुलन्दियों पर जा कर चीख़ें
मार! अबारीम के पहाड़ों की चोटियों पर आह-ओ-
ज़ारी कर! क्यूँकि तेरे तमाम आशिक़ [a]पाश पाश हो
गए हैं। 21 मैं ने तुझे उस वक़्त आगाह किया था
जब तू सुकून से ज़िन्दगी गुज़ार रही थी, लेकिन तू
ने कहा, ‘मैं नहीं सुनूँगी।’ तेरी जवानी से ही तेरा यही
रवय्या रहा। उस वक़्त से ले कर आज तक तू ने मेरी
नहीं सुनी। 22 तेरे तमाम गल्लाबानों को आँधी उड़ा ले
जाएगी, और तेरे आशिक़ जिलावतन हो जाएंगे। तब
तू अपनी बुरी हरकतों के बाइस शर्मिन्दा हो जाएगी,
क्यूँकि तेरी ख़ूब रुस्वाई हो जाएगी। 23 बेशक इस
वक़्त तू लुबनान में रहती है और तेरा बसेरा देवदार
के दरख़्तों में है। लेकिन जल्द ही तू आहें भर भर कर
दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला हो जाएगी, तू जन्म देने वाली
औरत की तरह पेच-ओ-ताब खाएगी।”
24 रब फ़रमाता है, “ऐ यहूदाह के बादशाह
यहूयाकीन बिन यहूयक़ीम, मेरी हयात की क़सम!
ख़्वाह तू मेरे दहने हाथ की मुहरदार अंगूठी क्यूँ न
होता तो भी मैं तुझे उतार कर फैंक देता। [b]25 मैं तुझे
उस जानी दुश्मन के हवाले करूँगा जिस से तू डरता
है यानी बाबल के बादशाह नबूकद्नज़्ज़र और उस
की क़ौम के हवाले। 26 मैं तुझे तेरी माँ समेत एक
अजनबी मुल्क में फैंक दूँगा। जहाँ तुम पैदा नहीं
हुए वहीं वफ़ात पाओगे। 27 तुम वतन में वापस आने
के शदीद आरज़ूमन्द होगे लेकिन उस में कभी नहीं
लौटोगे।”
28 लोग एतिराज़ करते हैं, “क्या यह आदमी
यहूयाकीन [c]वाक़ई ऐसा हक़ीर और टूटा-फूटा बर्तन
है जो किसी को भी पसन्द नहीं आता? उसे अपने
बच्चों समेत क्यूँ ज़ोर से निकाल कर किसी नामालूम
मुल्क में फैंक दिया जाएगा?”
29 ऐ मुल्क, ऐ मुल्क, ऐ मुल्क! रब का पैग़ाम सुन!
30 रब फ़रमाता है, “रजिस्टर में दर्ज करो कि यह
आदमी बेऔलाद है, कि यह उम्र भर नाकाम रहेगा।
क्यूँकि उस के बच्चों में से कोई दाऊद के तख़्त पर
बैठ कर यहूदाह की हुकूमत करने में कामयाब नहीं
होगा।”

रब क़ौम के सहीह गल्लाबान मुक़र्रर करेगा

23 1 रब फ़रमाता है, “उन गल्लाबानों पर
अफ़्सोस जो मेरी चरागाह की भेड़ों को
तबाह करके मुन्तशिर कर रहे हैं।” 2 इस लिए रब जो
इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, “ऐ मेरी क़ौम को
चराने वाले गल्लाबानो, मैं तुम्हारी शरीर हरकतों की
मुनासिब सज़ा दूँगा, क्यूँकि तुम ने मेरी भेड़ों की फ़िक्र
नहीं की बल्कि उन्हें मुन्तशिर करके तित्तर-बित्तर कर
दिया है।” रब फ़रमाता है, “सुनो, मैं तुम्हारी शरीर
हरकतों से निपट लूँगा।
3 मैं ख़ुद अपने रेवड़ की बची हुई भेड़ों को जमा
करूँगा। जहाँ भी मैं ने उन्हें मुन्तशिर कर दिया
था, उन तमाम ममालिक से मैं उन्हें उन की अपनी
चरागाह में वापस लाऊँगा। वहाँ वह फलें फूलेंगे,

[a]आशिक़ से मुराद यहूदाह के इत्तिहादी हैं।
[b]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ कूनियाह मुस्तामल है।
[c]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ कूनियाह मुस्तामल है।

और उन की तादाद बढ़ती जाएगी। 4 मैं ऐसे गल्लाबानों
को उन पर मुक़र्रर करूँगा जो उन की सहीह गल्लाबानी
करेंगे। आइन्दा न वह ख़ौफ़ खाएँगे, न घबरा जाएंगे।
एक भी गुम नहीं हो जाएगा।" यह रब का फ़रमान है।

रब सहीह बादशाह मुक़र्रर करेगा

5 रब फ़रमाता है, "वह वक़्त आने वाला है कि मैं
दाऊद के लिए एक रास्तबाज़ कोंपल फूटने दूँगा,
एक ऐसा बादशाह जो हिक्मत से हुकूमत करेगा, जो
मुल्क में इन्साफ़ और रास्ती क़ाइम रखेगा। 6 उस के
दौर-ए-हुकूमत में यहूदाह को छुटकारा मिलेगा और
इस्राईल महफ़ूज़ ज़िन्दगी गुज़ारेगा। वह 'रब हमारी
रास्तबाज़ी' कहलाएगा।

7 चुनाँचे वह वक़्त आने वाला है जब लोग क़सम
खाते वक़्त नहीं कहेंगे, 'रब की हयात की क़सम
जो इस्राईलियों को मिस्र से निकाल लाया।' 8 इस
के बजाय वह कहेंगे, 'रब की हयात की क़सम
जो इस्राईलियों को शिमाली मुल्क और दीगर उन
तमाम ममालिक से निकाल लाया जिन में उस ने उन्हें
मुन्तशिर कर दिया था।' उस वक़्त वह दुबारा अपने
ही मुल्क में बसेंगे।" यह रब का फ़रमान है।

झूटे नबियों पर यक़ीन मत करना

9 झूटे नबियों को देख कर मेरा दिल टूट गया है, मेरी
तमाम हड्डियाँ लरज़ रही हैं। मैं नशे में धुत आदमी की
मानिन्द हूँ। मै से मग़लूब शख़्स की तरह मैं रब और
उस के मुक़द्दस अल्फ़ाज़ के सबब से डगमगा रहा
हूँ।

10 यह मुल्क ज़िनाकारों से भरा हुआ है, इस लिए
उस पर अल्लाह की लानत है। ज़मीन झुलस गई है,
बयाबान की चरागाहों की हरियाली मुरझा गई है।
नबी ग़लत राह पर दौड़ रहे हैं, और जिस में वह
ताक़तवर हैं वह ठीक नहीं। 11 रब फ़रमाता है, "नबी
और इमाम दोनों ही बेदीन हैं। मैं ने अपने घर में भी
उन का बुरा काम पाया है। 12 इस लिए जहाँ भी चलें
वह फिसल जाएंगे, वह अंधेरे में ठोकर खा कर गिर
जाएंगे। क्यूँकि मैं मुक़र्ररा वक़्त पर उन पर आफ़त
लाऊँगा।" यह रब का फ़रमान है।

13 "मैं ने देखा कि सामरिया के नबी बाल के नाम
में नबुव्वत करके मेरी क़ौम इस्राईल को ग़लत राह
पर लाए। यह क़ाबिल-ए-घिन है, 14 लेकिन जो कुछ
मुझे यरूशलम के नबियों में नज़र आता है वह उतना
ही घिनौना है। वह ज़िना करते और झूट के पैरोकार
हैं। साथ साथ वह बदकारों की हौसलाअफ़्ज़ाई भी
करते हैं, और नतीजे में कोई भी अपनी बदी से बाज़
नहीं आता। मेरी नज़र में वह सब सदूम की मानिन्द
हैं। हाँ, यरूशलम के बाशिन्दे अमूरा के बराबर हैं।"
15 इस लिए रब इन नबियों के बारे में फ़रमाता है, "मैं
उन्हें कड़वा खाना खिलाऊँगा और ज़हरीला पानी
पिलाऊँगा, क्यूँकि यरूशलम के नबियों ने पूरे मुल्क
में बेदीनी फैलाई है।"

16 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "नबियों की
पेशगोइयों पर ध्यान मत देना। वह तुम्हें फ़रेब दे रहे
हैं। क्यूँकि वह रब का कलाम नहीं सुनाते बल्कि
महज़ अपने दिल में से उभरने वाली रोया पेश करते
हैं। 17 जो मुझे हक़ीर जानते हैं उन्हें वह बताते रहते हैं,
'रब फ़रमाता है कि हालात सहीह-सलामत रहेंगे।' जो
अपने दिलों की ज़िद के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते
हैं, उन सब को वह तसल्ली दे कर कहते हैं, 'तुम पर
आफ़त नहीं आएगी।' 18 लेकिन उन में से किस ने रब
की मजलिस में शरीक हो कर वह कुछ देखा और
सुना है जो रब बयान कर रहा है? किसी ने नहीं! किस
ने तवज्जुह दे कर उस का कलाम सुना है? किसी ने
नहीं!

19 देखो, रब की ग़ज़बनाक आँधी चलने लगी है,
उस का तेज़ी से घूमता हुआ बगूला बेदीनों के सरों पर
मंडला रहा है। 20 और रब का यह ग़ज़ब उस वक़्त
तक ठंडा नहीं होगा जब तक उस के दिल का इरादा
तक्मील तक न पहुँच जाए। आने वाले दिनों में तुम्हें
इस की पूरी समझ आएगी।

21 यह नबी दौड़ कर अपनी बातें सुनाते रहते हैं
अगरचे मैं ने उन्हें नहीं भेजा। गो मैं उन से हमकलाम

नहीं हुआ तो भी यह पेशगोइयाँ करते हैं। 22 अगर
यह मेरी मजलिस में शरीक होते तो मेरी क़ौम को मेरे
अल्फ़ाज़ सुना कर उसे उस के बुरे चाल-चलन और
ग़लत हरकतों से हटाने की कोशिश करते।"

23 रब फ़रमाता है, "क्या मैं सिर्फ़ क़रीब का ख़ुदा
हूँ? हरगिज़ नहीं! मैं दूर का ख़ुदा भी हूँ। 24 क्या कोई
मेरी नज़र से ग़ाइब हो सकता है? नहीं, ऐसी जगह है
नहीं जहाँ वह मुझ से छुप सके। आसमान-ओ-ज़मीन
मुझ से मामूर रहते हैं।" यह रब का फ़रमान है।

25 "इन नबियों की बातें मुझ तक पहुँच गई हैं। यह
मेरा नाम ले कर झूट बोलते हैं कि मैं ने ख़्वाब देखा
है, ख़्वाब देखा है! 26 यह नबी झूटी पेशगोइयाँ और
अपने दिलों के वस्वसे सुनाने से कब बाज़ आएँगे?
27 जो ख़्वाब वह एक दूसरे को बताते हैं उन से वह
चाहते हैं कि मेरी क़ौम मेरा नाम यूँ भूल जाए जिस
तरह उन के बापदादा बाल की पूजा करने से मेरा नाम
भूल गए थे।" 28 रब फ़रमाता है, "जिस नबी ने ख़्वाब
देखा हो वह बेशक अपना ख़्वाब बयान करे, लेकिन
जिस पर मेरा कलाम नाज़िल हुआ हो वह वफ़ादारी
से मेरा कलाम सुनाए। भूसे का गन्दुम से क्या वास्ता
है?"

29 रब फ़रमाता है, "क्या मेरा कलाम आग की
मानिन्द नहीं? क्या वह हथौड़े की तरह चटान को
टुकड़े टुकड़े नहीं करता?" 30 चुनाँचे रब फ़रमाता
है, "अब मैं उन नबियों से निपट लूँगा जो एक दूसरे
के पैग़ामात चुरा कर दावा करते हैं कि वह मेरी तरफ़
से हैं।" 31 रब फ़रमाता है, "मैं उन से निपट लूँगा जो
अपने शख़्सी ख़यालात सुना कर दावा करते हैं, 'यह
रब का फ़रमान है'।" 32 रब फ़रमाता है, "मैं उन से
निपट लूँगा जो झूटे ख़्वाब सुना कर मेरी क़ौम को
अपनी धोकेबाज़ी और शेख़ी की बातों से ग़लत राह
पर लाते हैं, हालाँकि मैं ने उन्हें न भेजा, न कुछ कहने
को कहा था। उन लोगों का इस क़ौम के लिए कोई
भी फ़ाइदा नहीं।" यह रब का फ़रमान है।

रब के लिए तुम बोझ का बाइस हो

33 "ऐ यरमियाह, अगर इस क़ौम के आम लोग या
इमाम या नबी तुझ से पूछें, 'आज रब ने तुझ पर
कलाम का क्या बोझ नाज़िल किया है?' तो जवाब
दे, 'रब फ़रमाता है कि तुम ही मुझ पर बोझ हो!
लेकिन मैं तुम्हें उतार फैंकूँगा।' 34 और अगर कोई
नबी, इमाम या आम शख़्स दावा करे, 'रब ने मुझ पर
कलाम का बोझ नाज़िल किया है' तो मैं उसे उस के
घराने समेत सज़ा दूँगा।

35 इस के बजाय एक दूसरे से सवाल करो कि 'रब
ने क्या जवाब दिया?' या 'रब ने क्या फ़रमाया?'
36 आइन्दा रब के पैग़ाम के लिए लफ़्ज़ 'बोझ'
इस्तेमाल न करो, क्यूँकि जो भी बात तुम करो वह
तुम्हारा अपना बोझ होगी। क्यूँकि तुम ज़िन्दा ख़ुदा
के अल्फ़ाज़ को तोड़-मरोड़ कर बयान करते हो,
उस कलाम को जो रब्ब-उल-अफ़्वाज हमारे ख़ुदा
ने नाज़िल किया है। 37 चुनाँचे आइन्दा नबी से सिर्फ़
इतना ही पूछो कि 'रब ने तुझे क्या जवाब दिया?'
या 'रब ने क्या फ़रमाया?' 38 लेकिन अगर तुम 'रब
का बोझ' कहने पर इसरार करो तो रब का जवाब
सुनो! चूँकि तुम कहते हो कि 'मुझ पर रब का बोझ
नाज़िल हुआ है' गो मैं ने यह मना किया था, 39 इस
लिए मैं तुम्हें अपनी याद से मिटा कर यरूशलम समेत
अपने हुज़ूर से दूर फैंक दूँगा, गो मैं ने ख़ुद यह शहर
तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को फ़राहम किया था।
40 मैं तुम्हारी अबदी रुस्वाई कराऊँगा, और तुम्हारी
शर्मिन्दगी हमेशा तक याद रहेगी।"

अन्जीर की दो टोकरियाँ

24 1 एक दिन रब ने मुझे रोया दिखाई। उस
वक़्त बाबल का बादशाह नबूकद्नज़्ज़र
यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन [d]बिन यहूयक़ीम को

[d]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

यहूदाह के बुज़ुर्गों, कारीगरों और लोहारों समेत
बाबल में जिलावतन कर चुका था।

रोया में मैं ने देखा कि अन्जीरों से भरी दो टोकरियाँ
रब के घर के सामने पड़ी हैं। 2 एक टोकरी में मौसम
के शुरू में पकने वाले बेहतरीन अन्जीर थे जबकि
दूसरी में ख़राब अन्जीर थे जो खाए भी नहीं जा सकते
थे।

3 रब ने मुझ से सवाल किया, "ऐ यरमियाह, तुझे
क्या नज़र आता है?" मैं ने जवाब दिया, "मुझे अन्जीर
नज़र आते हैं। कुछ बेहतरीन हैं जबकि दूसरे इतने
ख़राब हैं कि उन्हें खाया भी नहीं जा सकता।"

4 तब रब मुझ से हमकलाम हुआ, 5 "रब इस्राईल
का ख़ुदा फ़रमाता है कि अच्छे अन्जीर यहूदाह के
वह लोग हैं जिन्हें मैं ने जिलावतन करके मुल्क-ए-
बाबल में भेजा है। उन्हें मैं मेहरबानी की निगाह से
देखता हूँ। 6 क्यूँकि उन पर मैं अपने करम का इज़हार
करके उन्हें इस मुल्क में वापस लाऊँगा। मैं उन्हें
गिराऊँगा नहीं बल्कि तामीर करूँगा, उन्हें जड़ से
उखाड़ूँगा नहीं बल्कि पनीरी की तरह लगाऊँगा। 7 मैं
उन्हें समझदार दिल अता करूँगा ताकि वह मुझे जान
लें, वह पहचान लें कि मैं रब हूँ। तब वह मेरी क़ौम
होंगे और मैं उन का ख़ुदा हूँगा, क्यूँकि वह पूरे दिल
से मेरे पास वापस आएँगे।

8 लेकिन बाक़ी लोग उन ख़राब अन्जीरों की
मानिन्द हैं जो खाए नहीं जाते। उन के साथ मैं वह
सुलूक करूँगा जो ख़राब अन्जीरों के साथ किया
जाता है। उन में यहूदाह का बादशाह सिदक़ियाह,
उस के अफ़्सर, यरूशलम और यहूदाह में बचे हुए
लोग और मिस्र में पनाह लेने वाले सब शामिल हैं। 9 मैं
होने दूँगा कि वह दुनिया के तमाम ममालिक के लिए
दहशत और आफ़त की अलामत बन जाएंगे। जहाँ
भी मैं उन्हें मुन्तशिर करूँगा वहाँ वह इब्रतअंगेज़
मिसाल बन जाएंगे। हर जगह लोग उन की बेइज़्ज़ती,
उन्हें लान-तान और उन पर लानत करेंगे। 10 जब तक
वह उस मुल्क में से मिट न जाएँ जो मैं ने उन के
बापदादा को दे दिया था उस वक़्त तक मैं उन के
दरमियान तलवार, काल और मोहलिक बीमारियाँ
भेजता रहूँगा।"

मुल्क-ए-बाबल में 70 साल रहने की पेशगोई

25 1 यहूयक़ीम बिन यूसियाह की हुकूमत के
चौथे साल में अल्लाह का कलाम यरमियाह
पर नाज़िल हुआ। उसी साल बाबल का बादशाह
नबूकद्नज़्ज़र तख़्तनशीन हुआ था। यह कलाम
यहूदाह के तमाम बाशिन्दों के बारे में था। 2 चुनाँचे
यरमियाह नबी ने यरूशलम के तमाम बाशिन्दों और
यहूदाह की पूरी क़ौम से मुख़ातिब हो कर कहा,

3 "23 साल से रब का कलाम मुझ पर नाज़िल
होता रहा है यानी यूसियाह बिन अमून की हुकूमत
के तेरहवें साल से ले कर आज तक। बार बार मैं
तुम्हें पैग़ामात सुनाता रहा हूँ, लेकिन तुम ने ध्यान
नहीं दिया। 4 मेरे इलावा रब दीगर तमाम नबियों को
भी बार बार तुम्हारे पास भेजता रहा, लेकिन तुम ने न
सुना, न तवज्जुह दी, 5 गो मेरे ख़ादिम तुम्हें बार बार
आगाह करते रहे, 'तौबा करो! हर एक अपनी ग़लत
राहों और बुरी हरकतों से बाज़ आ कर वापस आए।
फिर तुम हमेशा तक उस मुल्क में रहोगे जो रब ने तुम्हें
और तुम्हारे बापदादा को अता किया था। 6 अजनबी
माबूदों की पैरवी करके उन की ख़िदमत और पूजा
मत करना! अपने हाथों के बनाए हुए बुतों से मुझे
तैश न दिलाना, वर्ना मैं तुम्हें नुक़्सान पहुँचाऊँगा'।"

7 रब फ़रमाता है, "अफ़्सोस! तुम ने मेरी न सुनी
बल्कि मुझे अपने हाथों के बनाए हुए बुतों से
ग़ुस्सा दिला कर अपने आप को नुक़्सान पहुँचाया।"
8 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "चूँकि तुम ने मेरे
पैग़ामात पर ध्यान न दिया, 9 इस लिए मैं शिमाल की
तमाम क़ौमों और अपने ख़ादिम बाबल के बादशाह
नबूकद्नज़्ज़र को बुला लूँगा ताकि वह इस मुल्क,
इस के बाशिन्दों और गिर्द-ओ-नवाह के ममालिक
पर हम्ला करें। तब यह सफ़्हा-ए-हस्ती से यूँ मिट
जाएंगे कि लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे और वह
उन का मज़ाक़ उड़ाएँगे। यह इलाक़े दाइमी खंडरात

बन जाएंगे। 10 मैं उन के दरमियान ख़ुशी-ओ-शादमानी
और दूल्हे दुल्हन की आवाज़ें बन्द कर दूँगा। चक्कियाँ
ख़ामोश पड़ जाएँगी और चराग़ बुझ जाएंगे। 11 पूरा
मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएगा, चारों तरफ़ मल्बे
के ढेर नज़र आएँगे। तब तुम और इर्दगिर्द की क़ौमें
70 साल तक शाह-ए-बाबल की ख़िदमत करोगे।

12 लेकिन 70 साल के बाद मैं शाह-ए-बाबल और
उस की क़ौम को मुनासिब सज़ा दूँगा। मैं मुल्क-
ए-बाबल को यूँ बर्बाद करूँगा कि वह हमेशा तक
वीरान-ओ-सुन्सान रहेगा। 13 उस वक़्त मैं उस मुल्क
पर सब कुछ नाज़िल करूँगा जो मैं ने उस के बारे
में फ़रमाया है, सब कुछ पूरा हो जाएगा जो इस
किताब में दर्ज है और जिस की पेशगोई यरमियाह
ने तमाम अक़्वाम के बारे में की है। 14 उस वक़्त
उन्हें भी मुतअद्दिद क़ौमों और बड़े बड़े बादशाहों
की ख़िदमत करनी पड़ेगी। यूँ मैं उन्हें उन की हरकतों
और आमाल का मुनासिब अज्र दूँगा।"

रब के ग़ज़ब का प्याला

15 रब जो इस्राईल का ख़ुदा है मुझ से हमकलाम
हुआ, "देख, मेरे हाथ में मेरे ग़ज़ब से भरा हुआ प्याला
है। इसे ले कर उन तमाम क़ौमों को पिला दे जिन
के पास मैं तुझे भेजता हूँ। 16 जो भी क़ौम यह पिए
वह मेरी तलवार के आगे डगमगाती हुई दीवाना हो
जाएगी।"

17 चुनाँचे मैं ने रब के हाथ से प्याला ले कर उसे उन
तमाम अक़्वाम को पिला दिया जिन के पास रब ने
मुझे भेजा। 18 पहले यरूशलम और यहूदाह के शहरों
को उन के बादशाहों और बुज़ुर्गों समेत ग़ज़ब का
प्याला पीना पड़ा। तब मुल्क मल्बे का ढेर बन गया
जिसे देख कर लोगों के रोंगटे खड़े हो गए। आज तक
वह मज़ाक़ और लानत का निशाना है।

19 फिर यके बाद दीगरे मुतअद्दिद क़ौमों को ग़ज़ब
का प्याला पीना पड़ा। ज़ैल में उन की फ़हरिस्त
है : मिस्र का बादशाह फ़िरऔन, उस के दरबारी,
अफ़सर, पूरी मिस्री क़ौम 20 और मुल्क में बसने वाले
ग़ैरमुल्की, मुल्क-ए-ऊज़ के तमाम बादशाह,

फ़िलिस्ती बादशाह और उन के शहर अस्क़लून,
ग़ज़्ज़ा और अक्रून, नीज़ फ़िलिस्ती शहर अश्दूद का
बचा-खुचा हिस्सा,

21 अदोम, मोआब और अम्मोन,

22 सूर और सैदा के तमाम बादशाह, बहीरा-ए-रूम
के साहिली इलाक़े,

23 ददान, तैमा और बूज़ के शहर, वह क़ौमें जो
रेगिस्तान के किनारे किनारे रहती हैं,

24 मुल्क-ए-अरब के तमाम बादशाह, रेगिस्तान में
मिल कर बसने वाले ग़ैरमुल्कियों के बादशाह,

25 ज़िम्री, ऐलाम और मादी के तमाम बादशाह,

26 शिमाल के दूर-ओ-नज़्दीक के तमाम बादशाह।

यके बाद दीगरे दुनिया के तमाम ममालिक को
ग़ज़ब का प्याला पीना पड़ा। आख़िर में शेशक के
बादशाह [e]को भी यह प्याला पीना पड़ा।

27 फिर रब ने कहा, "उन्हें बता, 'रब्ब-उल-
अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि
ग़ज़ब का प्याला ख़ूब पियो! इतना पियो कि नशे में
आ कर क़ै आने लगे। उस वक़्त तक पीते जाओ जब
तक तुम मेरी तलवार के आगे गिर कर पड़े न रहो।'
28 अगर वह तेरे हाथ से प्याला न लें बल्कि उसे पीने
से इन्कार करें तो उन्हें बता, 'रब्ब-उल-अफ़्वाज ख़ुद
फ़रमाता है कि पियो! 29 देखो, जिस शहर पर मेरे नाम
का ठप्पा लगा है उसी पर मैं आफ़त लाने लगा हूँ।
अगर मैं ने उसी से शुरू किया तो फिर तुम किस तरह
बचे रहोगे? यक़ीनन तुम्हें सज़ा मिलेगी, क्यूँकि मैं ने
तै कर लिया है कि दुनिया के तमाम बाशिन्दे तलवार
की ज़द में आ जाएँ'।" यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का
फ़रमान है।

---

[e]ग़ालिबन इस से मुराद बाबल का बादशाह है।

तमाम अक़्वाम की अदालत

30 “ऐ यरमियाह, उन्हें यह तमाम पेशगोइयाँ सुना
कर बता कि रब बुलन्दियों से दहाड़ेगा। उस की
मुक़द्दस सुकूनतगाह से उस की कड़कती आवाज़
निकलेगी, वह ज़ोर से अपनी चरागाह के ख़िलाफ़
गरजेगा। जिस तरह अंगूर का रस निकालने वाले
अंगूर को रौंदते वक़्त ज़ोर से नारे लगाते हैं उसी तरह
वह नारे लगाएगा, अलबत्ता जंग के नारे। क्यूँकि वह
दुनिया के तमाम बाशिन्दों के ख़िलाफ़ जंग के नारे
लगाएगा। 31 उस का शोर दुनिया की इन्तिहा तक
गूँजेगा, क्यूँकि रब अदालत में अक़्वाम से मुक़द्दमा
लड़ेगा, वह तमाम इन्सानों का इन्साफ़ करके शरीरों
को तलवार के हवाले कर देगा।” यह रब का फ़रमान
है। 32 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, “देखो, यके
बाद दीगरे तमाम क़ौमों पर आफ़त नाज़िल हो रही
है, ज़मीन की इन्तिहा से ज़बरदस्त तूफ़ान आ रहा है।
33 उस वक़्त रब के मारे हुए लोगों की लाशें दुनिया
के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पड़ी रहेंगी। न कोई उन
पर मातम करेगा, न उन्हें उठा कर दफ़न करेगा। वह
खेत में बिखरे गोबर की तरह ज़मीन पर पड़ी रहेंगी।
34 ऐ गल्लाबानो, वावैला करो! ऐ रेवड़ के
राहनुमाओ, राख में लोट-पोट हो जाओ! क्यूँकि वक़्त
आ गया है कि तुम्हें ज़बह किया जाए। तुम गिर
कर नाज़ुक बर्तन की तरह पाश पाश हो जाओगे।
35 गल्लाबान कहीं भी भाग कर पनाह नहीं ले सकेंगे,
रेवड़ के राहनुमा बच ही नहीं सकेंगे। 36 सुनो!
गल्लाबानों की चीख़ें और रेवड़ के राहनुमाओं की
आहें! क्यूँकि रब उन की चरागाह को तबाह कर
रहा है। 37 पुरसुकून मुर्ग़ज़ारों का सत्यानास होगा
जब रब का सख़्त ग़ज़ब नाज़िल होगा, 38 जब रब
जवान शेरबबर की तरह अपनी छुपने की जगह से
निकल कर लोगों पर टूट पड़ेगा। तब ज़ालिम की
तेज़ तलवार और रब का शदीद क़हर उन का मुल्क
तबाह करेगा।”

रब के घर में यरमियाह का पैग़ाम

26 1 जब यहूयक़ीम बिन यूसियाह यहूदाह के
तख़्त पर बैठ गया तो थोड़ी देर के बाद
रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ। 2 रब ने
फ़रमाया, “ऐ यरमियाह, रब के घर के सहन में खड़ा
हो कर उन तमाम लोगों से मुख़ातिब हो जो रब के
घर में सिज्दा करने के लिए यहूदाह के दीगर शहरों
से आए हैं। उन्हें मेरा पूरा पैग़ाम सुना दे, एक बात भी
न छोड़! 3 शायद वह सुनें और हर एक अपनी बुरी
राह से बाज़ आ जाए। इस सूरत में मैं पछता कर उन
पर वह सज़ा नाज़िल नहीं करूँगा जिस का मन्सूबा
मैं ने उन के बुरे आमाल देख कर बांध लिया है।
4 उन्हें बता, ‘रब फ़रमाता है कि मेरी सुनो और मेरी
उस शरीअत पर अमल करो जो मैं ने तुम्हें दी है।
5 नीज़, नबियों के पैग़ामात पर ध्यान दो। अफ़्सोस,
गो मैं अपने ख़ादिमों को बार बार तुम्हारे पास भेजता
रहा तो भी तुम ने उन की न सुनी। 6 अगर तुम आइन्दा
भी न सुनो तो मैं इस घर को यूँ तबाह करूँगा जिस
तरह मैं ने सैला का मक़्दिस तबाह किया था। मैं इस
शहर को भी यूँ ख़ाक में मिला दूँगा कि इब्रतअंगेज़
मिसाल बन जाएगा। दुनिया की तमाम क़ौमों में जब
कोई अपने दुश्मन पर लानत भेजना चाहे तो वह
कहेगा कि उस का यरूशलम का सा अन्जाम हो’।”

यरमियाह की अदालत

7 जब यरमियाह ने रब के घर में रब के यह अल्फ़ाज़
सुनाए तो इमामों, नबियों और तमाम बाक़ी लोगों ने
ग़ौर से सुना। 8 यरमियाह ने उन्हें सब कुछ पेश किया
जो रब ने उसे सुनाने को कहा था। लेकिन जूँ ही
वह इख़तिताम पर पहुँच गया तो इमाम, नबी और
बाक़ी तमाम लोग उसे पकड़ कर चीख़ने लगे, “तुझे
मरना ही है! 9 तू रब का नाम ले कर क्यूँ कह रहा
है कि रब का घर सैला की तरह तबाह हो जाएगा,
और यरूशलम मल्बे का ढेर बन कर ग़ैरआबाद हो

जाएगा?” ऐसी बातें कह कर तमाम लोगों ने रब के
घर में यरमियाह को घेरे रखा।
10 जब यहूदाह के बुज़ुर्गों को इस की ख़बर मिली
तो वह शाही महल से निकल कर रब के घर के पास
पहुँचे। वहाँ वह रब के घर के सहन के नए दरवाज़े
में बैठ गए ताकि यरमियाह की अदालत करें। 11 तब
इमामों और नबियों ने बुज़ुर्गों और तमाम लोगों के
सामने यरमियाह पर इल्ज़ाम लगाया, “लाज़िम है कि
इस आदमी को सज़ा-ए-मौत दी जाए! क्यूँकि इस ने
इस शहर यरूशलम के ख़िलाफ़ नबुव्वत की है। आप
ने अपने कानों से यह बात सुनी है।”
12 तब यरमियाह ने बुज़ुर्गों और बाक़ी तमाम लोगों
से कहा, “रब ने ख़ुद मुझे यहाँ भेजा ताकि मैं रब
के घर और यरूशलम के ख़िलाफ़ उन तमाम बातों
की पेशगोई करूँ जो आप ने सुनी हैं। 13 चुनाँचे अपनी
राहों और आमाल को दुरुस्त करें! रब अपने ख़ुदा की
सुनें ताकि वह पछता कर आप पर वह सज़ा नाज़िल
न करे जिस का एलान उस ने किया है। 14 जहाँ तक
मेरा ताल्लुक़ है, मैं तो आप के हाथ में हूँ। मेरे साथ
वह सुलूक करें जो आप को अच्छा और मुनासिब
लगे। 15 लेकिन एक बात जान लें। अगर आप मुझे
सज़ा-ए-मौत दें तो आप बेक़ुसूर के क़ातिल ठहरेंगे।
आप और यह शहर उस के तमाम बाशिन्दों समेत
क़ुसूरवार ठहरेंगे। क्यूँकि रब ही ने मुझे आप के पास
भेजा ताकि आप के सामने ही यह बातें करूँ।”
16 यह सुन कर बुज़ुर्गों और अवाम के तमाम लोगों
ने इमामों और नबियों से कहा, “यह आदमी सज़ा-ए-
मौत के लाइक़ नहीं है! क्यूँकि उस ने रब हमारे ख़ुदा
का नाम ले कर हम से बात की है।”
17 फिर मुल्क के कुछ बुज़ुर्ग खड़े हो कर पूरी
जमाअत से मुख़ातिब हुए, 18 “जब हिज़क़ियाह
यहूदाह का बादशाह था तो मोरशत के रहने वाले
नबी मीकाह ने नबुव्वत करके यहूदाह के तमाम
बाशिन्दों से कहा, ‘रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है
कि सिय्यून पर खेत की तरह हल चलाया जाएगा,
और यरूशलम मल्बे का ढेर बन जाएगा। रब के घर
की पहाड़ी पर गुंजान जंगल उगेगा।’ 19 क्या यहूदाह
के बादशाह हिज़क़ियाह या यहूदाह के किसी और
शख़्स ने मीकाह को सज़ा-ए-मौत दी? हरगिज़ नहीं,
बल्कि हिज़क़ियाह ने रब का ख़ौफ़ मान कर उस का
ग़ुस्सा ठंडा करने की कोशिश की। नतीजे में रब ने
पछता कर वह सज़ा उन पर नाज़िल न की जिस का
एलान वह कर चुका था। सुनें, अगर हम यरमियाह
को सज़ा-ए-मौत दें तो अपने आप पर सख़्त सज़ा
लाएँगे।”

ऊरियाह नबी का क़त्ल

20 उन दिनों में एक और नबी भी यरमियाह की तरह
रब का नाम ले कर नबुव्वत करता था। उस का
नाम ऊरियाह बिन समायाह था, और वह क़िर्यत-
यारीम का रहने वाला था। उस ने भी यरूशलम
और यहूदाह के ख़िलाफ़ वही पेशगोइयाँ सुनाईं जो
यरमियाह सुनाता था।
21 जब यहूयक़ीम बादशाह और उस के तमाम
फ़ौजी और सरकारी अफ़्सरों ने उस की बातें सुनीं तो
बादशाह ने उसे मार डालने की कोशिश की। लेकिन
ऊरियाह को इस की ख़बर मिली, और वह डर कर
भाग गया। चलते चलते वह मिस्र पहुँच गया। 22 तब
यहूयक़ीम ने इल्नातन बिन अक्बोर और चन्द एक
आदमियों को वहाँ भेज दिया। 23 वहाँ पहुँच कर वह
ऊरियाह को पकड़ कर यहूयक़ीम के पास वापस
लाए। बादशाह के हुक्म पर उस का सर क़लम कर
दिया गया और उस की नाश को निचले तब्क़े के
लोगों के क़ब्रिस्तान में दफ़नाया गया।
24 लेकिन यरमियाह की जान छूट गई। उसे अवाम
के हवाले न किया गया, गो वह उसे मार डालना
चाहते थे, क्यूँकि अख़ीक़ाम बिन साफ़न उस के हक़
में था।

जूए की अलामत

27 1 जब सिदक़ियाह बिन यूसियाह यहूदाह के
तख़्त पर बैठ गया तो रब यरमियाह से
हमकलाम हुआ। 2 रब ने मुझे फ़रमाया,
"अपने लिए जूआ और उस के रस्से बना कर
उसे अपनी गर्दन पर रख ले! 3 फिर अदोम, मोआब,
अम्मोन, सूर और सैदा के शाही सफ़ीरों के पास
जा जो इस वक़्त यरूशलम में सिदक़ियाह बादशाह
के पास जमा हैं। 4 उन के हाथ उन के बादशाहों
को पैग़ाम भेज, 'रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का
ख़ुदा है फ़रमाता है कि 5 मैं ने अपना हाथ बढ़ा कर
बड़ी क़ुदरत से दुनिया को इन्सान-ओ-हैवान समेत
ख़ल्क़ किया है, और मैं ही यह चीज़ें उसे अता
करता हूँ जो मेरी नज़र में लाइक़ है। 6 इस वक़्त
मैं तुम्हारे तमाम ममालिक को अपने ख़ादिम शाह-
ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र के हवाले करूँगा। जंगली
जानवर तक सब उस के ताबे हो जाएंगे। 7 तमाम
अक़्वाम उस की और उस के बेटे और पोते की
ख़िदमत करेंगी। फिर एक वक़्त आएगा कि बाबल
की हुकूमत ख़त्म हो जाएगी। तब मुतअद्दिद क़ौमें
और बड़े बड़े बादशाह उसे अपने ही ताबे कर लेंगे।
8 लेकिन इस वक़्त लाज़िम है कि हर क़ौम और
सल्तनत शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र की ख़िदमत
करके उस का जूआ क़बूल करे। जो इन्कार करे
उसे मैं तलवार, काल और मोहलिक बीमारियों से
उस वक़्त तक सज़ा दूँगा जब तक वह पूरे तौर पर
नबूकद्नज़्ज़र के हाथ से तबाह न हो जाए। यह रब
का फ़रमान है।
9 चुनाँचे अपने नबियों, फ़ालगीरों, ख़्वाब देखने
वालों, क़िस्मत का हाल बताने वालों और जादूगरों
पर ध्यान न दो जब वह तुम्हें बताते हैं कि तुम शाह-
ए-बाबल की ख़िदमत नहीं करोगे। 10 क्यूँकि वह
तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ पेश कर रहे हैं जिन का सिर्फ़
यह नतीजा निकलेगा कि मैं तुम्हें वतन से निकाल
कर मुन्तशिर करूँगा और तुम हलाक हो जाओगे।
11 लेकिन जो क़ौम शाह-ए-बाबल का जूआ क़बूल
करके उस की ख़िदमत करे उसे मैं उस के अपने
मुल्क में रहने दूँगा, और वह उस की खेतीबाड़ी
करके उस में बसेगी। यह रब का फ़रमान है'।"
12 मैं ने यही पैग़ाम यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह
को भी सुनाया। मैं बोला, "शाह-ए-बाबल के जूए
को क़बूल करके उस की और उस की क़ौम की
ख़िदमत करो तो तुम ज़िन्दा रहोगे। 13 क्या ज़रूरत
है कि तू अपनी क़ौम समेत तलवार, काल और
मोहलिक बीमारियों की ज़द में आ कर हलाक हो
जाए? क्यूँकि रब ने फ़रमाया है कि हर क़ौम जो
शाह-ए-बाबल की ख़िदमत करने से इन्कार करे उस
का यही अन्जाम होगा। 14 उन नबियों पर तवज्जुह
मत देना जो तुम से कहते हैं, 'तुम शाह-ए-बाबल की
ख़िदमत नहीं करोगे।' उन की यह पेशगोई झूट ही है।
15 रब फ़रमाता है, 'मैं ने उन्हें नहीं भेजा बल्कि वह
मेरा नाम ले कर झूटी पेशगोइयाँ सुना रहे हैं। अगर
तुम उन की सुनो तो मैं तुम्हें मुन्तशिर कर दूँगा, और
तुम नबुव्वत करने वाले उन नबियों समेत हलाक हो
जाओगे'।"
16 फिर मैं इमामों और पूरी क़ौम से मुख़ातिब हुआ,
"रब फ़रमाता है, 'उन नबियों की न सुनो जो नबुव्वत
करके कहते हैं कि अब रब के घर का सामान जल्द
ही मुल्क-ए-बाबल से वापस लाया जाएगा। वह तुम्हें
झूटी पेशगोइयाँ बयान कर रहे हैं। 17 उन पर तवज्जुह
मत देना। बाबल के बादशाह की ख़िदमत करो तो
तुम ज़िन्दा रहोगे। यह शहर क्यूँ मल्बे का ढेर बन
जाए? 18 अगर यह लोग वाक़ई नबी हों और इन्हें
रब का कलाम मिला हो तो इन्हें रब के घर, शाही
महल और यरूशलम में अब तक बचे हुए सामान के
लिए दुआ करनी चाहिए। वह रब्ब-उल-अफ़्वाज से
शफ़ाअत करें कि यह चीज़ें मुल्क-ए-बाबल न ले जाई
जाएँ बल्कि यहीं रहें।
19–22 अब तक पीतल के सतून, पीतल का
हौज़ बनाम समुन्दर, पानी के बासन उठाने वाली
हथगाड़ियाँ और इस शहर का बाक़ी बचा हुआ

सामान यहीं मौजूद है। नबूकद्नज़्ज़र ने इन्हें उस
वक़्त अपने साथ नहीं लिया था जब वह यहूदाह के
बादशाह यहूयाकीन [f]बिन यहूयक़ीम को यरूशलम
और यहूदाह के तमाम शुरफ़ा समेत जिलावतन
करके मुल्क-ए-बाबल ले गया था। लेकिन रब्ब-उल-
अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है इन चीज़ों के बारे
में फ़रमाता है कि जितनी भी क़ीमती चीज़ें अब तक
रब के घर, शाही महल या यरूशलम में कहीं और
बच गई हैं वह भी मुल्क-ए-बाबल में पहुँचाई जाएँगी।
वहीं वह उस वक़्त तक रहेंगी जब तक मैं उन पर
नज़र डाल कर उन्हें इस जगह वापस न लाऊँ।' यह
रब का फ़रमान है।"

हननियाह नबी की मुख़ालफ़त

28 1 उसी साल के पाँचवें महीने [g]में जिबऊन
का रहने वाला नबी हननियाह बिन अज़्ज़ूर
रब के घर में आया। उस वक़्त यानी सिदक़ियाह
की हुकूमत के चौथे साल में वह इमामों और क़ौम
की मौजूदगी में मुझ से मुख़ातिब हुआ, 2 "रब्ब-
उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है
कि मैं शाह-ए-बाबल का जूआ तोड़ डालूँगा। 3 दो
साल के अन्दर अन्दर मैं रब के घर का वह सारा
सामान इस जगह वापस पहुँचाऊँगा जो शाह-ए-
बाबल नबूकद्नज़्ज़र यहाँ से निकाल कर बाबल
ले गया था। 4 उस वक़्त मैं यहूदाह के बादशाह
यहूयाकीन [h]बिन यहूयक़ीम और यहूदाह के दीगर
तमाम जिलावतनों को भी बाबल से वापस लाऊँगा।
क्यूँकि मैं यक़ीनन शाह-ए-बाबल का जूआ तोड़
डालूँगा। यह रब का फ़रमान है।"

5 यह सुन कर यरमियाह ने इमामों और रब के घर
में खड़े बाक़ी परस्तारों की मौजूदगी में हननियाह
नबी से कहा, 6 "आमीन! रब ऐसा ही करे, वह तेरी
पेशगोई पूरी करके रब के घर का सामान और तमाम
जिलावतनों को बाबल से इस जगह वापस लाए।
7 लेकिन उस पर तवज्जुह दे जो मैं तेरी और पूरी क़ौम
की मौजूदगी में बयान करता हूँ! 8 क़दीम ज़माने से ले
कर आज तक जितने नबी मुझ से और तुझ से पहले
ख़िदमत करते आए हैं उन्हों ने मुतअद्दिद मुल्कों
और बड़ी बड़ी सल्तनतों के बारे में नबुव्वत की थी
कि उन पर जंग, आफ़त और मोहलिक बीमारियाँ
नाज़िल होंगी। 9 चुनाँचे ख़बरदार! जो नबी सलामती
की पेशगोई करे उस की तस्दीक़ उस वक़्त होगी जब
उस की पेशगोई पूरी हो जाएगी। उसी वक़्त लोग जान
लेंगे कि उसे वाक़ई रब की तरफ़ से भेजा गया है।"

10 तब हननियाह ने लकड़ी के जूए को यरमियाह
की गर्दन पर से उतार कर उसे तोड़ दिया। 11 तमाम
लोगों के सामने उस ने कहा, "रब फ़रमाता है कि
दो साल के अन्दर अन्दर मैं इसी तरह शाह-ए-बाबल
नबूकद्नज़्ज़र का जूआ तमाम क़ौमों की गर्दन पर
से उतार कर तोड़ डालूँगा।" तब यरमियाह वहाँ से
चला गया।

12 इस वाकिए के थोड़ी देर बाद रब यरमियाह से
हमकलाम हुआ, 13 "जा, हननियाह को बता, 'रब
फ़रमाता है कि तू ने लकड़ी का जूआ तो तोड़ दिया
है, लेकिन उस की जगह तू ने अपनी गर्दन पर लोहे
का जूआ रख लिया है।' 14 क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज
जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि मैं ने लोहे का
जूआ इन तमाम क़ौमों पर रख दिया है ताकि वह
नबूकद्नज़्ज़र की ख़िदमत करें। और न सिर्फ़ यह
उस की ख़िदमत करेंगे बल्कि मैं जंगली जानवरों को
भी उस के हाथ में कर दूँगा।"

15 फिर यरमियाह ने हननियाह से कहा, "ऐ
हननियाह, सुन! गो रब ने तुझे नहीं भेजा तो भी तू
ने इस क़ौम को झूट पर भरोसा रखने पर आमादा
किया है। 16 इस लिए रब फ़रमाता है, 'मैं तुझे रू-ए-
ज़मीन पर से मिटाने को हूँ। इसी साल तू मर जाएगा,

---

[f]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

[g]जुलाई ता अगस्त।

[h]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

इस लिए कि तू ने रब से सरकश होने का मश्वरा दिया
है'।"
17 और ऐसा ही हुआ। उसी साल के सातवें महीने
[i]यानी दो महीने के बाद हननियाह नबी कूच कर गया।

यरमियाह जिलावतनों को ख़त भेजता है

29 1 एक दिन यरमियाह नबी ने यरूशलम से
एक ख़त मुल्क-ए-बाबल भेजा। यह ख़त
उन बचे हुए बुज़ुर्गों, इमामों, नबियों और बाक़ी
इस्राईलियों के नाम लिखा था जिन्हें नबूकद्नज़्ज़र
बादशाह जिलावतन करके बाबल ले गया था। 2 उन
में यहूयाकीन [j]बादशाह, उस की माँ और दरबारी,
और यहूदाह और यरूशलम के बुज़ुर्ग, कारीगर और
लोहार शामिल थे। 3 यह ख़त इलिआसा बिन साफ़न
और जमरियाह बिन ख़िलक़ियाह के हाथ बाबल
पहुँचा जिन्हें यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह ने
बाबल में शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र के पास भेजा
था। ख़त में लिखा था,
4 "रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, 'ऐ तमाम जिलावतनो जिन्हें मैं यरूशलम
से निकाल कर बाबल ले गया हूँ, ध्यान से सुनो!
5 बाबल में घर बना कर उन में बसने लगो।
बाग़ लगा कर उन का फल खाओ। 6 शादी करके
बेटे-बेटियाँ पैदा करो। अपने बेटे-बेटियों की शादी
कराओ ताकि उन के भी बच्चे पैदा हो जाएँ। ध्यान दो
कि मुल्क-ए-बाबल में तुम्हारी तादाद कम न हो जाए
बल्कि बढ़ जाए। 7 उस शहर की सलामती के तालिब
रहो जिस में मैं तुम्हें जिलावतन करके ले गया हूँ। रब
से उस के लिए दुआ करो! क्यूँकि तुम्हारी सलामती
उसी की सलामती पर मुन्हसिर है।'
8 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, 'ख़बरदार! तुम्हारे दरमियान रहने वाले
नबी और क़िस्मत का हाल बताने वाले तुम्हें फ़रेब
न दें। उन ख़्वाबों पर तवज्जुह मत देना जो यह
देखते हैं।' 9 रब फ़रमाता है, 'यह मेरा नाम ले कर
तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ सुनाते हैं, गो मैं ने उन्हें नहीं
भेजा।' 10 क्यूँकि रब फ़रमाता है, 'तुम्हें बाबल में
रहते हुए कुल 70 साल गुज़र जाएंगे। लेकिन इस के
बाद मैं तुम्हारी तरफ़ रुजू करूँगा, मैं अपना पुरफ़ज़्ल
वादा पूरा करके तुम्हें वापस लाऊँगा।' 11 क्यूँकि रब
फ़रमाता है, 'मैं उन मन्सूबों से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ जो
मैं ने तुम्हारे लिए बांधे हैं। यह मन्सूबे तुम्हें नुक़्सान
नहीं पहुँचाएँगे बल्कि तुम्हारी सलामती का बाइस
होंगे, तुम्हें उम्मीद दिला कर एक अच्छा मुस्तक़बिल
फ़राहम करेंगे। 12 उस वक़्त तुम मुझे पुकारोगे, तुम
आ कर मुझ से दुआ करोगे तो मैं तुम्हारी सुनूँगा।
13 तुम मुझे तलाश करके पा लोगे। क्यूँकि अगर तुम
पूरे दिल से मुझे ढूँडो 14 तो मैं होने दूँगा कि तुम
मुझे पाओ।' यह रब का फ़रमान है। 'फिर मैं तुम्हें
बहाल करके उन तमाम क़ौमों और मक़ामों से जमा
करूँगा जहाँ मैं ने तुम्हें मुन्तशिर कर दिया था। और
मैं तुम्हें उस मुल्क में वापस लाऊँगा जिस से मैं ने
तुम्हें निकाल कर जिलावतन कर दिया था।' यह रब
का फ़रमान है।
15 तुम्हारा दावा है कि रब ने यहाँ बाबल में भी
हमारे लिए नबी बरपा किए हैं। 16–17 लेकिन रब का
जवाब सुनो! दाऊद के तख़्त पर बैठने वाले बादशाह
और यरूशलम में बचे हुए तमाम बाशिन्दों के बारे में
रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'तुम्हारे जितने भाई
जिलावतनी से बच गए हैं उन के ख़िलाफ़ मैं तलवार,
काल और मोहलिक बीमारियाँ भेज दूँगा। मैं उन्हें गले
हुए अन्जीरों की मानिन्द बना दूँगा, जो ख़राब होने की
वजह से खाए नहीं जाएंगे। 18 मैं तलवार, काल और
मोहलिक बीमारियों से उन का यूँ ताक़्क़ुब करूँगा
कि दुनिया के तमाम ममालिक उन की हालत देख
कर घबरा जाएंगे। जिस क़ौम में भी मैं उन्हें मुन्तशिर
करूँगा वहाँ लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। किसी
पर लानत भेजते वक़्त लोग कहेंगे कि उसे यहूदाह

[i]सितम्बर ता अक्तूबर।

[j]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

के बाशिन्दों का सा अन्जाम नसीब हो। हर जगह
वह मज़ाक़ और रुस्वाई का निशाना बन जाएंगे।
19 क्यूँ? इस लिए कि उन्हों ने मेरी न सुनी, गो मैं
अपने ख़ादिमों यानी नबियों के ज़रीए बार बार उन्हें
पैग़ामात भेजता रहा। लेकिन तुम ने भी मेरी न सुनी।'
यह रब का फ़रमान है।

20 अब रब का फ़रमान सुनो, तुम सब जो
जिलावतन हो चुके हो, जिन्हें मैं यरूशलम से निकाल
कर बाबल भेज चुका हूँ। 21 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो
इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, 'अख़ियब बिन
क़ौलायाह और सिदक़ियाह बिन मासियाह मेरा नाम
ले कर तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ सुनाते हैं। इस लिए मैं
उन्हें शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र के हाथ में दूँगा जो
उन्हें तेरे देखते देखते सज़ा-ए-मौत देगा। 22 उन का
अन्जाम इब्रतअंगेज़ मिसाल बन जाएगा। किसी पर
लानत भेजते वक़्त यहूदाह के जिलावतन कहेंगे, "रब
तेरे साथ सिदक़ियाह और अख़ियब का सा सुलूक
करे जिन्हें शाह-ए-बाबल ने आग में भून लिया!"
23 क्यूँकि उन्हों ने इस्राईल में बेदीन हरकतें की हैं।
अपने पड़ोसियों की बीवियों के साथ ज़िना करने के
साथ साथ उन्हों ने मेरा नाम ले कर ऐसे झूटे पैग़ाम
सुनाए हैं जो मैं ने उन्हें सुनाने को नहीं कहा था। मुझे
इस का पूरा इल्म है, और मैं इस का गवाह हूँ।' यह
रब का फ़रमान है।"

समायाह के लिए रब का पैग़ाम

24 रब ने फ़रमाया, "बाबल के रहने वाले समायाह
नख़लामी को इत्तिला दे, 25 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो
इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि तू ने अपनी ही
तरफ़ से इमाम सफ़नियाह बिन मासियाह को ख़त
भेजा। दीगर इमामों और यरूशलम के बाक़ी तमाम
बाशिन्दों को भी इस की कापियाँ मिल गईं। ख़त में
लिखा था,

26 'रब ने आप को यहोयदा की जगह अपने घर
की देख-भाल करने की ज़िम्मादारी दी है। आप की
ज़िम्मादारियों में यह भी शामिल है कि हर दीवाने
और नबुव्वत करने वाले को काठ में डाल कर
उस की गर्दन में लोहे की ज़न्जीरें डालें। 27 तो फिर
आप ने अनतोत के रहने वाले यरमियाह के ख़िलाफ़
क़दम क्यूँ नहीं उठाया जो आप के दरमियान नबुव्वत
करता रहता है? 28 क्यूँकि उस ने हमें जो बाबल में
हैं ख़त भेज कर मश्वरा दिया है कि देर लगेगी, इस
लिए घर बना कर उन में बसने लगो, बाग़ लगा कर
उन का फल खाओ'।"

29 जब सफ़नियाह को समायाह का ख़त मिल गया
तो उस ने यरमियाह को सब कुछ सुनाया। 30 तब
यरमियाह पर रब का कलाम नाज़िल हुआ, 31 "तमाम
जिलावतनों को ख़त भेज कर लिख दे, 'रब समायाह
नख़लामी के बारे में फ़रमाता है कि गो मैं ने समायाह
को नहीं भेजा तो भी उस ने तुम्हें पेशगोइयाँ सुना कर
झूट पर भरोसा रखने पर आमादा किया है। 32 चुनाँचे
रब फ़रमाता है कि मैं समायाह नख़लामी को उस की
औलाद समेत सज़ा दूँगा। इस क़ौम में उस की नस्ल
ख़त्म हो जाएगी, और वह ख़ुद उन अच्छी चीज़ों
से लुत्फ़अन्दोज़ नहीं होगा जो मैं अपनी क़ौम को
फ़राहम करूँगा। क्यूँकि उस ने रब से सरकश होने
का मश्वरा दिया है'।"

इस्राईल और यहूदाह बहाल हो जाएंगे

30 1 रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल
हुआ, 2 "रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है
कि जो भी पैग़ाम मैं ने तुझ पर नाज़िल किए उन्हें
किताब की सूरत में क़लमबन्द कर! 3 क्यूँकि रब
फ़रमाता है कि वह वक़्त आने वाला है जब मैं अपनी
क़ौम इस्राईल और यहूदाह को बहाल करके उस
मुल्क में वापस लाऊँगा जो मैं ने उन के बापदादा
को मीरास में दिया था।"

4 यह इस्राईल और यहूदाह के बारे में रब के फ़रमान
हैं। 5 "रब फ़रमाता है, 'ख़ौफ़ज़दा चीख़ें सुनाई दे रही
हैं। अम्न का नाम-ओ-निशान तक नहीं बल्कि चारों
तरफ़ दहशत ही दहशत फैली हुई है। 6 क्या मर्द बच्चे
जन्म दे सकता है? तो फिर तमाम मर्द क्यूँ अपने हाथ

कमर पर रख कर दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरतों की
तरह तड़प रहे हैं? हर एक का रंग फ़क़ पड़ गया है।
7 अफ़सोस! वह दिन कितना हौलनाक होगा! उस
जैसा कोई नहीं होगा। याक़ूब की औलाद को बड़ी
मुसीबत पेश आएगी, लेकिन आख़िरकार उसे रिहाई
मिलेगी।' 8 रब फ़रमाता है, 'उस दिन मैं उन की गर्दन
पर रखे जूए और उन की ज़न्जीरों को तोड़ डालूँगा।
तब वह ग़ैरमुल्कियों के ग़ुलाम नहीं रहेंगे 9 बल्कि रब
अपने ख़ुदा और दाऊद की नस्ल के उस बादशाह की
ख़िदमत करेंगे जिसे मैं बरपा करके उन पर मुक़र्रर
करूँगा।'
10 चुनाँचे रब फ़रमाता है, 'ऐ याक़ूब मेरे ख़ादिम,
मत डर! ऐ इस्राईल, दहशत मत खा! देख, मैं तुझे
दूरदराज़ इलाक़ों से और तेरी औलाद को जिलावतनी
से छुड़ा कर वापस ले आऊँगा। याक़ूब वापस आ
कर सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारेगा, और उसे परेशान
करने वाला कोई नहीं होगा।' 11 क्यूँकि रब फ़रमाता
है, 'मैं तेरे साथ हूँ, मैं ही तुझे बचाऊँगा। मैं उन तमाम
क़ौमों को नेस्त-ओ-नाबूद कर दूँगा जिन में मैं ने तुझे
मुन्तशिर कर दिया है, लेकिन तुझे मैं इस तरह सफ़हा-
ए-हस्ती से नहीं मिटाऊँगा। अलबत्ता मैं मुनासिब हद
तक तेरी तम्बीह करूँगा, क्यूँकि मैं तुझे सज़ा दिए
बग़ैर नहीं छोड़ सकता।'
12 क्यूँकि रब फ़रमाता है, 'तेरा ज़ख़्म लाइलाज है,
तेरी चोट भर ही नहीं सकती। 13 कोई नहीं है जो तेरे
हक़ में बात करे, तेरे फोड़ों का मुआलजा और तेरी
शिफ़ा मुमकिन ही नहीं! 14 तेरे तमाम आशिक़ [k]तुझे
भूल गए हैं और तेरी पर्वा ही नहीं करते। तेरा क़ुसूर
बहुत संगीन है, तुझ से बेशुमार गुनाह सरज़द हुए हैं।
इसी लिए मैं ने तुझे दुश्मन की तरह मारा, ज़ालिम की
तरह तम्बीह दी है।
15 अब जब चोट लग गई है और लाइलाज दर्द
महसूस हो रहा है तो तू मदद के लिए क्यूँ चीख़ता है?
यह मैं ही ने तेरे संगीन क़ुसूर और मुतअद्दिद गुनाहों
की वजह से तेरे साथ किया है।
16 लेकिन जो तुझे हड़प करें उन्हें भी हड़प किया
जाएगा। तेरे तमाम दुश्मन जिलावतन हो जाएंगे।
जिन्हों ने तुझे लूट लिया उन्हें भी लूटा जाएगा, जिन्हों
ने तुझे ग़ारत किया उन्हें भी ग़ारत किया जाएगा।'
17 क्यूँकि रब फ़रमाता है, 'मैं तेरे ज़ख़्मों को भर कर
तुझे शिफ़ा दूँगा, क्यूँकि लोगों ने तुझे मर्दूद क़रार दे
कर कहा है कि सिय्यून को देखो जिस की फ़िक्र कोई
नहीं करता।' 18 रब फ़रमाता है, 'देखो, मैं याक़ूब के
ख़ैमों की बदनसीबी ख़त्म करूँगा, मैं इस्राईल के
घरों पर तरस खाऊँगा। तब यरूशलम को खंडरात
पर नए सिरे से तामीर किया जाएगा, और महल को
दुबारा उस की पुरानी जगह पर खड़ा किया जाएगा।
19 उस वक़्त वहाँ शुक्रगुज़ारी के गीत और ख़ुशी
मनाने वालों की आवाज़ें बुलन्द हो जाएँगी। और मैं
ध्यान दूँगा कि उन की तादाद कम न हो जाए बल्कि
मज़ीद बढ़ जाए। उन्हें हक़ीर नहीं समझा जाएगा
बल्कि मैं उन की इज़्ज़त बहुत बढ़ा दूँगा। 20 उन के
बच्चे क़दीम ज़माने की तरह महफ़ूज़ ज़िन्दगी गुज़ारेंगे,
और उन की जमाअत मज़बूती से मेरे हुज़ूर क़ाइम
रहेगी। लेकिन जितनों ने उन पर ज़ुल्म किया है उन्हें
मैं सज़ा दूँगा।
21 उन का हुक्मरान उन का अपना हमवतन होगा,
वह दुबारा उन में से उठ कर तख़्तनशीन हो जाएगा।
मैं ख़ुद उसे अपने क़रीब लाऊँगा तो वह मेरे क़रीब
आएगा।' क्यूँकि रब फ़रमाता है, 'सिर्फ़ वही अपनी
जान ख़तरे में डाल कर मेरे क़रीब आने की जुरअत
कर सकता है जिसे मैं ख़ुद अपने क़रीब लाया हूँ।
22 उस वक़्त तुम मेरी क़ौम होगे और मैं तुम्हारा ख़ुदा
हूँगा'।"
23 देखो, रब का ग़ज़ब ज़बरदस्त आँधी की तरह
नाज़िल हो रहा है। तेज़ बगूले के झोंके बेदीनों के सरों
पर उतर रहे हैं। 24 और रब का शदीद क़हर उस वक़्त

[k]आशिक़ से मुराद इस्राईल के इत्तिहादी हैं।

तक ठंडा नहीं होगा जब तक उस ने अपने दिल के
मन्सूबों को तक्मील तक नहीं पहुँचाया। आने वाले
दिनों में तुम्हें इस की साफ़ समझ आएगी।

जिलावतनों की वापसी

31 1 रब फ़रमाता है, "उस वक़्त मैं तमाम
इस्राईली घरानों का ख़ुदा हूँगा, और वह
मेरी क़ौम होंगे।" 2 रब फ़रमाता है, "तलवार से बचे
हुए लोगों को रेगिस्तान में ही मेरा फ़ज़्ल हासिल हुआ
है, और इस्राईल अपनी आरामगाह के पास पहुँच रहा
है।"

3 रब ने दूर से इस्राईल पर ज़ाहिर हो कर फ़रमाया,
"मैं ने तुझे हमेशा ही प्यार किया है, इस लिए मैं
तुझे बड़ी शफ़क़त से अपने पास खैंच लाया हूँ। 4 ऐ
कुंवारी इस्राईल, तेरी नए सिरे से तामीर हो जाएगी,
क्यूँकि मैं ख़ुद तुझे तामीर करूँगा। तू दुबारा अपने
दफ़ों से आरास्ता हो कर ख़ुशी मनाने वालों के
लोकनाच के लिए निकलेगी। 5 तू दुबारा सामरिया की
पहाड़ियों पर अंगूर के बाग़ लगाएगी। और जो पौदों
को लगाएँगे वह ख़ुद उन के फल से लुत्फ़अन्दोज़
होंगे। 6 क्यूँकि वह दिन आने वाला है जब इफ़्राईम
के पहाड़ी इलाक़े के पहरेदार आवाज़ दे कर कहेंगे,
'आओ हम सिय्यून के पास जाएँ ताकि रब अपने
ख़ुदा को सिज्दा करें'।"

7 क्यूँकि रब फ़रमाता है, "याक़ूब को देख कर ख़ुशी
मनाओ! क़ौमों के सरबराह को देख कर शादमानी
का नारा मारो! बुलन्द आवाज़ से अल्लाह की हम्द-
ओ-सना करके कहो, 'ऐ रब, अपनी क़ौम को बचा,
इस्राईल के बचे हुए हिस्से को छुटकारा दे।' 8 क्यूँकि
मैं उन्हें शिमाली मुल्क से वापस लाऊँगा, उन्हें दुनिया
की इन्तिहा से जमा करूँगा। अंधे और लंगड़े उन में
शामिल होंगे, हामिला और जन्म देने वाली औरतें
भी साथ चलेंगी। उन का बड़ा हुजूम वापस आएगा।
9 और जब मैं उन्हें वापस लाऊँगा तो वह रोते हुए
और इल्तिजाएँ करते हुए मेरे पीछे चलेंगे। मैं उन्हें
नदियों के किनारे किनारे और ऐसे हमवार रास्तों पर
वापस ले चलूँगा, जहाँ ठोकर खाने का ख़तरा नहीं
होगा। क्यूँकि मैं इस्राईल का बाप हूँ, और इफ़्राईम
[l]मेरा पहलौठा है।

10 ऐ क़ौमो, रब का कलाम सुनो! दूरदराज़ जज़ीरों
तक एलान करो, 'जिस ने इस्राईल को मुन्तशिर कर
दिया है वह उसे दुबारा जमा करेगा और चरवाहे
की सी फ़िक्र रख कर उस की गल्लाबानी करेगा।'
11 क्यूँकि रब ने फ़िद्या दे कर याक़ूब को बचाया
है, उस ने इवज़ाना दे कर उसे ज़ोरावर के हाथ से
छुड़ाया है। 12 तब वह आ कर सिय्यून की बुलन्दी पर
ख़ुशी के नारे लगाएँगे, उन के चिहरे रब की बरकतों
को देख कर चमक उठेंगे। क्यूँकि उस वक़्त वह
उन्हें अनाज, नई मै, ज़ैतून के तेल और जवान भेड़-
बकरियों और गाय-बैलों की कस्रत से नवाज़ेगा। उन
की जान सेराब बाग़ की तरह सरसब्ज़ होगी, और उन
की निढाल हालत सँभल जाएगी। 13 फिर कुंवारियाँ
ख़ुशी के मारे लोकनाच नाचेंगी, जवान और बुज़ुर्ग
आदमी भी उस में हिस्सा लेंगे। यूँ मैं उन का मातम
ख़ुशी में बदल दूँगा, मैं उन के दिलों से ग़म निकाल
कर उन्हें अपनी तसल्ली और शादमानी से भर दूँगा।"
14 रब फ़रमाता है, "मैं इमामों की जान को तर-ओ-
ताज़ा करूँगा, और मेरी क़ौम मेरी बरकतों से सेर हो
जाएगी।"

15 रब फ़रमाता है, "रामा में शोर मच गया है, रोने
पीटने और शदीद मातम की आवाज़ें। राख़िल अपने
बच्चों के लिए रो रही है और तसल्ली क़बूल नहीं कर
रही, क्यूँकि वह हलाक हो गए हैं।"

16 लेकिन रब फ़रमाता है, "रोने और आँसू बहाने से
बाज़ आ, क्यूँकि तुझे अपनी मेहनत का अज्र मिलेगा।
यह रब का वादा है कि वह दुश्मन के मुल्क से लौट
आएँगे। 17 तेरा मुस्तक़बिल पुरउम्मीद होगा, क्यूँकि

---

[l]यहाँ इफ़्राईम इस्राईल का दूसरा नाम है।

तेरे बच्चे अपने वतन में वापस आएँगे।” यह रब का
फ़रमान है।
18 “इस्राईल [m]की गिर्या-ओ-ज़ारी मुझ तक पहुँच
गई है। क्यूँकि वह कहता है, ‘हाय, तू ने मेरी सख़्त
तादीब की है। मेरी यूँ तर्बियत हुई है जिस तरह बछड़े
की होती है जब उस की गर्दन पर पहली बार जूआ
रखा जाता है। ऐ रब, मुझे वापस ला ताकि मैं वापस
आऊँ, क्यूँकि तू ही रब मेरा ख़ुदा है। 19 मेरे वापस
आने पर मुझे नदामत महसूस हुई, और समझ आने
पर मैं अपना सीना पीटने लगा। मुझे शर्मिन्दगी और
रुस्वाई का शदीद एहसास हो रहा है, क्यूँकि अब
मैं अपनी जवानी के शर्मनाक फल की फ़सल काट
रहा हूँ।’ 20 लेकिन रब फ़रमाता है कि इस्राईल मेरा
क़ीमती बेटा, मेरा लाडला है। गो मैं बार बार उस के
ख़िलाफ़ बातें करता हूँ तो भी उसे याद करता रहता
हूँ। इस लिए मेरा दिल उस के लिए तड़पता है, और
लाज़िम है कि मैं उस पर तरस खाऊँ।
21 ऐ मेरी क़ौम, ऐसे निशान खड़े कर जिन से लोगों
को सहीह रास्ते का पता चले! उस पक्की सड़क पर
ध्यान दे जिस पर तू ने सफ़र किया है। ऐ कुंवारी
इस्राईल, वापस आ, अपने इन शहरों में लौट आ!
22 ऐ बेवफ़ा बेटी, तू कब तक भटकती फिरेगी? रब
ने मुल्क में एक नई चीज़ पैदा की है, यह कि आइन्दा
औरत आदमी के गिर्द रहेगी।”

इस्राईल और यहूदाह दुबारा आबाद हो जाएंगे

23 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, “जब मैं इस्राईलियों को बहाल करूँगा
तो मुल्क-ए-यहूदाह और उस के शहरों के बाशिन्दे
दुबारा कहेंगे, ‘ऐ रास्ती के घर, ऐ मुक़द्दस पहाड़,
रब तुझे बरकत दे!’ 24 तब यहूदाह और उस के शहर
दुबारा आबाद होंगे। किसान भी मुल्क में बसेंगे, और
वह भी जो अपने रेवड़ों के साथ इधर उधर फिरते
हैं। 25 क्यूँकि मैं थकेमान्दों को नई ताक़त दूँगा और
ग़श खाने वालों को तर-ओ-ताज़ा करूँगा।”
26 तब मैं जाग उठा और चारों तरफ़ देखा। मेरी नींद
कितनी मीठी रही थी!
27 रब फ़रमाता है, “वह वक़्त आने वाला है जब मैं
इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने का बीज बो
कर इन्सान-ओ-हैवान की तादाद बढ़ा दूँगा। 28 पहले
मैं ने बड़े ध्यान से उन्हें जड़ से उखाड़ दिया, गिरा
दिया, ढा दिया, हाँ तबाह करके ख़ाक में मिला दिया।
लेकिन आइन्दा मैं उतने ही ध्यान से उन्हें तामीर
करूँगा, उन्हें पनीरी की तरह लगा दूँगा।” यह रब
का फ़रमान है। 29 “उस वक़्त लोग यह कहने से बाज़
आएँगे कि वालिदैन ने खट्टे अंगूर खाए, लेकिन दाँत
उन के बच्चों के खट्टे हो गए हैं। 30 क्यूँकि अब से खट्टे
अंगूर खाने वाले के अपने ही दाँत खट्टे होंगे। अब से
उसी को सज़ा-ए-मौत दी जाएगी जो क़ुसूरवार है।”

नया अह्द

31 रब फ़रमाता है, “ऐसे दिन आ रहे हैं जब मैं
इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने के साथ एक
नया अह्द बांधूँगा। 32 यह उस अह्द की मानिन्द
नहीं होगा जो मैं ने उन के बापदादा के साथ उस दिन
बांधा था जब मैं उन का हाथ पकड़ कर उन्हें मिस्र से
निकाल लाया। क्यूँकि उन्हों ने वह अह्द तोड़ दिया,
गो मैं उन का मालिक था।” यह रब का फ़रमान है।
33 “जो नया अह्द मैं उन दिनों के बाद इस्राईल
के घराने के साथ बांधूँगा उस के तहत मैं अपनी
शरीअत उन के अन्दर डाल कर उन के दिलों पर
कन्दा करूँगा। तब मैं ही उन का ख़ुदा हूँगा, और
वह मेरी क़ौम होंगे। 34 उस वक़्त से इस की ज़रूरत
नहीं रहेगी कि कोई अपने पड़ोसी या भाई को तालीम
दे कर कहे, ‘रब को जान लो।’ क्यूँकि छोटे से ले कर
बड़े तक सब मुझे जानेंगे। क्यूँकि मैं उन का क़ुसूर

---

[m]लफ़्ज़ी तर्जुमा : इफ़्राईम।

मुआफ़ करूँगा और आइन्दा उन के गुनाहों को याद
नहीं करूँगा।” यह रब का फ़रमान है।
35 रब फ़रमाता है, “मैं ही ने मुक़र्रर किया है कि
दिन के वक़्त सूरज चमके और रात के वक़्त चाँद
सितारों समेत रौशनी दे। मैं ही समुन्दर को यूँ उछाल
देता हूँ कि उस की मौजें गरजने लगती हैं। रब्ब-उल-
अफ़्वाज ही मेरा नाम है।” 36 रब फ़रमाता है, “जब
तक यह क़ुदरती उसूल मेरे सामने क़ाइम रहेंगे उस
वक़्त तक इस्राईल क़ौम मेरे सामने क़ाइम रहेगी।
37 क्या इन्सान आसमान की पैमाइश कर सकता है?
या क्या वह ज़मीन की बुन्यादों की तफ़्तीश कर
सकता है? हरगिज़ नहीं! इसी तरह यह मुमकिन ही
नहीं कि मैं इस्राईल की पूरी क़ौम को उस के गुनाहों
के सबब से रद्द करूँ।” यह रब का फ़रमान है।

यरूशलम को नए सिरे से तामीर किया जाएगा

38 रब फ़रमाता है, “वह वक़्त आने वाला है जब
यरूशलम को रब के लिए नए सिरे से तामीर किया
जाएगा। तब उस की फ़सील हनन-एल के बुर्ज से ले
कर कोने के दरवाज़े तक तय्यार हो जाएगी। 39 वहाँ
से शहर की सरहद सीधी जरीब पहाड़ी तक पहुँचेगी,
फिर जोआ की तरफ़ मुड़ेगी। 40 उस वक़्त जो वादी
लाशों और भस्म हुई चर्बी की राख से नापाक हुई
है वह पूरे तौर पर रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
होगी। उस की ढलानों पर के तमाम खेत भी वादी-
ए-क़िद्रोन तक शामिल होंगे, बल्कि मशरिक़ में घोड़े
के दरवाज़े के कोने तक सब कुछ मुक़द्दस होगा।
आइन्दा शहर को न कभी दुबारा जड़ से उखाड़ा
जाएगा, न तबाह किया जाएगा।”

यरमियाह मुहासरे के दौरान खेत ख़रीदता है

32 1 यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह की
हुकूमत के दसवें साल में रब यरमियाह
से हमकलाम हुआ। उस वक़्त नबूकद्नज़्ज़र जो 18
साल से बाबल का बादशाह था 2 अपनी फ़ौज के
साथ यरूशलम का मुहासरा कर रहा था। यरमियाह
उन दिनों में शाही महल के मुहाफ़िज़ों के सहन में
क़ैद था। 3 सिदक़ियाह ने यह कह कर उसे गिरिफ़्तार
किया था, “तू क्यूँ इस क़िस्म की पेशगोई सुनाता
है? तू कहता है, ‘रब फ़रमाता है कि मैं इस शहर
को शाह-ए-बाबल के हाथ में देने वाला हूँ। जब वह
उस पर क़ब्ज़ा करेगा 4 तो सिदक़ियाह बाबल की
फ़ौज से नहीं बचेगा। उसे शाह-ए-बाबल के हवाले
कर दिया जाएगा, और वह उस के रू-ब-रू उस से
बात करेगा, अपनी आँखों से उसे देखेगा। 5 शाह-ए-
बाबल सिदक़ियाह को बाबल ले जाएगा, और वहाँ
वह उस वक़्त तक रहेगा जब तक मैं उसे दुबारा
क़बूल न करूँ। रब फ़रमाता है कि अगर तुम बाबल
की फ़ौज से लड़ो तो नाकाम रहोगे’।”
6 जब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ
तो यरमियाह ने कहा, “रब मुझ से हमकलाम हुआ,
7 ‘तेरा चचाज़ाद भाई हनम-एल बिन सल्लूम तेरे पास
आ कर कहेगा कि अनतोत में मेरा खेत ख़रीद लें।
आप सब से क़रीबी रिश्तेदार हैं, इस लिए उसे
ख़रीदना आप का हक़ बल्कि फ़र्ज़ भी है ताकि ज़मीन
हमारे ख़ानदान की मिलकियत रहे।’ [n] 8 ऐसा ही हुआ
जिस तरह रब ने फ़रमाया था। मेरा चचाज़ाद भाई
हनम-एल शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में आया और
मुझ से कहा, ‘बिनयमीन के क़बीले के शहर अनतोत
में मेरा खेत ख़रीद लें। यह खेत ख़रीदना आप का
मौरूसी हक़ बल्कि फ़र्ज़ भी है ताकि ज़मीन हमारे
ख़ानदान की मिलकियत रहे। आएँ, उसे ख़रीद लें!’
तब मैं ने जान लिया कि यह वही बात है जो रब ने
फ़रमाई थी। 9 चुनाँचे मैं ने अपने चचाज़ाद भाई हनम-
एल से अनतोत का खेत ख़रीद कर उसे चाँदी के 17
सिक्के दे दिए। 10 मैं ने इन्तिक़ालनामा लिख कर उस
पर मुहर लगाई, फिर चाँदी के सिक्के तोल कर अपने
भाई को दे दिए। मैं ने गवाह भी बुलाए थे ताकि वह

[n] लफ़्ज़ी तर्जुमा : इवज़ाना दे कर उसे छुड़ाना (ताकि ख़ानदान का हिस्सा रहे) आप ही का हक़ है।

पूरी कार-रवाई की तस्दीक़ करें। 11–12 इस के बाद
मैं ने मुहरशुदा इन्तिक़ालनामा तमाम शराइत और
क़वाइद समेत बारूक बिन नैरियाह बिन महसियाह
के सपुर्द कर दिया। साथ साथ मैं ने उसे एक नक़ल
भी दी जिस पर मुहर नहीं लगी थी। हनम-एल,
इन्तिक़ालनामे पर दस्तख़त करने वाले गवाह और
सहन में हाज़िर बाक़ी हमवतन सब इस के गवाह
थे। 13 उन के देखते देखते मैं ने बारूक को हिदायत
दी,

14 'रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है कि मुहरशुदा इन्तिक़ालनामा और उस की
नक़ल ले कर मिट्टी के बर्तन में डाल दे ताकि लम्बे
अर्से तक महफ़ूज़ रहें। 15 क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज
जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि एक वक़्त
आएगा जब इस मुल्क में दुबारा घर, खेत और अंगूर
के बाग़ ख़रीदे जाएंगे।'

यरमियाह अल्लाह की तम्जीद करता है

16 बारूक बिन नैरियाह को इन्तिक़ालनामा देने के
बाद मैं ने रब से दुआ की,

17 'ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, तू ने अपना हाथ बढ़ा
कर बड़ी क़ुदरत से आसमान-ओ-ज़मीन को बनाया,
तेरे लिए कोई भी काम नामुमकिन नहीं। 18 तू हज़ारों
पर शफ़क़त करता और साथ साथ बच्चों को उन के
वालिदैन के गुनाहों की सज़ा देता है। ऐ अज़ीम और
क़ादिर ख़ुदा जिस का नाम रब्ब-उल-अफ़्वाज है,
19 तेरे मक़ासिद अज़ीम और तेरे काम ज़बरदस्त हैं,
तेरी आँखें इन्सान की तमाम राहों को देखती रहती
हैं। तू हर एक को उस के चाल-चलन और आमाल
का मुनासिब अज्र देता है।

20 मिस्र में तू ने इलाही निशान और मोजिज़े दिखाए,
और तेरा यह सिलसिला आज तक जारी रहा है,
इस्राईल में भी और बाक़ी क़ौमों में भी। यूँ तेरे नाम
को वह इज़्ज़त-ओ-जलाल मिला जो तुझे आज तक
हासिल है। 21 तू इलाही निशान और मोजिज़े दिखा
कर अपनी क़ौम इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया।
तू ने अपना हाथ बढ़ा कर अपनी अज़ीम क़ुदरत
मिस्रियों पर ज़ाहिर की तो उन पर शदीद दहशत तारी
हुई। 22 तब तू ने अपनी क़ौम को यह मुल्क बख़्श
दिया जिस में दूध और शहद की कस्रत थी और जिस
का वादा तू ने क़सम खा कर उन के बापदादा से
किया था।

23 लेकिन जब हमारे बापदादा ने मुल्क में दाख़िल
हो कर उस पर क़ब्ज़ा किया तो उन्हों ने न तेरी सुनी,
न तेरी शरीअत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी। जो कुछ
भी तू ने उन्हें करने को कहा था उस पर उन्हों ने अमल
न किया। नतीजे में तू उन पर यह आफ़त लाया।
24 दुश्मन मिट्टी के पुश्ते बना कर फ़सील के क़रीब
पहुँच चुका है। हम तलवार, काल और मोहलिक
बीमारियों से इतने कमज़ोर हो गए हैं कि जब बाबल
की फ़ौज शहर पर हम्ला करेगी तो वह उस के क़ब्ज़े
में आएगा। जो कुछ भी तू ने फ़रमाया था वह पेश
आया है। तू ख़ुद इस का गवाह है। 25 लेकिन ऐ रब
क़ादिर-ए-मुतलक़, कमाल है कि गो शहर को बाबल
की फ़ौज के हवाले किया जाएगा तो भी तू मुझ से
हमकलाम हुआ है कि चाँदी दे कर खेत ख़रीद ले
और गवाहों से कार-रवाई की तस्दीक़ करवा'।"

रब का जवाब

26 तब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ,
27 "देख, मैं रब और तमाम इन्सानों का ख़ुदा हूँ। तो
फिर क्या कोई काम है जो मुझ से नहीं हो सकता?"
28 चुनाँचे रब फ़रमाता है, "मैं इस शहर को बाबल
और उस के बादशाह नबूकद्नज़्ज़र के हवाले कर
दूँगा। वह ज़रूर उस पर क़ब्ज़ा करेगा। 29 बाबल के
जो फ़ौजी इस शहर पर हम्ला कर रहे हैं इस में घुस
कर सब कुछ जला देंगे, सब कुछ नज़र-ए-आतिश
करेंगे। तब वह तमाम घर राख हो जाएंगे जिन की
छतों पर लोगों ने बाल देवता के लिए बख़ूर जला
कर और अजनबी माबूदों को मै की नज़रें पेश करके
मुझे तैश दिलाया।"

30 रब फ़रमाता है, “इस्राईल और यहूदाह के
क़बीले जवानी से ले कर आज तक वही कुछ करते
आए हैं जो मुझे नापसन्द है। अपने हाथों के काम से
वह मुझे बार बार ग़ुस्सा दिलाते रहे हैं। 31 यरूशलम
की बुन्यादें डालने से ले कर आज तक इस शहर
ने मुझे हद से ज़्यादा मुश्तइल कर दिया है। अब
लाज़िम है कि मैं उसे नज़रों से दूर कर दूँ। 32 क्यूँकि
इस्राईल और यहूदाह के बाशिन्दों ने अपनी बुरी
हरकतों से मुझे तैश दिलाया है, ख़्वाह बादशाह हो या
मुलाज़िम, ख़्वाह इमाम हो या नबी, ख़्वाह यहूदाह हो
या यरूशलम। 33 उन्हों ने अपना मुँह मुझ से फेर कर
मेरी तरफ़ रुजू करने से इन्कार किया है। गो मैं उन्हें
बार बार तालीम देता रहा तो भी वह सुनने या मेरी
तर्बियत क़बूल करने के लिए तय्यार नहीं थे। 34 न
सिर्फ़ यह बल्कि जिस घर पर मेरे नाम का ठप्पा लगा
है उस में उन्हों ने अपने घिनौने बुतों को रख कर उस
की बेहुरमती की है। 35 वादी-ए-बिन-हिन्नूम की ऊँची
जगहों पर उन्हों ने बाल देवता की क़ुर्बानगाहें तामीर
कीं ताकि वहाँ अपने बेटे-बेटियों को मलिक देवता
के लिए क़ुर्बान करें। मैं ने उन्हें ऐसी क़ाबिल-ए-घिन
हरकतें करने का हुक्म नहीं दिया था, बल्कि मुझे इस
का ख़याल तक नहीं आया। यूँ उन्हों ने यहूदाह को
गुनाह करने पर उकसाया है।

36 इस वक़्त तुम कह रहे हो, ‘यह शहर ज़रूर शाह-
ए-बाबल के क़ब्ज़े में आ जाएगा, क्यूँकि तलवार,
काल और मोहलिक बीमारियों ने हमें कमज़ोर कर
दिया है।’ लेकिन अब शहर के बारे में रब का फ़रमान
सुनो, जो इस्राईल का ख़ुदा है!

37 बेशक मैं बड़े तैश में आ कर शहर के बाशिन्दों
को मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुन्तशिर कर दूँगा,
लेकिन मैं उन्हें उन जगहों से फिर जमा करके वापस
भी लाऊँगा ताकि वह दुबारा यहाँ सुकून के साथ रह
सकें। 38 तब वह मेरी क़ौम होंगे, और मैं उन का ख़ुदा
हूँगा। 39 मैं होने दूँगा कि वह सोच और चाल-चलन
में एक हो कर हर वक़्त मेरा ख़ौफ़ मानेंगे। क्यूँकि
उन्हें मालूम होगा कि ऐसा करने से हमें और हमारी
औलाद को बरकत मिलेगी।

40 मैं उन के साथ अबदी अह्द बांध कर वादा
करूँगा कि उन पर शफ़क़त करने से बाज़ नहीं
आऊँगा। साथ साथ मैं अपना ख़ौफ़ उन के दिलों में
डाल दूँगा ताकि वह मुझ से दूर न हो जाएँ। 41 उन्हें
बरकत देना मेरे लिए ख़ुशी का बाइस होगा, और मैं
वफ़ादारी और पूरे दिल-ओ-जान से उन्हें पनीरी की
तरह इस मुल्क में दुबारा लगा दूँगा।” 42 क्यूँकि रब
फ़रमाता है, “मैं ही ने यह बड़ी आफ़त इस क़ौम पर
नाज़िल की, और मैं ही उन्हें उन तमाम बरकतों से
नवाज़ूँगा जिन का वादा मैं ने किया है। 43 बेशक तुम
इस वक़्त कहते हो, ‘हाय, हमारा मुल्क वीरान-ओ-
सुन्सान है, उस में न इन्सान और न हैवान रह गया
है, क्यूँकि सब कुछ बाबल के हवाले कर दिया गया
है।’ लेकिन मैं फ़रमाता हूँ कि पूरे मुल्क में दुबारा
खेत ख़रीदे 44 और फ़रोख़्त किए जाएंगे। लोग मामूल
के मुताबिक़ इन्तिक़ालनामे लिख कर उन पर मुहर
लगाएँगे और कार-रवाई की तस्दीक़ के लिए गवाह
बुलाएँगे। तमाम इलाक़े यानी बिनयमीन के क़बाइली
इलाक़े में, यरूशलम के दीहात में, यहूदाह और
पहाड़ी इलाक़े के शहरों में, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी
इलाक़े के शहरों में और दश्त-ए-नजब के शहरों में
ऐसा ही किया जाएगा। मैं ख़ुद उन की बदनसीबी
ख़त्म करूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

यरूशलम में दुबारा ख़ुशी होगी

33 1 यरमियाह अब तक शाही मुहाफ़िज़ों के
सहन में गिरिफ़्तार था कि रब एक बार
फिर उस से हमकलाम हुआ, 2 “जो सब कुछ ख़ल्क़
करता, तश्कील देता और क़ाइम रखता है उस का
नाम रब है। यही रब फ़रमाता है, 3 मुझे पुकार तो मैं
तुझे जवाब में ऐसी अज़ीम और नाक़ाबिल-ए-फ़हम
बातें बयान करूँगा जो तू नहीं जानता।

4 क्यूँकि रब जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि
तुम ने इस शहर के मकानों बल्कि चन्द एक शाही

मकानों को भी ढा दिया है ताकि उन के पत्थरों और
लकड़ी से फ़सील को मज़बूत करो और शहर को
दुश्मन के पुश्तों और तलवार से बचाए रखो। 5 गो
तुम बाबल की फ़ौज से लड़ना चाहते हो, लेकिन शहर
के घर इस्राईलियों की लाशों से भर जाएंगे। क्यूँकि
उन ही पर मैं अपना ग़ज़ब नाज़िल करूँगा। यरूशलम
की तमाम बेदीनी के बाइस मैं ने अपना मुँह उस से
छुपा लिया है।

6 लेकिन बाद में मैं उसे शिफ़ा दे कर तन्दुरुस्ती
बख़्शूँगा, मैं उस के बाशिन्दों को सेहत अता करूँगा
और उन पर देरपा सलामती और वफ़ादारी का
इज़हार करूँगा। 7 क्यूँकि मैं यहूदाह और इस्राईल
को बहाल करके उन्हें वैसे तामीर करूँगा जैसे पहले
थे। 8 मैं उन्हें उन की तमाम बेदीनी से पाक-साफ़
करके उन की तमाम सरकशी और तमाम गुनाहों
को मुआफ़ कर दूँगा। 9 तब यरूशलम पूरी दुनिया
में मेरे लिए मुसर्रत, शुहरत, तारीफ़ और जलाल का
बाइस बनेगा। दुनिया के तमाम ममालिक मेरी उस
पर मेहरबानी देख कर मुतअस्सिर हो जाएंगे। वह
घबरा कर काँप उठेंगे जब उन्हें पता चलेगा कि मैं
ने यरूशलम को कितनी बरकत और सुकून मुहय्या
किया है।

10 तुम कहते हो, 'हमारा शहर वीरान-ओ-सुन्सान
है। उस में न इन्सान, न हैवान रहते हैं।' लेकिन
रब फ़रमाता है कि यरूशलम और यहूदाह के दीगर
शहरों की जो गलियाँ इस वक़्त वीरान और इन्सान-
ओ-हैवान से ख़ाली हैं, 11 उन में दुबारा ख़ुशी-ओ-
शादमानी, दूल्हे दुल्हन की आवाज़ और रब के घर
में शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानियाँ पहुँचाने वालों के गीत
सुनाई देंगे। उस वक़्त वह गाएँगे, 'रब्ब-उल-अफ़्वाज
का शुक्र करो, क्यूँकि रब भला है, और उस की
शफ़क़त अबदी है।' क्यूँकि मैं इस मुल्क को पहले
की तरह बहाल कर दूँगा। यह रब का फ़रमान है।

12 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि फ़िलहाल यह
मक़ाम वीरान और इन्सान-ओ-हैवान से ख़ाली है।
लेकिन आइन्दा यहाँ और बाक़ी तमाम शहरों में
दुबारा ऐसी चरागाहें होंगी जहाँ गल्लाबान अपने रेवड़ों
को चराएँगे। 13 तब पूरे मुल्क में चरवाहे अपने रेवड़ों
को गिनते और सँभालते हुए नज़र आएँगे, ख़्वाह
पहाड़ी इलाक़े के शहरों या मग़रिब के नशेबी पहाड़ी
इलाक़े में देखो, ख़्वाह दश्त-ए-नजब या बिनयमीन के
क़बाइली इलाक़े में मालूम करो, ख़्वाह यरूशलम के
दीहात या यहूदाह के बाक़ी शहरों में दरयाफ़्त करो।
यह रब का फ़रमान है।

अबदी अह्द का वादा

14 रब फ़रमाता है कि ऐसा वक़्त आने वाला
है जब मैं वह अच्छा वादा पूरा करूँगा जो मैं
ने इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने से
किया है। 15 उस वक़्त मैं दाऊद की नस्ल से एक
रास्तबाज़ कोंपल फूटने दूँगा, और वही मुल्क में
इन्साफ़ और रास्ती क़ाइम करेगा। 16 उन दिनों में
यहूदाह को छुटकारा मिलेगा और यरूशलम पुरअम्न
ज़िन्दगी गुज़ारेगा। तब यरूशलम 'रब हमारी रास्ती'
कहलाएगा। 17 क्यूँकि रब फ़रमाता है कि इस्राईल के
तख़्त पर बैठने वाला हमेशा ही दाऊद की नस्ल का
होगा। 18 इसी तरह रब के घर में ख़िदमतगुज़ार इमाम
हमेशा ही लावी के क़बीले के होंगे। वही मुतवातिर
मेरे हुज़ूर भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ और ग़ल्ला और
ज़बह की क़ुर्बानियाँ पेश करेंगे।"

19 रब एक बार फिर यरमियाह से हमकलाम हुआ,
20 "रब फ़रमाता है कि मैं ने दिन और रात से अह्द
बांधा है कि वह मुक़र्ररा वक़्त पर और तर्तीबवार
गुज़रें। कोई इस अह्द को तोड़ नहीं सकता। 21 इसी
तरह मैं ने अपने ख़ादिम दाऊद से भी अह्द बांध कर
वादा किया कि इस्राईल का बादशाह हमेशा उसी
की नस्ल का होगा। नीज़, मैं ने लावी के इमामों
से भी अह्द बांध कर वादा किया कि रब के घर
में ख़िदमतगुज़ार इमाम हमेशा लावी के क़बीले के
ही होंगे। रात और दिन से बंधे हुए अह्द की तरह
इन अह्दों को भी तोड़ा नहीं जा सकता। 22 मैं अपने
ख़ादिम दाऊद की औलाद और अपने ख़िदमतगुज़ार

लावियों को सितारों और समुन्दर की रेत जैसा
बेशुमार बना दूँगा।”
23 रब यरमियाह से एक बार फिर हमकलाम हुआ,
24 “क्या तुझे लोगों की बातें मालूम नहीं हुईं? यह
कह रहे हैं, ‘गो रब ने इस्राईल और यहूदाह को चुन
कर अपनी क़ौम बना लिया था, लेकिन अब उस ने
दोनों को रद्द कर दिया है।’ यूँ वह मेरी क़ौम को हक़ीर
जानते हैं बल्कि इसे अब से क़ौम ही नहीं समझते।”
25 लेकिन रब फ़रमाता है, “जो अह्द मैं ने दिन और
रात से बांधा है वह मैं नहीं तोड़ूँगा, न कभी आसमान-
ओ-ज़मीन के मुक़र्ररा उसूल मन्सूख़ करूँगा। 26 इसी
तरह यह मुमकिन ही नहीं कि मैं याक़ूब और अपने
ख़ादिम दाऊद की औलाद को कभी रद्द करूँ। नहीं,
मैं हमेशा ही दाऊद की नस्ल में से किसी को तख़्त पर
बिठाऊँगा ताकि वह इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब
की औलाद पर हुकूमत करे, क्यूँकि मैं उन्हें बहाल
करके उन पर तरस खाऊँगा।”

सिदक़ियाह बाबल की क़ैद में मर जाएगा

34 1 रब उस वक़्त यरमियाह से हमकलाम
हुआ जब शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र
अपनी पूरी फ़ौज ले कर यरूशलम और यहूदाह के
तमाम शहरों पर हम्ला कर रहा था। उस के साथ
दुनिया के उन तमाम ममालिक और क़ौमों की फ़ौजें
थीं जिन्हें उस ने अपने ताबे कर लिया था।
2 “रब जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि
यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह के पास जा कर उसे
बता, रब फ़रमाता है कि मैं इस शहर यरूशलम को
शाह-ए-बाबल के हवाले करने को हूँ, और वह इसे
नज़र-ए-आतिश कर देगा। 3 तू भी उस के हाथ से
नहीं बचेगा बल्कि ज़रूर पकड़ा जाएगा। तुझे उस
के हवाले किया जाएगा, और तू शाह-ए-बाबल को
अपनी आँखों से देखेगा, वह तेरे रू-ब-रू तुझ से बात
करेगा। फिर तुझे बाबल जाना पड़ेगा। 4 लेकिन ऐ
सिदक़ियाह बादशाह, रब का यह फ़रमान भी सुन!
रब तेरे बारे में फ़रमाता है कि तू तलवार से नहीं
5 बल्कि तबई मौत मरेगा, और लोग उसी तरह तेरी
ताज़ीम में लकड़ी का बड़ा ढेर बना कर आग लगाएँगे
जिस तरह तेरे बापदादा के लिए करते आए हैं।
वह तुझ पर भी मातम करेंगे और कहेंगे, ‘हाय, मेरे
आक़ा’!” यह रब का फ़रमान है।
6 यरमियाह नबी ने सिदक़ियाह बादशाह को
यरूशलम में यह पैग़ाम सुनाया। 7 उस वक़्त बाबल
की फ़ौज यरूशलम, लकीस और अज़ीक़ा से लड़
रही थी। यहूदाह के तमाम क़िलाबन्द शहरों में से
यही तीन अब तक क़ाइम रहे थे।

ग़ुलामों के साथ बेवफ़ाई

8 रब का कलाम एक बार फिर यरमियाह पर
नाज़िल हुआ। उस वक़्त सिदक़ियाह बादशाह ने
यरूशलम के बाशिन्दों के साथ अह्द बांधा था कि
हम अपने हमवतन ग़ुलामों को आज़ाद कर देंगे।
9 हर एक ने अपने हमवतन ग़ुलामों और लौंडियों
को आज़ाद करने का वादा किया था, क्यूँकि सब
मुत्तफ़िक़ हुए थे कि हम अपने हमवतनों को ग़ुलामी
में नहीं रखेंगे। 10 तमाम बुज़ुर्ग और बाक़ी तमाम लोग
यह करने पर राज़ी हुए थे। यह अह्द करने पर उन्हों
ने अपने ग़ुलामों को वाक़ई आज़ाद कर दिया था।
11 लेकिन बाद में वह अपना इरादा बदल कर अपने
आज़ाद किए हुए ग़ुलामों को वापस लाए और उन्हें
दुबारा अपने ग़ुलाम बना लिया था। 12 तब रब का
कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ।
13 “रब जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, ‘जब
मैं तुम्हारे बापदादा को मिस्र की ग़ुलामी से निकाल
लाया तो मैं ने उन से अह्द बांधा। उस की एक शर्त
यह थी 14 कि जब किसी हमवतन ने अपने आप को
बेच कर छः साल तक तेरी ख़िदमत की है तो लाज़िम
है कि सातवें साल तू उसे आज़ाद कर दे। यह शर्त तुम
सब पर सादिक़ आती है। लेकिन अफ़सोस, तुम्हारे
बापदादा ने न मेरी सुनी, न मेरी बात पर ध्यान दिया।
15 अब तुम ने पछता कर वह कुछ किया जो मुझे
पसन्द था। हर एक ने एलान किया कि हम अपने

हमवतन ग़ुलामों को आज़ाद कर देंगे। तुम उस घर
में आए जिस पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है और
अह्द बांध कर मेरे हुज़ूर उस वादे की तस्दीक़ की।
16 लेकिन अब तुम ने अपना इरादा बदल कर मेरे नाम
की बेहुरमती की है। अपने ग़ुलामों और लौंडियों को
आज़ाद कर देने के बाद हर एक उन्हें अपने पास
वापस लाया है। पहले तुम ने उन्हें बताया कि जहाँ
जी चाहो चले जाओ, और अब तुम ने उन्हें दुबारा
ग़ुलाम बनने पर मज्बूर किया है।'

17 चुनाँचे सुनो जो कुछ रब फ़रमाता है! 'तुम ने
मेरी नहीं सुनी, क्यूँकि तुम ने अपने हमवतन ग़ुलामों
को आज़ाद नहीं छोड़ा। इस लिए अब रब तुम्हें
तलवार, मोहलिक बीमारियों और काल के लिए
आज़ाद छोड़ देगा। तुम्हें देख कर दुनिया के तमाम
ममालिक के रोंगटे खड़े हो जाएंगे।' यह रब का
फ़रमान है। 18–19 'देखो, यहूदाह और यरूशलम के
बुज़ुर्गों, दरबारियों, इमामों और अवाम ने मेरे साथ
अह्द बांधा। इस की तस्दीक़ करने के लिए वह
एक बछड़े को दो हिस्सों में तक़्सीम करके उन के
दरमियान से गुज़र गए। तो भी उन्हों ने अह्द तोड़ कर
उस की शराइत पूरी न कीं। चुनाँचे मैं होने दूँगा कि
वह उस बछड़े की मानिन्द हो जाएँ जिस के दो हिस्सों
में से वह गुज़र गए हैं। 20 मैं उन्हें उन के दुश्मनों के
हवाले कर दूँगा, उन ही के हवाले जो उन्हें जान से
मारने के दरपै हैं। उन की लाशें परिन्दों और जंगली
जानवरों की ख़ुराक बन जाएँगी।

21 मैं यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह और उस के
अफ़्सरों को उन के दुश्मन के हवाले कर दूँगा, उन
ही के हवाले जो उन्हें जान से मारने पर तुले हुए हैं।
वह यक़ीनन शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र की फ़ौज
के क़ब्ज़े में आ जाएंगे। क्यूँकि गो फ़ौजी इस वक़्त
पीछे हट गए हैं, 22 लेकिन मेरे हुक्म पर वह वापस
आ कर यरूशलम पर हम्ला करेंगे। और इस मर्तबा
वह उस पर क़ब्ज़ा करके उसे नज़र-ए-आतिश कर
देंगे। मैं यहूदाह के शहरों को भी यूँ ख़ाक में मिला
दूँगा कि कोई उन में नहीं रह सकेगा'।" यह रब का
फ़रमान है।

यरमियाह रैकाबियों को आज़माता है

35 1 जब यहूयक़ीम बिन यूसियाह अभी
यहूदाह का बादशाह था तो रब मुझ से
हमकलाम हुआ, 2 "रैकाबी ख़ानदान के पास जा कर
उन्हें रब के घर के सहन के किसी कमरे में आने की
दावत दे। जब वह आएँ तो उन्हें मै पिला दे।"

3 चुनाँचे मैं याज़नियाह बिन यरमियाह बिन
हबस्सिनियाह के पास गया और उसे उस के भाइयों
और तमाम बेटों यानी रैकाबियों के पूरे घराने समेत
4 रब के घर में लाया। हम हनान के बेटों के कमरे
में बैठ गए। हनान मर्द-ए-ख़ुदा यिज्दलियाह का बेटा
था। यह कमरा बुज़ुर्गों के कमरे से मुल्हिक़ और रब
के घर के दरबान मासियाह बिन सल्लूम के कमरे के
ऊपर था। 5 वहाँ मैं ने मै के जाम और प्याले रैकाबी
आदमियों को पेश करके उन से कहा, "आएँ, कुछ
मै पी लें।"

6 लेकिन उन्हों ने इन्कार करके कहा, "हम मै नहीं
पीते, क्यूँकि हमारे बाप यूनदब बिन रैकाब ने हमें
और हमारी औलाद को मै पीने से मना किया है। 7 उस
ने हमें यह हिदायत भी दी, 'न मकान तामीर करना, न
बीज बोना और न अंगूर का बाग़ लगाना। यह चीज़ें
कभी भी तुम्हारी मिलकियत में शामिल न हों, क्यूँकि
लाज़िम है कि तुम हमेशा ख़ैमों में ज़िन्दगी गुज़ारो।
फिर तुम लम्बे अर्से तक उस मुल्क में रहोगे जिस में
तुम मेहमान हो।' 8 चुनाँचे हम अपने बाप यूनदब बिन
रैकाब की इन तमाम हिदायात के ताबे रहते हैं। न हम
और न हमारी बीवियाँ या बच्चे कभी मै पीते हैं। 9 हम
अपनी रिहाइश के लिए मकान नहीं बनाते, और न
अंगूर के बाग़, न खेत या फ़सलें हमारी मिलकियत
में होती हैं। 10 इस के बजाय हम आज तक ख़ैमों में
रहते हैं। जो भी हिदायत हमारे बाप यूनदब ने हमें दी
उस पर हम पूरे उतरे हैं। 11 हम सिर्फ़ आरिज़ी तौर
पर शहर में ठहरे हुए हैं। क्यूँकि जब शाह-ए-बाबल

नबूकद्नज़्ज़र इस मुल्क में घुस आया तो हम बोले,
'आएँ, हम यरूशलम शहर में जाएँ ताकि बाबल और
शाम की फ़ौजों से बच जाएँ।' हम सिर्फ़ इसी लिए
यरूशलम में ठहरे हुए हैं।"

12 तब रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,
13 "रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है कि यहूदाह और यरूशलम के बाशिन्दों
के पास जा कर कह, 'तुम मेरी तर्बियत क्यूँ क़बूल
नहीं करते? तुम मेरी क्यूँ नहीं सुनते? 14 यूनदब बिन
रैकाब पर ग़ौर करो। उस ने अपनी औलाद को मै
पीने से मना किया, इस लिए उस का घराना आज
तक मै नहीं पीता। यह लोग अपने बाप की हिदायात
के ताबे रहते हैं। इस के मुक़ाबले में तुम लोग क्या
कर रहे हो? गो मैं बार बार तुम से हमकलाम हुआ
तो भी तुम ने मेरी नहीं सुनी।

15 बार बार मैं अपने नबियों को तुम्हारे पास भेजता
रहा ताकि मेरे ख़ादिम तुम्हें आगाह करते रहें कि हर
एक अपनी बुरी राह तर्क करके वापस आए! अपना
चाल-चलन दुरुस्त करो और अजनबी माबूदों की
पैरवी करके उन की ख़िदमत मत करो! फिर तुम उस
मुल्क में रहोगे जो मैं ने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा
को बख़्श दिया था। लेकिन तुम ने न तवज्जुह दी, न
मेरी सुनी। 16 यूनदब बिन रैकाब की औलाद अपने
बाप की हिदायात पर पूरी उतरी है, लेकिन इस क़ौम
ने मेरी नहीं सुनी।'

17 इस लिए रब जो लश्करों का और इस्राईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है, 'सुनो! मैं यहूदाह पर और
यरूशलम के हर बाशिन्दे पर वह तमाम आफ़त
नाज़िल करूँगा जिस का एलान मैं ने किया है। गो
मैं उन से हमकलाम हुआ तो भी उन्हों ने न सुनी। मैं
ने उन्हें बुलाया, लेकिन उन्हों ने जवाब न दिया'।"

18 लेकिन रैकाबियों से यरमियाह ने कहा, "रब्ब-
उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है,
'तुम अपने बाप यूनदब के हुक्म पर पूरे उतर कर
उस की हर हिदायत और हर हुक्म पर अमल करते
हो।' 19 इस लिए रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का
ख़ुदा है फ़रमाता है, 'यूनदब बिन रैकाब की औलाद
में से हमेशा कोई न कोई होगा जो मेरे हुज़ूर ख़िदमत
करेगा'।"

रब के घर में यरमियाह की किताब की तिलावत

36 1 यहूदाह के बादशाह यहूयक़ीम बिन
यूसियाह की हुकूमत के चौथे साल में रब
का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ, 2 "तूमार ले
कर उस में इस्राईल, यहूदाह और बाक़ी तमाम क़ौमों
के बारे में वह तमाम पैग़ामात क़लमबन्द कर जो मैं
ने यूसियाह की हुकूमत से ले कर आज तक तुझ पर
नाज़िल किए हैं। 3 शायद यहूदाह के घराने में हर एक
अपनी बुरी राह से बाज़ आ कर वापस आए अगर
उस आफ़त की पूरी ख़बर उन तक पहुँचे जो मैं इस
क़ौम पर नाज़िल करने को हूँ। फिर मैं उन की बेदीनी
और गुनाह को मुआफ़ करूँगा।"

4 चुनाँचे यरमियाह ने बारूक बिन नैरियाह को बुला
कर उस से वह तमाम पैग़ामात तूमार में लिखवाए जो
रब ने उस पर नाज़िल किए थे। 5 फिर यरमियाह ने
बारूक से कहा, "मुझे नज़रबन्द किया गया है, इस
लिए मैं रब के घर में नहीं जा सकता। 6 लेकिन आप
तो जा सकते हैं। रोज़े के दिन यह तूमार अपने साथ
ले कर रब के घर में जाएँ। हाज़िरीन के सामने रब
की उन तमाम बातों को पढ़ कर सुनाएँ जो मैं ने आप
से लिखवाई हैं। सब को तूमार की बातें सुनाएँ, उन्हें
भी जो यहूदाह की दीगर आबादियों से यहाँ पहुँचे
हैं। 7 शायद वह इल्तिजा करें कि रब उन पर रहम
करे। शायद हर एक अपनी बुरी राह से बाज़ आ कर
वापस आए। क्यूँकि जो ग़ज़ब इस क़ौम पर नाज़िल
होने वाला है और जिस का एलान रब कर चुका है
वह बहुत सख़्त है।"

8 बारूक बिन नैरियाह ने ऐसा ही किया। यरमियाह
नबी की हिदायत के मुताबिक़ उस ने रब के घर
में तूमार में दर्ज रब के कलाम की तिलावत की।
9 उस वक़्त लोग रोज़ा रखे हुए थे, क्यूँकि बादशाह
यहूयक़ीम बिन यूसियाह की हुकूमत के पाँचवें

साल और नवें महीने [o]में एलान किया गया था कि
यरूशलम के बाशिन्दे और यहूदाह के दीगर शहरों से
आए हुए तमाम लोग रब के हुज़ूर रोज़ा रखें। 10 जब
बारूक ने तूमार की तिलावत की तो तमाम लोग
हाज़िर थे। उस वक़्त वह रब के घर में शाही मुहर्रिर
जमरियाह बिन साफ़न के कमरे में बैठा था। यह
कमरा रब के घर के ऊपर वाले सहन में था, और
सहन का नया दरवाज़ा वहाँ से दूर नहीं था।

11 तूमार में दर्ज रब के तमाम पैग़ामात सुन कर
जमरियाह बिन साफ़न का बेटा मीकायाह 12 शाही
महल में मीरमुन्शी के दफ़्तर में चला गया। वहाँ तमाम
सरकारी अफ़्सर बैठे थे यानी इलीसमा मीरमुन्शी,
दिलायाह बिन समायाह, इल्नातन बिन अक्बोर,
जमरियाह बिन साफ़न, सिदक़ियाह बिन हननियाह
और बाक़ी तमाम मुलाज़िम। 13 मीकायाह ने उन्हें
सब कुछ सुनाया जो बारूक ने तूमार की तिलावत
करके पेश किया था। 14 तब तमाम बुज़ुर्गों ने यहूदी
बिन नतनियाह बिन सलमियाह बिन कूशी को बारूक
के पास भेज कर उसे इत्तिला दी, "जिस तूमार की
तिलावत आप ने लोगों के सामने की उसे ले कर
हमारे पास आएँ।" चुनाँचे बारूक बिन नैरियाह हाथ
में तूमार को थामे हुए उन के पास आया।

15 अफ़्सरों ने कहा, "ज़रा बैठ कर हमारे लिए भी
तूमार की तिलावत करें।" चुनाँचे बारूक ने उन्हें
सब कुछ पढ़ कर सुना दिया। 16 यरमियाह की तमाम
पेशगोइयाँ सुनते ही वह घबरा गए और डर के मारे
एक दूसरे को देखने लगे। फिर उन्हों ने बारूक से
कहा, "लाज़िम है कि हम बादशाह को इन तमाम
बातों से आगाह करें। 17 हमें ज़रा बताएँ, आप ने
यह तमाम बातें किस तरह क़लमबन्द कीं? क्या
यरमियाह ने सब कुछ ज़बानी आप को पेश किया?"
18 बारूक ने जवाब दिया, "जी, वह मुझे यह तमाम
बातें सुनाता गया, और मैं सब कुछ सियाही से इस
तूमार में दर्ज करता गया।"

19 यह सुन कर अफ़्सरों ने बारूक से कहा, "अब
चले जाएँ, आप और यरमियाह दोनों छुप जाएँ! किसी
को भी पता न चले कि आप कहाँ हैं।"

यहूयक़ीम तूमार को जला देता है

20 अफ़्सरों ने तूमार को शाही मीरमुन्शी इलीसमा के
दफ़्तर में महफ़ूज़ रख दिया, फिर दरबार में दाख़िल
हो कर बादशाह को सब कुछ बता दिया। 21 बादशाह
ने यहूदी को तूमार ले आने का हुक्म दिया। यहूदी,
इलीसमा मीरमुन्शी के दफ़्तर से तूमार को ले कर
बादशाह और तमाम अफ़्सरों की मौजूदगी में उस
की तिलावत करने लगा।

22 चूँकि नवाँ महीना [p]था इस लिए बादशाह महल
के उस हिस्से में बैठा था जो सर्दियों के मौसम के
लिए बनाया गया था। उस के सामने पड़ी अंगीठी
में आग जल रही थी। 23 जब भी यहूदी तीन या चार
कालम पढ़ने से फ़ारिग़ हुआ तो बादशाह ने मुन्शी की
छुरी ले कर उन्हें तूमार से काट लिया और आग में
फैंक दिया। यहूदी पढ़ता और बादशाह काटता गया।
आख़िरकार पूरा तूमार राख हो गया था।

24 गो बादशाह और उस के तमाम मुलाज़िमों ने
यह तमाम बातें सुनीं तो भी न वह घबराए, न उन्हों
ने परेशान हो कर अपने कपड़े फाड़े। 25 और गो
इल्नातन, दिलायाह और जमरियाह ने बादशाह से
मिन्नत की कि वह तूमार को न जलाए तो भी उस
ने उन की न मानी 26 बल्कि बाद में यरहमिएल
शाहज़ादा, सिरायाह बिन अज़्रीएल और सलमियाह
बिन अब्दिएल को भेजा ताकि वह बारूक मुन्शी और
यरमियाह नबी को गिरिफ़्तार करें। लेकिन रब ने उन्हें
छुपाए रखा था।

अल्लाह का कलाम दुबारा क़लमबन्द किया जाता है

27 बादशाह के तूमार को जलाने के बाद रब
यरमियाह से दुबारा हमकलाम हुआ,

---

[o]नवम्बर ता दिसम्बर।

[p]तक़रीबन दिसम्बर।

28 “नया तूमार ले कर उस में वही तमाम पैग़ामात
क़लमबन्द कर जो उस तूमार में दर्ज थे जिसे शाह-ए-
यहूदाह ने जला दिया था। 29 साथ साथ यहूयक़ीम
के बारे में एलान कर कि रब फ़रमाता है, ‘तू ने
तूमार को जला कर यरमियाह से शिकायत की कि
तू ने इस किताब में क्यूँ लिखा है कि शाह-ए-बाबल
ज़रूर आ कर इस मुल्क को तबाह करेगा, और इस
में न इन्सान, न हैवान रहेगा?’ 30 चुनाँचे यहूदाह के
बादशाह के बारे में रब का फ़ैसला सुन!

आइन्दा उस के ख़ानदान का कोई भी फ़र्द दाऊद
के तख़्त पर नहीं बैठेगा। यहूयक़ीम की लाश बाहर
फैंकी जाएगी, और वहाँ वह खुले मैदान में पड़ी
रहेगी। कोई भी उसे दिन की तपती गर्मी या रात
की शदीद सर्दी से बचाए नहीं रखेगा। 31 मैं उसे उस
के बच्चों और मुलाज़िमों समेत उन की बेदीनी का
मुनासिब अज्र दूँगा। क्यूँकि मैं उन पर और यरूशलम
और यहूदाह के बाशिन्दों पर वह तमाम आफ़त
नाज़िल करूँगा जिस का एलान मैं कर चुका हूँ।
अफ़्सोस, उन्हों ने मेरी नहीं सुनी।”

32 चुनाँचे यरमियाह ने नया तूमार ले कर उसे
बारूक बिन नैरियाह को दे दिया। फिर उस ने बारूक
मुन्शी से वह तमाम पैग़ामात दुबारा लिखवाए जो
उस तूमार में दर्ज थे जिसे शाह-ए-यहूदाह यहूयक़ीम
ने जला दिया था। उन के इलावा मज़ीद बहुत से
पैग़ामात का इज़ाफ़ा हुआ।

मिस्र सिदक़ियाह की मदद नहीं कर सकता

37 1 यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन [q]बिन
यहूयक़ीम को तख़्त से उतारने के बाद
शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र ने सिदक़ियाह बिन
यूसियाह को तख़्त पर बिठा दिया। 2 लेकिन न
सिदक़ियाह, न उस के अफ़्सरों या अवाम ने उन
पैग़ामात पर ध्यान दिया जो रब ने यरमियाह नबी
की मारिफ़त फ़रमाए थे।

3 एक दिन सिदक़ियाह बादशाह ने यहूकल बिन
सलमियाह और इमाम सफ़नियाह बिन मासियाह को
यरमियाह के पास भेजा ताकि वह गुज़ारिश करें,
“मेहरबानी करके रब हमारे ख़ुदा से हमारी शफ़ाअत
करें।”

4 यरमियाह को अब तक क़ैद में डाला नहीं गया
था, इस लिए वह आज़ादी से लोगों में चल फिर
सकता था। 5 उस वक़्त फ़िरऔन की फ़ौज मिस्र
से निकल कर इस्राईल की तरफ़ बढ़ रही थी। जब
यरूशलम का मुहासरा करने वाली बाबल की फ़ौज
को यह ख़बर मिली तो वह वहाँ से पीछे हट गई।
6 तब रब यरमियाह नबी से हमकलाम हुआ,

7 “रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि शाह-ए-
यहूदाह ने तुम्हें मेरी मर्ज़ी दरयाफ़्त करने भेजा है। उसे
जवाब दो कि फ़िरऔन की जो फ़ौज तुम्हारी मदद
करने के लिए निकल आई है वह अपने मुल्क वापस
लौटने को है। 8 फिर बाबल के फ़ौजी वापस आ कर
यरूशलम पर हम्ला करेंगे। वह इसे अपने क़ब्ज़े में ले
कर नज़र-ए-आतिश कर देंगे। 9 क्यूँकि रब फ़रमाता
है कि यह सोच कर धोका मत खाओ कि बाबल की
फ़ौज ज़रूर हमें छोड़ कर चली जाएगी। ऐसा कभी
नहीं होगा! 10 ख़्वाह तुम हम्लाआवर पूरी बाबली फ़ौज
को शिकस्त क्यूँ न देते और सिर्फ़ ज़ख़्मी आदमी बचे
रहते तो भी तुम नाकाम रहते, तो भी यह बाज़ एक
आदमी अपने ख़ैमों में से निकल कर यरूशलम को
नज़र-ए-आतिश करते।”

यरमियाह को क़ैद में डाला जाता है

11 जब फ़िरऔन की फ़ौज इस्राईल की तरफ़ बढ़ने
लगी तो बाबल के फ़ौजी यरूशलम को छोड़ कर
पीछे हट गए। 12 उन दिनों में यरमियाह बिनयमीन के
क़बाइली इलाक़े के लिए रवाना हुआ, क्यूँकि वह
अपने रिश्तेदारों के साथ कोई मौरूसी मिलकियत
तक़्सीम करना चाहता था। लेकिन जब वह शहर

---

[q]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ कूनियाह मुस्तामल है।

से निकलते हुए 13 बिनयमीन के दरवाज़े तक पहुँच
गया तो पहरेदारों का एक अफ़सर उसे पकड़ कर
कहने लगा, “तुम भगोड़े हो! तुम बाबल की फ़ौज
के पास जाना चाहते हो!” अफ़सर का नाम इरियाह
बिन सलमियाह बिन हननियाह था। 14 यरमियाह ने
एतिराज़ किया, “यह झूट है, मैं भगोड़ा नहीं हूँ! मैं
बाबल की फ़ौज के पास नहीं जा रहा।” लेकिन
इरियाह न माना बल्कि उसे गिरिफ़्तार करके सरकारी
अफ़सरों के पास ले गया। 15 उसे देख कर उन्हें
यरमियाह पर ग़ुस्सा आया, और वह उस की पिटाई
करा कर उसे शाही मुहर्रिर यूनतन के घर में लाए
जिसे उन्हों ने क़ैदख़ाना बनाया था। 16 वहाँ उसे एक
ज़मीनदोज़ कमरे में डाल दिया गया जो पहले हौज़
था और जिस की छत मेहराबदार थी। वह मुतअद्दिद
दिन उस में बन्द रहा।

17 एक दिन सिदक़ियाह ने उसे महल में बुलाया।
वहाँ अलाहिदगी में उस से पूछा, “क्या रब की तरफ़
से मेरे लिए कोई पैग़ाम है?” यरमियाह ने जवाब
दिया, “जी हाँ। आप को शाह-ए-बाबल के हवाले
किया जाएगा।” 18 तब यरमियाह ने सिदक़ियाह
बादशाह से अपनी बात जारी रख कर कहा, “मुझ
से क्या जुर्म हुआ है? मैं ने आप के अफ़सरों और
अवाम का क्या क़ुसूर किया है कि मुझे जेल में
डलवा दिया? 19 आप के वह नबी कहाँ हैं जिन्हों
ने आप को पेशगोई सुनाई कि शाह-ए-बाबल न आप
पर, न इस मुल्क पर हम्ला करेगा? 20 ऐ मेरे मालिक
और बादशाह, मेहरबानी करके मेरी बात सुनें, मेरी
गुज़ारिश पूरी करें! मुझे यूनतन मुहर्रिर के घर में वापस
न भेजें, वर्ना मैं मर जाऊँगा।”

21 तब सिदक़ियाह बादशाह ने हुक्म दिया कि
यरमियाह को शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में रखा जाए।
उस ने यह हिदायत भी दी कि जब तक शहर में रोटी
दस्तयाब हो यरमियाह को नानबाई-गली से हर रोज़
एक रोटी मिलती रहे। चुनाँचे यरमियाह मुहाफ़िज़ों के
सहन में रहने लगा।

यरमियाह को सज़ा-ए-मौत देने का इरादा

38 1 सफ़तियाह बिन मत्तान, जिदलियाह बिन
फ़श्हूर, यूकल बिन सलमियाह और फ़श्हूर
बिन मल्कियाह को मालूम हुआ कि यरमियाह तमाम
लोगों को बता रहा है 2 कि रब फ़रमाता है,

“अगर तुम तलवार, काल या वबा से मरना चाहो
तो इस शहर में रहो। लेकिन अगर तुम अपनी जान
को बचाना चाहो तो शहर से निकल कर अपने आप
को बाबल की फ़ौज के हवाले करो। जो कोई यह
करे उस की जान छूट जाएगी। [r] 3 क्यूँकि रब फ़रमाता
है कि यरूशलम को ज़रूर शाह-ए-बाबल की फ़ौज
के हवाले किया जाएगा। वह यक़ीनन उस पर क़ब्ज़ा
करेगा।”

4 तब मज़कूरा अफ़सरों ने बादशाह से कहा, “इस
आदमी को सज़ा-ए-मौत दीनी चाहिए, क्यूँकि यह
शहर में बचे हुए फ़ौजियों और बाक़ी तमाम लोगों
को ऐसी बातें बता रहा है जिन से वह हिम्मत हार
गए हैं। यह आदमी क़ौम की बहबूदी नहीं चाहता
बल्कि उसे मुसीबत में डालने पर तुला रहता है।”

5 सिदक़ियाह बादशाह ने जवाब दिया, “ठीक है,
वह आप के हाथ में है। मैं आप को रोक नहीं
सकता।” 6 तब उन्हों ने यरमियाह को पकड़ कर
मल्कियाह शाहज़ादा के हौज़ में डाल दिया। यह हौज़
शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में था। रस्सों के ज़रीए उन्हों
ने यरमियाह को उतार दिया। हौज़ में पानी नहीं था
बल्कि सिर्फ़ कीचड़, और यरमियाह कीचड़ में धँस
गया।

7 लेकिन एथोपिया के एक दरबारी बनाम अबद-
मलिक को पता चला कि यरमियाह के साथ क्या
कुछ किया जा रहा है। जब बादशाह शहर के दरवाज़े
बनाम बिनयमीन में कचहरी लगाए बैठा था 8 तो

---

[r] लफ़्ज़ी तर्जुमा : वह ग़नीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

अबद-मलिक शाही महल से निकल कर उस के
पास गया और कहा, 9 “मेरे आक़ा और बादशाह,
जो सुलूक इन आदमियों ने यरमियाह के साथ किया
है वह निहायत बुरा है। उन्हों ने उसे एक हौज़ में फैंक
दिया है जहाँ वह भूका मरेगा। क्यूँकि शहर में रोटी
ख़त्म हो गई है।”
10 यह सुन कर बादशाह ने अबद-मलिक को हुक्म
दिया, “इस से पहले कि यरमियाह मर जाए यहाँ से
30 आदमियों को ले कर नबी को हौज़ से निकाल
दें।” 11 अबद-मलिक आदमियों को अपने साथ ले
कर शाही महल के गोदाम के नीचे के एक कमरे में
गया। वहाँ से उस ने कुछ पुराने चीथड़े और घिसे
फटे कपड़े चुन कर उन्हें रस्सों के ज़रीए हौज़ में
यरमियाह तक उतार दिया। 12 अबद-मलिक बोला,
“रस्से बांधने से पहले यह पुराने चीथड़े और घिसे
फटे कपड़े बग़ल में रखें।” यरमियाह ने ऐसा ही
किया, 13 तो वह उसे रस्सों से खैंच कर हौज़ से
निकाल लाए। इस के बाद यरमियाह शाही मुहाफ़िज़ों
के सहन में रहा।

सिदक़ियाह को आख़िरी मर्तबा आगाह किया जाता है

14 एक दिन सिदक़ियाह बादशाह ने यरमियाह को
रब के घर के तीसरे दरवाज़े के पास बुला कर उस से
कहा, “मैं आप से एक बात दरयाफ़्त करना चाहता
हूँ। मुझे इस का साफ़ जवाब दें, कोई भी बात मुझ से
मत छुपाएँ।” 15 यरमियाह ने एतिराज़ किया, “अगर
मैं आप को साफ़ जवाब दूँ तो आप मुझे मार डालेंगे।
और अगर मैं आप को मश्वरा दूँ भी तो आप उसे
क़बूल नहीं करेंगे।” 16 तब सिदक़ियाह बादशाह ने
अलाहिदगी में क़सम खा कर यरमियाह से वादा
किया, “रब की हयात की क़सम जिस ने हमें जान
दी है, न मैं आप को मार डालूँगा, न आप के जानी
दुश्मनों के हवाले करूँगा।”
17 तब यरमियाह बोला, “रब जो लश्करों का और
इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, ‘अपने आप को
शाह-ए-बाबल के अफ़सरान के हवाले कर। फिर
तेरी जान छूट जाएगी और यह शहर नज़र-ए-आतिश
नहीं हो जाएगा। तू और तेरा ख़ानदान जीता रहेगा।
18 दूसरी सूरत में इस शहर को बाबल के हवाले किया
जाएगा और फ़ौजी इसे नज़र-ए-आतिश करेंगे। तू भी
उन के हाथ से नहीं बचेगा’।”
19 लेकिन सिदक़ियाह बादशाह ने एतिराज़ किया,
“मुझे उन हमवतनों से डर लगता है जो ग़द्दारी करके
बाबल की फ़ौज के पास भाग गए हैं। हो सकता है
कि बाबल के फ़ौजी मुझे उन के हवाले करें और
वह मेरे साथ बदसुलूकी करें।” 20 यरमियाह ने जवाब
दिया, “वह आप को उन के हवाले नहीं करेंगे। रब
की सुन कर वह कुछ करें जो मैं ने आप को बताया
है। फिर आप की सलामती होगी और आप की जान
छूट जाएगी। 21 लेकिन अगर आप शहर से निकल
कर हथियार डालने के लिए तय्यार नहीं हैं तो फिर
यह पैग़ाम सुनें जो रब ने मुझ पर ज़ाहिर किया है!
22 शाही महल में जितनी ख़वातीन बच गई हैं उन
सब को शाह-ए-बाबल के अफ़सरों के पास पहुँचाया
जाएगा। तब यह ख़वातीन आप के बारे में कहेंगी,
‘हाय, जिन आदमियों पर तू पूरा एतिमाद रखता था
वह फ़रेब दे कर तुझ पर ग़ालिब आ गए हैं। तेरे पाँओ
दलदल में धँस गए हैं, लेकिन यह लोग ग़ाइब हो गए
हैं।’ 23 हाँ, तेरे तमाम बाल-बच्चों को बाहर बाबल की
फ़ौज के पास लाया जाएगा। तू ख़ुद भी उन के हाथ से
नहीं बचेगा बल्कि शाह-ए-बाबल तुझे पकड़ लेगा।
यह शहर नज़र-ए-आतिश हो जाएगा।”
24 फिर सिदक़ियाह ने यरमियाह से कहा,
“ख़बरदार! किसी को भी यह मालूम न हो कि हम ने
क्या क्या बातें की हैं, वर्ना आप मर जाएंगे। 25 जब
मेरे अफ़सरों को पता चले कि मेरी आप से गुफ़्तगु
हुई है तो वह आप के पास आ कर पूछेंगे, ‘तुम ने
बादशाह से क्या बात की, और बादशाह ने तुम से
क्या कहा? हमें साफ़ जवाब दो और झूट न बोलो,
वर्ना हम तुम्हें मार डालेंगे।’ 26 जब वह इस तरह
की बातें करेंगे तो उन्हें सिर्फ़ इतना सा बताएँ, ‘मैं

बादशाह से मिन्नत कर रहा था कि वह मुझे यूनतन
के घर में वापस न भेजें, वर्ना मैं मर जाऊँगा'।"
27 ऐसा ही हुआ। तमाम सरकारी अफ़्सर यरमियाह
के पास आए और उस से सवाल करने लगे। लेकिन
उस ने उन्हें सिर्फ़ वह कुछ बताया जो बादशाह ने उसे
कहने को कहा था। तब वह ख़ामोश हो गए, क्यूँकि
किसी ने भी उस की बादशाह से गुफ़्तगु नहीं सुनी
थी।
28 इस के बाद यरमियाह यरूशलम की शिकस्त
तक शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में क़ैदी रहा।

यरूशलम की शिकस्त

39 1 यरूशलम यूँ दुश्मन के हाथ में आया :
यहूदाह के बादशाह के नवें साल और 10वें
महीने [s]में शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र अपनी तमाम
फ़ौज ले कर यरूशलम पहुँचा और शहर का मुहासरा
करने लगा। 2 सिदक़ियाह के 11वें साल के चौथे
महीने और नवें दिन [t]दुश्मन ने फ़सील में रख़ना डाल
दिया। 3 तब नबूकद्नज़्ज़र के तमाम आला अफ़्सर
शहर में आ कर उस के दरमियानी दरवाज़े में बैठ
गए। उन में नैर्गल-सराज़र जो रब-माग था, सम्गर-नबू,
सर-सकीम जो रब-सारीस था और शाह-ए-बाबल के
बाक़ी बुज़ुर्ग शामिल थे।
4 उन्हें देख कर यहूदाह का बादशाह सिदक़ियाह
और उस के तमाम फ़ौजी भाग गए। रात के वक़्त
वह फ़सील के उस दरवाज़े से निकले जो शाही बाग़
के साथ मुल्हिक़ दो दीवारों के बीच में था। वह
वादी-ए-यर्दन की तरफ़ दौड़ने लगे, 5 लेकिन बाबल
के फ़ौजियों ने उन का ताक़्क़ुब करके सिदक़ियाह
को यरीहू के मैदानी इलाक़े में पकड़ लिया। फिर
उसे मुल्क-ए-हमात के शहर रिब्ला में शाह-ए-बाबल
नबूकद्नज़्ज़र के पास लाया गया, और वहीं उस ने
सिदक़ियाह पर फ़ैसला सादिर किया। 6 सिदक़ियाह
के देखते देखते शाह-ए-बाबल ने रिब्ला में उस के
बेटों को क़त्ल किया। साथ साथ उस ने यहूदाह
के तमाम बुज़ुर्गों को भी मौत के घाट उतार दिया।
7 फिर उस ने सिदक़ियाह की आँखें निकलवा कर
उसे पीतल की ज़न्जीरों में जकड़ लिया और बाबल
को ले जाने के लिए मह्फ़ूज़ रखा।
8 बाबल के फ़ौजियों ने शाही महल और दीगर लोगों
के घरों को जला कर यरूशलम की फ़सील को गिरा
दिया। 9 शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़्सर नबूज़रादान ने
सब को जिलावतन कर दिया जो यरूशलम और
यहूदाह में पीछे रह गए थे। वह भी उन में शामिल
थे जो जंग के दौरान ग़द्दारी करके शाह-ए-बाबल के
पीछे लग गए थे। 10 लेकिन नबूज़रादान ने सब से
निचले तब्क़े के बाज़ लोगों को मुल्क-ए-यहूदाह में
छोड़ दिया, ऐसे लोग जिन के पास कुछ नहीं था।
उन्हें उस ने उस वक़्त अंगूर के बाग़ और खेत दिए।
11–12 नबूकद्नज़्ज़र बादशाह ने शाही मुहाफ़िज़ों के
अफ़्सर नबूज़रादान को हुक्म दिया, "यरमियाह को
अपने पास रखें। उस का ख़याल रखें। उसे नुक़्सान
न पहुँचाएँ बल्कि जो भी दरख़्वास्त वह करे उसे पूरा
करें।"
13 चुनाँचे शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़्सर नबूज़रादान
ने किसी को यरमियाह के पास भेजा। उस वक़्त
नबूशज़्बान जो रब-सारीस था, नैर्गल-सराज़र जो
रब-माग था और शाह-ए-बाबल के बाक़ी अफ़्सर
नबूज़रादान के पास थे। 14 यरमियाह अब तक शाही
मुहाफ़िज़ों के सहन में गिरिफ़्तार था। उन्हों ने हुक्म
दिया कि उसे वहाँ से निकाल कर जिदलियाह बिन
अख़ीक़ाम बिन साफ़न के हवाले कर दिया जाए
ताकि वह उसे उस के अपने घर पहुँचा दे। यूँ
यरमियाह अपने लोगों के दरमियान बसने लगा।

अबद-मलिक के लिए ख़ुशख़बरी

15 जब यरमियाह अभी शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में
गिरिफ़्तार था तो रब उस से हमकलाम हुआ,

---

[s]दिसम्बर ता जन्वरी।

[t]18 जुलाई।

16 “जा कर एथोपिया के अबद-मलिक को बता,
‘रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता
है कि देख, मैं इस शहर के साथ वह सब कुछ
करने को हूँ जिस का एलान मैं ने किया था।
मैं उस पर मेहरबानी नहीं करूँगा बल्कि उसे
नुक़्सान पहुँचाऊँगा। तू अपनी आँखों से यह देखेगा।
17 लेकिन रब फ़रमाता है कि तुझे मैं उस दिन
छुटकारा दूँगा, तुझे उन के हवाले नहीं किया जाएगा
जिन से तू डरता है। 18 मैं ख़ुद तुझे बचाऊँगा। चूँकि तू
ने मुझ पर भरोसा किया इस लिए तू तलवार की ज़द
में नहीं आएगा बल्कि तेरी जान छूट जाएगी। [ᵘ]यह
रब का फ़रमान है’।”

यरमियाह को आज़ाद किया जाता है

40 1 आज़ाद होने के बाद भी रब का
कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ। शाही
मुहाफ़िज़ों के अफ़्सर नबूज़रादान ने उसे रामा में रिहा
किया था। क्यूँकि जब यरूशलम और बाक़ी यहूदाह
के क़ैदियों को मुल्क-ए-बाबल में ले जाने के लिए
जमा किया गया तो मालूम हुआ कि यरमियाह भी
ज़न्जीरों में जकड़ा हुआ उन में शामिल है। 2 तब
नबूज़रादान ने यरमियाह को बुला कर उस से कहा,
“रब आप के ख़ुदा ने एलान किया था कि इस जगह
पर आफ़त आएगी। 3 और अब वह यह आफ़त उसी
तरह ही लाया जिस तरह उस ने फ़रमाया था। सब
कुछ इस लिए हुआ कि आप की क़ौम रब का गुनाह
करती रही और उस की न सुनी। 4 लेकिन आज मैं वह
ज़न्जीरें खोल देता हूँ जिन से आप के हाथ जकड़े हुए
हैं। आप आज़ाद हैं। अगर चाहें तो मेरे साथ बाबल
जाएँ। तब मैं ही आप की निगरानी करूँगा। बाक़ी
आप की मर्ज़ी। अगर यहीं रहना पसन्द करेंगे तो यहीं
रहें। पूरे मुल्क में जहाँ भी जाना चाहें जाएँ। कोई आप
को नहीं रोकेगा।”

5 यरमियाह अब तक झिजक रहा था, इस
लिए नबूज़रादान ने कहा, “फिर जिदलियाह बिन
अख़ीक़ाम बिन साफ़न के पास चले जाएँ! शाह-ए-
बाबल ने उसे सूबा यहूदाह के शहरों पर मुक़र्रर किया
है। उस के साथ रहें। या फिर जहाँ भी रहना पसन्द
करें वहीं रहें।”

नबूज़रादान ने यरमियाह को कुछ ख़ुराक और एक
तुह्फ़ा दे कर उसे रुख़्सत कर दिया। 6 जिदलियाह
मिस्फ़ाह में ठहरा हुआ था। यरमियाह उस के पास
जा कर मुल्क के बचे हुए लोगों के बीच में बसने
लगा।

जिदलियाह को क़त्ल करने की साज़िशें

7 दीहात में अब तक यहूदाह के कुछ फ़ौजी अफ़्सर
अपने दस्तों समेत छुपे रहते थे। जब उन्हें ख़बर मिली
कि शाह-ए-बाबल ने जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम को
यहूदाह का गवर्नर बना कर उन ग़रीब आदमियों और
बाल-बच्चों पर मुक़र्रर किया है जो जिलावतन नहीं हुए
हैं 8 तो वह मिस्फ़ाह में जिदलियाह के पास आए।
अफ़्सरों के नाम इस्माईल बिन नतनियाह, क़रीह
के बेटे यूहनान और यूनतन, सिरायाह बिन तन्हूमत,
ईफी नतूफ़ाती के बेटे और याज़नियाह बिन माकाती
थे। उन के फ़ौजी भी साथ आए। 9 जिदलियाह बिन
अख़ीक़ाम बिन साफ़न ने क़सम खा कर उन से वादा
किया, “बाबल के ताबे हो जाने से मत डरना! मुल्क
में आबाद हो कर शाह-ए-बाबल की ख़िदमत करें
तो आप की सलामती होगी। 10 मैं ख़ुद मिस्फ़ाह में
ठहर कर आप की सिफ़ारिश करूँगा जब बाबल के
नुमाइन्दे आएँगे। इतने में अंगूर, मौसम-ए-गर्मा का
फल और ज़ैतून की फ़सलें जमा करके अपने बर्तनों
में मह्फ़ूज़ रखें। उन शहरों में आबाद रहें जिन पर
आप ने क़ब्ज़ा कर लिया है।”

11 यहूदाह के मुतअद्दिद बाशिन्दे मोआब, अम्मोन,
अदोम और दीगर पड़ोसी ममालिक में हिज्रत कर

[ᵘ]लफ़्ज़ी तर्जुमा : तू ग़नीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

गए थे। अब जब उन्हें इत्तिला मिली कि शाह-ए-
बाबल ने कुछ बचे हुए लोगों को यहूदाह में छोड़ कर
जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम बिन साफ़न को गवर्नर
बना दिया है 12 तो वह सब यहूदाह में वापस आए।
जिन ममालिक में भी वह मुन्तशिर हुए थे वहाँ से
वह मिस्फ़ाह आए ताकि जिदलियाह से मिलें। उस
मौसम-ए-गर्मा में वह अंगूर और बाक़ी फल की बड़ी
फ़सल जमा कर सके।

13 एक दिन यूहनान बिन क़रीह और वह तमाम
फ़ौजी अफ़्सर जो अब तक दीहात में ठहरे हुए थे
जिदलियाह से मिलने आए। 14 मिस्फ़ाह में पहुँच कर
वह जिदलियाह से कहने लगे, "क्या आप को नहीं
मालूम कि अम्मोन के बादशाह बालीस ने इस्माईल
बिन नतनियाह को आप को क़त्ल करने के लिए भेजा
है?" लेकिन जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम ने उन की
बात का यक़ीन न किया। 15 तब यूहनान बिन क़रीह
मिस्फ़ाह आया और अलाहिदगी में जिदलियाह से
मिला। वह बोला, "मुझे इस्माईल बिन नतनियाह के
पास जा कर उसे मार देने की इजाज़त दें। किसी को
भी पता नहीं चलेगा। क्या ज़रूरत है कि वह आप को
क़त्ल करे? अगर वह इस में कामयाब हो जाए तो
आप के पास जमाशुदा हमवतन सब के सब मुन्तशिर
हो जाएंगे और यहूदाह का बचा हुआ हिस्सा हलाक
हो जाएगा।" 16 जिदलियाह ने यूहनान को डाँट कर
कहा, "ऐसा मत करना! जो कुछ आप इस्माईल के
बारे में बता रहे हैं वह झूट है।"

इस्माईल जिदलियाह गवर्नर को क़त्ल करता है

41 1 इस्माईल बिन नतनियाह बिन इलीसमा
शाही नस्ल का था और पहले शाह-ए-
यहूदाह का आला अफ़्सर था। सातवें महीने [v]में
वह दस आदमियों को अपने साथ ले कर मिस्फ़ाह
में जिदलियाह से मिलने आया। जब वह मिल कर
खाना खा रहे थे 2 तो इस्माईल और उस के दस
आदमी अचानक उठे और अपनी तलवारों को खैंच
कर जिदलियाह को मार डाला। यूँ इस्माईल ने उस
आदमी को क़त्ल किया जिसे बाबल के बादशाह ने
सूबा यहूदाह पर मुक़र्रर किया था। 3 उस ने मिस्फ़ाह
में जिदलियाह के साथ रहने वाले तमाम हमवतनों
को भी क़त्ल किया और वहाँ ठहरने वाले बाबल के
फ़ौजियों को भी।

4 अगले दिन जब किसी को मालूम नहीं था कि
जिदलियाह को क़त्ल किया गया है 5 तो 80 आदमी
वहाँ पहुँचे जो सिकम, सैला और सामरिया से आ
कर रब के तबाहशुदा घर में उस की परस्तिश करने
जा रहे थे। उन के पास ग़ल्ला और बख़ूर की क़ुर्बानियाँ
थीं, और उन्हों ने ग़म के मारे अपनी दाढ़ियाँ मुंडवा
कर अपने कपड़े फाड़ लिए और अपनी जिल्द को
ज़ख़्मी कर दिया था। 6 इस्माईल रोते रोते मिस्फ़ाह से
निकल कर उन से मिलने आया। जब वह उन के पास
पहुँचा तो कहने लगा, "जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम
के पास आओ और देखो कि क्या हुआ है!"

7 जूँ ही वह शहर में दाख़िल हुए तो इस्माईल और
उस के साथियों ने उन्हें क़त्ल करके एक हौज़ में
फैंक दिया। 8 सिर्फ़ दस आदमी बच गए जब उन्हों
ने इस्माईल से कहा, "हमें मत क़त्ल करना, क्यूँकि
हमारे पास गन्दुम, जौ और शहद के ज़ख़ीरे हैं जो हम
ने खुले मैदान में कहीं छुपा रखे हैं।" यह सुन कर उस
ने उन्हें दूसरों की तरह न मारा बल्कि ज़िन्दा छोड़ा।

9 जिस हौज़ में इस्माईल ने मज़कूरा आदमियों
की लाशें फैंक दीं वह बहुत बड़ा था। यहूदाह
के बादशाह आसा ने उसे उस वक़्त बनवाया था
जब इस्राईली बादशाह बाशा से जंग थी और वह
मिस्फ़ाह को मज़बूत बना रहा था। इस्माईल ने इसी
हौज़ को मक़्तूलों से भर दिया था। 10 मिस्फ़ाह के
बाक़ी लोगों को उस ने क़ैदी बना लिया। उन में
यहूदाह के बादशाह की बेटियाँ और बाक़ी वह तमाम
लोग शामिल थे जिन पर शाही मुहाफ़िज़ों के सरदार

---

[v]सितम्बर ता अक्तूबर।

नबूज़रादान ने जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम को मुक़र्रर
किया था। फिर इस्माईल उन सब को अपने साथ ले
कर मुल्क-ए-अम्मोन के लिए रवाना हुआ।
11 लेकिन यूहनान बिन क़रीह और उस के साथी
अफ़सरों को इत्तिला दी गई कि इस्माईल से क्या
जुर्म हुआ है। 12 तब वह अपने तमाम फ़ौजियों को
जमा करके इस्माईल से लड़ने के लिए निकले और
उस का ताक़्क़ुब करते करते उसे जिबऊन के जोहड़
के पास जा लिया। 13 जूँ ही इस्माईल के क़ैदियों ने
यूहनान और उस के अफ़सरों को देखा तो वह ख़ुश
हुए। 14 सब ने इस्माईल को छोड़ दिया और मुड़
कर यूहनान के पास भाग आए। 15 इस्माईल आठ
साथियों समेत फ़रार हुआ और यूहनान के हाथ से
बच कर मुल्क-ए-अम्मोन में चला गया।
16 यूँ मिस्फ़ाह के बचे हुए तमाम लोग जिबऊन में
यूहनान और उस के साथी अफ़सरों के ज़ेर-ए-निगरानी
आए। उन में वह तमाम फ़ौजी, ख़वातीन, बच्चे और
दरबारी शामिल थे जिन्हें इस्माईल ने जिदलियाह को
क़त्ल करने के बाद क़ैदी बनाया था। 17 लेकिन वह
मिस्फ़ाह वापस न गए बल्कि आगे चलते चलते बैत-
लहम के क़रीब के गाँव बनाम सराय-किम्हाम में रुक
गए। वहाँ वह मिस्र के लिए रवाना होने की तय्यारियाँ
करने लगे, 18 क्यूँकि वह बाबल के इन्तिक़ाम से
डरते थे, इस लिए कि जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम
को क़त्ल करने से इस्माईल बिन नतनियाह ने उस
आदमी को मौत के घाट उतारा था जिसे शाह-ए-
बाबल ने यहूदाह का गवर्नर मुक़र्रर किया था।

यरमियाह मिस्र न जाने का मश्वरा देता है

42 1 यूहनान बिन क़रीह, यज़नियाह बिन
हूसायाह और दीगर फ़ौजी अफ़सर बाक़ी
तमाम लोगों के साथ छोटे से ले कर बड़े तक
2 यरमियाह नबी के पास आए और कहने लगे,
“हमारी मिन्नत क़बूल करें और रब अपने ख़ुदा से
हमारे लिए दुआ करें। आप ख़ुद देख सकते हैं कि
गो हम पहले मुतअद्दिद लोग थे, लेकिन अब थोड़े
ही रह गए हैं। 3 दुआ करें कि रब आप का ख़ुदा हमें
दिखाए कि हम कहाँ जाएँ और क्या कुछ करें।”
4 यरमियाह ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं दुआ में
ज़रूर रब आप के ख़ुदा को आप की गुज़ारिश पेश
करूँगा। और जो भी जवाब रब दे वह मैं लफ़्ज़-ब-
लफ़्ज़ आप को बता दूँगा। मैं आप को किसी भी
बात से महरूम नहीं रखूँगा।” 5 उन्हों ने कहा, “रब
हमारा वफ़ादार और क़ाबिल-ए-एतिमाद गवाह है।
अगर हम हर बात पर अमल न करें जो रब आप
का ख़ुदा आप की मारिफ़त हम पर नाज़िल करेगा
तो वही हमारे ख़िलाफ़ गवाही दे। 6 ख़्वाह उस की
हिदायत हमें अच्छी लगे या बुरी, हम रब अपने ख़ुदा
की सुनेंगे। क्यूँकि हम जानते हैं कि जब हम रब अपने
ख़ुदा की सुनें तब ही हमारी सलामती होगी। इसी लिए
हम आप को उस के पास भेज रहे हैं।”
7 दस दिन गुज़रने के बाद रब का कलाम यरमियाह
पर नाज़िल हुआ। 8 उस ने यूहनान, उस के साथी
अफ़सरों और बाक़ी तमाम लोगों को छोटे से ले
कर बड़े तक अपने पास बुला कर 9 कहा, “आप
ने मुझे रब इस्राईल के ख़ुदा के पास भेजा ताकि मैं
आप की गुज़ारिश उस के सामने लाऊँ। अब उस का
फ़रमान सुनें! 10 ‘अगर तुम इस मुल्क में रहो तो मैं
तुम्हें नहीं गिराऊँगा बल्कि तामीर करूँगा, तुम्हें जड़
से नहीं उखाड़ूँगा बल्कि पनीरी की तरह लगा दूँगा।
क्यूँकि मुझे उस मुसीबत पर अफ़्सोस है जिस में मैं
ने तुम्हें मुब्तला किया है। 11 इस वक़्त तुम शाह-ए-
बाबल से डरते हो, लेकिन उस से ख़ौफ़ मत खाना!’
रब फ़रमाता है, ‘उस से दहशत न खाओ, क्यूँकि मैं
तुम्हारे साथ हूँ और तुम्हारी मदद करके उस के हाथ
से छुटकारा दूँगा। 12 मैं तुम पर रहम करूँगा, इस
लिए वह भी तुम पर रहम करके तुम्हें तुम्हारे मुल्क
में वापस आने देगा।
13 लेकिन अगर तुम रब अपने ख़ुदा की सुनने के
लिए तय्यार न हो बल्कि कहो कि हम इस मुल्क में
नहीं रहेंगे 14 बल्कि मिस्र जाएंगे जहाँ न जंग देखेंगे,
न जंगी नरसिंगे की आवाज़ सुनेंगे और न भूके रहेंगे

15 तो रब का जवाब सुनो! ऐ यहूदाह के बचे हुए
लोगो, रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि अगर
तुम मिस्र में जा कर वहाँ पनाह लेने पर तुले हुए हो
16 तो यक़ीन जानो कि जिस तलवार और काल से
तुम डरते हो वह वहीं मिस्र में तुम्हारा पीछा करता
रहेगा। वहाँ जा कर तुम यक़ीनन मरोगे। 17 जितने
भी मिस्र जा कर वहाँ रहने पर तुले हुए हों वह सब
तलवार, काल और मोहलिक बीमारियों की ज़द में
आ कर मर जाएंगे। जिस मुसीबत में मैं उन्हें डाल
दूँगा उस से कोई नहीं बचेगा।'

18 क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा
है फ़रमाता है, 'पहले मेरा सख़्त ग़ज़ब यरूशलम के
बाशिन्दों पर नाज़िल हुआ। अगर तुम मिस्र जाओ तो
मेरा ग़ज़ब तुम पर भी नाज़िल होगा। तुम्हें देख कर
लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और तुम उन की लान-
तान और हिक़ारत का निशाना बनोगे। लानत करने
वाला अपने दुश्मनों के लिए तुम्हारे जैसा अन्जाम
चाहेगा। जहाँ तक तुम्हारे वतन का ताल्लुक़ है, तुम
उसे आइन्दा कभी नहीं देखोगे।'

19 ऐ यहूदाह के बचे हुए लोगो, अब रब आप से
हमकलाम हुआ है। उस का जवाब साफ़ है। मिस्र
को मत जाना! यह बात ख़ूब जान लें कि आज मैं ने
आप को आगाह कर दिया है। 20 आप ने ख़ुद अपनी
जान को ख़तरे में डाल दिया जब आप ने मुझे रब
अपने ख़ुदा के पास भेज कर कहा, 'रब हमारे ख़ुदा से
हमारे लिए दुआ करें। उस का पूरा जवाब हमें सुनाएँ,
क्यूँकि हम उस की तमाम बातों पर अमल करेंगे।'
21 आज मैं ने यह किया है, लेकिन आप रब अपने
ख़ुदा की सुनने के लिए तय्यार नहीं हैं। जो कुछ भी
उस ने मुझे आप को सुनाने को कहा है उस पर आप
अमल नहीं करना चाहते। 22 चुनाँचे अब जान लें कि
जहाँ आप जा कर पनाह लेना चाहते हैं वहाँ आप
तलवार, काल और मोहलिक बीमारियों की ज़द में
आ कर हलाक हो जाएंगे।"

यरमियाह की आगाही को नज़रअन्दाज़ किया जाता है

43 1 यरमियाह ख़ामोश हुआ। जो कुछ भी रब
उन के ख़ुदा ने यरमियाह को उन्हें सुनाने को
कहा था उसे उस ने उन सब तक पहुँचाया था। 2 फिर
अज़रियाह बिन हूसायाह, यूहनान बिन अख़ीक़ाम
और तमाम बदतमीज़ आदमी बोल उठे, "तुम झूट
बोल रहे हो! रब हमारे ख़ुदा ने तुम्हें यह सुनाने को
नहीं भेजा कि मिस्र को न जाओ, न वहाँ आबाद हो
जाओ। 3 इस के पीछे बारूक बिन नैरियाह का हाथ
है। वही तुम्हें हमारे ख़िलाफ़ उकसा रहा है, क्यूँकि
वह चाहता है कि हम बाबलियों के हाथ में आ जाएँ
ताकि वह हमें क़त्ल करें या जिलावतन करके मुल्क-
ए-बाबल ले जाएँ।"

4 ऐसी बातें करते करते यूहनान बिन क़रीह, दीगर
फ़ौजी अफ़्सरों और बाक़ी तमाम लोगों ने रब
का हुक्म रद्द किया। वह मुल्क-ए-यहूदाह में न
रहे 5 बल्कि सब यूहनान और बाक़ी तमाम फ़ौजी
अफ़्सरों की राहनुमाई में मिस्र चले गए। उन में
यहूदाह के वह बचे हुए सब लोग शामिल थे जो
पहले मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुन्तशिर हुए थे, लेकिन
अब यहूदाह में दुबारा आबाद होने के लिए वापस
आए थे। 6 वह तमाम मर्द, औरतें और बच्चे बादशाह
की बेटियों समेत भी उन में शामिल थे जिन्हें शाही
मुहाफ़िज़ों के सरदार नबूज़रादान ने जिदलियाह बिन
अख़ीक़ाम के सपुर्द किया था। यरमियाह नबी और
बारूक बिन नैरियाह को भी साथ जाना पड़ा। 7 यूँ
वह रब की हिदायत रद्द करके रवाना हुए और चलते
चलते मिस्री सरहद के शहर तह्फ़न्हीस तक पहुँचे।

शाह-ए-बाबल के मिस्र में घुस आने की पेशगोई

8 तह्फ़न्हीस में रब का कलाम यरमियाह पर
नाज़िल हुआ, 9 "अपने हमवतनों की मौजूदगी में
चन्द एक बड़े पत्थर फ़िरऔन के महल के दरवाज़े के
क़रीब ले जा कर फ़र्श की कच्ची ईंटों के नीचे दबा दे।

10 फिर उन्हें बता दे, ‘रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है कि मैं अपने ख़ादिम शाह-ए-
बाबल नबूकद्नज़्ज़र को बुला कर यहाँ लाऊँगा और
उस का तख़्त उन पत्थरों के ऊपर खड़ा करूँगा जो
मैं ने यरमियाह के ज़रीए दबाए हैं। नबूकद्नज़्ज़र उन
ही के ऊपर अपना शाही तम्बू लगाएगा। 11 क्यूँकि
वह आएगा और मिस्र पर हम्ला करके हर एक के
साथ वह कुछ करेगा जो उस के नसीब में है। एक मर
जाएगा, दूसरा क़ैद में जाएगा और तीसरा तलवार की
ज़द में आएगा। 12–13 नबूकद्नज़्ज़र मिस्री देवताओं
के मन्दिरों को जला कर राख कर देगा और उन के
बुतों पर क़ब्ज़ा करके उन्हें अपने साथ ले जाएगा।
जिस तरह चरवाहा अपने कपड़े से जूएँ निकाल
निकाल कर उसे साफ़ कर लेता है उसी तरह शाह-
ए-बाबल मिस्र को माल-ओ-मता से साफ़ करेगा।
मिस्र आते वक़्त वह सूरज देवता के मन्दिर में जा
कर उस के सतूनों को ढा देगा और बाक़ी मिस्री
देवताओं के मन्दिर भी नज़र-ए-आतिश करेगा। फिर
शाह-ए-बाबल सहीह-सलामत वहाँ से वापस चला
जाएगा’।”

तुम बुतपरस्ती से बाज़ क्यूँ नहीं आते?

44 1 रब का कलाम एक बार फिर यरमियाह
पर नाज़िल हुआ। उस में वह उन तमाम
हमवतनों से हमकलाम हुआ जो शिमाली मिस्र के
शहरों मिज्दाल, तह्फ़न्हीस और मेम्फ़िस और जुनूबी
मिस्र बनाम पत्रूस में रहते थे।

2 “रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, ‘तुम ने ख़ुद वह बड़ी आफ़त देखी जो
मैं यरूशलम और यहूदाह के दीगर तमाम शहरों पर
लाया। आज वह वीरान-ओ-सुन्सान हैं, और उन में
कोई नहीं बसता। 3 यूँ उन्हें उन की बुरी हरकतों का
अज्र मिला। क्यूँकि अजनबी माबूदों के लिए बख़ूर
जला कर उन की ख़िदमत करने से उन्हों ने मुझे तैश
दिलाया। और यह ऐसे देवता थे जिन से पहले न वह,
न तुम और न तुम्हारे बापदादा वाक़िफ़ थे। 4 बार बार
मैं नबियों को उन के पास भेजता रहा, और बार बार
मेरे ख़ादिम कहते रहे कि ऐसी घिनौनी हरकतें मत
करना, क्यूँकि मुझे इन से नफ़रत है! 5 लेकिन उन्हों
ने न सुनी, न ध्यान दिया। न वह अपनी बेदीनी से
बाज़ आए, न अजनबी माबूदों को बख़ूर जलाने का
सिलसिला बन्द किया।

6 तब मेरा शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ। मेरे
क़हर की ज़बरदस्त आग ने यहूदाह के शहरों और
यरूशलम की गलियों में फैलते फैलते उन्हें वीरान-
ओ-सुन्सान कर दिया। आज तक उन का यही हाल
है।’

7 अब रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, ‘तुम अपना सत्यानास क्यूँ कर रहे हो?
ऐसे क़दम उठाने से तुम यहूदाह से आए हुए मर्दों और
औरतों को बच्चों और शीरख़्वारों समेत हलाकत की
तरफ़ ला रहे हो। इस सूरत में एक भी नहीं बचेगा।
8 मुझे अपने हाथों के काम से तैश क्यूँ दिलाते हो?
यहाँ मिस्र में पनाह ले कर तुम अजनबी माबूदों के
लिए बख़ूर क्यूँ जलाते हो? इस से तुम अपने आप
को नेस्त-ओ-नाबूद कर रहे हो, तुम दुनिया की तमाम
क़ौमों के लिए लानत और मज़ाक़ का निशाना बनोगे।
9 क्या तुम अपनी क़ौम के संगीन गुनाहों को भूल
गए हो? क्या तुम्हें वह कुछ याद नहीं जो तुम्हारे
बापदादा, यहूदाह के राजे रानियों और तुम से तुम्हारी
बीवियों समेत मुल्क-ए-यहूदाह और यरूशलम की
गलियों में सरज़द हुआ है? 10 आज तक तुम ने न
इनकिसारी का इज़हार किया, न मेरा ख़ौफ़ माना,
और न मेरी शरीअत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी।
तुम उन हिदायात के ताबे न रहे जो मैं ने तुम्हें और
तुम्हारे बापदादा को अता की थीं।’

11 चुनाँचे रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा
है फ़रमाता है, ‘मैं तुम पर आफ़त लाने का अटल
इरादा रखता हूँ। तमाम यहूदाह ख़त्म हो जाएगा।
12 मैं यहूदाह के उस बचे हुए हिस्से को सफ़्हा-ए-
हस्ती से मिटा दूँगा जो मिस्र में जा कर पनाह लेने
पर तुला हुआ था। सब मिस्र में हलाक हो जाएंगे,

ख़्वाह तलवार से, ख़्वाह काल से। छोटे से ले कर बड़े तक सब के सब तलवार या काल की ज़द में आ कर मर जाएंगे। उन्हें देख कर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह दूसरों की लान-तान और हिक़ारत का निशाना बनेंगे। लानत करने वाला अपने दुश्मनों के लिए उन ही का सा अन्जाम चाहेगा। 13 जिस तरह मैं ने यरूशलम को सज़ा दी ऐन उसी तरह मैं मिस्र में आने वाले हमवतनों को तलवार, काल और मोहलिक बीमारियों से सज़ा दूँगा। 14 यहूदाह के जितने बचे हुए लोग यहाँ मिस्र में पनाह लेने के लिए आए हैं वह सब यहीं हलाक हो जाएंगे। कोई भी बच कर मुल्क-ए-यहूदाह में नहीं लौटेगा, गो तुम सब वहाँ दुबारा आबाद होने की शदीद आर्ज़ू रखते हो। सिर्फ़ चन्द एक इस में कामयाब हो जाएंगे'।"

आसमानी मलिका की पूजा पर ज़िद

15 उस वक़्त शिमाली और जुनूबी मिस्र में रहने वाले यहूदाह के तमाम मर्द और औरतें एक बड़े इजतिमा के लिए जमा हुए थे। मर्दों को ख़ूब मालूम था कि हमारी बीवियाँ अजनबी माबूदों को बख़ूर की क़ुर्बानियाँ पेश करती हैं। अब उन्हों ने यरमियाह से कहा, 16 "जो बात आप ने रब का नाम ले कर हम से की है वह हम नहीं मानते। 17 हम उन तमाम बातों पर ज़रूर अमल करेंगे जो हम ने कही हैं। हम आसमानी मलिका देवी के लिए बख़ूर जलाएँगे और उसे मै की नज़रें पेश करेंगे। हम वही कुछ करेंगे जो हम, हमारे बापदादा, हमारे बादशाह और हमारे बुज़ुर्ग मुल्क-ए-यहूदाह और यरूशलम की गलियों में किया करते थे। क्यूँकि उस वक़्त रोटी की कस्रत थी और हमारा अच्छा हाल था। उस वक़्त हम किसी भी मुसीबत से दोचार न हुए। 18 लेकिन जब से हम आसमानी मलिका को बख़ूर और मै की नज़रें पेश करने से बाज़ आए हैं उस वक़्त से हर लिहाज़ से हाजतमन्द रहे हैं। उसी वक़्त से हम तलवार और काल की ज़द में आ कर नेस्त हो रहे हैं।" 19 औरतों ने बात जारी रख कर कहा, "क्या आप समझते हैं कि हमारे शौहरों को इस का इल्म नहीं था कि हम आसमानी मलिका को बख़ूर और मै की नज़रें पेश करती हैं, कि हम उस की शक्ल की टिक्कियाँ बना कर उस की पूजा करती हैं?"

चन्द एक के बचने की पेशगोई

20 यरमियाह एतिराज़ करने वाले तमाम मर्दों और औरतों से दुबारा मुख़ातिब हुआ, 21 "देखो, रब ने उस बख़ूर पर ध्यान दिया जो तुम और तुम्हारे बापदादा ने बादशाहों, बुज़ुर्गों और अवाम समेत यहूदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों में जलाया है। यह बात उसे ख़ूब याद है। 22 आख़िरकार एक वक़्त आया जब तुम्हारी शरीर और घिनौनी हरकतें क़ाबिल-ए-बर्दाश्त न रहीं, और रब को तुम्हें सज़ा देनी पड़ी। यही वजह है कि आज तुम्हारा मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान है, कि उसे देख कर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लानत करने वाला अपने दुश्मन के लिए ऐसा ही अन्जाम चाहता है। 23 आफ़त इसी लिए तुम पर आई कि तुम ने बुतों के लिए बख़ूर जला कर रब की न सुनी। न तुम ने उस की शरीअत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी, न उस की हिदायात और अह्काम पर अमल किया। आज तक मुल्क का यही हाल रहा है।"

24 फिर यरमियाह ने तमाम लोगों से औरतों समेत कहा, "ऐ मिस्र में रहने वाले यहूदाह के तमाम हमवतनो, रब का कलाम सुनो! 25 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि तुम और तुम्हारी बीवियों ने इसरार किया है, 'हम ज़रूर अपनी उन मन्नतों को पूरा करेंगे जो हम ने मानी हैं, हम ज़रूर आसमानी मलिका को बख़ूर और मै की नज़रें पेश करेंगे।' और तुम ने अपने अल्फ़ाज़ और अपनी हरकतों से साबित कर दिया है कि तुम सन्जीदगी से अपने इस एलान पर अमल करना चाहते हो। तो ठीक है, अपना वादा और अपनी मन्नतें पूरी करो!

26 लेकिन ऐ मिस्र में रहने वाले तमाम हमवतनो, रब के कलाम पर ध्यान दो! रब फ़रमाता है कि मेरे अज़ीम नाम की क़सम, आइन्दा मिस्र में तुम में

से कोई मेरा नाम ले कर क़सम नहीं खाएगा, कोई
नहीं कहेगा, ‘रब क़ादिर-ए-मुतलक़ की हयात की
क़सम!’ 27 क्यूँकि मैं तुम्हारी निगरानी कर रहा हूँ,
लेकिन तुम पर मेहरबानी करने के लिए नहीं बल्कि
तुम्हें नुक़्सान पहुँचाने के लिए। मिस्र में रहने वाले
यहूदाह के तमाम लोग तलवार और काल की ज़द
में आ जाएंगे और पिसते पिसते हलाक हो जाएंगे।
28 सिर्फ़ चन्द एक दुश्मन की तलवार से बच कर
मुल्क-ए-यहूदाह वापस आएँगे। तब यहूदाह के जितने
बचे हुए लोग मिस्र में पनाह लेने के लिए आए हैं
वह सब जान लेंगे कि किस की बात दुरुस्त निकली
है, मेरी या उन की। 29 रब फ़रमाता है कि मैं तुम्हें
निशान भी देता हूँ ताकि तुम्हें यक़ीन हो जाए कि
मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ ख़ाली बातें नहीं कर रहा बल्कि
तुम्हें यक़ीनन मिस्र में सज़ा दूँगा। 30 निशान यह होगा
कि जिस तरह मैं ने यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह
को उस के जानी दुश्मन नबूकद्नज़्ज़र के हवाले कर
दिया उसी तरह मैं हुफ़्रा फ़िरऔन को भी उस के जानी
दुश्मनों के हवाले कर दूँगा। यह रब का फ़रमान है।”

बारूक के लिए तसल्ली का पैग़ाम

45 1 यहूदाह के बादशाह यहूयक़ीम बिन
यूसियाह की हुकूमत के चौथे साल में
यरमियाह नबी को बारूक बिन नैरियाह के लिए रब
का पैग़ाम मिला। उस वक़्त यरमियाह बारूक से वह
तमाम बातें लिखवा रहा था जो उस पर नाज़िल हुई
थीं। यरमियाह ने कहा, 2 “ऐ बारूक, रब इस्राईल का
ख़ुदा तेरे बारे में फ़रमाता है 3 कि तू कहता है, ‘हाय,
मुझ पर अफ़्सोस! रब ने मेरे दर्द में इज़ाफ़ा कर दिया
है, अब मुझे रंज-ओ-अलम भी सहना पड़ता है। मैं
कराहते कराहते थक गया हूँ। कहीं भी आराम-ओ-
सुकून नहीं मिलता।’

4 ऐ बारूक, रब जवाब में फ़रमाता है कि जो कुछ
मैं ने ख़ुद तामीर किया उसे मैं गिरा दूँगा, जो पौदा मैं
ने ख़ुद लगाया उसे जड़ से उखाड़ दूँगा। पूरे मुल्क के
साथ ऐसा ही सुलूक करूँगा। 5 तो फिर तू अपने लिए
क्यूँ बड़ी कामयाबी हासिल करने का आरज़ूमन्द है?
ऐसा ख़याल छोड़ दे, क्यूँकि मैं तमाम इन्सानों पर
आफ़त ला रहा हूँ। यह रब का फ़रमान है। लेकिन
जहाँ भी तू जाए वहाँ मैं होने दूँगा कि तेरी जान छूट
जाए।” [w]

मिस्र की शिकस्त की पेशगोई

46 1 यरमियाह पर मुख़्तलिफ़ क़ौमों के बारे में
भी पैग़ामात नाज़िल हुए। यह ज़ैल में दर्ज
हैं।

2 पहला पैग़ाम मिस्र के बारे में है। यहूदाह के
बादशाह यहूयक़ीम बिन यूसियाह के चौथे साल में
शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र ने दरया-ए-फ़ुरात पर
वाक़े शहर कर्किमीस के पास मिस्री फ़ौज को
शिकस्त दी थी। उन दिनों में मिस्री बादशाह निकोह
फ़िरऔन की फ़ौज के बारे में रब का कलाम नाज़िल
हुआ,

3 “अपनी बड़ी और छोटी ढालें तय्यार करके जंग
के लिए निकलो! 4 घोड़ों को रथों में जोतो! दीगर
घोड़ों पर सवार हो जाओ! ख़ोद पहन कर खड़े
हो जाओ! अपने नेज़ों को रौग़न से चमका कर
ज़िराबक्तर पहन लो! 5 लेकिन मुझे क्या नज़र आ रहा
है? मिस्री फ़ौजियों पर दहशत तारी हुई है। वह पीछे
हट रहे हैं, उन के सूरमाओं ने हथियार डाल दिए
हैं। वह भाग भाग कर फ़रार हो रहे हैं और पीछे भी
नहीं देखते। रब फ़रमाता है कि चारों तरफ़ दहशत
ही दहशत फैल गई है। 6 किसी को भी बचने न दो,
ख़्वाह वह कितनी तेज़ी से क्यूँ न भाग रहा हो या
कितना ज़बरदस्त फ़ौजी क्यूँ न हो। शिमाल में दरया-
ए-फ़ुरात के किनारे ही वह ठोकर खा कर गिर गए
हैं।

---

[w] लफ़्ज़ी तर्जुमा : मैं तुझे तेरी जान ग़नीमत के तौर पर बख़्श दूँगा।

7 यह क्या है जो दरया-ए-नील की तरह चढ़ रहा है,
जो सैलाब बन कर सब कुछ ग़र्क़ कर रहा है? 8 मिस्र
दरया-ए-नील की तरह चढ़ रहा है, वही सैलाब बन
कर सब कुछ ग़र्क़ कर रहा है। वह कहता है, 'मैं चढ़
कर पूरी ज़मीन को ग़र्क़ कर दूँगा। मैं शहरों को उन के
बाशिन्दों समेत तबाह करूँगा।' 9 ऐ घोड़ो, दुश्मन पर
टूट पड़ो! ऐ रथो, दीवानों की तरह दौड़ो! ऐ फ़ौजियो,
लड़ने के लिए निकलो! ऐ एथोपिया और लिबिया के
सिपाहियो, अपनी ढालें पकड़ कर चलो, ऐ लुदिया
के तीर चलाने वालो, अपने कमान तान कर आगे
बढ़ो!

10 लेकिन आज क़ादिर-ए-मुतलक़, रब्ब-उल-
अफ़्वाज का ही दिन है। इन्तिक़ाम के इस दिन वह
अपने दुश्मनों से बदला लेगा। उस की तलवार उन्हें
खा खा कर सेर हो जाएगी, और उन का ख़ून पी पी
कर उस की प्यास बुझेगी। क्यूँकि शिमाल में दरया-ए-
फ़ुरात के किनारे उन्हें क़ादिर-ए-मुतलक़, रब्ब-उल-
अफ़्वाज को क़ुर्बान किया जाएगा।

11 ऐ कुंवारी मिस्र बेटी, मुल्क-ए-जिलिआद में जा
कर अपने ज़ख़्मों के लिए बल्सान ख़रीद ले। लेकिन
क्या फ़ाइदा? ख़्वाह तू कितनी दवाई क्यूँ न इस्तेमाल
करे तेरी चोटें भर ही नहीं सकतीं! 12 तेरी शर्मिन्दगी
की ख़बर दीगर अक़्वाम में फैल गई है, तेरी चीख़ें
पूरी दुनिया में गूँज रही हैं। क्यूँकि तेरे सूरमे एक दूसरे
से ठोकर खा कर गिर गए हैं।"

शाह-ए-बाबल के मिस्र में घुस आने की पेशगोई

13 जब शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र मिस्र पर हम्ला
करने आया तो रब इस के बारे में यरमियाह से
हमकलाम हुआ,

14 "मिस्री शहरों मिज्दाल, मेम्फ़िस और तह्फ़न्हीस
में एलान करो, 'जंग की तय्यारियाँ करके लड़ने के
लिए खड़े हो जाओ! क्यूँकि तलवार तुम्हारे आस-
पास सब कुछ खा रही है।'

15 ऐ मिस्र, तेरे सूरमाओं को ख़ाक में क्यूँ मिलाया
गया है? वह खड़े नहीं रह सकते, क्यूँकि रब ने उन्हें
दबा दिया है। 16 उस ने मुतअद्दिद अफ़राद को ठोकर
खाने दिया, और वह एक दूसरे पर गिर गए। उन्हों ने
कहा, 'आओ, हम अपनी ही क़ौम और अपने वतन
में वापस चले जाएँ जहाँ ज़ालिम की तलवार हम तक
नहीं पहुँच सकती।' 17 वहाँ वह पुकार उठे, 'मिस्र का
बादशाह शोर तो बहुत मचाता है लेकिन इस के पीछे
कुछ भी नहीं। जो सुनहरा मौक़ा उसे मिला वह जाता
रहा है'।"

18 दुनिया का बादशाह जिस का नाम रब्ब-उल-
अफ़्वाज है फ़रमाता है, "मेरी हयात की क़सम, जो
तुम पर हम्ला करने आ रहा है वह दूसरों से उतना बड़ा
है जितना तबूर दीगर पहाड़ों से और कर्मिल समुन्दर
से ऊँचा है। 19 ऐ मिस्र के बाशिन्दो, अपना माल-
ओ-अस्बाब बांध कर जिलावतन होने की तय्यारियाँ
करो। क्यूँकि मेम्फ़िस मिस्मार हो कर नज़र-ए-आतिश
हो जाएगा। उस में कोई नहीं रहेगा।

20 मिस्र ख़ूबसूरत सी जवान गाय है, लेकिन शिमाल
से मोहलिक मक्खी आ कर उस पर धावा बोल
रही है। हाँ, वह आ रही है। 21 मिस्री फ़ौज के भाड़े
के फ़ौजी मोटे-ताज़े बछड़े हैं, लेकिन वह भी मुड़
कर फ़रार हो जाएंगे। एक भी क़ाइम नहीं रहेगा।
क्यूँकि आफ़त का दिन उन पर आने वाला है, वह
वक़्त जब उन्हें पूरी सज़ा मिलेगी। 22 मिस्र साँप की
तरह फुंकारते हुए पीछे हट जाएगा जब दुश्मन के
फ़ौजी पूरे ज़ोर से उस पर हम्ला करेंगे, जब वह
लक्कड़हारों की तरह अपनी कुल्हाड़ियाँ पकड़े हुए
उस पर टूट पड़ेंगे।" 23 रब फ़रमाता है, "तब वह
मिस्र का जंगल काट डालेंगे, गो वह कितना घना
क्यूँ न हो। क्यूँकि उन की तादाद टिड्डियों से ज़्यादा
होगी बल्कि वह अनगिनत होंगे। 24 मिस्र बेटी की
बेइज़्ज़ती की जाएगी, उसे शिमाली क़ौम के हवाले
किया जाएगा।"

25 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, "मैं थीबस शहर के देवता आमून,
फ़िरऔन और तमाम मिस्र को उस के देवताओं और
बादशाहों समेत सज़ा दूँगा। हाँ, मैं फ़िरऔन और उस

पर एतिमाद रखने वाले तमाम लोगों की अदालत
करूँगा।” 26 रब फ़रमाता है, “मैं उन्हें उन के जानी
दुश्मनों के हवाले कर दूँगा, और वह शाह-ए-बाबल
नबूकद्नज़्ज़र और उस के अफ़सरों के क़ाबू में आ
जाएंगे। लेकिन बाद में मिस्र पहले की तरह दुबारा
आबाद हो जाएगा।
27 जहाँ तक तेरा ताल्लुक़ है, ऐ याक़ूब मेरे ख़ादिम,
ख़ौफ़ मत खा! ऐ इस्राईल, हौसला मत हार! देख, मैं
तुझे दूरदराज़ मुल्क से छुटकारा दूँगा। तेरी औलाद
को मैं उस मुल्क से नजात दूँगा जहाँ उसे जिलावतन
किया गया है। फिर याक़ूब वापस आ कर आराम-
ओ-सुकून की ज़िन्दगी गुज़ारेगा। कोई नहीं होगा जो
उसे हैबतज़दा करे।” 28 रब फ़रमाता है, “ऐ याक़ूब
मेरे ख़ादिम, ख़ौफ़ न खा, क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं
उन तमाम क़ौमों को नेस्त-ओ-नाबूद कर दूँगा जिन
में मैं ने तुझे मुन्तशिर कर दिया है, लेकिन तुझे मैं इस
तरह सफ़्हा-ए-हस्ती से नहीं मिटाऊँगा। अलबत्ता मैं
मुनासिब हद तक तेरी तम्बीह करूँगा, क्यूँकि मैं तुझे
सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ सकता।”

फ़िलिस्तियों को सफ़्हा-ए-हस्ती से मिटाया जाएगा

47 1 फ़िरऔन के ग़ज़्ज़ा शहर पर हम्ला करने
से पहले यरमियाह नबी पर फ़िलिस्तियों के
बारे में रब का कलाम नाज़िल हुआ,
2 “रब फ़रमाता है कि शिमाल से पानी आ रहा है
जो सैलाब बन कर पूरे मुल्क को ग़र्क़ कर देगा। पूरा
मुल्क शहरों और बाशिन्दों समेत उस में डूब जाएगा।
लोग चीख़ उठेंगे, और मुल्क के तमाम बाशिन्दे आह-
ओ-ज़ारी करेंगे। 3 क्यूँकि सरपट दौड़ते हुए घोड़ों
की टापें सुनाई देंगी, दुश्मन के रथों का शोर और
पहियों की गड़गड़ाहट उन के कानों तक पहुँचेगी।
बाप ख़ौफ़ज़दा हो कर यूँ साकित हो जाएंगे कि वह
अपने बच्चों की मदद करने के लिए पीछे भी देख नहीं
सकेंगे। 4 क्यूँकि वह दिन आने वाला है जब तमाम
फ़िलिस्तियों को नेस्त-ओ-नाबूद किया जाएगा ताकि
सूर और सैदा के आख़िरी मदद करने वाले भी ख़त्म
हो जाएँ। क्यूँकि रब फ़िलिस्तियों को सफ़्हा-ए-हस्ती
से मिटाने वाला है, जज़ीरा-ए-क्रेते के उन बचे हुओं
को जो यहाँ आ कर आबाद हुए हैं।
5 ग़ज़्ज़ा बेटी मातम के आलम में अपना सर
मुंडवाएगी, अस्क़लून शहर मिस्मार हो जाएगा। ऐ
मैदानी इलाक़े के बचे हुए लोगो, तुम कब तक अपनी
जिल्द को ज़ख़्मी करते रहोगे? 6 ‘हाय, ऐ रब की
तलवार, क्या तू कभी नहीं आराम करेगी? दुबारा
अपने मियान में छुप जा! ख़ामोश हो कर आराम
कर!’ 7 लेकिन वह किस तरह आराम कर सकती
है जब रब ने ख़ुद उसे चलाया है, जब उसी ने उसे
अस्क़लून और साहिली इलाक़े पर धावा बोलने का
हुक्म दिया है?”

मोआब के अन्जाम की पेशगोई

48 1 मोआब के बारे में रब्ब-उल-अफ़्वाज जो
इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है,
“नबू शहर पर अफ़्सोस, क्यूँकि वह तबाह हो गया
है। दुश्मन ने क़िर्यताइम की बेहुरमती करके उस पर
क़ब्ज़ा कर लिया है। चटान के क़िले की रुस्वाई हो
गई, वह पाश पाश हो गया है। 2 अब से कोई मोआब
की तारीफ़ नहीं करेगा। हस्बोन में आदमी उस की
शिकस्त की साज़िशें करके कह रहे हैं, आओ, हम
मोआबी क़ौम को नेस्त-ओ-नाबूद करें। ‘ऐ मदमीन,
तू भी तबाह हो जाएगा, तलवार तेरे भी पीछे पड़
जाएगी।’
3 सुनो! होरोनाइम से चीख़ें बुलन्द हो रही हैं।
तबाही और बड़ी शिकस्त का शोर मच रहा है।
4 मोआब चूर चूर हो गया है, उस के बच्चे ज़ोर से
चिल्ला रहे हैं। 5 लोग रोते रोते लूहीत की तरफ़ चढ़
रहे हैं। होरोनाइम की तरफ़ उतरते रास्ते पर शिकस्त
की आह-ओ-ज़ारी सुनाई दे रही है। 6 भाग कर अपनी
जान बचाओ! रेगिस्तान में झाड़ी की मानिन्द बन
जाओ।
7 चूँकि तुम मोआबियों ने अपनी कामयाबियों और
दौलत पर भरोसा रखा, इस लिए तुम भी क़ैद में

जाओगे। तुम्हारा देवता कमोस भी अपने पुजारियों
और बुज़ुर्गों समेत जिलावतन हो जाएगा। 8 तबाह
करने वाला हर शहर पर हम्ला करेगा, एक भी नहीं
बचेगा। जिस तरह रब ने फ़रमाया है, वादी भी तबाह
हो जाएगी और मैदान-ए-मुर्तफ़ा भी। 9 मोआब पर
नमक डाल दो, क्यूँकि वह मिस्मार हो जाएगा। उस
के शहर वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएंगे, और उन में
कोई नहीं बसेगा।

10 उस पर लानत जो सुस्ती से रब का काम
करे! उस पर लानत जो अपनी तलवार को ख़ून
बहाने से रोक ले! 11 अपनी जवानी से ले कर आज
तक मोआब आराम-ओ-सुकून की ज़िन्दगी गुज़ारता
आया है, उस मै की मानिन्द जो कभी नहीं छेड़ी गई
और कभी एक बर्तन से दूसरे में उंडेली नहीं गई। इस
लिए उस का मज़ा क़ाइम और ज़ाइक़ा बेहतरीन रहा
है।" 12 लेकिन रब फ़रमाता है, "वह दिन आने वाला
है जब मैं ऐसे आदमियों को उस के पास भेजूँगा जो मै
को बर्तनों से निकाल कर ज़ाए कर देंगे, और बर्तनों
को ख़ाली करने के बाद पाश पाश कर देंगे। 13 तब
मोआब को अपने देवता कमोस पर यूँ शर्म आएगी
जिस तरह इस्राईल को बैत-एल के उस बुत पर शर्म
आई जिस पर वह भरोसा रखता था।

14 हाय, तुम अपने आप पर कितना फ़ख़र करते
हो कि हम सूरमे और ज़बरदस्त जंगजू हैं। 15 लेकिन
दुनिया का बादशाह जिस का नाम रब्ब-उल-अफ़्वाज
है फ़रमाता है कि मोआब तबाह हो जाएगा, और
दुश्मन उस के शहरों में घुस आएगा। उस के बेहतरीन
जवान क़त्ल-ओ-ग़ारत की ज़द में आ कर हलाक हो
जाएंगे।

मोआब की ताक़त टूट गई है

16 मोआब का अन्जाम क़रीब ही है, आफ़त उस पर
नाज़िल होने वाली है। 17 ऐ पड़ोस में बसने वालो,
उस पर मातम करो! जितने उस की शुहरत जानते
हो आह-ओ-ज़ारी करो। बोलो, 'हाय, मोआब का
ज़ोरदार असा-ए-शाही टूट गया है, उस की शान-ओ-
शौकत की अलामत ख़ाक में मिलाई गई है।'

18 ऐ दीबोन बेटी, अपने शानदार तख़्त पर से उतर
कर प्यासी ज़मीन पर बैठ जा। क्यूँकि मोआब को
तबाह करने वाला तेरे ख़िलाफ़ भी चढ़ आएगा, वह
तेरे क़िलाबन्द शहरों को भी मिस्मार करेगा। 19 ऐ
अरोईर की रहने वाली, सड़क के किनारे खड़ी हो
कर गुज़रने वालों पर ग़ौर कर! अपनी जान बचाने
वालों से पूछ ले कि क्या हुआ है। 20 तब तुझे जवाब
मिलेगा, 'मोआब रुसवा हुआ है, वह पाश पाश हो
गया है। बुलन्द आवाज़ से वावैला करो! दरया-ए-
अर्नोन के किनारे एलान करो कि मोआब ख़त्म है।'

21 मैदान-ए-मुर्तफ़ा पर अल्लाह की अदालत नाज़िल
हुई है। हौलून, यहज़, मिफ़ात, 22 दीबोन, नबू, बैत-
दिब्लाताइम, 23 क़िर्यताइम, बैत-जमूल, बैत-मऊन,
24 क़रियोत और बुस्रा, ग़रज़ मोआब के तमाम शहरों
की अदालत हुई है, ख़्वाह वह दूर हों या क़रीब।"

25 रब फ़रमाता है, "मोआब की ताक़त टूट गई है,
उस का बाज़ू पाश पाश हो गया है। 26 उसे मै पिला
पिला कर मत्वाला करो, वह अपनी क़ै में लोट-पोट
हो कर सब के लिए मज़ाक़ का निशाना बन जाए।
क्यूँकि वह मग़रूर हो कर रब के ख़िलाफ़ खड़ा हो
गया है।

27 तुम मोआबियों ने इस्राईल को अपने मज़ाक़ का
निशाना बनाया था। तुम यूँ उसे गालियाँ देते रहे जैसे
उसे चोरी करते वक़्त पकड़ा गया हो। 28 लेकिन
अब तुम्हारी बारी आ गई है। अपने शहरों को छोड़
कर चटानों में जा बसो! कबूतर बन कर चटानों की
दराड़ों में अपने घोंसले बनाओ।

29 हम ने मोआब के तकब्बुर के बारे में सुना है,
क्यूँकि वह हद से ज़्यादा मुतकब्बिर, मग़रूर, घमंडी,
ख़ुदपसन्द और अनापरस्त है।"

30 रब फ़रमाता है, "मैं उस के तकब्बुर से वाक़िफ़
हूँ। लेकिन उस की डींगें अबस हैं, उन के पीछे कुछ
नहीं है। 31 इस लिए मैं मोआब पर आह-ओ-ज़ारी कर
रहा, तमाम मोआब के सबब से चिल्ला रहा हूँ। क़ीर-

हरासत के बाशिन्दों का अन्जाम देख कर मैं आहें
भर रहा हूँ। 32 ऐ सिब्माह की अंगूर की बेल, याज़ेर
की निस्बत मैं कहीं ज़्यादा तुझ पर मातम कर रहा हूँ।
तेरी कोंपलें याज़ेर तक फैली हुई थीं बल्कि समुन्दर
को पार भी करती थीं। लेकिन अब तबाह करने वाला
दुश्मन तेरे पके हुए अंगूरों और मौसम-ए-गर्मा के फल
पर टूट पड़ा है। 33 अब ख़ुशी-ओ-शादमानी मोआब
के बाग़ों और खेतों से जाती रही है। मैं ने अंगूर का
रस निकालने का काम रोक दिया है। कोई ख़ुशी के
नारे लगा लगा कर अंगूर को पाँओ तले नहीं रौंदता।
शोर तो मच रहा है, लेकिन ख़ुशी के नारे बुलन्द नहीं
हो रहे बल्कि जंग के।

34 हस्बोन में लोग मदद के लिए पुकार रहे हैं, उन
की आवाज़ इलीआली और यहज़ तक सुनाई दे रही
है। इसी तरह ज़ुग़र की चीख़ें होरोनाइम और इज्लत-
शलीशियाह तक पहुँच गई हैं। क्यूँकि निम्रीम का पानी
भी ख़ुश्क हो जाएगा।" 35 रब फ़रमाता है, "मोआब
में जो ऊँची जगहों पर चढ़ कर अपने देवताओं को
बख़ूर और बाक़ी क़ुर्बानियाँ पेश करते हैं उन का मैं
ख़ातमा कर दूँगा।

36 इस लिए मेरा दिल बाँसरी के मातमी सुर निकाल
कर मोआब और क़ीर-हरासत के लिए नोहा कर रहा
है। क्यूँकि उन की हासिलशुदा दौलत जाती रही है।
37 हर सर गंजा, हर दाढ़ी मुंडवाई गई है। हर हाथ की
जिल्द को ज़ख़्मी कर दिया गया है, हर कमर टाट से
मुलब्बस है। 38 मोआब की तमाम छतों पर और उस
के चौकों में आह-ओ-ज़ारी बुलन्द हो रही है।"

क्यूँकि रब फ़रमाता है, "मैं ने मोआब को बेकार
मिट्टी के बर्तन की तरह तोड़ डाला है। 39 हाय,
मोआब पाश पाश हो गया है! लोग ज़ार-ओ-क़तार
रो रहे हैं, और मोआब ने शर्म के मारे अपना मुँह ढाँप
लिया है। वह मज़ाक़ का निशाना बन गया है, उसे
देख कर तमाम पड़ोसियों के रोंगटे खड़े हो गए हैं।"

मोआब रब के ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है

40 रब फ़रमाता है, "वह देखो! दुश्मन उक़ाब की
तरह मोआब पर झपट्टा मारता है। अपने परों को फैला
कर वह पूरे मुल्क पर साया डालता है। 41 क़रियोत
क़िलों समेत उस के क़ब्ज़े में आ गया है। उस दिन
मोआबी सूरमाओं का दिल दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला
औरत की तरह पेच-ओ-ताब खाएगा। 42 क्यूँकि
मोआबी क़ौम सफ़्हा-ए-हस्ती से मिट जाएगी, इस
लिए कि वह मग़रूर हो कर रब के ख़िलाफ़ खड़ी
हो गई है।

43 ऐ मोआबी क़ौम, दहशत, गढ़ा और फंदा तेरे
नसीब में हैं।" 44 क्यूँकि रब फ़रमाता है, "जो दहशत
से भाग कर बच जाए वह गढ़े में गिर जाएगा, और जो
गढ़े से निकल जाए वह फंदे में फंस जाएगा। क्यूँकि
मैं मोआब पर उस की अदालत का साल लाऊँगा।

45 पनाहगुज़ीन थकेहारे हस्बोन के साय में रुक
जाते हैं। लेकिन अफ़्सोस, हस्बोन से आग निकल
आई है और सीहोन बादशाह के शहर में से शोला
भड़क उठा है जो मोआब की पेशानी को और शोर
मचाने वालों के चाँदों को नज़र-ए-आतिश करेगा।
46 ऐ मोआब, तुझ पर अफ़्सोस! कमोस देवता के
परस्तार नेस्त-ओ-नाबूद हैं, तेरे बेटे-बेटियाँ क़ैदी बन
कर जिलावतन हो गए हैं।

47 लेकिन आने वाले दिनों में मैं मोआब को बहाल
करूँगा।" यह रब का फ़रमान है।

यहाँ मोआब पर अदालत का फ़ैसला इख़तिताम
पर पहुँच गया है।

अम्मोनियों की अदालत

49 1 अम्मोनियों के बारे में रब फ़रमाता है,
"क्या इस्राईल की कोई औलाद नहीं,
कोई वारिस नहीं जो जद के क़बाइली इलाक़े में
रह सके? मलिक देवता के परस्तारों ने उस पर क्यूँ
क़ब्ज़ा किया है? क्या वजह है कि यह लोग जद के
शहरों में आबाद हो गए हैं?" 2 चुनाँचे रब फ़रमाता है,

"वह वक़्त आने वाला है कि मेरे हुक्म पर अम्मोनी
दार-उल-हकूमत रब्बा के ख़िलाफ़ जंग के नारे लगाए
जाएंगे। तब वह मल्बे का ढेर बन जाएगा, और गिर्द-
ओ-नवाह की आबादियाँ नज़र-ए-आतिश हो जाएँगी।
तब इस्राईल उन्हें मुल्क-ब-दर करेगा जिन्हों ने उसे
मुल्क-ब-दर किया था।" यह रब का फ़रमान है।
3 "ऐ हस्बोन, वावैला कर, क्यूँकि अई शहर बर्बाद
हुआ है। ऐ रब्बा की बेटियो, मदद के लिए चिल्लाओ!
टाट ओढ़ कर मातम करो! फ़सील के अन्दर बेचैनी
से इधर उधर फिरो! क्यूँकि मलिक देवता अपने
पुजारियों और बुज़ुर्गों समेत जिलावतन हो जाएगा।
4 ऐ बेवफ़ा बेटी, तू अपनी ज़रख़ेज़ वादियों पर इतना
फ़ख़र क्यूँ करती है? तू अपने माल-ओ-दौलत पर
भरोसा करके शेख़ी मारती है कि अब मुझ पर
कोई हम्ला नहीं करेगा।" 5 क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-
उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "मैं तमाम पड़ोसियों की
तरफ़ से तुझ पर दहशत छा जाने दूँगा। तुम सब
को चारों तरफ़ मुन्तशिर कर दिया जाएगा, और तेरे
पनाहगुज़ीनों को कोई जमा नहीं करेगा।
6 लेकिन बाद में मैं अम्मोनियों को बहाल करूँगा।"
यह रब का फ़रमान है।

अदोम की अदालत

7 रब्ब-उल-अफ़्वाज अदोम के बारे में फ़रमाता है,
"क्या तेमान में हिक्मत का नाम-ओ-निशान नहीं रहा?
क्या दानिशमन्द सहीह मश्वरा नहीं दे सकते? क्या उन
की दानाई बेकार हो गई है?
8 ऐ ददान के बाशिन्दो, भाग कर हिज्रत करो, ज़मीन
के अन्दर छुप जाओ। क्यूँकि मैं एसौ की औलाद पर
आफ़त नाज़िल करता हूँ, मेरी सज़ा का दिन क़रीब
आ गया है। 9 ऐ अदोम, अगर तू अंगूर का बाग़ होता
और मज़दूर फ़सल चुनने के लिए आते तो थोड़ा बहुत
उन के पीछे रह जाता। अगर डाकू रात के वक़्त तुझे
लूट लेते तो वह सिर्फ़ उतना ही छीन लेते जितना उठा
कर ले जा सकते हैं। लेकिन तेरा अन्जाम इस से कहीं
ज़्यादा बुरा होगा। 10 क्यूँकि मैं ने एसौ को नंगा करके
उस की तमाम छुपने की जगहें ढूँड निकाली हैं। वह
कहीं भी छुप नहीं सकेगा। उस की औलाद, भाई
और हमसाय हलाक हो जाएंगे, एक भी बाक़ी नहीं
रहेगा। 11 अपने यतीमों को पीछे छोड़ दे, क्यूँकि मैं
उन की जान को बचाए रखूँगा। तुम्हारी बेवाएँ भी
मुझ पर भरोसा रखें।"
12 रब फ़रमाता है, "जिन्हें मेरे ग़ज़ब का प्याला पीने
का फ़ैसला नहीं सुनाया गया था उन्हें भी पीना पड़ा।
तो फिर तेरी जान किस तरह बचेगी? नहीं, तू यक़ीनन
सज़ा का प्याला पी लेगा।" 13 रब फ़रमाता है, "मेरे
नाम की क़सम, बुस्रा शहर गिर्द-ओ-नवाह के तमाम
शहरों समेत अबदी खंडरात बन जाएगा। उसे देख
कर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह उसे
लान-तान करेंगे। लानत करने वाला अपने दुश्मन के
लिए बुस्रा ही का सा अन्जाम चाहेगा।"
14 मैं ने रब की तरफ़ से पैग़ाम सुना है, "एक क़ासिद
को अक़्वाम के पास भेजा गया है जो उन्हें हुक्म दे,
'जमा हो कर अदोम पर हम्ला करने के लिए निकलो!
उस से लड़ने के लिए उठो!'
15 अब मैं तुझे छोटा बना दूँगा, एक ऐसी क़ौम जिसे
दीगर लोग हक़ीर जानेंगे। 16 माज़ी में दूसरे तुझ से
दहशत खाते थे, लेकिन इस बात ने और तेरे ग़ुरूर
ने तुझे फ़रेब दिया है। बेशक तू चटानों की दराड़ों में
बसेरा करता है, और पहाड़ी बुलन्दियाँ तेरे क़ब्ज़े में
हैं। लेकिन ख़्वाह तू अपना घोंसला उक़ाब की सी
ऊँची जगहों पर क्यूँ न बनाए तो भी मैं तुझे वहाँ से
उतार कर ख़ाक में मिला दूँगा।" यह रब का फ़रमान
है।
17 "मुल्क-ए-अदोम यूँ बर्बाद हो जाएगा कि वहाँ
से गुज़रने वालों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। उस के
ज़ख़्मों को देख कर वह 'तौबा तौबा' कहेंगे।" 18 रब
फ़रमाता है, "उस का अन्जाम सदूम, अमूरा और
उन के पड़ोसी शहरों की मानिन्द होगा जिन्हें अल्लाह
ने उलटा कर नेस्त-ओ-नाबूद कर दिया। वहाँ कोई
नहीं बसेगा। 19 जिस तरह शेरबबर यर्दन के जंगल
से निकल कर शादाब चरागाहों में चरने वाली भेड़-

बकरियों पर टूट पड़ता है उसी तरह मैं अचानक
अदोम पर हम्ला करके उसे उस के अपने मुल्क से
भगा दूँगा। तब वह जिसे मैं ने मुक़र्रर किया है अदोम
पर हुकूमत करेगा। क्यूँकि कौन मेरी मानिन्द है?
कौन मुझ से जवाब तलब कर सकता है? कौन सा
गल्लाबान मेरा मुक़ाबला कर सकता है?"
20 चुनाँचे अदोम पर रब का फ़ैसला सुनो! तेमान के
बाशिन्दों के लिए उस के मन्सूबे पर ध्यान दो! दुश्मन
पूरे रेवड़ को सब से नन्हे बच्चों से ले कर बड़ों तक
घसीट कर ले जाएगा। उस की चरागाह वीरान-ओ-
सुन्सान हो जाएगी। 21 अदोम इतने धड़ाम से गिर
जाएगा कि ज़मीन थरथरा उठेगी। लोगों की चीख़ें
बहर-ए-क़ुल्ज़ुम तक सुनाई देंगी। 22 वह देखो! दुश्मन
उक़ाब की तरह उड़ कर अदोम पर झपट्टा मारता है।
वह अपने परों को फैला कर बुस्रा पर साया डालता
है। उस दिन अदोमी सूरमाओं का दिल दर्द-ए-ज़ह में
मुब्तला औरत की तरह पेच-ओ-ताब खाएगा।

दमिश्क़ की अदालत

23 रब दमिश्क़ के बारे में फ़रमाता है, "हमात और
अर्फ़ाद शर्मिन्दा हो गए हैं। बुरी ख़बरें सुन कर वह
हिम्मत हार गए हैं। परेशानी ने उन्हें उस मुतलातिम
समुन्दर जैसा बेचैन कर दिया है जो थम नहीं सकता।
24 दमिश्क़ हिम्मत हार कर भागने के लिए मुड़ गया
है। दह्शत उस पर छा गई है, और वह दर्द-ए-ज़ह में
मुब्तला औरत की तरह तड़प रहा है।
25 हाय, दमिश्क़ को तर्क किया गया है! जिस
मश्हूर शहर से मेरा दिल लुत्फ़अन्दोज़ होता था
वह वीरान-ओ-सुन्सान है।" 26 रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है, "उस दिन उस के जवान आदमी गलियों
में गिर कर रह जाएंगे, उस के तमाम फ़ौजी हलाक
हो जाएंगे। 27 मैं दमिश्क़ की फ़सील को आग लगा
दूँगा जो फैलते फैलते बिन-हदद बादशाह के महलों
को भी अपनी लपेट में ले लेगी।"

बदू क़बीलों की अदालत

28 ज़ैल में क़ीदार और हसूर के बदू क़बीलों
के बारे में कलाम दर्ज है। बाद में शाह-ए-बाबल
नबूकद्नज़्ज़र ने उन्हें शिकस्त दी। रब फ़रमाता है,
"उठो! क़ीदार पर हम्ला करो! मशरिक़ में बसने
वाले बदू क़बीलों को तबाह करो! 29 तुम उन के
ख़ैमों, भेड़-बकरियों और ऊँटों को छीन लोगे, उन के
ख़ैमों के पर्दों और बाक़ी सामान को लूट लोगे। चीख़ें
सुनाई देंगी, 'हाय, चारों तरफ़ दह्शत ही दह्शत'!"
30 रब फ़रमाता है, "ऐ हसूर में बसने वाले क़बीलो,
जल्दी से भाग जाओ, ज़मीन की दराड़ों में छुप
जाओ! क्यूँकि शाह-ए-बाबल ने तुम पर हम्ला करने
का फ़ैसला करके तुम्हारे ख़िलाफ़ मन्सूबा बांध लिया
है।" 31 रब फ़रमाता है, "ऐ बाबल के फ़ौजियो,
उठ कर उस क़ौम पर हम्ला करो जो अलाहिदगी में
पुरसुकून और मह्फ़ूज़ ज़िन्दगी गुज़ारती है, जिस के
न दरवाज़े, न कुंडे हैं। 32 उन के ऊँट और बड़े बड़े
रेवड़ लूट का माल बन जाएंगे। क्यूँकि मैं रेगिस्तान
के किनारे पर रहने वाले इन क़बीलों को चारों
तरफ़ मुन्तशिर कर दूँगा। उन पर चारों तरफ़ से
आफ़त आएगी।" यह रब का फ़रमान है। 33 "हसूर
हमेशा तक वीरान-ओ-सुन्सान रहेगा, उस में कोई
नहीं बसेगा। गीदड़ ही उस में अपने घर बना लेंगे।"

मुल्क-ए-ऐलाम की अदालत

34 शाह-ए-यहूदाह सिदक़ियाह की हुकूमत के
इब्तिदाई दिनों में रब यरमियाह नबी से हमकलाम
हुआ। पैग़ाम ऐलाम के मुताल्लिक़ था।
35 "रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'मैं ऐलाम की
कमान को तोड़ डालता हूँ, उस हथियार को जिस
पर ऐलाम की ताक़त मब्नी है। 36 आसमान की
चारों सिम्तों से मैं ऐलामियों के ख़िलाफ़ तेज़ हवाएँ
चलाऊँगा जो उन्हें उड़ा कर चारों तरफ़ मुन्तशिर
कर देंगी। कोई ऐसा मुल्क नहीं होगा जिस तक
ऐलामी जिलावतन नहीं पहुँचेंगे।' 37 रब फ़रमाता है,

‘मैं ऐलाम को उस के जानी दुश्मनों के सामने पाश
पाश कर दूँगा। मैं उन पर आफ़त लाऊँगा, मेरा सख़्त
क़हर उन पर नाज़िल होगा। जब तक वह नेस्त न हों
मैं तलवार को उन के पीछे चलाता रहूँगा। 38 तब मैं
ऐलाम में अपना तख़्त खड़ा करके उस के बादशाह
और बुज़ुर्गों को तबाह कर दूँगा।’ यह रब का फ़रमान
है।

39 लेकिन रब यह भी फ़रमाता है, ‘आने वाले दिनों
में मैं ऐलाम को बहाल करूँगा’।”

बाबल की अदालत

50 1 मुल्क-ए-बाबल और उस के दार-उल-
हकूमत बाबल के बारे में रब का कलाम
यरमियाह नबी पर नाज़िल हुआ,

2 “अक़्वाम के सामने एलान करो, हर जगह इत्तिला
दो! झंडा गाड़ कर कुछ न छुपाओ बल्कि सब को
साफ़ बताओ, ‘बाबल शहर दुश्मन के क़ब्ज़े में आ
गया है! बेल देवता की बेहुरमती हुई है, मर्दुक देवता
पाश पाश हो गया है। बाबल के तमाम देवताओं की
बेहुरमती हुई है, तमाम बुत चिकनाचूर हो गए हैं!’
3 क्यूँकि शिमाल से एक क़ौम बाबल पर चढ़ आई है
जो पूरे मुल्क को बर्बाद कर देगी। इन्सान और हैवान
सब हिज्रत कर जाएंगे, मुल्क में कोई नहीं रहेगा।”

4 रब फ़रमाता है, “जब यह वक़्त आएगा तो
इस्राईल और यहूदाह के लोग मिल कर अपने वतन में
वापस आएँगे। तब वह रोते हुए रब अपने ख़ुदा को
तलाश करने आएँगे। 5 वह सिय्यून का रास्ता पूछ
पूछ कर अपना रुख़ उस तरफ़ कर लेंगे और कहेंगे,
‘आओ, हम रब के साथ लिपट जाएँ, हम उस के
साथ अबदी अह्द बांध लें जो कभी न भुलाया जाए।’
6 मेरी क़ौम की हालत गुमशुदा भेड़-बकरियों की
मानिन्द थी। क्यूँकि उन के गल्लाबानों ने उन्हें ग़लत
राह पर ला कर फ़रेबदिह पहाड़ों पर आवारा फिरने
दिया था। यूँ पहाड़ों पर इधर उधर घूमते घूमते वह
अपनी आरामगाह भूल गए थे। 7 जो भी उन को पाते
वह उन्हें पकड़ कर खा जाते थे। उन के मुख़ालिफ़
कहते थे, ‘इस में हमारा क्या क़ुसूर है? उन्हों ने तो रब
का गुनाह किया है, गो वह उन की हक़ीक़ी चरागाह
है और उन के बापदादा उस पर उम्मीद रखते थे।’

बाबल से हिज्रत करो!

8 ऐ मेरी क़ौम, मुल्क-ए-बाबल और उस के दार-
उल-हकूमत से भाग निकलो! उन बकरों की मानिन्द
बन जाओ जो रेवड़ की राहनुमाई करते हैं। 9 क्यूँकि
मैं शिमाली मुल्क में बड़ी क़ौमों के इत्तिहाद को
बाबल पर हम्ला करने पर उभारूँगा, जो उस के
ख़िलाफ़ सफ़आरा हो कर उस पर क़ब्ज़ा करेगा।
दुश्मन के तीरअन्दाज़ इतने माहिर होंगे कि हर तीर
निशाने पर लग जाएगा।” 10 रब फ़रमाता है, “बाबल
को यूँ लूट लिया जाएगा कि तमाम लूटने वाले सेर
हो जाएंगे।

11 ऐ मेरे मौरूसी हिस्से को लूटने वालो, बेशक तुम
इस वक़्त शादियाना बजा कर ख़ुशी मनाते हो। बेशक
तुम गाहते हुए बछड़ों की तरह उछलते कूदते और
घोड़ों की तरह हिनहिनाते हो। 12 लेकिन आइन्दा
तुम्हारी माँ बेहद शर्मिन्दा हो जाएगी, जिस ने तुम्हें
जन्म दिया वह रुसवा हो जाएगी। आइन्दा बाबल
सब से ज़लील क़ौम होगी, वह ख़ुश्क और वीरान
रेगिस्तान ही होगी। 13 जब रब का ग़ज़ब उन पर
नाज़िल होगा तो वहाँ कोई आबाद नहीं रहेगा बल्कि
मुल्क सरासर वीरान-ओ-सुन्सान रहेगा। बाबल से
गुज़रने वालों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, उस के ज़ख़्मों
को देख कर सब ‘तौबा तौबा’ कहेंगे।

14 ऐ तीरअन्दाज़ो, बाबल शहर को घेर कर उस पर
तीर बरसाओ! तमाम तीर इस्तेमाल करो, एक भी
बाक़ी न रहे, क्यूँकि उस ने रब का गुनाह किया है।
15 चारों तरफ़ उस के ख़िलाफ़ जंग के नारे लगाओ!
देखो, उस ने हथियार डाल दिए हैं। उस के बुर्ज गिर
गए, उस की दीवारें मिस्मार हो गई हैं। रब इन्तिक़ाम
ले रहा है, चुनाँचे बाबल से ख़ूब बदला लो। जो
सुलूक उस ने दूसरों के साथ किया, वही उस के
साथ करो। 16 बाबल में जो बीज बोते और फ़सल के

वक़्त दरान्ती चलाते हैं उन्हें रू-ए-ज़मीन पर से मिटा दो। उस वक़्त शहर के परदेसी मोहलिक तलवार से भाग कर अपने अपने वतन में वापस चले जाएंगे।

17 इस्राईली क़ौम शेरबबरों के हमले से बिखरे हुए रेवड़ की मानिन्द है। क्यूँकि पहले शाह-ए-असूर ने आ कर उसे हड़प कर लिया, फिर शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र ने उस की हड्डियों को चबा लिया।" 18 इस लिए रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, "पहले मैं ने शाह-ए-असूर को सज़ा दी, और अब मैं शाह-ए-बाबल को उस के मुल्क समेत वही सज़ा दूँगा। 19 लेकिन इस्राईल को मैं उस की अपनी चरागाह में वापस लाऊँगा, और वह दुबारा कर्मिल और बसन की ढलानों पर चरेगा, वह दुबारा इफ़्राईम और जिलिआद के पहाड़ी इलाक़ों में सेर हो जाएगा।" 20 रब फ़रमाता है, "उन दिनों में जो इस्राईल का क़ुसूर ढूँड निकालने की कोशिश करे उसे कुछ नहीं मिलेगा। यही यहूदाह की हालत भी होगी। उस के गुनाह पाए नहीं जाएंगे, क्यूँकि जिन लोगों को मैं ज़िन्दा छोड़ूँगा उन्हें मैं मुआफ़ कर दूँगा।"

अल्लाह अपने घर का बदला लेता है

21 रब फ़रमाता है, "मुल्क-ए-मराताइम और फ़िक़ोद के बाशिन्दों पर हम्ला करो! उन्हें मारते मारते सफ़्हा-ए-हस्ती से मिटा दो! जो भी हुक्म मैं ने दिया उस पर अमल करो।

22 मुल्क-ए-बाबल में जंग का शोर-शराबा सुनो! बाबल की हौलनाक शिकस्त देखो! 23 जो पहले तमाम दुनिया का हथोड़ा था उसे तोड़ कर टुकड़े टुकड़े कर दिया गया है। बाबल को देख कर लोगों को सख़्त धच्का लगता है।

24 ऐ बाबल, मैं ने तेरे लिए फंदा लगा दिया, और तुझे पता न चला बल्कि तू उस में फंस गया। चूँकि तू ने रब का मुक़ाबला किया इसी लिए तेरा खोज लगाया गया और तुझे पकड़ा गया।" 25 क़ादिर-ए-मुतलक़ जो रब्ब-उल-अफ़्वाज है फ़रमाता है, "मैं अपना अस्लिहाख़ाना खोल कर अपना ग़ज़ब नाज़िल करने के हथियार निकाल लाया हूँ, क्यूँकि मुल्क-ए-बाबल में उन की अशद्द ज़रूरत है।

26 चारों तरफ़ से बाबल पर चढ़ आओ! उस के अनाज के गोदामों को खोल कर सारे माल का ढेर लगाओ! फिर सब कुछ नेस्त-ओ-नाबूद करो, कुछ बचा न रहे। 27 उस के तमाम बैलों को ज़बह करो! सब क़साई की ज़द में आएँ! उन पर अफ़्सोस, क्यूँकि उन का मुक़र्ररा दिन, उन की सज़ा का वक़्त आ गया है।

28 सुनो! मुल्क-ए-बाबल से बचे हुए पनाहगुज़ीन सिय्यून में बता रहे हैं कि रब हमारे ख़ुदा ने किस तरह इन्तिक़ाम लिया। क्यूँकि अब उस ने अपने घर का बदला लिया है!

29 तमाम तीरअन्दाज़ों को बुलाओ ताकि बाबल पर हम्ला करें! उसे घेर लो ताकि कोई न बचे। उसे उस की हरकतों का मुनासिब अज्र दो! जो बुरा सुलूक उस ने दूसरों के साथ किया वही उस के साथ करो। क्यूँकि उस का रवय्या रब, इस्राईल के क़ुद्दूस के साथ गुस्ताख़ाना था। 30 इस लिए उस के नौजवान गलियों में गिर कर मर जाएंगे, उस के तमाम फ़ौजी उस दिन हलाक हो जाएंगे।" यह रब का फ़रमान है।

31 क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "ऐ गुस्ताख़ शहर, मैं तुझ से निपटने वाला हूँ। क्यूँकि वह दिन आ गया है जब तुझे सज़ा मिलनी है। 32 तब गुस्ताख़ शहर ठोकर खा कर गिर जाएगा, और कोई उसे दुबारा खड़ा नहीं करेगा। मैं उस के तमाम शहरों में आग लगा दूँगा जो गिर्द-ओ-नवाह में सब कुछ राख कर देगी।"

रब अपनी क़ौम को रिहा करवाता है

33 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "इस्राईल और यहूदाह के लोगों पर ज़ुल्म हुआ है। जिन्हों ने उन्हें असीर करके जिलावतन किया है वह उन्हें रिहा नहीं करना चाहते, उन्हें जाने नहीं देते। 34 लेकिन उन का छुड़ाने वाला क़वी है, उस का नाम रब्ब-उल-अफ़्वाज है। वह ख़ूब लड़ कर उन का मुआमला

दुरुस्त करेगा ताकि मुल्क को आराम-ओ-सुकून मिल
जाए। लेकिन बाबल के बाशिन्दों को वह थरथराने
देगा।”
35 रब फ़रमाता है, “तलवार बाबल की क़ौम पर
टूट पड़े! वह बाबल के बाशिन्दों, उस के बुज़ुर्गों
और दानिशमन्दों पर टूट पड़े! 36 तलवार उस के
झूटे नबियों पर टूट पड़े ताकि बेवुक़ूफ़ साबित हों।
तलवार उस के सूरमाओं पर टूट पड़े ताकि उन पर
दहशत छा जाए। 37 तलवार बाबल के घोड़ों, रथों
और परदेसी फ़ौजियों पर टूट पड़े ताकि वह औरतों
की मानिन्द बन जाएँ। तलवार उस के ख़ज़ानों पर
टूट पड़े ताकि वह छीन लिए जाएँ। 38 तलवार उस
के पानी के ज़ख़ीरों पर टूट पड़े ताकि वह ख़ुश्क हो
जाएँ। क्यूँकि मुल्क-ए-बाबल बुतों से भरा हुआ है,
ऐसे बुतों से जिन के बाइस लोग दीवानों की तरह
फिरते हैं। 39 आख़िर में गलियों में सिर्फ़ रेगिस्तान
के जानवर और जंगली कुत्ते फिरेंगे, वहाँ उक़ाबी
उल्लू बसेंगे। वह हमेशा तक इन्सान की बस्तियों
से महरूम और नस्ल-दर-नस्ल ग़ैरआबाद रहेगा।”
40 रब फ़रमाता है, “उस की हालत सदूम और अमूरा
की सी होगी जिन्हें मैं ने पड़ोस के शहरों समेत उलटा
कर सफ़्हा-ए-हस्ती से मिटा दिया। आइन्दा वहाँ कोई
नहीं बसेगा, कोई नहीं आबाद होगा।” यह रब का
फ़रमान है।

शिमाल से दुश्मन आ रहा है

41 “देखो, शिमाल से फ़ौज आ रही है, एक बड़ी
क़ौम और मुतअद्दिद बादशाह दुनिया की इन्तिहा से
रवाना हुए हैं। 42 उस के ज़ालिम और बेरहम फ़ौजी
कमान और शम्शीर से लेस हैं। जब वह अपने घोड़ों
पर सवार हो कर चलते हैं तो गरजते समुन्दर का सा
शोर बरपा होता है। ऐ बाबल बेटी, वह सब जंग के
लिए तय्यार हो कर तुझ से लड़ने आ रहे हैं। 43 उन
की ख़बर सुनते ही शाह-ए-बाबल हिम्मत हार गया है।
ख़ौफ़ज़दा हो कर वह दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत की
तरह तड़पने लगा है।
44 जिस तरह शेरबबर यर्दन के जंगलों से निकल
कर शादाब चरागाहों में चरने वाली भेड़ों पर टूट
पड़ता है उसी तरह मैं बाबल को एक दम उस के
मुल्क से भगा दूँगा। फिर मैं अपने चुने हुए आदमी को
बाबल पर मुक़र्रर करूँगा। क्यूँकि कौन मेरे बराबर
है? कौन मुझ से जवाब तलब कर सकता है? वह
गल्लाबान कहाँ है जो मेरा मुक़ाबला कर सके?”
45 चुनाँचे बाबल पर रब का फ़ैसला सुनो, मुल्क-ए-
बाबल के लिए उस के मन्सूबे पर ध्यान दो! “दुश्मन
पूरे रेवड़ को सब से नन्हे बच्चों से ले कर बड़ों तक
घसीट कर ले जाएगा। उस की चरागाह वीरान-ओ-
सुन्सान हो जाएगी।
46 जूँ ही नारा बुलन्द होगा कि बाबल दुश्मन के
क़ब्ज़े में आ गया है तो ज़मीन लरज़ उठेगी। तब
मदद के लिए बाबल की चीख़ें दीगर ममालिक तक
गूँजेंगी।”

बाबल का ज़माना ख़त्म है

51 1 रब फ़रमाता है, “मैं बाबल और उस
के बाशिन्दों के ख़िलाफ़ मोहलिक आँधी
चलाऊँगा। 2 मैं मुल्क-ए-बाबल में ग़ैरमुल्की भेजूँगा
ताकि वह उसे अनाज की तरह फटक कर तबाह
करें। आफ़त के दिन वह पूरे मुल्क को घेरे रखेंगे।
3 तीरअन्दाज़ को तीर चलाने से रोको! फ़ौजी को
ज़िराबक्तर पहन कर लड़ने के लिए खड़े होने न दो!
उन के नौजवानों को ज़िन्दा मत छोड़ना बल्कि फ़ौज
को सरासर नेस्त-ओ-नाबूद कर देना!
4 तब मुल्क-ए-बाबल में हर तरफ़ लाशें नज़र
आएँगी, तलवार के चिरे हुए उस की गलियों में पड़े
रहेंगे। 5 क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज ने इस्राईल और
यहूदाह को अकेला [x]नहीं छोड़ा, उन के ख़ुदा ने उन्हें
तर्क नहीं किया। मुल्क-ए-बाबल का क़ुसूर निहायत

[x]लफ़्ज़ी तर्जुमा : रंडवा।

संगीन है, उस ने इस्राईल के क़ुद्दूस का गुनाह किया
है। 6 बाबल से भाग निकलो! दौड़ कर अपनी जान
बचाओ, वर्ना तुम्हें भी बाबल के क़ुसूर का अज्र
मिलेगा। क्यूँकि रब के इन्तिक़ाम का वक़्त आ पहुँचा
है, अब बाबल को मुनासिब सज़ा मिलेगी।

7 बाबल रब के हाथ में सोने का प्याला था जिसे उस
ने पूरी दुनिया को पिला दिया। अक़्वाम उस की मै पी
पी कर मत्वाली हो गईं, इस लिए वह दीवानी हो गई
हैं। 8 लेकिन अब यह प्याला अचानक गिर कर टूट
गया है। चुनाँचे बाबल पर आह-ओ-ज़ारी करो! उस
के दर्द और तक्लीफ़ को दूर करने के लिए बल्सान ले
आओ, शायद उसे शिफ़ा मिले। 9 लेकिन लोग कहेंगे,
'हम बाबल की मदद करना चाहते थे, लेकिन उस के
ज़ख़्म भर नहीं सकते। इस लिए आओ, हम उसे छोड़
दें और हर एक अपने अपने मुल्क में जा बसे। क्यूँकि
उस की सख़्त अदालत हो रही है, जितना आसमान
और बादल बुलन्द हैं उतनी ही सख़्त उस की सज़ा
है।'

10 रब की क़ौम बोले, 'रब हमारी रास्ती रौशनी में
लाया है। आओ, हम सिय्यून में वह कुछ सुनाएँ जो
रब हमारे ख़ुदा ने किया है।'

11 तीरों को तेज़ करो! अपना तर्कश उन से भर लो!
रब मादी बादशाहों को हरकत में लाया है, क्यूँकि
वह बाबल को तबाह करने का इरादा रखता है।
रब इन्तिक़ाम लेगा, अपने घर की तबाही का बदला
लेगा। 12 बाबल की फ़सील के ख़िलाफ़ जंग का झंडा
गाड़ दो! शहर के इर्दगिर्द पहरादारी का बन्द-ओ-
बस्त मज़बूत करो, हाँ मज़ीद संत्री खड़े करो। क्यूँकि
रब ने बाबल के बाशिन्दों के ख़िलाफ़ मन्सूबा बांध
कर उस का एलान किया है, और अब वह उसे पूरा
करेगा।

13 ऐ बाबल बेटी, तू गहरे पानी के पास बसती और
निहायत दौलतमन्द हो गई है। लेकिन ख़बरदार! तेरा
अन्जाम क़रीब ही है, तेरी ज़िन्दगी का धागा कट गया
है। 14 रब्ब-उल-अफ़्वाज ने अपने नाम की क़सम खा
कर फ़रमाया है कि मैं तुझे दुश्मनों से भर दूँगा, और
वह टिड्डियों के ग़ोल की तरह पूरे शहर को ढाँप लेंगे।
हर जगह वह तुझ पर फ़त्ह के नारे लगाएँगे।

15 देखो, अल्लाह ही ने अपनी क़ुदरत से ज़मीन को
ख़ल्क़ किया, उसी ने अपनी हिक्मत से दुनिया की
बुन्याद रखी, और उसी ने अपनी समझ के मुताबिक़
आसमान को ख़ैमे की तरह तान लिया। 16 उस के
हुक्म पर आसमान पर पानी के ज़ख़ीरे गरजने लगते
हैं। वह दुनिया की इन्तिहा से बादल चढ़ने देता,
बारिश के साथ बिजली कड़कने देता और अपने
गोदामों से हवा निकलने देता है।

17 तमाम इन्सान अहमक़ और समझ से ख़ाली हैं।
हर सुनार अपने बुतों के बाइस शर्मिन्दा हुआ है। उस
के बुत धोका ही हैं, उन में दम नहीं। 18 वह फ़ुज़ूल
और मज़्हकाख़ेज़ हैं। अदालत के वक़्त वह नेस्त हो
जाएंगे। 19 अल्लाह जो याक़ूब का मौरूसी हिस्सा है
इन की मानिन्द नहीं है। वह सब का ख़ालिक़ है,
और इस्राईली क़ौम उस का मौरूसी हिस्सा है। रब्ब-
उल-अफ़्वाज ही उस का नाम है।

अब रब बाबल पर हम्ला करेगा

20 ऐ बाबल, तू मेरा हथोड़ा, मेरा जंगी हथियार था।
तेरे ही ज़रीए मैं ने क़ौमों को पाश पाश कर दिया,
सल्तनतों को ख़ाक में मिला दिया। 21 तेरे ही ज़रीए
मैं ने घोड़ों को सवारों समेत और रथों को रथबानों
समेत पाश पाश कर दिया। 22 तेरे ही ज़रीए मैं ने
मर्दों और औरतों, बुज़ुर्गों और बच्चों, नौजवानों और
कुंवारियों को पारा पारा कर दिया। 23 तेरे ही ज़रीए
मैं ने गल्लाबान और उस के रेवड़, किसान और उस
के बैलों, गवर्नरों और सरकारी मुलाज़िमों को रेज़ा
रेज़ा कर दिया।

24 लेकिन अब मैं बाबल और उस के तमाम
बाशिन्दों को उन की सिय्यून के साथ बदसुलूकी का
पूरा अज्र दूँगा। तुम अपनी आँखों से इस के गवाह
होगे।" यह रब का फ़रमान है।

25 रब फ़रमाता है, "ऐ बाबल, पहले तू मोहलिक
पहाड़ था जिस ने तमाम दुनिया का सत्यानास कर

दिया। लेकिन अब मैं तुझ से निपट लेता हूँ। मैं अपना
हाथ तेरे ख़िलाफ़ बढ़ा कर तुझे ऊँची ऊँची चटानों से
पटख़ दूँगा। आख़िरकार मल्बे का झुलसा हुआ ढेर
ही बाक़ी रहेगा। 26 तू इतना तबाह हो जाएगा कि तेरे
पत्थर न किसी मकान के कोनों के लिए, न किसी
बुन्याद के लिए इस्तेमाल हो सकेंगे।" यह रब का
फ़रमान है।

27 "आओ, मुल्क में जंग का झंडा गाड़ दो!
अक़्वाम में नरसिंगा फूँक फूँक कर उन्हें बाबल के
ख़िलाफ़ लड़ने के लिए मख़्सूस करो! उस से लड़ने
के लिए अरारात, मिन्नी और अश्कनाज़ की सल्तनतों
को बुलाओ! बाबल से लड़ने के लिए कमाँडर मुक़र्रर
करो। घोड़े भेज दो जो टिड्डियों के हौलनाक ग़ोल की
तरह उस पर टूट पड़ें। 28 अक़्वाम को बाबल से लड़ने
के लिए मख़्सूस करो! मादी बादशाह अपने गवर्नरों,
अफ़सरों और तमाम मुती ममालिक समेत तय्यार हो
जाएँ। 29 ज़मीन लरज़ती और थरथराती है, क्यूँकि
रब का मन्सूबा अटल है, वह मुल्क-ए-बाबल को यूँ
तबाह करना चाहता है कि आइन्दा उस में कोई न
रहे।

30 बाबल के जंगआज़मूदा फ़ौजी लड़ने से बाज़ आ
कर अपने क़िलों में छुप गए हैं। उन की ताक़त जाती
रही है, वह औरतों की मानिन्द हो गए हैं। अब बाबल
के घरों को आग लग गई है, फ़सील के दरवाज़ों
के कुंडे टूट गए हैं। 31 यके बाद दीगरे क़ासिद दौड़
कर शाह-ए-बाबल को इत्तिला देते हैं, 'शहर चारों
तरफ़ से दुश्मन के क़ब्ज़े में है! 32 दरया को पार
करने के तमाम रास्ते उस के हाथ में हैं, सरकंडे का
दलदली इलाक़ा जल रहा है, और फ़ौजी ख़ौफ़ के
मारे बेहिस्स-ओ-हरकत हो गए हैं'।"

33 क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा
है फ़रमाता है, "फ़सल की कटाई से पहले पहले
गाहने की जगह के फ़र्श को दबा दबा कर मज़बूत
किया जाता है। यही बाबल बेटी की हालत है। फ़सल
की कटाई क़रीब आ गई है, और थोड़ी देर के बाद
बाबल को पाँओ तले ख़ूब दबाया जाएगा।

रब बाबल से यरूशलम का इन्तिक़ाम लेगा

34 सिय्यून बेटी रोती है, 'शाह-ए-बाबल
नबूकद्नज़्ज़र ने मुझे हड़प कर लिया, चूस लिया,
ख़ाली बर्तन की तरह एक तरफ़ रख दिया है। उस ने
अज़दहे की तरह मुझे निगल लिया, अपने पेट को
मेरी लज़ीज़ चीज़ों से भर लिया है। फिर उस ने मुझे
वतन से निकाल दिया।' 35 लेकिन अब सिय्यून की
रहने वाली कहे, 'जो ज़ियादती मेरे साथ हुई वह
बाबल के साथ की जाए। जो क़त्ल-ओ-ग़ारत मुझ
में हुई वह बाबल के बाशिन्दों में मच जाए'!"

36 रब यरूशलम से फ़रमाता है, "देख, मैं ख़ुद तेरे
हक़ में लड़ूँगा, मैं ख़ुद तेरा बदला लूँगा। तब उस
का समुन्दर ख़ुश्क हो जाएगा, उस के चश्मे बन्द हो
जाएंगे। 37 बाबल मल्बे का ढेर बन जाएगा। गीदड़
ही उस में अपना घर बना लेंगे। उसे देख कर गुज़रने
वालों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह 'तौबा तौबा'
कह कर आगे निकलेंगे। कोई भी वहाँ नहीं बसेगा।

38 इस वक़्त बाबल के बाशिन्दे शेरबबर की तरह
दहाड़ रहे हैं, वह शेर के बच्चों की तरह ग़ुर्रा रहे हैं।
39 लेकिन रब फ़रमाता है कि वह अभी मस्त होंगे
कि मैं उन के लिए ज़ियाफ़त तय्यार करूँगा, एक
ऐसी ज़ियाफ़त जिस में वह मत्वाले हो कर ख़ुशी के
नारे मारेंगे, फिर अबदी नींद सो जाएंगे। उस नींद से
वह कभी नहीं उठेंगे। 40 मैं उन्हें भेड़ के बच्चों, मेंढों
और बकरों की तरह क़साई के पास ले जाऊँगा।

41 हाय, बाबल दुश्मन के क़ब्ज़े में आ गया है!
जिस की तारीफ़ पूरी दुनिया करती थी वह छीन लिया
गया है! अब उसे देख कर क़ौमों के रोंगटे खड़े हो
जाते हैं। 42 समुन्दर बाबल पर चढ़ आया है, उस की
गरजती लहरों ने उसे ढाँप लिया है। 43 उस के शहर
रेगिस्तान बन गए हैं, अब चारों तरफ़ ख़ुश्क और
वीरान बयाबान ही नज़र आता है। न कोई उस में
रहता, न उस में से गुज़रता है।

44 मैं बाबल के देवता बेल को सज़ा दे कर उस
के मुँह से वह कुछ निकाल दूँगा जो उस ने हड़प कर

लिया था। अब से दीगर अक़्वाम जौक़-दर-जौक़ उस
के पास नहीं आएँगी, क्यूँकि बाबल की फ़सील भी
गिर गई है।
45 ऐ मेरी क़ौम, बाबल से निकल आ! हर एक
अपनी जान बचाने के लिए वहाँ से भाग जाए, क्यूँकि
रब का शदीद ग़ज़ब उस पर नाज़िल होने को है।
46 जब अफ़्वाहें मुल्क में फैल जाएँ तो हिम्मत मत
हारना, न ख़ौफ़ खाना। क्यूँकि हर साल कोई और
अफ़्वाह फैलेगी, ज़ुल्म पर ज़ुल्म और हुक्मरान पर
हुक्मरान आता रहेगा। 47 क्यूँकि वह वक़्त क़रीब ही
है जब मैं बाबल के बुतों को सज़ा दूँगा। तब पूरे मुल्क
की बेहुरमती हो जाएगी, और उस के मक़्तूल उस
के बीच में गिर कर पड़े रहेंगे। 48 तब आसमान-ओ-
ज़मीन और जो कुछ उन में है बाबल पर शादियाना
बजाएंगे। क्यूँकि तबाहकुन दुश्मन शिमाल से उस पर
हम्ला करने आ रहा है।" यह रब का फ़रमान है।
49 "बाबल ने पूरी दुनिया में बेशुमार लोगों को क़त्ल
किया है, लेकिन अब वह ख़ुद हलाक हो जाएगा, इस
लिए कि उस ने इतने इस्राईलियों को क़त्ल किया है।
50 ऐ तलवार से बचे हुए इस्राईलियो, रुके न रहो
बल्कि रवाना हो जाओ! दूरदराज़ मुल्क में रब को
याद करो, यरूशलम का भी ख़याल करो! 51 बेशक
तुम कहते हो, 'हम शर्मिन्दा हैं, हमारी सख़्त रुस्वाई
हुई है, शर्म के मारे हम ने अपने मुँह को ढाँप लिया है।
क्यूँकि परदेसी रब के घर की मुक़द्दसतरीन जगहों में
घुस आए हैं।'
52 लेकिन रब फ़रमाता है कि वह वक़्त आने वाला
है जब मैं बाबल के बुतों को सज़ा दूँगा। तब उस के
पूरे मुल्क में मौत के घाट उतरने वालों की आहें सुनाई
देंगी। 53 ख़्वाह बाबल की ताक़त आसमान तक ऊँची
क्यूँ न हो, ख़्वाह वह अपने बुलन्द क़िले को कितना
मज़बूत क्यूँ न करे तो भी वह गिर जाएगा। मैं तबाह
करने वाले फ़ौजी उस पर चढ़ा लाऊँगा।" यह रब का
फ़रमान है।
54 "सुनो! बाबल में चीख़ें बुलन्द हो रही हैं, मुल्क-
ए-बाबल धड़ाम से गिर पड़ा है। 55 क्यूँकि रब बाबल
को बर्बाद कर रहा, वह उस का शोर-शराबा बन्द कर
रहा है। दुश्मन की लहरें मुतलातिम समुन्दर की तरह
उस पर चढ़ रही हैं, उन की गरजती आवाज़ फ़िज़ा
में गूँज रही है। 56 क्यूँकि तबाहकुन दुश्मन बाबल
पर हम्ला करने आ रहा है। तब उस के सूरमाओं
को पकड़ा जाएगा और उन की कमानें टूट जाएँगी।
क्यूँकि रब इन्तिक़ाम का ख़ुदा है, वह हर इन्सान को
उस का मुनासिब अज्र देगा।"
57 दुनिया का बादशाह जिस का नाम रब्ब-उल-
अफ़्वाज है फ़रमाता है, "मैं बाबल के बड़ों को
मत्वाला करूँगा, ख़्वाह वह बुज़ुर्ग, दानिशमन्द,
गवर्नर, सरकारी अफ़्सर या फ़ौजी क्यूँ न हों। तब वह
अबदी नींद सो जाएंगे और दुबारा कभी नहीं उठेंगे।"
58 रब फ़रमाता है, "बाबल की मोटी मोटी फ़सील
को ख़ाक में मिलाया जाएगा, और उस के ऊँचे ऊँचे
दरवाज़े राख हो जाएंगे। तब यह कहावत बाबल
पर सादिक़ आएगी, 'अक़्वाम की मेहनत-मशक़्क़त
बेफ़ाइदा रही, जो कुछ उन्हों ने बड़ी मुश्किल से
बनाया वह नज़र-ए-आतिश हो गया है'।"

यरमियाह अपना पैग़ाम बाबल भेजता है

59 यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह के चौथे साल में
यरमियाह नबी ने यह कलाम सिरायाह बिन नैरियाह
बिन मह्सियाह के सपुर्द कर दिया जो उस वक़्त
बादशाह के साथ बाबल के लिए रवाना हुआ। सफ़र
का पूरा बन्द-ओ-बस्त सिरायाह के हाथ में था।
60 यरमियाह ने तूमार में बाबल पर नाज़िल होने
वाली आफ़त की पूरी तफ़्सील लिख दी थी। उस के
बाबल के बारे में तमाम पैग़ामात उस में क़लमबन्द
थे। 61 उस ने सिरायाह से कहा, "बाबल पहुँच कर
ध्यान से तूमार की तमाम बातों की तिलावत करें।
62 तब दुआ करें, 'ऐ रब, तू ने एलान किया है कि मैं
बाबल को यूँ तबाह करूँगा कि आइन्दा न इन्सान,
न हैवान उस में बसेगा। शहर अबद तक वीरान-
ओ-सुन्सान रहेगा।' 63 पूरी किताब की तिलावत के
इख़्तिताम पर उसे पत्थर के साथ बांध लें, फिर

दरया-ए-फ़ुरात में फैंक कर 64 बोलें, ‘बाबल का बेड़ा
इस पत्थर की तरह ग़र्क़ हो जाएगा। जो आफ़त मैं उस
पर नाज़िल करूँगा उस से उसे यूँ ख़ाक में मिलाया
जाएगा कि दुबारा कभी नहीं उठेगा। वह सरासर
ख़त्म हो जाएगा’।”

यरमियाह के पैग़ामात यहाँ इख़तिताम पर पहुँच गए
हैं।

शाह-ए-यहूदाह सिदक़ियाह की हुकूमत

52 1 सिदक़ियाह 21 साल की उम्र में बादशाह
बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत
का दौरानिया 11 साल था। उस की माँ हमूतल
बिन्त यरमियाह लिब्ना शहर की रहने वाली थी।
2 यहूयक़ीम की तरह सिदक़ियाह ऐसा काम करता
रहा जो रब को नापसन्द था। 3 रब यरूशलम और
यहूदाह के बाशिन्दों से इतना नाराज़ हुआ कि आख़िर
में उस ने उन्हें अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया।

सिदक़ियाह का फ़रार और गिरिफ़्तारी

एक दिन सिदक़ियाह बाबल के बादशाह से सरकश
हुआ, 4 इस लिए शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र तमाम
फ़ौज अपने साथ ले कर दुबारा यरूशलम पहुँचा
ताकि उस पर हम्ला करे।

सिदक़ियाह की हुकूमत के नवें साल में बाबल की
फ़ौज यरूशलम का मुहासरा करने लगी। यह काम
दसवें महीने के दसवें दिन [y]शुरू हुआ। पूरे शहर के
इर्दगिर्द बादशाह ने पुश्ते बनवाए। 5 सिदक़ियाह की
हुकूमत के 11वें साल तक यरूशलम क़ाइम रहा।
6 लेकिन फिर काल ने शहर में ज़ोर पकड़ा, और
अवाम के लिए खाने की चीज़ें न रहीं।

चौथे महीने के नवें दिन [z]7 बाबल के फ़ौजियों ने
फ़सील में रख़ना डाल दिया। उसी रात सिदक़ियाह
अपने तमाम फ़ौजियों समेत फ़रार होने में कामयाब
हुआ, अगरचे शहर दुश्मन से घिरा हुआ था। वह
फ़सील के उस दरवाज़े से निकले जो शाही बाग़ के
साथ मुल्हिक़ दो दीवारों के बीच में था। वह वादी-ए-
यर्दन की तरफ़ भागने लगे, 8 लेकिन बाबल की फ़ौज
ने बादशाह का ताक़्क़ुब करके उसे यरीहू के मैदान
में पकड़ लिया। उस के फ़ौजी उस से अलग हो कर
चारों तरफ़ मुन्तशिर हो गए, 9 और वह ख़ुद गिरिफ़्तार
हो गया। फिर उसे मुल्क-ए-हमात के शहर रिब्ला में
शाह-ए-बाबल के पास लाया गया, और वहीं उस ने
सिदक़ियाह पर फ़ैसला सादिर किया। 10 सिदक़ियाह
के देखते देखते शाह-ए-बाबल ने रिब्ला में उस के
बेटों को क़त्ल किया। साथ साथ उस ने यहूदाह
के तमाम बुज़ुर्गों को भी मौत के घाट उतार दिया।
11 फिर उस ने सिदक़ियाह की आँखें निकलवा कर
उसे पीतल की ज़न्जीरों में जकड़ लिया और बाबल
ले गया जहाँ वह जीते जी रहा।

यरूशलम और रब के घर की तबाही

12 शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र की हुकूमत के
19वें साल में बादशाह का ख़ास अफ़्सर नबूज़रादान
यरूशलम पहुँचा। वह शाही मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर
था। पाँचवें महीने के सातवें दिन [a]उस ने आ कर
13 रब के घर, शाही महल और यरूशलम के तमाम
मकानों को जला दिया। हर बड़ी इमारत भस्म हो
गई। 14 उस ने अपने तमाम फ़ौजियों से शहर की पूरी
फ़सील को भी गिरा दिया। 15 फिर नबूज़रादान ने सब
को जिलावतन कर दिया जो यरूशलम में पीछे रह
गए थे। वह भी उन में शामिल थे जो जंग के दौरान
ग़द्दारी करके शाह-ए-बाबल के पीछे लग गए थे।
नबूज़रादान बाक़ीमान्दा कारीगर और ग़रीबों में से
भी कुछ बाबल ले गया। 16 लेकिन उस ने सब से
निचले तब्क़े के बाज़ लोगों को मुल्क-ए-यहूदाह में

---

[y] 15 जन्वरी।

[z] 18 जुलाई।

[a] 17 अगस्त।

छोड़ दिया ताकि वह अंगूर के बाग़ों और खेतों को
सँभालें।

17 बाबल के फ़ौजियों ने रब के घर में जा कर पीतल
के दोनों सतूनों, पानी के बासनों को उठाने वाली
हथगाड़ियों और समुन्दर नामी पीतल के हौज़ को
तोड़ दिया और सारा पीतल उठा कर बाबल ले गए।
18 वह रब के घर की ख़िदमत सरअन्जाम देने के लिए
दरकार सामान भी ले गए यानी बालटियाँ, बेलचे,
बत्ती कतरने के औज़ार, छिड़काओ के कटोरे, प्याले
और पीतल का बाक़ी सारा सामान। 19 ख़ालिस सोने
और चाँदी के बर्तन भी इस में शामिल थे यानी बासन,
जलते हुए कोएले के बर्तन, छिड़काओ के कटोरे,
बालटियाँ, शमादान, प्याले और मै की नज़रें पेश
करने के बर्तन। शाही मुहाफ़िज़ों का यह अफ़्सर सारा
सामान उठा कर बाबल ले गया। 20 जब दोनों सतूनों,
समुन्दर नामी हौज़, हौज़ को उठाने वाले पीतल के
बैलों और बासनों को उठाने वाली हथगाड़ियों का
पीतल तुड़वाया गया तो वह इतना वज़नी था कि उसे
तोला न जा सका। सुलेमान बादशाह ने यह चीज़ें रब
के घर के लिए बनवाई थीं। 21 हर सतून की ऊँचाई
27 फ़ुट और घेरा 18 फ़ुट था। दोनों खोखले थे,
और उन की दीवारों की मोटाई 3 इंच थी। 22 उन के
बालाई हिस्सों की ऊँचाई साढ़े सात फ़ुट थी, और
वह पीतल की जाली और अनारों से सजे हुए थे।
23 96 अनार लगे हुए थे। जाली के इर्दगिर्द कुल 100
अनार लगे थे।

24 शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़्सर नबूज़रादान ने ज़ैल
के क़ैदियों को अलग कर दिया : इमाम-ए-आज़म
सिरायाह, उस के बाद आने वाले इमाम सफ़नियाह,
रब के घर के तीन दरबानों, 25 शहर के बचे हुओं में
से उस अफ़्सर को जो शहर के फ़ौजियों पर मुक़र्रर
था, सिदक़ियाह बादशाह के सात मुशीरों, उम्मत की
भर्ती करने वाले अफ़्सर और शहर में मौजूद उस
के 60 मर्दों को। 26 नबूज़रादान इन सब को अलग
करके सूबा हमात के शहर रिब्ला ले गया जहाँ शाह-
ए-बाबल था। 27 वहाँ नबूकद्नज़्ज़र ने उन्हें सज़ा-ए-
मौत दी।

यूँ यहूदाह के बाशिन्दों को जिलावतन कर दिया
गया। 28 नबूकद्नज़्ज़र ने अपनी हुकूमत के 7वें साल
में यहूदाह के 3,023 अफ़राद, 29 18वें साल में
यरूशलम के 832 अफ़राद, 30 और 23वें साल में
745 अफ़राद को जिलावतन कर दिया। यह आख़िरी
लोग शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़्सर नबूज़रादान के ज़रीए
बाबल लाए गए। कुल 4,600 अफ़राद जिलावतन
हुए।

यहूयाकीन को आज़ाद किया जाता है

31 यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन की जिलावतनी
के 37वें साल में अवील-मरूदक बाबल का बादशाह
बना। उसी साल के 12वें महीने के 25वें दिन [b]उस
ने यहूयाकीन को क़ैदख़ाने से आज़ाद कर दिया।
32 उस ने उस के साथ नर्म बातें करके उसे इज़्ज़त की
ऐसी कुर्सी पर बिठाया जो बाबल में जिलावतन किए
गए बाक़ी बादशाहों की निस्बत ज़्यादा अहम थी।
33 यहूयाकीन को क़ैदी के कपड़े उतारने की इजाज़त
मिली, और उसे ज़िन्दगी भर बादशाह की मेज़ पर
बाक़ाइदगी से खाना खाने का शरफ़ हासिल रहा।
34 बादशाह ने मुक़र्रर किया कि यहूयाकीन को उम्र
भर इतना वज़ीफ़ा मिलता रहे कि उस की रोज़मर्रा
ज़रूरियात पूरी होती रहें।

---

[b]31 मार्च।

नोहा

वीरान-ओ-सुन्सान

1 1 हाय, अफ़सोस! यरूशलम बेटी कितनी तन्हा
बैठी है, गो उस में पहले इतनी रौनक़ थी। जो
पहले अक़्वाम में अव्वल दर्जा रखती थी वह बेवा
बन गई है, जो पहले ममालिक की रानी थी वह
ग़ुलामी में आ गई है।
2 रात को वह रो रो कर गुज़ारती है, उस के गाल
आँसूओं से तर रहते हैं। आशिक़ों में से कोई नहीं रहा
जो उसे तसल्ली दे। दोस्त सब के सब बेवफ़ा हो कर
उस के दुश्मन बन गए हैं।
3 पहले भी यहूदाह बेटी बड़ी मुसीबत में फंसी
हुई थी, पहले भी उसे सख़्त मज़दूरी करनी पड़ी।
लेकिन अब वह जिलावतन हो कर दीगर अक़्वाम
के बीच में रहती है, अब उसे कहीं भी ऐसी जगह
नहीं मिलती जहाँ सुकून से रह सके। क्यूँकि जब वह
बड़ी तक्लीफ़ में मुब्तला थी तो दुश्मन ने उस का
ताक़्क़ुब करके उसे घेर लिया।
4 सिय्यून की राहें मातमज़दा हैं, क्यूँकि कोई ईद
मनाने के लिए नहीं आता। शहर के तमाम दरवाज़े
वीरान-ओ-सुन्सान हैं। उस के इमाम आहें भर रहे,
उस की कुंवारियाँ ग़म खा रही हैं और उसे ख़ुद शदीद
तल्ख़ी महसूस हो रही है।
5 उस के मुख़ालिफ़ मालिक बन गए, उस के दुश्मन
सुकून से रह रहे हैं। क्यूँकि रब ने शहर को उस के
मुतअद्दिद गुनाहों का अज्र दे कर उसे दुख पहुँचाया
है। उस के फ़र्ज़न्द दुश्मन के आगे आगे चल कर
जिलावतन हो गए हैं।
6 सिय्यून बेटी की तमाम शान-ओ-शौकत जाती रही
है। उस के बुज़ुर्ग चरागाह न पाने वाले हिरन हैं जो
थकते थकते शिकारियों के आगे आगे भागते हैं।
7 अब जब यरूशलम मुसीबतज़दा और बेवतन है
तो उसे वह क़ीमती चीज़ें याद आती हैं जो उसे क़दीम
ज़माने से ही हासिल थीं। क्यूँकि जब उस की क़ौम
दुश्मन के हाथ में आई तो कोई नहीं था जो उस की
मदद करता बल्कि उस के मुख़ालिफ़ तमाशा देखने
दौड़े आए, वह उस की तबाही से ख़ुश हो कर हंस
पड़े।
8 यरूशलम बेटी से संगीन गुनाह सरज़द हुआ है,
इसी लिए वह लान-तान का निशाना बन गई है। जो
पहले उस की इज़्ज़त करते थे वह सब उसे हक़ीर
जानते हैं, क्यूँकि उन्हों ने उस की बरहनगी देखी है।
अब वह आहें भर भर कर अपना मुँह दूसरी तरफ़
फेर लेती है।
9 गो उस के दामन में बहुत गन्दगी थी, तो भी उस
ने अपने अन्जाम का ख़याल तक न किया। अब वह
धड़ाम से गिर गई है, और कोई नहीं है जो उसे तसल्ली
दे। "ऐ रब, मेरी मुसीबत का लिहाज़ कर! क्यूँकि
दुश्मन शेख़ी मार रहा है।"
10 जो कुछ भी यरूशलम को प्यारा था उस पर
दुश्मन ने हाथ डाला है। हत्ता कि उसे देखना पड़ा
कि ग़ैरअक़्वाम उस के मक़्दिस में दाख़िल हो रहे हैं,
गो तू ने ऐसे लोगों को अपनी जमाअत में शरीक होने
से मना किया था।
11 तमाम बाशिन्दे आहें भर भर कर रोटी की तलाश
में रहते हैं। हर एक खाने का कोई न कोई टुकड़ा पाने
के लिए अपनी बेशक़ीमत चीज़ें बेच रहा है। ज़हन में
एक ही ख़याल है कि अपनी जान को किसी न किसी
तरह बचाए। "ऐ रब, मुझ पर नज़र डाल कर ध्यान
दे कि मेरी कितनी तज़्लील हुई है।

12 ऐ यहाँ से गुज़रने वालो, क्या यह सब कुछ
तुम्हारे नज़्दीक बेमानी है? ग़ौर से सोच लो, जो ईज़ा

मुझे बर्दाश्त करनी पड़ती है क्या वह कहीं और पाई जाती है? हरगिज़ नहीं! यह रब की तरफ़ से है, उसी का सख़्त ग़ज़ब मुझ पर नाज़िल हुआ है।

13 बुलन्दियों से उस ने मेरी हड्डियों पर आग नाज़िल करके उन्हें कुचल दिया। उस ने मेरे पाँओ के सामने जाल बिछा कर मुझे पीछे हटा दिया। उसी ने मुझे वीरान-ओ-सुन्सान करके हमेशा के लिए बीमार कर दिया।

14 मेरे जराइम का जूआ भारी है। रब के हाथ ने उन्हें एक दूसरे के साथ जोड़ कर मेरी गर्दन पर रख दिया। अब मेरी ताक़त ख़त्म है, रब ने मुझे उन ही के हवाले कर दिया जिन का मुक़ाबला मैं कर ही नहीं सकता।

15 रब ने मेरे दरमियान के तमाम सूरमाओं को रद्द कर दिया, उस ने मेरे ख़िलाफ़ जुलूस निकलवाया जो मेरे जवानों को पाश पाश करे। हाँ, रब ने कुंवारी यहूदाह बेटी को अंगूर का रस निकालने के हौज़ में फैंक कर कुचल डाला।

16 इस लिए मैं रो रही हूँ, मेरी आँखों से आँसू टपकते रहते हैं। क्यूँकि क़रीब कोई नहीं है जो मुझे तसल्ली दे कर मेरी जान को तर-ओ-ताज़ा करे। मेरे बच्चे तबाह हैं, क्यूँकि दुश्मन ग़ालिब आ गया है।”

17 सिय्यून बेटी अपने हाथ फैलाती है, लेकिन कोई नहीं है जो उसे तसल्ली दे। रब के हुक्म पर याक़ूब के पड़ोसी उस के दुश्मन बन गए हैं। यरूशलम उन के दरमियान घिनौनी चीज़ बन गई है।

18 “रब हक़-ब-जानिब है, क्यूँकि मैं उस के कलाम से सरकश हुई। ऐ तमाम अक़्वाम, सुनो! मेरी ईज़ा पर ग़ौर करो! मेरे नौजवान और कुंवारियाँ जिलावतन हो गए हैं।

19 मैं ने अपने आशिक़ों को बुलाया, लेकिन उन्हों ने बेवफ़ा हो कर मुझे तर्क कर दिया। अब मेरे इमाम और बुज़ुर्ग अपनी जान बचाने के लिए ख़ुराक ढूँडते ढूँडते शहर में हलाक हो गए हैं।

20 ऐ रब, मेरी तंगदस्ती पर ध्यान दे! बातिन में मैं तड़प रही हूँ, मेरा दिल तेज़ी से धड़क रहा है, इस लिए कि मैं इतनी ज़्यादा सरकश रही हूँ। बाहर गली में तलवार ने मुझे बच्चों से महरूम कर दिया, घर के अन्दर मौत मेरे पीछे पड़ी है।

21 मेरी आहें तो लोगों तक पहुँचती हैं, लेकिन कोई मुझे तसल्ली देने के लिए नहीं आता। इस के बजाय मेरे तमाम दुश्मन मेरी मुसीबत के बारे में सुन कर बग़लें बजा रहे हैं। वह ख़ुश हैं कि तू ने मेरे साथ ऐसा सुलूक किया है। ऐ रब, वह दिन आने दे जिस का एलान तू ने किया है ताकि वह भी मेरी तरह की मुसीबत में फंस जाएँ।

22 उन की तमाम बुरी हरकतें तेरे सामने आएँ। उन से यूँ निपट ले जिस तरह तू ने मेरे गुनाहों के जवाब में मुझ से निपट लिया है। क्यूँकि आहें भरते भरते मेरा दिल निढाल हो गया है।”

रब का ग़ज़ब यरूशलम पर नाज़िल हुआ है

2 1 हाय, रब का क़हर काले बादलों की तरह सिय्यून बेटी पर छा गया है! इस्राईल की जो शान-ओ-शौकत पहले आसमान की तरह बुलन्द थी उसे अल्लाह ने ख़ाक में मिला दिया है। जब उस का ग़ज़ब नाज़िल हुआ तो उस ने अपने घर का भी ख़याल न किया, गो वह उस के पाँओ की चौकी है।

2 रब ने बेरहमी से याक़ूब की आबादियों को मिटा डाला, क़हर में यहूदाह बेटी के क़िलों को ढा दिया। उस ने यहूदाह की सल्तनत और बुज़ुर्गों को ख़ाक में मिला कर उन की बेहुरमती की है।

3 ग़ज़बनाक हो कर उस ने इस्राईल की पूरी ताक़त ख़त्म कर दी। फिर जब दुश्मन क़रीब आया तो उस ने अपने दहने हाथ को इस्राईल की मदद करने से रोक लिया। न सिर्फ़ यह बल्कि वह शोलाज़न आग बन गया जिस ने याक़ूब में चारों तरफ़ फैल कर सब कुछ भस्म कर दिया।

4 अपनी कमान को तान कर वह अपने दहने हाथ से तीर चलाने के लिए उठा। दुश्मन की तरह उस ने सब कुछ जो मनमोहन था मौत के घाट उतारा। सिय्यून

बेटी का ख़ैमा उस के क़हर के भड़कते कोएलों से
भर गया।

5 रब ने इस्राईल का दुश्मन सा बन कर मुल्क को
उस के महलों और क़िलों समेत तबाह कर दिया
है। उसी के हाथों यहूदाह बेटी की आह-ओ-ज़ारी में
इज़ाफ़ा होता गया।
6 उस ने अपनी सुकूनतगाह को बाग़ की झोंपड़ी
की तरह गिरा दिया, उसी मक़ाम को बर्बाद कर दिया
जहाँ क़ौम उस से मिलने के लिए जमा होती थी। रब
के हाथों यूँ हुआ कि अब सिय्यून की ईदों और सबतों
की याद ही नहीं रही। उस के शदीद क़हर ने बादशाह
और इमाम दोनों को रद्द कर दिया है।
7 अपनी क़ुर्बानगाह और मक़्दिस को मुस्तरद
करके रब ने यरूशलम के महलों की दीवारें दुश्मन
के हवाले कर दीं। तब रब के घर में भी ईद के दिन
का सा शोर मच गया।
8 रब ने फ़ैसला किया कि सिय्यून बेटी की फ़सील
को गिरा दिया जाए। उस ने फ़ीते से दीवारों को
नाप नाप कर अपने हाथ को न रोका जब तक सब
कुछ तबाह न हो गया। तब क़िलाबन्दी के पुश्ते और
फ़सील मातम करते करते ज़ाए हो गए।
9 शहर के दरवाज़े ज़मीन में धँस गए, उन के कुंडे
टूट कर बेकार हो गए। यरूशलम के बादशाह और
राहनुमा दीगर अक़्वाम में जिलावतन हो गए हैं। अब
न शरीअत रही, न सिय्यून के नबियों को रब की रोया
मिलती है।
10 सिय्यून बेटी के बुज़ुर्ग ख़ामोशी से ज़मीन पर बैठ
गए हैं। टाट के लिबास ओढ़ कर उन्हों ने अपने सरों
पर ख़ाक डाल ली है। यरूशलम की कुंवारियाँ भी
अपने सरों को झुकाए बैठी हैं।

11 मेरी आँखें रो रो कर थक गई हैं, शदीद दर्द ने मेरे
दिल को बेहाल कर दिया है। क्यूँकि मेरी क़ौम नेस्त
हो गई है। शहर के चौकों में बच्चे पज़्मुर्दा हालत में
फिर रहे हैं, शीरख़्वार बच्चे ग़श खा रहे हैं। यह देख
कर मेरा कलेजा फट रहा है।
12 अपनी माँ से वह पूछते हैं, "रोटी और मै कहाँ
है?" लेकिन बेफ़ाइदा। वह मौत के घाट उतरने वाले
ज़ख़्मी आदमियों की तरह चौकों में भूके मर रहे हैं,
उन की जान माँ की गोद में ही निकल रही है।

13 ऐ यरूशलम बेटी, मैं किस से तेरा मुवाज़ना
करके तेरी हौसलाअफ़्ज़ाई करूँ? ऐ कुंवारी सिय्यून
बेटी, मैं किस से तेरा मुक़ाबला करके तुझे तसल्ली
दूँ? क्यूँकि तुझे समुन्दर जैसा वसी नुक़्सान पहुँचा
है। कौन तुझे शिफ़ा दे सकता है?
14 तेरे नबियों ने तुझे झूटी और बेकार रोयाएँ पेश
कीं। उन्हों ने तेरा क़ुसूर तुझ पर ज़ाहिर न किया,
हालाँकि उन्हें करना चाहिए था ताकि तू इस सज़ा
से बच जाती। इस के बजाय उन्हों ने तुझे झूट और
फ़रेबदिह पैग़ामात सुनाए।
15 अब तेरे पास से गुज़रने वाले ताली बजा कर
आवाज़े कसते हैं। यरूशलम बेटी को देख कर वह
सर हिलाते हुए तौबा तौबा कहते हैं, "क्या यह वह
शहर है जो 'तक्मील-ए-हुस्न' और 'तमाम दुनिया की
ख़ुशी' कहलाता था?"
16 तेरे तमाम दुश्मन मुँह पसार कर तेरे ख़िलाफ़ बातें
करते हैं। वह आवाज़े कसते और दाँत पीसते हुए
कहते हैं, "हम ने उसे हड़प कर लिया है। लो, वह दिन
आ गया है जिस के इन्तिज़ार में हम रहे। आख़िरकार
वह पहुँच गया, आख़िरकार हम ने अपनी आँखों से
उसे देख लिया है।"
17 अब रब ने अपनी मर्ज़ी पूरी की है। अब उस ने
सब कुछ पूरा किया है जो बड़ी देर से फ़रमाता आया
है। बेरहमी से उस ने तुझे ख़ाक में मिला दिया। उसी
ने होने दिया कि दुश्मन तुझ पर शादियाना बजाता,
कि तेरे मुख़ालिफ़ों की ताक़त तुझ पर ग़ालिब आ
गई है।

18 लोगों के दिल रब को पुकारते हैं। ऐ सिय्यून बेटी
की फ़सील, तेरे आँसू दिन रात बहते बहते नदी बन
जाएँ। न इस से बाज़ आ, न अपनी आँखों को रोने से
रुकने दे!
19 उठ, रात के हर पहर की इब्तिदा में आह-ओ-
ज़ारी कर! अपने दिल की हर बात पानी की तरह रब
के हुज़ूर उंडेल दे। अपने हाथों को उस की तरफ़ उठा
कर अपने बच्चों की जानों के लिए इल्तिजा कर जो
इस वक़्त गली गली में भूके मर रहे हैं।

20 ऐ रब, ध्यान से देख कि तू ने किस से ऐसा सुलूक
किया है। क्या यह औरतें अपने पेट का फल, अपने
लाडले बच्चों को खाएँ? क्या रब के मक़्दिस में ही
इमाम और नबी को मार डाला जाए?
21 लड़कों और बुज़ुर्गों की लाशें मिल कर गलियों
में पड़ी हैं। मेरे जवान लड़के-लड़कियाँ तलवार की
ज़द में आ कर गिर गए हैं। जब तेरा ग़ज़ब नाज़िल
हुआ तो तू ने उन्हें मार डाला, बेरहमी से उन्हें मौत
के घाट उतार दिया।
22 जिन से मैं दहशत खाता था उन्हें तू ने बुलाया।
जिस तरह बड़ी ईदों के मौक़े पर हुजूम शहर में जमा
होते हैं उसी तरह दुश्मन चारों तरफ़ से मुझ पर टूट
पड़े। जब रब का ग़ज़ब नाज़िल हुआ तो न कोई बचा,
न कोई बाक़ी रह गया। जिन्हें मैं ने पाला और जो मेरे
ज़ेर-ए-निगरानी परवान चढ़े उन्हें दुश्मन ने हलाक कर
दिया।

मुसीबत में रब की मेहरबानी पर उम्मीद

3 1 हाय, मुझे कितना दुख उठाना पड़ा! और यह
सब कुछ इस लिए हो रहा है कि रब का ग़ज़ब
मुझ पर नाज़िल हुआ है, उसी की लाठी मुझे तर्बियत
दे रही है।
2 उस ने मुझे हाँक हाँक कर तारीकी में चलने दिया,
कहीं भी रौशनी नज़र नहीं आई।
3 रोज़ाना वह बार बार अपना हाथ मेरे ख़िलाफ़
उठाता रहता है।
4 उस ने मेरे जिस्म और जिल्द को सड़ने दिया, मेरी
हड्डियों को तोड़ डाला।
5 मुझे घेर कर उस ने ज़हर और सख़्त मुसीबत की
दीवार मेरे इर्दगिर्द खड़ी कर दी।
6 उस ने मुझे तारीकी में बसाया। अब मैं उन की
मानिन्द हूँ जो बड़ी देर से क़ब्र में पड़े हैं।
7 उस ने मुझे पीतल की भारी ज़न्जीरों में जकड़ कर
मेरे इर्दगिर्द ऐसी दीवारें खड़ी कीं जिन से मैं निकल
नहीं सकता।
8 ख़्वाह मैं मदद के लिए कितनी चीख़ें क्यूँ न मारूँ
वह मेरी इल्तिजाएँ अपने हुज़ूर पहुँचने नहीं देता।
9 जहाँ भी मैं चलना चाहूँ वहाँ उस ने तराशे पत्थरों
की मज़बूत दीवार से मुझे रोक लिया। मेरे तमाम रास्ते
भूलभुलय्याँ बन गए हैं।
10 अल्लाह रीछ की तरह मेरी घात में बैठ गया,
शेरबबर की तरह मेरी ताक लगाए छुप गया।
11 उस ने मुझे सहीह रास्ते से भटका दिया, फिर
मुझे फाड़ कर बेसहारा छोड़ दिया।
12 अपनी कमान को तान कर उस ने मुझे अपने
तीरों का निशाना बनाया।
13 उस के तीरों ने मेरे गुर्दों को चीर डाला।
14 मैं अपनी पूरी क़ौम के लिए मज़ाक़ का निशाना
बन गया हूँ। वह पूरे दिन अपने गीतों में मुझे लान-तान
करते हैं।
15 अल्लाह ने मुझे कड़वे ज़हर से सेर किया, मुझे
नागवार तल्ख़ी का प्याला पिलाया।
16 उस ने मेरे दाँतों को बजरी चबाने दी, मुझे कुचल
कर ख़ाक में मिला दिया।
17 मेरी जान से सुकून छीन लिया गया, अब मैं
ख़ुशहाली का मज़ा भूल ही गया हूँ।

18 चुनाँचे मैं बोला, “मेरी शान और रब पर से मेरी
उम्मीद जाती रही है।”
19 मेरी तक्लीफ़दिह और बेवतन हालत का ख़याल
कड़वे ज़हर की मानिन्द है।

20 तो भी मेरी जान को उस की याद आती रहती है,
सोचते सोचते वह मेरे अन्दर दब जाती है।

21 लेकिन मुझे एक बात की उम्मीद रही है, और
यही मैं बार बार ज़हन में लाता हूँ,
22 रब की मेहरबानी है कि हम नेस्त-ओ-नाबूद नहीं
हुए। क्यूँकि उस की शफ़क़त कभी ख़त्म नहीं होती
23 बल्कि हर सुब्ह अज़ सर-ए-नौ हम पर चमक
उठती है। ऐ मेरे आक़ा, तेरी वफ़ादारी अज़ीम है।
24 मेरी जान कहती है, "रब मेरा मौरूसी हिस्सा है,
इस लिए मैं उस के इन्तिज़ार में रहूँगी।"
25 क्यूँकि रब उन पर मेहरबान है जो उस पर उम्मीद
रख कर उस के तालिब रहते हैं।
26 चुनाँचे अच्छा है कि हम ख़ामोशी से रब की
नजात के इन्तिज़ार में रहें।
27 अच्छा है कि इन्सान जवानी में अल्लाह का जूआ
उठाए फिरे।
28 जब जूआ उस की गर्दन पर रखा जाए तो वह
चुपके से तन्हाई में बैठ जाए।
29 वह ख़ाक में औंधे मुँह हो जाए, शायद अभी तक
उम्मीद हो।
30 वह मारने वाले को अपना गाल पेश करे, चुपके
से हर तरह की रुस्वाई बर्दाश्त करे।

31 क्यूँकि रब इन्सान को हमेशा तक रद्द नहीं
करता।
32 उस की शफ़क़त इतनी अज़ीम है कि गो वह कभी
इन्सान को दुख पहुँचाए तो भी वह आख़िरकार उस
पर दुबारा रहम करता है।
33 क्यूँकि वह इन्सान को दबाने और ग़म पहुँचाने
में ख़ुशी महसूस नहीं करता।

34 मुल्क में तमाम क़ैदियों को पाँओ तले कुचला
जा रहा है।
35 अल्लाह तआला के देखते देखते इन्सान की
हक़तल्फ़ी की जा रही है,
36 अदालत में लोगों का हक़ मारा जा रहा है।
लेकिन रब को यह सब कुछ नज़र आता है।
37 कौन कुछ करवा सकता है अगर रब ने इस का
हुक्म न दिया हो?
38 आफ़तें और अच्छी चीज़ें दोनों अल्लाह तआला
के फ़रमान पर वुजूद में आती हैं।
39 तो फिर इन्सानों में से कौन अपने गुनाहों की
सज़ा पाने पर शिकायत करे?
40 आओ, हम अपने चाल-चलन का जाइज़ा लें,
उसे अच्छी तरह जाँच कर रब के पास वापस आएँ।
41 हम अपने दिल को हाथों समेत आसमान की
तरफ़ माइल करें जहाँ अल्लाह है।

42 हम इक़्रार करें, "हम बेवफ़ा हो कर सरकश हो
गए हैं, और तू ने हमें मुआफ़ नहीं किया।
43 तू अपने क़हर के पर्दे के पीछे छुप कर हमारा
ताक़्क़ुब करने लगा, बेरहमी से हमें मारता गया।
44 तू बादल में यूँ छुप गया है कि कोई भी दुआ तुझ
तक नहीं पहुँच सकती।
45 तू ने हमें अक़्वाम के दरमियान कूड़ा-कर्कट बना
दिया।
46 हमारे तमाम दुश्मन हमें ताने देते हैं।
47 दहशत और गढ़े हमारे नसीब में हैं, हम धड़ाम
से गिर कर तबाह हो गए हैं।"

48 आँसू मेरी आँखों से टपक टपक कर नदियाँ बन
गए हैं, मैं इस लिए रो रहा हूँ कि मेरी क़ौम तबाह हो
गई है।
49 मेरे आँसू रुक नहीं सकते बल्कि उस वक़्त तक
जारी रहेंगे
50 जब तक रब आसमान से झाँक कर मुझ पर
ध्यान न दे।
51 अपने शहर की औरतों से दुश्मन का सुलूक देख
कर मेरा दिल छलनी हो रहा है।
52 जो बिलावजह मेरे दुश्मन हैं उन्हों ने परिन्दे की
तरह मेरा शिकार किया।

53 उन्हों ने मुझे जान से मारने के लिए गढ़े में डाल
कर मुझ पर पत्थर फैंक दिए।
54 सैलाब मुझ पर आया, और मेरा सर पानी में डूब
गया। मैं बोला, “मेरी ज़िन्दगी का धागा कट गया
है।”

55 ऐ रब, जब मैं गढ़े की गहराइयों में था तो मैं ने
तेरे नाम को पुकारा।
56 मैं ने इल्तिजा की, “अपना कान बन्द न रख
बल्कि मेरी आहें और चीख़ें सुन!” और तू ने मेरी
सुनी।
57 जब मैं ने तुझे पुकारा तो तू ने क़रीब आ कर
फ़रमाया, “ख़ौफ़ न खा।”
58 ऐ रब, तू अदालत में मेरे हक़ में मुक़द्दमा लड़ा,
बल्कि तू ने मेरी जान का इवज़ाना भी दिया।
59 ऐ रब, जो ज़ुल्म मुझ पर हुआ वह तुझे साफ़ नज़र
आता है। अब मेरा इन्साफ़ कर!
60 तू ने उन की तमाम कीनापर्वरी पर तवज्जुह दी
है। जितनी भी साज़िशें उन्हों ने मेरे ख़िलाफ़ की हैं
उन से तू वाक़िफ़ है।
61 ऐ रब, उन की लान-तान, उन के मेरे ख़िलाफ़
तमाम मन्सूबे तेरे कान तक पहुँच गए हैं।
62 जो कुछ मेरे मुख़ालिफ़ पूरा दिन मेरे ख़िलाफ़
फुसफुसाते और बुड़बुड़ाते हैं उस से तू ख़ूब आश्ना
है।
63 देख कि यह क्या करते हैं! ख़्वाह बैठे या खड़े
हों, हर वक़्त वह अपने गीतों में मुझे अपने मज़ाक़
का निशाना बनाते हैं।
64 ऐ रब, उन्हें उन की हरकतों का मुनासिब अज्र
दे!
65 उन के ज़हनों को कुन्द कर, तेरी लानत उन पर
आ पड़े!
66 उन पर अपना पूरा ग़ज़ब नाज़िल कर! जब तक
वह तेरे आसमान के नीचे से ग़ाइब न हो जाएँ उन का
ताक़्क़ुब करता रह!

यरूशलम की मुसीबत

4 1 हाय, सोने की आब-ओ-ताब न रही, ख़ालिस
सोना भी माँद पड़ गया है। मक़्दिस के जवाहिर
तमाम गलियों में बिखरे पड़े हैं।
2 पहले तो सिय्यून के गिराँक़दर फ़र्ज़न्द ख़ालिस
सोने जैसे क़ीमती थे, लेकिन अब वह गोया मिट्टी के
बर्तन समझे जाते हैं जो आम कुम्हार ने बनाए हैं।
3 गो गीदड़ भी अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं,
लेकिन मेरी क़ौम रेगिस्तान में रहने वाले उक़ाबी उल्लू
जैसी ज़ालिम हो गई है।
4 शीरख़्वार बच्चे की ज़बान प्यास के मारे तालू से
चिपक गई है। छोटे बच्चे भूक के मारे रोटी माँगते हैं,
लेकिन खिलाने वाला कोई नहीं है।
5 जो पहले लज़ीज़ खाना खाते थे वह अब गलियों
में तबाह हो रहे हैं। जो पहले अर्ग़वानी रंग के शानदार
कपड़े पहनते थे वह अब कूड़े-कर्कट में लोट-पोट हो
रहे हैं।

6 मेरी क़ौम से सदूम की निस्बत कहीं ज़्यादा संगीन
गुनाह सरज़द हुआ है। और सदूम का क़ुसूर इतना
संगीन था कि वह एक ही लम्हे में तबाह हुआ। किसी
ने भी मुदाख़लत न की।
7 सिय्यून के रईस कितने शानदार थे! जिल्द बर्फ़
जैसी निखरी, दूध जैसी सफ़ेद थी। रुख़सार मूँगे की
तरह गुलाबी, शक्ल-ओ-सूरत संग-ए-लाजवर्द [c]जैसी
चमकदार थी।
8 लेकिन अब वह कोएले जैसे काले नज़र आते हैं।
जब गलियों में घूमते हैं तो उन्हें पहचाना नहीं जाता।
उन की हड्डियों पर की जिल्द सुकड़ कर लकड़ी की
तरह सूखी हुई है।

---

[c] lapis lazuli

9 जो तलवार से हलाक हुए उन का हाल उन से
बेहतर था जो भूके मर गए। क्यूँकि खेतों से ख़ुराक
न मिलने पर वह घुल घुल कर मर गए।
10 जब मेरी क़ौम तबाह हुई तो इतना सख़्त काल
पड़ गया कि नर्मदिल माओं ने भी अपने बच्चों को
पका कर खा लिया।

11 रब ने अपना पूरा ग़ज़ब सिय्यून पर नाज़िल
किया, उसे अपने शदीद क़हर का निशाना बनाया।
उस ने यरूशलम में इतनी ज़बरदस्त आग लगाई कि
वह बुन्यादों तक भस्म हो गया।
12 अब दुश्मन यरूशलम के दरवाज़ों में दाख़िल हुए
हैं, हालाँकि दुनिया के तमाम बादशाह बल्कि सब
लोग समझते थे कि यह मुमकिन ही नहीं।
13 लेकिन यह सब कुछ उस के नबियों और इमामों
के सबब से हुआ जिन्हों ने शहर ही में रास्तबाज़ों की
ख़ूँरेज़ी की।
14 अब यही लोग अंधों की तरह गलियों में टटोल
टटोल कर फिरते हैं। वह ख़ून से इतने आलूदा हैं कि
सब लोग उन के कपड़ों से लगने से गुरेज़ करते हैं।
15 उन्हें देख कर लोग गरजते हैं, "हटो, तुम नापाक
हो! भाग जाओ, दफ़ा हो जाओ, हमें हाथ मत
लगाना!" फिर जब वह दीगर अक़्वाम में जा कर
इधर उधर फिरने लगते हैं तो वहाँ के लोग भी कहते
हैं कि यह मज़ीद यहाँ न ठहरें।
16 रब ने ख़ुद उन्हें मुन्तशिर कर दिया, अब से वह
उन का ख़याल नहीं करेगा। अब न इमामों की इज़्ज़त
होती है, न बुज़ुर्गों पर मेहरबानी की जाती है।

17 हम चारों तरफ़ आँख दौड़ाते रहे, लेकिन
बेफ़ाइदा, कोई मदद न मिली। देखते देखते हमारी
नज़र धुन्दला गई। क्यूँकि हम अपने बुर्जों पर खड़े
एक ऐसी क़ौम के इन्तिज़ार में रहे जो हमारी मदद
कर ही नहीं सकती थी।
18 हम अपने चौकों में जा न सके, क्यूँकि वहाँ
दुश्मन हमारी ताक में बैठा था। हमारा ख़ातमा क़रीब
आया, हमारा मुक़र्ररा वक़्त इख़तितामपज़ीर हुआ,
हमारा अन्जाम आ पहुँचा।
19 जिस तरह आसमान पर मंडलाने वाला उक़ाब
एक दम शिकार पर झपट पड़ता है उसी तरह हमारा
ताक़्क़ुब करने वाले हम पर टूट पड़े, और वह भी
कहीं ज़्यादा तेज़ी से। वह पहाड़ों पर हमारे पीछे पीछे
भागे और रेगिस्तान में हमारी घात में रहे।
20 हमारा बादशाह भी उन के गढ़ों में फंस गया।
जो हमारी जान था और जिसे रब ने मसह करके चुन
लिया था उसे भी पकड़ लिया गया, गो हम ने सोचा
था कि उस के साय में बस कर अक़्वाम के दरमियान
महफ़ूज़ रहेंगे।

21 ऐ अदोम बेटी, बेशक शादियाना बजा! बेशक
मुल्क-ए-ऊज़ में रह कर ख़ुशी मना! लेकिन ख़बरदार,
अल्लाह के ग़ज़ब का प्याला तुझे भी पिलाया जाएगा।
तब तू उसे पी पी कर मस्त हो जाएगी और नशे में
अपने कपड़े उतार कर बरहना फिरेगी।
22 ऐ सिय्यून बेटी, तेरी सज़ा का वक़्त पूरा हो गया
है। अब से रब तुझे क़ैदी बना कर जिलावतन नहीं
करेगा। लेकिन ऐ अदोम बेटी, वह तुझे तेरे क़ुसूर का
पूरा अज्र देगा, वह तेरे गुनाहों पर से पर्दा उठा लेगा।

ऐ रब, हमें अपने हुज़ूर वापस ला!

5 1 ऐ रब, याद कर कि हमारे साथ क्या कुछ
हुआ! ग़ौर कर कि हमारी कैसी रुस्वाई हुई है।
2 हमारी मौरूसी मिलकियत परदेसियों के हवाले
की गई, हमारे घर अजनबियों के हाथ में आ गए हैं।
3 हम वालिदों से महरूम हो कर यतीम हो गए हैं,
हमारी माएँ बेवाओं की तरह ग़ैरमहफ़ूज़ हैं।
4 ख़्वाह पीने का पानी हो या लकड़ी, हर चीज़ की
पूरी क़ीमत अदा करनी पड़ती है, हालाँकि यह हमारी
अपनी ही चीज़ें थीं।

5 हमारा ताक़्क़ुब करने वाले हमारे सर पर चढ़ आए
हैं, और हम थक गए हैं। कहीं भी सुकून नहीं मिलता।

6 हम ने अपने आप को मिस्र और असूर के हवाले
कर दिया ताकि रोटी मिल जाए और भूके न मरें।
7 हमारे बापदादा ने गुनाह किया, लेकिन वह कूच
कर गए हैं। अब हम ही उन की सज़ा भुगत रहे हैं।
8 ग़ुलाम हम पर हुकूमत करते हैं, और कोई नहीं है
जो हमें उन के हाथ से बचाए।
9 हम अपनी जान को ख़तरे में डाल कर रोज़ी कमाते
हैं, क्यूँकि बयाबान में तलवार हमारी ताक में बैठी
रहती है।
10 भूक के मारे हमारी जिल्द तनूर जैसी गर्म हो कर
चुरमुर हो गई है।
11 सिय्यून में औरतों की इस्मतदरी, यहूदाह के
शहरों में कुंवारियों की बेहुरमती हुई है।
12 दुश्मन ने रईसों को फाँसी दे कर बुज़ुर्गों की
बेइज़्ज़ती की है।
13 नौजवानों को चक्की का पाट उठाए फिरना है,
लड़के लकड़ी के बोझ तले डगमगा कर गिर जाते
हैं।
14 अब बुज़ुर्ग शहर के दरवाज़े से और जवान अपने
साज़ों से बाज़ रहते हैं।
15 ख़ुशी हमारे दिलों से जाती रही है, हमारा
लोकनाच आह-ओ-ज़ारी में बदल गया है।
16 ताज हमारे सर पर से गिर गया है। हम पर
अफ़सोस, हम से गुनाह सरज़द हुआ है।
17 इसी लिए हमारा दिल निढाल हो गया, हमारी
नज़र धुन्दला गई है।
18 क्यूँकि कोह-ए-सिय्यून तबाह हुआ है, लोमड़ियाँ
उस की गलियों में फिरती हैं।

19 ऐ रब, तेरा राज अबदी है, तेरा तख़्त पुश्त-दर-
पुश्त क़ाइम रहता है।
20 तू हमें हमेशा तक क्यूँ भूलना चाहता है? तू ने
हमें इतनी देर तक क्यूँ तर्क किए रखा है?
21 ऐ रब, हमें अपने पास वापस ला ताकि हम
वापस आ सकें। हमें बहाल कर ताकि हमारा हाल
पहले की तरह हो।
22 या क्या तू ने हमें हत्मी तौर पर मुस्तरद कर दिया
है? क्या तेरा हम पर ग़ुस्सा हद से ज़्यादा बढ़ गया
है?।

हिज़्क़ीएल

अल्लाह के रथ की रोया

1 1–3 जब मैं यानी इमाम हिज़्क़ीएल बिन बूज़ी
तीस साल का था तो मैं यहूदाह के जिलावतनों
के साथ मुल्क-ए-बाबल के दरया किबार के किनारे
ठहरा हुआ था। यहूयाकीन बादशाह को जिलावतन
हुए पाँच साल हो गए थे। चौथे महीने के पाँचवें
दिन [d]आसमान खुल गया और अल्लाह ने मुझ पर
मुख़्तलिफ़ रोयाएँ ज़ाहिर कीं। उस वक़्त रब मुझ
से हमकलाम हुआ, और उस का हाथ मुझ पर आ
ठहरा।

4 रोया में मैं ने ज़बरदस्त आँधी देखी जिस ने शिमाल
से आ कर बड़ा बादल मेरे पास पहुँचाया। बादल
में चमकती दमकती आग नज़र आई, और वह तेज़
रौशनी से घिरा हुआ था। आग का मर्कज़ चमकदार
धात की तरह तमतमा रहा था।

5 आग में चार जानदारों जैसे चल रहे थे जिन की
शक्ल-ओ-सूरत इन्सान की सी थी। 6 लेकिन हर एक
के चार चिहरे और चार पर थे। 7 उन की टाँगें इन्सानों
जैसी सीधी थीं, लेकिन पाँओ के तल्वे बछड़ों के से
खुर थे। वह पालिश किए हुए पीतल की तरह जगमगा
रहे थे। 8 चारों के चिहरे और पर थे, और चारों परों
के नीचे इन्सानी हाथ दिखाई दिए। 9 जानदार अपने
परों से एक दूसरे को छू रहे थे। चलते वक़्त मुड़ने की
ज़रूरत नहीं थी, क्यूँकि हर एक के चार चिहरे चारों
तरफ़ देखते थे। जब कभी किसी सिम्त जाना होता तो
उसी सिम्त का चिहरा चल पड़ता। 10 चारों के चिहरे
एक जैसे थे। सामने का चिहरा इन्सान का, दाईं तरफ़
का चिहरा शेरबबर का, बाईं तरफ़ का चिहरा बैल
का और पीछे का चिहरा उक़ाब का था। 11 उन के
पर ऊपर की तरफ़ फैले हुए थे। दो पर बाएँ और दाएँ
हाथ के जानदारों से लगते थे, और दो पर उन के
जिस्मों को ढाँपे रखते थे। 12 जहाँ भी अल्लाह का रूह
जाना चाहता था वहाँ यह जानदार चल पड़ते। उन्हें
मुड़ने की ज़रूरत नहीं थी, क्यूँकि वह हमेशा अपने
चारों चिहरों में से एक का रुख़ इख़तियार करते थे।

13 जानदारों के बीच में ऐसा लग रहा था जैसे
कोएले दहक रहे हों, कि उन के दरमियान मशअलें
इधर उधर चल रही हों। झिलमिलाती आग में से
बिजली भी चमक कर निकलती थी। 14 जानदार ख़ुद
इतनी तेज़ी से इधर उधर घूम रहे थे कि बादल की
बिजली जैसे नज़र आ रहे थे।

15 जब मैं ने ग़ौर से उन पर नज़र डाली तो देखा
कि हर एक जानदार के पास पहिया है जो ज़मीन को
छू रहा है। 16 लगता था कि चारों पहिए पुखराज [e]से
बने हुए हैं। चारों एक जैसे थे। हर पहिए के अन्दर
एक और पहिया ज़ाविया-ए-क़ाइमा में घूम रहा था,
17 इस लिए वह मुड़े बग़ैर हर रुख़ इख़तियार कर
सकते थे। 18 उन के लम्बे चक्कर ख़ौफ़नाक थे, और
चक्करों की हर जगह पर आँखें ही आँखें थीं। 19 जब
चार जानदार चलते तो चारों पहिए भी साथ चलते,
जब जानदार ज़मीन से उड़ते तो पहिए भी साथ उड़ते
थे। 20 जहाँ भी अल्लाह का रूह जाता वहाँ जानदार
भी जाते थे। पहिए भी उड़ कर साथ साथ चलते थे,
क्यूँकि जानदारों की रूह पहियों में थी। 21 जब कभी
जानदार चलते तो यह भी चलते, जब रुक जाते तो
यह भी रुक जाते, जब उड़ते तो यह भी उड़ते। क्यूँकि
जानदारों की रूह पहियों में थी।

22 जानदारों के सरों के ऊपर गुम्बद सा फैला हुआ
था जो साफ़-शफ़्फ़ाफ़ बिल्लौर जैसी लग रहा था। उसे

---

[d] 31 जुलाई।

[e] topas

देख कर इन्सान घबरा जाता था। 23 चारों जानदार
इस गुम्बद के नीचे थे, और हर एक अपने परों को
फैला कर एक से बाईं तरफ़ के साथी और दूसरे से
दाईं तरफ़ के साथी को छू रहा था। बाक़ी दो परों से
वह अपने जिस्म को ढाँपे रखता था। 24 चलते वक़्त
उन के परों का शोर मुझ तक पहुँचा। यूँ लग रहा था
जैसे क़रीब ही ज़बरदस्त आबशार बह रही हो, कि
क़ादिर-ए-मुतलक़ कोई बात फ़रमा रहा हो, या कि
कोई लश्कर हरकत में आ गया हो। रुकते वक़्त वह
अपने परों को नीचे लटकने देते थे।

25 फिर गुम्बद के ऊपर से आवाज़ सुनाई दी, और
जानदारों ने रुक कर अपने परों को लटकने दिया।
26 मैं ने देखा कि उन के सरों के ऊपर के गुम्बद पर
संग-ए-लाजवर्द [f] का तख़्त सा नज़र आ रहा है जिस
पर कोई बैठा था जिस की शक्ल-ओ-सूरत इन्सान
की मानिन्द है। 27 लेकिन कमर से ले कर सर तक
वह चमकदार धात की तरह तमतमा रहा था, जबकि
कमर से ले कर पाँओ तक आग की मानिन्द भड़क
रहा था। तेज़ रौशनी उस के इर्दगिर्द झिलमिला रही
थी। 28 उसे देख कर क़ौस-ए-क़ुज़ह की वह आब-
ओ-ताब याद आती थी जो बारिश होते वक़्त बादल
में दिखाई देती है। यूँ रब का जलाल नज़र आया। यह
देखते ही मैं औंधे मुँह गिर गया। इसी हालत में कोई
मुझ से बात करने लगा।

हिज़्क़ीएल की बुलाहट, तूमार की रोया

2 1 वह बोला, "ऐ आदमज़ाद, खड़ा हो जा! मैं
तुझ से बात करना चाहता हूँ।" 2 जूँ ही वह मुझ
से हमकलाम हुआ तो रूह ने मुझ में आ कर मुझे
खड़ा कर दिया। फिर मैं ने आवाज़ को यह कहते हुए
सुना,

3 "ऐ आदमज़ाद, मैं तुझे इस्राईलियों के पास भेज
रहा हूँ, एक ऐसी सरकश क़ौम के पास जिस ने मुझ
से बग़ावत की है। शुरू से ले कर आज तक वह
अपने बापदादा समेत मुझ से बेवफ़ा रहे हैं। 4 जिन
लोगों के पास मैं तुझे भेज रहा हूँ वह बेशर्म और
ज़िद्दी हैं। उन्हें वह कुछ सुना दे जो रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है। 5 ख़्वाह यह बाग़ी सुनें या न
सुनें, वह ज़रूर जान लेंगे कि हमारे दरमियान नबी
बरपा हुआ है। 6 ऐ आदमज़ाद, उन से या उन की
बातों से मत डरना। गो तू काँटेदार झाड़ियों से घिरा
रहेगा और तुझे बिच्छूओं के दरमियान बसना पड़ेगा
तो भी ख़ौफ़ज़दा न हो। न उन की बातों से ख़ौफ़
खाना, न उन के रवय्ये से दहशत खाना। क्यूँकि यह
क़ौम सरकश है। 7 ख़्वाह यह सुनें या न सुनें लाज़िम
है कि तू मेरे पैग़ामात उन्हें सुनाए। क्यूँकि वह बाग़ी
ही हैं। 8 ऐ आदमज़ाद, जब मैं तुझ से हमकलाम हूँगा
तो ध्यान दे और इस सरकश क़ौम की तरह बग़ावत
मत करना। अपने मुँह को खोल कर वह कुछ खा जो
मैं तुझे खिलाता हूँ।"

9 तब एक हाथ मेरी तरफ़ बढ़ा हुआ नज़र आया
जिस में तूमार था। 10 तूमार को खोला गया तो मैं ने
देखा कि उस में आगे भी और पीछे भी मातम और
आह-ओ-ज़ारी क़लमबन्द हुई है।

3 1 उस ने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, जो कुछ तुझे
दिया जा रहा है उसे खा ले! तूमार को खा, फिर
जा कर इस्राईली क़ौम से मुख़ातिब हो जा।" 2 मैं
ने अपना मुँह खोला तो उस ने मुझे तूमार खिलाया।
3 साथ साथ उस ने फ़रमाया, "आदमज़ाद, जो तूमार
मैं तुझे खिलाता हूँ उसे खा, पेट भर कर खा!" जब
मैं ने उसे खाया तो शहद की तरह मीठा लगा।

4 तब अल्लाह मुझ से हमकलाम हुआ, "ऐ
आदमज़ाद, अब जा कर इस्राईली घराने को मेरे
पैग़ामात सुना दे। 5 मैं तुझे ऐसी क़ौम के पास नहीं
भेज रहा जिस की अजनबी ज़बान तुझे समझ न
आए बल्कि तुझे इस्राईली क़ौम के पास भेज रहा
हूँ। 6 बेशक ऐसी बहुत सी क़ौमें हैं जिन की अजनबी
ज़बानें तुझे नहीं आतीं, लेकिन उन के पास मैं तुझे

---

[f] lapis lazuli

नहीं भेज रहा। अगर मैं तुझे उन ही के पास भेजता
तो वह ज़रूर तेरी सुनतीं। 7 लेकिन इस्राईली घराना
तेरी सुनने के लिए तय्यार नहीं होगा, क्यूँकि वह मेरी
सुनने के लिए तय्यार ही नहीं। क्यूँकि पूरी क़ौम का
माथा सख़्त और दिल अड़ा हुआ है। 8 लेकिन मैं ने
तेरा चिहरा भी उन के चिहरे जैसा सख़्त कर दिया,
तेरा माथा भी उन के माथे जैसा मज़बूत कर दिया है।
9 तू उन का मुक़ाबला कर सकेगा, क्यूँकि मैं ने तेरे
माथे को हीरे जैसा मज़बूत, चक़्माक़ जैसा पाएदार
कर दिया है। गो यह क़ौम बाग़ी है तो भी उन से
ख़ौफ़ न खा, न उन के सुलूक से दहशतज़दा हो।"
10 अल्लाह ने मज़ीद फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, मेरी
हर बात पर ध्यान दे कर उसे ज़हन में बिठा। 11 अब
रवाना हो कर अपनी क़ौम के उन अफ़राद के पास
जा जो बाबल में जिलावतन हुए हैं। उन्हें वह कुछ
सुना दे जो रब क़ादिर-ए-मुतलक़ उन्हें बताना चाहता
है, ख़्वाह वह सुनें या न सुनें।"
12 फिर अल्लाह के रूह ने मुझे वहाँ से उठाया।
जब रब का जलाल अपनी जगह से उठा तो मैं ने
अपने पीछे एक गड़गड़ाती आवाज़ सुनी। 13 फ़िज़ा
चारों जानदारों के शोर से गूँज उठी जब उन के पर
एक दूसरे से लगने और उन के पहिए घूमने लगे।
14 अल्लाह का रूह मुझे उठा कर वहाँ से ले गया, और
मैं तल्ख़मिज़ाजी और बड़ी सरगर्मी से रवाना हुआ।
क्यूँकि रब का हाथ ज़ोर से मुझ पर ठहरा हुआ था।
15 चलते चलते मैं दरया-ए-किबार की आबादी तल-
अबीब में रहने वाले जिलावतनों के पास पहुँच गया।
मैं उन के दरमियान बैठ गया। सात दिन तक मेरी
हालत गुमसुम रही।

मेरी क़ौम को आगाह कर!

16 सात दिन के बाद रब मुझ से हमकलाम हुआ,
17 "ऐ आदमज़ाद, मैं ने तुझे इस्राईली क़ौम पर
पहरेदार बनाया, इस लिए जब भी तुझे मुझ से कलाम
मिले तो उन्हें मेरी तरफ़ से आगाह कर!
18 मैं तेरे ज़रीए बेदीन को इत्तिला दूँगा कि उसे मरना
ही है ताकि वह अपनी बुरी राह से हट कर बच जाए।
अगर तू उसे यह पैग़ाम न पहुँचाए, न उसे तम्बीह करे
और वह अपने क़ुसूर के बाइस मर जाए तो मैं तुझे
ही उस की मौत का ज़िम्मादार ठहराऊँगा। 19 लेकिन
अगर वह तेरी तम्बीह पर अपनी बेदीनी और बुरी राह
से न हटे तो यह अलग बात है। बेशक वह मरेगा,
लेकिन तू ज़िम्मादार नहीं ठहरेगा बल्कि अपनी जान
को छुड़ाएगा।
20 जब रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी को छोड़ कर
बुरी राह पर आ जाएगा तो मैं तुझे उसे आगाह करने
की ज़िम्मादारी दूँगा। अगर तू यह करने से बाज़ रहा
तो तू ही ज़िम्मादार ठहरेगा जब मैं उसे ठोकर खिला
कर मार डालूँगा। उस वक़्त उस के रास्त काम याद
नहीं रहेंगे बल्कि वह अपने गुनाह के सबब से मरेगा।
लेकिन तू ही उस की मौत का ज़िम्मादार ठहरेगा।
21 लेकिन अगर तू उसे तम्बीह करे और वह अपने
गुनाह से बाज़ आए तो वह मेरी तम्बीह को क़बूल
करने के बाइस बचेगा, और तू भी अपनी जान को
छुड़ाएगा।"
22 वहीं रब का हाथ दुबारा मुझ पर आ ठहरा। उस
ने फ़रमाया, "उठ, यहाँ से निकल कर वादी के खुले
मैदान में चला जा! वहाँ मैं तुझ से हमकलाम हूँगा।"
23 मैं उठा और निकल कर वादी के खुले मैदान
में चला गया। जब पहुँचा तो क्या देखता हूँ कि रब
का जलाल वहाँ यूँ मौजूद है जिस तरह पहली रोया में
दरया-ए-किबार के किनारे पर था। मैं मुँह के बल गिर
गया। 24 तब अल्लाह के रूह ने आ कर मुझे दुबारा
खड़ा किया और फ़रमाया, "अपने घर में जा कर
अपने पीछे कुंडी लगा। 25 ऐ आदमज़ाद, लोग तुझे
रस्सियों में जकड़ कर बन्द रखेंगे ताकि तू निकल कर
दूसरों में न फिर सके। 26 मैं होने दूँगा कि तेरी ज़बान
तालू से चिपक जाए और तू ख़ामोश रह कर उन्हें डाँट
न सके। क्यूँकि यह क़ौम सरकश है। 27 लेकिन जब
भी मैं तुझ से हमकलाम हूँगा तो तेरे मुँह को खोलूँगा।
तब तू मेरा कलाम सुना कर कहेगा, 'रब क़ादिर-ए-

मुतलक़ फ़रमाता है!' तब जो सुनने के लिए तय्यार
हो वह सुने, और जो तय्यार न हो वह न सुने। क्यूँकि
यह क़ौम सरकश है।

यरूशलम का मुहासरा

4 1 ऐ आदमज़ाद, अब एक कच्ची ईंट ले और
उसे अपने सामने रख कर उस पर यरूशलम
शहर का नक़्शा कन्दा कर। 2 फिर यह नक़्शा शहर
का मुहासरा दिखाने के लिए इस्तेमाल कर। बुर्ज
और पुश्ते बना कर घेरा डाल। यरूशलम के बाहर
लश्करगाह लगा कर शहर के इर्दगिर्द क़िलाशिकन
मशीनें तय्यार रख। 3 फिर लोहे की प्लेट ले कर अपने
और शहर के दरमियान रख। इस से मुराद लोहे की
दीवार है। शहर को घूर घूर कर ज़ाहिर कर कि तू उस
का मुहासरा कर रहा है। इस निशान से तू दिखाएगा
कि इस्राईलियों के साथ क्या कुछ होने वाला है।
4–5 इस के बाद अपने बाएँ पहलू पर लेट कर
अलामती तौर पर मुल्क-ए-इस्राईल की सज़ा पा।
जितने भी साल वह गुनाह करते आए हैं उतने ही दिन
तुझे इसी हालत में लेटे रहना है। वह 390 साल गुनाह
करते रहे हैं, इस लिए तू 390 दिन उन के गुनाहों की
सज़ा पाएगा। 6 इस के बाद अपने दाएँ पहलू पर लेट
जा और मुल्क-ए-यहूदाह की सज़ा पा। मैं ने मुक़र्रर
किया है कि तू 40 दिन यह करे, क्यूँकि यहूदाह 40
साल गुनाह करता रहा है। 7 घेरे हुए शहर यरूशलम
को घूर घूर कर अपने नंगे बाज़ू से उसे धमकी दे और
उस के ख़िलाफ़ पेशगोई कर। 8 साथ साथ मैं तुझे
रस्सियों में जकड़ लूँगा ताकि तू उतने दिन करवटें
बदल न सके जितने दिन तेरा मुहासरा किया जाएगा।
9 अब कुछ गन्दुम, जौ, लोबिया, मसूर, बाजरा और
यहाँ मुस्तामल घटिया क़िस्म का गन्दुम जमा करके
एक ही बर्तन में डाल। बाएँ पहलू पर लेटते वक़्त
यानी पूरे 390 दिन इन ही से रोटी बना कर खा।
10–11 फ़ी दिन तुझे रोटी का एक पाओ खाने और
पानी का पौना लिटर पीने की इजाज़त है। यह चीज़ें
एहतियात से तोल कर मुक़र्ररा औक़ात पर खा और
पी। 12 रोटी को जौ की रोटी की तरह तय्यार करके
खा। ईंधन के लिए इन्सान का फ़ुज़्ला इस्तेमाल
कर। ध्यान दे कि सब इस के गवाह हों।" 13 रब ने
फ़रमाया, "जब मैं इस्राईलियों को दीगर अक़्वाम में
मुन्तशिर करूँगा तो उन्हें नापाक रोटी खानी पड़ेगी।"
14 यह सुन कर मैं बोल उठा, "हाय, हाय! ऐ रब
क़ादिर-ए-मुतलक़, मैं कभी भी नापाक नहीं हुआ।
जवानी से ले कर आज तक मैं ने कभी ऐसे जानवर
का गोश्त नहीं खाया जिसे ज़बह नहीं किया गया था
या जिसे जंगली जानवरों ने फाड़ा था। नापाक गोश्त
कभी मेरे मुँह में नहीं आया।"
15 तब रब ने जवाब दिया, "ठीक है, रोटी को बनाने
के लिए तू इन्सान के फ़ुज़्ले के बजाय गोबर इस्तेमाल
कर सकता है। मैं तुझे इस की इजाज़त देता हूँ।"
16 उस ने मज़ीद फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, मैं
यरूशलम में रोटी का बन्द-ओ-बस्त ख़त्म हो जाने
दूँगा। तब लोग अपना खाना बड़ी एहतियात से
और परेशानी में तोल तोल कर खाएँगे। वह पानी
का क़तरा क़तरा गिन कर उसे लरज़ते हुए पिएँगे।
17 क्यूँकि खाने और पानी की क़िल्लत होगी। सब मिल
कर तबाह हो जाएंगे, सब अपने गुनाहों के सबब से
सड़ जाएंगे।

यरूशलम के ख़िलाफ़ तलवार

5 1 ऐ आदमज़ाद, तेज़ तलवार ले कर अपने सर
के बाल और दाढ़ी मुंडवा। फिर तराज़ू में बालों
को तोल कर तीन हिस्सों में तक़्सीम कर। 2 कच्ची ईंट
पर कन्दा यरूशलम के नक़्शे के ज़रीए ज़ाहिर कर
कि शहर का मुहासरा ख़त्म हो गया है। फिर बालों
की एक तिहाई शहर के नक़्शे के बीच में जला दे,
एक तिहाई तलवार से मार मार कर शहर के इर्दगिर्द
ज़मीन पर गिरने दे, और एक तिहाई हवा में उड़ा कर
मुन्तशिर कर। क्यूँकि मैं इसी तरह अपनी तलवार
को मियान से खैंच कर लोगों के पीछे पड़ जाऊँगा।
3 लेकिन बालों में से थोड़े थोड़े बचा ले और अपनी
झोली में लपेट कर महफ़ूज़ रख। 4 फिर इन में से

कुछ ले और आग में फैंक कर भस्म कर। यही आग
इस्राईल के पूरे घराने में फैल जाएगी।”
5 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, “यही
यरूशलम की हालत है! गो मैं ने उसे दीगर
अक़्वाम के दरमियान रख कर दीगर ममालिक का
मर्कज़ बना दिया 6 तो भी वह मेरे अह्काम और
हिदायात से सरकश हो गया है। गिर्द-ओ-नवाह की
अक़्वाम-ओ-ममालिक की निस्बत उस की हरकतें
कहीं ज़्यादा बुरी हैं। क्यूँकि उस के बाशिन्दों ने मेरे
अह्काम को रद्द करके मेरी हिदायात के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारने से इन्कार कर दिया है।” 7 रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, “तुम्हारी हरकतें
इर्दगिर्द की क़ौमों की निस्बत कहीं ज़्यादा बुरी
हैं। न तुम ने मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी
गुज़ारी, न मेरे अह्काम पर अमल किया। बल्कि तुम
इतने शरारती थे कि गिर्द-ओ-नवाह की अक़्वाम
के रस्म-ओ-रिवाज से भी बदतर ज़िन्दगी गुज़ारने
लगे।” 8 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता
है, “ऐ यरूशलम, अब मैं ख़ुद तुझ से निपट लूँगा।
दीगर अक़्वाम के देखते देखते मैं तेरी अदालत
करूँगा। 9 तेरी घिनौनी बुतपरस्ती के सबब से मैं तेरे
साथ ऐसा सुलूक करूँगा जैसा मैं ने पहले कभी नहीं
किया है और आइन्दा भी कभी नहीं करूँगा। 10 तब
तेरे दरमियान बाप अपने बेटों को और बेटे अपने
बाप को खाएँगे। मैं तेरी अदालत यूँ करूँगा कि
जितने बचेंगे वह सब हवा में उड़ कर चारों तरफ़
मुन्तशिर हो जाएंगे।”
11 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, “मेरी हयात
की क़सम, तू ने अपने घिनौने बुतों और रस्म-ओ-
रिवाज से मेरे मक़्दिस की बेहुरमती की है, इस
लिए मैं तुझे मुंडवा कर तबाह कर दूँगा। न मैं तुझ
पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा। 12 तेरे बाशिन्दों
की एक तिहाई मोहलिक बीमारियों और काल से
शहर में हलाक हो जाएगी। दूसरी तिहाई तलवार की
ज़द में आ कर शहर के इर्दगिर्द मर जाएगी। तीसरी
तिहाई को मैं हवा में उड़ा कर मुन्तशिर कर दूँगा
और फिर तलवार को मियान से खैंच कर उन का
पीछा करूँगा। 13 यूँ मेरा क़हर ठंडा हो जाएगा और
मैं इन्तिक़ाम ले कर अपना ग़ुस्सा उतारूँगा। तब वह
जान लेंगे कि मैं, रब ग़ैरत में उन से हमकलाम हुआ
हूँ।
14 मैं तुझे मल्बे का ढेर और इर्दगिर्द की अक़्वाम
की लान-तान का निशाना बना दूँगा। हर गुज़रने वाला
तेरी हालत देख कर ‘तौबा तौबा’ कहेगा। 15 जब मेरा
ग़ज़ब तुझ पर टूट पड़ेगा और मैं तेरी सख़्त अदालत
और सरज़निश करूँगा तो उस वक़्त तू पड़ोस की
अक़्वाम के लिए मज़ाक़ और लानत-मलामत का
निशाना बन जाएगा। तेरी हालत को देख कर उन
के रोंगटे खड़े हो जाएंगे और वह मुह्तात रहने का
सबक़ सीखेंगे। यह मेरा, रब का फ़रमान है।
16 ऐ यरूशलम के बाशिन्दो, मैं काल के मोहलिक
और तबाहकुन तीर तुम पर बरसाऊँगा ताकि तुम
हलाक हो जाओ। काल यहाँ तक ज़ोर पकड़ेगा कि
खाने का बन्द-ओ-बस्त ख़त्म हो जाएगा। 17 मैं तुम्हारे
ख़िलाफ़ काल और वहशी जानवर भेजूँगा ताकि तू
बेऔलाद हो जाए। मोहलिक बीमारियाँ और क़त्ल-
ओ-ग़ारत तेरे बीच में से गुज़रेगी, और मैं तेरे ख़िलाफ़
तलवार चलाऊँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।”

बुलन्दियों पर मज़ारों की अदालत

6 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद,
इस्राईल के पहाड़ों की तरफ़ रुख़ करके उन के
ख़िलाफ़ नबुव्वत कर। 3 उन से कह, ‘ऐ इस्राईल के
पहाड़ो, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का कलाम सुनो! वह
पहाड़ों, पहाड़ियों, घाटियों और वादियों के बारे में
फ़रमाता है कि मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ तलवार चला कर
तुम्हारी ऊँची जगहों के मन्दिरों को तबाह कर दूँगा।
4 जिन क़ुर्बानगाहों पर तुम अपने जानवर और बख़ूर
जलाते हो वह ढा दूँगा। मैं तेरे मक़्तूलों को तेरे बुतों
के सामने ही फैंक छोड़ूँगा। 5 मैं इस्राईलियों की लाशों
को उन के बुतों के सामने डाल कर तुम्हारी हड्डियों
को तुम्हारी क़ुर्बानगाहों के इर्दगिर्द बिखेर दूँगा।

6 जहाँ भी तुम आबाद हो वहाँ तुम्हारे शहर खंडरात
बन जाएंगे और ऊँची जगहों के मन्दिर मिस्मार हो
जाएंगे। क्यूँकि लाज़िम है कि जिन क़ुर्बानगाहों पर
तुम अपने जानवर और बख़ूर जलाते हो वह ख़ाक
में मिलाई जाएँ, कि तुम्हारे बुतों को पाश पाश किया
जाए, कि तुम्हारी बुतपरस्ती की चीज़ें नेस्त-ओ-नाबूद
हो जाएँ। 7 मक़्तूल तुम्हारे दरमियान गिर कर पड़े
रहेंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

8 लेकिन मैं चन्द एक को ज़िन्दा छोड़ूँगा। क्यूँकि
जब तुम्हें दीगर ममालिक और अक़्वाम में मुन्तशिर
किया जाएगा तो कुछ तलवार से बचे रहेंगे। 9 जब
यह लोग क़ैदी बन कर मुख़्तलिफ़ ममालिक में लाए
जाएंगे तो उन्हें मेरा ख़याल आएगा। उन्हें याद आएगा
कि मुझे कितना ग़म खाना पड़ा जब उन के ज़िनाकार
दिल मुझ से दूर हुए और उन की आँखें अपने बुतों से
ज़िना करती रहीं। तब वह यह सोच कर कि हम ने
कितना बुरा काम किया और कितनी मकरूह हरकतें
की हैं अपने आप से घिन खाएँगे। 10 उस वक़्त वह
जान लेंगे कि मैं रब हूँ, कि उन पर यह आफ़त लाने
का एलान करते वक़्त मैं ख़ाली बातें नहीं कर रहा
था'।"

11 फिर रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने मुझ से फ़रमाया,
"तालियाँ बजा कर पाँओ ज़ोर से ज़मीन पर मार!
साथ साथ यह कह, इस्राईली क़ौम की घिनौनी
हरकतों पर अफ़्सोस! वह तलवार, काल और
मोहलिक बीमारियों की ज़द में आ कर हलाक हो
जाएंगे। 12 जो दूर है वह मोहलिक वबा से मर जाएगा,
जो क़रीब है वह तलवार से क़त्ल हो जाएगा, और
जो बच जाए वह भूके मरेगा। यूँ मैं अपना ग़ज़ब उन
पर नाज़िल करूँगा। 13 वह जान लेंगे कि मैं रब हूँ
जब उन के मक़्तूल उन के बुतों के दरमियान, उन
की क़ुर्बानगाहों के इर्दगिर्द, हर पहाड़ और पहाड़ की
चोटी पर और हर हरे दरख़्त और बलूत के घने दरख़्त
के साय में नज़र आएँगे। जहाँ भी वह अपने बुतों को
ख़ुश करने के लिए कोशाँ रहे वहाँ उन की लाशें पाई
जाएँगी। 14 मैं अपना हाथ उन के ख़िलाफ़ उठा कर
मुल्क को यहूदाह के रेगिस्तान से ले कर दिबला तक
तबाह कर दूँगा। उन की तमाम आबादियाँ वीरान-
ओ-सुन्सान हो जाएँगी। तब वह जान लेंगे कि मैं ही
रब हूँ।"

मुल्क का बुरा अन्जाम

7 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ आदमज़ाद,
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ मुल्क-ए-इस्राईल से
फ़रमाता है कि तेरा अन्जाम क़रीब ही है! जहाँ
भी देखो, पूरा मुल्क तबाह हो जाएगा। 3 अब तेरा
सत्यानास होने वाला है, मैं ख़ुद अपना ग़ज़ब तुझ
पर नाज़िल करूँगा। मैं तेरे चाल-चलन को परख
परख कर तेरी अदालत करूँगा, तेरी मकरूह हरकतों
का पूरा अज्र दूँगा। 4 न मैं तुझ पर तरस खाऊँगा, न
रहम करूँगा बल्कि तुझे तेरे चाल-चलन का मुनासिब
अज्र दूँगा। क्यूँकि तेरी मकरूह हरकतों का बीज तेरे
दरमियान ही उग कर फल लाएगा। तब तुम जान लोगे
कि मैं ही रब हूँ।"

5 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "आफ़त पर
आफ़त ही आ रही है। 6 तेरा अन्जाम, हाँ, तेरा
अन्जाम आ रहा है। अब वह उठ कर तुझ पर लपक
रहा है। 7 ऐ मुल्क के बाशिन्दे, तेरी फ़ना पहुँच रही
है। अब वह वक़्त क़रीब ही है, वह दिन जब तेरे
पहाड़ों पर ख़ुशी के नारों के बजाय अफ़्रा-तफ़्री का
शोर मचेगा। 8 अब मैं जल्द ही अपना ग़ज़ब तुझ
पर नाज़िल करूँगा, जल्द ही अपना ग़ुस्सा तुझ पर
उतारूँगा। मैं तेरे चाल-चलन को परख परख कर तेरी
अदालत करूँगा, तेरी घिनौनी हरकतों का पूरा अज्र
दूँगा। 9 न मैं तुझ पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा
बल्कि तुझे तेरे चाल-चलन का मुनासिब अज्र दूँगा।
क्यूँकि तेरी मकरूह हरकतों का बीज तेरे दरमियान
ही उग कर फल लाएगा। तब तुम जान लोगे कि मैं
यानी रब ही ज़र्ब लगा रहा हूँ।

10 देखो, मज़्कूरा दिन क़रीब ही है! तेरी हलाकत
पहुँच रही है। नाइन्साफ़ी के फूल और शोख़ी की
कोंपलें फूट निकली हैं। 11 लोगों का ज़ुल्म बढ़ बढ़

कर लाठी बन गया है जो उन्हें उन की बेदीनी की
सज़ा देगी। कुछ नहीं रहेगा, न वह ख़ुद, न उन की
दौलत, न उन का शोर-शराबा, और न उन की शान-
ओ-शौकत। 12 अदालत का दिन क़रीब ही है। उस
वक़्त जो कुछ ख़रीदे वह ख़ुश न हो, और जो कुछ
फ़रोख़्त करे वह ग़म न खाए। क्यूँकि अब इन चीज़ों
का कोई फ़ाइदा नहीं, इलाही ग़ज़ब सब पर नाज़िल
हो रहा है। 13 बेचने वाले बच भी जाएँ तो वह अपना
कारोबार नहीं कर सकेंगे। क्यूँकि सब पर इलाही
ग़ज़ब का फ़ैसला अटल है और मन्सूख़ नहीं हो
सकता। लोगों के गुनाहों के बाइस एक जान भी
नहीं छूटेगी। 14 बेशक लोग बिगुल बजा कर जंग की
तय्यारियाँ करें, लेकिन क्या फ़ाइदा? लड़ने के लिए
कोई नहीं निकलेगा, क्यूँकि सब के सब मेरे क़हर
का निशाना बन जाएंगे।

15 बाहर तलवार, अन्दर मोहलिक वबा और भूक।
क्यूँकि दीहात में लोग तलवार की ज़द में आ जाएंगे,
शहर में काल और मोहलिक वबा से हलाक हो
जाएंगे। 16 जितने भी बचेंगे वह पहाड़ों में पनाह लेंगे,
घाटियों में फ़ाख़्ताओं की तरह ग़ूँ ग़ूँ करके अपने
गुनाहों पर आह-ओ-ज़ारी करेंगे। 17 हर हाथ से ताक़त
जाती रहेगी, हर घुटना डाँवाँडोल हो जाएगा।

18 वह टाट के मातमी कपड़े ओढ़ लेंगे, उन पर
कपकपी तारी हो जाएगी। हर चिहरे पर शर्मिन्दगी
नज़र आएगी, हर सर मुंडवाया गया होगा। 19 अपनी
चाँदी को वह गलियों में फैंक देंगे, अपने सोने को
ग़िलाज़त समझेंगे। क्यूँकि जब रब का ग़ज़ब उन पर
नाज़िल होगा तो न उन की चाँदी उन्हें बचा सकेगी,
न सोना। उन से न वह अपनी भूक मिटा सकेंगे,
न अपने पेट को भर सकेंगे, क्यूँकि यही चीज़ें उन
के लिए गुनाह का बाइस बन गई थीं। 20 उन्हों ने
अपने ख़ूबसूरत ज़ेवरात पर फ़ख़र करके उन से अपने
घिनौने बुत और मकरूह मुजस्समे बनाए, इस लिए
मैं होने दूँगा कि वह अपनी दौलत से घिन खाएँगे।

21 मैं यह सब कुछ परदेसियों के हवाले कर दूँगा,
और वह उसे लूट लेंगे। दुनिया के बेदीन उसे छीन कर
उस की बेहुरमती करेंगे। 22 मैं अपना मुँह इस्राईलियों
से फेर लूँगा तो अजनबी मेरे क़ीमती मक़ाम की
बेहुरमती करेंगे। डाकू उस में घुस कर उसे नापाक
करेंगे। 23 ज़न्जीरें तय्यार कर! क्यूँकि मुल्क में क़त्ल-
ओ-ग़ारत आम हो गई है, शहर ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद से
भर गया है। 24 मैं दीगर अक़्वाम के सब से शरीर
लोगों को बुलाऊँगा ताकि इस्राईलियों के घरों पर
क़ब्ज़ा करें, मैं ज़ोरावरों का तकब्बुर ख़ाक में मिला
दूँगा। जो भी मक़ाम उन्हें मुक़द्दस हो उस की बेहुरमती
की जाएगी।

25 जब दहशत उन पर तारी होगी तो वह अम्न-
ओ-अमान तलाश करेंगे, लेकिन बेफ़ाइदा। अम्न-ओ-
अमान कहीं भी पाया नहीं जाएगा। 26 आफ़त पर
आफ़त ही उन पर आएगी, यके बाद दीगरे बुरी ख़बरें
उन तक पहुँचेंगी। वह नबी से रोया मिलने की उम्मीद
करेंगे, लेकिन बेफ़ाइदा। न इमाम उन्हें शरीअत की
तालीम, न बुज़ुर्ग उन्हें मश्वरा दे सकेंगे। 27 बादशाह
मातम करेगा, रईस हैबतज़दा होगा, और अवाम के
हाथ थरथराएँगे। मैं उन के चाल-चलन के मुताबिक़
उन से निपटूँगा, उन के अपने ही उसूलों के मुताबिक़
उन की अदालत करूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं
ही रब हूँ।”

रब के घर में बुतपरस्ती की रोया

8 1 जिलावतनी के छटे साल के छटे महीने के
पाँचवें दिन [8]मैं अपने घर में बैठा था। यहूदाह
के बुज़ुर्ग पास ही बैठे थे। तब रब क़ादिर-ए-मुतलक़
का हाथ मुझ पर आ ठहरा। 2 रोया में मैं ने किसी को
देखा जिस की शक्ल-ओ-सूरत इन्सान की मानिन्द
थी। लेकिन कमर से ले कर पाँओ तक वह आग
की मानिन्द भड़क रहा था जबकि कमर से ले कर
सर तक चमकदार धात की तरह तमतमा रहा था।

[8] 17 सितम्बर।

3 उस ने कुछ आगे बढ़ा दिया जो हाथ सा लग रहा
था और मेरे बालों को पकड़ लिया। फिर रूह ने मुझे
उठाया और ज़मीन और आसमान के दरमियान चलते
चलते यरूशलम तक पहुँचाया। अभी तक मैं अल्लाह
की रोया देख रहा था। मैं रब के घर के अन्दरूनी
सहन के उस दरवाज़े के पास पहुँच गया जिस का
रुख़ शिमाल की तरफ़ है। दरवाज़े के क़रीब एक बुत
पड़ा था जो रब को मुश्तइल करके ग़ैरत दिलाता है।
4 वहाँ इस्राईल के ख़ुदा का जलाल मुझ पर उसी
तरह ज़ाहिर हुआ जिस तरह पहले मैदान की रोया
में मुझ पर ज़ाहिर हुआ था। 5 वह मुझ से हमकलाम
हुआ, "ऐ आदमज़ाद, शिमाल की तरफ़ नज़र उठा।"
मैं ने अपनी नज़र शिमाल की तरफ़ उठाई तो दरवाज़े
के बाहर क़ुर्बानगाह देखी। साथ साथ दरवाज़े के
क़रीब ही वह बुत खड़ा था जो रब को ग़ैरत दिलाता
है। 6 फिर रब बोला, "ऐ आदमज़ाद, क्या तुझे वह
कुछ नज़र आता है जो इस्राईली क़ौम यहाँ करती
है? यह लोग यहाँ बड़ी मकरूह हरकतें कर रहे हैं
ताकि मैं अपने मक़्दिस से दूर हो जाऊँ। लेकिन तू
इन से भी ज़्यादा मकरूह चीज़ें देखेगा।"
7 वह मुझे रब के घर के बैरूनी सहन के दरवाज़े के
पास ले गया तो मैं ने दीवार में सूराख़ देखा। 8 अल्लाह
ने फ़रमाया, "आदमज़ाद, इस सूराख़ को बड़ा बना।"
मैं ने ऐसा किया तो दीवार के पीछे दरवाज़ा नज़र
आया। 9 तब उस ने फ़रमाया, "अन्दर जा कर वह
शरीर और घिनौनी हरकतें देख जो लोग यहाँ कर रहे
हैं।"
10 मैं दरवाज़े में दाख़िल हुआ तो क्या देखता हूँ कि
दीवारों पर चारों तरफ़ बुतपरस्ती की तस्वीरें कन्दा
हुई हैं। हर क़िस्म के रेंगने वाले और दीगर मकरूह
जानवर बल्कि इस्राईली क़ौम के तमाम बुत उन पर
नज़र आए। 11 इस्राईली क़ौम के 70 बुज़ुर्ग बख़ूरदान
पकड़े उन के सामने खड़े थे। बख़ूरदानों में से बख़ूर
का ख़ुश्बूदार धुआँ उठ रहा था। याज़नियाह बिन
साफ़न भी बुज़ुर्गों में शामिल था।
12 रब मुझ से हमकलाम हुआ, "ऐ आदमज़ाद, क्या
तू ने देखा कि इस्राईली क़ौम के बुज़ुर्ग अंधेरे में क्या
कुछ कर रहे हैं? हर एक ने अपने घर में अपने बुतों के
लिए कमरा मख़्सूस कर रखा है। क्यूँकि वह समझते
हैं, 'हम रब को नज़र नहीं आते, उस ने हमारे मुल्क
को तर्क कर दिया है।' 13 लेकिन आ, मैं तुझे इस से
भी ज़्यादा क़ाबिल-ए-घिन हरकतें दिखाता हूँ।"
14 वह मुझे रब के घर के अन्दरूनी सहन के
शिमाली दरवाज़े के पास ले गया। वहाँ औरतें बैठी
थीं जो रो रो कर तम्मूज़ देवता [h]का मातम कर रही
थीं। 15 रब ने सवाल किया, "आदमज़ाद, क्या तुझे
यह नज़र आता है? लेकिन आ, मैं तुझे इस से भी
ज़्यादा क़ाबिल-ए-घिन हरकतें दिखाता हूँ।"
16 वह मुझे रब के घर के अन्दरूनी सहन में ले
गया। रब के घर के दरवाज़े पर यानी सामने वाले
बरामदे और क़ुर्बानगाह के दरमियान ही 25 आदमी
खड़े थे। उन का रुख़ रब के घर की तरफ़ नहीं बल्कि
मशरिक़ की तरफ़ था, और वह सूरज को सिज्दा कर
रहे थे।
17 रब ने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, क्या तुझे यह
नज़र आता है? और यह मकरूह हरकतें भी यहूदाह
के बाशिन्दों के लिए काफ़ी नहीं हैं बल्कि वह पूरे
मुल्क को ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद से भर कर मुझे मुश्तइल
करने के लिए कोशाँ रहते हैं। देख, अब वह अपनी
नाकों के सामने अंगूर की बेल लहरा कर बुतपरस्ती
की एक और रस्म अदा कर रहे हैं! 18 चुनाँचे मैं अपना
ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा। न मैं उन पर तरस
खाऊँगा, न रहम करूँगा। ख़्वाह वह मदद के लिए
कितने ज़ोर से क्यूँ न चीख़ें मैं उन की नहीं सुनूँगा।"

---

[h]तम्मूज़ मसोपुतामिया का एक देवता था जिस के पैरोकार समझते थे कि वह मौसम-ए-गर्मा के इख़तिताम पर हरियाली के साथ साथ मर जाता और मौसम-ए-बहार में दुबारा जी उठता है।

यरूशलम तबाह हो जाएगा

9 1 फिर मैं ने अल्लाह की बुलन्द आवाज़ सुनी,
“यरूशलम की अदालत क़रीब आ गई है!
आओ, हर एक अपना तबाहकुन हथियार पकड़
कर खड़ा हो जाए!” 2 तब छः आदमी रब के घर
के शिमाली दरवाज़े में दाख़िल हुए। हर एक अपना
तबाहकुन हथियार थामे चल रहा था। उन के साथ
एक और आदमी था जिस का लिबास कतान का था।
उस के पटके से कातिब का सामान लटका हुआ था।
यह आदमी क़रीब आ कर पीतल की क़ुर्बानगाह के
पास खड़े हो गए।

3 इस्राईल के ख़ुदा का जलाल अब तक करूबी
फ़रिश्तों के ऊपर ठहरा हुआ था। अब वह वहाँ से
उड़ कर रब के घर की दहलीज़ के पास रुक गया।
फिर रब कतान से मुलब्बस उस मर्द से हमकलाम
हुआ जिस के पटके से कातिब का सामान लटका
हुआ था। 4 उस ने फ़रमाया, “जा, यरूशलम शहर
में से गुज़र कर हर एक के माथे पर निशान लगा
दे जो बाशिन्दों की तमाम मकरूह हरकतों को देख
कर आह-ओ-ज़ारी करता है।” 5 मेरे सुनते सुनते रब
ने दीगर आदमियों से कहा, “पहले आदमी के पीछे
पीछे चल कर लोगों को मार डालो! न किसी पर
तरस खाओ, न रहम करो 6 बल्कि बुज़ुर्गों को कुंवारे-
कुंवारियों और बाल-बच्चों समेत मौत के घाट उतारो।
सिर्फ़ उन्हें छोड़ना जिन के माथे पर निशान है। मेरे
मक़्दिस से शुरू करो!”

चुनाँचे आदमियों ने उन बुज़ुर्गों से शुरू किया जो
रब के घर के सामने खड़े थे। 7 फिर रब उन से दुबारा
हमकलाम हुआ, “रब के घर के सहनों को मक़्तूलों
से भर कर उस की बेहुरमती करो, फिर वहाँ से
निकल जाओ!” वह निकल गए और शहर में से गुज़र
कर लोगों को मार डालने लगे। 8 रब के घर के सहन
में सिर्फ़ मुझे ही ज़िन्दा छोड़ा गया था।

मैं औंधे मुँह गिर कर चीख़ उठा, “ऐ रब क़ादिर-ए-
मुतलक़, क्या तू यरूशलम पर अपना ग़ज़ब नाज़िल
करके इस्राईल के तमाम बचे हुओं को मौत के
घाट उतारेगा?” 9 रब ने जवाब दिया, “इस्राईल
और यहूदाह के लोगों का क़ुसूर निहायत ही संगीन
है। मुल्क में क़त्ल-ओ-ग़ारत आम है, और शहर
नाइन्साफ़ी से भर गया है। क्यूँकि लोग कहते हैं,
‘रब ने मुल्क को तर्क किया है, हम उसे नज़र ही
नहीं आते।’ 10 इस लिए न मैं उन पर तरस खाऊँगा,
न रहम करूँगा बल्कि उन की हरकतों की मुनासिब
सज़ा उन के सरों पर लाऊँगा।”

11 फिर कतान से मुलब्बस वह आदमी लौट आया
जिस के पटके से कातिब का सामान लटका हुआ
था। उस ने इत्तिला दी, “जो कुछ तू ने फ़रमाया वह
मैं ने पूरा किया है।”

10 1 मैं ने उस गुम्बद पर नज़र डाली जो करूबी
फ़रिश्तों के सरों के ऊपर फैली हुई थी।
उस पर संग-ए-लाजवर्द [i]का तख़्त सा नज़र आया।
2 रब ने कतान से मुलब्बस मर्द से फ़रमाया, “करूबी
फ़रिश्तों के नीचे लगे पहियों के बीच में जा। वहाँ
से दो मुट्ठी भर कोएले ले कर शहर पर बिखेर दे।”
आदमी मेरे देखते देखते फ़रिश्तों के बीच में चला
गया। 3 उस वक़्त करूबी फ़रिश्ते रब के घर के जुनूब
में खड़े थे, और अन्दरूनी सहन बादल से भरा हुआ
था।

4 फिर रब का जलाल जो करूबी फ़रिश्तों के ऊपर
ठहरा हुआ था वहाँ से उठ कर रब के घर की दहलीज़
पर रुक गया। पूरा मकान बादल से भर गया बल्कि
सहन भी रब के जलाल की आब-ओ-ताब से भर
गया। 5 करूबी फ़रिश्ते अपने परों को इतने ज़ोर
से फड़फड़ा रहे थे कि उस का शोर बैरूनी सहन
तक सुनाई दे रहा था। यूँ लग रहा था कि क़ादिर-
ए-मुतलक़ ख़ुदा बोल रहा है। 6 जब रब ने कतान से
मुलब्बस आदमी को हुक्म दिया कि करूबी फ़रिश्तों

---

[i] lapis lazuli

के पहियों के बीच में से जलते हुए कोएले ले तो वह
उन के दरमियान चल कर एक पहिए के पास खड़ा
हुआ। 7 फिर करूबी फ़रिश्तों में से एक ने अपना
हाथ बढ़ा कर बीच में जलने वाले कोएलों में से कुछ
ले लिया और आदमी के हाथों में डाल दिया। कतान
से मुलब्बस यह आदमी कोएले ले कर चला गया।

रब अपने घर को छोड़ देता है

8 मैं ने देखा कि करूबी फ़रिश्तों के परों के नीचे
कुछ है जो इन्सानी हाथ जैसा लग रहा है। 9 हर
फ़रिश्ते के पास एक पहिया था। पुखराज [j]से बने यह
चार पहिए 10 एक जैसे थे। हर पहिए के अन्दर एक
और पहिया ज़ाविया-ए-क़ाइमा में घूम रहा था, 11 इस
लिए यह मुड़े बग़ैर हर रुख़ इख़तियार कर सकते
थे। जिस तरफ़ एक चल पड़ता उस तरफ़ बाक़ी भी
मुड़े बग़ैर चलने लगते। 12 फ़रिश्तों के जिस्मों की हर
जगह पर आँखें ही आँखें थीं। आँखें न सिर्फ़ सामने
नज़र आईं बल्कि उन की पीठ, हाथों और परों पर
भी बल्कि चारों पहियों पर भी। 13 तो भी यह पहिए
ही थे, क्यूँकि मैं ने ख़ुद सुना कि उन के लिए यही
नाम इस्तेमाल हुआ।

14 हर फ़रिश्ते के चार चिहरे थे। पहला चिहरा
करूबी का, दूसरा आदमी का, तीसरा शेरबबर का
और चौथा उक़ाब का चिहरा था। 15 फिर करूबी
फ़रिश्ते उड़ गए। वही जानदार थे जिन्हें मैं दरया-
ए-किबार के किनारे देख चुका था। 16 जब फ़रिश्ते
हरकत में आ जाते तो पहिए भी चलने लगते, और
जब फ़रिश्ते फड़फड़ा कर उड़ने लगते तो पहिए भी
उन के साथ उड़ने लगते। 17 फ़रिश्तों के रुकने पर
पहिए रुक जाते, और उन के उड़ने पर यह भी उड़
जाते, क्यूँकि जानदारों की रूह उन में थी।

18 फिर रब का जलाल अपने घर की दहलीज़ से हट
गया और दुबारा करूबी फ़रिश्तों के ऊपर आ कर
ठहर गया। 19 मेरे देखते देखते फ़रिश्ते अपने परों को
फैला कर चल पड़े। चलते चलते वह रब के घर के
मशरिक़ी दरवाज़े के पास रुक गए। ख़ुदा-ए- इस्राईल
का जलाल उन के ऊपर ठहरा रहा।

20 वही जानदार थे जिन्हें मैं ने दरया-ए-किबार के
किनारे ख़ुदा-ए- इस्राईल के नीचे देखा था। मैं ने जान
लिया कि यह करूबी फ़रिश्ते हैं। 21 हर एक के चार
चिहरे और चार पर थे, और परों के नीचे कुछ नज़र
आया जो इन्सानी हाथों की मानिन्द था। 22 उन के
चिहरों की शक्ल-ओ-सूरत उन चिहरों की मानिन्द थी
जो मैं ने दरया-ए-किबार के किनारे देखे थे। चलते
वक़्त हर जानदार सीधा अपने किसी एक चिहरे का
रुख़ इख़तियार करता था।

अल्लाह की यरूशलम के बुज़ुर्गों के लिए सख़्त सज़ा

11 1 तब रूह मुझे उठा कर रब के घर के
मशरिक़ी दरवाज़े के पास ले गया। वहाँ
दरवाज़े पर 25 मर्द खड़े थे। मैं ने देखा कि क़ौम
के दो बुज़ुर्ग याज़नियाह बिन अज़्ज़ूर और फ़लतियाह
बिन बिनायाह भी उन में शामिल हैं। 2 रब ने फ़रमाया,
“ऐ आदमज़ाद, यह वही मर्द हैं जो शरीर मन्सूबे बांध
रहे और यरूशलम में बुरे मश्वरे दे रहे हैं। 3 यह कहते
हैं, ‘आने वाले दिनों में घर तामीर करने की ज़रूरत
नहीं। हमारा शहर तो देग है जबकि हम उस में पकने
वाला बेहतरीन गोश्त हैं।’ 4 आदमज़ाद, चूँकि वह
ऐसी बातें करते हैं इस लिए नबुव्वत कर! उन के
ख़िलाफ़ नबुव्वत कर!”

5 तब रब का रूह मुझ पर आ ठहरा, और उस ने
मुझे यह पेश करने को कहा, “रब फ़रमाता है, ‘ऐ
इस्राईली क़ौम, तुम इस क़िस्म की बातें करते हो। मैं
तो उन ख़यालात से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ जो तुम्हारे दिलों
से उभरते रहते हैं। 6 तुम ने इस शहर में मुतअद्दिद
लोगों को क़त्ल करके उस की गलियों को लाशों से
भर दिया है।’

---

[j]topas

7 चुनाँचे रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'बेशक
शहर देग है, लेकिन तुम उस में पकने वाला अच्छा
गोश्त नहीं होगे बल्कि वही जिन को तुम ने उस
के दरमियान क़त्ल किया है। तुम्हें मैं इस शहर से
निकाल दूँगा। 8 जिस तलवार से तुम डरते हो, उसी
को मैं तुम पर नाज़िल करूँगा।' यह रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ का फ़रमान है। 9 'मैं तुम्हें शहर से निकालूँगा
और परदेसियों के हवाले करके तुम्हारी अदालत
करूँगा। 10 तुम तलवार की ज़द में आ कर मर
जाओगे। इस्राईल की हुदूद पर ही मैं तुम्हारी अदालत
करूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 11 चुनाँचे
न यरूशलम शहर तुम्हारे लिए देग होगा, न तुम उस
में बेहतरीन गोश्त होगे बल्कि मैं इस्राईल की हुदूद ही
पर तुम्हारी अदालत करूँगा। 12 तब तुम जान लोगे
कि मैं ही रब हूँ, जिस के अह्काम के मुताबिक़ तुम
ने ज़िन्दगी नहीं गुज़ारी। क्यूँकि तुम ने मेरे उसूलों की
पैरवी नहीं की बल्कि अपनी पड़ोसी क़ौमों के उसूलों
की'।"

13 मैं अभी इस पेशगोई का एलान कर रहा था कि
फ़लतियाह बिन बिनायाह फ़ौत हुआ। यह देख कर
मैं मुँह के बल गिर गया और बुलन्द आवाज़ से चीख़
उठा, "हाय, हाय! ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, क्या
तू इस्राईल के बचे-खुचे हिस्से को सरासर मिटाना
चाहता है?"

अल्लाह इस्राईल को बहाल करेगा

14 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 15 "ऐ आदमज़ाद,
यरूशलम के बाशिन्दे तेरे भाइयों, तेरे रिश्तेदारों और
बाबल में जिलावतन हुए तमाम इस्राईलियों के बारे में
कह रहे हैं, 'यह लोग रब से कहीं दूर हो गए हैं, अब
इस्राईल हमारे ही क़ब्ज़े में है।' 16 जो इस क़िस्म की
बातें करते हैं उन्हें जवाब दे, रब क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि जी हाँ, मैं ने उन्हें दूर दूर भगा दिया,
और अब वह दीगर क़ौमों के दरमियान ही रहते हैं।
मैं ने ख़ुद उन्हें मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुन्तशिर कर
दिया, ऐसे इलाक़ों में जहाँ उन्हें मक़्दिस में मेरे हुज़ूर
आने का मौक़ा थोड़ा ही मिलता है। 17 लेकिन रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ यह भी फ़रमाता है, 'मैं तुम्हें दीगर
क़ौमों में से निकाल लूँगा, तुम्हें उन मुल्कों से जमा
करूँगा जहाँ मैं ने तुम्हें मुन्तशिर कर दिया था। तब
मैं तुम्हें मुल्क-ए-इस्राईल दुबारा अता करूँगा।'

18 फिर वह यहाँ आ कर तमाम मकरूह बुत और
घिनौनी चीज़ें दूर करेंगे। 19 उस वक़्त मैं उन्हें नया
दिल बख़्श कर उन में नई रूह डालूँगा। मैं उन
का संगीन दिल निकाल कर उन्हें गोश्त-पोस्त का
नर्म दिल अता करूँगा। 20 तब वह मेरे अह्काम
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेंगे और ध्यान से मेरी
हिदायात पर अमल करेंगे। वह मेरी क़ौम होंगे, और
मैं उन का ख़ुदा हूँगा। 21 लेकिन जिन लोगों के दिल
उन के घिनौने बुतों से लिपटे रहते हैं उन के सर पर
मैं उन के ग़लत काम का मुनासिब अज्र लाऊँगा। यह
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।"

रब यरूशलम को छोड़ देता है

22 फिर करूबी फ़रिश्तों ने अपने परों को फैलाया,
उन के पहिए हरकत में आ गए और ख़ुदा-ए- इस्राईल
का जलाल जो उन के ऊपर था 23 उठ कर शहर से
निकल गया। चलते चलते वह यरूशलम के मशरिक़
में वाक़े पहाड़ पर ठहर गया। 24 अल्लाह के रूह की
अताकरदा इस रोया में रूह मुझे उठा कर मुल्क-ए-
बाबल के जिलावतनों के पास वापस ले गया। फिर
रोया ख़त्म हुई, 25 और मैं ने जिलावतनों को सब
कुछ सुनाया जो रब ने मुझे दिखाया था।

नबी सामान लपेट कर जिलावतनी की पेशगोई करता है

12 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, तू एक सरकश क़ौम के
दरमियान रहता है। गो उन की आँखें हैं तो भी कुछ
नहीं देखते, गो उन के कान हैं तो भी कुछ नहीं सुनते।
क्यूँकि यह क़ौम हटधर्म है।

3 ऐ आदमज़ाद, अब अपना सामान यूँ लपेट ले
जिस तरह तुझे जिलावतन किया जा रहा हो। फिर
दिन के वक़्त और उन के देखते देखते घर से रवाना
हो कर किसी और जगह चला जा। शायद उन्हें समझ
आए कि उन्हें जिलावतन होना है, हालाँकि यह क़ौम
सरकश है। 4 दिन के वक़्त उन के देखते देखते अपना
सामान घर से निकाल ले, यूँ जैसे तू जिलावतनी
के लिए तय्यारियाँ कर रहा हो। फिर शाम के वक़्त
उन की मौजूदगी में जिलावतन का सा किरदार अदा
करके रवाना हो जा। 5 घर से निकलने के लिए दीवार
में सूराख़ बना, फिर अपना सारा सामान उस में से
बाहर ले जा। सब इस के गवाह हों। 6 उन के देखते
देखते अंधेरे में अपना सामान कंधे पर रख कर वहाँ
से निकल जा। लेकिन अपना मुँह ढाँप ले ताकि तू
मुल्क को देख न सके। लाज़िम है कि तू यह सब
कुछ करे, क्यूँकि मैं ने मुक़र्रर किया है कि तू इस्राईली
क़ौम को आगाह करने का निशान बन जाए।"

7 मैं ने वैसा ही किया जैसा रब ने मुझे हुक्म दिया
था। मैं ने अपना सामान यूँ लपेट लिया जैसे मुझे
जिलावतन किया जा रहा हो। दिन के वक़्त मैं उसे
घर से बाहर ले गया, शाम को मैं ने अपने हाथों से
दीवार में सूराख़ बना लिया। लोगों के देखते देखते मैं
सामान को अपने कंधे पर उठा कर वहाँ से निकल
आया। उतने में अंधेरा हो गया था।

8 सुब्ह के वक़्त रब का कलाम मुझ पर नाज़िल
हुआ, 9 "ऐ आदमज़ाद, इस हटधर्म क़ौम इस्राईल
ने तुझ से पूछा कि तू क्या कर रहा है? 10 उन्हें
जवाब दे, 'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि इस
पैग़ाम का ताल्लुक़ यरूशलम के रईस और शहर में
बसने वाले तमाम इस्राईलियों से है।' 11 उन्हें बता,
'मैं तुम्हें आगाह करने का निशान हूँ। जो कुछ मैं ने
किया वह तुम्हारे साथ हो जाएगा। तुम क़ैदी बन कर
जिलावतन हो जाओगे। 12 जो रईस तुम्हारे दरमियान
है वह अंधेरे में अपना सामान कंधे पर उठा कर
चला जाएगा। दीवार में सूराख़ बनाया जाएगा ताकि
वह निकल सके। वह अपना मुँह ढाँप लेगा ताकि
मुल्क को न देख सके। 13 लेकिन मैं अपना जाल उस
पर डाल दूँगा, और वह मेरे फंदे में फंस जाएगा। मैं
उसे बाबल लाऊँगा जो बाबलियों के मुल्क में है,
अगरचे वह उसे अपनी आँखों से नहीं देखेगा। वहीं
वह वफ़ात पाएगा। 14 जितने भी मुलाज़िम और दस्ते
उस के इर्दगिर्द होंगे उन सब को मैं हवा में उड़ा कर
चारों तरफ़ मुन्तशिर कर दूँगा। अपनी तलवार को
मियान से खैंच कर मैं उन के पीछे पड़ा रहूँगा। 15 जब
मैं उन्हें दीगर अक़्वाम और मुख़्तलिफ़ ममालिक में
मुन्तशिर करूँगा तो वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।
16 लेकिन मैं उन में से चन्द एक को बचा कर तलवार,
काल और मोहलिक वबा की ज़द में नहीं आने दूँगा।
क्यूँकि लाज़िम है कि जिन अक़्वाम में भी वह जा बसें
वहाँ वह अपनी मकरूह हरकतें बयान करें। तब यह
अक़्वाम भी जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ'।"

एक और निशान : हिज़्क़ीएल का काँपना

17 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 18 "ऐ आदमज़ाद,
खाना खाते वक़्त अपनी रोटी को लरज़ते हुए खा
और अपने पानी को परेशानी के मारे थरथराते हुए
पी। 19 साथ साथ उम्मत को बता, 'रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है कि मुल्क-ए-इस्राईल के शहर
यरूशलम के बाशिन्दे परेशानी में अपना खाना खाएँगे
और दहशतज़दा हालत में अपना पानी पिएँगे, क्यूँकि
उन का मुल्क तबाह और हर बरकत से ख़ाली हो
जाएगा। और सबब उस के बाशिन्दों का ज़ुल्म-ओ-
तशद्दुद होगा। 20 जिन शहरों में लोग अब तक आबाद
हैं वह बर्बाद हो जाएंगे, मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान हो
जाएगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ'।"

अल्लाह का कलाम जल्द ही पूरा हो जाएगा

21 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 22 "ऐ आदमज़ाद,
यह कैसी कहावत है जो मुल्क-ए-इस्राईल में आम हो
गई है? लोग कहते हैं, 'जूँ जूँ दिन गुज़रते जाते हैं तूँ
तूँ हर रोया ग़लत साबित होती जाती है।' 23 जवाब में
उन्हें बता, 'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं

इस कहावत को ख़त्म करूँगा, आइन्दा यह इस्राईल
में इस्तेमाल नहीं होगी।' उन्हें यह भी बता, 'वह वक़्त
क़रीब ही है जब हर रोया पूरी हो जाएगी। 24 क्यूँकि
आइन्दा इस्राईली क़ौम में न फ़रेबदिह रोया, न
चापलूसी की पेशगोइयाँ पाई जाएँगी। 25 क्यूँकि मैं
रब हूँ। जो कुछ मैं फ़रमाता हूँ वह वुजूद में आता
है। ऐ सरकश क़ौम, देर नहीं होगी बल्कि तुम्हारे
ही अय्याम में मैं बात भी करूँगा और उसे पूरा भी
करूँगा।' यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।"
26 रब मज़ीद मुझ से हमकलाम हुआ, 27 "ऐ
आदमज़ाद, इस्राईली क़ौम तेरे बारे में कहती है, 'जो
रोया यह आदमी देखता है वह बड़ी देर के बाद ही
पूरी होगी, उस की पेशगोइयाँ दूर के मुस्तक़बिल के
बारे में हैं।' 28 लेकिन उन्हें जवाब दे, 'रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है कि जो कुछ भी मैं फ़रमाता हूँ
उस में मज़ीद देर नहीं होगी बल्कि वह जल्द ही पूरा
होगा।' यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।"

झूटे नबी हलाक हो जाएंगे

13 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, इस्राईल के नाम-निहाद नबियों
के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! जो नबुव्वत करते वक़्त
अपने दिलों से उभरने वाली बातें ही पेश करते हैं,
उन से कह,
'रब का फ़रमान सुनो! 3 रब क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि उन अहमक़ नबियों पर अफ़्सोस
जिन्हें अपनी ही रूह से तहरीक मिलती है और जो
हक़ीक़त में रोया नहीं देखते। 4 ऐ इस्राईल, तेरे नबी
खंडरात में लोमड़ियों की तरह आवारा फिर रहे हैं।
5 न कोई दीवार के रख़नों में खड़ा हुआ, न किसी
ने उस की मरम्मत की ताकि इस्राईली क़ौम रब के
उस दिन क़ाइम रह सके जब जंग छिड़ जाएगी। 6 उन
की रोयाएँ धोका ही धोका, उन की पेशगोइयाँ झूट
ही झूट हैं। वह कहते हैं, "रब फ़रमाता है" गो रब
ने उन्हें नहीं भेजा। ताज्जुब की बात है कि तो भी
वह तवक़्क़ो करते हैं कि मैं उन की पेशगोइयाँ पूरी
होने दूँ! 7 हक़ीक़त में तुम्हारी रोयाएँ धोका ही धोका
और तुम्हारी पेशगोइयाँ झूट ही झूट हैं। तो भी तुम
कहते हो, "रब फ़रमाता है" हालाँकि मैं ने कुछ नहीं
फ़रमाया।
8 चुनाँचे रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
तुम्हारी फ़रेबदिह बातों और झूटी रोयाओं की वजह
से तुम से निपट लूँगा। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का
फ़रमान है। 9 मैं अपना हाथ उन नबियों के ख़िलाफ़
बढ़ा दूँगा जो धोके की रोयाएँ देखते और झूटी
पेशगोइयाँ सुनाते हैं। न वह मेरी क़ौम की मजलिस
में शरीक होंगे, न इस्राईली क़ौम की फ़हरिस्तों में
दर्ज होंगे। मुल्क-ए-इस्राईल में वह कभी दाख़िल नहीं
होंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं रब क़ादिर-ए-मुतलक़
हूँ। 10 वह मेरी क़ौम को ग़लत राह पर ला कर
अम्न-ओ-अमान का एलान करते हैं अगरचे अम्न-
ओ-अमान है नहीं। जब क़ौम अपने लिए कच्ची सी
दीवार बना लेती है तो यह नबी उस पर सफेदी फेर
देते हैं। 11 लेकिन ऐ सफेदी करने वालो, ख़बरदार!
यह दीवार गिर जाएगी। मूसलाधार बारिश बरसेगी,
ओले पड़ेंगे और सख़्त आँधी उस पर टूट पड़ेगी।
12 तब दीवार गिर जाएगी, और लोग तन्ज़न तुम से
पूछेंगे कि अब वह सफेदी कहाँ है जो तुम ने दीवार
पर फेरी थी?
13 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं तैश में
आ कर दीवार पर ज़बरदस्त आँधी आने दूँगा, ग़ुस्से
में उस पर मूसलाधार बारिश और मोहलिक ओले
बरसा दूँगा। 14 मैं उस दीवार को ढा दूँगा जिस पर
तुम ने सफेदी फेरी थी, उसे ख़ाक में यूँ मिला दूँगा
कि उस की बुन्याद नज़र आएगी। और जब वह गिर
जाएगी तो तुम भी उस की ज़द में आ कर तबाह हो
जाओगे। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 15 यूँ
मैं दीवार और उस की सफेदी करने वालों पर अपना
ग़ुस्सा उतारूँगा। तब मैं तुम से कहूँगा कि दीवार भी
ख़त्म है और उस की सफेदी करने वाले भी, 16 यानी
इस्राईल के वह नबी जिन्हों ने यरूशलम को ऐसी
पेशगोइयाँ और रोयाएँ सुनाईं जिन के मुताबिक़ अम्न-

ओ-अमान का दौर क़रीब ही है, हालाँकि अम्न-ओ-अमान का इम्कान ही नहीं। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।'

17 ऐ आदमज़ाद, अब अपनी क़ौम की उन बेटियों का सामना कर जो नबुव्वत करते वक़्त वही बातें पेश करती हैं जो उन के दिलों से उभर आती हैं। उन के ख़िलाफ़ नबुव्वत करके 18 कह,

'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि उन औरतों पर अफ़्सोस जो तमाम लोगों के लिए कलाई से बांधने वाले तावीज़ सी लेती हैं, जो लोगों को फंसाने के लिए छोटों और बड़ों के सरों के लिए पर्दे बना लेती हैं। ऐ औरतो, क्या तुम वाक़ई समझती हो कि मेरी क़ौम में से बाज़ को फाँस सकती और बाज़ को अपने लिए ज़िन्दा छोड़ सकती हो? 19 मेरी क़ौम के दरमियान ही तुम ने मेरी बेहुरमती की, और यह सिर्फ़ चन्द एक मुट्ठी भर जौ और रोटी के दो चार टुकड़ों के लिए। अफ़्सोस, मेरी क़ौम झूट सुनना पसन्द करती है। इस से फ़ाइदा उठा कर तुम ने उसे झूट पेश करके उन्हें मार डाला जिन्हें मरना नहीं था और उन्हें ज़िन्दा छोड़ा जिन्हें ज़िन्दा नहीं रहना था।

20 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं तुम्हारे तावीज़ों से निपट लूँगा जिन के ज़रीए तुम लोगों को परिन्दों की तरह पकड़ लेती हो। मैं जादूगरी की यह चीज़ें तुम्हारे बाज़ूओं से नोच कर फाड़ डालूँगा और उन्हें रिहा करूँगा जिन्हें तुम ने परिन्दों की तरह पकड़ लिया है। 21 मैं तुम्हारे पर्दों को फाड़ कर हटा लूँगा और अपनी क़ौम को तुम्हारे हाथों से बचा लूँगा। आइन्दा वह तुम्हारा शिकार नहीं रहेगी। तब तुम जान लोगी कि मैं ही रब हूँ।

22 तुम ने अपने झूट से रास्तबाज़ों को दुख पहुँचाया, हालाँकि यह दुख मेरी तरफ़ से नहीं था। साथ साथ तुम ने बेदीनों की हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह अपनी बुरी राहों से बाज़ न आएँ, हालाँकि वह बाज़ आने से बच जाते। 23 इस लिए आइन्दा न तुम फ़रेबदिह रोया देखोगी, न दूसरों की क़िस्मत का हाल बताओगी। मैं अपनी क़ौम को तुम्हारे हाथों से छुटकारा दूँगा। तब तुम जान लोगी कि मैं ही रब हूँ'।"

अल्लाह बुतपरस्ती का मुनासिब जवाब देगा

14 1 इस्राईल के कुछ बुज़ुर्ग मुझ से मिलने आए और मेरे सामने बैठ गए। 2 तब रब मुझ से हमकलाम हुआ, 3 "ऐ आदमज़ाद, इन आदमियों के दिल अपने बुतों से लिपटे रहते हैं। जो चीज़ें उन के लिए ठोकर और गुनाह का बाइस हैं उन्हें उन्हों ने अपने मुँह के सामने ही रखा है। तो फिर क्या मुनासिब है कि मैं उन्हें जवाब दूँ जब वह मुझ से दरयाफ़्त करने आते हैं? 4 उन्हें बता, 'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, यह लोग अपने बुतों से लिपटे रहते और वह चीज़ें अपने मुँह के सामने रखते हैं जो ठोकर और गुनाह का बाइस हैं। साथ साथ यह नबी के पास भी जाते हैं ताकि मुझ से मालूमात हासिल करें। जो भी इस्राईली ऐसा करे उसे मैं ख़ुद जो रब हूँ जवाब दूँगा, ऐसा जवाब जो उस के मुतअद्दिद बुतों के ऐन मुताबिक़ होगा। 5 मैं उन से ऐसा सुलूक करूँगा ताकि इस्राईली क़ौम के दिल को मज़बूती से पकड़ लूँ। क्यूँकि अपने बुतों की ख़ातिर सब के सब मुझ से दूर हो गए हैं।'

6 चुनाँचे इस्राईली क़ौम को बता, 'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तौबा करो! अपने बुतों और तमाम मकरूह रस्म-ओ-रिवाज से मुँह मोड़ कर मेरे पास वापस आ जाओ। 7 उस के अन्जाम पर ध्यान दो जो ऐसा नहीं करेगा, ख़्वाह वह इस्राईली या इस्राईल में रहने वाला परदेसी हो। अगर वह मुझ से दूर हो कर अपने बुतों से लिपट जाए और वह चीज़ें अपने सामने रखे जो ठोकर और गुनाह का बाइस हैं तो जब वह नबी की मारिफ़त मुझ से मालूमात हासिल करने की कोशिश करेगा तो मैं, रब उसे मुनासिब जवाब दूँगा। 8 मैं ऐसे शख़्स का सामना करके उस से यूँ निपट लूँगा कि वह दूसरों के लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल बन जाएगा। मैं उसे यूँ मिटा दूँगा कि मेरी क़ौम में उस का

नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा। तब तुम जान लोगे
कि मैं ही रब हूँ।
9 अगर किसी नबी को कुछ सुनाने पर उकसाया
गया जो मेरी तरफ़ से नहीं था तो यह इस लिए
हुआ कि मैं, रब ने ख़ुद उसे उकसाया। ऐसे नबी
के ख़िलाफ़ मैं अपना हाथ उठा कर उसे यूँ तबाह
करूँगा कि मेरी क़ौम में उस का नाम-ओ-निशान तक
नहीं रहेगा। 10 दोनों को उन के क़ुसूर की मुनासिब
सज़ा मिलेगी, नबी को भी और उसे भी जो हिदायत
पाने के लिए उस के पास आता है। 11 तब इस्राईली
क़ौम न मुझ से दूर हो कर आवारा फिरेगी, न अपने
आप को इन तमाम गुनाहों से आलूदा करेगी। वह
मेरी क़ौम होंगे, और मैं उन का ख़ुदा हूँगा। यह रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है'।"

सिर्फ़ रास्तबाज़ ही बचे रहेंगे

12 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 13 "ऐ आदमज़ाद,
फ़र्ज़ कर कि कोई मुल्क बेवफ़ा हो कर मेरा गुनाह
करे, और मैं काल के ज़रीए उसे सज़ा दे कर उस में
से इन्सान-ओ-हैवान मिटा डालूँ। 14 ख़्वाह मुल्क में
नूह, दान्याल और अय्यूब क्यूँ न बसते तो भी मुल्क न
बचता। यह आदमी अपनी रास्तबाज़ी से सिर्फ़ अपनी
ही जानों को बचा सकते। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़
का फ़रमान है।
15 या फ़र्ज़ कर कि मैं मज़कूरा मुल्क में वहशी
दरिन्दों को भेज दूँ जो इधर उधर फिर कर सब को
फाड़ खाएँ। मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान हो जाए और
जंगली दरिन्दों की वजह से कोई उस में से गुज़रने
की जुरअत न करे। 16 मेरी हयात की क़सम, ख़्वाह
मज़कूरा तीन रास्तबाज़ आदमी मुल्क में क्यूँ न बसते
तो भी अकेले ही बचते। वह अपने बेटे-बेटियों को भी
बचा न सकते बल्कि पूरा मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान
होता। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।
17 या फ़र्ज़ कर कि मैं मज़कूरा मुल्क को जंग से
तबाह करूँ, मैं तलवार को हुक्म दूँ कि मुल्क में
से गुज़र कर इन्सान-ओ-हैवान को नेस्त-ओ-नाबूद
कर दे। 18 मेरी हयात की क़सम, ख़्वाह मज़कूरा
तीन रास्तबाज़ आदमी मुल्क में क्यूँ न बसते वह
अकेले ही बचते। वह अपने बेटे-बेटियों को भी बचा
न सकते। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।
19 या फ़र्ज़ कर कि मैं अपना ग़ुस्सा मुल्क पर उतार
कर उस में मोहलिक वबा यूँ फैला दूँ कि इन्सान-ओ-
हैवान सब के सब मर जाएँ। 20 मेरी हयात की क़सम,
ख़्वाह नूह, दान्याल और अय्यूब मुल्क में क्यूँ न
बसते तो भी वह अपने बेटे-बेटियों को बचा न सकते।
वह अपनी रास्तबाज़ी से सिर्फ़ अपनी ही जानों को
बचाते। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।
21 अब यरूशलम के बारे में रब क़ादिर-ए-मुतलक़
का फ़रमान सुनो! यरूशलम का कितना बुरा हाल
होगा जब मैं अपनी चार सख़्त सज़ाएँ उस पर नाज़िल
करूँगा। क्यूँकि इन्सान-ओ-हैवान जंग, काल, वहशी
दरिन्दों और मोहलिक वबा की ज़द में आ कर
हलाक हो जाएंगे। 22 तो भी चन्द एक बचेंगे, कुछ
बेटे-बेटियाँ जिलावतन हो कर बाबल में तुम्हारे
पास आएँगे। जब तुम उन का बुरा चाल-चलन और
हरकतें देखोगे तो तुम्हें तसल्ली मिलेगी कि हर आफ़त
मुनासिब थी जो मैं यरूशलम पर लाया। 23 उन
का चाल-चलन और हरकतें देख कर तुम्हें तसल्ली
मिलेगी, क्यूँकि तुम जान लोगे कि जो कुछ भी मैं ने
यरूशलम के साथ किया वह बिलावजह नहीं था।
यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।"

यरूशलम अंगूर की बेल की बेकार लकड़ी है

15 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, अंगूर की बेल की लकड़ी
किस लिहाज़ से जंगल की दीगर लकड़ियों से बेहतर
है? 3 क्या यह किसी काम आ जाती है? क्या यह
कम अज़ कम खूँटियाँ बनाने के लिए इस्तेमाल हो
सकती है जिन से चीज़ें लटकाई जा सकें? हरगिज़
नहीं! 4 उसे ईंधन के तौर पर आग में फैंका जाता है।
इस के बाद जब उस के दोनों सिरे भस्म हुए हैं और
बीच में भी आग लग गई है तो क्या वह किसी काम

आ जाती है? 5 आग लगने से पहले भी बेकार थी, तो
अब वह किस काम आएगी जब उस के दोनों सिरे
भस्म हुए हैं बल्कि बीच में भी आग लग गई है?
6 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि यरूशलम
के बाशिन्दे अंगूर की बेल की लकड़ी जैसे हैं जिन्हें
मैं जंगल के दरख़्तों के दरमियान से निकाल कर
आग में फैंक देता हूँ। 7 क्यूँकि मैं उन के ख़िलाफ़
उठ खड़ा हूँगा। गो वह आग से बच निकले हैं तो भी
आख़िरकार आग ही उन्हें भस्म करेगी। जब मैं उन
के ख़िलाफ़ उठ खड़ा हूँगा तो तुम जान लोगे कि मैं
ही रब हूँ। 8 पूरे मुल्क को मैं वीरान-ओ-सुन्सान कर
दूँगा, इस लिए कि वह बेवफ़ा साबित हुए हैं। यह रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।"

यरूशलम बेवफ़ा औरत है

16 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, यरूशलम के ज़हन में उस की
मकरूह हरकतों की सन्जीदगी बिठा कर 3 एलान
कर कि रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'ऐ
यरूशलम बेटी, तेरी नस्ल मुल्क-ए-कनआन की है,
और वहीं तू पैदा हुई। तेरा बाप अमोरी, तेरी माँ
हित्ती थी। 4 पैदा होते वक़्त नाफ़ के साथ लगी नाल
को काट कर दूर नहीं किया गया। न तुझे पानी से
नहलाया गया, न तेरे जिस्म पर नमक मला गया, और
न तुझे कपड़ों में लपेटा गया। 5 न किसी को इतना
तरस आया, न किसी ने तुझ पर इतना रहम किया
कि इन कामों में से एक भी करता। इस के बजाय
तुझे खुले मैदान में फैंक कर छोड़ दिया गया। क्यूँकि
जब तू पैदा हुई तो सब तुझे हक़ीर जानते थे।
6 तब मैं वहाँ से गुज़रा। उस वक़्त तू अपने ख़ून में
तड़प रही थी। तुझे इस हालत में देख कर मैं बोला,
"जीती रह!" हाँ, तू अपने ख़ून में तड़प रही थी जब मैं
बोला, "जीती रह! 7 खेत में हरियाली की तरह फलती
फूलती जा!" तब तू फलती फूलती हुई परवान चढ़ी।
तू निहायत ख़ूबसूरत बन गई। छातियाँ और बाल
देखने में प्यारे लगे। लेकिन अभी तक तू नंगी और
बरहना थी।
8 मैं दुबारा तेरे पास से गुज़रा तो देखा कि तू शादी
के क़ाबिल हो गई है। मैं ने अपने लिबास का दामन
तुझ पर बिछा कर तेरी बरहनगी को ढाँप दिया।
मैं ने क़सम खा कर तेरे साथ अह्द बांधा और यूँ
तेरा मालिक बन गया। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का
फ़रमान है।
9 मैं ने तुझे नहला कर ख़ून से साफ़ किया, फिर तेरे
जिस्म पर तेल मला। 10 मैं ने तुझे शानदार लिबास
और चमड़े के नफ़ीस जूते पहनाए, तुझे बारीक कतान
और क़ीमती कपड़े से मुलब्बस किया। 11 फिर मैं ने
तुझे ख़ूबसूरत ज़ेवरात, चूड़ियों, हार, 12 नथ, बालियों
और शानदार ताज से सजाया। 13 यूँ तू सोने-चाँदी
से आरास्ता और बारीक कतान, रेशम और शानदार
कपड़े से मुलब्बस हुई। तेरी ख़ुराक बेहतरीन मैदे,
शहद और ज़ैतून के तेल पर मुश्तमिल थी। तू निहायत
ही ख़ूबसूरत हुई, और होते होते मलिका बन गई।'
14 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'तेरे हुस्न की
शुहरत दीगर अक़्वाम में फैल गई, क्यूँकि मैं ने तुझे
अपनी शान-ओ-शौकत में यूँ शरीक किया था कि तेरा
हुस्न कामिल था।
15 लेकिन तू ने क्या किया? तू ने अपने हुस्न पर
भरोसा रखा। अपनी शुहरत से फ़ाइदा उठा कर तू
ज़िनाकार बन गई। हर गुज़रने वाले को तू ने अपने
आप को पेश किया, हर एक को तेरा हुस्न हासिल
हुआ। 16 तू ने अपने कुछ शानदार कपड़े ले कर
अपने लिए रंगदार बिस्तर बनाया और उसे ऊँची
जगहों पर बिछा कर ज़िना करने लगी। ऐसा न माज़ी
में कभी हुआ, न आइन्दा कभी होगा। 17 तू ने वही
नफ़ीस ज़ेवरात लिए जो मैं ने तुझे दिए थे और मेरी ही
सोने-चाँदी से अपने लिए मर्दों के बुत ढाल कर उन
से ज़िना करने लगी। 18 उन्हें अपने शानदार कपड़े
पहना कर तू ने मेरा ही तेल और बख़ूर उन्हें पेश
किया।' 19 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'जो
ख़ुराक यानी बेहतरीन मैदा, ज़ैतून का तेल और शहद

मैं ने तुझे दिया था उसे तू ने उन्हें पेश किया ताकि
उस की ख़ुश्बू उन्हें पसन्द आए।
20 जिन बेटे-बेटियों को तू ने मेरे हाँ जन्म दिया था
उन्हें तू ने क़ुर्बान करके बुतों को खिलाया। क्या तू
अपनी ज़िनाकारी पर इकतिफ़ा न कर सकी? 21 क्या
ज़रूरत थी कि मेरे बच्चों को भी क़त्ल करके बुतों
के लिए जला दे? 22 ताज्जुब है कि जब भी तू ऐसी
मकरूह हरकतें और ज़िना करती थी तो तुझे एक बार
भी जवानी का ख़याल न आया, यानी वह वक़्त जब
तू नंगी और बरहना हालत में अपने ख़ून में तड़पती
रही।'
23 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'अफ़्सोस,
तुझ पर अफ़्सोस! अपनी बाक़ी तमाम शरारतों के
इलावा 24 तू ने हर चौक में बुतों के लिए क़ुर्बानगाह
तामीर करके हर एक के साथ ज़िना करने की जगह
भी बनाई। 25 हर गली के कोने में तू ने ज़िना करने
का कमरा बनाया। अपने हुस्न की बेहुरमती करके
तू अपनी इस्मतफ़रोशी ज़ोरों पर लाई। हर गुज़रने
वाले को तू ने अपना बदन पेश किया। 26 पहले तू
अपने शहवतपरस्त पड़ोसी मिस्र के साथ ज़िना करने
लगी। जब तू ने अपनी इस्मतफ़रोशी को ज़ोरों पर ला
कर मुझे मुश्तइल किया 27 तो मैं ने अपना हाथ तेरे
ख़िलाफ़ बढ़ा कर तेरे इलाक़े को छोटा कर दिया।
मैं ने तुझे फ़िलिस्ती बेटियों के लालच के हवाले कर
दिया, उन के हवाले जो तुझ से नफ़रत करती हैं और
जिन को तेरे ज़िनाकाराना चाल-चलन पर शर्म आती
है।
28 अब तक तेरी शहवत को तस्कीन नहीं मिली थी,
इस लिए तू असूरियों से ज़िना करने लगी। लेकिन
यह भी तेरे लिए काफ़ी न था। 29 अपनी ज़िनाकारी
में इज़ाफ़ा करके तू सौदागरों के मुल्क बाबल के
पीछे पड़ गई। लेकिन यह भी तेरी शहवत के लिए
काफ़ी नहीं था।' 30 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता
है, 'ऐसी हरकतें करके तू कितनी सरगर्म हुई! साफ़
ज़ाहिर हुआ कि तू ज़बरदस्त कस्बी है। 31 जब तू
ने हर चौक में बुतों की क़ुर्बानगाह बनाई और हर
गली के कोने में ज़िना करने का कमरा तामीर किया
तो तू आम कस्बी से मुख़्तलिफ़ थी। क्यूँकि तू ने
अपने गाहकों से पैसे लेने से इन्कार किया। 32 हाय,
तू कैसी बदकार बीवी है! अपने शौहर पर तू दीगर
मर्दों को तर्जीह देती है। 33 हर कस्बी को फ़ीस मिलती
है, लेकिन तू तो अपने तमाम आशिक़ों को तुह्फ़े
देती है ताकि वह हर जगह से आ कर तेरे साथ ज़िना
करें। 34 इस में तू दीगर कस्बियों से फ़र्क़ है। क्यूँकि
न गाहक तेरे पीछे भागते, न वह तेरी मुहब्बत का
मुआवज़ा देते हैं बल्कि तू ख़ुद उन के पीछे भागती
और उन्हें अपने साथ ज़िना करने का मुआवज़ा देती
है।'
35 ऐ कस्बी, अब रब का फ़रमान सुन ले! 36 रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'तू ने अपने आशिक़ों
को अपनी बरहनगी दिखा कर अपनी इस्मतफ़रोशी
की, तू ने मकरूह बुत बना कर उन की पूजा की, तू
ने उन्हें अपने बच्चों का ख़ून क़ुर्बान किया है। 37 इस
लिए मैं तेरे तमाम आशिक़ों को इकट्ठा करूँगा, उन
सब को जिन्हें तू पसन्द आई, उन्हें भी जो तुझे प्यारे
थे और उन्हें भी जिन से तू ने नफ़रत की। मैं उन्हें
चारों तरफ़ से जमा करके तेरे ख़िलाफ़ भेजूँगा। तब
मैं उन के सामने ही तेरे तमाम कपड़े उतारूँगा ताकि
वह तेरी पूरी बरहनगी देखें। 38 मैं तेरी अदालत करके
तेरी ज़िनाकारी और क़ातिलाना हरकतों का फ़ैसला
करूँगा। मेरा ग़ुस्सा और मेरी ग़ैरत तुझे ख़ूँरेज़ी की
सज़ा देगी।
39 मैं तुझे तेरे आशिक़ों के हवाले करूँगा, और वह
तेरे बुतों की क़ुर्बानगाहें उन कमरों समेत ढा देंगे
जहाँ तू ज़िनाकारी करती रही है। वह तेरे कपड़े और
शानदार ज़ेवरात उतार कर तुझे उरियाँ और बरहना
छोड़ देंगे। 40 वह तेरे ख़िलाफ़ जुलूस निकालेंगे और
तुझे संगसार करके तलवार से टुकड़े टुकड़े कर देंगे।
41 तेरे घरों को जला कर वह मुतअद्दिद औरतों के
देखते देखते तुझे सज़ा देंगे। यूँ मैं तेरी ज़िनाकारी को
रोक दूँगा, और आइन्दा तू अपने आशिक़ों को ज़िना
करने के पैसे नहीं दे सकेगी।

42 तब मेरा ग़ुस्सा ठंडा हो जाएगा, और तू मेरी ग़ैरत
का निशाना नहीं रहेगी। मेरी नाराज़ी ख़त्म हो जाएगी,
और मुझे दुबारा तस्कीन मिलेगी।' 43 रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है, 'मैं तेरे सर पर तेरी हरकतों का
पूरा नतीजा लाऊँगा, क्यूँकि तुझे जवानी में मेरी मदद
की याद न रही बल्कि तू मुझे इन तमाम बातों से तैश
दिलाती रही। बाक़ी तमाम घिनौनी हरकतें तेरे लिए
काफ़ी नहीं थीं बल्कि तू ज़िना भी करने लगी।

44 तब लोग यह कहावत कह कर तेरा मज़ाक़
उड़ाएँगे, "जैसी माँ, वैसी बेटी!" 45 तू वाक़ई अपनी
माँ की मानिन्द है, जो अपने शौहर और बच्चों से सख़्त
नफ़रत करती थी। तू अपनी बहनों की मानिन्द भी
है, क्यूँकि वह भी अपने शौहरों और बच्चों से सख़्त
नफ़रत करती थीं। तेरी माँ हित्ती और तेरा बाप अमोरी
था। 46 तेरी बड़ी बहन सामरिया थी जो अपनी बेटियों
के साथ तेरे शिमाल में आबाद थी। और तेरी छोटी
बहन सदूम थी जो अपनी बेटियों के साथ तेरे जुनूब में
रहती थी। 47 तू न सिर्फ़ उन के ग़लत नमूने पर चल
पड़ी और उन की सी मकरूह हरकतें करने लगी
बल्कि उन से कहीं ज़्यादा बुरा काम करने लगी।'
48 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'मेरी हयात की
क़सम, तेरी बहन सदूम और उस की बेटियों से कभी
इतना ग़लत काम सरज़द न हुआ जितना कि तुझ से
और तेरी बेटियों से हुआ है। 49 तेरी बहन सदूम का
क्या क़ुसूर था? वह अपनी बेटियों समेत मुतकब्बिर
थी। गो उन्हें ख़ुराक की कस्रत और आराम-ओ-
सुकून हासिल था तो भी वह मुसीबतज़दों और ग़रीबों
का सहारा नहीं बनती थीं। 50 वह मग़रूर थीं और
मेरी मौजूदगी में ही घिनौना काम करती थीं। इसी
वजह से मैं ने उन्हें हटा दिया। तू ख़ुद इस की गवाह
है। 51 सामरिया पर भी ग़ौर कर। जितने गुनाह तुझ से
सरज़द हुए उन का आधा हिस्सा भी उस से न हुआ।
अपनी बहनों की निस्बत तू ने कहीं ज़्यादा घिनौनी
हरकतें की हैं। तेरे मुक़ाबले में तेरी बहनें फ़रिश्ते
हैं। 52 चुनाँचे अब अपनी ख़जालत को बर्दाश्त कर।
क्यूँकि अपने गुनाहों से तू अपनी बहनों की जगह
खड़ी हो गई है। तू ने उन से कहीं ज़्यादा क़ाबिल-
ए-घिन काम किए हैं, और अब वह तेरे मुक़ाबले में
मासूम बच्चे लगती हैं। शर्म खा खा कर अपनी रुस्वाई
को बर्दाश्त कर, क्यूँकि तुझ से ऐसे संगीन गुनाह
सरज़द हुए हैं कि तेरी बहनें रास्तबाज़ ही लगती हैं।

तो भी रब वफ़ादार रहेगा

53 लेकिन एक दिन आएगा जब मैं सदूम, सामरिया,
तुझे और तुम सब की बेटियों को बहाल करूँगा।
54 तब तू अपनी रुस्वाई बर्दाश्त कर सकेगी और
अपने सारे ग़लत काम पर शर्म खाएगी। सदूम और
सामरिया यह देख कर तसल्ली पाएँगी। 55 हाँ, तेरी
बहनें सदूम और सामरिया अपनी बेटियों समेत दुबारा
क़ाइम हो जाएँगी। तू भी अपनी बेटियों समेत दुबारा
क़ाइम हो जाएगी।

56 पहले तू इतनी मग़रूर थी कि अपनी बहन
सदूम का ज़िक्र तक नहीं करती थी। 57 लेकिन
फिर तेरी अपनी बुराई पर रौशनी डाली गई, और
अब तेरी तमाम पड़ोसनें तेरा ही मज़ाक़ उड़ाती हैं,
ख़्वाह अदोमी हों, ख़्वाह फ़िलिस्ती। सब तुझे हक़ीर
जानती हैं। 58 चुनाँचे अब तुझे अपनी ज़िनाकारी और
मकरूह हरकतों का नतीजा भुगतना पड़ेगा। यह रब
का फ़रमान है।'

59 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'मैं तुझे
मुनासिब सज़ा दूँगा, क्यूँकि तू ने मेरा वह अह्द तोड़
कर उस क़सम को हक़ीर जाना है जो मैं ने तेरे साथ
अह्द बांधते वक़्त खाई थी। 60 तो भी मैं वह अह्द
याद करूँगा जो मैं ने तेरी जवानी में तेरे साथ बांधा
था। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं तेरे साथ अबदी अह्द
क़ाइम करूँगा। 61 तब तुझे वह ग़लत काम याद
आएगा जो पहले तुझ से सरज़द हुआ था, और तुझे
शर्म आएगी जब मैं तेरी बड़ी और छोटी बहनों को
ले कर तेरे हवाले करूँगा ताकि वह तेरी बेटियाँ बन
जाएँ। लेकिन यह सब कुछ इस वजह से नहीं होगा
कि तू अह्द के मुताबिक़ चलती रही है। 62 मैं ख़ुद तेरे
साथ अपना अह्द क़ाइम करूँगा, और तू जान लेगी

कि मैं ही रब हूँ।' 63 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता
है, 'जब मैं तेरे तमाम गुनाहों को मुआफ़ करूँगा तब
तुझे उन का ख़याल आ कर शर्मिन्दगी महसूस होगी,
और तू शर्म के मारे गुमसुम रहेगी'।"

अंगूर की बेल और उक़ाब की तम्सील

17 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, इस्राईली क़ौम को पहेली पेश
कर, तम्सील सुना दे। 3 उन्हें बता, 'रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है कि एक बड़ा उक़ाब उड़ कर
मुल्क-ए-लुबनान में आया। उस के बड़े बड़े पर और
लम्बे लम्बे पंख थे, उस के घने और रंगीन बाल-
ओ-पर चमक रहे थे। लुबनान में उस ने एक देवदार
के दरख़्त की चोटी पकड़ ली 4 और उस की सब से
ऊँची शाख़ को तोड़ कर ताजिरों के मुल्क में ले गया।
वहाँ उस ने उसे सौदागरों के शहर में लगा दिया।
5 फिर उक़ाब इस्राईल में आया और वहाँ से कुछ
बीज ले कर एक बड़े दरया के किनारे पर ज़रख़ेज़
ज़मीन में बो दिया। 6 तब अंगूर की बेल फूट निकली
जो ज़्यादा ऊँची न हुई बल्कि चारों तरफ़ फैलती गई।
शाख़ों का रुख़ उक़ाब की तरफ़ रहा जबकि उस की
जड़ें ज़मीन में धंसती गईं। चुनाँचे अच्छी बेल बन गई
जो फूटती फूटती नई शाख़ें निकालती गई।

7 लेकिन फिर एक और बड़ा उक़ाब आया। उस के
भी बड़े बड़े पर और घने घने बाल-ओ-पर थे। अब
मैं क्या देखता हूँ, बेल दूसरे उक़ाब की तरफ़ रुख़
करने लगती है। उस की जड़ें और शाख़ें उस खेत में
न रहीं जिस में उसे लगाया गया था बल्कि वह दूसरे
उक़ाब से पानी मिलने की उम्मीद रख कर उसी की
तरफ़ फैलने लगी। 8 ताज्जुब यह था कि उसे अच्छी
ज़मीन में लगाया गया था, जहाँ उसे कस्रत का पानी
हासिल था। वहाँ वह ख़ूब फैल कर फल ला सकती
थी, वहाँ वह ज़बरदस्त बेल बन सकती थी।'

9 अब रब क़ादिर-ए-मुतलक़ पूछता है, 'क्या बेल
की नश्व-ओ-नुमा जारी रहेगी? हरगिज़ नहीं! क्या उसे
जड़ से उखाड़ कर फैंका नहीं जाएगा? ज़रूर! क्या
उस का फल छीन नहीं लिया जाएगा? बेशक बल्कि
आख़िरकार उस की ताज़ा ताज़ा कोंपलें भी सब
की सब मुरझा कर ख़त्म हो जाएँगी। तब उसे जड़
से उखाड़ने के लिए न ज़्यादा लोगों, न ताक़त की
ज़रूरत होगी। 10 गो उसे लगाया गया है तो भी बेल
की नश्व-ओ-नुमा जारी नहीं रहेगी। जूँ ही मशरिक़ी लू
उस पर चलेगी वह मुकम्मल तौर पर मुरझा जाएगी।
जिस खेत में उसे लगाया गया वहीं वह ख़त्म हो
जाएगी'।"

11 रब मुझ से मज़ीद हमकलाम हुआ, 12 "इस
सरकश क़ौम से पूछ, 'क्या तुझे इस तम्सील की
समझ नहीं आई?' तब उन्हें इस का मतलब समझा
दे। 'बाबल के बादशाह ने यरूशलम पर हम्ला किया।
वह उस के बादशाह और अफ़सरों को गिरिफ़्तार
करके अपने मुल्क में ले गया। 13 उस ने यहूदाह के
शाही ख़ानदान में से एक को चुन लिया और उस के
साथ अह्द बांध कर उसे तख़्त पर बिठा दिया। नए
बादशाह ने बाबल से वफ़ादार रहने की क़सम खाई।
बाबल के बादशाह ने यहूदाह के राहनुमाओं को
भी जिलावतन कर दिया 14 ताकि मुल्क-ए-यहूदाह
और उस का नया बादशाह कमज़ोर रह कर सरकश
होने के क़ाबिल न बनें बल्कि उस के साथ अह्द
क़ाइम रख कर ख़ुद क़ाइम रहें। 15 तो भी यहूदाह का
बादशाह बाग़ी हो गया और अपने क़ासिद मिस्र भेजे
ताकि वहाँ से घोड़े और फ़ौजी मंगवाएँ। क्या उसे
कामयाबी हासिल होगी? क्या जिस ने ऐसी हरकतें
की हैं बच निकलेगा? हरगिज़ नहीं! क्या जिस ने
अह्द तोड़ लिया है वह बचेगा? हरगिज़ नहीं!

16 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात
की क़सम, उस शख़्स ने क़सम के तहत शाह-ए-
बाबल से अह्द बांधा है, लेकिन अब उस ने यह
क़सम हक़ीर जान कर अह्द को तोड़ डाला है। इस
लिए वह बाबल में वफ़ात पाएगा, उस बादशाह के
मुल्क में जिस ने उसे तख़्त पर बिठाया था। 17 जब
बाबल की फ़ौज यरूशलम के इर्दगिर्द पुश्ते और बुर्ज
बना कर उस का मुहासरा करेगी ताकि बहुतों को मार

डाले तो फ़िरऔन अपनी बड़ी फ़ौज और मुतअद्दिद
फ़ौजियों को ले कर उस की मदद करने नहीं आएगा।
18 क्यूँकि यहूदाह के बादशाह ने अह्द को तोड़ कर
वह क़सम हक़ीर जानी है जिस के तहत यह बांधा
गया। गो उस ने शाह-ए-बाबल से हाथ मिला कर
अह्द की तस्दीक़ की थी तो भी बेवफ़ा हो गया,
इस लिए वह नहीं बचेगा। 19 रब क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, उस ने मेरे ही
अह्द को तोड़ डाला, मेरी ही क़सम को हक़ीर जाना
है। इस लिए मैं अह्द तोड़ने के तमाम नताइज उस
के सर पर लाऊँगा। 20 मैं उस पर अपना जाल डाल
दूँगा, उसे अपने फंदे में पकड़ लूँगा। चूँकि वह मुझ
से बेवफ़ा हो गया है इस लिए मैं उसे बाबल ले जा
कर उस की अदालत करूँगा। 21 उस के बेहतरीन
फ़ौजी सब मर जाएंगे, और जितने बच जाएंगे वह
चारों तरफ़ मुन्तशिर हो जाएंगे। तब तुम जान लोगे
कि मैं, रब ने यह सब कुछ फ़रमाया है।

22 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि अब मैं
ख़ुद देवदार के दरख़्त की चोटी से नर्म-ओ-नाज़ुक
कोंपल तोड़ कर उसे एक बुलन्द-ओ-बाला पहाड़ पर
लगा दूँगा। 23 और जब मैं उसे इस्राईल की बुलन्दियों
पर लगा दूँगा तो उस की शाख़ें फूट निकलेंगी, और
वह फल ला कर शानदार दरख़्त बनेगा। हर क़िस्म
के परिन्दे उस में बसेरा करेंगे, सब उस की शाख़ों
के साय में पनाह लेंगे। 24 तब मुल्क के तमाम दरख़्त
जान लेंगे कि मैं रब हूँ। मैं ही ऊँचे दरख़्त को ख़ाक
में मिला देता, और मैं ही छोटे दरख़्त को बड़ा बना
देता हूँ। मैं ही सायादार दरख़्त को सूखने देता और
मैं ही सूखे दरख़्त को फलने फूलने देता हूँ। यह मेरा,
रब का फ़रमान है, और मैं यह करूँगा भी'।"

हर एक को सिर्फ़ अपने ही आमाल की सज़ा मिलेगी

18 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "तुम लोग
मुल्क-ए-इस्राईल के लिए यह कहावत क्यूँ
इस्तेमाल करते हो, 'वालिदैन ने खट्टे अंगूर खाए,
लेकिन उन के बच्चों ही के दाँत खट्टे हो गए हैं।'
3 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात
की क़सम, आइन्दा तुम यह कहावत इस्राईल में
इस्तेमाल नहीं करोगे! 4 हर इन्सान की जान मेरी ही
है, ख़्वाह बाप की हो या बेटे की। जिस ने गुनाह
किया है सिर्फ़ उसी को सज़ा-ए-मौत मिलेगी।

5 लेकिन उस रास्तबाज़ का मुआमला फ़र्क़ है जो
रास्ती और इन्साफ़ की राह पर चलते हुए 6 न ऊँची
जगहों की नाजाइज़ क़ुर्बानियाँ खाता, न इस्राईली
क़ौम के बुतों की पूजा करता है। न वह अपने पड़ोसी
की बीवी की बेहुरमती करता, न माहवारी के दौरान
किसी औरत से हमबिसतर होता है। 7 वह किसी पर
ज़ुल्म नहीं करता। अगर कोई ज़मानत दे कर उस से
क़र्ज़ा ले तो पैसे वापस मिलने पर वह ज़मानत वापस
कर देता है। वह चोरी नहीं करता बल्कि भूकों को
खाना खिलाता और नंगों को कपड़े पहनाता है। 8 वह
किसी से भी सूद नहीं लेता। वह ग़लत काम करने
से गुरेज़ करता और झगड़ने वालों का मुन्सिफ़ाना
फ़ैसला करता है। 9 वह मेरे क़वाइद के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारता और वफ़ादारी से मेरे अह्काम पर
अमल करता है। ऐसा शख़्स रास्तबाज़ है, और वह
यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का
फ़रमान है।

10 अब फ़र्ज़ करो कि उस का एक ज़ालिम बेटा है
जो क़ातिल है और वह कुछ करता है 11 जिस से
उस का बाप गुरेज़ करता था। वह ऊँची जगहों की
नाजाइज़ क़ुर्बानियाँ खाता, अपने पड़ोसी की बीवी
की बेहुरमती करता, 12 ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों
पर ज़ुल्म करता और चोरी करता है। जब क़र्ज़दार
क़र्ज़ा अदा करे तो वह उसे ज़मानत वापस नहीं
देता। वह बुतों की पूजा बल्कि कई क़िस्म की
मकरूह हरकतें करता है। 13 वह सूद भी लेता है।
क्या ऐसा आदमी ज़िन्दा रहेगा? हरगिज़ नहीं! इन
तमाम मकरूह हरकतों की बिना पर उसे सज़ा-ए-
मौत दी जाएगी। वह ख़ुद अपने गुनाहों का ज़िम्मादार
ठहरेगा।

14 लेकिन फ़र्ज़ करो कि इस बेटे के हाँ बेटा पैदा
हो जाए। गो बेटा सब कुछ देखता है जो उस के बाप
से सरज़द होता है तो भी वह बाप के ग़लत नमूने
पर नहीं चलता। 15 न वह ऊँची जगहों की नाजाइज़
क़ुर्बानियाँ खाता, न इस्राईली क़ौम के बुतों की पूजा
करता है। वह अपने पड़ोसी की बीवी की बेहुरमती
नहीं करता 16 और किसी पर भी ज़ुल्म नहीं करता।
अगर कोई ज़मानत दे कर उस से क़र्ज़ा ले तो पैसे
वापस मिलने पर वह ज़मानत लौटा देता है। वह
चोरी नहीं करता बल्कि भूकों को खाना खिलाता
और नंगों को कपड़े पहनाता है। 17 वह ग़लत काम
करने से गुरेज़ करके सूद नहीं लेता। वह मेरे क़वाइद
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता और मेरे अह्काम पर
अमल करता है। ऐसे शख़्स को अपने बाप की सज़ा
नहीं भुगतनी पड़ेगी। उसे सज़ा-ए-मौत नहीं मिलेगी,
हालाँकि उस के बाप ने मज़कूरा गुनाह किए हैं। नहीं,
वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा। 18 लेकिन उस के बाप को
ज़रूर उस के गुनाहों की सज़ा मिलेगी, वह यक़ीनन
मरेगा। क्यूँकि उस ने लोगों पर ज़ुल्म किया, अपने
भाई से चोरी की और अपनी ही क़ौम के दरमियान
बुरा काम किया।

19 लेकिन तुम लोग एतिराज़ करते हो, 'बेटा बाप
के क़ुसूर में क्यूँ न शरीक हो? उसे भी बाप की सज़ा
भुगतनी चाहिए।' जवाब यह है कि बेटा तो रास्तबाज़
और इन्साफ़ की राह पर चलता रहा है, वह एहतियात
से मेरे तमाम अह्काम पर अमल करता रहा है। इस
लिए लाज़िम है कि वह ज़िन्दा रहे। 20 जिस से गुनाह
सरज़द हुआ है सिर्फ़ उसे ही मरना है। लिहाज़ा न बेटे
को बाप की सज़ा भुगतनी पड़ेगी, न बाप को बेटे
की। रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी का अज्र पाएगा,
और बेदीन अपनी बेदीनी का।

21 तो भी अगर बेदीन आदमी अपने गुनाहों को तर्क
करे और मेरे तमाम क़वाइद के मुताबिक़ ज़िन्दगी
गुज़ार कर रास्तबाज़ी और इन्साफ़ की राह पर चल
पड़े तो वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा, वह मरेगा नहीं।
22 जितने भी ग़लत काम उस से सरज़द हुए हैं उन का
हिसाब मैं नहीं लूँगा बल्कि उस के रास्तबाज़ चाल-
चलन का लिहाज़ करके उसे ज़िन्दा रहने दूँगा। 23 रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि क्या मैं बेदीन की
हलाकत देख कर ख़ुश होता हूँ? हरगिज़ नहीं, बल्कि
मैं चाहता हूँ कि वह अपनी बुरी राहों को छोड़ कर
ज़िन्दा रहे।

24 इस के बरअक्स क्या रास्तबाज़ ज़िन्दा रहेगा
अगर वह अपनी रास्तबाज़ ज़िन्दगी तर्क करे और
गुनाह करके वही क़ाबिल-ए-घिन हरकतें करने लगे
जो बेदीन करते हैं? हरगिज़ नहीं! जितना भी अच्छा
काम उस ने किया उस का मैं ख़याल नहीं करूँगा
बल्कि उस की बेवफ़ाई और गुनाहों का। उन ही की
वजह से उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी।

25 लेकिन तुम लोग दावा करते हो कि जो कुछ रब
करता है वह ठीक नहीं। ऐ इस्राईली क़ौम, सुनो!
यह कैसी बात है कि मेरा अमल ठीक नहीं? अपने
ही आमाल पर ग़ौर करो! वही दुरुस्त नहीं। 26 अगर
रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ ज़िन्दगी तर्क करके
गुनाह करे तो वह इस बिना पर मर जाएगा। अपनी
नारास्ती की वजह से ही वह मर जाएगा। 27 इस
के बरअक्स अगर बेदीन अपनी बेदीन ज़िन्दगी तर्क
करके रास्ती और इन्साफ़ की राह पर चलने लगे तो
वह अपनी जान को छुड़ाएगा। 28 क्यूँकि अगर वह
अपना क़ुसूर तस्लीम करके अपने गुनाहों से मुँह मोड़
ले तो वह मरेगा नहीं बल्कि ज़िन्दा रहेगा। 29 लेकिन
इस्राईली क़ौम दावा करती है कि जो कुछ रब करता
है वह ठीक नहीं। ऐ इस्राईली क़ौम, यह कैसी बात
है कि मेरा अमल ठीक नहीं? अपने ही आमाल पर
ग़ौर करो! वही दुरुस्त नहीं।

30 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
ऐ इस्राईल की क़ौम, मैं तेरी अदालत करूँगा, हर
एक का उस के कामों के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करूँगा।
चुनाँचे ख़बरदार! तौबा करके अपनी बेवफ़ा हरकतों
से मुँह फेरो, वर्ना तुम गुनाह में फंस कर गिर जाओगे।
31 अपने तमाम ग़लत काम तर्क करके नया दिल
और नई रूह अपना लो। ऐ इस्राईलियो, तुम क्यूँ

मर जाओ? 32 क्यूँकि मैं किसी की मौत से ख़ुश नहीं
होता। चुनाँचे तौबा करो, तब ही तुम ज़िन्दा रहोगे।
यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।

इस्राईली बुज़ुर्गों पर मातमी गीत

19 1 ऐ नबी, इस्राईल के रईसों पर मातमी गीत
गा,
2 'तेरी माँ कितनी ज़बरदस्त शेरनी थी। जवान
शेरबबरों के दरमियान ही अपना घर बना कर उस
ने अपने बच्चों को पाल लिया।
3 एक बच्चे को उस ने ख़ास तर्बियत दी। जब बड़ा
हुआ तो जानवरों को फाड़ना सीख लिया, बल्कि
इन्सान भी उस की ख़ुराक बन गए।
4 इस की ख़बर दीगर अक़्वाम तक पहुँची तो उन्हों
ने उसे अपने गढ़े में पकड़ लिया। वह उस की नाक
में काँटे डाल कर उसे मिस्र में घसीट ले गए।

5 जब शेरनी के इस बच्चे पर से उम्मीद जाती रही तो
उस ने दीगर बच्चों में से एक को चुन कर उसे ख़ास
तर्बियत दी।
6 यह भी ताक़तवर हो कर दीगर शेरों में घूमने फिरने
लगा। उस ने जानवरों को फाड़ना सीख लिया, बल्कि
इन्सान भी उस की ख़ुराक बन गए।
7 उन के क़िलों को गिरा कर उस ने उन के शहरों
को ख़ाक में मिला दिया। उस की दहाड़ती आवाज़
से मुल्क बाशिन्दों समेत ख़ौफ़ज़दा हो गया।
8 तब इर्दगिर्द के सूबों में बसने वाली अक़्वाम उस
से लड़ने आईं। उन्हों ने अपना जाल उस पर डाल
दिया, उसे अपने गढ़े में पकड़ लिया।
9 वह उस की गर्दन में पट्टा और नाक में काँटे डाल
कर उसे शाह-ए-बाबल के पास घसीट ले गए। वहाँ
उसे क़ैद में डाला गया ताकि आइन्दा इस्राईल के
पहाड़ों पर उस की गरजती आवाज़ सुनाई न दे।

10 तेरी माँ पानी के किनारे लगाई गई अंगूर की सी
बेल थी। बेल कस्रत के पानी के बाइस फलदार और
शाख़दार थी।
11 उस की शाख़ें इतनी मज़बूत थीं कि उन से शाही
असा बन सकते थे। वह बाक़ी पौदों से कहीं ज़्यादा
ऊँची थी बल्कि उस की शाख़ें दूर दूर तक नज़र आती
थीं।
12 लेकिन आख़िरकार लोगों ने तैश में आ कर उसे
उखाड़ कर फैंक दिया। मशरिक़ी लू ने उस का फल
मुरझाने दिया। सब कुछ उतारा गया, लिहाज़ा वह
सूख गया और उस का मज़बूत तना नज़र-ए-आतिश
हुआ।
13 अब बेल को रेगिस्तान में लगाया गया है, वहाँ
जहाँ ख़ुश्क और प्यासी ज़मीन होती है।
14 उस के तने की एक टहनी से आग ने निकल कर
उस का फल भस्म कर दिया। अब कोई मज़बूत शाख़
नहीं रही जिस से शाही असा बन सके'।"

दर्ज-ए-बाला गीत मातमी है और आह-ओ-ज़ारी
करने के लिए इस्तेमाल हुआ है।

इस्राईल की मुसलसल बेवफ़ाई

20 1 यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन की
जिलावतनी के सातवें साल में इस्राईली
क़ौम के कुछ बुज़ुर्ग मेरे पास आए ताकि रब से कुछ
दरयाफ़्त करें। पाँचवें महीने का दसवाँ दिन [k]था। वह
मेरे सामने बैठ गए। 2 तब रब मुझ से हमकलाम हुआ,
3 "ऐ आदमज़ाद, इस्राईल के बुज़ुर्गों को बता,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि क्या तुम मुझ
से दरयाफ़्त करने आए हो? मेरी हयात की क़सम,
मैं तुम्हें कोई जवाब नहीं दूँगा! यह रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ का फ़रमान है।'
4 ऐ आदमज़ाद, क्या तू उन की अदालत करने के
लिए तय्यार है? फिर उन की अदालत कर! उन्हें उन

[k] 14 अगस्त।

के बापदादा की क़ाबिल-ए-घिन हरकतों का एहसास
दिला। 5 उन्हें बता, ‘रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता
है कि इस्राईली क़ौम को चुनते वक़्त मैं ने अपना हाथ
उठा कर उस से क़सम खाई। मुल्क-ए-मिस्र में ही मैं ने
अपने आप को उन पर ज़ाहिर किया और क़सम खा
कर कहा कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 6 यह मेरा अटल
वादा है कि मैं तुम्हें मिस्र से निकाल कर एक मुल्क
में पहुँचा दूँगा जिस का जाइज़ा मैं तुम्हारी ख़ातिर ले
चुका हूँ। यह मुल्क दीगर तमाम ममालिक से कहीं
ज़्यादा ख़ूबसूरत है, और इस में दूध और शहद की
कस्रत है। 7 उस वक़्त मैं ने इस्राईलियों से कहा, “हर
एक अपने घिनौने बुतों को फैंक दे! मिस्र के देवताओं
से लिपटे न रहो, क्यूँकि उन से तुम अपने आप को
नापाक कर रहे हो। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

8 लेकिन वह मुझ से बाग़ी हुए और मेरी सुनने के
लिए तय्यार न थे। किसी ने भी अपने बुतों को न फैंका
बल्कि वह इन घिनौनी चीज़ों से लिपटे रहे और मिस्री
देवताओं को तर्क न किया। यह देख कर मैं वहीं मिस्र
में अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करना चाहता था।
उसी वक़्त मैं अपना ग़ुस्सा उन पर उतारना चाहता
था। 9 लेकिन मैं बाज़ रहा, क्यूँकि मैं नहीं चाहता
था कि जिन अक़्वाम के दरमियान इस्राईली रहते थे
उन के सामने मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए। क्यूँकि
उन क़ौमों की मौजूदगी में ही मैं ने अपने आप को
इस्राईलियों पर ज़ाहिर करके वादा किया था कि मैं
तुम्हें मिस्र से निकाल लाऊँगा।

10 चुनाँचे मैं उन्हें मिस्र से निकाल कर रेगिस्तान में
लाया। 11 वहाँ मैं ने उन्हें अपनी हिदायात दीं, वह
अह्काम जिन की पैरवी करने से इन्सान जीता रहता
है। 12 मैं ने उन्हें सबत का दिन भी अता किया। मैं
चाहता था कि आराम का यह दिन मेरे उन के साथ
अह्द का निशान हो, कि इस से लोग जान लें कि मैं
रब ही उन्हें मुक़द्दस बनाता हूँ।

13 लेकिन रेगिस्तान में भी इस्राईली मुझ से बाग़ी
हुए। उन्हों ने मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी न
गुज़ारी बल्कि मेरे अह्काम को मुस्तरद कर दिया,
हालाँकि इन्सान उन की पैरवी करने से ही जीता रहता
है। उन्हों ने सबत की भी बड़ी बेहुरमती की। यह देख
कर मैं अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करके उन्हें वहीं
रेगिस्तान में हलाक करना चाहता था। 14 ताहम मैं
बाज़ रहा, क्यूँकि मैं नहीं चाहता था कि उन अक़्वाम
के सामने मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए जिन के
देखते देखते मैं इस्राईलियों को मिस्र से निकाल लाया
था। 15 चुनाँचे मैं ने यह करने के बजाय अपना हाथ
उठा कर क़सम खाई, “मैं तुम्हें उस मुल्क में नहीं
ले जाऊँगा जो मैं ने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किया था,
हालाँकि उस में दूध और शहद की कस्रत है और
वह दीगर तमाम ममालिक की निस्बत कहीं ज़्यादा
ख़ूबसूरत है। 16 क्यूँकि तुम ने मेरी हिदायात को रद्द
करके मेरे अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी न गुज़ारी
बल्कि सबत के दिन की भी बेहुरमती की। अभी तक
तुम्हारे दिल बुतों से लिपटे रहते हैं।”

17 लेकिन एक बार फिर मैं ने उन पर तरस खाया।
न मैं ने उन्हें तबाह किया, न पूरी क़ौम को रेगिस्तान
में मिटा दिया। 18 रेगिस्तान में ही मैं ने उन के बेटों
को आगाह किया, “अपने बापदादा के क़वाइद के
मुताबिक़ ज़िन्दगी मत गुज़ारना। न उन के अह्काम
पर अमल करो, न उन के बुतों की पूजा से अपने
आप को नापाक करो। 19 मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मेरी
हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारो और एहतियात
से मेरे अह्काम पर अमल करो। 20 मेरे सबत के दिन
आराम करके उन्हें मुक़द्दस मानो ताकि वह मेरे साथ
बंधे हुए अह्द का निशान रहें। तब तुम जान लोगे कि
मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

21 लेकिन यह बच्चे भी मुझ से बाग़ी हुए। न उन्हों
ने मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी, न
एहतियात से मेरे अह्काम पर अमल किया, हालाँकि
इन्सान उन की पैरवी करने से ही जीता रहता है।
उन्हों ने मेरे सबत के दिनों की भी बेहुरमती की। यह
देख कर मैं अपना ग़ुस्सा उन पर नाज़िल करके उन्हें
वहीं रेगिस्तान में तबाह करना चाहता था। 22 लेकिन
एक बार फिर मैं अपने हाथ को रोक कर बाज़ रहा,

क्यूँकि मैं नहीं चाहता था कि उन अक़्वाम के सामने
मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए जिन के देखते देखते मैं
इस्राईलियों को मिस्र से निकाल लाया था। 23 चुनाँचे
मैं ने यह करने के बजाय अपना हाथ उठा कर
क़सम खाई, "मैं तुम्हें दीगर अक़्वाम-ओ-ममालिक
में मुन्तशिर करूँगा, 24 क्यूँकि तुम ने मेरे अह्काम
की पैरवी नहीं की बल्कि मेरी हिदायात को रद्द कर
दिया। गो मैं ने सबत का दिन मानने का हुक्म दिया
था तो भी तुम ने आराम के इस दिन की बेहुरमती
की। और यह भी काफ़ी नहीं था बल्कि तुम अपने
बापदादा के बुतों के भी पीछे लगे रहे।"

25 तब मैं ने उन्हें ऐसे अह्काम दिए जो अच्छे नहीं
थे, ऐसी हिदायात जो इन्सान को जीने नहीं देतीं।
26 नीज़, मैं ने होने दिया कि वह अपने पहलौठों को
क़ुर्बान करके अपने आप को नापाक करें। मक़्सद
यह था कि उन के रोंगटे खड़े हो जाएँ और वह जान
लें कि मैं ही रब हूँ।'

27 चुनाँचे ऐ आदमज़ाद, इस्राईली क़ौम को बता,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुम्हारे
बापदादा ने इस में भी मेरी तक्फ़ीर की कि वह मुझ
से बेवफ़ा हुए। 28 मैं ने तो उन से मुल्क-ए-इस्राईल
देने की क़सम खा कर वादा किया था। लेकिन जूँ ही
मैं उन्हें उस में लाया तो जहाँ भी कोई ऊँची जगह या
सायादार दरख़्त नज़र आया वहाँ वह अपने जानवरों
को ज़बह करने, तैश दिलाने वाली क़ुर्बानियाँ चढ़ाने,
ख़ुश्बूदार बख़ूर जलाने और मै की नज़रें पेश करने
लगे। 29 मैं ने उन का सामना करके कहा, "यह किस
तरह की ऊँची जगहें हैं जहाँ तुम जाते हो?" आज
तक यह क़ुर्बानगाहें ऊँची जगहें कहलाती हैं।'

30 ऐ आदमज़ाद, इस्राईली क़ौम को बता, 'रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि क्या तुम अपने
बापदादा की हरकतें अपना कर अपने आप को
नापाक करना चाहते हो? क्या तुम भी उन के घिनौने
बुतों के पीछे लग कर ज़िना करना चाहते हो?
31 क्यूँकि अपने नज़राने पेश करने और अपने बच्चों
को क़ुर्बान करने से तुम अपने आप को अपने बुतों
से आलूदा करते हो। ऐ इस्राईली क़ौम, आज तक
यही तुम्हारा रवय्या है! तो फिर मैं क्या करूँ? क्या
मुझे तुम्हें जवाब देना चाहिए जब तुम मुझ से कुछ
दरयाफ़्त करने के लिए आते हो? हरगिज़ नहीं!
मेरी हयात की क़सम, मैं तुम्हें जवाब में कुछ नहीं
बताऊँगा। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।

अल्लाह अपनी क़ौम को वापस लाएगा

32 तुम कहते हो, "हम दीगर क़ौमों की मानिन्द
होना चाहते, दुनिया के दूसरे ममालिक की तरह
लकड़ी और पत्थर की चीज़ों की इबादत करना
चाहते हैं।" गो यह ख़याल तुम्हारे ज़हनों में उभर
आया है, लेकिन ऐसा कभी नहीं होगा। 33 रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम,
मैं बड़े ग़ुस्से और ज़ोरदार तरीक़े से अपनी क़ुदरत
का इज़हार करके तुम पर हुकूमत करूँगा। 34 मैं
बड़े ग़ुस्से और ज़ोरदार तरीक़े से अपनी क़ुदरत
का इज़हार करके तुम्हें उन क़ौमों और ममालिक
से निकाल कर जमा करूँगा जहाँ तुम मुन्तशिर हो
गए हो। 35 तब मैं तुम्हें अक़्वाम के रेगिस्तान में
ला कर तुम्हारे रू-ब-रू तुम्हारी अदालत करूँगा।
36 जिस तरह मैं ने तुम्हारे बापदादा की अदालत मिस्र
के रेगिस्तान में की उसी तरह तुम्हारी भी अदालत
करूँगा। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।
37 जिस तरह गल्लाबान भेड़-बकरियों को अपनी लाठी
के नीचे से गुज़रने देता है ताकि उन्हें गिन ले उसी तरह
मैं तुम्हें अपनी लाठी के नीचे से गुज़रने दूँगा और तुम्हें
अह्द के बंधन में शरीक करूँगा। 38 जो बेवफ़ा हो
कर मुझ से बाग़ी हो गए हैं उन्हें मैं तुम से दूर कर
दूँगा ताकि तुम पाक हो जाओ। अगरचे मैं उन्हें भी
उन दीगर ममालिक से निकाल लाऊँगा जिन में वह
रह रहे हैं तो भी वह मुल्क-ए-इस्राईल में दाख़िल नहीं
होंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

39 ऐ इस्राईली क़ौम, तुम्हारे बारे में रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है कि जाओ, हर एक अपने बुतों
की इबादत करता जाए! लेकिन एक वक़्त आएगा

जब तुम ज़रूर मेरी सुनोगे, जब तुम अपनी क़ुर्बानियों
और बुतों की पूजा से मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती
नहीं करोगे।
40 क्यूँकि रब फ़रमाता है कि आइन्दा पूरी इस्राईली
क़ौम मेरे मुक़द्दस पहाड़ यानी इस्राईल के बुलन्द
पहाड़ सिय्यून पर मेरी ख़िदमत करेगी। वहाँ मैं
ख़ुशी से उन्हें क़बूल करूँगा, और वहाँ मैं तुम्हारी
क़ुर्बानियाँ, तुम्हारे पहले फल और तुम्हारे तमाम
मुक़द्दस हदिए तलब करूँगा। 41 मेरे तुम्हें उन
अक़्वाम और ममालिक से निकाल कर जमा करने
के बाद जिन में तुम मुन्तशिर हो गए हो तुम इस्राईल
में मुझे क़ुर्बानियाँ पेश करोगे, और मैं उन की ख़ुश्बू
सूँघ कर ख़ुशी से तुम्हें क़बूल करूँगा। यूँ मैं तुम्हारे
ज़रीए दीगर अक़्वाम पर ज़ाहिर करूँगा कि मैं क़ुद्दूस
ख़ुदा हूँ। 42 तब जब मैं तुम्हें मुल्क-ए-इस्राईल यानी
उस मुल्क में लाऊँगा जिस का वादा मैं ने क़सम
खा कर तुम्हारे बापदादा से किया था तो तुम जान
लोगे कि मैं ही रब हूँ। 43 वहाँ तुम्हें अपना वह चाल-
चलन और अपनी वह हरकतें याद आएँगी जिन से
तुम ने अपने आप को नापाक कर दिया था, और
तुम अपने तमाम बुरे आमाल के बाइस अपने आप
से घिन खाओगे। 44 ऐ इस्राईली क़ौम, तुम जान लोगे
कि मैं रब हूँ जब मैं अपने नाम की ख़ातिर नर्मी से तुम
से पेश आऊँगा, हालाँकि तुम अपने बुरे सुलूक और
तबाहकुन हरकतों की वजह से सख़्त सज़ा के लाइक़
थे। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है'।"

जंगल में आग लगने की तम्सील

45 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 46 "ऐ आदमज़ाद,
जुनूब की तरफ़ रुख़ करके उस के ख़िलाफ़ नबुव्वत
कर! दश्त-ए-नजब के जंगल के ख़िलाफ़ नबुव्वत
करके 47 उसे बता, 'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता
है कि मैं तुझ में ऐसी आग लगाने वाला हूँ जो तेरे
तमाम दरख़्तों को भस्म करेगी, ख़्वाह वह हरे-भरे या
सूखे हुए हों। इस आग के भड़कते शोले नहीं बुझेंगे
बल्कि जुनूब से ले कर शिमाल तक हर चिहरे को
झुलसा देंगे। 48 हर एक को नज़र आएगा कि यह आग
मेरे, रब के हाथ ने लगाई है। यह बुझेगी नहीं'।"
49 यह सुन कर मैं बोला, "ऐ क़ादिर-ए-मुतलक़, यह
बताने का क्या फ़ाइदा है? लोग पहले से मेरे बारे में
कहते हैं कि यह हमेशा नाक़ाबिल-ए-समझ तम्सीलें
पेश करता है।"

रब इस्राईल के ख़िलाफ़ तलवार चलाने को है

21 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, यरूशलम की तरफ़ रुख़
करके मुक़द्दस जगहों और मुल्क-ए-इस्राईल के
ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! 3 मुल्क को बता, 'रब
फ़रमाता है कि अब मैं तुझ से निपट लूँगा! अपनी
तलवार मियान से खैंच कर मैं तेरे तमाम बाशिन्दों को
मिटा दूँगा, ख़्वाह रास्तबाज़ हों या बेदीन। 4 क्यूँकि
मैं रास्तबाज़ों को बेदीनों समेत मार डालूँगा, इस लिए
मेरी तलवार मियान से निकल कर जुनूब से ले कर
शिमाल तक हर शख़्स पर टूट पड़ेगी। 5 तब तमाम
लोगों को पता चलेगा कि मैं, रब ने अपनी तलवार
को मियान से खैंच लिया है। तलवार मारती रहेगी
और मियान में वापस नहीं आएगी।'
6 ऐ आदमज़ाद, आहें भर भर कर यह पैग़ाम सुना!
लोगों के सामने इतनी तल्ख़ी से आह-ओ-ज़ारी कर
कि कमर में दर्द होने लगे। 7 जब वह तुझ से पूछें,
'आप क्यूँ कराह रहे हैं?' तो उन्हें जवाब दे, 'मुझे एक
हौलनाक ख़बर का इल्म है जो अभी आने वाली है।
जब यहाँ पहुँचेगी तो हर एक की हिम्मत टूट जाएगी
और हर हाथ बेहिस्स-ओ-हरकत हो जाएगा। हर जान
हौसला हारेगी और हर घुटना डाँवाँडोल हो जाएगा।
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि इस ख़बर का
वक़्त क़रीब आ गया है, जो कुछ पेश आना है वह
जल्द ही पेश आएगा'।"
8 रब एक बार फिर मुझ से हमकलाम हुआ, 9 "ऐ
आदमज़ाद, नबुव्वत करके लोगों को बता,
'तलवार को रगड़ रगड़ कर तेज़ कर दिया गया
है। 10 अब वह क़त्ल-ओ-ग़ारत के लिए तय्यार है,

बिजली की तरह चमकने लगी है। हम यह देख
कर किस तरह ख़ुश हो सकते हैं? ऐ मेरे बेटे, तू ने
लाठी और हर तर्बियत को हक़ीर जाना है। 11 चुनाँचे
तलवार को तेज़ करवाने के लिए भेजा गया ताकि
उसे ख़ूब इस्तेमाल किया जा सके। अब वह रगड़
रगड़ कर तेज़ की गई है, अब वह क़ातिल के हाथ
के लिए तय्यार है।'

12 ऐ आदमज़ाद, चीख़ उठ! वावैला कर! अफ़सोस
से अपना सीना पीट! तलवार मेरी क़ौम और इस्राईल
के बुज़ुर्गों के ख़िलाफ़ चलने लगी है, और सब उस
की ज़द में आ जाएंगे। 13 क्यूँकि क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि जाँच-पड़ताल का वक़्त आ गया है,
और लाज़िम है कि वह आए, क्यूँकि तू ने लाठी की
तर्बियत को हक़ीर जाना है।

14 चुनाँचे ऐ आदमज़ाद, अब ताली बजा कर
नबुव्वत कर! तलवार को दो बल्कि तीन बार उन
पर टूटने दे! क्यूँकि क़त्ल-ओ-ग़ारत की यह मोहलिक
तलवार क़ब्ज़े तक मक़्तूलों में घोंपी जाएगी। 15 मैं ने
तलवार को उन के शहरों के हर दरवाज़े पर खड़ा
कर दिया है ताकि आने जाने वालों को मार डाले,
हर दिल हिम्मत हारे और मुतअद्दिद अफ़राद हलाक
हो जाएँ। अफ़सोस! उसे बिजली की तरह चमकाया
गया है, वह क़त्ल-ओ-ग़ारत के लिए तय्यार है।

16 ऐ तलवार, दाईं और बाईं तरफ़ घूमती फिर,
जिस तरफ़ भी तू मुड़े उस तरफ़ मारती जा! 17 मैं
भी तालियाँ बजा कर अपना ग़ुस्सा इस्राईल पर
उतारूँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।"

दो रास्तों का नक़्शा, बाबल के ज़रीए यरूशलम की तबाही

18 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 19 "ऐ
आदमज़ाद, नक़्शा बना कर उस पर वह दो रास्ते
दिखा जो शाह-ए-बाबल की तलवार इख़तियार कर
सकती है। दोनों रास्ते एक ही मुल्क से शुरू हो जाएँ।
जहाँ यह एक दूसरे से अलग हो जाते हैं वहाँ दो
साइन-बोर्ड खड़े कर जो दो मुख़्तलिफ़ शहरों के रास्ते
दिखाएँ, 20 एक अम्मोनियों के शहर रब्बा का और
दूसरा यहूदाह के क़िलाबन्द शहर यरूशलम का।

यह वह दो रास्ते हैं जो शाह-ए-बाबल की तलवार
इख़तियार कर सकती है। 21 क्यूँकि जहाँ यह दो
रास्ते एक दूसरे से अलग हो जाते हैं वहाँ शाह-ए-
बाबल रुक कर मालूम करेगा कि कौन सा रास्ता
इख़तियार करना है। वह तीरों के ज़रीए क़ुरआ
डालेगा, अपने बुतों से इशारा मिलने की कोशिश
करेगा और किसी जानवर की कलेजी का मुआइना
करेगा। 22 तब उसे यरूशलम का रास्ता इख़तियार
करने की हिदायत मिलेगी, चुनाँचे वह अपने फ़ौजियों
के साथ यरूशलम के पास पहुँच कर क़त्ल-ओ-
ग़ारत का हुक्म देगा। तब वह ज़ोर से जंग के नारे
लगा लगा कर शहर को पुश्ते से घेर लेंगे, मुहासरे
के बुर्ज तामीर करेंगे और दरवाज़ों को तोड़ने की
क़िलाशिकन मशीनें खड़ी करेंगे। 23 जिन्हों ने शाह-
ए-बाबल से वफ़ादारी की क़सम खाई है उन्हें यह
पेशगोई ग़लत लगेगी, लेकिन वह उन्हें उन के क़ुसूर
की याद दिला कर उन्हें गिरिफ़्तार करेगा।

24 चुनाँचे रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'तुम
लोगों ने ख़ुद अलानिया तौर पर बेवफ़ा होने से अपने
क़ुसूर की याद दिलाई है। तुम्हारे तमाम आमाल में
तुम्हारे गुनाह नज़र आते हैं। इस लिए तुम से सख़्ती
से निपटा जाएगा।

25 ऐ इस्राईल के बिगड़े हुए और बेदीन रईस, अब
वह वक़्त आ गया है जब तुझे हत्मी सज़ा दी जाएगी।
26 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि पगड़ी को
उतार, ताज को दूर कर! अब सब कुछ उलट जाएगा।
ज़लील को सरफ़राज़ और सरफ़राज़ को ज़लील
किया जाएगा।

27 मैं यरूशलम को मल्बे का ढेर, मल्बे का ढेर,
मल्बे का ढेर बना दूँगा। और शहर उस वक़्त तक
नए सिरे से तामीर नहीं किया जाएगा जब तक वह
न आए जो हक़दार है। उसी के हवाले मैं यरूशलम
करूँगा।'

अम्मोनी भी तलवार की ज़द में आएँगे

28 ऐ आदमज़ाद, अम्मोनियों और उन की लान-तान
के जवाब में नबुव्वत कर! उन्हें बता,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तलवार
क़त्ल-ओ-ग़ारत के लिए मियान से खैंच ली गई है,
उसे रगड़ रगड़ कर तेज़ किया गया है ताकि बिजली
की तरह चमकते हुए मारती जाए।
29 तेरे नबियों ने तुझे फ़रेबदिह रोयाएँ और झूटे
पैग़ामात सुनाए हैं। लेकिन तलवार बेदीनों की गर्दन
पर नाज़िल होने वाली है, क्यूँकि वह वक़्त आ गया
है जब उन्हें हत्मी सज़ा दी जाए।
30 लेकिन इस के बाद अपनी तलवार को मियान
में वापस डाल, क्यूँकि मैं तुझे भी सज़ा दूँगा। जहाँ तू
पैदा हुआ, तेरे अपने वतन में मैं तेरी अदालत करूँगा।
31 मैं अपना ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल करूँगा, अपने
क़हर की आग तेरे ख़िलाफ़ भड़काऊँगा। मैं तुझे ऐसे
वहशी आदमियों के हवाले करूँगा जो तबाह करने
का फ़न ख़ूब जानते हैं। 32 तू आग का ईंधन बन
जाएगा, तेरा ख़ून तेरे अपने मुल्क में बह जाएगा।
आइन्दा तुझे कोई याद नहीं करेगा। क्यूँकि यह मेरा,
रब का फ़रमान है'।"

यरूशलम ख़ूँरेज़ी का शहर है

22 1 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, क्या तू यरूशलम की अदालत
करने के लिए तय्यार है? क्या तू इस क़ातिल शहर
पर फ़ैसला करने के लिए मुस्तइद है? फिर उस पर
उस की मकरूह हरकतें ज़ाहिर कर। 3 उसे बता,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ यरूशलम
बेटी, तेरा अन्जाम क़रीब ही है, और यह तेरा अपना
क़ुसूर है। क्यूँकि तू ने अपने दरमियान मासूमों का ख़ून
बहाया और अपने लिए बुत बना कर अपने आप को
नापाक कर दिया है। 4 अपनी ख़ूँरेज़ी से तू मुजरिम बन
गई है, अपनी बुतपरस्ती से नापाक हो गई है। तू ख़ुद
अपनी अदालत का दिन क़रीब लाई है। इसी वजह
से तेरा अन्जाम क़रीब आ गया है, इसी लिए मैं तुझे
दीगर अक़्वाम की लान-तान और तमाम ममालिक
के मज़ाक़ का निशाना बना दूँगा। 5 सब तुझ पर ठट्ठा
मारेंगे, ख़्वाह वह क़रीब हों या दूर। तेरे नाम पर दाग़
लग गया है, तुझ में फ़साद हद से ज़्यादा बढ़ गया है।
6 इस्राईल का जो भी बुज़ुर्ग तुझ में रहता है वह
अपनी पूरी ताक़त से ख़ून बहाने की कोशिश करता
है। 7 तेरे बाशिन्दे अपने माँ-बाप को हक़ीर जानते हैं।
वह परदेसी पर सख़्ती करके यतीमों और बेवाओं पर
ज़ुल्म करते हैं। 8 जो मुझे मुक़द्दस है उसे तू पाँओ तले
कुचल देती है। तू मेरे सबत के दिनों की बेहुरमती भी
करती है।
9 तुझ में ऐसे तुहमत लगाने वाले हैं जो ख़ूँरेज़ी
पर तुले हुए हैं। तेरे बाशिन्दे पहाड़ों की नाजाइज़
क़ुर्बानगाहों के पास क़ुर्बानियाँ खाते और तेरे
दरमियान शर्मनाक हरकतें करते हैं। 10 बेटा माँ से
हमबिसतर हो कर बाप की बेहुरमती करता है, शौहर
माहवारी के दौरान बीवी से सोहबत करके उस से
ज़ियादती करता है। 11 एक अपने पड़ोसी की बीवी से
ज़िना करता है जबकि दूसरा अपनी बहू की बेहुरमती
और तीसरा अपनी सगी बहन की इस्मतदरी करता
है। 12 तुझ में ऐसे लोग हैं जो रिश्वत के इवज़ क़त्ल
करते हैं। सूद क़ाबिल-ए-क़बूल है, और लोग एक
दूसरे पर ज़ुल्म करके नाजाइज़ नफ़ा कमाते हैं। रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ यरूशलम, तू
मुझे सरासर भूल गई है!
13 तेरा नाजाइज़ नफ़ा और तेरे बीच में ख़ूँरेज़ी देख
कर मैं ग़ुस्से में ताली बजाता हूँ। 14 सोच ले! जिस
दिन मैं तुझ से निपटूँगा तो क्या तेरा हौसला क़ाइम
और तेरे हाथ मज़बूत रहेंगे? यह मेरा, रब का फ़रमान
है, और मैं यह करूँगा भी। 15 मैं तुझे दीगर अक़्वाम-
ओ-ममालिक में मुन्तशिर करके तेरी नापाकी दूर
करूँगा। 16 फिर जब दीगर क़ौमों के देखते देखते
तेरी बेहुरमती हो जाएगी तब तू जान लेगी कि मैं ही
रब हूँ'।"

इस्राईली क़ौम भट्टी में धात का मैल है

17 रब मज़ीद मुझ से हमकलाम हुआ, 18 "ऐ
आदमज़ाद, इस्राईली क़ौम मेरे नज़्दीक उस मैल की
मानिन्द बन गई है जो चाँदी को ख़ालिस करने के
बाद भट्टी में बाक़ी रह जाता है। सब के सब उस
ताँबे, टीन, लोहे और सीसे की मानिन्द हैं जो भट्टी में
रह जाता है। वह कचरा ही हैं। 19 चुनाँचे रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि चूँकि तुम भट्टी में बचा हुआ
मैल हो इस लिए मैं तुम्हें यरूशलम में इकट्ठा करके
20 भट्टी में फैंक दूँगा। जिस तरह चाँदी, ताँबे, लोहे,
सीसे और टीन की आमेज़िश को तपती भट्टी में फैंका
जाता है ताकि पिघल जाए उसी तरह मैं तुम्हें ग़ुस्से
में इकट्ठा करूँगा और भट्टी में फैंक कर पिघला दूँगा।
21 मैं तुम्हें जमा करके आग में फैंक दूँगा और बड़े
ग़ुस्से से हवा दे कर तुम्हें पिघला दूँगा। 22 जिस तरह
चाँदी भट्टी में पिघल जाती है उसी तरह तुम यरूशलम
में पिघल जाओगे। तब तुम जान लोगे कि मैं रब ने
अपना ग़ज़ब तुम पर नाज़िल किया है।"

पूरी क़ौम क़ुसूरवार है

23 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 24 "ऐ आदमज़ाद,
मुल्क-ए-इस्राईल को बता, 'ग़ज़ब के दिन तुझ पर
मेंह नहीं बरसेगा बल्कि तू बारिश से महरूम रहेगा।'
25 मुल्क के बीच में साज़िश करने वाले राहनुमा
शेरबबर की मानिन्द हैं जो दहाड़ते दहाड़ते अपना
शिकार फाड़ लेते हैं। वह लोगों को हड़प करके उन
के ख़ज़ाने और क़ीमती चीज़ें छीन लेते और मुल्क के
दरमियान ही मुतअद्दिद औरतों को बेवाएँ बना देते
हैं।
26 मुल्क के इमाम मेरी शरीअत से ज़ियादती करके
उन चीज़ों की बेहुरमती करते हैं जो मुझे मुक़द्दस हैं।
न वह मुक़द्दस और आम चीज़ों में इम्तियाज़ करते, न
पाक और नापाक अश्या का फ़र्क़ सिखाते हैं। नीज़,
वह मेरे सबत के दिन अपनी आँखों को बन्द रखते
हैं ताकि उस की बेहुरमती नज़र न आए। यूँ उन के
दरमियान ही मेरी बेहुरमती की जाती है।
27 मुल्क के दरमियान के बुज़ुर्ग भेड़ियों की मानिन्द
हैं जो अपने शिकार को फाड़ फाड़ कर ख़ून बहाते
और लोगों को मौत के घाट उतारते हैं ताकि नारवा
नफ़ा कमाएँ।
28 मुल्क के नबी फ़रेबदिह रोयाएँ और झूटे पैग़ामात
सुना कर लोगों के बुरे कामों पर सफेदी फेर देते हैं
ताकि उन की ग़लतियाँ नज़र न आएँ। वह कहते हैं,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है' हालाँकि रब ने
उन पर कुछ नाज़िल नहीं किया होता।
29 मुल्क के आम लोग भी एक दूसरे का इस्तेह्साल
करते हैं। वह डकैत बन कर ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों
पर ज़ुल्म करते और परदेसियों से बदसुलूकी करके
उन का हक़ मारते हैं।
30 इस्राईल में मैं ऐसे आदमी की तलाश में रहा जो
मुल्क के लिए हिफ़ाज़ती चारदीवारी तामीर करे, जो
मेरे हुज़ूर आ कर दीवार के रख़ने में खड़ा हो जाए
ताकि मैं मुल्क को तबाह न करूँ। लेकिन मुझे एक
भी न मिला जो इस क़ाबिल हो। 31 चुनाँचे मैं अपना
ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा और उन्हें अपने सख़्त
क़हर से भस्म करूँगा। तब उन के ग़लत कामों का
नतीजा उन के अपने सरों पर आएगा। यह रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ का फ़रमान है।"

बेहया बहनें अहोला और अहोलीबा

23 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, दो औरतों की कहानी सुन
ले। दोनों एक ही माँ की बेटियाँ थीं। 3 वह अभी
जवान ही थीं जब मिस्र में कस्बी बन गईं। वहीं
मर्द दोनों कुंवारियों की छातियाँ सहला कर अपना
दिल बहलाते थे। 4 बड़ी का नाम अहोला और
छोटी का नाम अहोलीबा था। अहोला सामरिया और
अहोलीबा यरूशलम है। मैं दोनों का मालिक बन
गया, और दोनों के बेटे-बेटियाँ पैदा हुए।

5 गो मैं अहोला का मालिक था तो भी वह ज़िना
करने लगी। शहवत से भर कर वह जंगजू असूरियों
के पीछे पड़ गई, और यही उस के आशिक़ बन गए।
6 शानदार कपड़ों से मुलब्बस यह गवर्नर और फ़ौजी
अफ़सर उसे बड़े प्यारे लगे। सब ख़ूबसूरत जवान और
अच्छे घुड़सवार थे। 7 असूर के चीदा चीदा बेटों से
उस ने ज़िना किया। जिस की भी उसे शहवत थी उस
से और उस के बुतों से वह नापाक हुई। 8 लेकिन उस
ने जवानी में मिस्रियों के साथ जो ज़िनाकारी शुरू हुई
वह भी न छोड़ी। वही लोग थे जो उस के साथ उस
वक़्त हमबिसतर हुए थे जब वह अभी कुंवारी थी,
जिन्हों ने उस की छातियाँ सहला कर अपनी गन्दी
ख़्वाहिशात उस से पूरी की थीं।

9 यह देख कर मैं ने उसे उस के असूरी आशिक़ों के
हवाले कर दिया, उन ही के हवाले जिन की शदीद
शहवत उसे थी। 10 उन ही से अहोला की अदालत
हुई। उन्हों ने उस के कपड़े उतार कर उसे बरहना कर
दिया और उस के बेटे-बेटियों को उस से छीन लिया।
उसे ख़ुद उन्हों ने तलवार से मार डाला। यूँ वह दीगर
औरतों के लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल बन गई।

11 गो उस की बहन अहोलीबा ने यह सब कुछ
देखा तो भी वह शहवत और ज़िनाकारी के लिहाज़
से अपनी बहन से कहीं ज़्यादा आगे बढ़ी। 12 वह
भी शहवत के मारे असूरियों के पीछे पड़ गई।
यह ख़ूबसूरत जवान सब उसे प्यारे थे, ख़्वाह
असूरी गवर्नर या अफ़सर, ख़्वाह शानदार कपड़ों से
मुलब्बस फ़ौजी या अच्छे घुड़सवार थे। 13 मैं ने देखा
कि उस ने भी अपने आप को नापाक कर दिया। इस
में दोनों बेटियाँ एक जैसी थीं।

14 लेकिन अहोलीबा की ज़िनाकाराना हरकतें कहीं
ज़्यादा बुरी थीं। एक दिन उस ने दीवार पर बाबल
के मर्दों की तस्वीर देखी। तस्वीर लाल रंग से खैंची
हुई थी। 15 मर्दों की कमर में पटका और सर पर
पगड़ी बंधी हुई थी। वह बाबल के उन अफ़सरों
की मानिन्द लगते थे जो रथों पर सवार लड़ते हैं।
16 मर्दों की तस्वीर देखते ही अहोलीबा के दिल में उन
के लिए शदीद आर्ज़ू पैदा हुई। चुनाँचे उस ने अपने
क़ासिदों को बाबल भेज कर उन्हें आने की दावत
दी। 17 तब बाबल के मर्द उस के पास आए और उस
से हमबिसतर हुए। अपनी ज़िनाकारी से उन्हों ने उसे
नापाक कर दिया। लेकिन उन से नापाक होने के बाद
उस ने तंग आ कर अपना मुँह उन से फेर लिया।

18 जब उस ने खुले तौर पर उन से ज़िना करके
अपनी बरहनगी सब पर ज़ाहिर की तो मैं ने तंग आ
कर अपना मुँह उस से फेर लिया, बिलकुल उसी तरह
जिस तरह मैं ने अपना मुँह उस की बहन से भी फेर
लिया था। 19 लेकिन यह भी उस के लिए काफ़ी न
था बल्कि उस ने अपनी ज़िनाकारी में मज़ीद इज़ाफ़ा
किया। उसे जवानी के दिन याद आए जब वह मिस्र में
कस्बी थी। 20 वह शहवत के मारे पहले आशिक़ों की
आर्ज़ू करने लगी, उन से जो गधों और घोड़ों की सी
जिन्सी ताक़त रखते थे। 21 क्यूँकि तू अपनी जवानी
की ज़िनाकारी दुहराने की मुतमन्नी थी। तू एक बार
फिर उन से हमबिसतर होना चाहती थी जो मिस्र में
तेरी छातियाँ सहला कर अपना दिल बहलाते थे।

22 चुनाँचे रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'ऐ
अहोलीबा, मैं तेरे आशिक़ों को तेरे ख़िलाफ़ खड़ा
करूँगा। जिन से तू ने तंग आ कर अपना मुँह फेर
लिया था उन्हें मैं चारों तरफ़ से तेरे ख़िलाफ़ लाऊँगा।
23 बाबल, कस्दियों, फ़िक़ोद, शोअ और क़ोअ के
फ़ौजी मिल कर तुझ पर टूट पड़ेंगे। घुड़सवार असूरी
भी उन में शामिल होंगे, ऐसे ख़ूबसूरत जवान जो सब
गवर्नर, अफ़सर, रथसवार फ़ौजी और ऊँचे तब्क़े के
अफ़राद होंगे। 24 शिमाल से वह रथों और मुख़्तलिफ़
क़ौमों के मुतअद्दिद फ़ौजियों समेत तुझ पर हम्ला
करेंगे। वह तुझे यूँ घेर लेंगे कि हर तरफ़ छोटी और
बड़ी ढालें, हर तरफ़ ख़ोद नज़र आएँगे। मैं तुझे उन
के हवाले कर दूँगा ताकि वह तुझे सज़ा दे कर अपने
क़वानीन के मुताबिक़ तेरी अदालत करें। 25 तू मेरी
ग़ैरत का तजरिबा करेगी, क्यूँकि यह लोग ग़ुस्से में
तुझ से निपट लेंगे। वह तेरी नाक और कानों को
काट डालेंगे और बचे हुओं को तलवार से मौत के

घाट उतारेंगे। तेरे बेटे-बेटियों को वह ले जाएंगे, और
जो कुछ उन के पीछे रह जाए वह भस्म हो जाएगा।
26 वह तेरे लिबास और तेरे ज़ेवरात को तुझ पर से
उतारेंगे।

27 यूँ मैं तेरी वह फ़ह्हाशी और ज़िनाकारी रोक दूँगा
जिस का सिलसिला तू ने मिस्र में शुरू किया था।
तब न तू आरज़ूमन्द नज़रों से इन चीज़ों की तरफ़
देखेगी, न मिस्र को याद करेगी। 28 क्यूँकि रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं तुझे उन के हवाले करने
को हूँ जो तुझ से नफ़रत करते हैं, उन के हवाले
जिन से तू ने तंग आ कर अपना मुँह फेर लिया
था। 29 वह बड़ी नफ़रत से तेरे साथ पेश आएँगे। जो
कुछ तू ने मेहनत से कमाया उसे वह छीन कर तुझे
नंगी और बरहना छोड़ेंगे। तब तेरी ज़िनाकारी का
शर्मनाक अन्जाम और तेरी फ़ह्हाशी सब पर ज़ाहिर
हो जाएगी। 30 तब तुझे इस का अज्र मिलेगा कि तू
क़ौमों के पीछे पड़ कर ज़िना करती रही, कि तू ने
उन के बुतों की पूजा करके अपने आप को नापाक
कर दिया है।

31 तू अपनी बहन के नमूने पर चल पड़ी, इस लिए मैं
तुझे वही प्याला पिलाऊँगा जो उसे पीना पड़ा। 32 रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुझे अपनी बहन
का प्याला पीना पड़ेगा जो बड़ा और गहरा है। और
तू उस वक़्त तक उसे पीती रहेगी जब तक मज़ाक़
और लान-तान का निशाना न बन गई हो। 33 दह्शत
और तबाही का प्याला पी पी कर तू मदहोशी और
दुख से भर जाएगी। तू अपनी बहन सामरिया का यह
प्याला 34 आख़िरी क़तरे तक पी लेगी, फिर प्याले को
पाश पाश करके उस के टुकड़े चबा लेगी और अपने
सीने को फाड़ लेगी।' यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का
फ़रमान है। 35 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'तू
ने मुझे भूल कर अपना मुँह मुझ से फेर लिया है।
अब तुझे अपनी फ़ह्हाशी और ज़िनाकारी का नतीजा
भुगतना पड़ेगा'।"

36 रब मज़ीद मुझ से हमकलाम हुआ, "ऐ
आदमज़ाद, क्या तू अहोला और अहोलीबा की
अदालत करने के लिए तय्यार है? फिर उन पर उन
की मकरूह हरकतें ज़ाहिर कर। 37 उन से दो जुर्म
सरज़द हुए हैं, ज़िना और क़त्ल। उन्हों ने बुतों से
ज़िना किया और अपने बच्चों को जला कर उन्हें
खिलाया, उन बच्चों को जो उन्हों ने मेरे हाँ जन्म दिए
थे। 38 लेकिन यह उन के लिए काफ़ी नहीं था। साथ
साथ उन्हों ने मेरा मक़्दिस नापाक और मेरे सबत
के दिनों की बेहुरमती की। 39 क्यूँकि जब कभी वह
अपने बच्चों को अपने बुतों के हुज़ूर क़ुर्बान करती थीं
उसी दिन वह मेरे घर में आ कर उस की बेहुरमती
करती थीं। मेरे ही घर में वह ऐसी हरकतें करती थीं।

40 यह भी इन दो बहनों के लिए काफ़ी नहीं
था बल्कि आदमियों की तलाश में उन्हों ने अपने
क़ासिदों को दूर दूर तक भेज दिया। जब मर्द पहुँचे
तो तू ने उन के लिए नहा कर अपनी आँखों में सुरमा
लगाया और अपने ज़ेवरात पहन लिए। 41 फिर तू
शानदार सोफ़े पर बैठ गई। तेरे सामने मेज़ थी जिस
पर तू ने मेरे लिए मख़्सूस बख़ूर और तेल रखा था।
42 रेगिस्तान से सिबा के मुतअद्दिद आदमी लाए गए
तो शहर में शोर मच गया, और लोगों ने सुकून का
साँस लिया। आदमियों ने दोनों बहनों के बाज़ूओं में
कड़े पहनाए और उन के सरों पर शानदार ताज रखे।
43 तब मैं ने ज़िनाकारी से घिसी फटी औरत के बारे में
कहा, 'अब वह उस के साथ ज़िना करें, क्यूँकि वह
ज़िनाकार ही है।' 44 ऐसा ही हुआ। मर्द उन बेहया
बहनों अहोला और अहोलीबा से यूँ हमबिसतर हुए
जिस तरह कस्बियों से।

45 लेकिन रास्तबाज़ आदमी उन की अदालत करके
उन्हें ज़िना और क़त्ल के मुजरिम ठहराएँगे। क्यूँकि
दोनों बहनें ज़िनाकार और क़ातिल ही हैं। 46 रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि उन के ख़िलाफ़
जुलूस निकाल कर उन्हें दह्शत और लूट-मार के
हवाले करो। 47 लोग उन्हें संगसार करके तलवार
से टुकड़े टुकड़े करें, वह उन के बेटे-बेटियों को मार
डालें और उन के घरों को नज़र-ए-आतिश करें।

48 यूँ मैं मुल्क में ज़िनाकारी ख़त्म करूँगा। इस से
तमाम औरतों को तम्बीह मिलेगी कि वह तुम्हारे
शर्मनाक नमूने पर न चलें। 49 तुम्हें ज़िनाकारी और
बुतपरस्ती की मुनासिब सज़ा मिलेगी। तब तुम जान
लोगी कि मैं रब क़ादिर-ए-मुतलक़ हूँ।”

यरूशलम आग पर ज़ंगआलूदा देग है

24 1 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के
नवें साल में रब का कलाम मुझ पर नाज़िल
हुआ। दसवें महीने का दसवाँ दिन [l]था। पैग़ाम यह
था, 2 “ऐ आदमज़ाद, इसी दिन की तारीख़ लिख
ले, क्यूँकि इसी दिन शाह-ए-बाबल यरूशलम का
मुहासरा करने लगा है। 3 फिर इस सरकश क़ौम
इस्राईल को तम्सील पेश करके बता,

‘रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि आग पर देग
रख कर उस में पानी डाल दे। 4 फिर उसे बेहतरीन
गोश्त से भर दे। रान और शाने के टुकड़े, नीज़
बेहतरीन हड्डियाँ उस में डाल दे। 5 सिर्फ़ बेहतरीन
भेड़ों का गोश्त इस्तेमाल कर। ध्यान दे कि देग के
नीचे आग ज़ोर से भड़कती रहे। गोश्त को हड्डियों
समेत ख़ूब पकने दे।

6 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि यरूशलम
पर अफ़्सोस जिस में इतना ख़ून बहाया गया है! यह
शहर देग है जिस में ज़ंग लगा है, ऐसा ज़ंग जो उतरता
नहीं। अब गोश्त के टुकड़ों को यके बाद दीगरे देग
से निकाल दे। उन्हें किसी तर्तीब से मत निकालना
बल्कि क़ुरआ डाले बग़ैर निकाल दे।

7 जो ख़ून यरूशलम ने बहाया वह अब तक उस में
मौजूद है। क्यूँकि वह मिट्टी पर न गिरा जो उसे जज़्ब
कर सकती बल्कि नंगी चटान पर। 8 मैं ने ख़ुद यह
ख़ून नंगी चटान पर बहने दिया ताकि वह छुप न जाए
बल्कि मेरा ग़ज़ब यरूशलम पर नाज़िल हो जाए और
मैं बदला लूँ।

9 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि यरूशलम
पर अफ़्सोस जिस ने इतना ख़ून बहाया है! मैं भी तेरे
नीचे लकड़ी का बड़ा ढेर लगाऊँगा। 10 आ, लकड़ी
का बड़ा ढेर करके आग लगा दे। गोश्त को ख़ूब
पका, फिर शोरबा निकाल कर हड्डियों को भस्म होने
दे। 11 इस के बाद ख़ाली देग को जलते कोएलों पर
रख दे ताकि पीतल गर्म हो कर तमतमाने लगे और
देग में मैल पिघल जाए, उस का ज़ंग उतर जाए।

12 लेकिन बेफ़ाइदा! इतना ज़ंग लगा है कि वह
आग में भी नहीं उतरता।

13 ऐ यरूशलम, अपनी बेहया हरकतों से तू ने अपने
आप को नापाक कर दिया है। अगरचे मैं ख़ुद तुझे
पाक-साफ़ करना चाहता था तो भी तू पाक-साफ़ न
हुई। अब तू उस वक़्त तक पाक नहीं होगी जब तक
मैं अपना पूरा ग़ुस्सा तुझ पर उतार न लूँ। 14 मेरे रब
का यह फ़रमान पूरा होने वाला है, और मैं ध्यान से
उसे अमल में लाऊँगा। न मैं तुझ पर तरस खाऊँगा,
न रहम करूँगा। मैं तेरे चाल-चलन और आमाल के
मुताबिक़ तेरी अदालत करूँगा।’ यह रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ का फ़रमान है।”

बीवी की वफ़ात पर हिज़्क़ीएल मातम न करे

15 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 16 “ऐ आदमज़ाद,
मैं तुझ से अचानक तेरी आँख का तारा छीन लूँगा।
लेकिन लाज़िम है कि तू न आह-ओ-ज़ारी करे, न
आँसू बहाए। 17 बेशक चुपके से कराहता रह, लेकिन
अपनी अज़ीज़ा के लिए अलानिया मातम न कर। न
सर से पगड़ी उतार और न पाँओ से जूते। न दाढ़ी को
ढाँपना, न जनाज़े का खाना खा।”

18 सुब्ह को मैं ने क़ौम को यह पैग़ाम सुनाया, और
शाम को मेरी बीवी इन्तिक़ाल कर गई। अगली सुब्ह
मैं ने वह कुछ किया जो रब ने मुझे करने को कहा
था। 19 यह देख कर लोगों ने मुझ से पूछा, “आप

---

[l] 15 जन्वरी।

के रवय्ये का हमारे साथ क्या ताल्लुक़ है? ज़रा हमें बताएँ।”

20 मैं ने जवाब दिया, “रब ने मुझे 21 आप इस्राईलियों को यह पैग़ाम सुनाने को कहा, ‘रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरा घर तुम्हारे नज़्दीक पनाहगाह है जिस पर तुम फ़ख़र करते हो। लेकिन यह मक़्दिस जो तुम्हारी आँख का तारा और जान का प्यारा है तबाह होने वाला है। मैं उस की बेहुरमती करने को हूँ। और तुम्हारे जितने बेटे-बेटियाँ यरूशलम में पीछे रह गए थे वह सब तलवार की ज़द में आ कर मर जाएंगे। 22 तब तुम वह कुछ करोगे जो हिज़्क़ीएल इस वक़्त कर रहा है। न तुम अपनी दाढ़ियों को ढाँपोगे, न जनाज़े का खाना खाओगे। 23 न तुम सर से पगड़ी, न पाँओ से जूते उतारोगे। तुम्हारे हाँ न मातम का शोर, न रोने की आवाज़ सुनाई देगी बल्कि तुम अपने गुनाहों के सबब से ज़ाए होते जाओगे। तुम चुपके से एक दूसरे के साथ बैठ कर कराहते रहोगे। 24 हिज़्क़ीएल तुम्हारे लिए निशान है। जो कुछ वह इस वक़्त कर रहा है वह तुम भी करोगे। तब तुम जान लोगे कि मैं रब क़ादिर-ए-मुतलक़ हूँ’।”

25 रब मज़ीद मुझ से हमकलाम हुआ, “ऐ आदमज़ाद, यह घर इस्राईलियों के नज़्दीक पनाहगाह है जिस के बारे में वह ख़ास ख़ुशी महसूस करते हैं, जिस पर वह फ़ख़र करते हैं। लेकिन मैं यह मक़्दिस जो उन की आँख का तारा और जान का प्यारा है उन से छीन लूँगा और साथ साथ उन के बेटे-बेटियों को भी। जिस दिन यह पेश आएगा 26 उस दिन एक आदमी बच कर तुझे इस की ख़बर पहुँचाएगा। 27 उसी वक़्त तू दुबारा बोल सकेगा। तू गूँगा नहीं रहेगा बल्कि उस से बातें करने लगेगा। यूँ तू इस्राईलियों के लिए निशान होगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

अम्मोनियों का मुल्क उन से छीन लिया जाएगा

25 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद, अम्मोनियों के मुल्क की तरफ़ रुख़ करके उन के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर। 3 उन्हें बता,

‘सुनो रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का कलाम! वह फ़रमाता है कि ऐ अम्मोन बेटी, तू ने ख़ुश हो कर क़हक़हा लगाया जब मेरे मक़्दिस की बेहुरमती हुई, मुल्क-ए-इस्राईल तबाह हुआ और यहूदाह के बाशिन्दे जिलावतन हुए। 4 इस लिए मैं तुझे मशरिक़ी क़बीलों के हवाले करूँगा जो अपने डेरे तुझ में लगा कर पूरी बस्तियाँ क़ाइम करेंगे। वह तेरा ही फल खाएँगे, तेरा ही दूध पिएँगे। 5 रब्बा शहर को मैं ऊँटों की चरागाह में बदल दूँगा और मुल्क-ए-अम्मोन को भेड़-बकरियों की आरामगाह बना दूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

6 क्यूँकि रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तू ने तालियाँ बजा बजा कर और पाँओ ज़मीन पर मार मार कर इस्राईल के अन्जाम पर अपनी दिली ख़ुशी का इज़हार किया। तेरी इस्राईल के लिए हिक़ारत साफ़ तौर पर नज़र आई। 7 इस लिए मैं अपना हाथ तेरे ख़िलाफ़ बढ़ा कर तुझे दीगर अक़्वाम के हवाले कर दूँगा ताकि वह तुझे लूट लें। मैं तुझे यूँ मिटा दूँगा कि अक़्वाम-ओ-ममालिक में तेरा नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा। तब तू जान लेगी कि मैं ही रब हूँ’।”

मोआब के शहर तबाह हो जाएंगे

8 “रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मोआब और सईर इस्राईल का मज़ाक़ उड़ा कर कहते हैं, ‘लो, देखो यहूदाह के घराने का हाल! अब वह भी बाक़ी क़ौमों की तरह बन गया है।’ 9 इस लिए मैं मोआब की पहाड़ी ढलानों को उन के शहरों से महरूम करूँगा। मुल्क के एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक भी आबादी नहीं रहेगी। गो मोआबी अपने शहरों बैत-यसीमोत, बाल-मऊन और क़िर्यताइम पर ख़ास फ़ख़र करते हैं, लेकिन वह भी ज़मीनबोस हो जाएंगे। 10 अम्मोन की तरह मैं मोआब को भी मशरिक़ी क़बीलों के हवाले करूँगा। आख़िरकार अक़्वाम में अम्मोनियों की याद तक नहीं रहेगी,

11 और मोआब को भी मुझ से मुनासिब सज़ा मिलेगी।
तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

अल्लाह अदोमियों से इन्तिक़ाम लेगा

12 “रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि यहूदाह
से इन्तिक़ाम लेने से अदोम ने संगीन गुनाह किया है।
13 इस लिए मैं अपना हाथ अदोम के ख़िलाफ़ बढ़ा
कर उस के इन्सान-ओ-हैवान को मार डालूँगा, और
वह तलवार से मारे जाएंगे। तेमान से ले कर ददान
तक यह मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएगा। यह
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है। 14 रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि अपनी क़ौम के हाथों मैं
अदोम से बदला लूँगा, और इस्राईल मेरे ग़ज़ब और
क़हर के मुताबिक़ ही अदोम से निपट लेगा। तब वह
मेरा इन्तिक़ाम जान लेंगे।”

फ़िलिस्तियों का ख़ातमा

15 “रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
फ़िलिस्तियों ने बड़े ज़ुल्म के साथ यहूदाह से बदला
लिया है। उन्हों ने उस पर अपनी दिली हिक़ारत और
दाइमी दुश्मनी का इज़हार किया और इन्तिक़ाम
ले कर उसे तबाह करने की कोशिश की। 16 इस
लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं अपना
हाथ फ़िलिस्तियों के ख़िलाफ़ बढ़ाने को हूँ। मैं इन
करेतियों और साहिली इलाक़े के बचे हुओं को
मिटा दूँगा। 17 मैं अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करके
सख़्ती से उन से बदला लूँगा। तब वह जान लेंगे कि
मैं ही रब हूँ।”

सूर का सत्यानास

26 1 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के
11वें साल में रब मुझ से हमकलाम हुआ।
महीने का पहला दिन था। 2 “ऐ आदमज़ाद, सूर बेटी
यरूशलम की तबाही देख कर ख़ुश हुई है। वह कहती
है, ‘लो, अक़्वाम का दरवाज़ा टूट गया है! अब मैं ही
इस की ज़िम्मादारियाँ निभाऊँगी। अब जब यरूशलम
वीरान है तो मैं ही फ़रोग़ पाऊँगी।’
3 जवाब में रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
ऐ सूर, मैं तुझ से निपट लूँगा! मैं मुतअद्दिद क़ौमों
को तेरे ख़िलाफ़ भेजूँगा। समुन्दर की ज़बरदस्त मौजों
की तरह वह तुझ पर टूट पड़ेंगी। 4 वह सूर शहर
की फ़सील को ढा कर उस के बुर्जों को ख़ाक में
मिला देंगी। तब मैं उसे इतने ज़ोर से झाड़ दूँगा कि
मिट्टी तक नहीं रहेगी। ख़ाली चटान ही नज़र आएगी।
5 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि वह समुन्दर
के दरमियान ऐसी जगह रहेगी जहाँ मछेरे अपने जालों
को सुखाने के लिए बिछा देंगे। दीगर अक़्वाम उसे
लूट लेंगी, 6 और ख़ुश्की पर उस की आबादियाँ
तलवार की ज़द में आ जाएँगी। तब वह जान लेंगे
कि मैं ही रब हूँ।
7 क्यूँकि रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
बाबल के बादशाह नबूकद्नज़्ज़र को तेरे ख़िलाफ़
भेजूँगा जो घोड़े, रथ, घुड़सवार और बड़ी फ़ौज ले
कर शिमाल से तुझ पर हम्ला करेगा। 8 ख़ुश्की पर
तेरी आबादियों को वह तलवार से तबाह करेगा,
फिर पुश्ते और बुर्जों से तुझे घेर लेगा। उस के फ़ौजी
अपनी ढालें उठा कर तुझ पर हम्ला करेंगे। 9 बादशाह
अपनी क़िलाशिकन मशीनों से तेरी फ़सील को ढा
देगा और अपने आलात से तेरे बुर्जों को गिरा देगा।
10 जब उस के बेशुमार घोड़े चल पड़ेंगे तो इतनी गर्द
उड़ जाएगी कि तू उस में डूब जाएगी। जब बादशाह
तेरी फ़सील को तोड़ तोड़ कर तेरे दरवाज़ों में दाख़िल
होगा तो तेरी दीवारें घोड़ों और रथों के शोर से लरज़
उठेंगी। 11 उस के घोड़ों के खुर तेरी तमाम गलियों को
कुचल देंगे, और तेरे बाशिन्दे तलवार से मर जाएंगे,
तेरे मज़बूत सतून ज़मीनबोस हो जाएंगे। 12 दुश्मन तेरी
दौलत छीन लेंगे और तेरी तिजारत का माल लूट
लेंगे। वह तेरी दीवारों को गिरा कर तेरी शानदार
इमारतों को मिस्मार करेंगे, फिर तेरे पत्थर, लकड़ी
और मल्बा समुन्दर में फैंक देंगे। 13 मैं तेरे गीतों का
शोर बन्द करूँगा। आइन्दा तेरे सरोदों की आवाज़

सुनाई नहीं देगी। 14 मैं तुझे नंगी चटान में तब्दील
करूँगा, और मछेरे तुझे अपने जाल बिछा कर सुखाने
के लिए इस्तेमाल करेंगे। आइन्दा तुझे कभी दुबारा
तामीर नहीं किया जाएगा। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़
का फ़रमान है।

15 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ सूर बेटी,
साहिली इलाक़े काँप उठेंगे जब तू धड़ाम से गिर
जाएगी, जब हर तरफ़ ज़ख़्मी लोगों की कराहती
आवाज़ें सुनाई देंगी, हर गली में क़त्ल-ओ-ग़ारत
का शोर मचेगा। 16 तब साहिली इलाक़ों के तमाम
हुक्मरान अपने तख़्तों से उतर कर अपने चोग़े और
शानदार लिबास उतारेंगे। वह मातमी कपड़े पहन कर
ज़मीन पर बैठ जाएंगे और बार बार लरज़ उठेंगे, यहाँ
तक वह तेरे अन्जाम पर परेशान होंगे। 17 तब वह तुझ
पर मातम करके गीत गाएँगे,

'हाय, तू कितने धड़ाम से गिर कर तबाह हुई है! ऐ
साहिली शहर, ऐ सूर बेटी, पहले तू अपने बाशिन्दों
समेत समुन्दर के दरमियान रह कर कितनी मश्हूर
और ताक़तवर थी। गिर्द-ओ-नवाह के तमाम बाशिन्दे
तुझ से दह्शत खाते थे। 18 अब साहिली इलाक़े तेरे
अन्जाम को देख कर थरथरा रहे हैं। समुन्दर के जज़ीरे
तेरे ख़ातमे की ख़बर सुन कर दह्शतज़दा हो गए हैं।'

19 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ सूर बेटी,
मैं तुझे वीरान-ओ-सुन्सान करूँगा। तू उन दीगर शहरों
की मानिन्द बन जाएगी जो नेस्त-ओ-नाबूद हो गए
हैं। मैं तुझ पर सैलाब लाऊँगा, और गहरा पानी तुझे
ढाँप देगा। 20 मैं तुझे पाताल में उतरने दूँगा, और
तू उस क़ौम के पास पहुँचेगी जो क़दीम ज़माने से
ही वहाँ बसती है। तब तुझे ज़मीन की गहराइयों में
रहना पड़ेगा, वहाँ जहाँ क़दीम ज़मानों के खंडरात
हैं। तू मुर्दों के मुल्क में रहेगी और कभी ज़िन्दगी के
मुल्क में वापस नहीं आएगी, न वहाँ अपना मक़ाम
दुबारा हासिल करेगी। 21 मैं होने दूँगा कि तेरा अन्जाम
दह्शतनाक होगा, और तू सरासर तबाह हो जाएगी।
लोग तेरा खोज लगाएँगे लेकिन तुझे कभी नहीं पाएँगे।
यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।"

सूर के अन्जाम पर मातमी गीत

27 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, सूर बेटी पर मातमी गीत गा,
3 उस शहर पर जो समुन्दर की गुज़रगाह पर वाक़े है
और मुतअद्दिद साहिली क़ौमों से तिजारत करता है।
उस से कह,

'रब फ़रमाता है कि ऐ सूर बेटी, तू अपने आप
पर बहुत फ़ख़र करके कहती है कि वाह, मेरा हुस्न
कमाल का है। 4 और वाक़ई, तेरा इलाक़ा समुन्दर
के बीच में ही है, और जिन्हों ने तुझे तामीर किया
उन्हों ने तेरे हुस्न को तक्मील तक पहुँचाया, 5 तुझे
शानदार बहरी जहाज़ की मानिन्द बनाया। तेरे तख़्ते
सनीर में उगने वाले जूनीपर के दरख़्तों से बनाए
गए, तेरा मस्तूल लुबनान का देवदार का दरख़्त था।
6 तेरे चप्पू बसन के बलूत के दरख़्तों से बनाए गए,
जबकि तेरे फ़र्श के लिए क़ुब्रुस से सर्व की लकड़ी
लाई गई, फिर उसे हाथीदाँत से आरास्ता किया गया।
7 नफ़ीस कतान का तेरा रंगदार बादबान मिस्र का था।
वह तेरा इम्तियाज़ी निशान बन गया। तेरे तरपालों
का क़िर्मिज़ी और अर्ग़वानी रंग इलीसा के साहिली
इलाक़े से लाया गया।

8 सैदा और अर्वद के मर्द तेरे चप्पू मारते थे, सूर
के अपने ही दाना तेरे मल्लाह थे। 9 जबल [m]के बुज़ुर्ग
और दानिशमन्द आदमी ध्यान देते थे कि तेरी दर्ज़ें
बन्द रहें। तमाम बहरी जहाज़ अपने मल्लाहों समेत
तेरे पास आया करते थे ताकि तेरे साथ तिजारत
करें। 10 फ़ार्स, लुदिया और लिबिया के अफ़राद तेरी
फ़ौज में ख़िदमत करते थे। तेरी दीवारों से लटकी
उन की ढालों और ख़ोदों ने तेरी शान मज़ीद बढ़ा
दी। 11 अर्वद और ख़लक [n]के आदमी तेरी फ़सील
का दिफ़ा करते थे, जम्माद के फ़ौजी तेरे बुर्जों में

[m]Biblos

[n]ग़ालिबन Cilicia।

पहरादारी करते थे। तेरी दीवारों से लटकी हुई उन
की ढालों ने तेरे हुस्न को कमाल तक पहुँचा दिया।
12 तू अमीर थी, तुझ में माल-ओ-अस्बाब की कस्रत
की तिजारत की जाती थी। इस लिए तरसीस तुझे
चाँदी, लोहा, टीन और सीसा दे कर तुझ से सौदा
करता था। 13 यूनान, तूबल और मसक तुझ से
तिजारत करते, तेरा माल ख़रीद कर मुआवज़े में
ग़ुलाम और पीतल का सामान देते थे। 14 बैत-तुजर्मा
के ताजिर तेरे माल के लिए तुझे आम घोड़े, फ़ौजी
घोड़े और ख़च्चर पहुँचाते थे। 15 ददान के आदमी
तेरे साथ तिजारत करते थे, हाँ मुतअद्दिद साहिली
इलाक़े तेरे गाहक थे। उन के साथ सौदाबाज़ी करके
तुझे हाथीदाँत और आब्नूस की लकड़ी मिलती थी।
16 शाम तेरी पैदावार की कस्रत की वजह से तेरे
साथ तिजारत करता था। मुआवज़े में तुझे फ़ीरोज़ा,
अर्ग़वानी रंग, रंगदार कपड़े, बारीक कतान, मूँगा
और याक़ूत मिलता था। 17 यहूदाह और इस्राईल तेरे
गाहक थे। तेरा माल ख़रीद कर वह तुझे मिन्नीत का
गन्दुम, पन्नग की टिक्कियाँ, शहद, ज़ैतून का तेल और
बल्सान देते थे। 18 दमिश्क़ तेरी वाफ़िर पैदावार और
माल की कस्रत की वजह से तेरे साथ कारोबार करता
था। उस से तुझे हल्बून की मै और साहर की ऊन
मिलती थी। 19 विदान और यूनान तेरे गाहक थे। वह
ऊज़ाल का ढाला हुआ लोहा, दारचीनी और कलमस
का मसाला पहुँचाते थे। 20 ददान से तिजारत करने
से तुझे ज़ीनपोश मिलती थी। 21 अरब और क़ीदार
के तमाम हुक्मरान तेरे गाहक थे। तेरे माल के इवज़
वह भेड़ के बच्चे, मेंढे और बकरे देते थे। 22 सबा और
रामा के ताजिर तेरा माल हासिल करने के लिए तुझे
बेहतरीन बल्सान, हर क़िस्म के जवाहिर और सोना
देते थे। 23 हारान, कन्ना, अदन, सबा, असूर और
कुल मादी सब तेरे साथ तिजारत करते थे। 24 वह
तेरे पास आ कर तुझे शानदार लिबास, क़िर्मिज़ी रंग
की चादरें, रंगदार कपड़े और कम्बल, नीज़ मज़बूत
रस्से पेश करते थे। 25 तरसीस के उम्दा जहाज़ तेरा
माल मुख़्तलिफ़ ममालिक में पहुँचाते थे। यूँ तू जहाज़
की मानिन्द समुन्दर के बीच में रह कर दौलत और
शान से मालामाल हो गई। 26 तेरे चप्पू चलाने वाले
तुझे दूर दूर तक पहुँचाते हैं।

लेकिन वह वक़्त क़रीब है जब मशरिक़ से तेज़
आँधी आ कर तुझे समुन्दर के दरमियान ही टुकड़े
टुकड़े कर देगी। 27 जिस दिन तू गिर जाएगी उस दिन
तेरी तमाम मिलकियत समुन्दर के बीच में ही डूब
जाएगी। तेरी दौलत, तेरा सौदा, तेरे मल्लाह, तेरे बहरी
मुसाफ़िर, तेरी दर्ज़ें बन्द रखने वाले, तेरे ताजिर, तेरे
तमाम फ़ौजी और बाक़ी जितने भी तुझ पर सवार
हैं सब के सब ग़र्क़ हो जाएंगे। 28 तेरे मल्लाहों की
चीख़ती चिल्लाती आवाज़ें सुन कर साहिली इलाक़े
काँप उठेंगे। 29 तमाम चप्पू चलाने वाले, मल्लाह और
बहरी मुसाफ़िर अपने जहाज़ों से उतर कर साहिल
पर खड़े हो जाएंगे। 30 वह ज़ोर से रो पड़ेंगे, बड़ी
तल्ख़ी से गिर्या-ओ-ज़ारी करेंगे। अपने सरों पर ख़ाक
डाल कर वह राख में लोट-पोट हो जाएंगे। 31 तेरी
ही वजह से वह अपने सरों को मुंडवा कर टाट का
लिबास ओढ़ लेंगे, वह बड़ी बेचैनी और तल्ख़ी से
तुझ पर मातम करेंगे। 32 तब वह ज़ार-ओ-क़तार रो
कर मातम का गीत गाएँगे,

"हाय, कौन समुन्दर से घिरे हुए सूर की तरह
ख़ामोश हो गया है?"

33 जब तिजारत का माल समुन्दर की चारों तरफ़
से तुझ तक पहुँचता था तो तू मुतअद्दिद क़ौमों को
सेर करती थी। दुनिया के बादशाह तेरी दौलत और
तिजारती सामान की कस्रत से अमीर हुए।

34 अफ़सोस! अब तू पाश पाश हो कर समुन्दर की
गहराइयों में ग़ाइब हो गई है। तेरा माल और तेरे तमाम
अफ़राद तेरे साथ डूब गए हैं।

35 साहिली इलाक़ों में बसने वाले घबरा गए हैं।
उन के बादशाहों के रोंगटे खड़े हो गए, उन के चिहरे
परेशान नज़र आते हैं।

36 दीगर अक़्वाम के ताजिर तुझे देख कर "तौबा
तौबा" कहते हैं। तेरा हौलनाक अन्जाम अचानक ही
आ गया है। अब से तू कभी नहीं उठेगी'।"

सूर के हुक्मरान के लिए पैग़ाम

28 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 “ऐ
आदमज़ाद, सूर के हुक्मरान को बता,
‘रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तू मग़रूर
हो गया है। तू कहता है कि मैं ख़ुदा हूँ, मैं समुन्दर
के दरमियान ही अपने तख़्त-ए-इलाही पर बैठा हूँ।
लेकिन तू ख़ुदा नहीं बल्कि इन्सान है, गो तू अपने
आप को ख़ुदा सा समझता है। 3 बेशक तू अपने
आप को दान्याल से कहीं ज़्यादा दानिशमन्द समझ
कर कहता है कि कोई भी भेद मुझ से पोशीदा नहीं
रहता। 4 और यह हक़ीक़त भी है कि तू ने अपनी
हिक्मत और समझ से बहुत दौलत हासिल की है,
सोने और चाँदी से अपने ख़ज़ानों को भर दिया है।
5 बड़ी दानिशमन्दी से तू ने तिजारत के ज़रीए अपनी
दौलत बढ़ाई। लेकिन जितनी तेरी दौलत बढ़ती गई
उतना ही तेरा ग़ुरूर भी बढ़ता गया।
6 चुनाँचे रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि चूँकि
तू अपने आप को ख़ुदा सा समझता है 7 इस लिए मैं
सब से ज़ालिम क़ौमों को तेरे ख़िलाफ़ भेजूँगा जो
अपनी तलवारों को तेरी ख़ूबसूरती और हिक्मत के
ख़िलाफ़ खैंच कर तेरी शान-ओ-शौकत की बेहुरमती
करेंगी। 8 वह तुझे पाताल में उतारेंगी। समुन्दर के
बीच में ही तुझे मार डाला जाएगा। 9 क्या तू उस वक़्त
अपने क़ातिलों से कहेगा कि मैं ख़ुदा हूँ? हरगिज़
नहीं! अपने क़ातिलों के हाथ में होते वक़्त तू ख़ुदा
नहीं बल्कि इन्सान साबित होगा। 10 तू अजनबियों
के हाथों नामख़्तून की सी वफ़ात पाएगा। यह मेरा,
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है’।”
11 रब मज़ीद मुझ से हमकलाम हुआ, 12 “ऐ
आदमज़ाद, सूर के बादशाह पर मातमी गीत गा कर
उस से कह,
‘रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुझ पर
कामिलियत का ठप्पा था। तू हिक्मत से भरपूर
था, तेरा हुस्न कमाल का था। 13 अल्लाह के बाग़-
ए-अदन में रह कर तू हर क़िस्म के जवाहिर से
सजा हुआ था। लाल, [o]ज़बर्जद, [p]हज़्र-उल-क़मर,
[q]पुखराज, [r]अक़ीक़-ए-अह्मर [s]और यशब, [t]संग-ए-
लाजवर्द, [u]फ़ीरोज़ा और ज़ुमुर्रद सब तुझे आरास्ता
करते थे। सब कुछ सोने के काम से मज़ीद ख़ूबसूरत
बनाया गया था। जिस दिन तुझे ख़ल्क़ किया गया
उसी दिन यह चीज़ें तेरे लिए तय्यार हुईं।
14 मैं ने तुझे अल्लाह के मुक़द्दस पहाड़ पर खड़ा
किया था। वहाँ तू करूबी फ़रिश्ते की हैसियत से
अपने पर फैलाए पहरादारी करता था, वहाँ तू जलते
हुए पत्थरों के दरमियान ही घूमता फिरता रहा।
15 जिस दिन तुझे ख़ल्क़ किया गया तेरा चाल-चलन
बेइल्ज़ाम था, लेकिन अब तुझ में नाइन्साफ़ी पाई गई
है। 16 तिजारत में कामयाबी की वजह से तू ज़ुल्म-ओ-
तशद्दुद से भर गया और गुनाह करने लगा।
यह देख कर मैं ने तुझे अल्लाह के पहाड़ पर से उतार
दिया। मैं ने तुझे जो पहरादारी करने वाला फ़रिश्ता
था तबाह करके जलते हुए पत्थरों के दरमियान से
निकाल दिया। 17 तेरी ख़ूबसूरती तेरे लिए ग़ुरूर का
बाइस बन गई, हाँ तेरी शान-ओ-शौकत ने तुझे इतना

---

[o]या एक क़िस्म का सुर्ख़ अक़ीक़। याद रहे कि चूँकि क़दीम ज़माने के अक्सर जवाहिरात के नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख़्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

[p]peridot

[q]moonstone

[r]topas

[s]carnelian

[t]jasper

[u]lapis lazuli

फुला दिया कि तेरी हिक्मत जाती रही। इसी लिए मैं
ने तुझे ज़मीन पर पटख़ कर दीगर बादशाहों के सामने
तमाशा बना दिया। 18 अपने बेशुमार गुनाहों और
बेइन्साफ़ तिजारत से तू ने अपने मुक़द्दस मक़ामों की
बेहुरमती की है। जवाब में मैं ने होने दिया कि आग
तेरे दरमियान से निकल कर तुझे भस्म करे। मैं ने तुझे
तमाशा देखने वाले तमाम लोगों के सामने ही राख
कर दिया। 19 जितनी भी क़ौमें तुझे जानती थीं उन के
रोंगटे खड़े हो गए। तेरा हौलनाक अन्जाम अचानक
ही आ गया है। अब से तू कभी नहीं उठेगा'।"

सैदा को सज़ा दी जाएगी

20 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 21 "ऐ आदमज़ाद,
सैदा की तरफ़ रुख़ करके उस के ख़िलाफ़ नबुव्वत
कर! 22 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ सैदा,
मैं तुझ से निपट लूँगा। तेरे दरमियान ही मैं अपना
जलाल दिखाऊँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही
रब हूँ, क्यूँकि मैं शहर की अदालत करके अपना
मुक़द्दस किरदार उन पर ज़ाहिर करूँगा। 23 मैं उस में
मोहलिक वबा फैला कर उस की गलियों में ख़ून बहा
दूँगा। उसे चारों तरफ़ से तलवार घेर लेगी तो उस में
फंसे हुए लोग हलाक हो जाएंगे। तब वह जान लेंगे
कि मैं ही रब हूँ।

इस्राईल की बहाली

24 इस वक़्त इस्राईल के पड़ोसी उसे हक़ीर जानते
हैं। अब तक वह उसे चुभने वाले ख़ार और ज़ख़्मी
करने वाले काँटे हैं। लेकिन आइन्दा ऐसा नहीं होगा।
तब वह जान लेंगे कि मैं रब क़ादिर-ए-मुतलक़ हूँ।
25 क्यूँकि रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि दीगर
अक़्वाम के देखते देखते मैं ज़ाहिर करूँगा कि मैं
मुक़द्दस हूँ। क्यूँकि मैं इस्राईलियों को उन अक़्वाम में
से निकाल कर जमा करूँगा जहाँ मैं ने उन्हें मुन्तशिर
कर दिया था। तब वह अपने वतन में जा बसेंगे, उस
मुल्क में जो मैं ने अपने ख़ादिम याक़ूब को दिया था।
26 वह हिफ़ाज़त से उस में रह कर घर तामीर करेंगे
और अंगूर के बाग़ लगाएँगे। लेकिन जो पड़ोसी उन्हें
हक़ीर जानते थे उन की मैं अदालत करूँगा। तब वह
जान लेंगे कि मैं रब उन का ख़ुदा हूँ।"

मिस्र को सज़ा मिलेगी

29 1 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के
दसवें साल में रब मुझ से हमकलाम हुआ।
दसवें महीने का 11वाँ दिन [v]था। रब ने फ़रमाया,
2 "ऐ आदमज़ाद, मिस्र के बादशाह फ़िरऔन की
तरफ़ रुख़ करके उस के और तमाम मिस्र के ख़िलाफ़
नबुव्वत कर!
3 उसे बता, 'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
ऐ शाह-ए-मिस्र फ़िरऔन, मैं तुझ से निपटने को हूँ।
बेशक तू एक बड़ा अज़दहा है जो दरया-ए-नील की
मुख़्तलिफ़ शाख़ों के बीच में लेटा हुआ कहता है कि
यह दरया मेरा ही है, मैं ने ख़ुद उसे बनाया।
4 लेकिन मैं तेरे मुँह में काँटे डाल कर तुझे दरया
से निकाल लाऊँगा। मेरे कहने पर तेरी नदियों की
तमाम मछलियाँ तेरे छिलकों के साथ लग कर तेरे
साथ पकड़ी जाएँगी। 5 मैं तुझे इन तमाम मछलियों
समेत रेगिस्तान में फैंक छोड़ूँगा। तू खुले मैदान में
गिर कर पड़ा रहेगा। न कोई तुझे इकट्ठा करेगा, न
जमा करेगा बल्कि मैं तुझे दरिन्दों और परिन्दों को
खिला दूँगा। 6 तब मिस्र के तमाम बाशिन्दे जान लेंगे
कि मैं ही रब हूँ।
तू इस्राईल के लिए सरकंडे की कच्ची छड़ी साबित
हुआ है। 7 जब उन्हों ने तुझे पकड़ने की कोशिश की
तो तू ने टुकड़े टुकड़े हो कर उन के कंधे को ज़ख़्मी
कर दिया। जब उन्हों ने अपना पूरा वज़न तुझ पर
डाला तो तू टूट गया, और उन की कमर डाँवाँडोल
हो गई। 8 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता
है कि मैं तेरे ख़िलाफ़ तलवार भेजूँगा जो मुल्क में

[v] 7 जन्वरी।

से इन्सान-ओ-हैवान मिटा डालेगी। 9 मुल्क-ए-मिस्र
वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएगा। तब वह जान लेंगे कि
मैं ही रब हूँ।

चूँकि तू ने दावा किया, "दरया-ए-नील मेरा ही है, मैं
ने ख़ुद उसे बनाया" 10 इस लिए मैं तुझ से और तेरी
नदियों से निपट लूँगा। मिस्र में हर तरफ़ खंडरात नज़र
आएँगे। शिमाल में मिज्दाल से ले कर जुनूबी शहर
अस्वान बल्कि एथोपिया की सरहद तक मैं मिस्र
को वीरान-ओ-सुन्सान कर दूँगा। 11 न इन्सान और
न हैवान का पाँओ उस में से गुज़रेगा। चालीस साल
तक उस में कोई नहीं बसेगा। 12 इर्दगिर्द के दीगर
तमाम ममालिक की तरह मैं मिस्र को भी उजाड़ूँगा,
इर्दगिर्द के दीगर तमाम शहरों की तरह मैं मिस्र के
शहर भी मल्बे के ढेर बना दूँगा। चालीस साल तक
उन की यही हालत रहेगी। साथ साथ मैं मिस्रियों को
मुख़्तलिफ़ अक़्वाम-ओ-ममालिक में मुन्तशिर कर
दूँगा।

13 लेकिन रब क़ादिर-ए-मुतलक़ यह भी फ़रमाता
है कि चालीस साल के बाद मैं मिस्रियों को उन
ममालिक से निकाल कर जमा करूँगा जहाँ मैं ने
उन्हें मुन्तशिर कर दिया था। 14 मैं मिस्र को बहाल
करके उन्हें उन के आबाई वतन यानी जुनूबी मिस्र
में वापस लाऊँगा। वहाँ वह एक ग़ैरअहम सल्तनत
क़ाइम करेंगे 15 जो बाक़ी ममालिक की निस्बत छोटी
होगी। आइन्दा वह दीगर क़ौमों पर अपना रोब नहीं
डालेंगे। मैं ख़ुद ध्यान दूँगा कि वह आइन्दा इतने
कमज़ोर रहें कि दीगर क़ौमों पर हुकूमत न कर सकें।
16 आइन्दा इस्राईल न मिस्र पर भरोसा करने और न
उस से लिपट जाने की आज़माइश में पड़ेगा। तब वह
जान लेंगे कि मैं ही रब क़ादिर-ए-मुतलक़ हूँ'।"

शाह-ए-बाबल को मिस्र मिलेगा

17 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के 27वें
साल में रब मुझ से हमकलाम हुआ। पहले महीने का
पहला दिन [w]था। उस ने फ़रमाया, 18 "ऐ आदमज़ाद,
जब शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र ने सूर का मुहासरा
किया तो उस की फ़ौज को सख़्त मेहनत करनी पड़ी।
हर सर गंजा हुआ, हर कंधे की जिल्द छिल गई।
लेकिन न उसे और न उस की फ़ौज को मेहनत का
मुनासिब अज्र मिला।

19 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
मैं शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र को मिस्र दे दूँगा। उस
की दौलत को वह उठा कर ले जाएगा। अपनी फ़ौज
को पैसे देने के लिए वह मिस्र को लूट लेगा। 20 चूँकि
नबूकद्नज़्ज़र और उस की फ़ौज ने मेरे लिए ख़ूब
मेहनत-मशक़्क़त की इस लिए मैं ने उसे मुआवज़े के
तौर पर मिस्र दे दिया है। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़
का फ़रमान है।

21 जब यह कुछ पेश आएगा तो मैं इस्राईल को नई
ताक़त दूँगा। ऐ हिज़्क़ीएल, उस वक़्त मैं तेरा मुँह
खोल दूँगा, और तू दुबारा उन के दरमियान बोलेगा।
तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।"

मिस्र की ताक़त ख़त्म हो जाएगी

30 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, नबुव्वत करके यह पैग़ाम सुना
दे,

'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि आह-ओ-
ज़ारी करो! उस दिन पर अफ़्सोस 3 जो आने वाला है।
क्यूँकि रब का दिन क़रीब ही है। उस दिन घने बादल
छा जाएंगे, और मैं अक़्वाम की अदालत करूँगा।
4 मिस्र पर तलवार नाज़िल हो कर वहाँ के बाशिन्दों
को मार डालेगी। मुल्क की दौलत छीन ली जाएगी,
और उस की बुन्यादों को ढा दिया जाएगा। यह देख
कर एथोपिया लरज़ उठेगा, 5 क्यूँकि उस के लोग भी
तलवार की ज़द में आ जाएंगे। कई क़ौमों के अफ़राद
मिस्रियों के साथ हलाक हो जाएंगे। एथोपिया के,
लिबिया के, लुदिया के, मिस्र में बसने वाले तमाम

---

[w] 26 अप्रैल।

अजनबी क़ौमों के, कूब के और मेरे अह्द की क़ौम
इस्राईल के लोग हलाक हो जाएंगे। 6 रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है कि मिस्र को सहारा देने वाले सब
गिर जाएंगे, और जिस ताक़त पर वह फ़ख़र करता है
वह जाती रहेगी। शिमाल में मिज्दाल से ले कर जुनूबी
शहर अस्वान तक उन्हें तलवार मार डालेगी। यह रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है। 7 इर्दगिर्द के दीगर
ममालिक की तरह मिस्र भी वीरान-ओ-सुन्सान होगा,
इर्दगिर्द के दीगर शहरों की तरह उस के शहर भी मल्बे
के ढेर होंगे। 8 जब मैं मिस्र में यूँ आग लगा कर उस
के मददगारों को कुचल डालूँगा तो लोग जान लेंगे
कि मैं ही रब हूँ।

9 अब तक एथोपिया अपने आप को मह्फ़ूज़
समझता है, लेकिन उस दिन मेरी तरफ़ से क़ासिद
निकल कर उस मुल्क के बाशिन्दों को ऐसी ख़बर
पहुँचाएँगे जिस से वह थरथरा उठेंगे। क्यूँकि क़ासिद
कश्तियों में बैठ कर दरया-ए-नील के ज़रीए उन तक
पहुँचेंगे और उन्हें इत्तिला देंगे कि मिस्र तबाह हो
गया है। यह सुन कर वहाँ के लोग काँप उठेंगे।
यक़ीन करो, यह दिन जल्द ही आने वाला है।
10 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि शाह-ए-
बाबल नबूकद्नज़्ज़र के ज़रीए मैं मिस्र की शान-ओ-
शौकत छीन लूँगा। 11 उसे फ़ौज समेत मिस्र में लाया
जाएगा ताकि उसे तबाह करे। तब अक़्वाम में से सब
से ज़ालिम यह लोग अपनी तलवारों को चला कर
मुल्क को मक़्तूलों से भर देंगे। 12 मैं दरया-ए-नील
की शाख़ों को ख़ुश्क करूँगा और मिस्र को फ़रोख़्त
करके शरीर आदमियों के हवाले कर दूँगा। परदेसियों
के ज़रीए मैं मुल्क और जो कुछ भी उस में है तबाह
कर दूँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।

13 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं मिस्री
बुतों को बर्बाद करूँगा और मेम्फ़िस के मुजस्समे
हटा दूँगा। मिस्र में हुक्मरान नहीं रहेगा, और मैं मुल्क
पर ख़ौफ़ तारी करूँगा। 14 मेरे हुक्म पर जुनूबी मिस्र
बर्बाद और ज़ुअन नज़र-ए-आतिश होगा। मैं थीबस
की अदालत 15 और मिस्री क़िले पलूसियम पर अपना
ग़ज़ब नाज़िल करूँगा। हाँ, थीबस की शान-ओ-
शौकत नेस्त-ओ-नाबूद हो जाएगी। 16 मैं मिस्र को
नज़र-ए-आतिश करूँगा। तब पलूसियम दर्द-ए-ज़ह
में मुब्तला औरत की तरह पेच-ओ-ताब खाएगा,
थीबस दुश्मन के क़ब्ज़े में आएगा और मेम्फ़िस
मुसलसल मुसीबत में फंसा रहेगा। 17 दुश्मन की
तलवार हीलियोपुलिस और बूबस्तिस के जवानों को
मार डालेगी जबकि बची हुई औरतें ग़ुलाम बन कर
जिलावतन हो जाएँगी। 18 तह्फ़न्हीस में दिन तारीक
हो जाएगा जब मैं वहाँ मिस्र के जूए को तोड़ दूँगा।
वहीं उस की ज़बरदस्त ताक़त जाती रहेगी। घना
बादल शहर पर छा जाएगा, और गिर्द-ओ-नवाह की
आबादियाँ क़ैदी बन कर जिलावतन हो जाएँगी। 19 यूँ
मैं मिस्र की अदालत करूँगा और वह जान लेंगे कि
मैं ही रब हूँ'।"

20 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के ग्यारवें
साल में रब मुझ से हमकलाम हुआ। पहले महीने
का सातवाँ दिन [x]था। उस ने फ़रमाया था, 21 "ऐ
आदमज़ाद, मैं ने मिस्री बादशाह फ़िरऔन का बाज़ू
तोड़ डाला है। शिफ़ा पाने के लिए लाज़िम था कि
बाज़ू पर पट्टी बांधी जाए, कि टूटी हुई हड्डी के साथ
खपच्ची बांधी जाए ताकि बाज़ू मज़बूत हो कर तलवार
चलाने के क़ाबिल हो जाए। लेकिन इस क़िस्म का
इलाज हुआ नहीं।

22 चुनाँचे रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
मिस्री बादशाह फ़िरऔन से निपट कर उस के दोनों
बाज़ूओं को तोड़ डालूँगा, सेहतमन्द बाज़ू को भी और
टूटे हुए को भी। तब तलवार उस के हाथ से गिर
जाएगी 23 और मैं मिस्रियों को मुख़्तलिफ़ अक़्वाम-
ओ-ममालिक में मुन्तशिर कर दूँगा।

24 मैं शाह-ए-बाबल के बाज़ूओं को तक़वियत दे
कर उसे अपनी ही तलवार पकड़ा दूँगा। लेकिन

---

[x] 29 अप्रैल।

फ़िरऔन के बाज़ूओं को मैं तोड़ डालूँगा, और वह
शाह-ए-बाबल के सामने मरने वाले ज़ख़्मी आदमी की
तरह कराह उठेगा। 25 शाह-ए-बाबल के बाज़ूओं को
मैं तक़वियत दूँगा जबकि फ़िरऔन के बाज़ू बेहिस्स-
ओ-हरकत हो जाएंगे। जिस वक़्त मैं अपनी तलवार
को शाह-ए-बाबल को पकड़ा दूँगा और वह उसे
मिस्र के ख़िलाफ़ चलाएगा उस वक़्त लोग जान लेंगे
कि मैं ही रब हूँ। 26 हाँ, जिस वक़्त मैं मिस्रियों को
दीगर अक़्वाम-ओ-ममालिक में मुन्तशिर कर दूँगा
उस वक़्त वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

मिस्री दरख़्त धड़ाम से गिर जाएगा

31 1 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के
ग्यारवें साल में रब मुझ से हमकलाम हुआ।
तीसरे महीने का पहला दिन [y]था। उस ने फ़रमाया,
2 “ऐ आदमज़ाद, मिस्री बादशाह फ़िरऔन और उस
की शान-ओ-शौकत से कह,

‘कौन तुझ जैसा अज़ीम था? 3 तू सर्व का दरख़्त,
लुबनान का देवदार का दरख़्त था, जिस की
ख़ूबसूरत और घनी शाख़ें जंगल को साया देती थीं।
वह इतना बड़ा था कि उस की चोटी बादलों में
ओझल थी। 4 पानी की कस्रत ने उसे इतनी तरक़्क़ी
दी, गहरे चश्मों ने उसे बड़ा बना दिया। उस की
नदियाँ तने के चारों तरफ़ बहती थीं और फिर आगे
जा कर खेत के बाक़ी तमाम दरख़्तों को भी सेराब
करती थीं। 5 चुनाँचे वह दीगर दरख़्तों से कहीं ज़्यादा
बड़ा था। उस की शाख़ें बढ़ती और उस की टहनियाँ
लम्बी होती गईं। वाफ़िर पानी के बाइस वह ख़ूब
फैलता गया। 6 तमाम परिन्दे अपने घोंसले उस की
शाख़ों में बनाते थे। उस की शाख़ों की आड़ में जंगली
जानवरों के बच्चे पैदा होते, उस के साय में तमाम
अज़ीम क़ौमें बसती थीं। 7 चूँकि दरख़्त की जड़ों
को पानी की कस्रत मिलती थी इस लिए उस की
लम्बाई और शाख़ें क़ाबिल-ए-तारीफ़ और ख़ूबसूरत
बन गईं। 8 बाग़-ए-ख़ुदा के देवदार के दरख़्त उस के
बराबर नहीं थे। न जूनीपर की टहनियाँ, न चनार की
शाख़ें उस की शाख़ों के बराबर थीं। बाग़-ए-ख़ुदा में
कोई भी दरख़्त उस की ख़ूबसूरती का मुक़ाबला नहीं
कर सकता था। 9 मैं ने ख़ुद उसे मुतअद्दिद डालियाँ
मुहय्या करके ख़ूबसूरत बनाया था। अल्लाह के बाग़-
ए-अदन के तमाम दीगर दरख़्त उस से रश्क खाते
थे।

10 लेकिन अब रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है
कि जब दरख़्त इतना बड़ा हो गया कि उस की चोटी
बादलों में ओझल हो गई तो वह अपने क़द पर फ़ख़र
करके मग़ुरूर हो गया।

11 यह देख कर मैं ने उसे अक़्वाम के सब से बड़े
हुक्मरान के हवाले कर दिया ताकि वह उस की
बेदीनी के मुताबिक़ उस से निपट ले। मैं ने उसे
निकाल दिया, 12 तो अजनबी अक़्वाम के सब से
ज़ालिम लोगों ने उसे टुकड़े टुकड़े करके ज़मीन पर
छोड़ दिया। तब उस की शाख़ें पहाड़ों पर और तमाम
वादियों में गिर गईं, उस की टहनियाँ टूट कर मुल्क
की तमाम घाटियों में पड़ी रहीं। दुनिया की तमाम
अक़्वाम उस के साय में से निकल कर वहाँ से चली
गईं। 13 तमाम परिन्दे उस के कटे हुए तने पर बैठ
गए, तमाम जंगली जानवर उस की सूखी हुई शाख़ों
पर लेट गए। 14 यह इस लिए हुआ कि आइन्दा पानी
के किनारे पर लगा कोई भी दरख़्त इतना बड़ा न
हो कि उस की चोटी बादलों में ओझल हो जाए
और नतीजतन वह अपने आप को दूसरों से बरतर
समझे। क्यूँकि सब के लिए मौत और ज़मीन की
गहराइयाँ मुक़र्रर हैं, सब को पाताल में उतर कर
मुर्दों के दरमियान बसना है।

15 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि जिस वक़्त
यह दरख़्त पाताल में उतर गया उस दिन मैं ने
गहराइयों के चश्मों को उस पर मातम करने दिया
और उन की नदियों को रोक दिया ताकि पानी इतनी

---

[y] 21 जून।

कस्रत से न बहे। उस की ख़ातिर मैं ने लुबनान को
मातमी लिबास पहनाए। तब खुले मैदान के तमाम
दरख़्त मुरझा गए। 16 वह इतने धड़ाम से गिर गया
जब मैं ने उसे पाताल में उन के पास उतार दिया जो
गढ़े में उतर चुके थे कि दीगर अक़्वाम को धच्का
लगा। लेकिन बाग़-ए-अदन के बाक़ी तमाम दरख़्तों
को तसल्ली मिली। क्यूँकि गो लुबनान के इन चीदा
और बेहतरीन दरख़्तों को पानी की कस्रत मिलती
रही थी ताहम यह भी पाताल में उतर गए थे। 17 गो
यह बड़े दरख़्त की ताक़त रहे थे और अक़्वाम के
दरमियान रह कर उस के साय में अपना घर बना
लिया था तो भी यह बड़े दरख़्त के साथ वहाँ उतर
गए जहाँ मक़्तूल उन के इन्तिज़ार में थे।

18 ऐ मिस्र, अज़मत और शान के लिहाज़ से बाग़-ए-
अदन का कौन सा दरख़्त तेरा मुक़ाबला कर सकता
है? लेकिन तुझे बाग़-ए-अदन के दीगर दरख़्तों के
साथ ज़मीन की गहराइयों में उतारा जाएगा। वहाँ तू
नामख़्तूनों और मक़्तूलों के दरमियान पड़ा रहेगा। रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि यही फ़िरऔन और
उस की शान-ओ-शौकत का अन्जाम होगा'।"

अज़दहे फ़िरऔन को मारा जाएगा

32 1 यहूयाकीन बादशाह के 12वें साल में
रब मुझ से हमकलाम हुआ। 12वें महीने
का पहला दिन [z]था। मुझे यह पैग़ाम मिला, 2 "ऐ
आदमज़ाद, मिस्र के बादशाह फ़िरऔन पर मातमी
गीत गा कर उसे बता,

'गो अक़्वाम के दरमियान तुझे जवान शेरबबर
समझा जाता है, लेकिन दरहक़ीक़त तू दरया-ए-नील
की शाख़ों में रहने वाला अज़दहा है जो अपनी नदियों
को उबलने देता और पाँओ से पानी को ज़ोर से
हरकत में ला कर गदला कर देता है।

3 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं मुतअद्दिद
क़ौमों को जमा करके तेरे पास भेजूँगा ताकि तुझ पर
जाल डाल कर तुझे पानी से खैंच निकालें। 4 तब मैं
तुझे ज़ोर से ख़ुश्की पर पटख़ दूँगा, खुले मैदान पर ही
तुझे फैंक छोड़ूँगा। तमाम परिन्दे तुझ पर बैठ जाएंगे,
तमाम जंगली जानवर तुझे खा खा कर सेर हो जाएंगे।
5 तेरा गोश्त मैं पहाड़ों पर फैंक दूँगा, तेरी लाश से
वादियों को भर दूँगा। 6 तेरे बहते ख़ून से मैं ज़मीन
को पहाड़ों तक सेराब करूँगा, घाटियाँ तुझ से भर
जाएँगी।

7 जिस वक़्त मैं तेरी ज़िन्दगी की बत्ती बुझा दूँगा
उस वक़्त मैं आसमान को ढाँप दूँगा। सितारे तारीक
हो जाएंगे, सूरज बादलों में छुप जाएगा और चाँद की
रौशनी नज़र नहीं आएगी। 8 जो कुछ भी आसमान
पर चमकता दमकता है उसे मैं तेरे बाइस तारीक कर
दूँगा। तेरे पूरे मुल्क पर तारीकी छा जाएगी। यह रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।

9 बहुत क़ौमों के दिल घबरा जाएंगे जब मैं तेरे
अन्जाम की ख़बर दीगर अक़्वाम तक पहुँचाऊँगा,
ऐसे ममालिक तक जिन से तू नावाक़िफ़ है।
10 मुतअद्दिद क़ौमों के सामने ही मैं तुझ पर तलवार
चला दूँगा। यह देख कर उन पर दहशत तारी हो
जाएगी, और उन के बादशाहों के रोंगटे खड़े हो
जाएंगे। जिस दिन तू धड़ाम से गिर जाएगा उस दिन
उन पर मरने का इतना ख़ौफ़ छा जाएगा कि वह बार
बार काँप उठेंगे।

11 क्यूँकि रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
शाह-ए-बाबल की तलवार तुझ पर हम्ला करेगी।
12 तेरी शानदार फ़ौज उस के सूरमाओं की तलवार से
गिर कर हलाक हो जाएगी। दुनिया के सब से ज़ालिम
आदमी मिस्र का ग़ुरूर और उस की तमाम शान-ओ-
शौकत ख़ाक में मिला देंगे। 13 मैं वाफ़िर पानी के पास
खड़े उस के मवेशी को भी बर्बाद करूँगा। आइन्दा
यह पानी न इन्सान, न हैवान के पाँओ से गदला
होगा। 14 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि उस
वक़्त मैं होने दूँगा कि उन का पानी साफ़-शफ़्फ़ाफ़ हो

---

[z] 3 मार्च।

जाए और नदियाँ तेल की तरह बहने लगें। 15 मैं मिस्र
को वीरान-ओ-सुन्सान करके हर चीज़ से महरूम
करूँगा, मैं उस के तमाम बाशिन्दों को मार डालूँगा।
तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ'।"
16 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "लाज़िम है
कि दर्ज-ए-बाला मातमी गीत को गाया जाए। दीगर
अक़्वाम उसे गाएँ, वह मिस्र और उस की शान-ओ-
शौकत पर मातम का यह गीत ज़रूर गाएँ।"

पाताल में दीगर अक़्वाम मिस्र के इन्तिज़ार में हैं

17 यहूयाकीन बादशाह के 12वें साल में रब मुझ
से हमकलाम हुआ। महीने का 15वाँ दिन था। उस
ने फ़रमाया, 18 "ऐ आदमज़ाद, मिस्र की शान-ओ-
शौकत पर वावैला कर। उसे दीगर अज़ीम अक़्वाम
के साथ पाताल में उतार दे। उसे उन के पास पहुँचा
दे जो पहले गढ़े में पहुँच चुके हैं। 19 मिस्र को बता,
'अब तेरी ख़ूबसूरती कहाँ गई? अब तू इस में किस
का मुक़ाबला कर सकता है? उतर जा! पाताल में
नामख़्तूनों के पास ही पड़ा रह।' 20 क्यूँकि लाज़िम
है कि मिस्री मक़्तूलों के बीच में ही गिर कर हलाक
हो जाएँ। तलवार उन पर हम्ला करने के लिए खैंची
जा चुकी है। अब मिस्र को उस की तमाम शान-ओ-
शौकत के साथ घसीट कर पाताल में ले जाओ!
21 तब पाताल में बड़े सूरमे मिस्र और उस के
मददगारों का इस्तिक़्बाल करके कहेंगे, 'लो, अब
यह भी उतर आए हैं, यह भी यहाँ पड़े नामख़्तूनों
और मक़्तूलों में शामिल हो गए हैं।'
22 वहाँ असूर पहले से अपनी पूरी फ़ौज समेत पड़ा
है, और उस के इर्दगिर्द तलवार के मक़्तूलों की क़ब्रें
हैं। 23 असूर को पाताल के सब से गहरे गढ़े में क़ब्रें
मिल गईं, और इर्दगिर्द उस की फ़ौज दफ़न हुई है।
पहले यह ज़िन्दों के मुल्क में चारों तरफ़ दहशत
फैलाते थे, लेकिन अब ख़ुद तलवार से हलाक हो
गए हैं।
24 वहाँ ऐलाम भी अपनी तमाम शान-ओ-शौकत
समेत पड़ा है। उस के इर्दगिर्द दफ़न हुए फ़ौजी
तलवार की ज़द में आ गए थे। अब सब उतर कर
नामख़्तूनों में शामिल हो गए हैं, गो ज़िन्दों के मुल्क
में लोग उन से शदीद दहशत खाते थे। अब वह
भी पाताल में उतरे हुए दीगर लोगों की तरह अपनी
रुस्वाई भुगत रहे हैं। 25 ऐलाम का बिस्तर मक़्तूलों
के दरमियान ही बिछाया गया है, और उस के इर्दगिर्द
उस की तमाम शानदार फ़ौज को क़ब्रें मिल गई हैं।
सब नामख़्तून, सब मक़्तूल हैं, गो ज़िन्दों के मुल्क
में लोग उन से सख़्त दहशत खाते थे। अब वह भी
पाताल में उतरे हुए दीगर लोगों की तरह अपनी
रुस्वाई भुगत रहे हैं। उन्हें मक़्तूलों के दरमियान ही
जगह मिल गई है।
26 वहाँ मसक-तूबल भी अपनी तमाम शान-ओ-
शौकत समेत पड़ा है। उस के इर्दगिर्द दफ़न हुए फ़ौजी
तलवार की ज़द में आ गए थे। अब सब नामख़्तूनों में
शामिल हो गए हैं, गो ज़िन्दों के मुल्क में लोग उन से
शदीद दहशत खाते थे। 27 और उन्हें उन सूरमाओं के
पास जगह नहीं मिली जो क़दीम ज़माने में नामख़्तूनों
के दरमियान फ़ौत हो कर अपने हथियारों के साथ
पाताल में उतर आए थे और जिन के सरों के नीचे
तलवार रखी गई। उन का क़ुसूर उन की हड्डियों
पर पड़ा रहता है, गो ज़िन्दों के मुल्क में लोग इन
जंगजूओं से दहशत खाते थे।
28 ऐ फ़िरऔन, तू भी पाश पाश हो कर नामख़्तूनों
और मक़्तूलों के दरमियान पड़ा रहेगा। 29 अदोम
पहले से अपने बादशाहों और रईसों समेत वहाँ पहुँच
चुका होगा। गो वह पहले इतने ताक़तवर थे, लेकिन
अब मक़्तूलों में शामिल हैं, उन नामख़्तूनों में जो
पाताल में उतर गए हैं। 30 इस तरह शिमाल के तमाम
हुक्मरान और सैदा के तमाम बाशिन्दे भी वहाँ आ
मौजूद होंगे। वह भी मक़्तूलों के साथ पाताल में उतर
गए हैं। गो उन की ज़बरदस्त ताक़त लोगों में दहशत
फैलाती थी, लेकिन अब वह शर्मिन्दा हो गए हैं, अब
वह नामख़्तून हालत में मक़्तूलों के साथ पड़े हैं। वह
भी पाताल में उतरे हुए बाक़ी लोगों के साथ अपनी
रुस्वाई भुगत रहे हैं।

31 तब फ़िरऔन इन सब को देख कर तसल्ली
पाएगा, गो उस की तमाम शान-ओ-शौकत पाताल
में उतर गई होगी। रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है
कि फ़िरऔन और उस की पूरी फ़ौज तलवार की ज़द
में आ जाएंगे।
32 पहले मेरी मर्ज़ी थी कि फ़िरऔन ज़िन्दों के मुल्क
में ख़ौफ़-ओ-हिरास फैलाए, लेकिन अब उसे उस
की तमाम शान-ओ-शौकत के साथ नामख़्तूनों और
मक़्तूलों के दरमियान रखा जाएगा। यह मेरा रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।”

हिज़्क़ीएल इस्राईल का पहरेदार है

33 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 “ऐ
आदमज़ाद, अपने हमवतनों को यह पैग़ाम
पहुँचा दे,
‘जब कभी मैं किसी मुल्क में जंग छेड़ता हूँ तो उस
मुल्क के बाशिन्दे अपने मर्दों में से एक को चुन कर
अपना पहरेदार बना लेते हैं। 3 पहरेदार की ज़िम्मादारी
यह है कि जूँ ही दुश्मन नज़र आए तूँ ही नरसिंगा बजा
कर लोगों को आगाह करे। 4 उस वक़्त जो नरसिंगे
की आवाज़ सुन कर पर्वा न करे वह ख़ुद ज़िम्मादार
ठहरेगा अगर दुश्मन उस पर हम्ला करके उसे क़त्ल
करे। 5 यह उस का अपना क़ुसूर होगा, क्यूँकि उस
ने नरसिंगे की आवाज़ सुनने के बावुजूद पर्वा न की।
लेकिन अगर वह पहरेदार की ख़बर मान ले तो अपनी
जान को बचाएगा।
6 अब फ़र्ज़ करो कि पहरेदार दुश्मन को देखे लेकिन
न नरसिंगा बजाय, न लोगों को आगाह करे। अगर
नतीजे में कोई क़त्ल हो जाए तो वह अपने गुनाहों के
बाइस ही मर जाएगा। लेकिन मैं पहरेदार को उस की
मौत का ज़िम्मादार ठहराऊँगा।’
7 ऐ आदमज़ाद, मैं ने तुझे इस्राईली क़ौम की
पहरादारी करने की ज़िम्मादारी दी है। इस लिए
लाज़िम है कि जब भी मैं कुछ फ़रमाऊँ तो तू मेरी
सुन कर इस्राईलियों को मेरी तरफ़ से आगाह करे।
8 अगर मैं किसी बेदीन को बताना चाहूँ, ‘तू यक़ीनन
मरेगा’ तो लाज़िम है कि तू उसे यह सुना कर उस
की ग़लत राह से आगाह करे। अगर तू ऐसा न करे
तो गो बेदीन अपने गुनाहों के बाइस ही मरेगा ताहम
मैं तुझे ही उस की मौत का ज़िम्मादार ठहराऊँगा।
9 लेकिन अगर तू उसे उस की ग़लत राह से आगाह
करे और वह न माने तो वह अपने गुनाहों के बाइस
मरेगा, लेकिन तू ने अपनी जान को बचाया होगा।

तौबा करो!

10 ऐ आदमज़ाद, इस्राईलियों को बता, तुम आहें
भर भर कर कहते हो, ‘हाय हम अपने जराइम और
गुनाहों के बाइस गल सड़ कर तबाह हो रहे हैं।
हम किस तरह जीते रहें?’ 11 लेकिन रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है, ‘मेरी हयात की क़सम, मैं बेदीन
की मौत से ख़ुश नहीं होता बल्कि मैं चाहता हूँ कि
वह अपनी ग़लत राह से हट कर ज़िन्दा रहे। चुनाँचे
तौबा करो! अपनी ग़लत राहों को तर्क करके वापस
आओ! ऐ इस्राईली क़ौम, क्या ज़रूरत है कि तू मर
जाए?’
12 ऐ आदमज़ाद, अपने हमवतनों को बता,
‘अगर रास्तबाज़ ग़लत काम करे तो यह बात उसे
नहीं बचाएगी कि पहले रास्तबाज़ था। अगर वह
गुनाह करे तो उसे ज़िन्दा नहीं छोड़ा जाएगा। इस के
मुक़ाबले में अगर बेदीन अपनी बेदीनी से तौबा करके
वापस आए तो यह बात उस की तबाही का बाइस
नहीं बनेगी कि पहले बेदीन था।’ 13 हो सकता है मैं
रास्तबाज़ को बताऊँ, ‘तू ज़िन्दा रहेगा।’ अगर वह
यह सुन कर समझने लगे, ‘मेरी रास्तबाज़ी मुझे हर
सूरत में बचाएगी’ और नतीजे में ग़लत काम करे तो
मैं उस के तमाम रास्त कामों का लिहाज़ नहीं करूँगा
बल्कि उस के ग़लत काम के बाइस उसे सज़ा-ए-मौत
दूँगा। 14 लेकिन फ़र्ज़ करो मैं किसी बेदीन आदमी
को बताऊँ, ‘तू यक़ीनन मरेगा।’ हो सकता है वह
यह सुन कर अपने गुनाह से तौबा करके इन्साफ़
और रास्तबाज़ी करने लगे। 15 वह अपने क़र्ज़दार
को वह कुछ वापस करे जो ज़मानत के तौर पर

मिला था, वह चोरी हुई चीज़ें वापस कर दे, वह ज़िन्दगीबख़्श हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे, ग़रज़ वह हर बुरे काम से गुरेज़ करे। इस सूरत में वह मरेगा नहीं बल्कि ज़िन्दा ही रहेगा। 16 जो भी गुनाह उस से सरज़द हुए थे वह मैं याद नहीं करूँगा। चूँकि उस ने बाद में वह कुछ किया जो मुन्सिफ़ाना और रास्त था इस लिए वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा।

17 तेरे हमवतन एतिराज़ करते हैं कि रब का सुलूक सहीह नहीं है जबकि उन का अपना सुलूक सहीह नहीं है। 18 अगर रास्तबाज़ अपना रास्त चाल-चलन छोड़ कर बदी करने लगे तो उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी। 19 इस के मुक़ाबले में अगर बेदीन अपना बेदीन चाल-चलन छोड़ कर वह कुछ करने लगे जो मुन्सिफ़ाना और रास्त है तो वह इस बिना पर ज़िन्दा रहेगा।

20 ऐ इस्राईलियो, तुम दावा करते हो कि रब का सुलूक सहीह नहीं है। लेकिन ऐसा हरगिज़ नहीं है! तुम्हारी अदालत करते वक़्त मैं हर एक के चाल-चलन का ख़याल करूँगा।"

यरूशलम पर दुश्मन के क़ब्ज़े की ख़बर

21 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के 12वें साल में एक आदमी मेरे पास आया। 10वें महीने का पाँचवाँ दिन [a]था। यह आदमी यरूशलम से भाग निकला था। उस ने कहा, "यरूशलम दुश्मन के क़ब्ज़े में आ गया है!"

22 एक दिन पहले रब का हाथ शाम के वक़्त मुझ पर आया था, और अगले दिन जब यह आदमी सुब्ह के वक़्त पहुँचा तो रब ने मेरे मुँह को खोल दिया, और मैं दुबारा बोल सका।

बचे हुए इस्राईली अपने आप पर ग़लत एतिमाद करते हैं

23 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 24 "ऐ आदमज़ाद, मुल्क-ए-इस्राईल के खंडरात में रहने वाले लोग कह रहे हैं, 'गो इब्राहीम सिर्फ़ एक आदमी था तो भी उस ने पूरे मुल्क पर क़ब्ज़ा किया। उस की निस्बत हम बहुत हैं, इस लिए लाज़िम है कि हमें यह मुल्क हासिल हो।' 25 उन्हें बता,

'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुम गोश्त खाते हो जिस में ख़ून है, तुम्हारे हाँ बुतपरस्ती और ख़ूँरेज़ी आम है। तो फिर मुल्क किस तरह तुम्हें हासिल हो सकता है? 26 तुम अपनी तलवार पर भरोसा रख कर क़ाबिल-ए-घिन हरकतें करते हो, हत्ता कि हर एक अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करता है। तो फिर मुल्क किस तरह तुम्हें हासिल हो सकता है?'

27 उन्हें बता, 'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, जो इस्राईल के खंडरात में रहते हैं वह तलवार की ज़द में आ कर हलाक हो जाएंगे, जो बच कर खुले मैदान में जा बसे हैं उन्हें मैं दरिन्दों को खिला दूँगा, और जिन्हों ने पहाड़ी क़िलों और ग़ारों में पनाह ली है वह मोहलिक बीमारियों का शिकार हो जाएंगे। 28 मैं मुल्क को वीरान-ओ-सुन्सान कर दूँगा। जिस ताक़त पर वह फ़ख़र करते हैं वह जाती रहेगी। इस्राईल का पहाड़ी इलाक़ा भी इतना तबाह हो जाएगा कि लोग उस में से गुज़रने से गुरेज़ करेंगे। 29 फिर जब मैं मुल्क को उन की मकरूह हरकतों के बाइस वीरान-ओ-सुन्सान कर दूँगा तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।'

जिलावतन इस्राईलियों की बेपर्वाई

30 ऐ आदमज़ाद, तेरे हमवतन अपने घरों की दीवारों और दरवाज़ों के पास खड़े हो कर तेरा ज़िक्र

---

[a] 8 जन्वरी।

करते हैं। वह कहते हैं, 'आओ, हम नबी के पास
जा कर वह पैग़ाम सुनें जो रब की तरफ़ से आया
है।' 31 लेकिन गो इन लोगों के हुजूम आ कर तेरे
पैग़ामात सुनने के लिए तेरे सामने बैठ जाते हैं तो भी
वह उन पर अमल नहीं करते। क्यूँकि उन की ज़बान
पर इश्क़ के ही गीत हैं। उन ही पर वह अमल करते
हैं, जबकि उन का दिल नारवा नफ़ा के पीछे पड़ा
रहता है। 32 असल में वह तेरी बातें यूँ सुनते हैं जिस
तरह किसी गुलूकार के गीत जो महारत से साज़ बजा
कर सुरीली आवाज़ से इश्क़ के गीत गाए । गो वह
तेरी बातें सुन कर ख़ुश हो जाते हैं तो भी उन पर
अमल नहीं करते। 33 लेकिन यक़ीनन एक दिन आने
वाला है जब वह जान लेंगे कि हमारे दरमियान नबी
रहा है।"

इस्राईल के बेपरवा गल्लाबान

34 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, इस्राईल के गल्लाबानों के
ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! उन्हें बता,

'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि इस्राईल के
गल्लाबानों पर अफ़सोस जो सिर्फ़ अपनी ही फ़िक्र
करते हैं। क्या गल्लाबान को रेवड़ की फ़िक्र नहीं
करनी चाहिए? 3 तुम भेड़-बकरियों का दूध पीते,
उन की ऊन के कपड़े पहनते और बेहतरीन जानवरों
का गोश्त खाते हो। तो भी तुम रेवड़ की देख-भाल
नहीं करते! 4 न तुम ने कमज़ोरों को तक़वियत, न
बीमारों को शिफ़ा दी या ज़ख़्मियों की मर्हम-पट्टी
की। न तुम आवारा फिरने वालों को वापस लाए,
न गुमशुदा जानवरों को तलाश किया बल्कि सख़्ती
और ज़ालिमाना तरीक़े से उन पर हुकूमत करते रहे।
5 गल्लाबान न होने की वजह से भेड़-बकरियाँ तित्तर-
बित्तर हो कर दरिन्दों का शिकार हो गईं। 6 मेरी
भेड़-बकरियाँ तमाम पहाड़ों और बुलन्द जगहों पर
आवारा फिरती रहीं। सारी ज़मीन पर वह मुन्तशिर
हो गईं, और कोई नहीं था जो उन्हें ढूँड कर वापस
लाता।

7 चुनाँचे ऐ गल्लाबानो, रब का जवाब सुनो! 8 रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात की
क़सम, मेरी भेड़-बकरियाँ लुटेरों का शिकार और
तमाम दरिन्दों की ग़िज़ा बन गई हैं। उन की देख-
भाल करने वाला कोई नहीं है। मेरे गल्लाबान मेरे रेवड़
को ढूँड कर वापस नहीं लाते बल्कि सिर्फ़ अपना
ही ख़याल करते हैं। 9 चुनाँचे ऐ गल्लाबानो, रब का
जवाब सुनो! 10 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
मैं गल्लाबानों से निपट कर उन्हें अपनी भेड़-बकरियों
के लिए ज़िम्मादार ठहराऊँगा। तब मैं उन्हें गल्लाबानी
की ज़िम्मादारी से फ़ारिग़ करूँगा ताकि सिर्फ़ अपना
ही ख़याल करने का सिलसिला ख़त्म हो जाए। मैं
अपनी भेड़-बकरियों को उन के मुँह से निकाल कर
बचाऊँगा ताकि आइन्दा वह उन्हें न खाएँ।

अल्लाह अच्छा चरवाहा है

11 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि आइन्दा
मैं ख़ुद अपनी भेड़-बकरियों को ढूँड कर वापस
लाऊँगा, ख़ुद उन की देख-भाल करूँगा। 12 जिस
तरह चरवाहा चारों तरफ़ बिखरी हुई अपनी भेड़-
बकरियों को इकट्ठा करके उन की देख-भाल करता
है उसी तरह मैं अपनी भेड़-बकरियों की देख-भाल
करूँगा। मैं उन्हें उन तमाम मक़ामों से निकाल कर
बचाऊँगा जहाँ उन्हें घने बादलों और तारीकी के दिन
मुन्तशिर कर दिया गया था। 13 मैं उन्हें दीगर अक़्वाम
और ममालिक में से निकाल कर जमा करूँगा और
उन्हें उन के अपने मुल्क में वापस ला कर इस्राईल के
पहाड़ों, घाटियों और तमाम आबादियों में चराऊँगा।
14 तब मैं अच्छी चरागाहों में उन की देख-भाल
करूँगा, और वह इस्राईल की बुलन्दियों पर ही
चरेंगी। वहाँ वह सरसब्ज़ मैदानों में आराम करके
इस्राईल के पहाड़ों पर बेहतरीन घास चरेंगी। 15 रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं ख़ुद अपनी भेड़-
बकरियों की देख-भाल करूँगा, ख़ुद उन्हें बिठाऊँगा।

16 मैं गुमशुदा भेड़-बकरियों का खोज लगाऊँगा
और आवारा फिरने वालों को वापस लाऊँगा। मैं

ज़ख़्मियों की मर्हम-पट्टी करूँगा और कमज़ोरों को तक़वियत दूँगा। लेकिन मोटे-ताज़े और ताक़तवर जानवरों को मैं ख़त्म करूँगा। मैं इन्साफ़ से रेवड़ की गल्लाबानी करूँगा।

17 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ मेरे रेवड़, जहाँ भेड़ों, मेंढों और बकरों के दरमियान नाइन्साफ़ी है वहाँ मैं उन की अदालत करूँगा। 18 क्या यह तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं कि तुम्हें खाने के लिए चरागाह का बेहतरीन हिस्सा और पीने के लिए साफ़-शफ़्फ़ाफ़ पानी मिल गया है? तुम बाक़ी चरागाह को क्यूँ रौंदते और बाक़ी पानी को पाँओ से गदला करते हो? 19 मेरा रेवड़ क्यूँ तुम से कुचली हुई घास खाए और तुम्हारा गदला किया हुआ पानी पिए?

20 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि जहाँ मोटी और दुबली भेड़-बकरियों के दरमियान नाइन्साफ़ी है वहाँ मैं ख़ुद फ़ैसला करूँगा। 21 क्यूँकि तुम मोटी भेड़ों ने कमज़ोरों को कंधों से धक्का दे कर और सींगों से मार मार कर अच्छी घास से भगा दिया है। 22 लेकिन मैं अपनी भेड़-बकरियों को तुम से बचा लूँगा। आइन्दा उन्हें लूटा नहीं जाएगा बल्कि मैं ख़ुद उन में इन्साफ़ क़ाइम रखूँगा।

अम्न-ओ-अमान की सल्तनत

23 मैं उन पर एक ही गल्लाबान यानी अपने ख़ादिम दाऊद को मुक़र्रर करूँगा जो उन्हें चरा कर उन की देख-भाल करेगा। वही उन का सहीह चरवाहा रहेगा। 24 मैं, रब उन का ख़ुदा हूँगा और मेरा ख़ादिम दाऊद उन के दरमियान उन का हुक्मरान होगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।

25 मैं इस्राईलियों के साथ सलामती का अह्द बांध कर दरिन्दों को मुल्क से निकाल दूँगा। फिर वह हिफ़ाज़त से सो सकेंगे, ख़्वाह रेगिस्तान में हों या जंगल में। 26 मैं उन्हें और अपने पहाड़ के इर्दगिर्द के इलाक़े को बरकत दूँगा। मैं मुल्क में वक़्त पर बारिश बरसाता रहूँगा। ऐसी मुबारक बारिशें होंगी 27 कि मुल्क के बाग़ों और खेतों में ज़बरदस्त फ़सलें पकेंगी। लोग अपने मुल्क में महफ़ूज़ होंगे। फिर जब मैं उन के जूए को तोड़ कर उन्हें उन से रिहाई दूँगा जिन्हों ने उन्हें ग़ुलाम बनाया था तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। 28 आइन्दा न दीगर अक़्वाम उन्हें लूटेंगी, न वह दरिन्दों की ख़ुराक बनेंगे बल्कि वह हिफ़ाज़त से अपने घरों में बसेंगे। डराने वाला कोई नहीं होगा। 29 मेरे हुक्म पर ज़मीन ऐसी फ़सलें पैदा करेगी जिन की शुहरत दूर दूर तक फैलेगी। आइन्दा न वह भूके मरेंगे, न उन्हें दीगर अक़्वाम की लान-तान सुननी पड़ेगी। 30 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा फ़रमाता है कि उस वक़्त वह जान लेंगे कि मैं जो रब उन का ख़ुदा हूँ उन के साथ हूँ, कि इस्राईली मेरी क़ौम हैं। 31 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुम मेरा रेवड़, मेरी चरागाह की भेड़-बकरियाँ हो। तुम मेरे लोग, और मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँ'।"

अदोम रेगिस्तान बनेगा

35 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ आदमज़ाद, सईर के पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ रुख़ करके उस के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! 3 उसे बता,

'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ सईर के पहाड़ी इलाक़े, अब मैं तुझ से निपट लूँगा। मैं अपना हाथ तेरे ख़िलाफ़ उठा कर तुझे वीरान-ओ-सुन्सान कर दूँगा। 4 मैं तेरे शहरों को मल्बे के ढेर बना दूँगा, और तू सरासर उजड़ जाएगा। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।

5 तू हमेशा इस्राईलियों का सख़्त दुश्मन रहा है, और जब उन पर आफ़त आई और उन की सज़ा उरूज तक पहुँची तो तू भी तलवार ले कर उन पर टूट पड़ा। 6 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, मैं तुझे क़त्ल-ओ-ग़ारत के हवाले करूँगा, और क़त्ल-ओ-ग़ारत तेरा ताक़्क़ुब करती रहेगी। चूँकि तू ने क़त्ल-ओ-ग़ारत करने से नफ़रत न की, इस लिए क़त्ल-ओ-ग़ारत तेरे पीछे पड़ी

रहेगी। 7 मैं सईर के पहाड़ी इलाक़े को वीरान-ओ-
सुन्सान करके वहाँ के तमाम आने जाने वालों को
मिटा डालूँगा। 8 तेरे पहाड़ी इलाक़े को मैं मक़्तूलों से
भर दूँगा। तलवार की ज़द में आने वाले हर तरफ़ पड़े
रहेंगे। तेरी पहाड़ियों, वादियों और तमाम घाटियों में
लाशें नज़र आएँगी । 9 मेरे हुक्म पर तू अबद तक
वीरान रहेगा, और तेरे शहर ग़ैरआबाद रहेंगे। तब तू
जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।

10 तू बोला, "इस्राईल और यहूदाह की दोनों क़ौमें
अपने इलाक़ों समेत मेरी ही हैं! आओ हम उन पर
क़ब्ज़ा करें।" तुझे ख़याल तक नहीं आया कि रब
वहाँ मौजूद है। 11 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, मैं तुझ से वही
सुलूक करूँगा जो तू ने उन से किया जब तू ने ग़ुस्से
और हसद के आलम में उन पर अपनी पूरी नफ़रत का
इज़हार किया। लेकिन उन ही पर मैं अपने आप को
ज़ाहिर करूँगा जब मैं तेरी अदालत करूँगा। 12 उस
वक़्त तू जान लेगा कि मैं, रब ने वह तमाम कुफ़्र सुन
लिया है जो तू ने इस्राईल के पहाड़ों के ख़िलाफ़ बका
है। क्यूँकि तू ने कहा, "यह उजड़ गए हैं, अब यह
हमारे क़ब्ज़े में आ गए हैं और हम उन्हें खा सकते
हैं।" 13 तू ने शेख़ी मार मार कर मेरे ख़िलाफ़ कुफ़्र
बका है, लेकिन ख़बरदार! मैं ने इन तमाम बातों पर
तवज्जुह दी है। 14 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है
कि तू ने ख़ुशी मनाई कि पूरा मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान
है, लेकिन मैं तुझे भी उतना ही वीरान कर दूँगा। 15 तू
कितना ख़ुश हुआ जब इस्राईल की मौरूसी ज़मीन
उजड़ गई! अब मैं तेरे साथ भी ऐसा ही करूँगा। ऐ
सईर के पहाड़ी इलाक़े, तू पूरे अदोम समेत वीरान-
ओ-सुन्सान हो जाएगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही
रब हूँ।'

इस्राईल अपने वतन वापस आएगा

36 1 ऐ आदमज़ाद, इस्राईल के पहाड़ों के बारे
में नबुव्वत करके कह,
'ऐ इस्राईल के पहाड़ो, रब का कलाम सुनो! 2 रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि दुश्मन बग़लें बजा
कर कहता है कि क्या ख़ूब, इस्राईल की क़दीम
बुलन्दियाँ हमारे क़ब्ज़े में आ गई हैं! 3 क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है कि उन्हों ने तुम्हें उजाड़ दिया,
तुम्हें चारों तरफ़ से तंग किया है। नतीजे में तुम दीगर
अक़्वाम के क़ब्ज़े में आ गई हो और लोग तुम पर
कुफ़्र बकने लगे हैं। 4 चुनाँचे ऐ इस्राईल के पहाड़ो,
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का कलाम सुनो!

रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ पहाड़ो
और पहाड़ियो, ऐ घाटियो और वादियो, ऐ खंडरात
और इन्सान से ख़ाली शहरो, तुम गिर्द-ओ-नवाह की
अक़्वाम के लिए लूट-मार और मज़ाक़ का निशाना
बन गए हो।

5 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
ने बड़ी ग़ैरत से इन बाक़ी अक़्वाम की सरज़निश की
है, ख़ासकर अदोम की। क्यूँकि वह मेरी क़ौम का
नुक़्सान देख कर शादियाना बजाने लगीं और अपनी
हिक़ारत का इज़हार करके मेरे मुल्क पर क़ब्ज़ा
किया ताकि उस की चरागाह को लूट लें। 6 ऐ पहाड़ो
और पहाड़ियो, ऐ घाटियो और वादियो, रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि चूँकि दीगर अक़्वाम ने
तेरी इतनी रुस्वाई की है इस लिए मैं अपनी ग़ैरत
और अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा। 7 मैं रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ अपना हाथ उठा कर क़सम खाता
हूँ कि गिर्द-ओ-नवाह की इन अक़्वाम की भी रुस्वाई
की जाएगी।

8 लेकिन ऐ इस्राईल के पहाड़ो, तुम पर दुबारा
हरियाली फले फूलेगी। तुम नए सिरे से मेरी क़ौम
इस्राईल के लिए फल लाओगे, क्यूँकि वह जल्द ही
वापस आने वाली है। 9 मैं दुबारा तुम्हारी तरफ़ रुजू
करूँगा, दुबारा तुम पर मेहरबानी करूँगा। तब लोग
नए सिरे से तुम पर हल चला कर बीज बोएँगे।

10 मैं तुम पर की आबादी बढ़ा दूँगा। क्यूँकि तमाम
इस्राईली आ कर तुम्हारी ढलानों पर अपने घर बना
लेंगे। तुम्हारे शहर दुबारा आबाद हो जाएंगे, और

खंडरात की जगह नए घर बन जाएंगे। 11 मैं तुम पर
बसने वाले इन्सान-ओ-हैवान की तादाद बढ़ा दूँगा,
और वह बढ़ कर फलें फूलेंगे। मैं होने दूँगा कि तुम्हारे
इलाक़े में माज़ी की तरह आबादी होगी, पहले की
निस्बत मैं तुम पर कहीं ज़्यादा मेहरबानी करूँगा।
तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

12 मैं अपनी क़ौम इस्राईल को तुम्हारे पास पहुँचा
दूँगा, और वह दुबारा तुम्हारी ढलानों पर घूमते
फिरेंगे। वह तुम पर क़ब्ज़ा करेंगे, और तुम उन की
मौरूसी ज़मीन होगे। आइन्दा कभी तुम उन्हें उन
की औलाद से महरूम नहीं करोगे। 13 रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि बेशक लोग तुम्हारे बारे में
कहते हैं कि तुम लोगों को हड़प करके अपनी क़ौम
को उस की औलाद से महरूम कर देते हो। 14 लेकिन
आइन्दा ऐसा नहीं होगा। आइन्दा तुम न आदमियों
को हड़प करोगे, न अपनी क़ौम को उस की औलाद
से महरूम करोगे। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का
फ़रमान है। 15 मैं ख़ुद होने दूँगा कि आइन्दा तुम्हें
दीगर अक़्वाम की लान-तान नहीं सुननी पड़ेगी।
आइन्दा तुम्हें उन का मज़ाक़ बर्दाश्त नहीं करना
पड़ेगा, क्यूँकि ऐसा कभी होगा नहीं कि तुम अपनी
क़ौम के लिए ठोकर का बाइस हो। यह रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ का फ़रमान है'।"

अल्लाह अपनी क़ौम को नया दिल और नया रूह बख़्शेगा

16 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 17 "ऐ आदमज़ाद,
जब इस्राईली अपने मुल्क में आबाद थे तो मुल्क उन
के चाल-चलन और हरकतों से नापाक हुआ। वह
अपने बुरे रवय्ये के बाइस मेरी नज़र में माहवारी में
मुब्तला औरत की तरह नापाक थे। 18 उन के हाथों
लोग क़त्ल हुए, उन की बुतपरस्ती से मुल्क नापाक
हो गया।

जवाब में मैं ने उन पर अपना ग़ज़ब नाज़िल किया।
19 मैं ने उन्हें मुख़्तलिफ़ अक़्वाम-ओ-ममालिक में
मुन्तशिर करके उन के चाल-चलन और ग़लत कामों
की मुनासिब सज़ा दी। 20 लेकिन जहाँ भी वह पहुँचे
वहाँ उन ही के सबब से मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती
हुई। क्यूँकि जिन से भी उन की मुलाक़ात हुई उन्हों
ने कहा, 'गो यह रब की क़ौम हैं तो भी इन्हें उस
के मुल्क को छोड़ना पड़ा!' 21 यह देख कर कि जिस
क़ौम में भी इस्राईली जा बसे वहाँ उन्हों ने मेरे मुक़द्दस
नाम की बेहुरमती की मैं अपने नाम की फ़िक्र करने
लगा। 22 इस लिए इस्राईली क़ौम को बता,

'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि जो कुछ मैं
करने वाला हूँ वह मैं तेरी ख़ातिर नहीं करूँगा बल्कि
अपने मुक़द्दस नाम की ख़ातिर। क्यूँकि तुम ने दीगर
अक़्वाम में मुन्तशिर हो कर उस की बेहुरमती की
है। 23 मैं ज़ाहिर करूँगा कि मेरा अज़ीम नाम कितना
मुक़द्दस है। तुम ने दीगर अक़्वाम के दरमियान रह कर
उस की बेहुरमती की है, लेकिन मैं उन की मौजूदगी
में तुम्हारी मदद करके अपना मुक़द्दस किरदार उन
पर ज़ाहिर करूँगा। तब वह जान लेंगी कि मैं ही रब
हूँ। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।

24 मैं तुम्हें दीगर अक़्वाम-ओ-ममालिक से निकाल
दूँगा और तुम्हें जमा करके तुम्हारे अपने मुल्क में
वापस लाऊँगा। 25 मैं तुम पर साफ़ पानी छिड़कूँगा
तो तुम पाक-साफ़ हो जाओगे। हाँ, मैं तुम्हें तमाम
नापाकियों और बुतों से पाक-साफ़ कर दूँगा।

26 तब मैं तुम्हें नया दिल बख़्श कर तुम में नई रूह
डाल दूँगा। मैं तुम्हारा संगीन दिल निकाल कर तुम्हें
गोश्त-पोस्त का नर्म दिल अता करूँगा। 27 क्यूँकि मैं
अपना ही रूह तुम में डाल कर तुम्हें इस क़ाबिल
बना दूँगा कि तुम मेरी हिदायात की पैरवी और मेरे
अह्काम पर ध्यान से अमल कर सको। 28 तब तुम
दुबारा उस मुल्क में सुकूनत करोगे जो मैं ने तुम्हारे
बापदादा को दिया था। तुम मेरी क़ौम होगे, और
मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँगा। 29 मैं ख़ुद तुम्हें तुम्हारी तमाम
नापाकी से छुड़ाऊँगा। आइन्दा मैं तुम्हारे मुल्क में
काल पड़ने नहीं दूँगा बल्कि अनाज को उगने और
बढ़ने का हुक्म दूँगा। 30 मैं बाग़ों और खेतों की
पैदावार बढ़ा दूँगा ताकि आइन्दा तुम्हें मुल्क में काल

पड़ने के बाइस दीगर क़ौमों के ताने सुनने न पड़ें।
31 तब तुम्हारी बुरी राहें और ग़लत हरकतें तुम्हें याद
आएँगी, और तुम अपने गुनाहों और बुतपरस्ती के
बाइस अपने आप से घिन खाओगे। 32 लेकिन याद
रहे कि मैं यह सब कुछ तुम्हारी ख़ातिर नहीं कर रहा।
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ इस्राईली
क़ौम, शर्म करो! अपने चाल-चलन पर शर्मसार हो!

33 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि जिस दिन
मैं तुम्हें तुम्हारे तमाम गुनाहों से पाक-साफ़ करूँगा
उस दिन मैं तुम्हें दुबारा तुम्हारे शहरों में आबाद
करूँगा। तब खंडरात पर नए घर बनेंगे। 34 गो इस
वक़्त मुल्क में से गुज़रने वाले हर मुसाफ़िर को उस
की तबाहशुदा हालत नज़र आती है, लेकिन उस
वक़्त ऐसा नहीं होगा बल्कि ज़मीन की खेतीबाड़ी
की जाएगी। 35 लोग यह देख कर कहेंगे, "पहले सब
कुछ वीरान-ओ-सुन्सान था, लेकिन अब मुल्क बाग़-
ए-अदन बन गया है! पहले उस के शहर ज़मीनबोस
थे और उन की जगह मल्बे के ढेर नज़र आते थे।
लेकिन अब उन की नए सिरे से क़िलाबन्दी हो गई
है और लोग उन में आबाद हैं।" 36 फिर इर्दगिर्द की
जितनी क़ौमें बच गई होंगी वह जान लेंगी कि मैं,
रब ने नए सिरे से वह कुछ तामीर किया है जो पहले
ढा दिया गया था, मैं ने वीरान ज़मीन में दुबारा पौदे
लगाए हैं। यह मेरा, रब का फ़रमान है, और मैं यह
करूँगा भी।

37 क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि एक बार फिर
मैं इस्राईली क़ौम की इल्तिजाएँ सुन कर बाशिन्दों
की तादाद रेवड़ की तरह बढ़ा दूँगा। 38 जिस तरह
माज़ी में ईद के दिन यरूशलम में हर तरफ़ क़ुर्बानी
की भेड़-बकरियाँ नज़र आती थीं उसी तरह मुल्क के
शहरों में दुबारा हुजूम के हुजूम नज़र आएँगे। तब वह
जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ'।"

हड्डियों से भरी वादी की रोया

37 1 एक दिन रब का हाथ मुझ पर आ ठहरा।
रब ने मुझे अपने रूह से बाहर ले जा कर
एक खुली वादी के बीच में खड़ा किया। वादी हड्डियों
से भरी थी। 2 उस ने मुझे उन में से गुज़रने दिया तो
मैं ने देखा कि वादी की ज़मीन पर बेशुमार हड्डियाँ
बिखरी पड़ी हैं। यह हड्डियाँ सरासर सूखी हुई थीं।

3 रब ने मुझ से पूछा, "ऐ आदमज़ाद, क्या यह
हड्डियाँ दुबारा ज़िन्दा हो सकती हैं?" मैं ने जवाब
दिया, "ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, तू ही जानता है।"

4 तब उस ने फ़रमाया, "नबुव्वत करके हड्डियों को
बता, 'ऐ सूखी हुई हड्डियो, रब का कलाम सुनो!
5 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं तुम में दम
डालूँगा तो तुम दुबारा ज़िन्दा हो जाओगी। 6 मैं तुम
पर नसें और गोश्त चढ़ा कर सब कुछ जिल्द से ढाँप
दूँगा। मैं तुम में दम डाल दूँगा, और तुम ज़िन्दा हो
जाओगी। तब तुम जान लोगी कि मैं ही रब हूँ'।"

7 मैं ने ऐसा ही किया। और जूँ ही मैं नबुव्वत करने
लगा तो शोर मच गया। हड्डियाँ खड़खड़ाते हुए एक
दूसरी के साथ जुड़ गईं, और होते होते पूरे ढाँचे बन
गए। 8 मेरे देखते देखते नसें और गोश्त ढाँचों पर चढ़
गया और सब कुछ जिल्द से ढाँपा गया। लेकिन अब
तक जिस्मों में दम नहीं था।

9 फिर रब ने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत
करके दम से मुख़ातिब हो जा, 'ऐ दम, रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि चारों तरफ़ से आ कर
मक़्तूलों पर फूँक मार ताकि दुबारा ज़िन्दा हो जाएँ'।"

10 मैं ने ऐसा ही किया तो मक़्तूलों में दम आ गया,
और वह ज़िन्दा हो कर अपने पाँओ पर खड़े हो गए।
एक निहायत बड़ी फ़ौज वुजूद में आ गई थी!

11 तब रब ने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, यह हड्डियाँ
इस्राईली क़ौम के तमाम अफ़राद हैं। वह कहते हैं,
'हमारी हड्डियाँ सूख गई हैं, हमारी उम्मीद जाती रही
है। हम ख़त्म ही हो गए हैं!' 12 चुनाँचे नबुव्वत करके
उन्हें बता,

'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ मेरी क़ौम,
मैं तुम्हारी क़ब्रों को खोल दूँगा और तुम्हें उन में से
निकाल कर मुल्क-ए-इस्राईल में वापस लाऊँगा। 13 ऐ
मेरी क़ौम, जब मैं तुम्हारी क़ब्रों को खोल दूँगा और

तुम्हें उन में से निकाल लाऊँगा तब तुम जान लोगे
कि मैं ही रब हूँ। 14 मैं अपना रूह तुम में डाल दूँगा
तो तुम ज़िन्दा हो जाओगे। फिर मैं तुम्हें तुम्हारे अपने
मुल्क में बसा दूँगा। तब तुम जान लोगे कि यह मेरा,
रब का फ़रमान है और मैं यह करूँगा भी'।"

यहूदाह और इस्राईल मुत्तहिद हो जाएंगे

15 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 16 "ऐ आदमज़ाद,
लकड़ी का टुकड़ा ले कर उस पर लिख दे, 'जुनूबी
क़बीला यहूदाह और जितने इस्राईली क़बीले उस के
साथ मुत्तहिद हैं।' फिर लकड़ी का एक और टुकड़ा
ले कर उस पर लिख दे, 'शिमाली क़बीला यूसुफ़
यानी इफ़्राईम और जितने इस्राईली क़बीले उस के
साथ मुत्तहिद हैं।' 17 अब लकड़ी के दोनों टुकड़े एक
दूसरे के साथ यूँ जोड़ दे कि तेरे हाथ में एक हो जाएँ।
18 तेरे हमवतन तुझ से पूछेंगे, 'क्या आप हमें इस
का मतलब नहीं बताएँगे?' 19 तब उन्हें बता, 'रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं यूसुफ़ यानी
लकड़ी के मालिक इफ़्राईम और उस के साथ मुत्तहिद
इस्राईली क़बीलों को ले कर यहूदाह की लकड़ी के
साथ जोड़ दूँगा। मेरे हाथ में वह लकड़ी का एक ही
टुकड़ा बन जाएंगे।'
20 अपने हमवतनों की मौजूदगी में लकड़ी के
मज़कूरा टुकड़े हाथ में थामे रख 21 और साथ साथ
उन्हें बता, 'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
इस्राईलियों को उन क़ौमों में से निकाल लाऊँगा जहाँ
वह जा बसे हैं। मैं उन्हें जमा करके उन के अपने
मुल्क में वापस लाऊँगा। 22 वहीं इस्राईल के पहाड़ों
पर मैं उन्हें मुत्तहिद करके एक ही क़ौम बना दूँगा।
उन पर एक ही बादशाह हुकूमत करेगा। आइन्दा
वह न कभी दो क़ौमों में तक़्सीम हो जाएंगे, न दो
सल्तनतों में। 23 आइन्दा वह अपने आप को न अपने
बुतों या बाक़ी मकरूह चीज़ों से नापाक करेंगे, न
उन गुनाहों से जो अब तक करते आए हैं। मैं उन्हें
उन तमाम मक़ामों से निकाल कर छुड़ाऊँगा जिन में
उन्हों ने गुनाह किया है। मैं उन्हें पाक-साफ़ करूँगा।
यूँ वह मेरी क़ौम होंगे और मैं उन का ख़ुदा हूँगा।
24 मेरा ख़ादिम दाऊद उन का बादशाह होगा, उन का
एक ही गल्लाबान होगा। तब वह मेरी हिदायात के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेंगे और ध्यान से मेरे अह्काम
पर अमल करेंगे।
25 जो मुल्क मैं ने अपने ख़ादिम याक़ूब को दिया था
और जिस में तुम्हारे बापदादा रहते थे उस में इस्राईली
दुबारा बसेंगे। हाँ, वह और उन की औलाद हमेशा
तक उस में आबाद रहेंगे, और मेरा ख़ादिम दाऊद
अबद तक उन पर हुकूमत करेगा। 26 तब मैं उन के
साथ सलामती का अह्द बांधूँगा, एक ऐसा अह्द जो
हमेशा तक क़ाइम रहेगा। मैं उन्हें क़ाइम करके उन
की तादाद बढ़ाता जाऊँगा, और मेरा मक़्दिस अबद
तक उन के दरमियान रहेगा। 27 वह मेरी सुकूनतगाह
के साय में बसेंगे। मैं उन का ख़ुदा हूँगा, और वह
मेरी क़ौम होंगे। 28 जब मेरा मक़्दिस अबद तक उन
के दरमियान होगा तो दीगर अक़्वाम जान लेंगी कि
मैं ही रब हूँ, कि इस्राईल को मुक़द्दस करने वाला मैं
ही हूँ'।"

इस्राईल का दुश्मन जूज

38 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, मुल्क-ए-माजूज के हुक्मरान
जूज की तरफ़ रुख़ कर जो मसक और तूबल का
आला रईस है। उस के ख़िलाफ़ नबुव्वत करके
3 कह,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ मसक
और तूबल के आला रईस जूज, अब मैं तुझ से निपट
लूँगा। 4 मैं तेरे मुँह को फेर दूँगा, तेरे मुँह में काँटे
डाल कर तुझे पूरी फ़ौज समेत निकाल दूँगा। शानदार
वर्दियों से आरास्ता तेरे तमाम घुड़सवार और फ़ौजी
अपने घोड़ों समेत निकल आएँगे, गो तेरी बड़ी फ़ौज
के मर्द छोटी और बड़ी ढालें उठाए फिरेंगे, और
हर एक तलवार से लेस होगा। 5 फ़ार्स, एथोपिया
और लिबिया के मर्द भी फ़ौज में शामिल होंगे। हर
एक बड़ी ढाल और ख़ोद से मुसल्लह होगा। 6 जुमर

और शिमाल के दूरदराज़ इलाक़े बैत-तुजर्मा के तमाम
दस्ते भी साथ होंगे। ग़रज़ उस वक़्त बहुत सी क़ौमें
तेरे साथ निकलेंगी। 7 चुनाँचे मुस्तइद हो जा! जितने
लश्कर तेरे इर्दगिर्द जमा हो गए हैं उन के साथ मिल
कर ख़ूब तय्यारियाँ कर! उन के लिए पहरादारी कर।
8 मुतअद्दिद दिनों के बाद तुझे मुल्क-ए-इस्राईल पर
हम्ला करने के लिए बुलाया जाएगा जिसे अभी जंग
से छुटकारा मिला होगा और जिस के जिलावतन
दीगर बहुत सी क़ौमों में से वापस आ गए होंगे। गो
इस्राईल का पहाड़ी इलाक़ा बड़ी देर से बर्बाद हुआ
होगा, लेकिन उस वक़्त उस के बाशिन्दे जिलावतनी
से वापस आ कर अम्न-ओ-अमान से उस में बसेंगे।
9 तब तू तूफ़ान की तरह आगे बढ़ेगा, तेरे दस्ते
बादल की तरह पूरे मुल्क पर छा जाएंगे। तेरे
साथ बहुत सी क़ौमें होंगी। 10 रब क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि उस वक़्त तेरे ज़हन में बुरे ख़यालात
उभर आएँगे और तू शरीर मन्सूबे बांधेगा। 11 तू
कहेगा, "यह मुल्क खुला है, और उस के बाशिन्दे
आराम और सुकून के साथ रह रहे हैं। आओ, मैं
उन पर हम्ला करूँ, क्यूँकि वह अपनी हिफ़ाज़त नहीं
कर सकते। न उन की चारदीवारी है, न दरवाज़ा या
कुंडा। 12 मैं इस्राईलियों को लूट लूँगा। जो शहर पहले
खंडरात थे लेकिन अब नए सिरे से आबाद हुए हैं उन
पर मैं टूट पड़ूँगा। जो जिलावतन दीगर अक़्वाम से
वापस आ गए हैं उन की दौलत मैं छीन लूँगा। क्यूँकि
उन्हें काफ़ी माल-मवेशी हासिल हुए हैं, और अब वह
दुनिया के मर्कज़ में आ बसे हैं।" 13 सबा, ददान और
तरसीस के ताजिर और बुज़ुर्ग पूछेंगे कि क्या तू ने
वाक़ई अपने फ़ौजियों को लूट-मार के लिए इकट्ठा
कर लिया है? क्या तू वाक़ई सोना-चाँदी, माल-मवेशी
और बाक़ी बहुत सी दौलत छीनना चाहता है?'
14 ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत करके जूज को बता,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि उस वक़्त तुझे
पता चलेगा कि मेरी क़ौम इस्राईल सुकून से ज़िन्दगी
गुज़ार रही है, 15 और तू दूरदराज़ शिमाल के अपने
मुल्क से निकलेगा। तेरी वसी और ताक़तवर फ़ौज
में मुतअद्दिद क़ौमें शामिल होंगी, और सब घोड़ों
पर सवार 16 मेरी क़ौम इस्राईल पर धावा बोल देंगे।
वह उस पर बादल की तरह छा जाएंगे। ऐ जूज, उन
आख़िरी दिनों में मैं ख़ुद तुझे अपने मुल्क पर हम्ला
करने दूँगा ताकि दीगर अक़्वाम मुझे जान लें। क्यूँकि
जो कुछ मैं उन के देखते देखते तेरे साथ करूँगा उस
से मेरा मुक़द्दस किरदार उन पर ज़ाहिर हो जाएगा।
17 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तू वही है
जिस का ज़िक्र मैं ने माज़ी में किया था। क्यूँकि माज़ी
में मेरे ख़ादिम यानी इस्राईल के नबी काफ़ी सालों
से पेशगोई करते रहे कि मैं तुझे इस्राईल के ख़िलाफ़
भेजूँगा।

अल्लाह ख़ुद जूज को तबाह करेगा

18 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि जिस दिन
जूज मुल्क-ए-इस्राईल पर हम्ला करेगा उस दिन मैं
आग-बगूला हो जाऊँगा। 19 मैं फ़रमाता हूँ कि उस
दिन मेरी ग़ैरत और शदीद क़हर यूँ भड़क उठेगा
कि यक़ीनन मुल्क-ए-इस्राईल में ज़बरदस्त ज़ल्ज़ला
आएगा। 20 सब मेरे सामने थरथरा उठेंगे, ख़्वाह
मछलियाँ हों या परिन्दे, ख़्वाह ज़मीन पर चलने और
रेंगने वाले जानवर हों या इन्सान। पहाड़ उन की
गुज़रगाहों समेत ख़ाक में मिलाए जाएंगे, और हर
दीवार गिर जाएगी।
21 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं अपने
तमाम पहाड़ी इलाक़े में जूज के ख़िलाफ़ तलवार
भेजूँगा। तब सब आपस में लड़ने लगेंगे। 22 मैं उन में
मोहलिक बीमारियाँ और क़त्ल-ओ-ग़ारत फैला कर
उन की अदालत करूँगा। साथ साथ मैं मूसलाधार
बारिश, ओले, आग और गंधक जूज और उस की
बैन-उल-अक़्वामी फ़ौज पर बरसा दूँगा। 23 यूँ मैं
अपना अज़ीम और मुक़द्दस किरदार मुतअद्दिद क़ौमों
पर ज़ाहिर करूँगा, उन के देखते देखते अपने आप
का इज़हार करूँगा। तब वह जान लेंगी कि मैं ही रब
हूँ।'

39 1 ऐ आदमज़ाद, जूज के ख़िलाफ़ नबुव्वत
करके कह,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ मसक
और तूबल के आला रईस जूज, अब मैं तुझ से निपट
लूँगा। 2 मैं तेरा मुँह फेर दूँगा और तुझे शिमाल के
दूरदराज़ इलाक़े से घसीट कर इस्राईल के पहाड़ों पर
लाऊँगा। 3 वहाँ मैं तेरे बाएँ हाथ से कमान हटाऊँगा
और तेरे दाएँ हाथ से तीर गिरा दूँगा। 4 इस्राईल
के पहाड़ों पर ही तू अपने तमाम बैन-उल-अक़्वामी
फ़ौजियों के साथ हलाक हो जाएगा। मैं तुझे हर क़िस्म
के शिकारी परिन्दों और दरिन्दों को खिला दूँगा।
5 क्यूँकि तेरी लाश खुले मैदान में गिर कर पड़ी रहेगी।
यह मेरा, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।
6 मैं माजूज पर और अपने आप को महफ़ूज़ समझने
वाले साहिली इलाक़ों पर आग भेजूँगा। तब वह जान
लेंगे कि मैं ही रब हूँ। 7 अपनी क़ौम इस्राईल के
दरमियान ही मैं अपना मुक़द्दस नाम ज़ाहिर करूँगा।
आइन्दा मैं अपने मुक़द्दस नाम की बेहुरमती बर्दाश्त
नहीं करूँगा। तब अक़्वाम जान लेंगी कि मैं रब
और इस्राईल का क़ुद्दूस हूँ। 8 रब क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि यह सब कुछ होने वाला है, यह ज़रूर
पेश आएगा! वही दिन है जिस का ज़िक्र मैं कर चुका
हूँ।

जूज और उस की फ़ौज की तद्फ़ीन

9 फिर इस्राईली शहरों के बाशिन्दे मैदान-ए-जंग
में जा कर दुश्मन के असलिहा को ईंधन के लिए
जमा करेंगे। इतनी छोटी और बड़ी ढालें, कमान,
तीर, लाठियाँ और नेज़े इकट्ठे हो जाएंगे कि सात
साल तक किसी और ईंधन की ज़रूरत नहीं होगी।
10 इस्राईलियों को खुले मैदान में लकड़ी चुनने या
जंगल में दरख़्त काटने की ज़रूरत नहीं होगी, क्यूँकि
वह यह हथियार ईंधन के तौर पर इस्तेमाल करेंगे।
अब वह उन्हें लूटेंगे जिन्हों ने उन्हें लूट लिया था,
वह उन से माल-मवेशी छीन लेंगे जिन्हों ने उन से
सब कुछ छीन लिया था। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़
का फ़रमान है।
11 उस दिन मैं इस्राईल में जूज के लिए क़ब्रिस्तान
मुक़र्रर करूँगा। यह क़ब्रिस्तान वादी-ए-अबारीम [b]में
होगा जो बहीरा-ए-मुर्दार के मशरिक़ में है। जूज के
साथ उस की तमाम फ़ौज भी दफ़न होगी, इस लिए
मुसाफ़िर आइन्दा उस में से नहीं गुज़र सकेंगे। तब
वह जगह वादी-ए-हमून जूज [c]भी कहलाएगी। 12 जब
इस्राईली तमाम लाशें दफ़ना कर मुल्क को पाक-
साफ़ करेंगे तो सात महीने लगेंगे। 13 तमाम उम्मत
इस काम में मसरूफ़ रहेगी। रब क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि जिस दिन मैं दुनिया पर अपना जलाल
ज़ाहिर करूँगा उस दिन यह उन के लिए शुहरत का
बाइस होगा।
14 सात महीनों के बाद कुछ आदमियों को अलग
करके कहा जाएगा कि पूरे मुल्क में से गुज़र कर
मालूम करें कि अभी कहाँ कहाँ लाशें पड़ी हैं। क्यूँकि
लाज़िम है कि सब दफ़न हो जाएँ ताकि मुल्क दुबारा
पाक-साफ़ हो जाए। 15 जहाँ कहीं कोई लाश नज़र
आए उस जगह की वह निशानदिही करेंगे ताकि
दफ़नाने वाले उसे वादी-ए-हमून जूज में ले जा कर
दफ़न करें। 16 यूँ मुल्क को पाक-साफ़ किया जाएगा।
उस वक़्त से इस्राईल के एक शहर का नाम हमूना
[d]कहलाएगा।'
17 ऐ आदमज़ाद, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है
कि हर क़िस्म के परिन्दे और दरिन्दे बुला कर कह,
'आओ, इधर जमा हो जाओ! चारों तरफ़ से आ कर
इस्राईल के पहाड़ी इलाक़े में जमा हो जाओ! क्यूँकि
यहाँ मैं तुम्हारे लिए क़ुर्बानी की ज़बरदस्त ज़ियाफ़त
तय्यार कर रहा हूँ। यहाँ तुम्हें गोश्त खाने और ख़ून
पीने का सुनहरा मौक़ा मिलेगा। 18 तुम सूरमाओं का

[b]या गुज़रने वालों की वादी।
[c]जूज के फ़ौजी हुजूम की वादी।
[d]हुजूम यानी जूज के।

गोश्त खाओगे और दुनिया के हुक्मरानों का ख़ून
पियोगे। सब बसन के मोटे-ताज़े मेंढों, भेड़ के बच्चों,
बकरों और बैलों जैसे मज़ेदार होंगे। 19 क्यूँकि जो
क़ुर्बानी में तुम्हारे लिए तय्यार कर रहा हूँ उस की
चर्बी तुम जी भर कर खाओगे, उस का ख़ून पी पी
कर मस्त हो जाओगे। 20 रब फ़रमाता है कि तुम मेरी
मेज़ पर बैठ कर घोड़ों और घुड़सवारों, सूरमाओं
और हर क़िस्म के फ़ौजियों से सेर हो जाओगे।'

रब अपनी क़ौम वापस लाएगा

21 यूँ मैं दीगर अक़्वाम पर अपना जलाल ज़ाहिर
करूँगा। क्यूँकि जब मैं जूज और उस की फ़ौज की
अदालत करके उन से निपट लूँगा तो तमाम अक़्वाम
इस की गवाह होंगी। 22 तब इस्राईली क़ौम हमेशा के
लिए जान लेगी कि मैं रब उस का ख़ुदा हूँ। 23 और
दीगर अक़्वाम जान लेंगी कि इस्राईली अपने गुनाहों
के सबब से जिलावतन हुए। वह जान लेंगी कि चूँकि
इस्राईली मुझ से बेवफ़ा हुए, इसी लिए मैं ने अपना
मुँह उन से छुपा कर उन्हें उन के दुश्मनों के हवाले
कर दिया, इसी लिए वह सब तलवार की ज़द में आ
कर हलाक हुए। 24 क्यूँकि मैं ने उन्हें उन की नापाकी
और जराइम का मुनासिब बदला दे कर अपना चिहरा
उन से छुपा लिया था।

25 चुनाँचे रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
अब मैं याक़ूब की औलाद को बहाल करके तमाम
इस्राईली क़ौम पर तरस खाऊँगा। अब मैं बड़ी ग़ैरत
से अपने मुक़द्दस नाम का दिफ़ा करूँगा। 26 जब
इस्राईली सुकून से और ख़ौफ़ खाए बग़ैर अपने मुल्क
में रहेंगे तो वह अपनी रुस्वाई और मेरे साथ बेवफ़ाई
का एतिराफ़ करेंगे। 27 मैं उन्हें दीगर अक़्वाम और
उन के दुश्मनों के ममालिक में से जमा करके उन्हें
वापस लाऊँगा और यूँ उन के ज़रीए अपना मुक़द्दस
किरदार मुतअद्दिद अक़्वाम पर ज़ाहिर करूँगा।
28 तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। क्यूँकि उन्हें
अक़्वाम में जिलावतन करने के बाद मैं उन्हें उन के
अपने ही मुल्क में दुबारा जमा करूँगा। एक भी पीछे
नहीं छोड़ा जाएगा। 29 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता
है कि आइन्दा मैं अपना चिहरा उन से नहीं छुपाऊँगा।
क्यूँकि मैं अपना रूह इस्राईली क़ौम पर उंडेल दूँगा।"

रब के नए घर की रोया

40 1 हमारी जिलावतनी के 25वें साल में रब
का हाथ मुझ पर आ ठहरा और वह मुझे
यरूशलम ले गया। महीने का दसवाँ दिन [e]था। उस
वक़्त यरूशलम को दुश्मन के क़ब्ज़े में आए 14
साल हो गए थे। 2 इलाही रोयाओं में अल्लाह ने मुझे
मुल्क-ए-इस्राईल के एक निहायत बुलन्द पहाड़ पर
पहुँचाया। पहाड़ के जुनूब में मुझे एक शहर सा नज़र
आया। 3 अल्लाह मुझे शहर के क़रीब ले गया तो मैं
ने शहर के दरवाज़े में खड़े एक आदमी को देखा
जो पीतल का बना हुआ लग रहा था। उस के हाथ
में कतान की रस्सी और फ़ीता था। 4 उस ने मुझ से
कहा, "ऐ आदमज़ाद, ध्यान से देख, ग़ौर से सुन!
जो कुछ भी मैं तुझे दिखाऊँगा, उस पर तवज्जुह दे।
क्यूँकि तुझे इसी लिए यहाँ लाया गया है कि मैं तुझे
यह दिखाऊँ। जो कुछ भी तू देखे उसे इस्राईली क़ौम
को सुना दे!"

रब के घर के बैरूनी सहन का मशरिक़ी दरवाज़ा

5 मैं ने देखा कि रब के घर का सहन चारदीवारी से
घिरा हुआ है। जो फ़ीता मेरे राहनुमा के हाथ में था
उस की लम्बाई साढ़े 10 फ़ुट थी। इस के ज़रीए उस
ने चारदीवारी को नाप लिया। दीवार की मोटाई और
ऊँचाई दोनों साढ़े दस दस फ़ुट थी।

6 फिर मेरा राहनुमा मशरिक़ी दरवाज़े के पास
पहुँचाने वाली सीढ़ी पर चढ़ कर दरवाज़े की दहलीज़
पर रुक गया। जब उस ने उस की पैमाइश की तो उस
की गहराई साढ़े 10 फ़ुट निकली।

---

[e] 28 अप्रैल।

7 जब वह दरवाज़े में खड़ा हुआ तो दाईं और बाईं
तरफ़ पहरेदारों के तीन तीन कमरे नज़र आए। हर
कमरे की लम्बाई और चौड़ाई साढ़े दस दस फ़ुट
थी। कमरों के दरमियान की दीवार पौने नौ फ़ुट मोटी
थी। इन कमरों के बाद एक और दहलीज़ थी जो साढ़े
10 फ़ुट गहरी थी। उस पर से गुज़र कर हम दरवाज़े
से मुल्हिक़ एक बरामदे में आए जिस का रुख़ रब
के घर की तरफ़ था। 8 मेरे राहनुमा ने बरामदे की
पैमाइश की 9 तो पता चला कि उस की लम्बाई 14
फ़ुट है। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ू साढ़े तीन तीन
फ़ुट मोटे थे। बरामदे का रुख़ रब के घर की तरफ़
था। 10 पहरेदारों के मज़कूरा कमरे सब एक जैसे बड़े
थे, और उन के दरमियान वाली दीवारें सब एक जैसी
मोटी थीं।

11 इस के बाद उस ने दरवाज़े की गुज़रगाह की
चौड़ाई नापी। यह मिल मिला कर पौने 23 फ़ुट थी,
अलबत्ता जब किवाड़ खुले थे तो उन के दरमियान
का फ़ासिला साढ़े 17 फ़ुट था। 12 पहरेदारों के हर
कमरे के सामने एक छोटी सी दीवार थी जिस की
ऊँचाई 21 इंच थी जबकि हर कमरे की लम्बाई और
ऊँचाई साढ़े दस दस फ़ुट थी। 13 फिर मेरे राहनुमा
ने वह फ़ासिला नापा जो इन कमरों में से एक की
पिछली दीवार से ले कर उस के मुक़ाबिल के कमरे
की पिछली दीवार तक था। मालूम हुआ कि पौने 44
फ़ुट है।

14 सहन में दरवाज़े से मुल्हिक़ वह बरामदा था जिस
का रुख़ रब के घर की तरफ़ था। उस की चौड़ाई 33
फ़ुट थी। [f] 15 जो बाहर से दरवाज़े में दाख़िल होता था
वह साढ़े 87 फ़ुट के बाद ही सहन में पहुँचता था।

16 पहरेदारों के तमाम कमरों में छोटी खिड़कियाँ
थीं। कुछ बैरूनी दीवार में थीं, कुछ कमरों के
दरमियान की दीवारों में। दरवाज़े के सतून-नुमा
बाज़ूओं में खजूर के दरख़्त मुनक़्क़श थे।

रब के घर का बैरूनी सहन

17 फिर मेरा राहनुमा दरवाज़े में से गुज़र कर मुझे रब
के घर के बैरूनी सहन में लाया। चारदीवारी के साथ
साथ 30 कमरे बनाए गए थे जिन के सामने पत्थर का
फ़र्श था। 18 यह फ़र्श चारदीवारी के साथ साथ था।
जहाँ दरवाज़ों की गुज़रगाहें थीं वहाँ फ़र्श उन की
दीवारों से लगता था। जितना लम्बा इन गुज़रगाहों
का वह हिस्सा था जो सहन में था उतना ही चौड़ा
फ़र्श भी था। यह फ़र्श अन्दरूनी सहन की निस्बत
नीचा था।

19 बैरूनी और अन्दरूनी सहनों के दरमियान भी
दरवाज़ा था। यह बैरूनी दरवाज़े के मुक़ाबिल था।
जब मेरे राहनुमा ने दोनों दरवाज़ों का दरमियानी
फ़ासिला नापा तो मालूम हुआ कि 175 फ़ुट है।

बैरूनी सहन का शिमाली दरवाज़ा

20 इस के बाद उस ने चारदीवारी के शिमाली
दरवाज़े की पैमाइश की।

21 इस दरवाज़े में भी दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन
कमरे थे जो मशरिक़ी दरवाज़े के कमरों जितने बड़े
थे। उस में से गुज़र कर हम वहाँ भी दरवाज़े से
मुल्हिक़ बरामदे में आए जिस का रुख़ रब के घर की
तरफ़ था। उस की और उस के सतून-नुमा बाज़ूओं की
लम्बाई और चौड़ाई उतनी ही थी जितनी मशरिक़ी
दरवाज़े के बरामदे और उस के सतून-नुमा बाज़ूओं
की थी। गुज़रगाह की पूरी लम्बाई साढ़े 87 फ़ुट थी।
जब मेरे राहनुमा ने वह फ़ासिला नापा जो पहरेदारों
के कमरों में से एक की पिछली दीवार से ले कर
उस के मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक
था तो मालूम हुआ कि पौने 44 फ़ुट है। 22 दरवाज़े
से मुल्हिक़ बरामदा, खिड़कियाँ और कन्दा किए
गए खजूर के दरख़्त उसी तरह बनाए गए थे जिस
तरह मशरिक़ी दरवाज़े में। बाहर एक सीढ़ी दरवाज़े

---

[f] इब्रानी मतन में इस आयत का मतलब ग़ैरवाज़िह है।

तक पहुँचाती थी जिस के सात क़दम्चे थे। मशरिक़ी दरवाज़े की तरह शिमाली दरवाज़े के अन्दरूनी सिरे के साथ एक बरामदा मुल्हिक़ था जिस से हो कर इन्सान सहन में पहुँचता था।

23 मशरिक़ी दरवाज़े की तरह इस दरवाज़े के मुक़ाबिल भी अन्दरूनी सहन में पहुँचाने वाला दरवाज़ा था। दोनों दरवाज़ों का दरमियानी फ़ासिला 175 फ़ुट था।

बैरूनी सहन का जुनूबी दरवाज़ा

24 इस के बाद मेरा राहनुमा मुझे बाहर ले गया। चलते चलते हम जुनूबी चारदीवारी के पास पहुँचे। वहाँ भी दरवाज़ा नज़र आया। उस में से गुज़र कर हम वहाँ भी दरवाज़े से मुल्हिक़ बरामदे में आए जिस का रुख़ रब के घर की तरफ़ था। यह बरामदा दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ूओं समेत दीगर दरवाज़ों के बरामदे जितना बड़ा था। 25 दरवाज़े और बरामदे की खिड़कियाँ भी दीगर खिड़कियों की मानिन्द थीं। गुज़रगाह की पूरी लम्बाई साढ़े 87 फ़ुट थी। जब उस ने वह फ़ासिला नापा जो पहरेदारों के कमरों में से एक की पिछली दीवार से ले कर उस के मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था तो मालूम हुआ कि पौने 44 फ़ुट है। 26 बाहर एक सीढ़ी दरवाज़े तक पहुँचाती थी जिस के सात क़दम्चे थे। दीगर दरवाज़ों की तरह जुनूबी दरवाज़े के अन्दरूनी सिरे के साथ बरामदा मुल्हिक़ था जिस से हो कर इन्सान सहन में पहुँचता था। बरामदे के दोनों सतून-नुमा बाज़ूओं पर खजूर के दरख़्त कन्दा किए गए थे।

27 इस दरवाज़े के मुक़ाबिल भी अन्दरूनी सहन में पहुँचाने वाला दरवाज़ा था। दोनों दरवाज़ों का दरमियानी फ़ासिला 175 फ़ुट था।

अन्दरूनी सहन का जुनूबी दरवाज़ा

28 फिर मेरा राहनुमा जुनूबी दरवाज़े में से गुज़र कर मुझे अन्दरूनी सहन में लाया। जब उस ने वहाँ का दरवाज़ा नापा तो मालूम हुआ कि वह बैरूनी दरवाज़ों की मानिन्द है। 29–30 पहरेदारों के कमरे, बरामदा और उस के सतून-नुमा बाज़ू सब पैमाइश के हिसाब से दीगर दरवाज़ों की मानिन्द थे। इस दरवाज़े और इस के साथ मुल्हिक़ बरामदे में भी खिड़कियाँ थीं। गुज़रगाह की पूरी लम्बाई साढ़े 87 फ़ुट थी। जब मेरे राहनुमा ने वह फ़ासिला नापा जो पहरेदारों के कमरे में से एक की पिछली दीवार से ले कर उस के मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था तो मालूम हुआ कि पौने 44 फ़ुट है। 31 लेकिन उस के बरामदे का रुख़ बैरूनी सहन की तरफ़ था। उस में पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिस के आठ क़दम्चे थे। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ूओं पर खजूर के दरख़्त कन्दा किए गए थे।

अन्दरूनी सहन का मशरिक़ी दरवाज़ा

32 इस के बाद मेरा राहनुमा मुझे मशरिक़ी दरवाज़े से हो कर अन्दरूनी सहन में लाया। जब उस ने यह दरवाज़ा नापा तो मालूम हुआ कि यह भी दीगर दरवाज़ों जितना बड़ा है। 33 पहरेदारों के कमरे, दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ू और बरामदा पैमाइश के हिसाब से दीगर दरवाज़ों की मानिन्द थे। यहाँ भी दरवाज़े और बरामदे में खिड़कियाँ लगी थीं। गुज़रगाह की लम्बाई साढ़े 87 फ़ुट और चौड़ाई पौने 44 फ़ुट थी। 34 इस दरवाज़े के बरामदे का रुख़ भी बैरूनी सहन की तरफ़ था। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ूओं पर खजूर के दरख़्त कन्दा किए गए थे। बरामदे में पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिस के आठ क़दम्चे थे।

अन्दरूनी सहन का शिमाली दरवाज़ा

35 फिर मेरा राहनुमा मुझे शिमाली दरवाज़े के पास लाया। उस की पैमाइश करने पर मालूम हुआ कि यह भी दीगर दरवाज़ों जितना बड़ा है। 36 पहरेदारों के कमरे, सतून-नुमा बाज़ू, बरामदा और दीवारों में खिड़कियाँ भी दूसरे दरवाज़ों की मानिन्द थीं। गुज़रगाह की लम्बाई साढ़े 87 फ़ुट और चौड़ाई पौने

44 फ़ुट थी। 37 उस के बरामदे का रुख़ भी बैरूनी
सहन की तरफ़ था। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ूओं
पर खजूर के दरख़्त कन्दा किए गए थे। उस में पहुँचने
के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिस के आठ
क़दम्चे थे।

अन्दरूनी शिमाली दरवाज़े के पास ज़बह का बन्द-ओ-बस्त

38 अन्दरूनी शिमाली दरवाज़े के बरामदे में
दरवाज़ा था जिस में से गुज़र कर इन्सान उस कमरे
में दाख़िल होता था जहाँ उन ज़बह किए हुए जानवरों
को धोया जाता था जिन्हें भस्म करना होता था।
39 बरामदे में चार मेज़ें थीं, कमरे के दोनों तरफ़ दो
दो मेज़ें। इन मेज़ों पर उन जानवरों को ज़बह किया
जाता था जो भस्म होने वाली क़ुर्बानियों, गुनाह की
क़ुर्बानियों और क़ुसूर की क़ुर्बानियों के लिए मख़्सूस
थे। 40 इस बरामदे से बाहर मज़ीद चार ऐसी मेज़ें थीं,
दो एक तरफ़ और दो दूसरी तरफ़। 41 मिल मिला कर
आठ मेज़ें थीं जिन पर क़ुर्बानियों के जानवर ज़बह
किए जाते थे। चार बरामदे के अन्दर और चार उस
से बाहर के सहन में थीं।

42 बरामदे की चार मेज़ें तराशे हुए पत्थर से बनाई
गई थीं। हर एक की लम्बाई और चौड़ाई साढ़े 31 इंच
और ऊँचाई 21 इंच थी। उन पर वह तमाम आलात
पड़े थे जो जानवरों को भस्म होने वाली क़ुर्बानी
और बाक़ी क़ुर्बानियों के लिए तय्यार करने के लिए
दरकार थे। 43 जानवरों का गोश्त इन मेज़ों पर रखा
जाता था। इर्दगिर्द की दीवारों में तीन तीन इंच लम्बी
हुकें लगी थीं।

44 फिर हम अन्दरूनी सहन में दाख़िल हुए। वहाँ
शिमाली दरवाज़े के साथ एक कमरा मुल्हिक़ था जो
अन्दरूनी सहन की तरफ़ खुला था और जिस का
रुख़ जुनूब की तरफ़ था। जुनूबी दरवाज़े के साथ भी
ऐसा कमरा था। उस का रुख़ शिमाल की तरफ़ था।
45 मेरे राहनुमा ने मुझ से कहा, "जिस कमरे का रुख़
जुनूब की तरफ़ है वह उन इमामों के लिए है जो रब
के घर की देख-भाल करते हैं, 46 जबकि जिस कमरे
का रुख़ शिमाल की तरफ़ है वह उन इमामों के लिए
है जो क़ुर्बानगाह की देख-भाल करते हैं। तमाम इमाम
सदोक़ की औलाद हैं। लावी के क़बीले में से सिर्फ़
उन ही को रब के हुज़ूर आ कर उस की ख़िदमत
करने की इजाज़त है।"

अन्दरूनी सहन और रब का घर

47 मेरे राहनुमा ने अन्दरूनी सहन की पैमाइश की।
उस की लम्बाई और चौड़ाई पौने दो दो सौ फ़ुट थी।
क़ुर्बानगाह इस सहन में रब के घर के सामने ही थी।
48 फिर उस ने मुझे रब के घर के बरामदे में ले जा
कर दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ूओं की पैमाइश की।
मालूम हुआ कि यह पौने 9 फ़ुट मोटे हैं। दरवाज़े की
चौड़ाई साढ़े 24 फ़ुट थी जबकि दाएँ बाएँ की दीवारों
की लम्बाई सवा पाँच पाँच फ़ुट थी। 49 चुनाँचे बरामदे
की पूरी चौड़ाई 35 और लम्बाई 21 फ़ुट थी। उस में
दाख़िल होने के लिए दस क़दम्चों वाली सीढ़ी बनाई
गई थी। दरवाज़े के दोनों सतून-नुमा बाज़ूओं के साथ
साथ एक एक सतून खड़ा किया गया था।

41 1 इस के बाद मेरा राहनुमा मुझे रब के घर
के पहले कमरे यानी 'मुक़द्दस कमरा' में
ले गया। उस ने दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ू नापे तो
मालूम हुआ कि साढ़े दस दस फ़ुट मोटे हैं। 2 दरवाज़े
की चौड़ाई साढ़े 17 फ़ुट थी, और दाएँ बाएँ की
दीवारें पौने नौ नौ फ़ुट लम्बी थीं। कमरे की पूरी
लम्बाई 70 फ़ुट और चौड़ाई 35 फ़ुट थी।

3 फिर वह आगे बढ़ कर सब से अन्दरूनी कमरे में
दाख़िल हुआ। उस ने दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ूओं
की पैमाइश की तो मालूम हुआ कि साढ़े तीन तीन
फ़ुट मोटे हैं। दरवाज़े की चौड़ाई साढ़े 10 फ़ुट थी,
और दाएँ बाएँ की दीवारें सवा बारह बारह फ़ुट लम्बी
थीं। 4 अन्दरूनी कमरे की लम्बाई और चौड़ाई पैंतीस
पैंतीस फ़ुट थी। वह बोला, "यह मुक़द्दसतरीन कमरा
है।"

रब के घर से मुल्हिक़ कमरे

5 फिर उस ने रब के घर की बैरूनी दीवार नापी।
उस की मोटाई साढ़े 10 फ़ुट थी। दीवार के साथ
साथ कमरे तामीर किए गए थे। हर कमरे की चौड़ाई
7 फ़ुट थी। 6 कमरों की तीन मन्ज़िलें थीं, कुल 30
कमरे थे। रब के घर की बैरूनी दीवार दूसरी मन्ज़िल
पर पहली मन्ज़िल की निस्बत कम मोटी और तीसरी
मन्ज़िल पर दूसरी मन्ज़िल की निस्बत कम मोटी थी।
नतीजतन हर मन्ज़िल का वज़न उस की बैरूनी दीवार
पर था और ज़रूरत नहीं थी कि इस दीवार में शहतीर
लगाएँ। 7 चुनाँचे दूसरी मन्ज़िल पहली की निस्बत
चौड़ी और तीसरी दूसरी की निस्बत चौड़ी थी। एक
सीढ़ी निचली मन्ज़िल से दूसरी और तीसरी मन्ज़िल
तक पहुँचाती थी।

8–11 इन कमरों की बैरूनी दीवार पौने 9 फ़ुट मोटी
थी। जो कमरे रब के घर की शिमाली दीवार में थे
उन में दाख़िल होने का एक दरवाज़ा था, और इसी
तरह जुनूबी कमरों में दाख़िल होने का एक दरवाज़ा
था। मैं ने देखा कि रब का घर एक चबूतरे पर तामीर
हुआ है। इस का जितना हिस्सा उस के इर्दगिर्द नज़र
आता था वह पौने 9 फ़ुट चौड़ा और साढ़े 10 फ़ुट
ऊँचा था। रब के घर की बैरूनी दीवार से मुल्हिक़
कमरे इस पर बनाए गए थे। इस चबूतरे और इमामों
से मुस्तामल मकानों के दरमियान खुली जगह थी
जिस का फ़ासिला 35 फ़ुट था। यह खुली जगह रब
के घर के चारों तरफ़ नज़र आती थी।

मग़रिब में इमारत

12 इस खुली जगह के मग़रिब में एक इमारत थी जो
साढ़े 157 फ़ुट लम्बी और साढ़े 122 फ़ुट चौड़ी थी।
उस की दीवारें चारों तरफ़ पौने नौ नौ फ़ुट मोटी थीं।

रब के घर की बैरूनी पैमाइश

13 फिर मेरे राहनुमा ने बाहर से रब के घर की
पैमाइश की। उस की लम्बाई 175 फ़ुट थी। रब के
घर की पिछली दीवार से मग़रिबी इमारत तक का
फ़ासिला भी 175 फ़ुट था। 14 फिर उस ने रब के घर
के सामने वाली यानी मशरिक़ी दीवार शिमाल और
जुनूब में खुली जगह समेत की पैमाइश की। मालूम
हुआ कि उस का फ़ासिला भी 175 फ़ुट है। 15 उस ने
मग़रिब में उस इमारत की लम्बाई नापी जो रब के घर
के पीछे थी। मालूम हुआ कि यह भी दोनों पहलूओं
की गुज़रगाहों समेत 175 फ़ुट लम्बी है।

रब के घर का अन्दरूनी हिस्सा

रब के घर के बरामदे, मुक़द्दस कमरे और
मुक़द्दसतरीन कमरे की दीवारों पर 16 फ़र्श से ले कर
खिड़कियों तक लकड़ी के तख़्ते लगाए गए थे। इन
खिड़कियों को बन्द किया जा सकता था।

17 रब के घर की अन्दरूनी दीवारों पर दरवाज़ों
के ऊपर तक तस्वीरें कन्दा की गई थीं। 18 खजूर
के दरख़्तों और करूबी फ़रिश्तों की तस्वीरें बारी
बारी नज़र आती थीं। हर फ़रिश्ते के दो चिहरे थे।
19 इन्सान का चिहरा एक तरफ़ के दरख़्त की तरफ़
देखता था जबकि शेरबबर का चिहरा दूसरी तरफ़ के
दरख़्त की तरफ़ देखता था। यह दरख़्त और करूबी
पूरी दीवार पर बारी बारी मुनक़्क़श किए गए थे,
20 फ़र्श से ले कर दरवाज़ों के ऊपर तक। 21 मुक़द्दस
कमरे में दाख़िल होने वाले दरवाज़े के दोनों बाज़ू
मुरब्बा थे।

लकड़ी की क़ुर्बानगाह

मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के सामने 22 लकड़ी
की क़ुर्बानगाह नज़र आई। उस की ऊँचाई सवा 5
फ़ुट और चौड़ाई साढ़े तीन फ़ुट थी। उस के कोने,
पाया और चारों पहलू लकड़ी से बने थे। उस ने मुझ
से कहा, “यह वही मेज़ है जो रब के हुज़ूर रहती है।”

दरवाज़े

23 मुक़द्दस कमरे में दाख़िल होने का एक दरवाज़ा
था और मुक़द्दसतरीन कमरे का एक। 24 हर दरवाज़े

के दो किवाड़ थे, वह दरमियान में से खुलते थे।
25 दीवारों की तरह मुक़द्दस कमरे के दरवाज़े पर भी
खजूर के दरख़्त और करूबी फ़रिश्ते कन्दा किए
गए थे। और बरामदे के बाहर वाले दरवाज़े के ऊपर
लकड़ी की छोटी सी छत बनाई गई थी।
26 बरामदे के दोनों तरफ़ खिड़कियाँ थीं, और
दीवारों पर खजूर के दरख़्त कन्दा किए गए थे।

इमामों के लिए मख़्सूस कमरे

42 1 इस के बाद हम दुबारा बैरूनी सहन में
आए। मेरा राहनुमा मुझे रब के घर के
शिमाल में वाक़े एक इमारत के पास ले गया जो
रब के घर के पीछे यानी मग़रिब में वाक़े इमारत
के मुक़ाबिल थी। 2 यह इमारत 175 फ़ुट लम्बी और
साढ़े 87 फ़ुट चौड़ी थी।
3 उस का रुख़ अन्दरूनी सहन की उस खुली जगह
की तरफ़ था जो 35 फ़ुट चौड़ी थी। दूसरा रुख़ बैरूनी
सहन के पक्के फ़र्श की तरफ़ था।
मकान की तीन मन्ज़िलें थीं। दूसरी मन्ज़िल पहली
की निस्बत कम चौड़ी और तीसरी दूसरी की निस्बत
कम चौड़ी थी। 4 मकान के शिमाली पहलू में एक
गुज़रगाह थी जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक ले जाती
थी। उस की लम्बाई 175 फ़ुट और चौड़ाई साढ़े 17
फ़ुट थी। कमरों के दरवाज़े सब शिमाल की तरफ़
खुलते थे। 5–6 दूसरी मन्ज़िल के कमरे पहली मन्ज़िल
की निस्बत कम चौड़े थे ताकि उन के सामने टैरस
हो। इसी तरह तीसरी मन्ज़िल के कमरे दूसरी की
निस्बत कम चौड़े थे। इस इमारत में सहन की दूसरी
इमारतों की तरह सतून नहीं थे।
7 कमरों के सामने एक बैरूनी दीवार थी जो उन्हें
बैरूनी सहन से अलग करती थी। उस की लम्बाई
साढ़े 87 फ़ुट थी, 8 क्यूँकि बैरूनी सहन की तरफ़
कमरों की मिल मिला कर लम्बाई साढ़े 87 फ़ुट थी
अगरचे पूरी दीवार की लम्बाई 175 फ़ुट थी। 9 बैरूनी
सहन से इस इमारत में दाख़िल होने के लिए मशरिक़
की तरफ़ से आना पड़ता था। वहाँ एक दरवाज़ा था।
10 रब के घर के जुनूब में उस जैसी एक और इमारत
थी जो रब के घर के पीछे वाली यानी मग़रिबी इमारत
के मुक़ाबिल थी। 11 उस के कमरों के सामने भी
मज़कूरा शिमाली इमारत जैसी गुज़रगाह थी। उस की
लम्बाई और चौड़ाई, डिज़ाइन और दरवाज़े, ग़रज़
सब कुछ शिमाली मकान की मानिन्द था। 12 कमरों
के दरवाज़े जुनूब की तरफ़ थे, और उन के सामने भी
एक हिफ़ाज़ती दीवार थी। बैरूनी सहन से इस इमारत
में दाख़िल होने के लिए मशरिक़ से आना पड़ता था।
उस का दरवाज़ा भी गुज़रगाह के शुरू में था।
13 उस आदमी ने मुझ से कहा, “यह दोनों इमारतें
मुक़द्दस हैं। जो इमाम रब के हुज़ूर आते हैं वह इन
ही में मुक़द्दसतरीन क़ुर्बानियाँ खाते हैं। चूँकि यह
कमरे मुक़द्दस हैं इस लिए इमाम इन में मुक़द्दसतरीन
क़ुर्बानियाँ रखेंगे, ख़्वाह ग़ल्ला, गुनाह या क़ुसूर की
क़ुर्बानियाँ क्यूँ न हों। 14 जो इमाम मक़्दिस से निकल
कर बैरूनी सहन में जाना चाहें उन्हें इन कमरों में
वह मुक़द्दस लिबास उतार कर छोड़ना है जो उन्हों ने
रब की ख़िदमत करते वक़्त पहने हुए थे। लाज़िम है
कि वह पहले अपने कपड़े बदलें, फिर ही वहाँ जाएँ
जहाँ बाक़ी लोग जमा होते हैं।”

बाहर से रब के घर की चारदीवारी की पैमाइश

15 रब के घर के इहाते में सब कुछ नापने के
बाद मेरा राहनुमा मुझे मशरिक़ी दरवाज़े से बाहर
ले गया और बाहर से चारदीवारी की पैमाइश करने
लगा। 16–20 फ़ीते से पहले मशरिक़ी दीवार नापी,
फिर शिमाली, जुनूबी और मग़रिबी दीवार। हर दीवार
की लम्बाई 875 फ़ुट थी। इस चारदीवारी का मक़्सद
यह था कि जो कुछ मुक़द्दस है वह उस से अलग
किया जाए जो मुक़द्दस नहीं है।

रब अपने घर में वापस आ जाता है

43 1 मेरा राहनुमा मुझे दुबारा रब के घर
के मशरिक़ी दरवाज़े के पास ले गया।
2 अचानक इस्राईल के ख़ुदा का जलाल मशरिक़ से

आता हुआ दिखाई दिया। ज़बरदस्त आबशार का सा
शोर सुनाई दिया, और ज़मीन उस के जलाल से चमक
रही थी। 3 रब मुझ पर यूँ ज़ाहिर हुआ जिस तरह
दीगर रोयाओं में, पहले दरया-ए-किबार के किनारे
और फिर उस वक़्त जब वह यरूशलम को तबाह
करने आया था।
मैं मुँह के बल गिर गया। 4 रब का जलाल मशरिक़ी
दरवाज़े में से रब के घर में दाख़िल हुआ। 5 फिर
अल्लाह का रूह मुझे उठा कर अन्दरूनी सहन में ले
गया। वहाँ मैं ने देखा कि पूरा घर रब के जलाल से
मामूर है।
6 मेरे पास खड़े आदमी की मौजूदगी में कोई रब के
घर में से मुझ से मुख़ातिब हुआ,
7 "ऐ आदमज़ाद, यह मेरे तख़्त और मेरे पाँओ के
तल्वों का मक़ाम है। यहीं मैं हमेशा तक इस्राईलियों
के दरमियान सुकूनत करूँगा। आइन्दा न कभी
इस्राईली और न उन के बादशाह मेरे मुक़द्दस नाम
की बेहुरमती करेंगे। न वह अपनी ज़िनाकाराना
बुतपरस्ती से, न बादशाहों की लाशों से मेरे नाम की
बेहुरमती करेंगे। 8 माज़ी में इस्राईल के बादशाहों ने
अपने महलों को मेरे घर के साथ ही तामीर किया।
उन की दहलीज़ मेरी दहलीज़ के साथ और उन के
दरवाज़े का बाज़ू मेरे दरवाज़े के बाज़ू के साथ लगता
था। एक ही दीवार उन्हें मुझ से अलग रखती थी।
यूँ उन्हों ने अपनी मकरूह हरकतों से मेरे मुक़द्दस
नाम की बेहुरमती की, और जवाब में मैं ने अपने
ग़ज़ब में उन्हें हलाक कर दिया। 9 लेकिन अब वह
अपनी ज़िनाकाराना बुतपरस्ती और अपने बादशाहों
की लाशें मुझ से दूर रखेंगे। तब मैं हमेशा तक उन के
दरमियान सुकूनत करूँगा।
10 ऐ आदमज़ाद, इस्राईलियों को इस घर के बारे में
बता दे ताकि उन्हें अपने गुनाहों पर शर्म आए। वह
ध्यान से नए घर के नक़्शे का मुतालआ करें। 11 अगर
उन्हें अपनी हरकतों पर शर्म आए तो उन्हें घर की
तफ़्सीलात भी दिखा दे, यानी उस की तर्तीब, उस के
आने जाने के रास्ते और उस का पूरा इन्तिज़ाम तमाम
क़वाइद और अह्काम समेत। सब कुछ उन के सामने
ही लिख दे ताकि वह उस के पूरे इन्तिज़ाम के पाबन्द
रहें और उस के तमाम क़वाइद की पैरवी करें। 12 रब
के घर के लिए मेरी हिदायत सुन! इस पहाड़ की चोटी
गिर्द-ओ-नवाह के तमाम इलाक़े समेत मुक़द्दसतरीन
जगह है। यह घर के लिए मेरी हिदायत है।"

भस्म होने वाली क़ुर्बानियों की क़ुर्बानगाह

13 क़ुर्बानगाह यूँ बनाई गई थी कि उस का पाया
नाली से घिरा हुआ था जो 21 इंच गहरी और उतनी
ही चौड़ी थी। बाहर की तरफ़ नाली के किनारे पर
छोटी सी दीवार थी जिस की ऊँचाई 9 इंच थी।
14 क़ुर्बानगाह के तीन हिस्से थे। सब से निचला
हिस्सा साढ़े तीन फ़ुट ऊँचा था। इस पर बना हुआ
हिस्सा 7 फ़ुट ऊँचा था, लेकिन उस की चौड़ाई कुछ
कम थी, इस लिए चारों तरफ़ निचले हिस्से का ऊपर
वाला किनारा नज़र आता था। इस किनारे की चौड़ाई
21 इंच थी। तीसरा और सब से ऊपर वाला हिस्सा
भी इसी तरह बनाया गया था। वह दूसरे हिस्से की
निस्बत कम चौड़ा था, इस लिए चारों तरफ़ दूसरे
हिस्से का ऊपर वाला किनारा नज़र आता था। इस
किनारे की चौड़ाई भी 21 इंच थी। 15 तीसरे हिस्से पर
क़ुर्बानियाँ जलाई जाती थीं, और चारों कोनों पर सींग
लगे थे। यह हिस्सा भी 7 फ़ुट ऊँचा था। 16 क़ुर्बानगाह
की ऊपर वाली सतह मुरब्बा शक्ल की थी। उस की
चौड़ाई और लम्बाई इक्कीस इक्कीस फ़ुट थी। 17 दूसरा
हिस्सा भी मुरब्बा शक्ल का था। उस की चौड़ाई और
लम्बाई साढ़े चौबीस चौबीस फ़ुट थी। उस का ऊपर
वाला किनारा नज़र आता था, और उस पर 21 इंच
चौड़ी नाली थी, यूँ कि किनारे पर छोटी सी दीवार
थी जिस की ऊँचाई साढ़े 10 इंच थी। क़ुर्बानगाह पर
चढ़ने के लिए उस के मशरिक़ में सीढ़ी थी।

क़ुर्बानगाह की मख़्सूसियत

18 फिर रब मुझ से हमकलाम हुआ, "ऐ आदमज़ाद,
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि इस क़ुर्बानगाह

को तामीर करने के बाद तुझे इस पर क़ुर्बानियाँ जला कर इसे मख़्सूस करना है। साथ साथ इस पर क़ुर्बानियों का ख़ून भी छिड़कना है। इस सिलसिले में मेरी हिदायात सुन!

19 सिर्फ़ लावी के क़बीले के उन इमामों को रब के घर में मेरे हुज़ूर ख़िदमत करने की इजाज़त है जो सदोक़ की औलाद हैं।

रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि उन्हें एक जवान बैल दे ताकि वह उसे गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करें। 20 इस बैल का कुछ ख़ून ले कर क़ुर्बानगाह के चारों सींगों, निचले हिस्से के चारों कोनों और इर्दगिर्द उस के किनारे पर लगा दे। यूँ तू क़ुर्बानगाह का कफ़्फ़ारा दे कर उसे पाक-साफ़ करेगा। 21 इस के बाद जवान बैल को मक़्दिस से बाहर किसी मुक़र्ररा जगह पर ले जा। वहाँ उसे जला देना है।

22 अगले दिन एक बेऐब बकरे को क़ुर्बान कर। यह भी गुनाह की क़ुर्बानी है, और इस के ज़रीए क़ुर्बानगाह को पहली क़ुर्बानी की तरह पाक-साफ़ करना है।

23 पाक-साफ़ करने के इस सिलसिले की तक्मील पर एक बेऐब बैल और एक बेऐब मेंढे को चुन कर 24 रब को पेश कर। इमाम इन जानवरों पर नमक छिड़क कर इन्हें रब को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करें।

25 लाज़िम है कि तू सात दिन तक रोज़ाना एक बकरा, एक जवान बैल और एक मेंढा क़ुर्बान करे। सब जानवर बेऐब हों। 26 सात दिनों की इस कार-रवाई से तुम क़ुर्बानगाह का कफ़्फ़ारा दे कर उसे पाक-साफ़ और मख़्सूस करोगे। 27 आठवें दिन से इमाम बाक़ाइदा क़ुर्बानियाँ शुरू कर सकेंगे। उस वक़्त से वह तुम्हारे लिए भस्म होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँगे। तब तुम मुझे मन्ज़ूर होगे। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।”

रब के घर का बैरूनी मशरिक़ी दरवाज़ा बन्द किया जाता है

44 1 मेरा राहनुमा मुझे दुबारा मक़्दिस के बैरूनी मशरिक़ी दरवाज़े के पास ले गया। अब वह बन्द था। 2 रब ने फ़रमाया, “अब से यह दरवाज़ा हमेशा तक बन्द रहे। इसे कभी नहीं खोलना है। किसी को भी इस में से दाख़िल होने की इजाज़त नहीं, क्यूँकि रब जो इस्राईल का ख़ुदा है इस दरवाज़े में से हो कर रब के घर में दाख़िल हुआ है। 3 सिर्फ़ इस्राईल के हुक्मरान को इस दरवाज़े में बैठने और मेरे हुज़ूर क़ुर्बानी का अपना हिस्सा खाने की इजाज़त है। लेकिन इस के लिए वह दरवाज़े में से गुज़र नहीं सकेगा बल्कि बैरूनी सहन की तरफ़ से उस में दाख़िल होगा। वह दरवाज़े के साथ मुल्हिक़ बरामदे से हो कर वहाँ पहुँचेगा और इसी रास्ते से वहाँ से निकलेगा भी।”

अक्सर लावियों की ख़िदमत को मह्दूद किया जाता है

4 फिर मेरा राहनुमा मुझे शिमाली दरवाज़े में से हो कर दुबारा अन्दरूनी सहन में ले गया। हम रब के घर के सामने पहुँचे। मैं ने देखा कि रब का घर रब के जलाल से मामूर हो रहा है। मैं मुँह के बल गिर गया।

5 रब ने फ़रमाया, “ऐ आदमज़ाद, ध्यान से देख, ग़ौर से सुन! रब के घर के बारे में उन तमाम हिदायात पर तवज्जुह दे जो मैं तुझे बताने वाला हूँ। ध्यान दे कि कौन कौन उस में जा सकेगा। 6 इस सरकश क़ौम इस्राईल को बता,

‘ऐ इस्राईली क़ौम, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुम्हारी मकरूह हरकतें बहुत हैं, अब बस करो! 7 तुम परदेसियों को मेरे मक़्दिस में लाए हो, ऐसे लोगों को जो बातिन और ज़ाहिर में नामख़्तून हैं। और यह तुम ने उस वक़्त किया जब तुम मुझे मेरी ख़ुराक यानी चर्बी और ख़ून पेश कर रहे थे। यूँ तुम ने मेरे घर की बेहुरमती करके अपनी घिनौनी हरकतों से

वह अह्द तोड़ डाला है जो मैं ने तुम्हारे साथ बांधा
था। 8 तुम ख़ुद मेरे मक़्दिस में ख़िदमत नहीं करना
चाहते थे बल्कि तुम ने परदेसियों को यह ज़िम्मादारी
दी थी कि वह तुम्हारी जगह यह ख़िदमत अन्जाम दें।
9 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
आइन्दा जो भी ग़ैरमुल्की अन्दरूनी और बैरूनी तौर
पर नामख़्तून है उसे मेरे मक़्दिस में दाख़िल होने की
इजाज़त नहीं। इस में वह अजनबी भी शामिल हैं जो
इस्राईलियों के दरमियान रहते हैं। 10 जब इस्राईली
भटक गए और मुझ से दूर हो कर बुतों के पीछे लग
गए तो अक्सर लावी भी मुझ से दूर हुए। अब उन्हें
अपने गुनाह की सज़ा भुगतनी पड़ेगी। 11 आइन्दा वह
मेरे मक़्दिस में हर क़िस्म की ख़िदमत नहीं करेंगे।
उन्हें सिर्फ़ दरवाज़ों की पहरादारी करने और जानवरों
को ज़बह करने की इजाज़त होगी। इन जानवरों में
भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ भी शामिल होंगी और
ज़बह की क़ुर्बानियाँ भी। लावी क़ौम की ख़िदमत के
लिए रब के घर में हाज़िर रहेंगे, 12 लेकिन चूँकि वह
अपने हमवतनों के बुतों के सामने लोगों की ख़िदमत
करके उन के लिए गुनाह का बाइस बने रहे इस लिए
मैं ने अपना हाथ उठा कर क़सम खाई है कि उन्हें इस
की सज़ा भुगतनी पड़ेगी। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़
का फ़रमान है।
13 अब से वह इमाम की हैसियत से मेरे क़रीब आ
कर मेरी ख़िदमत नहीं करेंगे, अब से वह उन चीज़ों
के क़रीब नहीं आएँगे जिन को मैं ने मुक़द्दसतरीन
क़रार दिया है। 14 इस के बजाय मैं उन्हें रब के घर
के निचले दर्जे की ज़िम्मादारियाँ दूँगा।

इमामों के लिए हिदायात

15 लेकिन रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
लावी का एक ख़ानदान उन में शामिल नहीं है। सदोक़
का ख़ानदान आइन्दा भी मेरी ख़िदमत करेगा। उस
के इमाम उस वक़्त भी वफ़ादारी से मेरे मक़्दिस में
मेरी ख़िदमत करते रहे जब इस्राईल के बाक़ी लोग
मुझ से दूर हो गए थे। इस लिए यह आइन्दा भी मेरे
हुज़ूर आ कर मुझे क़ुर्बानियों की चर्बी और ख़ून पेश
करेंगे। 16 सिर्फ़ यही इमाम मेरे मक़्दिस में दाख़िल
होंगे और मेरी मेज़ पर मेरी ख़िदमत करके मेरे तमाम
फ़राइज़ अदा करेंगे।
17 जब भी इमाम अन्दरूनी दरवाज़े में दाख़िल होते
हैं तो लाज़िम है कि वह कतान के कपड़े पहन लें।
अन्दरूनी सहन और रब के घर में ख़िदमत करते
वक़्त ऊन के कपड़े पहनना मना है। 18 वह कतान
की पगड़ी और पाजामा पहनें, क्यूँकि उन्हें पसीना
दिलाने वाले कपड़ों से गुरेज़ करना है। 19 जब भी
इमाम अन्दरूनी सहन से दुबारा बैरूनी सहन में जाना
चाहें तो लाज़िम है कि वह ख़िदमत के लिए मुस्तामल
कपड़ों को उतारें। वह इन कपड़ों को मुक़द्दस कमरों
में छोड़ आएँ और आम कपड़े पहन लें, ऐसा न हो
कि मुक़द्दस कपड़े छूने से आम लोगों की जान ख़तरे
में पड़ जाए।
20 न इमाम अपना सर मुंडवाएँ, न उन के बाल
लम्बे हों बल्कि वह उन्हें कटवाते रहें। 21 इमाम को
अन्दरूनी सहन में दाख़िल होने से पहले मै पीना मना
है।
22 इमाम को किसी तलाकशुदा औरत या बेवा से
शादी करने की इजाज़त नहीं है। वह सिर्फ़ इस्राईली
कुंवारी से शादी करे। सिर्फ़ उस वक़्त बेवा से शादी
करने की इजाज़त है जब मरहूम शौहर इमाम था।
23 इमाम अवाम को मुक़द्दस और ग़ैरमुक़द्दस चीज़ों
में फ़र्क़ की तालीम दें। वह उन्हें नापाक और पाक
चीज़ों में इम्तियाज़ करना सिखाएँ। 24 अगर तनाज़ो
हो तो इमाम मेरे अह्काम के मुताबिक़ ही उस पर
फ़ैसला करें। उन का फ़र्ज़ है कि वह मेरी मुक़र्ररा
ईदों को मेरी हिदायात और क़वाइद के मुताबिक़ ही
मनाएँ। वह मेरा सबत का दिन मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
रखें।
25 इमाम अपने आप को किसी लाश के पास जाने
से नापाक न करे। इस की इजाज़त सिर्फ़ इसी सूरत में
है कि उस के माँ-बाप, बच्चों, भाइयों या ग़ैरशादीशुदा
बहनों में से कोई इन्तिक़ाल कर जाए। 26 अगर कभी

ऐसा हो तो वह अपने आप को पाक-साफ़ करने के
बाद मज़ीद सात दिन इन्तिज़ार करे, 27 फिर मक़्दिस
के अन्दरूनी सहन में जा कर अपने लिए गुनाह
की क़ुर्बानी पेश करे। तब ही वह दुबारा मक़्दिस में
ख़िदमत कर सकता है। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़
का फ़रमान है।

28 सिर्फ़ मैं ही इमामों का मौरूसी हिस्सा हूँ। उन्हें
इस्राईल में मौरूसी मिलकियत मत देना, क्यूँकि मैं
ख़ुद उन की मौरूसी मिलकियत हूँ। 29 खाने के लिए
इमामों को ग़ल्ला, गुनाह और क़ुसूर की क़ुर्बानियाँ
मिलेंगी, नीज़ इस्राईल में वह सब कुछ जो रब के
लिए मख़्सूस किया जाता है। 30 इमामों को फ़सल के
पहले फल का बेहतरीन हिस्सा और तुम्हारे तमाम
हदिए मिलेंगे। उन्हें अपने गुंधे हुए आटे से भी हिस्सा
देना है। तब अल्लाह की बरकत तेरे घराने पर ठहरेगी।

31 जो परिन्दा या दीगर जानवर फ़ित्री तौर पर या
किसी दूसरे जानवर के हमले से मर जाए उस का
गोश्त खाना इमाम के लिए मना है।

इस्राईल में रब का हिस्सा

45 1 जब तुम मुल्क को क़ुरआ डाल कर
क़बीलों में तक़्सीम करोगे तो एक हिस्से
को रब के लिए मख़्सूस करना है। उस ज़मीन
की लम्बाई साढ़े 12 किलोमीटर और चौड़ाई 10
किलोमीटर होगी। पूरी ज़मीन मुक़द्दस होगी।

2 इस ख़ित्ते में एक प्लाट रब के घर के लिए मख़्सूस
होगा। उस की लम्बाई भी 875 फ़ुट होगी और उस
की चौड़ाई भी। उस के इर्दगिर्द खुली जगह होगी जिस
की चौड़ाई साढ़े 87 फ़ुट होगी। 3 ख़ित्ते का आधा
हिस्सा अलग किया जाए। उस की लम्बाई साढ़े 12
किलोमीटर और चौड़ाई 5 किलोमीटर होगी, और
उस में मक़्दिस यानी मुक़द्दसतरीन जगह होगी। 4 यह
ख़ित्ता मुल्क का मुक़द्दस इलाक़ा होगा। वह उन
इमामों के लिए मख़्सूस होगा जो मक़्दिस में उस की
ख़िदमत करते हैं। उस में उन के घर और मक़्दिस का
मख़्सूस प्लाट होगा।

5 ख़ित्ते का दूसरा हिस्सा उन बाक़ी लावियों को
दिया जाएगा जो रब के घर में ख़िदमत करेंगे। यह
उन की मिलकियत होगी, और उस में वह अपनी
आबादियाँ बना सकेंगे। उस की लम्बाई और चौड़ाई
पहले हिस्से के बराबर होगी।

6 मुक़द्दस ख़ित्ते से मुल्हिक़ एक और ख़ित्ता होगा
जिस की लम्बाई साढ़े 12 किलोमीटर और चौड़ाई
ढाई किलोमीटर होगी। यह एक ऐसे शहर के लिए
मख़्सूस होगा जिस में कोई भी इस्राईली रह सकेगा।

हुक्मरान के लिए ज़मीन

7 हुक्मरान के लिए भी ज़मीन अलग करनी है।
यह ज़मीन मुक़द्दस ख़ित्ते की मशरिक़ी हद से ले
कर मुल्क की मशरिक़ी सरहद तक और मुक़द्दस
ख़ित्ते की मग़रिबी हद से ले कर समुन्दर तक होगी।
चुनाँचे मशरिक़ से मग़रिब तक मुक़द्दस ख़ित्ते और
हुक्मरान के इलाक़े का मिल मिला कर फ़ासिला
उतना है जितना क़बाइली इलाक़ों का है। 8 यह
इलाक़ा मुल्क-ए-इस्राईल में हुक्मरान का हिस्सा
होगा। फिर वह आइन्दा मेरी क़ौम पर ज़ुल्म नहीं
करेगा बल्कि मुल्क के बाक़ी हिस्से को इस्राईल के
क़बीलों पर छोड़ेगा।

हुक्मरान के लिए हिदायात

9 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ इस्राईली
हुक्मरानो, अब बस करो! अपनी ग़लत हरकतों
से बाज़ आओ। अपना ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद छोड़ कर
इन्साफ़ और रास्तबाज़ी क़ाइम करो। मेरी क़ौम को
उस की मौरूसी ज़मीन से भगाने से बाज़ आओ। यह
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।

10 सहीह तराज़ू इस्तेमाल करो, तुम्हारे बाट और
पैमाइश के आलात ग़लत न हों। 11 ग़ल्ला नापने का
बर्तन बनाम ऐफ़ा माए नापने के बर्तन बनाम बत
जितना बड़ा हो। दोनों के लिए कसौटी ख़ोमर है। एक
ख़ोमर 10 ऐफ़ा और 10 बत के बराबर है। 12 तुम्हारे

बाट यूँ हों कि 20 जीरह 1 मिस्क़ाल के बराबर और
60 मिस्क़ाल 1 माना के बराबर हों।
13 दर्ज-ए-ज़ैल तुम्हारे बाक़ाइदा हदिए हैं :
अनाज : तुम्हारी फ़सल का 60वाँ हिस्सा,
जौ : तुम्हारी फ़सल का 60वाँ हिस्सा,
14 ज़ैतून का तेल : तुम्हारी फ़सल का 100वाँ हिस्सा
(तेल को बत के हिसाब से नापना है। 10 बत 1 ख़ोमर
और 1 कोर के बराबर है।),
15 200 भेड़-बकरियों में से एक।
यह चीज़ें ग़ल्ला की नज़रों के लिए, भस्म होने वाली
क़ुर्बानियों और सलामती की क़ुर्बानियों के लिए
मुक़र्रर हैं। उन से क़ौम का कफ़्फ़ारा दिया जाएगा।
यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।
16 लाज़िम है कि तमाम इस्राईली यह हदिए मुल्क
के हुक्मरान के हवाले करें। 17 हुक्मरान का फ़र्ज़ होगा
कि वह नए चाँद की ईदों, सबत के दिनों और दीगर
ईदों पर तमाम इस्राईली क़ौम के लिए क़ुर्बानियाँ
मुहय्या करे। इन में भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ, गुनाह
और सलामती की क़ुर्बानियाँ और ग़ल्ला और मै की
नज़रें शामिल होंगी। यूँ वह इस्राईल का कफ़्फ़ारा
देगा।

बड़ी ईदों पर क़ुर्बानियाँ

18 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि पहले
महीने [g]के पहले दिन को एक बेऐब बैल को क़ुर्बान
करके मक़्दिस को पाक-साफ़ कर। 19 इमाम बैल
का ख़ून ले कर उसे रब के घर के दरवाज़ों के
बाज़ूओं, क़ुर्बानगाह के दरमियानी हिस्से के कोनों
और अन्दरूनी सहन में पहुँचाने वाले दरवाज़ों के
बाज़ूओं पर लगा दे। 20 यही अमल पहले महीने के
सातवें दिन भी कर ताकि उन सब का कफ़्फ़ारा दिया
जाए जिन्हों ने ग़ैरइरादी तौर पर या बेख़बरी से गुनाह
किया हो। यूँ तुम रब के घर का कफ़्फ़ारा दोगे।
21 पहले महीने के चौधवें दिन फ़सह की ईद का
आग़ाज़ हो। उसे सात दिन मनाओ, और उस के दौरान
सिर्फ़ बेख़मीरी रोटी खाओ। 22 पहले दिन मुल्क का
हुक्मरान अपने और तमाम क़ौम के लिए गुनाह की
क़ुर्बानी के तौर पर एक बैल पेश करे। 23 नीज़, वह
ईद के सात दिन के दौरान रोज़ाना सात बेऐब बैल
और सात मेंढे भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर
क़ुर्बान करे और गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर एक
एक बकरा पेश करे। 24 वह हर बैल और हर मेंढे के
साथ साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश करे। इस के लिए
वह फ़ी जानवर 16 किलोग्राम मैदा और 4 लिटर तेल
मुहय्या करे।
25 सातवें महीने [h]के पंद्रहवें दिन झोंपड़ियों की ईद
शुरू होती है। हुक्मरान इस ईद पर भी सात दिन के
दौरान वही क़ुर्बानियाँ पेश करे जो फ़सह की ईद के
लिए दरकार हैं यानी गुनाह की क़ुर्बानियाँ, भस्म होने
वाली क़ुर्बानियाँ, ग़ल्ला की नज़रें और तेल।

ईदों पर हुक्मरान की जानिब से क़ुर्बानियाँ

46 1 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
लाज़िम है कि अन्दरूनी सहन में पहुँचाने
वाला मशरिक़ी दरवाज़ा इत्वार से ले कर जुमए तक
बन्द रहे। उसे सिर्फ़ सबत और नए चाँद के दिन
खोलना है। 2 उस वक़्त हुक्मरान बैरूनी सहन से
हो कर मशरिक़ी दरवाज़े के बरामदे में दाख़िल हो
जाए और उस में से गुज़र कर दरवाज़े के बाज़ू के
पास खड़ा हो जाए। वहाँ से वह इमामों को उस की
भस्म होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश
करते हुए देख सकेगा। दरवाज़े की दहलीज़ पर वह
सिज्दा करेगा, फिर चला जाएगा। यह दरवाज़ा शाम
तक खुला रहे। 3 लाज़िम है कि बाक़ी इस्राईली सबत
और नए चाँद के दिन बैरूनी सहन में इबादत करें।
वह इसी मशरिक़ी दरवाज़े के पास आ कर मेरे हुज़ूर
औंधे मुँह हो जाएँ।

---

[g]मार्च ता अप्रैल।

[h]सितम्बर ता अक्तूबर।

4 सबत के दिन हुक्मरान छः बेऐब भेड़ के बच्चे और
एक बेऐब मेंढा चुन कर रब को भस्म होने वाली
क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। 5 वह हर मेंढे के साथ
ग़ल्ला की नज़र भी पेश करे यानी 16 किलोग्राम मैदा
और 4 लिटर ज़ैतून का तेल। हर भेड़ के बच्चे के साथ
वह उतना ही ग़ल्ला दे जितना जी चाहे। 6 नए चाँद के
दिन वह एक जवान बैल, छः भेड़ के बच्चे और एक
मेंढा पेश करे। सब बेऐब हों। 7 जवान बैल और मेंढे
के साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश की जाए। ग़ल्ला की
यह नज़र 16 किलोग्राम मैदे और 4 लिटर ज़ैतून के
तेल पर मुश्तमिल हो। वह हर भेड़ के बच्चे के साथ
उतना ही ग़ल्ला दे जितना जी चाहे।

8 हुक्मरान अन्दरूनी मशरिक़ी दरवाज़े में बैरूनी
सहन से हो कर दाख़िल हो, और वह इसी रास्ते से
निकले भी। 9 जब बाक़ी इस्राईली किसी ईद पर रब
को सिज्दा करने आएँ तो जो शिमाली दरवाज़े से
बैरूनी सहन में दाख़िल हों वह इबादत के बाद जुनूबी
दरवाज़े से निकलें, और जो जुनूबी दरवाज़े से दाख़िल
हों वह शिमाली दरवाज़े से निकलें। कोई उस दरवाज़े
से न निकले जिस में से वह दाख़िल हुआ बल्कि
मुक़ाबिल के दरवाज़े से। 10 हुक्मरान उस वक़्त सहन
में दाख़िल हो जब बाक़ी इस्राईली दाख़िल हो रहे हों,
और वह उस वक़्त रवाना हो जब बाक़ी इस्राईली
रवाना हो जाएँ।

11 ईदों और मुक़र्ररा तहवारों पर बैल और मेंढे के
साथ ग़ल्ला की नज़र पेश की जाए। ग़ल्ला की यह नज़र
16 किलोग्राम मैदे और 4 लिटर ज़ैतून के तेल पर
मुश्तमिल हो। हुक्मरान भेड़ के बच्चों के साथ उतना
ही ग़ल्ला दे जितना जी चाहे।

12 जब हुक्मरान अपनी ख़ुशी से मुझे क़ुर्बानी पेश
करना चाहे ख़्वाह भस्म होने वाली या सलामती
की क़ुर्बानी हो, तो उस के लिए अन्दरूनी दरवाज़े
का मशरिक़ी दरवाज़ा खोला जाए। वहाँ वह अपनी
क़ुर्बानी यूँ पेश करे जिस तरह सबत के दिन करता
है। उस के निकलने पर यह दरवाज़ा बन्द कर दिया
जाए।

रोज़ाना की क़ुर्बानी

13 इस्राईल रब को हर सुब्ह एक बेऐब यकसाला
भेड़ का बच्चा पेश करे। भस्म होने वाली यह क़ुर्बानी
रोज़ाना चढ़ाई जाए। 14 साथ साथ ग़ल्ला की नज़र पेश
की जाए। इस के लिए सवा लिटर ज़ैतून का तेल
ढाई किलोग्राम मैदे के साथ मिलाया जाए। ग़ल्ला की
यह नज़र हमेशा ही मुझे पेश करनी है। 15 लाज़िम है
कि हर सुब्ह भेड़ का बच्चा, मैदा और तेल मेरे लिए
जलाया जाए।

हुक्मरान की मौरूसी ज़मीन

16 क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि अगर इस्राईल
का हुक्मरान अपने किसी बेटे को कुछ मौरूसी
ज़मीन दे तो यह ज़मीन बेटे की मौरूसी ज़मीन बन
कर उस की औलाद की मिलकियत रहेगी। 17 लेकिन
अगर हुक्मरान कुछ मौरूसी ज़मीन अपने किसी
मुलाज़िम को दे तो यह ज़मीन सिर्फ़ अगले बहाली के
साल तक मुलाज़िम के हाथ में रहेगी। फिर यह दुबारा
हुक्मरान के क़ब्ज़े में वापस आएगी। क्यूँकि यह
मौरूसी ज़मीन मुस्तक़िल तौर पर उस की और उस के
बेटों की मिलकियत है। 18 हुक्मरान को जब्रन दूसरे
इस्राईलियों की मौरूसी ज़मीन अपनाने की इजाज़त
नहीं। लाज़िम है कि जो भी ज़मीन वह अपने बेटों में
तक़्सीम करे वह उस की अपनी ही मौरूसी ज़मीन
हो। मेरी क़ौम में से किसी को निकाल कर उस की
मौरूसी ज़मीन से महरूम करना मना है'।"

रब के घर का किचन

19 इस के बाद मेरा राहनुमा मुझे उन कमरों के
दरवाज़े के पास ले गया जिन का रुख़ शिमाल की
तरफ़ था और जो अन्दरूनी सहन के जुनूबी दरवाज़े
के क़रीब थे। यह इमामों के मुक़द्दस कमरे हैं। उस ने
मुझे कमरों के मग़रिबी सिरे में एक जगह दिखा कर
20 कहा, "यहाँ इमाम वह गोश्त उबालेंगे जो गुनाह
और क़ुसूर की क़ुर्बानियों में से उन का हिस्सा बनता

है। यहाँ वह ग़ल्ला की नज़र ले कर रोटी भी बनाएँगे। क़ुर्बानियों में से कोई भी चीज़ बैरूनी सहन में नहीं लाई जा सकती, ऐसा न हो कि मुक़द्दस चीज़ें छूने से आम लोगों की जान ख़तरे में पड़ जाए।”

21 फिर मेरा राहनुमा दुबारा मेरे साथ बैरूनी सहन में
आ गया। वहाँ उस ने मुझे उस के चार कोने दिखाए।
हर कोने में एक सहन था 22 जिस की लम्बाई 70
फ़ुट और चौड़ाई साढ़े 52 फ़ुट थी। हर सहन इतना
ही बड़ा था 23 और एक दीवार से घिरा हुआ था।
दीवार के साथ साथ चूल्हे थे। 24 मेरे राहनुमा ने मुझे
बताया, “यह वह किचन हैं जिन में रब के घर के
ख़ादिम लोगों की पेशकरदा क़ुर्बानियाँ उबालेंगे।”

रब के घर में से निकलने वाला दरया

47 1 इस के बाद मेरा राहनुमा मुझे एक बार
फिर रब के घर के दरवाज़े के पास ले
गया। यह दरवाज़ा मशरिक़ में था, क्यूँकि रब के
घर का रुख़ ही मशरिक़ की तरफ़ था। मैं ने देखा कि
दहलीज़ के नीचे से पानी निकल रहा है। दरवाज़े से
निकल कर वह पहले रब के घर की जुनूबी दीवार
के साथ साथ बहता था, फिर क़ुर्बानगाह के जुनूब में
से गुज़र कर मशरिक़ की तरफ़ बह निकला। 2 मेरा
राहनुमा मेरे साथ बैरूनी सहन के शिमाली दरवाज़े
में से निकला। बाहर चारदीवारी के साथ साथ चलते
चलते हम बैरूनी सहन के मशरिक़ी दरवाज़े के पास
पहुँच गए। मैं ने देखा कि पानी इस दरवाज़े के जुनूबी
हिस्से में से निकल रहा है।

3 हम पानी के किनारे किनारे चल पड़े। मेरे राहनुमा
ने अपने फ़ीते के साथ आधा किलोमीटर का
फ़ासिला नापा। फिर उस ने मुझे पानी में से गुज़रने
को कहा। यहाँ पानी टख़नों तक पहुँचता था। 4 उस
ने मज़ीद आधे किलोमीटर का फ़ासिला नापा, फिर
मुझे दुबारा पानी में से गुज़रने को कहा। अब पानी
घुटनों तक पहुँचा। जब उस ने तीसरी मर्तबा आधा
किलोमीटर का फ़ासिला नाप कर मुझे उस में से
गुज़रने दिया तो पानी कमर तक पहुँचा। 5 एक
आख़िरी दफ़ा उस ने आधे किलोमीटर का फ़ासिला
नापा। अब मैं पानी में से गुज़र न सका। पानी इतना
गहरा था कि उस में से गुज़रने के लिए तैरने की
ज़रूरत थी।

6 उस ने मुझ से पूछा, “ऐ आदमज़ाद, क्या तू ने ग़ौर
किया है?” फिर वह मुझे दरया के किनारे तक वापस
लाया।

7 जब वापस आया तो मैं ने देखा कि दरया के दोनों
किनारों पर मुतअद्दिद दरख़्त लगे हैं। 8 वह बोला,
“यह पानी मशरिक़ की तरफ़ बह कर वादी-ए-यर्दन
में पहुँचता है। उसे पार करके वह बहीरा-ए-मुर्दार में
आ जाता है। उस के असर से बहीरा-ए-मुर्दार का
नमकीन पानी पीने के क़ाबिल हो जाएगा। 9 जहाँ भी
दरया बहेगा वहाँ के बेशुमार जानदार जीते रहेंगे।
बहुत मछलियाँ होंगी, और दरया बहीरा-ए-मुर्दार का
नमकीन पानी पीने के क़ाबिल बनाएगा। जहाँ से भी
गुज़रेगा वहाँ सब कुछ फलता फूलता रहेगा। 10 ऐन-
जदी से ले कर ऐन-अज्लैम तक उस के किनारों पर
मछेरे खड़े होंगे। हर तरफ़ उन के जाल सूखने के
लिए फैलाए हुए नज़र आएँगे। दरया में हर क़िस्म
की मछलियाँ होंगी, उतनी जितनी बहीरा-ए-रूम में
पाई जाती हैं। 11 सिर्फ़ बहीरा-ए-मुर्दार के इर्दगिर्द की
दलदली जगहों और जोहड़ों का पानी नमकीन रहेगा,
क्यूँकि वह नमक हासिल करने के लिए इस्तेमाल
होगा। 12 दरया के दोनों किनारों पर हर क़िस्म के
फलदार दरख़्त उगेंगे। इन दरख़्तों के पत्ते न कभी
मुरझाएँगे, न कभी उन का फल ख़त्म होगा। वह हर
महीने फल लाएँगे, इस लिए कि मक़्दिस का पानी
उन की आबपाशी करता रहेगा। उन का फल लोगों
की ख़ुराक बनेगा, और उन के पत्ते शिफ़ा देंगे।”

इस्राईल की सरहदें

13 फिर रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने फ़रमाया, “मैं तुझे
उस मुल्क की सरहदें बताता हूँ जो बारह क़बीलों में
तक़्सीम करना है। यूसुफ़ को दो हिस्से देने हैं, बाक़ी
क़बीलों को एक एक हिस्सा। 14 मैं ने अपना हाथ

उठा कर क़सम खाई थी कि मैं यह मुल्क तुम्हारे
बापदादा को अता करूँगा, इस लिए तुम यह मुल्क
मीरास में पाओगे। अब उसे आपस में बराबर तक़्सीम
कर लो।

15 शिमाली सरहद बहीरा-ए-रूम से शुरू हो कर
मशरिक़ की तरफ़ हत्लून, लबो-हमात और सिदाद के
पास से गुज़रती है। 16 वहाँ से वह बेरोता और सिब्रैम
के पास पहुँचती है (सिब्रैम मुल्क-ए-दमिश्क़ और
मुल्क-ए-हमात के दरमियान वाक़े है)। फिर सरहद
हसर-एनान शहर तक आगे निकलती है जो हौरान की
सरहद पर वाक़े है। 17 ग़रज़ शिमाली सरहद बहीरा-
ए-रूम से ले कर हसर-एनान तक पहुँचती है। दमिश्क़
और हमात की सरहद्दें उस के शिमाल में हैं।

18 मुल्क की मशरिक़ी सरहद वहाँ शुरू होती है
जहाँ दमिश्क़ का इलाक़ा हौरान के पहाड़ी इलाक़े से
मिलता है। वहाँ से सरहद दरया-ए-यर्दन के साथ साथ
चलती हुई जुनूब में बहीरा-ए-रूम के पास तमर शहर
तक पहुँचती है। यूँ दरया-ए-यर्दन मुल्क-ए-इस्राईल
की मशरिक़ी सरहद और मुल्क-ए-जिलिआद की
मग़रिबी सरहद है।

19 जुनूबी सरहद तमर से शुरू हो कर जुनूब-मग़रिब
की तरफ़ चलती चलती मरीबा-क़ादिस के चश्मों
तक पहुँचती है। फिर वह शिमाल-मग़रिब की तरफ़
रुख़ करके मिस्र की सरहद यानी वादी-ए-मिस्र के
साथ साथ बहीरा-ए-रूम तक पहुँचती है।

20 मग़रिबी सरहद बहीरा-ए-रूम है जो शिमाल में
लबो-हमात के मुक़ाबिल ख़त्म होती है।

21 मुल्क को अपने क़बीलों में तक़्सीम करो! 22 यह
तुम्हारी मौरूसी ज़मीन होगी। जब तुम क़ुरआ डाल
कर उसे आपस में तक़्सीम करो तो उन ग़ैरमुल्कियों
को भी ज़मीन मिलनी है जो तुम्हारे दरमियान रहते
और जिन के बच्चे यहाँ पैदा हुए हैं। तुम्हारा उन के
साथ वैसा सुलूक हो जैसा इस्राईलियों के साथ।
क़ुरआ डालते वक़्त उन्हें इस्राईली क़बीलों के साथ
ज़मीन मिलनी है। 23 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता
है कि जिस क़बीले में भी परदेसी आबाद हों वहाँ
तुम्हें उन्हें मौरूसी ज़मीन देनी है।

क़बीलों में मुल्क की तक़्सीम

48 1–7 इस्राईल की शिमाली सरहद बहीरा-ए-
रूम से शुरू हो कर मशरिक़ की तरफ़
हत्लून, लबो-हमात और हसर-एनान के पास से
गुज़रती है। दमिश्क़ और हमात सरहद के शिमाल में
हैं। हर क़बीले को मुल्क का एक हिस्सा मिलेगा। हर
ख़ित्ते का एक सिरा मुल्क की मशरिक़ी सरहद और
दूसरा सिरा मग़रिबी सरहद होगा। शिमाल से ले कर
जुनूब तक क़बाइली इलाक़ों की यह तर्तीब होगी :
दान, आशर, नफ़्ताली, मनस्सी, इफ़्राईम, रूबिन और
यहूदाह।

मुल्क के बीच में मख़्सूस इलाक़ा

8 यहूदाह के जुनूब में वह इलाक़ा होगा जो तुम्हें
मेरे लिए अलग करना है। क़बाइली इलाक़ों की तरह
उस का भी एक सिरा मुल्क की मशरिक़ी सरहद और
दूसरा सिरा मग़रिबी सरहद होगा। शिमाल से जुनूब
तक का फ़ासिला साढ़े 12 किलोमीटर है। उस के
बीच में मक़्दिस है।

9 इस इलाक़े के दरमियान एक ख़ास ख़ित्ता होगा।
मशरिक़ से मग़रिब तक उस का फ़ासिला साढ़े
12 किलोमीटर होगा जबकि शिमाल से जुनूब तक
फ़ासिला 10 किलोमीटर होगा। रब के लिए मख़्सूस
इस ख़ित्ते 10 का एक हिस्सा इमामों के लिए मख़्सूस
होगा। इस हिस्से का फ़ासिला मशरिक़ से मग़रिब
तक साढ़े 12 किलोमीटर और शिमाल से जुनूब
तक 5 किलोमीटर होगा। इस के बीच में ही रब
का मक़्दिस होगा। 11 यह मुक़द्दस इलाक़ा लावी के
ख़ानदान सदोक़ के मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किए गए
इमामों को दिया जाएगा। क्यूँकि जब इस्राईली मुझ से
बर्गश्ता हुए तो बाक़ी लावी उन के साथ भटक गए,
लेकिन सदोक़ का ख़ानदान वफ़ादारी से मेरी ख़िदमत
करता रहा। 12 इस लिए उन्हें मेरे लिए मख़्सूस इलाक़े

का मुक़द्दसतरीन हिस्सा मिलेगा। यह लावियों के
ख़ित्ते के शिमाल में होगा। 13 इमामों के जुनूब में बाक़ी
लावियों का ख़ित्ता होगा। मशरिक़ से मग़रिब तक
उस का फ़ासिला साढ़े 12 किलोमीटर और शिमाल
से जुनूब तक 5 किलोमीटर होगा।

14 रब के लिए मख़्सूस यह इलाक़ा पूरे मुल्क का
बेहतरीन हिस्सा है। उस का कोई भी प्लाट किसी
दूसरे के हाथ में देने की इजाज़त नहीं। उसे न बेचा
जाए, न किसी दूसरे को किसी प्लाट के इवज़ में
दिया जाए। क्यूँकि यह इलाक़ा रब के लिए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस है।

15 रब के मक़्दिस के इस ख़ास इलाक़े के जुनूब
में एक और ख़ित्ता होगा जिस की लम्बाई साढ़े 12
किलोमीटर और चौड़ाई अढ़ाई किलोमीटर है। वह
मुक़द्दस नहीं है बल्कि आम लोगों की रिहाइश के
लिए होगा। इस के बीच में शहर होगा, जिस के
इर्दगिर्द चरागाहें होंगी। 16 यह शहर मुरब्बा शक्ल
का होगा। लम्बाई और चौड़ाई दोनों सवा दो दो
किलोमीटर होगी।

17 शहर के चारों तरफ़ जानवरों को चराने की
खुली जगह होगी जिस की चौड़ाई 133 मीटर होगी।
18 चूँकि शहर अपने ख़ित्ते के बीच में होगा इस
लिए मज़कूरा खुली जगह के मशरिक़ में एक ख़ित्ता
बाक़ी रह जाएगा जिस का मशरिक़ से शहर तक
फ़ासिला 5 किलोमीटर और शिमाल से जुनूब तक
फ़ासिला अढ़ाई किलोमीटर होगा। शहर के मग़रिब
में भी इतना ही बड़ा ख़ित्ता होगा। इन दो ख़ित्तों में
खेतीबाड़ी की जाएगी जिस की पैदावार शहर में काम
करने वालों की ख़ुराक होगी। 19 शहर में काम करने
वाले तमाम क़बीलों के होंगे। वही इन खेतों की
खेतीबाड़ी करेंगे।

20 चुनाँचे मेरे लिए अलग किया गया यह पूरा
इलाक़ा मुरब्बा शक्ल का है। उस की लम्बाई और
चौड़ाई साढ़े बारह बारह किलोमीटर है। इस में शहर
भी शामिल है।

21–22 मज़कूरा मुक़द्दस ख़ित्ते में मक़्दिस, इमामों
और बाक़ी लावियों की ज़मीनें हैं। उस के मशरिक़
और मग़रिब में बाक़ीमान्दा ज़मीन हुक्मरान की
मिलकियत है। मुक़द्दस ख़ित्ते के मशरिक़ में हुक्मरान
की ज़मीन मुल्क की मशरिक़ी सरहद तक होगी और
मुक़द्दस ख़ित्ते के मग़रिब में वह समुन्दर तक होगी।
शिमाल से जुनूब तक वह मुक़द्दस ख़ित्ते जितनी चौड़ी
यानी साढ़े 12 किलोमीटर होगी। शिमाल में यहूदाह
का क़बाइली इलाक़ा होगा और जुनूब में बिनयमीन
का।

दीगर क़बीलों की ज़मीन

23–27 मुल्क के इस ख़ास दरमियानी हिस्से के जुनूब
में बाक़ी क़बीलों को एक एक इलाक़ा मिलेगा। हर
इलाक़े का एक सिरा मुल्क की मशरिक़ी सरहद और
दूसरा सिरा बहीरा-ए-रूम होगा। शिमाल से ले कर
जुनूब तक क़बाइली इलाक़ों की यह तर्तीब होगी :
बिनयमीन, शमाऊन, इश्कार, ज़बूलून और जद।

28 जद के क़बीले की जुनूबी सरहद मुल्क की
सरहद भी है। वह तमर से जुनूब-मग़रिब में मरीबा-
क़ादिस के चश्मों तक चलती है, फिर मिस्र की सरहद
यानी वादी-ए-मिस्र के साथ साथ शिमाल-मग़रिब का
रुख़ करके बहीरा-ए-रूम तक पहुँचती है।

29 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि यही
तुम्हारा मुल्क होगा! उसे इस्राईली क़बीलों में
तक़्सीम करो। जो कुछ भी उन्हें क़ुरआ डाल कर
मिले वह उन की मौरूसी ज़मीन होगी।

यरूशलम के दरवाज़े

30–34 यरूशलम शहर के 12 दरवाज़े होंगे। फ़सील
की चारों दीवारें सवा दो दो किलोमीटर लम्बी होंगी।
हर दीवार के तीन दरवाज़े होंगे, ग़रज़ कुल बारह
दरवाज़े होंगे। हर एक का नाम किसी क़बीले का नाम
होगा। चुनाँचे शिमाल में रूबिन का दरवाज़ा, यहूदाह
का दरवाज़ा और लावी का दरवाज़ा होगा, मशरिक़
में यूसुफ़ का दरवाज़ा, बिनयमीन का दरवाज़ा और

दान का दरवाज़ा होगा, जुनूब में शमाऊन का
दरवाज़ा, इश्कार का दरवाज़ा और ज़बूलून का
दरवाज़ा होगा, और मग़रिब में जद का दरवाज़ा,
आशर का दरवाज़ा और नफ़्ताली का दरवाज़ा होगा।
35 फ़सील की पूरी लम्बाई 9 किलोमीटर है।
तब शहर 'यहाँ रब है' कहलाएगा।!"

दान्याल

दान्याल और उस के दोस्त
शाह-ए-बाबल के दरबार में

1 1 शाह-ए-यहूदाह यहूयक़ीम की सल्तनत के
तीसरे साल में शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र ने
यरूशलम आ कर उस का मुहासरा किया। 2 उस
वक़्त रब ने यहूयक़ीम और अल्लाह के घर का
काफ़ी सामान नबूकद्नज़्ज़र के हवाले कर दिया।
नबूकद्नज़्ज़र ने यह चीज़ें मुल्क-ए-बाबल में ले जा
कर अपने देवता के मन्दिर के ख़ज़ाने में महफ़ूज़ कर
दीं।

3 फिर उस ने अपने दरबार के आला अफ़्सर
अश्पनाज़ को हुक्म दिया, "यहूदाह के शाही ख़ानदान
और ऊँचे तब्क़े के ख़ानदानों की तफ़्तीश करो। उन
में से कुछ ऐसे नौजवानों को चुन कर ले आओ
4 जो बेऐब, ख़ूबसूरत, हिक्मत के हर लिहाज़ से
समझदार, तालीमयाफ़्ता और समझने में तेज़ हों।
ग़रज़ यह आदमी शाही महल में ख़िदमत करने के
क़ाबिल हों। उन्हें बाबल की ज़बान लिखने और
बोलने की तालीम दो।" 5 बादशाह ने मुक़र्रर किया
कि रोज़ाना उन्हें शाही बावर्चीख़ाने से कितना खाना
और मै मिलनी है। तीन साल की तर्बियत के बाद
उन्हें बादशाह की ख़िदमत के लिए हाज़िर होना था।

6 जब इन नौजवानों को चुना गया तो चार आदमी
उन में शामिल थे जिन के नाम दान्याल, हननियाह,
मीसाएल और अज़रियाह थे। 7 दरबार के आला
अफ़्सर ने उन के नए नाम रखे। दान्याल बेल्तशज़्ज़र
में बदल गया, हननियाह सद्रक में, मीसाएल मीसक
में और अज़रियाह अबद्नजू में।

8 लेकिन दान्याल ने मुसम्मम इरादा कर लिया कि
मैं अपने आप को शाही खाना खाने और शाही मै
पीने से नापाक नहीं करूँगा। उस ने दरबार के आला
अफ़्सर से इन चीज़ों से पर्हेज़ करने की इजाज़त
माँगी। 9 अल्लाह ने पहले से इस अफ़्सर का दिल
नर्म कर दिया था, इस लिए वह दान्याल का ख़ास
लिहाज़ करता और उस पर मेहरबानी करता था।
10 लेकिन दान्याल की दरख़्वास्त सुन कर उस ने
जवाब दिया, "मुझे अपने आक़ा बादशाह से डर है।
उन ही ने मुतअय्यिन किया कि तुम्हें क्या क्या खाना
और पीना है। अगर उन्हें पता चले कि तुम दूसरे
नौजवानों की निस्बत दुबले-पतले और कमज़ोर लगे
तो वह मेरा सर क़लम करेंगे।" 11 तब दान्याल ने उस
निगरान से बात की जिसे दरबार के आला अफ़्सर
ने दान्याल, हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह पर
मुक़र्रर किया था। वह बोला, 12 "ज़रा दस दिन तक
अपने ख़ादिमों को आज़माएँ। इतने में हमें खाने के
लिए सिर्फ़ साग-पात और पीने के लिए पानी दीजिए।
13 इस के बाद हमारी सूरत का मुक़ाबला उन दीगर
नौजवानों के साथ करें जो शाही खाना खाते हैं। फिर
ही फ़ैसला करें कि आइन्दा अपने ख़ादिमों के साथ
कैसा सुलूक करेंगे।"

14 निगरान मान गया। दस दिन तक वह उन्हें साग-
पात खिला कर और पानी पिला कर आज़माता रहा।
15 दस दिन के बाद क्या देखता है कि दान्याल और
उस के तीन दोस्त शाही खाना खाने वाले दीगर
नौजवानों की निस्बत कहीं ज़्यादा सेहतमन्द और
मोटे-ताज़े लग रहे हैं। 16 तब निगरान उन के लिए
मुक़र्ररा शाही खाने और मै का इन्तिज़ाम बन्द करके
उन्हें सिर्फ़ साग-पात खिलाने लगा। 17 अल्लाह ने इन
चार आदमियों को अदब और हिक्मत के हर शोबे में
इल्म और समझ अता की। नीज़, दान्याल हर क़िस्म
की रोया और ख़्वाब की ताबीर कर सकता था।

18 मुक़र्ररा तीन साल के बाद दरबार के आला
अफ़्सर ने तमाम नौजवानों को नबूकद्नज़्ज़र के

सामने पेश किया। 19 जब बादशाह ने उन से गुफ़्तगु
की तो मालूम हुआ कि दान्याल, हननियाह, मीसाएल
और अज़रियाह दूसरों पर सब्क़त रखते हैं। चुनाँचे
चारों बादशाह के मुलाज़िम बन गए। 20 जब भी किसी
मुआमले में ख़ास हिक्मत और समझ दरकार होती
तो बादशाह ने देखा कि यह चार नौजवान मश्वरा देने
में पूरी सल्तनत के तमाम क़िस्मत का हाल बताने
वालों और जादूगरों से दस गुना ज़्यादा क़ाबिल हैं।
21 दान्याल ख़ोरस की हुकूमत के पहले साल तक
शाही दरबार में ख़िदमत करता रहा।

नबूकद्नज़्ज़र का ख़्वाब

2 1 अपनी हुकूमत के दूसरे साल में नबूकद्नज़्ज़र
ने ख़्वाब देखा। ख़्वाब इतना हौलनाक था
कि वह घबरा कर जाग उठा। 2 उस ने हुक्म दिया
कि तमाम क़िस्मत का हाल बताने वाले, जादूगर,
अफ़्सूँगर और नजूमी मेरे पास आ कर ख़्वाब का
मतलब बताएँ। जब वह हाज़िर हुए 3 तो बादशाह
बोला, "मैं ने एक ख़्वाब देखा है जो मुझे बहुत परेशान
कर रहा है। अब मैं उस का मतलब जानना चाहता
हूँ।"
4 नुजूमियों ने अरामी ज़बान में जवाब दिया,
"बादशाह सलामत अपने ख़ादिमों के सामने यह
ख़्वाब बयान करें तो हम उस की ताबीर करेंगे।"
5 लेकिन बादशाह बोला, "नहीं, तुम ही मुझे वह
कुछ बताओ और उस की ताबीर करो जो मैं ने ख़्वाब
में देखा। अगर तुम यह न कर सको तो मैं हुक्म दूँगा
कि तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए और तुम्हारे घर
कचरे के ढेर हो जाएँ। यह मेरा मुसम्मम इरादा है।
6 लेकिन अगर तुम मुझे वह कुछ बता कर उस की
ताबीर करो जो मैं ने ख़्वाब में देखा तो मैं तुम्हें अच्छे
तुह्फ़े और इनआम दूँगा, नीज़ तुम्हारी ख़ास इज़्ज़त
करूँगा। अब शुरू करो! मुझे वह कुछ बताओ और
उस की ताबीर करो जो मैं ने ख़्वाब में देखा।"
7 एक बार फिर उन्हों ने मिन्नत की, "बादशाह अपने
ख़ादिमों के सामने अपना ख़्वाब बताएँ तो हम ज़रूर
उस की ताबीर करेंगे।"
8 बादशाह ने जवाब दिया, "मुझे साफ़ पता है कि
तुम क्या कर रहे हो! तुम सिर्फ़ टाल-मटोल कर रहे
हो, क्यूँकि तुम समझ गए हो कि मेरा इरादा पक्का है।
9 अगर तुम मुझे ख़्वाब न बताओ तो तुम सब को एक
ही सज़ा दी जाएगी। क्यूँकि तुम सब झूट और ग़लत
बातें पेश करने पर मुत्तफ़िक़ हो गए हो, यह उम्मीद
रखते हुए कि हालात किसी वक़्त बदल जाएंगे। मुझे
ख़्वाब बताओ तो मुझे पता चल जाएगा कि तुम मुझे
उस की सहीह ताबीर पेश कर सकते हो।"
10 नुजूमियों ने एतिराज़ किया, "दुनिया में कोई भी
इन्सान वह कुछ नहीं कर पाता जो बादशाह माँगते
हैं। यह कभी हुआ भी नहीं कि किसी बादशाह ने ऐसी
बात किसी क़िस्मत का हाल बताने वाले, जादूगर या
नजूमी से तलब की, ख़्वाह बादशाह कितना अज़ीम
क्यूँ न था। 11 जिस चीज़ का तक़ाज़ा बादशाह करते
हैं वह हद से ज़्यादा मुश्किल है। सिर्फ़ देवता ही यह
बात बादशाह पर ज़ाहिर कर सकते हैं, लेकिन वह
तो इन्सान के दरमियान रहते नहीं।"
12 यह सुन कर बादशाह आग-बगूला हो गया। बड़े
ग़ुस्से में उस ने हुक्म दिया कि बाबल के तमाम
दानिशमन्दों को सज़ा-ए-मौत दी जाए। 13 फ़रमान
सादिर हुआ कि दानिशमन्दों को मार डालना है।
चुनाँचे दान्याल और उस के दोस्तों को भी तलाश
किया गया ताकि उन्हें सज़ा-ए-मौत दें।
14 शाही मुहाफ़िज़ों का अफ़्सर बनाम अर्यूक अभी
दानिशमन्दों को मार डालने के लिए रवाना हुआ
कि दान्याल बड़ी हिक्मत और मौक़ाशनासी से
उस से मुख़ातिब हुआ। 15 उस ने अफ़्सर से पूछा,
"बादशाह ने इतना सख़्त फ़रमान क्यूँ जारी किया?"
अर्यूक ने दान्याल को सारा मुआमला बयान किया।
16 दान्याल फ़ौरन बादशाह के पास गया और उस
से दरख़्वास्त की, "ज़रा मुझे कुछ मुहलत दीजिए
ताकि मैं बादशाह के ख़्वाब की ताबीर कर सकूँ।"

17 फिर वह अपने घर वापस गया और अपने दोस्तों
हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह को तमाम सूरत-
ए-हाल सुनाई। 18 वह बोला, “आसमान के ख़ुदा
से इल्तिजा करें कि वह मुझ पर रहम करे। मिन्नत
करें कि वह मेरे लिए भेद खोले ताकि हम दीगर
दानिशमन्दों के साथ हलाक न हो जाएँ।”

19 रात के वक़्त दान्याल ने रोया देखी जिस में उस
के लिए भेद खोला गया। तब उस ने आसमान के
ख़ुदा की हम्द-ओ-सना की,

20 “अल्लाह के नाम की तम्जीद अज़ल से अबद तक
हो। वही हिक्मत और क़ुव्वत का मालिक है। 21 वही
औक़ात और ज़माने बदलने देता है। वही बादशाहों
को तख़्त पर बिठा देता और उन्हें तख़्त पर से उतार
देता है। वही दानिशमन्दों को दानाई और समझदारों
को समझ अता करता है। 22 वही गहरी और पोशीदा
बातें ज़ाहिर करता है। जो कुछ अंधेरे में छुपा रहता
है उस का इल्म वह रखता है, क्यूँकि वह रौशनी
से घिरा रहता है। 23 ऐ मेरे बापदादा के ख़ुदा, मैं तेरी
हम्द-ओ-सना करता हूँ! तू ने मुझे हिक्मत और ताक़त
अता की है। जो बात हम ने तुझ से माँगी वह तू ने
हम पर ज़ाहिर की, क्यूँकि तू ने हम पर बादशाह का
ख़्वाब ज़ाहिर किया है।”

24 फिर दान्याल अर्यूक के पास गया जिसे बादशाह
ने बाबल के दानिशमन्दों को सज़ा-ए-मौत देने की
ज़िम्मादारी दी थी। उस ने उस से दरख़्वास्त की,
“बाबल के दानिशमन्दों को मौत के घाट न उतारें,
क्यूँकि मैं बादशाह के ख़्वाब की ताबीर कर सकता
हूँ। मुझे बादशाह के हुज़ूर पहुँचा दें तो मैं उन्हें सब
कुछ बता दूँगा।”

25 यह सुन कर अर्यूक भाग कर दान्याल को
बादशाह के हुज़ूर ले गया। वह बोला, “मुझे यहूदाह
के जिलावतनों में से एक आदमी मिल गया जो
बादशाह को ख़्वाब का मतलब बता सकता है।”
26 तब नबूकद्नज़्ज़र ने दान्याल से जो बेल्तशज़्ज़र
कहलाता था पूछा, “क्या तुम मुझे वह कुछ बता
सकते हो जो मैं ने ख़्वाब में देखा? क्या तुम उस की
ताबीर कर सकते हो?”

27 दान्याल ने जवाब दिया, “जो भेद बादशाह
जानना चाहते हैं उसे खोलने की कुंजी किसी भी
दानिशमन्द, जादूगर, क़िस्मत का हाल बताने वाले
या ग़ैबदान के पास नहीं होती। 28 लेकिन आसमान
पर एक ख़ुदा है जो भेदों का मतलब इन्सान पर
ज़ाहिर कर देता है। उसी ने नबूकद्नज़्ज़र बादशाह
को दिखाया कि आने वाले दिनों में क्या कुछ पेश
आएगा। सोते वक़्त आप ने ख़्वाब में रोया देखी।
29 ऐ बादशाह, जब आप पलंग पर लेटे हुए थे तो
आप के ज़हन में आने वाले दिनों के बारे में ख़यालात
उभर आए। तब भेदों को खोलने वाले ख़ुदा ने आप
पर ज़ाहिर किया कि आने वाले दिनों में क्या कुछ
पेश आएगा। 30 इस भेद का मतलब मुझ पर ज़ाहिर
हुआ है, लेकिन इस लिए नहीं कि मुझे दीगर तमाम
दानिशमन्दों से ज़्यादा हिक्मत हासिल है बल्कि इस
लिए कि आप को भेद का मतलब मालूम हो जाए
और आप समझ सकें कि आप के ज़हन में क्या कुछ
उभर आया है।

31 ऐ बादशाह, रोया में आप ने अपने सामने एक
बड़ा और लम्बा-तड़ंगा मुजस्समा देखा जो तेज़ी से
चमक रहा था। शक्ल-ओ-सूरत ऐसी थी कि इन्सान
के रोंगटे खड़े हो जाते थे। 32 सर ख़ालिस सोने का था
जबकि सीना और बाज़ू चाँदी के, पेट और रान पीतल
की 33 और पिंडलियाँ लोहे की थीं। उस के पाँओ
का आधा हिस्सा लोहा और आधा हिस्सा पकी हुई
मिट्टी था। 34 आप इस मन्ज़र पर ग़ौर ही कर रहे थे
कि अचानक किसी पहाड़ी ढलान से पत्थर का बड़ा
टुकड़ा अलग हुआ। यह बग़ैर किसी इन्सानी हाथ के
हुआ। पत्थर धड़ाम से मुजस्समे के लोहे और मिट्टी
के पाँओ पर गिर कर दोनों को चूर चूर कर दिया।
35 नतीजे में पूरा मुजस्समा पाश पाश हो गया। जितना
भी लोहा, मिट्टी, पीतल, चाँदी और सोना था वह उस
भूसे की मानिन्द बन गया जो गाहते वक़्त बाक़ी रह
जाता है। हवा ने सब कुछ यूँ उड़ा दिया कि इन चीज़ों

का नाम-ओ-निशान तक न रहा। लेकिन जिस पत्थर
ने मुजस्समे को गिरा दिया वह ज़बरदस्त पहाड़ बन
कर इतना बढ़ गया कि पूरी दुनिया उस से भर गई।
36 यही बादशाह का ख़्वाब था। अब हम बादशाह
को ख़्वाब का मतलब बताते हैं। 37 ऐ बादशाह, आप
शहन्शाह हैं। आसमान के ख़ुदा ने आप को सल्तनत,
क़ुव्वत, ताक़त और इज़्ज़त से नवाज़ा है। 38 उस ने
इन्सान को जंगली जानवरों और परिन्दों समेत आप
ही के हवाले कर दिया है। जहाँ भी वह बसते हैं उस ने
आप को ही उन पर मुक़र्रर किया है। आप ही मज़कूरा
सोने का सर हैं। 39 आप के बाद एक और सल्तनत
क़ाइम हो जाएगी, लेकिन उस की ताक़त आप की
सल्तनत से कम होगी। फिर पीतल की एक तीसरी
सल्तनत वुजूद में आएगी जो पूरी दुनिया पर हुकूमत
करेगी। 40 आख़िर में एक चौथी सल्तनत आएगी जो
लोहे जैसी ताक़तवर होगी। जिस तरह लोहा सब कुछ
तोड़ कर पाश पाश कर देता है उसी तरह वह दीगर
सब को तोड़ कर पाश पाश करेगी। 41 आप ने देखा
कि मुजस्समे के पाँओ और उंगलियों में कुछ लोहा
और कुछ पकी हुई मिट्टी थी। इस का मतलब है, इस
सल्तनत के दो अलग हिस्से होंगे। लेकिन जिस तरह
ख़्वाब में मिट्टी के साथ लोहा मिलाया गया था उसी
तरह चौथी सल्तनत में लोहे की कुछ न कुछ ताक़त
होगी। 42 ख़्वाब में पाँओ की उंगलियों में कुछ लोहा
भी था और कुछ मिट्टी भी। इस का मतलब है, चौथी
सल्तनत का एक हिस्सा ताक़तवर और दूसरा नाज़ुक
होगा। 43 लोहे और मिट्टी की मिलावट का मतलब है
कि गो लोग आपस में शादी करने से एक दूसरे के
साथ मुत्तहिद होने की कोशिश करेंगे तो भी वह एक
दूसरे से पैवस्त नहीं रहेंगे, बिलकुल उसी तरह जिस
तरह लोहा मिट्टी के साथ पैवस्त नहीं रह सकता।
44 जब यह बादशाह हुकूमत करेंगे, उन ही दिनों में
आसमान का ख़ुदा एक बादशाही क़ाइम करेगा जो
न कभी तबाह होगी, न किसी दूसरी क़ौम के हाथ
में आएगी। यह बादशाही इन दीगर तमाम सल्तनतों
को पाश पाश करके ख़त्म करेगी, लेकिन ख़ुद अबद
तक क़ाइम रहेगी। 45 यही ख़्वाब में उस पत्थर का
मतलब है जिस ने बग़ैर किसी इन्सानी हाथ के पहाड़ी
ढलान से अलग हो कर मुजस्समे के लोहे, पीतल,
मिट्टी, चाँदी और सोने को पाश पाश कर दिया। इस
तरीक़े से अज़ीम ख़ुदा ने बादशाह पर ज़ाहिर किया है
कि मुस्तक़बिल में क्या कुछ पेश आएगा। यह ख़्वाब
क़ाबिल-ए-एतिमाद और उस की ताबीर सहीह है।”
46 यह सुन कर नबूकद्नज़्ज़र बादशाह ने औंधे मुँह
हो कर दान्याल को सिज्दा किया और हुक्म दिया कि
दान्याल को ग़ल्ला और बख़ूर की क़ुर्बानियाँ पेश की
जाएँ। 47 दान्याल से उस ने कहा, “यक़ीनन, तुम्हारा
ख़ुदा ख़ुदाओं का ख़ुदा और बादशाहों का मालिक
है। वह वाक़ई भेदों को खोलता है, वर्ना तुम यह भेद
मेरे लिए खोल न पाते।” 48 नबूकद्नज़्ज़र ने दान्याल
को बड़ा उहदा और मुतअद्दिद बेशक़ीमत तुहफ़े दिए।
उस ने उसे पूरे सूबा बाबल का गवर्नर बना दिया।
साथ साथ दान्याल बाबल के तमाम दानिशमन्दों पर
मुक़र्रर हुआ। 49 उस की गुज़ारिश पर बादशाह ने
सद्रक, मीसक और अबद्नजू को सूबा बाबल की
इन्तिज़ामिया पर मुक़र्रर किया। दान्याल ख़ुद शाही
दरबार में हाज़िर रहता था।

सोने के बुत की पूजा करने का हुक्म

3 1 एक दिन नबूकद्नज़्ज़र ने सोने का मुजस्समा
बनवाया। उस की ऊँचाई 90 फ़ुट और चौड़ाई
9 फ़ुट थी। उस ने हुक्म दिया कि बुत को सूबा बाबल
के मैदान बनाम दूरा में खड़ा किया जाए। 2 फिर
उस ने तमाम सूबेदारों, गवर्नरों, मुन्तज़िमों, मुशीरों,
ख़ज़ानचियों, जजों, मजिस्ट्रेटों, और सूबों के दीगर
तमाम बड़े बड़े सरकारी मुलाज़िमों को पैग़ाम भेजा
कि मुजस्समे की मख़्सूसियत के लिए आ कर जमा
हो जाओ। 3 चुनाँचे सब बुत की मख़्सूसियत के लिए
जमा हो गए। जब सब उस के सामने खड़े थे 4 तो
शाही नक़ीब ने बुलन्द आवाज़ से एलान किया,
“ऐ मुख़्तलिफ़ क़ौमों, उम्मतों और ज़बानों के
लोगो, सुनो! बादशाह फ़रमाता है, 5 ‘जूँ ही नरसिंगा,

शहनाई, सन्तूर, सरोद, ऊद, बीन और दीगर तमाम
साज़ बजेंगे तो लाज़िम है कि सब औंधे मुँह हो कर
बादशाह के खड़े किए गए सोने के बुत को सिज्दा
करें। 6 जो भी सिज्दा न करे उसे फ़ौरन भड़कती भट्टी
में फैंका जाएगा'।"
7 चुनाँचे जूँ ही साज़ बजने लगे तो मुख़्तलिफ़ क़ौमों,
उम्मतों और ज़बानों के तमाम लोग मुँह के बल हो
कर नबूकद्नज़्ज़र के खड़े किए गए बुत को सिज्दा
करने लगे।
8 उस वक़्त कुछ नजूमी बादशाह के पास आ
कर यहूदियों पर इल्ज़ाम लगाने लगे। 9 वह बोले,
"बादशाह सलामत अबद तक जीते रहें! 10 ऐ
बादशाह, आप ने फ़रमाया, 'जूँ ही नरसिंगा, शहनाई,
सन्तूर, सरोद, ऊद, बीन और दीगर तमाम साज़ बजेंगे
तो लाज़िम है कि सब औंधे मुँह हो कर बादशाह के
खड़े किए गए इस सोने के बुत को सिज्दा करें। 11 जो
भी सिज्दा न करे उसे भड़कती भट्टी में फैंका जाएगा'
12 लेकिन कुछ यहूदी आदमी हैं जो आप की पर्वा
ही नहीं करते, हालाँकि आप ने उन्हें सूबा बाबल की
इन्तिज़ामिया पर मुक़र्रर किया था। यह आदमी बनाम
सद्रक, मीसक और अबद्नजू न आप के देवताओं
की पूजा करते, न सोने के उस बुत की परस्तिश करते
हैं जो आप ने खड़ा किया है।"
13 यह सुन कर नबूकद्नज़्ज़र आपे से बाहर हो
गया। उस ने सीधा सद्रक, मीसक और अबद्नजू
को बुलाया। जब पहुँचे 14 तो बोला, "ऐ सद्रक,
मीसक और अबद्नजू, क्या यह सहीह है कि न
तुम मेरे देवताओं की पूजा करते, न मेरे खड़े किए
गए मुजस्समे की परस्तिश करते हो? 15 मैं तुम्हें एक
आख़िरी मौक़ा देता हूँ। साज़ दुबारा बजेंगे तो तुम्हें
मुँह के बल हो कर मेरे बनवाए हुए मुजस्समे को
सिज्दा करना है। अगर तुम ऐसा न करो तो तुम्हें
सीधा भड़कती भट्टी में फैंका जाएगा। तब कौन सा
ख़ुदा तुम्हें मेरे हाथ से बचा सकेगा?"
16 सद्रक, मीसक और अबद्नजू ने जवाब दिया,
"ऐ नबूकद्नज़्ज़र, इस मुआमले में हमें अपना दिफ़ा
करने की ज़रूरत नहीं है। 17 जिस ख़ुदा की ख़िदमत
हम करते हैं वह हमें बचा सकता है, ख़्वाह हमें
भड़कती भट्टी में क्यूँ न फैंका जाए। ऐ बादशाह, वह
हमें ज़रूर आप के हाथ से बचाएगा। 18 लेकिन अगर
वह हमें न भी बचाए तो भी आप को मालूम हो कि
न हम आप के देवताओं की पूजा करेंगे, न आप के
खड़े किए गए सोने के मुजस्समे की परस्तिश करेंगे।"
19 यह सुन कर नबूकद्नज़्ज़र आग-बगूला हो गया।
सद्रक, मीसक और अबद्नजू के सामने उस का
चिहरा बिगड़ गया और उस ने हुक्म दिया कि भट्टी
को मामूल की निस्बत सात गुना ज़्यादा गर्म किया
जाए। 20 फिर उस ने कहा कि बेहतरीन फ़ौजियों में
से चन्द एक सद्रक, मीसक और अबद्नजू को बांध
कर भड़कती भट्टी में फैंक दें। 21 तीनों को बांध कर
भड़कती भट्टी में फैंका गया। उन के चोग़े, पाजामे
और टोपियाँ उतारी न गईं। 22 चूँकि बादशाह ने भट्टी
को गर्म करने पर ख़ास ज़ोर दिया था इस लिए आग
इतनी तेज़ हुई कि जो फ़ौजी सद्रक, मीसक और
अबद्नजू को ले कर भट्टी के मुँह तक चढ़ गए वह
फ़ौरन नज़र-ए-आतिश हो गए। 23 उन के क़ैदी बंधी
हुई हालत में शोलाज़न आग में गिर गए।
24 अचानक नबूकद्नज़्ज़र बादशाह चौंक उठा।
उस ने उछल कर अपने मुशीरों से पूछा, "हम ने तो
तीन आदमियों को बांध कर भट्टी में फैंकवाया कि
नहीं?" उन्हों ने जवाब दिया, "जी, ऐ बादशाह।"
25 वह बोला, "तो फिर यह क्या है? मुझे चार आदमी
आग में इधर उधर फिरते हुए नज़र आ रहे हैं। न
वह बंधे हुए हैं, न उन्हें नुक़्सान पहुँच रहा है। चौथा
आदमी देवताओं का बेटा सा लग रहा है।"
26 नबूकद्नज़्ज़र जलती हुई भट्टी के मुँह के क़रीब
गया और पुकारा, "ऐ सद्रक, मीसक और अबद्नजू,
ऐ अल्लाह तआला के बन्दो, निकल आओ! इधर
आओ।" तब सद्रक, मीसक और अबद्नजू आग
से निकल आए। 27 सूबेदार, गवर्नर, मुन्तज़िम और
शाही मुशीर उन के गिर्द जमा हुए तो देखा कि आग
ने उन के जिस्मों को नुक़्सान नहीं पहुँचाया। बालों

में से एक भी झुलस नहीं गया था, न उन के लिबास
आग से मुतअस्सिर हुए थे। आग और धुएँ की बू
तक नहीं थी।

28 तब नबूकद्नज़्ज़र बोला, “सद्रक, मीसक और
अबद्नजू के ख़ुदा की तम्जीद हो जिस ने अपने
फ़रिश्ते को भेज कर अपने बन्दों को बचाया। उन्हों
ने उस पर भरोसा रख कर बादशाह के हुक्म की
नाफ़रमानी की। अपने ख़ुदा के सिवा किसी और की
ख़िदमत या परस्तिश करने से पहले वह अपनी जान
को देने के लिए तय्यार थे। 29 चुनाँचे मेरा हुक्म सुनो!
सद्रक, मीसक और अबद्नजू के ख़ुदा के ख़िलाफ़
कुफ़्र बकना तमाम क़ौमों, उम्मतों और ज़बानों के
अफ़राद के लिए सख़्त मना है। जो भी ऐसा करे उसे
टुकड़े टुकड़े कर दिया जाएगा और उस के घर को
कचरे का ढेर बनाया जाएगा। क्यूँकि कोई भी देवता
इस तरह नहीं बचा सकता।” 30 फिर बादशाह ने तीनों
आदमियों को सूबा बाबल में सरफ़राज़ किया।

नबूकद्नज़्ज़र के दूसरे ख़्वाब की ताबीर

4 1 नबूकद्नज़्ज़र दुनिया की तमाम क़ौमों, उम्मतों
और ज़बानों के अफ़राद को ज़ैल का पैग़ाम
भेजता है,

सब की सलामती हो! 2 मैं ने सब को उन इलाही
निशानात और मोजिज़ात से आगाह करने का फ़ैसला
किया है जो अल्लाह तआला ने मेरे लिए किए हैं। 3 उस
के निशान कितने अज़ीम, उस के मोजिज़ात कितने
ज़बरदस्त हैं! उस की बादशाही अबदी है, उस की
सल्तनत नस्ल-दर-नस्ल क़ाइम रहती है।

4 मैं, नबूकद्नज़्ज़र ख़ुशी और सुकून से अपने महल
में रहता था। 5 लेकिन एक दिन मैं एक ख़्वाब देख
कर बहुत घबरा गया। मैं पलंग पर लेटा हुआ था
कि इतनी हौलनाक बातें और रोयाएँ मेरे सामने से
गुज़रीं कि मैं डर गया। 6 तब मैं ने हुक्म दिया कि
बाबल के तमाम दानिशमन्द मेरे पास आएँ ताकि मेरे
लिए ख़्वाब की ताबीर करें। 7 क़िस्मत का हाल बताने
वाले, जादूगर, नजूमी और ग़ैबदान पहुँचे तो मैं ने
उन्हें अपना ख़्वाब बयान किया, लेकिन वह उस की
ताबीर करने में नाकाम रहे।

8 आख़िरकार दान्याल मेरे हुज़ूर आया जिस का
नाम बेल्तशज़्ज़र रखा गया है (मेरे देवता का नाम
बेल है)। दान्याल में मुक़द्दस देवताओं की रूह है।
उसे भी मैं ने अपना ख़्वाब सुनाया। 9 मैं बोला, “ऐ
बेल्तशज़्ज़र, तुम जादूगरों के सरदार हो, और मैं
जानता हूँ कि मुक़द्दस देवताओं की रूह तुम में है।
कोई भी भेद तुम्हारे लिए इतना मुश्किल नहीं है कि
तुम उसे खोल न सको। अब मेरा ख़्वाब सुन कर उस
की ताबीर करो!

10 पलंग पर लेटे हुए मैं ने रोया में देखा कि दुनिया
के बीच में निहायत लम्बा सा दरख़्त लगा है।
11 यह दरख़्त इतना ऊँचा और तनावर होता गया
कि आख़िरकार उस की चोटी आसमान तक पहुँच
गई और वह दुनिया की इन्तिहा तक नज़र आया।
12 उस के पत्ते ख़ूबसूरत थे, और वह बहुत फल लाता
था। उस के साय में जंगली जानवर पनाह लेते, उस
की शाख़ों में परिन्दे बसेरा करते थे। हर इन्सान-ओ-
हैवान को उस से ख़ुराक मिलती थी।

13 मैं अभी दरख़्त को देख रहा था कि एक मुक़द्दस
फ़रिश्ता आसमान से उतर आया। 14 उस ने बड़े ज़ोर
से आवाज़ दी, ‘दरख़्त को काट डालो! उस की शाख़ें
तोड़ दो, उस के पत्ते झाड़ दो, उस का फल बिखेर
दो! जानवर उस के साय में से निकल कर भाग जाएँ,
परिन्दे उस की शाख़ों से उड़ जाएँ। 15 लेकिन उस
का मुढ जड़ों समेत ज़मीन में रहने दो। उसे लोहे और
पीतल की ज़न्जीरों में जकड़ कर खुले मैदान की घास
में छोड़ दो। वहाँ उसे आसमान की ओस तर करे,
और जानवरों के साथ ज़मीन की घास ही उस को
नसीब हो। 16 सात साल तक उस का इन्सानी दिल
जानवर के दिल में बदल जाए। 17 क्यूँकि मुक़द्दस
फ़रिश्तों ने फ़त्वा दिया है कि ऐसा ही हो ताकि
इन्सान जान ले कि अल्लाह तआला का इख़तियार
इन्सानी सल्तनतों पर है। वह अपनी ही मर्ज़ी से लोगों

को उन पर मुक़र्रर करता है, ख़्वाह वह कितने ज़लील
क्यूँ न हों।'
18 मैं, नबूकद्नज़्ज़र ने ख़्वाब में यह कुछ देखा। ऐ
बेल्तशज़्ज़र, अब मुझे इस की ताबीर पेश करो। मेरी
सल्तनत के तमाम दानिशमन्द इस में नाकाम रहे हैं।
लेकिन तुम यह कर पाओगे, क्यूँकि तुम में मुक़द्दस
देवताओं की रूह है।"
19 तब बेल्तशज़्ज़र यानी दान्याल के रोंगटे खड़े हो
गए, और जो ख़यालात उभर आए उन से उस पर
काफ़ी देर तक सख़्त दहशत तारी रही। आख़िरकार
बादशाह बोला, "ऐ बेल्तशज़्ज़र, ख़्वाब और उस का
मतलब तुझे इतना दहशतज़दा न करे।" बीलतशज़र
ने जवाब दिया, "मेरे आक़ा, काश ख़्वाब की बातें
आप के दुश्मनों और मुख़ालिफ़ों को पेश आएँ!
20 आप ने एक दरख़्त देखा जो इतना ऊँचा और
तनावर हो गया कि उस की चोटी आसमान तक
पहुँची और वह पूरी दुनिया को नज़र आया। 21 उस
के पत्ते ख़ूबसूरत थे, और वह बहुत सा फल लाता
था। उस के साय में जंगली जानवर पनाह लेते, उस
की शाख़ों में परिन्दे बसेरा करते थे। हर इन्सान-ओ-
हैवान को उस से ख़ुराक मिलती थी।
22 ऐ बादशाह, आप ही यह दरख़्त हैं! आप ही बड़े
और ताक़तवर हो गए हैं बल्कि आप की अज़मत
बढ़ते बढ़ते आसमान से बातें करने लगी, आप की
सल्तनत दुनिया की इन्तिहा तक फैल गई है। 23 ऐ
बादशाह, इस के बाद आप ने एक मुक़द्दस फ़रिश्ते
को देखा जो आसमान से उतर कर बोला, दरख़्त को
काट डालो! उसे तबाह करो, लेकिन उस का मुढ
जड़ों समेत ज़मीन में रहने दो। उसे लोहे और पीतल
की ज़न्जीरों में जकड़ कर खुले मैदान की घास में
छोड़ दो। वहाँ उसे आसमान की ओस तर करे, और
जानवरों के साथ ज़मीन की घास ही उस को नसीब
हो। सात साल यूँ ही गुज़र जाएँ।
24 ऐ बादशाह, इस का मतलब यह है, अल्लाह
तआला ने मेरे आक़ा बादशाह के बारे में फ़ैसला
किया है 25 कि आप को इन्सानी संगत से निकाल कर
भगाया जाएगा। तब आप जंगली जानवरों के साथ
रह कर बैलों की तरह घास चरेंगे और आसमान की
ओस से तर हो जाएंगे। सात साल यूँ ही गुज़रेंगे। फिर
आख़िरकार आप इक़्रार करेंगे कि अल्लाह तआला
का इन्सानी सल्तनतों पर इख़तियार है, वह अपनी
ही मर्ज़ी से लोगों को उन पर मुक़र्रर करता है।
26 लेकिन ख़्वाब में यह भी कहा गया कि दरख़्त
के मुढ को जड़ों समेत ज़मीन में छोड़ा जाए। इस
का मतलब है कि आप की सल्तनत ताहम क़ाइम
रहेगी। जब आप एतिराफ़ करेंगे कि तमाम इख़तियार
आसमान के हाथ में है तो आप को सल्तनत वापस
मिलेगी। 27 ऐ बादशाह, अब मेहरबानी से मेरा मश्वरा
क़बूल फ़रमाएँ। इन्साफ़ करके और मज़्लूमों पर
करम फ़रमा कर अपने गुनाहों को दूर करें। शायद
ऐसा करने से आप की ख़ुशहाली क़ाइम रहे।"
28 दान्याल की हर बात नबूकद्नज़्ज़र को पेश
आई। 29 बारह महीने के बाद बादशाह बाबल में
अपने शाही महल की छत पर टहल रहा था। 30 तब
वह कहने लगा, "लो, यह अज़ीम शहर देखो जो मैं
ने अपनी रिहाइश के लिए तामीर किया है! यह सब
कुछ मैं ने अपनी ही ज़बरदस्त क़ुव्वत से बना लिया
है ताकि मेरी शान-ओ-शौकत मज़ीद बढ़ती जाए।"
31 बादशाह यह बात बोल ही रहा था कि आसमान
से आवाज़ सुनाई दी, "ऐ नबूकद्नज़्ज़र बादशाह,
सुन! सल्तनत तुझ से छीन ली गई है। 32 तुझे इन्सानी
संगत से निकाल कर भगाया जाएगा, और तू जंगली
जानवरों के साथ रह कर बैल की तरह घास चरेगा।
सात साल यूँ ही गुज़र जाएंगे। फिर आख़िरकार
तू इक़्रार करेगा कि अल्लाह तआला का इन्सानी
सल्तनतों पर इख़तियार है, वह अपनी ही मर्ज़ी से
लोगों को उन पर मुक़र्रर करता है।"
33 जूँ ही आवाज़ बन्द हुई तो ऐसा ही हुआ।
नबूकद्नज़्ज़र को इन्सानी संगत से निकाल कर
भगाया गया, और वह बैलों की तरह घास चरने
लगा। उस का जिस्म आसमान की ओस से तर
होता रहा। होते होते उस के बाल उक़ाब के परों

जितने लम्बे और उस के नाख़ुन परिन्दे के चंगुल की
मानिन्द हुए। 34 लेकिन सात साल गुज़रने के बाद मैं,
नबूकद्नज़्ज़र अपनी आँखों को आसमान की तरफ़
उठा कर दुबारा होश में आया। तब मैं ने अल्लाह
तआला की तम्जीद की, मैं ने उस की हम्द-ओ-सना
की जो हमेशा तक ज़िन्दा है। उस की हुकूमत अबदी
है, उस की सल्तनत नस्ल-दर-नस्ल क़ाइम रहती है।
35 उस की निस्बत दुनिया के तमाम बाशिन्दे सिफ़र
के बराबर हैं। वह आसमानी फ़ौज और दुनिया के
बाशिन्दों के साथ जो जी चाहे करता है। उसे कुछ
करने से कोई नहीं रोक सकता, कोई उस से जवाब
तलब करके पूछ नहीं सकता, "तू ने क्या किया?"
36 जूँ ही मैं दुबारा होश में आया तो मुझे पहली
शाही इज़्ज़त और शान-ओ-शौकत भी अज़ सर-ए-नौ
हासिल हुई। मेरे मुशीर और शुरफ़ा दुबारा मेरे सामने
हाज़िर हुए, और मुझे दुबारा तख़्त पर बिठाया गया।
पहले की निस्बत मेरी अज़मत में इज़ाफ़ा हुआ।
37 अब मैं, नबूकद्नज़्ज़र आसमान के बादशाह की
हम्द-ओ-सना करता हूँ। मैं उसी को जलाल देता हूँ,
क्यूँकि जो कुछ भी वह करे वह सहीह है। उस की
तमाम राहें मुन्सिफ़ाना हैं। जो मग़रूर हो कर ज़िन्दगी
गुज़ारते हैं उन्हें वह पस्त करने के क़ाबिल है।

बेल्शज़्ज़र की ज़ियाफ़त

5 1 एक दिन बेल्शज़्ज़र बादशाह अपने बड़ों के
हज़ार अफ़राद के लिए ज़बरदस्त ज़ियाफ़त
करके उन के साथ मै पीने लगा। 2 नशे में उस
ने हुक्म दिया, "सोने-चाँदी के जो प्याले मेरे बाप
नबूकद्नज़्ज़र ने यरूशलम में वाक़े अल्लाह के घर से
छीन लिए थे वह मेरे पास ले आओ ताकि मैं अपने
बड़ों, बीवियों और दाश्ताओं के साथ उन से मै पी
लूँ।" 3 चुनाँचे यरूशलम में वाक़े अल्लाह के घर से
लूटे हुए प्याले उस के पास लाए गए, और सब उन
से मै पी कर 4 सोने, चाँदी, पीतल, लोहे, लकड़ी और
पत्थर के अपने बुतों की तम्जीद करने लगे।
5 उसी लम्हे शाही महल के हाल में इन्सानी हाथ की
उंगलियाँ नज़र आईं जो शमादान के मुक़ाबिल दीवार
के पलस्तर पर कुछ लिखने लगीं। जब बादशाह ने
हाथ को लिखते हुए देखा 6 तो उस का चिहरा डर के
मारे फ़क़ हो गया। उस की कमर के जोड़ ढीले पड़
गए, और उस के घुटने एक दूसरे से टकराने लगे।
7 वह ज़ोर से चीख़ा, "जादूगरों, नुजूमियों और
ग़ैबदानों को बुलाओ!" बाबल के दानिशमन्द पहुँचे
तो वह बोला, "जो भी लिखे हुए अल्फ़ाज़ पढ़ कर
मुझे उन का मतलब बता सके उसे अर्ग़वानी रंग का
लिबास पहनाया जाएगा। उस के गले में सोने की
ज़न्जीर पहनाई जाएगी, और हुकूमत में सिर्फ़ दो लोग
उस से बड़े होंगे।"
8 बादशाह के दानिशमन्द क़रीब आए, लेकिन न
वह लिखे हुए अल्फ़ाज़ पढ़ सके, न उन का मतलब
बादशाह को बता सके। 9 तब बेल्शज़्ज़र बादशाह
निहायत परेशान हुआ, और उस का चिहरा मज़ीद
माँद पड़ गया। उस के शुरफ़ा भी सख़्त परेशान हो
गए।
10 बादशाह और शुरफ़ा की बातें मलिका तक पहुँच
गईं तो वह ज़ियाफ़त के हाल में दाख़िल हुई। कहने
लगी, "बादशाह अबद तक जीते रहें! घबराने या
माँद पड़ने की क्या ज़रूरत है? 11 आप की बादशाही
में एक आदमी है जिस में मुक़द्दस देवताओं की
रूह है। आप के बाप के दौर-ए-हुकूमत में साबित
हुआ कि वह देवताओं की सी बसीरत, फ़हम और
हिक्मत का मालिक है। आप के बाप नबूकद्नज़्ज़र
बादशाह ने उसे क़िस्मत का हाल बताने वालों,
जादूगरों, नुजूमियों और ग़ैबदानों पर मुक़र्रर किया
था, 12 क्यूँकि उस में ग़ैरमामूली ज़िहानत, इल्म और
समझ पाई जाती है। वह ख़्वाबों की ताबीर करने
और पहेलियाँ और पेचीदा मसले हल करने में माहिर
साबित हुआ है। आदमी का नाम दान्याल है, गो
बादशाह ने उस का नाम बेल्तशज़्ज़र रखा था। मेरा
मश्वरा है कि आप उसे बुलाएँ, क्यूँकि वह आप को
ज़रूर लिखे हुए अल्फ़ाज़ का मतलब बताएगा।"

13 यह सुन कर बादशाह ने दान्याल को फ़ौरन बुला
लिया। जब पहुँचा तो बादशाह उस से मुख़ातिब
हुआ, “क्या तुम वह दान्याल हो जिसे मेरे बाप
नबूकद्नज़्ज़र बादशाह यहूदाह के जिलावतनों के
साथ यहूदाह से यहाँ लाए थे? 14 सुना है कि देवताओं
की रूह तुम में है, कि तुम बसीरत, फ़हम और
ग़ैरमामूली हिक्मत के मालिक हो। 15 दानिशमन्दों
और नुजूमियों को मेरे सामने लाया गया है ताकि
दीवार पर लिखे हुए अल्फ़ाज़ पढ़ कर मुझे उन का
मतलब बताएँ, लेकिन वह नाकाम रहे हैं। 16 अब
मुझे बताया गया कि तुम ख़्वाबों की ताबीर और
पेचीदा मसलों को हल करने में माहिर हो। अगर तुम
यह अल्फ़ाज़ पढ़ कर मुझे इन का मतलब बता सको
तो तुम्हें अर्ग़वानी रंग का लिबास पहनाया जाएगा।
तुम्हारे गले में सोने की ज़न्जीर पहनाई जाएगी, और
हुकूमत में सिर्फ़ दो लोग तुम से बड़े होंगे।”

17 दान्याल ने जवाब दिया, “मुझे अज्र न दें, अपने
तुह्फ़े किसी और को दीजिए। मैं बादशाह को यह
अल्फ़ाज़ और इन का मतलब वैसे ही बता दूँगा।
18 ऐ बादशाह, जो सल्तनत, अज़मत और शान-ओ-
शौकत आप के बाप नबूकद्नज़्ज़र को हासिल थी
वह अल्लाह तआला से मिली थी। 19 उसी ने उन्हें वह
अज़मत अता की थी जिस के बाइस तमाम क़ौमों,
उम्मतों और ज़बानों के अफ़राद उन से डरते और उन
के सामने काँपते थे। जिसे वह मार डालना चाहते थे
उसे मारा गया, जिसे वह ज़िन्दा छोड़ना चाहते थे
वह ज़िन्दा रहा। जिसे वह सरफ़राज़ करना चाहते
थे वह सरफ़राज़ हुआ और जिसे पस्त करना चाहते
थे वह पस्त हुआ। 20 लेकिन वह फूल कर हद से
ज़्यादा मग़रूर हो गए, इस लिए उन्हें तख़्त से उतारा
गया, और वह अपनी क़दर-ओ-मन्जिलत खो बैठे।
21 उन्हें इन्सानी संगत से निकाल कर भगाया गया,
और उन का दिल जानवर के दिल की मानिन्द बन
गया। उन का रहन-सहन जंगली गधों के साथ था,
और वह बैलों की तरह घास चरने लगे। उन का
जिस्म आसमान की ओस से तर रहता था। यह हालत
उस वक़्त तक रही जब तक कि उन्हों ने इक़्रार न
किया कि अल्लाह तआला का इन्सानी सल्तनतों पर
इख़तियार है, वह अपनी ही मर्ज़ी से लोगों को उन
पर मुक़र्रर करता है।

22 ऐ बेल्शज़्ज़र बादशाह, गो आप उन के बेटे हैं
और इस बात का इल्म रखते हैं तो भी आप फ़रोतन
न रहे 23 बल्कि आसमान के मालिक के ख़िलाफ़ उठ
खड़े हो गए हैं। आप ने हुक्म दिया कि उस के घर के
प्याले आप के हुज़ूर लाए जाएँ, और आप ने अपने
बड़ों, बीवियों और दाश्ताओं के साथ उन्हें मै पीने
के लिए इस्तेमाल किया। साथ साथ आप ने अपने
देवताओं की तम्जीद की गो वह चाँदी, सोने, पीतल,
लोहे, लकड़ी और पत्थर के बुत ही हैं। न वह देख
सकते, न सुन या समझ सकते हैं। लेकिन जिस ख़ुदा
के हाथ में आप की जान और आप की तमाम राहें हैं
उस का एहतिराम आप ने नहीं किया।

24 इसी लिए उस ने हाथ भेज कर दीवार पर यह
अल्फ़ाज़ लिखवा दिए। 25 और लिखा यह है, ‘मिने
मिने तक़ेल-ओ-फ़र्सीन।’

26 ‘मिने’ का मतलब ‘गिना हुआ’ है। यानी आप की
सल्तनत के दिन गिने हुए हैं, अल्लाह ने उन्हें इख़तिताम
तक पहुँचाया है।

27 ‘तक़ेल’ का मतलब ‘तोला हुआ’ है। यानी
अल्लाह ने आप को तोल कर मालूम किया है कि आप
का वज़न कम है।

28 ‘फ़र्सीन’ का मतलब ‘तक़्सीम हुआ’ है। यानी
आप की बादशाही को मादियों और फ़ार्सियों में
तक़्सीम किया जाएगा।”

29 दान्याल ख़ामोश हुआ तो बेल्शज़्ज़र ने हुक्म
दिया कि उसे अर्ग़वानी रंग का लिबास पहनाया जाए
और उस के गले में सोने की ज़न्जीर पहनाई जाए।
साथ साथ एलान किया गया कि अब से हुकूमत में
सिर्फ़ दो आदमी दान्याल से बड़े हैं।

30 उसी रात शाह-ए-बाबल बेल्शज़्ज़र को क़त्ल
किया गया, 31 और दारा मादी तख़्त पर बैठ गया।
उस की उम्र 62 साल थी।

दान्याल शेरबबर की मान्द में

6 1 दारा ने सल्तनत के तमाम सूबों पर 120
सूबेदार मुतअय्यिन करने का फ़ैसला किया।
2 उन पर तीन वज़ीर मुक़र्रर थे जिन में से एक
दान्याल था। गवर्नर उन के सामने जवाबदिह थे
ताकि बादशाह को नुक़्सान न पहुँचे। 3 जल्द ही पता
चला कि दान्याल दूसरे वज़ीरों और सूबेदारों पर
सब्क़त रखता था, क्यूँकि वह ग़ैरमामूली ज़िहानत
का मालिक था। नतीजतन बादशाह ने उसे पूरी
सल्तनत पर मुक़र्रर करने का इरादा किया। 4 जब
दीगर वज़ीरों और सूबेदारों को यह बात मालूम हुई
तो वह दान्याल पर इल्ज़ाम लगाने का बहाना ढूँडने
लगे। लेकिन वह अपनी ज़िम्मादारियों को निभाने में
इतना क़ाबिल-ए-एतिमाद था कि वह नाकाम रहे।
क्यूँकि न वह रिश्वतखोर था, न किसी काम में सुस्त।
5 आख़िरकार वह आदमी आपस में कहने लगे,
"इस तरीक़े से हमें दान्याल पर इल्ज़ाम लगाने का
मौक़ा नहीं मिलेगा। लेकिन एक बात है जो इल्ज़ाम
का बाइस बन सकती है यानी उस के ख़ुदा की
शरीअत।" 6 तब वह गुरोह की सूरत में बादशाह के
सामने हाज़िर हुए और कहने लगे, "दारा बादशाह
अबद तक जीते रहें! 7 सल्तनत के तमाम वज़ीर,
गवर्नर, सूबेदार, मुशीर और मुन्तज़िम आपस में
मश्वरा करके मुत्तफ़िक़ हुए हैं कि अगले 30 दिन के
दौरान सब को सिर्फ़ बादशाह से दुआ करनी चाहिए।
बादशाह एक फ़रमान सादिर करें कि जो भी किसी
और माबूद या इन्सान से इल्तिजा करे उसे शेरों की
मान्द में फैंका जाएगा। ध्यान देना चाहिए कि सब
ही इस पर अमल करें। 8 ऐ बादशाह, गुज़ारिश है कि
आप यह फ़रमान ज़रूर सादिर करें बल्कि लिख कर
उस की तस्दीक़ भी करें ताकि उसे तब्दील न किया
जा सके। तब वह मादियों और फ़ार्सियों के क़वानीन
का हिस्सा बन कर मन्सूख़ नहीं किया जा सकेगा।"
9 दारा बादशाह मान गया। उस ने फ़रमान लिखवा
कर उस की तस्दीक़ की।
10 जब दान्याल को मालूम हुआ कि फ़रमान सादिर
हुआ है तो वह सीधा अपने घर में चला गया। छत पर
एक कमरा था जिस की खुली खिड़कियों का रुख़
यरूशलम की तरफ़ था। इस कमरे में दान्याल रोज़ाना
तीन बार अपने घुटने टेक कर दुआ और अपने ख़ुदा
की सताइश करता था। अब भी उस ने यह सिलसिला
जारी रखा। 11 जूँ ही दान्याल अपने ख़ुदा से दुआ और
इल्तिजा कर रहा था तो उस के दुश्मनों ने गुरोह की
सूरत में घर में घुस कर उसे यह करते हुए पाया।
12 तब वह बादशाह के पास गए और उसे शाही
फ़रमान की याद दिलाई, "क्या आप ने फ़रमान
सादिर नहीं किया था कि अगले 30 दिन के दौरान
सब को सिर्फ़ बादशाह से दुआ करनी है, और जो
किसी और माबूद या इन्सान से इल्तिजा करे उसे
शेरों की मान्द में फैंका जाएगा?" बादशाह ने जवाब
दिया, "जी, यह फ़रमान क़ाइम है बल्कि मादियों और
फ़ार्सियों के क़वानीन का हिस्सा है जो मन्सूख़ नहीं
किया जा सकता।" 13 उन्हों ने कहा, "ऐ बादशाह,
दान्याल जो यहूदाह के जिलावतनों में से है न आप
की पर्वा करता, न उस फ़रमान की जिस की आप ने
लिख कर तस्दीक़ की। अभी तक वह रोज़ाना तीन
बार अपने ख़ुदा से दुआ करता है।"
14 यह सुन कर बादशाह को बड़ी दिक़्क़त महसूस
हुई। पूरा दिन वह सोचता रहा कि मैं दान्याल को
किस तरह बचाऊँ। सूरज के ग़ुरूब होने तक वह उसे
छुड़ाने के लिए कोशाँ रहा। 15 लेकिन आख़िरकार
वह आदमी गुरोह की सूरत में दुबारा बादशाह के
हुज़ूर आए और कहने लगे, "बादशाह को याद रहे
कि मादियों और फ़ार्सियों के क़वानीन के मुताबिक़
जो भी फ़रमान बादशाह सादिर करे उसे तब्दील नहीं
किया जा सकता।" 16 चुनाँचे बादशाह ने हुक्म दिया
कि दान्याल को पकड़ कर शेरों की मान्द में फैंका
जाए। ऐसा ही हुआ। बादशाह बोला, "ऐ दान्याल,
जिस ख़ुदा की इबादत तुम बिलानाग़ा करते आए हो
वह तुम्हें बचाए।" 17 फिर मान्द के मुँह पर पत्थर
रखा गया, और बादशाह ने अपनी मुहर और अपने

बड़ों की मुहरें उस पर लगाईं ताकि कोई भी उसे
खोल कर दान्याल की मदद न करे।
18 इस के बाद बादशाह शाही महल में वापस चला
गया और पूरी रात रोज़ा रखे हुए गुज़ारी। न कुछ उस
का दिल बहलाने के लिए उस के पास लाया गया, न
उसे नींद आई।
19 जब पौ फटने लगी तो वह उठ कर शेरों की
मान्द के पास गया। 20 उस के क़रीब पहुँच कर
बादशाह ने ग़मगीन आवाज़ से पुकारा, "ऐ ज़िन्दा
ख़ुदा के बन्दे दान्याल, क्या तुम्हारे ख़ुदा जिस की
तुम बिलानाग़ा इबादत करते रहे हो तुम्हें शेरों से बचा
सका?" 21 दान्याल ने जवाब दिया, "बादशाह अबद
तक जीते रहें! 22 मेरे ख़ुदा ने अपने फ़रिश्ते को भेज
दिया जिस ने शेरों के मुँह को बन्द किए रखा। उन्हों
ने मुझे कोई भी नुक़्सान न पहुँचाया, क्यूँकि अल्लाह के
सामने मैं बेक़ुसूर हूँ। बादशाह सलामत के ख़िलाफ़
भी मुझ से जुर्म नहीं हुआ।"
23 यह सुन कर बादशाह आपे में न समाया। उस
ने दान्याल को मान्द से निकालने का हुक्म दिया।
जब उसे खैंच कर निकाला गया तो मालूम हुआ कि
उसे कोई भी नुक़्सान नहीं पहुँचा। यूँ उसे अल्लाह
पर भरोसा रखने का अज्र मिला। 24 लेकिन जिन
आदमियों ने दान्याल पर इल्ज़ाम लगाया था उन का
बुरा अन्जाम हुआ। बादशाह के हुक्म पर उन्हें उन के
बाल-बच्चों समेत शेरों की मान्द में फैंका गया। मान्द
के फ़र्श पर गिरने से पहले ही शेर उन पर झपट पड़े
और उन्हें फाड़ कर उन की हड्डियों को चबा लिया।
25 फिर दारा बादशाह ने सल्तनत की तमाम क़ौमों,
उम्मतों और अहल-ए-ज़बान को ज़ैल का पैग़ाम भेजा,
"सब की सलामती हो! 26 मेरा फ़रमान सुनो!
लाज़िम है कि मेरी सल्तनत की हर जगह लोग
दान्याल के ख़ुदा के सामने थरथराएँ और उस का
ख़ौफ़ मानें। क्यूँकि वह ज़िन्दा ख़ुदा और अबद तक
क़ाइम है। न कभी उस की बादशाही तबाह, न उस
की हुकूमत ख़त्म होगी। 27 वही बचाता और नजात
देता है, वही आसमान-ओ-ज़मीन पर इलाही निशान
और मोजिज़े दिखाता है। उसी ने दान्याल को शेरों के
क़ब्ज़े से बचाया।"
28 चुनाँचे दान्याल को दारा बादशाह और फ़ार्स के
बादशाह ख़ोरस के दौर-ए-हुकूमत में बहुत कामयाबी
हासिल हुई।

दान्याल की पहली रोया : चार जानवर

7 1 शाह-ए-बाबल बेल्शज़्ज़र की हुकूमत के पहले
साल में दान्याल ने ख़्वाब में रोया देखी। जाग
उठने पर उस ने वह कुछ क़लमबन्द कर लिया जो
ख़्वाब में देखा था। ज़ैल में इस का बयान है,
2 रात के वक़्त मैं, दान्याल ने रोया में देखा कि
आसमान की चारों हवाएँ ज़ोर से बड़े समुन्दर को
मुतलातिम कर रही हैं। 3 फिर चार बड़े जानवर
समुन्दर से निकल आए जो एक दूसरे से मुख़्तलिफ़
थे।
4 पहला जानवर शेरबबर जैसा था, लेकिन उस के
उक़ाब के पर थे। मेरे देखते ही उस के परों को नोच
लिया गया और उसे उठा कर इन्सान की तरह पिछले
दो पैरों पर खड़ा किया गया। उसे इन्सान का दिल
भी मिल गया।
5 दूसरा जानवर रीछ जैसा था। उस का एक पहलू
खड़ा किया गया था, और वह अपने दाँतों में तीन
पसलियाँ पकड़े हुए था। उसे बताया गया, "उठ, जी
भर कर गोश्त खा ले!"
6 फिर मैं ने तीसरे जानवर को देखा। वह चीते जैसा
था, लेकिन उस के चार सर थे। उसे हुकूमत करने
का इख़तियार दिया गया।
7 इस के बाद रात की रोया में एक चौथा जानवर
नज़र आया जो डराऔना, हौलनाक और निहायत ही
ताक़तवर था। अपने लोहे के बड़े बड़े दाँतों से वह
सब कुछ खाता और चूर चूर करता था। जो कुछ बच
जाता उसे वह पाँओ तले रौंद देता था। यह जानवर
दीगर जानवरों से मुख़्तलिफ़ था। उस के दस सींग
थे। 8 मैं सींगों पर ग़ौर ही कर रहा था कि एक और
छोटा सा सींग उन के दरमियान से निकल आया।

पहले दस सींगों में से तीन को नोच लिया गया ताकि उसे जगह मिल जाए। छोटे सींग पर इन्सानी आँखें थीं, और उस का मुँह बड़ी बड़ी बातें करता था।

9 मैं देख ही रहा था कि तख़्त लगाए गए और क़दीम-उल-अय्याम बैठ गया। उस का लिबास बर्फ़ जैसा सफ़ेद और उस के बाल ख़ालिस ऊन की मानिन्द थे। जिस तख़्त पर वह बैठा था वह आग की तरह भड़क रहा था, और उस पर शोलाज़न पहिए लगे थे। 10 उस के सामने से आग की नहर बह कर निकल रही थी। बेशुमार हस्तियाँ उस की ख़िदमत के लिए खड़ी थीं। लोग अदालत के लिए बैठ गए, और किताबें खोली गईं।

11 मैं ने ग़ौर किया कि छोटा सींग बड़ी बड़ी बातें कर रहा है। मैं देखता रहा तो चौथे जानवर को क़त्ल किया गया। उस का जिस्म तबाह हुआ और भड़कती आग में फैंका गया। 12 दीगर तीन जानवरों की हुकूमत उन से छीन ली गई, लेकिन उन्हें कुछ देर के लिए ज़िन्दा रहने की इजाज़त दी गई।

13 रात की रोया में मैं ने यह भी देखा कि आसमान के बादलों के साथ साथ कोई आ रहा है जो इब्न-ए-आदम सा लग रहा है। जब क़दीम-उल-अय्याम के क़रीब पहुँचा तो उस के हुज़ूर लाया गया। 14 उसे सल्तनत, इज़्ज़त और बादशाही दी गई, और हर क़ौम, उम्मत और ज़बान के अफ़राद ने उस की परस्तिश की। उस की हुकूमत अबदी है और कभी ख़त्म नहीं होगी। उस की बादशाही कभी तबाह नहीं होगी।

15 मैं, दान्याल सख़्त परेशान हुआ, क्यूँकि रोया से मुझ पर दहशत छा गई थी। 16 इस लिए मैं ने वहाँ खड़े किसी के पास जा कर उस से गुज़ारिश की कि वह मुझे इन तमाम बातों का मतलब बताए। उस ने मुझे इन का मतलब बताया, 17 "चार बड़े जानवर चार सल्तनतें हैं जो ज़मीन से निकल कर क़ाइम हो जाएँगी। 18 लेकिन अल्लाह तआला के मुक़द्दसीन को हक़ीक़ी बादशाही मिलेगी, वह बादशाही जो अबद तक हासिल रहेगी।"

19 मैं चौथे जानवर के बारे में मज़ीद जानना चाहता था, उस जानवर के बारे में जो दीगर जानवरों से इतना मुख़्तलिफ़ और इतना हौलनाक था। क्यूँकि उस के दाँत लोहे और पंजे पीतल के थे, और वह सब कुछ खाता और चूर चूर करता था। जो बच जाता उसे वह पाँओ तले रौंद देता था। 20 मैं उस के सर के दस सींगों और उन में से निकले हुए छोटे सींग के बारे में भी मज़ीद जानना चाहता था। क्यूँकि छोटे सींग के निकलने पर दस सींगों में से तीन निकल कर गिर गए, और यह सींग बढ़ कर साथ वाले सींगों से कहीं बड़ा नज़र आया। उस की आँखें थीं, और उस का मुँह बड़ी बड़ी बातें करता था। 21 रोया में मैं ने देखा कि छोटे सींग ने मुक़द्दसीन से जंग करके उन्हें शिकस्त दी। 22 लेकिन फिर क़दीम-उल-अय्याम आ पहुँचा और अल्लाह तआला के मुक़द्दसीन के लिए इन्साफ़ क़ाइम किया। फिर वह वक़्त आया जब मुक़द्दसीन को बादशाही हासिल हुई।

23 जिस से मैं ने रोया का मतलब पूछा था उस ने कहा, "चौथे जानवर से मुराद ज़मीन पर एक चौथी बादशाही है जो दीगर तमाम बादशाहियों से मुख़्तलिफ़ होगी। वह तमाम दुनिया को खा जाएगी, उसे रौंद कर चूर चूर कर देगी। 24 दस सींगों से मुराद दस बादशाह हैं जो इस बादशाही से निकल आएँगे। उन के बाद एक और बादशाह आएगा जो गुज़रे बादशाहों से मुख़्तलिफ़ होगा और तीन बादशाहों को ख़ाक में मिला देगा। 25 वह अल्लाह तआला के ख़िलाफ़ कुफ़्र बकेगा, और मुक़द्दसीन उस के तहत पिसते रहेंगे, यहाँ तक कि वह ईदों के मुक़र्ररा औक़ात और शरीअत को तब्दील करने की कोशिश करेगा। मुक़द्दसीन को एक अर्से, दो उर्सों और आधे अर्से के लिए उस के हवाले किया जाएगा।

26 लेकिन फिर लोग उस की अदालत के लिए बैठ जाएंगे। उस की हुकूमत उस से छीन ली जाएगी, और वह मुकम्मल तौर पर तबाह हो जाएगी। 27 तब आसमान तले की तमाम सल्तनतों की बादशाहत, सल्तनत और अज़मत अल्लाह तआला की मुक़द्दस

क़ौम के हवाले कर दी जाएगी। अल्लाह तआला की बादशाही अबदी होगी, और तमाम हुक्मरान उस की ख़िदमत करके उस के ताबे रहेंगे।”

28 मुझे मज़ीद कुछ नहीं बताया गया। मैं, दान्याल इन बातों से बहुत परेशान हुआ, और मेरा चिहरा माँद पड़ गया, लेकिन मैं ने मुआमला अपने दिल में महफ़ूज़ रखा।

दान्याल की दूसरी रोया : मेंढा और बकरा

8 1 बेल्शज़्ज़र बादशाह के दौर-ए-हुकूमत के तीसरे साल में मैं, दान्याल ने एक और रोया देखी। 2 रोया में मैं सूबा ऐलाम के क़िलाबन्द शहर सोसन की नहर ऊलाई के किनारे पर खड़ा था। 3 जब मैं ने अपनी निगाह उठाई तो किनारे पर मेरे सामने ही एक मेंढा खड़ा था। उस के दो बड़े सींग थे जिन में से एक ज़्यादा बड़ा था। लेकिन वह दूसरे के बाद ही बड़ा हो गया था। 4 मेरी नज़रों के सामने मेंढा मग़रिब, शिमाल और जुनूब की तरफ़ सींग मारने लगा। न कोई जानवर उस का मुक़ाबला कर सका, न कोई उस के क़ाबू से बचा सका। जो जी चाहे करता था और होते होते बहुत बड़ा हो गया।

5 मैं उस पर ग़ौर ही कर रहा था कि अचानक मग़रिब से आते हुए एक बकरा दिखाई दिया। उस की आँखों के दरमियान ज़बरदस्त सींग था, और वह ज़मीन को छुए बग़ैर चल रहा था। पूरी दुनिया को उबूर करके 6 वह दो सींगों वाले उस मेंढे के पास पहुँच गया जो मैं ने नहर के किनारे खड़ा देखा था। बड़े तैश में आ कर वह उस पर टूट पड़ा। 7 मैं ने देखा कि वह मेंढे के पहलू से टकरा गया। बड़े ग़ुस्से में उस ने उसे यूँ मारा कि मेंढे के दोनों सींग टुकड़े टुकड़े हो गए। इस बेबस हालत में मेंढा उस का मुक़ाबला न कर सका। बकरे ने उसे ज़मीन पर पटख़ कर पाँओ तले कुचल दिया। कोई नहीं था जो मेंढे को बकरे के क़ाबू से बचाए।

8 बकरा निहायत ताक़तवर हो गया। लेकिन ताक़त के उरूज पर ही उस का बड़ा सींग टूट गया, और उस की जगह मज़ीद चार ज़बरदस्त सींग निकल आए जिन का रुख़ आसमान की चार सिम्तों की तरफ़ था। 9 उन के एक सींग में से एक और सींग निकल आया जो इब्तिदा में छोटा था। लेकिन वह जुनूब, मशरिक़ और ख़ूबसूरत मुल्क इस्राईल की तरफ़ बढ़ते बढ़ते बहुत ताक़तवर हो गया। 10 फिर वह आसमानी फ़ौज तक बढ़ गया। वहाँ उस ने कुछ फ़ौजियों और सितारों को ज़मीन पर फैंक कर पाँओ तले कुचल दिया। 11 वह बढ़ते बढ़ते आसमानी फ़ौज के कमाँडर तक भी पहुँच गया और उसे उन क़ुर्बानियों से महरूम कर दिया जो उसे रोज़ाना पेश की जाती थीं। साथ साथ सींग ने उस के मक़्दिस के मक़ाम को तबाह कर दिया। 12 उस की फ़ौज से रोज़ाना की क़ुर्बानियों की बेहुरमती हुई, और सींग ने सच्चाई को ज़मीन पर पटख़ दिया। जो कुछ भी उस ने किया उस में वह कामयाब रहा।

13 फिर मैं ने दो मुक़द्दस हस्तियों को आपस में बात करते हुए सुना। एक ने पूछा, “इस रोया में पेश किए गए हालात कब तक क़ाइम रहेंगे, यानी जो कुछ रोज़ाना की क़ुर्बानियों के साथ हो रहा है, यह तबाहकुन बेहुरमती और यह बात कि मक़्दिस को पामाल किया जा रहा है?” 14 दूसरे ने जवाब में मुझे बताया, “हालात 2,300 शामों और सुब्हों तक यूँ ही रहेंगे। इस के बाद मक़्दिस को नए सिरे से मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया जाएगा।”

15 मैं देखे हुए वाक़िआत को समझने की कोशिश कर ही रहा था कि कोई मेरे सामने खड़ा हुआ जो मर्द जैसा लग रहा था। 16 साथ साथ मैं ने नहर ऊलाई की तरफ़ से किसी शख़्स की आवाज़ सुनी जिस ने कहा, “ऐ जिब्राईल, इस आदमी को रोया का मतलब बता दे।” 17 फ़रिश्ता मेरे क़रीब आया तो मैं सख़्त घबरा कर मुँह के बल गिर गया। लेकिन वह बोला, “ऐ आदमज़ाद, जान ले कि इस रोया का ताल्लुक़ आख़िरी ज़माने से है।”

18 जब वह मुझ से बात कर रहा था तो मैं मदहोश हालत में मुँह के बल पड़ा रहा। अब फ़रिश्ते ने मुझे

छू कर पाँओ पर खड़ा किया। 19 वह बोला, “मैं तुझे
समझा देता हूँ कि उस आख़िरी ज़माने में क्या कुछ
पेश आएगा जब अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा।
क्यूँकि रोया का ताल्लुक़ आख़िरी ज़माने से है। 20 दो
सींगों के जिस मेंढे को तू ने देखा वह मादी और फ़ार्स
के बादशाहों की नुमाइन्दगी करता है। 21 लम्बे बालों
का बकरा यूनान का बादशाह है। उस की आँखों
के दरमियान लगा बड़ा सींग यूनानी शहन्शाही का
पहला बादशाह है। 22 तू ने देखा कि यह सींग टूट गया
और उस की जगह चार सींग निकल आए। इस का
मतलब है कि पहली बादशाही से चार और निकल
आएँगी । लेकिन चारों की ताक़त पहली की निस्बत
कम होगी। 23 उन की हुकूमत के आख़िरी अय्याम
में बेवफ़ाओं की बदकिर्दारी उरूज तक पहुँच गई
होगी।

उस वक़्त एक गुस्ताख़ और साज़िश का माहिर
बादशाह तख़्त पर बैठेगा। 24 वह बहुत ताक़तवर हो
जाएगा, लेकिन यह उस की अपनी ताक़त नहीं होगी।
वह हैरतअंगेज़ बर्बादी का बाइस बनेगा, और जो
कुछ भी करेगा उस में कामयाब होगा। वह ज़ोरावरों
और मुक़द्दस क़ौम को तबाह करेगा। 25 अपनी समझ
और फ़रेब के ज़रीए वह कामयाब रहेगा। तब वह
मुतकब्बिर हो जाएगा। जब लोग अपने आप को
महफ़ूज़ समझेंगे तो वह उन्हें मौत के घाट उतारेगा।
आख़िरकार वह हुक्मरानों के हुक्मरान के ख़िलाफ़
भी उठेगा। लेकिन वह पाश पाश हो जाएगा, अलबत्ता
इन्सानी हाथ से नहीं।

26 ऐ दान्याल, शामों और सुब्हों के बारे में जो रोया
तुझ पर ज़ाहिर हुई वह सच्ची है। लेकिन फ़िलहाल
उसे पोशीदा रख, क्यूँकि यह वाक़िआत अभी पेश
नहीं आएँगे बल्कि बहुत दिनों के गुज़र जाने के बाद
ही।”

27 इस के बाद मैं, दान्याल निढाल हो कर कई
दिनों तक बीमार रहा। फिर मैं उठा और बादशाह की
ख़िदमत में दुबारा अपने फ़राइज़ अदा करने लगा।
मैं रोया से सख़्त परेशान था, और कोई नहीं था जो
मुझे उस का मतलब बता सके।

दान्याल अपनी क़ौम की शफ़ाअत करता है

9 1 दारा बिन अख़स्वेरुस बाबल के तख़्त पर
बैठ गया था। इस मादी बादशाह 2 की हुकूमत
के पहले साल में मैं, दान्याल ने पाक नविश्तों की
तहक़ीक़ की। मैं ने ख़ासकर उस पर ग़ौर किया
जो रब ने यरमियाह नबी की मारिफ़त फ़रमाया था।
उस के मुताबिक़ यरूशलम की तबाहशुदा हालत 70
साल तक क़ाइम रहेगी। 3 चुनाँचे मैं ने रब अपने
ख़ुदा की तरफ़ रुजू किया ताकि अपनी दुआ और
इल्तिजाओं से उस की मर्ज़ी दरयाफ़्त करूँ। साथ
साथ मैं ने रोज़ा रखा, टाट का लिबास ओढ़ लिया
और अपने सर पर राख डाल ली। 4 मैं ने रब अपने
ख़ुदा से दुआ करके इक़्रार किया,

“ऐ रब, तू कितना अज़ीम और महीब ख़ुदा है!
जो भी तुझे प्यार करता और तेरे अह्काम के ताबे
रहता है उस के साथ तू अपना अह्द क़ाइम रखता
और उस पर मेहरबानी करता है। 5 लेकिन हम ने
गुनाह और बदी की है। हम बेदीन और बाग़ी हो कर
तेरे अह्काम और हिदायात से भटक गए हैं। 6 हम
ने नबियों की नहीं सुनी, हालाँकि तेरे ख़ादिम तेरा
नाम ले कर हमारे बादशाहों, बुज़ुर्गों, बापदादा बल्कि
मुल्क के तमाम बाशिन्दों से मुख़ातिब हुए। 7 ऐ रब, तू
हक़-ब-जानिब है जबकि इस दिन हम सब शर्मसार हैं,
ख़्वाह यहूदाह, यरूशलम या इस्राईल के हों, ख़्वाह
क़रीब या उन तमाम दूरदराज़ ममालिक में रहते हों
जहाँ तू ने हमें हमारी बेवफ़ाई के सबब से मुन्तशिर
कर दिया है। क्यूँकि हम तेरे ही साथ बेवफ़ा रहे हैं।
8 ऐ रब, हम अपने बादशाहों, बुज़ुर्गों और बापदादा
समेत बहुत शर्मसार हैं, क्यूँकि हम ने तेरा ही गुनाह
किया है।

9 लेकिन रब हमारा ख़ुदा रहीम है और ख़ुशी से
मुआफ़ करता है, गो हम उस से सरकश हुए हैं।
10 न हम रब अपने ख़ुदा के ताबे रहे, न उस के

उन अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी जो उस
ने हमें अपने ख़ादिमों यानी नबियों की मारिफ़त दिए
थे। 11 तमाम इस्राईल तेरी शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी
करके सहीह राह से भटक गया है, कोई तेरी सुनने
के लिए तय्यार नहीं था।

अल्लाह के ख़ादिम मूसा ने शरीअत में क़सम खा कर
लानतें भेजी थीं, और अब यह लानतें हम पर नाज़िल
हुई हैं, इस लिए कि हम ने तेरा गुनाह किया। 12 जो
कुछ तू ने हमारे और हमारे हुक्मरानों के ख़िलाफ़
फ़रमाया था वह पूरा हुआ, और हम पर बड़ी आफ़त
आई। आसमान तले कहीं भी ऐसी मुसीबत नहीं आई
जिस तरह यरूशलम को पेश आई है। 13 मूसा की
शरीअत में मज़कूर हर वह लानत हम पर नाज़िल
हुई जो नाफ़रमानों पर भेजी गई है। तो भी न हम ने
अपने गुनाहों को छोड़ा, न तेरी सच्चाई पर ध्यान दिया,
हालाँकि इस से हम रब अपने ख़ुदा का ग़ज़ब ठंडा
कर सकते थे। 14 इसी लिए रब हम पर आफ़त लाने
से न झिजका। क्यूँकि जो कुछ भी रब हमारा ख़ुदा
करता है उस में वह हक़-ब-जानिब होता है। लेकिन
हम ने उस की न सुनी।

15 ऐ रब हमारे ख़ुदा, तू बड़ी क़ुदरत का इज़हार
करके अपनी क़ौम को मिस्र से निकाल लाया। यूँ तेरे
नाम को वह इज़्ज़त-ओ-जलाल मिला जो आज तक
क़ाइम रहा है। इस के बावुजूद हम ने गुनाह किया,
हम से बेदीन हरकतें सरज़द हुई हैं। 16 ऐ रब, तू अपने
मुन्सिफ़ाना कामों में वफ़ादार रहा है! अब भी इस का
लिहाज़ कर और अपने सख़्त ग़ज़ब को अपने शहर
और मुक़द्दस पहाड़ यरूशलम से दूर कर! यरूशलम
और तेरी क़ौम गिर्द-ओ-नवाह की क़ौमों के लिए
मज़ाक़ का निशाना बन गई है, गो हम मानते हैं कि
यह हमारे गुनाहों और हमारे बापदादा की ख़ताओं
की वजह से हो रहा है।

17 ऐ हमारे ख़ुदा, अब अपने ख़ादिम की दुआओं
और इल्तिजाओं को सुन! ऐ रब, अपनी ही ख़ातिर
अपने तबाहशुदा मक़्दिस पर अपने चिहरे का
मेहरबान नूर चमका। 18 ऐ मेरे ख़ुदा, कान लगा कर
मेरी सुन! अपनी आँखें खोल! उस शहर के खंडरात
पर नज़र कर जिस पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।
हम इस लिए तुझ से इल्तिजाएँ नहीं कर रहे कि हम
रास्तबाज़ हैं बल्कि इस लिए कि तू निहायत मेहरबान
है। 19 ऐ रब, हमारी सुन! ऐ रब, हमें मुआफ़ कर! ऐ
मेरे ख़ुदा, अपनी ख़ातिर देर न कर, क्यूँकि तेरे शहर
और क़ौम पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।”

70 हफ़्तों का भेद

20 यूँ मैं दुआ करता और अपने और अपनी क़ौम
इस्राईल के गुनाहों का इक़्रार करता गया। मैं ख़ासकर
अपने ख़ुदा के मुक़द्दस पहाड़ यरूशलम के लिए रब
अपने ख़ुदा के हुज़ूर फ़र्याद कर रहा था।

21 मैं दुआ कर ही रहा था कि जिब्राईल जिसे मैं
ने दूसरी रोया में देखा था मेरे पास आ पहुँचा। रब
के घर में शाम की क़ुर्बानी पेश करने का वक़्त था।
मैं बहुत ही थक गया था। 22 उस ने मुझे समझा कर
कहा, “ऐ दान्याल, अब मैं तुझे समझ और बसीरत
देने के लिए आया हूँ। 23 जूँ ही तू दुआ करने लगा
तो अल्लाह ने जवाब दिया, क्यूँकि तू उस की नज़र
में गिराँक़दर है। मैं तुझे यह जवाब सुनाने आया हूँ।
अब ध्यान से रोया को समझ ले! 24 तेरी क़ौम और
तेरे मुक़द्दस शहर के लिए 70 हफ़्ते मुक़र्रर किए गए
हैं ताकि उतने में जराइम और गुनाहों का सिलसिला
ख़त्म किया जाए, क़ुसूर का कफ़्फ़ारा दिया जाए,
अबदी रास्ती क़ाइम की जाए, रोया और पेशगोई की
तस्दीक़ की जाए और मुक़द्दसतरीन जगह को मसह
करके मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया जाए।

25 अब जान ले और समझ ले कि यरूशलम
को दुबारा तामीर करने का हुक्म दिया जाएगा,
लेकिन मज़ीद सात हफ़्ते गुज़रेंगे, फिर ही अल्लाह
एक हुक्मरान को इस काम के लिए चुन कर मसह
करेगा। तब शहर को 62 हफ़्तों के अन्दर चौकों
और ख़न्दक़ों समेत नए सिरे से तामीर किया जाएगा,
गो इस दौरान वह काफ़ी मुसीबत से दोचार होगा।
26 इन 62 हफ़्तों के बाद अल्लाह के मसह किए गए

बन्दे को क़त्ल किया जाएगा, और उस के पास कुछ
भी नहीं होगा। उस वक़्त एक और हुक्मरान की
क़ौम आ कर शहर और मक़्दिस को तबाह करेगी।
इख़्तिताम सैलाब की सूरत में आएगा, और आख़िर
तक जंग जारी रहेगी, ऐसी तबाही होगी जिस का
फ़ैसला हो चुका है। 27 एक हफ़्ते तक यह हुक्मरान
मुतअद्दिद लोगों को एक अह्द के तहत रहने पर
मज्बूर करेगा। इस हफ़्ते के बीच में वह ज़बह और
ग़ल्ला की क़ुर्बानियों का इन्तिज़ाम बन्द करेगा और
मक़्दिस के एक तरफ़ वह कुछ खड़ा करेगा जो
बेहुरमती और तबाही का बाइस है। लेकिन तबाह
करने वाले का ख़ातमा भी मुक़र्रर किया गया है, और
आख़िरकार वह भी तबाह हो जाएगा।”

दान्याल की आख़िरी रोया

10 1 फ़ार्स के बादशाह ख़ोरस की हुकूमत के
तीसरे साल में बेल्तशज़्ज़र यानी दान्याल
पर एक बात ज़ाहिर हुई जो यक़ीनी है और जिस का
ताल्लुक़ एक बड़ी मुसीबत से है। उसे रोया में इस
पैग़ाम की समझ हासिल हुई।

2 उन दिनों में मैं, दान्याल तीन पूरे हफ़्ते मातम
कर रहा था। 3 न मैं ने उम्दा खाना खाया, न गोश्त
या मै मेरे होंटों तक पहुँची। तीन पूरे हफ़्ते मैं ने हर
ख़ुश्बूदार तेल से पर्हेज़ किया। 4 पहले महीने के 24वें
दिन [i]मैं बड़े दरया दिजला के किनारे पर खड़ा था।
5 मैं ने निगाह उठाई तो क्या देखता हूँ कि मेरे सामने
कतान से मुलब्बस आदमी खड़ा है जिस की कमर
में ख़ालिस सोने का पटका बंधा हुआ है। 6 उस का
जिस्म पुखराज [j]जैसा था, उस का चिहरा आसमानी
बिजली की तरह चमक रहा था, और उस की आँखें
भड़कती मशअलों की मानिन्द थीं। उस के बाज़ू और
पाँओ पालिश किए हुए पीतल की तरह दमक रहे थे।
बोलते वक़्त यूँ लग रहा था कि बड़ा हुजूम शोर मचा
रहा है।

7 सिर्फ़ मैं, दान्याल ने यह रोया देखी। मेरे साथियों
ने उसे न देखा। तो भी अचानक उन पर इतनी दह्शत
तारी हुई कि वह भाग कर छुप गए। 8 चुनाँचे मैं
अकेला ही रह गया। लेकिन यह अज़ीम रोया देख
कर मेरी सारी ताक़त जाती रही। मेरे चिहरे का रंग
माँद पड़ गया और मैं बेबस हुआ। 9 फिर वह बोलने
लगा। उसे सुनते ही मैं मुँह के बल गिर कर मदहोश
हालत में ज़मीन पर पड़ा रहा। 10 तब एक हाथ ने मुझे
छू कर हिलाया। उस की मदद से मैं अपने हाथों और
घुटनों के बल हो सका।

11 वह आदमी बोला, “ऐ दान्याल, तू अल्लाह के
नज़्दीक बहुत गिराँक़दर है! जो बातें मैं तुझ से करूँगा
उन पर ग़ौर कर। खड़ा हो जा, क्यूँकि इस वक़्त
मुझे तेरे ही पास भेजा गया है।” तब मैं थरथराते हुए
खड़ा हो गया। 12 उस ने अपनी बात जारी रखी, “ऐ
दान्याल, मत डरना! जब से तू ने समझ हासिल करने
और अपने ख़ुदा के सामने झुकने का पूरा इरादा कर
रखा है, उसी दिन से तेरी सुनी गई है। मैं तेरी दुआओं
के जवाब में आ गया हूँ। 13 लेकिन फ़ार्सी बादशाही
का सरदार 21 दिन तक मेरे रास्ते में खड़ा रहा। फिर
मीकाएल जो अल्लाह के सरदार फ़रिश्तों में से एक है
मेरी मदद करने आया, और मेरी जान फ़ार्सी बादशाही
के उस सरदार के साथ लड़ने से छूट गई। 14 मैं तुझे
वह कुछ सुनाने को आया हूँ जो आख़िरी दिनों में तेरी
क़ौम को पेश आएगा। क्यूँकि रोया का ताल्लुक़ आने
वाले वक़्त से है।”

15 जब वह मेरे साथ यह बातें कर रहा था तो मैं
ख़ामोशी से नीचे ज़मीन की तरफ़ देखता रहा। 16 फिर
जो आदमी सा लग रहा था उस ने मेरे होंटों को छू
दिया, और मैं मुँह खोल कर बोलने लगा। मैं ने अपने
सामने खड़े फ़रिश्ते से कहा, “ऐ मेरे आक़ा, यह रोया
देख कर मैं दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेच-
ओ-ताब खाने लगा हूँ। मेरी ताक़त जाती रही है। 17 ऐ
मेरे आक़ा, आप का ख़ादिम किस तरह आप से बात

[i]23 अप्रैल।

[j]topas

कर सकता है? मेरी ताक़त तो जवाब दे गई है, साँस
लेना भी मुश्किल हो गया है।”
18 जो आदमी सा लग रहा था उस ने मुझे एक बार
फिर छू कर तक़वियत दी 19 और बोला, “ऐ तू जो
अल्लाह की नज़र में गिराँक़दर है, मत डरना! तेरी
सलामती हो। हौसला रख, मज़बूत हो जा!” जूँ ही
उस ने मुझ से बात की मुझे तक़वियत मिली, और
मैं बोला, “अब मेरे आक़ा बात करें, क्यूँकि आप ने
मुझे तक़वियत दी है।”
20 उस ने कहा, “क्या तू मेरे आने का मक़्सद जानता
है? जल्द ही मैं दुबारा फ़ार्स के सरदार से लड़ने
चला जाऊँगा। और उस से निपटने के बाद यूनान
का सरदार आएगा। 21 लेकिन पहले मैं तेरे सामने
वह कुछ बयान करता हूँ जो ‘सच्चाई की किताब’ में
लिखा है। (इन सरदारों से लड़ने में मेरी मदद कोई
नहीं करता सिवाए तुम्हारे सरदार फ़रिश्ते मीकाएल
के।

11 1 मादी बादशाह दारा की हुकूमत के पहले
साल से ही मैं मीकाएल के साथ खड़ा रहा
हूँ ताकि उस को सहारा दूँ और उस की हिफ़ाज़त
करूँ।)

शिमाली और जुनूबी सल्तनतों की जंगें

2 अब मैं तुझे वह कुछ बताता हूँ जो यक़ीनन
पेश आएगा। फ़ार्स में मज़ीद तीन बादशाह तख़्त पर
बैठेंगे। इस के बाद एक चौथा आदमी बादशाह बनेगा
जो तमाम दूसरों से कहीं ज़्यादा दौलतमन्द होगा।
जब वह दौलत के बाइस ताक़तवर हो जाएगा तो
वह यूनानी मम्लकत से लड़ने के लिए सब कुछ जमा
करेगा।
3 फिर एक ज़ोरावर बादशाह बरपा हो जाएगा जो
बड़ी क़ुव्वत से हुकूमत करेगा और जो जी चाहे
करेगा। 4 लेकिन जूँ ही वह बरपा हो जाए उस की
सल्तनत टुकड़े टुकड़े हो कर एक शिमाली, एक
जुनूबी, एक मग़रिबी और एक मशरिक़ी हिस्से में
तक़्सीम हो जाएगी। न यह चार हिस्से पहली सल्तनत
जितने ताक़तवर होंगे, न बादशाह की औलाद तख़्त
पर बैठेगी, क्यूँकि उस की सल्तनत जड़ से उखाड़
कर दूसरों को दी जाएगी। 5 जुनूबी मुल्क का बादशाह
तक़वियत पाएगा, लेकिन उस का एक अफ़्सर कहीं
ज़्यादा ताक़तवर हो जाएगा, उस की हुकूमत कहीं
ज़्यादा मज़बूत होगी।
6 चन्द साल के बाद दोनों सल्तनतें मुत्तहिद हो
जाएँगी। अह्द को मज़बूत करने के लिए जुनूबी
बादशाह की बेटी की शादी शिमाली बादशाह से
कराई जाएगी। लेकिन न बेटी कामयाब होगी, न
उस का शौहर और न उस की ताक़त क़ाइम रहेगी।
उन दिनों में उसे उस के साथियों, बाप और शौहर
समेत दुश्मन के हवाले किया जाएगा। 7 बेटी की
जगह उस का एक रिश्तेदार खड़ा हो जाएगा जो
शिमाली बादशाह की फ़ौज पर हम्ला करके उस के
क़िले में घुस आएगा। वह उन से निपट कर फ़त्ह
पाएगा 8 और उन के ढाले हुए बुतों को सोने-चाँदी की
क़ीमती चीज़ों समेत छीन कर मिस्र ले जाएगा। वह
कुछ साल तक शिमाली बादशाह को नहीं छेड़ेगा।
9 फिर शिमाली बादशाह जुनूबी बादशाह के मुल्क में
घुस आएगा, लेकिन उसे अपने मुल्क में वापस जाना
पड़ेगा। 10 इस के बाद उस के बेटे जंग की तय्यारियाँ
करके बड़ी बड़ी फ़ौजें जमा करेंगे। उन में से एक
जुनूबी बादशाह की तरफ़ बढ़ कर सैलाब की तरह
जुनूबी मुल्क पर आएगी और लड़ते लड़ते उस के
क़िले तक पहुँचेगी।
11 फिर जुनूबी बादशाह तैश में आ कर शिमाली
बादशाह से लड़ने के लिए निकलेगा। शिमाली
बादशाह जवाब में बड़ी फ़ौज खड़ी करेगा, लेकिन
वह शिकस्त खा कर 12 तबाह हो जाएगी। तब जुनूबी
बादशाह का दिल ग़ुरूर से भर जाएगा, और वह
बेशुमार अफ़राद को मौत के घाट उतारेगा। तो भी वह
ताक़तवर नहीं रहेगा। 13 क्यूँकि शिमाली बादशाह
एक और फ़ौज जमा करेगा जो पहली की निस्बत
कहीं ज़्यादा बड़ी होगी। चन्द साल के बाद वह इस

बड़ी और हथियारों से लेस फ़ौज के साथ जुनूबी बादशाह से लड़ने आएगा।

14 उस वक़्त बहुत से लोग जुनूबी बादशाह के ख़िलाफ़ उठ खड़े होंगे। तेरी क़ौम के बेदीन लोग भी उस के ख़िलाफ़ खड़े हो जाएंगे और यूँ रोया को पूरा करेंगे। लेकिन वह ठोकर खा कर गिर जाएंगे। 15 फिर शिमाली बादशाह आ कर एक क़िलाबन्द शहर का मुहासरा करेगा। वह पुश्ता बना कर शहर पर क़ब्ज़ा कर लेगा। जुनूब की फ़ौजें उसे रोक नहीं सकेंगी, उन के बेहतरीन दस्ते भी बेबस हो कर उस का सामना नहीं कर सकेंगे। 16 हम्लाआवर बादशाह जो जी चाहे करेगा, और कोई उस का सामना नहीं कर सकेगा।

उस वक़्त वह ख़ूबसूरत मुल्क इस्राईल में टिक जाएगा और उसे तबाह करने का इख़्तियार रखेगा। 17 तब वह अपनी पूरी सल्तनत पर क़ाबू पाने का मन्सूबा बांधेगा। इस ज़िम्न में वह जुनूबी बादशाह के साथ अह्द बांध कर उस से अपनी बेटी की शादी कराएगा ताकि जुनूबी मुल्क को तबाह करे, लेकिन बेफ़ाइदा। मन्सूबा नाकाम हो जाएगा।

18 इस के बाद वह साहिली इलाक़ों की तरफ़ रुख़ करेगा। उन में से वह बहुतों पर क़ब्ज़ा भी करेगा, लेकिन आख़िरकार एक हुक्मरान उस के गुस्ताखाना रवय्ये का ख़ातमा करेगा, और उसे शर्मिन्दा हो कर पीछे हटना पड़ेगा। 19 फिर शिमाली बादशाह अपने मुल्क के क़िलों के पास वापस आएगा, लेकिन इतने में ठोकर खा कर गिर जाएगा। तब उस का नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा।

20 उस की जगह एक बादशाह बरपा हो जाएगा जो अपने अफ़्सर को शानदार मुल्क इस्राईल में भेजेगा ताकि वहाँ से गुज़र कर लोगों से टैक्स ले। लेकिन थोड़े दिनों के बाद वह तबाह हो जाएगा। न वह किसी झगड़े के सबब से हलाक होगा, न किसी जंग में।

इस्राईली क़ौम का बड़ा दुश्मन

21 उस की जगह एक क़ाबिल-ए-मज़म्मत आदमी खड़ा हो जाएगा। वह तख़्त के लिए मुक़र्रर नहीं हुआ होगा बल्कि ग़ैरमुतवक़्क़े तौर पर आ कर साज़िशों के वसीले से बादशाह बनेगा। 22 मुख़ालिफ़ फ़ौजें उस पर टूट पड़ेंगी, लेकिन वह सैलाब की तरह उन पर आ कर उन्हें बहा ले जाएगा। वह और अह्द का एक रईस तबाह हो जाएंगे। 23 क्यूँकि उस के साथ अह्द बांधने के बाद वह उसे फ़रेब देगा और सिर्फ़ थोड़े ही अफ़राद के ज़रीए इक़तिदार हासिल कर लेगा। 24 वह ग़ैरमुतवक़्क़े तौर पर दौलतमन्द सूबों में घुस कर वह कुछ करेगा जो न उस के बाप और न उस के बापदादा से कभी सरज़द हुआ होगा। लूटा हुआ माल और मिलकियत वह अपने लोगों में तक़्सीम करेगा। वह क़िलाबन्द शहरों पर क़ब्ज़ा करने के मन्सूबे भी बांधेगा, लेकिन सिर्फ़ मह्दूद अर्से के लिए।

25 फिर वह हिम्मत बांध कर और पूरा ज़ोर लगा कर बड़ी फ़ौज के साथ जुनूबी बादशाह से लड़ने जाएगा। जवाब में जुनूबी बादशाह एक बड़ी और निहायत ही ताक़तवर फ़ौज को लड़ने के लिए तय्यार करेगा। तो भी वह शिमाली बादशाह का सामना नहीं कर पाएगा, इस लिए कि उस के ख़िलाफ़ साज़िशें कामयाब हो जाएँगी। 26 उस की रोटी खाने वाले ही उसे तबाह करेंगे। तब उस की फ़ौज मुन्तशिर हो जाएगी, और बहुत से अफ़राद मैदान-ए-जंग में खेत आएँगे।

27 दोनों बादशाह मुज़ाकरात के लिए एक ही मेज़ पर बैठ जाएंगे। वहाँ दोनों झूट बोलते हुए एक दूसरे को नुक़्सान पहुँचाने के लिए कोशाँ रहेंगे। लेकिन किसी को कामयाबी हासिल नहीं होगी, क्यूँकि मुक़र्ररा आख़िरी वक़्त अभी नहीं आना है। 28 शिमाली बादशाह बड़ी दौलत के साथ अपने मुल्क में वापस चला जाएगा। रास्ते में वह मुक़द्दस अह्द की क़ौम इस्राईल पर ध्यान दे कर उसे नुक़्सान पहुँचाएगा, फिर अपने वतन वापस जाएगा।

29 मुक़र्ररा वक़्त पर वह दुबारा जुनूबी मुल्क में घुस आएगा, लेकिन पहले की निस्बत इस बार नतीजा फ़र्क़ होगा। 30 क्यूँकि कित्तीम के बहरी जहाज़ उस की मुख़ालफ़त करेंगे, और वह हौसला हारेगा।

तब वह मुड़ कर मुक़द्दस अह्द की क़ौम पर अपना
पूरा ग़ुस्सा उतारेगा। जो मुक़द्दस अह्द को तर्क करेंगे
उन पर वह मेहरबानी करेगा। 31 उस के फ़ौजी आ
कर क़िलाबन्द मक़्दिस की बेहुरमती करेंगे। वह
रोज़ाना की क़ुर्बानियों का इन्तिज़ाम बन्द करके
तबाही का मकरूह बुत खड़ा करेंगे। 32 जो यहूदी
पहले से अह्द की ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे होंगे उन्हें
वह चिकनी-चुपड़ी बातों से मुर्तद हो जाने पर आमादा
करेगा। लेकिन जो लोग अपने ख़ुदा को जानते हैं वह
मज़बूत रह कर उस की मुख़ालफ़त करेंगे। 33 क़ौम
के समझदार बहुतों को सहीह राह की तालीम देंगे।
लेकिन कुछ अर्से के लिए वह तलवार, आग, क़ैद
और लूट-मार के बाइस डाँवाँडोल रहेंगे। 34 उस वक़्त
उन्हें थोड़ी बहुत मदद हासिल तो होगी, लेकिन बहुत
से ऐसे लोग उन के साथ मिल जाएंगे जो मुख़लिस
नहीं होंगे। 35 समझदारों में से कुछ डाँवाँडोल हो
जाएंगे ताकि लोगों को आज़मा कर आख़िरी वक़्त
तक ख़ालिस और पाक-साफ़ किया जाए। क्यूँकि
मुक़र्ररा वक़्त कुछ देर के बाद आएगा।

36 बादशाह जो जी चाहे करेगा। वह सरफ़राज़ हो
कर अपने आप को तमाम माबूदों से अज़ीम क़रार
देगा। ख़ुदाओं के ख़ुदा के ख़िलाफ़ वह नाक़ाबिल-
ए-बयान कुफ़्र बकेगा। उसे कामयाबी भी हासिल
होगी, लेकिन सिर्फ़ उस वक़्त तक जब तक इलाही
ग़ज़ब ठंडा न हो जाए। क्यूँकि जो कुछ मुक़र्रर हुआ
है उसे पूरा होना है। 37 बादशाह न अपने बापदादा
के देवताओं की पर्वा करेगा, न औरतों के अज़ीज़
देवता की, न किसी और की। क्यूँकि वह अपने आप
को सब पर सरफ़राज़ करेगा। 38 इन देवताओं के
बजाय वह क़िलों के देवता की पूजा करेगा जिस
से उस के बापदादा वाक़िफ़ ही नहीं थे। वह सोने-
चाँदी, जवाहिरात और क़ीमती तुह्फ़ों से देवता का
एहतिराम करेगा। 39 चुनाँचे वह अजनबी माबूद की
मदद से मज़बूत क़िलों पर हम्ला करेगा। जो उस की
हुकूमत मानें उन की वह बड़ी इज़्ज़त करेगा, इन्हें
बहुतों पर मुक़र्रर करेगा और उन में अज्र के तौर पर
ज़मीन तक़्सीम करेगा।

40 लेकिन फिर आख़िरी वक़्त आएगा। जुनूबी
बादशाह जंग में उस से टकराएगा, तो जवाब में
शिमाली बादशाह रथ, घुड़सवार और मुतअद्दिद
बहरी जहाज़ ले कर उस पर टूट पड़ेगा। तब वह
बहुत से मुल्कों में घुस आएगा और सैलाब की तरह
सब कुछ ग़र्क़ करके आगे बढ़ेगा। 41 इस दौरान
वह ख़ूबसूरत मुल्क इस्राईल में भी घुस आएगा।
बहुत से ममालिक शिकस्त खाएँगे, लेकिन अदोम
और मोआब अम्मोन के मर्कज़ी हिस्से समेत बच
जाएंगे। 42 उस वक़्त उस का इक़तिदार बहुत से
ममालिक पर छा जाएगा, मिस्र भी नहीं बचेगा।
43 शिमाली बादशाह मिस्र की सोने-चाँदी और बाक़ी
दौलत पर क़ब्ज़ा करेगा, और लिबिया और एथोपिया
भी उस के नक़्श-ए-क़दम पर चलेंगे। 44 लेकिन फिर
मशरिक़ और शिमाल की तरफ़ से अफ़्वाहें उसे
सदमा पहुँचाएँगी, और वह बड़े तैश में आ कर बहुतों
को तबाह और हलाक करने के लिए निकलेगा।
45 रास्ते में वह समुन्दर और ख़ूबसूरत मुक़द्दस पहाड़
के दरमियान अपने शाही ख़ैमे लगा लेगा। लेकिन फिर
उस का अन्जाम आएगा, और कोई उस की मदद नहीं
करेगा।

मुर्दे जी उठते हैं

12 1 उस वक़्त फ़रिश्तों का अज़ीम सरदार
मीकाएल उठ खड़ा होगा, वह जो तेरी क़ौम
की शफ़ाअत करता है। मुसीबत का ऐसा वक़्त होगा
कि क़ौमों के पैदा होने से ले कर उस वक़्त तक
नहीं हुआ होगा। लेकिन साथ साथ तेरी क़ौम को
नजात मिलेगी। जिस का भी नाम अल्लाह की किताब
में दर्ज है वह नजात पाएगा। 2 तब ख़ाक में सोए
हुए मुतअद्दिद लोग जाग उठेंगे, कुछ अबदी ज़िन्दगी
पाने के लिए और कुछ अबदी रुस्वाई और घिन
का निशाना बनने के लिए। 3 जो समझदार हैं वह
आसमान की आब-ओ-ताब की मानिन्द चमकेंगे,

और जो बहुतों को रास्त राह पर लाए हैं वह हमेशा
तक सितारों की तरह जगमगाएँगे।
4 लेकिन तू, ऐ दान्याल, इन बातों को छुपाए रख!
इस किताब पर आख़िरी वक़्त तक मुहर लगा दे!
बहुत लोग इधर उधर घूमते फिरेंगे, और इल्म में
इज़ाफ़ा होता जाएगा।"

आख़िरी वक़्त

5 फिर मैं, दान्याल ने दरया के पास दो आदमियों
को देखा। एक इस किनारे पर खड़ा था जबकि दूसरा
दूसरे किनारे पर। 6 कतान से मुलब्बस आदमी बहते
हुए पानी के ऊपर था। किनारों पर खड़े आदमियों
में से एक ने उस से पूछा, "इन हैरतअंगेज़ बातों की
तक्मील तक मज़ीद कितनी देर लगेगी?"
7 कतान से मुलब्बस आदमी ने दोनों हाथ आसमान
की तरफ़ उठाए और अबद तक ज़िन्दा ख़ुदा की
क़सम खा कर बोला, "पहले एक अर्सा, फिर दो
अर्से, फिर आधा अर्सा गुज़रेगा। पहले मुक़द्दस
क़ौम की ताक़त को पाश पाश करने का सिलसिला
इख़तिताम पर पहुँचना है। इस के बाद ही यह तमाम
बातें तक्मील तक पहुँचेंगी।"
8 गो मैं ने उस की यह बात सुनी, लेकिन वह मेरी
समझ में न आई। चुनाँचे मैं ने पूछा, "मेरे आक़ा, इन
तमाम बातों का क्या अन्जाम होगा?"
9 वह बोला, "ऐ दान्याल, अब चला जा! क्यूँकि इन
बातों को आख़िरी वक़्त तक छुपाए रखना है। उस
वक़्त तक इन पर मुहर लगी रहेगी। 10 बहुतों को
आज़मा कर पाक-साफ़ और ख़ालिस किया जाएगा।
लेकिन बेदीन बेदीन ही रहेंगे। कोई भी बेदीन यह
नहीं समझेगा, लेकिन समझदारों को समझ आएगी।
11 जिस वक़्त से रोज़ाना की क़ुर्बानी का इन्तिज़ाम
बन्द किया जाएगा और तबाही के मकरूह बुत
को मक़्दिस में खड़ा किया जाएगा उस वक़्त से
1,290 दिन गुज़रेंगे। 12 जो सब्र करके 1,335 दिनों
के इख़तिताम तक क़ाइम रहे वह मुबारक है!
13 जहाँ तक तेरा ताल्लुक़ है, आख़िरी वक़्त की तरफ़
बढ़ता चला जा! तू आराम करेगा और फिर दिनों के
इख़तिताम पर जी उठ कर अपनी मीरास पाएगा।"

होसेअ

नबी का ख़ानदान इस्राईल की अलामत है

1 1 ज़ैल में रब का वह कलाम दर्ज है जो उन
दिनों में होसेअ बिन बैरी पर नाज़िल हुआ जब
उज़्ज़ियाह, यूताम, आख़ज़ और हिज़क़ियाह यहूदाह
के बादशाह और यरुबिआम बिन यूआस इस्राईल का
बादशाह था।

2 जब रब पहली बार होसेअ से हमकलाम हुआ तो
उस ने हुक्म दिया, "जा, ज़िनाकार औरत से शादी
कर और ज़िनाकार बच्चे पैदा कर, क्यूँकि मुल्क रब
की पैरवी छोड़ कर मुसलसल ज़िना करता रहता
है।" 3 चुनाँचे होसेअ की जुमर बिन्त दिब्लाइम से
शादी हुई। उस का पाँओ भारी हुआ, और बेटा पैदा
हुआ। 4 तब रब ने होसेअ से कहा, "उस का नाम
यज़्रएल रखना। क्यूँकि जल्द ही मैं याहू के ख़ानदान
को यज़्रएल में उस क़त्ल-ओ-ग़ारत की सज़ा दूँगा जो
उस से सरज़द हुई। साथ साथ मैं इस्राईली बादशाही
को भी ख़त्म करूँगा। 5 उस दिन मैं मैदान-ए-यज़्रएल
में इस्राईल की कमान को तोड़ डालूँगा।"

6 इस के बाद जुमर दुबारा उम्मीद से हुई। इस बार
बेटी पैदा हुई। रब ने होसेअ से कहा, "इस का नाम
लोरुहामा यानी 'जिस पर रहम न हुआ हो' रखना,
क्यूँकि आइन्दा मैं इस्राईलियों पर रहम नहीं करूँगा
बल्कि वह मेरे रहम से सरासर महरूम रहेंगे।

7 लेकिन यहूदाह के बाशिन्दों पर मैं रहम करके
उन्हें छुटकारा दूँगा। मैं उन्हें कमान, तलवार, जंग के
हथियारों, घोड़ों या घुड़सवारों की मारिफ़त छुटकारा
नहीं दूँगा बल्कि मैं जो रब उन का ख़ुदा हूँ ख़ुद ही
उन्हें नजात दूँगा।"

8 लोरुहामा का दूध छुड़ाने पर जुमर फिर हामिला
हुई। इस मर्तबा बेटा पैदा हुआ। 9 तब रब ने फ़रमाया,
"इस का नाम लोअम्मी यानी 'मेरी क़ौम नहीं' रखना।
क्यूँकि तुम मेरी क़ौम नहीं, और मैं तुम्हारा ख़ुदा नहीं
हूँगा।

10 लेकिन वह वक़्त आएगा जब इस्राईली समुन्दर
की रेत जैसे बेशुमार होंगे। न उन की पैमाइश की
जा सकेगी, न उन्हें गिना जा सकेगा। तब जहाँ उन
से कहा गया कि 'तुम मेरी क़ौम नहीं' वहाँ वह
'ज़िन्दा ख़ुदा के फ़र्ज़न्द' कहलाएँगे। 11 तब यहूदाह
और इस्राईल के लोग मुत्तहिद हो जाएंगे और मिल
कर एक राहनुमा मुक़र्रर करेंगे। फिर वह मुल्क में
से निकल आएँगे, क्यूँकि यज़्रएल [k]का दिन अज़ीम
होगा!

2 1 उस वक़्त अपने भाइयों का नाम अम्मी यानी
'मेरी क़ौम' और अपनी बहनों का नाम रुहामा
यानी 'जिस पर रहम किया गया हो' रखो।

इस्राईल बेवफ़ा जुमर की मानिन्द है

2 अपनी माँ इस्राईल पर इल्ज़ाम लगाओ, हाँ उस
पर इल्ज़ाम लगाओ! क्यूँकि न वह मेरी बीवी है, न
मैं उस का शौहर हूँ। वह अपने चिहरे से और अपनी
छातियों के दरमियान से ज़िनाकारी के निशान दूर
करे, 3 वर्ना मैं उस के कपड़े उतार कर उसे उस नंगी
हालत में छोड़ूँगा जिस में वह पैदा हुई। मैं होने दूँगा
कि वह रेगिस्तान और झुलसती ज़मीन में तब्दील हो
जाए, कि वह प्यास के मारे मर जाए। 4 मैं उस के
बच्चों पर भी रहम नहीं करूँगा, क्यूँकि वह ज़िनाकार
बच्चे हैं। 5 उन की माँ ने ज़िना किया, उन्हें जन्म देने
वाली ने शर्मनाक हरकतें की हैं। वह बोली, 'मैं अपने

---

[k]यानी अल्लाह बीज बोता है।

आशिक़ों के पीछे भाग जाऊँगी। आख़िर मेरी रोटी,
पानी, ऊन, कतान, तेल और पीने की चीज़ें वही
मुहय्या करते हैं।'
6 इस लिए जहाँ भी वह चलना चाहे वहाँ मैं उसे
काँटेदार झाड़ियों से रोक दूँगा, मैं ऐसी दीवार खड़ी
करूँगा कि उसे रास्ते का पता न चले। 7 वह अपने
आशिक़ों का पीछा करते करते थक जाएगी और
कभी उन तक पहुँचेगी नहीं, वह उन का खोज लगाती
रहेगी लेकिन उन्हें पाएगी नहीं। फिर वह बोलेगी, 'मैं
अपने पहले शौहर के पास वापस जाऊँ, क्यूँकि उस
वक़्त मेरा हाल आज की निस्बत कहीं बेहतर था।'
8 लेकिन वह यह बात जानने के लिए तय्यार नहीं कि
उसे अल्लाह ही की तरफ़ से सब कुछ मुहय्या हुआ
है। मैं ही ने उसे वह अनाज, मै, तेल और कस्रत
की सोना-चाँदी दे दी जो लोगों ने बाल देवता को
पेश की। 9 इस लिए मैं अपने अनाज और अपने
अंगूर को फ़सल की कटाई से पहले पहले वापस
लूँगा। जो ऊन और कतान मैं उसे देता रहा ताकि
उस की बरहनगी नज़र न आए उसे मैं उस से छीन
लूँगा। 10 उस के आशिक़ों के देखते देखते मैं उस
के सारे कपड़े उतारूँगा, और कोई उसे मेरे हाथ से
नहीं बचाएगा। 11 मैं उस की तमाम ख़ुशियाँ बन्द कर
दूँगा। न कोई ईद, न नए चाँद का तहवार, न सबत
का दिन या बाक़ी कोई मुक़र्ररा जश्न मनाया जाएगा।
12 मैं उस के अंगूर और अन्जीर के बाग़ों को तबाह
करूँगा, उन चीज़ों को जिन के बारे में उस ने कहा,
'यह मुझे आशिक़ों की ख़िदमत करने के इवज़ मिल
गई हैं।' मैं यह बाग़ जंगल बनने दूँगा, और जंगली
जानवर उन का फल खाएँगे।
13 रब फ़रमाता है कि मैं उसे उन दिनों की सज़ा दूँगा
जब उस ने बाल के बुतों को बख़ूर की क़ुर्बानियाँ पेश
कीं। उस वक़्त वह अपने आप को बालियों और
ज़ेवरात से सजा कर अपने आशिक़ों के पीछे भाग
गई। मुझे वह भूल गई।

अल्लाह वफ़ादार रहता है

14 चुनाँचे अब मैं उसे मनाने की कोशिश करूँगा,
उसे रेगिस्तान में ले जा कर उस से नर्मी से बात
करूँगा। 15 फिर मैं उसे वहाँ से हो कर उस के
अंगूर के बाग़ वापस करूँगा और वादी-ए-अकूर [l]को
उम्मीद के दरवाज़े में बदल दूँगा। उस वक़्त वह ख़ुशी
से मेरे पीछे हो कर वहाँ चलेगी, बिलकुल उसी तरह
जिस तरह जवानी में करती थी जब मेरे पीछे हो कर
मिस्र से निकल आई।"
16 रब फ़रमाता है, "उस दिन तू मुझे पुकारते वक़्त
'ऐ मेरे बाल' [m]नहीं कहेगी बल्कि 'ऐ मेरे ख़ावन्द।'
17 मैं बाल देवताओं के नाम तेरे मुँह से निकाल दूँगा,
और तू आइन्दा उन के नामों का ज़िक्र तक नहीं
करेगी। 18 उस दिन मैं जंगली जानवरों, परिन्दों और
रेंगने वाले जानदारों के साथ अह्द बांधूँगा ताकि वह
इस्राईल को नुक़्सान न पहुँचाएँ। कमान और तलवार
को तोड़ कर मैं जंग का ख़तरा मुल्क से दूर कर दूँगा।
सब आराम-ओ-सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारेंगे।
19 मैं तेरे साथ अबदी रिश्ता बांधूँगा, ऐसा रिश्ता
जो रास्ती, इन्साफ़, फ़ज़्ल और रहम पर मब्नी होगा।
20 हाँ, जो रिश्ता मैं तेरे साथ बांधूँगा उस की बुन्याद
वफ़ादारी होगी। तब तू रब को जान लेगी।"
21 रब फ़रमाता है, "उस दिन मैं सुनूँगा। मैं आसमान
की सुन कर बादल पैदा करूँगा, आसमान ज़मीन की
सुन कर बारिश बरसाएगा, 22 ज़मीन अनाज, अंगूर
और ज़ैतून की सुन कर उन्हें तक़वियत देगी, और यह
चीज़ें मैदान-ए-यज़्रएल [n]की सुन कर कस्रत से पैदा
हो जाएँगी। 23 उस वक़्त मैं अपनी ख़ातिर इस्राईल
का बीज मुल्क में बो दूँगा। 'लोरुहामा' [o]पर मैं रहम

[l]यानी मुसीबत की वादी।

[m]बाल का मतलब 'मालिक' है।

[n]अल्लाह बीज बोता है।

[o]जिस पर रहम न हुआ हो।

करूँगा, और 'लोअम्मी' [p]से मैं कहूँगा, 'तू मेरी क़ौम है।' जवाब में वह बोलेगी, 'तू मेरा ख़ुदा है'।"

जुमर की तरह इस्राईल को वापस ख़रीदा जाएगा

3 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, "जा, अपनी बीवी
को दुबारा प्यार कर, हालाँकि उस का आशिक़
है जिस से उस ने ज़िना किया है। उसे यूँ प्यार
कर जिस तरह रब इस्राईलियों को प्यार करता है,
हालाँकि उन का रुख़ दीगर माबूदों की तरफ़ है और
उन्हें उन ही की अंगूर की टिक्कियाँ पसन्द हैं।"
2 तब मैं ने चाँदी के 15 सिक्के और जौ के 195
किलोग्राम दे कर उसे वापस ख़रीद लिया। 3 मैं ने उस
से कहा, "अब तुझे बड़े अर्से तक मेरे साथ रहना है।
इतने में न ज़िना कर, न किसी आदमी से सोह्बत
रख। मैं भी बड़ी देर तक तुझ से हमबिसतर नहीं
हूँगा।"
4 इस्राईल का यही हाल होगा। बड़ी देर तक न
उन का बादशाह होगा, न राहनुमा, न क़ुर्बानी का
इन्तिज़ाम, न यादगार पत्थर, न इमाम का बालापोश।
उन के पास बुत तक भी नहीं होंगे। 5 इस के बाद
इस्राईली वापस आ कर रब अपने ख़ुदा और दाऊद
अपने बादशाह को तलाश करेंगे। आख़िरी दिनों में
वह लरज़ते हुए रब और उस की भलाई की तरफ़
रुजू करेंगे।

इमामों पर रब का इल्ज़ाम

4 1 ऐ इस्राईलियो, रब का कलाम सुनो! क्यूँकि
रब का मुल्क के बाशिन्दों से मुक़द्दमा है।
"इल्ज़ाम यह है कि मुल्क में न वफ़ादारी, न मेहरबानी
और न अल्लाह का इर्फ़ान है। 2 कोसना, झूट बोलना,
चोरी और ज़िना करना आम हो गया है। रोज़-ब-
रोज़ क़त्ल-ओ-ग़ारत की नई ख़बरें मिलती रहती हैं।
3 इसी लिए मुल्क में काल है और उस के तमाम
बाशिन्दे पज़मुर्दा हो गए हैं। जंगली जानवर, परिन्दे
और मछलियाँ भी फ़ना हो रही हैं।
4 लेकिन बिलावजह किसी पर इल्ज़ाम मत लगाना,
न ख़्वाह-म-ख़्वाह किसी की तम्बीह करो! ऐ इमामो,
मैं तुम ही पर इल्ज़ाम लगाता हूँ। 5 ऐ इमामो, दिन के
वक़्त तू ठोकर खा कर गिरेगा, और रात के वक़्त
नबी गिर कर तेरे साथ पड़ा रहेगा। मैं तेरी माँ को भी
तबाह करूँगा। 6 अफ़सोस, मेरी क़ौम इस लिए तबाह
हो रही है कि वह सहीह इल्म नहीं रखती। और क्या
अजब जब तुम इमामों ने यह इल्म रद्द कर दिया है।
अब मैं तुम्हें भी रद्द करता हूँ। आइन्दा तुम इमाम की
ख़िदमत अदा नहीं करोगे। चूँकि तुम अपने ख़ुदा की
शरीअत भूल गए हो इस लिए मैं तुम्हारी औलाद को
भी भूल जाऊँगा।
7 इमामों की तादाद जितनी बढ़ती गई उतना ही वह
मेरा गुनाह करते गए। उन्हों ने अपनी इज़्ज़त ऐसी
चीज़ के इवज़ छोड़ दी जो रुस्वाई का बाइस है।
8 मेरी क़ौम के गुनाह उन की ख़ुराक हैं, और वह
इस लालच में रहते हैं कि लोगों का क़ुसूर मज़ीद
बढ़ जाए। 9 चुनाँचे इमामों और क़ौम के साथ एक
जैसा सुलूक किया जाएगा। दोनों को मैं उन के चाल-
चलन की सज़ा दूँगा, दोनों को उन की हरकतों का
अज्र दूँगा। 10 खाना तो वह खाएँगे लेकिन सेर नहीं
होंगे। ज़िना भी करते रहेंगे, लेकिन बेफ़ाइदा। इस से
उन की तादाद नहीं बढ़ेगी। क्यूँकि उन्हों ने रब का
ख़याल करना छोड़ दिया है।
11 ज़िना करने और नई और पुरानी मै पीने से लोगों
की अक़्ल जाती रहती है। 12 मेरी क़ौम लकड़ी से
दरयाफ़्त करती है कि क्या करना है, और उस की
लाठी उसे हिदायत देती है। क्यूँकि ज़िनाकारी की
रूह ने उन्हें भटका दिया है, ज़िना करते करते वह
अपने ख़ुदा से कहीं दूर हो गए हैं। 13 वह पहाड़ों की
चोटियों पर अपने जानवरों को क़ुर्बान करते हैं और
पहाड़ियों पर चढ़ कर बलूत, सफ़ेदा या किसी और

---

[p]मेरी क़ौम नहीं।

दरख़्त के ख़ुशगवार साय में बख़ूर की क़ुर्बानियाँ पेश
करते हैं। इसी लिए तुम्हारी बेटियाँ इस्मतफ़रोश बन
गई हैं, और तुम्हारी बहूएँ ज़िना करती हैं। 14 लेकिन
मैं उन्हें उन की इस्मतफ़रोशी और ज़िनाकारी की
सज़ा क्यूँ दूँ जबकि तुम मर्द कस्बियों से सोह्बत
रखते और देवताओं की ख़िदमत में इस्मतफ़रोशी
करने वाली औरतों के साथ क़ुर्बानियाँ चढ़ाते हो?
ऐसी हरकतों से नासमझ क़ौम तबाह हो रही है।

15 ऐ इस्राईल, तू इस्मतफ़रोश है, लेकिन यहूदाह
ख़बरदार रहे कि वह इस जुर्म में मुलव्वस न हो
जाए। इस्राईल के शहरों जिल्जाल और बैत-आवन
[q]की क़ुर्बानगाहों के पास मत जाना। ऐसी जगहों पर
रब का नाम ले कर उस की हयात की क़सम खाना
मना है। 16 इस्राईल तो ज़िद्दी गाय की तरह अड़ गया
है। तो फिर रब उन्हें किस तरह सब्ज़ाज़ार में भेड़ के
बच्चों की तरह चरा सकता है?

17 इस्राईल [r]तो बुतों का इत्तिहादी है, उसे छोड़ दे!
18 यह लोग शराब की महफ़िल से फ़ारिग़ हो कर
ज़िनाकारी में लग जाते हैं। वह नाजाइज़ मुहब्बत
करते करते कभी नहीं थकते। लेकिन इस का अज्र
उन की अपनी बेइज़्ज़ती है। 19 आँधी उन्हें अपनी
लपेट में ले कर उड़ा ले जाएगी, और वह अपनी
क़ुर्बानियों के बाइस शर्मिन्दा हो जाएंगे।

इस्राईल और यहूदाह दोनों क़ुसूरवार हैं

5 1 ऐ इमामो, सुनो मेरी बात! ऐ इस्राईल के घराने,
तवज्जुह दे! ऐ शाही ख़ानदान, मेरे पैग़ाम पर ग़ौर
कर!

तुम पर फ़ैसला है, क्यूँकि अपनी बुतपरस्ती से तुम
ने मिस्फ़ाह में फंदा लगा दिया, तबूर पहाड़ पर जाल
बिछा दिया 2 और शित्तीम में गढ़ा खुदवा लिया है।
ख़बरदार! मैं तुम सब को सज़ा दूँगा।

3 मैं तो इस्राईल को ख़ूब जानता हूँ, वह मुझ से छुपा
नहीं रह सकता। इस्राईल अब इस्मतफ़रोश बन गया
है, वह नापाक है। 4 उन की बुरी हरकतें उन्हें उन
के ख़ुदा के पास वापस आने नहीं देतीं। क्यूँकि उन
के अन्दर ज़िनाकारी की रूह है, और वह रब को
नहीं जानते। 5 इस्राईल का तकब्बुर उस के ख़िलाफ़
गवाही देता है, और वह अपने क़ुसूर के बाइस गिर
जाएगा। यहूदाह भी उस के साथ गिर जाएगा।

6 तब वह अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को
ले कर रब को तलाश करेंगे, लेकिन बेफ़ाइदा। वह
उसे पा नहीं सकेंगे, क्यूँकि वह उन्हें छोड़ कर चला
गया है। 7 उन्हों ने रब से बेवफ़ा हो कर नाजाइज़
औलाद पैदा की है। अब नया चाँद उन्हें उन की
मौरूसी ज़मीनों समेत हड़प कर लेगा।

अपनी क़ौम पर अल्लाह का इल्ज़ाम

8 जिबिआ में नरसिंगा फूँको, रामा में तुरम बजाओ!
बैत-आवन में जंग के नारे बुलन्द करो। ऐ बिनयमीन,
दुश्मन तेरे पीछे पड़ गया है! 9 जिस दिन मैं सज़ा
दूँगा उस दिन इस्राईल वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएगा।
ध्यान दो कि मैं ने इस्राईली क़बीलों के बारे में
क़ाबिल-ए-एतिमाद बातें बताई हैं।

10 यहूदाह के राहनुमा उन जैसे बन गए हैं जो
नाजाइज़ तौर पर अपनी ज़मीन की हुदूद बढ़ा देते
हैं। जवाब में मैं अपना ग़ज़ब मूसलाधार बारिश की
तरह उन पर नाज़िल करूँगा। 11 इस्राईल पर इस लिए
ज़ुल्म हो रहा है और उस का हक़ मारा जा रहा है
कि वह बेमानी बुतों के पीछे भागने पर तुला हुआ
है। 12 मैं इस्राईल के लिए पीप और यहूदाह के लिए
सड़ाहट का बाइस बनूँगा।

13 इस्राईल ने अपनी बीमारी देखी और यहूदाह ने
अपने नासूर पर ग़ौर किया। तब इस्राईल ने असूर की
तरफ़ रुजू किया और असूर के अज़ीम बादशाह को

---

[q]बैत-आवन यानी 'गुनाह का घर' से मुराद बैत-एल है।

[r]होसेअ के इब्रानी मतन में यहाँ और मुतअद्दिद दीगर आयात में 'इफ़्राईम' मुस्तामल है जिस से मुराद शिमाली मुल्क-ए-इस्राईल है।

पैग़ाम भेज कर उस से मदद माँगी। लेकिन वह तुम्हें
शिफ़ा नहीं दे सकता, वह तुम्हारे नासूर का इलाज
नहीं कर सकता।
14 क्यूँकि मैं शेरबबर की तरह इस्राईल पर टूट
पड़ूँगा और जवान शेरबबर की तरह यहूदाह पर
झपट पड़ूँगा। मैं उन्हें फाड़ कर अपने साथ घसीट
ले जाऊँगा, और कोई उन्हें नहीं बचाएगा। 15 फिर मैं
अपने घर वापस जा कर उस वक़्त तक उन से दूर
रहूँगा जब तक वह अपना क़ुसूर तस्लीम करके मेरे
चिहरे को तलाश न करें। क्यूँकि जब वह मुसीबत में
फंस जाएंगे तब ही मुझे तलाश करेंगे।”

6 1 उस वक़्त वह कहेंगे, “आओ, हम रब के पास
वापस चलें। क्यूँकि उसी ने हमें फाड़ा, और
वही हमें शिफ़ा भी देगा। उसी ने हमारी पिटाई की,
और वही हमारी मर्हम-पट्टी भी करेगा। 2 दो दिन के
बाद वह हमें नए सिरे से ज़िन्दा करेगा और तीसरे
दिन हमें दुबारा उठा खड़ा करेगा ताकि हम उस के
हुज़ूर ज़िन्दगी गुज़ारें। 3 आओ, हम उसे जान लें, हम
पूरी जिद्द-ओ-जह्द के साथ रब को जानने के लिए
कोशाँ रहें। वह ज़रूर हम पर ज़ाहिर होगा। यह उतना
यक़ीनी है जितना सूरज का रोज़ाना तुलू होना यक़ीनी
है। जिस तरह मौसम-ए-बहार की तेज़ बारिश ज़मीन
को सेराब करती है उसी तरह अल्लाह भी हमारे पास
आएगा।”
4 “ऐ इस्राईल, मैं तेरे साथ क्या करूँ? ऐ यहूदाह, मैं
तेरे साथ क्या करूँ? तुम्हारी मुहब्बत सुब्ह की धुन्द
जैसी आरिज़ी है। धूप में ओस की तरह वह जल्द ही
काफ़ूर हो जाती है। 5 इसी लिए मैं ने अपने नबियों
की मारिफ़त तुम्हें पटख़ दिया, अपने मुँह के अल्फ़ाज़
से तुम्हें मार डाला है। मेरे इन्साफ़ का नूर सूरज की
तरह ही तुलू होता है। 6 क्यूँकि मैं क़ुर्बानी नहीं बल्कि
रहम पसन्द करता हूँ, भस्म होने वाली क़ुर्बानियों की
निस्बत मुझे यह पसन्द है कि तुम अल्लाह को जान
लो।

अदालत की फ़सल पक गई है

7 वह आदम शहर में अह्द तोड़ कर मुझ से बेवफ़ा
हो गए। 8 जिलिआद शहर मुजरिमों से भर गया है, हर
तरफ़ ख़ून के दाग़ हैं। 9 इमामों के जथ्थे डाकुओं की
मानिन्द बन गए हैं। क्यूँकि वह सिकम को पहुँचाने
वाले रास्ते पर मुसाफ़िरों की ताक लगा कर उन्हें
क़त्ल करते हैं। हाँ, वह शर्मनाक हरकतों से गुरेज़
नहीं करते। 10 मैं ने इस्राईल में ऐसी बातें देखी हैं जिन
से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। क्यूँकि इस्राईल ज़िना करता
है, वह अपने आप को नापाक करता है। 11 लेकिन
यहूदाह पर भी अदालत की फ़सल पकने वाली है।

7 जब कभी मैं अपनी क़ौम को बहाल करके
1 इस्राईल को शिफ़ा देना चाहता हूँ तो इस्राईल
का क़ुसूर और सामरिया की बुराई साफ़ ज़ाहिर
हो जाती है। क्यूँकि फ़रेब देना उन का पेशा ही बन
गया है। चोर घरों में नक़ब लगाते जबकि बाहर गली
में डाकूओं के जथ्थे लोगों को लूट लेते हैं। 2 लेकिन
वह ख़याल नहीं करते कि मुझे उन की तमाम बुरी
हरकतों की याद रहती है। वह नहीं समझते कि अब
वह अपने ग़लत कामों से घिरे रहते हैं, कि यह गुनाह
हर वक़्त मुझे नज़र आते हैं। 3 अपनी बुराई से वह
बादशाह को ख़ुश रखते हैं, उन के झूट से बुज़ुर्ग
लुत्फ़अन्दोज़ होते हैं। 4 सब के सब ज़िनाकार हैं। वह
उस तपते तनूर की मानिन्द हैं जो इतना गर्म है कि
नानबाई को उसे मज़ीद छेड़ने की ज़रूरत नहीं। अगर
वह आटा गूँध कर उस के ख़मीर होने तक इन्तिज़ार
भी करे तो भी तनूर इतना गर्म रहता है कि रोटी पक
जाएगी। 5 हमारे बादशाह के जश्न पर राहनुमा मै पी
पी कर मस्त हो जाते हैं, और वह कुफ़्र बकने वालों
से हाथ मिलाता है। 6 यह लोग क़रीब आ कर ताक में
बैठ जाते हैं जबकि उन के दिल तनूर की तरह तपते
हैं। पूरी रात को उन का ग़ुस्सा सोया रहता है, लेकिन
सुब्ह के वक़्त वह बेदार हो कर शोलाज़न आग की
तरह दहकने लगता है। 7 सब तनूर की तरह तपते
तपते अपने राहनुमाओं को हड़प कर लेते हैं। उन के

तमाम बादशाह गिर जाते हैं, और एक भी मुझे नहीं
पुकारता।
8 इस्राईल दीगर अक़्वाम के साथ मिल कर एक हो
गया है। अब वह उस रोटी की मानिन्द है जो तवे पर
सिर्फ़ एक तरफ़ से पक गई है, दूसरी तरफ़ से कच्ची
ही है। 9 ग़ैरमुल्की उस की ताक़त खा खा कर उसे
कमज़ोर कर रहे हैं, लेकिन अभी तक उसे पता नहीं
चला। उस के बाल सफ़ेद हो गए हैं, लेकिन अभी
तक उसे मालूम नहीं हुआ। 10 इस्राईल का तकब्बुर
उस के ख़िलाफ़ गवाही देता है। तो भी न वह रब
अपने ख़ुदा के पास वापस आ जाता, न उसे तलाश
करता है।
11 इस्राईल नासमझ कबूतर की मानिन्द है जिसे
आसानी से वरग़लाया जा सकता है। पहले वह मिस्र
को मदद के लिए बुलाता, फिर असूर के पास भाग
जाता है। 12 लेकिन जूँ ही वह कभी इधर कभी इधर
दौड़ेंगे तो मैं उन पर अपना जाल डालूँगा, उन्हें उड़ते
हुए परिन्दों की तरह नीचे उतारूँगा। मैं उन की
यूँ तादीब करूँगा जिस तरह उन की जमाअत को
आगाह किया गया है।
13 उन पर अफ़सोस, क्यूँकि वह मुझ से भाग गए
हैं। उन पर तबाही आए, क्यूँकि वह मुझ से सरकश
हो गए हैं। मैं फ़िद्या दे कर उन्हें छुड़ाना चाहता था,
लेकिन जवाब में वह मेरे बारे में झूट बोलते हैं।
14 वह ख़ुलूसदिली से मुझ से इल्तिजा नहीं करते।
वह बिस्तर पर लेटे लेटे "हाय हाय" करते और ग़ल्ला
और अंगूर को हासिल करने के लिए अपने आप को
ज़ख़्मी करते हैं। लेकिन मुझ से वह दूर रहते हैं।
15 मैं ही ने उन्हें तर्बियत दी, मैं ही ने उन्हें तक़वियत
दी, लेकिन वह मेरे ख़िलाफ़ बुरे मन्सूबे बांधते हैं।
16 वह तौबा करके वापस आ जाते हैं, लेकिन मेरे
पास नहीं, लिहाज़ा वह ढीली कमान जैसे बेकार हो
गए हैं। चुनाँचे उन के राहनुमा कुफ़्र बकने के सबब
से तलवार की ज़द में आ कर हलाक हो जाएंगे। इस
बात के बाइस वह मिस्र में मज़ाक़ का निशाना बन
जाएंगे।

अल्लाह की बेवफ़ा क़ौम पर अदालत

8 1 नरसिंगा बजाओ! दुश्मन उक़ाब की तरह
रब के घर पर झपट्टा मारने को है। क्यूँकि
लोगों ने मेरे अह्द को तोड़ कर मेरी शरीअत की
ख़िलाफ़वरज़ी की है। 2 बेशक वह मदद के लिए
चीख़ते चिल्लाते हैं, 'ऐ हमारे ख़ुदा, हम तो तुझे जानते
हैं, हम तो इस्राईल हैं।' 3 लेकिन हक़ीक़त में इस्राईल
ने वह कुछ मुस्तरद कर दिया है जो अच्छा है। चुनाँचे
दुश्मन उस का ताक़्क़ुब करे! 4 उन्हों ने मेरी मर्ज़ी
पूछे बग़ैर अपने बादशाह मुक़र्रर किए, मेरी मन्ज़ूरी
के बग़ैर अपने राहनुमाओं को चुन लिया है। अपने
सोने-चाँदी से अपने लिए बुत बना कर वह अपनी
तबाही अपने सर पर लाए हैं।
5 ऐ सामरिया, मैं ने तेरे बछड़े को रद्द कर दिया है!
मेरा ग़ज़ब तेरे बाशिन्दों पर नाज़िल होने वाला है,
क्यूँकि वह पाक-साफ़ हो जाने के क़ाबिल ही नहीं!
यह हालत कब तक जारी रहेगी? 6 ऐ इस्राईल, जिस
बछड़े की पूजा तू करता है उसे दस्तकार ही ने बनाया
है। सामरिया का बछड़ा ख़ुदा नहीं है बल्कि पाश पाश
हो जाएगा।
7 वह हवा का बीज बो रहे हैं और आँधी की
फ़सल काटेंगे। अनाज की फ़सल तय्यार है, लेकिन
बालियाँ कहीं नज़र नहीं आतीं। इस से आटा मिलने
का इम्कान ही नहीं। और अगर थोड़ा बहुत गन्दुम
मिले भी तो ग़ैरमुल्की उसे हड़प कर लेंगे।
8 हाँ, तमाम इस्राईल को हड़प कर लिया गया है।
अब वह क़ौमों में ऐसा बर्तन बन गया है जो कोई
पसन्द नहीं करता। 9 क्यूँकि उस के लोग असूर के
पास चले गए हैं। जंगली गधा तो अकेला रहता
है, लेकिन इस्राईल अपने आशिक़ को तुह्फ़े दे कर
ख़ुश रखने पर तुला रहता है। 10 लेकिन ख़्वाह वह
दीगर क़ौमों में कितने तुह्फ़े क्यूँ न तक़्सीम करें
अब मैं उन्हें सज़ा देने के लिए जमा करूँगा। जल्द
ही वह शहन्शाह के बोझ तले पेच-ओ-ताब खाने
लगेंगे। 11 गो इस्राईल ने गुनाहों को दूर करने के लिए

मुतअद्दिद क़ुर्बानगाहें तामीर कीं, लेकिन वह उस
के लिए गुनाह का बाइस बन गई हैं। 12 ख़्वाह मैं
अपने अह्काम को इस्राईलियों के लिए हज़ारों दफ़ा
क्यूँ न क़लमबन्द करता, तो भी फ़र्क़ न पड़ता, वह
समझते कि यह अह्काम अजनबी हैं, यह हम पर
लागू नहीं होते। 13 गो वह मुझे क़ुर्बानियाँ पेश करके
उन का गोश्त खाते हैं, लेकिन मैं, रब इन से ख़ुश नहीं
होता बल्कि उन के गुनाहों को याद करके उन्हें सज़ा
दूँगा। तब उन्हें दुबारा मिस्र जाना पड़ेगा। 14 इस्राईल
ने अपने ख़ालिक़ को भूल कर बड़े महल बना लिए हैं,
और यहूदाह ने मुतअद्दिद शहरों को क़िलाबन्द बना
लिया है। लेकिन मैं उन के शहरों पर आग नाज़िल
करके उन के महलों को भस्म कर दूँगा।"

इस्राईल का अन्जाम

9 1 ऐ इस्राईल, ख़ुशी न मना, दीगर अक़्वाम की
तरह शादियाना मत बजा। क्यूँकि तू ज़िना करते
करते अपने ख़ुदा से दूर होता जा रहा है। जहाँ भी लोग
गन्दुम गाहते हैं वहाँ तू जा कर अपनी इस्मतफ़रोशी
के पैसे जमा करता है, यही कुछ तुझे प्यारा है।
2 इस लिए आइन्दा गन्दुम गाहने और अंगूर का रस
निकालने की जगहें उन्हें ख़ुराक मुहय्या नहीं करेंगी,
और अंगूर की फ़सल उन्हें रस मुहय्या नहीं करेगी।
3 इस्राईली रब के मुल्क में नहीं रहेंगे बल्कि उन्हें
मिस्र वापस जाना पड़ेगा, उन्हें असूर में नापाक चीज़ें
खानी पड़ेंगी। 4 वहाँ वह रब को न मै की और न ज़बह
की क़ुर्बानियाँ पेश कर सकेंगे। उन की रोटी मातम
करने वालों की रोटी जैसी होगी यानी जो भी उसे
खाए वह नापाक हो जाएगा। हाँ, उन का खाना सिर्फ़
उन की अपनी भूक मिटाने के लिए होगा, और वह
रब के घर में नहीं आएगा। 5 उस वक़्त तुम ईदों पर
क्या करोगे? रब के तहवारों को तुम कैसे मनाओगे?
6 जो तबाहशुदा मुल्क से निकलेंगे उन्हें मिस्र इकट्ठा
करेगा, उन्हें मेम्फ़िस दफ़नाएगा। ख़ुदरौ पौदे उन की
क़ीमती चाँदी पर क़ब्ज़ा करेंगे, काँटेदार झाड़ियाँ उन
के घरों पर छा जाएँगी।
7 सज़ा के दिन आ गए हैं, हिसाब-किताब के दिन
पहुँच गए हैं। इस्राईल यह बात जान ले। तुम कहते
हो, "यह नबी अहमक़ है, रूह का यह बन्दा पागल
है।" क्यूँकि जितना संगीन तुम्हारा गुनाह है उतने ही
ज़ोर से तुम मेरी मुख़ालफ़त करते हो।
8 नबी मेरे ख़ुदा की तरफ़ से इस्राईल का पहरेदार
बनाया गया है। लेकिन जहाँ भी वह जाए वहाँ उसे
फंसाने के फंदे लगाए गए हैं, बल्कि उसे उस के ख़ुदा
के घर में भी सताया जाता है। 9 उन से निहायत ही
ख़राब काम सरज़द हुआ है, ऐसा शरीर काम जैसा
जिबिआ के बाशिन्दों से हुआ था। अल्लाह उन का
क़ुसूर याद करके उन के गुनाहों की मुनासिब सज़ा
देगा।

इस्राईल शुरू से ही शरीर है

10 रब फ़रमाता है, "जब मेरा इस्राईल से पहला
वास्ता पड़ा तो रेगिस्तान में अंगूर जैसा लग रहा था।
तुम्हारे बापदादा अन्जीर के दरख़्त पर लगे पहले
पकने वाले फल जैसे नज़र आए। लेकिन बाल-फ़ग़ूर
के पास पहुँचते ही उन्हों ने अपने आप को उस
शर्मनाक बुत के लिए मख़्सूस कर लिया। तब वह
अपने आशिक़ जैसे मकरूह हो गए। 11 अब इस्राईल
की शान-ओ-शौकत परिन्दे की तरह उड़ कर ग़ाइब
हो जाएगी। आइन्दा न कोई उम्मीद से होगी, न बच्चा
जनेगी। 12 अगर वह अपने बच्चों को परवान चढ़ने
तक पालें भी तो भी मैं उन्हें बेऔलाद कर दूँगा। एक
भी नहीं रहेगा। उन पर अफ़्सोस जब मैं उन से दूर हो
जाऊँगा। 13 पहले जब मैं ने इस्राईल पर नज़र डाली
तो वह सूर की मानिन्द शानदार था, उसे शादाब जगह
पर पौदे की तरह लगाया गया था। लेकिन अब उसे
अपनी औलाद को बाहर ला कर क़ातिल के हवाले
करना पड़ेगा।"
14 ऐ रब, उन्हें दे! क्या दे? होने दे कि उन के बच्चे
पेट में ज़ाए हो जाएँ, कि औरतें दूध न पिला सकें।
15 रब फ़रमाता है, "जब उन की तमाम बेदीनी
जिल्जाल में ज़ाहिर हुई तो मैं ने उन से नफ़रत की।

उन की बुरी हरकतों की वजह से मैं उन्हें अपने घर
से निकाल दूँगा। आइन्दा मैं उन्हें प्यार नहीं करूँगा।
उन के तमाम राहनुमा सरकश हैं। 16 इस्राईल को मारा
गया, लोगों की जड़ सूख गई है, और वह फल नहीं
ला सकते। उन के बच्चे पैदा हो भी जाएँ तो मैं उन
की क़ीमती औलाद को मार डालूँगा।" 17 मेरा ख़ुदा
उन्हें रद्द करेगा, इस लिए कि उन्हों ने उस की नहीं
सुनी। चुनाँचे उन्हें दीगर अक़्वाम में मारे मारे फिरना
पड़ेगा।

बुतपरस्ती के नताइज

10 1 इस्राईल अंगूर की फलती फूलती बेल था
जो काफ़ी फल लाती रही। लेकिन जितना
उस का फल बढ़ता गया उतना ही वह बुतों के
लिए क़ुर्बानगाहें बनाता गया। जितना उस का मुल्क
तरक़्क़ी करता गया उतना ही वह देवताओं के
मख़्सूस सतूनों को सजाता गया। 2 लोग दोदिले हैं,
और अब उन्हें उन के क़ुसूर का अज्र भुगतना पड़ेगा।
रब उन की क़ुर्बानगाहों को गिरा देगा, उन के सतूनों
को मिस्मार करेगा। 3 जल्द ही वह कहेंगे, "हम इस
लिए बादशाह से महरूम हैं कि हम ने रब का ख़ौफ़ न
माना। लेकिन अगर बादशाह होता भी तो वह हमारे
लिए क्या कर सकता?" 4 वह बड़ी बातें करते, झूटी
क़समें खाते और ख़ाली अह्द बांधते हैं। उन का
इन्साफ़ उन ज़हरीले ख़ुदरौ पौदों की मानिन्द है जो
बीज के लिए तय्यारशुदा ज़मीन से फूट निकलते हैं।
5 सामरिया के बाशिन्दे परेशान हैं कि बैत-आवन
[s]में बछड़े के बुत के साथ क्या किया जाएगा। उस के
परस्तार उस पर मातम करेंगे, उस के पुजारी उस की
शान-ओ-शौकत याद करके वावैला करेंगे, क्यूँकि
वह उन से छिन कर परदेस में ले जाया जाएगा।
6 हाँ, बछड़े को मुल्क-ए-असूर में ले जा कर शहन्शाह
को ख़राज के तौर पर पेश किया जाएगा। इस्राईल
की रुस्वाई हो जाएगी, वह अपने मन्सूबे के बाइस
शर्मिन्दा हो जाएगा।
7 सामरिया नेस्त-ओ-नाबूद, उस का बादशाह पानी
पर तैरती हुई टहनी की तरह बेबस होगा। 8 बैत-
आवन [t]की वह ऊँची जगहें तबाह हो जाएँगी जहाँ
इस्राईल गुनाह करता रहा है। उन की क़ुर्बानगाहों
पर काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटारे छा जाएंगे।
तब लोग पहाड़ों से कहेंगे, "हमें छुपा लो!" और
पहाड़ियों को "हम पर गिर पड़ो!"
9 रब फ़रमाता है, "ऐ इस्राईल, जिबिआ के वाकिए
से ले कर आज तक तू गुनाह करता आया है, लोग
वहीं के वहीं रह गए हैं। क्या मुनासिब नहीं कि
जिबिआ में जंग उन पर टूट पड़े जो इतने शरीर हैं?
10 अब मैं अपनी मर्ज़ी से उन की तादीब करूँगा।
अक़्वाम उन के ख़िलाफ़ जमा हो जाएँगी जब उन्हें
उन के दुगने क़ुसूर के लिए ज़न्जीरों में जकड़ लिया
जाएगा।
11 इस्राईल जवान गाय था जिसे गन्दुम गाहने की
तर्बियत दी गई थी और जो शौक़ से यह काम करती
थी। तब मैं ने उस के ख़ूबसूरत गले पर जूआ रख कर
उसे जोत लिया। यहूदाह को हल खैंचना और याक़ूब
[u]को ज़मीन पर सुहागा फेरना था। 12 मैं ने फ़रमाया,
'इन्साफ़ का बीज बो कर शफ़क़त की फ़सल काटो।
जिस ज़मीन पर हल कभी नहीं चलाया गया उस पर
ठीक तरह हल चलाओ! जब तक रब को तलाश
करने का मौक़ा है उसे तलाश करो, और जब तक
वह आ कर तुम पर इन्साफ़ की बारिश न बरसाए
उसे ढूँडो।'
13 लेकिन जवाब में तुम ने हल चला कर बेदीनी
का बीज बोया, तुम ने बुराई की फ़सल काट कर
फ़रेब का फल खाया है। चूँकि तू ने अपनी राह और
अपने सूरमाओं की बड़ी तादाद पर भरोसा रखा है
14 इस लिए तेरी क़ौम में जंग का शोर मचेगा, तेरे

[s]बैत-आवन यानी 'गुनाह का घर' से मुराद बैत-एल है।

[t]बैत-आवन यानी 'गुनाह का घर' से मुराद बैत-एल है।

[u]याक़ूब से मुराद इस्राईल है।

तमाम क़िले ख़ाक में मिलाए जाएंगे। शल्मन के बैत-
अरबेल पर हमले के से हालात होंगे जिस ने उस शहर
को ज़मीनबोस करके माओं को बच्चों समेत ज़मीन पर
पटख़ दिया। 15 ऐ बैत-एल के बाशिन्दो, तुम्हारे साथ
भी ऐसा ही किया जाएगा, क्यूँकि तुम्हारी बदकारी
हद से ज़्यादा है। पौ फटते ही इस्राईल का बादशाह
नेस्त हो जाएगा।”

बेवफ़ाई के बावुजूद अल्लाह की शफ़क़त

11 1 रब फ़रमाता है, “इस्राईल अभी लड़का
था जब मैं ने उसे प्यार किया, जब मैं ने
अपने बेटे को मिस्र से बुलाया। 2 लेकिन बाद में
जितना ही मैं उन्हें बुलाता रहा उतना ही वह मुझ
से दूर होते गए। वह बाल देवताओं के लिए जानवर
चढ़ाने, बुतों के लिए बख़ूर जलाने लगे। 3 मैं ने ख़ुद
इस्राईल को चलने की तर्बियत दी, बार बार उन्हें
गोद में उठा कर लिए फिरा। लेकिन वह न समझे
कि मैं ही उन्हें शिफ़ा देने वाला हूँ। 4 मैं उन्हें खैंचता
रहा, लेकिन ऐसे रस्सों से नहीं जो इन्सान बर्दाश्त न
कर सके बल्कि शफ़क़त भरे रस्सों से। मैं ने उन के
गले पर का जूआ हल्का कर दिया और नर्मी से उन्हें
ख़ुराक खिलाई।

5 क्या उन्हें मुल्क-ए-मिस्र वापस नहीं जाना पड़ेगा?
बल्कि असूर ही उन का बादशाह बनेगा, इस लिए
कि वह मेरे पास वापस आने के लिए तय्यार नहीं।
6 तलवार उन के शहरों में घूम घूम कर ग़ैबदानों को
हलाक करेगी और लोगों को उन के ग़लत मश्वरों के
सबब से खाती जाएगी। 7 लेकिन मेरी क़ौम मुझे तर्क
करने पर तुली हुई है। जब उसे ऊपर अल्लाह की तरफ़
देखने को कहा जाए तो उस में से कोई भी उस तरफ़
रुजू नहीं करता।

8 ऐ इस्राईल, मैं तुझे किस तरह छोड़ सकता हूँ?
मैं तुझे किस तरह दुश्मन के हवाले कर सकता,
किस तरह अदमा की तरह दूसरों के क़ब्ज़े में छोड़
सकता, किस तरह ज़बोईम की तरह तबाह कर
सकता हूँ? मेरा इरादा सरासर बदल गया है, मैं तुझ
पर शफ़क़त करने के लिए बेचैन हूँ। 9 न मैं अपना
सख़्त ग़ज़ब नाज़िल करूँगा, न दुबारा इस्राईल को
बर्बाद करूँगा। क्यूँकि मैं इन्सान नहीं बल्कि ख़ुदा
हूँ, वह क़ुद्दूस जो तेरे दरमियान सुकूनत करता है। मैं
ग़ज़ब में नहीं आऊँगा। 10 उस वक़्त वह रब के पीछे
ही चलेंगे। तब वह शेरबबर की तरह दहाड़ेगा। और
जब दहाड़ेगा तो उस के फ़र्ज़न्द मग़रिब से लरज़ते हुए
वापस आएँगे। 11 वह परिन्दों की तरह फड़फड़ाते
हुए मिस्र से आएँगे, थरथराते कबूतरों की तरह असूर
से लौटेंगे। फिर मैं उन्हें उन के घरों में बसा दूँगा। यह
मेरा, रब का फ़रमान है।

12 इस्राईल ने मुझे झूट से घेर लिया, फ़रेब से मेरा
मुहासरा कर लिया है। लेकिन यहूदाह भी मज़बूती
से अल्लाह के साथ नहीं है बल्कि आवारा फिरता है,
हालाँकि क़ुद्दूस ख़ुदा वफ़ादार है।”

सरकशी की राम कहानी

12 1 इस्राईल हवा चरने की कोशिश कर रहा
है, पूरा दिन वह मशरिक़ी लू के पीछे
भागता रहता है। उस के झूट और ज़ुल्म में इज़ाफ़ा
होता जा रहा है। असूर से अह्द बांधने के साथ साथ
वह मिस्र को भी ज़ैतून का तेल भेज देता है।

2 रब अदालत में यहूदाह से भी लड़ेगा। वह याक़ूब
[v]को उस के चाल-चलन की सज़ा, उस के आमाल
का मुनासिब अज्र देगा। 3 क्यूँकि माँ के पेट में ही
उस ने अपने भाई की एड़ी पकड़ कर उसे धोका
दिया। जब बालिग़ हुआ तो अल्लाह से लड़ा 4 बल्कि
फ़रिश्ते से लड़ते लड़ते उस पर ग़ालिब आया। फिर
उस ने रोते रोते उस से इल्तिजा की कि मुझ पर रहम
कर। बाद में याक़ूब ने अल्लाह को बैत-एल में पाया,
और वहाँ ख़ुदा उस से हमकलाम हुआ। 5 रब जो
लश्करों का ख़ुदा है और जिस का नाम रब ही है,

---

[v]याक़ूब से मुराद इस्राईल है।

उस ने फ़रमाया, 6 “अपने ख़ुदा के पास वापस आ
कर रहम और इन्साफ़ क़ाइम रख! कभी अपने ख़ुदा
पर उम्मीद रखने से बाज़ न आ।”
7 इस्राईल ताजिर है जिस के हाथ में ग़लत तराज़ू
है और जिसे लोगों से नाजाइज़ फ़ाइदा उठाने का
बड़ा शौक़ है। 8 वह कहता है, “मैं अमीर हो गया
हूँ, मैं ने कस्रत की दौलत पाई है। कोई साबित नहीं
कर सकेगा कि मुझ से यह तमाम मिलकियत हासिल
करने में कोई क़ुसूर या गुनाह सरज़द हुआ है।”
9 “लेकिन मैं, रब जो मिस्र से तुझे निकालते वक़्त
आज तक तेरा ख़ुदा हूँ मैं यह नज़रअन्दाज़ नहीं
करूँगा। मैं तुझे दुबारा ख़ैमों में बसने दूँगा। यूँ होगा
जिस तरह उन पहले दिनों में हुआ जब इस्राईली मेरी
परस्तिश करने के लिए रेगिस्तान में जमा होते थे।
10 मैं बार बार नबियों की मारिफ़त तुम से हमकलाम
हुआ, मैं ने उन्हें मुतअद्दिद रोयाएँ दिखाईं और उन
के ज़रीए तुम्हें तम्सीलें सुनाईं।”

बुतपरस्ती का अज्र ज़वाल है

11 क्या जिलिआद बेदीन है? उस के लोग नाकारा
ही हैं! जिल्जाल में लोगों ने साँड क़ुर्बान किए हैं, इस
लिए उन की क़ुर्बानगाहें मल्बे के ढेर बन जाएँगी।
वह बीज बोने के लिए तय्यारशुदा खेत के किनारे पर
लगे पत्थर के ढेर जैसी बनेंगी।
12 याक़ूब को भाग कर मुल्क-ए-अराम में पनाह
लेनी पड़ी। वहाँ वह बीवी मिलने के लिए मुलाज़िम
बन गया, औरत के बाइस उस ने भेड़-बकरियों की
गल्लाबानी की। 13 लेकिन बाद में रब नबी की मारिफ़त
इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया और नबी के ज़रीए
उस की गल्लाबानी की। 14 तो भी इस्राईल ने उसे बड़ा
तैश दिलाया। अब उन्हें उन की क़त्ल-ओ-ग़ारत का
अज्र भुगतना पड़ेगा। उन्हों ने अपने आक़ा की तौहीन
की है, और अब वह उन्हें मुनासिब सज़ा देगा।

अल्लाह की तरफ़ से इस्राईल की अदालत

13 1 पहले जब इस्राईल ने बात की तो लोग
काँप उठे, क्यूँकि मुल्क-ए-इस्राईल में वह
सरफ़राज़ था। लेकिन फिर वह बाल की बुतपरस्ती
में मुलव्वस हो कर हलाक हुआ। 2 अब वह अपने
गुनाहों में बहुत इज़ाफ़ा कर रहे हैं। वह अपनी चाँदी
ले कर महारत से बुत ढाल लेते हैं। फिर दस्तकारों
के हाथ से बने इन बुतों के बारे में कहा जाता है, “जो
बछड़े के बुतों को चूमना चाहे वह किसी इन्सान को
क़ुर्बान करे!” 3 इस लिए वह सुब्ह-सवेरे की धुन्द
जैसे आरिज़ी और धूप में जल्द ही ख़त्म होने वाली
ओस की मानिन्द होंगे। वह गाहते वक़्त गन्दुम से
अलग होने वाले भूसे की मानिन्द हवा में उड़ जाएंगे,
घर में से निकलने वाले धुएँ की तरह ज़ाए हो जाएंगे।
4 “लेकिन मैं, रब तुझे मिस्र से निकालते वक़्त से
ले कर आज तक तेरा ख़ुदा हूँ। तुझे मेरे सिवा किसी
और को ख़ुदा नहीं जानना है। मेरे सिवा और कोई
नजातदहिन्दा नहीं है। 5 रेगिस्तान में मैं ने तेरी देख-
भाल की, वहाँ जहाँ तपती गर्मी थी। 6 वहाँ उन्हें
अच्छी ख़ुराक मिली। लेकिन जब वह जी भर कर
खा सके और सेर हुए तो मग़रूर हो कर मुझे भूल
गए। 7 यह देख कर मैं उन के लिए शेरबबर बन गया
हूँ। अब मैं चीते की तरह रास्ते के किनारे उन की
ताक में बैठूँगा। 8 उस रीछनी की तरह जिस के बच्चों
को छीन लिया गया हो मैं उन पर झपट्टा मार कर उन
की अंतड़ियों को फाड़ निकालूँगा। मैं उन्हें शेरबबर
की तरह हड़प कर लूँगा, और जंगली जानवर उन्हें
टुकड़े टुकड़े कर देंगे।
9 ऐ इस्राईल, तू इस लिए तबाह हो गया है कि तू मेरे
ख़िलाफ़ है, उस के ख़िलाफ़ जो तेरी मदद कर सकता
है। 10 अब तेरा बादशाह कहाँ है कि वह तेरे तमाम
शहरों में आ कर तुझे छुटकारा दे? अब तेरे राहनुमा
किधर हैं जिन से तू ने कहा था, ‘मुझे बादशाह और
राहनुमा दे दे।’ 11 मैं ने ग़ुस्से में तुझे बादशाह दे दिया
और ग़ुस्से में उसे तुझ से छीन भी लिया।

12 इस्राईल का क़ुसूर लपेट कर गोदाम में रखा गया
है, उस के गुनाह हिसाब-किताब के लिए महफ़ूज़
रखे गए हैं। 13 दर्द-ए-ज़ह शुरू हो गया है, लेकिन वह
नासमझ बच्चा है। वह माँ के पेट से निकलना नहीं
चाहता।

14 मैं फ़िद्या दे कर उन्हें पाताल से क्यूँ रिहा करूँ?
मैं उन्हें मौत की गिरिफ़्त से क्यूँ छुड़ाऊँ? ऐ मौत, तेरे
काँटे कहाँ रहे? ऐ पाताल, तेरा डंक कहाँ रहा? उसे
काम में ला, क्यूँकि मैं तरस नहीं खाऊँगा। 15 ख़्वाह
वह अपने भाइयों के दरमियान फलता फूलता क्यूँ
न हो तो भी रब की तरफ़ से मशरिक़ी लू उस पर
चलेगी। और जब रेगिस्तान से आएगी तो इस्राईल
के कुएँ और चश्मे ख़ुश्क हो जाएंगे। हर ख़ज़ाना, हर
क़ीमती चीज़ लूट का माल बन जाएगी। 16 सामरिया
के बाशिन्दों को उन के क़ुसूर की सज़ा भुगतनी
पड़ेगी, क्यूँकि वह अपने ख़ुदा से सरकश हो गए
हैं। दुश्मन उन्हें तलवार से मार कर उन के बच्चों को
ज़मीन पर पटख़ देगा और उन की हामिला औरतों के
पेट चीर डालेगा।"

रब के पास वापस आओ!

14 1 ऐ इस्राईल, तौबा करके रब अपने ख़ुदा
के पास वापस आ! क्यूँकि तेरा क़ुसूर तेरे
ज़वाल का सबब बन गया है। 2 अपने गुनाहों का
इक़्रार करते हुए रब के पास वापस आओ। उस से
कहो, "हमारे तमाम गुनाहों को मुआफ़ करके हमें
मेहरबानी से क़बूल फ़रमा ताकि हम अपने होंटों से
तेरी तारीफ़ करके तुझे मुनासिब क़ुर्बानी अदा कर
सकें। 3 असूर हमें न बचाए। आइन्दा न हम घोड़ों पर
सवार हो जाएंगे, न कहेंगे कि हमारे हाथों की चीज़ें
हमारा ख़ुदा हैं। क्यूँकि तू ही यतीम पर रहम करता
है।"

4 तब रब फ़रमाएगा, "मैं उन की बेवफ़ाई के
असरात ख़त्म करके उन्हें शिफ़ा दूँगा, हाँ मैं उन्हें
खुले दिल से प्यार करूँगा, क्यूँकि मेरा उन पर
ग़ज़ब ठंडा हो गया है। 5 इस्राईल के लिए मैं शबनम
की मानिन्द हूँगा। तब वह सोसन की मानिन्द फूल
निकालेगा, लुबनान के देवदार के दरख़्त की तरह
जड़ पकड़ेगा, 6 उस की कोंपलें फूट निकलेंगी, और
शाख़ें बन कर फैलती जाएँगी। उस की शान ज़ैतून के
दरख़्त की मानिन्द होगी, उस की ख़ुश्बू लुबनान के
देवदार के दरख़्त की ख़ुश्बू की तरह फैल जाएगी।

7 लोग दुबारा उस के साय में जा बसेंगे। वहाँ
वह अनाज की तरह फलें फूलेंगे, अंगूर के से फूल
निकालेंगे। दूसरे उन की यूँ तारीफ़ करेंगे जिस तरह
लुबनान की उम्दा मै की। 8 तब इस्राईल कहेगा, 'मेरा
बुतों से क्या वास्ता?' मैं ही तेरी सुन कर तेरी देख-
भाल करूँगा। मैं जूनीपर का सायादार दरख़्त हूँ, और
तू मुझ से ही फल पाएगा।"

9 कौन दानिशमन्द है? वह समझ ले। कौन साहिब-
ए-फ़हम है? वह मतलब जान ले। क्यूँकि रब की
राहें दुरुस्त हैं। रास्तबाज़ उन पर चलते रहेंगे, लेकिन
सरकश उन पर चलते वक़्त ठोकर खा कर गिर
जाएंगे।

योएल

1 1 ज़ैल में रब का वह कलाम है जो योएल बिन
फ़तूएल पर नाज़िल हुआ।
2 ऐ बुज़ुर्गो, सुनो! ऐ मुल्क के तमाम बाशिन्दो,
तवज्जुह दो! जो कुछ इन दिनों में तुम्हें पेश आया
है क्या वह पहले कभी तुम्हें या तुम्हारे बापदादा को
पेश आया? 3 अपने बच्चों को इस के बारे में बताओ,
जो कुछ पेश आया है उस की याद नस्ल-दर-नस्ल
ताज़ा रहे।
4 जो कुछ टिड्डी के लार्वे ने छोड़ दिया उसे बालिग़
टिड्डी खा गई, जो बालिग़ टिड्डी छोड़ गई उसे टिड्डी
का बच्चा खा गया, और जो टिड्डी का बच्चा छोड़ गया
उसे जवान टिड्डी खा गई। 5 ऐ नशे में धुत लोगो, जाग
उठो और रो पड़ो! ऐ मै पीने वालो, वावैला करो!
क्यूँकि नई मै तुम्हारे मुँह से छीन ली गई है। 6 टिड्डियों
की ज़बरदस्त और अनगिनत क़ौम मेरे मुल्क पर टूट
पड़ी है। उन के शेर के से दाँत और शेरनी का सा
जबड़ा है। 7 नतीजे में मेरे अंगूर की बेलें तबाह, मेरे
अन्जीर के दरख़्त ज़ाए हो गए हैं। टिड्डियों ने छाल को
भी उतार लिया, अब शाख़ें सफ़ेद सफ़ेद नज़र आती
हैं।
8 आह-ओ-ज़ारी करो, टाट से मुलब्बस उस कुंवारी
की तरह गिर्या करो जिस का मंगेतर इन्तिक़ाल कर
गया हो। 9 रब के घर में ग़ल्ला और मै की नज़रें बन्द
हो गई हैं। इमाम जो रब के ख़ादिम हैं मातम कर रहे
हैं। 10 खेत तबाह हुए, ज़मीन झुलस गई है। अनाज
ख़त्म, अंगूर ख़त्म, ज़ैतून ख़त्म।
11 ऐ काश्तकारो, शर्मसार हो जाओ! ऐ अंगूर
के बाग़बानो, आह-ओ-बुका करो! क्यूँकि खेत की
फ़सल बर्बाद हो गई है, गन्दुम और जौ की फ़सल
ख़त्म ही है। 12 अंगूर की बेल सूख गई, अन्जीर का
दरख़्त मुरझा गया है। अनार, खजूर, सेब बल्कि फल
लाने वाले तमाम दरख़्त पझमुर्दा हो गए हैं। इन्सान
की तमाम ख़ुशी ख़ाक में मिलाई गई है।
13 ऐ इमामो, टाट का लिबास ओढ़ कर मातम
करो! ऐ क़ुर्बानगाह के ख़ादिमो, वावैला करो! ऐ
मेरे ख़ुदा के ख़ादिमो, आओ, रात को भी टाट ओढ़
कर गुज़ारो! क्यूँकि तुम्हारे ख़ुदा का घर ग़ल्ला और
मै की नज़रों से महरूम हो गया है। 14 मुक़द्दस रोज़े
का एलान करो। लोगों को ख़ास इजतिमा के लिए
बुलाओ। बुज़ुर्गों और मुल्क के तमाम बाशिन्दों को
रब अपने ख़ुदा के घर में जमा करके बुलन्द आवाज़
से रब से इल्तिजा करो।
15 उस दिन पर अफ़सोस! क्यूँकि रब का वह दिन
क़रीब ही है जब क़ादिर-ए-मुतलक़ हम पर तबाही
नाज़िल करेगा। 16 क्या ऐसा नहीं हुआ कि हमारे
देखते देखते हम से ख़ुराक छीन ली गई, कि अल्लाह
के घर में ख़ुशी-ओ-शादमानी बन्द हो गई है? 17 ढेलों
में छुपे बीज झुलस गए हैं, इस लिए ख़ाली गोदाम
ख़स्ताहाल और अनाज को महफ़ूज़ रखने के मकान
टूट फूट गए हैं। उन की ज़रूरत नहीं रही, क्यूँकि ग़ल्ला
सूख गया है। 18 हाय, मवेशी कैसी दर्दनाक आवाज़
निकाल रहे हैं! गाय-बैल परेशानी से इधर उधर फिर
रहे हैं, क्यूँकि कहीं भी चरागाह नहीं मिलती। भेड़-
बकरियों को भी तक्लीफ़ है।
19 ऐ रब, मैं तुझे पुकारता हूँ, क्यूँकि खुले मैदान
की चरागाहें नज़र-ए-आतिश हो गई हैं, तमाम दरख़्त
भस्म हो गए हैं। 20 जंगली जानवर भी हाँपते हाँपते
तेरे इन्तिज़ार में हैं, क्यूँकि नदियाँ सूख गई हैं, और
खुले मैदान की चरागाहें नज़र-ए-आतिश हो गई हैं।

रब का अदालती दिन

2 1 कोह-ए-सिय्यून पर नरसिंगा फूँको, मेरे
मुक़द्दस पहाड़ पर जंग का नारा लगाओ। मुल्क

के तमाम बाशिन्दे लरज़ उठें, क्यूँकि रब का दिन
आने वाला है बल्कि क़रीब ही है। 2 ज़ुल्मत और
तारीकी का दिन, घने बादलों और घुप अंधेरे का दिन
होगा। जिस तरह पौ फटते ही रौशनी पहाड़ों पर फैल
जाती है उसी तरह एक बड़ी और ताक़तवर क़ौम
आ रही है, ऐसी क़ौम जैसी न माज़ी में कभी थी,
न मुस्तक़बिल में कभी होगी। 3 उस के आगे आगे
आतिश सब कुछ भस्म करती है, उस के पीछे पीछे
झुलसाने वाला शोला चलता है। जहाँ भी वह पहुँचे
वहाँ मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान हो जाता है, ख़्वाह वह
बाग़-ए-अदन क्यूँ न होता। उस से कुछ नहीं बचता।
4 देखने में वह घोड़े जैसे लगते हैं, फ़ौजी घोड़ों की
तरह सरपट दौड़ते हैं। 5 रथों का सा शोर मचाते हुए
वह उछल उछल कर पहाड़ की चोटियों पर से गुज़रते
हैं। भूसे को भस्म करने वाली आग की चटख़्ती
आवाज़ सुनाई देती है जब वह जंग के लिए तय्यार
बड़ी बड़ी फ़ौज की तरह आगे बढ़ते हैं। 6 उन्हें देख
कर क़ौमें डर के मारे पेच-ओ-ताब खाने लगती हैं,
हर चिहरा माँद पड़ जाता है।

7 वह सूरमाओं की तरह हम्ला करते, फ़ौजियों की
तरह दीवारों पर छलाँग लगाते हैं। सब सफ़ बांध कर
आगे बढ़ते हैं, एक भी मुक़र्ररा रास्ते से नहीं हटता।
8 वह एक दूसरे को धक्का नहीं देते बल्कि हर एक
सीधा अपनी राह पर आगे बढ़ता है। यूँ सफ़बस्ता
हो कर वह दुश्मन की दिफ़ाई सफ़ों में से गुज़र जाते
हैं 9 और शहर पर झपट्टा मार कर फ़सील पर छलाँग
लगाते हैं, घरों की दीवारों पर चढ़ कर चोर की तरह
खिड़कियों में से घुस आते हैं।

10 उन के आगे आगे ज़मीन काँप उठती, आसमान
थरथराता, सूरज और चाँद तारीक हो जाते और
सितारों की चमक-दमक जाती रहती है। 11 रब ख़ुद
अपनी फ़ौज के आगे आगे गरजता रहता है। उस का
लश्कर निहायत बड़ा है, और जो फ़ौजी उस के हुक्म
पर चलते हैं वह ताक़तवर हैं। क्यूँकि रब का दिन
अज़ीम और निहायत हौलनाक है, कौन उसे बर्दाश्त
कर सकता है?

तौबा करके वापस आओ

12 रब फ़रमाता है, "अब भी तुम तौबा कर सकते
हो। पूरे दिल से मेरे पास वापस आओ! रोज़ा
रखो, आह-ओ-ज़ारी करो, मातम करो! 13 रंजिश का
इज़हार करने के लिए अपने कपड़ों को मत फाड़ो
बल्कि अपने दिल को।"

रब अपने ख़ुदा के पास वापस आओ, क्यूँकि वह
मेहरबान और रहीम है। वह तहम्मुल और शफ़क़त
से भरपूर है और जल्द ही सज़ा देने से पछताता है।
14 कौन जाने, शायद वह इस बार भी पछता कर
अपने पीछे बरकत छोड़ जाए और तुम नए सिरे से
रब अपने ख़ुदा को ग़ल्ला और मै की नज़रें पेश कर
सको।

15 कोह-ए-सिय्यून पर नरसिंगा फूँको, मुक़द्दस रोज़े
का एलान करो, लोगों को ख़ास इजतिमा के लिए
बुलाओ! 16 लोगों को जमा करो, फिर जमाअत को
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करो। न सिर्फ़ बुज़ुर्गों को बल्कि
बच्चों को भी शीरख़्वारों समेत इकट्ठा करो। दूल्हा और
दुल्हन भी अपने अपने उरूसी कमरों से निकल कर
आएँ। 17 लाज़िम है कि इमाम जो अल्लाह के ख़ादिम
हैं रब के घर के बरामदे और क़ुर्बानगाह के दरमियान
खड़े हो कर आह-ओ-ज़ारी करें। वह इक़्रार करें, "ऐ
रब, अपनी क़ौम पर तरस की निगाह डाल! अपनी
मौरूसी मिलकियत को लान-तान का निशाना बनने
न दे। ऐसा न हो कि दीगर अक़्वाम उस का मज़ाक़
उड़ा कर कहें, 'उन का ख़ुदा कहाँ है'?"

रब अपनी क़ौम पर रहम करता है

18 तब रब अपने मुल्क के लिए ग़ैरत खा कर अपनी
क़ौम पर तरस खाएगा। 19 वह अपनी क़ौम से वादा
करेगा, "मैं तुम्हें इतना अनाज, अंगूर और ज़ैतून भेज
देता हूँ कि तुम सेर हो जाओगे। आइन्दा मैं तुम्हें
दीगर अक़्वाम के मज़ाक़ का निशाना नहीं बनाऊँगा।
20 मैं शिमाल से आए हुए दुश्मन को तुम से दूर करके
वीरान-ओ-सुन्सान मुल्क में भगा दूँगा। वहाँ उस के
अगले दस्ते मशरिक़ी समुन्दर में और उस के पिछले

दस्ते मग़रिबी समुन्दर में डूब जाएंगे। तब उन की गली सड़ी नाशों की बदबू चारों तरफ़ फैल जाएगी।”
क्यूँकि उस [w]ने अज़ीम काम किए हैं।

21 ऐ मुल्क, मत डरना बल्कि शादियाना बजा कर
ख़ुशी मना! क्यूँकि रब ने अज़ीम काम किए हैं।
22 ऐ जंगली जानवरो, मत डरना, क्यूँकि खुले मैदान
की हरियाली दुबारा उगने लगी है। दरख़्त नए सिरे से
फल ला रहे हैं, अन्जीर और अंगूर की बड़ी फ़सल
पक रही है।
23 ऐ सिय्यून के बाशिन्दो, तुम भी शादियाना बजा
कर रब अपने ख़ुदा की ख़ुशी मनाओ। क्यूँकि वह
अपनी रास्ती के मुताबिक़ तुम पर मेंह बरसाता, पहले
की तरह ख़िज़ाँ और बहार की बारिशें बख़्श देता है।
24 अनाज की कस्रत से गाहने की जगहें भर जाएँगी,
अंगूर और ज़ैतून की कस्रत से हौज़ छलक उठेंगे।
25 रब फ़रमाता है, “मैं तुम्हें सब कुछ वापस कर
दूँगा जो टिड्डियों की बड़ी फ़ौज ने खा लिया है। तुम्हें
सब कुछ वापस मिल जाएगा जो बालिग़ टिड्डी, टिड्डी
के बच्चे, जवान टिड्डी और टिड्डियों के लार्वों ने खा
लिया जब मैं ने उन्हें तुम्हारे ख़िलाफ़ भेजा था। 26 तुम
दुबारा जी भर कर खा सकोगे। तब तुम रब अपने
ख़ुदा के नाम की सताइश करोगे जिस ने तुम्हारी
ख़ातिर इतने बड़े मोजिज़े किए हैं। आइन्दा मेरी क़ौम
कभी शर्मिन्दा न होगी। 27 तब तुम जान लोगे कि मैं
इस्राईल के दरमियान मौजूद हूँ, कि मैं, रब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ और मेरे सिवा और कोई नहीं है। आइन्दा
मेरी क़ौम कभी भी शर्मसार नहीं होगी।

अल्लाह अपने रूह का वादा करता है

28 इस के बाद मैं अपने रूह को तमाम इन्सानों
पर उंडेल दूँगा। तुम्हारे बेटे-बेटियाँ नबुव्वत करेंगे,
तुम्हारे बुज़ुर्ग ख़्वाब और तुम्हारे नौजवान रोयाएँ
देखेंगे। 29 उन दिनों में मैं अपने रूह को ख़ादिमों
और ख़ादिमाओं पर भी उंडेल दूँगा। 30 मैं आसमान
पर मोजिज़े दिखाऊँगा और ज़मीन पर इलाही निशान
ज़ाहिर करूँगा, ख़ून, आग और धुएँ के बादल।
31 सूरज तारीक हो जाएगा, चाँद का रंग ख़ून सा हो
जाएगा, और फिर रब का अज़ीम और जलाली दिन
आएगा। 32 उस वक़्त जो भी रब का नाम लेगा नजात
पाएगा। क्यूँकि कोह-ए-सिय्यून पर और यरूशलम में
नजात मिलेगी, बिलकुल उसी तरह जिस तरह रब ने
फ़रमाया है। जिन बचे हुओं को रब ने बुलाया है उन
ही में नजात पाई जाएगी।

दुश्मन की सज़ा

3 1 उन दिनों में, हाँ उस वक़्त जब मैं यहूदाह
और यरूशलम को बहाल करूँगा 2 मैं तमाम
दीगर अक़्वाम को जमा करके वादी-ए-यहूसफ़त
[x]में ले जाऊँगा। वहाँ मैं अपनी क़ौम और मौरूसी
मिलकियत की ख़ातिर उन से मुक़द्दमा लड़ूँगा।
क्यूँकि उन्हों ने मेरी क़ौम को दीगर अक़्वाम में
मुन्तशिर करके मेरे मुल्क को आपस में तक़्सीम कर
लिया, 3 क़ुरआ डाल कर मेरी क़ौम को आपस में बाँट
लिया है। उन्हों ने इस्राईली लड़कों को कस्बियों के
बदले में दे दिया और इस्राईली लड़कियों को फ़रोख़्त
किया ताकि मै ख़रीद कर पी सकें।
4 ऐ सूर, सैदा और तमाम फ़िलिस्ती इलाक़ो, मेरा
तुम से क्या वास्ता? क्या तुम मुझ से इन्तिक़ाम लेना
या मुझे सज़ा देना चाहते हो? जल्द ही मैं तेज़ी से
तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो तुम ने दूसरों के
साथ किया है। 5 क्यूँकि तुम ने मेरी सोना-चाँदी और
मेरे बेशक़ीमत ख़ज़ाने लूट कर अपने मन्दिरों में रख
लिए हैं। 6 यहूदाह और यरूशलम के बाशिन्दों को
तुम ने यूनानियों के हाथ बेच डाला ताकि वह अपने
वतन से दूर रहें।
7 लेकिन मैं उन्हें जगा कर उन मक़ामों से वापस
लाऊँगा जहाँ तुम ने उन्हें फ़रोख़्त कर दिया था। साथ
साथ मैं तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो तुम ने उन के

[w]ग़ालिबन ‘उस’ से मुराद ख़ुदा है, लेकिन दुश्मन भी हो सकता है।

[x]यहूसफ़त का मतलब : ‘रब अदालत करता है।’

साथ किया था। 8 रब फ़रमाता है कि मैं तुम्हारे बेटे-
बेटियों को यहूदाह के बाशिन्दों के हाथ बेच डालूँगा,
और वह उन्हें दूरदराज़ क़ौम सबा के हवाले करके
फ़रोख़्त करेंगे।

9 बुलन्द आवाज़ से दीगर अक़्वाम में एलान करो
कि जंग की तय्यारियाँ करो। अपने बेहतरीन फ़ौजियों
को खड़ा करो। लड़ने के क़ाबिल तमाम मर्द आ कर
हम्ला करें। 10 अपने हल की फालियों को कूट कूट
कर तलवारें बना लो, काँट-छाँट के औज़ारों को नेज़ों
में तब्दील करो। कमज़ोर आदमी भी कहे, 'मैं सूरमा
हूँ!' 11 ऐ तमाम अक़्वाम, चारों तरफ़ से आ कर वादी
में जमा हो जाओ! जल्दी करो।"

ऐ रब, अपने सूरमाओं को वहाँ उतरने दे!

12 "दीगर अक़्वाम हरकत में आ कर वादी-ए-
यहूसफ़त में आ जाएँ। क्यूँकि वहाँ मैं तख़्त पर बैठ
कर इर्दगिर्द की तमाम अक़्वाम का फ़ैसला करूँगा।
13 आओ, दरान्ती चलाओ, क्यूँकि फ़सल पक गई
है। आओ, अंगूर को कुचल दो, क्यूँकि उस का रस
निकालने का हौज़ भरा हुआ है, और तमाम बर्तन रस
से छलकने लगे हैं। क्यूँकि उन की बुराई बहुत है।"

14 फ़ैसले की वादी में हंगामा ही हंगामा है, क्यूँकि
फ़ैसले की वादी में रब का दिन क़रीब आ गया है।
15 सूरज और चाँद तारीक हो जाएंगे, सितारों की
चमक-दमक जाती रहेगी। 16 रब कोह-ए-सिय्यून पर
से दहाड़ेगा, यरूशलम से उस की गरजती आवाज़ यूँ
सुनाई देगी कि आसमान-ओ-ज़मीन लरज़ उठेंगे।

इस्राईल का जलाली मुस्तक़बिल

लेकिन रब अपनी क़ौम की पनाहगाह और
इस्राईलियों का क़िला होगा। 17 "तब तुम जान लोगे
कि मैं, रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ और अपने मुक़द्दस पहाड़
सिय्यून पर सुकूनत करता हूँ। यरूशलम मुक़द्दस
होगा, और आइन्दा परदेसी उस में से नहीं गुज़रेंगे।

18 उस दिन हर चीज़ कस्रत से दस्तयाब होगी।
पहाड़ों से अंगूर का रस टपकेगा, पहाड़ियों से दूध
की नदियाँ बहेंगी, और यहूदाह के तमाम नदी-नाले
पानी से भरे रहेंगे। नीज़, रब के घर में से एक चश्मा
फूट निकलेगा और बहता हुआ वादी-ए-शित्तीम की
आबपाशी करेगा। 19 लेकिन मिस्र तबाह और अदोम
वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएगा, क्यूँकि उन्हों ने यहूदाह
के बाशिन्दों पर ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद किया, उन के
अपने ही मुल्क में बेक़ुसूर लोगों को क़त्ल किया
है। 20 लेकिन यहूदाह हमेशा तक आबाद रहेगा,
यरूशलम नस्ल-दर-नस्ल क़ाइम रहेगा। 21 जो क़त्ल-
ओ-ग़ारत उन के दरमियान हुई है उस की सज़ा मैं
ज़रूर दूँगा।"

रब कोह-ए-सिय्यून पर सुकूनत करता है।!

आमूस

इस्राईल के पड़ोसियों की अदालत

1 1 ज़ैल में आमूस के पैग़ामात क़लमबन्द हैं।
आमूस तक़ूअ शहर का गल्लाबान था। ज़ल्ज़ले
से दो साल पहले उस ने इस्राईल के बारे में रोया में
यह कुछ देखा। उस वक़्त उज़्ज़ियाह यहूदाह का और
यरुबिआम बिन यूआस इस्राईल का बादशाह था।
2 आमूस बोला, "रब कोह-ए-सिय्यून पर से
दहाड़ता है, उस की गरजती आवाज़ यरूशलम से
सुनाई देती है। तब गल्लाबानों की चरागाहें सूख जाती
हैं और कर्मिल की चोटी पर जंगल मुरझा जाता है।"
3 रब फ़रमाता है, "दमिश्क़ के बाशिन्दों ने बार
बार गुनाह किया है, इस लिए मैं उन्हें सज़ा दिए
बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्यूँकि उन्हों ने जिलिआद को
गाहने के आहनी औज़ार से ख़ूब कूट कर गाह लिया
है। 4 चुनाँचे मैं हज़ाएल के घराने पर आग नाज़िल
करूँगा, और बिन-हदद के महल नज़र-ए-आतिश हो
जाएंगे। 5 मैं दमिश्क़ के कुंडे को तोड़ कर बिक़अत-
आवन और बैत-अदन के हुक्मरानों को मौत के घाट
उतारूँगा। अराम की क़ौम जिलावतन हो कर क़ीर
में जा बसेगी।" यह रब का फ़रमान है।
6 रब फ़रमाता है, "ग़ज़्ज़ा के बाशिन्दों ने बार
बार गुनाह किया है, इस लिए मैं उन्हें सज़ा दिए
बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्यूँकि उन्हों ने पूरी आबादियों
को जिलावतन करके अदोम के हवाले कर दिया
है। 7 चुनाँचे मैं ग़ज़्ज़ा की फ़सील पर आग नाज़िल
करूँगा, और उस के महल नज़र-ए-आतिश हो
जाएंगे। 8 अश्दूद और अस्क़लून के हुक्मरानों को
मैं मार डालूँगा, अक़्रून पर भी हम्ला करूँगा। तब
बचे-खुचे फ़िलिस्ती भी हलाक हो जाएंगे।" यह रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।
9 रब फ़रमाता है, "सूर के बाशिन्दों ने बार बार
गुनाह किया है, इस लिए मैं उन्हें सज़ा दिए बग़ैर नहीं
छोड़ूँगा। क्यूँकि उन्हों ने बरादराना अह्द का लिहाज़
न किया बल्कि पूरी आबादियों को जिलावतन करके
अदोम के हवाले कर दिया। 10 चुनाँचे मैं सूर की
फ़सील पर आग नाज़िल करूँगा, और उस के महल
नज़र-ए-आतिश हो जाएंगे।"
11 रब फ़रमाता है, "अदोम के बाशिन्दों ने बार बार
गुनाह किया है, इस लिए मैं उन्हें सज़ा दिए बग़ैर नहीं
छोड़ूँगा। क्यूँकि उन्हों ने अपने इस्राईली भाइयों को
तलवार से मार मार कर उन का ताक़्क़ुब किया और
सख़्ती से उन पर रहम करने से इन्कार किया। उन
का क़हर भड़कता रहा, उन का तैश कभी ठंडा न
हुआ। 12 चुनाँचे मैं तेमान पर आग नाज़िल करूँगा,
और बुस्रा के महल नज़र-ए-आतिश हो जाएंगे।"
13 रब फ़रमाता है, "अम्मोन के बाशिन्दों ने बार बार
गुनाह किया है, इस लिए मैं उन्हें सज़ा दिए बग़ैर नहीं
छोड़ूँगा। क्यूँकि अपनी सरहद्दों को बढ़ाने के लिए
उन्हों ने जिलिआद की हामिला औरतों के पेट चीर
डाले। 14 चुनाँचे मैं रब्बा की फ़सील को आग लगा
दूँगा, और उस के महल नज़र-ए-आतिश हो जाएंगे।
जंग के उस दिन हर तरफ़ फ़ौजियों के नारे बुलन्द
हो जाएंगे, तूफ़ान के उस दिन उन पर सख़्त आँधी
टूट पड़ेगी। 15 उन का बादशाह अपने अफ़्सरों समेत
क़ैदी बन कर जिलावतन हो जाएगा।" यह रब का
फ़रमान है।

2 1 रब फ़रमाता है, "मोआब के बाशिन्दों ने बार
बार गुनाह किया है, इस लिए मैं उन्हें सज़ा
दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्यूँकि उन्हों ने अदोम के
बादशाह की हड्डियों को जला कर राख कर दिया है।
2 चुनाँचे मैं मुल्क-ए-मोआब पर आग नाज़िल करूँगा,
और क़रियोत के महल नज़र-ए-आतिश हो जाएंगे।

जंग का शोर-शराबा मचेगा, फ़ौजियों के नारे बुलन्द
हो जाएंगे, नरसिंगा फूँका जाएगा। तब मोआब हलाक
हो जाएगा। 3 मैं उस के हुक्मरान को उस के तमाम
अफ़सरों समेत हलाक कर दूँगा।" यह रब का फ़रमान
है।

यहूदाह की अदालत

4 रब फ़रमाता है, "यहूदाह के बाशिन्दों ने बार बार
गुनाह किया है, इस लिए मैं उन्हें सज़ा दिए बग़ैर
नहीं छोड़ूँगा। क्यूँकि उन्हों ने रब की शरीअत को
रद्द करके उस के अह्काम पर अमल नहीं किया।
उन के झूटे देवता उन्हें ग़लत राह पर ले गए हैं, वह
देवता जिन की पैरवी उन के बापदादा भी करते रहे।
5 चुनाँचे मैं यहूदाह पर आग नाज़िल करूँगा, और
यरूशलम के महल नज़र-ए-आतिश हो जाएंगे।"

इस्राईल की अदालत

6 रब फ़रमाता है, "इस्राईल के बाशिन्दों ने बार बार
गुनाह किया है, इस लिए मैं उन्हें सज़ा दिए बग़ैर
नहीं छोड़ूँगा। क्यूँकि वह शरीफ़ लोगों को पैसे के
लिए बेचते और ज़रूरतमन्दों को फ़रोख़्त करते हैं
ताकि एक जोड़ी जूते मिल जाए। 7 वह ग़रीबों के सर
को ज़मीन पर कुचल देते, मुसीबतज़दों को इन्साफ़
मिलने से रोकते हैं। बाप और बेटा दोनों एक ही
कस्बी के पास जा कर मेरे नाम की बेहुरमती करते हैं।
8 जब कभी किसी क़ुर्बानगाह के पास पूजा करने जाते
हैं तो ऐसे कपड़ों पर आराम करते हैं जो क़र्ज़दारों ने
ज़मानत के तौर पर दिए थे। जब कभी अपने देवता
के मन्दिर में जाते तो ऐसे पैसों से मै ख़रीद कर पीते
हैं जो जुर्माना के तौर पर ज़रूरतमन्दों से मिल गए थे।
9 यह कैसी बात है? मैं ही ने अमोरियों को उन के
आगे आगे नेस्त कर दिया था, हालाँकि वह देवदार
के दरख़्तों जैसे लम्बे और बलूत के दरख़्तों जैसे
ताक़तवर थे। मैं ही ने अमोरियों को जड़ों और फल
समेत मिटा दिया था। 10 इस से पहले मैं ही तुम्हें मिस्र
से निकाल लाया, मैं ही ने चालीस साल तक रेगिस्तान
में तुम्हारी राहनुमाई करते करते तुम्हें अमोरियों के
मुल्क तक पहुँचाया ताकि उस पर क़ब्ज़ा करो। 11 मैं
ही ने तुम्हारे बेटों में से नबी बरपा किए, और मैं ही
ने तुम्हारे नौजवानों में से कुछ चुन लिए ताकि अपनी
ख़िदमत के लिए मख़्सूस करूँ।" रब फ़रमाता है, "ऐ
इस्राईलियो, क्या ऐसा नहीं था? 12 लेकिन तुम ने मेरे
लिए मख़्सूस आदमियों को मै पिलाई और नबियों
को हुक्म दिया कि नबुव्वत मत करो।
13 अब मैं होने दूँगा कि तुम अनाज से ख़ूब लदी
हुई बैलगाड़ी की तरह झूलने लगोगे। 14 न तेज़रौ
शख़्स भाग कर बचेगा, न ताक़तवर आदमी कुछ
कर पाएगा। न सूरमा अपनी जान बचाएगा, 15 न तीर
चलाने वाला क़ाइम रहेगा। कोई नहीं बचेगा, ख़्वाह
पैदल दौड़ने वाला हो या घोड़े पर सवार। 16 उस
दिन सब से बहादुर सूरमा भी हथियार डाल कर नंगी
हालत में भाग जाएगा।" यह रब का फ़रमान है।

3 1 ऐ इस्राईलियो, वह कलाम सुनो जो रब तुम्हारे
ख़िलाफ़ फ़रमाता है, उस पूरी क़ौम के ख़िलाफ़
जिसे मैं मिस्र से निकाल लाया था। 2 "दुनिया की
तमाम क़ौमों में से मैं ने सिर्फ़ तुम ही को जान लिया,
इस लिए मैं तुम ही को तुम्हारे तमाम गुनाहों की सज़ा
दूँगा।"

नबी की ज़िम्मादारी

3 क्या दो अफ़राद मिल कर सफ़र कर सकते हैं
अगर वह मुत्तफ़िक़ न हों? 4 क्या शेरबबर दहाड़ता
है अगर उसे शिकार न मिला हो? क्या जवान शेर
अपनी मान्द में गरजता है अगर उस ने कुछ पकड़ा
न हो? 5 क्या परिन्दा फंदे में फंस जाता है अगर फंदे
को लगाया न गया हो? या फंदा कुछ फंसा सकता
है अगर शिकार न हो? 6 जब शहर में नरसिंगा फूँका
जाता है ताकि लोगों को किसी ख़तरे से आगाह करे
तो क्या वह नहीं घबराते? जब आफ़त शहर पर आती
है तो क्या रब की तरफ़ से नहीं होती?

7 यक़ीनन जो भी मन्सूबा रब क़ादिर-ए-मुतलक़
बांधे उस पर अमल करने से पहले वह उसे अपने
ख़ादिमों यानी नबियों पर ज़ाहिर करता है।
8 शेरबबर दहाड़ उठा है तो कौन है जो डर न जाए?
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ बोल उठा है तो कौन है जो
नबुव्वत न करे?

सामरिया को रिहाई नहीं मिलेगी

9 अश्दूद और मिस्र के महलों को इत्तिला दो,
"सामरिया के पहाड़ों पर जमा हो कर उस पर नज़र
डालो जो कुछ शहर में हो रहा है। कितनी बड़ी
हलचल मच गई है, कितना ज़ुल्म हो रहा है।" 10 रब
फ़रमाता है, "यह लोग सहीह काम करना जानते ही
नहीं बल्कि ज़ालिम और तबाहकुन तरीक़ों से अपने
महलों में ख़ज़ाने जमा करते हैं।"
11 चुनाँचे रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है,
"दुश्मन मुल्क को घेर कर तेरी क़िलाबन्दियों को ढा
देगा और तेरे महलों को लूट लेगा।" 12 रब फ़रमाता
है, "अगर चरवाहा अपनी भेड़ को शेरबबर के मुँह से
निकालने की कोशिश करे तो शायद दो पिंडलियाँ या
कान का टुकड़ा बच जाए। सामरिया के इस्राईली भी
इसी तरह ही बच जाएंगे, ख़्वाह वह इस वक़्त अपने
शानदार सोफ़ों और ख़ूबसूरत गद्दियों पर आराम क्यूँ
न करें।"
13 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ जो आसमानी लश्करों का
ख़ुदा है फ़रमाता है, "सुनो, याक़ूब के घराने के
ख़िलाफ़ गवाही दो! 14 जिस दिन मैं इस्राईल को उस
के गुनाहों की सज़ा दूँगा उस दिन मैं बैत-एल की
क़ुर्बानगाहों को मिस्मार करूँगा। तब क़ुर्बानगाह के
कोनों पर लगे सींग टूट कर ज़मीन पर गिर जाएंगे।
15 मैं सर्दियों और गर्मियों के मौसम के लिए तामीर
किए गए घरों को ढा दूँगा। हाथीदाँत से आरास्ता
इमारतें ख़ाक में मिलाई जाएँगी, और जहाँ इस
वक़्त मुतअद्दिद मकान नज़र आते हैं वहाँ कुछ नहीं
रहेगा।" यह रब का फ़रमान है।

सामरिया की ज़ालिम औरतें

4 1 ऐ कोह-ए-सामरिया की मोटी-ताज़ी गायो,
[y]सुनो मेरी बात! तुम ग़रीबों पर ज़ुल्म करती
और ज़रूरतमन्दों को कुचल देती, तुम अपने शौहरों
को कहती हो, "जा कर मै ले आओ, हम और पीना
चाहती हैं।" 2 रब ने अपनी क़ुद्दूसियत की क़सम
खा कर फ़रमाया है, "वह दिन आने वाला है जब
दुश्मन तुम्हें काँटों के ज़रीए घसीट कर अपने साथ
ले जाएगा। जो बचेगा उसे मछली के काँटे से पकड़ा
जाएगा। 3 हर एक को फ़सील के रख़नों में से सीधा
निकलना पड़ेगा, हर एक को हर्मून पहाड़ की तरफ़
भगा दिया जाएगा।" यह रब का फ़रमान है।

इस्राईल को समझाया नहीं जा सकता

4 "चलो, बैत-एल जा कर गुनाह करो, जिल्जाल
जा कर अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा करो! सुब्ह के वक़्त
अपनी क़ुर्बानियों को चढ़ाओ, तीसरे दिन आम्दनी
का दसवाँ हिस्सा पेश करो। 5 ख़मीरी रोटी जला कर
अपनी शुक्रगुज़ारी का इज़हार करो, बुलन्द आवाज़
से उन क़ुर्बानियों का एलान करो जो तुम अपनी
ख़ुशी से अदा कर रहे हो। क्यूँकि ऐसी हरकतें तुम
इस्राईलियों को बहुत पसन्द हैं।" यह रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ का फ़रमान है।
6 रब फ़रमाता है, "मैं ने काल पड़ने दिया। हर शहर
और आबादी में रोटी ख़त्म हुई। तो भी तुम मेरे पास
वापस नहीं आए! 7 अभी फ़सल के पकने तक तीन
माह बाक़ी थे कि मैं ने तुम्हारे मुल्क में बारिशों को
रोक दिया। मैं ने होने दिया कि एक शहर में बारिश
हुई जबकि साथ वाला शहर उस से महरूम रहा,
एक खेत बारिश से सेराब हुआ जबकि दूसरा झुलस
गया। 8 जिस शहर में थोड़ा बहुत पानी बाक़ी था वहाँ

---

[y]लफ़्ज़ी तर्जुमा : 'बसन की गायो।' बसन एक पहाड़ी इलाक़ा था जिस के मवेशी मश्हूर थे।

दीगर कई शहरों के बाशिन्दे लड़खड़ाते हुए पहुँचे,
लेकिन उन के लिए काफ़ी नहीं था। तो भी तुम मेरे
पास वापस न आए!" यह रब का फ़रमान है।
9 रब फ़रमाता है, "मैं ने तुम्हारी फ़सलों को पतरोग
और फफूँदी से तबाह कर दिया। जो भी तुम्हारे
मुतअद्दिद अंगूर, अन्जीर, ज़ैतून और बाक़ी फल के
बाग़ों में उगता था उसे टिड्डियाँ खा गईं। तो भी तुम
मेरे पास वापस न आए!"
10 रब फ़रमाता है, "मैं ने तुम्हारे दरमियान ऐसी
मोहलिक बीमारी फैला दी जैसी क़दीम ज़माने में मिस्र
में फैल गई थी। तुम्हारे नौजवानों को मैं ने तलवार से
मार डाला, तुम्हारे घोड़े तुम से छीन लिए गए। तुम्हारी
लश्करगाहों में लाशों का ताफ़्फ़ुन इतना फैल गया
कि तुम बहुत तंग हुए। तो भी तुम मेरे पास वापस न
आए।"
11 रब फ़रमाता है, "मैं ने तुम्हारे दरमियान ऐसी
तबाही मचाई जैसी उस दिन हुई जब मैं ने सदूम और
अमूरा को तबाह किया।
तुम्हारी हालत बिलकुल उस लकड़ी की मानिन्द
थी जो आग से निकाल कर बचाई तो गई लेकिन
फिर भी काफ़ी झुलस गई थी। तो भी तुम वापस
न आए। 12 चुनाँचे ऐ इस्राईल, अब मैं आइन्दा भी
तेरे साथ ऐसा ही करूँगा। और चूँकि मैं तेरे साथ
ऐसा करूँगा, इस लिए अपने ख़ुदा से मिलने के लिए
तय्यार हो जा, ऐ इस्राईल!"
13 क्यूँकि अल्लाह ही पहाड़ों को तश्कील देता, हवा
को ख़ल्क़ करता और अपने ख़यालात को इन्सान पर
ज़ाहिर करता है। वही तड़का और अंधेरा पैदा करता
और वही ज़मीन की बुलन्दियों पर चलता है। उस का
नाम 'रब, लश्करों का ख़ुदा' है।

मेरे पास लौट आओ!

5 1 ऐ इस्राईली क़ौम, मेरी बात सुनो, तुम्हारे बारे
में मेरे नोहा पर ध्यान दो!
2 "कुंवारी इस्राईल गिर गई है और आइन्दा कभी
नहीं उठेगी। उसे उस की अपनी ज़मीन पर पटख़ दिया
गया है, और कोई उसे दुबारा खड़ा नहीं करेगा।"
3 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "इस्राईल के
जिस शहर से 1,000 मर्द लड़ने के लिए निकलेंगे
उस के सिर्फ़ 100 अफ़राद वापस आएँगे। और जिस
शहर से 100 निकलेंगे, उस के सिर्फ़ 10 मर्द वापस
आएँगे।" 4 क्यूँकि रब इस्राईली क़ौम से फ़रमाता है,
"मुझे तलाश करो तो तुम जीते रहोगे। 5 न बैत-एल के
तालिब हो, न जिल्जाल के पास जाओ, और न बैर-
सबा के लिए रवाना हो जाओ! क्यूँकि जिल्जाल के
बाशिन्दे यक़ीनन जिलावतन हो जाएंगे, और बैत-एल
नेस्त-ओ-नाबूद हो जाएगा।"
6 रब को तलाश करो तो तुम जीते रहोगे। वर्ना वह
आग की तरह यूसुफ़ के घराने में से गुज़र कर बैत-एल
को भस्म करेगा, और उसे कोई नहीं बुझा सकेगा।

हर तरफ़ नाइन्साफ़ी

7 उन पर अफ़सोस जो इन्साफ़ को उलट कर ज़हर
में बदल देते, जो रास्ती को ज़मीन पर पटख़ देते हैं!
8 अल्लाह सात सहेलियों के झुमके और जौज़े का
ख़ालिक़ है। अंधेरे को वह सुब्ह की रौशनी में और
दिन को रात में बदल देता है। जो समुन्दर के पानी को
बुला कर रू-ए-ज़मीन पर उंडेल देता है उस का नाम
रब है! 9 अचानक ही वह ज़ोरावरों पर आफ़त लाता
है, और उस के कहने पर क़िलाबन्द शहर तबाह हो
जाता है।
10 तुम उस से नफ़रत करते हो जो अदालत में
इन्साफ़ करे, तुम्हें उस से घिन आती है जो सच बोले।
11 तुम ग़रीबों को कुचल कर उन के अनाज पर हद
से ज़्यादा टैक्स लगाते हो। इस लिए गो तुम ने तराशे
हुए पत्थरों से शानदार घर बनाए हैं तो भी उन में नहीं
रहोगे, गो तुम ने अंगूर के फलते फूलते बाग़ लगाए हैं
तो भी उन की मै से महज़ूज़ नहीं होगे। 12 मैं तो तुम्हारे
मुतअद्दिद जराइम और संगीन गुनाहों से ख़ूब वाक़िफ़
हूँ। तुम रास्तबाज़ों पर ज़ुल्म करते और रिश्वत ले कर

ग़रीबों को अदालत में इन्साफ़ से महरूम रखते हो।
13 इस लिए समझदार शख़्स इस वक़्त ख़ामोश रहता
है, वक़्त इतना ही बुरा है।
14 बुराई को तलाश न करो बल्कि अच्छाई को, तब
ही जीते रहोगे। तब ही तुम्हारा दावा दुरुस्त होगा कि
रब जो लश्करों का ख़ुदा है हमारे साथ है। 15 बुराई
से नफ़रत करो और जो कुछ अच्छा है उसे प्यार
करो। अदालतों में इन्साफ़ क़ाइम रखो, शायद रब
जो लश्करों का ख़ुदा है यूसुफ़ के बचे-खुचे हिस्से
पर रहम करे।
16 चुनाँचे रब जो लश्करों का ख़ुदा और हमारा
आक़ा है फ़रमाता है, "तमाम चौकों में आह-ओ-
बुका होगी, तमाम गलियों में लोग 'हाय, हाय' करेंगे।
खेतीबाड़ी करने वालों को भी बुलाया जाएगा ताकि
पेशावराना तौर पर सोग मनाने वालों के साथ गिर्या-
ओ-ज़ारी करें। 17 अंगूर के तमाम बाग़ों में वावैला
मचेगा, क्यूँकि मैं ख़ुद तुम्हारे दरमियान से गुज़रूँगा।"
यह रब का फ़रमान है।

रब का दिन हौलनाक है

18 उन पर अफ़्सोस जो कहते हैं, "काश रब का दिन
आ जाए!" तुम्हारे लिए रब के दिन का क्या फ़ाइदा
होगा? वह तो तुम्हारे लिए रौशनी का नहीं बल्कि
तारीकी का बाइस होगा। 19 तब तुम उस आदमी की
मानिन्द होगे जो शेरबबर से भाग कर रीछ से टकरा
जाता है। जब घर में पनाह ले कर हाथ से दीवार का
सहारा लेता है तो साँप उसे डस लेता है। 20 हाँ, रब
का दिन तुम्हारे लिए रौशनी का नहीं बल्कि तारीकी
का बाइस होगा। ऐसा अंधेरा होगा कि उम्मीद की
किरन तक नज़र नहीं आएगी।
21 रब फ़रमाता है, "मुझे तुम्हारे मज़्हबी तहवारों
से नफ़रत है, मैं उन्हें हक़ीर जानता हूँ। तुम्हारे
इजतिमाओं से मुझे घिन आती है। 22 जो भस्म होने
वाली और ग़ल्ला की क़ुर्बानियाँ तुम मुझे पेश करते
हो उन्हें मैं पसन्द नहीं करता, जो मोटे-ताज़े बैल तुम
मुझे सलामती की क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाते हो उन
पर मैं नज़र भी नहीं डालना चाहता। 23 दफ़ा करो
अपने गीतों का शोर! मैं तुम्हारे सितारों की मौसीक़ी
सुनना नहीं चाहता। 24 इन चीज़ों की बजाय इन्साफ़
का चश्मा फूट निकले और रास्ती की कभी बन्द न
होने वाली नहर बह निकले।
25 ऐ इस्राईल के घराने, जब तुम रेगिस्तान में घूमते
फिरते थे तो क्या तुम ने उन 40 सालों के दौरान कभी
मुझे ज़बह और ग़ल्ला की क़ुर्बानियाँ पेश कीं? 26 नहीं,
उस वक़्त भी तुम अपने बादशाह सक्कूत देवता और
अपने सितारे कीवान देवता को उठाए फिरते थे, गो
तुम ने अपने हाथों से यह बुत अपने लिए बना लिए
थे। 27 इस लिए रब जिस का नाम लश्करों का ख़ुदा
है फ़रमाता है कि मैं तुम्हें जिलावतन करके दमिश्क़
के पार बसा दूँगा।"

राहनुमाओं की ख़ुदएतिमादी और अय्याशी

6 1 कोह-ए-सिय्यून के बेपरवा बाशिन्दों पर
अफ़्सोस! कोह-ए-सामरिया के बाशिन्दों पर
अफ़्सोस जो अपने आप को महफ़ूज़ समझते हैं। हाँ,
सब से आला क़ौम के उन शुरफ़ा पर अफ़्सोस जिन के
पास इस्राईली क़ौम मदद के लिए आती है। 2 कल्ना
शहर के पास जा कर उस पर ग़ौर करो, वहाँ से
अज़ीम शहर हमात के पास पहुँचो, फिर फ़िलिस्ती
मुल्क के शहर जात के पास उतरो। क्या तुम इन
ममालिक से बेहतर हो? क्या तुम्हारा इलाक़ा इन की
निस्बत बड़ा है?
3 तुम अपने आप को आफ़त के दिन से दूर समझ
कर अपनी ज़ालिम हुकूमत दूसरों पर जताते हो। 4 तुम
हाथीदाँत से आरास्ता पलंगों पर सोते और अपने
शानदार सोफ़ों पर पाँओ फैलाते हो। खाने के लिए
तुम अपने रेवड़ों से अच्छे अच्छे भेड़ के बच्चे और
मोटे-ताज़े बछड़े चुन लेते हो। 5 तुम अपने सितारों को
बजा बजा कर दाऊद की तरह मुख़्तलिफ़ क़िस्म के
गीत तय्यार करते हो। 6 मै को तुम बड़े बड़े प्यालों
से पी लेते, बेहतरीन क़िस्म के तेल अपने जिस्म पर

मिलते हो। अफ़्सोस, तुम पर्वा ही नहीं करते कि
यूसुफ़ का घराना तबाह होने वाला है।
7 इस लिए तुम उन लोगों में से होगे जो पहले क़ैदी
बन कर जिलावतन हो जाएंगे। तब तुम्हारी रंगरलियाँ
बन्द हो जाएँगी, तुम्हारी आवारागर्द और काहिल
ज़िन्दगी ख़त्म हो जाएगी।
8 रब जो लश्करों का ख़ुदा है फ़रमाता है, "मुझे
याक़ूब का ग़ुरूर देख कर घिन आती है, उस के
महलों से मैं मुतनफ़्फ़िर हूँ। मैं शहर और जो कुछ
उस में है दुश्मन के हवाले कर दूँगा। मेरे नाम की
क़सम, यह मेरा, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान
है।" 9 उस वक़्त अगर एक घर में दस आदमी रह जाएँ
तो वह भी मर जाएंगे। 10 फिर जब कोई रिश्तेदार आए
ताकि लाशों को उठा कर दफ़नाने जाए और देखे कि
घर के किसी कोने में अभी कोई छुप कर बच गया
है तो वह उस से पूछेगा, "क्या आप के इलावा कोई
और भी बचा है?" तो वह जवाब देगा, "नहीं, एक
भी नहीं।" तब रिश्तेदार कहेगा, "चुप! रब के नाम
का ज़िक्र मत करना, ऐसा न हो कि वह तुझे भी मौत
के घाट उतारे।" [z]
11 क्यूँकि रब ने हुक्म दिया है कि शानदार घरों को
टुकड़े टुकड़े और छोटे घरों को रेज़ा रेज़ा किया जाए।
12 क्या घोड़े चटानों पर सरपट दौड़ते हैं? क्या
इन्सान बैल ले कर उन पर हल चलाता है? लेकिन
तुम इतनी ही ग़ैरफ़ित्री हरकतें करते हो। क्यूँकि
तुम इन्साफ़ को ज़हर में और रास्ती का मीठा फल
कड़वाहट में बदल देते हो। 13 तुम लो-दिबार की
फ़त्ह पर शादियाना बजा बजा कर फ़ख़र करते
हो, "हम ने अपनी ही ताक़त से क़र्नैम पर क़ब्ज़ा
कर लिया!" 14 चुनाँचे रब जो लश्करों का ख़ुदा है
फ़रमाता है, "ऐ इस्राईली क़ौम, मैं तेरे ख़िलाफ़ एक
क़ौम को तहरीक दूँगा जो तुझे शिमाल के शहर लबो-
हमात से ले कर जुनूब की वादी अराबा तक अज़ियत
पहुँचाएगी।"

टिड्डियों की रोया

7 1 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने मुझे रोया दिखाई। मैं
ने देखा कि अल्लाह टिड्डियों के ग़ोल पैदा कर
रहा है। उस वक़्त पहली घास की कटाई हो चुकी
थी, वह घास जो बादशाह के लिए मुक़र्रर थी। अब
घास दुबारा उगने लगी थी। 2 तब टिड्डियाँ मुल्क की
पूरी हरियाली पर टूट पड़ीं और सब कुछ खा गईं।
मैं चिल्ला उठा, "ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, मेहरबानी
करके मुआफ़ कर, वर्ना याक़ूब किस तरह क़ाइम
रहेगा? वह पहले से इतनी छोटी क़ौम है।" 3 तब रब
पछताया और फ़रमाया, "जो कुछ तू ने देखा वह पेश
नहीं आएगा।"

आग की रोया

4 फिर रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने मुझे एक और रोया
दिखाई। मैं ने देखा कि रब क़ादिर-ए-मुतलक़ आग
की बारिश बुला रहा है ताकि मुल्क पर बरसे। आग
ने समुन्दर की गहराइयों को ख़ुश्क कर दिया, फिर
मुल्क में फैलने लगी। 5 तब मैं चिल्ला उठा, "ऐ रब
क़ादिर-ए-मुतलक़, मेहरबानी करके इस से बाज़ आ,
वर्ना याक़ूब किस तरह क़ाइम रहेगा? वह पहले से
इतनी छोटी क़ौम है।" 6 तब रब दुबारा पछताया और
फ़रमाया, "यह भी पेश नहीं आएगा।"

साहूल की रोया

7 इस के बाद रब ने मुझे एक तीसरी रोया दिखाई।
मैं ने देखा कि क़ादिर-ए-मुतलक़ एक ऐसी दीवार
पर खड़ा है जो साहूल से नाप नाप कर तामीर की
गई है। उस के हाथ में साहूल था। 8 रब ने मुझ
से पूछा, "ऐ आमूस, तुझे क्या नज़र आता है?"
मैं ने जवाब दिया, "साहूल।" तब रब ने फ़रमाया,
"मैं अपनी क़ौम इस्राईल के दरमियान साहूल लगाने
वाला हूँ। आइन्दा मैं उन के गुनाहों को नज़रअन्दाज़

---

[z] 'ऐसा न हो कि वह. . . घाट उतारे' इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।

नहीं करूँगा बल्कि नाप नाप कर उन को सज़ा दूँगा।
9 उन बुलन्दियों की क़ुर्बानगाहें तबाह हो जाएँगी जहाँ
इस्हाक़ की औलाद अपनी क़ुर्बानियाँ पेश करती
है। इस्राईल के मक़्दिस ख़ाक में मिलाए जाएंगे,
और मैं अपनी तलवार को पकड़ कर यरुबिआम
के ख़ानदान पर टूट पड़ूँगा।"

आमूस को इस्राईल से निकलने का हुक्म दिया जाता है

10 यह सुन कर बैत-एल के इमाम अमसियाह ने
इस्राईल के बादशाह यरुबिआम को इत्तिला दी,
"आमूस इस्राईल के दरमियान ही आप के ख़िलाफ़
साज़िशें कर रहा है! मुल्क उस के पैग़ाम बर्दाश्त नहीं
कर सकता, 11 क्यूँकि वह कहता है, 'यरुबिआम
तलवार की ज़द में आ कर मर जाएगा, और इस्राईली
क़ौम यक़ीनन क़ैदी बन कर जिलावतन हो जाएगी'।"
12 अमसियाह ने आमूस से कहा, "ऐ रोया देखने
वाले, यहाँ से निकल जा! मुल्क-ए-यहूदाह में भाग
कर वहीं रोज़ी कमा, वहीं नबुव्वत कर। 13 आइन्दा
बैत-एल में नबुव्वत मत करना, क्यूँकि यह बादशाह
का मक़्दिस और बादशाही की मर्कज़ी इबादतगाह
है।"
14 आमूस ने जवाब दिया, "पेशा के लिहाज़ से न
मैं नबी हूँ, न किसी नबी का शागिर्द बल्कि गल्लाबान
और अन्जीर-तूत का बाग़बान। 15 तो भी रब ने मुझे
भेड़-बकरियों की गल्लाबानी करने से हटा कर हुक्म
दिया कि मेरी क़ौम इस्राईल के पास जा और नबुव्वत
करके उसे मेरा कलाम पेश कर। 16 अब रब का
कलाम सुन! तू कहता है, 'इस्राईल के ख़िलाफ़
नबुव्वत मत करना, इस्हाक़ की क़ौम के ख़िलाफ़
बात मत करना।' 17 जवाब में रब फ़रमाता है, 'तेरी
बीवी शहर में कस्बी बनेगी, तेरे बेटे-बेटियाँ सब
तलवार से क़त्ल हो जाएंगे, तेरी ज़मीन नाप कर
दूसरों में तक़्सीम की जाएगी, और तू ख़ुद एक नापाक
मुल्क में वफ़ात पाएगा। यक़ीनन इस्राईली क़ौम क़ैदी
बन कर जिलावतन हो जाएगी'।"

पके फल से भरी टोकरी

8 1 एक बार फिर रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने मुझे
रोया दिखाई। मैं ने पके हुए फल से भरी हुई
टोकरी देखी। 2 रब ने पूछा, "ऐ आमूस, तुझे क्या
नज़र आता है?" मैं ने जवाब दिया, "पके हुए फल
से भरी हुई टोकरी।" तब रब ने मुझ से फ़रमाया,
"मेरी क़ौम का अन्जाम पक गया है। अब से मैं उन्हें
सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। 3 रब क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि उस दिन महल में गीत सुनाई नहीं देंगे
बल्कि आह-ओ-ज़ारी। चारों तरफ़ नाशें नज़र आएँगी,
क्यूँकि दुश्मन उन्हें हर जगह फैंकेगा। ख़ामोश!"

अवाम का इस्तेह्साल

4 ऐ ग़रीबों को कुचलने वालो, ऐ ज़रूरतमन्दों को
तबाह करने वालो, सुनो! 5–6 तुम कहते हो, "नए चाँद
की ईद कब गुज़र जाएगी, सबत का दिन कब ख़त्म
है ताकि हम अनाज के गोदाम खोल कर ग़ल्ला बेच
सकें? तब हम पैमाइश के बर्तन छोटे और तराज़ू
के बाट हल्के बनाएँगे, साथ साथ सौदे का भाओ
बढ़ाएँगे। हम फ़रोख़्त करते वक़्त अनाज के साथ
उस का भूसा भी मिलाएँगे।" अपने नाजाइज़ तरीक़ों
से तुम थोड़े पैसों में बल्कि एक जोड़ी जूतों के इवज़
ग़रीबों को ख़रीदते हो।
7 रब ने याक़ूब के फ़ख़र की क़सम खा कर वादा
किया है, "जो कुछ उन से सरज़द हुआ है उसे मैं कभी
नहीं भूलूँगा। 8 उन ही की वजह से ज़मीन लरज़ उठेगी
और उस के तमाम बाशिन्दे मातम करेंगे। जिस तरह
मिस्र में दरया-ए-नील बरसात के मौसम में सैलाबी
सूरत इख़तियार कर लेता है उसी तरह पूरी ज़मीन
उठेगी। वह नील की तरह जोश में आएगी, फिर
दुबारा उतर जाएगी।"
9 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "उस दिन मैं
होने दूँगा कि सूरज दोपहर के वक़्त ग़ुरूब हो जाए।
दिन उरूज पर ही होगा तो ज़मीन पर अंधेरा छा
जाएगा। 10 मैं तुम्हारे तहवारों को मातम में और

तुम्हारे गीतों को आह-ओ-बुका में बदल दूँगा। मैं सब
को टाट के मातमी लिबास पहना कर हर एक का सर
मुंडवाऊँगा। लोग यूँ मातम करेंगे जैसा उन का वाहिद
बेटा कूच कर गया हो। अन्जाम का वह दिन कितना
तल्ख़ होगा।"

अल्लाह आइन्दा जवाब नहीं देगा

11 क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "ऐसे दिन आने
वाले हैं जब मैं मुल्क में काल भेजूँगा। लेकिन लोग
न रोटी और न पानी से बल्कि अल्लाह का कलाम
सुनने से महरूम रहेंगे। 12 लोग लड़खड़ाते हुए एक
समुन्दर से दूसरे तक और शिमाल से मशरिक़ तक
फिरेंगे ताकि रब का कलाम मिल जाए, लेकिन बेसूद।
13 उस दिन ख़ूबसूरत कुंवारियाँ और जवान मर्द
प्यास के मारे बेहोश हो जाएंगे। 14 जो इस वक़्त
सामरिया के मकरूह बुत की क़सम खाते और कहते
हैं, 'ऐ दान, तेरे देवता की हयात की क़सम' या 'ऐ
बैर-सबा, तेरे देवता की क़सम!' वह उस वक़्त गिर
जाएंगे और दुबारा कभी नहीं उठेंगे।"

आख़िरी रोया : इस्राईल की तबाही

9 1 मैं ने रब को क़ुर्बानगाह के पास खड़ा देखा।
उस ने फ़रमाया, "मक़्दिस के सतूनों के बालाई
हिस्सों को इतने ज़ोर से मार कि दहलीज़ें लरज़ उठें
और उन के टुकड़े हाज़िरीन के सरों पर गिर जाएँ।
उन में से जितने ज़िन्दा रहें उन्हें मैं तलवार से मार
डालूँगा। एक भी भाग जाने में कामयाब नहीं होगा,
एक भी नहीं बचेगा। 2 ख़्वाह वह ज़मीन में खोद
खोद कर पाताल तक क्यूँ न पहुँचें तो भी मेरा हाथ
उन्हें पकड़ कर वहाँ से वापस लाएगा। और ख़्वाह
वह आसमान तक क्यूँ न चढ़ जाएँ तो भी मैं उन्हें
वहाँ से उतारूँगा। 3 ख़्वाह वह कर्मिल की चोटी पर
क्यूँ न छुप जाएँ तो भी मैं उन का खोज लगा कर
उन्हें छीन लूँगा। गो वह समुन्दर की तह तक उतर
कर मुझ से पोशीदा होने की कोशिश क्यूँ न करें
तो भी बेफ़ाइदा होगा, क्यूँकि मैं समुन्दरी साँप को
उन्हें डसने का हुक्म दूँगा। 4 अगर उन के दुश्मन
उन्हें भगा कर जिलावतन करें तो मैं तलवार को
उन्हें क़त्ल करने का हुक्म दूँगा। मैं ध्यान से उन को
तकता रहूँगा, लेकिन बरकत देने के लिए नहीं बल्कि
नुक़्सान पहुँचाने के लिए।"
5 क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज है। जब वह
ज़मीन को छू देता है तो वह लरज़ उठती और उस के
तमाम बाशिन्दे मातम करने लगते हैं। तब जिस तरह
मिस्र में दरया-ए-नील बरसात के मौसम में सैलाब की
सूरत इख़्तियार कर लेता है उसी तरह पूरी ज़मीन
उठती, फिर दुबारा उतर जाती है। 6 वह आसमान पर
अपना बालाख़ाना तामीर करता और ज़मीन पर अपने
तहख़ाने की बुन्याद डालता है। वह समुन्दर का पानी
बुला कर रू-ए-ज़मीन पर उंडेल देता है। उसी का नाम
रब है!

तुम दूसरों से बेहतर नहीं

7 रब फ़रमाता है, "ऐ इस्राईलियो, यह मत समझना
कि मेरे नज़्दीक तुम एथोपिया के बाशिन्दों से बेहतर
हो। बेशक मैं इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया,
लेकिन बिलकुल इसी तरह मैं फ़िलिस्तियों को क्रेते
[a]से और अरामियों को क़ीर से निकाल लाया।
8 मैं, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ध्यान से इस्राईल की
गुनाहआलूदा बादशाही पर ग़ौर कर रहा हूँ। यक़ीनन
मैं उसे रू-ए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा।"
ताहम रब फ़रमाता है, "मैं याक़ूब के घराने को
सरासर तबाह नहीं करूँगा। 9 मेरे हुक्म पर इस्राईली
क़ौम को तमाम अक़्वाम के दरमियान ही यूँ हिलाया
जाएगा जिस तरह अनाज को छलनी में हिला हिला
कर पाक-साफ़ किया जाता है। आख़िर में एक भी
पत्थर अनाज में बाक़ी नहीं रहेगा। 10 मेरी क़ौम के
तमाम गुनाहगार तलवार की ज़द में आ कर मर

---

[a]क्रेते : इब्रानी कफ़्तूर।

जाएंगे, गो वह इस वक़्त कहते हैं कि न हम पर आफ़त आएगी, न हम उस की ज़द में आएँगे।

इस्राईल के लिए नई उम्मीद

11 उस दिन मैं दाऊद के गिरे हुए घर को नए सिरे से खड़ा करूँगा। मैं उस के रख़नों को बन्द और उस के खंडरात को बहाल करूँगा। मैं सब कुछ यूँ तामीर करूँगा जिस तरह क़दीम ज़माने में था। 12 तब इस्राईली अदोम के बचे-खुचे हिस्से और उन तमाम क़ौमों पर क़ब्ज़ा करेंगे जिन पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है।" यह रब का फ़रमान है, और वह यह करेगा भी।

13 रब फ़रमाता है, "ऐसे दिन आने वाले हैं जब फ़सलें बहुत ही ज़्यादा होंगी। फ़सल की कटाई के लिए इतना वक़्त दरकार होगा कि आख़िरकार हल चलाने वाला कटाई करने वालों के पीछे पीछे खेत को अगली फ़सल के लिए तय्यार करता जाएगा। अंगूर की फ़सल भी ऐसी ही होगी। अंगूर की कस्रत के बाइस उन से रस निकालने के लिए इतना वक़्त लगेगा कि आख़िरकार बीज बोने वाला साथ साथ बीज बोने का काम शुरू करेगा। कस्रत के बाइस नई मै पहाड़ों से टपकेगी और तमाम पहाड़ियों से बहेगी।

14 उस वक़्त मैं अपनी क़ौम इस्राईल को बहाल करूँगा। तब वह तबाहशुदा शहरों को नए सिरे से तामीर करके उन में आबाद हो जाएंगे। वह अंगूर के बाग़ लगा कर उन की मै पिएँगे, दीगर फलों के बाग़ लगा कर उन का फल खाएँगे। 15 मैं उन्हें पनीरी की तरह उन के अपने मुल्क में लगा दूँगा। तब वह आइन्दा उस मुल्क से कभी जड़ से नहीं उखाड़े जाएंगे जो मैं ने उन्हें अता किया है।" यह रब तेरे ख़ुदा का फ़रमान है।

अबदियाह

रब अदोम की अदालत करेगा

1 [1] ज़ैल में वह रोया क़लमबन्द है जो अबदियाह
ने देखी। उस में वह कुछ बयान किया गया है जो
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने अदोम के बारे में फ़रमाया।
हम ने रब की तरफ़ से पैग़ाम सुना है, एक क़ासिद
को अक़्वाम के पास भेजा गया है जो उन्हें हुक्म दे,
"उठो! आओ, हम अदोम से लड़ने के लिए तय्यार
हो जाएँ।"
[2] रब अदोम से फ़रमाता है, "मैं तुझे क़ौमों में छोटा
बना दूँगा, और तुझे बहुत हक़ीर जाना जाएगा। [3] तेरे
दिल के ग़ुरूर ने तुझे फ़रेब दिया है। चूँकि तू चटानों
की दराड़ों में और बुलन्दियों पर रहता है इस लिए तू
दिल में सोचता है, 'कौन मुझे यहाँ से उतार देगा'?"
[4] लेकिन रब फ़रमाता है, "ख़्वाह तू अपना घोंसला
उक़ाब की तरह बुलन्दी पर क्यूँ न बनाए बल्कि उसे
सितारों के दरमियान लगा ले, तो भी मैं तुझे वहाँ से
उतार कर ख़ाक में मिला दूँगा।
[5] अगर डाकू रात के वक़्त तुझे लूट लेते तो वह
सिर्फ़ उतना ही छीन लेते जितना उठा कर ले जा
सकते हैं। अगर तू अंगूर का बाग़ होता और मज़दूर
फ़सल चुनने के लिए आते तो थोड़ा बहुत उन के पीछे
रह जाता। लेकिन तेरा अन्जाम इस से कहीं ज़्यादा
बुरा होगा। [6] दुश्मन एसौ [b]के कोने कोने का खोज
लगा लगा कर उस के तमाम पोशीदा ख़ज़ाने लूट
लेगा। [7] तेरे तमाम इत्तिहादी तुझे मुल्क की सरहद तक
भगा देंगे, तेरे दोस्त तुझे फ़रेब दे कर तुझ पर ग़ालिब
आएँगे। बल्कि तेरी रोटी खाने वाले ही तेरे लिए फंदा
लगाएँगे, और तुझे पता नहीं चलेगा।" [8] रब फ़रमाता
है, "उस दिन मैं अदोम के दानिशमन्दों को तबाह
कर दूँगा। तब एसौ के पहाड़ी इलाक़े में समझ और
अक़्ल का नाम-ओ-निशान नहीं रहेगा। [9] ऐ तेमान,
तेरे सूरमे भी सख़्त दहशत खाएँगे, क्यूँकि उस वक़्त
एसौ के पहाड़ी इलाक़े में क़त्ल-ओ-ग़ारत आम होगी,
कोई नहीं बचेगा।
[10] तू ने अपने भाई याक़ूब [c]पर ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद
किया, इस लिए तेरी ख़ूब रुस्वाई हो जाएगी, तुझे
यूँ मिटाया जाएगा कि आइन्दा तेरा नाम-ओ-निशान
तक नहीं रहेगा। [11] जब अजनबी फ़ौजी यरूशलम
के दरवाज़ों में घुस आए तो तू फ़ासिले पर खड़ा
हो कर उन जैसा था। जब उन्हों ने तमाम माल-ओ-
दौलत छीन लिया, जब उन्हों ने क़ुरआ डाल कर
आपस में यरूशलम को बाँट लिया तो तू ने उन का ही
रवय्या अपना लिया। [12] तुझे तेरे भाई की बदक़िस्मती
पर ख़ुशी नहीं मनानी चाहिए थी। मुनासिब नहीं था
कि तू यहूदाह के बाशिन्दों की तबाही पर शादियाना
बजाता। उन की मुसीबत देख कर तुझे शेख़ी नहीं
मारनी चाहिए थी। [13] यह ठीक नहीं था कि तू उस
दिन तबाहशुदा शहर में घुस आया ताकि यरूशलम
की मुसीबत से लुत्फ़ उठाए और उन का बचा-खुचा
माल लूट ले। [14] कितनी बुरी बात थी कि तू शहर से
निकलने वाले रास्तों पर ताक में बैठ गया ताकि वहाँ
से भागने वालों को तबाह करे और बचे हुओं को
दुश्मन के हवाले करे। [15] क्यूँकि रब का दिन तमाम
अक़्वाम के लिए क़रीब आ गया है। जो सुलूक तू
ने दूसरों के साथ किया वही सुलूक तेरे साथ किया
जाएगा। तेरा ग़लत काम तेरे अपने ही सर पर आएगा।

---

[b]एसौ से मुराद अदोम है।

[c]याक़ूब से मुराद इस्राईल है।

अल्लाह की क़ौम नजात पाएगी

16 पहले तुम्हें मेरे मुक़द्दस पहाड़ पर मेरे ग़ज़ब का
प्याला पीना पड़ा, लेकिन अब तमाम दीगर अक़्वाम
उसे पीती रहेंगी। बल्कि वह उसे पी पी कर ख़ाली
करेंगी, उन्हें उस के आख़िरी क़तरे भी चाटने पड़ेंगे।
फिर उन का नाम-ओ-निशान नहीं रहेगा, ऐसा लगेगा
कि वह कभी थीं नहीं।
17 लेकिन कोह-ए-सिय्यून पर नजात होगी,
यरूशलम मुक़द्दस होगा।
तब याक़ूब का घराना [d]दुबारा अपनी मौरूसी
ज़मीन पर क़ब्ज़ा करेगा, 18 और इस्राईली क़ौम
[e]भड़कती आग बन कर अदोम को भूसे की तरह
भस्म करेगी। अदोम का एक शख़्स भी नहीं बचेगा।
क्यूँकि रब ने यह फ़रमाया है।
19 तब नजब यानी जुनूब के बाशिन्दे अदोम के
पहाड़ी इलाक़े पर क़ब्ज़ा करेंगे, और मग़रिब के
नशेबी पहाड़ी इलाक़े के बाशिन्दे फ़िलिस्तियों का
इलाक़ा अपना लेंगे। वह इफ़्राईम और सामरिया
के इलाक़ों पर भी क़ब्ज़ा करेंगे। जिलिआद का
इलाक़ा बिनयमीन के क़बीले की मिलकियत बनेगा।
20 इस्राईल के जिलावतनों को कनआनियों का
मुल्क शिमाली शहर सारपत तक हासिल होगा
जबकि यरूशलम के जो बाशिन्दे जिलावतन हो कर
सिफ़ाराद में जा बसे वह जुनूबी इलाक़े नजब पर
क़ब्ज़ा करेंगे। 21 नजात देने वाले कोह-ए-सिय्यून पर
आ कर अदोम के पहाड़ी इलाक़े पर हुकूमत करेंगे।
तब रब ही बादशाह होगा।!”

---

[d]याक़ूब का घराना से मुराद इस्राईल है।

[e]लफ़्ज़ी तर्जुमा : याक़ूब और यूसुफ़ के घराने।

यूनुस

यूनुस अल्लाह से फ़रार हो जाता है

1 1 रब यूनुस बिन अमित्ती से हमकलाम हुआ,
2 "बड़े शहर नीनवा जा कर उस पर मेरी
अदालत का एलान कर, क्यूँकि उन की बुराई मेरे
हुज़ूर तक पहुँच गई है।"
3 यूनुस रवाना हुआ, लेकिन मशरिक़ी शहर नीनवा
के लिए नहीं बल्कि मग़रिबी शहर तरसीस के लिए।
रब के हुज़ूर से फ़रार होने के लिए वह याफ़ा शहर
पहुँच गया जहाँ एक बहरी जहाज़ तरसीस को जाने
वाला था। सफ़र का किराया अदा करके यूनुस
जहाज़ में बैठ गया ताकि रब के हुज़ूर से भाग निकले।
4 लेकिन रब ने समुन्दर पर ज़बरदस्त आँधी भेजी।
तूफ़ान इतना शदीद था कि जहाज़ के टुकड़े टुकड़े
होने का ख़तरा था। 5 मल्लाह सहम गए, और हर एक
चीख़ता चिल्लाता अपने देवता से इल्तिजा करने लगा।
जहाज़ को हल्का करने के लिए उन्हों ने सामान को
समुन्दर में फैंक दिया।
लेकिन यूनुस जहाज़ के निचले हिस्से में लेट गया
था। अब वह गहरी नींद सो रहा था। 6 फिर कप्तान
उस के पास आया और कहने लगा, "आप किस
तरह सो सकते हैं? उठें, अपने देवता से इल्तिजा
करें! शायद वह हम पर ध्यान दे और हम हलाक न
हों।"
7 मल्लाह आपस में कहने लगे, "आओ, हम क़ुरआ
डाल कर मालूम करें कि कौन हमारी मुसीबत का
बाइस है।" उन्हों ने क़ुरआ डाला तो यूनुस का नाम
निकला। 8 तब उन्हों ने उस से पूछा, "हमें बताएँ कि
यह आफ़त किस के क़ुसूर के बाइस हम पर नाज़िल
हुई है? आप क्या करते हैं, कहाँ से आए हैं, किस
मुल्क और किस क़ौम से हैं?"
9 यूनुस ने जवाब दिया, "मैं इब्रानी हूँ, और रब का
परस्तार हूँ जो आसमान का ख़ुदा है। समुन्दर और
ख़ुश्की दोनों उसी ने बनाए हैं।" 10 यूनुस ने उन्हें यह
भी बताया कि मैं रब के हुज़ूर से फ़रार हो रहा हूँ। यह
सब कुछ सुन कर दीगर मुसाफ़िरों पर शदीद दहशत
तारी हुई। उन्हों ने कहा, "यह आप ने क्या किया
है?" 11 इतने में समुन्दर मज़ीद मुतलातिम होता जा
रहा था। चुनाँचे उन्हों ने पूछा, "अब हम आप के
साथ क्या करें ताकि समुन्दर थम जाए और हमारा
पीछा छोड़ दे?" 12 यूनुस ने जवाब दिया, "मुझे उठा
कर समुन्दर में फैंक दें तो वह थम जाएगा। क्यूँकि मैं
जानता हूँ कि यह बड़ा तूफ़ान मेरी ही वजह से आप
पर टूट पड़ा है।"
13 पहले मल्लाहों ने उस का मश्वरा न माना बल्कि
चप्पू मार मार कर साहिल पर पहुँचने की सिरतोड़
कोशिश करते रहे। लेकिन बेफ़ाइदा, समुन्दर पहले
की निस्बत कहीं ज़्यादा मुतलातिम हो गया। 14 तब
वह बुलन्द आवाज़ से रब से इल्तिजा करने लगे, "ऐ
रब, ऐसा न हो कि हम इस आदमी की ज़िन्दगी के
सबब से हलाक हो जाएँ। और जब हम उसे समुन्दर
में फैंकेंगे तो हमें बेगुनाह आदमी की जान लेने के
ज़िम्मादार न ठहरा। क्यूँकि जो कुछ हो रहा है वह
तेरी ही मर्ज़ी से हो रहा है।" 15 यह कह कर उन्हों
ने यूनुस को उठा कर समुन्दर में फैंक दिया। पानी
में गिरते ही समुन्दर ठाठें मारने से बाज़ आ कर थम
गया। 16 यह देख कर मुसाफ़िरों पर सख़्त दहशत छा
गई, और उन्हों ने रब को ज़बह की क़ुर्बानी पेश की
और मन्नतें मानीं।
17 लेकिन रब ने एक बड़ी मछली को यूनुस के पास
भेजा जिस ने उसे निगल लिया। यूनुस तीन दिन और
तीन रात मछली के पेट में रहा।

यूनुस की दुआ

2 1 मछली के पेट में यूनुस ने रब अपने ख़ुदा से
ज़ैल की दुआ की,
2 "मैं ने बड़ी मुसीबत में आ कर रब से इल्तिजा
की, और उस ने मुझे जवाब दिया। मैं ने पाताल की
गहराइयों से चीख़ कर फ़र्याद की तो तू ने मेरी सुनी।
3 तू ने मुझे गहरे पानी बल्कि समुन्दर के बीच में
ही फैंक दिया। पानी के ज़ोरदार बहाओ ने मुझे घेर
लिया, तेरी तमाम लहरें और मौजें मुझ पर से गुज़र
गईं।
4 तब मैं बोला, 'मुझे तेरे हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया
गया है, लेकिन मैं तेरे मुक़द्दस घर की तरफ़ तकता
रहूँगा।'
5 पानी मेरे गले तक पहुँच गया, समुन्दर की
गहराइयों ने मुझे छुपा लिया। मेरे सर से समुन्दरी
पौदे लिपट गए।
6 पानी में उतरते उतरते मैं पहाड़ों की बुन्यादों तक
पहुँच गया। मैं ज़मीन में धँस कर एक ऐसे मुल्क में
आ गया जिस के दरवाज़े हमेशा के लिए मेरे पीछे
बन्द हो गए। लेकिन ऐ रब, मेरे ख़ुदा, तू ही मेरी जान
को गढ़े से निकाल लाया!
7 जब मेरी जान निकलने लगी तो तू, ऐ रब मुझे
याद आया, और मेरी दुआ तेरे मुक़द्दस घर में तेरे
हुज़ूर पहुँची।
8 जो बुतों की पूजा करते हैं उन्हों ने अल्लाह से
वफ़ादार रहने का वादा तोड़ दिया है।
9 लेकिन मैं शुक्रगुज़ारी के गीत गाते हुए तुझे क़ुर्बानी
पेश करूँगा। जो मन्नत मैं ने मानी उसे पूरा करूँगा।
रब ही नजात देता है।"

10 तब रब ने मछली को हुक्म दिया कि वह यूनुस
को ख़ुश्की पर उगल दे।

यूनुस नीनवा में

3 1 रब एक बार फिर यूनुस से हमकलाम हुआ,
2 "बड़े शहर नीनवा जा कर उसे वह पैग़ाम सुना
दे जो मैं तुझे दूँगा।"
3 इस मर्तबा यूनुस रब की सुन कर नीनवा के लिए
रवाना हुआ। रब के नज़्दीक नीनवा अहम शहर था।
उस में से गुज़रने के लिए तीन दिन दरकार थे। 4 पहले
दिन यूनुस शहर में दाख़िल हुआ और चलते चलते
लोगों को पैग़ाम सुनाने लगा, "ऐन 40 दिन के बाद
नीनवा तबाह हो जाएगा।"
5 यह सुन कर नीनवा के बाशिन्दे अल्लाह पर ईमान
लाए। उन्हों ने रोज़े का एलान किया, और छोटे से ले
कर बड़े तक सब टाट ओढ़ कर मातम करने लगे।
6 जब यूनुस का पैग़ाम नीनवा के बादशाह तक
पहुँचा तो उस ने तख़्त पर से उतर कर अपने शाही
कपड़ों को उतार दिया और टाट ओढ़ कर ख़ाक में
बैठ गया। 7 उस ने शहर में एलान किया, "बादशाह
और उस के शुरफ़ा का फ़रमान सुनो! किसी को भी
खाने या पीने की इजाज़त नहीं। गाय-बैल और भेड़-
बकरियों समेत तमाम जानवर भी इस में शामिल हैं।
न उन्हें चरने दो, न पानी पीने दो। 8 लाज़िम है कि सब
लोग जानवरों समेत टाट ओढ़ लें। हर एक पूरे ज़ोर से
अल्लाह से इल्तिजा करे, हर एक अपनी बुरी राहों और
अपने ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद से बाज़ आए। 9 क्या मालूम,
शायद अल्लाह पछताए। शायद उस का शदीद ग़ज़ब
टल जाए और हम हलाक न हों।"
10 जब अल्लाह ने उन का यह रवय्या देखा, कि वह
वाक़ई अपनी बुरी राहों से बाज़ आए तो वह पछताया
और उन पर वह आफ़त न लाया जिस का एलान उस
ने किया था।

यूनुस अल्लाह की मेहरबानी देख कर नाराज़ हो जाता है

4 1 यह बात यूनुस को निहायत बुरी लगी, और
वह ग़ुस्से हुआ। 2 उस ने रब से दुआ की, "ऐ

रब, क्या यह वही बात नहीं जो मैं ने उस वक़्त की
जब अभी अपने वतन में था? इसी लिए मैं इतनी
तेज़ी से भाग कर तरसीस के लिए रवाना हुआ था।
मैं जानता था कि तू मेहरबान और रहीम ख़ुदा है। तू
तहम्मुल और शफ़क़त से भरपूर है और जल्द ही सज़ा
देने से पछताता है। 3 ऐ रब, अब मुझे जान से मार दे!
जीने से बेहतर यही है कि मैं कूच कर जाऊँ।"

4 लेकिन रब ने जवाब दिया, "क्या तू ग़ुस्से होने में
हक़-ब-जानिब है?"

5 यूनुस शहर से निकल कर उस के मशरिक़ में रुक
गया। वहाँ वह अपने लिए झोंपड़ी बना कर उस के
साय में बैठ गया। क्यूँकि वह देखना चाहता था कि
शहर के साथ क्या कुछ हो जाएगा।

6 तब रब ख़ुदा ने एक बेल को फूटने दिया जो बढ़ते
बढ़ते यूनुस के ऊपर फैल गई ताकि साया दे कर
उस की नाराज़ी दूर करे। यह देख कर यूनुस बहुत
ख़ुश हुआ। 7 लेकिन अगले दिन जब पौ फटने लगी
तो अल्लाह ने एक कीड़ा भेजा जिस ने बेल पर हम्ला
किया। बेल जल्द ही मुरझा गई।

8 जब सूरज तुलू हुआ तो अल्लाह ने मशरिक़ से
झुलसती लू भेजी। धूप इतनी शदीद थी कि यूनुस
ग़श खाने लगा। आख़िरकार वह मरना ही चाहता
था। वह बोला, "जीने से बेहतर यही है कि मैं कूच
कर जाऊँ।"

9 तब अल्लाह ने उस से पूछा, "क्या तू बेल के सबब
से ग़ुस्से होने में हक़-ब-जानिब है?" यूनुस ने जवाब
दिया, "जी हाँ, मैं मरने तक ग़ुस्से हूँ, और इस में मैं
हक़-ब-जानिब भी हूँ।"

10 रब ने जवाब दिया, "तू इस बेल पर ग़म खाता है,
हालाँकि तू ने उस के फलने फूलने के लिए एक उंगली
भी नहीं हिलाई। यह बेल एक रात में पैदा हुई और
अगली रात ख़त्म हुई 11 जबकि नीनवा बहुत बड़ा
शहर है, उस में 1,20,000 अफ़राद और मुतअद्दिद
जानवर बसते हैं। और यह लोग इतने जाहिल हैं कि
अपने दाएँ और बाएँ हाथ में इम्तियाज़ नहीं कर पाते।
क्या मुझे इस बड़े शहर पर ग़म नहीं खाना चाहिए।?"

मीकाह

सामरिया की तबाही

1 1 ज़ैल में रब का वह कलाम दर्ज है जो मीकाह
मोरश्ती पर यहूदाह के बादशाहों यूताम, आख़ज़
और हिज़क़ियाह के दौर-ए-हुकूमत में नाज़िल हुआ।
उस ने सामरिया और यरूशलम के बारे में यह बातें
रोया में देखीं।

2 ऐ तमाम अक़्वाम, सुनो! ऐ ज़मीन और जो कुछ
उस पर है, ध्यान दो! रब क़ादिर-ए-मुतलक़ तुम्हारे
ख़िलाफ़ गवाही दे, क़ादिर-ए-मुतलक़ अपने मुक़द्दस
घर की तरफ़ से गवाही दे। 3 क्यूँकि देखो, रब अपनी
सुकूनतगाह से निकल रहा है ताकि उतर कर ज़मीन
की बुलन्दियों पर चले। 4 उस के पाँओ तले पहाड़
पिघल जाएंगे और वादियाँ फट जाएँगी, वह आग के
सामने पिघलने वाले मोम या ढलान पर उंडेले गए
पानी की मानिन्द होंगे।

5 यह सब कुछ याक़ूब के जुर्म, इस्राईली क़ौम के
गुनाहों के सबब से हो रहा है। कौन याक़ूब के जुर्म
का ज़िम्मादार है? सामरिया! किस ने यहूदाह को
बुलन्द जगहों पर बुतपरस्ती करने की तहरीक दी?
यरूशलम ने!

6 इस लिए रब फ़रमाता है, "मैं सामरिया को खुले
मैदान में मल्बे का ढेर बना दूँगा, इतनी ख़ाली
जगह कि लोग वहाँ अंगूर के बाग़ लगाएँगे। मैं उस
के पत्थर वादी में फैंक दूँगा, उसे इतने धड़ाम से
गिरा दूँगा कि उस की बुन्यादें ही नज़र आएँगी ।
7 उस के तमाम बुत टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे, उस
की इस्मतफ़रोशी का पूरा अज्र नज़र-ए-आतिश हो
जाएगा। मैं उस के देवताओं के तमाम मुजस्समों को
तबाह कर दूँगा। क्यूँकि सामरिया ने यह तमाम चीज़ें
अपनी इस्मतफ़रोशी से हासिल की हैं, और अब यह
सब उस से छीन ली जाएँगी और दीगर इस्मतफ़रोशों
को मुआवज़े के तौर पर दी जाएँगी।"

अपनी क़ौम पर मातम

8 इस लिए मैं आह-ओ-ज़ारी करूँगा, नंगे पाँओ और
बरहना फिरूँगा, गीदड़ों की तरह वावैला करूँगा,
उक़ाबी उल्लू की तरह आहें भरूँगा। 9 क्यूँकि सामरिया
का ज़ख़्म लाइलाज है, और वह मुल्क-ए-यहूदाह में
भी फैल गया है, वह मेरी क़ौम के दरवाज़े यानी
यरूशलम तक पहुँच गया है।

10 फ़िलिस्ती शहर जात में यह बात न बताओ, उन्हें
अपने आँसू न दिखाओ। बैत-लाफ़्रा [f]में ख़ाक में लोट-
पोट हो जाओ। 11 ऐ सफ़ीर [g]के रहने वालो, बरहना
और शर्मसार हो कर यहाँ से गुज़र जाओ। ज़ानान [h]के
बाशिन्दे निकलेंगे नहीं। बैत-एज़ल [i]मातम करेगा जब
तुम से हर सहारा छीन लिया जाएगा। 12 मारोत [j]के
बसने वाले अपने माल के लिए पेच-ओ-ताब खा रहे
हैं, क्यूँकि रब की तरफ़ से आफ़त नाज़िल हो कर
यरूशलम के दरवाज़े तक पहुँच गई है।

13 ऐ लकीस [k]के बाशिन्दो, घोड़ों को रथ में जोत
कर भाग जाओ। क्यूँकि इब्तिदा में तुम ही सिय्यून

---

[f]बैत-लाफ़्रा = ख़ाक का घर।

[g]सफ़ीर = ख़ूबसूरत।

[h]ज़ानान = निकलने वाला।

[i]बैत-एज़ल = साथ वाला यानी सहारा देने वाला घर।

[j]मारोत = तल्ख़ी।

[k]लकीस के क़िलाबन्द शहर में जंगी रथ रखे जाते थे।

बेटी के लिए गुनाह का बाइस बन गए, तुम ही में
वह जराइम मौजूद थे जो इस्राईल से सरज़द हो रहे
हैं। 14 इस लिए तुम्हें तुह्फ़े दे कर मोरशत-जात [l]को
रुख़्सत करनी पड़ेगी। अक्ज़ीब [m]के घर इस्राईल के
बादशाहों के लिए फ़रेबदिह साबित होंगे।

15 ऐ मरेसा [n]के लोगो, मैं होने दूँगा कि एक क़ब्ज़ा
करने वाला तुम पर हम्ला करेगा। तब इस्राईल का
जलाल अदुल्लाम तक पहुँचेगा। 16 ऐ सिय्यून बेटी,
अपने बाल कटवा कर गिद्ध जैसी गंजी हो जा। अपने
लाडले बच्चों पर मातम कर, क्यूँकि वह क़ैदी बन कर
तुझ से दूर हो जाएंगे।

क़ौम पर ज़ुल्म करने वालों पर अफ़्सोस

2 1 उन पर अफ़्सोस जो दूसरों को नुक़्सान पहुँचाने
के मन्सूबे बांधते और अपने बिस्तर पर ही
साज़िशें करते हैं। पौ फटते ही वह उठ कर उन्हें
पूरा करते हैं, क्यूँकि वह यह करने का इख़तियार
रखते हैं। 2 जब वह किसी खेत या मकान के लालच
में आ जाते हैं तो उसे छीन लेते हैं। वह लोगों पर
ज़ुल्म करके उन के घर और मौरूसी मिलकियत उन
से लूट लेते हैं।

3 चुनाँचे रब फ़रमाता है, "मैं इस क़ौम पर आफ़त
का मन्सूबा बांध रहा हूँ, ऐसा फंदा जिस में से तुम
अपनी गरदनों को निकाल नहीं सकोगे। तब तुम
सर उठा कर नहीं फिरोगे, क्यूँकि वक़्त बुरा ही
होगा। 4 उस दिन लोग अपने गीतों में तुम्हारा मज़ाक़
उड़ाएँगे, वह मातम का तल्ख़ गीत गा कर तुम्हें लान-
तान करेंगे,

'हाय, हम सरासर तबाह हो गए हैं! मेरी क़ौम की
मौरूसी ज़मीन दूसरों के हाथ में आ गई है। वह किस
तरह मुझ से छीन ली गई है! हमारे काम के जवाब
में हमारे खेत दूसरों में तक़्सीम हो रहे हैं'।"

5 चुनाँचे आइन्दा तुम में से कोई नहीं होगा जो
रब की जमाअत में क़ुरआ डाल कर मौरूसी ज़मीन
तक़्सीम करे।

6 वह नबुव्वत करते हैं, "नबुव्वत मत करो!
नबुव्वत करते वक़्त इन्सान को इस क़िस्म की
बातें नहीं सुनानी चाहिएँ। यह सहीह नहीं कि हमारी
रुस्वाई हो जाएगी।" 7 ऐ याक़ूब के घराने, क्या तुझे
इस तरह की बातें करनी चाहिएँ, "क्या रब नाराज़
है? क्या वह ऐसा काम करेगा?"

रब फ़रमाता है, "यह बात दुरुस्त है कि मैं उस
से मेहरबान बातें करता हूँ जो सहीह राह पर चले।
8 लेकिन काफ़ी देर से मेरी क़ौम दुश्मन बन कर उठ
खड़ी हुई है। जिन लोगों का जंग करने से ताल्लुक़ ही
नहीं उन से तुम चादर तक सब कुछ छीन लेते हो
जब वह अपने आप को महफ़ूज़ समझ कर तुम्हारे
पास से गुज़रते हैं। 9 मेरी क़ौम की औरतों को तुम
उन के ख़ुशनुमा घरों से भगा कर उन के बच्चों को
हमेशा के लिए मेरी शानदार बरकतों से महरूम कर
देते हो। 10 अब उठ कर चले जाओ! आइन्दा तुम्हें
यहाँ सुकून हासिल नहीं होगा। क्यूँकि नापाकी के
सबब से यह मक़ाम अज़ियतनाक तरीक़े से तबाह
हो जाएगा। 11 हक़ीक़त में यह क़ौम ऐसा फ़रेबदिह
नबी चाहती है जो ख़ाली हाथ आ कर [o]उस से कहे,
'तुम्हें कस्रत की मै और शराब हासिल होगी!'

अल्लाह क़ौम को वापस लाएगा

12 ऐ याक़ूब की औलाद, एक दिन मैं तुम सब को
यक़ीनन जमा करूँगा। तब मैं इस्राईल का बचा हुआ
हिस्सा यूँ इकट्ठा करूँगा जिस तरह भेड़-बकरियों को
बाड़े में या रेवड़ को चरागाह में। मुल्क में चारों तरफ़
हुजूमों का शोर मचेगा। 13 एक राहनुमा उन के आगे
आगे चलेगा जो उन के लिए रास्ता खोलेगा। तब वह

---

[l]'मोरशत' तुह्फ़े और जहेज़ के लिए मुस्तामल इब्रानी लफ़्ज़ से मिलता जुलता है।

[m]अक्ज़ीब = फ़रेब है।

[n]'मरेसा' फ़ातेह और क़ाबिज़ के लिए मुस्तामल इब्रानी लफ़्ज़ से मिलता जुलता है।

[o]लफ़्ज़ी तर्जुमा : जो हवा यानी कुछ नहीं अपने साथ ले कर आए।

शहर के दरवाज़े को तोड़ कर उस में से निकलेंगे।
उन का बादशाह उन के आगे आगे चलेगा, रब ख़ुद
उन की राहनुमाई करेगा।”

राहनुमाओं और झूटे नबियों पर इलाही फ़ैसला

3 1 मैं बोला, “ऐ याक़ूब के राहनुमाओ, ऐ इस्राईल
के बुज़ुर्गो, सुनो! तुम्हें इन्साफ़ को जानना
चाहिए। 2 लेकिन जो अच्छा है उस से तुम नफ़रत
करते और जो ग़लत है उसे प्यार करते हो। तुम मेरी
क़ौम की खाल उतार कर उस का गोश्त हड्डियों से
जुदा कर लेते हो। 3 क्यूँकि तुम मेरी क़ौम का गोश्त
खा लेते हो। उन की खाल उतार कर तुम उन की
हड्डियों और गोश्त को टुकड़े टुकड़े करके देग में
फैंक देते हो।” 4 तब वह चिल्ला कर रब से इल्तिजा
करेंगे, लेकिन वह उन की नहीं सुनेगा। उन के ग़लत
कामों के सबब से वह अपना चिहरा उन से छुपा
लेगा।

5 रब फ़रमाता है, “ऐ नबियो, तुम मेरी क़ौम को
भटका रहे हो। अगर तुम्हें कुछ खिलाया जाए तो तुम
एलान करते हो कि अम्न-ओ-अमान होगा। लेकिन
जो तुम्हें कुछ न खिलाए उस पर तुम जिहाद का फ़त्वा
देते हो। 6 चुनाँचे तुम पर ऐसी रात छा जाएगी जिस
में तुम रोया नहीं देखोगे, ऐसी तारीकी जिस में तुम्हें
मुस्तक़बिल के बारे में कोई भी बात नहीं मिलेगी।
नबियों पर सूरज डूब जाएगा, उन के चारों तरफ़
अंधेरा ही अंधेरा छा जाएगा। 7 तब रोया देखने वाले
शर्मसार और क़िस्मत का हाल बताने वाले शर्मिन्दा
हो जाएंगे। शर्म के मारे वह अपने मुँह को छुपा लेंगे,
[p]क्यूँकि अल्लाह से कोई भी जवाब नहीं मिलेगा।”

8 लेकिन मैं ख़ुद क़ुव्वत से, रब के रूह से और
इन्साफ़ और ताक़त से भरा हुआ हूँ ताकि याक़ूब की
औलाद को उस के जराइम और इस्राईल को उस के
गुनाह सुना सकूँ।

9 ऐ याक़ूब के राहनुमाओ, ऐ इस्राईल के बुज़ुर्गो,
सुनो! तुम इन्साफ़ से घिन खा कर हर सीधी बात
को टेढ़ी बना लेते हो। 10 तुम सिय्यून को ख़ूँरेज़ी से
और यरूशलम को नाइन्साफ़ी से तामीर कर रहे हो।
11 यरूशलम के बुज़ुर्ग अदालत करते वक़्त रिश्वत
लेते हैं। उस के इमाम तालीम देते हैं लेकिन सिर्फ़
कुछ मिलने के लिए। उस के नबी पेशगोई सुना देते
हैं लेकिन सिर्फ़ पैसों के मुआवज़े में। ताहम यह लोग
रब पर इन्हिसार करके कहते हैं, “हम पर आफ़त
आ ही नहीं सकती, क्यूँकि रब हमारे दरमियान है।”

12 तुम्हारी वजह से सिय्यून पर हल चलाया जाएगा
और यरूशलम मल्बे का ढेर बन जाएगा। जिस पहाड़
पर रब का घर है उस पर जंगल छा जाएगा।

यरूशलम एक नई बादशाही का मर्कज़ बन जाएगा

4 1 आख़िरी अय्याम में रब के घर का पहाड़
मज़बूती से क़ाइम होगा। सब से बड़ा यह
पहाड़ दीगर तमाम बुलन्दियों से कहीं ज़्यादा
सरफ़राज़ होगा। तब उम्मतें जौक़-दर-जौक़ उस के
पास पहुँचेंगी, 2 और बेशुमार क़ौमें आ कर कहेंगी,
“आओ, हम रब के पहाड़ पर चढ़ कर याक़ूब के
ख़ुदा के घर के पास जाएँ ताकि वह हमें अपनी मर्ज़ी
की तालीम दे और हम उस की राहों पर चलें।”

क्यूँकि सिय्यून पहाड़ से रब की हिदायत निकलेगी,
और यरूशलम से उस का कलाम सादिर होगा।
3 रब बैन-उल-अक़्वामी झगड़ों को निपटाएगा और
दूर तक की ज़ोरावर क़ौमों का इन्साफ़ करेगा। तब
वह अपनी तलवारों को कूट कर फाले बनाएँगी
और अपने नेज़ों को काँट-छाँट के औज़ार में तब्दील
करेंगी। अब से न एक क़ौम दूसरी पर हम्ला करेगी, न
लोग जंग करने की तर्बियत हासिल करेंगे। 4 हर एक
अपनी अंगूर की बेल और अपने अन्जीर के दरख़्त
के साय में बैठ कर आराम करेगा। कोई नहीं रहेगा

---

[p]मुँह का लफ़्ज़ी तर्जुमा ‘मूँछें’ है।

जो उन्हें अचानक दहशतज़दा करे। क्यूँकि रब्ब-उल-
अफ़्वाज ने यह कुछ फ़रमाया है।
5 हर दूसरी क़ौम अपने देवता का नाम ले कर
फिरती है, लेकिन हम हमेशा तक रब अपने ख़ुदा
का नाम ले कर फिरेंगे।
6 रब फ़रमाता है, "उस दिन मैं लंगड़ों को जमा
करूँगा और उन्हें इकट्ठा करूँगा जिन्हें मैं ने मुन्तशिर
करके दुख पहुँचाया था। 7 मैं लंगड़ों को क़ौम का
बचा हुआ हिस्सा बना दूँगा और जो दूर तक भटक
गए थे उन्हें ताक़तवर उम्मत में तब्दील करूँगा। तब
रब उन का बादशाह बन कर अबद तक सिय्यून
पहाड़ पर उन पर हुकूमत करेगा। 8 जहाँ तक तेरा
ताल्लुक़ है, ऐ रेवड़ के बुर्ज, ऐ सिय्यून बेटी के पहाड़,
तुझे पहले की सी सल्तनत हासिल होगी। यरूशलम
बेटी को दुबारा बादशाहत मिलेगी।"

यरूशलम अभी तक ख़तरे में है

9 ऐ यरूशलम बेटी, इस वक़्त तू इतने ज़ोर से क्यूँ
चीख़ रही है? क्या तेरा कोई बादशाह नहीं? क्या तेरे
मुशीर सब ख़त्म हो गए हैं कि तू दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला
औरत की तरह पेच-ओ-ताब खा रही है?
10 ऐ सिय्यून बेटी, जन्म देने वाली औरत की तरह
तड़पती और चीख़ती जा! क्यूँकि अब तुझे शहर से
निकल कर खुले मैदान में रहना पड़ेगा, आख़िर में तू
बाबल तक पहुँचेगी। लेकिन वहाँ रब तुझे बचाएगा,
वहाँ वह इवज़ाना दे कर तुझे दुश्मन के हाथ से
छुड़ाएगा।
11 इस वक़्त तो मुतअद्दिद क़ौमें तेरे ख़िलाफ़ जमा
हो गई हैं। आपस में वह कह रही हैं, "आओ,
यरूशलम की बेहुरमती हो जाए, हम सिय्यून की
हालत देख कर लुत्फ़अन्दोज़ हो जाएँ।" 12 लेकिन
वह रब के ख़यालात को नहीं जानते, उस का मन्सूबा
नहीं समझते। उन्हें मालूम नहीं कि वह उन्हें गन्दुम
के पूलों की तरह इकट्ठा कर रहा है ताकि उन्हें गाह
ले।
13 "ऐ सिय्यून बेटी, उठ कर गाह ले! क्यूँकि मैं
तुझे लोहे के सींगों और पीतल के खुरों से नवाज़ूँगा
ताकि तू बहुत सी क़ौमों को चूर चूर कर सके। तब मैं
उन का लूटा हुआ माल रब के लिए मख़्सूस करूँगा,
उन की दौलत पूरी दुनिया के मालिक के हवाले
करूँगा।"

नजातदहिन्दा की उम्मीद

5 1 ऐ शहर जिस पर हम्ला हो रहा है, अब अपने
आप को छुरी से ज़ख़्मी कर, क्यूँकि हमारा
मुहासरा हो रहा है। दुश्मन लाठी से इस्राईल के
हुक्मरान के गाल पर मारेगा।
2 लेकिन तू, ऐ बैत-लहम इफ़्राता, जो यहूदाह के
दीगर ख़ानदानों की निस्बत छोटा है, तुझ में से
वह निकलेगा जो इस्राईल का हुक्मरान होगा और
जो क़दीम ज़माने बल्कि अज़ल से सादिर हुआ है।
3 लेकिन जब तक हामिला औरत उसे जन्म न दे,
उस वक़्त तक रब अपनी क़ौम को दुश्मन के हवाले
छोड़ेगा। लेकिन फिर उस के भाइयों का बचा हुआ
हिस्सा इस्राईलियों के पास वापस आएगा।
4 यह हुक्मरान खड़े हो कर रब की क़ुव्वत के साथ
अपने रेवड़ की गल्लाबानी करेगा। उसे रब अपने ख़ुदा
के नाम का अज़ीम इख़तियार हासिल होगा। तब
क़ौम सलामती से बसेगी, क्यूँकि उस की अज़मत
दुनिया की इन्तिहा तक फैलेगी। 5 वही सलामती का
मम्बा होगा। जब असूर की फ़ौज हमारे मुल्क में
दाख़िल हो कर हमारे महलों में घुस आए तो हम
उस के ख़िलाफ़ सात चरवाहे और आठ रईस खड़े
करेंगे 6 जो तलवार से मुल्क-ए-असूर की गल्लाबानी
करेंगे, हाँ तलवार को मियान से खैंच कर नमरूद के
मुल्क पर हुकूमत करेंगे। यूँ हुक्मरान हमें असूर से
बचाएगा जब यह हमारे मुल्क और हमारी सरहद में
घुस आएगा।
7 तब याक़ूब के जितने लोग बच कर मुतअद्दिद
अक़्वाम के बीच में रहेंगे वह रब की भेजी हुई ओस
या हरियाली पर पड़ने वाली बारिश की मानिन्द होंगे

यानी ऐसी चीज़ों की मानिन्द जो न किसी इन्सान
के इन्तिज़ार में रहती, न किसी इन्सान के हुक्म पर
पड़ती हैं। 8 याक़ूब के जितने लोग बच कर मुतअद्दिद
अक़्वाम के बीच में रहेंगे वह जंगली जानवरों के
दरमियान शेरबबर और भेड़-बकरियों के बीच में
जवान शेर की मानिन्द होंगे यानी ऐसे जानवर की
मानिन्द जो जहाँ से भी गुज़रे जानवरों को रौंद कर
फाड़ लेता है। उस के हाथ से कोई बचा नहीं सकता।
9 तेरा हाथ तेरे तमाम मुख़ालिफ़ों पर फ़त्ह पाएगा, तेरे
तमाम दुश्मन नेस्त-ओ-नाबूद हो जाएंगे।

रब इस्राईल के बुतों को ख़त्म करेगा

10 रब फ़रमाता है, "उस दिन मैं तेरे घोड़ों को नेस्त
और तेरे रथों को नाबूद करूँगा। 11 मैं तेरे मुल्क
के शहरों को ख़ाक में मिला कर तेरे तमाम क़िलों
को गिरा दूँगा। 12 तेरी जादूगरी को मैं मिटा डालूँगा,
क़िस्मत का हाल बताने वाले तेरे बीच में नहीं रहेंगे।
13 तेरे बुत और तेरे मख़्सूस सतूनों को मैं यूँ तबाह
करूँगा कि तू आइन्दा अपने हाथ की बनाई हुई
चीज़ों की पूजा नहीं करेगा। 14 तेरे असीरत देवी के
खम्बे मैं उखाड़ कर तेरे शहरों को मिस्मार करूँगा।
15 उस वक़्त मैं बड़े ग़ुस्से से उन क़ौमों से इन्तिक़ाम
लूँगा जिन्हों ने मेरी नहीं सुनी।"

अल्लाह इस्राईल पर इल्ज़ाम लगाता है

6 1 ऐ इस्राईल, रब का फ़रमान सुन, "अदालत में
खड़े हो कर अपना मुआमला बयान कर! पहाड़
और पहाड़ियाँ तेरे गवाह हों, उन्हें अपनी बात सुना
दे।"
2 ऐ पहाड़ो, अब रब का अपनी क़ौम पर इल्ज़ाम
सुनो! ऐ दुनिया की क़दीम बुन्यादो, तवज्जुह दो!
क्यूँकि रब अदालत में अपनी क़ौम पर इल्ज़ाम लगा
रहा है, वह इस्राईल से मुक़द्दमा उठा रहा है।
3 वह सवाल करता है, "ऐ मेरी क़ौम, मैं ने तेरे साथ
क्या ग़लत सुलूक किया? मैं ने क्या किया कि तू
इतनी थक गई है? बता तो सही! 4 हक़ीक़त तो यह
है कि मैं तुझे मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया, मैं ने
फ़िद्या दे कर तुझे ग़ुलामी से रिहा कर दिया। साथ
साथ मैं ने मूसा, हारून और मरियम को भेजा ताकि
तेरे आगे चल कर तेरी राहनुमाई करें। 5 ऐ मेरी क़ौम,
वह वक़्त याद कर जब मोआब के बादशाह बलक़ ने
बलआम बिन बओर को बुलाया ताकि तुझ पर लानत
भेजे। लानत की बजाय उस ने तुझे बरकत दी! वह
सफ़र भी याद कर जब तू शित्तीम से रवाना हो कर
जिल्जाल पहुँची। अगर तू इन तमाम बातों पर ग़ौर
करे तो जान लेगी कि रब ने कितनी वफ़ादारी और
इन्साफ़ से तेरे साथ सुलूक किया है।"
6 जब हम रब के हुज़ूर आते हैं ताकि अल्लाह तआला
को सिज्दा करें तो हमें अपने साथ क्या लाना चाहिए?
क्या हमें यकसाला बछड़े उस के हुज़ूर ला कर भस्म
करने चाहिएँ? 7 क्या रब हज़ारों मेंढों या तेल की
बेशुमार नदियों से ख़ुश हो जाएगा? क्या मुझे अपने
पहलौठे को अपने जराइम के इवज़ चढ़ाना चाहिए,
अपने जिस्म के फल को अपने गुनाहों को मिटाने के
लिए पेश करना चाहिए? हरगिज़ नहीं!
8 ऐ इन्सान, उस ने तुझे साफ़ बताया है कि क्या
कुछ अच्छा है। रब तुझ से चाहता है कि तू इन्साफ़
क़ाइम रखे, मेहरबानी करने में लगा रहे और फ़रोतनी
से अपने ख़ुदा के हुज़ूर चलता रहे।

यरूशलम को भी सामरिया की सी सज़ा मिलेगी

9 सुनो! रब यरूशलम को आवाज़ दे रहा है।
तवज्जुह दो, क्यूँकि दानिशमन्द उस के नाम का
ख़ौफ़ मानता है। ऐ क़बीले, ध्यान दो कि किस ने
यह मुक़र्रर किया है,
10 "अब तक नाजाइज़ नफ़ा की दौलत बेदीन
आदमी के घर में जमा हो रही है, अब तक लोग
गन्दुम बेचते वक़्त पूरा तोल नहीं तोलते, उन की
ग़लत पैमाइश पर लानत! 11 क्या मैं उस आदमी को
बरी क़रार दूँ जो ग़लत तराज़ू इस्तेमाल करता है और
जिस की थैली में हल्के बाट पड़े रहते हैं? हरगिज़
नहीं! 12 यरूशलम के अमीर बड़े ज़ालिम हैं, लेकिन

बाक़ी बाशिन्दे भी झूट बोलते हैं, उन की हर बात
धोका ही धोका है!
13 इस लिए मैं तुझे मार मार कर ज़ख़्मी करूँगा।
मैं तुझे तेरे गुनाहों के बदले में तबाह करूँगा। 14 तू
खाना खाएगा लेकिन सेर नहीं होगा बल्कि पेट ख़ाली
रहेगा। तू माल महफ़ूज़ रखने की कोशिश करेगा,
लेकिन कुछ नहीं बचेगा। क्यूँकि जो कुछ तू बचाने
की कोशिश करेगा उसे मैं तलवार के हवाले करूँगा।
15 तू बीज बोएगा लेकिन फ़सल नहीं काटेगा, ज़ैतून
का तेल निकालेगा लेकिन उसे इस्तेमाल नहीं करेगा,
अंगूर का रस निकालेगा लेकिन उसे नहीं पिएगा।
16 तू इस्राईल के बादशाहों उम्री और अख़ियब के
नमूने पर चल पड़ा है, आज तक उन ही के मन्सूबों
की पैरवी करता आया है। इस लिए मैं तुझे तबाही
के हवाले कर दूँगा, तेरे लोगों को मज़ाक़ का निशाना
बनाऊँगा। तुझे दीगर अक़्वाम की लान-तान बर्दाश्त
करनी पड़ेगी।”

अपनी क़ौम पर अफ़सोस

7 1 हाय, मुझ पर अफ़सोस! मैं उस शख़्स की
मानिन्द हूँ जो फ़सल के जमा होने पर अंगूर
के बाग़ में से गुज़र जाता है ताकि बचा हुआ थोड़ा
बहुत फल मिल जाए, लेकिन एक गुच्छा तक बाक़ी
नहीं। मैं उस आदमी की मानिन्द हूँ जो अन्जीर
का पहला फल मिलने की उम्मीद रखता है लेकिन
एक भी नहीं मिलता। 2 मुल्क में से दियानतदार मिट
गए हैं, एक भी ईमानदार नहीं रहा। सब ताक में
बैठे हैं ताकि एक दूसरे को क़त्ल करें, हर एक
अपना जाल बिछा कर अपने भाई को पकड़ने की
कोशिश करता है। 3 दोनों हाथ ग़लत काम करने
में एक जैसे माहिर हैं। हुक्मरान और क़ाज़ी रिश्वत
खाते, बड़े लोग मुतलव्विनमिज़ाजी से कभी यह,
कभी वह तलब करते हैं। सब मिल कर साज़िशें
करने में मसरूफ़ रहते हैं। 4 उन में से सब से शरीफ़
शख़्स ख़ारदार झाड़ी की मानिन्द है, सब से ईमानदार
आदमी काँटेदार बाड़ से अच्छा नहीं।
लेकिन वह दिन आने वाला है जिस का एलान
तुम्हारे पहरेदारों ने किया है। तब अल्लाह तुझ से निपट
लेगा, सब कुछ उलट-पलट हो जाएगा।
5 किसी पर भी भरोसा मत रखना, न अपने पड़ोसी
पर, न अपने दोस्त पर। अपनी बीवी से भी बात करने
से मुहतात रहो। 6 क्यूँकि बेटा अपने बाप की हैसियत
नहीं मानता, बेटी अपनी माँ के ख़िलाफ़ खड़ी हो
जाती और बहू अपनी सास की मुख़ालफ़त करती
है। तुम्हारे अपने ही घर वाले तुम्हारे दुश्मन हैं।
7 लेकिन मैं ख़ुद रब की राह देखूँगा, अपनी नजात
के ख़ुदा के इन्तिज़ार में रहूँगा। क्यूँकि मेरा ख़ुदा मेरी
सुनेगा।

रब हमें रिहा करेगा

8 ऐ मेरे दुश्मन, मुझे देख कर शादियाना मत बजा!
गो मैं गिर गया हूँ ताहम दुबारा खड़ा हो जाऊँगा,
गो अंधेरे में बैठा हूँ ताहम रब मेरी रौशनी है। 9 मैं
ने रब का ही गुनाह किया है, इस लिए मुझे उस का
ग़ज़ब भुगतना पड़ेगा। क्यूँकि जब तक वह मेरे हक़
में मुक़द्दमा लड़ कर मेरा इन्साफ़ न करे उस वक़्त
तक मैं उस का क़हर बर्दाश्त करूँगा। तब वह मुझे
तारीकी से निकाल कर रौशनी में लाएगा, और मैं
अपनी आँखों से उस के इन्साफ़ और वफ़ादारी का
मुशाहदा करूँगा।
10 मेरा दुश्मन यह देख कर सरासर शर्मिन्दा हो
जाएगा, हालाँकि इस वक़्त वह कह रहा है, “रब तेरा
ख़ुदा कहाँ है?” मेरी अपनी आँखें उस की शर्मिन्दगी
देखेंगी, क्यूँकि उस वक़्त उसे गली में कचरे की तरह
पाँओ तले रौंदा जाएगा।
11 ऐ इस्राईल, वह दिन आने वाला है जब तेरी
दीवारें नए सिरे से तामीर हो जाएँगी। उस दिन
तेरी सरहदें वसी हो जाएँगी। 12 लोग चारों तरफ़ से
तेरे पास आएँगे। वह असूर से, मिस्र के शहरों से,
दरया-ए-फ़ुरात के इलाक़े से बल्कि दूरदराज़ साहिली
और पहाड़ी इलाक़ों से भी आएँगे। 13 ज़मीन अपने
बाशिन्दों के बाइस वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएगी,

आख़िरकार उन की हरकतों का कड़वा फल निकल
आएगा।
14 ऐ रब, अपनी लाठी से अपनी क़ौम की गल्लाबानी
कर! क्यूँकि तेरी मीरास का यह रेवड़ इस वक़्त
जंगल में तन्हा रहता है, हालाँकि गिर्द-ओ-नवाह
की ज़मीन ज़रख़ेज़ है। क़दीम ज़माने की तरह उन्हें
बसन और जिलिआद की शादाब चरागाहों में चरने
दे! 15 रब फ़रमाता है, "मिस्र से निकलते वक़्त की
तरह मैं तुझे मोजिज़ात दिखा दूँगा।" 16 यह देख कर
अक़्वाम शर्मिन्दा हो जाएँगी और अपनी तमाम ताक़त
के बावुजूद कुछ नहीं कर पाएँगी। वह घबरा कर मुँह
पर हाथ रखेंगी, उन के कान बहरे हो जाएंगे। 17 साँप
और रेंगने वाले जानवरों की तरह वह ख़ाक चाटेंगी
और थरथराते हुए अपने क़िलों से निकल आएँगी ।
वह डर के मारे रब हमारे ख़ुदा की तरफ़ रुजू करेंगी,
हाँ तुझ से दहशत खाएँगी।
18 ऐ रब, तुझ जैसा ख़ुदा कहाँ है? तू ही गुनाहों
को मुआफ़ कर देता, तू ही अपनी मीरास के बचे
हुओं के जराइम से दरगुज़र करता है। तू हमेशा तक
ग़ुस्से नहीं रहता बल्कि शफ़क़त पसन्द करता है।
19 तू दुबारा हम पर रहम करेगा, दुबारा हमारे गुनाहों
को पाँओ तले कुचल कर समुन्दर की गहराइयों में
फैंक देगा। 20 तू याक़ूब और इब्राहीम की औलाद पर
अपनी वफ़ा और शफ़क़त दिखा कर वह वादा पूरा
करेगा जो तू ने क़सम खा कर क़दीम ज़माने में हमारे
बापदादा से किया था।

नाहूम

अल्लाह के ग़ज़ब का इज़हार

1 1 ज़ैल में नीनवा के बारे में वह कलाम
क़लमबन्द है जो अल्लाह ने रोया में नाहूम
इल्क़ूशी को दिखाया।
2 रब ग़ैरतमन्द और इन्तिक़ाम लेने वाला ख़ुदा है।
इन्तिक़ाम लेते वक़्त रब अपना पूरा ग़ुस्सा उतारता
है। रब अपने मुख़ालिफ़ों से बदला लेता और अपने
दुश्मनों से नाराज़ रहता है।
3 रब तहम्मुल से भरपूर है, और उस की क़ुदरत
अज़ीम है। वह क़ुसूरवार को कभी भी सज़ा दिए बग़ैर
नहीं छोड़ता।

वह आँधी और तूफ़ान से घिरा हुआ चलता है, और
बादल उस के पाँओ तले की गर्द होते हैं।
4 वह समुन्दर को डाँटता तो वह सूख जाता, उस के
हुक्म पर तमाम दरया ख़ुश्क हो जाते हैं। तब बसन
और कर्मिल की शादाब हरियाली मुरझा जाती और
लुबनान के फूल कुमला जाते हैं।

5 उस के सामने पहाड़ लरज़ उठते, पहाड़ियाँ
पिघल जाती हैं। उस के हुज़ूर पूरी ज़मीन अपने
बाशिन्दों समेत लरज़ उठती है।
6 कौन उस की नाराज़ी और उस के शदीद क़हर
का सामना कर सकता है? उस का ग़ज़ब आग की
तरह भड़क कर ज़मीन पर नाज़िल होता है, उस के
आने पर पत्थर फट कर टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं।

7 रब मेहरबान है। मुसीबत के दिन वह मज़बूत
क़िला है, और जो उस में पनाह लेते हैं उन्हें वह
जानता है।
8 लेकिन अपने दुश्मनों पर वह सैलाब लाएगा जो
उन के मक़ाम को ग़र्क़ करेगा। जहाँ भी दुश्मन भाग
जाए वहाँ उस पर तारीकी छा जाने देगा।

9 रब के ख़िलाफ़ मन्सूबा बांधने का क्या फ़ाइदा?
वह तो तुम्हें एक दम तबाह कर देगा, दूसरी बार तुम
पर आफ़त लाने की ज़रूरत ही नहीं होगी।
10 क्यूँकि गो दुश्मन घनी और ख़ारदार झाड़ियों
और नशे में धुत शराबी की मानिन्द हैं, लेकिन वह
जल्द ही ख़ुश्क भूसे की तरह भस्म हो जाएंगे।
11 ऐ नीनवा, तुझ से वह निकल आया जिस ने रब
के ख़िलाफ़ बुरे मन्सूबे बांधे, जिस ने शैतानी मश्वरे
दिए।
12 लेकिन अपनी क़ौम से रब फ़रमाता है, "गो
दुश्मन ताक़तवर और बेशुमार क्यूँ न हों तो भी उन्हें
मिटाया जाएगा और वह ग़ाइब हो जाएंगे। बेशक मैं
ने तुझे पस्त कर दिया, लेकिन आइन्दा ऐसा नहीं
करूँगा। 13 अब मैं वह जूआ तोड़ डालूँगा जो उन्हों
ने तेरी गर्दन पर रख दिया था, मैं तेरी ज़न्जीरों को
फाड़ डालूँगा।"
14 लेकिन नीनवा से रब फ़रमाता है, "आइन्दा तेरी
कोई औलाद क़ाइम नहीं रहेगी जो तेरा नाम रखे।
जितने भी बुत और मुजस्समे तेरे मन्दिर में पड़े हैं
उन सब को मैं नेस्त-ओ-नाबूद कर दूँगा। मैं तेरी क़ब्र
तय्यार कर रहा हूँ, क्यूँकि तू कुछ भी नहीं है।"

नीनवा की शिकस्त

15 वह देखो, पहाड़ों पर उस के क़दम चल रहे
हैं जो अम्न-ओ-अमान की ख़ुशख़बरी सुनाता है। ऐ
यहूदाह, अब अपनी ईदें मना, अपनी मन्नतें पूरी कर!
क्यूँकि आइन्दा शैतानी आदमी तुझ में नहीं घुसेगा,
वह सरासर मिट गया है।

2 1 ऐ नीनवा, सब कुछ मुन्तशिर करने वाला तुझ
पर हम्ला करने आ रहा है, चुनाँचे क़िले की
पहरादारी कर! रास्ते पर ध्यान दे, कमरबस्ता हो जा,
जहाँ तक मुमकिन है दिफ़ा की तय्यारियाँ कर!
2 गो याक़ूब तबाह और उस के अंगूरों के बाग़
नाबूद हो गए हैं, लेकिन अब रब इस्राईल की शान-
ओ-शौकत बहाल करेगा।
3 वह देखो, नीनवा पर हम्ला करने वाले सूरमाओं
की ढालें सुर्ख़ हैं, फ़ौजी क़िर्मिज़ी रंग की वर्दियाँ पहने
हुए हैं। दुश्मन ने अपने रथों को तय्यार कर रखा है,
और वह भड़कती मशअलों की तरह चमक रहे हैं।
साथ साथ सिपाही अपने नेज़े लहरा रहे हैं। 4 अब रथ
गलियों में से अंधा-धुन्द गुज़र रहे हैं। चौकों में वह
इधर उधर भाग रहे हैं। यूँ लग रहा है कि भड़कती
मशअलें या बादल की बिजलियाँ इधर उधर चमक
रही हैं।
5 हुक्मरान अपने चीदा अफ़सरों को बुला लेता है,
और वह ठोकर खा खा कर आगे बढ़ते हैं। वह दौड़
कर फ़सील के पास पहुँच जाते, जल्दी से हिफ़ाज़ती
ढाल खड़ी करते हैं। 6 फिर दरया के दरवाज़े खुल
जाते और शाही महल लड़खड़ाने लगता है। 7 तब
दुश्मन मलिका के कपड़े उतार कर उसे ले जाते हैं।
उस की लौंडियाँ छाती पीट पीट कर कबूतरों की
तरह ग़ूँ ग़ूँ करती हैं। 8 नीनवा बड़ी देर से अच्छे-
ख़ासे तालाब की मानिन्द था, लेकिन अब लोग उस
से भाग रहे हैं। लोगों को कहा जाता है, "रुक जाओ,
रुको तो सही!" लेकिन कोई नहीं रुकता। सब सर
पर पाँओ रख कर शहर से भाग रहे हैं, और कोई नहीं
मुड़ता।
9 आओ, नीनवा की चाँदी लूट लो, उस का सोना
छीन लो! क्यूँकि ज़ख़ीरे की इन्तिहा नहीं, उस के
ख़ज़ानों की दौलत ला-महदूद है। 10 लूटने वाले कुछ
नहीं छोड़ते। जल्द ही शहर ख़ाली और वीरान-ओ-
सुन्सान हो जाता है। हर दिल हौसला हार जाता, हर
घुटना काँप उठता, हर कमर थरथराने लगती और
हर चिहरे का रंग माँद पड़ जाता है।
11 अब नीनवा बेटी की क्या हैसियत रही? पहले
वह शेरबबर की मान्द थी, ऐसी जगह जहाँ जवान
शेरों को गोश्त खिलाया जाता, जहाँ शेर और शेरनी
अपने बच्चों समेत टहलते थे। कोई उन्हें डरा कर भगा
नहीं सकता था। 12 उस वक़्त शेर अपने बच्चों के लिए
बहुत कुछ फाड़ लेता और अपनी शेरनियों के लिए
भी गला घूँट कर मार डालता था। उस की मान्दें और
छुपने की जगहें फाड़े हुए शिकार से भरी रहती थीं।
13 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "ऐ नीनवा, अब
मैं तुझ से निपट लेता हूँ। मैं तेरे रथों को नज़र-ए-
आतिश कर दूँगा, और तेरे जवान शेर तलवार की
ज़द में आ कर मर जाएंगे। मैं होने दूँगा कि आइन्दा
तुझे ज़मीन पर कुछ न मिले जिसे फाड़ कर खा सके।
आइन्दा तेरे क़ासिदों की आवाज़ कभी सुनाई नहीं
देगी।"

नीनवा की रुस्वाई

3 1 उस क़ातिल शहर पर अफ़सोस जो झूट और
लूटे हुए माल से भरा हुआ है। वह लूट-मार से
कभी बाज़ नहीं आता।
2 सुनो! चाबुक की आवाज़, चलते हुए रथों का
शोर! घोड़े सरपट दौड़ रहे, रथ भाग भाग कर उछल
रहे हैं। 3 घुड़सवार आगे बढ़ रहे, शोलाज़न तलवारें
और चमकते नेज़े नज़र आ रहे हैं। हर तरफ़ मक़्तूल
ही मक़्तूल, बेशुमार लाशों के ढेर पड़े हैं। इतनी हैं
कि लोग ठोकर खा खा कर उन पर से गुज़रते हैं।
4 यह होगा नीनवा का अन्जाम, उस दिलफ़रेब कस्बी
और जादूगरनी का जिस ने अपनी जादूगरी और
इस्मतफ़रोशी से अक़्वाम और उम्मतों को ग़ुलामी
में बेच डाला।
5 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "ऐ नीनवा बेटी,
अब मैं तुझ से निपट लेता हूँ। मैं तेरा लिबास तेरे
सर के ऊपर उठाऊँगा कि तेरा नंगापन अक़्वाम
को नज़र आए और तेरा मुँह दीगर ममालिक के
सामने काला हो जाए। 6 मैं तुझ पर कूड़ा-कर्कट फैंक
कर तेरी तह्क़ीर करूँगा। तू दूसरों के लिए तमाशा

बन जाएगी। 7 तब सब तुझे देख कर भाग जाएंगे।
वह कहेंगे, ‘नीनवा तबाह हो गई है!’ अब उस पर
अफ़सोस करने वाला कौन रहा? अब मुझे कहाँ से
लोग मिलेंगे जो तुझे तसल्ली दें?”

8 क्या तू थीबस [q]शहर से बेहतर है, जो दरया-
ए-नील पर वाक़े था? वह तो पानी से घिरा हुआ
था, और पानी ही उसे हम्लों से महफ़ूज़ रखता था।
9 एथोपिया और मिस्र के फ़ौजी उस के लिए ला-
महदूद ताक़त का बाइस थे, फ़ूत और लिबिया उस के
इत्तिहादी थे। 10 तो भी वह क़ैदी बन कर जिलावतन
हुआ। हर गली के कोने में उस के शीरख़्वार बच्चों को
ज़मीन पर पटख़ दिया गया। उस के शुरफ़ा क़ुरआ-
अन्दाज़ी के ज़रीए तक़्सीम हुए, उस के तमाम बुज़ुर्ग
ज़न्जीरों में जकड़े गए।

11 ऐ नीनवा बेटी, तू भी नशे में धुत हो जाएगी।
तू भी हवासबाख़्ता हो कर दुश्मन से पनाह लेने की
कोशिश करेगी। 12 तेरे तमाम क़िले पके फल से लदे
हुए अन्जीर के दरख़्त हैं। जब उन्हें हिलाया जाए तो
अन्जीर फ़ौरन खाने वाले के मुँह में गिर जाते हैं।
13 लो, तेरे तमाम दस्ते औरतें बन गए हैं। तेरे मुल्क
के दरवाज़े दुश्मन के लिए पूरे तौर पर खोले गए, तेरे
कुंडे नज़र-ए-आतिश हो गए हैं।

14 ख़ूब पानी जमा कर ताकि मुहासरे के दौरान
काफ़ी हो। अपनी क़िलाबन्दी मज़ीद मज़बूत कर!
गारे को पाँओ से लताड़ लताड़ कर ईंटें बना ले!
15 ताहम आग तुझे भस्म करेगी, तलवार तुझे मार
डालेगी, हाँ वह तुझे टिड्डियों की तरह खा जाएगी।
बचने का कोई इम्कान नहीं होगा, ख़्वाह तू टिड्डियों
की तरह बेशुमार क्यूँ न हो जाए। 16 बेशक तेरे ताजिर
सितारों जितने लातादाद हो गए हैं, लेकिन अचानक
वह टिड्डियों के बच्चों की तरह अपनी केंचली को
उतार लेंगे और उड़ कर ग़ाइब हो जाएंगे। 17 तेरे
दरबारी टिड्डियों जैसे और तेरे अफ़सर टिड्डी दलों की
मानिन्द हैं जो सर्दियों के मौसम में दीवारों के साथ
चिपक जाती लेकिन धूप निकलते ही उड़ कर ओझल
हो जाती हैं। किसी को भी पता नहीं कि वह कहाँ
चली गई हैं।

18 ऐ असूर के बादशाह, तेरे चरवाहे गहरी नींद सो
रहे, तेरे शुरफ़ा आराम कर रहे हैं। तेरी क़ौम पहाड़ों
पर मुन्तशिर हो गई है, और कोई नहीं जो उन्हें दुबारा
जमा करे। 19 तेरी चोट भर ही नहीं सकती, तेरा ज़ख़्म
लाइलाज है। जिसे भी तेरे अन्जाम की ख़बर मिले
वह ताली बजायगा। क्यूँकि सब को तेरा मुसलसल
ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद बर्दाश्त करना पड़ा।

---

[q]Thebes। इब्रानी मतन में इस का मुतरादिफ़ नो-आमून मुस्तामल है।

हबक़्क़ूक़

नबी की शिकायत : हर तरफ़ नाइन्साफ़ी

1 1 ज़ैल में वह कलाम क़लमबन्द है जो हबक़्क़ूक़
नबी को रोया देख कर मिला।
2 ऐ रब, मैं मज़ीद कब तक मदद के लिए पुकारूँ?
अब तक तू ने मेरी नहीं सुनी। मैं मज़ीद कब तक
चीख़ें मार मार कर कहूँ कि फ़साद हो रहा है? अब
तक तू ने हमें छुटकारा नहीं दिया। 3 तू क्यूँ होने
देता है कि मुझे इतनी नाइन्साफ़ी देखनी पड़े? लोगों
को इतना नुक़्सान पहुँचाया जा रहा है, लेकिन तू
ख़ामोशी से सब कुछ देखता रहता है। जहाँ भी मैं
नज़र डालूँ, वहाँ ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद ही नज़र आता है,
मुक़द्दमाबाज़ी और झगड़े सर उठाते हैं। 4 नतीजे में
शरीअत बेअसर हो गई है, और बा-इन्साफ़ फ़ैसले
कभी जारी नहीं होते। बेदीनों ने रास्तबाज़ों को घेर
लिया है, इस लिए अदालत में बेहूदा फ़ैसले किए
जाते हैं।

अल्लाह का जवाब

5 "दीगर अक़्वाम पर निगाह डालो, हाँ उन पर
ध्यान दो तो हक्का-बक्का रह जाओगे। क्यूँकि मैं तुम्हारे
जीते जी एक ऐसा काम करूँगा जिस की जब ख़बर
सुनोगे तो तुम्हें यक़ीन नहीं आएगा। 6 मैं बाबलियों
को खड़ा करूँगा। यह ज़ालिम और तल्ख़रू क़ौम
पूरी दुनिया को उबूर करके दूसरे ममालिक पर क़ब्ज़ा
करेगी। 7 लोग उस से सख़्त दहशत खाएँगे, हर तरफ़
उसी के क़वानीन और अज़मत माननी पड़ेगी। 8 उन
के घोड़े चीतों से तेज़ हैं, और शाम के वक़्त शिकार
करने वाले भेड़ीए भी उन जैसे फुरतीले नहीं होते। वह
सरपट दौड़ कर दूर दूर से आते हैं। जिस तरह उक़ाब
लाश पर झपट्टा मारता है उसी तरह वह अपने शिकार
पर हम्ला करते हैं। 9 सब इसी मक़्सद से आते हैं कि
ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद करें। जहाँ भी जाएँ वहाँ आगे बढ़ते
जाते हैं। रेत जैसे बेशुमार क़ैदी उन के हाथ में जमा
होते हैं। 10 वह दीगर बादशाहों का मज़ाक़ उड़ाते हैं,
और दूसरों के बुज़ुर्ग उन के तमस्ख़ुर का निशाना बन
जाते हैं। हर क़िले को देख कर वह हंस उठते हैं।
जल्द ही वह उन की दीवारों के साथ मिट्टी के ढेर
लगा कर उन पर क़ब्ज़ा करते हैं। 11 फिर वह तेज़
हवा की तरह वहाँ से गुज़र कर आगे बढ़ जाते हैं।
लेकिन वह क़ुसूरवार ठहरेंगे, क्यूँकि उन की अपनी
ताक़त उन का ख़ुदा है।"

ऐ रब, तू क्यूँ ख़ामोश रहता है?

12 ऐ रब, क्या तू क़दीम ज़माने से ही मेरा ख़ुदा,
मेरा क़ुद्दूस नहीं है? हम नहीं मरेंगे। ऐ रब, तू ने उन्हें
सज़ा देने के लिए मुक़र्रर किया है। ऐ चटान, तेरी
मर्ज़ी है कि वह हमारी तर्बियत करें। 13 तेरी आँखें
बिलकुल पाक हैं, इस लिए तू बुरा काम बर्दाश्त
नहीं कर सकता, तू ख़ामोशी से ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद पर
नज़र नहीं डाल सकता। तो फिर तू इन बेवफ़ाओं
की हरकतों को किस तरह बर्दाश्त करता है? जब
बेदीन उसे हड़प कर लेता जो उस से कहीं ज़्यादा
रास्तबाज़ है तो तू ख़ामोश क्यूँ रहता है? 14 तू ने होने
दिया है कि इन्सान से मछलियों का सा सुलूक किया
जाए, कि उसे उन समुन्दरी जानवरों की तरह पकड़ा
जाए, जिन का कोई मालिक नहीं। 15 दुश्मन उन सब
को काँटे के ज़रीए पानी से निकाल लेता है, अपना
जाल डाल कर उन्हें पकड़ लेता है। जब उन का बड़ा
ढेर जमा हो जाता है तो वह ख़ुश हो कर शादियाना
बजाता है। 16 तब वह अपने जाल के सामने बख़ूर
जला कर उसे जानवर क़ुर्बान करता है। क्यूँकि उसी
के वसीले से वह ऐश-ओ-इश्रत की ज़िन्दगी गुज़ार

सकता है। 17 क्या वह मुसलसल अपना जाल डालता
और क़ौमों को बेरहमी से मौत के घाट उतारता रहे?

2 1 अब मैं पहरा देने के लिए अपनी बुर्जी पर चढ़
जाऊँगा, क़िले की ऊँची जगह पर खड़ा हो कर
चारों तरफ़ देखता रहूँगा। क्यूँकि मैं जानना चाहता
हूँ कि अल्लाह मुझे क्या कुछ बताएगा, कि वह मेरी
शिकायत का क्या जवाब देगा।

रब का जवाब

2 रब ने मुझे जवाब दिया, "जो कुछ तू ने रोया में
देखा है उसे तख़्तों पर यूँ लिख दे कि हर गुज़रने वाला
उसे रवानी से पढ़ सके। 3 क्यूँकि वह फ़ौरन पूरी
नहीं हो जाएगी बल्कि मुक़र्ररा वक़्त पर आख़िरकार
ज़ाहिर होगी, वह झूटी साबित नहीं होगी। गो देर भी
लगे तो भी सब्र कर। क्यूँकि आने वाला पहुँचेगा, वह
देर नहीं करेगा।

4 मग़ुरूर आदमी फूला हुआ है और अन्दर से सीधी
राह पर नहीं चलता। लेकिन रास्तबाज़ ईमान ही
से जीता रहेगा। 5 यक़ीनन मै एक बेवफ़ा साथी है।
मग़ुरूर शख़्स जीता नहीं रहेगा, गो वह अपने मुँह को
पाताल की तरह खुला रखता और उस की भूक मौत
की तरह कभी नहीं मिटती, वह तमाम अक़्वाम और
उम्मतें अपने पास जमा करता है।

बेदीनों का अन्जाम

6 लेकिन यह सब उस का मज़ाक़ उड़ा कर उसे
लान-तान करेंगी। वह कहेंगी, 'उस पर अफ़्सोस
जो दूसरों की चीज़ें छीन कर अपनी मिलकियत में
इज़ाफ़ा करता है, जो क़र्ज़दारों की ज़मानत पर क़ब्ज़ा
करने से दौलतमन्द हो गया है। यह कार-रवाई कब
तक जारी रहेगी?' 7 क्यूँकि अचानक ही ऐसे लोग
उठेंगे जो तुझे काटेंगे, ऐसे लोग जाग उठेंगे जिन के
सामने तू थरथराने लगेगा। तब तू ख़ुद उन का शिकार
बन जाएगा। 8 चूँकि तू ने दीगर मुतअद्दिद अक़्वाम
को लूट लिया है इस लिए अब बची हुई उम्मतें तुझे
ही लूट लेंगी। क्यूँकि तुझ से क़त्ल-ओ-ग़ारत सरज़द
हुई है, तू ने दीहात और शहर पर उन के बाशिन्दों
समेत शदीद ज़ुल्म किया है।

9 उस पर अफ़्सोस जो नाजाइज़ नफ़ा कमा कर
अपने घर पर आफ़त लाता है, हालाँकि वह आफ़त
से बचने के लिए अपना घोंसला बुलन्दियों पर बना
लेता है। 10 तेरे मन्सूबों से मुतअद्दिद क़ौमें तबाह हुई
हैं, लेकिन यह तेरे ही घराने के लिए शर्म का बाइस
बन गया है। इस गुनाह से तू अपने आप पर मौत की
सज़ा लाया है। 11 यक़ीनन दीवारों के पत्थर चीख़
कर इल्तिजा करेंगे और लकड़ी के शहतीर जवाब में
आह-ओ-ज़ारी करेंगे।

12 उस पर अफ़्सोस जो शहर को क़त्ल-ओ-ग़ारत
के ज़रीए तामीर करता, जो आबादी को नाइन्साफ़ी
की बुन्याद पर क़ाइम करता है। 13 रब्ब-उल-
अफ़्वाज ने मुक़र्रर किया है कि जो कुछ क़ौमों ने
बड़ी मेहनत-मशक़्क़त से हासिल किया उसे नज़र-
ए-आतिश होना है, जो कुछ पाने के लिए उम्मतें
थक जाती हैं वह बेकार ही है। 14 क्यूँकि जिस तरह
समुन्दर पानी से भरा हुआ है, उसी तरह दुनिया एक
दिन रब के जलाल के इर्फ़ान से भर जाएगी।

15 उस पर अफ़्सोस जो अपना प्याला ज़हरीली
शराब से भर कर उसे अपने पड़ोसियों को पिला देता
है ताकि उन्हें नशे में ला कर उन की बरहनगी से
लुत्फ़अन्दोज़ हो जाए। 16 लेकिन अब तेरी बारी भी
आ गई है! तेरी शान-ओ-शौकत ख़त्म हो जाएगी,
और तेरा मुँह काला हो जाएगा। अब ख़ुद पी ले! नशे
में आ कर अपने कपड़े उतार ले। ग़ज़ब का जो प्याला
रब के दहने हाथ में है वह तेरे पास भी पहुँचेगा। तब
तेरी इतनी रुस्वाई हो जाएगी कि तेरी शान का नाम-
ओ-निशान तक नहीं रहेगा।

17 जो ज़ुल्म तू ने लुबनान पर किया वह तुझ पर ही
ग़ालिब आएगा, जिन जानवरों को तू ने वहाँ तबाह
किया उन की दहशत तुझ ही पर तारी हो जाएगी।
क्यूँकि तुझ से क़त्ल-ओ-ग़ारत सरज़द हुई है, तू ने
दीहात और शहरों पर उन के बाशिन्दों समेत शदीद
ज़ुल्म किया है।

18 बुत का क्या फ़ाइदा? आख़िर किसी माहिर
कारीगर ने उसे तराशा या ढाल लिया है, और वह झूट
ही झूट की हिदायात देता है। कारीगर अपने हाथों के
बुत पर भरोसा रखता है, हालाँकि वह बोल भी नहीं
सकता!
19 उस पर अफ़्सोस जो लकड़ी से कहता है, 'जाग
उठ!' और ख़ामोश पत्थर से, 'खड़ा हो जा!' क्या यह
चीज़ें हिदायत दे सकती हैं? हरगिज़ नहीं! उन में जान
ही नहीं, ख़्वाह उन पर सोना या चाँदी क्यूँ न चढ़ाई
गई हो। 20 लेकिन रब अपने मुक़द्दस घर में मौजूद है।
उस के हुज़ूर पूरी दुनिया ख़ामोश रहे।"

हबक़्क़ूक़ की दुआ

3 1 ज़ैल में हबक़्क़ूक़ नबी की दुआ है। इसे
'शिगियूनोत' के तर्ज़ पर गाना है।
2 ऐ रब, मैं ने तेरा पैग़ाम सुना है। ऐ रब, तेरा काम
देख कर मैं डर गया हूँ। हमारे जीते जी उसे वुजूद में
ला, जल्द ही उसे हम पर ज़ाहिर कर। जब तुझे हम
पर ग़ुस्सा आए तो अपना रहम याद कर।

3 अल्लाह तेमान से आ रहा है, क़ुद्दूस फ़ारान के
पहाड़ी इलाक़े से पहुँच रहा है। (सिलाह) [r]उस का
जलाल पूरे आसमान पर छा गया है, ज़मीन उस की
हम्द-ओ-सना से भरी हुई है।
4 तब उस की शान सूरज की तरह चमकती, उस
के हाथ से तेज़ किरनें निकलती हैं जिन में उस की
क़ुदरत पिनहाँ होती है।
5 मोहलिक बीमारी उस के आगे आगे फैलती,
वबाई मर्ज़ उस के नक़्श-ए-क़दम पर चलता है।
6 जहाँ भी क़दम उठाए, वहाँ ज़मीन हिल जाती,
जहाँ भी नज़र डाले वहाँ अक़्वाम लरज़ उठती हैं।
तब क़दीम पहाड़ फट जाते, पुरानी पहाड़ियाँ दबक
जाती हैं। उस की राहें अज़ल से ऐसी ही रही हैं।

7 मैं ने कूशान के ख़ैमों को मुसीबत में देखा,
मिदियान के तम्बू काँप रहे थे।

8 ऐ रब, क्या तू दरयाओं और नदियों से ग़ुस्से था?
क्या तेरा ग़ज़ब समुन्दर पर नाज़िल हुआ जब तू अपने
घोड़ों और फ़त्हमन्द रथों पर सवार हो कर निकला?
9 तू ने अपनी कमान को निकाल लिया, तेरी लानतें
तीरों की तरह बरसने लगी हैं। (सिलाह) तू ज़मीन को
फाड़ कर उन जगहों पर दरया बहने देता है।
10 तुझे देख कर पहाड़ काँप उठते, मूसलाधार
बारिश बरसने लगती और पानी की गहराइयाँ
गरजती हुई अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठाती
हैं।
11 सूरज और चाँद अपनी बुलन्द रिहाइशगाह में
रुक जाते हैं। तेरे चमकते तीरों के सामने वह माँद पड़
जाते, तेरे नेज़ों की झिलमिलाती रौशनी में ओझल हो
जाते हैं।

12 तू ग़ुस्से में दुनिया में से गुज़रता, तैश से दीगर
अक़्वाम को मार कर गाह लेता है।
13 तू अपनी क़ौम को रिहा करने के लिए निकला,
अपने मसह किए हुए ख़ादिम की मदद करने आया
है। तू ने बेदीन का घर छत से ले कर बुन्याद तक
गिरा दिया, अब कुछ नज़र नहीं आता। (सिलाह)
14 उस के अपने नेज़ों से तू ने उस के सर को छेद
डाला। पहले उस के दस्ते कितनी ख़ुशी से हम पर
टूट पड़े ताकि हमें मुन्तशिर करके मुसीबतज़दा को
पोशीदगी में खा सकें! लेकिन अब वह ख़ुद भूसे की
तरह हवा में उड़ गए हैं।
15 तू ने अपने घोड़ों से समुन्दर को यूँ कुचल दिया
कि गहरा पानी झाग निकालने लगा।

---

[r]सिलाह ग़ालिबन गाने बजाने के बारे में कोई हिदायत है। मुफ़स्सिरीन में इस के मतलब के बारे में इत्तिफ़ाक़-ए-राय नहीं होती।

अल्लाह मुझे तक़वियत देता है

16 यह सब कुछ सुन कर मेरा जिस्म लरज़ उठा।
इतना शोर था कि मेरे दाँत बजने लगे, [s]मेरी हड्डियाँ
सड़ने लगीं, मेरे घुटने काँप उठे। अब मैं उस दिन के
इन्तिज़ार में रहूँगा जब आफ़त उस क़ौम पर आएगी
जो हम पर हम्ला कर रही है।

17 अभी तक कोंपलें अन्जीर के दरख़्त पर नज़र
नहीं आतीं, अंगूर की बेलें बेफल हैं। अभी तक ज़ैतून
के दरख़्त फल से महरूम हैं और खेतों में फ़सलें नहीं
उगतीं। बाड़ों में न भेड़-बकरियाँ, न मवेशी हैं।
18 ताहम मैं रब की ख़ुशी मनाऊँगा, अपने
नजातदहिन्दा अल्लाह के बाइस शादियाना बजाऊँगा।
19 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ मेरी क़ुव्वत है। वही मुझे
हिरनों के से तेज़रौ पाँओ मुहय्या करता है, वही मुझे
बुलन्दियों पर से गुज़रने देता है।

दर्ज-ए-बाला गीत मौसीक़ी के राहनुमा के लिए है।
इसे मेरे तर्ज़ के तारदार साज़ों के साथ गाना है।

---

[s]लफ़्ज़ी तर्जुमा : होंट हिलने लगे।

सफ़नियाह

1 1 ज़ैल में रब का वह कलाम क़लमबन्द है जो
सफ़नियाह बिन कूशी बिन जिदलियाह बिन
अमरियाह बिन हिज़क़ियाह पर नाज़िल हुआ। उस
वक़्त यूसियाह बिन अमून यहूदाह का बादशाह था।
2 रब फ़रमाता है, "मैं रू-ए-ज़मीन पर से सब
कुछ मिटा डालूँगा, 3 इन्सान-ओ-हैवान, परिन्दों,
मछलियों, ठोकर खिलाने वाली चीज़ों और बेदीनों
को। तब ज़मीन पर इन्सान का नाम-ओ-निशान तक
नहीं रहेगा।" यह रब का फ़रमान है।
4 "यहूदाह और यरूशलम के तमाम बाशिन्दों पर
मेरी सज़ा नाज़िल होगी। बाल देवता की जितनी भी
बुतपरस्ती अब तक रह गई है उसे नेस्त-ओ-नाबूद
कर दूँगा। न बुतपरस्त पुजारियों का नाम-ओ-निशान
रहेगा, 5 न उन का जो छतों पर सूरज, चाँद बल्कि
आसमान के पूरे लश्कर को सिज्दा करते हैं, जो रब
की क़सम खाने के साथ साथ मिल्कूम देवता की भी
क़सम खाते हैं। 6 जो रब की पैरवी छोड़ कर न उसे
तलाश करते, न उस की मर्ज़ी दरयाफ़्त करते हैं वह
सब के सब तबाह हो जाएंगे।
7 अब रब क़ादिर-ए-मुतलक़ के सामने ख़ामोश हो
जाओ, क्यूँकि रब का दिन क़रीब ही है। रब ने इस के
लिए ज़बह की क़ुर्बानी तय्यार करके अपने मेहमानों
को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर दिया है।" 8 रब फ़रमाता
है, "जिस दिन मैं यह क़ुर्बानी चढ़ाऊँगा उस दिन
बुज़ुर्गों, शहज़ादों और अजनबी लिबास पहनने वालों
को सज़ा दूँगा। 9 उस दिन मैं उन पर सज़ा नाज़िल
करूँगा जो तवह्हुमपरस्ती के बाइस दहलीज़ पर
क़दम रखने से गुरेज़ करते हैं, जो अपने मालिक के
घर को ज़ुल्म और फ़रेब से भर देते हैं।"
10 रब फ़रमाता है, "उस दिन मछली के दरवाज़े
से ज़ोर की चीख़ें, नए शहर से आह-ओ-ज़ारी और
पहाड़ियों से कड़कती आवाज़ें सुनाई देंगी। 11 ऐ
मक्तीस मुहल्ले के बाशिन्दो, वावैला करो, क्यूँकि
तुम्हारे तमाम ताजिर हलाक हो जाएंगे। वहाँ के जितने
भी सौदागर चाँदी तोलते हैं वह नेस्त-ओ-नाबूद हो
जाएंगे।
12 तब मैं चराग़ ले कर यरूशलम के कोने कोने में
उन का खोज लगाऊँगा जो इस वक़्त बड़े आराम से
बैठे हैं, ख़्वाह हालात कितने बुरे क्यूँ न हों। मैं उन
से निपट लूँगा जो सोचते हैं, 'रब कुछ नहीं करेगा, न
अच्छा काम और न बुरा।' 13 ऐसे लोगों का माल लूट
लिया जाएगा, उन के घर मिस्मार हो जाएंगे। वह नए
मकान तामीर तो करेंगे लेकिन उन में रहेंगे नहीं, अंगूर
के बाग़ लगाएँगे लेकिन उन की मै पिएँगे नहीं।"
14 रब का अज़ीम दिन क़रीब ही है, वह बड़ी तेज़ी
से हम पर नाज़िल हो रहा है। सुनो! वह दिन तल्ख़
होगा। हालात ऐसे होंगे कि बहादुर फ़ौजी भी चीख़
कर मदद के लिए पुकारेंगे। 15 रब का पूरा ग़ज़ब
नाज़िल होगा, और लोग परेशानी और मुसीबत में
मुब्तला रहेंगे। हर तरफ़ तबाही-ओ-बर्बादी, हर तरफ़
अंधेरा ही अंधेरा, हर तरफ़ घने बादल छाए रहेंगे।
16 उस दिन दुश्मन नरसिंगा फूँक कर और जंग के
नारे लगा कर क़िलाबन्द शहरों और बुर्जों पर टूट
पड़ेगा। 17 रब फ़रमाता है, "चूँकि लोगों ने मेरा गुनाह
किया है इस लिए मैं उन को बड़ी मुसीबत में उलझा
दूँगा। वह अंधों की तरह टटोल टटोल कर इधर उधर
फिरेंगे, उन का ख़ून ख़ाक की तरह गिराया जाएगा
और उन की नाशें गोबर की तरह ज़मीन पर फैंकी
जाएँगी।" 18 जब रब का ग़ज़ब नाज़िल होगा तो न
उन का सोना, न चाँदी उन्हें बचा सकेगी। उस की
ग़ैरत पूरे मुल्क को आग की तरह भस्म कर देगी।
वह मुल्क के तमाम बाशिन्दों को हलाक करेगा, हाँ
उन का अन्जाम हौलनाक होगा।

होश में आओ!

2 1 ऐ बेहया क़ौम, जमा हो कर हाज़िरी के लिए
खड़ी हो जा, 2 इस से पहले कि मुक़र्ररा दिन आ
कर तुझे भूसे की तरह उड़ा ले जाए। ऐसा न हो कि
तुम रब के सख़्त ग़ुस्से का निशाना बन जाओ, कि
रब का ग़ज़बनाक दिन तुम पर नाज़िल हो जाए।
3 ऐ मुल्क के तमाम फ़रोतनो, ऐ उस के अह्काम पर
अमल करने वालो, रब को तलाश करो! रास्तबाज़ी
के तालिब हो, हलीमी ढूँडो। शायद तुम उस दिन रब
के ग़ज़ब से बच जाओ। [t]

इस्राईल के दुश्मनों का अन्जाम

4 ग़ज़्ज़ा को छोड़ दिया जाएगा, अस्क़लून वीरान-
ओ-सुन्सान हो जाएगा। दोपहर के वक़्त ही अश्दूद
के बाशिन्दों को निकाला जाएगा, अक्रून को जड़ से
उखाड़ा जाएगा। 5 क्रेते से आई हुई क़ौम पर अफ़्सोस
जो साहिली इलाक़े में रहती है। क्यूँकि रब तुम्हारे
बारे में फ़रमाता है, "ऐ फ़िलिस्तियों की सरज़मीन,
ऐ मुल्क-ए-कनआन, मैं तुझे तबाह करूँगा, एक भी
बाक़ी नहीं रहेगा।" 6 तब यह साहिली इलाक़ा चराने
के लिए इस्तेमाल होगा, और चरवाहे उस में अपनी
भेड़-बकरियों के लिए बाड़े बना लेंगे। 7 मुल्क यहूदाह
के घराने के बचे हुओं के क़ब्ज़े में आएगा, और वही
वहाँ चरेंगे, वही शाम के वक़्त अस्क़लून के घरों में
आराम करेंगे। क्यूँकि रब उन का ख़ुदा उन की देख-
भाल करेगा, वही उन्हें बहाल करेगा।
8 "मैं ने मोआबियों की लान-तान और अम्मोनियों
की इहानत पर ग़ौर किया है। उन्हों ने मेरी क़ौम की
रुस्वाई और उस के मुल्क के ख़िलाफ़ बड़ी बड़ी बातें
की हैं।" 9 इस लिए रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है, "मेरी हयात की क़सम,
मोआब और अम्मोन के इलाक़े सदूम और अमूरा की
मानिन्द बन जाएंगे। उन में ख़ुदरौ पौदे और नमक के
गढ़े ही पाए जाएंगे, और वह अबद तक वीरान-ओ-
सुन्सान रहेंगे। तब मेरी क़ौम का बचा हुआ हिस्सा
उन्हें लूट कर उन की ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लेगा।"
10 यही उन के तकब्बुर का अज्र होगा। क्यूँकि उन्हों
ने रब्ब-उल-अफ़्वाज की क़ौम को लान-तान करके
क़ौम के ख़िलाफ़ बड़ी बड़ी बातें की हैं। 11 जब रब
मुल्क के तमाम देवताओं को तबाह करेगा तो उन
के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। तमाम साहिली इलाक़ों की
अक़्वाम उस के सामने झुक जाएँगी, हर एक अपने
अपने मक़ाम पर उसे सिज्दा करेगा।
12 रब फ़रमाता है, "ऐ एथोपिया के बाशिन्दो, मेरी
तलवार तुम्हें भी मार डालेगी।"
13 वह अपना हाथ शिमाल की तरफ़ भी बढ़ा कर
असूर को तबाह करेगा। नीनवा वीरान-ओ-सुन्सान
हो कर रेगिस्तान जैसा ख़ुश्क हो जाएगा। 14 शहर
के बीच में रेवड़ और दीगर कई क़िस्म के जानवर
आराम करेंगे। दश्ती उल्लू और ख़ारपुश्त उस के टूटे-
फूटे सतूनों में बसेरा करेंगे, और जंगली जानवरों की
चीख़ें खिड़कियों में से गूँजेंगी। घरों की दहलीज़ें मल्बे
के ढेरों में छुपी रहेंगी जबकि उन की देवदार की
लकड़ी हर गुज़रने वाले को दिखाई देगी। 15 यही
उस ख़ुशबाश शहर का अन्जाम होगा जो पहले इतनी
हिफ़ाज़त से बसता था और जो दिल में कहता था, "मैं
ही हूँ, मेरे सिवा कोई और है ही नहीं।" आइन्दा वह
रेगिस्तान होगा, ऐसी जगह जहाँ जानवर ही आराम
करेंगे। हर मुसाफ़िर "तौबा तौबा" कह कर वहाँ से
गुज़रेगा।

यरूशलम का अन्जाम

3 1 उस सरकश, नापाक और ज़ालिम शहर पर
अफ़्सोस जो यरूशलम कहलाता है। 2 न वह
सुनता, न तर्बियत क़बूल करता है। न वह रब पर
भरोसा रखता, न अपने ख़ुदा के क़रीब आता है। 3 जो
बुज़ुर्ग उस के बीच में हैं वह दहाड़ते हुए शेरबबर हैं।

---

[t] लफ़्ज़ी तर्जुमा : छुपे रह सको।

उस के क़ाज़ी शाम के वक़्त भूके फिरने वाले भेड़ीए
हैं जो तुलू-ए-सुब्ह तक शिकार की एक हड्डी तक
नहीं छोड़ते। 4 उस के नबी गुस्ताख़ और ग़द्दार हैं।
उस के इमाम मक़्दिस की बेहुरमती और शरीअत से
ज़ियादती करते हैं।
5 लेकिन रब भी शहर के बीच में है, और वह रास्त
है, वह बेइन्साफ़ी नहीं करता। सुब्ह-ब-सुब्ह वह
अपना इन्साफ़ क़ाइम रखता है, हम कभी उस से
महरूम नहीं रहते। लेकिन बेदीन शर्म से वाक़िफ़ ही
नहीं होता।
6 रब फ़रमाता है, "मैं ने क़ौमों को नेस्त-ओ-नाबूद
कर दिया है। उन के क़िले तबाह, उन की गलियाँ
सुन्सान हैं। अब उन में से कोई नहीं गुज़रता। उन के
शहर इतने बर्बाद हैं कि कोई भी उन में नहीं रहता।
7 मैं बोला, 'बेशक यरूशलम मेरा ख़ौफ़ मान कर मेरी
तर्बियत क़बूल करेगा। क्यूँकि क्या ज़रूरत है कि उस
की रिहाइशगाह मिट जाए और मेरी तमाम सज़ाएँ
उस पर नाज़िल हो जाएँ।' लेकिन उस के बाशिन्दे
मज़ीद जोश के साथ अपनी बुरी हरकतों में लग गए।"
8 चुनाँचे रब फ़रमाता है, "अब मेरे इन्तिज़ार में रहो,
उस दिन के इन्तिज़ार में जब मैं शिकार करने के
लिए उठूँगा। [ध]क्यूँकि मैं ने अक़्वाम को जमा करने
का फ़ैसला किया है। मैं ममालिक को इकट्ठा करके
उन पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करूँगा। तब वह मेरे
सख़्त क़हर का निशाना बन जाएंगे, पूरी दुनिया मेरी
ग़ैरत की आग से भस्म हो जाएगी।

इस्राईल के लिए नई उम्मीद

9 लेकिन इस के बाद मैं अक़्वाम के होंटों को पाक-
साफ़ करूँगा ताकि वह आइन्दा रब का नाम ले कर
इबादत करें, कि वह शाना-ब-शाना खड़ी हो कर मेरी
ख़िदमत करें। 10 उस वक़्त मेरे परस्तार, मेरी मुन्तशिर
हुई क़ौम एथोपिया के दरयाओं के पार से भी आ कर
मुझे क़ुर्बानियाँ पेश करेगी।
11 ऐ सिय्यून बेटी, उस दिन तुझे शर्मसार नहीं होना
पड़ेगा हालाँकि तू ने मुझ से बेवफ़ा हो कर निहायत
बुरे काम किए हैं। क्यूँकि मैं तेरे दरमियान से तेरे
मुतकब्बिर शेख़ीबाज़ों को निकालूँगा। आइन्दा तू मेरे
मुक़द्दस पहाड़ पर मग़रूर नहीं होगी। 12 मैं तुझ में
सिर्फ़ क़ौम के ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों को छोड़ूँगा,
उन सब को जो रब के नाम में पनाह लेंगे। 13 इस्राईल
का यह बचा हुआ हिस्सा न ग़लत काम करेगा, न झूट
बोलेगा। उन की ज़बान पर फ़रेब नहीं होगा। तब वह
भेड़ों की तरह चरागाह में चरेंगे और आराम करेंगे।
उन्हें डराने वाला कोई नहीं होगा।"
14 ऐ सिय्यून बेटी, ख़ुशी के नारे लगा! ऐ इस्राईल,
ख़ुशी मना! ऐ यरूशलम बेटी, शादमान हो, पूरे दिल
से शादियाना बजा। 15 क्यूँकि रब ने तेरी सज़ा मिटा
कर तेरे दुश्मन को भगा दिया है। रब जो इस्राईल का
बादशाह है तेरे दरमियान ही है। आइन्दा तुझे किसी
नुक़्सान से डरने की ज़रूरत नहीं होगी।
16 उस दिन लोग यरूशलम से कहेंगे, "ऐ सिय्यून,
मत डरना! हौसला न हार, तेरे हाथ ढीले न हों।
17 रब तेरा ख़ुदा तेरे दरमियान है, तेरा पहलवान तुझे
नजात देगा। वह शादमान हो कर तेरी ख़ुशी मनाएगा।
उस की मुहब्बत तेरे क़ुसूर का ज़िक्र ही नहीं करेगी
बल्कि वह तुझ से इन्तिहाई ख़ुश हो कर शादियाना
बजायगा।"
18 रब फ़रमाता है, "मैं ईद को तर्क करने वालों
को तुझ से दूर कर दूँगा, क्यूँकि वह तेरी रुस्वाई
का बाइस थे। 19 मैं उन से भी निपट लूँगा जो तुझे
कुचल रहे हैं। जो लंगड़ाता है उसे मैं बचाऊँगा, जो
मुन्तशिर हैं उन्हें जमा करूँगा। जिस मुल्क में भी
उन की रुस्वाई हुई वहाँ मैं उन की तारीफ़ और
एहतिराम कराऊँगा। 20 उस वक़्त मैं तुम्हें जमा करके
वतन में वापस लाऊँगा। मैं तुम्हारे देखते देखते तुम्हें
बहाल करूँगा और दुनिया की तमाम अक़्वाम में

[ध]एक और मुमकिना तर्जुमा : गवाही देने के लिए।

तुम्हारी तारीफ़ और एहतिराम कराऊँगा।” यह रब
का फ़रमान है।

हज्जी

रब के घर को दुबारा बनाने का हुक्म

1 1 फ़ार्स के बादशाह दारा की हुकूमत के
दूसरे साल में हज्जी नबी पर रब का कलाम
नाज़िल हुआ। छटे महीने का पहला दिन [v]था।
कलाम में अल्लाह यहूदाह के गवर्नर ज़रुब्बाबल
बिन सियाल्तीएल और इमाम-ए-आज़म यशूअ बिन
यहूसदक़ से मुख़ातिब हुआ।
2–3 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "यह क़ौम
कहती है, 'अभी रब के घर को दुबारा तामीर करने
का वक़्त नहीं आया।' 4 क्या यह ठीक है कि तुम
ख़ुद लकड़ी से सजे हुए घरों में रहते हो जबकि मेरा
घर अब तक मल्बे का ढेर है?" 5 रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है, "अपने हाल पर ग़ौर करो। 6 तुम ने बहुत
बीज बोया लेकिन कम फ़सल काटी है। तुम खाना
तो खाते हो लेकिन भूके रहते हो, पानी तो पीते हो
लेकिन प्यासे रहते हो, कपड़े तो पहनते हो लेकिन
सर्दी लगती है। और जब कोई पैसे कमा कर उन्हें
अपने बटवे में डालता है तो उस में सूराख़ हैं।"
7 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "अपने हाल पर
ध्यान दे कर उस का सहीह नतीजा निकालो!
8 पहाड़ों पर चढ़ कर लकड़ी ले आओ और रब के
घर की तामीर शुरू करो। ऐसा ही रवय्या मुझे पसन्द
होगा, और इस तरह ही तुम मुझे जलाल दोगे।" यह
रब का फ़रमान है। 9 "देखो, तुम ने बहुत बरकत पाने
की तवक़्क़ो की, लेकिन क्या हुआ? कम ही हासिल
हुआ। और जो कुछ तुम अपने घर वापस लाए उसे
मैं ने हवा में उड़ा दिया। क्यूँ? मैं, रब्ब-उल-अफ़्वाज
तुम्हें इस की असल वजह बताता हूँ। मेरा घर अब
तक मल्बे का ढेर है जबकि तुम में से हर एक अपना
अपना घर मज़बूत करने के लिए भाग-दौड़ कर रहा
है। 10 इसी लिए आसमान ने तुम्हें ओस से और ज़मीन
ने तुम्हें फ़सलों से महरूम कर रखा है। 11 इसी लिए
मैं ने हुक्म दिया कि खेतों में और पहाड़ों पर काल
पड़े, कि मुल्क का अनाज, अंगूर, ज़ैतून बल्कि ज़मीन
की हर पैदावार उस की लपेट में आ जाए। इन्सान-
ओ-हैवान उस की ज़द में आ गए हैं, और तुम्हारी
मेहनत-मशक़्क़त ज़ाए हो रही है।"
12 तब ज़रुब्बाबल बिन सियाल्तीएल, इमाम-ए-
आज़म यशूअ बिन यहूसदक़ और क़ौम के पूरे बचे
हुए हिस्से ने रब अपने ख़ुदा की सुनी। जो भी बात
रब उन के ख़ुदा ने हज्जी नबी को सुनाने को कहा
था उसे उन्हों ने मान लिया। रब का ख़ौफ़ पूरी क़ौम
पर तारी हुआ। 13 तब रब ने अपने पैग़म्बर हज्जी की
मारिफ़त उन्हें यह पैग़ाम दिया, "रब फ़रमाता है, मैं
तुम्हारे साथ हूँ।"
14–15 यूँ रब ने यहूदाह के गवर्नर ज़रुब्बाबल बिन
सियाल्तीएल, इमाम-ए-आज़म यशूअ बिन यहूसदक़
और क़ौम के बचे हुए हिस्से को रब के घर की तामीर
करने की तहरीक दी। दारा बादशाह की हुकूमत के
दूसरे साल में वह आ कर रब्ब-उल-अफ़्वाज अपने
ख़ुदा के घर पर काम करने लगे। छटे महीने का 24वाँ
दिन [w]था।

रब का नया घर शानदार होगा

2 1 उसी साल के सातवें महीने के 21वें दिन
[x]हज्जी नबी पर रब का कलाम नाज़िल हुआ,
2 "यहूदाह के गवर्नर ज़रुब्बाबल बिन सियाल्तीएल,

---

[v]29 अगस्त।

[w]21 सितम्बर।

[x]17 अक्तूबर।

इमाम-ए-आज़म यशूअ बिन यहूसदक़ और क़ौम के
बचे हुए हिस्से को बता देना,
3 ‘तुम में से किस को याद है कि रब का घर तबाह
होने से पहले कितना शानदार था? जो इस वक़्त उस
की जगह तामीर हो रहा है वह तुम्हें कैसा लगता है?
रब के पहले घर की निस्बत यह कुछ भी नहीं लगता।
4 लेकिन रब फ़रमाता है कि ऐ ज़रुब्बाबल, हौसला
रख! ऐ इमाम-ए-आज़म यशूअ बिन यहूसदक़ हौसला
रख! ऐ मुल्क के तमाम बाशिन्दो, हौसला रख कर
अपना काम जारी रखो। क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। 5 जो अह्द मैं ने
मिस्र से निकलते वक़्त तुम से बांधा था वह क़ाइम
रहेगा। मेरा रूह तुम्हारे दरमियान ही रहेगा। डरो मत!
6 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि थोड़ी देर के
बाद मैं एक बार फिर आसमान-ओ-ज़मीन और बहर-
ओ-बर्र को हिला दूँगा। 7 तब तमाम अक़्वाम लरज़
उठेंगी, उन के बेशक़ीमत ख़ज़ाने इधर लाए जाएंगे,
और मैं इस घर को अपने जलाल से भर दूँगा। 8 रब्ब-
उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि चाँदी मेरी है और सोना
मेरा है। 9 नया घर पुराने घर से कहीं ज़्यादा शानदार
होगा, और मैं इस जगह को सलामती अता करूँगा।’
यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान है।”

मैं तुम्हें दुबारा बरकत दूँगा

10 दारा बादशाह की हुकूमत के दूसरे साल में हज्जी
पर रब का एक और कलाम नाज़िल हुआ। नवें महीने
का 24वाँ दिन [y]था।
11 “रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, ‘इमामों से
सवाल कर कि शरीअत ज़ैल के मुआमले के बारे
में क्या फ़रमाती है, 12 अगर कोई शख़्स मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस गोश्त अपनी झोली में डाल कर कहीं ले
जाए और रास्ते में झोली मै, ज़ैतून के तेल, रोटी या
मज़ीद किसी खाने वाली चीज़ से लग जाए तो क्या
खाने वाली यह चीज़ गोश्त से मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
हो जाती है’?”
हज्जी ने इमामों को यह सवाल पेश किया तो उन्हों
ने जवाब दिया, “नहीं।” 13 तब उस ने मज़ीद पूछा,
“अगर कोई किसी लाश को छूने से नापाक हो कर
इन खाने वाली चीज़ों में से कुछ छुए तो क्या खाने
वाली चीज़ उस से नापाक हो जाती है?”
इमामों ने जवाब दिया, “जी हाँ।”
14 फिर हज्जी ने कहा, “रब फ़रमाता है कि मेरी
नज़र में इस क़ौम का यही हाल है। जो कुछ भी यह
करते और क़ुर्बान करते हैं वह नापाक है।
15 लेकिन अब इस बात पर ध्यान दो कि आज से
हालात कैसे होंगे। रब के घर की नए सिरे से बुन्याद
रखने से पहले हालात कैसे थे? 16 जहाँ तुम फ़सल
की 20 बोरियों की उम्मीद रखते थे वहाँ सिर्फ़ 10
हासिल हुईं। जहाँ तुम अंगूरों को कुचल कर रस के
100 लिटर की तवक़्क़ो रखते थे वहाँ सिर्फ़ 40 लिटर
निकले।” 17 रब फ़रमाता है, “तेरी मेहनत-मशक़्क़त
ज़ाए हुई, क्यूँकि मैं ने पतरोग, फफूँदी और ओलों
से तुम्हारी पैदावार को नुक़्सान पहुँचाया। तो भी तुम
ने तौबा करके मेरी तरफ़ रुजू न किया। 18 लेकिन
अब तवज्जुह दो कि तुम्हारा हाल आज यानी नवें
महीने के 24वें दिन से कैसा होगा। इस दिन रब के
घर की बुन्याद रखी गई, इस लिए ग़ौर करो 19 कि
क्या आइन्दा भी गोदाम में जमाशुदा बीज ज़ाए हो
जाएगा, कि क्या आइन्दा भी अंगूर, अन्जीर, अनार
और ज़ैतून का फल न होने के बराबर होगा। क्यूँकि
आज से मैं तुम्हें बरकत दूँगा।”

ज़रुब्बाबल से अल्लाह का वादा

20 उसी दिन हज्जी पर रब का एक और कलाम
नाज़िल हुआ, 21 “यहूदाह के गवर्नर ज़रुब्बाबल को
बता दे कि मैं आसमान-ओ-ज़मीन को हिला दूँगा।
22 मैं शाही तख़्तों को उलट कर अजनबी सल्तनतों

[y] 18 दिसम्बर।

की ताक़त तबाह कर दूँगा। मैं रथों को उन के रथबानों समेत उलट दूँगा, और घोड़े अपने सवारों समेत गिर जाएंगे। हर एक अपने भाई की तलवार से मरेगा।” 23 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, “उस दिन मैं तुझे, अपने ख़ादिम ज़रुब्बाबल बिन सियाल्तीएल को ले कर मुहर की अंगूठी की मानिन्द बना दूँगा, क्यूँकि मैं ने तुझे चुन लिया है।” यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान है।

ज़करियाह

तौबा करो!

1 1 फ़ार्स के बादशाह दारा की हुकूमत के दूसरे
साल और आठवें महीने [z]में रब का कलाम नबी
ज़करियाह बिन बरकियाह बिन इद्दू पर नाज़िल हुआ,
2–3 "लोगों से कह कि रब तुम्हारे बापदादा से
निहायत ही नाराज़ था। अब रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है कि मेरे पास वापस आओ तो मैं भी तुम्हारे
पास वापस आऊँगा। 4 अपने बापदादा की मानिन्द
न हो जिन्हों ने न मेरी सुनी, न मेरी तरफ़ तवज्जुह
दी, गो मैं ने उस वक़्त के नबियों की मारिफ़त उन्हें
आगाह किया था कि अपनी बुरी राहों और शरीर
हरकतों से बाज़ आओ। 5 अब तुम्हारे बापदादा कहाँ
हैं? और क्या नबी अबद तक ज़िन्दा रहते हैं? दोनों
बहुत देर हुई वफ़ात पा चुके हैं। [a]6 लेकिन तुम्हारे
बापदादा के बारे में जितनी भी बातें और फ़ैसले मैं ने
अपने ख़ादिमों यानी नबियों की मारिफ़त फ़रमाए वह
सब पूरे हुए। तब उन्हों ने तौबा करके इक़्रार किया,
'रब्ब-उल-अफ़्वाज ने हमारी बुरी राहों और हरकतों
के सबब से वह कुछ किया है जो उस ने करने को
कहा था'।"

ज़करियाह रोया देखता है

7 तीन माह के बाद रब ने नबी ज़करियाह बिन
बरकियाह बिन इद्दू पर एक और कलाम नाज़िल
किया। सबात यानी 11वें महीने का 24वाँ दिन [b]था।

पहली रोया : घुड़सवार

8 उस रात मैं ने रोया में एक आदमी को सुर्ख़ रंग के
घोड़े पर सवार देखा। वह घाटी के दरमियान उगने
वाली मेहंदी की झाड़ियों के बीच में रुका हुआ था।
उस के पीछे सुर्ख़, भूरे और सफ़ेद रंग के घोड़े खड़े
थे। उन पर भी आदमी बैठे थे। [c]9 जो फ़रिश्ता मुझ से
बात कर रहा था उस से मैं ने पूछा, "मेरे आक़ा, इन
घुड़सवारों से क्या मुराद है?" उस ने जवाब दिया,
"मैं तुझे उन का मतलब दिखाता हूँ।" 10 तब मेहंदी
की झाड़ियों में रुके हुए आदमी ने जवाब दिया, "यह
वह हैं जिन्हें रब ने पूरी दुनिया की गश्त करने के लिए
भेजा है।" 11 अब दीगर घुड़सवार रब के उस फ़रिश्ते
के पास आए जो मेहंदी की झाड़ियों के दरमियान
रुका हुआ था। उन्हों ने इत्तिला दी, "हम ने दुनिया
की गश्त लगाई तो मालूम हुआ कि पूरी दुनिया में
अम्न-ओ-अमान है।" 12 तब रब का फ़रिश्ता बोला,
"ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, अब तू 70 सालों से यरूशलम
और यहूदाह की आबादियों से नाराज़ रहा है। तू कब
तक उन पर रहम न करेगा?"

13 जवाब में रब ने मेरे साथ गुफ़्तगु करने वाले
फ़रिश्ते से नर्म और तसल्ली देने वाली बातें कीं।
14 फ़रिश्ता दुबारा मुझ से मुख़ातिब हुआ, "एलान
कर कि रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'मैं बड़ी ग़ैरत
से यरूशलम और कोह-ए-सिय्यून के लिए लड़ूँगा।
15 मैं उन दीगर अक़्वाम से निहायत नाराज़ हूँ जो इस
वक़्त अपने आप को महफ़ूज़ समझती हैं। बेशक मैं
अपनी क़ौम से कुछ नाराज़ था, लेकिन इन दीगर

---

[z]अक्तूबर ता नवम्बर।

[a]'दोनों . . .चुके हैं' इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।

[b]15 फ़र्वरी।

[c]'उन . . .बैठे थे' इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।

क़ौमों ने उसे हद से ज़्यादा तबाह कर दिया है। यह
कभी भी मेरा मक़्सद नहीं था।' 16 रब फ़रमाता है,
'अब मैं दुबारा यरूशलम की तरफ़ माइल हो कर
उस पर रहम करूँगा। मेरा घर नए सिरे से उस में
तामीर हो जाएगा बल्कि पूरे शहर की पैमाइश की
जाएगी ताकि उसे दुबारा तामीर किया जाए।' यह
रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान है।

17 मज़ीद एलान कर कि रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है, 'मेरे शहरों में दुबारा कस्रत का माल
पाया जाएगा। रब दुबारा कोह-ए-सिय्यून को तसल्ली
देगा, दुबारा यरूशलम को चुन लेगा'।"

दूसरी रोया : सींग और कारीगर

18 मैं ने अपनी निगाह उठाई तो क्या देखता हूँ कि
चार सींग मेरे सामने हैं। 19 जो फ़रिश्ता मुझ से बात
कर रहा था उस से मैं ने पूछा, "इन का क्या मतलब
है?" उस ने जवाब दिया, "यह वह सींग हैं जिन्हों ने
यहूदाह और इस्राईल को यरूशलम समेत मुन्तशिर
कर दिया था।"

20 फिर रब ने मुझे चार कारीगर दिखाए। 21 मैं ने
सवाल किया, "यह क्या करने आ रहे हैं?" उस ने
जवाब दिया, "मज़कूरा सींगों ने यहूदाह को इतने ज़ोर
से मुन्तशिर कर दिया कि आख़िरकार एक भी अपना
सर नहीं उठा सका। लेकिन अब यह कारीगर उन
में दहशत फैलाने आए हैं। यह उन क़ौमों के सींगों
को ख़ाक में मिला देंगे जिन्हों ने उन से यहूदाह के
बाशिन्दों को मुन्तशिर कर दिया था।"

तीसरी रोया : आदमी यरूशलम की पैमाइश करता है

2 1 मैं ने अपनी नज़र दुबारा उठाई तो एक आदमी
को देखा जिस के हाथ में फ़ीता था। 2 मैं ने
पूछा, "आप कहाँ जा रहे हैं?" उस ने जवाब दिया,
"यरूशलम की पैमाइश करने जा रहा हूँ। मैं मालूम
करना चाहता हूँ कि शहर की लम्बाई और चौड़ाई
कितनी होनी चाहिए।" 3 तब वह फ़रिश्ता रवाना
हुआ जो अब तक मुझ से बात कर रहा था। लेकिन
रास्ते में एक और फ़रिश्ता उस से मिलने आया। 4 इस
दूसरे फ़रिश्ते ने कहा, "भाग कर पैमाइश करने वाले
नौजवान को बता दे, 'इन्सान-ओ-हैवान की इतनी
बड़ी तादाद होगी कि आइन्दा यरूशलम की फ़सील
नहीं होगी। 5 रब फ़रमाता है कि उस वक़्त मैं आग
की चारदीवारी बन कर उस की हिफ़ाज़त करूँगा, मैं
उस के दरमियान रह कर उस की इज़्ज़त-ओ-जलाल
का बाइस हूँगा'।"

6 रब फ़रमाता है, "उठो, उठो! शिमाली मुल्क से
भाग आओ। क्यूँकि मैं ने ख़ुद तुम्हें चारों तरफ़
मुन्तशिर कर दिया था। 7 लेकिन अब मैं फ़रमाता हूँ
कि वहाँ से निकल आओ। सिय्यून के जितने लोग
बाबल [d]में रहते हैं वहाँ से बच निकलें!" 8 क्यूँकि
रब्ब-उल-अफ़्वाज जिस ने मुझे भेजा वह उन क़ौमों
के बारे में जिन्हों ने तुम्हें लूट लिया फ़रमाता है, "जो
तुम्हें छेड़े वह मेरी आँख की पुतली को छेड़ेगा। 9 इस
लिए यक़ीन करो कि मैं अपना हाथ उन के ख़िलाफ़
उठाऊँगा। उन के अपने ग़ुलाम उन्हें लूट लेंगे।"

तब तुम जान लोगे कि रब्ब-उल-अफ़्वाज ने मुझे
भेजा है। 10 रब फ़रमाता है, "ऐ सिय्यून बेटी, ख़ुशी
के नारे लगा! क्यूँकि मैं आ रहा हूँ, मैं तेरे दरमियान
सुकूनत करूँगा। 11 उस दिन बहुत सी अक़्वाम मेरे
साथ पैवस्त हो कर मेरी क़ौम का हिस्सा बन जाएँगी।
मैं ख़ुद तेरे दरमियान सुकूनत करूँगा।"

तब तू जान लेगी कि रब्ब-उल-अफ़्वाज ने मुझे तेरे
पास भेजा है।

12 मुक़द्दस मुल्क में यहूदाह रब की मौरूसी ज़मीन
बनेगा, और वह यरूशलम को दुबारा चुन लेगा।
13 तमाम इन्सान रब के सामने ख़ामोश हो जाएँ,
क्यूँकि वह उठ कर अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह से
निकल आया है।

---

[d]लफ़्ज़ी तर्जुमा : बाबल बेटी।

चौथी रोया : इमाम-ए-आज़म यशूअ

3 1 इस के बाद रब ने मुझे रोया में इमाम-ए-आज़म
यशूअ को दिखाया। वह रब के फ़रिश्ते के
सामने खड़ा था, और इब्लीस उस पर इल्ज़ाम लगाने
के लिए उस के दाएँ हाथ खड़ा हो गया था। 2 रब ने
इब्लीस से फ़रमाया, "ऐ इब्लीस, रब तुझे मलामत
करता है! रब जिस ने यरूशलम को चुन लिया वह
तुझे डाँटता है! यह आदमी तो बाल बाल बच गया
है, उस लकड़ी की तरह जो भड़कती आग में से छीन
ली गई है।"

3 यशूअ गन्दे कपड़े पहने हुए फ़रिश्ते के सामने
खड़ा था। 4 जो अफ़राद साथ खड़े थे उन्हें फ़रिश्ते
ने हुक्म दिया, "उस के मैले कपड़े उतार दो।" फिर
यशूअ से मुख़ातिब हुआ, "देख, मैं ने तेरा क़ुसूर तुझ
से दूर कर दिया है, और अब मैं तुझे शानदार सफ़ेद
कपड़े पहना देता हूँ।" 5 मैं ने कहा, "वह उस के सर
पर पाक-साफ़ पगड़ी बांधें!" चुनाँचे उन्हों ने यशूअ
के सर पर पाक-साफ़ पगड़ी बांध कर उसे नए कपड़े
पहनाए। रब का फ़रिश्ता साथ खड़ा रहा। 6 यशूअ से
उस ने बड़ी सन्जीदगी से कहा,

7 "रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'मेरी राहों पर
चल कर मेरे अह्काम पर अमल कर तो तू मेरे घर
की राहनुमाई और उस की बारगाहों की देख-भाल
करेगा। फिर मैं तेरे लिए यहाँ आने और हाज़िरीन में
खड़े होने का रास्ता क़ाइम रखूँगा।

8 ऐ इमाम-ए-आज़म यशूअ, सुन! तू और तेरे सामने
बैठे तेरे इमाम भाई मिल कर उस वक़्त की तरफ़
इशारा हैं जब मैं अपने ख़ादिम को जो कोंपल
कहलाता है आने दूँगा। 9 देखो वह जौहर जो मैं ने
यशूअ के सामने रखा है। उस एक ही पत्थर पर सात
आँखें हैं।' रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'मैं उस
पर कतबा कन्दा करके एक ही दिन में इस मुल्क
का गुनाह मिटा दूँगा। 10 उस दिन तुम एक दूसरे को
अपनी अंगूर की बेल और अपने अन्जीर के दरख़्त के
साय में बैठने की दावत दोगे।' यह रब्ब-उल-अफ़्वाज
का फ़रमान है।"

पाँचवीं रोया : सोने का शमादान और ज़ैतून के दरख़्त

4 1 जिस फ़रिश्ते ने मुझ से बात की थी वह अब
मेरे पास वापस आया। उस ने मुझे यूँ जगा दिया
जिस तरह गहरी नींद सोने वाले को जगाया जाता है।
2 उस ने पूछा, "तुझे क्या नज़र आता है?" मैं ने जवाब
दिया, "ख़ालिस सोने का शमादान जिस पर तेल का
प्याला और सात चराग़ हैं। हर चराग़ के सात मुँह हैं।
3 ज़ैतून के दो दरख़्त भी दिखाई देते हैं। एक दरख़्त
तेल के प्याले के दाईं तरफ़ और दूसरा उस के बाईं
तरफ़ है। 4 लेकिन मेरे आक़ा, इन चीज़ों का मतलब
क्या है?"

5 फ़रिश्ता बोला, "क्या यह तुझे मालूम नहीं?" मैं
ने जवाब दिया, "नहीं, मेरे आक़ा।"

6 फ़रिश्ते ने मुझ से कहा, "ज़रुब्बाबल के लिए रब
का यह पैग़ाम है,

'रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि तू न अपनी
ताक़त, न अपनी क़ुव्वत से बल्कि मेरे रूह से ही
कामयाब होगा।' 7 क्या रास्ते में बड़ा पहाड़ हाइल
है? ज़रुब्बाबल के सामने वह हमवार मैदान बन
जाएगा। और जब ज़रुब्बाबल रब के घर का आख़िरी
पत्थर लगाएगा तो हाज़िरीन पुकार उठेंगे, 'मुबारक
हो! मुबारक हो'!"

8 रब का कलाम एक बार फिर मुझ पर नाज़िल
हुआ, 9 "ज़रुब्बाबल के हाथों ने इस घर की
बुन्याद डाली, और उसी के हाथ उसे तक्मील तक
पहुँचाएँगे। तब तू जान लेगा कि रब्ब-उल-अफ़्वाज
ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। 10 गो तामीर के आग़ाज़
में बहुत कम नज़र आता है तो भी उस पर हिक़ारत
की निगाह न डालो। क्यूँकि लोग ख़ुशी मनाएँगे जब
ज़रुब्बाबल के हाथ में साहूल देखेंगे। (मज़कूरा सात
चराग़ रब की आँखें हैं जो पूरी दुनिया की गश्त
लगाती रहती हैं)।"

11 मैं ने मज़ीद पूछा, “शमादान के दाएँ बाएँ के
ज़ैतून के दो दरख़्तों से क्या मुराद है? 12 यहाँ सोने
के दो पाइप भी नज़र आते हैं जिन से ज़ैतून का सुनहरा
तेल बह निकलता है। ज़ैतून की जो दो टहनियाँ उन
के साथ हैं उन का मतलब क्या है?”
13 फ़रिश्ते ने कहा, “क्या तू यह नहीं जानता?” मैं
बोला, “नहीं, मेरे आक़ा।” 14 तब उस ने फ़रमाया,
“यह वह दो मसह किए हुए आदमी हैं जो पूरी दुनिया
के मालिक के हुज़ूर खड़े होते हैं।”

छटी रोया : उड़ने वाला तूमार

5 1 मैं ने एक बार फिर अपनी नज़र उठाई तो एक
उड़ता हुआ तूमार देखा। 2 फ़रिश्ते ने पूछा, “तुझे
क्या नज़र आता है?” मैं ने जवाब दिया, “एक उड़ता
हुआ तूमार जो 30 फ़ुट लम्बा और 15 फ़ुट चौड़ा है।”
3 वह बोला, “इस से मुराद एक लानत है जो पूरे मुल्क
पर भेजी जाएगी। इस तूमार के एक तरफ़ लिखा है कि
हर चोर को मिटा दिया जाएगा और दूसरी तरफ़ यह
कि झूटी क़सम खाने वाले को नेस्त किया जाएगा।
4 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, ‘मैं यह भेजूँगा तो
चोर और मेरे नाम की झूटी क़सम खाने वाले के घर
में लानत दाख़िल होगी और उस के बीच में रह कर
उसे लकड़ी और पत्थर समेत तबाह कर देगी’।”

सातवीं रोया : टोकरी में औरत

5 जो फ़रिश्ता मुझ से बात कर रहा था उस ने आ
कर मुझ से कहा, “अपनी निगाह उठा कर वह देख
जो निकल कर आ रहा है।” 6 मैं ने पूछा, “यह क्या
है?” उस ने जवाब दिया, “यह अनाज की पैमाइश
करने की टोकरी है। यह पूरे मुल्क में नज़र आती
है।” 7 टोकरी पर सीसे का ढकना था। अब वह खुल
गया, और टोकरी में बैठी हुई एक औरत दिखाई दी।
8 फ़रिश्ता बोला, “इस औरत से मुराद बेदीनी है।”
उस ने औरत को धक्का दे कर टोकरी में वापस कर
दिया और सीसे का ढकना ज़ोर से बन्द कर दिया।
9 मैं ने दुबारा अपनी नज़र उठाई तो दो औरतों को
देखा। उन के लक़्लक़ के से पर थे, और उड़ते वक़्त
हवा उन के साथ थी। टोकरी के पास पहुँच कर वह
उसे उठा कर आसमान-ओ-ज़मीन के दरमियान ले
गईं। 10 जो फ़रिश्ता मुझ से गुफ़्तगु कर रहा था उस से
मैं ने पूछा, “औरतें टोकरी को किधर ले जा रही हैं?”
11 उस ने जवाब दिया, “मुल्क-ए-बाबल में। वहाँ वह
उस के लिए घर बना देंगी। जब घर तय्यार होगा तो
टोकरी वहाँ उस की अपनी जगह पर रखी जाएगी।”

चार रथ

6 1 मैं ने फिर अपनी निगाह उठाई तो क्या देखता
हूँ कि चार रथ पीतल के दो पहाड़ों के बीच में
से निकल रहे हैं। 2 पहले रथ के घोड़े सुर्ख़, दूसरे के
सियाह, 3 तीसरे के सफ़ेद और चौथे के धब्बेदार थे।
सब ताक़तवर थे।
4 जो फ़रिश्ता मुझ से बात कर रहा था उस से मैं ने
सवाल किया, “मेरे आक़ा, इन का क्या मतलब है?”
5 उस ने जवाब दिया, “यह आसमान की चार रूहें
[e]हैं। पहले यह पूरी दुनिया के मालिक के हुज़ूर खड़ी
थीं, लेकिन अब वहाँ से निकल रही हैं। 6 सियाह
घोड़ों का रथ शिमाली मुल्क की तरफ़ जा रहा है,
सफ़ेद घोड़ों का मग़रिब की तरफ़, और धब्बेदार
घोड़ों का जुनूब की तरफ़।”
7 यह ताक़तवर घोड़े बड़ी बेताबी से इस इन्तिज़ार
में थे कि दुनिया की गश्त करें। फिर उस ने हुक्म
दिया, “चलो, दुनिया की गश्त करो।” वह फ़ौरन
निकल कर दुनिया की गश्त करने लगे। 8 फ़रिश्ते
ने मुझे आवाज़ दे कर कहा, “उन घोड़ों पर ख़ास
ध्यान दो जो शिमाली मुल्क की तरफ़ बढ़ रहे हैं। यह
उस मुल्क पर मेरा ग़ुस्सा उतारेंगे।”

---

[e]या हवाएँ।

इस्राईल का आने वाला बादशाह

9 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 10 “आज
ही यूसियाह बिन सफ़नियाह के घर में जा! वहाँ तेरी
मुलाक़ात बाबल में जिलावतन किए हुए इस्राईलियों
ख़ल्दी, तूबियाह और यदायाह से होगी जो इस वक़्त
वहाँ पहुँच चुके हैं। जो हदिए वह अपने साथ लाए
हैं उन्हें क़बूल कर। 11 उन की यह सोना-चाँदी ले
कर ताज बना ले, फिर ताज को इमाम-ए-आज़म
यशूअ बिन यहूसदक़ के सर पर रख कर 12 उसे बता,
‘रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि एक आदमी आने
वाला है जिस का नाम कोंपल है। उस के साय में
बहुत कोंपलें फूट निकलेंगी, और वह रब का घर
तामीर करेगा। 13 हाँ, वही रब का घर बनाएगा और
शान-ओ-शौकत के साथ तख़्त पर बैठ कर हुकूमत
करेगा। वह इमाम की हैसियत से भी तख़्त पर बैठेगा,
और दोनों उहदों में इत्तिफ़ाक़ और सलामती होगी।’
14 ताज को हीलम, तूबियाह, यदायाह और हेन बिन
सफ़नियाह की याद में रब के घर में महफ़ूज़ रखा
जाए। 15 लोग दूरदराज़ इलाक़ों से आ कर रब का
घर तामीर करने में मदद करेंगे।”

तब तुम जान लोगे कि रब्ब-उल-अफ़्वाज ने मुझे
तुम्हारे पास भेजा है। अगर तुम ध्यान से रब अपने
ख़ुदा की सुनो तो यह सब कुछ पूरा हो जाएगा।

तुम मेरी सुनने से इन्कार करते हो

7 1 दारा बादशाह की हुकूमत के चौथे साल में
रब ज़करियाह से हमकलाम हुआ। किस्लेव
यानी नवें महीने का चौथा दिन [f]था। 2 उस वक़्त
बैत-एल शहर ने सराज़र और रजम-मलिक को उस
के आदमियों समेत यरूशलम भेजा था ताकि रब से
इल्तिमास करें। 3 साथ साथ उन्हें रब्ब-उल-अफ़्वाज
के घर के इमामों को यह सवाल पेश करना था, “अब
हम कई साल से पाँचवें महीने में रोज़ा रख कर रब के
घर की तबाही पर मातम करते आए हैं। क्या लाज़िम
है कि हम यह दस्तूर आइन्दा भी जारी रखें?”

4 तब मुझे रब्ब-उल-अफ़्वाज से जवाब मिला,
5 “मुल्क के तमाम बाशिन्दों और इमामों से कह,
‘बेशक तुम 70 साल से पाँचवें और सातवें महीने में
रोज़ा रख कर मातम करते आए हो। लेकिन क्या तुम
ने यह दस्तूर वाक़ई मेरी ख़ातिर अदा किया? हरगिज़
नहीं! 6 ईदों पर भी तुम खाते-पीते वक़्त सिर्फ़ अपनी
ही ख़ातिर ख़ुशी मनाते हो। 7 यह वही बात है जो मैं
ने माज़ी में भी नबियों की मारिफ़त तुम्हें बताई, उस
वक़्त जब यरूशलम में आबादी और सुकून था, जब
गिर्द-ओ-नवाह के शहर दश्त-ए-नजब और मग़रिब
के नशेबी पहाड़ी इलाक़े तक आबाद थे’।”

8 इस नाते से ज़करियाह पर रब का एक और
कलाम नाज़िल हुआ, 9 “रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता
है, ‘अदालत में मुन्सिफ़ाना फ़ैसले करो, एक दूसरे
पर मेहरबानी और रहम करो! 10 बेवाओं, यतीमों,
अजनबियों और ग़रीबों पर ज़ुल्म मत करना। अपने
दिल में एक दूसरे के ख़िलाफ़ बुरे मन्सूबे न बान्धो।’
11 जब तुम्हारे बापदादा ने यह कुछ सुना तो वह इस
पर ध्यान देने के लिए तय्यार नहीं थे बल्कि अकड़
गए। उन्हों ने अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेर कर अपने
कानों को बन्द किए रखा। 12 उन्हों ने अपने दिलों को
हीरे की तरह सख़्त कर लिया ताकि शरीअत और वह
बातें उन पर असरअन्दाज़ न हो सकें जो रब्ब-उल-
अफ़्वाज ने अपने रूह के वसीले से गुज़शता नबियों
को बताने को कहा था। तब रब्ब-उल-अफ़्वाज का
शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ। 13 वह फ़रमाता
है, ‘चूँकि उन्हों ने मेरी न सुनी इस लिए मैं ने फ़ैसला
किया कि जब वह मदद के लिए मुझ से इल्तिजा करें
तो मैं भी उन की नहीं सुनूँगा। 14 मैं ने उन्हें आँधी से
उड़ा कर तमाम दीगर अक़्वाम में मुन्तशिर कर दिया,
ऐसी क़ौमों में जिन से वह नावाक़िफ़ थे। उन के जाने
पर वतन इतना वीरान-ओ-सुन्सान हुआ कि कोई न

[f] 4 दिसम्बर।

रहा जो उस में आए या वहाँ से जाए। यूँ उन्हों ने उस
ख़ुशगवार मुल्क को तबाह कर दिया'।"

एक नया आग़ाज़

8 1 एक बार फिर रब्ब-उल-अफ़्वाज का कलाम
मुझ पर नाज़िल हुआ, 2 "रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है कि मैं बड़ी ग़ैरत से सिय्यून के लिए
लड़ रहा हूँ, बड़े ग़ुस्से में उस के लिए जिद्द-ओ-
जह्द कर रहा हूँ। 3 रब फ़रमाता है कि मैं सिय्यून
के पास वापस आऊँगा, दुबारा यरूशलम के बीच में
सुकूनत करूँगा। तब यरूशलम 'वफ़ादारी का शहर'
और रब्ब-उल-अफ़्वाज का पहाड़ 'कोह-ए-मुक़द्दस'
कहलाएगा। 4 क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है,
'बुज़ुर्ग मर्द-ओ-ख़वातीन दुबारा यरूशलम के चौकों
में बैठेंगे, और हर एक इतना उम्ररसीदा होगा कि उसे
छड़ी का सहारा लेना पड़ेगा। 5 साथ साथ चौक खेल-
कूद में मसरूफ़ लड़कों-लड़कियों से भरे रहेंगे।'
6 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'शायद यह उस
वक़्त बचे हुए इस्राईलियों को नामुमकिन लगे।
लेकिन क्या ऐसा काम मेरे लिए जो रब्ब-उल-
अफ़्वाज हूँ नामुमकिन है? हरगिज़ नहीं!' 7 रब्ब-उल-
अफ़्वाज फ़रमाता है, 'मैं अपनी क़ौम को मशरिक़
और मग़रिब के ममालिक से बचा कर 8 वापस
लाऊँगा, और वह यरूशलम में बसेंगे। वहाँ वह मेरी
क़ौम होंगे और मैं वफ़ादारी और इन्साफ़ के साथ उन
का ख़ुदा हूँगा।'
9 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'हौसला रख कर
तामीरी काम तक्मील तक पहुँचाओ! आज भी तुम
उन बातों पर एतिमाद कर सकते हो जो नबियों ने
रब्ब-उल-अफ़्वाज के घर की बुन्याद डालते वक़्त
सुनाई थीं। 10 याद रहे कि उस वक़्त से पहले न
इन्सान और न हैवान को मेहनत की मज़दूरी मिलती
थी। आने जाने वाले कहीं भी दुश्मन के हम्लों से
महफ़ूज़ नहीं थे, क्यूँकि मैं ने हर आदमी को उस के
हमसाय का दुश्मन बना दिया था।' 11 लेकिन रब्ब-
उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'अब से मैं तुम से जो बचे
हुए हो ऐसा सुलूक नहीं करूँगा। 12 लोग सलामती
से बीज बोएँगे, अंगूर की बेल वक़्त पर अपना फल
लाएगी, खेतों में फ़सलें पकेंगी और आसमान ओस
पड़ने देगा। यह तमाम चीज़ें मैं यहूदाह के बचे हुओं
को मीरास में दूँगा। 13 ऐ यहूदाह और इस्राईल, पहले
तुम दीगर अक़्वाम में लानत का निशाना बन गए थे,
लेकिन अब जब मैं तुम्हें रिहा करूँगा तो तुम बरकत
का बाइस होगे। डरो मत! हौसला रखो!'
14 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'पहले जब
तुम्हारे बापदादा ने मुझे तैश दिलाया तो मैं ने तुम पर
आफ़त लाने का मुसम्मम इरादा कर लिया था और
कभी न पछताया। 15 लेकिन अब मैं यरूशलम और
यहूदाह को बरकत देना चाहता हूँ। इस में मेरा इरादा
उतना ही पक्का है जितना पहले तुम्हें नुक़्सान पहुँचाने
में पक्का था। चुनाँचे डरो मत! 16 लेकिन इन बातों पर
ध्यान दो, एक दूसरे से सच बात करो, अदालत में
सच्चाई और सलामती पर मब्नी फ़ैसले करो, 17 अपने
पड़ोसी के ख़िलाफ़ बुरे मन्सूबे मत बान्धो और झूटी
क़सम खाने के शौक़ से बाज़ आओ। इन तमाम चीज़ों
से मैं नफ़रत करता हूँ।' यह रब का फ़रमान है।"
18 एक बार फिर रब्ब-उल-अफ़्वाज का कलाम मुझ
पर नाज़िल हुआ, 19 "रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है
कि आज तक यहूदाह के लोग चौथे, पाँचवें, सातवें
और दसवें महीने में रोज़ा रख कर मातम करते आए
हैं। लेकिन अब से यह औक़ात ख़ुशी-ओ-शादमानी
के मौक़े होंगे जिन पर जश्न मनाओगे। लेकिन सच्चाई
और सलामती को प्यार करो!
20 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि ऐसा वक़्त
आएगा जब दीगर अक़्वाम और मुतअद्दिद शहरों
के लोग यहाँ आएँगे। 21 एक शहर के बाशिन्दे दूसरे
शहर में जा कर कहेंगे, 'आओ, हम यरूशलम जा
कर रब से इल्तिमास करें, रब्ब-उल-अफ़्वाज की
मर्ज़ी दरयाफ़्त करें। हम भी जाएंगे।' 22 हाँ, मुतअद्दिद
अक़्वाम और ताक़तवर उम्मतें यरूशलम आएँगी
ताकि रब्ब-उल-अफ़्वाज की मर्ज़ी मालूम करें और
उस से इल्तिमास करें।

23 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि उन दिनों में
मुख़्तलिफ़ अक़्वाम और अहल-ए-ज़बान के दस
आदमी एक यहूदी के दामन को पकड़ कर कहेंगे,
'हमें अपने साथ चलने दें, क्यूँकि हम ने सुना है कि
अल्लाह आप के साथ है'।"

इस्राईल के दुश्मनों की अदालत

9 1 रब का कलाम मुल्क-ए-हद्राक के ख़िलाफ़
है, और वह दमिश्क़ पर नाज़िल होगा। क्यूँकि
इन्सान और इस्राईल के तमाम क़बीलों की आँखें
रब की तरफ़ देखती हैं। 2 दमिश्क़ की सरहद पर
वाक़े हमात बल्कि सूर और सैदा भी इस कलाम से
मुतअस्सिर हो जाएंगे, ख़्वाह वह कितने दानिशमन्द
क्यूँ न हों। 3 बेशक सूर ने अपने लिए मज़बूत क़िला
बना लिया है, बेशक उस ने सोने-चाँदी के ऐसे ढेर
लगाए हैं जैसे आम तौर पर गलियों में रेत या कचरे
के ढेर लगा लिए जाते हैं। 4 लेकिन रब उस पर
क़ब्ज़ा करके उस की फ़ौज को समुन्दर में फैंक देगा।
तब शहर नज़र-ए-आतिश हो जाएगा। 5 यह देख कर
अस्क़लून घबरा जाएगा और ग़ज़्ज़ा तड़प उठेगा।
अक्रून भी लरज़ उठेगा, क्यूँकि उस की उम्मीद जाती
रहेगी। ग़ज़्ज़ा का बादशाह हलाक और अस्क़लून
ग़ैरआबाद हो जाएगा। 6 अश्दूद में दो नस्लों के लोग
बसेंगे। रब फ़रमाता है, "जो कुछ फ़िलिस्तियों के
लिए फ़ख़र का बाइस है उसे मैं मिटा दूँगा। 7 मैं उन
की बुतपरस्ती ख़त्म करूँगा। आइन्दा वह गोश्त को
ख़ून के साथ और अपनी घिनौनी क़ुर्बानियाँ नहीं
खाएँगे। तब जो बच जाएंगे मेरे परस्तार होंगे और
यहूदाह के ख़ानदानों में शामिल हो जाएंगे। अक्रून
के फ़िलिस्ती यूँ मेरी क़ौम में शामिल हो जाएंगे जिस
तरह क़दीम ज़माने में यबूसी मेरी क़ौम में शामिल हो
गए। 8 मैं ख़ुद अपने घर की पहरादारी करूँगा ताकि
आइन्दा जो भी आते या जाते वक़्त वहाँ से गुज़रे उस
पर हम्ला न करे, कोई भी ज़ालिम मेरी क़ौम को तंग
न करे। अब से मैं ख़ुद उस की देख-भाल करूँगा।

नया बादशाह आने वाला है

9 ऐ सिय्यून बेटी, शादियाना बजा! ऐ यरूशलम
बेटी, शादमानी के नारे लगा! देख, तेरा बादशाह तेरे
पास आ रहा है। वह रास्तबाज़ और फ़त्हमन्द है, वह
हलीम है और गधे पर, हाँ गधी के बच्चे पर सवार है।
10 मैं इफ़्राईम से रथ और यरूशलम से घोड़े दूर कर
दूँगा। जंग की कमान टूट जाएगी। मौऊदा बादशाह
[8]के कहने पर तमाम अक़्वाम में सलामती क़ाइम हो
जाएगी। उस की हुकूमत एक समुन्दर से दूसरे तक
और दरया-ए-फ़ुरात से दुनिया की इन्तिहा तक मानी
जाएगी।

रब अपनी क़ौम की हिफ़ाज़त करेगा

11 ऐ मेरी क़ौम, मैं ने तेरे साथ एक अह्द बांधा जिस
की तस्दीक़ क़ुर्बानियों के ख़ून से हुई, इस लिए मैं
तेरे क़ैदियों को पानी से महरूम गढ़े से रिहा करूँगा।
12 ऐ पुरउम्मीद कैदियो, क़िले के पास वापस आओ!
क्यूँकि आज ही मैं एलान करता हूँ कि तुम्हारी हर
तक्लीफ़ के इवज़ मैं तुम्हें दो बरकतें बख़्श दूँगा।
13 यहूदाह मेरी कमान है और इस्राईल मेरे तीर जो मैं
दुश्मन के ख़िलाफ़ चलाऊँगा। ऐ सिय्यून बेटी, मैं तेरे
बेटों को यूनान के फ़ौजियों से लड़ने के लिए भेजूँगा,
मैं तुझे सूरमे की तलवार की मानिन्द बना दूँगा।"
14 तब रब उन पर ज़ाहिर हो कर बिजली की तरह
अपना तीर चलाएगा। रब क़ादिर-ए-मुतलक़ नरसिंगा
फूँक कर जुनूबी आँधियों में आएगा। 15 रब्ब-उल-
अफ़्वाज ख़ुद इस्राईलियों को पनाह देगा। तब वह
दुश्मन को खा खा कर उस के फैंके हुए पत्थरों को
ख़ाक में मिला देंगे और ख़ून को मै की तरह पी
पी कर शोर मचाएँगे। वह क़ुर्बानी के ख़ून से भरे

[8]लफ़्ज़ी तर्जुमा : उस के कहने पर।

कटोरे की तरह भर जाएंगे, क़ुर्बानगाह के कोनों जैसे
ख़ूनआलूदा हो जाएंगे।
16 उस दिन रब उन का ख़ुदा उन्हें जो उस की क़ौम
का रेवड़ हैं छुटकारा देगा। तब वह उस के मुल्क
में ताज के जवाहिर की मानिन्द चमक उठेंगे। 17 वह
कितने दिलकश और ख़ूबसूरत लगेंगे! अनाज और मै
की कस्रत से कुंवारे-कुंवारियाँ फलने फूलने लगेंगे।

रब ही मदद कर सकता है

10 1 बहार के मौसम में रब से बारिश माँगो।
क्यूँकि वही घने बादल बनाता है, वही
बारिश बरसा कर हर एक को खेत की हरियाली
मुहय्या करता है। 2 तुम्हारे घरों के बुत फ़रेब देते,
तुम्हारे ग़ैबदान झूटी रोया देखते और फ़रेबदिह ख़्वाब
सुनाते हैं। उन की तसल्ली अबस है। इसी लिए क़ौम
को भेड़-बकरियों की तरह यहाँ से चला जाना पड़ा।
गल्लाबान नहीं है, इस लिए वह मुसीबत में उलझे रहते
हैं।

रब अपनी क़ौम को वापस लाएगा

3 रब फ़रमाता है, "मेरी क़ौम के गल्लाबानों पर
मेरा ग़ज़ब भड़क उठा है, और जो बकरे उस की
राहनुमाई कर रहे हैं उन्हें मैं सज़ा दूँगा। क्यूँकि रब्ब-
उल-अफ़्वाज अपने रेवड़ यहूदाह के घराने की देख-
भाल करेगा, उसे जंगी घोड़े जैसा शानदार बना देगा।
4 यहूदाह से कोने का बुन्यादी पत्थर, मेख़, जंग की
कमान और तमाम हुक्मरान निकल आएँगे। 5 सब
सूरमे की मानिन्द होंगे जो लड़ते वक़्त दुश्मन को
गली के कचरे में कुचल देंगे। रब्ब-उल-अफ़्वाज उन
के साथ होगा, इस लिए वह लड़ कर ग़ालिब आएँगे।
मुख़ालिफ़ घुड़सवारों की बड़ी रुस्वाई होगी।
6 मैं यहूदाह के घराने को तक़वियत दूँगा, यूसुफ़
के घराने को छुटकारा दूँगा, हाँ उन पर रहम करके
उन्हें दुबारा वतन में बसा दूँगा। तब उन की हालत से
पता नहीं चलेगा कि मैं ने कभी उन्हें रद्द किया था।
क्यूँकि मैं रब उन का ख़ुदा हूँ, मैं ही उन की सुनूँगा।
7 इफ़्राईम के अफ़राद सूरमे से बन जाएंगे, वह यूँ ख़ुश
हो जाएंगे जिस तरह दिल मै पीने से ख़ुश हो जाता है।
उन के बच्चे यह देख कर बाग़ बाग़ हो जाएंगे, उन के
दिल रब की ख़ुशी मनाएँगे।
8 मैं सीटी बजा कर उन्हें जमा करूँगा, क्यूँकि मैं
ने फ़िद्या दे कर उन्हें आज़ाद कर दिया है। तब वह
पहले की तरह बेशुमार हो जाएंगे। 9 मैं उन्हें बीज की
तरह मुख़्तलिफ़ क़ौमों में बो कर मुन्तशिर कर दूँगा,
लेकिन दूरदराज़ इलाक़ों में वह मुझे याद करेंगे। और
एक दिन वह अपनी औलाद समेत बच कर वापस
आएँगे। 10 मैं उन्हें मिस्र से वापस लाऊँगा, असूर से
इकट्ठा करूँगा। मैं उन्हें जिलिआद और लुबनान में
लाऊँगा, तो भी उन के लिए जगह काफ़ी नहीं होगी।
11 जब वह मुसीबत के समुन्दर में से गुज़रेंगे तो रब
मौजों को यूँ मारेगा कि सब कुछ पानी की गहराइयों
तक ख़ुश्क हो जाएगा। असूर का फ़ख़र ख़ाक में मिल
जाएगा, और मिस्र का शाही असा दूर हो जाएगा।
12 मैं अपनी क़ौम को रब में तक़वियत दूँगा, और
वह उस का ही नाम ले कर ज़िन्दगी गुज़ारेंगे।" यह
रब का फ़रमान है।

बड़ों को नीचा किया जाएगा

11 1 ऐ लुबनान, अपने दरवाज़ों को खोल दे
ताकि तेरे देवदार के दरख़्त नज़र-ए-आतिश
हो जाएँ।
2 ऐ जूनीपर के दरख़तो, वावैला करो! क्यूँकि
देवदार के दरख़्त गिर गए हैं, यह ज़बरदस्त दरख़्त
तबाह हो गए हैं। ऐ बसन के बलूतो, आह-ओ-ज़ारी
करो! जो जंगल इतना घना था कि कोई उस में से
गुज़र न सकता था उसे काटा गया है।
3 सुनो, चरवाहे रो रहे हैं, क्यूँकि उन की शानदार
चरागाहें बर्बाद हो गई हैं। सुनो, जवान शेरबबर दहाड़
रहे हैं, क्यूँकि वादी-ए-यर्दन का गुंजान जंगल ख़त्म
हो गया है।

दो क़िस्म के गल्लाबान

4 रब मेरा ख़ुदा मुझ से हमकलाम हुआ, “ज़बह होने
वाली भेड़-बकरियों की गल्लाबानी कर! 5 जो उन्हें
ख़रीद लेते वह उन्हें ज़बह करते हैं और क़ुसूरवार
नहीं ठहरते। और जो उन्हें बेचते वह कहते हैं,
‘अल्लाह की हम्द हो, मैं अमीर हो गया हूँ!’ उन के
अपने चरवाहे उन पर तरस नहीं खाते।
6 इस लिए रब फ़रमाता है कि मैं भी मुल्क के
बाशिन्दों पर तरस नहीं खाऊँगा। मैं हर एक को उस
के पड़ोसी और उस के बादशाह के हवाले करूँगा।
वह मुल्क को टुकड़े टुकड़े करेंगे, और मैं उन्हें उन
के हाथ से नहीं छुड़ाऊँगा।”
7 चुनाँचे मैं, ज़करियाह ने सौदागरों के लिए ज़बह
होने वाली भेड़-बकरियों की गल्लाबानी की। मैं ने
उस काम के लिए दो लाठियाँ लीं। एक का नाम
‘मेहरबानी’ और दूसरी का नाम ‘यगानगत’ था। उन
के साथ मैं ने रेवड़ की गल्लाबानी की। 8 एक ही महीने
में मैं ने तीन गल्लाबानों को मिटा दिया। लेकिन जल्द
ही मैं भेड़-बकरियों से तंग आ गया, और उन्हों ने
मुझे भी हक़ीर जाना।
9 तब मैं बोला, “आइन्दा मैं तुम्हारी गल्लाबानी नहीं
करूँगा। जिसे मरना है वह मरे, जिसे ज़ाए होना है
वह ज़ाए हो जाए। और जो बच जाएँ वह एक दूसरे
का गोश्त खाएँ। मैं ज़िम्मादार नहीं हूँगा!” [h]10 मैं ने
लाठी बनाम ‘मेहरबानी’ को तोड़ कर ज़ाहिर किया
कि जो अह्द मैं ने तमाम अक़्वाम के साथ बांधा था
वह मन्सूख़ है। 11 उसी दिन वह मन्सूख़ हुआ।
तब भेड़-बकरियों के जो सौदागर मुझ पर ध्यान दे
रहे थे उन्हों ने जान लिया कि यह पैग़ाम रब की तरफ़
से है। 12 फिर मैं ने उन से कहा, “अगर यह आप को
मुनासिब लगे तो मुझे मज़दूरी के पैसे दे दें, वर्ना रहने
दें।” उन्हों ने मज़दूरी के लिए मुझे चाँदी के 30 सिक्के
दे दिए।
13 तब रब ने मुझे हुक्म दिया, “अब यह रक़म
कुम्हार [i]के सामने फैंक दे। कितनी शानदार रक़म
है! यह मेरी इतनी ही क़दर करते हैं।” मैं ने चाँदी
के 30 सिक्के ले कर रब के घर में कुम्हार के सामने
फैंक दिए। 14 इस के बाद मैं ने दूसरी लाठी बनाम
‘यगानगत’ को तोड़ कर ज़ाहिर किया कि यहूदाह
और इस्राईल की अख़ुव्वत मन्सूख़ हो गई है।
15 फिर रब ने मुझे बताया, “अब दुबारा गल्लाबान
का सामान ले ले। लेकिन इस बार अहमक़ चरवाहे
का सा रवय्या अपना ले। 16 क्यूँकि मैं मुल्क पर
ऐसा गल्लाबान मुक़र्रर करूँगा जो न हलाक होने वालों
की देख-भाल करेगा, न छोटों को तलाश करेगा, न
ज़ख़्मियों को शिफ़ा देगा, न सेहतमन्दों को ख़ुराक
मुहय्या करेगा। इस के बजाय वह बेहतरीन जानवरों
का गोश्त खा लेगा बल्कि इतना ज़ालिम होगा कि
उन के खुरों को फाड़ कर तोड़ेगा। 17 उस बेकार
चरवाहे पर अफ़्सोस जो अपने रेवड़ को छोड़ देता
है। तलवार उस के बाज़ू और दहनी आँख को ज़ख़्मी
करे। उस का बाज़ू सूख जाए और उस की दहनी
आँख अंधी हो जाए।”

अल्लाह यरूशलम की हिफ़ाज़त करेगा

12 1 ज़ैल में रब का इस्राईल के लिए कलाम
है। रब जिस ने आसमान को ख़ैमे की तरह
तान कर ज़मीन की बुन्यादें रखीं और इन्सान के
अन्दर उस की रूह को तश्कील दिया वह फ़रमाता
है,
2 “मैं यरूशलम को गिर्द-ओ-नवाह की क़ौमों के
लिए शराब का प्याला बना दूँगा जिसे वह पी कर
लड़खड़ाने लगेंगी। यहूदाह भी मुसीबत में आएगा
जब यरूशलम का मुहासरा किया जाएगा। 3 उस दिन
दुनिया की तमाम अक़्वाम यरूशलम के ख़िलाफ़
जमा हो जाएँगी। तब मैं यरूशलम को एक ऐसा
पत्थर बनाऊँगा जो कोई नहीं उठा सकेगा। जो भी

[h]‘मैं ज़िम्मादार नहीं हूँगा’ इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।

[i]या धात ढालने वाले।

उसे उठा कर ले जाना चाहे वह ज़ख़्मी हो जाएगा।”
4 रब फ़रमाता है, “उस दिन मैं तमाम घोड़ों में अब्तरी
और उन के सवारों में दीवानगी पैदा करूँगा। मैं दीगर
अक़्वाम के तमाम घोड़ों को अंधा कर दूँगा।

साथ साथ मैं खुली आँखों से यहूदाह के घराने की
देख-भाल करूँगा। 5 तब यहूदाह के ख़ानदान दिल में
कहेंगे, ‘यरूशलम के बाशिन्दे इस लिए हमारे लिए
क़ुव्वत का बाइस हैं कि रब्ब-उल-अफ़्वाज उन का
ख़ुदा है।’ 6 उस दिन मैं यहूदाह के ख़ानदानों को
जलते हुए कोएले बना दूँगा जो दुश्मन की सूखी
लकड़ी को जला देंगे। वह भड़कती हुई मशअल होंगे
जो दुश्मन की पूलों को भस्म करेगी। उन के दाईं
और बाईं तरफ़ जितनी भी क़ौमें गिर्द-ओ-नवाह में
रहती हैं वह सब नज़र-ए-आतिश हो जाएँगी। लेकिन
यरूशलम अपनी ही जगह महफ़ूज़ रहेगा।

7 पहले रब यहूदाह के घरों को बचाएगा ताकि
दाऊद के घराने और यरूशलम के बाशिन्दों की
शान-ओ-शौकत यहूदाह से बड़ी न हो। 8 लेकिन रब
यरूशलम के बाशिन्दों को भी पनाह देगा। तब उन में
से कमज़ोर आदमी दाऊद जैसा सूरमा होगा जबकि
दाऊद का घराना ख़ुदा की मानिन्द, उन के आगे
चलने वाले रब के फ़रिश्ते की मानिन्द होगा। 9 उस
दिन मैं यरूशलम पर हम्लाआवर तमाम अक़्वाम को
तबाह करने के लिए निकलूँगा।

यरूशलम का मातम

10 मैं दाऊद के घराने और यरूशलम के बाशिन्दों
पर मेहरबानी और इल्तिमास का रूह उंडेलूँगा। तब
वह मुझ पर नज़र डालेंगे जिसे उन्हों ने छेदा है, और
वह उस के लिए ऐसा मातम करेंगे जैसे अपने इक्लौते
बेटे के लिए, उस के लिए ऐसा शदीद ग़म खाएँगे
जिस तरह अपने पहलौठे के लिए। 11 उस दिन लोग
यरूशलम में शिद्दत से मातम करेंगे। ऐसा मातम होगा
जैसा मैदान-ए-मजिद्दो में हदद-रिम्मोन पर किया जाता
था। 12–14 पूरे का पूरा मुल्क वावैला करेगा। तमाम
ख़ानदान एक दूसरे से अलग और तमाम औरतें दूसरों
से अलग आह-ओ-बुका करेंगी। दाऊद का ख़ानदान,
नातन का ख़ानदान, लावी का ख़ानदान, सिमई का
ख़ानदान और मुल्क के बाक़ी तमाम ख़ानदान अलग
अलग मातम करेंगे।

बुतपरस्ती और झूटी नबुव्वत का ख़ातमा

13 1 उस दिन दाऊद के घराने और यरूशलम
के बाशिन्दों के लिए चश्मा खोला जाएगा
जिस के ज़रीए वह अपने गुनाहों और नापाकी को दूर
कर सकेंगे।”

2 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, “उस दिन मैं
तमाम बुतों को मुल्क में से मिटा दूँगा। उन का नाम-
ओ-निशान तक नहीं रहेगा, और वह किसी को याद
नहीं रहेंगे।

नबियों और नापाकी की रूह को भी मैं मुल्क से
दूर करूँगा। 3 इस के बाद अगर कोई नबुव्वत करे
तो उस के अपने माँ-बाप उस से कहेंगे, ‘तू ज़िन्दा
नहीं रह सकता, क्यूँकि तू ने रब का नाम ले कर झूट
बोला है।’ जब वह पेशगोइयाँ सुनाएगा तो उस के
अपने वालिदैन उसे छेद डालेंगे। 4 उस वक़्त हर नबी
को अपनी रोया पर शर्म आएगी जब नबुव्वत करेगा।
वह नबी का बालों से बना लिबास नहीं पहनेगा
ताकि फ़रेब दे 5 बल्कि कहेगा, ‘मैं नबी नहीं बल्कि
काश्तकार हूँ। जवानी से ही मेरा पेशा खेतीबाड़ी रहा
है।’ 6 अगर कोई पूछे, ‘तो फिर तेरे सीने पर ज़ख़्मों
के निशान किस तरह लगे? तो जवाब देगा, मैं अपने
दोस्तों के घर में ज़ख़्मी हुआ’।”

लोगों की जाँच-पड़ताल

7 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, “ऐ तलवार, जाग
उठ! मेरे गल्लाबान पर हम्ला कर, उस पर जो मेरे क़रीब
है। गल्लाबान को मार डाल ताकि भेड़-बकरियाँ तित्तर-
बित्तर हो जाएँ। मैं ख़ुद अपने हाथ को छोटों के
ख़िलाफ़ उठाऊँगा।” 8 रब फ़रमाता है, “पूरे मुल्क
में लोगों के तीन हिस्सों में से दो हिस्सों को मिटाया
जाएगा। दो हिस्से हलाक हो जाएंगे और सिर्फ़ एक

ही हिस्सा बचा रहेगा। 9 इस बचे हुए हिस्से को मैं
आग में डाल कर चाँदी या सोने की तरह पाक-साफ़
करूँगा। तब वह मेरा नाम पुकारेंगे, और मैं उन की
सुनूँगा। मैं कहूँगा, 'यह मेरी क़ौम है,' और वह कहेंगे,
'रब हमारा ख़ुदा है'।"

रब ख़ुद यरूशलम में बादशाह होगा

14 1 ऐ यरूशलम, रब का वह दिन आने वाला
है जब दुश्मन तेरा माल लूट कर तेरे
दरमियान ही उसे आपस में तक़्सीम करेगा। 2 क्यूँकि
मैं तमाम अक़्वाम को यरूशलम से लड़ने के लिए
जमा करूँगा। शहर दुश्मन के क़ब्ज़े में आएगा, घरों
को लूट लिया जाएगा और औरतों की इस्मतदरी की
जाएगी। शहर के आधे बाशिन्दे जिलावतन हो जाएंगे,
लेकिन बाक़ी हिस्सा उस में ज़िन्दा छोड़ा जाएगा।
3 लेकिन फिर रब ख़ुद निकल कर इन अक़्वाम
से यूँ लड़ेगा जिस तरह तब लड़ता है जब कभी
मैदान-ए-जंग में आ जाता है। 4 उस दिन उस के पाँओ
यरूशलम के मशरिक़ में ज़ैतून के पहाड़ पर खड़े
होंगे। तब पहाड़ फट जाएगा। उस का एक हिस्सा
शिमाल की तरफ़ और दूसरा जुनूब की तरफ़ खिसक
जाएगा। बीच में मशरिक़ से मग़रिब की तरफ़ एक
बड़ी वादी पैदा हो जाएगी। 5 तुम मेरे पहाड़ों की इस
वादी में भाग कर पनाह लोगे, क्यूँकि यह आज़ल
तक पहुँचाएगी। जिस तरह तुम यहूदाह के बादशाह
उज़्ज़ियाह के अय्याम में अपने आप को ज़ल्ज़ले से
बचाने के लिए यरूशलम से भाग निकले थे उसी तरह
तुम मज़कूरा वादी में दौड़ आओगे। तब रब मेरा ख़ुदा
आएगा, और तमाम मुक़द्दसीन उस के साथ होंगे।
6 उस दिन न तपती गर्मी होगी, न सर्दी या पाला।
7 वह एक मुन्फ़रिद दिन होगा जो रब ही को मालूम
होगा। न दिन होगा और न रात बल्कि शाम को भी
रौशनी होगी। 8 उस दिन यरूशलम से ज़िन्दगी का
पानी बह निकलेगा। उस की एक शाख़ मशरिक़ के
बहीरा-ए-मुर्दार की तरफ़ और दूसरी शाख़ मग़रिब के
समुन्दर की तरफ़ बहेगी। इस पानी में न गर्मियों में,
न सर्दियों में कभी कमी होगी।
9 रब पूरी दुनिया का बादशाह होगा। उस दिन रब
वाहिद ख़ुदा होगा, लोग सिर्फ़ उसी के नाम की
परस्तिश करेंगे। 10 पूरा मुल्क शिमाली शहर जिबा
से ले कर यरूशलम के जुनूब में वाक़े शहर रिम्मोन
तक खुला मैदान बन जाएगा। सिर्फ़ यरूशलम अपनी
ही ऊँची जगह पर रहेगा। उस की पुरानी हुदूद भी
क़ाइम रहेंगी यानी बिनयमीन के दरवाज़े से ले कर
पुराने दरवाज़े और कोने के दरवाज़े तक, फिर हनन-
एल के बुर्ज से ले कर उस जगह तक जहाँ शाही मै
बनाई जाती है। 11 लोग उस में बसेंगे, और आइन्दा
उसे कभी पूरी तबाही के लिए मख़्सूस नहीं किया
जाएगा। यरूशलम महफ़ूज़ जगह रहेगी।
12 लेकिन जो क़ौमें यरूशलम से लड़ने निकलें उन
पर रब एक हौलनाक बीमारी लाएगा। लोग अभी
खड़े हो सकेंगे कि उन के जिस्म सड़ जाएंगे। आँखें
अपने ख़ानों में और ज़बान मुँह में गल जाएगी।
13 उस दिन रब उन में बड़ी अब्तरी पैदा करेगा। हर
एक अपने साथी का हाथ पकड़ कर उस पर हम्ला
करेगा। 14 यहूदाह भी यरूशलम से [j]लड़ेगा। तमाम
पड़ोसी अक़्वाम की दौलत वहाँ जमा हो जाएगी यानी
कस्रत का सोना, चाँदी और कपड़े। 15 न सिर्फ़ इन्सान
मोहलिक बीमारी की ज़द में आएगा बल्कि जानवर
भी। घोड़े, ख़च्चर, ऊँट, गधे और बाक़ी जितने जानवर
उन लश्करगाहों में होंगे उन सब पर यही आफ़त
आएगी।

तमाम अक़्वाम यरूशलम में ईद मनाएँगी

16 तो भी उन तमाम अक़्वाम के कुछ लोग बच
जाएंगे जिन्हों ने यरूशलम पर हम्ला किया था। अब
वह साल-ब-साल यरूशलम आते रहेंगे ताकि हमारे
बादशाह रब्ब-उल-अफ़्वाज की परस्तिश करें और

---

[j]या में।

झोंपड़ियों की ईद मनाएँ। 17 जब कभी दुनिया की
तमाम अक़्वाम में से कोई हमारे बादशाह रब्ब-उल-
अफ़्वाज को सिज्दा करने के लिए यरूशलम न आए
तो उस का मुल्क बारिश से महरूम रहेगा। 18 अगर
मिस्री क़ौम यरूशलम न आए और हिस्सा न ले तो वह
बारिश से महरूम रहेगी। यूँ रब उन क़ौमों को सज़ा
देगा जो झोंपड़ियों की ईद मनाने के लिए यरूशलम
नहीं आएँगी । 19 जितनी भी क़ौमें झोंपड़ियों की ईद
मनाने के लिए यरूशलम न आएँ उन्हें यही सज़ा
मिलेगी, ख़्वाह मिस्र हो या कोई और क़ौम।

20 उस दिन घोड़ों की घंटियों पर लिखा होगा,
“रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस।” और रब के
घर की देगें उन मुक़द्दस कटोरों के बराबर होंगी
जो क़ुर्बानगाह के सामने इस्तेमाल होते हैं। 21 हाँ,
यरूशलम और यहूदाह में मौजूद हर देग रब्ब-उल-
अफ़्वाज के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस होगी। जो भी
क़ुर्बानियाँ पेश करने के लिए यरूशलम आए वह उन्हें
अपनी क़ुर्बानियाँ पकाने के लिए इस्तेमाल करेगा।
उस दिन से रब्ब-उल-अफ़्वाज के घर में कोई भी
सौदागर पाया नहीं जाएगा।

मलाक़ी

1 1 ज़ैल में इस्राईल के लिए रब का वह कलाम है
जो उस ने मलाक़ी पर नाज़िल किया।
2 रब फ़रमाता है, "तुम मुझे प्यारे हो।" लेकिन तुम
कहते हो, "किस तरह? तेरी हम से मुहब्बत कहाँ
ज़ाहिर हुई है?"
सुनो रब का जवाब! "क्या एसौ और याक़ूब सगे
भाई नहीं थे? तो भी सिर्फ़ याक़ूब मुझे प्यारा था
3 जबकि एसौ से मैं मुतनफ़्फ़िर रहा। उस के पहाड़ी
इलाक़े अदोम को मैं ने वीरान-ओ-सुन्सान कर दिया,
उस की मौरूसी ज़मीन को रेगिस्तान के गीदड़ों के
हवाले कर दिया है।" 4 अदोमी कहते हैं, "गो हम
चिकनाचूर हो गए हैं तो भी खंडरात की जगह नए
घर बना लेंगे।" लेकिन रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता
है, "बेशक तामीर का काम करते जाओ, लेकिन मैं
सब कुछ दुबारा ढा दूँगा। उन का मुल्क 'बेदीनी का
मुल्क' और उन की क़ौम 'वह क़ौम जिस पर रब की
अबदी लानत है' कहलाएगी। 5 तुम इस्राईली अपनी
आँखों से यह देखोगे। तब तुम कहोगे, 'रब अपनी
अज़मत इस्राईल की सरहद्दों से बाहर भी ज़ाहिर
करता है'।"

इमामों पर इल्ज़ाम

6 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "ऐ इमामो, बेटा
अपने बाप का और नौकर अपने मालिक का
एहतिराम करता है। लेकिन मेरा एहतिराम कौन
करता है, गो मैं तुम्हारा बाप हूँ? मेरा ख़ौफ़ कौन
मानता है, गो मैं तुम्हारा मालिक हूँ? हक़ीक़त यह
है कि तुम मेरे नाम को हक़ीर जानते हो। लेकिन
तुम एतिराज़ करते हो, 'हम किस तरह तेरे नाम को
हक़ीर जानते हैं?' 7 इस में कि तुम मेरी क़ुर्बानगाह
पर नापाक ख़ुराक रख देते हो। तुम पूछते हो, 'हम
ने तुझे किस बात में नापाक किया है?' इस में कि
तुम रब की मेज़ को क़ाबिल-ए-तह्क़ीर क़रार देते
हो। 8 क्यूँकि गो अंधे जानवरों को क़ुर्बान करना
सख़्त मना है, तो भी तुम यह बात नज़रअन्दाज़ करके
ऐसे जानवरों को क़ुर्बान करते हो। लंगड़े या बीमार
जानवर चढ़ाना भी मम्नू है, तो भी तुम कहते हो,
'कोई बात नहीं' और ऐसे ही जानवरों को पेश करते
हो।" रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "अगर वाक़ई
इस की कोई बात नहीं तो अपने मुल्क के गवर्नर
को ऐसे जानवरों को पेश करो। क्या वह तुम से
ख़ुश होगा? क्या वह तुम्हें क़बूल करेगा? हरगिज़
नहीं! 9 चुनाँचे अब अल्लाह से इल्तिमास करो कि हम
पर मेहरबानी कर।" रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है,
"ख़ुद सोच लो, क्या हमारे हाथों से ऐसी क़ुर्बानियाँ
मिलने पर अल्लाह हमें क़बूल करेगा? 10 काश तुम में
से कोई मेरे घर के दरवाज़ों को बन्द करे ताकि मेरी
क़ुर्बानगाह पर बेफ़ाइदा आग न लगा सको! मैं तुम
से ख़ुश नहीं, और तुम्हारे हाथों से क़ुर्बानियाँ मुझे
बिलकुल पसन्द नहीं।" यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का
फ़रमान है।
11 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "पूरी दुनिया में
मशरिक़ से मग़रिब तक मेरा नाम अज़ीम है। हर
जगह मेरे नाम को बख़ूर और पाक क़ुर्बानियाँ पेश
की जाती हैं। क्यूँकि दीगर अक़्वाम में मेरा नाम
अज़ीम है। 12 लेकिन तुम अपनी हरकतों से मेरे नाम
की बेहुरमती करते हो। तुम कहते हो, 'रब की मेज़
को नापाक किया जा सकता है, उस की क़ुर्बानियों
को हक़ीर जाना जा सकता है।' 13 तुम शिकायत
करते हो, 'हाय, यह ख़िदमत कितनी तक्लीफ़दिह
है!' और क़ुर्बानी की आग को हिक़ारत की नज़रों
से देखते हुए तेज़ करते हो। हर क़िस्म का जानवर
पेश किया जाता है, ख़्वाह वह ज़ख़्मी, लंगड़ा या
बीमार क्यूँ न हो।" रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है,

"क्या मैं तुम्हारे हाथों से ऐसी क़ुर्बानियाँ क़बूल कर
सकता हूँ? हरगिज़ नहीं! 14 उस धोकेबाज़ पर लानत
जो मन्नत मान कर कहे, 'मैं रब को अपने रेवड़ का
अच्छा मेंढा क़ुर्बान करूँगा' लेकिन इस के बजाय
नाक़िस जानवर पेश करे।" क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है, "मैं अज़ीम बादशाह हूँ, और अक़्वाम में
मेरे नाम का ख़ौफ़ माना जाता है।

2 1 ऐ इमामो, अब मेरे फ़ैसले पर ध्यान दो!"
2 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "मेरी सुनो, पूरे
दिल से मेरे नाम का एहतिराम करो, वर्ना मैं तुम
पर लानत भेजूँगा, मैं तुम्हारी बरकतों को लानतों में
तब्दील कर दूँगा। बल्कि मैं यह कर भी चुका हूँ,
क्यूँकि तुम ने पूरे दिल से मेरे नाम का एहतिराम नहीं
किया। 3 तुम्हारे चाल-चलन के सबब से मैं तुम्हारी
औलाद को डाँटूँगा। मैं तुम्हारी ईद की क़ुर्बानियों
का गोबर तुम्हारे मुँह पर फैंक दूँगा, और तुम्हें उस
के समेत बाहर फैंका जाएगा।"

4 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "तब तुम जान
लोगे कि मैं ने तुम पर यह फ़ैसला किया है ताकि
मेरा लावी के क़बीले के साथ अह्द क़ाइम रहे।
5 क्यूँकि मैं ने अह्द बांध कर लावियों से ज़िन्दगी
और सलामती का वादा किया था, और मैं ने वादे
को पूरा भी किया। उस वक़्त लावी मेरा ख़ौफ़ मानते
बल्कि मेरे नाम से दह्शत खाते थे। 6 वह क़ाबिल-ए-
एतिमाद तालीम देते थे, और उन की ज़बान पर झूट
नहीं होता था। वह सलामती से और सीधी राह पर
मेरे साथ चलते थे, और बहुत से लोग उन के बाइस
गुनाह से दूर हो गए।

7 इमामों का फ़र्ज़ है कि वह सहीह तालीम मह्फ़ूज़
रखें, और लोगों को उन से हिदायत हासिल करनी
चाहिए। क्यूँकि इमाम रब्ब-उल-अफ़्वाज का पैग़म्बर
है। 8 लेकिन तुम सहीह राह से हट गए हो। तुम्हारी
तालीम बहुतों के लिए ठोकर का बाइस बन गई है।"
रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "तुम ने लावियों के
साथ मेरे अह्द को ख़ाक में मिला दिया है। 9 इस लिए
मैं ने तुम्हें तमाम क़ौम के सामने ज़लील कर दिया
है, सब तुम्हें हक़ीर जानते हैं। क्यूँकि तुम मेरी राहों
पर नहीं रहते बल्कि तालीम देते वक़्त जानिबदारी
दिखाते हो।"

नाजाइज़ शादियाँ और तलाक़ पर मलामत

10 क्या हम सब का एक ही बाप नहीं? एक ही
ख़ुदा ने हमें ख़ल्क़ किया है। तो फिर हम एक दूसरे
से बेवफ़ाई करके अपने बापदादा के अह्द की
बेहुरमती क्यूँ कर रहे हैं?

11 यहूदाह बेवफ़ा हो गया है। इस्राईल और
यरूशलम में मकरूह हरकतें सरज़द हुई हैं, क्यूँकि
यहूदाह के आदमियों ने रब के घर की बेहुरमती की
है, उस मक़्दिस की जो रब को प्यारा है। किस तरह?
उन्हों ने दीगर अक़्वाम की बुतपरस्त औरतों से शादी
की है। [k]12 लेकिन जिस ने भी ऐसा किया है उसे रब
जड़ से याक़ूब के ख़ैमों से निकाल फैंकेगा, ख़्वाह वह
रब्ब-उल-अफ़्वाज को कितनी क़ुर्बानियाँ पेश क्यूँ न
करे।

13 तुम से एक और ख़ता भी सरज़द होती है।
बेशक रब की क़ुर्बानगाह को अपने आँसूओं से तर
करो, बेशक रोते और कराहते रहो कि रब न हमारी
क़ुर्बानियों पर तवज्जुह देता, न उन्हें ख़ुशी से हमारे
हाथ से क़बूल करता है। लेकिन यह करने से कोई
फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। 14 तुम पूछते हो, "क्यूँ?" इस लिए
कि शादी करते वक़्त रब ख़ुद गवाह होता है। और
अब तू अपनी बीवी से बेवफ़ा हो गया है, गो वह तेरी
जीवनसाथी है जिस से तू ने शादी का अह्द बांधा था।
15 क्या रब ने शौहर और बीवी को एक नहीं बनाया,
एक जिस्म जिस में रूह है? और यह एक जिस्म
क्या चाहता है? अल्लाह की तरफ़ से औलाद। चुनाँचे
अपनी रूह में ख़बरदार रहो! अपनी बीवी से बेवफ़ा
न हो जा! 16 क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल

---

[k]लफ़्ज़ी तर्जुमा : यहूदाह ने अजनबी माबूदों की बेटियों से शादी की है।

का ख़ुदा है फ़रमाता है, “मैं तलाक़ से नफ़रत करता हूँ और उस से मुतनफ़्फ़िर हूँ जो ज़ुल्म से मुलब्बस होता है। चुनाँचे अपनी रूह में ख़बरदार रह कर इस तरह का बेवफ़ा रवय्या इख़्तियार न करो!”

रब लोगों की अदालत करेगा

17 तुम्हारी बातों को सुन सुन कर रब थक गया है। तुम पूछते हो, “हम ने उसे किस तरह थका दिया है?” इस में कि तुम दावा करते हो, “बदी करने वाला रब की नज़र में ठीक है, वह ऐसे लोगों को पसन्द करता है।” तुम यह भी कहते हो, “अल्लाह कहाँ है? वह इन्साफ़ क्यूँ नहीं करता?”

3 1 रब्ब-उल-अफ़्वाज जवाब में फ़रमाता है, “देख, मैं अपने पैग़म्बर को भेज देता हूँ जो मेरे आगे आगे चल कर मेरा रास्ता तय्यार करेगा। तब जिस रब को तुम तलाश कर रहे हो वह अचानक अपने घर में आ मौजूद होगा। हाँ, अह्द का पैग़म्बर जिस की तुम शिद्दत से आर्ज़ू करते हो वह आने वाला है!”

2 लेकिन जब वह आए तो कौन यह बर्दाश्त कर सकेगा? कौन क़ाइम रह सकेगा जब वह हम पर ज़ाहिर हो जाएगा? वह तो धात ढालने वाले की आग या धोबी के तेज़ साबुन की मानिन्द होगा। 3 वह बैठ कर चाँदी को पिघला कर पाक-साफ़ करेगा। जिस तरह सोने-चाँदी को पिघला कर पाक-साफ़ किया जाता है उसी तरह वह लावी के क़बीले को पाक-साफ़ करेगा। तब वह रब को रास्त क़ुर्बानियाँ पेश करेंगे। 4 फिर यहूदाह और यरूशलम की क़ुर्बानियाँ क़दीम ज़माने की तरह दुबारा रब को क़बूल होंगी।

5 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, “मैं तुम्हारी अदालत करने के लिए तुम्हारे पास आऊँगा। जल्द ही मैं उन के ख़िलाफ़ गवाही दूँगा जो मेरा ख़ौफ़ नहीं मानते, जो जादूगर और ज़िनाकार हैं, जो झूटी क़सम खाते, मज़दूरों का हक़ मारते, बेवाओं और यतीमों पर ज़ुल्म करते और अजनबियों का हक़ मारते हैं।

तुम अल्लाह को धोका देते हो

6 मैं, रब तब्दील नहीं होता, लेकिन तुम अब तक याक़ूब की औलाद रहे हो। 7 अपने बापदादा के ज़माने से ले कर आज तक तुम ने मेरे अह्काम से दूर रह कर उन पर ध्यान नहीं दिया। रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि मेरे पास वापस आओ! तब मैं भी तुम्हारे पास वापस आऊँगा।

लेकिन तुम एतिराज़ करते हो, ‘हम क्यूँ वापस आएँ, हम से क्या सरज़द हुआ है?’ 8 क्या मुनासिब है कि इन्सान अल्लाह को ठगे? हरगिज़ नहीं! लेकिन तुम लोग यही कुछ कर रहे हो। तुम पूछते हो, ‘हम किस तरह तुझे ठगते हैं?’ इस में कि तुम मुझे अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा नहीं देते। नीज़, तुम इमामों को क़ुर्बानियों का वह हिस्सा नहीं देते जो उन का हक़ बनता है। 9 पूरी क़ौम मुझे ठगती रहती है, इस लिए मैं ने तुम पर लानत भेजी है।”

10 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, “मेरे घर के गोदाम में अपनी पैदावार का पूरा दसवाँ हिस्सा जमा करो ताकि इस में ख़ुराक दस्तयाब हो। मुझे इस में आज़मा कर देखो कि मैं अपने वादे को पूरा करता हूँ कि नहीं। क्यूँकि मैं तुम से वादा करता हूँ कि जवाब में मैं आसमान के दरीचे खोल कर तुम पर हद से ज़्यादा बरकत बरसा दूँगा।” 11 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, “मैं कीड़ों को तुम्हारी फ़सलों से दूर रखूँगा ताकि तुम्हारे खेतों की पैदावार और तुम्हारे अंगूर ख़राब न हो जाएँ बल्कि पक जाएँ। 12 तब तुम्हारा मुल्क इतना राहतबख़्श होगा कि तमाम अक़्वाम तुम्हें मुबारक कहेंगी।” यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान है।

जिस दिन अल्लाह फ़ैसला करेगा

13 रब फ़रमाता है, “तुम मेरे बारे में कुफ़्र बकते हो। तुम कहते हो, ‘हम क्यूँकर कुफ़्र बकते हैं?’ 14 इस में कि तुम कहते हो, ‘अल्लाह की ख़िदमत करना अबस है। क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज की हिदायात पर ध्यान

देने और मुँह लटका कर उस के हुज़ूर फिरने से हमें
क्या फ़ाइदा हुआ है? 15 चुनाँचे गुस्ताख़ लोगों को
मुबारक हो, क्यूँकि बेदीन फलते फूलते और अल्लाह
को आज़माने वाले ही बचे रहते हैं'।"

16 लेकिन फिर रब का ख़ौफ़ मानने वाले आपस
में बात करने लगे, और रब ने ग़ौर से उन की सुनी।
उस के हुज़ूर यादगारी की किताब लिखी गई जिस में
उन के नाम दर्ज हैं जो रब का ख़ौफ़ मानते और उस
के नाम का एहतिराम करते हैं। 17 रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है, "जिस दिन मैं हरकत में आऊँगा उस
दिन वह मेरी ख़ास मिलकियत होंगे। मैं उन पर यूँ
रहम करूँगा, जिस तरह बाप अपने उस बेटे पर
तरस खाता है जो उस की ख़िदमत करता है। 18 उस
वक़्त तुम्हें रास्तबाज़ और बेदीन का फ़र्क़ दुबारा
नज़र आएगा। साफ़ ज़ाहिर हो जाएगा कि अल्लाह की
ख़िदमत करने वालों और दूसरों में क्या फ़र्क़ है।"

4 1 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "यक़ीनन वह
दिन आने वाला है जब मेरा ग़ज़ब भड़कती भट्टी
की तरह नाज़िल हो कर हर गुस्ताख़ और बेदीन शख़्स
को भूसे की तरह भस्म कर देगा। वह जड़ से ले कर
शाख़ तक मिट जाएंगे।

2 लेकिन तुम पर जो मेरे नाम का ख़ौफ़ मानते हो
रास्ती का सूरज तुलू होगा, और उस के परों तले
शिफ़ा होगी। तब तुम बाहर निकल कर खुले छोड़े
हुए बछड़ों की तरह ख़ुशी से कूदते फाँदते फिरोगे।
3 जिस दिन मैं यह कुछ करूँगा उस दिन तुम बेदीनों
को यूँ कुचल डालोगे कि वह पाँओ तले की ख़ाक
बन जाएंगे।" यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान है।

4 "मेरे ख़ादिम मूसा की शरीअत को याद रखो यानी
वह तमाम अह्काम और हिदायात जो मैं ने उसे होरिब
यानी सीना पहाड़ पर इस्राईली क़ौम के लिए दी थीं।
5 रब के उस अज़ीम और हौलनाक दिन से पहले
मैं तुम्हारे पास इल्यास नबी को भेजूँगा। 6 जब वह
आएगा तो बाप का दिल बेटे और बेटे का दिल बाप
की तरफ़ माइल करेगा ताकि मैं आ कर मुल्क को
अपने लिए मख़्सूस करके नेस्त-ओ-नाबूद न करूँ।"

मत्ती

ईसा मसीह का नसबनामा

1 [1] ईसा मसीह बिन दाऊद बिन इब्राहीम का
नसबनामा :
[2] इब्राहीम इस्हाक़ का बाप था, इस्हाक़ याक़ूब का
बाप और याक़ूब यहूदा और उस के भाइयों का बाप।
[3] यहूदा के दो बेटे फ़ारस और ज़ारह थे (उन की माँ
तमर थी)। फ़ारस हस्रोन का बाप और हस्रोन राम
का बाप था। [4] राम अम्मीनदाब का बाप, अम्मीनदाब
नह्सोन का बाप और नह्सोन सल्मोन का बाप था।
[5] सल्मोन बोअज़ का बाप था (बोअज़ की माँ राहब
थी)। बोअज़ ओबेद का बाप था (ओबेद की माँ
रूत थी)। ओबेद यस्सी का बाप और [6] यस्सी दाऊद
बादशाह का बाप था।

दाऊद सुलैमान का बाप था (सुलैमान की माँ पहले
ऊरिय्याह की बीवी थी)। [7] सुलैमान रहुबिआम का
बाप, रहुबिआम अबियाह का बाप और अबियाह
आसा का बाप था। [8] आसा यहूसफ़त का बाप,
यहूसफ़त यूराम का बाप और यूराम उज़्ज़ियाह का
बाप था। [9] उज़्ज़ियाह यूताम का बाप, यूताम आख़ज़
का बाप और आख़ज़ हिज़क़ियाह का बाप था।
[10] हिज़क़ियाह मनस्सी का बाप, मनस्सी अमून का
बाप और अमून यूसियाह का बाप था। [11] यूसियाह
यहूयाकीन [l]और उस के भाइयों का बाप था (यह
बाबल की जिलावतनी के दौरान पैदा हुए)।

[12] बाबल की जिलावतनी के बाद यहूयाकीन
[m]सियाल्तीएल का बाप और सियाल्तीएल
ज़रुब्बाबल का बाप था। [13] ज़रुब्बाबल अबीहूद
का बाप, अबीहूद इलियाक़ीम का बाप और
इलियाक़ीम आज़ोर का बाप था। [14] आज़ोर सदोक़
का बाप, सदोक़ अख़ीम का बाप और अख़ीम
इलीहूद का बाप था। [15] इलीहूद इलीअज़र का
बाप, अलीअज़र मत्तान का बाप और मत्तान का
बाप याक़ूब था। [16] याक़ूब मरियम के शौहर यूसुफ़
का बाप था। इस मरियम से ईसा पैदा हुआ, जो
मसीह कहलाता है।

[17] यूँ इब्राहीम से दाऊद तक 14 नस्लें हैं, दाऊद
से बाबल की जिलावतनी तक 14 नस्लें हैं और
जिलावतनी से मसीह तक 14 नस्लें हैं

ईसा मसीह की पैदाइश

[18] ईसा मसीह की पैदाइश यूँ हुई : उस वक़्त उस
की माँ मरियम की मंगनी यूसुफ़ के साथ हो चुकी थी
कि वह रूह-उल-क़ुद्स से हामिला पाई गई। अभी
उन की शादी नहीं हुई थी। [19] उस का मंगेतर यूसुफ़
रास्तबाज़ था, वह अलानिया मरियम को बदनाम
नहीं करना चाहता था। इस लिए उस ने ख़ामोशी
से यह रिश्ता तोड़ने का इरादा कर लिया। [20] वह
इस बात पर अभी ग़ौर-ओ-फ़िक्र कर ही रहा था कि
रब का फ़रिश्ता ख़्वाब में उस पर ज़ाहिर हुआ और
फ़रमाया, "यूसुफ़ बिन दाऊद, मरियम से शादी करके
उसे अपने घर ले आने से मत डर, क्यूँकि पैदा होने
वाला बच्चा रूह-उल-क़ुद्स से है। [21] उस के बेटा होगा
और उस का नाम ईसा रखना, क्यूँकि वह अपनी
क़ौम को उस के गुनाहों से रिहाई देगा।"

[22] यह सब कुछ इस लिए हुआ ताकि रब की वह
बात पूरी हो जाए जो उस ने अपने नबी की मारिफ़त
फ़रमाई थी, [23] "देखो एक कुंवारी हामिला होगी। उस
से बेटा पैदा होगा और वह उस का नाम इम्मानूएल

---

[l] यूनानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

[m] यूनानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

रखेंगे।” (इम्मानूएल का मतलब ‘ख़ुदा हमारे साथ’ है।)

24 जब यूसुफ़ जाग उठा तो उस ने रब के फ़रिश्ते
के फ़रमान के मुताबिक़ मरियम से शादी कर ली और
उसे अपने घर ले गया। 25 लेकिन जब तक उस के
बेटा पैदा न हुआ वह मरियम से हमबिसतर न हुआ।
और यूसुफ़ ने बच्चे का नाम ईसा रखा।

मशरिक़ से मजूसी आलिम

2 1 ईसा हेरोदेस बादशाह के ज़माने में सूबा
यहूदिया के शहर बैत-लहम में पैदा हुआ। उन
दिनों में कुछ मजूसी आलिम मशरिक़ से आ कर
यरूशलम पहुँच गए। 2 उन्हों ने पूछा, “यहूदियों का
वह बादशाह कहाँ है जो हाल ही में पैदा हुआ है?
क्यूँकि हम ने मशरिक़ में उस का सितारा देखा है
और हम उसे सिज्दा करने आए हैं।”

3 यह सुन कर हेरोदेस बादशाह पूरे यरूशलम समेत
घबरा गया। 4 तमाम राहनुमा इमामों और शरीअत के
उलमा को जमा करके उस ने उन से दरयाफ़्त किया
कि मसीह कहाँ पैदा होगा।

5 उन्हों ने जवाब दिया, “यहूदिया के शहर बैत-
लहम में, क्यूँकि नबी की मारिफ़त यूँ लिखा है, 6 ‘ऐ
मुल्क-ए-यहूदिया में वाक़े बैत-लहम, तू यहूदिया के
हुक्मरानों में हरगिज़ सब से छोटा नहीं। क्यूँकि तुझ
में से एक हुक्मरान निकलेगा जो मेरी क़ौम इस्राईल
की गल्लाबानी करेगा’।”

7 इस पर हेरोदेस ने ख़ुफ़िया तौर पर मजूसी
आलिमों को बुला कर तफ़्सील से पूछा कि वह
सितारा किस वक़्त दिखाई दिया था। 8 फिर उस ने
उन्हें बताया, “बैत-लहम जाएँ और तफ़्सील से बच्चे
का पता लगाएँ। जब आप उसे पा लें तो मुझे इत्तिला
दें ताकि मैं भी जा कर उसे सिज्दा करूँ।”

9 बादशाह के इन अल्फ़ाज़ के बाद वह चले गए।
और देखो जो सितारा उन्हों ने मशरिक़ में देखा था वह
उन के आगे आगे चलता गया और चलते चलते उस
मक़ाम के ऊपर ठहर गया जहाँ बच्चा था। 10 सितारे
को देख कर वह बहुत ख़ुश हुए। 11 वह घर में दाख़िल
हुए और बच्चे को माँ के साथ देख कर उन्हों ने औंधे
मुँह गिर कर उसे सिज्दा किया। फिर अपने डिब्बे
खोल कर उसे सोने, लुबान और मुर के तुह्फ़े पेश
किए।

12 जब रवानगी का वक़्त आया तो वह यरूशलम
से हो कर न गए बल्कि एक और रास्ते से अपने मुल्क
चले गए, क्यूँकि उन्हें ख़्वाब में आगाह किया गया
था कि हेरोदेस के पास वापस न जाओ।

मिस्र की जानिब हिज्रत

13 उन के चले जाने के बाद रब का फ़रिश्ता ख़्वाब
में यूसुफ़ पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “उठ, बच्चे को
उस की माँ समेत ले कर मिस्र को हिज्रत कर जा।
जब तक मैं तुझे इत्तिला न दूँ वहीं ठहरा रह, क्यूँकि
हेरोदेस बच्चे को तलाश करेगा ताकि उसे क़त्ल करे।”

14 यूसुफ़ उठा और उसी रात बच्चे को उस की माँ
समेत ले कर मिस्र के लिए रवाना हुआ। 15 वहाँ वह
हेरोदेस के इन्तिक़ाल तक रहा। यूँ वह बात पूरी हुई
जो रब ने नबी की मारिफ़त फ़रमाई थी, “मैं ने अपने
फ़र्ज़न्द को मिस्र से बुलाया।”

बच्चों का क़त्ल

16 जब हेरोदेस को मालूम हुआ कि मजूसी आलिमों
ने मुझे फ़रेब दिया है तो उसे बड़ा तैश आया। उस ने
अपने फ़ौजियों को बैत-लहम भेज कर उन्हें हुक्म
दिया कि बैत-लहम और इर्दगिर्द के इलाक़े के उन
तमाम लड़कों को क़त्ल करें जिन की उम्र दो साल
तक हो। क्यूँकि उस ने मजूसियों से बच्चे की उम्र के
बारे में यह मालूम कर लिया था।

17 यूँ यर्मियाह नबी की पेशगोई पूरी हुई, 18 “रामा
में शोर मच गया है, रोने पीटने और शदीद मातम की
आवाज़ें। राख़िल अपने बच्चों के लिए रो रही है और
तसल्ली क़बूल नहीं कर रही, क्यूँकि वह हलाक हो
गए हैं।”

मिस्र से वापसी

19 जब हेरोदेस इन्तिक़ाल कर गया तो रब का
फ़रिश्ता ख़्वाब में यूसुफ़ पर ज़ाहिर हुआ जो अभी
मिस्र ही में था। 20 फ़रिश्ते ने उसे बताया, "उठ, बच्चे
को उस की माँ समेत ले कर मुल्क-ए-इस्राईल वापस
चला जा, क्यूँकि जो बच्चे को जान से मारने के दरपै
थे वह मर गए हैं।" 21 चुनाँचे यूसुफ़ उठा और बच्चे
और उस की माँ को ले कर मुल्क-ए-इस्राईल में लौट
आया।
22 लेकिन जब उस ने सुना कि अर्ख़िलाउस अपने
बाप हेरोदेस की जगह यहूदिया में तख़्तनशीन हो
गया है तो वह वहाँ जाने से डर गया। फिर ख़्वाब
में हिदायत पा कर वह गलील के इलाक़े के लिए
रवाना हुआ। 23 वहाँ वह एक शहर में जा बसा जिस
का नाम नासरत था। यूँ नबियों की बात पूरी हुई कि
'वह नासरी कहलाएगा।'

यहया बपतिस्मा देने वाले की ख़िदमत

3 1 उन दिनों में यहया बपतिस्मा देने वाला आया
और यहूदिया के रेगिस्तान में एलान करने लगा,
2 "तौबा करो, क्यूँकि आसमान की बादशाही क़रीब
आ गई है।" 3 यहया वही है जिस के बारे में यसायाह
नबी ने फ़रमाया, 'रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार
रही है, रब की राह तय्यार करो! उस के रास्ते सीधे
बनाओ।'
4 यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और कमर
पर चमड़े का पटका बांधे रहता था। ख़ुराक के तौर
पर वह टिड्डियाँ और जंगली शहद खाता था। 5 लोग
यरूशलम, पूरे यहूदिया और दरया-ए-यर्दन के पूरे
इलाक़े से निकल कर उस के पास आए। 6 और अपने
गुनाहों को तस्लीम करके उन्हों ने दरया-ए- यर्दन में
यहया से बपतिस्मा लिया।
7 बहुत से फ़रीसी और सदूक़ी भी वहाँ आए जहाँ
वह बपतिस्मा दे रहा था। उन्हें देख कर उस ने
कहा, "ऐ ज़हरीले साँप के बच्चो! किस ने तुम्हें आने
वाले ग़ज़ब से बचने की हिदायत की? 8 अपनी
ज़िन्दगी से ज़ाहिर करो कि तुम ने वाक़ई तौबा की
है। 9 यह ख़याल मत करो कि हम तो बच जाएंगे
क्यूँकि इब्राहीम हमारा बाप है। मैं तुम को बताता
हूँ कि अल्लाह इन पत्थरों से भी इब्राहीम के लिए
औलाद पैदा कर सकता है। 10 अब तो अदालत
की कुल्हाड़ी दरख़्तों की जड़ों पर रखी हुई है। हर
दरख़्त जो अच्छा फल न लाए काटा और आग में
झोंका जाएगा। 11 मैं तो तुम तौबा करने वालों को
पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन एक आने वाला
है जो मुझ से बड़ा है। मैं उस के जूतों को उठाने के
भी लाइक़ नहीं। वह तुम्हें रूह-उल-क़ुद्स और आग
से बपतिस्मा देगा। 12 वह हाथ में छाज पकड़े हुए
अनाज को भूसे से अलग करने के लिए तय्यार खड़ा
है। वह गाहने की जगह बिलकुल साफ़ करके अनाज
को अपने गोदाम में जमा करेगा। लेकिन भूसे को वह
ऐसी आग में झोंकेगा जो बुझने की नहीं।"

ईसा का बपतिस्मा

13 फिर ईसा गलील से दरया-ए-यर्दन के किनारे
आया ताकि यहया से बपतिस्मा ले। 14 लेकिन यहया
ने उसे रोकने की कोशिश करके कहा, "मुझे तो आप
से बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है, तो फिर आप मेरे
पास क्यूँ आए हैं?"
15 ईसा ने जवाब दिया, "अब होने ही दे, क्यूँकि
मुनासिब है कि हम यह करते हुए अल्लाह की रास्त
मर्ज़ी पूरी करें।" [n]इस पर यहया मान गया।
16 बपतिस्मा लेने पर ईसा फ़ौरन पानी से निकला।
उसी लम्हे आसमान खुल गया और उस ने अल्लाह के
रूह को देखा जो कबूतर की तरह उतर कर उस पर
ठहर गया। 17 साथ साथ आसमान से एक आवाज़

---

[n]लफ़्ज़ी तर्जुमा : हम तमाम रास्तबाज़ी पूरी करें।

सुनाई दी, “यह मेरा प्यारा फ़र्ज़न्द है, इस से मैं ख़ुश हूँ।”

ईसा को आज़माया जाता है

4 1 फिर रूह-उल-क़ुद्स ईसा को रेगिस्तान में ले
गया ताकि उसे इब्लीस से आज़माया जाए।
2 चालीस दिन और चालीस रात रोज़ा रखने के बाद
उसे आख़िरकार भूक लगी। 3 फिर आज़माने वाला
उस के पास आ कर कहने लगा, “अगर तू अल्लाह
का फ़र्ज़न्द है तो इन पत्थरों को हुक्म दे कि रोटी बन
जाएँ।”
4 लेकिन ईसा ने इन्कार करके कहा, “हरगिज़ नहीं,
क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है कि इन्सान की
ज़िन्दगी सिर्फ़ रोटी पर मुन्हसिर नहीं होती बल्कि हर
उस बात पर जो रब के मुँह से निकलती है।”
5 इस पर इब्लीस ने उसे मुक़द्दस शहर यरूशलम ले
जा कर बैत-उल-मुक़द्दस की सब से ऊँची जगह पर
खड़ा किया और कहा, 6 “अगर तू अल्लाह का फ़र्ज़न्द
है तो यहाँ से छलाँग लगा दे। क्यूँकि कलाम-ए-
मुक़द्दस में लिखा है, ‘वह तेरी ख़ातिर अपने फ़रिश्तों
को हुक्म देगा, और वह तुझे अपने हाथों पर उठा
लेंगे ताकि तेरे पाँओ को पत्थर से ठेस न लगे’।”
7 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “कलाम-ए-मुक़द्दस
यह भी फ़रमाता है, ‘रब अपने ख़ुदा को न
आज़माना’।”
8 फिर इब्लीस ने उसे एक निहायत ऊँचे पहाड़ पर
ले जा कर उसे दुनिया के तमाम ममालिक और उन
की शान-ओ-शौकत दिखाई। 9 वह बोला, “यह सब
कुछ मैं तुझे दे दूँगा, शर्त यह है कि तू गिर कर मुझे
सिज्दा करे।”
10 लेकिन ईसा ने तीसरी बार इन्कार किया और
कहा, “इब्लीस, दफ़ा हो जा! क्यूँकि कलाम-ए-
मुक़द्दस में यूँ लिखा है, ‘रब अपने ख़ुदा को सिज्दा
कर और सिर्फ़ उसी की इबादत कर’।”
11 इस पर इब्लीस उसे छोड़ कर चला गया और
फ़रिश्ते आ कर उस की ख़िदमत करने लगे।

गलील में ईसा की ख़िदमत का आग़ाज़

12 जब ईसा को ख़बर मिली कि यहया को जेल
में डाल दिया गया है तो वह वहाँ से चला गया
और गलील में आया। 13 नासरत को छोड़ कर वह
झील के किनारे पर वाक़े शहर कफ़र्नहूम में रहने
लगा, यानी ज़बूलून और नफ़्ताली के इलाक़े में। 14 यूँ
यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,

15 “ज़बूलून का इलाक़ा, नफ़्ताली का इलाक़ा,
झील के साथ का रास्ता, दरया-ए-यर्दन के पार,
ग़ैरयहूदियों का गलील :
16 अंधेरे में बैठी क़ौम ने एक तेज़ रौशनी देखी,
मौत के साय में डूबे हुए मुल्क के बाशिन्दों पर
रौशनी चमकी।”

17 उस वक़्त से ईसा इस पैग़ाम की मुनादी करने
लगा, “तौबा करो, क्यूँकि आसमान की बादशाही
क़रीब आ गई है।”

ईसा चार मछेरों को बुलाता है

18 एक दिन जब ईसा गलील की झील के किनारे
किनारे चल रहा था तो उस ने दो भाइयों को देखा -
शमाऊन जो पतरस भी कहलाता था और अन्द्रियास
को। वह पानी में जाल डाल रहे थे, क्यूँकि वह
माहीगीर थे। 19 उस ने कहा, “आओ, मेरे पीछे हो
लो, मैं तुम को आदमगीर बनाऊँगा।” 20 यह सुनते
ही वह अपने जालों को छोड़ कर उस के पीछे हो
लिए।
21 आगे जा कर ईसा ने दो और भाइयों को देखा,
याक़ूब बिन ज़ब्दी और उस के भाई यूहन्ना को। वह
कश्ती में बैठे अपने बाप ज़ब्दी के साथ अपने जालों
की मरम्मत कर रहे थे। ईसा ने उन्हें बुलाया 22 तो
वह फ़ौरन कश्ती और अपने बाप को छोड़ कर उस
के पीछे हो लिए।

ईसा तालीम देता, मुनादी करता और शिफ़ा देता है

23 और ईसा गलील के पूरे इलाक़े में फिरता रहा।
जहाँ भी वह जाता वह यहूदी इबादतख़ानों में तालीम
देता, बादशाही की ख़ुशख़बरी सुनाता और हर क़िस्म
की बीमारी और अलालत से शिफ़ा देता था। 24 उस
की ख़बर मुल्क-ए-शाम के कोने कोने तक पहुँच गई,
और लोग अपने तमाम मरीज़ों को उस के पास लाने
लगे। क़िस्म क़िस्म की बीमारियों तले दबे लोग, ऐसे
जो शदीद दर्द का शिकार थे, बदरूहों की गिरिफ़्त
में मुब्तला, मिर्गी वाले और फ़ालिजज़दा, ग़रज़ जो
भी आया ईसा ने उसे शिफ़ा बख़्शी। 25 गलील,
दिकपुलिस, यरूशलम, यहूदिया और दरया-ए-यर्दन
के पार के इलाक़े से बड़े बड़े हुजूम उस के पीछे
चलते रहे।

पहाड़ी वाज़

5 1 भीड़ को देख कर ईसा पहाड़ पर चढ़ कर बैठ
गया। उस के शागिर्द उस के पास आए 2 और
वह उन्हें यह तालीम देने लगा :

हक़ीक़ी ख़ुशी

3 "मुबारक हैं वह जिन की रूह ज़रूरतमन्द है,
क्यूँकि आसमान की बादशाही उन ही की है।
4 मुबारक हैं वह जो मातम करते हैं, क्यूँकि उन्हें
तसल्ली दी जाएगी।
5 मुबारक हैं वह जो हलीम हैं, क्यूँकि वह ज़मीन
विरसे में पाएँगे।
6 मुबारक हैं वह जिन्हें रास्तबाज़ी की भूक और
प्यास है, क्यूँकि वह सेर हो जाएंगे।
7 मुबारक हैं वह जो रहमदिल हैं, क्यूँकि उन पर
रहम किया जाएगा।
8 मुबारक हैं वह जो ख़ालिस दिल हैं, क्यूँकि वह
अल्लाह को देखेंगे।
9 मुबारक हैं वह जो सुलह कराते हैं, क्यूँकि वह
अल्लाह के फ़र्ज़न्द कहलाएँगे।
10 मुबारक हैं वह जिन को रास्तबाज़ होने के
सबब से सताया जाता है, क्यूँकि उन्हें आसमान की
बादशाही विरसे में मिलेगी।
11 मुबारक हो तुम जब लोग मेरी वजह से तुम्हें
लान-तान करते, तुम्हें सताते और तुम्हारे बारे में हर
क़िस्म की बुरी और झूटी बात करते हैं। 12 ख़ुशी
मनाओ और बाग़ बाग़ हो जाओ, तुम को आसमान
पर बड़ा अज्र मिलेगा। क्यूँकि इसी तरह उन्हों ने तुम
से पहले नबियों को भी ईज़ा पहुँचाई थी।

तुम नमक और रौशनी हो

13 तुम दुनिया का नमक हो। लेकिन अगर नमक का
ज़ाइक़ा जाता रहे तो फिर उसे क्यूँकर दुबारा नमकीन
किया जा सकता है? वह किसी भी काम का नहीं रहा
बल्कि बाहर फैंका जाएगा जहाँ वह लोगों के पाँओ
तले रौंदा जाएगा।
14 तुम दुनिया की रौशनी हो। पहाड़ पर वाक़े शहर
की तरह तुम को छुपाया नहीं जा सकता। 15 जब
कोई चराग़ जलाता है तो वह उसे बर्तन के नीचे नहीं
रखता बल्कि शमादान पर रख देता है जहाँ से वह घर
के तमाम अफ़राद को रौशनी देता है। 16 इसी तरह
तुम्हारी रौशनी भी लोगों के सामने चमके ताकि वह
तुम्हारे नेक काम देख कर तुम्हारे आसमानी बाप को
जलाल दें।

शरीअत

17 यह न समझो कि मैं मूसवी शरीअत और नबियों
की बातों को मन्सूख़ करने आया हूँ। मन्सूख़ करने
नहीं बल्कि उन की तक्मील करने आया हूँ। 18 मैं
तुम को सच बताता हूँ, जब तक आसमान-ओ-ज़मीन
क़ाइम रहेंगे तब तक शरीअत भी क़ाइम रहेगी - न उस
का कोई हर्फ़, न उस का कोई ज़ेर या ज़बर मन्सूख़
होगा जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए। 19 जो इन
सब से छोटे अह्काम में से एक को भी मन्सूख़ करे
और लोगों को ऐसा करना सिखाए उसे आसमान की
बादशाही में सब से छोटा क़रार दिया जाएगा। इस

के मुक़ाबले में जो इन अह्काम पर अमल करके
इन्हें सिखाता है उसे आसमान की बादशाही में बड़ा
क़रार दिया जाएगा। 20 क्यूँकि मैं तुम को बताता
हूँ कि अगर तुम्हारी रास्तबाज़ी शरीअत के उलमा
और फ़रीसियों की रास्तबाज़ी से ज़्यादा नहीं तो तुम
आसमान की बादशाही में दाख़िल होने के लाइक़
नहीं।

ग़ुस्सा

21 तुम ने सुना है कि बापदादा को फ़रमाया गया,
'क़त्ल न करना। और जो क़त्ल करे उसे अदालत में
जवाब देना होगा।' 22 लेकिन मैं तुम को बताता हूँ
कि जो भी अपने भाई पर ग़ुस्सा करे उसे अदालत
में जवाब देना होगा। इसी तरह जो अपने भाई
को 'अहमक़' कहे उसे यहूदी अदालत-ए-अलिया
में जवाब देना होगा। और जो उस को 'बेवुक़ूफ़!'
कहे वह जहन्नुम की आग में फैंके जाने के लाइक़
ठहरेगा। 23 लिहाज़ा अगर तुझे बैत-उल-मुक़द्दस में
क़ुर्बानी पेश करते वक़्त याद आए कि तेरे भाई को
तुझ से कोई शिकायत है 24 तो अपनी क़ुर्बानी को
वहीं क़ुर्बानगाह के सामने ही छोड़ कर अपने भाई
के पास चला जा। पहले उस से सुलह कर और फिर
वापस आ कर अल्लाह को अपनी क़ुर्बानी पेश कर।
25 फ़र्ज़ करो कि किसी ने तुझ पर मुक़द्दमा चलाया
है। अगर ऐसा हो तो कचहरी में दाख़िल होने से पहले
पहले जल्दी से झगड़ा ख़त्म कर। ऐसा न हो कि वह
तुझे जज के हवाले करे, जज तुझे पुलिस अफ़्सर के
हवाले करे और नतीजे में तुझ को जेल में डाला जाए।
26 मैं तुझे सच बताता हूँ, वहाँ से तू उस वक़्त तक
नहीं निकल पाएगा जब तक जुर्माने की पूरी पूरी रक़म
अदा न कर दे।

ज़िनाकारी

27 तुम ने यह हुक्म सुन लिया है कि 'ज़िना न
करना।' 28 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, जो किसी औरत
को बुरी ख़्वाहिश से देखता है वह अपने दिल में उस
के साथ ज़िना कर चुका है। 29 अगर तेरी बाईं आँख
तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे निकाल कर
फैंक दे। इस से पहले कि तेरे पूरे जिस्म को जहन्नुम
में डाला जाए बेहतर यह है कि तेरा एक ही उज़ू जाता
रहे। 30 और अगर तेरा दहना हाथ तुझे गुनाह करने
पर उकसाए तो उसे काट कर फैंक दे। इस से पहले
कि तेरा पूरा जिस्म जहन्नुम में जाए बेहतर यह है कि
तेरा एक ही उज़ू जाता रहे।

तलाक़

31 यह भी फ़रमाया गया है, 'जो भी अपनी बीवी को
तलाक़ दे वह उसे तलाक़नामा लिख दे।' 32 लेकिन
मैं तुम को बताता हूँ कि अगर किसी की बीवी ने
ज़िना न किया हो तो भी शौहर उसे तलाक़ दे तो वह
उस से ज़िना कराता है। और जो तलाकशुदा औरत
से शादी करे वह ज़िना करता है।

क़सम मत खाना

33 तुम ने यह भी सुना है कि बापदादा को फ़रमाया
गया, 'झूटी क़सम मत खाना बल्कि जो वादे तू ने
रब से क़सम खा कर किए हों उन्हें पूरा करना।'
34 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, क़सम बिलकुल न
खाना। न 'आसमान की क़सम' क्यूँकि आसमान
अल्लाह का तख़्त है, 35 न 'ज़मीन की' क्यूँकि ज़मीन
उस के पाँओ की चौकी है। 'यरूशलम की क़सम' भी
न खाना क्यूँकि यरूशलम अज़ीम बादशाह का शहर
है। 36 यहाँ तक कि अपने सर की क़सम भी न खाना,
क्यूँकि तू अपना एक बाल भी काला या सफ़ेद नहीं
कर सकता। 37 सिर्फ़ इतना ही कहना, 'जी हाँ' या
'जी नहीं।' अगर इस से ज़्यादा कहो तो यह इब्लीस
की तरफ़ से है।

बदला लेना

38 तुम ने सुना है कि यह फ़रमाया गया है, 'आँख के
बदले आँख, दाँत के बदले दाँत।' 39 लेकिन मैं तुम
को बताता हूँ कि बदकार का मुक़ाबला मत करना।

अगर कोई तेरे दहने गाल पर थप्पड़ मारे तो उसे
दूसरा गाल भी पेश कर दे। 40 अगर कोई तेरी क़मीस
लेने के लिए तुझ पर मुक़द्दमा करना चाहे तो उसे
अपनी चादर भी दे देना। 41 अगर कोई तुझ को उस
का सामान उठा कर एक किलोमीटर जाने पर मज्बूर
करे तो उस के साथ दो किलोमीटर चला जाना। 42 जो
तुझ से कुछ माँगे उसे दे देना और जो तुझ से क़र्ज़
लेना चाहे उस से इन्कार न करना।

दुश्मन से मुहब्बत

43 तुम ने सुना है कि फ़रमाया गया है, 'अपने
पड़ोसी से मुहब्बत रखना और अपने दुश्मन से
नफ़रत करना।' 44 लेकिन मैं तुम को बताता हूँ, अपने
दुश्मनों से मुहब्बत रखो और उन के लिए दुआ करो
जो तुम को सताते हैं। 45 फिर तुम अपने आसमानी
बाप के फ़र्ज़न्द ठहरोगे, क्यूँकि वह अपना सूरज सब
पर तुलू होने देता है, ख़्वाह वह अच्छे हों या बुरे।
और वह सब पर बारिश बरसने देता है, ख़्वाह वह
रास्तबाज़ हों या नारास्त। 46 अगर तुम सिर्फ़ उन ही
से मुहब्बत करो जो तुम से करते हैं तो तुम को क्या
अज्र मिलेगा? टैक्स लेने वाले भी तो ऐसा ही करते
हैं। 47 और अगर तुम सिर्फ़ अपने भाइयों के लिए
सलामती की दुआ करो तो कौन सी ख़ास बात करते
हो? ग़ैरयहूदी भी तो ऐसा ही करते हैं। 48 चुनाँचे वैसे
ही कामिल हो जैसा तुम्हारा आसमानी बाप कामिल
है।

ख़ैरात

6 1 ख़बरदार! अपने नेक काम लोगों के सामने
दिखावे के लिए न करो, वर्ना तुम को अपने
आसमानी बाप से कोई अज्र नहीं मिलेगा।
2 चुनाँचे ख़ैरात देते वक़्त रियाकारों की तरह न कर
जो इबादतख़ानों और गलियों में बिगुल बजा कर इस
का एलान करते हैं ताकि लोग उन की इज़्ज़त करें।
मैं तुम को सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना
था उन्हें मिल चुका है। 3 इस के बजाय जब तू ख़ैरात
दे तो तेरे दाएँ हाथ को पता न चले कि बायाँ हाथ
क्या कर रहा है। 4 तेरी ख़ैरात यूँ पोशीदगी में दी जाए
तो तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इस का
मुआवज़ा देगा।

दुआ

5 दुआ करते वक़्त रियाकारों की तरह न करना
जो इबादतख़ानों और चौकों में जा कर दुआ करना
पसन्द करते हैं, जहाँ सब उन्हें देख सकें। मैं तुम को
सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना था उन्हें
मिल चुका है। 6 इस के बजाय जब तू दुआ करता
है तो अन्दर के कमरे में जा कर दरवाज़ा बन्द कर
और फिर अपने बाप से दुआ कर जो पोशीदगी में है।
फिर तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इस का
मुआवज़ा देगा।
7 दुआ करते वक़्त ग़ैरयहूदियों की तरह तवील और
बेमानी बातें न दुहराते रहो। वह समझते हैं कि हमारी
बहुत सी बातों के सबब से हमारी सुनी जाएगी। 8 उन
की मानिन्द न बनो, क्यूँकि तुम्हारा बाप पहले से
तुम्हारी ज़रूरियात से वाक़िफ़ है, 9 बल्कि यूँ दुआ
किया करो,

ऐ हमारे आसमानी बाप,
तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।
10 तेरी बादशाही आए।
तेरी मर्ज़ी जिस तरह आसमान में पूरी होती है ज़मीन
पर भी पूरी हो।
11 हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे।
12 हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर
जिस तरह हम ने उन्हें मुआफ़ किया [o]
जिन्हों ने हमारा गुनाह किया है।
13 और हमें आज़माइश में न पड़ने दे
बल्कि हमें इब्लीस से बचाए रख।

---

[o] लफ़्ज़ी तर्जुमा : हमारे क़र्ज़ हमें मुआफ़ कर जिस तरह हम ने अपने क़र्ज़दारों को मुआफ़ किया।

[क्यूँकि बादशाही, क़ुदरत और जलाल अबद तक
तेरे ही हैं।]

14 क्यूँकि जब तुम लोगों के गुनाह मुआफ़ करोगे
तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुम को मुआफ़ करेगा।
15 लेकिन अगर तुम उन्हें मुआफ़ न करो तो तुम्हारा
बाप भी तुम्हारे गुनाह मुआफ़ नहीं करेगा।

रोज़ा

16 रोज़ा रखते वक़्त रियाकारों की तरह मुँह
लटकाए न फिरो, क्यूँकि वह ऐसा रूप भरते हैं ताकि
लोगों को मालूम हो जाए कि वह रोज़ा से हैं। मैं तुम
को सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना था उन्हें
मिल चुका है। 17 ऐसा मत करना बल्कि रोज़े के वक़्त
अपने बालों में तेल डाल और अपना मुँह धो। 18 फिर
लोगों को मालूम नहीं होगा कि तू रोज़ा से है बल्कि
सिर्फ़ तेरे बाप को जो पोशीदगी में है। और तेरा बाप
जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इस का मुआवज़ा
देगा।

आसमान पर ख़ज़ाना

19 इस दुनिया में अपने लिए ख़ज़ाने जमा न करो,
जहाँ कीड़ा और ज़ंग उन्हें खा जाते और चोर नक़ब
लगा कर चुरा लेते हैं। 20 इस के बजाय अपने ख़ज़ाने
आसमान पर जमा करो जहाँ कीड़ा और ज़ंग उन्हें
तबाह नहीं कर सकते, न चोर नक़ब लगा कर चुरा
सकते हैं। 21 क्यूँकि जहाँ तेरा ख़ज़ाना है वहीं तेरा
दिल भी लगा रहेगा।

जिस्म की रौशनी

22 बदन का चराग़ आँख है। अगर तेरी आँख ठीक
हो तो फिर तेरा पूरा बदन रौशन होगा। 23 लेकिन
अगर तेरी आँख ख़राब हो तो तेरा पूरा बदन अंधेरा
ही अंधेरा होगा। और अगर तेरे अन्दर की रौशनी
तारीकी हो तो यह तारीकी कितनी शदीद होगी!

बेफ़िक्र होना

24 कोई भी दो मालिकों की ख़िदमत नहीं कर
सकता। या तो वह एक से नफ़रत करके दूसरे से
मुहब्बत रखेगा या एक से लिपट कर दूसरे को हक़ीर
जानेगा। तुम एक ही वक़्त में अल्लाह और दौलत की
ख़िदमत नहीं कर सकते।

25 इस लिए मैं तुम्हें बताता हूँ, अपनी ज़िन्दगी की
ज़रूरियात पूरी करने के लिए परेशान न रहो कि हाय,
मैं क्या खाऊँ और क्या पियूँ। और जिस्म के लिए
फ़िक्रमन्द न रहो कि हाय, मैं क्या पहनूँ। क्या ज़िन्दगी
खाने-पीने से अहम नहीं है? और क्या जिस्म पोशाक
से ज़्यादा अहमियत नहीं रखता? 26 परिन्दों पर ग़ौर
करो। न वह बीज बोते, न फ़सलें काट कर उन्हें
गोदाम में जमा करते हैं। तुम्हारा आसमानी बाप ख़ुद
उन्हें खाना खिलाता है। क्या तुम्हारी उन की निस्बत
ज़्यादा क़दर-ओ-क़ीमत नहीं है? 27 क्या तुम में से
कोई फ़िक्र करते करते अपनी ज़िन्दगी में एक लम्हे
का भी इज़ाफ़ा कर सकता है?

28 और तुम अपने कपड़ों के लिए क्यूँ फ़िक्रमन्द
होते हो? ग़ौर करो कि सोसन के फूल किस तरह
उगते हैं। न वह मेहनत करते, न कातते हैं। 29 लेकिन
मैं तुम्हें बताता हूँ कि सुलैमान बादशाह अपनी पूरी
शान-ओ-शौकत के बावुजूद ऐसे शानदार कपड़ों से
मुलब्बस नहीं था जैसे उन में से एक। 30 अगर अल्लाह
उस घास को जो आज मैदान में है और कल आग
में झोंकी जाएगी ऐसा शानदार लिबास पहनाता है तो
ऐ कमएतिक़ादो, वह तुम को पहनाने के लिए क्या
कुछ नहीं करेगा?

31 चुनाँचे परेशानी के आलम में फ़िक्र करते करते
यह न कहते रहो, 'हम क्या खाएँ? हम क्या पिएँ? हम
क्या पहनें?' 32 क्यूँकि जो ईमान नहीं रखते वही इन
तमाम चीज़ों के पीछे भागते रहते हैं जबकि तुम्हारे
आसमानी बाप को पहले से मालूम है कि तुम को
इन तमाम चीज़ों की ज़रूरत है। 33 पहले अल्लाह की
बादशाही और उस की रास्तबाज़ी की तलाश में रहो।

फिर यह तमाम चीज़ें भी तुम को मिल जाएँगी। 34 इस
लिए कल के बारे में फ़िक्र करते करते परेशान न
हो क्यूँकि कल का दिन अपने लिए आप फ़िक्र कर
लेगा। हर दिन की अपनी मुसीबतें काफ़ी हैं।

औरों का मुन्सिफ़ बनना

7 1 दूसरों की अदालत मत करना, वर्ना तुम्हारी
अदालत भी की जाएगी। 2 क्यूँकि जितनी सख़्ती
से तुम दूसरों का फ़ैसला करते हो उतनी सख़्ती से
तुम्हारा भी फ़ैसला किया जाएगा। और जिस पैमाने
से तुम नापते हो उसी पैमाने से तुम भी नापे जाओगे।
3 तू क्यूँ ग़ौर से अपने भाई की आँख में पड़े तिनके
पर नज़र करता है जबकि तुझे वह शहतीर नज़र नहीं
आता जो तेरी अपनी आँख में है? 4 तू क्यूँकर अपने
भाई से कह सकता है, 'ठहरो, मुझे तुम्हारी आँख
में पड़ा तिनका निकालने दो,' जबकि तेरी अपनी
आँख में शहतीर है। 5 रियाकार! पहले अपनी आँख
के शहतीर को निकाल। तब ही तुझे भाई का तिनका
साफ़ नज़र आएगा और तू उसे अच्छी तरह से देख
कर निकाल सकेगा।

6 कुत्तों को मुक़द्दस ख़ुराक मत खिलाना और
सूअरों के आगे अपने मोती न फैंकना। ऐसा न हो
कि वह उन्हें पाँओ तले रौंदें और मुड़ कर तुम को
फाड़ डालें।

माँगते रहना

7 माँगते रहो तो तुम को दिया जाएगा। ढूँडते रहो तो
तुम को मिल जाएगा। खटखटाते रहो तो तुम्हारे लिए
दरवाज़ा खोल दिया जाएगा। 8 क्यूँकि जो भी माँगता
है वह पाता है, जो ढूँडता है उसे मिलता है, और
जो खटखटाता है उस के लिए दरवाज़ा खोल दिया
जाता है। 9 तुम में से कौन अपने बेटे को पत्थर देगा
अगर वह रोटी माँगे? 10 या कौन उसे साँप देगा अगर
वह मछली माँगे? कोई नहीं! 11 जब तुम बुरे होने के
बावुजूद इतने समझदार हो कि अपने बच्चों को अच्छी
चीज़ें दे सकते हो तो फिर कितनी ज़्यादा यक़ीनी बात
है कि तुम्हारा आसमानी बाप माँगने वालों को अच्छी
चीज़ें देगा।

12 हर बात में दूसरों के साथ वही सुलूक करो
जो तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें। क्यूँकि
यही शरीअत और नबियों की तालीमात का लुब्ब-ए-
लुबाब है।

तंग दरवाज़ा

13 तंग दरवाज़े से दाख़िल हो, क्यूँकि हलाकत की
तरफ़ ले जाने वाला रास्ता कुशादा और उस का
दरवाज़ा चौड़ा है। बहुत से लोग उस में दाख़िल हो
जाते हैं। 14 लेकिन ज़िन्दगी की तरफ़ ले जाने वाला
रास्ता तंग है और उस का दरवाज़ा छोटा। कम ही
लोग उसे पाते हैं।

हर दरख़्त का अपना फल होता है

15 झूटे नबियों से ख़बरदार रहो! गो वह भेड़ों का
भेस बदल कर तुम्हारे पास आते हैं, लेकिन अन्दर
से वह ग़ारतगर भेड़िए होते हैं। 16 उन का फल देख
कर तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या ख़ारदार झाड़ियों से
अंगूर तोड़े जाते हैं या ऊँटकटारों से अन्जीर? हरगिज़
नहीं। 17 इसी तरह अच्छा दरख़्त अच्छा फल लाता है
और ख़राब दरख़्त ख़राब फल। 18 न अच्छा दरख़्त
ख़राब फल ला सकता है, न ख़राब दरख़्त अच्छा
फल। 19 जो भी दरख़्त अच्छा फल नहीं लाता उसे
काट कर आग में झोंका जाता है। 20 यूँ तुम उन का
फल देख कर उन्हें पहचान लोगे।

सिर्फ़ असल पैरोकार दाख़िल होंगे

21 हर एक जो मुझे 'ख़ुदावन्द, ख़ुदावन्द' कह कर
पुकारता है आसमान की बादशाही में दाख़िल न
होगा। सिर्फ़ वही दाख़िल होगा जो मेरे आसमानी
बाप की मर्ज़ी पर अमल करता है। 22 अदालत के दिन
बहुत से लोग मुझ से कहेंगे, 'ऐ ख़ुदावन्द, ख़ुदावन्द!
क्या हम ने तेरे ही नाम में नबुव्वत नहीं की, तेरे
ही नाम से बदरुहें नहीं निकालीं, तेरे ही नाम से

मोजिज़े नहीं किए?' 23 उस वक़्त मैं उन से साफ़ साफ़
कह दूँगा, 'मेरी कभी तुम से जान पहचान न थी। ऐ
बदकारो! मेरे सामने से चले जाओ।'

दो क़िस्म के मकान

24 लिहाज़ा जो भी मेरी यह बातें सुन कर उन
पर अमल करता है वह उस समझदार आदमी की
मानिन्द है जिस ने अपने मकान की बुन्याद चटान पर
रखी। 25 बारिश होने लगी, सैलाब आया और आँधी
मकान को झंझोड़ने लगी। लेकिन वह न गिरा, क्यूँकि
उस की बुन्याद चटान पर रखी गई थी।
26 लेकिन जो भी मेरी यह बातें सुन कर उन पर
अमल नहीं करता वह उस अहमक़ की मानिन्द है
जिस ने अपना मकान सहीह बुन्याद डाले बग़ैर रेत
पर तामीर किया। 27 जब बारिश होने लगी, सैलाब
आया और आँधी मकान को झंझोड़ने लगी तो यह
मकान धड़ाम से गिर गया।"

ईसा का इख़तियार

28 जब ईसा ने यह बातें ख़त्म कर लीं तो लोग उस
की तालीम सुन कर हक्का-बक्का रह गए, 29 क्यूँकि वह
उन के उलमा की तरह नहीं बल्कि इख़तियार के साथ
सिखाता था।

कोढ़ से शिफ़ा

8 1 ईसा पहाड़ से उतरा तो बड़ी भीड़ उस के पीछे
चलने लगी। 2 फिर एक आदमी उस के पास
आया जो कोढ़ का मरीज़ था। मुँह के बल गिर कर
उस ने कहा, "ख़ुदावन्द, अगर आप चाहें तो मुझे
पाक-साफ़ कर सकते हैं।"
3 ईसा ने अपना हाथ बढ़ा कर उसे छुआ और कहा,
"मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़ हो जा।" इस पर वह फ़ौरन
उस बीमारी से पाक-साफ़ हो गया। 4 ईसा ने उस
से कहा, "ख़बरदार! यह बात किसी को न बताना
बल्कि बैत-उल-मुक़द्दस में इमाम के पास जा ताकि
वह तेरा मुआइना करे। अपने साथ वह क़ुर्बानी ले जा
जिस का तक़ाज़ा मूसा की शरीअत उन से करती है
जिन्हें कोढ़ से शिफ़ा मिली है। यूँ अलानिया तस्दीक़
हो जाएगी कि तू वाक़ई पाक-साफ़ हो गया है।"

रोमी अफ़्सर के ग़ुलाम की शिफ़ा

5 जब ईसा कफ़र्नहूम में दाख़िल हुआ तो सौ
फ़ौजियों पर मुक़र्रर एक अफ़्सर उस के पास आ कर
उस की मिन्नत करने लगा, 6 "ख़ुदावन्द, मेरा ग़ुलाम
मफ़्लूज हालत में घर में पड़ा है, और उसे शदीद दर्द
हो रहा है।"
7 ईसा ने उस से कहा, "मैं आ कर उसे शिफ़ा दूँगा।"
8 अफ़्सर ने जवाब दिया, "नहीं ख़ुदावन्द, मैं इस
लाइक़ नहीं कि आप मेरे घर जाएँ। बस यहीं से हुक्म
करें तो मेरा ग़ुलाम शिफ़ा पा जाएगा। 9 क्यूँकि मुझे
ख़ुद आला अफ़्सरों के हुक्म पर चलना पड़ता है और
मेरे मातहत भी फ़ौजी हैं। एक को कहता हूँ, 'जा!'
तो वह जाता है और दूसरे को 'आ!' तो वह आता
है। इसी तरह मैं अपने नौकर को हुक्म देता हूँ, 'यह
कर' तो वह करता है।"
10 यह सुन कर ईसा निहायत हैरान हुआ। उस ने
मुड़ कर अपने पीछे आने वालों से कहा, "मैं तुम
को सच बताता हूँ, मैं ने इस्राईल में भी इस क़िस्म
का ईमान नहीं पाया। 11 मैं तुम्हें बताता हूँ, बहुत
से लोग मशरिक़ और मग़रिब से आ कर इब्राहीम,
इस्हाक़ और याक़ूब के साथ आसमान की बादशाही
की ज़ियाफ़त में शरीक होंगे। 12 लेकिन बादशाही के
असल वारिसों को निकाल कर अंधेरे में डाल दिया
जाएगा, उस जगह जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते
रहेंगे।" 13 फिर ईसा अफ़्सर से मुख़ातिब हुआ, "जा,
तेरे साथ वैसा ही हो जैसा तेरा ईमान है।"
और अफ़्सर के ग़ुलाम को उसी घड़ी शिफ़ा मिल
गई।

बहुत से मरीज़ों की शिफ़ा

14 ईसा पतरस के घर में आया। वहाँ उस ने पतरस
की सास को बिस्तर पर पड़े देखा। उसे बुख़ार था।

15 उस ने उस का हाथ छू लिया तो बुख़ार उतर गया
और वह उठ कर उस की ख़िदमत करने लगी।
16 शाम हुई तो बदरूहों की गिरिफ़्त में पड़े बहुत से
लोगों को ईसा के पास लाया गया। उस ने बदरूहों
को हुक्म दे कर निकाल दिया और तमाम मरीज़ों को
शिफ़ा दी। 17 यूँ यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी
हुई कि "उस ने हमारी कमज़ोरियाँ ले लीं और हमारी
बीमारियाँ उठा लीं।"

पैरवी की सन्जीदगी

18 जब ईसा ने अपने गिर्द बड़ा हुजूम देखा तो उस ने
शागिर्दों को झील पार करने का हुक्म दिया। 19 रवाना
होने से पहले शरीअत का एक आलिम उस के पास
आ कर कहने लगा, "उस्ताद, जहाँ भी आप जाएंगे
मैं आप के पीछे चलता रहूँगा।"
20 ईसा ने जवाब दिया, "लोमड़ियाँ अपने भटों में
और परिन्दे अपने घोंसलों में आराम कर सकते हैं,
लेकिन इब्न-ए-आदम के पास सर रख कर आराम
करने की कोई जगह नहीं।"
21 किसी और शागिर्द ने उस से कहा, "ख़ुदावन्द,
मुझे पहले जा कर अपने बाप को दफ़न करने की
इजाज़त दें।"
22 लेकिन ईसा ने उसे बताया, "मेरे पीछे हो ले और
मुर्दों को अपने मुर्दे दफ़न करने दे।"

ईसा आँधी को थमा देता है

23 फिर वह कश्ती पर सवार हुआ और उस के पीछे
उस के शागिर्द भी। 24 अचानक झील पर सख़्त आँधी
चलने लगी और कश्ती लहरों में डूबने लगी। लेकिन
ईसा सो रहा था। 25 शागिर्द उस के पास गए और
उसे जगा कर कहने लगे, "ख़ुदावन्द, हमें बचा, हम
तबाह हो रहे हैं!"
26 उस ने जवाब दिया, "ऐ कमएतिक़ादो! घबराते
क्यूँ हो?" खड़े हो कर उस ने आँधी और मौजों को
डाँटा तो लहरें बिलकुल साकित हो गईं। 27 शागिर्द
हैरान हो कर कहने लगे, "यह किस क़िस्म का शख़्स
है? हवा और झील भी उस का हुक्म मानती हैं।"

दो बदरुह-गिरिफ़्ता आदमियों की शिफ़ा

28 वह झील के पार गदरीनियों के इलाक़े में पहुँचे
तो बदरुह-गिरिफ़्ता दो आदमी क़ब्रों में से निकल कर
ईसा को मिले। वह इतने ख़तरनाक थे कि वहाँ से
कोई गुज़र नहीं सकता था। 29 चीख़ें मार मार कर
उन्हों ने कहा, "अल्लाह के फ़र्ज़न्द, हमारा आप के
साथ क्या वास्ता? क्या आप हमें मुक़र्ररा वक़्त से
पहले अज़ाब में डालने आए हैं?"
30 कुछ फ़ासिले पर सूअरों का बड़ा ग़ोल चर रहा
था। 31 बदरूहों ने ईसा से इल्तिजा की, "अगर आप
हमें निकालते हैं तो सूअरों के उस ग़ोल में भेज दें।"
32 ईसा ने उन्हें हुक्म दिया, "जाओ।" बदरुहें
निकल कर सूअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे का पूरा
ग़ोल भाग भाग कर पहाड़ी की ढलान पर से उतरा
और झील में झपट कर डूब मरा। 33 यह देख कर
सूअरों के गल्लाबान भाग गए। शहर में जा कर उन्हों ने
लोगों को सब कुछ सुनाया और वह भी जो बदरुह-
गिरिफ़्ता आदमियों के साथ हुआ था। 34 फिर पूरा
शहर निकल कर ईसा को मिलने आया। उसे देख
कर उन्हों ने उस की मिन्नत की कि हमारे इलाक़े से
चले जाएँ।

मफ़्लूज आदमी की शिफ़ा

9 1 कश्ती में बैठ कर ईसा ने झील को पार किया
और अपने शहर पहुँच गया। 2 वहाँ एक मफ़्लूज
आदमी को चारपाई पर डाल कर उस के पास लाया
गया। उन का ईमान देख कर ईसा ने कहा, "बेटा,
हौसला रख। तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं।"
3 यह सुन कर शरीअत के कुछ उलमा दिल में कहने
लगे, "यह कुफ़्र बक रहा है!"
4 ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे हैं, इस
लिए उस ने उन से पूछा, 5 "तुम दिल में बुरी बातें
क्यूँ सोच रहे हो? क्या मफ़्लूज से यह कहना ज़्यादा

आसान है कि 'तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं' या
यह कि 'उठ और चल फिर?' 6 लेकिन मैं तुम को
दिखाता हूँ कि इब्न-ए-आदम को वाक़ई दुनिया में
गुनाह मुआफ़ करने का इख़तियार है।" यह कह कर
वह मफ़्लूज से मुख़ातिब हुआ, "उठ, अपनी चारपाई
उठा कर घर चला जा।"
7 वह आदमी खड़ा हुआ और अपने घर चला गया।
8 यह देख कर हुजूम पर अल्लाह का ख़ौफ़ तारी हो
गया और वह अल्लाह की तम्जीद करने लगे कि उस
ने इन्सान को इस क़िस्म का इख़तियार दिया है।

मत्ती की बुलाहट

9 आगे जा कर ईसा ने एक आदमी को देखा जो
टैक्स लेने वालों की चौकी पर बैठा था। उस का
नाम मत्ती था। ईसा ने उस से कहा, "मेरे पीछे हो
ले।" और मत्ती उठ कर उस के पीछे हो लिया।
10 बाद में ईसा मत्ती के घर में खाना खा रहा था।
बहुत से टैक्स लेने वाले और गुनाहगार भी आ कर
ईसा और उस के शागिर्दों के साथ खाने में शरीक हुए।
11 यह देख कर फ़रीसियों ने उस के शागिर्दों से पूछा,
"आप का उस्ताद टैक्स लेने वालों और गुनाहगारों
के साथ क्यूँ खाता है?"
12 यह सुन कर ईसा ने कहा, "सेहतमन्दों को
डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को।
13 पहले जाओ और कलाम-ए-मुक़द्दस की इस बात
का मतलब जान लो कि 'मैं क़ुर्बानी नहीं बल्कि
रहम पसन्द करता हूँ।' क्यूँकि मैं रास्तबाज़ों को नहीं
बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।"

शागिर्द रोज़ा क्यूँ नहीं रखते?

14 फिर यहया के शागिर्द उस के पास आए और
पूछा, "आप के शागिर्द रोज़ा क्यूँ नहीं रखते जबकि
हम और फ़रीसी रोज़ा रखते हैं?"
15 ईसा ने जवाब दिया, "शादी के मेहमान किस
तरह मातम कर सकते हैं जब तक दूल्हा उन के
दरमियान है? लेकिन एक दिन आएगा जब दूल्हा उन
से ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।
16 कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा किसी पुराने
लिबास में नहीं लगाता। अगर वह ऐसा करे तो नया
टुकड़ा बाद में सुकड़ कर पुराने लिबास से अलग हो
जाएगा। यूँ पुराने लिबास की फटी हुई जगह पहले
की निस्बत ज़्यादा ख़राब हो जाएगी। 17 इसी तरह
अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बेलचक मश्कों में
नहीं डाला जाता। अगर ऐसा किया जाए तो पुरानी
मश्कें पैदा होने वाली गैस के बाइस फट जाएँगी।
नतीजे में मै और मश्कें दोनों ज़ाए हो जाएँगी। इस
लिए अंगूर का ताज़ा रस नई मश्कों में डाला जाता
है जो लचकदार होती हैं। यूँ रस और मश्कें दोनों ही
महफ़ूज़ रहते हैं।"

याईर की बेटी और बीमार औरत

18 ईसा अभी यह बयान कर रहा था कि एक यहूदी
राहनुमा ने गिर कर उसे सिज्दा किया और कहा,
"मेरी बेटी अभी अभी मरी है। लेकिन आ कर अपना
हाथ उस पर रखें तो वह दुबारा ज़िन्दा हो जाएगी।"
19 ईसा उठ कर अपने शागिर्दों समेत उस के साथ
हो लिया।
20 चलते चलते एक औरत ने पीछे से आ कर ईसा
के लिबास का किनारा छुआ। यह औरत बारह साल
से ख़ून बहने की मरीज़ा थी 21 और वह सोच रही
थी, "अगर मैं सिर्फ़ उस के लिबास को ही छू लूँ तो
शिफ़ा पा लूँगी।"
22 ईसा ने मुड़ कर उसे देखा और कहा, "बेटी,
हौसला रख! तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।" और
औरत को उसी वक़्त शिफ़ा मिल गई।
23 फिर ईसा राहनुमा के घर में दाख़िल हुआ।
बाँसरी बजाने वाले और बहुत से लोग पहुँच चुके
थे और बहुत शोर-शराबा था। यह देख कर 24 ईसा
ने कहा, "निकल जाओ! लड़की मर नहीं गई बल्कि
सो रही है।" लोग हंस कर उस का मज़ाक़ उड़ाने
लगे। 25 लेकिन जब सब को निकाल दिया गया तो

वह अन्दर गया। उस ने लड़की का हाथ पकड़ा तो
वह उठ खड़ी हुई। 26 इस मोजिज़े की ख़बर उस पूरे
इलाक़े में फैल गई।

दो अंधों की शिफ़ा

27 जब ईसा वहाँ से रवाना हुआ तो दो अंधे उस के
पीछे चल कर चिल्लाने लगे, "इब्न-ए-दाऊद, हम पर
रहम करें।"
28 जब ईसा किसी के घर में दाख़िल हुआ तो वह
उस के पास आए। ईसा ने उन से पूछा, "क्या तुम्हारा
ईमान है कि मैं यह कर सकता हूँ?"
उन्हों ने जवाब दिया, "जी, ख़ुदावन्द।"
29 फिर उस ने उन की आँखें छू कर कहा, "तुम्हारे
साथ तुम्हारे ईमान के मुताबिक़ हो जाए।" 30 उन की
आँखें बहाल हो गईं और ईसा ने सख़्ती से उन्हें कहा,
"ख़बरदार, किसी को भी इस का पता न चले!"
31 लेकिन वह निकल कर पूरे इलाक़े में उस की
ख़बर फैलाने लगे।

गूँगे आदमी की शिफ़ा

32 जब वह निकल रहे थे तो एक गूँगा आदमी ईसा
के पास लाया गया जो किसी बदरुह के क़ब्ज़े में
था। 33 जब बदरुह को निकाला गया तो गूँगा बोलने
लगा। हुजूम हैरान रह गया। उन्हों ने कहा, "ऐसा
काम इस्राईल में कभी नहीं देखा गया।"
34 लेकिन फ़रीसियों ने कहा, "वह बदरूहों के
सरदार ही की मदद से बदरूहों को निकालता है।"

ईसा को लोगों पर तरस आता है

35 और ईसा सफ़र करते करते तमाम शहरों और
गाँव में से गुज़रा। जहाँ भी वह पहुँचा वहाँ उस
ने उन के इबादतख़ानों में तालीम दी, बादशाही
की ख़ुशख़बरी सुनाई और हर क़िस्म के मर्ज़ और
अलालत से शिफ़ा दी। 36 हुजूम को देख कर उसे
उन पर बड़ा तरस आया, क्यूँकि वह पिसे हुए और
बेबस थे, ऐसी भेड़ों की तरह जिन का चरवाहा न हो।
37 उस ने अपने शागिर्दों से कहा, "फ़सल बहुत है,
लेकिन मज़दूर कम। 38 इस लिए फ़सल के मालिक
से गुज़ारिश करो कि वह अपनी फ़सल काटने के
लिए मज़ीद मज़दूर भेज दे।"

बारह रसूलों को इख़तियार दिया जाता है

10 1 फिर ईसा ने अपने बारह रसूलों को बुला
कर उन्हें नापाक रूहें निकालने और हर
क़िस्म के मर्ज़ और अलालत से शिफ़ा देने का
इख़तियार दिया। 2 बारह रसूलों के नाम यह हैं :
पहला शमाऊन जो पतरस भी कहलाता है, फिर उस
का भाई अन्द्रियास, याक़ूब बिन ज़ब्दी और उस
का भाई यूहन्ना, 3 फ़िलिप्पुस, बरतुल्माई, तोमा, मत्ती
(जो टैक्स लेने वाला था), याक़ूब बिन हल्फ़ई, तद्दी,
4 शमाऊन मुजाहिद और यहूदा इस्करियोती जिस ने
बाद में उसे दुश्मनों के हवाले कर दिया।

रसूलों को तब्लीग़ के लिए भेजा जाता है

5 इन बारह मर्दों को ईसा ने भेज दिया। साथ
साथ उस ने उन्हें हिदायत दी, "ग़ैरयहूदी आबादियों
में न जाना, न किसी सामरी शहर में, 6 बल्कि
सिर्फ़ इस्राईल की खोई हुई भेड़ों के पास। 7 और
चलते चलते मुनादी करते जाओ कि 'आसमान की
बादशाही क़रीब आ चुकी है।' 8 बीमारों को शिफ़ा
दो, मुर्दों को ज़िन्दा करो, कोढ़ियों को पाक-साफ़
करो, बदरूहों को निकालो। तुम को मुफ़्त में मिला
है, मुफ़्त में ही बाँटना। 9 अपने कमरबन्द में पैसे न
रखना - न सोने, न चाँदी और न ताँबे के सिक्के। 10 न
सफ़र के लिए बैग हो, न एक से ज़्यादा सूट, न जूते,
न लाठी। क्यूँकि मज़दूर अपनी रोज़ी का हक़दार है।
11 जिस शहर या गाँव में दाख़िल होते हो उस में
किसी लाइक़ शख़्स का पता करो और रवाना होते
वक़्त तक उसी के घर में ठहरो। 12 घर में दाख़िल
होते वक़्त उसे दुआ-ए-ख़ैर दो। 13 अगर वह घर इस
लाइक़ होगा तो जो सलामती तुम ने उस के लिए माँगी
है वह उस पर आ कर ठहरी रहेगी। अगर नहीं तो

यह सलामती तुम्हारे पास लौट आएगी। 14 अगर कोई
घराना या शहर तुम को क़बूल न करे, न तुम्हारी सुने
तो रवाना होते वक़्त उस जगह की गर्द अपने पाँओ
से झाड़ देना। 15 मैं तुम्हें सच बताता हूँ, अदालत
के दिन उस शहर की निस्बत सदूम और अमूरा के
इलाक़े का हाल ज़्यादा क़ाबिल-ए-बर्दाश्त होगा।

आने वाली ईज़ारसानियाँ

16 देखो, मैं तुम भेड़ों को भेड़ियों में भेज रहा हूँ।
इस लिए साँपों की तरह होश्यार और कबूतरों की
तरह मासूम बनो। 17 लोगों से ख़बरदार रहो, क्यूँकि
वह तुम को मक़ामी अदालतों के हवाले करके अपने
इबादतख़ानों में कोड़े लगवाएँगे। 18 मेरी ख़ातिर तुम्हें
हुक्मरानों और बादशाहों के सामने पेश किया जाएगा
और यूँ तुम को उन्हें और ग़ैरयहूदियों को गवाही देने
का मौक़ा मिलेगा। 19 जब वह तुम्हें गिरिफ़्तार करेंगे
तो यह सोचते सोचते परेशान न हो जाना कि मैं क्या
कहूँ या किस तरह बात करूँ। उस वक़्त तुम को
बताया जाएगा कि क्या कहना है, 20 क्यूँकि तुम ख़ुद
बात नहीं करोगे बल्कि तुम्हारे बाप का रूह तुम्हारी
मारिफ़त बोलेगा।

21 भाई अपने भाई को और बाप अपने बच्चे को मौत
के हवाले करेगा। बच्चे अपने वालिदैन के ख़िलाफ़
खड़े हो कर उन्हें क़त्ल करवाएँगे। 22 सब तुम से
नफ़रत करेंगे, इस लिए कि तुम मेरे पैरोकार हो।
लेकिन जो आख़िर तक क़ाइम रहेगा उसे नजात
मिलेगी। 23 जब वह एक शहर में तुम्हें सताएँगे तो
किसी दूसरे शहर को हिज्रत कर जाना। मैं तुम को
सच बताता हूँ कि इब्न-ए-आदम की आमद तक तुम
इस्राईल के तमाम शहरों तक नहीं पहुँच पाओगे।

24 शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता, न
ग़ुलाम अपने मालिक से। 25 शागिर्द को इस पर
इकतिफ़ा करना है कि वह अपने उस्ताद की मानिन्द
हो, और इसी तरह ग़ुलाम को कि वह अपने मालिक
की मानिन्द हो। घराने के सरपरस्त को अगर बदरूहों
का सरदार बाल-ज़बूल क़रार दिया गया है तो उस के
घर वालों को क्या कुछ न कहा जाएगा।

किस से डरना है?

26 उन से मत डरना, क्यूँकि जो कुछ अभी छुपा
हुआ है उसे आख़िर में ज़ाहिर किया जाएगा, और जो
कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है उस का राज़ आख़िर
में खुल जाएगा। 27 जो कुछ मैं तुम्हें अंधेरे में सुना
रहा हूँ उसे रोज़-ए-रौशन में सुना देना। और जो कुछ
आहिस्ता आहिस्ता तुम्हारे कान में बताया गया है
उस का छतों से एलान करो। 28 उन से ख़ौफ़ मत
खाना जो तुम्हारी रूह को नहीं बल्कि सिर्फ़ तुम्हारे
जिस्म को क़त्ल कर सकते हैं। अल्लाह से डरो जो
रूह और जिस्म दोनों को जहन्नुम में डाल कर हलाक
कर सकता है। 29 क्या चिड़ियों का जोड़ा कम पैसों
में नहीं बिकता? ताहम उन में से एक भी तुम्हारे बाप
की इजाज़त के बग़ैर ज़मीन पर नहीं गिर सकती।
30 न सिर्फ़ यह बल्कि तुम्हारे सर के सब बाल भी
गिने हुए हैं। 31 लिहाज़ा मत डरो। तुम्हारी क़दर-ओ-
क़ीमत बहुत सी चिड़ियों से कहीं ज़्यादा है।

मसीह का इक़्रार या इन्कार करने का नतीजा

32 जो भी लोगों के सामने मेरा इक़्रार करे उस का
इक़्रार मैं ख़ुद भी अपने आसमानी बाप के सामने
करूँगा। 33 लेकिन जो भी लोगों के सामने मेरा इन्कार
करे उस का मैं भी अपने आसमानी बाप के सामने
इन्कार करूँगा।

ईसा सुलह-सलामती का बाइस नहीं

34 यह मत समझो कि मैं दुनिया में सुलह-सलामती
क़ाइम करने आया हूँ। मैं सुलह-सलामती नहीं बल्कि
तलवार चलवाने आया हूँ। 35 मैं बेटे को उस के बाप
के ख़िलाफ़ खड़ा करने आया हूँ, बेटी को उस की माँ
के ख़िलाफ़ और बहू को उस की सास के ख़िलाफ़।
36 इन्सान के दुश्मन उस के अपने घर वाले होंगे।

37 जो अपने बाप या माँ को मुझ से ज़्यादा प्यार
करे वह मेरे लाइक़ नहीं। जो अपने बेटे या बेटी को
मुझ से ज़्यादा प्यार करे वह मेरे लाइक़ नहीं। 38 जो
अपनी सलीब उठा कर मेरे पीछे न हो ले वह मेरे
लाइक़ नहीं। 39 जो भी अपनी जान को बचाए वह
उसे खो देगा, लेकिन जो अपनी जान को मेरी ख़ातिर
खो दे वह उसे पाएगा।

ईसा और उस के पैरोकारों को क़बूल करने का अज्र

40 जो तुम्हें क़बूल करे वह मुझे क़बूल करता है,
और जो मुझे क़बूल करता है वह उस को क़बूल
करता है जिस ने मुझे भेजा है। 41 जो किसी नबी को
क़बूल करे उसे नबी का सा अज्र मिलेगा। और जो
किसी रास्तबाज़ शख़्स को उस की रास्तबाज़ी के
सबब से क़बूल करे उसे रास्तबाज़ शख़्स का सा
अज्र मिलेगा। 42 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो इन
छोटों में से किसी एक को मेरा शागिर्द होने के बाइस
ठंडे पानी का गलास भी पिलाए उस का अज्र क़ाइम
रहेगा।"

यहया का ईसा से सवाल

11 1 अपने शागिर्दों को यह हिदायात देने के
बाद ईसा उन के शहरों में तालीम देने और
मुनादी करने के लिए रवाना हुआ।

2 यहया ने जो उस वक़्त जेल में था सुना कि ईसा
क्या क्या कर रहा है। इस पर उस ने अपने शागिर्दों
को उस के पास भेज दिया 3 ताकि वह उस से पूछें,
"क्या आप वही हैं जिसे आना है या हम किसी और
के इन्तिज़ार में रहें?"

4 ईसा ने जवाब दिया, "यहया के पास वापस जा
कर उसे सब कुछ बता देना जो तुम ने देखा और सुना
है। 5 'अंधे देखते, लंगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ियों
को पाक-साफ़ किया जाता है, बहरे सुनते हैं, मुर्दों
को ज़िन्दा किया जाता है और ग़रीबों को अल्लाह की
ख़ुशख़बरी सुनाई जाती है।' 6 मुबारक है वह जो मेरे
सबब से ठोकर खा कर बर्गश्ता नहीं होता।"

7 यहया के यह शागिर्द चले गए तो ईसा हुजूम से
यहया के बारे में बात करने लगा, "तुम रेगिस्तान
में क्या देखने गए थे? एक सरकंडा जो हवा के हर
झोंके से हिलता है? बेशक नहीं। 8 या क्या वहाँ जा
कर ऐसे आदमी की तवक़्क़ो कर रहे थे जो नफ़ीस
और मुलाइम लिबास पहने हुए है? नहीं, जो शानदार
कपड़े पहनते हैं वह शाही महलों में पाए जाते हैं।
9 तो फिर तुम क्या देखने गए थे? एक नबी को?
बिलकुल सहीह, बल्कि में तुम को बताता हूँ कि
वह नबी से भी बड़ा है। 10 उसी के बारे में कलाम-ए-
मुक़द्दस में लिखा है, 'देख, मैं अपने पैग़म्बर को तेरे
आगे आगे भेज देता हूँ जो तेरे सामने रास्ता तय्यार
करेगा।' 11 मैं तुम को सच बताता हूँ कि इस दुनिया
में पैदा होने वाला कोई भी शख़्स यहया से बड़ा नहीं
है। तो भी आसमान की बादशाही में दाख़िल होने
वाला सब से छोटा शख़्स उस से बड़ा है। 12 यहया
बपतिस्मा देने वाले की ख़िदमत से ले कर आज तक
आसमान की बादशाही पर ज़बरदस्ती की जा रही
है, और ज़बरदस्त उसे छीन रहे हैं। 13 क्यूँकि तमाम
नबी और तौरेत ने यहया के दौर तक इस के बारे में
पेशगोई की है। 14 और अगर तुम यह मानने के लिए
तय्यार हो तो मानो कि वह इल्यास नबी है जिसे आना
था। 15 जो सुन सकता है वह सुन ले!

16 मैं इस नस्ल को किस से तश्बीह दूँ? वह उन
बच्चों की मानिन्द हैं जो बाज़ार में बैठे खेल रहे हैं। उन
में से कुछ ऊँची आवाज़ से दूसरे बच्चों से शिकायत
कर रहे हैं, 17 'हम ने बाँसरी बजाई तो तुम न नाचे।
फिर हम ने नोहा के गीत गाए, लेकिन तुम ने छाती
पीट कर मातम न किया।' 18 देखो, यहया आया और
न खाया, न पिया। यह देख कर लोग कहते हैं कि उस
में बदरुह है। 19 फिर इब्न-ए-आदम खाता और पीता
हुआ आया। अब कहते हैं, 'देखो यह कैसा पेटू और
शराबी है। और वह टैक्स लेने वालों और गुनाहगारों
का दोस्त भी है।' लेकिन हिक्मत अपने आमाल से
ही सहीह साबित हुई है।"

तौबा न करने वाले शहरों पर अफ़्सोस

20 फिर ईसा उन शहरों को डाँटने लगा जिन में उस
ने ज़्यादा मोजिज़े किए थे, क्यूँकि उन्हों ने तौबा नहीं
की थी। 21 "ऐ ख़ुराज़ीन, तुझ पर अफ़्सोस! बैत-
सैदा, तुझ पर अफ़्सोस! अगर सूर और सैदा में वह
मोजिज़े किए गए होते जो तुम में हुए तो वहाँ के
लोग कब के टाट ओढ़ कर और सर पर राख डाल
कर तौबा कर चुके होते। 22 जी हाँ, अदालत के
दिन तुम्हारी निस्बत सूर और सैदा का हाल ज़्यादा
क़ाबिल-ए-बर्दाश्त होगा। 23 और ऐ कफ़र्नहूम, क्या
तुझे आसमान तक सरफ़राज़ किया जाएगा? हरगिज़
नहीं, बल्कि तू उतरता उतरता पाताल तक पहुँचेगा।
अगर सदूम में वह मोजिज़े किए गए होते जो तुझ में
हुए हैं तो वह आज तक क़ाइम रहता। 24 हाँ, अदालत
के दिन तेरी निस्बत सदूम का हाल ज़्यादा क़ाबिल-
ए-बर्दाश्त होगा।"

बाप की तम्जीद

25 उस वक़्त ईसा ने कहा, "ऐ बाप, आसमान-ओ-
ज़मीन के मालिक! मैं तेरी तम्जीद करता हूँ कि तू ने
यह बातें दानाओं और अक़लमन्दों से छुपा कर छोटे
बच्चों पर ज़ाहिर कर दी हैं। 26 हाँ मेरे बाप, यही तुझे
पसन्द आया।

27 मेरे बाप ने सब कुछ मेरे सपुर्द कर दिया है। कोई
भी फ़र्ज़न्द को नहीं जानता सिवाए बाप के। और
कोई बाप को नहीं जानता सिवाए फ़र्ज़न्द के और
उन लोगों के जिन पर फ़र्ज़न्द बाप को ज़ाहिर करना
चाहता है।

28 ऐ थकेमान्दे और बोझ तले दबे हुए लोगो, सब
मेरे पास आओ! मैं तुम को आराम दूँगा। 29 मेरा जूआ
अपने ऊपर उठा कर मुझ से सीखो, क्यूँकि मैं हलीम
और नर्मदिल हूँ। यूँ करने से तुम्हारी जानें आराम
पाएँगी, 30 क्यूँकि मेरा जूआ मुलाइम और मेरा बोझ
हल्का है।"

सबत के बारे में सवाल

12 1 उन दिनों में ईसा अनाज के खेतों में से
गुज़र रहा था। सबत का दिन था। चलते
चलते उस के शागिर्दों को भूक लगी और वह अनाज
की बालें तोड़ तोड़ कर खाने लगे। 2 यह देख कर
फ़रीसियों ने ईसा से शिकायत की, "देखो, आप के
शागिर्द ऐसा काम कर रहे हैं जो सबत के दिन मना
है।"

3 ईसा ने जवाब दिया, "क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि
दाऊद ने क्या किया जब उसे और उस के साथियों को
भूक लगी? 4 वह अल्लाह के घर में दाख़िल हुआ और
अपने साथियों समेत रब के लिए मख़्सूसशुदा रोटियाँ
खाईं, अगरचे उन्हें इस की इजाज़त नहीं थी बल्कि
सिर्फ़ इमामों को? 5 या क्या तुम ने तौरेत में नहीं
पढ़ा कि गो इमाम सबत के दिन बैत-उल-मुक़द्दस
में ख़िदमत करते हुए आराम करने का हुक्म तोड़ते
हैं तो भी वह बेइल्ज़ाम ठहरते हैं? 6 मैं तुम्हें बताता
हूँ कि यहाँ वह है जो बैत-उल-मुक़द्दस से अफ़्ज़ल
है। 7 कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, 'मैं क़ुर्बानी नहीं
बल्कि रहम पसन्द करता हूँ।' अगर तुम इस का
मतलब समझते तो बेक़ुसूरों को मुजरिम न ठहराते।
8 क्यूँकि इब्न-ए-आदम सबत का मालिक है।"

सूखे हाथ वाले आदमी की शिफ़ा

9 वहाँ से चलते चलते वह उन के इबादतख़ाने में
दाख़िल हुआ। 10 उस में एक आदमी था जिस का
हाथ सूखा हुआ था। लोग ईसा पर इल्ज़ाम लगाने
का कोई बहाना तलाश कर रहे थे, इस लिए उन्हों ने
उस से पूछा, "क्या शरीअत सबत के दिन शिफ़ा देने
की इजाज़त देती है?"

11 ईसा ने जवाब दिया, "अगर तुम में से किसी
की भेड़ सबत के दिन गढ़े में गिर जाए तो क्या
उसे नहीं निकालोगे? 12 और भेड़ की निस्बत इन्सान
की कितनी ज़्यादा क़दर-ओ-क़ीमत है! ग़रज़ शरीअत
नेक काम करने की इजाज़त देती है।" 13 फिर उस ने

उस आदमी से जिस का हाथ सूखा हुआ था कहा,
“अपना हाथ आगे बढ़ा।”
उस ने ऐसा किया तो उस का हाथ दूसरे हाथ की
मानिन्द तन्दुरुस्त हो गया। 14 इस पर फ़रीसी निकल
कर आपस में ईसा को क़त्ल करने की साज़िशें करने
लगे।

अल्लाह का चुना हुआ ख़ादिम

15 जब ईसा ने यह जान लिया तो वह वहाँ से चला
गया। बहुत से लोग उस के पीछे चल रहे थे। उस
ने उन के तमाम मरीज़ों को शिफ़ा दे कर 16 उन्हें
ताकीद की, “किसी को मेरे बारे में न बताओ।” 17 यूँ
यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई,

18 ‘देखो, मेरा ख़ादिम जिसे मैं ने चुन लिया है,
मेरा प्यारा जो मुझे पसन्द है।
मैं अपने रूह को उस पर डालूँगा,
और वह अक़्वाम में इन्साफ़ का एलान करेगा।
19 वह न तो झगड़ेगा, न चिल्लाएगा।
गलियों में उस की आवाज़ सुनाई नहीं देगी।
20 न वह कुचले हुए सरकंडे को तोड़ेगा,
न बुझती हुई बत्ती को बुझाएगा
जब तक वह इन्साफ़ को ग़ल्बा न बख़्शे।
21 उसी के नाम से क़ौमें उम्मीद रखेंगी।’

ईसा और बदरूहों का सरदार

22 फिर एक आदमी को ईसा के पास लाया गया
जो बदरुह की गिरिफ़्त में था। वह अंधा और गूँगा
था। ईसा ने उसे शिफ़ा दी तो गूँगा बोलने और देखने
लगा। 23 हुजूम के तमाम लोग हक्का-बक्का रह गए और
पूछने लगे, “क्या यह इब्न-ए-दाऊद नहीं?”
24 लेकिन जब फ़रीसियों ने यह सुना तो उन्हों ने
कहा, “यह सिर्फ़ बदरूहों के सरदार बाल-ज़बूल की
मारिफ़त बदरूहों को निकालता है।”
25 उन के यह ख़यालात जान कर ईसा ने उन से
कहा, “जिस बादशाही में फूट पड़ जाए वह तबाह
हो जाएगी। और जिस शहर या घराने की ऐसी हालत
हो वह भी क़ाइम नहीं रह सकता। 26 इसी तरह अगर
इब्लीस अपने आप को निकाले तो फिर उस में फूट
पड़ गई है। इस सूरत में उस की बादशाही किस
तरह क़ाइम रह सकती है? 27 और अगर मैं बदरूहों
को बाल-ज़बूल की मदद से निकालता हूँ तो तुम्हारे
बेटे उन्हें किस के ज़रीए निकालते हैं? चुनाँचे वही
इस बात में तुम्हारे मुन्सिफ़ होंगे। 28 लेकिन अगर मैं
अल्लाह के रूह की मारिफ़त बदरूहों को निकाल देता
हूँ तो फिर अल्लाह की बादशाही तुम्हारे पास पहुँच
चुकी है।
29 किसी ज़ोरावर आदमी के घर में घुस कर उस
का माल-ओ-अस्बाब लूटना किस तरह मुमकिन है
जब तक कि उसे बांधा न जाए? फिर ही उसे लूटा
जा सकता है।
30 जो मेरे साथ नहीं वह मेरे ख़िलाफ़ है और जो मेरे
साथ जमा नहीं करता वह बिखेरता है। 31 ग़रज़ मैं
तुम को बताता हूँ कि इन्सान का हर गुनाह और कुफ़्र
मुआफ़ किया जा सकेगा सिवाए रूह-उल-क़ुद्स के
ख़िलाफ़ कुफ़्र बकने के। इसे मुआफ़ नहीं किया
जाएगा। 32 जो इब्न-ए-आदम के ख़िलाफ़ बात करे
उसे मुआफ़ किया जा सकेगा, लेकिन जो रूह-उल-
क़ुद्स के ख़िलाफ़ बात करे उसे न इस जहान में और
न आने वाले जहान में मुआफ़ किया जाएगा।

दरख़्त उस के फल से पहचाना जाता है

33 अच्छे फल के लिए अच्छे दरख़्त की ज़रूरत
होती है। ख़राब दरख़्त से ख़राब फल मिलता है।
दरख़्त उस के फल से ही पहचाना जाता है। 34 ऐ साँप
के बच्चो! तुम जो बुरे हो किस तरह अच्छी बातें कर
सकते हो? क्यूँकि जिस चीज़ से दिल लबरेज़ होता
है वह छलक कर ज़बान पर आ जाती है। 35 अच्छा
शख़्स अपने दिल के अच्छे ख़ज़ाने से अच्छी चीज़ें
निकालता है जबकि बुरा शख़्स अपने बुरे ख़ज़ाने से
बुरी चीज़ें।
36 मैं तुम को बताता हूँ कि क़ियामत के दिन लोगों
को बेपर्वाई से की गई हर बात का हिसाब देना

पड़ेगा। 37 तुम्हारी अपनी बातों की बिना पर तुम को
रास्त या नारास्त ठहराया जाएगा।”

इलाही निशान का तक़ाज़ा

38 फिर शरीअत के कुछ उलमा और फ़रीसियों ने
ईसा से बात की, “उस्ताद, हम आप की तरफ़ से
इलाही निशान देखना चाहते हैं।”
39 उस ने जवाब दिया, “सिर्फ़ शरीर और ज़िनाकार
नस्ल इलाही निशान का तक़ाज़ा करती है। लेकिन
उसे कोई भी इलाही निशान पेश नहीं किया जाएगा
सिवाए यूनुस नबी के निशान के। 40 क्यूँकि जिस तरह
यूनुस तीन दिन और तीन रात मछली के पेट में रहा
उसी तरह इब्न-ए-आदम भी तीन दिन और तीन रात
ज़मीन की गोद में पड़ा रहेगा। 41 क़ियामत के दिन
नीनवा के बाशिन्दे इस नस्ल के साथ खड़े हो कर इसे
मुजरिम ठहराएँगे। क्यूँकि यूनुस के एलान पर उन्हों ने
तौबा की थी जबकि यहाँ वह है जो यूनुस से भी बड़ा
है। 42 उस दिन जुनूबी मुल्क सबा की मलिका भी इस
नस्ल के साथ खड़ी हो कर इसे मुजरिम क़रार देगी।
क्यूँकि वह दूरदराज़ मुल्क से सुलैमान की हिक्मत
सुनने के लिए आई थी जबकि यहाँ वह है जो सुलैमान
से भी बड़ा है।

बदरुह की वापसी

43 जब कोई बदरुह किसी शख़्स से निकलती है
तो वह वीरान इलाक़ों में से गुज़रती हुई आराम की
जगह तलाश करती है। लेकिन जब उसे कोई ऐसा
मक़ाम नहीं मिलता 44 तो वह कहती है, ‘मैं अपने
उस घर में वापस चली जाऊँगी जिस में से निकली
थी।’ वह वापस आ कर देखती है कि घर ख़ाली है
और किसी ने झाड़ू दे कर सब कुछ सलीक़े से रख
दिया है। 45 फिर वह जा कर सात और बदरुहें ढूँड
लाती है जो उस से बदतर होती हैं, और वह सब उस
शख़्स में घुस कर रहने लगती हैं। चुनाँचे अब उस
आदमी की हालत पहले की निस्बत ज़्यादा बुरी हो
जाती है। इस शरीर नस्ल का भी यही हाल होगा।”

ईसा की माँ और भाई

46 ईसा अभी हुजूम से बात कर ही रहा था कि उस
की माँ और भाई बाहर खड़े उस से बात करने की
कोशिश करने लगे। 47 किसी ने ईसा से कहा, “आप
की माँ और भाई बाहर खड़े हैं और आप से बात
करना चाहते हैं।”
48 ईसा ने पूछा, “कौन है मेरी माँ और कौन हैं
मेरे भाई?” 49 फिर अपने हाथ से शागिर्दों की तरफ़
इशारा करके उस ने कहा, “देखो, यह मेरी माँ और
मेरे भाई हैं। 50 क्यूँकि जो भी मेरे आसमानी बाप की
मर्ज़ी पूरी करता है वह मेरा भाई, मेरी बहन और मेरी
माँ है।”

बीज बोने वाले की तम्सील

13 1 उसी दिन ईसा घर से निकल कर झील
के किनारे बैठ गया। 2 इतना बड़ा हुजूम
उस के गिर्द जमा हो गया कि आख़िरकार वह एक
कश्ती में बैठ गया जबकि लोग किनारे पर खड़े रहे।
3 फिर उस ने उन्हें बहुत सी बातें तम्सीलों में सुनाईं।
“एक किसान बीज बोने के लिए निकला। 4 जब
बीज इधर उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते पर
गिरे और परिन्दों ने आ कर उन्हें चुग लिया। 5 कुछ
पथरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ मिट्टी की कमी थी। वह
जल्द उग आए क्यूँकि मिट्टी गहरी नहीं थी। 6 लेकिन
जब सूरज निकला तो पौदे झुलस गए और चूँकि वह
जड़ न पकड़ सके इस लिए सूख गए। 7 कुछ ख़ुदरौ
काँटेदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने
तो लगे, लेकिन ख़ुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़ कर
उन्हें फलने फूलने न दिया। चुनाँचे वह भी ख़त्म हो
गए। 8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रख़ेज़ ज़मीन में
गिरे और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ
गुना तक ज़्यादा फल लाए। 9 जो सुन सकता है वह
सुन ले!”

तम्सीलों का मक़्सद

10 शागिर्द उस के पास आ कर पूछने लगे, “आप
लोगों से तम्सीलों में बात क्यूँ करते हैं?”
11 उस ने जवाब दिया, “तुम को तो आसमान की
बादशाही के भेद समझने की लियाक़त दी गई है,
लेकिन उन्हें यह लियाक़त नहीं दी गई। 12 जिस के
पास कुछ है उसे और दिया जाएगा और उस के पास
कस्रत की चीज़ें होंगी। लेकिन जिस के पास कुछ
नहीं है उस से वह भी छीन लिया जाएगा जो उस के
पास है। 13 इस लिए मैं तम्सीलों में उन से बात करता
हूँ। क्यूँकि वह देखते हुए कुछ नहीं देखते, वह सुनते
हुए कुछ नहीं सुनते और कुछ नहीं समझते। 14 उन
में यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हो रही है :

‘तुम अपने कानों से सुनोगे
मगर कुछ नहीं समझोगे,
तुम अपनी आँखों से देखोगे
मगर कुछ नहीं जानोगे।
15 क्यूँकि इस क़ौम का दिल बेहिस्स हो गया है।
वह मुश्किल से अपने कानों से सुनते हैं,
उन्हों ने अपनी आँखों को बन्द कर रखा है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने कानों से सुनें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ़ रुजू करें
और मैं उन्हें शिफ़ा दूँ।’

16 लेकिन तुम्हारी आँखें मुबारक हैं क्यूँकि वह देख
सकती हैं और तुम्हारे कान मुबारक हैं क्यूँकि वह सुन
सकते हैं। 17 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो कुछ
तुम देख रहे हो बहुत से नबी और रास्तबाज़ इसे देख
न पाए अगरचे वह इस के आरज़ूमन्द थे। और जो
कुछ तुम सुन रहे हो इसे वह सुनने न पाए, अगरचे
वह इस के ख़्वाहिशमन्द थे।

बीज बोने वाले की तम्सील का मतलब

18 अब सुनो कि बीज बोने वाले की तम्सील का
मतलब क्या है। 19 रास्ते पर गिरे हुए दाने वह लोग
हैं जो बादशाही का कलाम सुनते तो हैं, लेकिन उसे
समझते नहीं। फिर इब्लीस आ कर वह कलाम छीन
लेता है जो उन के दिलों में बोया गया है। 20 पथरीली
ज़मीन पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते
ही उसे ख़ुशी से क़बूल तो कर लेते हैं, 21 लेकिन वह
जड़ नहीं पकड़ते और इस लिए ज़्यादा देर तक क़ाइम
नहीं रहते। जूँ ही वह कलाम पर ईमान लाने के बाइस
किसी मुसीबत या ईज़ारसानी से दोचार हो जाएँ तो
वह बर्गश्ता हो जाते हैं। 22 ख़ुदरौ काँटेदार पौदों
के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम
सुनते तो हैं, लेकिन फिर रोज़मर्रा की परेशानियाँ और
दौलत का फ़रेब कलाम को फलने फूलने नहीं देता।
नतीजे में वह फल लाने तक नहीं पहुँचता। 23 इस के
मुक़ाबले में ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे हुए दाने वह लोग
हैं जो कलाम को सुन कर उसे समझ लेते और बढ़ते
बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल
लाते हैं।”

ख़ुदरौ पौदों की तम्सील

24 ईसा ने उन्हें एक और तम्सील सुनाई। “आसमान
की बादशाही उस किसान से मुताबिक़त रखती है
जिस ने अपने खेत में अच्छा बीज बो दिया। 25 लेकिन
जब लोग सो रहे थे तो उस के दुश्मन ने आ कर
अनाज के पौदों के दरमियान ख़ुदरौ पौदों का बीज
बो दिया। फिर वह चला गया। 26 जब अनाज फूट
निकला और फ़सल पकने लगी तो ख़ुदरौ पौदे भी
नज़र आए। 27 नौकर मालिक के पास आए और
कहने लगे, ‘जनाब, क्या आप ने अपने खेत में अच्छा
बीज नहीं बोया था? तो फिर यह ख़ुदरौ पौदे कहाँ से
आ गए हैं?’

28 उस ने जवाब दिया, ‘किसी दुश्मन ने यह कर
दिया है।’

नौकरों ने पूछा, 'क्या हम जा कर उन्हें उखाड़ें?'
29 'नहीं,' उस ने कहा। 'ऐसा न हो कि ख़ुदरौ पौदों
के साथ साथ तुम अनाज के पौदे भी उखाड़ डालो।
30 उन्हें फ़सल की कटाई तक मिल कर बढ़ने दो।
उस वक़्त मैं फ़सल की कटाई करने वालों से कहूँगा
कि पहले ख़ुदरौ पौदों को चुन लो और उन्हें जलाने
के लिए गठों में बांध लो। फिर ही अनाज को जमा
करके गोदाम में लाओ'।"

राई के दाने की तम्सील

31 ईसा ने उन्हें एक और तम्सील सुनाई। "आसमान
की बादशाही राई के दाने की मानिन्द है जो किसी ने
ले कर अपने खेत में बो दिया। 32 गो यह बीजों में सब
से छोटा दाना है, लेकिन बढ़ते बढ़ते यह सब्ज़ियों में
सब से बड़ा हो जाता है। बल्कि यह दरख़्त सा बन
जाता है और परिन्दे आ कर उस की शाख़ों में घोंसले
बना लेते हैं।"

ख़मीर की तम्सील

33 उस ने उन्हें एक और तम्सील भी सुनाई।
"आसमान की बादशाही ख़मीर की मानिन्द है जो
किसी औरत ने ले कर तक़रीबन 27 किलोग्राम आटे
में मिला दिया। गो वह उस में छुप गया तो भी होते
होते पूरे गुंधे हुए आटे को ख़मीर बना दिया।"

तम्सीलों में बात करने का सबब

34 ईसा ने यह तमाम बातें हुजूम के सामने तम्सीलों
की सूरत में कीं। तम्सील के बग़ैर उस ने उन से बात
ही नहीं की। 35 यूँ नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि
"मैं तम्सीलों में बात करूँगा, मैं दुनिया की तख़्लीक़
से ले कर आज तक छुपी हुई बातें बयान करूँगा।"

ख़ुदरौ पौदों की तम्सील का मतलब

36 फिर ईसा हुजूम को रुख़्सत करके घर के अन्दर
चला गया। उस के शागिर्द उस के पास आ कर कहने
लगे, "खेत में ख़ुदरौ पौदों की तम्सील का मतलब
हमें समझाएँ।"
37 उस ने जवाब दिया, "अच्छा बीज बोने वाला
इब्न-ए-आदम है। 38 खेत दुनिया है जबकि अच्छे
बीज से मुराद बादशाही के फ़र्ज़न्द हैं। ख़ुदरौ पौदे
इब्लीस के फ़र्ज़न्द हैं 39 और उन्हें बोने वाला दुश्मन
इब्लीस है। फ़सल की कटाई का मतलब दुनिया
का इख़तिताम है जबकि फ़सल की कटाई करने
वाले फ़रिश्ते हैं। 40 जिस तरह तम्सील में ख़ुदरौ पौदे
उखाड़े जाते और आग में जलाए जाते हैं उसी तरह
दुनिया के इख़तिताम पर भी किया जाएगा। 41 इब्न-
ए-आदम अपने फ़रिश्तों को भेज देगा, और वह उस
की बादशाही से बर्गश्तगी का हर सबब और शरीअत
की ख़िलाफ़वरज़ी करने वाले हर शख़्स को निकालते
जाएंगे। 42 वह उन्हें भड़कती भट्टी में फैंक देंगे जहाँ
लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे। 43 फिर रास्तबाज़
अपने बाप की बादशाही में सूरज की तरह चमकेंगे।
जो सुन सकता है वह सुन ले!

छुपे हुए ख़ज़ाने की तम्सील

44 आसमान की बादशाही खेत में छुपे ख़ज़ाने की
मानिन्द है। जब किसी आदमी को उस के बारे में
मालूम हुआ तो उस ने उसे दुबारा छुपा दिया। फिर
वह ख़ुशी के मारे चला गया, अपनी तमाम मिलकियत
फ़रोख़्त कर दी और उस खेत को ख़रीद लिया।

मोती की तम्सील

45 नीज़, आसमान की बादशाही ऐसे सौदागर की
मानिन्द है जो अच्छे मोतियों की तलाश में था। 46 जब
उसे एक निहायत क़ीमती मोती के बारे में मालूम हुआ
तो वह चला गया, अपनी तमाम मिलकियत फ़रोख़्त
कर दी और उस मोती को ख़रीद लिया।

जाल की तम्सील

47 आसमान की बादशाही जाल की मानिन्द भी
है। उसे झील में डाला गया तो हर क़िस्म की

मछलियाँ पकड़ी गईं। 48 जब वह भर गया तो मछेरों
ने उसे किनारे पर खैंच लिया। फिर उन्हों ने बैठ कर
क़ाबिल-ए-इस्तेमाल मछलियाँ चुन कर टोकरियों
में डाल दीं और नाक़ाबिल-ए-इस्तेमाल मछलियाँ
फैंक दीं। 49 दुनिया के इख़तिताम पर ऐसा ही होगा।
फ़रिश्ते आएँगे और बुरे लोगों को रास्तबाज़ों से
अलग करके 50 उन्हें भड़कती भट्टी में फैंक देंगे जहाँ
लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।"

नई और पुरानी सच्चाइयाँ

51 ईसा ने पूछा, "क्या तुम को इन तमाम बातों की
समझ आ गई है?"

"जी," शागिर्दों ने जवाब दिया।

52 उस ने उन से कहा, "इस लिए शरीअत का हर
आलिम जो आसमान की बादशाही में शागिर्द बन
गया है ऐसे मालिक-ए-मकान की मानिन्द है जो अपने
ख़ज़ाने से नए और पुराने जवाहिर निकालता है।"

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

53 यह तम्सीलें सुनाने के बाद ईसा वहाँ से चला
गया। 54 अपने वतनी शहर नासरत पहुँच कर वह
इबादतख़ाने में लोगों को तालीम देने लगा। उस की
बातें सुन कर वह हैरतज़दा हुए। उन्हों ने पूछा, "उसे
यह हिक्मत और मोजिज़े करने की यह क़ुदरत कहाँ
से हासिल हुई है? 55 क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है?
क्या उस की माँ का नाम मरियम नहीं है, और क्या
उस के भाई याक़ूब, यूसुफ़, शमाऊन और यहूदा नहीं
हैं? 56 क्या उस की बहनें हमारे साथ नहीं रहतीं? तो
फिर उसे यह सब कुछ कहाँ से मिल गया?" 57 यूँ वह
उस से ठोकर खा कर उसे क़बूल करने से क़ासिर
रहे।

ईसा ने उन से कहा, "नबी की इज़्ज़त हर जगह
की जाती है सिवाए उस के वतनी शहर और उस के
अपने ख़ानदान के।" 58 और उन के ईमान की कमी
के बाइस उस ने वहाँ ज़्यादा मोजिज़े न किए

यहया का क़त्ल

14 1 उस वक़्त गलील के हुक्मरान हेरोदेस
अनतिपास को ईसा के बारे में इत्तिला
मिली। 2 इस पर उस ने अपने दरबारियों से कहा,
"यह यहया बपतिस्मा देने वाला है जो मुर्दों में से जी
उठा है, इस लिए उस की मोजिज़ाना ताक़तें इस में
नज़र आती हैं।"

3 वजह यह थी कि हेरोदेस ने यहया को गिरिफ़्तार
करके जेल में डाला था। यह हेरोदियास की ख़ातिर
हुआ था जो पहले हेरोदेस के भाई फ़िलिप्पुस
की बीवी थी। 4 यहया ने हेरोदेस को बताया था,
"हेरोदियास से तेरी शादी नाजाइज़ है।" 5 हेरोदेस
यहया को क़त्ल करना चाहता था, लेकिन अवाम
से डरता था क्यूँकि वह उसे नबी समझते थे।

6 हेरोदेस की सालगिरह के मौक़े पर हेरोदियास की
बेटी उन के सामने नाची। हेरोदेस को उस का नाचना
इतना पसन्द आया 7 कि उस ने क़सम खा कर उस
से वादा किया, "जो भी तू माँगेगी मैं तुझे दूँगा।"

8 अपनी माँ के सिखाने पर बेटी ने कहा, "मुझे
यहया बपतिस्मा देने वाले का सर ट्रे में मंगवा दें।"

9 यह सुन कर बादशाह को दुख हुआ। लेकिन
अपनी क़समों और मेहमानों की मौजूदगी की वजह
से उस ने उसे देने का हुक्म दे दिया। 10 चुनाँचे यहया
का सर क़लम कर दिया गया। 11 फिर ट्रे में रख कर
अन्दर लाया गया और लड़की को दे दिया गया।
लड़की उसे अपनी माँ के पास ले गई। 12 बाद में
यहया के शागिर्द आए और उस की लाश ले कर उसे
दफ़नाया। फिर वह ईसा के पास गए और उसे इत्तिला
दी।

ईसा 5000 मर्दों को खाना खिलाता है

13 यह ख़बर सुन कर ईसा लोगों से अलग हो कर
कश्ती पर सवार हुआ और किसी वीरान जगह चला
गया। लेकिन हुजूम को उस की ख़बर मिली। लोग
पैदल चल कर शहरों से निकल आए और उस के

पीछे लग गए। 14 जब ईसा ने कश्ती पर से उतर
कर बड़े हुजूम को देखा तो उसे लोगों पर बड़ा तरस
आया। वहीं उस ने उन के मरीज़ों को शिफ़ा दी।
15 जब दिन ढलने लगा तो उस के शागिर्द उस के
पास आए और कहा, "यह जगह वीरान है और दिन
ढलने लगा है। इन को रुख़्सत कर दें ताकि यह
इर्दगिर्द के दीहातों में जा कर खाने के लिए कुछ
ख़रीद लें।"
16 ईसा ने जवाब दिया, "इन्हें जाने की ज़रूरत नहीं,
तुम ख़ुद इन्हें खाने को दो।"
17 उन्हों ने जवाब दिया, "हमारे पास सिर्फ़ पाँच
रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं।"
18 उस ने कहा, "उन्हें यहाँ मेरे पास ले आओ,"
19 और लोगों को घास पर बैठने का हुक्म दिया।
ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को ले
कर आसमान की तरफ़ देखा और शुक्रगुज़ारी की
दुआ की। फिर उस ने रोटियों को तोड़ तोड़ कर
शागिर्दों को दिया, और शागिर्दों ने यह रोटियाँ लोगों
में तक़्सीम कर दीं। 20 सब ने जी भर कर खाया। जब
शागिर्दों ने बचे हुए टुकड़े जमा किए तो बारह टोकरे
भर गए। 21 ख़वातीन और बच्चों के इलावा खाने वाले
तक़रीबन 5,000 मर्द थे।

ईसा पानी पर चलता है

22 इस के ऐन बाद ईसा ने शागिर्दों को मज्बूर किया
कि वह कश्ती पर सवार हो कर आगे निकलें और
झील के पार चले जाएँ। इतने में वह हुजूम को रुख़्सत
करना चाहता था। 23 उन्हें ख़ैरबाद कहने के बाद
वह दुआ करने के लिए अकेला पहाड़ पर चढ़ गया।
शाम के वक़्त वह वहाँ अकेला था 24 जबकि कश्ती
किनारे से काफ़ी दूर हो गई थी। लहरें कश्ती को
बहुत तंग कर रही थीं क्यूँकि हवा उस के ख़िलाफ़
चल रही थी।
25 तक़रीबन तीन बजे रात के वक़्त ईसा पानी पर
चलते हुए उन के पास आया। 26 जब शागिर्दों ने उसे
झील की सतह पर चलते हुए देखा तो उन्हों ने दहशत
खाई। "यह कोई भूत है,"उन्हों ने कहा और डर के
मारे चीख़ें मारने लगे।
27 लेकिन ईसा फ़ौरन उन से मुख़ातिब हो कर
बोला, "हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।"
28 इस पर पतरस बोल उठा, "ख़ुदावन्द, अगर
आप ही हैं तो मुझे पानी पर अपने पास आने का
हुक्म दें।"
29 ईसा ने जवाब दिया, "आ।" पतरस कश्ती पर से
उतर कर पानी पर चलते चलते ईसा की तरफ़ बढ़ने
लगा। 30 लेकिन जब उस ने तेज़ हवा पर ग़ौर किया
तो वह घबरा गया और डूबने लगा। वह चिल्ला उठा,
"ख़ुदावन्द, मुझे बचाएँ!"
31 ईसा ने फ़ौरन अपना हाथ बढ़ा कर उसे पकड़
लिया। उस ने कहा, "ऐ कमएतिक़ाद! तू शक में क्यूँ
पड़ गया था?"
32 दोनों कश्ती पर सवार हुए तो हवा थम गई।
33 फिर कश्ती में मौजूद शागिर्दों ने उसे सिज्दा करके
कहा, "यक़ीनन आप अल्लाह के फ़र्ज़न्द हैं!"

गन्नेसरत में मरीज़ों की शिफ़ा

34 झील को पार करके वह गन्नेसरत शहर के पास
पहुँच गए। 35 जब उस जगह के लोगों ने ईसा को
पहचान लिया तो उन्हों ने इर्दगिर्द के पूरे इलाक़े में
इस की ख़बर फैलाई। उन्हों ने अपने तमाम मरीज़ों
को उस के पास ला कर 36 उस से मिन्नत की कि वह
उन्हें सिर्फ़ अपने लिबास के दामन को छूने दे। और
जिस ने भी उसे छुआ उसे शिफ़ा मिली।

बापदादा की तालीम

15 1 फिर कुछ फ़रीसी और शरीअत के
आलिम यरूशलम से आ कर ईसा से पूछने
लगे, 2 "आप के शागिर्द बापदादा की रिवायत क्यूँ
तोड़ते हैं? क्यूँकि वह हाथ धोए बग़ैर रोटी खाते हैं।"
3 ईसा ने जवाब दिया, "और तुम अपनी रिवायात
की ख़ातिर अल्लाह का हुक्म क्यूँ तोड़ते हो? 4 क्यूँकि
अल्लाह ने फ़रमाया, 'अपने बाप और अपनी माँ की

इज़्ज़त करना’ और ‘जो अपने बाप या माँ पर लानत
करे उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।’ 5 लेकिन जब कोई
अपने वालिदैन से कहे, ‘मैं आप की मदद नहीं कर
सकता, क्यूँकि मैं ने मन्नत मानी है कि जो कुछ मुझे
आप को देना था वह अल्लाह के लिए वक़्फ़ है’ तो
तुम इसे जाइज़ क़रार देते हो। 6 यूँ तुम कहते हो कि
उसे अपने माँ-बाप की इज़्ज़त करने की ज़रूरत नहीं
है। और इसी तरह तुम अल्लाह के कलाम को अपनी
रिवायत की ख़ातिर मन्सूख़ कर लेते हो। 7 रियाकारो!
यसायाह नबी ने तुम्हारे बारे में क्या ख़ूब नबुव्वत की
है,

8 ‘यह क़ौम अपने होंटों से तो मेरा एहतिराम करती
है
लेकिन उस का दिल मुझ से दूर है।
9 वह मेरी परस्तिश करते तो हैं, लेकिन बेफ़ाइदा।
क्यूँकि वह सिर्फ़ इन्सान ही के अहकाम सिखाते
हैं’।”

इन्सान को क्या कुछ नापाक कर देता है?

10 फिर ईसा ने हुजूम को अपने पास बुला कर कहा,
“सब मेरी बात सुनो और इसे समझने की कोशिश
करो। 11 कोई ऐसी चीज़ है नहीं जो इन्सान के मुँह
में दाख़िल हो कर उसे नापाक कर सके, बल्कि जो
कुछ इन्सान के मुँह से निकलता है वही उसे नापाक
कर देता है।”

12 इस पर शागिर्दों ने उस के पास आ कर पूछा,
“क्या आप को मालूम है कि फ़रीसी यह बात सुन
कर नाराज़ हुए हैं?”

13 उस ने जवाब दिया, “जो भी पौदा मेरे आसमानी
बाप ने नहीं लगाया उसे जड़ से उखाड़ा जाएगा।
14 उन्हें छोड़ दो, वह अंधे राह दिखाने वाले हैं। अगर
एक अंधा दूसरे अंधे की राहनुमाई करे तो दोनों गढ़े
में गिर जाएंगे।”

15 पतरस बोल उठा, “इस तम्सील का मतलब हमें
बताएँ।”

16 ईसा ने कहा, “क्या तुम अभी तक इतने नासमझ
हो? 17 क्या तुम नहीं समझ सकते कि जो कुछ
इन्सान के मुँह में दाख़िल हो जाता है वह उस के मेदे
में जाता है और वहाँ से निकल कर जा-ए-ज़रूरत
में? 18 लेकिन जो कुछ इन्सान के मुँह से निकलता
है वह दिल से आता है। वही इन्सान को नापाक
करता है। 19 दिल ही से बुरे ख़यालात, क़त्ल-ओ-
ग़ारत, ज़िनाकारी, हरामकारी, चोरी, झूटी गवाही
और बुहतान निकलते हैं। 20 यही कुछ इन्सान को
नापाक कर देता है, लेकिन हाथ धोए बग़ैर खाना
खाने से वह नापाक नहीं होता।”

ग़ैरयहूदी औरत का ईमान

21 फिर ईसा गलील से रवाना हो कर शिमाल में सूर
और सैदा के इलाक़े में आया। 22 इस इलाक़े की एक
कनआनी ख़ातून उस के पास आ कर चिल्लाने लगी,
“ख़ुदावन्द, इब्न-ए-दाऊद, मुझ पर रहम करें। एक
बदरुह मेरी बेटी को बहुत सताती है।”

23 लेकिन ईसा ने जवाब में एक लफ़्ज़ भी न कहा।
इस पर उस के शागिर्द उस के पास आ कर उस से
गुज़ारिश करने लगे, “उसे फ़ारिग़ कर दें, क्यूँकि वह
हमारे पीछे पीछे चीख़ती चिल्लाती है।”

24 ईसा ने जवाब दिया, “मुझे सिर्फ़ इस्राईल की
खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया है।”

25 औरत उस के पास आ कर मुँह के बल झुक गई
और कहा, “ख़ुदावन्द, मेरी मदद करें!”

26 उस ने उसे बताया, “यह मुनासिब नहीं कि बच्चों
से खाना ले कर कुत्तों के सामने फैंक दिया जाए।”

27 उस ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावन्द, लेकिन कुत्ते
भी वह टुकड़े खाते हैं जो उन के मालिक की मेज़ पर
से फ़र्श पर गिर जाते हैं।”

28 ईसा ने कहा, “ऐ औरत, तेरा ईमान बड़ा है। तेरी
दरख़्वास्त पूरी हो जाए।” उसी लम्हे औरत की बेटी
को शिफ़ा मिल गई।

ईसा बहुत से मरीज़ों को शिफ़ा देता है

29 फिर ईसा वहाँ से रवाना हो कर गलील की झील
के किनारे पहुँच गया। वहाँ वह पहाड़ पर चढ़ कर
बैठ गया। 30 लोगों की बड़ी तादाद उस के पास
आई। वह अपने लंगड़े, अंधे, मफ़्लूज, गूँगे और कई
और क़िस्म के मरीज़ भी साथ ले आए। उन्हों ने उन्हें
ईसा के सामने रखा तो उस ने उन्हें शिफ़ा दी। 31 हुजूम
हैरतज़दा हो गया। क्यूँकि गूँगे बोल रहे थे, अपाहजों
के आज़ा बहाल हो गए, लंगड़े चलने और अंधे देखने
लगे थे। यह देख कर भीड़ ने इस्राईल के ख़ुदा की
तम्जीद की।

ईसा 4000 मर्दों को खाना खिलाता है

32 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों को बुला कर उन
से कहा, "मुझे इन लोगों पर तरस आता है। इन्हें
मेरे साथ ठहरे तीन दिन हो चुके हैं और इन के पास
खाने की कोई चीज़ नहीं है। लेकिन मैं इन्हें इस भूकी
हालत में रुख़्सत नहीं करना चाहता। ऐसा न हो कि
वह रास्ते में थक कर चूर हो जाएँ।"
33 उस के शागिर्दों ने जवाब दिया, "इस वीरान
इलाक़े में कहाँ से इतना खाना मिल सकेगा कि यह
लोग खा कर सेर हो जाएँ?"
34 ईसा ने पूछा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?"
उन्हों ने जवाब दिया, "सात, और चन्द एक छोटी
मछलियाँ।"
35 ईसा ने हुजूम को ज़मीन पर बैठने को कहा।
36 फिर सात रोटियों और मछलियों को ले कर उस
ने शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उन्हें तोड़ तोड़ कर
अपने शागिर्दों को तक़्सीम करने के लिए दे दिया।
37 सब ने जी भर कर खाया। बाद में जब खाने के
बचे हुए टुकड़े जमा किए गए तो सात बड़े टोकरे भर
गए। 38 ख़वातीन और बच्चों के इलावा खाने वाले
4,000 मर्द थे।
39 फिर ईसा लोगों को रुख़्सत करके कश्ती पर
सवार हुआ और मगदन के इलाक़े में चला गया।

फ़रीसी इलाही निशान का तक़ाज़ा करते हैं

16 1 एक दिन फ़रीसी और सदूक़ी ईसा के
पास आए। उसे परखने के लिए उन्हों ने
मुतालबा किया कि वह उन्हें आसमान की तरफ़ से
कोई इलाही निशान दिखाए ताकि उस का इख़तियार
साबित हो जाए। 2 लेकिन उस ने जवाब दिया, "शाम
को तुम कहते हो, 'कल मौसम साफ़ होगा क्यूँकि
आसमान सुर्ख़ नज़र आता है।' 3 और सुब्ह के वक़्त
कहते हो, 'आज तूफ़ान होगा क्यूँकि आसमान सुर्ख़
है और बादल छाए हुए हैं।' ग़रज़ तुम आसमान की
हालत पर ग़ौर करके सहीह नतीजा निकाल लेते हो,
लेकिन ज़मानों की अलामतों पर ग़ौर करके सहीह
नतीजे तक पहुँचना तुम्हारे बस की बात नहीं है।
4 सिर्फ़ शरीर और ज़िनाकार नस्ल इलाही निशान का
तक़ाज़ा करती है। लेकिन उसे कोई भी इलाही निशान
पेश नहीं किया जाएगा सिवाए यूनुस नबी के निशान
के।"
यह कह कर ईसा उन्हें छोड़ कर चला गया।

फ़रीसियों और सदूक़ियों का ख़मीर

5 झील को पार करते वक़्त शागिर्द अपने साथ
खाना लाना भूल गए थे। 6 ईसा ने उन से कहा,
"ख़बरदार, फ़रीसियों और सदूक़ियों के ख़मीर से
होश्यार रहना।"
7 शागिर्द आपस में बह्स करने लगे, "वह इस लिए
कह रहे होंगे कि हम खाना साथ नहीं लाए।"
8 ईसा को मालूम हुआ कि वह क्या सोच रहे हैं।
उस ने कहा, "तुम आपस में क्यूँ बह्स कर रहे हो कि
हमारे पास रोटी नहीं है? 9 क्या तुम अभी तक नहीं
समझते? क्या तुम्हें याद नहीं कि मैं ने पाँच रोटियाँ
ले कर 5,000 आदमियों को खाना खिला दिया और
कि तुम ने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए
थे? 10 या क्या तुम भूल गए हो कि मैं ने सात रोटियाँ
ले कर 4,000 आदमियों को खाना खिलाया और
कि तुम ने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए

थे? 11 तुम क्यूँ नहीं समझते कि मैं तुम से खाने की
बात नहीं कर रहा? सुनो मेरी बात! फ़रीसियों और
सदूक़ियों के ख़मीर से होश्यार रहो!”
12 फिर उन्हें समझ आई कि ईसा उन्हें रोटी के
ख़मीर से आगाह नहीं कर रहा था बल्कि फ़रीसियों
और सदूक़ियों की तालीम से।

पतरस का इक़्रार

13 जब ईसा क़ैसरिया-फ़िलिप्पी के इलाक़े में पहुँचा
तो उस ने शागिर्दों से पूछा, “इब्न-ए-आदम लोगों के
नज़्दीक कौन है?”
14 उन्हों ने जवाब दिया, “कुछ कहते हैं यहया
बपतिस्मा देने वाला, कुछ यह कि आप इल्यास नबी
हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि यरमियाह या नबियों में
से एक।”
15 उस ने पूछा, “लेकिन तुम्हारे नज़्दीक मैं कौन
हूँ?”
16 पतरस ने जवाब दिया, “आप ज़िन्दा ख़ुदा के
फ़र्ज़न्द मसीह हैं।”
17 ईसा ने कहा, “शमाऊन बिन यूनुस, तू मुबारक
है, क्यूँकि किसी इन्सान ने तुझ पर यह ज़ाहिर नहीं
किया बल्कि मेरे आसमानी बाप ने। 18 मैं तुझे यह
भी बताता हूँ कि तू पतरस यानी पत्थर है, और इसी
पत्थर पर मैं अपनी जमाअत को तामीर करूँगा, ऐसी
जमाअत जिस पर पाताल के दरवाज़े भी ग़ालिब नहीं
आएँगे। 19 मैं तुझे आसमान की बादशाही की कुंजियाँ
दे दूँगा। जो कुछ तू ज़मीन पर बांधेगा वह आसमान
पर भी बंधेगा। और जो कुछ तू ज़मीन पर खोलेगा
वह आसमान पर भी खुलेगा।”
20 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों को हुक्म दिया,
“किसी को भी न बताओ कि मैं मसीह हूँ।”

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

21 उस वक़्त से ईसा अपने शागिर्दों पर वाज़िह करने
लगा, “लाज़िम है कि मैं यरूशलम जा कर क़ौम के
बुज़ुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा के
हाथों बहुत दुख उठाऊँ। मुझे क़त्ल किया जाएगा,
लेकिन तीसरे दिन मैं जी उठूँगा।”
22 इस पर पतरस उसे एक तरफ़ ले जा कर समझाने
लगा। “ऐ ख़ुदावन्द, अल्लाह न करे कि यह कभी भी
आप के साथ हो।”
23 ईसा ने मुड़ कर पतरस से कहा, “शैतान, मेरे
सामने से हट जा! तू मेरे लिए ठोकर का बाइस है,
क्यूँकि तू अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि इन्सान
की।”
24 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “जो मेरे
पीछे आना चाहे वह अपने आप का इन्कार करे और
अपनी सलीब उठा कर मेरे पीछे हो ले। 25 क्यूँकि जो
अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो देगा।
लेकिन जो मेरी ख़ातिर अपनी जान खो दे वही उसे पा
लेगा। 26 क्या फ़ाइदा है अगर किसी को पूरी दुनिया
हासिल हो जाए, लेकिन वह अपनी जान से महरूम
हो जाए? इन्सान अपनी जान के बदले क्या दे सकता
है? 27 क्यूँकि इब्न-ए-आदम अपने बाप के जलाल में
अपने फ़रिश्तों के साथ आएगा, और उस वक़्त वह
हर एक को उस के काम का बदला देगा। 28 मैं तुम्हें
सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने
से पहले ही इब्न-ए-आदम को उस की बादशाही में
आते हुए देखेंगे।”

पहाड़ पर ईसा की सूरत बदल जाती है

17 1 छः दिन के बाद ईसा सिर्फ़ पतरस, याक़ूब
और यूहन्ना को अपने साथ ले कर ऊँचे
पहाड़ पर चढ़ गया। 2 वहाँ उस की शक्ल-ओ-सूरत
उन के सामने बदल गई। उस का चिहरा सूरज की
तरह चमकने लगा, और उस के कपड़े नूर की मानिन्द
सफ़ेद हो गए। 3 अचानक इल्यास और मूसा ज़ाहिर
हुए और ईसा से बातें करने लगे। 4 पतरस बोल उठा,
“ख़ुदावन्द, कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं।
अगर आप चाहें तो मैं तीन झोंपड़ियाँ बनाऊँगा, एक
आप के लिए, एक मूसा के लिए और एक इल्यास
के लिए।”

5 वह अभी बात कर ही रहा था कि एक चमकदार
बादल आ कर उन पर छा गया और बादल में से एक
आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा प्यारा फ़र्ज़न्द है, जिस
से मैं ख़ुश हूँ। इस की सुनो।”
6 यह सुन कर शागिर्द दहशत खा कर औंधे मुँह
गिर गए। 7 लेकिन ईसा ने आ कर उन्हें छुआ। उस ने
कहा, “उठो, मत डरो।” 8 जब उन्हों ने नज़र उठाई
तो ईसा के सिवा किसी को न देखा।
9 वह पहाड़ से उतरने लगे तो ईसा ने उन्हें हुक्म
दिया, “जो कुछ तुम ने देखा है उसे उस वक़्त तक
किसी को न बताना जब तक कि इब्न-ए-आदम मुर्दों
में से जी न उठे।”
10 शागिर्दों ने उस से पूछा, “शरीअत के उलमा क्यूँ
कहते हैं कि मसीह की आमद से पहले इल्यास का
आना ज़रूरी है?”
11 ईसा ने जवाब दिया, “इल्यास तो ज़रूर सब कुछ
बहाल करने के लिए आएगा। 12 लेकिन मैं तुम को
बताता हूँ कि इल्यास तो आ चुका है और उन्हों
ने उसे नहीं पहचाना बल्कि उस के साथ जो चाहा
किया। इसी तरह इब्न-ए-आदम भी उन के हाथों दुख
उठाएगा।”
13 फिर शागिर्दों को समझ आई कि वह उन के साथ
यहया बपतिस्मा देने वाले की बात कर रहा था।

ईसा लड़के में से बदरुह निकालता है

14 जब वह नीचे हुजूम के पास पहुँचे तो एक आदमी
ने ईसा के सामने आ कर घुटने टेके 15 और कहा,
“ख़ुदावन्द, मेरे बेटे पर रहम करें, उसे मिर्गी के दौरे
पड़ते हैं और उसे शदीद तक्लीफ़ उठानी पड़ती है।
कई बार वह आग या पानी में गिर जाता है। 16 मैं उसे
आप के शागिर्दों के पास लाया था, लेकिन वह उसे
शिफ़ा न दे सके।”
17 ईसा ने जवाब दिया, “ईमान से ख़ाली और
टेढ़ी नस्ल! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँ, कब तक
तुम्हें बर्दाश्त करूँ? लड़के को मेरे पास ले आओ।”
18 ईसा ने बदरुह को डाँटा, तो वह लड़के में से
निकल गई। उसी लम्हे उसे शिफ़ा मिल गई।
19 बाद में शागिर्दों ने अलाहिदगी में ईसा के पास
आ कर पूछा, “हम बदरुह को क्यूँ न निकाल सके?”
20 उस ने जवाब दिया, “अपने ईमान की कमी के
सबब से। मैं तुम्हें सच बताता हूँ, अगर तुम्हारा ईमान
राई के दाने के बराबर भी हो तो फिर तुम इस पहाड़
को कह सकोगे, ‘इधर से उधर खिसक जा,’ तो वह
खिसक जाएगा। और तुम्हारे लिए कुछ भी नामुमकिन
नहीं होगा। 21 [लेकिन इस क़िस्म की बदरुह दुआ
और रोज़े के बग़ैर नहीं निकलती।]”

ईसा दूसरी बार अपनी मौत का ज़िक्र करता है

22 जब वह गलील में जमा हुए तो ईसा ने उन्हें
बताया, “इब्न-ए-आदम को आदमियों के हवाले कर
दिया जाएगा। 23 वह उसे क़त्ल करेंगे, लेकिन तीन
दिन के बाद वह जी उठेगा।” यह सुन कर शागिर्द
निहायत ग़मगीन हुए।

बैत-उल-मुक़द्दस का टैक्स

24 वह कफ़र्नहूम पहुँचे तो बैत-उल-मुक़द्दस का
टैक्स जमा करने वाले पतरस के पास आ कर पूछने
लगे, “क्या आप का उस्ताद बैत-उल-मुक़द्दस का
टैक्स अदा नहीं करता?”
25 “जी, वह करता है,” पतरस ने जवाब दिया।
वह घर में आया तो ईसा पहले ही बोलने लगा,
“क्या ख़याल है शमाऊन, दुनिया के बादशाह किन
से ड्यूटी और टैक्स लेते हैं, अपने फ़र्ज़न्दों से या
अजनबियों से?”
26 पतरस ने जवाब दिया, “अजनबियों से।” ईसा
बोला “तो फिर उन के फ़र्ज़न्द टैक्स देने से बरी हुए।
27 लेकिन हम उन्हें नाराज़ नहीं करना चाहते। इस
लिए झील पर जा कर उस में डोरी डाल देना। जो
मछली तू पहले पकड़ेगा उस का मुँह खोलना तो उस
में से चाँदी का सिक्का निकलेगा। उसे ले कर उन्हें मेरे
और अपने लिए अदा कर दे।”

कौन सब से बड़ा है?

18 1 उस वक़्त शागिर्द ईसा के पास आ कर
पूछने लगे, “आसमान की बादशाही में
कौन सब से बड़ा है?”
2 जवाब में ईसा ने एक छोटे बच्चे को बुला कर उन
के दरमियान खड़ा किया 3 और कहा, “मैं तुम को
सच बताता हूँ अगर तुम बदल कर छोटे बच्चों की
मानिन्द न बनो तो तुम कभी आसमान की बादशाही
में दाख़िल नहीं होगे। 4 इस लिए जो भी अपने आप
को इस बच्चे की तरह छोटा बनाएगा वह आसमान में
सब से बड़ा होगा। 5 और जो भी मेरे नाम में इस जैसे
छोटे बच्चे को क़बूल करे वह मुझे क़बूल करता है।

आज़माइशें

6 लेकिन जो कोई इन छोटों में से किसी को गुनाह
करने पर उकसाए उस के लिए बेहतर है कि उस के
गले में बड़ी चक्की का पाट बांध कर उसे समुन्दर की
गहराइयों में डुबो दिया जाए। 7 दुनिया पर उन चीज़ों
की वजह से अफ़्सोस जो गुनाह करने पर उकसाती
हैं। लाज़िम है कि ऐसी आज़माइशें आएँ, लेकिन उस
शख़्स पर अफ़्सोस जिस की मारिफ़त वह आएँ।
8 अगर तेरा हाथ या पाँओ तुझे गुनाह करने पर
उकसाए तो उसे काट कर फैंक देना। इस से पहले
कि तुझे दो हाथों या दो पाँओ समेत जहन्नुम की
अबदी आग में फैंका जाए, बेहतर यह है कि एक
हाथ या पाँओ से महरूम हो कर अबदी ज़िन्दगी में
दाख़िल हो। 9 और अगर तेरी आँख तुझे गुनाह करने
पर उकसाए तो उसे निकाल कर फैंक देना। इस से
पहले कि तुझे दो आँखों समेत जहन्नुम की आग में
फैंका जाए बेहतर यह है कि एक आँख से महरूम हो
कर अबदी ज़िन्दगी में दाख़िल हो।

खोई हुई भेड़ की तम्सील

10 ख़बरदार! तुम इन छोटों में से किसी को भी
हक़ीर न जानना। क्यूँकि मैं तुम को बताता हूँ कि
आसमान पर इन के फ़रिश्ते हर वक़्त मेरे बाप के
चिहरे को देखते रहते हैं। 11 [क्यूँकि इब्न-ए-आदम
खोए हुओं को ढूँडने और नजात देने आया है।]
12 तुम्हारा क्या ख़याल है? अगर किसी आदमी की
100 भेड़ें हों और एक भटक कर गुम हो जाए तो वह
क्या करेगा? क्या वह बाक़ी 99 भेड़ें पहाड़ी इलाक़े
में छोड़ कर भटकी हुई भेड़ को ढूँडने नहीं जाएगा?
13 और मैं तुम को सच बताता हूँ कि भटकी हुई भेड़
के मिलने पर वह उस के बारे में उन बाक़ी 99 भेड़ों
की निस्बत कहीं ज़्यादा ख़ुशी मनाएगा जो भटकी
नहीं। 14 बिलकुल इसी तरह आसमान पर तुम्हारा
बाप नहीं चाहता कि इन छोटों में से एक भी हलाक
हो जाए।

गुनाह में पड़े भाई से सुलूक

15 अगर तेरे भाई ने तेरा गुनाह किया हो तो अकेले
उस के पास जा कर उस पर उस का गुनाह ज़ाहिर
कर। अगर वह तेरी बात माने तो तू ने अपने भाई को
जीत लिया। 16 लेकिन अगर वह न माने तो एक या
दो और लोगों को अपने साथ ले जा ताकि तुम्हारी
हर बात की दो या तीन गवाहों से तस्दीक़ हो जाए।
17 अगर वह उन की बात भी न माने तो जमाअत को
बता देना। और अगर वह जमाअत की भी न माने तो
उस के साथ ग़ैरईमानदार या टैक्स लेने वाले का सा
सुलूक कर।

बांधने और खोलने का इख़्तियार

18 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो कुछ भी तुम
ज़मीन पर बान्धोगे आसमान पर भी बंधेगा, और जो
कुछ ज़मीन पर खोलोगे आसमान पर भी खुलेगा।
19 मैं तुम को यह भी बताता हूँ कि अगर तुम में से
दो शख़्स किसी बात को माँगने पर मुत्तफ़िक़ हो जाएँ
तो मेरा आसमानी बाप तुम को बख़्शेगा। 20 क्यूँकि
जहाँ भी दो या तीन अफ़राद मेरे नाम में जमा हो जाएँ
वहाँ मैं उन के दरमियान हूँगा।”

मुआफ़ न करने वाले नौकर की तम्सील

21 फिर पतरस ने ईसा के पास आ कर पूछा,
“ख़ुदावन्द, जब मेरा भाई मेरा गुनाह करे तो मैं
कितनी बार उसे मुआफ़ करूँ? सात बार तक?”
22 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे बताता हूँ, सात
बार नहीं बल्कि 77 बार। 23 इस लिए आसमान की
बादशाही एक बादशाह की मानिन्द है जो अपने
नौकरों के कर्ज़ों का हिसाब-किताब करना चाहता
था। 24 हिसाब-किताब शुरू करते वक़्त एक आदमी
उस के सामने पेश किया गया जो अरबों के हिसाब
से उस का क़र्ज़दार था। 25 वह यह रक़म अदा न
कर सका, इस लिए उस के मालिक ने यह क़र्ज़
वसूल करने के लिए हुक्म दिया कि उसे बाल-बच्चों
और तमाम मिलकियत समेत फ़रोख़्त कर दिया जाए।
26 यह सुन कर नौकर मुँह के बल गिरा और मिन्नत
करने लगा, ‘मुझे मुहलत दें, मैं पूरी रक़म अदा कर
दूँगा।’ 27 बादशाह को उस पर तरस आया। उस ने
उस का क़र्ज़ मुआफ़ करके उसे जाने दिया।
28 लेकिन जब यही नौकर बाहर निकला तो एक
हमख़िदमत मिला जो उस का चन्द हज़ार रूपों का
क़र्ज़दार था। उसे पकड़ कर वह उस का गला दबा
कर कहने लगा, ‘अपना क़र्ज़ अदा कर!’ 29 दूसरा
नौकर गिर कर मिन्नत करने लगा, ‘मुझे मुहलत दें, मैं
आप को सारी रक़म अदा कर दूँगा।’ 30 लेकिन वह
इस के लिए तय्यार न हुआ, बल्कि जा कर उसे उस
वक़्त तक जेल में डलवाया जब तक वह पूरी रक़म
अदा न कर दे। 31 जब बाक़ी नौकरों ने यह देखा तो
उन्हें शदीद दुख हुआ और उन्हों ने अपने मालिक के
पास जा कर सब कुछ बता दिया जो हुआ था। 32 इस
पर मालिक ने उस नौकर को अपने पास बुला लिया
और कहा, ‘शरीर नौकर! जब तू ने मेरी मिन्नत की तो
मैं ने तेरा पूरा क़र्ज़ मुआफ़ कर दिया। 33 क्या लाज़िम
न था कि तू भी अपने साथी नौकर पर उतना रहम
करता जितना मैं ने तुझ पर किया था?’ 34 ग़ुस्से में
मालिक ने उसे जेल के अफ़सरों के हवाले कर दिया
ताकि उस पर उस वक़्त तक तशद्दुद किया जाए जब
तक वह क़र्ज़ की पूरी रक़म अदा न कर दे।
35 मेरा आसमानी बाप तुम में से हर एक के साथ
भी ऐसा ही करेगा अगर तुम ने अपने भाई को पूरे
दिल से मुआफ़ न किया।”

तलाक़ के बारे में तालीम

19 1 यह कहने के बाद ईसा गलील को छोड़
कर यहूदिया में दरया-ए- यर्दन के पार चला
गया। 2 बड़ा हुजूम उस के पीछे हो लिया और उस ने
उन्हें वहाँ शिफ़ा दी।
3 कुछ फ़रीसी आए और उसे फंसाने की ग़रज़ से
सवाल किया, “क्या जाइज़ है कि मर्द अपनी बीवी
को किसी भी वजह से तलाक़ दे?”
4 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुम ने कलाम-ए-
मुक़द्दस में नहीं पढ़ा कि इब्तिदा में ख़ालिक़ ने उन्हें
मर्द और औरत बनाया? 5 और उस ने फ़रमाया, ‘इस
लिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़ कर अपनी बीवी
के साथ पैवस्त हो जाता है। वह दोनों एक हो जाते
हैं।’ 6 यूँ वह कलाम-ए-मुक़द्दस के मुताबिक़ दो नहीं
रहते बल्कि एक हो जाते हैं। जिसे अल्लाह ने जोड़ा है
उसे इन्सान जुदा न करे।”
7 उन्हों ने एतिराज़ किया, “तो फिर मूसा ने यह क्यूँ
फ़रमाया कि आदमी तलाक़नामा लिख कर बीवी को
रुख़्सत कर दे?”
8 ईसा ने जवाब दिया, “मूसा ने तुम्हारी सख़्तदिली
की वजह से तुम को अपनी बीवी को तलाक़ देने की
इजाज़त दी। लेकिन इब्तिदा में ऐसा न था। 9 मैं तुम्हें
बताता हूँ, जो अपनी बीवी को जिस ने ज़िना न किया
हो तलाक़ दे और किसी और से शादी करे, वह ज़िना
करता है।”
10 शागिर्दों ने उस से कहा, “अगर शौहर और बीवी
का आपस का ताल्लुक़ ऐसा है तो शादी न करना
बेहतर है।”
11 ईसा ने जवाब दिया, “हर कोई यह बात समझ
नहीं सकता बल्कि सिर्फ़ वह जिसे इस क़ाबिल बना

दिया गया हो। 12 क्यूँकि कुछ पैदाइश ही से शादी
करने के क़ाबिल नहीं होते, बाज़ को दूसरों ने यूँ
बनाया है और बाज़ ने आसमान की बादशाही की
ख़ातिर शादी करने से इन्कार किया है। लिहाज़ा जो
यह समझ सके वह समझ ले।"

ईसा छोटे बच्चों को बरकत देता है

13 एक दिन छोटे बच्चों को ईसा के पास लाया गया
ताकि वह उन पर अपने हाथ रख कर दुआ करे।
लेकिन शागिर्दों ने लाने वालों को मलामत की। 14 यह
देख कर ईसा ने कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो
और उन्हें न रोको, क्यूँकि आसमान की बादशाही
इन जैसे लोगों को हासिल है।"
15 उस ने उन पर अपने हाथ रखे और फिर वहाँ से
चला गया।

अमीर मुश्किल से अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकते हैं

16 फिर एक आदमी ईसा के पास आया। उस ने
कहा, "उस्ताद, में कौन सा नेक काम करूँ ताकि
अबदी ज़िन्दगी मिल जाए?"
17 ईसा ने जवाब दिया, "तू मुझे नेकी के बारे में
क्यूँ पूछ रहा है? सिर्फ़ एक ही नेक है। लेकिन अगर
तू अबदी ज़िन्दगी में दाख़िल होना चाहता है तो
अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार।"
18 आदमी ने पूछा, "कौन से अह्काम?"
ईसा ने जवाब दिया, "क़त्ल न करना, ज़िना न
करना, चोरी न करना, झूटी गवाही न देना, 19 अपने
बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना और अपने
पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आप
से रखता है।"
20 जवान आदमी ने जवाब दिया, "मैं ने इन तमाम
अह्काम की पैरवी की है, अब क्या रह गया है?"
21 ईसा ने उसे बताया, "अगर तू कामिल होना
चाहता है तो जा और अपनी पूरी जायदाद फ़रोख़्त
करके पैसे ग़रीबों में तक़्सीम कर दे। फिर तेरे लिए
आसमान पर ख़ज़ाना जमा हो जाएगा। इस के बाद
आ कर मेरे पीछे हो ले।"
22 यह सुन कर नौजवान मायूस हो कर चला गया,
क्यूँकि वह निहायत दौलतमन्द था।
23 इस पर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "मैं तुम
को सच बताता हूँ कि दौलतमन्द के लिए आसमान
की बादशाही में दाख़िल होना मुश्किल है। 24 मैं यह
दुबारा कहता हूँ, अमीर के आसमान की बादशाही
में दाख़िल होने की निस्बत ज़्यादा आसान यह है कि
ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।"
25 यह सुन कर शागिर्द निहायत हैरतज़दा हुए और
पूछने लगे, "फिर किस को नजात हासिल हो सकती
है?"
26 ईसा ने ग़ौर से उन की तरफ़ देख कर जवाब
दिया, "यह इन्सान के लिए तो नामुमकिन है, लेकिन
अल्लाह के लिए सब कुछ मुमकिन है।"
27 फिर पतरस बोल उठा, "हम तो अपना सब
कुछ छोड़ कर आप के पीछे हो लिए हैं। हमें क्या
मिलेगा?"
28 ईसा ने उन से कहा, "मैं तुम को सच बताता
हूँ, दुनिया की नई तख़्लीक़ पर जब इब्न-ए-आदम
अपने जलाली तख़्त पर बैठेगा तो तुम भी जिन्हों ने
मेरी पैरवी की है बारह तख़्तों पर बैठ कर इस्राईल
के बारह क़बीलों की अदालत करोगे। 29 और जिस
ने भी मेरी ख़ातिर अपने घरों, भाइयों, बहनों, बाप,
माँ, बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है उसे सौ गुना
ज़्यादा मिल जाएगा और मीरास में अबदी ज़िन्दगी
पाएगा। 30 लेकिन बहुत से लोग जो अब अव्वल हैं
उस वक़्त आख़िर होंगे और जो अब आख़िर हैं वह
अव्वल होंगे।

अंगूर के बाग़ में मज़दूर

20 1 क्यूँकि आसमान की बादशाही उस
ज़मीन्दार से मुताबिक़त रखती है जो एक
दिन सुब्ह-सवेरे निकला ताकि अपने अंगूर के बाग़
के लिए मज़दूर ढूँडे। 2 वह उन से दिहाड़ी के लिए

चाँदी का एक सिक्का देने पर मुत्तफ़िक़ हुआ और उन्हें
अपने अंगूर के बाग़ में भेज दिया। 3 नौ बजे वह दुबारा
निकला तो देखा कि कुछ लोग अभी तक मंडी में
फ़ारिग़ बैठे हैं। 4 उस ने उन से कहा, 'तुम भी जा कर
मेरे अंगूर के बाग़ में काम करो। मैं तुम्हें मुनासिब
उजरत दूँगा।' 5 चुनाँचे वह काम करने के लिए चले
गए। बारह बजे और तीन बजे दोपहर के वक़्त भी
वह निकला और इस तरह के फ़ारिग़ मज़दूरों को
काम पर लगाया। 6 फिर शाम के पाँच बज गए। वह
निकला तो देखा कि अभी तक कुछ लोग फ़ारिग़ बैठे
हैं। उस ने उन से पूछा, 'तुम क्यूँ पूरा दिन फ़ारिग़ बैठे
रहे हो?' 7 उन्हों ने जवाब दिया, 'इस लिए कि किसी
ने हमें काम पर नहीं लगाया।' उस ने उन से कहा,
'तुम भी जा कर मेरे अंगूर के बाग़ में काम करो।'

8 दिन ढल गया तो ज़मीन्दार ने अपने अफ़सर को
बताया, 'मज़दूरों को बुला कर उन्हें मज़दूरी दे दे,
आख़िर में आने वालों से शुरू करके पहले आने
वालों तक।' 9 जो मज़दूर पाँच बजे आए थे उन्हें
चाँदी का एक एक सिक्का मिल गया। 10 इस लिए
जब वह आए जो पहले काम पर लगाए गए थे तो
उन्हों ने ज़्यादा मिलने की तवक़्क़ो की। लेकिन उन्हें
भी चाँदी का एक एक सिक्का मिला। 11 इस पर वह
ज़मीन्दार के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे, 12 'यह आदमी
जिन्हें आख़िर में लगाया गया उन्हों ने सिर्फ़ एक घंटा
काम किया। तो भी आप ने उन्हें हमारे बराबर की
मज़दूरी दी हालाँकि हमें दिन का पूरा बोझ और धूप
की शिद्दत बर्दाश्त करनी पड़ी।'

13 लेकिन ज़मीन्दार ने उन में से एक से बात की,
'यार, मैं ने ग़लत काम नहीं किया। क्या तू चाँदी के
एक सिक्के के लिए मज़दूरी करने पर मुत्तफ़िक़ न हुआ
था? 14 अपने पैसे ले कर चला जा। मैं आख़िर में काम
पर लगने वालों को उतना ही देना चाहता हूँ जितना
तुझे। 15 क्या मेरा हक़ नहीं कि मैं जैसा चाहूँ अपने
पैसे ख़र्च करूँ? या क्या तू इस लिए हसद करता है
कि मैं फ़य्याज़दिल हूँ?'

16 यूँ अव्वल आख़िर में आएँगे और जो आख़िरी
हैं वह अव्वल हो जाएंगे।"

ईसा तीसरी मर्तबा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

17 अब जब ईसा यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहा था
तो बारह शागिर्दों को एक तरफ़ ले जा कर उस ने
उन से कहा, 18 "हम यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे हैं।
वहाँ इब्न-ए-आदम को राहनुमा इमामों और शरीअत
के उलमा के हवाले कर दिया जाएगा। वह उस पर
सज़ा-ए-मौत का फ़त्वा दे कर 19 उसे ग़ैरयहूदियों के
हवाले कर देंगे ताकि वह उस का मज़ाक़ उड़ाएँ, उस
को कोड़े मारें और उसे मस्लूब करें। लेकिन तीसरे
दिन वह जी उठेगा।"

याक़ूब और यूहन्ना की माँ की गुज़ारिश

20 फिर ज़ब्दी के बेटों याक़ूब और यूहन्ना की माँ
अपने बेटों को साथ ले कर ईसा के पास आई और
सिज्दा करके कहा, "आप से एक गुज़ारिश है।"

21 ईसा ने पूछा, "तू क्या चाहती है?"

उस ने जवाब दिया, "अपनी बादशाही में मेरे इन
बेटों में से एक को अपने दाएँ हाथ बैठने दें और दूसरे
को बाएँ हाथ।"

22 ईसा ने कहा, "तुम को नहीं मालूम कि क्या माँग
रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो मैं पीने
को हूँ?" "जी, हम पी सकते हैं," उन्हों ने जवाब
दिया।

23 फिर ईसा ने उन से कहा, "तुम मेरा प्याला तो
ज़रूर पियोगे, लेकिन यह फ़ैसला करना मेरा काम
नहीं कि कौन मेरे दाएँ हाथ बैठेगा और कौन बाएँ
हाथ। मेरे बाप ने यह मक़ाम उन ही के लिए तय्यार
किया है जिन को उस ने ख़ुद मुक़र्रर किया है।"

24 जब बाक़ी दस शागिर्दों ने यह सुना तो उन्हें
याक़ूब और यूहन्ना पर ग़ुस्सा आया। 25 इस पर ईसा
ने उन सब को बुला कर कहा, "तुम जानते हो कि
क़ौमों के हुक्मरान अपनी रआया पर रोब डालते हैं
और उन के बड़े अफ़सर उन पर अपने इख़तियार का

ग़लत इस्तेमाल करते हैं। 26 लेकिन तुम्हारे दरमियान
ऐसा नहीं है। जो तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा
ख़ादिम बने 27 और जो तुम में अव्वल होना चाहे वह
तुम्हारा ग़ुलाम बने। 28 क्यूँकि इब्न-ए-आदम भी इस
लिए नहीं आया कि ख़िदमत ले बल्कि इस लिए कि
ख़िदमत करे और अपनी जान फ़िद्या के तौर पर दे
कर बहुतों को छुड़ाए।"

दो अंधों की शिफ़ा

29 जब वह यरीहू शहर से निकलने लगे तो एक बड़ा
हुजूम उन के पीछे चल रहा था। 30 दो अंधे रास्ते के
किनारे बैठे थे। जब उन्हों ने सुना कि ईसा गुज़र रहा
है तो वह चिल्लाने लगे, "ख़ुदावन्द, इब्न-ए-दाऊद,
हम पर रहम करें।"
31 हुजूम ने उन्हें डाँट कर कहा, "ख़ामोश!"
लेकिन वह और भी ऊँची आवाज़ से पुकारते रहे,
"ख़ुदावन्द, इब्न-ए-दाऊद, हम पर रहम करें।"
32 ईसा रुक गया। उस ने उन्हें अपने पास बुलाया
और पूछा, "तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए
करूँ?"
33 उन्हों ने जवाब दिया, "ख़ुदावन्द, यह कि हम
देख सकें।"
34 ईसा को उन पर तरस आया। उस ने उन की
आँखों को छुआ तो वह फ़ौरन बहाल हो गईं। फिर
वह उस के पीछे चलने लगे।

यरूशलम में पुरजोश इस्तिक़्बाल

21 1 वह यरूशलम के क़रीब बैत-फ़गे पहुँचे।
यह गाँव ज़ैतून के पहाड़ पर वाक़े था। ईसा
ने दो शागिर्दों को भेजा 2 और कहा, "सामने वाले
गाँव में जाओ। वहाँ तुम को फ़ौरन एक गधी नज़र
आएगी जो अपने बच्चे के साथ बंधी हुई होगी। उन्हें
खोल कर यहाँ ले आओ। 3 अगर कोई यह देख कर
तुम से कुछ कहे तो उसे बता देना, 'ख़ुदावन्द को
इन की ज़रूरत है।' यह सुन कर वह फ़ौरन इन्हें भेज
देगा।"
4 यूँ नबी की यह पेशगोई पूरी हुई,
5 'सिय्यून बेटी को बता देना,
देख, तेरा बादशाह तेरे पास आ रहा है।
वह हलीम है और गधे पर,
हाँ गधी के बच्चे पर सवार है।'
6 दोनों शागिर्द चले गए। उन्हों ने वैसा ही किया
जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। 7 वह गधी को बच्चे
समेत ले आए और अपने कपड़े उन पर रख दिए।
फिर ईसा उन पर बैठ गया। 8 जब वह चल पड़ा तो
बहुत ज़्यादा लोगों ने उस के आगे आगे रास्ते में अपने
कपड़े बिछा दिए। बाज़ ने शाख़ें भी उस के आगे आगे
रास्ते में बिछा दीं जो उन्हों ने दरख़्तों से काट ली थीं।
9 लोग ईसा के आगे और पीछे चल रहे थे और चिल्ला
कर यह नारे लगा रहे थे,
"इब्न-ए-दाऊद को होशाना! [p]
मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।
आसमान की बुलन्दियों पर होशाना।" [q]
10 जब ईसा यरूशलम में दाख़िल हुआ तो पूरा शहर
हिल गया। सब ने पूछा, "यह कौन है?"
11 हुजूम ने जवाब दिया, "यह ईसा है, वह नबी जो
गलील के नासरत से है।"

ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में जाता है

12 और ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में जा कर उन सब
को निकालने लगा जो वहाँ क़ुर्बानियों के लिए
दरकार चीज़ों की ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त कर रहे थे।
उस ने सिक्कों का तबादला करने वालों की मेज़ें और
कबूतर बेचने वालों की कुर्सियाँ उलट दीं 13 और उन
से कहा, "कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, 'मेरा घर
दुआ का घर कहलाएगा।' लेकिन तुम ने उसे डाकुओं
के अड्डे में बदल दिया है।"

---

[p] होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इस में हम्द-ओ-सना का उन्सुर भी पाया जाता है।

[q] होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इस में हम्द-ओ-सना का उन्सुर भी पाया जाता है।

14 अंधे और लंगड़े बैत-उल-मुक़द्दस में उस के पास
आए और उस ने उन्हें शिफ़ा दी। 15 लेकिन राहनुमा
इमाम और शरीअत के उलमा नाराज़ हुए जब उन्हों ने
उस के हैरतअंगेज़ काम देखे और यह कि बच्चे बैत-
उल-मुक़द्दस में "इब्न-ए-दाऊद को होशाना" चिल्ला
रहे हैं। 16 उन्हों ने उस से पूछा, "क्या आप सुन रहे
हैं कि यह बच्चे क्या कह रहे हैं?"

"जी," ईसा ने जवाब दिया, "क्या तुम ने कलाम-ए-
मुक़द्दस में कभी नहीं पढ़ा कि 'तू ने छोटे बच्चों और
शीरख़्वारों की ज़बान को तय्यार किया है ताकि वह
तेरी तम्जीद करें'?"

17 फिर वह उन्हें छोड़ कर शहर से निकला और
बैत-अनियाह पहुँचा जहाँ उस ने रात गुज़ारी।

अन्जीर के दरख़्त पर लानत

18 अगले दिन सुब्ह-सवेरे जब वह यरूशलम लौट
रहा था तो ईसा को भूक लगी। 19 रास्ते के क़रीब
अन्जीर का एक दरख़्त देख कर वह उस के पास
गया। लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा तो देखा कि फल
नहीं लगा बल्कि सिर्फ़ पत्ते ही पत्ते हैं। इस पर उस
ने दरख़्त से कहा, "अब से कभी भी तुझ में फल न
लगे!" दरख़्त फ़ौरन सूख गया।

20 यह देख कर शागिर्द हैरान हुए और कहा,
"अन्जीर का दरख़्त इतनी जल्दी से किस तरह सूख
गया?"

21 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुम को सच बताता हूँ,
अगर तुम शक न करो बल्कि ईमान रखो तो फिर
तुम न सिर्फ़ ऐसा काम कर सकोगे बल्कि इस से भी
बड़ा। तुम इस पहाड़ से कहोगे, 'उठ, अपने आप को
समुन्दर में गिरा दे' तो यह हो जाएगा। 22 अगर तुम
ईमान रखो तो जो कुछ भी तुम दुआ में माँगोगे वह
तुम को मिल जाएगा।"

किस ने ईसा को इख़तियार दिया?

23 ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में दाख़िल हो कर तालीम
देने लगा। इतने में राहनुमा इमाम और क़ौम के बुज़ुर्ग
उस के पास आए और पूछा, "आप यह सब कुछ
किस इख़तियार से कर रहे हैं? किस ने आप को यह
इख़तियार दिया है?"

24 ईसा ने जवाब दिया, "मेरा भी तुम से एक सवाल
है। इस का जवाब दो तो फिर तुम को बता दूँगा
कि मैं यह किस इख़तियार से कर रहा हूँ। 25 मुझे
बताओ कि यहया का बपतिस्मा कहाँ से था - क्या
वह आसमानी था या इन्सानी?"

वह आपस में बह्स करने लगे, "अगर हम कहें
'आसमानी' तो वह पूछेगा, 'तो फिर तुम उस पर
ईमान क्यूँ न लाए?' 26 लेकिन हम कैसे कह सकते
हैं कि वह इन्सानी था? हम तो आम लोगों से डरते
हैं, क्यूँकि वह सब मानते हैं कि यहया नबी था।"
27 चुनाँचे उन्हों ने जवाब दिया, "हम नहीं जानते।"

ईसा ने कहा, "फिर मैं भी तुम को नहीं बताता कि
मैं यह सब कुछ किस इख़तियार से कर रहा हूँ।

दो बेटों की तम्सील

28 तुम्हारा क्या ख़याल है? एक आदमी के दो बेटे
थे। बाप बड़े बेटे के पास गया और कहा, 'बेटा, आज
अंगूर के बाग़ में जा कर काम कर।' 29 बेटे ने जवाब
दिया, 'मैं जाना नहीं चाहता,' लेकिन बाद में उस ने
अपना ख़याल बदल लिया और बाग़ में चला गया।
30 इतने में बाप छोटे बेटे के पास भी गया और उसे
बाग़ में जाने को कहा। 'जी जनाब, मैं जाऊँगा,' छोटे
बेटे ने कहा। लेकिन वह न गया। 31 अब मुझे बताओ
कि किस बेटे ने अपने बाप की मर्ज़ी पूरी की?"

"पहले बेटे ने," उन्हों ने जवाब दिया।

ईसा ने कहा, "मैं तुम को सच बताता हूँ कि टैक्स
लेने वाले और कस्बियाँ तुम से पहले अल्लाह की
बादशाही में दाख़िल हो रहे हैं। 32 क्यूँकि यहया तुम
को रास्तबाज़ी की राह दिखाने आया और तुम उस पर
ईमान न लाए। लेकिन टैक्स लेने वाले और कस्बियाँ
उस पर ईमान लाए। और यह देख कर भी तुम ने
अपना ख़याल न बदला और उस पर ईमान न लाए।

अंगूर के बाग़ में मुज़ारेओं की बग़ावत

33 एक और तम्सील सुनो। एक ज़मीन्दार था जिस
ने अंगूर का बाग़ लगाया। उस ने उस की चारदीवारी
बनाई, अंगूरों का रस निकालने के लिए एक गढ़े की
खुदाई की और पहरेदारों के लिए बुर्ज तामीर किया।
फिर वह उसे मुज़ारेओं के सपुर्द करके बैरून-ए-मुल्क
चला गया। 34 जब अंगूर को तोड़ने का वक़्त क़रीब
आ गया तो उस ने अपने नौकरों को मुज़ारेओं के
पास भेज दिया ताकि वह उन से मालिक का हिस्सा
वसूल करें। 35 लेकिन मुज़ारेओं ने उस के नौकरों को
पकड़ लिया। उन्हों ने एक की पिटाई की, दूसरे को
क़त्ल किया और तीसरे को संगसार किया। 36 फिर
मालिक ने मज़ीद नौकरों को उन के पास भेज दिया
जो पहले की निस्बत ज़्यादा थे। लेकिन मुज़ारेओं ने
उन के साथ भी वही सुलूक किया। 37 आख़िरकार
ज़मीन्दार ने अपने बेटे को उन के पास भेजा। उस
ने कहा, 'आख़िर मेरे बेटे का तो लिहाज़ करेंगे।'
38 लेकिन बेटे को देख कर मुज़ारे एक दूसरे से कहने
लगे, 'यह ज़मीन का वारिस है। आओ, हम इसे क़त्ल
करके उस की मीरास पर क़ब्ज़ा कर लें।' 39 उन्हों ने
उसे पकड़ कर बाग़ से बाहर फैंक दिया और क़त्ल
किया।"

40 ईसा ने पूछा, "अब बताओ, बाग़ का मालिक
जब आएगा तो उन मुज़ारेओं के साथ क्या करेगा?"
41 उन्हों ने जवाब दिया, "वह उन्हें बुरी तरह तबाह
करेगा और बाग़ को दूसरों के सपुर्द कर देगा, ऐसे
मुज़ारेओं के सपुर्द जो वक़्त पर उसे फ़सल का उस
का हिस्सा देंगे।"

42 ईसा ने उन से कहा, "क्या तुम ने कभी कलाम
का यह हवाला नहीं पढ़ा,

'जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने रद्द किया,
वह कोने का बुन्यादी पत्थर बन गया।
यह रब ने किया
और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है'?

43 इस लिए मैं तुम्हें बताता हूँ कि अल्लाह की
बादशाही तुम से ले ली जाएगी और एक ऐसी क़ौम
को दी जाएगी जो इस के मुताबिक़ फल लाएगी।
44 जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े हो
जाएगा, जबकि जिस पर वह ख़ुद गिरेगा उसे वह
पीस डालेगा।"

45 ईसा की तम्सीलें सुन कर राहनुमा इमाम और
फ़रीसी समझ गए कि वह हमारे बारे में बात कर रहा
है। 46 उन्हों ने ईसा को गिरिफ़्तार करने की कोशिश
की, लेकिन वह अवाम से डरते थे क्यूँकि वह समझते
थे कि ईसा नबी है।

बड़ी ज़ियाफ़त की तम्सील

22 1 ईसा ने एक बार फिर तम्सीलों में उन से
बात की। 2 "आसमान की बादशाही एक
बादशाह से मुताबिक़त रखती है जिस ने अपने बेटे
की शादी की ज़ियाफ़त की तय्यारियाँ करवाईं। 3 जब
ज़ियाफ़त का वक़्त आ गया तो उस ने अपने नौकरों
को मेहमानों के पास यह इत्तिला देने के लिए भेजा
कि वह आएँ, लेकिन वह आना नहीं चाहते थे।
4 फिर उस ने मज़ीद कुछ नौकरों को भेज कर कहा,
'मेहमानों को बताना कि मैं ने अपना खाना तय्यार
कर रखा है। बैलों और मोटे-ताज़े बछड़ों को ज़बह
किया गया है, 5 सब कुछ तय्यार है। आएँ, ज़ियाफ़त
में शरीक हो जाएँ।' लेकिन मेहमानों ने पर्वा न की
बल्कि अपने मुख़्तलिफ़ कामों में लग गए। एक अपने
खेत को चला गया, दूसरा अपने कारोबार में मसरूफ़
हो गया। 6 बाक़ियों ने बादशाह के नौकरों को पकड़
लिया और उन से बुरा सुलूक करके उन्हें क़त्ल
किया। 7 बादशाह बड़े तैश में आ गया। उस ने अपनी
फ़ौज को भेज कर क़ातिलों को तबाह कर दिया और
उन का शहर जला दिया। 8 फिर उस ने अपने नौकरों
से कहा, 'शादी की ज़ियाफ़त तो तय्यार है, लेकिन
जिन मेहमानों को मैं ने दावत दी थी वह आने के
लाइक़ नहीं थे। 9 अब वहाँ जाओ जहाँ सड़कें शहर
से निकलती हैं और जिस से भी मुलाक़ात हो जाए उसे

ज़ियाफ़त के लिए दावत दे देना।' 10 चुनाँचे नौकर
सड़कों पर निकले और जिस से भी मुलाक़ात हुई
उसे लाए, ख़्वाह वह अच्छा था या बुरा। यूँ शादी
हाल मेहमानों से भर गया।

11 लेकिन जब बादशाह मेहमानों से मिलने के लिए
अन्दर आया तो उसे एक आदमी नज़र आया जिस
ने शादी के लिए मुनासिब कपड़े नहीं पहने थे।
12 बादशाह ने पूछा, 'दोस्त, तुम शादी का लिबास
पहने बग़ैर अन्दर किस तरह आए?' वह आदमी
कोई जवाब न दे सका। 13 फिर बादशाह ने अपने
दरबारियों को हुक्म दिया, 'इस के हाथ और पाँओ
बांध कर इसे बाहर तारीकी में फैंक दो, वहाँ जहाँ
लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।'

14 क्यूँकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, लेकिन चुने हुए
कम।"

क्या टैक्स देना जाइज़ है?

15 फिर फ़रीसियों ने जा कर आपस में मश्वरा किया
कि हम ईसा को किस तरह ऐसी बात करने के लिए
उभारें जिस से उसे पकड़ा जा सके। 16 इस मक़सद के
तहत उन्हों ने अपने शागिर्दों को हेरोदेस के पैरोकारों
समेत ईसा के पास भेजा। उन्हों ने कहा, "उस्ताद,
हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और दयानतदारी से
अल्लाह की राह की तालीम देते हैं। आप किसी की
पर्वा नहीं करते क्यूँकि आप ग़ैरजानिबदार हैं। 17 अब
हमें अपनी राय बताएँ। क्या रोमी शहन्शाह को टैक्स
देना जाइज़ है या नाजाइज़?"

18 लेकिन ईसा ने उन की बुरी नीयत पहचान ली।
उस ने कहा, "रियाकारो, तुम मुझे क्यूँ फंसाना चाहते
हो? 19 मुझे वह सिक्का दिखाओ जो टैक्स अदा करने
के लिए इस्तेमाल होता है।"

वह उस के पास चाँदी का एक रोमी सिक्का ले आए
20 तो उस ने पूछा, "किस की सूरत और नाम इस पर
कन्दा है?"

21 उन्हों ने जवाब दिया, "शहन्शाह का।"

उस ने कहा, "तो जो शहन्शाह का है शहन्शाह को
दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।"

22 उस का यह जवाब सुन कर वह हक्का-बक्का रह
गए और उसे छोड़ कर चले गए।

क्या हम जी उठेंगे?

23 उस दिन सदूक़ी ईसा के पास आए। सदूक़ी
नहीं मानते कि रोज़-ए-क़ियामत मुर्दे जी उठेंगे। उन्हों
ने ईसा से एक सवाल किया। 24 "उस्ताद, मूसा ने
हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी
बेऔलाद मर जाए और उस का भाई हो तो भाई का
फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के
लिए औलाद पैदा करे। 25 अब फ़र्ज़ करें कि हमारे
दरमियान सात भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन
बेऔलाद फ़ौत हुआ। इस लिए दूसरे भाई ने बेवा से
शादी की। 26 लेकिन वह भी बेऔलाद मर गया। फिर
तीसरे भाई ने उस से शादी की। यह सिलसिला सातवें
भाई तक जारी रहा। यके बाद दीगरे हर भाई बेवा से
शादी करने के बाद मर गया। 27 आख़िर में बेवा भी
फ़ौत हो गई। 28 अब बताएँ कि क़ियामत के दिन वह
किस की बीवी होगी? क्यूँकि सात के सात भाइयों
ने उस से शादी की थी।"

29 ईसा ने जवाब दिया, "तुम इस लिए ग़लती पर
हो कि न तुम कलाम-ए-मुक़द्दस से वाक़िफ़ हो, न
अल्लाह की क़ुदरत से। 30 क्यूँकि क़ियामत के दिन
लोग न शादी करेंगे न उन की शादी कराई जाएगी
बल्कि वह आसमान पर फ़रिश्तों की मानिन्द होंगे।
31 रही यह बात कि मुर्दे जी उठेंगे, क्या तुम ने वह
बात नहीं पढ़ी जो अल्लाह ने तुम से कही? 32 उस ने
फ़रमाया, 'मैं इब्राहीम का ख़ुदा, इस्हाक़ का ख़ुदा
और याक़ूब का ख़ुदा हूँ,' हालाँकि उस वक़्त तीनों
काफ़ी अर्से से मर चुके थे। इस का मतलब है कि यह
हक़ीक़त में ज़िन्दा हैं। क्यूँकि अल्लाह मुर्दों का नहीं
बल्कि ज़िन्दों का ख़ुदा है।"

33 यह सुन कर हुजूम उस की तालीम के बाइस
हैरान रह गया।

अव्वल हुक्म

34 जब फ़रीसियों ने सुना कि ईसा ने सदूक़ियों को
लाजवाब कर दिया है तो वह जमा हुए। 35 उन में से
एक ने जो शरीअत का आलिम था उसे फंसाने के
लिए सवाल किया, 36 "उस्ताद, शरीअत में सब से
बड़ा हुक्म कौन सा है?"
37 ईसा ने जवाब दिया, "'रब अपने ख़ुदा से अपने
पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने पूरे ज़हन से
प्यार करना।' 38 यह अव्वल और सब से बड़ा हुक्म
है। 39 और दूसरा हुक्म इस के बराबर यह है, 'अपने
पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आप
से रखता है।' 40 तमाम शरीअत और नबियों की
तालीमात इन दो अह्काम पर मब्नी हैं।"

मसीह के बारे में सवाल

41 जब फ़रीसी इकट्ठे थे तो ईसा ने उन से पूछा,
42 "तुम्हारा मसीह के बारे में क्या ख़याल है? वह
किस का फ़र्ज़न्द है?"
उन्हों ने जवाब दिया, "वह दाऊद का फ़र्ज़न्द है।"
43 ईसा ने कहा, "तो फिर दाऊद रूह-उल-क़ुद्स
की मारिफ़त उसे किस तरह 'रब' कहता है? क्यूँकि
वह फ़रमाता है,
44 'रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँओ के नीचे न कर दूँ।'
45 दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो फिर
वह किस तरह उस का फ़र्ज़न्द हो सकता है?"
46 कोई भी जवाब न दे सका, और उस दिन से
किसी ने भी उस से मज़ीद कुछ पूछने की जुरअत न
की।

उलमा और फ़रीसियों से ख़बरदार

23 1 फिर ईसा हुजूम और अपने शागिर्दों से
मुख़ातिब हुआ, 2 "शरीअत के उलमा और
फ़रीसी मूसा की कुर्सी पर बैठे हैं। 3 चुनाँचे जो कुछ
वह तुम को बताते हैं वह करो और उस के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारो। लेकिन जो कुछ वह करते हैं वह न
करो, क्यूँकि वह ख़ुद अपनी तालीम के मुताबिक़
ज़िन्दगी नहीं गुज़ारते। 4 वह भारी गठड़ियाँ बांध
बांध कर लोगों के कंधों पर रख देते हैं, लेकिन
ख़ुद उन्हें उठाने के लिए एक उंगली तक हिलाने
को तय्यार नहीं होते। 5 जो भी करते हैं दिखावे के
लिए करते हैं। जो तावीज़ [r]वह अपने बाज़ूओं और
पेशानियों पर बांधते और जो फुन्दने अपने लिबास से
लगाते हैं वह ख़ास बड़े होते हैं। 6 उन की बस एक ही
ख़्वाहिश होती है कि ज़ियाफ़तों और इबादतख़ानों में
इज़्ज़त की कुर्सियों पर बैठ जाएँ। 7 जब लोग बाज़ारों
में सलाम करके उन की इज़्ज़त करते और 'उस्ताद'
कह कर उन से बात करते हैं तो फिर वह ख़ुश हो जाते
हैं। 8 लेकिन तुम को उस्ताद नहीं कहलाना चाहिए,
क्यूँकि तुम्हारा सिर्फ़ एक ही उस्ताद है जबकि तुम
सब भाई हो। 9 और दुनिया में किसी को 'बाप' कह
कर उस से बात न करो, क्यूँकि तुम्हारा एक ही बाप है
और वह आसमान पर है। 10 हादी न कहलाना क्यूँकि
तुम्हारा सिर्फ़ एक ही हादी है यानी अल-मसीह।
11 तुम में से सब से बड़ा शख़्स तुम्हारा ख़ादिम होगा।
12 क्यूँकि जो भी अपने आप को सरफ़राज़ करेगा
उसे पस्त किया जाएगा और जो अपने आप को पस्त
करेगा उसे सरफ़राज़ किया जाएगा।

उन की रियाकारी पर अफ़्सोस

13 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़्सोस! रियाकारो! तुम लोगों के सामने आसमान
की बादशाही पर ताला लगाते हो। न तुम ख़ुद दाख़िल

---

[r]तावीज़ों में तौरेत के हवालाजात लिख कर रखे जाते थे।

होते हो, न उन्हें दाख़िल होने देते हो जो अन्दर जाना
चाहते हैं।
14 [शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़सोस! रियाकारो! तुम बेवाओं के घरों पर क़ब्ज़ा
कर लेते और दिखावे के लिए लम्बी लम्बी नमाज़
पढ़ते हो। इस लिए तुम्हें ज़्यादा सज़ा मिलेगी।]
15 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़सोस! रियाकारो! तुम एक नौमुरीद बनाने की
ख़ातिर ख़ुश्की और तरीके लम्बे सफ़र करते हो। और
जब इस में कामयाब हो जाते हो तो तुम उस शख़्स को
अपनी निस्बत जहन्नुम का दुगना शरीर फ़र्ज़न्द बना
देते हो। 16 अंधे राहनुमाओ, तुम पर अफ़सोस! तुम
कहते हो, 'अगर कोई बैत-उल-मुक़द्दस की क़सम
खाए तो ज़रूरी नहीं कि वह उसे पूरा करे। लेकिन
अगर वह बैत-उल-मुक़द्दस के सोने की क़सम खाए
तो लाज़िम है कि उसे पूरा करे।' 17 अंधे अहमक़ो!
ज़्यादा अहम किया है, सोना या बैत-उल-मुक़द्दस
जो सोने को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस बनाता है? 18 तुम
यह भी कहते हो, 'अगर कोई क़ुर्बानगाह की क़सम
खाए तो ज़रूरी नहीं कि वह उसे पूरा करे। लेकिन
अगर वह क़ुर्बानगाह पर पड़े हदिए की क़सम खाए
तो लाज़िम है कि वह उसे पूरा करे।' 19 अंधो!
ज़्यादा अहम किया है, हदिया या क़ुर्बानगाह जो
हदिए को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस बनाती है? 20 ग़रज़,
जो क़ुर्बानगाह की क़सम खाता है वह उन तमाम
चीज़ों की क़सम भी खाता है जो उस पर पड़ी हैं।
21 और जो बैत-उल-मुक़द्दस की क़सम खाता है वह
उस की भी क़सम खाता है जो उस में सुकूनत करता
है। 22 और जो आसमान की क़सम खाता है वह
अल्लाह के तख़्त की और उस पर बैठने वाले की
क़सम भी खाता है।
23 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़सोस! रियाकारो! गो तुम बड़ी एहतियात से
पौदीने, अजवाइन और ज़ीरे का दसवाँ हिस्सा हदिए
के लिए मख़्सूस करते हो, लेकिन तुम ने शरीअत
की ज़्यादा अहम बातों को नज़रअन्दाज़ कर दिया है
यानी इन्साफ़, रहम और वफ़ादारी को। लाज़िम है
कि तुम यह काम भी करो और पहला भी न छोड़ो।
24 अंधे राहनुमाओ! तुम अपने मशरूब छानते हो
ताकि ग़लती से मच्छर न पी लिया जाए, लेकिन साथ
साथ ऊँट को निगल लेते हो।
25 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़सोस! रियाकारो! तुम बाहर से हर प्याले और
बर्तन की सफ़ाई करते हो, लेकिन अन्दर से वह लूट-
मार और ऐशपरस्ती से भरे होते हैं। 26 अंधे फ़रीसियो,
पहले अन्दर से प्याले और बर्तन की सफ़ाई करो,
और फिर वह बाहर से भी पाक-साफ़ हो जाएंगे।
27 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़सोस! रियाकारो! तुम ऐसी क़ब्रों से मुताबिक़त
रखते हो जिन पर सफेदी की गई हो। गो वह बाहर
से दिलकश नज़र आती हैं, लेकिन अन्दर से वह
मुर्दों की हड्डियों और हर क़िस्म की नापाकी से भरी
होती हैं। 28 तुम भी बाहर से रास्तबाज़ दिखाई देते हो
जबकि अन्दर से तुम रियाकारी और बेदीनी से मामूर
होते हो।
29 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़सोस! रियाकारो! तुम नबियों के लिए क़ब्रें
तामीर करते और रास्तबाज़ों के मज़ार सजाते हो।
30 और तुम कहते हो, 'अगर हम अपने बापदादा
के ज़माने में ज़िन्दा होते तो नबियों को क़त्ल करने
में शरीक न होते।' 31 लेकिन यह कहने से तुम
अपने ख़िलाफ़ गवाही देते हो कि तुम नबियों के
क़ातिलों की औलाद हो। 32 अब जाओ, वह काम
मुकम्मल करो जो तुम्हारे बापदादा ने अधूरा छोड़
दिया था। 33 साँपो, ज़हरीले साँपों के बच्चो! तुम किस
तरह जहन्नुम की सज़ा से बच पाओगे? 34 इस लिए
मैं नबियों, दानिशमन्दों और शरीअत के आलिमों
को तुम्हारे पास भेज देता हूँ। उन में से बाज़ को
तुम क़त्ल और मस्लूब करोगे और बाज़ को अपने
इबादतख़ानों में ले जा कर कोड़े लगवाओगे और
शहर-ब-शहर उन का ताक़्क़ुब करोगे। 35 नतीजे में
तुम तमाम रास्तबाज़ों के क़त्ल के ज़िम्मादार ठहरोगे

- रास्तबाज़ हाबील के क़त्ल से ले कर ज़करियाह
बिन बरकियाह के क़त्ल तक जिसे तुम ने बैत-उल-
मुक़द्दस के दरवाज़े और उस के सहन में मौजूद
क़ुर्बानगाह के दरमियान मार डाला। 36 मैं तुम को सच
बताता हूँ कि यह सब कुछ इसी नस्ल पर आएगा।

यरूशलम पर अफ़सोस

37 हाय यरूशलम, यरूशलम! तू जो नबियों को
क़त्ल करती और अपने पास भेजे हुए पैग़म्बरों को
संगसार करती है। मैं ने कितनी ही बार तेरी औलाद
को जमा करना चाहा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह
मुर्ग़ी अपने बच्चों को अपने परों तले जमा करके
महफ़ूज़ कर लेती है। लेकिन तुम ने न चाहा। 38 अब
तुम्हारे घर को वीरान-ओ-सुन्सान छोड़ा जाएगा।
39 क्यूँकि मैं तुम को बताता हूँ, तुम मुझे उस वक़्त
तक दुबारा नहीं देखोगे जब तक तुम न कहो कि
मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।"

बैत-उल-मुक़द्दस पर आने वाली तबाही

24 1 ईसा बैत-उल-मुक़द्दस को छोड़ कर
निकल रहा था कि उस के शागिर्द उस
के पास आए और बैत-उल-मुक़द्दस की मुख़्तलिफ़
इमारतों की तरफ़ उस की तवज्जुह दिलाने लगे।
2 लेकिन ईसा ने जवाब में कहा, "क्या तुम को यह
सब कुछ नज़र आता है? मैं तुम को सच बताता हूँ
कि यहाँ पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा बल्कि सब कुछ
ढा दिया जाएगा।"

मुसीबतों और ईज़ारसानियों की पेशगोई

3 बाद में ईसा ज़ैतून के पहाड़ पर बैठ गया। शागिर्द
अकेले उस के पास आए। उन्हों ने कहा, "हमें ज़रा
बताएँ, यह कब होगा? क्या क्या नज़र आएगा जिस
से पता चलेगा कि आप आने वाले हैं और यह दुनिया
ख़त्म होने वाली है?"

4 ईसा ने जवाब दिया, "ख़बरदार रहो कि कोई तुम्हें
गुमराह न कर दे। 5 क्यूँकि बहुत से लोग मेरा नाम
ले कर आएँगे और कहेंगे, 'मैं ही मसीह हूँ।' यूँ वह
बहुतों को गुमराह कर देंगे। 6 जंगों की ख़बरें और
अफ़वाहें तुम तक पहुँचेंगी, लेकिन मुह्तात रहो ताकि
तुम घबरा न जाओ। क्यूँकि लाज़िम है कि यह सब
कुछ पेश आए। तो भी अभी आख़िरत नहीं होगी।
7 एक क़ौम दूसरी के ख़िलाफ़ उठ खड़ी होगी, और
एक बादशाही दूसरी के ख़िलाफ़। काल पड़ेंगे और
जगह जगह ज़ल्ज़ले आएँगे। 8 लेकिन यह सिर्फ़ दर्द-
ए-ज़ह की इब्तिदा ही होगी।

9 फिर वह तुम को बड़ी मुसीबत में डाल देंगे और
तुम को क़त्ल करेंगे। तमाम क़ौमें तुम से इस लिए
नफ़रत करेंगी कि तुम मेरे पैरोकार हो। 10 उस वक़्त
बहुत से लोग ईमान से बर्गश्ता हो कर एक दूसरे
को दुश्मन के हवाले करेंगे और एक दूसरे से नफ़रत
करेंगे। 11 बहुत से झूटे नबी खड़े हो कर बहुत से
लोगों को गुमराह कर देंगे। 12 बेदीनी के बढ़ जाने
की वजह से बेशतर लोगों की मुहब्बत ठंडी पड़
जाएगी। 13 लेकिन जो आख़िर तक क़ाइम रहेगा उसे
नजात मिलेगी। 14 और बादशाही की इस ख़ुशख़बरी
के पैग़ाम का एलान पूरी दुनिया में किया जाएगा ताकि
तमाम क़ौमों के सामने उस की गवाही दी जाए। फिर
ही आख़िरत आएगी।

बैत-उल-मुक़द्दस की बेहुरमती

15 एक दिन आएगा जब तुम मुक़द्दस मक़ाम में वह
कुछ खड़ा देखोगे जिस का ज़िक्र दान्याल नबी ने
किया और जो बेहुरमती और तबाही का बाइस है।"
(क़ारी इस पर ध्यान दे!) 16 "उस वक़्त यहूदिया के
रहने वाले भाग कर पहाड़ी इलाक़े में पनाह लें। 17 जो
अपने घर की छत पर हो वह घर में से कुछ साथ ले
जाने के लिए न उतरे। 18 जो खेत में हो वह अपनी
चादर साथ ले जाने के लिए वापस न जाए। 19 उन
ख़वातीन पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों या
अपने बच्चों को दूध पिलाती हों। 20 दुआ करो कि तुम
को सर्दियों के मौसम में या सबत के दिन हिज्रत न
करनी पड़े। 21 क्यूँकि उस वक़्त ऐसी शदीद मुसीबत

होगी कि दुनिया की तख़्लीक़ से आज तक देखने में न
आई होगी। इस क़िस्म की मुसीबत बाद में भी कभी
नहीं आएगी। 22 और अगर इस मुसीबत का दौरानिया
मुख़्तसर न किया जाता तो कोई न बचता। लेकिन
अल्लाह के चुने हुओं की ख़ातिर इस का दौरानिया
मुख़्तसर कर दिया जाएगा।
23 उस वक़्त अगर कोई तुम को बताए, 'देखो,
मसीह यहाँ है' या 'वह वहाँ है' तो उस की बात न
मानना। 24 क्यूँकि झूटे मसीह और झूटे नबी उठ खड़े
होंगे जो बड़े अजीब-ओ-ग़रीब निशान और मोजिज़े
दिखाएँगे ताकि अल्लाह के चुने हुए लोगों को भी ग़लत
रास्ते पर डाल दें - अगर यह मुमकिन होता। 25 देखो,
मैं ने तुम्हें पहले से इस से आगाह कर दिया है।
26 चुनाँचे अगर कोई तुम को बताए, 'देखो, वह
रेगिस्तान में है' तो वहाँ जाने के लिए न निकलना।
और अगर कोई कहे, 'देखो, वह अन्दरूनी कमरों में
है' तो उस का यक़ीन न करना। 27 क्यूँकि जिस तरह
बादल की बिजली मशरिक़ में कड़क कर मग़रिब
तक चमकती है उसी तरह इब्न-ए-आदम की आमद
भी होगी।
28 जहाँ भी लाश पड़ी हो वहाँ गिद्ध जमा हो जाएंगे।

इब्न-ए-आदम की आमद

29 मुसीबत के उन दिनों के ऐन बाद सूरज तारीक
हो जाएगा और चाँद की रौशनी ख़त्म हो जाएगी।
सितारे आसमान पर से गिर पड़ेंगे और आसमान की
क़ुव्वतें हिलाई जाएँगी। 30 उस वक़्त इब्न-ए-आदम
का निशान आसमान पर नज़र आएगा। तब दुनिया
की तमाम क़ौमें मातम करेंगी। वह इब्न-ए-आदम
को बड़ी क़ुदरत और जलाल के साथ आसमान
के बादलों पर आते हुए देखेंगी। 31 और वह अपने
फ़रिश्तों को बिगुल की ऊँची आवाज़ के साथ भेज
देगा ताकि उस के चुने हुओं को चारों तरफ़ से जमा
करें, आसमान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक इकट्ठा
करें।

अन्जीर के दरख़्त से सबक़

32 अन्जीर के दरख़्त से सबक़ सीखो। जूँ ही उस
की शाख़ें नर्म और लचकदार हो जाती हैं और उन से
कोंपलें फूट निकलती हैं तो तुम को मालूम हो जाता
है कि गर्मियों का मौसम क़रीब आ गया है। 33 इसी
तरह जब तुम यह वाक़िआत देखोगे तो जान लोगे
कि इब्न-ए-आदम की आमद क़रीब बल्कि दरवाज़े
पर है। 34 मैं तुम को सच बताता हूँ कि इस नस्ल
के ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े
होगा। 35 आसमान-ओ-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन
मेरी बातें हमेशा तक क़ाइम रहेंगी।

किसी को भी उस की आमद का वक़्त मालूम नहीं

36 लेकिन किसी को भी इल्म नहीं कि यह किस दिन
या कौन सी घड़ी रूनुमा होगा। आसमान के फ़रिश्तों
और फ़र्ज़न्द को भी इल्म नहीं बल्कि सिर्फ़ बाप को।
37 जब इब्न-ए-आदम आएगा तो हालात नूह के दिनों
जैसे होंगे। 38 क्यूँकि सैलाब से पहले के दिनों में लोग
उस वक़्त तक खाते-पीते और शादियाँ करते कराते
रहे जब तक नूह कश्ती में दाख़िल न हो गया। 39 वह
उस वक़्त तक आने वाली मुसीबत के बारे में लाइल्म
रहे जब तक सैलाब आ कर उन सब को बहा न ले
गया। जब इब्न-ए-आदम आएगा तो इसी क़िस्म के
हालात होंगे। 40 उस वक़्त दो अफ़राद खेत में होंगे,
एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे
छोड़ दिया जाएगा। 41 दो ख़वातीन चक्की पर गन्दुम
पीस रही होंगी, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि
दूसरी को पीछे छोड़ दिया जाएगा।
42 इस लिए चौकस रहो, क्यूँकि तुम नहीं जानते कि
तुम्हारा ख़ुदावन्द किस दिन आ जाएगा। 43 यक़ीन
जानो, अगर किसी घर के मालिक को मालूम होता
कि चोर कब आएगा तो वह ज़रूर चौकस रहता और
उसे अपने घर में नक़ब लगाने न देता। 44 तुम भी
तय्यार रहो, क्यूँकि इब्न-ए-आदम ऐसे वक़्त आएगा
जब तुम उस की तवक़्क़ो नहीं करोगे।

वफ़ादार नौकर

45 चुनाँचे कौन सा नौकर वफ़ादार और समझदार
है? फ़र्ज़ करो कि घर के मालिक ने किसी नौकर
को बाक़ी नौकरों पर मुक़र्रर किया हो। उस की
एक ज़िम्मादारी यह भी है कि उन्हें वक़्त पर खाना
खिलाए। 46 वह नौकर मुबारक होगा जो मालिक की
वापसी पर यह सब कुछ कर रहा होगा। 47 मैं तुम को
सच बताता हूँ कि यह देख कर मालिक उसे अपनी
पूरी जायदाद पर मुक़र्रर करेगा। 48 लेकिन फ़र्ज़ करो
कि नौकर अपने दिल में सोचे, 'मालिक की वापसी
में अभी देर है।' 49 वह अपने साथी नौकरों को पीटने
और शराबियों के साथ खाने-पीने लगे। 50 अगर वह
ऐसा करे तो मालिक ऐसे दिन और वक़्त आएगा जिस
की तवक़्क़ो नौकर को नहीं होगी। 51 इन हालात को
देख कर वह नौकर को टुकड़े टुकड़े कर डालेगा और
उसे रियाकारों में शामिल करेगा, वहाँ जहाँ लोग रोते
और दाँत पीसते रहेंगे।

दस कुंवारियों की तम्सील

25 1 उस वक़्त आसमान की बादशाही दस
कुंवारियों से मुताबिक़त रखेगी जो अपने
चराग़ ले कर दूल्हे को मिलने के लिए निकलें।
2 उन में से पाँच नासमझ थीं और पाँच समझदार।
3 नासमझ कुंवारियों ने अपने पास चराग़ों के लिए
फ़ाल्तू तेल न रखा। 4 लेकिन समझदार कुंवारियों ने
कुप्पी में तेल डाल कर अपने साथ ले लिया। 5 दूल्हे
को आने में बड़ी देर लगी, इस लिए वह सब ऊँघ
ऊँघ कर सो गईं।

6 आधी रात को शोर मच गया, 'देखो, दूल्हा पहुँच
रहा है, उसे मिलने के लिए निकलो!' 7 इस पर
तमाम कुंवारियाँ जाग उठीं और अपने चराग़ों को
दुरुस्त करने लगीं। 8 नासमझ कुंवारियों ने समझदार
कुंवारियों से कहा, 'अपने तेल में से हमें भी कुछ दे
दो। हमारे चराग़ बुझने वाले हैं।' 9 दूसरी कुंवारियों
ने जवाब दिया, 'नहीं, ऐसा न हो कि न सिर्फ़ तुम्हारे
लिए बल्कि हमारे लिए भी तेल काफ़ी न हो। दुकान
पर जा कर अपने लिए ख़रीद लो।' 10 चुनाँचे नासमझ
कुंवारियाँ चली गईं। लेकिन इस दौरान दूल्हा पहुँच
गया। जो कुंवारियाँ तय्यार थीं वह उस के साथ शादी
हाल में दाख़िल हुईं। फिर दरवाज़े को बन्द कर दिया
गया।

11 कुछ देर के बाद बाक़ी कुंवारियाँ आईं और
चिल्लाने लगीं, 'जनाब! हमारे लिए दरवाज़ा खोल दें।'
12 लेकिन उस ने जवाब दिया, 'यक़ीन जानो, मैं तुम
को नहीं जानता।'

13 इस लिए चौकस रहो, क्यूँकि तुम इब्न-ए-आदम
के आने का दिन या वक़्त नहीं जानते।

तीन नौकरों की तम्सील

14 उस वक़्त आसमान की बादशाही यूँ होगी : एक
आदमी को बैरून-ए-मुल्क जाना था। उस ने अपने
नौकरों को बुला कर अपनी मिलकियत उन के सपुर्द
कर दी। 15 पहले को उस ने सोने के 5,000 सिक्के दिए,
दूसरे को 2,000 और तीसरे को 1,000। हर एक को
उस ने उस की क़ाबिलियत के मुताबिक़ पैसे दिए।
फिर वह रवाना हुआ। 16 जिस नौकर को 5,000 सिक्के
मिले थे उस ने सीधा जा कर उन्हें किसी कारोबार में
लगाया। इस से उसे मज़ीद 5,000 सिक्के हासिल हुए।
17 इसी तरह दूसरे को भी जिसे 2,000 सिक्के मिले
थे मज़ीद 2,000 सिक्के हासिल हुए। 18 लेकिन जिस
आदमी को 1,000 सिक्के मिले थे वह चला गया और
कहीं ज़मीन में गढ़ा खोद कर अपने मालिक के पैसे
उस में छुपा दिए।

19 बड़ी देर के बाद उन का मालिक लौट आया।
जब उस ने उन के साथ हिसाब-किताब किया 20 तो
पहला नौकर जिसे 5,000 सिक्के मिले थे मज़ीद 5,000
सिक्के ले कर आया। उस ने कहा, 'जनाब, आप ने
5,000 सिक्के मेरे सपुर्द किए थे। यह देखें, मैं ने मज़ीद
5,000 सिक्के हासिल किए हैं।' 21 उस के मालिक
ने जवाब दिया, 'शाबाश, मेरे अच्छे और वफ़ादार
नौकर। तुम थोड़े में वफ़ादार रहे, इस लिए मैं तुम्हें

बहुत कुछ पर मुक़र्रर करूँगा। अन्दर आओ और
अपने मालिक की ख़ुशी में शरीक हो जाओ।'
22 फिर दूसरा नौकर आया जिसे 2,000 सिक्के मिले
थे। उस ने कहा, 'जनाब, आप ने 2,000 सिक्के मेरे
सपुर्द किए थे। यह देखें, मैं ने मज़ीद 2,000 सिक्के
हासिल किए हैं।' 23 उस के मालिक ने जवाब दिया,
'शाबाश, मेरे अच्छे और वफ़ादार नौकर। तुम थोड़े में
वफ़ादार रहे, इस लिए मैं तुम्हें बहुत कुछ पर मुक़र्रर
करूँगा। अन्दर आओ और अपने मालिक की ख़ुशी
में शरीक हो जाओ।'
24 फिर तीसरा नौकर आया जिसे 1,000 सिक्के मिले
थे। उस ने कहा, 'जनाब, मैं जानता था कि आप सख़्त
आदमी हैं। जो बीज आप ने नहीं बोया उस की फ़सल
आप काटते हैं और जो कुछ आप ने नहीं लगाया उस
की पैदावार जमा करते हैं। 25 इस लिए मैं डर गया
और जा कर आप के पैसे ज़मीन में छुपा दिए। अब
आप अपने पैसे वापस ले सकते हैं।'
26 उस के मालिक ने जवाब दिया, 'शरीर और सुस्त
नौकर! क्या तू जानता था कि जो बीज मैं ने नहीं बोया
उस की फ़सल काटता हूँ और जो कुछ मैं ने नहीं
लगाया उस की पैदावार जमा करता हूँ? 27 तो फिर
तू ने मेरे पैसे बैंक में क्यूँ न जमा करा दिए? अगर ऐसा
करता तो वापसी पर मुझे कम अज़ कम वह पैसे सूद
समेत मिल जाते।' 28 यह कह कर मालिक दूसरों से
मुख़ातिब हुआ, 'यह पैसे इस से ले कर उस नौकर
को दे दो जिस के पास 10,000 सिक्के हैं। 29 क्यूँकि
जिस के पास कुछ है उसे और दिया जाएगा और उस
के पास कस्रत की चीज़ें होंगी। लेकिन जिस के पास
कुछ नहीं है उस से वह भी छीन लिया जाएगा जो उस
के पास है। 30 अब इस बेकार नौकर को निकाल कर
बाहर की तारीकी में फैंक दो, वहाँ जहाँ लोग रोते
और दाँत पीसते रहेंगे।'

आख़िरी अदालत

31 जब इब्न-ए-आदम अपने जलाल के साथ आएगा
और तमाम फ़रिश्ते उस के साथ होंगे तो वह अपने
जलाली तख़्त पर बैठ जाएगा। 32 तब तमाम क़ौमें
उस के सामने जमा की जाएँगी। और जिस तरह
चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है उसी
तरह वह लोगों को एक दूसरे से अलग करेगा। 33 वह
भेड़ों को अपने दहने हाथ खड़ा करेगा और बकरियों
को अपने बाएँ हाथ। 34 फिर बादशाह दहने हाथ
वालों से कहेगा, 'आओ, मेरे बाप के मुबारक लोगो!
जो बादशाही दुनिया की तख़्लीक़ से तुम्हारे लिए
तय्यार है उसे मीरास में ले लो। 35 क्यूँकि मैं भूका
था और तुम ने मुझे खाना खिलाया, मैं प्यासा था
और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं अजनबी था और
तुम ने मेरी मेहमान-नवाज़ी की, 36 मैं नंगा था और तुम
ने मुझे कपड़े पहनाए, मैं बीमार था और तुम ने मेरी
देख-भाल की, मैं जेल में था और तुम मुझ से मिलने
आए।'
37 फिर यह रास्तबाज़ लोग जवाब में कहेंगे,
'ख़ुदावन्द, हम ने आप को कब भूका देख कर
खाना खिलाया, आप को कब प्यासा देख कर
पानी पिलाया? 38 हम ने आप को कब अजनबी की
हैसियत से देख कर आप की मेहमान-नवाज़ी की,
आप को कब नंगा देख कर कपड़े पहनाए? 39 हम
आप को कब बीमार हालत में या जेल में पड़ा देख
कर आप से मिलने गए?' 40 बादशाह जवाब देगा,
'मैं तुम्हें सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम ने मेरे इन
सब से छोटे भाइयों में से एक के लिए किया वह तुम
ने मेरे ही लिए किया।'
41 फिर वह बाएँ हाथ वालों से कहेगा, 'लानती
लोगो, मुझ से दूर हो जाओ और उस अबदी आग
में चले जाओ जो इब्लीस और उस के फ़रिश्तों के
लिए तय्यार है। 42 क्यूँकि मैं भूका था और तुम ने
मुझे कुछ न खिलाया, मैं प्यासा था और तुम ने मुझे
पानी न पिलाया, 43 मैं अजनबी था और तुम ने मेरी
मेहमान-नवाज़ी न की, मैं नंगा था और तुम ने मुझे
कपड़े न पहनाए, मैं बीमार और जेल में था और तुम
मुझ से मिलने न आए।'

44 फिर वह जवाब में पूछेंगे, ‘ख़ुदावन्द, हम ने आप
को कब भूका, प्यासा, अजनबी, नंगा, बीमार या
जेल में पड़ा देखा और आप की ख़िदमत न की?’
45 वह जवाब देगा, ‘मैं तुम को सच बताता हूँ कि
जब कभी तुम ने इन सब से छोटों में से एक की मदद
करने से इन्कार किया तो तुम ने मेरी ख़िदमत करने
से इन्कार किया।’ 46 फिर यह अबदी सज़ा भुगतने
के लिए जाएंगे जबकि रास्तबाज़ अबदी ज़िन्दगी में
दाख़िल होंगे।”

ईसा के ख़िलाफ़ मन्सूबाबन्दियाँ

26 1 यह बातें ख़त्म करने पर ईसा शागिर्दों से
मुख़ातिब हुआ, 2 “तुम जानते हो कि दो
दिन के बाद फ़सह की ईद शुरू होगी। उस वक़्त
इब्न-ए-आदम को दुश्मन के हवाले किया जाएगा
ताकि उसे मस्लूब किया जाए।”
3 फिर राहनुमा इमाम और क़ौम के बुज़ुर्ग काइफ़ा
नामी इमाम-ए-आज़म के महल में जमा हुए 4 और ईसा
को किसी चालाकी से गिरिफ़्तार करके क़त्ल करने
की साज़िशें करने लगे। 5 उन्हों ने कहा, “लेकिन यह
ईद के दौरान नहीं होना चाहिए, ऐसा न हो कि अवाम
में हलचल मच जाए।”

ख़ातून ईसा पर ख़ुश्बू उंडेलती है

6 इतने में ईसा बैत-अनियाह आ कर एक आदमी
के घर में दाख़िल हुआ जो किसी वक़्त कोढ़ का
मरीज़ था। उस का नाम शमाऊन था। 7 ईसा खाना
खाने के लिए बैठ गया तो एक औरत आई जिस के
पास निहायत क़ीमती इत्र का इत्रदान था। उस ने उसे
ईसा के सर पर उंडेल दिया। 8 शागिर्द यह देख कर
नाराज़ हुए। उन्हों ने कहा, “इतना क़ीमती इत्र ज़ाए
करने की क्या ज़रूरत थी? 9 यह बहुत महंगी चीज़
है। अगर इसे बेचा जाता तो इस के पैसे ग़रीबों को
दिए जा सकते थे।”
10 लेकिन उन के ख़याल पहचान कर ईसा ने उन
से कहा, “तुम इसे क्यूँ तंग कर रहे हो? इस ने तो
मेरे लिए एक नेक काम किया है। 11 ग़रीब तो हमेशा
तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तक तुम्हारे पास
नहीं रहूँगा। 12 मुझ पर इत्र उंडेलने से उस ने मेरे बदन
को दफ़न होने के लिए तय्यार किया है। 13 मैं तुम को
सच बताता हूँ कि तमाम दुनिया में जहाँ भी अल्लाह
की ख़ुशख़बरी का एलान किया जाएगा वहाँ लोग
इस ख़ातून को याद करके वह कुछ सुनाएँगे जो इस
ने किया है।”

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मन्सूबा

14 फिर यहूदा इस्करियोती जो बारह शागिर्दों में से
एक था राहनुमा इमामों के पास गया। 15 उस ने पूछा,
“आप मुझे ईसा को आप के हवाले करने के इवज़
कितने पैसे देने के लिए तय्यार हैं?” उन्हों ने उस
के लिए चाँदी के 30 सिक्के मुतअय्यिन किए। 16 उस
वक़्त से यहूदा ईसा को उन के हवाले करने का मौक़ा
ढूँडने लगा।

फ़सह की ईद के लिए तय्यारियाँ

17 बेख़मीरी रोटी की ईद आई। पहले दिन ईसा के
शागिर्दों ने उस के पास आ कर पूछा, “हम कहाँ आप
के लिए फ़सह का खाना तय्यार करें?”
18 उस ने जवाब दिया, “यरूशलम शहर में फ़ुलाँ
आदमी के पास जाओ और उसे बताओ, ‘उस्ताद ने
कहा है कि मेरा मुक़र्ररा वक़्त क़रीब आ गया है। मैं
अपने शागिर्दों के साथ फ़सह की ईद का खाना आप
के घर में खाऊँगा’।”
19 शागिर्दों ने वह कुछ किया जो ईसा ने उन्हें बताया
था और फ़सह की ईद का खाना तय्यार किया।

कौन ग़द्दार है?

20 शाम के वक़्त ईसा बारह शागिर्दों के साथ खाना
खाने के लिए बैठ गया। 21 जब वह खाना खा रहे थे
तो उस ने कहा, “मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम
में से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।”

22 शागिर्द यह सुन कर निहायत ग़मगीन हुए। बारी
बारी वह उस से पूछने लगे, “ख़ुदावन्द, मैं तो नहीं
हूँ?”
23 ईसा ने जवाब दिया, “जिस ने मेरे साथ अपना
हाथ सालन के बर्तन में डाला है वही मुझे दुश्मन के
हवाले करेगा। 24 इब्न-ए-आदम तो कूच कर जाएगा
जिस तरह कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, लेकिन उस
शख़्स पर अफ़सोस जिस के वसीले से उसे दुश्मन के
हवाले कर दिया जाएगा। उस के लिए बेहतर यह
होता कि वह कभी पैदा ही न होता।”
25 फिर यहूदा ने जो उसे दुश्मन के हवाले करने को
था पूछा, “उस्ताद, मैं तो नहीं हूँ?”
ईसा ने जवाब दिया, “जी, तुम ने ख़ुद कहा है।”

फ़सह का आख़िरी खाना

26 खाने के दौरान ईसा ने रोटी ले कर शुक्रगुज़ारी
की दुआ की और उसे टुकड़े करके शागिर्दों को दे
दिया। उस ने कहा, “यह लो और खाओ। यह मेरा
बदन है।”
27 फिर उस ने मै का प्याला ले कर शुक्रगुज़ारी की
दुआ की और उसे उन्हें दे कर कहा, “तुम सब इस
में से पियो। 28 यह मेरा ख़ून है, नए अह्द का वह
ख़ून जो बहुतों के लिए बहाया जाता है ताकि उन
के गुनाहों को मुआफ़ कर दिया जाए। 29 मैं तुम को
सच बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का यह रस नहीं
पियूँगा, क्यूँकि अगली दफ़ा इसे तुम्हारे साथ अपने
बाप की बादशाही में ही पियूँगा।”
30 फिर एक ज़बूर गा कर वह निकले और ज़ैतून के
पहाड़ के पास पहुँचे।

पतरस के इन्कार की पेशगोई

31 ईसा ने उन्हें बताया, “आज रात तुम सब
मेरी बाबत बर्गश्ता हो जाओगे, क्यूँकि कलाम-ए-
मुक़द्दस में अल्लाह फ़रमाता है, ‘मैं चरवाहे को मार
डालूँगा और रेवड़ की भेड़ें तित्तर-बित्तर हो जाएँगी।’
32 लेकिन अपने जी उठने के बाद मैं तुम्हारे आगे
आगे गलील पहुँचूँगा।”
33 पतरस ने एतिराज़ किया, “दूसरे बेशक सब आप
की बाबत बर्गश्ता हो जाएँ, लेकिन मैं कभी नहीं
हूँगा।”
34 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, इसी
रात मुर्ग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे
जानने से इन्कार कर चुका होगा।”
35 पतरस ने कहा, “हरगिज़ नहीं! मैं आप को जानने
से कभी इन्कार नहीं करूँगा, चाहे मुझे आप के साथ
मरना भी पड़े।”
दूसरों ने भी यही कुछ कहा।

गत्समनी बाग़ में ईसा की दुआ

36 ईसा अपने शागिर्दों के साथ एक बाग़ में पहुँचा
जिस का नाम गत्समनी था। उस ने उन से कहा, “यहाँ
बैठ कर मेरा इन्तिज़ार करो। मैं दुआ करने के लिए
आगे जाता हूँ।” 37 उस ने पतरस और ज़ब्दी के दो
बेटों याक़ूब और यूहन्ना को साथ लिया। वहाँ वह
ग़मगीन और बेक़रार होने लगा। 38 उस ने उन से
कहा, “मैं दुख से इतना दबा हुआ हूँ कि मरने को
हूँ। यहाँ ठहर कर मेरे साथ जागते रहो।”
39 कुछ आगे जा कर वह औंधे मुँह ज़मीन पर गिर
कर यूँ दुआ करने लगा, “ऐ मेरे बाप, अगर मुमकिन
हो तो दुख का यह प्याला मुझ से हट जाए। लेकिन
मेरी नहीं बल्कि तेरी मर्ज़ी पूरी हो।”
40 वह अपने शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा
कि वह सो रहे हैं। उस ने पतरस से पूछा, “क्या तुम
लोग एक घंटा भी मेरे साथ नहीं जाग सके? 41 जागते
और दुआ करते रहो ताकि आज़माइश में न पड़ो।
क्यूँकि रूह तो तय्यार है लेकिन जिस्म कमज़ोर।”
42 एक बार फिर उस ने जा कर दुआ की, “मेरे बाप,
अगर यह प्याला मेरे पिए बग़ैर हट नहीं सकता तो
फिर तेरी मर्ज़ी पूरी हो।” 43 जब वह वापस आया
तो दुबारा देखा कि वह सो रहे हैं, क्यूँकि नींद की
बदौलत उन की आँखें बोझल थीं।

44 चुनाँचे वह उन्हें दुबारा छोड़ कर चला गया
और तीसरी बार यही दुआ करने लगा। 45 फिर ईसा
शागिर्दों के पास वापस आया और उन से कहा,
"अभी तक सो और आराम कर रहे हो? देखो, वक़्त
आ गया है कि इब्न-ए-आदम गुनाहगारों के हवाले
किया जाए। 46 उठो! आओ, चलें। देखो, मुझे दुश्मन
के हवाले करने वाला क़रीब आ चुका है।"

ईसा की गिरिफ़्तारी

47 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि यहूदा
पहुँच गया, जो बारह शागिर्दों में से एक था। उस के
साथ तलवारों और लाठियों से लेस आदमियों का
बड़ा हुजूम था। उन्हें राहनुमा इमामों और क़ौम के
बुज़ुर्गों ने भेजा था। 48 इस ग़द्दार यहूदा ने उन्हें एक
इम्तियाज़ी निशान दिया था कि जिस को मैं बोसा दूँ
वही ईसा है। उसे गिरिफ़्तार कर लेना।
49 जूँ ही वह पहुँचे यहूदा ईसा के पास गया और
"उस्ताद, अस्सलामु अलैकुम!" कह कर उसे बोसा
दिया।
50 ईसा ने कहा, "दोस्त, क्या तू इसी मक़्सद से
आया है?"
फिर उन्हों ने उसे पकड़ कर गिरिफ़्तार कर लिया।
51 इस पर ईसा के एक साथी ने अपनी तलवार मियान
से निकाली और इमाम-ए-आज़म के ग़ुलाम को मार
कर उस का कान उड़ा दिया। 52 लेकिन ईसा ने कहा,
"अपनी तलवार को मियान में रख, क्यूँकि जो भी
तलवार चलाता है उसे तलवार से मारा जाएगा। 53 या
क्या तू नहीं समझता कि मेरा बाप मुझे हज़ारों फ़रिश्ते
फ़ौरन भेज देगा अगर मैं उन्हें तलब करूँ? 54 लेकिन
अगर मैं ऐसा करता तो फिर कलाम-ए-मुक़द्दस की
पेशगोइयाँ किस तरह पूरी होतीं जिन के मुताबिक़
यह ऐसा ही होना है?"
55 उस वक़्त ईसा ने हुजूम से कहा, "क्या मैं डाकू
हूँ कि तुम तलवारें और लाठियाँ लिए मुझे गिरिफ़्तार
करने निकले हो? मैं तो रोज़ाना बैत-उल-मुक़द्दस में
बैठ कर तालीम देता रहा, मगर तुम ने मुझे गिरिफ़्तार
नहीं किया। 56 लेकिन यह सब कुछ इस लिए हो रहा
है ताकि नबियों के सहीफ़ों में दर्ज पेशगोइयाँ पूरी हो
जाएँ।"
फिर तमाम शागिर्द उसे छोड़ कर भाग गए।

ईसा यहूदी अदालत-ए-आलिया के सामने

57 जिन्हों ने ईसा को गिरिफ़्तार किया था वह
उसे काइफ़ा इमाम-ए-आज़म के घर ले गए जहाँ
शरीअत के तमाम उलमा और क़ौम के बुज़ुर्ग जमा
थे। 58 इतने में पतरस कुछ फ़ासिले पर ईसा के पीछे
पीछे इमाम-ए-आज़म के सहन तक पहुँच गया। उस
में दाख़िल हो कर वह मुलाज़िमों के साथ आग के
पास बैठ गया ताकि इस सिलसिले का अन्जाम
देख सके। 59 मकान के अन्दर राहनुमा इमाम और
यहूदी अदालत-ए-अलिया के तमाम अफ़राद ईसा के
ख़िलाफ़ झूटी गवाहियाँ ढूँड रहे थे ताकि उसे सज़ा-
ए-मौत दिलवा सकें। 60 बहुत से झूटे गवाह सामने
आए, लेकिन कोई ऐसी गवाही न मिली। आख़िरकार
दो आदमियों ने सामने आ कर 61 यह बात पेश की,
"इस ने कहा है कि मैं अल्लाह के बैत-उल-मुक़द्दस को
ढा कर उसे तीन दिन के अन्दर अन्दर दुबारा तामीर
कर सकता हूँ।"
62 फिर इमाम-ए-आज़म ने खड़े हो कर ईसा से
कहा, "क्या तू कोई जवाब नहीं देगा? यह क्या
गवाहियाँ हैं जो यह लोग तेरे ख़िलाफ़ दे रहे हैं?"
63 लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। इमाम-ए-आज़म ने उस
से एक और सवाल किया, "मैं तुझे ज़िन्दा ख़ुदा की
क़सम दे कर पूछता हूँ कि क्या तू अल्लाह का फ़र्ज़न्द
मसीह है?"
64 ईसा ने कहा, "जी, तू ने ख़ुद कह दिया है। और
मैं तुम सब को बताता हूँ कि आइन्दा तुम इब्न-ए-
आदम को क़ादिर-ए-मुतलक़ के दहने हाथ बैठे और
आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।"
65 इमाम-ए-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके
अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, "इस ने कुफ़्र बका
है! हमें मज़ीद गवाहों की क्या ज़रूरत रही! आप ने

ख़ुद सुन लिया है कि इस ने कुफ़्र बका है। 66 आप
का क्या फ़ैसला है?”

उन्हों ने जवाब दिया, “यह सज़ा-ए-मौत के लाइक़
है।”

67 फिर वह उस पर थूकने और उस के मुक्के मारने
लगे। बाज़ ने उस के थप्पड़ मार मार कर 68 कहा,
“ऐ मसीह, नबुव्वत करके हमें बता कि तुझे किस ने
मारा।”

पतरस ईसा को जानने से इन्कार करता है

69 इस दौरान पतरस बाहर सहन में बैठा था। एक
नौकरानी उस के पास आई। उस ने कहा, “तुम भी
गलील के उस आदमी ईसा के साथ थे।”

70 लेकिन पतरस ने उन सब के सामने इन्कार
किया, “मैं नहीं जानता कि तू क्या बात कर रही है।”
यह कह कर 71 वह बाहर गेट तक गया। वहाँ एक
और नौकरानी ने उसे देखा और पास खड़े लोगों से
कहा, “यह आदमी ईसा नासरी के साथ था।”

72 दुबारा पतरस ने इन्कार किया। इस दफ़ा उस
ने क़सम खा कर कहा, “मैं इस आदमी को नहीं
जानता।”

73 थोड़ी देर के बाद वहाँ खड़े कुछ लोगों ने पतरस
के पास आ कर कहा, “तुम ज़रूर उन में से हो क्यूँकि
तुम्हारी बोली से साफ़ पता चलता है।”

74 इस पर पतरस ने क़सम खा कर कहा, “मुझ पर
लानत अगर मैं झूट बोल रहा हूँ। मैं इस आदमी को
नहीं जानता!” फ़ौरन मुर्ग़ की बाँग सुनाई दी। 75 फिर
पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने कही थी,
“मुर्ग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे
जानने से इन्कार कर चुका होगा।” इस पर वह बाहर
निकला और टूटे दिल से ख़ूब रोया।

ईसा को पीलातुस के सामने पेश किया जाता है

27 1 सुब्ह-सवेरे तमाम राहनुमा इमाम और
क़ौम के तमाम बुज़ुर्ग इस फ़ैसले तक पहुँच
गए कि ईसा को सज़ा-ए-मौत दी जाए। 2 वह उसे
बांध कर वहाँ से ले गए और रोमी गवर्नर पीलातुस
के हवाले कर दिया।

यहूदा की ख़ुदकुशी

3 जब यहूदा ने जिस ने उसे दुश्मन के हवाले कर
दिया था देखा कि उस पर सज़ा-ए-मौत का फ़त्वा दे
दिया गया है तो उस ने पछता कर चाँदी के 30 सिक्के
राहनुमा इमामों और क़ौम के बुज़ुर्गों को वापस कर
दिए। 4 उस ने कहा, “मैं ने गुनाह किया है, क्यूँकि
एक बेक़ुसूर आदमी को सज़ा-ए-मौत दी गई है और
मैं ही ने उसे आप के हवाले किया है।”

उन्हों ने जवाब दिया, “हमें क्या! यह तेरा मसला
है।” 5 यहूदा चाँदी के सिक्के बैत-उल-मुक़द्दस में फैंक
कर चला गया। फिर उस ने जा कर फाँसी ले ली।

6 राहनुमा इमामों ने सिक्कों को जमा करके कहा,
“शरीअत यह पैसे बैत-उल-मुक़द्दस के ख़ज़ाने में
डालने की इजाज़त नहीं देती, क्यूँकि यह ख़ूँरेज़ी का
मुआवज़ा है।” 7 आपस में मश्वरा करने के बाद उन्हों
ने कुम्हार का खेत ख़रीदने का फ़ैसला किया ताकि
परदेसियों को दफ़नाने के लिए जगह हो। 8 इस लिए
यह खेत आज तक ख़ून का खेत कहलाता है।

9 यूँ यरमियाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि
“उन्हों ने चाँदी के 30 सिक्के लिए यानी वह रक़म जो
इस्राईलियों ने उस के लिए लगाई थी। 10 इन से उन्हों
ने कुम्हार का खेत ख़रीद लिया, बिलकुल ऐसा जिस
तरह रब ने मुझे हुक्म दिया था।”

पीलातुस ईसा की पूछगछ करता है

11 इतने में ईसा को रोमी गवर्नर पीलातुस के सामने
पेश किया गया। उस ने उस से पूछा, “क्या तुम
यहूदियों के बादशाह हो?”

ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप ख़ुद कहते हैं।”
12 लेकिन जब राहनुमा इमामों और क़ौम के बुज़ुर्गों
ने उस पर इल्ज़ाम लगाए तो ईसा ख़ामोश रहा।

13 चुनाँचे पीलातुस ने दुबारा उस से सवाल किया,
“क्या तुम यह तमाम इल्ज़ामात नहीं सुन रहे जो तुम
पर लगाए जा रहे हैं?”
14 लेकिन ईसा ने एक इल्ज़ाम का भी जवाब न
दिया, इस लिए गवर्नर निहायत हैरान हुआ।

सज़ा-ए-मौत का फ़ैसला

15 उन दिनों यह रिवाज था कि गवर्नर हर साल
फ़सह की ईद पर एक क़ैदी को आज़ाद कर देता
था। यह क़ैदी हुजूम से मुन्तख़ब किया जाता था।
16 उस वक़्त जेल में एक बदनाम क़ैदी था। उस का
नाम बर-अब्बा था। 17 चुनाँचे जब हुजूम जमा हुआ
तो पीलातुस ने उस से पूछा, “तुम क्या चाहते हो? मैं
बर-अब्बा को आज़ाद करूँ या ईसा को जो मसीह
कहलाता है?” 18 वह तो जानता था कि उन्हों ने ईसा
को सिर्फ़ हसद की बिना पर उस के हवाले किया है।
19 जब पीलातुस यूँ अदालत के तख़्त पर बैठा था
तो उस की बीवी ने उसे पैग़ाम भेजा, “इस बेक़ुसूर
आदमी को हाथ न लगाएँ, क्यूँकि मुझे पिछली रात
इस के बाइस ख़्वाब में शदीद तक्लीफ़ हुई।”
20 लेकिन राहनुमा इमामों और क़ौम के बुज़ुर्गों ने
हुजूम को उकसाया कि वह बर-अब्बा को माँगें और
ईसा की मौत तलब करें। गवर्नर ने दुबारा पूछा,
21 “मैं इन दोनों में से किस को तुम्हारे लिए आज़ाद
करूँ?”
वह चिल्लाए, “बर-अब्बा को।”
22 पीलातुस ने पूछा, “फिर मैं ईसा के साथ क्या
करूँ जो मसीह कहलाता है?”
वह चीख़े, “उसे मस्लूब करें।”
23 पीलातुस ने पूछा, “क्यूँ? उस ने क्या जुर्म किया
है?”
लेकिन लोग मज़ीद शोर मचा कर चीख़ते रहे, “उसे
मस्लूब करें!”
24 पीलातुस ने देखा कि वह किसी नतीजे तक नहीं
पहुँच रहा बल्कि हंगामा बरपा हो रहा है। इस लिए
उस ने पानी ले कर हुजूम के सामने अपने हाथ धोए।
उस ने कहा, “अगर इस आदमी को क़त्ल किया
जाए तो मैं बेक़ुसूर हूँ, तुम ही उस के लिए जवाबदिह
ठहरो।”
25 तमाम लोगों ने जवाब दिया, “हम और हमारी
औलाद उस के ख़ून के जवाबदिह हैं।”
26 फिर उस ने बर-अब्बा को आज़ाद करके उन्हें दे
दिया। लेकिन ईसा को उस ने कोड़े लगाने का हुक्म
दिया, फिर उसे मस्लूब करने के लिए फ़ौजियों के
हवाले कर दिया।

फ़ौजी ईसा का मज़ाक़ उड़ाते हैं

27 गवर्नर के फ़ौजी ईसा को महल बनाम प्रैटोरियुम
के सहन में ले गए और पूरी पलटन को उस के इर्दगिर्द
इकट्ठा किया। 28 उस के कपड़े उतार कर उन्हों ने उसे
अर्ग़वानी रंग का लिबास पहनाया, 29 फिर काँटेदार
टहनियों का एक ताज बना कर उस के सर पर रख
दिया। उस के दहने हाथ में छड़ी पकड़ा कर उन्हों ने
उस के सामने घुटने टेक कर उस का मज़ाक़ उड़ाया,
“ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!” 30 वह उस पर
थूकते रहे, छड़ी ले कर बार बार उस के सर को मारा।
31 फिर उस का मज़ाक़ उड़ाने से थक कर उन्हों ने
अर्ग़वानी लिबास उतार कर उसे दुबारा उस के अपने
कपड़े पहनाए और उसे मस्लूब करने के लिए ले गए।

ईसा को मस्लूब किया जाता है

32 शहर से निकलते वक़्त उन्हों ने एक आदमी को
देखा जो लिबिया के शहर कुरेन का रहने वाला था।
उस का नाम शमाऊन था। उसे उन्हों ने सलीब उठा
कर ले जाने पर मज्बूर किया। 33 यूँ चलते चलते वह
एक मक़ाम तक पहुँच गए जिस का नाम गुल्गुता
(यानी खोपड़ी का मक़ाम) था। 34 वहाँ उन्हों ने उसे
मै पेश की जिस में कोई कड़वी चीज़ मिलाई गई
थी। लेकिन चख कर ईसा ने उसे पीने से इन्कार कर
दिया।
35 फिर फ़ौजियों ने उसे मस्लूब किया और उस के
कपड़े आपस में बाँट लिए। यह फ़ैसला करने के लिए

कि किस को क्या क्या मिले उन्हों ने क़ुरआ डाला।
36 यूँ वह वहाँ बैठ कर उस की पहरादारी करते रहे।
37 सलीब पर ईसा के सर के ऊपर एक तख़्ती लगा
दी गई जिस पर यह इल्ज़ाम लिखा था, "यह यहूदियों
का बादशाह ईसा है।" 38 दो डाकुओं को भी ईसा के
साथ मस्लूब किया गया, एक को उस के दहने हाथ
और दूसरे को उस के बाएँ हाथ।

39 जो वहाँ से गुज़रे उन्हों ने कुफ़्र बक कर उस की
तज़्लील की और सर हिला हिला कर अपनी हिक़ारत
का इज़हार किया। 40 उन्हों ने कहा, "तू ने तो कहा
था कि मैं बैत-उल-मुक़द्दस को ढा कर उसे तीन दिन
के अन्दर अन्दर दुबारा तामीर कर दूँगा। अब अपने
आप को बचा! अगर तू वाक़ई अल्लाह का फ़र्ज़न्द है
तो सलीब पर से उतर आ।"

41 राहनुमा इमामों, शरीअत के उलमा और क़ौम
के बुज़ुर्गों ने भी ईसा का मज़ाक़ उड़ाया, 42 "इस
ने औरों को बचाया, लेकिन अपने आप को नहीं
बचा सकता। यह इस्राईल का बादशाह है! अभी यह
सलीब पर से उतर आए तो हम इस पर ईमान ले
आएँगे। 43 इस ने अल्लाह पर भरोसा रखा है। अब
अल्लाह इसे बचाए अगर वह इसे चाहता है, क्यूँकि
इस ने कहा, 'मैं अल्लाह का फ़र्ज़न्द हूँ'।"

44 और जिन डाकुओं को उस के साथ मस्लूब
किया गया था उन्हों ने भी उसे लान-तान की।

ईसा की मौत

45 दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया।
यह तारीकी तीन घंटों तक रही। 46 फिर तीन बजे
ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, "एली, एली, लमा
शबक़तनी" जिस का मतलब है, "ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे
ख़ुदा, तू ने मुझे क्यूँ तर्क कर दिया है?"

47 यह सुन कर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे,
"वह इल्यास नबी को बुला रहा है।" 48 उन में से
एक ने फ़ौरन दौड़ कर एक इस्फ़ंज को मै के सिरके
में डुबोया और उसे डंडे पर लगा कर ईसा को चुसाने
की कोशिश की।

49 दूसरों ने कहा, "आओ, हम देखें, शायद इल्यास
आ कर उसे बचाए।"

50 लेकिन ईसा ने दुबारा बड़े ज़ोर से चिल्ला कर दम
छोड़ दिया।

51 उसी वक़्त बैत-उल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन
कमरे के सामने लटका हुआ पर्दा ऊपर से ले कर नीचे
तक दो हिस्सों में फट गया। ज़ल्ज़ला आया, चटानें
फट गईं 52 और क़ब्रें खुल गईं। कई मरहूम मुक़द्दसीन
के जिस्मों को ज़िन्दा कर दिया गया। 53 वह ईसा के
जी उठने के बाद क़ब्रों में से निकल कर मुक़द्दस शहर
में दाख़िल हुए और बहुतों को नज़र आए।

54 जब पास खड़े रोमी अफ़सर [s]और ईसा की
पहरादारी करने वाले फ़ौजियों ने ज़ल्ज़ला और यह
तमाम वाक़िआत देखे तो वह निहायत दहशतज़दा हो
गए। उन्हों ने कहा, "यह वाक़ई अल्लाह का फ़र्ज़न्द
था।"

55 बहुत सी ख़वातीन भी वहाँ थीं जो कुछ फ़ासिले
पर इस का मुशाहदा कर रही थीं। वह गलील में ईसा
के पीछे चल कर यहाँ तक उस की ख़िदमत करती
आई थीं। 56 उन में मरियम मग्दलीनी, याक़ूब और
यूसुफ़ की माँ मरियम और ज़ब्दी के बेटों याक़ूब और
यूहन्ना की माँ भी थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

57 जब शाम होने को थी तो अरिमतियाह का एक
दौलतमन्द आदमी बनाम यूसुफ़ आया। वह भी ईसा
का शागिर्द था। 58 उस ने पीलातुस के पास जा कर
ईसा की लाश माँगी, और पीलातुस ने हुक्म दिया
कि वह उसे दे दी जाए। 59 यूसुफ़ ने लाश को ले
कर उसे कतान के एक साफ़ कफ़न में लपेटा 60 और
अपनी ज़ाती ग़ैरइस्तेमालशुदा क़ब्र में रख दिया जो
चटान में तराशी गई थी। आख़िर में उस ने एक बड़ा

---

[s]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

पत्थर लुढ़का कर क़ब्र का मुँह बन्द कर दिया और
चला गया। 61 उस वक़्त मरियम मग्दलीनी और दूसरी
मरियम क़ब्र के मुक़ाबिल बैठी थीं।

क़ब्र की पहरादारी

62 अगले दिन, जो सबत का दिन था, राहनुमा इमाम
और फ़रीसी पीलातुस के पास आए। 63 "जनाब,"
उन्हों ने कहा, "हमें याद आया कि जब वह धोकेबाज़
अभी ज़िन्दा था तो उस ने कहा था, 'तीन दिन के बाद
मैं जी उठूँगा।' 64 इस लिए हुक्म दें कि क़ब्र को तीसरे
दिन तक महफ़ूज़ रखा जाए। ऐसा न हो कि उस के
शागिर्द आ कर उस की लाश को चुरा ले जाएँ और
लोगों को बताएँ कि वह मुर्दों में से जी उठा है। अगर
ऐसा हुआ तो यह आख़िरी धोका पहले धोके से भी
ज़्यादा बड़ा होगा।"

65 पीलातुस ने जवाब दिया, "पहरेदारों को ले कर
क़ब्र को इतना महफ़ूज़ कर दो जितना तुम कर सकते
हो।"

66 चुनाँचे उन्हों ने जा कर क़ब्र को महफ़ूज़ कर
लिया। क़ब्र के मुँह पर पड़े पत्थर पर मुहर लगा कर
उन्हों ने उस पर पहरेदार मुक़र्रर कर दिए।

ईसा जी उठता है

28 1 इत्वार को सुब्ह-सवेरे ही मरियम
मग्दलीनी और दूसरी मरियम क़ब्र को
देखने के लिए निकलीं। सूरज तुलू हो रहा था।
2 अचानक एक शदीद ज़ल्ज़ला आया, क्यूँकि रब
का एक फ़रिश्ता आसमान से उतर आया और क़ब्र
के पास जा कर उस पर पड़े पत्थर को एक तरफ़
लुढ़का दिया। फिर वह उस पर बैठ गया। 3 उस
की शक्ल-ओ-सूरत बिजली की तरह चमक रही थी
और उस का लिबास बर्फ़ की मानिन्द सफ़ेद था।
4 पहरेदार इतने डर गए कि वह लरज़ते लरज़ते मुर्दा
से हो गए।

5 फ़रिश्ते ने ख़वातीन से कहा, "मत डरो। मुझे
मालूम है कि तुम ईसा को ढूँड रही हो जो मस्लूब
हुआ था। 6 वह यहाँ नहीं है। वह जी उठा है, जिस
तरह उस ने फ़रमाया था। आओ, उस जगह को ख़ुद
देख लो जहाँ वह पड़ा था। 7 और अब जल्दी से जा
कर उस के शागिर्दों को बता दो कि वह जी उठा है
और तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँच जाएगा। वहीं
तुम उसे देखोगे। अब मैं ने तुम को इस से आगाह
किया है।"

8 ख़वातीन जल्दी से क़ब्र से चली गईं। वह सहमी
हुई लेकिन बड़ी ख़ुश थीं और दौड़ी दौड़ी उस के
शागिर्दों को यह ख़बर सुनाने गईं।

9 अचानक ईसा उन से मिला। उस ने कहा,
"सलाम।" वह उस के पास आईं, उस के पाँओ पकड़े
और उसे सिज्दा किया। 10 ईसा ने उन से कहा, "मत
डरो। जाओ, मेरे भाइयों को बता दो कि वह गलील
को चले जाएँ। वहाँ वह मुझे देखेंगे।"

पहरेदारों की रिपोर्ट

11 ख़वातीन अभी रास्ते में थीं कि पहरेदारों में से
कुछ शहर में गए और राहनुमा इमामों को सब कुछ
बता दिया। 12 राहनुमा इमामों ने क़ौम के बुज़ुर्गों के
साथ एक मीटिंग मुनअक़िद की और पहरेदारों को
रिश्वत की बड़ी रक़म देने का फ़ैसला किया। 13 उन्हों
ने उन्हें बताया, "तुम को कहना है, 'जब हम रात
के वक़्त सो रहे थे तो उस के शागिर्द आए और उसे
चुरा ले गए।' 14 अगर यह ख़बर गवर्नर तक पहुँचे तो
हम उसे समझा लेंगे। तुम को फ़िक्र करने की ज़रूरत
नहीं।"

15 चुनाँचे पहरेदारों ने रिश्वत ले कर वह कुछ किया
जो उन्हें सिखाया गया था। उन की यह कहानी
यहूदियों के दरमियान बहुत फैलाई गई और आज
तक उन में राइज है।

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

16 फिर ग्यारह शागिर्द गलील के उस पहाड़ के पास
पहुँचे जहाँ ईसा ने उन्हें जाने को कहा था। 17 वहाँ
उसे देख कर उन्हों ने उसे सिज्दा किया। लेकिन कुछ

शक में पड़ गए। 18 फिर ईसा ने उन के पास आ कर
कहा, “आसमान और ज़मीन का कुल इख़तियार मुझे
दे दिया गया है। 19 इस लिए जाओ, तमाम क़ौमों को
शागिर्द बना कर उन्हें बाप, फ़र्ज़न्द और रूह-उल-
क़ुद्स के नाम से बपतिस्मा दो। 20 और उन्हें यह
सिखाओ कि वह उन तमाम अह्काम के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारें जो मैं ने तुम्हें दिए हैं। और देखो, मैं
दुनिया के इख़तिताम तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।”

मर्क़ुस

यहया बपतिस्मा देने वाले की ख़िदमत

1 1 यह अल्लाह के फ़र्ज़न्द ईसा मसीह के बारे में
ख़ुशख़बरी है, 2 जो यसायाह नबी की पेशगोई
के मुताबिक़ यूँ शुरू हुई :
'देख, मैं अपने पैग़म्बर को तेरे आगे आगे भेज देता
हूँ
जो तेरे लिए रास्ता तय्यार करेगा।
3 रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है,
रब की राह तय्यार करो!
उस के रास्ते सीधे बनाओ।'
4 यह पैग़म्बर यहया बपतिस्मा देने वाला था।
रेगिस्तान में रह कर उस ने एलान किया कि लोग
तौबा करके बपतिस्मा लें ताकि उन्हें अपने गुनाहों
की मुआफ़ी मिल जाए। 5 यहूदिया के पूरे इलाक़े के
लोग यरूशलम के तमाम बाशिन्दों समेत निकल कर
उस के पास आए। और अपने गुनाहों को तस्लीम
करके उन्हों ने दरया-ए-यर्दन में यहया से बपतिस्मा
लिया।
6 यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और कमर
पर चमड़े का पटका बांधे रहता था। ख़ुराक के तौर
पर वह टिड्डियाँ और जंगली शहद खाता था। 7 उस
ने एलान किया, "मेरे बाद एक आने वाला है जो मुझ
से बड़ा है। मैं झुक कर उस के जूतों के तस्मे खोलने
के भी लाइक़ नहीं। 8 मैं तुम को पानी से बपतिस्मा
देता हूँ, लेकिन वह तुम्हें रूह-उल-क़ुद्स से बपतिस्मा
देगा।"

ईसा का बपतिस्मा और आज़माइश

9 उन दिनों में ईसा नासरत से आया और यहया
ने उसे दरया-ए-यर्दन में बपतिस्मा दिया। 10 पानी से
निकलते ही ईसा ने देखा कि आसमान फट रहा है
और रूह-उल-क़ुद्स कबूतर की तरह मुझ पर उतर
रहा है। 11 साथ साथ आसमान से एक आवाज़ सुनाई
दी, "तू मेरा प्यारा फ़र्ज़न्द है, तुझ से मैं ख़ुश हूँ।"
12 इस के फ़ौरन बाद रूह-उल-क़ुद्स ने उसे
रेगिस्तान में भेज दिया। 13 वहाँ वह चालीस दिन रहा
जिस के दौरान इब्लीस उस की आज़माइश करता
रहा। वह जंगली जानवरों के दरमियान रहता और
फ़रिश्ते उस की ख़िदमत करते थे।

ईसा चार मछेरों को बुलाता है

14 जब यहया को जेल में डाल दिया गया तो ईसा
गलील के इलाक़े में आया और अल्लाह की ख़ुशख़बरी
का एलान करने लगा। 15 वह बोला, "मुक़र्ररा वक़्त
आ गया है, अल्लाह की बादशाही क़रीब आ गई
है। तौबा करो और अल्लाह की ख़ुशख़बरी पर ईमान
लाओ।"
16 एक दिन जब ईसा गलील की झील के किनारे
किनारे चल रहा था तो उस ने शमाऊन और उस के
भाई अन्द्रियास को देखा। वह झील में जाल डाल रहे
थे क्यूँकि वह माहीगीर थे। 17 उस ने कहा, "आओ,
मेरे पीछे हो लो, मैं तुम को आदमगीर बनाऊँगा।"
18 यह सुनते ही वह अपने जालों को छोड़ कर उस
के पीछे हो लिए।
19 थोड़ा सा आगे जा कर ईसा ने ज़ब्दी के बेटों
याक़ूब और यूहन्ना को देखा। वह कश्ती में बैठे अपने
जालों की मरम्मत कर रहे थे। 20 उस ने उन्हें फ़ौरन
बुलाया तो वह अपने बाप को मज़दूरों समेत कश्ती
में छोड़ कर उस के पीछे हो लिए।

आदमी की बदरुह के क़ब्ज़े से रिहाई

21 वह कफ़र्नहूम शहर में दाख़िल हुए। और सबत
के दिन ईसा इबादतख़ाने में जा कर लोगों को सिखाने

लगा। 22 वह उस की तालीम सुन कर हक्का-बक्का रह
गए क्यूँकि वह उन्हें शरीअत के आलिमों की तरह
नहीं बल्कि इख़तियार के साथ सिखाता था।
23 उन के इबादतख़ाने में एक आदमी था जो किसी
नापाक रूह के क़ब्ज़े में था। ईसा को देखते ही वह
चीख़ चीख़ कर बोलने लगा, 24 "ऐ नासरत के ईसा,
हमारा आप के साथ क्या वास्ता है? क्या आप हमें
हलाक करने आए हैं? मैं तो जानता हूँ कि आप कौन
हैं, आप अल्लाह के क़ुद्दूस हैं।"
25 ईसा ने उसे डाँट कर कहा, "ख़ामोश! आदमी से
निकल जा!" 26 इस पर बदरुह आदमी को झंझोड़
कर और चीख़ें मार मार कर उस में से निकल गई।
27 तमाम लोग घबरा गए और एक दूसरे से कहने
लगे, "यह क्या है? एक नई तालीम जो इख़तियार के
साथ दी जा रही है। और वह बदरूहों को हुक्म देता
है तो वह उस की मानती हैं।"
28 और ईसा के बारे में चर्चा जल्दी से गलील के
पूरे इलाक़े में फैल गया।

बहुत से मरीज़ों की शिफ़ा

29 इबादतख़ाने से निकलने के ऐन बाद वह याक़ूब
और यूहन्ना के साथ शमाऊन और अन्द्रियास के घर
गए। 30 वहाँ शमाऊन की सास बिस्तर पर पड़ी थी,
क्यूँकि उसे बुख़ार था। उन्हों ने ईसा को बता दिया
31 तो वह उस के नज़्दीक गया। उस का हाथ पकड़
कर उस ने उठने में उस की मदद की। इस पर बुख़ार
उतर गया और वह उन की ख़िदमत करने लगी।
32 जब शाम हुई और सूरज ग़ुरूब हुआ तो लोग
तमाम मरीज़ों और बदरुह-गिरिफ़्ता अश्ख़ास को
ईसा के पास लाए। 33 पूरा शहर दरवाज़े पर जमा हो
गया 34 और ईसा ने बहुत से मरीज़ों को मुख़्तलिफ़
क़िस्म की बीमारियों से शिफ़ा दी। उस ने बहुत सी
बदरुहें भी निकाल दीं, लेकिन उस ने उन्हें बोलने न
दिया, क्यूँकि वह जानती थीं कि वह कौन है।

गलील में मुनादी

35 अगले दिन सुब्ह-सवेरे जब अभी अंधेरा ही था
तो ईसा उठ कर दुआ करने के लिए किसी वीरान
जगह चला गया। 36 बाद में शमाऊन और उस के
साथी उसे ढूँडने निकले। 37 जब मालूम हुआ कि वह
कहाँ है तो उन्हों ने उस से कहा, "तमाम लोग आप
को तलाश कर रहे हैं!"
38 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "आओ, हम साथ
वाली आबादियों में जाएँ ताकि मैं वहाँ भी मुनादी
करूँ। क्यूँकि मैं इसी मक़्सद से निकल आया हूँ।"
39 चुनाँचे वह पूरे गलील में से गुज़रता हुआ
इबादतख़ानों में मुनादी करता और बदरूहों को
निकालता रहा।

कोढ़ से शिफ़ा

40 एक आदमी ईसा के पास आया जो कोढ़ का
मरीज़ था। घुटनों के बल झुक कर उस ने मिन्नत की,
"अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ़ कर सकते हैं।"
41 ईसा को तरस आया। उस ने अपना हाथ बढ़ा
कर उसे छुआ और कहा, "मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़
हो जा।" 42 इस पर बीमारी फ़ौरन दूर हो गई और
वह पाक-साफ़ हो गया। 43 ईसा ने उसे फ़ौरन रुख़्सत
करके सख़्ती से समझाया, 44 "ख़बरदार! यह बात
किसी को न बताना बल्कि बैत-उल-मुक़द्दस में इमाम
के पास जा ताकि वह तेरा मुआइना करे। अपने साथ
वह क़ुर्बानी ले जा जिस का तक़ाज़ा मूसा की शरीअत
उन से करती है जिन्हें कोढ़ से शिफ़ा मिली हो। यूँ
अलानिया तस्दीक़ हो जाएगी कि तू वाक़ई पाक-
साफ़ हो गया है।"
45 आदमी चला गया, लेकिन वह हर जगह अपनी
कहानी सुनाने लगा। उस ने यह ख़बर इतनी फैलाई
कि ईसा खुले तौर पर किसी भी शहर में दाख़िल न हो
सका बल्कि उसे वीरान जगहों में रहना पड़ा। लेकिन
वहाँ भी लोग हर जगह से उस के पास पहुँच गए।

मफ़्लूज के लिए छत खोली जाती है

2 1 कुछ दिनों के बाद ईसा कफ़र्नहूम में वापस
आया। जल्द ही ख़बर फैल गई कि वह घर में
है। 2 इस पर इतने लोग जमा हो गए कि पूरा घर भर
गया बल्कि दरवाज़े के सामने भी जगह न रही। वह
उन्हें कलाम-ए-मुक़द्दस सुनाने लगा। 3 इतने में कुछ
लोग पहुँचे। उन में से चार आदमी एक मफ़्लूज को
उठाए ईसा के पास लाना चाहते थे। 4 मगर वह उसे
हुजूम की वजह से ईसा तक न पहुँचा सके, इस लिए
उन्हों ने छत खोल दी। ईसा के ऊपर का हिस्सा उधेड़
कर उन्हों ने चारपाई को जिस पर मफ़्लूज लेटा था
उतार दिया। 5 जब ईसा ने उन का ईमान देखा तो उस
ने मफ़्लूज से कहा, "बेटा, तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए
गए हैं।"

6 शरीअत के कुछ आलिम वहाँ बैठे थे। वह यह
सुन कर सोच-बिचार में पड़ गए। 7 "यह किस तरह
ऐसी बातें कर सकता है? कुफ़्र बक रहा है। सिर्फ़
अल्लाह ही गुनाह मुआफ़ कर सकता है।"

8 ईसा ने अपनी रूह में फ़ौरन जान लिया कि वह
क्या सोच रहे हैं, इस लिए उस ने उन से पूछा,
"तुम दिल में इस तरह की बातें क्यूँ सोच रहे हो?
9 क्या मफ़्लूज से यह कहना आसान है कि 'तेरे गुनाह
मुआफ़ कर दिए गए हैं' या यह कि 'उठ, अपनी
चारपाई उठा कर चल फिर'? 10 लेकिन मैं तुम को
दिखाता हूँ कि इब्न-ए-आदम को वाक़ई दुनिया में
गुनाह मुआफ़ करने का इख़तियार है।" यह कह कर
वह मफ़्लूज से मुख़ातिब हुआ, 11 "मैं तुझ से कहता
हूँ कि उठ, अपनी चारपाई उठा कर घर चला जा।"

12 वह आदमी खड़ा हुआ और फ़ौरन अपनी
चारपाई उठा कर उन के देखते देखते चला गया। सब
सख़्त हैरतज़दा हुए और अल्लाह की तम्जीद करके
कहने लगे, "ऐसा काम हम ने कभी नहीं देखा!"

ईसा मत्ती को बुलाता है

13 फिर ईसा निकल कर दुबारा झील के किनारे
गया। एक बड़ी भीड़ उस के पास आई तो वह उन्हें
सिखाने लगा। 14 चलते चलते उस ने हल्फ़ई के बेटे
लावी को देखा जो टैक्स लेने के लिए अपनी चौकी
पर बैठा था। ईसा ने उस से कहा, "मेरे पीछे हो ले।"
और लावी उठ कर उस के पीछे हो लिया।

15 बाद में ईसा लावी के घर में खाना खा रहा था।
उस के साथ न सिर्फ़ उस के शागिर्द बल्कि बहुत से
टैक्स लेने वाले और गुनाहगार भी थे, क्यूँकि उन में
से बहुतेरे उस के पैरोकार बन चुके थे। 16 शरीअत के
कुछ फ़रीसी आलिमों ने उसे यूँ टैक्स लेने वालों और
गुनाहगारों के साथ खाते देखा तो उस के शागिर्दों से
पूछा, "यह टैक्स लेने वालों और गुनाहगारों के साथ
क्यूँ खाता है?"

17 यह सुन कर ईसा ने जवाब दिया, "सेहतमन्दों
को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को।
मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने
आया हूँ।"

शागिर्द रोज़ा क्यूँ नहीं रखते?

18 यहया के शागिर्द और फ़रीसी रोज़ा रखा करते
थे। एक मौक़े पर कुछ लोग ईसा के पास आए और
पूछा, "आप के शागिर्द रोज़ा क्यूँ नहीं रखते जबकि
यहया और फ़रीसियों के शागिर्द रोज़ा रखते हैं?"

19 ईसा ने जवाब दिया, "शादी के मेहमान किस
तरह रोज़ा रख सकते हैं जब दूल्हा उन के दरमियान
है? जब तक दूल्हा उन के साथ है वह रोज़ा नहीं रख
सकते। 20 लेकिन एक दिन आएगा जब दूल्हा उन से
ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।

21 कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा किसी पुराने
लिबास में नहीं लगाता। अगर वह ऐसा करे तो नया
टुकड़ा बाद में सुकड़ कर पुराने लिबास से अलग हो
जाएगा। यूँ पुराने लिबास की फटी हुई जगह पहले
की निस्बत ज़्यादा ख़राब हो जाएगी। 22 इसी तरह

कोई भी अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बेलचक मश्कों में नहीं डालता। अगर वह ऐसा करे तो पुरानी मश्कें पैदा होने वाली गैस के बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मै और मश्कें दोनों ज़ाए हो जाएँगी। इस लिए अंगूर का ताज़ा रस नई मश्कों में डाला जाता है जो लचकदार होती हैं।”

सबत के बारे में सवाल

23 एक दिन ईसा अनाज के खेतों में से गुज़र रहा था। चलते चलते उस के शागिर्द खाने के लिए अनाज की बालें तोड़ने लगे। सबत का दिन था। 24 यह देख कर फ़रीसियों ने ईसा से पूछा, “देखो, यह क्यूँ ऐसा कर रहे हैं? सबत के दिन ऐसा करना मना है।”

25 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उस के साथियों को भूक लगी और उन के पास ख़ुराक नहीं थी? 26 उस वक़्त अबियातर इमाम-ए-आज़म था। दाऊद अल्लाह के घर में दाख़िल हुआ और रब के लिए मख़्सूसशुदा रोटियाँ ले कर खाईं, अगरचे सिर्फ़ इमामों को इन्हें खाने की इजाज़त है। और उस ने अपने साथियों को भी यह रोटियाँ खिलाईं।”

27 फिर उस ने कहा, “इन्सान को सबत के दिन के लिए नहीं बनाया गया बल्कि सबत का दिन इन्सान के लिए। 28 चुनाँचे इब्न-ए-आदम सबत का भी मालिक है।”

सूखे हुए हाथ की शिफ़ा

3 1 किसी और वक़्त जब ईसा इबादतख़ाने में गया तो वहाँ एक आदमी था जिस का हाथ सूखा हुआ था। 2 सबत का दिन था और लोग बड़े ग़ौर से देख रहे थे कि क्या ईसा उस आदमी को आज भी शिफ़ा देगा। क्यूँकि वह इस पर इल्ज़ाम लगाने का कोई बहाना तलाश कर रहे थे। 3 ईसा ने सूखे हाथ वाले आदमी से कहा, “उठ, दरमियान में खड़ा हो।” 4 फिर ईसा ने उन से पूछा, “मुझे बताओ, शरीअत हमें सबत के दिन क्या करने की इजाज़त देती है, नेक काम करने की या ग़लत काम करने की, किसी की जान बचाने की या उसे तबाह करने की?”

सब ख़ामोश रहे। 5 वह ग़ुस्से से अपने इर्दगिर्द के लोगों की तरफ़ देखने लगा। उन की सख़्तदिली उस के लिए बड़े दुख का बाइस बन रही थी। फिर उस ने आदमी से कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा।” उस ने ऐसा किया तो उस का हाथ बहाल हो गया। 6 इस पर फ़रीसी बाहर निकल कर सीधे हेरोदेस की पार्टी के अफ़राद के साथ मिल कर ईसा को क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे।

झील के किनारे पर हुजूम

7 लेकिन ईसा वहाँ से हट कर अपने शागिर्दों के साथ झील के पास गया। एक बड़ा हुजूम उस के पीछे हो लिया। लोग न सिर्फ़ गलील के इलाक़े से आए बल्कि बहुत सी और जगहों यानी यहूदिया, 8 यरूशलम, इदूमया, दरया-ए-यर्दन के पार और सूर और सैदा के इलाक़े से भी। वजह यह थी कि ईसा के काम की ख़बर उन इलाक़ों तक भी पहुँच चुकी थी और नतीजे में बहुत से लोग वहाँ से भी आए। 9 ईसा ने शागिर्दों से कहा, “एहतियातन एक कश्ती उस वक़्त के लिए तय्यार कर रखो जब हुजूम मुझे हद से ज़्यादा दबाने लगेगा।” 10 क्यूँकि उस दिन उस ने बहुतों को शिफ़ा दी थी, इस लिए जिसे भी कोई तक्लीफ़ थी वह धक्के दे दे कर उस के पास आया ताकि उसे छू सके। 11 और जब भी नापाक रूहों ने ईसा को देखा तो वह उस के सामने गिर कर चीख़ें मारने लगीं, “आप अल्लाह के फ़र्ज़न्द हैं।”

12 लेकिन ईसा ने उन्हें सख़्ती से डाँट कर कहा कि वह उसे ज़ाहिर न करें।

ईसा बारह रसूलों को मुक़र्रर करता है

13 इस के बाद ईसा ने पहाड़ पर चढ़ कर जिन्हें वह चाहता था उन्हें अपने पास बुला लिया। और वह उस के पास आए। 14 उस ने उन में से बारह को चुन लिया। उन्हें उस ने अपने रसूल मुक़र्रर कर लिया ताकि वह

उस के साथ चलें और वह उन्हें मुनादी करने के
लिए भेज सके। 15 उस ने उन्हें बदरुहें निकालने का
इख़्तियार भी दिया।
16 जिन बारह को उस ने मुक़र्रर किया उन के नाम
यह हैं : शमाऊन जिस का लक़ब उस ने पतरस
रखा, 17 ज़ब्दी के बेटे याक़ूब और यूहन्ना जिन का
लक़ब ईसा ने 'बादल की गरज के बेटे' रखा,
18 अन्द्रियास, फ़िलिप्पुस, बरतुल्माई, मत्ती, तोमा,
याक़ूब बिन हल्फ़ई, तद्दी, शमाऊन मुजाहिद 19 और
यहूदाह इस्करियोती जिस ने बाद में उसे दुश्मन के
हवाले कर दिया।

ईसा और बदरूहों का सरदार

20 फिर ईसा किसी घर में दाख़िल हुआ। इस बार भी
इतना हुजूम जमा हो गया कि ईसा को अपने शागिर्दों
समेत खाना खाने का मौक़ा भी न मिला। 21 जब उस
के ख़ानदान के अफ़राद ने यह सुना तो वह उसे पकड़
कर ले जाने के लिए आए, क्यूँकि उन्हों ने कहा, "वह
होश में नहीं है।"
22 लेकिन शरीअत के जो आलिम यरूशलम से
आए थे उन्हों ने कहा, "यह बदरूहों के सरदार बाल-
ज़बूल के क़ब्ज़े में है। उसी की मदद से बदरूहों को
निकाल रहा है।"
23 फिर ईसा ने उन्हें अपने पास बुला कर तम्सीलों
में जवाब दिया। "इब्लीस किस तरह इब्लीस को
निकाल सकता है? 24 जिस बादशाही में फूट पड़ जाए
वह क़ाइम नहीं रह सकती। 25 और जिस घराने की
ऐसी हालत हो वह भी क़ाइम नहीं रह सकता। 26 इसी
तरह अगर इब्लीस अपने आप की मुख़ालफ़त करे
और यूँ उस में फूट पड़ जाए तो वह क़ाइम नहीं रह
सकता बल्कि ख़त्म हो चुका है।
27 किसी ज़ोरावर आदमी के घर में घुस कर उस
का माल-ओ-अस्बाब लूटना उस वक़्त तक मुमकिन
नहीं है जब तक उस आदमी को बांधा न जाए। फिर
ही उसे लूटा जा सकता है।
28 मैं तुम से सच कहता हूँ कि लोगों के तमाम
गुनाह और कुफ़्र की बातें मुआफ़ की जा सकेंगी,
ख़्वाह वह कितना ही कुफ़्र क्यूँ न बकें। 29 लेकिन
जो रूह-उल-क़ुद्स के ख़िलाफ़ कुफ़्र बके उसे अबद
तक मुआफ़ी नहीं मिलेगी। वह एक अबदी गुनाह
का क़ुसूरवार ठहरेगा।" 30 ईसा ने यह इस लिए कहा
क्यूँकि आलिम कह रहे थे कि वह किसी बदरुह की
गिरिफ़्त में है।

ईसा की माँ और भाई

31 फिर ईसा की माँ और भाई पहुँच गए। बाहर खड़े
हो कर उन्हों ने किसी को उसे बुलाने को भेज दिया।
32 उस के इर्दगिर्द हुजूम बैठा था। उन्हों ने कहा,
"आप की माँ और भाई बाहर आप को बुला रहे
हैं।"
33 ईसा ने पूछा, "कौन मेरी माँ और कौन मेरे भाई
हैं?" 34 और अपने गिर्द बैठे लोगों पर नज़र डाल
कर उस ने कहा, "देखो, यह मेरी माँ और मेरे भाई
हैं। 35 जो भी अल्लाह की मर्ज़ी पूरी करता है वह मेरा
भाई, मेरी बहन और मेरी माँ है।"

बीज बोने वाले की तम्सील

4 1 फिर ईसा दुबारा झील के किनारे तालीम देने
लगा। और इतनी बड़ी भीड़ उस के पास जमा
हुई कि वह झील में खड़ी एक कश्ती में बैठ गया।
बाक़ी लोग झील के किनारे पर खड़े रहे। 2 उस ने
उन्हें बहुत सी बातें तम्सीलों में सिखाईं। उन में से
एक यह थी :
3 "सुनो! एक किसान बीज बोने के लिए निकला।
4 जब बीज इधर उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते
पर गिरे और परिन्दों ने आ कर उन्हें चुग लिया।
5 कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ मिट्टी की कमी
थी। वह जल्द उग आए क्यूँकि मिट्टी गहरी नहीं थी।
6 लेकिन जब सूरज निकला तो पौदे झुलस गए और
चूँकि वह जड़ न पकड़ सके इस लिए सूख गए।
7 कुछ दाने ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान भी

गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन ख़ुदरौ पौदों ने
साथ साथ बढ़ कर उन्हें फलने फूलने की जगह न
दी। चुनाँचे वह भी ख़त्म हो गए और फल न ला सके।
8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे।
वहाँ वह फूट निकले और बढ़ते बढ़ते तीस गुना,
साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल लाए।"
9 फिर उस ने कहा, "जो सुन सकता है वह सुन ले!"

तम्सीलों का मक़्सद

10 जब वह अकेला था तो जो लोग उस के इर्दगिर्द
जमा थे उन्हों ने बारह शागिर्दों समेत उस से पूछा कि
इस तम्सील का क्या मतलब है? 11 उस ने जवाब
दिया, "तुम को तो अल्लाह की बादशाही का भेद
समझने की लियाक़त दी गई है। लेकिन मैं इस दाइरे
से बाहर के लोगों को हर बात समझाने के लिए
तम्सीलें इस्तेमाल करता हूँ 12 ताकि पाक कलाम पूरा
हो जाए कि

'वह अपनी आँखों से देखेंगे मगर कुछ नहीं जानेंगे,
वह अपने कानों से सुनेंगे मगर कुछ नहीं समझेंगे,
ऐसा न हो कि वह मेरी तरफ़ रुजू करें
और उन्हें मुआफ़ कर दिया जाए'।"

बीज बोने वाले की तम्सील का मतलब

13 फिर ईसा ने उन से कहा, "क्या तुम यह तम्सील
नहीं समझते? तो फिर बाक़ी तमाम तम्सीलें किस
तरह समझ पाओगे? 14 बीज बोने वाला अल्लाह का
कलाम बो देता है। 15 रास्ते पर गिरने वाले दाने वह
लोग हैं जो कलाम को सुनते तो हैं, लेकिन फिर
इब्लीस फ़ौरन आ कर वह कलाम छीन लेता है जो
उन में बोया गया है। 16 पथरीली ज़मीन पर गिरने
वाले दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते ही उसे ख़ुशी
से क़बूल तो कर लेते हैं, 17 लेकिन वह जड़ नहीं
पकड़ते और इस लिए ज़्यादा देर तक क़ाइम नहीं
रहते। जूँ ही वह कलाम पर ईमान लाने के बाइस
किसी मुसीबत या ईज़ारसानी से दोचार हो जाएँ, तो
वह बर्गश्ता हो जाते हैं। 18 ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के
दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते
तो हैं, 19 लेकिन फिर रोज़मर्रा की परेशानियाँ, दौलत
का फ़रेब और दीगर चीज़ों का लालच कलाम को
फलने फूलने नहीं देते। नतीजे में वह फल लाने तक
नहीं पहुँचता। 20 इस के मुक़ाबले में ज़रख़ेज़ ज़मीन
में गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुन कर उसे
क़बूल करते और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना
बल्कि सौ गुना तक फल लाते हैं।"

कोई चराग़ को बर्तन के नीचे नहीं छुपाता

21 ईसा ने बात जारी रखी और कहा, "क्या चराग़
को इस लिए जला कर लाया जाता है कि वह किसी
बर्तन या चारपाई के नीचे रखा जाए? हरगिज़ नहीं!
उसे शमादान पर रखा जाता है। 22 क्यूँकि जो कुछ
भी इस वक़्त पोशीदा है उसे आख़िरकार ज़ाहिर हो
जाना है और तमाम भेदों को एक दिन खुल जाना है।
23 अगर कोई सुन सके तो सुन ले।"
24 उस ने उन से यह भी कहा, "इस पर ध्यान दो
कि तुम क्या सुनते हो। जिस हिसाब से तुम दूसरों
को देते हो उसी हिसाब से तुम को भी दिया जाएगा
बल्कि तुम को उस से बढ़ कर मिलेगा। 25 क्यूँकि
जिसे कुछ हासिल हुआ है उसे और भी दिया जाएगा,
जबकि जिसे कुछ हासिल नहीं हुआ उस से वह थोड़ा
बहुत भी छीन लिया जाएगा जो उसे हासिल है।"

ख़ुद-ब-ख़ुद उगने वाले बीज की तम्सील

26 फिर ईसा ने कहा, "अल्लाह की बादशाही यूँ
समझ लो : एक किसान ज़मीन में बीज बिखेर देता
है। 27 यह बीज फूट कर दिन रात उगता रहता है,
ख़्वाह किसान सो रहा या जाग रहा हो। उसे मालूम
नहीं कि यह क्यूँकर होता है। 28 ज़मीन ख़ुद-ब-ख़ुद
अनाज की फ़सल पैदा करती है। पहले पत्ते निकलते
हैं, फिर बालें नज़र आने लगती हैं और आख़िर में
दाने पैदा हो जाते हैं। 29 और जूँ ही अनाज की फ़सल
पक जाती है किसान आ कर दरान्ती से उसे काट

लेता है, क्यूँकि फ़सल की कटाई का वक़्त आ चुका होता है।”

राई के दाने की तम्सील

30 फिर ईसा ने कहा, “हम अल्लाह की बादशाही का मुवाज़ना किस चीज़ से करें? या हम कौन सी तम्सील से इसे बयान करें? 31 वह राई के दाने की मानिन्द है जो ज़मीन में डाला गया हो। राई बीजों में सब से छोटा दाना है 32 लेकिन बढ़ते बढ़ते सब्ज़ियों में सब से बड़ा हो जाता है। उस की शाख़ें इतनी लम्बी हो जाती हैं कि परिन्दे उस के साय में अपने घोंसले बना सकते हैं।”

33 ईसा इसी क़िस्म की बहुत सी तम्सीलों की मदद से उन्हें कलाम यूँ सुनाता था कि वह इसे समझ सकते थे। 34 हाँ, अवाम को वह सिर्फ़ तम्सीलों के ज़रीए सिखाता था। लेकिन जब वह अपने शागिर्दों के साथ अकेला होता तो वह हर बात की तश्रीह करता था।

ईसा आँधी को थमा देता है

35 उस दिन जब शाम हुई तो ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “आओ, हम झील के पार चलें।” 36 चुनाँचे वह भीड़ को रुख़्सत करके उसे ले कर चल पड़े। बाज़ और कश्तियाँ भी साथ गईं। 37 अचानक सख़्त आँधी आई। लहरें कश्ती से टकरा कर उसे पानी से भरने लगीं, 38 लेकिन ईसा अभी तक कश्ती के पिछले हिस्से में अपना सर गद्दी पर रखे सो रहा था। शागिर्दों ने उसे जगा कर कहा, “उस्ताद, क्या आप को पर्वा नहीं कि हम तबाह हो रहे हैं?”

39 वह जाग उठा, आँधी को डाँटा और झील से कहा, “ख़ामोश! चुप कर!” इस पर आँधी थम गई और लहरें बिलकुल साकित हो गईं। 40 फिर ईसा ने शागिर्दों से पूछा, “तुम क्यूँ घबराते हो? क्या तुम अभी तक ईमान नहीं रखते?” 41 उन पर सख़्त ख़ौफ़ तारी हो गया और वह एक दूसरे से कहने लगे, “आख़िर यह कौन है? हवा और झील भी उस का हुक्म मानती हैं।”

ईसा एक गरासीनी आदमी से बदरुहें निकाल देता है

5 1 फिर वह झील के पार गरासा के इलाक़े में पहुँचे। 2 जब ईसा कश्ती से उतरा तो एक आदमी जो नापाक रूह की गिरिफ़्त में था क़ब्रों में से निकल कर ईसा को मिला। 3 यह आदमी क़ब्रों में रहता और इस नौबत तक पहुँच गया था कि कोई भी उसे बांध न सकता था, चाहे उसे ज़न्जीरों से भी बांधा जाता। 4 उसे बहुत दफ़ा बेड़ियों और ज़न्जीरों से बांधा गया था, लेकिन जब भी ऐसा हुआ तो उस ने ज़न्जीरों को तोड़ कर बेड़ियों को टुकड़े टुकड़े कर दिया था। कोई भी उसे कंट्रोल नहीं कर सकता था। 5 दिन रात वह चीख़ें मार मार कर क़ब्रों और पहाड़ी इलाक़े में घूमता फिरता और अपने आप को पत्थरों से ज़ख़्मी कर लेता था।

6 ईसा को दूर से देख कर वह दौड़ा और उस के सामने मुँह के बल गिरा। 7 वह ज़ोर से चीख़ा, “ऐ ईसा अल्लाह तआला के फ़र्ज़न्द, मेरा आप के साथ क्या वास्ता है? अल्लाह के नाम में आप को क़सम देता हूँ कि मुझे अज़ाब में न डालें।” 8 क्यूँकि ईसा ने उसे कहा था, “ऐ नापाक रूह, आदमी में से निकल जा!”

9 फिर ईसा ने पूछा, “तेरा नाम क्या है?”

उस ने जवाब दिया, “लश्कर, क्यूँकि हम बहुत से हैं।” 10 और वह बार बार मिन्नत करता रहा कि ईसा उन्हें इस इलाक़े से न निकाले।

11 उस वक़्त क़रीब की पहाड़ी पर सूअरों का बड़ा ग़ोल चर रहा था। 12 बदरूहों ने ईसा से इल्तिमास की, “हमें सूअरों में भेज दें, हमें उन में दाख़िल होने दें।” 13 उस ने उन्हें इजाज़त दी तो बदरुहें उस आदमी में से निकल कर सूअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे ग़ोल के तक़रीबन 2,000 सूअर भाग भाग कर पहाड़ी की ढलान पर से उतरे और झील में झपट कर डूब मरे।

14 यह देख कर सूअरों के गल्लाबान भाग गए। उन्हों
ने शहर और दीहात में इस बात का चर्चा किया तो
लोग यह मालूम करने के लिए कि क्या हुआ है अपनी
जगहों से निकल कर ईसा के पास आए। 15 उस
के पास पहुँचे तो वह आदमी मिला जिस में पहले
बदरूहों का लश्कर था। अब वह कपड़े पहने वहाँ
बैठा था और उस की ज़हनी हालत ठीक थी। यह
देख कर वह डर गए। 16 जिन्हों ने सब कुछ देखा
था उन्हों ने लोगों को बताया कि बदरुह-गिरिफ़्ता
आदमी और सूअरों के साथ क्या हुआ है।

17 फिर लोग ईसा की मिन्नत करने लगे कि वह उन
के इलाक़े से चला जाए।

18 ईसा कश्ती पर सवार होने लगा तो बदरूहों से
आज़ाद किए गए आदमी ने उस से इल्तिमास की,
"मुझे भी अपने साथ जाने दें।"

19 लेकिन ईसा ने उसे साथ जाने न दिया बल्कि
कहा, "अपने घर वापस चला जा और अपने अज़ीज़ों
को सब कुछ बता जो रब ने तेरे लिए किया है, कि
उस ने तुझ पर कितना रहम किया है।"

20 चुनाँचे आदमी चला गया और दिकपुलिस के
इलाक़े में लोगों को बताने लगा कि ईसा ने मेरे लिए
क्या कुछ किया है। और सब हैरतज़दा हुए।

याईर की बेटी और बीमार औरत

21 ईसा ने कश्ती में बैठे झील को दुबारा पार किया।
जब दूसरे किनारे पहुँचा तो एक हुजूम उस के गिर्द
जमा हो गया। वह अभी झील के पास ही था 22 कि
मक़ामी इबादतख़ाने का एक राहनुमा उस के पास
आया। उस का नाम याईर था। ईसा को देख कर वह
उस के पाँओ में गिर गया 23 और बहुत मिन्नत करने
लगा, "मेरी छोटी बेटी मरने वाली है, बराह-ए-करम
आ कर उस पर अपने हाथ रखें ताकि वह शिफ़ा पा
कर ज़िन्दा रहे।"

24 चुनाँचे ईसा उस के साथ चल पड़ा। एक बड़ी
भीड़ उस के पीछे लग गई और लोग उसे घेर कर हर
तरफ़ से दबाने लगे।

25 हुजूम में एक औरत थी जो बारह साल से ख़ून
बहने के मर्ज़ से रिहाई न पा सकी थी। 26 बहुत
डाक्टरों से अपना इलाज करवा करवा कर उसे कई
तरह की मुसीबत झेलनी पड़ी थी और इतने में उस
के तमाम पैसे भी ख़र्च हो गए थे। तो भी कोई फ़ाइदा
न हुआ था बल्कि उस की हालत मज़ीद ख़राब होती
गई। 27 ईसा के बारे में सुन कर वह भीड़ में शामिल हो
गई थी। अब पीछे से आ कर उस ने उस के लिबास
को छुआ, 28 क्यूँकि उस ने सोचा, "अगर मैं सिर्फ़
उस के लिबास को ही छू लूँ तो मैं शिफ़ा पा लूँगी।"

29 ख़ून बहना फ़ौरन बन्द हो गया और उस ने अपने
जिस्म में महसूस किया कि मुझे इस अज़ियतनाक
हालत से रिहाई मिल गई है। 30 लेकिन उसी लम्हे
ईसा को ख़ुद महसूस हुआ कि मुझ में से तवानाई
निकली है। उस ने मुड़ कर पूछा, "किस ने मेरे कपड़ों
को छुआ है?"

31 उस के शागिर्दों ने जवाब दिया, "आप ख़ुद देख
रहे हैं कि हुजूम आप को घेर कर दबा रहा है। तो
फिर आप किस तरह पूछ सकते हैं कि किस ने मुझे
छुआ?"

32 लेकिन ईसा अपने चारों तरफ़ देखता रहा कि
किस ने यह किया है। 33 इस पर वह औरत यह जान
कर कि मेरे साथ क्या हुआ है ख़ौफ़ के मारे लरज़ती
हुई उस के पास आई। वह उस के सामने गिर पड़ी
और उसे पूरी हक़ीक़त खोल कर बयान की। 34 ईसा
ने उस से कहा, "बेटी, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया
है। सलामती से जा और अपनी अज़ियतनाक हालत
से बची रह।"

35 ईसा ने यह बात अभी ख़त्म नहीं की थी कि
इबादतख़ाने के राहनुमा याईर के घर की तरफ़ से
कुछ लोग पहुँचे और कहा, "आप की बेटी फ़ौत हो
चुकी है, अब उस्ताद को मज़ीद तक्लीफ़ देने की
क्या ज़रूरत?"

36 उन की यह बात नज़रअन्दाज़ करके ईसा ने
याईर से कहा, "मत घबराओ, फ़क़त ईमान रखो।"
37 फिर ईसा ने हुजूम को रोक लिया और सिर्फ़

पतरस, याक़ूब और उस के भाई यूहन्ना को अपने
साथ जाने की इजाज़त दी। 38 जब इबादतख़ाने के
राहनुमा के घर पहुँचे तो वहाँ बड़ी अफ़्रा-तफ़्री नज़र
आई। लोग ख़ूब गिर्या-ओ-ज़ारी कर रहे थे। 39 उन्दर
जा कर ईसा ने उन से कहा, "यह कैसा शोर-शराबा
है? क्यूँ रो रहे हो? लड़की मर नहीं गई बल्कि सो
रही है।"

40 लोग हंस कर उस का मज़ाक़ उड़ाने लगे। लेकिन
उस ने सब को बाहर निकाल दिया। फिर सिर्फ़
लड़की के वालिदैन और अपने तीन शागिर्दों को साथ
ले कर वह उस कमरे में दाख़िल हुआ जिस में लड़की
पड़ी थी। 41 उस ने उस का हाथ पकड़ कर कहा,
"तलिथा क़ूम!" इस का मतलब है, "छोटी लड़की,
मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि जाग उठ!"

42 लड़की फ़ौरन उठ कर चलने फिरने लगी। उस
की उम्र बारह साल थी। यह देख कर लोग घबरा कर
हैरान रह गए। 43 ईसा ने उन्हें सन्जीदगी से समझाया
कि वह किसी को भी इस के बारे में न बताएँ। फिर
उस ने उन्हें कहा कि उसे खाने को कुछ दो।

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

6 1 फिर ईसा वहाँ से चला गया और अपने वतनी
शहर नासरत में आया। उस के शागिर्द उस
के साथ थे। 2 सबत के दिन वह इबादतख़ाने में
तालीम देने लगा। बेशतर लोग उस की बातें सुन
कर हैरतज़दा हुए। उन्हों ने पूछा, "इसे यह कहाँ
से हासिल हुआ है? यह हिक्मत जो इसे मिली है,
और यह मोजिज़े जो इस के हाथों से होते हैं, यह
क्या है? 3 क्या यह वह बढ़ई नहीं है जो मरियम का
बेटा है और जिस के भाई याक़ूब, यूसुफ़, यहूदाह
और शमाऊन हैं? और क्या इस की बहनें यहीं नहीं
रहतीं?" यूँ उन्हों ने उस से ठोकर खा कर उसे क़बूल
न किया।

4 ईसा ने उन से कहा, "नबी की हर जगह इज़्ज़त
होती है सिवाए उस के वतनी शहर, उस के रिश्तेदारों
और उस के अपने ख़ानदान के।"

5 वहाँ वह कोई मोजिज़ा न कर सका। उस ने सिर्फ़
चन्द एक मरीज़ों पर हाथ रख कर उन को शिफ़ा
दी। 6 और वह उन की बेएतिक़ादी के सबब से बहुत
हैरान था।

ईसा बारह शागिर्दों को तब्लीग़ करने भेजता है

इस के बाद ईसा ने इर्दगिर्द के इलाक़े में गाँव गाँव
जा कर लोगों को तालीम दी। 7 बारह शागिर्दों को
बुला कर वह उन्हें दो दो करके मुख़्तलिफ़ जगहों पर
भेजने लगा। इस के लिए उस ने उन्हें नापाक रूहों
को निकालने का इख़तियार दे कर 8 यह हिदायत
की, "सफ़र पर अपने साथ कुछ न लेना सिवाए एक
लाठी के। न रोटी, न सामान के लिए कोई बैग, न
कमरबन्द में कोई पैसा, 9 न एक से ज़्यादा सूट। तुम
जूते पहन सकते हो। 10 जिस घर में भी दाख़िल हो
उस में उस मक़ाम से चले जाने तक ठहरो। 11 और
अगर कोई मक़ाम तुम को क़बूल न करे या तुम्हारी
न सुने तो फिर रवाना होते वक़्त अपने पाँओ से गर्द
झाड़ दो। यूँ तुम उन के ख़िलाफ़ गवाही दोगे।"

12 चुनाँचे शागिर्द वहाँ से निकल कर मुनादी करने
लगे कि लोग तौबा करें। 13 उन्हों ने बहुत सी बदरूहें
निकाल दीं और बहुत से मरीज़ों पर ज़ैतून का तेल
मल कर उन्हें शिफ़ा दी।

यहया बपतिस्मा देने वाले का क़त्ल

14 बादशाह हेरोदेस अनतिपास ने ईसा के बारे में
सुना, क्यूँकि उस का नाम मश्हूर हो गया था। कुछ
कह रहे थे, "यहया बपतिस्मा देने वाला मुर्दों में से जी
उठा है, इस लिए इस क़िस्म की मोजिज़ाना ताक़तें
उस में नज़र आती हैं।"

औरों ने सोचा, "यह इल्यास नबी है।"

15 यह ख़याल भी पेश किया जा रहा था कि वह
क़दीम ज़माने के नबियों जैसा कोई नबी है।

16 लेकिन जब हेरोदेस ने उस के बारे में सुना तो उस
ने कहा, "यहया जिस का मैं ने सर क़लम करवाया है
मुर्दों में से जी उठा है।" 17 वजह यह थी कि हेरोदेस

के हुक्म पर ही यहया को गिरिफ़्तार करके जेल में
डाला गया था। यह हेरोदियास की ख़ातिर हुआ था
जो पहले हेरोदेस के भाई फ़िलिप्पुस की बीवी थी,
लेकिन जिस से उस ने अब ख़ुद शादी कर ली थी।
18 यहया ने हेरोदेस को बताया था, "अपने भाई की
बीवी से तेरी शादी नाजाइज़ है।"
19 इस वजह से हेरोदियास उस से कीना रखती
और उसे क़त्ल कराना चाहती थी। लेकिन इस में
वह नाकाम रही 20 क्यूँकि हेरोदेस यहया से डरता
था। वह जानता था कि यह आदमी रास्तबाज़ और
मुक़द्दस है, इस लिए वह उस की हिफ़ाज़त करता
था। जब भी उस से बात होती तो हेरोदेस सुन सुन
कर बड़ी उलझन में पड़ जाता। तो भी वह उस की
बातें सुनना पसन्द करता था।
21 आख़िरकार हेरोदियास को हेरोदेस की
सालगिरह पर अच्छा मौक़ा मिल गया। सालगिरह
को मनाने के लिए हेरोदेस ने अपने बड़े सरकारी
अफ़्सरों, मिल्ट्री कमाँडरों और गलील के अव्वल
दर्जे के शहरियों की ज़ियाफ़त की। 22 ज़ियाफ़त के
दौरान हेरोदियास की बेटी अन्दर आ कर नाचने
लगी। हेरोदेस और उस के मेहमानों को यह बहुत
पसन्द आया और उस ने लड़की से कहा, "जो जी
चाहे मुझ से माँग तो मैं वह तुझे दूँगा।" 23 बल्कि
उस ने क़सम खा कर कहा, "जो भी तू माँगेगी मैं
तुझे दूँगा, ख़्वाह बादशाही का आधा हिस्सा ही क्यूँ
न हो।"
24 लड़की ने निकल कर अपनी माँ से पूछा, "मैं
क्या माँगूँ?"
माँ ने जवाब दिया, "यहया बपतिस्मा देने वाले का
सर।"
25 लड़की फ़ुरती से अन्दर जा कर बादशाह के पास
वापस आई और कहा, "मैं चाहती हूँ कि आप मुझे
अभी अभी यहया बपतिस्मा देने वाले का सर ट्रे में
मंगवा दें।"
26 यह सुन कर बादशाह को बहुत दुख हुआ।
लेकिन अपनी क़समों और मेहमानों की मौजूदगी की
वजह से वह इनकार करने के लिए भी तय्यार नहीं
था। 27 चुनाँचे उस ने फ़ौरन जल्लाद को भेज कर हुक्म
दिया कि वह यहया का सर ले आए। जल्लाद ने जेल
में जा कर यहया का सर क़लम कर दिया। 28 फिर
वह उसे ट्रे में रख कर ले आया और लड़की को
दे दिया। लड़की ने उसे अपनी माँ के सपुर्द किया।
29 जब यहया के शागिर्दों को यह ख़बर पहुँची तो वह
आए और उस की लाश ले कर उसे क़ब्र में रख दिया।

ईसा 5000 अफ़राद को खाना खिलाता है

30 रसूल वापस आ कर ईसा के पास जमा हुए और
उसे सब कुछ सुनाने लगे जो उन्हों ने किया और
सिखाया था। 31 इस दौरान इतने लोग आ और जा
रहे थे कि उन्हें खाना खाने का मौक़ा भी न मिला।
इस लिए ईसा ने बारह शागिर्दों से कहा, "आओ, हम
लोगों से अलग हो कर किसी ग़ैरआबाद जगह जाएँ
और आराम करें।" 32 चुनाँचे वह कश्ती पर सवार
हो कर किसी वीरान जगह चले गए।
33 लेकिन बहुत से लोगों ने उन्हें जाते वक़्त पहचान
लिया। वह पैदल चल कर तमाम शहरों से निकल
आए और दौड़ दौड़ कर उन से पहले मन्ज़िल-ए-
मक़सूद तक पहुँच गए। 34 जब ईसा ने कश्ती पर से
उतर कर बड़े हुजूम को देखा तो उसे लोगों पर तरस
आया, क्यूँकि वह उन भेड़ों की मानिन्द थे जिन का
कोई चरवाहा न हो। वहीं वह उन्हें बहुत सी बातें
सिखाने लगा।
35 जब दिन ढलने लगा तो उस के शागिर्द उस के
पास आए और कहा, "यह जगह वीरान है और दिन
ढलने लगा है। 36 इन को रुख़्सत कर दें ताकि यह
इर्दगिर्द की बस्तियों और दीहातों में जा कर खाने के
लिए कुछ ख़रीद लें।"
37 लेकिन ईसा ने उन्हें कहा, "तुम ख़ुद इन्हें कुछ
खाने को दो।"
उन्हों ने पूछा, "हम इस के लिए दरकार चाँदी के
200 सिक्के कहाँ से ले कर रोटी ख़रीदने जाएँ और
इन्हें खिलाएँ?"

38 उस ने कहा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?
जा कर पता करो!”
उन्हों ने मालूम किया। फिर दुबारा उस के पास आ
कर कहने लगे, “हमारे पास पाँच रोटियाँ और दो
मछलियाँ हैं।”
39 इस पर ईसा ने उन्हें हिदायत दी, “तमाम लोगों
को गुरोहों में हरी घास पर बिठा दो।” 40 चुनाँचे लोग
सौ सौ और पचास पचास की सूरत में बैठ गए।
41 फिर ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों
को ले कर आसमान की तरफ़ देखा और शुक्रगुज़ारी
की दुआ की। फिर उस ने रोटियों को तोड़ तोड़
कर शागिर्दों को दिया ताकि वह लोगों में तक़्सीम
करें। उस ने दो मछलियों को भी टुकड़े टुकड़े करके
शागिर्दों के ज़रीए उन में तक़्सीम करवाया। 42 और
सब ने जी भर कर खाया। 43 जब शागिर्दों ने रोटियों
और मछलियों के बचे हुए टुकड़े जमा किए तो बारह
टोकरे भर गए। 44 खाने वाले मर्दों की कुल तादाद
5,000 थी।

ईसा पानी पर चलता है

45 इस के ऐन बाद ईसा ने अपने शागिर्दों को मज्बूर
किया कि वह कश्ती पर सवार हो कर आगे निकलें
और झील के पार के शहर बैत-सैदा जाएँ। इतने
में वह हुजूम को रुख़्सत करना चाहता था। 46 उन्हें
ख़ैरबाद कहने के बाद वह दुआ करने के लिए पहाड़
पर चढ़ गया। 47 शाम के वक़्त शागिर्दों की कश्ती
झील के बीच तक पहुँच गई थी जबकि ईसा ख़ुद
ख़ुश्की पर अकेला रह गया था। 48 वहाँ से उस ने
देखा कि शागिर्द कश्ती को खेने में बड़ी जिद्द-ओ-
जह्द कर रहे हैं, क्यूँकि हवा उन के ख़िलाफ़ चल
रही थी। तक़रीबन तीन बजे रात के वक़्त ईसा पानी
पर चलते हुए उन के पास आया। वह उन से आगे
निकलना चाहता था, 49 लेकिन जब उन्हों ने उसे
झील की सतह पर चलते हुए देखा तो सोचने लगे,
“यह कोई भूत है” और चीख़ें मारने लगे। 50 क्यूँकि
सब ने उसे देख कर दह्शत खाई।
लेकिन ईसा फ़ौरन उन से मुख़ातिब हो कर बोला,
“हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।” 51 फिर वह
उन के पास आया और कश्ती में बैठ गया। उसी
वक़्त हवा थम गई। शागिर्द निहायत ही हैरतज़दा
हुए। 52 क्यूँकि जब रोटियों का मोजिज़ा किया गया
था तो वह इस का मतलब नहीं समझे थे बल्कि उन
के दिल बेहिस्स हो गए थे।

गन्नेसरत में मरीज़ों की शिफ़ा

53 झील को पार करके वह गन्नेसरत शहर के पास
पहुँच गए और लंगर डाल दिया। 54 जूँ ही वह कश्ती
से उतरे लोगों ने ईसा को पहचान लिया। 55 वह भाग
भाग कर उस पूरे इलाक़े में से गुज़रे और मरीज़ों को
चारपाइयों पर उठा उठा कर वहाँ ले आए जहाँ कहीं
उन्हें ख़बर मिली कि वह ठहरा हुआ है। 56 जहाँ भी
वह गया चाहे गाँव, शहर या बस्ती में, वहाँ लोगों ने
बीमारों को चौकों में रख कर उस से मिन्नत की कि
वह कम अज़ कम उन्हें अपने लिबास के दामन को
छूने दे। और जिस ने भी उसे छुआ उसे शिफ़ा मिली।

बापदादा की तालीम

7 1 एक दिन फ़रीसी और शरीअत के कुछ
आलिम यरूशलम से ईसा से मिलने आए। 2 जब
वह वहाँ थे तो उन्हों ने देखा कि उस के कुछ शागिर्द
अपने हाथ पाक-साफ़ किए बग़ैर यानी धोए बग़ैर
खाना खा रहे हैं।
3 (क्यूँकि यहूदी और ख़ासकर फ़रीसी फ़िर्क़े के
लोग इस मुआमले में अपने बापदादा की रिवायत
को मानते हैं। वह अपने हाथ अच्छी तरह धोए बग़ैर
खाना नहीं खाते। 4 इसी तरह जब वह कभी बाज़ार
से आते हैं तो वह ग़ुसल करके ही खाना खाते हैं।
वह बहुत सी और रिवायतों पर भी अमल करते हैं,
मसलन कप, जग और केतली को धो कर पाक-साफ़
करने की रस्म पर।)
5 चुनाँचे फ़रीसियों और शरीअत के आलिमों ने ईसा
से पूछा, “आप के शागिर्द बापदादा की रिवायतों के

मुताबिक़ ज़िन्दगी क्यूँ नहीं गुज़ारते बल्कि रोटी भी
हाथ पाक-साफ़ किए बग़ैर खाते हैं?”
6 ईसा ने जवाब दिया, “यसायाह नबी ने तुम
रियाकारों के बारे में ठीक कहा जब उस ने यह
नबुव्वत की,
‘यह क़ौम अपने होंटों से तो मेरा एहतिराम करती
है
लेकिन उस का दिल मुझ से दूर है।
7 वह मेरी परस्तिश करते तो हैं, लेकिन बेफ़ाइदा।
क्यूँकि वह सिर्फ़ इन्सान ही के अह्काम सिखाते
हैं।’
8 तुम अल्लाह के अह्काम को छोड़ कर इन्सानी
रिवायात की पैरवी करते हो।”
9 ईसा ने अपनी बात जारी रखी, “तुम कितने
सलीक़े से अल्लाह का हुक्म मन्सूख़ करते हो ताकि
अपनी रिवायात को क़ाइम रख सको। 10 मसलन
मूसा ने फ़रमाया, ‘अपने बाप और अपनी माँ की
इज़्ज़त करना’ और ‘जो अपने बाप या माँ पर लानत
करे उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।’ 11 लेकिन जब कोई
अपने वालिदैन से कहे, ‘मैं आप की मदद नहीं कर
सकता, क्यूँकि मैं ने मन्नत मानी है कि जो मुझे आप
को देना था वह अल्लाह के लिए क़ुर्बानी है’ तो तुम
इसे जाइज़ क़रार देते हो। 12 यूँ तुम उसे अपने माँ-बाप
की मदद करने से रोक लेते हो। 13 और इसी तरह तुम
अल्लाह के कलाम को अपनी उस रिवायत से मन्सूख़
कर लेते हो जो तुम ने नस्ल-दर-नस्ल मुन्तक़िल की
है। तुम इस क़िस्म की बहुत सी हरकतें करते हो।”

क्या कुछ इन्सान को नापाक कर देता है?

14 फिर ईसा ने दुबारा हुजूम को अपने पास बुलाया
और कहा, “सब मेरी बात सुनो और इसे समझने की
कोशिश करो। 15 कोई ऐसी चीज़ है नहीं जो इन्सान में
दाख़िल हो कर उसे नापाक कर सके, बल्कि जो कुछ
इन्सान के अन्दर से निकलता है वही उसे नापाक कर
देता है।” 16 [अगर कोई सुन सकता है तो वह सुन
ले।]
17 फिर वह हुजूम को छोड़ कर किसी घर में
दाख़िल हुआ। वहाँ उस के शागिर्दों ने पूछा, “इस
तम्सील का क्या मतलब है?”
18 उस ने कहा, “क्या तुम भी इतने नासमझ हो?
क्या तुम नहीं समझते कि जो कुछ बाहर से इन्सान
में दाख़िल होता है वह उसे नापाक नहीं कर सकता?
19 वह तो उस के दिल में नहीं जाता बल्कि उस के
मेदे में और वहाँ से निकल कर जा-ए-ज़रूरत में।”
(यह कह कर ईसा ने हर क़िस्म का खाना पाक-साफ़
क़रार दिया।)
20 उस ने यह भी कहा, “जो कुछ इन्सान के अन्दर
से निकलता है वही उसे नापाक करता है। 21 क्यूँकि
लोगों के अन्दर से, उन के दिलों ही से बुरे ख़यालात,
हरामकारी, चोरी, क़त्ल-ओ-ग़ारत, 22 ज़िनाकारी,
लालच, बदकारी, धोका, शहवतपरस्ती, हसद,
बुह्तान, ग़ुरूर और हमाक़त निकलते हैं। 23 यह
तमाम बुराइयाँ अन्दर ही से निकल कर इन्सान को
नापाक कर देती हैं।”

ग़ैरयहूदी औरत का ईमान

24 फिर ईसा गलील से रवाना हो कर शिमाल में सूर
के इलाक़े में आया। वहाँ वह किसी घर में दाख़िल
हुआ। वह नहीं चाहता था कि किसी को पता चले,
लेकिन वह पोशीदा न रह सका। 25 फ़ौरन एक औरत
उस के पास आई जिस ने उस के बारे में सुन रखा
था। वह उस के पाँओ में गिर गई। उस की छोटी
बेटी किसी नापाक रूह के क़ब्ज़े में थी, 26 और उस
ने ईसा से गुज़ारिश की, “बदरुह को मेरी बेटी में
से निकाल दें।” लेकिन वह औरत यूनानी थी और
सूरुफ़ेनीके के इलाक़े में पैदा हुई थी, 27 इस लिए
ईसा ने उसे बताया, “पहले बच्चों को जी भर कर
खाने दे, क्यूँकि यह मुनासिब नहीं कि बच्चों से खाना
ले कर कुत्तों के सामने फैंक दिया जाए।”
28 उस ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावन्द, लेकिन मेज़
के नीचे के कुत्ते भी बच्चों के गिरे हुए टुकड़े खाते हैं।”

29 ईसा ने कहा, “तू ने अच्छा जवाब दिया, इस
लिए जा, बदरुह तेरी बेटी में से निकल गई है।”
30 औरत अपने घर वापस चली गई तो देखा कि
लड़की बिस्तर पर पड़ी है और बदरुह उस में से
निकल चुकी है।

गूँगे-बहरे की शिफ़ा

31 जब ईसा सूर से रवाना हुआ तो वह पहले शिमाल
में वाक़े शहर सैदा को चला गया। फिर वहाँ से
भी फ़ारिग़ हो कर वह दुबारा गलील की झील के
किनारे वाक़े दिकपुलिस के इलाक़े में पहुँच गया।
32 वहाँ उस के पास एक बहरा आदमी लाया गया
जो मुश्किल ही से बोल सकता था। उन्हों ने मिन्नत
की कि वह अपना हाथ उस पर रखे। 33 ईसा उसे
हुजूम से दूर ले गया। उस ने अपनी उंगलियाँ उस के
कानों में डालीं और थूक कर आदमी की ज़बान को
छुआ। 34 फिर आसमान की तरफ़ नज़र उठा कर उस
ने आह भरी और उस से कहा, “इफ़्फ़तह!” (इस का
मतलब है “खुल जा!”)
35 फ़ौरन आदमी के कान खुल गए, ज़बान का बंधन
टूट गया और वह ठीक ठीक बोलने लगा। 36 ईसा ने
हाज़िरीन को हुक्म दिया कि वह किसी को यह बात
न बताएँ। लेकिन जितना वह मना करता था उतना
ही लोग इस की ख़बर फैलाते थे। 37 वह निहायत ही
हैरान हुए और कहने लगे, “इस ने सब कुछ अच्छा
किया है, यह बहरों को सुनने की ताक़त देता है और
गूँगों को बोलने की।”

ईसा 4000 अफ़राद को खाना खिलाता है

8 1 उन दिनों में एक और मर्तबा ऐसा हुआ कि
बहुत से लोग जमा हुए जिन के पास खाने का
बन्द-ओ-बस्त नहीं था। चुनाँचे ईसा ने अपने शागिर्दों
को बुला कर उन से कहा, 2 “मुझे इन लोगों पर तरस
आता है। इन्हें मेरे साथ ठहरे तीन दिन हो चुके हैं
और इन के पास खाने की कोई चीज़ नहीं है। 3 लेकिन
अगर मैं इन्हें रुख़्सत कर दूँ और वह इस भूकी हालत
में अपने अपने घर चले जाएँ तो वह रास्ते में थक कर
चूर हो जाएंगे। और इन में से कई दूरदराज़ से आए
हैं।”
4 उस के शागिर्दों ने जवाब दिया, “इस वीरान
इलाक़े में कहाँ से इतना खाना मिल सकेगा कि यह
खा कर सेर हो जाएँ?”
5 ईसा ने पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?”
उन्हों ने जवाब दिया, “सात।”
6 ईसा ने हुजूम को ज़मीन पर बैठने को कहा।
फिर सात रोटियों को ले कर उस ने शुक्रगुज़ारी की
दुआ की और उन्हें तोड़ तोड़ कर अपने शागिर्दों को
तक़्सीम करने के लिए दे दिया। 7 उन के पास दो चार
छोटी मछलियाँ भी थीं। ईसा ने उन पर भी शुक्रगुज़ारी
की दुआ की और शागिर्दों को उन्हें बाँटने को कहा।
8 लोगों ने जी भर कर खाया। बाद में जब खाने के बचे
हुए टुकड़े जमा किए गए तो सात बड़े टोकरे भर गए।
9 तक़रीबन 4,000 आदमी हाज़िर थे। खाने के बाद
ईसा ने उन्हें रुख़्सत कर दिया 10 और फ़ौरन कश्ती
पर सवार हो कर अपने शागिर्दों के साथ दल्मनूता के
इलाक़े में पहुँच गया।

फ़रीसी इलाही निशान तलब करते हैं

11 इस पर फ़रीसी निकल कर ईसा के पास आए
और उस से बह्स करने लगे। उसे आज़माने के लिए
उन्हों ने मुतालबा किया कि वह उन्हें आसमान की
तरफ़ से कोई इलाही निशान दिखाए ताकि उस का
इख़्तियार साबित हो जाए। 12 लेकिन उस ने ठंडी
आह भर कर कहा, “यह नस्ल क्यूँ इलाही निशान
का मुतालबा करती है? मैं तुम को सच बताता हूँ कि
इसे कोई निशान नहीं दिया जाएगा।”
13 और उन्हें छोड़ कर वह दुबारा कश्ती में बैठ
गया और झील को पार करने लगा।

फ़रीसियों और हेरोदेस का ख़मीर

14 लेकिन शागिर्द अपने साथ खाना लाना भूल गए
थे। कश्ती में उन के पास सिर्फ़ एक रोटी थी। 15 ईसा

ने उन्हें हिदायत की, “ख़बरदार, फ़रीसियों और
हेरोदेस के ख़मीर से होश्यार रहना।”
16 शागिर्द आपस में बह्स करने लगे, “वह इस लिए
कह रहे होंगे कि हमारे पास रोटी नहीं है।”
17 ईसा को मालूम हुआ कि वह क्या सोच रहे हैं।
उस ने कहा, “तुम आपस में क्यूँ बह्स कर रहे हो कि
हमारे पास रोटी नहीं है? क्या तुम अब तक न जानते,
न समझते हो? क्या तुम्हारे दिल इतने बेहिस्स हो गए
हैं? 18 तुम्हारी आँखें तो हैं, क्या तुम देख नहीं सकते?
तुम्हारे कान तो हैं, क्या तुम सुन नहीं सकते? और
क्या तुम्हें याद नहीं 19 जब मैं ने 5,000 आदमियों
को पाँच रोटियों से सेर कर दिया तो तुम ने बचे हुए
टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे?”
उन्हों ने जवाब दिया, “बारह”।
20 “और जब मैं ने 4,000 आदमियों को सात
रोटियों से सेर कर दिया तो तुम ने बचे हुए टुकड़ों
के कितने टोकरे उठाए थे?”
उन्हों ने जवाब दिया, “सात।” 21 उस ने पूछा,
“क्या तुम अभी तक नहीं समझते?”

बैत-सैदा में अंधे की शिफ़ा

22 वह बैत-सैदा पहुँचे तो लोग ईसा के पास एक
अंधे आदमी को लाए। उन्हों ने इल्तिमास की कि
वह उसे छुए। 23 ईसा अंधे का हाथ पकड़ कर उसे
गाँव से बाहर ले गया। वहाँ उस ने उस की आँखों
पर थूक कर अपने हाथ उस पर रख दिए और पूछा,
“क्या तू कुछ देख सकता है?”
24 आदमी ने नज़र उठा कर कहा, “हाँ, मैं लोगों को
देख सकता हूँ। वह फिरते हुए दरख़्तों की मानिन्द
दिखाई दे रहे हैं।”
25 ईसा ने दुबारा अपने हाथ उस की आँखों पर रखे।
इस पर आदमी की आँखें पूरे तौर पर खुल गईं, उस
की नज़र बहाल हो गई और वह सब कुछ साफ़ साफ़
देख सकता था। 26 ईसा ने उसे रुख़्सत करके कहा,
“इस गाँव में वापस न जाना बल्कि सीधा अपने घर
चला जा।”

पतरस का इक़्रार

27 फिर ईसा वहाँ से निकल कर अपने शागिर्दों
के साथ क़ैसरिया-फ़िलिप्पी के क़रीब के दीहातों में
गया। चलते चलते उस ने उन से पूछा, “मैं लोगों के
नज़्दीक कौन हूँ?”
28 उन्हों ने जवाब दिया, “कुछ कहते हैं यहया
बपतिस्मा देने वाला, कुछ यह कि आप इल्यास नबी
हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि नबियों में से एक।”
29 उस ने पूछा, “लेकिन तुम क्या कहते हो? तुम्हारे
नज़्दीक मैं कौन हूँ?”
पतरस ने जवाब दिया, “आप मसीह हैं।”
30 यह सुन कर ईसा ने उन्हें किसी को भी यह बात
बताने से मना किया।

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

31 फिर ईसा उन्हें तालीम देने लगा, “लाज़िम है कि
इब्न-ए-आदम बहुत दुख उठा कर बुज़ुर्गों, राहनुमा
इमामों और शरीअत के उलमा से रद्द किया जाए। उसे
क़त्ल भी किया जाएगा, लेकिन वह तीसरे दिन जी
उठेगा।” 32 उस ने उन्हें यह बात साफ़ साफ़ बताई।
इस पर पतरस उसे एक तरफ़ ले जा कर समझाने
लगा। 33 ईसा मुड़ कर शागिर्दों की तरफ़ देखने लगा।
उस ने पतरस को डाँटा, “शैतान, मेरे सामने से हट
जा! तू अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि इन्सान
की।”
34 फिर उस ने शागिर्दों के इलावा हुजूम को भी
अपने पास बुलाया। उस ने कहा, “जो मेरे पीछे
आना चाहे वह अपने आप का इनकार करे और
अपनी सलीब उठा कर मेरे पीछे हो ले। 35 क्यूँकि
जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो
देगा। लेकिन जो मेरी और अल्लाह की ख़ुशख़बरी की
ख़ातिर अपनी जान खो दे वही उसे बचाएगा। 36 क्या
फ़ाइदा है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो
जाए, लेकिन वह अपनी जान से महरूम हो जाए?
37 इन्सान अपनी जान के बदले क्या दे सकता है?

38 जो भी इस ज़िनाकार और गुनाहआलूदा नस्ल के
सामने मेरे और मेरी बातों के सबब से शरमाए उस
से इब्न-ए-आदम भी उस वक़्त शरमाएगा जब वह
अपने बाप के जलाल में मुक़द्दस फ़रिश्तों के साथ
आएगा।"

9 1 ईसा ने उन्हें यह भी बताया, "मैं तुम को सच
बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने
से पहले ही अल्लाह की बादशाही को क़ुदरत के साथ
आते हुए देखेंगे।"

पहाड़ पर ईसा की सूरत बदल जाती है

2 छः दिन के बाद ईसा सिर्फ़ पतरस, याक़ूब और
यूहन्ना को अपने साथ ले कर ऊँचे पहाड़ पर चढ़
गया। वहाँ उस की शक्ल-ओ-सूरत उन के सामने
बदल गई। 3 उस के कपड़े चमकने लगे और निहायत
सफ़ेद हो गए। दुनिया में कोई भी धोबी कपड़े इतने
सफ़ेद नहीं कर सकता। 4 फिर इल्यास और मूसा
ज़ाहिर हुए और ईसा से बात करने लगे। 5 पतरस बोल
उठा, "उस्ताद, कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ
हैं। आएँ, हम तीन झोंपड़ियाँ बनाएँ, एक आप के
लिए, एक मूसा के लिए और एक इल्यास के लिए।"
6 उस ने यह इस लिए कहा कि तीनों शागिर्द सहमे
हुए थे और वह नहीं जानता था कि क्या कहे।

7 इस पर एक बादल आ कर उन पर छा गया और
बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी, "यह मेरा प्यारा
फ़र्ज़न्द है। इस की सुनो।" 8 अचानक मूसा और
इल्यास ग़ाइब हो गए। शागिर्दों ने चारों तरफ़ देखा,
लेकिन सिर्फ़ ईसा नज़र आया।

9 वह पहाड़ से उतरने लगे तो ईसा ने उन्हें हुक्म
दिया, "जो कुछ तुम ने देखा है उसे उस वक़्त तक
किसी को न बताना जब तक कि इब्न-ए-आदम मुर्दों
में से जी न उठे।"

10 चुनाँचे उन्हों ने यह बात अपने तक महदूद रखी।
लेकिन वह कई बार आपस में बहस करने लगे कि
मुर्दों में से जी उठने से क्या मुराद हो सकती है। 11 फिर
उन्हों ने उस से पूछा, "शरीअत के उलमा क्यूँ कहते
हैं कि मसीह की आमद से पहले इल्यास का आना
ज़रूरी है?"

12 ईसा ने जवाब दिया, "इल्यास तो ज़रूर पहले
सब कुछ बहाल करने के लिए आएगा। लेकिन
कलाम-ए-मुक़द्दस में इब्न-ए-आदम के बारे में यह
क्यूँ लिखा है कि उसे बहुत दुख उठाना और हक़ीर
समझा जाना है? 13 लेकिन मैं तुम को बताता हूँ,
इल्यास तो आ चुका है और उन्हों ने उस के साथ जो
चाहा किया। यह भी कलाम-ए-मुक़द्दस के मुताबिक़
ही हुआ है।"

ईसा लड़के में से बदरुह निकालता है

14 जब वह बाक़ी शागिर्दों के पास वापस पहुँचे तो
उन्हों ने देखा कि उन के गिर्द एक बड़ा हुजूम जमा है
और शरीअत के कुछ उलमा उन के साथ बहस कर
रहे हैं। 15 ईसा को देखते ही लोगों ने बड़ी बेचैनी से
उस की तरफ़ दौड़ कर उसे सलाम किया। 16 उस ने
शागिर्दों से सवाल किया, "तुम उन के साथ किस के
बारे में बहस कर रहे हो?"

17 हुजूम में से एक आदमी ने जवाब दिया, "उस्ताद,
मैं अपने बेटे को आप के पास लाया था। वह ऐसी
बदरुह के क़ब्ज़े में है जो उसे बोलने नहीं देती।
18 और जब भी वह उस पर ग़ालिब आती है वह उसे
ज़मीन पर पटक देती है। बेटे के मुँह से झाग निकलने
लगता और वह दाँत पीसने लगता है। फिर उस का
जिस्म अकड़ जाता है। मैं ने आप के शागिर्दों से कहा
तो था कि वह बदरुह को निकाल दें, लेकिन वह न
निकाल सके।"

19 ईसा ने उन से कहा, "ईमान से ख़ाली नस्ल! मैं
कब तक तुम्हारे साथ रहूँ, कब तक तुम्हें बर्दाश्त
करूँ? लड़के को मेरे पास ले आओ।" 20 वह उसे
ईसा के पास ले आए।

ईसा को देखते ही बदरुह लड़के को झंझोड़ने लगी।
वह ज़मीन पर गिर गया और इधर उधर लुढ़कते हुए
मुँह से झाग निकालने लगा। 21 ईसा ने बाप से पूछा,
"इस के साथ कब से ऐसा हो रहा है?"

उस ने जवाब दिया, “बचपन से। 22 बहुत दफ़ा उस
ने इसे हलाक करने की ख़ातिर आग या पानी में
गिराया है। अगर आप कुछ कर सकते हैं तो तरस
खा कर हमारी मदद करें।”
23 ईसा ने पूछा, “क्या मतलब, ‘अगर आप कुछ
कर सकते हैं’? जो ईमान रखता है उस के लिए सब
कुछ मुमकिन है।”
24 लड़के का बाप फ़ौरन चिल्ला उठा, “मैं ईमान
रखता हूँ। मेरी बेएतिक़ादी का इलाज करें।”
25 ईसा ने देखा कि बहुत से लोग दौड़ दौड़ कर
देखने आ रहे हैं, इस लिए उस ने नापाक रूह को
डाँटा, “ऐ गूँगी और बहरी बदरुह, मैं तुझे हुक्म देता
हूँ कि इस में से निकल जा। कभी भी इस में दुबारा
दाख़िल न होना!”
26 इस पर बदरुह चीख़ उठी और लड़के को शिद्दत
से झंझोड़ कर निकल गई। लड़का लाश की तरह
ज़मीन पर पड़ा रहा, इस लिए सब ने कहा, “वह मर
गया है।” 27 लेकिन ईसा ने उस का हाथ पकड़ कर
उठने में उस की मदद की और वह खड़ा हो गया।
28 बाद में जब ईसा किसी घर में जा कर अपने
शागिर्दों के साथ अकेला था तो उन्हों ने उस से पूछा,
“हम बदरुह को क्यूँ न निकाल सके?”
29 उस ने जवाब दिया, “इस क़िस्म की बदरुह
सिर्फ़ दुआ से निकाली जा सकती है।”

ईसा दूसरी दफ़ा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

30 वहाँ से निकल कर वह गलील में से गुज़रे। ईसा
नहीं चाहता था कि किसी को पता चले कि वह
कहाँ है, 31 क्यूँकि वह अपने शागिर्दों को तालीम
दे रहा था। उस ने उन से कहा, “इब्न-ए-आदम को
आदमियों के हवाले कर दिया जाएगा। वह उसे क़त्ल
करेंगे, लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”
32 लेकिन शागिर्द इस का मतलब न समझे और वह
ईसा से इस के बारे में पूछने से डरते भी थे।

कौन सब से बड़ा है?

33 चलते चलते वह कफ़र्नहूम पहुँचे। जब वह
किसी घर में थे तो ईसा ने शागिर्दों से सवाल किया,
“रास्ते में तुम किस बात पर बह्स कर रहे थे?”
34 लेकिन वह ख़ामोश रहे, क्यूँकि वह रास्ते में
इस पर बह्स कर रहे थे कि हम में से बड़ा कौन
है? 35 ईसा बैठ गया और बारह शागिर्दों को बुला
कर कहा, “जो अव्वल होना चाहता है वह सब से
आख़िर में आए और सब का ख़ादिम हो।” 36 फिर
उस ने एक छोटे बच्चे को ले कर उन के दरमियान
खड़ा किया। उसे गले लगा कर उस ने उन से कहा,
37 “जो मेरे नाम में इन बच्चों में से किसी को क़बूल
करता है वह मुझे ही क़बूल करता है। और जो मुझे
क़बूल करता है वह मुझे नहीं बल्कि उसे क़बूल
करता है जिस ने मुझे भेजा है।”

जो हमारे ख़िलाफ़ नहीं वह हमारे हक़ में है

38 यूहन्ना बोल उठा, “उस्ताद, हम ने एक शख़्स को
देखा जो आप का नाम ले कर बदरुहें निकाल रहा
था। हम ने उसे मना किया, क्यूँकि वह हमारी पैरवी
नहीं करता।”
39 लेकिन ईसा ने कहा, “उसे मना न करना। जो
भी मेरे नाम में मोजिज़ा करे वह अगले लम्हे मेरे बारे
में बुरी बातें नहीं कह सकेगा। 40 क्यूँकि जो हमारे
ख़िलाफ़ नहीं वह हमारे हक़ में है। 41 मैं तुम को सच
बताता हूँ, जो भी तुम्हें इस वजह से पानी का गलास
पिलाए कि तुम मसीह के पैरोकार हो उसे ज़रूर अज्र
मिलेगा।

आज़माइशें

42 और जो कोई मुझ पर ईमान रखने वाले इन छोटों
में से किसी को गुनाह करने पर उकसाए उस के
लिए बेहतर है कि उस के गले में बड़ी चक्की का पाट
बांध कर उसे समुन्दर में फैंक दिया जाए। 43–44 अगर
तेरा हाथ तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काट

डालना। इस से पहले कि तू दो हाथों समेत जहन्नुम
की कभी न बुझने वाली आग में चला जाए [यानी
वहाँ जहाँ लोगों को खाने वाले कीड़े कभी नहीं मरते
और आग कभी नहीं बुझती] बेहतर यह है कि तू एक
हाथ से महरूम हो कर अबदी ज़िन्दगी में दाख़िल हो।
45–46 अगर तेरा पाँओ तुझे गुनाह करने पर उकसाए
तो उसे काट डालना। इस से पहले कि तुझे दो पाँओ
समेत जहन्नुम में फैंका जाए [जहाँ लोगों को खाने
वाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं
बुझती] बेहतर यह है कि तू एक पाँओ से महरूम
हो कर अबदी ज़िन्दगी में दाख़िल हो। 47–48 और
अगर तेरी आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे
निकाल देना। इस से पहले कि तुझे दो आँखों समेत
जहन्नुम में फैंका जाए जहाँ लोगों को खाने वाले कीड़े
कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती बेहतर
यह है कि तू एक आँख से महरूम हो कर अल्लाह की
बादशाही में दाख़िल हो।

49 क्यूँकि हर एक को आग से नमकीन किया
जाएगा [और हर एक क़ुर्बानी नमक से नमकीन की
जाएगी]।

50 नमक अच्छी चीज़ है। लेकिन अगर उस का
ज़ाइक़ा जाता रहे तो उसे क्यूँकर दुबारा नमकीन
किया जा सकता है? अपने दरमियान नमक की
ख़ूबियाँ बरक़रार रखो और सुलह-सलामती से एक
दूसरे के साथ ज़िन्दगी गुज़ारो।"

तलाक़ के बारे में तालीम

10 1 फिर ईसा उस जगह को छोड़ कर
यहूदिया के इलाक़े में और दरया-ए-यर्दन
के पार चला गया। वहाँ भी हुजूम जमा हो गया। उस
ने उन्हें मामूल के मुताबिक़ तालीम दी।

2 कुछ फ़रीसी आए और उसे फंसाने की ग़रज़ से
सवाल किया, "क्या जाइज़ है कि मर्द अपनी बीवी
को तलाक़ दे?"

3 ईसा ने उन से पूछा, "मूसा ने शरीअत में तुम को
क्या हिदायत की है?"

4 उन्हों ने कहा, "उस ने इजाज़त दी है कि आदमी
तलाक़नामा लिख कर बीवी को रुख़्सत कर दे।"

5 ईसा ने जवाब दिया, "मूसा ने तुम्हारी सख़्तदिली
की वजह से तुम्हारे लिए यह हुक्म लिखा था।
6 लेकिन इब्तिदा में ऐसा नहीं था। दुनिया की
तख़्लीक़ के वक़्त अल्लाह ने उन्हें मर्द और औरत
बनाया। 7 'इस लिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़
कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है। 8 वह
दोनों एक हो जाते हैं।' यूँ वह कलाम-ए-मुक़द्दस के
मुताबिक़ दो नहीं रहते बल्कि एक हो जाते हैं। 9 तो
जिसे अल्लाह ने ख़ुद जोड़ा है उसे इन्सान जुदा न करे।"

10 किसी घर में आ कर शागिर्दों ने यह बात दुबारा
छेड़ कर ईसा से मज़ीद दरयाफ़्त किया। 11 उस ने
उन्हें बताया, "जो अपनी बीवी को तलाक़ दे कर
किसी और से शादी करे वह उस के साथ ज़िना करता
है। 12 और जो औरत अपने ख़ावन्द को तलाक़ दे कर
किसी और से शादी करे वह भी ज़िना करती है।"

ईसा छोटे बच्चों को बरकत देता है

13 एक दिन लोग अपने छोटे बच्चों को ईसा के पास
लाए ताकि वह उन्हें छुए। लेकिन शागिर्दों ने उन को
मलामत की। 14 यह देख कर ईसा नाराज़ हुआ। उस
ने उन से कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो और
उन्हें न रोको, क्यूँकि अल्लाह की बादशाही इन जैसे
लोगों को हासिल है। 15 मैं तुम को सच बताता हूँ,
जो अल्लाह की बादशाही को बच्चे की तरह क़बूल न
करे वह उस में दाख़िल नहीं होगा।" 16 यह कह कर
उस ने उन्हें गले लगाया और अपने हाथ उन पर रख
कर उन्हें बरकत दी।

अमीर मुश्किल से बादशाही में दाख़िल हो सकते हैं

17 जब ईसा रवाना होने लगा तो एक आदमी दौड़
कर उस के पास आया और उस के सामने घुटने टेक
कर पूछा, "नेक उस्ताद, मैं क्या करूँ ताकि अबदी
ज़िन्दगी मीरास में पाऊँ?"

18 ईसा ने पूछा, “तू मुझे नेक क्यूँ कहता है? कोई
नेक नहीं सिवाए एक के और वह है अल्लाह। 19 तू
शरीअत के अह्काम से तो वाक़िफ़ है। क़त्ल न
करना, ज़िना न करना, चोरी न करना, झूटी गवाही
न देना, धोका न देना, अपने बाप और अपनी माँ की
इज़्ज़त करना।”
20 आदमी ने जवाब दिया, “उस्ताद, मैं ने जवानी
से आज तक इन तमाम अह्काम की पैरवी की है।”
21 ईसा ने ग़ौर से उस की तरफ़ देखा। उस के दिल
में उस के लिए प्यार उभर आया। वह बोला, “एक
काम रह गया है। जा, अपनी पूरी जायदाद फ़रोख़्त
करके पैसे ग़रीबों में तक़्सीम कर दे। फिर तेरे लिए
आसमान पर ख़ज़ाना जमा हो जाएगा। इस के बाद
आ कर मेरे पीछे हो ले।” 22 यह सुन कर आदमी का
मुँह लटक गया और वह मायूस हो कर चला गया,
क्यूँकि वह निहायत दौलतमन्द था।
23 ईसा ने अपने इर्दगिर्द देख कर शागिर्दों से कहा,
“दौलतमन्दों के लिए अल्लाह की बादशाही में दाख़िल
होना कितना मुश्किल है!”
24 शागिर्द उस के यह अल्फ़ाज़ सुन कर हैरान
हुए। लेकिन ईसा ने दुबारा कहा, “बच्चो! अल्लाह
की बादशाही में दाख़िल होना कितना मुश्किल है।
25 अमीर के अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होने की
निस्बत ज़्यादा आसान यह है कि ऊँट सूई के नाके में
से गुज़र जाए।”
26 इस पर शागिर्द मज़ीद हैरतज़दा हुए और एक
दूसरे से कहने लगे, “फिर किस को नजात मिल
सकती है?”
27 ईसा ने ग़ौर से उन की तरफ़ देख कर जवाब
दिया, “यह इन्सान के लिए तो नामुमकिन है, लेकिन
अल्लाह के लिए नहीं। उस के लिए सब कुछ मुमकिन
है।”
28 फिर पतरस बोल उठा, “हम तो अपना सब कुछ
छोड़ कर आप के पीछे हो लिए हैं।”
29 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुम को सच बताता हूँ,
जिस ने भी मेरी और अल्लाह की ख़ुशख़बरी की ख़ातिर
अपने घर, भाइयों, बहनों, माँ, बाप, बच्चों या खेतों
को छोड़ दिया है 30 उसे इस ज़माने में ईज़ारसानी के
साथ साथ सौ गुना ज़्यादा घर, भाई, बहनें, माएँ, बच्चे
और खेत मिल जाएंगे। और आने वाले ज़माने में उसे
अबदी ज़िन्दगी मिलेगी। 31 लेकिन बहुत से लोग जो
अब अव्वल हैं उस वक़्त आख़िर होंगे और जो अब
आख़िर हैं वह अव्वल होंगे।”

ईसा तीसरी दफ़ा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

32 अब वह यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे थे और ईसा
उन के आगे आगे चल रहा था। शागिर्द हैरतज़दा थे
जबकि उन के पीछे चलने वाले लोग सहमे हुए थे।
एक और दफ़ा बारह शागिर्दों को एक तरफ़ ले जा कर
ईसा उन्हें वह कुछ बताने लगा जो उस के साथ होने
को था। 33 उस ने कहा, “हम यरूशलम की तरफ़ बढ़
रहे हैं। वहाँ इब्न-ए-आदम को राहनुमा इमामों और
शरीअत के उलमा के हवाले कर दिया जाएगा। वह
उस पर सज़ा-ए-मौत का फ़त्वा दे कर उसे ग़ैरयहूदियों
के हवाले कर देंगे, 34 जो उस का मज़ाक़ उड़ाएँगे,
उस पर थूकेंगे, उस को कोड़े मारेंगे और उसे क़त्ल
करेंगे। लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”

याक़ूब और यूहन्ना की गुज़ारिश

35 फिर ज़ब्दी के बेटे याक़ूब और यूहन्ना उस के
पास आए। वह कहने लगे, “उस्ताद, आप से एक
गुज़ारिश है।”
36 उस ने पूछा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे
लिए करूँ?”
37 उन्हों ने जवाब दिया, “जब आप अपने जलाली
तख़्त पर बैठेंगे तो हम में से एक को अपने दाएँ हाथ
बैठने दें और दूसरे को बाएँ हाथ।”
38 ईसा ने कहा, “तुम को नहीं मालूम कि क्या माँग
रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो मैं पीने
को हूँ या वह बपतिस्मा ले सकते हो जो मैं लेने को
हूँ?”

39 उन्हों ने जवाब दिया, “जी, हम कर सकते हैं।”
फिर ईसा ने उन से कहा, “तुम ज़रूर वह प्याला
पियोगे जो मैं पीने को हूँ और वह बपतिस्मा लोगे
जो मैं लेने को हूँ। 40 लेकिन यह फ़ैसला करना मेरा
काम नहीं कि कौन मेरे दाएँ हाथ बैठेगा और कौन
बाएँ हाथ। अल्लाह ने यह मक़ाम सिर्फ़ उन ही के लिए
तय्यार किया है जिन को उस ने ख़ुद मुक़र्रर किया
है।”

41 जब बाक़ी दस शागिर्दों ने यह सुना तो उन्हें
याक़ूब और यूहन्ना पर ग़ुस्सा आया। 42 इस पर ईसा
ने उन सब को बुला कर कहा, “तुम जानते हो कि
क़ौमों के हुक्मरान अपनी रआया पर रोब डालते हैं,
और उन के बड़े अफ़सर उन पर अपने इख़तियार का
ग़लत इस्तेमाल करते हैं। 43 लेकिन तुम्हारे दरमियान
ऐसा नहीं है। जो तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा
ख़ादिम बने 44 और जो तुम में अव्वल होना चाहे वह
सब का ग़ुलाम बने। 45 क्यूँकि इब्न-ए-आदम भी इस
लिए नहीं आया कि ख़िदमत ले बल्कि इस लिए कि
ख़िदमत करे और अपनी जान फ़िद्या के तौर पर दे
कर बहुतों को छुड़ाए।”

अंधे बरतिमाई की शिफ़ा

46 वह यरीहू पहुँच गए। उस में से गुज़र कर ईसा
शागिर्दों और एक बड़े हुजूम के साथ बाहर निकलने
लगा। वहाँ एक अंधा भीक माँगने वाला रास्ते के
किनारे बैठा था। उस का नाम बरतिमाई (तिमाई का
बेटा) था। 47 जब उस ने सुना कि ईसा नासरी क़रीब
ही है तो वह चिल्लाने लगा, “ईसा इब्न-ए-दाऊद, मुझ
पर रहम करें!”

48 बहुत से लोगों ने उसे डाँट कर कहा, “ख़ामोश!”
लेकिन वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से पुकारता रहा,
“इब्न-ए-दाऊद, मुझ पर रहम करें!”

49 ईसा रुक कर बोला, “उसे बुलाओ।”

चुनाँचे उन्हों ने उसे बुला कर कहा, “हौसला रख।
उठ, वह तुझे बुला रहा है।”

50 बरतिमाई ने अपनी चादर ज़मीन पर फैंक दी और
उछल कर ईसा के पास आया।

51 ईसा ने पूछा, “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए
करूँ?”

उस ने जवाब दिया, “उस्ताद, यह कि मैं देख
सकूँ।”

52 ईसा ने कहा, “जा, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया
है।”

जूँ ही ईसा ने यह कहा अंधे की आँखें बहाल हो
गईं और वह ईसा के पीछे चलने लगा।

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तिक़्बाल

11 1 वह यरूशलम के क़रीब बैत-फ़गे और
बैत-अनियाह पहुँचने लगे। यह गाँव ज़ैतून
के पहाड़ पर वाक़े थे। ईसा ने अपने शागिर्दों में से दो
को भेजा 2 और कहा, “सामने वाले गाँव में जाओ।
वहाँ तुम एक जवान गधा देखोगे। वह बंधा हुआ
होगा और अब तक कोई भी उस पर सवार नहीं हुआ
है। उसे खोल कर यहाँ ले आओ। 3 अगर कोई पूछे
कि यह क्या कर रहे हो तो उसे बता देना, ‘ख़ुदावन्द
को इस की ज़रूरत है। वह जल्द ही इसे वापस भेज
देंगे’।”

4 दोनों शागिर्द वहाँ गए तो एक जवान गधा देखा
जो बाहर गली में किसी दरवाज़े के साथ बंधा हुआ
था। जब वह उस की रस्सी खोलने लगे 5 तो वहाँ
खड़े कुछ लोगों ने पूछा, “तुम यह क्या कर रहे हो?
जवान गधे को क्यूँ खोल रहे हो?”

6 उन्हों ने जवाब में वह कुछ बता दिया जो ईसा ने
उन्हें कहा था। इस पर लोगों ने उन्हें खोलने दिया।
7 वह जवान गधे को ईसा के पास ले आए और अपने
कपड़े उस पर रख दिए। फिर ईसा उस पर सवार
हुआ। 8 जब वह चल पड़ा तो बहुत से लोगों ने उस
के आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए। बाज़
ने हरी शाख़ें भी उस के आगे बिछा दीं जो उन्हों ने
खेतों के दरख़्तों से काट ली थीं। 9 लोग ईसा के आगे

और पीछे चल रहे थे और चिल्ला चिल्ला कर नारे लगा रहे थे,

"होशाना! [t]

मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है। 10 मुबारक है हमारे बाप दाऊद की बादशाही जो आ रही है।

आसमान की बुलन्दियों पर होशाना।" [u]

11 यूँ ईसा यरूशलम में दाख़िल हुआ। वह बैत-उल-मुक़द्दस में गया और अपने इर्दगिर्द नज़र दौड़ा कर सब कुछ देखने के बाद चला गया। चूँकि शाम का पिछला वक़्त था इस लिए वह बारह शागिर्दों समेत शहर से निकल कर बैत-अनियाह वापस गया।

अन्जीर के दरख़्त पर लानत

12 अगले दिन जब वह बैत-अनियाह से निकल रहे थे तो ईसा को भूक लगी। 13 उस ने कुछ फ़ासिले पर अन्जीर का एक दरख़्त देखा जिस पर पत्ते थे। इस लिए वह यह देखने के लिए उस के पास गया कि आया कोई फल लगा है या नहीं। लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा तो देखा कि पत्ते ही पत्ते हैं। वजह यह थी कि अन्जीर का मौसम नहीं था। 14 इस पर ईसा ने दरख़्त से कहा, "अब से हमेशा तक तुझ से फल खाया न जा सके!" उस के शागिर्दों ने उस की यह बात सुन ली।

ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में जाता है

15 वह यरूशलम पहुँच गए। और ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में जा कर उन्हें निकालने लगा जो वहाँ क़ुर्बानियों के लिए दरकार चीज़ों की ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त कर रहे थे। उस ने सिक्कों का तबादला करने वालों की मेज़ें और कबूतर बेचने वालों की कुर्सियाँ उलट दीं 16 और जो तिजारती माल ले कर बैत-उल-मुक़द्दस के सहनों में से गुज़र रहे थे उन्हें रोक लिया। 17 तालीम दे कर उस ने कहा, "क्या कलाम-ए-मुक़द्दस में नहीं लिखा है, 'मेरा घर तमाम क़ौमों के लिए दुआ का घर कहलाएगा'? लेकिन तुम ने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया है।"

18 राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा ने जब यह सुना तो उसे क़त्ल करने का मौक़ा ढूँडने लगे। क्यूँकि वह उस से डरते थे इस लिए कि पूरा हुजूम उस की तालीम से निहायत हैरान था।

19 जब शाम हुई तो ईसा और उस के शागिर्द शहर से निकल गए।

अन्जीर के दरख़्त से सबक़

20 अगले दिन वह सुब्ह-सवेरे अन्जीर के उस दरख़्त के पास से गुज़रे जिस पर ईसा ने लानत भेजी थी। जब उन्हों ने उस पर ग़ौर किया तो मालूम हुआ कि वह जड़ों तक सूख गया है। 21 तब पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने कल अन्जीर के दरख़्त से की थी। उस ने कहा, "उस्ताद, यह देखें! अन्जीर के जिस दरख़्त पर आप ने लानत भेजी थी वह सूख गया है।"

22 ईसा ने जवाब दिया, "अल्लाह पर ईमान रखो। 23 मैं तुम को सच बताता हूँ कि अगर कोई इस पहाड़ से कहे, 'उठ, अपने आप को समुन्दर में गिरा दे' तो यह हो जाएगा। शर्त सिर्फ़ यह है कि वह शक न करे बल्कि ईमान रखे कि जो कुछ उस ने कहा है वह उस के लिए हो जाएगा। 24 इस लिए मैं तुम को बताता हूँ, जब भी तुम दुआ करके कुछ माँगते हो तो ईमान रखो कि तुम को मिल गया है। फिर वह तुम्हें ज़रूर मिल जाएगा। 25 और जब तुम खड़े हो कर दुआ करते हो तो अगर तुम्हें किसी से शिकायत हो तो पहले उसे मुआफ़ करो ताकि आसमान पर तुम्हारा बाप भी तुम्हारे गुनाहों को मुआफ़ करे। 26 [और अगर तुम मुआफ़ न करो तो तुम्हारा आसमानी बाप तुम्हारे गुनाह भी मुआफ़ नहीं करेगा।]"

---

[t]होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इस में हम्द-ओ-सना का उन्सुर भी पाया जाता है।

[u]होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इस में हम्द-ओ-सना का उन्सुर भी पाया जाता है।

किस ने ईसा को इख़तियार दिया?

27 वह एक और दफ़ा यरूशलम पहुँच गए। और
जब ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में फिर रहा था तो राहनुमा
इमाम, शरीअत के उलमा और बुज़ुर्ग उस के पास
आए। 28 उन्हों ने पूछा, "आप यह सब कुछ किस
इख़तियार से कर रहे हैं? किस ने आप को यह करने
का इख़तियार दिया है?"
29 ईसा ने जवाब दिया, "मेरा भी तुम से एक सवाल
है। इस का जवाब दो तो फिर तुम को बता दूँगा
कि मैं यह किस इख़तियार से कर रहा हूँ। 30 मुझे
बताओ, क्या यहया का बपतिस्मा आसमानी था या
इन्सानी?"
31 वह आपस में बह्स करने लगे, "अगर हम कहें
'आसमानी' तो वह पूछेगा, 'तो फिर तुम उस पर
ईमान क्यूँ न लाए?' 32 लेकिन हम कैसे कह सकते
हैं कि वह इन्सानी था?" वजह यह थी कि वह आम
लोगों से डरते थे, क्यूँकि सब मानते थे कि यहया
वाक़ई नबी था। 33 चुनाँचे उन्हों ने जवाब दिया, "हम
नहीं जानते।"
ईसा ने कहा, "तो फिर मैं भी तुम को नहीं बताता
कि मैं यह सब कुछ किस इख़तियार से कर रहा हूँ।"

अंगूर के बाग़ के मुज़ारेओं की बग़ावत

12 1 फिर वह तम्सीलों में उन से बात करने
लगा। "किसी आदमी ने अंगूर का एक बाग़
लगाया। उस ने उस की चारदीवारी बनाई, अंगूरों
का रस निकालने के लिए एक गढ़े की खुदाई की
और पहरेदारों के लिए बुर्ज तामीर किया। फिर वह
उसे मुज़ारेओं के सपुर्द करके बैरून-ए-मुल्क चला
गया। 2 जब अंगूर पक गए तो उस ने अपने नौकर
को मुज़ारेओं के पास भेज दिया ताकि वह उन से
मालिक का हिस्सा वसूल करे। 3 लेकिन मुज़ारेओं ने
उसे पकड़ कर उस की पिटाई की और उसे ख़ाली
हाथ लौटा दिया। 4 फिर मालिक ने एक और नौकर
को भेज दिया। लेकिन उन्हों ने उस की भी बेइज़्ज़ती
करके उस का सर फोड़ दिया। 5 जब मालिक ने
तीसरे नौकर को भेजा तो उन्हों ने उसे मार डाला।
यूँ उस ने कई एक को भेजा। बाज़ को उन्हों ने मारा
पीटा, बाज़ को क़त्ल किया। 6 आख़िरकार सिर्फ़ एक
बाक़ी रह गया था। वह था उस का प्यारा बेटा। अब
उस ने उसे भेज कर कहा, 'आख़िर मेरे बेटे का तो
लिहाज़ करेंगे।' 7 लेकिन मुज़ारे एक दूसरे से कहने
लगे, 'यह ज़मीन का वारिस है। आओ हम इसे मार
डालें तो फिर इस की मीरास हमारी ही होगी।' 8 उन्हों
ने उसे पकड़ कर क़त्ल किया और बाग़ से बाहर फैंक
दिया।
9 अब बताओ, बाग़ का मालिक क्या करेगा? वह
जा कर मुज़ारेओं को हलाक करेगा और बाग़ को
दूसरों के सपुर्द कर देगा। 10 क्या तुम ने कलाम-ए-
मुक़द्दस का यह हवाला नहीं पढ़ा,

'जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने रद्द किया
वह कोने का बुन्यादी पत्थर बन गया।
11 यह रब ने किया
और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है'।"

12 इस पर दीनी राहनुमाओं ने ईसा को गिरिफ़्तार
करने की कोशिश की, क्यूँकि वह समझ गए थे कि
तम्सील में बयानशुदा मुज़ारे हम ही हैं। लेकिन वह
हुजूम से डरते थे, इस लिए वह उसे छोड़ कर चले
गए।

क्या टैक्स देना जाइज़ है?

13 बाद में उन्हों ने कुछ फ़रीसियों और हेरोदेस के
पैरोकारों को उस के पास भेज दिया ताकि वह उसे
कोई ऐसी बात करने पर उभारें जिस से उसे पकड़ा
जा सके। 14 वह उस के पास आ कर कहने लगे,
"उस्ताद, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और किसी
की पर्वा नहीं करते। आप जानिबदार नहीं होते बल्कि
दयानतदारी से अल्लाह की राह की तालीम देते हैं।
अब हमें बताएँ कि क्या रोमी शहन्शाह को टैक्स
देना जाइज़ है या नाजाइज़? क्या हम अदा करें या न
करें?"

15 लेकिन ईसा ने उन की रियाकारी जान कर उन
से कहा, “मुझे क्यूँ फंसाना चाहते हो? चाँदी का एक
रोमी सिक्का मेरे पास ले आओ।”
16 वह एक सिक्का उस के पास ले आए तो उस ने
पूछा, “किस की सूरत और नाम इस पर कन्दा है?”
उन्हों ने जवाब दिया, “शहन्शाह का।”
17 उस ने कहा, “तो जो शहन्शाह का है शहन्शाह
को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।” उस का
यह जवाब सुन कर उन्हों ने बड़ा ताज्जुब किया।

क्या हम जी उठेंगे?

18 फिर कुछ सदूक़ी ईसा के पास आए। सदूक़ी
नहीं मानते कि रोज़-ए-क़ियामत मुर्दे जी उठेंगे। उन्हों
ने ईसा से एक सवाल किया, 19 “उस्ताद, मूसा ने
हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी
बेऔलाद मर जाए और उस का भाई हो तो भाई का
फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के
लिए औलाद पैदा करे। 20 अब फ़र्ज़ करें कि सात
भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद फ़ौत
हुआ। 21 इस पर दूसरे ने उस से शादी की, लेकिन
वह भी बेऔलाद मर गया। फिर तीसरे भाई ने उस से
शादी की। 22 यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी
रहा। यके बाद दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने
के बाद मर गया। आख़िर में बेवा भी फ़ौत हो गई।
23 अब बताएँ कि क़ियामत के दिन वह किस की
बीवी होगी? क्यूँकि सात के सात भाइयों ने उस से
शादी की थी।”
24 ईसा ने जवाब दिया, “तुम इस लिए ग़लती पर हो
कि न तुम कलाम-ए-मुक़द्दस से वाक़िफ़ हो, न अल्लाह
की क़ुदरत से। 25 क्यूँकि जब मुर्दे जी उठेंगे तो न वह
शादी करेंगे न उन की शादी कराई जाएगी बल्कि वह
आसमान पर फ़रिश्तों की मानिन्द होंगे। 26 रही यह
बात कि मुर्दे जी उठेंगे। क्या तुम ने मूसा की किताब
में नहीं पढ़ा कि अल्लाह जलती हुई झाड़ी में से किस
तरह मूसा से हमकलाम हुआ? उस ने फ़रमाया, ‘मैं
इब्राहीम का ख़ुदा, इस्हाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का
ख़ुदा हूँ,’ हालाँकि उस वक़्त तीनों काफ़ी अर्से से मर
चुके थे। 27 इस का मतलब है कि यह हक़ीक़त में
ज़िन्दा हैं, क्यूँकि अल्लाह मुर्दों का नहीं, बल्कि ज़िन्दों
का ख़ुदा है। तुम से बड़ी ग़लती हुई है।”

अव्वल हुक्म

28 इतने में शरीअत का एक आलिम उन के पास
आया। उस ने उन्हें बह्स करते हुए सुना था और
जान लिया कि ईसा ने अच्छा जवाब दिया, इस लिए
उस ने पूछा, “तमाम अह्काम में से कौन सा हुक्म
सब से अहम है?”
29 ईसा ने जवाब दिया, “अव्वल हुक्म यह है : ‘सुन
ऐ उसराईल! रब हमारा ख़ुदा एक ही रब है। 30 रब
अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपने
पूरे ज़हन और अपनी पूरी ताक़त से प्यार करना।’
31 दूसरा हुक्म यह है : ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत
रखना जैसी तू अपने आप से रखता है।’ दीगर कोई
भी हुक्म इन दो अह्काम से अहम नहीं है।”
32 उस आलिम ने कहा, “शाबाश, उस्ताद! आप ने
सच कहा है कि अल्लाह सिर्फ़ एक ही है और उस
के सिवा कोई और नहीं है। 33 हमें उसे अपने पूरे
दिल, अपने पूरे ज़हन और अपनी पूरी ताक़त से प्यार
करना चाहिए और साथ साथ अपने पड़ोसी से वैसी
मुहब्बत रखनी चाहिए जैसी अपने आप से रखते हैं।
यह दो अह्काम भस्म होने वाली तमाम क़ुर्बानियों
और दीगर नज़रों से ज़्यादा अहमियत रखते हैं।”
34 जब ईसा ने उस का यह जवाब सुना तो उस से
कहा, “तू अल्लाह की बादशाही से दूर नहीं है।” इस
के बाद किसी ने भी उस से सवाल पूछने की जुरअत
न की।

मसीह के बारे में सवाल

35 जब ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा था
तो उस ने पूछा, “शरीअत के उलमा क्यूँ दावा करते
हैं कि मसीह दाऊद का फ़र्ज़न्द है? 36 क्यूँकि दाऊद
ने तो ख़ुद रूह-उल-क़ुद्स की मारिफ़त यह फ़रमाया,

‘रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँओ के नीचे न कर दूँ।’
37 दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो फिर
वह किस तरह दाऊद का फ़र्ज़न्द हो सकता है?”

शरीअत के उलमा से ख़बरदार रहना

एक बड़ा हुजूम मज़े से ईसा की बातें सुन रहा था।
38 उन्हें तालीम देते वक़्त उस ने कहा, “उलमा से
ख़बरदार रहो! क्यूँकि वह शानदार चोग़े पहन कर
इधर उधर फिरना पसन्द करते हैं। जब लोग बाज़ारों
में सलाम करके उन की इज़्ज़त करते हैं तो फिर वह
ख़ुश हो जाते हैं। 39 उन की बस एक ही ख़्वाहिश
होती है कि इबादतख़ानों और ज़ियाफ़तों में इज़्ज़त
की कुर्सियों पर बैठ जाएँ। 40 यह लोग बेवाओं के
घर हड़प कर जाते और साथ साथ दिखावे के लिए
लम्बी लम्बी दुआएँ माँगते हैं। ऐसे लोगों को निहायत
सख़्त सज़ा मिलेगी।”

बेवा का चन्दा

41 ईसा बैत-उल-मुक़द्दस के चन्दे के बक्स के
मुक़ाबिल बैठ गया और हुजूम को हदिए डालते हुए
देखने लगा। कई अमीर बड़ी बड़ी रकमें डाल रहे
थे। 42 फिर एक ग़रीब बेवा भी वहाँ से गुज़री जिस ने
उस में ताँबे के दो मामूली से सिक्के डाल दिए। 43 ईसा
ने शागिर्दों को अपने पास बुला कर कहा, “मैं तुम
को सच बताता हूँ कि इस ग़रीब बेवा ने तमाम लोगों
की निस्बत ज़्यादा डाला है। 44 क्यूँकि इन सब ने
अपनी दौलत की कस्रत से दे दिया जबकि उस ने
ज़रूरतमन्द होने के बावुजूद भी अपने गुज़ारे के सारे
पैसे दे दिए हैं।”

बैत-उल-मुक़द्दस पर आने वाली तबाही

13 1 उस दिन जब ईसा बैत-उल-मुक़द्दस से
निकल रहा था तो उस के शागिर्दों ने कहा,
“उस्ताद, देखें कितने शानदार पत्थर और इमारतें
हैं!”
2 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुम को यह बड़ी बड़ी
इमारतें नज़र आती हैं? पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा।
सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

मुसीबतों और ईज़ारसानी की पेशगोई

3 बाद में ईसा ज़ैतून के पहाड़ पर बैत-उल-मुक़द्दस
के मुक़ाबिल बैठ गया। पतरस, याक़ूब, यूहन्ना और
अन्द्रियास अकेले उस के पास आए। उन्हों ने कहा,
4 “हमें ज़रा बताएँ, यह कब होगा? क्या क्या नज़र
आएगा जिस से मालूम होगा कि यह अब पूरा होने
को है?”
5 ईसा ने जवाब दिया, “ख़बरदार रहो कि कोई तुम्हें
गुमराह न कर दे। 6 बहुत से लोग मेरा नाम ले कर
आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही मसीह हूँ।’ यूँ वह बहुतों को
गुमराह कर देंगे। 7 जब जंगों की ख़बरें और अफ़वाहें
तुम तक पहुँचेंगी तो मत घबराना। क्यूँकि लाज़िम है
कि यह सब कुछ पेश आए। तो भी अभी आख़िरत
नहीं होगी। 8 एक क़ौम दूसरी के ख़िलाफ़ उठ खड़ी
होगी और एक बादशाही दूसरी के ख़िलाफ़। जगह
जगह ज़ल्ज़ले आएँगे, काल पड़ेंगे। लेकिन यह सिर्फ़
दर्द-ए-ज़ह की इब्तिदा ही होगी।
9 तुम ख़ुद ख़बरदार रहो। तुम को मक़ामी अदालतों
के हवाले कर दिया जाएगा और लोग यहूदी
इबादतख़ानों में तुम्हें कोड़े लगवाएँगे। मेरी ख़ातिर
तुम्हें हुक्मरानों और बादशाहों के सामने पेश किया
जाएगा। यूँ तुम उन्हें मेरी गवाही दोगे। 10 लाज़िम है
कि आख़िरत से पहले अल्लाह की ख़ुशख़बरी तमाम
अक़्वाम को सुनाई जाए। 11 लेकिन जब लोग तुम
को गिरिफ़्तार करके अदालत में पेश करेंगे तो यह
सोचते सोचते परेशान न हो जाना कि मैं क्या कहूँ।
बस वही कुछ कहना जो अल्लाह तुम्हें उस वक़्त
बताएगा। क्यूँकि उस वक़्त तुम नहीं बल्कि रूह-उल-
क़ुद्स बोलने वाला होगा। 12 भाई अपने भाई को और
बाप अपने बच्चे को मौत के हवाले कर देगा। बच्चे

अपने वालिदैन के ख़िलाफ़ खड़े हो कर उन्हें क़त्ल
करवाएँगे। 13 सब तुम से नफ़रत करेंगे, इस लिए कि
तुम मेरे पैरोकार हो। लेकिन जो आख़िर तक क़ाइम
रहेगा उसे नजात मिलेगी।

बैत-उल-मुक़द्दस की बेहुरमती

14 एक दिन आएगा जब तुम वहाँ जहाँ उसे नहीं
होना चाहिए वह कुछ खड़ा देखोगे जो बेहुरमती और
तबाही का बाइस है।" (क़ारी इस पर ध्यान दे!) "उस
वक़्त यहूदिया के रहने वाले भाग कर पहाड़ी इलाक़े
में पनाह लें। 15 जो अपने घर की छत पर हो वह न
उतरे, न कुछ साथ ले जाने के लिए घर में दाख़िल हो
जाए। 16 जो खेत में हो वह अपनी चादर साथ ले जाने
के लिए वापस न जाए। 17 उन ख़वातीन पर अफ़सोस
जो उन दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध
पिलाती हों। 18 दुआ करो कि यह वाक़िआ सर्दियों
के मौसम में पेश न आए। 19 क्यूँकि उन दिनों में ऐसी
मुसीबत होगी कि दुनिया की तख़्लीक़ से आज तक
देखने में न आई होगी। इस क़िस्म की मुसीबत बाद
में भी कभी नहीं आएगी। 20 और अगर ख़ुदावन्द इस
मुसीबत का दौरानिया मुख़्तसर न करता तो कोई न
बचता। लेकिन उस ने अपने चुने हुओं की ख़ातिर
उस का दौरानिया मुख़्तसर कर दिया है।

21 उस वक़्त अगर कोई तुम को बताए, 'देखो,
मसीह यहाँ है,' या 'वह वहाँ है' तो उस की बात
न मानना। 22 क्यूँकि झूटे मसीह और झूटे नबी उठ
खड़े होंगे जो अजीब-ओ-ग़रीब निशान और मोजिज़े
दिखाएँगे ताकि अल्लाह के चुने हुए लोगों को ग़लत
रास्ते पर डाल दें - अगर यह मुमकिन होता। 23 इस
लिए ख़बरदार! मैं ने तुम को पहले ही इन सब बातों
से आगाह कर दिया है।

इब्न-ए-आदम की आमद

24 मुसीबत के उन दिनों के बाद सूरज तारीक
हो जाएगा और चाँद की रौशनी ख़त्म हो जाएगी।
25 सितारे आसमान पर से गिर पड़ेंगे और आसमान
की क़ुव्वतें हिलाई जाएँगी। 26 उस वक़्त लोग इब्न-
ए-आदम को बड़ी क़ुदरत और जलाल के साथ
बादलों में आते हुए देखेंगे। 27 और वह अपने
फ़रिश्तों को भेज देगा ताकि उस के चुने हुओं को
चारों तरफ़ से जमा करें, दुनिया के कोने कोने से
आसमान की इन्तिहा तक इकट्ठा करें।

अन्जीर के दरख़्त से सबक़

28 अन्जीर के दरख़्त से सबक़ सीखो। जूँ ही उस
की शाख़ें नर्म और लचकदार हो जाती हैं और उन से
कोंपलें फूट निकलती हैं तो तुम को मालूम हो जाता है
कि गर्मियों का मौसम क़रीब आ गया है। 29 इसी तरह
जब तुम यह वाक़िआत देखोगे तो जान लोगे कि इब्न-
ए-आदम की आमद क़रीब बल्कि दरवाज़े पर है।
30 मैं तुम को सच बताता हूँ, इस नस्ल के ख़त्म होने से
पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा। 31 आसमान-
ओ-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक
क़ाइम रहेंगी।

किसी को भी उस की आमद का वक़्त मालूम नहीं

32 लेकिन किसी को भी इल्म नहीं कि यह किस दिन
या कौन सी घड़ी रूनुमा होगा। आसमान के फ़रिश्तों
और फ़र्ज़न्द को भी इल्म नहीं बल्कि सिर्फ़ बाप को।
33 चुनाँचे ख़बरदार और चौकन्ने रहो! क्यूँकि तुम को
नहीं मालूम कि यह वक़्त कब आएगा। 34 इब्न-ए-
आदम की आमद उस आदमी से मुताबिक़त रखती है
जिसे किसी सफ़र पर जाना था। घर छोड़ते वक़्त उस
ने अपने नौकरों को इन्तिज़ाम चलाने का इख़तियार
दे कर हर एक को उस की अपनी ज़िम्मादारी सौंप
दी। दरबान को उस ने हुक्म दिया कि वह चौकस
रहे। 35 तुम भी इसी तरह चौकस रहो, क्यूँकि तुम
नहीं जानते कि घर का मालिक कब वापस आएगा,
शाम को, आधी रात को, मुर्ग़ के बाँग देते या पौ
फटते वक़्त। 36 ऐसा न हो कि वह अचानक आ कर
तुम को सोते पाए। 37 यह बात मैं न सिर्फ़ तुम को
बल्कि सब को बताता हूँ, चौकस रहो!"

ईसा के ख़िलाफ़ मन्सूबाबन्दियाँ

14 1 फ़सह और बेख़मीरी रोटी की ईद क़रीब
आ गई थी। सिर्फ़ दो दिन रह गए थे।
राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा ईसा को किसी
चालाकी से गिरिफ़्तार करके क़त्ल करने की तलाश
में थे। 2 उन्हों ने कहा, "लेकिन यह ईद के दौरान नहीं
होना चाहिए, ऐसा न हो कि अवाम में हलचल मच
जाए।"

ख़ातून ईसा पर ख़ुश्बू उंडेलती है

3 इतने में ईसा बैत-अनियाह आ कर एक आदमी
के घर में दाख़िल हुआ जो किसी वक़्त कोढ़ का
मरीज़ था। उस का नाम शमाऊन था। ईसा खाना
खाने के लिए बैठ गया तो एक औरत आई। उस
के पास ख़ालिस जटामासी के निहायत क़ीमती इत्र
का इत्रदान था। उस का सर तोड़ कर उस ने इत्र ईसा
के सर पर उंडेल दिया। 4 हाज़िरीन में से कुछ नाराज़
हुए। "इतना क़ीमती इत्र ज़ाए करने की क्या ज़रूरत
थी? 5 इस की क़ीमत कम अज़ कम चाँदी के 300
सिक्के थी। अगर इसे बेचा जाता तो इस के पैसे ग़रीबों
को दिए जा सकते थे।" ऐसी बातें करते हुए उन्हों ने
उसे झिड़का।

6 लेकिन ईसा ने कहा, "इसे छोड़ दो, तुम इसे क्यूँ
तंग कर रहे हो? इस ने तो मेरे लिए एक नेक काम
किया है। 7 ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, और
तुम जब भी चाहो उन की मदद कर सकोगे। लेकिन
मैं हमेशा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। 8 जो कुछ वह कर
सकती थी उस ने किया है। मुझ पर इत्र उंडेलने से
वह मुक़र्ररा वक़्त से पहले मेरे बदन को दफ़नाने के
लिए तय्यार कर चुकी है। 9 मैं तुम को सच बताता हूँ
कि तमाम दुनिया में जहाँ भी अल्लाह की ख़ुशख़बरी
का एलान किया जाएगा वहाँ लोग इस ख़ातून को
याद करके वह कुछ सुनाएँगे जो इस ने किया है।"

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मन्सूबा

10 फिर यहूदाह इस्करियोती जो बारह शागिर्दों में से
एक था राहनुमा इमामों के पास गया ताकि ईसा को
उन के हवाले करने की बात करे। 11 उस के आने
का मक़्सद सुन कर वह ख़ुश हुए और उसे पैसे देने
का वादा किया। चुनाँचे वह ईसा को उन के हवाले
करने का मौक़ा ढूँडने लगा।

फ़सह की ईद के लिए तय्यारियाँ

12 बेख़मीरी रोटी की ईद आई जब लोग फ़सह के
लेले को क़ुर्बान करते थे। ईसा के शागिर्दों ने उस
से पूछा, "हम कहाँ आप के लिए फ़सह का खाना
तय्यार करें?"

13 चुनाँचे ईसा ने उन में से दो को यह हिदायत
दे कर यरूशलम भेज दिया कि "जब तुम शहर में
दाख़िल होगे तो तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी से
होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा। उस
के पीछे हो लेना। 14 जिस घर में वह दाख़िल हो उस
के मालिक से कहना, 'उस्ताद आप से पूछते हैं कि
वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ
फ़सह का खाना खाऊँ?' 15 वह तुम्हें दूसरी मन्ज़िल
पर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाएगा। वह
तय्यार होगा। हमारे लिए फ़सह का खाना वहीं तय्यार
करना।"

16 दोनों चले गए तो शहर में दाख़िल हो कर सब
कुछ वैसा ही पाया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था।
फिर उन्हों ने फ़सह का खाना तय्यार किया।

ग़द्दार कौन है?

17 शाम के वक़्त ईसा बारह शागिर्दों समेत वहाँ
पहुँच गया। 18 जब वह मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे
तो उस ने कहा, "मैं तुम को सच बताता हूँ, तुम में
से एक जो मेरे साथ खाना खा रहा है मुझे दुश्मन के
हवाले कर देगा।"

19 शागिर्द यह सुन कर ग़मगीन हुए। बारी बारी उन्हों
ने उस से पूछा, “मैं तो नहीं हूँ?”
20 ईसा ने जवाब दिया, “तुम बारह में से एक है।
वह मेरे साथ अपनी रोटी सालन के बर्तन में डाल रहा
है। 21 इब्न-ए-आदम तो कूच कर जाएगा जिस तरह
कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, लेकिन उस शख़्स पर
अफ़सोस जिस के वसीले से उसे दुश्मन के हवाले
कर दिया जाएगा। उस के लिए बेहतर यह होता कि
वह कभी पैदा ही न होता।”

फ़सह का आख़िरी खाना

22 खाने के दौरान ईसा ने रोटी ले कर शुक्रगुज़ारी
की दुआ की और उसे टुकड़े करके शागिर्दों को दे
दिया। उस ने कहा, “यह लो, यह मेरा बदन है।”
23 फिर उस ने मै का प्याला ले कर शुक्रगुज़ारी की
दुआ की और उसे उन्हें दे दिया। सब ने उस में से पी
लिया। 24 उस ने उन से कहा, “यह मेरा ख़ून है, नए
अह्द का वह ख़ून जो बहुतों के लिए बहाया जाता
है। 25 मैं तुम को सच बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर
का रस नहीं पियूँगा, क्यूँकि अगली दफ़ा इसे नए सिरे
से अल्लाह की बादशाही में ही पियूँगा।”
26 फिर वह एक ज़बूर गा कर निकले और ज़ैतून के
पहाड़ के पास पहुँचे।

पतरस के इन्कार की पेशगोई

27 ईसा ने उन्हें बताया, “तुम सब बर्गश्ता
हो जाओगे, क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में अल्लाह
फ़रमाता है, ‘मैं चरवाहे को मार डालूँगा और भेड़ें
तित्तर-बित्तर हो जाएँगी।’ 28 लेकिन अपने जी उठने
के बाद में तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँचूँगा।”
29 पतरस ने एतिराज़ किया, “दूसरे बेशक सब
बर्गश्ता हो जाएँ, लेकिन में कभी नहीं हूँगा।”
30 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ,
इसी रात मुर्ग़ के दूसरी दफ़ा बाँग देने से पहले पहले
तू तीन बार मुझे जानने से इन्कार कर चुका होगा।”
31 पतरस ने इसरार किया, “हरगिज़ नहीं! मैं आप
को जानने से कभी इन्कार नहीं करूँगा, चाहे मुझे
आप के साथ मरना भी पड़े।”
दूसरों ने भी यही कुछ कहा।

गत्समनी बाग़ में ईसा की दुआ

32 वह एक बाग़ में पहुँचे जिस का नाम गत्समनी
था। ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “यहाँ बैठ कर
मेरा इन्तिज़ार करो। मैं दुआ करने के लिए आगे जाता
हूँ।” 33 उस ने पतरस, याक़ूब और यूहन्ना को साथ
लिया। वहाँ वह घबरा कर बेक़रार होने लगा। 34 उस
ने उन से कहा, “मैं दुख से इतना दबा हुआ हूँ कि
मरने को हूँ। यहाँ ठहर कर जागते रहो।”
35 कुछ आगे जा कर वह ज़मीन पर गिर गया और
दुआ करने लगा कि अगर मुमकिन हो तो मुझे आने
वाली घड़ियों की तक्लीफ़ से गुज़रना न पड़े। 36 उस
ने कहा, “ऐ अब्बा, ऐ बाप! तेरे लिए सब कुछ
मुमकिन है। दुख का यह प्याला मुझ से हटा ले।
लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मर्ज़ी पूरी हो।”
37 वह अपने शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा
कि वह सो रहे हैं। उस ने पतरस से कहा, “शमाऊन,
क्या तू सो रहा है? क्या तू एक घंटा भी नहीं जाग
सका? 38 जागते और दुआ करते रहो ताकि तुम
आज़माइश में न पड़ो। क्यूँकि रूह तो तय्यार है,
लेकिन जिस्म कमज़ोर।”
39 एक बार फिर उस ने जा कर वही दुआ की जो
पहले की थी। 40 जब वापस आया तो दुबारा देखा
कि वह सो रहे हैं, क्यूँकि नींद की बदौलत उन की
आँखें बोझल थीं। वह नहीं जानते थे कि क्या जवाब
दें।
41 जब ईसा तीसरी बार वापस आया तो उस ने उन
से कहा, “तुम अभी तक सो और आराम कर रहे
हो? बस काफ़ी है। वक़्त आ गया है। देखो, इब्न-
ए-आदम को गुनाहगारों के हवाले किया जा रहा है।
42 उठो। आओ, चलें। देखो, मुझे दुश्मन के हवाले
करने वाला क़रीब आ चुका है।”

ईसा की गिरिफ़्तारी

43 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि यहूदाह
पहुँच गया, जो बारह शागिर्दों में से एक था। उस के
साथ तलवारों और लाठियों से लेस आदमियों का
हुजूम था। उन्हें राहनुमा इमामों, शरीअत के उलमा
और बुज़ुर्गों ने भेजा था। 44 इस ग़द्दार यहूदाह ने उन्हें
एक इम्तियाज़ी निशान दिया था कि जिस को मैं बोसा
दूँ वही ईसा है। उसे गिरिफ़्तार करके ले जाएँ।
45 जूँ ही वह पहुँचे यहूदाह ईसा के पास गया और
"उस्ताद!" कह कर उसे बोसा दिया। 46 इस पर उन्हों
ने उसे पकड़ कर गिरिफ़्तार कर लिया। 47 लेकिन
ईसा के पास खड़े एक शख़्स ने अपनी तलवार मियान
से निकाली और इमाम-ए-आज़म के ग़ुलाम को मार
कर उस का कान उड़ा दिया। 48 ईसा ने उन से पूछा,
"क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारें और लाठियाँ लिए
मुझे गिरिफ़्तार करने निकले हो? 49 मैं तो रोज़ाना बैत-
उल-मुक़द्दस में तुम्हारे पास था और तालीम देता रहा,
मगर तुम ने मुझे गिरिफ़्तार नहीं किया। लेकिन यह
इस लिए हो रहा है ताकि कलाम-ए-मुक़द्दस की बातें
पूरी हो जाएँ।"
50 फिर सब के सब उसे छोड़ कर भाग गए।
51 लेकिन एक नौजवान ईसा के पीछे पीछे चलता
रहा जो सिर्फ़ चादर ओढ़े हुए था। लोगों ने उसे
पकड़ने की कोशिश की, 52 लेकिन वह चादर छोड़
कर नंगी हालत में भाग गया।

यहूदी अदालत-ए-आलिया के सामने

53 वह ईसा को इमाम-ए-आज़म के पास ले गए जहाँ
तमाम राहनुमा इमाम, बुज़ुर्ग और शरीअत के उलमा
भी जमा थे। 54 इतने में पतरस कुछ फ़ासिले पर ईसा
के पीछे पीछे इमाम-ए-आज़म के सहन तक पहुँच
गया। वहाँ वह मुलाज़िमों के साथ बैठ कर आग
तापने लगा। 55 मकान के अन्दर राहनुमा इमाम और
यहूदी अदालत-ए-आलिया के तमाम अफ़राद ईसा के
ख़िलाफ़ गवाहियाँ ढूँड रहे थे ताकि उसे सज़ा-ए-मौत
दिलवा सकें। लेकिन कोई गवाही न मिली। 56 काफ़ी
लोगों ने उस के ख़िलाफ़ झूटी गवाही तो दी, लेकिन
उन के बयान एक दूसरे के मुतज़ाद थे।
57 आख़िरकार बाज़ ने खड़े हो कर यह झूटी गवाही
दी, 58 "हम ने इसे यह कहते सुना है कि मैं इन्सान के
हाथों के बने इस बैत-उल-मुक़द्दस को ढा कर तीन
दिन के अन्दर अन्दर नया मक़्दिस तामीर कर दूँगा,
एक ऐसा मक़्दिस जो इन्सान के हाथ नहीं बनाएँगे।"
59 लेकिन उन की गवाहियाँ भी एक दूसरी से मुतज़ाद
थीं।
60 फिर इमाम-ए-आज़म ने हाज़िरीन के सामने खड़े
हो कर ईसा से पूछा, "क्या तू कोई जवाब नहीं देगा?
यह क्या गवाहियाँ हैं जो यह लोग तेरे ख़िलाफ़ दे रहे
हैं?"
61 लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। उस ने कोई जवाब
न दिया। इमाम-ए-आज़म ने उस से एक और सवाल
किया, "क्या तू अल-हमीद का फ़र्ज़न्द मसीह है?"
62 ईसा ने कहा, "जी, मैं हूँ। और आइन्दा तुम इब्न-
ए-आदम को क़ादिर-ए-मुतलक़ के दहने हाथ बैठे
और आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।"
63 इमाम-ए-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके
अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, "हमें मज़ीद
गवाहों की क्या ज़रूरत रही! 64 आप ने ख़ुद सुन
लिया है कि इस ने कुफ़्र बका है। आप का क्या
फ़ैसला है?"
सब ने उसे सज़ा-ए-मौत के लाइक़ क़रार दिया।
65 फिर कुछ उस पर थूकने लगे। उन्हों ने उस की
आँखों पर पट्टी बांधी और उसे मुक्के मार मार कर
कहने लगे, "नबुव्वत कर!" मुलाज़िमों ने भी उसे
थप्पड़ मारे।

पतरस ईसा को जानने से इन्कार करता है

66 इस दौरान पतरस नीचे सहन में था। इमाम-ए-
आज़म की एक नौकरानी वहाँ से गुज़री 67 और देखा
कि पतरस वहाँ आग ताप रहा है। उस ने ग़ौर से

उस पर नज़र की और कहा, “तुम भी नासरत के उस
आदमी ईसा के साथ थे।”
68 लेकिन उस ने इन्कार किया, “मैं नहीं जानता या
समझता कि तू क्या बात कर रही है।” यह कह कर
वह गेट के क़रीब चला गया। [उसी लम्हे मुर्ग़ ने बाँग
दी।]
69 जब नौकरानी ने उसे वहाँ देखा तो उस ने दुबारा
पास खड़े लोगों से कहा, “यह बन्दा उन में से है।”
70 दुबारा पतरस ने इन्कार किया।
थोड़ी देर के बाद पतरस के साथ खड़े लोगों ने भी
उस से कहा, “तुम ज़रूर उन में से हो क्यूँकि तुम
गलील के रहने वाले हो।”
71 इस पर पतरस ने क़सम खा कर कहा, “मुझ पर
लानत अगर मैं झूट बोल रहा हूँ। मैं उस आदमी को
नहीं जानता जिस का ज़िक्र तुम कर रहे हो।”
72 फ़ौरन मुर्ग़ की बाँग दूसरी मर्तबा सुनाई दी। फिर
पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने उस से कही
थी, “मुर्ग़ के दूसरी दफ़ा बाँग देने से पहले पहले तू
तीन बार मुझे जानने से इन्कार कर चुका होगा।” इस
पर वह रो पड़ा।

पीलातुस के सामने

15 1 सुब्ह-सवेरे ही राहनुमा इमाम बुज़ुर्गों,
शरीअत के उलमा और पूरी यहूदी
अदालत-ए-आलिया के साथ मिल कर फ़ैसले तक
पहुँच गए। वह ईसा को बांध कर वहाँ से ले गए
और रोमी गवर्नर पीलातुस के हवाले कर दिया।
2 पीलातुस ने उस से पूछा, “क्या तुम यहूदियों के
बादशाह हो?”
ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप ख़ुद कहते हैं।”
3 राहनुमा इमामों ने उस पर बहुत इल्ज़ाम लगाए।
4 चुनाँचे पीलातुस ने दुबारा उस से सवाल किया,
“क्या तुम कोई जवाब नहीं दोगे? यह तो तुम पर
बहुत से इल्ज़ामात लगा रहे हैं।”
5 लेकिन ईसा ने इस पर भी कोई जवाब न दिया,
और पीलातुस बड़ा हैरान हुआ।

सज़ा-ए-मौत का फ़ैसला

6 उन दिनों यह रिवाज था कि हर साल फ़सह की
ईद पर एक क़ैदी को रिहा कर दिया जाता था। यह
क़ैदी अवाम से मुन्तख़ब किया जाता था। 7 उस वक़्त
कुछ आदमी जेल में थे जो हुकूमत के ख़िलाफ़ किसी
इन्क़िलाबी तहरीक में शरीक हुए थे और जिन्हों ने
बग़ावत के मौक़े पर क़त्ल-ओ-ग़ारत की थी। उन
में से एक का नाम बर-अब्बा था। 8 अब हुजूम ने
पीलातुस के पास आ कर उस से गुज़ारिश की कि
वह मामूल के मुताबिक़ एक क़ैदी को आज़ाद कर
दे। 9 पीलातुस ने पूछा, “क्या तुम चाहते हो कि मैं
यहूदियों के बादशाह को आज़ाद कर दूँ?” 10 वह
जानता था कि राहनुमा इमामों ने ईसा को सिर्फ़ हसद
की बिना पर उस के हवाले किया है।
11 लेकिन राहनुमा इमामों ने हुजूम को उकसाया कि
वह ईसा के बजाय बर-अब्बा को माँगें। 12 पीलातुस
ने सवाल किया, “फिर मैं इस के साथ क्या करूँ
जिस का नाम तुम ने यहूदियों का बादशाह रखा है?”
13 वह चीख़े, “उसे मस्लूब करें।”
14 पीलातुस ने पूछा, “क्यूँ? उस ने क्या जुर्म किया
है?”
लेकिन लोग मज़ीद शोर मचा कर चीख़ते रहे, “उसे
मस्लूब करें!”
15 चुनाँचे पीलातुस ने हुजूम को मुत्मइन करने की
ख़ातिर बर-अब्बा को आज़ाद कर दिया। उस ने ईसा
को कोड़े लगाने को कहा, फिर उसे मस्लूब करने के
लिए फ़ौजियों के हवाले कर दिया।

फ़ौजी ईसा का मज़ाक़ उड़ाते हैं

16 फ़ौजी ईसा को गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियुम
के सहन में ले गए और पूरी पलटन को इकट्ठा किया।
17 उन्हों ने उसे अर्ग़वानी रंग का लिबास पहनाया
और काँटेदार टहनियों का एक ताज बना कर उस के
सर पर रख दिया। 18 फिर वह उसे सलाम करने लगे,
“ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!” 19 लाठी से उस

के सर पर मार मार कर वह उस पर थूकते रहे। घुटने
टेक कर उन्हों ने उसे सिज्दा किया। 20 फिर उस का
मज़ाक़ उड़ाने से थक कर उन्हों ने अर्ग़वानी लिबास
उतार कर उसे दुबारा उस के अपने कपड़े पहनाए।
फिर वह उसे मस्लूब करने के लिए बाहर ले गए।

ईसा को मस्लूब किया जाता है

21 उस वक़्त लिबिया के शहर कुरेन का रहने वाला
एक आदमी बनाम शमाऊन दीहात से शहर को आ
रहा था। वह सिकन्दर और रूफ़ुस का बाप था। जब
वह ईसा और फ़ौजियों के पास से गुज़रने लगा तो
फ़ौजियों ने उसे सलीब उठाने पर मज्बूर किया। 22 यूँ
चलते चलते वह ईसा को एक मक़ाम पर ले गए
जिस का नाम गुल्गुता (यानी खोपड़ी का मक़ाम) था।
23 वहाँ उन्हों ने उसे मै पेश की जिस में मुर मिलाया
गया था, लेकिन उस ने पीने से इन्कार किया। 24 फिर
फ़ौजियों ने उसे मस्लूब किया और उस के कपड़े
आपस में बाँट लिए। यह फ़ैसला करने के लिए कि
किस को क्या क्या मिलेगा उन्हों ने क़ुरआ डाला।
25 नौ बजे सुब्ह का वक़्त था जब उन्हों ने उसे मस्लूब
किया। 26 एक तख़्ती सलीब पर लगा दी गई जिस
पर यह इल्ज़ाम लिखा था, "यहूदियों का बादशाह।"
27 दो डाकुओं को भी ईसा के साथ मस्लूब किया
गया, एक को उस के दहने हाथ और दूसरे को उस
के बाएँ हाथ। 28 [यूँ मुक़द्दस कलाम का वह हवाला
पूरा हुआ जिस में लिखा है, 'उसे मुजरिमों में शुमार
किया गया।']

29 जो वहाँ से गुज़रे उन्हों ने कुफ़्र बक कर उस की
तज़्लील की और सर हिला हिला कर अपनी हिक़ारत
का इज़हार किया। उन्हों ने कहा, "तू ने तो कहा था
कि मैं बैत-उल-मुक़द्दस को ढा कर उसे तीन दिन के
अन्दर अन्दर दुबारा तामीर कर दूँगा। 30 अब सलीब
पर से उतर कर अपने आप को बचा!"

31 राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा ने भी
ईसा का मज़ाक़ उड़ा कर कहा, "इस ने औरों को
बचाया, लेकिन अपने आप को नहीं बचा सकता।
32 उसराईल का यह बादशाह मसीह अब सलीब पर
से उतर आए ताकि हम यह देख कर ईमान लाएँ।"
और जिन आदमियों को उस के साथ मस्लूब किया
गया था उन्हों ने भी उसे लान-तान की।

ईसा की मौत

33 दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया।
यह तारीकी तीन घंटों तक रही। 34 फिर तीन बजे
ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, "एली, एली, लमा
शबक़तनी?" जिस का मतलब है, "ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ
मेरे ख़ुदा, तू ने मुझे क्यूँ तर्क कर दिया है?"

35 यह सुन कर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे,
"वह इल्यास नबी को बुला रहा है।" 36 किसी ने दौड़
कर मै के सिरके में एक इस्फ़ंज डुबोया और उसे डंडे
पर लगा कर ईसा को चुसाने की कोशिश की। वह
बोला, "आओ हम देखें, शायद इल्यास आ कर उसे
सलीब पर से उतार ले।"

37 लेकिन ईसा ने बड़े ज़ोर से चिल्ला कर दम छोड़
दिया।

38 उसी वक़्त बैत-उल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन
कमरे के सामने लटका हुआ पर्दा ऊपर से ले कर
नीचे तक दो हिस्सों में फट गया। 39 जब ईसा के
मुक़ाबिल खड़े रोमी अफ़्सर [v]ने देखा कि वह किस
तरह मरा तो उस ने कहा, "यह आदमी वाक़ई अल्लाह
का फ़र्ज़न्द था!"

40 कुछ ख़वातीन भी वहाँ थीं जो कुछ फ़ासिले
पर उस का मुशाहदा कर रही थीं। उन में मरियम
मग्दलीनी, छोटे याक़ूब और योसेस की माँ मरियम
और सलोमी भी थीं। 41 गलील में यह औरतें ईसा के
पीछे चल कर इस की ख़िदमत करती रही थीं। कई

---

[v]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़्सर।

और ख़वातीन भी वहाँ थीं जो उस के साथ यरूशलम
आ गई थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

42 यह सब कुछ जुमए को हुआ जो अगले दिन के
सबत के लिए तय्यारी का दिन था। जब शाम होने को
थी 43 तो अरिमतियाह का एक आदमी बनाम यूसुफ़
हिम्मत करके पीलातुस के पास गया और उस से ईसा
की लाश माँगी। (यूसुफ़ यहूदी अदालत-ए-अलिया
का नामवर मैम्बर था और अल्लाह की बादशाही के
आने के इन्तिज़ार में था।) 44 पीलातुस यह सुन कर
हैरान हुआ कि ईसा मर चुका है। उस ने रोमी अफ़सर
को बुला कर उस से पूछा कि क्या ईसा वाक़ई मर
चुका है? 45 जब अफ़सर ने इस की तस्दीक़ की तो
पीलातुस ने यूसुफ़ को लाश दे दी। 46 यूसुफ़ ने कफ़न
ख़रीद लिया, फिर ईसा की लाश उतार कर उसे
कतान के कफ़न में लपेटा और एक क़ब्र में रख दिया
जो चटान में तराशी गई थी। आख़िर में उस ने एक
बड़ा पत्थर लुढ़का कर क़ब्र का मुँह बन्द कर दिया।
47 मरियम मग्दलीनी और योसेस की माँ मरियम ने
देख लिया कि ईसा की लाश कहाँ रखी गई है।

ईसा जी उठता है

16 1 हफ़्ते की शाम को जब सबत का दिन
गुज़र गया तो मरियम मग्दलीनी, याक़ूब की
माँ मरियम और सलोमी ने ख़ुश्बूदार मसाले ख़रीद
लिए, क्यूँकि वह क़ब्र के पास जा कर उन्हें ईसा की
लाश पर लगाना चाहती थीं। 2 चुनाँचे वह इत्वार को
सुब्ह-सवेरे ही क़ब्र पर गईं। सूरज तुलू हो रहा था।
3 रास्ते में वह एक दूसरे से पूछने लगीं, "कौन हमारे
लिए क़ब्र के मुँह से पत्थर को लुढ़काएगा?" 4 लेकिन
जब वहाँ पहुँचीं और नज़र उठा कर क़ब्र पर ग़ौर
किया तो देखा कि पत्थर को एक तरफ़ लुढ़काया
जा चुका है। यह पत्थर बहुत बड़ा था। 5 वह क़ब्र
में दाख़िल हुईं। वहाँ एक जवान आदमी नज़र आया
जो सफ़ेद लिबास पहने हुए दाईं तरफ़ बैठा था। वह
घबरा गईं।
6 उस ने कहा, "मत घबराओ। तुम ईसा नासरी को
ढूँड रही हो जो मस्लूब हुआ था। वह जी उठा है,
वह यहाँ नहीं है। उस जगह को ख़ुद देख लो जहाँ
उसे रखा गया था। 7 अब जाओ, उस के शागिर्दों और
पतरस को बता दो कि वह तुम्हारे आगे आगे गलील
पहुँच जाएगा। वहीं तुम उसे देखोगे, जिस तरह उस
ने तुम को बताया था।"
8 ख़वातीन लरज़ती और उलझी हुई हालत में क़ब्र
से निकल कर भाग गईं। उन्हों ने किसी को भी कुछ
न बताया, क्यूँकि वह निहायत सहमी हुई थीं।

ईसा मरियम मग्दलीनी पर ज़ाहिर होता है

9 जब ईसा इत्वार को सुब्ह-सवेरे जी उठा तो पहला
शख़्स जिस पर वह ज़ाहिर हुआ मरियम मग्दलीनी थी
जिस से उस ने सात बदरुहें निकाली थीं। 10 मरियम
ईसा के साथियों के पास गई जो मातम कर रहे और
रो रहे थे। उस ने उन्हें जो कुछ हुआ था बताया।
11 लेकिन गो उन्हों ने सुना कि ईसा ज़िन्दा है और कि
मरियम ने उसे देखा है तो भी उन्हें यक़ीन न आया।

ईसा मज़ीद दो शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

12 इस के बाद ईसा दूसरी सूरत में उन में से दो
पर ज़ाहिर हुआ जब वह यरूशलम से दीहात की
तरफ़ पैदल चल रहे थे। 13 दोनों ने वापस जा कर
यह बात बाक़ी लोगों को बताई। लेकिन उन्हें इन
का भी यक़ीन न आया।

ईसा ग्यारह रसूलों पर ज़ाहिर होता है

14 आख़िर में ईसा ग्यारह शागिर्दों पर भी ज़ाहिर
हुआ। उस वक़्त वह मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे।
उस ने उन्हें उन की बेएतिक़ादी और सख़्तदिली के
सबब से डाँटा, कि उन्हों ने उन का यक़ीन न किया
जिन्हों ने उसे ज़िन्दा देखा था। 15 फिर उस ने उन
से कहा, "पूरी दुनिया में जा कर तमाम मख़्लूक़ात

को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाओ। 16 जो भी ईमान
ला कर बपतिस्मा ले उसे नजात मिलेगी। लेकिन
जो ईमान न लाए उसे मुजरिम क़रार दिया जाएगा।
17 और जहाँ जहाँ लोग ईमान रखेंगे वहाँ यह इलाही
निशान ज़ाहिर होंगे : वह मेरे नाम से बदरुहें निकाल
देंगे, नई नई ज़बानें बोलेंगे 18 और साँपों को उठा कर
महफ़ूज़ रहेंगे। मोहलिक ज़हर पीने से उन्हें नुक़्सान
नहीं पहुँचेगा और जब वह अपने हाथ मरीज़ों पर
रखेंगे तो शिफ़ा पाएँगे।”

ईसा को आसमान पर उठाया जाता है

19 उन से बात करने के बाद ख़ुदावन्द ईसा को
आसमान पर उठा लिया गया और वह अल्लाह के दहने
हाथ बैठ गया। 20 इस पर शागिर्दों ने निकल कर हर
जगह मुनादी की। और ख़ुदावन्द ने उन की हिमायत
करके इलाही निशानों से कलाम की तस्दीक़ की।

लूक़ा

पेशलफ़्ज़

1 [1] मुह्तरम थियुफ़िलुस, बहुत से लोग वह सब
कुछ लिख चुके हैं जो हमारे दरमियान वाक़े
हुआ है। [2] उन की कोशिश यह थी कि वही कुछ
बयान किया जाए जिस की गवाही वह देते हैं जो
शुरू ही से साथ थे और आज तक अल्लाह का कलाम
सुनाने की ख़िदमत सरअन्जाम दे रहे हैं। [3] मैं ने भी हर
मुमकिन कोशिश की है कि सब कुछ शुरू से और ऐन
हक़ीक़त के मुताबिक़ मालूम करूँ। अब मैं यह बातें
तर्तीब से आप के लिए लिखना चाहता हूँ। [4] आप यह
पढ़ कर जान लेंगे कि जो बातें आप को सिखाई गई
हैं वह सच और दुरुस्त हैं।

यहया के बारे में पेशगोई

[5] यहूदिया के बादशाह हेरोदेस के ज़माने में एक
इमाम था जिस का नाम ज़करियाह था। बैत-उल-
मुक़द्दस में इमामों के मुख़्तलिफ़ गुरोह ख़िदमत
सरअन्जाम देते थे, और ज़करियाह का ताल्लुक़
अबियाह के गुरोह से था। उस की बीवी इमाम-
ए-आज़म हारून की नस्ल से थी और उस का
नाम इलीशिबा था। [6] मियाँ-बीवी अल्लाह के नज़्दीक
रास्तबाज़ थे और रब के तमाम अह्काम और
हिदायात के मुताबिक़ बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारते थे।
[7] लेकिन वह बेऔलाद थे। इलीशिबा के बच्चे पैदा
नहीं हो सकते थे। अब वह दोनों बूढ़े हो चुके थे।

[8] एक दिन बैत-उल-मुक़द्दस मैं अबियाह के गुरोह
की बारी थी और ज़करियाह अल्लाह के हुज़ूर अपनी
ख़िदमत सरअन्जाम दे रहा था। [9] दस्तूर के मुताबिक़
उन्हों ने क़ुरआ डाला ताकि मालूम करें कि रब के
मक़्दिस में जा कर बख़ूर की क़ुर्बानी कौन जलाए।
ज़करियाह को चुना गया। [10] जब वह मुक़र्ररा वक़्त
पर बख़ूर जलाने के लिए बैत-उल-मुक़द्दस में दाख़िल
हुआ तो जमा होने वाले तमाम परस्तार सहन में दुआ
कर रहे थे।

[11] अचानक रब का एक फ़रिश्ता ज़ाहिर हुआ जो
बख़ूर जलाने की क़ुर्बानगाह के दहनी तरफ़ खड़ा था।
[12] उसे देख कर ज़करियाह घबराया और बहुत डर
गया। [13] लेकिन फ़रिश्ते ने उस से कहा, "ज़करियाह,
मत डर! अल्लाह ने तेरी दुआ सुन ली है। तेरी बीवी
इलीशिबा के बेटा होगा। उस का नाम यहया रखना।
[14] वह न सिर्फ़ तेरे लिए ख़ुशी और मुसर्रत का बाइस
होगा, बल्कि बहुत से लोग उस की पैदाइश पर ख़ुशी
मनाएँगे। [15] क्यूँकि वह रब के नज़्दीक अज़ीम होगा।
लाज़िम है कि वह मै और शराब से पर्हेज़ करे। वह
पैदा होने से पहले ही रूह-उल-क़ुद्स से मामूर होगा
[16] और इस्राईली क़ौम में से बहुतों को रब उन के
ख़ुदा के पास वापस लाएगा। [17] वह इल्यास की रूह
और क़ुव्वत से ख़ुदावन्द के आगे आगे चलेगा। उस
की ख़िदमत से वालिदों के दिल अपने बच्चों की तरफ़
माइल हो जाएंगे और नाफ़रमान लोग रास्तबाज़ों की
दानाई की तरफ़ रुजू करेंगे। यूँ वह इस क़ौम को रब
के लिए तय्यार करेगा।"

[18] ज़करियाह ने फ़रिश्ते से पूछा, "मैं किस तरह
जानूँ कि यह बात सच है? मैं ख़ुद बूढ़ा हूँ और मेरी
बीवी भी उम्ररसीदा है।"

[19] फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "मैं जिब्राईल हूँ जो
अल्लाह के हुज़ूर खड़ा रहता हूँ। मुझे इसी मक़्सद के
लिए भेजा गया है कि तुझे यह ख़ुशख़बरी सुनाऊँ।
[20] लेकिन चूँकि तू ने मेरी बात का यक़ीन नहीं किया
इस लिए तू ख़ामोश रहेगा और उस वक़्त तक बोल
नहीं सकेगा जब तक तेरे बेटा पैदा न हो। मेरी यह
बातें मुक़र्ररा वक़्त पर ही पूरी होंगी।"

21 इस दौरान बाहर के लोग ज़करियाह के इन्तिज़ार
में थे। वह हैरान होते जा रहे थे कि उसे वापस आने
में क्यूँ इतनी देर हो रही है। 22 आख़िरकार वह बाहर
आया, लेकिन वह उन से बात न कर सका। तब
उन्हों ने जान लिया कि उस ने बैत-उल-मुक़द्दस में
रोया देखी है। उस ने हाथों से इशारे तो किए, लेकिन
ख़ामोश रहा।

23 ज़करियाह मुक़र्ररा वक़्त तक बैत-उल-मुक़द्दस
में अपनी ख़िदमत अन्जाम देता रहा, फिर अपने घर
वापस चला गया। 24 थोड़े दिनों के बाद उस की बीवी
इलीशिबा हामिला हो गई और वह पाँच माह तक घर
में छुपी रही। 25 उस ने कहा, "ख़ुदावन्द ने मेरे लिए
कितना बड़ा काम किया है, क्यूँकि अब उस ने मेरी
फ़िक्र की और लोगों के सामने से मेरी रुस्वाई दूर
कर दी।"

ईसा की पैदाइश की पेशगोई

26–27 इलीशिबा छः माह से उम्मीद से थी जब
अल्लाह ने जिब्राईल फ़रिश्ते को एक कुंवारी के पास
भेजा जो नासरत में रहती थी। नासरत गलील का
एक शहर है और कुंवारी का नाम मरियम था। उस
की मंगनी एक मर्द के साथ हो चुकी थी जो दाऊद
बादशाह की नस्ल से था और जिस का नाम यूसुफ़
था। 28 फ़रिश्ते ने उस के पास आ कर कहा, "ऐ
ख़ातून जिस पर रब का ख़ास फ़ज़्ल हुआ है, सलाम!
रब तेरे साथ है।"

29 मरियम यह सुन कर घबरा गई और सोचा, "यह
किस तरह का सलाम है?" 30 लेकिन फ़रिश्ते ने
अपनी बात जारी रखी और कहा, "ऐ मरियम, मत
डर, क्यूँकि तुझ पर अल्लाह का फ़ज़्ल हुआ है। 31 तू
उम्मीद से हो कर एक बेटे को जन्म देगी। तुझे उस का
नाम ईसा (नजात देने वाला) रखना है। 32 वह अज़ीम
होगा और अल्लाह तआला का फ़र्ज़न्द कहलाएगा।
रब हमारा ख़ुदा उसे उस के बाप दाऊद के तख़्त पर
बिठाएगा 33 और वह हमेशा तक इस्राईल पर हुकूमत
करेगा। उस की सल्तनत कभी ख़त्म न होगी।"

34 मरियम ने फ़रिश्ते से कहा, "यह क्यूँकर हो
सकता है? अभी तो मैं कुंवारी हूँ।"

35 फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "रूह-उल-क़ुद्स तुझ पर
नाज़िल होगा, अल्लाह तआला की क़ुदरत का साया
तुझ पर छा जाएगा। इस लिए यह बच्चा क़ुद्दूस होगा
और अल्लाह का फ़र्ज़न्द कहलाएगा। 36 और देख,
तेरी रिश्तेदार इलीशिबा के भी बेटा होगा हालाँकि
वह उम्रसीदा है। गो उसे बाँझ क़रार दिया गया था,
लेकिन वह छः माह से उम्मीद से है। 37 क्यूँकि अल्लाह
के नज़्दीक कोई काम नामुमकिन नहीं है।"

38 मरियम ने जवाब दिया, "मैं रब की ख़िदमत के
लिए हाज़िर हूँ। मेरे साथ वैसा ही हो जैसा आप ने
कहा है।" इस पर फ़रिश्ता चला गया।

मरियम इलीशिबा से मिलती है

39 उन दिनों में मरियम यहूदिया के पहाड़ी इलाक़े
के एक शहर के लिए रवाना हुई। उस ने जल्दी जल्दी
सफ़र किया। 40 वहाँ पहुँच कर वह ज़करियाह के
घर में दाख़िल हुई और इलीशिबा को सलाम किया।
41 मरियम का यह सलाम सुन कर इलीशिबा का बच्चा
उस के पेट में उछल पड़ा और इलीशिबा ख़ुद रूह-
उल-क़ुद्स से भर गई। 42 उस ने बुलन्द आवाज़ से
कहा, "तू तमाम औरतों में मुबारक है और मुबारक
है तेरा बच्चा! 43 मैं कौन हूँ कि मेरे ख़ुदावन्द की माँ
मेरे पास आई! 44 जूँ ही मैं ने तेरा सलाम सुना बच्चा
मेरे पेट में ख़ुशी से उछल पड़ा। 45 तू कितनी मुबारक
है, क्यूँकि तू ईमान लाई कि जो कुछ रब ने फ़रमाया
है वह तक्मील तक पहुँचेगा।"

मरियम का गीत

46 इस पर मरियम ने कहा,
"मेरी जान रब की ताज़ीम करती है
47 और मेरी रूह अपने नजातदहिन्दा अल्लाह से
निहायत ख़ुश है।
48 क्यूँकि उस ने अपनी ख़ादिमा की पस्ती पर नज़र
की है।

हाँ, अब से तमाम नस्लें मुझे मुबारक कहेंगी,
49 क्यूँकि क़ादिर-ए-मुतलक़ ने मेरे लिए बड़े बड़े
काम किए हैं।
उस का नाम क़ुद्दूस है।
50 जो उस का ख़ौफ़ मानते हैं
उन पर वह पुश्त-दर-पुश्त अपनी रहमत ज़ाहिर
करेगा।
51 उस की क़ुदरत ने अज़ीम काम कर दिखाए हैं,
और दिल से मग़रूर लोग तित्तर-बित्तर हो गए हैं।
52 उस ने हुक्मरानों को उन के तख़्त से हटा कर
पस्तहाल लोगों को सरफ़राज़ कर दिया है।
53 भूकों को उस ने अच्छी चीज़ों से मालामाल
करके
अमीरों को ख़ाली हाथ लौटा दिया है।
54 वह अपने ख़ादिम इस्राईल की मदद के लिए आ
गया है।
हाँ, उस ने अपनी रहमत को याद किया है,
55 यानी वह दाइमी वादा जो उस ने हमारे बुज़ुर्गों के
साथ किया था,
इब्राहीम और उस की औलाद के साथ।"
56 मरियम तक़रीबन तीन माह इलीशिबा के हाँ
ठहरी रही, फिर अपने घर लौट गई।

यहया बपतिस्मा देने वाले की पैदाइश

57 फिर इलीशिबा का बच्चे को जन्म देने का दिन
आ पहुँचा और उस के बेटा हुआ। 58 जब उस के
हमसायों और रिश्तेदारों को इत्तिला मिली कि रब
की उस पर कितनी बड़ी रहमत हुई है तो उन्हों ने
उस के साथ ख़ुशी मनाई।
59 जब बच्चा आठ दिन का था तो वह उस का ख़तना
करवाने की रस्म के लिए आए। वह बच्चे का नाम
उस के बाप के नाम पर ज़करियाह रखना चाहते थे,
60 लेकिन उस की माँ ने एतिराज़ किया। उस ने कहा,
"नहीं, उस का नाम यहया हो।"
61 उन्हों ने कहा, "आप के रिश्तेदारों में तो ऐसा
नाम कहीं भी नहीं पाया जाता।" 62 तब उन्हों ने
इशारों से बच्चे के बाप से पूछा कि वह क्या नाम
रखना चाहता है।
63 जवाब में ज़करियाह ने तख़्ती मंगवा कर उस पर
लिखा, "इस का नाम यहया है।" यह देख कर सब
हैरान हुए। 64 उसी लम्हे ज़करियाह दुबारा बोलने के
क़ाबिल हो गया, और वह अल्लाह की तम्जीद करने
लगा। 65 तमाम हमसायों पर ख़ौफ़ छा गया और इस
बात का चर्चा यहूदिया के पूरे इलाक़े में फैल गया।
66 जिस ने भी सुना उस ने सन्जीदगी से इस पर ग़ौर
किया और सोचा, "इस बच्चे का क्या बनेगा?" क्यूँकि
रब की क़ुदरत उस के साथ थी।

ज़करियाह की नबुव्वत

67 उस का बाप ज़करियाह रूह-उल-क़ुद्स से मामूर
हो गया और नबुव्वत करके कहा,
68 "रब इस्राईल के अल्लाह की तम्जीद हो!
क्यूँकि वह अपनी क़ौम की मदद के लिए आया है,
उस ने फ़िद्या दे कर उसे छुड़ाया है।
69 उस ने अपने ख़ादिम दाऊद के घराने में
हमारे लिए एक अज़ीम नजातदहिन्दा खड़ा किया
है।
70 ऐसा ही हुआ जिस तरह उस ने क़दीम ज़मानों में
अपने मुक़द्दस नबियों की मारिफ़त फ़रमाया था,
71 कि वह हमें हमारे दुश्मनों से नजात दिलाएगा,
उन सब के हाथ से
जो हम से नफ़रत रखते हैं।
72 क्यूँकि उस ने फ़रमाया था कि वह हमारे
बापदादा पर रहम करेगा
73 और अपने मुक़द्दस अह्द को याद रखेगा,
उस वादे को जो उस ने क़सम खा कर
इब्राहीम के साथ किया था।
74 अब उस का यह वादा पूरा हो जाएगा :
हम अपने दुश्मनों से मख़्लसी पा कर
ख़ौफ़ के बग़ैर अल्लाह की ख़िदमत कर सकेंगे,
75 जीते जी उस के हुज़ूर मुक़द्दस और रास्त ज़िन्दगी
गुज़ार सकेंगे।

76 और तू, मेरे बच्चे, अल्लाह तआला का नबी
कहलाएगा।
क्यूँकि तू ख़ुदावन्द के आगे आगे
उस के रास्ते तय्यार करेगा।
77 तू उस की क़ौम को नजात का रास्ता दिखाएगा,
कि वह किस तरह अपने गुनाहों की मुआफ़ी
पाएगी।
78 हमारे अल्लाह की बड़ी रहमत की वजह से
हम पर इलाही नूर चमकेगा।
79 उस की रौशनी उन पर फैल जाएगी जो अंधेरे
और मौत के साय में बैठे हैं,
हाँ वह हमारे क़दमों को सलामती की राह पर
पहुँचाएगी।"
80 यहया परवान चढ़ा और उस की रूह ने
तक़वियत पाई। उस ने उस वक़्त तक रेगिस्तान में
ज़िन्दगी गुज़ारी जब तक उसे इस्राईल की ख़िदमत
करने के लिए बुलाया न गया।

ईसा की पैदाइश

2 1 उन अय्याम में रोम के शहन्शाह औगुस्तुस
ने फ़रमान जारी किया कि पूरी सल्तनत की
मर्दुमशुमारी की जाए। 2 यह पहली मर्दुमशुमारी उस
वक़्त हुई जब कूरिनियुस शाम का गवर्नर था। 3 हर
किसी को अपने वतनी शहर में जाना पड़ा ताकि वहाँ
रजिस्टर में अपना नाम दर्ज करवाए।
4 चुनाँचे यूसुफ़ गलील के शहर नासरत से रवाना
हो कर यहूदिया के शहर बैत-लहम पहुँचा। वजह
यह थी कि वह दाऊद बादशाह के घराने और नस्ल
से था, और बैत-लहम दाऊद का शहर था। 5 चुनाँचे
वह अपने नाम को रजिस्टर में दर्ज करवाने के लिए
वहाँ गया। उस की मंगेतर मरियम भी साथ थी। उस
वक़्त वह उम्मीद से थी। 6 जब वह वहाँ ठहरे हुए
थे तो बच्चे को जन्म देने का वक़्त आ पहुँचा। 7 बेटा
पैदा हुआ। यह मरियम का पहला बच्चा था। उस ने
उसे कपड़ों [w]में लपेट कर एक चरनी में लिटा दिया,
क्यूँकि उन्हें सराय में रहने की जगह नहीं मिली थी।

चरवाहों को ख़ुशख़बरी

8 उस रात कुछ चरवाहे क़रीब के खुले मैदान में
अपने रेवड़ों की पहरादारी कर रहे थे। 9 अचानक
रब का एक फ़रिश्ता उन पर ज़ाहिर हुआ, और उन
के इर्दगिर्द रब का जलाल चमका। यह देख कर वह
सख़्त डर गए। 10 लेकिन फ़रिश्ते ने उन से कहा,
"डरो मत! देखो मैं तुम को बड़ी ख़ुशी की ख़बर देता
हूँ जो तमाम लोगों के लिए होगी। 11 आज ही दाऊद
के शहर में तुम्हारे लिए नजातदहिन्दा पैदा हुआ है
यानी मसीह ख़ुदावन्द। 12 और तुम उसे इस निशान से
पहचान लोगे, तुम एक शीरख़्वार बच्चे को कपड़ों में
लिपटा हुआ पाओगे। वह चरनी में पड़ा हुआ होगा।"
13 अचानक आसमानी लश्करों के बेशुमार फ़रिश्ते
उस फ़रिश्ते के साथ ज़ाहिर हुए जो अल्लाह की हम्द-
ओ-सना करके कह रहे थे,
14 "आसमान की बुलन्दियों पर अल्लाह की इज़्ज़त-
ओ-जलाल, ज़मीन पर उन लोगों की सलामती जो
उसे मन्ज़ूर हैं।"
15 फ़रिश्ते उन्हें छोड़ कर आसमान पर वापस चले
गए तो चरवाहे आपस में कहने लगे, "आओ, हम
बैत-लहम जा कर यह बात देखें जो हुई है और जो
रब ने हम पर ज़ाहिर की है।"
16 वह भाग कर बैत-लहम पहुँचे। वहाँ उन्हें मरियम
और यूसुफ़ मिले और साथ ही छोटा बच्चा जो चरनी
में पड़ा हुआ था। 17 यह देख कर उन्हों ने सब कुछ
बयान किया जो उन्हें इस बच्चे के बारे में बताया गया
था। 18 जिस ने भी उन की बात सुनी वह हैरतज़दा
हुआ। 19 लेकिन मरियम को यह तमाम बातें याद
रहीं और वह अपने दिल में उन पर ग़ौर करती रही।
20 फिर चरवाहे लौट गए और चलते चलते उन तमाम
बातों के लिए अल्लाह की ताज़ीम-ओ-तारीफ़ करते रहे

---

[w]लफ़्ज़ी तर्जुमा : पोतड़ों

जो उन्हों ने सुनी और देखी थीं, क्यूँकि सब कुछ वैसा
ही पाया था जैसा फ़रिश्ते ने उन्हें बताया था।

बच्चे का नाम ईसा रखा जाता है

21 आठ दिन के बाद बच्चे का ख़तना करवाने का
वक़्त आ गया। उस का नाम ईसा रखा गया, यानी
वही नाम जो फ़रिश्ते ने मरियम को उस के हामिला
होने से पहले बताया था।

ईसा को बैत-उल-मुक़द्दस में पेश किया जाता है

22 जब मूसा की शरीअत के मुताबिक़ तहारत के
दिन पूरे हुए तब वह बच्चे को यरूशलम ले गए ताकि
उसे रब के हुज़ूर पेश किया जाए, 23 जैसे रब की
शरीअत में लिखा है, "हर पहलौठे को रब के लिए
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करना है।" 24 साथ ही उन्हों ने
मरियम की तहारत की रस्म के लिए वह क़ुर्बानी पेश
की जो रब की शरीअत बयान करती है, यानी "दो
क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर।"
25 उस वक़्त यरूशलम में एक आदमी बनाम
शमाऊन रहता था। वह रास्तबाज़ और ख़ुदातरस था
और इस इन्तिज़ार में था कि मसीह आ कर इस्राईल
को सुकून बख़्शे। रूह-उल-क़ुद्स उस पर था, 26 और
उस ने उस पर यह बात ज़ाहिर की थी कि वह जीते
जी रब के मसीह को देखेगा। 27 उस दिन रूह-उल-
क़ुद्स ने उसे तहरीक दी कि वह बैत-उल-मुक़द्दस
में जाए। चुनाँचे जब मरियम और यूसुफ़ बच्चे को रब
की शरीअत के मुताबिक़ पेश करने के लिए बैत-उल-
मुक़द्दस में आए 28 तो शमाऊन मौजूद था। उस ने बच्चे
को अपने बाज़ूओं में ले कर अल्लाह की हम्द-ओ-सना
करते हुए कहा,
29 "ऐ आक़ा, अब तू अपने बन्दे को इजाज़त देता
है
कि वह सलामती से रेहलत कर जाए, जिस तरह तू
ने फ़रमाया है।
30 क्यूँकि मैं ने अपनी आँखों से तेरी उस नजात का
मुशाहदा कर लिया है
31 जो तू ने तमाम क़ौमों की मौजूदगी में तय्यार की
है।
32 यह एक ऐसी रौशनी है जिस से ग़ैरयहूदियों की
आँखें खुल जाएँगी
और तेरी क़ौम इस्राईल को जलाल हासिल होगा।"
33 बच्चे के माँ-बाप अपने बेटे के बारे में इन अल्फ़ाज़
पर हैरान हुए। 34 शमाऊन ने उन्हें बरकत दी और
मरियम से कहा, "यह बच्चा मुक़र्रर हुआ है कि
इस्राईल के बहुत से लोग इस से ठोकर खा कर गिर
जाएँ, लेकिन बहुत से इस से अपने पाँओ पर खड़े
भी हो जाएंगे। गो यह अल्लाह की तरफ़ से एक इशारा
है तो भी इस की मुख़ालफ़त की जाएगी। 35 यूँ बहुतों
के दिली ख़यालात ज़ाहिर हो जाएंगे। इस सिलसिले
में तलवार तेरी जान में से भी गुज़र जाएगी।"
36 वहाँ बैत-उल-मुक़द्दस में एक उम्ररसीदा नबिया
भी थी जिस का नाम हन्नाह था। वह फ़नूएल की बेटी
और आशर के क़बीले से थी। शादी के सात साल
बाद उस का शौहर मर गया था। 37 अब वह बेवा
की हैसियत से 84 साल की हो चुकी थी। वह कभी
बैत-उल-मुक़द्दस को नहीं छोड़ती थी, बल्कि दिन
रात अल्लाह को सिज्दा करती, रोज़ा रखती और दुआ
करती थी। 38 उस वक़्त वह मरियम और यूसुफ़ के
पास आ कर अल्लाह की तम्जीद करने लगी। साथ
साथ वह हर एक को जो इस इन्तिज़ार में था कि
अल्लाह फ़िद्या दे कर यरूशलम को छुड़ाए, बच्चे के
बारे में बताती रही।

वह नासरत वापस चले जाते हैं

39 जब ईसा के वालिदैन ने रब की शरीअत में दर्ज
तमाम फ़राइज़ अदा कर लिए तो वह गलील में अपने
शहर नासरत को लौट गए। 40 वहाँ बच्चा परवान चढ़ा
और तक़वियत पाता गया। वह हिक्मत-ओ-दानाई से
मामूर था, और अल्लाह का फ़ज़्ल उस पर था।

बारह साल की उम्र में बैत-उल-मुक़द्दस में

41 ईसा के वालिदैन हर साल फ़सह की ईद के लिए
यरूशलम जाया करते थे। 42 उस साल भी वह मामूल
के मुताबिक़ ईद के लिए गए जब ईसा बारह साल का
था। 43 ईद के इख़तिताम पर वह नासरत वापस जाने
लगे, लेकिन ईसा यरूशलम में रह गया। पहले उस
के वालिदैन को मालूम न था, 44 क्यूँकि वह समझते
थे कि वह क़ाफ़िले में कहीं मौजूद है। लेकिन चलते
चलते पहला दिन गुज़र गया और वह अब तक नज़र
न आया था। इस पर वालिदैन उसे अपने रिश्तेदारों
और अज़ीज़ों में ढूँडने लगे। 45 जब वह वहाँ न मिला
तो मरियम और यूसुफ़ यरूशलम वापस गए और वहाँ
ढूँडने लगे। 46 तीन दिन के बाद वह आख़िरकार बैत-
उल-मुक़द्दस में पहुँचे। वहाँ ईसा दीनी उस्तादों के
दरमियान बैठा उन की बातें सुन रहा और उन से
सवालात पूछ रहा था। 47 जिस ने भी उस की बातें
सुनीं वह उस की समझ और जवाबों से दंग रह गया।
48 उसे देख कर उस के वालिदैन घबरा गए। उस की
माँ ने कहा, "बेटा, तू ने हमारे साथ यह क्यूँ किया?
तेरा बाप और मैं तुझे ढूँडते ढूँडते शदीद कोफ़्त का
शिकार हुए।"

49 ईसा ने जवाब दिया, "आप को मुझे तलाश करने
की क्या ज़रूरत थी? क्या आप को मालूम न था कि
मुझे अपने बाप के घर में होना ज़रूर है?" 50 लेकिन
वह उस की बात न समझे।

51 फिर वह उन के साथ रवाना हो कर नासरत
वापस आया और उन के ताबे रहा। लेकिन उस की
माँ ने यह तमाम बातें अपने दिल में महफ़ूज़ रखें। 52 यूँ
ईसा जवान हुआ। उस की समझ और हिक्मत बढ़ती
गई, और उसे अल्लाह और इन्सान की मक़्बूलियत
हासिल थी।

यहया बपतिस्मा देने वाले की ख़िदमत

3 1 फिर रोम के शहन्शाह तिबरियुस की हुकूमत
का पंद्रहवाँ साल आ गया। उस वक़्त पुन्तियुस
पीलातुस सूबा यहूदिया का गवर्नर था, हेरोदेस
अनतिपास गलील का हाकिम था, उस का भाई
फ़िलिप्पुस इतूरिया और त्रख़ोनीतिस के इलाक़े
का, जबकि लिसानियास अबिलेने का। 2 हन्ना और
काइफ़ा दोनों इमाम-ए-आज़म थे। उन दिनों में अल्लाह
यहया बिन ज़करियाह से हमकलाम हुआ जब वह
रेगिस्तान में था। 3 फिर वह दरया-ए-यर्दन के पूरे
इलाक़े में से गुज़रा। हर जगह उस ने एलान किया
कि तौबा करके बपतिस्मा लो ताकि तुम्हें अपने
गुनाहों की मुआफ़ी मिल जाए। 4 यूँ यसायाह नबी
के अल्फ़ाज़ पूरे हुए जो उस की किताब में दर्ज हैं :

'रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है,
रब की राह तय्यार करो!
उस के रास्ते सीधे बनाओ।
5 लाज़िम है कि हर वादी भर दी जाए,
ज़रूरी है कि हर पहाड़ और बुलन्द जगह मैदान
बन जाए।
जो टेढ़ा है उसे सीधा किया जाए,
जो नाहमवार है उसे हमवार किया जाए।
6 और तमाम इन्सान अल्लाह की नजात देखेंगे।'

7 जब बहुत से लोग यहया के पास आए ताकि उस
से बपतिस्मा लें तो उस ने उन से कहा, "ऐ ज़हरीले
साँप के बच्चो! किस ने तुम को आने वाले ग़ज़ब से
बचने की हिदायत की? 8 अपनी ज़िन्दगी से ज़ाहिर
करो कि तुम ने वाक़ई तौबा की है। यह ख़याल मत
करो कि हम तो बच जाएंगे क्यूँकि इब्राहीम हमारा
बाप है। मैं तुम को बताता हूँ कि अल्लाह इन पत्थरों
से भी इब्राहीम के लिए औलाद पैदा कर सकता है।
9 अब तो अदालत की कुल्हाड़ी दरख़्तों की जड़ों पर
रखी हुई है। हर दरख़्त जो अच्छा फल न लाए काटा
और आग में झोंका जाएगा।"

10 लोगों ने उस से पूछा, "फिर हम क्या करें?"

11 उस ने जवाब दिया, "जिस के पास दो कुरते हैं
वह एक उस को दे दे जिस के पास कुछ न हो। और
जिस के पास खाना है वह उसे खिला दे जिस के पास
कुछ न हो।"

12 टैक्स लेने वाले भी बपतिस्मा लेने के लिए आए
तो उन्हों ने पूछा, “उस्ताद, हम क्या करें?”
13 उस ने जवाब दिया, “सिर्फ़ उतने टैक्स लेना
जितने हुकूमत ने मुक़र्रर किए हैं।”
14 कुछ फ़ौजियों ने पूछा, “हमें क्या करना
चाहिए?”
उस ने जवाब दिया, “किसी से जब्रन या ग़लत
इल्ज़ाम लगा कर पैसे न लेना बल्कि अपनी जाइज़
आम्दनी पर इकतिफ़ा करना।”
15 लोगों की तवक़्क़ोआत बहुत बढ़ गईं। वह
अपने दिलों में सोचने लगे कि क्या यह मसीह तो
नहीं है? 16 इस पर यहया उन सब से मुख़ातिब हो
कर कहने लगा, “मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता
हूँ, लेकिन एक आने वाला है जो मुझ से बड़ा है। मैं
उस के जूतों के तस्मे खोलने के भी लाइक़ नहीं। वह
तुम्हें रूह-उल-क़ुद्स और आग से बपतिस्मा देगा।
17 वह हाथ में छाज पकड़े हुए अनाज को भूसे से
अलग करने के लिए तय्यार खड़ा है। वह गाहने की
जगह को बिलकुल साफ़ करके अनाज को अपने
गोदाम में जमा करेगा। लेकिन भूसे को वह ऐसी आग
में झोंकेगा जो बुझने की नहीं।”
18 इस क़िस्म की बहुत सी और बातों से उस ने
क़ौम को नसीहत की और उसे अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाई। 19 लेकिन एक दिन यूँ हुआ कि यहया ने
गलील के हाकिम हेरोदेस अनतिपास को डाँटा।
वजह यह थी कि हेरोदेस ने अपने भाई की बीवी
हेरोदियास से शादी कर ली थी और इस के इलावा
और बहुत से ग़लत काम किए थे। 20 यह मलामत सुन
कर हेरोदेस ने अपने ग़लत कामों में और इज़ाफ़ा यह
किया कि यहया को जेल में डाल दिया।

ईसा का बपतिस्मा

21 एक दिन जब बहुत से लोगों को बपतिस्मा दिया
जा रहा था तो ईसा ने भी बपतिस्मा लिया। जब वह
दुआ कर रहा था तो आसमान खुल गया 22 और रूह-
उल-क़ुद्स जिस्मानी सूरत में कबूतर की तरह उस
पर उतर आया। साथ साथ आसमान से एक आवाज़
सुनाई दी, “तू मेरा प्यारा फ़र्ज़न्द है, तुझ से मैं ख़ुश
हूँ।”

ईसा का नसबनामा

23 ईसा तक़रीबन तीस साल का था जब उस ने
ख़िदमत शुरू की। उसे यूसुफ़ का बेटा समझा जाता
था। उस का नसबनामा यह है : यूसुफ़ बिन एली
24 बिन मत्तात बिन लावी बिन मलकी बिन यन्ना बिन
यूसुफ़ 25 बिन मत्तितियाह बिन आमूस बिन नाहूम बिन
असलियाह बिन नोगा 26 बिन माअत बिन मत्तितियाह
बिन शमई बिन योसेख़ बिन यूदाह 27 बिन यूहन्नाह
बिन रेसा बिन ज़रुब्बाबल बिन सियाल्तीएल बिन
नेरी 28 बिन मलिकी बिन अद्दी बिन क़ोसाम बिन
इल्मोदाम बिन एर 29 बिन यशूअ बिन इलीअज़र बिन
योरीम बिन मत्तात बिन लावी 30 बिन शमाऊन बिन
यहूदाह बिन यूसुफ़ बिन योनाम बिन इलियाक़ीम
31 बिन मलेआह बिन मिन्नाह बिन मत्तितियाह बिन
नातन बिन दाऊद 32 बिन यस्सी बिन ओबेद बिन
बोअज़ बिन सल्मोन बिन नह्सोन 33 बिन अम्मीनदाब
बिन अदमीन बिन अर्नी बिन हस्रोन बिन फ़ारस बिन
यहूदाह 34 बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम
बिन तारह बिन नहूर 35 बिन सरूज बिन रऊ बिन
फ़लज बिन इबर बिन सिलह 36 बिन क़ीनान बिन
अर्फ़क्सद बिन सिम बिन नूह बिन लमक 37 बिन
मतूसिलह बिन हनूक बिन यारिद बिन महलल-एल
बिन क़ीनान 38 बिन अनूस बिन सेत बिन आदम।
आदम को अल्लाह ने पैदा किया था।

ईसा को आज़माया जाता है

4 1 ईसा दरया-ए-यर्दन से वापस आया। वह रूह-
उल-क़ुद्स से मामूर था जिस ने उसे रेगिस्तान
में ला कर उस की राहनुमाई की। 2 वहाँ उसे चालीस
दिन तक इब्लीस से आज़माया गया। इस पूरे अर्से में
उस ने कुछ न खाया। आख़िरकार उसे भूक लगी।

3 फिर इब्लीस ने उस से कहा, “अगर तू अल्लाह
का फ़र्ज़न्द है तो इस पत्थर को हुक्म दे कि रोटी बन
जाए।”
4 लेकिन ईसा ने इन्कार करके कहा, “हरगिज़ नहीं,
क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है कि इन्सान की
ज़िन्दगी सिर्फ़ रोटी पर मुन्हसिर नहीं होती।”
5 इस पर इब्लीस ने उसे किसी बुलन्द जगह पर
ले जा कर एक लम्हे में दुनिया के तमाम ममालिक
दिखाए। 6 वह बोला, “मैं तुझे इन ममालिक की
शान-ओ-शौकत और इन पर तमाम इख़तियार दूँगा।
क्यूँकि यह मेरे सपुर्द किए गए हैं और जिसे चाहूँ दे
सकता हूँ। 7 लिहाज़ा यह सब कुछ तेरा ही होगा।
शर्त यह है कि तू मुझे सिज्दा करे।”
8 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “हरगिज़ नहीं, क्यूँकि
कलाम-ए-मुक़द्दस में यूँ लिखा है, ‘रब अपने अल्लाह
को सिज्दा कर और सिर्फ़ उसी की इबादत कर’।”
9 फिर इब्लीस ने उसे यरूशलम ले जा कर बैत-
उल-मुक़द्दस की सब से ऊँची जगह पर खड़ा किया
और कहा, “अगर तू अल्लाह का फ़र्ज़न्द है तो यहाँ
से छलाँग लगा दे। 10 क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में
लिखा है, ‘वह अपने फ़रिश्तों को तेरी हिफ़ाज़त करने
का हुक्म देगा, 11 और वह तुझे अपने हाथों पर उठा
लेंगे ताकि तेरे पाँओ को पत्थर से ठेस न लगे’।”
12 लेकिन ईसा ने तीसरी बार इन्कार किया और
कहा, “कलाम-ए-मुक़द्दस यह भी फ़रमाता है, ‘रब
अपने अल्लाह को न आज़माना’।”
13 इन आज़माइशों के बाद इब्लीस ने ईसा को कुछ
देर के लिए छोड़ दिया।

ख़िदमत का आग़ाज़

14 फिर ईसा वापस गलील में आया। उस में रूह-
उल-क़ुद्स की क़ुव्वत थी, और उस की शुहरत
उस पूरे इलाक़े में फैल गई। 15 वहाँ वह उन के
इबादतख़ानों में तालीम देने लगा, और सब ने उस
की तारीफ़ की।

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

16 एक दिन वह नासरत पहुँचा जहाँ वह परवान
चढ़ा था। वहाँ भी वह मामूल के मुताबिक़ सबत
के दिन मक़ामी इबादतख़ाने में जा कर कलाम-ए-
मुक़द्दस में से पढ़ने के लिए खड़ा हो गया। 17 उसे
यसायाह नबी की किताब दी गई तो उस ने तूमार को
खोल कर यह हवाला ढूँड निकाला,
18 “रब का रूह मुझ पर है,
क्यूँकि उस ने मुझे तेल से मसह करके
ग़रीबों को ख़ुशख़बरी सुनाने का इख़तियार दिया
है।
उस ने मुझे यह एलान करने के लिए भेजा है कि
क़ैदियों को रिहाई मिलेगी
और अंधे देखेंगे।
उस ने मुझे भेजा है कि मैं कुचले हुओं को आज़ाद
कराऊँ
19 और रब की तरफ़ से बहाली के साल का एलान
करूँ।”
20 यह कह कर ईसा ने तूमार को लपेट कर
इबादतख़ाने के मुलाज़िम को वापस कर दिया और
बैठ गया। सारी जमाअत की आँखें उस पर लगी थीं।
21 फिर वह बोल उठा, “आज अल्लाह का यह फ़रमान
तुम्हारे सुनते ही पूरा हो गया है।”
22 सब ईसा के हक़ में बातें करने लगे। वह उन
पुरफ़ज़्ल बातों पर हैरतज़दा थे जो उस के मुँह से
निकलीं, और वह कहने लगे, “क्या यह यूसुफ़ का
बेटा नहीं है?”
23 उस ने उन से कहा, “बेशक तुम मुझे यह कहावत
बताओगे, ‘ऐ डाक्टर, पहले अपने आप का इलाज
कर।’ यानी सुनने में आया है कि आप ने कफ़र्नहूम में
मोजिज़े किए हैं। अब ऐसे मोजिज़े यहाँ अपने वतनी
शहर में भी दिखाएँ। 24 लेकिन मैं तुम को सच बताता
हूँ कि कोई भी नबी अपने वतनी शहर में मक़्बूल नहीं
होता।

25 यह हक़ीक़त है कि इल्यास नबी के ज़माने में
इस्राईल में बहुत सी ज़रूरतमन्द बेवाएँ थीं, उस
वक़्त जब साढ़े तीन साल तक बारिश न हुई और पूरे
मुल्क में सख़्त काल पड़ा। 26 इस के बावुजूद इल्यास
को उन में से किसी के पास नहीं भेजा गया बल्कि
एक ग़ैरयहूदी बेवा के पास जो सैदा के शहर सारपत
में रहती थी। 27 इसी तरह इलीशा नबी के ज़माने में
इस्राईल में कोढ़ के बहुत से मरीज़ थे। लेकिन उन में
से किसी को शिफ़ा न मिली बल्कि सिर्फ़ नामान को
जो मुल्क-ए-शाम का शहरी था।"

28 जब इबादतख़ाने में जमा लोगों ने यह बातें सुनीं
तो वह बड़े तैश में आ गए। 29 वह उठे और उसे शहर
से निकाल कर उस पहाड़ी के किनारे ले गए जिस पर
शहर को तामीर किया गया था। वहाँ से वह उसे नीचे
गिराना चाहते थे, 30 लेकिन ईसा उन में से गुज़र कर
वहाँ से चला गया।

आदमी का बदरुह की गिरिफ़्त से रिहाई पाना

31 इस के बाद वह गलील के शहर कफ़र्नहूम को
गया और सबत के दिन इबादतख़ाने में लोगों को
सिखाने लगा। 32 वह उस की तालीम सुन कर हक्का-
बक्का रह गए, क्यूँकि वह इख़तियार के साथ तालीम
देता था। 33 इबादतख़ाने में एक आदमी था जो किसी
नापाक रूह के क़ब्ज़े में था। अब वह चीख़ चीख़ कर
बोलने लगा, 34 "अरे नासरत के ईसा, हमारा आप
के साथ क्या वास्ता है? क्या आप हमें हलाक करने
आए हैं? मैं तो जानता हूँ कि आप कौन हैं, आप
अल्लाह के क़ुद्दूस हैं।"

35 ईसा ने उसे डाँट कर कहा, "ख़ामोश! आदमी में
से निकल जा!" इस पर बदरुह आदमी को जमाअत
के बीच में फ़र्श पर पटक कर उस में से निकल गई।
लेकिन वह आदमी ज़ख़्मी न हुआ।

36 तमाम लोग घबरा गए और एक दूसरे से कहने
लगे, "उस आदमी के अल्फ़ाज़ में क्या इख़तियार
और क़ुव्वत है कि बदरुहें उस का हुक्म मानती और
उस के कहने पर निकल जाती हैं?" 37 और ईसा के
बारे में चर्चा उस पूरे इलाक़े में फैल गया।

बहुत से मरीज़ों की शिफ़ायाबी

38 फिर ईसा इबादतख़ाने को छोड़ कर शमाऊन के
घर गया। वहाँ शमाऊन की सास शदीद बुख़ार में
मुब्तला थी। उन्हों ने ईसा से गुज़ारिश की कि वह
उस की मदद करे। 39 उस ने उस के सिरहाने खड़े हो
कर बुख़ार को डाँटा तो वह उतर गया और शमाऊन
की सास उसी वक़्त उठ कर उन की ख़िदमत करने
लगी।

40 जब दिन ढल गया तो सब मक़ामी लोग अपने
मरीज़ों को ईसा के पास लाए। ख़्वाह उन की
बीमारियाँ कुछ भी क्यूँ न थीं, उस ने हर एक पर
अपने हाथ रख कर उसे शिफ़ा दी। 41 बहुतों में
बदरुहें भी थीं जिन्हों ने निकलते वक़्त चिल्ला कर
कहा, "तू अल्लाह का फ़र्ज़न्द है।" लेकिन चूँकि वह
जानती थीं कि वह मसीह है इस लिए उस ने उन्हें
डाँट कर बोलने न दिया।

ख़ुशख़बरी हर एक के लिए है

42 जब अगला दिन चढ़ा तो ईसा शहर से निकल
कर किसी वीरान जगह चला गया। लेकिन हुजूम उसे
ढूँडते ढूँडते आख़िरकार उस के पास पहुँचा। लोग
उसे अपने पास से जाने नहीं देना चाहते थे। 43 लेकिन
उस ने उन से कहा, "लाज़िम है कि मैं दूसरे शहरों
में भी जा कर अल्लाह की बादशाही की ख़ुशख़बरी
सुनाऊँ, क्यूँकि मुझे इसी मक़्सद के लिए भेजा गया
है।"

44 चुनाँचे वह यहूदिया के इबादतख़ानों में मुनादी
करता रहा।

पहले शागिर्दों की बुलाहट

5 1 एक दिन ईसा गलील की झील गन्नेसरत के
किनारे पर खड़ा हुजूम को अल्लाह का कलाम
सुना रहा था। लोग सुनते सुनते इतने क़रीब आ गए

कि उस के लिए जगह कम हो गई। 2 फिर उसे दो
कश्तियाँ नज़र आईं जो झील के किनारे लगी थीं।
मछेरे उन में से उतर चुके थे और अब अपने जालों
को धो रहे थे। 3 ईसा एक कश्ती पर सवार हुआ।
उस ने कश्ती के मालिक शमाऊन से दरख़्वास्त की
कि वह कश्ती को किनारे से थोड़ा सा दूर ले चले।
फिर वह कश्ती में बैठा और हुजूम को तालीम देने
लगा।

4 तालीम देने के इख़तिताम पर उस ने शमाऊन से
कहा, "अब कश्ती को वहाँ ले जा जहाँ पानी गहरा
है और अपने जालों को मछलियाँ पकड़ने के लिए
डाल दो।"

5 लेकिन शमाऊन ने एतिराज़ किया, "उस्ताद, हम
ने तो पूरी रात बड़ी कोशिश की, लेकिन एक भी न
पकड़ी। ताहम आप के कहने पर मैं जालों को दुबारा
डालूँगा।" 6 यह कह कर उन्हों ने गहरे पानी में जा
कर अपने जाल डाल दिए। और वाक़ई, मछलियों
का इतना बड़ा ग़ोल जालों में फंस गया कि वह
फटने लगे। 7 यह देख कर उन्हों ने अपने साथियों
को इशारा करके बुलाया ताकि वह दूसरी कश्ती में
आ कर उन की मदद करें। वह आए और सब ने मिल
कर दोनों कश्तियों को इतनी मछलियों से भर दिया
कि आख़िरकार दोनों डूबने के ख़तरे में थीं। 8 जब
शमाऊन पतरस ने यह सब कुछ देखा तो उस ने ईसा
के सामने मुँह के बल गिर कर कहा, "ख़ुदावन्द, मुझ
से दूर चले जाएँ। मैं तो गुनाहगार हूँ।" 9 क्यूँकि वह
और उस के साथी इतनी मछलियाँ पकड़ने की वजह
से सख़्त हैरान थे। 10 और ज़ब्दी के बेटे याक़ूब और
यूहन्ना की हालत भी यही थी जो शमाऊन के साथ
मिल कर काम करते थे।

लेकिन ईसा ने शमाऊन से कहा, "मत डर। अब से
तू आदमियों को पकड़ा करेगा।"

11 वह अपनी कश्तियों को किनारे पर ले आए और
सब कुछ छोड़ कर ईसा के पीछे हो लिए।

कोढ़ से शिफ़ा

12 एक दिन ईसा किसी शहर में से गुज़र रहा था कि
वहाँ एक मरीज़ मिला जिस का पूरा जिस्म कोढ़ से
मुतअस्सिर था। जब उस ने ईसा को देखा तो वह मुँह
के बल गिर पड़ा और इल्तिजा की, "ऐ ख़ुदावन्द,
अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ़ कर सकते हैं।"

13 ईसा ने अपना हाथ बढ़ा कर उसे छुआ और
कहा, "मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़ हो जा।" इस पर
बीमारी फ़ौरन दूर हो गई। 14 ईसा ने उसे हिदायत की
कि वह किसी को न बताए कि क्या हुआ है। उस
ने कहा, "सीधा बैत-उल-मुक़द्दस में इमाम के पास
जा ताकि वह तेरा मुआइना करे। अपने साथ वह
क़ुर्बानी ले जा जिस का तक़ाज़ा मूसा की शरीअत
उन से करती है जिन्हें कोढ़ से शिफ़ा मिलती है। यूँ
अलानिया तस्दीक़ हो जाएगी कि तू वाक़ई पाक-
साफ़ हो गया है।"

15 ताहम ईसा के बारे में ख़बर और ज़्यादा तेज़ी से
फैलती गई। लोगों के बड़े गुरोह उस के पास आते रहे
ताकि उस की बातें सुनें और उस के हाथ से शिफ़ा
पाएँ। 16 फिर भी वह कई बार उन्हें छोड़ कर दुआ
करने के लिए वीरान जगहों पर जाया करता था।

मफ़्लूज के लिए छत खोली जाती है

17 एक दिन वह लोगों को तालीम दे रहा था।
फ़रीसी और शरीअत के आलिम भी गलील और
यहूदिया के हर गाँव और यरूशलम से आ कर उस
के पास बैठे थे। और रब की क़ुदरत उसे शिफ़ा देने
के लिए तहरीक दे रही थी। 18 इतने में कुछ आदमी
एक मफ़्लूज को चारपाई पर डाल कर वहाँ पहुँचे।
उन्हों ने उसे घर के अन्दर ईसा के सामने रखने की
कोशिश की, 19 लेकिन बेफ़ाइदा। घर में इतने लोग
थे कि अन्दर जाना नामुमकिन था। इस लिए वह
आख़िरकार छत पर चढ़ गए और कुछ टायलें उधेड़
कर छत का एक हिस्सा खोल दिया। फिर उन्हों ने
चारपाई को मफ़्लूज समेत हुजूम के दरमियान ईसा

के सामने उतारा। 20 जब ईसा ने उन का ईमान देखा
तो उस ने मफ़्लूज से कहा, “ऐ आदमी, तेरे गुनाह
मुआफ़ कर दिए गए हैं।”
21 यह सुन कर शरीअत के आलिम और फ़रीसी
सोच-बिचार में पड़ गए, “यह किस तरह का बन्दा है
जो इस क़िस्म का कुफ़्र बकता है? सिर्फ़ अल्लाह ही
गुनाह मुआफ़ कर सकता है।”
22 लेकिन ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे
हैं, इस लिए उस ने पूछा, “तुम दिल में इस तरह की
बातें क्यूँ सोच रहे हो? 23 क्या मफ़्लूज से यह कहना
ज़्यादा आसान है कि ‘तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए
गए हैं’ या यह कि ‘उठ कर चल फिर’? 24 लेकिन
मैं तुम को दिखाता हूँ कि इब्न-ए-आदम को वाक़ई
दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख़तियार है।” यह
कह कर वह मफ़्लूज से मुख़ातिब हुआ, “उठ, अपनी
चारपाई उठा कर अपने घर चला जा।”
25 लोगों के देखते देखते वह आदमी खड़ा हुआ
और अपनी चारपाई उठा कर अल्लाह की हम्द-ओ-
सना करते हुए अपने घर चला गया। 26 यह देख कर
सब सख़्त हैरतज़दा हुए और अल्लाह की तम्जीद करने
लगे। उन पर ख़ौफ़ छा गया और वह कह उठे, “आज
हम ने नाक़ाबिल-ए-यक़ीन बातें देखी हैं।”

ईसा मत्ती को बुलाता है

27 इस के बाद ईसा निकल कर एक टैक्स लेने वाले
के पास से गुज़रा जो अपनी चौकी पर बैठा था। उस
का नाम लावी था। उसे देख कर ईसा ने कहा, “मेरे
पीछे हो ले।” 28 वह उठा और सब कुछ छोड़ कर
उस के पीछे हो लिया।
29 बाद में उस ने अपने घर में ईसा की बड़ी
ज़ियाफ़त की। बहुत से टैक्स लेने वाले और दीगर
मेहमान इस में शरीक हुए। 30 यह देख कर कुछ
फ़रीसियों और उन से ताल्लुक़ रखने वाले शरीअत के
आलिमों ने ईसा के शागिर्दों से शिकायत की। उन्हों
ने कहा, “तुम टैक्स लेने वालों और गुनाहगारों के
साथ क्यूँ खाते-पीते हो?”
31 ईसा ने जवाब दिया, “सेहतमन्दों को डाक्टर की
ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को। 32 मैं रास्तबाज़ों
को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ ताकि
वह तौबा करें।”

शागिर्द रोज़ा क्यूँ नहीं रखते?

33 कुछ लोगों ने ईसा से एक और सवाल पूछा,
“यहया के शागिर्द अक्सर रोज़ा रखते हैं। और साथ
साथ वह दुआ भी करते रहते हैं। फ़रीसियों के शागिर्द
भी इसी तरह करते हैं। लेकिन आप के शागिर्द खाने-
पीने का सिलसिला जारी रखते हैं।”
34 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुम शादी के मेहमानों
को रोज़ा रखने को कह सकते हो जब दूल्हा उन
के दरमियान है? हरगिज़ नहीं! 35 लेकिन एक दिन
आएगा जब दूल्हा उन से ले लिया जाएगा। उस वक़्त
वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।”
36 उस ने उन्हें यह मिसाल भी दी, “कौन किसी
नए लिबास को फाड़ कर उस का एक टुकड़ा किसी
पुराने लिबास में लगाएगा? कोई भी नहीं! अगर वह
ऐसा करे तो न सिर्फ़ नया लिबास ख़राब होगा बल्कि
उस से लिया गया टुकड़ा पुराने लिबास को भी ख़राब
कर देगा। 37 इसी तरह कोई भी अंगूर का ताज़ा रस
पुरानी और बेलचक मश्कों में नहीं डालेगा। अगर
वह ऐसा करे तो पुरानी मश्कें पैदा होने वाली गैस के
बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मै और मश्कें दोनों ज़ाए
हो जाएँगी। 38 इस लिए अंगूर का ताज़ा रस नई मश्कों
में डाला जाता है जो लचकदार होती हैं। 39 लेकिन
जो भी पुरानी मै पीना पसन्द करे वह अंगूर का नया
और ताज़ा रस पसन्द नहीं करेगा। वह कहेगा कि
पुरानी ही बेहतर है।”

सबत के बारे में सवाल

6 1 एक दिन ईसा अनाज के खेतों में से गुज़र रहा
था। चलते चलते उस के शागिर्द अनाज की
बालें तोड़ने और अपने हाथों से मल कर खाने लगे।
सबत का दिन था। 2 यह देख कर कुछ फ़रीसियों ने

कहा, “तुम यह क्यूँ कर रहे हो? सबत के दिन ऐसा
करना मना है।”
3 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा
कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उस के साथियों
को भूक लगी थी? 4 वह अल्लाह के घर में दाख़िल
हुआ और रब के लिए मख़्सूसशुदा रोटियाँ ले कर
खाईं, अगरचे सिर्फ़ इमामों को इन्हें खाने की इजाज़त
है। और उस ने अपने साथियों को भी यह रोटियाँ
खिलाईं।” 5 फिर ईसा ने उन से कहा, “इब्न-ए-आदम
सबत का मालिक है।”

सूखे हाथ की शिफ़ा

6 सबत के एक और दिन ईसा इबादतख़ाने में जा
कर सिखाने लगा। वहाँ एक आदमी था जिस का
दहना हाथ सूखा हुआ था। 7 शरीअत के आलिम और
फ़रीसी बड़े ग़ौर से देख रहे थे कि क्या ईसा इस
आदमी को आज भी शिफ़ा देगा? क्यूँकि वह उस पर
इल्ज़ाम लगाने का कोई बहाना ढूँड रहे थे। 8 लेकिन
ईसा ने उन की सोच को जान लिया और उस सूखे
हाथ वाले आदमी से कहा, “उठ, दरमियान में खड़ा
हो।” चुनाँचे वह आदमी खड़ा हुआ। 9 फिर ईसा ने
उन से पूछा, “मुझे बताओ, शरीअत हमें सबत के
दिन क्या करने की इजाज़त देती है, नेक काम करने
की या ग़लत काम करने की, किसी की जान बचाने
की या उसे तबाह करने की?” 10 वह ख़ामोश हो कर
अपने इर्दगिर्द के तमाम लोगों की तरफ़ देखने लगा।
फिर उस ने कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा।” उस ने
ऐसा किया तो उस का हाथ बहाल हो गया।
11 लेकिन वह आपे में न रहे और एक दूसरे से बात
करने लगे कि हम ईसा से किस तरह निपट सकते
हैं?

ईसा बारह रसूलों को मुक़र्रर करता है

12 उन ही दिनों में ईसा निकल कर दुआ करने के
लिए पहाड़ पर चढ़ गया। दुआ करते करते पूरी
रात गुज़र गई। 13 फिर उस ने अपने शागिर्दों को
अपने पास बुला कर उन में से बारह को चुन लिया,
जिन्हें उस ने अपने रसूल मुक़र्रर किया। उन के
नाम यह हैं : 14 शमाऊन जिस का लक़ब उस ने
पतरस रखा, उस का भाई अन्द्रियास, याक़ूब, यूहन्ना,
फ़िलिप्पुस, बरतुल्माई, 15 मत्ती, तोमा, याक़ूब बिन
हल्फ़ई, शमाऊन मुजाहिद, 16 यहूदाह बिन याक़ूब
और यहूदाह इस्करियोती जिस ने बाद में उसे दुश्मन
के हवाले कर दिया।

ईसा तालीम और शिफ़ा देता है

17 फिर वह उन के साथ पहाड़ से उतर कर एक
खुले और हमवार मैदान में खड़ा हुआ। वहाँ शागिर्दों
की बड़ी तादाद ने उसे घेर लिया। साथ ही बहुत
से लोग यहूदिया, यरूशलम और सूर और सैदा के
साहिली इलाक़े से 18 उस की तालीम सुनने और
बीमारियों से शिफ़ा पाने के लिए आए थे। और
जिन्हें बदरुहें तंग कर रही थीं उन्हें भी शिफ़ा मिली।
19 तमाम लोग उसे छूने की कोशिश कर रहे थे,
क्यूँकि उस में से क़ुव्वत निकल कर सब को शिफ़ा
दे रही थी।

कौन मुबारक है?

20 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों की तरफ़ देख कर
कहा,
“मुबारक हो तुम जो ज़रूरतमन्द हो,
क्यूँकि अल्लाह की बादशाही तुम को ही हासिल है।
21 मुबारक हो तुम जो इस वक़्त भूके हो,
क्यूँकि सेर हो जाओगे।
मुबारक हो तुम जो इस वक़्त रोते हो,
क्यूँकि ख़ुशी से हंसोगे।
22 मुबारक हो तुम जब लोग इस लिए तुम से नफ़रत
करते और तुम्हारा हुक़्क़ा-पानी बन्द करते हैं कि तुम
इब्न-ए-आदम के पैरोकार बन गए हो। हाँ, मुबारक
हो तुम जब वह इसी वजह से तुम्हें लान-तान करते
और तुम्हारी बदनामी करते हैं। 23 जब वह ऐसा करते
हैं तो शादमान हो कर ख़ुशी से नाचो, क्यूँकि आसमान

पर तुम को बड़ा अज्र मिलेगा। उन के बापदादा ने यही
सुलूक नबियों के साथ किया था।
24 मगर तुम पर अफ़्सोस जो अब दौलतमन्द हो,
क्यूँकि तुम्हारा सुकून यहीं ख़त्म हो जाएगा।
25 तुम पर अफ़्सोस जो इस वक़्त ख़ूब सेर हो,
क्यूँकि बाद में तुम भूके होगे।
तुम पर अफ़्सोस जो अब हंस रहे हो,
क्यूँकि एक वक़्त आएगा कि रो रो कर मातम
करोगे।
26 तुम पर अफ़्सोस जिन की तमाम लोग तारीफ़
करते हैं, क्यूँकि उन के बापदादा ने यही सुलूक झूटे
नबियों के साथ किया था।

अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखना

27 लेकिन तुम को जो सुन रहे हो मैं यह बताता हूँ,
अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो, और उन से भलाई
करो जो तुम से नफ़रत करते हैं। 28 जो तुम पर लानत
करते हैं उन्हें बरकत दो, और जो तुम से बुरा सुलूक
करते हैं उन के लिए दुआ करो। 29 अगर कोई तुम्हारे
एक गाल पर थप्पड़ मारे तो उसे दूसरा गाल भी पेश
कर दो। इसी तरह अगर कोई तुम्हारी चादर छीन ले
तो उसे क़मीस लेने से भी न रोको। 30 जो भी तुम से
कुछ माँगता है उसे दो। और जिस ने तुम से कुछ
लिया है उस से उसे वापस देने का तक़ाज़ा न करो।
31 लोगों के साथ वैसा सुलूक करो जैसा तुम चाहते
हो कि वह तुम्हारे साथ करें।
32 अगर तुम सिर्फ़ उन ही से मुहब्बत करो जो तुम से
करते हैं तो इस में तुम्हारी क्या ख़ास मेहरबानी होगी?
गुनाहगार भी ऐसा ही करते हैं। 33 और अगर तुम सिर्फ़
उन ही से भलाई करो जो तुम से भलाई करते हैं तो
इस में तुम्हारी क्या ख़ास मेहरबानी होगी? गुनाहगार
भी ऐसा ही करते हैं। 34 इसी तरह अगर तुम सिर्फ़
उन ही को उधार दो जिन के बारे में तुम्हें अन्दाज़ा है
कि वह वापस कर देंगे तो इस में तुम्हारी क्या ख़ास
मेहरबानी होगी? गुनाहगार भी गुनाहगारों को उधार
देते हैं जब उन्हें सब कुछ वापस मिलने का यक़ीन
होता है। 35 नहीं, अपने दुश्मनों से मुहब्बत करो और
उन ही से भलाई करो। उन्हें उधार दो जिन के बारे में
तुम्हें वापस मिलने की उम्मीद नहीं है। फिर तुम को
बड़ा अज्र मिलेगा और तुम अल्लाह तआला के फ़र्ज़न्द
साबित होगे, क्यूँकि वह भी नाशुक्रों और बुरे लोगों
पर नेकी का इज़हार करता है। 36 लाज़िम है कि तुम
रहमदिल हो क्यूँकि तुम्हारा बाप भी रहमदिल है।

मुन्सिफ़ न बनना

37 दूसरों की अदालत न करना तो तुम्हारी भी
अदालत नहीं की जाएगी। दूसरों को मुजरिम क़रार न
देना तो तुम को भी मुजरिम क़रार नहीं दिया जाएगा।
मुआफ़ करो तो तुम को भी मुआफ़ कर दिया जाएगा।
38 दो तो तुम को भी दिया जाएगा। हाँ, जिस हिसाब
से तुम ने दिया उसी हिसाब से तुम को दिया जाएगा,
बल्कि पैमाना दबा दबा और हिला हिला कर और
लबरेज़ करके तुम्हारी झोली में डाल दिया जाएगा।
क्यूँकि जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे
लिए नापा जाएगा।”
39 फिर ईसा ने यह मिसाल पेश की। “क्या एक
अंधा दूसरे अंधे की राहनुमाई कर सकता है? हरगिज़
नहीं! अगर वह ऐसा करे तो दोनों गढ़े में गिर जाएंगे।
40 शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता बल्कि
जब उसे पूरी ट्रेनिंग मिली हो तो वह अपने उस्ताद ही
की मानिन्द होगा।
41 तू क्यूँ ग़ौर से अपने भाई की आँख में पड़े तिनके
पर नज़र करता है जबकि तुझे वह शहतीर नज़र नहीं
आता जो तेरी अपनी आँख में है? 42 तू क्यूँकर अपने
भाई से कह सकता है, ‘भाई, ठहरो, मुझे तुम्हारी
आँख में पड़ा तिनका निकालने दो’ जबकि तुझे
अपनी आँख का शहतीर नज़र नहीं आता? रियाकार!
पहले अपनी आँख के शहतीर को निकाल। तब ही
तुझे भाई का तिनका साफ़ नज़र आएगा और तू उसे
अच्छी तरह से देख कर निकाल सकेगा।

दरख़्त उस के फल से पहचाना जाता है

43 न अच्छा दरख़्त ख़राब फल लाता है, न ख़राब
दरख़्त अच्छा फल। 44 हर क़िस्म का दरख़्त उस
के फल से पहचाना जाता है। ख़ारदार झाड़ियों से
अन्जीर या अंगूर नहीं तोड़े जाते। 45 नेक शख़्स
का अच्छा फल उस के दिल के अच्छे ख़ज़ाने से
निकलता है जबकि बुरे शख़्स का ख़राब फल उस
के दिल की बुराई से निकलता है। क्यूँकि जिस चीज़
से दिल भरा होता है वही छलक कर मुँह से निकलती
है।

दो क़िस्म के मकान

46 तुम क्यूँ मुझे 'ख़ुदावन्द, ख़ुदावन्द' कह कर
पुकारते हो? मेरी बात पर तो तुम अमल नहीं करते।
47 लेकिन मैं तुम को बताता हूँ कि वह शख़्स किस
की मानिन्द है जो मेरे पास आ कर मेरी बात सुन लेता
और उस पर अमल करता है। 48 वह उस आदमी
की मानिन्द है जिस ने अपना मकान बनाने के लिए
गहरी बुन्याद की खुदाई करवाई। खोद खोद कर
वह चटान तक पहुँच गया। उसी पर उस ने मकान
की बुन्याद रखी। मकान मुकम्मल हुआ तो एक दिन
सैलाब आया। ज़ोर से बहता हुआ पानी मकान से
टकराया, लेकिन वह उसे हिला न सका क्यूँकि वह
मज़बूती से बनाया गया था। 49 लेकिन जो मेरी बात
सुनता और उस पर अमल नहीं करता वह उस शख़्स
की मानिन्द है जिस ने अपना मकान बुन्याद के बग़ैर
ज़मीन पर ही तामीर किया। जूँ ही ज़ोर से बहता हुआ
पानी उस से टकराया तो वह गिर गया और सरासर
तबाह हो गया।"

रोमी अफ़्सर के ग़ुलाम की शिफ़ा

7 1 यह सब कुछ लोगों को सुनाने के बाद ईसा
कफ़र्नहूम चला गया। 2 वहाँ सौ फ़ौजियों पर
मुक़र्रर एक अफ़्सर रहता था। उन दिनों में उस का
एक ग़ुलाम जो उसे बहुत अज़ीज़ था बीमार पड़ गया।
अब वह मरने को था। 3 चूँकि अफ़्सर ने ईसा के बारे
में सुना था इस लिए उस ने यहूदियों के कुछ बुज़ुर्ग
यह दरख़्वास्त करने के लिए उस के पास भेज दिए
कि वह आ कर ग़ुलाम को शिफ़ा दे। 4 वह ईसा के
पास पहुँच कर बड़े ज़ोर से इल्तिजा करने लगे, "यह
आदमी इस लाइक़ है कि आप उस की दरख़्वास्त
पूरी करें, 5 क्यूँकि वह हमारी क़ौम से प्यार करता
है, यहाँ तक कि उस ने हमारे लिए इबादतख़ाना भी
तामीर करवाया है।"

6 चुनाँचे ईसा उन के साथ चल पड़ा। लेकिन जब
वह घर के क़रीब पहुँच गया तो अफ़्सर ने अपने
कुछ दोस्त यह कह कर उस के पास भेज दिए कि
"ख़ुदावन्द, मेरे घर में आने की तक्लीफ़ न करें,
क्यूँकि मैं इस लाइक़ नहीं हूँ। 7 इस लिए मैं ने ख़ुद को
आप के पास आने के लाइक़ भी न समझा। बस वहीं
से कह दें तो मेरा ग़ुलाम शिफ़ा पा जाएगा। 8 क्यूँकि
मुझे ख़ुद आला अफ़्सरों के हुक्म पर चलना पड़ता
है और मेरे मातहत भी फ़ौजी हैं। एक को कहता हूँ,
'जा!' तो वह जाता है और दूसरे को 'आ!' तो वह
आता है। इसी तरह मैं अपने नौकर को हुक्म देता हूँ,
'यह कर!' तो वह करता है।"

9 यह सुन कर ईसा निहायत हैरान हुआ। उस ने मुड़
कर अपने पीछे आने वाले हुजूम से कहा, "मैं तुम
को सच बताता हूँ, मैं ने इस्राईल में भी इस क़िस्म
का ईमान नहीं पाया।"

10 जब अफ़्सर का पैग़ाम पहुँचाने वाले घर वापस
आए तो उन्हों ने देखा कि ग़ुलाम की सेहत बहाल हो
चुकी है।

बेवा का बेटा ज़िन्दा किया जाता है

11 कुछ देर के बाद ईसा अपने शागिर्दों के साथ
नाइन शहर के लिए रवाना हुआ। एक बड़ा हुजूम भी
साथ चल रहा था। 12 जब वह शहर के दरवाज़े के
क़रीब पहुँचा तो एक जनाज़ा निकला। जो नौजवान
फ़ौत हुआ था उस की माँ बेवा थी और वह उस का
इक्लौता बेटा था। माँ के साथ शहर के बहुत से लोग

चल रहे थे। 13 उसे देख कर ख़ुदावन्द को उस पर
बड़ा तरस आया। उस ने उस से कहा, “मत रो।”
14 फिर वह जनाज़े के पास गया और उसे छुआ। उसे
उठाने वाले रुक गए तो ईसा ने कहा, “ऐ नौजवान,
मैं तुझे कहता हूँ कि उठ!” 15 मुर्दा उठ बैठा और
बोलने लगा। ईसा ने उसे उस की माँ के सपुर्द कर
दिया।

16 यह देख कर तमाम लोगों पर ख़ौफ़ तारी हो गया
और वह अल्लाह की तम्जीद करके कहने लगे, “हमारे
दरमियान एक बड़ा नबी बरपा हुआ है। अल्लाह ने
अपनी क़ौम पर नज़र की है।”

17 और ईसा के बारे में यह ख़बर पूरे यहूदिया और
इर्दगिर्द के इलाक़े में फैल गई।

यहया का ईसा से सवाल

18 यहया को भी अपने शागिर्दों की मारिफ़त इन
तमाम वाक़िआत के बारे में पता चला। इस पर उस
ने दो शागिर्दों को बुला कर 19 उन्हें यह पूछने के लिए
ख़ुदावन्द के पास भेजा, “क्या आप वही हैं जिसे
आना है या हम किसी और के इन्तिज़ार में रहें?”

20 चुनाँचे यह शागिर्द ईसा के पास पहुँच कर कहने
लगे, “यहया बपतिस्मा देने वाले ने हमें यह पूछने के
लिए भेजा है कि क्या आप वही हैं जिसे आना है या
हम किसी और का इन्तिज़ार करें?”

21 ईसा ने उसी वक़्त बहुत से लोगों को शिफ़ा दी थी
जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बीमारियों, मुसीबतों और
बदरूहों की गिरिफ़्त में थे। अंधों की आँखें भी बहाल
हो गई थीं। 22 इस लिए उस ने जवाब में यहया के
क़ासिदों से कहा, “यहया के पास वापस जा कर उसे
सब कुछ बता देना जो तुम ने देखा और सुना है। ‘अंधे
देखते, लंगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ियों को पाक-
साफ़ किया जाता है, बहरे सुनते हैं, मुर्दों को ज़िन्दा
किया जाता है और ग़रीबों को अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाई जाती है।’ 23 यहया को बताओ, ‘मुबारक है
वह जो मेरे सबब से ठोकर खा कर बर्गश्ता नहीं
होता’।”

24 यहया के यह क़ासिद चले गए तो ईसा हुजूम
से यहया के बारे में बात करने लगा, “तुम रेगिस्तान
में क्या देखने गए थे? एक सरकंडा जो हवा के हर
झोंके से हिलता है? बेशक नहीं। 25 या क्या वहाँ जा
कर ऐसे आदमी की तवक़्क़ो कर रहे थे जो नफ़ीस
और मुलाइम लिबास पहने हुए है? नहीं, जो शानदार
कपड़े पहनते और ऐश-ओ-इश्रत में ज़िन्दगी गुज़ारते
हैं वह शाही महलों में पाए जाते हैं। 26 तो फिर तुम
क्या देखने गए थे? एक नबी को? बिलकुल सहीह,
बल्कि मैं तुम को बताता हूँ कि वह नबी से भी बड़ा
है। 27 उसी के बारे में कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है,
‘देख मैं अपने पैग़म्बर को तेरे आगे आगे भेज देता
हूँ जो तेरे सामने रास्ता तय्यार करेगा।’ 28 मैं तुम को
बताता हूँ कि इस दुनिया में पैदा होने वाला कोई
भी शख़्स यहया से बड़ा नहीं है। तो भी अल्लाह की
बादशाही में दाख़िल होने वाला सब से छोटा शख़्स
उस से बड़ा है।”

29 बात यह थी कि तमाम क़ौम बशमूल टैक्स
लेने वालों ने यहया का पैग़ाम सुन कर अल्लाह का
इन्साफ़ मान लिया और यहया से बपतिस्मा लिया
था। 30 सिर्फ़ फ़रीसी और शरीअत के उलमा ने अपने
बारे में अल्लाह की मर्ज़ी को रद्द करके यहया का
बपतिस्मा लेने से इन्कार किया था।

31 ईसा ने बात जारी रखी, “चुनाँचे मैं इस नस्ल
के लोगों को किस से तश्बीह दूँ? वह किस से
मुताबिक़त रखते हैं? 32 वह उन बच्चों की मानिन्द
हैं जो बाज़ार में बैठे खेल रहे हैं। उन में से कुछ ऊँची
आवाज़ से दूसरे बच्चों से शिकायत कर रहे हैं, ‘हम
ने बाँसरी बजाई तो तुम न नाचे। फिर हम ने नोहा
के गीत गाए, लेकिन तुम न रोए।’ 33 देखो, यहया
बपतिस्मा देने वाला आया और न रोटी खाई, न मै
पी। यह देख कर तुम कहते हो कि उस में बदरुह है।
34 फिर इब्न-ए-आदम खाता और पीता हुआ आया।
अब तुम कहते हो, ‘देखो यह कैसा पेटू और शराबी
है। और वह टैक्स लेने वालों और गुनाहगारों का

दोस्त भी है।' 35 लेकिन हिक्मत अपने तमाम बच्चों से
ही सहीह साबित हुई है।"

ईसा शमाऊन फ़रीसी के घर में

36 एक फ़रीसी ने ईसा को खाना खाने की दावत
दी। ईसा उस के घर जा कर खाना खाने के लिए बैठ
गया। 37 उस शहर में एक बदचलन औरत रहती थी।
जब उसे पता चला कि ईसा उस फ़रीसी के घर में
खाना खा रहा है तो वह इत्रदान में बेशक़ीमत इत्र
ला कर 38 पीछे से उस के पाँओ के पास खड़ी हो
गई। वह रो पड़ी और उस के आँसू टपक टपक कर
ईसा के पाँओ को तर करने लगे। फिर उस ने उस के
पाँओ को अपने बालों से पोंछ कर उन्हें चूमा और
उन पर इत्र डाला। 39 जब ईसा के फ़रीसी मेज़बान ने
यह देखा तो उस ने दिल में कहा, "अगर यह आदमी
नबी होता तो उसे मालूम होता कि यह किस क़िस्म
की औरत है जो उसे छू रही है, कि यह गुनाहगार
है।"

40 ईसा ने इन ख़यालात के जवाब में उस से कहा,
"शमाऊन, मैं तुझे कुछ बताना चाहता हूँ।"

उस ने कहा, "जी उस्ताद, बताएँ।"

41 ईसा ने कहा, "एक साहूकार के दो क़र्ज़दार थे।
एक को उस ने चाँदी के 500 सिक्के दिए थे और दूसरे
को 50 सिक्के। 42 लेकिन दोनों अपना क़र्ज़ अदा न
कर सके। यह देख कर उस ने दोनों का क़र्ज़ मुआफ़
कर दिया। अब मुझे बता, दोनों क़र्ज़दारों में से कौन
उसे ज़्यादा अज़ीज़ रखेगा?"

43 शमाऊन ने जवाब दिया, "मेरे ख़याल में वह जिसे
ज़्यादा मुआफ़ किया गया।"

ईसा ने कहा, "तू ने ठीक अन्दाज़ा लगाया है।"
44 और औरत की तरफ़ मुड़ कर उस ने शमाऊन से
बात जारी रखी, "क्या तू इस औरत को देखता है?
45 जब मैं इस घर में आया तो तू ने मुझे पाँओ धोने
के लिए पानी न दिया। लेकिन इस ने मेरे पाँओ को
अपने आँसूओं से तर करके अपने बालों से पोंछ कर
ख़ुश्क कर दिया है। तू ने मुझे बोसा न दिया, लेकिन
यह मेरे अन्दर आने से ले कर अब तक मेरे पाँओ को
चूमने से बाज़ नहीं रही। 46 तू ने मेरे सर पर ज़ैतून का
तेल न डाला, लेकिन इस ने मेरे पाँओ पर इत्र डाला।
47 इस लिए मैं तुझे बताता हूँ कि इस के गुनाहों को
गो वह बहुत हैं मुआफ़ कर दिया गया है, क्यूँकि इस
ने बहुत मुहब्बत का इज़हार किया है। लेकिन जिसे
कम मुआफ़ किया गया हो वह कम मुहब्बत रखता
है।"

48 फिर ईसा ने औरत से कहा, "तेरे गुनाहों को
मुआफ़ कर दिया गया है।"

49 यह सुन कर जो साथ बैठे थे आपस में कहने
लगे, "यह किस क़िस्म का शख़्स है जो गुनाहों को
भी मुआफ़ करता है?"

50 लेकिन ईसा ने ख़ातून से कहा, "तेरे ईमान ने तुझे
बचा लिया है। सलामती से चली जा।"

ख़िदमतगुज़ार ख़वातीन ईसा के साथ सफ़र करती हैं

8 1 इस के कुछ देर बाद ईसा मुख़्तलिफ़ शहरों
और दीहातों में से गुज़र कर सफ़र करने लगा।
हर जगह उस ने अल्लाह की बादशाही के बारे में
ख़ुशख़बरी सुनाई। उस के बारह शागिर्द उस के साथ
थे, 2 नीज़ कुछ ख़वातीन भी जिन्हें उस ने बदरूहों
से रिहाई और बीमारियों से शिफ़ा दी थी। इन में से
एक मरियम थी जो मग्दलीनी कहलाती थी जिस में
से सात बदरुहें निकाली गई थीं। 3 फिर यूअन्ना जो
ख़ूज़ा की बीवी थी (ख़ूज़ा हेरोदेस बादशाह का एक
अफ़सर था)। सूसन्ना और दीगर कई ख़वातीन भी थीं
जो अपने माली वसाइल से उन की ख़िदमत करती
थीं।

बीज बोने वाले की तम्सील

4 एक दिन ईसा ने एक बड़े हुजूम को एक तम्सील
सुनाई। लोग मुख़्तलिफ़ शहरों से उसे सुनने के लिए
जमा हो गए थे।

5 "एक किसान बीज बोने के लिए निकला। जब
बीज इधर उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते पर

गिरे। वहाँ उन्हें पाँओ तले कुचला गया और परिन्दों
ने उन्हें चुग लिया। 6 कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे।
वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन नमी की कमी थी,
इस लिए पौदे कुछ देर के बाद सूख गए। 7 कुछ दाने
ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ वह
उगने तो लगे, लेकिन ख़ुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़
कर उन्हें फलने फूलने की जगह न दी। चुनाँचे वह
भी ख़त्म हो गए। 8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रख़ेज़
ज़मीन पर गिरे। वहाँ वह उग सके और जब फ़सल
पक गई तो सौ गुना ज़्यादा फल पैदा हुआ।"

यह कह कर ईसा पुकार उठा, "जो सुन सकता है
वह सुन ले!"

तम्सीलों का मक़्सद

9 उस के शागिर्दों ने उस से पूछा कि इस तम्सील का
क्या मतलब है? 10 जवाब में उस ने कहा, "तुम को
तो अल्लाह की बादशाही के भेद समझने की लियाक़त
दी गई है। लेकिन मैं दूसरों को समझाने के लिए
तम्सीलें इस्तेमाल करता हूँ ताकि पाक कलाम पूरा
हो जाए कि 'वह अपनी आँखों से देखेंगे मगर कुछ
नहीं जानेंगे, वह अपने कानों से सुनेंगे मगर कुछ नहीं
समझेंगे।'

बीज बोने वाले की तम्सील का मतलब

11 तम्सील का मतलब यह है : बीज से मुराद अल्लाह
का कलाम है। 12 राह पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं
जो कलाम सुनते तो हैं, लेकिन फिर इब्लीस आ कर
उसे उन के दिलों से छीन लेता है, ऐसा न हो कि
वह ईमान ला कर नजात पाएँ। 13 पथरीली ज़मीन
पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुन कर
उसे ख़ुशी से क़बूल तो कर लेते हैं, लेकिन जड़ नहीं
पकड़ते। नतीजे में अगरचे वह कुछ देर के लिए ईमान
रखते हैं तो भी जब किसी आज़माइश का सामना
करना पड़ता है तो वह बर्गश्ता हो जाते हैं। 14 ख़ुदरौ
काँटेदार पौदों के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग
हैं जो सुनते तो हैं, लेकिन जब वह चले जाते हैं तो
रोज़मर्रा की परेशानियाँ, दौलत और ज़िन्दगी की ऐश-
ओ-इश्रत उन्हें फलने फूलने नहीं देती। नतीजे में वह
फल लाने तक नहीं पहुँचते। 15 इस के मुक़ाबले में
ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे हुए दाने वह लोग हैं जिन का
दिल दियानतदार और अच्छा है। जब वह कलाम
सुनते हैं तो वह उसे अपनाते और साबितक़दमी से
तरक़्क़ी करते करते फल लाते हैं।

कोई चराग़ को बर्तन के नीचे नहीं छुपाता

16 जब कोई चराग़ जलाता है तो वह उसे किसी
बर्तन या चारपाई के नीचे नहीं रखता, बल्कि उसे
शमादान पर रख देता है ताकि उस की रौशनी अन्दर
आने वालों को नज़र आए।

17 जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है वह आख़िर में
ज़ाहिर हो जाएगा, और जो कुछ भी छुपा हुआ है वह
मालूम हो जाएगा और रौशनी में लाया जाएगा।

18 चुनाँचे इस पर ध्यान दो कि तुम किस तरह सुनते
हो। क्यूँकि जिस के पास कुछ है उसे और दिया
जाएगा, जबकि जिस के पास कुछ नहीं है उस से
वह भी छीन लिया जाएगा जिस के बारे में वह ख़याल
करता है कि उस का है।"

ईसा की माँ और भाई

19 एक दिन ईसा की माँ और भाई उस के पास
आए, लेकिन वह हुजूम की वजह से उस तक न पहुँच
सके। 20 चुनाँचे ईसा को इत्तिला दी गई, "आप की
माँ और भाई बाहर खड़े हैं और आप से मिलना चाहते
हैं।"

21 उस ने जवाब दिया, "मेरी माँ और भाई वह सब
हैं जो अल्लाह का कलाम सुन कर उस पर अमल करते
हैं।"

ईसा आँधी को थमा देता है

22 एक दिन ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "आओ,
हम झील को पार करें।" चुनाँचे वह कश्ती पर सवार
हो कर रवाना हुए। 23 जब कश्ती चली जा रही थी

तो ईसा सो गया। अचानक झील पर आँधी आई।
कश्ती पानी से भरने लगी और डूबने का ख़तरा था।
24 फिर उन्हों ने ईसा के पास जा कर उसे जगा दिया
और कहा, “उस्ताद, उस्ताद, हम तबाह हो रहे हैं।”
वह जाग उठा और आँधी और मौजों को डाँटा।
आँधी थम गई और लहरें बिलकुल साकित हो गईं।
25 फिर उस ने शागिर्दों से पूछा, “तुम्हारा ईमान कहाँ
है?”

उन पर ख़ौफ़ तारी हो गया और वह सख़्त हैरान हो
कर आपस में कहने लगे, “आख़िर यह कौन है? वह
हवा और पानी को भी हुक्म देता है, और वह उस
की मानते हैं।”

ईसा एक गरासीनी आदमी से बदरुहें निकाल देता है

26 फिर वह सफ़र जारी रखते हुए गरासा के इलाक़े
के किनारे पर पहुँचे जो झील के पार गलील के
मुक़ाबिल है। 27 जब ईसा कश्ती से उतरा तो शहर
का एक आदमी ईसा को मिला जो बदरूहों की
गिरिफ़्त में था। वह काफ़ी देर से कपड़े पहने बग़ैर
चलता फिरता था और अपने घर के बजाय क़ब्रों में
रहता था। 28 ईसा को देख कर वह चिल्लाया और उस
के सामने गिर गया। ऊँची आवाज़ से उस ने कहा,
“ईसा अल्लाह तआला के फ़र्ज़न्द, मेरा आप के साथ
क्या वास्ता है? मैं मिन्नत करता हूँ, मुझे अज़ाब में
न डालें।” 29 क्यूँकि ईसा ने नापाक रूह को हुक्म
दिया था, “आदमी में से निकल जा!” इस बदरुह
ने बड़ी देर से उस पर क़ब्ज़ा किया हुआ था, इस
लिए लोगों ने उस के हाथ-पाँओ ज़न्जीरों से बांध
कर उस की पहरादारी करने की कोशिश की थी,
लेकिन बेफ़ाइदा। वह ज़न्जीरों को तोड़ डालता और
बदरुह उसे वीरान इलाक़ों में भगाए फिरती थी।

30 ईसा ने उस से पूछा, “तेरा नाम क्या है?” उस
ने जवाब दिया, “लश्कर।” इस नाम की वजह यह
थी कि उस में बहुत सी बदरुहें घुसी हुई थीं। 31 अब
यह मिन्नत करने लगीं, “हमें अथाह गढ़े में जाने को
न कहें।”

32 उस वक़्त क़रीब की पहाड़ी पर सूअरों का बड़ा
ग़ोल चर रहा था। बदरूहों ने ईसा से इल्तिमास की,
“हमें उन सूअरों में दाख़िल होने दें।” उस ने इजाज़त
दे दी। 33 चुनाँचे वह उस आदमी में से निकल कर
सूअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे ग़ोल के सूअर भाग
भाग कर पहाड़ी की ढलान पर से उतरे और झील में
झपट कर डूब मरे।

34 यह देख कर सूअरों के गल्लाबान भाग गए। उन्हों
ने शहर और दीहात में इस बात का चर्चा किया 35 तो
लोग यह मालूम करने के लिए कि क्या हुआ है अपनी
जगहों से निकल कर ईसा के पास आए। उस के पास
पहुँचे तो वह आदमी मिला जिस से बदरुहें निकल
गई थीं। अब वह कपड़े पहने ईसा के पाँओ में बैठा
था और उस की ज़हनी हालत ठीक थी। यह देख कर
वह डर गए। 36 जिन्हों ने सब कुछ देखा था उन्हों ने
लोगों को बताया कि इस बदरुह-गिरिफ़्ता आदमी
को किस तरह रिहाई मिली है। 37 फिर उस इलाक़े
के तमाम लोगों ने ईसा से दरख़्वास्त की कि वह उन्हें
छोड़ कर चला जाए, क्यूँकि उन पर बड़ा ख़ौफ़ छा
गया था। चुनाँचे ईसा कश्ती पर सवार हो कर वापस
चला गया। 38 जिस आदमी से बदरुहें निकल गई थीं
उस ने उस से इल्तिमास की, “मुझे भी अपने साथ
जाने दें।”

लेकिन ईसा ने उसे इजाज़त न दी बल्कि कहा,
39 “अपने घर वापस चला जा और दूसरों को वह
सब कुछ बता जो अल्लाह ने तेरे लिए किया है।”

चुनाँचे वह वापस चला गया और पूरे शहर में लोगों
को बताने लगा कि ईसा ने मेरे लिए क्या कुछ किया
है।

याईर की बेटी और बीमार ख़ातून

40 जब ईसा झील के दूसरे किनारे पर वापस पहुँचा
तो लोगों ने उस का इस्तिक़्बाल किया, क्यूँकि वह
उस के इन्तिज़ार में थे। 41 इतने में एक आदमी ईसा
के पास आया जिस का नाम याईर था। वह मक़ामी
इबादतख़ाने का राहनुमा था। वह ईसा के पाँओ में

गिर कर मिन्नत करने लगा, “मेरे घर चलें।” 42 क्यूँकि
उस की इक्लौती बेटी जो तक़रीबन बारह साल की
थी मरने को थी।

ईसा चल पड़ा। हुजूम ने उसे यूँ घेरा हुआ था कि
साँस लेना भी मुश्किल था। 43 हुजूम में एक ख़ातून
थी जो बारह साल से ख़ून बहने के मर्ज़ से रिहाई न
पा सकी थी। कोई उसे शिफ़ा न दे सका था। 44 अब
उस ने पीछे से आ कर ईसा के लिबास के किनारे
को छुआ। ख़ून बहना फ़ौरन बन्द हो गया। 45 लेकिन
ईसा ने पूछा, “किस ने मुझे छुआ है?”

सब ने इन्कार किया और पतरस ने कहा, “उस्ताद,
यह तमाम लोग तो आप को घेर कर दबा रहे हैं।”

46 लेकिन ईसा ने इसरार किया, “किसी ने ज़रूर
मुझे छुआ है, क्यूँकि मुझे महसूस हुआ है कि मुझ में
से तवानाई निकली है।” 47 जब उस ख़ातून ने देखा
कि भेद खुल गया तो वह लरज़ती हुई आई और उस
के सामने गिर गई। पूरे हुजूम की मौजूदगी में उस ने
बयान किया कि उस ने ईसा को क्यूँ छुआ था और
कि छूते ही उसे शिफ़ा मिल गई थी। 48 ईसा ने कहा,
“बेटी, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है। सलामती से
चली जा।”

49 ईसा ने यह बात अभी ख़त्म नहीं की थी कि
इबादतख़ाने के राहनुमा याईर के घर से कोई शख़्स
आ पहुँचा। उस ने कहा, “आप की बेटी फ़ौत हो
चुकी है, अब उस्ताद को मज़ीद तक्लीफ़ न दें।”

50 लेकिन ईसा ने यह सुन कर कहा, “मत घबरा।
फ़क़त ईमान रख तो वह बच जाएगी।”

51 वह घर पहुँच गए तो ईसा ने किसी को भी सिवाए
पतरस, यूहन्ना, याक़ूब और बेटी के वालिदैन के
अन्दर आने की इजाज़त न दी। 52 तमाम लोग रो रहे
और छाती पीट पीट कर मातम कर रहे थे। ईसा ने
कहा, “ख़ामोश! वह मर नहीं गई बल्कि सो रही है।”

53 लोग हंस कर उस का मज़ाक़ उड़ाने लगे, क्यूँकि
वह जानते थे कि लड़की मर गई है। 54 लेकिन ईसा
ने लड़की का हाथ पकड़ कर ऊँची आवाज़ से कहा,
“बेटी, जाग उठ!” 55 लड़की की जान वापस आ
गई और वह फ़ौरन उठ खड़ी हुई। फिर ईसा ने हुक्म
दिया कि उसे कुछ खाने को दिया जाए। 56 यह सब
कुछ देख कर उस के वालिदैन हैरतज़दा हुए। लेकिन
उस ने उन्हें कहा कि इस के बारे में किसी को भी न
बताना।

ईसा बारह रसूलों को तब्लीग़ करने भेज देता है

9 1 इस के बाद ईसा ने अपने बारह शागिर्दों को
इकट्ठा करके उन्हें बदरूहों को निकालने और
मरीज़ों को शिफ़ा देने की क़ुव्वत और इख़तियार
दिया। 2 फिर उस ने उन्हें अल्लाह की बादशाही की
मुनादी करने और शिफ़ा देने के लिए भेज दिया। 3 उस
ने कहा, “सफ़र पर कुछ साथ न लेना। न लाठी, न
सामान के लिए बैग, न रोटी, न पैसे और न एक से
ज़्यादा सूट। 4 जिस घर में भी तुम जाते हो उस में
उस मक़ाम से चले जाने तक ठहरो। 5 और अगर
मक़ामी लोग तुम को क़बूल न करें तो फिर उस शहर
से निकलते वक़्त उस की गर्द अपने पाँओ से झाड़
दो। यूँ तुम उन के ख़िलाफ़ गवाही दोगे।”

6 चुनाँचे वह निकल कर गाँव गाँव जा कर अल्लाह
की ख़ुशख़बरी सुनाने और मरीज़ों को शिफ़ा देने लगे।

हेरोदेस अनतिपास परेशान हो जाता है

7 जब गलील के हुक्मरान हेरोदेस अनतिपास ने सब
कुछ सुना जो ईसा कर रहा था तो वह उलझन में पड़
गया। बाज़ तो कह रहे थे कि यहया बपतिस्मा देने
वाला जी उठा है। 8 औरों का ख़याल था कि इल्यास
नबी ईसा में ज़ाहिर हुआ है या कि क़दीम ज़माने का
कोई और नबी जी उठा है। 9 लेकिन हेरोदेस ने कहा,
“मैं ने ख़ुद यहया का सर क़लम करवाया था। तो
फिर यह कौन है जिस के बारे में मैं इस क़िस्म की
बातें सुनता हूँ?” और वह उस से मिलने की कोशिश
करने लगा।

ईसा 5000 अफ़राद को खाना खिलाता है

10 रसूल वापस आए तो उन्हों ने ईसा को सब कुछ
सुनाया जो उन्हों ने किया था। फिर वह उन्हें अलग
ले जा कर बैत-सैदा नामी शहर में आया। 11 लेकिन
जब लोगों को पता चला तो वह उन के पीछे वहाँ
पहुँच गए। ईसा ने उन्हें आने दिया और अल्लाह की
बादशाही के बारे में तालीम दी। साथ साथ उस ने
मरीज़ों को शिफ़ा भी दी। 12 जब दिन ढलने लगा तो
बारह शागिर्दों ने पास आ कर उस से कहा, "लोगों
को रुख़्सत कर दें ताकि वह इर्दगिर्द के दीहातों और
बस्तियों में जा कर रात ठहरने और खाने का बन्द-
ओ-बस्त कर सकें, क्यूँकि इस वीरान जगह में कुछ
नहीं मिलेगा।"

13 लेकिन ईसा ने उन्हें कहा, "तुम ख़ुद इन्हें कुछ
खाने को दो।"

उन्हों ने जवाब दिया, "हमारे पास सिर्फ़ पाँच
रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। या क्या हम जा कर इन
तमाम लोगों के लिए खाना ख़रीद लाएँ?" 14 (वहाँ
तक़रीबन 5,000 मर्द थे।)

ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "तमाम लोगों को
गुरोहों में तक़्सीम करके बिठा दो। हर गुरोह पचास
अफ़राद पर मुश्तमिल हो।"

15 शागिर्दों ने ऐसा ही किया और सब को बिठा
दिया। 16 इस पर ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो
मछलियों को ले कर आसमान की तरफ़ नज़र उठाई
और उन के लिए शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उस
ने उन्हें तोड़ तोड़ कर शागिर्दों को दिया ताकि वह
लोगों में तक़्सीम करें। 17 और सब ने जी भर कर
खाया। इस के बाद जब बचे हुए टुकड़े जमा किए
गए तो बारह टोकरे भर गए।

पतरस का इक़्रार

18 एक दिन ईसा अकेला दुआ कर रहा था। सिर्फ़
शागिर्द उस के साथ थे। उस ने उन से पूछा, "मैं आम
लोगों के नज़्दीक कौन हूँ?"

19 उन्हों ने जवाब दिया, "कुछ कहते हैं यहया
बपतिस्मा देने वाला, कुछ यह कि आप इल्यास नबी
हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि क़दीम ज़माने का कोई
नबी जी उठा है।"

20 उस ने पूछा, "लेकिन तुम क्या कहते हो? तुम्हारे
नज़्दीक मैं कौन हूँ?"

पतरस ने जवाब दिया, "आप अल्लाह के मसीह हैं।"

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

21 यह सुन कर ईसा ने उन्हें यह बात किसी को भी
बताने से मना किया। 22 उस ने कहा, "लाज़िम है कि
इब्न-ए-आदम बहुत दुख उठा कर बुज़ुर्गों, राहनुमा
इमामों और शरीअत के उलमा से रद्द किया जाए।
उसे क़त्ल भी किया जाएगा, लेकिन तीसरे दिन वह
जी उठेगा।"

23 फिर उस ने सब से कहा, "जो मेरे पीछे आना
चाहे वह अपने आप का इन्कार करे और हर रोज़
अपनी सलीब उठा कर मेरे पीछे हो ले। 24 क्यूँकि
जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो
देगा। लेकिन जो मेरी ख़ातिर अपनी जान खो दे वही
उसे बचाएगा। 25 क्या फ़ाइदा है अगर किसी को
पूरी दुनिया हासिल हो जाए मगर वह अपनी जान से
महरूम हो जाए या उसे इस का नुक़्सान उठाना पड़े?
26 जो भी मेरे और मेरी बातों के सबब से शरमाए उस
से इब्न-ए-आदम भी उस वक़्त शरमाएगा जब वह
अपने और अपने बाप के और मुक़द्दस फ़रिश्तों के
जलाल में आएगा। 27 मैं तुम को सच बताता हूँ, यहाँ
कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने से पहले ही अल्लाह
की बादशाही को देखेंगे।"

ईसा की सूरत बदल जाती है

28 तक़रीबन आठ दिन गुज़र गए। फिर ईसा पतरस,
याक़ूब और यूहन्ना को साथ ले कर दुआ करने
के लिए पहाड़ पर चढ़ गया। 29 वहाँ दुआ करते
करते उस के चिहरे की सूरत बदल गई और उस के
कपड़े सफ़ेद हो कर बिजली की तरह चमकने लगे।

30 अचानक दो मर्द ज़ाहिर हो कर उस से मुख़ातिब
हुए। एक मूसा और दूसरा इल्यास था। 31 उन की
शक्ल-ओ-सूरत पुरजलाल थी। वह ईसा से इस के
बारे में बात करने लगे कि वह किस तरह अल्लाह
का मक़्सद पूरा करके यरूशलम में इस दुनिया से
कूच कर जाएगा। 32 पतरस और उस के साथियों को
गहरी नींद आ गई थी, लेकिन जब वह जाग उठे
तो ईसा का जलाल देखा और यह कि दो आदमी
उस के साथ खड़े हैं। 33 जब वह मर्द ईसा को छोड़
कर रवाना होने लगे तो पतरस ने कहा, "उस्ताद,
कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। आएँ, हम
तीन झोंपड़ियाँ बनाएँ, एक आप के लिए, एक मूसा
के लिए और एक इल्यास के लिए।" लेकिन वह नहीं
जानता था कि क्या कह रहा है।

34 यह कहते ही एक बादल आ कर उन पर छा
गया। जब वह उस में दाख़िल हुए तो दहशतज़दा हो
गए। 35 फिर बादल से एक आवाज़ सुनाई दी, "यह
मेरा चुना हुआ फ़र्ज़न्द है, इस की सुनो।"

36 आवाज़ ख़त्म हुई तो ईसा अकेला ही था। और
उन दिनों में शागिर्दों ने किसी को भी इस वाकिए के
बारे में न बताया बल्कि ख़ामोश रहे।

ईसा लड़के में से बदरुह निकालता है

37 अगले दिन वह पहाड़ से उतर आए तो एक
बड़ा हुजूम ईसा से मिलने आया। 38 हुजूम में से एक
आदमी ने ऊँची आवाज़ से कहा, "उस्ताद, मेहरबानी
करके मेरे बेटे पर नज़र करें। वह मेरा इक्लौता बेटा
है। 39 एक बदरुह उसे बार बार अपनी गिरिफ़्त में ले
लेती है। फिर वह अचानक चीख़ें मारने लगता है।
बदरुह उसे झंझोड़ कर इतना तंग करती है कि उस
के मुँह से झाग निकलने लगता है। वह उसे कुचल
कुचल कर मुश्किल से छोड़ती है। 40 मैं ने आप के
शागिर्दों से दरख़्वास्त की थी कि वह उसे निकालें,
लेकिन वह नाकाम रहे।"

41 ईसा ने कहा, "ईमान से ख़ाली और टेढ़ी नस्ल!
मैं कब तक तुम्हारे पास रहूँ, कब तक तुम्हें बर्दाश्त
करूँ?" फिर उस ने आदमी से कहा, "अपने बेटे को
ले आ।"

42 बेटा ईसा के पास आ रहा था तो बदरुह उसे
ज़मीन पर पटख़ कर झंझोड़ने लगी। लेकिन ईसा ने
नापाक रूह को डाँट कर बच्चे को शिफ़ा दी। फिर उस
ने उसे वापस बाप के सपुर्द कर दिया। 43 तमाम लोग
अल्लाह की अज़ीम क़ुदरत को देख कर हक्का-बक्का रह
गए।

ईसा की मौत का दूसरा एलान

अभी सब उन तमाम कामों पर ताज्जुब कर रहे थे
जो ईसा ने हाल ही में किए थे कि उस ने अपने शागिर्दों
से कहा, 44 "मेरी इस बात पर ख़ूब ध्यान दो, इब्न-ए-
आदम को आदमियों के हवाले कर दिया जाएगा।"
45 लेकिन शागिर्द इस का मतलब न समझे। यह बात
उन से पोशीदा रही और वह इसे समझ न सके। नीज़,
वह ईसा से इस के बारे में पूछने से डरते भी थे।

कौन सब से बड़ा है?

46 फिर शागिर्द बहस करने लगे कि हम में से कौन
सब से बड़ा है। 47 लेकिन ईसा जानता था कि वह
क्या सोच रहे हैं। उस ने एक छोटे बच्चे को ले कर
अपने पास खड़ा किया 48 और उन से कहा, "जो
मेरे नाम में इस बच्चे को क़बूल करता है वह मुझे ही
क़बूल करता है। और जो मुझे क़बूल करता है वह
उसे क़बूल करता है जिस ने मुझे भेजा है। चुनाँचे तुम
में से जो सब से छोटा है वही बड़ा है।"

जो तुम्हारे ख़िलाफ़ नहीं वह तुम्हारे हक़ में है

49 यूहन्ना बोल उठा, "उस्ताद, हम ने किसी को
देखा जो आप का नाम ले कर बदरुहें निकाल रहा
था। हम ने उसे मना किया, क्यूँकि वह हमारे साथ
मिल कर आप की पैरवी नहीं करता।"

50 लेकिन ईसा ने कहा, "उसे मना न करना, क्यूँकि
जो तुम्हारे ख़िलाफ़ नहीं वह तुम्हारे हक़ में है।"

एक सामरी गाँव ईसा को ठहरने नहीं देता

51 जब वह वक़्त क़रीब आया कि ईसा को
आसमान पर उठा लिया जाए तो वह बड़े अज़्म के
साथ यरूशलम की तरफ़ सफ़र करने लगा। 52 इस
मक़्सद के तहत उस ने अपने आगे क़ासिद भेज दिए।
चलते चलते वह सामरियों के एक गाँव में पहुँचे जहाँ
वह उस के लिए ठहरने की जगह तय्यार करना चाहते
थे। 53 लेकिन गाँव के लोगों ने ईसा को टिकने न
दिया, क्यूँकि उस की मन्ज़िल-ए-मक़सूद यरूशलम
थी। 54 यह देख कर उस के शागिर्द याक़ूब और यूहन्ना
ने कहा, "ख़ुदावन्द, क्या [इल्यास की तरह] हम कहें
कि आसमान पर से आग नाज़िल हो कर इन को भस्म
कर दे?"

55 लेकिन ईसा ने मुड़ कर उन्हें डाँटा [और कहा,
"तुम नहीं जानते कि तुम किस क़िस्म की रूह के
हो। इब्न-ए-आदम इस लिए नहीं आया कि लोगों
को हलाक करे बल्कि इस लिए कि उन्हें बचाए।"]
56 चुनाँचे वह किसी और गाँव में चले गए।

पैरवी की सन्जीदगी

57 सफ़र करते करते किसी ने रास्ते में ईसा से कहा,
"जहाँ भी आप जाएँ मैं आप के पीछे चलता रहूँगा।"

58 ईसा ने जवाब दिया, "लोमड़ियाँ अपने भटों में
और परिन्दे अपने घोंसलों में आराम कर सकते हैं,
लेकिन इब्न-ए-आदम के पास सर रख कर आराम
करने की कोई जगह नहीं।"

59 किसी और से उस ने कहा, "मेरे पीछे हो ले।"

लेकिन उस आदमी ने कहा, "ख़ुदावन्द, मुझे पहले
जा कर अपने बाप को दफ़न करने की इजाज़त दें।"

60 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "मुर्दों को अपने मुर्दे
दफ़नाने दे। तू जा कर अल्लाह की बादशाही की मुनादी
कर।"

61 एक और आदमी ने यह माज़रत चाही,
"ख़ुदावन्द, मैं ज़रूर आप के पीछे हो लूँगा। लेकिन
पहले मुझे अपने घर वालों को ख़ैरबाद कहने दें।"

62 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "जो भी हल चलाते
हुए पीछे की तरफ़ देखे वह अल्लाह की बादशाही के
लाइक़ नहीं है।"

ईसा 72 शागिर्दों को मुनादी के लिए भेजता है

10 1 इस के बाद ख़ुदावन्द ने मज़ीद 72
शागिर्दों को मुक़र्रर किया और उन्हें दो
दो करके अपने आगे हर उस शहर और जगह भेज
दिया जहाँ वह अभी जाने को था। 2 उस ने उन से
कहा, "फ़सल बहुत है, लेकिन मज़दूर थोड़े। इस
लिए फ़सल के मालिक से दरख़्वास्त करो कि वह
फ़सल काटने के लिए मज़ीद मज़दूर भेज दे। 3 अब
रवाना हो जाओ, लेकिन ज़हन में यह बात रखो कि
तुम भेड़ के बच्चों की मानिन्द हो जिन्हें मैं भेड़ियों
के दरमियान भेज रहा हूँ। 4 अपने साथ न बटवा ले
जाना, न सामान के लिए बैग, न जूते। और रास्ते में
किसी को भी सलाम न करना। 5 जब भी तुम किसी
के घर में दाख़िल हो तो पहले यह कहना, 'इस घर
की सलामती हो।' 6 अगर उस में सलामती का कोई
बन्दा होगा तो तुम्हारी बरकत उस पर ठहरेगी, वर्ना
वह तुम पर लौट आएगी। 7 सलामती के ऐसे घर में
ठहरो और वह कुछ खाओ पियो जो तुम को दिया
जाए, क्यूँकि मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है।
मुख़्तलिफ़ घरों में घूमते न फिरो बल्कि एक ही घर
में रहो। 8 जब भी तुम किसी शहर में दाख़िल हो और
लोग तुम को क़बूल करें तो जो कुछ वह तुम को
खाने को दें उसे खाओ। 9 वहाँ के मरीज़ों को शिफ़ा
दे कर बताओ कि अल्लाह की बादशाही क़रीब आ
गई है। 10 लेकिन अगर तुम किसी शहर में जाओ और
लोग तुम को क़बूल न करें तो फिर शहर की सड़कों
पर खड़े हो कर कहो, 11 'हम अपने जूतों से तुम्हारे
शहर की गर्द भी झाड़ देते हैं। यूँ हम तुम्हारे ख़िलाफ़
गवाही देते हैं। लेकिन यह जान लो कि अल्लाह की
बादशाही क़रीब आ गई है।' 12 मैं तुम को बताता हूँ
कि उस दिन उस शहर की निस्बत सदूम का हाल
ज़्यादा क़ाबिल-ए-बर्दाश्त होगा।

तौबा न करने वाले शहरों पर अफ़्सोस

13 ऐ ख़ुराज़ीन, तुझ पर अफ़्सोस! बैत-सैदा, तुझ पर
अफ़्सोस! अगर सूर और सैदा में वह मोजिज़े किए
गए होते जो तुम में हुए तो वहाँ के लोग कब के
टाट ओढ़ कर और सर पर राख डाल कर तौबा कर
चुके होते। 14 जी हाँ, अदालत के दिन तुम्हारी निस्बत
सूर और सैदा का हाल ज़्यादा क़ाबिल-ए-बर्दाश्त
होगा। 15 और तू ऐ कफ़र्नहूम, क्या तुझे आसमान
तक सरफ़राज़ किया जाएगा? हरगिज़ नहीं, बल्कि
तू उतरता उतरता पाताल तक पहुँचेगा।
16 जिस ने तुम्हारी सुनी उस ने मेरी भी सुनी। और
जिस ने तुम को रद्द किया उस ने मुझे भी रद्द किया।
और मुझे रद्द करने वाले ने उसे भी रद्द किया जिस ने
मुझे भेजा है।"

72 शागिर्दों की वापसी

17 72 शागिर्द लौट आए। वह बहुत ख़ुश थे और
कहने लगे, "ख़ुदावन्द, जब हम आप का नाम लेते
हैं तो बदरुहें भी हमारे ताबे हो जाती हैं।"
18 ईसा ने जवाब दिया, "इब्लीस मुझे नज़र आया
और वह बिजली की तरह आसमान से गिर रहा था।
19 देखो, मैं ने तुम को साँपों और बिछूओं पर चलने
का इख़तियार दिया है। तुम को दुश्मन की पूरी ताक़त
पर इख़तियार हासिल है। कुछ भी तुम को नुक़्सान
नहीं पहुँचा सकेगा। 20 लेकिन इस वजह से ख़ुशी न
मनाओ कि बदरुहें तुम्हारे ताबे हैं, बल्कि इस वजह
से कि तुम्हारे नाम आसमान पर दर्ज किए गए हैं।"

बाप की तम्जीद

21 उसी वक़्त ईसा रूह-उल-क़ुद्स में ख़ुशी मनाने
लगा। उस ने कहा, "ऐ बाप, आसमान-ओ-ज़मीन के
मालिक! मैं तेरी तम्जीद करता हूँ कि तू ने यह बात
दानाओं और अक़्लमन्दों से छुपा कर छोटे बच्चों पर
ज़ाहिर कर दी है। हाँ मेरे बाप, क्यूँकि यही तुझे पसन्द
आया।
22 मेरे बाप ने सब कुछ मेरे सपुर्द कर दिया है। कोई
नहीं जानता कि फ़र्ज़न्द कौन है सिवाए बाप के। और
कोई नहीं जानता कि बाप कौन है सिवाए फ़र्ज़न्द के
और उन लोगों के जिन पर फ़र्ज़न्द यह ज़ाहिर करना
चाहता है।"
23 फिर ईसा शागिर्दों की तरफ़ मुड़ा और
अलाहिदगी में उन से कहने लगा, "मुबारक हैं वह
आँखें जो वह कुछ देखती हैं जो तुम ने देखा है। 24 मैं
तुम को बताता हूँ कि बहुत से नबी और बादशाह यह
देखना चाहते थे जो तुम देखते हो, लेकिन उन्हों ने न
देखा। और वह यह सुनने के आरज़ूमन्द थे जो तुम
सुनते हो, लेकिन उन्हों ने न सुना।"

नेक सामरी की तम्सील

25 एक मौक़े पर शरीअत का एक आलिम ईसा को
फंसाने की ख़ातिर खड़ा हुआ। उस ने पूछा, "उस्ताद,
मैं क्या क्या करने से मीरास में अबदी ज़िन्दगी पा
सकता हूँ?"
26 ईसा ने उस से कहा, "शरीअत में क्या लिखा है?
तू उस में क्या पढ़ता है?"
27 आदमी ने जवाब दिया, "'रब अपने ख़ुदा से
अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपनी पूरी ताक़त
और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।' और 'अपने
पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आप
से रखता है'।"
28 ईसा ने कहा, "तू ने ठीक जवाब दिया। ऐसा ही
कर तो ज़िन्दा रहेगा।"
29 लेकिन आलिम ने अपने आप को दुरुस्त साबित
करने की ग़रज़ से पूछा, "तो मेरा पड़ोसी कौन है?"
30 ईसा ने जवाब में कहा, "एक आदमी यरूशलम
से यरीहू की तरफ़ जा रहा था कि वह डाकुओं के
हाथों में पड़ गया। उन्हों ने उस के कपड़े उतार कर
उसे ख़ूब मारा और अधमुआ छोड़ कर चले गए।
31 इत्तिफ़ाक़ से एक इमाम भी उसी रास्ते पर यरीहू
की तरफ़ चल रहा था। लेकिन जब उस ने ज़ख़्मी
आदमी को देखा तो रास्ते की परली तरफ़ हो कर

आगे निकल गया। 32 लावी क़बीले का एक ख़ादिम
भी वहाँ से गुज़रा। लेकिन वह भी रास्ते की परली
तरफ़ से आगे निकल गया। 33 फिर सामरिया का एक
मुसाफ़िर वहाँ से गुज़रा। जब उस ने ज़ख़्मी आदमी
को देखा तो उसे उस पर तरस आया। 34 वह उस के
पास गया और उस के ज़ख़्मों पर तेल और मै लगा
कर उन पर पट्टियाँ बांध दीं। फिर उस को अपने गधे
पर बिठा कर सराय तक ले गया। वहाँ उस ने उस की
मज़ीद देख-भाल की। 35 अगले दिन उस ने चाँदी के
दो सिक्के निकाल कर सराय के मालिक को दिए और
कहा, 'इस की देख-भाल करना। अगर ख़र्चा इस से
बढ़ कर हुआ तो मैं वापसी पर अदा कर दूँगा'।"

36 फिर ईसा ने पूछा, "अब तेरा क्या ख़याल है,
डाकुओं की ज़द में आने वाले आदमी का पड़ोसी
कौन था? इमाम, लावी या सामरी?"

37 आलिम ने जवाब दिया, "वह जिस ने उस पर
रहम किया।"

ईसा ने कहा, "बिलकुल ठीक। अब तू भी जा कर
ऐसा ही कर।"

ईसा मरियम और मर्था के घर जाता है

38 फिर ईसा शागिर्दों के साथ आगे निकला। चलते
चलते वह एक गाँव में पहुँचा। वहाँ की एक औरत
बनाम मर्था ने उसे अपने घर में ख़ुशआमदीद कहा।
39 मर्था की एक बहन थी जिस का नाम मरियम
था। वह ख़ुदावन्द के पाँओ में बैठ कर उस की
बातें सुनने लगी 40 जबकि मर्था मेहमानों की ख़िदमत
करते करते थक गई। आख़िरकार वह ईसा के पास
आ कर कहने लगी, "ख़ुदावन्द, क्या आप को पर्वा
नहीं कि मेरी बहन ने मेहमानों की ख़िदमत का पूरा
इन्तिज़ाम मुझ पर छोड़ दिया है? उस से कहें कि वह
मेरी मदद करे।"

41 लेकिन ख़ुदावन्द ईसा ने जवाब में कहा, "मर्था,
मर्था, तू बहुत सी फ़िक्रों और परेशानियों में पड़ गई
है। 42 लेकिन एक बात ज़रूरी है। मरियम ने बेहतर
हिस्सा चुन लिया है और यह उस से छीना नहीं
जाएगा।"

दुआ किस तरह करनी है

11 1 एक दिन ईसा कहीं दुआ कर रहा था।
जब वह फ़ारिग़ हुआ तो उस के किसी
शागिर्द ने कहा, "ख़ुदावन्द, हमें दुआ करना सिखाएँ,
जिस तरह यहया ने भी अपने शागिर्दों को दुआ करने
की तालीम दी।"

2 ईसा ने कहा, "दुआ करते वक़्त यूँ कहना,
ऐ बाप,
तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।
तेरी बादशाही आए।
3 हर रोज़ हमें हमारी रोज़ की रोटी दे।
4 हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर।
क्यूँकि हम भी हर एक को मुआफ़ करते हैं
जो हमारा गुनाह करता है। [x]
और हमें आज़माइश में न पड़ने दे।"

माँगते रहो

5 फिर उस ने उन से कहा, "अगर तुम में से कोई
आधी रात के वक़्त अपने दोस्त के घर जा कर कहे,
'भाई, मुझे तीन रोटियाँ दे, बाद में मैं यह वापस कर
दूँगा। 6 क्यूँकि मेरा दोस्त सफ़र करके मेरे पास आया
है और मैं उसे खाने के लिए कुछ नहीं दे सकता।'
7 अब फ़र्ज़ करो कि यह दोस्त अन्दर से जवाब दे,
'मेहरबानी करके मुझे तंग न कर। दरवाज़े पर ताला
लगा है और मेरे बच्चे मेरे साथ बिस्तर पर हैं, इस लिए
मैं तुझे देने के लिए उठ नहीं सकता।' 8 लेकिन मैं तुम
को यह बताता हूँ कि अगर वह दोस्ती की ख़ातिर न
भी उठे, तो भी वह अपने दोस्त के बेजा इसरार की
वजह से उस की तमाम ज़रूरत पूरी करेगा।

---

[x] लफ़्ज़ी तर्जुमा : जो हमारा क़र्ज़दार है।

9 चुनाँचे माँगते रहो तो तुम को दिया जाएगा, ढूँडते
रहो तो तुम को मिल जाएगा। खटखटाते रहो तो
तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोल दिया जाएगा। 10 क्यूँकि
जो भी माँगता है वह पाता है, जो ढूँडता है उसे मिलता
है और जो खटखटाता है उस के लिए दरवाज़ा खोल
दिया जाता है। 11 तुम बापों में से कौन अपने बेटे
को साँप देगा अगर वह मछली माँगे? 12 या कौन
उसे बिच्छू देगा अगर वह अंडा माँगे? कोई नहीं!
13 जब तुम बुरे होने के बावुजूद इतने समझदार हो
कि अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें दे सकते हो तो फिर
कितनी ज़्यादा यक़ीनी बात है कि आसमानी बाप
अपने माँगने वालों को रूह-उल-क़ुद्स देगा।"

ईसा और बदरूहों का सरदार

14 एक दिन ईसा ने एक ऐसी बदरुह निकाल दी जो
गूँगी थी। जब वह गूँगे आदमी में से निकली तो वह
बोलने लगा। वहाँ पर जमा लोग हक्का-बक्का रह गए।
15 लेकिन बाज़ ने कहा, "यह तो बदरूहों के सरदार
बाल-ज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता है।"
16 औरों ने उसे आज़माने के लिए किसी इलाही
निशान का मुतालबा किया। 17 लेकिन ईसा ने उन के
ख़यालात जान कर कहा, "जिस बादशाही में भी फूट
पड़ जाए वह तबाह हो जाएगी, और जिस घराने की
ऐसी हालत हो वह भी ख़ाक में मिल जाएगा। 18 तुम
कहते हो कि मैं बाल-ज़बूल की मदद से बदरूहों को
निकालता हूँ। लेकिन अगर इब्लीस में फूट पड़ गई
है तो फिर उस की बादशाही किस तरह क़ाइम रह
सकती है? 19 दूसरा सवाल यह है, अगर मैं बाल-
ज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता हूँ तो
तुम्हारे बेटे उन्हें किस के ज़रीए निकालते हैं? चुनाँचे
वही इस बात में तुम्हारे मुन्सिफ़ होंगे। 20 लेकिन
अगर मैं अल्लाह की क़ुदरत से बदरूहों को निकालता
हूँ तो फिर अल्लाह की बादशाही तुम्हारे पास पहुँच
चुकी है।
21 जब तक कोई ज़ोरावर आदमी हथियारों से लेस
अपने डेरे की पहरादारी करे उस वक़्त तक उस की
मिलकियत महफ़ूज़ रहती है। 22 लेकिन अगर कोई
ज़्यादा ताक़तवर शख़्स हम्ला करके उस पर ग़ालिब
आए तो वह उस के असलिहा पर क़ब्ज़ा करेगा जिस
पर उस का भरोसा था, और लूटा हुआ माल अपने
लोगों में तक़्सीम कर देगा।
23 जो मेरे साथ नहीं वह मेरे ख़िलाफ़ है और जो मेरे
साथ जमा नहीं करता वह बिखेरता है।

बदरुह की वापसी

24 जब कोई बदरुह किसी शख़्स में से निकलती है
तो वह वीरान इलाक़ों में से गुज़रती हुई आराम की
जगह तलाश करती है। लेकिन जब उसे कोई ऐसा
मक़ाम नहीं मिलता तो वह कहती है, 'मैं अपने उस
घर में वापस चली जाऊँगी जिस में से निकली थी।'
25 वह वापस आ कर देखती है कि किसी ने झाड़ू दे
कर सब कुछ सलीक़े से रख दिया है। 26 फिर वह जा
कर सात और बदरुहें ढूँड लाती है जो उस से बदतर
होती हैं, और वह सब उस शख़्स में घुस कर रहने
लगती हैं। चुनाँचे अब उस आदमी की हालत पहले
की निस्बत ज़्यादा बुरी हो जाती है।"

कौन मुबारक है?

27 ईसा अभी यह बात कर ही रहा था कि एक औरत
ने ऊँची आवाज़ से कहा, "आप की माँ मुबारक
है जिस ने आप को जन्म दिया और आप को दूध
पिलाया।"
28 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "बात यह नहीं है।
हक़ीक़त में वह मुबारक हैं जो अल्लाह का कलाम
सुन कर उस पर अमल करते हैं।"

इलाही निशान का तक़ाज़ा

29 सुनने वालों की तादाद बहुत बढ़ गई तो वह
कहने लगा, "यह नस्ल शरीर है, क्यूँकि यह मुझ
से इलाही निशान का तक़ाज़ा करती है। लेकिन
इसे कोई भी इलाही निशान पेश नहीं किया जाएगा
सिवाए यूनुस के निशान के। 30 क्यूँकि जिस तरह

यूनुस नीनवा शहर के बाशिन्दों के लिए निशान था
बिलकुल उसी तरह इब्न-ए-आदम इस नस्ल के लिए
निशान होगा। 31 क़ियामत के दिन जुनूबी मुल्क सबा
की मलिका इस नस्ल के लोगों के साथ खड़ी हो कर
उन्हें मुजरिम क़रार देगी। क्यूँकि वह दूरदराज़ मुल्क
से सुलेमान की हिक्मत सुनने के लिए आई थी जबकि
यहाँ वह है जो सुलेमान से भी बड़ा है। 32 उस दिन
नीनवा के बाशिन्दे भी इस नस्ल के लोगों के साथ
खड़े हो कर उन्हें मुजरिम ठहराएँगे। क्यूँकि यूनुस के
एलान पर उन्हों ने तौबा की थी जबकि यहाँ वह है
जो यूनुस से भी बड़ा है।

बदन की रौशनी

33 जब कोई शख़्स चराग़ जलाता है तो न वह उसे
छुपाता, न बर्तन के नीचे रखता बल्कि उसे शमादान
पर रख देता है ताकि उस की रौशनी अन्दर आने
वालों को नज़र आए। 34 तेरी आँख तेरे बदन का
चराग़ है। अगर तेरी आँख ठीक हो तो तेरा पूरा
जिस्म रौशन होगा। लेकिन अगर आँख ख़राब हो
तो पूरा जिस्म अंधेरा ही अंधेरा होगा। 35 ख़बरदार!
ऐसा न हो कि जो रौशनी तेरे अन्दर है वह हक़ीक़त
में तारीकी हो। 36 चुनाँचे अगर तेरा पूरा जिस्म रौशन
हो और कोई भी हिस्सा तारीक न हो तो फिर वह
बिलकुल रौशन होगा, ऐसा जैसा उस वक़्त होता है
जब चराग़ तुझे अपने चमकने दमकने से रौशन कर
देता है।"

फ़रीसियों पर अफ़्सोस

37 ईसा अभी बात कर रहा था कि किसी फ़रीसी ने
उसे खाने की दावत दी। चुनाँचे वह उस के घर में जा
कर खाने के लिए बैठ गया। 38 मेज़बान बड़ा हैरान
हुआ, क्यूँकि उस ने देखा कि ईसा हाथ धोए बग़ैर
खाने के लिए बैठ गया है। 39 लेकिन ख़ुदावन्द ने उस
से कहा, "देखो, तुम फ़रीसी बाहर से हर प्याले और
बर्तन की सफ़ाई करते हो, लेकिन अन्दर से तुम लूट-
मार और शरारत से भरे होते हो। 40 नादानो! अल्लाह
ने बाहर वाले हिस्से को ख़ल्क़ किया, तो क्या उस
ने अन्दर वाले हिस्से को नहीं बनाया? 41 चुनाँचे जो
कुछ बर्तन के अन्दर है उसे ग़रीबों को दे दो। फिर
तुम्हारे लिए सब कुछ पाक-साफ़ होगा।

42 फ़रीसियो, तुम पर अफ़्सोस! क्यूँकि एक तरफ़
तुम पौदीना, सदाब और बाग़ की हर क़िस्म की
तरकारी का दसवाँ हिस्सा अल्लाह के लिए मख़्सूस
करते हो, लेकिन दूसरी तरफ़ तुम इन्साफ़ और अल्लाह
की मुहब्बत को नज़रअन्दाज़ करते हो। लाज़िम है
कि तुम यह काम भी करो और पहला भी न छोड़ो।

43 फ़रीसियो, तुम पर अफ़्सोस! क्यूँकि तुम
इबादतख़ानों की इज़्ज़त की कुर्सियों पर बैठने के
लिए बेचैन रहते और बाज़ार में लोगों का सलाम
सुनने के लिए तड़पते हो। 44 हाँ, तुम पर अफ़्सोस!
क्यूँकि तुम पोशीदा क़ब्रों की मानिन्द हो जिन पर से
लोग नादानिस्ता तौर पर गुज़रते हैं।"

45 शरीअत के एक आलिम ने एतिराज़ किया,
"उस्ताद, आप यह कह कर हमारी भी बेइज़्ज़ती
करते हैं।"

46 ईसा ने जवाब दिया, "तुम शरीअत के आलिमों
पर भी अफ़्सोस! क्यूँकि तुम लोगों पर भारी बोझ
डाल देते हो जो मुश्किल से उठाया जा सकता है। न
सिर्फ़ यह बल्कि तुम ख़ुद इस बोझ को अपनी एक
उंगली भी नहीं लगाते। 47 तुम पर अफ़्सोस! क्यूँकि
तुम नबियों के मज़ार बना देते हो, उन के जिन्हें तुम्हारे
बापदादा ने मार डाला। 48 इस से तुम गवाही देते हो
कि तुम वह कुछ पसन्द करते हो जो तुम्हारे बापदादा
ने किया। उन्हों ने नबियों को क़त्ल किया जबकि तुम
उन के मज़ार तामीर करते हो। 49 इस लिए अल्लाह
की हिक्मत ने कहा, 'मैं उन में नबी और रसूल भेज
दूँगी। उन में से बाज़ को वह क़त्ल करेंगे और बाज़
को सताएँगे।' 50 नतीजे में यह नस्ल तमाम नबियों के
क़त्ल की ज़िम्मादार ठहरेगी - दुनिया की तख़्लीक़ से
ले कर आज तक, 51 यानी हाबील के क़त्ल से ले कर
ज़करियाह के क़त्ल तक, जिसे बैत-उल-मुक़द्दस के
सहन में मौजूद क़ुर्बानगाह और बैत-उल-मुक़द्दस के

दरवाज़े के दरमियान क़त्ल किया गया। हाँ, मैं तुम
को बताता हूँ कि यह नस्ल ज़रूर उन की ज़िम्मादार
ठहरेगी।
52 शरीअत के आलिमो, तुम पर अफ़्सोस! क्यूँकि
तुम ने इल्म की कुंजी को छीन लिया है। न सिर्फ़ यह
कि तुम ख़ुद दाख़िल नहीं हुए, बल्कि तुम ने दाख़िल
होने वालों को भी रोक लिया।"
53 जब ईसा वहाँ से निकला तो आलिम और
फ़रीसी उस के सख़्त मुख़ालिफ़ हो गए और बड़े ग़ौर
से उस की पूछगछ करने लगे। 54 वह इस ताक में
रहे कि उसे मुँह से निकली किसी बात की वजह से
पकड़ें।

रियाकारी से ख़बरदार रहो!

12 1 इतने में कई हज़ार लोग जमा हो गए थे।
बड़ी तादाद की वजह से वह एक दूसरे पर
गिरे पड़ते थे। फिर ईसा अपने शागिर्दों से यह बात
करने लगा, "फ़रीसियों के ख़मीर यानी रियाकारी
से ख़बरदार! 2 जो कुछ भी अभी छुपा हुआ है उसे
आख़िर में ज़ाहिर किया जाएगा और जो कुछ भी इस
वक़्त पोशीदा है उस का राज़ आख़िर में खुल जाएगा।
3 इस लिए जो कुछ तुम ने अंधेरे में कहा है वह
रोज़-ए-रौशन में सुनाया जाएगा और जो कुछ तुम ने
अन्दरूनी कमरों का दरवाज़ा बन्द करके आहिस्ता
आहिस्ता कान में बयान किया है उस का छतों से
एलान किया जाएगा।

किस से डरना चाहिए?

4 मेरे अज़ीज़ो, उन से मत डरना जो सिर्फ़ जिस्म
को क़त्ल करते हैं और मज़ीद नुक़्सान नहीं पहुँचा
सकते। 5 मैं तुम को बताता हूँ कि किस से डरना है।
अल्लाह से डरो, जो तुम्हें हलाक करने के बाद जहन्नुम
में फैंकने का इख़तियार भी रखता है। जी हाँ, उसी से
ख़ौफ़ खाओ।
6 क्या पाँच चिड़ियाँ दो पैसों में नहीं बिकतीं? तो
भी अल्लाह हर एक की फ़िक्र करके एक को भी नहीं
भूलता। 7 हाँ, बल्कि तुम्हारे सर के सब बाल भी गिने
हुए हैं। लिहाज़ा मत डरो। तुम्हारी क़दर-ओ-क़ीमत
बहुत सी चिड़ियों से कहीं ज़्यादा है।

मसीह का इक़्रार या इन्कार करने के नतीजे

8 मैं तुम को बताता हूँ, जो भी लोगों के सामने मेरा
इक़्रार करे उस का इक़्रार इब्न-ए-आदम भी फ़रिश्तों
के सामने करेगा। 9 लेकिन जो लोगों के सामने मेरा
इन्कार करे उस का भी अल्लाह के फ़रिश्तों के सामने
इन्कार किया जाएगा।
10 और जो भी इब्न-ए-आदम के ख़िलाफ़ बात करे
उसे मुआफ़ किया जा सकता है। लेकिन जो रूह-
उल-क़ुद्स के ख़िलाफ़ कुफ़्र बके उसे मुआफ़ नहीं
किया जाएगा।
11 जब लोग तुम को इबादतख़ानों में और हाकिमों
और इख़तियार वालों के सामने घसीट कर ले जाएंगे
तो यह सोचते सोचते परेशान न हो जाना कि मैं किस
तरह अपना दिफ़ा करूँ या क्या कहूँ, 12 क्यूँकि रूह-
उल-क़ुद्स तुम को उसी वक़्त सिखा देगा कि तुम को
क्या कहना है।"

नादान अमीर की तम्सील

13 किसी ने भीड़ में से कहा, "उस्ताद, मेरे भाई से
कहें कि मीरास का मेरा हिस्सा मुझे दे।"
14 ईसा ने जवाब दिया, "भई, किस ने मुझे तुम
पर जज या तक़्सीम करने वाला मुक़र्रर किया है?"
15 फिर उस ने उन से मज़ीद कहा, "ख़बरदार! हर
क़िस्म के लालच से बचे रहना, क्यूँकि इन्सान
की ज़िन्दगी उस के माल-ओ-दौलत की कस्रत पर
मुन्हसिर नहीं।"
16 उस ने उन्हें एक तम्सील सुनाई। "किसी अमीर
आदमी की ज़मीन में अच्छी फ़सल पैदा हुई।
17 चुनाँचे वह सोचने लगा, 'अब मैं क्या करूँ? मेरे
पास तो इतनी जगह नहीं जहाँ मैं सब कुछ जमा
करके रखूँ।' 18 फिर उस ने कहा, 'मैं यह करूँगा कि
अपने गोदामों को ढा कर इन से बड़े तामीर करूँगा।

उन में अपना तमाम अनाज और बाक़ी पैदावार जमा
कर लूँगा। 19 फिर मैं अपने आप से कहूँगा कि लो,
इन अच्छी चीज़ों से तेरी ज़रूरियात बहुत सालों तक
पूरी होती रहेंगी। अब आराम कर। खा, पी और ख़ुशी
मना।' 20 लेकिन अल्लाह ने उस से कहा, 'अहमक़!
इसी रात तू मर जाएगा। तो फिर जो चीज़ें तू ने जमा
की हैं वह किस की होंगी?'
21 यही उस शख़्स का अन्जाम है जो सिर्फ़ अपने
लिए चीज़ें जमा करता है जबकि वह अल्लाह के सामने
ग़रीब है।"

अल्लाह पर भरोसा

22 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "इस लिए
अपनी ज़िन्दगी की ज़रूरियात पूरी करने के लिए
परेशान न रहो कि हाय, मैं क्या खाऊँ। और जिस्म
के लिए फ़िक्रमन्द न रहो कि हाय, मैं क्या पहनूँ।
23 ज़िन्दगी तो खाने से ज़्यादा अहम है और जिस्म
पोशाक से ज़्यादा। 24 कव्वों पर ग़ौर करो। न वह
बीज बोते, न फ़सलें काटते हैं। उन के पास न स्टोर
होता है, न गोदाम। तो भी अल्लाह ख़ुद उन्हें खाना
खिलाता है। और तुम्हारी क़दर-ओ-क़ीमत तो परिन्दों
से कहीं ज़्यादा है। 25 क्या तुम में से कोई फ़िक्र करते
करते अपनी ज़िन्दगी में एक लम्हे का भी इज़ाफ़ा
कर सकता है? 26 अगर तुम फ़िक्र करने से इतनी
छोटी सी तब्दीली भी नहीं ला सकते तो फिर तुम
बाक़ी बातों के बारे में क्यूँ फ़िक्रमन्द हो? 27 ग़ौर
करो कि सोसन के फूल किस तरह उगते हैं। न वह
मेहनत करते, न कातते हैं। लेकिन मैं तुम्हें बताता
हूँ कि सुलेमान बादशाह अपनी पूरी शान-ओ-शौकत
के बावुजूद ऐसे शानदार कपड़ों से मुलब्बस नहीं था
जैसे उन में से एक। 28 अगर अल्लाह उस घास को
जो आज मैदान में है और कल आग में झोंकी जाएगी
ऐसा शानदार लिबास पहनाता है तो ऐ कमएतिक़ादो,
वह तुम को पहनाने के लिए क्या कुछ नहीं करेगा?
29 इस की तलाश में न रहना कि क्या खाओगे या
क्या पियोगे। ऐसी बातों की वजह से बेचैन न रहो।
30 क्यूँकि दुनिया में जो ईमान नहीं रखते वही इन
तमाम चीज़ों के पीछे भागते रहते हैं, जबकि तुम्हारे
बाप को पहले से मालूम है कि तुम को इन की ज़रूरत
है। 31 चुनाँचे उसी की बादशाही की तलाश में रहो।
फिर यह तमाम चीज़ें भी तुम को मिल जाएँगी।

आसमान पर दौलत जमा करना

32 ऐ छोटे गल्ले, मत डरना, क्यूँकि तुम्हारे बाप
ने तुम को बादशाही देना पसन्द किया। 33 अपनी
मिलकियत बेच कर ग़रीबों को दे देना। अपने लिए
ऐसे बटवे बनवाओ जो नहीं घिसते। अपने लिए
आसमान पर ऐसा ख़ज़ाना जमा करो जो कभी ख़त्म
नहीं होगा और जहाँ न कोई चोर आएगा, न कोई
कीड़ा उसे ख़राब करेगा। 34 क्यूँकि जहाँ तुम्हारा
ख़ज़ाना है वहीं तुम्हारा दिल भी लगा रहेगा।

हर वक़्त तय्यार नौकर

35 ख़िदमत के लिए तय्यार खड़े रहो और इस पर
ध्यान दो कि तुम्हारे चराग़ जलते रहें। 36 यानी ऐसे
नौकरों की मानिन्द जिन का मालिक किसी शादी से
वापस आने वाला है और वह उस के लिए तय्यार
खड़े हैं। जूँ ही वह आ कर दस्तक दे वह दरवाज़े को
खोल देंगे। 37 वह नौकर मुबारक हैं जिन्हें मालिक आ
कर जागते हुए और चौकस पाएगा। मैं तुम को सच
बताता हूँ कि यह देख कर मालिक अपने कपड़े बदल
कर उन्हें बिठाएगा और मेज़ पर उन की ख़िदमत
करेगा। 38 हो सकता है मालिक आधी रात या इस
के बाद आए। अगर वह इस सूरत में भी उन्हें मुस्तइद
पाए तो वह मुबारक हैं। 39 यक़ीन जानो, अगर किसी
घर के मालिक को पता होता कि चोर कब आएगा तो
वह ज़रूर उसे घर में नक़ब लगाने न देता। 40 तुम भी
तय्यार रहो, क्यूँकि इब्न-ए-आदम ऐसे वक़्त आएगा
जब तुम इस की तवक़्क़ो नहीं करोगे।"

वफ़ादार नौकर

41 पतरस ने पूछा, “ख़ुदावन्द, क्या यह तम्सील
सिर्फ़ हमारे लिए है या सब के लिए?”
42 ख़ुदावन्द ने जवाब दिया, “कौन सा नौकर
वफ़ादार और समझदार है? फ़र्ज़ करो कि घर के
मालिक ने किसी नौकर को बाक़ी नौकरों पर मुक़र्रर
किया हो। उस की एक ज़िम्मादारी यह भी है कि
उन्हें वक़्त पर मुनासिब खाना खिलाए। 43 वह नौकर
मुबारक होगा जो मालिक की वापसी पर यह सब
कुछ कर रहा होगा। 44 मैं तुम को सच बताता हूँ
कि यह देख कर मालिक उसे अपनी पूरी जायदाद
पर मुक़र्रर करेगा। 45 लेकिन फ़र्ज़ करो कि नौकर
अपने दिल में सोचे, ‘मालिक की वापसी में अभी
देर है।’ वह नौकरों और नौकरानियों को पीटने लगे
और खाते-पीते वह नशे में रहे। 46 अगर वह ऐसा
करे तो मालिक ऐसे दिन और वक़्त आएगा जिस की
तवक़्क़ो नौकर को नहीं होगी। इन हालात को देख
कर वह नौकर को टुकड़े टुकड़े कर डालेगा और उसे
ग़ैरईमानदारों में शामिल करेगा।
47 जो नौकर अपने मालिक की मर्ज़ी को जानता है,
लेकिन उस के लिए तय्यारियाँ नहीं करता, न उसे
पूरी करने की कोशिश करता है, उस की ख़ूब पिटाई
की जाएगी। 48 इस के मुक़ाबले में वह जो मालिक
की मर्ज़ी को नहीं जानता और इस बिना पर कोई
क़ाबिल-ए-सज़ा काम करे उस की कम पिटाई की
जाएगी। क्यूँकि जिसे बहुत दिया गया हो उस से बहुत
तलब किया जाएगा। और जिस के सपुर्द बहुत कुछ
किया गया हो उस से कहीं ज़्यादा माँगा जाएगा।

ईसा की वजह से इख़तिलाफ़ पैदा होगा

49 मैं ज़मीन पर आग लगाने आया हूँ, और काश
वह पहले ही भड़क रही होती! 50 लेकिन अब तक
मेरे सामने एक बपतिस्मा है जिसे लेना ज़रूरी है।
और मुझ पर कितना दबाओ है जब तक उस की
तक्मील न हो जाए। 51 क्या तुम समझते हो कि मैं
दुनिया में सुलह-सलामती क़ाइम करने आया हूँ?
नहीं, मैं तुम को बताता हूँ कि इस की बजाय मैं
इख़तिलाफ़ पैदा करूँगा। 52 क्यूँकि अब से एक
घराने के पाँच अफ़राद में इख़तिलाफ़ होगा। तीन दो
के ख़िलाफ़ और दो तीन के ख़िलाफ़ होंगे। 53 बाप
बेटे के ख़िलाफ़ होगा और बेटा बाप के ख़िलाफ़, माँ
बेटी के ख़िलाफ़ और बेटी माँ के ख़िलाफ़, सास बहू
के ख़िलाफ़ और बहू सास के ख़िलाफ़।”

मौजूदा हालात का सहीह नतीजा निकालना चाहिए

54 ईसा ने हुजूम से यह भी कहा, “जूँ ही कोई बादल
मग़रिबी उफ़क़ से चढ़ता हुआ नज़र आए तो तुम
कहते हो कि बारिश होगी। और ऐसा ही होता है।
55 और जब जुनूबी लू चलती है तो तुम कहते हो
कि सख़्त गर्मी होगी। और ऐसा ही होता है। 56 ऐ
रियाकारो! तुम आसमान-ओ-ज़मीन के हालात पर
ग़ौर करके सहीह नतीजा निकाल लेते हो। तो फिर
तुम मौजूदा ज़माने के हालात पर ग़ौर करके सहीह
नतीजा क्यूँ नहीं निकाल सकते?

अपने मुख़ालिफ़ से समझौता करना

57 तुम ख़ुद सहीह फ़ैसला क्यूँ नहीं कर सकते?
58 फ़र्ज़ करो कि किसी ने तुझ पर मुक़द्दमा चलाया
है। अगर ऐसा हो तो पूरी कोशिश कर कि कचहरी
में पहुँचने से पहले पहले मुआमला हल करके
मुख़ालिफ़ से फ़ारिग़ हो जाए। ऐसा न हो कि वह
तुझ को जज के सामने घसीट कर ले जाए, जज तुझे
पुलिस अफ़्सर के हवाले करे और पुलिस अफ़्सर
तुझे जेल में डाल दे। 59 मैं तुझे बताता हूँ, वहाँ से तू
उस वक़्त तक नहीं निकल पाएगा जब तक जुर्माने
की पूरी पूरी रक़म अदा न कर दे।”

तौबा करो वर्ना हलाक हो जाओगे

13 1 उस वक़्त कुछ लोग ईसा के पास पहुँचे।
उन्हों ने उसे गलील के कुछ लोगों के बारे
में बताया जिन्हें पीलातुस ने उस वक़्त क़त्ल करवाया

था जब वह बैत-उल-मुक़द्दस में क़ुर्बानियाँ पेश कर
रहे थे। यूँ उन का ख़ून क़ुर्बानियों के ख़ून के साथ
मिलाया गया था। 2 ईसा ने यह सुन कर पूछा, “क्या
तुम्हारे ख़याल में यह लोग गलील के बाक़ी लोगों
से ज़्यादा गुनाहगार थे कि इन्हें इतना दुख उठाना
पड़ा? 3 हरगिज़ नहीं! बल्कि मैं तुम को बताता हूँ कि
अगर तुम तौबा न करो तो तुम भी इसी तरह तबाह
हो जाओगे। 4 या उन 18 अफ़राद के बारे में तुम्हारा
क्या ख़याल है जो मर गए जब शिलोख़ का बुर्ज उन
पर गिरा? क्या वह यरूशलम के बाक़ी बाशिन्दों की
निस्बत ज़्यादा गुनाहगार थे? 5 हरगिज़ नहीं! मैं तुम
को बताता हूँ कि अगर तुम तौबा न करो तो तुम भी
तबाह हो जाओगे।”

बेफल अन्जीर का दरख़्त

6 फिर ईसा ने उन्हें यह तम्सील सुनाई, “किसी ने
अपने बाग़ में अन्जीर का दरख़्त लगाया। जब वह
उस का फल तोड़ने के लिए आया तो कोई फल नहीं
था। 7 यह देख कर उस ने माली से कहा, ‘मैं तीन
साल से इस का फल तोड़ने आता हूँ, लेकिन आज
तक कुछ भी नहीं मिला। इसे काट डाल। यह ज़मीन
की ताक़त क्यूँ ख़त्म करे?’ 8 लेकिन माली ने कहा,
‘जनाब, इसे एक साल और रहने दें। मैं इस के इर्दगिर्द
गोडी करके खाद डालूँगा। 9 फिर अगर यह अगले
साल फल लाया तो ठीक, वर्ना इसे कटवा डालना’।”

सबत के दिन कुबड़ी औरत की शिफ़ा

10 सबत के दिन ईसा किसी इबादतख़ाने में तालीम
दे रहा था। 11 वहाँ एक औरत थी जो 18 साल से
बदरुह के बाइस बीमार थी। वह कुबड़ी हो गई थी
और सीधी खड़ी होने के बिलकुल क़ाबिल न थी।
12 जब ईसा ने उसे देखा तो पुकार कर कहा, “ऐ
औरत, तू अपनी बीमारी से छूट गई है!” 13 उस ने
अपने हाथ उस पर रखे तो वह फ़ौरन सीधी खड़ी हो
कर अल्लाह की तम्जीद करने लगी।

14 लेकिन इबादतख़ाने का राहनुमा नाराज़ हुआ
क्यूँकि ईसा ने सबत के दिन शिफ़ा दी थी। उस ने
लोगों से कहा, “हफ़्ते के छः दिन काम करने के
लिए होते हैं। इस लिए इत्वार से ले कर जुमए तक
शिफ़ा पाने के लिए आओ, न कि सबत के दिन।”

15 ख़ुदावन्द ने जवाब में उस से कहा, “तुम कितने
रियाकार हो! क्या तुम में से हर कोई सबत के दिन
अपने बैल या गधे को खोल कर उसे थान से बाहर
नहीं ले जाता ताकि उसे पानी पिलाए? 16 अब इस
औरत को देखो जो इब्राहीम की बेटी है और जो 18
साल से इब्लीस के बंधन में थी। जब तुम सबत के
दिन अपने जानवरों की मदद करते हो तो क्या यह
ठीक नहीं कि औरत को इस बंधन से रिहाई दिलाई
जाती, चाहे यह काम सबत के दिन ही क्यूँ न किया
जाए?” 17 ईसा के इस जवाब से उस के मुख़ालिफ़
शर्मिन्दा हो गए। लेकिन आम लोग उस के इन तमाम
शानदार कामों से ख़ुश हुए।

राई के दाने की तम्सील

18 ईसा ने कहा, “अल्लाह की बादशाही किस चीज़
की मानिन्द है? मैं इस का मुवाज़ना किस से करूँ?
19 वह राई के एक दाने की मानिन्द है जो किसी
ने अपने बाग़ में बो दिया। बढ़ते बढ़ते वह दरख़्त
सा बन गया और परिन्दों ने उस की शाख़ों में अपने
घोंसले बना लिए।”

ख़मीर की मिसाल

20 उस ने दुबारा पूछा, “अल्लाह की बादशाही का
किस चीज़ से मुवाज़ना करूँ? 21 वह उस ख़मीर की
मानिन्द है जो किसी औरत ने ले कर तक़रीबन 27
किलोग्राम आटे में मिला दिया। गो वह उस में छुप
गया तो भी होते होते पूरे गुंधे हुए आटे को ख़मीर कर
गया।”

तंग दरवाज़ा

22 ईसा तालीम देते देते मुख़्तलिफ़ शहरों और
दीहातों में से गुज़रा। अब उस का रुख़ यरूशलम
ही की तरफ़ था। 23 इतने में किसी ने उस से पूछा,
"ख़ुदावन्द, क्या कम लोगों को नजात मिलेगी?"
उस ने जवाब दिया, 24 "तंग दरवाज़े में से दाख़िल
होने की सिरतोड़ कोशिश करो। क्यूँकि मैं तुम को
बताता हूँ कि बहुत से लोग अन्दर जाने की कोशिश
करेंगे, लेकिन बेफ़ाइदा। 25 एक वक़्त आएगा कि
घर का मालिक उठ कर दरवाज़ा बन्द कर देगा।
फिर तुम बाहर खड़े रहोगे और खटखटाते खटखटाते
इल्तिमास करोगे, 'ख़ुदावन्द, हमारे लिए दरवाज़ा
खोल दें।' लेकिन वह जवाब देगा, 'न मैं तुम को
जानता हूँ, न यह कि तुम कहाँ के हो।' 26 फिर तुम
कहोगे, 'हम ने तो आप के सामने ही खाया और पिया
और आप ही हमारी सड़कों पर तालीम देते रहे।'
27 लेकिन वह जवाब देगा, 'न मैं तुम को जानता हूँ, न
यह कि तुम कहाँ के हो। ऐ तमाम बदकारो, मुझ से दूर
हो जाओ!' 28 वहाँ तुम रोते और दाँत पीसते रहोगे।
क्यूँकि तुम देखोगे कि इब्राहीम, इस्हाक़, याक़ूब और
तमाम नबी अल्लाह की बादशाही में हैं जबकि तुम को
निकाल दिया गया है। 29 और लोग मशरिक़, मग़रिब,
शिमाल और जुनूब से आ कर अल्लाह की बादशाही
की ज़ियाफ़त में शरीक होंगे। 30 उस वक़्त कुछ ऐसे
होंगे जो पहले आख़िर थे, लेकिन अब अव्वल होंगे।
और कुछ ऐसे भी होंगे जो पहले अव्वल थे, लेकिन
अब आख़िर होंगे।"

यरूशलम पर अफ़्सोस

31 उस वक़्त कुछ फ़रीसी ईसा के पास आ कर उस
से कहने लगे, "इस मक़ाम को छोड़ कर कहीं और
चले जाएँ, क्यूँकि हेरोदेस आप को क़त्ल करने का
इरादा रखता है।"
32 ईसा ने जवाब दिया, "जाओ, उस लोमड़ी को
बता दो, 'आज और कल मैं बदरुहें निकालता और
मरीज़ों को शिफ़ा देता रहूँगा। फिर तीसरे दिन मैं
पाया-ए-तक्मील को पहुँचूँगा।' 33 इस लिए लाज़िम
है कि मैं आज, कल और परसों आगे चलता रहूँ।
क्यूँकि मुमकिन नहीं कि कोई नबी यरूशलम से
बाहर हलाक हो।
34 हाय यरूशलम, यरूशलम! तू जो नबियों को
क़त्ल करती और अपने पास भेजे हुए पैग़म्बरों को
संगसार करती है। मैं ने कितनी ही बार तेरी औलाद
को जमा करना चाहा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह
मुर्ग़ी अपने बच्चों को अपने परों तले जमा करके
महफ़ूज़ कर लेती है। लेकिन तू ने न चाहा। 35 अब
तेरे घर को वीरान-ओ-सुन्सान छोड़ा जाएगा। और मैं
तुम को बताता हूँ, तुम मुझे उस वक़्त तक दुबारा
नहीं देखोगे जब तक तुम न कहो कि मुबारक है वह
जो रब के नाम से आता है।"

सबत के दिन मरीज़ की शिफ़ा

14 1 सबत के एक दिन ईसा खाने के लिए
फ़रीसियों के किसी राहनुमा के घर आया।
लोग उसे पकड़ने के लिए उस की हर हरकत पर
नज़र रखे हुए थे। 2 वहाँ एक आदमी ईसा के सामने
था जिस के बाज़ू और टाँगें फूले हुए थे। 3 यह देख
कर वह फ़रीसियों और शरीअत के आलिमों से पूछने
लगा, "क्या शरीअत सबत के दिन शिफ़ा देने की
इजाज़त देती है?"
4 लेकिन वह ख़ामोश रहे। फिर उस ने उस आदमी
पर हाथ रखा और उसे शिफ़ा दे कर रुख़्सत कर
दिया। 5 हाज़िरीन से वह कहने लगा, "अगर तुम में
से किसी का बेटा या बैल सबत के दिन कुएँ में गिर
जाए तो क्या तुम उसे फ़ौरन नहीं निकालोगे?"
6 इस पर वह कोई जवाब न दे सके।

इज़्ज़त और अज्र हासिल करने का तरीक़ा

7 जब ईसा ने देखा कि मेहमान मेज़ पर इज़्ज़त की
कुर्सियाँ चुन रहे हैं तो उस ने उन्हें यह तम्सील सुनाई,
8 "जब तुझे किसी शादी की ज़ियाफ़त में शरीक होने

की दावत दी जाए तो वहाँ जा कर इज़्ज़त की कुर्सी
पर न बैठना। ऐसा न हो कि किसी और को भी दावत
दी गई हो जो तुझ से ज़्यादा इज़्ज़तदार है। 9 क्यूँकि
जब वह पहुँचेगा तो मेज़बान तेरे पास आ कर कहेगा,
'ज़रा इस आदमी को यहाँ बैठने दे।' यूँ तेरी बेइज़्ज़ती
हो जाएगी और तुझे वहाँ से उठ कर आख़िरी कुर्सी
पर बैठना पड़ेगा। 10 इस लिए ऐसा मत करना बल्कि
जब तुझे दावत दी जाए तो जा कर आख़िरी कुर्सी पर
बैठ जा। फिर जब मेज़बान तुझे वहाँ बैठा हुआ देखेगा
तो वह कहेगा, 'दोस्त, सामने वाली कुर्सी पर बैठ।'
इस तरह तमाम मेहमानों के सामने तेरी इज़्ज़त हो
जाएगी। 11 क्यूँकि जो भी अपने आप को सरफ़राज़
करे उसे पस्त किया जाएगा और जो अपने आप को
पस्त करे उसे सरफ़राज़ किया जाएगा।"

12 फिर ईसा ने मेज़बान से बात की, "जब तू लोगों
को दोपहर या शाम का खाना खाने की दावत देना
चाहता है तो अपने दोस्तों, भाइयों, रिश्तेदारों या
अमीर हमसायों को न बुला। ऐसा न हो कि वह इस
के इवज़ तुझे भी दावत दें। क्यूँकि अगर वह ऐसा
करें तो यही तेरा मुआवज़ा होगा। 13 इस के बजाय
ज़ियाफ़त करते वक़्त ग़रीबों, लंगड़ों, मफ़्लूजों और
अंधों को दावत दे। 14 ऐसा करने से तुझे बरकत
मिलेगी। क्यूँकि वह तुझे इस के इवज़ कुछ नहीं
दे सकेंगे, बल्कि तुझे इस का मुआवज़ा उस वक़्त
मिलेगा जब रास्तबाज़ जी उठेंगे।"

बड़ी ज़ियाफ़त की तम्सील

15 यह सुन कर मेहमानों में से एक ने उस से कहा,
"मुबारक है वह जो अल्लाह की बादशाही में खाना
खाए।"

16 ईसा ने जवाब में कहा, "किसी आदमी ने एक
बड़ी ज़ियाफ़त का इन्तिज़ाम किया। इस के लिए उस
ने बहुत से लोगों को दावत दी। 17 जब ज़ियाफ़त का
वक़्त आया तो उस ने अपने नौकर को मेहमानों को
इत्तिला देने के लिए भेजा कि 'आएँ, सब कुछ तय्यार
है।' 18 लेकिन वह सब के सब माज़रत चाहने लगे।
पहले ने कहा, 'मैं ने खेत ख़रीदा है और अब ज़रूरी
है कि निकल कर उस का मुआइना करूँ। मैं माज़रत
चाहता हूँ।' 19 दूसरे ने कहा, 'मैं ने बैलों के पाँच जोड़े
ख़रीदे हैं। अब मैं उन्हें आज़माने जा रहा हूँ। मैं माज़रत
चाहता हूँ।' 20 तीसरे ने कहा, 'मैं ने शादी की है, इस
लिए नहीं आ सकता।'

21 नौकर ने वापस आ कर मालिक को सब कुछ
बताया। वह ग़ुस्से हो कर नौकर से कहने लगा, 'जा,
सीधे शहर की सड़कों और गलियों में जा कर वहाँ
के ग़रीबों, लंगड़ों, अंधों और मफ़्लूजों को ले आ।'
नौकर ने ऐसा ही किया। 22 फिर वापस आ कर उस
ने मालिक को इत्तिला दी, 'जनाब, जो कुछ आप
ने कहा था पूरा हो चुका है। लेकिन अब भी मज़ीद
लोगों के लिए गुन्जाइश है।' 23 मालिक ने उस से
कहा, फिर शहर से निकल कर दीहात की सड़कों
पर और बाड़ों के पास जा। जो भी मिल जाए उसे
हमारी ख़ुशी में शरीक होने पर मज्बूर कर ताकि मेरा
घर भर जाए। 24 क्यूँकि मैं तुम को बताता हूँ कि जिन
को पहले दावत दी गई थी उन में से कोई भी मेरी
ज़ियाफ़त में शरीक न होगा।"

शागिर्द होने की क़ीमत

25 एक बड़ा हुजूम ईसा के साथ चल रहा था। उन
की तरफ़ मुड़ कर उस ने कहा, 26 "अगर कोई मेरे
पास आ कर अपने बाप, माँ, बीवी, बच्चों, भाइयों,
बहनों बल्कि अपने आप से भी दुश्मनी न रखे तो
वह मेरा शागिर्द नहीं हो सकता। 27 और जो अपनी
सलीब उठा कर मेरे पीछे न हो ले वह मेरा शागिर्द
नहीं हो सकता।

28 अगर तुम में से कोई बुर्ज तामीर करना चाहे तो
क्या वह पहले बैठ कर पूरे अख़्राजात का अन्दाज़ा
नहीं लगाएगा ताकि मालूम हो जाए कि वह उसे
तक्मील तक पहुँचा सकेगा या नहीं? 29 वर्ना ख़तरा
है कि उस की बुन्याद डालने के बाद पैसे ख़त्म हो
जाएँ और वह आगे कुछ न बना सके। फिर जो कोई
भी देखेगा वह उस का मज़ाक़ उड़ा कर 30 कहेगा,

‘उस ने इमारत को शुरू तो किया, लेकिन अब उसे
मुकम्मल नहीं कर पाया।’
31 या अगर कोई बादशाह किसी दूसरे बादशाह के
साथ जंग के लिए निकले तो क्या वह पहले बैठ
कर अन्दाज़ा नहीं लगाएगा कि वह अपने दस हज़ार
फ़ौजियों से उन बीस हज़ार फ़ौजियों पर ग़ालिब आ
सकता है जो उस से लड़ने आ रहे हैं? 32 अगर वह
इस नतीजे पर पहुँचे कि ग़ालिब नहीं आ सकता तो
वह सुलह करने के लिए अपने नुमाइन्दे दुश्मन के
पास भेजेगा जब वह अभी दूर ही हो। 33 इसी तरह
तुम में से जो भी अपना सब कुछ न छोड़े वह मेरा
शागिर्द नहीं हो सकता।

बेकार नमक

34 नमक अच्छी चीज़ है। लेकिन अगर उस का
ज़ाइक़ा जाता रहे तो फिर उसे क्यूँकर दुबारा नमकीन
किया जा सकता है? 35 न वह ज़मीन के लिए मुफ़ीद
है, न खाद के लिए बल्कि उसे निकाल कर बाहर
फैंका जाएगा। जो सुन सकता है वह सुन ले।”

खोई हुई भेड़

15 1 अब ऐसा था कि तमाम टैक्स लेने वाले
और गुनाहगार ईसा की बातें सुनने के लिए
उस के पास आते थे। 2 यह देख कर फ़रीसी और
शरीअत के आलिम बुड़बुड़ाने लगे, “यह आदमी
गुनाहगारों को ख़ुशआमदीद कह कर उन के साथ
खाना खाता है।” 3 इस पर ईसा ने उन्हें यह तम्सील
सुनाई,
4 “फ़र्ज़ करो कि तुम में से किसी की सौ भेड़ें
हैं। लेकिन एक गुम हो जाती है। अब मालिक क्या
करेगा? क्या वह बाक़ी 99 भेड़ें खुले मैदान में छोड़
कर गुमशुदा भेड़ को ढूँडने नहीं जाएगा? ज़रूर
जाएगा, बल्कि जब तक उसे वह भेड़ मिल न जाए
वह उस की तलाश में रहेगा। 5 फिर वह ख़ुश हो कर
उसे अपने कंधों पर उठा लेगा। 6 यूँ चलते चलते वह
अपने घर पहुँच जाएगा और वहाँ अपने दोस्तों और
हमसायों को बुला कर उन से कहेगा, ‘मेरे साथ ख़ुशी
मनाओ! क्यूँकि मुझे अपनी खोई हुई भेड़ मिल गई
है।’ 7 मैं तुम को बताता हूँ कि आसमान पर बिलकुल
इसी तरह ख़ुशी मनाई जाएगी जब एक ही गुनाहगार
तौबा करेगा। और यह ख़ुशी उस ख़ुशी की निस्बत
ज़्यादा होगी जो उन 99 अफ़राद के बाइस मनाई
जाएगी जिन्हें तौबा करने की ज़रूरत ही नहीं थी।

गुमशुदा सिक्का

8 या फ़र्ज़ करो कि किसी औरत के पास दस सिक्के
हों लेकिन एक सिक्का गुम हो जाए। अब औरत क्या
करेगी? क्या वह चराग़ जला कर और घर में झाड़ू
दे दे कर बड़ी एहतियात से सिक्के को तलाश नहीं
करेगी? ज़रूर करेगी, बल्कि वह उस वक़्त तक
ढूँडती रहेगी जब तक उसे सिक्का मिल न जाए। 9 जब
उसे सिक्का मिल जाएगा तो वह अपनी सहेलियों और
हमसायों को बुला कर उन से कहेगी, ‘मेरे साथ ख़ुशी
मनाओ! क्यूँकि मुझे अपना गुमशुदा सिक्का मिल गया
है।’ 10 मैं तुम को बताता हूँ कि बिलकुल इसी तरह
अल्लाह के फ़रिश्तों के सामने ख़ुशी मनाई जाती है
जब एक भी गुनाहगार तौबा करता है।”

गुमशुदा बेटा

11 ईसा ने अपनी बात जारी रखी। “किसी आदमी
के दो बेटे थे। 12 इन में से छोटे ने बाप से कहा, ‘ऐ
बाप, मीरास का मेरा हिस्सा दे दें।’ इस पर बाप ने
दोनों में अपनी मिलकियत तक़्सीम कर दी। 13 थोड़े
दिनों के बाद छोटा बेटा अपना सारा सामान समेट
कर अपने साथ किसी दूरदराज़ मुल्क में ले गया।
वहाँ उस ने अय्याशी में अपना पूरा माल-ओ-मता
उड़ा दिया। 14 सब कुछ ज़ाए हो गया तो उस मुल्क
में सख़्त काल पड़ा। अब वह ज़रूरतमन्द होने लगा।
15 नतीजे में वह उस मुल्क के किसी बाशिन्दे के
हाँ जा पड़ा जिस ने उसे सूअरों को चराने के लिए
अपने खेतों में भेज दिया। 16 वहाँ वह अपना पेट उन
फलियों से भरने की शदीद ख़्वाहिश रखता था जो

सूअर खाते थे, लेकिन उसे इस की भी इजाज़त न
मिली। 17 फिर वह होश में आया। वह कहने लगा, मेरे
बाप के कितने मज़दूरों को कस्रत से खाना मिलता
है जबकि मैं यहाँ भूका मर रहा हूँ। 18 मैं उठ कर
अपने बाप के पास वापस चला जाऊँगा और उस से
कहूँगा, 'ऐ बाप, मैं ने आसमान का और आप का
गुनाह किया है। 19 अब मैं इस लाइक़ नहीं रहा कि
आप का बेटा कहलाऊँ। मेहरबानी करके मुझे अपने
मज़दूरों में रख लें।' 20 फिर वह उठ कर अपने बाप
के पास वापस चला गया।

लेकिन वह घर से अभी दूर ही था कि उस के बाप
ने उसे देख लिया। उसे तरस आया और वह भाग
कर बेटे के पास आया और गले लगा कर उसे बोसा
दिया। 21 बेटे ने कहा, 'ऐ बाप, मैं ने आसमान का और
आप का गुनाह किया है। अब मैं इस लाइक़ नहीं रहा
कि आप का बेटा कहलाऊँ।' 22 लेकिन बाप ने अपने
नौकरों को बुलाया और कहा, 'जल्दी करो, बेहतरीन
सूट ला कर इसे पहनाओ। इस के हाथ में अंगूठी और
पाँओ में जूते पहना दो। 23 फिर मोटा-ताज़ा बछड़ा ला
कर उसे ज़बह करो ताकि हम खाएँ और ख़ुशी मनाएँ,
24 क्यूँकि यह मेरा बेटा मुर्दा था अब ज़िन्दा हो गया
है, गुम हो गया था अब मिल गया है।' इस पर वह
ख़ुशी मनाने लगे।

25 इस दौरान बाप का बड़ा बेटा खेत में था। अब
वह घर लौटा। जब वह घर के क़रीब पहुँचा तो अन्दर
से मौसीक़ी और नाचने की आवाज़ें सुनाई दीं। 26 उस
ने किसी नौकर को बुला कर पूछा, 'यह क्या हो
रहा है?' 27 नौकर ने जवाब दिया, 'आप का भाई आ
गया है और आप के बाप ने मोटा-ताज़ा बछड़ा ज़बह
करवाया है, क्यूँकि उसे अपना बेटा सहीह-सलामत
वापस मिल गया है।'

28 यह सुन कर बड़ा बेटा ग़ुस्से हुआ और अन्दर
जाने से इन्कार कर दिया। फिर बाप घर से निकल
कर उसे समझाने लगा। 29 लेकिन उस ने जवाब में
अपने बाप से कहा, 'देखें, मैं ने इतने साल आप की
ख़िदमत में सख़्त मेहनत-मशक़्क़त की है और एक
दफ़ा भी आप की मर्ज़ी की ख़िलाफ़वरज़ी नहीं की।
तो भी आप ने मुझे इस पूरे अर्से में एक छोटा बकरा
भी नहीं दिया कि उसे ज़बह करके अपने दोस्तों के
साथ ज़ियाफ़त करता। 30 लेकिन जूँ ही आप का यह
बेटा आया जिस ने आप की दौलत कस्बियों में उड़ा
दी, आप ने उस के लिए मोटा-ताज़ा बछड़ा ज़बह
करवाया।' 31 बाप ने जवाब दिया, 'बेटा, आप तो
हर वक़्त मेरे पास रहे हैं, और जो कुछ मेरा है वह
आप ही का है। 32 लेकिन अब ज़रूरी था कि हम
जश्न मनाएँ और ख़ुश हों। क्यूँकि आप का यह भाई
जो मुर्दा था अब ज़िन्दा हो गया है, जो गुम हो गया
था अब मिल गया है'।"

चालाक मुलाज़िम

16 1 ईसा ने शागिर्दों से कहा, "किसी अमीर
आदमी ने एक मुलाज़िम रखा था जो उस
की जायदाद की देख-भाल करता था। ऐसा हुआ कि
एक दिन उस पर इल्ज़ाम लगाया गया कि वह अपने
मालिक की दौलत ज़ाए कर रहा है। 2 मालिक ने
उसे बुला कर कहा, 'यह क्या है जो मैं तेरे बारे में
सुनता हूँ? अपनी तमाम ज़िम्मादारियों का हिसाब दे,
क्यूँकि मैं तुझे बर्ख़ास्त कर दूँगा।' 3 मुलाज़िम ने दिल
में कहा, 'अब मैं क्या करूँ जबकि मेरा मालिक यह
ज़िम्मादारी मुझ से छीन लेगा? खुदाई जैसा सख़्त
काम मुझ से नहीं होता और भीक माँगने से शर्म
आती है। 4 हाँ, मैं जानता हूँ कि क्या करूँ ताकि
लोग मुझे बर्ख़ास्त किए जाने के बाद अपने घरों में
ख़ुशआमदीद कहें।'

5 यह कह कर उस ने अपने मालिक के तमाम
क़र्ज़दारों को बुलाया। पहले से उस ने पूछा, 'तुम्हारा
क़र्ज़ा कितना है?' 6 उस ने जवाब दिया, 'मुझे मालिक
को ज़ैतून के तेल के सौ कनस्तर वापस करने हैं।'
मुलाज़िम ने कहा, 'अपना बिल ले लो और बैठ कर
जल्दी से सौ कनस्तर पचास में बदल लो।' 7 दूसरे
से उस ने पूछा, 'तुम्हारा कितना क़र्ज़ा है?' उस ने
जवाब दिया, 'मुझे गन्दुम की हज़ार बोरियाँ वापस

करनी हैं।' मुलाज़िम ने कहा, 'अपना बिल ले लो
और हज़ार के बदले आठ सौ लिख लो।'
8 यह देख कर मालिक ने बेईमान मुलाज़िम की
तारीफ़ की कि उस ने अक़्ल से काम लिया है।
क्यूँकि इस दुनिया के फ़र्ज़न्द अपनी नस्ल के लोगों
से निपटने में नूर के फ़र्ज़न्दों से ज़्यादा होश्यार होते
हैं।
9 मैं तुम को बताता हूँ कि दुनिया की नारास्त दौलत
से अपने लिए दोस्त बना लो ताकि जब यह ख़त्म
हो जाए तो लोग तुम को अबदी रिहाइशगाहों में
ख़ुशआमदीद कहें। 10 जो थोड़े में वफ़ादार है वह
ज़्यादा में भी वफ़ादार होगा। और जो थोड़े में बेईमान
है वह ज़्यादा में भी बेईमानी करेगा। 11 अगर तुम
दुनिया की नारास्त दौलत को सँभालने में वफ़ादार न
रहे तो फिर कौन हक़ीक़ी दौलत तुम्हारे सपुर्द करेगा?
12 और अगर तुम ने दूसरों की दौलत सँभालने में
बेईमानी दिखाई है तो फिर कौन तुम को तुम्हारे ज़ाती
इस्तेमाल के लिए कुछ देगा?
13 कोई भी ग़ुलाम दो मालिकों की ख़िदमत नहीं
कर सकता। या तो वह एक से नफ़रत करके दूसरे से
मुहब्बत रखेगा, या एक से लिपट कर दूसरे को हक़ीर
जानेगा। तुम एक ही वक़्त में अल्लाह और दौलत की
ख़िदमत नहीं कर सकते।"

ईसा की चन्द कहावतें

14 फ़रीसियों ने यह सब कुछ सुना तो वह उस का
मज़ाक़ उड़ाने लगे, क्यूँकि वह लालची थे। 15 उस
ने उन से कहा, "तुम ही वह हो जो अपने आप
को लोगों के सामने रास्तबाज़ क़रार देते हो, लेकिन
अल्लाह तुम्हारे दिलों से वाक़िफ़ है। क्यूँकि लोग जिस
चीज़ की बहुत क़दर करते हैं वह अल्लाह के नज़्दीक
मकरूह है।
16 यहया के आने तक तुम्हारे राहनुमा मूसा की
शरीअत और नबियों के पैग़ामात थे। लेकिन अब
अल्लाह की बादशाही की ख़ुशख़बरी का एलान किया
जा रहा है और तमाम लोग ज़बरदस्ती इस में दाख़िल
हो रहे हैं। 17 लेकिन इस का यह मतलब नहीं कि
शरीअत मन्सूख़ हो गई है बल्कि आसमान-ओ-ज़मीन
जाते रहेंगे, लेकिन शरीअत की ज़ेर ज़बर तक कोई
भी बात नहीं बदलेगी।
18 चुनाँचे जो आदमी अपनी बीवी को तलाक़ दे
कर किसी और से शादी करे वह ज़िना करता है।
इसी तरह जो किसी तलाकशुदा औरत से शादी करे
वह भी ज़िना करता है।

अमीर आदमी और लाज़र

19 एक अमीर आदमी का ज़िक्र है जो अर्ग़वानी रंग
के कपड़े और नफ़ीस कतान पहनता और हर रोज़
ऐश-ओ-इश्रत में गुज़ारता था। 20 अमीर के गेट पर
एक ग़रीब आदमी पड़ा था जिस के पूरे जिस्म पर
नासूर थे। उस का नाम लाज़र था 21 और उस की
बस एक ही ख़्वाहिश थी कि वह अमीर की मेज़ से
गिरे हुए टुकड़े खा कर सेर हो जाए। कुत्ते उस के पास
आ कर उस के नासूर चाटते थे।
22 फिर ऐसा हुआ कि ग़रीब आदमी मर गया।
फ़रिश्तों ने उसे उठा कर इब्राहीम की गोद में बिठा
दिया। अमीर आदमी भी फ़ौत हुआ और दफ़नाया
गया। 23 वह जहन्नुम में पहुँचा। अज़ाब की हालत में
उस ने अपनी नज़र उठाई तो दूर से इब्राहीम और
उस की गोद में लाज़र को देखा। 24 वह पुकार उठा,
'ऐ मेरे बाप इब्राहीम, मुझ पर रहम करें। मेहरबानी
करके लाज़र को मेरे पास भेज दें ताकि वह अपनी
उंगली को पानी में डुबो कर मेरी ज़बान को ठंडा करे,
क्यूँकि मैं इस आग में तड़पता हूँ।'
25 लेकिन इब्राहीम ने जवाब दिया, 'बेटा, याद रख
कि तुझे अपनी ज़िन्दगी में बेहतरीन चीज़ें मिल चुकी
हैं जबकि लाज़र को बदतरीन चीज़ें। लेकिन अब
उसे आराम और तसल्ली मिल गई है जबकि तुझे
अज़ियत। 26 नीज़, हमारे और तुम्हारे दरमियान एक
वसी ख़लीज क़ाइम है। अगर कोई चाहे भी तो उसे
पार करके यहाँ से तुम्हारे पास नहीं जा सकता, न
वहाँ से कोई यहाँ आ सकता है।' 27 अमीर आदमी

ने कहा, ‘मेरे बाप, फिर मेरी एक और गुज़ारिश
है, मेहरबानी करके लाज़र को मेरे वालिद के घर
भेज दें। 28 मेरे पाँच भाई हैं। वह वहाँ जा कर उन्हें
आगाह करे, ऐसा न हो कि उन का अन्जाम भी यह
अज़ियतनाक मक़ाम हो।’
29 लेकिन इब्राहीम ने जवाब दिया, ‘उन के पास
मूसा की तौरेत और नबियों के सहीफ़े तो हैं। वह
उन की सुनें।’ 30 अमीर ने अर्ज़ की, ‘नहीं, मेरे बाप
इब्राहीम, अगर कोई मुर्दों में से उन के पास जाए
तो फिर वह ज़रूर तौबा करेंगे।’ 31 इब्राहीम ने कहा,
‘अगर वह मूसा और नबियों की नहीं सुनते तो वह
उस वक़्त भी क़ाइल नहीं होंगे जब कोई मुर्दों में से
जी उठ कर उन के पास जाएगा’।”

गुनाह

17 1 ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा,
“आज़माइशों को तो आना ही आना है,
लेकिन उस पर अफ़्सोस जिस की मारिफ़त वह
आएँ। 2 अगर वह इन छोटों में से किसी को गुनाह
करने पर उकसाए तो उस के लिए बेहतर है कि उस
के गले में बड़ी चक्की का पाट बांधा जाए और उसे
समुन्दर में फैंक दिया जाए। 3 ख़बरदार रहो!
अगर तुम्हारा भाई गुनाह करे तो उसे समझाओ।
अगर वह इस पर तौबा करे तो उसे मुआफ़ कर दो।
4 अब फ़र्ज़ करो कि वह एक दिन के अन्दर सात बार
तुम्हारा गुनाह करे, लेकिन हर दफ़ा वापस आ कर
तौबा का इज़हार करे, तो भी उसे हर दफ़ा मुआफ़
कर दो।”

ईमान

5 रसूलों ने ख़ुदावन्द से कहा, “हमारे ईमान को
बढ़ा दें।”
6 ख़ुदावन्द ने जवाब दिया, “अगर तुम्हारा ईमान
राई के दाने जैसा छोटा भी हो तो तुम शहतूत के इस
दरख़्त को कह सकते हो, ‘उखड़ कर समुन्दर में जा
लग’ तो वह तुम्हारी बात पर अमल करेगा।

ग़ुलाम का फ़र्ज़

7 फ़र्ज़ करो कि तुम में से किसी ने हल चलाने या
जानवर चराने के लिए एक ग़ुलाम रखा है। जब यह
ग़ुलाम खेत से घर आएगा तो क्या उस का मालिक
कहेगा, ‘इधर आओ, खाने के लिए बैठ जाओ?’
8 हरगिज़ नहीं, बल्कि वह यह कहेगा, ‘मेरा खाना
तय्यार करो, ड्यूटी के कपड़े पहन कर मेरी ख़िदमत
करो जब तक मैं खा पी न लूँ। इस के बाद तुम भी
खा और पी सकोगे।’ 9 और क्या वह अपने ग़ुलाम
की उस ख़िदमत का शुक्रिया अदा करेगा जो उस ने
उसे करने को कहा था? हरगिज़ नहीं! 10 इसी तरह
जब तुम सब कुछ जो तुम्हें करने को कहा गया है कर
चुको तब तुम को यह कहना चाहिए, ‘हम नालाइक़
नौकर हैं। हम ने सिर्फ़ अपना फ़र्ज़ अदा किया है’।”

कोढ़ के दस मरीज़ों की शिफ़ा

11 ऐसा हुआ कि यरूशलम की तरफ़ सफ़र करते
करते ईसा सामरिया और गलील में से गुज़रा। 12 एक
दिन वह किसी गाँव में दाख़िल हो रहा था कि कोढ़
के दस मरीज़ उस को मिलने आए। वह कुछ फ़ासिले
पर खड़े हो कर 13 ऊँची आवाज़ से कहने लगे, “ऐ
ईसा, उस्ताद, हम पर रहम करें।”
14 उस ने उन्हें देखा तो कहा, “जाओ, अपने आप
को इमामों को दिखाओ ताकि वह तुम्हारा मुआइना
करें।”
और ऐसा हुआ कि वह चलते चलते अपनी बीमारी
से पाक-साफ़ हो गए। 15 उन में से एक ने जब देखा
कि शिफ़ा मिल गई है तो वह मुड़ कर ऊँची आवाज़ से
अल्लाह की तम्जीद करने लगा, 16 और ईसा के सामने
मुँह के बल गिर कर शुक्रिया अदा किया। यह आदमी
सामरिया का बाशिन्दा था। 17 ईसा ने पूछा, “क्या
दस के दस आदमी अपनी बीमारी से पाक-साफ़ नहीं
हुए? बाक़ी नौ कहाँ हैं? 18 क्या इस ग़ैरमुल्की के
इलावा कोई और वापस आ कर अल्लाह की तम्जीद
करने के लिए तय्यार नहीं था?” 19 फिर उस ने उस

से कहा, “उठ कर चला जा। तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।”

अल्लाह की बादशाही कब आएगी

20 कुछ फ़रीसियों ने ईसा से पूछा, “अल्लाह की बादशाही कब आएगी?” उस ने जवाब दिया, “अल्लाह की बादशाही यूँ नहीं आ रही कि उसे ज़ाहिरी निशानों से पहचाना जाए। 21 लोग यह भी नहीं कह सकेंगे, ‘वह यहाँ है’ या ‘वह वहाँ है’ क्यूँकि अल्लाह की बादशाही तुम्हारे दरमियान है।”

22 फिर उस ने अपने शागिर्दों से कहा, “ऐसे दिन आएँगे कि तुम इब्न-ए-आदम का कम अज़ कम एक दिन देखने की तमन्ना करोगे, लेकिन नहीं देखोगे। 23 लोग तुम को बताएँगे, ‘वह वहाँ है’ या ‘वह यहाँ है।’ लेकिन मत जाना और उन के पीछे न लगना। 24 क्यूँकि जब इब्न-ए-आदम का दिन आएगा तो वह बिजली की मानिन्द होगा जिस की चमक आसमान को एक सिरे से ले कर दूसरे सिरे तक रौशन कर देती है। 25 लेकिन पहले लाज़िम है कि वह बहुत दुख उठाए और इस नस्ल के हाथों रद्द किया जाए। 26 जब इब्न-ए-आदम का वक़्त आएगा तो हालात नूह के दिनों जैसे होंगे। 27 लोग उस दिन तक खाने-पीने और शादी करने करवाने में लगे रहे जब तक नूह कश्ती में दाख़िल न हो गया। फिर सैलाब ने आ कर उन सब को तबाह कर दिया। 28 बिलकुल यही कुछ लूत के अय्याम में हुआ। लोग खाने-पीने, ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त, काश्तकारी और तामीर के काम में लगे रहे। 29 लेकिन जब लूत सदूम को छोड़ कर निकला तो आग और गंधक ने आसमान से बरस कर उन सब को तबाह कर दिया। 30 इब्न-ए-आदम के ज़ुहूर के वक़्त ऐसे ही हालात होंगे।

31 जो शख़्स उस दिन छत पर हो वह घर का सामान साथ ले जाने के लिए नीचे न उतरे। इसी तरह जो खेत में हो वह अपने पीछे पड़ी चीज़ों को साथ ले जाने के लिए घर न लौटे। 32 लूत की बीवी को याद रखो। 33 जो अपनी जान बचाने की कोशिश करेगा वह उसे खो देगा, और जो अपनी जान खो देगा वही उसे बचाए रखेगा। 34 मैं तुम को बताता हूँ कि उस रात दो अफ़राद एक बिस्तर में सोए होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा। 35 दो ख़वातीन चक्की पर गन्दुम पीस रही होंगी, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरी को पीछे छोड़ दिया जाएगा। 36 [दो अफ़राद खेत में होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा।]”

37 उन्हों ने पूछा, “ख़ुदावन्द, यह कहाँ होगा?” उस ने जवाब दिया, “जहाँ लाश पड़ी हो वहाँ गिद्ध जमा हो जाएंगे।”

बेवा और जज की तम्सील

18 1 फिर ईसा ने उन्हें एक तम्सील सुनाई जो मुसलसल दुआ करने और हिम्मत न हारने की ज़रूरत को ज़ाहिर करती है। 2 उस ने कहा, “किसी शहर में एक जज रहता था जो न ख़ुदा का ख़ौफ़ मानता, न किसी इन्सान का लिहाज़ करता था। 3 अब उस शहर में एक बेवा भी थी जो यह कह कर उस के पास आती रही कि ‘मेरे मुख़ालिफ़ को जीतने न दें बल्कि मेरा इन्साफ़ करें।’ 4 कुछ देर के लिए जज ने इन्कार किया। लेकिन फिर वह दिल में कहने लगा, ‘बेशक मैं ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं मानता, न लोगों की पर्वा करता हूँ, 5 लेकिन यह बेवा मुझे बार बार तंग कर रही है। इस लिए मैं उस का इन्साफ़ करूँगा। ऐसा न हो कि आख़िरकार वह आ कर मेरे मुँह पर थप्पड़ मारे’।”

6 ख़ुदावन्द ने बात जारी रखी। “इस पर ध्यान दो जो बेइन्साफ़ जज ने कहा। 7 अगर उस ने आख़िरकार इन्साफ़ किया तो क्या अल्लाह अपने चुने हुए लोगों का इन्साफ़ नहीं करेगा जो दिन रात उसे मदद के लिए पुकारते हैं? क्या वह उन की बात मुल्तवी करता रहेगा? 8 हरगिज़ नहीं! मैं तुम को बताता हूँ कि वह जल्दी से उन का इन्साफ़ करेगा। लेकिन क्या इब्न-ए-आदम जब दुनिया में आएगा तो ईमान देख पाएगा?”

फ़रीसी और टैक्स लेने वाले की तम्सील

9 बाज़ लोग मौजूद थे जो अपनी रास्तबाज़ी पर
भरोसा रखते और दूसरों को हक़ीर जानते थे। उन्हें
ईसा ने यह तम्सील सुनाई, 10 "दो आदमी बैत-उल-
मुक़द्दस में दुआ करने आए। एक फ़रीसी था और
दूसरा टैक्स लेने वाला।
11 फ़रीसी खड़ा हो कर यह दुआ करने लगा, 'ऐ
ख़ुदा, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि मैं बाक़ी लोगों की
तरह नहीं हूँ। न मैं डाकू हूँ, न बेइन्साफ़, न ज़िनाकार।
मैं इस टैक्स लेने वाले की मानिन्द भी नहीं हूँ। 12 मैं
हफ़्ते में दो मर्तबा रोज़ा रखता हूँ और तमाम आम्दनी
का दसवाँ हिस्सा तेरे लिए मख़्सूस करता हूँ।'
13 लेकिन टैक्स लेने वाला दूर ही खड़ा रहा। उस
ने अपनी आँखें आसमान की तरफ़ उठाने तक की
जुरअत न की बल्कि अपनी छाती पीट पीट कर
कहने लगा, 'ऐ ख़ुदा, मुझ गुनाहगार पर रहम कर!'
14 मैं तुम को बताता हूँ कि जब दोनों अपने अपने
घर लौटे तो फ़रीसी नहीं बल्कि यह आदमी अल्लाह
के नज़्दीक रास्तबाज़ ठहरा। क्यूँकि जो भी अपने
आप को सरफ़राज़ करे उसे पस्त किया जाएगा और
जो अपने आप को पस्त करे उसे सरफ़राज़ किया
जाएगा।"

ईसा छोटे बच्चों को प्यार करता है

15 एक दिन लोग अपने छोटे बच्चों को भी ईसा के
पास लाए ताकि वह उन्हें छुए। यह देख कर शागिर्दों
ने उन को मलामत की। 16 लेकिन ईसा ने उन्हें अपने
पास बुला कर कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो
और उन्हें न रोको, क्यूँकि अल्लाह की बादशाही इन
जैसे लोगों को हासिल है। 17 मैं तुम को सच बताता
हूँ, जो अल्लाह की बादशाही को बच्चे की तरह क़बूल
न करे वह उस में दाख़िल नहीं होगा।"

अमीर मुश्किल से अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकते हैं

18 किसी राहनुमा ने उस से पूछा, "नेक उस्ताद, मैं
क्या करूँ ताकि मीरास में अबदी ज़िन्दगी पाऊँ?"
19 ईसा ने जवाब दिया, "तू मुझे नेक क्यूँ कहता है?
कोई नेक नहीं सिवाए एक के और वह है अल्लाह।
20 तू शरीअत के अह्काम से तो वाक़िफ़ है कि
ज़िना न करना, क़त्ल न करना, चोरी न करना, झूटी
गवाही न देना, अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त
करना।"
21 आदमी ने जवाब दिया, "मैं ने जवानी से आज
तक इन तमाम अह्काम की पैरवी की है।"
22 यह सुन कर ईसा ने कहा, "एक काम अब तक
रह गया है। अपनी पूरी जायदाद फ़रोख़्त करके पैसे
ग़रीबों में तक़्सीम कर दे। फिर तेरे लिए आसमान
पर ख़ज़ाना जमा हो जाएगा। इस के बाद आ कर मेरे
पीछे हो ले।" 23 यह सुन कर आदमी को बहुत दुख
हुआ, क्यूँकि वह निहायत दौलतमन्द था।
24 यह देख कर ईसा ने कहा, "दौलतमन्दों के
लिए अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होना कितना
मुश्किल है! 25 अमीर के अल्लाह की बादशाही में
दाख़िल होने की निस्बत यह ज़्यादा आसान है कि
ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।"
26 यह बात सुन कर सुनने वालों ने पूछा, "फिर
किस को नजात मिल सकती है?"
27 ईसा ने जवाब दिया, "जो इन्सान के लिए
नामुमकिन है वह अल्लाह के लिए मुमकिन है।"
28 पतरस ने उस से कहा, "हम तो अपना सब कुछ
छोड़ कर आप के पीछे हो लिए हैं।"
29 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुम को सच बताता हूँ
कि जिस ने भी अल्लाह की बादशाही की ख़ातिर अपने
घर, बीवी, भाइयों, वालिदैन या बच्चों को छोड़ दिया
है 30 उसे इस ज़माने में कई गुना ज़्यादा और आने
वाले ज़माने में अबदी ज़िन्दगी मिलेगी।"

ईसा की मौत की तीसरी पेशगोई

31 ईसा शागिर्दों को एक तरफ़ ले जा कर उन से
कहने लगा, “सुनो, हम यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे
हैं। वहाँ सब कुछ पूरा हो जाएगा जो नबियों की
मारिफ़त इब्न-ए-आदम के बारे में लिखा गया है।
32 उसे ग़ैरयहूदियों के हवाले कर दिया जाएगा जो
उस का मज़ाक़ उड़ाएँगे, उस की बेइज़्ज़ती करेंगे,
उस पर थूकेंगे, 33 उस को कोड़े मारेंगे और उसे क़त्ल
करेंगे। लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।”

34 लेकिन शागिर्दों की समझ में कुछ न आया। इस
बात का मतलब उन से छुपा रहा और वह न समझे
कि वह क्या कह रहा है।

अंधे की शिफ़ा

35 ईसा यरीहू के क़रीब पहुँचा। वहाँ रास्ते के
किनारे एक अंधा बैठा भीक माँग रहा था। 36 बहुत
से लोग उस के सामने से गुज़रने लगे तो उस ने यह
सुन कर पूछा कि क्या हो रहा है।

37 उन्हों ने कहा, “ईसा नासरी यहाँ से गुज़र रहा
है।”

38 अंधा चिल्लाने लगा, “ऐ ईसा इब्न-ए-दाऊद, मुझ
पर रहम करें।”

39 आगे चलने वालों ने उसे डाँट कर कहा,
“ख़ामोश!” लेकिन वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से
पुकारता रहा, “ऐ इब्न-ए-दाऊद, मुझ पर रहम करें।”

40 ईसा रुक गया और हुक्म दिया, “उसे मेरे पास
लाओ।” जब वह क़रीब आया तो ईसा ने उस से
पूछा, 41 “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?”

उस ने जवाब दिया, “ख़ुदावन्द, यह कि मैं देख
सकूँ।”

42 ईसा ने उस से कहा, “तो फिर देख! तेरे ईमान ने
तुझे बचा लिया है।”

43 जूँ ही उस ने यह कहा अंधे की आँखें बहाल हो
गईं और वह अल्लाह की तम्जीद करते हुए उस के
पीछे हो लिया। यह देख कर पूरे हुजूम ने अल्लाह को
जलाल दिया।

ईसा और ज़क्काई

19 1 फिर ईसा यरीहू में दाख़िल हुआ और उस
में से गुज़रने लगा। 2 उस शहर में एक अमीर
आदमी बनाम ज़क्काई रहता था जो टैक्स लेने वालों
का अफ़्सर था। 3 वह जानना चाहता था कि यह ईसा
कौन है, लेकिन पूरी कोशिश करने के बावुजूद उसे
देख न सका, क्यूँकि ईसा के इर्दगिर्द बड़ा हुजूम था
और ज़क्काई का क़द छोटा था। 4 इस लिए वह दौड़
कर आगे निकला और उसे देखने के लिए अन्जीर-
तूत [y]के दरख़्त पर चढ़ गया जो रास्ते में था। 5 जब
ईसा वहाँ पहुँचा तो उस ने नज़र उठा कर कहा,
“ज़क्काई, जल्दी से उतर आ, क्यूँकि आज मुझे तेरे
घर में ठहरना है।”

6 ज़क्काई फ़ौरन उतर आया और ख़ुशी से उस की
मेहमान-नवाज़ी की। 7 यह देख कर बाक़ी तमाम लोग
बुड़बुड़ाने लगे, “इस के घर में जा कर वह एक
गुनाहगार के मेहमान बन गए हैं।”

8 लेकिन ज़क्काई ने ख़ुदावन्द के सामने खड़े हो कर
कहा, “ख़ुदावन्द, मैं अपने माल का आधा हिस्सा
ग़रीबों को दे देता हूँ। और जिस से मैं ने नाजाइज़
तौर से कुछ लिया है उसे चार गुना वापस करता
हूँ।”

9 ईसा ने उस से कहा, “आज इस घराने को नजात
मिल गई है, इस लिए कि यह भी इब्राहीम का बेटा
है। 10 क्यूँकि इब्न-ए-आदम गुमशुदा को ढूँडने और
नजात देने के लिए आया है।”

---

[y]एक सायादार दरख़्त जिस में अन्जीर की तरह का ख़ुर्दनी फल लगता है। इस के फूल ज़र्द और आराइशी होते हैं। मिस्री तूत। जमीज़। ficus sycomorus।

पैसों में इज़ाफ़ा

11 अब ईसा यरूशलम के क़रीब आ चुका था,
इस लिए लोग अन्दाज़ा लगाने लगे कि अल्लाह की
बादशाही ज़ाहिर होने वाली है। इस के पेश-ए-नज़र
ईसा ने अपनी यह बातें सुनने वालों को एक तम्सील
सुनाई। 12 उस ने कहा, "एक नवाब किसी दूरदराज़
मुल्क को चला गया ताकि उसे बादशाह मुक़र्रर किया
जाए। फिर उसे वापस आना था। 13 रवाना होने से
पहले उस ने अपने नौकरों में से दस को बुला कर
उन्हें सोने का एक एक सिक्का दिया। साथ साथ उस
ने कहा, 'यह पैसे ले कर उस वक़्त तक कारोबार में
लगाओ जब तक मैं वापस न आऊँ।' 14 लेकिन उस
की रआया उस से नफ़रत रखती थी, इस लिए उस
ने उस के पीछे वफ़द भेज कर इत्तिला दी, 'हम नहीं
चाहते कि यह आदमी हमारा बादशाह बने।'

15 तो भी उसे बादशाह मुक़र्रर किया गया। इस के
बाद जब वापस आया तो उस ने उन नौकरों को
बुलाया जिन्हें उस ने पैसे दिए थे ताकि मालूम करे
कि उन्हों ने यह पैसे कारोबार में लगा कर कितना
इज़ाफ़ा किया है। 16 पहला नौकर आया। उस ने
कहा, 'जनाब, आप के एक सिक्के से दस हो गए हैं।'
17 मालिक ने कहा, 'शाबाश, अच्छे नौकर। तू थोड़े
में वफ़ादार रहा, इस लिए अब तुझे दस शहरों पर
इख़तियार मिलेगा।' 18 फिर दूसरा नौकर आया। उस
ने कहा, 'जनाब, आप के एक सिक्के से पाँच हो गए
हैं।' 19 मालिक ने उस से कहा, 'तुझे पाँच शहरों पर
इख़तियार मिलेगा।'

20 फिर एक और नौकर आ कर कहने लगा,
'जनाब, यह आप का सिक्का है। मैं ने इसे कपड़े में
लपेट कर महफ़ूज़ रखा, 21 क्यूँकि मैं आप से डरता
था, इस लिए कि आप सख़्त आदमी हैं। जो पैसे
आप ने नहीं लगाए उन्हें ले लेते हैं और जो बीज आप
ने नहीं बोया उस की फ़सल काटते हैं।' 22 मालिक
ने कहा, 'शरीर नौकर! मैं तेरे अपने अल्फ़ाज़ के
मुताबिक़ तेरी अदालत करूँगा। जब तू जानता था
कि मैं सख़्त आदमी हूँ, कि वह पैसे ले लेता हूँ जो
ख़ुद नहीं लगाए और वह फ़सल काटता हूँ जिस का
बीज नहीं बोया, 23 तो फिर तू ने मेरे पैसे बैंक में क्यूँ
न जमा कराए? अगर तू ऐसा करता तो वापसी पर
मुझे कम अज़ कम वह पैसे सूद समेत मिल जाते।'

24 यह कह कर वह हाज़िरीन से मुख़ातिब हुआ,
'यह सिक्का इस से ले कर उस नौकर को दे दो जिस
के पास दस सिक्के हैं।' 25 उन्हों ने एतिराज़ किया,
'जनाब, उस के पास तो पहले ही दस सिक्के हैं।'
26 उस ने जवाब दिया, 'मैं तुम्हें बताता हूँ कि हर
शख़्स जिस के पास कुछ है उसे और दिया जाएगा,
लेकिन जिस के पास कुछ नहीं है उस से वह भी
छीन लिया जाएगा जो उस के पास है। 27 अब उन
दुश्मनों को ले आओ जो नहीं चाहते थे कि मैं उन
का बादशाह बनूँ। उन्हें मेरे सामने फाँसी दे दो'।"

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तिक़्बाल

28 इन बातों के बाद ईसा दूसरों के आगे आगे
यरूशलम की तरफ़ बढ़ने लगा। 29 जब वह बैत-
फ़गे और बैत-अनियाह के क़रीब पहुँचा जो ज़ैतून
के पहाड़ पर थे तो उस ने दो शागिर्दों को अपने आगे
भेज कर 30 कहा, "सामने वाले गाँव में जाओ। वहाँ
तुम एक जवान गधा देखोगे। वह बंधा हुआ होगा
और अब तक कोई भी उस पर सवार नहीं हुआ है।
उसे खोल कर ले आओ। 31 अगर कोई पूछे कि गधे
को क्यूँ खोल रहे हो तो उसे बता देना कि ख़ुदावन्द
को इस की ज़रूरत है।"

32 दोनों शागिर्द गए तो देखा कि सब कुछ वैसा ही
है जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। 33 जब वह जवान
गधे को खोलने लगे तो उस के मालिकों ने पूछा,
"तुम गधे को क्यूँ खोल रहे हो?"

34 उन्हों ने जवाब दिया, "ख़ुदावन्द को इस की
ज़रूरत है।" 35 वह उसे ईसा के पास ले आए, और
अपने कपड़े गधे पर रख कर उस को उस पर सवार
किया। 36 जब वह चल पड़ा तो लोगों ने उस के आगे
आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए।

37 चलते चलते वह उस जगह के क़रीब पहुँचा जहाँ
रास्ता ज़ैतून के पहाड़ पर से उतरने लगता है। इस पर
शागिर्दों का पूरा हुजूम ख़ुशी के मारे ऊँची आवाज़ से
उन मोजिज़ों के लिए अल्लाह की तम्जीद करने लगा
जो उन्हों ने देखे थे,
38 "मुबारक है वह बादशाह
जो रब के नाम से आता है।
आसमान पर सलामती हो और बुलन्दियों पर
इज़्ज़त-ओ-जलाल।"
39 कुछ फ़रीसी भीड़ में थे। उन्हों ने ईसा से कहा,
"उस्ताद, अपने शागिर्दों को समझाएँ।"
40 उस ने जवाब दिया, "मैं तुम्हें बताता हूँ, अगर
यह चुप हो जाएँ तो पत्थर पुकार उठेंगे।"

ईसा शहर को देख कर रो पड़ता है

41 जब वह यरूशलम के क़रीब पहुँचा तो शहर को
देख कर रो पड़ा 42 और कहा, "काश तू भी इस दिन
जान लेती कि तेरी सलामती किस में है। लेकिन अब
यह बात तेरी आँखों से छुपी हुई है। 43 क्यूँकि तुझ
पर ऐसा वक़्त आएगा कि तेरे दुश्मन तेरे इर्दगिर्द बन्द
बांध कर तेरा मुहासरा करेंगे और यूँ तुझे चारों तरफ़
से घेर कर तंग करेंगे। 44 वह तुझे तेरे बच्चों समेत
ज़मीन पर पटकेंगे और तेरे अन्दर एक भी पत्थर दूसरे
पर नहीं छोड़ेंगे। और वजह यही होगी कि तू ने वह
वक़्त नहीं पहचाना जब अल्लाह ने तेरी नजात के लिए
तुझ पर नज़र की।"

ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में जाता है

45 फिर ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में जा कर उन्हें
निकालने लगा जो वहाँ क़ुर्बानियों के लिए दरकार
चीज़ें बेच रहे थे। उस ने कहा, 46 "कलाम-ए-मुक़द्दस
में लिखा है, 'मेरा घर दुआ का घर होगा' जबकि तुम
ने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया है।"
47 और वह रोज़ाना बैत-उल-मुक़द्दस में तालीम
देता रहा। लेकिन बैत-उल-मुक़द्दस के राहनुमा इमाम,
शरीअत के आलिम और अवामी राहनुमा उसे क़त्ल
करने के लिए कोशाँ रहे, 48 अलबत्ता उन्हें कोई
मौक़ा न मिला, क्यूँकि तमाम लोग ईसा की हर बात
सुन सुन कर उस से लिपटे रहते थे।

ईसा का इख़तियार

20 1 एक दिन जब वह बैत-उल-मुक़द्दस में
लोगों को तालीम दे रहा और अल्लाह की
ख़ुशख़बरी सुना रहा था तो राहनुमा इमाम, शरीअत
के उलमा और बुज़ुर्ग उस के पास आए। 2 उन्हों ने
कहा, "हमें बताएँ, आप यह किस इख़तियार से कर
रहे हैं? किस ने आप को यह इख़तियार दिया है?"
3 ईसा ने जवाब दिया, "मेरा भी तुम से एक सवाल
है। तुम मुझे बताओ कि 4 क्या यहया का बपतिस्मा
आसमानी था या इन्सानी?"
5 वह आपस में बहस करने लगे, "अगर हम कहें
'आसमानी' तो वह पूछेगा, 'तो फिर तुम उस पर
ईमान क्यूँ न लाए?' 6 लेकिन अगर हम कहें 'इन्सानी'
तो तमाम लोग हमें संगसार करेंगे, क्यूँकि वह तो
यक़ीन रखते हैं कि यहया नबी था।" 7 इस लिए उन्हों
ने जवाब दिया, "हम नहीं जानते कि वह कहाँ से
था।"
8 ईसा ने कहा, "तो फिर मैं भी तुम को नहीं बताता
कि मैं यह सब कुछ किस इख़तियार से कर रहा हूँ।"

अंगूर के बाग़ के मुज़ारेओं की बग़ावत

9 फिर ईसा लोगों को यह तम्सील सुनाने लगा,
"किसी आदमी ने अंगूर का एक बाग़ लगाया। फिर
वह उसे मुज़ारेओं के सपुर्द करके बहुत देर के लिए
बैरून-ए-मुल्क चला गया। 10 जब अंगूर पक गए तो
उस ने अपने नौकर को उन के पास भेज दिया ताकि
वह मालिक का हिस्सा वसूल करे। लेकिन मुज़ारेओं
ने उस की पिटाई करके उसे ख़ाली हाथ लौटा दिया।
11 इस पर मालिक ने एक और नौकर को उन के
पास भेजा। लेकिन मुज़ारेओं ने उसे भी मार मार कर
उस की बेइज़्ज़ती की और ख़ाली हाथ निकाल दिया।
12 फिर मालिक ने तीसरे नौकर को भेज दिया। उसे भी

उन्हों ने मार कर ज़ख़्मी कर दिया और निकाल दिया।
13 बाग़ के मालिक ने कहा, 'अब मैं क्या करूँ?
मैं अपने प्यारे बेटे को भेजूँगा, शायद वह उस का
लिहाज़ करें।' 14 लेकिन मालिक के बेटे को देख कर
मुज़ारे आपस में कहने लगे, 'यह ज़मीन का वारिस
है। आओ, हम इसे मार डालें। फिर इस की मीरास
हमारी ही होगी।' 15 उन्हों ने उसे बाग़ से बाहर फैंक
कर क़त्ल किया।"

ईसा ने पूछा, "अब बताओ, बाग़ का मालिक क्या
करेगा? 16 वह वहाँ जा कर मुज़ारेओं को हलाक
करेगा और बाग़ को दूसरों के सपुर्द कर देगा।"

यह सुन कर लोगों ने कहा, "ख़ुदा ऐसा कभी न
करे।"

17 ईसा ने उन पर नज़र डाल कर पूछा, "तो फिर
कलाम-ए-मुक़द्दस के इस हवाले का क्या मतलब है
कि

'जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने रद्द किया,
वह कोने का बुन्यादी पत्थर बन गया'?

18 जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े हो
जाएगा, जबकि जिस पर वह ख़ुद गिरेगा उसे पीस
डालेगा।"

क्या टैक्स देना जाइज़ है?

19 शरीअत के उलमा और राहनुमा इमामों ने उसी
वक़्त उसे पकड़ने की कोशिश की, क्यूँकि वह समझ
गए थे कि तम्सील में बयानशुदा मुज़ारे हम ही हैं।
लेकिन वह अवाम से डरते थे। 20 चुनाँचे वह उसे
पकड़ने का मौक़ा ढूँडते रहे। इस मक़सद के तहत
उन्हों ने उस के पास जासूस भेज दिए। यह लोग
अपने आप को दियानतदार ज़ाहिर करके ईसा के
पास आए ताकि उस की कोई बात पकड़ कर उसे
रोमी गवर्नर के हवाले कर सकें। 21 इन जासूसों ने
उस से पूछा, "उस्ताद, हम जानते हैं कि आप वही
कुछ बयान करते और सिखाते हैं जो सहीह है। आप
जानिबदार नहीं होते बल्कि दयानतदारी से अल्लाह की
राह की तालीम देते हैं। 22 अब हमें बताएँ कि क्या
रोमी शहन्शाह को टैक्स देना जाइज़ है या नाजाइज़?"

23 लेकिन ईसा ने उन की चालाकी भाँप ली और
कहा, 24 "मुझे चाँदी का एक रोमी सिक्का दिखाओ।
किस की सूरत और नाम इस पर कन्दा है?"

उन्हों ने जवाब दिया, "शहन्शाह का।"

25 उस ने कहा, "तो जो शहन्शाह का है शहन्शाह
को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।"

26 यूँ वह अवाम के सामने उस की कोई बात
पकड़ने में नाकाम रहे। उस का जवाब सुन कर वह
हक्का-बक्का रह गए और मज़ीद कोई बात न कर सके।

क्या हम जी उठेंगे?

27 फिर कुछ सदूक़ी उस के पास आए। सदूक़ी
नहीं मानते कि रोज़-ए-क़ियामत मुर्दे जी उठेंगे। उन्हों
ने ईसा से एक सवाल किया, 28 "उस्ताद, मूसा ने
हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी
बेऔलाद मर जाए और उस का भाई हो तो भाई का
फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के
लिए औलाद पैदा करे। 29 अब फ़र्ज़ करें कि सात भाई
थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ।
30 इस पर दूसरे ने उस से शादी की, लेकिन वह भी
बेऔलाद मर गया। 31 फिर तीसरे ने उस से शादी की।
यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। यके बाद
दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर गया।
32 आख़िर में बेवा भी फ़ौत हो गई। 33 अब बताएँ कि
क़ियामत के दिन वह किस की बीवी होगी? क्यूँकि
सात के सात भाइयों ने उस से शादी की थी।"

34 ईसा ने जवाब दिया, "इस ज़माने में लोग ब्याह-
शादी करते और कराते हैं। 35 लेकिन जिन्हें अल्लाह
आने वाले ज़माने में शरीक होने और मुर्दों में से जी
उठने के लाइक़ समझता है वह उस वक़्त शादी नहीं
करेंगे, न उन की शादी किसी से कराई जाएगी। 36 वह
मर भी नहीं सकेंगे, क्यूँकि वह फ़रिश्तों की मानिन्द
होंगे और क़ियामत के फ़र्ज़न्द होने के बाइस अल्लाह
के फ़र्ज़न्द होंगे। 37 और यह बात कि मुर्दे जी उठेंगे

मूसा से भी ज़ाहिर की गई है। क्यूँकि जब वह काँटेदार
झाड़ी के पास आया तो उस ने रब को यह नाम दिया,
'इब्राहीम का ख़ुदा, इस्हाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का
ख़ुदा,' हालाँकि उस वक़्त तीनों बहुत पहले मर चुके
थे। इस का मतलब है कि यह हक़ीक़त में ज़िन्दा
हैं। 38 क्यूँकि अल्लाह मुर्दों का नहीं बल्कि ज़िन्दों का
ख़ुदा है। उस के नज़्दीक यह सब ज़िन्दा हैं।"
39 यह सुन कर शरीअत के कुछ उलमा ने कहा,
"शाबाश उस्ताद, आप ने अच्छा कहा है।" 40 इस
के बाद उन्हों ने उस से कोई भी सवाल करने की
जुरअत न की।

मसीह के बारे में सवाल

41 फिर ईसा ने उन से पूछा, "मसीह के बारे में क्यूँ
कहा जाता है कि वह दाऊद का फ़र्ज़न्द है? 42 क्यूँकि
दाऊद ख़ुद ज़बूर की किताब में फ़रमाता है,
'रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ,
43 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँओ की चौकी
न बना दूँ।'
44 दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो फिर
वह किस तरह दाऊद का फ़र्ज़न्द हो सकता है?"

शरीअत के उलमा से ख़बरदार

45 जब लोग सुन रहे थे तो उस ने अपने शागिर्दों
से कहा, 46 "शरीअत के उलमा से ख़बरदार रहो!
क्यूँकि वह शानदार चोग़े पहन कर इधर उधर फिरना
पसन्द करते हैं। जब लोग बाज़ारों में सलाम करके
उन की इज़्ज़त करते हैं तो फिर वह ख़ुश हो जाते
हैं। उन की बस एक ही ख़्वाहिश होती है कि
इबादतख़ानों और ज़ियाफ़तों में इज़्ज़त की कुर्सियों
पर बैठ जाएँ। 47 यह लोग बेवाओं के घर हड़प कर
जाते और साथ साथ दिखावे के लिए लम्बी लम्बी
दुआएँ माँगते हैं। ऐसे लोगों को निहायत सख़्त सज़ा
मिलेगी।"

बेवा का चन्दा

21 1 ईसा ने नज़र उठा कर देखा कि अमीर
लोग अपने हदिए बैत-उल-मुक़द्दस के चन्दे
के बक्स में डाल रहे हैं। 2 एक ग़रीब बेवा भी वहाँ
से गुज़री जिस ने उस में ताँबे के दो मामूली से सिक्के
डाल दिए। 3 ईसा ने कहा, "मैं तुम को सच बताता हूँ
कि इस ग़रीब बेवा ने तमाम लोगों की निस्बत ज़्यादा
डाला है। 4 क्यूँकि इन सब ने तो अपनी दौलत की
कस्रत से कुछ डाला जबकि इस ने ज़रूरतमन्द होने
के बावुजूद भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।"

बैत-उल-मुक़द्दस पर आने वाली तबाही

5 उस वक़्त कुछ लोग बैत-उल-मुक़द्दस की तारीफ़
में कहने लगे कि वह कितने ख़ूबसूरत पत्थरों और
मन्नत के तुह्फ़ों से सजी हुई है। यह सुन कर ईसा ने
कहा, 6 "जो कुछ तुम को यहाँ नज़र आता है उस का
पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा। आने वाले दिनों में सब
कुछ ढा दिया जाएगा।"

मुसीबतों और ईज़ारसानी की पेशगोई

7 उन्हों ने पूछा, "उस्ताद, यह कब होगा? क्या क्या
नज़र आएगा जिस से मालूम हो कि यह अब होने को
है?"
8 ईसा ने जवाब दिया, "ख़बरदार रहो कि कोई तुम्हें
गुमराह न कर दे। क्यूँकि बहुत से लोग मेरा नाम ले
कर आएँगे और कहेंगे, 'मैं ही मसीह हूँ' और कि
'वक़्त क़रीब आ चुका है।' लेकिन उन के पीछे न
लगना। 9 और जब जंगों और फ़ितनों की ख़बरें तुम
तक पहुँचेंगी तो मत घबराना। क्यूँकि लाज़िम है कि
यह सब कुछ पहले पेश आए। तो भी अभी आख़िरत
न होगी।"
10 उस ने अपनी बात जारी रखी, "एक क़ौम दूसरी
के ख़िलाफ़ उठ खड़ी होगी, और एक बादशाही
दूसरी के ख़िलाफ़। 11 शदीद ज़ल्ज़ले आएँगे, जगह
जगह काल पड़ेंगे और वबाई बीमारियाँ फैल जाएँगी।

हैबतनाक वाक़िआत और आसमान पर बड़े निशान
देखने में आएँगे। 12 लेकिन इन तमाम वाक़िआत से
पहले लोग तुम को पकड़ कर सताएँगे। वह तुम को
यहूदी इबादतख़ानों के हवाले करेंगे, क़ैदख़ानों में
डलवाएँगे और बादशाहों और हुक्मरानों के सामने
पेश करेंगे। और यह इस लिए होगा कि तुम मेरे
पैरोकार हो। 13 नतीजे में तुम्हें मेरी गवाही देने का
मौक़ा मिलेगा। 14 लेकिन ठान लो कि तुम पहले से
अपना दिफ़ा करने की तय्यारी न करो, 15 क्यूँकि मैं
तुम को ऐसे अल्फ़ाज़ और हिक्मत अता करूँगा कि
तुम्हारे तमाम मुख़ालिफ़ न उस का मुक़ाबला और न
उस की तरदीद कर सकेंगे। 16 तुम्हारे वालिदैन, भाई,
रिश्तेदार और दोस्त भी तुम को दुश्मन के हवाले कर
देंगे, बल्कि तुम में से बाज़ को क़त्ल किया जाएगा।
17 सब तुम से नफ़रत करेंगे, इस लिए कि तुम मेरे
पैरोकार हो। 18 तो भी तुम्हारा एक बाल भी बीका
नहीं होगा। 19 साबितक़दम रहने से ही तुम अपनी
जान बचा लोगे।

यरूशलम की तबाही

20 जब तुम यरूशलम को फ़ौजों से घिरा हुआ देखो
तो जान लो कि उस की तबाही क़रीब आ चुकी है।
21 उस वक़्त यहूदिया के बाशिन्दे भाग कर पहाड़ी
इलाक़े में पनाह लें। शहर के रहने वाले उस से निकल
जाएँ और दीहात में आबाद लोग शहर में दाख़िल न
हों। 22 क्यूँकि यह इलाही ग़ज़ब के दिन होंगे जिन में
वह सब कुछ पूरा हो जाएगा जो कलाम-ए-मुक़द्दस
में लिखा है। 23 उन ख़वातीन पर अफ़्सोस जो उन
दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध पिलाती
हों, क्यूँकि मुल्क में बहुत मुसीबत होगी और इस
क़ौम पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा। 24 लोग
उन्हें तलवार से क़त्ल करेंगे और क़ैद करके तमाम
ग़ैरयहूदी ममालिक में ले जाएंगे। ग़ैरयहूदी यरूशलम
को पाँओ तले कुचल डालेंगे। यह सिलसिला उस
वक़्त तक जारी रहेगा जब तक ग़ैरयहूदियों का दौर
पूरा न हो जाए।

इब्न-ए-आदम की आमद

25 सूरज, चाँद और सितारों में अजीब-ओ-ग़रीब
निशान ज़ाहिर होंगे। क़ौमें समुन्दर के शोर और ठाठें
मारने से हैरान-ओ-परेशान होंगी। 26 लोग इस अन्देशे
से कि क्या क्या मुसीबत दुनिया पर आएगी इस क़दर
ख़ौफ़ खाएँगे कि उन की जान में जान न रहेगी, क्यूँकि
आसमान की क़ुव्वतें हिलाई जाएँगी। 27 और फिर
वह इब्न-ए-आदम को बड़ी क़ुदरत और जलाल के
साथ बादल में आते हुए देखेंगे। 28 चुनाँचे जब यह
कुछ पेश आने लगे तो सीधे खड़े हो कर अपनी नज़र
उठाओ, क्यूँकि तुम्हारी नजात नज़्दीक होगी।”

अन्जीर के दरख़्त की तम्सील

29 इस सिलसिले में ईसा ने उन्हें एक तम्सील
सुनाई। “अन्जीर के दरख़्त और बाक़ी दरख़्तों पर
ग़ौर करो। 30 जूँ ही कोंपलें निकलने लगती हैं तुम
जान लेते हो कि गर्मियों का मौसम नज़्दीक है। 31 इसी
तरह जब तुम यह वाक़िआत देखोगे तो जान लोगे कि
अल्लाह की बादशाही क़रीब ही है।
32 मैं तुम को सच बताता हूँ कि इस नस्ल के
ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा।
33 आसमान-ओ-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी
बातें हमेशा तक क़ाइम रहेंगी।

ख़बरदार रहना

34 ख़बरदार रहो ताकि तुम्हारे दिल अय्याशी,
नशाबाज़ी और रोज़ाना की फ़िक्रों तले दब न जाएँ।
वर्ना यह दिन अचानक तुम पर आन पड़ेगा, 35 और
फंदे की तरह तुम्हें जकड़ लेगा। क्यूँकि वह दुनिया
के तमाम बाशिन्दों पर आएगा। 36 हर वक़्त चौकस
रहो और दुआ करते रहो कि तुम को आने वाली इन
सब बातों से बच निकलने की तौफ़ीक़ मिल जाए
और तुम इब्न-ए-आदम के सामने खड़े हो सको।”
37 हर रोज़ ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में तालीम देता
रहा और हर शाम वह निकल कर उस पहाड़ पर रात

गुज़ारता था जिस का नाम ज़ैतून का पहाड़ है। 38 और
तमाम लोग उस की बातें सुनने के लिए सुब्ह-सवेरे
बैत-उल-मुक़द्दस में उस के पास आते थे।

ईसा के ख़िलाफ़ मन्सूबाबन्दियाँ

22 1 बेख़मीरी रोटी की ईद यानी फ़सह की ईद
क़रीब आ गई थी। 2 राहनुमा इमाम और
शरीअत के उलमा ईसा को क़त्ल करने का कोई
मौज़ूँ मौक़ा ढूँड रहे थे, क्यूँकि वह अवाम के रद्द-ए-
अमल से डरते थे।

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मन्सूबा

3 उस वक़्त इब्लीस यहूदाह इस्करियोती में समा
गया जो बारह रसूलों में से था। 4 अब वह
राहनुमा इमामों और बैत-उल-मुक़द्दस के पहरेदारों
के अफ़्सरों से मिला और उन से बात करने लगा कि
वह ईसा को किस तरह उन के हवाले कर सकेगा।
5 वह ख़ुश हुए और उसे पैसे देने पर मुत्तफ़िक़ हुए।
6 यहूदाह रज़ामन्द हुआ। अब से वह इस तलाश में
रहा कि ईसा को ऐसे मौक़े पर उन के हवाले करे जब
हुजूम उस के पास न हो।

फ़सह की ईद के लिए तय्यारियाँ

7 बेख़मीरी रोटी की ईद आई जब फ़सह के लेले
को क़ुर्बान करना था। 8 ईसा ने पतरस और यूहन्ना
को आगे भेज कर हिदायत की, "जाओ, हमारे लिए
फ़सह का खाना तय्यार करो ताकि हम जा कर उसे
खा सकें।"

9 उन्हों ने पूछा, "हम उसे कहाँ तय्यार करें?"

10 उस ने जवाब दिया, "जब तुम शहर में दाख़िल
होगे तो तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी से होगी जो
पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा। उस के पीछे चल
कर उस घर में दाख़िल हो जाओ जिस में वह जाएगा।
11 वहाँ के मालिक से कहना, 'उस्ताद आप से पूछते
हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शागिर्दों
के साथ फ़सह का खाना खाऊँ?' 12 वह तुम को
दूसरी मन्ज़िल पर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा
दिखाएगा। फ़सह का खाना वहीं तय्यार करना।"

13 दोनों चले गए तो सब कुछ वैसा ही पाया जैसा
ईसा ने उन्हें बताया था। फिर उन्हों ने फ़सह का खाना
तय्यार किया।

फ़सह का आख़िरी खाना

14 मुक़र्ररा वक़्त पर ईसा अपने शागिर्दों के साथ
खाने के लिए बैठ गया। 15 उस ने उन से कहा, "मेरी
शदीद आर्ज़ू थी कि दुख उठाने से पहले तुम्हारे साथ
मिल कर फ़सह का यह खाना खाऊँ। 16 क्यूँकि मैं
तुम को बताता हूँ कि उस वक़्त तक इस खाने में
शरीक नहीं हूँगा जब तक इस का मक़्सद अल्लाह की
बादशाही में पूरा न हो गया हो।"

17 फिर उस ने मै का प्याला ले कर शुक्रगुज़ारी की
दुआ की और कहा, "इस को ले कर आपस में बाँट
लो। 18 मैं तुम को बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का
रस नहीं पियूँगा, क्यूँकि अगली दफ़ा इसे अल्लाह की
बादशाही के आने पर पियूँगा।"

19 फिर उस ने रोटी ले कर शुक्रगुज़ारी की दुआ की
और उसे टुकड़े करके उन्हें दे दिया। उस ने कहा,
"यह मेरा बदन है, जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे
याद करने के लिए यही किया करो।" 20 इसी तरह
उस ने खाने के बाद प्याला ले कर कहा, "मै का यह
प्याला वह नया अह्द है जो मेरे ख़ून के ज़रीए क़ाइम
किया जाता है, वह ख़ून जो तुम्हारे लिए बहाया जाता
है।

21 लेकिन जिस शख़्स का हाथ मेरे साथ खाना खाने
में शरीक है वह मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।
22 इब्न-ए-आदम तो अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़
कूच कर जाएगा, लेकिन उस शख़्स पर अफ़्सोस
जिस के वसीले से उसे दुश्मन के हवाले कर दिया
जाएगा।"

23 यह सुन कर शागिर्द एक दूसरे से बह्स करने लगे
कि हम में से यह कौन हो सकता है जो इस क़िस्म
की हरकत करेगा।

कौन बड़ा है?

24 फिर एक और बात भी छिड़ गई। वह एक
दूसरे से बह्स करने लगे कि हम में से कौन सब
से बड़ा समझा जाए। 25 लेकिन ईसा ने उन से कहा,
"ग़ैरयहूदी क़ौमों में बादशाह वही हैं जो दूसरों पर
हुकूमत करते हैं, और इख़तियार वाले वही हैं जिन्हें
'मोहसिन' का लक़ब दिया जाता है। 26 लेकिन तुम
को ऐसा नहीं होना चाहिए। इस के बजाय जो सब से
बड़ा है वह सब से छोटे लड़के की मानिन्द हो और
जो राहनुमाई करता है वह नौकर जैसा हो। 27 क्यूँकि
आम तौर पर कौन ज़्यादा बड़ा होता है, वह जो खाने
के लिए बैठा है या वह जो लोगों की ख़िदमत के
लिए हाज़िर होता है? क्या वह नहीं जो खाने के लिए
बैठा है? बेशक। लेकिन मैं ख़िदमत करने वाले की
हैसियत से ही तुम्हारे दरमियान हूँ।
28 देखो, तुम वही हो जो मेरी तमाम आज़माइशों के
दौरान मेरे साथ रहे हो। 29 चुनाँचे मैं तुम को बादशाही
अता करता हूँ जिस तरह बाप ने मुझे भी बादशाही
अता की है। 30 तुम मेरी बादशाही में मेरी मेज़ पर बैठ
कर मेरे साथ खाओ और पियोगे, और तख़्तों पर बैठ
कर इस्राईल के बारह क़बीलों का इन्साफ़ करोगे।

पतरस के इन्कार की पेशगोई

31 शमाऊन, शमाऊन! इब्लीस ने तुम लोगों को
गन्दुम की तरह फटकने का मुतालबा किया है।
32 लेकिन मैं ने तेरे लिए दुआ की है ताकि तेरा ईमान
जाता न रहे। और जब तू मुड़ कर वापस आए तो उस
वक़्त अपने भाइयों को मज़बूत करना।"
33 पतरस ने जवाब दिया, "ख़ुदावन्द, मैं तो आप
के साथ जेल में भी जाने बल्कि मरने को तय्यार हूँ।"
34 ईसा ने कहा, "पतरस, मैं तुझे बताता हूँ कि कल
सुब्ह मुर्ग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे
जानने से इन्कार कर चुका होगा।"

अब बटवे, बैग और तलवार की ज़रूरत है

35 फिर उस ने उन से पूछा, "जब मैं ने तुम को बटवे,
सामान के लिए बैग और जूतों के बग़ैर भेज दिया तो
क्या तुम किसी भी चीज़ से महरूम रहे?"
उन्हों ने जवाब दिया, "किसी से नहीं।"
36 उस ने कहा, "लेकिन अब जिस के पास बटवा
या बैग हो वह उसे साथ ले जाए, बल्कि जिस के
पास तलवार न हो वह अपनी चादर बेच कर तलवार
ख़रीद ले। 37 कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, 'उसे
मुजरिमों में शुमार किया गया' और मैं तुम को बताता
हूँ, लाज़िम है कि यह बात मुझ में पूरी हो जाए। क्यूँकि
जो कुछ मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा ही होना है।"
38 उन्हों ने कहा, "ख़ुदावन्द, यहाँ दो तलवारें हैं।"
उस ने कहा, "बस! काफ़ी है!"

ज़ैतून के पहाड़ पर ईसा की दुआ

39 फिर वह शहर से निकल कर मामूल के मुताबिक़
ज़ैतून के पहाड़ की तरफ़ चल दिया। उस के शागिर्द
उस के पीछे हो लिए। 40 वहाँ पहुँच कर उस ने उन
से कहा, "दुआ करो ताकि आज़माइश में न पड़ो।"
41 फिर वह उन्हें छोड़ कर कुछ आगे निकला,
तक़रीबन इतने फ़ासिले पर जितनी दूर तक पत्थर
फैंका जा सकता है। वहाँ वह झुक कर दुआ करने
लगा, 42 "ऐ बाप, अगर तू चाहे तो यह प्याला मुझ
से हटा ले। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मर्ज़ी पूरी
हो।" 43 उस वक़्त एक फ़रिश्ते ने आसमान पर से
उस पर ज़ाहिर हो कर उस को तक़वियत दी। 44 वह
सख़्त परेशान हो कर ज़्यादा दिलसोज़ी से दुआ करने
लगा। साथ साथ उस का पसीना ख़ून की बूँदों की
तरह ज़मीन पर टपकने लगा।
45 जब वह दुआ से फ़ारिग़ हो कर खड़ा हुआ और
शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि वह ग़म के
मारे सो गए हैं। 46 उस ने उन से कहा, "तुम क्यूँ सो
रहे हो? उठ कर दुआ करते रहो ताकि आज़माइश में
न पड़ो।"

ईसा की गिरिफ़्तारी

47 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि एक हुजूम
आ पहुँचा जिस के आगे आगे यहूदाह चल रहा था।
वह ईसा को बोसा देने के लिए उस के पास आया।
48 लेकिन उस ने कहा, "यहूदाह, क्या तू इब्न-ए-
आदम को बोसा दे कर दुश्मन के हवाले कर रहा
है?"
49 जब उस के साथियों ने भाँप लिया कि अब क्या
होने वाला है तो उन्हों ने कहा, "ख़ुदावन्द, क्या हम
तलवार चलाएँ?" 50 और उन में से एक ने अपनी
तलवार से इमाम-ए-आज़म के ग़ुलाम का दहना कान
उड़ा दिया।
51 लेकिन ईसा ने कहा, "बस कर!" उस ने ग़ुलाम
का कान छू कर उसे शिफ़ा दी। 52 फिर वह उन
राहनुमा इमामों, बैत-उल-मुक़द्दस के पहरेदारों के
अफ़सरों और बुज़ुर्गों से मुख़ातिब हुआ जो उस के
पास आए थे, "क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारें
और लाठियाँ लिए मेरे ख़िलाफ़ निकले हो? 53 मैं
तो रोज़ाना बैत-उल-मुक़द्दस में तुम्हारे पास था, मगर
तुम ने वहाँ मुझे हाथ नहीं लगाया। लेकिन अब
यह तुम्हारा वक़्त है, वह वक़्त जब तारीकी हुकूमत
करती है।"

पतरस ईसा को जानने से इन्कार करता है

54 फिर वह उसे गिरिफ़्तार करके इमाम-ए-आज़म
के घर ले गए। पतरस कुछ फ़ासिले पर उन के पीछे
पीछे वहाँ पहुँच गया। 55 लोग सहन में आग जला कर
उस के इर्दगिर्द बैठ गए। पतरस भी उन के दरमियान
बैठ गया। 56 किसी नौकरानी ने उसे वहाँ आग के
पास बैठे हुए देखा। उस ने उसे घूर कर कहा, "यह
भी उस के साथ था।"
57 लेकिन उस ने इन्कार किया, "ख़ातून, मैं उसे
नहीं जानता।"
58 थोड़ी देर के बाद किसी आदमी ने उसे देखा और
कहा, "तुम भी उन में से हो।"
लेकिन पतरस ने जवाब दिया, "नहीं भई! मैं नहीं
हूँ।"
59 तक़रीबन एक घंटा गुज़र गया तो किसी और ने
इसरार करके कहा, "यह आदमी यक़ीनन उस के
साथ था, क्यूँकि यह भी गलील का रहने वाला है।"
60 लेकिन पतरस ने जवाब दिया, "यार, मैं नहीं
जानता कि तुम क्या कह रहे हो!"
वह अभी बात कर ही रहा था कि अचानक मुर्ग़
की बाँग सुनाई दी। 61 ख़ुदावन्द ने मुड़ कर पतरस
पर नज़र डाली। फिर पतरस को ख़ुदावन्द की वह
बात याद आई जो उस ने उस से कही थी कि "कल
सुब्ह मुर्ग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे
जानने से इन्कार कर चुका होगा।" 62 पतरस वहाँ से
निकल कर टूटे दिल से ख़ूब रोया।

लान-तान और पिटाई

63 पहरेदार ईसा का मज़ाक़ उड़ाने और उस की
पिटाई करने लगे। 64 उन्हों ने उस की आँखों पर
पट्टी बांध कर पूछा, "नबुव्वत कर कि किस ने तुझे
मारा?" 65 इस तरह की और बहुत सी बातों से वह
उस की बेइज़्ज़ती करते रहे।

यहूदी अदालत-ए-आलिया के सामने पेशी

66 जब दिन चढ़ा तो राहनुमा इमामों और शरीअत
के उलमा पर मुश्तमिल क़ौम की मजलिस ने जमा हो
कर उसे यहूदी अदालत-ए-आलिया में पेश किया।
67 उन्हों ने कहा, "अगर तू मसीह है तो हमें बता!"
ईसा ने जवाब दिया, "अगर मैं तुम को बताऊँ तो
तुम मेरी बात नहीं मानोगे, 68 और अगर तुम से पूछूँ
तो तुम जवाब नहीं दोगे। 69 लेकिन अब से इब्न-ए-
आदम अल्लाह तआला के दहने हाथ बैठा होगा।"
70 सब ने पूछा, "तो फिर क्या तू अल्लाह का फ़र्ज़न्द
है?"
उस ने जवाब दिया, "जी, तुम ख़ुद कहते हो।"

71 इस पर उन्हों ने कहा, “अब हमें किसी और
गवाही की क्या ज़रूरत रही? क्यूँकि हम ने यह बात
उस के अपने मुँह से सुन ली है।”

पीलातुस के सामने

23 1 फिर पूरी मजलिस उठी और उसे
पीलातुस के पास ले आई। 2 वहाँ वह उस
पर इल्ज़ाम लगा कर कहने लगे, “हम ने मालूम किया
है कि यह आदमी हमारी क़ौम को गुमराह कर रहा
है। यह शहन्शाह को टैक्स देने से मना करता और
दावा करता है कि मैं मसीह और बादशाह हूँ।”
3 पीलातुस ने उस से पूछा, “अच्छा, तुम यहूदियों
के बादशाह हो?”
ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप ख़ुद कहते हैं।”
4 फिर पीलातुस ने राहनुमा इमामों और हुजूम से
कहा, “मुझे इस आदमी पर इल्ज़ाम लगाने की कोई
वजह नज़र नहीं आती।”
5 लेकिन वह अड़े रहे। उन्हों ने कहा, “वह पूरे
यहूदिया में तालीम देते हुए क़ौम को उकसाता है।
वह गलील से शुरू करके यहाँ तक आ पहुँचा है।”

हेरोदेस के सामने

6 यह सुन कर पीलातुस ने पूछा, “क्या यह शख़्स
गलील का है?” 7 जब उसे मालूम हुआ कि ईसा
गलील यानी उस इलाक़े से है जिस पर हेरोदेस
अनतिपास की हुकूमत है तो उस ने उसे हेरोदेस के
पास भेज दिया, क्यूँकि वह भी उस वक़्त यरूशलम
में था। 8 हेरोदेस ईसा को देख कर बहुत ख़ुश हुआ,
क्यूँकि उस ने उस के बारे में बहुत कुछ सुना था
और इस लिए काफ़ी देर से उस से मिलना चाहता
था। अब उस की बड़ी ख़्वाहिश थी कि ईसा को
कोई मोजिज़ा करते हुए देख सके। 9 उस ने उस से
बहुत सारे सवाल किए, लेकिन ईसा ने एक का भी
जवाब न दिया। 10 राहनुमा इमाम और शरीअत के
उलमा साथ खड़े बड़े जोश से उस पर इल्ज़ाम लगाते
रहे। 11 फिर हेरोदेस और उस के फ़ौजियों ने उस की
तह्क़ीर करते हुए उस का मज़ाक़ उड़ाया और उसे
चमकदार लिबास पहना कर पीलातुस के पास वापस
भेज दिया। 12 उसी दिन हेरोदेस और पीलातुस दोस्त
बन गए, क्यूँकि इस से पहले उन की दुश्मनी चल
रही थी।

सज़ा-ए-मौत का फ़ैसला

13 फिर पीलातुस ने राहनुमा इमामों, सरदारों और
अवाम को जमा करके 14 उन से कहा, “तुम ने इस
शख़्स को मेरे पास ला कर इस पर इल्ज़ाम लगाया है
कि यह क़ौम को उकसा रहा है। मैं ने तुम्हारी मौजूदगी
में इस का जाइज़ा ले कर ऐसा कुछ नहीं पाया जो
तुम्हारे इल्ज़ामात की तस्दीक़ करे। 15 हेरोदेस भी
कुछ नहीं मालूम कर सका, इस लिए उस ने इसे हमारे
पास वापस भेज दिया है। इस आदमी से कोई भी ऐसा
क़ुसूर नहीं हुआ कि यह सज़ा-ए-मौत के लाइक़ है।
16 इस लिए मैं इसे कोड़ों की सज़ा दे कर रिहा कर
देता हूँ।”
17 [असल में यह उस का फ़र्ज़ था कि वह ईद के
मौक़े पर उन की ख़ातिर एक क़ैदी को रिहा कर दे।]
18 लेकिन सब मिल कर शोर मचा कर कहने लगे,
“इसे ले जाएँ! इसे नहीं बल्कि बर-अब्बा को रिहा
करके हमें दें।” 19 (बर-अब्बा को इस लिए जेल में
डाला गया था कि वह क़ातिल था और उस ने शहर
में हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत की थी।)
20 पीलातुस ईसा को रिहा करना चाहता था, इस
लिए वह दुबारा उन से मुख़ातिब हुआ। 21 लेकिन वह
चिल्लाते रहे, “इसे मस्लूब करें, इसे मस्लूब करें।”
22 फिर पीलातुस ने तीसरी दफ़ा उन से कहा, “क्यूँ?
उस ने क्या जुर्म किया है? मुझे इसे सज़ा-ए-मौत देने
की कोई वजह नज़र नहीं आती। इस लिए मैं इसे
कोड़े लगवा कर रिहा कर देता हूँ।”
23 लेकिन वह बड़ा शोर मचा कर उसे मस्लूब करने
का तक़ाज़ा करते रहे, और आख़िरकार उन की
आवाज़ें ग़ालिब आ गईं। 24 फिर पीलातुस ने फ़ैसला
किया कि उन का मुतालबा पूरा किया जाए। 25 उस ने

उस आदमी को रिहा कर दिया जो अपनी बाग़ियाना हरकतों और क़त्ल की वजह से जेल में डाल दिया गया था जबकि ईसा को उस ने उन की मर्ज़ी के मुताबिक़ उन के हवाले कर दिया।

ईसा को मस्लूब किया जाता है

26 जब फ़ौजी ईसा को ले जा रहे थे तो उन्हों ने एक
आदमी को पकड़ लिया जो लिबिया के शहर कुरेन
का रहने वाला था। उस का नाम शमाऊन था। उस
वक़्त वह दीहात से शहर में दाख़िल हो रहा था। उन्हों
ने सलीब को उस के कंधों पर रख कर उसे ईसा के
पीछे चलने का हुक्म दिया।
27 एक बड़ा हुजूम उस के पीछे हो लिया जिस में
कुछ ऐसी औरतें भी शामिल थीं जो सीना पीट पीट
कर उस का मातम कर रही थीं। 28 ईसा ने मुड़ कर
उन से कहा, "यरूशलम की बेटियो! मेरे वास्ते न
रोओ बल्कि अपने और अपने बच्चों के वास्ते रोओ।
29 क्यूँकि ऐसे दिन आएँगे जब लोग कहेंगे, 'मुबारक
हैं वह जो बाँझ हैं, जिन्हों ने न तो बच्चों को जन्म
दिया, न दूध पिलाया।' 30 फिर लोग पहाड़ों से कहने
लगेंगे, 'हम पर गिर पड़ो,' और पहाड़ियों से कि
'हमें छुपा लो।' 31 क्यूँकि अगर हरी लकड़ी से ऐसा
सुलूक किया जाता है तो फिर सूखी लकड़ी का क्या
बनेगा?"
32 दो और मर्दों को भी फाँसी देने के लिए बाहर ले
जाया जा रहा था। दोनों मुजरिम थे। 33 चलते चलते
वह उस जगह पहुँचे जिस का नाम खोपड़ी था। वहाँ
उन्हों ने ईसा को दोनों मुजरिमों समेत मस्लूब किया।
एक मुजरिम को उस के दाएँ हाथ और दूसरे को उस
के बाएँ हाथ लटका दिया गया। 34 ईसा ने कहा, "ऐ
बाप, इन्हें मुआफ़ कर, क्यूँकि यह जानते नहीं कि
क्या कर रहे हैं।"
उन्हों ने क़ुरआ डाल कर उस के कपड़े आपस
में बाँट लिए। 35 हुजूम वहाँ खड़ा तमाशा देखता
रहा जबकि क़ौम के सरदारों ने उस का मज़ाक़ भी
उड़ाया। उन्हों ने कहा, "उस ने औरों को बचाया है।
अगर यह अल्लाह का चुना हुआ और मसीह है तो
अपने आप को बचाए।"
36 फ़ौजियों ने भी उसे लान-तान की। उस के पास
आ कर उन्हों ने उसे मै का सिरका पेश किया 37 और
कहा, "अगर तू यहूदियों का बादशाह है तो अपने
आप को बचा ले।"
38 उस के सर के ऊपर एक तख़्ती लगाई गई थी
जिस पर लिखा था, "यह यहूदियों का बादशाह है।"
39 जो मुजरिम उस के साथ मस्लूब हुए थे उन में से
एक ने कुफ़्र बकते हुए कहा, "क्या तू मसीह नहीं है?
तो फिर अपने आप को और हमें भी बचा ले।"
40 लेकिन दूसरे ने यह सुन कर उसे डाँटा, "क्या
तू अल्लाह से भी नहीं डरता? जो सज़ा उसे दी गई
है वह तुझे भी मिली है। 41 हमारी सज़ा तो वाजिबी
है, क्यूँकि हमें अपने कामों का बदला मिल रहा है,
लेकिन इस ने कोई बुरा काम नहीं किया।" 42 फिर
उस ने ईसा से कहा, "जब आप अपनी बादशाही में
आएँ तो मुझे याद करें।"
43 ईसा ने उस से कहा, "मैं तुझे सच बताता हूँ कि
तू आज ही मेरे साथ फ़िर्दौस में होगा।"

ईसा की मौत

44 बारह बजे से दोपहर तीन बजे तक पूरा मुल्क
अंधेरे में डूब गया। 45 सूरज तारीक हो गया और
बैत-उल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने
लटका हुआ पर्दा दो हिस्सों में फट गया। 46 ईसा
ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, "ऐ बाप, मैं अपनी रूह
तेरे हाथों में सौंपता हूँ।" यह कह कर उस ने दम छोड़
दिया।
47 यह देख कर वहाँ खड़े फ़ौजी अफ़सर [z] ने
अल्लाह की तम्जीद करके कहा, "यह आदमी वाक़ई
रास्तबाज़ था।"

---

[z] सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

48 और हुजूम के तमाम लोग जो यह तमाशा देखने
के लिए जमा हुए थे यह सब कुछ देख कर छाती
पीटने लगे और शहर में वापस चले गए। 49 लेकिन
ईसा के जानने वाले कुछ फ़ासिले पर खड़े देखते रहे।
उन में वह ख़वातीन भी शामिल थीं जो गलील में उस
के पीछे चल कर यहाँ तक उस के साथ आई थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

50 वहाँ एक नेक और रास्तबाज़ आदमी बनाम
यूसुफ़ था। वह यहूदी अदालत-ए-अलिया का रुकन
था 51 लेकिन दूसरों के फ़ैसले और हरकतों पर
रज़ामन्द नहीं हुआ था। यह आदमी यहूदिया के शहर
अरिमतियाह का रहने वाला था और इस इन्तिज़ार
में था कि अल्लाह की बादशाही आए। 52 अब उस ने
पीलातुस के पास जा कर उस से ईसा की लाश ले
जाने की इजाज़त माँगी। 53 फिर लाश को उतार कर
उस ने उसे कतान के कफ़न में लपेट कर चटान में
तराशी हुई एक क़ब्र में रख दिया जिस में अब तक
किसी को दफ़नाया नहीं गया था। 54 यह तय्यारी का
दिन यानी जुमआ था, लेकिन सबत का दिन शुरू
होने को था। [a]55 जो औरतें ईसा के साथ गलील से
आई थीं वह यूसुफ़ के पीछे हो लीं। उन्हों ने क़ब्र को
देखा और यह भी कि ईसा की लाश किस तरह उस में
रखी गई है। 56 फिर वह शहर में वापस चली गईं और
उस की लाश के लिए ख़ुश्बूदार मसाले तय्यार करने
लगीं। लेकिन बीच में सबत का दिन शुरू हुआ, इस
लिए उन्हों ने शरीअत के मुताबिक़ आराम किया।

ईसा जी उठता है

24 1 इत्वार के दिन यह औरतें अपने
तय्यारशुदा मसाले ले कर सुब्ह-सवेरे क़ब्र
पर गईं। 2 वहाँ पहुँच कर उन्हों ने देखा कि क़ब्र
पर का पत्थर एक तरफ़ लुढ़का हुआ है। 3 लेकिन
जब वह क़ब्र में गईं तो वहाँ ख़ुदावन्द ईसा की
लाश न पाई। 4 वह अभी उलझन में वहाँ खड़ी थीं
कि अचानक दो मर्द उन के पास आ खड़े हुए जिन
के लिबास बिजली की तरह चमक रहे थे। 5 औरतें
दहशत खा कर मुँह के बल झुक गईं, लेकिन उन मर्दों
ने कहा, "तुम क्यूँ ज़िन्दा को मुर्दों में ढूँड रही हो?
6 वह यहाँ नहीं है, वह तो जी उठा है। वह बात याद
करो जो उस ने तुम से उस वक़्त कही जब वह गलील
में था। 7 'लाज़िम है कि इब्न-ए-आदम को गुनाहगारों
के हवाले कर दिया जाए, मस्लूब किया जाए और कि
वह तीसरे दिन जी उठे'।"

8 फिर उन्हें यह बात याद आई। 9 और क़ब्र से
वापस आ कर उन्हों ने यह सब कुछ ग्यारह
रसूलों और बाक़ी शागिर्दों को सुना दिया। 10 मरियम
मग्दलीनी, यूअन्ना, याक़ूब की माँ मरियम और चन्द
एक और औरतें उन में शामिल थीं जिन्हों ने यह बातें
रसूलों को बताईं। 11 लेकिन उन को यह बातें बेतुकी
सी लग रही थीं, इस लिए उन्हें यक़ीन न आया। 12 तो
भी पतरस उठा और भाग कर क़ब्र के पास आया।
जब पहुँचा तो झुक कर अन्दर झाँका, लेकिन सिर्फ़
कफ़न [b]ही नज़र आया। यह हालात देख कर वह
हैरान हुआ और चला गया।

इम्माउस के रास्ते में ईसा से मुलाक़ात

13 उसी दिन ईसा के दो पैरोकार एक गाँव बनाम
इम्माउस की तरफ़ चल रहे थे। यह गाँव यरूशलम
से तक़रीबन दस किलोमीटर दूर था। 14 चलते चलते
वह आपस में उन वाक़िआत का ज़िक्र कर रहे थे जो
हुए थे। 15 और ऐसा हुआ कि जब वह बातें और एक
दूसरे के साथ बहस-मुबाहसा कर रहे थे तो ईसा ख़ुद
क़रीब आ कर उन के साथ चलने लगा। 16 लेकिन उन
की आँखों पर पर्दा डाला गया था, इस लिए वह उसे
पहचान न सके। 17 ईसा ने कहा, "यह कैसी बातें हैं
जिन के बारे में तुम चलते चलते तबादला-ए-ख़याल
कर रहे हो?"

---

[a]यहूदी दिन सूरज के ग़ुरूब होने से शुरू होता है।

[b]लफ़्ज़ी तर्जुमा : कतान की पट्टियाँ जो कफ़न के लिए इस्तेमाल होती थीं।

यह सुन कर वह ग़मगीन से खड़े हो गए। 18 उन में
से एक बनाम क्लियुपास ने उस से पूछा, “क्या आप
यरूशलम में वाहिद शख़्स हैं जिसे मालूम नहीं कि
इन दिनों में क्या कुछ हुआ है?”
19 उस ने कहा, “क्या हुआ है?”
उन्हों ने जवाब दिया, “वह जो ईसा नासरी के साथ
हुआ है। वह नबी था जिसे कलाम और काम में
अल्लाह और तमाम क़ौम के सामने ज़बरदस्त क़ुव्वत
हासिल थी। 20 लेकिन हमारे राहनुमा इमामों और
सरदारों ने उसे हुक्मरानों के हवाले कर दिया ताकि
उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए, और उन्हों ने उसे मस्लूब
किया। 21 लेकिन हमें तो उम्मीद थी कि वही इस्राईल
को नजात देगा। इन वाक़िआत को तीन दिन हो गए
हैं। 22 लेकिन हम में से कुछ ख़वातीन ने भी हमें हैरान
कर दिया है। वह आज सुब्ह-सवेरे क़ब्र पर गईं 23 तो
देखा कि लाश वहाँ नहीं है। उन्हों ने लौट कर हमें
बताया कि हम पर फ़रिश्ते ज़ाहिर हुए जिन्हों ने कहा
कि ईसा ज़िन्दा है। 24 हम में से कुछ क़ब्र पर गए और
उसे वैसा ही पाया जिस तरह उन औरतों ने कहा था।
लेकिन उसे ख़ुद उन्हों ने नहीं देखा।”
25 फिर ईसा ने उन से कहा, “अरे नादानो! तुम
कितने कुन्दज़हन हो कि तुम्हें उन तमाम बातों पर
यक़ीन नहीं आया जो नबियों ने फ़रमाई हैं। 26 क्या
लाज़िम नहीं था कि मसीह यह सब कुछ झेल कर
अपने जलाल में दाख़िल हो जाए?” 27 फिर मूसा
और तमाम नबियों से शुरू करके ईसा ने कलाम-
ए-मुक़द्दस की हर बात की तश्रीह की जहाँ जहाँ उस
का ज़िक्र है।
28 चलते चलते वह उस गाँव के क़रीब पहुँचे जहाँ
उन्हें जाना था। ईसा ने ऐसा किया गोया कि वह आगे
बढ़ना चाहता है, 29 लेकिन उन्हों ने उसे मज्बूर करके
कहा, “हमारे पास ठहरें, क्यूँकि शाम होने को है और
दिन ढल गया है।” चुनाँचे वह उन के साथ ठहरने के
लिए अन्दर गया। 30 और ऐसा हुआ कि जब वह
खाने के लिए बैठ गए तो उस ने रोटी ले कर उस के
लिए शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उस ने उसे टुकड़े
करके उन्हें दिया। 31 अचानक उन की आँखें खुल गईं
और उन्हों ने उसे पहचान लिया। लेकिन उसी लम्हे
वह ओझल हो गया। 32 फिर वह एक दूसरे से कहने
लगे, “क्या हमारे दिल जोश से न भर गए थे जब
वह रास्ते में हम से बातें करते करते हमें सहीफ़ों का
मतलब समझा रहा था?”
33 और वह उसी वक़्त उठ कर यरूशलम वापस
चले गए। जब वह वहाँ पहुँचे तो ग्यारह रसूल अपने
साथियों समेत पहले से जमा थे 34 और यह कह रहे
थे, “ख़ुदावन्द वाक़ई जी उठा है! वह शमाऊन पर
ज़ाहिर हुआ है।”
35 फिर इम्माउस के दो शागिर्दों ने उन्हें बताया कि
गाँव की तरफ़ जाते हुए क्या हुआ था और कि ईसा
के रोटी तोड़ते वक़्त उन्हों ने उसे कैसे पहचाना।

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

36 वह अभी यह बातें सुना रहे थे कि ईसा ख़ुद
उन के दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, “तुम्हारी
सलामती हो।”
37 वह घबरा कर बहुत डर गए, क्यूँकि उन का
ख़याल था कि कोई भूत-प्रेत देख रहे हैं। 38 उस ने उन
से कहा, “तुम क्यूँ परेशान हो गए हो? क्या वजह है
कि तुम्हारे दिलों में शक उभर आया है? 39 मेरे हाथों
और पाँओ को देखो कि मैं ही हूँ। मुझे टटोल कर
देखो, क्यूँकि भूत के गोश्त और हड्डियाँ नहीं होतीं
जबकि तुम देख रहे हो कि मेरा जिस्म है।”
40 यह कह कर उस ने उन्हें अपने हाथ और पाँओ
दिखाए। 41 जब उन्हें ख़ुशी के मारे यक़ीन नहीं आ
रहा था और ताज्जुब कर रहे थे तो ईसा ने पूछा,
“क्या यहाँ तुम्हारे पास कोई खाने की चीज़ है?”
42 उन्हों ने उसे भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया
43 उस ने उसे ले कर उन के सामने ही खा लिया।
44 फिर उस ने उन से कहा, “यही है जो मैं ने तुम
को उस वक़्त बताया था जब तुम्हारे साथ था कि जो
कुछ भी मूसा की शरीअत, नबियों के सहीफ़ों और

ज़बूर की किताब में मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा
होना है।”
45 फिर उस ने उन के ज़हन को खोल दिया ताकि
वह अल्लाह का कलाम समझ सकें। 46 उस ने उन से
कहा, “कलाम-ए-मुक़द्दस में यूँ लिखा है, मसीह दुख
उठा कर तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठेगा। 47 फिर
यरूशलम से शुरू करके उस के नाम में यह पैग़ाम
तमाम क़ौमों को सुनाया जाएगा कि वह तौबा करके
गुनाहों की मुआफ़ी पाएँ। 48 तुम इन बातों के गवाह
हो। 49 और मैं तुम्हारे पास उसे भेज दूँगा जिस का
वादा मेरे बाप ने किया है। फिर तुम को आसमान की
क़ुव्वत से मुलब्बस किया जाएगा। उस वक़्त तक
शहर से बाहर न निकलना।”

ईसा को आसमान पर उठाया जाता है

50 फिर वह शहर से निकल कर उन्हें बैत-अनियाह
तक ले गया। वहाँ उस ने अपने हाथ उठा कर उन्हें
बरकत दी। 51 और ऐसा हुआ कि बरकत देते हुए वह
उन से जुदा हो कर आसमान पर उठा लिया गया।
52 उन्हों ने उसे सिज्दा किया और फिर बड़ी ख़ुशी
से यरूशलम वापस चले गए। 53 वहाँ वह अपना
पूरा वक़्त बैत-उल-मुक़द्दस में गुज़ार कर अल्लाह की
तम्जीद करते रहे।

यूहन्ना

ज़िन्दगी का कलाम

1 1 इब्तिदा में कलाम था। कलाम अल्लाह के साथ
था और कलाम अल्लाह था। 2 यही इब्तिदा में
अल्लाह के साथ था। 3 सब कुछ कलाम के वसीले से
पैदा हुआ। मख़्लूक़ात की एक भी चीज़ उस के बग़ैर
पैदा नहीं हुई। 4 उस में ज़िन्दगी थी, और यह ज़िन्दगी
इन्सानों का नूर थी। 5 यह नूर तारीकी में चमकता है,
और तारीकी ने उस पर क़ाबू न पाया।

6 एक दिन अल्लाह ने अपना पैग़म्बर भेज दिया, एक
आदमी जिस का नाम यहया था। 7 वह नूर की गवाही
देने के लिए आया। मक़्सद यह था कि लोग उस
की गवाही की बिना पर ईमान लाएँ। 8 वह ख़ुद तो
नूर न था बल्कि उसे सिर्फ़ नूर की गवाही देनी थी।
9 हक़ीक़ी नूर जो हर शख़्स को रौशन करता है दुनिया
में आने को था।

10 गो कलाम दुनिया में था और दुनिया उस के
वसीले से पैदा हुई तो भी दुनिया ने उसे न पहचाना।
11 वह उस में आया जो उस का अपना था, लेकिन
उस के अपनों ने उसे क़बूल न किया। 12 तो भी कुछ
उसे क़बूल करके उस के नाम पर ईमान लाए। उन्हें
उस ने अल्लाह के फ़र्ज़न्द बनने का हक़ बख़्श दिया,
13 ऐसे फ़र्ज़न्द जो न फ़ित्री तौर पर, न किसी इन्सान
के मन्सूबे के तहत पैदा हुए बल्कि अल्लाह से।

14 कलाम इन्सान बन कर हमारे दरमियान
रिहाइशपज़ीर हुआ और हम ने उस के जलाल का
मुशाहदा किया। वह फ़ज़्ल और सच्चाई से मामूर था
और उस का जलाल बाप के इक्लौते फ़र्ज़न्द का सा
था।

15 यहया उस के बारे में गवाही दे कर पुकार उठा,
"यह वही है जिस के बारे में मैं ने कहा, एक मेरे बाद
आने वाला है जो मुझ से बड़ा है, क्यूँकि वह मुझ से
पहले था।"

16 उस की कस्रत से हम सब ने फ़ज़्ल पर फ़ज़्ल
पाया। 17 क्यूँकि शरीअत मूसा की मारिफ़त दी गई,
लेकिन अल्लाह का फ़ज़्ल और सच्चाई ईसा मसीह के
वसीले से क़ाइम हुई। 18 किसी ने कभी भी अल्लाह
को नहीं देखा। लेकिन इक्लौता फ़र्ज़न्द जो अल्लाह
की गोद में है उसी ने अल्लाह को हम पर ज़ाहिर किया
है।

यहया बपतिस्मा देने वाले का पैग़ाम

19 यह यहया की गवाही है जब यरूशलम के
यहूदियों ने इमामों और लावियों को उस के पास
भेज कर पूछा, "आप कौन हैं?"

20 उस ने इन्कार न किया बल्कि साफ़ तस्लीम
किया, "मैं मसीह नहीं हूँ।"

21 उन्हों ने पूछा, "तो फिर आप कौन हैं? क्या आप
इल्यास हैं?"

उस ने जवाब दिया, "नहीं, मैं वह नहीं हूँ।"

उन्हों ने सवाल किया, "क्या आप आने वाला नबी
हैं?"

उस ने कहा, "नहीं।"

22 "तो फिर हमें बताएँ कि आप कौन हैं? जिन्हों
ने हमें भेजा है उन्हें हमें कोई न कोई जवाब देना है।
आप ख़ुद अपने बारे में क्या कहते हैं?"

23 यहया ने यसायाह नबी का हवाला दे कर जवाब
दिया, "मैं रेगिस्तान में वह आवाज़ हूँ जो पुकार रही
है, रब का रास्ता सीधा बनाओ।"

24 भेजे गए लोग फ़रीसी फ़िर्क़े से ताल्लुक़ रखते थे।
25 उन्हों ने पूछा, "अगर आप न मसीह हैं, न इल्यास
या आने वाला नबी तो फिर आप बपतिस्मा क्यूँ दे
रहे हैं?"

26 यहया ने जवाब दिया, “मैं तो पानी से बपतिस्मा
देता हूँ, लेकिन तुम्हारे दरमियान ही एक खड़ा है जिस
को तुम नहीं जानते। 27 वही मेरे बाद आने वाला है
और मैं उस के जूतों के तस्मे भी खोलने के लाइक़
नहीं।”
28 यह यर्दन के पार बैत-अनियाह में हुआ जहाँ
यहया बपतिस्मा दे रहा था।

अल्लाह का लेला

29 अगले दिन यहया ने ईसा को अपने पास आते
देखा। उस ने कहा, “देखो, यह अल्लाह का लेला है
जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है। 30 यह वही है
जिस के बारे में मैं ने कहा, ‘एक मेरे बाद आने वाला
है जो मुझ से बड़ा है, क्यूँकि वह मुझ से पहले था।’
31 मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन मैं इस लिए आ
कर पानी से बपतिस्मा देने लगा ताकि वह इस्राईल
पर ज़ाहिर हो जाए।”
32 और यहया ने यह गवाही दी, “मैं ने देखा कि
रूह-उल-क़ुद्स कबूतर की तरह आसमान पर से
उतर कर उस पर ठहर गया। 33 मैं तो उसे नहीं जानता
था, लेकिन जब अल्लाह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए
भेजा तो उस ने मुझे बताया, ‘तू देखेगा कि रूह-उल-
क़ुद्स उतर कर किसी पर ठहर जाएगा। यह वही
होगा जो रूह-उल-क़ुद्स से बपतिस्मा देगा।’ 34 अब
मैं ने देखा है और गवाही देता हूँ कि यह अल्लाह का
फ़र्ज़न्द है।”

ईसा के पहले शागिर्द

35 अगले दिन यहया दुबारा वहीं खड़ा था। उस के
दो शागिर्द साथ थे। 36 उस ने ईसा को वहाँ से गुज़रते
हुए देखा तो कहा, “देखो, यह अल्लाह का लेला है!”
37 उस की यह बात सुन कर उस के दो शागिर्द ईसा
के पीछे हो लिए। 38 ईसा ने मुड़ कर देखा कि यह
मेरे पीछे चल रहे हैं तो उस ने पूछा, “तुम क्या चाहते
हो?” उन्हों ने कहा, “उस्ताद, आप कहाँ ठहरे हुए
हैं?”
39 उस ने जवाब दिया, “आओ, ख़ुद देख लो।”
चुनाँचे वह उस के साथ गए। उन्हों ने वह जगह देखी
जहाँ वह ठहरा हुआ था और दिन के बाक़ी वक़्त
उस के पास रहे। शाम के तक़रीबन चार बज गए थे।
40 शमाऊन पतरस का भाई अन्द्रियास उन दो
शागिर्दों में से एक था जो यहया की बात सुन कर
ईसा के पीछे हो लिए थे। 41 अब उस की पहली
मुलाक़ात उस के अपने भाई शमाऊन से हुई। उस
ने उसे बताया, “हमें मसीह मिल गया है।” (मसीह
का मतलब ‘मसह किया हुआ शख़्स’ है।) 42 फिर
वह उसे ईसा के पास ले गया।
उसे देख कर ईसा ने कहा, “तू यूहन्ना का बेटा
शमाऊन है। तू कैफ़ा कहलाएगा।” (इस का यूनानी
तर्जुमा पतरस यानी पत्थर है।)

ईसा फ़िलिप्पुस और नतनएल को बुलाता है

43 अगले दिन ईसा ने गलील जाने का इरादा किया।
फ़िलिप्पुस से मिला तो उस से कहा, “मेरे पीछे हो
ले।” 44 अन्द्रियास और पतरस की तरह फ़िलिप्पुस
का वतनी शहर बैत-सैदा था। 45 फ़िलिप्पुस नतनएल
से मिला, और उस ने उस से कहा, “हमें वही शख़्स
मिल गया जिस का ज़िक्र मूसा ने तौरेत और नबियों
ने अपने सहीफ़ों में किया है। उस का नाम ईसा बिन
यूसुफ़ है और वह नासरत का रहने वाला है।”
46 नतनएल ने कहा, “नासरत? क्या नासरत से कोई
अच्छी चीज़ निकल सकती है?” फ़िलिप्पुस ने जवाब
दिया, “आ और ख़ुद देख ले।”
47 जब ईसा ने नतन-एल को आते देखा तो उस ने
कहा, “लो, यह सच्चा इस्राईली है जिस में मक्र नहीं।”
48 नतन-एल ने पूछा, “आप मुझे कहाँ से जानते
हैं?”
ईसा ने जवाब दिया, “इस से पहले कि फ़िलिप्पुस
ने तुझे बुलाया मैं ने तुझे देखा। तू अन्जीर के दरख़्त
के साय में था।”
49 नतन-एल ने कहा, “उस्ताद, आप अल्लाह के
फ़र्ज़न्द हैं, आप इस्राईल के बादशाह हैं।”

50 ईसा ने उस से पूछा, “अच्छा, मेरी यह बात
सुन कर कि मैं ने तुझे अन्जीर के दरख़्त के साय
में देखा तू ईमान लाया है? तू इस से कहीं बड़ी बातें
देखेगा।” 51 उस ने बात जारी रखी, “मैं तुम को सच
बताता हूँ कि तुम आसमान को खुला और अल्लाह
के फ़रिश्तों को ऊपर चढ़ते और इब्न-ए-आदम पर
उतरते देखोगे।”

क़ाना में शादी

2 1 तीसरे दिन गलील के गाँव क़ाना में एक शादी
हुई। ईसा की माँ वहाँ थी 2 और ईसा और उस
के शागिर्दों को भी दावत दी गई थी। 3 मै ख़त्म हो
गई तो ईसा की माँ ने उस से कहा, “उन के पास मै
नहीं रही।”

4 ईसा ने जवाब दिया, “ऐ ख़ातून, मेरा आप से क्या
वास्ता? मेरा वक़्त अभी नहीं आया।”

5 लेकिन उस की माँ ने नौकरों को बताया, “जो
कुछ वह तुम को बताए वह करो।” 6 वहाँ पत्थर के
छः मटके पड़े थे जिन्हें यहूदी दीनी ग़ुसल के लिए
इस्तेमाल करते थे। हर एक में तक़रीबन 100 लिटर
की गुन्जाइश थी। 7 ईसा ने नौकरों से कहा, “मटकों
को पानी से भर दो।” चुनाँचे उन्हों ने उन्हें लबालब
भर दिया। 8 फिर उस ने कहा, “अब कुछ निकाल
कर ज़ियाफ़त का इन्तिज़ाम चलाने वाले के पास ले
जाओ।” उन्हों ने ऐसा ही किया। 9 जूँ ही ज़ियाफ़त
का इन्तिज़ाम चलाने वाले ने वह पानी चखा जो मै
में बदल गया था तो उस ने दूल्हे को बुलाया। (उसे
मालूम न था कि यह कहाँ से आई है, अगरचे उन
नौकरों को पता था जो उसे निकाल कर लाए थे।)
10 उस ने कहा, “हर मेज़बान पहले अच्छी क़िस्म की
मै पीने के लिए पेश करता है। फिर जब लोगों को
नशा चढ़ने लगे तो वह निस्बतन घटिया क़िस्म की
मै पिलाने लगता है। लेकिन आप ने अच्छी मै अब
तक रख छोड़ी है।”

11 यूँ ईसा ने गलील के क़ाना में यह पहला इलाही
निशान दिखा कर अपने जलाल का इज़हार किया।
यह देख कर उस के शागिर्द उस पर ईमान लाए।

12 इस के बाद वह अपनी माँ, अपने भाइयों और
अपने शागिर्दों के साथ कफ़र्नहूम को चला गया। वहाँ
वह थोड़े दिन रहे।

ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में जाता है

13 जब यहूदी ईद-ए-फ़सह क़रीब आ गई तो ईसा
यरूशलम चला गया। 14 बैत-उल-मुक़द्दस में जा कर
उस ने देखा कि कई लोग उस में गाय-बैल, भेड़ें और
कबूतर बेच रहे हैं। दूसरे मेज़ पर बैठे ग़ैरमुल्की सिक्के
बैत-उल-मुक़द्दस के सिक्कों में बदल रहे हैं। 15 फिर
ईसा ने रस्सियों का कोड़ा बना कर सब को बैत-उल-
मुक़द्दस से निकाल दिया। उस ने भेड़ों और गाय-बैलों
को बाहर हाँक दिया, पैसे बदलने वालों के सिक्के
बिखेर दिए और उन की मेज़ें उलट दीं। 16 कबूतर
बेचने वालों को उस ने कहा, “इसे ले जाओ। मेरे
बाप के घर को मंडी में मत बदलो।” 17 यह देख
कर ईसा के शागिर्दों को कलाम-ए-मुक़द्दस का यह
हवाला याद आया कि “तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा
जाएगी।”

18 यहूदियों ने जवाब में पूछा, “आप हमें क्या
इलाही निशान दिखा सकते हैं ताकि हमें यक़ीन आए
कि आप को यह करने का इख़तियार है?”

19 ईसा ने जवाब दिया, “इस मक़्दिस को ढा दो तो
मैं इसे तीन दिन के अन्दर दुबारा तामीर कर दूँगा।”

20 यहूदियों ने कहा, “बैत-उल-मुक़द्दस को तामीर
करने में 46 साल लग गए थे और आप उसे तीन दिन
में तामीर करना चाहते हैं?”

21 लेकिन जब ईसा ने “इस मक़्दिस” के अल्फ़ाज़
इस्तेमाल किए तो इस का मतलब उस का अपना
बदन था। 22 उस के मुर्दों में से जी उठने के बाद उस
के शागिर्दों को उस की यह बात याद आई। फिर वह
कलाम-ए-मुक़द्दस और उन बातों पर ईमान लाए जो
ईसा ने की थीं।

ईसा इन्सानी फ़ित्रत से वाक़िफ़ है

23 जब ईसा फ़सह की ईद के लिए यरूशलम में था
तो बहुत से लोग उस के पेशकरदा इलाही निशानों को
देख कर उस के नाम पर ईमान लाने लगे। 24 लेकिन
उस को उन पर एतिमाद नहीं था, क्यूँकि वह सब को
जानता था। 25 और उसे इन्सान के बारे में किसी की
गवाही की ज़रूरत नहीं थी, क्यूँकि वह जानता था
कि इन्सान के अन्दर क्या कुछ है।

नीकुदेमुस के साथ मुलाक़ात

3 1 फ़रीसी फ़िर्क़े का एक आदमी बनाम
नीकुदेमुस था जो यहूदी अदालत-ए-अलिया का
रुकन था। 2 वह रात के वक़्त ईसा के पास आया
और कहा, "उस्ताद, हम जानते हैं कि आप ऐसे
उस्ताद हैं जो अल्लाह की तरफ़ से आए हैं, क्यूँकि
जो इलाही निशान आप दिखाते हैं वह सिर्फ़ ऐसा
शख़्स ही दिखा सकता है जिस के साथ अल्लाह हो।"
3 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़
वह शख़्स अल्लाह की बादशाही को देख सकता है जो
नए सिरे से पैदा हुआ हो।"
4 नीकुदेमुस ने एतिराज़ किया, "क्या मतलब? बूढ़ा
आदमी किस तरह नए सिरे से पैदा हो सकता है? क्या
वह दुबारा अपनी माँ के पेट में जा कर पैदा हो सकता
है?"
5 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़
वह शख़्स अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकता
है जो पानी और रूह से पैदा हुआ हो। 6 जो कुछ
जिस्म से पैदा होता है वह जिस्मानी है, लेकिन जो
रूह से पैदा होता है वह रुहानी है। 7 इस लिए तू
ताज्जुब न कर कि मैं कहता हूँ, 'तुम्हें नए सिरे से
पैदा होना ज़रूर है।' 8 हवा जहाँ चाहे चलती है। तू
उस की आवाज़ तो सुनता है, लेकिन यह नहीं जानता
कि कहाँ से आती और कहाँ को जाती है। यही हालत
हर उस शख़्स की है जो रूह से पैदा हुआ है।"
9 नीकुदेमुस ने पूछा, "यह किस तरह हो सकता
है?"
10 ईसा ने जवाब दिया, "तू तो इस्राईल का उस्ताद
है। क्या इस के बावुजूद भी यह बातें नहीं समझता?
11 मैं तुझ को सच बताता हूँ, हम वह कुछ बयान
करते हैं जो हम जानते हैं और उस की गवाही देते
हैं जो हम ने ख़ुद देखा है। तो भी तुम लोग हमारी
गवाही क़बूल नहीं करते। 12 मैं ने तुम को दुनियावी
बातें सुनाई हैं और तुम उन पर ईमान नहीं रखते। तो
फिर तुम क्यूँकर ईमान लाओगे अगर तुम्हें आसमानी
बातों के बारे में बताऊँ? 13 आसमान पर कोई नहीं
चढ़ा सिवाए इब्न-ए-आदम के, जो आसमान से उतरा
है।
14 और जिस तरह मूसा ने रेगिस्तान में साँप को
लकड़ी पर लटका कर ऊँचा कर दिया उसी तरह
ज़रूर है कि इब्न-ए-आदम को भी ऊँचे पर चढ़ाया
जाए, 15 ताकि हर एक को जो उस पर ईमान लाएगा
अबदी ज़िन्दगी मिल जाए। 16 क्यूँकि अल्लाह ने दुनिया
से इतनी मुहब्बत रखी कि उस ने अपने इक्लौते
फ़र्ज़न्द को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान
लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िन्दगी पाए।
17 क्यूँकि अल्लाह ने अपने फ़र्ज़न्द को इस लिए दुनिया
में नहीं भेजा कि वह दुनिया को मुजरिम ठहराए
बल्कि इस लिए कि वह उसे नजात दे।
18 जो भी उस पर ईमान लाया है उसे मुजरिम नहीं
क़रार दिया जाएगा, लेकिन जो ईमान नहीं रखता उसे
मुजरिम ठहराया जा चुका है। वजह यह है कि वह
अल्लाह के इक्लौते फ़र्ज़न्द के नाम पर ईमान नहीं
लाया। 19 और लोगों को मुजरिम ठहराने का सबब
यह है कि गो अल्लाह का नूर इस दुनिया में आया,
लेकिन लोगों ने नूर की निस्बत अंधेरे को ज़्यादा प्यार
किया, क्यूँकि उन के काम बुरे थे। 20 जो भी ग़लत
काम करता है वह नूर से दुश्मनी रखता है और उस
के क़रीब नहीं आता ताकि उस के बुरे कामों का
पोल न खुल जाए। 21 लेकिन जो सच्चा काम करता है

वह नूर के पास आता है ताकि ज़ाहिर हो जाए कि उस के काम अल्लाह के वसीले से हुए हैं।”

ईसा और यहया

22 इस के बाद ईसा अपने शागिर्दों के साथ यहूदिया के इलाक़े में गया। वहाँ वह कुछ देर के लिए उन के साथ ठहरा और लोगों को बपतिस्मा देने लगा। 23 उस वक़्त यहया भी शालेम के क़रीब वाक़े मक़ाम ऐनोन में बपतिस्मा दे रहा था, क्यूँकि वहाँ पानी बहुत था। उस जगह पर लोग बपतिस्मा लेने के लिए आते रहे। 24 (यहया को अब तक जेल में नहीं डाला गया था।)

25 एक दिन यहया के शागिर्दों का किसी यहूदी के साथ मुबाहसा छिड़ गया। ज़ेर-ए-ग़ौर मज़्मून दीनी ग़ुसल था। 26 वह यहया के पास आए और कहने लगे, “उस्ताद, जिस आदमी से आप की दरया-ए-यर्दन के पार मुलाक़ात हुई और जिस के बारे में आप ने गवाही दी कि वह मसीह है, वह भी लोगों को बपतिस्मा दे रहा है। अब सब लोग उसी के पास जा रहे हैं।”

27 यहया ने जवाब दिया, “हर एक को सिर्फ़ वह कुछ मिलता है जो उसे आसमान से दिया जाता है। 28 तुम ख़ुद इस के गवाह हो कि मैं ने कहा, ‘मैं मसीह नहीं हूँ बल्कि मुझे उस के आगे आगे भेजा गया है।’ 29 दूल्हा ही दुल्हन से शादी करता है, और दुल्हन उसी की है। उस का दोस्त सिर्फ़ साथ खड़ा होता है। और दूल्हे की आवाज़ सुन सुन कर दोस्त की ख़ुशी की इन्तिहा नहीं होती। मैं भी ऐसा ही दोस्त हूँ जिस की ख़ुशी पूरी हो गई है। 30 लाज़िम है कि वह बढ़ता जाए जबकि मैं घटता जाऊँ।

आसमान से आने वाला

31 जो आसमान पर से आया है उस का इख़तियार सब पर है। जो दुनिया से है उस का ताल्लुक़ दुनिया से ही है और वह दुनियावी बातें करता है। लेकिन जो आसमान पर से आया है उस का इख़तियार सब पर है। 32 जो कुछ उस ने ख़ुद देखा और सुना है उसी की गवाही देता है। तो भी कोई उस की गवाही को क़बूल नहीं करता। 33 लेकिन जिस ने उसे क़बूल किया उस ने इस की तस्दीक़ की है कि अल्लाह सच्चा है। 34 जिसे अल्लाह ने भेजा है वह अल्लाह की बातें सुनाता है, क्यूँकि अल्लाह अपना रूह नाप तोल कर नहीं देता। 35 बाप अपने फ़र्ज़न्द को प्यार करता है, और उस ने सब कुछ उस के सपुर्द कर दिया है। 36 चुनाँचे जो अल्लाह के फ़र्ज़न्द पर ईमान लाता है अबदी ज़िन्दगी उस की है। लेकिन जो फ़र्ज़न्द को रद्द करे वह इस ज़िन्दगी को नहीं देखेगा बल्कि अल्लाह का ग़ज़ब उस पर ठहरा रहेगा।”

ईसा और सामरी औरत

4 1 फ़रीसियों को इत्तिला मिली कि ईसा यहया की निस्बत ज़्यादा शागिर्द बना रहा और लोगों को बपतिस्मा दे रहा है, 2 हालाँकि वह ख़ुद बपतिस्मा नहीं देता था बल्कि उस के शागिर्द। 3 जब ख़ुदावन्द ईसा को यह बात मालूम हुई तो वह यहूदिया को छोड़ कर गलील को वापस चला गया। 4 वहाँ पहुँचने के लिए उसे सामरिया में से गुज़रना था।

5 चलते चलते वह एक शहर के पास पहुँच गया जिस का नाम सूख़ार था। यह उस ज़मीन के क़रीब था जो याक़ूब ने अपने बेटे यूसुफ़ को दी थी। 6 वहाँ याक़ूब का कुआँ था। ईसा सफ़र से थक गया था, इस लिए वह कुएँ पर बैठ गया। दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए थे।

7 एक सामरी औरत पानी भरने आई। ईसा ने उस से कहा, “मुझे ज़रा पानी पिला।” 8 (उस के शागिर्द खाना ख़रीदने के लिए शहर गए हुए थे।)

9 सामरी औरत ने ताज्जुब किया, क्यूँकि यहूदी सामरियों के साथ ताल्लुक़ रखने से इन्कार करते हैं। उस ने कहा, “आप तो यहूदी हैं, और मैं सामरी औरत हूँ। आप किस तरह मुझ से पानी पिलाने की दरख़्वास्त कर सकते हैं?”

10 ईसा ने जवाब दिया, “अगर तू उस बख़्शिश से
वाक़िफ़ होती जो अल्लाह तुझ को देना चाहता है और
तू उसे जानती जो तुझ से पानी माँग रहा है तो तू उस
से माँगती और वह तुझे ज़िन्दगी का पानी देता।”
11 ख़ातून ने कहा, “ख़ुदावन्द, आप के पास तो
बाल्टी नहीं है और यह कुआँ गहरा है। आप को
ज़िन्दगी का यह पानी कहाँ से मिला? 12 क्या आप
हमारे बाप याक़ूब से बड़े हैं जिस ने हमें यह कुआँ
दिया और जो ख़ुद भी अपने बेटों और रेवड़ों समेत
उस के पानी से लुत्फ़अन्दोज़ हुआ?”
13 ईसा ने जवाब दिया, “जो भी इस पानी में से पिए
उसे दुबारा प्यास लगेगी। 14 लेकिन जिसे मैं पानी
पिला दूँ उसे बाद में कभी भी प्यास नहीं लगेगी।
बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा वह उस में एक चश्मा
बन जाएगा जिस से पानी फूट कर अबदी ज़िन्दगी
मुहय्या करेगा।”
15 औरत ने उस से कहा, “ख़ुदावन्द, मुझे यह पानी
पिला दें। फिर मुझे कभी भी प्यास नहीं लगेगी और
मुझे बार बार यहाँ आ कर पानी भरना नहीं पड़ेगा।”
16 ईसा ने कहा, “जा, अपने ख़ावन्द को बुला ला।”
17 औरत ने जवाब दिया, “मेरा कोई ख़ावन्द नहीं
है।”
ईसा ने कहा, “तू ने सहीह कहा कि मेरा ख़ावन्द
नहीं है, 18 क्यूँकि तेरी शादी पाँच मर्दों से हो चुकी है
और जिस आदमी के साथ तू अब रह रही है वह तेरा
शौहर नहीं है। तेरी बात बिलकुल दुरुस्त है।”
19 औरत ने कहा, “ख़ुदावन्द, मैं देखती हूँ कि आप
नबी हैं। 20 हमारे बापदादा तो इसी पहाड़ पर इबादत
करते थे जबकि आप यहूदी लोग इसरार करते हैं कि
यरूशलम वह मर्कज़ है जहाँ हमें इबादत करनी है।”
21 ईसा ने जवाब दिया, “ऐ ख़ातून, यक़ीन जान कि
वह वक़्त आएगा जब तुम न तो इस पहाड़ पर बाप
की इबादत करोगे, न यरूशलम में। 22 तुम सामरी
उस की परस्तिश करते हो जिसे नहीं जानते। इस के
मुक़ाबले में हम उस की परस्तिश करते हैं जिसे जानते
हैं, क्यूँकि नजात यहूदियों में से है। 23 लेकिन वह
वक़्त आ रहा है बल्कि पहुँच चुका है जब हक़ीक़ी
परस्तार रूह और सच्चाई से बाप की परस्तिश करेंगे,
क्यूँकि बाप ऐसे ही परस्तार चाहता है। 24 अल्लाह रूह
है, इस लिए लाज़िम है कि उस के परस्तार रूह और
सच्चाई से उस की परस्तिश करें।”
25 औरत ने उस से कहा, “मुझे मालूम है कि मसीह
यानी मसह किया हुआ शख़्स आ रहा है। जब वह
आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।”
26 इस पर ईसा ने उसे बताया, “मैं ही मसीह हूँ जो
तेरे साथ बात कर रहा हूँ।”
27 उसी लम्हे शागिर्द पहुँच गए। उन्हों ने जब देखा
कि ईसा एक औरत से बात कर रहा है तो ताज्जुब
किया। लेकिन किसी ने पूछने की जुरअत न की कि
“आप क्या चाहते हैं?” या “आप इस औरत से क्यूँ
बातें कर रहे हैं?”
28 औरत अपना घड़ा छोड़ कर शहर में चली गई
और वहाँ लोगों से कहने लगी, 29 “आओ, एक
आदमी को देखो जिस ने मुझे सब कुछ बता दिया है
जो मैं ने किया है। वह मसीह तो नहीं है?” 30 चुनाँचे
वह शहर से निकल कर ईसा के पास आए।
31 इतने में शागिर्द ज़ोर दे कर ईसा से कहने लगे,
“उस्ताद, कुछ खाना खा लें।”
32 लेकिन उस ने जवाब दिया, “मेरे पास खाने की
ऐसी चीज़ है जिस से तुम वाक़िफ़ नहीं हो।”
33 शागिर्द आपस में कहने लगे, “क्या कोई उस के
पास खाना ले कर आया?”
34 लेकिन ईसा ने उन से कहा, “मेरा खाना यह
है कि उस की मर्ज़ी पूरी करूँ जिस ने मुझे भेजा है
और उस का काम तक्मील तक पहुँचाऊँ। 35 तुम तो
ख़ुद कहते हो, ‘मज़ीद चार महीने तक फ़सल पक
जाएगी।’ लेकिन मैं तुम को बताता हूँ, अपनी नज़र
उठा कर खेतों पर ग़ौर करो। फ़सल पक गई है और
कटाई के लिए तय्यार है। 36 फ़सल की कटाई शुरू
हो चुकी है। कटाई करने वाले को मज़दूरी मिल रही है
और वह फ़सल को अबदी ज़िन्दगी के लिए जमा कर
रहा है ताकि बीज बोने वाला और कटाई करने वाला

दोनों मिल कर ख़ुशी मना सकें। 37 यूँ यह कहावत
दुरुस्त साबित हो जाती है कि 'एक बीज बोता और
दूसरा फ़सल काटता है।' 38 मैं ने तुम को उस फ़सल
की कटाई करने के लिए भेज दिया है जिसे तय्यार
करने के लिए तुम ने मेहनत नहीं की। औरों ने ख़ूब
मेहनत की है और तुम इस से फ़ाइदा उठा कर फ़सल
जमा कर सकते हो।"

39 उस शहर के बहुत से सामरी ईसा पर ईमान लाए।
वजह यह थी कि उस औरत ने उस के बारे में यह
गवाही दी थी, "उस ने मुझे सब कुछ बता दिया जो
मैं ने किया है।" 40 जब वह उस के पास आए तो
उन्हों ने मिन्नत की, "हमारे पास ठहरें।" चुनाँचे वह
दो दिन वहाँ रहा।

41 और उस की बातें सुन कर मज़ीद बहुत से लोग
ईमान लाए। 42 उन्हों ने औरत से कहा, "अब हम तेरी
बातों की बिना पर ईमान नहीं रखते बल्कि इस लिए
कि हम ने ख़ुद सुन और जान लिया है कि वाक़ई
दुनिया का नजातदहिन्दा यही है।"

अफ़सर के बेटे की शिफ़ा

43 वहाँ दो दिन गुज़ारने के बाद ईसा गलील को
चला गया। 44 उस ने ख़ुद गवाही दे कर कहा था कि
नबी की उस के अपने वतन में इज़्ज़त नहीं होती।
45 अब जब वह गलील पहुँचा तो मक़ामी लोगों ने
उसे ख़ुशआमदीद कहा, क्यूँकि वह फ़सह की ईद
मनाने के लिए यरूशलम आए थे और उन्हों ने सब
कुछ देखा जो ईसा ने वहाँ किया था।

46 फिर वह दुबारा क़ाना में आया जहाँ उस ने पानी
को मै में बदल दिया था। उस इलाक़े में एक शाही
अफ़सर था जिस का बेटा कफ़र्नहूम में बीमार पड़ा
था। 47 जब उसे इत्तिला मिली कि ईसा यहूदिया से
गलील पहुँच गया है तो वह उस के पास गया और
गुज़ारिश की, "काना से मेरे पास आ कर मेरे बेटे को
शिफ़ा दें, क्यूँकि वह मरने को है।" 48 ईसा ने उस से
कहा, "जब तक तुम लोग इलाही निशान और मोजिज़े
नहीं देखते ईमान नहीं लाते।"

49 शाही अफ़सर ने कहा, "ख़ुदावन्द आएँ, इस से
पहले कि मेरा लड़का मर जाए।"

50 ईसा ने जवाब दिया, "जा, तेरा बेटा ज़िन्दा
रहेगा।"

आदमी ईसा की बात पर ईमान लाया और अपने
घर चला गया। 51 वह अभी रास्ते में था कि उस के
नौकर उस से मिले। उन्हों ने उसे इत्तिला दी कि बेटा
ज़िन्दा है।

52 उस ने उन से पूछगछ की कि उस की तबीअत
किस वक़्त से बेहतर होने लगी थी। उन्हों ने जवाब
दिया, "बुख़ार कल दोपहर एक बजे उतर गया।"
53 फिर बाप ने जान लिया कि उसी वक़्त ईसा ने उसे
बताया था, "तुम्हारा बेटा ज़िन्दा रहेगा।" और वह
अपने पूरे घराने समेत उस पर ईमान लाया।

54 यूँ ईसा ने अपना दूसरा इलाही निशान उस वक़्त
दिखाया जब वह यहूदिया से गलील में आया था।

बैत-उल-मुक़द्दस के हौज़ पर शिफ़ा

5 1 कुछ देर के बाद ईसा किसी यहूदी ईद के
मौक़े पर यरूशलम गया। 2 शहर में एक हौज़ था
जिस का नाम अरामी ज़बान में बैत-हसदा था। उस
के पाँच बड़े बरामदे थे और वह शहर के उस दरवाज़े
के क़रीब था जिस का नाम 'भेड़ों का दरवाज़ा' है।
3 इन बरामदों में बेशुमार माज़ूर लोग पड़े रहते थे। यह
अंधे, लंगड़े और मफ़्लूज पानी के हिलने के इन्तिज़ार
में रहते थे। 4 [क्यूँकि गाहे-ब-गाहे रब का फ़रिश्ता
उतर कर पानी को हिला देता था। जो भी उस वक़्त
उस में पहले दाख़िल हो जाता उसे शिफ़ा मिल जाती
थी ख़्वाह उस की बीमारी कोई भी क्यूँ न होती।]
5 मरीज़ों में से एक आदमी 38 साल से माज़ूर था।
6 जब ईसा ने उसे वहाँ पड़ा देखा और उसे मालूम
हुआ कि यह इतनी देर से इस हालत में है तो उस ने
पूछा, "क्या तू तन्दुरुस्त होना चाहता है?"

7 उस ने जवाब दिया, "ख़ुदावन्द, यह मुश्किल है।
मेरा कोई साथी नहीं जो मुझे उठा कर पानी में जब
उसे हिलाया जाता है ले जाए। इस लिए मेरे वहाँ

पहुँचने में इतनी देर लग जाती है कि कोई और मुझ
से पहले पानी में उतर जाता है।”
8 ईसा ने कहा, “उठ, अपना बिस्तर उठा कर चल
फिर!” 9 वह आदमी फ़ौरन बहाल हो गया। उस ने
अपना बिस्तर उठाया और चलने फिरने लगा।
यह वाक़िआ सबत के दिन हुआ। 10 इस लिए
यहूदियों ने शिफ़ायाब आदमी को बताया, “आज
सबत का दिन है। आज बिस्तर उठाना मना है।”
11 लेकिन उस ने जवाब दिया, “जिस आदमी ने मुझे
शिफ़ा दी उस ने मुझे बताया, ‘अपना बिस्तर उठा कर
चल फिर’।”
12 उन्हों ने सवाल किया, “वह कौन है जिस ने तुझे
यह कुछ बताया?” 13 लेकिन शिफ़ायाब आदमी को
मालूम न था, क्यूँकि ईसा हुजूम के सबब से चुपके
से वहाँ से चला गया था।
14 बाद में ईसा उसे बैत-उल-मुक़द्दस में मिला। उस
ने कहा, “अब तू बहाल हो गया है। फिर गुनाह न
करना, ऐसा न हो कि तेरा हाल पहले से भी बदतर
हो जाए।”
15 उस आदमी ने उसे छोड़ कर यहूदियों को इत्तिला
दी, “ईसा ने मुझे शिफ़ा दी।” 16 इस पर यहूदी उस को
सताने लगे, क्यूँकि उस ने उस आदमी को सबत के
दिन बहाल किया था। 17 लेकिन ईसा ने उन्हें जवाब
दिया, “मेरा बाप आज तक काम करता आया है,
और मैं भी ऐसा करता हूँ।”
18 यह सुन कर यहूदी उसे क़त्ल करने की मज़ीद
कोशिश करने लगे, क्यूँकि उस ने न सिर्फ़ सबत
के दिन को मन्सूख़ क़रार दिया था बल्कि अल्लाह
को अपना बाप कह कर अपने आप को अल्लाह के
बराबर ठहराया था।

फ़र्ज़न्द का इख़तियार

19 ईसा ने उन्हें जवाब दिया, “मैं तुम को सच
बताता हूँ कि फ़र्ज़न्द अपनी मर्ज़ी से कुछ नहीं कर
सकता। वह सिर्फ़ वह कुछ करता है जो वह बाप
को करते देखता है। जो कुछ बाप करता है वही
फ़र्ज़न्द भी करता है, 20 क्यूँकि बाप फ़र्ज़न्द को प्यार
करता और उसे सब कुछ दिखाता है जो वह ख़ुद
करता है। हाँ, वह फ़र्ज़न्द को इन से भी अज़ीम काम
दिखाएगा। फिर तुम और भी ज़्यादा हैरतज़दा होगे।
21 क्यूँकि जिस तरह बाप मुर्दों को ज़िन्दा करता है
उसी तरह फ़र्ज़न्द भी जिन्हें चाहता है ज़िन्दा कर देता
है। 22 और बाप किसी की भी अदालत नहीं करता
बल्कि उस ने अदालत का पूरा इन्तिज़ाम फ़र्ज़न्द के
सपुर्द कर दिया है 23 ताकि सब उसी तरह फ़र्ज़न्द की
इज़्ज़त करें जिस तरह वह बाप की इज़्ज़त करते हैं।
जो फ़र्ज़न्द की इज़्ज़त नहीं करता वह बाप की भी
इज़्ज़त नहीं करता जिस ने उसे भेजा है।
24 मैं तुम को सच बताता हूँ, जो भी मेरी बात सुन
कर उस पर ईमान लाता है जिस ने मुझे भेजा है अबदी
ज़िन्दगी उस की है। उसे मुजरिम नहीं ठहराया जाएगा
बल्कि वह मौत की गिरिफ़्त से निकल कर ज़िन्दगी
में दाख़िल हो गया है। 25 मैं तुम को सच बताता हूँ
कि एक वक़्त आने वाला है बल्कि आ चुका है जब
मुर्दे अल्लाह के फ़र्ज़न्द की आवाज़ सुनेंगे। और जितने
सुनेंगे वह ज़िन्दा हो जाएंगे। 26 क्यूँकि जिस तरह
बाप ज़िन्दगी का मम्बा है उसी तरह उस ने अपने
फ़र्ज़न्द को ज़िन्दगी का मम्बा बना दिया है। 27 साथ
साथ उस ने उसे अदालत करने का इख़तियार भी
दे दिया है, क्यूँकि वह इब्न-ए-आदम है। 28 यह सुन
कर ताज्जुब न करो क्यूँकि एक वक़्त आ रहा है जब
तमाम मुर्दे उस की आवाज़ सुन कर 29 क़ब्रों में से
निकल आएँगे। जिन्हों ने नेक काम किया वह जी
उठ कर ज़िन्दगी पाएँगे जबकि जिन्हों ने बुरा काम
किया वह जी तो उठेंगे लेकिन उन की अदालत की
जाएगी।

ईसा के गवाह

30 मैं अपनी मर्ज़ी से कुछ नहीं कर सकता बल्कि
जो कुछ बाप से सुनता हूँ उस के मुताबिक़ अदालत
करता हूँ। और मेरी अदालत रास्त है क्यूँकि मैं अपनी

मर्ज़ी करने की कोशिश नहीं करता बल्कि उसी की
जिस ने मुझे भेजा है।
31 अगर मैं ख़ुद अपने बारे में गवाही देता तो मेरी
गवाही मोतबर न होती। 32 लेकिन एक और है जो मेरे
बारे में गवाही दे रहा है और मैं जानता हूँ कि मेरे बारे
में उस की गवाही सच्ची और मोतबर है। 33 तुम ने पता
करने के लिए अपने लोगों को यहया के पास भेजा
है और उस ने हक़ीक़त की तस्दीक़ की है। 34 बेशक
मुझे किसी इन्सानी गवाह की ज़रूरत नहीं है, लेकिन
मैं यह इस लिए बता रहा हूँ ताकि तुम को नजात मिल
जाए। 35 यहया एक जलता हुआ चराग़ था जो रौशनी
देता था, और कुछ देर के लिए तुम ने उस की रौशनी
में ख़ुशी मनाना पसन्द किया। 36 लेकिन मेरे पास एक
और गवाह है जो यहया की निस्बत ज़्यादा अहम है
यानी वह काम जो बाप ने मुझे मुकम्मल करने के
लिए दे दिया। यही काम जो मैं कर रहा हूँ मेरे बारे
में गवाही देता है कि बाप ने मुझे भेजा है। 37 इस के
इलावा बाप ने ख़ुद जिस ने मुझे भेजा है मेरे बारे में
गवाही दी है। अफ़सोस, तुम ने कभी उस की आवाज़
नहीं सुनी, न उस की शक्ल-ओ-सूरत देखी, 38 और
उस का कलाम तुम्हारे अन्दर नहीं रहता, क्यूँकि तुम
उस पर ईमान नहीं रखते जिसे उस ने भेजा है। 39 तुम
अपने सहीफ़ों में ढूँडते रहते हो क्यूँकि समझते हो
कि उन से तुम्हें अबदी ज़िन्दगी हासिल है। लेकिन
यही मेरे बारे में गवाही देते हैं! 40 तो भी तुम ज़िन्दगी
पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते।
41 मैं इन्सानों से इज़्ज़त नहीं चाहता, 42 लेकिन मैं
तुम को जानता हूँ कि तुम में अल्लाह की मुहब्बत नहीं।
43 अगरचे मैं अपने बाप के नाम में आया हूँ तो भी
तुम मुझे क़बूल नहीं करते। इस के मुक़ाबले में अगर
कोई अपने नाम में आएगा तो तुम उसे क़बूल करोगे।
44 कोई अजब नहीं कि तुम ईमान नहीं ला सकते।
क्यूँकि तुम एक दूसरे से इज़्ज़त चाहते हो जबकि तुम
वह इज़्ज़त पाने की कोशिश ही नहीं करते जो वाहिद
ख़ुदा से मिलती है। 45 लेकिन यह न समझो कि मैं बाप
के सामने तुम पर इल्ज़ाम लगाऊँगा। एक और है जो
तुम पर इल्ज़ाम लगा रहा है यानी मूसा, जिस से तुम
उम्मीद रखते हो। 46 अगर तुम वाक़ई मूसा पर ईमान
रखते तो ज़रूर मुझ पर भी ईमान रखते, क्यूँकि उस
ने मेरे ही बारे में लिखा। 47 लेकिन चूँकि तुम वह कुछ
नहीं मानते जो उस ने लिखा है तो मेरी बातें क्यूँकर
मान सकते हो!”

ईसा बड़े हुजूम को खाना खिलाता है

6 1 इस के बाद ईसा ने गलील की झील को पार
किया। (झील का दूसरा नाम तिबरियास था।)
2 एक बड़ा हुजूम उस के पीछे लग गया था, क्यूँकि
उस ने इलाही निशान दिखा कर मरीज़ों को शिफ़ा
दी थी और लोगों ने इस का मुशाहदा किया था।
3 फिर ईसा पहाड़ पर चढ़ कर अपने शागिर्दों के साथ
बैठ गया। 4 (यहूदी ईद-ए-फ़सह क़रीब आ गई थी।)
5 वहाँ बैठे ईसा ने अपनी नज़र उठाई तो देखा कि एक
बड़ा हुजूम पहुँच रहा है। उस ने फ़िलिप्पुस से पूछा,
“हम कहाँ से खाना ख़रीदें ताकि उन्हें खिलाएँ?”
6 (यह उस ने फ़िलिप्पुस को आज़माने के लिए कहा।
ख़ुद तो वह जानता था कि क्या करेगा।)
7 फ़िलिप्पुस ने जवाब दिया, “अगर हर एक को
सिर्फ़ थोड़ा सा मिले तो भी चाँदी के 200 सिक्के काफ़ी
नहीं होंगे।”
8 फिर शमाऊन पतरस का भाई अन्द्रियास बोल
उठा, 9 “यहाँ एक लड़का है जिस के पास जौ की
पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। मगर इतने लोगों
में यह क्या हैं!”
10 ईसा ने कहा, “लोगों को बिठा दो।” उस जगह
बहुत घास थी। चुनाँचे सब बैठ गए। (सिर्फ़ मर्दों
की तादाद 5,000 थी।) 11 ईसा ने रोटियाँ ले कर
शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उन्हें बैठे हुए लोगों
में तक़्सीम करवाया। यही कुछ उस ने मछलियों के
साथ भी किया। और सब ने जी भर कर रोटी खाई।
12 जब सब सेर हो गए तो ईसा ने शागिर्दों को बताया,
“अब बचे हुए टुकड़े जमा करो ताकि कुछ ज़ाए न हो
जाए।” 13 जब उन्हों ने बचा हुआ खाना इकट्ठा किया

तो जौ की पाँच रोटियों के टुकड़ों से बारह टोकरे भर
गए।
14 जब लोगों ने ईसा को यह इलाही निशान दिखाते
देखा तो उन्हों ने कहा, “यक़ीनन यह वही नबी है
जिसे दुनिया में आना था।” 15 ईसा को मालूम हुआ
कि वह आ कर उसे ज़बरदस्ती बादशाह बनाना
चाहते हैं, इस लिए वह दुबारा उन से अलग हो कर
अकेला ही किसी पहाड़ पर चढ़ गया।

ईसा पानी पर चलता है

16 शाम को शागिर्द झील के पास गए 17 और कश्ती
पर सवार हो कर झील के पार शहर कफ़र्नहूम के
लिए रवाना हुए। अंधेरा हो चुका था और ईसा अब
तक उन के पास वापस नहीं आया था। 18 तेज़ हवा
के बाइस झील में लहरें उठने लगीं। 19 कश्ती को
खेते खेते शागिर्द चार या पाँच किलोमीटर का सफ़र
तै कर चुके थे कि अचानक ईसा नज़र आया। वह
पानी पर चलता हुआ कश्ती की तरफ़ बढ़ रहा था।
शागिर्द दहशतज़दा हो गए। 20 लेकिन उस ने उन से
कहा, “मैं ही हूँ। ख़ौफ़ न करो।” 21 वह उसे कश्ती
में बिठाने पर आमादा हुए। और कश्ती उसी लम्हे
उस जगह पहुँच गई जहाँ वह जाना चाहते थे।

लोग ईसा को ढूँडते हैं

22 हुजूम तो झील के पार रह गया था। अगले दिन
लोगों को पता चला कि शागिर्द एक ही कश्ती ले
कर चले गए हैं और कि उस वक़्त ईसा कश्ती में
नहीं था। 23 फिर कुछ कश्तियाँ तिबरियास से उस
मक़ाम के क़रीब पहुँचीं जहाँ ख़ुदावन्द ईसा ने रोटी
के लिए शुक्रगुज़ारी की दुआ करके उसे लोगों को
खिलाया था। 24 जब लोगों ने देखा कि न ईसा और
न उस के शागिर्द वहाँ हैं तो वह कश्तियों पर सवार
हो कर ईसा को ढूँडते ढूँडते कफ़र्नहूम पहुँचे।

ईसा ज़िन्दगी की रोटी है

25 जब उन्हों ने उसे झील के पार पाया तो पूछा,
“उस्ताद, आप किस तरह यहाँ पहुँच गए?”
26 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुम को सच बताता हूँ,
तुम मुझे इस लिए नहीं ढूँड रहे कि इलाही निशान
देखे हैं बल्कि इस लिए कि तुम ने जी भर कर रोटी
खाई है। 27 ऐसी ख़ुराक के लिए जिद्द-ओ-जहद न
करो जो गल सड़ जाती है, बल्कि ऐसी के लिए जो
अबदी ज़िन्दगी तक क़ाइम रहती है और जो इब्न-
ए-आदम तुम को देगा, क्यूँकि ख़ुदा बाप ने उस पर
अपनी तस्दीक़ की मुहर लगाई है।”
28 इस पर उन्हों ने पूछा, “हमें क्या करना चाहिए
ताकि अल्लाह का मतलूबा काम करें?”
29 ईसा ने जवाब दिया, “अल्लाह का काम यह है
कि तुम उस पर ईमान लाओ जिसे उस ने भेजा है।”
30 उन्हों ने कहा, “तो फिर आप क्या इलाही निशान
दिखाएँगे जिसे देख कर हम आप पर ईमान लाएँ?
आप क्या काम सरअन्जाम देंगे? 31 हमारे बापदादा ने
तो रेगिस्तान में मन खाया। चुनाँचे कलाम-ए-मुक़द्दस
में लिखा है कि मूसा ने उन्हें आसमान से रोटी
खिलाई।”
32 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुम को सच बताता
हूँ कि ख़ुद मूसा ने तुम को आसमान से रोटी नहीं
खिलाई बल्कि मेरे बाप ने। वही तुम को आसमान
से हक़ीक़ी रोटी देता है। 33 क्यूँकि अल्लाह की रोटी
वह शख़्स है जो आसमान पर से उतर कर दुनिया को
ज़िन्दगी बख़्शता है।”
34 उन्हों ने कहा, “ख़ुदावन्द, हमें यह रोटी हर वक़्त
दिया करें।”
35 जवाब में ईसा ने कहा, “मैं ही ज़िन्दगी की रोटी
हूँ। जो मेरे पास आए उसे फिर कभी भूक नहीं लगेगी।
और जो मुझ पर ईमान लाए उसे फिर कभी प्यास नहीं
लगेगी। 36 लेकिन जिस तरह मैं तुम को बता चुका
हूँ, तुम ने मुझे देखा और फिर भी ईमान नहीं लाए।
37 जितने भी बाप ने मुझे दिए हैं वह मेरे पास आएँगे

और जो भी मेरे पास आएगा उसे मैं हरगिज़ निकाल
न दूँगा। 38 क्यूँकि मैं अपनी मर्ज़ी पूरी करने के लिए
आसमान से नहीं उतरा बल्कि उस की जिस ने मुझे
भेजा है। 39 और जिस ने मुझे भेजा उस की मर्ज़ी यह
है कि जितने भी उस ने मुझे दिए हैं उन में से मैं एक
को भी खो न दूँ बल्कि सब को क़ियामत के दिन मुर्दों
में से फिर ज़िन्दा करूँ। 40 क्यूँकि मेरे बाप की मर्ज़ी
यही है कि जो भी फ़र्ज़न्द को देख कर उस पर ईमान
लाए उसे अबदी ज़िन्दगी हासिल हो। ऐसे शख़्स को
मैं क़ियामत के दिन मुर्दों में से फिर ज़िन्दा करूँगा।"
41 यह सुन कर यहूदी इस लिए बुड़बुड़ाने लगे कि
उस ने कहा था, "मैं ही वह रोटी हूँ जो आसमान पर
से उतर आई है।" 42 उन्हों ने एतिराज़ किया, "क्या
यह ईसा बिन यूसुफ़ नहीं, जिस के बाप और माँ से
हम वाक़िफ़ हैं? वह क्यूँकर कह सकता है कि 'मैं
आसमान से उतरा हूँ'?"
43 ईसा ने जवाब में कहा, "आपस में मत
बुड़बुड़ाओ। 44 सिर्फ़ वह शख़्स मेरे पास आ सकता
है जिसे बाप जिस ने मुझे भेजा है मेरे पास खैंच लाया
है। ऐसे शख़्स को मैं क़ियामत के दिन मुर्दों में से
फिर ज़िन्दा करूँगा। 45 नबियों के सहीफ़ों में लिखा
है, 'सब अल्लाह से तालीम पाएँगे।' जो भी अल्लाह की
सुन कर उस से सीखता है वह मेरे पास आ जाता
है। 46 इस का मतलब यह नहीं कि किसी ने कभी
बाप को देखा। सिर्फ़ एक ही ने बाप को देखा है,
वही जो अल्लाह की तरफ़ से है। 47 मैं तुम को सच
बताता हूँ कि जो ईमान रखता है उसे अबदी ज़िन्दगी
हासिल है। 48 ज़िन्दगी की रोटी मैं हूँ। 49 तुम्हारे
बापदादा रेगिस्तान में मन खाते रहे, तो भी वह मर
गए। 50 लेकिन यहाँ आसमान से उतरने वाली ऐसी
रोटी है जिसे खा कर इन्सान नहीं मरता। 51 मैं ही
ज़िन्दगी की वह रोटी हूँ जो आसमान से उतर आई
है। जो इस रोटी से खाए वह अबद तक ज़िन्दा रहेगा।
और यह रोटी मेरा गोश्त है जो मैं दुनिया को ज़िन्दगी
मुहय्या करने की ख़ातिर पेश करूँगा।" 52 यहूदी बड़ी
सरगर्मी से एक दूसरे से बह्स करने लगे, "यह आदमी
हमें किस तरह अपना गोश्त खिला सकता है?"
53 ईसा ने उन से कहा, "मैं तुम को सच बताता हूँ
कि सिर्फ़ इब्न-ए-आदम का गोश्त खाने और उस का
ख़ून पीने ही से तुम में ज़िन्दगी होगी। 54 जो मेरा गोश्त
खाए और मेरा ख़ून पिए अबदी ज़िन्दगी उस की है
और मैं उसे क़ियामत के दिन मुर्दों में से फिर ज़िन्दा
करूँगा। 55 क्यूँकि मेरा गोश्त हक़ीक़ी ख़ुराक और
मेरा ख़ून हक़ीक़ी पीने की चीज़ है। 56 जो मेरा गोश्त
खाता और मेरा ख़ून पीता है वह मुझ में क़ाइम रहता
है और मैं उस में। 57 मैं उस ज़िन्दा बाप की वजह से
ज़िन्दा हूँ जिस ने मुझे भेजा। इसी तरह जो मुझे खाता
है वह मेरी ही वजह से ज़िन्दा रहेगा। 58 यही वह रोटी
है जो आसमान से उतरी है। तुम्हारे बापदादा मन खाने
के बावुजूद मर गए, लेकिन जो यह रोटी खाएगा वह
अबद तक ज़िन्दा रहेगा।"
59 ईसा ने यह बातें उस वक़्त कीं जब वह कफ़र्नहूम
में यहूदी इबादतख़ाने में तालीम दे रहा था।

अबदी ज़िन्दगी की बातें

60 यह सुन कर उस के बहुत से शागिर्दों ने कहा,
"यह बातें नागवार हैं। कौन इन्हें सुन सकता है!"
61 ईसा को मालूम था कि मेरे शागिर्द मेरे बारे में
बुड़बुड़ा रहे हैं, इस लिए उस ने कहा, "क्या तुम को
इन बातों से ठेस लगी है? 62 तो फिर तुम क्या सोचोगे
जब इब्न-ए-आदम को ऊपर जाते देखोगे जहाँ वह
पहले था? 63 अल्लाह का रूह ही ज़िन्दा करता है
जबकि जिस्मानी ताक़त का कोई फ़ाइदा नहीं होता।
जो बातें मैं ने तुम को बताई हैं वह रूह और ज़िन्दगी
हैं। 64 लेकिन तुम में से कुछ हैं जो ईमान नहीं रखते।"
(ईसा तो शुरू से ही जानता था कि कौन कौन ईमान
नहीं रखते और कौन मुझे दुश्मन के हवाले करेगा।)
65 फिर उस ने कहा, "इस लिए मैं ने तुम को बताया
कि सिर्फ़ वह शख़्स मेरे पास आ सकता है जिसे बाप
की तरफ़ से यह तौफ़ीक़ मिले।"

66 उस वक़्त से उस के बहुत से शागिर्द उलटे पाँओ
फिर गए और आइन्दा को उस के साथ न चले। 67 तब
ईसा ने बारह शागिर्दों से पूछा, “क्या तुम भी चले
जाना चाहते हो?”
68 शमाऊन पतरस ने जवाब दिया, “ख़ुदावन्द, हम
किस के पास जाएँ? अबदी ज़िन्दगी की बातें तो आप
ही के पास हैं। 69 और हम ने ईमान ला कर जान लिया
है कि आप अल्लाह के क़ुद्दूस हैं।”
70 जवाब में ईसा ने कहा, “क्या मैं ने तुम बारह
को नहीं चुना? तो भी तुम में से एक शख़्स शैतान
है।” 71 (वह शमाऊन इस्करियोती के बेटे यहूदाह की
तरफ़ इशारा कर रहा था जो बारह शागिर्दों में से एक
था और जिस ने बाद में उसे दुश्मन के हवाले कर
दिया।)

ईसा और उस के भाई

7 1 इस के बाद ईसा ने गलील के इलाक़े में इधर
उधर सफ़र किया। वह यहूदिया में फिरना नहीं
चाहता था क्यूँकि वहाँ के यहूदी उसे क़त्ल करने
का मौक़ा ढूँड रहे थे। 2 लेकिन जब यहूदी ईद बनाम
झोंपड़ियों की ईद क़रीब आई 3 तो उस के भाइयों
ने उस से कहा, “यह जगह छोड़ कर यहूदिया चला
जा ताकि तेरे पैरोकार भी वह मोजिज़े देख लें जो
तू करता है। 4 जो शख़्स चाहता है कि अवाम उसे
जाने वह पोशीदगी में काम नहीं करता। अगर तू इस
क़िस्म का मोजिज़ाना काम करता है तो अपने आप
को दुनिया पर ज़ाहिर कर।” 5 (असल में ईसा के भाई
भी उस पर ईमान नहीं रखते थे।)
6 ईसा ने उन्हें बताया, “अभी वह वक़्त नहीं आया
जो मेरे लिए मौज़ूँ है। लेकिन तुम जा सकते हो, तुम्हारे
लिए हर वक़्त मौज़ूँ है। 7 दुनिया तुम से दुश्मनी नहीं
रख सकती। लेकिन मुझ से वह दुश्मनी रखती है,
क्यूँकि मैं उस के बारे में यह गवाही देता हूँ कि उस
के काम बुरे हैं। 8 तुम ख़ुद ईद पर जाओ। मैं नहीं
जाऊँगा, क्यूँकि अभी वह वक़्त नहीं आया जो मेरे
लिए मौज़ूँ है।” 9 यह कह कर वह गलील में ठहरा
रहा।

ईसा झोंपड़ियों की ईद पर

10 लेकिन बाद में, जब उस के भाई ईद पर जा चुके
थे तो वह भी गया, अगरचे अलानिया नहीं बल्कि
ख़ुफ़िया तौर पर। 11 यहूदी ईद के मौक़े पर उसे तलाश
कर रहे थे। वह पूछते रहे, “वह आदमी कहाँ है?”
12 हुजूम में से कई लोग ईसा के बारे में बुड़बुड़ा
रहे थे। बाज़ ने कहा, “वह अच्छा बन्दा है।” लेकिन
दूसरों ने एतिराज़ किया, “नहीं, वह अवाम को
बहकाता है।” 13 लेकिन किसी ने भी उस के बारे
में खुल कर बात न की, क्यूँकि वह यहूदियों से डरते
थे।
14 ईद का आधा हिस्सा गुज़र चुका था जब ईसा
बैत-उल-मुक़द्दस में जा कर तालीम देने लगा। 15 उसे
सुन कर यहूदी हैरतज़दा हुए और कहा, “यह आदमी
किस तरह इतना इल्म रखता है हालाँकि इस ने कहीं
से भी तालीम हासिल नहीं की!”
16 ईसा ने जवाब दिया, “जो तालीम मैं देता हूँ वह
मेरी अपनी नहीं बल्कि उस की है जिस ने मुझे भेजा।
17 जो उस की मर्ज़ी पूरी करने के लिए तय्यार है वह
जान लेगा कि मेरी तालीम अल्लाह की तरफ़ से है
या कि मेरी अपनी तरफ़ से। 18 जो अपनी तरफ़ से
बोलता है वह अपनी ही इज़्ज़त चाहता है। लेकिन जो
अपने भेजने वाले की इज़्ज़त-ओ-जलाल बढ़ाने की
कोशिश करता है वह सच्चा है और उस में नारास्ती
नहीं है। 19 क्या मूसा ने तुम को शरीअत नहीं दी? तो
फिर तुम मुझे क़त्ल करने की कोशिश क्यूँ कर रहे
हो?”
20 हुजूम ने जवाब दिया, “तुम किसी बदरुह की
गिरिफ़्त में हो। कौन तुम्हें क़त्ल करने की कोशिश
कर रहा है?”
21 ईसा ने उन से कहा, “मैं ने सबत के दिन एक ही
मोजिज़ा किया और तुम सब हैरतज़दा हुए। 22 लेकिन
तुम भी सबत के दिन काम करते हो। तुम उस दिन

अपने बच्चों का ख़तना करवाते हो। और यह रस्म
मूसा की शरीअत के मुताबिक़ ही है, अगरचे यह मूसा
से नहीं बल्कि हमारे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और
याक़ूब से शुरू हुई। 23 क्यूँकि शरीअत के मुताबिक़
लाज़िम है कि बच्चे का ख़तना आठवें दिन करवाया
जाए, और अगर यह दिन सबत हो तो तुम फिर भी
अपने बच्चे का ख़तना करवाते हो ताकि शरीअत की
ख़िलाफ़वरज़ी न हो जाए। तो फिर तुम मुझ से क्यूँ
नाराज़ हो कि मैं ने सबत के दिन एक आदमी के पूरे
जिस्म को शिफ़ा दी? 24 ज़ाहिरी सूरत की बिना पर
फ़ैसला न करो बल्कि बातिनी हालत पहचान कर
मुन्सिफ़ाना फ़ैसला करो।"

क्या ईसा ही मसीह है?

25 उस वक़्त यरूशलम के कुछ रहने वाले कहने
लगे, "क्या यह वह आदमी नहीं है जिसे लोग क़त्ल
करने की कोशिश कर रहे हैं? 26 ताहम वह यहाँ
खुल कर बात कर रहा है और कोई भी उसे रोकने
की कोशिश नहीं कर रहा। क्या हमारे राहनुमाओं ने
हक़ीक़त में जान लिया है कि यह मसीह है? 27 लेकिन
जब मसीह आएगा तो किसी को भी मालूम नहीं होगा
कि वह कहाँ से है। यह आदमी फ़र्क़ है। हम तो जानते
हैं कि यह कहाँ से है।"

28 ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा था। अब
वह पुकार उठा, "तुम मुझे जानते हो और यह भी
जानते हो कि मैं कहाँ से हूँ। लेकिन मैं अपनी तरफ़
से नहीं आया। जिस ने मुझे भेजा है वह सच्चा है और
उसे तुम नहीं जानते। 29 लेकिन मैं उसे जानता हूँ,
क्यूँकि मैं उस की तरफ़ से हूँ और उस ने मुझे भेजा
है।"

30 तब उन्हों ने उसे गिरिफ़्तार करने की कोशिश
की। लेकिन कोई भी उस को हाथ न लगा सका,
क्यूँकि अभी उस का वक़्त नहीं आया था। 31 तो भी
हुजूम के कई लोग उस पर ईमान लाए, क्यूँकि उन्हों
ने कहा, "जब मसीह आएगा तो क्या वह इस आदमी
से ज़्यादा इलाही निशान दिखाएगा?"

पहरेदार उसे गिरिफ़्तार करने आते हैं

32 फ़रीसियों ने देखा कि हुजूम में इस क़िस्म की
बातें धीमी धीमी आवाज़ के साथ फैल रही हैं। चुनाँचे
उन्हों ने राहनुमा इमामों के साथ मिल कर बैत-उल-
मुक़द्दस के पहरेदार ईसा को गिरिफ़्तार करने के लिए
भेजे। 33 लेकिन ईसा ने कहा, "मैं सिर्फ़ थोड़ी देर और
तुम्हारे साथ रहूँगा, फिर मैं उस के पास वापस चला
जाऊँगा जिस ने मुझे भेजा है। 34 उस वक़्त तुम मुझे
ढूँडोगे, मगर नहीं पाओगे, क्यूँकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम
नहीं आ सकते।"

35 यहूदी आपस में कहने लगे, "यह कहाँ जाना
चाहता है जहाँ हम उसे नहीं पा सकेंगे? क्या वह
बैरून-ए-मुल्क जाना चाहता है, वहाँ जहाँ हमारे लोग
यूनानियों में बिखरी हालत में रहते हैं? क्या वह
यूनानियों को तालीम देना चाहता है? 36 मतलब क्या
है जब वह कहता है, 'तुम मुझे ढूँडोगे मगर नहीं
पाओगे' और 'जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते'।"

ज़िन्दगी के पानी की नहरें

37 ईद के आख़िरी दिन जो सब से अहम है ईसा
खड़ा हुआ और ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, "जो
प्यासा हो वह मेरे पास आए, 38 और जो मुझ पर
ईमान लाए वह पिए। कलाम-ए-मुक़द्दस के मुताबिक़
'उस के अन्दर से ज़िन्दगी के पानी की नहरें बह
निकलेंगी'।" 39 ('ज़िन्दगी के पानी' से वह रूह-उल-
क़ुद्स की तरफ़ इशारा कर रहा था जो उन को हासिल
होता है जो ईसा पर ईमान लाते हैं। लेकिन वह उस
वक़्त तक नाज़िल नहीं हुआ था, क्यूँकि ईसा अब
तक अपने जलाल को न पहुँचा था।)

सुनने वालों में नाइत्तिफ़ाक़ी

40 ईसा की यह बातें सुन कर हुजूम के कुछ लोगों
ने कहा, "यह आदमी वाक़ई वह नबी है जिस के
इन्तिज़ार में हम हैं।"

41 दूसरों ने कहा, "यह मसीह है।"

लेकिन बाज़ ने एतिराज़ किया, “मसीह गलील से
किस तरह आ सकता है! 42 पाक कलाम तो बयान
करता है कि मसीह दाऊद के ख़ानदान और बैत-
लहम से आएगा, उस गाँव से जहाँ दाऊद बादशाह
पैदा हुआ।” 43 यूँ ईसा की वजह से लोगों में फूट
पड़ गई। 44 कुछ तो उसे गिरिफ़्तार करना चाहते थे,
लेकिन कोई भी उस को हाथ न लगा सका।

यहूदी राहनुमा ईसा पर ईमान नहीं रखते

45 इतने में बैत-उल-मुक़द्दस के पहरेदार राहनुमा
इमामों और फ़रीसियों के पास वापस आए। वह ईसा
को ले कर नहीं आए थे, इस लिए राहनुमाओं ने पूछा,
“तुम उसे क्यूँ नहीं लाए?”
46 पहरेदारों ने जवाब दिया, “किसी ने कभी इस
आदमी की तरह बात नहीं की।”
47 फ़रीसियों ने तन्ज़न कहा, “क्या तुम को
भी बहका दिया गया है? 48 क्या राहनुमाओं या
फ़रीसियों में कोई है जो उस पर ईमान लाया हो?
कोई भी नहीं! 49 लेकिन शरीअत से नावाक़िफ़ यह
हुजूम लानती है!”
50 इन राहनुमाओं में नीकुदेमुस भी शामिल था जो
कुछ देर पहले ईसा के पास गया था। अब वह बोल
उठा, 51 “क्या हमारी शरीअत किसी पर यूँ फ़ैसला
देने की इजाज़त देती है? नहीं, लाज़िम है कि उसे
पहले अदालत में पेश किया जाए ताकि मालूम हो
जाए कि उस से क्या कुछ सरज़द हुआ है।”
52 दूसरों ने एतिराज़ किया, “क्या तुम भी गलील के
रहने वाले हो? कलाम-ए-मुक़द्दस में तफ़्तीश करके
ख़ुद देख लो कि गलील से कोई नबी नहीं आएगा।”
53 यह कह कर हर एक अपने अपने घर चला गया।

ज़िनाकार औरत पर पहला पत्थर

8 1 ईसा ख़ुद ज़ैतून के पहाड़ पर चला गया।
2 अगले दिन पौ फटते वक़्त वह दुबारा बैत-
उल-मुक़द्दस में आया। वहाँ सब लोग उस के गिर्द
जमा हुए और वह बैठ कर उन्हें तालीम देने लगा।
3 इस दौरान शरीअत के उलमा और फ़रीसी एक
औरत को ले कर आए जिसे ज़िना करते वक़्त पकड़ा
गया था। उसे बीच में खड़ा करके 4 उन्हों ने ईसा
से कहा, “उस्ताद, इस औरत को ज़िना करते वक़्त
पकड़ा गया है। 5 मूसा ने शरीअत में हमें हुक्म दिया
है कि ऐसे लोगों को संगसार करना है। आप क्या
कहते हैं?” 6 इस सवाल से वह उसे फंसाना चाहते
थे ताकि उस पर इल्ज़ाम लगाने का कोई बहाना उन
के हाथ आ जाए। लेकिन ईसा झुक गया और अपनी
उंगली से ज़मीन पर लिखने लगा।
7 जब वह उस से जवाब का तक़ाज़ा करते रहे तो
वह खड़ा हो कर उन से मुख़ातिब हुआ, “तुम में से
जिस ने कभी गुनाह नहीं किया, वह पहला पत्थर
मारे।” 8 फिर वह दुबारा झुक कर ज़मीन पर लिखने
लगा। 9 यह जवाब सुन कर इल्ज़ाम लगाने वाले यके
बाद दीगरे वहाँ से खिसक गए, पहले बुज़ुर्ग, फिर
बाक़ी सब। आख़िरकार ईसा और दरमियान में खड़ी
वह औरत अकेले रह गए। 10 फिर उस ने खड़े हो कर
कहा, “ऐ औरत, वह सब कहाँ गए? क्या किसी ने
तुझ पर फ़त्वा नहीं लगाया?”
11 औरत ने जवाब दिया, “नहीं ख़ुदावन्द।”
ईसा ने कहा, “मैं भी तुझ पर फ़त्वा नहीं लगाता।
जा, आइन्दा गुनाह न करना।”

ईसा दुनिया का नूर है

12 फिर ईसा दुबारा लोगों से मुख़ातिब हुआ,
“दुनिया का नूर मैं हूँ। जो मेरी पैरवी करे वह तारीकी
में नहीं चलेगा, क्यूँकि उसे ज़िन्दगी का नूर हासिल
होगा।”
13 फ़रीसियों ने एतिराज़ किया, “आप तो अपने बारे
में गवाही दे रहे हैं। ऐसी गवाही मोतबर नहीं होती।”
14 ईसा ने जवाब दिया, “अगरचे मैं अपने बारे में
ही गवाही दे रहा हूँ तो भी वह मोतबर है। क्यूँकि मैं
जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ को जा
रहा हूँ। लेकिन तुम को तो मालूम नहीं कि मैं कहाँ
से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। 15 तुम इन्सानी

सोच के मुताबिक़ लोगों का फ़ैसला करते हो, लेकिन
मैं किसी का भी फ़ैसला नहीं करता। 16 और अगर
फ़ैसला करूँ भी तो मेरा फ़ैसला दुरुस्त है, क्यूँकि मैं
अकेला नहीं हूँ। बाप जिस ने मुझे भेजा है मेरे साथ है।
17 तुम्हारी शरीअत में लिखा है कि दो आदमियों की
गवाही मोतबर है। 18 मैं ख़ुद अपने बारे में गवाही देता
हूँ जबकि दूसरा गवाह बाप है जिस ने मुझे भेजा।"
19 उन्हों ने पूछा, "आप का बाप कहाँ है?" ईसा
ने जवाब दिया, "तुम न मुझे जानते हो, न मेरे बाप
को। अगर तुम मुझे जानते तो फिर मेरे बाप को भी
जानते।"
20 ईसा ने यह बातें उस वक़्त कीं जब वह उस जगह
के क़रीब तालीम दे रहा था जहाँ लोग अपना हदिया
डालते थे। लेकिन किसी ने उसे गिरिफ़्तार न किया
क्यूँकि अभी उस का वक़्त नहीं आया था।

जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम वहाँ नहीं जा सकते

21 एक और बार ईसा उन से मुख़ातिब हुआ, "मैं
जा रहा हूँ और तुम मुझे ढूँड ढूँड कर अपने गुनाहों में
मर जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच
सकते।"
22 यहूदियों ने पूछा, "क्या वह ख़ुदकुशी करना
चाहता है? क्या वह इसी वजह से कहता है, 'जहाँ
मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते'?"
23 ईसा ने अपनी बात जारी रखी, "तुम नीचे से हो
जबकि मैं ऊपर से हूँ। तुम इस दुनिया के हो जबकि
मैं इस दुनिया का नहीं हूँ। 24 मैं तुम को बता चुका
हूँ कि तुम अपने गुनाहों में मर जाओगे। क्यूँकि अगर
तुम ईमान नहीं लाते कि मैं वही हूँ तो तुम यक़ीनन
अपने गुनाहों में मर जाओगे।"
25 उन्हों ने सवाल किया, "आप कौन हैं?"
ईसा ने जवाब दिया, "मैं वही हूँ जो मैं शुरू से ही
बताता आया हूँ। 26 मैं तुम्हारे बारे में बहुत कुछ कह
सकता हूँ। बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन की बिना पर
मैं तुम को मुजरिम ठहरा सकता हूँ। लेकिन जिस ने
मुझे भेजा है वही सच्चा और मोतबर है और मैं दुनिया
को सिर्फ़ वह कुछ सुनाता हूँ जो मैं ने उस से सुना
है।"
27 सुनने वाले न समझे कि ईसा बाप का ज़िक्र कर
रहा है। 28 चुनाँचे उस ने कहा, "जब तुम इब्न-ए-
आदम को ऊँचे पर चढ़ाओगे तब ही तुम जान लोगे
कि मैं वही हूँ, कि मैं अपनी तरफ़ से कुछ नहीं करता
बल्कि सिर्फ़ वही सुनाता हूँ जो बाप ने मुझे सिखाया
है। 29 और जिस ने मुझे भेजा है वह मेरे साथ है। उस
ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्यूँकि मैं हर वक़्त वही
कुछ करता हूँ जो उसे पसन्द आता है।"
30 यह बातें सुन कर बहुत से लोग उस पर ईमान
लाए।

सच्चाई तुम को आज़ाद करेगी

31 जो यहूदी उस का यक़ीन करते थे ईसा अब उन
से हमकलाम हुआ, "अगर तुम मेरी तालीम के ताबे
रहोगे तब ही तुम मेरे सच्चे शागिर्द होगे। 32 फिर तुम
सच्चाई को जान लोगे और सच्चाई तुम को आज़ाद कर
देगी।"
33 उन्हों ने एतिराज़ किया, "हम तो इब्राहीम की
औलाद हैं, हम कभी भी किसी के ग़ुलाम नहीं रहे।
फिर आप किस तरह कह सकते हैं कि हम आज़ाद
हो जाएंगे?"
34 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुम को सच बताता
हूँ कि जो भी गुनाह करता है वह गुनाह का ग़ुलाम
है। 35 ग़ुलाम तो आरिज़ी तौर पर घर में रहता है,
लेकिन मालिक का बेटा हमेशा तक। 36 इस लिए
अगर फ़र्ज़न्द तुम को आज़ाद करे तो तुम हक़ीक़तन
आज़ाद होगे। 37 मुझे मालूम है कि तुम इब्राहीम की
औलाद हो। लेकिन तुम मुझे क़त्ल करने के दरपै हो,
क्यूँकि तुम्हारे अन्दर मेरे पैग़ाम के लिए गुन्जाइश नहीं
है। 38 मैं तुम को वही कुछ बताता हूँ जो मैं ने बाप
के हाँ देखा है, जबकि तुम वही कुछ सुनाते हो जो
तुम ने अपने बाप से सुना है।"
39 उन्हों ने कहा, "हमारा बाप इब्राहीम है।" ईसा
ने जवाब दिया, "अगर तुम इब्राहीम की औलाद होते

तो तुम उस के नमूने पर चलते। 40 इस के बजाय तुम
मुझे क़त्ल करने की तलाश में हो, इस लिए कि मैं ने
तुम को वही सच्चाई सुनाई है जो मैं ने अल्लाह के हुज़ूर
सुनी है। इब्राहीम ने कभी भी इस क़िस्म का काम
न किया। 41 नहीं, तुम अपने बाप का काम कर रहे
हो।"

उन्हों ने एतिराज़ किया, "हम हरामज़ादे नहीं हैं।
अल्लाह ही हमारा वाहिद बाप है।"

42 ईसा ने उन से कहा, "अगर अल्लाह तुम्हारा बाप
होता तो तुम मुझ से मुहब्बत रखते, क्यूँकि मैं अल्लाह
में से निकल आया हूँ। मैं अपनी तरफ़ से नहीं आया
बल्कि उसी ने मुझे भेजा है। 43 तुम मेरी ज़बान क्यूँ
नहीं समझते? इस लिए कि तुम मेरी बात सुन नहीं
सकते। 44 तुम अपने बाप इब्लीस से हो और अपने
बाप की ख़्वाहिशों पर अमल करने के ख़्वाहाँ रहते
हो। वह शुरू ही से क़ातिल है और सच्चाई पर क़ाइम
न रहा, क्यूँकि उस में सच्चाई है नहीं। जब वह झूट
बोलता है तो यह फ़ित्री बात है, क्यूँकि वह झूट बोलने
वाला और झूट का बाप है। 45 लेकिन मैं सच्ची बातें
सुनाता हूँ और यही वजह है कि तुम को मुझ पर
यक़ीन नहीं आता। 46 क्या तुम में से कोई साबित
कर सकता है कि मुझ से कोई गुनाह सरज़द हुआ
है? मैं तो तुम को हक़ीक़त बता रहा हूँ। फिर तुम को
मुझ पर यक़ीन क्यूँ नहीं आता? 47 जो अल्लाह से है
वह अल्लाह की बातें सुनता है। तुम यह इस लिए नहीं
सुनते कि तुम अल्लाह से नहीं हो।"

ईसा और इब्राहीम

48 यहूदियों ने जवाब दिया, "क्या हम ने ठीक नहीं
कहा कि तुम सामरी हो और किसी बदरुह के क़ब्ज़े
में हो?"

49 ईसा ने कहा, "मैं बदरुह के क़ब्ज़े में नहीं हूँ
बल्कि अपने बाप की इज़्ज़त करता हूँ जबकि तुम
मेरी बेइज़्ज़ती करते हो। 50 मैं ख़ुद अपनी इज़्ज़त का
ख़्वाहाँ नहीं हूँ। लेकिन एक है जो मेरी इज़्ज़त और
जलाल का ख़याल रखता और इन्साफ़ करता है।
51 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो भी मेरे कलाम
पर अमल करता रहे वह मौत को कभी नहीं देखेगा।"

52 यह सुन कर लोगों ने कहा, "अब हमें पता चल
गया है कि तुम किसी बदरुह के क़ब्ज़े में हो। इब्राहीम
और नबी सब इन्तिक़ाल कर गए जबकि तुम दावा
करते हो, 'जो भी मेरे कलाम पर अमल करता रहे वह
मौत का मज़ा कभी नहीं चखेगा।' 53 क्या तुम हमारे
बाप इब्राहीम से बड़े हो? वह मर गया, और नबी भी
मर गए। तुम अपने आप को क्या समझते हो?"

54 ईसा ने जवाब दिया, "अगर में अपनी इज़्ज़त
और जलाल बढ़ाता तो मेरा जलाल बातिल होता।
लेकिन मेरा बाप ही मेरी इज़्ज़त-ओ-जलाल बढ़ाता
है, वही जिस के बारे में तुम दावा करते हो कि 'वह
हमारा ख़ुदा है।' 55 लेकिन हक़ीक़त में तुम ने उसे
नहीं जाना जबकि मैं उसे जानता हूँ। अगर मैं कहता
कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं तुम्हारी तरह झूटा होता।
लेकिन मैं उसे जानता और उस के कलाम पर अमल
करता हूँ। 56 तुम्हारे बाप इब्राहीम ने ख़ुशी मनाई जब
उसे मालूम हुआ कि वह मेरी आमद का दिन देखेगा,
और वह उसे देख कर मसरूर हुआ।"

57 यहूदियों ने एतिराज़ किया, "तुम्हारी उम्र तो अभी
पचास साल भी नहीं, तो फिर तुम किस तरह कह
सकते हो कि तुम ने इब्राहीम को देखा है?"

58 ईसा ने उन से कहा, "मैं तुम को सच बताता हूँ,
इब्राहीम की पैदाइश से पेशतर 'मैं हूँ'।"

59 इस पर लोग उसे संगसार करने के लिए पत्थर
उठाने लगे। लेकिन ईसा ग़ाइब हो कर बैत-उल-
मुक़द्दस से निकल गया।

अंधे की शिफ़ा

9 1 चलते चलते ईसा ने एक आदमी को देखा जो
पैदाइश का अंधा था। 2 उस के शागिर्दों ने उस
से पूछा, "उस्ताद, यह आदमी अंधा क्यूँ पैदा हुआ?
क्या इस का कोई गुनाह है या इस के वालिदैन का?"

3 ईसा ने जवाब दिया, "न इस का कोई गुनाह है
और न इस के वालिदैन का। यह इस लिए हुआ कि

इस की ज़िन्दगी में अल्लाह का काम ज़ाहिर हो जाए।
4 अभी दिन है। लाज़िम है कि हम जितनी देर तक
दिन है उस का काम करते रहें जिस ने मुझे भेजा है।
क्यूँकि रात आने वाली है, उस वक़्त कोई काम नहीं
कर सकेगा। 5 लेकिन जितनी देर तक मैं दुनिया में हूँ
उतनी देर तक मैं दुनिया का नूर हूँ।"

6 यह कह कर उस ने ज़मीन पर थूक कर मिट्टी सानी
और उस की आँखों पर लगा दी। 7 उस ने उस से
कहा, "जा, शिलोख़ के हौज़ में नहा ले।" (शिलोख़
का मतलब 'भेजा हुआ' है।) अंधे ने जा कर नहा
लिया। जब वापस आया तो वह देख सकता था।

8 उस के हमसाय और वह जिन्हों ने पहले उसे भीक
माँगते देखा था पूछने लगे, "क्या यह वही नहीं जो
बैठा भीक माँगा करता था?"

9 बाज़ ने कहा, "हाँ, वही है।"

औरों ने इन्कार किया, "नहीं, यह सिर्फ़ उस का
हमशक्ल है।"

लेकिन आदमी ने ख़ुद इसरार किया, "मैं वही हूँ।"

10 उन्हों ने उस से सवाल किया, "तेरी आँखें किस
तरह बहाल हुईं?"

11 उस ने जवाब दिया, "वह आदमी जो ईसा
कहलाता है उस ने मिट्टी सान कर मेरी आँखों पर
लगा दी। फिर उस ने मुझे कहा, 'शिलोख़ के हौज़
पर जा और नहा ले।' मैं वहाँ गया और नहाते ही मेरी
आँखें बहाल हो गईं।"

12 उन्हों ने पूछा, "वह कहाँ है?"

उस ने जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम।"

फ़रीसी शिफ़ा की तफ़्तीश करते हैं

13 तब वह शिफ़ायाब अंधे को फ़रीसियों के पास
ले गए। 14 जिस दिन ईसा ने मिट्टी सान कर उस की
आँखों को बहाल किया था वह सबत का दिन था।
15 इस लिए फ़रीसियों ने भी उस से पूछगछ की कि
उसे किस तरह बसारत मिल गई। आदमी ने जवाब
दिया, "उस ने मेरी आँखों पर मिट्टी लगा दी, फिर मैं
ने नहा लिया और अब देख सकता हूँ।"

16 फ़रीसियों में से बाज़ ने कहा, "यह शख़्स अल्लाह
की तरफ़ से नहीं है, क्यूँकि सबत के दिन काम करता
है।"

दूसरों ने एतिराज़ किया, "गुनाहगार इस क़िस्म के
इलाही निशान किस तरह दिखा सकता है?" यूँ उन
में फूट पड़ गई।

17 फिर वह दुबारा उस आदमी से मुख़ातिब हुए जो
पहले अंधा था, "तू ख़ुद इस के बारे में क्या कहता
है? उस ने तो तेरी ही आँखों को बहाल किया है।"

उस ने जवाब दिया, "वह नबी है।"

18 यहूदियों को यक़ीन नहीं आ रहा था कि वह
वाक़ई अंधा था और फिर बहाल हो गया है। इस
लिए उन्हों ने उस के वालिदैन को बुलाया। 19 उन्हों
ने उन से पूछा, "क्या यह तुम्हारा बेटा है, वही जिस
के बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा पैदा हुआ था?
अब यह किस तरह देख सकता है?"

20 उस के वालिदैन ने जवाब दिया, "हम जानते हैं
कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते वक़्त
अंधा था। 21 लेकिन हमें मालूम नहीं कि अब यह
किस तरह देख सकता है या कि किस ने इस की
आँखों को बहाल किया है। इस से ख़ुद पता करें, यह
बालिग़ है। यह ख़ुद अपने बारे में बता सकता है।"
22 उस के वालिदैन ने यह इस लिए कहा कि वह
यहूदियों से डरते थे। क्यूँकि वह फ़ैसला कर चुके
थे कि जो भी ईसा को मसीह क़रार दे उसे यहूदी
जमाअत से निकाल दिया जाए। 23 यही वजह थी कि
उस के वालिदैन ने कहा था, "यह बालिग़ है, इस से
ख़ुद पूछ लें।"

24 एक बार फिर उन्हों ने शिफ़ायाब अंधे को
बुलाया, "अल्लाह को जलाल दे, हम तो जानते हैं कि
यह आदमी गुनाहगार है।"

25 आदमी ने जवाब दिया, "मुझे क्या पता है कि
वह गुनाहगार है या नहीं, लेकिन एक बात मैं जानता
हूँ, पहले मैं अंधा था, और अब मैं देख सकता हूँ!"

26 फिर उन्हों ने उस से सवाल किया, “उस ने तेरे
साथ क्या किया? उस ने किस तरह तेरी आँखों को
बहाल कर दिया?”
27 उस ने जवाब दिया, “मैं पहले भी आप को बता
चुका हूँ और आप ने सुना नहीं। क्या आप भी उस
के शागिर्द बनना चाहते हैं?”
28 इस पर उन्हों ने उसे बुरा-भला कहा, “तू ही उस
का शागिर्द है, हम तो मूसा के शागिर्द हैं। 29 हम तो
जानते हैं कि अल्लाह ने मूसा से बात की है, लेकिन
इस के बारे में हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ
से आया है।”
30 आदमी ने जवाब दिया, “अजीब बात है, उस
ने मेरी आँखों को शिफ़ा दी है और फिर भी आप
नहीं जानते कि वह कहाँ से है। 31 हम जानते हैं कि
अल्लाह गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो उस की
सुनता है जो उस का ख़ौफ़ मानता और उस की मर्ज़ी
के मुताबिक़ चलता है। 32 इब्तिदा ही से यह बात
सुनने में नहीं आई कि किसी ने पैदाइशी अंधे की
आँखों को बहाल कर दिया हो। 33 अगर यह आदमी
अल्लाह की तरफ़ से न होता तो कुछ न कर सकता।”
34 जवाब में उन्हों ने उसे बताया, “तू जो
गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ है क्या तू हमारा
उस्ताद बनना चाहता है?” यह कह कर उन्हों ने उसे
जमाअत में से निकाल दिया।

रुहानी अंधापन

35 जब ईसा को पता चला कि उसे निकाल दिया
गया है तो वह उस को मिला और पूछा, “क्या तू
इब्न-ए-आदम पर ईमान रखता है?”
36 उस ने कहा, “ख़ुदावन्द, वह कौन है? मुझे
बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।”
37 ईसा ने जवाब दिया, “तू ने उसे देख लिया है
बल्कि वह तुझ से बात कर रहा है।”
38 उस ने कहा, “ख़ुदावन्द, मैं ईमान रखता हूँ” और
उसे सिज्दा किया।
39 ईसा ने कहा, “मैं अदालत करने के लिए इस
दुनिया में आया हूँ, इस लिए कि अंधे देखें और देखने
वाले अंधे हो जाएँ।”
40 कुछ फ़रीसी जो साथ खड़े थे यह कुछ सुन कर
पूछने लगे, “अच्छा, हम भी अंधे हैं?”
41 ईसा ने उन से कहा, “अगर तुम अंधे होते तो
तुम क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब चूँकि तुम दावा
करते हो कि हम देख सकते हैं इस लिए तुम्हारा गुनाह
क़ाइम रहता है।

चरवाहे की तम्सील

10 1 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो दरवाज़े
से भेड़ों के बाड़े में दाख़िल नहीं होता
बल्कि फलाँग कर अन्दर घुस आता है वह चोर और
डाकू है। 2 लेकिन जो दरवाज़े से दाख़िल होता है
वह भेड़ों का चरवाहा है। 3 चौकीदार उस के लिए
दरवाज़ा खोल देता है और भेड़ें उस की आवाज़
सुनती हैं। वह अपनी हर एक भेड़ का नाम ले कर
उन्हें बुलाता और बाहर ले जाता है। 4 अपने पूरे गल्ले
को बाहर निकालने के बाद वह उन के आगे आगे
चलने लगता है और भेड़ें उस के पीछे पीछे चल
पड़ती हैं, क्यूँकि वह उस की आवाज़ पहचानती हैं।
5 लेकिन वह किसी अजनबी के पीछे नहीं चलेंगी
बल्कि उस से भाग जाएँगी, क्यूँकि वह उस की
आवाज़ नहीं पहचानतीं।”
6 ईसा ने उन्हें यह तम्सील पेश की, लेकिन वह न
समझे कि वह उन्हें क्या बताना चाहता है।

अच्छा चरवाहा

7 इस लिए ईसा दुबारा इस पर बात करने लगा, “मैं
तुम को सच बताता हूँ कि भेड़ों के लिए दरवाज़ा मैं
हूँ। 8 जितने भी मुझ से पहले आए वह चोर और डाकू
हैं। लेकिन भेड़ों ने उन की न सुनी। 9 मैं ही दरवाज़ा हूँ।
जो भी मेरे ज़रीए अन्दर आए उसे नजात मिलेगी। वह
आता जाता और हरी चरागाहें पाता रहेगा। 10 चोर तो
सिर्फ़ चोरी करने, ज़बह करने और तबाह करने आता

है। लेकिन मैं इस लिए आया हूँ कि वह ज़िन्दगी पाएँ,
बल्कि कस्रत की ज़िन्दगी पाएँ।
11 अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी
भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। 12 मज़दूर चरवाहे
का किरदार अदा नहीं करता, क्यूँकि भेड़ें उस की
अपनी नहीं होतीं। इस लिए जूँ ही कोई भेड़िया आता
है तो मज़दूर उसे देखते ही भेड़ों को छोड़ कर भाग
जाता है। नतीजे में भेड़िया कुछ भेड़ें पकड़ लेता और
बाक़ियों को मुन्तशिर कर देता है। 13 वजह यह है
कि वह मज़दूर ही है और भेड़ों की फ़िक्र नहीं करता।
14 अच्छा चरवाहा मैं हूँ। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ
और वह मुझे जानती हैं, 15 बिलकुल उसी तरह जिस
तरह बाप मुझे जानता है और मैं बाप को जानता हूँ।
और मैं भेड़ों के लिए अपनी जान देता हूँ। 16 मेरी और
भी भेड़ें हैं जो इस बाड़े में नहीं हैं। लाज़िम है कि उन्हें
भी ले आऊँ। वह भी मेरी आवाज़ सुनेंगी। फिर एक
ही गल्ला और एक ही गल्लाबान होगा।
17 मेरा बाप मुझे इस लिए प्यार करता है कि मैं
अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर ले लूँ। 18 कोई
मेरी जान मुझ से छीन नहीं सकता बल्कि मैं उसे
अपनी मर्ज़ी से दे देता हूँ। मुझे उसे देने का इख़तियार
है और उसे वापस लेने का भी। यह हुक्म मुझे अपने
बाप की तरफ़ से मिला है।"
19 इन बातों पर यहूदियों में दुबारा फूट पड़ गई।
20 बहुतों ने कहा, "यह बदरुह की गिरिफ़्त में है, यह
दीवाना है। इस की क्यूँ सुनें!"
21 लेकिन औरों ने कहा, "यह ऐसी बातें नहीं हैं जो
बदरुह-गिरिफ़्ता शख़्स कर सके। क्या बदरुहें अंधों
की आँखें बहाल कर सकती हैं?"

ईसा को रद्द किया जाता है

22 सर्दियों का मौसम था और ईसा बैत-उल-मुक़द्दस
की मख़्सूसियत की ईद बनाम हनूका के दौरान
यरूशलम में था। 23 वह बैत-उल-मुक़द्दस के उस
बरामदे में फिर रहा था जिस का नाम सुलेमान का
बरामदा था। 24 यहूदी उसे घेर कर कहने लगे, "आप
हमें कब तक उलझन में रखेंगे? अगर आप मसीह हैं
तो हमें साफ़ साफ़ बता दें।"
25 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुम को बता चुका हूँ,
लेकिन तुम को यक़ीन नहीं आया। जो काम मैं अपने
बाप के नाम से करता हूँ वह मेरे गवाह हैं। 26 लेकिन
तुम ईमान नहीं रखते क्यूँकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो।
27 मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता
हूँ और वह मेरे पीछे चलती हैं। 28 मैं उन्हें अबदी
ज़िन्दगी देता हूँ, इस लिए वह कभी हलाक नहीं
होंगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा, 29 क्यूँकि
मेरे बाप ने उन्हें मेरे सपुर्द किया है और वही सब से
बड़ा है। कोई उन्हें बाप के हाथ से छीन नहीं सकता।
30 मैं और बाप एक हैं।"
31 यह सुन कर यहूदी दुबारा पत्थर उठाने लगे
ताकि ईसा को संगसार करें। 32 उस ने उन से कहा,
"मैं ने तुम्हें बाप की तरफ़ से कई इलाही निशान
दिखाए हैं। तुम मुझे इन में से किस निशान की वजह
से संगसार कर रहे हो?"
33 यहूदियों ने जवाब दिया, "हम तुम को किसी
अच्छे काम की वजह से संगसार नहीं कर रहे बल्कि
कुफ़्र बकने की वजह से। तुम जो सिर्फ़ इन्सान हो
अल्लाह होने का दावा करते हो।"
34 ईसा ने कहा, "क्या यह तुम्हारी शरीअत में नहीं
लिखा है कि अल्लाह ने फ़रमाया, 'तुम ख़ुदा हो'?
35 उन्हें 'ख़ुदा' कहा गया जिन तक अल्लाह का यह
पैग़ाम पहुँचाया गया। और हम जानते हैं कि कलाम-
ए-मुक़द्दस को मन्सूख़ नहीं किया जा सकता। 36 तो
फिर तुम कुफ़्र बकने की बात क्यूँ करते हो जब मैं
कहता हूँ कि मैं अल्लाह का फ़र्ज़न्द हूँ? आख़िर बाप
ने ख़ुद मुझे मख़्सूस करके दुनिया में भेजा है। 37 अगर
मैं अपने बाप के काम न करूँ तो मेरी बात न मानो।
38 लेकिन अगर उस के काम करूँ तो बेशक मेरी बात
न मानो, लेकिन कम अज़ कम उन कामों की गवाही
तो मानो। फिर तुम जान लोगे और समझ जाओगे कि
बाप मुझ में है और मैं बाप में हूँ।"

39 एक बार फिर उन्हों ने उसे गिरिफ़्तार करने की
कोशिश की, लेकिन वह उन के हाथ से निकल गया।
40 फिर ईसा दुबारा दरया-ए-यर्दन के पार उस जगह
चला गया जहाँ यहया शुरू में बपतिस्मा दिया करता
था। वहाँ वह कुछ देर ठहरा। 41 बहुत से लोग उस
के पास आते रहे। उन्हों ने कहा, "यहया ने कभी
कोई इलाही निशान न दिखाया, लेकिन जो कुछ उस
ने इस के बारे में बयान किया, वह बिलकुल सहीह
निकला।" 42 और वहाँ बहुत से लोग ईसा पर ईमान
लाए।

लाज़र की मौत

11 1 उन दिनों में एक आदमी बीमार पड़ गया
जिस का नाम लाज़र था। वह अपनी बहनों
मरियम और मर्था के साथ बैत-अनियाह में रहता था।
2 यह वही मरियम थी जिस ने बाद में ख़ुदावन्द पर
ख़ुश्बू उंडेल कर उस के पाँओ अपने बालों से ख़ुश्क
किए थे। उसी का भाई लाज़र बीमार था। 3 चुनाँचे
बहनों ने ईसा को इत्तिला दी, "ख़ुदावन्द, जिसे आप
प्यार करते हैं वह बीमार है।"
4 जब ईसा को यह ख़बर मिली तो उस ने कहा,
"इस बीमारी का अन्जाम मौत नहीं है, बल्कि यह
अल्लाह के जलाल के वास्ते हुआ है, ताकि इस से
अल्लाह के फ़र्ज़न्द को जलाल मिले।"
5 ईसा मर्था, मरियम और लाज़र से मुहब्बत रखता
था। 6 तो भी वह लाज़र के बारे में इत्तिला मिलने के
बाद दो दिन और वहीं ठहरा। 7 फिर उस ने अपने
शागिर्दों से बात की, "आओ, हम दुबारा यहूदिया
चले जाएँ।"
8 शागिर्दों ने एतिराज़ किया, "उस्ताद, अभी अभी
वहाँ के यहूदी आप को संगसार करने की कोशिश
कर रहे थे, फिर भी आप वापस जाना चाहते हैं?"
9 ईसा ने जवाब दिया, "क्या दिन में रौशनी के बारह
घंटे नहीं होते? जो शख़्स दिन के वक़्त चलता फिरता
है वह किसी भी चीज़ से नहीं टकराएगा, क्यूँकि
वह इस दुनिया की रौशनी के ज़रीए देख सकता है।
10 लेकिन जो रात के वक़्त चलता है वह चीज़ों से
टकरा जाता है, क्यूँकि उस के पास रौशनी नहीं है।"
11 फिर उस ने कहा, "हमारा दोस्त लाज़र सो गया
है। लेकिन मैं जा कर उसे जगा दूँगा।"
12 शागिर्दों ने कहा, "ख़ुदावन्द, अगर वह सो रहा
है तो वह बच जाएगा।"
13 उन का ख़याल था कि ईसा लाज़र की फ़ित्री नींद
का ज़िक्र कर रहा है जबकि हक़ीक़त में वह उस की
मौत की तरफ़ इशारा कर रहा था। 14 इस लिए उस
ने उन्हें साफ़ बता दिया, "लाज़र वफ़ात पा गया है।
15 और तुम्हारी ख़ातिर मैं ख़ुश हूँ कि मैं उस के मरते
वक़्त वहाँ नहीं था, क्यूँकि अब तुम ईमान लाओगे।
आओ, हम उस के पास जाएँ।"
16 तोमा ने जिस का लक़ब जुड़वाँ था अपने साथी
शागिर्दों से कहा, "चलो, हम भी वहाँ जा कर उस के
साथ मर जाएँ।"

ईसा क़ियामत और ज़िन्दगी है

17 वहाँ पहुँच कर ईसा को मालूम हुआ कि लाज़र
को क़ब्र में रखे चार दिन हो गए हैं। 18 बैत-अनियाह
का यरूशलम से फ़ासिला तीन किलोमीटर से कम
था, 19 और बहुत से यहूदी मर्था और मरियम को उन
के भाई के बारे में तसल्ली देने के लिए आए हुए थे।
20 यह सुन कर कि ईसा आ रहा है मर्था उसे मिलने
गई। लेकिन मरियम घर में बैठी रही। 21 मर्था ने कहा,
"ख़ुदावन्द, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न
मरता। 22 लेकिन मैं जानती हूँ कि अब भी अल्लाह
आप को जो भी माँगेंगे देगा।"
23 ईसा ने उसे बताया, "तेरा भाई जी उठेगा।"
24 मर्था ने जवाब दिया, "जी, मुझे मालूम है कि वह
क़ियामत के दिन जी उठेगा, जब सब जी उठेंगे।"
25 ईसा ने उसे बताया, "क़ियामत और ज़िन्दगी तो
मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िन्दा रहेगा, चाहे
वह मर भी जाए। 26 और जो ज़िन्दा है और मुझ पर
ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा। मर्था, क्या तुझे
इस बात का यक़ीन है?"

27 मर्था ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावन्द, मैं ईमान
रखती हूँ कि आप ख़ुदा के फ़र्ज़न्द मसीह हैं, जिसे
दुनिया में आना था।”

ईसा रोता है

28 यह कह कर मर्था वापस चली गई और चुपके
से मरियम को बुलाया, “उस्ताद आ गए हैं, वह तुझे
बुला रहे हैं।” 29 यह सुनते ही मरियम उठ कर ईसा
के पास गई। 30 वह अभी गाँव के बाहर उसी जगह
ठहरा था जहाँ उस की मुलाक़ात मर्था से हुई थी।
31 जो यहूदी घर में मरियम के साथ बैठे उसे तसल्ली
दे रहे थे, जब उन्हों ने देखा कि वह जल्दी से उठ कर
निकल गई है तो वह उस के पीछे हो लिए। क्यूँकि
वह समझ रहे थे कि वह मातम करने के लिए अपने
भाई की क़ब्र पर जा रही है।
32 मरियम ईसा के पास पहुँच गई। उसे देखते ही
वह उस के पाँओ में गिर गई और कहने लगी,
“ख़ुदावन्द, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न
मरता।”
33 जब ईसा ने मरियम और उस के साथियों को
रोते देखा तो उसे बड़ी रंजिश हुई। मुज़्तरिब हालत में
34 उस ने पूछा, “तुम ने उसे कहाँ रखा है?”
उन्हों ने जवाब दिया, “आएँ ख़ुदावन्द, और देख
लें।”
35 ईसा रो पड़ा। 36 यहूदियों ने कहा, “देखो, वह
उसे कितना अज़ीज़ था।”
37 लेकिन उन में से बाज़ ने कहा, “इस आदमी ने
अंधे को शिफ़ा दी। क्या यह लाज़र को मरने से नहीं
बचा सकता था?”

लाज़र को ज़िन्दा कर दिया जाता है

38 फिर ईसा दुबारा निहायत रंजीदा हो कर क़ब्र पर
आया। क़ब्र एक ग़ार थी जिस के मुँह पर पत्थर रखा
गया था। 39 ईसा ने कहा, “पत्थर को हटा दो।”
लेकिन मरहूम की बहन मर्था ने एतिराज़ किया,
“ख़ुदावन्द, बदबू आएगी, क्यूँकि उसे यहाँ पड़े चार
दिन हो गए हैं।”
40 ईसा ने उस से कहा, “क्या मैं ने तुझे नहीं
बताया कि अगर तू ईमान रखे तो अल्लाह का जलाल
देखेगी?” 41 चुनाँचे उन्हों ने पत्थर को हटा दिया।
फिर ईसा ने अपनी नज़र उठा कर कहा, “ऐ बाप, मैं
तेरा शुक्र करता हूँ कि तू ने मेरी सुन ली है। 42 मैं तो
जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी सुनता है। लेकिन मैं ने
यह बात पास खड़े लोगों की ख़ातिर की, ताकि वह
ईमान लाएँ कि तू ने मुझे भेजा है।” 43 फिर ईसा ज़ोर
से पुकार उठा, “लाज़र, निकल आ!” 44 और मुर्दा
निकल आया। अभी तक उस के हाथ और पाँओ
पट्टियों से बंधे हुए थे जबकि उस का चिहरा कपड़े
में लिपटा हुआ था। ईसा ने उन से कहा, “इस के
कफ़न को खोल कर इसे जाने दो।”

ईसा के ख़िलाफ़ मन्सूबाबन्दी

45 उन यहूदियों में से जो मरियम के पास आए थे
बहुत से ईसा पर ईमान लाए जब उन्हों ने वह देखा जो
उस ने किया। 46 लेकिन बाज़ फ़रीसियों के पास गए
और उन्हें बताया कि ईसा ने क्या किया है। 47 तब
राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदी अदालत-ए-
आलिया का इज्लास मुनअक़िद किया। उन्हों ने एक
दूसरे से पूछा, “हम क्या कर रहे हैं? यह आदमी
बहुत से इलाही निशान दिखा रहा है। 48 अगर हम
उसे खुला छोड़ें तो आख़िरकार सब उस पर ईमान
ले आएँगे। फिर रोमी आ कर हमारे बैत-उल-मुक़द्दस
और हमारे मुल्क को तबाह कर देंगे।”
49 उन में से एक काइफ़ा था जो उस साल इमाम-
ए-आज़म था। उस ने कहा, “आप कुछ नहीं समझते
50 और इस का ख़याल भी नहीं करते कि इस से पहले
कि पूरी क़ौम हलाक हो जाए बेहतर यह है कि एक
आदमी उम्मत के लिए मर जाए।” 51 उस ने यह बात
अपनी तरफ़ से नहीं की थी। उस साल के इमाम-
ए-आज़म की हैसियत से ही उस ने यह पेशगोई की

कि ईसा यहूदी क़ौम के लिए मरेगा। 52 और न सिर्फ़
इस के लिए बल्कि अल्लाह के बिखरे हुए फ़र्ज़न्दों को
जमा करके एक करने के लिए भी।
53 उस दिन से उन्हों ने ईसा को क़त्ल करने
का इरादा कर लिया। 54 इस लिए उस ने अब से
अलानिया यहूदियों के दरमियान वक़्त न गुज़ारा,
बल्कि उस जगह को छोड़ कर रेगिस्तान के क़रीब
एक इलाक़े में गया। वहाँ वह अपने शागिर्दों समेत
एक गाँव बनाम इफ़्राईम में रहने लगा।
55 फिर यहूदियों की ईद-ए-फ़सह क़रीब आ गई।
दीहात से बहुत से लोग अपने आप को पाक करवाने
के लिए ईद से पहले पहले यरूशलम पहुँचे। 56 वहाँ
वह ईसा का पता करते और बैत-उल-मुक़द्दस में खड़े
आपस में बात करते रहे, "क्या ख़याल है? क्या वह
तहवार पर नहीं आएगा?" 57 लेकिन राहनुमा इमामों
और फ़रीसियों ने हुक्म दिया था, "अगर किसी को
मालूम हो जाए कि ईसा कहाँ है तो वह इत्तिला दे
ताकि हम उसे गिरिफ़्तार कर लें।"

ईसा को बैत-अनियाह में मसह किया जाता है

12 1 फ़सह की ईद में अभी छः दिन बाक़ी
थे कि ईसा बैत-अनियाह पहुँचा। यह वह
जगह थी जहाँ उस लाज़र का घर था जिसे ईसा ने मुर्दों
में से ज़िन्दा किया था। 2 वहाँ उस के लिए एक ख़ास
खाना बनाया गया। मर्था खाने वालों की ख़िदमत
कर रही थी जबकि लाज़र ईसा और बाक़ी मेहमानों
के साथ खाने में शरीक था। 3 फिर मरियम ने आधा
लिटर ख़ालिस जटामासी का निहायत क़ीमती इत्र ले
कर ईसा के पाँओ पर उंडेल दिया और उन्हें अपने
बालों से पोंछ कर ख़ुश्क किया। ख़ुश्बू पूरे घर में फैल
गई। 4 लेकिन ईसा के शागिर्द यहूदाह इस्करियोती
ने एतिराज़ किया (बाद में उसी ने ईसा को दुश्मन
के हवाले कर दिया)। उस ने कहा, 5 "इस इत्र की
क़ीमत चाँदी के 300 सिक्के थी। इसे क्यूँ नहीं बेचा
गया ताकि इस के पैसे ग़रीबों को दिए जाते?" 6 उस
ने यह बात इस लिए नहीं की कि उसे ग़रीबों की
फ़िक्र थी। असल में वह चोर था। वह शागिर्दों का
ख़ज़ान्ची था और जमाशुदा पैसों में से बददियानती
करता रहता था।
7 लेकिन ईसा ने कहा, "उसे छोड़ दे! उस ने मेरी
तद्फ़ीन की तय्यारी के लिए यह किया है। 8 ग़रीब
तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे
पास नहीं रहूँगा।"

लाज़र के ख़िलाफ़ मन्सूबाबन्दी

9 इतने में यहूदियों की बड़ी तादाद को मालूम हुआ
कि ईसा वहाँ है। वह न सिर्फ़ ईसा से मिलने के लिए
आए बल्कि लाज़र से भी जिसे उस ने मुर्दों में से ज़िन्दा
किया था। 10 इस लिए राहनुमा इमामों ने लाज़र को
भी क़त्ल करने का मन्सूबा बनाया। 11 क्यूँकि उस
की वजह से बहुत से यहूदी उन में से चले गए और
ईसा पर ईमान ले आए थे।

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तिक़्बाल

12 अगले दिन ईद के लिए आए हुए लोगों को पता
चला कि ईसा यरूशलम आ रहा है। एक बड़ा हुजूम
13 खजूर की डालियाँ पकड़े शहर से निकल कर उस
से मिलने आया। चलते चलते वह चिल्ला कर नारे लगा
रहे थे,

"होशाना! [c]
मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है!
इस्राईल का बादशाह मुबारक है!"

14 ईसा को कहीं से एक जवान गधा मिल गया और
वह उस पर बैठ गया, जिस तरह कलाम-ए-मुक़द्दस
में लिखा है,

15 "ऐ सिय्यून बेटी, मत डर!
देख, तेरा बादशाह गधे के बच्चे पर सवार आ रहा
है।"

---

[c] होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इस में हम्द-ओ-सना का उन्सुर भी पाया जाता है।

16 उस वक़्त उस के शागिर्दों को इस बात की समझ
न आई। लेकिन बाद में जब ईसा अपने जलाल को
पहुँचा तो उन्हें याद आया कि लोगों ने उस के साथ
यह कुछ किया था और वह समझ गए कि कलाम-
ए-मुक़द्दस में इस का ज़िक्र भी है।
17 जो हुजूम उस वक़्त ईसा के साथ था जब उस ने
लाज़र को मुर्दों में से ज़िन्दा किया था, वह दूसरों को
इस के बारे में बताता रहा था। 18 इसी वजह से इतने
लोग ईसा से मिलने के लिए आए थे, उन्हों ने उस के
इस इलाही निशान के बारे में सुना था। 19 यह देख
कर फ़रीसी आपस में कहने लगे, "आप देख रहे हैं
कि बात नहीं बन रही। देखो, तमाम दुनिया उस के
पीछे हो ली है।"

कुछ यूनानी ईसा को तलाश करते हैं

20 कुछ यूनानी भी उन में थे जो फ़सह की ईद के
मौक़े पर परस्तिश करने के लिए आए हुए थे। 21 अब
वह फ़िलिप्पुस से मिलने आए जो गलील के बैत-सैदा
से था। उन्हों ने कहा, "जनाब, हम ईसा से मिलना
चाहते हैं।"
22 फ़िलिप्पुस ने अन्द्रियास को यह बात बताई और
फिर वह मिल कर ईसा के पास गए और उसे यह
ख़बर पहुँचाई। 23 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "अब
वक़्त आ गया है कि इब्न-ए-आदम को जलाल मिले।
24 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जब तक गन्दुम का
दाना ज़मीन में गिर कर मर न जाए वह अकेला ही
रहता है। लेकिन जब वह मर जाता है तो बहुत सा
फल लाता है। 25 जो अपनी जान को प्यार करता
है वह उसे खो देगा, और जो इस दुनिया में अपनी
जान से दुश्मनी रखता है वह उसे अबद तक महफ़ूज़
रखेगा। 26 अगर कोई मेरी ख़िदमत करना चाहे तो वह
मेरे पीछे हो ले, क्यूँकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा ख़ादिम
भी होगा। और जो मेरी ख़िदमत करे मेरा बाप उस
की इज़्ज़त करेगा।

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

27 अब मेरा दिल मुज़्तरिब है। मैं क्या कहूँ? क्या मैं
कहूँ, 'ऐ बाप, मुझे इस वक़्त से बचाए रख'? नहीं,
मैं तो इसी लिए आया हूँ। 28 ऐ बाप, अपने नाम को
जलाल दे।"
तब आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, "मैं उसे
जलाल दे चुका हूँ और दुबारा भी जलाल दूँगा।"
29 हुजूम के जो लोग वहाँ खड़े थे उन्हों ने यह सुन
कर कहा, "बादल गरज रहे हैं।" औरों ने ख़याल पेश
किया, "कोई फ़रिश्ता उस से हमकलाम हुआ है।"
30 ईसा ने उन्हें बताया, "यह आवाज़ मेरे वास्ते नहीं
बल्कि तुम्हारे वास्ते थी। 31 अब दुनिया की अदालत
करने का वक़्त आ गया है, अब दुनिया के हुक्मरान
को निकाल दिया जाएगा। 32 और मैं ख़ुद ज़मीन से
ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद सब को अपने पास खैंच
लूँगा।" 33 इन अल्फ़ाज़ से उस ने इस तरफ़ इशारा
किया कि वह किस तरह की मौत मरेगा।
34 हुजूम बोल उठा, "कलाम-ए-मुक़द्दस से हम ने
सुना है कि मसीह अबद तक क़ाइम रहेगा। तो फिर
आप की यह कैसी बात है कि इब्न-ए-आदम को
ऊँचे पर चढ़ाया जाना है? आख़िर इब्न-ए-आदम है
कौन?"
35 ईसा ने जवाब दिया, "नूर थोड़ी देर और तुम्हारे
पास रहेगा। जितनी देर वह मौजूद है इस नूर में चलते
रहो ताकि तारीकी तुम पर छा न जाए। जो अंधेरे में
चलता है उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है।
36 नूर के तुम्हारे पास से चले जाने से पहले पहले
उस पर ईमान लाओ ताकि तुम नूर के फ़र्ज़न्द बन
जाओ।"

लोग ईमान नहीं रखते

यह कहने के बाद ईसा चला गया और ग़ाइब हो
गया। 37 अगरचे ईसा ने यह तमाम इलाही निशान उन
के सामने ही दिखाए तो भी वह उस पर ईमान न लाए।
38 यूँ यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,

"ऐ रब, कौन हमारे पैग़ाम पर ईमान लाया?
और रब की क़ुदरत किस पर ज़ाहिर हुई?"
39 चुनाँचे वह ईमान न ला सके, जिस तरह यसायाह
नबी ने कहीं और फ़रमाया है,
40 "अल्लाह ने उन की आँखों को अंधा
और उन के दिल को बेहिस्स कर दिया है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ़ रुजू करें
और मैं उन्हें शिफ़ा दूँ।"
41 यसायाह ने यह इस लिए फ़रमाया क्यूँकि उस ने
ईसा का जलाल देख कर उस के बारे में बात की।
42 तो भी बहुत से लोग ईसा पर ईमान रखते थे।
उन में कुछ राहनुमा भी शामिल थे। लेकिन वह इस
का अलानिया इक़्रार नहीं करते थे, क्यूँकि वह डरते
थे कि फ़रीसी हमें यहूदी जमाअत से ख़ारिज कर
देंगे। 43 असल में वह अल्लाह की इज़्ज़त की निस्बत
इन्सान की इज़्ज़त को ज़्यादा अज़ीज़ रखते थे।

ईसा का कलाम लोगों की अदालत करेगा

44 फिर ईसा पुकार उठा, "जो मुझ पर ईमान रखता
है वह न सिर्फ़ मुझ पर बल्कि उस पर ईमान रखता
है जिस ने मुझे भेजा है। 45 और जो मुझे देखता है
वह उसे देखता है जिस ने मुझे भेजा है। 46 मैं नूर
की हैसियत से इस दुनिया में आया हूँ ताकि जो भी
मुझ पर ईमान लाए वह तारीकी में न रहे। 47 जो मेरी
बातें सुन कर उन पर अमल नहीं करता मैं उस की
अदालत नहीं करूँगा, क्यूँकि मैं दुनिया की अदालत
करने के लिए नहीं आया बल्कि उसे नजात देने के
लिए। 48 तो भी एक है जो उस की अदालत करता
है। जो मुझे रद्द करके मेरी बातें क़बूल नहीं करता
मेरा पेश किया गया कलाम ही क़ियामत के दिन उस
की अदालत करेगा। 49 क्यूँकि जो कुछ मैं ने बयान
किया है वह मेरी तरफ़ से नहीं है। मेरे भेजने वाले
बाप ही ने मुझे हुक्म दिया कि क्या कहना और क्या
सुनाना है। 50 और मैं जानता हूँ कि उस का हुक्म
अबदी ज़िन्दगी तक पहुँचाता है। चुनाँचे जो कुछ मैं
सुनाता हूँ वही कुछ है जो बाप ने मुझे बताया है।"

ईसा अपने शागिर्दों के पाँओ धोता है

13 1 फ़सह की ईद अब शुरू होने वाली थी।
ईसा जानता था कि वह वक़्त आ गया है
कि मुझे इस दुनिया को छोड़ कर बाप के पास जाना
है। गो उस ने हमेशा दुनिया में अपने लोगों से मुहब्बत
रखी थी, लेकिन अब उस ने आख़िरी हद तक उन पर
अपनी मुहब्बत का इज़हार किया।
2 फिर शाम का खाना तय्यार हुआ। उस वक़्त
इब्लीस शमाऊन इस्करियोती के बेटे यहूदाह के दिल
में ईसा को दुश्मन के हवाले करने का इरादा डाल
चुका था। 3 ईसा जानता था कि बाप ने सब कुछ मेरे
सपुर्द कर दिया है और कि मैं अल्लाह में से निकल
आया और अब उस के पास वापस जा रहा हूँ।
4 चुनाँचे उस ने दस्तरख़्वान से उठ कर अपना लिबास
उतार दिया और कमर पर तौलिया बांध लिया। 5 फिर
वह बासन में पानी डाल कर शागिर्दों के पाँओ धोने
और बंधे हुए तौलिया से पोंछ कर ख़ुश्क करने
लगा। 6 जब पतरस की बारी आई तो उस ने कहा,
"ख़ुदावन्द, आप मेरे पाँओ धोना चाहते हैं?"
7 ईसा ने जवाब दिया, "इस वक़्त तू नहीं समझता
कि मैं क्या कर रहा हूँ, लेकिन बाद में यह तेरी समझ
में आ जाएगा।"
8 पतरस ने एतिराज़ किया, "मैं कभी भी आप को
मेरे पाँओ धोने नहीं दूँगा!"
ईसा ने जवाब दिया, "अगर मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे
साथ तेरा कोई हिस्सा नहीं होगा।"
9 यह सुन कर पतरस ने कहा, "तो फिर ख़ुदावन्द,
न सिर्फ़ मेरे पाँओ बल्कि मेरे हाथों और सर को भी
धोएँ!"
10 ईसा ने जवाब दिया, "जिस शख़्स ने नहा लिया है
उसे सिर्फ़ अपने पाँओ को धोने की ज़रूरत होती है,
क्यूँकि वह पूरे तौर पर पाक-साफ़ है। तुम पाक-साफ़
हो, लेकिन सब के सब नहीं।" 11 (ईसा को मालूम

था कि कौन उसे दुश्मन के हवाले करेगा। इस लिए
उस ने कहा कि सब के सब पाक-साफ़ नहीं हैं।)
12 उन सब के पाँओ धोने के बाद ईसा दुबारा अपना
लिबास पहन कर बैठ गया। उस ने सवाल किया,
"क्या तुम समझते हो कि मैं ने तुम्हारे लिए क्या किया
है? 13 तुम मुझे 'उस्ताद' और 'ख़ुदावन्द' कह कर
मुख़ातिब करते हो और यह सहीह है, क्यूँकि मैं यही
कुछ हूँ। 14 मैं, तुम्हारे ख़ुदावन्द और उस्ताद ने तुम्हारे
पाँओ धोए। इस लिए अब तुम्हारा फ़र्ज़ भी है कि एक
दूसरे के पाँओ धोया करो। 15 मैं ने तुम को एक नमूना
दिया है ताकि तुम भी वही करो जो मैं ने तुम्हारे साथ
किया है। 16 मैं तुम को सच बताता हूँ कि ग़ुलाम
अपने मालिक से बड़ा नहीं होता, न पैग़म्बर अपने
भेजने वाले से। 17 अगर तुम यह जानते हो तो इस पर
अमल भी करो, फिर ही तुम मुबारक होगे।
18 मैं तुम सब की बात नहीं कर रहा। जिन्हें मैं ने चुन
लिया है उन्हें मैं जानता हूँ। लेकिन कलाम-ए-मुक़द्दस
की उस बात का पूरा होना ज़रूर है, 'जो मेरी रोटी
खाता है उस ने मुझ पर लात उठाई है।' 19 मैं तुम
को इस से पहले कि वह पेश आए यह अभी बता
रहा हूँ, ताकि जब वह पेश आए तो तुम ईमान लाओ
कि मैं वही हूँ। 20 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो
शख़्स उसे क़बूल करता है जिसे मैं ने भेजा है वह
मुझे क़बूल करता है। और जो मुझे क़बूल करता है
वह उसे क़बूल करता है जिस ने मुझे भेजा है।"

ईसा को दुश्मन के हवाले किया जाता है

21 इन अल्फ़ाज़ के बाद ईसा निहायत मुज़्तरिब
हुआ और कहा, "मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम
में से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।"
22 शागिर्द उलझन में एक दूसरे को देख कर सोचने
लगे कि ईसा किस की बात कर रहा है। 23 एक
शागिर्द जिसे ईसा प्यार करता था उस के क़रीबतरीन
बैठा था। 24 पतरस ने उसे इशारा किया कि वह उस
से दरयाफ़्त करे कि वह किस की बात कर रहा है।
25 उस शागिर्द ने ईसा की तरफ़ सर झुका कर पूछा,
"ख़ुदावन्द, यह कौन है?"
26 ईसा ने जवाब दिया, "जिसे मैं रोटी का लुक़्मा
शोर्ब में डुबो कर दूँ, वही है।" फिर लुक़्मे को डुबो
कर उस ने शमाऊन इस्करियोती के बेटे यहूदाह को दे
दिया। 27 जूँ ही यहूदाह ने यह लुक़्मा ले लिया इब्लीस
उस में समा गया। ईसा ने उसे बताया, "जो कुछ
करना है वह जल्दी से कर ले।" 28 लेकिन मेज़ पर
बैठे लोगों में से किसी को मालूम न हुआ कि ईसा
ने यह क्यूँ कहा। 29 बाज़ का ख़याल था कि चूँकि
यहूदाह ख़ज़ान्ची था इस लिए वह उसे बता रहा है
कि ईद के लिए दरकार चीज़ें ख़रीद ले या ग़रीबों में
कुछ तक़्सीम कर दे।
30 चुनाँचे ईसा से यह लुक़्मा लेते ही यहूदाह बाहर
निकल गया। रात का वक़्त था।

ईसा का नया हुक्म

31 यहूदाह के चले जाने के बाद ईसा ने कहा, "अब
इब्न-ए-आदम ने जलाल पाया और अल्लाह ने उस
में जलाल पाया है। 32 हाँ, चूँकि अल्लाह को उस में
जलाल मिल गया है इस लिए अल्लाह अपने में फ़र्ज़न्द
को जलाल देगा। और वह यह जलाल फ़ौरन देगा।
33 मेरे बच्चो, मैं थोड़ी देर और तुम्हारे पास ठहरूँगा।
तुम मुझे तलाश करोगे, और जो कुछ मैं यहूदियों को
बता चुका हूँ वह अब तुम को भी बताता हूँ, जहाँ
मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते। 34 मैं तुम को
एक नया हुक्म देता हूँ, यह कि एक दूसरे से मुहब्बत
रखो। जिस तरह मैं ने तुम से मुहब्बत रखी उसी तरह
तुम भी एक दूसरे से मुहब्बत करो। 35 अगर तुम एक
दूसरे से मुहब्बत रखोगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे
शागिर्द हो।"

पतरस के इन्कार की पेशगोई

36 पतरस ने पूछा, "ख़ुदावन्द, आप कहाँ जा रहे
हैं?"

ईसा ने जवाब दिया, “जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तू
मेरे पीछे नहीं आ सकता। लेकिन बाद में तू मेरे पीछे
आ जाएगा।”
37 पतरस ने सवाल किया, “ख़ुदावन्द, मैं आप के
पीछे अभी क्यूँ नहीं जा सकता? मैं आप के लिए
अपनी जान तक देने को तय्यार हूँ।”
38 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “तू मेरे लिए अपनी
जान देना चाहता है? मैं तुझे सच बताता हूँ कि मुर्ग़
के बाँग देने से पहले पहले तू तीन मर्तबा मुझे जानने
से इन्कार कर चुका होगा।

ईसा बाप के पास जाने की राह है

14 1 तुम्हारा दिल न घबराए। तुम अल्लाह पर
ईमान रखते हो, मुझ पर भी ईमान रखो।
2 मेरे बाप के घर में बेशुमार मकान हैं। अगर ऐसा न
होता तो क्या मैं तुम को बताता कि मैं तुम्हारे लिए
जगह तय्यार करने के लिए वहाँ जा रहा हूँ? 3 और
अगर मैं जा कर तुम्हारे लिए जगह तय्यार करूँ तो
वापस आ कर तुम को अपने साथ ले जाऊँगा ताकि
जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी हो। 4 और जहाँ मैं जा रहा हूँ
उस की राह तुम जानते हो।”
5 तोमा बोल उठा, “ख़ुदावन्द, हमें मालूम नहीं कि
आप कहाँ जा रहे हैं। तो फिर हम उस की राह किस
तरह जानें?”
6 ईसा ने जवाब दिया, “राह और हक़ और ज़िन्दगी
मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ
सकता। 7 अगर तुम ने मुझे जान लिया है तो इस का
मतलब है कि तुम मेरे बाप को भी जान लोगे। और
अब से ऐसा है भी। तुम उसे जानते हो और तुम ने
उस को देख लिया है।”
8 फ़िलिप्पुस ने कहा, “ऐ ख़ुदावन्द, बाप को हमें
दिखाएँ। बस यही हमारे लिए काफ़ी है।”
9 ईसा ने जवाब दिया, “फ़िलिप्पुस, मैं इतनी देर
से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इस के बावुजूद तू मुझे नहीं
जानता? जिस ने मुझे देखा उस ने बाप को देखा है।
तो फिर तू क्यूँकर कहता है, ‘बाप को हमें दिखाएँ’?
10 क्या तू ईमान नहीं रखता कि मैं बाप में हूँ और
बाप मुझ में है? जो बातें में तुम को बताता हूँ वह
मेरी नहीं बल्कि मुझ में रहने वाले बाप की तरफ़ से
हैं। वही अपना काम कर रहा है। 11 मेरी बात का
यक़ीन करो कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझ में है। या
कम अज़ कम उन कामों की बिना पर यक़ीन करो जो
मैं ने किए हैं। 12 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो मुझ
पर ईमान रखे वह वही कुछ करेगा जो मैं करता हूँ।
न सिर्फ़ यह बल्कि वह इन से भी बड़े काम करेगा,
क्यूँकि मैं बाप के पास जा रहा हूँ। 13 और जो कुछ
तुम मेरे नाम में माँगो मैं दूँगा ताकि बाप को फ़र्ज़न्द
में जलाल मिल जाए। 14 जो कुछ तुम मेरे नाम में मुझ
से चाहो वह मैं करूँगा।

रूह-उल-क़ुद्स देने का वादा

15 अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरे अह्काम
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारोगे। 16 और मैं बाप से
गुज़ारिश करूँगा तो वह तुम को एक और मददगार
देगा जो अबद तक तुम्हारे साथ रहेगा 17 यानी सच्चाई
का रूह, जिसे दुनिया पा नहीं सकती, क्यूँकि वह न
तो उसे देखती न जानती है। लेकिन तुम उसे जानते
हो, क्यूँकि वह तुम्हारे साथ रहता है और आइन्दा
तुम्हारे अन्दर रहेगा।
18 मैं तुम को यतीम छोड़ कर नहीं जाऊँगा बल्कि
तुम्हारे पास वापस आऊँगा। 19 थोड़ी देर के बाद
दुनिया मुझे नहीं देखेगी, लेकिन तुम मुझे देखते रहोगे।
चूँकि मैं ज़िन्दा हूँ इस लिए तुम भी ज़िन्दा रहोगे।
20 जब वह दिन आएगा तो तुम जान लोगे कि मैं अपने
बाप में हूँ, तुम मुझ में हो और मैं तुम में।
21 जिस के पास मेरे अह्काम हैं और जो उन के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता है, वही मुझे प्यार करता
है। और जो मुझे प्यार करता है उसे मेरा बाप प्यार
करेगा। मैं भी उसे प्यार करूँगा और अपने आप को
उस पर ज़ाहिर करूँगा।”

22 यहूदाह (यहूदाह इस्करियोती नहीं) ने पूछा,
“ख़ुदावन्द, क्या वजह है कि आप अपने आप को
सिर्फ़ हम पर ज़ाहिर करेंगे और दुनिया पर नहीं?”
23 ईसा ने जवाब दिया, “अगर कोई मुझे प्यार करे
तो वह मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेगा।
मेरा बाप ऐसे शख़्स को प्यार करेगा और हम उस के
पास आ कर उस के साथ सुकूनत करेंगे। 24 जो मुझ
से मुहब्बत नहीं करता वह मेरी बातों के मुताबिक़
ज़िन्दगी नहीं गुज़ारता। और जो कलाम तुम मुझ से
सुनते हो वह मेरा अपना कलाम नहीं है बल्कि बाप
का है जिस ने मुझे भेजा है।
25 यह सब कुछ मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम को
बताया है। 26 लेकिन बाद में रूह-उल-क़ुद्स, जिसे
बाप मेरे नाम से भेजेगा तुम को सब कुछ सिखाएगा।
यह मददगार तुम को हर बात की याद दिलाएगा जो
मैं ने तुम को बताई है।
27 मैं तुम्हारे पास सलामती छोड़े जाता हूँ, अपनी
ही सलामती तुम को दे देता हूँ। और मैं इसे यूँ नहीं
देता जिस तरह दुनिया देती है। तुम्हारा दिल न घबराए
और न डरे। 28 तुम ने मुझ से सुन लिया है कि ‘मैं जा
रहा हूँ और तुम्हारे पास वापस आऊँगा।’ अगर तुम
मुझ से मुहब्बत रखते तो तुम इस बात पर ख़ुश होते
कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ, क्यूँकि बाप मुझ से
बड़ा है। 29 मैं ने तुम को पहले से बता दिया है, इस
से पेशतर कि यह हो, ताकि जब पेश आए तो तुम
ईमान लाओ। 30 अब से मैं तुम से ज़्यादा बातें नहीं
करूँगा, क्यूँकि इस दुनिया का हुक्मरान आ रहा है।
उसे मुझ पर कोई क़ाबू नहीं है, 31 लेकिन दुनिया यह
जान ले कि मैं बाप को प्यार करता हूँ और वही कुछ
करता हूँ जिस का हुक्म वह मुझे देता है।
अब उठो, हम यहाँ से चलें।

ईसा अंगूर की हक़ीक़ी बेल है

15 1 मैं अंगूर की हक़ीक़ी बेल हूँ और मेरा बाप
माली है। 2 वह मेरी हर शाख़ को जो फल
नहीं लाती काट कर फैंक देता है। लेकिन जो शाख़
फल लाती है उस की वह काँट-छाँट करता है ताकि
ज़्यादा फल लाए। 3 उस कलाम के ज़रीए जो मैं ने
तुम को सुनाया है तुम तो पाक-साफ़ हो चुके हो।
4 मुझ में क़ाइम रहो तो मैं भी तुम में क़ाइम रहूँगा।
जो शाख़ बेल से कट गई है वह फल नहीं ला सकती।
बिलकुल इसी तरह तुम भी अगर तुम मुझ में क़ाइम
नहीं रहते फल नहीं ला सकते।
5 मैं ही अंगूर की बेल हूँ, और तुम उस की शाख़ें
हो। जो मुझ में क़ाइम रहता है और मैं उस में वह
बहुत सा फल लाता है, क्यूँकि मुझ से अलग हो कर
तुम कुछ नहीं कर सकते। 6 जो मुझ में क़ाइम नहीं
रहता और न मैं उस में उसे बेफ़ाइदा शाख़ की तरह
बाहर फैंक दिया जाता है। ऐसी शाख़ें सूख जाती हैं
और लोग उन का ढेर लगा कर उन्हें आग में झोंक
देते हैं जहाँ वह जल जाती हैं। 7 अगर तुम मुझ में
क़ाइम रहो और मैं तुम में तो जो जी चाहे माँगो, वह
तुम को दिया जाएगा। 8 जब तुम बहुत सा फल लाते
और यूँ मेरे शागिर्द साबित होते हो तो इस से मेरे बाप
को जलाल मिलता है। 9 जिस तरह बाप ने मुझ से
मुहब्बत रखी है उसी तरह मैं ने तुम से भी मुहब्बत
रखी है। अब मेरी मुहब्बत में क़ाइम रहो। 10 जब तुम
मेरे अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हो तो तुम
मुझ में क़ाइम रहते हो। मैं भी इसी तरह अपने बाप
के अह्काम के मुताबिक़ चलता हूँ और यूँ उस की
मुहब्बत में क़ाइम रहता हूँ।
11 मैं ने तुम को यह इस लिए बताया है ताकि मेरी
ख़ुशी तुम में हो बल्कि तुम्हारा दिल ख़ुशी से भर कर
छलक उठे। 12 मेरा हुक्म यह है कि एक दूसरे को वैसे
प्यार करो जैसे मैं ने तुम को प्यार किया है। 13 इस से
बड़ी मुहब्बत है नहीं कि कोई अपने दोस्तों के लिए
अपनी जान दे दे। 14 तुम मेरे दोस्त हो अगर तुम वह
कुछ करो जो मैं तुम को बताता हूँ। 15 अब से मैं नहीं
कहता कि तुम ग़ुलाम हो, क्यूँकि ग़ुलाम नहीं जानता
कि उस का मालिक क्या करता है। इस के बजाय मैं
ने कहा है कि तुम दोस्त हो, क्यूँकि मैं ने तुम को सब
कुछ बताया है जो मैं ने अपने बाप से सुना है। 16 तुम

ने मुझे नहीं चुना बल्कि मैं ने तुम को चुन लिया है।
मैं ने तुम को मुक़र्रर किया कि जा कर फल लाओ,
ऐसा फल जो क़ाइम रहे। फिर बाप तुम को वह कुछ
देगा जो तुम मेरे नाम में माँगोगे। 17 मेरा हुक्म यही है
कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो।

दुनिया की दुश्मनी

18 अगर दुनिया तुम से दुश्मनी रखे तो यह बात
ज़हन में रखो कि उस ने तुम से पहले मुझ से दुश्मनी
रखी है। 19 अगर तुम दुनिया के होते तो दुनिया तुम
को अपना समझ कर प्यार करती। लेकिन तुम दुनिया
के नहीं हो। मैं ने तुम को दुनिया से अलग करके
चुन लिया है। इस लिए दुनिया तुम से दुश्मनी रखती
है। 20 वह बात याद करो जो मैं ने तुम को बताई
कि ग़ुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता। अगर
उन्हों ने मुझे सताया है तो तुम्हें भी सताएँगे। और
अगर उन्हों ने मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी
तो वह तुम्हारी बातों पर भी अमल करेंगे। 21 लेकिन
तुम्हारे साथ जो कुछ भी करेंगे, मेरे नाम की वजह
से करेंगे, क्यूँकि वह उसे नहीं जानते जिस ने मुझे
भेजा है। 22 अगर मैं आया न होता और उन से बात
न की होती तो वह क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब
उन के गुनाह का कोई भी उज़्र बाक़ी नहीं रहा। 23 जो
मुझ से दुश्मनी रखता है वह मेरे बाप से भी दुश्मनी
रखता है। 24 अगर मैं ने उन के दरमियान ऐसा काम
न किया होता जो किसी और ने नहीं किया तो वह
क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब उन्हों ने सब कुछ
देखा है और फिर भी मुझ से और मेरे बाप से दुश्मनी
रखी है। 25 और ऐसा होना भी था ताकि कलाम-ए-
मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए कि 'उन्हों ने
बिलावजह मुझ से कीना रखा है।'

26 जब वह मददगार आएगा जिसे मैं बाप की तरफ़
से तुम्हारे पास भेजूँगा तो वह मेरे बारे में गवाही देगा।
वह सच्चाई का रूह है जो बाप में से निकलता है।
27 तुम को भी मेरे बारे में गवाही देना है, क्यूँकि तुम
इब्तिदा से मेरे साथ रहे हो।

16 1 मैं ने तुम को यह इस लिए बताया है ताकि
तुम गुमराह न हो जाओ। 2 वह तुम को
यहूदी जमाअतों से निकाल देंगे, बल्कि वह वक़्त
भी आने वाला है कि जो भी तुम को मार डालेगा वह
समझेगा, 'मैं ने अल्लाह की ख़िदमत की है।' 3 वह इस
क़िस्म की हरकतें इस लिए करेंगे कि उन्हों ने न बाप
को जाना है, न मुझे। 4 मैं ने तुम को यह बातें इस लिए
बताई हैं कि जब उन का वक़्त आ जाए तो तुम को
याद आए कि मैं ने तुम्हें आगाह कर दिया था।

रूह-उल-क़ुद्स की ख़िदमत

मैं ने अब तक तुम को यह नहीं बताया क्यूँकि मैं
तुम्हारे साथ था। 5 लेकिन अब मैं उस के पास जा
रहा हूँ जिस ने मुझे भेजा है। तो भी तुम में से कोई
मुझ से नहीं पूछता, 'आप कहाँ जा रहे हैं?' 6 इस के
बजाय तुम्हारे दिल ग़मज़दा हैं कि मैं ने तुम को ऐसी
बातें बताई हैं। 7 लेकिन मैं तुम को सच बताता हूँ कि
तुम्हारे लिए फ़ाइदामन्द है कि मैं जा रहा हूँ। अगर मैं
न जाऊँ तो मददगार तुम्हारे पास नहीं आएगा। लेकिन
अगर मैं जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। 8 और
जब वह आएगा तो गुनाह, रास्तबाज़ी और अदालत
के बारे में दुनिया की ग़लती को बेनिक़ाब करके यह
ज़ाहिर करेगा : 9 गुनाह के बारे में यह कि लोग मुझ
पर ईमान नहीं रखते, 10 रास्तबाज़ी के बारे में यह
कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे अब से
नहीं देखोगे, 11 और अदालत के बारे में यह कि इस
दुनिया के हुक्मरान की अदालत हो चुकी है।

12 मुझे तुम को मज़ीद बहुत कुछ बताना है, लेकिन
इस वक़्त तुम उसे बर्दाश्त नहीं कर सकते। 13 जब
सच्चाई का रूह आएगा तो वह पूरी सच्चाई की तरफ़
तुम्हारी राहनुमाई करेगा। वह अपनी मर्ज़ी से बात
नहीं करेगा बल्कि सिर्फ़ वही कुछ कहेगा जो वह
ख़ुद सुनेगा। वही तुम को मुस्तक़बिल के बारे में भी
बताएगा। 14 और वह इस में मुझे जलाल देगा कि
वह तुम को वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझ से मिला
होगा। 15 जो कुछ भी बाप का है वह मेरा है। इस

लिए मैं ने कहा, 'रूह तुम को वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझ से मिला होगा।'

अब दुख फिर सुख

16 थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे। फिर
थोड़ी देर के बाद तुम मुझे दुबारा देख लोगे।"
17 उस के कुछ शागिर्द आपस में बात करने लगे,
"ईसा के यह कहने से क्या मुराद है कि 'थोड़ी देर के
बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे
दुबारा देख लोगे'? और इस का क्या मतलब है, 'मैं
बाप के पास जा रहा हूँ'?" 18 और वह सोचते रहे,
"यह किस क़िस्म की 'थोड़ी देर' है जिस का ज़िक्र
वह कर रहे हैं? हम उन की बात नहीं समझते।"
19 ईसा ने जान लिया कि वह मुझ से इस के बारे
में सवाल करना चाहते हैं। इस लिए उस ने कहा,
"क्या तुम एक दूसरे से पूछ रहे हो कि मेरी इस बात
का क्या मतलब है कि 'थोड़ी देर के बाद तुम मुझे
नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख
लोगे'? 20 मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम रो रो
कर मातम करोगे जबकि दुनिया ख़ुश होगी। तुम ग़म
करोगे, लेकिन तुम्हारा ग़म ख़ुशी में बदल जाएगा।
21 जब किसी औरत के बच्चा पैदा होने वाला होता
है तो उसे ग़म और तक्लीफ़ होती है क्यूँकि उस का
वक़्त आ गया है। लेकिन जूँ ही बच्चा पैदा हो जाता है
तो माँ ख़ुशी के मारे कि एक इन्सान दुनिया में आ गया
है अपनी तमाम मुसीबत भूल जाती है। 22 यही तुम्हारी
हालत है। क्यूँकि अब तुम ग़मज़दा हो, लेकिन मैं तुम
से दुबारा मिलूँगा। उस वक़्त तुम को ख़ुशी होगी, ऐसी
ख़ुशी जो तुम से कोई छीन न लेगा।
23 उस दिन तुम मुझ से कुछ नहीं पूछोगे। मैं तुम
को सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम मेरे नाम में बाप
से माँगोगे वह तुम को देगा। 24 अब तक तुम ने मेरे
नाम में कुछ नहीं माँगा। माँगो तो तुम को मिलेगा।
फिर तुम्हारी ख़ुशी पूरी हो जाएगी।

दुनिया पर फ़त्ह

25 मैं ने तुम को यह तम्सीलों में बताया है। लेकिन
एक दिन आएगा जब मैं ऐसा नहीं करूँगा। उस वक़्त
मैं तम्सीलों में बात नहीं करूँगा बल्कि तुम को बाप
के बारे में साफ़ साफ़ बता दूँगा। 26 उस दिन तुम मेरा
नाम ले कर माँगोगे। मेरे कहने का मतलब यह नहीं
कि मैं ही तुम्हारी ख़ातिर बाप से दरख़्वास्त करूँगा।
27 क्यूँकि बाप ख़ुद तुम को प्यार करता है, इस लिए
कि तुम ने मुझे प्यार किया है और ईमान लाए हो
कि मैं अल्लाह में से निकल आया हूँ। 28 मैं बाप में से
निकल कर दुनिया में आया हूँ। और अब मैं दुनिया
को छोड़ कर बाप के पास वापस जाता हूँ।"
29 इस पर उस के शागिर्दों ने कहा, "अब आप
तम्सीलों में नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात कर रहे हैं।
30 अब हमें समझ आई है कि आप सब कुछ जानते
हैं और कि इस की ज़रूरत नहीं कि कोई आप की
पूछगछ करे। इस लिए हम ईमान रखते हैं कि आप
अल्लाह में से निकल कर आए हैं।"
31 ईसा ने जवाब दिया, "अब तुम ईमान रखते हो?
32 देखो, वह वक़्त आ रहा है बल्कि आ चुका है जब
तुम तित्तर-बित्तर हो जाओगे। मुझे अकेला छोड़ कर
हर एक अपने घर चला जाएगा। तो भी मैं अकेला
नहीं हूँगा क्यूँकि बाप मेरे साथ है। 33 मैं ने तुम को
इस लिए यह बात बताई ताकि तुम मुझ में सलामती
पाओ। दुनिया में तुम मुसीबत में फंसे रहते हो। लेकिन
हौसला रखो, मैं दुनिया पर ग़ालिब आया हूँ।"

ईसा अपने शागिर्दों के लिए दुआ करता है

17 1 यह कह कर ईसा ने अपनी नज़र आसमान
की तरफ़ उठाई और दुआ की, "ऐ बाप,
वक़्त आ गया है। अपने फ़र्ज़न्द को जलाल दे ताकि
फ़र्ज़न्द तुझे जलाल दे। 2 क्यूँकि तू ने उसे तमाम
इन्सानों पर इख़तियार दिया है ताकि वह उन सब को
अबदी ज़िन्दगी दे जो तू ने उसे दिए हैं। 3 और अबदी
ज़िन्दगी यह है कि वह तुझे जान लें जो वाहिद और

सच्चा ख़ुदा है और ईसा मसीह को भी जान लें जिसे
तू ने भेजा है। 4 मैं ने तुझे ज़मीन पर जलाल दिया और
उस काम की तक्मील की जिस की ज़िम्मादारी तू ने
मुझे दी थी। 5 और अब मुझे अपने हुज़ूर जलाल दे,
ऐ बाप, वही जलाल जो मैं दुनिया की तख़्लीक़ से
पेशतर तेरे हुज़ूर रखता था।

6 मैं ने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर किया जिन्हें
तू ने दुनिया से अलग करके मुझे दिया है। वह तेरे
ही थे। तू ने उन्हें मुझे दिया और उन्हों ने तेरे कलाम
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी है। 7 अब उन्हों ने जान
लिया है कि जो कुछ भी तू ने मुझे दिया है वह तेरी
तरफ़ से है। 8 क्यूँकि जो बातें तू ने मुझे दीं मैं ने उन्हें दी
हैं। नतीजे में उन्हों ने यह बातें क़बूल करके हक़ीक़ी
तौर पर जान लिया कि मैं तुझ में से निकल कर आया
हूँ। साथ साथ वह ईमान भी लाए कि तू ने मुझे भेजा
है।

9 मैं उन के लिए दुआ करता हूँ, दुनिया के लिए नहीं
बल्कि उन के लिए जिन्हें तू ने मुझे दिया है, क्यूँकि
वह तेरे ही हैं। 10 जो भी मेरा है वह तेरा है और जो
तेरा है वह मेरा है। चुनाँचे मुझे उन में जलाल मिला है।
11 अब से मैं दुनिया में नहीं हूँगा। लेकिन यह दुनिया
में रह गए हैं जबकि मैं तेरे पास आ रहा हूँ। क़ुद्दूस
बाप, अपने नाम में उन्हें महफ़ूज़ रख, उस नाम में जो
तू ने मुझे दिया है, ताकि वह एक हों जैसे हम एक हैं।
12 जितनी देर मैं उन के साथ रहा मैं ने उन्हें तेरे नाम में
महफ़ूज़ रखा, उसी नाम में जो तू ने मुझे दिया था। मैं ने
यूँ उन की निगहबानी की कि उन में से एक भी हलाक
नहीं हुआ सिवाए हलाकत के फ़र्ज़न्द के। यूँ कलाम
की पेशगोई पूरी हुई। 13 अब तो मैं तेरे पास आ रहा
हूँ। लेकिन मैं दुनिया में होते हुए यह बयान कर रहा हूँ
ताकि उन के दिल मेरी ख़ुशी से भर कर छलक उठें।
14 मैं ने उन्हें तेरा कलाम दिया है और दुनिया ने उन से
दुश्मनी रखी, क्यूँकि यह दुनिया के नहीं हैं, जिस तरह
मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। 15 मेरी दुआ यह नहीं है कि
तू उन्हें दुनिया से उठा ले बल्कि यह कि उन्हें इब्लीस
से महफ़ूज़ रखे। 16 वह दुनिया के नहीं हैं जिस तरह
मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। 17 उन्हें सच्चाई के वसीले से
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर। तेरा कलाम ही सच्चाई है।
18 जिस तरह तू ने मुझे दुनिया में भेजा है उसी तरह
मैं ने भी उन्हें दुनिया में भेजा है। 19 उन की ख़ातिर
मैं अपने आप को मख़्सूस करता हूँ, ताकि उन्हें भी
सच्चाई के वसीले से मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया जाए।

20 मेरी दुआ न सिर्फ़ इन ही के लिए है, बल्कि उन
सब के लिए भी जो इन का पैग़ाम सुन कर मुझ पर
ईमान लाएँगे 21 ताकि सब एक हों। जिस तरह तू ऐ
बाप, मुझ में है और मैं तुझ में हूँ उसी तरह वह भी हम
में हों ताकि दुनिया यक़ीन करे कि तू ने मुझे भेजा है।
22 मैं ने उन्हें वह जलाल दिया है जो तू ने मुझे दिया
है ताकि वह एक हों जिस तरह हम एक हैं, 23 मैं उन
में और तू मुझ में। वह कामिल तौर पर एक हों ताकि
दुनिया जान ले कि तू ने मुझे भेजा और कि तू ने उन
से मुहब्बत रखी है जिस तरह मुझ से रखी है।

24 ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तू ने मुझे दिए हैं वह
भी मेरे साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह मेरे जलाल
को देखें, वह जलाल जो तू ने इस लिए मुझे दिया
है कि तू ने मुझे दुनिया की तख़्लीक़ से पेशतर प्यार
किया है। 25 ऐ रास्त बाप, दुनिया तुझे नहीं जानती,
लेकिन मैं तुझे जानता हूँ। और यह शागिर्द जानते हैं
कि तू ने मुझे भेजा है। 26 मैं ने तेरा नाम उन पर ज़ाहिर
किया और इसे ज़ाहिर करता रहूँगा ताकि तेरी मुझ
से मुहब्बत उन में हो और मैं उन में हूँ।”

ईसा की गिरिफ़्तारी

18 1 यह कह कर ईसा अपने शागिर्दों के
साथ निकला और वादी-ए-क़िद्रोन को पार
करके एक बाग़ में दाख़िल हुआ। 2 यहूदाह जो उसे
दुश्मन के हवाले करने वाला था वह भी इस जगह से
वाक़िफ़ था, क्यूँकि ईसा वहाँ अपने शागिर्दों के साथ
जाया करता था। 3 राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने
यहूदाह को रोमी फ़ौजियों का दस्ता और बैत-उल-
मुक़द्दस के कुछ पहरेदार दिए थे। अब यह मशअलें,
लालटैन और हथियार लिए बाग़ में पहुँचे। 4 ईसा को

मालूम था कि उसे क्या पेश आएगा। चुनाँचे उस ने
निकल कर उन से पूछा, “तुम किस को ढूँड रहे हो?”
5 उन्हों ने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”
ईसा ने उन्हें बताया, “मैं ही हूँ।”
यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करना चाहता था,
वह भी उन के साथ खड़ा था। 6 जब ईसा ने एलान
किया, “मैं ही हूँ,” तो सब पीछे हट कर ज़मीन पर
गिर पड़े। 7 एक और बार ईसा ने उन से सवाल किया,
“तुम किस को ढूँड रहे हो?”
उन्हों ने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”
8 उस ने कहा, “मैं तुम को बता चुका हूँ कि मैं ही
हूँ। अगर तुम मुझे ढूँड रहे हो तो इन को जाने दो।”
9 यूँ उस की यह बात पूरी हुई, “मैं ने उन में से जो तू
ने मुझे दिए हैं एक को भी नहीं खोया।”
10 शमाऊन पतरस के पास तलवार थी। अब उस ने
उसे मियान से निकाल कर इमाम-ए-आज़म के ग़ुलाम
का दहना कान उड़ा दिया (ग़ुलाम का नाम मलख़ुस
था)। 11 लेकिन ईसा ने पतरस से कहा, “तलवार को
मियान में रख। क्या मैं वह प्याला न पियूँ जो बाप ने
मुझे दिया है?”

ईसा हन्ना के सामने

12 फिर फ़ौजी दस्ते, उन के अफ़्सर और बैत-उल-
मुक़द्दस के यहूदी पहरेदारों ने ईसा को गिरिफ़्तार
करके बांध लिया। 13 पहले वह उसे हन्ना के पास ले
गए। हन्ना उस साल के इमाम-ए-आज़म काइफ़ा का
सुसर था। 14 काइफ़ा ही ने यहूदियों को यह मश्वरा
दिया था कि बेहतर यह है कि एक ही आदमी उम्मत
के लिए मर जाए।

पतरस ईसा को जानने से इन्कार करता है

15 शमाऊन पतरस किसी और शागिर्द के साथ ईसा
के पीछे हो लिया था। यह दूसरा शागिर्द इमाम-
ए-आज़म का जानने वाला था, इस लिए वह ईसा
के साथ इमाम-ए-आज़म के सहन में दाख़िल हुआ।
16 पतरस बाहर दरवाज़े पर खड़ा रहा। फिर इमाम-ए-
आज़म का जानने वाला शागिर्द दुबारा निकल आया।
उस ने गेट की निगरानी करने वाली औरत से बात
की तो उसे पतरस को अपने साथ अन्दर ले जाने की
इजाज़त मिली। 17 उस औरत ने पतरस से पूछा, “तुम
भी इस आदमी के शागिर्द हो कि नहीं?”
उस ने जवाब दिया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”
18 ठंड थी, इस लिए ग़ुलामों और पहरेदारों ने
लकड़ी के कोएलों से आग जलाई। अब वह उस
के पास खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उन के साथ
खड़ा ताप रहा था।

इमाम-ए-आज़म ईसा की पूछगछ करता है

19 इतने में इमाम-ए-आज़म ईसा की पूछगछ करके
उस के शागिर्दों और तालीम के बारे में तफ़्तीश करने
लगा। 20 ईसा ने जवाब में कहा, “मैं ने दुनिया में
खुल कर बात की है। मैं हमेशा यहूदी इबादतख़ानों
और बैत-उल-मुक़द्दस में तालीम देता रहा, वहाँ जहाँ
तमाम यहूदी जमा हुआ करते हैं। पोशीदगी में तो मैं
ने कुछ नहीं कहा। 21 आप मुझ से क्यूँ पूछ रहे हैं?
उन से दरयाफ़्त करें जिन्हों ने मेरी बातें सुनी हैं। उन
को मालूम है कि मैं ने क्या कुछ कहा है।”
22 इस पर साथ खड़े बैत-उल-मुक़द्दस के पहरेदारों
में से एक ने ईसा के मुँह पर थप्पड़ मार कर कहा,
“क्या यह इमाम-ए-आज़म से बात करने का तरीक़ा
है जब वह तुम से कुछ पूछे?”
23 ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं ने बुरी बात की
है तो साबित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो तू ने
मुझे क्यूँ मारा?”
24 फिर हन्ना ने ईसा को बंधी हुई हालत में इमाम-
ए-आज़म काइफ़ा के पास भेज दिया।

पतरस दुबारा ईसा को जानने से इन्कार करता है

25 शमाऊन पतरस अब तक आग के पास खड़ा
ताप रहा था। इतने में दूसरे उस से पूछने लगे, “तुम
भी उस के शागिर्द हो कि नहीं?”
लेकिन पतरस ने इन्कार किया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”

26 फिर इमाम-ए-आज़म का एक ग़ुलाम बोल उठा
जो उस आदमी का रिश्तेदार था जिस का कान पतरस
ने उड़ा दिया था, “क्या मैं ने तुम को बाग़ में उस के
साथ नहीं देखा था?”
27 पतरस ने एक बार फिर इन्कार किया, और
इन्कार करते ही मुर्ग़ की बाँग सुनाई दी।

ईसा को पीलातुस के सामने पेश किया जाता है

28 फिर यहूदी ईसा को काइफ़ा से ले कर रोमी
गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियुम के पास पहुँच गए।
अब सुब्ह हो चुकी थी और चूँकि यहूदी फ़सह की
ईद के खाने में शरीक होना चाहते थे, इस लिए वह
महल में दाख़िल न हुए, वर्ना वह नापाक हो जाते।
29 चुनाँचे पीलातुस निकल कर उन के पास आया
और पूछा, “तुम इस आदमी पर क्या इल्ज़ाम लगा
रहे हो?”
30 उन्हों ने जवाब दिया, “अगर यह मुजरिम न होता
तो हम इसे आप के हवाले न करते।”
31 पीलातुस ने कहा, “फिर इसे ले जाओ और
अपनी शरई अदालतों में पेश करो।”
लेकिन यहूदियों ने एतिराज़ किया, “हमें किसी को
सज़ा-ए-मौत देने की इजाज़त नहीं।” 32 ईसा ने इस
तरफ़ इशारा किया था कि वह किस तरह मरेगा और
अब उस की यह बात पूरी हुई।
33 तब पीलातुस फिर अपने महल में गया। वहाँ से
उस ने ईसा को बुलाया और उस से पूछा, “क्या तुम
यहूदियों के बादशाह हो?”
34 ईसा ने पूछा, “क्या आप अपनी तरफ़ से यह
सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आप को मेरे बारे में
बताया है?”
35 पीलातुस ने जवाब दिया, “क्या मैं यहूदी हूँ?
तुम्हारी अपनी क़ौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें
मेरे हवाले किया है। तुम से क्या कुछ सरज़द हुआ
है?”
36 ईसा ने कहा, “मेरी बादशाही इस दुनिया की नहीं
है। अगर वह इस दुनिया की होती तो मेरे ख़ादिम
सख़्त जिद्द-ओ-जह्द करते ताकि मुझे यहूदियों के
हवाले न किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। अब मेरी
बादशाही यहाँ की नहीं है।”
37 पीलातुस ने कहा, “तो फिर तुम वाक़ई बादशाह
हो?”
ईसा ने जवाब दिया, “आप सहीह कहते हैं, मैं
बादशाह हूँ। मैं इसी मक़्सद के लिए पैदा हो कर
दुनिया में आया कि सच्चाई की गवाही दूँ। जो भी
सच्चाई की तरफ़ से है वह मेरी सुनता है।”
38 पीलातुस ने पूछा, “सच्चाई क्या है?”

ईसा को सज़ा-ए-मौत सुनाई जाती है

फिर वह दुबारा निकल कर यहूदियों के पास गया।
उस ने एलान किया, “मुझे उसे मुजरिम ठहराने की
कोई वजह नहीं मिली। 39 लेकिन तुम्हारी एक रस्म
है जिस के मुताबिक़ मुझे ईद-ए-फ़सह के मौक़े पर
तुम्हारे लिए एक क़ैदी को रिहा करना है। क्या तुम
चाहते हो कि मैं ‘यहूदियों के बादशाह’ को रिहा कर
दूँ?”
40 लेकिन जवाब में लोग चिल्लाने लगे, “नहीं, इस
को नहीं बल्कि बर-अब्बा को।” (बर-अब्बा डाकू
था।)

19 1 फिर पीलातुस ने ईसा को कोड़े लगवाए।
2 फ़ौजियों ने काँटेदार टहनियों का एक
ताज बना कर उस के सर पर रख दिया। उन्हों ने उसे
अर्ग़वानी रंग का लिबास भी पहनाया। 3 फिर उस के
सामने आ कर वह कहते, “ऐ यहूदियों के बादशाह,
आदाब!” और उसे थप्पड़ मारते थे।
4 एक बार फिर पीलातुस निकल आया और
यहूदियों से बात करने लगा, “देखो, मैं इसे तुम्हारे
पास बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मुझे इसे
मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।” 5 फिर
ईसा काँटेदार ताज और अर्ग़वानी रंग का लिबास
पहने बाहर आया। पीलातुस ने उन से कहा, “लो यह
है वह आदमी।”

6 उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उन के मुलाज़िम
चीख़ने लगे, “इसे मस्लूब करें, इसे मस्लूब करें!”
पीलातुस ने उन से कहा, “तुम ही इसे ले जा कर
मस्लूब करो। क्यूँकि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की
कोई वजह नहीं मिली।”
7 यहूदियों ने इसरार किया, “हमारे पास शरीअत
है और इस शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि वह
मारा जाए। क्यूँकि इस ने अपने आप को अल्लाह का
फ़र्ज़न्द क़रार दिया है।”
8 यह सुन कर पीलातुस मज़ीद डर गया। 9 दुबारा
महल में जा कर ईसा से पूछा, “तुम कहाँ से आए
हो?”
लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। 10 पीलातुस ने उस से
कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं करते? क्या
तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने और मस्लूब
करने का इख़तियार है?”
11 ईसा ने जवाब दिया, “आप को मुझ पर
इख़तियार न होता अगर वह आप को ऊपर से न
दिया गया होता। इस वजह से उस शख़्स से ज़्यादा
संगीन गुनाह हुआ है जिस ने मुझे दुश्मन के हवाले
कर दिया है।”
12 इस के बाद पीलातुस ने उसे आज़ाद करने
की कोशिश की। लेकिन यहूदी चीख़ चीख़ कर
कहने लगे, “अगर आप इसे रिहा करें तो आप
रोमी शहन्शाह क़ैसर के दोस्त साबित नहीं होंगे। जो
भी बादशाह होने का दावा करे वह शहन्शाह की
मुख़ालफ़त करता है।”
13 इस तरह की बातें सुन कर पीलातुस ईसा को
बाहर ले आया। फिर वह जज की कुर्सी पर बैठ
गया। उस जगह का नाम “पच्चीकारी” था। (अरामी
ज़बान में वह गब्बता कहलाती थी।) 14 अब दोपहर
के तक़रीबन बारह बज गए थे। उस दिन ईद के
लिए तय्यारियाँ की जाती थीं, क्यूँकि अगले दिन ईद
का आग़ाज़ था। पीलातुस बोल उठा, “लो, तुम्हारा
बादशाह!”
15 लेकिन वह चिल्लाते रहे, “ले जाएँ इसे, ले जाएँ!
इसे मस्लूब करें!”
पीलातुस ने सवाल किया, “क्या मैं तुम्हारे बादशाह
को सलीब पर चढ़ाऊँ?”
राहनुमा इमामों ने जवाब दिया, “सिवाए शहन्शाह
के हमारा कोई बादशाह नहीं है।”
16 फिर पीलातुस ने ईसा को उन के हवाले कर दिया
ताकि उसे मस्लूब किया जाए।

ईसा को मस्लूब किया जाता है

चुनाँचे वह ईसा को ले कर चले गए। 17 वह अपनी
सलीब उठाए शहर से निकला और उस जगह पहुँचा
जिस का नाम खोपड़ी (अरामी ज़बान में गुल्गुता)
था। 18 वहाँ उन्हों ने उसे सलीब पर चढ़ा दिया।
साथ साथ उन्हों ने उस के बाएँ और दाएँ हाथ दो
और आदमियों को मस्लूब किया। 19 पीलातुस ने एक
तख़्ती बनवा कर उसे ईसा की सलीब पर लगवा
दिया। तख़्ती पर लिखा था, ‘ईसा नासरी, यहूदियों
का बादशाह।’ 20 बहुत से यहूदियों ने यह पढ़ लिया,
क्यूँकि मस्लूबियत का मक़ाम शहर के क़रीब था
और यह जुमला अरामी, लातीनी और यूनानी ज़बानों
में लिखा था। 21 यह देख कर यहूदियों के राहनुमा
इमामों ने एतिराज़ किया, “‘यहूदियों का बादशाह’
न लिखें बल्कि यह कि ‘इस आदमी ने यहूदियों का
बादशाह होने का दावा किया’।”
22 पीलातुस ने जवाब दिया, “जो कुछ मैं ने लिख
दिया सो लिख दिया।”
23 ईसा को सलीब पर चढ़ाने के बाद फ़ौजियों ने
उस के कपड़े ले कर चार हिस्सों में बाँट लिए, हर
फ़ौजी के लिए एक हिस्सा। लेकिन चोग़ा बेजोड़ था।
वह ऊपर से ले कर नीचे तक बुना हुआ एक ही
टुकड़े का था। 24 इस लिए फ़ौजियों ने कहा, “आओ,
इसे फाड़ कर तक़्सीम न करें बल्कि इस पर क़ुरआ
डालें।” यूँ कलाम-ए-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी
हुई, “उन्हों ने आपस में मेरे कपड़े बाँट लिए और

मेरे लिबास पर क़ुरआ डाला।” फ़ौजियों ने यही कुछ
किया।
25 कुछ ख़वातीन भी ईसा की सलीब के क़रीब
खड़ी थीं : उस की माँ, उस की ख़ाला, क्लोपास की
बीवी मरियम और मरियम मग्दलीनी। 26 जब ईसा ने
अपनी माँ को उस शागिर्द के साथ खड़े देखा जो उसे
प्यारा था तो उस ने कहा, “ऐ ख़ातून, देखें आप का
बेटा यह है।”
27 और उस शागिर्द से उस ने कहा, “देख, तेरी माँ
यह है।” उस वक़्त से उस शागिर्द ने ईसा की माँ को
अपने घर रखा।

ईसा की मौत

28 इस के बाद जब ईसा ने जान लिया कि मेरा मिशन
तक्मील तक पहुँच चुका है तो उस ने कहा, “मुझे
प्यास लगी है।” (इस से भी कलाम-ए-मुक़द्दस की
एक पेशगोई पूरी हुई।)
29 क़रीब मै के सिरके से भरा बर्तन पड़ा था। उन्हों
ने एक इस्पंज सिरके में डुबो कर उसे ज़ूफ़े की
शाख़ पर लगा दिया और उठा कर ईसा के मुँह तक
पहुँचाया। 30 यह सिरका पीने के बाद ईसा बोल उठा,
“काम मुकम्मल हो गया है।” और सर झुका कर उस
ने अपनी जान अल्लाह के सपुर्द कर दी।

ईसा का पहलू छेदा जाता है

31 फ़सह की तय्यारी का दिन था और अगले दिन
ईद का आग़ाज़ और एक ख़ास सबत था। इस लिए
यहूदी नहीं चाहते थे कि मस्लूब हुई लाशें अगले दिन
तक सलीबों पर लटकी रहें। चुनाँचे उन्हों ने पीलातुस
से गुज़ारिश की कि वह उन की टाँगें तुड़वा कर उन्हें
सलीबों से उतारने दे। 32 तब फ़ौजियों ने आ कर ईसा
के साथ मस्लूब किए जाने वाले आदमियों की टाँगें
तोड़ दीं, पहले एक की फिर दूसरे की। 33 जब वह
ईसा के पास आए तो उन्हों ने देखा कि वह फ़ौत हो
चुका है, इस लिए उन्हों ने उस की टाँगें न तोड़ीं।
34 इस के बजाय एक ने नेज़े से ईसा का पहलू छेद
दिया। ज़ख़्म से फ़ौरन ख़ून और पानी बह निकला।
35 (जिस ने यह देखा है उस ने गवाही दी है और उस
की गवाही सच्ची है। वह जानता है कि वह हक़ीक़त
बयान कर रहा है और उस की गवाही का मक़्सद
यह है कि आप भी ईमान लाएँ।) 36 यह यूँ हुआ ताकि
कलाम-ए-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए, “उस
की एक हड्डी भी तोड़ी नहीं जाएगी।” 37 कलाम-ए-
मुक़द्दस में यह भी लिखा है, “वह उस पर नज़र डालेंगे
जिसे उन्हों ने छेदा है।”

ईसा को दफ़नाया जाता है

38 बाद में अरिमतियाह के रहने वाले यूसुफ़ ने
पीलातुस से ईसा की लाश उतारने की इजाज़त माँगी।
(यूसुफ़ ईसा का ख़ुफ़िया शागिर्द था, क्यूँकि वह
यहूदियों से डरता था।) इस की इजाज़त मिलने पर
वह आया और लाश को उतार लिया। 39 नीकुदेमुस
भी साथ था, वह आदमी जो गुज़रे दिनों में रात के
वक़्त ईसा से मिलने आया था। नीकुदेमुस अपने
साथ मुर और ऊद की तक़रीबन 34 किलोग्राम ख़ुश्बू
ले कर आया था। 40 यहूदी जनाज़े की रुसूमात के
मुताबिक़ उन्हों ने लाश पर ख़ुश्बू लगा कर उसे
पट्टियों से लपेट दिया। 41 सलीबों के क़रीब एक
बाग़ था और बाग़ में एक नई क़ब्र थी जो अब तक
इस्तेमाल नहीं की गई थी। 42 उस के क़रीब होने के
सबब से उन्हों ने ईसा को उस में रख दिया, क्यूँकि
फ़सह की तय्यारी का दिन था और अगले दिन ईद
का आग़ाज़ था।

ख़ाली क़ब्र

20 1 हफ़्ते का दिन गुज़र गया तो इत्वार को
मरियम मग्दलीनी सुब्ह-सवेरे क़ब्र के पास
आई। अभी अंधेरा था। वहाँ पहुँच कर उस ने देखा
कि क़ब्र के मुँह पर का पत्थर एक तरफ़ हटाया गया
है। 2 मरियम दौड़ कर शमाऊन पतरस और ईसा को
प्यारे शागिर्द के पास आई। उस ने इत्तिला दी, “वह

ख़ुदावन्द को क़ब्र से ले गए हैं, और हमें मालूम नहीं
कि उन्हों ने उसे कहाँ रख दिया है।”
3 तब पतरस दूसरे शागिर्द समेत क़ब्र की तरफ़
चल पड़ा। 4 दोनों दौड़ रहे थे, लेकिन दूसरा शागिर्द
ज़्यादा तेज़रफ़्तार था। वह पहले क़ब्र पर पहुँच गया।
5 उस ने झुक कर अन्दर झाँका तो कफ़न की पट्टियाँ
वहाँ पड़ी नज़र आईं। लेकिन वह अन्दर न गया।
6 फिर शमाऊन पतरस उस के पीछे पहुँच कर क़ब्र
में दाख़िल हुआ। उस ने भी देखा कि कफ़न की
पट्टियाँ वहाँ पड़ी हैं 7 और साथ वह कपड़ा भी जिस
में ईसा का सर लिपटा हुआ था। यह कपड़ा तह
किया गया था और पट्टियों से अलग पड़ा था। 8 फिर
दूसरा शागिर्द जो पहले पहुँच गया था, वह भी दाख़िल
हुआ। जब उस ने यह देखा तो वह ईमान लाया।
9 (लेकिन अब भी वह कलाम-ए-मुक़द्दस की यह
पेशगोई नहीं समझते थे कि उसे मुर्दों में से जी उठना
है।) 10 फिर दोनों शागिर्द घर वापस चले गए।

ईसा मरियम मग्दलीनी पर ज़ाहिर होता है

11 लेकिन मरियम रो रो कर क़ब्र के सामने खड़ी
रही। और रोते हुए उस ने झुक कर क़ब्र में झाँका
12 तो क्या देखती है कि दो फ़रिश्ते सफ़ेद लिबास
पहने हुए वहाँ बैठे हैं जहाँ पहले ईसा की लाश पड़ी
थी, एक उस के सिरहाने और दूसरा वहाँ जहाँ पहले
उस के पाँओ थे। 13 उन्हों ने मरियम से पूछा, “ऐ
ख़ातून, तू क्यूँ रो रही है?”
उस ने कहा, “वह मेरे ख़ुदावन्द को ले गए हैं, और
मालूम नहीं कि उन्हों ने उसे कहाँ रख दिया है।”
14 फिर उस ने पीछे मुड़ कर ईसा को वहाँ खड़े
देखा, लेकिन उस ने उसे न पहचाना। 15 ईसा ने पूछा,
“ऐ ख़ातून, तू क्यूँ रो रही है, किस को ढूँड रही है?”
यह सोच कर कि वह माली है उस ने कहा, “जनाब,
अगर आप उसे ले गए हैं तो मुझे बता दें कि उसे कहाँ
रख दिया है ताकि उसे ले जाऊँ।”
16 ईसा ने उस से कहा, “मरियम!”
वह उस की तरफ़ मुड़ी और बोल उठी, “रब्बूनी!”
(इस का मतलब अरामी ज़बान में उस्ताद है।)
17 ईसा ने कहा, “मेरे साथ चिमटी न रह, क्यूँकि
अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं गया। लेकिन भाइयों
के पास जा और उन्हें बता, ‘मैं अपने बाप और तुम्हारे
बाप के पास वापस जा रहा हूँ, अपने ख़ुदा और
तुम्हारे ख़ुदा के पास’।”
18 चुनाँचे मरियम मग्दलीनी शागिर्दों के पास गई
और उन्हें इत्तिला दी, “मैं ने ख़ुदावन्द को देखा है
और उस ने मुझ से यह बातें कहीं।”

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

19 उस इत्वार की शाम को शागिर्द जमा थे। उन्हों
ने दरवाज़ों पर ताले लगा दिए थे क्यूँकि वह यहूदियों
से डरते थे। अचानक ईसा उन के दरमियान आ खड़ा
हुआ और कहा, “तुम्हारी सलामती हो,” 20 और उन्हें
अपने हाथों और पहलू को दिखाया। ख़ुदावन्द को
देख कर वह निहायत ख़ुश हुए। 21 ईसा ने दुबारा
कहा, “तुम्हारी सलामती हो! जिस तरह बाप ने मुझे
भेजा उसी तरह मैं तुम को भेज रहा हूँ।” 22 फिर उन
पर फूँक कर उस ने फ़रमाया, “रूह-उल-क़ुद्स को
पा लो। 23 अगर तुम किसी के गुनाहों को मुआफ़
करो तो वह मुआफ़ किए जाएंगे। और अगर तुम उन्हें
मुआफ़ न करो तो वह मुआफ़ नहीं किए जाएंगे।”

तोमा शक करता है

24 बारह शागिर्दों में से तोमा जिस का लक़ब जुड़वाँ
था ईसा के आने पर मौजूद न था। 25 चुनाँचे दूसरे
शागिर्दों ने उसे बताया, “हम ने ख़ुदावन्द को देखा
है!” लेकिन तोमा ने कहा, “मुझे यक़ीन नहीं आता।
पहले मुझे उस के हाथों में कीलों के निशान नज़र
आएँ और मैं उन में अपनी उंगली डालूँ, पहले मैं
अपने हाथ को उस के पहलू के ज़ख़्म में डालूँ। फिर
ही मुझे यक़ीन आएगा।”
26 एक हफ़्ता गुज़र गया। शागिर्द दुबारा मकान
में जमा थे। इस मर्तबा तोमा भी साथ था। अगरचे

दरवाज़ों पर ताले लगे थे फिर भी ईसा उन के
दरमियान आ कर खड़ा हुआ। उस ने कहा, “तुम्हारी
सलामती हो!” 27 फिर वह तोमा से मुख़ातिब हुआ,
“अपनी उंगली को मेरे हाथों और अपने हाथ को मेरे
पहलू के ज़ख़्म में डाल और बेएतिक़ाद न हो बल्कि
ईमान रख।”
28 तोमा ने जवाब में उस से कहा, “ऐ मेरे ख़ुदावन्द!
ऐ मेरे ख़ुदा!”
29 फिर ईसा ने उसे बताया, “क्या तू इस लिए ईमान
लाया है कि तू ने मुझे देखा है? मुबारक हैं वह जो
मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाते हैं।”

इस किताब का मक़्सद

30 ईसा ने अपने शागिर्दों की मौजूदगी में मज़ीद
बहुत से ऐसे इलाही निशान दिखाए जो इस किताब में
दर्ज नहीं हैं। 31 लेकिन जितने दर्ज हैं उन का मक़्सद
यह है कि आप ईमान लाएँ कि ईसा ही मसीह यानी
अल्लाह का फ़र्ज़न्द है और आप को इस ईमान के
वसीले से उस के नाम से ज़िन्दगी हासिल हो।

ईसा झील पर शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

21 1 इस के बाद ईसा एक बार फिर
अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ जब वह
तिबरियास यानी गलील की झील पर थे। यह यूँ
हुआ। 2 कुछ शागिर्द शमाऊन पतरस के साथ जमा
थे, तोमा जो जुड़वाँ कहलाता था, नतन-एल जो
गलील के क़ाना से था, ज़ब्दी के दो बेटे और मज़ीद
दो शागिर्द।
3 शमाऊन पतरस ने कहा, “मैं मछली पकड़ने जा
रहा हूँ।”
दूसरों ने कहा, “हम भी साथ जाएंगे।” चुनाँचे वह
निकल कर कश्ती पर सवार हुए। लेकिन उस पूरी
रात एक भी मछली हाथ न आई। 4 सुब्ह-सवेरे ईसा
झील के किनारे पर आ खड़ा हुआ। लेकिन शागिर्दों
को मालूम नहीं था कि वह ईसा ही है। 5 उस ने उन
से पूछा, “बच्चो, क्या तुम्हें खाने के लिए कुछ मिल
गया?”
उन्हों ने जवाब दिया, “नहीं।”
6 उस ने कहा, “अपना जाल कश्ती के दाएँ हाथ
डालो, फिर तुम को कुछ मिलेगा।” उन्हों ने ऐसा
किया तो मछलियों की इतनी बड़ी तादाद थी कि
वह जाल कश्ती तक न ला सके।
7 इस पर ख़ुदावन्द के प्यारे शागिर्द ने पतरस से
कहा, “यह तो ख़ुदावन्द है।” यह सुनते ही कि
ख़ुदावन्द है शमाऊन पतरस अपनी चादर ओढ़ कर
पानी में कूद पड़ा (उस ने चादर को काम करने
के लिए उतार लिया था।) 8 दूसरे शागिर्द कश्ती पर
सवार उस के पीछे आए। वह किनारे से ज़्यादा दूर
नहीं थे, तक़रीबन सौ मीटर के फ़ासिले पर थे। इस
लिए वह मछलियों से भरे जाल को पानी में खैंच खैंच
कर ख़ुश्की तक लाए। 9 जब वह कश्ती से उतरे तो
देखा कि लकड़ी के कोएलों की आग पर मछलियाँ
भुनी जा रही हैं और साथ रोटी भी है। 10 ईसा ने उन
से कहा, “उन मछलियों में से कुछ ले आओ जो तुम
ने अभी पकड़ी हैं।”
11 शमाऊन पतरस कश्ती पर गया और जाल
को ख़ुश्की पर घसीट लाया। यह जाल 153 बड़ी
मछलियों से भरा हुआ था, तो भी वह न फटा। 12 ईसा
ने उन से कहा, “आओ, नाशता कर लो।” किसी भी
शागिर्द ने सवाल करने की जुरअत न की कि “आप
कौन हैं?” क्यूँकि वह तो जानते थे कि यह ख़ुदावन्द
ही है। 13 फिर ईसा आया और रोटी ले कर उन्हें दी
और इसी तरह मछली भी उन्हें खिलाई।
14 ईसा के जी उठने के बाद यह तीसरी बार थी कि
वह अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ।

ईसा का पतरस से सवाल

15 नाशते के बाद ईसा शमाऊन पतरस से मुख़ातिब
हुआ, “यूहन्ना के बेटे शमाऊन, क्या तू इन की निस्बत
मुझ से ज़्यादा मुहब्बत करता है?”

उस ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावन्द, आप तो जानते
हैं कि मैं आप को प्यार करता हूँ।”
ईसा बोला, “फिर मेरे लेलों को चरा।” 16 तब ईसा
ने एक और मर्तबा पूछा, “शमाऊन यूहन्ना के बेटे,
क्या तू मुझ से मुहब्बत करता है?”
उस ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावन्द, आप तो जानते
हैं कि मैं आप को प्यार करता हूँ।”
ईसा बोला, “फिर मेरी भेड़ों की गल्लाबानी कर।”
17 तीसरी बार ईसा ने उस से पूछा, “शमाऊन यूहन्ना
के बेटे, क्या तू मुझे प्यार करता है?”
तीसरी दफ़ा यह सवाल सुनने से पतरस को बड़ा
दुख हुआ। उस ने कहा, “ख़ुदावन्द, आप को सब
कुछ मालूम है। आप तो जानते हैं कि मैं आप को
प्यार करता हूँ।”
ईसा ने उस से कहा, “मेरी भेड़ों को चरा।
18 मैं तुझे सच बताता हूँ कि जब तू जवान था तो
तू ख़ुद अपनी कमर बांध कर जहाँ जी चाहता घूमता
फिरता था। लेकिन जब तू बूढ़ा होगा तो तू अपने
हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी कमर
बांध कर तुझे ले जाएगा जहाँ तेरा दिल नहीं करेगा।”
19 (ईसा की यह बात इस तरफ़ इशारा था कि पतरस
किस क़िस्म की मौत से अल्लाह को जलाल देगा।)
फिर उस ने उसे बताया, “मेरे पीछे चल।”

ईसा और दूसरा शागिर्द

20 पतरस ने मुड़ कर देखा कि जो शागिर्द ईसा को
प्यारा था वह उन के पीछे चल रहा है। यह वही
शागिर्द था जिस ने शाम के खाने के दौरान ईसा की
तरफ़ सर झुका कर पूछा था, “ख़ुदावन्द, कौन आप
को दुश्मन के हवाले करेगा?” 21 अब उसे देख कर
पतरस ने सवाल किया, “ख़ुदावन्द, इस के साथ क्या
होगा?”
22 ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे
वापस आने तक ज़िन्दा रहे तो तुझे क्या? बस तू मेरे
पीछे चलता रह।”
23 नतीजे में भाइयों में यह ख़याल फैल गया कि यह
शागिर्द नहीं मरेगा। लेकिन ईसा ने यह बात नहीं की
थी। उस ने सिर्फ़ यह कहा था, “अगर मैं चाहूँ कि
यह मेरे वापस आने तक ज़िन्दा रहे तो तुझे क्या?”
24 यह वह शागिर्द है जिस ने इन बातों की गवाही
दे कर इन्हें क़लमबन्द कर दिया है। और हम जानते
हैं कि उस की गवाही सच्ची है।

ख़ुलासा

25 ईसा ने इस के इलावा भी बहुत कुछ किया।
अगर उस का हर काम क़लमबन्द किया जाता तो
मेरे ख़याल में पूरी दुनिया में यह किताबें रखने की
गुन्जाइश न होती।

आमाल

1 [1] मुअज़्ज़ज़ थियुफ़िलुस, पहली किताब में मैं
ने सब कुछ बयान किया जो ईसा ने शुरू से
ले कर [2] उस दिन तक किया और सिखाया, जब
उसे आसमान पर उठाया गया। जाने से पहले उस ने
अपने चुने हुए रसूलों को रूह-उल-क़ुद्स की मारिफ़त
मज़ीद हिदायात दीं। [3] अपने दुख उठाने और मौत
सहने के बाद उस ने अपने आप को ज़ाहिर करके
उन्हें बहुत सी दलीलों से क़ाइल किया कि वह वाक़ई
ज़िन्दा है। वह चालीस दिन के दौरान उन पर ज़ाहिर
होता और उन्हें अल्लाह की बादशाही के बारे में बताता
रहा। [4] जब वह अभी उन के साथ था उस ने उन्हें
हुक्म दिया, "यरूशलम को न छोड़ना बल्कि इस
इन्तिज़ार में यहीं ठहरो कि बाप का वादा पूरा हो
जाए, वह वादा जिस के बारे में मैं ने तुम को आगाह
किया है। [5] क्यूँकि यहया ने तो पानी से बपतिस्मा
दिया, लेकिन तुम को थोड़े दिनों के बाद रूह-उल-
क़ुद्स से बपतिस्मा दिया जाएगा।"

ईसा को उठाया जाता है

[6] जो वहाँ जमा थे उन्हों ने उस से पूछा, "ख़ुदावन्द,
क्या आप इसी वक़्त इस्राईल के लिए उस की
बादशाही दुबारा क़ाइम करेंगे?"
[7] ईसा ने जवाब दिया, "यह जानना तुम्हारा काम
नहीं है बल्कि सिर्फ़ बाप का जो ऐसे औक़ात
और तारीखें मुक़र्रर करने का इख़तियार रखता है।
[8] लेकिन तुम्हें रूह-उल-क़ुद्स की क़ुव्वत मिलेगी
जो तुम पर नाज़िल होगा। फिर तुम यरूशलम, पूरे
यहूदिया और सामरिया बल्कि दुनिया की इन्तिहा
तक मेरे गवाह होगे।" [9] यह कह कर वह उन के
देखते देखते उठा लिया गया। और एक बादल ने
उसे उन की नज़रों से ओझल कर दिया।
[10] वह अभी आसमान की तरफ़ देख ही रहे थे कि
अचानक दो आदमी उन के पास आ खड़े हुए। दोनों
सफ़ेद लिबास पहने हुए थे। [11] उन्हों ने कहा, "गलील
के मर्दो, आप क्यूँ खड़े आसमान की तरफ़ देख रहे
हैं? यही ईसा जिसे आप के पास से आसमान पर
उठाया गया है उसी तरह वापस आएगा जिस तरह
आप ने उसे ऊपर जाते हुए देखा है।"

यहूदाह का जानशीन

[12] फिर वह ज़ैतून के पहाड़ से यरूशलम शहर
वापस चले गए। (यह पहाड़ शहर से तक़रीबन
एक किलोमीटर दूर है।) [13] वहाँ पहुँच कर वह उस
बालाख़ाने में दाख़िल हुए जिस में वह ठहरे हुए
थे, यानी पतरस, यूहन्ना, याक़ूब और अन्द्रियास,
फ़िलिप्पुस और तोमा, बरतुल्माई और मत्ती, याक़ूब
बिन हल्फ़ई, शमाऊन मुजाहिद और यहूदाह बिन
याक़ूब। [14] यह सब यकदिल हो कर दुआ में लगे
रहे। कुछ औरतें, ईसा की माँ मरियम और उस के
भाई भी साथ थे।
[15] उन दिनों में पतरस भाइयों में खड़ा हुआ। उस
वक़्त तक़रीबन 120 लोग जमा थे। उस ने कहा,
[16] "भाइयो, लाज़िम था कि कलाम-ए-मुक़द्दस की
वह पेशगोई पूरी हो जो रूह-उल-क़ुद्स ने दाऊद
की मारिफ़त यहूदाह के बारे में की। यहूदाह उन का
राहनुमा बन गया जिन्हों ने ईसा को गिरिफ़्तार किया,
[17] गो उसे हम में शुमार किया जाता था और वह इसी
ख़िदमत में हमारे साथ शरीक था।"
[18] (जो पैसे यहूदाह को उस के ग़लत काम के लिए
मिल गए थे उन से उस ने एक खेत ख़रीद लिया
था। वहाँ वह सर के बल गिर गया, उस का पेट
फट गया और उस की तमाम अंतड़ियाँ बाहर निकल
पड़ीं। [19] इस का चर्चा यरूशलम के तमाम बाशिन्दों

में फैल गया, इस लिए यह खेत उन की मादरी ज़बान
में हक़ल्दमा के नाम से मश्हूर हुआ जिस का मतलब
है ख़ून का खेत।)
20 पतरस ने अपनी बात जारी रखी, "यही बात
ज़बूर की किताब में लिखी है, 'उस की रिहाइशगाह
सुन्सान हो जाए, कोई उस में आबाद न हो।' यह
भी लिखा है, 'कोई और उस की ज़िम्मादारी उठाए।'
21 चुनाँचे अब ज़रूरी है कि हम यहूदाह की जगह
किसी और को चुन लें। यह शख़्स उन मर्दों में से
एक हो जो उस पूरे वक़्त के दौरान हमारे साथ सफ़र
करते रहे जब ख़ुदावन्द ईसा हमारे साथ था, 22 यानी
उस के यहया के हाथ से बपतिस्मा लेने से ले कर
उस वक़्त तक जब उसे हमारे पास से उठाया गया।
लाज़िम है कि उन में से एक हमारे साथ ईसा के जी
उठने का गवाह हो।"
23 चुनाँचे उन्हों ने दो आदमी पेश किए, यूसुफ़ जो
बर्सब्बा कहलाता था (उस का दूसरा नाम यूस्तुस
था) और मत्तियाह। 24 फिर उन्हों ने दुआ की, "ऐ
ख़ुदावन्द, तू हर एक के दिल से वाक़िफ़ है। हम पर
ज़ाहिर कर कि तू ने इन दोनों में से किस को चुना है
25 ताकि वह उस ख़िदमत की ज़िम्मादारी उठाए जो
यहूदाह छोड़ कर वहाँ चला गया जहाँ उसे जाना ही
था।" 26 यह कह कर उन्हों ने दोनों का नाम ले कर
क़ुरआ डाला तो मत्तियाह का नाम निकला। लिहाज़ा
उसे भी ग्यारह रसूलों में शामिल कर लिया गया।

रूह-उल-क़ुद्स की आमद

2 1 फिर ईद-ए-पन्तिकुस्त का दिन आया। सब
एक जगह जमा थे 2 कि अचानक आसमान से
ऐसी आवाज़ आई जैसे शदीद आँधी चल रही हो।
पूरा मकान जिस में वह बैठे थे इस आवाज़ से गूँज
उठा। 3 और उन्हें शोले की लौएँ जैसी नज़र आईं
जो अलग अलग हो कर उन में से हर एक पर उतर
कर ठहर गईं। 4 सब रूह-उल-क़ुद्स से भर गए और
मुख़्तलिफ़ ग़ैरमुल्की ज़बानों में बोलने लगे, हर एक
उस ज़बान में जो बोलने की रूह-उल-क़ुद्स ने उसे
तौफ़ीक़ दी।
5 उस वक़्त यरूशलम में ऐसे ख़ुदातरस यहूदी
ठहरे हुए थे जो आसमान तले की हर क़ौम में से थे।
6 जब यह आवाज़ सुनाई दी तो एक बड़ा हुजूम जमा
हुआ। सब घबरा गए क्यूँकि हर एक ने ईमानदारों
को अपनी मादरी ज़बान में बोलते सुना। 7 सख़्त
हैरतज़दा हो कर वह कहने लगे, "क्या यह सब
गलील के रहने वाले नहीं हैं? 8 तो फिर यह किस
तरह हो सकता है कि हम में से हर एक उन्हें अपनी
मादरी ज़बान में बातें करते सुन रहा है 9 जबकि
हमारे ममालिक यह हैं : पार्थिया, मादिया, ऐलाम,
मसोपुतामिया, यहूदिया, कप्पदुकिया, पुन्तुस,
आसिया, 10 फ़रूगिया, पम्फ़ीलिया, मिस्र और
लिबिया का वह इलाक़ा जो कुरेन के इर्दगिर्द है।
रोम से भी लोग मौजूद हैं। 11 यहाँ यहूदी भी हैं और
ग़ैरयहूदी नौमुरीद भी, क्रेते के लोग और अरब के
बाशिन्दे भी। और अब हम सब के सब इन को
अपनी अपनी ज़बान में अल्लाह के अज़ीम कामों का
ज़िक्र करते सुन रहे हैं।" 12 सब दंग रह गए। उलझन
में पड़ कर वह एक दूसरे से पूछने लगे, "इस का
क्या मतलब है?"
13 लेकिन कुछ लोग उन का मज़ाक़ उड़ा कर कहने
लगे, "यह बस नई मै पी कर नशे में धुत हो गए हैं।"

पतरस का पैग़ाम

14 फिर पतरस बाक़ी ग्यारह रसूलों समेत खड़ा हो
कर ऊँची आवाज़ से उन से मुख़ातिब हुआ, "सुनें,
यहूदी भाइयो और यरूशलम के तमाम रहने वालो!
जान लें और ग़ौर से मेरी बात सुन लें! 15 आप का
ख़याल है कि यह लोग नशे में हैं। लेकिन ऐसा नहीं है।
देखें, अभी तो सुब्ह के नौ बजे का वक़्त है। 16 अब
वह कुछ हो रहा है जिस की पेशगोई योएल नबी ने
की थी,
17 'अल्लाह फ़रमाता है कि आख़िरी दिनों में
मैं अपने रूह को तमाम इन्सानों पर उंडेल दूँगा।

तुम्हारे बेटे-बेटियाँ नबुव्वत करेंगे,
तुम्हारे नौजवान रोयाएँ और
तुम्हारे बुज़ुर्ग ख़्वाब देखेंगे।
18 उन दिनों में
मैं अपने रूह को अपने ख़ादिमों और ख़ादिमाओं
पर भी उंडेल दूँगा,
और वह नबुव्वत करेंगे।
19 मैं ऊपर आसमान पर मोजिज़े दिखाऊँगा
और नीचे ज़मीन पर इलाही निशान ज़ाहिर करूँगा,
ख़ून, आग और धुएँ के बादल।
20 सूरज तारीक हो जाएगा,
चाँद का रंग ख़ून सा हो जाएगा,
और फिर रब का अज़ीम और जलाली दिन आएगा।
21 उस वक़्त जो भी रब का नाम लेगा
नजात पाएगा।'

22 इस्राईल के मर्दो, मेरी बात सुनें! अल्लाह ने आप के सामने ही ईसा नासरी की तस्दीक़ की, क्यूँकि उस ने उस के वसीले से आप के दरमियान अजूबे, मोजिज़े और इलाही निशान दिखाए। आप ख़ुद इस बात से वाक़िफ़ हैं। 23 लेकिन अल्लाह को पहले ही इल्म था कि क्या होना है, क्यूँकि उस ने ख़ुद अपनी मर्ज़ी से मुक़र्रर किया था कि ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया जाए। चुनाँचे आप ने बेदीन लोगों के ज़रीए उसे सलीब पर चढ़वा कर क़त्ल किया। 24 लेकिन अल्लाह ने उसे मौत की अज़ियतनाक गिरिफ़्त से आज़ाद करके ज़िन्दा कर दिया, क्यूँकि मुमकिन ही नहीं था कि मौत उसे अपने क़ब्ज़े में रखे। 25 चुनाँचे दाऊद ने उस के बारे में कहा,

'रब हर वक़्त मेरी आँखों के सामने रहा।
वह मेरे दहने हाथ रहता है
ताकि मैं न डगमगाऊँ।
26 इस लिए मेरा दिल शादमान है,
और मेरी ज़बान ख़ुशी के नारे लगाती है।
हाँ, मेरा बदन पुरउम्मीद ज़िन्दगी गुज़ारेगा।
27 क्यूँकि तू मेरी जान को पाताल में नहीं छोड़ेगा,
और न अपने मुक़द्दस को गलने सड़ने की नौबत तक पहुँचने देगा।
28 तू ने मुझे ज़िन्दगी की राहों से आगाह कर दिया है,
और तू अपने हुज़ूर मुझे ख़ुशी से सरशार करेगा।'

29 मेरे भाइयो, अगर इजाज़त हो तो मैं आप को दिलेरी से अपने बुज़ुर्ग दाऊद के बारे में कुछ बताऊँ। वह तो फ़ौत हो कर दफ़नाया गया और उस की क़ब्र आज तक हमारे दरमियान मौजूद है। 30 लेकिन वह नबी था और जानता था कि अल्लाह ने क़सम खा कर मुझ से वादा किया है कि वह मेरी औलाद में से एक को मेरे तख़्त पर बिठाएगा। 31 मज़कूरा आयात में दाऊद मुस्तक़बिल में देख कर मसीह के जी उठने का ज़िक्र कर रहा है, यानी कि न उसे पाताल में छोड़ा गया, न उस का बदन गलने सड़ने की नौबत तक पहुँचा। 32 अल्लाह ने इसी ईसा को ज़िन्दा कर दिया है और हम सब इस के गवाह हैं। 33 अब उसे सरफ़राज़ करके ख़ुदा के दहने हाथ बिठाया गया और बाप की तरफ़ से उसे मौऊदा रूह-उल-क़ुद्स मिल गया है। इसी को उस ने हम पर उंडेल दिया, जिस तरह आप देख और सुन रहे हैं। 34 दाऊद ख़ुद तो आसमान पर नहीं चढ़ा, तो भी उस ने फ़रमाया,

'रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ
35 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँओ की चौकी न बना दूँ।'

36 चुनाँचे पूरा इस्राईल यक़ीन जाने कि जिस ईसा को आप ने मस्लूब किया है उसे ही अल्लाह ने ख़ुदावन्द और मसीह बना दिया है।"

37 पतरस की यह बातें सुन कर लोगों के दिल छिद गए। उन्हों ने पतरस और बाक़ी रसूलों से पूछा, "भाइयो, फिर हम क्या करें?"

38 पतरस ने जवाब दिया, "आप में से हर एक तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि आप के गुनाह मुआफ़ कर दिए जाएँ। फिर आप को रूह-उल-क़ुद्स की नेमत मिल जाएगी। 39 क्यूँकि यह देने का

वादा आप से और आप के बच्चों से किया गया है,
बल्कि उन से भी जो दूर के हैं, उन सब से जिन्हें रब
हमारा ख़ुदा अपने पास बुलाएगा।”
40 पतरस ने मज़ीद बहुत सी बातों से उन्हें नसीहत
की और समझाया कि “इस टेढ़ी नस्ल से निकल
कर नजात पाएँ।” 41 जिन्हों ने पतरस की बात क़बूल
की उन का बपतिस्मा हुआ। यूँ उस दिन जमाअत में
तक़रीबन 3,000 अफ़राद का इज़ाफ़ा हुआ। 42 यह
ईमानदार रसूलों से तालीम पाने, रिफ़ाक़त रखने और
रिफ़ाक़ती खानों और दुआओं में शरीक होते रहे।

ईमानदारों की हैरतअंगेज़ ज़िन्दगी

43 सब पर ख़ौफ़ छा गया और रसूलों की तरफ़
से बहुत से मोजिज़े और इलाही निशान दिखाए गए।
44 जो भी ईमान लाते थे वह एक जगह जमा होते
थे। उन की हर चीज़ मुश्तरका होती थी। 45 अपनी
मिलकियत और माल फ़रोख़्त करके उन्हों ने हर एक
को उस की ज़रूरत के मुताबिक़ दिया। 46 रोज़ाना
वह यकदिली से बैत-उल-मुक़द्दस में जमा होते रहे।
साथ साथ वह मसीह की याद में अपने घरों में
रोटी तोड़ते, बड़ी ख़ुशी और सादगी से रिफ़ाक़ती
खाना खाते 47 और अल्लाह की तम्जीद करते रहे।
उस वक़्त वह तमाम लोगों के मन्ज़ूर-ए-नज़र थे। और
ख़ुदावन्द रोज़-ब-रोज़ जमाअत में नजातयाफ़्ता लोगों
का इज़ाफ़ा करता रहा।

लंगड़े आदमी की शिफ़ा

3 1 एक दोपहर पतरस और यूहन्ना दुआ करने
के लिए बैत-उल-मुक़द्दस की तरफ़ चल पड़े।
तीन बज गए थे। 2 उस वक़्त लोग एक पैदाइशी
लंगड़े को उठा कर वहाँ ला रहे थे। रोज़ाना उसे
सहन के उस दरवाज़े के पास लाया जाता था जो
‘ख़ूबसूरत दरवाज़ा’ कहलाता था ताकि वह बैत-
उल-मुक़द्दस के सहनों में दाख़िल होने वालों से भीक
माँग सके। 3 पतरस और यूहन्ना बैत-उल-मुक़द्दस में
दाख़िल होने वाले थे तो लंगड़ा उन से भीक माँगने
लगा। 4 पतरस और यूहन्ना ग़ौर से उस की तरफ़ देखने
लगे। फिर पतरस ने कहा, “हमारी तरफ़ देखें।” 5 इस
तवक़्क़ो से कि उसे कुछ मिलेगा लंगड़ा उन की तरफ़
मुतवज्जिह हुआ। 6 लेकिन पतरस ने कहा, “मेरे पास
न तो चाँदी है, न सोना, लेकिन जो कुछ है वह आप
को दे देता हूँ। नासरत के ईसा मसीह के नाम से उठें
और चलें फिरें!” 7 उस ने उस का दहना हाथ पकड़
कर उसे खड़ा किया। उसी वक़्त लंगड़े के पाँओ और
टख़ने मज़बूत हो गए। 8 वह उछल कर खड़ा हुआ
और चलने फिरने लगा। फिर वह चलते, कूदते और
अल्लाह की तम्जीद करते हुए उन के साथ बैत-उल-
मुक़द्दस में दाख़िल हुआ। 9 और तमाम लोगों ने उसे
चलते फिरते और अल्लाह की तम्जीद करते हुए देखा।
10 जब उन्हों ने जान लिया कि यह वही आदमी है जो
ख़ूबसूरत नामी दरवाज़े पर बैठा भीक माँगा करता
था तो वह उस की तब्दीली देख कर दंग रह गए।

बैत-उल-मुक़द्दस में पतरस का पैग़ाम

11 वह सब दौड़ कर सुलेमान के बरामदे में आए
जहाँ भीक माँगने वाला अब तक पतरस और यूहन्ना
से लिपटा हुआ था। 12 यह देख कर पतरस उन से
मुख़ातिब हुआ, “इस्राईल के हज़रात, आप यह देख
कर क्यूँ हैरान हैं? आप क्यूँ घूर घूर कर हमारी
तरफ़ देख रहे हैं गोया हम ने अपनी ज़ाती ताक़त या
दीनदारी के बाइस यह किया है कि यह आदमी चल
फिर सके? 13 यह हमारे बापदादा के ख़ुदा, इब्राहीम,
इस्हाक़ और याक़ूब के ख़ुदा की तरफ़ से है जिस ने
अपने बन्दे ईसा को जलाल दिया है। यह वही ईसा
है जिसे आप ने दुश्मन के हवाले करके पीलातुस
के सामने रद्द किया, अगरचे वह उसे रिहा करने का
फ़ैसला कर चुका था। 14 आप ने उस क़ुद्दूस और
रास्तबाज़ को रद्द करके तक़ाज़ा किया कि पीलातुस
उस के इवज़ एक क़ातिल को रिहा करके आप को
दे दे। 15 आप ने ज़िन्दगी के सरदार को क़त्ल किया,
लेकिन अल्लाह ने उसे मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया।
हम इस बात के गवाह हैं। 16 आप तो इस आदमी से

वाक़िफ़ हैं जिसे देख रहे हैं। अब वह ईसा के नाम पर ईमान लाने से बहाल हो गया है, क्यूँकि जो ईमान ईसा के ज़रीए मिलता है उसी ने इस आदमी को आप के सामने पूरी सेहतमन्दी अता की।

17 मेरे भाइयो, मैं जानता हूँ कि आप और आप के राहनुमाओं को सहीह इल्म नहीं था, इस लिए आप ने ऐसा किया। 18 लेकिन अल्लाह ने वह कुछ पूरा किया जिस की पेशगोई उस ने तमाम नबियों की मारिफ़त की थी, यानी यह कि उस का मसीह दुख उठाएगा। 19 अब तौबा करें और अल्लाह की तरफ़ रुजू लाएँ ताकि आप के गुनाहों को मिटाया जाए। 20 फिर आप को रब के हुज़ूर से ताज़गी के दिन मुयस्सर आएँगे और वह दुबारा ईसा यानी मसीह को भेज देगा जिसे आप के लिए मुक़र्रर किया गया है। 21 लाज़िम है कि वह उस वक़्त तक आसमान पर रहे जब तक अल्लाह सब कुछ बहाल न कर दे, जिस तरह वह इब्तिदा से अपने मुक़द्दस नबियों की ज़बानी फ़रमाता आया है। 22 क्यूँकि मूसा ने कहा, 'रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे वास्ते तुम्हारे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। जो भी बात वह कहे उस की सुनना। 23 जो नहीं सुनेगा उसे मिटा कर क़ौम से निकाल दिया जाएगा।' 24 और समूएल से ले कर हर नबी ने इन दिनों की पेशगोई की है। 25 आप तो इन नबियों की औलाद और उस अह्द के वारिस हैं जो अल्लाह ने आप के बापदादा से क़ाइम किया था, क्यूँकि उस ने इब्राहीम से कहा था, 'तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी।' 26 जब अल्लाह ने अपने बन्दे ईसा को बरपा किया तो पहले उसे आप के पास भेज दिया ताकि वह आप में से हर एक को उस की बुरी राहों से फेर कर बरकत दे।"

पतरस और यूहन्ना यहूदी अदालत-ए-आलिया के सामने

4 1 पतरस और यूहन्ना लोगों से बात कर ही रहे थे कि इमाम, बैत-उल-मुक़द्दस के पहरेदारों का कप्तान और सदूक़ी उन के पास पहुँचे। 2 वह नाराज़ थे कि रसूल ईसा के जी उठने की मुनादी करके लोगों को मुर्दों में से जी उठने की तालीम दे रहे हैं। 3 उन्हों ने उन्हें गिरिफ़्तार करके अगले दिन तक जेल में डाल दिया, क्यूँकि शाम हो चुकी थी। 4 लेकिन जिन्हों ने उन का पैग़ाम सुन लिया था उन में से बहुत से लोग ईमान लाए। यूँ ईमानदारों में मर्दों की तादाद बढ़ कर तक़रीबन 5,000 तक पहुँच गई।

5 अगले दिन यरूशलम में यहूदी अदालत-ए-अलिया के सरदारों, बुज़ुर्गों और शरीअत के उलमा का इज्लास मुनअक़िद हुआ। 6 इमाम-ए-आज़म हन्ना और इसी तरह काइफ़ा, यूहन्ना, सिकन्दर और इमाम-ए-आज़म के ख़ानदान के दीगर मर्द भी शामिल थे। 7 उन्हों ने दोनों को अपने दरमियान खड़ा करके पूछा, "तुम ने यह काम किस क़ुव्वत और नाम से किया?"

8 पतरस ने रूह-उल-क़ुद्स से मामूर हो कर उन से कहा, "क़ौम के राहनुमाओ और बुज़ुर्गो, 9 आज हमारी पूछगछ की जा रही है कि हम ने माज़ूर आदमी पर रहम का इज़हार किस के वसीले से किया कि उसे शिफ़ा मिल गई है। 10 तो फिर आप सब और पूरी क़ौम इस्राईल जान ले कि यह नासरत के ईसा मसीह के नाम से हुआ है, जिसे आप ने मस्लूब किया और जिसे अल्लाह ने मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया। यह आदमी उसी के वसीले से सेहत पा कर यहाँ आप के सामने खड़ा है। 11 ईसा वह पत्थर है जिस के बारे में कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, 'जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने रद्द किया वह कोने का बुन्यादी पत्थर बन गया।' और आप ही ने उसे रद्द कर दिया है। 12 किसी दूसरे के वसीले से नजात हासिल नहीं होती, क्यूँकि आसमान के तले हम इन्सानों को कोई और नाम नहीं बख़्शा गया जिस के वसीले से हम नजात पा सकें।"

13 पतरस और यूहन्ना की बातें सुन कर लोग हैरान हुए क्यूँकि वह दिलेरी से बात कर रहे थे अगरचे वह न तो आलिम थे, न उन्हों ने शरीअत की ख़ास तालीम पाई थी। साथ साथ सुनने वालों ने यह भी जान लिया कि दोनों ईसा के साथी हैं। 14 लेकिन चूँकि

वह अपनी आँखों से उस आदमी को देख रहे थे जो
शिफ़ा पा कर उन के साथ खड़ा था इस लिए वह इस
के ख़िलाफ़ कोई बात न कर सके। 15 चुनाँचे उन्हों
ने उन दोनों को इज्लास में से बाहर जाने को कहा
और आपस में सलाह-मश्वरा करने लगे, 16 "हम इन
लोगों के साथ क्या सुलूक करें? बात वाज़िह है कि
उन के ज़रीए एक इलाही निशान दिखाया गया है।
इस का यरूशलम के तमाम बाशिन्दों को इल्म हुआ
है। हम इस का इन्कार नहीं कर सकते। 17 लेकिन
लाज़िम है कि उन्हें धमकी दे कर हुक्म दें कि वह
किसी भी शख़्स से यह नाम ले कर बात न करें, वर्ना
यह मुआमला क़ौम में मज़ीद फैल जाएगा।"

18 चुनाँचे उन्हों ने दोनों को बुला कर हुक्म दिया
कि वह आइन्दा ईसा के नाम से न कभी बोलें और
न तालीम दें।

19 लेकिन पतरस और यूहन्ना ने जवाब में कहा,
"आप ख़ुद फ़ैसला कर लें, क्या यह अल्लाह के
नज़्दीक ठीक है कि हम उस की निस्बत आप की
बात मानें? 20 मुमकिन ही नहीं कि जो कुछ हम ने
देख और सुन लिया है उसे दूसरों को सुनाने से बाज़
रहें।"

21 तब इज्लास के मैम्बरान ने दोनों को मज़ीद
धमकियाँ दे कर छोड़ दिया। वह फ़ैसला न कर सके
कि क्या सज़ा दें, क्यूँकि तमाम लोग पतरस और
यूहन्ना के इस काम की वजह से अल्लाह की तम्जीद
कर रहे थे। 22 क्यूँकि जिस आदमी को मोजिज़ाना
तौर पर शिफ़ा मिली थी वह चालीस साल से ज़्यादा
लंगड़ा रहा था।

दिलेरी के लिए दुआ

23 उन की रिहाई के बाद पतरस और यूहन्ना अपने
साथियों के पास वापस गए और सब कुछ सुनाया
जो राहनुमा इमामों और बुज़ुर्गों ने उन्हें बताया था।
24 यह सुन कर तमाम ईमानदारों ने मिल कर ऊँची
आवाज़ से दुआ की, "ऐ आक़ा, तू ने आसमान-ओ-
ज़मीन और समुन्दर को और जो कुछ उन में है ख़ल्क़
किया है। 25 और तू ने अपने ख़ादिम हमारे बाप दाऊद
के मुँह से रूह-उल-क़ुद्स की मारिफ़त कहा,

'अक़्वाम क्यूँ तैश में आ गई हैं?
उम्मतें क्यूँ बेकार साज़िशें कर रही हैं?
26 दुनिया के बादशाह उठ खड़े हुए,
हुक्मरान रब और उस के मसीह के ख़िलाफ़ जमा
हो गए हैं।'

27 और वाक़ई यही कुछ इस शहर में हुआ। हेरोदेस
अनतिपास, पुन्तियुस पीलातुस, ग़ैरयहूदी और यहूदी
सब तेरे मुक़द्दस ख़ादिम ईसा के ख़िलाफ़ जमा हुए
जिसे तू ने मसह किया था। 28 लेकिन जो कुछ उन्हों
ने किया वह तू ने अपनी क़ुदरत और मर्ज़ी से पहले ही
से मुक़र्रर किया था। 29 ऐ रब, अब उन की धमकियों
पर ग़ौर कर। अपने ख़ादिमों को अपना कलाम सुनाने
की बड़ी दिलेरी अता फ़रमा। 30 अपनी क़ुदरत का
इज़हार कर ताकि हम तेरे मुक़द्दस ख़ादिम ईसा के
नाम से शिफ़ा, इलाही निशान और मोजिज़े दिखा
सकें।"

31 दुआ के इख़तिताम पर वह जगह हिल गई जहाँ
वह जमा थे। सब रूह-उल-क़ुद्स से मामूर हो गए
और दिलेरी से अल्लाह का कलाम सुनाने लगे।

ईमानदारों की मुश्तरका मिलकियत

32 ईमानदारों की पूरी जमाअत यकदिल थी। किसी
ने भी अपनी मिलकियत की किसी चीज़ के बारे में
नहीं कहा कि यह मेरी है बल्कि उन की हर चीज़
मुश्तरका थी। 33 और रसूल बड़े इख़तियार के साथ
ख़ुदावन्द ईसा के जी उठने की गवाही देते रहे।
अल्लाह की बड़ी मेहरबानी उन सब पर थी। 34 उन में
से कोई भी ज़रूरतमन्द नहीं था, क्यूँकि जिस के पास
भी ज़मीनें या मकान थे उस ने उन्हें फ़रोख़्त करके
रक़म 35 रसूलों के पाँओ में रख दी। यूँ जमाशुदा पैसों
में से हर एक को उतने दिए जाते जितनों की उसे
ज़रूरत होती थी।

36 मसलन यूसुफ़ नामी एक आदमी था जिस का
नाम रसूलों ने बर्नबास (हौसलाअफ़्ज़ाई का बेटा)

रखा था। वह लावी क़बीले से और जज़ीरा-ए-क़ुब्रुस
का रहने वाला था। 37 उस ने अपना एक खेत फ़रोख़्त
करके पैसे रसूलों के पाँओ में रख दिए।

हननियाह और सफ़ीरा

5 1 एक और आदमी था जिस ने अपनी बीवी के
साथ मिल कर अपनी कोई ज़मीन बेच दी। उन
के नाम हननियाह और सफ़ीरा थे। 2 लेकिन हननियाह
पूरी रक़म रसूलों के पास न लाया बल्कि उस में से
कुछ अपने लिए रख छोड़ा और बाक़ी रसूलों के
पाँओ में रख दिया। उस की बीवी भी इस बात से
वाक़िफ़ थी। 3 लेकिन पतरस ने कहा, "हननियाह,
इब्लीस ने आप के दिल को यूँ क्यूँ भर दिया है कि
आप ने रूह-उल-क़ुद्स से झूट बोला है? क्यूँकि आप
ने ज़मीन की रक़म के कुछ पैसे अपने पास रख लिए
हैं। 4 क्या यह ज़मीन फ़रोख़्त करने से पहले आप की
नहीं थी? और उसे बेच कर क्या आप पैसे जैसे चाहते
इस्तेमाल नहीं कर सकते थे? आप ने क्यूँ अपने दिल
में यह ठान लिया? आप ने हमें नहीं बल्कि अल्लाह
को धोका दिया है।"

5 यह सुनते ही हननियाह फ़र्श पर गिर कर मर गया।
और तमाम सुनने वालों पर बड़ी दहशत तारी हो गई।
6 जमाअत के नौजवानों ने उठ कर लाश को कफ़न
में लपेट दिया और उसे बाहर ले जा कर दफ़न कर
दिया।

7 तक़रीबन तीन घंटे गुज़र गए तो उस की बीवी
अन्दर आई। उसे मालूम न था कि शौहर को क्या
हुआ है।

8 पतरस ने उस से पूछा, "मुझे बताएँ, क्या आप को
अपनी ज़मीन के लिए इतनी ही रक़म मिली थी?"

सफ़ीरा ने जवाब दिया, "जी, इतनी ही रक़म थी।"

9 पतरस ने कहा, "क्यूँ आप दोनों रब के रूह को
आज़माने पर मुत्तफ़िक़ हुए? देखो, जिन्हों ने आप के
ख़ावन्द को दफ़नाया है वह दरवाज़े पर खड़े हैं और
आप को भी उठा कर बाहर ले जाएंगे।" 10 उसी लम्हे
सफ़ीरा पतरस के पाँओ में गिर कर मर गई। नौजवान
अन्दर आए तो उस की लाश देख कर उसे भी बाहर
ले गए और उस के शौहर के पास दफ़न कर दिया।
11 पूरी जमाअत बल्कि हर सुनने वाले पर बड़ा ख़ौफ़
तारी हो गया।

मोजिज़े

12 रसूलों की मारिफ़त अवाम में बहुत से इलाही
निशान और मोजिज़े ज़ाहिर हुए। उस वक़्त तमाम
ईमानदार यकदिली से बैत-उल-मुक़द्दस में सुलेमान
के बरामदे में जमा हुआ करते थे। 13 बाक़ी लोग उन
से क़रीबी ताल्लुक़ रखने की जुरअत नहीं करते थे,
अगरचे अवाम उन की बहुत इज़्ज़त करते थे। 14 तो
भी ख़ुदावन्द पर ईमान रखने वाले मर्द-ओ-ख़वातीन
की तादाद बढ़ती गई। 15 लोग अपने मरीज़ों को
चारपाइयों और चटाइयों पर रख कर सड़कों पर
लाते थे ताकि जब पतरस वहाँ से गुज़रे तो कम अज़
कम उस का साया किसी न किसी पर पड़ जाए।
16 बहुत से लोग यरूशलम के इर्दगिर्द की आबादियों
से भी अपने मरीज़ों और बदरुह-गिरिफ़्ता अज़ीज़ों
को लाते, और सब शिफ़ा पाते थे।

रसूलों की ईज़ारसानी

17 फिर इमाम-ए-आज़म सदूक़ी फ़िर्क़े के तमाम
साथियों के साथ हरकत में आया। हसद से जल कर
18 उन्हों ने रसूलों को गिरिफ़्तार करके अवामी जेल
में डाल दिया। 19 लेकिन रात को रब का एक फ़रिश्ता
क़ैदख़ाने के दरवाज़ों को खोल कर उन्हें बाहर लाया।
उस ने कहा, 20 "जाओ, बैत-उल-मुक़द्दस में खड़े हो
कर लोगों को इस नई ज़िन्दगी से मुताल्लिक़ सब बातें
सुनाओ।" 21 फ़रिश्ते की सुन कर रसूल सुब्ह-सवेरे
बैत-उल-मुक़द्दस में जा कर तालीम देने लगे।

अब ऐसा हुआ कि इमाम-ए-आज़म अपने साथियों
समेत पहुँचा और यहूदी अदालत-ए-आलिया का
इज्लास मुनअक़िद किया। इस में इस्राईल के तमाम
बुज़ुर्ग शरीक हुए। फिर उन्हों ने अपने मुलाज़िमों को
क़ैदख़ाने में भेज दिया ताकि रसूलों को ला कर उन के

सामने पेश किया जाए। 22 लेकिन जब वह वहाँ पहुँचे
तो पता चला कि रसूल जेल में नहीं हैं। वह वापस
आए और कहने लगे, 23 "जब हम पहुँचे तो जेल बड़ी
एहतियात से बन्द थी और दरवाज़ों पर पहरेदार खड़े
थे। लेकिन जब हम दरवाज़ों को खोल कर अन्दर
गए तो वहाँ कोई नहीं था!" 24 यह सुन कर बैत-
उल-मुक़द्दस के पहरेदारों का कप्तान और राहनुमा
इमाम बड़ी उलझन में पड़ गए और सोचने लगे कि
अब क्या होगा? 25 इतने में कोई आ कर कहने लगा,
"बात सुनें, जिन आदमियों को आप ने जेल में डाला
था वह बैत-उल-मुक़द्दस में खड़े लोगों को तालीम
दे रहे हैं।" 26 तब बैत-उल-मुक़द्दस के पहरेदारों का
कप्तान अपने मुलाज़िमों के साथ रसूलों के पास गया
और उन्हें लाया, लेकिन ज़बरदस्ती नहीं, क्यूँकि वह
डरते थे कि जमाशुदा लोग उन्हें संगसार न कर दें।

27 चुनाँचे उन्हों ने रसूलों को ला कर इज्लास के
सामने खड़ा किया। इमाम-ए-आज़म उन से मुख़ातिब
हुआ, 28 "हम ने तो तुम को सख़्ती से मना किया था
कि इस आदमी का नाम ले कर तालीम न दो। इस
के बरअक्स तुम ने न सिर्फ़ अपनी तालीम यरूशलम
की हर जगह तक पहुँचा दी है बल्कि हमें इस आदमी
की मौत के ज़िम्मादार भी ठहराना चाहते हो।"

29 पतरस और बाक़ी रसूलों ने जवाब दिया,
"लाज़िम है कि हम पहले अल्लाह की सुनें, फिर
इन्सान की। 30 हमारे बापदादा के ख़ुदा ने ईसा को
ज़िन्दा कर दिया, उसी शख़्स को जिसे आप ने
सलीब पर चढ़वा कर मार डाला था। 31 अल्लाह ने
उसी को हुक्मरान और नजातदहिन्दा की हैसियत से
सरफ़राज़ करके अपने दहने हाथ बिठा लिया ताकि
वह इस्राईल को तौबा और गुनाहों की मुआफ़ी का
मौक़ा फ़राहम करे। 32 हम ख़ुद इन बातों के गवाह
हैं और रूह-उल-क़ुद्स भी, जिसे अल्लाह ने अपने
फ़रमाँबर्दारों को दे दिया है।"

33 यह सुन कर अदालत के लोग तैश में आ कर
उन्हें क़त्ल करना चाहते थे। 34 लेकिन एक फ़रीसी
आलिम इज्लास में खड़ा हुआ जिस का नाम जम्लीएल
था। पूरी क़ौम में वह इज़्ज़तदार था। उस ने हुक्म
दिया कि रसूलों को थोड़ी देर के लिए इज्लास
से निकाल दिया जाए। 35 फिर उस ने कहा, "मेरे
इस्राईली भाइयो, ग़ौर से सोचें कि आप इन आदमियों
के साथ क्या करेंगे। 36 क्यूँकि कुछ देर हुई थियूदास
उठ कर कहने लगा कि मैं कोई ख़ास शख़्स हूँ।
तक़रीबन 400 आदमी उस के पीछे लग गए। लेकिन
उसे क़त्ल किया गया और उस के पैरोकार बिखर
गए। उन की सरगर्मियों से कुछ न हुआ। 37 इस के
बाद मर्दुमशुमारी के दिनों में यहूदाह गलीली उठा।
उस ने भी काफ़ी लोगों को अपने पैरोकार बना कर
बग़ावत करने पर उकसाया। लेकिन उसे भी मार
दिया गया और उस के पैरोकार मुन्तशिर हुए। 38 यह
पेश-ए-नज़र रख कर मेरा मश्वरा यह है कि इन लोगों
को छोड़ दें, इन्हें जाने दें। अगर इन का इरादा या
सरगर्मियाँ इन्सानी हैं तो सब कुछ ख़ुद-ब-ख़ुद ख़त्म
हो जाएगा। 39 लेकिन अगर यह अल्लाह की तरफ़ से
है तो आप इन्हें ख़त्म नहीं कर सकेंगे। ऐसा न हो
कि आख़िरकार आप अल्लाह ही के ख़िलाफ़ लड़ रहे
हों।"

हाज़िरीन ने उस की बात मान ली। 40 उन्हों ने रसूलों
को बुला कर उन को कोड़े लगवाए। फिर उन्हों ने
उन्हें ईसा का नाम ले कर बोलने से मना किया और
फिर जाने दिया। 41 रसूल यहूदी अदालत-ए-आलिया
से निकल कर चले गए। यह बात उन के लिए बड़ी
ख़ुशी का बाइस थी कि अल्लाह ने हमें इस लाइक़
समझा है कि ईसा के नाम की ख़ातिर बेइज़्ज़त हो
जाएँ। 42 इस के बाद भी वह रोज़ाना बैत-उल-मुक़द्दस
और मुख़्तलिफ़ घरों में जा जा कर सिखाते और इस
ख़ुशख़बरी की मुनादी करते रहे कि ईसा ही मसीह
है।

रसूलों के सात मददगार

6 1 उन दिनों में जब ईसा के शागिर्दों की तादाद
बढ़ती गई तो यूनानी ज़बान बोलने वाले
ईमानदार इब्रानी बोलने वाले ईमानदारों के बारे

में बुड़बुड़ाने लगे। उन्हों ने कहा, “जब रोज़मर्रा
का खाना तक़्सीम होता है तो हमारी बेवाओं को
नज़रअन्दाज़ किया जाता है।” 2 तब बारह रसूलों ने
शागिर्दों की पूरी जमाअत को इकट्ठा करके कहा,
“यह ठीक नहीं कि हम अल्लाह का कलाम सिखाने
की ख़िदमत को छोड़ कर खाना तक़्सीम करने में
मसरूफ़ रहें। 3 भाइयो, यह बात पेश-ए-नज़र रख कर
अपने में से सात आदमी चुन लें, जिन के नेक किरदार
की आप तस्दीक़ कर सकते हैं और जो रूह-उल-
क़ुद्स और हिक्मत से मामूर हैं। फिर हम उन्हें खाना
तक़्सीम करने की यह ज़िम्मादारी दे कर 4 अपना पूरा
वक़्त दुआ और कलाम की ख़िदमत में सर्फ़ कर
सकेंगे।”

5 यह बात पूरी जमाअत को पसन्द आई और उन्हों
ने सात आदमी चुन लिए : स्तिफ़नुस (जो ईमान और
रूह-उल-क़ुद्स से मामूर था), फ़िलिप्पुस, प्रुख़ुरुस,
नीकानोर, तीमोन, पर्मिनास और अन्ताकिया का
नीकुलाउस। (नीकलाओस ग़ैरयहूदी था जिस ने ईसा
पर ईमान लाने से पहले यहूदी मज़्हब को अपना लिया
था।) 6 इन सात आदमियों को रसूलों के सामने पेश
किया गया तो उन्हों ने इन पर हाथ रख कर दुआ
की।

7 यूँ अल्लाह का पैग़ाम फैलता गया। यरूशलम में
ईमानदारों की तादाद निहायत बढ़ती गई और बैत-
उल-मुक़द्दस के बहुत से इमाम भी ईमान ले आए।

स्तिफ़नुस की गिरिफ़्तारी

8 स्तिफ़नुस अल्लाह के फ़ज़्ल और क़ुव्वत से
मामूर था और लोगों के दरमियान बड़े बड़े मोजिज़े
और इलाही निशान दिखाता था। 9 एक दिन कुछ
यहूदी स्तिफ़नुस से बह्स करने लगे। (वह कुरेन,
इस्कन्दरिया, किलिकिया और सूबा आसिया के
रहने वाले थे और उन के इबादतख़ाने का नाम
लबरतीनियों यानी आज़ाद किए गए ग़ुलामों का
इबादतख़ाना था।) 10 लेकिन वह न उस की हिक्मत
का सामना कर सके, न उस रूह का जो कलाम करते
वक़्त उस की मदद करता था। 11 इस लिए उन्हों ने
बाज़ आदमियों को यह कहने को उकसाया कि “इस
ने मूसा और अल्लाह के बारे में कुफ़्र बका है। हम ख़ुद
इस के गवाह हैं।” 12 यूँ आम लोगों, बुज़ुर्गों और
शरीअत के उलमा में हलचल मच गई। वह स्तिफ़नुस
पर चढ़ आए और उसे घसीट कर यहूदी अदालत-ए-
आलिया के पास लाए। 13 वहाँ उन्हों ने झूटे गवाह
खड़े किए जिन्हों ने कहा, “यह आदमी बैत-उल-
मुक़द्दस और शरीअत के ख़िलाफ़ बातें करने से बाज़
नहीं आता। 14 हम ने इस के मुँह से सुना है कि
ईसा नासरी यह मक़ाम तबाह करेगा और वह रस्म-
ओ-रिवाज बदल देगा जो मूसा ने हमारे सपुर्द किए
हैं।” 15 जब इज्लास में बैठे तमाम लोग घूर घूर कर
स्तिफ़नुस की तरफ़ देखने लगे तो उस का चिहरा
फ़रिश्ते का सा नज़र आया।

स्तिफ़नुस की तक़रीर

7 1 इमाम-ए-आज़म ने पूछा, “क्या यह सच है?”
2 स्तिफ़नुस ने जवाब दिया, “भाइयो और
बुज़ुर्गो, मेरी बात सुनें। जलाल का ख़ुदा हमारे बाप
इब्राहीम पर ज़ाहिर हुआ जब वह अभी मसोपुतामिया
में आबाद था। उस वक़्त वह हारान में मुन्तक़िल नहीं
हुआ था। 3 अल्लाह ने उस से कहा, ‘अपने वतन और
अपनी क़ौम को छोड़ कर इस मुल्क में चला जा जो
मैं तुझे दिखाऊँगा।’ 4 चुनाँचे वह कस्दियों के मुल्क
को छोड़ कर हारान में रहने लगा। वहाँ उस का बाप
फ़ौत हुआ तो अल्लाह ने उसे इस मुल्क में मुन्तक़िल
किया जिस में आप आज तक आबाद हैं। 5 उस वक़्त
अल्लाह ने उसे इस मुल्क में कोई भी मौरूसी ज़मीन न
दी थी, एक मुरब्बा फ़ुट तक भी नहीं। लेकिन उस ने
उस से वादा किया, ‘मैं इस मुल्क को तेरे और तेरी
औलाद के क़ब्ज़े में कर दूँगा,’ अगरचे उस वक़्त
इब्राहीम के हाँ कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ था। 6 अल्लाह
ने उसे यह भी बताया, ‘तेरी औलाद ऐसे मुल्क में
रहेगी जो उस का नहीं होगा। वहाँ वह अजनबी और
ग़ुलाम होगी, और उस पर 400 साल तक बहुत ज़ुल्म

किया जाएगा। 7 लेकिन मैं उस क़ौम की अदालत
करूँगा जिस ने उसे ग़ुलाम बनाया होगा। इस के
बाद वह उस मुल्क में से निकल कर इस मक़ाम
पर मेरी इबादत करेंगे।' 8 फिर अल्लाह ने इब्राहीम को
ख़तना का अह्द दिया। चुनाँचे जब इब्राहीम का बेटा
इस्हाक़ पैदा हुआ तो बाप ने आठवें दिन उस का
ख़तना किया। यह सिलसिला जारी रहा जब इस्हाक़
का बेटा याक़ूब पैदा हुआ और याक़ूब के बारह बेटे,
हमारे बारह क़बीलों के सरदार।

9 यह सरदार अपने भाई यूसुफ़ से हसद करने लगे
और इस लिए उसे बेच दिया। यूँ वह ग़ुलाम बन कर
मिस्र पहुँचा। लेकिन अल्लाह उस के साथ रहा 10 और
उसे उस की तमाम मुसीबतों से रिहाई दी। उस ने
उसे दानाई अता करके इस क़ाबिल बना दिया कि
वह मिस्र के बादशाह फ़िरऔन का मन्ज़ूर-ए-नज़र
हो जाए। यूँ फ़िरऔन ने उसे मिस्र और अपने पूरे
घराने पर हुक्मरान मुक़र्रर किया। 11 फिर तमाम मिस्र
और कनआन में काल पड़ा। लोग बड़ी मुसीबत में
पड़ गए और हमारे बापदादा के पास भी ख़ुराक
ख़त्म हो गई। 12 याक़ूब को पता चला कि मिस्र में
अब तक अनाज है, इस लिए उस ने अपने बेटों
को अनाज ख़रीदने को वहाँ भेज दिया। 13 जब उन्हें
दूसरी बार वहाँ जाना पड़ा तो यूसुफ़ ने अपने आप
को अपने भाइयों पर ज़ाहिर किया, और फ़िरऔन
को यूसुफ़ के ख़ानदान के बारे में आगाह किया
गया। 14 इस के बाद यूसुफ़ ने अपने बाप याक़ूब और
तमाम रिश्तेदारों को बुला लिया। कुल 75 अफ़राद
आए। 15 यूँ याक़ूब मिस्र पहुँचा। वहाँ वह और हमारे
बापदादा मर गए। 16 उन्हें सिकम में ला कर उस क़ब्र
में दफ़नाया गया जो इब्राहीम ने हमोर की औलाद से
पैसे दे कर ख़रीदी थी।

17 फिर वह वक़्त क़रीब आ गया जिस का वादा
अल्लाह ने इब्राहीम से किया था। मिस्र में हमारी
क़ौम की तादाद बहुत बढ़ चुकी थी। 18 लेकिन
होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन हुआ जो
यूसुफ़ से नावाक़िफ़ था। 19 उस ने हमारी क़ौम का
इस्तेह्साल करके उन से बदसुलूकी की और उन्हें
अपने शीरख़्वार बच्चों को ज़ाए करने पर मज्बूर
किया। 20 उस वक़्त मूसा पैदा हुआ। वह अल्लाह के
नज़्दीक ख़ूबसूरत बच्चा था और तीन माह तक अपने
बाप के घर में पाला गया। 21 इस के बाद वालिदैन
को उसे छोड़ना पड़ा, लेकिन फ़िरऔन की बेटी ने
उसे लेपालक बना कर अपने बेटे के तौर पर पाला।
22 और मूसा को मिस्रियों की हिक्मत के हर शोबे
में तर्बियत मिली। उसे बोलने और अमल करने की
ज़बरदस्त क़ाबिलियत हासिल थी।

23 जब वह चालीस साल का था तो उसे अपनी
क़ौम इस्राईल के लोगों से मिलने का ख़याल आया।
24 जब उस ने उन के पास जा कर देखा कि एक
मिस्री किसी इस्राईली पर तशद्दुद कर रहा है तो उस ने
इस्राईली की हिमायत करके मज़्लूम का बदला लिया
और मिस्री को मार डाला। 25 उस का ख़याल तो यह
था कि मेरे भाइयों को समझ आएगी कि अल्लाह मेरे
वसीले से उन्हें रिहाई देगा, लेकिन ऐसा नहीं था।
26 अगले दिन वह दो इस्राईलियों के पास से गुज़रा
जो आपस में लड़ रहे थे। उस ने सुलह कराने की
कोशिश में कहा, 'मर्दो, आप तो भाई हैं। आप क्यूँ
एक दूसरे से ग़लत सुलूक कर रहे हैं?' 27 लेकिन जो
आदमी दूसरे से बदसुलूकी कर रहा था उस ने मूसा
को एक तरफ़ धकेल कर कहा, 'किस ने आप को
हम पर हुक्मरान और क़ाज़ी मुक़र्रर किया है? 28 क्या
आप मुझे भी क़त्ल करना चाहते हैं जिस तरह कल
मिस्री को मार डाला था?' 29 यह सुन कर मूसा फ़रार
हो कर मुल्क-ए-मिदियान में अजनबी के तौर पर रहने
लगा। वहाँ उस के दो बेटे पैदा हुए।

30 चालीस साल के बाद एक फ़रिश्ता जलती हुई
काँटेदार झाड़ी के शोले में उस पर ज़ाहिर हुआ। उस
वक़्त मूसा सीना पहाड़ के क़रीब रेगिस्तान में था।
31 यह मन्ज़र देख कर मूसा हैरान हुआ। जब वह
उस का मुआइना करने के लिए क़रीब पहुँचा तो
रब की आवाज़ सुनाई दी, 32 'मैं तेरे बापदादा का
ख़ुदा, इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब का ख़ुदा हूँ।'

मूसा थरथराने लगा और उस तरफ़ देखने की जुरअत
न की। 33 फिर रब ने उस से कहा, 'अपनी जूतियाँ
उतार, क्यूँकि तू मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है। 34 मैं ने
मिस्र में अपनी क़ौम की बुरी हालत देखी और उन
की आहें सुनी हैं, इस लिए उन्हें बचाने के लिए उतर
आया हूँ। अब जा, मैं तुझे मिस्र भेजता हूँ।'

35 यूँ अल्लाह ने उस शख़्स को उन के पास भेज दिया
जिसे वह यह कह कर रद्द कर चुके थे कि 'किस ने
आप को हम पर हुक्मरान और क़ाज़ी मुक़र्रर किया
है?' जलती हुई काँटेदार झाड़ी में मौजूद फ़रिश्ते की
मारिफ़त अल्लाह ने मूसा को उन के पास भेज दिया
ताकि वह उन का हुक्मरान और नजातदहिन्दा बन
जाए। 36 और वह मोजिज़े और इलाही निशान दिखा
कर उन्हें मिस्र से निकाल लाया, फिर बहर-ए-क़ुल्ज़ुम
से गुज़र कर 40 साल के दौरान रेगिस्तान में उन की
राहनुमाई की। 37 मूसा ने ख़ुद इस्राईलियों को बताया,
'अल्लाह तुम्हारे वास्ते तुम्हारे भाइयों में से मुझ जैसे
नबी को बरपा करेगा।' 38 मूसा रेगिस्तान में क़ौम की
जमाअत में शरीक था। एक तरफ़ वह उस फ़रिश्ते
के साथ था जो सीना पहाड़ पर उस से बातें करता
था, दूसरी तरफ़ हमारे बापदादा के साथ। फ़रिश्ते से
उसे ज़िन्दगीबख़्श बातें मिल गईं जो उसे हमारे सपुर्द
करनी थीं।

39 लेकिन हमारे बापदादा ने उस की सुनने से
इन्कार करके उसे रद्द कर दिया। दिल ही दिल में
वह मिस्र की तरफ़ रुजू कर चुके थे। 40 वह हारून
से कहने लगे, 'आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो
हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें।
क्यूँकि क्या मालूम कि उस बन्दे मूसा को क्या हुआ
है जो हमें मिस्र से निकाल लाया।' 41 उसी वक़्त उन्हों
ने बछड़े का बुत बना कर उसे क़ुर्बानियाँ पेश कीं
और अपने हाथों के काम की ख़ुशी मनाई। 42 इस
पर अल्लाह ने अपना मुँह फेर लिया और उन्हें सितारों
की पूजा की गिरिफ़्त में छोड़ दिया, बिलकुल उसी
तरह जिस तरह नबियों के सहीफ़े में लिखा है,

'ऐ इस्राईल के घराने,
जब तुम रेगिस्तान में घूमते फिरते थे
तो क्या तुम ने उन 40 सालों के दौरान
कभी मुझे ज़बह और ग़ल्ला की क़ुर्बानियाँ पेश कीं?
43 नहीं, उस वक़्त भी तुम मलिक देवता का ताबूत
और रिफ़ान देवता का सितारा उठाए फिरते थे,
गो तुम ने अपने हाथों से यह बुत
पूजा करने के लिए बना लिए थे।
इस लिए मैं तुम्हें जिलावतन करके
बाबल के पार बसा दूँगा।'

44 रेगिस्तान में हमारे बापदादा के पास मुलाक़ात
का ख़ैमा था। उसे उस नमूने के मुताबिक़ बनाया
गया था जो अल्लाह ने मूसा को दिखाया था। 45 मूसा
की मौत के बाद हमारे बापदादा ने उसे विरसे में पा
कर अपने साथ ले लिया जब उन्हों ने यशूअ की
राहनुमाई में इस मुल्क में दाख़िल हो कर उस पर
क़ब्ज़ा कर लिया। उस वक़्त अल्लाह उस में आबाद
क़ौमों को उन के आगे आगे निकालता गया। यूँ
मुलाक़ात का ख़ैमा दाऊद बादशाह के ज़माने तक
मुल्क में रहा। 46 दाऊद अल्लाह का मन्ज़ूर-ए-नज़र
था। उस ने याक़ूब के ख़ुदा को एक सुकूनतगाह
मुहय्या करने की इजाज़त माँगी। 47 लेकिन सुलेमान
को उस के लिए मकान बनाने का एज़ाज़ हासिल
हुआ।

48 हक़ीक़त में अल्लाह तआला इन्सान के हाथ के
बनाए हुए मकानों में नहीं रहता। नबी रब का फ़रमान
यूँ बयान करता है,

49 'आसमान मेरा तख़्त है
और ज़मीन मेरे पाँओ की चौकी,
तो फिर तुम मेरे लिए किस क़िस्म का घर बनाओगे?
वह जगह कहाँ है जहाँ मैं आराम करूँगा?
50 क्या मेरे हाथ ने यह सब कुछ नहीं बनाया?'

51 ऐ गर्दनकश लोगो! बेशक आप का ख़तना हुआ
है जो अल्लाह की क़ौम का ज़ाहिरी निशान है। लेकिन
उस का आप के दिलों और कानों पर कुछ भी असर
नहीं हुआ। आप अपने बापदादा की तरह हमेशा रूह-
उल-क़ुद्स की मुख़ालफ़त करते रहते हैं। 52 क्या

कभी कोई नबी था जिसे आप के बापदादा ने न सताया? उन्हों ने उन्हें भी क़त्ल किया जिन्हों ने रास्तबाज़ मसीह की पेशगोई की, उस शख़्स की जिसे आप ने दुश्मनों के हवाले करके मार डाला। 53 आप ही को फ़रिश्तों के हाथ से अल्लाह की शरीअत हासिल हुई मगर उस पर अमल नहीं किया।”

स्तिफ़नुस को संगसार किया जाता है

54 स्तिफ़नुस की यह बातें सुन कर इज्लास के लोग तैश में आ कर दाँत पीसने लगे। 55 लेकिन स्तिफ़नुस रूह-उल-क़ुद्स से मामूर अपनी नज़र उठा कर आसमान की तरफ़ तकने लगा। वहाँ उसे अल्लाह का जलाल नज़र आया, और ईसा अल्लाह के दहने हाथ खड़ा था। 56 उस ने कहा, “देखो, मुझे आसमान खुला हुआ दिखाई दे रहा है और इब्न-ए-आदम अल्लाह के दहने हाथ खड़ा है!”

57 यह सुनते ही उन्हों ने चीख़ चीख़ कर हाथों से अपने कानों को बन्द कर लिया और मिल कर उस पर झपट पड़े। 58 फिर वह उसे शहर से निकाल कर संगसार करने लगे। और जिन लोगों ने उस के ख़िलाफ़ गवाही दी थी उन्हों ने अपनी चादरें उतार कर एक जवान आदमी के पाँओ में रख दीं। उस आदमी का नाम साऊल था। 59 जब वह स्तिफ़नुस को संगसार कर रहे थे तो उस ने दुआ करके कहा, “ऐ ख़ुदावन्द ईसा, मेरी रूह को क़बूल कर।” 60 फिर घुटने टेक कर उस ने ऊँची आवाज़ से कहा, “ऐ ख़ुदावन्द, उन्हें इस गुनाह के ज़िम्मादार न ठहरा।” यह कह कर वह इन्तिक़ाल कर गया।

8 1 और साऊल को भी स्तिफ़नुस का क़त्ल मन्ज़ूर था।

साऊल जमाअत को सताता है

उस दिन यरूशलम में मौजूद जमाअत सख़्त ईज़ारसानी की ज़द में आ गई। इस लिए सिवाए रसूलों के तमाम ईमानदार यहूदिया और सामरिया के इलाक़ों में तित्तर-बित्तर हो गए। 2 कुछ ख़ुदातरस आदमियों ने स्तिफ़नुस को दफ़न करके रो रो कर उस का मातम किया।

3 लेकिन साऊल ईसा की जमाअत को तबाह करने पर तुला हुआ था। उस ने घर घर जा कर ईमानदार मर्द-ओ-ख़वातीन को निकाल दिया और उन्हें घसीट कर क़ैदख़ाने में डलवा दिया।

ख़ुशख़बरी सामरिया में फैल जाती है

4 जो ईमानदार बिखर गए थे वह जगह जगह जा कर अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते फिरे। 5 इस तरह फ़िलिप्पुस सामरिया के किसी शहर को गया और वहाँ के लोगों को मसीह के बारे में बताया। 6 जो कुछ भी फ़िलिप्पुस ने कहा और जो भी इलाही निशान उस ने दिखाए, उस पर सुनने वाले हुजूम ने यकदिल हो कर तवज्जुह दी। 7 बहुत से लोगों में से बदरुहें ज़ोरदार चीख़ें मार मार कर निकल गईं, और बहुत से मफ़्लूजों और लंगड़ों को शिफ़ा मिल गई। 8 यूँ उस शहर में बड़ी शादमानी फैल गई।

9 वहाँ काफ़ी अर्से से एक आदमी रहता था जिस का नाम शमाऊन था। वह जादूगर था और उस के हैरतअंगेज़ काम से सामरिया के लोग बहुत मुतअस्सिर थे। उस का अपना दावा था कि मैं कोई ख़ास शख़्स हूँ। 10 इस लिए सब लोग छोटे से ले कर बड़े तक उस पर ख़ास तवज्जुह देते थे। उन का कहना था, ‘यह आदमी वह इलाही क़ुव्वत है जो अज़ीम कहलाती है।’ 11 वह इस लिए उस के पीछे लग गए थे कि उस ने उन्हें बड़ी देर से अपने हैरतअंगेज़ कामों से मुतअस्सिर कर रखा था। 12 लेकिन अब लोग फ़िलिप्पुस की अल्लाह की बादशाही और ईसा के नाम के बारे में ख़ुशख़बरी पर ईमान ले आए, और मर्द-ओ-ख़वातीन ने बपतिस्मा लिया। 13 ख़ुद शमाऊन ने भी ईमान ला कर बपतिस्मा लिया और फ़िलिप्पुस के साथ रहा। जब उस ने वह बड़े इलाही निशान और मोजिज़े देखे जो फ़िलिप्पुस के हाथ से ज़ाहिर हुए तो वह हक्का-बक्का रह गया।

14 जब यरूशलम में रसूलों ने सुना कि सामरिया
ने अल्लाह का कलाम क़बूल कर लिया है तो उन्हों
ने पतरस और यूहन्ना को उन के पास भेज दिया।
15 वहाँ पहुँच कर उन्हों ने उन के लिए दुआ की कि
उन्हें रूह-उल-क़ुद्स मिल जाए, 16 क्यूँकि अभी रूह-
उल-क़ुद्स उन पर नाज़िल नहीं हुआ था बल्कि उन्हें
सिर्फ़ ख़ुदावन्द ईसा के नाम में बपतिस्मा दिया गया
था। 17 अब जब पतरस और यूहन्ना ने अपने हाथ उन
पर रखे तो उन्हें रूह-उल-क़ुद्स मिल गया।

18 शमाऊन ने देखा कि जब रसूल लोगों पर हाथ
रखते हैं तो उन को रूह-उल-क़ुद्स मिलता है। इस
लिए उस ने उन्हें पैसे पेश करके 19 कहा, "मुझे भी
यह इख़तियार दे दें कि जिस पर मैं हाथ रखूँ उसे
रूह-उल-क़ुद्स मिल जाए।"

20 लेकिन पतरस ने जवाब दिया, "आप के पैसे
आप के साथ ग़ारत हो जाएँ, क्यूँकि आप ने सोचा कि
अल्लाह की नेमत पैसों से ख़रीदी जा सकती है। 21 इस
ख़िदमत में आप का कोई हिस्सा नहीं है, क्यूँकि आप
का दिल अल्लाह के सामने ख़ालिस नहीं है। 22 अपनी
इस शरारत से तौबा करके ख़ुदावन्द से दुआ करें।
शायद वह आप को इस इरादे की मुआफ़ी दे जो आप
ने दिल में रखा है। 23 क्यूँकि मैं देखता हूँ कि आप
कड़वे पित से भरे और नारास्ती के बंधन में जकड़े
हुए हैं।"

24 शमाऊन ने कहा, "फिर ख़ुदावन्द से मेरे लिए
दुआ करें कि आप की मज़कूरा मुसीबतों में से मुझ
पर कोई न आए।"

25 ख़ुदावन्द के कलाम की गवाही देने और उस
की मुनादी करने के बाद पतरस और यूहन्ना वापस
यरूशलम के लिए रवाना हुए। रास्ते में उन्हों ने
सामरिया के बहुत से दीहातों में अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाई।

फ़िलिप्पुस और एथोपिया का अफ़्सर

26 एक दिन रब के फ़रिश्ते ने फ़िलिप्पुस से कहा,
"उठ कर जुनूब की तरफ़ उस राह पर जा जो
रेगिस्तान में से गुज़र कर यरूशलम से ग़ज़्ज़ा को
जाती है।" 27 फ़िलिप्पुस उठ कर रवाना हुआ। चलते
चलते उस की मुलाक़ात एथोपिया की मलिका
कन्दाके के एक ख़्वाजासरा से हुई। मलिका के पूरे
ख़ज़ाने पर मुक़र्रर यह दरबारी इबादत करने के लिए
यरूशलम गया था 28 और अब अपने मुल्क में वापस
जा रहा था। उस वक़्त वह रथ में सवार यसायाह नबी
की किताब की तिलावत कर रहा था। 29 रूह-उल-
क़ुद्स ने फ़िलिप्पुस से कहा, "उस के पास जा कर
रथ के साथ हो ले।" 30 फ़िलिप्पुस दौड़ कर रथ के
पास पहुँचा तो सुना कि वह यसायाह नबी की किताब
की तिलावत कर रहा है। उस ने पूछा, "क्या आप
को उस सब की समझ आती है जो आप पढ़ रहे हैं?"

31 दरबारी ने जवाब दिया, "मैं क्यूँकर समझूँ जब
तक कोई मेरी राहनुमाई न करे?" और उस ने
फ़िलिप्पुस को रथ में सवार होने की दावत दी।
32 कलाम-ए-मुक़द्दस का जो हवाला वह पढ़ रहा था
यह था,

'उसे भेड़ की तरह ज़बह करने के लिए ले गए।
जिस तरह लेला बाल कतरने वाले के सामने
ख़ामोश रहता है,
उसी तरह उस ने अपना मुँह न खोला।
33 उस की तज़्लील की गई और उसे इन्साफ़ न
मिला।
कौन उस की नस्ल बयान कर सकता है?
क्यूँकि उस की जान दुनिया से छीन ली गई।'

34 दरबारी ने फ़िलिप्पुस से पूछा, "मेहरबानी करके
मुझे बता दीजिए कि नबी यहाँ किस का ज़िक्र कर
रहा है, अपना या किसी और का?" 35 जवाब में
फ़िलिप्पुस ने कलाम-ए-मुक़द्दस के इसी हवाले से
शुरू करके उसे ईसा के बारे में ख़ुशख़बरी सुनाई।
36 सड़क पर सफ़र करते करते वह एक जगह से
गुज़रे जहाँ पानी था। ख़्वाजासरा ने कहा, "देखें, यहाँ
पानी है। अब मुझे बपतिस्मा लेने से कौन सी चीज़
रोक सकती है?" 37 [फ़िलिप्पुस ने कहा, "अगर
आप पूरे दिल से ईमान लाएँ तो ले सकते हैं।" उस

ने जवाब दिया, “मैं ईमान रखता हूँ कि ईसा मसीह अल्लाह का फ़र्ज़न्द है।”]

38 उस ने रथ को रोकने का हुक्म दिया। दोनों पानी में उतर गए और फ़िलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया। 39 जब वह पानी से निकल आए तो ख़ुदावन्द का रूह फ़िलिप्पुस को उठा ले गया। इस के बाद ख़्वाजासरा ने उसे फिर कभी न देखा, लेकिन उस ने ख़ुशी मनाते हुए अपना सफ़र जारी रखा। 40 इतने में फ़िलिप्पुस को अश्दूद शहर में पाया गया। वह वहाँ और क़ैसरिया तक के तमाम शहरों में से गुज़र कर अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाता गया।

पौलुस की तब्दीली

9 1 अब तक साऊल ख़ुदावन्द के शागिर्दों को धमकाने और क़त्ल करने के दरपै था। उस ने इमाम-ए-आज़म के पास जा कर 2 उस से गुज़ारिश की कि “मुझे दमिश्क़ में यहूदी इबादतख़ानों के लिए सिफ़ारिशी ख़त लिख कर दें ताकि वह मेरे साथ तआवुन करें। क्यूँकि मैं वहाँ मसीह की राह पर चलने वालों को ख़्वाह वह मर्द हों या ख़वातीन ढूँड कर और बांध कर यरूशलम लाना चाहता हूँ।”

3 वह इस मक़्सद से सफ़र करके दमिश्क़ के क़रीब पहुँचा ही था कि अचानक आसमान की तरफ़ से एक तेज़ रौशनी उस के गिर्द चमकी। 4 वह ज़मीन पर गिर पड़ा तो एक आवाज़ सुनाई दी, “साऊल, साऊल, तू मुझे क्यूँ सताता है?”

5 उस ने पूछा, “ख़ुदावन्द, आप कौन हैं?”

आवाज़ ने जवाब दिया, “मैं ईसा हूँ जिसे तू सताता है। 6 अब उठ कर शहर में जा। वहाँ तुझे बताया जाएगा कि तुझे क्या करना है।”

7 साऊल के पास खड़े हमसफ़र दम-ब-ख़ुद रह गए। आवाज़ तो वह सुन रहे थे, लेकिन उन्हें कोई नज़र न आया। 8 साऊल ज़मीन पर से उठा, लेकिन जब उस ने अपनी आँखें खोलीं तो मालूम हुआ कि वह अंधा है। चुनाँचे उस के साथी उस का हाथ पकड़ कर उसे दमिश्क़ ले गए। 9 वहाँ तीन दिन के दौरान वह अंधा रहा। इतने में उस ने न कुछ खाया, न पिया।

10 उस वक़्त दमिश्क़ में ईसा का एक शागिर्द रहता था जिस का नाम हननियाह था। अब ख़ुदावन्द रोया में उस से हमकलाम हुआ, “हननियाह!”

उस ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावन्द, मैं हाज़िर हूँ।”

11 ख़ुदावन्द ने फ़रमाया, “उठ, उस गली में जा जो ‘सीधी’ कहलाती है। वहाँ यहूदाह के घर में तर्सुस के एक आदमी का पता करना जिस का नाम साऊल है। क्यूँकि देख, वह दुआ कर रहा है। 12 और रोया में उस ने देख लिया है कि एक आदमी बनाम हननियाह मेरे पास आ कर अपने हाथ मुझ पर रखेगा। इस से मेरी आँखें बहाल हो जाएँगी।”

13 हननियाह ने एतिराज़ किया, “ऐ ख़ुदावन्द, मैं ने बहुत से लोगों से उस शख़्स की शरीर हरकतों के बारे में सुना है। यरूशलम में उस ने तेरे मुक़द्दसों के साथ बहुत ज़ियादती की है। 14 अब उसे राहनुमा इमामों से इख़तियार मिल गया है कि यहाँ भी हर एक को गिरिफ़्तार करे जो तेरी इबादत करता है।”

15 लेकिन ख़ुदावन्द ने कहा, “जा, यह आदमी मेरा चुना हुआ वसीला है जो मेरा नाम ग़ैरयहूदियों, बादशाहों और इस्राईलियों तक पहुँचाएगा। 16 और मैं उसे दिखा दूँगा कि उसे मेरे नाम की ख़ातिर कितना दुख उठाना पड़ेगा।”

17 चुनाँचे हननियाह मज़कूरा घर के पास गया, उस में दाख़िल हुआ और अपने हाथ साऊल पर रख दिए। उस ने कहा, “साऊल भाई, ख़ुदावन्द ईसा जो आप पर ज़ाहिर हुआ जब आप यहाँ आ रहे थे उसी ने मुझे भेजा है ताकि आप दुबारा देख पाएँ और रूह-उल-क़ुद्स से मामूर हो जाएँ।” 18 यह कहते ही छिलकों जैसी कोई चीज़ साऊल की आँखों पर से गिरी और वह दुबारा देखने लगा। उस ने उठ कर बपतिस्मा लिया, 19 फिर कुछ खाना खा कर नए सिरे से तक़वियत पाई।

साऊल दमिश्क़ में अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाता है

साऊल कई दिन शागिर्दों के साथ दमिश्क़ में रहा।
20 उसी वक़्त वह सीधा यहूदी इबादतख़ानों में जा
कर एलान करने लगा कि ईसा अल्लाह का फ़र्ज़न्द
है।
21 और जिस ने भी उसे सुना वह हैरान रह गया
और पूछा, “क्या यह वह आदमी नहीं जो यरूशलम
में ईसा की इबादत करने वालों को हलाक कर रहा
था? और क्या वह इस मक़्सद से यहाँ नहीं आया
कि ऐसे लोगों को बांध कर राहनुमा इमामों के पास
ले जाए?”
22 लेकिन साऊल रोज़-ब-रोज़ ज़ोर पकड़ता गया,
और चूँकि उस ने साबित किया कि ईसा वादा किया
हुआ मसीह है इस लिए दमिश्क़ में आबाद यहूदी
उलझन में पड़ गए।
23 चुनाँचे काफ़ी दिनों के बाद उन्हों ने मिल कर उसे
क़त्ल करने का मन्सूबा बनाया। 24 लेकिन साऊल
को पता चल गया। यहूदी दिन रात शहर के दरवाज़ों
की पहरादारी करते रहे ताकि उसे क़त्ल करें, 25 इस
लिए उस के शागिर्दों ने उसे रात के वक़्त टोकरे में
बिठा कर शहर की चारदीवारी के एक सूराख़ में से
उतार दिया।

साऊल यरूशलम में

26 साऊल यरूशलम वापस चला गया। वहाँ उस
ने शागिर्दों से राबिता करने की कोशिश की, लेकिन
सब उस से डरते थे, क्यूँकि उन्हें यक़ीन नहीं आया
था कि वह वाक़ई ईसा का शागिर्द बन गया है।
27 फिर बर्नबास उसे रसूलों के पास ले आया। उस
ने उन्हें साऊल के बारे में सब कुछ बताया, कि
उस ने दमिश्क़ की तरफ़ सफ़र करते वक़्त रास्ते में
ख़ुदावन्द को देखा, कि ख़ुदावन्द उस से हमकलाम
हुआ था और उस ने दमिश्क़ में दिलेरी से ईसा के
नाम से बात की थी। 28 चुनाँचे साऊल उन के साथ
रह कर आज़ादी से यरूशलम में फिरने और दिलेरी
से ख़ुदावन्द ईसा के नाम से कलाम करने लगा।
29 उस ने यूनानी ज़बान बोलने वाले यहूदियों से भी
मुख़ातिब हो कर बह्स की, लेकिन जवाब में वह उसे
क़त्ल करने की कोशिश करने लगे। 30 जब भाइयों
को मालूम हुआ तो उन्हों ने उसे क़ैसरिया पहुँचा दिया
और जहाज़ में बिठा कर तर्सुस के लिए रवाना कर
दिया।
31 इस पर यहूदिया, गलील और सामरिया के पूरे
इलाक़े में फैली हुई जमाअत को अम्न-ओ-अमान
हासिल हुआ। रूह-उल-क़ुद्स की हिमायत से उस
की तामीर-ओ-तक़वियत हुई, वह ख़ुदा का ख़ौफ़
मान कर चलती रही और तादाद में भी बढ़ती गई।

पतरस लुद्दा और याफ़ा में

32 एक दिन जब पतरस जगह जगह सफ़र कर रहा
था तो वह लुद्दा में आबाद मुक़द्दसों के पास भी
आया। 33 वहाँ उस की मुलाक़ात एक आदमी बनाम
ऐनियास से हुई। ऐनियास मफ़्लूज था। वह आठ साल
से बिस्तर से उठ न सका था। 34 पतरस ने उस से
कहा, “ऐनियास, ईसा मसीह आप को शिफ़ा देता है।
उठ कर अपना बिस्तर समेट लें।” ऐनियास फ़ौरन
उठ खड़ा हुआ। 35 जब लुद्दा और मैदानी इलाक़े
शारून के तमाम रहने वालों ने उसे देखा तो उन्हों
ने ख़ुदावन्द की तरफ़ रुजू किया।
36 याफ़ा में एक औरत थी जो शागिर्द थी और नेक
काम करने और ख़ैरात देने में बहुत आगे थी। उस
का नाम तबीता (ग़ज़ाला) था। 37 उन ही दिनों में वह
बीमार हो कर फ़ौत हो गई। लोगों ने उसे ग़ुसल दे
कर बालाख़ाने में रख दिया। 38 लुद्दा याफ़ा के क़रीब
है, इस लिए जब शागिर्दों ने सुना कि पतरस लुद्दा
में है तो उन्हों ने उस के पास दो आदमियों को भेज
कर इल्तिमास की, “सीधे हमारे पास आएँ और देर
न करें।” 39 पतरस उठ कर उन के साथ चला गया।
वहाँ पहुँच कर लोग उसे बालाख़ाने में ले गए। तमाम
बेवाओं ने उसे घेर लिया और रोते चिल्लाते वह सारी
क़मीसें और बाक़ी लिबास दिखाने लगीं जो तबीता

ने उन के लिए बनाए थे जब वह अभी ज़िन्दा थी।
40 लेकिन पतरस ने उन सब को कमरे से निकाल
दिया और घुटने टेक कर दुआ की। फिर लाश की
तरफ़ मुड़ कर उस ने कहा, “तबीता, उठें!” औरत
ने अपनी आँखें खोल दीं। पतरस को देख कर वह
बैठ गई। 41 पतरस ने उस का हाथ पकड़ लिया और
उठने में उस की मदद की। फिर उस ने मुक़द्दसों
और बेवाओं को बुला कर तबीता को ज़िन्दा उन
के सपुर्द किया। 42 यह वाक़िआ पूरे याफ़ा में मश्हूर
हुआ, और बहुत से लोग ख़ुदावन्द ईसा पर ईमान
लाए। 43 पतरस काफ़ी दिनों तक याफ़ा में रहा। वहाँ
वह चमड़ा रंगने वाले एक आदमी के घर ठहरा जिस
का नाम शमाऊन था।

पतरस और कुर्नेलियुस

10 1 क़ैसरिया में एक रोमी अफ़सर [d]रहता था
जिस का नाम कुर्नेलियुस था। वह उस
पलटन के सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर था जो इतालवी
कहलाती थी। 2 कुर्नेलियुस अपने पूरे घराने समेत
दीनदार और ख़ुदातरस था। वह फ़य्याज़ी से ख़ैरात
देता और मुतवातिर दुआ में लगा रहता था। 3 एक
दिन उस ने तीन बजे दोपहर के वक़्त रोया देखी। उस
में उस ने साफ़ तौर पर अल्लाह का एक फ़रिश्ता देखा
जो उस के पास आया और कहा, “कुर्नेलियुस!”

4 वह घबरा गया और उसे ग़ौर से देखते हुए कहा,
“मेरे आक़ा, फ़रमाएँ।”

फ़रिश्ते ने कहा, “तुम्हारी दुआओं और ख़ैरात की
क़ुर्बानी अल्लाह के हुज़ूर पहुँच गई है और मन्ज़ूर है।
5 अब कुछ आदमी याफ़ा भेज दो। वहाँ एक आदमी
बनाम शमाऊन है जो पतरस कहलाता है। उसे बुला
कर ले आओ। 6 पतरस एक चमड़ा रंगने वाले का
मेहमान है जिस का नाम शमाऊन है। उस का घर
समुन्दर के क़रीब वाक़े है।”

7 जूँ ही फ़रिश्ता चला गया कुर्नेलियुस ने दो नौकरों
और अपने ख़िदमतगार फ़ौजियों में से एक ख़ुदातरस
आदमी को बुलाया। 8 सब कुछ सुना कर उस ने उन्हें
याफ़ा भेज दिया।

9 अगले दिन पतरस दोपहर तक़रीबन बारह बजे
दुआ करने के लिए छत पर चढ़ गया। उस वक़्त
कुर्नेलियुस के भेजे हुए आदमी याफ़ा शहर के क़रीब
पहुँच गए थे। 10 पतरस को भूक लगी और वह कुछ
खाना चाहता था। जब उस के लिए खाना तय्यार
किया जा रहा था तो वह वज्द की हालत में आ गया।
11 उस ने देखा कि आसमान खुल गया है और एक
चीज़ ज़मीन पर उतर रही है, कतान की बड़ी चादर
जैसी जो अपने चार कोनों से नीचे उतारी जा रही
है। 12 चादर में तमाम क़िस्म के जानवर हैं : चार
पाँओ रखने वाले, रेंगने वाले और परिन्दे। 13 फिर
एक आवाज़ उस से मुख़ातिब हुई, “उठ, पतरस।
कुछ ज़बह करके खा!”

14 पतरस ने एतिराज़ किया, “हरगिज़ नहीं
ख़ुदावन्द, मैं ने कभी भी हराम या नापाक खाना नहीं
खाया।”

15 लेकिन यह आवाज़ दुबारा उस से हमकलाम हुई,
“जो कुछ अल्लाह ने पाक कर दिया है उसे नापाक
क़रार न दे।” 16 यही कुछ तीन मर्तबा हुआ, फिर
चादर को अचानक आसमान पर वापस उठा लिया
गया।

17 पतरस बड़ी उलझन में पड़ गया। वह अभी सोच
रहा था कि इस रोया का क्या मतलब है तो कुर्नेलियुस
के भेजे हुए आदमी शमाऊन के घर का पता करके
उस के गेट पर पहुँच गए। 18 आवाज़ दे कर उन्हों ने
पूछा, “क्या शमाऊन जो पतरस कहलाता है आप के
मेहमान हैं?”

19 पतरस अभी रोया पर ग़ौर कर ही रहा था कि
रूह-उल-क़ुद्स उस से हमकलाम हुआ, “शमाऊन,
तीन मर्द तेरी तलाश में हैं। 20 उठ और छत से उतर

---

[d]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

कर उन के साथ चला जा। मत झिजकना, क्यूँकि मैं
ही ने उन्हें तेरे पास भेजा है।” 21 चुनाँचे पतरस उन
आदमियों के पास गया और उन से कहा, “मैं वही हूँ
जिसे आप ढूँड रहे हैं। आप क्यूँ मेरे पास आए हैं?”
22 उन्हों ने जवाब दिया, “हम सौ फ़ौजियों पर
मुक़र्रर अफ़्सर कुर्नेलियुस के घर से आए हैं। वह
इन्साफ़पर्वर और ख़ुदातरस आदमी हैं। पूरी यहूदी
क़ौम इस की तस्दीक़ कर सकती है। एक मुक़द्दस
फ़रिश्ते ने उन्हें हिदायत दी कि वह आप को अपने
घर बुला कर आप का पैग़ाम सुनें।” 23 यह सुन कर
पतरस उन्हें अन्दर ले गया और उन की मेहमान-
नवाज़ी की। अगले दिन वह उठ कर उन के साथ
रवाना हुआ। याफ़ा के कुछ भाई भी साथ गए। 24 एक
दिन के बाद वह क़ैसरिया पहुँच गया। कुर्नेलियुस
उन के इन्तिज़ार में था। उस ने अपने रिश्तेदारों और
क़रीबी दोस्तों को भी अपने घर जमा कर रखा था।
25 जब पतरस घर में दाख़िल हुआ तो कुर्नेलियुस ने
उस के सामने गिर कर उसे सिज्दा किया। 26 लेकिन
पतरस ने उसे उठा कर कहा, “उठें। मैं भी इन्सान ही
हूँ।” 27 और उस से बातें करते करते वह अन्दर गया
और देखा कि बहुत से लोग जमा हो गए हैं। 28 उस
ने उन से कहा, “आप जानते हैं कि किसी यहूदी के
लिए किसी ग़ैरयहूदी से रिफ़ाक़त रखना या उस के
घर में जाना मना है। लेकिन अल्लाह ने मुझे दिखाया
है कि मैं किसी को भी हराम या नापाक क़रार न दूँ।
29 इस वजह से जब मुझे बुलाया गया तो मैं एतिराज़
किए बग़ैर चला आया। अब मुझे बता दीजिए कि
आप ने मुझे क्यूँ बुलाया है?”
30 कुर्नेलियुस ने जवाब दिया, “चार दिन की बात है
कि मैं इसी वक़्त दोपहर तीन बजे दुआ कर रहा था।
अचानक एक आदमी मेरे सामने आ खड़ा हुआ। उस
के कपड़े चमक रहे थे। 31 उस ने कहा, ‘कुर्नेलियुस,
अल्लाह ने तुम्हारी दुआ सुन ली और तुम्हारी ख़ैरात का
ख़याल किया है। 32 अब किसी को याफ़ा भेज कर
शमाऊन को बुला लो जो पतरस कहलाता है। वह
चमड़ा रंगने वाले शमाऊन का मेहमान है। शमाऊन
का घर समुन्दर के क़रीब वाक़े है।’ 33 यह सुनते ही
मैं ने अपने लोगों को आप को बुलाने के लिए भेज
दिया। अच्छा हुआ कि आप आ गए हैं। अब हम सब
अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हैं ताकि वह कुछ सुनें जो रब
ने आप को हमें बताने को कहा है।”

पतरस की तक़रीर

34 फिर पतरस बोल उठा, “अब मैं समझ गया
हूँ कि अल्लाह वाक़ई जानिबदार नहीं, 35 बल्कि हर
किसी को क़बूल करता है जो उस का ख़ौफ़ मानता
और रास्त काम करता है। 36 आप अल्लाह की उस
ख़ुशख़बरी से वाक़िफ़ हैं जो उस ने इस्राईलियों को
भेजी, यह ख़ुशख़बरी कि ईसा मसीह के वसीले से
सलामती आई है। ईसा मसीह सब का ख़ुदावन्द है।
37 आप को वह कुछ मालूम है जो गलील से शुरू
हो कर यहूदिया के पूरे इलाक़े में हुआ यानी उस
बपतिस्मे के बाद जिस की मुनादी यहया ने की।
38 और आप जानते हैं कि अल्लाह ने ईसा नासरी को
रूह-उल-क़ुद्स और क़ुव्वत से मसह किया और कि
इस पर उस ने जगह जगह जा कर नेक काम किया
और इब्लीस के दबे हुए तमाम लोगों को शिफ़ा दी,
क्यूँकि अल्लाह उस के साथ था। 39 जो कुछ भी उस ने
मुल्क-ए-यहूद और यरूशलम में किया, उस के गवाह
हम ख़ुद हैं। गो लोगों ने उसे लकड़ी पर लटका कर
क़त्ल कर दिया 40 लेकिन अल्लाह ने तीसरे दिन उसे
मुर्दों में से ज़िन्दा किया और उसे लोगों पर ज़ाहिर
किया। 41 वह पूरी क़ौम पर तो ज़ाहिर नहीं हुआ
बल्कि हम पर जिन को अल्लाह ने पहले से चुन लिया
था ताकि हम उस के गवाह हों। हम ने उस के जी
उठने के बाद उस के साथ खाने-पीने की रिफ़ाक़त
भी रखी। 42 उस वक़्त उस ने हमें हुक्म दिया कि
मुनादी करके क़ौम को गवाही दो कि ईसा वही है
जिसे अल्लाह ने ज़िन्दों और मुर्दों पर मुन्सिफ़ मुक़र्रर
किया है। 43 तमाम नबी उस की गवाही देते हैं कि जो
भी उस पर ईमान लाए उसे उस के नाम के वसीले से
गुनाहों की मुआफ़ी मिल जाएगी।”

रूह-उल-क़ुद्स ग़ैरयहूदियों पर नाज़िल होता है

44 पतरस अभी यह बात कर ही रहा था कि
तमाम सुनने वालों पर रूह-उल-क़ूदस नाज़िल हुआ।
45 जो यहूदी ईमानदार पतरस के साथ आए थे वह
हक्का-बक्का रह गए कि रूह-उल-क़ुद्स की नेमत
ग़ैरयहूदियों पर भी उंडेली गई है, 46 क्यूँकि उन्हों
ने देखा कि वह ग़ैरज़बानें बोल रहे और अल्लाह की
तम्जीद कर रहे हैं। तब पतरस ने कहा, 47 "अब कौन
इन को बपतिस्मा लेने से रोक सकता है? इन्हें तो
हमारी तरह रूह-उल-क़ुद्स हासिल हुआ है।" 48 और
उस ने हुक्म दिया कि उन्हें ईसा मसीह के नाम से
बपतिस्मा दिया जाए। इस के बाद उन्हों ने पतरस से
गुज़ारिश की कि कुछ दिन हमारे पास ठहरें।

यरूशलम की जमाअत में पतरस की रिपोर्ट

11 1 यह ख़बर रसूलों और यहूदिया के बाक़ी
भाइयों तक पहुँची कि ग़ैरयहूदियों ने भी
अल्लाह का कलाम क़बूल किया है। 2 चुनाँचे जब
पतरस यरूशलम वापस आया तो यहूदी ईमानदार
उस पर एतिराज़ करने लगे, 3 "आप ग़ैरयहूदियों के
घर में गए और उन के साथ खाना भी खाया।" 4 फिर
पतरस ने उन के सामने तर्तीब से सब कुछ बयान
किया जो हुआ था।

5 "मैं याफ़ा शहर में दुआ कर रहा था कि वज्द की
हालत में आ कर रोया देखी। आसमान से एक चीज़
ज़मीन पर उतर रही है, कतान की बड़ी चादर जैसी जो
अपने चारों कोनों से उतारी जा रही है। उतरती उतरती
वह मुझ तक पहुँच गई। 6 जब मैं ने ग़ौर से देखा तो
पता चला कि उस में तमाम क़िस्म के जानवर हैं :
चार पाँओ वाले, रेंगने वाले और परिन्दे। 7 फिर एक
आवाज़ मुझ से मुख़ातिब हुई, 'पतरस, उठ! कुछ
ज़बह करके खा!' 8 मैं ने एतिराज़ किया, 'हरगिज़
नहीं, ख़ुदावन्द, मैं ने कभी भी हराम या नापाक खाना
नहीं खाया।' 9 लेकिन यह आवाज़ दुबारा मुझ से
हमकलाम हुई, 'जो कुछ अल्लाह ने पाक कर दिया
है उसे नापाक क़रार न दे।' 10 तीन मर्तबा ऐसा हुआ,
फिर चादर को जानवरों समेत वापस आसमान पर
उठा लिया गया। 11 उसी वक़्त तीन आदमी उस घर
के सामने रुक गए जहाँ मैं ठहरा हुआ था। उन्हें
क़ैसरिया से मेरे पास भेजा गया था। 12 रूह-उल-
क़ुद्स ने मुझे बताया कि मैं बग़ैर झिजके उन के साथ
चला जाऊँ। यह मेरे छः भाई भी मेरे साथ गए। हम
रवाना हो कर उस आदमी के घर में दाख़िल हुए जिस
ने मुझे बुलाया था। 13 उस ने हमें बताया कि एक
फ़रिश्ता घर में उस पर ज़ाहिर हुआ था जिस ने उसे
कहा था, 'किसी को याफ़ा भेज कर शमाऊन को बुला
लो जो पतरस कहलाता है। 14 उस के पास वह पैग़ाम
है जिस के ज़रीए तुम अपने पूरे घराने समेत नजात
पाओगे।' 15 जब मैं वहाँ बोलने लगा तो रूह-उल-
क़ुद्स उन पर नाज़िल हुआ, बिलकुल उसी तरह जिस
तरह वह शुरू में हम पर हुआ था। 16 फिर मुझे वह
बात याद आई जो ख़ुदावन्द ने कही थी, 'यहया ने तुम
को पानी से बपतिस्मा दिया, लेकिन तुम्हें रूह-उल-
क़ुद्स से बपतिस्मा दिया जाएगा।' 17 अल्लाह ने उन्हें
वही नेमत दी जो उस ने हमें भी दी थी जो ख़ुदावन्द
ईसा मसीह पर ईमान लाए थे। तो फिर मैं कौन था
कि अल्लाह को रोकता?"

18 पतरस की यह बातें सुन कर यरूशलम के
ईमानदार एतिराज़ करने से बाज़ आए और अल्लाह
की तम्जीद करने लगे। उन्हों ने कहा, "तो इस का
मतलब है कि अल्लाह ने ग़ैरयहूदियों को भी तौबा
करने और अबदी ज़िन्दगी पाने का मौक़ा दिया है।"

अन्ताकिया में जमाअत

19 जो ईमानदार स्तिफ़नुस की मौत के बाद की
ईज़ारसानी से बिखर गए थे वह फ़ेनीके, क़ुब्रुस और
अन्ताकिया तक पहुँच गए। जहाँ भी वह जाते वहाँ
अल्लाह का पैग़ाम सुनाते अलबत्ता सिर्फ़ यहूदियों
को। 20 लेकिन उन में से कुरेन और क़ुब्रुस के कुछ
आदमी अन्ताकिया शहर जा कर यूनानियों को भी
ख़ुदावन्द ईसा के बारे में ख़ुशख़बरी सुनाने लगे।

21 ख़ुदावन्द की क़ुदरत उन के साथ थी, और बहुत
से लोगों ने ईमान ला कर ख़ुदावन्द की तरफ़ रुजू
किया। 22 इस की ख़बर यरूशलम की जमाअत तक
पहुँच गई तो उन्हों ने बर्नबास को अन्ताकिया भेज
दिया। 23 जब वह वहाँ पहुँचा और देखा कि अल्लाह
के फ़ज़्ल से क्या कुछ हुआ है तो वह ख़ुश हुआ।
उस ने उन सब की हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह पूरी
लगन से ख़ुदावन्द के साथ लिपटे रहें। 24 बर्नबास
नेक आदमी था जो रूह-उल-क़ुद्स और ईमान से
मामूर था। चुनाँचे उस वक़्त बहुत से लोग ख़ुदावन्द
की जमाअत में शामिल हुए।

25 इस के बाद वह साऊल की तलाश में तर्सुस चला
गया। 26 जब उसे मिला तो वह उसे अन्ताकिया ले
आया। वहाँ वह दोनों एक पूरे साल तक जमाअत
में शामिल होते और बहुत से लोगों को सिखाते रहे।
अन्ताकिया पहला मक़ाम था जहाँ ईमानदार मसीही
कहलाने लगे।

27 उन दिनों कुछ नबी यरूशलम से आ कर
अन्ताकिया पहुँच गए। 28 एक का नाम अगबुस था।
वह खड़ा हुआ और रूह-उल-क़ुद्स की मारिफ़त
पेशगोई की कि रोम की पूरी मम्लकत में सख़्त काल
पड़ेगा। (यह बात उस वक़्त पूरी हुई जब शहन्शाह
क्लौदियुस की हुकूमत थी।) 29 अगबुस की बात सुन
कर अन्ताकिया के शागिर्दों ने फ़ैसला किया कि हम
में से हर एक अपनी माली गुन्जाइश के मुताबिक़
कुछ दे ताकि उसे यहूदिया में रहने वाले भाइयों की
इम्दाद के लिए भेजा जा सके। 30 उन्हों ने अपने इस
हदिए को बर्नबास और साऊल के सपुर्द करके वहाँ
के बुज़ुर्गों को भेज दिया।

मज़ीद ईज़ारसानी

12 1 उन दिनों में बादशाह हेरोदेस अग्रिप्पा
जमाअत के कुछ ईमानदारों को गिरिफ़्तार
करके उन से बदसुलूकी करने लगा। 2 इस सिलसिले
में उस ने याक़ूब रसूल (यूहन्ना के भाई) को तलवार
से क़त्ल करवाया। 3 जब उस ने देखा कि यह हरकत
यहूदियों को पसन्द आई है तो उस ने पतरस को भी
गिरिफ़्तार कर लिया। उस वक़्त बेख़मीरी रोटी की
ईद मनाई जा रही थी। 4 उस ने उसे जेल में डाल कर
चार दस्तों के हवाले कर दिया कि उस की पहरादारी
करें (हर दस्ते में चार फ़ौजी थे)। ख़याल था कि ईद
के बाद ही पतरस को अवाम के सामने खड़ा करके
उस की अदालत की जाए। 5 यूँ पतरस क़ैदख़ाने में
रहा। लेकिन ईमानदारों की जमाअत लगातार उस के
लिए दुआ करती रही।

पतरस की रिहाई

6 फिर अदालत का दिन क़रीब आ गया। पतरस
रात के वक़्त सो रहा था। अगले दिन हेरोदेस उसे पेश
करना चाहता था। पतरस दो फ़ौजियों के दरमियान
लेटा हुआ था जो दो ज़न्जीरों से उस के साथ बंधे
हुए थे। दीगर फ़ौजी दरवाज़े के सामने पहरा दे रहे
थे। 7 अचानक एक तेज़ रौशनी कोठड़ी में चमक
उठी और रब का एक फ़रिश्ता पतरस के सामने आ
खड़ा हुआ। उस ने उस के पहलू को झटका दे कर
उसे जगा दिया और कहा, “जल्दी करो! उठो!” तब
पतरस की कलाइयों पर की ज़न्जीरें गिर गईं। 8 फिर
फ़रिश्ते ने उसे बताया, “अपने कपड़े और जूते पहन
लो।” पतरस ने ऐसा ही किया। फ़रिश्ते ने कहा, “अब
अपनी चादर ओढ़ कर मेरे पीछे हो लो।” 9 चुनाँचे
पतरस कोठड़ी से निकल कर फ़रिश्ते के पीछे हो
लिया अगरचे उसे अब तक समझ नहीं आई थी कि
जो कुछ हो रहा है हक़ीक़ी है। उस का ख़याल था
कि मैं रोया देख रहा हूँ। 10 दोनों पहले पहरे से गुज़र
गए, फिर दूसरे से और यूँ शहर में पहुँचाने वाले लोहे
के गेट के पास आए। यह ख़ुद-ब-ख़ुद खुल गया और
वह दोनों निकल कर एक गली में चलने लगे। चलते
चलते फ़रिश्ते ने अचानक पतरस को छोड़ दिया।

11 फिर पतरस होश में आ गया। उस ने कहा,
“वाक़ई, ख़ुदावन्द ने अपने फ़रिश्ते को मेरे पास भेज
कर मुझे हेरोदेस के हाथ से बचाया है। अब यहूदी
क़ौम की तवक़्क़ो पूरी नहीं होगी।”

12 जब यह बात उसे समझ आई तो वह यूहन्ना
मर्क़ुस की माँ मरियम के घर चला गया। वहाँ बहुत
से अफ़राद जमा हो कर दुआ कर रहे थे। 13 पतरस
ने गेट खटखटाया तो एक नौकरानी देखने के लिए
आई। उस का नाम रुदी था। 14 जब उस ने पतरस
की आवाज़ पहचान ली तो वह ख़ुशी के मारे गेट
को खोलने के बजाय दौड़ कर अन्दर चली गई और
बताया, "पतरस गेट पर खड़े हैं!" 15 हाज़िरीन ने
कहा, "होश में आओ!" लेकिन वह अपनी बात पर
अड़ी रही। फिर उन्हों ने कहा, "यह उस का फ़रिश्ता
होगा।"

16 अब तक पतरस बाहर खड़ा खटखटा रहा था।
चुनाँचे उन्हों ने गेट को खोल दिया। पतरस को देख
कर वह हैरान रह गए। 17 लेकिन उस ने अपने हाथ
से ख़ामोश रहने का इशारा किया और उन्हें सारा
वाक़िआ सुनाया कि ख़ुदावन्द मुझे किस तरह जेल
से निकाल लाया है। "याक़ूब और बाक़ी भाइयों को
भी यह बताना," यह कह कर वह कहीं और चला
गया।

18 अगली सुब्ह जेल के फ़ौजियों में बड़ी हलचल
मच गई कि पतरस का क्या हुआ है। 19 जब हेरोदेस
ने उसे ढूँडा और न पाया तो उस ने पहरेदारों का
बयान ले कर उन्हें सज़ा-ए-मौत दे दी।

इस के बाद वह यहूदिया से चला गया और
क़ैसरिया में रहने लगा।

हेरोदेस अग्रिप्पा की मौत

20 उस वक़्त वह सूर और सैदा के बाशिन्दों से
निहायत नाराज़ था। इस लिए दोनों शहरों के नुमाइन्दे
मिल कर सुलह की दरख़्वास्त करने के लिए उस के
पास आए। वजह यह थी कि उन की ख़ुराक हेरोदेस
के मुल्क से हासिल होती थी। उन्हों ने बादशाह के
महल के इंचार्ज ब्लस्तुस को इस पर आमादा किया
कि वह उन की मदद करे 21 और बादशाह से मिलने
का दिन मुक़र्रर किया। जब वह दिन आया तो हेरोदेस
अपना शाही लिबास पहन कर तख़्त पर बैठ गया
और एक अलानिया तक़रीर की। 22 अवाम ने नारे
लगा लगा कर पुकारा, "यह अल्लाह की आवाज़ है,
इन्सान की नहीं।" 23 वह अभी यह कह रहे थे कि
रब के फ़रिश्ते ने हेरोदेस को मारा, क्यूँकि उस ने
लोगों की परस्तिश क़बूल करके अल्लाह को जलाल
नहीं दिया था। वह बीमार हुआ और कीड़ों ने उस के
जिस्म को खा खा कर ख़त्म कर दिया। इसी हालत
में वह मर गया।

24 लेकिन अल्लाह का कलाम बढ़ता और फैलता
गया।

25 इतने में बर्नबास और साऊल अन्ताकिया का
हदिया ले कर यरूशलम पहुँच चुके थे। उन्हों ने पैसे
वहाँ के बुज़ुर्गों के सपुर्द कर दिए और फिर यूहन्ना
मर्क़ुस को साथ ले कर वापस चले गए।

बर्नबास और साऊल को तब्लीग़ी ख़िदमत के लिए चुना जाता है

13 1 अन्ताकिया की जमाअत में कई नबी
और उस्ताद थे : बर्नबास, शमाऊन जो
काला कहलाता था, लूकियुस कुरेनी, मनाहेम जिस
ने बादशाह हेरोदेस अनतिपास के साथ परवरिश पाई
थी और साऊल। 2 एक दिन जब वह रोज़ा रख कर
ख़ुदावन्द की परस्तिश कर रहे थे तो रूह-उल-क़ुद्स
उन से हमकलाम हुआ, "बर्नबास और साऊल को
उस ख़ास काम के लिए अलग करो जिस के लिए मैं
ने उन्हें बुलाया है।"

3 इस पर उन्हों ने मज़ीद रोज़े रखे और दुआ की,
फिर उन पर अपने हाथ रख कर उन्हें रुख़्सत कर
दिया।

क़ुब्रुस में

4 यूँ बर्नबास और साऊल को रूह-उल-क़ुद्स
की तरफ़ से भेजा गया। पहले वह साहिली शहर
सलूकिया गए और वहाँ जहाज़ में बैठ कर जज़ीरा-ए-
क़ुब्रुस के लिए रवाना हुए। 5 जब वह सलमीस शहर
पहुँचे तो उन्हों ने यहूदियों के इबादतख़ानों में जा कर

अल्लाह का कलाम सुनाया। यूहन्ना मर्क़ुस मददगार के
तौर पर उन के साथ था।
6 पूरे जज़ीरे में से सफ़र करते करते वह पाफ़ुस शहर
तक पहुँच गए। वहाँ उन की मुलाक़ात एक यहूदी
जादूगर से हुई जिस का नाम बरईसा था। वह झूटा
नबी था 7 और जज़ीरे के गवर्नर सिरगियुस पौलुस
की ख़िदमत के लिए हाज़िर रहता था। सिरगियुस
एक समझदार आदमी था। उस ने बर्नबास और
साऊल को अपने पास बुला लिया क्यूँकि वह अल्लाह
का कलाम सुनने का ख़्वाहिशमन्द था। 8 लेकिन
जादूगर इलीमास (बरईसा का दूसरा नाम) ने उन की
मुख़ालफ़त करके गवर्नर को ईमान से बाज़ रखने की
कोशिश की। 9 फिर साऊल जो पौलुस भी कहलाता
है रूह-उल-क़ुद्स से मामूर हुआ और ग़ौर से उस
की तरफ़ देखने लगा। 10 उस ने कहा, "इब्लीस के
फ़र्ज़न्द! तू हर क़िस्म के धोके और बदी से भरा हुआ
है और हर इन्साफ़ का दुश्मन है। क्या तू ख़ुदावन्द
की सीधी राहों को बिगाड़ने की कोशिश से बाज़ न
आएगा? 11 अब ख़ुदावन्द तुझे सज़ा देगा। तू अंधा हो
कर कुछ देर के लिए सूरज की रौशनी नहीं देखेगा।"
उसी लम्हे धुन्द और तारीकी जादूगर पर छा गई
और वह टटोल टटोल कर किसी को तलाश करने
लगा जो उस की राहनुमाई करे। 12 यह माजरा देख
कर गवर्नर ईमान लाया, क्यूँकि ख़ुदावन्द की तालीम
ने उसे हैरतज़दा कर दिया था।

पिसिदिया के शहर अन्ताकिया में मुनादी

13 फिर पौलुस और उस के साथी जहाज़ पर सवार
हुए और पाफ़ुस से रवाना हो कर पिर्गा शहर पहुँच
गए जो पम्फ़ीलिया में है। वहाँ यूहन्ना मर्क़ुस उन्हें
छोड़ कर यरूशलम वापस चला गया। 14 लेकिन
पौलुस और बर्नबास आगे निकल कर पिसिदिया में
वाक़े शहर अन्ताकिया पहुँचे जहाँ वह सबत के दिन
यहूदी इबादतख़ाने में जा कर बैठ गए। 15 तौरेत और
नबियों के सहीफ़ों की तिलावत के बाद इबादतख़ाने
के राहनुमाओं ने उन्हें कहला भेजा, "भाइयो, अगर
आप के पास लोगों के लिए कोई नसीहत की बात
है तो उसे पेश करें।" 16 पौलुस खड़ा हुआ और हाथ
का इशारा करके बोलने लगा,
"इस्राईल के मर्दो और ख़ुदातरस ग़ैरयहूदियो, मेरी
बात सुनें! 17 इस क़ौम इस्राईल के ख़ुदा ने हमारे
बापदादा को चुन कर उन्हें मिस्र में ही ताक़तवर
बना दिया जहाँ वह अजनबी थे। फिर वह उन्हें बड़ी
क़ुदरत के साथ वहाँ से निकाल लाया। 18 जब वह
रेगिस्तान में फिर रहे थे तो वह चालीस साल तक
उन्हें बर्दाश्त करता रहा। 19 इस के बाद उस ने मुल्क-
ए-कनआन में सात क़ौमों को तबाह करके उन की
ज़मीन इस्राईल को विरसे में दी। 20 इतने में तक़रीबन
450 साल गुज़र गए।
यशूअ की मौत पर अल्लाह ने उन्हें समूएल नबी के
दौर तक क़ाज़ी दिए ताकि उन की राहनुमाई करें।
21 फिर इन से तंग आ कर उन्हों ने बादशाह माँगा,
इस लिए उस ने उन्हें साऊल बिन क़ीस दे दिया जो
बिनयमीन के क़बीले का था। साऊल चालीस साल
तक उन का बादशाह रहा, 22 फिर अल्लाह ने उसे हटा
कर दाऊद को तख़्त पर बिठा दिया। दाऊद वही
आदमी है जिस के बारे में अल्लाह ने गवाही दी, 'मैं
ने दाऊद बिन यस्सी में एक ऐसा आदमी पाया है
जो मेरी सोच रखता है। जो कुछ भी मैं चाहता हूँ
उसे वह करेगा।' 23 इसी बादशाह की औलाद में
से ईसा निकला जिस का वादा अल्लाह कर चुका
था और जिसे उस ने इस्राईल को नजात देने के
लिए भेज दिया। 24 उस के आने से पेशतर यहया
बपतिस्मा देने वाले ने एलान किया कि इस्राईल की
पूरी क़ौम को तौबा करके बपतिस्मा लेने की ज़रूरत
है। 25 अपनी ख़िदमत के इख़तिताम पर उस ने कहा,
'तुम्हारे नज़्दीक मैं कौन हूँ? मैं वह नहीं हूँ जो तुम
समझते हो। लेकिन मेरे बाद वह आ रहा है जिस के
जूतों के तस्मे मैं खोलने के लाइक़ भी नहीं हूँ।'
26 भाइयो, इब्राहीम के फ़र्ज़न्दो और ख़ुदा का ख़ौफ़
मानने वाले ग़ैरयहूदियो! नजात का पैग़ाम हमें ही भेज
दिया गया है। 27 यरूशलम के रहने वालों और उन

के राहनुमाओं ने ईसा को न पहचाना बल्कि उसे
मुजरिम ठहराया। यूँ उन की मारिफ़त नबियों की
वह पेशगोइयाँ पूरी हुईं जिन की तिलावत हर सबत
को की जाती है। 28 और अगरचे उन्हें सज़ा-ए-मौत
देने की वजह न मिली तो भी उन्हों ने पीलातुस से
गुज़ारिश की कि वह उसे सज़ा-ए-मौत दे। 29 जब उन
की मारिफ़त ईसा के बारे में तमाम पेशगोइयाँ पूरी हुईं
तो उन्हों ने उसे सलीब से उतार कर क़ब्र में रख दिया।
30 लेकिन अल्लाह ने उसे मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया
31 और वह बहुत दिनों तक अपने उन पैरोकारों पर
ज़ाहिर होता रहा जो उस के साथ गलील से यरूशलम
आए थे। यह अब हमारी क़ौम के सामने उस के गवाह
हैं। 32 और अब हम आप को यह ख़ुशख़बरी सुनाने
आए हैं कि जो वादा अल्लाह ने हमारे बापदादा के
साथ किया, 33 उसे उस ने ईसा को ज़िन्दा करके
हमारे लिए जो उन की औलाद हैं पूरा कर दिया है।
यूँ दूसरे ज़बूर में लिखा है, 'तू मेरा फ़र्ज़न्द है, आज मैं
तेरा बाप बन गया हूँ।' 34 इस हक़ीक़त का ज़िक्र भी
कलाम-ए-मुक़द्दस में किया गया है कि अल्लाह उसे
मुर्दों में से ज़िन्दा करके कभी गलने सड़ने नहीं देगा
: 'मैं तुम्हें उन मुक़द्दस और अनमिट मेहरबानियों से
नवाज़ूँगा जिन का वादा दाऊद से किया था।' 35 यह
बात एक और हवाले में पेश की गई है, 'तू अपने
मुक़द्दस को गलने सड़ने की नौबत तक पहुँचने नहीं
देगा।' 36 इस हवाले का ताल्लुक़ दाऊद के साथ नहीं
है, क्यूँकि दाऊद अपने ज़माने में अल्लाह की मर्ज़ी की
ख़िदमत करने के बाद फ़ौत हो कर अपने बापदादा
से जा मिला। उस की लाश गल कर ख़त्म हो गई।
37 बल्कि यह हवाला किसी और का ज़िक्र करता है,
उस का जिसे अल्लाह ने ज़िन्दा कर दिया और जिस का
जिस्म गलने सड़ने से दोचार न हुआ। 38 भाइयो, अब
मेरी यह बात जान लें, हम इस की मुनादी करने आए
हैं कि आप को इस शख़्स ईसा के वसीले से अपने
गुनाहों की मुआफ़ी मिलती है। मूसा की शरीअत आप
को किसी तरह भी रास्तबाज़ क़रार नहीं दे सकती
थी, 39 लेकिन अब जो भी ईसा पर ईमान लाए उसे
हर लिहाज़ से रास्तबाज़ क़रार दिया जाता है। 40 इस
लिए ख़बरदार! ऐसा न हो कि वह बात आप पर पूरी
उतरे जो नबियों के सहीफ़ों में लिखी है,

41 'ग़ौर करो, मज़ाक़ उड़ाने वालो!
हैरतज़दा हो कर हलाक हो जाओ।
क्यूँकि मैं तुम्हारे जीते जी एक ऐसा काम करूँगा
जिस की जब ख़बर सुनोगे
तो तुम्हें यक़ीन नहीं आएगा'।"

42 जब पौलुस और बर्नबास इबादतख़ाने से
निकलने लगे तो लोगों ने उन से गुज़ारिश की, "अगले
सबत हमें इन बातों के बारे में मज़ीद कुछ बताएँ।"
43 इबादत के बाद बहुत से यहूदी और यहूदी ईमान के
नौमुरीद पौलुस और बर्नबास के पीछे हो लिए, और
दोनों ने उन से बात करके उन की हौसलाअफ़ज़ाई
की कि अल्लाह के फ़ज़्ल पर क़ाइम रहें।

44 अगले सबत के दिन तक़रीबन तमाम शहर
ख़ुदावन्द का कलाम सुनने को जमा हुआ। 45 लेकिन
जब यहूदियों ने हुजूम को देखा तो वह हसद से
जल गए और पौलुस की बातों की तरदीद करके
कुफ़्र बकने लगे। 46 इस पर पौलुस और बर्नबास
ने उन से साफ़ साफ़ कह दिया, "लाज़िम था कि
अल्लाह का कलाम पहले आप को सुनाया जाए।
लेकिन चूँकि आप उसे मुस्तरद करके अपने आप को
अबदी ज़िन्दगी के लाइक़ नहीं समझते इस लिए हम
अब ग़ैरयहूदियों की तरफ़ रुख़ करते हैं। 47 क्यूँकि
ख़ुदावन्द ने हमें यही हुक्म दिया जब उस ने फ़रमाया,
'मैं ने तुझे दीगर अक़्वाम की रौशनी बना दी है ताकि
तू मेरी नजात को दुनिया की इन्तिहा तक पहुँचाए'।"

48 यह सुन कर ग़ैरयहूदी ख़ुश हुए और ख़ुदावन्द
के कलाम की तम्जीद करने लगे। और जितने अबदी
ज़िन्दगी के लिए मुक़र्रर किए गए थे वह ईमान लाए।

49 यूँ ख़ुदावन्द का कलाम पूरे इलाक़े में फैल गया।
50 फिर यहूदियों ने शहर के लीडरों और यहूदी ईमान
रखने वाली कुछ बारसूख ग़ैरयहूदी ख़वातीन को
उकसा कर लोगों को पौलुस और बर्नबास को सताने
पर उभारा। आख़िरकार उन्हें शहर की सरहद्दों से

निकाल दिया गया। 51 इस पर वह उन के ख़िलाफ़
गवाही के तौर पर अपने जूतों से गर्द झाड़कर
आगे बढ़े और इकुनियुम शहर पहुँच गए। 52 और
अन्ताकिया के शागिर्द ख़ुशी और रूह-उल-क़ुद्स से
भरे रहे।

इकुनियुम में

14 1 इकुनियुम में पौलुस और बर्नबास यहूदी
इबादतख़ाने में जा कर इतने इख़तियार से
बोले कि यहूदियों और ग़ैरयहूदियों की बड़ी तादाद
ईमान ले आई। 2 लेकिन जिन यहूदियों ने ईमान लाने
से इन्कार किया उन्हों ने ग़ैरयहूदियों को उकसा
कर भाइयों के बारे में उन के ख़यालात ख़राब कर
दिए। 3 तो भी रसूल काफ़ी देर तक वहाँ ठहरे। उन्हों
ने दिलेरी से ख़ुदावन्द के बारे में तालीम दी और
ख़ुदावन्द ने अपने फ़ज़्ल के पैग़ाम की तस्दीक़ की।
उस ने उन के हाथों इलाही निशान और मोजिज़े रूनुमा
होने दिए। 4 लेकिन शहर में आबाद लोग दो गुरोहों
में बट गए। कुछ यहूदियों के हक़ में थे और कुछ
रसूलों के हक़ में।

5 फिर कुछ ग़ैरयहूदियों और यहूदियों में जोश आ
गया। उन्हों ने अपने लीडरों समेत फ़ैसला किया कि
हम पौलुस और बर्नबास की तज़्लील करके उन्हें
संगसार करेंगे। 6 लेकिन जब रसूलों को पता चला तो
वह हिज्रत करके लुकाउनिया के शहरों लुस्तरा, दिर्बे
और इर्दगिर्द के इलाक़े में 7 अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाते रहे।

लुस्तरा और दिर्बे

8 लुस्तरा में पौलुस और बर्नबास की मुलाक़ात एक
आदमी से हुई जिस के पाँओ में ताक़त नहीं थी। वह
पैदाइश ही से लंगड़ा था और कभी भी चल फिर न
सका था। वह वहाँ बैठा 9 उन की बातें सुन रहा था
कि पौलुस ने ग़ौर से उस की तरफ़ देखा। उस ने जान
लिया कि उस आदमी में रिहाई पाने के लाइक़ ईमान
है। 10 इस लिए वह ऊँची आवाज़ से बोला, "अपने
पाँओ पर खड़े हो जाएँ!" वह उछल कर खड़ा हुआ
और चलने फिरने लगा। 11 पौलुस का यह काम देख
कर हुजूम अपनी मक़ामी ज़बान में चिल्ला उठा, "इन
आदमियों की शक्ल में देवता हमारे पास उतर आए
हैं।" 12 उन्हों ने बर्नबास को यूनानी देवता ज़ियूस
क़रार दिया और पौलुस को देवता हिर्मेस, क्यूँकि
कलाम सुनाने की ख़िदमत ज़्यादातर वह अन्जाम
देता था। 13 इस पर शहर से बाहर वाक़े ज़ियूस के
मन्दिर का पुजारी शहर के दरवाज़े पर बैल और फूलों
के हार ले आया और हुजूम के साथ क़ुर्बानियाँ चढ़ाने
की तय्यारियाँ करने लगा।

14 यह सुन कर बर्नबास और साऊल अपने कपड़ों
को फाड़ कर हुजूम में जा घुसे और चिल्लाने लगे,
15 "मर्दो, यह आप क्या कर रहे हैं? हम भी आप जैसे
इन्सान हैं। हम तो आप को अल्लाह की यह ख़ुशख़बरी
सुनाने आए हैं कि आप इन बेकार चीज़ों को छोड़ कर
ज़िन्दा ख़ुदा की तरफ़ रुजू फ़रमाएँ जिस ने आसमान-
ओ-ज़मीन, समुन्दर और जो कुछ उन में है पैदा किया
है। 16 माज़ी में उस ने तमाम ग़ैरयहूदी क़ौमों को खुला
छोड़ दिया था कि वह अपनी अपनी राह पर चलें।
17 तो भी उस ने ऐसी चीज़ें आप के पास रहने दी
हैं जो उस की गवाही देती हैं। उस की मेहरबानी
इस से ज़ाहिर होती है कि वह आप को बारिश भेज
कर हर मौसम की फ़सलें मुहय्या करता है और आप
सेर हो कर ख़ुशी से भर जाते हैं।" 18 इन अल्फ़ाज़
के बावुजूद पौलुस और बर्नबास ने बड़ी मुश्किल से
हुजूम को उन्हें क़ुर्बानियाँ चढ़ाने से रोका।

19 फिर कुछ यहूदी पिसिदिया के अन्ताकिया और
इकुनियुम से वहाँ आए और हुजूम को अपनी तरफ़
माइल किया। उन्हों ने पौलुस को संगसार किया और
शहर से बाहर घसीट कर ले गए। उन का ख़याल था
कि वह मर गया है, 20 लेकिन जब शागिर्द उस के
गिर्द जमा हुए तो वह उठ कर शहर की तरफ़ वापस
चल पड़ा। अगले दिन वह बर्नबास समेत दिर्बे चला
गया।

शाम के अन्ताकिया में वापसी

21 दिर्बे में उन्हों ने अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुना कर
बहुत से शागिर्द बनाए। फिर वह मुड़ कर लुस्तरा,
इकुनियुम और पिसिदिया के अन्ताकिया वापस
आए। 22 हर जगह उन्हों ने शागिर्दों के दिल मज़बूत
करके उन की हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह ईमान
में साबितक़दम रहें। उन्हों ने कहा, "लाज़िम है कि
हम बहुत सी मुसीबतों में से गुज़र कर अल्लाह की
बादशाही में दाख़िल हों।" 23 पौलुस और बर्नबास ने
हर जमाअत में बुज़ुर्ग भी मुक़र्रर किए। उन्हों ने रोज़े
रख कर दुआ की और उन्हें उस ख़ुदावन्द के सपुर्द
किया जिस पर वह ईमान लाए थे।

24 यूँ पिसिदिया के इलाक़े में से सफ़र करते करते
वह पम्फ़ीलिया पहुँचे। 25 उन्हों ने पिर्गा में कलाम-ए-
मुक़द्दस सुनाया और फिर उतर कर अत्तलिया पहुँचे।
26 वहाँ से वह जहाज़ में बैठ कर शाम के शहर
अन्ताकिया के लिए रवाना हुए, उस शहर के लिए
जहाँ ईमानदारों ने उन्हें इस तब्लीग़ी सफ़र के लिए
अल्लाह के फ़ज़्ल के सपुर्द किया था। यूँ उन्हों ने
अपनी इस ख़िदमत को पूरा किया।

27 अन्ताकिया पहुँच कर उन्हों ने ईमानदारों को
जमा करके उन तमाम कामों का बयान किया जो
अल्लाह ने उन के वसीले से किए थे। साथ साथ उन्हों
ने यह भी बताया कि अल्लाह ने किस तरह ग़ैरयहूदियों
के लिए भी ईमान का दरवाज़ा खोल दिया है। 28 और
वह काफ़ी देर तक वहाँ के शागिर्दों के पास ठहरे रहे।

यरूशलम में मुशावरती इजतिमा

15 1 उस वक़्त कुछ आदमी यहूदिया से आ
कर शाम के अन्ताकिया में भाइयों को यह
तालीम देने लगे, "लाज़िम है कि आप का मूसा की
शरीअत के मुताबिक़ ख़तना किया जाए, वर्ना आप
नजात नहीं पा सकेंगे।" 2 इस से उन के और बर्नबास
और पौलुस के दरमियान नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा हो गई
और दोनों उन के साथ ख़ूब बह्स-मुबाहसा करने
लगे। आख़िरकार जमाअत ने पौलुस और बर्नबास
को मुक़र्रर किया कि वह चन्द एक और मक़ामी
ईमानदारों के साथ यरूशलम जाएँ और वहाँ के
रसूलों और बुज़ुर्गों को यह मुआमला पेश करें।

3 चुनाँचे जमाअत ने उन्हें रवाना किया और वह
फ़ेनीके और सामरिया में से गुज़रे। रास्ते में उन्हों
ने मक़ामी ईमानदारों को तफ़्सील से बताया कि
ग़ैरयहूदी किस तरह ख़ुदावन्द की तरफ़ रुजू ला रहे
हैं। यह सुन कर तमाम भाई निहायत ख़ुश हुए। 4 जब
वह यरूशलम पहुँच गए तो जमाअत ने अपने रसूलों
और बुज़ुर्गों समेत उन का इस्तिक़्बाल किया। फिर
पौलुस और बर्नबास ने सब कुछ बयान किया जो उन
की मारिफ़त हुआ था। 5 यह सुन कर कुछ ईमानदार
खड़े हुए जो फ़रीसी फ़िर्क़े में से थे। उन्हों ने कहा,
"लाज़िम है कि ग़ैरयहूदियों का ख़तना किया जाए
और उन्हें हुक्म दिया जाए कि वह मूसा की शरीअत
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें।"

6 रसूल और बुज़ुर्ग इस मुआमले पर ग़ौर करने के
लिए जमा हुए। 7 बहुत बह्स-मुबाहसा के बाद पतरस
खड़ा हुआ और कहा, "भाइयो, आप जानते हैं कि
अल्लाह ने बहुत देर हुई आप में से मुझे चुन लिया कि
ग़ैरयहूदियों को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ ताकि
वह ईमान लाएँ। 8 और अल्लाह ने जो दिलों को जानता
है इस बात की तस्दीक़ की है, क्यूँकि उस ने उन्हें
वही रूह-उल-क़ुद्स बख़्शा है जो उस ने हमें भी दिया
था। 9 उस ने हम में और उन में कोई भी फ़र्क़ न रखा
बल्कि ईमान से उन के दिलों को भी पाक कर दिया।
10 चुनाँचे आप अल्लाह को इस में क्यूँ आज़मा रहे
हैं कि आप ग़ैरयहूदी शागिर्दों की गर्दन पर एक ऐसा
जूआ रखना चाहते हैं जो न हम और न हमारे बापदादा
उठा सकते थे? 11 देखें, हम तो ईमान रखते हैं कि हम
सब एक ही तरीक़े यानी ख़ुदावन्द ईसा के फ़ज़्ल ही
से नजात पाते हैं।"

12 तमाम लोग चुप रहे तो पौलुस और बर्नबास उन्हें
उन इलाही निशानों और मोजिज़ों के बारे में बताने
लगे जो अल्लाह ने उन की मारिफ़त ग़ैरयहूदियों के

दरमियान किए थे। 13 जब उन की बात ख़त्म हुई तो
याक़ूब ने कहा, “भाइयो, मेरी बात सुनें! 14 शमाऊन
ने बयान किया है कि अल्लाह ने किस तरह पहला
क़दम उठा कर ग़ैरयहूदियों पर अपनी फ़िक्रमन्दी का
इज़हार किया और उन में से अपने लिए एक क़ौम
चुन ली। 15 और यह बात नबियों की पेशगोइयों के
भी मुताबिक़ है। चुनाँचे लिखा है,

16 ‘इस के बाद मैं वापस आ कर
दाऊद के तबाहशुदा घर को नए सिरे से तामीर
करूँगा,
मैं उस के खंडरात दुबारा तामीर करके बहाल
करूँगा
17 ताकि लोगों का बचा-खुचा हिस्सा और वह
तमाम क़ौमें
मुझे ढूँडें जिन पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है।
यह रब का फ़रमान है, और वह यह करेगा भी’
18 बल्कि यह उसे अज़ल से मालूम है।

19 यही पेश-ए-नज़र रख कर मेरी राय यह है कि हम
उन ग़ैरयहूदियों को जो अल्लाह की तरफ़ रुजू कर रहे
हैं ग़ैरज़रूरी तक्लीफ़ न दें। 20 इस के बजाय बेहतर
यह है कि हम उन्हें लिख कर हिदायत दें कि वह इन
चीज़ों से पर्हेज़ करें : ऐसे खानों से जो बुतों को पेश
किए जाने से नापाक हैं, ज़िनाकारी से, ऐसे जानवरों
का गोश्त खाने से जिन्हें गला घूँट कर मार दिया गया
हो और ख़ून खाने से। 21 क्यूँकि मूसवी शरीअत की
मुनादी करने वाले कई नस्लों से हर शहर में रह रहे
हैं। जिस शहर में भी जाएँ हर सबत के दिन शरीअत
की तिलावत की जाती है।”

ग़ैरयहूदी ईमानदारों के नाम ख़त

22 फिर रसूलों और बुज़ुर्गों ने पूरी जमाअत समेत
फ़ैसला किया कि हम अपने में से कुछ आदमी चुन
कर पौलुस और बर्नबास के हमराह शाम के शहर
अन्ताकिया भेज दें। दो को चुना गया जो भाइयों में
राहनुमा थे, यहूदाह बर्सब्बा और सीलास। 23 उन के
हाथ उन्हों ने यह ख़त भेजा,

“यरूशलम के रसूलों और बुज़ुर्गों की तरफ़ से जो
आप के भाई हैं।

अज़ीज़ ग़ैरयहूदी भाइयो जो अन्ताकिया, शाम और
किलिकिया में रहते हैं, अस्सलामु अलैकुम!

24 सुना है कि हम में से कुछ लोगों ने आप के पास
आ कर आप को परेशान करके बेचैन कर दिया है,
हालाँकि हम ने उन्हें नहीं भेजा था। 25 इस लिए हम
सब इस पर मुत्तफ़िक़ हुए कि कुछ आदमियों को
चुन कर अपने प्यारे भाइयों बर्नबास और पौलुस के
हमराह आप के पास भेजें। 26 बर्नबास और पौलुस
ऐसे लोग हैं जिन्हों ने हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह की
ख़ातिर अपनी जान ख़तरे में डाल दी है। 27 उन के
साथी यहूदाह और सीलास हैं जिन को हम ने इस
लिए भेजा कि वह ज़बानी भी उन बातों की तस्दीक़
करें जो हम ने लिखी हैं।

28 हम और रूह-उल-क़ुद्स इस पर मुत्तफ़िक़ हुए हैं
कि आप पर सिवाए इन ज़रूरी बातों के कोई बोझ न
डालें : 29 बुतों को पेश किया गया खाना मत खाना,
ख़ून मत खाना, ऐसे जानवरों का गोश्त मत खाना
जो गला घूँट कर मार दिए गए हों। इस के इलावा
ज़िनाकारी न करें। इन चीज़ों से बाज़ रहेंगे तो अच्छा
करेंगे। ख़ुदा हाफ़िज़।”

30 पौलुस, बर्नबास और उन के साथी रुख़्सत हो
कर अन्ताकिया चले गए। वहाँ पहुँच कर उन्हों ने
जमाअत इकट्ठी करके उसे ख़त दे दिया। 31 उसे पढ़
कर ईमानदार उस के हौसलाअफ़्ज़ा पैग़ाम पर ख़ुश
हुए। 32 यहूदाह और सीलास ने भी जो ख़ुद नबी थे
भाइयों की हौसलाअफ़्ज़ाई और मज़बूती के लिए
काफ़ी बातें कीं। 33 वह कुछ देर के लिए वहाँ ठहरे,
फिर मक़ामी भाइयों ने उन्हें सलामती से अलविदा
कहा ताकि वह भेजने वालों के पास वापस जा सकें।
34 [लेकिन सीलास को वहाँ ठहरना अच्छा लगा।]

35 पौलुस और बर्नबास ख़ुद कुछ और देर
अन्ताकिया में रहे। वहाँ वह बहुत से और लोगों के
साथ ख़ुदावन्द के कलाम की तालीम देते और उस
की मुनादी करते रहे।

पौलुस और बर्नबास जुदा हो जाते हैं

36 कुछ दिनों के बाद पौलुस ने बर्नबास से कहा,
"आओ, हम मुड़ कर उन तमाम शहरों में जाएँ जहाँ
हम ने ख़ुदावन्द के कलाम की मुनादी की है और वहाँ
के भाइयों से मुलाक़ात करके उन का हाल मालूम
करें।" 37 बर्नबास मुत्तफ़िक़ हो कर यूहन्ना मर्क़ुस को
साथ ले जाना चाहता था, 38 लेकिन पौलुस ने इसरार
किया कि वह साथ न जाए, क्यूँकि यूहन्ना मर्क़ुस
पहले दौरे के दौरान ही पम्फ़ीलिया में उन्हें छोड़ कर
उन के साथ ख़िदमत करने से बाज़ आया था। 39 इस
से उन में इतना सख़्त इख़तिलाफ़ पैदा हुआ कि वह
एक दूसरे से जुदा हो गए। बर्नबास यूहन्ना मर्क़ुस को
साथ ले कर जहाज़ में बैठ गया और क़ुब्रुस चला
गया, 40 जबकि पौलुस ने सीलास को ख़िदमत के
लिए चुन लिया। मक़ामी भाइयों ने उन्हें ख़ुदावन्द
के फ़ज़्ल के सपुर्द किया और वह रवाना हुए। 41 यूँ
पौलुस जमाअतों को मज़बूत करते करते शाम और
किलिकिया में से गुज़रा।

तीमुथियुस का चुनाओ

16 1 चलते चलते वह दिर्बे पहुँचा, फिर
लुस्तरा। वहाँ एक शागिर्द बनाम
तीमुथियुस रहता था। उस की यहूदी माँ ईमान लाई
थी जबकि बाप यूनानी था। 2 लुस्तरा और इकुनियुम
के भाइयों ने उस की अच्छी रिपोर्ट दी, 3 इस लिए
पौलुस उसे सफ़र पर अपने साथ ले जाना चाहता
था। उस इलाक़े के यहूदियों का लिहाज़ करके उस
ने तीमुथियुस का ख़तना करवाया, क्यूँकि सब लोग
इस से वाक़िफ़ थे कि उस का बाप यूनानी है। 4 फिर
शहर-ब-शहर जा कर उन्हों ने मक़ामी जमाअतों
को यरूशलम के रसूलों और बुज़ुर्गों के वह फ़ैसले
पहुँचाए जिन के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारनी थी।
5 यूँ जमाअतें ईमान में मज़बूत हुईं और तादाद में
रोज़-ब-रोज़ बढ़ती गईं।

त्रोआस में पौलुस की रोया

6 रूह-उल-क़ुद्स ने उन्हें सूबा आसिया में कलाम-
ए-मुक़द्दस की मुनादी करने से रोक लिया, इस लिए
वह फ़रूगिया और गलतिया के इलाक़े में से गुज़रे।
7 मूसिया के क़रीब आ कर उन्हों ने शिमाल की तरफ़
सूबा बिथुनिया में दाख़िल होने की कोशिश की।
लेकिन ईसा के रूह ने उन्हें वहाँ भी जाने न दिया,
8 इस लिए वह मूसिया में से गुज़र कर बन्दरगाह
त्रोआस पहुँचे। 9 वहाँ पौलुस ने रात के वक़्त रोया
देखी जिस में शिमाली यूनान में वाक़े सूबा मकिदुनिया
का एक आदमी खड़ा उस से इल्तिमास कर रहा
था, "समुन्दर को पार करके मकिदुनिया आएँ और
हमारी मदद करें!" 10 जूँ ही उस ने यह रोया देखी हम
मकिदुनिया जाने की तय्यारियाँ करने लगे। क्यूँकि
हम ने रोया से यह नतीजा निकाला कि अल्लाह ने हमें
उस इलाक़े के लोगों को ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए
बुलाया है।

फ़िलिप्पी में लुदिया की तब्दीली

11 हम त्रोआस में जहाज़ पर सवार हो कर सीधे
जज़ीरा-ए-समुत्राके के लिए रवाना हुए। फिर अगले
दिन आगे निकल कर नयापुलिस पहुँचे। 12 वहाँ
जहाज़ से उतर कर हम फ़िलिप्पी चले गए, जो सूबा
मकिदुनिया के उस ज़िला का सदर शहर था और
रोमी नौआबादी था। इस शहर में हम कुछ दिन ठहरे।
13 सबत के दिन हम शहर से निकल कर दरया के
किनारे गए, जहाँ हमारी तवक़्क़ो थी कि यहूदी दुआ
के लिए जमा होंगे। वहाँ हम बैठ कर कुछ ख़वातीन
से बात करने लगे जो इकट्ठी हुई थीं। 14 उन में से
थुआतीरा शहर की एक औरत थी जिस का नाम
लुदिया था। उस का पेशा क़ीमती अर्ग़वानी रंग के
कपड़े की तिजारत था और वह अल्लाह की परस्तिश
करने वाली ग़ैरयहूदी थी। ख़ुदावन्द ने उस के दिल
को खोल दिया, और उस ने पौलुस की बातों पर
तवज्जुह दी। 15 उस के और उस के घर वालों के

बपतिस्मा लेने के बाद उस ने हमें अपने घर में ठहरने
की दावत दी। उस ने कहा, “अगर आप समझते हैं
कि मैं वाक़ई ख़ुदावन्द पर ईमान लाई हूँ तो मेरे घर
आ कर ठहरें।” यूँ उस ने हमें मज्बूर किया।

फ़िलिप्पी की जेल में

16 एक दिन हम दुआ की जगह की तरफ़ जा रहे थे
कि हमारी मुलाक़ात एक लौंडी से हुई जो एक बदरुह
के ज़रीए लोगों की क़िस्मत का हाल बताती थी। इस
से वह अपने मालिकों के लिए बहुत से पैसे कमाती
थी। 17 वह पौलुस और हमारे पीछे पड़ कर चीख़
चीख़ कर कहने लगी, “यह आदमी अल्लाह तआला
के ख़ादिम हैं जो आप को नजात की राह बताने
आए हैं।” 18 यह सिलसिला रोज़-ब-रोज़ जारी रहा।
आख़िरकार पौलुस तंग आ कर मुड़ा और बदरुह से
कहा, “मैं तुझे ईसा मसीह के नाम से हुक्म देता हूँ
कि लड़की में से निकल जा!” उसी लम्हे वह निकल
गई।

19 उस के मालिकों को मालूम हुआ कि पैसे कमाने
की उम्मीद जाती रही तो वह पौलुस और सीलास
को पकड़ कर चौक में बैठे इक़तिदार रखने वालों
के सामने घसीट ले गए। 20 उन्हें मजिस्ट्रेटों के सामने
पेश करके वह चिल्लाने लगे, “यह आदमी हमारे शहर
में हलचल पैदा कर रहे हैं। यह यहूदी हैं 21 और
ऐसे रस्म-ओ-रिवाज का प्रचार कर रहे हैं जिन्हें
क़बूल करना और अदा करना हम रोमियों के लिए
जाइज़ नहीं।” 22 हुजूम भी आ मिला और पौलुस और
सीलास के ख़िलाफ़ बातें करने लगा।

इस पर मजिस्ट्रेटों ने हुक्म दिया कि उन के कपड़े
उतारे और उन्हें लाठी से मारा जाए। 23 उन्हों ने उन
की ख़ूब पिटाई करवा कर उन्हें क़ैदख़ाने में डाल
दिया और दारोग़े से कहा कि एहतियात से उन की
पहरादारी करो। 24 चुनाँचे उस ने उन्हें जेल के सब से
अन्दरूनी हिस्से में ले जा कर उन के पाँओ काठ में
डाल दिए।

25 अब ऐसा हुआ कि पौलुस और सीलास आधी
रात के क़रीब दुआ कर रहे और अल्लाह की तम्जीद
के गीत गा रहे थे और बाक़ी क़ैदी सुन रहे थे।
26 अचानक बड़ा ज़ल्ज़ला आया और क़ैदख़ाने की
पूरी इमारत बुन्यादों तक हिल गई। फ़ौरन तमाम
दरवाज़े खुल गए और तमाम क़ैदियों की ज़न्जीरें खुल
गईं। 27 दारोग़ा जाग उठा। जब उस ने देखा कि जेल
के दरवाज़े खुले हैं तो वह अपनी तलवार निकाल
कर ख़ुदकुशी करने लगा, क्यूँकि ऐसा लग रहा था
कि क़ैदी फ़रार हो गए हैं। 28 लेकिन पौलुस चिल्ला
उठा, “मत करें! अपने आप को नुक़्सान न पहुँचाएँ।
हम सब यहीं हैं।”

29 दारोग़े ने चराग़ मंगवा लिया और भाग कर अन्दर
आया। लरज़ते लरज़ते वह पौलुस और सीलास के
सामने गिर गया। 30 फिर उन्हें बाहर ले जा कर उस ने
पूछा, “साहिबो, मुझे नजात पाने के लिए क्या करना
है?”

31 उन्हों ने जवाब दिया, “ख़ुदावन्द ईसा पर ईमान
लाएँ तो आप और आप के घराने को नजात
मिलेगी।” 32 फिर उन्हों ने उसे और उस के तमाम
घर वालों को ख़ुदावन्द का कलाम सुनाया। 33 और
रात की उसी घड़ी दारोग़े ने उन्हें ले जा कर उन के
ज़ख़्मों को धोया। इस के बाद उस का और उस के
सारे घर वालों का बपतिस्मा हुआ। 34 फिर उस ने
उन्हें अपने घर में ला कर खाना खिलाया। अल्लाह पर
ईमान लाने के बाइस उस ने और उस के तमाम घर
वालों ने बड़ी ख़ुशी मनाई।

35 जब दिन चढ़ा तो मजिस्ट्रेटों ने अपने अफ़्सरों
को दारोग़े के पास भिजवा दिया कि वह पौलुस और
सीलास को रिहा करे।

36 चुनाँचे दारोग़े ने पौलुस को उन का पैग़ाम पहुँचा
दिया, “मजिस्ट्रेटों ने हुक्म दिया है कि आप और
सीलास को रिहा कर दिया जाए। अब निकल कर
सलामती से चले जाएँ।”

37 लेकिन पौलुस ने एतिराज़ किया। उस ने उन
से कहा, “उन्हों ने हमें अवाम के सामने ही और

अदालत में पेश किए बग़ैर मार कर जेल में डाल
दिया है हालाँकि हम रोमी शहरी हैं। और अब वह
हमें चुपके से निकालना चाहते हैं? हरगिज़ नहीं! अब
वह ख़ुद आएँ और हमें बाहर ले जाएँ।”
38 अफ़सरों ने मजिस्ट्रेटों को यह ख़बर पहुँचाई। जब
उन्हें मालूम हुआ कि पौलुस और सीलास रोमी शहरी
हैं तो वह घबरा गए। 39 वह ख़ुद उन्हें समझाने के
लिए आए और जेल से बाहर ला कर गुज़ारिश की कि
शहर को छोड़ दें। 40 चुनाँचे पौलुस और सीलास जेल
से निकल आए। लेकिन पहले वह लुदिया के घर गए
जहाँ वह भाइयों से मिले और उन की हौसलाअफ़ज़ाई
की। फिर वह चले गए।

थिस्सलुनीके में

17 1 अम्फ़िपुलिस और अपुल्लोनिया से हो कर
पौलुस और सीलास थिस्सलुनीके शहर
पहुँच गए जहाँ यहूदी इबादतख़ाना था। 2 अपनी
आदत के मुताबिक़ पौलुस उस में गया और लगातार
तीन सबतों के दौरान कलाम-ए-मुक़द्दस से दलाइल दे
दे कर यहूदियों को क़ाइल करने की कोशिश करता
रहा। 3 उस ने कलाम-ए-मुक़द्दस की तश्रीह करके
साबित किया कि मसीह का दुख उठाना और मुर्दों में
से जी उठना लाज़िम था। उस ने कहा, “जिस ईसा की
मैं ख़बर दे रहा हूँ, वही मसीह है।” 4 यहूदियों में से
कुछ क़ाइल हो कर पौलुस और सीलास से वाबस्ता
हो गए, जिन में ख़ुदातरस यूनानियों की बड़ी तादाद
और बारसूख ख़वातीन भी शरीक थीं।
5 यह देख कर बाक़ी यहूदी हसद करने लगे। उन्हों
ने गलियों में आवारा फिरने वाले कुछ शरीर आदमी
इकट्ठे करके जुलूस निकाला और शहर में हलचल
मचा दी। फिर यासोन के घर पर हम्ला करके उन्हों
ने पौलुस और सीलास को ढूँडा ताकि उन्हें अवामी
इज्लास के सामने पेश करें। 6 लेकिन वह वहाँ नहीं
थे, इस लिए वह यासोन और चन्द एक और ईमानदार
भाइयों को शहर के मजिस्ट्रेटों के सामने लाए। उन्हों
ने चीख़ कर कहा, “यह लोग पूरी दुनिया में गड़बड़
पैदा कर रहे हैं और अब यहाँ भी आ गए हैं। 7 यासोन
ने उन्हें अपने घर में ठहराया है। यह सब शहन्शाह
के अह्काम की ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे हैं, क्यूँकि
यह किसी और को बादशाह मानते हैं जिस का नाम
ईसा है।” 8 इस तरह की बातों से उन्हों ने हुजूम
और मजिस्ट्रेटों में बड़ा हंगामा पैदा किया। 9 चुनाँचे
मजिस्ट्रेटों ने यासोन और दूसरों से ज़मानत ली और
फिर उन्हें छोड़ दिया।

बेरिया में

10 उसी रात भाइयों ने पौलुस और सीलास को
बेरिया भेज दिया। वहाँ पहुँच कर वह यहूदी
इबादतख़ाने में गए। 11 यह लोग थिस्सलुनीके के
यहूदियों की निस्बत ज़्यादा खुले ज़हन के थे। यह
बड़े शौक़ से पौलुस और सीलास की बातें सुनते और
रोज़-ब-रोज़ कलाम-ए-मुक़द्दस की तफ़्तीश करते रहे
कि क्या वाक़ई ऐसा है जैसा हमें बताया जा रहा है?
12 नतीजे में इन में से बहुत से यहूदी ईमान लाए और
साथ साथ बहुत सी बारसूख यूनानी ख़वातीन और
मर्द भी। 13 लेकिन फिर थिस्सलुनीके के यहूदियों
को यह ख़बर मिली कि पौलुस बेरिया में अल्लाह
का कलाम सुना रहा है। वह वहाँ भी पहुँचे और
लोगों को उकसा कर हलचल मचा दी। 14 इस पर
भाइयों ने पौलुस को फ़ौरन साहिल पर भेज दिया,
लेकिन सीलास और तीमुथियुस बेरिया में पीछे रह
गए। 15 जो आदमी पौलुस को साहिल तक पहुँचाने
आए थे वह उस के साथ अथेने तक गए। वहाँ वह
उसे छोड़ कर वापस चले गए। उन के हाथ पौलुस ने
सीलास और तीमुथियुस को ख़बर भेजी कि जितनी
जल्दी हो सके बेरिया को छोड़ कर मेरे पास आ जाएँ।

अथेने में

16 अथेने शहर में सीलास और तीमुथियुस का
इन्तिज़ार करते करते पौलुस बड़े जोश में आ गया,
क्यूँकि उस ने देखा कि पूरा शहर बुतों से भरा हुआ
है। 17 वह यहूदी इबादतख़ाने में जा कर यहूदियों

और ख़ुदातरस ग़ैरयहूदियों से बह्स करने लगा।
साथ साथ वह रोज़ाना चौक में भी जा कर वहाँ
पर मौजूद लोगों से गुफ़्तगु करता रहा। 18 इपिकूरी
और स्तोइकी फ़ल्सफ़ी [e]भी उस से बह्स करने लगे।
जब पौलुस ने उन्हें ईसा और उस के जी उठने की
ख़ुशख़बरी सुनाई तो बाज़ ने पूछा, "यह बकवासी
इन बातों से क्या कहना चाहता है जो इस ने इधर
उधर से चुन कर जोड़ दी हैं?"

दूसरों ने कहा, "लगता है कि वह अजनबी
देवताओं की ख़बर दे रहा है।" 19 वह उसे साथ ले
कर शहर की मजलिस-ए-शूरा में गए जो अरियोपगुस
नामी पहाड़ी पर मुनअक़िद होती थी। उन्हों ने
दरख़्वास्त की, "क्या हमें मालूम हो सकता है कि
आप कौन सी नई तालीम पेश कर रहे हैं? 20 आप
तो हमें अजीब-ओ-ग़रीब बातें सुना रहे हैं। अब हम
उन का सहीह मतलब जानना चाहते हैं।" 21 (बात
यह थी कि अथेने के तमाम बाशिन्दे शहर में रहने
वाले परदेसियों समेत अपना पूरा वक़्त इस में सर्फ़
करते थे कि ताज़ा ताज़ा ख़यालात सुनें या सुनाएँ।)

22 पौलुस मजलिस में खड़ा हुआ और कहा, "अथेने
के हज़रात, मैं देखता हूँ कि आप हर लिहाज़ से
बहुत मज़्हबी लोग हैं। 23 क्यूँकि जब मैं शहर में से
गुज़र रहा था तो उन चीज़ों पर ग़ौर किया जिन की
पूजा आप करते हैं। चलते चलते मैं ने एक ऐसी
क़ुर्बानगाह भी देखी जिस पर लिखा था, 'नामालूम
ख़ुदा की क़ुर्बानगाह।' अब मैं आप को उस ख़ुदा की
ख़बर देता हूँ जिस की पूजा आप करते तो हैं मगर
आप उसे जानते नहीं। 24 यह वह ख़ुदा है जिस ने
दुनिया और उस में मौजूद हर चीज़ की तख़्लीक़ की।
वह आसमान-ओ-ज़मीन का मालिक है, इस लिए
वह इन्सानी हाथों के बनाए हुए मन्दिरों में सुकूनत
नहीं करता। 25 और इन्सानी हाथ उस की ख़िदमत
नहीं कर सकते, क्यूँकि उसे कोई भी चीज़ दरकार
नहीं होती। इस के बजाय वही सब को ज़िन्दगी और
साँस मुहय्या करके उन की तमाम ज़रूरियात पूरी
करता है। 26 उसी ने एक शख़्स को ख़ल्क़ किया
ताकि दुनिया की तमाम क़ौमें उस से निकल कर पूरी
दुनिया में फैल जाएँ। उस ने हर क़ौम के औक़ात
और सरहदें भी मुक़र्रर कीं। 27 मक़्सद यह था कि
वह ख़ुदा को तलाश करें। उम्मीद यह थी कि वह
टटोल टटोल कर उसे पाएँ, अगरचे वह हम में से
किसी से दूर नहीं होता। 28 क्यूँकि उस में हम जीते,
हरकत करते और वुजूद रखते हैं। आप के अपने
कुछ शाइरों ने भी फ़रमाया है, 'हम भी उस के फ़र्ज़न्द
हैं।' 29 अब चूँकि हम अल्लाह के फ़र्ज़न्द हैं इस लिए
हमारा उस के बारे में तसव्वुर यह नहीं होना चाहिए
कि वह सोने, चाँदी या पत्थर का कोई मुजस्समा हो
जो इन्सान की महारत और डिज़ाइन से बनाया गया
हो। 30 माज़ी में ख़ुदा ने इस क़िस्म की जहालत को
नज़रअन्दाज़ किया, लेकिन अब वह हर जगह के
लोगों को तौबा का हुक्म देता है। 31 क्यूँकि उस ने
एक दिन मुक़र्रर किया है जब वह इन्साफ़ से दुनिया
की अदालत करेगा। और वह यह अदालत एक
शख़्स की मारिफ़त करेगा जिस को वह मुतअय्यिन
कर चुका है और जिस की तस्दीक़ उस ने इस से की
है कि उस ने उसे मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया है।"

32 मुर्दों की क़ियामत का ज़िक्र सुन कर बाज़ ने
पौलुस का मज़ाक़ उड़ाया। लेकिन बाज़ ने कहा,
"हम किसी और वक़्त इस के बारे में आप से मज़ीद
सुनना चाहते हैं।" 33 फिर पौलुस मजलिस से निकल
कर चला गया। 34 कुछ लोग उस से वाबस्ता हो कर
ईमान ले आए। उन में से मजलिस-ए-शूरा का मैम्बर
दियोनीसियुस था और एक औरत बनाम दमरिस।
कुछ और भी थे।

कुरिन्थुस में

18 1 इस के बाद पौलुस अथेने को छोड़
कर कुरिन्थुस शहर आया। 2 वहाँ उस की

[e]यानी रवाक़ीत के फ़ल्सफ़ी।

मुलाक़ात एक यहूदी से हुई जिस का नाम अक्विला
था। वह पुन्तुस का रहने वाला था और थोड़ी देर
पहले अपनी बीवी प्रिस्किल्ला समेत इटली से आया
था। वजह यह थी कि शहन्शाह क्लौदियुस ने हुक्म
सादिर किया था कि तमाम यहूदी रोम को छोड़ कर
चले जाएँ। उन लोगों के पास पौलुस गया 3 और चूँकि
उन का पेशा भी ख़ैमे सिलाई करना था इस लिए वह
उन के घर ठहर कर रोज़ी कमाने लगा। 4 साथ साथ
उस ने हर सबत को यहूदी इबादतख़ाने में तालीम
दे कर यहूदियों और यूनानियों को क़ाइल करने की
कोशिश की।

5 जब सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए
तो पौलुस अपना पूरा वक़्त कलाम सुनाने में सर्फ़
करने लगा। उस ने यहूदियों को गवाही दी कि ईसा
कलाम-ए-मुक़द्दस में बयान किया गया मसीह है।
6 लेकिन जब वह उस की मुख़ालफ़त करके उस की
तज़्लील करने लगे तो उस ने एहतिजाज में अपने
कपड़ों से गर्द झाड़कर कहा, "आप ख़ुद अपनी
हलाकत के ज़िम्मादार हैं, मैं बेक़ुसूर हूँ। अब से
मैं ग़ैरयहूदियों के पास जाया करूँगा।" 7 फिर वह
वहाँ से निकल कर इबादतख़ाने के साथ वाले घर में
गया। वहाँ तितुस यूस्तुस रहता था जो यहूदी नहीं था,
लेकिन ख़ुदा का ख़ौफ़ मानता था। 8 और क्रिस्पुस
जो इबादतख़ाने का राहनुमा था अपने घराने समेत
ख़ुदावन्द पर ईमान लाया। कुरिन्थुस के बहुत सारे
और लोगों ने भी जब पौलुस की बातें सुनीं तो ईमान
लाए और बपतिस्मा लिया।

9 एक रात ख़ुदावन्द रोया में पौलुस से हमकलाम
हुआ, "मत डर! कलाम करता जा और ख़ामोश न
हो, 10 क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ। कोई हम्ला करके तुझे
नुक़्सान नहीं पहुँचाएगा, क्यूँकि इस शहर में मेरे बहुत
से लोग हैं।" 11 फिर पौलुस मज़ीद डेढ़ साल वहाँ
ठहर कर लोगों को अल्लाह का कलाम सिखाता रहा।

12 उन दिनों में जब गल्लियो सूबा अख़या का गवर्नर
था तो यहूदी मुत्तहिद हो कर पौलुस के ख़िलाफ़ जमा
हुए और उसे अदालत में गल्लियो के सामने लाए।
13 उन्हों ने कहा, "यह आदमी लोगों को ऐसे तरीक़े
से अल्लाह की इबादत करने पर उकसा रहा है जो
हमारी शरीअत के ख़िलाफ़ है।"

14 पौलुस जवाब में कुछ कहने को था कि गल्लियो
ख़ुद यहूदियों से मुख़ातिब हुआ, "सुनें, यहूदी मर्दो!
अगर आप का इल्ज़ाम कोई नाइन्साफ़ी या संगीन
जुर्म होता तो आप की बात क़ाबिल-ए-बर्दाश्त होती।
15 लेकिन आप का झगड़ा मज़्हबी तालीम, नामों और
आप की यहूदी शरीअत से ताल्लुक़ रखता है, इस
लिए उसे ख़ुद हल करें। मैं इस मुआमले में फ़ैसला
करने के लिए तय्यार नहीं हूँ।" 16 यह कह कर उस
ने उन्हें अदालत से भगा दिया। 17 इस पर हुजूम ने
यहूदी इबादतख़ाने के राहनुमा सोस्थिनेस को पकड़
कर अदालत के सामने उस की पिटाई की। लेकिन
गल्लियो ने पर्वा न की।

अन्ताकिया तक वापसी का सफ़र

18 इस के बाद भी पौलुस बहुत दिन कुरिन्थुस में
रहा। फिर भाइयों को ख़ैरबाद कह कर वह क़रीब
के शहर किन्ख़रिया गया जहाँ उस ने किसी मन्नत
के पूरे होने पर अपने सर के बाल मुंडवा दिए।
इस के बाद वह प्रिस्किल्ला और अक्विला के साथ
जहाज़ पर सवार हो कर मुल्क-ए-शाम के लिए रवाना
हुआ। 19 पहले वह इफ़िसुस पहुँचे जहाँ पौलुस ने
प्रिस्किल्ला और अक्विला को छोड़ दिया। वहाँ भी
उस ने यहूदी इबादतख़ाने में जा कर यहूदियों से बह्स
की। 20 उन्हों ने उस से दरख़्वास्त की कि मज़ीद
वक़्त उन के साथ गुज़ारे, लेकिन उस ने इन्कार किया
21 और उन्हें ख़ैरबाद कह कर कहा, "अगर अल्लाह
की मर्ज़ी हो तो मैं आप के पास वापस आऊँगा।"
फिर वह जहाज़ पर सवार हो कर इफ़िसुस से रवाना
हुआ।

22 सफ़र करते करते वह क़ैसरिया पहुँच गया, जहाँ
से वह यरूशलम जा कर मक़ामी जमाअत से मिला।
इस के बाद वह अन्ताकिया वापस चला गया 23 जहाँ
वह कुछ देर ठहरा। फिर आगे निकल कर वह

गलतिया और फ़रूगिया के इलाक़े में से गुज़रते हुए वहाँ के तमाम ईमानदारों को मज़बूत करता गया।

अपुल्लोस इफ़िसुस और कुरिन्थुस में

24 इतने में एक फ़सीह यहूदी जिसे कलाम-ए-मुक़द्दस का ज़बरदस्त इल्म था इफ़िसुस पहुँच गया था। उस का नाम अपुल्लोस था। वह मिस्र के शहर इस्कन्दरिया का रहने वाला था। 25 उसे ख़ुदावन्द की राह के बारे में तालीम दी गई थी और वह बड़ी सरगर्मी से लोगों को ईसा के बारे में सिखाता रहा। उस की यह तालीम सहीह थी अगरचे वह अभी तक सिर्फ़ यहया का बपतिस्मा जानता था। 26 इफ़िसुस के यहूदी इबादतख़ाने में वह बड़ी दिलेरी से कलाम करने लगा। यह सुन कर प्रिस्किल्ला और अक्विला ने उसे एक तरफ़ ले जा कर उस के सामने अल्लाह की राह को मज़ीद तफ़सील से बयान किया। 27 अपुल्लोस सूबा अख़या जाने का ख़याल रखता था तो इफ़िसुस के भाइयों ने उस की हौसलाअफ़ज़ाई की। उन्हों ने वहाँ के शागिर्दों को ख़त लिखा कि वह उस का इस्तिक़्बाल करें। जब वह वहाँ पहुँचा तो उन के लिए बड़ी मदद का बाइस बना जो अल्लाह के फ़ज़्ल से ईमान लाए थे, 28 क्यूँकि वह अलानिया मुबाहिसों में ज़बरदस्त दलाइल से यहूदियों पर ग़ालिब आया और कलाम-ए-मुक़द्दस से साबित किया कि ईसा मसीह है।

पौलुस इफ़िसुस में

19 1 जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में ठहरा हुआ था तो पौलुस एशिया-ए-कूचक के अन्दरूनी इलाक़े में से सफ़र करते करते साहिली शहर इफ़िसुस में आया। वहाँ उसे कुछ शागिर्द मिले 2 जिन से उस ने पूछा, "क्या आप को ईमान लाते वक़्त रूह-उल-क़ुद्स मिला?"

उन्हों ने जवाब दिया, "नहीं, हम ने तो रूह-उल-क़ुद्स का ज़िक्र तक नहीं सुना।"

3 उस ने पूछा, "तो आप को कौन सा बपतिस्मा दिया गया?"

उन्हों ने जवाब दिया, "यहया का।"

4 पौलुस ने कहा, "यहया ने बपतिस्मा दिया जब लोगों ने तौबा की। लेकिन उस ने ख़ुद उन्हें बताया, 'मेरे बाद आने वाले पर ईमान लाओ, यानी ईसा पर'।"

5 यह सुन कर उन्हों ने ख़ुदावन्द ईसा के नाम पर बपतिस्मा लिया। 6 और जब पौलुस ने अपने हाथ उन पर रखे तो उन पर रूह-उल-क़ूदस नाज़िल हुआ, और वह ग़ैरज़बानें बोलने और नबुव्वत करने लगे। 7 इन आदमियों की कुल तादाद तक़रीबन बारह थी।

8 पौलुस यहूदी इबादतख़ाने में गया और तीन महीने के दौरान यहूदियों से दिलेरी से बात करता रहा। उन के साथ बहस करके उस ने उन्हें अल्लाह की बादशाही के बारे में क़ाइल करने की कोशिश की। 9 लेकिन कुछ अड़ गए। वह अल्लाह के ताबे न हुए बल्कि अवाम के सामने ही अल्लाह की राह को बुरा-भला कहने लगे। इस पर पौलुस ने उन्हें छोड़ दिया। शागिर्दों को भी अलग करके वह उन के साथ तुरन्नुस के लैक्चर हाल में जमा हुआ करता था जहाँ वह रोज़ाना उन्हें तालीम देता रहा। 10 यह सिलसिला दो साल तक जारी रहा। यूँ सूबा आसिया के तमाम लोगों को ख़ुदावन्द का कलाम सुनने का मौक़ा मिला, ख़्वाह वह यहूदी थे या यूनानी।

राहनुमा इमाम स्किवा के सात बेटे

11 अल्लाह ने पौलुस की मारिफ़त ग़ैरमामूली मोजिज़े किए, 12 यहाँ तक कि जब रूमाल या एप्रन उस के बदन से लगाने के बाद मरीज़ों पर रखे जाते तो उन की बीमारियाँ जाती रहतीं और बदरुहें निकल जातीं। 13 वहाँ कुछ ऐसे यहूदी भी थे जो जगह जगह जा कर बदरुहें निकालते थे। अब वह बदरूहों के बंधन में फंसे लोगों पर ख़ुदावन्द ईसा का नाम इस्तेमाल करने की कोशिश करके कहने लगे, "मैं तुझे उस ईसा के नाम से निकलने का हुक्म देता हूँ जिस की मुनादी

पौलुस करता है।” 14 एक यहूदी राहनुमा इमाम बनाम
स्किवा के सात बेटे ऐसा करते थे।
15 लेकिन एक दफ़ा जब यही कोशिश कर रहे थे
तो बदरुह ने जवाब दिया, “ईसा को तो मैं जानती हूँ
और पौलुस को भी, लेकिन तुम कौन हो?”
16 फिर वह आदमी जिस में बदरुह थी उन पर झपट
कर सब पर ग़ालिब आ गया। उस का उन पर इतना
सख़्त हम्ला हुआ कि वह नंगे और ज़ख़्मी हालत में
भाग कर उस घर से निकल गए। 17 इस वाकिए की
ख़बर इफ़िसुस के तमाम रहने वाले यहूदियों और
यूनानियों में फैल गई। उन पर ख़ौफ़ तारी हुआ और
ख़ुदावन्द ईसा के नाम की ताज़ीम हुई। 18 जो ईमान
लाए थे उन में से बहुतेरों ने आ कर अलानिया अपने
गुनाहों का इक़्रार किया। 19 जादूगरी करने वालों की
बड़ी तादाद ने अपनी जादूमंत्र की किताबें इकट्ठी
करके अवाम के सामने जला दीं। पूरी किताबों का
हिसाब किया गया तो उन की कुल रक़म चाँदी के
पचास हज़ार सिक्के थी। 20 यूँ ख़ुदावन्द का कलाम
ज़बरदस्त तरीक़े से बढ़ता और ज़ोर पकड़ता गया।

इफ़िसुस में हंगामा

21 इन वाक़िआत के बाद पौलुस ने मकिदुनिया और
अख़या में से गुज़र कर यरूशलम जाने का फ़ैसला
किया। उस ने कहा, “इस के बाद लाज़िम है कि
मैं रोम भी जाऊँ।” 22 उस ने अपने दो मददगारों
तीमुथियुस और इरास्तुस को आगे मकिदुनिया भेज
दिया जबकि वह ख़ुद मज़ीद कुछ देर के लिए सूबा
आसिया में ठहरा रहा।
23 तक़रीबन उस वक़्त अल्लाह की राह एक शदीद
हंगामे का बाइस हो गई। 24 यह यूँ हुआ, इफ़िसुस
में एक चाँदी की अश्या बनाने वाला रहता था जिस
का नाम देमेत्रियुस था। वह चाँदी से अर्तमिस देवी के
मन्दिर बनवाता था, और उस के काम से दस्तकारों
का कारोबार ख़ूब चलता था। 25 अब उस ने इस काम
से ताल्लुक़ रखने वाले दीगर दस्तकारों को जमा करके
उन से कहा, “हज़रात, आप को मालूम है कि हमारी
दौलत इस कारोबार पर मुन्हसिर है। 26 आप ने यह
भी देख और सुन लिया है कि इस आदमी पौलुस ने न
सिर्फ़ इफ़िसुस बल्कि तक़रीबन पूरे सूबा आसिया में
बहुत से लोगों को भटका कर क़ाइल कर लिया है कि
हाथों के बने देवता हक़ीक़त में देवता नहीं होते। 27 न
सिर्फ़ यह ख़तरा है कि हमारे कारोबार की बदनामी
हो बल्कि यह भी कि अज़ीम देवी अर्तमिस के मन्दिर
का असर-ओ-रसूख़ जाता रहेगा, कि अर्तमिस ख़ुद
जिस की पूजा सूबा आसिया और पूरी दुनिया में की
जाती है अपनी अज़मत खो बैठे।”
28 यह सुन कर वह तैश में आ कर चीख़ने-चिल्लाने
लगे, “इफ़िसियों की अर्तमिस देवी अज़ीम है!” 29 पूरे
शहर में हलचल मच गई। लोगों ने पौलुस के मकिदुनी
हमसफ़र गयुस और अरिस्तर्ख़ुस को पकड़ लिया
और मिल कर तमाशागाह में दौड़े आए। 30 यह देख
कर पौलुस भी अवाम के इस इज्लास में जाना चाहता
था, लेकिन शागिर्दों ने उसे रोक लिया। 31 इसी तरह
उस के कुछ दोस्तों ने भी जो सूबा आसिया के अफ़सर
थे उसे ख़बर भेज कर मिन्नत की कि वह न जाए।
32 इज्लास में बड़ी अफ़्रा-तफ़्री थी। कुछ यह चीख़
रहे थे, कुछ वह। ज़्यादातर लोग जमा होने की वजह
जानते भी न थे। 33 यहूदियों ने सिकन्दर को आगे कर
दिया। साथ साथ हुजूम के कुछ लोग उसे हिदायात
देते रहे। उस ने हाथ से ख़ामोश हो जाने का इशारा
किया ताकि वह इज्लास के सामने अपना दिफ़ा करे।
34 लेकिन जब उन्हों ने जान लिया कि वह यहूदी है
तो वह तक़रीबन दो घंटों तक चिल्ला कर नारा लगाते
रहे, “इफ़िसुस की अर्तमिस देवी अज़ीम है!”
35 आख़िरकार बलदिया का चीफ़ सैक्रटरी उन्हें
ख़ामोश कराने में कामयाब हुआ। फिर उस ने
कहा, “इफ़िसुस के हज़रात, किस को मालूम नहीं
कि इफ़िसुस अज़ीम अर्तमिस देवी के मन्दिर का
मुहाफ़िज़ है! पूरी दुनिया जानती है कि हम उस के उस
मुजस्समे के निगरान हैं जो आसमान से गिर कर हमारे
पास पहुँच गया। 36 यह हक़ीक़त तो नाक़ाबिल-ए-
इन्कार है। चुनाँचे लाज़िम है कि आप चुप-चाप रहें

और जल्दबाज़ी न करें। 37 आप यह आदमी यहाँ लाए
हैं हालाँकि न तो वह मन्दिरों को लूटने वाले हैं, न
उन्हों ने देवी की बेहुरमती की है। 38 अगर देमेत्रियुस
और उस के साथ वाले दस्तकारों का किसी पर
इल्ज़ाम है तो इस के लिए कचहरियाँ और गवर्नर
होते हैं। वहाँ जा कर वह एक दूसरे से मुक़द्दमा लड़ें।
39 अगर आप मज़ीद कोई मुआमला पेश करना चाहते
हैं तो उसे हल करने के लिए क़ानूनी मजलिस होती
है। 40 अब हम इस ख़तरे में हैं कि आज के वाक़िआत
के बाइस हम पर फ़साद का इल्ज़ाम लगाया जाएगा।
क्यूँकि जब हम से पूछा जाएगा तो हम इस क़िस्म के
बेतर्तीब और नाजाइज़ इजतिमा का कोई जवाज़ पेश
नहीं कर सकेंगे।" 41 यह कह कर उस ने इज्लास को
बर्ख़ास्त कर दिया।

मकिदुनिया और अख़या में

20 1 जब शहर में अफ़्रा-तफ़्री ख़त्म हुई तो
पौलुस ने शागिर्दों को बुला कर उन की
हौसलाअफ़्ज़ाई की। फिर वह उन्हें ख़ैरबाद कह
कर मकिदुनिया के लिए रवाना हुआ। 2 वहाँ पहुँच
कर उस ने जगह-ब-जगह जा कर बहुत सी बातों
से ईमानदारों की हौसलाअफ़्ज़ाई की। यूँ चलते
चलते वह यूनान पहुँच गया 3 जहाँ वह तीन माह
तक ठहरा। वह मुल्क-ए-शाम के लिए जहाज़ पर
सवार होने वाला था कि पता चला कि यहूदियों
ने उस के ख़िलाफ़ साज़िश की है। इस पर उस
ने मकिदुनिया से हो कर वापस जाने का फ़ैसला
किया। 4 उस के कई हमसफ़र थे : बेरिया से पुरुस
का बेटा सोपत्रुस, थिस्सलुनीके से अरिस्तर्ख़ुस और
सिकुन्दुस, दिर्बे से गयुस, तीमुथियुस और सूबा
आसिया से तुख़िकुस और त्रुफ़िमुस। 5 यह आदमी
आगे निकल कर त्रोआस चले गए जहाँ उन्हों ने
हमारा इन्तिज़ार किया। 6 बेख़मीरी रोटी की ईद के
बाद हम फ़िलिप्पी के क़रीब जहाज़ पर सवार हुए
और पाँच दिन के बाद उन के पास त्रोआस पहुँच
गए। वहाँ हम सात दिन रहे।

त्रोआस में पौलुस की अलविदाई मीटिंग

7 इत्वार को हम अशा-ए-रब्बानी मनाने के लिए
जमा हुए। पौलुस लोगों से बात करने लगा और चूँकि
वह अगले दिन रवाना होने वाला था इस लिए वह
आधी रात तक बोलता रहा। 8 ऊपर की मन्ज़िल में
जिस कमरे में हम जमा थे वहाँ बहुत से चराग़ जल
रहे थे। 9 एक जवान खिड़की की दहलीज़ पर बैठा
था। उस का नाम यूतिख़ुस था। जूँ जूँ पौलुस की बातें
लम्बी होती जा रही थीं उस पर नींद ग़ालिब आती
जा रही थी। आख़िरकार वह गहरी नींद में तीसरी
मन्ज़िल से ज़मीन पर गिर गया। जब लोगों ने नीचे
पहुँच कर उसे ज़मीन पर से उठाया तो वह जाँ-ब-
हक़ हो चुका था। 10 लेकिन पौलुस उतर कर उस पर
झुक गया और उसे अपने बाज़ूओं में ले लिया। उस
ने कहा, "मत घबराएँ, वह ज़िन्दा है।" 11 फिर वह
वापस ऊपर आ गया, अशा-ए-रब्बानी मनाई और
खाना खाया। उस ने अपनी बातें पौ फटने तक जारी
रखीं, फिर रवाना हुआ। 12 और उन्हों ने जवान को
ज़िन्दा हालत में वहाँ से ले कर बहुत तसल्ली पाई।

त्रोआस से मीलेतुस तक

13 हम आगे निकल कर अस्सुस के लिए जहाज़
पर सवार हुए। ख़ुद पौलुस ने इन्तिज़ाम करवाया
था कि वह पैदल जा कर अस्सुस में हमारे जहाज़
पर आएगा। 14 वहाँ वह हम से मिला और हम उसे
जहाज़ पर ला कर मतुलेने पहुँचे। 15 अगले दिन हम
ख़ियुस के जज़ीरे से गुज़रे। उस से अगले दिन हम
सामुस के जज़ीरे के क़रीब आए। इस के बाद के दिन
हम मीलेतुस पहुँच गए। 16 पौलुस पहले से फ़ैसला
कर चुका था कि मैं इफ़िसुस में नहीं ठहरूँगा बल्कि
आगे निकलूँगा, क्यूँकि वह जल्दी में था। वह जहाँ
तक मुमकिन था पन्तिकुस्त की ईद से पहले पहले
यरूशलम पहुँचना चाहता था।

इफ़िसुस के बुज़ुर्गों के लिए पौलुस की अलविदाई तक़रीर

17 मीलेतुस से पौलुस ने इफ़िसुस की जमाअत के
बुज़ुर्गों को बुला लिया। 18 जब वह पहुँचे तो उस ने
उन से कहा, “आप जानते हैं कि मैं सूबा आसिया में
पहला क़दम उठाने से ले कर पूरा वक़्त आप के साथ
किस तरह रहा। 19 मैं ने बड़ी इनकिसारी से ख़ुदावन्द
की ख़िदमत की है। मुझे बहुत आँसू बहाने पड़े और
यहूदियों की साज़िशों से मुझ पर बहुत आज़माइशें
आईं। 20 मैं ने आप के फ़ाइदे की कोई भी बात आप
से छुपाए न रखी बल्कि आप को अलानिया और
घर घर जा कर तालीम देता रहा। 21 मैं ने यहूदियों
को यूनानियों समेत गवाही दी कि उन्हें तौबा करके
अल्लाह की तरफ़ रुजू करने और हमारे ख़ुदावन्द ईसा
पर ईमान लाने की ज़रूरत है। 22 और अब मैं रूह-
उल-क़ुद्स से बंधा हुआ यरूशलम जा रहा हूँ। मैं नहीं
जानता कि मेरे साथ क्या कुछ होगा, 23 लेकिन इतना
मुझे मालूम है कि रूह-उल-क़ुद्स मुझे शहर-ब-शहर
इस बात से आगाह कर रहा है कि मुझे क़ैद और
मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। 24 ख़ैर, मैं अपनी
ज़िन्दगी को किसी तरह भी अहम नहीं समझता।
अहम बात सिर्फ़ यह है कि मैं अपना वह मिशन और
ज़िम्मादारी पूरी करूँ जो ख़ुदावन्द ईसा ने मेरे सपुर्द
की है। और वह ज़िम्मादारी यह है कि मैं लोगों को
गवाही दे कर यह ख़ुशख़बरी सुनाऊँ कि अल्लाह ने
अपने फ़ज़्ल से उन के लिए क्या कुछ किया है।

25 और अब मैं जानता हूँ कि आप सब जिन्हें मैं
ने अल्लाह की बादशाही का पैग़ाम सुना दिया है मुझे
इस के बाद कभी नहीं देखेंगे। 26 इस लिए मैं आज
ही आप को बताता हूँ कि अगर आप में से कोई
भी हलाक हो जाए तो मैं बेक़ुसूर हूँ, 27 क्यूँकि मैं
आप को अल्लाह की पूरी मर्ज़ी बताने से न झिजका।
28 चुनाँचे ख़बरदार रह कर अपना और उस पूरे गल्ले
का ख़याल रखना जिस पर रूह-उल-क़ूदस ने आप
को मुक़र्रर किया है। निगरानों और चरवाहों की
हैसियत से अल्लाह की जमाअत की ख़िदमत करें, उस
जमाअत की जिसे उस ने अपने ही फ़र्ज़न्द के ख़ून से
हासिल किया है। 29 मुझे मालूम है कि मेरे जाने के
बाद वहशी भेड़िए आप में घुस आएँगे जो गल्ले को
नहीं छोड़ेंगे। 30 आप के दरमियान से भी आदमी उठ
कर सच्चाई को तोड़-मरोड़ कर बयान करेंगे ताकि
शागिर्दों को अपने पीछे लगा लें। 31 इस लिए जागते
रहें! यह बात ज़हन में रखें कि मैं तीन साल के दौरान
दिन रात हर एक को समझाने से बाज़ न आया। मेरे
आँसूओं को याद रखें जो मैं ने आप के लिए बहाए
हैं।

32 और अब मैं आप को अल्लाह और उस के फ़ज़्ल
के कलाम के सपुर्द करता हूँ। यही कलाम आप की
तामीर करके आप को वह मीरास मुहय्या करने के
क़ाबिल है जो अल्लाह तमाम मुक़द्दस किए गए लोगों
को देता है। 33 मैं ने किसी के भी सोने, चाँदी या
कपड़ों का लालच न किया। 34 आप ख़ुद जानते हैं
कि मैं ने अपने इन हाथों से काम करके न सिर्फ़
अपनी बल्कि अपने साथियों की ज़रूरियात भी पूरी
कीं। 35 अपने हर काम में मैं आप को दिखाता
रहा कि लाज़िम है कि हम इस क़िस्म की मेहनत
करके कमज़ोरों की मदद करें। क्यूँकि हमारे सामने
ख़ुदावन्द ईसा के यह अल्फ़ाज़ होने चाहिएँ कि देना
लेने से मुबारक है।”

36 यह सब कुछ कह कर पौलुस ने घुटने टेक कर
उन सब के साथ दुआ की। 37 सब ख़ूब रोए और उस
को गले लगा लगा कर बोसे दिए। 38 उन्हें ख़ासकर
पौलुस की इस बात से तक्लीफ़ हुई कि ‘आप इस
के बाद मुझे कभी नहीं देखेंगे।’ फिर वह उस के साथ
जहाज़ तक गए।

पौलुस यरूशलम जाता है

21 1 मुश्किल से इफ़िसुस के बुज़ुर्गों से अलग
हो कर हम रवाना हुए और सीधे जज़ीरा-ए-
कोस पहुँच गए। अगले दिन हम रुदुस आए और वहाँ
से पतरा पहुँचे। 2 पतरा में फ़ेनीके के लिए जहाज़ मिल

गया तो हम उस पर सवार हो कर रवाना हुए। 3 जब
क़ुब्रुस दूर से नज़र आया तो हम उस के जुनूब में से
गुज़र कर शाम के शहर सूर पहुँच गए जहाँ जहाज़ को
अपना सामान उतारना था। 4 जहाज़ से उतर कर हम
ने मक़ामी शागिर्दों को तलाश किया और सात दिन
उन के साथ ठहरे। उन ईमानदारों ने रूह-उल-क़ुद्स
की हिदायत से पौलुस को समझाने की कोशिश की
कि वह यरूशलम न जाए। 5 जब हम एक हफ़्ते के
बाद जहाज़ पर वापस चले गए तो पूरी जमाअत बाल-
बच्चों समेत हमारे साथ शहर से निकल कर साहिल
तक आई। वहीं हम ने घुटने टेक कर दुआ की 6 और
एक दूसरे को अलविदा कहा। फिर हम दुबारा जहाज़
पर सवार हुए जबकि वह अपने घरों को लौट गए।

7 सूर से अपना सफ़र जारी रख कर हम
पतुलिमयिस पहुँचे जहाँ हम ने मक़ामी ईमानदारों को
सलाम किया और एक दिन उन के साथ गुज़ारा।
8 अगले दिन हम रवाना हो कर क़ैसरिया पहुँच गए।
वहाँ हम फ़िलिप्पुस के घर ठहरे। यह वही फ़िलिप्पुस
था जो अल्लाह की ख़ुशख़बरी का मुनाद था और जिसे
इब्तिदाई दिनों में यरूशलम में खाना तक़्सीम करने
के लिए छः और आदमियों के साथ मुक़र्रर किया
गया था। 9 उस की चार ग़ैरशादीशुदा बेटियाँ थीं जो
नबुव्वत की नेमत रखती थीं। 10 कई दिन गुज़र गए
तो यहूदिया से एक नबी आया जिस का नाम अगबुस
था। 11 जब वह हम से मिलने आया तो उस ने पौलुस
की पेटी ले कर अपने पाँओ और हाथों को बांध
लिया और कहा, "रूह-उल-क़ुद्स फ़रमाता है कि
यरूशलम में यहूदी इस पेटी के मालिक को यूँ बांध
कर ग़ैरयहूदियों के हवाले करेंगे।"

12 यह सुन कर हम ने मक़ामी ईमानदारों समेत
पौलुस को समझाने की ख़ूब कोशिश की कि वह
यरूशलम न जाए। 13 लेकिन उस ने जवाब दिया,
"आप क्यूँ रोते और मेरा दिल तोड़ते हैं? देखें, मैं
ख़ुदावन्द ईसा के नाम की ख़ातिर यरूशलम में न
सिर्फ़ बांधे जाने बल्कि उस के लिए अपनी जान तक
देने को तय्यार हूँ।"

14 हम उसे क़ाइल न कर सके, इस लिए हम यह
कहते हुए ख़ामोश हो गए कि "ख़ुदावन्द की मर्ज़ी
पूरी हो।"

15 इस के बाद हम तय्यारियाँ करके यरूशलम चले
गए। 16 क़ैसरिया के कुछ शागिर्द भी हमारे साथ
चले और हमें मनासोन के घर पहुँचा दिया जहाँ हमें
ठहरना था। मनासोन क़ुब्रुस का था और जमाअत के
इब्तिदाई दिनों में ईमान लाया था।

पौलुस याक़ूब से मिलता है

17 जब हम यरूशलम पहुँचे तो मक़ामी भाइयों ने
गर्मजोशी से हमारा इस्तिक़्बाल किया। 18 अगले दिन
पौलुस हमारे साथ याक़ूब से मिलने गया। तमाम
मक़ामी बुज़ुर्ग भी हाज़िर हुए। 19 उन्हें सलाम करके
पौलुस ने तफ़्सील से बयान किया कि अल्लाह ने उस
की ख़िदमत की मारिफ़त ग़ैरयहूदियों में क्या किया
था। 20 यह सुन कर उन्हों ने अल्लाह की तम्जीद की।
फिर उन्हों ने कहा, "भाई, आप को मालूम है कि
हज़ारों यहूदी ईमान लाए हैं। और सब बड़ी सरगर्मी
से शरीअत पर अमल करते हैं। 21 उन्हें आप के बारे
में ख़बर दी गई है कि आप ग़ैरयहूदियों के दरमियान
रहने वाले यहूदियों को तालीम देते हैं कि वह मूसा
की शरीअत को छोड़ कर न अपने बच्चों का ख़तना
करवाएँ और न हमारे रस्म-ओ-रिवाज के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारें। 22 अब हम क्या करें? वह तो ज़रूर
सुनेंगे कि आप यहाँ आ गए हैं। 23 इस लिए हम चाहते
हैं कि आप यह करें : हमारे पास चार मर्द हैं जिन्हों
ने मन्नत मान कर उसे पूरा कर लिया है। 24 अब उन्हें
साथ ले कर उन की तहारत की रुसूमात में शरीक हो
जाएँ। उन के अख़्राजात भी आप बर्दाश्त करें ताकि
वह अपने सरों को मुंडवा सकें। फिर सब जान लेंगे
कि जो कुछ आप के बारे में कहा जाता है वह झूट
है और कि आप भी शरीअत के मुताबिक़ ज़िन्दगी
गुज़ार रहे हैं। 25 जहाँ तक ग़ैरयहूदी ईमानदारों की
बात है हम उन्हें अपना फ़ैसला ख़त के ज़रीए भेज
चुके हैं कि वह इन चीज़ों से पर्हेज़ करें : बुतों को पेश

किया गया खाना, ख़ून, ऐसे जानवरों का गोश्त जिन्हें गला घूँट कर मार दिया गया हो और ज़िनाकारी।”

26 चुनाँचे अगले दिन पौलुस उन आदमियों को साथ ले कर उन की तहारत की रुसूमात में शरीक हुआ। फिर वह बैत-उल-मुक़द्दस में उस दिन का एलान करने गया जब तहारत के दिन पूरे हो जाएंगे और उन सब के लिए क़ुर्बानी पेश की जाएगी।

बैत-उल-मुक़द्दस में पौलुस की गिरिफ़्तारी

27 इस रस्म के लिए मुक़र्ररा सात दिन ख़त्म होने को थे कि सूबा आसिया के कुछ यहूदियों ने पौलुस को बैत-उल-मुक़द्दस में देखा। उन्हों ने पूरे हुजूम में हलचल मचा कर उसे पकड़ लिया 28 और चीख़ने लगे, “इस्राईल के हज़रात, हमारी मदद करें! यह वही आदमी है जो हर जगह तमाम लोगों को हमारी क़ौम, हमारी शरीअत और इस मक़ाम के ख़िलाफ़ तालीम देता है। न सिर्फ़ यह बल्कि इस ने बैत-उल-मुक़द्दस में ग़ैरयहूदियों को ला कर इस मुक़द्दस जगह की बेहुरमती भी की है।” 29 (यह आख़िरी बात उन्हों ने इस लिए की क्यूँकि उन्हों ने शहर में इफ़िसुस के ग़ैरयहूदी त्रुफ़िमुस को पौलुस के साथ देखा और ख़याल किया था कि वह उसे बैत-उल-मुक़द्दस में लाया है।)

30 पूरे शहर में हंगामा बरपा हुआ और लोग चारों तरफ़ से दौड़ कर आए। पौलुस को पकड़ कर उन्हों ने उसे बैत-उल-मुक़द्दस से बाहर घसीट लिया। जूँ ही वह निकल गए बैत-उल-मुक़द्दस के सहन के दरवाज़ों को बन्द कर दिया गया। 31 वह उसे मार डालने की कोशिश कर रहे थे कि रोमी पलटन के कमाँडर को ख़बर मिल गई, “पूरे यरूशलम में हलचल मच गई है।” 32 यह सुनते ही उस ने अपने फ़ौजियों और अफ़सरों को इकट्ठा किया और दौड़ कर उन के साथ हुजूम के पास उतर गया। जब हुजूम ने कमाँडर और उस के फ़ौजियों को देखा तो वह पौलुस की पिटाई करने से रुक गया। 33 कमाँडर ने नज़्दीक आ कर उसे गिरिफ़्तार किया और दो ज़न्जीरों से बांधने का हुक्म दिया। फिर उस ने पूछा, “यह कौन है? इस ने क्या किया है?” 34 हुजूम में से बाज़ कुछ चिल्लाए और बाज़ कुछ। कमाँडर कोई यक़ीनी बात मालूम न कर सका, क्यूँकि अफ़्रा-तफ़्री और शोर-शराबा बहुत था। इस लिए उस ने हुक्म दिया कि पौलुस को क़िले में ले जाया जाए। 35 वह क़िले की सीढ़ी तक पहुँच तो गए, लेकिन फिर हुजूम इतना बेकाबू हो गया कि फ़ौजियों को उसे अपने कंधों पर उठा कर चलना पड़ा। 36 लोग उन के पीछे पीछे चलते और चीख़ते चिल्लाते रहे, “उसे मार डालो! उसे मार डालो!”

पौलुस अपना दिफ़ा करता है

37 वह पौलुस को क़िले में ले जा रहे थे कि उस ने कमाँडर से पूछा, “क्या आप से एक बात करने की इजाज़त है?”

कमाँडर ने कहा, “अच्छा, आप यूनानी बोल लेते हैं? 38 तो क्या आप वही मिस्री नहीं हैं जो कुछ देर पहले हुकूमत के ख़िलाफ़ उठ कर चार हज़ार दहशतगरदों को रेगिस्तान में लाया था?”

39 पौलुस ने जवाब दिया, “मैं यहूदी और किलिकिया के मर्कज़ी शहर तर्सुस का शहरी हूँ। मेहरबानी करके मुझे लोगों से बात करने दें।”

40 कमाँडर मान गया और पौलुस ने सीढ़ी पर खड़े हो कर हाथ से इशारा किया। जब सब ख़ामोश हो गए तो पौलुस अरामी ज़बान में उन से मुख़ातिब हुआ,

22 1 “भाइयो और बुज़ुर्गो, मेरी बात सुनें कि मैं अपने दिफ़ा में कुछ बताऊँ।” 2 जब उन्हों ने सुना कि वह अरामी ज़बान में बोल रहा है तो वह मज़ीद ख़ामोश हो गए। पौलुस ने अपनी बात जारी रखी।

3 “मैं यहूदी हूँ और किलिकिया के शहर तर्सुस में पैदा हुआ। लेकिन मैं ने इसी शहर यरूशलम में परवरिश पाई और जम्लीएल के ज़ेर-ए-निगरानी तालीम हासिल की। उन्हों ने मुझे तफ़्सील और एहतियात से हमारे बापदादा की शरीअत सिखाई। उस वक़्त मैं भी आप की तरह अल्लाह के लिए सरगर्म

था। 4 इस लिए मैं ने इस नई राह के पैरोकारों का
पीछा किया और मर्दों और ख़वातीन को गिरिफ़्तार
करके जेल में डलवा दिया यहाँ तक कि मरवा
भी दिया। 5 इमाम-ए-आज़म और यहूदी अदालत-ए-
आलिया के मैम्बरान इस बात की तस्दीक़ कर सकते
हैं। उन ही से मुझे दमिश्क़ में रहने वाले यहूदी भाइयों
के लिए सिफ़ारिशी ख़त मिल गए ताकि मैं वहाँ भी
जा कर इस नए फ़िर्क़े के लोगों को गिरिफ़्तार करके
सज़ा देने के लिए यरूशलम लाऊँ।

पौलुस की तब्दीली का बयान

6 मैं इस मक़्सद के लिए दमिश्क़ के क़रीब पहुँच
गया था कि अचानक आसमान की तरफ़ से एक
तेज़ रौशनी मेरे गिर्द चमकी। 7 मैं ज़मीन पर गिर
पड़ा तो एक आवाज़ सुनाई दी, 'साऊल, साऊल, तू
मुझे क्यूँ सताता है?' 8 मैं ने पूछा, 'ख़ुदावन्द, आप
कौन हैं?' आवाज़ ने जवाब दिया, 'मैं ईसा नासरी हूँ
जिसे तू सताता है।' 9 मेरे हमसफ़रों ने रौशनी को तो
देखा, लेकिन मुझ से मुख़ातिब होने वाले की आवाज़
न सुनी। 10 मैं ने पूछा, 'ख़ुदावन्द, मैं क्या करूँ?'
ख़ुदावन्द ने जवाब दिया, 'उठ कर दमिश्क़ में जा।
वहाँ तुझे वह सारा काम बताया जाएगा जो अल्लाह
तेरे ज़िम्मे लगाने का इरादा रखता है।' 11 रौशनी की
तेज़ी ने मुझे अंधा कर दिया था, इस लिए मेरे साथी
मेरा हाथ पकड़ कर मुझे दमिश्क़ ले गए।

12 वहाँ एक आदमी रहता था जिस का नाम
हननियाह था। वह शरीअत का कट्टर पैरोकार था
और वहाँ के रहने वाले यहूदियों में नेकनाम। 13 वह
आया और मेरे पास खड़े हो कर कहा, 'साऊल भाई,
दुबारा बीना हो जाएँ!' उसी लम्हे मैं उसे देख सका।
14 फिर उस ने कहा, 'हमारे बापदादा के ख़ुदा ने आप
को इस मक़्सद के लिए चुन लिया है कि आप उस
की मर्ज़ी जान कर उस के रास्त ख़ादिम को देखें और
उस के अपने मुँह से उस की आवाज़ सुनें। 15 जो कुछ
आप ने देख और सुन लिया है उस की गवाही आप
तमाम लोगों को देंगे। 16 चुनाँचे आप क्यूँ देर कर रहे
हैं? उठें और उस के नाम में बपतिस्मा लें ताकि आप
के गुनाह धुल जाएँ।'

पौलुस की ग़ैरयहूदियों में ख़िदमत का बुलावा

17 जब मैं यरूशलम वापस आया तो मैं एक दिन
बैत-उल-मुक़द्दस में गया। वहाँ दुआ करते करते मैं
वज्द की हालत में आ गया 18 और ख़ुदावन्द को
देखा। उस ने फ़रमाया, 'जल्दी कर! यरूशलम को
फ़ौरन छोड़ दे क्यूँकि लोग मेरे बारे में तेरी गवाही
को क़बूल नहीं करेंगे।' 19 मैं ने एतिराज़ किया, 'ऐ
ख़ुदावन्द, वह तो जानते हैं कि मैं ने जगह-ब-जगह
इबादतख़ाने में जा कर तुझ पर ईमान रखने वालों
को गिरिफ़्तार किया और उन की पिटाई करवाई।
20 और उस वक़्त भी जब तेरे शहीद स्तिफ़नुस को
क़त्ल किया जा रहा था मैं साथ खड़ा था। मैं राज़ी था
और उन लोगों के कपड़ों की निगरानी कर रहा था जो
उसे संगसार कर रहे थे।' 21 लेकिन ख़ुदावन्द ने कहा,
'जा, क्यूँकि मैं तुझे दूरदराज़ इलाक़ों में ग़ैरयहूदियों
के पास भेज दूँगा'।"

22 यहाँ तक हुजूम पौलुस की बातें सुनता रहा।
लेकिन अब वह चिल्ला उठे, "इसे हटा दो! इसे जान
से मार दो! यह ज़िन्दा रहने के लाइक़ नहीं!" 23 वह
चीख़ें मार मार कर अपनी चादरें उतारने और हवा में
गर्द उड़ाने लगे। 24 इस पर कमाँडर ने हुक्म दिया कि
पौलुस को क़िले में ले जाया जाए और कोड़े लगा
कर उस की पूछगछ की जाए। क्यूँकि वह मालूम
करना चाहता था कि लोग किस वजह से पौलुस के
ख़िलाफ़ यूँ चीख़ें मार रहे हैं। 25 जब वह उसे कोड़े
लगाने के लिए ले कर जा रहे थे तो पौलुस ने साथ
खड़े अफ़्सर [f]से कहा, "क्या आप के लिए जाइज़ है
कि एक रोमी शहरी के कोड़े लगवाएँ और वह भी
अदालत में पेश किए बग़ैर?"

---

[f]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़्सर।

26 अफ़सर ने जब यह सुना तो कमाँडर के पास जा
कर उसे इत्तिला दी, “आप क्या करने को हैं? यह
आदमी तो रोमी शहरी है!”
27 कमाँडर पौलुस के पास आया और पूछा, “मुझे
सहीह बताएँ, क्या आप रोमी शहरी हैं?”
पौलुस ने जवाब दिया, “जी हाँ।”
28 कमाँडर ने कहा, “मैं तो बड़ी रक़म दे कर शहरी
बना हूँ।”
पौलुस ने जवाब दिया, “लेकिन मैं तो पैदाइशी
शहरी हूँ।”
29 यह सुनते ही वह फ़ौजी जो उस की पूछगछ करने
को थे पीछे हट गए। कमाँडर ख़ुद घबरा गया कि मैं
ने एक रोमी शहरी को ज़न्जीरों में जकड़ रखा है।

पौलुस यहूदी अदालत-ए-आलिया के सामने

30 अगले दिन कमाँडर साफ़ मालूम करना चाहता
था कि यहूदी पौलुस पर क्यूँ इल्ज़ाम लगा रहे हैं। इस
लिए उस ने राहनुमा इमामों और यहूदी अदालत-ए-
आलिया के तमाम मैम्बरान का इज्लास मुनअक़िद
करने का हुक्म दिया। फिर पौलुस को आज़ाद करके
क़िले से नीचे लाया और उन के सामने खड़ा किया।

23 1 पौलुस ने ग़ौर से अदालत-ए-आलिया के
मैम्बरान की तरफ़ देख कर कहा, “भाइयो,
आज तक मैं ने साफ़ ज़मीर के साथ अल्लाह के
सामने ज़िन्दगी गुज़ारी है।” 2 इस पर इमाम-ए-आज़म
हननियाह ने पौलुस के क़रीब खड़े लोगों से कहा कि
वह उस के मुँह पर थप्पड़ मारें। 3 पौलुस ने उस से
कहा, “मक्कार! [8]अल्लाह तुम को ही मारेगा, क्यूँकि तुम
यहाँ बैठे शरीअत के मुताबिक़ मेरा फ़ैसला करना
चाहते हो जबकि मुझे मारने का हुक्म दे कर ख़ुद
शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे हो!”
4 पौलुस के क़रीब खड़े आदमियों ने कहा, “तुम
अल्लाह के इमाम-ए-आज़म को बुरा कहने की जुरअत
क्यूँकर करते हो?”
5 पौलुस ने जवाब दिया, “भाइयो, मुझे मालूम न
था कि वह इमाम-ए-आज़म हैं, वर्ना ऐसे अल्फ़ाज़
इस्तेमाल न करता। क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में
लिखा है कि अपनी क़ौम के हाकिमों को बुरा-भला
मत कहना।”
6 पौलुस को इल्म था कि अदालत-ए-आलिया के
कुछ लोग सदूक़ी हैं जबकि दीगर फ़रीसी हैं। इस
लिए वह इज्लास में पुकार उठा, “भाइयो, मैं फ़रीसी
बल्कि फ़रीसी का बेटा भी हूँ। मुझे इस लिए अदालत
में पेश किया गया है कि मैं मुर्दों में से जी उठने की
उम्मीद रखता हूँ।”
7 इस बात से फ़रीसी और सदूक़ी एक दूसरे से
झगड़ने लगे और इज्लास के अफ़राद दो गुरोहों में
बट गए। 8 वजह यह थी कि सदूक़ी नहीं मानते कि
हम जी उठेंगे। वह फ़रिश्तों और रूहों का भी इन्कार
करते हैं। इस के मुक़ाबले में फ़रीसी यह सब कुछ
मानते हैं। 9 होते होते बड़ा शोर मच गया। फ़रीसी
फ़िर्क़े के कुछ आलिम खड़े हो कर जोश से बह्स
करने लगे, “हमें इस आदमी में कोई ग़लती नज़र नहीं
आती, शायद कोई रूह या फ़रिश्ता इस से हमकलाम
हुआ हो।”
10 झगड़े ने इतना ज़ोर पकड़ा कि कमाँडर डर गया,
क्यूँकि ख़तरा था कि वह पौलुस के टुकड़े कर डालें।
इस लिए उस ने अपने फ़ौजियों को हुक्म दिया कि
वह उतरें और पौलुस को यहूदियों के बीच में से छीन
कर क़िले में वापस लाएँ।
11 उसी रात ख़ुदावन्द पौलुस के पास आ खड़ा
हुआ और कहा, “हौसला रख, क्यूँकि जिस तरह तू
ने यरूशलम में मेरे बारे में गवाही दी है लाज़िम है कि
इसी तरह रोम शहर में भी गवाही दे।”

पौलुस के ख़िलाफ़ साज़िश

12 अगले दिन कुछ यहूदियों ने साज़िश करके
क़सम खाई, “हम न तो कुछ खाएँगे, न पिएँगे जब

---

[8]लफ़्ज़ी तर्जुमा : सफेदी की हुई दीवार।

तक पौलुस को क़त्ल न कर लें।” 13 चालीस से
ज़्यादा मर्दों ने इस साज़िश में हिस्सा लिया। 14 वह
राहनुमा इमामों और बुज़ुर्गों के पास गए और कहा,
“हम ने पक्की क़सम खाई है कि कुछ नहीं खाएँगे जब
तक पौलुस को क़त्ल न कर लें। 15 अब ज़रा यहूदी
अदालत-ए-आलिया के साथ मिल कर कमाँडर से
गुज़ारिश करें कि वह उसे दुबारा आप के पास लाएँ।
बहाना यह पेश करें कि आप मज़ीद तफ़सील से उस
के मुआमले का जाइज़ा लेना चाहते हैं। जब उसे
लाया जाएगा तो हम उस के यहाँ पहुँचने से पहले
पहले उसे मार डालने के लिए तय्यार होंगे।”

16 लेकिन पौलुस के भान्जे को इस बात का पता
चल गया। उस ने क़िले में जा कर पौलुस को इत्तिला
दी। 17 इस पर पौलुस ने रोमी अफ़सरों [h]में से एक को
बुला कर कहा, “इस जवान को कमाँडर के पास ले
जाएँ। इस के पास उन के लिए ख़बर है।” 18 अफ़सर
भान्जे को कमाँडर के पास ले गया और कहा, “क़ैदी
पौलुस ने मुझे बुला कर मुझ से गुज़ारिश की कि इस
नौजवान को आप के पास ले आऊँ। उस के पास
आप के लिए ख़बर है।”

19 कमाँडर नौजवान का हाथ पकड़ कर दूसरों से
अलग हो गया। फिर उस ने पूछा, “क्या ख़बर है जो
आप मुझे बताना चाहते हैं?”

20 उस ने जवाब दिया, “यहूदी आप से दरख़्वास्त
करने पर मुत्तफ़िक़ हो गए हैं कि आप कल पौलुस को
दुबारा यहूदी अदालत-ए-आलिया के सामने लाएँ।
बहाना यह होगा कि वह और ज़्यादा तफ़सील से
उस के बारे में मालूमात हासिल करना चाहते हैं।
21 लेकिन उन की बात न मानें, क्यूँकि उन में से
चालीस से ज़्यादा आदमी उस की ताक में बैठे हैं।
उन्हों ने क़सम खाई है कि हम न कुछ खाएँगे न पिएँगे
जब तक उसे क़त्ल न कर लें। वह अभी तय्यार बैठे
हैं और सिर्फ़ इस इन्तिज़ार में हैं कि आप उन की
बात मानें।”

22 कमाँडर ने नौजवान को रुख़्सत करके कहा,
“जो कुछ आप ने मुझे बता दिया है उस का किसी
से ज़िक्र न करना।”

पौलुस को गवर्नर फ़ेलिक्स के पास भेजा जाता है

23 फिर कमाँडर ने अपने अफ़सरों में से दो को
बुलाया जो सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर थे। उस ने
हुक्म दिया, “दो सौ फ़ौजी, सत्तर घुड़सवार और दो
सौ नेज़ाबाज़ तय्यार करें। उन्हें आज रात को नौ
बजे क़ैसरिया जाना है। 24 पौलुस के लिए भी घोड़े
तय्यार रखना ताकि वह सहीह-सलामत गवर्नर के
पास पहुँचे।” 25 फिर उस ने यह ख़त लिखा,

26 “अज़ : क्लौदियुस लूसियास
मुअज़्ज़ज़ गवर्नर फ़ेलिक्स को सलाम। 27 यहूदी
इस आदमी को पकड़ कर क़त्ल करने को थे। मुझे
पता चला कि यह रोमी शहरी है, इस लिए मैं ने अपने
दस्तों के साथ आ कर इसे निकाल कर बचा लिया।
28 मैं मालूम करना चाहता था कि वह क्यूँ इस पर
इल्ज़ाम लगा रहे हैं, इस लिए मैं उतर कर इसे उन की
अदालत-ए-आलिया के सामने लाया। 29 मुझे मालूम
हुआ कि उन का इल्ज़ाम उन की शरीअत से ताल्लुक़
रखता है। लेकिन इस ने ऐसा कुछ नहीं किया जिस
की बिना पर यह जेल में डालने या सज़ा-ए-मौत के
लाइक़ हो। 30 फिर मुझे इत्तिला दी गई कि इस आदमी
को क़त्ल करने की साज़िश की गई है, इस लिए मैं
ने इसे फ़ौरन आप के पास भेज दिया। मैं ने इल्ज़ाम
लगाने वालों को भी हुक्म दिया कि वह इस पर अपना
इल्ज़ाम आप को ही पेश करें।”

31 फ़ौजियों ने उसी रात कमाँडर का हुक्म पूरा
किया। पौलुस को साथ ले कर वह अन्तीपत्रिस तक
पहुँच गए। 32 अगले दिन पयादे क़िले को वापस चले
जबकि घुड़सवारों ने पौलुस को ले कर सफ़र जारी
रखा। 33 क़ैसरिया पहुँच कर उन्हों ने पौलुस को ख़त
समेत गवर्नर फ़ेलिक्स के सामने पेश किया। 34 उस ने

---

[h]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

ख़त पढ़ लिया और फिर पौलुस से पूछा, “आप किस
सूबे के हैं?” पौलुस ने कहा, “किलिकिया का।”
35 इस पर गवर्नर ने कहा, “मैं आप की समाअत
उस वक़्त करूँगा जब आप पर इल्ज़ाम लगाने वाले
पहुँचेंगे।” और उस ने हुक्म दिया कि हेरोदेस के महल
में पौलुस की पहरादारी की जाए।

पौलुस पर मुक़द्दमा

24 1 पाँच दिन के बाद इमाम-ए-आज़म
हननियाह, कुछ यहूदी बुज़ुर्ग और एक
वकील बनाम तिर्तुल्लुस क़ैसरिया आए ताकि गवर्नर
के सामने पौलुस पर अपना इल्ज़ाम पेश करें।
2 पौलुस को बुलाया गया तो तिर्तुल्लुस ने फ़ेलिक्स को
यहूदियों का इल्ज़ाम पेश किया,

“आप के ज़ेर-ए-हुकूमत हमें बड़ा अम्न-ओ-अमान
हासिल है, और आप की दूरअन्देशी से इस मुल्क
में बहुत तरक़्क़ी हुई है। 3 मुअज़्ज़ज़ फ़ेलिक्स, इन
तमाम बातों के लिए हम आप के ख़ास ममनून हैं।
4 लेकिन मैं नहीं चाहता कि आप मेरी बातों से हद से
ज़्यादा थक जाएँ। अर्ज़ सिर्फ़ यह है कि आप हम पर
मेहरबानी का इज़हार करके एक लम्हे के लिए हमारे
मुआमले पर तवज्जुह दें। 5 हम ने इस आदमी को
अवाम दुश्मन पाया है जो पूरी दुनिया के यहूदियों
में फ़साद पैदा करता रहता है। यह नासरी फ़िर्क़े
का एक सरग़ना है 6 और हमारे बैत-उल-मुक़द्दस की
बेहुरमती करने की कोशिश कर रहा था जब हम ने
इसे पकड़ा [ताकि अपनी शरीअत के मुताबिक़ इस
पर मुक़द्दमा चलाएँ। 7 मगर लूसियास कमाँडर आ
कर इसे ज़बरदस्ती हम से छीन कर ले गया और
हुक्म दिया कि इस के मुद्दई आप के पास हाज़िर हों।]
8 इस की पूछगछ करके आप ख़ुद हमारे इल्ज़ामात
की तस्दीक़ करा सकते हैं।” 9 फिर बाक़ी यहूदियों
ने उस की हाँ में हाँ मिला कर कहा कि यह वाक़ई
ऐसा ही है।

पौलुस का दिफ़ा

10 गवर्नर ने इशारा किया कि पौलुस अपनी बात
पेश करे। उस ने जवाब में कहा,

“मैं जानता हूँ कि आप कई सालों से इस क़ौम के
जज मुक़र्रर हैं, इस लिए ख़ुशी से आप को अपना
दिफ़ा पेश करता हूँ। 11 आप ख़ुद मालूम कर सकते
हैं कि मुझे यरूशलम गए सिर्फ़ बारह दिन हुए हैं। जाने
का मक़्सद इबादत में शरीक होना था। 12 वहाँ न मैं ने
बैत-उल-मुक़द्दस में किसी से बह्स-मुबाहसा किया,
न शहर के किसी इबादतख़ाने में या किसी और जगह
हलचल मचाई। इन लोगों ने भी मेरी कोई ऐसी हरकत
नहीं देखी। 13 जो इल्ज़ाम यह मुझ पर लगा रहे हैं उस
का कोई भी सबूत पेश नहीं कर सकते। 14 बेशक मैं
तस्लीम करता हूँ कि मैं उसी राह पर चलता हूँ जिसे
यह बिदअत क़रार देते हैं। लेकिन मैं अपने बापदादा
के ख़ुदा की परस्तिश करता हूँ। जो कुछ भी शरीअत
और नबियों के सहीफ़ों में लिखा है उसे मैं मानता हूँ।
15 और मैं अल्लाह पर वही उम्मीद रखता हूँ जो यह भी
रखते हैं, कि क़ियामत का एक दिन होगा जब वह
रास्तबाज़ों और नारास्तों को मुर्दों में से ज़िन्दा कर
देगा। 16 इस लिए मेरी पूरी कोशिश यही होती है कि
हर वक़्त मेरा ज़मीर अल्लाह और इन्सान के सामने
साफ़ हो।

17 कई सालों के बाद मैं यरूशलम वापस आया।
मेरे पास क़ौम के ग़रीबों के लिए ख़ैरात थी और मैं
बैत-उल-मुक़द्दस में क़ुर्बानियाँ भी पेश करना चाहता
था। 18 मुझ पर इल्ज़ाम लगाने वालों ने मुझे बैत-उल-
मुक़द्दस में देखा जब मैं तहारत की रुसूमात अदा
कर रहा था। उस वक़्त न कोई हुजूम था, न फ़साद।
19 लेकिन सूबा आसिया के कुछ यहूदी वहाँ थे।
अगर उन्हें मेरे ख़िलाफ़ कोई शिकायत है तो उन्हें ही
यहाँ हाज़िर हो कर मुझ पर इल्ज़ाम लगाना चाहिए।
20 या यह लोग ख़ुद बताएँ कि जब मैं यहूदी अदालत-
ए-आलिया के सामने खड़ा था तो उन्हों ने मेरा क्या
जुर्म मालूम किया। 21 सिर्फ़ यह एक जुर्म हो सकता है

कि मैं ने उस वक़्त उन के हुज़ूर पुकार कर यह बात
बयान की, ‘आज मुझ पर इस लिए इल्ज़ाम लगाया
जा रहा है कि मैं ईमान रखता हूँ कि मुर्दे जी उठेंगे’।”
22 फ़ेलिक्स ने जो ईसा की राह से ख़ूब वाक़िफ़
था मुक़द्दमा मुल्तवी कर दिया। उस ने कहा, “जब
कमाँडर लूसियास आएँगे फिर मैं फ़ैसला दूँगा।”
23 उस ने पौलुस पर मुक़र्रर अफ़्सर [i]को हुक्म दिया
कि वह उस की पहरादारी तो करे लेकिन उसे कुछ
सहूलियात भी दे और उस के अज़ीज़ों को उस से
मिलने और उस की ख़िदमत करने से न रोके।

पौलुस फ़ेलिक्स और द्रूसिल्ला के सामने

24 कुछ दिनों के बाद फ़ेलिक्स अपनी अहलिया
द्रूसिल्ला के हमराह वापस आया। द्रूसिल्ला यहूदी थी।
पौलुस को बुला कर उन्हों ने ईसा पर ईमान के बारे में
उस की बातें सुनीं। 25 लेकिन जब रास्तबाज़ी, ज़ब्त-
ए-नफ़्स और आने वाली अदालत के मज़ामीन छिड़
गए तो फ़ेलिक्स ने घबरा कर उस की बात काटी,
“फ़िलहाल काफ़ी है। अब इजाज़त है, जब मेरे पास
वक़्त होगा मैं आप को बुला लूँगा।” 26 साथ साथ
वह यह उम्मीद भी रखता था कि पौलुस रिश्वत देगा,
इस लिए वह कई बार उसे बुला कर उस से बात
करता रहा।
27 दो साल गुज़र गए तो फ़ेलिक्स की जगह
पुरकियुस फ़ेस्तुस आ गया। ताहम उस ने पौलुस को
क़ैदख़ाने में छोड़ दिया, क्यूँकि वह यहूदियों के साथ
रिआयत बरतना चाहता था।

पौलुस शहन्शाह से अपील करता है

25 1 क़ैसरिया पहुँचने के तीन दिन बाद फ़ेस्तुस
यरूशलम चला गया। 2 वहाँ राहनुमा
इमामों और बाक़ी यहूदी राहनुमाओं ने उस के सामने
पौलुस पर अपने इल्ज़ामात पेश किए। उन्हों ने बड़े
ज़ोर से 3 मिन्नत की कि वह उन की रिआयत करके
पौलुस को यरूशलम मुन्तक़िल करे। वजह यह थी
कि वह घात में बैठ कर रास्ते में पौलुस को क़त्ल
करना चाहते थे। 4 लेकिन फ़ेस्तुस ने जवाब दिया,
“पौलुस को क़ैसरिया में रखा गया है और मैं ख़ुद
वहाँ जाने को हूँ। 5 अगर उस से कोई जुर्म सरज़द
हुआ है तो आप के कुछ राहनुमा मेरे साथ वहाँ जा
कर उस पर इल्ज़ाम लगाएँ।”
6 फ़ेस्तुस ने मज़ीद आठ दस दिन उन के साथ
गुज़ारे, फिर क़ैसरिया चला गया। अगले दिन वह
अदालत करने के लिए बैठा और पौलुस को लाने
का हुक्म दिया। 7 जब पौलुस पहुँचा तो यरूशलम से
आए हुए यहूदी उस के इर्दगिर्द खड़े हुए और उस पर
कई सन्जीदा इल्ज़ामात लगाए, लेकिन वह कोई भी
बात साबित न कर सके। 8 पौलुस ने अपना दिफ़ा
करके कहा, “मुझ से न यहूदी शरीअत, न बैत-उल-
मुक़द्दस और न शहन्शाह के ख़िलाफ़ जुर्म सरज़द
हुआ है।”
9 लेकिन फ़ेस्तुस यहूदियों के साथ रिआयत बरतना
चाहता था, इस लिए उस ने पूछा, “क्या आप
यरूशलम जा कर वहाँ की अदालत में मेरे सामने
पेश किए जाने के लिए तय्यार हैं?”
10 पौलुस ने जवाब दिया, “मैं शहन्शाह की रोमी
अदालत में खड़ा हूँ और लाज़िम है कि यहीं मेरा
फ़ैसला किया जाए। आप भी इस से ख़ूब वाक़िफ़
हैं कि मैं ने यहूदियों से कोई नाइन्साफ़ी नहीं की।
11 अगर मुझ से कोई ऐसा काम सरज़द हुआ हो जो
सज़ा-ए-मौत के लाइक़ हो तो मैं मरने से इन्कार नहीं
करूँगा। लेकिन अगर बेक़ुसूर हूँ तो किसी को भी
मुझे इन आदमियों के हवाले करने का हक़ नहीं है।
मैं शहन्शाह से अपील करता हूँ!”
12 यह सुन कर फ़ेस्तुस ने अपनी कौंसल से मश्वरा
करके कहा, “आप ने शहन्शाह से अपील की है, इस
लिए आप शहन्शाह ही के पास जाएंगे।”

---

[i]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़्सर।

पौलुस अग्रिप्पा और बिरनीके के सामने

13 कुछ दिन गुज़र गए तो अग्रिप्पा बादशाह अपनी
बहन बिरनीके के साथ फ़ेस्तुस से मिलने आया।
14 वह कई दिन वहाँ ठहरे रहे। इतने में फ़ेस्तुस
ने पौलुस के मुआमले पर बादशाह के साथ बात
की। उस ने कहा, "यहाँ एक क़ैदी है जिसे फ़ेलिक्स
छोड़ कर चला गया है। 15 जब मैं यरूशलम गया
तो राहनुमा इमामों और यहूदी बुज़ुर्गों ने उस पर
इल्ज़ामात लगा कर उसे मुजरिम क़रार देने का
तक़ाज़ा किया। 16 मैं ने उन्हें जवाब दिया, 'रोमी
क़ानून किसी को अदालत में पेश किए बग़ैर मुजरिम
क़रार नहीं देता। लाज़िम है कि उसे पहले इल्ज़ाम
लगाने वालों का सामना करने का मौक़ा दिया जाए
ताकि अपना दिफ़ा कर सके।' 17 जब उस पर इल्ज़ाम
लगाने वाले यहाँ पहुँचे तो मैं ने ताख़ीर न की। मैं
ने अगले ही दिन अदालत मुनअक़िद करके पौलुस
को पेश करने का हुक्म दिया। 18 लेकिन जब उस
के मुख़ालिफ़ इल्ज़ाम लगाने के लिए खड़े हुए तो
वह ऐसे जुर्म नहीं थे जिन की तवक़्क़ो मैं कर रहा
था। 19 उन का उस के साथ कोई और झगड़ा था
जो उन के अपने मज़्हब और एक मुर्दा आदमी बनाम
ईसा से ताल्लुक़ रखता है। इस ईसा के बारे में पौलुस
दावा करता है कि वह ज़िन्दा है। 20 मैं उलझन में पड़
गया क्यूँकि मुझे मालूम नहीं था कि किस तरह इस
मुआमले का सहीह जाइज़ा लूँ। चुनाँचे मैं ने पूछा,
'क्या आप यरूशलम जा कर वहाँ अदालत में पेश
किए जाने के लिए तय्यार हैं?' 21 लेकिन पौलुस ने
अपील की, 'शहन्शाह ही मेरा फ़ैसला करे।' फिर मैं
ने हुक्म दिया कि उसे उस वक़्त तक क़ैद में रखा जाए
जब तक उसे शहन्शाह के पास भेजने का इन्तिज़ाम
न करवा सकूँ।"

22 अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से कहा, "मैं भी उस शख़्स
को सुनना चाहता हूँ।"

उस ने जवाब दिया, "कल ही आप उस को सुन
लेंगे।"

23 अगले दिन अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूमधाम
के साथ आए और बड़े फ़ौजी अफ़सरों और शहर के
नामवर आदमियों के साथ दीवान-ए-आम में दाख़िल
हुए। फ़ेस्तुस के हुक्म पर पौलुस को अन्दर लाया
गया। 24 फ़ेस्तुस ने कहा, "अग्रिप्पा बादशाह और
तमाम ख़वातीन-ओ-हज़रात! आप यहाँ एक आदमी
को देखते हैं जिस के बारे में तमाम यहूदी ख़्वाह वह
यरूशलम के रहने वाले हों, ख़्वाह यहाँ के, शोर
मचा कर सज़ा-ए-मौत का तक़ाज़ा कर रहे हैं। 25 मेरी
दानिस्त में तो इस ने कोई ऐसा काम नहीं किया जो
सज़ा-ए-मौत के लाइक़ हो। लेकिन इस ने शहन्शाह
से अपील की है, इस लिए मैं ने इसे रोम भेजने का
फ़ैसला किया है। 26 लेकिन मैं शहन्शाह को क्या
लिख दूँ? क्यूँकि इस पर कोई साफ़ इल्ज़ाम नहीं
लगाया गया। इस लिए मैं इसे आप सब के सामने
लाया हूँ, ख़ासकर अग्रिप्पा बादशाह आप के सामने,
ताकि आप इस की तफ़्तीश करें और मैं कुछ लिख
सकूँ। 27 क्यूँकि मुझे बेतुकी सी बात लग रही है कि
हम एक क़ैदी को रोम भेजें जिस पर अब तक साफ़
इल्ज़ामात नहीं लगाए गए हैं।"

पौलुस का अग्रिप्पा के सामने दिफ़ा

26 1 अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "आप को
अपने दिफ़ा में बोलने की इजाज़त है।"
पौलुस ने हाथ से इशारा करके अपने दिफ़ा में बोलने
का आग़ाज़ किया,

2 "अग्रिप्पा बादशाह, मैं अपने आप को ख़ुशनसीब
समझता हूँ कि आज आप ही मेरा यह दिफ़ाई बयान
सुन रहे हैं जो मुझे यहूदियों के तमाम इल्ज़ामात के
जवाब में देना पड़ रहा है। 3 ख़ासकर इस लिए कि
आप यहूदियों के रस्म-ओ-रिवाज और तनाज़ुओं से
वाक़िफ़ हैं। मेरी अर्ज़ है कि आप सब्र से मेरी बात
सुनें।

4 तमाम यहूदी जानते हैं कि मैं ने जवानी से ले कर
अब तक अपनी क़ौम बल्कि यरूशलम में किस तरह
ज़िन्दगी गुज़ारी। 5 वह मुझे बड़ी देर से जानते हैं और

अगर चाहें तो इस की गवाही भी दे सकते हैं कि मैं
फ़रीसी की ज़िन्दगी गुज़ारता था, हमारे मज़्हब के
उसी फ़िर्क़े की जो सब से कट्टर है। 6 और आज
मेरी अदालत इस वजह से की जा रही है कि मैं
उस वादे पर उम्मीद रखता हूँ जो अल्लाह ने हमारे
बापदादा से किया। 7 हक़ीक़त में यह वही उम्मीद
है जिस की वजह से हमारे बारह क़बीले दिन रात
और बड़ी लगन से अल्लाह की इबादत करते रहते हैं
और जिस की तक्मील के लिए वह तड़पते हैं। तो
भी ऐ बादशाह, यह लोग मुझ पर यह उम्मीद रखने
का इल्ज़ाम लगा रहे हैं। 8 लेकिन आप सब को यह
ख़याल क्यूँ नाक़ाबिल-ए-यक़ीन लगता है कि अल्लाह
मुर्दों को ज़िन्दा कर देता है?

9 पहले मैं भी समझता था कि हर मुमकिन तरीक़े
से ईसा नासरी की मुख़ालफ़त करना मेरा फ़र्ज़ है।
10 और यह मैं ने यरूशलम में किया भी। राहनुमा
इमामों से इख़तियार ले कर मैं ने वहाँ के बहुत से
मुक़द्दसों को जेल में डलवा दिया। और जब कभी
उन्हें सज़ा-ए-मौत देने का फ़ैसला करना था तो मैं ने
भी इस हक़ में वोट दिया। 11 मैं तमाम इबादतख़ानों
में गया और बहुत दफ़ा उन्हें सज़ा दिला कर ईसा
के बारे में कुफ़्र बकने पर मज्बूर करने की कोशिश
करता रहा। मैं इतने तैश में आ गया था कि उन की
ईज़ारसानी की ग़रज़ से बैरून-ए-मुल्क भी गया।

पौलुस अपनी तब्दीली का ज़िक्र करता है

12 एक दिन मैं राहनुमा इमामों से इख़तियार और
इजाज़तनामा ले कर दमिश्क़ जा रहा था। 13 दोपहर
तक़रीबन बारह बजे मैं सड़क पर चल रहा था
कि एक रौशनी देखी जो सूरज से ज़्यादा तेज़ थी।
वह आसमान से आ कर मेरे और मेरे हमसफ़रों
के गिर्दागिर्द चमकी। 14 हम सब ज़मीन पर गिर
गए और मैं ने अरामी ज़बान में एक आवाज़ सुनी,
'साऊल, साऊल, तू मुझे क्यूँ सताता है? यूँ मेरे
आँकुस के ख़िलाफ़ पाँओ मारना तेरे लिए ही दुश्वारी
का बाइस है।' 15 मैं ने पूछा, 'ख़ुदावन्द, आप कौन
हैं?' ख़ुदावन्द ने जवाब दिया, 'मैं ईसा हूँ, वही जिसे
तू सताता है। 16 लेकिन अब उठ कर खड़ा हो जा,
क्यूँकि मैं तुझे अपना ख़ादिम और गवाह मुक़र्रर करने
के लिए तुझ पर ज़ाहिर हुआ हूँ। जो कुछ तू ने देखा
है उस की तुझे गवाही देनी है और उस की भी जो
मैं आइन्दा तुझ पर ज़ाहिर करूँगा। 17 मैं तुझे तेरी
अपनी क़ौम से बचाए रखूँगा और उन ग़ैरयहूदी क़ौमों
से भी जिन के पास तुझे भेजूँगा। 18 तू उन की आँखों
को खोल देगा ताकि वह तारीकी और इब्लीस के
इख़तियार से नूर और अल्लाह की तरफ़ रुजू करें।
फिर उन के गुनाहों को मुआफ़ कर दिया जाएगा और
वह उन के साथ आसमानी मीरास में शरीक होंगे जो
मुझ पर ईमान लाने से मुक़द्दस किए गए हैं।'

पौलुस अपनी ख़िदमत का बयान करता है

19 ऐ अग्रिप्पा बादशाह, जब मैं ने यह सुना तो
मैं ने इस आसमानी रोया की नाफ़रमानी न की
20 बल्कि इस बात की मुनादी की कि लोग तौबा
करके अल्लाह की तरफ़ रुजू करें और अपने अमल
से अपनी तब्दीली का इज़हार भी करें। मैं ने इस की
तब्लीग़ पहले दमिश्क़ में की, फिर यरूशलम और पूरे
यहूदिया में और इस के बाद ग़ैरयहूदी क़ौमों में भी।
21 इसी वजह से यहूदियों ने मुझे बैत-उल-मुक़द्दस में
पकड़ कर क़त्ल करने की कोशिश की। 22 लेकिन
अल्लाह ने आज तक मेरी मदद की है, इस लिए मैं यहाँ
खड़ा हो कर छोटों और बड़ों को अपनी गवाही दे
सकता हूँ। जो कुछ मैं सुनाता हूँ वह वही कुछ है जो
मूसा और नबियों ने कहा है, 23 कि मसीह दुख उठा
कर पहला शख़्स होगा जो मुर्दों में से जी उठेगा और
कि वह यूँ अपनी क़ौम और ग़ैरयहूदियों के सामने
अल्लाह के नूर का प्रचार करेगा।"

24 अचानक फ़ेस्तुस पौलुस की बात काट कर चिल्ला
उठा, "पौलुस, होश में आओ! इल्म की ज़ियादती ने
तुम्हें दीवाना कर दिया है।"

25 पौलुस ने जवाब दिया, "मुअज़्ज़ज़ फ़ेस्तुस, मैं
दीवाना नहीं हूँ। मेरी यह बातें हक़ीक़ी और माक़ूल

हैं। 26 बादशाह सलामत इन से वाक़िफ़ हैं, इस लिए
मैं उन से खुल कर बात कर सकता हूँ। मुझे यक़ीन
है कि यह सब कुछ उन से छुपा नहीं रहा, क्यूँकि
यह पोशीदगी में या किसी कोने में नहीं हुआ। 27 ऐ
अग्रिप्पा बादशाह, क्या आप नबियों पर ईमान रखते
हैं? बल्कि मैं जानता हूँ कि आप उन पर ईमान रखते
हैं।"

28 अग्रिप्पा ने कहा, "आप तो बड़ी जल्दी से मुझे
क़ाइल करके मसीही बनाना चाहते हैं।"

29 पौलुस ने जवाब दिया, "जल्द या बदेर मैं अल्लाह
से दुआ करता हूँ कि न सिर्फ़ आप बल्कि तमाम
हाज़िरीन मेरी मानिन्द बन जाएँ, सिवाए मेरी ज़न्जीरों
के।"

30 फिर बादशाह, गवर्नर, बिरनीके और बाक़ी सब
उठ कर चले गए। 31 वहाँ से निकल कर वह एक
दूसरे से बात करने लगे। सब इस पर मुत्तफ़िक़ थे
कि "इस आदमी ने कुछ नहीं किया जो सज़ा-ए-मौत
या क़ैद के लाइक़ हो।" 32 और अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से
कहा, "अगर इस ने शहन्शाह से अपील न की होती
तो इसे रिहा किया जा सकता था।"

पौलुस का रोम की तरफ़ सफ़र

27 1 जब हमारा इटली के लिए सफ़र
मुतअय्यिन किया गया तो पौलुस को चन्द
एक और क़ैदियों समेत एक रोमी अफ़सर [j]के हवाले
किया गया जिस का नाम यूलियुस था जो शाही
पलटन पर मुक़र्रर था। 2 अरिस्तर्ख़ुस भी हमारे साथ
था। वह थिस्सलुनीके शहर का मकिदुनी आदमी था।
हम अद्रमित्तियुम शहर के एक जहाज़ पर सवार हुए
जिसे सूबा आसिया की चन्द बन्दरगाहों को जाना
था। 3 अगले दिन हम सैदा पहुँचे तो यूलियुस ने
मेहरबानी करके पौलुस को शहर में उस के दोस्तों
के पास जाने की इजाज़त दी ताकि वह उस की
ज़रूरियात पूरी कर सकें। 4 जब हम वहाँ से रवाना
हुए तो मुख़ालिफ़ हवाओं की वजह से जज़ीरा-ए-
क़ुब्रुस और सूबा आसिया के दरमियान से गुज़रे।
5 फिर खुले समुन्दर पर चलते चलते हम किलिकिया
और पम्फ़ीलिया के समुन्दर से गुज़र कर सूबा
लूकिया के शहर मूरा पहुँचे। 6 वहाँ क़ैदियों पर मुक़र्रर
अफ़सर को पता चला कि इस्कन्दरिया का एक मिस्री
जहाज़ इटली जा रहा है। उस पर उस ने हमें सवार
किया।

7 कई दिन हम आहिस्ता आहिस्ता चले और
बड़ी मुश्किल से कनिदुस के क़रीब पहुँचे। लेकिन
मुख़ालिफ़ हवा की वजह से हम ने जज़ीरा-ए-क्रेते की
तरफ़ रुख़ किया और सल्मोने शहर के क़रीब से गुज़र
कर क्रेते की आड़ में सफ़र किया। 8 लेकिन वहाँ हम
साहिल के साथ साथ चलते हुए बड़ी मुश्किल से एक
जगह पहुँचे जिस का नाम 'हसीन-बन्दर' था। शहर
लसया उस के क़रीब वाक़े था।

9 बहुत वक़्त ज़ाए हो गया था और अब बहरी
सफ़र ख़तरनाक भी हो चुका था, क्यूँकि कफ़्फ़ारा का
दिन (तक़रीबन नवम्बर के शुरू में) गुज़र चुका था।
इस लिए पौलुस ने उन्हें आगाह किया, 10 "हज़रात,
मुझे पता है कि आगे जा कर हम पर बड़ी मुसीबत
आएगी। हमें जहाज़, माल-ओ-अस्बाब और जानों
का नुक़्सान उठाना पड़ेगा।" 11 लेकिन क़ैदियों पर
मुक़र्रर रोमी अफ़सर ने उस की बात नज़रअन्दाज़
करके जहाज़ के नाख़ुदा और मालिक की बात मानी।
12 चूँकि 'हसीन-बन्दर' में जहाज़ को सर्दियों के
मौसम के लिए रखना मुश्किल था इस लिए अक्सर
लोग आगे फ़ेनिक्स तक पहुँच कर सर्दियों का मौसम
गुज़ारना चाहते थे। क्यूँकि फ़ेनिक्स जज़ीरा-ए-क्रेते
की अच्छी बन्दरगाह थी जो सिर्फ़ जुनूब-मग़रिब और
शिमाल-मग़रिब की तरफ़ खुली थी।

---

[j]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

समुन्दर पर तूफ़ान

13 चुनाँचे एक दिन जब जुनूब की सिम्त से हल्की
सी हवा चलने लगी तो मल्लाहों ने सोचा कि हमारा
इरादा पूरा हो गया है। वह लंगर उठा कर क्रेते के
साहिल के साथ साथ चलने लगे। 14 लेकिन थोड़ी
ही देर के बाद मौसम बदल गया और उन पर जज़ीरे
की तरफ़ से एक तूफ़ानी हवा टूट पड़ी जो बाद-
ए-शिमाल-मशरिक़ी कहलाती है। 15 जहाज़ हवा के
क़ाबू में आ गया और हवा की तरफ़ रुख़ न कर
सका, इस लिए हम ने हार मान कर जहाज़ को हवा
के साथ साथ चलने दिया। 16 जब हम एक छोटे
जज़ीरा बनाम कौदा की आड़ में से गुज़रने लगे तो
हम ने बड़ी मुश्किल से बचाओ-कश्ती को जहाज़
पर उठा कर महफ़ूज़ रखा। (अब तक वह रस्से से
जहाज़ के साथ खैंची जा रही थी।) 17 फिर मल्लाहों ने
जहाज़ के ढाँचे को ज़्यादा मज़बूत बनाने की ख़ातिर
उस के इर्दगिर्द रस्से बांधे। ख़ौफ़ यह था कि जहाज़
शिमाली अफ़्रीक़ा के क़रीब पड़े चोरबालू में धँस
जाए। (इन रेतों का नाम सूरतिस था।) इस से बचने
के लिए उन्हों ने लंगर डाल दिया [k]ताकि जहाज़ कुछ
आहिस्ता चले। यूँ जहाज़ हवा के साथ चलते चलते
आगे बढ़ा। 18 अगले दिन भी तूफ़ान जहाज़ को इतनी
शिद्दत से झंझोड़ रहा था कि मल्लाह माल-ओ-अस्बाब
को समुन्दर में फैंकने लगे। 19 तीसरे दिन उन्हों ने
अपने ही हाथों से जहाज़ चलाने का कुछ सामान
समुन्दर में फैंक दिया। 20 तूफ़ान की शिद्दत बहुत
दिनों के बाद भी ख़त्म न हुई। न सूरज और न सितारे
नज़र आए यहाँ तक कि आख़िरकार हमारे बचने की
हर उम्मीद जाती रही।

21 काफ़ी देर से दिल नहीं चाहता था कि खाना
खाया जाए। आख़िरकार पौलुस ने लोगों के बीच में
खड़े हो कर कहा, “हज़रात, बेहतर होता कि आप
मेरी बात मान कर क्रेते से रवाना न होते। फिर आप
इस मुसीबत और ख़सारे से बच जाते। 22 लेकिन
अब मैं आप को नसीहत करता हूँ कि हौसला रखें।
आप में से एक भी नहीं मरेगा। सिर्फ़ जहाज़ तबाह
हो जाएगा। 23 क्यूँकि पिछली रात एक फ़रिश्ता मेरे
पास आ खड़ा हुआ, उसी ख़ुदा का फ़रिश्ता जिस
का मैं बन्दा हूँ और जिस की इबादत मैं करता हूँ।
24 उस ने कहा, ‘पौलुस, मत डर। लाज़िम है कि तुझे
शहन्शाह के सामने पेश किया जाए। और अल्लाह
अपनी मेहरबानी से तेरे वास्ते तमाम हमसफ़रों की
जानें भी बचाए रखेगा।’ 25 इस लिए हौसला रखें,
क्यूँकि मेरा अल्लाह पर ईमान है कि ऐसा ही होगा
जिस तरह उस ने फ़रमाया है। 26 लेकिन जहाज़ को
किसी जज़ीरे के साहिल पर चढ़ जाना है।”

27 तूफ़ान की चौधवीं रात जहाज़ बहीरा-ए-अद्रिया
पर बहे चला जा रहा था कि तक़रीबन आधी रात
को मल्लाहों ने महसूस किया कि साहिल नज़्दीक आ
रहा है। 28 पानी की गहराई की पैमाइश करके उन्हें
मालूम हुआ कि वह 120 फ़ुट थी। थोड़ी देर के बाद
उस की गहराई 90 फ़ुट हो चुकी थी। 29 वह डर गए,
क्यूँकि उन्हों ने अन्दाज़ा लगाया कि ख़तरा है कि
हम साहिल पर पड़ी चटानों से टकरा जाएँ। इस लिए
उन्हों ने जहाज़ के पिछले हिस्से से चार लंगर डाल
कर दुआ की कि दिन जल्दी से चढ़ जाए। 30 उस
वक़्त मल्लाहों ने जहाज़ से फ़रार होने की कोशिश
की। उन्हों ने यह बहाना बना कर कि हम जहाज़ के
सामने से भी लंगर डालना चाहते हैं बचाओ-कश्ती
पानी में उतरने दी। 31 इस पर पौलुस ने क़ैदियों पर
मुक़र्रर अफ़्सर और फ़ौजियों से कहा, “अगर यह
आदमी जहाज़ पर न रहें तो आप सब मर जाएंगे।”
32 चुनाँचे उन्हों ने बचाओ कश्ती के रस्से को काट
कर उसे खुला छोड़ दिया।

33 पौ फटने वाली थी कि पौलुस ने सब को
समझाया कि वह कुछ खा लें। उस ने कहा, “आप
ने चौदह दिन से इज़्तिराब की हालत में रह कर कुछ

---

[k]लंगर यानी छोटा लंगर जिस की मदद से जहाज़ का रुख़ एक ही सिम्त में रखा जाता है।

नहीं खाया। 34 अब मेहरबानी करके कुछ खा लें। यह
आप के बचाओ के लिए ज़रूरी है, क्यूँकि आप न
सिर्फ़ बच जाएंगे बल्कि आप का एक बाल भी बीका
नहीं होगा।” 35 यह कह कर उस ने कुछ रोटी ली और
उन सब के सामने अल्लाह से शुक्रगुज़ारी की दुआ
की। फिर उसे तोड़ कर खाने लगा। 36 इस से दूसरों
की हौसलाअफ़्ज़ाई हुई और उन्हों ने भी कुछ खाना
खाया। 37 जहाज़ पर हम 276 अफ़राद थे। 38 जब
सब सेर हो गए तो गन्दुम को भी समुन्दर में फैंका
गया ताकि जहाज़ और हल्का हो जाए।

जहाज़ टुकड़े टुकड़े हो जाता है

39 जब दिन चढ़ गया तो मल्लाहों ने साहिली इलाक़े
को न पहचाना। लेकिन एक ख़लीज नज़र आई जिस
का साहिल अच्छा था। उन्हें ख़याल आया कि शायद
हम जहाज़ को वहाँ ख़ुश्की पर चढ़ा सकें। 40 चुनाँचे
उन्हों ने लंगरों के रस्से काट कर उन्हें समुन्दर में
छोड़ दिया। फिर उन्हों ने वह रस्से खोल दिए जिन
से पतवार बंधे होते थे और सामने वाले बादबान
को चढ़ा कर हवा के ज़ोर से साहिल की तरफ़ रुख़
किया। 41 लेकिन चलते चलते जहाज़ एक चोरबालू
से टकरा कर उस पर चढ़ गया। जहाज़ का माथा धँस
गया यहाँ तक कि वह हिल भी न सका जबकि उस
का पिछला हिस्सा मौजों की टक्करों से टुकड़े टुकड़े
होने लगा।

42 फ़ौजी क़ैदियों को क़त्ल करना चाहते थे ताकि
वह जहाज़ से तैर कर फ़रार न हो सकें। 43 लेकिन उन
पर मुक़र्रर अफ़्सर पौलुस को बचाना चाहता था, इस
लिए उस ने उन्हें ऐसा करने न दिया। उस ने हुक्म दिया
कि पहले वह सब जो तैर सकते हैं पानी में छलाँग
लगा कर किनारे तक पहुँचें। 44 बाक़ियों को तख़्तों
या जहाज़ के किसी टुकड़े को पकड़ कर पहुँचना
था। यूँ सब सहीह-सलामत साहिल तक पहुँचे।

जज़ीरा-ए-मिलिते में

28 1 तूफ़ान से बचने पर हमें मालूम हुआ कि
जज़ीरे का नाम मिलिते है। 2 मक़ामी लोगों
ने हमें ग़ैरमामूली मेहरबानी दिखाई। उन्हों ने आग
जला कर हमारा इस्तिक़्बाल किया, क्यूँकि बारिश
शुरू हो चुकी थी और ठंड थी। 3 पौलुस ने भी लकड़ी
का ढेर जमा किया। लेकिन जूँ ही उस ने उसे आग
में फैंका एक ज़हरीला साँप आग की तपिश से भाग
कर निकल आया और पौलुस के हाथ से चिमट कर
उसे डस लिया। 4 मक़ामी लोगों ने साँप को पौलुस
के हाथ से लगे देखा तो एक दूसरे से कहने लगे,
“यह आदमी ज़रूर क़ातिल होगा। गो यह समुन्दर
से बच गया, लेकिन इन्साफ़ की देवी इसे जीने नहीं
देती।” 5 लेकिन पौलुस ने साँप को झटक कर आग
में फैंक दिया, और साँप का कोई बुरा असर उस पर
न हुआ। 6 लोग इस इन्तिज़ार में रहे कि वह सूज जाए
या अचानक गिर पड़े, लेकिन काफ़ी देर के बाद भी
कुछ न हुआ। इस पर उन्हों ने अपना ख़याल बदल
कर उसे देवता क़रार दिया।

7 क़रीब ही जज़ीरे के सब से बड़े आदमी की ज़मीनें
थीं। उस का नाम पुब्लियुस था। उस ने अपने घर में
हमारा इस्तिक़्बाल किया और तीन दिन तक हमारी
ख़ूब मेहमान-नवाज़ी की। 8 उस का बाप बीमार पड़ा
था, वह बुख़ार और पेचिश के मर्ज़ में मुब्तला था।
पौलुस उस के कमरे में गया, उस के लिए दुआ की
और अपने हाथ उस पर रख दिए। इस पर मरीज़
को शिफ़ा मिली। 9 जब यह हुआ तो जज़ीरे के बाक़ी
तमाम मरीज़ों ने पौलुस के पास आ कर शिफ़ा पाई।
10 नतीजे में उन्हों ने कई तरह से हमारी इज़्ज़त की।
और जब रवाना होने का वक़्त आ गया तो उन्हों ने
हमें वह सब कुछ मुहय्या किया जो सफ़र के लिए
दरकार था।

जज़ीरा-ए-मिलिते से रोम तक

11 जज़ीरे पर तीन माह गुज़र गए। फिर हम एक
जहाज़ पर सवार हुए जो सर्दियों के मौसम के लिए
वहाँ ठहर गया था। यह जहाज़ इस्कन्दरिया का था
और उस के माथे पर जुड़वाँ देवताओं 'कास्टर' और
'पोल्लुक्स' की मूरत नसब थी। हम वहाँ से रुख़्सत
हो कर 12 सुरकूसा शहर पहुँचे। तीन दिन के बाद
13 हम वहाँ से रेगियुम शहर गए जहाँ हम सिर्फ़ एक
दिन ठहरे। फिर जुनूब से हवा उठी, इस लिए हम
अगले दिन पुतियोली पहुँचे। 14 इस शहर में हमारी
मुलाक़ात कुछ भाइयों से हुई। उन्हों ने हमें अपने
पास एक हफ़्ता रहने की दावत दी। यूँ हम रोम
पहुँच गए। 15 रोम के भाइयों ने हमारे बारे में सुन
रखा था, और कुछ हमारा इस्तिक़्बाल करने के लिए
क़स्बा बनाम अप्पियुस के चौक तक आए जबकि
कुछ सिर्फ़ 'तीन-सराय' तक आ सके। उन्हें देख कर
पौलुस ने अल्लाह का शुक्र किया और नया हौसला
पाया।

रोम में

16 हमारे रोम में पहुँचने पर पौलुस को अपने किराए
के मकान में रहने की इजाज़त मिली, गो एक फ़ौजी
उस की पहरादारी करने के लिए उस के साथ रहा।
17 तीन दिन गुज़र गए तो पौलुस ने यहूदी राहनुमाओं
को बुलाया। जब वह जमा हुए तो उस ने उन से कहा,
"भाइयो, मुझे यरूशलम में गिरिफ़्तार करके रोमियों
के हवाले कर दिया गया हालाँकि मैं ने अपनी क़ौम
या अपने बापदादा के रस्म-ओ-रिवाज के ख़िलाफ़
कुछ नहीं किया था। 18 रोमी मेरा जाइज़ा ले कर मुझे
रिहा करना चाहते थे, क्यूँकि उन्हें मुझे सज़ा-ए-मौत
देने का कोई सबब न मिला था। 19 लेकिन यहूदियों ने
एतिराज़ किया और यूँ मुझे शहन्शाह से अपील करने
पर मज्बूर कर दिया गया, गो मेरा यह इरादा नहीं है
कि मैं अपनी क़ौम पर कोई इल्ज़ाम लगाऊँ। 20 मैं ने
इस लिए आप को बुलाया ताकि आप से मिलों और
गुफ़्तगु करूँ। मैं उस शख़्स की ख़ातिर इन ज़न्जीरों
से जकड़ा हुआ हूँ जिस के आने की उम्मीद इस्राईल
रखता है।"
21 यहूदियों ने उसे जवाब दिया, "हमें यहूदिया से
आप के बारे में कोई भी ख़त नहीं मिला। और जितने
भाई वहाँ से आए हैं उन में से एक ने भी आप के
बारे में न तो कोई मन्फ़ी रिपोर्ट दी न कोई बुरी बात
बताई। 22 लेकिन हम आप से सुनना चाहते हैं कि
आप के ख़यालात क्या हैं, क्यूँकि हम इतना जानते
हैं कि हर जगह लोग इस फ़िर्क़े के ख़िलाफ़ बातें कर
रहे हैं।"
23 चुनाँचे उन्हों ने मिलने का एक दिन मुक़र्रर
किया। जब यहूदी दुबारा उस जगह आए जहाँ पौलुस
रहता था तो उन की तादाद बहुत ज़्यादा थी। सुब्ह से
ले कर शाम तक उस ने अल्लाह की बादशाही बयान
की और उस की गवाही दी। उस ने उन्हें मूसा की
शरीअत और नबियों के हवालाजात पेश कर करके
ईसा के बारे में क़ाइल करने की कोशिश की। 24 कुछ
तो क़ाइल हो गए, लेकिन बाक़ी ईमान न लाए। 25 उन
में नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा हुई तो वह चले गए। जब वह
जाने लगे तो पौलुस ने उन से कहा, "रूह-उल-क़ुद्स
ने यसायाह नबी की मारिफ़त आप के बापदादा से
ठीक कहा कि
26 जा, इस क़ौम को बता, 'तुम अपने कानों से
सुनोगे
मगर कुछ नहीं समझोगे,
तुम अपनी आँखों से देखोगे
मगर कुछ नहीं जानोगे।
27 क्यूँकि इस क़ौम का दिल बेहिस्स हो गया है।
वह मुश्किल से अपने कानों से सुनते हैं,
उन्हों ने अपनी आँखों को बन्द कर रखा है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने कानों से सुनें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ़ रुजू करें
और मैं उन्हें शिफ़ा दूँ'।"

28 पौलुस ने अपनी बात इन अल्फ़ाज़ से ख़त्म की,
“अब जान लें कि अल्लाह की तरफ़ से यह नजात
ग़ैरयहूदियों को भी पेश की गई है और वह सुनेंगे
भी!”
29 [जब उस ने यह कहा तो यहूदी आपस में बह्स-
मुबाहसा करते हुए चले गए।]
30 पौलुस पूरे दो साल अपने किराए के घर में रहा।
जो भी उस के पास आया उस का उस ने इस्तिक़्बाल
करके 31 दिलेरी से अल्लाह की बादशाही की मुनादी
की और ख़ुदावन्द ईसा मसीह की तालीम दी। और
किसी ने मुदाख़लत न की।

रोमियों

सलाम

1 1 यह ख़त मसीह ईसा के ग़ुलाम पौलुस की
तरफ़ से है जिसे रसूल होने के लिए बुलाया
और अल्लाह की ख़ुशख़बरी की मुनादी करने के लिए
अलग किया गया है।
2 पाक नविश्तों में दर्ज इस ख़ुशख़बरी का वादा
अल्लाह ने पहले ही अपने नबियों से कर रखा था।
3 और यह पैग़ाम उस के फ़र्ज़न्द ईसा के बारे में है।
इन्सानी लिहाज़ से वह दाऊद की नस्ल से पैदा हुआ,
4 जबकि रूह-उल-क़ुद्स के लिहाज़ से वह क़ुदरत
के साथ अल्लाह का फ़र्ज़न्द ठहरा जब वह मुर्दों में
से जी उठा। यह है हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के
बारे में अल्लाह की ख़ुशख़बरी। 5 मसीह से हमें रसूली
इख़तियार का यह फ़ज़्ल हासिल हुआ है कि हम
तमाम ग़ैरयहूदियों में मुनादी करें ताकि वह ईमान ला
कर उस के ताबे हो जाएँ और यूँ मसीह के नाम को
जलाल मिले। 6 आप भी उन ग़ैरयहूदियों में से हैं, जो
ईसा मसीह के बुलाए हुए हैं।
7 मैं आप सब को लिख रहा हूँ जो रोम में अल्लाह के
प्यारे हैं और मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस होने के लिए बुलाए
गए हैं।
ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
को फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

रोम जाने की आर्ज़ू

8 अव्वल, मैं आप सब के लिए ईसा मसीह के
वसीले से अपने ख़ुदा का शुक्र करता हूँ, क्यूँकि पूरी
दुनिया में आप के ईमान का चर्चा हो रहा है। 9 ख़ुदा
ही मेरा गवाह है जिस की ख़िदमत मैं अपनी रूह में
करता हूँ जब मैं उस के फ़र्ज़न्द के बारे में ख़ुशख़बरी
फैलाता हूँ, मैं लगातार आप को याद करता रहता हूँ
10 और हर वक़्त अपनी दुआओं में मिन्नत करता हूँ
कि अल्लाह मुझे आख़िरकार आप के पास आने की
कामयाबी अता करे। 11 क्यूँकि मैं आप से मिलने का
आरज़ूमन्द हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे ज़रीए आप को
कुछ रुहानी बरकत मिल जाए और यूँ आप मज़बूत
हो जाएँ। 12 यानी आने का मक़्सद यह है कि मेरे
ईमान से आप की हौसलाअफ़्ज़ाई की जाए और इसी
तरह आप के ईमान से मेरा हौसला भी बढ़ जाए।
13 भाइयो, आप के इल्म में हो कि मैं ने बहुत दफ़ा
आप के पास आने का इरादा किया। क्यूँकि जिस
तरह दीगर ग़ैरयहूदी अक़्वाम में मेरी ख़िदमत से फल
पैदा हुआ है उसी तरह आप में भी फल देखना चाहता
हूँ। लेकिन आज तक मुझे रोका गया है। 14 बात यह है
कि यह ख़िदमत सरअन्जाम देना मेरा फ़र्ज़ है, ख़्वाह
यूनानियों में हो या ग़ैरयूनानियों में, ख़्वाह दानाओं में
हो या नादानों में। 15 यही वजह है कि मैं आप को भी
जो रोम में रहते हैं अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने का
मुश्ताक़ हूँ।

अल्लाह की ख़ुशख़बरी की क़ुदरत

16 मैं तो ख़ुशख़बरी के सबब से शर्माता नहीं, क्यूँकि
यह अल्लाह की क़ुदरत है जो हर एक को जो ईमान
लाता है नजात देती है, पहले यहूदियों को, फिर
ग़ैरयहूदियों को। 17 क्यूँकि इस ख़ुशख़बरी में अल्लाह
की ही रास्तबाज़ी ज़ाहिर होती है, वह रास्तबाज़ी जो
शुरू से आख़िर तक ईमान पर मब्नी है। यही बात
कलाम-ए-मुक़द्दस में दर्ज है जब लिखा है, “रास्तबाज़
ईमान ही से जीता रहेगा।”

इन्सान पर अल्लाह का ग़ज़ब

18 लेकिन अल्लाह का ग़ज़ब आसमान पर से उन
तमाम बेदीन और नारास्त लोगों पर नाज़िल होता है

जो सच्चाई को अपनी नारास्ती से दबाए रखते हैं।
19 जो कुछ अल्लाह के बारे में मालूम हो सकता है
वह तो उन पर ज़ाहिर है, हाँ अल्लाह ने ख़ुद यह उन
पर ज़ाहिर किया है। 20 क्यूँकि दुनिया की तख़्लीक़
से ले कर आज तक इन्सान अल्लाह की अनदेखी
फ़ित्रत यानी उस की अज़ली क़ुदरत और उलूहियत
मख़्लूक़ात का मुशाहदा करने से पहचान सकता है।
इस लिए उन के पास कोई उज़्र नहीं। 21 अल्लाह को
जानने के बावुजूद उन्हों ने उसे वह जलाल न दिया
जो उस का हक़ है, न उस का शुक्र अदा किया बल्कि
वह बातिल ख़यालात में पड़ गए और उन के बेसमझ
दिलों पर तारीकी छा गई। 22 वह दावा तो करते थे
कि हम दाना हैं, लेकिन अहमक़ साबित हुए। 23 यूँ
उन्हों ने ग़ैरफ़ानी ख़ुदा को जलाल देने के बजाय
ऐसे बुतों की पूजा की जो फ़ानी इन्सान, परिन्दों,
चौपाइयों और रेंगने वाले जानवरों की सूरत में बनाए
गए थे।

24 इस लिए अल्लाह ने उन्हें उन नजिस कामों में छोड़
दिया जो उन के दिल करना चाहते थे। नतीजे में उन
के जिस्म एक दूसरे से बेहुर्मत होते रहे। 25 हाँ, उन्हों ने
अल्लाह के बारे में सच्चाई को रद्द करके झूट को अपना
लिया और मख़्लूक़ात की परस्तिश और ख़िदमत की,
न कि ख़ालिक़ की, जिस की तारीफ़ अबद तक होती
रहे, आमीन।

26 यही वजह है कि अल्लाह ने उन्हें उन की शर्मनाक
शहवतों में छोड़ दिया। उन की ख़वातीन ने फ़ित्रती
जिन्सी ताल्लुक़ात के बजाय ग़ैरफ़ित्रती ताल्लुक़ात रखे।
27 इसी तरह मर्द ख़वातीन के साथ फ़ित्रती ताल्लुक़ात
छोड़ कर एक दूसरे की शहवत में मस्त हो गए। मर्दों
ने मर्दों के साथ बेहया हरकतें करके अपने बदनों में
अपनी इस गुमराही का मुनासिब बदला पाया।

28 और चूँकि उन्हों ने अल्लाह को जानने से इन्कार
कर दिया इस लिए उस ने उन्हें उन की मकरूह सोच
में छोड़ दिया। और इस लिए वह ऐसी हरकतें करते
रहते हैं जो कभी नहीं करनी चाहिएँ। 29 वह हर तरह
की नारास्ती, शर, लालच और बुराई से भरे हुए हैं।
वह हसद, ख़ूँरेज़ी, झगड़े, फ़रेब और कीनावरी से
लबरेज़ हैं। वह चुग़ली खाने वाले, 30 तुहमत लगाने
वाले, अल्लाह से नफ़रत करने वाले, सरकश, मग़ुरूर,
शेख़ीबाज़, बदी को ईजाद करने वाले, माँ-बाप के
नाफ़रमान, 31 बेसमझ, बेवफ़ा, संगदिल और बेरहम
हैं। 32 अगरचे वह अल्लाह का फ़रमान जानते हैं कि
ऐसा करने वाले सज़ा-ए-मौत के मुस्तहिक़ हैं तो भी
वह ऐसा करते हैं। न सिर्फ़ यह बल्कि वह ऐसा करने
वाले दीगर लोगों को शाबाश भी देते हैं।

अल्लाह की रास्त अदालत

2 1 ऐ इन्सान, क्या तू दूसरों को मुजरिम ठहराता
है? तू जो कोई भी हो तेरा कोई उज़्र नहीं। क्यूँकि
तू ख़ुद भी वही कुछ करता है जिस में तू दूसरों को
मुजरिम ठहराता है और यूँ अपने आप को भी मुजरिम
क़रार देता है। 2 अब हम जानते हैं कि ऐसे काम करने
वालों पर अल्लाह का फ़ैसला मुन्सिफ़ाना है। 3 ताहम
तू वही कुछ करता है जिस में तू दूसरों को मुजरिम
ठहराता है। क्या तू समझता है कि ख़ुद अल्लाह की
अदालत से बच जाएगा? 4 या क्या तू उस की वसी
मेहरबानी, तहम्मुल और सब्र को हक़ीर जानता है?
क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह की मेहरबानी तुझे
तौबा तक ले जाना चाहती है? 5 लेकिन तू हटधर्म
है, तू तौबा करने के लिए तय्यार नहीं और यूँ अपनी
सज़ा में इज़ाफ़ा करता जा रहा है, वह सज़ा जो उस
दिन दी जाएगी जब अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा,
जब उस की रास्त अदालत ज़ाहिर होगी। 6 अल्लाह हर
एक को उस के कामों का बदला देगा। 7 कुछ लोग
साबितक़दमी से नेक काम करते और जलाल, इज़्ज़त
और बक़ा के तालिब रहते हैं। उन्हें अल्लाह अबदी
ज़िन्दगी अता करेगा। 8 लेकिन कुछ लोग ख़ुदग़रज़
हैं और सच्चाई की नहीं बल्कि नारास्ती की पैरवी
करते हैं। उन पर अल्लाह का ग़ज़ब और क़हर नाज़िल
होगा। 9 मुसीबत और परेशानी हर उस इन्सान पर
आएगी जो बुराई करता है, पहले यहूदी पर, फिर
यूनानी पर। 10 लेकिन जलाल, इज़्ज़त और सलामती

हर उस इन्सान को हासिल होगी जो नेकी करता है,
पहले यहूदी को, फिर यूनानी को। 11 क्यूँकि अल्लाह
किसी का भी तरफ़दार नहीं।

12 ग़ैरयहूदियों के पास मूसवी शरीअत नहीं है, इस
लिए वह शरीअत के बग़ैर ही गुनाह करके हलाक
हो जाते हैं। यहूदियों के पास शरीअत है, लेकिन
वह भी नहीं बचेंगे। क्यूँकि जब वह गुनाह करते हैं
तो शरीअत ही उन्हें मुजरिम ठहराती है। 13 क्यूँकि
अल्लाह के नज़्दीक यह काफ़ी नहीं कि हम शरीअत
की बातें सुनें बल्कि वह हमें उस वक़्त ही रास्तबाज़
क़रार देता है जब शरीअत पर अमल भी करते हैं।
14 और गो ग़ैरयहूदियों के पास शरीअत नहीं होती
लेकिन जब भी वह फ़ित्रती तौर पर वह कुछ करते
हैं जो शरीअत फ़रमाती है तो ज़ाहिर करते हैं कि गो
हमारे पास शरीअत नहीं तो भी हम अपने आप के
लिए ख़ुद शरीअत हैं। 15 इस में वह साबित करते
हैं कि शरीअत के तक़ाज़े उन के दिल पर लिखे हुए
हैं। उन का ज़मीर भी इस की गवाही देता है, क्यूँकि
उन के ख़यालात कभी एक दूसरे की मज़म्मत और
कभी एक दूसरे का दिफ़ा भी करते हैं। 16 ग़रज़, मेरी
ख़ुशख़बरी के मुताबिक़ हर एक को उस दिन अपना
अज्र मिलेगा जब अल्लाह ईसा मसीह की मारिफ़त
इन्सानों की पोशीदा बातों की अदालत करेगा।

यहूदी और शरीअत

17 अच्छा, तू अपने आप को यहूदी कहता है। तू
शरीअत पर इन्हिसार करता और अल्लाह के साथ
अपने ताल्लुक़ पर फ़ख़र करता है। 18 तू उस की
मर्ज़ी को जानता है और शरीअत की तालीम पाने
के बाइस सहीह राह की पहचान रखता है। 19 तुझे
पूरा यक़ीन है, 'मैं अंधों का क़ाइद, तारीकी में बसने
वालों की रौशनी, 20 बेसमझों का मुअल्लिम और बच्चों
का उस्ताद हूँ।' एक लिहाज़ से यह दुरुस्त भी है,
क्यूँकि शरीअत की सूरत में तेरे पास इल्म-ओ-इर्फ़ान
और सच्चाई मौजूद है। 21 अब बता, तू जो औरों को
सिखाता है अपने आप को क्यूँ नहीं सिखाता? तू
जो चोरी न करने की मुनादी करता है, ख़ुद चोरी
क्यूँ करता है? 22 तू जो औरों को ज़िना करने से
मना करता है, ख़ुद ज़िना क्यूँ करता है? तू जो बुतों
से घिन खाता है, ख़ुद मन्दिरों को क्यूँ लूटता है?
23 तू जो शरीअत पर फ़ख़र करता है, क्यूँ इस की
ख़िलाफ़वरज़ी करके अल्लाह की बेइज़्ज़ती करता है?
24 यह वही बात है जो कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखी है,
"तुम्हारे सबब से ग़ैरयहूदियों में अल्लाह के नाम पर
कुफ़्र बका जाता है।"

25 ख़तने का फ़ाइदा तो उस वक़्त होता है जब तू
शरीअत पर अमल करता है। लेकिन अगर तू उस
की हुक्मअदूली करता है तो तू नामख़्तून जैसा है।
26 इस के बरअक्स अगर नामख़्तून ग़ैरयहूदी शरीअत
के तक़ाज़ों को पूरा करता है तो क्या अल्लाह उसे
मख़्तून यहूदी के बराबर नहीं ठहराएगा? 27 चुनाँचे
जो नामख़्तून ग़ैरयहूदी शरीअत पर अमल करते हैं वह
आप यहूदियों को मुजरिम ठहराएँगे जिन का ख़तना
हुआ है और जिन के पास शरीअत है, क्यूँकि आप
शरीअत पर अमल नहीं करते। 28 आप इस बिना पर
हक़ीक़ी यहूदी नहीं हैं कि आप के वालिदैन यहूदी थे
या आप के बदन का ख़तना ज़ाहिरी तौर पर हुआ
है। 29 बल्कि हक़ीक़ी यहूदी वह है जो बातिन में
यहूदी है। और हक़ीक़ी ख़तना उस वक़्त होता है जब
दिल का ख़तना हुआ है। ऐसा ख़तना शरीअत से नहीं
बल्कि रूह-उल-क़ुद्स के वसीले से किया जाता है।
और ऐसे यहूदी को इन्सान की तरफ़ से नहीं बल्कि
अल्लाह की तरफ़ से तारीफ़ मिलती है।

3 1 तो क्या यहूदी होने का या ख़तना का कोई
फ़ाइदा है? 2 जी हाँ, हर तरह का! अव्वल तो
यह कि अल्लाह का कलाम उन के सपुर्द किया गया
है। 3 अगर उन में से बाज़ बेवफ़ा निकले तो क्या
हुआ? क्या इस से अल्लाह की वफ़ादारी भी ख़त्म
हो जाएगी? 4 कभी नहीं! लाज़िम है कि अल्लाह सच्चा
ठहरे गो हर इन्सान झूटा है। यूँ कलाम-ए-मुक़द्दस में
लिखा है, "लाज़िम है कि तू बोलते वक़्त रास्त ठहरे
और अदालत करते वक़्त ग़ालिब आए।"

5 कोई कह सकता है, “हमारी नारास्ती का एक
अच्छा मक़्सद होता है, क्यूँकि इस से लोगों पर
अल्लाह की रास्ती ज़ाहिर होती है। तो क्या अल्लाह
बेइन्साफ़ नहीं होगा अगर वह अपना ग़ज़ब हम पर
नाज़िल करे?” (मैं इन्सानी ख़याल पेश कर रहा हूँ)।
6 हरगिज़ नहीं! अगर अल्लाह रास्त न होता तो फिर
वह दुनिया की अदालत किस तरह कर सकता?
7 शायद कोई और एतिराज़ करे, “अगर मेरा झूट
अल्लाह की सच्चाई को कस्रत से नुमायाँ करता है
और यूँ उस का जलाल बढ़ता है तो वह मुझे क्यूँकर
गुनाहगार क़रार दे सकता है?” 8 कुछ लोग हम पर
यह कुफ़्र भी बकते हैं कि हम कहते हैं, “आओ,
हम बुराई करें ताकि भलाई निकले।” इन्साफ़ का
तक़ाज़ा है कि ऐसे लोगों को मुजरिम ठहराया जाए।

कोई रास्तबाज़ नहीं

9 अब हम क्या कहें? क्या हम यहूदी दूसरों से
बरतर हैं? बिलकुल नहीं। हम तो पहले ही यह
इल्ज़ाम लगा चुके हैं कि यहूदी और यूनानी सब
ही गुनाह के क़ब्ज़े में हैं। 10 कलाम-ए-मुक़द्दस में यूँ
लिखा है,

“कोई नहीं जो रास्तबाज़ है, एक भी नहीं।
11 कोई नहीं जो समझदार है,
कोई नहीं जो अल्लाह का तालिब है।
12 अफ़्सोस, सब सहीह राह से भटक गए,
सब के सब बिगड़ गए हैं।
कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।
13 उन का गला खुली क़ब्र है,
उन की ज़बान फ़रेब देती है।
उन के होंटों में साँप का ज़हर है।
14 उन का मुँह लानत और कड़वाहट से भरा है।
15 उन के पाँओ ख़ून बहाने के लिए जल्दी करते हैं।
16 अपने पीछे वह तबाही-ओ-बर्बादी छोड़ जाते हैं,
17 और वह सलामती की राह नहीं जानते।
18 उन की आँखों के सामने ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं
होता।”

19 अब हम जानते हैं कि शरीअत जो कुछ फ़रमाती
है उन्हें फ़रमाती है जिन के सपुर्द वह की गई है।
मक़्सद यह है कि हर इन्सान के बहाने ख़त्म किए
जाएँ और तमाम दुनिया अल्लाह के सामने मुजरिम
ठहरे। 20 क्यूँकि शरीअत के तक़ाज़े पूरे करने से कोई
भी उस के सामने रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता, बल्कि
शरीअत का काम यह है कि हमारे अन्दर गुनाहगार
होने का एहसास पैदा करे।

रास्तबाज़ होने के लिए ईमान ज़रूरी है

21 लेकिन अब अल्लाह ने हम पर एक राह का
इन्किशाफ़ किया है जिस से हम शरीअत के बग़ैर
ही उस के सामने रास्तबाज़ ठहर सकते हैं। तौरेत
और नबियों के सहीफ़े भी इस की तस्दीक़ करते
हैं। 22 राह यह है कि जब हम ईसा मसीह पर ईमान
लाते हैं तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ क़रार देता है। और
यह राह सब के लिए है। क्यूँकि कोई भी फ़र्क़ नहीं,
23 सब ने गुनाह किया, सब अल्लाह के उस जलाल
से महरूम हैं जिस का वह तक़ाज़ा करता है, 24 और
सब मुफ़्त में अल्लाह के फ़ज़्ल ही से रास्तबाज़ ठहराए
जाते हैं, उस फ़िदिए के वसीले से जो मसीह ईसा ने
दिया। 25 क्यूँकि अल्लाह ने ईसा को उस के ख़ून के
बाइस कफ़्फ़ारा का वसीला बना कर पेश किया,
ऐसा कफ़्फ़ारा जिस से ईमान लाने वालों को गुनाहों
की मुआफ़ी मिलती है। यूँ अल्लाह ने अपनी रास्ती
ज़ाहिर की, पहले माज़ी में जब वह अपने सब्र-ओ-
तहम्मुल में गुनाहों की सज़ा देने से बाज़ रहा 26 और
अब मौजूदा ज़माने में भी। इस से वह ज़ाहिर करता है
कि वह रास्त है और हर एक को रास्तबाज़ ठहराता
है जो ईसा पर ईमान लाया है।

27 अब हमारा फ़ख़र कहाँ रहा? उसे तो ख़त्म कर
दिया गया है। किस शरीअत से? क्या आमाल की
शरीअत से? नहीं, बल्कि ईमान की शरीअत से।
28 क्यूँकि हम कहते हैं कि इन्सान को ईमान से
रास्तबाज़ ठहराया जाता है, न कि आमाल से। 29 क्या
अल्लाह सिर्फ़ यहूदियों का ख़ुदा है? ग़ैरयहूदियों का

नहीं? हाँ, ग़ैरयहूदियों का भी है। 30 क्यूँकि अल्लाह
एक ही है जो मख़्तून और नामख़्तून दोनों को ईमान
ही से रास्तबाज़ ठहराएगा। 31 फिर क्या हम शरीअत
को ईमान से मन्सूख़ करते हैं? हरगिज़ नहीं, बल्कि
हम शरीअत को क़ाइम रखते हैं।

इब्राहीम ईमान से रास्तबाज़ ठहरा

4 1 इब्राहीम जिस्मानी लिहाज़ से हमारा बाप था।
तो रास्तबाज़ ठहरने के सिलसिले में उस का
क्या तजरिबा था? 2 हम कह सकते हैं कि अगर वह
शरीअत पर अमल करने से रास्तबाज़ ठहरता तो वह
अपने आप पर फ़ख़र कर सकता था। लेकिन अल्लाह
के नज़्दीक उस के पास अपने आप पर फ़ख़र करने
का कोई सबब न था। 3 क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस
में लिखा है, "इब्राहीम ने अल्लाह पर भरोसा रखा।
इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।"
4 जब लोग काम करते हैं तो उन की मज़दूरी कोई
ख़ास मेहरबानी क़रार नहीं दी जाती, बल्कि यह तो
उन का हक़ बनता है। 5 लेकिन जब लोग काम नहीं
करते बल्कि अल्लाह पर ईमान रखते हैं जो बेदीनों को
रास्तबाज़ क़रार देता है तो उन का कोई हक़ नहीं
बनता। वह उन के ईमान ही की बिना पर रास्तबाज़
क़रार दिए जाते हैं। 6 दाऊद यही बात बयान करता
है जब वह उस शख़्स को मुबारक कहता है जिसे
अल्लाह बग़ैर आमाल के रास्तबाज़ ठहराता है,

7 "मुबारक हैं वह जिन के जराइम मुआफ़ किए गए,
जिन के गुनाह ढाँपे गए हैं।
8 मुबारक है वह जिस का गुनाह रब हिसाब में नहीं
लाएगा।"

9 क्या यह मुबारकबादी सिर्फ़ मख़्तूनों के लिए
है या नामख़्तूनों के लिए भी? हम तो बयान कर
चुके हैं कि इब्राहीम ईमान की बिना पर रास्तबाज़
ठहरा। 10 उसे किस हालत में रास्तबाज़ ठहराया
गया? ख़तना कराने के बाद या पहले? ख़तने के
बाद नहीं बल्कि पहले। 11 और ख़तना का जो निशान
उसे मिला वह उस की रास्तबाज़ी की मुहर थी, वह
रास्तबाज़ी जो उसे ख़तना कराने से पेशतर मिली,
उस वक़्त जब वह ईमान लाया। यूँ वह उन सब का
बाप है जो बग़ैर ख़तना कराए ईमान लाए हैं और इस
बिना पर रास्तबाज़ ठहरते हैं। 12 साथ ही वह ख़तना
कराने वालों का बाप भी है, लेकिन उन का जिन का
न सिर्फ़ ख़तना हुआ है बल्कि जो हमारे बाप इब्राहीम
के उस ईमान के नक़्श-ए-क़दम पर चलते हैं जो वह
ख़तना कराने से पेशतर रखता था।

अल्लाह का वादा ईमान से हासिल होता है

13 जब अल्लाह ने इब्राहीम और उस की औलाद से
वादा किया कि वह दुनिया का वारिस होगा तो उस ने
यह इस लिए नहीं किया कि इब्राहीम ने शरीअत की
पैरवी की बल्कि इस लिए कि वह ईमान लाया और यूँ
रास्तबाज़ ठहराया गया। 14 क्यूँकि अगर वह वारिस
हैं जो शरीअत के पैरोकार हैं तो फिर ईमान बेअसर
ठहरा और अल्लाह का वादा मिट गया। 15 शरीअत
अल्लाह का ग़ज़ब ही पैदा करती है। लेकिन जहाँ कोई
शरीअत नहीं वहाँ उस की ख़िलाफ़वरज़ी भी नहीं।

16 चुनाँचे यह मीरास ईमान से मिलती है ताकि इस
की बुन्याद अल्लाह का फ़ज़्ल हो और इस का वादा
इब्राहीम की तमाम नस्ल के लिए हो, न सिर्फ़ शरीअत
के पैरोकारों के लिए बल्कि उन के लिए भी जो
इब्राहीम का सा ईमान रखते हैं। यही हम सब का बाप
है। 17 यूँ अल्लाह कलाम-ए-मुक़द्दस में उस से वादा
करता है, "मैं ने तुझे बहुत क़ौमों का बाप बना दिया
है।" अल्लाह ही के नज़्दीक इब्राहीम हम सब का बाप
है। क्यूँकि उस का ईमान उस ख़ुदा पर था जो मुर्दों
को ज़िन्दा करता और जिस के हुक्म पर वह कुछ
पैदा होता है जो पहले नहीं था। 18 उम्मीद की कोई
किरन दिखाई नहीं देती थी, फिर भी इब्राहीम उम्मीद
के साथ ईमान रखता रहा कि मैं ज़रूर बहुत क़ौमों
का बाप बनूँगा। और आख़िरकार ऐसा ही हुआ, जैसा
कलाम-ए-मुक़द्दस में वादा किया गया था कि "तेरी
औलाद इतनी ही बेशुमार होगी।" 19 और इब्राहीम
का ईमान कमज़ोर न पड़ा, हालाँकि उसे मालूम था

कि मैं तक़रीबन सौ साल का हूँ और मेरा और सारा
के बदन गोया मुर्दा हैं, अब बच्चे पैदा करने की उम्र
सारा के लिए गुज़र चुकी है। 20 तो भी इब्राहीम का
ईमान ख़त्म न हुआ, न उस ने अल्लाह के वादे पर शक
किया बल्कि ईमान में वह मज़ीद मज़बूत हुआ और
अल्लाह को जलाल देता रहा। 21 उसे पुख़्ता यक़ीन
था कि अल्लाह अपने वादे को पूरा करने की क़ुदरत
रखता है। 22 उस के इस ईमान की वजह से अल्लाह
ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया। 23 कलाम-ए-मुक़द्दस
में यह बात कि अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया
न सिर्फ़ उस की ख़ातिर लिखी गई 24 बल्कि हमारी
ख़ातिर भी। क्यूँकि अल्लाह हमें भी रास्तबाज़ क़रार
देगा अगर हम उस पर ईमान रखें जिस ने हमारे
ख़ुदावन्द ईसा को मुर्दों में से ज़िन्दा किया। 25 हमारी
ही ख़ताओं की वजह से उसे मौत के हवाले किया
गया, और हमें ही रास्तबाज़ क़रार देने के लिए उसे
ज़िन्दा किया गया।

रास्तबाज़ी का अन्जाम

5 1 अब चूँकि हमें ईमान से रास्तबाज़ क़रार दिया
गया है इस लिए अल्लाह के साथ हमारी सुलह
है। इस सुलह का वसीला हमारा ख़ुदावन्द ईसा
मसीह है। 2 हमारे ईमान लाने पर उस ने हमें फ़ज़्ल
के उस मक़ाम तक पहुँचाया जहाँ हम आज क़ाइम
हैं। और यूँ हम इस उम्मीद पर फ़ख़र करते हैं कि हम
अल्लाह के जलाल में शरीक होंगे। 3 न सिर्फ़ यह बल्कि
हम उस वक़्त भी फ़ख़र करते हैं जब हम मुसीबतों
में फंसे होते हैं। क्यूँकि हम जानते हैं कि मुसीबत
से साबितक़दमी पैदा होती है, 4 साबितक़दमी से
पुख़्तगी और पुख़्तगी से उम्मीद। 5 और उम्मीद हमें
शर्मिन्दा होने नहीं देती, क्यूँकि अल्लाह ने हमें रूह-
उल-क़ुद्स दे कर उस के वसीले से हमारे दिलों में
अपनी मुहब्बत उंडेली है।

6 क्यूँकि हम अभी कमज़ोर ही थे तो मसीह ने हम
बेदीनों की ख़ातिर अपनी जान दे दी। 7 मुश्किल से ही
कोई किसी रास्तबाज़ की ख़ातिर अपनी जान देगा।
हाँ, मुमकिन है कि कोई किसी नेकोकार के लिए
अपनी जान देने की जुरअत करे। 8 लेकिन अल्लाह ने
हम से अपनी मुहब्बत का इज़हार यूँ किया कि मसीह
ने उस वक़्त हमारी ख़ातिर अपनी जान दी जब हम
गुनाहगार ही थे। 9 हमें मसीह के ख़ून से रास्तबाज़
ठहराया गया है। तो यह बात कितनी यक़ीनी है कि
हम उस के वसीले से अल्लाह के ग़ज़ब से बचेंगे।
10 हम अभी अल्लाह के दुश्मन ही थे जब उस के
फ़र्ज़न्द की मौत के वसीले से हमारी उस के साथ
सुलह हो गई। तो फिर यह बात कितनी यक़ीनी है कि
हम उस की ज़िन्दगी के वसीले से नजात भी पाएँगे।
11 न सिर्फ़ यह बल्कि अब हम अल्लाह पर फ़ख़र करते
हैं और यह हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के वसीले से
है, जिस ने हमारी सुलह कराई है।

आदम और मसीह

12 जब आदम ने गुनाह किया तो उस एक ही शख़्स
से गुनाह दुनिया में आया। इस गुनाह के साथ साथ
मौत भी आ कर सब आदमियों में फैल गई, क्यूँकि
सब ने गुनाह किया। 13 शरीअत के इन्किशाफ़ से
पहले गुनाह तो दुनिया में था, लेकिन जहाँ शरीअत
नहीं होती वहाँ गुनाह का हिसाब नहीं किया जाता।
14 ताहम आदम से ले कर मूसा तक मौत की हुकूमत
जारी रही, उन पर भी जिन्हों ने आदम की सी
हुक्मअदूली न की।

अब आदम आने वाले ईसा मसीह की तरफ़ इशारा
था। 15 लेकिन इन दोनों में बड़ा फ़र्क़ है। जो नेमत
अल्लाह मुफ़्त में देता है वह आदम के गुनाह से
मुताबिक़त नहीं रखती। क्यूँकि इस एक शख़्स आदम
की ख़िलाफ़वरज़ी से बहुत से लोग मौत की ज़द
में आ गए, लेकिन अल्लाह का फ़ज़्ल कहीं ज़्यादा
मुअस्सिर है, वह मुफ़्त नेमत जो बहुतों को उस एक
शख़्स ईसा मसीह में मिली है। 16 हाँ, अल्लाह की इस
नेमत और आदम के गुनाह में बहुत फ़र्क़ है। उस एक
शख़्स आदम के गुनाह के नतीजे में हमें तो मुजरिम
क़रार दिया गया, लेकिन अल्लाह की मुफ़्त नेमत का

असर यह है कि हमें रास्तबाज़ क़रार दिया जाता
है, गो हम से बेशुमार गुनाह सरज़द हुए हैं। 17 इस
एक शख़्स आदम के गुनाह के नतीजे में मौत सब
पर हुकूमत करने लगी। लेकिन इस एक शख़्स ईसा
मसीह का काम कितना ज़्यादा मुअस्सिर था। जितने
भी अल्लाह का वाफ़िर फ़ज़्ल और रास्तबाज़ी की नेमत
पाते हैं वह मसीह के वसीले से अबदी ज़िन्दगी में
हुकूमत करेंगे।

18 चुनाँचे जिस तरह एक ही शख़्स के गुनाह के
बाइस सब लोग मुजरिम ठहरे उसी तरह एक ही
शख़्स के रास्त अमल से वह दरवाज़ा खुल गया
जिस में दाख़िल हो कर सब लोग रास्तबाज़ ठहर
सकते और ज़िन्दगी पा सकते हैं। 19 जिस तरह एक
ही शख़्स की नाफ़रमानी से बहुत से लोग गुनाहगार
बन गए, उसी तरह एक ही शख़्स की फ़रमाँबरदारी
से बहुत से लोग रास्तबाज़ बन जाएंगे।

20 शरीअत इस लिए दरमियान में आ गई कि
ख़िलाफ़वरज़ी बढ़ जाए। लेकिन जहाँ गुनाह ज़्यादा
हुआ वहाँ अल्लाह का फ़ज़्ल इस से भी ज़्यादा हो गया।
21 चुनाँचे जिस तरह गुनाह मौत की सूरत में हुकूमत
करता था उसी तरह अब अल्लाह का फ़ज़्ल हमें
रास्तबाज़ ठहरा कर हुकूमत करता है। यूँ हमें अपने
ख़ुदावन्द ईसा मसीह की बदौलत अबदी ज़िन्दगी
हासिल होती है।

मसीह में नई ज़िन्दगी

6 1 क्या इस का मतलब यह है कि हम गुनाह
करते रहें ताकि अल्लाह के फ़ज़्ल में इज़ाफ़ा हो?
2 हरगिज़ नहीं! हम तो मर कर गुनाह से लाताल्लुक़ हो
गए हैं। तो फिर हम किस तरह गुनाह को अपने आप
पर हुकूमत करने दे सकते हैं? 3 या क्या आप को
मालूम नहीं कि हम सब जिन्हें बपतिस्मा दिया गया
है इस से मसीह ईसा की मौत में शामिल हो गए हैं?
4 क्यूँकि बपतिस्मे से हमें दफ़नाया गया और उस की
मौत में शामिल किया गया ताकि हम मसीह की तरह
नई ज़िन्दगी गुज़ारें, जिसे बाप की जलाली क़ुदरत ने
मुर्दों में से ज़िन्दा किया।

5 चूँकि इस तरह हम उस की मौत में उस के साथ
पैवस्त हो गए हैं इस लिए हम उस के जी उठने में भी
उस के साथ पैवस्त होंगे। 6 क्यूँकि हम जानते हैं कि
हमारा पुराना इन्सान मसीह के साथ मस्लूब हो गया
ताकि गुनाह के क़ब्ज़े में यह जिस्म नेस्त हो जाए और
यूँ हम गुनाह के ग़ुलाम न रहें। 7 क्यूँकि जो मर गया
वह गुनाह से आज़ाद हो गया है। 8 और हमारा ईमान
है कि चूँकि हम मसीह के साथ मर गए हैं इस लिए
हम उस के साथ ज़िन्दा भी होंगे, 9 क्यूँकि हम जानते
हैं कि मसीह मुर्दों में से जी उठा है और अब कभी
नहीं मरेगा। अब मौत का उस पर कोई इख़तियार
नहीं। 10 मरते वक़्त वह हमेशा के लिए गुनाह की
हुकूमत से निकल गया, और अब जब वह दुबारा
ज़िन्दा है तो उस की ज़िन्दगी अल्लाह के लिए मख़्सूस
है। 11 आप भी अपने आप को ऐसा समझें। आप भी
मर कर गुनाह की हुकूमत से निकल गए हैं और अब
आप की मसीह में ज़िन्दगी अल्लाह के लिए मख़्सूस
है।

12 चुनाँचे गुनाह आप के फ़ानी बदन में हुकूमत न
करे। ध्यान दें कि आप उस की बुरी ख़्वाहिशात के
ताबे न हो जाएँ। 13 अपने बदन के किसी भी उज़्ू को
गुनाह की ख़िदमत के लिए पेश न करें, न उसे नारास्ती
का हथियार बनने दें। इस के बजाय अपने आप को
अल्लाह की ख़िदमत के लिए पेश करें। क्यूँकि पहले
आप मुर्दा थे, लेकिन अब आप ज़िन्दा हो गए हैं।
चुनाँचे अपने तमाम आज़ा को अल्लाह की ख़िदमत
के लिए पेश करें और उन्हें रास्ती के हथियार बनने
दें। 14 आइन्दा गुनाह आप पर हुकूमत नहीं करेगा,
क्यूँकि आप अपनी ज़िन्दगी शरीअत के तहत नहीं
गुज़ारते बल्कि अल्लाह के फ़ज़्ल के तहत।

रास्तबाज़ी के ग़ुलाम

15 अब सवाल यह है, चूँकि हम शरीअत के तहत
नहीं बल्कि फ़ज़्ल के तहत हैं तो क्या इस का मतलब

यह है कि हमें गुनाह करने के लिए खुला छोड़ दिया
गया है? हरगिज़ नहीं! 16 क्या आप को मालूम नहीं
कि जब आप अपने आप को किसी के ताबे करके
उस के ग़ुलाम बन जाते हैं तो आप उस मालिक के
ग़ुलाम हैं जिस के ताबे आप हैं? या तो गुनाह आप
का मालिक बन कर आप को मौत तक ले जाएगा,
या फ़रमाँबरदारी आप की मालिकन बन कर आप
को रास्तबाज़ी तक ले जाएगी। 17 दरहक़ीक़त आप
पहले गुनाह के ग़ुलाम थे, लेकिन ख़ुदा का शुक्र है
कि अब आप पूरे दिल से उसी तालीम के ताबे हो
गए हैं जो आप के सपुर्द की गई है। 18 अब आप को
गुनाह से आज़ाद कर दिया गया है, रास्तबाज़ी ही
आप की मालिकन बन गई है। 19 (आप की फ़ित्रती
कमज़ोरी की वजह से मैं ग़ुलामी की यह मिसाल दे
रहा हूँ ताकि आप मेरी बात समझ पाएँ।) पहले आप
ने अपने आज़ा को नजासत और बेदीनी की ग़ुलामी में
दे रखा था जिस के नतीजे में आप की बेदीनी बढ़ती
गई। लेकिन अब आप अपने आज़ा को रास्तबाज़ी
की ग़ुलामी में दे दें ताकि आप मुक़द्दस बन जाएँ।
20 जब गुनाह आप का मालिक था तो आप
रास्तबाज़ी से आज़ाद थे। 21 और इस का नतीजा क्या
था? जो कुछ आप ने उस वक़्त किया उस से आप
को आज शर्म आती है और उस का अन्जाम मौत है।
22 लेकिन अब आप गुनाह की ग़ुलामी से आज़ाद हो
कर अल्लाह के ग़ुलाम बन गए हैं, जिस के नतीजे में
आप मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस बन जाते हैं और जिस का
अन्जाम अबदी ज़िन्दगी है। 23 क्यूँकि गुनाह का अज्र
मौत है जबकि अल्लाह हमारे ख़ुदावन्द मसीह ईसा के
वसीले से हमें अबदी ज़िन्दगी की मुफ़्त नेमत अता
करता है।

शादी की मिसाल

7 1 भाइयो, आप तो शरीअत से वाक़िफ़ हैं। तो
क्या आप नहीं जानते कि शरीअत उस वक़्त
तक इन्सान पर इख़तियार रखती है जब तक वह
ज़िन्दा है? 2 शादी की मिसाल लें। जब किसी औरत
की शादी होती है तो शरीअत उस का शौहर के साथ
बंधन उस वक़्त तक क़ाइम रखती है जब तक शौहर
ज़िन्दा है। अगर शौहर मर जाए तो फिर वह इस बंधन
से आज़ाद हो गई। 3 चुनाँचे अगर वह अपने ख़ावन्द
के जीते जी किसी और मर्द की बीवी बन जाए तो उसे
ज़िनाकार क़रार दिया जाता है। लेकिन अगर उस का
शौहर मर जाए तो वह शरीअत से आज़ाद हुई। अब
वह किसी दूसरे मर्द की बीवी बने तो ज़िनाकार नहीं
ठहरती। 4 मेरे भाइयो, यह बात आप पर भी सादिक़
आती है। जब आप मसीह के बदन का हिस्सा बन
गए तो आप मर कर शरीअत के इख़तियार से आज़ाद
हो गए। अब आप उस के साथ पैवस्त हो गए हैं
जिसे मुर्दों में से ज़िन्दा किया गया ताकि हम अल्लाह
की ख़िदमत में फल लाएँ। 5 क्यूँकि जब हम अपनी
पुरानी फ़ित्रत के तहत ज़िन्दगी गुज़ारते थे तो शरीअत
हमारी गुनाहआलूदा रग़बतों को उकसाती थी। फिर
यही रग़बतें हमारे आज़ा पर असरअन्दाज़ होती थीं
और नतीजे में हम ऐसा फल लाते थे जिस का अन्जाम
मौत है। 6 लेकिन अब हम मर कर शरीअत के बंधन
से आज़ाद हो गए हैं। अब हम शरीअत की पुरानी
ज़िन्दगी के तहत ख़िदमत नहीं करते बल्कि रूह-
उल-क़ुद्स की नई ज़िन्दगी के तहत।

शरीअत और गुनाह

7 क्या इस का मतलब यह है कि शरीअत ख़ुद गुनाह
है? हरगिज़ नहीं! बात तो यह है कि अगर शरीअत
मुझ पर मेरे गुनाह ज़ाहिर न करती तो मुझे इन का
कुछ पता न चलता। मसलन अगर शरीअत न बताती,
“लालच न करना” तो मुझे दरहक़ीक़त मालूम न होता
कि लालच क्या है। 8 लेकिन गुनाह ने इस हुक्म से
फ़ाइदा उठा कर मुझ में हर तरह का लालच पैदा
कर दिया। इस के बरअक्स जहाँ शरीअत नहीं होती
वहाँ गुनाह मुर्दा है और ऐसा काम नहीं कर पाता।
9 एक वक़्त था जब मैं शरीअत के बग़ैर ज़िन्दगी
गुज़ारता था। लेकिन जूँ ही हुक्म मेरे सामने आया तो
गुनाह में जान आ गई 10 और मैं मर गया। इस तरह

मालूम हुआ कि जिस हुक्म का मक़्सद मेरी ज़िन्दगी
को क़ाइम रखना था वही मेरी मौत का बाइस बन
गया। 11 क्यूँकि गुनाह ने हुक्म से फ़ाइदा उठा कर
मुझे बहकाया और हुक्म से ही मुझे मार डाला।
12 लेकिन शरीअत ख़ुद मुक़द्दस है और इस के
अह्काम मुक़द्दस, रास्त और अच्छे हैं। 13 क्या इस
का मतलब यह है कि जो अच्छा है वही मेरे लिए
मौत का बाइस बन गया? हरगिज़ नहीं! गुनाह ही ने
यह किया। इस अच्छी चीज़ को इस्तेमाल करके उस
ने मेरे लिए मौत पैदा कर दी ताकि गुनाह ज़ाहिर हो
जाए। यूँ हुक्म के ज़रीए गुनाह की सन्जीदगी हद से
ज़्यादा बढ़ जाती है।

हमारे अन्दर की कश-म-कश

14 हम जानते हैं कि शरीअत रुहानी है। लेकिन मेरी
फ़ित्रत इन्सानी है, मुझे गुनाह की ग़ुलामी में बेचा गया
है। 15 दरहक़ीक़त मैं नहीं समझता कि क्या करता हूँ।
क्यूँकि मैं वह काम नहीं करता जो करना चाहता हूँ
बल्कि वह जिस से मुझे नफ़रत है। 16 लेकिन अगर मैं
वह करता हूँ जो नहीं करना चाहता तो ज़ाहिर है कि
मैं मुत्तफ़िक़ हूँ कि शरीअत अच्छी है। 17 और अगर
ऐसा है तो फिर मैं यह काम ख़ुद नहीं कर रहा बल्कि
गुनाह जो मेरे अन्दर सुकूनत करता है। 18 मुझे मालूम
है कि मेरे अन्दर यानी मेरी पुरानी फ़ित्रत में कोई
अच्छी चीज़ नहीं बसती। अगरचे मुझ में नेक काम
करने का इरादा तो मौजूद है लेकिन मैं उसे अमली
जामा नहीं पहना सकता। 19 जो नेक काम मैं करना
चाहता हूँ वह नहीं करता बल्कि वह बुरा काम करता
हूँ जो करना नहीं चाहता। 20 अब अगर मैं वह काम
करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता तो इस का मतलब
है कि मैं ख़ुद नहीं कर रहा बल्कि वह गुनाह जो मेरे
अन्दर बसता है।
21 चुनाँचे मुझे एक और तरह की शरीअत काम
करती हुई नज़र आती है, और वह यह है कि जब
मैं नेक काम करने का इरादा रखता हूँ तो बुराई आ
मौजूद होती है। 22 हाँ, अपने बातिन में तो मैं ख़ुशी
से अल्लाह की शरीअत को मानता हूँ। 23 लेकिन मुझे
अपने आज़ा में एक और तरह की शरीअत दिखाई
देती है, ऐसी शरीअत जो मेरी समझ की शरीअत के
ख़िलाफ़ लड़ कर मुझे गुनाह की शरीअत का क़ैदी
बना देती है, उस शरीअत का जो मेरे आज़ा में मौजूद
है। 24 हाय, मेरी हालत कितनी बुरी है! मुझे इस बदन
से जिस का अन्जाम मौत है कौन छुड़ाएगा? 25 ख़ुदा
का शुक्र है जो हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के वसीले
से यह काम करता है।

ग़रज़ यही मेरी हालत है, मसीह के बग़ैर मैं अल्लाह
की शरीअत की ख़िदमत सिर्फ़ अपनी समझ से
कर सकता हूँ जबकि मेरी पुरानी फ़ित्रत गुनाह की
शरीअत की ग़ुलाम रह कर उसी की ख़िदमत करती
है।

रूह में ज़िन्दगी

8 1 अब जो मसीह ईसा में हैं उन्हें मुजरिम नहीं
ठहराया जाता। 2 क्यूँकि रूह की शरीअत ने जो
हमें मसीह में ज़िन्दगी अता करती है तुझे गुनाह और
मौत की शरीअत से आज़ाद कर दिया है। 3 मूसवी
शरीअत हमारी पुरानी फ़ित्रत की कमज़ोर हालत की
वजह से हमें न बचा सकी। इस लिए अल्लाह ने वह
कुछ किया जो शरीअत के बस में न था। उस ने अपना
फ़र्ज़न्द भेज दिया ताकि वह गुनाहगार का सा जिस्म
इख़तियार करके हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा दे। इस
तरह अल्लाह ने पुरानी फ़ित्रत में मौजूद गुनाह को
मुजरिम ठहराया 4 ताकि हम में शरीअत का तक़ाज़ा
पूरा हो जाए, हम जो पुरानी फ़ित्रत के मुताबिक़ नहीं
बल्कि रूह के मुताबिक़ चलते हैं। 5 जो पुरानी फ़ित्रत
के इख़तियार में हैं वह पुरानी सोच रखते हैं जबकि
जो रूह के इख़तियार में हैं वह रुहानी सोच रखते हैं।
6 पुरानी फ़ित्रत की सोच का अन्जाम मौत है जबकि
रूह की सोच ज़िन्दगी और सलामती पैदा करती है।
7 पुरानी फ़ित्रत की सोच अल्लाह से दुश्मनी रखती है।
यह अपने आप को अल्लाह की शरीअत के ताबे नहीं
रखती, न ही ऐसा कर सकती है। 8 इस लिए वह लोग

अल्लाह को पसन्द नहीं आ सकते जो पुरानी फ़ित्रत के इख़तियार में हैं।

9 लेकिन आप पुरानी फ़ित्रत के इख़तियार में नहीं बल्कि रूह के इख़तियार में हैं। शर्त यह है कि रूह-उल-क़ुद्स आप में बसा हुआ हो। अगर किसी में मसीह का रूह नहीं तो वह मसीह का नहीं। 10 लेकिन अगर मसीह आप में है तो फिर आप का बदन गुनाह की वजह से मुर्दा है जबकि रूह-उल-क़ुद्स आप को रास्तबाज़ ठहराने की वजह से आप के लिए ज़िन्दगी का बाइस है। 11 उस का रूह आप में बसता है जिस ने ईसा को मुर्दों में से ज़िन्दा किया। और चूँकि रूह-उल-क़ुद्स आप में बसता है इस लिए अल्लाह इस के ज़रीए आप के फ़ानी बदनों को भी मसीह की तरह ज़िन्दा करेगा।

12 चुनाँचे मेरे भाइयो, हमारी पुरानी फ़ित्रत का कोई हक़ न रहा कि हमें अपने मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने पर मज्बूर करे। 13 क्यूँकि अगर आप अपनी पुरानी फ़ित्रत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें तो आप हलाक हो जाएंगे। लेकिन अगर आप रूह-उल-क़ुद्स की क़ुव्वत से अपनी पुरानी फ़ित्रत के ग़लत कामों को नेस्त-ओ-नाबूद करें तो फिर आप ज़िन्दा रहेंगे। 14 जिस की भी राहनुमाई रूह-उल-क़ुद्स करता है वह अल्लाह का फ़र्ज़न्द है। 15 क्यूँकि अल्लाह ने जो रूह आप को दिया है उस ने आप को ग़ुलाम बना कर ख़ौफ़ज़दा हालत में नहीं रखा बल्कि आप को अल्लाह के फ़र्ज़न्द बना दिया है, और उसी के ज़रीए हम पुकार कर अल्लाह को "अब्बा" यानी "ऐ बाप" कह सकते हैं। 16 रूह-उल-क़ुद्स ख़ुद हमारी रूह के साथ मिल कर गवाही देता है कि हम अल्लाह के फ़र्ज़न्द हैं। 17 और चूँकि हम उस के फ़र्ज़न्द हैं इस लिए हम वारिस हैं, अल्लाह के वारिस और मसीह के हममीरास। क्यूँकि अगर हम मसीह के दुख में शरीक हों तो उस के जलाल में भी शरीक होंगे।

आइन्दा का जलाल

18 मेरे ख़याल में हमारा मौजूदा दुख उस आने वाले जलाल की निस्बत कुछ भी नहीं जो हम पर ज़ाहिर होगा। 19 हाँ, तमाम काइनात यह देखने के लिए तड़पती है कि अल्लाह के फ़र्ज़न्द ज़ाहिर हो जाएँ, 20 क्यूँकि काइनात अल्लाह की लानत के तहत आ कर फ़ानी हो गई है। यह उस की अपनी नहीं बल्कि अल्लाह की मर्ज़ी थी जिस ने उस पर यह लानत भेजी। तो भी यह उम्मीद दिलाई गई 21 कि एक दिन काइनात को ख़ुद उस की फ़ानी हालत की ग़ुलामी से छुड़ाया जाएगा। उस वक़्त वह अल्लाह के फ़र्ज़न्दों की जलाली आज़ादी में शरीक हो जाएगी। 22 क्यूँकि हम जानते हैं कि आज तक तमाम काइनात कराहती और दर्द-ए-ज़ह में तड़पती रहती है। 23 न सिर्फ़ काइनात बल्कि हम ख़ुद भी अन्दर ही अन्दर कराहते हैं, गो हमें आने वाले जलाल का पहला फल रूह-उल-क़ुद्स की सूरत में मिल चुका है। हम कराहते कराहते शिद्दत से इस इन्तिज़ार में हैं कि यह बात ज़ाहिर हो जाए कि हम अल्लाह के फ़र्ज़न्द हैं और हमारे बदनों को नजात मिले। 24 क्यूँकि नजात पाते वक़्त हमें यह उम्मीद दिलाई गई। लेकिन अगर वह कुछ नज़र आ चुका होता जिस की उम्मीद हम रखते तो यह दरहक़ीक़त उम्मीद न होती। कौन उस की उम्मीद रखे जो उसे नज़र आ चुका है? 25 लेकिन चूँकि हम उस की उम्मीद रखते हैं जो अभी नज़र नहीं आया तो लाज़िम है कि हम सब्र से उस का इन्तिज़ार करें।

26 इसी तरह रूह-उल-क़ुद्स भी हमारी कमज़ोर हालत में हमारी मदद करता है, क्यूँकि हम नहीं जानते कि किस तरह मुनासिब दुआ माँगें। लेकिन रूह-उल-क़ुद्स ख़ुद नाक़ाबिल-ए-बयान आहें भरते हुए हमारी शफ़ाअत करता है। 27 और ख़ुदा बाप जो तमाम दिलों की तहक़ीक़ करता है रूह-उल-क़ुद्स की सोच को जानता है, क्यूँकि पाक रूह अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ मुक़द्दसीन की शफ़ाअत करता है।

28 और हम जानते हैं कि जो अल्लाह से मुहब्बत
रखते हैं उन के लिए सब कुछ मिल कर भलाई का
बाइस बनता है, उन के लिए जो उस के इरादे के
मुताबिक़ बुलाए गए हैं। 29 क्यूँकि अल्लाह ने पहले
से अपने लोगों को चुन लिया, उस ने पहले से उन्हें
इस के लिए मुक़र्रर किया कि वह उस के फ़र्ज़न्द के
हमशक्ल बन जाएँ और यूँ मसीह बहुत से भाइयों में
पहलौठा हो। 30 लेकिन जिन्हें उस ने पहले से मुक़र्रर
किया उन्हें उस ने बुलाया भी, जिन्हें उस ने बुलाया
उन्हें उस ने रास्तबाज़ भी ठहराया और जिन्हें उस ने
रास्तबाज़ ठहराया उन्हें उस ने जलाल भी बख़्शा।

अल्लाह की मसीह में मुहब्बत

31 इन तमाम बातों के जवाब में हम क्या कहें?
अगर अल्लाह हमारे हक़ में है तो कौन हमारे ख़िलाफ़
हो सकता है? 32 उस ने अपने फ़र्ज़न्द को भी दरेग़
न किया बल्कि उसे हम सब के लिए दुश्मन के
हवाले कर दिया। जिस ने हमें अपने फ़र्ज़न्द को
दे दिया क्या वह हमें उस के साथ सब कुछ मुफ़्त
नहीं देगा? 33 अब कौन अल्लाह के चुने हुए लोगों
पर इल्ज़ाम लगाएगा जब अल्लाह ख़ुद उन्हें रास्तबाज़
क़रार देता है? 34 कौन हमें मुजरिम ठहराएगा जब
मसीह ईसा ने हमारे लिए अपनी जान दी? बल्कि
हमारी ख़ातिर इस से भी ज़्यादा हुआ। उसे ज़िन्दा
किया गया और वह अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया,
जहाँ वह हमारी शफ़ाअत करता है। 35 ग़रज़ कौन
हमें मसीह की मुहब्बत से जुदा करेगा? क्या कोई
मुसीबत, तंगी, ईज़ारसानी, काल, नंगापन, ख़तरा
या तलवार? 36 जैसे कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है,
"तेरी ख़ातिर हमें दिन भर मौत का सामना करना
पड़ता है, लोग हमें ज़बह होने वाली भेड़ों के बराबर
समझते हैं।" 37 कोई बात नहीं, क्यूँकि मसीह हमारे
साथ है और हम से मुहब्बत रखता है। उस के वसीले
से हम इन सब खतरों के रू-ब-रू ज़बरदस्त फ़त्ह
पाते हैं। 38 क्यूँकि मुझे यक़ीन है कि हमें उस की
मुहब्बत से कोई चीज़ जुदा नहीं कर सकती : न मौत
और न ज़िन्दगी, न फ़रिश्ते और न हुक्मरान, न हाल
और न मुस्तक़बिल, न ताक़तें, 39 न नशेब और न
फ़राज़, न कोई और मख़्लूक़ हमें अल्लाह की उस
मुहब्बत से जुदा कर सकेगी जो हमें हमारे ख़ुदावन्द
मसीह ईसा में हासिल है।

अल्लाह और उस की क़ौम

9 1 मैं मसीह में सच कहता हूँ, झूट नहीं बोलता,
और मेरा ज़मीर भी रूह-उल-क़ुद्स में इस की
गवाही देता है 2 कि मैं दिल में अपने यहूदी हमवतनों
के लिए शदीद ग़म और मुसलसल दर्द महसूस करता
हूँ। 3 काश मेरे भाई और ख़ूनी रिश्तेदार नजात पाएँ!
इस के लिए मैं ख़ुद मलऊन और मसीह से जुदा होने
के लिए भी तय्यार हूँ। 4 अल्लाह ने उन ही को जो
इस्राईली हैं अपने फ़र्ज़न्द बनने के लिए मुक़र्रर किया
था। उन ही पर उस ने अपना जलाल ज़ाहिर किया,
उन ही के साथ अपने अह्द बांधे और उन ही को
शरीअत अता की। वही हक़ीक़ी इबादत और अल्लाह
के वादों के हक़दार हैं, 5 वही इब्राहीम और याक़ूब
की औलाद हैं और उन ही में से जिस्मानी लिहाज़ से
मसीह आया। अल्लाह की तम्जीद-ओ-तारीफ़ अबद
तक हो जो सब पर हुकूमत करता है! आमीन।

6 कहने का मतलब यह नहीं कि अल्लाह अपना
वादा पूरा न कर सका। बात यह नहीं है बल्कि यह
कि वह सब हक़ीक़ी इस्राईली नहीं हैं जो इस्राईली
क़ौम से हैं। 7 और सब इब्राहीम की हक़ीक़ी औलाद
नहीं हैं जो उस की नस्ल से हैं। क्यूँकि अल्लाह
ने कलाम-ए-मुक़द्दस में इब्राहीम से फ़रमाया, "तेरी
नस्ल इस्हाक़ ही से क़ाइम रहेगी।" 8 चुनाँचे लाज़िम
नहीं कि इब्राहीम की तमाम फ़ित्रती औलाद अल्लाह
के फ़र्ज़न्द हों बल्कि सिर्फ़ वही इब्राहीम की हक़ीक़ी
औलाद समझे जाते हैं जो अल्लाह के वादे के मुताबिक़
उस के फ़र्ज़न्द बन गए हैं। 9 और वादा यह था,
"मुक़र्ररा वक़्त पर मैं वापस आऊँगा तो सारा के बेटा
होगा।"

10 लेकिन न सिर्फ़ सारा के साथ ऐसा हुआ बल्कि
इस्हाक़ की बीवी रिब्क़ा के साथ भी। एक ही मर्द
यानी हमारे बाप इस्हाक़ से उस के जुड़वाँ बच्चे पैदा
हुए। 11 लेकिन बच्चे अभी पैदा नहीं हुए थे न उन्हों ने
कोई नेक या बुरा काम किया था कि माँ को अल्लाह
से एक पैग़ाम मिला। इस पैग़ाम से ज़ाहिर होता है कि
अल्लाह लोगों को अपने इरादे के मुताबिक़ चुन लेता
है। 12 और उस का यह चुनाओ उन के नेक आमाल
पर मब्नी नहीं होता बल्कि उस के बुलावे पर। पैग़ाम
यह था, "बड़ा छोटे की ख़िदमत करेगा।" 13 यह भी
कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, "याक़ूब मुझे प्यारा
था, जबकि एसौ से मैं मुतनफ़्फ़िर रहा।"

14 क्या इस का मतलब यह है कि अल्लाह बेइन्साफ़
है? हरगिज़ नहीं! 15 क्यूँकि उस ने मूसा से कहा, "मैं
जिस पर मेहरबान होना चाहूँ उस पर मेहरबान होता
हूँ और जिस पर रहम करना चाहूँ उस पर रहम करता
हूँ।" 16 चुनाँचे सब कुछ अल्लाह के रहम पर ही मब्नी
है। इस में इन्सान की मर्ज़ी या कोशिश का कोई
दख़ल नहीं। 17 यूँ अल्लाह अपने कलाम में मिस्र के
बादशाह फ़िरऔन से मुख़ातिब हो कर फ़रमाता है,
"मैं ने तुझे इस लिए बरपा किया है कि तुझ में अपनी
क़ुदरत का इज़हार करूँ और यूँ तमाम दुनिया में मेरे
नाम का प्रचार किया जाए।" 18 ग़रज़, यह अल्लाह ही
की मर्ज़ी है कि वह किस पर रहम करे और किस को
सख़्त कर दे।

अल्लाह का ग़ज़ब और रहम

19 शायद कोई कहे, "अगर यह बात है तो फिर
अल्लाह किस तरह हम पर इल्ज़ाम लगा सकता है
जब हम से ग़लतियाँ होती हैं? हम तो उस की मर्ज़ी
का मुक़ाबला नहीं कर सकते।" 20 यह न कहें। आप
इन्सान होते हुए कौन हैं कि अल्लाह के साथ बहस-
मुबाहसा करें? क्या जिस को तश्कील दिया गया है
वह तश्कील देने वाले से कहता है, "तू ने मुझे इस
तरह क्यूँ बना दिया?" 21 क्या कुम्हार का हक़ नहीं है
कि गारे के एक ही लौंदे से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के बर्तन
बनाए, कुछ बाइज़्ज़त इस्तेमाल के लिए और कुछ
ज़िल्लतआमेज़ इस्तेमाल के लिए? 22 यह बात अल्लाह
पर भी सादिक़ आती है। गो वह अपना ग़ज़ब नाज़िल
करना और अपनी क़ुदरत ज़ाहिर करना चाहता था,
लेकिन उस ने बड़े सब्र-ओ-तहम्मुल से वह बर्तन
बर्दाश्त किए जिन पर उस का ग़ज़ब आना है और
जो हलाकत के लिए तय्यार किए गए हैं। 23 उस ने
यह इस लिए किया ताकि अपना जलाल कस्रत से
उन बर्तनों पर ज़ाहिर करे जिन पर उस का फ़ज़्ल है
और जो पहले से जलाल पाने के लिए तय्यार किए
गए हैं। 24 और हम उन में से हैं जिन को उस ने चुन
लिया है, न सिर्फ़ यहूदियों में से बल्कि ग़ैरयहूदियों
में से भी। 25 यूँ वह ग़ैरयहूदियों के नाते से होसेअ की
किताब में फ़रमाता है,

"मैं उसे 'मेरी क़ौम' कहूँगा
जो मेरी क़ौम न थी,
और उसे 'मेरी प्यारी' कहूँगा
जो मुझे प्यारी न थी।"

26 और "जहाँ उन्हें बताया गया कि 'तुम मेरी क़ौम
नहीं'
वहाँ वह 'ज़िन्दा ख़ुदा के फ़र्ज़न्द' कहलाएँगे।"

27 और यसायाह नबी इस्राईल के बारे में पुकारता
है, "गो इस्राईली साहिल पर की रेत जैसे बेशुमार
क्यूँ न हों तो भी सिर्फ़ एक बचे हुए हिस्से को नजात
मिलेगी। 28 क्यूँकि रब अपना फ़रमान मुकम्मल तौर
पर और तेज़ी से दुनिया में पूरा करेगा।" 29 यसायाह
ने यह बात एक और पेशगोई में भी की, "अगर रब्ब-
उल-अफ़्वाज हमारी कुछ औलाद ज़िन्दा न छोड़ता
तो हम सदूम की तरह मिट जाते, हमारा अमूरा जैसा
सत्यानास हो जाता।"

इस्राईल के लिए पौलुस की दुआ

30 इस से हम क्या कहना चाहते हैं? यह कि गो
ग़ैरयहूदी रास्तबाज़ी की तलाश में न थे तो भी उन्हें
रास्तबाज़ी हासिल हुई, ऐसी रास्तबाज़ी जो ईमान से
पैदा हुई। 31 इस के बरअक्स इस्राईलियों को यह

हासिल न हुई, हालाँकि वह ऐसी शरीअत की तलाश
में रहे जो उन्हें रास्तबाज़ ठहराए। 32 इस की क्या
वजह थी? यह कि वह अपनी तमाम कोशिशों में
ईमान पर इन्हिसार नहीं करते थे बल्कि अपने नेक
आमाल पर। उन्हों ने राह में पड़े पत्थर से ठोकर
खाई। 33 यह बात कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखी भी है,

"देखो मैं सिय्यून में एक पत्थर रख देता हूँ
जो ठोकर का बाइस बनेगा,
एक चटान जो ठेस लगने का सबब होगी।
लेकिन जो उस पर ईमान लाएगा
उसे शर्मिन्दा नहीं किया जाएगा।"

10 1 भाइयो, मेरी दिली आर्ज़ू और मेरी अल्लाह
से दुआ यह है कि इस्राईलियों को नजात
मिले। 2 मैं इस की तस्दीक़ कर सकता हूँ कि वह
अल्लाह की ग़ैरत रखते हैं। लेकिन इस ग़ैरत के पीछे
रुहानी समझ नहीं होती। 3 वह उस रास्तबाज़ी से
नावाक़िफ़ रहे हैं जो अल्लाह की तरफ़ से है। इस की
बजाय वह अपनी ज़ाती रास्तबाज़ी क़ाइम करने की
कोशिश करते रहे हैं। यूँ उन्हों ने अपने आप को
अल्लाह की रास्तबाज़ी के ताबे नहीं किया। 4 क्यूँकि
मसीह में शरीअत का मक़्सद पूरा हो गया, हाँ वह
अन्जाम तक पहुँच गई है। चुनाँचे जो भी मसीह पर
ईमान रखता है वही रास्तबाज़ ठहरता है।

सब के लिए रास्तबाज़ी

5 मूसा ने उस रास्तबाज़ी के बारे में लिखा जो
शरीअत से हासिल होती है, "जो शख़्स यूँ करेगा
वह जीता रहेगा।" 6 लेकिन जो रास्तबाज़ी ईमान से
हासिल होती है वह कहती है, "अपने दिल में न
कहना कि 'कौन आसमान पर चढ़ेगा?' (ताकि मसीह
को नीचे ले आए)। 7 यह भी न कहना कि 'कौन
पाताल में उतरेगा?' (ताकि मसीह को मुर्दों में से
वापस ले आए)।" 8 तो फिर क्या करना चाहिए?
ईमान की रास्तबाज़ी फ़रमाती है, "यह कलाम तेरे
क़रीब बल्कि तेरे मुँह और दिल में मौजूद है।" कलाम
से मुराद ईमान का वह पैग़ाम है जो हम सुनाते हैं।
9 यानी यह कि अगर तू अपने मुँह से इक़्रार करे कि
ईसा ख़ुदावन्द है और दिल से ईमान लाए कि अल्लाह
ने उसे मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया तो तुझे नजात
मिलेगी। 10 क्यूँकि जब हम दिल से ईमान लाते हैं
तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ क़रार देता है, और जब हम
अपने मुँह से इक़्रार करते हैं तो हमें नजात मिलती है।
11 यूँ कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है, "जो भी उस पर
ईमान लाए उसे शर्मिन्दा नहीं किया जाएगा।" 12 इस
में कोई फ़र्क़ नहीं कि वह यहूदी हो या ग़ैरयहूदी।
क्यूँकि सब का एक ही ख़ुदावन्द है, जो फ़य्याज़ी से
हर एक को देता है जो उसे पुकारता है। 13 क्यूँकि
"जो भी ख़ुदावन्द का नाम लेगा नजात पाएगा।"

14 लेकिन वह किस तरह उसे पुकार सकेंगे अगर
वह उस पर कभी ईमान नहीं लाए? और वह किस
तरह उस पर ईमान ला सकते हैं अगर उन्हों ने कभी
उस के बारे में सुना नहीं? और वह किस तरह उस
के बारे में सुन सकते हैं अगर किसी ने उन्हें यह
पैग़ाम सुनाया नहीं? 15 और सुनाने वाले किस तरह
दूसरों के पास जाएंगे अगर उन्हें भेजा न गया? इस
लिए कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है, "उन के क़दम
कितने प्यारे हैं जो ख़ुशख़बरी सुनाते हैं।" 16 लेकिन
सब ने अल्लाह की यह ख़ुशख़बरी क़बूल नहीं की। यूँ
यसायाह नबी फ़रमाता है, "ऐ रब, कौन हमारे पैग़ाम
पर ईमान लाया?" 17 ग़रज़, ईमान पैग़ाम सुनने से पैदा
होता है, यानी मसीह का कलाम सुनने से।

18 तो फिर सवाल यह है कि क्या इस्राईलियों ने यह
पैग़ाम नहीं सुना? उन्हों ने इसे ज़रूर सुना। कलाम-
ए-मुक़द्दस में लिखा है,

"उन की आवाज़ निकल कर पूरी दुनिया में सुनाई
दी,
उन के अल्फ़ाज़ दुनिया की इन्तिहा तक पहुँच
गए।"

19 तो क्या इस्राईल को इस बात की समझ न आई?
नहीं, उसे ज़रूर समझ आई। पहले मूसा इस का
जवाब देता है,

"मैं ख़ुद ही तुम्हें ग़ैरत दिलाऊँगा,

एक ऐसी क़ौम के ज़रीए जो हक़ीक़त में क़ौम नहीं है।

एक नादान क़ौम के ज़रीए मैं तुम्हें ग़ुस्सा दिलाऊँगा।”

20 और यसायाह नबी यह कहने की जुरअत करता है,

“जो मुझे तलाश नहीं करते थे
उन्हें मैं ने मुझे पाने का मौक़ा दिया,
जो मेरे बारे में दरयाफ़्त नहीं करते थे
उन पर मैं ज़ाहिर हुआ।”

21 लेकिन इस्राईल के बारे में वह फ़रमाता है,

“दिन भर मैं ने अपने हाथ फैलाए रखे
ताकि एक नाफ़रमान और सरकश क़ौम का इस्तिक़्बाल करूँ।”

इस्राईल पर अल्लाह का रहम

11 1 तो क्या इस का यह मतलब है कि अल्लाह ने अपनी क़ौम को रद्द किया है? हरगिज़ नहीं! मैं तो ख़ुद इस्राईली हूँ। इब्राहीम मेरा भी बाप है, और मैं बिनयमीन के क़बीले का हूँ। 2 अल्लाह ने अपनी क़ौम को पहले से चुन लिया था। वह किस तरह उसे रद्द करेगा! क्या आप को मालूम नहीं कि कलाम-ए-मुक़द्दस में इल्यास नबी के बारे में क्या लिखा है? इल्यास ने अल्लाह के सामने इस्राईली क़ौम की शिकायत करके कहा, 3 “ऐ रब, उन्हों ने तेरे नबियों को क़त्ल किया और तेरी क़ुर्बानगाहों को गिरा दिया है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार डालने के दरपै हैं।” 4 इस पर अल्लाह ने उसे क्या जवाब दिया? “मैं ने अपने लिए 7,000 मर्दों को बचा लिया है जिन्हों ने अपने घुटने बाल देवता के सामने नहीं टेके।” 5 आज भी यही हालत है। इस्राईल का एक छोटा हिस्सा बच गया है जिसे अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से चुन लिया है। 6 और चूँकि यह अल्लाह के फ़ज़्ल से हुआ है इस लिए यह उन की अपनी कोशिशों से नहीं हुआ। वर्ना फ़ज़्ल फ़ज़्ल ही न रहता।

7 ग़रज़, जिस चीज़ की तलाश में इस्राईल रहा वह पूरी क़ौम को हासिल नहीं हुई बल्कि सिर्फ़ उस के एक चुने हुए हिस्से को। बाक़ी सब को फ़ज़्ल के बारे में बेहिस्स कर दिया गया, 8 जिस तरह कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है,

“आज तक अल्लाह ने उन्हें ऐसी हालत में रखा है
कि उन की रूह मदहोश है,
उन की आँखें देख नहीं सकतीं
और उन के कान सुन नहीं सकते।”

9 और दाऊद फ़रमाता है,

“उन की मेज़ उन के लिए फंदा और जाल बन जाए,
इस से वह ठोकर खा कर अपने ग़लत कामों का मुआवज़ा पाएँ।
10 उन की आँखें तारीक हो जाएँ ताकि वह देख न सकें,
उन की कमर हमेशा झुकी रहे।”

11 तो क्या अल्लाह की क़ौम ठोकर खा कर यूँ गिर गई कि कभी बहाल नहीं होगी? हरगिज़ नहीं! उस की ख़ताओं की वजह से अल्लाह ने ग़ैरयहूदियों को नजात पाने का मौक़ा दिया ताकि इस्राईली ग़ैरत खाएँ। 12 यूँ यहूदियों की ख़ताएँ दुनिया के लिए भरपूर बरकत का बाइस बन गईं, और उन का नुक़्सान ग़ैरयहूदियों के लिए भरपूर बरकत का बाइस बन गया। तो फिर यह बरकत कितनी और ज़्यादा होगी जब यहूदियों की पूरी तादाद इस में शामिल हो जाएगी!

ग़ैरयहूदियों की नजात

13 आप को जो ग़ैरयहूदी हैं मैं यह बताता हूँ, अल्लाह ने मुझे ग़ैरयहूदियों के लिए रसूल बनाया है, इस लिए मैं अपनी इस ख़िदमत पर ज़ोर देता हूँ। 14 क्यूँकि मैं चाहता हूँ कि मेरी क़ौम के लोग यह देख कर ग़ैरत खाएँ और उन में से कुछ बच जाएँ। 15 जब उन्हें रद्द किया गया तो बाक़ी दुनिया की अल्लाह के साथ सुलह हो गई। तो फिर क्या होगा जब उन्हें दुबारा क़बूल किया जाएगा? यह मुर्दों में से जी उठने के बराबर होगा!

16 जब आप फ़सल के पहले आटे से रोटी बना
कर अल्लाह के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करते हैं तो
बाक़ी सारा आटा भी मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है। और
जब दरख़्त की जड़ें मुक़द्दस हैं तो उस की शाख़ें भी
मुक़द्दस हैं। 17 ज़ैतून के दरख़्त की कुछ शाख़ें तोड़
दी गई हैं और उन की जगह जंगली ज़ैतून के दरख़्त
की एक शाख़ पैवन्द की गई है। आप ग़ैरयहूदी इस
जंगली शाख़ से मुताबिक़त रखते हैं। जिस तरह यह
दूसरे दरख़्त की जड़ से रस और तक़वियत पाती है
उसी तरह आप भी यहूदी क़ौम की रुहानी जड़ से
तक़वियत पाते हैं। 18 चुनाँचे आप का दूसरी शाख़ों
के सामने शेख़ी मारने का हक़ नहीं। और अगर आप
शेख़ी मारें तो यह ख़याल करें कि आप जड़ को क़ाइम
नहीं रखते बल्कि जड़ आप को।

19 शायद आप इस पर एतिराज़ करें, "हाँ, लेकिन
दूसरी शाख़ें तोड़ी गईं ताकि मैं पैवन्द किया जाऊँ।"
20 बेशक, लेकिन याद रखें, दूसरी शाख़ें इस लिए
तोड़ी गईं कि वह ईमान नहीं रखती थीं और आप इस
लिए उन की जगह लगे हैं कि आप ईमान रखते हैं।
चुनाँचे अपने आप पर फ़ख़र न करें बल्कि ख़ौफ़ रखें।
21 अल्लाह ने असली शाख़ें बचने न दीं। अगर आप
इस तरह की हरकतें करें तो क्या वह आप को छोड़
देगा? 22 यहाँ हमें अल्लाह की मेहरबानी और सख़्ती
नज़र आती है - जो गिर गए हैं उन के सिलसिले में
उस की सख़्ती, लेकिन आप के सिलसिले में उस की
मेहरबानी। और यह मेहरबानी रहेगी जब तक आप
उस की मेहरबानी से लिपटे रहेंगे। वर्ना आप को भी
दरख़्त से काट डाला जाएगा। 23 और अगर यहूदी
अपने कुफ़्र से बाज़ आएँ तो उन की पैवन्दकारी
दुबारा दरख़्त के साथ की जाएगी, क्यूँकि अल्लाह ऐसा
करने पर क़ादिर है। 24 आख़िर आप ख़ुद क़ुदरती तौर
पर ज़ैतून के जंगली दरख़्त की शाख़ थे जिसे अल्लाह
ने तोड़ कर क़ुदरती क़वानीन के ख़िलाफ़ ज़ैतून के
असल दरख़्त पर लगाया। तो फिर वह कितनी ज़्यादा
आसानी से यहूदियों की तोड़ी गई शाख़ें दुबारा उन
के अपने दरख़्त में लगा देगा!

अल्लाह का रहम सब पर

25 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि आप एक भेद से
वाक़िफ़ हो जाएँ, क्यूँकि यह आप को अपने आप को
दाना समझने से बाज़ रखेगा। भेद यह है कि इस्राईल
का एक हिस्सा अल्लाह के फ़ज़्ल के बारे में बेहिस्स
हो गया है, और उस की यह हालत उस वक़्त तक
रहेगी जब तक ग़ैरयहूदियों की पूरी तादाद अल्लाह की
बादशाही में दाख़िल न हो जाए। 26 फिर पूरा इस्राईल
नजात पाएगा। यह कलाम-ए-मुक़द्दस में भी लिखा है,

"छुड़ाने वाला सिय्यून से आएगा।
वह बेदीनी को याक़ूब से हटा देगा।
27 और यह मेरा उन के साथ अह्द होगा
जब मैं उन के गुनाहों को उन से दूर करूँगा।"

28 चूँकि यहूदी अल्लाह की ख़ुशख़बरी क़बूल नहीं
करते इस लिए वह अल्लाह के दुश्मन हैं, और यह
बात आप के लिए फ़ाइदे का बाइस बन गई है।
तो भी वह अल्लाह को प्यारे हैं, इस लिए कि उस ने
उन के बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब को
चुन लिया था। 29 क्यूँकि जब भी अल्लाह किसी को
अपनी नेमतों से नवाज़ कर बुलाता है तो उस की यह
नेमतें और बुलावे कभी नहीं मिटने की। 30 माज़ी में
ग़ैरयहूदी अल्लाह के ताबे नहीं थे, लेकिन अब अल्लाह
ने आप पर यहूदियों की नाफ़रमानी की वजह से रहम
किया है। 31 अब इस के उलट है कि यहूदी ख़ुद आप
पर किए गए रहम की वजह से अल्लाह के ताबे नहीं
हैं, और लाज़िम है कि अल्लाह उन पर भी रहम करे।
32 क्यूँकि उस ने सब को नाफ़रमानी के क़ैदी बना
दिया है ताकि सब पर रहम करे।

अल्लाह की तम्जीद

33 वाह! अल्लाह की दौलत, हिक्मत और इल्म क्या
ही गहरा है। कौन उस के फ़ैसलों की तह तक पहुँच
सकता है! कौन उस की राहों का खोज लगा सकता
है! 34 कलाम-ए-मुक़द्दस यूँ फ़रमाता है,

"किस ने रब की सोच को जाना?

या कौन इतना इल्म रखता है
कि वह उसे मश्वरा दे? 35 क्या किसी ने कभी उसे कुछ दिया
कि उसे इस का मुआवज़ा देना पड़े?”
36 क्यूँकि सब कुछ उसी ने पैदा किया है, सब कुछ उसी के ज़रीए और उसी के जलाल के लिए क़ाइम है। उसी की तम्जीद अबद तक होती रहे! आमीन।

पूरी ज़िन्दगी अल्लाह की ख़िदमत में

12 1 भाइयो, अल्लाह ने आप पर कितना रहम किया है! अब ज़रूरी है कि आप अपने बदनों को अल्लाह के लिए मख़्सूस करें, कि वह एक ऐसी ज़िन्दा और मुक़द्दस क़ुर्बानी बन जाएँ जो उसे पसन्द आए। ऐसा करने से आप उस की माक़ूल इबादत करेंगे। 2 इस दुनिया के साँचे में न ढल जाएँ बल्कि अल्लाह को आप की सोच की तज्दीद करने दें ताकि आप वह शक्ल-ओ-सूरत अपना सकें जो उसे पसन्द है। फिर आप अल्लाह की मर्ज़ी को पहचान सकेंगे, वह कुछ जो अच्छा, पसन्दीदा और कामिल है।

3 उस रहम की बिना पर जो अल्लाह ने मुझ पर किया मैं आप में से हर एक को हिदायत देता हूँ कि अपनी हक़ीक़ी हैसियत को जान कर अपने आप को इस से ज़्यादा न समझें। क्यूँकि जिस पैमाने से अल्लाह ने हर एक को ईमान बख़्शा है उसी के मुताबिक़ वह समझदारी से अपनी हक़ीक़ी हैसियत को जान ले। 4 हमारे एक ही जिस्म में बहुत से आज़ा हैं, और हर एक उज़ू का फ़र्क़ फ़र्क़ काम होता है। 5 इसी तरह गो हम बहुत हैं, लेकिन मसीह में एक ही बदन हैं, जिस में हर उज़ू दूसरों के साथ जुड़ा हुआ है। 6 अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से हर एक को मुख़्तलिफ़ नेमतों से नवाज़ा है। अगर आप की नेमत नबुव्वत करना है तो अपने ईमान के मुताबिक़ नबुव्वत करें। 7 अगर आप की नेमत ख़िदमत करना है तो ख़िदमत करें। अगर आप की नेमत तालीम देना है तो तालीम दें। 8 अगर आप की नेमत हौसलाअफ़्ज़ाई करना है तो हौसलाअफ़्ज़ाई करें। अगर आप की नेमत दूसरों की ज़रूरियात पूरी करना है तो ख़ुलूसदिली से यही करें। अगर आप की नेमत राहनुमाई करना है तो सरगर्मी से राहनुमाई करें। अगर आप की नेमत रहम करना है तो ख़ुशी से रहम करें।

9 आप की मुहब्बत महज़ दिखावे की न हो। जो कुछ बुरा है उस से नफ़रत करें और जो कुछ अच्छा है उस के साथ लिपटे रहें। 10 आप की एक दूसरे के लिए बरादराना मुहब्बत सरगर्म हो। एक दूसरे की इज़्ज़त करने में आप ख़ुद पहला क़दम उठाएँ। 11 आप का जोश ढीला न पड़ जाए बल्कि रुहानी सरगर्मी से ख़ुदावन्द की ख़िदमत करें। 12 उम्मीद में ख़ुश, मुसीबत में साबितक़दम और दुआ में लगे रहें। 13 जब मुक़द्दसीन ज़रूरतमन्द हैं तो उन की मदद करने में शरीक हों। मेहमान-नवाज़ी में लगे रहें।

14 जो आप को ईज़ा पहुँचाएँ उन को बरकत दें। उन पर लानत मत करें बल्कि बरकत चाहें। 15 ख़ुशी मनाने वालों के साथ ख़ुशी मनाएँ और रोने वालों के साथ रोएँ। 16 एक दूसरे के साथ अच्छे ताल्लुक़ात रखें। ऊँची सोच न रखें बल्कि दबे हुओं से रिफ़ाक़त रखें। अपने आप को दाना मत समझें।

17 अगर कोई आप से बुरा सुलूक करे तो बदले में उस से बुरा सुलूक न करना। ध्यान रखें कि जो कुछ सब की नज़र में अच्छा है वही अमल में लाएँ। 18 अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करें कि जहाँ तक मुमकिन हो सब के साथ मेल-मिलाप रखें। 19 अज़ीज़ो, इन्तिक़ाम मत लें बल्कि अल्लाह के ग़ज़ब को बदला लेने का मौक़ा दें। क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, “रब फ़रमाता है, इन्तिक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा।” 20 इस के बजाय “अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो उसे खाना खिला, अगर प्यासा हो तो पानी पिला। क्यूँकि ऐसा करने से तू उस के सर पर जलते हुए कोएलों का ढेर लगाएगा।” 21 अपने पर बुराई को ग़ालिब न आने दें बल्कि भलाई से आप बुराई पर ग़ालिब आएँ।

रआया के फ़राइज़

13 1 हर शख़्स इख़तियार रखने वाले हुक्मरानों
के ताबे रहे, क्यूँकि तमाम इख़तियार
अल्लाह की तरफ़ से है। जो इख़तियार रखते हैं उन्हें
अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर किया गया है। 2 चुनाँचे
जो हुक्मरान की मुख़ालफ़त करता है वह अल्लाह के
फ़रमान की मुख़ालफ़त करता और यूँ अपने आप पर
अल्लाह की अदालत लाता है। 3 क्यूँकि हुक्मरान उन
के लिए ख़ौफ़ का बाइस नहीं होते जो सहीह काम
करते हैं बल्कि उन के लिए जो ग़लत काम करते
हैं। क्या आप हुक्मरान से ख़ौफ़ खाए बग़ैर ज़िन्दगी
गुज़ारना चाहते हैं? तो फिर वह कुछ करें जो अच्छा
है तो वह आप को शाबाश देगा। 4 क्यूँकि वह अल्लाह
का ख़ादिम है जो आप की बेहतरी के लिए ख़िदमत
करता है। लेकिन अगर आप ग़लत काम करें तो डरें,
क्यूँकि वह अपनी तलवार को ख़्वाह-म-ख़्वाह थामे
नहीं रखता। वह अल्लाह का ख़ादिम है और उस का
ग़ज़ब ग़लत काम करने वाले पर नाज़िल होता है।
5 इस लिए लाज़िम है कि आप हुकूमत के ताबे रहें,
न सिर्फ़ सज़ा से बचने के लिए बल्कि इस लिए भी
कि आप के ज़मीर पर दाग़ न लगे।

6 यही वजह है कि आप टैक्स अदा करते हैं,
क्यूँकि सरकारी मुलाज़िम अल्लाह के ख़ादिम हैं जो
इस ख़िदमत को सरअन्जाम देने में लगे रहते हैं।
7 चुनाँचे हर एक को वह कुछ दें जो उस का हक़
है, टैक्स लेने वाले को टैक्स और कस्टम ड्यूटी लेने
वाले को कस्टम ड्यूटी। जिस का ख़ौफ़ रखना आप
पर फ़र्ज़ है उस का ख़ौफ़ मानें और जिस का एहतिराम
करना आप पर फ़र्ज़ है उस का एहतिराम करें।

एक दूसरे के लिए फ़राइज़

8 किसी के भी क़र्ज़दार न रहें। सिर्फ़ एक क़र्ज़ है जो
आप कभी नहीं उतार सकते, एक दूसरे से मुहब्बत
रखने का क़र्ज़। यह करते रहें क्यूँकि जो दूसरों से
मुहब्बत रखता है उस ने शरीअत के तमाम तक़ाज़े
पूरे किए हैं। 9 मसलन शरीअत में लिखा है, "क़त्ल
न करना, ज़िना न करना, चोरी न करना, लालच न
करना।" और दीगर जितने अह्काम हैं इस एक ही
हुक्म में समाए हुए हैं कि "अपने पड़ोसी से वैसी
मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आप से रखता है।"
10 जो किसी से मुहब्बत रखता है वह उस से ग़लत
सुलूक नहीं करता। यूँ मुहब्बत शरीअत के तमाम
तक़ाज़े पूरे करती है।

11 ऐसा करना लाज़िम है, क्यूँकि आप ख़ुद इस
वक़्त की अहमियत को जानते हैं कि नींद से जाग
उठने की घड़ी आ चुकी है। क्यूँकि जब हम ईमान
लाए थे तो हमारी नजात इतनी क़रीब नहीं थी जितनी
कि अब है। 12 रात ढलने वाली है और दिन निकलने
वाला है। इस लिए आएँ, हम तारीकी के काम गन्दे
कपड़ों की तरह उतार कर नूर के हथियार बांध लें।
13 हम शरीफ़ ज़िन्दगी गुज़ारें, ऐसे लोगों की तरह जो
दिन की रौशनी में चलते हैं। इस लिए लाज़िम है कि
हम इन चीज़ों से बाज़ रहें : बदमस्तों की रंगरलियों
और शराबनोशी से, ज़िनाकारी और अय्याशी से,
और झगड़े और हसद से। 14 इस के बजाय ख़ुदावन्द
ईसा मसीह को पहन लें और अपनी पुरानी फ़ित्रत
की परवरिश यूँ न करें कि गुनाहआलूदा ख़्वाहिशात
बेदार हो जाएँ।

एक दूसरे को मुजरिम मत ठहराना

14 1 जिस का ईमान कमज़ोर है उसे क़बूल
करें, और उस के साथ बह्स-मुबाहसा न
करें। 2 एक का ईमान तो उसे हर चीज़ खाने की
इजाज़त देता है जबकि कमज़ोर ईमान रखने वाला
सिर्फ़ सब्ज़ियाँ खाता है। 3 जो सब कुछ खाता है वह
उसे हक़ीर न जाने जो यह नहीं कर सकता। और
जो यह नहीं कर सकता वह उसे मुजरिम न ठहराए
जो सब कुछ खाता है, क्यूँकि अल्लाह ने उसे क़बूल
किया है। 4 आप कौन हैं कि किसी और के ग़ुलाम का
फ़ैसला करें? उस का अपना मालिक फ़ैसला करेगा
कि वह खड़ा रहे या गिर जाए। और वह ज़रूर खड़ा

रहेगा, क्यूँकि ख़ुदावन्द उसे क़ाइम रखने पर क़ादिर है।

5 कुछ लोग एक दिन को दूसरे दिनों की निस्बत ज़्यादा अहम क़रार देते हैं जबकि दूसरे तमाम दिनों की अहमियत बराबर समझते हैं। आप जो भी ख़याल रखें, हर एक उसे पूरे यक़ीन के साथ रखे। 6 जो एक दिन को ख़ास क़रार देता है वह इस से ख़ुदावन्द की ताज़ीम करना चाहता है। इसी तरह जो सब कुछ खाता है वह इस से ख़ुदावन्द को जलाल देना चाहता है। यह इस से ज़ाहिर होता है कि वह इस के लिए ख़ुदा का शुक्र करता है। लेकिन जो कुछ खानों से पर्हेज़ करता है वह भी ख़ुदा का शुक्र करके इस से उस की ताज़ीम करना चाहता है। 7 बात यह है कि हम में से कोई नहीं जो सिर्फ़ अपने वास्ते ज़िन्दगी गुज़ारता है और कोई नहीं जो सिर्फ़ अपने वास्ते मरता है। 8 अगर हम ज़िन्दा हैं तो इस लिए कि ख़ुदावन्द को जलाल दें, और अगर हम मरें तो इस लिए कि हम ख़ुदावन्द को जलाल दें। ग़रज़ हम ख़ुदावन्द ही के हैं, ख़्वाह ज़िन्दा हों या मुर्दा। 9 क्यूँकि मसीह इसी मक़्सद के लिए मुआ और जी उठा कि वह मुर्दों और ज़िन्दों दोनों का मालिक हो। 10 तो फिर आप जो सिर्फ़ सब्ज़ी खाते हैं अपने भाई को मुजरिम क्यूँ ठहराते हैं? और आप जो सब कुछ खाते हैं अपने भाई को हक़ीर क्यूँ जानते हैं? याद रखें कि एक दिन हम सब अल्लाह के तख़्त-ए-अदालत के सामने खड़े होंगे। 11 कलाम-ए-मुक़द्दस में यही लिखा है,

रब फ़रमाता है, "मेरी हयात की क़सम,
हर घुटना मेरे सामने झुकेगा
और हर ज़बान अल्लाह की तम्जीद करेगी।"

12 हाँ, हम में से हर एक को अल्लाह के सामने अपनी ज़िन्दगी का जवाब देना पड़ेगा।

दूसरों के लिए गिरने का बाइस न बनना

13 चुनाँचे आएँ, हम एक दूसरे को मुजरिम न ठहराएँ। पूरे अज़म के साथ इस का ख़याल रखें कि आप अपने भाई के लिए ठोकर खाने या गुनाह में गिरने का बाइस न बनें। 14 मुझे ख़ुदावन्द मसीह में इल्म और यक़ीन है कि कोई भी खाना बज़ात-ए-ख़ुद नापाक नहीं है। लेकिन जो किसी खाने को नापाक समझता है उस के लिए वह खाना नापाक ही है। 15 अगर आप अपने भाई को अपने किसी खाने के बाइस परेशान कर रहे हैं तो आप मुहब्बत की रूह में ज़िन्दगी नहीं गुज़ार रहे। अपने भाई को अपने खाने से हलाक न करें। याद रखें कि मसीह ने उस के लिए अपनी जान दी है। 16 ऐसा न हो कि लोग उस अच्छी चीज़ पर कुफ़्र बकें जो आप को मिल गई है। 17 क्यूँकि अल्लाह की बादशाही खाने-पीने की चीज़ों पर क़ाइम नहीं है बल्कि रास्तबाज़ी, सुलह-सलामती और रूह-उल-क़ुद्स में ख़ुशी पर। 18 जो यूँ मसीह की ख़िदमत करता है वह अल्लाह को पसन्द और इन्सानों को मन्ज़ूर है।

19 चुनाँचे आएँ, हम पूरी जिद्द-ओ-जह्द के साथ वह कुछ करने की कोशिश करें जो सुलह-सलामती और एक दूसरे की रुहानी तामीर-ओ-तरक़्क़ी का बाइस है। 20 अल्लाह का काम किसी खाने की ख़ातिर बर्बाद न करें। हर खाना पाक है, लेकिन अगर आप कुछ खाते हैं जिस से दूसरे को ठेस लगे तो यह ग़लत है। 21 बेहतर यह है कि न आप गोश्त खाएँ, न मै पिएँ और न कोई और क़दम उठाएँ जिस से आप का भाई ठोकर खाए। 22 जो भी ईमान आप इस नाते से रखते हैं वह आप और अल्लाह तक मह्दूद रहे। मुबारक है वह जो किसी चीज़ को जाइज़ क़रार दे कर अपने आप को मुजरिम नहीं ठहराता। 23 लेकिन जो शक करते हुए कोई खाना खाता है उसे मुजरिम ठहराया जाता है, क्यूँकि उस का यह अमल ईमान पर मब्नी नहीं है। और जो भी अमल ईमान पर मब्नी नहीं होता वह गुनाह है।

बुर्दबारी

15 1 हम ताक़तवरों का फ़र्ज़ है कि कमज़ोरों की कमज़ोरियाँ बर्दाश्त करें। हम सिर्फ़ अपने आप को ख़ुश करने की ख़ातिर ज़िन्दगी न

गुज़ारें 2 बल्कि हर एक अपने पड़ोसी को उस की
बेहतरी और रुहानी तामीर-ओ-तरक़्क़ी के लिए ख़ुश
करे। 3 क्यूँकि मसीह ने भी ख़ुद को ख़ुश रखने
के लिए ज़िन्दगी नहीं गुज़ारी। कलाम-ए-मुक़द्दस में
उस के बारे में यही लिखा है, "जो तुझे गालियाँ
देते हैं उन की गालियाँ मुझ पर आ गई हैं।"
4 यह सब कुछ हमें हमारी नसीहत के लिए लिखा
गया ताकि हम साबितक़दमी और कलाम-ए-मुक़द्दस
की हौसलाअफ़्ज़ा बातों से उम्मीद पाएँ। 5 अब
साबितक़दमी और हौसला देने वाला ख़ुदा आप को
तौफ़ीक़ दे कि आप मसीह ईसा का नमूना अपना
कर यगानगत की रूह में एक दूसरे के साथ ज़िन्दगी
गुज़ारें। 6 तब ही आप मिल कर एक ही आवाज़ के
साथ ख़ुदा, हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के बाप को
जलाल दे सकेंगे।

ग़ैरयहूदियों के लिए ख़ुशख़बरी

7 चुनाँचे जिस तरह मसीह ने आप को क़बूल किया
है उसी तरह एक दूसरे को भी क़बूल करें ताकि
अल्लाह को जलाल मिले। 8 याद रखें कि मसीह अल्लाह
की सदाक़त का इज़हार करके यहूदियों का ख़ादिम
बना ताकि उन वादों की तस्दीक़ करे जो इब्राहीम,
इस्हाक़ और याक़ूब से किए गए थे। 9 वह इस लिए
भी ख़ादिम बना कि ग़ैरयहूदी अल्लाह को उस रहम के
लिए जलाल दें जो उस ने उन पर किया है। कलाम-
ए-मुक़द्दस में यही लिखा है,

"इस लिए मैं अक़्वाम में तेरी हम्द-ओ-सना करूँगा,
तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।"

10 यह भी लिखा है,

"ऐ दीगर क़ौमो, उस की उम्मत के साथ ख़ुशी
मनाओ!"

11 फिर लिखा है,

"ऐ तमाम अक़्वाम, रब की तम्जीद करो!
ऐ तमाम उम्मतो, उस की सताइश करो!"

12 और यसायाह नबी यह फ़रमाता है,

"यस्सी की जड़ से एक कोंपल फूट निकलेगी,
एक ऐसा आदमी उठेगा
जो क़ौमों पर हुकूमत करेगा।
ग़ैरयहूदी उस पर आस रखेंगे।"

13 उम्मीद का ख़ुदा आप को ईमान रखने के बाइस
हर ख़ुशी और सलामती से मामूर करे ताकि रूह-उल-
क़ुद्स की क़ुदरत से आप की उम्मीद बढ़ कर दिल
से छलक जाए।

दिलेरी से लिखने की वजह

14 मेरे भाइयो, मुझे पूरा यक़ीन है कि आप ख़ुद
भलाई से मामूर हैं, कि आप हर तरह का इल्म-ओ-
इर्फ़ान रखते हैं और एक दूसरे को नसीहत करने
के क़ाबिल भी हैं। 15 तो भी मैं ने याद दिलाने की
ख़ातिर आप को कई बातें लिखने की दिलेरी की है।
क्यूँकि मैं अल्लाह के फ़ज़्ल से 16 आप ग़ैरयहूदियों के
लिए मसीह ईसा का ख़ादिम हूँ। और मैं अल्लाह की
ख़ुशख़बरी फैलाने में बैत-उल-मुक़द्दस के इमाम की
सी ख़िदमत सरअन्जाम देता हूँ ताकि आप एक ऐसी
क़ुर्बानी बन जाएँ जो अल्लाह को पसन्द आए और
जिसे रूह-उल-क़ुद्स ने उस के लिए मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस किया हो। 17 चुनाँचे मैं मसीह ईसा में अल्लाह
के सामने अपनी ख़िदमत पर फ़ख़र कर सकता हूँ।
18 क्यूँकि मैं सिर्फ़ उस काम के बारे में बात करने
की जुरअत करूँगा जो मसीह ने मेरी मारिफ़त किया
है और जिस से ग़ैरयहूदी अल्लाह के ताबे हो गए हैं।
हाँ, मसीह ही ने यह काम कलाम और अमल से,
19 इलाही निशानों और मोजिज़ों की क़ुव्वत से और
अल्लाह के रूह की क़ुदरत से सरअन्जाम दिया है।
यूँ मैं ने यरूशलम से ले कर सूबा इल्लुरिकुम तक
सफ़र करते करते अल्लाह की ख़ुशख़बरी फैलाने की
ख़िदमत पूरी की है। 20 और मैं इसे अपनी इज़्ज़त का
बाइस समझा कि ख़ुशख़बरी वहाँ सुनाऊँ जहाँ मसीह
के बारे में ख़बर नहीं पहुँची। क्यूँकि मैं ऐसी बुन्याद
पर तामीर नहीं करना चाहता था जो किसी और ने
डाली थी। 21 कलाम-ए-मुक़द्दस यही फ़रमाता है,

"जिन्हें उस के बारे में नहीं बताया गया

वह देखेंगे,
और जिन्हों ने नहीं सुना
उन्हें समझ आएगी।”

पौलुस का रोम जाने का इरादा

22 यही वजह है कि मुझे इतनी दफ़ा आप के पास
आने से रोका गया है। 23 लेकिन अब मेरी इन इलाक़ों
में ख़िदमत पूरी हो चुकी है। और चूँकि मैं इतने
सालों से आप के पास आने का आरज़ूमन्द रहा हूँ
24 इस लिए अब यह ख़्वाहिश पूरी करने की उम्मीद
रखता हूँ। क्यूँकि मैं ने स्पेन जाने का मन्सूबा बनाया
है। उम्मीद है कि रास्ते में आप से मिलूँगा और
आप आगे के सफ़र के लिए मेरी मदद कर सकेंगे।
लेकिन पहले मैं कुछ देर के लिए आप की रिफ़ाक़त
से लुत्फ़अन्दोज़ होना चाहता हूँ। 25 इस वक़्त मैं
यरूशलम जा रहा हूँ ताकि वहाँ के मुक़द्दसीन की
ख़िदमत करूँ। 26 क्यूँकि मकिदुनिया और अख़या
की जमाअतों ने यरूशलम के उन मुक़द्दसीन के लिए
हदिया जमा करने का फ़ैसला किया है जो ग़रीब हैं।
27 उन्हों ने यह ख़ुशी से किया और दरअसल यह
उन का फ़र्ज़ भी है। ग़ैरयहूदी तो यहूदियों की रुहानी
बरकतों में शरीक हुए हैं, इस लिए ग़ैरयहूदियों का
फ़र्ज़ है कि वह यहूदियों को भी अपनी माली बरकतों
में शरीक करके उन की ख़िदमत करें। 28 चुनाँचे
अपना यह फ़र्ज़ अदा करने और मक़ामी भाइयों का
यह सारा फल यरूशलम के ईमानदारों तक पहुँचाने
के बाद मैं आप के पास से होता हुआ स्पेन जाऊँगा।
29 और मैं जानता हूँ कि जब मैं आप के पास आऊँगा
तो मसीह की पूरी बरकत ले कर आऊँगा।

30 भाइयो, मैं हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह और रूह-
उल-क़ुद्स की मुहब्बत को याद दिला कर आप से
मिन्नत करता हूँ कि आप मेरे लिए अल्लाह से दुआ करें
और यूँ मेरी रुहानी जंग में शरीक हो जाएँ। 31 इस के
लिए दुआ करें कि मैं सूबा यहूदिया के ग़ैरईमानदारों
से बचा रहूँ और कि मेरी यरूशलम में ख़िदमत वहाँ
के मुक़द्दसीन को पसन्द आए। 32 क्यूँकि मैं चाहता हूँ
कि जब मैं अल्लाह की मर्ज़ी से आप के पास आऊँगा
तो मेरे दिल में ख़ुशी हो और हम एक दूसरे की
रिफ़ाक़त से तर-ओ-ताज़ा हो जाएँ। 33 सलामती का
ख़ुदा आप सब के साथ हो। आमीन।

सलाम-ओ-दुआ

16 1 हमारी बहन फ़ीबे आप के पास आ रही
है। वह किन्ख़रिया शहर की जमाअत में
ख़ादिमा है। मैं उस की सिफ़ारिश करता हूँ 2 बल्कि
ख़ुदावन्द में अर्ज़ है कि आप उस का वैसे ही
इस्तिक़्बाल करें जैसे कि मुक़द्दसीन को करना
चाहिए। जिस मुआमले में भी उसे आप की मदद की
ज़रूरत हो उस में उस का साथ दें, क्यूँकि उस ने
बहुत लोगों की बल्कि मेरी भी मदद की है।

3 प्रिस्किल्ला और अक्विला को मेरा सलाम देना
जो मसीह ईसा में मेरे हमख़िदमत रहे हैं। 4 उन्हों ने
मेरे लिए अपनी जान पर खेला। न सिर्फ़ मैं बल्कि
ग़ैरयहूदियों की जमाअतें उन की एह्सानमन्द हैं।
5 उन के घर में जमा होने वाली जमाअत को भी मेरा
सलाम देना।

मेरे अज़ीज़ दोस्त इपिनेतुस को मेरा सलाम देना।
वह सूबा आसिया में मसीह का पहला पैरोकार यानी
उस इलाक़े की फ़सल का पहला फल था। 6 मरियम
को मेरा सलाम जिस ने आप के लिए बड़ी मेहनत-
मशक़्क़त की है। 7 अन्द्रूनीकुस और यूनिया को मेरा
सलाम। वह मेरे हमवतन हैं और जेल में मेरे साथ
वक़्त गुज़ारा है। रसूलों में वह नुमायाँ हैसियत रखते
हैं, और वह मुझ से पहले मसीह के पीछे हो लिए थे।

8 अम्पलियातुस को सलाम। वह ख़ुदावन्द में मुझे
अज़ीज़ है। 9 मसीह में हमारे हमख़िदमत उर्बानुस को
सलाम और इसी तरह मेरे अज़ीज़ दोस्त इस्तख़ुस को
भी। 10 अपेल्लिस को सलाम जिस की मसीह के साथ
वफ़ादारी को आज़माया गया है। अरिस्तुबूलुस के
घर वालों को सलाम। 11 मेरे हमवतन हेरोदियोन को
सलाम और इसी तरह नरकिस्सुस के उन घर वालों
को भी जो मसीह के पीछे हो लिए हैं।

12 त्रूफ़ेना और त्रूफ़ोसा को सलाम जो ख़ुदावन्द
की ख़िदमत में मेहनत-मशक़्क़त करती हैं। मेरी
अज़ीज़ बहन पर्सिस को सलाम जिस ने ख़ुदावन्द की
ख़िदमत में बड़ी मेहनत-मशक़्क़त की है। 13 हमारे
ख़ुदावन्द के चुने हुए भाई रूफ़ुस को सलाम और
इसी तरह उस की माँ को भी जो मेरी माँ भी है।
14 असिन्क्रितुस, फ़लिगोन, हिर्मेस, पत्रोबास, हिर्मास
और उन के साथी भाइयों को मेरा सलाम देना।
15 फ़िलुलुगुस और यूलिया, नेरियूस और उस की
बहन, उलिम्पास और उन के साथ तमाम मुक़द्दसीन
को सलाम।

16 एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा दे कर सलाम करें।
मसीह की तमाम जमाअतों की तरफ़ से आप को
सलाम।

आख़िरी हिदायात

17 भाइयो, मैं आप को ताकीद करता हूँ कि आप
उन से ख़बरदार रहें जो पार्टीबाज़ी और ठोकर का
बाइस बनते हैं। यह उस तालीम के ख़िलाफ़ है जो
आप को दी गई है। उन से किनारा करें 18 क्यूँकि ऐसे
लोग हमारे ख़ुदावन्द मसीह की ख़िदमत नहीं कर रहे
बल्कि अपने पेट की। वह अपनी मीठी और चिकनी-
चुपड़ी बातों से सादालौह लोगों के दिलों को धोका
देते हैं। 19 आप की फ़रमाँबरदारी की ख़बर सब तक
पहुँच गई है। यह देख कर मैं आप के बारे में ख़ुश
हूँ। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप अच्छा काम करने
के लिहाज़ से दानिशमन्द और बुरा काम करने के
लिहाज़ से बेक़ुसूर हों। 20 सलामती का ख़ुदा जल्द ही
इब्लीस को आप के पाँओ तले कुचलवा डालेगा।

हमारे ख़ुदावन्द ईसा का फ़ज़्ल आप के साथ हो।

21 मेरा हमख़िदमत तीमुथियुस आप को सलाम देता
है, और इसी तरह मेरे हमवतन लूकियुस, यासोन और
सोसिपात्रुस।

22 मैं, तिर्तियुस इस ख़त का कातिब हूँ। मेरी तरफ़
से भी ख़ुदावन्द में आप को सलाम।

23 गयुस की तरफ़ से आप को सलाम। मैं और पूरी
जमाअत उस के मेहमान रहे हैं। शहर के ख़ज़ान्ची
इरास्तुस और हमारे भाई क्वार्तुस भी आप को सलाम
कहते हैं। 24 [हमारे ख़ुदावन्द ईसा का फ़ज़्ल आप
सब के साथ होता रहे।]

आख़िरी दुआ

25 अल्लाह की तम्जीद हो, जो आप को मज़बूत
करने पर क़ादिर है, क्यूँकि ईसा मसीह के बारे में
उस ख़ुशख़बरी से जो मैं सुनाता हूँ और उस भेद के
इन्किशाफ़ से जो अज़ल से पोशीदा रहा वह आप को
क़ाइम रख सकता है। 26 अब इस भेद की हक़ीक़त
नबियों के सहीफ़ों से ज़ाहिर की गई है और अबदी
ख़ुदा के हुक्म पर तमाम क़ौमों को मालूम हो गई है
ताकि सब ईमान ला कर अल्लाह के ताबे हो जाएँ।

27 अल्लाह की तम्जीद हो जो वाहिद दानिशमन्द है।
उसी का ईसा मसीह के वसीले से अबद तक जलाल
होता रहे! आमीन।

१-कुरिन्थियों

सलाम

1 1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है, जो अल्लाह के
इरादे से मसीह ईसा का बुलाया हुआ रसूल है,
और हमारे भाई सोस्थिनेस की तरफ़ से।
2 मैं कुरिन्थुस में मौजूद अल्लाह की जमाअत को
लिख रहा हूँ, आप को जिन्हें मसीह ईसा में मुक़द्दस
किया गया है, जिन्हें मुक़द्दस होने के लिए बुलाया
गया है। साथ ही यह ख़त उन तमाम लोगों के नाम
भी है जो हर जगह हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह का
नाम लेते हैं जो उन का और हमारा ख़ुदावन्द है।
3 हमारा ख़ुदा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
को फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

शुक्र

4 मैं हमेशा आप के लिए ख़ुदा का शुक्र करता हूँ
कि उस ने आप को मसीह ईसा में इतना फ़ज़्ल
बख़्शा है। 5 आप को उस में हर लिहाज़ से दौलतमन्द
किया गया है, हर क़िस्म की तक़रीर और इल्म-ओ-
इर्फ़ान में। 6 क्यूँकि मसीह की गवाही ने आप के
दरमियान ज़ोर पकड़ लिया है, 7 इस लिए आप को
हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के ज़ुहूर का इन्तिज़ार
करते करते किसी भी बरकत में कमी नहीं। 8 वही
आप को आख़िर तक मज़बूत बनाए रखेगा, इस लिए
आप हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह की दूसरी आमद
के दिन बेइल्ज़ाम ठहरेंगे। 9 अल्लाह पर पूरा एतिमाद
किया जा सकता है जिस ने आप को बुला कर अपने
फ़र्ज़न्द हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह की रिफ़ाक़त में
शरीक किया है।

कुरिन्थियों की पार्टीबाज़ी

10 भाइयो, मैं अपने ख़ुदावन्द ईसा मसीह के नाम में
आप को ताकीद करता हूँ कि आप सब एक ही बात
कहें। आप के दरमियान पार्टीबाज़ी नहीं बल्कि एक
ही सोच और एक ही राय होनी चाहिए। 11 क्यूँकि
मेरे भाइयो, आप के बारे में मुझे ख़लोए के घर वालों
से मालूम हुआ है कि आप झगड़ों में उलझ गए हैं।
12 मतलब यह है कि आप में से कोई कहता है, "मैं
पौलुस की पार्टी का हूँ," कोई "मैं अपुल्लोस की पार्टी
का हूँ," कोई "मैं कैफ़ा की पार्टी का हूँ" और कोई
कि "मैं मसीह की पार्टी का हूँ।" 13 क्या मसीह बट
गया? क्या आप की ख़ातिर पौलुस को सलीब पर
चढ़ाया गया? या क्या आप को पौलुस के नाम से
बपतिस्मा दिया गया?
14 ख़ुदा का शुक्र है कि मैं ने आप में से किसी को
बपतिस्मा नहीं दिया सिवाए क्रिस्पुस और गयुस के।
15 इस लिए कोई नहीं कह सकता कि मैं ने पौलुस के
नाम से बपतिस्मा पाया है। 16 हाँ मैं ने स्तिफ़नास के
घराने को भी बपतिस्मा दिया। लेकिन जहाँ तक मेरा
ख़याल है इस के इलावा किसी और को बपतिस्मा
नहीं दिया। 17 मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए
रसूल बना कर नहीं भेजा बल्कि इस लिए कि अल्लाह
की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ। और यह काम मुझे दुनियावी
हिक्मत से आरास्ता तक़रीर से नहीं करना है ताकि
मसीह की सलीब की ताक़त बेअसर न हो जाए।

सलीब का पैग़ाम

18 क्यूँकि सलीब का पैग़ाम उन के लिए जिन का
अन्जाम हलाकत है बेवुक़ूफ़ी है जबकि हमारे लिए
जिन का अन्जाम नजात है यह अल्लाह की क़ुदरत है।
19 चुनाँचे पाक नविश्तों में लिखा है,

"मैं दानिशमन्दों की दानिश को तबाह करूँगा
और समझदारों की समझ को रद्द करूँगा।"

20 अब दानिशमन्द शख़्स कहाँ है? आलिम कहाँ
है? इस जहान का मुनाज़रे का माहिर कहाँ है? क्या
अल्लाह ने दुनिया की हिक्मत-ओ-दानाई को बेवुक़ूफ़ी
साबित नहीं किया?
21 क्यूँकि अगरचे दुनिया अल्लाह की दानाई से घिरी
हुई है तो भी दुनिया ने अपनी दानाई की बदौलत
अल्लाह को न पहचाना। इस लिए अल्लाह को पसन्द
आया कि वह सलीब के पैग़ाम की बेवुक़ूफ़ी के ज़रीए
ही ईमान रखने वालों को नजात दे। 22 यहूदी तक़ाज़ा
करते हैं कि इलाही बातों की तस्दीक़ इलाही निशानों
से की जाए जबकि यूनानी दानाई के वसीले से इन
की तस्दीक़ के ख़्वाहाँ हैं। 23 इस के मुक़ाबले में हम
मसीह-ए-मस्लूब की मुनादी करते हैं। यहूदी इस से
ठोकर खा कर नाराज़ हो जाते हैं जबकि ग़ैरयहूदी
इसे बेवुक़ूफ़ी क़रार देते हैं। 24 लेकिन जो अल्लाह के
बुलाए हुए हैं, ख़्वाह वह यहूदी हों ख़्वाह यूनानी,
उन के लिए मसीह अल्लाह की क़ुदरत और अल्लाह
की दानाई होता है। 25 क्यूँकि अल्लाह की जो बात
बेवुक़ूफ़ी लगती है वह इन्सान की दानाई से ज़्यादा
दानिशमन्द है। और अल्लाह की जो बात कमज़ोर
लगती है वह इन्सान की ताक़त से ज़्यादा ताक़तवर
है।
26 भाइयो, इस पर ग़ौर करें कि आप का क्या हाल
था जब ख़ुदा ने आप को बुलाया। आप में से कम
हैं जो दुनिया के मेयार के मुताबिक़ दाना हैं, कम हैं
जो ताक़तवर हैं, कम हैं जो आली ख़ानदान से हैं।
27 बल्कि जो दुनिया की निगाह में बेवुक़ूफ़ है उसे
अल्लाह ने चुन लिया ताकि दानाओं को शर्मिन्दा करे।
और जो दुनिया में कमज़ोर है उसे अल्लाह ने चुन लिया
ताकि ताक़तवरों को शर्मिन्दा करे। 28 इसी तरह जो
दुनिया के नज़्दीक ज़लील और हक़ीर है उसे अल्लाह
ने चुन लिया। हाँ, जो कुछ भी नहीं है उसे उस ने
चुन लिया ताकि उसे नेस्त करे जो बज़ाहिर कुछ है।
29 चुनाँचे कोई भी अल्लाह के सामने अपने पर फ़ख़र
नहीं कर सकता। 30 यह अल्लाह की तरफ़ से है कि
आप मसीह ईसा में हैं। अल्लाह की बख़्शिश से ईसा
ख़ुद हमारी दानाई, हमारी रास्तबाज़ी, हमारी तक़दीस
और हमारी मख़्लसी बन गया है। 31 इस लिए जिस
तरह कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है, "फ़ख़र करने
वाला ख़ुदावन्द ही पर फ़ख़र करे।"

पौलुस की सादा मुनादी

2 1 भाइयो, मुझ पर भी ग़ौर करें। जब मैं आप के
पास आया तो मैं ने आप को अल्लाह का भेद
मोटे मोटे अल्फ़ाज़ में या फ़ल्सफ़ियाना हिक्मत का
इज़हार करते हुए न सुनाया। 2 वजह क्या थी? यह
कि मैं ने इरादा कर रखा था कि आप के दरमियान
होते हुए मैं ईसा मसीह के सिवा और कुछ न जानूँ,
ख़ासकर यह कि उसे मस्लूब किया गया। 3 हाँ मैं
कमज़ोरहाल, ख़ौफ़ खाते और बहुत थरथराते हुए
आप के पास आया। 4 और गुफ़्तगु और मुनादी करते
हुए मैं ने दुनियावी हिक्मत के बड़े ज़ोरदार अल्फ़ाज़
की मारिफ़त आप को क़ाइल करने की कोशिश न
की, बल्कि रूह-उल-क़ुद्स और अल्लाह की क़ुदरत
ने मेरी बातों की तस्दीक़ की, 5 ताकि आप का ईमान
इन्सानी हिक्मत पर मब्नी न हो बल्कि अल्लाह की
क़ुदरत पर।

ग़लत और सहीह दानाई

6 दानाई की बातें हम उस वक़्त करते हैं जब
कामिल ईमान रखने वालों के दरमियान होते हैं।
लेकिन यह दानाई मौजूदा जहान की नहीं और न
इस जहान के हाकिमों ही की है जो मिटने वाले हैं।
7 बल्कि हम ख़ुदा ही की दानाई की बातें करते हैं जो
भेद की सूरत में छुपी रही है। अल्लाह ने तमाम ज़मानों
से पेशतर मुक़र्रर किया है कि यह दानाई हमारे जलाल
का बाइस बने। 8 इस जहान के किसी भी हाकिम ने
इस दानाई को न पहचाना, क्यूँकि अगर वह पहचान
लेते तो फिर वह हमारे जलाली ख़ुदावन्द को मस्लूब

न करते। 9 दानाई के बारे में पाक नविश्ते भी यही
कहते हैं,
"जो न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना,
और न इन्सान के ज़हन में आया,
उसे अल्लाह ने उन के लिए तय्यार कर दिया
जो उस से मुहब्बत रखते हैं।"
10 लेकिन अल्लाह ने यही कुछ अपने रूह की
मारिफ़त हम पर ज़ाहिर किया क्यूँकि उस का रूह
हर चीज़ का खोज लगाता है, यहाँ तक कि अल्लाह
की गहराइयों का भी। 11 इन्सान के बातिन से कौन
वाक़िफ़ है सिवाए इन्सान की रूह के जो उस के
अन्दर है? इसी तरह अल्लाह से ताल्लुक़ रखने वाली
बातों को कोई नहीं जानता सिवाए अल्लाह के रूह
के। 12 और हमें दुनिया की रूह नहीं मिली बल्कि
वह रूह जो अल्लाह की तरफ़ से है ताकि हम उस की
अताकरदा बातों को जान सकें।
13 यही कुछ हम बयान करते हैं, लेकिन ऐसे
अल्फ़ाज़ में नहीं जो इन्सानी हिक्मत से हमें सिखाया
गया बल्कि रूह-उल-क़ुद्स से। यूँ हम रुहानी
हक़ीक़तों की तश्रीह रुहानी लोगों के लिए करते
हैं। 14 जो शख़्स रुहानी नहीं है वह अल्लाह के रूह
की बातों को क़बूल नहीं करता क्यूँकि वह उस के
नज़्दीक बेवुक़ूफ़ी हैं। वह उन्हें पहचान नहीं सकता
क्यूँकि उन की परख सिर्फ़ रुहानी शख़्स ही कर
सकता है। 15 वही हर चीज़ परख लेता है जबकि
उस की अपनी परख कोई नहीं कर सकता। 16 चुनाँचे
पाक कलाम में लिखा है,
"किस ने रब की सोच को जाना?
कौन उस को तालीम देगा?"
लेकिन हम मसीह की सोच रखते हैं।

कुरिन्थुस की बचगाना हालत

3 1 भाइयो, मैं आप से रुहानी लोगों की बातें न
कर सका बल्कि सिर्फ़ जिस्मानी लोगों की।
क्यूँकि आप अब तक मसीह में छोटे बच्चे हैं। 2 मैं ने
आप को दूध पिलाया, ठोस ग़िज़ा न खिलाई, क्यूँकि
आप उस वक़्त इस क़ाबिल नहीं थे बल्कि अब तक
नहीं हैं। 3 अभी तक आप जिस्मानी हैं, क्यूँकि आप
में हसद और झगड़ा पाया जाता है। क्या इस से यह
साबित नहीं होता कि आप जिस्मानी हैं और रूह के
बग़ैर चलते हैं? 4 जब कोई कहता है, "मैं पौलुस की
पार्टी का हूँ" और दूसरा, "मैं अपुल्लोस की पार्टी का
हूँ" तो क्या इस से यह ज़ाहिर नहीं होता कि आप
रुहानी नहीं बल्कि इन्सानी सोच रखते हैं?

पौलुस और अपुल्लोस की हैसियत

5 अपुल्लोस की क्या हैसियत है और पौलुस की
क्या? दोनों नौकर हैं जिन के वसीले से आप ईमान
लाए। और हम में से हर एक ने वही ख़िदमत अन्जाम
दी जो ख़ुदावन्द ने उस के सपुर्द की। 6 मैं ने पौदे
लगाए, अपुल्लोस पानी देता रहा, लेकिन अल्लाह ने
उन्हें उगने दिया। 7 लिहाज़ा पौदा लगाने वाला और
आबपाशी करने वाला दोनों कुछ भी नहीं, बल्कि
ख़ुदा ही सब कुछ है जो पौदे को फलने फूलने देता
है। 8 पौदा लगाने और पानी देने वाला एक जैसे हैं,
अलबत्ता हर एक को उस की मेहनत के मुताबिक़
मज़दूरी मिलेगी। 9 क्यूँकि हम अल्लाह के मुआविन हैं
जबकि आप अल्लाह का खेत और उस की इमारत हैं।
10 अल्लाह के उस फ़ज़्ल के मुताबिक़ जो मुझे बख़्शा
गया मैं ने एक दानिशमन्द ठेकेदार की तरह बुन्याद
रखी। इस के बाद कोई और उस पर इमारत तामीर
कर रहा है। लेकिन हर एक ध्यान रखे कि वह
बुन्याद पर इमारत किस तरह बना रहा है। 11 क्यूँकि
बुन्याद रखी जा चुकी है और वह है ईसा मसीह।
इस के इलावा कोई भी मज़ीद कोई बुन्याद नहीं रख
सकता। 12 जो भी इस बुन्याद पर कुछ तामीर करे
वह मुख़्तलिफ़ मवाद तो इस्तेमाल कर सकता है,
मसलन सोना, चाँदी, क़ीमती पत्थर, लकड़ी, सूखी
घास या भूसा, 13 लेकिन आख़िर में हर एक का काम
ज़ाहिर हो जाएगा। क़ियामत के दिन कुछ पोशीदा
नहीं रहेगा बल्कि आग सब कुछ ज़ाहिर कर देगी।
वह साबित कर देगी कि हर किसी ने कैसा काम

किया है। 14 अगर उस का तामीरी काम न जला जो
उस ने इस बुन्याद पर किया तो उसे अज्र मिलेगा।
15 अगर उस का काम जल गया तो उसे नुक़्सान
पहुँचेगा। ख़ुद तो वह बच जाएगा मगर जलते जलते।
16 क्या आप को मालूम नहीं कि आप अल्लाह का
घर हैं, और आप में अल्लाह का रूह सुकूनत करता है?
17 अगर कोई अल्लाह के घर को तबाह करे तो अल्लाह
उसे तबाह करेगा, क्यूँकि अल्लाह का घर मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस है और यह घर आप ही हैं।

अपने बारे में शेख़ी न मारना

18 कोई अपने आप को फ़रेब न दे। अगर आप
में से कोई समझे कि वह इस दुनिया की नज़र में
दानिशमन्द है तो फिर ज़रूरी है कि वह बेवुक़ूफ़
बने ताकि वाक़ई दानिशमन्द हो जाए। 19 क्यूँकि इस
दुनिया की हिक्मत अल्लाह की नज़र में बेवुक़ूफ़ी
है। चुनाँचे मुक़द्दस नविश्तों में लिखा है, "वह
दानिशमन्दों को उन की अपनी चालाकी के फंदे में
फंसा देता है।" 20 यह भी लिखा है, "रब दानिशमन्दों
के ख़यालात को जानता है कि वह बातिल हैं।"
21 ग़रज़ कोई किसी इन्सान के बारे में शेख़ी न
मारे। सब कुछ तो आप का है। 22 पौलुस, अपुल्लोस,
कैफ़ा, दुनिया, ज़िन्दगी, मौत, मौजूदा जहान के और
मुस्तक़बिल के उमूर सब कुछ आप का है। 23 लेकिन
आप मसीह के हैं और मसीह अल्लाह का है।

ख़ुदावन्द के ख़ादिम और उन का काम

4 1 ग़रज़ लोग हमें मसीह के ख़ादिम समझें, ऐसे
निगरान जिन्हें अल्लाह के भेदों को खोलने की
ज़िम्मादारी दी गई है। 2 अब निगरानों का फ़र्ज़ यह
है कि उन पर पूरा एतिमाद किया जा सके। 3 मुझे
इस बात की ज़्यादा फ़िक्र नहीं कि आप या कोई
दुनियावी अदालत मेरा एहतिसाब करे, बल्कि मैं ख़ुद
भी अपना एहतिसाब नहीं करता। 4 मुझे किसी ग़लती
का इल्म नहीं है अगरचे यह बात मुझे रास्तबाज़
क़रार देने के लिए काफ़ी नहीं है। ख़ुदावन्द ख़ुद मेरा
एहतिसाब करता है। 5 इस लिए वक़्त से पहले किसी
बात का फ़ैसला न करें। उस वक़्त तक इन्तिज़ार
करें जब तक ख़ुदावन्द न आए। क्यूँकि वही तारीकी
में छुपी हुई चीज़ों को रौशनी में लाएगा और दिलों
की मन्सूबाबन्दियों को ज़ाहिर कर देगा। उस वक़्त
अल्लाह ख़ुद हर फ़र्द की मुनासिब तारीफ़ करेगा।

कुरिन्थियों की शेख़ीबाज़ी

6 भाइयो, मैं ने इन बातों का इत्लाक़ अपने और
अपुल्लोस पर किया ताकि आप हम पर ग़ौर करते हुए
अल्लाह के कलाम की हुदूद जान लें जिन से तजावुज़
करना मुनासिब नहीं। फिर आप फूल कर एक शख़्स
की हिमायत करके दूसरे की मुख़ालफ़त नहीं करेंगे।
7 क्यूँकि कौन आप को किसी दूसरे से अफ़्ज़ल क़रार
देता है? जो कुछ आप के पास है क्या वह आप
को मुफ़्त नहीं मिला? और अगर मुफ़्त मिला तो इस
पर शेख़ी क्यूँ मारते हैं गोया कि आप ने उसे अपनी
मेहनत से हासिल किया हो?
8 वाह जी वाह! आप सेर हो चुके हैं। आप अमीर
बन चुके हैं। आप हमारे बग़ैर बादशाह बन चुके हैं।
काश आप बादशाह बन चुके होते ताकि हम भी
आप के साथ हुकूमत करते! 9 इस के बजाय मुझे
लगता है कि अल्लाह ने हमारे लिए जो उस के रसूल
हैं रोमी तमाशागाह में सब से निचला दर्जा मुक़र्रर
किया है, जो उन लोगों के लिए मख़्सूस होता है जिन्हें
सज़ा-ए-मौत का फ़ैसला सुनाया गया हो। हाँ, हम
दुनिया, फ़रिश्तों और इन्सानों के सामने तमाशा बन
गए हैं। 10 हम तो मसीह की ख़ातिर बेवुक़ूफ़ बन गए
हैं जबकि आप मसीह में समझदार ख़याल किए जाते
हैं। हम कमज़ोर हैं जबकि आप ताक़तवर। आप की
इज़्ज़त की जाती है जबकि हमारी बेइज़्ज़ती। 11 अब
तक हमें भूक और प्यास सताती है। हम चीथड़ों
में मल्बूस गोया नंगे फिरते हैं। हमें मुक्के मारे जाते
हैं। हमारी कोई मुस्तक़िल रिहाइशगाह नहीं। 12 और
बड़ी मशक़्क़त से हम अपने हाथों से रोज़ी कमाते हैं।
लान-तान करने वालों को हम बरकत देते हैं, ईज़ा

देने वालों को बर्दाश्त करते हैं। 13 जो हमें बुरा-भला
कहते हैं उन्हें हम दुआ देते हैं। अब तक हम दुनिया
का कूड़ा-कर्कट और ग़िलाज़त बने फिरते हैं।

पौलुस कुरिन्थियों का रुहानी बाप है

14 मैं आप को शर्मिन्दा करने के लिए यह नहीं लिख
रहा, बल्कि अपने प्यारे बच्चे जान कर समझाने की
ग़रज़ से। 15 बेशक मसीह ईसा में आप के उस्ताद तो
बेशुमार हैं, लेकिन बाप कम हैं। क्यूँकि मसीह ईसा में
मैं ही आप को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुना कर आप
का बाप बना। 16 अब मैं ताकीद करता हूँ कि आप
मेरे नमूने पर चलें। 17 इस लिए मैं ने तीमुथियुस को
आप के पास भेज दिया जो ख़ुदावन्द में मेरा प्यारा
और वफ़ादार बेटा है। वह आप को मसीह ईसा में
मेरी उन हिदायात की याद दिलाएगा जो मैं हर जगह
और ईमानदारों की हर जमाअत में देता हूँ।

18 आप में से बाज़ यूँ फूल गए हैं जैसे मैं अब
आप के पास कभी नहीं आऊँगा। 19 लेकिन अगर
ख़ुदावन्द की मर्ज़ी हुई तो जल्द आ कर मालूम
करूँगा कि क्या यह फूले हुए लोग सिर्फ़ बातें कर
रहे हैं या कि अल्लाह की क़ुदरत उन में काम कर
रही है। 20 क्यूँकि अल्लाह की बादशाही ख़ाली बातों
से ज़ाहिर नहीं होती बल्कि अल्लाह की क़ुदरत से।
21 क्या आप चाहते हैं कि मैं छड़ी ले कर आप के
पास आऊँ या प्यार और हलीमी की रूह में?

ज़िनाकारी

5 1 यह बात हमारे कानों तक पहुँची है कि आप
के दरमियान ज़िनाकारी हो रही है, बल्कि ऐसी
ज़िनाकारी जिसे ग़ैरयहूदी भी रवा नहीं समझते।
कहते हैं कि आप में से किसी ने अपनी सौतेली
माँ [l]से शादी कर रखी है। 2 कमाल है कि आप इस
फ़ेल पर नादिम नहीं बल्कि फूले फिर रहे हैं! क्या
मुनासिब न होता कि आप दुख महसूस करके इस
बदी के मुर्तकिब को अपने दरमियान से ख़ारिज कर
देते? 3 गो मैं जिस्म के लिहाज़ से आप के पास नहीं,
लेकिन रूह के लिहाज़ से ज़रूर हूँ। और मैं उस शख़्स
पर फ़त्वा इस तरह दे चुका हूँ जैसे कि मैं आप के
दरमियान मौजूद हूँ। 4 जब आप हमारे ख़ुदावन्द ईसा
के नाम में जमा होंगे तो मैं रूह में आप के साथ
हूँगा और हमारे ख़ुदावन्द ईसा की क़ुदरत भी। 5 उस
वक़्त ऐसे शख़्स को इब्लीस के हवाले करें ताकि
सिर्फ़ उस का जिस्म हलाक हो जाए, लेकिन उस की
रूह ख़ुदावन्द के दिन रिहाई पाए।

6 आप का फ़ख़र करना अच्छा नहीं। क्या आप को
मालूम नहीं कि जब हम थोड़ा सा ख़मीर ताज़ा गुंधे
हुए आटे में मिलाते हैं तो वह सारे आटे को ख़मीर
कर देता है? 7 अपने आप को ख़मीर से पाक-साफ़
करके ताज़ा गुंधा हुआ आटा बन जाएँ। दरहक़ीक़त
आप हैं भी पाक, क्यूँकि हमारा ईद-ए-फ़सह का लेला
मसीह हमारे लिए ज़बह हो चुका है। 8 इस लिए आइए
हम पुराने ख़मीरी आटे यानी बुराई और बदी को दूर
करके ताज़ा गुंधे हुए आटे यानी ख़ुलूस और सच्चाई
की रोटियाँ बना कर फ़सह की ईद मनाएँ।

9 मैं ने ख़त में लिखा था कि आप ज़िनाकारों से
ताल्लुक़ न रखें। 10 मेरा मतलब यह नहीं था कि आप
इस दुनिया के ज़िनाकारों से ताल्लुक़ मुन्क़ते कर लें
या इस दुनिया के लालचियों, लुटेरों और बुतपरस्तों
से। अगर आप ऐसा करते तो लाज़िम होता कि आप
दुनिया ही से कूच कर जाते। 11 नहीं, मेरा मतलब यह
था कि आप ऐसे शख़्स से ताल्लुक़ न रखें जो मसीह में
तो भाई कहलाता है मगर है वह ज़िनाकार या लालची
या बुतपरस्त या गाली-गलोच करने वाला या शराबी
या लुटेरा। ऐसे शख़्स के साथ खाना तक भी न खाएँ।

12 मैं उन लोगों की अदालत क्यूँ करता फिरूँ जो
ईमानदारों की जमाअत से बाहर हैं? क्या आप ख़ुद
भी सिर्फ़ उन की अदालत नहीं करते जो जमाअत के
अन्दर हैं? 13 बाहर वालों की अदालत तो ख़ुदा ही

---

[l]लफ़्ज़ी तर्जुमा : बाप की बीवी, लेकिन ग़ालिबन इस से मुराद सौतेली माँ है।

करेगा। कलाम-ए-मुक़द्दस में यूँ लिखा है, ‘शरीर को अपने दरमियान से निकाल दो।’

मुक़द्दमाबाज़ी

6 1 आप में यह जुरअत कैसे पैदा हुई कि जब किसी का किसी दूसरे ईमानदार के साथ तनाज़ो हो तो वह अपना झगड़ा बेदीनों के सामने ले जाता है न कि मुक़द्दसों के सामने? 2 क्या आप नहीं जानते कि मुक़द्दसीन दुनिया की अदालत करेंगे? और अगर आप दुनिया की अदालत करेंगे तो क्या आप इस क़ाबिल नहीं कि छोटे मोटे झगड़ों का फ़ैसला कर सकें? 3 क्या आप को मालूम नहीं कि हम फ़रिश्तों की अदालत करेंगे? तो फिर क्या हम रोज़मर्रा के मुआमलात को नहीं निपटा सकते? 4 और इस क़िस्म के मुआमलात को फ़ैसल करने के लिए आप ऐसे लोगों को क्यूँ मुक़र्रर करते हैं जो जमाअत की निगाह में कोई हैसियत नहीं रखते? 5 यह बात मैं आप को शर्म दिलाने के लिए कहता हूँ। क्या आप में एक भी सयाना शख़्स नहीं जो अपने भाइयों के माबैन फ़ैसला करने के क़ाबिल हो? 6 लेकिन नहीं। भाई अपने ही भाई पर मुक़द्दमा चलाता है और वह भी ग़ैरईमानदारों के सामने।

7 अव्वल तो आप से यह ग़लती हुई कि आप एक दूसरे से मुक़द्दमाबाज़ी करते हैं। अगर कोई आप से नाइन्साफ़ी कर रहा हो तो क्या बेहतर नहीं कि आप उसे ऐसा करने दें? और अगर कोई आप को ठग रहा हो तो क्या यह बेहतर नहीं कि आप उसे ठिगने दें? 8 इस के बरअक्स आप का यह हाल है कि आप ख़ुद ही नाइन्साफ़ी करते और ठगते हैं और वह भी अपने भाइयों को। 9 क्या आप नहीं जानते कि नाइन्साफ़ अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे? फ़रेब न खाएँ! हरामकार, बुतपरस्त, ज़िनाकार, हमजिन्सपरस्त, लौंडेबाज़, 10 चोर, लालची, शराबी, बदज़बान, लुटेरे, यह सब अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे। 11 आप में से कुछ ऐसे थे भी। लेकिन आप को धोया गया, आप को मुक़द्दस किया गया, आप को ख़ुदावन्द ईसा मसीह के नाम और हमारे ख़ुदा के रूह से रास्तबाज़ बनाया गया है।

जिस्म अल्लाह का घर है

12 मेरे लिए सब कुछ जाइज़ है, लेकिन सब कुछ मुफ़ीद नहीं। मेरे लिए सब कुछ जाइज़ तो है, लेकिन मैं किसी भी चीज़ को इजाज़त नहीं दूँगा कि मुझ पर हुकूमत करे। 13 बेशक ख़ुराक पेट के लिए और पेट ख़ुराक के लिए है, मगर अल्लाह दोनों को नेस्त कर देगा। लेकिन हम इस से यह नतीजा नहीं निकाल सकते कि जिस्म ज़िनाकारी के लिए है। हरगिज़ नहीं! जिस्म ख़ुदावन्द के लिए है और ख़ुदावन्द जिस्म के लिए। 14 अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से ख़ुदावन्द ईसा को ज़िन्दा किया और इसी तरह वह हमें भी ज़िन्दा करेगा।

15 क्या आप नहीं जानते कि आप के जिस्म मसीह के आज़ा हैं? तो क्या मैं मसीह के आज़ा को ले कर फ़ाहिशा के आज़ा बनाऊँ? हरगिज़ नहीं। 16 क्या आप को मालूम नहीं कि जो फ़ाहिशा से लिपट जाता है वह उस के साथ एक तन हो जाता है? जैसे पाक नविश्तों में लिखा है, “वह दोनों एक हो जाते हैं।” 17 इस के बरअक्स जो ख़ुदावन्द से लिपट जाता है वह उस के साथ एक रूह हो जाता है।

18 ज़िनाकारी से भागें! इन्सान से सरज़द होने वाला हर गुनाह उस के जिस्म से बाहर होता है सिवाए ज़िना के। ज़िनाकार तो अपने ही जिस्म का गुनाह करता है। 19 क्या आप नहीं जानते कि आप का बदन रूह-उल-क़ुद्स का घर है जो आप के अन्दर सुकूनत करता है और जो आप को अल्लाह की तरफ़ से मिला है? आप अपने मालिक नहीं हैं 20 क्यूँकि आप को क़ीमत अदा करके ख़रीदा गया है। अब अपने बदन से अल्लाह को जलाल दें।

इज़्दिवाजी ज़िन्दगी

7 1 अब मैं आप के सवालात का जवाब देता हूँ।
बेशक अच्छा है कि मर्द शादी न करे। 2 लेकिन
ज़िनाकारी से बचने की ख़ातिर हर मर्द की अपनी
बीवी और हर औरत का अपना शौहर हो। 3 शौहर
अपनी बीवी का हक़ अदा करे और इसी तरह बीवी
अपने शौहर का। 4 बीवी अपने जिस्म पर इख़तियार
नहीं रखती बल्कि उस का शौहर। इसी तरह शौहर
भी अपने जिस्म पर इख़तियार नहीं रखता बल्कि उस
की बीवी। 5 चुनाँचे एक दूसरे से जुदा न हों सिवाए
इस के कि आप दोनों बाहमी रज़ामन्दी से एक वक़्त
मुक़र्रर कर लें ताकि दुआ के लिए ज़्यादा फ़ुर्सत मिल
सके। लेकिन इस के बाद आप दुबारा इकट्ठे हो जाएँ
ताकि इब्लीस आप के बेज़ब्त नफ़्स से फ़ाइदा उठा
कर आप को आज़माइश में न डाले।

6 यह मैं हुक्म के तौर पर नहीं बल्कि आप के
हालात के पेश-ए-नज़र रिआयतन कह रहा हूँ। 7 मैं
चाहता हूँ कि तमाम लोग मुझ जैसे ही हों। लेकिन
हर एक को अल्लाह की तरफ़ से अलग नेमत मिली
है, एक को यह नेमत, दूसरे को वह।

तलाक़ और ग़ैरईमानदार से शादी

8 मैं ग़ैरशादीशुदा अफ़राद और बेवाओं से यह
कहता हूँ कि अच्छा हो अगर आप मेरी तरह
ग़ैरशादीशुदा रहें। 9 लेकिन अगर आप अपने आप
पर क़ाबू न रख सकें तो शादी कर लें। क्यूँकि इस से
पेशतर कि आप के शहवानी जज़्बात बेलगाम होने
लगें बेहतर यह है कि आप शादी कर लें।

10 शादीशुदा जोड़ों को मैं नहीं बल्कि ख़ुदावन्द
हुक्म देता है कि बीवी अपने शौहर से ताल्लुक़ मुन्क़ते
न करे। 11 अगर वह ऐसा कर चुकी हो तो दूसरी शादी
न करे या अपने शौहर से सुलह कर ले। इसी तरह
शौहर भी अपनी बीवी को तलाक़ न दे।

12 दीगर लोगों को ख़ुदावन्द नहीं बल्कि मैं नसीहत
करता हूँ कि अगर किसी ईमानदार भाई की बीवी
ईमान नहीं लाई, लेकिन वह शौहर के साथ रहने पर
राज़ी हो तो फिर वह अपनी बीवी को तलाक़ न दे।
13 इसी तरह अगर किसी ईमानदार ख़ातून का शौहर
ईमान नहीं लाया, लेकिन वह बीवी के साथ रहने पर
रज़ामन्द हो तो वह अपने शौहर को तलाक़ न दे।
14 क्यूँकि जो शौहर ईमान नहीं लाया उसे उस की
ईमानदार बीवी की मारिफ़त मुक़द्दस ठहराया गया है
और जो बीवी ईमान नहीं लाई उसे उस के ईमानदार
शौहर की मारिफ़त मुक़द्दस क़रार दिया गया है। अगर
ऐसा न होता तो आप के बच्चे नापाक होते, मगर अब
वह मुक़द्दस हैं। 15 लेकिन अगर ग़ैरईमानदार शौहर
या बीवी अपना ताल्लुक़ मुन्क़ते कर ले तो उसे जाने
दें। ऐसी सूरत में ईमानदार भाई या बहन इस बंधन
से आज़ाद हो गए। मगर अल्लाह ने आप को सुलह-
सलामती की ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए बुलाया है।
16 बहन, मुमकिन है आप अपने ख़ावन्द की नजात
का बाइस बन जाएँ। या भाई, मुमकिन है आप अपनी
बीवी की नजात का बाइस बन जाएँ।

अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्ररा राह पर रहें

17 हर शख़्स उसी राह पर चले जो ख़ुदावन्द ने उस
के लिए मुक़र्रर की और उस हालत में जिस में अल्लाह
ने उसे बुलाया है। ईमानदारों की तमाम जमाअतों के
लिए मेरी यही हिदायत है। 18 अगर किसी को मख़्तून
हालत में बुलाया गया तो वह नामख़्तून होने की
कोशिश न करे। अगर किसी को नामख़्तूनी की हालत
में बुलाया गया तो वह अपना ख़तना न करवाए। 19 न
ख़तना कुछ चीज़ है और न ख़तने का न होना, बल्कि
अल्लाह के अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना
ही सब कुछ है। 20 हर शख़्स उसी हैसियत में रहे
जिस में उसे बुलाया गया था। 21 क्या आप ग़ुलाम थे
जब ख़ुदावन्द ने आप को बुलाया? यह बात आप
को परेशान न करे। अलबत्ता अगर आप को आज़ाद
होने का मौक़ा मिले तो इस से ज़रूर फ़ाइदा उठाएँ।
22 क्यूँकि जो उस वक़्त ग़ुलाम था जब ख़ुदावन्द ने
उसे बुलाया वह अब ख़ुदावन्द का आज़ाद किया

हुआ है। इसी तरह जो आज़ाद था जब उसे बुलाया गया वह अब मसीह का ग़ुलाम है। 23 आप को क़ीमत दे कर ख़रीदा गया है, इस लिए इन्सान के ग़ुलाम न बनें। 24 भाइयो, हर शख़्स जिस हालत में बुलाया गया उसी में वह अल्लाह के सामने क़ाइम रहे।

ग़ैरशादीशुदा लोग

25 कुंवारियों के बारे में मुझे ख़ुदावन्द की तरफ़ से कोई ख़ास हुक्म नहीं मिला। तो भी मैं जिसे अल्लाह ने अपनी रहमत से क़ाबिल-ए-एतिमाद बनाया है आप पर अपनी राय का इज़हार करता हूँ।

26 मेरी दानिस्त में मौजूदा मुसीबत के पेश-ए-नज़र इन्सान के लिए अच्छा है कि ग़ैरशादीशुदा रहे। 27 अगर आप किसी ख़ातून के साथ शादी के बंधन में बंध चुके हैं तो फिर इस बंधन को तोड़ने की कोशिश न करें। लेकिन अगर आप शादी के बंधन में नहीं बंधे तो फिर इस के लिए कोशिश न करें। 28 ताहम अगर आप ने शादी कर ही ली है तो आप ने गुनाह नहीं किया। इसी तरह अगर कुंवारी शादी कर चुकी है तो यह गुनाह नहीं। मगर ऐसे लोग जिस्मानी तौर पर मुसीबत में पड़ जाएंगे जबकि मैं आप को इस से बचाना चाहता हूँ।

29 भाइयो, मैं तो यह कहता हूँ कि वक़्त थोड़ा है। आइन्दा शादीशुदा ऐसे ज़िन्दगी बसर करें जैसे कि ग़ैरशादीशुदा हैं। 30 रोने वाले ऐसे हों जैसे नहीं रो रहे। ख़ुशी मनाने वाले ऐसे हों जैसे ख़ुशी नहीं मना रहे। ख़रीदने वाले ऐसे हों जैसे उन के पास कुछ भी नहीं। 31 दुनिया से फ़ाइदा उठाने वाले ऐसे हों जैसे इस का कोई फ़ाइदा नहीं। क्यूँकि इस दुनिया की मौजूदा शक्ल-ओ-सूरत ख़त्म होती जा रही है।

32 मैं तो चाहता हूँ कि आप फ़िक्रों से आज़ाद रहें। ग़ैरशादीशुदा शख़्स ख़ुदावन्द के मुआमलों की फ़िक्र में रहता है कि किस तरह उसे ख़ुश करे। 33 इस के बरअक्स शादीशुदा शख़्स दुनियावी फ़िक्र में रहता है कि किस तरह अपनी बीवी को ख़ुश करे। 34 यूँ वह बड़ी कश-म-कश में मुब्तला रहता है। इसी तरह ग़ैरशादीशुदा ख़ातून और कुंवारी ख़ुदावन्द की फ़िक्र में रहती है कि वह जिस्मानी और रुहानी तौर पर उस के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो। इस के मुक़ाबले में शादीशुदा ख़ातून दुनियावी फ़िक्र में रहती है कि अपने ख़ावन्द को किस तरह ख़ुश करे।

35 मैं यह आप ही के फ़ाइदे के लिए कहता हूँ। मक़्सद यह नहीं कि आप पर पाबन्दियाँ लगाई जाएँ बल्कि यह कि आप शराफ़त, साबितक़दमी और यकसूई के साथ ख़ुदावन्द की हुज़ूरी में चलें।

36 अगर कोई समझता है, 'मैं अपनी कुंवारी मंगेतर से शादी न करने से उस का हक़ मार रहा हूँ' या यह कि 'मेरी उस के लिए ख़्वाहिश हद से ज़्यादा है, इस लिए शादी होनी चाहिए' तो फिर वह अपने इरादे को पूरा करे, यह गुनाह नहीं। वह शादी कर ले। 37 लेकिन इस के बरअक्स अगर उस ने शादी न करने का पुख़्ता अज़्म कर लिया है और वह मज्बूर नहीं बल्कि अपने इरादे पर इख़तियार रखता है और उस ने अपने दिल में फ़ैसला कर लिया है कि अपनी कुंवारी लड़की को ऐसे ही रहने दे तो उस ने अच्छा किया। 38 ग़रज़ जिस ने अपनी कुंवारी मंगेतर से शादी कर ली है उस ने अच्छा किया है, लेकिन जिस ने नहीं की उस ने और भी अच्छा किया है।

39 जब तक ख़ावन्द ज़िन्दा है बीवी को उस से रिश्ता तोड़ने की इजाज़त नहीं। ख़ावन्द की वफ़ात के बाद वह आज़ाद है कि जिस से चाहे शादी कर ले, मगर सिर्फ़ ख़ुदावन्द में। 40 लेकिन मेरी दानिस्त में अगर वह ऐसे ही रहे तो ज़्यादा मुबारक होगी। और मैं समझता हूँ कि मुझ में भी अल्लाह का रूह है।

बुतों की क़ुर्बानियाँ

8 1 अब मैं बुतों की क़ुर्बानी के बारे में बात करता हूँ। हम जानते हैं कि हम सब साहिब-ए-इल्म हैं। इल्म इन्सान के फूलने का बाइस बनता है जबकि मुहब्बत उस की तामीर करती है। 2 जो समझता है कि उस ने कुछ जान लिया है उस ने अब तक उस तरह नहीं जाना जिस तरह उस को जानना चाहिए।

3 लेकिन जो अल्लाह से मुहब्बत रखता है उसे अल्लाह
ने जान लिया है।

4 बुतों की क़ुर्बानी खाने के ज़िम्न में हम जानते हैं
कि दुनिया में बुत कोई चीज़ नहीं और कि रब के
सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। 5 बेशक आसमान-
ओ-ज़मीन पर कई नाम-निहाद देवता होते हैं, हाँ
दरअसल बहुतेरे देवताओं और ख़ुदावन्दों की पूजा
की जाती है। 6 तो भी हम जानते हैं कि फ़क़त एक ही
ख़ुदा है, हमारा बाप जिस ने सब कुछ पैदा किया है
और जिस के लिए हम ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। और एक
ही ख़ुदावन्द है यानी ईसा मसीह जिस के वसीले से
सब कुछ वुजूद में आया है और जिस से हमें ज़िन्दगी
हासिल है।

7 लेकिन हर किसी को इस का इल्म नहीं। बाज़
ईमानदार तो अब तक यह सोचने के आदी हैं कि
बुत का वुजूद है। इस लिए जब वह किसी बुत की
क़ुर्बानी का गोश्त खाते हैं तो वह समझते हैं कि हम
ऐसा करने से उस बुत की पूजा कर रहे हैं। यूँ उन का
ज़मीर कमज़ोर होने की वजह से आलूदा हो जाता
है। 8 हक़ीक़त तो यह है कि हमारा अल्लाह को पसन्द
आना इस बात पर मब्नी नहीं कि हम क्या खाते
हैं और क्या नहीं खाते। न पर्हेज़ करने से हमें कोई
नुक़्सान पहुँचता है और न खा लेने से कोई फ़ाइदा।

9 लेकिन ख़बरदार रहें कि आप की यह आज़ादी
कमज़ोरों के लिए ठोकर का बाइस न बने। 10 क्यूँकि
अगर कोई कमज़ोरज़मीर शख़्स आप को बुतख़ाने
में खाना खाते हुए देखे तो क्या उसे उस के ज़मीर
के ख़िलाफ़ बुतों की क़ुर्बानियाँ खाने पर उभारा नहीं
जाएगा? 11 इस तरह आप का कमज़ोर भाई जिस
की ख़ातिर मसीह क़ुर्बान हुआ आप के इल्म-ओ-
इर्फ़ान की वजह से हलाक हो जाएगा। 12 जब आप
इस तरह अपने भाइयों का गुनाह करते और उन के
कमज़ोर ज़मीर को मजरूह करते हैं तो आप मसीह
का ही गुनाह करते हैं। 13 इस लिए अगर ऐसा खाना
मेरे भाई को सहीह राह से भटकाने का बाइस बने
तो मैं कभी गोश्त नहीं खाऊँगा ताकि अपने भाई की
गुमराही का बाइस न बनूँ।

रसूल का हक़

9 1 क्या मैं आज़ाद नहीं? क्या मैं मसीह का रसूल
नहीं? क्या मैं ने ईसा को नहीं देखा जो हमारा
ख़ुदावन्द है? क्या आप ख़ुदावन्द में मेरी मेहनत का
फल नहीं हैं? 2 अगरचे मैं दूसरों के नज़्दीक मसीह
का रसूल नहीं, लेकिन आप के नज़्दीक तो ज़रूर हूँ।
ख़ुदावन्द में आप ही मेरी रिसालत पर मुहर हैं।

3 जो मेरी बाज़पुर्स करना चाहते हैं उन्हें मैं अपने
दिफ़ा में कहता हूँ, 4 क्या हमें खाने-पीने का हक़
नहीं? 5 क्या हमें हक़ नहीं कि शादी करके अपनी
बीवी को साथ लिए फिरें? दूसरे रसूल और ख़ुदावन्द
के भाई और कैफ़ा तो ऐसा ही करते हैं। 6 क्या मुझे
और बर्नबास ही को अपनी ख़िदमत के अज्र में कुछ
पाने का हक़ नहीं? 7 कौन सा फ़ौजी अपने ख़र्च पर
जंग लड़ता है? कौन अंगूर का बाग़ लगा कर उस के
फल से अपना हिस्सा नहीं पाता? या कौन रेवड़ की
गल्लाबानी करके उस के दूध से अपना हिस्सा नहीं
पाता?

8 क्या मैं यह फ़क़त इन्सानी सोच के तहत कह
रहा हूँ? क्या शरीअत भी यही नहीं कहती? 9 तौरेत
में लिखा है, “जब तू फ़सल गाहने के लिए उस
पर बैल चलने देता है तो उस का मुँह बांध कर न
रखना।” क्या अल्लाह सिर्फ़ बैलों की फ़िक्र करता है
10 या वह हमारी ख़ातिर यह फ़रमाता है? हाँ, ज़रूर
हमारी ख़ातिर क्यूँकि हल चलाने वाला इस उम्मीद
पर चलाता है कि उसे कुछ मिलेगा। इसी तरह गाहने
वाला इस उम्मीद पर गाहता है कि वह पैदावार में से
अपना हिस्सा पाएगा। 11 हम ने आप के लिए रुहानी
बीज बोया है। तो क्या यह नामुनासिब है अगर हम
आप से जिस्मानी फ़सल काटें? 12 अगर दूसरों को
आप से अपना हिस्सा लेने का हक़ है तो क्या हमारा
उन से ज़्यादा हक़ नहीं बनता?

लेकिन हम ने इस हक़ से फ़ाइदा नहीं उठाया।
हम सब कुछ बर्दाश्त करते हैं ताकि मसीह की
ख़ुशख़बरी के लिए किसी भी तरह से रुकावट का
बाइस न बनें। 13 क्या आप नहीं जानते कि बैत-उल-
मुक़द्दस में ख़िदमत करने वालों की ज़रूरियात बैत-
उल-मुक़द्दस ही से पूरी की जाती हैं? जो क़ुर्बानियाँ
चढ़ाने के काम में मसरूफ़ रहते हैं उन्हें क़ुर्बानियों
से ही हिस्सा मिलता है। 14 इसी तरह ख़ुदावन्द ने
मुक़र्रर किया है कि इंजील की ख़ुशख़बरी की मुनादी
करने वालों की ज़रूरियात उन से पूरी की जाएँ जो
इस ख़िदमत से फ़ाइदा उठाते हैं।

15 लेकिन मैं ने किसी तरह भी इस से फ़ाइदा नहीं
उठाया, और न इस लिए लिखा है कि मेरे साथ ऐसा
सुलूक किया जाए। नहीं, इस से पहले कि फ़ख़र
करने का मेरा यह हक़ मुझ से छीन लिया जाए
बेहतर यह है कि मैं मर जाऊँ। 16 लेकिन अल्लाह
की ख़ुशख़बरी की मुनादी करना मेरे लिए फ़ख़र का
बाइस नहीं। मैं तो यह करने पर मज्बूर हूँ। मुझ पर
अफ़्सोस अगर इस ख़ुशख़बरी की मुनादी न करूँ।
17 अगर मैं यह अपनी मर्ज़ी से करता तो फिर अज्र
का मेरा हक़ बनता। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि ख़ुदा
ही ने मुझे यह ज़िम्मादारी दी है। 18 तो फिर मेरा अज्र
क्या है? यह कि मैं इंजील की ख़ुशख़बरी मुफ़्त सुनाऊँ
और अपने उस हक़ से फ़ाइदा न उठाऊँ जो मुझे उस
की मुनादी करने से हासिल है।

19 अगरचे मैं सब लोगों से आज़ाद हूँ फिर भी मैं
ने अपने आप को सब का ग़ुलाम बना लिया ताकि
ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को जीत लूँ। 20 में यहूदियों
के दरमियान यहूदी की मानिन्द बना ताकि यहूदियों
को जीत लूँ। मूसवी शरीअत के तहत ज़िन्दगी गुज़ारने
वालों के दरमियान मैं उन की मानिन्द बना ताकि उन्हें
जीत लूँ, गो मैं शरीअत के मातहत नहीं। 21 मूसवी
शरीअत के बग़ैर ज़िन्दगी गुज़ारने वालों के दरमियान
मैं उन ही की मानिन्द बना ताकि उन्हें जीत लूँ। इस
का मतलब यह नहीं कि मैं अल्लाह की शरीअत के
ताबे नहीं हूँ। हक़ीक़त में मैं मसीह की शरीअत के
तहत ज़िन्दगी गुज़ारता हूँ। 22 मैं कमज़ोरों के लिए
कमज़ोर बना ताकि उन्हें जीत लूँ। सब के लिए मैं सब
कुछ बना ताकि हर मुमकिन तरीक़े से बाज़ को बचा
सकूँ। 23 जो कुछ भी करता हूँ अल्लाह की ख़ुशख़बरी
के वास्ते करता हूँ ताकि इस की बरकात में शरीक
हो जाऊँ।

24 क्या आप नहीं जानते कि स्टेडियम में दौड़ते तो
सब ही हैं, लेकिन इनआम एक ही शख़्स हासिल
करता है? चुनाँचे ऐसे दौड़ें कि आप ही जीतें।
25 खेलों में शरीक होने वाला हर शख़्स अपने आप
को सख़्त नज़्म-ओ-ज़ब्त का पाबन्द रखता है। वह
फ़ानी ताज पाने के लिए ऐसा करते हैं, लेकिन हम
ग़ैरफ़ानी ताज पाने के लिए। 26 चुनाँचे मैं हर वक़्त
मन्ज़िल-ए-मक़सूद को पेश-ए-नज़र रखते हुए दौड़ता
हूँ। और मैं इसी तरह बाक्सिंग भी करता हूँ, मैं हवा में
मुक्के नहीं मारता बल्कि निशाने को। 27 मैं अपने बदन
को मारता कूटता और इसे अपना ग़ुलाम बनाता हूँ,
ऐसा न हो कि दूसरों में मुनादी करके ख़ुद नामक़्बूल
ठहरूँ।

इस्राईल का इब्रतनाक तजरिबा

10 1 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आप इस बात
से नावाक़िफ़ रहें कि हमारे बापदादा सब
बादल के नीचे थे। वह सब समुन्दर में से गुज़रे। 2 उन
सब ने बादल और समुन्दर में मूसा का बपतिस्मा
लिया। 3 सब ने एक ही रुहानी ख़ुराक खाई 4 और
सब ने एक ही रुहानी पानी पिया। क्यूँकि मसीह
रुहानी चटान की सूरत में उन के साथ साथ चलता
रहा और वही उन सब को पानी पिलाता रहा। 5 इस
के बावुजूद उन में से बेशतर लोग अल्लाह को पसन्द
न आए, इस लिए वह रेगिस्तान में हलाक हो गए।

6 यह सब कुछ हमारी इब्रत के लिए वाक़े हुआ
ताकि हम उन लोगों की तरह बुरी चीज़ों की हवस न
करें। 7 उन में से बाज़ की तरह बुतपरस्त न बनें, जैसे
मुक़द्दस नविश्तों में लिखा है, “लोग खाने-पीने के
लिए बैठ गए और फिर उठ कर रंगरलियों में अपने

दिल बहलाने लगे।” 8 हम ज़िना भी न करें जैसे उन में
से बाज़ ने किया और नतीजे में एक ही दिन में 23,000
अफ़राद ढेर हो गए। 9 हम ख़ुदावन्द की आज़माइश
भी न करें जिस तरह उन में से बाज़ ने की और नतीजे
में साँपों से हलाक हुए। 10 और न बुड़बुड़ाएँ जिस
तरह उन में से बाज़ बुड़बुड़ाने लगे और नतीजे में
हलाक करने वाले फ़रिश्ते के हाथों मारे गए।
11 यह माजरे इब्रत की ख़ातिर उन पर वाक़े हुए और
हम अख़ीर ज़माने में रहने वालों की नसीहत के लिए
लिखे गए।
12 ग़रज़ जो समझता है कि वह मज़बूती से खड़ा
है, ख़बरदार रहे कि गर न पड़े। 13 आप सिर्फ़ ऐसी
आज़माइशों में पड़े हैं जो इन्सान के लिए आम होती
हैं। और अल्लाह वफ़ादार है। वह आप को आप की
ताक़त से ज़्यादा आज़माइश में नहीं पड़ने देगा। जब
आप आज़माइश में पड़ जाएंगे तो वह उस में से
निकलने की राह भी पैदा कर देगा ताकि आप उसे
बर्दाश्त कर सकें।

अशा-ए-रब्बानी और बुतपरस्ती में तज़ाद

14 ग़रज़ मेरे प्यारो, बुतपरस्ती से भागें। 15 मैं आप
को समझदार जान कर बात कर रहा हूँ। आप ख़ुद
मेरी इस बात का फ़ैसला करें। 16 जब हम अशा-ए-
रब्बानी के मौक़े पर बरकत के प्याले को बरकत दे
कर उस में से पीते हैं तो क्या हम यूँ मसीह के ख़ून में
शरीक नहीं होते? और जब हम रोटी तोड़ कर खाते हैं
तो क्या मसीह के बदन में शरीक नहीं होते? 17 रोटी
तो एक ही है, इस लिए हम जो बहुत से हैं एक ही
बदन हैं, क्यूँकि हम सब एक ही रोटी में शरीक होते
हैं।
18 बनी इस्राईल पर ग़ौर करें। क्या बैत-उल-मुक़द्दस
में क़ुर्बानियाँ खाने वाले क़ुर्बानगाह की रिफ़ाक़त में
शरीक नहीं होते? 19 क्या मैं यह कहना चाहता हूँ
कि बुतों के चढ़ावे की कोई हैसियत है? या कि बुत
की कोई हैसियत है? हरगिज़ नहीं। 20 मैं यह कहता
हूँ कि जो क़ुर्बानियाँ वह गुज़राँते हैं अल्लाह को नहीं
बल्कि शयातीन को गुज़राँते हैं। और मैं नहीं चाहता
कि आप शयातीन की रिफ़ाक़त में शरीक हों। 21 आप
ख़ुदावन्द के प्याले और साथ ही शयातीन के प्याले
से नहीं पी सकते। आप ख़ुदावन्द के रिफ़ाक़ती खाने
और साथ ही शयातीन के रिफ़ाक़ती खाने में शरीक
नहीं हो सकते। 22 या क्या हम अल्लाह की ग़ैरत को
उकसाना चाहते हैं? क्या हम उस से ताक़तवर हैं?

दूसरों के ज़मीर का लिहाज़ करना

23 सब कुछ रवा तो है, लेकिन सब कुछ मुफ़ीद
नहीं। सब कुछ जाइज़ तो है, लेकिन सब कुछ हमारी
तामीर-ओ-तरक़्क़ी का बाइस नहीं होता। 24 हर कोई
अपने ही फ़ाइदे की तलाश में न रहे बल्कि दूसरे के।
25 बाज़ार में जो कुछ बिकता है उसे खाएँ और
अपने ज़मीर को मुत्मइन करने की ख़ातिर पूछगछ
न करें, 26 क्यूँकि “ज़मीन और जो कुछ उस पर है
रब का है।”
27 अगर कोई ग़ैरईमानदार आप की दावत करे और
आप उस दावत को क़बूल कर लें तो आप के सामने
जो कुछ भी रखा जाए उसे खाएँ। अपने ज़मीर के
इत्मीनान के लिए तफ़्तीश न करें। 28 लेकिन अगर
कोई आप को बता दे, “यह बुतों का चढ़ावा है”
तो फिर उस शख़्स की ख़ातिर जिस ने आप को
आगाह किया है और ज़मीर की ख़ातिर उसे न खाएँ।
29 मतलब है अपने ज़मीर की ख़ातिर नहीं बल्कि
दूसरे के ज़मीर की ख़ातिर। क्यूँकि यह किस तरह
हो सकता है कि किसी दूसरे का ज़मीर मेरी आज़ादी
के बारे में फ़ैसला करे? 30 अगर मैं ख़ुदा का शुक्र
करके किसी खाने में शरीक होता हूँ तो फिर मुझे
क्यूँ बुरा कहा जाए? मैं तो उसे ख़ुदा का शुक्र करके
खाता हूँ।
31 चुनाँचे सब कुछ अल्लाह के जलाल की ख़ातिर
करें, ख़्वाह आप खाएँ, पिएँ या और कुछ करें।
32 किसी के लिए ठोकर का बाइस न बनें, न यहूदियों
के लिए, न यूनानियों के लिए और न अल्लाह की
जमाअत के लिए। 33 इसी तरह मैं भी सब को पसन्द

आने की हर मुमकिन कोशिश करता हूँ। मैं अपने ही फ़ाइदे के ख़याल में नहीं रहता बल्कि दूसरों के ताकि बहुतेरे नजात पाएँ।

11 1 मेरे नमूने पर चलें जिस तरह मैं मसीह के नमूने पर चलता हूँ।

इबादत में ख़वातीन का किरदार

2 शाबाश कि आप हर तरह से मुझे याद रखते हैं। आप ने रिवायात को यूँ मह्फ़ूज़ रखा है जिस तरह मैं ने उन्हें आप के सपुर्द किया था। 3 लेकिन मैं आप को एक और बात से आगाह करना चाहता हूँ। हर मर्द का सर मसीह है जबकि औरत का सर मर्द और मसीह का सर अल्लाह है। 4 अगर कोई मर्द सर ढाँक कर दुआ या नबुव्वत करे तो वह अपने सर की बेइज़्ज़ती करता है। 5 और अगर कोई ख़ातून नंगे सर दुआ या नबुव्वत करे तो वह अपने सर की बेइज़्ज़ती करती है, गोया वह सर मुंडी है। 6 जो औरत अपने सर पर दोपट्टा नहीं लेती वह टिंड करवाए। लेकिन अगर टिंड करवाना या सर मुंडवाना उस के लिए बेइज़्ज़ती का बाइस है तो फिर वह अपने सर को ज़रूर ढाँके। 7 लेकिन मर्द के लिए लाज़िम है कि वह अपने सर को न ढाँके क्यूँकि वह अल्लाह की सूरत और जलाल को मुनअकिस करता है। लेकिन औरत मर्द का जलाल मुनअकिस करती है, 8 क्यूँकि पहला मर्द औरत से नहीं निकला बल्कि औरत मर्द से निकली है। 9 मर्द को औरत के लिए ख़ल्क़ नहीं किया गया बल्कि औरत को मर्द के लिए। 10 इस वजह से औरत फ़रिश्तों को पेश-ए-नज़र रख कर अपने सर पर दोपट्टा ले जो उस पर इख़तियार का निशान है। 11 लेकिन याद रहे कि ख़ुदावन्द में न औरत मर्द के बग़ैर कुछ है और न मर्द औरत के बग़ैर। 12 क्यूँकि अगरचे इब्तिदा में औरत मर्द से निकली, लेकिन अब मर्द औरत ही से पैदा होता है। और हर शय अल्लाह से निकलती है।

13 आप ख़ुद फ़ैसला करें। क्या मुनासिब है कि कोई औरत अल्लाह के सामने नंगे सर दुआ करे? 14 क्या फ़ित्रत भी यह नहीं सिखाती कि लम्बे बाल मर्द की बेइज़्ज़ती का बाइस हैं 15 जबकि औरत के लम्बे बाल उस की इज़्ज़त का मूजिब हैं? क्यूँकि बाल उसे ढाँपने के लिए दिए गए हैं। 16 लेकिन इस सिलसिले में अगर कोई झगड़ने का शौक़ रखे तो जान ले कि न हमारा यह दस्तूर है, न अल्लाह की जमाअतों का।

अशा-ए-रब्बानी

17 मैं आप को एक और हिदायत देता हूँ। लेकिन इस सिलसिले में मेरे पास आप के लिए तारीफ़ी अल्फ़ाज़ नहीं, क्यूँकि आप का जमा होना आप की बेहतरी का बाइस नहीं होता बल्कि नुक़्सान का बाइस। 18 अव्वल तो मैं सुनता हूँ कि जब आप जमाअत की सूरत में इकट्ठे होते हैं तो आप के दरमियान पार्टीबाज़ी नज़र आती है। और किसी हद तक मुझे इस का यक़ीन भी है। 19 लाज़िम है कि आप के दरमियान मुख़्तलिफ़ पार्टियाँ नज़र आएँ ताकि आप में से वह ज़ाहिर हो जाएँ जो आज़माने के बाद भी सच्चे निकलें। 20 जब आप जमा होते हैं तो जो खाना आप खाते हैं उस का अशा-ए-रब्बानी से कोई ताल्लुक़ नहीं रहा। 21 क्यूँकि हर शख़्स दूसरों का इन्तिज़ार किए बग़ैर अपना खाना खाने लगता है। नतीजे में एक भूका रहता है जबकि दूसरे को नशा हो जाता है। 22 ताज्जुब है! क्या खाने-पीने के लिए आप के घर नहीं? या क्या आप अल्लाह की जमाअत को हक़ीर जान कर उन को जो ख़ाली हाथ आए हैं शर्मिन्दा करना चाहते हैं? मैं क्या कहूँ? क्या आप को शाबाश दूँ? इस में मैं आप को शाबाश नहीं दे सकता।

23 क्यूँकि जो कुछ मैं ने आप के सपुर्द किया है वह मुझे ख़ुदावन्द ही से मिला है। जिस रात ख़ुदावन्द ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया गया उस ने रोटी ले कर 24 शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके कहा, “यह मेरा बदन है जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो।” 25 इसी तरह उस ने खाने के बाद प्याला ले कर कहा,

“मै का यह प्याला वह नया अह्द है जो मेरे ख़ून के
ज़रीए क़ाइम किया जाता है। जब कभी इसे पियो
तो मुझे याद करने के लिए पियो।” 26 क्यूँकि जब
भी आप यह रोटी खाते और यह प्याला पीते हैं तो
ख़ुदावन्द की मौत का एलान करते हैं, जब तक वह
वापस न आए।

27 चुनाँचे जो नालाइक़ तौर पर ख़ुदावन्द की रोटी
खाए और उस का प्याला पिए वह ख़ुदावन्द के
बदन और ख़ून का गुनाह करता है और क़ुसूरवार
ठहरेगा। 28 हर शख़्स अपने आप को परख कर
ही इस रोटी में से खाए और प्याले में से पिए।
29 जो रोटी खाते और प्याला पीते वक़्त ख़ुदावन्द
के बदन का एहतिराम नहीं करता वह अपने आप
पर अल्लाह की अदालत लाता है। 30 इसी लिए आप
के दरमियान बहुतेरे कमज़ोर और बीमार हैं बल्कि
बहुत से मौत की नींद सो चुके हैं। 31 अगर हम अपने
आप को जाँचते तो अल्लाह की अदालत से बचे रहते।
32 लेकिन ख़ुदावन्द हमारी अदालत करने से हमारी
तर्बियत करता है ताकि हम दुनिया के साथ मुजरिम
न ठहरें।

33 ग़रज़ मेरे भाइयो, जब आप खाने के लिए जमा
होते हैं तो एक दूसरे का इन्तिज़ार करें। 34 अगर
किसी को भूक लगी हो तो वह अपने घर में ही खाना
खा ले ताकि आप का जमा होना आप की अदालत
का बाइस न ठहरे। दीगर हिदायात मैं आप को उस
वक़्त दूँगा जब आप के पास आऊँगा।

एक रूह और मुख़्तलिफ़ नेमतें

12 1 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आप रुहानी
नेमतों के बारे में नावाक़िफ़ रहें। 2 आप
जानते हैं कि ईमान लाने से पेशतर आप को बार
बार बहकाया और गूँगे बुतों की तरफ़ खैंचा जाता
था। 3 इसी के पेश-ए-नज़र मैं आप को आगाह करता
हूँ कि अल्लाह के रूह की हिदायत से बोलने वाला
कभी नहीं कहेगा, “ईसा पर लानत।” और रूह-उल-
क़ुद्स की हिदायत से बोलने वाले के सिवा कोई नहीं
कहेगा, “ईसा ख़ुदावन्द है।”

4 गो तरह तरह की नेमतें होती हैं, लेकिन रूह एक
ही है। 5 तरह तरह की ख़िदमतें होती हैं, लेकिन
ख़ुदावन्द एक ही है। 6 अल्लाह अपनी क़ुदरत का
इज़हार मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से करता है, लेकिन ख़ुदा
एक ही है जो सब में हर तरह का काम करता है।
7 हम में से हर एक में रूह-उल-क़ुद्स का इज़हार
किसी नेमत से होता है। यह नेमतें इस लिए दी जाती
हैं ताकि हम एक दूसरे की मदद करें। 8 एक को रूह-
उल-क़ुद्स हिक्मत का कलाम अता करता है, दूसरे
को वही रूह इल्म-ओ-इर्फ़ान का कलाम। 9 तीसरे
को वही रूह पुख़्ता ईमान देता है और चौथे को वही
एक रूह शिफ़ा देने की नेमतें। 10 वह एक को मोजिज़े
करने की ताक़त देता है, दूसरे को नबुव्वत करने
की सलाहियत और तीसरे को मुख़्तलिफ़ रूहों में
इम्तियाज़ करने की नेमत। एक को उस से ग़ैरज़बानें
बोलने की नेमत मिलती है और दूसरे को इन का
तर्जुमा करने की। 11 वही एक रूह यह तमाम नेमतें
तक़्सीम करता है। और वही फ़ैसला करता है कि
किस को क्या नेमत मिलनी है।

एक जिस्म और मुख़्तलिफ़ आज़ा

12 इन्सानी जिस्म के बहुत से आज़ा होते हैं, लेकिन
यह तमाम आज़ा एक ही बदन को तश्कील देते हैं।
मसीह का बदन भी ऐसा है। 13 ख़्वाह हम यहूदी थे या
यूनानी, ग़ुलाम थे या आज़ाद, बपतिस्मे से हम सब
को एक ही रूह की मारिफ़त एक ही बदन में शामिल
किया गया है, हम सब को एक ही रूह पिलाया गया
है।

14 बदन के बहुत से हिस्से होते हैं, न सिर्फ़ एक।
15 फ़र्ज़ करें कि पाँओ कहे, “मैं हाथ नहीं हूँ इस लिए
बदन का हिस्सा नहीं।” क्या यह कहने पर उस का
बदन से ताल्लुक़ ख़त्म हो जाएगा? 16 या फ़र्ज़ करें
कि कान कहे, “मैं आँख नहीं हूँ इस लिए बदन का
हिस्सा नहीं।” क्या यह कहने पर उस का बदन से

नाता टूट जाएगा? 17 अगर पूरा जिस्म आँख ही होता
तो फिर सुनने की सलाहियत कहाँ होती? अगर सारा
बदन कान ही होता तो फिर सूँघने का क्या बनता?
18 लेकिन अल्लाह ने जिस्म के मुख़्तलिफ़ आज़ा बना
कर हर एक को वहाँ लगाया जहाँ वह चाहता था।
19 अगर एक ही उज़ू पूरा जिस्म होता तो फिर यह
किस क़िस्म का जिस्म होता? 20 नहीं, बहुत से आज़ा
होते हैं, लेकिन जिस्म एक ही है।

21 आँख हाथ से नहीं कह सकती, "मुझे तेरी
ज़रूरत नहीं," न सर पाँओ से कह सकता है, "मुझे
तुम्हारी ज़रूरत नहीं।" 22 बल्कि अगर देखा जाए
तो अक्सर ऐसा होता है कि जिस्म के जो आज़ा
ज़्यादा कमज़ोर लगते हैं उन की ज़्यादा ज़रूरत होती
है। 23 वह आज़ा जिन्हें हम कम इज़्ज़त के लाइक़
समझते हैं उन्हें हम ज़्यादा इज़्ज़त के साथ ढाँप लेते
हैं, और वह आज़ा जिन्हें हम शर्म से छुपा कर रखते
हैं उन ही का हम ज़्यादा एहतिराम करते हैं। 24 इस के
बरअक्स हमारे इज़्ज़तदार आज़ा को इस की ज़रूरत
ही नहीं होती कि हम उन का ख़ास एहतिराम करें।
लेकिन अल्लाह ने जिस्म को इस तरह तर्तीब दिया
कि उस ने कमक़दर आज़ा को ज़्यादा इज़्ज़तदार
ठहराया, 25 ताकि जिस्म के आज़ा में तफ़रिक़ा न हो
बल्कि वह एक दूसरे की फ़िक्र करें। 26 अगर एक
उज़ू दुख में हो तो उस के साथ दीगर तमाम आज़ा भी
दुख महसूस करते हैं। अगर एक उज़ू सरफ़राज़ हो
जाए तो उस के साथ बाक़ी तमाम आज़ा भी मसरूर
होते हैं।

27 आप सब मिल कर मसीह का बदन हैं और
इन्फ़िरादी तौर पर उस के मुख़्तलिफ़ आज़ा। 28 और
अल्लाह ने अपनी जमाअत में पहले रसूल, दूसरे नबी
और तीसरे उस्ताद मुक़र्रर किए हैं। फिर उस ने ऐसे
लोग भी मुक़र्रर किए हैं जो मोजिज़े करते, शिफ़ा
देते, दूसरों की मदद करते, इन्तिज़ाम चलाते और
मुख़्तलिफ़ क़िस्म की ग़ैरज़बानें बोलते हैं। 29 क्या
सब रसूल हैं? क्या सब नबी हैं? क्या सब उस्ताद
हैं? क्या सब मोजिज़े करते हैं? 30 क्या सब को शिफ़ा
देने की नेमतें हासिल हैं? क्या सब ग़ैरज़बानें बोलते
हैं? क्या सब इन का तर्जुमा करते हैं? 31 लेकिन आप
उन नेमतों की तलाश में रहें जो अफ़ज़ल हैं।

अब मैं आप को इस से कहीं उम्दा राह बताता हूँ।

मुहब्बत

13 1 अगर मैं इन्सानों और फ़रिश्तों की ज़बानें
बोलूँ, लेकिन मुहब्बत न रखूँ तो फिर मैं
बस गूँजता हुआ घड़ियाल या ठनठनाती हुई झाँझ
ही हूँ। 2 अगर मेरी नबुव्वत की नेमत हो और मुझे
तमाम भेदों और हर इल्म से वाक़फ़ियत हो, साथ
ही मेरा ऐसा ईमान हो कि पहाड़ों को खिसका सकूँ,
लेकिन मेरा दिल मुहब्बत से ख़ाली हो तो मैं कुछ भी
नहीं। 3 अगर मैं अपना सारा माल ग़रीबों में तक़्सीम
कर दूँ बल्कि अपना बदन जलाए जाने के लिए दे दूँ,
लेकिन मेरा दिल मुहब्बत से ख़ाली हो तो मुझे कुछ
फ़ाइदा नहीं। 4 मुहब्बत सब्र से काम लेती है, मुहब्बत
मेहरबान है। न यह हसद करती है न डींगें मारती है।
यह फूलती भी नहीं।

5 मुहब्बत बदतमीज़ी नहीं करती न अपने ही फ़ाइदे
की तलाश में रहती है। यह जल्दी से ग़ुस्से में नहीं
आ जाती और दूसरों की ग़लतियों का रिकार्ड नहीं
रखती। 6 यह नाइन्साफ़ी देख कर ख़ुश नहीं होती
बल्कि सच्चाई के ग़ालिब आने पर ही ख़ुशी मनाती
है। 7 यह हमेशा दूसरों की कमज़ोरियाँ बर्दाश्त करती
है, हमेशा एतिमाद करती है, हमेशा उम्मीद रखती है,
हमेशा साबितक़दम रहती है।

8 मुहब्बत कभी ख़त्म नहीं होती। इस के मुक़ाबले
में नबुव्वतें ख़त्म हो जाएँगी, ग़ैरज़बानें जाती रहेंगी,
इल्म मिट जाएगा। 9 क्यूँकि इस वक़्त हमारा इल्म
नामुकम्मल है और हमारी नबुव्वत सब कुछ ज़ाहिर
नहीं करती। 10 लेकिन जब वह कुछ आएगा जो
कामिल है तो यह अधूरी चीज़ें जाती रहेंगी। 11 जब मैं
बच्चा था तो बच्चे की तरह बोलता, बच्चे की सी सोच
रखता और बच्चे की सी समझ से काम लेता था।
लेकिन अब मैं बालिग़ हूँ, इस लिए मैं ने बच्चे का

सा अन्दाज़ छोड़ दिया है। 12 इस वक़्त हमें आईने
में धुन्दला सा दिखाई देता है, लेकिन उस वक़्त हम
रू-ब-रू देखेंगे। अब मैं जुज़्वी तौर पर जानता हूँ,
लेकिन उस वक़्त कामिल तौर से जान लूँगा, ऐसे ही
जैसे अल्लाह ने मुझे पहले से जान लिया है।
13 ग़रज़ ईमान, उम्मीद और मुहब्बत तीनों क़ाइम
रहते हैं, लेकिन इन में अफ़्ज़ल मुहब्बत है।

नबुव्वत और ग़ैरज़बानें

14 1 मुहब्बत का दामन थामे रखें। लेकिन
साथ ही रुहानी नेमतों को सरगर्मी से
इस्तेमाल में लाएँ, ख़ुसूसन नबुव्वत की नेमत
को। 2 ग़ैरज़बान बोलने वाला लोगों से नहीं बल्कि
अल्लाह से बात करता है। कोई उस की बात नहीं
समझता क्यूँकि वह रूह में भेद की बातें करता है।
3 इस के बरअक्स नबुव्वत करने वाला लोगों से
ऐसी बातें करता है जो उन की तामीर-ओ-तरक़्क़ी,
हौसलाअफ़्ज़ाई और तसल्ली का बाइस बनती हैं।
4 ग़ैरज़बान बोलने वाला अपनी तामीर-ओ-तरक़्क़ी
करता है जबकि नबुव्वत करने वाला जमाअत की।
5 मैं चाहता हूँ कि आप सब ग़ैरज़बानें बोलें, लेकिन
इस से ज़्यादा यह ख़्वाहिश रखता हूँ कि आप
नबुव्वत करें। नबुव्वत करने वाला ग़ैरज़बानें बोलने
वाले से अहम है। हाँ, ग़ैरज़बानें बोलने वाला भी
अहम है बशर्तेकि अपनी ज़बान का तर्जुमा करे,
क्यूँकि इस से ख़ुदा की जमाअत की तामीर-ओ-
तरक़्क़ी होती है।
6 भाइयो, अगर मैं आप के पास आ कर ग़ैरज़बानें
बोलूँ, लेकिन मुकाशफ़े, इल्म, नबुव्वत और तालीम
की कोई बात न करूँ तो आप को क्या फ़ाइदा होगा?
7 बेजान साज़ों पर ग़ौर करने से भी यही बात सामने
आती है। अगर बाँसरी या सरोद को किसी ख़ास सुर
के मुताबिक़ न बजाया जाए तो फिर सुनने वाले किस
तरह पहचान सकेंगे कि इन पर क्या क्या पेश किया
जा रहा है? 8 इसी तरह अगर बिगुल की आवाज़ जंग
के लिए तय्यार हो जाने के लिए साफ़ तौर से न बजे
तो क्या फ़ौजी कमरबस्ता हो जाएंगे? 9 अगर आप
साफ़ साफ़ बात न करें तो आप की हालत भी ऐसी
ही होगी। फिर आप की बात कौन समझेगा? क्यूँकि
आप लोगों से नहीं बल्कि हवा से बातें करेंगे। 10 इस
दुनिया में बहुत ज़्यादा ज़बानें बोली जाती हैं और
इन में से कोई भी नहीं जो बेमानी हो। 11 अगर मैं
किसी ज़बान से वाक़िफ़ नहीं तो मैं उस ज़बान में
बोलने वाले के नज़्दीक अजनबी ठहरूँगा और वह
मेरे नज़्दीक। 12 यह उसूल आप पर भी लागू होता है।
चूँकि आप रुहानी नेमतों के लिए तड़पते हैं तो फिर
ख़ासकर उन नेमतों में माहिर बनने की कोशिश करें
जो ख़ुदा की जमाअत को तामीर करती हैं।
13 चुनाँचे ग़ैरज़बान बोलने वाला दुआ करे कि इस
का तर्जुमा भी कर सके। 14 क्यूँकि अगर मैं ग़ैरज़बान
में दुआ करूँ तो मेरी रूह तो दुआ करती है मगर मेरी
अक़्ल बेअमल रहती है। 15 तो फिर क्या करूँ? मैं
रूह में दुआ करूँगा, लेकिन अक़्ल को भी इस्तेमाल
करूँगा। मैं रूह में हम्द-ओ-सना करूँगा, लेकिन
अक़्ल को भी इस्तेमाल में लाऊँगा। 16 अगर आप
सिर्फ़ रूह में हम्द-ओ-सना करें तो हाज़िरीन में से जो
आप की बात नहीं समझता वह किस तरह आप की
शुक्रगुज़ारी पर "आमीन" कह सकेगा? उसे तो आप
की बातों की समझ ही नहीं आई। 17 बेशक आप
अच्छी तरह ख़ुदा का शुक्र कर रहे होंगे, लेकिन इस
से दूसरे शख़्स की तामीर-ओ-तरक़्क़ी नहीं होगी।
18 मैं ख़ुदा का शुक्र करता हूँ कि आप सब की
निस्बत ज़्यादा ग़ैरज़बानों में बात करता हूँ। 19 फिर
भी मैं ख़ुदा की जमाअत में ऐसी बातें पेश करना
चाहता हूँ जो दूसरे समझ सकें और जिन से वह
तर्बियत हासिल कर सकें। क्यूँकि ग़ैरज़बानों में बोली
गई बेशुमार बातों की निस्बत पाँच तर्बियत देने वाले
अल्फ़ाज़ कहीं बेहतर हैं।
20 भाइयो, बच्चों जैसी सोच से बाज़ आएँ। बुराई
के लिहाज़ से तो ज़रूर बच्चे बने रहें, लेकिन समझ
में बालिग़ बन जाएँ। 21 शरीअत में लिखा है, "रब
फ़रमाता है कि मैं ग़ैरज़बानों और अजनबियों के होंटों

की मारिफ़त इस क़ौम से बात करूँगा। लेकिन वह फिर भी मेरी नहीं सुनेंगे।” 22 इस से ज़ाहिर होता है कि ग़ैरज़बानें ईमानदारों के लिए इम्तियाज़ी निशान नहीं होतीं बल्कि ग़ैरईमानदारों के लिए। इस के बरअक्स नबुव्वत ग़ैरईमानदारों के लिए इम्तियाज़ी निशान नहीं होती बल्कि ईमानदारों के लिए।

23 अब फ़र्ज़ करें कि ईमानदार एक जगह जमा हैं और तमाम हाज़िरीन ग़ैरज़बानें बोल रहे हैं। इसी अस्ना में ग़ैरज़बान को न समझने वाले या ग़ैरईमानदार आ शामिल होते हैं। आप को इस हालत में देख कर क्या वह आप को दीवाना क़रार नहीं देंगे? 24 इस के मुक़ाबले में अगर तमाम लोग नबुव्वत कर रहे हों और कोई ग़ैरईमानदार अन्दर आए तो क्या होगा? वह सब उसे क़ाइल कर लेंगे कि गुनाहगार है और सब उसे परख लेंगे। 25 यूँ उस के दिल की पोशीदा बातें ज़ाहिर हो जाएँगी, वह गिर कर अल्लाह को सिज्दा करेगा और तस्लीम करेगा कि फ़िलहक़ीक़त अल्लाह आप के दरमियान मौजूद है।

जमाअत में तर्तीब की ज़रूरत

26 भाइयो, फिर क्या होना चाहिए? जब आप जमा होते हैं तो हर एक के पास कोई गीत या तालीम या मुकाशफ़ा या ग़ैरज़बान या इस का तर्जुमा हो। इन सब का मक़्सद ख़ुदा की जमाअत की तामीर-ओ-तरक़्क़ी हो। 27 ग़ैरज़बान में बोलते वक़्त सिर्फ़ दो या ज़्यादा से ज़्यादा तीन अश्ख़ास बोलें और वह भी बारी बारी। साथ ही कोई उन का तर्जुमा भी करे। 28 अगर कोई तर्जुमा करने वाला न हो तो ग़ैरज़बान बोलने वाला जमाअत में ख़ामोश रहे, अलबत्ता उसे अपने आप से और अल्लाह से बात करने की आज़ादी है। 29 नबियों में से दो या तीन नबुव्वत करें और दूसरे उन की बातों की सेहत को परखें। 30 अगर इस दौरान किसी बैठे हुए शख़्स को कोई मुकाशफ़ा मिले तो पहला शख़्स ख़ामोश हो जाए। 31 क्यूँकि आप सब बारी बारी नबुव्वत कर सकते हैं ताकि तमाम लोग सीखें और उन की हौसलाअफ़्ज़ाई हो। 32 नबियों की रूहें नबियों के ताबे रहती हैं, 33 क्यूँकि अल्लाह बेतर्तीबी का नहीं बल्कि सलामती का ख़ुदा है।

जैसा मुक़द्दसीन की तमाम जमाअतों का दस्तूर है 34 ख़वातीन जमाअत में ख़ामोश रहें। उन्हें बोलने की इजाज़त नहीं, बल्कि वह फ़रमाँबरदार रहें। शरीअत भी यही फ़रमाती है। 35 अगर वह कुछ सीखना चाहें तो अपने घर पर अपने शौहर से पूछ लें, क्यूँकि औरत का ख़ुदा की जमाअत में बोलना शर्म की बात है।

36 क्या अल्लाह का कलाम आप में से निकला है, या क्या वह सिर्फ़ आप ही तक पहुँचा है? 37 अगर कोई ख़याल करे कि मैं नबी हूँ या ख़ास रुहानी हैसियत रखता हूँ तो वह जान ले कि जो कुछ मैं आप को लिख रहा हूँ वह ख़ुदावन्द का हुक्म है। 38 जो यह नज़रअन्दाज़ करता है उसे ख़ुद भी नज़रअन्दाज़ किया जाएगा।

39 ग़रज़ भाइयो, नबुव्वत करने के लिए तड़पते रहें, अलबत्ता किसी को ग़ैरज़बानें बोलने से न रोकें। 40 लेकिन सब कुछ शाइस्तगी और तर्तीब से अमल में आए।

मसीह का जी उठना

15 1 भाइयो, मैं आप की तवज्जुह उस ख़ुशख़बरी की तरफ़ दिलाता हूँ जो मैं ने आप को सुनाई, वही ख़ुशख़बरी जिसे आप ने क़बूल किया और जिस पर आप क़ाइम भी हैं। 2 इसी पैग़ाम के वसीले से आप को नजात मिलती है। शर्त यह है कि आप वह बातें जूँ की तूँ थामे रखें जिस तरह मैं ने आप तक पहुँचाई हैं। बेशक यह बात इस पर मुन्हसिर है कि आप का ईमान लाना बेमक़्सद नहीं था।

3 क्यूँकि मैं ने इस पर ख़ास ज़ोर दिया कि वही कुछ आप के सपुर्द करूँ जो मुझे भी मिला है। यह कि मसीह ने पाक नविश्तों के मुताबिक़ हमारे गुनाहों की ख़ातिर अपनी जान दी, 4 फिर वह दफ़न हुआ और तीसरे दिन पाक नविश्तों के मुताबिक़ जी उठा। 5 वह पतरस को दिखाई दिया, फिर बारह शागिर्दों

को। 6 इस के बाद वह एक ही वक़्त पाँच सौ से
ज़्यादा भाइयों पर ज़ाहिर हुआ। उन में से बेशतर अब
तक ज़िन्दा हैं अगरचे चन्द एक इन्तिक़ाल कर चुके
हैं। 7 फिर याक़ूब ने उसे देखा, फिर तमाम रसूलों ने।
8 और सब के बाद वह मुझ पर भी ज़ाहिर हुआ, मुझ
पर जो गोया क़बल अज़ वक़्त पैदा हुआ। 9 क्यूँकि
रसूलों में मेरा दर्जा सब से छोटा है, बल्कि मैं तो
रसूल कहलाने के भी लाइक़ नहीं, इस लिए कि मैं ने
अल्लाह की जमाअत को ईज़ा पहुँचाई। 10 लेकिन मैं
जो कुछ हूँ अल्लाह के फ़ज़्ल ही से हूँ। और जो फ़ज़्ल
उस ने मुझ पर किया वह बेअसर न रहा, क्यूँकि मैं
ने उन सब से ज़्यादा जाँफ़िशानी से काम किया है।
अलबत्ता यह काम मैं ने ख़ुद नहीं बल्कि अल्लाह के
फ़ज़्ल ने किया है जो मेरे साथ था। 11 ख़ैर, यह काम मैं
ने किया या उन्हों ने, हम सब उसी पैग़ाम की मुनादी
करते हैं जिस पर आप ईमान लाए हैं।

जी उठने पर एतिराज़

12 अब मुझे यह बताएँ, हम तो मुनादी करते हैं कि
मसीह मुर्दों में से जी उठा है। तो फिर आप में से कुछ
लोग कैसे कह सकते हैं कि मुर्दे जी नहीं उठते?
13 अगर मुर्दे जी नहीं उठते तो मतलब यह हुआ कि
मसीह भी नहीं जी उठा। 14 और अगर मसीह जी नहीं
उठा तो फिर हमारी मुनादी अबस होती और आप का
ईमान लाना भी बेफ़ाइदा होता। 15 नीज़ हम अल्लाह के
बारे में झूटे गवाह साबित होते। क्यूँकि हम गवाही
देते हैं कि अल्लाह ने मसीह को ज़िन्दा किया जबकि
अगर वाक़ई मुर्दे नहीं जी उठते तो वह भी ज़िन्दा नहीं
हुआ। 16 ग़रज़ अगर मुर्दे जी नहीं उठते तो फिर मसीह
भी नहीं जी उठा। 17 और अगर मसीह नहीं जी उठा
तो आप का ईमान बेफ़ाइदा है और आप अब तक
अपने गुनाहों में गिरिफ़्तार हैं। 18 हाँ, इस के मुताबिक़
जिन्हों ने मसीह में होते हुए इन्तिक़ाल किया है वह
सब हलाक हो गए हैं। 19 चुनाँचे अगर मसीह पर
हमारी उम्मीद सिर्फ़ इसी ज़िन्दगी तक महदूद है तो
हम इन्सानों में सब से ज़्यादा क़ाबिल-ए-रहम हैं।

मसीह वाक़ई जी उठा है

20 लेकिन मसीह वाक़ई मुर्दों में से जी उठा है। वह
इन्तिक़ाल किए हुओं की फ़सल का पहला फल है।
21 चूँकि इन्सान के वसीले से मौत आई, इस लिए
इन्सान ही के वसीले से मुर्दों के जी उठने की भी
राह खुली। 22 जिस तरह सब इस लिए मरते हैं कि
वह आदम के फ़र्ज़न्द हैं उसी तरह सब ज़िन्दा किए
जाएंगे जो मसीह के हैं। 23 लेकिन जी उठने की एक
तर्तीब है। मसीह तो फ़सल के पहले फल की हैसियत
से जी उठ चुका है जबकि उस के लोग उस वक़्त जी
उठेंगे जब वह वापस आएगा। 24 इस के बाद ख़ातमा
होगा। तब हर हुकूमत, इख़तियार और क़ुव्वत को
नेस्त करके वह बादशाही को ख़ुदा बाप के हवाले
कर देगा। 25 क्यूँकि लाज़िम है कि मसीह उस वक़्त
तक हुकूमत करे जब तक अल्लाह तमाम दुश्मनों को
उस के पाँओ के नीचे न कर दे। 26 आख़िरी दुश्मन
जिसे नेस्त किया जाएगा मौत होगी। 27 क्यूँकि अल्लाह
के बारे में कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, "उस ने सब
कुछ उस (यानी मसीह) के पाँओ के नीचे कर दिया।"
जब कहा गया है कि सब कुछ मसीह के मातहत कर
दिया गया है, तो ज़ाहिर है कि इस में अल्लाह शामिल
नहीं जिस ने सब कुछ मसीह के मातहत किया है।
28 जब सब कुछ मसीह के मातहत कर दिया गया
तब फ़र्ज़न्द ख़ुद भी उसी के मातहत हो जाएगा जिस
ने सब कुछ उस के मातहत किया। यूँ अल्लाह सब में
सब कुछ होगा।

जी उठने के पेश-ए-नज़र ज़िन्दगी गुज़ारना

29 अगर मुर्दे वाक़ई जी नहीं उठते तो फिर वह लोग
क्या करेंगे जो मुर्दों की ख़ातिर बपतिस्मा लेते हैं?
अगर मुर्दे जी नहीं उठेंगे तो फिर वह उन की ख़ातिर
क्यूँ बपतिस्मा लेते हैं? 30 और हम भी हर वक़्त
अपनी जान ख़तरे में क्यूँ डाले हुए हैं? 31 भाइयो,
मैं रोज़ाना मरता हूँ। यह बात उतनी ही यक़ीनी है
जितनी यह कि आप हमारे ख़ुदावन्द मसीह ईसा में

मेरा फ़ख़र हैं। 32 अगर मैं सिर्फ़ इसी ज़िन्दगी की
उम्मीद रखते हुए इफ़िसुस में वहशी दरिन्दों से लड़ा
तो मुझे क्या फ़ाइदा हुआ? अगर मुर्दे जी नहीं उठते
तो इस क़ौल के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना बेहतर
होगा कि "आओ, हम खाएँ पिएँ, क्यूँकि कल तो
मर ही जाना है।"
33 फ़रेब न खाएँ, बुरी सोह्बत अच्छी आदतों को
बिगाड़ देती है। 34 पूरे तौर पर होश में आएँ और गुनाह
न करें। आप में से बाज़ ऐसे हैं जो अल्लाह के बारे में
कुछ नहीं जानते। यह बात मैं आप को शर्म दिलाने
के लिए कहता हूँ।

मुर्दे किस तरह जी उठेंगे

35 शायद कोई सवाल उठाए, "मुर्दे किस तरह जी
उठते हैं? और जी उठने के बाद उन का जिस्म कैसा
होगा?" 36 भई, अक़्ल से काम लें। जो बीज आप
बोते हैं वह उस वक़्त तक नहीं उगता जब तक कि
मर न जाए। 37 जो आप बोते हैं वह वही पौदा नहीं
है जो बाद में उगेगा बल्कि महज़ एक नंगा सा दाना
है, ख़्वाह गन्दुम का हो या किसी और चीज़ का।
38 लेकिन अल्लाह उसे ऐसा जिस्म देता है जैसा वह
मुनासिब समझता है। हर क़िस्म के बीज को वह उस
का ख़ास जिस्म अता करता है।
39 तमाम जानदारों को एक जैसा जिस्म नहीं मिला
बल्कि इन्सानों को और क़िस्म का, मवेशियों को
और क़िस्म का, परिन्दों को और क़िस्म का, और
मछलियों को और क़िस्म का।
40 इस के इलावा आसमानी जिस्म भी हैं और
ज़मीनी जिस्म भी। आसमानी जिस्मों की शान और
है और ज़मीनी जिस्मों की शान और। 41 सूरज की
शान और है, चाँद की शान और, और सितारों की
शान और, बल्कि एक सितारा शान में दूसरे सितारे
से फ़र्क़ है।
42 मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। जिस्म फ़ानी
हालत में बोया जाता है और लाफ़ानी हालत में जी
उठता है। 43 वह ज़लील हालत में बोया जाता है और
जलाली हालत में जी उठता है। वह कमज़ोर हालत
में बोया जाता है और क़वी हालत में जी उठता है।
44 फ़ित्रती जिस्म बोया जाता है और रुहानी जिस्म जी
उठता है। जहाँ फ़ित्रती जिस्म है वहाँ रुहानी जिस्म
भी होता है। 45 पाक नविश्तों में भी लिखा है कि
पहले इन्सान आदम में जान आ गई। लेकिन आख़िरी
आदम ज़िन्दा करने वाली रूह बना। 46 रुहानी जिस्म
पहले नहीं था बल्कि फ़ित्रती जिस्म, फिर रुहानी
जिस्म हुआ। 47 पहला इन्सान ज़मीन की मिट्टी से बना
था, लेकिन दूसरा आसमान से आया। 48 जैसा पहला
ख़ाकी इन्सान था वैसे ही दीगर ख़ाकी इन्सान भी हैं,
और जैसा आसमान से आया हुआ इन्सान है वैसे ही
दीगर आसमानी इन्सान भी हैं। 49 यूँ हम इस वक़्त
ख़ाकी इन्सान की शक्ल-ओ-सूरत रखते हैं जबकि
हम उस वक़्त आसमानी इन्सान की शक्ल-ओ-सूरत
रखेंगे।

मौत पर फ़त्ह

50 भाइयो, मैं यह कहना चाहता हूँ कि ख़ाकी
इन्सान का मौजूदा जिस्म अल्लाह की बादशाही को
मीरास में नहीं पा सकता। जो कुछ फ़ानी है वह
लाफ़ानी चीज़ों को मीरास में नहीं पा सकता।
51 देखो मैं आप को एक भेद बताता हूँ। हम सब
वफ़ात नहीं पाएँगे, लेकिन सब ही बदल जाएंगे।
52 और यह अचानक, आँख झपकते में, आख़िरी
बिगुल बजते ही रूनुमा होगा। क्यूँकि बिगुल बजने
पर मुर्दे लाफ़ानी हालत में जी उठेंगे और हम बदल
जाएंगे। 53 क्यूँकि लाज़िम है कि यह फ़ानी जिस्म
बक़ा का लिबास पहन ले और मरने वाला जिस्म
अबदी ज़िन्दगी का। 54 जब इस फ़ानी और मरने वाले
जिस्म ने बक़ा और अबदी ज़िन्दगी का लिबास पहन
लिया होगा तो फिर वह कलाम पूरा होगा जो पाक
नविश्तों में लिखा है कि

"मौत इलाही फ़त्ह का लुक़्मा हो गई है।
55 ऐ मौत, तेरी फ़त्ह कहाँ रही?
ए मौत, तेरा डंक कहाँ रहा?"

56 मौत का डंक गुनाह है और गुनाह शरीअत से
तक़वियत पाता है। 57 लेकिन ख़ुदा का शुक्र है जो
हमें हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के वसीले से फ़त्ह
बख़्शता है।

58 ग़रज़, मेरे प्यारे भाइयो, मज़बूत बने रहें। कोई
चीज़ आप को डाँवाँडोल न कर दे। हमेशा ख़ुदावन्द
की ख़िदमत जाँफ़िशानी से करें, यह जानते हुए कि
ख़ुदावन्द के लिए आप की मेहनत-मशक़्क़त रायगाँ
नहीं जाएगी।

यरूशलम की जमाअत के लिए चन्दा

16 1 रही चन्दे की बात जो यरूशलम के
मुक़द्दसीन के लिए जमा किया जा रहा है
तो उसी हिदायत पर अमल करें जो मैं गलतिया की
जमाअतों को दे चुका हूँ। 2 हर इत्वार को आप में
से हर कोई अपने कमाए हुए पैसों में से कुछ इस
चन्दे के लिए मख़्सूस करके अपने पास रख छोड़े।
फिर मेरे आने पर हदियाजात जमा करने की ज़रूरत
नहीं पड़ेगी। 3 जब मैं आऊँगा तो ऐसे अफ़राद को
जो आप के नज़्दीक क़ाबिल-ए-एतिमाद हैं ख़ुतूत दे
कर यरूशलम भेजूँगा ताकि वह आप का हदिया वहाँ
तक पहुँचा दें। 4 अगर मुनासिब हो कि मैं भी जाऊँ
तो वह मेरे साथ जाएंगे।

5 मैं मकिदुनिया से हो कर आप के पास आऊँगा
क्यूँकि मकिदुनिया में से सफ़र करने का इरादा रखता
हूँ। 6 शायद आप के पास थोड़े अर्से के लिए ठहरूँ,
लेकिन यह भी मुमकिन है कि सर्दियों का मौसम आप
ही के साथ काटूँ ताकि मेरे बाद के सफ़र के लिए
आप मेरी मदद कर सकें। 7 मैं नहीं चाहता कि इस
दफ़ा मुख़्तसर मुलाक़ात के बाद चलता बनूँ, बल्कि
मेरी ख़्वाहिश है कि कुछ वक़्त आप के साथ गुज़ारूँ।
शर्त यह है कि ख़ुदावन्द मुझे इजाज़त दे।

8 लेकिन ईद-ए-पन्तिकुस्त तक मैं इफ़िसुस में ही
ठहरूँगा, 9 क्यूँकि यहाँ मेरे सामने मुअस्सिर काम के
लिए एक बड़ा दरवाज़ा खुल गया है और साथ ही
बहुत से मुख़ालिफ़ भी पैदा हो गए हैं।

10 अगर तीमुथियुस आए तो इस का ख़याल रखें
कि वह बिलाख़ौफ़ आप के पास रह सके। मेरी तरह
वह भी ख़ुदावन्द के खेत में फ़सल काट रहा है।
11 इस लिए कोई उसे हक़ीर न जाने। उसे सलामती
से सफ़र पर रवाना करें ताकि वह मुझ तक पहुँचे,
क्यूँकि मैं और दीगर भाई उस के मुन्तज़िर हैं।

12 भाई अपुल्लोस की मैं ने बड़ी हौसलाअफ़्ज़ाई की
है कि वह दीगर भाइयों के साथ आप के पास आए,
लेकिन अल्लाह को क़तअन मन्ज़ूर न था। ताहम मौक़ा
मिलने पर वह ज़रूर आएगा।

नसीहतें और सलाम

13 जागते रहें, ईमान में साबितक़दम रहें, मर्दानगी
दिखाएँ, मज़बूत बने रहें। 14 सब कुछ मुहब्बत से
करें।

15 भाइयो, मैं एक बात में आप को नसीहत करना
चाहता हूँ। आप जानते हैं कि स्तिफ़नास का घराना
अख़या का पहला फल है और कि उन्हों ने अपने
आप को मुक़द्दसीन की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर
रखा है। 16 आप ऐसे लोगों के ताबे रहें और साथ ही
हर उस शख़्स के जो उन के साथ ख़िदमत के काम
में जाँफ़िशानी करता है।

17 स्तिफ़नास, फ़ुर्तूनातुस और अख़ीकुस के पहुँचने
पर मैं बहुत ख़ुश हुआ, क्यूँकि उन्हों ने वह कमी
पूरी कर दी जो आप की गैरहाज़िरी से पैदा हुई थी।
18 उन्हों ने मेरी रूह को और साथ ही आप की रूह
को भी ताज़ा किया है। ऐसे लोगों की क़दर करें।

19 आसिया की जमाअतें आप को सलाम कहती
हैं। अक्विला और प्रिस्किल्ला आप को ख़ुदावन्द
में पुरजोश सलाम कहते हैं और उन के साथ वह
जमाअत भी जो उन के घर में जमा होती है। 20 तमाम
भाई आप को सलाम कहते हैं। एक दूसरे को मुक़द्दस
बोसा देते हुए सलाम कहें।

21 यह सलाम मैं यानी पौलुस अपने हाथ से लिखता
हूँ।

22 लानत उस शख़्स पर जो ख़ुदावन्द से मुहब्बत
नहीं रखता।
ऐ हमारे ख़ुदावन्द, आ! 23 ख़ुदावन्द ईसा का फ़ज़्ल
आप के साथ रहे।
24 मसीह ईसा में आप सब को मेरा प्यार।

२-कुरिन्थियों

1 1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है, जो अल्लाह की
मर्ज़ी से मसीह ईसा का रसूल है। साथ ही यह
भाई तीमुथियुस की तरफ़ से भी है।
मैं कुरिन्थुस में अल्लाह की जमाअत और सूबा
अख़या में मौजूद तमाम मुक़द्दसीन को यह लिख रहा
हूँ।
2 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
को फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

अल्लाह की हम्द-ओ-सना

3 हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के ख़ुदा और बाप
की तम्जीद हो, जो रहम का बाप और तमाम तरह की
तसल्ली का ख़ुदा है। 4 जब भी हम मुसीबत में फंस जाते
हैं तो वह हमें तसल्ली देता है ताकि हम औरों को भी
तसल्ली दे सकें। फिर जब वह किसी मुसीबत से दोचार
होते हैं तो हम भी उन को उसी तरह तसल्ली दे सकते
हैं जिस तरह अल्लाह ने हमें तसल्ली दी है। 5 क्यूँकि
जितनी कस्रत से मसीह की सी मुसीबतें हम पर आ
जाती हैं उतनी कस्रत से अल्लाह मसीह के ज़रीए हमें
तसल्ली देता है। 6 जब हम मुसीबतों से दोचार होते हैं
तो यह बात आप की तसल्ली और नजात का बाइस
बनती है। जब हमारी तसल्ली होती है तो यह आप की
भी तसल्ली का बाइस बनती है। यूँ आप भी सब्र से
वह कुछ बर्दाश्त करने के क़ाबिल बन जाते हैं जो
हम बर्दाश्त कर रहे हैं। 7 चुनाँचे हमारी आप के बारे
में उम्मीद पुख़्ता रहती है। क्यूँकि हम जानते हैं कि
जिस तरह आप हमारी मुसीबतों में शरीक हैं उसी
तरह आप उस तसल्ली में भी शरीक हैं जो हमें हासिल
होती है।
8 भाइयो, हम आप को उस मुसीबत से आगाह
करना चाहते हैं जिस में हम सूबा आसिया में फंस
गए। हम पर दबाओ इतना शदीद था कि उसे बर्दाश्त
करना नामुमकिन सा हो गया और हम जान से हाथ
धो बैठे। 9 हम ने महसूस किया कि हमें सज़ा-ए-मौत
दी गई है। लेकिन यह इस लिए हुआ ताकि हम अपने
आप पर भरोसा न करें बल्कि अल्लाह पर जो मुर्दों को
ज़िन्दा कर देता है। 10 उसी ने हमें ऐसी हैबतनाक
मौत से बचाया और वह आइन्दा भी हमें बचाएगा।
और हम ने उस पर उम्मीद रखी है कि वह हमें एक
बार फिर बचाएगा। 11 आप भी अपनी दुआओं से
हमारी मदद कर रहे हैं। यह कितनी ख़ूबसूरत बात
है कि अल्लाह बहुतों की दुआओं को सुन कर हम
पर मेहरबानी करेगा और नतीजे में बहुतेरे हमारे लिए
शुक्र करेंगे।

पौलुस के मन्सूबों में तब्दीली

12 यह बात हमारे लिए फ़ख़र का बाइस है कि
हमारा ज़मीर साफ़ है। क्यूँकि हम ने अल्लाह के सामने
सादादिली और ख़ुलूस से ज़िन्दगी गुज़ारी है, और हम
ने अपनी इन्सानी हिक्मत पर इन्हिसार नहीं किया
बल्कि अल्लाह के फ़ज़्ल पर। दुनिया में और ख़ासकर
आप के साथ हमारा रवय्या ऐसा ही रहा है। 13 हम
तो आप को ऐसी कोई बात नहीं लिखते जो आप
पढ़ या समझ नहीं सकते। और मुझे उम्मीद है कि
आप को पूरे तौर पर समझ आएगी, 14 अगरचे आप
फ़िलहाल सब कुछ नहीं समझते। क्यूँकि जब आप
को सब कुछ समझ आएगा तब आप ख़ुदावन्द ईसा
के दिन हम पर उतना फ़ख़र कर सकेंगे जितना हम
आप पर।
15 चूँकि मुझे इस का पूरा यक़ीन था इस लिए मैं
पहले आप के पास आना चाहता था ताकि आप को
दुगनी बरकत मिल जाए। 16 ख़याल यह था कि मैं
आप के हाँ से हो कर मकिदुनिया जाऊँ और वहाँ से
आप के पास वापस आऊँ। फिर आप सूबा यहूदिया

के सफ़र के लिए तय्यारियाँ करने में मेरी मदद करके
मुझे आगे भेज सकते थे। 17 आप मुझे बताएँ कि
क्या मैं ने यह मन्सूबा यूँ ही बनाया था? क्या मैं
दुनियावी लोगों की तरह मन्सूबे बना लेता हूँ जो
एक ही लम्हे में "जी हाँ" और "जी नहीं" कहते हैं?
18 लेकिन अल्लाह वफ़ादार है और वह मेरा गवाह है
कि हम आप के साथ बात करते वक़्त "नहीं" को
"हाँ" के साथ नहीं मिलाते। 19 क्यूँकि अल्लाह का
फ़र्ज़न्द ईसा मसीह जिस की मुनादी मैं, सीलास और
तीमुथियुस ने की वह भी ऐसा नहीं है। उस ने कभी भी
"हाँ" को "नहीं" के साथ नहीं मिलाया बल्कि उस में
अल्लाह की हत्मी "जी हाँ" वुजूद में आई। 20 क्यूँकि
वही अल्लाह के तमाम वादों की "हाँ" है। इस लिए
हम उसी के वसीले से "आमीन" (जी हाँ) कह कर
अल्लाह को जलाल देते हैं। 21 और अल्लाह ख़ुद हमें
और आप को मसीह में मज़बूत कर देता है। उसी ने
हमें मसह करके मख़्सूस किया है। 22 उसी ने हम पर
अपनी मुहर लगा कर ज़ाहिर किया है कि हम उस
की मिलकियत हैं और उसी ने हमें रूह-उल-क़ुद्स दे
कर अपने वादों का बैआना अदा किया है।

23 अगर मैं झूट बोलूँ तो अल्लाह मेरे ख़िलाफ़ गवाही
दे। बात यह है कि मैं आप को बचाने के लिए
कुरिन्थुस वापस न आया। 24 मतलब यह नहीं कि
हम ईमान के मुआमले में आप पर हुकूमत करना
चाहते हैं। नहीं, हम आप के साथ मिल कर ख़िदमत
करते हैं ताकि आप ख़ुशी से भर जाएँ, क्यूँकि आप
तो ईमान की मारिफ़त क़ाइम हैं।

2 1 चुनाँचे मैं ने फ़ैसला किया कि मैं दुबारा आप
के पास नहीं आऊँगा, वर्ना आप को बहुत
ग़म खाना पड़ेगा। 2 क्यूँकि अगर मैं आप को दुख
पहुँचाऊँ तो कौन मुझे ख़ुश करेगा? यह वह शख़्स
नहीं करेगा जिसे मैं ने दुख पहुँचाया है। 3 यही वजह है
कि मैं ने आप को यह लिख दिया। मैं नहीं चाहता था
कि आप के पास आ कर उन ही लोगों से ग़म खाऊँ
जिन्हें मुझे ख़ुश करना चाहिए। क्यूँकि मुझे आप सब
के बारे में यक़ीन है कि मेरी ख़ुशी आप सब की
ख़ुशी है। 4 मैं ने आप को निहायत रंजीदा और परेशान
हालत में आँसू बहा बहा कर लिख दिया। मक़्सद यह
नहीं था कि आप ग़मगीन हो जाएँ बल्कि मैं चाहता
था कि आप जान लें कि मैं आप से कितनी गहरी
मुहब्बत रखता हूँ।

मुजरिम को मुआफ़ कर दिया जाए

5 अगर किसी ने दुख पहुँचाया है तो मुझे नहीं बल्कि
किसी हद तक आप सब को (मैं ज़्यादा सख़्ती से बात
नहीं करना चाहता)। 6 लेकिन मज़कूरा शख़्स के लिए
यह काफ़ी है कि उसे जमाअत के अक्सर लोगों ने
सज़ा दी है। 7 अब ज़रूरी है कि आप उसे मुआफ़
करके तसल्ली दें, वर्ना वह ग़म खा खा कर तबाह हो
जाएगा। 8 चुनाँचे मैं इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि
आप उसे अपनी मुहब्बत का एहसास दिलाएँ। 9 मैं
ने यह मालूम करने के लिए आप को लिखा कि क्या
आप इम्तिहान में पूरे उतरेंगे और हर बात में ताबे
रहेंगे। 10 जिसे आप कुछ मुआफ़ करते हैं उसे मैं भी
मुआफ़ करता हूँ। और जो कुछ मैं ने मुआफ़ किया,
अगर मुझे कुछ मुआफ़ करने की ज़रूरत थी, वह मैं
ने आप की ख़ातिर मसीह के हुज़ूर मुआफ़ किया है
11 ताकि इब्लीस हम से फ़ाइदा न उठाए। क्यूँकि हम
उस की चालों से ख़ूब वाक़िफ़ हैं।

त्रोआस में पौलुस की परेशानी

12 जब मैं मसीह की ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए
त्रोआस गया तो ख़ुदावन्द ने मेरे लिए आगे ख़िदमत
करने का एक दरवाज़ा खोल दिया। 13 लेकिन जब
मुझे अपना भाई तितुस वहाँ न मिला तो मैं बेचैन हो
गया और उन्हें ख़ैरबाद कह कर सूबा मकिदुनिया
चला गया।

मसीह में फ़त्ह

14 लेकिन ख़ुदा का शुक्र है! वही हमारे आगे आगे
चलता है और हम मसीह के क़ैदी बन कर उस की
फ़त्ह मनाते हुए उस के पीछे पीछे चलते हैं। यूँ अल्लाह

हमारे वसीले से हर जगह मसीह के बारे में इल्म
ख़ुश्बू की तरह फैलाता है। 15 क्यूँकि हम मसीह की
ख़ुश्बू हैं जो अल्लाह तक पहुँचती है और साथ साथ
लोगों में भी फैलती है, नजात पाने वालों में भी और
हलाक होने वालों में भी। 16 बाज़ लोगों के लिए
हम मौत की मोहलिक बू हैं जबकि बाज़ के लिए
हम ज़िन्दगीबख़्श ख़ुश्बू हैं। तो कौन यह ज़िम्मादारी
निभाने के लाइक़ है? 17 क्यूँकि हम अक्सर लोगों
की तरह अल्लाह के कलाम की तिजारत नहीं करते,
बल्कि यह जान कर कि हम अल्लाह के हुज़ूर में हैं
और उस के भेजे हुए हैं हम ख़ुलूसदिली से लोगों से
बात करते हैं।

नए अह्द के ख़ादिम

3 1 क्या हम दुबारा अपनी ख़ूबियों का ढंडोरा पीट
रहे हैं? या क्या हम बाज़ लोगों की मानिन्द हैं
जिन्हें आप को सिफ़ारिशी ख़त देने या आप से ऐसे
ख़त लिखवाने की ज़रूरत होती है? 2 नहीं, आप तो
ख़ुद हमारा ख़त हैं जो हमारे दिलों पर लिखा हुआ
है। सब इसे पहचान और पढ़ सकते हैं। 3 यह साफ़
ज़ाहिर है कि आप मसीह का ख़त हैं जो उस ने
हमारी ख़िदमत के ज़रीए लिख दिया है। और यह ख़त
सियाही से नहीं बल्कि ज़िन्दा ख़ुदा के रूह से लिखा
गया, पत्थर की तख़्तियों पर नहीं बल्कि इन्सानी
दिलों पर।

4 हम यह इस लिए यक़ीन से कह सकते हैं क्यूँकि
हम मसीह के वसीले से अल्लाह पर एतिमाद रखते हैं।
5 हमारे अन्दर तो कुछ नहीं है जिस की बिना पर हम
दावा कर सकते कि हम यह काम करने के लाइक़ हैं।
नहीं, हमारी लियाक़त अल्लाह की तरफ़ से है। 6 उसी
ने हमें नए अह्द के ख़ादिम होने के लाइक़ बना दिया
है। और यह अह्द लिखी हुई शरीअत पर मब्नी नहीं
है बल्कि रूह पर, क्यूँकि लिखी हुई शरीअत के असर
से हम मर जाते हैं जबकि रूह हमें ज़िन्दा कर देता
है।

7 शरीअत के हुरूफ़ पत्थर की तख़्तियों पर कन्दा
किए गए और जब उसे दिया गया तो अल्लाह का
जलाल ज़ाहिर हुआ। यह जलाल इतना तेज़ था कि
इस्राईली मूसा के चिहरे को लगातार देख न सके।
अगर उस चीज़ का जलाल इतना तेज़ था जो अब
मन्सूख़ है 8 तो क्या रूह के निज़ाम का जलाल इस
से कहीं ज़्यादा नहीं होगा? 9 अगर पुराना निज़ाम जो
हमें मुजरिम ठहराता था जलाली था तो फिर नया
निज़ाम जो हमें रास्तबाज़ क़रार देता है कहीं ज़्यादा
जलाली होगा। 10 हाँ, पहले निज़ाम का जलाल नए
निज़ाम के ज़बरदस्त जलाल की निस्बत कुछ भी नहीं
है। 11 और अगर उस पुराने निज़ाम का जलाल बहुत
था जो अब मन्सूख़ है तो फिर उस नए निज़ाम का
जलाल कहीं ज़्यादा होगा जो क़ाइम रहेगा।

12 पस चूँकि हम ऐसी उम्मीद रखते हैं इस लिए बड़ी
दिलेरी से ख़िदमत करते हैं। 13 हम मूसा की मानिन्द
नहीं हैं जिस ने शरीअत सुनाने के इख़तिताम पर
अपने चिहरे पर निक़ाब डाल लिया ताकि इस्राईली
उसे तकते न रहें जो अब मन्सूख़ है। 14 तो भी वह
ज़हनी तौर पर अड़ गए, क्यूँकि आज तक जब
पुराने अह्दनामे की तिलावत की जाती है तो यही
निक़ाब क़ाइम है। आज तक निक़ाब को हटाया
नहीं गया क्यूँकि यह अह्द सिर्फ़ मसीह में मन्सूख़
होता है। 15 हाँ, आज तक जब मूसा की शरीअत
पढ़ी जाती है तो यह निक़ाब उन के दिलों पर
पड़ा रहता है। 16 लेकिन जब भी कोई ख़ुदावन्द की
तरफ़ रुजू करता है तो यह निक़ाब हटाया जाता है,
17 क्यूँकि ख़ुदावन्द रूह है और जहाँ ख़ुदावन्द का
रूह है वहाँ आज़ादी है। 18 चुनाँचे हम सब जिन के
चिहरों से निक़ाब हटाया गया है ख़ुदावन्द का जलाल
मुनअकिस करते और क़दम-ब-क़दम जलाल पाते
हुए मसीह की सूरत में बदलते जाते हैं। यह ख़ुदावन्द
ही का काम है जो रूह है।

मिट्टी के बर्तनों में रुहानी ख़ज़ाना

4 1 पस चूँकि हमें अल्लाह के रहम से यह ख़िदमत
सौंपी गई है इस लिए हम बेदिल नहीं हो जाते।
2 हम ने छुपी हुई शर्मनाक बातें मुस्तरद कर दी हैं। न
हम चालाकी से काम करते, न अल्लाह के कलाम में
तहरीफ़ करते हैं। बल्कि हमें अपनी सिफ़ारिश की
ज़रूरत भी नहीं, क्यूँकि जब हम अल्लाह के हुज़ूर
लोगों पर हक़ीक़त को ज़ाहिर करते हैं तो हमारी
नेकनामी ख़ुद-ब-ख़ुद हर एक के ज़मीर पर ज़ाहिर
हो जाती है। 3 और अगर हमारी ख़ुशख़बरी निक़ाब
तले छुपी हुई भी हो तो वह सिर्फ़ उन के लिए छुपी
हुई है जो हलाक हो रहे हैं। 4 इस जहान के शरीर
ख़ुदा ने उन के ज़हनों को अंधा कर दिया है जो ईमान
नहीं रखते। इस लिए वह अल्लाह की ख़ुशख़बरी की
जलाली रौशनी नहीं देख सकते। वह यह पैग़ाम नहीं
समझ सकते जो मसीह के जलाल के बारे में है, उस
के बारे में जो अल्लाह की सूरत है। 5 क्यूँकि हम अपना
प्रचार नहीं करते बल्कि ईसा मसीह का पैग़ाम सुनाते
हैं कि वह ख़ुदावन्द है। अपने आप को हम ईसा की
ख़ातिर आप के ख़ादिम क़रार देते हैं। 6 क्यूँकि जिस
ख़ुदा ने फ़रमाया, "अंधेरे में से रौशनी चमके," उस
ने हमारे दिलों में अपनी रौशनी चमकने दी ताकि हम
अल्लाह का वह जलाल जान लें जो ईसा मसीह के
चिहरे से चमकता है।

7 लेकिन हम जिन के अन्दर यह ख़ज़ाना है आम
मिट्टी के बर्तनों की मानिन्द हैं ताकि ज़ाहिर हो कि यह
ज़बरदस्त क़ुव्वत हमारी तरफ़ से नहीं बल्कि अल्लाह
की तरफ़ से है। 8 लोग हमें चारों तरफ़ से दबाते हैं,
लेकिन कोई हमें कुचल कर ख़त्म नहीं कर सकता।
हम उलझन में पड़ जाते हैं, लेकिन उम्मीद का दामन
हाथ से जाने नहीं देते। 9 लोग हमें ईज़ा देते हैं, लेकिन
हमें अकेला नहीं छोड़ा जाता। लोगों के धक्कों से हम
ज़मीन पर गिर जाते हैं, लेकिन हम तबाह नहीं होते।
10 हर वक़्त हम अपने बदन में ईसा की मौत लिए
फिरते हैं ताकि ईसा की ज़िन्दगी भी हमारे बदन में
ज़ाहिर हो जाए। 11 क्यूँकि हर वक़्त हमें ज़िन्दा हालत
में ईसा की ख़ातिर मौत के हवाले कर दिया जाता है
ताकि उस की ज़िन्दगी हमारे फ़ानी बदन में ज़ाहिर
हो जाए। 12 यूँ हम में मौत का असर काम करता है
जबकि आप में ज़िन्दगी का असर।

13 कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, "मैं ईमान लाया
और इस लिए बोला।" हमें ईमान का यही रूह
हासिल है इस लिए हम भी ईमान लाने की वजह
से बोलते हैं। 14 क्यूँकि हम जानते हैं कि जिस ने
ख़ुदावन्द ईसा को मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया है वह
ईसा के साथ हमें भी ज़िन्दा करके आप लोगों समेत
अपने हुज़ूर खड़ा करेगा। 15 यह सब कुछ आप के
फ़ाइदे के लिए है। यूँ अल्लाह का फ़ज़्ल आगे बढ़ते
बढ़ते मज़ीद बहुत से लोगों तक पहुँच रहा है और
नतीजे में वह अल्लाह को जलाल दे कर शुक्रगुज़ारी
की दुआओं में बहुत इज़ाफ़ा कर रहे हैं।

ईमान की ज़िन्दगी

16 इसी वजह से हम बेदिल नहीं हो जाते। बेशक
ज़ाहिरी तौर पर हम ख़त्म हो रहे हैं, लेकिन अन्दर ही
अन्दर रोज़-ब-रोज़ हमारी तज्दीद होती जा रही है।
17 क्यूँकि हमारी मौजूदा मुसीबत हल्की और पल भर
की है, और वह हमारे लिए एक ऐसा अबदी जलाल
पैदा कर रही है जिस की निस्बत मौजूदा मुसीबत
कुछ भी नहीं। 18 इस लिए हम देखी हुई चीज़ों पर ग़ौर
नहीं करते बल्कि अनदेखी चीज़ों पर। क्यूँकि देखी
हुई चीज़ें आरिज़ी हैं, जबकि अनदेखी चीज़ें अबदी
हैं।

5 1 हम तो जानते हैं कि जब हमारी दुनियावी
झोंपड़ी जिस में हम रहते हैं गिराई जाएगी
तो अल्लाह हमें आसमान पर एक मकान देगा, एक
ऐसा अबदी घर जिसे इन्सानी हाथों ने नहीं बनाया
होगा। 2 इस लिए हम इस झोंपड़ी में कराहते हैं और
आसमानी घर पहन लेने की शदीद आर्ज़ू रखते हैं,
3 क्यूँकि जब हम उसे पहन लेंगे तो हम नंगे नहीं
पाए जाएंगे। 4 इस झोंपड़ी में रहते हुए हम बोझ तले

कराहते हैं। क्यूँकि हम अपना फ़ानी लिबास उतारना
नहीं चाहते बल्कि उस पर आसमानी घर का लिबास
पहन लेना चाहते हैं ताकि ज़िन्दगी वह कुछ निगल
जाए जो फ़ानी है। 5 अल्लाह ने ख़ुद हमें इस मक़्सद के
लिए तय्यार किया है और उसी ने हमें रूह-उल-क़ुद्स
को आने वाले जलाल के बैआने के तौर पर दे दिया
है।

6 चुनाँचे हम हमेशा हौसला रखते हैं। हम जानते
हैं कि जब तक अपने बदन में रिहाइशपज़ीर हैं उस
वक़्त तक ख़ुदावन्द के घर से दूर हैं। 7 हम ज़ाहिरी
चीज़ों पर भरोसा नहीं करते बल्कि ईमान पर चलते
हैं। 8 हाँ, हमारा हौसला बुलन्द है बल्कि हम ज़्यादा
यह चाहते हैं कि अपने जिस्मानी घर से रवाना हो कर
ख़ुदावन्द के घर में रहें। 9 लेकिन ख़्वाह हम अपने
बदन में हों या न, हम इसी कोशिश में रहते हैं कि
ख़ुदावन्द को पसन्द आएँ। 10 क्यूँकि लाज़िम है कि
हम सब मसीह के तख़्त-ए-अदालत के सामने हाज़िर
हो जाएँ। वहाँ हर एक को उस काम का अज्र मिलेगा
जो उस ने अपने बदन में रहते हुए किया है, ख़्वाह
वह अच्छा था या बुरा।

मसीह के वसीले से हमारी अल्लाह के साथ दोस्ती

11 अब हम ख़ुदावन्द के ख़ौफ़ को जान कर लोगों
को समझाने की कोशिश करते हैं। हम तो अल्लाह के
सामने पूरे तौर पर ज़ाहिर हैं। और मैं उम्मीद रखता
हूँ कि हम आप के ज़मीर के सामने भी ज़ाहिर हैं।
12 क्या हम यह बात करके दुबारा अपनी सिफ़ारिश
कर रहे हैं? नहीं, आप को हम पर फ़ख़र करने का
मौक़ा दे रहे हैं ताकि आप उन के जवाब में कुछ कह
सकें जो ज़ाहिरी बातों पर शेख़ी मारते और दिली बातें
नज़रअन्दाज़ करते हैं। 13 क्यूँकि अगर हम बेख़ुद हुए
तो अल्लाह की ख़ातिर, और अगर होश में हैं तो आप
की ख़ातिर। 14 बात यह है कि मसीह की मुहब्बत हमें
मज्बूर कर देती है, क्यूँकि हम इस नतीजे पर पहुँच
गए हैं कि एक सब के लिए मुआ। इस का मतलब
है कि सब ही मर गए हैं। 15 और वह सब के लिए
इस लिए मुआ ताकि जो ज़िन्दा हैं वह अपने लिए
न जिएँ बल्कि उस के लिए जो उन की ख़ातिर मुआ
और फिर जी उठा।

16 इस वजह से हम अब से किसी को भी दुनियावी
निगाह से नहीं देखते। पहले तो हम मसीह को भी
इस ज़ावीए से देखते थे, लेकिन यह वक़्त गुज़र गया
है। 17 चुनाँचे जो मसीह में है वह नया मख़्लूक़ है।
पुरानी ज़िन्दगी जाती रही और नई ज़िन्दगी शुरू हो
गई है। 18 यह सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है जिस ने
मसीह के वसीले से अपने साथ हमारा मेल-मिलाप
कर लिया है। और उसी ने हमें मेल-मिलाप कराने
की ख़िदमत की ज़िम्मादारी दी है। 19 इस ख़िदमत
के तहत हम यह पैग़ाम सुनाते हैं कि अल्लाह ने मसीह
के वसीले से अपने साथ दुनिया की सुलह कराई और
लोगों के गुनाहों को उन के ज़िम्मे न लगाया। सुलह
कराने का यह पैग़ाम उस ने हमारे सपुर्द कर दिया।

20 पस हम मसीह के एलची हैं और अल्लाह हमारे
वसीले से लोगों को समझाता है। हम मसीह के वास्ते
आप से मिन्नत करते हैं कि अल्लाह की सुलह की
पेशकश को क़बूल करें ताकि उस की आप के साथ
सुलह हो जाए। 21 मसीह बेगुनाह था, लेकिन अल्लाह
ने उसे हमारी ख़ातिर गुनाह ठहराया ताकि हमें उस
में रास्तबाज़ क़रार दिया जाए।

6 1 अल्लाह के हमख़िदमत होते हुए हम आप से
मिन्नत करते हैं कि जो फ़ज़्ल आप को मिला
है वह ज़ाए न जाए। 2 क्यूँकि अल्लाह फ़रमाता है,
“क़बूलियत के वक़्त मैं ने तेरी सुनी, नजात के दिन
तेरी मदद की।” सुनें! अब क़बूलियत का वक़्त आ
गया है, अब नजात का दिन है।

3 हम किसी के लिए भी ठोकर का बाइस नहीं
बनते ताकि लोग हमारी ख़िदमत में नुक़्स न निकाल
सकें। 4 हाँ, हमें सिफ़ारिश की ज़रूरत ही नहीं,
क्यूँकि अल्लाह के ख़ादिम होते हुए हम हर हालत
में अपनी नेकनामी ज़ाहिर करते हैं : जब हम सब्र
से मुसीबतें, मुश्किलात और आफ़तें बर्दाश्त करते
हैं, 5 जब लोग हमें मारते और क़ैद में डालते हैं,

जब हम बेकाबू हुजूमों का सामना करते हैं, जब
हम मेहनत-मशक़्क़त करते, रात के वक़्त जागते और
भूके रहते हैं, 6 जब हम अपनी पाकीज़गी, इल्म, सब्र
और मेहरबान सुलूक का इज़हार करते हैं, जब हम
रूह-उल-क़ुद्स के वसीले से हक़ीक़ी मुहब्बत रखते,
7 सच्ची बातें करते और अल्लाह की क़ुदरत से लोगों
की ख़िदमत करते हैं। हम अपनी नेकनामी इस में
भी ज़ाहिर करते हैं कि हम दोनों हाथों से रास्तबाज़ी
के हथियार थामे रखते हैं। 8 हम अपनी ख़िदमत जारी
रखते हैं, चाहे लोग हमारी इज़्ज़त करें चाहे बेइज़्ज़ती,
चाहे वह हमारी बुरी रिपोर्ट दें चाहे अच्छी। अगरचे
हमारी ख़िदमत सच्ची है, लेकिन लोग हमें दग़ाबाज़
क़रार देते हैं। 9 अगरचे लोग हमें जानते हैं तो भी हमें
नज़रअन्दाज़ किया जाता है। हम मरते मरते ज़िन्दा
रहते हैं और लोग हमें मार मार कर क़त्ल नहीं कर
सकते। 10 हम ग़म खा खा कर हर वक़्त ख़ुश रहते
हैं, हम ग़रीब हालत में बहुतों को दौलतमन्द बना
देते हैं। हमारे पास कुछ नहीं है, तो भी हमें सब कुछ
हासिल है।

11 कुरिन्थुस के अज़ीज़ो, हम ने खुल कर आप से
बात की है, हमारा दिल आप के लिए कुशादा हो
गया है। 12 जो जगह हम ने दिल में आप को दी है
वह अब तक कम नहीं हुई। लेकिन आप के दिलों में
हमारे लिए कोई जगह नहीं रही। 13 अब मैं आप से
जो मेरे बच्चे हैं दरख़्वास्त करता हूँ कि जवाब में हमें
भी अपने दिलों में जगह दें।

ग़ैरमसीही असरात से ख़बरदार

14 ग़ैरईमानदारों के साथ मिल कर एक जूए तले
ज़िन्दगी न गुज़ारें, क्यूँकि रास्ती का नारास्ती से
क्या वास्ता है? या रौशनी तारीकी के साथ क्या
ताल्लुक़ रख सकती है? 15 मसीह और इब्लीस के
दरमियान क्या मुताबिक़त हो सकती है? ईमानदार
का ग़ैरईमानदार के साथ क्या वास्ता है? 16 अल्लाह
के मक़्दिस और बुतों में क्या इत्तिफ़ाक़ हो सकता है?
हम तो ज़िन्दा ख़ुदा का घर हैं। अल्लाह ने यूँ फ़रमाया
है,

"मैं उन के दरमियान सुकूनत करूँगा
और उन में फिरूँगा।
मैं उन का ख़ुदा हूँगा,
और वह मेरी क़ौम होंगे।"
17 चुनाँचे रब फ़रमाता है,
"इस लिए उन में से निकल आओ
और उन से अलग हो जाओ।
किसी नापाक चीज़ को न छूना,
तो फिर मैं तुम्हें क़बूल करूँगा।
18 मैं तुम्हारा बाप हूँगा
और तुम मेरे बेटे-बेटियाँ होगे,
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है।"

7 1 मेरे अज़ीज़ो, यह तमाम वादे हम से किए गए
हैं। इस लिए आएँ, हम अपने आप को हर
उस चीज़ से पाक-साफ़ करें जो जिस्म और रूह
को आलूदा कर देती है। और हम ख़ुदा के ख़ौफ़ में
मुकम्मल तौर पर मुक़द्दस बनने के लिए कोशाँ रहें।

पौलुस की ख़ुशी

2 हमें अपने दिल में जगह दें। न हम ने किसी से
नाइन्साफ़ी की, न किसी को बिगाड़ा या उस से
ग़लत फ़ाइदा उठाया। 3 मैं यह बात आप को मुजरिम
ठहराने के लिए नहीं कह रहा। मैं आप को पहले बता
चुका हूँ कि आप हमें इतने अज़ीज़ हैं कि हम आप
के साथ मरने और जीने के लिए तय्यार हैं। 4 इस लिए
मैं आप से खुल कर बात करता हूँ और मैं आप पर
बड़ा फ़ख़र भी करता हूँ। इस नाते से मुझे पूरी तसल्ली
है, और हमारी तमाम मुसीबतों के बावुजूद मेरी ख़ुशी
की इन्तिहा नहीं।

5 क्यूँकि जब हम मकिदुनिया पहुँचे तो हम जिस्म
के लिहाज़ से आराम न कर सके। मुसीबतों ने हमें
हर तरफ़ से घेर लिया। दूसरों की तरफ़ से झगड़ों
से और दिल में तरह तरह के डर से निपटना पड़ा।
6 लेकिन अल्लाह ने जो दबे हुओं को तसल्ली बख़्शता

है तितुस के आने से हमारी हौसलाअफ़ज़ाई की।
7 हमारा हौसला न सिर्फ़ उस के आने से बढ़ गया
बल्कि उन हौसलाअफ़ज़ा बातों से भी जिन से आप
ने उसे तसल्ली दी। उस ने हमें आप की आर्ज़ू, आप
की आह-ओ-ज़ारी और मेरे लिए आप की सरगर्मी के
बारे में रिपोर्ट दी। यह सुन कर मेरी ख़ुशी मज़ीद बढ़
गई।

8 क्यूँकि अगरचे मैं ने आप को अपने ख़त से दुख
पहुँचाया तो भी मैं पछताता नहीं। पहले तो मैं ख़त
लिखने से पछताया, लेकिन अब मैं देखता हूँ कि जो
दुख उस ने आप को पहुँचाया वह सिर्फ़ आरिज़ी था
9 और उस ने आप को तौबा तक पहुँचाया। यह सुन
कर मैं अब ख़ुशी मनाता हूँ, इस लिए नहीं कि आप
को दुख उठाना पड़ा है बल्कि इस लिए कि इस दुख
ने आप को तौबा तक पहुँचाया। अल्लाह ने यह दुख
अपनी मर्ज़ी पूरी कराने के लिए इस्तेमाल किया, इस
लिए आप को हमारी तरफ़ से कोई नुक़्सान न पहुँचा।
10 क्यूँकि जो दुख अल्लाह अपनी मर्ज़ी पूरी कराने के
लिए इस्तेमाल करता है उस से तौबा पैदा होती है
और उस का अन्जाम नजात है। इस में पछताने की
गुन्जाइश ही नहीं। इस के बरअक्स दुनियावी दुख का
अन्जाम मौत है। 11 आप ख़ुद देखें कि अल्लाह के इस
दुख ने आप में क्या पैदा किया है : कितनी सन्जीदगी,
अपना दिफ़ा करने का कितना जोश, ग़लत हरकतों
पर कितना ग़ुस्सा, कितना ख़ौफ़, कितनी चाहत,
कितनी सरगर्मी। आप सज़ा देने के लिए कितने
तय्यार थे! आप ने हर लिहाज़ से साबित किया है
कि आप इस मुआमले में बेक़ुसूर हैं।

12 ग़रज़, अगरचे मैं ने आप को लिखा, लेकिन
मक़्सद यह नहीं था कि ग़लत हरकतें करने वाले के
बारे में लिखूँ या उस के बारे में जिस के साथ ग़लत
काम किया गया। नहीं, मक़्सद यह था कि अल्लाह के
हुज़ूर आप पर ज़ाहिर हो जाए कि आप हमारे लिए
कितने सरगर्म हैं। 13 यही वजह है कि हमारा हौसला
बढ़ गया है।

लेकिन न सिर्फ़ हमारी हौसलाअफ़ज़ाई हुई है बल्कि
हम यह देख कर बेइन्तिहा ख़ुश हुए कि तितुस कितना
ख़ुश था। वह क्यूँ ख़ुश था? इस लिए कि उस की रूह
आप सब से तर-ओ-ताज़ा हुई। 14 उस के सामने मैं ने
आप पर फ़ख़र किया था, और मैं शर्मिन्दा नहीं हुआ
क्यूँकि यह बात दुरुस्त साबित हुई है। जिस तरह
हम ने आप को हमेशा सच्ची बातें बताई हैं उसी तरह
तितुस के सामने आप पर हमारा फ़ख़र भी दुरुस्त
निकला। 15 आप उसे निहायत अज़ीज़ हैं क्यूँकि वह
आप सब की फ़रमाँबरदारी याद करता है, कि आप
ने डरते और काँपते हुए उसे ख़ुशआमदीद कहा। 16 मैं
ख़ुश हूँ कि मैं हर लिहाज़ से आप पर एतिमाद कर
सकता हूँ।

यहूदिया के ग़रीबों के लिए हदिया

8 1 भाइयो, हम आप की तवज्जुह उस फ़ज़्ल
की तरफ़ दिलाना चाहते हैं जो अल्लाह ने सूबा
मकिदुनिया की जमाअतों पर किया। 2 जिस मुसीबत
में वह फंसे हुए हैं उस से उन की सख़्त आज़माइश
हुई। तो भी उन की बेइन्तिहा ख़ुशी और शदीद
ग़ुर्बत का नतीजा यह निकला कि उन्हों ने बड़ी
फ़य्याज़दिली से हदिया दिया। 3 मैं गवाह हूँ कि
जितना वह दे सके उतना उन्हों ने दे दिया बल्कि
इस से भी ज़्यादा। अपनी ही तरफ़ से 4 उन्हों ने बड़े
ज़ोर से हम से मिन्नत की कि हमें भी यहूदिया के
मुक़द्दसीन की ख़िदमत करने का मौक़ा दें, हम भी
देने के फ़ज़्ल में शरीक होना चाहते हैं। 5 और उन्हों
ने हमारी उम्मीद से कहीं ज़्यादा किया! अल्लाह की
मर्ज़ी से उन का पहला क़दम यह था कि उन्हों ने
अपने आप को ख़ुदावन्द के लिए मख़्सूस किया।
उन का दूसरा क़दम यह था कि उन्हों ने अपने आप
को हमारे लिए मख़्सूस किया। 6 इस पर हम ने तितुस
की हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह आप के पास भी
हदिया जमा करने का वह सिलसिला अन्जाम तक
पहुँचाए जो उस ने शुरू किया था। 7 आप के पास
सब कुछ कस्रत से पाया जाता है, ख़्वाह ईमान हो,

ख़्वाह कलाम, इल्म, मुकम्मल सरगर्मी या हम से मुहब्बत हो। अब इस बात का ख़याल रखें कि आप यह हदिया देने में भी अपनी कसीर दौलत का इज़हार करें।

8 मेरी तरफ़ से यह कोई हुक्म नहीं है। लेकिन दूसरों की सरगर्मी के पेश-ए-नज़र मैं आप की भी मुहब्बत परख रहा हूँ कि वह कितनी हक़ीक़ी है। 9 आप तो जानते हैं कि हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह ने आप पर कैसा फ़ज़्ल किया है, कि अगरचे वह दौलतमन्द था तो भी वह आप की ख़ातिर ग़रीब बन गया ताकि आप उस की ग़ुर्बत से दौलतमन्द बन जाएँ।

10 इस मुआमले में मेरा मश्वरा सुनें, क्यूँकि वह आप के लिए मुफ़ीद साबित होगा। पिछले साल आप पहली जमाअत थे जो न सिर्फ़ हदिया देने लगी बल्कि इसे देना भी चाहती थी। 11 अब उसे तक्मील तक पहुँचाएँ जो आप ने शुरू कर रखा है। देने का जो शौक़ आप रखते हैं वह अमल में लाया जाए। उतना दें जितना आप दे सकें। 12 क्यूँकि अगर आप देने का शौक़ रखते हैं तो फिर अल्लाह आप का हदिया उस बिना पर क़बूल करेगा जो आप दे सकते हैं, उस बिना पर नहीं जो आप नहीं दे सकते।

13 कहने का मतलब यह नहीं कि दूसरों को आराम दिलाने के बाइस आप ख़ुद मुसीबत में पड़ जाएँ। बात सिर्फ़ यह है कि लोगों के हालात कुछ बराबर होने चाहिएँ। 14 इस वक़्त तो आप के पास बहुत है और आप उन की ज़रूरत पूरी कर सकते हैं। बाद में किसी वक़्त जब उन के पास बहुत होगा तो वह आप की ज़रूरत भी पूरी कर सकेंगे। यूँ आप के हालात कुछ बराबर रहेंगे, 15 जिस तरह कलाम-ए-मुक़द्दस में भी लिखा है, "जिस ने ज़्यादा जमा किया था उस के पास कुछ न बचा। लेकिन जिस ने कम जमा किया था उस के पास भी काफ़ी था।"

तितुस और उस के साथी

16 ख़ुदा का शुक्र है जिस ने तितुस के दिल में वही जोश पैदा किया है जो मैं आप के लिए रखता हूँ। 17 जब हम ने उस की हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह आप के पास जाए तो वह न सिर्फ़ इस के लिए तय्यार हुआ बल्कि बड़ा सरगर्म हो कर ख़ुद-ब-ख़ुद आप के पास जाने के लिए रवाना हुआ। 18 हम ने उस के साथ उस भाई को भेज दिया जिस की ख़िदमत की तारीफ़ तमाम जमाअतें करती हैं, क्यूँकि उसे अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने की नेमत मिली है। 19 उसे न सिर्फ़ आप के पास जाना है बल्कि जमाअतों ने उसे मुक़र्रर किया है कि जब हम हदिए को यरूशलम ले जाएंगे तो वह हमारे साथ जाए। यूँ हम यह ख़िदमत अदा करते वक़्त ख़ुदावन्द को जलाल देंगे और अपनी सरगर्मी का इज़हार करेंगे।

20 क्यूँकि उस बड़े हदिए के पेश-ए-नज़र जो हम ले जाएंगे हम इस से बचना चाहते हैं कि किसी को हम पर शक करने का मौक़ा मिले। 21 हमारी पूरी कोशिश यह है कि वही कुछ करें जो न सिर्फ़ ख़ुदावन्द की नज़र में दुरुस्त है बल्कि इन्सान की नज़र में भी।

22 उन के साथ हम ने एक और भाई को भी भेज दिया जिस की सरगर्मी हम ने कई मौक़ों पर परखी है। अब वह मज़ीद सरगर्म हो गया है, क्यूँकि वह आप पर बड़ा एतिमाद करता है। 23 जहाँ तक तितुस का ताल्लुक़ है, वह मेरा साथी और हमख़िदमत है। और जो भाई उस के साथ हैं उन्हें जमाअतों ने भेजा है। वह मसीह के लिए इज़्ज़त का बाइस हैं। 24 उन पर अपनी मुहब्बत का इज़हार करके यह ज़ाहिर करें कि हम आप पर क्यूँ फ़ख़र करते हैं। फिर यह बात ख़ुदा की दीगर जमाअतों को भी नज़र आएगी।

मक़द्दसीन की मदद

9 1 असल में इस की ज़रूरत नहीं कि मैं आप को उस काम के बारे में लिखूँ जो हमें यहूदिया के मुक़द्दसीन की ख़िदमत में करना है। 2 क्यूँकि मैं आप की गर्मजोशी जानता हूँ, और मैं मकिदुनिया के ईमानदारों के सामने आप पर फ़ख़र करता रहा हूँ कि "अख़या के लोग पिछले साल से देने के लिए तय्यार थे।" यूँ आप की सरगर्मी ने ज़्यादातर

लोगों को ख़ुद देने के लिए उभारा। 3 अब मैं ने इन
भाइयों को भेज दिया है ताकि हमारा आप पर फ़ख़र
बेबुन्याद न निकले बल्कि जिस तरह मैं ने कहा था
आप तय्यार रहें। 4 ऐसा न हो कि जब मैं मकिदुनिया
के कुछ भाइयों को साथ ले कर आप के पास पहुँचूँगा
तो आप तय्यार न हूँ। उस वक़्त मैं, बल्कि आप
भी शर्मिन्दा होंगे कि मैं ने आप पर इतना एतिमाद
किया है। 5 इस लिए मैं ने इस बात पर ज़ोर देना
ज़रूरी समझा कि भाई पहले ही आप के पास आ कर
उस हदिए का इन्तिज़ाम करें जिस का वादा आप ने
किया है। क्यूँकि मैं चाहता हूँ कि मेरे आने तक यह
हदिया जमा किया गया हो और ऐसा न लगे जैसा इसे
मुश्किल से आप से निकालना पड़ा। इस के बजाय
आप की सख़ावत ज़ाहिर हो जाए।

6 याद रहे कि जो शख़्स बीज को बचा बचा कर
बोता है उस की फ़सल भी उतनी कम होगी। लेकिन
जो बहुत बीज बोता है उस की फ़सल भी बहुत
ज़्यादा होगी। 7 हर एक उतना दे जितना देने के लिए
उस ने पहले अपने दिल में ठहरा लिया है। वह
इस में तक्लीफ़ या मज्बूरी महसूस न करे, क्यूँकि
अल्लाह उस से मुहब्बत रखता है जो ख़ुशी से देता है।
8 और अल्लाह इस क़ाबिल है कि आप को आप की
ज़रूरियात से कहीं ज़्यादा दे। फिर आप के पास हर
वक़्त और हर लिहाज़ से काफ़ी होगा बल्कि इतना
ज़्यादा कि आप हर क़िस्म का नेक काम कर सकेंगे।
9 चुनाँचे कलाम-ए-मुक़द्दस में यह भी लिखा है, "उस
ने फ़य्याज़ी से ज़रूरतमन्दों में ख़ैरात बिखेर दी, उस
की रास्तबाज़ी हमेशा तक क़ाइम रहेगी।" 10 ख़ुदा
ही बीज बोने वाले को बीज मुहय्या करता और उसे
खाने के लिए रोटी देता है। और वह आप को भी
बीज दे कर उस में इज़ाफ़ा करेगा और आप की
रास्तबाज़ी की फ़सल उगने देगा। 11 हाँ, वह आप
को हर लिहाज़ से दौलतमन्द बना देगा और आप
हर मौक़े पर फ़य्याज़ी से दे सकेंगे। चुनाँचे जब हम
आप का हदिया उन के पास ले जाएंगे जो ज़रूरतमन्द
हैं तो वह ख़ुदा का शुक्र करेंगे। 12 यूँ आप न सिर्फ़
मुक़द्दसीन की ज़रूरियात पूरी करेंगे बल्कि वह आप
की इस ख़िदमत से इतने मुतअस्सिर हो जाएंगे कि
वह बड़े जोश से ख़ुदा का भी शुक्रिया अदा करेंगे।
13 आप की ख़िदमत के नतीजे में वह अल्लाह को
जलाल देंगे। क्यूँकि आप की उन पर और तमाम
ईमानदारों पर सख़ावत का इज़हार साबित करेगा कि
आप मसीह की ख़ुशख़बरी न सिर्फ़ तस्लीम करते हैं
बल्कि उस के ताबे भी रहते हैं। 14 और जब वह आप
के लिए दुआ करेंगे तो आप के आरज़ूमन्द रहेंगे, इस
लिए कि अल्लाह ने आप को कितना बड़ा फ़ज़्ल दे
दिया है। 15 अल्लाह का उस की नाक़ाबिल-ए-बयान
बख़्शिश के लिए शुक्र हो!

पौलुस अपनी ख़िदमत का दिफ़ा करता है

10 1 मैं आप से अपील करता हूँ, मैं पौलुस
जिस के बारे में कहा जाता है कि मैं आप
के रू-ब-रू आजिज़ होता हूँ और सिर्फ़ आप से दूर हो
कर दिलेर होता हूँ। मसीह की हलीमी और नर्मी के
नाम में 2 मैं आप से मिन्नत करता हूँ कि मुझे आप के
पास आ कर इतनी दिलेरी से उन लोगों से निपटना न
पड़े जो समझते हैं कि हमारा चाल-चलन दुनियावी है।
क्यूँकि फ़िलहाल ऐसा लगता है कि इस की ज़रूरत
होगी। 3 बेशक हम इन्सान ही हैं, लेकिन हम दुनिया
की तरह जंग नहीं लड़ते। 4 और जो हथियार हम इस
जंग में इस्तेमाल करते हैं वह इस दुनिया के नहीं हैं,
बल्कि उन्हें अल्लाह की तरफ़ से क़िले ढा देने की
क़ुव्वत हासिल है। इन से हम ग़लत ख़यालात के
ढाँचे 5 और हर ऊँची चीज़ ढा देते हैं जो अल्लाह के
इल्म-ओ-इर्फ़ान के ख़िलाफ़ खड़ी हो जाती है। और
हम हर ख़याल को क़ैद करके मसीह के ताबे कर देते
हैं। 6 हाँ, आप के पूरे तौर पर ताबे हो जाने पर हम
हर नाफ़रमानी की सज़ा देने के लिए तय्यार होंगे।

7 आप सिर्फ़ ज़ाहिरी बातों पर ग़ौर कर रहे हैं। अगर
किसी को इस बात का एतिमाद हो कि वह मसीह का
है तो वह इस का भी ख़याल करे कि हम भी उसी की
तरह मसीह के हैं। 8 क्यूँकि अगर मैं उस इख़तियार

पर मज़ीद फ़ख़र भी करूँ जो ख़ुदावन्द ने हमें दिया
है तो भी मैं शर्मिन्दा नहीं हूँगा। ग़ौर करें कि उस ने
हमें आप को ढा देने का नहीं बल्कि आप की रुहानी
तामीर करने का इख़तियार दिया है। 9 मैं नहीं चाहता
कि ऐसा लगे जैसे मैं आप को अपने ख़तों से डराने
की कोशिश कर रहा हूँ। 10 क्यूँकि बाज़ कहते हैं,
"पौलुस के ख़त ज़ोरदार और ज़बरदस्त हैं, लेकिन
जब वह ख़ुद हाज़िर होता है तो वह कमज़ोर और उस
के बोलने का तर्ज़ हिक़ारतआमेज़ है।" 11 ऐसे लोग
इस बात का ख़याल करें कि जो बातें हम आप से
दूर होते हुए अपने ख़तों में पेश करते हैं उन ही बातों
पर हम अमल करेंगे जब आप के पास आएँगे।

12 हम तो अपने आप को उन में शुमार नहीं करते
जो अपनी तारीफ़ करके अपनी सिफ़ारिश करते रहते
हैं, न अपना उन के साथ मुवाज़ना करते हैं। वह
कितने बेसमझ हैं जब वह अपने आप को मेयार
बना कर उसी पर अपने आप को जाँचते हैं और
अपना मुवाज़ना अपने आप से करते हैं। 13 लेकिन
हम मुनासिब हद से ज़्यादा फ़ख़र नहीं करेंगे बल्कि
सिर्फ़ उस हद तक जो अल्लाह ने हमारे लिए मुक़र्रर
किया है। और आप भी इस हद के अन्दर आ जाते हैं।
14 इस में हम मुनासिब हद से ज़्यादा फ़ख़र नहीं कर
रहे, क्यूँकि हम तो मसीह की ख़ुशख़बरी ले कर आप
तक पहुँच गए हैं। अगर ऐसा न होता तो फिर और
बात होती। 15 हम ऐसे काम पर फ़ख़र नहीं करते जो
दूसरों की मेहनत से सरअन्जाम दिया गया है। इस में
भी हम मुनासिब हद्दों के अन्दर रहते हैं, बल्कि हम
यह उम्मीद रखते हैं कि आप का ईमान बढ़ जाए और
यूँ हमारी क़दर-ओ-क़ीमत भी अल्लाह की मुक़र्ररा हद
तक बढ़ जाए। ख़ुदा करे कि आप में हमारा यह काम
इतना बढ़ जाए 16 कि हम अल्लाह की ख़ुशख़बरी आप
से आगे जा कर भी सुना सकें। क्यूँकि हम उस काम
पर फ़ख़र नहीं करना चाहते जिसे दूसरे कर चुके हैं।

17 कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, "फ़ख़र करने
वाला ख़ुदावन्द ही पर फ़ख़र करे।" 18 जब लोग
अपनी तारीफ़ करके अपनी सिफ़ारिश करते हैं तो
इस में क्या है! इस से वह सहीह साबित नहीं होते,
बल्कि अहम बात यह है कि ख़ुदावन्द ही इस की
तस्दीक़ करे।

पौलुस और झूटे रसूल

11 1 ख़ुदा करे कि जब मैं अपनी हमाक़त का
कुछ इज़हार करता हूँ तो आप मुझे बर्दाश्त
करें। हाँ, ज़रूर मुझे बर्दाश्त करें, 2 क्यूँकि मैं आप
के लिए अल्लाह की सी ग़ैरत रखता हूँ। मैं ने आप
का रिश्ता एक ही मर्द के साथ बांधा, और मैं आप
को पाकदामन कुंवारी की हैसियत से उस मर्द मसीह
के हुज़ूर पेश करना चाहता था। 3 लेकिन अफ़सोस,
मुझे डर है कि आप हव्वा की तरह गुनाह में गिर
जाएंगे, कि जिस तरह साँप ने अपनी चालाकी से
हव्वा को धोका दिया उसी तरह आप की सोच भी
बिगड़ जाएगी और वह ख़ुलूसदिली और पाक लगन
ख़त्म हो जाएगी जो आप मसीह के लिए महसूस करते
हैं। 4 क्यूँकि आप ख़ुशी से हर एक को बर्दाश्त करते
हैं जो आप के पास आ कर एक फ़र्क़ क़िस्म का
ईसा पेश करता है, एक ऐसा ईसा जो हम ने आप को
पेश नहीं किया था। और आप एक ऐसी रूह और
ऐसी "ख़ुशख़बरी" क़बूल करते हैं जो उस रूह और
ख़ुशख़बरी से बिलकुल फ़र्क़ है जो आप को हम से
मिली थी।

5 मेरा नहीं ख़याल कि मैं इन नाम-निहाद 'ख़ास'
रसूलों की निस्बत कम हूँ। 6 हो सकता है कि मैं
बोलने में माहिर नहीं हूँ, लेकिन यह मेरे इल्म के बारे
में नहीं कहा जा सकता। यह हम ने आप को साफ़
साफ़ और हर लिहाज़ से दिखाया है।

7 मैं ने अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए आप
से कोई भी मुआवज़ा न लिया। यूँ मैं ने अपने आप
को नीचा कर दिया ताकि आप को सरफ़राज़ कर
दिया जाए। क्या इस में मुझ से ग़लती हुई? 8 जब
मैं आप की ख़िदमत कर रहा था तो मुझे ख़ुदा की
दीगर जमाअतों से पैसे मिल रहे थे, यानी आप की
मदद करने के लिए मैं उन्हें लूट रहा था। 9 और जब

मैं आप के पास था और ज़रूरतमन्द था तो मैं किसी
पर बोझ न बना, क्यूँकि जो भाई मकिदुनिया से आए
उन्हों ने मेरी ज़रूरियात पूरी कीं। माज़ी में मैं आप पर
बोझ न बना और आइन्दा भी नहीं बनूँगा। 10 मसीह
की उस सच्चाई की क़सम जो मेरे अन्दर है, अख़या
के पूरे सूबे में कोई मुझे इस पर फ़ख़र करने से नहीं
रोकेगा। 11 मैं यह क्यूँ कह रहा हूँ? इस लिए कि मैं
आप से मुहब्बत नहीं रखता? ख़ुदा ही जानता है कि
मैं आप से मुहब्बत रखता हूँ।

12 और जो कुछ मैं अब कर रहा हूँ वही करता
रहूँगा, ताकि मैं नाम-निहाद रसूलों को वह मौक़ा न दूँ
जो वह ढूँड रहे हैं। क्यूँकि यही उन का मक़सद है कि
वह फ़ख़र करके यह कह सकें कि वह हम जैसे हैं।
13 ऐसे लोग तो झूटे रसूल हैं, धोकेबाज़ मज़दूर जिन्हों
ने मसीह के रसूलों का रूप धार लिया है। 14 और
क्या अजब, क्यूँकि इब्लीस भी नूर के फ़रिश्ते का
रूप धार कर घूमता फिरता है। 15 तो फिर यह बड़ी
बात नहीं कि उस के चेले रास्तबाज़ी के ख़ादिम का
रूप धार कर घूमते फिरते हैं। उन का अन्जाम उन के
आमाल के मुताबिक़ ही होगा।

रसूल होने की वजह से पौलुस की ईज़ारसानी

16 मैं दुबारा कहता हूँ कि कोई मुझे अहमक़ न
समझे। लेकिन अगर आप यह सोचें भी तो कम
अज़ कम मुझे अहमक़ की हैसियत से क़बूल करें
ताकि मैं भी थोड़ा बहुत अपने आप पर फ़ख़र करूँ।
17 असल में जो कुछ मैं अब बयान कर रहा हूँ वह
ख़ुदावन्द को पसन्द नहीं है, बल्कि मैं अहमक़ की
तरह बात कर रहा हूँ। 18 लेकिन चूँकि इतने लोग
जिस्मानी तौर पर फ़ख़र कर रहे हैं इस लिए मैं भी
फ़ख़र करूँगा। 19 बेशक आप ख़ुद इतने दानिशमन्द
हैं कि आप अहमक़ों को ख़ुशी से बर्दाश्त करते
हैं। 20 हाँ, बल्कि आप यह भी बर्दाश्त करते हैं जब
लोग आप को ग़ुलाम बनाते, आप को लूटते, आप
से ग़लत फ़ाइदा उठाते, नख़रे करते और आप को
थप्पड़ मारते हैं। 21 यह कह कर मुझे शर्म आती है
कि हम इतने कमज़ोर थे कि हम ऐसा न कर सके।

लेकिन अगर कोई किसी बात पर फ़ख़र करने की
जुरअत करे (मैं अहमक़ की सी बात कर रहा हूँ) तो
मैं भी उतनी ही जुरअत करूँगा। 22 क्या वह इब्रानी
हैं? मैं भी हूँ। क्या वह इस्राईली हैं? मैं भी हूँ। क्या
वह इब्राहीम की औलाद हैं? मैं भी हूँ। 23 क्या वह
मसीह के ख़ादिम हैं? (अब तो मैं गोया बेख़ुद हो
गया हूँ कि इस तरह की बातें कर रहा हूँ!) मैं उन
से ज़्यादा मसीह की ख़िदमत करता हूँ। मैं ने उन से
कहीं ज़्यादा मेहनत-मशक़्क़त की, ज़्यादा दफ़ा जेल
में रहा, मेरे ज़्यादा सख़्ती से कोड़े लगाए गए और मैं
बार बार मरने के खतरों में रहा हूँ। 24 मुझे यहूदियों
से पाँच दफ़ा 39 कोड़ों की सज़ा मिली है। 25 तीन
दफ़ा रोमियों ने मुझे लाठी से मारा। एक बार मुझे
संगसार किया गया। जब मैं समुन्दर में सफ़र कर
रहा था तो तीन मर्तबा मेरा जहाज़ तबाह हुआ। हाँ,
एक दफ़ा मुझे जहाज़ के तबाह होने पर एक पूरी रात
और दिन समुन्दर में गुज़ारना पड़ा। 26 मेरे बेशुमार
सफ़रों के दौरान मुझे कई तरह के खतरों का सामना
करना पड़ा, दरयाओं और डाकुओं का ख़तरा, अपने
हमवतनों और ग़ैरयहूदियों के हम्लों का ख़तरा। जहाँ
भी मैं गया हूँ वहाँ यह ख़तरे मौजूद रहे, ख़्वाह मैं
शहर में था, ख़्वाह ग़ैरआबाद इलाक़े में या समुन्दर
में। झूटे भाइयों की तरफ़ से भी ख़तरे रहे हैं। 27 मैं
ने जाँफ़िशानी से सख़्त मेहनत-मशक़्क़त की है और
कई रात जागता रहा हूँ, मैं भूका और प्यासा रहा हूँ,
मैं ने बहुत रोज़े रखे हैं। मुझे सर्दी और नंगेपन का
तजरिबा हुआ है। 28 और यह उन फ़िक्रों के इलावा
है जो मैं ख़ुदा की तमाम जमाअतों के लिए महसूस
करता हूँ और जो मुझे दबाती रहती हैं। 29 जब कोई
कमज़ोर है तो मैं अपने आप को भी कमज़ोर महसूस
करता हूँ। जब किसी को ग़लत राह पर लाया जाता
है तो मैं उस के लिए शदीद रंजिश महसूस करता हूँ।

30 अगर मुझे फ़ख़र करना पड़े तो मैं उन चीज़ों पर
फ़ख़र करूँगा जो मेरी कमज़ोर हालत ज़ाहिर करती

हैं। 31 हमारा ख़ुदा और ख़ुदावन्द ईसा का बाप (उस
की हम्द-ओ-सना अबद तक हो) जानता है कि मैं
झूट नहीं बोल रहा। 32 जब मैं दमिश्क़ शहर में था
तो बादशाह अरितास के गवर्नर ने शहर के तमाम
दरवाज़ों पर अपने पहरेदार मुक़र्रर किए ताकि वह
मुझे गिरिफ़्तार करें। 33 लेकिन शहर की फ़सील में
एक दरीचा था, और मुझे एक टोकरे में रख कर वहाँ
से उतारा गया। यूँ मैं उस के हाथों से बच निकला।

पौलुस पर कई बातों का इन्किशाफ़

12 1 लाज़िम है कि मैं कुछ और फ़ख़र करूँ।
अगरचे इस का कोई फ़ाइदा नहीं, लेकिन
अब मैं उन रोयाओं और इन्किशाफ़ात का ज़िक्र
करूँगा जो ख़ुदावन्द ने मुझ पर ज़ाहिर किए। 2 मैं
मसीह में एक आदमी को जानता हूँ जिसे चौदह साल
हुए छीन कर तीसरे आसमान तक पहुँचाया गया। मुझे
नहीं पता कि उसे यह तजरिबा जिस्म में या इस के
बाहर हुआ। ख़ुदा जानता है। 3 हाँ, ख़ुदा ही जानता है
कि वह जिस्म में था या नहीं। लेकिन यह मैं जानता
हूँ 4 कि उसे छीन कर फ़िर्दौस में लाया गया जहाँ उस
ने नाक़ाबिल-ए-बयान बातें सुनीं, ऐसी बातें जिन का
ज़िक्र करना इन्सान के लिए रवा नहीं। 5 इस क़िस्म
के आदमी पर मैं फ़ख़र करूँगा, लेकिन अपने आप
पर नहीं। मैं सिर्फ़ उन बातों पर फ़ख़र करूँगा जो मेरी
कमज़ोर हालत को ज़ाहिर करती हैं। 6 अगर मैं फ़ख़र
करना चाहता तो इस में अहमक़ न होता, क्यूँकि मैं
हक़ीक़त बयान करता। लेकिन मैं यह नहीं करूँगा,
क्यूँकि मैं चाहता हूँ कि सब की मेरे बारे में राय सिर्फ़
उस पर मुन्हसिर हो जो मैं करता या बयान करता हूँ।
कोई मुझे इस से ज़्यादा न समझे।

7 लेकिन मुझे इन आला इन्किशाफ़ात की वजह से
एक काँटा चुभो दिया गया, एक तक्लीफ़दिह चीज़
जो मेरे जिस्म में धंसी रहती है ताकि मैं फूल न जाऊँ।
इब्लीस का यह पैग़म्बर मेरे मुक्के मारता रहता है ताकि
मैं मग़रूर न हो जाऊँ। 8 तीन बार मैं ने ख़ुदावन्द से
इल्तिजा की कि वह इसे मुझ से दूर करे। 9 लेकिन
उस ने मुझे यही जवाब दिया, "मेरा फ़ज़्ल तेरे लिए
काफ़ी है, क्यूँकि मेरी क़ुदरत का पूरा इज़हार तेरी
कमज़ोर हालत ही में होता है।" इस लिए मैं मज़ीद
ख़ुशी से अपनी कमज़ोरियों पर फ़ख़र करूँगा ताकि
मसीह की क़ुदरत मुझ पर ठहरी रहे। 10 यही वजह
है कि मैं मसीह की ख़ातिर कमज़ोरियों, गालियों,
मज्बूरियों, ईज़ारसानियों और परेशानियों में ख़ुश हूँ,
क्यूँकि जब मैं कमज़ोर होता हूँ तब ही मैं ताक़तवर
होता हूँ।

पौलुस की कुरिन्थियों के लिए फ़िक्र

11 मैं बेवुक़ूफ़ बन गया हूँ, लेकिन आप ने मुझे
मज्बूर कर दिया है। चाहिए था कि आप ही दूसरों
के सामने मेरे हक़ में बात करते। क्यूँकि बेशक मैं
कुछ भी नहीं हूँ, लेकिन इन नाम-निहाद ख़ास रसूलों
के मुक़ाबले में मैं किसी भी लिहाज़ से कम नहीं
हूँ। 12 जो मुतअद्दिद इलाही निशान, मोजिज़े और
ज़बरदस्त काम मेरे वसीले से हुए वह साबित करते हैं
कि मैं रसूल हूँ। हाँ, वह बड़ी साबितक़दमी से आप
के दरमियान किए गए। 13 जो ख़िदमत मैं ने आप के
दरमियान की, क्या वह ख़ुदा की दीगर जमाअतों में
मेरी ख़िदमत की निस्बत कम थी? हरगिज़ नहीं! इस
में फ़र्क़ सिर्फ़ यह था कि मैं आप के लिए माली बोझ
न बना। मुझे मुआफ़ करें अगर मुझ से इस में ग़लती
हुई है।

14 अब मैं तीसरी बार आप के पास आने के लिए
तय्यार हूँ। इस मर्तबा भी मैं आप के लिए बोझ का
बाइस नहीं बनूँगा, क्यूँकि मैं आप का माल नहीं
बल्कि आप ही को चाहता हूँ। आख़िर बच्चों को माँ-
बाप की मदद के लिए माल जमा नहीं करना चाहिए
बल्कि माँ-बाप को बच्चों के लिए। 15 मैं तो बड़ी ख़ुशी
से आप के लिए हर ख़र्चा उठा लूँगा बल्कि अपने
आप को भी ख़र्च कर दूँगा। क्या आप मुझे कम प्यार
करेंगे अगर मैं आप से ज़्यादा मुहब्बत रखूँ?

16 ठीक है, मैं आप के लिए बोझ न बना। लेकिन
बाज़ सोचते हैं कि मैं चालाक हूँ और आप को धोके

से अपने जाल में फंसा लिया। 17 किस तरह? जिन
लोगों को मैं ने आप के पास भेजा क्या मैं ने उन में
से किसी के ज़रीए आप से ग़लत फ़ाइदा उठाया?
18 मैं ने तितुस की हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह आप
के पास जाए और दूसरे भाई को भी साथ भेज दिया।
क्या तितुस ने आप से ग़लत फ़ाइदा उठाया? हरगिज़
नहीं! क्यूँकि हम दोनों एक ही रूह में एक ही राह पर
चलते हैं।

19 आप काफ़ी देर से सोच रहे होंगे कि हम आप
के सामने अपना दिफ़ा कर रहे हैं। लेकिन ऐसा नहीं
है बल्कि हम मसीह में होते हुए अल्लाह के हुज़ूर ही
यह कुछ बयान कर रहे हैं। और मेरे अज़ीज़ो, जो
कुछ भी हम करते हैं हम आप की तामीर करने के
लिए करते हैं। 20 मुझे डर है कि जब मैं आऊँगा
तो न आप की हालत मुझे पसन्द आएगी, न मेरी
हालत आप को। मुझे डर है कि आप में झगड़ा,
हसद, ग़ुस्सा, ख़ुदग़रज़ी, बुह्तान, गपबाजी, ग़ुरूर
और बेतर्तीबी पाई जाएगी। 21 हाँ, मुझे डर है कि
अगली दफ़ा जब आऊँगा तो अल्लाह मुझे आप के
सामने नीचा दिखाएगा, और मैं उन बहुतों के लिए
ग़म खाऊँगा जिन्हों ने माज़ी में गुनाह करके अब तक
अपनी नापाकी, ज़िनाकारी और अय्याशी से तौबा
नहीं की।

आख़िरी तम्बीह और सलाम

13 1 अब मैं तीसरी दफ़ा आप के पास आ रहा
हूँ। कलाम-ए-मुक़द्दस के मुताबिक़ लाज़िम
है कि हर इल्ज़ाम की तस्दीक़ दो या तीन गवाहों से
की जाए। 2 जब मैं दूसरी दफ़ा आप के पास आया
था तो मैं ने पहले से आप को आगाह किया था। अब
मैं आप से दूर यह बात दुबारा कहता हूँ कि जब मैं
वापस आऊँगा तो न वह बचेंगे जिन्हों ने पहले गुनाह
किया था न दीगर लोग। 3 जो भी सबूत आप माँग रहे
हैं कि मसीह मेरे ज़रीए बोलता है वह मैं आप को
दूँगा। आप के साथ सुलूक में मसीह कमज़ोर नहीं
है। नहीं, वह आप के दरमियान ही अपनी क़ुव्वत
का इज़हार करता है। 4 क्यूँकि अगरचे उसे कमज़ोर
हालत में मस्लूब किया गया, लेकिन अब वह अल्लाह
की क़ुदरत से ज़िन्दा है। इसी तरह हम भी उस में
कमज़ोर हैं, लेकिन अल्लाह की क़ुदरत से हम आप
की ख़िदमत करते वक़्त उस के साथ ज़िन्दा हैं।

5 अपने आप को जाँच कर मालूम करें कि क्या
आप का ईमान क़ाइम है? ख़ुद अपने आप को परखें।
क्या आप नहीं जानते कि ईसा मसीह आप में है?
अगर नहीं तो इस का मतलब होता कि आप का
ईमान नामक़्बूल साबित होता। 6 लेकिन मुझे उम्मीद
है कि आप इतना पहचान लेंगे कि जहाँ तक हमारा
ताल्लुक़ है हम नामक़्बूल साबित नहीं हुए हैं। 7 हम
अल्लाह से दुआ करते हैं कि आप से कोई ग़लती न
हो जाए। बात यह नहीं कि लोगों के सामने हम सहीह
निकलें बल्कि यह कि आप सहीह काम करें, चाहे
लोग हमें ख़ुद नाकाम क्यूँ न क़रार दें। 8 क्यूँकि हम
हक़ीक़त के ख़िलाफ़ खड़े नहीं हो सकते बल्कि सिर्फ़
उस के हक़ में। 9 हम ख़ुश हैं जब आप ताक़तवर
हैं गो हम ख़ुद कमज़ोर हैं। और हमारी दुआ यह है
कि आप कामिल हो जाएँ। 10 यही वजह है कि मैं
आप से दूर रह कर लिखता हूँ। फिर जब मैं आऊँगा
तो मुझे अपना इख़तियार इस्तेमाल करके आप पर
सख़्ती नहीं करनी पड़ेगी। क्यूँकि ख़ुदावन्द ने मुझे
यह इख़तियार आप को ढा देने के लिए नहीं बल्कि
आप को तामीर करने के लिए दिया है।

11 भाइयो, आख़िर में मैं आप को सलाम कहता हूँ।
सुधर जाएँ, एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करें, एक
ही सोच रखें और सुलह-सलामती के साथ ज़िन्दगी
गुज़ारें। फिर मुहब्बत और सलामती का ख़ुदा आप
के साथ होगा।

12 एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा देना। तमाम
मुक़द्दसीन आप को सलाम कहते हैं।

13 ख़ुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़्ल, अल्लाह की
मुहब्बत और रूह-उल-क़ुद्स की रिफ़ाक़त आप सब
के साथ होती रहे।

गलतियों

1 [1] यह ख़त पौलुस रसूल की तरफ़ से है। मुझे न
किसी गुरोह ने मुक़र्रर किया न किसी शख़्स ने
बल्कि ईसा मसीह और ख़ुदा बाप ने जिस ने उसे मुर्दों
में से ज़िन्दा कर दिया। [2] तमाम भाई भी जो मेरे साथ
हैं गलतिया की जमाअतों को सलाम कहते हैं।

[3] ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
को फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

[4] मसीह वही है जिस ने अपने आप को हमारे गुनाहों
की ख़ातिर क़ुर्बान कर दिया और यूँ हमें इस मौजूदा
शरीर जहान से बचा लिया है, क्यूँकि यह अल्लाह हमारे
बाप की मर्ज़ी थी। [5] उसी का जलाल अबद तक होता
रहे! आमीन।

एक ही ख़ुशख़बरी

[6] मैं हैरान हूँ! आप इतनी जल्दी से उसे तर्क कर रहे
हैं जिस ने मसीह के फ़ज़्ल से आप को बुलाया। और
अब आप एक फ़र्क़ क़िस्म की "ख़ुशख़बरी" के पीछे
लग गए हैं। [7] असल में यह अल्लाह की ख़ुशख़बरी है
नहीं। बस कुछ लोग आप को उलझन में डाल कर
मसीह की ख़ुशख़बरी में तब्दीली लाना चाहते हैं।
[8] हम ने तो असली ख़ुशख़बरी सुनाई और जो इस से
फ़र्क़ पैग़ाम सुनाता है उस पर लानत, ख़्वाह हम ख़ुद
ऐसा करें ख़्वाह आसमान से कोई फ़रिश्ता उतर कर
यह ग़लत पैग़ाम सुनाए। [9] हम यह पहले बयान कर
चुके हैं और अब मैं दुबारा कहता हूँ कि अगर कोई
आप को ऐसी "ख़ुशख़बरी" सुनाए जो उस से फ़र्क़
है जिसे आप ने क़बूल किया है तो उस पर लानत!

[10] क्या मैं इस में यह कोशिश कर रहा हूँ कि लोग
मुझे क़बूल करें? हरगिज़ नहीं! मैं चाहता हूँ कि
अल्लाह मुझे क़बूल करे। क्या मेरी कोशिश यह है कि
मैं लोगों को पसन्द आऊँ? अगर मैं अब तक ऐसा
करता तो मसीह का ख़ादिम न होता।

पौलुस किस तरह रसूल बन गया

[11] भाइयो, मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि जो
ख़ुशख़बरी मैं ने सुनाई वह इन्सान की तरफ़ से नहीं
है। [12] न मुझे यह पैग़ाम किसी इन्सान से मिला, न
यह मुझे किसी ने सिखाया है बल्कि ईसा मसीह ने
ख़ुद मुझ पर यह पैग़ाम ज़ाहिर किया।

[13] आप ने तो ख़ुद सुन लिया है कि मैं उस वक़्त
किस तरह ज़िन्दगी गुज़ारता था जब यहूदी मज़्हब
का पैरोकार था। उस वक़्त मैं ने कितने जोश और
शिद्दत से अल्लाह की जमाअत को ईज़ा पहुँचाई।
मेरी पूरी कोशिश यह थी कि यह जमाअत ख़त्म हो
जाए। [14] यहूदी मज़्हब के लिहाज़ से मैं अक्सर दीगर
हमउम्र यहूदियों पर सब्क़त ले गया था। हाँ, मैं अपने
बापदादा की रिवायतों की पैरवी में हद से ज़्यादा
सरगर्म था।

[15] लेकिन अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से मुझे पैदा होने
से पेशतर ही चुन कर अपनी ख़िदमत करने के लिए
बुलाया। और जब उस ने अपनी मर्ज़ी से [16] अपने
फ़र्ज़न्द को मुझ पर ज़ाहिर किया ताकि मैं उस के
बारे में ग़ैरयहूदियों को ख़ुशख़बरी सुनाऊँ तो मैं ने
किसी भी शख़्स से मश्वरा न लिया। [17] उस वक़्त मैं
यरूशलम भी न गया ताकि उन से मिलूँ जो मुझ से
पहले रसूल थे बल्कि मैं सीधा अरब चला गया और
बाद में दमिश्क़ वापस आया। [18] इस के तीन साल
बाद ही मैं पतरस से शनासा होने के लिए यरूशलम
गया। वहाँ मैं पंद्रह दिन उस के साथ रहा। [19] इस के
इलावा मैं ने सिर्फ़ ख़ुदावन्द के भाई याक़ूब को देखा,
किसी और रसूल को नहीं।

[20] जो कुछ मैं लिख रहा हूँ अल्लाह गवाह है कि वह
सहीह है। मैं झूट नहीं बोल रहा।

21 बाद में मैं मुल्क-ए-शाम और किलिकिया चला
गया। 22 उस वक़्त सूबा यहूदिया में मसीह की
जमाअतें मुझे नहीं जानती थीं। 23 उन तक सिर्फ़ यह
ख़बर पहुँची थी कि जो आदमी पहले हमें ईज़ा पहुँचा
रहा था वह अब ख़ुद उस ईमान की ख़ुशख़बरी
सुनाता है जिसे वह पहले ख़त्म करना चाहता था।
24 यह सुन कर उन्हों ने मेरी वजह से अल्लाह की
तम्जीद की।

पौलुस और दीगर रसूल

2 1 चौदह साल के बाद मैं दुबारा यरूशलम गया।
इस दफ़ा बर्नबास साथ था। मैं तितुस को भी
साथ ले कर गया। 2 मैं एक मुकाशफ़े की वजह से
गया जो अल्लाह ने मुझ पर ज़ाहिर किया था। मेरी
अलाहिदगी में उन के साथ मीटिंग हुई जो असर-ओ-
रसूख़ रखते हैं। इस में मैं ने उन्हें वह ख़ुशख़बरी पेश
की जो मैं ग़ैरयहूदियों को सुनाता हूँ। मैं नहीं चाहता
था कि जो दौड़ मैं दौड़ रहा हूँ या माज़ी में दौड़ा था
वह आख़िरकार बेफ़ाइदा निकले। 3 उस वक़्त वह
यहाँ तक मेरे हक़ में थे कि उन्हों ने तितुस को भी
अपना ख़तना करवाने पर मज्बूर नहीं किया, अगरचे
वह ग़ैरयहूदी है। 4 और चन्द यही चाहते थे। लेकिन
यह झूटे भाई थे जो चुपके से अन्दर घुस आए थे
ताकि जासूस बन कर हमारी उस आज़ादी के बारे
में मालूमात हासिल कर लें जो हमें मसीह में मिली
है। यह हमें ग़ुलाम बनाना चाहते थे, 5 लेकिन हम ने
लम्हा भर उन की बात न मानी और न उन के ताबे
हुए ताकि अल्लाह की ख़ुशख़बरी की सच्चाई आप के
दरमियान क़ाइम रहे।

6 और जो राहनुमा समझे जाते थे उन्हों ने मेरी
बात में कोई इज़ाफ़ा न किया। (असल में मुझे कोई
पर्वा नहीं कि उन का असर-ओ-रसूख़ था कि नहीं।
अल्लाह तो इन्सान की ज़ाहिरी हालत का लिहाज़
नहीं करता।) 7 बहरहाल उन्हों ने देखा कि अल्लाह
ने मुझे ग़ैरयहूदियों को मसीह की ख़ुशख़बरी सुनाने
की ज़िम्मादारी दी थी, बिलकुल उसी तरह जिस तरह
उस ने पतरस को यहूदियों को यह पैग़ाम सुनाने की
ज़िम्मादारी दी थी। 8 क्यूँकि जो काम अल्लाह यहूदियों
के रसूल पतरस की ख़िदमत के वसीले से कर रहा
था वही काम वह मेरे वसीले से भी कर रहा था,
जो ग़ैरयहूदियों का रसूल हूँ। 9 याक़ूब, पतरस और
यूहन्ना को जमाअत के सतून माना जाता था। जब
उन्हों ने जान लिया कि अल्लाह ने इस नाते से मुझे
ख़ास फ़ज़्ल दिया है तो उन्हों ने मुझ से और बर्नबास
से दहना हाथ मिला कर इस का इज़हार किया कि वह
हमारे साथ हैं। यूँ हम मुत्तफ़िक़ हुए कि बर्नबास और
मैं ग़ैरयहूदियों में ख़िदमत करेंगे और वह यहूदियों
में। 10 उन्हों ने सिर्फ़ एक बात पर ज़ोर दिया कि हम
ज़रूरतमन्दों को याद रखें, वही बात जिसे मैं हमेशा
करने के लिए कोशाँ रहा हूँ।

अन्ताकिया में पौलुस पतरस को मलामत करता है

11 लेकिन जब पतरस अन्ताकिया शहर आया तो
मैं ने रू-ब-रू उस की मुख़ालफ़त की, क्यूँकि वह
अपने रवय्ये के सबब से मुजरिम ठहरा। 12 जब
वह आया तो पहले वह ग़ैरयहूदी ईमानदारों के
साथ खाना खाता रहा। लेकिन फिर याक़ूब के
कुछ अज़ीज़ आए। उसी वक़्त पतरस पीछे हट कर
ग़ैरयहूदियों से अलग हुआ, क्यूँकि वह उन से डरता
था जो ग़ैरयहूदियों का ख़तना करवाने के हक़ में
थे। 13 बाक़ी यहूदी भी इस रियाकारी में शामिल हुए,
यहाँ तक कि बर्नबास को भी उन की रियाकारी से
बहकाया गया। 14 जब मैं ने देखा कि वह उस सीधी
राह पर नहीं चल रहे हैं जो अल्लाह की ख़ुशख़बरी
की सच्चाई पर मब्नी है तो मैं ने सब के सामने पतरस
से कहा, “आप यहूदी हैं। लेकिन आप ग़ैरयहूदी की
तरह ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, यहूदी की तरह नहीं। तो
फिर यह कैसी बात है कि आप ग़ैरयहूदियों को यहूदी
रिवायात की पैरवी करने पर मज्बूर कर रहे हैं?”

यहूदी और ग़ैरयहूदी ईमान से नजात पाते हैं

15 बेशक हम पैदाइशी यहूदी हैं और 'ग़ैरयहूदी
गुनाहगार' नहीं हैं। 16 लेकिन हम जानते हैं कि
इन्सान को शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़
नहीं ठहराया जाता बल्कि ईसा मसीह पर ईमान लाने
से। हम भी मसीह ईसा पर ईमान लाए हैं ताकि हमें
रास्तबाज़ क़रार दिया जाए, शरीअत की पैरवी करने
से नहीं बल्कि मसीह पर ईमान लाने से। क्यूँकि
शरीअत की पैरवी करने से किसी को भी रास्तबाज़
क़रार नहीं दिया जाएगा। 17 लेकिन अगर मसीह में
रास्तबाज़ ठहरने की कोशिश करते करते हम ख़ुद
गुनाहगार साबित हो जाएँ तो क्या इस का मतलब
यह है कि मसीह गुनाह का ख़ादिम है? हरगिज़ नहीं!
18 अगर मैं शरीअत के उस निज़ाम को दुबारा तामीर
करूँ जो मैं ने ढा दिया तो फिर मैं ज़ाहिर करता हूँ
कि मैं मुजरिम हूँ। 19 क्यूँकि जहाँ तक शरीअत का
ताल्लुक़ है मैं मुर्दा हूँ। मुझे शरीअत ही से मारा गया है
ताकि अल्लाह के लिए जी सकूँ। मुझे मसीह के साथ
मस्लूब किया गया 20 और यूँ मैं ख़ुद ज़िन्दा न रहा
बल्कि मसीह मुझ में ज़िन्दा है। अब जो ज़िन्दगी मैं
इस जिस्म में गुज़ारता हूँ वह अल्लाह के फ़र्ज़न्द पर
ईमान लाने से गुज़ारता हूँ। उसी ने मुझ से मुहब्बत रख
कर मेरे लिए अपनी जान दी। 21 मैं अल्लाह का फ़ज़्ल
रद्द करने से इन्कार करता हूँ। क्यूँकि अगर किसी
को शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ ठहराया
जा सकता तो इस का मतलब यह होता कि मसीह
का मरना अबस था।

शरीअत या ईमान

3 1 नासमझ गलतियो! किस ने आप पर जादू कर
दिया? आप की आँखों के सामने ही ईसा मसीह
और उस की सलीबी मौत को साफ़ साफ़ पेश किया
गया। 2 मुझे एक बात बताएँ, क्या आप को शरीअत
की पैरवी करने से रूह-उल-क़ुद्स मिला? हरगिज़
नहीं! वह आप को उस वक़्त मिला जब आप मसीह
के बारे में पैग़ाम सुन कर उस पर ईमान लाए। 3 क्या
आप इतने बेसमझ हैं? आप की रुहानी ज़िन्दगी रूह-
उल-क़ुद्स के वसीले से शुरू हुई। तो अब आप यह
काम अपनी इन्सानी कोशिशों से किस तरह तक्मील
तक पहुँचाना चाहते हैं? 4 आप को कई तरह के
तजरिबे हासिल हुए हैं। क्या यह सब बेफ़ाइदा थे?
यक़ीनन यह बेफ़ाइदा नहीं थे। 5 क्या अल्लाह इस लिए
आप को अपना रूह देता और आप के दरमियान
मोजिज़े करता है कि आप शरीअत की पैरवी करते
हैं? हरगिज़ नहीं, बल्कि इस लिए कि आप मसीह के
बारे में पैग़ाम सुन कर ईमान लाए हैं।

6 इब्राहीम की मिसाल लें। उस ने अल्लाह पर भरोसा
किया और इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़
क़रार दिया। 7 तो फिर आप को जान लेना चाहिए
कि इब्राहीम की हक़ीक़ी औलाद वह लोग हैं जो
ईमान रखते हैं। 8 कलाम-ए-मुक़द्दस ने इस बात की
पेशगोई की कि अल्लाह ग़ैरयहूदियों को ईमान के
ज़रीए रास्तबाज़ क़रार देगा। यूँ उस ने इब्राहीम
को यह ख़ुशख़बरी सुनाई, "तमाम क़ौमें तुझ से
बरकत पाएँगी।" 9 इब्राहीम ईमान लाया, इस लिए
उसे बरकत मिली। इसी तरह सब को ईमान लाने पर
इब्राहीम की सी बरकत मिलती है।

10 लेकिन जो भी इस पर तकिया करते हैं कि
हमें शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ क़रार
दिया जाएगा उन पर अल्लाह की लानत है। क्यूँकि
कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है, "हर एक पर लानत
जो शरीअत की किताब की तमाम बातें क़ाइम न
रखे, न इन पर अमल करे।" 11 यह बात तो साफ़ है
कि अल्लाह किसी को भी शरीअत की पैरवी करने की
बिना पर रास्तबाज़ नहीं ठहराता, क्यूँकि कलाम-ए-
मुक़द्दस के मुताबिक़ रास्तबाज़ ईमान ही से जीता
रहेगा। 12 ईमान की यह राह शरीअत की राह से
बिलकुल फ़र्क़ है जो कहती है, "जो यूँ करेगा वह
जीता रहेगा।"

13 लेकिन मसीह ने हमारा फ़िद्या दे कर हमें शरीअत
की लानत से आज़ाद कर दिया है। यह उस ने

इस तरह किया कि वह हमारी ख़ातिर ख़ुद लानत बना। क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, “जिसे भी दरख़्त से लटकाया गया है उस पर अल्लाह की लानत है।” 14 इस का मक़्सद यह था कि जो बरकत इब्राहीम को हासिल हुई वह मसीह के वसीले से ग़ैरयहूदियों को भी मिले और यूँ हम ईमान ला कर वादा किया हुआ रूह पाएँ।

शरीअत और वादा

15 भाइयो, इन्सानी ज़िन्दगी की एक मिसाल लें। जब दो पार्टियाँ किसी मुआमले में मुत्तफ़िक़ हो कर मुआहदा करती हैं तो कोई इस मुआहदे को मन्सूख़ या इस में इज़ाफ़ा नहीं कर सकता। 16 अब ग़ौर करें कि अल्लाह ने अपने वादे इब्राहीम और उस की औलाद से ही किए। लेकिन जो लफ़्ज़ इब्रानी में औलाद के लिए इस्तेमाल हुआ है इस से मुराद बहुत से अफ़राद नहीं बल्कि एक फ़र्द है और वह है मसीह। 17 कहने से मुराद यह है कि अल्लाह ने इब्राहीम से अह्द बांध कर उसे क़ाइम रखने का वादा किया। शरीअत जो 430 साल के बाद दी गई इस अह्द को रद्द करके अल्लाह का वादा मन्सूख़ नहीं कर सकती। 18 क्यूँकि अगर इब्राहीम की मीरास शरीअत की पैरवी करने से मिलती तो फिर वह अल्लाह के वादे पर मुन्हसिर न होती। लेकिन ऐसा नहीं था। अल्लाह ने इसे अपने वादे की बिना पर इब्राहीम को दे दिया।

19 तो फिर शरीअत का क्या मक़्सद था? उसे इस लिए वादे के इलावा दिया गया ताकि लोगों के गुनाहों को ज़ाहिर करे। और उसे उस वक़्त तक क़ाइम रहना था जब तक इब्राहीम की वह औलाद न आ जाती जिस से वादा किया गया था। अल्लाह ने अपनी शरीअत फ़रिश्तों के वसीले से मूसा को दे दी जो अल्लाह और लोगों के बीच में दरमियानी रहा। 20 अब दरमियानी उस वक़्त ज़रूरी होता है जब एक से ज़्यादा पार्टियों में इत्तिफ़ाक़ कराने की ज़रूरत है। लेकिन अल्लाह जो एक ही है उस ने दरमियानी इस्तेमाल न किया जब उस ने इब्राहीम से वादा किया।

शरीअत का मक़्सद

21 तो क्या इस का मतलब यह है कि शरीअत अल्लाह के वादों के ख़िलाफ़ है? हरगिज़ नहीं! अगर इन्सान को ऐसी शरीअत मिली होती जो ज़िन्दगी दिला सकती तो फिर सब उस की पैरवी करने से रास्तबाज़ ठहरते। 22 लेकिन कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है कि पूरी दुनिया गुनाह के क़ब्ज़े में है। चुनाँचे हमें अल्लाह का वादा सिर्फ़ ईसा मसीह पर ईमान लाने से हासिल होता है।

23 इस से पहले कि ईमान की यह राह दस्तयाब हुई शरीअत ने हमें क़ैद करके महफ़ूज़ रखा था। इस क़ैद में हम उस वक़्त तक रहे जब तक ईमान की राह ज़ाहिर नहीं हुई थी। 24 यूँ शरीअत को हमारी तर्बियत करने की ज़िम्मादारी दी गई। उसे हमें मसीह तक पहुँचाना था ताकि हमें ईमान से रास्तबाज़ क़रार दिया जाए। 25 अब चूँकि ईमान की राह आ गई है इस लिए हम शरीअत की तर्बियत के तहत नहीं रहे।

26 क्यूँकि मसीह ईसा पर ईमान लाने से आप सब अल्लाह के फ़र्ज़न्द बन गए हैं। 27 आप में से जितनों को मसीह में बपतिस्मा दिया गया उन्हों ने मसीह को पहन लिया। 28 अब न यहूदी रहा न ग़ैरयहूदी, न ग़ुलाम रहा न आज़ाद, न मर्द रहा न औरत। मसीह ईसा में आप सब के सब एक हैं। 29 शर्त यह है कि आप मसीह के हों। तब आप इब्राहीम की औलाद और उन चीज़ों के वारिस हैं जिन का वादा अल्लाह ने किया है।

4 1 देखें, जो बेटा अपने बाप की मिलकियत का वारिस है वह उस वक़्त तक ग़ुलामों से फ़र्क़ नहीं जब तक वह बालिग़ न हो, हालाँकि वह पूरी मिलकियत का मालिक है। 2 बाप की तरफ़ से मुक़र्रर की हुई उम्र तक दूसरे उस की देख-भाल करते और उस की मिलकियत सँभालते हैं। 3 इसी तरह हम भी जब बच्चे थे दुनिया की कुव्वतों के ग़ुलाम थे। 4 लेकिन जब मुक़र्ररा वक़्त आ गया तो अल्लाह ने अपने फ़र्ज़न्द को भेज दिया। एक औरत से पैदा हो

कर वह शरीअत के ताबे हुआ 5 ताकि फ़िद्या दे कर
हमें जो शरीअत के ताबे थे आज़ाद कर दे। यूँ हमें
अल्लाह के फ़र्ज़न्द होने का मर्तबा मिला है।
6 अब चूँकि आप उस के फ़र्ज़न्द हैं इस लिए अल्लाह
ने अपने फ़र्ज़न्द के रूह को हमारे दिलों में भेज
दिया, वह रूह जो "अब्बा" यानी "ऐ बाप" कह
कर पुकारता रहता है। 7 ग़रज़ अब आप ग़ुलाम न
रहे बल्कि बेटे की हैसियत रखते हैं। और बेटा होने
का यह मतलब है कि अल्लाह ने आप को वारिस भी
बना दिया है।

पौलुस की गलतियों के लिए फ़िक्र

8 माज़ी में जब आप अल्लाह को नहीं जानते थे तो
आप उन के ग़ुलाम थे जो हक़ीक़त में ख़ुदा नहीं हैं।
9 लेकिन अब आप अल्लाह को जानते हैं, बल्कि अब
अल्लाह ने आप को जान लिया है। तो फिर आप मुड़
कर इन कमज़ोर और घटिया उसूलों की तरफ़ क्यूँ
वापस जाने लगे हैं? क्या आप दुबारा इन की ग़ुलामी
में आना चाहते हैं? 10 आप बड़ी फ़िक्रमन्दी से ख़ास
दिन, माह, मौसम और साल मनाते हैं। 11 मुझे आप
के बारे में डर है, कहीं मेरी आप पर मेहनत-मशक़्क़त
ज़ाए न जाए।
12 भाइयो, मैं आप से इल्तिजा करता हूँ कि मेरी
मानिन्द बन जाएँ, क्यूँकि मैं तो आप की मानिन्द
बन गया हूँ। आप ने मेरे साथ कोई ग़लत सुलूक नहीं
किया। 13 आप को मालूम है कि जब मैं ने पहली दफ़ा
आप को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाई तो इस की
वजह मेरे जिस्म की कमज़ोर हालत थी। 14 लेकिन
अगरचे मेरी यह हालत आप के लिए आज़माइश का
बाइस थी तो भी आप ने मुझे हक़ीर न जाना, न मुझे
नीच समझा, बल्कि आप ने मुझे यूँ ख़ुशआमदीद
कहा जैसा कि मैं अल्लाह का कोई फ़रिश्ता या मसीह
ईसा ख़ुद हूँ। 15 उस वक़्त आप इतने ख़ुश थे! अब
क्या हुआ है? मैं गवाह हूँ, उस वक़्त अगर आप को
मौक़ा मिलता तो आप अपनी आँखें निकाल कर मुझे
दे देते। 16 तो क्या अब मैं आप को हक़ीक़त बताने
की वजह से आप का दुश्मन बन गया हूँ?
17 वह दूसरे लोग आप की दोस्ती पाने की पूरी
जिद्द-ओ-जह्द कर रहे हैं, लेकिन उन की नीयत साफ़
नहीं है। बस वह आप को मुझ से जुदा करना चाहते
हैं ताकि आप उन ही के हक़ में जिद्द-ओ-जह्द करते
रहें। 18 जब लोग आप की दोस्ती पाने की जिद्द-ओ-
जह्द करते हैं तो यह है तो ठीक, लेकिन इस का
मक़्सद अच्छा होना चाहिए। हाँ, सहीह जिद्द-ओ-
जह्द हर वक़्त अच्छी होती है, न सिर्फ़ इस वक़्त
जब मैं आप के दरमियान हूँ। 19 मेरे प्यारे बच्चो! अब
मैं दुबारा आप को जन्म देने का सा दर्द महसूस कर
रहा हूँ और उस वक़्त तक करता रहूँगा जब तक
मसीह आप में सूरत न पकड़े। 20 काश मैं उस वक़्त
आप के पास होता ताकि फ़र्क़ अन्दाज़ में आप से
बात कर सकता, क्यूँकि मैं आप के सबब से बड़ी
उलझन में हूँ!

हाजिरा और सारा की मिसाल

21 आप जो शरीअत के ताबे रहना चाहते हैं मुझे
एक बात बताएँ, क्या आप वह बात नहीं सुनते जो
शरीअत कहती है? 22 वह कहती है कि इब्राहीम के
दो बेटे थे। एक लौंडी का बेटा था, एक आज़ाद
औरत का। 23 लौंडी के बेटे की पैदाइश हसब-ए-
मामूल थी, लेकिन आज़ाद औरत के बेटे की पैदाइश
ग़ैरमामूली थी, क्यूँकि उस में अल्लाह का वादा पूरा
हुआ। 24 जब यह किनायतन समझा जाए तो यह दो
ख़वातीन अल्लाह के दो अह्दों की नुमाइन्दगी करती
हैं। पहली ख़ातून हाजिरा सीना पहाड़ पर बंधे हुए
अह्द की नुमाइन्दगी करती है, और जो बच्चे उस से
पैदा होते हैं वह ग़ुलामी के लिए मुक़र्रर हैं। 25 हाजिरा
जो अरब में वाक़े पहाड़ सीना की अलामत है मौजूदा
शहर यरूशलम से मुताबिक़त रखती है। वह और
उस के तमाम बच्चे ग़ुलामी में ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।
26 लेकिन आसमानी यरूशलम आज़ाद है और वही

हमारी माँ है। 27 क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है,

"ख़ुश हो जा, तू जो बेऔलाद है,
जो बच्चे को जन्म ही नहीं दे सकती।
बुलन्द आवाज़ से शादियाना बजा,
तू जिसे पैदाइश का दर्द न हुआ।
क्यूँकि अब तर्क की हुई औरत के बच्चे
शादीशुदा औरत के बच्चों से ज़्यादा हैं।"

28 भाइयो, आप इस्हाक़ की तरह अल्लाह के वादे के फ़र्ज़न्द हैं। 29 उस वक़्त इस्माईल ने जो हसब-ए-मामूल पैदा हुआ था इस्हाक़ को सताया जो रूह-उल-क़ुद्स की क़ुदरत से पैदा हुआ था। आज भी ऐसा ही है। 30 लेकिन कलाम-ए-मुक़द्दस में क्या फ़रमाया गया है? "इस लौंडी और इस के बेटे को घर से निकाल दें, क्यूँकि वह आज़ाद औरत के बेटे के साथ विरसा नहीं पाएगा।" 31 ग़रज़ भाइयो, हम लौंडी के फ़र्ज़न्द नहीं हैं बल्कि आज़ाद औरत के।

अपनी आज़ादी महफ़ूज़ रखें

5 1 मसीह ने हमें आज़ाद रहने के लिए ही आज़ाद किया है। तो अब क़ाइम रहें और दुबारा अपने गले में ग़ुलामी का जूआ डालने न दें।

2 सुनें! मैं पौलुस आप को बताता हूँ कि अगर आप अपना ख़तना करवाएँ तो आप को मसीह का कोई फ़ाइदा नहीं होगा। 3 मैं एक बार फिर इस बात की तस्दीक़ करता हूँ कि जिस ने भी अपना ख़तना करवाया उस का फ़र्ज़ है कि वह पूरी शरीअत की पैरवी करे। 4 आप जो शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ बनना चाहते हैं आप का मसीह के साथ कोई वास्ता न रहा। हाँ, आप अल्लाह के फ़ज़्ल से दूर हो गए हैं। 5 लेकिन हमें एक फ़र्क़ उम्मीद दिलाई गई है। उम्मीद यह है कि ख़ुदा ही हमें रास्तबाज़ क़रार देता है। चुनाँचे हम रूह-उल-क़ुद्स के बाइस ईमान रख कर इसी रास्तबाज़ी के लिए तड़पते रहते हैं। 6 क्यूँकि जब हम मसीह ईसा में होते हैं तो ख़तना करवाने या न करवाने से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। फ़र्क़ सिर्फ़ उस ईमान से पड़ता है जो मुहब्बत करने से ज़ाहिर होता है।

7 आप ईमान की दौड़ में अच्छी तरक़्क़ी कर रहे थे! तो फिर किस ने आप को सच्चाई की पैरवी करने से रोक लिया? 8 किस ने आप को उभारा? अल्लाह तो नहीं था जो आप को बुलाता है। 9 देखें, थोड़ा सा ख़मीर तमाम गुंधे हुए आटे को ख़मीर कर देता है। 10 मुझे ख़ुदावन्द में आप पर इतना एतिमाद है कि आप यही सोच रखते हैं। जो भी आप में अफ़्रा-तफ़्री पैदा कर रहा है उसे सज़ा मिलेगी।

11 भाइयो, जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, अगर मैं यह पैग़ाम देता कि अब तक ख़तना करवाने की ज़रूरत है तो मेरी ईज़ारसानी क्यूँ हो रही होती? अगर ऐसा होता तो लोग मसीह के मस्लूब होने के बारे में सुन कर ठोकर न खाते। 12 बेहतर है कि आप को परेशान करने वाले न सिर्फ़ अपना ख़तना करवाएँ बल्कि खोजे बन जाएँ।

13 भाइयो, आप को आज़ाद होने के लिए बुलाया गया है। लेकिन ख़बरदार रहें कि इस आज़ादी से आप की गुनाहआलूदा फ़ित्रत को अमल में आने का मौक़ा न मिले। इस के बजाय मुहब्बत की रूह में एक दूसरे की ख़िदमत करें। 14 क्यूँकि पूरी शरीअत एक ही हुक्म में समाई हुई है, "अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आप से रखता है।" 15 अगर आप एक दूसरे को काटते और फाड़ते हैं तो ख़बरदार! ऐसा न हो कि आप एक दूसरे को ख़त्म करके सब के सब तबाह हो जाएँ।

रूह-उल-क़ुद्स और इन्सानी फ़ित्रत

16 मैं तो यह कहता हूँ कि रूह-उल-क़ुद्स में ज़िन्दगी गुज़ारें। फिर आप अपनी पुरानी फ़ित्रत की ख़्वाहिशात पूरी नहीं करेंगे। 17 क्यूँकि जो कुछ हमारी पुरानी फ़ित्रत चाहती है वह उस के ख़िलाफ़ है जो रूह चाहता है, और जो कुछ रूह चाहता है वह उस के ख़िलाफ़ है जो हमारी पुरानी फ़ित्रत चाहती है। यह दोनों एक दूसरे के दुश्मन हैं, इस लिए आप वह कुछ

नहीं कर पाते जो आप करना चाहते हैं। 18 लेकिन
जब रूह-उल-क़ुद्स आप की राहनुमाई करता है तो
आप शरीअत के ताबे नहीं होते।

19 जो काम पुरानी फ़ित्रत करती है वह साफ़ ज़ाहिर
होता है। मसलन ज़िनाकारी, नापाकी, अय्याशी,
20 बुतपरस्ती, जादूगरी, दुश्मनी, झगड़ा, हसद,
ग़ुस्सा, ख़ुदग़रज़ी, अनबन, पार्टीबाज़ी, 21 जलन,
नशाबाज़ी, रंगरलियाँ वग़ैरा। मैं पहले भी आप को
आगाह कर चुका हूँ, लेकिन अब एक बार फिर
कहता हूँ कि जो इस तरह की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं
वह अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे।

22 रूह-उल-क़ुद्स का फल फ़र्क़ है। वह मुहब्बत,
ख़ुशी, सुलह-सलामती, सब्र, मेहरबानी, नेकी,
वफ़ादारी, 23 नर्मी और ज़ब्त-ए-नफ़्स पैदा करता है।
शरीअत ऐसी चीज़ों के ख़िलाफ़ नहीं होती। 24 और
जो मसीह ईसा के हैं उन्हों ने अपनी पुरानी फ़ित्रत को
उस की रग़बतों और बुरी ख़्वाहिशों समेत मस्लूब
कर दिया है। 25 चूँकि हम रूह में ज़िन्दगी गुज़ारते हैं
इस लिए आएँ, हम क़दम-ब-क़दम उस के मुताबिक़
चलते भी रहें। 26 न हम मग़रूर हूँ, न एक दूसरे को
मुश्तइल करें या एक दूसरे से हसद करें।

एक दूसरे के बोझ उठाना

6 1 भाइयो, अगर कोई किसी गुनाह में फंस जाए
तो आप जो रुहानी हैं उसे नर्मदिली से बहाल
करें। लेकिन अपना भी ख़याल रखें, ऐसा न हो कि
आप भी आज़माइश में फंस जाएँ। 2 बोझ उठाने में
एक दूसरे की मदद करें, क्यूँकि इस तरह आप मसीह
की शरीअत पूरी करेंगे। 3 जो समझता है कि मैं कुछ
हूँ अगरचे वह हक़ीक़त में कुछ भी नहीं है तो वह
अपने आप को फ़रेब दे रहा है। 4 हर एक अपना
ज़ाती अमल परखे। फिर ही उसे अपने आप पर
फ़ख़र का मौक़ा होगा और उसे किसी दूसरे से अपना
मुवाज़ना करने की ज़रूरत न होगी। 5 क्यूँकि हर एक
को अपना ज़ाती बोझ उठाना होता है।

6 जिसे कलाम-ए-मुक़द्दस की तालीम दी जाती है
उस का फ़र्ज़ है कि वह अपने उस्ताद को अपनी
तमाम अच्छी चीज़ों में शरीक करे।

7 फ़रेब मत खाना, अल्लाह इन्सान को अपना मज़ाक़
उड़ाने नहीं देता। जो कुछ भी इन्सान बोता है उसी की
फ़सल वह काटेगा। 8 जो अपनी पुरानी फ़ित्रत के खेत
में बीज बोए वह हलाकत की फ़सल काटेगा। और
जो रूह-उल-क़ुद्स के खेत में बीज बोए वह अबदी
ज़िन्दगी की फ़सल काटेगा। 9 चुनाँचे हम नेक काम
करने में बेदिल न हो जाएँ, क्यूँकि हम मुक़र्ररा वक़्त
पर ज़रूर फ़सल की कटाई करेंगे। शर्त सिर्फ़ यह है
कि हम हथियार न डालें। 10 इस लिए आएँ, जितना
वक़्त रह गया है सब के साथ नेकी करें, ख़ासकर
उन के साथ जो ईमान में हमारे भाई और बहनें हैं।

आख़िरी आगाही और सलाम

11 देखें, मैं बड़े बड़े हुरूफ़ के साथ अपने हाथ
से आप को लिख रहा हूँ। 12 यह लोग जो दुनिया
के सामने इज़्ज़त हासिल करना चाहते हैं आप को
ख़तना करवाने पर मज्बूर करना चाहते हैं। मक़्सद
उन का सिर्फ़ एक ही है, कि वह उस ईज़ारसानी से
बचे रहें जो तब पैदा होती है जब हम मसीह की
सलीबी मौत की तालीम देते हैं। 13 बात यह है कि जो
अपना ख़तना कराते हैं वह ख़ुद शरीअत की पैरवी
नहीं करते। तो भी यह चाहते हैं कि आप अपना
ख़तना करवाएँ ताकि आप के जिस्म की हालत पर
वह फ़ख़र कर सकें। 14 लेकिन ख़ुदा करे कि मैं
सिर्फ़ हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह की सलीब ही पर
फ़ख़र करूँ। क्यूँकि उस की सलीब से दुनिया मेरे
लिए मस्लूब हुई है और मैं दुनिया के लिए। 15 ख़तना
करवाने या न करवाने से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता
बल्कि फ़र्क़ उस वक़्त पड़ता है जब अल्लाह किसी
को नए सिरे से ख़ल्क़ करता है। 16 जो भी इस उसूल
पर अमल करते हैं उन्हें सलामती और रहम हासिल
होता रहे, उन्हें भी और अल्लाह की क़ौम इस्राईल को
भी।

17 आइन्दा कोई मुझे तक्लीफ़ न दे, क्यूँकि मेरे
जिस्म पर ज़ख़्मों के निशान ज़ाहिर करते हैं कि मैं
ईसा का ग़ुलाम हूँ।

18 भाइयो, हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़्ल
आप की रूह के साथ होता रहे। आमीन।

इफ़िसियों

1 1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है, जो अल्लाह की
मर्ज़ी से मसीह ईसा का रसूल है।
मैं इफ़िसुस शहर के मुक़द्दसीन को लिख रहा हूँ,
उन्हें जो मसीह ईसा में ईमानदार हैं।
2 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
को फ़ज़्ल और सलामती बख़्शें।

मसीह में रुहानी बरकतें

3 ख़ुदा हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के बाप की हम्द-
ओ-सना हो! क्यूँकि मसीह में उस ने हमें आसमान
पर हर रुहानी बरकत से नवाज़ा है। 4 दुनिया की
तख़्लीक़ से पेशतर ही उस ने मसीह में हमें चुन लिया
ताकि हम मुक़द्दस और बेऐब हालत में उस के सामने
ज़िन्दगी गुज़ारें।
यह कितनी अज़ीम मुहब्बत थी! 5 पहले ही से उस
ने फ़ैसला कर लिया कि वह हमें मसीह में अपने बेटे-
बेटियाँ बना लेगा। यही उस की मर्ज़ी और ख़ुशी थी
6 ताकि हम उस के जलाली फ़ज़्ल की तम्जीद करें,
उस मुफ़्त नेमत के लिए जो उस ने हमें अपने प्यारे
फ़र्ज़न्द में दे दी। 7 क्यूँकि उस ने मसीह के ख़ून से
हमारा फ़िद्या दे कर हमें आज़ाद और हमारे गुनाहों
को मुआफ़ कर दिया है। अल्लाह का यह फ़ज़्ल कितना
वसी है 8 जो उस ने कस्रत से हमें अता किया है।
अपनी पूरी हिक्मत और दानाई का इज़्हार करके
9 अल्लाह ने हम पर अपनी पोशीदा मर्ज़ी ज़ाहिर कर
दी, यानी वह मन्सूबा जो उसे पसन्द था और जो उस
ने मसीह में पहले से बना रखा था। 10 मन्सूबा यह
है कि जब मुक़र्ररा वक़्त आएगा तो अल्लाह मसीह में
तमाम काइनात को जमा कर देगा। उस वक़्त सब
कुछ मिल कर मसीह के तहत हो जाएगा, ख़्वाह वह
आसमान पर हो या ज़मीन पर।
11 मसीह में हम आसमानी बादशाही के वारिस भी
बन गए हैं। अल्लाह ने पहले से हमें इस के लिए मुक़र्रर
किया, क्यूँकि वह सब कुछ यूँ सरअन्जाम देता है
कि उस की मर्ज़ी का इरादा पूरा हो जाए। 12 और वह
चाहता है कि हम उस के जलाल की सताइश का
बाइस बनें, हम जिन्हों ने पहले से मसीह पर उम्मीद
रखी।
13 आप भी मसीह में हैं, क्यूँकि आप सच्चाई का
कलाम और अपनी नजात की ख़ुशख़बरी सुन कर
ईमान लाए। और अल्लाह ने आप पर भी रूह-उल-
क़ुद्स की मुहर लगा दी जिस का वादा उस ने किया
था। 14 रूह-उल-क़ुद्स हमारी मीरास का बैआना है।
वह हमें यह ज़मानत देता है कि अल्लाह हमारा जो उस
की मिलकियत हैं फ़िद्या दे कर हमें पूरी मख़्लसी तक
पहुँचाएगा। क्यूँकि हमारी ज़िन्दगी का मक़्सद यह है
कि उस के जलाल की सताइश की जाए।

पौलुस की दुआ

15 भाइयो, मैं ख़ुदावन्द ईसा पर आप के ईमान और
आप की तमाम मुक़द्दसीन से मुहब्बत के बारे में सुन
कर 16 आप के लिए ख़ुदा का शुक्र करने से बाज़
नहीं आता बल्कि आप को अपनी दुआओं में याद
करता रहता हूँ। 17 मेरी ख़ास दुआ यह है कि हमारे
ख़ुदावन्द ईसा मसीह का ख़ुदा और जलाली बाप
आप को दानाई और मुकाशफ़ा की रूह दे ताकि
आप उसे बेहतर तौर पर जान सकें। 18 वह करे कि
आप के दिलों की आँखें रौशन हो जाएँ। क्यूँकि फिर
ही आप जान लेंगे कि यह कैसी उम्मीद है जिस के
लिए उस ने आप को बुलाया है, कि यह जलाली
मीरास कैसी दौलत है जो मुक़द्दसीन को हासिल
है, 19 और कि हम ईमान रखने वालों पर उस की
क़ुदरत का इज़्हार कितना ज़बरदस्त है। यह वही

बेहद क़ुदरत है 20 जिस से उस ने मसीह को मुर्दों
में से ज़िन्दा करके आसमान पर अपने दहने हाथ
बिठाया। 21 वहाँ मसीह हर हुक्मरान, इख़तियार,
क़ुव्वत, हुकूमत, हाँ हर नाम से कहीं सरफ़राज़
है, ख़्वाह इस दुनिया में हो या आने वाली दुनिया
में। 22 अल्लाह ने सब कुछ उस के पाँओ के नीचे
करके उसे सब का सर बना दिया। यह उस ने अपनी
जमाअत की ख़ातिर किया 23 जो मसीह का बदन है
और जिसे मसीह से पूरी मामूरी हासिल होती है यानी
उस से जो हर तरह से सब कुछ मामूर कर देता है।

मौत से ज़िन्दगी तक

2 1 आप भी अपनी ख़ताओं और गुनाहों की
वजह से रुहानी तौर पर मुर्दा थे। 2 क्यूँकि पहले
आप इन में फंसे हुए इस दुनिया के तौर-तरीक़ों के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते थे। आप हवा की कुव्वतों
के सरदार के ताबे थे, उस रूह के जो इस वक़्त उन
में सरगर्म-ए-अमल है जो अल्लाह के नाफ़रमान हैं।
3 पहले तो हम भी सब उन में ज़िन्दगी गुज़ारते थे।
हम भी अपनी पुरानी फ़ित्रत की शहवतें, मर्ज़ी और
सोच पूरी करने की कोशिश करते रहे। दूसरों की तरह
हम पर भी फ़ित्री तौर पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल
होना था।

4 लेकिन अल्लाह का रहम इतना वसी है और वह
इतनी शिद्दत से हम से मुहब्बत रखता है 5 कि अगरचे
हम अपने गुनाहों में मुर्दा थे तो भी उस ने हमें मसीह
के साथ ज़िन्दा कर दिया। हाँ, आप को अल्लाह के
फ़ज़्ल ही से नजात मिली है। 6 जब हम मसीह ईसा
पर ईमान लाए तो उस ने हमें मसीह के साथ ज़िन्दा
करके आसमान पर बिठा दिया। 7 ईसा मसीह में हम
पर मेहरबानी करने से अल्लाह आने वाले ज़मानों में
अपने फ़ज़्ल की ला-महदूद दौलत दिखाना चाहता
था। 8 क्यूँकि यह उस का फ़ज़्ल ही है कि आप को
ईमान लाने पर नजात मिली है। यह आप की तरफ़
से नहीं है बल्कि अल्लाह की बख़्शिश है। 9 और यह
नजात हमें अपने किसी काम के नतीजे में नहीं मिली,
इस लिए कोई अपने आप पर फ़ख़्र नहीं कर सकता।
10 हाँ, हम उसी की मख़्लूक़ हैं जिन्हें उस ने मसीह
में नेक काम करने के लिए ख़ल्क़ किया है। और यह
काम उस ने पहले से हमारे लिए तय्यार कर रखे हैं,
क्यूँकि वह चाहता है कि हम उन्हें सरअन्जाम देते
हुए ज़िन्दगी गुज़ारें।

मसीह में एक

11 यह बात ज़हन में रखें कि माज़ी में आप क्या थे।
यहूदी सिर्फ़ अपने लिए लफ़्ज़ मख़्तून इस्तेमाल करते
थे अगरचे वह अपना ख़तना सिर्फ़ इन्सानी हाथों से
करवाते हैं। आप को जो ग़ैरयहूदी हैं वह नामख़्तून
क़रार देते थे। 12 उस वक़्त आप मसीह के बग़ैर ही
चलते थे। आप इस्राईल क़ौम के शहरी न बन सके
और जो वादे अल्लाह ने अह्दों के ज़रीए अपनी क़ौम
से किए थे वह आप के लिए नहीं थे। इस दुनिया में
आप की कोई उम्मीद नहीं थी, आप अल्लाह के बग़ैर
ही ज़िन्दगी गुज़ारते थे। 13 लेकिन अब आप मसीह
में हैं। पहले आप दूर थे, लेकिन अब आप को मसीह
के ख़ून के वसीले से क़रीब लाया गया है। 14 क्यूँकि
मसीह हमारी सुलह है और उसी ने यहूदियों और
ग़ैरयहूदियों को मिला कर एक क़ौम बना दिया है।
अपने जिस्म को क़ुर्बान करके उस ने वह दीवार गिरा
दी जिस ने उन्हें अलग करके एक दूसरे के दुश्मन
बना रखा था। 15 उस ने शरीअत को उस के अह्काम
और ज़वाबित समेत मन्सूख़ कर दिया ताकि दोनों
गुरोहों को मिला कर एक नया इन्सान ख़ल्क़ करे,
ऐसा इन्सान जो उस में एक हो और सुलह-सलामती
के साथ ज़िन्दगी गुज़ारे। 16 अपनी सलीबी मौत से
उस ने दोनों गुरोहों को एक बदन में मिला कर उन
की अल्लाह के साथ सुलह कराई। हाँ, उस ने अपने
आप में यह दुश्मनी ख़त्म कर दी। 17 उस ने आ
कर दोनों गुरोहों को सुलह-सलामती की ख़ुशख़बरी
सुनाई, आप ग़ैरयहूदियों को जो अल्लाह से दूर थे और
आप यहूदियों को भी जो उस के क़रीब थे। 18 अब

हम दोनों मसीह के ज़रीए एक ही रूह में बाप के हुज़ूर
आ सकते हैं।
19 नतीजे में अब आप परदेसी और अजनबी नहीं
रहे बल्कि मुक़द्दसीन के हमवतन और अल्लाह के
घराने के हैं। 20 आप को रसूलों और नबियों की
बुन्याद पर तामीर किया गया है जिस के कोने का
बुन्यादी पत्थर मसीह ईसा ख़ुद है। 21 उस में पूरी
इमारत जुड़ जाती और बढ़ती बढ़ती ख़ुदावन्द में
अल्लाह का मुक़द्दस घर बन जाती है। 22 दूसरों के
साथ साथ उस में आप की भी तामीर हो रही है ताकि
आप रूह में अल्लाह की सुकूनतगाह बन जाएँ।

पौलुस की ग़ैरयहूदियों में ख़िदमत

3 1 इस वजह से मैं पौलुस जो आप ग़ैरयहूदियों
की ख़ातिर मसीह ईसा का क़ैदी हूँ अल्लाह से
दुआ करता हूँ। 2 आप ने तो सुन लिया है कि मुझे
आप में अल्लाह के फ़ज़्ल का इन्तिज़ाम चलाने [m]की
ख़ास ज़िम्मादारी दी गई है। 3 जिस तरह मैं ने पहले
ही मुख़्तसर तौर पर लिखा है, अल्लाह ने ख़ुद मुझ पर
यह राज़ ज़ाहिर कर दिया। 4 जब आप वह पढ़ेंगे जो
मैं ने लिखा तो आप जान लेंगे कि मुझे मसीह के राज़
के बारे में क्या क्या समझ आई है। 5 गुज़रे ज़मानों में
अल्लाह ने यह बात ज़ाहिर नहीं की, लेकिन अब उस
ने इसे रूह-उल-क़ुद्स के ज़रीए अपने मुक़द्दस रसूलों
और नबियों पर ज़ाहिर कर दिया। 6 और अल्लाह का
राज़ यह है कि उस की ख़ुशख़बरी के ज़रीए ग़ैरयहूदी
इस्राईल के साथ आसमानी बादशाही के वारिस, एक
ही बदन के आज़ा और उसी वादे में शरीक हैं जो
अल्लाह ने मसीह ईसा में किया है।
7 मैं अल्लाह के मुफ़्त फ़ज़्ल और उस की क़ुदरत के
इज़हार से ख़ुशख़बरी का ख़ादिम बन गया। 8 अगरचे
मैं अल्लाह के तमाम मुक़द्दसीन से कमतर हूँ तो भी उस
ने मुझे यह फ़ज़्ल बख़्शा कि मैं ग़ैरयहूदियों को उस
ला-महदूद दौलत की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ जो मसीह में
दस्तयाब है। 9 यही मेरी ज़िम्मादारी बन गई कि मैं
सब पर उस राज़ का इन्तिज़ाम ज़ाहिर करूँ जो गुज़रे
ज़मानों में सब चीज़ों के ख़ालिक़ ख़ुदा में पोशीदा
रहा। 10 क्यूँकि अल्लाह चाहता था कि अब मसीह की
जमाअत ही आसमानी हुक्मरानों और कुव्वतों को
अल्लाह की वसी हिक्मत के बारे में इल्म पहुँचाए।
11 यही उस का अज़ली मन्सूबा था जो उस ने हमारे
ख़ुदावन्द मसीह ईसा के वसीले से तक्मील तक
पहुँचाया। 12 उस में और उस पर ईमान रख कर हम
पूरी आज़ादी और एतिमाद के साथ अल्लाह के हुज़ूर
आ सकते हैं। 13 इस लिए मेरी आप से गुज़ारिश है
कि आप मेरी मुसीबतें देख कर बेदिल न हो जाएँ।
यह मैं आप की ख़ातिर बर्दाश्त कर रहा हूँ, और यह
आप की इज़्ज़त का बाइस हैं।

मसीह की मुहब्बत

14 इस वजह से मैं बाप के हुज़ूर अपने घुटने टेकता
हूँ, 15 उस बाप के सामने जिस से आसमान-ओ-ज़मीन
का हर ख़ानदान नामज़द है। 16 मेरी दुआ है कि वह
अपने जलाल की दौलत के मुवाफ़िक़ यह बख़्शे
कि आप उस के रूह के वसीले से बातिनी तौर पर
ज़बरदस्त तक़वियत पाएँ, 17 कि मसीह ईमान के
ज़रीए आप के दिलों में सुकूनत करे। हाँ, मेरी दुआ है
कि आप मुहब्बत में जड़ पकड़ें और इस बुन्याद पर
ज़िन्दगी यूँ गुज़ारें 18 कि आप बाक़ी तमाम मुक़द्दसीन
के साथ यह समझने के क़ाबिल बन जाएँ कि मसीह
की मुहब्बत कितनी चौड़ी, कितनी लम्बी, कितनी
ऊँची और कितनी गहरी है। 19 ख़ुदा करे कि आप
मसीह की यह मुहब्बत जान लें जो हर इल्म से कहीं
अफ़्ज़ल है और यूँ अल्लाह की पूरी मामूरी से भर जाएँ।
20 अल्लाह की तम्जीद हो जो अपनी उस क़ुदरत के
मुवाफ़िक़ जो हम में काम कर रही है ऐसा ज़बरदस्त
काम कर सकता है जो हमारी हर सोच और दुआ
से कहीं बाहर है। 21 हाँ, मसीह ईसा और उस की

---

[m]यानी ख़ुशख़बरी सुनाने।

जमाअत में अल्लाह की तम्जीद पुश्त-दर-पुश्त और अज़ल से अबद तक होती रहे। आमीन।

बदन की यगानगत

4 1 चुनाँचे मैं जो ख़ुदावन्द में क़ैदी हूँ आप को ताकीद करता हूँ कि उस ज़िन्दगी के मुताबिक़ चलें जिस के लिए ख़ुदा ने आप को बुलाया है। 2 हर वक़्त हलीम और नर्मदिल रहें, सब्र से काम लें और एक दूसरे से मुहब्बत रख कर उसे बर्दाश्त करें। 3 सुलह-सलामती के बंधन में रह कर रूह की यगानगत क़ाइम रखने की पूरी कोशिश करें। 4 एक ही बदन और एक ही रूह है। यूँ आप को भी एक ही उम्मीद के लिए बुलाया गया। 5 एक ख़ुदावन्द, एक ईमान, एक बपतिस्मा है। 6 एक ख़ुदा है, जो सब का वाहिद बाप है। वह सब का मालिक है, सब के ज़रीए काम करता है और सब में मौजूद है।

7 अब हम सब को अल्लाह का फ़ज़्ल बख़्शा गया। लेकिन मसीह हर एक को मुख़्तलिफ़ पैमाने से यह फ़ज़्ल अता करता है। 8 इस लिए कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है, "उस ने बुलन्दी पर चढ़ कर क़ैदियों का हुजूम गिरिफ़्तार कर लिया और आदमियों को तुह्फ़े दिए।" 9 अब ग़ौर करें कि चढ़ने का ज़िक्र किया गया है। इस का मतलब है कि पहले वह ज़मीन की गहराइयों में उतरा। 10 जो उतरा वह वही है जो तमाम आसमानों से ऊँचा चढ़ गया ताकि तमाम काइनात को अपने आप से मामूर करे। 11 उसी ने अपनी जमाअत को तरह तरह के ख़ादिमों से नवाज़ा। बाज़ रसूल, बाज़ नबी, बाज़ मुबश्शिर, बाज़ चरवाहे और बाज़ उस्ताद हैं। 12 इन का मक़्सद यह है कि मुक़द्दसीन को ख़िदमत करने के लिए तय्यार किया जाए और यूँ मसीह के बदन की तामीर-ओ-तरक़्क़ी हो जाए। 13 इस तरीक़े से हम सब ईमान और अल्लाह के फ़र्ज़न्द की पहचान में एक हो कर बालिग़ हो जाएंगे, और हम मिल कर मसीह की मामूरी और बलूग़त को मुनअकिस करेंगे। 14 फिर हम बच्चे नहीं रहेंगे, और तालीम के हर एक झोंके से उछलते फिरते नहीं रहेंगे जब लोग अपनी चालाकी और धोकेबाज़ी से हमें अपने जालों में फंसाने की कोशिश करेंगे। 15 इस के बजाय हम मुहब्बत की रूह में सच्ची बात करके हर लिहाज़ से मसीह की तरफ़ बढ़ते जाएंगे जो हमारा सर है। 16 वही नसों के ज़रीए पूरे बदन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों को एक दूसरे के साथ जोड़ कर मुत्तहिद कर देता है। हर हिस्सा अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ काम करता है, और यूँ पूरा बदन मुहब्बत की रूह में बढ़ता और अपनी तामीर करता रहता है।

मसीह में नई ज़िन्दगी

17 पस मैं ख़ुदावन्द के नाम में आप को आगाह करता हूँ कि अब से ग़ैरईमानदारों की तरह ज़िन्दगी न गुज़ारें जिन की सोच बेकार है 18 और जिन की समझ अंधेरे की गिरिफ़्त में है। उन का उस ज़िन्दगी में कोई हिस्सा नहीं जो अल्लाह देता है, क्यूँकि वह जाहिल हैं और उन के दिल सख़्त हो गए हैं। 19 बेहिस्स हो कर उन्हों ने अपने आप को अय्याशी के हवाले कर दिया। यूँ वह न बुझने वाली प्यास के साथ हर क़िस्म की नापाक हरकतें करते हैं।

20 लेकिन आप ने मसीह को यूँ नहीं जाना। 21 आप ने तो उस के बारे में सुन लिया है, और उस में हो कर आप को वह सच्चाई सिखाई गई जो ईसा में है। 22 चुनाँचे अपने पुराने इन्सान को उस के पुराने चाल-चलन समेत उतार देना, क्यूँकि वह अपनी धोकेबाज़ शहवतों से बिगड़ता जा रहा है। 23 अल्लाह को आप की सोच की तज्दीद करने दें 24 और नए इन्सान को पहन लें जो यूँ बनाया गया है कि वह हक़ीक़ी रास्तबाज़ी और क़ुद्दूसियत में अल्लाह के मुशाबेह है।

25 इस लिए हर शख़्स झूट से बाज़ रह कर दूसरों से सच बात करे, क्यूँकि हम सब एक ही बदन के आज़ा हैं। 26 ग़ुस्से में आते वक़्त गुनाह मत करना। आप का ग़ुस्सा सूरज के ग़ुरूब होने तक ठंडा हो जाए, 27 वर्ना आप इब्लीस को अपनी ज़िन्दगी में काम करने का मौक़ा देंगे। 28 चोर अब से चोरी न करे बल्कि ख़ूब मेहनत-मशक़्क़त करके अपने हाथों से अच्छा काम

करे। हाँ, वह इतना कमाए कि ज़रूरतमन्दों को भी
कुछ दे सके। 29 कोई भी बुरी बात आप के मुँह
से न निकले बल्कि सिर्फ़ ऐसी बातें जो दूसरों की
ज़रूरियात के मुताबिक़ उन की तामीर करें। यूँ सुनने
वालों को बरकत मिलेगी। 30 अल्लाह के मुक़द्दस रूह
को दुख न पहुँचाना, क्यूँकि उसी से अल्लाह ने आप पर
मुहर लगा कर यह ज़मानत दे दी है कि आप उसी के
हैं और नजात के दिन बच जाएंगे। 31 तमाम तरह की
तल्ख़ी, तैश, ग़ुस्से, शोर-शराबा, गाली-गलोच बल्कि
हर क़िस्म के बुरे रवय्ये से बाज़ आएँ। 32 एक दूसरे
पर मेहरबान और रहमदिल हों और एक दूसरे को यूँ
मुआफ़ करें जिस तरह अल्लाह ने आप को भी मसीह
में मुआफ़ कर दिया है।

रौशनी में ज़िन्दगी गुज़ारना

5 1 चूँकि आप अल्लाह के प्यारे बच्चे हैं इस लिए
उस के नमूने पर चलें। 2 मुहब्बत की रूह में
ज़िन्दगी यूँ गुज़ारें जैसे मसीह ने गुज़ारी। क्यूँकि उस
ने हम से मुहब्बत रख कर अपने आप को हमारे लिए
अल्लाह के हुज़ूर क़ुर्बान कर दिया और यूँ ऐसी क़ुर्बानी
बन गया जिस की ख़ुश्बू अल्लाह को पसन्द आई।
3 आप के दरमियान ज़िनाकारी, हर तरह की
नापाकी या लालच का ज़िक्र तक न हो, क्यूँकि यह
अल्लाह के मुक़द्दसीन के लिए मुनासिब नहीं है। 4 इसी
तरह शर्मनाक, अहमक़ाना या गन्दी बातें भी ठीक
नहीं। इन की जगह शुक्रगुज़ारी होनी चाहिए। 5 क्यूँकि
यक़ीन जानें कि ज़िनाकार, नापाक या लालची मसीह
और अल्लाह की बादशाही में मीरास नहीं पाएँगे
(लालच तो एक क़िस्म की बुतपरस्ती है)।
6 कोई आप को बेमानी अल्फ़ाज़ से धोका न दे।
ऐसी ही बातों की वजह से अल्लाह का ग़ज़ब उन
पर जो नाफ़रमान हैं नाज़िल होता है। 7 चुनाँचे उन
में शरीक न हो जाएँ जो यह करते हैं। 8 क्यूँकि
पहले आप तारीकी थे, लेकिन अब आप ख़ुदावन्द
में रौशनी हैं। रौशनी के फ़र्ज़न्द की तरह ज़िन्दगी
गुज़ारें, 9 क्यूँकि रौशनी का फल हर तरह की भलाई,
रास्तबाज़ी और सच्चाई है। 10 और मालूम करते रहें
कि ख़ुदावन्द को क्या कुछ पसन्द है। 11 तारीकी के
बेफल कामों में हिस्सा न लें बल्कि उन्हें रौशनी में
लाएँ। 12 क्यूँकि जो कुछ यह लोग पोशीदगी में करते
हैं उस का ज़िक्र करना भी शर्म की बात है। 13 लेकिन
सब कुछ बेनिक़ाब हो जाता है जब उसे रौशनी में
लाया जाता है। 14 क्यूँकि जो रौशनी में लाया जाता है
वह रौशन हो जाता है। इस लिए कहा जाता है,

"ऐ सोने वाले, जाग उठ!
मुर्दों में से जी उठ,
तो मसीह तुझ पर चमकेगा।"

15 चुनाँचे बड़ी एहतियात से इस पर ध्यान दें कि
आप ज़िन्दगी किस तरह गुज़ारते हैं - बेसमझ या
समझदार लोगों की तरह। 16 हर मौक़े से पूरा फ़ाइदा
उठाएँ, क्यूँकि दिन बुरे हैं। 17 इस लिए अहमक़ न बनें
बल्कि ख़ुदावन्द की मर्ज़ी को समझें।
18 शराब में मत्वाले न हो जाएँ, क्यूँकि इस का
अन्जाम अय्याशी है। इस के बजाय रूह-उल-क़ुद्स
से मामूर होते जाएँ। 19 ज़बूरों, हम्द-ओ-सना और
रुहानी गीतों से एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करें।
अपने दिलों में ख़ुदावन्द के लिए गीत गाएँ और
नग़मासराई करें। 20 हाँ, हर वक़्त हमारे ख़ुदावन्द
ईसा मसीह के नाम में हर चीज़ के लिए शुक्र करें।

मियाँ-बीवी का ताल्लुक़

21 मसीह के ख़ौफ़ में एक दूसरे के ताबे रहें।
22 बीवियो, जिस तरह आप ख़ुदावन्द के ताबे हैं उसी
तरह अपने शौहर के ताबे भी रहें। 23 क्यूँकि शौहर
वैसे ही अपनी बीवी का सर है जैसे मसीह अपनी
जमाअत का। हाँ, जमाअत मसीह का बदन है जिसे
उस ने नजात दी है। 24 अब जिस तरह जमाअत मसीह
के ताबे है उसी तरह बीवियाँ भी अपने शौहरों के ताबे
रहें।
25 शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें,
बिलकुल उसी तरह जिस तरह मसीह ने अपनी
जमाअत से मुहब्बत रख कर अपने आप को उस

के लिए क़ुर्बान किया 26 ताकि उसे अल्लाह के लिए
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करे। उस ने उसे कलाम-ए-पाक
से धो कर पाक-साफ़ कर दिया 27 ताकि अपने आप
को एक ऐसी जमाअत पेश करे जो जलाली, मुक़द्दस
और बेइल्ज़ाम हो, जिस में न कोई दाग़ हो, न कोई
झुर्री, न किसी और क़िस्म का नुक़्स। 28 शौहरों का
फ़र्ज़ है कि वह अपनी बीवियों से ऐसी ही मुहब्बत
रखें। हाँ, वह उन से वैसी मुहब्बत रखें जैसी अपने
जिस्म से रखते हैं। क्यूँकि जो अपनी बीवी से मुहब्बत
रखता है वह अपने आप से ही मुहब्बत रखता है।
29 आख़िर कोई भी अपने जिस्म से नफ़रत नहीं
करता बल्कि उसे ख़ुराक मुहय्या करता और पालता
है। मसीह भी अपनी जमाअत के लिए यही कुछ
करता है। 30 क्यूँकि हम उस के बदन के आज़ा हैं।
31 कलाम-ए-मुक़द्दस में भी लिखा है, "इस लिए मर्द
अपने माँ-बाप को छोड़ कर अपनी बीवी के साथ
पैवस्त हो जाता है। वह दोनों एक हो जाते हैं।" 32 यह
राज़ बहुत गहरा है। मैं तो उस का इत्लाक़ मसीह
और उस की जमाअत पर करता हूँ। 33 लेकिन इस
का इत्लाक़ आप पर भी है। हर शौहर अपनी बीवी
से इस तरह मुहब्बत रखे जिस तरह वह अपने आप
से रखता है। और हर बीवी अपने शौहर की इज़्ज़त
करे।

बच्चों और वालिदैन का ताल्लुक़

6 1 बच्चो, ख़ुदावन्द में अपने माँ-बाप के ताबे
रहें, क्यूँकि यही रास्तबाज़ी का तक़ाज़ा है।
2 कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, "अपने बाप और
अपनी माँ की इज़्ज़त करना।" यह पहला हुक्म है
जिस के साथ एक वादा भी किया गया है, 3 "फिर तू
ख़ुशहाल और ज़मीन पर देर तक जीता रहेगा।"
4 ऐ वालिदो, अपने बच्चों से ऐसा सुलूक मत करें कि
वह ग़ुस्से हो जाएँ बल्कि उन्हें ख़ुदावन्द की तरफ़ से
तर्बियत और हिदायत दे कर पालें।

ग़ुलाम और मालिक

5 ग़ुलामो, डरते और काँपते हुए अपने इन्सानी
मालिकों के ताबे रहें। ख़ुलूसदिली से उन की ख़िदमत
यूँ करें जैसे मसीह की। 6 न सिर्फ़ उन के सामने ही
और उन्हें ख़ुश रखने के लिए ख़िदमत करें बल्कि
मसीह के ग़ुलामों की हैसियत से जो पूरी लगन
से अल्लाह की मर्ज़ी पूरी करना चाहते हैं। 7 ख़ुशी
से ख़िदमत करें, इस तरह जैसा कि आप न सिर्फ़
इन्सानों की बल्कि ख़ुदावन्द की ख़िदमत कर रहे
हों। 8 आप तो जानते हैं कि जो भी अच्छा काम
हम ने किया उस का अज्र ख़ुदावन्द देगा, ख़्वाह
हम ग़ुलाम हों या आज़ाद। 9 और मालिको, आप भी
अपने ग़ुलामों से ऐसा ही सुलूक करें। उन्हें धमकियाँ
न दें। आप को तो मालूम है कि आसमान पर आप
का भी मालिक है और कि वह जानिबदार नहीं होता।

रुहानी ज़िराबक्तर

10 एक आख़िरी बात, ख़ुदावन्द और उस की
ज़बरदस्त क़ुव्वत में ताक़तवर बन जाएँ। 11 अल्लाह
का पूरा ज़िराबक्तर पहन लें ताकि इब्लीस की चालों
का सामना कर सकें। 12 क्यूँकि हमारी जंग इन्सान के
साथ नहीं है बल्कि हुक्मरानों और इख़तियार वालों
के साथ, इस तारीक दुनिया के हाकिमों के साथ और
आसमानी दुनिया की शैतानी क़ुव्वतों के साथ है।
13 चुनाँचे अल्लाह का पूरा ज़िराबक्तर पहन लें ताकि
आप मुसीबत के दिन इब्लीस के हम्लों का सामना
कर सकें बल्कि सब कुछ सरअन्जाम देने के बाद
क़ाइम रह सकें।
14 अब यूँ खड़े हो जाएँ कि आप की कमर में सच्चाई
का पटका बंधा हुआ हो, आप के सीने पर रास्तबाज़ी
का सीनाबन्द लगा हो 15 और आप के पाँओ में ऐसे
जूते हों जो सुलह-सलामती की ख़ुशख़बरी सुनाने के
लिए तय्यार रहें। 16 इस के इलावा ईमान की ढाल
भी उठाए रखें, क्यूँकि इस से आप इब्लीस के जलते
हुए तीर बुझा सकते हैं। 17 अपने सर पर नजात का

ख़ोद पहन कर हाथ में रूह की तलवार जो अल्लाह
का कलाम है थामे रखें। 18 और हर मौक़े पर रूह
में हर तरह की दुआ और मिन्नत करते रहें। जागते
और साबितक़दमी से तमाम मुक़द्दसीन के लिए दुआ
करते रहें। 19 मेरे लिए भी दुआ करें कि जब भी मैं
अपना मुँह खोलूँ अल्लाह मुझे ऐसे अल्फ़ाज़ अता करे
कि पूरी दिलेरी से उस की ख़ुशख़बरी का राज़ सुना
सकूँ। 20 क्यूँकि मैं इसी पैग़ाम की ख़ातिर क़ैदी, हाँ
ज़न्जीरों में जकड़ा हुआ मसीह का एलची हूँ। दुआ
करें कि मैं मसीह में उतनी दिलेरी से यह पैग़ाम सुनाऊँ
जितना मुझे करना चाहिए।

आख़िरी सलाम

21 आप मेरे हाल और काम के बारे में भी जानना
चाहेंगे। ख़ुदावन्द में हमारा अज़ीज़ भाई और वफ़ादार
ख़ादिम तुख़िकुस आप को यह सब कुछ बता देगा।
22 मैं ने उसे इसी लिए आप के पास भेज दिया कि
आप को हमारे हाल का पता चले और आप को
तसल्ली मिले।

23 ख़ुदा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
भाइयों को सलामती और ईमान के साथ मुहब्बत
अता करें। 24 अल्लाह का फ़ज़्ल उन सब के साथ हो
जो अनमिट मुहब्बत के साथ हमारे ख़ुदावन्द ईसा
मसीह को प्यार करते हैं।

फ़िलिप्पियों

सलाम

1 1 यह ख़त मसीह ईसा के ग़ुलामों पौलुस और
तीमुथियुस की तरफ़ से है।
मैं फ़िलिप्पी में मौजूद उन तमाम लोगों को लिख
रहा हूँ जिन्हें अल्लाह ने मसीह ईसा के ज़रीए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस किया है। मैं उन के बुज़ुर्गों और ख़ादिमों
को भी लिख रहा हूँ।
2 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
को फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

जमाअत के लिए शुक्र-ओ-दुआ

3 जब भी मैं आप को याद करता हूँ तो अपने ख़ुदा
का शुक्र करता हूँ। 4 आप के लिए तमाम दुआओं में
मैं हमेशा ख़ुशी से दुआ करता हूँ, 5 इस लिए कि आप
पहले दिन से ले कर आज तक अल्लाह की ख़ुशख़बरी
फैलाने में मेरे शरीक रहे हैं। 6 और मुझे यक़ीन है कि
अल्लाह जिस ने आप में यह अच्छा काम शुरू किया है
इसे उस दिन तक्मील तक पहुँचाएगा जब मसीह ईसा
वापस आएगा। 7 और मुनासिब है कि आप सब के
बारे में मेरा यही ख़याल हो, क्यूँकि आप मुझे अज़ीज़
रखते हैं। हाँ, जब मुझे जेल में डाला गया या मैं अल्लाह
की ख़ुशख़बरी का दिफ़ा या उस की तस्दीक़ कर रहा
था तो आप भी मेरे इस ख़ास फ़ज़्ल में शरीक हुए।
8 अल्लाह मेरा गवाह है कि मैं कितनी शिद्दत से आप
सब का आरज़ूमन्द हूँ। हाँ, मैं मसीह की सी दिली
शफ़क़त के साथ आप का ख़्वाहिशमन्द हूँ।
9 और मेरी दुआ है कि आप की मुहब्बत में इल्म-
ओ-इर्फ़ान और हर तरह की रुहानी बसीरत का
यहाँ तक इज़ाफ़ा हो जाए कि वह बढ़ती बढ़ती
दिल से छलक उठे। 10 क्यूँकि यह ज़रूरी है ताकि
आप वह बातें क़बूल करें जो बुन्यादी अहमियत की
हामिल हैं और आप मसीह की आमद तक बेलौस
और बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारें। 11 और यूँ आप उस
रास्तबाज़ी के फल से भरे रहेंगे जो आप को ईसा
मसीह के वसीले से हासिल होती है। फिर आप
अपनी ज़िन्दगी से अल्लाह को जलाल देंगे और उस
की तम्जीद करेंगे।

हर एक को मालूम हो जाए कि मसीह कौन है

12 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि यह बात आप के इल्म
में हो कि जो कुछ भी मुझ पर गुज़रा है वह हक़ीक़त
में अल्लाह की ख़ुशख़बरी के फैलाओ का बाइस बन
गया है। 13 क्यूँकि प्रैटोरियुम [n]के तमाम अफ़राद और
बाक़ी सब को मालूम हो गया है कि मैं मसीह की
ख़ातिर क़ैदी हूँ। 14 और मेरे क़ैद में होने की वजह
से ख़ुदावन्द में ज़्यादातर भाइयों का एतिमाद इतना
बढ़ गया है कि वह मज़ीद दिलेरी के साथ बिलाख़ौफ़
अल्लाह का कलाम सुनाते हैं।
15 बेशक बाज़ तो हसद और मुख़ालफ़त के बाइस
मसीह की मुनादी कर रहे हैं, लेकिन बाक़ियों की
नीयत अच्छी है, 16 क्यूँकि वह जानते हैं कि मैं अल्लाह
की ख़ुशख़बरी के दिफ़ा की वजह से यहाँ पड़ा हूँ।
इस लिए वह मुहब्बत की रूह में तब्लीग़ करते हैं।
17 इस के मुक़ाबले में दूसरे ख़ुलूसदिली से मसीह के
बारे में पैग़ाम नहीं सुनाते बल्कि ख़ुदग़रज़ी से। यह
समझते हैं कि हम इस तरह पौलुस की गिरिफ़्तारी
को मज़ीद तक्लीफ़दिह बना सकते हैं।
18 लेकिन इस से क्या फ़र्क़ पड़ता है! अहम बात तो
यह है कि मसीह की मुनादी हर तरह से की जा रही है,

---

[n]गवर्नर का सरकारी महल प्रैटोरियुम कहलाता था। यहाँ इस का मतलब शाहन्शाह के पहरेदारों के क्वार्टर भी हो सकता है।

ख़्वाह मुनाद की नीयत पुरख़ुलूस हो या न। और इस
वजह से मैं ख़ुश हूँ। और ख़ुश रहूँगा भी, 19 क्यूँकि मैं
जानता हूँ कि यह मेरे लिए रिहाई का बाइस बनेगा,
इस लिए कि आप मेरे लिए दुआ कर रहे हैं और ईसा
मसीह का रूह मेरी हिमायत कर रहा है। 20 हाँ, यह
मेरी पूरी तवक़्क़ो और उम्मीद है। मैं यह भी जानता हूँ
कि मुझे किसी भी बात में शर्मिन्दा नहीं किया जाएगा
बल्कि जैसा माज़ी में हमेशा हुआ अब भी मुझे बड़ी
दिलेरी से मसीह को जलाल देने का फ़ज़्ल मिलेगा,
ख़्वाह मैं ज़िन्दा रहूँ या मर जाऊँ। 21 क्यूँकि मेरे लिए
मसीह ज़िन्दगी है और मौत नफ़ा का बाइस। 22 अगर
मैं ज़िन्दा रहूँ तो इस का फ़ाइदा यह होगा कि मैं
मेहनत करके मज़ीद फल ला सकूँगा। चुनाँचे मैं नहीं
कह सकता कि क्या बेहतर है। 23 मैं बड़ी कश-म-
कश में रहता हूँ। एक तरफ़ मैं कूच करके मसीह के
पास होने की आर्ज़ू रखता हूँ, क्यूँकि यह मेरे लिए
सब से बेहतर होता। 24 लेकिन दूसरी तरफ़ ज़्यादा
ज़रूरी यह है कि मैं आप की ख़ातिर ज़िन्दा रहूँ।
25 और चूँकि मुझे इस ज़रूरत का यक़ीन है, इस लिए
मैं जानता हूँ कि मैं ज़िन्दा रह कर दुबारा आप सब
के साथ रहूँगा ताकि आप तरक़्क़ी करें और ईमान
में ख़ुश रहें। 26 हाँ, मेरे आप के पास वापस आने से
आप मेरे सबब से मसीह ईसा पर हद से ज़्यादा फ़ख़र
करेंगे।

27 लेकिन आप हर सूरत में मसीह की ख़ुशख़बरी
और आसमान के शहरियों के लाइक़ ज़िन्दगी गुज़ारें।
फिर ख़्वाह मैं आ कर आप को देखूँ, ख़्वाह
ग़ैरमौजूदगी में आप के बारे में सुनूँ, मुझे मालूम
होगा कि आप एक रूह में क़ाइम हैं, आप मिल कर
यकदिली से उस ईमान के लिए जाँफ़िशानी कर रहे
हैं जो अल्लाह की ख़ुशख़बरी से पैदा हुआ है, 28 और
आप किसी सूरत में अपने मुख़ालिफ़ों से दहशत नहीं
खाते। यह उन के लिए एक निशान होगा कि वह
हलाक हो जाएंगे जबकि आप को नजात हासिल
होगी, और वह भी अल्लाह से। 29 क्यूँकि आप को न
सिर्फ़ मसीह पर ईमान लाने का फ़ज़्ल हासिल हुआ
है बल्कि उस की ख़ातिर दुख उठाने का भी। 30 आप
भी उस मुक़ाबले में जाँफ़िशानी कर रहे हैं जिस में
आप ने मुझे देखा है और जिस के बारे में आप ने
अब सुन लिया है कि मैं अब तक उस में मसरूफ़ हूँ।

यगानगत की ज़रूरत

2 1 क्या आप के दरमियान मसीह में
हौसलाअफ़्ज़ाई, मुहब्बत की तसल्ली,
रूह-उल-क़ुद्स की रिफ़ाक़त, नर्मदिली और रहमत
पाई जाती है? 2 अगर ऐसा है तो मेरी ख़ुशी इस में
पूरी करें कि आप एक जैसी सोच रखें और एक
जैसी मुहब्बत रखें, एक जान और एक ज़हन हो
जाएँ। 3 ख़ुदग़रज़ न हों, न बातिल इज़्ज़त के पीछे
पड़ें बल्कि फ़रोतनी से दूसरों को अपने से बेहतर
समझें। 4 हर एक न सिर्फ़ अपना फ़ाइदा सोचे बल्कि
दूसरों का भी।

मसीह की राह-ए-सलीब

5 वही सोच रखें जो मसीह ईसा की भी थी।
6 वह जो अल्लाह की सूरत पर था
नहीं समझता था कि मेरा अल्लाह के बराबर होना
कोई ऐसी चीज़ है
जिस के साथ ज़बरदस्ती चिमटे रहने की ज़रूरत
है।
7 नहीं, उस ने अपने आप को इस से महरूम करके
ग़ुलाम की सूरत अपनाई
और इन्सानों की मानिन्द बन गया।
शक्ल-ओ-सूरत में वह इन्सान पाया गया।
8 उस ने अपने आप को पस्त कर दिया
और मौत तक ताबे रहा,
बल्कि सलीबी मौत तक।
9 इस लिए अल्लाह ने उसे सब से आला मक़ाम पर
सरफ़राज़ कर दिया
और उसे वह नाम बख़्शा जो हर नाम से आला है,
10 ताकि ईसा के इस नाम के सामने हर घुटना झुके,

ख़्वाह वह घुटना आसमान पर, ज़मीन पर या इस
के नीचे हो,
11 और हर ज़बान तस्लीम करे कि ईसा मसीह
ख़ुदावन्द है।
यूँ ख़ुदा बाप को जलाल दिया जाएगा।

रुहानी तरक़्क़ी का राज़

12 मेरे अज़ीज़ो, जब मैं आप के पास था तो आप
हमेशा फ़रमाँबरदार रहे। अब जब मैं गैरहाज़िर हूँ
तो इस की कहीं ज़्यादा ज़रूरत है। चुनाँचे डरते
और काँपते हुए जाँफ़िशानी करते रहें ताकि आप की
नजात तक्मील तक पहुँचे। 13 क्यूँकि ख़ुदा ही आप
में वह कुछ करने की ख़्वाहिश पैदा करता है जो
उसे पसन्द है, और वही आप को यह पूरा करने की
ताक़त देता है।
14 सब कुछ बुड़बुड़ाए और बह्स-मुबाहसा किए
बग़ैर करें 15 ताकि आप बेइल्ज़ाम और पाक हो कर
अल्लाह के बेदाग़ फ़र्ज़न्द साबित हो जाएँ, ऐसे लोग जो
एक टेढ़ी और उलटी नस्ल के दरमियान ही आसमान
के सितारों की तरह चमकते दमकते 16 और ज़िन्दगी
का कलाम थामे रखते हैं। फिर मैं मसीह की आमद
के दिन फ़ख़र कर सकूँगा कि न मैं रायगाँ दौड़ा, न
बेफ़ाइदा जिद्द-ओ-जह्द की।
17 देखें, जो ख़िदमत आप ईमान से सरअन्जाम दे
रहे हैं वह एक ऐसी क़ुर्बानी है जो अल्लाह को पसन्द
है। ख़ुदा करे कि जो दुख मैं उठा रहा हूँ वह मै की उस
नज़र की मानिन्द हो जो बैत-उल-मुक़द्दस में क़ुर्बानी
पर उंडेली जाती है। अगर मेरी नज़र वाक़ई आप की
क़ुर्बानी यूँ मुकम्मल करे तो मैं ख़ुश हूँ और आप के
साथ ख़ुशी मनाता हूँ। 18 आप भी इसी वजह से ख़ुश
हों और मेरे साथ ख़ुशी मनाएँ।

तीमुथियुस और इपफ़्रुदितुस को फ़िलिप्पियों के पास भेजा जाएगा

19 मुझे उम्मीद है कि अगर ख़ुदावन्द ईसा ने चाहा
तो मैं जल्द ही तीमुथियुस को आप के पास भेज दूँगा
ताकि आप के बारे में ख़बर पा कर मेरा हौसला
भी बढ़ जाए। 20 क्यूँकि मेरे पास कोई और नहीं
जिस की सोच बिलकुल मेरी जैसी है और जो इतनी
ख़ुलूसदिली से आप की फ़िक्र करे। 21 दूसरे सब
अपने मफ़ाद की तलाश में रहते हैं और वह कुछ
नज़रअन्दाज़ करते हैं जो ईसा मसीह का काम बढ़ाता
है। 22 लेकिन आप को तो मालूम है कि तीमुथियुस
क़ाबिल-ए-एतिमाद साबित हुआ, कि उस ने मेरा बेटा
बन कर मेरे साथ अल्लाह की ख़ुशख़बरी फैलाने की
ख़िदमत सरअन्जाम दी। 23 चुनाँचे उम्मीद है कि जूँ
ही मुझे पता चले कि मेरा क्या बनेगा मैं उसे आप के
पास भेज दूँगा। 24 और मेरा ख़ुदावन्द में ईमान है कि
मैं भी जल्द ही आप के पास आऊँगा।
25 लेकिन मैं ने ज़रूरी समझा कि इतने में
इपफ़्रुदितुस को आप के पास वापस भेज दूँ जिसे
आप ने क़ासिद के तौर पर मेरी ज़रूरियात पूरी करने
के लिए मेरे पास भेज दिया था। वह मेरा सच्चा भाई,
हमख़िदमत और साथी सिपाही साबित हुआ। 26 मैं
उसे इस लिए भेज रहा हूँ क्यूँकि वह आप सब का
निहायत आरज़ूमन्द है और इस लिए बेचैन है कि
आप को उस के बीमार होने की ख़बर मिल गई थी।
27 और वह था भी बीमार बल्कि मरने को था। लेकिन
अल्लाह ने उस पर रहम किया, और न सिर्फ़ उस पर
बल्कि मुझ पर भी ताकि मेरे दुख में इज़ाफ़ा न हो
जाए। 28 इस लिए मैं उसे और जल्दी से आप के पास
भेजूँगा ताकि आप उसे देख कर ख़ुश हो जाएँ और
मेरी परेशानी भी दूर हो जाए। 29 चुनाँचे ख़ुदावन्द में
बड़ी ख़ुशी से उस का इस्तिक़्बाल करें। उस जैसे
लोगों की इज़्ज़त करें, 30 क्यूँकि वह मसीह के काम
के बाइस मरने की नौबत तक पहुँच गया था। उस ने
अपनी जान ख़तरे में डाल दी ताकि आप की जगह
मेरी वह ख़िदमत करे जो आप न कर सके।

अल्लाह में ख़ुशी

3 1 मेरे भाइयो, जो कुछ भी हो, ख़ुदावन्द में ख़ुश
रहें। मैं आप को यह बात बताते रहने से कभी

थकता नहीं, क्यूँकि ऐसा करने से आप महफ़ूज़ रहते हैं।

यहूदियों से ख़बरदार

2 कुत्तों से ख़बरदार! उन शरीर मज़दूरों से होश्यार
रहना जो जिस्म की काँट-छाँट यानी ख़तना करवाते
हैं। 3 क्यूँकि हम ही हक़ीक़ी ख़तना के पैरोकार हैं, हम
ही हैं जो अल्लाह के रूह में परस्तिश करते, मसीह ईसा
पर फ़ख़र करते और इन्सानी ख़ूबियों पर भरोसा नहीं
करते।

पौलुस की शख़्सी गवाही

4 बात यह नहीं कि मेरा अपनी इन्सानी ख़ूबियों पर
भरोसा करने का कोई जवाज़ न होता। जब दूसरे
अपनी इन्सानी ख़ूबियों पर फ़ख़र करते हैं तो मैं उन
की निस्बत ज़्यादा कर सकता हूँ। 5 मेरा ख़तना हुआ
जब मैं अभी आठ दिन का बच्चा था। मैं इस्राईल क़ौम
के क़बीले बिनयमीन का हूँ, ऐसा इब्रानी जिस के
वालिदैन भी इब्रानी थे। मैं फ़रीसियों का मैम्बर था जो
यहूदी शरीअत के कट्टर पैरोकार हैं। 6 मैं इतना सरगर्म
था कि मसीह की जमाअतों को ईज़ा पहुँचाई। हाँ, मैं
शरीअत पर अमल करने में रास्तबाज़ और बेइल्ज़ाम
था।

हक़ीक़ी फ़ाइदा

7 उस वक़्त यह सब कुछ मेरे नज़्दीक नफ़ा का
बाइस था, लेकिन अब मैं इसे मसीह में होने के बाइस
नुक़्सान ही समझता हूँ। 8 हाँ, बल्कि मैं सब कुछ इस
अज़ीमतरीन बात के सबब से नुक़्सान समझता हूँ
कि मैं अपने ख़ुदावन्द मसीह ईसा को जानता हूँ।
उसी की ख़ातिर मुझे तमाम चीज़ों का नुक़्सान पहुँचा
है। मैं उन्हें कूड़ा ही समझता हूँ ताकि मसीह को
हासिल करूँ 9 और उस में पाया जाऊँ। लेकिन मैं
इस नौबत तक अपनी उस रास्तबाज़ी के ज़रीए नहीं
पहुँच सकता जो शरीअत के ताबे रहने से हासिल
होती है। इस के लिए वह रास्तबाज़ी ज़रूरी है जो
मसीह पर ईमान लाने से मिलती है, जो अल्लाह की
तरफ़ से है और जो ईमान पर मब्नी होती है। 10 हाँ,
मैं सब कुछ कूड़ा ही समझता हूँ ताकि मसीह को,
उस के जी उठने की क़ुदरत और उस के दुखों में
शरीक होने का फ़ज़्ल जान लूँ। यूँ मैं उस की मौत का
हमशक्ल बनता जा रहा हूँ, 11 इस उम्मीद में कि मैं
किसी न किसी तरह मुर्दों में से जी उठने की नौबत
तक पहुँचूँगा।

इनआम हासिल करने के लिए दौड़ें

12 मतलब यह नहीं कि मैं यह सब कुछ हासिल
कर चुका या कामिल हो चुका हूँ। लेकिन मैं मन्ज़िल-
ए-मक़सूद की तरफ़ दौड़ा हुआ जाता हूँ ताकि वह
कुछ पकड़ लूँ जिस के लिए मसीह ईसा ने मुझे पकड़
लिया है। 13 भाइयो, में अपने बारे में यह ख़याल नहीं
करता कि मैं इसे हासिल कर चुका हूँ। लेकिन मैं
इस एक ही बात पर ध्यान देता हूँ, जो कुछ मेरे पीछे
है वह मैं भूल कर सख़्त तग-ओ-दौ के साथ उस
तरफ़ बढ़ता हूँ जो आगे पड़ा है। 14 मैं सीधा मन्ज़िल-
ए-मक़सूद की तरफ़ दौड़ा हुआ जाता हूँ ताकि वह
इनआम हासिल करूँ जिस के लिए अल्लाह ने मुझे
मसीह ईसा में आसमान पर बुलाया है।

मसीह में पुख़्ता होना

15 चुनाँचे हम में से जितने कामिल हैं आएँ, हम ऐसी
सोच रखें। और अगर आप किसी बात में फ़र्क़ सोचते
हैं तो अल्लाह आप पर यह भी ज़ाहिर करेगा। 16 जो
भी हो, जिस मरहले तक हम पहुँच गए हैं आएँ, हम
उस के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें।

17 भाइयो, मिल कर मेरे नक़्श-ए-क़दम पर चलें।
और उन पर ख़ूब ध्यान दें जो हमारे नमूने पर चलते हैं।
18 क्यूँकि जिस तरह मैं ने आप को कई बार बताया
है और अब रो रो कर बता रहा हूँ, बहुत से लोग
अपने चाल-चलन से ज़ाहिर करते हैं कि वह मसीह
की सलीब के दुश्मन हैं। 19 ऐसे लोगों का अन्जाम
हलाकत है। खाने-पीने की पाबन्दियाँ और ख़तने

पर फ़ख़र उन का ख़ुदा बन गया है। [o]हाँ, वह सिर्फ़
दुनियावी सोच रखते हैं। 20 लेकिन हम आसमान के
शहरी हैं, और हम शिद्दत से इस इन्तिज़ार में हैं कि
हमारा नजातदहिन्दा और ख़ुदावन्द ईसा मसीह वहीं
से आए। 21 उस वक़्त वह हमारे पस्तहाल बदनों
को बदल कर अपने जलाली बदन के हमशक्ल बना
देगा। और यह वह उस क़ुव्वत के ज़रीए करेगा जिस
से वह तमाम चीज़ें अपने ताबे कर सकता है।

हिदायात

4 1 चुनाँचे मेरे प्यारे भाइयो, जिन का आरज़ूमन्द
मैं हूँ और जो मेरी मुसर्रत का बाइस और मेरा
ताज हैं, ख़ुदावन्द में साबितक़दम रहें। अज़ीज़ो, 2 मैं
युवदिया और सुन्तुख़े से अपील करता हूँ कि वह
ख़ुदावन्द में एक जैसी सोच रखें। 3 हाँ मेरे हमख़िदमत
भाई, मेरी आप से गुज़ारिश है कि आप उन की मदद
करें। क्यूँकि वह अल्लाह की ख़ुशख़बरी फैलाने की
जिद्द-ओ-जह्द में मेरे साथ ख़िदमत करती रही हैं,
उस मुक़ाबले में जिस में क्लेमेंस और मेरे वह बाक़ी
मददगार भी शरीक थे जिन के नाम किताब-ए-हयात
में दर्ज हैं।

4 हर वक़्त ख़ुदावन्द में ख़ुशी मनाएँ। एक बार फिर
कहता हूँ, ख़ुशी मनाएँ।

5 आप की नर्मदिली तमाम लोगों पर ज़ाहिर हो।
याद रखें कि ख़ुदावन्द आने को है। 6 अपनी किसी
भी फ़िक्र में उलझ कर परेशान न हो जाएँ बल्कि हर
हालत में दुआ और इल्तिजा करके अपनी दरख़्वास्तें
अल्लाह के सामने पेश करें। ध्यान रखें कि आप
यह शुक्रगुज़ारी की रूह में करें। 7 फिर अल्लाह की
सलामती जो समझ से बाहर है आप के दिलों और
ख़यालात को मसीह ईसा में महफ़ूज़ रखेगी।

8 भाइयो, एक आख़िरी बात, जो कुछ सच्चा है, जो
कुछ शरीफ़ है, जो कुछ रास्त है, जो कुछ मुक़द्दस
है, जो कुछ पसन्दीदा है, जो कुछ उम्दा है, ग़रज़,
अगर कोई अख़्लाक़ी या क़ाबिल-ए-तारीफ़ बात हो
तो उस का ख़याल रखें। 9 जो कुछ आप ने मेरे वसीले
से सीख लिया, हासिल कर लिया, सुन लिया या देख
लिया है उस पर अमल करें। फिर सलामती का ख़ुदा
आप के साथ होगा।

जमाअत की माली इम्दाद के लिए शुक्रिया

10 मैं ख़ुदावन्द में निहायत ही ख़ुश हुआ कि अब
आख़िरकार आप की मेरे लिए फ़िक्रमन्दी दुबारा जाग
उठी है। हाँ, मुझे पता है कि आप पहले भी फ़िक्रमन्द
थे, लेकिन आप को इस का इज़हार करने का मौक़ा
नहीं मिला था। 11 मैं यह अपनी किसी ज़रूरत की
वजह से नहीं कह रहा, क्यूँकि मैं ने हर हालत में
ख़ुश रहने का राज़ सीख लिया है। 12 मुझे दबाए जाने
का तजरिबा हुआ है और हर चीज़ कस्रत से मुयस्सर
होने का भी। मुझे हर हालत से ख़ूब वाक़िफ़ किया
गया है, सेर होने से और भूका रहने से भी, हर चीज़
कस्रत से मुयस्सर होने से और ज़रूरतमन्द होने से
भी। 13 मसीह में मैं सब कुछ करने के क़ाबिल हूँ,
क्यूँकि वही मुझे तक़वियत देता रहता है।

14 तो भी अच्छा था कि आप मेरी मुसीबत में शरीक
हुए। 15 आप जो फ़िलिप्पी के रहने वाले हैं ख़ुद जानते
हैं कि उस वक़्त जब मसीह की मुनादी का काम आप
के इलाक़े में शुरू हुआ था और मैं सूबा मकिदुनिया
से निकल आया था तो सिर्फ़ आप की जमाअत पूरे
हिसाब-किताब के साथ पैसे दे कर मेरी ख़िदमत में
शरीक हुई। 16 उस वक़्त भी जब मैं थिस्सलुनीके
शहर में था आप ने कई बार मेरी ज़रूरियात पूरी
करने के लिए कुछ भेज दिया। 17 कहने का मतलब
यह नहीं कि मैं आप से कुछ पाना चाहता हूँ, बल्कि
मेरी शदीद ख़्वाहिश यह है कि आप के देने से आप ही
को अल्लाह से कस्रत का सूद मिल जाए। 18 यही मेरी
रसीद है। मैं ने पूरी रक़म वसूल पाई है बल्कि अब
मेरे पास ज़रूरत से ज़्यादा है। जब से मुझे इपफ़्रुदितुस

---

[o]लफ़्ज़ी तर्जुमा : उन का पेट और उन का अपनी शर्म पर फ़ख़र उन का ख़ुदा बन गया है।

के हाथ आप का हदिया मिल गया है मेरे पास बहुत
कुछ है। यह ख़ुश्बूदार और क़ाबिल-ए-क़बूल क़ुर्बानी
अल्लाह को पसन्दीदा है। 19 जवाब में मेरा ख़ुदा अपनी
उस जलाली दौलत के मुवाफ़िक़ जो मसीह ईसा में है
आप की तमाम ज़रूरियात पूरी करे। 20 अल्लाह हमारे
बाप का जलाल अज़ल से अबद तक हो। आमीन।

सलाम और बरकत

21 तमाम मक़ामी मुक़द्दसीन को मसीह ईसा में मेरा
सलाम देना। जो भाई मेरे साथ हैं वह आप को
सलाम कहते हैं। 22 यहाँ के तमाम मुक़द्दसीन आप
को सलाम कहते हैं, ख़ासकर शहन्शाह के घराने के
भाई और बहनें। 23 ख़ुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़्ल
आप की रूह के साथ रहे। आमीन।

कुलुस्सियों

1 [1] यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो अल्लाह की
मर्ज़ी से मसीह ईसा का रसूल है। साथ ही यह
भाई तीमुथियुस की तरफ़ से भी है।
[2] मैं कुलुस्से शहर के मुक़द्दस भाइयों को लिख रहा
हूँ जो मसीह पर ईमान लाए हैं :
ख़ुदा हमारा बाप आप को फ़ज़्ल और सलामती
बख़्शे।

शुक्रगुज़ारी की दुआ

[3] जब हम आप के लिए दुआ करते हैं तो हर वक़्त
ख़ुदा अपने ख़ुदावन्द ईसा मसीह के बाप का शुक्र
करते हैं, [4] क्यूँकि हम ने आप के मसीह ईसा पर ईमान
और आप की तमाम मुक़द्दसीन से मुहब्बत के बारे
में सुन लिया है। [5] आप का यह ईमान और मुहब्बत
वह कुछ ज़ाहिर करते हैं जिस की आप उम्मीद रखते
हैं और जो आसमान पर आप के लिए महफ़ूज़ रखा
गया है। और आप ने यह उम्मीद उस वक़्त से रखी है
जब से आप ने पहली मर्तबा सच्चाई का कलाम यानी
अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनी। [6] यह पैग़ाम जो आप के
पास पहुँच गया पूरी दुनिया में फल ला रहा और बढ़
रहा है, बिलकुल उसी तरह जिस तरह यह आप में भी
उस दिन से काम कर रहा है जब आप ने पहली बार
इसे सुन कर अल्लाह के फ़ज़्ल की पूरी हक़ीक़त समझ
ली। [7] आप ने हमारे अज़ीज़ हमख़िदमत इपफ़्रास से
इस ख़ुशख़बरी की तालीम पा ली थी। मसीह का यह
वफ़ादार ख़ादिम हमारी जगह आप की ख़िदमत कर
रहा है। [8] उसी ने हमें आप की उस मुहब्बत के बारे में
बताया जो रूह-उल-क़ुद्स ने आप के दिलों में डाल
दी है।
[9] इस वजह से हम आप के लिए दुआ करने से
बाज़ नहीं आए बल्कि यह माँगते रहते हैं कि अल्लाह
आप को हर रुहानी हिक्मत और समझ से नवाज़
कर अपनी मर्ज़ी के इल्म से भर दे। [10] क्यूँकि फिर
ही आप अपनी ज़िन्दगी ख़ुदावन्द के लाइक़ गुज़ार
सकेंगे और हर तरह से उसे पसन्द आएँगे। हाँ, आप
हर क़िस्म का अच्छा काम करके फल लाएँगे और
अल्लाह के इल्म-ओ-इर्फ़ान में तरक़्क़ी करेंगे। [11] और
आप उस की जलाली क़ुदरत से मिलने वाली हर
क़िस्म की क़ुव्वत से तक़वियत पा कर हर वक़्त
साबितक़दमी और सब्र से चल सकेंगे। आप ख़ुशी से
[12] बाप का शुक्र करेंगे जिस ने आप को उस मीरास में
हिस्सा लेने के लाइक़ बना दिया जो उस के रौशनी में
रहने वाले मुक़द्दसीन को हासिल है। [13] क्यूँकि वही
हमें तारीकी के इख़तियार से रिहाई दे कर अपने प्यारे
फ़र्ज़न्द की बादशाही में लाया, [14] उस वाहिद शख़्स
के इख़तियार में जिस ने हमारा फ़िद्या दे कर हमारे
गुनाहों को मुआफ़ कर दिया।

मसीह की शख़्सियत और काम

[15] अल्लाह को देखा नहीं जा सकता, लेकिन हम
मसीह को देख सकते हैं जो अल्लाह की सूरत और
काइनात का पहलौठा है। [16] क्यूँकि अल्लाह ने उसी
में सब कुछ ख़ल्क़ किया, ख़्वाह आसमान पर हो
या ज़मीन पर, आँखों को नज़र आए या न, ख़्वाह
शाही तख़्त, क़ुव्वतें, हुक्मरान या इख़तियार वाले हूँ।
सब कुछ मसीह के ज़रीए और उसी के लिए ख़ल्क़
हुआ। [17] वही सब चीज़ों से पहले है और उसी में सब
कुछ क़ाइम रहता है। [18] और वह बदन यानी अपनी
जमाअत का सर भी है। वही इब्तिदा है, और चूँकि
पहले वही मुर्दों में से जी उठा इस लिए वही उन में
से पहलौठा भी है ताकि वह सब बातों में अव्वल
हो। [19] क्यूँकि अल्लाह को पसन्द आया कि मसीह में
उस की पूरी मामूरी सुकूनत करे [20] और वह मसीह
के ज़रीए सब बातों की अपने साथ सुलह करा ले,

ख़्वाह वह ज़मीन की हूँ ख़्वाह आसमान की। क्यूँकि उस ने मसीह के सलीब पर बहाए गए ख़ून के वसीले से सुलह-सलामती क़ाइम की।

21 आप भी पहले अल्लाह के सामने अजनबी थे और दुश्मन की सी सोच रख कर बुरे काम करते थे। 22 लेकिन अब उस ने मसीह के इन्सानी बदन की मौत से आप के साथ सुलह कर ली है ताकि वह आप को मुक़द्दस, बेदाग़ और बेइल्ज़ाम हालत में अपने हुज़ूर खड़ा करे। 23 बेशक अब ज़रूरी है कि आप ईमान में क़ाइम रहें, कि आप ठोस बुन्याद पर मज़बूती से खड़े रहें और उस ख़ुशख़बरी की उम्मीद से हट न जाएँ जो आप ने सुन ली है। यह वही पैग़ाम है जिस की मुनादी दुनिया में हर मख़्लूक़ के सामने कर दी गई है और जिस का ख़ादिम मैं पौलुस बन गया हूँ।

जमाअत के ख़ादिम की हैसियत से पौलुस की ख़िदमत

24 अब मैं उन दुखों के बाइस ख़ुशी मनाता हूँ जो मैं आप की ख़ातिर उठा रहा हूँ। क्यूँकि मैं अपने जिस्म में मसीह के बदन यानी उस की जमाअत की ख़ातिर मसीह की मुसीबतों की वह कमियाँ पूरी कर रहा हूँ जो अब तक रह गई हैं। 25 हाँ, अल्लाह ने मुझे अपनी जमाअत का ख़ादिम बना कर यह ज़िम्मादारी दी कि मैं आप को अल्लाह का पूरा कलाम सुना दूँ, 26 वह राज़ जो अज़ल से तमाम गुज़री नस्लों से पोशीदा रहा था लेकिन अब मुक़द्दसीन पर ज़ाहिर किया गया है। 27 क्यूँकि अल्लाह चाहता था कि वह जान लें कि ग़ैरयहूदियों में यह राज़ कितना बेशक़ीमत और जलाली है। और यह राज़ है क्या? यह कि मसीह आप में है। वही आप में है जिस के बाइस हम अल्लाह के जलाल में शरीक होने की उम्मीद रखते हैं। 28 यूँ हम सब को मसीह का पैग़ाम सुनाते हैं। हर मुमकिना हिक्मत से हम उन्हें समझाते और तालीम देते हैं ताकि हर एक को मसीह में कामिल हालत में अल्लाह के हुज़ूर पेश करें। 29 यही मक़्सद पूरा करने के लिए मैं सख़्त मेहनत करता हूँ। हाँ, मैं पूरी जिद्द-ओ-जह्द करके मसीह की उस क़ुव्वत का सहारा लेता हूँ जो बड़े ज़ोर से मेरे अन्दर काम कर रही है।

2 1 मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि मैं आप के लिए किस क़दर जाँफ़िशानी कर रहा हूँ - आप के लिए, लौदीकिया वालों के लिए और उन तमाम ईमानदारों के लिए भी जिन की मेरे साथ मुलाक़ात नहीं हुई। 2 मेरी कोशिश यह है कि उन की दिली हौसलाअफ़ज़ाई की जाए और वह मुहब्बत में एक हो जाएँ, कि उन्हें वह ठोस एतिमाद हासिल हो जाए जो पूरी समझ से पैदा होता है। क्यूँकि मैं चाहता हूँ कि वह अल्लाह का राज़ जान लें। राज़ क्या है? मसीह ख़ुद। 3 उसी में हिक्मत और इल्म-ओ-इर्फ़ान के तमाम ख़ज़ाने पोशीदा हैं।

4 ग़रज़ ख़बरदार रहें कि कोई आप को बज़ाहिर सहीह और मीठे मीठे अल्फ़ाज़ से धोका न दे। 5 क्यूँकि गो मैं जिस्म के लिहाज़ से हाज़िर नहीं हूँ, लेकिन रूह में मैं आप के साथ हूँ। और मैं यह देख कर ख़ुश हूँ कि आप कितनी मुनज़्ज़म ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, कि आप का मसीह पर ईमान कितना पुख़्ता है।

मसीह में ज़िन्दगी

6 आप ने ईसा मसीह को ख़ुदावन्द के तौर पर क़बूल कर लिया है। अब उस में ज़िन्दगी गुज़ारें। 7 उस में जड़ पकड़ें, उस पर अपनी ज़िन्दगी तामीर करें, उस ईमान में मज़बूत रहें जिस की आप को तालीम दी गई है और शुक्रगुज़ारी से लबरेज़ हो जाएँ।

8 मुह्तात रहें कि कोई आप को फ़ल्सफ़ियाना और महज़ फ़रेब देने वाली बातों से अपने जाल में न फंसा ले। ऐसी बातों का सरचश्मा मसीह नहीं बल्कि इन्सानी रिवायतें और इस दुनिया की क़ुव्वतें हैं। 9 क्यूँकि मसीह में उलूहियत की सारी मामूरी मुजस्सम हो कर सुकूनत करती है। 10 और आप को जो मसीह में हैं उस की मामूरी में शरीक कर दिया गया है। वही हर हुक्मरान और इख़्तियार वाले का सर है।

11 उस में आते वक़्त आप का ख़तना भी करवाया
गया। लेकिन यह ख़तना इन्सानी हाथों से नहीं किया
गया बल्कि मसीह के वसीले से। उस वक़्त आप की
पुरानी फ़ित्रत उतार दी गई, 12 आप को बपतिस्मा
दे कर मसीह के साथ दफ़नाया गया और आप को
ईमान से ज़िन्दा कर दिया गया। क्यूँकि आप अल्लाह
की क़ुदरत पर ईमान लाए थे, उसी क़ुदरत पर जिस
ने मसीह को मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया था। 13 पहले
आप अपने गुनाहों और नामख़्तून जिस्मानी हालत
के सबब से मुर्दा थे, लेकिन अब अल्लाह ने आप को
मसीह के साथ ज़िन्दा कर दिया है। उस ने हमारे
तमाम गुनाहों को मुआफ़ कर दिया है। 14 हमारे क़र्ज़
की जो रसीद अपनी शराइत की बिना पर हमारे
ख़िलाफ़ थी उसे उस ने मन्सूख़ कर दिया। हाँ, उस ने
हम से दूर करके उसे कीलों से सलीब पर जड़ दिया।
15 उस ने हुक्मरानों और इख़तियार वालों से उन का
असलिहा छीन कर सब के सामने उन की रुस्वाई
की। हाँ, मसीह की सलीबी मौत से वह अल्लाह के
क़ैदी बन गए और उन्हें फ़त्ह के जुलूस में उस के
पीछे पीछे चलना पड़ा।

16 चुनाँचे कोई आप को इस वजह से मुजरिम न
ठहराए कि आप क्या क्या खाते-पीते या कौन कौन
सी ईदें मनाते हैं। इसी तरह कोई आप की अदालत न
करे अगर आप हिलाल की ईद या सबत का दिन नहीं
मनाते। 17 यह चीज़ें तो सिर्फ़ आने वाली हक़ीक़त का
साया ही हैं जबकि यह हक़ीक़त ख़ुद मसीह में पाई
जाती है। 18 ऐसे लोग आप को मुजरिम न ठहराएँ जो
ज़ाहिरी फ़रोतनी और फ़रिश्तों की पूजा पर इसरार
करते हैं। बड़ी तफ़्सील से अपनी रोयाओं में देखी
हुई बातें बयान करते करते उन के ग़ैररुहानी ज़हन
ख़्वाह-म-ख़्वाह फूल जाते हैं। 19 यूँ उन्हों ने मसीह
के साथ लगे रहना छोड़ दिया अगरचे वह बदन का
सर है। वही जोड़ों और पट्ठों के ज़रीए पूरे बदन को
सहारा दे कर उस के मुख़्तलिफ़ हिस्सों को जोड़ देता
है। यूँ पूरा बदन अल्लाह की मदद से तरक़्क़ी करता
जाता है।

मसीह के साथ मरना और ज़िन्दगी गुज़ारना

20 आप तो मसीह के साथ मर कर दुनिया की
कुव्वतों से आज़ाद हो गए हैं। अगर ऐसा है तो आप
ज़िन्दगी ऐसे क्यूँ गुज़ारते हैं जैसे कि आप अभी तक
इस दुनिया की मिलकियत हैं? आप क्यूँ इस के
अह्काम के ताबे रहते हैं? 21 मसलन "इसे हाथ न
लगाना, वह न चखना, यह न छूना।" 22 इन तमाम
चीज़ों का मक़्सद तो यह है कि इस्तेमाल हो कर
ख़त्म हो जाएँ। यह सिर्फ़ इन्सानी अह्काम और
तालीमात हैं। 23 बेशक यह अह्काम जो घड़े हुए
मज़्हबी फ़राइज़, नाम-निहाद फ़रोतनी और जिस्म के
सख़्त दबाओ का तक़ाज़ा करते हैं हिक्मत पर मब्नी
तो लगते हैं, लेकिन यह बेकार हैं और सिर्फ़ जिस्म
ही की ख़्वाहिशात पूरी करते हैं।

3 1 आप को मसीह के साथ ज़िन्दा कर दिया गया
है, इस लिए वह कुछ तलाश करें जो आसमान
पर है जहाँ मसीह अल्लाह के दहने हाथ बैठा है।
2 दुनियावी चीज़ों को अपने ख़यालों का मर्कज़ न
बनाएँ बल्कि आसमानी चीज़ों को। 3 क्यूँकि आप
मर गए हैं और अब आप की ज़िन्दगी मसीह के साथ
अल्लाह में पोशीदा है। 4 मसीह ही आप की ज़िन्दगी
है। जब वह ज़ाहिर हो जाएगा तो आप भी उस के साथ
ज़ाहिर हो कर उस के जलाल में शरीक हो जाएंगे।

पुरानी और नई ज़िन्दगी

5 चुनाँचे उन दुनियावी चीज़ों को मार डालें जो आप
के अन्दर काम कर रही हैं : ज़िनाकारी, नापाकी,
शहवतपरस्ती, बुरी ख़्वाहिशात और लालच (लालच
तो एक क़िस्म की बुतपरस्ती है)। 6 अल्लाह का ग़ज़ब
ऐसी ही बातों की वजह से नाज़िल होगा। 7 एक वक़्त
था जब आप भी इन के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते थे,
जब आप की ज़िन्दगी इन के क़ाबू में थी।

8 लेकिन अब वक़्त आ गया है कि आप यह सब
कुछ यानी ग़ुस्सा, तैश, बदसुलूकी, बुह्तान और
गन्दी ज़बान ख़स्ताहाल कपड़े की तरह उतार कर

फैंक दें। 9 एक दूसरे से बात करते वक़्त झूट मत
बोलना, क्यूँकि आप ने अपनी पुरानी फ़ित्रत उस की
हरकतों समेत उतार दी है। 10 साथ साथ आप ने नई
फ़ित्रत पहन ली है, वह फ़ित्रत जिस की तज्दीद हमारा
ख़ालिक़ अपनी सूरत पर करता जा रहा है ताकि आप
उसे और बेहतर तौर पर जान लें। 11 जहाँ यह काम
हो रहा है वहाँ लोगों में कोई फ़र्क़ नहीं है, ख़्वाह
कोई ग़ैरयहूदी हो या यहूदी, मख़्तून हो या नामख़्तून,
ग़ैरयूनानी हो या स्कूती, [P]ग़ुलाम हो या आज़ाद। कोई
फ़र्क़ नहीं पड़ता, सिर्फ़ मसीह ही सब कुछ और सब
में है।

12 अल्लाह ने आप को चुन कर अपने लिए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस कर लिया है। वह आप से मुहब्बत रखता
है। इस लिए अब तरस, नेकी, फ़रोतनी, नर्मदिली
और सब्र को पहन लें। 13 एक दूसरे को बर्दाश्त
करें, और अगर आप की किसी से शिकायत हो तो
उसे मुआफ़ कर दें। हाँ, यूँ मुआफ़ करें जिस तरह
ख़ुदावन्द ने आप को मुआफ़ कर दिया है। 14 इन
के इलावा मुहब्बत भी पहन लें जो सब कुछ बांध
कर कामिलियत की तरफ़ ले जाती है। 15 मसीह
की सलामती आप के दिलों में हुकूमत करे। क्यूँकि
अल्लाह ने आप को इसी सलामती की ज़िन्दगी गुज़ारने
के लिए बुला कर एक बदन में शामिल कर दिया है।
शुक्रगुज़ार भी रहें। 16 आप की ज़िन्दगी में मसीह के
कलाम की पूरी दौलत घर कर जाए। एक दूसरे को
हर तरह की हिक्मत से तालीम देते और समझाते रहें।
साथ साथ अपने दिलों में अल्लाह के लिए शुक्रगुज़ारी
के साथ ज़बूर, हम्द-ओ-सना और रुहानी गीत गाते
रहें। 17 और जो कुछ भी आप करें ख़्वाह ज़बानी हो
या अमली वह ख़ुदावन्द ईसा का नाम ले कर करें।
हर काम में उसी के वसीले से ख़ुदा बाप का शुक्र
करें।

नई ज़िन्दगी में ताल्लुक़ात कैसे हूँ

18 बीवियो, अपने शौहर के ताबे रहें, क्यूँकि जो
ख़ुदावन्द में है उस के लिए यही मुनासिब है।

19 शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें। उन से
तल्ख़मिज़ाजी से पेश न आएँ।

20 बच्चो, हर बात में अपने माँ-बाप के ताबे रहें,
क्यूँकि यही ख़ुदावन्द को पसन्द है।

21 वालिदो, अपने बच्चों को मुश्तइल न करें, वर्ना
वह बेदिल हो जाएंगे।

22 ग़ुलामो, हर बात में अपने दुनियावी मालिकों
के ताबे रहें। न सिर्फ़ उन के सामने ही और उन्हें
ख़ुश रखने के लिए ख़िदमत करें बल्कि ख़ुलूसदिली
और ख़ुदावन्द का ख़ौफ़ मान कर काम करें। 23 जो
कुछ भी आप करते हैं उसे पूरी लगन के साथ करें,
इस तरह जैसा कि आप न सिर्फ़ इन्सानों की बल्कि
ख़ुदावन्द की ख़िदमत कर रहे हूँ। 24 आप तो जानते
हैं कि ख़ुदावन्द आप को इस के मुआवज़े में वह
मीरास देगा जिस का वादा उस ने किया है। हक़ीक़त
में आप ख़ुदावन्द मसीह की ही ख़िदमत कर रहे हैं।
25 लेकिन जो ग़लत काम करे उसे अपनी ग़लतियों
का मुआवज़ा भी मिलेगा। अल्लाह तो किसी की भी
जानिबदारी नहीं करता।

4 1 मालिको, अपने ग़ुलामों के साथ मुन्सिफ़ाना
और जाइज़ सुलूक करें। आप तो जानते हैं कि
आसमान पर आप का भी मालिक है।

हिदायात

2 दुआ में लगे रहें। और दुआ करते वक़्त
शुक्रगुज़ारी के साथ जागते रहें। 3 साथ साथ हमारे
लिए भी दुआ करें ताकि अल्लाह हमारे लिए कलाम
सुनाने का दरवाज़ा खोले और हम मसीह का राज़
पेश कर सकें। आख़िर मैं इसी राज़ की वजह से क़ैद

[P]एक क़बीला जो ज़लील समझा जाता था।

में हूँ। 4 दुआ करें कि मैं इसे यूँ पेश करूँ जिस तरह
करना चाहिए, कि इसे साफ़ समझा जा सके।
5 जो अब तक ईमान न लाए हों उन के साथ
दानिशमन्दाना सुलूक करें। इस सिलसिले में हर
मौक़े से फ़ाइदा उठाएँ। 6 आप की गुफ़्तगु हर वक़्त
मेहरबान हो, ऐसी कि मज़ा आए और आप हर एक
को मुनासिब जवाब दे सकें।

आख़िरी सलाम-ओ-दुआ

7 जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है हमारा अज़ीज़ भाई
तुख़िकुस आप को सब कुछ बता देगा। वह एक
वफ़ादार ख़ादिम और ख़ुदावन्द में हमख़िदमत रहा
है। 8 मैं ने उसे ख़ासकर इस लिए आप के पास भेज
दिया ताकि आप को हमारा हाल मालूम हो जाए
और वह आप की हौसलाअफ़ज़ाई करे। 9 वह हमारे
वफ़ादार और अज़ीज़ भाई उनेसिमुस के साथ आप
के पास आ रहा है, वही जो आप की जमाअत से है।
दोनों आप को वह सब कुछ सुना देंगे जो यहाँ हो
रहा है।
10 अरिस्तर्ख़ुस जो मेरे साथ क़ैद में है आप को
सलाम कहता है और इसी तरह बर्नबास का कज़न
[1]मर्क़ुस भी। (आप को उस के बारे में हिदायात दी गई
हैं। जब वह आप के पास आए तो उसे ख़ुशआमदीद
कहना।) 11 ईसा जो यूस्तुस कहलाता है भी आप को
सलाम कहता है। उन में से जो मेरे साथ अल्लाह की
बादशाही में ख़िदमत कर रहे हैं सिर्फ़ यह तीन मर्द
यहूदी हैं। और यह मेरे लिए तसल्ली का बाइस रहे हैं।
12 मसीह ईसा का ख़ादिम इपफ़्रास भी जो आप की
जमाअत से है सलाम कहता है। वह हर वक़्त बड़ी
जिद्द-ओ-जह्द के साथ आप के लिए दुआ करता है।
उस की ख़ास दुआ यह है कि आप मज़बूती के साथ
खड़े रहें, कि आप बालिग़ मसीही बन कर हर बात में
अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ चलें। 13 मैं ख़ुद इस की
तस्दीक़ कर सकता हूँ कि उस ने आप के लिए सख़्त
मेहनत की है बल्कि लौदीकिया और हियरापुलिस
की जमाअतों के लिए भी। 14 हमारे अज़ीज़ डाक्टर
लूक़ा और देमास आप को सलाम कहते हैं।
15 मेरा सलाम लौदीकिया की जमाअत को देना
और इसी तरह नुम्फ़ास को उस जमाअत समेत जो
उस के घर में जमा होती है। 16 यह पढ़ने के बाद
ध्यान दें कि लौदीकिया की जमाअत में भी यह ख़त
पढ़ा जाए और आप लौदीकिया का ख़त भी पढ़ें।
17 अर्ख़िप्पुस को बता देना, ख़बरदार कि आप वह
ख़िदमत तक्मील तक पहुँचाएँ जो आप को ख़ुदावन्द
में सौंपी गई है।
18 मैं अपने हाथ से यह अल्फ़ाज़ लिख रहा हूँ। मेरी
यानी पौलुस की तरफ़ से सलाम। मेरी ज़न्जीरें मत
भूलना! अल्लाह का फ़ज़्ल आप के साथ होता रहे।

---

[1]यूनानी लफ़्ज़ से ज़ाहिर नहीं होता कि मर्क़ुस चचा, मामूँ, फूफी या ख़ाला का लड़का है।

१-थिस्सलुनीकियों

1 1 यह ख़त पौलुस, सिल्वानुस और तीमुथियुस
की तरफ़ से है।
हम थिस्सलुनीकियों की जमाअत को लिख रहे हैं,
उन्हें जो ख़ुदा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह पर
ईमान लाए हैं।
अल्लाह आप को फ़ज़्ल और सलामती बख़्शे।

थिस्सलुनीकियों की ज़िन्दगी और ईमान

2 हम हर वक़्त आप सब के लिए ख़ुदा का शुक्र
करते और अपनी दुआओं में आप को याद करते
रहते हैं। 3 हमें अपने ख़ुदा बाप के हुज़ूर ख़ासकर
आप का अमल, मेहनत-मशक़्क़त और साबितक़दमी
याद आती रहती है। आप अपना ईमान कितनी
अच्छी तरह अमल में लाए, आप ने मुहब्बत की
रूह में कितनी मेहनत-मशक़्क़त की और आप ने
कितनी साबितक़दमी दिखाई, ऐसी साबितक़दमी
जो सिर्फ़ हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह पर उम्मीद ही
दिला सकती है। 4 भाइयो, अल्लाह आप से मुहब्बत
रखता है, और हमें पूरा इल्म है कि उस ने आप को
वाक़ई चुन लिया है। 5 क्यूँकि जब हम ने अल्लाह की
ख़ुशख़बरी आप तक पहुँचाई तो न सिर्फ़ बातें करके
बल्कि क़ुव्वत के साथ, रूह-उल-क़ुदस में और पूरे
एतिमाद के साथ। आप जानते हैं कि जब हम आप के
पास थे तो हम ने किस तरह की ज़िन्दगी गुज़ारी। जो
कुछ हम ने किया वह आप की ख़ातिर किया। 6 उस
वक़्त आप हमारे और ख़ुदावन्द के नमूने पर चलने
लगे। अगरचे आप बड़ी मुसीबत में पड़ गए तो भी
आप ने हमारे पैग़ाम को उस ख़ुशी के साथ क़बूल
किया जो सिर्फ़ रूह-उल-क़ुद्स दे सकता है। 7 यूँ
आप सूबा मकिदुनिया और सूबा अख़या के तमाम
ईमानदारों के लिए नमूना बन गए। 8 ख़ुदावन्द के
पैग़ाम की आवाज़ आप में से निकल कर न सिर्फ़
मकिदुनिया और अख़या में सुनाई दी, बल्कि यह
ख़बर कि आप अल्लाह पर ईमान रखते हैं हर जगह
तक पहुँच गई है। नतीजे में हमें कुछ कहने की
ज़रूरत नहीं रही, 9 क्यूँकि लोग हर जगह बात कर रहे
हैं कि आप ने हमें किस तरह ख़ुशआमदीद कहा है,
कि आप ने किस तरह बुतों से मुँह फेर कर अल्लाह की
तरफ़ रुजू किया ताकि ज़िन्दा और हक़ीक़ी ख़ुदा की
ख़िदमत करें। 10 लोग यह भी कह रहे हैं कि अब आप
इस इन्तिज़ार में हैं कि अल्लाह का फ़र्ज़न्द आसमान
पर से आए यानी ईसा जिसे अल्लाह ने मुर्दों में से ज़िन्दा
कर दिया और जो हमें आने वाले ग़ज़ब से बचाएगा।

थिस्सलुनीके में पौलुस का काम

2 1 भाइयो, आप जानते हैं कि हमारा आप के
पास आना बेफ़ाइदा न हुआ। 2 आप उस दुख
से भी वाक़िफ़ हैं जो हमें आप के पास आने से
पहले सहना पड़ा, कि फ़िलिप्पी शहर में हमारे साथ
कितनी बदसुलूकी हुई थी। तो भी हम ने अपने ख़ुदा
की मदद से आप को उस की ख़ुशख़बरी सुनाने की
जुरअत की हालाँकि बहुत मुख़ालफ़त का सामना
करना पड़ा। 3 क्यूँकि जब हम आप को उभारते हैं
तो इस के पीछे न तो कोई ग़लत नीयत होती है, न
कोई नापाक मक़्सद या चालाकी। 4 नहीं, अल्लाह ने
ख़ुद हमें जाँच कर इस लाइक़ समझा कि हम उस की
ख़ुशख़बरी सुनाने की ज़िम्मादारी सँभालें। इसी बिना
पर हम बोलते हैं, इन्सानों को ख़ुश रखने के लिए
नहीं बल्कि अल्लाह को जो हमारे दिलों को परखता है।
5 आप को भी मालूम है कि हम ने न ख़ुशामद से काम
लिया, न हम पस-ए-पर्दा लालची थे - अल्लाह हमारा
गवाह है! 6 हम इस मक़्सद से काम नहीं कर रहे थे
कि लोग हमारी इज़्ज़त करें, ख़्वाह आप हों या दीगर
लोग। 7 मसीह के रसूलों की हैसियत से हम आप

के लिए माली बोझ बन सकते थे, लेकिन हम आप
के दरमियान होते हुए नर्मदिल रहे, ऐसी माँ की तरह
जो अपने छोटे बच्चों की परवरिश करती है। 8 हमारी
आप के लिए चाहत इतनी शदीद थी कि हम आप को
न सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशख़बरी की बरकत में शरीक
करने को तय्यार थे बल्कि अपनी ज़िन्दगियों में भी।
हाँ, आप हमें इतने अज़ीज़ थे! 9 भाइयो, बेशक आप
को याद है कि हम ने कितनी सख़्त मेहनत-मशक़्क़त
की। दिन रात हम काम करते रहे ताकि अल्लाह की
ख़ुशख़बरी सुनाते वक़्त किसी पर बोझ न बनें।

10 आप और अल्लाह हमारे गवाह हैं कि आप ईमान
लाने वालों के साथ हमारा सुलूक कितना मुक़द्दस,
रास्त और बेइल्ज़ाम था। 11 क्यूँकि आप जानते हैं कि
हम ने आप में से हर एक से ऐसा सुलूक किया जैसा
बाप अपने बच्चों के साथ करता है। 12 हम आप की
हौसलाअफ़्ज़ाई करते, आप को तसल्ली देते और आप
को समझाते रहे कि आप अल्लाह के लाइक़ ज़िन्दगी
गुज़ारें, क्यूँकि वह आप को अपनी बादशाही और
जलाल में हिस्सा लेने के लिए बुलाता है।

13 एक और वजह है कि हम हर वक़्त ख़ुदा का
शुक्र करते हैं। जब हम ने आप तक अल्लाह का पैग़ाम
पहुँचाया तो आप ने उसे सुन कर यूँ क़बूल किया
जैसा यह हक़ीक़त में है यानी अल्लाह का कलाम जो
इन्सानों की तरफ़ से नहीं है और जो आप ईमानदारों
में काम कर रहा है। 14 भाइयो, न सिर्फ़ यह बल्कि
आप यहूदिया में अल्लाह की उन जमाअतों के नमूने
पर चल पड़े जो मसीह ईसा में हैं। क्यूँकि आप को
अपने हमवतनों के हाथों वह कुछ सहना पड़ा जो
उन्हें पहले ही अपने हमवतन यहूदियों से सहना पड़ा
था। 15 हाँ, यहूदियों ने न सिर्फ़ ख़ुदावन्द ईसा और
नबियों को क़त्ल किया बल्कि हमें भी अपने बीच
में से निकाल दिया। यह लोग अल्लाह को पसन्द नहीं
आते और तमाम लोगों के ख़िलाफ़ हो कर 16 हमें
इस से रोकने की कोशिश करते हैं कि ग़ैरयहूदियों
को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाएँ, ऐसा न हो कि वह
नजात पाएँ। यूँ वह हर वक़्त अपने गुनाहों का प्याला
किनारे तक भरते जा रहे हैं। लेकिन अल्लाह का पूरा
ग़ज़ब उन पर नाज़िल हो चुका है।

पौलुस की उन से दुबारा मिलने की ख़्वाहिश

17 भाइयो, जब हमें कुछ देर के लिए आप से अलग
कर दिया गया (गो हम दिल से आप के साथ रहे) तो
हम ने बड़ी आर्ज़ू से आप से मिलने की पूरी कोशिश
की। 18 क्यूँकि हम आप के पास आना चाहते थे।
हाँ, मैं पौलुस ने बार बार आने की कोशिश की,
लेकिन इब्लीस ने हमें रोक लिया। 19 आख़िर आप
ही हमारी उम्मीद और ख़ुशी का बाइस हैं। आप ही
हमारा इनआम और हमारा ताज हैं जिस पर हम अपने
ख़ुदावन्द ईसा के हुज़ूर फ़ख़र करेंगे जब वह आएगा।
20 हाँ, आप हमारा जलाल और ख़ुशी हैं।

3 1 आख़िरकार हम यह हालत मज़ीद बर्दाश्त न
कर सके। हम ने फ़ैसला किया कि अकेले ही
अथेने में रह कर 2 तीमुथियुस को भेज देंगे जो हमारा
भाई और मसीह की ख़ुशख़बरी फैलाने में हमारे साथ
अल्लाह की ख़िदमत करता है। हम ने उसे भेज दिया
ताकि वह आप को मज़बूत करे और ईमान में आप
की हौसलाअफ़्ज़ाई करे 3 ताकि कोई इन मुसीबतों
से बेचैन न हो जाए। क्यूँकि आप ख़ुद जानते हैं कि
इन का सामना करना हमारे लिए अल्लाह की मर्ज़ी है।
4 बल्कि जब हम आप के पास थे तो हम ने इस की
पेशगोई की कि हमें मुसीबत बर्दाश्त करनी पड़ेगी।
और ऐसा ही हुआ जैसा कि आप ख़ूब जानते हैं।
5 यही वजह थी कि मैं ने तीमुथियुस को भेज दिया।
मैं यह हालात बर्दाश्त न कर सका, इस लिए मैं ने
उसे आप के ईमान को मालूम करने के लिए भेज
दिया। ऐसा न हो कि आज़माने वाले ने आप को
यूँ आज़माइश में डाल दिया हो कि हमारी आप पर
मेहनत ज़ाए जाए।

6 लेकिन अब तीमुथियुस लौट आया है, और वह
आप के ईमान और मुहब्बत के बारे में अच्छी ख़बर
ले कर आया है। उस ने हमें बताया कि आप हमें
बहुत याद करते हैं और हम से उतना ही मिलने

के आरज़ूमन्द हैं जितना कि हम आप से। 7 भाइयो,
आप और आप के ईमान के बारे में यह सुन कर
हमारी हौसलाअफ़्ज़ाई हुई, हालाँकि हम ख़ुद तरह
तरह के दबाओ और मुसीबतों में फंसे हुए हैं। 8 अब
हमारी जान में जान आ गई है, क्यूँकि आप मज़बूती
से ख़ुदावन्द में क़ाइम हैं। 9 हम आप की वजह से
अल्लाह के कितने शुक्रगुज़ार हैं! यह ख़ुशी नाक़ाबिल-
ए-बयान है जो हम आप की वजह से अल्लाह के हुज़ूर
महसूस करते हैं। 10 दिन रात हम बड़ी सन्जीदगी से
दुआ करते रहते हैं कि आप से दुबारा मिल कर वह
कमियाँ पूरी करें जो आप के ईमान में अब तक रह
गई हैं।

11 अब हमारा ख़ुदा और बाप ख़ुद और हमारा
ख़ुदावन्द ईसा रास्ता खोले ताकि हम आप तक पहुँच
सकें। 12 ख़ुदावन्द करे कि आप की एक दूसरे और
दीगर तमाम लोगों से मुहब्बत इतनी बढ़ जाए कि
वह यूँ दिल से छलक उठे जिस तरह आप के लिए
हमारी मुहब्बत भी छलक रही है। 13 क्यूँकि इस तरह
अल्लाह आप के दिलों को मज़बूत करेगा और आप
उस वक़्त हमारे ख़ुदा और बाप के हुज़ूर बेइल्ज़ाम
और मुक़द्दस साबित होंगे जब हमारा ख़ुदावन्द ईसा
अपने तमाम मुक़द्दसीन के साथ आएगा। आमीन।

अल्लाह को पसन्दीदा ज़िन्दगी

4 1 भाइयो, एक आख़िरी बात, आप ने हम से
सीख लिया था कि हमारी ज़िन्दगी किस तरह
होनी चाहिए ताकि वह अल्लाह को पसन्द आए।
और आप इस के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते भी हैं।
अब हम ख़ुदावन्द ईसा में आप से दरख़्वास्त और
आप की हौसलाअफ़्ज़ाई करते हैं कि आप इस में
मज़ीद तरक़्क़ी करते जाएँ। 2 आप तो उन हिदायात
से वाक़िफ़ हैं जो हम ने आप को ख़ुदावन्द ईसा के
वसीले से दी थीं। 3 क्यूँकि अल्लाह की मर्ज़ी है कि
आप उस के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हों, कि आप
ज़िनाकारी से बाज़ रहें। 4 हर एक अपने बदन पर
यूँ क़ाबू पाना सीख ले कि वह मुक़द्दस और शरीफ़
ज़िन्दगी गुज़ार सके। 5 वह ग़ैरईमानदारों की तरह जो
अल्लाह से नावाक़िफ़ हैं शहवतपरस्ती का शिकार न
हो। 6 इस मुआमले में कोई अपने भाई का गुनाह न
करे, न उस से ग़लत फ़ाइदा उठाए। ख़ुदावन्द ऐसे
गुनाहों की सज़ा देता है। हम यह सब कुछ बता
चुके और आप को आगाह कर चुके हैं। 7 क्यूँकि
अल्लाह ने हमें नापाक ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए नहीं
बुलाया बल्कि मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस ज़िन्दगी गुज़ारने
के लिए। 8 इस लिए जो यह हिदायात रद्द करता है
वह इन्सान को नहीं बल्कि अल्लाह को रद्द करता है
जो आप को अपना मुक़द्दस रूह दे देता है।

9 यह लिखने की ज़रूरत नहीं कि आप दूसरे
ईमानदारों से मुहब्बत रखें। अल्लाह ने ख़ुद आप को
एक दूसरे से मुहब्बत रखना सिखाया है। 10 और
हक़ीक़तन आप मकिदुनिया के तमाम भाइयों से
ऐसी ही मुहब्बत रखते हैं। तो भी भाइयो, हम आप
की हौसलाअफ़्ज़ाई करना चाहते हैं कि आप इस
में मज़ीद तरक़्क़ी करते जाएँ। 11 अपनी इज़्ज़त इस
में बरक़रार रखें कि आप सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारें,
अपने फ़राइज़ अदा करें और अपने हाथों से काम
करें, जिस तरह हम ने आप को कह दिया था। 12 जब
आप ऐसा करेंगे तो ग़ैरईमानदार आप की क़दर करेंगे
और आप किसी भी चीज़ के मुहताज नहीं रहेंगे।

ख़ुदावन्द की आमद

13 भाइयो, हम चाहते हैं कि आप उन के बारे में
हक़ीक़त जान लें जो सो गए हैं ताकि आप दूसरों
की तरह जिन की कोई उम्मीद नहीं मातम न करें।
14 हमारा ईमान है कि ईसा मर गया और दुबारा जी
उठा, इस लिए हमारा यह भी ईमान है कि जब ईसा
वापस आएगा तो अल्लाह उस के साथ उन ईमानदारों
को भी वापस लाएगा जो मौत की नींद सो गए हैं।

15 जो कुछ हम अब आप को बता रहे हैं वह
ख़ुदावन्द की तालीम है। ख़ुदावन्द की आमद पर
हम जो ज़िन्दा होंगे सोए हुए लोगों से पहले ख़ुदावन्द
से नहीं मिलेंगे। 16 उस वक़्त ऊँची आवाज़ से हुक्म

दिया जाएगा, फ़रिश्ता-ए-आज़म की आवाज़ सुनाई
देगी, अल्लाह का तुरम बजेगा और ख़ुदावन्द ख़ुद
आसमान पर से उतर आएगा। तब पहले वह जी उठेंगे
जो मसीह में मर गए थे। 17 इन के बाद ही हमें जो
ज़िन्दा होंगे बादलों पर उठा लिया जाएगा ताकि हवा
में ख़ुदावन्द से मिलें। फिर हम हमेशा ख़ुदावन्द के
साथ रहेंगे। 18 चुनाँचे इन अल्फ़ाज़ से एक दूसरे को
तसल्ली दिया करें।

ख़ुदावन्द की आमद के लिए तय्यार रहना

5 1 भाइयो, इस की ज़रूरत नहीं कि हम आप को
लिखें कि यह सब कुछ कब और किस मौक़े पर
होगा। 2 क्यूँकि आप ख़ुद ख़ूब जानते हैं कि ख़ुदावन्द
का दिन यूँ आएगा जिस तरह चोर रात के वक़्त घर
में घुस आता है। 3 जब लोग कहेंगे, "अब अम्न-ओ-
अमान है," तो हलाकत अचानक ही उन पर आन
पड़ेगी। वह इस तरह मुसीबत में पड़ जाएंगे जिस तरह
वह औरत जिस का बच्चा पैदा हो रहा है। वह हरगिज़
नहीं बच सकेंगे। 4 लेकिन आप भाइयो तारीकी की
गिरिफ़्त में नहीं हैं, इस लिए यह दिन चोर की तरह
आप पर ग़ालिब नहीं आना चाहिए। 5 क्यूँकि आप
सब रौशनी और दिन के फ़र्ज़न्द हैं। हमारा रात या
तारीकी से कोई वास्ता नहीं। 6 ग़रज़ आएँ, हम दूसरों
की मानिन्द न हों जो सोए हुए हैं बल्कि जागते रहें,
होशमन्द रहें। 7 क्यूँकि रात के वक़्त ही लोग सो जाते
हैं, रात के वक़्त ही लोग नशे में धुत हो जाते हैं।
8 लेकिन चूँकि हम दिन के हैं इस लिए आएँ हम होश
में रहें। लाज़िम है कि हम ईमान और मुहब्बत को
ज़िराबक्तर के तौर पर और नजात की उम्मीद को
ख़ोद के तौर पर पहन लें। 9 क्यूँकि अल्लाह ने हमें इस
लिए नहीं चुना कि हम पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करे
बल्कि इस लिए कि हम अपने ख़ुदावन्द ईसा मसीह
के वसीले से नजात पाएँ। 10 उस ने हमारी ख़ातिर
अपनी जान दे दी ताकि हम उस के साथ जिएँ, ख़्वाह
हम उस की आमद के दिन मुर्दा हों या ज़िन्दा। 11 इस
लिए एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई और तामीर करते
रहें, जैसा कि आप कर भी रहे हैं।

आख़िरी हिदायात और सलाम

12 भाइयो, हमारी दरख़्वास्त है कि आप उन की
क़दर करें जो आप के दरमियान सख़्त मेहनत करके
ख़ुदावन्द में आप की राहनुमाई और हिदायत करते
हैं। 13 उन की ख़िदमत को सामने रख कर प्यार से
उन की बड़ी इज़्ज़त करें। और एक दूसरे के साथ
मेल-मिलाप से ज़िन्दगी गुज़ारें।

14 भाइयो, हम इस पर ज़ोर देना चाहते हैं कि उन्हें
समझाएँ जो बेक़ाइदा ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, उन्हें तसल्ली
दें जो जल्दी से मायूस हो जाते हैं, कमज़ोरों का
ख़याल रखें और सब को सब्र से बर्दाश्त करें। 15 इस
पर ध्यान दें कि कोई किसी से बुराई के बदले बुराई
न करे बल्कि आप हर वक़्त एक दूसरे और तमाम
लोगों के साथ नेक काम करने में लगे रहें।

16 हर वक़्त ख़ुश रहें, 17 बिलानाग़ा दुआ करें,
18 और हर हालत में ख़ुदा का शुक्र करें। क्यूँकि जब
आप मसीह में हैं तो अल्लाह यही कुछ आप से चाहता
है।

19 रूह-उल-क़ुद्स को मत बुझाएँ। 20 नबुव्वतों की
तह्क़ीर न करें। 21 सब कुछ परख कर वह थामे रखें
जो अच्छा है, 22 और हर क़िस्म की बुराई से बाज़
रहें।

23 अल्लाह ख़ुद जो सलामती का ख़ुदा है आप को पूरे
तौर पर मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करे। वह करे कि आप
पूरे तौर पर रूह, जान और बदन समेत उस वक़्त तक
मह्फ़ूज़ और बेइल्ज़ाम रहें जब तक हमारा ख़ुदावन्द
ईसा मसीह वापस नहीं आ जाता। 24 जो आप को
बुलाता है वह वफ़ादार है और वह ऐसा करेगा भी।

25 भाइयो, हमारे लिए दुआ करें।

26 तमाम भाइयों को हमारी तरफ़ से बोसा देना।

27 ख़ुदावन्द के हुज़ूर मैं आप को ताकीद करता हूँ
कि यह ख़त तमाम भाइयों के सामने पढ़ा जाए।

28 हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़्ल आप के
साथ होता रहे।

२-थिस्सलुनीकियों

1 1 यह ख़त पौलुस, सिल्वानुस और तीमुथियुस
की तरफ़ से है।
हम थिस्सलुनीकियों की जमाअत को लिख रहे हैं,
उन्हें जो अल्लाह हमारे बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह
पर ईमान लाए हैं।
2 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
को फ़ज़्ल और सलामती बख़्शें।

मसीह की आमद पर अदालत

3 भाइयो, वाजिब है कि हम हर वक़्त आप के लिए
ख़ुदा का शुक्र करें। हाँ, यह मौज़ूँ है, क्यूँकि आप का
ईमान हैरतअंगेज़ तरक़्क़ी कर रहा है और आप सब
की एक दूसरे से मुहब्बत बढ़ रही है। 4 यही वजह
है कि हम अल्लाह की दीगर जमाअतों में आप पर
फ़ख़र करते हैं। हाँ, हम फ़ख़र करते हैं कि आप इन
दिनों में कितनी साबितक़दमी और ईमान दिखा रहे
हैं हालाँकि आप बहुत ईज़ारसानियाँ और मुसीबतें
बर्दाश्त कर रहे हैं।
5 यह सब कुछ साबित करता है कि अल्लाह की
अदालत रास्त है, और नतीजे में आप उस की
बादशाही के लाइक़ ठहरेंगे, जिस के लिए आप अब
दुख उठा रहे हैं। 6 अल्लाह वही कुछ करेगा जो रास्त
है। वह उन्हें मुसीबतों में डाल देगा जो आप को
मुसीबत में डाल रहे हैं, 7 और आप को जो मुसीबत
में हैं हमारे समेत आराम देगा। वह यह उस वक़्त
करेगा जब ख़ुदावन्द ईसा अपने क़वी फ़रिश्तों के
साथ आसमान पर से आ कर ज़ाहिर होगा 8 और
भड़कती हुई आग में उन्हें सज़ा देगा जो न अल्लाह को
जानते हैं, न हमारे ख़ुदावन्द ईसा की ख़ुशख़बरी के
ताबे हैं। 9 ऐसे लोग अबदी हलाकत की सज़ा पाएँगे,
वह हमेशा तक ख़ुदावन्द की हुज़ूरी और उस की
जलाली क़ुदरत से दूर हो जाएंगे। 10 लेकिन उस दिन
ख़ुदावन्द इस लिए भी आएगा कि अपने मुक़द्दसीन में
जलाल पाए और तमाम ईमानदारों में हैरत का बाइस
हो। आप भी उन में शामिल होंगे, क्यूँकि आप उस
पर ईमान लाए जिस की गवाही हम ने आप को दी।
11 यह पेश-ए-नज़र रख कर हम लगातार आप के
लिए दुआ करते हैं। हमारा ख़ुदा आप को उस बुलावे
के लाइक़ ठहराए जिस के लिए आप को बुलाया
गया है। और वह अपनी क़ुदरत से आप की नेकी
करने की हर ख़्वाहिश और आप के ईमान का हर
काम तक्मील तक पहुँचाए। 12 क्यूँकि इस तरह ही
हमारे ख़ुदावन्द ईसा का नाम आप में जलाल पाएगा
और आप भी उस में जलाल पाएँगे, उस फ़ज़्ल के
मुताबिक़ जो हमारे ख़ुदा और ख़ुदावन्द ईसा मसीह
ने आप को दिया है।

"बेदीनी का आदमी"

2 1 भाइयो, यह सवाल उठा है कि हमारे ख़ुदावन्द
ईसा मसीह की आमद कैसी होगी? हम किस
तरह उस के साथ जमा हो जाएंगे? इस नाते से हमारी
आप से दरख़्वास्त है 2 कि जब लोग कहते हैं कि
ख़ुदावन्द का दिन आ चुका है तो आप जल्दी से बेचैन
या परेशान न हो जाएँ। उन की बात न मानें, चाहे वह
यह दावा भी करें कि उन के पास हमारी तरफ़ से
कोई नबुव्वत, पैग़ाम या ख़त है। 3 कोई भी आप को
किसी भी चाल से फ़रेब न दे, क्यूँकि यह दिन उस
वक़्त तक नहीं आएगा जब तक आख़िरी बग़ावत
पेश न आए और "बेदीनी का आदमी" ज़ाहिर न हो
जाए, वह जिस का अन्जाम हलाकत होगा। 4 वह
हर एक की मुख़ालफ़त करेगा जो ख़ूदा और माबूद
कहलाता है और अपने आप को उन सब से बड़ा
ठहराएगा। हाँ, वह अल्लाह के घर में बैठ कर एलान
करेगा, "मैं अल्लाह हूँ।"

5 क्या आप को याद नहीं कि मैं आप को यह बताता
रहा जब अभी आप के पास था? 6 और अब आप
जानते हैं कि क्या कुछ उसे रोक रहा है ताकि वह
अपने मुक़र्ररा वक़्त पर ज़ाहिर हो जाए। 7 क्यूँकि यह
पुरअस्रार बेदीनी अब भी असर कर रही है। लेकिन
यह उस वक़्त तक ज़ाहिर नहीं होगी जब तक वह
शख़्स हट न जाए जो अब तक उसे रोक रहा है। 8 फिर
ही "बेदीनी का आदमी" ज़ाहिर होगा। लेकिन जब
ख़ुदावन्द ईसा आएगा तो वह उसे अपने मुँह की फूँक
से मार डालेगा, ज़ाहिर होने पर ही वह उसे हलाक
कर देगा। 9 "बेदीनी के आदमी" में इब्लीस काम
करेगा। जब वह आएगा तो हर क़िस्म की ताक़त
का इज़हार करेगा। वह झूटे निशान और मोजिज़े पेश
करेगा। 10 यूँ वह उन्हें हर तरह के शरीर फ़रेब में
फंसाएगा जो हलाक होने वाले हैं। लोग इस लिए
हलाक हो जाएंगे कि उन्हों ने सच्चाई से मुहब्बत
करने से इन्कार किया, वर्ना वह बच जाते। 11 इस
वजह से अल्लाह उन्हें बुरी तरह से फ़रेब में फंसने
देता है ताकि वह इस झूट पर ईमान लाएँ। 12 नतीजे
में सब जो सच्चाई पर ईमान न लाए बल्कि नारास्ती
से लुत्फ़अन्दोज़ हुए मुजरिम ठहरेंगे।

आप को नजात के लिए चुन लिया गया है

13 मेरे भाइयो, वाजिब है कि हम हर वक़्त आप के
लिए ख़ुदा का शुक्र करें जिन्हें ख़ुदावन्द प्यार करता
है। क्यूँकि अल्लाह ने आप को शुरू ही से नजात पाने
के लिए चुन लिया, ऐसी नजात के लिए जो रूह-उल-
क़ुद्स से पाकीज़गी पा कर सच्चाई पर ईमान लाने
से हासिल होती है। 14 अल्लाह ने आप को उस वक़्त
यह नजात पाने के लिए बुला लिया जब हम ने आप
को उस की ख़ुशख़बरी सुनाई। और अब आप हमारे
ख़ुदावन्द ईसा मसीह के जलाल में शरीक हो सकते
हैं। 15 भाइयो, इस लिए साबितक़दम रहें और उन
रिवायात को थामे रखें जो हम ने आप को सिखाई
हैं, ख़्वाह ज़बानी या ख़त के ज़रीए।

16 हमारा ख़ुदावन्द ईसा मसीह ख़ुद और ख़ुदा
हमारा बाप जिस ने हम से मुहब्बत रखी और अपने
फ़ज़्ल से हमें अबदी तसल्ली और ठोस उम्मीद बख़्शी
17 आप की हौसलाअफ़्ज़ाई करे और यूँ मज़बूत करे
कि आप हमेशा वह कुछ बोलें और करें जो अच्छा
है।

हमारे लिए दुआ करना

3 1 भाइयो, एक आख़िरी बात, हमारे लिए दुआ
करें कि ख़ुदावन्द का पैग़ाम जल्दी से फैल जाए
और इज़्ज़त पाए, बिलकुल उसी तरह जिस तरह आप
के दरमियान हुआ। 2 इस के लिए भी दुआ करें कि
अल्लाह हमें ग़लत और शरीर लोगों से बचाए रखे,
क्यूँकि सब तो ईमान नहीं रखते।

3 लेकिन ख़ुदावन्द वफ़ादार है, और वही आप
को मज़बूत करके इब्लीस से महफ़ूज़ रखेगा। 4 हम
ख़ुदावन्द में आप पर एतिमाद रखते हैं कि आप वह
कुछ कर रहे हैं बल्कि करते रहेंगे जो हम ने आप को
करने को कहा था।

5 ख़ुदावन्द आप के दिलों को अल्लाह की मुहब्बत
और मसीह की साबितक़दमी की तरफ़ माइल करता
रहे।

काम करने का फ़र्ज़

6 भाइयो, अपने ख़ुदावन्द ईसा मसीह के नाम में
हम आप को हुक्म देते हैं कि हर उस भाई से किनारा
करें जो बेक़ाइदा चलता और जो हम से पाई हुई
रिवायत के मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं गुज़ारता। 7 आप
ख़ुद जानते हैं कि आप को किस तरह हमारे नमूने पर
चलना चाहिए। जब हम आप के पास थे तो हमारी
ज़िन्दगी में बेतर्तीबी नहीं पाई जाती थी। 8 हम ने
किसी का खाना भी पैसे दिए बग़ैर न खाया, बल्कि
दिन रात सख़्त मेहनत-मशक़्क़त करते रहे ताकि आप
में से किसी के लिए बोझ न बनें। 9 बात यह नहीं कि
हमें आप से मुआवज़ा मिलने का हक़ नहीं था। नहीं,
हम ने ऐसा किया ताकि हम आप के लिए अच्छा

नमूना बनें और आप इस नमूने पर चलें। 10 जब हम
अभी आप के पास थे तो हम ने आप को हुक्म दिया,
“जो काम नहीं करना चाहता वह खाना भी न खाए।”
11 अब हमें यह ख़बर मिली है कि आप में से बाज़
बेक़ाइदा ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। वह काम नहीं करते
बल्कि दूसरों के कामों में ख़्वाह-म-ख़्वाह दख़ल देते
हैं। 12 ख़ुदावन्द ईसा मसीह के नाम में हम ऐसे लोगों
को हुक्म देते और समझाते हैं कि आराम से काम
करके अपनी रोज़ी कमाएँ।
13 भाइयो, आप भलाई करने से कभी हिम्मत न
हारें। 14 अगर कोई इस ख़त में दर्ज हमारी हिदायत
पर अमल न करे तो उस से ताल्लुक़ न रखना ताकि उसे
शर्म आए। 15 लेकिन उसे दुश्मन मत समझना बल्कि
उसे भाई जान कर समझाना।

आख़िरी अल्फ़ाज़

16 ख़ुदावन्द ख़ुद जो सलामती का सरचश्मा है आप
को हर वक़्त और हर तरह से सलामती बख़्शे।
ख़ुदावन्द आप सब के साथ हो।
17 मैं, पौलुस अपने हाथ से यह लिख रहा हूँ। मेरी
तरफ़ से सलाम। मैं इसी तरीक़े से अपने हर ख़त पर
दस्तख़त करता और इसी तरह लिखता हूँ।
18 हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़्ल आप सब
के साथ रहे।

१-तीमुथियुस

1 1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो हमारे
नजातदहिन्दा अल्लाह और हमारी उम्मीद मसीह
ईसा के हुक्म पर मसीह ईसा का रसूल है।
2 मैं तीमुथियुस को लिख रहा हूँ जो ईमान में मेरा
सच्चा बेटा है।
ख़ुदा बाप और हमारा ख़ुदावन्द मसीह ईसा आप
को फ़ज़्ल, रहम और सलामती अता करें।

ग़लत तालीम से ख़बरदार

3 मैं ने आप को मकिदुनिया जाते वक़्त नसीहत की
थी कि इफ़िसुस में रहें ताकि आप वहाँ के कुछ लोगों
को ग़लत तालीम देने से रोकें। 4 उन्हें फ़र्ज़ी कहानियों
और ख़त्म न होने वाले नसबनामे के पीछे न लगने दें।
इन से महज़ बह्स-मुबाहसा पैदा होता है और अल्लाह
का नजातबख़्श मन्सूबा पूरा नहीं होता। क्यूँकि यह
मन्सूबा सिर्फ़ ईमान से तक्मील तक पहुँचता है। 5 मेरी
इस हिदायत का मक़्सद यह है कि मुहब्बत उभर
आए, ऐसी मुहब्बत जो ख़ालिस दिल, साफ़ ज़मीर
और बेरिया ईमान से पैदा होती है। 6 कुछ लोग इन
चीज़ों से भटक कर बेमानी बातों में गुम हो गए हैं।
7 यह शरीअत के उस्ताद बनना चाहते हैं, लेकिन उन्हें
उन बातों की समझ नहीं आती जो वह कर रहे हैं और
जिन पर वह इतने एतिमाद से इसरार कर रहे हैं।
8 लेकिन हम तो जानते हैं कि शरीअत अच्छी है
बशर्तेकि इसे सहीह तौर पर इस्तेमाल किया जाए।
9 और याद रहे कि यह रास्तबाज़ों के लिए नहीं दी
गई। क्यूँकि यह उन के लिए है जो बग़ैर शरीअत
के और सरकश ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, जो बेदीन और
गुनाहगार हैं, जो मुक़द्दस और रुहानी बातों से ख़ाली
हैं, जो अपने माँ-बाप के क़ातिल हैं, जो ख़ूनी,
10 ज़िनाकार, हमजिन्सपरस्त और ग़ुलामों के ताजिर
हैं, जो झूट बोलते, झूटी क़सम खाते और मज़ीद बहुत
कुछ करते हैं जो सेहतबख़्श तालीम के ख़िलाफ़ है।
11 और सेहतबख़्श तालीम क्या है? वह जो मुबारक
ख़ुदा की उस जलाली ख़ुशख़बरी में पाई जाती है जो
मेरे सपुर्द की गई है।

अल्लाह के रहम के लिए शुक्रगुज़ारी

12 मैं अपने ख़ुदावन्द मसीह ईसा का शुक्र करता हूँ
जिस ने मेरी तक़वियत की है। मैं उस का शुक्र करता
हूँ कि उस ने मुझे वफ़ादार समझ कर ख़िदमत के
लिए मुक़र्रर किया। 13 गो मैं पहले कुफ़्र बकने वाला
और गुस्ताख़ आदमी था, जो लोगों को ईज़ा देता
था, लेकिन अल्लाह ने मुझ पर रहम किया। क्यूँकि
उस वक़्त मैं ईमान नहीं लाया था और इस लिए
नहीं जानता था कि क्या कर रहा हूँ। 14 हाँ, हमारे
ख़ुदावन्द ने मुझ पर अपना फ़ज़्ल कस्रत से उंडेल
दिया और मुझे वह ईमान और मुहब्बत अता की जो
हमें मसीह ईसा में होते हुए मिलती है। 15 हम इस
क़ाबिल-ए-क़बूल बात पर पूरा भरोसा रख सकते हैं
कि मसीह ईसा गुनाहगारों को नजात देने के लिए इस
दुनिया में आया। उन में से मैं सब से बड़ा गुनाहगार
हूँ, 16 लेकिन यही वजह है कि अल्लाह ने मुझ पर रहम
किया। क्यूँकि वह चाहता था कि मसीह ईसा मुझ में
जो अव्वल गुनाहगार हूँ अपना वसी सब्र ज़ाहिर करे
और मैं यूँ उन के लिए नमूना बन जाऊँ जो उस पर
ईमान ला कर अबदी ज़िन्दगी पाने वाले हैं। 17 हाँ,
हमारे अज़ली-ओ-अबदी शहन्शाह की हमेशा तक
इज़्ज़त-ओ-जलाल हो! वही लाफ़ानी, अनदेखा और
वाहिद ख़ुदा है। आमीन।
18 तीमुथियुस मेरे बेटे, मैं आप को यह हिदायत उन
पेशगोइयों के मुताबिक़ देता हूँ जो पहले आप के
बारे में की गई थीं। क्यूँकि मैं चाहता हूँ कि आप
इन की पैरवी करके अच्छी तरह लड़ सकें 19 और

ईमान और साफ़ ज़मीर के साथ ज़िन्दगी गुज़ार सकें।
क्यूँकि बाज़ ने यह बातें रद्द कर दी हैं और नतीजे
में उन के ईमान का बेड़ा ग़र्क़ हो गया। 20 हुमिनयुस
और सिकन्दर भी इन में शामिल हैं। अब मैं ने इन्हें
इब्लीस के हवाले कर दिया है ताकि वह कुफ़्र बकने
से बाज़ आना सीखें।

जमाअत की परस्तिश

2 1 पहले मैं इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि आप
सब के लिए दरख़्वास्तें, दुआएँ, सिफारिशें और
शुक्रगुज़ारियाँ पेश करें, 2 बादशाहों और इख़तियार
वालों के लिए भी ताकि हम आराम और सुकून से
ख़ुदातरस और शरीफ़ ज़िन्दगी गुज़ार सकें। 3 यह
अच्छा और हमारे नजातदहिन्दा अल्लाह को पसन्दीदा
है। 4 हाँ, वह चाहता है कि तमाम इन्सान नजात पा
कर सच्चाई को जान लें। 5 क्यूँकि एक ही ख़ुदा है और
अल्लाह और इन्सान के बीच में एक ही दरमियानी है
यानी मसीह ईसा, वह इन्सान 6 जिस ने अपने आप
को फ़िद्या के तौर पर सब के लिए दे दिया ताकि वह
मख़्लसी पाएँ। यूँ उस ने मुक़र्ररा वक़्त पर गवाही दी
7 और यह गवाही सुनाने के लिए मुझे मुनाद, रसूल
और ग़ैरयहूदियों का उस्ताद मुक़र्रर किया ताकि उन्हें
ईमान और सच्चाई का पैग़ाम सुनाऊँ। मैं झूट नहीं बोल
रहा बल्कि सच कह रहा हूँ।

8 अब मैं चाहता हूँ कि हर मक़ामी जमाअत के
मर्द मुक़द्दस हाथ उठा कर दुआ करें। वह ग़ुस्से
या बह्स-मुबाहसा की हालत में ऐसा न करें। 9 इसी
तरह मैं चाहता हूँ कि ख़वातीन मुनासिब कपड़े
पहन कर शराफ़त और शाइस्तगी से अपने आप
को आरास्ता करें। वह गुंधे हुए बाल, सोना, मोती
या हद से ज़्यादा महंगे कपड़ों से अपने आप को
आरास्ता न करें 10 बल्कि नेक कामों से। क्यूँकि
यही ऐसी ख़वातीन के लिए मुनासिब है जो ख़ुदातरस
होने का दावा करती हैं। 11 ख़ातून ख़ामोशी से और
पूरी फ़रमाँबरदारी के साथ सीखे। 12 मैं ख़वातीन
को तालीम देने या आदमियों पर हुकूमत करने की
इजाज़त नहीं देता। वह ख़ामोश रहें। 13 क्यूँकि पहले
आदम को तश्कील दिया गया, फिर हव्वा को।
14 और आदम ने इब्लीस से धोका न खाया बल्कि
हव्वा ने, जिस का नतीजा गुनाह था। 15 लेकिन
ख़वातीन बच्चे जन्म देने से नजात पाएँगी। शर्त यह है
कि वह समझ के साथ ईमान, मुहब्बत और मुक़द्दस
हालत में ज़िन्दगी गुज़ारती रहें।

ख़ुदा की जमाअत के निगरान

3 1 यह बात यक़ीनी है कि जो जमाअत का
निगरान बनना चाहता है वह एक अच्छी
ज़िम्मादारी की आर्ज़ू रखता है। 2 लाज़िम है कि
निगरान बेइल्ज़ाम हो। उस की एक ही बीवी हो। वह
होशमन्द, समझदार, [r]शरीफ़, मेहमान-नवाज़ और
तालीम देने के क़ाबिल हो। 3 वह शराबी न हो, न
लड़ाका बल्कि नर्मदिल और अम्नपसन्द। वह पैसों
का लालच करने वाला न हो। 4 लाज़िम है कि वह
अपने ख़ानदान को अच्छी तरह सँभाल सके और
कि उस के बच्चे शराफ़त के साथ उस की बात मानें।
5 क्यूँकि अगर वह अपना ख़ानदान न सँभाल सके
तो वह किस तरह अल्लाह की जमाअत की देख-भाल
कर सकेगा? 6 वह नौमुरीद न हो वर्ना ख़तरा है कि
वह फूल कर इब्लीस के जाल में उलझ जाए और यूँ
उस की अदालत की जाए। 7 लाज़िम है कि जमाअत
से बाहर के लोग उस की अच्छी गवाही दे सकें, ऐसा
न हो कि वह बदनाम हो कर इब्लीस के फंदे में फंस
जाए।

जमाअत के मददगार

8 इसी तरह जमाअत के मददगार भी शरीफ़ हों। वह
रियाकार न हों, न हद से ज़्यादा मै पिएँ। वह लालची
भी न हों। 9 लाज़िम है कि वह साफ़ ज़मीर रख कर

---

[r]यूनानी लफ़्ज़ में ज़ब्त-ए-नफ़्स का उन्सुर भी पाया जाता है।

ईमान की पुरअस्रार सच्चाइयाँ महफ़ूज़ रखें। 10 यह भी ज़रूरी है कि उन्हें पहले परखा जाए। अगर वह इस के बाद बेइल्ज़ाम निकलें तो फिर वह ख़िदमत करें। 11 उन की बीवियाँ भी शरीफ़ हों। वह बुहतान लगाने वाली न हों बल्कि होशमन्द और हर बात में वफ़ादार। 12 मददगार की एक ही बीवी हो। लाज़िम है कि वह अपने बच्चों और ख़ानदान को अच्छी तरह सँभाल सके। 13 जो मददगार अच्छी तरह अपनी ख़िदमत सँभालते हैं उन की हैसियत बढ़ जाएगी और मसीह ईसा पर उन का ईमान इतना पुख़्ता हो जाएगा कि वह बड़े एतिमाद के साथ ज़िन्दगी गुज़ार सकेंगे।

एक अज़ीम भेद

14 अगरचे मैं जल्द आप के पास आने की उम्मीद रखता हूँ तो भी आप को यह ख़त लिख रहा हूँ। 15 लेकिन अगर देर भी लगे तो यह पढ़ कर आप को मालूम होगा कि अल्लाह के घराने में हमारा बरताओ कैसा होना चाहिए। अल्लाह का घराना क्या है? ज़िन्दा ख़ुदा की जमाअत, जो सच्चाई का सतून और बुन्याद है। 16 यक़ीनन हमारे ईमान का भेद अज़ीम है।

वह जिस्म में ज़ाहिर हुआ,
रूह में रास्तबाज़ ठहरा
और फ़रिश्तों को दिखाई दिया।
उस की ग़ैरयहूदियों में मुनादी की गई,
उस पर दुनिया में ईमान लाया गया
और उसे आसमान के जलाल में उठा लिया गया।

झूटे उस्ताद

4 1 रूह-उल-क़ुद्स साफ़ फ़रमाता है कि आख़िरी दिनों में कुछ ईमान से हट कर फ़रेबदिह रूहों और शैतानी तालीमात की पैरवी करेंगे। 2 ऐसी तालीमात झूट बोलने वालों की रियाकार बातों से आती हैं, जिन के ज़मीर पर इब्लीस ने अपना निशान लगा कर ज़ाहिर कर दिया है कि यह उस के अपने हैं। 3 यह शादी करने की इजाज़त नहीं देते और लोगों को कहते हैं कि वह मुख़्तलिफ़ खाने की चीज़ों से पर्हेज़ करें। लेकिन अल्लाह ने यह चीज़ें इस लिए बनाई हैं कि जो ईमान रखते हैं और सच्चाई से वाक़िफ़ हैं इन्हें शुक्रगुज़ारी के साथ खाएँ। 4 जो कुछ भी अल्लाह ने ख़ल्क़ किया है वह अच्छा है, और हमें उसे रद्द नहीं करना चाहिए बल्कि ख़ुदा का शुक्र करके उसे खा लेना चाहिए। 5 क्यूँकि उसे अल्लाह के कलाम और दुआ से मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया गया है।

मसीह ईसा का अच्छा ख़ादिम

6 अगर आप भाइयों को यह तालीम दें तो आप मसीह ईसा के अच्छे ख़ादिम होंगे। फिर यह साबित हो जाएगा कि आप को ईमान और उस अच्छी तालीम की सच्चाइयों में तर्बियत दी गई है जिस की पैरवी आप करते रहे हैं। 7 लेकिन दादी-अम्माँ की इन बेमानी फ़र्ज़ी कहानियों से बाज़ रहें। इन की बजाय ऐसी तर्बियत हासिल करें जिस से आप की रुहानी ज़िन्दगी मज़बूत हो जाए। 8 क्यूँकि जिस्म की तर्बियत का थोड़ा ही फ़ाइदा है, लेकिन रुहानी तर्बियत हर लिहाज़ से मुफ़ीद है, इस लिए कि अगर हम इस क़िस्म की तर्बियत हासिल करें तो हम से हाल और मुस्तक़बिल में ज़िन्दगी पाने का वादा किया गया है। 9 यह बात क़ाबिल-ए-एतिमाद है और इसे पूरे तौर पर क़बूल करना चाहिए। 10 यही वजह है कि हम मेहनत-मशक़्क़त और जाँफ़िशानी करते रहते हैं, क्यूँकि हम ने अपनी उम्मीद ज़िन्दा ख़ुदा पर रखी है जो तमाम इन्सानों का नजातदहिन्दा है, ख़ासकर ईमान रखने वालों का।

11 लोगों को यह हिदायात दें और सिखाएँ। 12 कोई भी आप को इस लिए हक़ीर न जाने कि आप जवान हैं। लेकिन ज़रूरी है कि आप कलाम में, चाल-चलन में, मुहब्बत में, ईमान में और पाकीज़गी में ईमानदारों के लिए नमूना बन जाएँ। 13 जब तक मैं नहीं आता इस पर ख़ास ध्यान दें कि जमाअत में बाक़ाइदगी से कलाम की तिलावत की जाए, लोगों को नसीहत की जाए और उन्हें तालीम दी जाए। 14 अपनी उस नेमत को नज़रअन्दाज़ न करें जो आप को उस वक़्त

पेशगोई के ज़रीए मिली जब बुज़ुर्गों ने आप पर अपने
हाथ रखे। 15 इन बातों को फ़रोग़ दें और इन के पीछे
लगे रहें ताकि आप की तरक़्क़ी सब को नज़र आए।
16 अपना और तालीम का ख़ास ख़याल रखें। इन में
साबितक़दम रहें, क्यूँकि ऐसा करने से आप अपने
आप को और अपने सुनने वालों को बचा लेंगे।

ईमानदारों से सुलूक

5 1 बुज़ुर्ग भाइयों को सख़्ती से न डाँटना बल्कि
उन्हें यूँ समझाना जिस तरह कि वह आप के
बाप हों। इसी तरह जवान आदमियों को यूँ समझाना
जैसे वह आप के भाई हों, 2 बुज़ुर्ग बहनों को यूँ जैसे
वह आप की माएँ हों और जवान ख़वातीन को तमाम
पाकीज़गी के साथ यूँ जैसे वह आप की बहनें हों।
3 उन बेवाओं की मदद करके उन की इज़्ज़त करें
जो वाक़ई ज़रूरतमन्द हैं। 4 अगर किसी बेवा के बच्चे
या पोते-नवासे हों तो उस की मदद करना उन ही
का फ़र्ज़ है। हाँ, वह सीखें कि ख़ुदातरस होने का
पहला फ़र्ज़ यह है कि हम अपने घर वालों की फ़िक्र
करें और यूँ अपने माँ-बाप, दादा-दादी और नाना-
नानी को वह कुछ वापस करें जो हमें उन से मिला
है, क्यूँकि ऐसा अमल अल्लाह को पसन्द है। 5 जो
औरत वाक़ई ज़रूरतमन्द बेवा और तन्हा रह गई
है वह अपनी उम्मीद अल्लाह पर रख कर दिन रात
अपनी इल्तिजाओं और दुआओं में लगी रहती है।
6 लेकिन जो बेवा ऐश-ओ-इश्रत में ज़िन्दगी गुज़ारती
है वह ज़िन्दा हालत में ही मुर्दा है। 7 यह हिदायात
लोगों तक पहुँचाएँ ताकि उन पर इल्ज़ाम न लगाया
जा सके। 8 क्यूँकि अगर कोई अपनों और ख़ासकर
अपने घर वालों की फ़िक्र न करे तो उस ने अपने
ईमान का इन्कार कर दिया। ऐसा शख़्स ग़ैरईमानदारों
से बदतर है।
9 जिस बेवा की उम्र 60 साल से कम है उसे बेवाओं
की फ़हरिस्त में दर्ज न किया जाए। शर्त यह भी है कि
जब उस का शौहर ज़िन्दा था तो वह उस की वफ़ादार
रही हो 10 और कि लोग उस के नेक कामों की अच्छी
गवाही दे सकें, मसलन क्या उस ने अपने बच्चों को
अच्छी तरह पाला है? क्या उस ने मेहमान-नवाज़ी की
और मुक़द्दसीन के पाँओ धो कर उन की ख़िदमत की
है? क्या वह मुसीबत में फंसे हुओं की मदद करती
रही है? क्या वह हर नेक काम के लिए कोशाँ रही
है?
11 लेकिन जवान बेवाएँ इस फ़हरिस्त में शामिल
मत करना, क्यूँकि जब उन की जिस्मानी ख़्वाहिशात
उन पर ग़ालिब आती हैं तो वह मसीह से दूर हो कर
शादी करना चाहती हैं। 12 यूँ वह अपना पहला ईमान
छोड़ कर मुजरिम ठहरती हैं। 13 इस के इलावा वह
सुस्त होने और इधर उधर घरों में फिरने की आदी
बन जाती हैं। न सिर्फ़ यह बल्कि वह बातूनी भी बन
जाती हैं और दूसरों के मुआमलात में दख़ल दे कर
नामुनासिब बातें करती हैं। 14 इस लिए मैं चाहता हूँ
कि जवान बेवाएँ दुबारा शादी करके बच्चों को जन्म
दें और अपने घरों को सँभालें। फिर वह दुश्मन को
बदगोई करने का मौक़ा नहीं देंगी। 15 क्यूँकि बाज़
तो सहीह राह से हट कर इब्लीस के पीछे लग चुकी
हैं। 16 लेकिन जिस ईमानदार औरत के ख़ानदान में
बेवाएँ हैं उस का फ़र्ज़ है कि वह उन की मदद करे
ताकि वह ख़ुदा की जमाअत के लिए बोझ न बनें।
वर्ना जमाअत उन बेवाओं की सहीह मदद नहीं कर
सकेगी जो वाक़ई ज़रूरतमन्द हैं।
17 जो बुज़ुर्ग जमाअत को अच्छी तरह सँभालते
हैं उन्हें दुगनी इज़्ज़त के लाइक़ समझा जाए [s]। मैं
ख़ासकर उन की बात कर रहा हूँ जो पाक कलाम
सुनाने और तालीम देने में मेहनत-मशक़्क़त करते
हैं। 18 क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है, “जब
तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने देता है
तो उस का मुँह बांध कर न रखना।” यह भी लिखा
है, “मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है।” 19 जब

[s] यहाँ मतलब है कि उन की इज़्ज़त ख़ासकर माली लिहाज़ से की जाए।

किसी बुज़ुर्ग पर इल्ज़ाम लगाया जाए तो यह बात सिर्फ़ इस सूरत में मानें कि दो या इस से ज़्यादा गवाह इस की तस्दीक़ करें। 20 लेकिन जिन्हों ने वाक़ई गुनाह किया हो उन्हें पूरी जमाअत के सामने समझाएँ ताकि दूसरे ऐसी हरकतें करने से डर जाएँ।

21 अल्लाह और मसीह ईसा और उस के चुनीदा फ़रिश्तों के सामने मैं सन्जीदगी से ताकीद करता हूँ कि इन हिदायात की यूँ पैरवी करें कि आप किसी मुआमले से सहीह तौर पर वाक़िफ़ होने से पेशतर फ़ैसला न करें, न जानिबदारी का शिकार हो जाएँ। 22 जल्दी से किसी पर हाथ रख कर उसे किसी ख़िदमत के लिए मख़्सूस मत करना, न दूसरों के गुनाहों में शरीक होना। अपने आप को पाक रखें।

23 चूँकि आप अक्सर बीमार रहते हैं इस लिए अपने मेदे का लिहाज़ करके न सिर्फ़ पानी ही पिया करें बल्कि साथ साथ कुछ मै भी इस्तेमाल करें।

24 कुछ लोगों के गुनाह साफ़ साफ़ नज़र आते हैं, और वह उन से पहले ही अदालत के तख़्त के सामने आ पहुँचते हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जिन के गुनाह गोया उन के पीछे चल कर बाद में ज़ाहिर होते हैं। 25 इसी तरह कुछ लोगों के अच्छे काम साफ़ नज़र आते हैं जबकि बाज़ के अच्छे काम अभी नज़र नहीं आते। लेकिन यह भी पोशीदा नहीं रहेंगे बल्कि किसी वक़्त ज़ाहिर हो जाएंगे।

6 1 जो भी ग़ुलामी के जूए में हैं वह अपने मालिकों को पूरी इज़्ज़त के लाइक़ समझें ताकि लोग अल्लाह के नाम और हमारी तालीम पर कुफ़्र न बकें। 2 जब मालिक ईमान लाते हैं तो ग़ुलामों को उन की इस लिए कम इज़्ज़त नहीं करना चाहिए कि वह अब मसीह में भाई हैं। बल्कि वह उन की और ज़्यादा ख़िदमत करें, क्यूँकि अब जो उन की अच्छी ख़िदमत से फ़ाइदा उठा रहे हैं वह ईमानदार और अज़ीज़ हैं।

ग़लत तालीम और हक़ीक़ी दौलत

लाज़िम है कि आप लोगों को इन बातों की तालीम दें और इस में उन की हौसलाअफ़्ज़ाई करें। 3 जो भी इस से फ़र्क़ तालीम दे कर हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के सेहतबख़्श अल्फ़ाज़ और इस ख़ुदातरस ज़िन्दगी की तालीम से वाबस्ता नहीं रहता 4 वह ख़ुदपसन्दी से फूला हुआ है और कुछ नहीं समझता। ऐसा शख़्स बह्स-मुबाहसा करने और ख़ाली बातों पर झगड़ने में ग़ैरसेहतमन्द दिलचस्पी लेता है। नतीजे में हसद, झगड़े, कुफ़्र और बदगुमानी पैदा होती है। 5 यह लोग आपस में झगड़ने की वजह से हमेशा कुढ़ते रहते हैं। उन के ज़हन बिगड़ गए हैं और सच्चाई उन से छीन ली गई है। हाँ, यह समझते हैं कि ख़ुदातरस ज़िन्दगी गुज़ारने से माली नफ़ा हासिल किया जा सकता है।

6 ख़ुदातरस ज़िन्दगी वाक़ई बहुत नफ़ा का बाइस है, लेकिन शर्त यह है कि इन्सान को जो कुछ भी मिल जाए वह उस पर इकतिफ़ा करे। 7 हम दुनिया में अपने साथ क्या लाए? कुछ नहीं! तो हम दुनिया से निकलते वक़्त क्या कुछ साथ ले जा सकेंगे? कुछ भी नहीं! 8 चुनाँचे अगर हमारे पास ख़ुराक और लिबास हो तो यह हमारे लिए काफ़ी होना चाहिए। 9 जो अमीर बनने के ख़्वाहाँ रहते हैं वह कई तरह की आज़माइशों और फंदों में फंस जाते हैं। बहुत सी नासमझ और नुक़्सानदेह ख़्वाहिशात उन्हें हलाकत और तबाही में ग़र्क़ हो जाने देती हैं। 10 क्यूँकि पैसों का लालच हर ग़लत काम का सरचश्मा है। कई लोगों ने इसी लालच के बाइस ईमान से भटक कर अपने आप को बहुत अज़ियत पहुँचाई है।

शख़्सी हिदायात

11 लेकिन आप जो अल्लाह के बन्दे हैं इन चीज़ों से भागते रहें। इन की बजाय रास्तबाज़ी, ख़ुदातरसी, ईमान, मुहब्बत, साबितक़दमी और नर्मदिली के पीछे लगे रहें। 12 ईमान की अच्छी कुश्ती लड़ें। अबदी ज़िन्दगी से ख़ूब लिपट जाएँ, क्यूँकि अल्लाह ने आप को यही ज़िन्दगी पाने के लिए बुलाया, और आप ने अपनी तरफ़ से बहुत से गवाहों के सामने इस बात का इक़्रार भी किया। 13 मेरे दो गवाह हैं, अल्लाह जो सब कुछ ज़िन्दा रखता है और मसीह ईसा जिस ने

पुन्तियुस पीलातुस के सामने अपने ईमान की अच्छी
गवाही दी। इन ही के सामने मैं आप को कहता हूँ कि
14 यह हुक्म यूँ पूरा करें कि आप पर न दाग़ लगे, न
इल्ज़ाम। और इस हुक्म पर उस दिन तक अमल करते
रहें जब तक हमारा ख़ुदावन्द ईसा मसीह ज़ाहिर
नहीं हो जाता। 15 क्यूँकि अल्लाह मसीह को मुक़र्ररा
वक़्त पर ज़ाहिर करेगा। हाँ, जो मुबारक और वाहिद
हुक्मरान, बादशाहों का बादशाह और मालिकों का
मालिक है वह उसे मुक़र्ररा वक़्त पर ज़ाहिर करेगा।
16 सिर्फ़ वही लाफ़ानी है, वही ऐसी रौशनी में रहता
है जिस के क़रीब कोई नहीं आ सकता। न किसी
इन्सान ने उसे कभी देखा, न वह उसे देख सकता है।
उस की इज़्ज़त और क़ुदरत अबद तक रहे। आमीन।
17 जो मौजूदा दुनिया में अमीर हैं उन्हें समझाएँ कि
वह मग़रूर न हों, न दौलत जैसी ग़ैरयक़ीनी चीज़ पर
उम्मीद रखें। इस की बजाय वह अल्लाह पर उम्मीद
रखें जो हमें फ़य्याज़ी से सब कुछ मुहय्या करता है
ताकि हम उस से लुत्फ़अन्दोज़ हो जाएँ। 18 यह पेश-
ए-नज़र रख कर अमीर नेक काम करें और भलाई
करने में ही अमीर हों। वह ख़ुशी से दूसरों को देने और
अपनी दौलत में शरीक करने के लिए तय्यार हों। 19 यूँ
वह अपने लिए एक अच्छा ख़ज़ाना जमा करेंगे यानी
आने वाले जहान के लिए एक ठोस बुन्याद जिस पर
खड़े हो कर वह हक़ीक़ी ज़िन्दगी पा सकेंगे।
20 तीमुथियुस बेटे, जो कुछ आप के हवाले किया
गया है उसे महफ़ूज़ रखें। दुनियावी बकवास और
उन मुतज़ाद ख़यालात से कतराते रहें जिन्हें ग़लती
से इल्म का नाम दिया गया है। 21 कुछ तो इस इल्म
के माहिर होने का दावा करके ईमान की सहीह राह
से हट गए हैं।

अल्लाह का फ़ज़्ल आप सब के साथ रहे।

२-तीमुथियुस

1 1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो अल्लाह की
मर्ज़ी से मसीह ईसा का रसूल है ताकि उस वादा
की हुई ज़िन्दगी का पैग़ाम सुनाए जो हमें मसीह ईसा
में हासिल होती है।
2 मैं अपने प्यारे बेटे तीमुथियुस को लिख रहा हूँ।
ख़ुदा बाप और हमारा ख़ुदावन्द मसीह ईसा आप
को फ़ज़्ल, रहम और सलामती अता करें।

शुक्रगुज़ारी और हौसलाअफ़ज़ाई

3 मैं आप के लिए ख़ुदा का शुक्र करता हूँ जिस
की ख़िदमत मैं अपने बापदादा की तरह साफ़ ज़मीर
से करता हूँ। दिन रात मैं लगातार आप को अपनी
दुआओं में याद रखता हूँ। 4 मुझे आप के आँसू याद
आते हैं, और मैं आप से मिलने का आरज़ूमन्द हूँ
ताकि ख़ुशी से भर जाऊँ। 5 मुझे ख़ासकर आप का
मुख़लिस ईमान याद है जो पहले आप की नानी लूइस
और माँ यUनीके रखती थीं। और मुझे यक़ीन है कि
आप भी यही ईमान रखते हैं। 6 यही वजह है कि मैं
आप को एक बात याद दिलाता हूँ। अल्लाह ने आप
को उस वक़्त एक नेमत से नवाज़ा जब मैं ने आप पर
हाथ रखे। आप को उस नेमत की आग को नए सिरे से
भड़काने की ज़रूरत है। 7 क्यूँकि जिस रूह से अल्लाह
ने हमें नवाज़ा है वह हमें बुज़दिल नहीं बनाता बल्कि
हमें क़ुव्वत, मुहब्बत और नज़्म-ओ-ज़ब्त दिलाता है।
8 इस लिए हमारे ख़ुदावन्द के बारे में गवाही देने से
न शर्माएँ, न मुझ से जो मसीह की ख़ातिर क़ैदी हूँ। इस
के बजाय मेरे साथ अल्लाह की क़ुव्वत से मदद ले कर
उस की ख़ुशख़बरी की ख़ातिर दुख उठाएँ। 9 क्यूँकि
उस ने हमें नजात दे कर मुक़द्दस ज़िन्दगी गुज़ारने के
लिए बुलाया। और यह चीज़ें हमें अपनी मेहनत से
नहीं मिलीं बल्कि अल्लाह के इरादे और फ़ज़्ल से।
यह फ़ज़्ल ज़मानों की इब्तिदा से पहले हमें मसीह में
दिया गया 10 लेकिन अब हमारे नजातदहिन्दा मसीह
ईसा की आमद से ज़ाहिर हुआ। मसीह ही ने मौत को
नेस्त कर दिया। उसी ने अपनी ख़ुशख़बरी के ज़रीए
लाफ़ानी ज़िन्दगी रौशनी में ला कर हम पर ज़ाहिर
कर दी है।
11 अल्लाह ने मुझे यही ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए
मुनाद, रसूल और उस्ताद मुक़र्रर किया है। 12 इसी
वजह से मैं दुख उठा रहा हूँ। तो भी मैं शर्माता नहीं,
क्यूँकि मैं उसे जानता हूँ जिस पर में ईमान लाया हूँ,
और मुझे पूरा यक़ीन है कि जो कुछ मैं ने उस के
हवाले कर दिया है उसे वह अपनी आमद के दिन
तक महफ़ूज़ रखने के क़ाबिल है। 13 उन सेहतबख़्श
बातों के मुताबिक़ चलते रहें जो आप ने मुझ से सुन
ली हैं, और यूँ ईमान और मुहब्बत के साथ मसीह
ईसा में ज़िन्दगी गुज़ारें। 14 जो बेशक़ीमत चीज़ आप
के हवाले कर दी गई है उसे रूह-उल-क़ुद्स की मदद
से जो हम में सुकूनत करता है महफ़ूज़ रखें।
15 आप को मालूम है कि सूबा आसिया में तमाम
लोगों ने मुझे तर्क कर दिया है। इन में फ़ूगिलुस और
हिर्मुग़िनेस भी शामिल हैं। 16 ख़ुदावन्द उनेसिफ़ुरुस
के घराने पर रहम करे, क्यूँकि उस ने कई दफ़ा मुझे
तर-ओ-ताज़ा किया। हाँ, वह इस से कभी न शर्माया
कि मैं क़ैदी हूँ। 17 बल्कि जब वह रोम शहर पहुँचा
तो बड़ी कोशिशों से मेरा खोज लगा कर मुझे मिला।
18 ख़ुदावन्द करे कि वह क़ियामत के दिन ख़ुदावन्द
से रहम पाए। आप ख़ुद बेहतर जानते हैं कि उस ने
इफ़िसुस में कितनी ख़िदमत की।

मसीह ईसा का वफ़ादार सिपाही

2 1 लेकिन आप, मेरे बेटे, उस फ़ज़्ल से तक़वियत
पाएँ जो आप को मसीह ईसा में मिल गया है।
2 जो कुछ आप ने बहुत गवाहों की मौजूदगी में मुझ

से सुना है उसे मोतबर लोगों के सपुर्द करें। यह ऐसे
लोग हों जो औरों को सिखाने के क़ाबिल हों।
3 मसीह ईसा के अच्छे सिपाही की तरह हमारे साथ
दुख उठाते रहें। 4 जिस सिपाही की ड्यूटी है वह
आम रआया के मुआमलात में फंसने से बाज़ रहता
है, क्यूँकि वह अपने अफ़्सर को पसन्द आना चाहता
है। 5 इसी तरह खेल के मुक़ाबले में हिस्सा लेने वाले
को सिर्फ़ इस सूरत में इनआम मिल सकता है कि
वह क़वाइद के मुताबिक़ ही मुक़ाबला करे। 6 और
लाज़िम है कि फ़सल की कटाई के वक़्त पहले उस
को फ़सल का हिस्सा मिले जिस ने खेत में मेहनत की
है। 7 उस पर ध्यान देना जो मैं आप को बता रहा हूँ,
क्यूँकि ख़ुदावन्द आप को इन तमाम बातों की समझ
अता करेगा।
8 मसीह ईसा को याद रखें, जो दाऊद की औलाद में
से है और जिसे मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया गया। यही
मेरी ख़ुशख़बरी है 9 जिस की ख़ातिर मैं दुख उठा रहा
हूँ, यहाँ तक कि मुझे आम मुजरिम की तरह ज़न्जीरों
से बांधा गया है। लेकिन अल्लाह का कलाम ज़न्जीरों
से बांधा नहीं जा सकता। 10 इस लिए मैं सब कुछ
अल्लाह के चुने हुए लोगों की ख़ातिर बर्दाश्त करता
हूँ ताकि वह भी नजात पाएँ - वह नजात जो मसीह
ईसा से मिलती है और जो अबदी जलाल का बाइस
बनती है। 11 यह क़ौल क़ाबिल-ए-एतिमाद है,

अगर हम उस के साथ मर गए
तो हम उस के साथ जिएँगे भी।
12 अगर हम बर्दाश्त करते रहें
तो हम उस के साथ हुकूमत भी करेंगे।
अगर हम उसे जानने से इन्कार करें
तो वह भी हमें जानने से इन्कार करेगा।
13 अगर हम बेवफ़ा निकलें
तो भी वह वफ़ादार रहेगा।
क्यूँकि वह अपना इन्कार नहीं कर सकता।

क़ाबिल-ए-क़बूल ख़िदमतगुज़ार

14 लोगों को इन बातों की याद दिलाते रहें और
उन्हें सन्जीदगी से अल्लाह के हुज़ूर समझाएँ कि वह
बाल की खाल उतार कर एक दूसरे से न झगड़ें। यह
बेफ़ाइदा है बल्कि सुनने वालों को बिगाड़ देता है।
15 अपने आप को अल्लाह के सामने यूँ पेश करने की
पूरी कोशिश करें कि आप मक़्बूल साबित हों, कि
आप ऐसा मज़दूर निकलें जिसे अपने काम से शर्माने
की ज़रूरत न हो बल्कि जो सहीह तौर पर अल्लाह
का सच्चा कलाम पेश करे। 16 दुनियावी बकवास से
बाज़ रहें। क्यूँकि जितना यह लोग इस में फंस जाएंगे
उतना ही बेदीनी का असर बढ़ेगा 17 और उन की
तालीम कैंसर की तरह फैल जाएगी। इन लोगों में
हुमिनयुस और फ़िलेतुस भी शामिल हैं 18 जो सच्चाई
से हट गए हैं। यह दावा करते हैं कि मुर्दों के जी उठने
का अमल हो चुका है और यूँ बाज़ एक का ईमान
तबाह हो गया है। 19 लेकिन अल्लाह की ठोस बुन्याद
क़ाइम रहती है और उस पर इन दो बातों की मुहर
लगी है, "ख़ुदावन्द ने अपने लोगों को जान लिया है"
और "जो भी समझे कि मैं ख़ुदावन्द का पैरोकार हूँ
वह नारास्ती से बाज़ रहे।"
20 बड़े घरों में न सिर्फ़ सोने और चाँदी के बर्तन
होते हैं बल्कि लकड़ी और मिट्टी के भी। यानी कुछ
शरीफ़ कामों के लिए इस्तेमाल होते हैं और कुछ
कमक़दर कामों के लिए। 21 अगर कोई अपने आप
को इन बुरी चीज़ों से पाक-साफ़ करे तो वह शरीफ़
कामों के लिए इस्तेमाल होने वाला बर्तन होगा। वह
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस, मालिक के लिए मुफ़ीद और हर
नेक काम के लिए तय्यार होगा। 22 जवानी की बुरी
ख़्वाहिशात से भाग कर रास्तबाज़ी, ईमान, मुहब्बत
और सुलह-सलामती के पीछे लगे रहें। और यह उन
के साथ मिल कर करें जो ख़ुलूसदिली से ख़ुदावन्द
की परस्तिश करते हैं। 23 हमाक़त और जहालत की
बहसों से किनारा करें। आप तो जानते हैं कि इन से
सिर्फ़ झगड़े पैदा होते हैं। 24 लाज़िम है कि ख़ुदावन्द

का ख़ादिम न झगड़े बल्कि हर एक से मेहरबानी का
सुलूक करे। वह तालीम देने के क़ाबिल हो और सब्र
से ग़लत सुलूक बर्दाश्त करे। 25 जो मुख़ालफ़त करते
हैं उन्हें वह नर्मदिली से तर्बियत दे, क्यूँकि हो सकता
है कि अल्लाह उन्हें तौबा करने की तौफ़ीक़ दे और
वह सच्चाई को जान लें, 26 होश में आएँ और इब्लीस
के फंदे से बच निकलें। क्यूँकि इब्लीस ने उन्हें क़ैद
कर लिया है ताकि वह उस की मर्ज़ी पूरी करें।

आख़िरी दिन

3 1 लेकिन यह बात जान लें कि आख़िरी दिनों
में हौलनाक लम्हे आएँगे। 2 लोग ख़ुदपसन्द
और पैसों के लालची होंगे। वह शेख़ीबाज़, मग़रूर,
कुफ़्र बकने वाले, माँ-बाप के नाफ़रमान, नाशुकरे,
बेदीन 3 और मुहब्बत से ख़ाली होंगे। वह सुलह
करने के लिए तय्यार नहीं होंगे, दूसरों पर तुहमत
लगाएँगे, अय्याश और वहशी होंगे और भलाई से
नफ़रत रखेंगे। 4 वह नमकहराम, ग़ैरमुह्तात और
ग़ुरूर से फूले हुए होंगे। अल्लाह से मुहब्बत रखने
के बजाय उन्हें ऐश-ओ-इश्रत प्यारी होगी। 5 वह
बज़ाहिर ख़ुदातरस ज़िन्दगी गुज़ारेंगे, लेकिन हक़ीक़ी
ख़ुदातरस ज़िन्दगी की क़ुव्वत का इन्कार करेंगे।
ऐसों से किनारा करें। 6 उन में से कुछ लोग घरों में
घुस कर कमज़ोर ख़वातीन को अपने जाल में फंसा
लेते हैं, ऐसी ख़वातीन को जो अपने गुनाहों तले दबी
हुई हैं और जिन्हें कई तरह की शहवतें चलाती हैं।
7 गो यह हर वक़्त तालीम हासिल करती रहती हैं तो
भी सच्चाई को जानने तक कभी नहीं पहुँच सकतीं।
8 जिस तरह यन्नेस और यम्ब्रेस मूसा की मुख़ालफ़त
करते थे उसी तरह यह लोग भी सच्चाई की मुख़ालफ़त
करते हैं। इन का ज़हन बिगड़ा हुआ है और इन
का ईमान नामक़्बूल निकला। 9 लेकिन यह ज़्यादा
तरक़्क़ी नहीं करेंगे क्यूँकि इन की हमाक़त सब पर
ज़ाहिर हो जाएगी, बिलकुल उसी तरह जिस तरह
यन्नेस और यम्ब्रेस के साथ भी हुआ।

आख़िरी हिदायात

10 लेकिन आप हर लिहाज़ से मेरे शागिर्द रहे हैं,
चाल-चलन में, इरादे में, ईमान में, सब्र में, मुहब्बत
में, साबितक़दमी में, 11 ईज़ारसानियों में और दुखों में।
अन्ताकिया, इकुनियुम और लुस्तरा में मेरे साथ क्या
कुछ न हुआ! वहाँ मुझे कितनी सख़्त ईज़ारसानियों
का सामना करना पड़ा। लेकिन ख़ुदावन्द ने मुझे इन
सब से रिहाई दी। 12 बात यह है कि सब जो मसीह
ईसा में ख़ुदातरस ज़िन्दगी गुज़ारना चाहते हैं उन्हें
सताया जाएगा। 13 साथ साथ शरीर और धोकेबाज़
लोग अपने ग़लत कामों में तरक़्क़ी करते जाएंगे। वह
दूसरों को ग़लत राह पर ले जाएंगे और उन्हें ख़ुद
भी ग़लत राह पर लाया जाएगा। 14 लेकिन आप ख़ुद
उस पर क़ाइम रहें जो आप ने सीख लिया और जिस
पर आप को यक़ीन आया है। क्यूँकि आप अपने
उस्तादों को जानते हैं 15 और आप बचपन से मुक़द्दस
सहीफ़ों से वाक़िफ़ हैं। अल्लाह का यह कलाम आप
को वह हिक्मत अता कर सकता है जो मसीह ईसा
पर ईमान लाने से नजात तक पहुँचाती है। 16 क्यूँकि
हर पाक नविश्ता अल्लाह के रूह से वुजूद में आया है
और तालीम देने, मलामत करने, इस्लाह करने और
रास्तबाज़ ज़िन्दगी गुज़ारने की तर्बियत देने के लिए
मुफ़ीद है। 17 कलाम-ए-मुक़द्दस का मक़्सद यही है
कि अल्लाह का बन्दा हर लिहाज़ से क़ाबिल और हर
नेक काम के लिए तय्यार हो।

4 1 मैं अल्लाह और मसीह ईसा के सामने जो ज़िन्दों
और मुर्दों की अदालत करेगा और उस की
आमद और बादशाही की याद दिला कर सन्जीदगी
से इस की ताकीद करता हूँ, 2 कि वक़्त बेवक़्त
कलाम-ए-मुक़द्दस की मुनादी करने के लिए तय्यार
रहें। बड़े सब्र से ईमानदारों को तालीम दे कर उन्हें
समझाएँ, मलामत करें और उन की हौसलाअफ़्ज़ाई
भी करें। 3 क्यूँकि एक वक़्त आएगा जब लोग
सेहतबख़्श तालीम बर्दाश्त नहीं करेंगे बल्कि अपने
पास अपनी बुरी ख़्वाहिशात से मुताबिक़त रखने

वाले उस्तादों का ढेर लगा लेंगे। यह उस्ताद उन्हें
सिर्फ़ दिल बहलाने वाली बातें सुनाएँगे, सिर्फ़ वह
कुछ जो वह सुनना चाहते हैं। 4 वह सच्चाई को सुनने
से बाज़ आ कर फ़र्ज़ी कहानियों के पीछे पड़ जाएंगे।
5 लेकिन आप ख़ुद हर हालत में होश में रहें। दुख को
बर्दाश्त करें, अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते रहें और
अपनी ख़िदमत के तमाम फ़राइज़ अदा करें।

6 जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, वह वक़्त आ चुका है
कि मुझे मै की नज़र की तरह क़ुर्बानगाह पर उंडेला
जाए। मेरे कूच का वक़्त आ गया है। 7 मैं ने अच्छी
कुश्ती लड़ी है, मैं दौड़ के इख़तिताम तक पहुँच गया
हूँ, मैं ने ईमान को महफ़ूज़ रखा है। 8 और अब एक
इनआम तय्यार पड़ा है, रास्तबाज़ी का वह ताज जो
ख़ुदावन्द हमारा रास्त मुन्सिफ़ मुझे अपनी आमद के
दिन देगा। और न सिर्फ़ मुझे बल्कि उन सब को जो
उस की आमद के आरज़ूमन्द रहे हैं।

कुछ शख़्सी बातें

9 मेरे पास आने में जल्दी करें। 10 क्यूँकि देमास
ने इस दुनिया को प्यार करके मुझे छोड़ दिया है।
वह थिस्सलुनीके चला गया। क्रेस्केन्स गलतिया और
तितुस दल्मतिया चले गए हैं। 11 सिर्फ़ लूक़ा मेरे पास
है। मर्क़ुस को अपने साथ ले आना, क्यूँकि वह
ख़िदमत के लिए मुफ़ीद साबित होगा। 12 तुख़िकुस
को मैं ने इफ़िसुस भेज दिया है। 13 आते वक़्त मेरा
वह कोट अपने साथ ले आएँ जो मैं त्रोआस में कर्पुस
के पास छोड़ आया था। मेरी किताबें भी ले आएँ,
ख़ासकर चरमी काग़ज़ वाली।

14 सिकन्दर लोहार ने मुझे बहुत नुक़्सान पहुँचाया
है। ख़ुदावन्द उसे उस के काम का बदला देगा।
15 उस से मुहतात रहें क्यूँकि उस ने बड़ी शिद्दत से
हमारी बातों की मुख़ालफ़त की।

16 जब मुझे पहली दफ़ा अपने दिफ़ा के लिए
अदालत में पेश किया गया तो सब ने मुझे तर्क कर
दिया। अल्लाह उन से इस बात का हिसाब न ले बल्कि
इसे नज़रअन्दाज़ कर दे। 17 लेकिन ख़ुदावन्द मेरे
साथ था। उसी ने मुझे तक़वियत दी, क्यूँकि उस की
मर्ज़ी थी कि मेरे वसीले से उस का पूरा पैग़ाम सुनाया
जाए और तमाम ग़ैरयहूदी उसे सुनें। यूँ अल्लाह ने मुझे
शेरबबर के मुँह से निकाल कर बचा लिया। 18 और
आगे भी ख़ुदावन्द मुझे हर शरीर हमले से बचाएगा
और अपनी आसमानी बादशाही में ला कर नजात
देगा। उस का जलाल अज़ल से अबद तक होता रहे।
आमीन।

आख़िरी सलाम

19 प्रिस्किल्ला, अक्विला और उनेसिफ़ुरुस के घराने
को हमारा सलाम कहना। 20 इरास्तुस कुरिन्थुस में
रहा, और मुझे त्रुफ़िमुस को मीलेतुस में छोड़ना पड़ा,
क्यूँकि वह बीमार था। 21 जल्दी करें ताकि सर्दियों
के मौसम से पहले यहाँ पहुँचें।

यूबूलुस, पूदेन्स, लीनुस, क्लौदिया और तमाम भाई
आप को सलाम कहते हैं।

22 ख़ुदावन्द आप की रूह के साथ हो। अल्लाह का
फ़ज़्ल आप के साथ होता रहे।

तितुस

1 [1] यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो अल्लाह का
ख़ादिम और ईसा मसीह का रसूल है।
मुझे चुन कर भेजा गया ताकि मैं ईमान लाने और
ख़ुदातरस ज़िन्दगी की सच्चाई जान लेने में अल्लाह
के चुने हुए लोगों की मदद करूँ। [2] क्यूँकि उस से
उन्हें अबदी ज़िन्दगी की उम्मीद दिलाई जाती है,
ऐसी ज़िन्दगी की जिस का वादा अल्लाह ने दुनिया
के ज़मानों से पेशतर ही किया था। और वह झूट नहीं
बोलता। [3] अपने मुक़र्ररा वक़्त पर अल्लाह ने अपने
कलाम का एलान करके उसे ज़ाहिर कर दिया। यही
एलान मेरे सपुर्द किया गया है और मैं इसे हमारे
नजातदहिन्दा अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ सुनाता
हूँ।
[4] मैं तितुस को लिख रहा हूँ जो हमारे मुश्तरका
ईमान के मुताबिक़ मेरा हक़ीक़ी बेटा है।
ख़ुदा बाप और हमारा नजातदहिन्दा मसीह ईसा
आप को फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

क्रेते में तितुस की ख़िदमत

[5] मैं ने आप को क्रेते में इस लिए छोड़ा था कि
आप वह कमियाँ दुरुस्त करें जो अब तक रह गई
थीं। यह भी एक मक़्सद था कि आप हर शहर की
जमाअत में बुज़ुर्ग मुक़र्रर करें, जिस तरह मैं ने आप
को कहा था। [6] बुज़ुर्ग बेइल्ज़ाम हो। उस की सिर्फ़
एक बीवी हो। उस के बच्चे ईमानदार हों और लोग
उन पर अय्याश या सरकश होने का इल्ज़ाम न लगा
सकें। [7] निगरान को तो अल्लाह का घराना सँभालने
की ज़िम्मादारी दी गई है, इस लिए लाज़िम है कि वह
बेइल्ज़ाम हो। वह ख़ुदसर, ग़ुसीला, शराबी, लड़ाका
या लालची न हो। [8] इस के बजाय वह मेहमान-नवाज़
हो और सब अच्छी चीज़ों से प्यार करने वाला हो।
वह समझदार, रास्तबाज़ और मुक़द्दस हो। वह अपने
आप पर क़ाबू रख सके। [9] वह उस कलाम के साथ
लिपटा रहे जो क़ाबिल-ए-एतिमाद और हमारी तालीम
के मुताबिक़ है। क्यूँकि इस तरह ही वह सेहतबख़्श
तालीम दे कर दूसरों की हौसलाअफ़्ज़ाई कर सकेगा
और मुख़ालफ़त करने वालों को समझा भी सकेगा।
[10] बात यह है कि बहुत से ऐसे लोग हैं जो सरकश
हैं, जो फ़ुज़ूल बातें करके दूसरों को धोका देते हैं। यह
बात ख़ासकर उन पर सादिक़ आती है जो यहूदियों
में से हैं। [11] लाज़िम है कि उन्हें चुप करा दिया जाए,
क्यूँकि यह लालच में आ कर कई लोगों के पूरे घर
अपनी ग़लत तालीम से ख़राब कर रहे हैं। [12] उन के
अपने एक नबी ने कहा है, "क्रेते के बाशिन्दे हमेशा
झूट बोलने वाले, वहशी जानवर और सुस्त पेटू होते
हैं।" [13] उस की यह गवाही दुरुस्त है। इस वजह से
लाज़िम है कि आप उन्हें सख़्ती से समझाएँ ताकि
उन का ईमान सेहतमन्द रहे [14] और वह यहूदी फ़र्ज़ी
कहानियों या उन इन्सानों के अह्काम पर ध्यान न
दें जो सच्चाई से हट गए हैं। [15] जो लोग पाक-साफ़ हैं
उन के लिए सब कुछ पाक है। लेकिन जो नापाक
और ईमान से ख़ाली हैं उन के लिए कुछ भी पाक
नहीं होता बल्कि उन का ज़हन और उन का ज़मीर
दोनों नापाक हो गए हैं। [16] यह अल्लाह को जानने का
दावा तो करते हैं, लेकिन उन की हरकतें इस बात का
इन्कार करती हैं। यह घिनौने, नाफ़रमान और कोई
भी अच्छा काम करने के क़ाबिल नहीं हैं।

सेहतबख़्श तालीम

2 [1] लेकिन आप वह कुछ सुनाएँ जो सेहतबख़्श
तालीम से मुताबिक़त रखता है। [2] बुज़ुर्ग मर्दों को
बता देना कि वह होशमन्द, शरीफ़ और समझदार हों।
उन का ईमान, मुहब्बत और साबितक़दमी सेहतमन्द
हों।

3 इसी तरह बुज़ुर्ग ख़वातीन को हिदायत देना कि
वह मुक़द्दसीन की सी ज़िन्दगी गुज़ारें। न वह तुहमत
लगाएँ न शराब की ग़ुलाम हों। इस के बजाय वह
अच्छी तालीम देने के लाइक़ हों 4 ताकि वह जवान
औरतों को समझदार ज़िन्दगी गुज़ारने की तर्बियत
दे सकें, कि वह अपने शौहरों और बच्चों से मुहब्बत
रखें, 5 कि वह समझदार [t]और मुक़द्दस हों, कि वह
घर के फ़राइज़ अदा करने में लगी रहें, कि वह नेक
हों, कि वह अपने शौहरों के ताबे रहें। अगर वह ऐसी
ज़िन्दगी गुज़ारें तो वह दूसरों को अल्लाह के कलाम
पर कुफ़्र बकने का मौक़ा फ़राहम नहीं करेंगी।
6 ईसी तरह जवान आदमियों की हौसलाअफ़्ज़ाई
करें कि वह हर लिहाज़ से समझदार ज़िन्दगी गुज़ारें।
7 आप ख़ुद नेक काम करने में उन के लिए नमूना
बनें। तालीम देते वक़्त आप की ख़ुलूसदिली, शराफ़त
8 और अल्फ़ाज़ की बेइल्ज़ाम सेहत साफ़ नज़र आए।
फिर आप के मुख़ालिफ़ शर्मिन्दा हो जाएंगे, क्यूँकि
वह हमारे बारे में कोई बुरी बात नहीं कह सकेंगे।
9 ग़ुलामों को कह देना कि वह हर लिहाज़ से अपने
मालिकों के ताबे रहें। वह उन्हें पसन्द आएँ, बहस-
मुबाहसा किए बग़ैर उन की बात मानें 10 और उन की
चीज़ें चोरी न करें बल्कि साबित करें कि उन पर हर
तरह का एतिमाद किया जा सकता है। क्यूँकि इस
तरीक़े से वह हमारे नजातदहिन्दा अल्लाह के बारे में
तालीम को हर तरह से दिलकश बना देंगे।
11 क्यूँकि अल्लाह का नजातबख़्श फ़ज़्ल तमाम
इन्सानों पर ज़ाहिर हुआ है। 12 और यह फ़ज़्ल हमें
तर्बियत दे कर इस क़ाबिल बना देता है कि हम
बेदीनी और दुनियावी ख़्वाहिशात का इन्कार करके
इस दुनिया में समझदार, रास्तबाज़ और ख़ुदातरस
ज़िन्दगी गुज़ार सकें। 13 साथ साथ यह तर्बियत उस
मुबारक दिन का इन्तिज़ार करने में हमारी मदद
करती है जिस की उम्मीद हम रखते हैं और जब
हमारे अज़ीम ख़ुदा और नजातदहिन्दा ईसा मसीह
का जलाल ज़ाहिर हो जाएगा। 14 क्यूँकि मसीह ने
हमारे लिए अपनी जान दे दी ताकि फ़िद्या दे कर हमें
हर तरह की बेदीनी से छुड़ा कर अपने लिए एक
पाक और मख़्सूस क़ौम बनाए जो नेक काम करने में
सरगर्म हो।
15 इन ही बातों की तालीम दे कर पूरे इख़तियार के
साथ लोगों को समझाएँ और उन की इस्लाह करें।
कोई भी आप को हक़ीर न जाने।

मसीही किरदार

3 1 उन्हें याद दिलाना कि वह हुक्मरानों और
इख़तियार वालों के ताबे और फ़रमाँबरदार रहें।
वह हर नेक काम करने के लिए तय्यार रहें, 2 किसी
पर तुहमत न लगाएँ, अम्नपसन्द और नर्मदिल
हों और तमाम लोगों के साथ नर्ममिज़ाजी से पेश
आएँ। 3 क्यूँकि एक वक़्त था जब हम भी नासमझ,
नाफ़रमान और सहीह राह से भटके हुए थे। उस
वक़्त हम कई तरह की शहवतों और ग़लत ख़्वाहिशों
की ग़ुलामी में थे। हम बुरे कामों और हसद करने
में ज़िन्दगी गुज़ारते थे। दूसरे हम से नफ़रत करते
थे और हम भी उन से नफ़रत करते थे। 4 लेकिन
जब हमारे नजातदहिन्दा अल्लाह की मेहरबानी और
मुहब्बत ज़ाहिर हुई 5 तो उस ने हमें बचाया। यह नहीं
कि हम ने रास्त काम करने के बाइस नजात हासिल
की बल्कि उस के रहम ही ने हमें रूह-उल-क़ुद्स के
वसीले से बचाया जिस ने हमें धो कर नए सिरे से जन्म
दिया और नई ज़िन्दगी अता की। 6 अल्लाह ने अपने
इस रूह को बड़ी फ़य्याज़ी से हमारे नजातदहिन्दा
ईसा मसीह के वसीले से हम पर उंडेल दिया 7 ताकि
हमें उस के फ़ज़्ल से रास्तबाज़ क़रार दिया जाए और
हम उस अबदी ज़िन्दगी के वारिस बन जाएँ जिस
की उम्मीद हम रखते हैं। 8 इस बात पर पूरा एतिमाद
किया जा सकता है।

---

[t]यूनानी लफ़्ज़ में ज़ब्त-ए-नफ़्स का उन्सुर भी पाया जाता है।

मैं चाहता हूँ कि आप इन बातों पर ख़ास ज़ोर दें
ताकि जो अल्लाह पर ईमान लाए हैं वह ध्यान से नेक
काम करने में लगे रहें। यह बातें सब के लिए अच्छी
और मुफ़ीद हैं। 9 लेकिन बेहूदा बह्सों, नसबनामों,
झगड़ों और शरीअत के बारे में तनाज़ुओं से बाज़ रहें,
क्यूँकि ऐसा करना बेफ़ाइदा और फ़ुज़ूल है। 10 जो
शख़्स पार्टीबाज़ है उसे दो बार समझाएँ। अगर वह
इस के बाद भी न माने तो उसे रिफ़ाक़त से ख़ारिज
करें। 11 क्यूँकि आप को पता होगा कि ऐसा शख़्स
ग़लत राह पर है और गुनाह में फंसा हुआ होता है। उस
ने अपनी हरकतों से अपने आप को मुजरिम ठहराया
है। 12

आख़िरी हिदायात

जब मैं अर्तिमास या तुख़िकुस को आप के पास भेज
दूँगा तो मेरे पास आने में जल्दी करें। मैं नीकुपुलिस
शहर में हूँ, क्यूँकि मैं ने फ़ैसला कर लिया है कि
सर्दियों का मौसम यहाँ गुज़ारूँ। 13 जब ज़ेनास वकील
और अपुल्लोस सफ़र की तय्यारियाँ कर रहे हैं तो उन
की मदद करें। ख़याल रखें कि उन की हर ज़रूरत पूरी
की जाए। 14 लाज़िम है कि हमारे लोग नेक काम करने
में लगे रहना सीखें, ख़ासकर जहाँ बहुत ज़रूरत है,
ऐसा न हो कि आख़िरकार वह बेफल निकलें। 15 सब
जो मेरे साथ हैं आप को सलाम कहते हैं। उन्हें मेरा
सलाम देना जो ईमान में हम से मुहब्बत रखते हैं।

अल्लाह का फ़ज़्ल आप सब के साथ होता रहे।

फ़िलेमोन

1 1 यह ख़त मसीह ईसा के क़ैदी पौलुस और
तीमुथियुस की तरफ़ से है।
मैं अपने अज़ीज़ दोस्त और हमख़िदमत फ़िलेमोन
को लिख रहा हूँ 2 और साथ साथ अपनी बहन
अफ़िया, अपने हमसिपाह अर्ख़िप्पुस और उस
जमाअत को जो आप के घर में जमा होती है।
3 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
को फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

फ़िलेमोन की मुहब्बत और ईमान

4 जब भी मैं दुआ करता हूँ तो आप को याद करके
अपने ख़ुदा का शुक्र करता हूँ। 5 क्यूँकि मुझे ख़ुदावन्द
ईसा के बारे में आप के ईमान और आप की तमाम
मुक़द्दसीन से मुहब्बत की ख़बर मिलती रहती है।
6 मेरी दुआ है कि आप की जो रिफ़ाक़त ईमान से पैदा
हुई है वह आप में यूँ ज़ोर पकड़े कि आप को बेहतर
तौर पर हर उस अच्छी चीज़ की समझ आए जो हमें
मसीह में हासिल है। 7 भाई, आप की मुहब्बत देख
कर मुझे बड़ी ख़ुशी और तसल्ली हुई है, क्यूँकि आप
ने मुक़द्दसीन के दिलों को तर-ओ-ताज़ा कर दिया है।

उनेसिमुस की सिफ़ारिश

8 इस वजह से मैं मसीह में इतनी दिलेरी महसूस
करता हूँ कि आप को वह कुछ करने का हुक्म दूँ
जो अब मुनासिब है। 9 तो भी मैं ऐसा नहीं करना
चाहता बल्कि मुहब्बत की बिना पर आप से अपील
ही करता हूँ। गो मैं पौलुस मसीह ईसा का एलची
बल्कि अब उस का क़ैदी भी हूँ 10 तो भी मिन्नत करके
अपने बेटे उनेसिमुस की सिफ़ारिश करता हूँ। क्यूँकि
मेरे क़ैद में होते हुए वह मेरा बेटा बन गया। 11 पहले
तो वह आप के काम नहीं आ सकता था, लेकिन
अब वह आप के लिए और मेरे लिए काफ़ी मुफ़ीद
साबित हुआ है। [u]
12 अब मैं इस को गोया अपनी जान को आप के
पास वापस भेज रहा हूँ। 13 असल में मैं उसे अपने
पास रखना चाहता था ताकि जब तक मैं ख़ुशख़बरी
की ख़ातिर क़ैद में हूँ वह आप की जगह मेरी ख़िदमत
करे। 14 लेकिन मैं आप की इजाज़त के बग़ैर कुछ
नहीं करना चाहता था। क्यूँकि मैं चाहता हूँ कि जो
भी मेहरबानी आप करेंगे वह आप मज्बूर हो कर न
करें बल्कि ख़ुशी से।
15 हो सकता है कि उनेसिमुस इस लिए कुछ देर के
लिए आप से जुदा हो गया कि वह आप को हमेशा के
लिए दुबारा मिल जाए। 16 क्यूँकि अब वह न सिर्फ़
ग़ुलाम है बल्कि ग़ुलाम से कहीं ज़्यादा। अब वह
एक अज़ीज़ भाई है जो मुझे ख़ास अज़ीज़ है। लेकिन
वह आप को कहीं ज़्यादा अज़ीज़ होगा, ग़ुलाम की
हैसियत से भी और ख़ुदावन्द में भाई की हैसियत से
भी।
17 ग़रज़, अगर आप मुझे अपना साथी समझें तो
उसे यूँ ख़ुशआमदीद कहें जैसे मैं ख़ुद आ कर हाज़िर
होता। 18 अगर उस ने आप को कोई नुक़्सान पहुँचाया
या आप का क़र्ज़दार हुआ तो मैं इस का मुआवज़ा
देने के लिए तय्यार हूँ। 19 यहाँ मैं पौलुस अपने ही
हाथ से इस बात की तस्दीक़ करता हूँ : मैं इस का
मुआवज़ा दूँगा अगरचे मुझे आप को याद दिलाने की
ज़रूरत नहीं कि आप ख़ुद मेरे क़र्ज़दार हैं। क्यूँकि मेरा
क़र्ज़ जो आप पर है वह आप ख़ुद हैं। 20 चुनाँचे मेरे
भाई, मुझ पर यह मेहरबानी करें कि मुझे ख़ुदावन्द

---

[u] उनेसिमुस का मतलब कारआमद, फ़ाइदामन्द है।

में आप से कुछ फ़ाइदा मिले। मसीह में मेरी जान को
ताज़ा करें।

21 मैं आप की फ़रमाँबरदारी पर एतिबार करके
आप को यह लिख रहा हूँ। क्यूँकि मैं जानता हूँ कि
आप न सिर्फ़ मेरी सुनेंगे बल्कि इस से कहीं ज़्यादा
मेरे लिए करेंगे। 22 एक और गुज़ारिश भी है, मेरे लिए
एक कमरा तय्यार करें, क्यूँकि मुझे उम्मीद है कि
आप की दुआओं के जवाब में मुझे आप को वापस
दिया जाएगा।

आख़िरी सलाम

23 इपफ़्रास जो मसीह ईसा में मेरे साथ क़ैदी है
आप को सलाम कहता है। 24 इसी तरह मर्क़ुस,
अरिस्तर्ख़ुस, देमास और लूक़ा भी आप को सलाम
कहते हैं।

25 ख़ुदावन्द ईसा का फ़ज़्ल आप सब के साथ होता
रहे।

इब्रानियों

अल्लाह का अपने फ़र्ज़न्द के ज़रीए कलाम

1 1 माज़ी में अल्लाह मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर और कई
तरीक़ों से हमारे बापदादा से हमकलाम हुआ।
उस वक़्त उस ने यह नबियों के वसीले से किया
2 लेकिन इन आख़िरी दिनों में वह अपने फ़र्ज़न्द के
वसीले से हम से हमकलाम हुआ, उसी के वसीले
से जिसे उस ने सब चीज़ों का वारिस बना दिया
और जिस के वसीले से उस ने काइनात को भी
ख़ल्क़ किया। 3 फ़र्ज़न्द अल्लाह का शानदार जलाल
मुनअकिस करता और उस की ज़ात की ऐन शबीह
[v]है। वह अपने क़वी कलाम से सब कुछ सँभाले
रखता है। जब वह दुनिया में था तो उस ने हमारे
लिए गुनाहों से पाक-साफ़ हो जाने का इन्तिज़ाम
क़ाइम किया। इस के बाद वह आसमान पर क़ादिर-
ए-मुतलक़ के दहने हाथ जा बैठा।

अल्लाह के फ़र्ज़न्द की अज़मत

4 फ़र्ज़न्द फ़रिश्तों से कहीं अज़ीम है, इतना जितना
उस का मीरास में पाया हुआ नाम उन के नामों से
अज़ीम है। 5 क्यूँकि अल्लाह ने किस फ़रिश्ते से कभी
कहा,
"तू मेरा फ़र्ज़न्द है,
आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।"
यह भी उस ने किसी फ़रिश्ते के बारे में कभी नहीं
कहा,
"मैं उस का बाप हूँगा
और वह मेरा फ़र्ज़न्द होगा।"
6 और जब अल्लाह अपने पहलौठे फ़र्ज़न्द को
आसमानी दुनिया में लाता है तो वह फ़रमाता है,
"अल्लाह के तमाम फ़रिश्ते उस की परस्तिश करें।"
7 फ़रिश्तों के बारे में वह फ़रमाता है,
"वह अपने फ़रिश्तों को हवाएँ
और अपने ख़ादिमों को आग के शोले बना देता
है।"
8 लेकिन फ़र्ज़न्द के बारे में वह कहता है,
"ऐ ख़ुदा, तेरा तख़्त अज़ल से अबद तक क़ाइम-
ओ-दाइम रहेगा,
और इन्साफ़ का शाही असा तेरी बादशाही पर
हुकूमत करेगा।
9 तू ने रास्तबाज़ी से मुहब्बत
और बेदीनी से नफ़रत की,
इस लिए अल्लाह तेरे ख़ुदा ने तुझे ख़ुशी के तेल से
मसह करके
तुझे तेरे साथियों से कहीं ज़्यादा सरफ़राज़ कर
दिया।"
10 वह यह भी फ़रमाता है,
"ऐ रब, तू ने इब्तिदा में दुनिया की बुन्याद रखी,
और तेरे ही हाथों ने आसमानों को बनाया।
11 यह तो तबाह हो जाएंगे,
लेकिन तू क़ाइम रहेगा।
यह सब लिबास की तरह घिस फट जाएंगे
12 और तू इन्हें चादर की तरह लपेटेगा,
पुराने कपड़े की तरह यह बदले जाएंगे।
लेकिन तू वही का वही रहता है,
और तेरी ज़िन्दगी कभी ख़त्म नहीं होती।"
13 अल्लाह ने कभी भी अपने किसी फ़रिश्ते से यह
बात न कही,
"मेरे दहने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को

---

[v]या नक़्श।

तेरे पाँओ की चौकी न बना दूँ।”

14 फिर फ़रिश्ते क्या हैं? वह तो सब ख़िदमतगुज़ार
रूहें हैं जिन्हें अल्लाह उन की ख़िदमत करने के लिए
भेज देता है जिन्हें मीरास में नजात पानी है।

नजात की अज़मत

2 1 इस लिए लाज़िम है कि हम और ज़्यादा ध्यान
से कलाम-ए-मुक़द्दस की उन बातों पर ग़ौर करें
जो हम ने सुन ली हैं। ऐसा न हो कि हम समुन्दर पर
बेकाबू कश्ती की तरह बेमक़्सद इधर उधर फिरें।
2 जो कलाम फ़रिश्तों ने इन्सान तक पहुँचाया वह
तो अनमिट रहा, और जिस से भी कोई ख़ता या
नाफ़रमानी हुई उसे उस की मुनासिब सज़ा मिली।
3 तो फिर हम किस तरह अल्लाह के ग़ज़ब से बच
सकेंगे अगर हम मसीह की इतनी अज़ीम नजात को
नज़रअन्दाज़ करें? पहले ख़ुदावन्द ने ख़ुद इस नजात
का एलान किया, और फिर ऐसे लोगों ने हमारे पास
आ कर इस की तस्दीक़ की जिन्हों ने उसे सुन लिया
था। 4 साथ साथ अल्लाह ने इस बात की इस तरह
तस्दीक़ भी की कि उस ने अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़
इलाही निशान, मोजिज़े और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के
ज़ोरदार काम दिखाए और रूह-उल-क़ुद्स की नेमतें
लोगों में तक़्सीम कीं।

मसीह का नजातबख़्श काम

5 अब ऐसा है कि अल्लाह ने मज़कूरा आने वाली
दुनिया को फ़रिश्तों के ताबे नहीं किया। 6 क्यूँकि
कलाम-ए-मुक़द्दस में किसी ने कहीं यह गवाही दी
है,

“इन्सान कौन है कि तू उसे याद करे
या आदमज़ाद कि तू उस का ख़याल रखे?
7 तू ने उसे थोड़ी देर के लिए फ़रिश्तों से कम कर
दिया,
तू ने उसे जलाल और इज़्ज़त का ताज पहना कर
8 सब कुछ उस के पाँओ के नीचे कर दिया।”

जब लिखा है कि सब कुछ उस के पाँओ तले कर
दिया गया तो इस का मतलब है कि कोई चीज़ न
रही जो उस के ताबे नहीं है। बेशक हमें हाल में यह
बात नज़र नहीं आती कि सब कुछ उस के ताबे है,
9 लेकिन हम उसे ज़रूर देखते हैं जो “थोड़ी देर के
लिए फ़रिश्तों से कम” था यानी ईसा को जिसे उस की
मौत तक के दुख की वजह से “जलाल और इज़्ज़त
का ताज” पहनाया गया है। हाँ, अल्लाह के फ़ज़्ल से
उस ने सब की ख़ातिर मौत बर्दाश्त की। 10 क्यूँकि
यही मुनासिब था कि अल्लाह जिस के लिए और जिस
के वसीले से सब कुछ है यूँ बहुत से बेटों को अपने
जलाल में शरीक करे कि वह उन की नजात के बानी
ईसा को दुख उठाने से कामिलियत तक पहुँचाए।

11 ईसा और वह जिन्हें वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
कर देता है दोनों का एक ही बाप है। यही वजह
है कि ईसा यह कहने से नहीं शर्माता कि मुक़द्दसीन
मेरे भाई हैं। 12 मसलन वह अल्लाह से कहता है,

“मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का एलान
करूँगा,
जमाअत के दरमियान ही तेरी मद्हसराई करूँगा।”

13 वह यह भी कहता है, “मैं उस पर भरोसा
रखूँगा।” और फिर “मैं हाज़िर हूँ, मैं और वह बच्चे
जो अल्लाह ने मुझे दिए हैं।”

14 अब चूँकि यह बच्चे गोश्त-पोस्त और ख़ून के
इन्सान हैं इस लिए ईसा ख़ुद उन की मानिन्द बन गया
और उन की इन्सानी फ़ित्रत में शरीक हुआ। क्यूँकि
इस तरह ही वह अपनी मौत से मौत के मालिक
इब्लीस को तबाह कर सका, 15 और इस तरह ही वह
उन्हें छुड़ा सका जो मौत से डरने की वजह से ज़िन्दगी
भर ग़ुलामी में थे। 16 ज़ाहिर है कि जिन की मदद
वह करता है वह फ़रिश्ते नहीं हैं बल्कि इब्राहीम की
औलाद। 17 इस लिए लाज़िम था कि वह हर लिहाज़
से अपने भाइयों की मानिन्द बन जाए। सिर्फ़ इस से
उस का यह मक़्सद पूरा हो सका कि वह अल्लाह के
हुज़ूर एक रहीम और वफ़ादार इमाम-ए-आज़म बन
कर लोगों के गुनाहों का कफ़्फ़ारा दे सके। 18 और

अब वह उन की मदद कर सकता है जो आज़माइश
में उलझे हुए हैं, क्यूँकि उस की भी आज़माइश हुई
और उस ने ख़ुद दुख उठाया है।

ईसा मूसा से बड़ा है

3 1 मुक़द्दस भाइयो, जो मेरे साथ अल्लाह के बुलाए
हुए हैं! ईसा पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करते रहें जो
अल्लाह का पैग़म्बर और इमाम-ए-आज़म है और
जिस का हम इक़्रार करते हैं। 2 ईसा अल्लाह का
वफ़ादार रहा जब उस ने उसे यह काम करने के लिए
मुक़र्रर किया, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मूसा भी
वफ़ादार रहा जब अल्लाह का पूरा घर उस के सपुर्द
किया गया। 3 अब जो किसी घर को तामीर करता
है उसे घर की निस्बत ज़्यादा इज़्ज़त हासिल होती
है। इसी तरह ईसा मूसा की निस्बत ज़्यादा इज़्ज़त
के लाइक़ है। 4 क्यूँकि हर घर को किसी न किसी ने
बनाया होता है, जबकि अल्लाह ने सब कुछ बनाया
है। 5 मूसा तो अल्लाह के पूरे घर में ख़िदमत करते
वक़्त वफ़ादार रहा, लेकिन मुलाज़िम की हैसियत से
ताकि कलाम-ए-मुक़द्दस की आने वाली बातों की
गवाही देता रहे। 6 मसीह फ़र्क़ है। उसे फ़र्ज़न्द की
हैसियत से अल्लाह के घर पर इख़तियार है और इसी
में वह वफ़ादार है। हम उस का घर हैं बशर्तेकि हम
अपनी दिलेरी और वह उम्मीद क़ाइम रखें जिस पर
हम फ़ख़र करते हैं।

अल्लाह की क़ौम के लिए सुकून

7 चुनाँचे जिस तरह रूह-उल-क़ुद्स फ़रमाता है,
"अगर तुम आज अल्लाह की आवाज़ सुनो
8 तो अपने दिलों को सख़्त न करो जिस तरह
बग़ावत के दिन हुआ,
जब तुम्हारे बापदादा ने रेगिस्तान में मुझे आज़माया।
9 वहाँ उन्हों ने मुझे आज़माया और जाँचा,
हालाँकि उन्हों ने चालीस साल के दौरान मेरे काम
देख लिए थे।
10 इस लिए मुझे उस नस्ल पर ग़ुस्सा आया और मैं
बोला,
'उन के दिल हमेशा सहीह राह से हट जाते हैं
और वह मेरी राहें नहीं जानते।'
11 अपने ग़ज़ब में मैं ने क़सम खाई,
'यह कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे
जहाँ मैं उन्हें सुकून देता'।"
12 भाइयो, ख़बरदार रहें ताकि आप में से किसी
का दिल बुराई और कुफ़्र से भर कर ज़िन्दा ख़ुदा
से बर्गश्ता न हो जाए। 13 इस के बजाय जब तक
अल्लाह का यह फ़रमान क़ाइम है रोज़ाना एक दूसरे
की हौसलाअफ़्ज़ाई करें ताकि आप में से कोई भी
गुनाह के फ़रेब में आ कर सख़्तदिल न हो। 14 बात
यह है कि हम मसीह के शरीक-ए-कार बन गए हैं।
लेकिन इस शर्त पर कि हम आख़िर तक वह एतिमाद
मज़बूती से क़ाइम रखें जो हम आग़ाज़ में रखते थे।
15 मज़कूरा कलाम में लिखा है,
"अगर तुम आज अल्लाह की आवाज़ सुनो,
तो अपने दिलों को सख़्त न करो जिस तरह बग़ावत
के दिन हुआ।"
16 यह कौन थे जो अल्लाह की आवाज़ सुन कर बाग़ी
हो गए? वह सब जिन्हें मूसा मिस्र से निकाल कर
बाहर लाया। 17 और यह कौन थे जिन से अल्लाह
चालीस साल के दौरान नाराज़ रहा? यह वही थे
जिन्हों ने गुनाह किया और जो रेगिस्तान में मर कर
वहीं पड़े रहे। 18 अल्लाह ने किन की बाबत क़सम
खाई कि "यह कभी भी उस मुल्क में दाख़िल नहीं
होंगे जहाँ मैं उन्हें सुकून देता"? ज़ाहिर है उन की
बाबत जिन्हों ने नाफ़रमानी की थी। 19 चुनाँचे हम
देखते हैं कि वह ईमान न रखने की वजह से मुल्क में
दाख़िल न हो सके।

4 1 देखें, अब तक अल्लाह का यह वादा क़ाइम है,
और अब तक हम सुकून के मुल्क में दाख़िल
हो सकते हैं। इस लिए आएँ, हम ख़बरदार रहें।
ऐसा न हो कि आप में से कोई पीछे रह कर उस
में दाख़िल न होने पाए। 2 क्यूँकि हमें भी उन की तरह

एक ख़ुशख़बरी सुनाई गई। लेकिन यह पैग़ाम उन के लिए बेफ़ाइदा था, क्यूँकि वह उसे सुन कर ईमान न लाए। 3 उन की निस्बत हम जो ईमान लाए हैं सुकून के इस मुल्क में दाख़िल हो सकते हैं।

ग़रज़, यह ऐसा ही है जिस तरह अल्लाह ने फ़रमाया,
"अपने ग़ज़ब में मैं ने क़सम खाई,
'यह कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे
जहाँ मैं उन्हें सुकून देता'।"

अब ग़ौर करें कि उस ने यह कहा अगरचे उस का काम दुनिया की तख़्लीक़ पर इख़तिताम तक पहुँच गया था। 4 क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में सातवें दिन के बारे में लिखा है, "सातवें दिन अल्लाह का सारा काम तक्मील तक पहुँच गया। इस से फ़ारिग़ हो कर उस ने आराम किया।" 5 अब इस का मुक़ाबला मज़कूरा आयत से करें,

"यह कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे
जहाँ मैं उन्हें सुकून देता।"

6 जिन्हों ने पहले अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनी उन्हें नाफ़रमान होने की वजह से यह सुकून न मिला। तो भी यह बात क़ाइम रही कि कुछ तो सुकून के इस मुल्क में दाख़िल हो जाएंगे। 7 यह मद्द-ए-नज़र रख कर अल्लाह ने एक और दिन मुक़र्रर किया, मज़कूरा "आज" का दिन। कई सालों के बाद ही उस ने दाऊद की मारिफ़त वह बात की जिस पर हम ग़ौर कर रहे हैं,

"अगर तुम आज अल्लाह की आवाज़ सुनो
तो अपने दिलों को सख़्त न करो।"

8 जब यशूअ उन्हें मुल्क-ए-कनआन में लाया तब उस ने इस्राईलियों को यह सुकून न दिया, वर्ना अल्लाह इस के बाद के किसी और दिन का ज़िक्र न करता। 9 चुनाँचे अल्लाह की क़ौम के लिए एक ख़ास सुकून बाक़ी रह गया है, ऐसा सुकून जो अल्लाह के सातवें दिन आराम करने से मुताबिक़त रखता है। 10 क्यूँकि जो भी वह सुकून पाता है जिस का वादा अल्लाह ने किया वह अल्लाह की तरह अपने कामों से फ़ारिग़ हो कर आराम करेगा। 11 इस लिए आएँ, हम इस सुकून में दाख़िल होने की पूरी कोशिश करें ताकि हम में से कोई भी बापदादा के नाफ़रमान नमूने पर चल कर गुनाह में न गिर जाए।

12 क्यूँकि अल्लाह का कलाम ज़िन्दा, मुअस्सिर और हर दोधारी तलवार से ज़्यादा तेज़ है। वह इन्सान में से गुज़र कर उस की जान रूह से और उस के जोड़ों को गूदे से अलग कर लेता है। वही दिल के ख़यालात और सोच को जाँच कर उन पर फ़ैसला करने के क़ाबिल है। 13 कोई मख़्लूक़ भी अल्लाह की नज़र से नहीं छुप सकती। उस की आँखों के सामने जिस के जवाबदिह हम होते हैं सब कुछ अयाँ और बेनिक़ाब है।

ईसा हमारा इमाम-ए-आज़म है

14 ग़रज़ आएँ, हम उस ईमान से लिपटे रहें जिस का इक़्रार हम करते हैं। क्यूँकि हमारा ऐसा अज़ीम इमाम-ए-आज़म है जो आसमानों में से गुज़र गया यानी ईसा अल्लाह का फ़र्ज़न्द। 15 और वह ऐसा इमाम-ए-आज़म नहीं है जो हमारी कमज़ोरियों को देख कर हमदर्दी न दिखाए बल्कि अगरचे वह बेगुनाह रहा तो भी हमारी तरह उसे हर क़िस्म की आज़माइश का सामना करना पड़ा। 16 अब आएँ, हम पूरे एतिमाद के साथ अल्लाह के तख़्त के सामने हाज़िर हो जाएँ जहाँ फ़ज़्ल पाया जाता है। क्यूँकि वहीं हम वह रहम और फ़ज़्ल पाएँगे जो ज़रूरत के वक़्त हमारी मदद कर सकता है।

5 1 अब इन्सानों में से चुने गए इमाम-ए-आज़म को इस लिए मुक़र्रर किया जाता है कि वह उन की ख़ातिर अल्लाह की ख़िदमत करे, ताकि वह गुनाहों के लिए नज़राने और क़ुर्बानियाँ पेश करे। 2 वह जाहिल और आवारा लोगों के साथ नर्म सुलूक रख सकता है, क्यूँकि वह ख़ुद कई तरह की कमज़ोरियों की गिरिफ़्त में होता है। 3 यही वजह है कि उसे न सिर्फ़ क़ौम के गुनाहों के लिए बल्कि अपने गुनाहों के लिए भी क़ुर्बानियाँ चढ़ानी पड़ती हैं। 4 और कोई अपनी मर्ज़ी से इमाम-ए-आज़म का पुरवक़ार उह्दा नहीं अपना

सकता बल्कि लाज़िम है कि अल्लाह उसे हारून की तरह बुला कर मुक़र्रर करे।

5 इसी तरह मसीह ने भी अपनी मर्ज़ी से इमाम-ए-आज़म का पुरवक़ार उह्दा नहीं अपनाया। इस के बजाय अल्लाह ने उस से कहा,

"तू मेरा फ़र्ज़न्द है,
आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।"

6 कहीं और वह फ़रमाता है,

"तू अबद तक इमाम है,
ऐसा इमाम जैसा मलिक-ए-सिद्क़ था।"

7 जब ईसा इस दुनिया में था तो उस ने ज़ोर ज़ोर से पुकार कर और आँसू बहा बहा कर उसे दुआएँ और इल्तिजाएँ पेश कीं [w]जो उसे मौत से बचा सकता था। और अल्लाह ने उस की सुनी, क्यूँकि वह ख़ुदा का ख़ौफ़ रखता था। 8 वह अल्लाह का फ़र्ज़न्द तो था, तो भी उस ने दुख उठाने से फ़रमाँबरदारी सीखी। 9 जब वह कामिलियत तक पहुँच गया तो वह उन सब की अबदी नजात का सरचश्मा बन गया जो उस की सुनते हैं। 10 उस वक़्त अल्लाह ने उसे इमाम-ए-आज़म भी मुतअय्यिन किया, ऐसा इमाम जैसा मलिक-ए-सिद्क़ था।

ईमान तर्क करने की बाबत आगाही

11 इस के बारे में हम मज़ीद बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन हम मुश्किल से इस की तश्रीह कर सकते हैं, क्यूँकि आप सुनने में सुस्त हैं। 12 असल में इतना वक़्त गुज़र गया है कि अब आप को ख़ुद उस्ताद होना चाहिए। अफ़्सोस कि ऐसा नहीं है बल्कि आप को इस की ज़रूरत है कि कोई आप के पास आ कर आप को अल्लाह के कलाम की बुन्यादी सच्चाइयाँ दुबारा सिखाए। आप अब तक ठोस खाना नहीं खा सकते बल्कि आप को दूध की ज़रूरत है। 13 जो दूध ही पी सकता है वह अभी छोटा बच्चा ही है और वह रास्तबाज़ी की तालीम से नावाक़िफ़ है। 14 इस के मुक़ाबले में ठोस खाना बालिग़ों के लिए है जिन्हों ने अपनी बलूग़त के बाइस अपनी रुहानी बसारत को इतनी तर्बियत दी है कि वह भलाई और बुराई में इम्तियाज़ कर सकते हैं।

6 1 इस लिए आएँ, हम मसीह के बारे में बुन्यादी तालीम को छोड़ कर बलूग़त की तरफ़ आगे बढ़ें। क्यूँकि ऐसी बातें दुहराने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए जिन से ईमान की बुन्याद रखी जाती है, मसलन मौत तक पहुँचाने वाले काम से तौबा, 2 बपतिस्मा क्या है, किसी पर हाथ रखने की तालीम, मुर्दों के जी उठने और अबदी सज़ा पाने की तालीम। 3 चुनाँचे अल्लाह की मर्ज़ी हुई तो हम यह छोड़ कर आगे बढ़ेंगे।

4 नामुमकिन है कि उन्हें बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाया जाए जिन्हों ने अपना ईमान तर्क कर दिया हो। उन्हें तो एक बार अल्लाह के नूर में लाया गया था, उन्हों ने आसमान की नेमत चख ली थी, वह रूह-उल-क़ुद्स में शरीक हुए, 5 उन्हों ने अल्लाह के कलाम की भलाई और आने वाले ज़माने की कुव्वतों का तजरिबा किया था। 6 और फिर उन्हों ने अपना ईमान तर्क कर दिया! ऐसे लोगों को बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाना नामुमकिन है। क्यूँकि ऐसा करने से वह अल्लाह के फ़र्ज़न्द को दुबारा मस्लूब करके उसे लान-तान का निशाना बना देते हैं।

7 अल्लाह उस ज़मीन को बरकत देता है जो अपने पर बार बार पड़ने वाली बारिश को जज़ब करके ऐसी फ़सल पैदा करती है जो खेतीबाड़ी करने वाले के लिए मुफ़ीद हो। 8 लेकिन अगर वह सिर्फ़ ख़ारदार पौदे और ऊँटकटारे पैदा करे तो वह बेकार है और इस ख़तरे में है कि उस पर लानत भेजी जाए। अन्जाम-ए-कार उस पर का सब कुछ जलाया जाएगा।

9 अज़ीज़ो, गो हम इस तरह की बातें कर रहे हैं तो भी हमारा एतिमाद यह है कि आप को वह बेहतरीन

---

[w]यानी इमाम की हैसियत से उस ने यह दुआएँ और इल्तिजाएँ क़ुर्बानी के तौर पर पेश कीं।

बरकतें हासिल हैं जो नजात से मिलती हैं। 10 क्यूँकि
अल्लाह बेइन्साफ़ नहीं है। वह आप का काम और वह
मुहब्बत नहीं भूलेगा जो आप ने उस का नाम ले कर
ज़ाहिर की जब आप ने मुक़द्दसीन की ख़िदमत की
बल्कि आज तक कर रहे हैं। 11 लेकिन हमारी बड़ी
ख़्वाहिश यह है कि आप में से हर एक इसी सरगर्मी
का इज़हार आख़िर तक करता रहे ताकि जिन बातों
की उम्मीद आप रखते हैं वह वाक़ई पूरी हो जाएँ।
12 हम नहीं चाहते कि आप सुस्त हो जाएँ बल्कि यह
कि आप उन के नमूने पर चलें जो ईमान और सब्र से
वह कुछ मीरास में पा रहे हैं जिस का वादा अल्लाह
ने किया है।

अल्लाह का यक़ीनी वादा

13 जब अल्लाह ने क़सम खा कर इब्राहीम से वादा
किया तो उस ने अपनी ही क़सम खा कर यह वादा
किया। क्यूँकि कोई और नहीं था जो उस से बड़ा था
जिस की क़सम वह खा सकता। 14 उस वक़्त उस
ने कहा, "मैं ज़रूर तुझे बहुत बरकत दूँगा, और मैं
यक़ीनन तुझे कस्रत की औलाद दूँगा।" 15 इस पर
इब्राहीम ने सब्र से इन्तिज़ार करके वह कुछ पाया
जिस का वादा किया गया था। 16 क़सम खाते वक़्त
लोग उस की क़सम खाते हैं जो उन से बड़ा होता है।
इस तरह से क़सम में बयानकरदा बात की तस्दीक़
बह्स-मुबाहसा की हर गुन्जाइश को ख़त्म कर देती
है। 17 अल्लाह ने भी क़सम खा कर अपने वादे की
तस्दीक़ की। क्यूँकि वह अपने वादे के वारिसों पर
साफ़ ज़ाहिर करना चाहता था कि उस का इरादा
कभी नहीं बदलेगा। 18 ग़रज़, यह दो बातें क़ाइम रही
हैं, अल्लाह का वादा और उस की क़सम। वह इन्हें न
तो बदल सकता न इन के बारे में झूट बोल सकता है।
यूँ हम जिन्हों ने उस के पास पनाह ली है बड़ी तसल्ली
पा कर उस उम्मीद को मज़बूती से थामे रख सकते हैं
जो हमें पेश की गई है। 19 क्यूँकि यह उम्मीद हमारी
जान के लिए मज़बूत लंगर है। और यह आसमानी
बैत-उल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के पर्दे में से
गुज़र कर उस में दाख़िल होती है। 20 वहीं ईसा हमारे
आगे आगे जा कर हमारी ख़ातिर दाख़िल हुआ है।
यूँ वह मलिक-ए-सिद्क़ की मानिन्द हमेशा के लिए
इमाम-ए-आज़म बन गया है।

मलिक-ए-सिद्क़

7 1 यह मलिक-ए-सिद्क़, सालिम का बादशाह
और अल्लाह तआला का इमाम था। जब
इब्राहीम चार बादशाहों को शिकस्त देने के बाद
वापस आ रहा था तो मलिक-ए-सिद्क़ उस से मिला
और उसे बरकत दी। 2 इस पर इब्राहीम ने उसे तमाम
लूट के माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया। अब मलिक-
ए-सिद्क़ का मतलब "रास्तबाज़ी का बादशाह" है।
दूसरे, "सालिम का बादशाह" का मतलब "सलामती
का बादशाह" है। 3 न उस का बाप या माँ है, न कोई
नसबनामा। उस की ज़िन्दगी का न तो आग़ाज़ है,
न इख़तिताम। अल्लाह के फ़र्ज़न्द की तरह वह अबद
तक इमाम रहता है।

4 ग़ौर करें कि वह कितना अज़ीम था। हमारे
बापदादा इब्राहीम ने उसे लूटे हुए माल का दसवाँ
हिस्सा दे दिया। 5 अब शरीअत तलब करती है कि
लावी की वह औलाद जो इमाम बन जाती है क़ौम
यानी अपने भाइयों से पैदावार का दसवाँ हिस्सा
ले, हालाँकि उन के भाई इब्राहीम की औलाद हैं।
6 लेकिन मलिक-ए-सिद्क़ लावी की औलाद में से
नहीं था। तो भी उस ने इब्राहीम से दसवाँ हिस्सा ले
कर उसे बरकत दी जिस से अल्लाह ने वादा किया
था। 7 इस में कोई शक नहीं कि कमहैसियत शख़्स
को उस से बरकत मिलती है जो ज़्यादा हैसियत का
हो। 8 जहाँ लावी इमामों का ताल्लुक़ है फ़ानी इन्सान
दसवाँ हिस्सा लेते हैं। लेकिन मलिक-ए-सिद्क़ के
मुआमले में यह हिस्सा उस को मिला जिस के बारे
में गवाही दी गई है कि वह ज़िन्दा रहता है। 9 यह
भी कहा जा सकता है कि जब इब्राहीम ने माल का
दसवाँ हिस्सा दे दिया तो लावी ने उस के ज़रीए भी
यह हिस्सा दिया, हालाँकि वह ख़ुद दसवाँ हिस्सा

लेता है। 10 क्यूँकि गो लावी उस वक़्त पैदा नहीं हुआ
था तो भी वह एक तरह से इब्राहीम के जिस्म में मौजूद
था जब मलिक-ए-सिद्क़ उस से मिला।

11 अगर लावी की कहानत (जिस पर शरीअत
मब्नी थी) कामिलियत पैदा कर सकती तो फिर एक
और क़िस्म के इमाम की क्या ज़रूरत होती, उस की
जो हारून जैसा न हो बल्कि मलिक-ए-सिद्क़ जैसा?
12 क्यूँकि जब भी कहानत बदल जाती है तो लाज़िम
है कि शरीअत में भी तब्दीली आए। 13 और हमारा
ख़ुदावन्द जिस के बारे में यह बयान किया गया है
वह एक फ़र्क़ क़बीले का फ़र्द था। उस के क़बीले
के किसी भी फ़र्द ने इमाम की ख़िदमत अदा नहीं
की। 14 क्यूँकि साफ़ मालूम है कि ख़ुदावन्द मसीह
यहूदाह क़बीले का फ़र्द था, और मूसा ने इस क़बीले
को इमामों की ख़िदमत में शामिल न किया।

मलिक-ए-सिद्क़ जैसा एक और इमाम

15 मुआमला मज़ीद साफ़ हो जाता है। एक फ़र्क़
इमाम ज़ाहिर हुआ है जो मलिक-ए-सिद्क़ जैसा है।
16 वह लावी के क़बीले का फ़र्द होने से इमाम न
बना जिस तरह शरीअत तक़ाज़ा करती थी, बल्कि
वह लाफ़ानी ज़िन्दगी की क़ुव्वत ही से इमाम बन
गया। 17 क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है,

"तू अबद तक इमाम है,
ऐसा इमाम जैसा मलिक-ए-सिद्क़ था।"

18 यूँ पुराने हुक्म को मन्सूख़ कर दिया जाता है,
क्यूँकि वह कमज़ोर और बेकार था 19 (मूसा की
शरीअत तो किसी चीज़ को कामिल नहीं बना सकती
थी) और अब एक बेहतर उम्मीद मुहय्या की गई है
जिस से हम अल्लाह के क़रीब आ जाते हैं।

20 और यह नया निज़ाम अल्लाह की क़सम से क़ाइम
हुआ। ऐसी कोई क़सम न खाई गई जब दूसरे इमाम
बने। 21 लेकिन ईसा एक क़सम के ज़रीए इमाम बन
गया जब अल्लाह ने फ़रमाया,

"रब ने क़सम खाई है
और इस से पछताएगा नहीं,
'तू अबद तक इमाम है'।"

22 इस क़सम की वजह से ईसा एक बेहतर अह्द
की ज़मानत देता है।

23 एक और फ़र्क़, पुराने निज़ाम में बहुत से इमाम
थे, क्यूँकि मौत ने हर एक की ख़िदमत मह्दूद किए
रखी। 24 लेकिन चूँकि ईसा अबद तक ज़िन्दा है इस
लिए उस की कहानत कभी भी ख़त्म नहीं होगी। 25 यूँ
वह उन्हें अबदी नजात दे सकता है जो उस के वसीले
से अल्लाह के पास आते हैं, क्यूँकि वह अबद तक
ज़िन्दा है और उन की शफ़ाअत करता रहता है।

26 हमें ऐसे ही इमाम-ए-आज़म की ज़रूरत थी। हाँ,
ऐसा इमाम जो मुक़द्दस, बेक़ुसूर, बेदाग़, गुनाहगारों
से अलग और आसमानों से बुलन्द हुआ है। 27 उसे
दूसरे इमामों की तरह इस की ज़रूरत नहीं कि हर
रोज़ क़ुर्बानियाँ पेश करे, पहले अपने लिए फिर क़ौम
के लिए। बल्कि उस ने अपने आप को पेश करके
अपनी इस क़ुर्बानी से उन के गुनाहों को एक बार सदा
के लिए मिटा दिया। 28 मूसवी शरीअत ऐसे लोगों
को इमाम-ए-आज़म मुक़र्रर करती है जो कमज़ोर हैं।
लेकिन शरीअत के बाद अल्लाह की क़सम फ़र्ज़न्द को
इमाम-ए-आज़म मुक़र्रर करती है, और यह फ़र्ज़न्द
अबद तक कामिल है।

ईसा हमारा इमाम-ए-आज़म

8 1 जो कुछ हम कह रहे हैं उस की मर्कज़ी बात
यह है, हमारा एक ऐसा इमाम-ए-आज़म है जो
आसमान पर जलाली ख़ुदा के तख़्त के दहने हाथ
बैठा है। 2 वहाँ वह मक़्दिस में ख़िदमत करता है, उस
हक़ीक़ी मुलाक़ात के ख़ैमे में जिसे इन्सानी हाथों ने
खड़ा नहीं किया बल्कि रब ने।

3 हर इमाम-ए-आज़म को नज़राने और क़ुर्बानियाँ
पेश करने के लिए मुक़र्रर किया जाता है। इस लिए
लाज़िम है कि हमारे इमाम-ए-आज़म के पास भी कुछ
हो जो वह पेश कर सके। 4 अगर यह दुनिया में होता
तो इमाम-ए-आज़म न होता, क्यूँकि यहाँ इमाम तो हैं
जो शरीअत के मतलूबा नज़राने पेश करते हैं। 5 जिस

मक़्दिस में वह ख़िदमत करते हैं वह उस मक़्दिस की
सिर्फ़ नक़ली सूरत और साया है जो आसमान पर है।
यही वजह है कि अल्लाह ने मूसा को मुलाक़ात का
ख़ैमा बनाने से पहले आगाह करके यह कहा, "ग़ौर
कर कि सब कुछ ऐन उस नमूने के मुताबिक़ बनाया
जाए जो मैं तुझे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।" 6 लेकिन
जो ख़िदमत ईसा को मिल गई है वह दुनिया के इमामों
की ख़िदमत से कहीं बेहतर है, उतनी बेहतर जितना
वह अह्द जिस का दरमियानी ईसा है पुराने अह्द से
बेहतर है। क्यूँकि यह अह्द बेहतर वादों की बुन्याद
पर बांधा गया।

7 अगर पहला अह्द बेइल्ज़ाम होता तो फिर नए
अह्द की ज़रूरत न होती। 8 लेकिन अल्लाह को अपनी
क़ौम पर इल्ज़ाम लगाना पड़ा। उस ने कहा,

"रब का फ़रमान है, ऐसे दिन आ रहे हैं
जब मैं इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने से
एक नया अह्द बांधूँगा।
9 यह उस अह्द की मानिन्द नहीं होगा
जो मैं ने उन के बापदादा के साथ
उस दिन बांधा था जब मैं उन का हाथ पकड़ कर
उन्हें मिस्र से निकाल लाया।
क्यूँकि वह उस अह्द के वफ़ादार न रहे
जो मैं ने उन से बांधा था।
नतीजे में मेरी उन के लिए फ़िक्र न रही।
10 ख़ुदावन्द फ़रमाता है कि
जो नया अह्द मैं उन दिनों के बाद उन से बांधूँगा
उस के तहत मैं अपनी शरीअत
उन के ज़हनों में डाल कर
उन के दिलों पर कन्दा करूँगा।
तब मैं ही उन का ख़ुदा हूँगा, और वह मेरी क़ौम
होंगे।
11 उस वक़्त से इस की ज़रूरत नहीं रहेगी
कि कोई अपने पड़ोसी या भाई को तालीम दे कर
कहे,
'रब को जान लो।'
क्यूँकि छोटे से ले कर बड़े तक
सब मुझे जानेंगे,
12 क्यूँकि मैं उन का क़ुसूर मुआफ़ करूँगा
और आइन्दा उन के गुनाहों को याद नहीं करूँगा।"

13 इन अल्फ़ाज़ में अल्लाह एक नए अह्द का ज़िक्र
करता है और यूँ पुराने अह्द को मतरूक क़रार देता
है। और जो मतरूक और पुराना है उस का अन्जाम
क़रीब ही है।

दुनियावी और आसमानी इबादत

9 1 जब पहला अह्द बांधा गया तो इबादत करने
के लिए हिदायात दी गईं। ज़मीन पर एक
मक़्दिस भी बनाया गया, 2 एक ख़ैमा जिस के पहले
कमरे में शमादान, मेज़ और उस पर पड़ी मख़्सूस
की गई रोटियाँ थीं। उस का नाम "मुक़द्दस कमरा"
था। 3 उस के पीछे एक और कमरा था जिस का
नाम "मुक़द्दसतरीन कमरा" था। पहले और दूसरे
कमरे के दरमियान वाक़े दरवाज़े पर पर्दा लगा था।
4 इस पिछले कमरे में बख़ूर जलाने के लिए सोने
की क़ुर्बानगाह और अह्द का सन्दूक़ था। अह्द के
सन्दूक़ पर सोना मंढा हुआ था और उस में तीन चीज़ें
थीं : सोने का मर्तबान जिस में मन भरा था, हारून का
वह असा जिस से कोंपलें फूट निकली थीं और पत्थर
की वह दो तख़्तियाँ जिन पर अह्द के अह्काम लिखे
थे। 5 सन्दूक़ पर इलाही जलाल के दो करूबी फ़रिश्ते
लगे थे जो सन्दूक़ के ढकने को साया देते थे जिस का
नाम "कफ़्फ़ारा का ढकना" था। लेकिन इस जगह
पर हम सब कुछ मज़ीद तफ़्सील से बयान नहीं करना
चाहते।

6 यह चीज़ें इसी तर्तीब से रखी जाती हैं। जब
इमाम अपनी ख़िदमत के फ़राइज़ अदा करते हैं तो
बाक़ाइदगी से पहले कमरे में जाते हैं। 7 लेकिन सिर्फ़
इमाम-ए-आज़म ही दूसरे कमरे में दाख़िल होता है,
और वह भी साल में सिर्फ़ एक दफ़ा। जब भी वह
जाता है वह अपने साथ ख़ून ले कर जाता है जिसे
वह अपने और क़ौम के लिए पेश करता है ताकि
वह गुनाह मिट जाएँ जो लोगों ने ग़ैरइरादी तौर पर

किए होते हैं। 8 इस से रूह-उल-क़ुद्स दिखाता है कि
मुक़द्दसतरीन कमरे तक रसाई उस वक़्त तक ज़ाहिर
नहीं की गई थी जब तक पहला कमरा इस्तेमाल में
था। 9 यह मजाज़न मौजूदा ज़माने की तरफ़ इशारा है।
इस का मतलब यह है कि जो नज़राने और क़ुर्बानियाँ
पेश की जा रही हैं वह परस्तार के ज़मीर को पाक-
साफ़ करके कामिल नहीं बना सकतीं। 10 क्यूँकि
इन का ताल्लुक़ सिर्फ़ खाने-पीने वाली चीज़ों और
ग़ुसल की मुख़्तलिफ़ रस्मों से होता है, ऐसी ज़ाहिरी
हिदायात जो सिर्फ़ नए निज़ाम के आने तक लागू हैं।
11 लेकिन अब मसीह आ चुका है, उन अच्छी
चीज़ों का इमाम-ए-आज़म जो अब हासिल हुई हैं।
जिस ख़ैमे में वह ख़िदमत करता है वह कहीं ज़्यादा
अज़ीम और कामिल है। यह ख़ैमा इन्सानी हाथों से
नहीं बनाया गया यानी यह इस काइनात का हिस्सा
नहीं है। 12 जब मसीह एक बार सदा के लिए ख़ैमे
के मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल हुआ तो उस ने
क़ुर्बानियाँ पेश करने के लिए बकरों और बछड़ों का
ख़ून इस्तेमाल न किया। इस के बजाय उस ने अपना
ही ख़ून पेश किया और यूँ हमारे लिए अबदी नजात
हासिल की। 13 पुराने निज़ाम में बैल-बकरों का ख़ून
और जवान गाय की राख नापाक लोगों पर छिड़के
जाते थे ताकि उन के जिस्म पाक-साफ़ हो जाएँ।
14 अगर इन चीज़ों का यह असर था तो फिर मसीह
के ख़ून का क्या ज़बरदस्त असर होगा! अज़ली रूह
के ज़रीए उस ने अपने आप को बेदाग़ क़ुर्बानी के
तौर पर पेश किया। यूँ उस का ख़ून हमारे ज़मीर को
मौत तक पहुँचाने वाले कामों से पाक-साफ़ करता है
ताकि हम ज़िन्दा ख़ुदा की ख़िदमत कर सकें।
15 यही वजह है कि मसीह एक नए अह्द का
दरमियानी है। मक़्सद यह था कि जितने लोगों को
अल्लाह ने बुलाया है उन्हें अल्लाह की मौऊदा और
अबदी मीरास मिले। और यह सिर्फ़ इस लिए मुमकिन
हुआ है कि मसीह ने मर कर फ़िद्या दिया ताकि लोग
उन गुनाहों से छुटकारा पाएँ जो उन से उस वक़्त
सरज़द हुए जब वह पहले अह्द के तहत थे।
16 जहाँ वसियत है वहाँ ज़रूरी है कि वसियत करने
वाले की मौत की तस्दीक़ की जाए। 17 क्यूँकि जब
तक वसियत करने वाला ज़िन्दा हो वसियत बेअसर
होती है। इस का असर वसियत करने वाले की मौत
ही से शुरू होता है। 18 यही वजह है कि पहला अह्द
बांधते वक़्त भी ख़ून इस्तेमाल हुआ। 19 क्यूँकि पूरी
क़ौम को शरीअत का हर हुक्म सुनाने के बाद मूसा
ने बछड़ों का ख़ून पानी से मिला कर उसे ज़ूफ़े के
गुच्छे और क़िर्मिज़ी रंग के धागे के ज़रीए शरीअत
की किताब और पूरी क़ौम पर छिड़का। 20 उस ने
कहा, “यह ख़ून उस अह्द की तस्दीक़ करता है जिस
की पैरवी करने का हुक्म अल्लाह ने तुम्हें दिया है।”
21 इसी तरह मूसा ने यह ख़ून मुलाक़ात के ख़ैमे और
इबादत के तमाम सामान पर छिड़का। 22 न सिर्फ़ यह
बल्कि शरीअत तक़ाज़ा करती है कि तक़रीबन हर
चीज़ को ख़ून ही से पाक-साफ़ किया जाए बल्कि
अल्लाह के हुज़ूर ख़ून पेश किए बग़ैर मुआफ़ी मिल ही
नहीं सकती।

मसीह की क़ुर्बानी गुनाहों को मिटा देती है

23 ग़रज़, लाज़िम था कि यह चीज़ें जो आसमान
की असली चीज़ों की नक़ली सूरतें हैं पाक-साफ़ की
जाएँ। लेकिन आसमानी चीज़ें ख़ुद ऐसी क़ुर्बानियों
का मुतालबा करती हैं जो इन से कहीं बेहतर
हों। 24 क्यूँकि मसीह सिर्फ़ इन्सानी हाथों से बने
मक़्दिस में दाख़िल नहीं हुआ जो असली मक़्दिस
की सिर्फ़ नक़ली सूरत थी बल्कि वह आसमान में
ही दाख़िल हुआ ताकि अब से हमारी ख़ातिर अल्लाह
के सामने हाज़िर हो। 25 दुनिया का इमाम-ए-आज़म
तो सालाना किसी और (यानी जानवर) का ख़ून ले
कर मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल होता है। लेकिन
मसीह इस लिए आसमान में दाख़िल न हुआ कि वह
अपने आप को बार बार क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे।
26 अगर ऐसा होता तो उसे दुनिया की तख़्लीक़ से ले
कर आज तक बहुत दफ़ा दुख सहना पड़ता। लेकिन
ऐसा नहीं है बल्कि अब वह ज़मानों के इख़तिताम पर

एक ही बार सदा के लिए ज़ाहिर हुआ ताकि अपने
आप को क़ुर्बान करने से गुनाह को दूर करे। 27 एक
बार मरना और अल्लाह की अदालत में हाज़िर होना
हर इन्सान के लिए मुक़र्रर है। 28 इसी तरह मसीह
को भी एक ही बार बहुतों के गुनाहों को उठा कर ले
जाने के लिए क़ुर्बान किया गया। दूसरी बार जब वह
ज़ाहिर होगा तो गुनाहों को दूर करने के लिए ज़ाहिर
नहीं होगा बल्कि उन्हें नजात देने के लिए जो शिद्दत
से उस का इन्तिज़ार कर रहे हैं।

10 1 मूसवी शरीअत आने वाली अच्छी और
असली चीज़ों की सिर्फ़ नक़ली सूरत और
साया है। यह उन चीज़ों की असली शक्ल नहीं है।
इस लिए यह उन्हें कभी भी कामिल नहीं कर सकती
जो साल-ब-साल और बार बार अल्लाह के हुज़ूर आ
कर वही क़ुर्बानियाँ पेश करते रहते हैं। 2 अगर वह
कामिल कर सकती तो क़ुर्बानियाँ पेश करने की
ज़रूरत न रहती। क्यूँकि इस सूरत में परस्तार एक
बार सदा के लिए पाक-साफ़ हो जाते और उन्हें
गुनाहगार होने का शऊर न रहता। 3 लेकिन इस के
बजाय यह क़ुर्बानियाँ साल-ब-साल लोगों को उन के
गुनाहों की याद दिलाती हैं। 4 क्यूँकि मुमकिन ही नहीं
कि बैल-बकरों का ख़ून गुनाहों को दूर करे।

5 इस लिए मसीह दुनिया में आते वक़्त अल्लाह से
कहता है,

“तू क़ुर्बानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था
लेकिन तू ने मेरे लिए एक जिस्म तय्यार किया।
6 भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ और गुनाह की क़ुर्बानियाँ
तुझे पसन्द नहीं थीं।
7 फिर मैं बोल उठा, ‘ऐ ख़ुदा, मैं हाज़िर हूँ
ताकि तेरी मर्ज़ी पूरी करूँ,
जिस तरह मेरे बारे में कलाम-ए-मुक़द्दस में [x]लिखा है’।”

8 पहले मसीह कहता है, “न तू क़ुर्बानियाँ, नज़रें,
भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ या गुनाह की क़ुर्बानियाँ
चाहता था, न उन्हें पसन्द करता था” गो शरीअत
इन्हें पेश करने का मुतालबा करती है। 9 फिर वह
फ़रमाता है, “मैं हाज़िर हूँ ताकि तेरी मर्ज़ी पूरी करूँ।”
यूँ वह पहला निज़ाम ख़त्म करके उस की जगह दूसरा
निज़ाम क़ाइम करता है। 10 और उस की मर्ज़ी पूरी
हो जाने से हमें ईसा मसीह के बदन के वसीले से
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया गया है। क्यूँकि उसे एक
ही बार सदा के लिए हमारे लिए क़ुर्बान किया गया।

11 हर इमाम रोज़-ब-रोज़ मक़्दिस में खड़ा अपनी
ख़िदमत के फ़राइज़ अदा करता है। रोज़ाना और
बार बार वह वही क़ुर्बानियाँ पेश करता रहता है जो
कभी भी गुनाहों को दूर नहीं कर सकतीं। 12 लेकिन
मसीह ने गुनाहों को दूर करने के लिए एक ही क़ुर्बानी
पेश की, एक ऐसी क़ुर्बानी जिस का असर सदा के
लिए रहेगा। फिर वह अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया।
13 वहीं वह अब इन्तिज़ार करता है जब तक अल्लाह
उस के दुश्मनों को उस के पाँओ की चौकी न बना
दे। 14 यूँ उस ने एक ही क़ुर्बानी से उन्हें सदा के लिए
कामिल बना दिया है जिन्हें मुक़द्दस किया जा रहा
है।

15 रूह-उल-क़ुद्स भी हमें इस के बारे में गवाही
देता है। पहले वह कहता है,

16 “रब फ़रमाता है कि
जो नया अह्द मैं उन दिनों के बाद उन से बांधूँगा
उस के तहत मैं अपनी शरीअत
उन के दिलों में डाल कर
उन के ज़हनों पर कन्दा करूँगा।”

17 फिर वह कहता है, “उस वक़्त से मैं उन के
गुनाहों और बुराइयों को याद नहीं करूँगा।” 18 और
जहाँ इन गुनाहों की मुआफ़ी हुई है वहाँ गुनाहों को
दूर करने की क़ुर्बानियों की ज़रूरत ही नहीं रही।

---

[x]लफ़्ज़ी तर्जुमा : किताब के तूमार में।

आएँ, हम अल्लाह के हुज़ूर आएँ

19 चुनाँचे भाइयो, अब हम ईसा के ख़ून के वसीले
से पूरे एतिमाद के साथ मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल
हो सकते हैं। 20 अपने बदन की क़ुर्बानी से ईसा
ने उस कमरे के पर्दे में से गुज़रने का एक नया
और ज़िन्दगीबख़्श रास्ता खोल दिया। 21 हमारा एक
अज़ीम इमाम-ए-आज़म है जो अल्लाह के घर पर
मुक़र्रर है। 22 इस लिए आएँ, हम ख़ुलूसदिली और
ईमान के पूरे एतिमाद के साथ अल्लाह के हुज़ूर आएँ।
क्यूँकि हमारे दिलों पर मसीह का ख़ून छिड़का गया है
ताकि हमारे मुजरिम ज़मीर साफ़ हो जाएँ। नीज़, हमारे
बदनों को पाक-साफ़ पानी से धोया गया है। 23 आएँ,
हम मज़बूती से उस उम्मीद को थामे रखें जिस का
इक़्रार हम करते हैं। हम डाँवाँडोल न हो जाएँ, क्यूँकि
जिस ने इस उम्मीद का वादा किया है वह वफ़ादार
है। 24 और आएँ, हम इस पर ध्यान दें कि हम एक
दूसरे को किस तरह मुहब्बत दिखाने और नेक काम
करने पर उभार सकें। 25 हम बाहम जमा होने से बाज़
न आएँ, जिस तरह बाज़ की आदत बन गई है। इस
के बजाय हम एक दूसरे की हौसलाअफ़ज़ाई करें,
ख़ासकर यह बात मद्द-ए-नज़र रख कर कि ख़ुदावन्द
का दिन क़रीब आ रहा है।

26 ख़बरदार! अगर हम सच्चाई जान लेने के बाद भी
जान-बूझ कर गुनाह करते रहें तो मसीह की क़ुर्बानी
इन गुनाहों को दूर नहीं कर सकेगी। 27 फिर सिर्फ़
अल्लाह की अदालत की हौलनाक तवक़्क़ो बाक़ी
रहेगी, उस भड़कती हुई आग की जो अल्लाह के
मुख़ालिफ़ों को भस्म कर डालेगी। 28 जो मूसा की
शरीअत रद्द करता है उस पर रहम नहीं किया जा
सकता बल्कि अगर दो या इस से ज़ाइद लोग इस जुर्म
की गवाही दें तो उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। 29 तो फिर
क्या ख़याल है, वह कितनी सख़्त सज़ा के लाइक़
होगा जिस ने अल्लाह के फ़र्ज़न्द को पाँओ तले रौंदा?
जिस ने अह्द का वह ख़ून हक़ीर जाना जिस से उसे
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया गया था? और जिस ने
फ़ज़्ल के रूह की बेइज़्ज़ती की? 30 क्यूँकि हम उसे
जानते हैं जिस ने फ़रमाया, "इन्तिक़ाम लेना मेरा ही
काम है, मैं ही बदला लूँगा।" उस ने यह भी कहा,
"रब अपनी क़ौम का इन्साफ़ करेगा।" 31 यह एक
हौलनाक बात है अगर ज़िन्दा ख़ुदा हमें सज़ा देने के
लिए पकड़े।

32 ईमान के पहले दिन याद करें जब अल्लाह ने
आप को रौशन कर दिया था। उस वक़्त के सख़्त
मुक़ाबले में आप को कई तरह का दुख सहना पड़ा,
लेकिन आप साबितक़दम रहे। 33 कभी कभी आप
की बेइज़्ज़ती और अवाम के सामने ही ईज़ारसानी
होती थी, कभी कभी आप उन के साथी थे जिन से
ऐसा सुलूक हो रहा था। 34 जिन्हें जेल में डाला गया
आप उन के दुख में शरीक हुए और जब आप का
माल-ओ-मता लूटा गया तो आप ने यह बात ख़ुशी से
बर्दाश्त की। क्यूँकि आप जानते थे कि वह माल हम
से नहीं छीन लिया गया जो पहले की निस्बत कहीं
बेहतर है और हर सूरत में क़ाइम रहेगा। 35 चुनाँचे
अपने इस एतिमाद को हाथ से जाने न दें क्यूँकि इस
का बड़ा अज्र मिलेगा। 36 लेकिन इस के लिए आप
को साबितक़दमी की ज़रूरत है ताकि आप अल्लाह
की मर्ज़ी पूरी कर सकें और यूँ आप को वह कुछ
मिल जाए जिस का वादा उस ने किया है। 37 क्यूँकि
कलाम-ए-मुक़द्दस यह फ़रमाता है,

"थोड़ी ही देर बाक़ी है
तो आने वाला पहुँचेगा, वह देर नहीं करेगा।
38 लेकिन मेरा रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा,
और अगर वह पीछे हट जाए
तो मैं उस से ख़ुश नहीं हूँगा।"

39 लेकिन हम उन में से नहीं हैं जो पीछे हट कर
तबाह हो जाएंगे बल्कि हम उन में से हैं जो ईमान रख
कर नजात पाते हैं।

ईमान

11 1 ईमान क्या है? यह कि हम उस में क़ाइम
रहें जिस पर हम उम्मीद रखते हैं और कि

हम उस का यक़ीन रखें जो हम नहीं देख सकते।
2 ईमान ही से पुराने ज़मानों के लोगों को अल्लाह की
क़बूलियत हासिल हुई।
3 ईमान के ज़रीए हम जान लेते हैं कि काइनात को
अल्लाह के कलाम से ख़ल्क़ किया गया, कि जो कुछ
हम देख सकते हैं नज़र आने वाली चीज़ों से नहीं
बना।
4 यह ईमान का काम था कि हाबील ने अल्लाह को
एक ऐसी क़ुर्बानी पेश की जो क़ाबील की क़ुर्बानी
से बेहतर थी। इस ईमान की बिना पर अल्लाह ने
उसे रास्तबाज़ ठहरा कर उस की अच्छी गवाही दी,
जब उस ने उस की क़ुर्बानियों को क़बूल किया।
और ईमान के ज़रीए वह अब तक बोलता रहता है
हालाँकि वह मुर्दा है। 5 यह ईमान का काम था कि
हनूक न मरा बल्कि ज़िन्दा हालत में आसमान पर
उठाया गया। कोई भी उसे ढूँड कर पा न सका क्यूँकि
अल्लाह उसे आसमान पर उठा ले गया था। वजह यह
थी कि उठाए जाने से पहले उसे यह गवाही मिली
कि वह अल्लाह को पसन्द आया। 6 और ईमान रखे
बग़ैर हम अल्लाह को पसन्द नहीं आ सकते। क्यूँकि
लाज़िम है कि अल्लाह के हुज़ूर आने वाला ईमान रखे
कि वह है और कि वह उन्हें अज्र देता है जो उस के
तालिब हैं।
7 यह ईमान का काम था कि नूह ने अल्लाह की सुनी
जब उस ने उसे आने वाली बातों के बारे में आगाह
किया, ऐसी बातों के बारे में जो अभी देखने में नहीं
आई थीं। नूह ने ख़ुदा का ख़ौफ़ मान कर एक कश्ती
बनाई ताकि उस का ख़ानदान बच जाए। यूँ उस ने
अपने ईमान के ज़रीए दुनिया को मुजरिम क़रार दिया
और उस रास्तबाज़ी का वारिस बन गया जो ईमान से
हासिल होती है।
8 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम ने अल्लाह की
सुनी जब उस ने उसे बुला कर कहा कि वह एक ऐसे
मुल्क में जाए जो उसे बाद में मीरास में मिलेगा। हाँ,
वह अपने मुल्क को छोड़ कर रवाना हुआ, हालाँकि
उसे मालूम न था कि वह कहाँ जा रहा है। 9 ईमान
के ज़रीए वह वादा किए हुए मुल्क में अजनबी की
हैसियत से रहने लगा। वह ख़ैमों में रहता था और
इसी तरह इस्हाक़ और याक़ूब भी जो उस के साथ
उसी वादे के वारिस थे। 10 क्यूँकि इब्राहीम उस शहर
के इन्तिज़ार में था जिस की मज़बूत बुन्याद है और
जिस का नक़्श बनाने और तामीर करने वाला ख़ुद
अल्लाह है।
11 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम बाप बनने
के क़ाबिल हो गया, हालाँकि वह बुढ़ापे की वजह
से बाप नहीं बन सकता था। इसी तरह सारा भी बच्चे
जन्म नहीं दे सकती थी। लेकिन इब्राहीम समझता
था कि अल्लाह जिस ने वादा किया है वफ़ादार है।
12 गो इब्राहीम तक़रीबन मर चुका था तो भी उसी
एक शख़्स से बेशुमार औलाद निकली, तादाद में
आसमान पर के सितारों और साहिल पर की रेत के
ज़र्रों के बराबर।
13 यह तमाम लोग ईमान रखते रखते मर गए। उन्हें
वह कुछ न मिला जिस का वादा किया गया था।
उन्हों ने उसे सिर्फ़ दूर ही से देख कर ख़ुशआमदीद
[y]कहा। और उन्हों ने तस्लीम किया कि हम ज़मीन
पर [z]सिर्फ़ मेहमान और आरिज़ी तौर पर रहने वाले
अजनबी हैं। 14 जो इस क़िस्म की बातें करते हैं वह
ज़ाहिर करते हैं कि हम अब तक अपने वतन की
तलाश में हैं। 15 अगर उन के ज़हन में वह मुल्क होता
जिस से वह निकल आए थे तो वह अब भी वापस
जा सकते थे। 16 इस के बजाय वह एक बेहतर मुल्क
यानी एक आसमानी मुल्क की आर्ज़ू कर रहे थे। इस
लिए अल्लाह उन का ख़ुदा कहलाने से नहीं शर्माता,
क्यूँकि उस ने उन के लिए एक शहर तय्यार किया है।
17 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम ने उस वक़्त
इस्हाक़ को क़ुर्बानी के तौर पर पेश किया जब अल्लाह
ने उसे आज़माया। हाँ, वह अपने इक्लौते बेटे को

[y]लफ़्ज़ी तर्जुमा : सलामी दी। सलाम दे कर इज़्ज़त का इज़हार किया। सल्यूट किया।

[z]ज़मीन पर या मुल्क (यानी कनआन) में।

क़ुर्बान करने के लिए तय्यार था अगरचे उसे अल्लाह
के वादे मिल गए थे 18 कि "तेरी नस्ल इस्हाक़ ही से
क़ाइम रहेगी।" 19 इब्राहीम ने सोचा, "अल्लाह मुर्दों को
भी ज़िन्दा कर सकता है," और मजाज़न उसे वाक़ई
इस्हाक़ मुर्दों में से वापस मिल गया।

20 यह ईमान का काम था कि इस्हाक़ ने आने वाली
चीज़ों के लिहाज़ से याक़ूब और एसौ को बरकत दी।
21 यह ईमान का काम था कि याक़ूब ने मरते वक़्त
यूसुफ़ के दोनों बेटों को बरकत दी और अपनी लाठी
के सिरे पर टेक लगा कर अल्लाह को सिज्दा किया।
22 यह ईमान का काम था कि यूसुफ़ ने मरते वक़्त
यह पेशगोई की कि इस्राईली मिस्र से निकलेंगे बल्कि
यह भी कहा कि निकलते वक़्त मेरी हड्डियाँ भी अपने
साथ ले जाओ।

23 यह ईमान का काम था कि मूसा के माँ-बाप
ने उसे पैदाइश के बाद तीन माह तक छुपाए रखा,
क्यूँकि उन्हों ने देखा कि वह ख़ूबसूरत है। वह
बादशाह के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी करने से न डरे।
24 यह ईमान का काम था कि मूसा ने परवान चढ़
कर इन्कार किया कि उसे फ़िरऔन की बेटी का
बेटा ठहराया जाए। 25 आरिज़ी तौर पर गुनाह से
लुत्फ़अन्दोज़ होने के बजाय उस ने अल्लाह की क़ौम
के साथ बदसुलूकी का निशाना बनने को तर्जीह दी।
26 वह समझा कि जब मेरी मसीह की ख़ातिर रुस्वाई
की जाती है तो यह मिस्र के तमाम ख़ज़ानों से ज़्यादा
क़ीमती है, क्यूँकि उस की आँखें आने वाले अज्र पर
लगी रहीं।

27 यह ईमान का काम था कि मूसा ने बादशाह के
ग़ुस्से से डरे बग़ैर मिस्र को छोड़ दिया, क्यूँकि वह
गोया अनदेखे ख़ुदा को मुसलसल अपनी आँखों के
सामने रखता रहा। 28 यह ईमान का काम था कि उस
ने फ़सह की ईद मना कर हुक्म दिया कि ख़ून को
चौखटों पर लगाया जाए ताकि हलाक करने वाला
फ़रिश्ता उन के पहलौठे बेटों को न छुए।

29 यह ईमान का काम था कि इस्राईली बहर-ए-
क़ुल्ज़ुम में से यूँ गुज़र सके जैसे कि यह ख़ुश्क ज़मीन
थी। जब मिस्रियों ने यह करने की कोशिश की तो
वह डूब गए।

30 यह ईमान का काम था कि सात दिन तक
यरीहू शहर की फ़सील के गिर्द चक्कर लगाने के बाद
पूरी दीवार गिर गई। 31 यह भी ईमान का काम था
कि राहब फ़ाहिशा अपने शहर के बाक़ी नाफ़रमान
बाशिन्दों के साथ हलाक न हुई, क्यूँकि उस ने
इस्राईली जासूसों को सलामती के साथ ख़ुशआमदीद
कहा था।

32 मैं मज़ीद क्या कुछ कहूँ? मेरे पास इतना वक़्त
नहीं कि मैं जिदाऊन, बरक़, सम्सून, इफ़्ताह, दाऊद,
समूएल और नबियों के बारे में सुनाता रहूँ। 33 यह सब
ईमान के सबब से ही कामयाब रहे। वह बादशाहियों
पर ग़ालिब आए और इन्साफ़ करते रहे। उन्हें अल्लाह
के वादे हासिल हुए। उन्हों ने शेरबबरों के मुँह बन्द
कर दिए 34 और आग के भड़कते शोलों को बुझा
दिया। वह तलवार की ज़द से बच निकले। वह
कमज़ोर थे लेकिन उन्हें क़ुव्वत हासिल हुई। जब
जंग छिड़ गई तो वह इतने ताक़तवर साबित हुए कि
उन्हों ने ग़ैरमुल्की लश्करों को शिकस्त दी। 35 ईमान
रखने के बाइस ख़वातीन को उन के मुर्दा अज़ीज़
ज़िन्दा हालत में वापस मिले।

लेकिन ऐसे भी थे जिन्हें तशद्दुद बर्दाश्त करना पड़ा
और जिन्हों ने आज़ाद हो जाने से इन्कार किया
ताकि उन्हें एक बेहतर चीज़ यानी जी उठने का
तजरिबा हासिल हो जाए। 36 बाज़ को लान-तान और
कोड़ों बल्कि ज़न्जीरों और क़ैद का भी सामना करना
पड़ा। 37 उन्हें संगसार किया गया, उन्हें आरे से
चीरा गया, उन्हें तलवार से मार डाला गया। बाज़
को भेड़-बकरियों की खालों में घूमना फिरना पड़ा।
ज़रूरतमन्द हालत में उन्हें दबाया और उन पर ज़ुल्म
किया जाता रहा। 38 दुनिया उन के लाइक़ नहीं थी!
वह वीरान जगहों में, पहाड़ों पर, ग़ारों और गढ़ों में
आवारा फिरते रहे।

39 इन सब को ईमान की वजह से अच्छी गवाही
मिली। तो भी इन्हें वह कुछ हासिल न हुआ जिस

का वादा अल्लाह ने किया था। 40 क्यूँकि उस ने हमारे
लिए एक ऐसा मन्सूबा बनाया था जो कहीं बेहतर है।
वह चाहता था कि यह लोग हमारे बग़ैर कामिलियत
तक न पहुँचें।

अल्लाह हमारा बाप

12 1 ग़रज़, हम गवाहों के इतने बड़े लश्कर से
घेरे रहते हैं! इस लिए आएँ, हम सब कुछ
उतारें जो हमारे लिए रुकावट का बाइस बन गया है,
हर गुनाह को जो हमें आसानी से उलझा लेता है।
आएँ, हम साबितक़दमी से उस दौड़ में दौड़ते रहें जो
हमारे लिए मुक़र्रर की गई है। 2 और दौड़ते हुए हम
ईसा को तकते रहें, उसे जो ईमान का बानी भी है
और उसे तक्मील तक पहुँचाने वाला भी। याद रहे
कि गो वह ख़ुशी हासिल कर सकता था तो भी उस
ने सलीबी मौत की शर्मनाक बेइज़्ज़ती की पर्वा न की
बल्कि उसे बर्दाश्त किया। और अब वह अल्लाह के
तख़्त के दहने हाथ जा बैठा है!

3 उस पर ध्यान दें जिस ने गुनाहगारों की इतनी
मुख़ालफ़त बर्दाश्त की। फिर आप थकते थकते
बेदिल नहीं हो जाएंगे। 4 देखें, आप गुनाह से लड़े
तो हैं, लेकिन अभी तक आप को जान देने तक इस
की मुख़ालफ़त नहीं करनी पड़ी। 5 क्या आप कलाम-
ए-मुक़द्दस की यह हौसलाअफ़्ज़ा बात भूल गए हैं जो
आप को अल्लाह के फ़र्ज़न्द ठहरा कर बयान करती
है,

"मेरे बेटे, रब की तर्बियत को हक़ीर मत जान,
जब वह तुझे डाँटे तो न बेदिल हो।

6 क्यूँकि जो रब को प्यारा है उस की वह तादीब
करता है,

वह हर एक को सज़ा देता है
जिसे उस ने बेटे के तौर पर क़बूल किया है।"

7 अपनी मुसीबतों को इलाही तर्बियत समझ कर
बर्दाश्त करें। इस में अल्लाह आप से बेटों का सा
सुलूक कर रहा है। क्या कभी कोई बेटा था जिस
की उस के बाप ने तर्बियत न की? 8 अगर आप
की तर्बियत सब की तरह न की जाती तो इस का
मतलब यह होता कि आप अल्लाह के हक़ीक़ी फ़र्ज़न्द
न होते बल्कि नाजाइज़ औलाद। 9 देखें, जब हमारे
इन्सानी बाप ने हमारी तर्बियत की तो हम ने उस की
इज़्ज़त की। अगर ऐसा है तो कितना ज़्यादा ज़रूरी
है कि हम अपने रुहानी बाप के ताबे हो कर ज़िन्दगी
पाएँ। 10 हमारे इन्सानी बापों ने हमें अपनी समझ
के मुताबिक़ थोड़ी देर के लिए तर्बियत दी। लेकिन
अल्लाह हमारी ऐसी तर्बियत करता है जो फ़ाइदे का
बाइस है और जिस से हम उस की क़ुद्दूसियत में
शरीक होने के क़ाबिल हो जाते हैं। 11 जब हमारी
तर्बियत की जाती है तो उस वक़्त हम ख़ुशी महसूस
नहीं करते बल्कि ग़म। लेकिन जिन की तर्बियत इस
तरह होती है वह बाद में रास्तबाज़ी और सलामती
की फ़सल काटते हैं।

हिदायात

12 चुनाँचे अपने थकेहारे बाज़ूओं और कमज़ोर
घुटनों को मज़बूत करें। 13 अपने रास्ते चलने के
क़ाबिल बना दें ताकि जो उज़्ज़ू लंगड़ा है उस का जोड़
उतर न जाए [a]बल्कि शिफ़ा पाए।

14 सब के साथ मिल कर सुलह-सलामती और
क़ुद्दूसियत के लिए जिद्द-ओ-जह्द करते रहें, क्यूँकि
जो मुक़द्दस नहीं है वह ख़ुदावन्द को कभी नहीं
देखेगा। 15 इस पर ध्यान देना कि कोई अल्लाह के
फ़ज़्ल से महरूम न रहे। ऐसा न हो कि कोई कड़वी
जड़ फूट निकले और बढ़ कर तक्लीफ़ का बाइस
बन जाए और बहुतों को नापाक कर दे। 16 ध्यान
दें कि कोई भी ज़िनाकार या एसौ जैसा दुनियावी
शख़्स न हो जिस ने एक ही खाने के इवज़ अपने
वह मौरूसी हुक़ूक़ बेच डाले जो उसे बड़े बेटे की
हैसियत से हासिल थे। 17 आप को भी मालूम है कि

---

[a]एक और मुमकिना तर्जुमा : जो लंगड़ा है वह भटक न जाए।

बाद में जब वह यह बरकत विरासत में पाना चाहता
था तो उसे रद्द किया गया। उस वक़्त उसे तौबा का
मौक़ा न मिला हालाँकि उस ने आँसू बहा बहा कर
यह बरकत हासिल करने की कोशिश की।

18 आप उस तरह अल्लाह के हुज़ूर नहीं आए जिस
तरह इस्राईली जब वह सीना पहाड़ पर पहुँचे, उस
पहाड़ के पास जिसे छुआ जा सकता था। वहाँ आग
भड़क रही थी, अंधेरा ही अंधेरा था और आँधी चल
रही थी। 19 जब नरसिंगे की आवाज़ सुनाई दी और
अल्लाह उन से हमकलाम हुआ तो सुनने वालों ने उस
से इल्तिजा की कि हमें मज़ीद कोई बात न बता।
20 क्यूँकि वह यह हुक्म बर्दाश्त नहीं कर सकते थे
कि "अगर कोई जानवर भी पहाड़ को छू ले तो उसे
संगसार करना है।" 21 यह मन्ज़र इतना हैबतनाक था
कि मूसा ने कहा, "मैं ख़ौफ़ के मारे काँप रहा हूँ।"

22 नहीं, आप सिय्यून पहाड़ के पास आ गए हैं,
यानी ज़िन्दा ख़ुदा के शहर आसमानी यरूशलम के
पास। आप बेशुमार फ़रिश्तों और जश्न मनाने वाली
जमाअत के पास आ गए हैं, 23 उन पहलौठों की
जमाअत के पास जिन के नाम आसमान पर दर्ज किए
गए हैं। आप तमाम इन्सानों के मुन्सिफ़ अल्लाह के
पास आ गए हैं और कामिल किए गए रास्तबाज़ों की
रूहों के पास। 24 नीज़ आप नए अह्द के दरमियानी
ईसा के पास आ गए हैं और उस छिड़काए गए ख़ून
के पास जो हाबील के ख़ून की तरह बदला लेने की
बात नहीं करता बल्कि एक ऐसी मुआफ़ी देता है जो
कहीं ज़्यादा मुअस्सिर है। 25 चुनाँचे ख़बरदार रहें कि
आप उस की सुनने से इन्कार न करें जो इस वक़्त
आप से हमकलाम हो रहा है। क्यूँकि अगर इस्राईली
न बचे जब उन्हों ने दुनियावी पैग़म्बर मूसा की सुनने
से इन्कार किया तो फिर हम किस तरह बचेंगे अगर
हम उस की सुनने से इन्कार करें जो आसमान से हम
से हमकलाम होता है। 26 जब अल्लाह सीना पहाड़ पर
से बोल उठा तो ज़मीन काँप गई, लेकिन अब उस
ने वादा किया है, "एक बार फिर मैं न सिर्फ़ ज़मीन
को हिला दूँगा बल्कि आसमान को भी।" 27 "एक
बार फिर" के अल्फ़ाज़ इस तरफ़ इशारा करते हैं कि
ख़ल्क़ की गई चीज़ों को हिला कर दूर किया जाएगा
और नतीजे में सिर्फ़ वह चीज़ें क़ाइम रहेंगी जिन्हें
हिलाया नहीं जा सकता।

28 चुनाँचे आएँ, हम शुक्रगुज़ार हों। क्यूँकि हमें एक
ऐसी बादशाही हासिल हो रही है जिसे हिलाया नहीं
जा सकता। हाँ, हम शुक्रगुज़ारी की इस रूह में
एहतिराम और ख़ौफ़ के साथ अल्लाह की पसन्दीदा
परस्तिश करें, 29 क्यूँकि हमारा ख़ुदा हक़ीक़तन भस्म
कर देने वाली आग है।

हम अल्लाह को किस तरह पसन्द आएँ

13 1 एक दूसरे से भाइयों की सी मुहब्बत रखते
रहें। 2 मेहमान-नवाज़ी मत भूलना, क्यूँकि
ऐसा करने से बाज़ ने नादानिस्ता तौर पर फ़रिश्तों
की मेहमान-नवाज़ी की है। 3 जो क़ैद में हैं, उन्हें यूँ
याद रखना जैसे आप ख़ुद उन के साथ क़ैद में हों।
और जिन के साथ बदसुलूकी हो रही है उन्हें यूँ याद
रखना जैसे आप से यह बदसुलूकी हो रही हो।

4 लाज़िम है कि सब के सब इज़्दिवाजी ज़िन्दगी
का एहतिराम करें। शौहर और बीवी एक दूसरे के
वफ़ादार रहें, क्यूँकि अल्लाह ज़िनाकारों और शादी
का बंधन तोड़ने वालों की अदालत करेगा।

5 आप की ज़िन्दगी पैसों के लालच से आज़ाद हो।
उसी पर इकतिफ़ा करें जो आप के पास है, क्यूँकि
अल्लाह ने फ़रमाया है, "मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा, मैं
तुझे कभी तर्क नहीं करूँगा।" 6 इस लिए हम एतिमाद
से कह सकते हैं,

"रब मेरी मदद करने वाला है,
इस लिए मैं नहीं डरूँगा।
इन्सान मेरा क्या बिगाड़ सकता है?"

7 अपने राहनुमाओं को याद रखें जिन्हों ने आप को
अल्लाह का कलाम सुनाया। इस पर ग़ौर करें कि उन
के चाल-चलन से कितनी भलाई पैदा हुई है, और
उन के ईमान के नमूने पर चलें। 8 ईसा मसीह माज़ी में,
आज और अबद तक यक्साँ है। 9 तरह तरह की और

बेगाना तालीमात आप को इधर उधर न भटकाएँ। आप तो अल्लाह के फ़ज़्ल से तक़वियत पाते हैं और इस से नहीं कि आप मुख़्तलिफ़ खानों से पर्हेज़ करते हैं। इस में कोई ख़ास फ़ाइदा नहीं है।

10 हमारे पास एक ऐसी क़ुर्बानगाह है जिस की क़ुर्बानी खाना मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करने वालों के लिए मना है। 11 क्यूँकि गो इमाम-ए-आज़म जानवरों का ख़ून गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर मुक़द्दसतरीन कमरे में ले जाता है, लेकिन उन की लाशों को ख़ैमागाह के बाहर जलाया जाता है। 12 इस वजह से ईसा को भी शहर के बाहर सलीबी मौत सहनी पड़ी ताकि क़ौम को अपने ख़ून से मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करे। 13 इस लिए आएँ, हम ख़ैमागाह से निकल कर उस के पास जाएँ और उस की बेइज़्ज़ती में शरीक हो जाएँ। 14 क्यूँकि यहाँ हमारा कोई क़ाइम रहने वाला शहर नहीं है बल्कि हम आने वाले शहर की शदीद आर्ज़ू रखते हैं। 15 चुनाँचे आएँ, हम ईसा के वसीले से अल्लाह को हम्द-ओ-सना की क़ुर्बानी पेश करें, यानी हमारे होंटों से उस के नाम की तारीफ़ करने वाला फल निकले। 16 नीज़, भलाई करना और दूसरों को अपनी बरकात में शरीक करना मत भूलना, क्यूँकि ऐसी क़ुर्बानियाँ अल्लाह को पसन्द हैं।

17 अपने राहनुमाओं की सुनें और उन की बात मानें। क्यूँकि वह आप की देख-भाल करते करते जागते रहते हैं, और इस में वह अल्लाह के सामने जवाबदिह हैं। उन की बात मानें ताकि वह ख़ुशी से अपनी ख़िदमत सरअन्जाम दें। वर्ना वह कराहते कराहते अपनी ज़िम्मादारी निभाएँगे, और यह आप के लिए मुफ़ीद नहीं होगा।

18 हमारे लिए दुआ करें, गो हमें यक़ीन है कि हमारा ज़मीर साफ़ है और हम हर लिहाज़ से अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारने के ख़्वाहिशमन्द हैं।

19 मैं ख़ासकर इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि आप दुआ करें कि अल्लाह मुझे आप के पास जल्द वापस आने की तौफ़ीक़ बख़्शे।

आख़िरी दुआ

20 अब सलामती का ख़ुदा जो अबदी अह्द के ख़ून से हमारे ख़ुदावन्द और भेड़ों के अज़ीम चरवाहे ईसा को मुर्दों में से वापस लाया 21 वह आप को हर अच्छी चीज़ से नवाज़े ताकि आप उस की मर्ज़ी पूरी कर सकें। और वह ईसा मसीह के ज़रीए हम में वह कुछ पैदा करे जो उसे पसन्द आए। उस का जलाल अज़ल से अबद तक होता रहे! आमीन।

आख़िरी अल्फ़ाज़

22 भाइयो, मेहरबानी करके नसीहत की इन बातों पर सन्जीदगी से ग़ौर करें, क्यूँकि मैं ने आप को सिर्फ़ चन्द अल्फ़ाज़ लिखे हैं। 23 यह बात आप के इल्म में होनी चाहिए कि हमारे भाई तीमुथियुस को रिहा कर दिया गया है। अगर वह जल्दी पहुँचे तो उसे साथ ले कर आप से मिलने आऊँगा।

24 अपने तमाम राहनुमाओं और तमाम मुक़द्दसीन को मेरा सलाम कहना। इटली के ईमानदार आप को सलाम कहते हैं।

25 अल्लाह का फ़ज़्ल आप सब के साथ रहे।

याक़ूब

1 [1] यह ख़त अल्लाह और ख़ुदावन्द ईसा मसीह के
ख़ादिम याक़ूब की तरफ़ से है।
ग़ैरयहूदी क़ौमों में बिखरे हुए बारह इस्राईली
क़बीलों को सलाम।

ईमान और हिक्मत

[2] मेरे भाइयो, जब आप को तरह तरह की
आज़माइशों का सामना करना पड़े तो अपने आप को
ख़ुशक़िसमत समझें, [3] क्यूँकि आप जानते हैं कि आप
के ईमान के आज़माए जाने से साबितक़दमी पैदा
होती है। [4] चुनाँचे साबितक़दमी को बढ़ने दें, क्यूँकि
जब वह तक्मील तक पहुँचेगी तो आप बालिग़ और
कामिल बन जाएंगे, और आप में कोई भी कमी
नहीं पाई जाएगी। [5] लेकिन अगर आप में से किसी
में हिक्मत की कमी हो तो अल्लाह से माँगे जो सब
को फ़य्याज़ी से और बग़ैर झिड़की दिए देता है।
वह ज़रूर आप को हिक्मत देगा। [6] लेकिन अपनी
गुज़ारिश ईमान के साथ पेश करें और शक न करें,
क्यूँकि शक करने वाला समुन्दर की मौज की मानिन्द
होता है जो हवा से इधर उधर उछलती बहती जाती
है। [7] ऐसा शख़्स न समझे कि मुझे ख़ुदावन्द से कुछ
मिलेगा, [8] क्यूँकि वह दोदिला और अपने हर काम में
ग़ैरमुस्तक़िलमिज़ाज है।

ग़ुर्बत और दौलत

[9] पस्तहाल भाई मसीह में अपने ऊँचे मर्तबे पर
फ़ख़र करे [10] जबकि दौलतमन्द शख़्स अपने अदना
मर्तबे पर फ़ख़र करे, क्यूँकि वह जंगली फूल की
तरह जल्द ही जाता रहेगा। [11] जब सूरज तुलू होता
है तो उस की झुलसा देने वाली धूप में पौदा मुरझा
जाता, उस का फूल गिर जाता और उस की तमाम
ख़ूबसूरती ख़त्म हो जाती है। उस तरह दौलतमन्द
शख़्स भी काम करते करते मुरझा जाएगा।

आज़माइश

[12] मुबारक है वह जो आज़माइश के वक़्त
साबितक़दम रहता है, क्यूँकि क़ाइम रहने पर उसे
ज़िन्दगी का वह ताज मिलेगा जिस का वादा अल्लाह
ने उन से किया है जो उस से मुहब्बत रखते हैं।
[13] आज़माइश के वक़्त कोई न कहे कि अल्लाह
मुझे आज़माइश में फंसा रहा है। न तो अल्लाह को
बुराई से आज़माइश में फंसाया जा सकता है, न
वह किसी को फंसाता है। [14] बल्कि हर एक की
अपनी बुरी ख़्वाहिशात उसे खैंच कर और उकसा कर
आज़माइश में फंसा देती हैं। [15] फिर यह ख़्वाहिशात
हामिला हो कर गुनाह को जन्म देती हैं और गुनाह
बालिग़ हो कर मौत को जन्म देता है।
[16] मेरे अज़ीज़ भाइयो, फ़रेब मत खाना! [17] हर
अच्छी नेमत और हर अच्छा तुह्फ़ा आसमान से
नाज़िल होता है, नूरों के बाप से, जिस में न कभी
तब्दीली आती है, न बदलते हुए साइयों की सी हालत
पाई जाती है। [18] उसी ने अपनी मर्ज़ी से हमें सच्चाई
के कलाम के वसीले से पैदा किया। यूँ हम एक तरह
से उस की तमाम मख़्लूक़ात का पहला फल हैं।

सुनना काफ़ी नहीं है

[19] मेरे अज़ीज़ भाइयो, इस का ख़याल रखना, हर
शख़्स सुनने में तेज़ हो, लेकिन बोलने और ग़ुस्सा
करने में धीमा। [20] क्यूँकि इन्सान का ग़ुस्सा वह
रास्तबाज़ी पैदा नहीं करता जो अल्लाह चाहता है।
[21] चुनाँचे अपनी ज़िन्दगी की गन्दी आदतें और शरीर
चाल-चलन दूर करके हलीमी से कलाम-ए-मुक़द्दस

का वह बीज क़बूल करें जो आप के अन्दर बोया गया है, क्यूँकि यही आप को नजात दे सकता है।

22 कलाम-ए-मुक़द्दस को न सिर्फ़ सुनें बल्कि उस पर अमल भी करें, वर्ना आप अपने आप को फ़रेब देंगे। 23 जो कलाम को सुन कर उस पर अमल नहीं करता वह उस आदमी की मानिन्द है जो आईने में अपने चिहरे पर नज़र डालता है। 24 अपने आप को देख कर वह चला जाता है और फ़ौरन भूल जाता है कि मैं ने किया कुछ देखा। 25 उस की निस्बत वह मुबारक है जो आज़ाद करने वाली कामिल शरीअत में ग़ौर से नज़र डाल कर उस में क़ाइम रहता है और उसे सुनने के बाद नहीं भूलता बल्कि उस पर अमल करता है।

26 क्या आप अपने आप को दीनदार समझते हैं? अगर आप अपनी ज़बान पर क़ाबू नहीं रख सकते तो आप अपने आप को फ़रेब देते हैं। फिर आप की दीनदारी का इज़हार बेकार है। 27 ख़ुदा बाप की नज़र में दीनदारी का पाक और बेदाग़ इज़हार यह है, यतीमों और बेवाओं की देख-भाल करना जब वह मुसीबत में हों और अपने आप को दुनिया की आलूदगी से बचाए रखना।

तास्सुब से ख़बरदार

2 1 मेरे भाइयो, लाज़िम है कि आप जो हमारे जलाली ख़ुदावन्द ईसा मसीह पर ईमान रखते हैं जानिबदारी न दिखाएँ। 2 फ़र्ज़ करें कि एक आदमी सोने की अंगूठी और शानदार कपड़े पहने हुए आप की जमाअत में आ जाए और साथ साथ एक ग़रीब आदमी भी मैले-कुचैले कपड़े पहने हुए अन्दर आए। 3 और आप शानदार कपड़े पहने हुए आदमी पर ख़ास ध्यान दे कर उस से कहें, "यहाँ इस अच्छी कुर्सी पर तश्रीफ़ रखें," लेकिन ग़रीब आदमी को कहें, "वहाँ खड़ा हो जा" या "आ, मेरे पाँओ के पास फ़र्श पर बैठ जा।" 4 क्या आप ऐसा करने से मुजरिमाना ख़यालात वाले मुन्सिफ़ नहीं साबित हुए? क्यूँकि आप ने लोगों में नारवा फ़र्क़ किया है।

5 मेरे अज़ीज़ भाइयो, सुनें! क्या अल्लाह ने उन्हें नहीं चुना जो दुनिया की नज़र में ग़रीब हैं ताकि वह ईमान में दौलतमन्द हो जाएँ? यही लोग वह बादशाही मीरास में पाएँगे जिस का वादा अल्लाह ने उन से किया है जो उसे प्यार करते हैं। 6 लेकिन आप ने ज़रूरतमन्दों की बेइज़्ज़ती की है। ज़रा सोच लें, वह कौन हैं जो आप को दबाते और अदालत में घसीट कर ले जाते हैं? क्या यह दौलतमन्द ही नहीं हैं? 7 वही तो ईसा पर कुफ़्र बकते हैं, उस अज़ीम नाम पर जिस के पैरोकार आप बन गए हैं।

8 अल्लाह चाहता है कि आप कलाम-ए-मुक़द्दस में मज़कूर शाही शरीअत पूरी करें, "अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आप से रखता है।" 9 चुनाँचे जब आप जानिबदारी दिखाते हैं तो गुनाह करते हैं और शरीअत आप को मुजरिम ठहराती है। 10 मत भूलना कि जिस ने शरीअत का सिर्फ़ एक हुक्म तोड़ा है वह पूरी शरीअत का क़ुसूरवार ठहरता है। 11 क्यूँकि जिस ने फ़रमाया, "ज़िना न करना" उस ने यह भी कहा, "क़त्ल न करना।" हो सकता है कि आप ने ज़िना तो न किया हो, लेकिन किसी को क़त्ल किया हो। तो भी आप उस एक जुर्म की वजह से पूरी शरीअत तोड़ने के मुजरिम बन गए हैं। 12 चुनाँचे जो कुछ भी आप कहते और करते हैं याद रखें कि आज़ाद करने वाली शरीअत आप की अदालत करेगी। 13 क्यूँकि अल्लाह अदालत करते वक़्त उस पर रहम नहीं करेगा जिस ने ख़ुद रहम नहीं दिखाया। लेकिन रहम अदालत पर ग़ालिब आ जाता है। जब आप रहम करेंगे तो अल्लाह आप पर रहम करेगा।

ईमान नेक कामों के बग़ैर मुर्दा है

14 मेरे भाइयो, अगर कोई ईमान रखने का दावा करे, लेकिन उस के मुताबिक़ ज़िन्दगी न गुज़ारे तो उस का क्या फ़ाइदा है? क्या ऐसा ईमान उसे नजात दिला सकता है? 15 फ़र्ज़ करें कि कोई भाई या बहन कपड़ों और रोज़मर्रा रोटी की ज़रूरतमन्द हो। 16 यह

देख कर आप में से कोई उस से कहे, “अच्छा जी,
ख़ुदा हाफ़िज़। गर्म कपड़े पहनो और जी भर कर
खाना खाओ।” लेकिन वह ख़ुद यह ज़रूरियात पूरी
करने में मदद न करे। क्या इस का कोई फ़ाइदा है?
17 ग़रज़, महज़ ईमान काफ़ी नहीं। अगर वह नेक
कामों से अमल में न लाया जाए तो वह मुर्दा है।

18 हो सकता है कोई एतिराज़ करे, “एक शख़्स के
पास तो ईमान होता है, दूसरे के पास नेक काम।”
आएँ, मुझे दिखाएँ कि आप नेक कामों के बग़ैर
किस तरह ईमान रख सकते हैं। यह तो नामुमकिन
है। लेकिन मैं ज़रूर आप को अपने नेक कामों से
दिखा सकता हूँ कि मैं ईमान रखता हूँ। 19 अच्छा,
आप कहते हैं, “हम ईमान रखते हैं कि एक ही ख़ुदा
है।” शाबाश, यह बिलकुल सहीह है। शयातीन भी
यह ईमान रखते हैं, गो वह यह जान कर ख़ौफ़ के
मारे थरथराते हैं। 20 होश में आएँ! क्या आप नहीं
समझते कि नेक आमाल के बग़ैर ईमान बेकार है?
21 हमारे बाप इब्राहीम पर ग़ौर करें। वह तो इसी
वजह से रास्तबाज़ ठहराया गया कि उस ने अपने
बेटे इस्हाक़ को क़ुर्बानगाह पर पेश किया। 22 आप
ख़ुद देख सकते हैं कि उस का ईमान और नेक काम
मिल कर अमल कर रहे थे। उस का ईमान तो उस से
मुकम्मल हुआ जो कुछ उस ने किया 23 और इस तरह
ही कलाम-ए-मुक़द्दस की यह बात पूरी हुई, “इब्राहीम
ने अल्लाह पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे
रास्तबाज़ क़रार दिया।” इसी वजह से वह “अल्लाह
का दोस्त” कहलाया। 24 यूँ आप ख़ुद देख सकते हैं
कि इन्सान अपने नेक आमाल की बिना पर रास्तबाज़
क़रार दिया जाता है, न कि सिर्फ़ ईमान रखने की
वजह से।

25 राहब फ़ाहिशा की मिसाल भी लें। उसे भी अपने
कामों की बिना पर रास्तबाज़ क़रार दिया गया जब
उस ने इस्राईली जासूसों की मेहमान-नवाज़ी की और
उन्हें शहर से निकलने का दूसरा रास्ता दिखा कर
बचाया।

26 ग़रज़, जिस तरह बदन रूह के बग़ैर मुर्दा है उसी
तरह ईमान भी नेक आमाल के बग़ैर मुर्दा है।

ज़बान

3 1 मेरे भाइयो, आप में से ज़्यादा उस्ताद न बनें।
आप को मालूम है कि हम उस्तादों की ज़्यादा
सख़्ती से अदालत की जाएगी। 2 हम सब से तो कई
तरह की ग़लतियाँ सरज़द होती हैं। लेकिन जिस
शख़्स से बोलने में कभी ग़लती नहीं होती वह कामिल
है और अपने पूरे बदन को क़ाबू में रखने के क़ाबिल
है। 3 हम घोड़े के मुँह में लगाम का दहाना रख देते
हैं ताकि वह हमारे हुक्म पर चले, और इस तरह हम
अपनी मर्ज़ी से उस का पूरा जिस्म चला लेते हैं। 4 या
बादबानी जहाज़ को मिसाल लें। जितना भी बड़ा वह
हो और जितनी भी तेज़ हवा चलती हो नाख़ुदा एक
छोटी सी पतवार के ज़रीए उस का रुख़ ठीक रखता
है। यूँ ही वह उसे अपनी मर्ज़ी से चला लेता है। 5 इसी
तरह ज़बान एक छोटा सा उज़ू है, लेकिन वह बड़ी
बड़ी बातें करती है।

देखें, एक बड़े जंगल को भस्म करने के लिए एक ही
चिंगारी काफ़ी होती है। 6 ज़बान भी आग की मानिन्द
है। बदन के दीगर आज़ा के दरमियान रह कर उस में
नारास्ती की पूरी दुनिया पाई जाती है। वह पूरे बदन
को आलूदा कर देती है, हाँ इन्सान की पूरी ज़िन्दगी
को आग लगा देती है, क्यूँकि वह ख़ुद जहन्नुम की
आग से सुलगाई गई है। 7 देखें, इन्सान हर क़िस्म के
जानवरों पर क़ाबू पा लेता है और उस ने ऐसा किया
भी है, ख़्वाह जंगली जानवर हों या परिन्दे, रेंगने वाले
हों या समुन्दरी जानवर। 8 लेकिन ज़बान पर कोई
क़ाबू नहीं पा सकता, इस बेताब और शरीर चीज़ पर
जो मोहलिक ज़हर से लबालब भरी है। 9 ज़बान से
हम अपने ख़ुदावन्द और बाप की सताइश भी करते
हैं और दूसरों पर लानत भी भेजते हैं, जिन्हें अल्लाह की
सूरत पर बनाया गया है। 10 एक ही मुँह से सताइश
और लानत निकलती है। मेरे भाइयो, ऐसा नहीं होना
चाहिए। 11 यह कैसे हो सकता है कि एक ही चश्मे से

मीठा और कड़वा पानी फूट निकले। 12 मेरे भाइयो,
क्या अन्जीर के दरख़्त पर ज़ैतून लग सकते हैं या
अंगूर की बेल पर अन्जीर? हरगिज़ नहीं! इसी तरह
नमकीन चश्मे से मीठा पानी नहीं निकल सकता।

आसमान से हिक्मत

13 क्या आप में से कोई दाना और समझदार है?
वह यह बात अपने अच्छे चाल-चलन से ज़ाहिर करे,
हिक्मत से पैदा होने वाली हलीमी के नेक कामों से।
14 लेकिन ख़बरदार! अगर आप दिल में हसद की
कड़वाहट और ख़ुदग़रज़ी पाल रहे हैं तो इस पर
शेख़ी मत मारना, न सच्चाई के ख़िलाफ़ झूट बोलें।
15 ऐसा फ़ख़र आसमान की तरफ़ से नहीं है, बल्कि
दुनियावी, ग़ैररुहानी और इब्लीस से है। 16 क्यूँकि
जहाँ हसद और ख़ुदग़रज़ी है वहाँ फ़साद और हर
शरीर काम पाया जाता है। 17 आसमान की हिक्मत
फ़र्क़ है। अव्वल तो वह पाक और मुक़द्दस है।
नीज़ वह अम्नपसन्द, नर्मदिल, फ़रमाँबरदार, रहम
और अच्छे फल से भरी हुई, ग़ैरजानिबदार और
ख़ुलूसदिल है। 18 और जो सुलह कराते हैं उन के
लिए रास्तबाज़ी का फल सलामती से बोया जाता है।

दुनिया से दोस्ती

4 1 यह लड़ाइयाँ और झगड़े जो आप के दरमियान
हैं कहाँ से आते हैं? क्या इन का सरचश्मा वह
बुरी ख़्वाहिशात नहीं जो आप के आज़ा में लड़ती
रहती हैं? 2 आप किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखते हैं,
लेकिन उसे हासिल नहीं कर सकते। आप क़त्ल और
हसद करते हैं, लेकिन जो कुछ आप चाहते हैं वह पा
नहीं सकते। आप झगड़ते और लड़ते हैं। तो भी आप
के पास कुछ नहीं है, क्यूँकि आप अल्लाह से माँगते
नहीं। 3 और जब आप माँगते हैं तो आप को कुछ नहीं
मिलता। वजह यह है कि आप ग़लत नीयत से माँगते
हैं। आप इस से अपनी ख़ुदग़रज़ ख़्वाहिशात पूरी
करना चाहते हैं। 4 बेवफ़ा लोगो! क्या आप को नहीं
मालूम कि दुनिया का दोस्त अल्लाह का दुश्मन होता
है? जो दुनिया का दोस्त बनना चाहता है वह अल्लाह
का दुश्मन बन जाता है। 5 या क्या आप समझते हैं
कि कलाम-ए-मुक़द्दस की यह बात बेतुकी सी है कि
अल्लाह ग़ैरत से उस रूह का आरज़ूमन्द है जिस को
उस ने हमारे अन्दर सुकूनत करने दिया? 6 लेकिन
वह हमें इस से कहीं ज़्यादा फ़ज़्ल बख़्शता है।
कलाम-ए-मुक़द्दस यूँ फ़रमाता है, "अल्लाह मग़ुरूरों
का मुक़ाबला करता लेकिन फ़रोतनों पर मेहरबानी
करता है।"

7 ग़रज़, अल्लाह के ताबे हो जाएँ। इब्लीस का
मुक़ाबला करें तो वह भाग जाएगा। 8 अल्लाह के
क़रीब आ जाएँ तो वह आप के क़रीब आएगा।
गुनाहगारो, अपने हाथों को पाक-साफ़ करें। दोदिलो,
अपने दिलों को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करें। 9 अफ़सोस
करें, मातम करें, ख़ूब रोएँ। आप की हंसी मातम में
बदल जाए और आप की ख़ुशी मायूसी में। 10 अपने
आप को ख़ुदावन्द के सामने नीचा करें तो वह आप
को सरफ़राज़ करेगा।

एक दूसरे का मुन्सिफ़ मत बनना

11 भाइयो, एक दूसरे पर तुहमत मत लगाना। जो
अपने भाई पर तुहमत लगाता या उसे मुजरिम ठहराता
है वह शरीअत पर तुहमत लगाता है और शरीअत
को मुजरिम ठहराता है। और जब आप शरीअत पर
तुहमत लगाते हैं तो आप उस के पैरोकार नहीं रहते
बल्कि उस के मुन्सिफ़ बन गए हैं। 12 शरीअत देने
वाला और मुन्सिफ़ सिर्फ़ एक ही है और वह है अल्लाह
जो नजात देने और हलाक करने के क़ाबिल है। तो
फिर आप कौन हैं जो अपने आप को मुन्सिफ़ समझ
कर अपने पड़ोसी को मुजरिम ठहरा रहे हैं!

शेख़ी मत मारना

13 और अब मेरी बात सुनें, आप जो कहते हैं,
"आज या कल हम फ़ुलाँ फ़ुलाँ शहर में जाएंगे।
वहाँ हम एक साल ठहर कर कारोबार करके पैसे
कमाएँगे।" 14 देखें, आप यह भी नहीं जानते कि कल

क्या होगा। आप की ज़िन्दगी चीज़ ही किया है! आप
भाप ही हैं जो थोड़ी देर के लिए नज़र आती, फिर
ग़ाइब हो जाती है। 15 बल्कि आप को यह कहना
चाहिए, "अगर ख़ुदावन्द की मर्ज़ी हुई तो हम जिएँगे
और यह या वह करेंगे।" 16 लेकिन फ़िलहाल आप
शेख़ी मार कर अपने ग़ुरूर का इज़हार करते हैं। इस
क़िस्म की तमाम शेख़ीबाज़ी बुरी है।
17 चुनाँचे जो जानता है कि उसे क्या क्या नेक काम
करना है, लेकिन फिर भी कुछ नहीं करता वह गुनाह
करता है।

दौलतमन्दो, ख़बरदार!

5 1 दौलतमन्दो, अब मेरी बात सुनें! ख़ूब रोएँ और
गिर्या-ओ-ज़ारी करें, क्यूँकि आप पर मुसीबत
आने वाली है। 2 आप की दौलत सड़ गई है और
कीड़े आप के शानदार कपड़े खा गए हैं। 3 आप के
सोने और चाँदी को ज़ंग लग गया है। और उन की
ज़ंगआलूदा हालत आप के ख़िलाफ़ गवाही देगी और
आप के जिस्मों को आग की तरह खा जाएगी। क्यूँकि
आप ने इन आख़िरी दिनों में अपने लिए ख़ज़ाने जमा
कर लिए हैं। 4 देखें, जो मज़दूरी आप ने फ़सल की
कटाई करने वालों से बाज़ रखी है वह आप के
ख़िलाफ़ चिल्ला रही है। और आप की फ़सल जमा
करने वालों की चीख़ें आसमानी लश्करों के रब के
कानों तक पहुँच गई हैं। 5 आप ने दुनिया में अय्याशी
और ऐश-ओ-इश्रत की ज़िन्दगी गुज़ारी है। ज़बह के
दिन आप ने अपने आप को मोटा-ताज़ा कर दिया
है। 6 आप ने रास्तबाज़ को मुजरिम ठहरा कर क़त्ल
किया है, और उस ने आप का मुक़ाबला नहीं किया।

सब्र और दुआ

7 भाइयो, अब सब्र से ख़ुदावन्द की आमद के
इन्तिज़ार में रहें। किसान पर ग़ौर करें जो इस
इन्तिज़ार में रहता है कि ज़मीन अपनी क़ीमती फ़सल
पैदा करे। वह कितने सब्र से ख़रीफ़ और बहार की
बारिशों का इन्तिज़ार करता है! 8 आप भी सब्र करें
और अपने दिलों को मज़बूत रखें, क्यूँकि ख़ुदावन्द
की आमद क़रीब आ गई है।
9 भाइयो, एक दूसरे पर मत बुड़बुड़ाना, वर्ना आप
की अदालत की जाएगी। मुन्सिफ़ तो दरवाज़े पर
खड़ा है। 10 भाइयो, उन नबियों के नमूने पर चलें
जिन्हों ने रब के नाम में कलाम पेश करके सब्र से
दुख उठाया। 11 देखें, हम उन्हें मुबारक कहते हैं जो
सब्र से दुख बर्दाश्त करते थे। आप ने अय्यूब की
साबितक़दमी के बारे में सुना है और यह भी देख
लिया कि रब ने आख़िर में क्या कुछ किया, क्यूँकि
रब बहुत मेहरबान और रहीम है।
12 मेरे भाइयो, सब से बढ़ कर यह कि आप क़सम
न खाएँ, न आसमान की क़सम, न ज़मीन की, न
किसी और चीज़ की। जब आप "हाँ" कहना चाहते
हैं तो बस "हाँ" ही काफ़ी है। और अगर इन्कार
करना चाहें तो बस "नहीं" कहना काफ़ी है, वर्ना
आप मुजरिम ठहरेंगे।
13 क्या आप में से कोई मुसीबत में फंसा हुआ है?
वह दुआ करे। क्या कोई ख़ुश है? वह सताइश के
गीत गाए । 14 क्या आप में से कोई बीमार है? वह
जमाअत के बुज़ुर्गों को बुलाए ताकि वह आ कर उस
के लिए दुआ करें और ख़ुदावन्द के नाम में उस पर
तेल मलें। 15 फिर ईमान से की गई दुआ मरीज़ को
बचाएगी और ख़ुदावन्द उसे उठा खड़ा करेगा। और
अगर उस ने गुनाह किया हो तो उसे मुआफ़ किया
जाएगा। 16 चुनाँचे एक दूसरे के सामने अपने गुनाहों
का इक़्रार करें और एक दूसरे के लिए दुआ करें ताकि
आप शिफ़ा पाएँ। रास्त शख़्स की मुअस्सिर दुआ से
बहुत कुछ हो सकता है। 17 इल्यास हम जैसा इन्सान
था। लेकिन जब उस ने ज़ोर से दुआ की कि बारिश
न हो तो साढ़े तीन साल तक बारिश न हुई। 18 फिर
उस ने दुबारा दुआ की तो आसमान ने बारिश अता
की और ज़मीन ने अपनी फ़सलें पैदा कीं।
19 मेरे भाइयो, अगर आप में से कोई सच्चाई से
भटक जाए और कोई उसे सहीह राह पर वापस लाए
20 तो यक़ीन जानें, जो किसी गुनाहगार को उस की

ग़लत राह से वापस लाता है वह उस की जान को
मौत से बचाएगा और गुनाहों की बड़ी तादाद को
छुपा देगा।

१-पतरस

1 [1] यह ख़त ईसा मसीह के रसूल पतरस की तरफ़
से है।

मैं अल्लाह के चुने हुओं को लिख रहा हूँ, दुनिया के
उन मेहमानों को जो पुन्तुस, गलतिया, कप्पदुकिया,
आसिया और बिथुनिया के सूबों में बिखरे हुए हैं।
[2] ख़ुदा बाप ने आप को बहुत देर पहले जान कर
चुन लिया और उस के रूह ने आप को मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस कर दिया। नतीजे में आप ईसा मसीह के ताबे
और उस के छिड़काए गए ख़ून से पाक-साफ़ हो गए
हैं।

अल्लाह आप को भरपूर फ़ज़्ल और सलामती बख़्शे।

ज़िन्दा उम्मीद

[3] ख़ुदा हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के बाप की
तारीफ़ हो! अपने अज़ीम रहम से उस ने ईसा मसीह
को ज़िन्दा करने के वसीले से हमें नए सिरे से पैदा
किया है। इस से हमें एक ज़िन्दा उम्मीद मिली है,
[4] एक ऐसी मीरास जो कभी नहीं सड़ेगी, कभी नहीं
नापाक हो जाएगी और कभी नहीं मुरझाएगी। क्यूँकि
यह आसमान पर आप के लिए महफ़ूज़ रखी गई है।
[5] और अल्लाह आप के ईमान के ज़रीए अपनी क़ुदरत
से आप की उस वक़्त तक हिफ़ाज़त करता रहेगा
जब तक आप को नजात न मिल जाए, वह नजात जो
आख़िरत के दिन सब पर ज़ाहिर होने के लिए तय्यार
है।

[6] उस वक़्त आप ख़ुशी मनाएँगे, गो फ़िलहाल आप
को थोड़ी देर के लिए तरह तरह की आज़माइशों का
सामना करके ग़म खाना पड़ता है [7] ताकि आप का
ईमान असली साबित हो जाए। क्यूँकि जिस तरह
आग सोने को आज़मा कर ख़ालिस बना देती है
उसी तरह आप का ईमान भी आज़माया जा रहा
है, हालाँकि यह फ़ानी सोने से कहीं ज़्यादा क़ीमती
है। क्यूँकि अल्लाह चाहता है कि आप को उस दिन
तारीफ़, जलाल और इज़्ज़त मिल जाए जब ईसा
मसीह ज़ाहिर होगा। [8] उसी को आप प्यार करते हैं
अगरचे आप ने उसे देखा नहीं, और उसी पर आप
ईमान रखते हैं गो वह आप को इस वक़्त नज़र नहीं
आता। हाँ, आप दिल में नाक़ाबिल-ए-बयान और
जलाली ख़ुशी मनाएँगे, [9] जब आप वह कुछ पाएँगे
जो ईमान की मन्ज़िल-ए-मक़सूद है यानी अपनी जानों
की नजात।

[10] नबी इसी नजात की तलाश और तफ़्तीश में लगे
रहे, और उन्हों ने उस फ़ज़्ल की पेशगोई की जो
अल्लाह आप को देने वाला था। [11] उन्हों ने मालूम
करने की कोशिश की कि मसीह का रूह जो उन में
था किस वक़्त या किन हालात के बारे में बात कर
रहा था जब उस ने मसीह के दुख और बाद के जलाल
की पेशगोई की। [12] उन पर इतना ज़ाहिर किया गया
कि उन की यह पेशगोइयाँ उन के अपने लिए नहीं थीं,
बल्कि आप के लिए। और अब यह सब कुछ आप
को उन ही के वसीले से पेश किया गया है जिन्हों ने
आसमान से भेजे गए रूह-उल-क़ुद्स के ज़रीए आप
को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाई है। यह ऐसी बातें हैं
जिन पर फ़रिश्ते भी नज़र डालने के आरज़ूमन्द हैं।

मुक़द्दस ज़िन्दगी गुज़ारना

[13] चुनाँचे ज़हनी तौर पर कमरबस्ता हो जाएँ।
होशमन्दी से अपनी पूरी उम्मीद उस फ़ज़्ल पर रखें
जो आप को ईसा मसीह के ज़ुहूर पर बख़्शा जाएगा।
[14] आप अल्लाह के ताबेफ़रमान फ़र्ज़न्द हैं, इस लिए
उन बुरी ख़्वाहिशात को अपनी ज़िन्दगी में जगह न दें
जो आप जाहिल होते वक़्त रखते थे। वर्ना वह आप
की ज़िन्दगी को अपने साँचे में ढाल लेंगी। [15] इस
के बजाय अल्लाह की मानिन्द बनें जिस ने आप को

बुलाया है। जिस तरह वह क़ुद्दूस है उसी तरह आप भी
हर वक़्त मुक़द्दस ज़िन्दगी गुज़ारें। 16 क्यूँकि कलाम-
ए-मुक़द्दस में लिखा है, "अपने आप को मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस रखो क्यूँकि मैं मुक़द्दस हूँ।"

17 और याद रखें कि आसमानी बाप जिस से आप
दुआ करते हैं जानिबदारी नहीं करता बल्कि आप के
अमल के मुताबिक़ आप का फ़ैसला करेगा। चुनाँचे
जब तक आप इस दुनिया के मेहमान रहेंगे ख़ुदा के
ख़ौफ़ में ज़िन्दगी गुज़ारें। 18 क्यूँकि आप ख़ुद जानते
हैं कि आप को बापदादा की बेमानी ज़िन्दगी से
छुड़ाने के लिए क्या फ़िद्या दिया गया। यह सोने या
चाँदी जैसी फ़ानी चीज़ नहीं थी 19 बल्कि मसीह का
क़ीमती ख़ून था। उसी को बेनुक़्स और बेदाग़ लेले
की हैसियत से हमारे लिए क़ुर्बान किया गया। 20 उसे
दुनिया की तख़्लीक़ से पेशतर चुना गया, लेकिन
इन आख़िरी दिनों में आप की ख़ातिर ज़ाहिर किया
गया। 21 और उस के वसीले से आप अल्लाह पर ईमान
रखते हैं जिस ने उसे मुर्दों में से ज़िन्दा करके इज़्ज़त-
ओ-जलाल दिया ताकि आप का ईमान और उम्मीद
अल्लाह पर हो।

22 सच्चाई के ताबे हो जाने से आप को मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस कर दिया गया और आप के दिलों में भाइयों
के लिए बेरिया मुहब्बत डाली गई है। चुनाँचे अब
एक दूसरे को ख़ुलूसदिली और लगन से प्यार करते
रहें। 23 क्यूँकि आप की नए सिरे से पैदाइश हुई है।
और यह किसी फ़ानी बीज का फल नहीं है बल्कि
अल्लाह के लाफ़ानी, ज़िन्दा और क़ाइम रहने वाले
कलाम का फल है। 24 यूँ कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता
है,

"तमाम इन्सान घास ही हैं,
उन की तमाम शान-ओ-शौकत जंगली फूल की
मानिन्द है।
घास तो मुरझा जाती और फूल गिर जाता है,
25 लेकिन रब का कलाम अबद तक क़ाइम रहता
है।"

मज़कूरा कलाम अल्लाह की ख़ुशख़बरी है जो आप
को सुनाई गई है।

ज़िन्दा पत्थर और मुक़द्दस क़ौम

2 1 चुनाँचे अपनी ज़िन्दगी से तमाम तरह की
बुराई, धोकेबाज़ी, रियाकारी, हसद और
बुह्तान निकालें। 2 चूँकि आप नौमौलूद बच्चे हैं इस
लिए ख़ालिस रुहानी दूध पीने के आरज़ूमन्द रहें,
क्यूँकि इसे पीने से ही आप बढ़ते बढ़ते नजात की
नौबत तक पहुँचेंगे। 3 जिन्हों ने ख़ुदावन्द की भलाई
का तजरिबा किया है उन के लिए ऐसा करना ज़रूरी
है।

4 ख़ुदावन्द के पास आएँ, उस ज़िन्दा पत्थर के
पास जिसे इन्सानों ने रद्द किया है, लेकिन जो अल्लाह
के नज़्दीक चुनीदा और क़ीमती है। 5 और आप भी
ज़िन्दा पत्थर हैं जिन को अल्लाह अपने रुहानी मक़्दिस
को तामीर करने के लिए इस्तेमाल कर रहा है। न
सिर्फ़ यह बल्कि आप उस के मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
इमाम हैं। ईसा मसीह के वसीले से आप ऐसी रुहानी
क़ुर्बानियाँ पेश कर रहे हैं जो अल्लाह को पसन्द हैं।
6 क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है,

"देखो, मैं सिय्यून में एक पत्थर रख देता हूँ,
कोने का एक चुनीदा और क़ीमती पत्थर।
जो उस पर ईमान लाएगा
उसे शर्मिन्दा नहीं किया जाएगा।"

7 यह पत्थर आप के नज़्दीक जो ईमान रखते हैं
बेशक़ीमत है। लेकिन जो ईमान नहीं लाए उन्हों ने
उसे रद्द किया।

"जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने रद्द किया
वह कोने का बुन्यादी पत्थर बन गया।"
8 नीज़ वह एक ऐसा पत्थर है
"जो ठोकर का बाइस बनेगा,
एक चटान जो ठेस लगने का सबब होगी।"

वह इस लिए ठोकर खाते हैं क्यूँकि वह कलाम-ए-
मुक़द्दस के ताबे नहीं होते। यही कुछ अल्लाह की उन
के लिए मर्ज़ी थी।

9 लेकिन आप अल्लाह की चुनी हुई नस्ल हैं, आप
आसमानी बादशाह के इमाम और उस की मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस क़ौम हैं। आप उस की मिलकियत बन
गए हैं ताकि अल्लाह के क़वी कामों का एलान करें,
क्यूँकि वह आप को तारीकी से अपनी हैरतअंगेज़
रौशनी में लाया है। 10 एक वक़्त था जब आप उस
की क़ौम नहीं थे, लेकिन अब आप अल्लाह की क़ौम
हैं। पहले आप पर रहम नहीं हुआ था, लेकिन अब
अल्लाह ने आप पर अपने रहम का इज़हार किया है।

अल्लाह के ख़ादिम

11 अज़ीज़ो, आप इस दुनिया में अजनबी और
मेहमान हैं। इस लिए मैं आप को ताकीद करता हूँ कि
आप जिस्मानी ख़्वाहिशात का इन्कार करें। क्यूँकि
यह आप की जान से लड़ती हैं। 12 ग़ैरईमानदारों के
दरमियान रहते हुए इतनी अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारें कि
गो वह आप पर ग़लत काम करने की तुहमत भी
लगाएँ तो भी उन्हें आप के नेक काम नज़र आएँ
और उन्हें अल्लाह की आमद के दिन उस की तम्जीद
करनी पड़े।

13 ख़ुदावन्द की ख़ातिर हर इन्सानी इख़तियार के
ताबे रहें, ख़्वाह बादशाह हो जो सब से आला
इख़तियार रखने वाला है, 14 ख़्वाह उस के वज़ीर
जिन्हें उस ने इस लिए मुक़र्रर किया है कि वह ग़लत
काम करने वालों को सज़ा और अच्छा काम करने
वालों को शाबाश दें। 15 क्यूँकि अल्लाह की मर्ज़ी है
कि आप अच्छा काम करने से नासमझ लोगों की
जाहिल बातों को बन्द करें। 16 आप आज़ाद हैं,
इस लिए आज़ादाना ज़िन्दगी गुज़ारें। लेकिन अपनी
आज़ादी को ग़लत काम छुपाने के लिए इस्तेमाल
न करें, क्यूँकि आप अल्लाह के ख़ादिम हैं। 17 हर
एक का मुनासिब एहतिराम करें, अपने बहन-भाइयों
से मुहब्बत रखें, ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें, बादशाह का
एहतिराम करें।

मसीह के दुख का नमूना

18 ऐ ग़ुलामो, हर लिहाज़ से अपने मालिकों का
एहतिराम करके उन के ताबे रहें। और यह सुलूक न
सिर्फ़ उन के साथ हो जो नेक और नर्मदिल हैं बल्कि
उन के साथ भी जो ज़ालिम हैं। 19 क्यूँकि अगर कोई
अल्लाह की मर्ज़ी का ख़याल करके बेइन्साफ़ तक्लीफ़
का ग़म सब्र से बर्दाश्त करे तो यह अल्लाह का फ़ज़्ल
है। 20 बेशक इस में फ़ख़र की कोई बात नहीं अगर
आप सब्र से पिटाई की वह सज़ा बर्दाश्त करें जो आप
को ग़लत काम करने की वजह से मिली हो। लेकिन
अगर आप को अच्छा काम करने की वजह से दुख
सहना पड़े और आप यह सज़ा सब्र से बर्दाश्त करें तो
यह अल्लाह का फ़ज़्ल है। 21 आप को इसी के लिए
बुलाया गया है। क्यूँकि मसीह ने आप की ख़ातिर
दुख सहने में आप के लिए एक नमूना छोड़ा है। और
वह चाहता है कि आप उस के नक़्श-ए-क़दम पर
चलें। 22 उस ने तो कोई गुनाह न किया, और न कोई
फ़रेब की बात उस के मुँह से निकली। 23 जब लोगों
ने उसे गालियाँ दीं तो उस ने जवाब में गालियाँ न
दीं। जब उसे दुख सहना पड़ा तो उस ने किसी को
धमकी न दी बल्कि उस ने अपने आप को अल्लाह
के हवाले कर दिया जो इन्साफ़ से अदालत करता
है। 24 मसीह ख़ुद अपने बदन पर हमारे गुनाहों को
सलीब पर ले गया ताकि हम गुनाहों के एतिबार से मर
जाएँ और यूँ हमारा गुनाह से ताल्लुक़ ख़त्म हो जाए।
अब वह चाहता है कि हम रास्तबाज़ी की ज़िन्दगी
गुज़ारें। क्यूँकि आप को उसी के ज़ख़्मों के वसीले से
शिफ़ा मिली है। 25 पहले आप आवारा भेड़ों की तरह
आवारा फिर रहे थे, लेकिन अब आप अपनी जानों
के चरवाहे और निगरान के पास लौट आए हैं।

बीवी और शौहर

3 1 इसी तरह आप बीवियों को भी अपने अपने
शौहर के ताबे रहना है। क्यूँकि इस तरह वह
जो ईमान नहीं रखते अपनी बीवी के चाल-चलन से

जीते जा सकते हैं। कुछ कहने की ज़रूरत नहीं रहेगी
2 क्यूँकि वह देखेंगे कि आप कितनी पाकीज़गी से
ख़ुदा के ख़ौफ़ में ज़िन्दगी गुज़ारती हैं। 3 इस की फ़िक्र
मत करना कि आप ज़ाहिरी तौर पर आरास्ता हों,
मसलन ख़ास तौर-तरीक़ों से गुंधे हुए बालों से या
सोने के ज़ेवर और शानदार लिबास पहनने से। 4 इस
के बजाय इस की फ़िक्र करें कि आप की बातिनी
शख़्सियत आरास्ता हो। क्यूँकि जो रूह नर्मदिली
और सुकून के लाफ़ानी ज़ेवरों से सजी हुई है वही
अल्लाह के नज़्दीक बेशक़ीमत है। 5 माज़ी में अल्लाह
पर उम्मीद रखने वाली मुक़द्दस ख़वातीन भी इसी
तरह अपना सिंगार किया करती थीं। यूँ वह अपने
शौहरों के ताबे रहीं, 6 सारा की तरह जो अपने शौहर
इब्राहीम को आक़ा कह कर उस की मानती थी।
आप तो सारा की बेटियाँ बन गई हैं। चुनाँचे नेक
काम करें और किसी भी चीज़ से न डरें, ख़्वाह वह
कितनी ही डराऔनी क्यूँ न हो। 7 इस तरह लाज़िम है
कि आप जो शौहर हैं समझ के साथ अपनी बीवियों
के साथ ज़िन्दगी गुज़ारें, यह जान कर कि यह आप
की निस्बत कमज़ोर हैं। उन की इज़्ज़त करें, क्यूँकि
यह भी आप के साथ ज़िन्दगी के फ़ज़्ल की वारिस
हैं। ऐसा न हो कि इस में बेपर्वाई करने से आप की
दुआइया ज़िन्दगी में रुकावट पैदा हो जाए।

नेक ज़िन्दगी गुज़ारने की वजह से दुख

8 आख़िर में एक और बात, आप सब एक ही सोच
रखें और एक दूसरे से ताल्लुक़ात में हमदर्दी, प्यार,
रहम और हलीमी का इज़हार करें। 9 किसी के ग़लत
काम के जवाब में ग़लत काम मत करना, न किसी
की गालियों के जवाब में गाली देना। इस के बजाय
जवाब में ऐसे शख़्स को बरकत दें, क्यूँकि अल्लाह
ने आप को भी इस लिए बुलाया है कि आप उस
की बरकत विरासत में पाएँ। 10 कलाम-ए-मुक़द्दस यूँ
फ़रमाता है,

"कौन मज़े से ज़िन्दगी गुज़ारना
और अच्छे दिन देखना चाहता है?
वह अपनी ज़बान को शरीर बातें करने से रोके
और अपने होंटों को झूट बोलने से।
11 वह बुराई से मुँह फेर कर नेक काम करे,
सुलह-सलामती का तालिब हो कर
उस के पीछे लगा रहे।
12 क्यूँकि रब की आँखें रास्तबाज़ों पर लगी रहती
हैं,
और उस के कान उन की दुआओं की तरफ़ माइल
हैं।
लेकिन रब का चिहरा उन के ख़िलाफ़ है जो ग़लत
काम करते हैं।"

13 अगर आप नेक काम करने में सरगर्म हों तो कौन
आप को नुक़्सान पहुँचाएगा? 14 लेकिन अगर आप
को रास्त काम करने की वजह से दुख भी उठाना
पड़े तो आप मुबारक हैं। उन की धमकियों से मत
डरना और मत घबराना 15 बल्कि अपने दिलों में
ख़ुदावन्द मसीह को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस जानें। और
जो भी आप से आप की मसीह पर उम्मीद के बारे
में पूछे हर वक़्त उसे जवाब देने के लिए तय्यार
रहें। लेकिन नर्मदिली से और ख़ुदा के ख़ौफ़ के साथ
जवाब दें। 16 साथ साथ आप का ज़मीर साफ़ हो।
फिर जो लोग आप के मसीह में अच्छे चाल-चलन
के बारे में ग़लत बातें कर रहे हैं उन्हें अपनी तुहमत
पर शर्म आएगी। 17 याद रहे कि ग़लत काम करने
की वजह से दुख सहने की निस्बत बेहतर यह है कि
हम नेक काम करने की वजह से तक्लीफ़ उठाएँ,
बशर्तेकि यह अल्लाह की मर्ज़ी हो। 18 क्यूँकि मसीह
ने हमारे गुनाहों को मिटाने की ख़ातिर एक बार सदा
के लिए मौत सही। हाँ, जो रास्तबाज़ है उस ने यह
नारास्तों के लिए किया ताकि आप को अल्लाह के
पास पहुँचाए। उसे बदन के एतिबार से सज़ा-ए-मौत
दी गई, लेकिन रूह के एतिबार से उसे ज़िन्दा कर
दिया गया। 19 इस रूह के ज़रीए उस ने जा कर क़ैदी
रूहों को पैग़ाम दिया। 20 यह उन की रूहें थीं जो उन
दिनों में नाफ़रमान थे जब नूह अपनी कश्ती बना रहा
था। उस वक़्त अल्लाह सब्र से इन्तिज़ार करता रहा,

लेकिन आख़िरकार सिर्फ़ चन्द एक लोग यानी आठ
अफ़राद पानी में से गुज़र कर बच निकले। 21 यह
पानी उस बपतिस्मे की तरफ़ इशारा है जो इस वक़्त
आप को नजात दिलाता है। इस से जिस्म की गन्दगी
दूर नहीं की जाती बल्कि बपतिस्मा लेते वक़्त हम
अल्लाह से अर्ज़ करते हैं कि वह हमारा ज़मीर पाक-
साफ़ कर दे। फिर यह आप को ईसा मसीह के जी
उठने से नजात दिलाता है। 22 अब मसीह आसमान
पर जा कर अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया है जहाँ
फ़रिश्ते, इख़तियार वाले और क़ुव्वतें उस के ताबे
हैं।

तब्दीलशुदा ज़िन्दगियाँ

4 1 अब चूँकि मसीह ने जिस्मानी तौर पर दुख
उठाया इस लिए आप भी अपने आप को उस
की सी सोच से लेस करें। क्यूँकि जिस ने मसीह की
ख़ातिर जिस्मानी तौर पर दुख सह लिया है उस ने
गुनाह से निपट लिया है। 2 नतीजे में वह ज़मीन पर
अपनी बाक़ी ज़िन्दगी इन्सान की बुरी ख़्वाहिशात
पूरी करने में नहीं गुज़ारेगा बल्कि अल्लाह की मर्ज़ी
पूरी करने में। 3 माज़ी में आप ने काफ़ी वक़्त वह कुछ
करने में गुज़ारा जो ग़ैरईमानदार पसन्द करते हैं यानी
अय्याशी, शहवतपरस्ती, नशाबाज़ी, शराबनोशी,
रंगरलियों, नाच-रंग और घिनौनी बुतपरस्ती में। 4 अब
आप के ग़ैरईमानदार दोस्त ताज्जुब करते हैं कि
आप उन के साथ मिल कर अय्याशी के इस तेज़
धारे में छलाँग नहीं लगाते। इस लिए वह आप पर
कुफ़्र बकते हैं। 5 लेकिन उन्हें अल्लाह को जवाब देना
पड़ेगा जो ज़िन्दों और मुर्दों की अदालत करने के
लिए तय्यार खड़ा है। 6 यही वजह है कि अल्लाह
की ख़ुशख़बरी उन्हें भी सुनाई गई जो अब मुर्दा हैं।
मक़्सद यह था कि वह अल्लाह के सामने रूह में
ज़िन्दगी गुज़ार सकें अगरचे इन्सानी लिहाज़ से उन
के जिस्म की अदालत की गई है।

अपनी नेमतों से एक दूसरे की ख़िदमत करें

7 तमाम चीज़ों का ख़ातमा क़रीब आ गया है।
चुनाँचे दुआ करने के लिए चुस्त और होशमन्द रहें।
8 सब से ज़रूरी बात यह है कि आप एक दूसरे से
लगातार मुहब्बत रखें, क्यूँकि मुहब्बत गुनाहों की
बड़ी तादाद पर पर्दा डाल देती है। 9 बुड़बुड़ाए बग़ैर
एक दूसरे की मेहमान-नवाज़ी करें। 10 अल्लाह अपना
फ़ज़्ल मुख़्तलिफ़ नेमतों से ज़ाहिर करता है। फ़ज़्ल
का यह इन्तिज़ाम वफ़ादारी से चलाते हुए एक दूसरे
की ख़िदमत करें, हर एक उस नेमत से जो उसे मिली
है। 11 अगर कोई बोले तो अल्लाह के से अल्फ़ाज़ के
साथ बोले। अगर कोई ख़िदमत करे तो उस ताक़त
के ज़रीए जो अल्लाह उसे मुहय्या करता है, क्यूँकि
इस तरह ही अल्लाह को ईसा मसीह के वसीले से
जलाल दिया जाएगा। अज़ल से अबद तक जलाल
और क़ुदरत उसी की हो! आमीन।

आप की मुसीबत ग़ैरमामूली नहीं है

12 अज़ीज़ो, ईज़ारसानी की उस आग पर ताज्जुब न
करें जो आप को आज़माने के लिए आप पर आन पड़ी
है। यह मत सोचना कि मेरे साथ कैसी ग़ैरमामूली बात
हो रही है। 13 बल्कि ख़ुशी मनाएँ कि आप मसीह के
दुखों में शरीक हो रहे हैं। क्यूँकि फिर आप उस वक़्त
भी ख़ुशी मनाएँगे जब मसीह का जलाल ज़ाहिर होगा।
14 अगर लोग इस लिए आप की बेइज़्ज़ती करते हैं
कि आप मसीह के पैरोकार हैं तो आप मुबारक हैं।
क्यूँकि इस का मतलब है कि अल्लाह का जलाली रूह
आप पर ठहरा हुआ है। 15 अगर आप में से किसी को
दुख उठाना पड़े तो यह इस लिए नहीं होना चाहिए कि
आप क़ातिल, चोर, मुजरिम या फ़सादी हैं। 16 लेकिन
अगर आप को मसीह के पैरोकार होने की वजह से
दुख उठाना पड़े तो न शर्माएँ बल्कि मसीह के नाम में
अल्लाह की हम्द-ओ-सना करें।

17 क्यूँकि अब वक़्त आ गया है कि अल्लाह की
अदालत शुरू हो जाए, और पहले उस के घर वालों

की अदालत की जाएगी। अगर ऐसा है तो फिर इस
का अन्जाम उन के लिए क्या होगा जो अल्लाह की
ख़ुशख़बरी के ताबे नहीं हैं? 18 और अगर रास्तबाज़
मुश्किल से बचेंगे तो फिर बेदीन और गुनाहगार का
क्या होगा? 19 चुनाँचे जो अल्लाह की मर्ज़ी से दुख
उठा रहे हैं वह नेक काम करने से बाज़ न आएँ
बल्कि अपनी जानों को उसी के हवाले करें जो उन
का वफ़ादार ख़ालिक़ है।

अल्लाह का गल्ला

5 1 अब मैं आप को जो जमाअतों के बुज़ुर्ग हैं
नसीहत करना चाहता हूँ। मैं ख़ुद भी बुज़ुर्ग हूँ
बल्कि मसीह के दुखों का गवाह भी हूँ, और मैं आप
के साथ उस आने वाले जलाल में शरीक हो जाऊँगा
जो ज़ाहिर हो जाएगा। इस हैसियत से मैं आप से
अपील करता हूँ, 2 गल्लाबान होते हुए अल्लाह के उस
गल्ले की देख-भाल करें जो आप के सपुर्द किया गया
है। यह ख़िदमत मज्बूरन न करें बल्कि ख़ुशी से,
क्यूँकि यह अल्लाह की मर्ज़ी है। लालच के बग़ैर पूरी
लगन से यह ख़िदमत सरअन्जाम दें। 3 जिन्हें आप के
सपुर्द किया गया है उन पर हुकूमत मत करना बल्कि
गल्ले के लिए अच्छा नमूना बनें। 4 फिर जब हमारा
सरदार गल्लाबान ज़ाहिर होगा तो आप को जलाल
का ग़ैरफ़ानी ताज मिलेगा।

5 इसी तरह लाज़िम है कि आप जो जवान हैं
बुज़ुर्गों के ताबे रहें। सब इनकिसारी का लिबास
पहन कर एक दूसरे की ख़िदमत करें, क्यूँकि अल्लाह
मग़ुरूरों का मुक़ाबला करता लेकिन फ़रोतनों पर
मेहरबानी करता है। 6 चुनाँचे अल्लाह के क़ादिर हाथ
के नीचे झुक जाएँ ताकि वह मौज़ूँ वक़्त पर आप
को सरफ़राज़ करे। 7 अपनी तमाम परेशानियाँ उस
पर डाल दें, क्यूँकि वह आप की फ़िक्र करता है।

8 होशमन्द रहें, जागते रहें। आप का दुश्मन इब्लीस
गरजते हुए शेरबबर की तरह घूमता फिरता और
किसी को हड़प कर लेने की तलाश में रहता है।
9 ईमान में मज़बूत रह कर उस का मुक़ाबला करें।
आप को तो मालूम है कि पूरी दुनिया में आप के
भाई इसी क़िस्म का दुख उठा रहे हैं। 10 लेकिन
आप को ज़्यादा देर के लिए दुख उठाना नहीं पड़ेगा।
क्यूँकि हर तरह के फ़ज़्ल का ख़ुदा जिस ने आप
को मसीह में अपने अबदी जलाल में शरीक होने के
लिए बुलाया है वह ख़ुद आप को कामिलियत तक
पहुँचाएगा, मज़बूत बनाएगा, तक़वियत देगा और
एक ठोस बुन्याद पर खड़ा करेगा। 11 अबद तक
क़ुदरत उसी को हासिल रहे। आमीन।

आख़िरी सलाम

12 मैं आप को यह मुख़्तसर ख़त सिल्वानुस की
मदद से लिख रहा हूँ जिसे मैं वफ़ादार भाई समझता
हूँ। मैं इस से आप की हौसलाअफ़्ज़ाई और इस की
तस्दीक़ करना चाहता हूँ कि यही अल्लाह का हक़ीक़ी
फ़ज़्ल है। इस पर क़ाइम रहें।

13 बाबल में जो जमाअत अल्लाह ने आप की तरह
चुनी है वह आप को सलाम कहती है, और इसी
तरह मेरा बेटा मर्क़ुस भी। 14 एक दूसरे को मुहब्बत
का बोसा देना।

आप सब की जो मसीह में हैं सलामती हो।

२-पतरस

1 1 यह ख़त ईसा मसीह के ख़ादिम और रसूल
शमाऊन पतरस की तरफ़ से है।
मैं उन सब को लिख रहा हूँ जिन्हें हमारे ख़ुदा और
नजातदहिन्दा ईसा मसीह की रास्तबाज़ी के वसीले
से वही बेशक़ीमत ईमान बख़्शा गया है जो हमें भी
मिला।
2 ख़ुदा करे कि आप उसे और हमारे ख़ुदावन्द ईसा
को जानने में तरक़्क़ी करते करते कस्रत से फ़ज़्ल
और सलामती पाते जाएँ।

अल्लाह का बुलावा

3 अल्लाह ने अपनी इलाही क़ुदरत से हमें वह सब
कुछ अता किया है जो ख़ुदातरस ज़िन्दगी गुज़ारने के
लिए ज़रूरी है। और हमें यह उसे जान लेने से हासिल
हुआ है। क्यूँकि उस ने हमें अपने ज़ाती जलाल
और क़ुदरत के ज़रीए बुलाया है। 4 इस जलाल और
क़ुदरत से उस ने हमें वह अज़ीम और बेशक़ीमत
चीज़ें दी हैं जिन का वादा उस ने किया था। क्यूँकि
वह चाहता था कि आप इन से दुनिया की बुरी
ख़्वाहिशात से पैदा होने वाले फ़साद से बच कर
उस की इलाही ज़ात में शरीक हो जाएँ। 5 यह सब
कुछ पेश-ए-नज़र रख कर पूरी लगन से कोशिश
करें कि आप के ईमान से अख़्लाक़ पैदा हो जाए,
अख़्लाक़ से इल्म, 6 इल्म से ज़ब्त-ए-नफ़्स, ज़ब्त-ए-
नफ़्स से साबितक़दमी, साबितक़दमी से ख़ुदातरस
ज़िन्दगी, 7 ख़ुदातरस ज़िन्दगी से बरादराना शफ़क़त
और बरादराना शफ़क़त से सब के लिए मुहब्बत।
8 क्यूँकि जितना ही आप इन ख़ूबियों में बढ़ते जाएंगे
उतना ही यह आप को इस से महफ़ूज़ रखेंगी कि आप
हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह को जानने में सुस्त और
बेफल रहें। 9 लेकिन जिस में यह ख़ूबियाँ नहीं हैं उस
की नज़र इतनी कमज़ोर है कि वह अंधा है। वह भूल
गया है कि उसे उस के गुज़रे गुनाहों से पाक-साफ़
किया गया है।
10 चुनाँचे भाइयो, मज़ीद लगन से अपने बुलावे और
चुनाओ की तस्दीक़ करने में कोशाँ रहें। क्यूँकि यह
करने से आप गिर जाने से बचेंगे 11 और अल्लाह बड़ी
ख़ुशी से आप को हमारे ख़ुदावन्द और नजातदहिन्दा
ईसा मसीह की बादशाही में दाख़िल होने की इजाज़त
देगा।
12 इस लिए मैं हमेशा आप को इन बातों की याद
दिलाता रहूँगा, हालाँकि आप इन से वाक़िफ़ हैं और
मज़बूती से उस सच्चाई पर क़ाइम हैं जो आप को
मिली है। 13 बल्कि मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ कि
जितनी और देर मैं जिस्म की इस झोंपड़ी में रहता हूँ
आप को इन बातों की याद दिलाने से उभारता रहूँ।
14 क्यूँकि मुझे मालूम है कि अब मेरी यह झोंपड़ी
जल्द ही ढा दी जाएगी। हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह
ने भी मुझ पर यह ज़ाहिर किया था। 15 लेकिन मैं पूरी
कोशिश करूँगा कि मेरे कूच कर जाने के बाद भी
आप हर वक़्त इन बातों को याद रख सकें।

मसीह के जलाल के गवाह

16 क्यूँकि जब हम ने आप को अपने और आप के
ख़ुदावन्द मसीह की क़ुदरत और आमद के बारे में
बताया तो हम चालाकी से घड़े क़िस्से-कहानियों पर
इन्हिसार नहीं कर रहे थे बल्कि हम ने यह गवाहों की
हैसियत से बताया। क्यूँकि हम ने अपनी ही आँखों
से उस की अज़मत देखी थी। 17 हम मौजूद थे जब
उसे ख़ुदा बाप से इज़्ज़त-ओ-जलाल मिला, जब एक
आवाज़ ने अल्लाह की पुरजलाल शान से आ कर
कहा, “यह मेरा प्यारा फ़र्ज़न्द है जिस से मैं ख़ुश हूँ।”
18 जब हम उस के साथ मुक़द्दस पहाड़ पर थे तो हम
ने ख़ुद यह आवाज़ आसमान से आती सुनी।

19 इस तजरिबे की बिना पर हमारा नबियों के
पैग़ाम पर एतिमाद ज़्यादा मज़बूत है। आप अच्छा
करेंगे अगर इस पर ख़ूब ध्यान दें। क्यूँकि यह किसी
तारीक जगह में रौशनी की मानिन्द है जो उस वक़्त
तक चमकती रहेगी जब तक पौ फट कर सुब्ह का
सितारा आप के दिलों में तुलू न हो जाए। 20 सब
से बढ़ कर आप को यह समझने की ज़रूरत है
कि कलाम-ए-मुक़द्दस की कोई भी पेशगोई नबी की
अपनी ही तफ़सीर से पैदा नहीं होती। 21 क्यूँकि कोई
भी पेशगोई कभी भी इन्सान की तहरीक से वुजूद
में नहीं आई बल्कि पेशगोई करते वक़्त इन्सानों ने
रूह-उल-क़ुद्स से तहरीक पा कर अल्लाह की तरफ़
से बात की।

झूटे उस्ताद

2 1 लेकिन जिस तरह माज़ी में इस्राईल क़ौम में
झूटे नबी भी थे, उसी तरह आप में से भी झूटे
उस्ताद खड़े हो जाएंगे। यह ख़ुदा की जमाअतों में
मोहलिक तालीमात फैलाएँगे बल्कि अपने मालिक
को जानने से इन्कार भी करेंगे जिस ने उन्हें ख़रीद
लिया था। ऐसी हरकतों से यह जल्द ही अपने आप
पर हलाकत लाएँगे। 2 बहुत से लोग उन की अय्याश
हरकतों की पैरवी करेंगे, और इस वजह से दूसरे
सच्चाई की राह पर कुफ़्र बकेंगे। 3 लालच के सबब
से यह उस्ताद आप को फ़र्ज़ी कहानियाँ सुना कर
आप की लूट-खसूट करेंगे। लेकिन अल्लाह ने बड़ी
देर से उन्हें मुजरिम ठहराया, और उस का फ़ैसला
सुस्तरफ़्तार नहीं है। हाँ, उन का मुन्सिफ़ ऊँघ नहीं
रहा बल्कि उन्हें हलाक करने के लिए तय्यार खड़ा
है।

4 देखें, अल्लाह ने उन फ़रिश्तों को बचने न दिया
जिन्हों ने गुनाह किया बल्कि उन्हें तारीकी की
ज़न्जीरों में बांध कर जहन्नुम में डाल दिया जहाँ वह
अदालत के दिन तक महफ़ूज़ रहेंगे। 5 इसी तरह उस
ने क़दीम दुनिया को बचने न दिया बल्कि उस के
बेदीन बाशिन्दों पर सैलाब को आने दिया। उस ने
सिर्फ़ रास्तबाज़ी के पैग़म्बर नूह को सात और जानों
समेत बचाया। 6 और उस ने सदूम और अमूरा के
शहरों को मुजरिम क़रार दे कर राख कर दिया। यूँ
अल्लाह ने उन्हें इब्रत बना कर दिखाया कि बेदीनों के
साथ क्या कुछ किया जाएगा। 7 साथ साथ उस ने लूत
को बचाया जो रास्तबाज़ था और बेउसूल लोगों के
गन्दे चाल-चलन देख देख कर पिसता रहा। 8 क्यूँकि
यह रास्तबाज़ आदमी उन के दरमियान बसता था,
और उस की रास्तबाज़ जान रोज़-ब-रोज़ उन की
शरीर हरकतें देख और सुन कर सख़्त अज़ाब में
फंसी रही। 9 यूँ ज़ाहिर है कि रब दीनदार लोगों को
आज़माइश से बचाना और बेदीनों को अदालत के
दिन तक सज़ा के तहत रखना जानता है, 10 ख़ासकर
उन्हें जो अपने जिस्म की गन्दी ख़्वाहिशात के पीछे
लगे रहते और ख़ुदावन्द के इख़तियार को हक़ीर
जानते हैं।

यह लोग गुस्ताख़ और मग़रूर हैं और जलाली
हस्तियों पर कुफ़्र बकने से नहीं डरते। 11 इस के
मुक़ाबले में फ़रिश्ते भी जो कहीं ज़्यादा ताक़तवर
और क़वी हैं रब के हुज़ूर ऐसी हस्तियों पर बुह्तान
और इल्ज़ामात लगाने की जुरअत नहीं करते।
12 लेकिन यह झूटे उस्ताद बेअक़्ल जानवरों की
मानिन्द हैं, जो फ़ित्री तौर पर इस लिए पैदा हुए हैं
कि उन्हें पकड़ा और ख़त्म किया जाए। जो कुछ वह
नहीं समझते उस पर वह कुफ़्र बकते हैं। और जंगली
जानवरों की तरह वह भी हलाक हो जाएंगे। 13 यूँ
जो नुक़्सान उन्हों ने दूसरों को पहुँचाया वही उन्हें
ख़ुद भुगतना पड़ेगा। उन के नज़्दीक लुत्फ़ उठाने से
मुराद यह है कि दिन के वक़्त खुल कर ऐश करें। वह
दाग़ और धब्बे हैं जो आप की ज़ियाफ़तों में शरीक
हो कर अपनी दग़ाबाज़ियों की रंगरलियाँ मनाते हैं।
14 उन की आँखें हर वक़्त किसी बदकार औरत से
ज़िना करने की तलाश में रहती हैं और गुनाह करने से
कभी नहीं रुकतीं। वह कमज़ोर लोगों को ग़लत काम
करने के लिए उकसाते और लालच करने में माहिर
हैं। उन पर अल्लाह की लानत! 15 वह सहीह राह से

हट कर आवारा फिर रहे और बलआम बिन बओर
के नक़्श-ए-क़दम पर चल रहे हैं, क्यूँकि बलआम ने
पैसों के लालच में ग़लत काम किया। 16 लेकिन गधी
ने उसे इस गुनाह के सबब से डाँटा। इस जानवर ने
जो बोलने के क़ाबिल नहीं था इन्सान की सी आवाज़
में बात की और नबी को उस की दीवानगी से रोक
दिया।

17 यह लोग सूखे हुए चश्मे और आँधी से धकेले
हुए बादल हैं। इन की तक़्दीर अंधेरे का तारीकतरीन
हिस्सा है। 18 यह मग़रूर बातें करते हैं जिन के पीछे
कुछ नहीं है और ग़ैरअख़्लाक़ी जिस्मानी शहवतों से
ऐसे लोगों को उकसाते हैं जो हाल ही में धोके की
ज़िन्दगी गुज़ारने वालों में से बच निकले हैं। 19 यह
उन्हें आज़ाद करने का वादा करते हैं जबकि ख़ुद
बदकारी के ग़ुलाम हैं। क्यूँकि इन्सान उसी का ग़ुलाम
है जो उस पर ग़ालिब आ गया है। 20 और जो हमारे
ख़ुदावन्द और नजातदहिन्दा ईसा मसीह को जान
लेने से इस दुनिया की आलूदगी से बच निकलते हैं,
लेकिन बाद में एक बार फिर इस में फंस कर मग़लूब
हो जाते हैं उन का अन्जाम पहले की निस्बत ज़्यादा
बुरा हो जाता है। 21 हाँ, जिन लोगों ने रास्तबाज़ी की
राह को जान लिया, लेकिन बाद में उस मुक़द्दस हुक्म
से मुँह फेर लिया जो उन के हवाले किया गया था, उन
के लिए बेहतर होता कि वह इस राह से कभी वाक़िफ़
न होते। 22 उन पर यह मुहावरा सादिक़ आता है कि
"कुत्ता अपनी क़ै के पास वापस आ जाता है।" और
यह भी कि "सूअरनी नहाने के बाद दुबारा कीचड़ में
लोटने लगती है।"

ख़ुदावन्द की आमद का वादा

3 1 अज़ीज़ो, यह अब दूसरा ख़त है जो मैं ने आप
को लिख दिया है। दोनों ख़तों में मैं ने कई
बातों की याद दिला कर आप के ज़हनों में पाक
सोच उभारने की कोशिश की। 2 मैं चाहता हूँ कि
आप वह कुछ याद रखें जिस की पेशगोई मुक़द्दस
नबियों ने की थी और साथ साथ हमारे ख़ुदावन्द और
नजातदहिन्दा का वह हुक्म भी जो आप को अपने
रसूलों की मारिफ़त मिला। 3 अव्वल आप को यह
बात समझने की ज़रूरत है कि इन आख़िरी दिनों में
ऐसे लोग आएँगे जो मज़ाक़ उड़ा कर अपनी शहवतों
के क़ब्ज़े में रहेंगे। 4 वह पूछेंगे, "ईसा ने आने का
वादा तो किया, लेकिन वह कहाँ है? हमारे बापदादा
तो मर चुके हैं, और दुनिया की तख़्लीक़ से ले कर
आज तक सब कुछ वैसे का वैसा ही है।" 5 लेकिन
यह लोग नज़रअन्दाज़ करते हैं कि क़दीम ज़माने
में अल्लाह के हुक्म पर आसमानों की तख़्लीक़ हुई
और ज़मीन पानी में से और पानी के ज़रीए वुजूद में
आई। 6 इसी पानी के ज़रीए क़दीम ज़माने की दुनिया
पर सैलाब आया और सब कुछ तबाह हुआ। 7 और
अल्लाह के इसी हुक्म ने मौजूदा आसमान और ज़मीन
को आग के लिए महफ़ूज़ कर रखा है, उस दिन के
लिए जब बेदीन लोगों की अदालत की जाएगी और
वह हलाक हो जाएंगे।

8 लेकिन मेरे अज़ीज़ो, एक बात आप से पोशीदा
न रहे। ख़ुदावन्द के नज़्दीक एक दिन हज़ार साल
के बराबर है और हज़ार साल एक दिन के बराबर।
9 ख़ुदावन्द अपना वादा पूरा करने में देर नहीं करता
जिस तरह कुछ लोग समझते हैं बल्कि वह तो आप
की ख़ातिर सब्र कर रहा है। क्यूँकि वह नहीं चाहता
कि कोई हलाक हो जाए बल्कि यह कि सब तौबा
की नौबत तक पहुँचें।

10 लेकिन ख़ुदावन्द का दिन चोर की तरह आएगा।
आसमान बड़े शोर के साथ ख़त्म हो जाएंगे, अज्राम-
ए-फ़लकी आग में पिघल जाएंगे और ज़मीन उस
के कामों समेत ज़ाहिर हो कर अदालत में पेश की
जाएगी। 11 अब सोचें, अगर सब कुछ इस तरह ख़त्म
हो जाएगा तो फिर आप किस क़िस्म के लोग होने
चाहिएँ? आप को मुक़द्दस और ख़ुदातरस ज़िन्दगी
गुज़ारते हुए 12 अल्लाह के दिन की राह देखनी चाहिए।
हाँ, आप को यह कोशिश करनी चाहिए कि वह दिन
जल्दी आए जब आसमान जल जाएंगे और अज्राम-ए-
फ़लकी आग में पिघल जाएंगे। 13 लेकिन हम उन नए

आसमानों और नई ज़मीन के इन्तिज़ार में हैं जिन का
वादा अल्लाह ने किया है। और वहाँ रास्ती सुकूनत
करेगी।
14 चुनाँचे अज़ीज़ो, चूँकि आप इस इन्तिज़ार में हैं
इस लिए पूरी लगन के साथ कोशाँ रहें कि आप
अल्लाह के नज़्दीक बेदाग़ और बेइल्ज़ाम ठहरें और
आप की उस के साथ सुलह हो। 15 याद रखें कि
हमारे ख़ुदावन्द का सब्र लोगों को नजात पाने का
मौक़ा देता है। हमारे अज़ीज़ भाई पौलुस ने भी उस
हिक्मत के मुताबिक़ जो अल्लाह ने उसे अता की है
आप को यही कुछ लिखा है। 16 वह यही कुछ अपने
तमाम ख़तों में लिखता है जब वह इस मज़्मून का
ज़िक्र करता है। उस के ख़तों में कुछ ऐसी बातें
हैं जो समझने में मुश्किल हैं और जिन्हें जाहिल
और कमज़ोर लोग तोड़-मरोड़ कर बयान करते हैं,
बिलकुल उसी तरह जिस तरह वह बाक़ी सहीफ़ों के
साथ भी करते हैं। लेकिन इस से वह अपने आप को
ही हलाक कर रहे हैं।
17 मेरे अज़ीज़ो, मैं आप को वक़्त से पहले इन बातों
से आगाह कर रहा हूँ। इस लिए ख़बरदार रहें ताकि
बेउसूल लोगों की ग़लत सोच आप को बहका कर
आप को महफ़ूज़ मक़ाम से हटा न दे। 18 इस के
बजाय हमारे ख़ुदावन्द और नजातदहिन्दा ईसा मसीह
के फ़ज़्ल और इल्म में तरक़्क़ी करते रहें। उसे अब
और अबद तक जलाल हासिल होता रहे! आमीन।

१-यूहन्ना

ज़िन्दगी का कलाम

1 1 हम आप को उस की मुनादी करते हैं जो
इब्तिदा से था, जिसे हम ने अपने कानों से सुना,
अपनी आँखों से देखा, जिस का मुशाहदा हम ने किया
और जिसे हम ने अपने हाथों से छुआ। वही ज़िन्दगी
का कलाम है। 2 वह जो ख़ुद ज़िन्दगी था ज़ाहिर हुआ,
हम ने उसे देखा। और अब हम गवाही दे कर आप
को उस अबदी ज़िन्दगी की मुनादी करते हैं जो ख़ुदा
बाप के पास थी और हम पर ज़ाहिर हुई है। 3 हम
आप को वह कुछ सुनाते हैं जो हम ने ख़ुद देख और
सुन लिया है ताकि आप भी हमारी रिफ़ाक़त में शरीक
हो जाएँ। और हमारी रिफ़ाक़त ख़ुदा बाप और उस
के फ़र्ज़न्द ईसा मसीह के साथ है। 4 हम यह इस लिए
लिख रहे हैं ताकि हमारी ख़ुशी पूरी हो जाए।

अल्लाह नूर है

5 जो पैग़ाम हम ने उस से सुना और आप को सुना
रहे हैं वह यह है, अल्लाह नूर है और उस में तारीकी
है ही नहीं। 6 जब हम तारीकी में चलते हुए अल्लाह के
साथ रिफ़ाक़त रखने का दावा करते हैं तो हम झूट
बोल रहे और सच्चाई के मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं गुज़ार
रहे। 7 लेकिन जब हम नूर में चलते हैं, बिलकुल उसी
तरह जिस तरह अल्लाह नूर में है, तो फिर हम एक
दूसरे के साथ रिफ़ाक़त रखते हैं और उस के फ़र्ज़न्द
ईसा का ख़ून हमें तमाम गुनाहों से पाक-साफ़ कर
देता है।

8 अगर हम गुनाह से पाक होने का दावा करें तो
हम अपने आप को फ़रेब देते हैं और हम में सच्चाई
नहीं है।

9 लेकिन अगर हम अपने गुनाहों का इक़्रार करें
तो वह वफ़ादार और रास्त साबित होगा। वह हमारे
गुनाहों को मुआफ़ करके हमें तमाम नारास्ती से पाक-
साफ़ करेगा। 10 अगर हम दावा करें कि हम ने गुनाह
नहीं किया तो हम उसे झूटा क़रार देते हैं और उस
का कलाम हमारे अन्दर नहीं है।

मसीह हमारी शफ़ाअत करता है

2 1 मेरे बच्चो, मैं आप को यह इस लिए लिख रहा
हूँ कि आप गुनाह न करें। लेकिन अगर कोई
गुनाह करे तो एक है जो ख़ुदा बाप के सामने हमारी
शफ़ाअत करता है, ईसा मसीह जो रास्त है। 2 वही
हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा देने वाली क़ुर्बानी है, और
न सिर्फ़ हमारे गुनाहों का बल्कि पूरी दुनिया के गुनाहों
का भी।

3 इस से हमें पता चलता है कि हम ने उसे जान
लिया है, जब हम उस के अह्काम पर अमल करते
हैं। 4 जो कहता है, "मैं उसे जानता हूँ" लेकिन उस
के अह्काम पर अमल नहीं करता वह झूटा है और
सच्चाई उस में नहीं है। 5 लेकिन जो उस के कलाम की
पैरवी करता है उस में अल्लाह की मुहब्बत हक़ीक़तन
तक्मील तक पहुँच गई है। इस से हमें पता चलता है
कि हम उस में हैं। 6 जो कहता है कि वह उस में क़ाइम
है उस के लिए लाज़िम है कि वह यूँ चले जिस तरह
ईसा चलता था।

एक नया हुक्म

7 अज़ीज़ो, मैं आप को कोई नया हुक्म नहीं लिख
रहा, बल्कि वही पुराना हुक्म जो आप को शुरू से
मिला है। यह पुराना हुक्म वही पैग़ाम है जो आप
ने सुन लिया है। 8 लेकिन दूसरी तरफ़ से यह हुक्म
नया भी है, और इस की सच्चाई मसीह और आप में
ज़ाहिर हुई है। क्यूँकि तारीकी ख़त्म होने वाली है और
हक़ीक़ी रौशनी चमकने लग गई है।

9 जो नूर में होने का दावा करके अपने भाई से
नफ़रत करता है वह अब तक तारीकी में है। 10 जो
अपने भाई से मुहब्बत रखता है वह नूर में रहता है
और उस में कोई भी चीज़ नहीं पाई जाती जो ठोकर
का बाइस बन सके। 11 लेकिन जो अपने भाई से
नफ़रत करता है वह तारीकी ही में है और अंधेरे
में चलता फिरता है। उस को यह नहीं मालूम कि वह
कहाँ जा रहा है, क्यूँकि तारीकी ने उसे अंधा कर
रखा है।

12 प्यारे बच्चो, मैं आप को इस लिए लिख रहा हूँ कि
आप के गुनाहों को उस के नाम की ख़ातिर मुआफ़
कर दिया गया है। 13 वालिदो, मैं आप को इस लिए
लिख रहा हूँ कि आप ने उसे जान लिया है जो इब्तिदा
ही से है। जवान मर्दो, मैं आप को इस लिए लिख रहा
हूँ कि आप इब्लीस पर ग़ालिब आ गए हैं। बच्चो, मैं
आप को इस लिए लिख रहा हूँ कि आप ने बाप को
जान लिया है। 14 वालिदो, मैं आप को इस लिए लिख
रहा हूँ कि आप ने उसे जान लिया है जो इब्तिदा ही
से है। जवान मर्दो, मैं आप को इस लिए लिख रहा
हूँ कि आप मज़बूत हैं। अल्लाह का कलाम आप में
बसता है और आप इब्लीस पर ग़ालिब आ गए हैं।

15 दुनिया को प्यार मत करना, न किसी चीज़ को
जो दुनिया में है। अगर कोई दुनिया को प्यार करे तो
ख़ुदा बाप की मुहब्बत उस में नहीं है। 16 क्यूँकि जो
भी चीज़ दुनिया में है वह बाप की तरफ़ से नहीं बल्कि
दुनिया की तरफ़ से है, ख़्वाह वह जिस्म की बुरी
ख़्वाहिशात, आँखों का लालच या अपनी मिलकियत
पर फ़ख़र हो। 17 दुनिया और उस की वह चीज़ें जो
इन्सान चाहता है ख़त्म हो रही हैं, लेकिन जो अल्लाह
की मर्ज़ी पूरी करता है वह अबद तक जीता रहेगा।

मसीह का दुश्मन

18 बच्चो, अब आख़िरी घड़ी आ पहुँची है। आप ने
ख़ुद सुन लिया है कि मुख़ालिफ़-ए-मसीह आ रहा है,
और हक़ीक़तन बहुत से ऐसे मुख़ालिफ़-ए-मसीह आ
चुके हैं। इस से हमें पता चलता है कि आख़िरी घड़ी
आ गई है। 19 यह लोग हम में से निकले तो हैं, लेकिन
हक़ीक़त में हम में से नहीं थे। क्यूँकि अगर वह हम
में से होते तो वह हमारे साथ ही रहते। लेकिन हमें
छोड़ने से ज़ाहिर हुआ कि सब हम में से नहीं हैं।

20 लेकिन आप फ़र्क़ हैं। आप को उस से जो क़ुद्दूस
है रूह का मसह मिल गया है, और आप पूरी सच्चाई
को जानते हैं। 21 मैं आप को इस लिए नहीं लिख रहा
कि आप सच्चाई को नहीं जानते बल्कि इस लिए कि
आप सच्चाई जानते हैं और कि कोई भी झूट सच्चाई
की तरफ़ से नहीं आ सकता।

22 कौन झूटा है? वह जो ईसा के मसीह होने का
इन्कार करता है। मुख़ालिफ़-ए-मसीह ऐसा शख़्स है।
वह बाप और फ़र्ज़न्द का इन्कार करता है। 23 जो
फ़र्ज़न्द का इन्कार करता है उस के पास बाप भी
नहीं है, और जो फ़र्ज़न्द का इक़्रार करता है उस के
पास बाप भी है।

24 चुनाँचे लाज़िम है कि जो कुछ आप ने इब्तिदा
से सुना वह आप में रहे। अगर वह आप में रहे तो
आप भी फ़र्ज़न्द और बाप में रहेंगे। 25 और जो वादा
उस ने हम से किया है वह है अबदी ज़िन्दगी।

26 मैं आप को यह उन के बारे में लिख रहा हूँ जो
आप को सहीह राह से हटाने की कोशिश कर रहे हैं।
27 लेकिन आप को उस से रूह का मसह मिल गया
है। वह आप के अन्दर बसता है, इस लिए आप को
इस की ज़रूरत ही नहीं कि कोई आप को तालीम दे।
क्यूँकि मसीह का रूह आप को सब बातों के बारे में
तालीम देता है और जो कुछ भी वह सिखाता है वह
सच है, झूट नहीं। चुनाँचे जिस तरह उस ने आप को
तालीम दी है, उसी तरह मसीह में रहें।

28 और अब प्यारे बच्चो, उस में क़ाइम रहें ताकि
उस के ज़ाहिर होने पर हम पूरे एतिमाद के साथ
उस के सामने खड़े हो सकें और उस की आमद पर
शर्मिन्दा न होना पड़े। 29 अगर आप जानते हैं कि
मसीह रास्तबाज़ है तो आप यह भी जानते हैं कि जो
भी रास्त काम करता है वह अल्लाह से पैदा हो कर
उस का फ़र्ज़न्द बन गया है।

अल्लाह के फ़र्ज़न्द

3 1 ध्यान दें कि बाप ने हम से कितनी मुहब्बत की
है, यहाँ तक कि हम अल्लाह के फ़र्ज़न्द कहलाते
हैं। और हम वाक़ई हैं भी। इस लिए दुनिया हमें नहीं
जानती। वह तो उसे भी नहीं जानती। 2 अज़ीज़ो, अब
हम अल्लाह के फ़र्ज़न्द हैं, और जो कुछ हम होंगे वह
अभी तक ज़ाहिर नहीं हुआ है। लेकिन इतना हम
जानते हैं कि जब वह ज़ाहिर हो जाएगा तो हम उस
की मानिन्द होंगे। क्यूँकि हम उस का मुशाहदा वैसे
ही करेंगे जैसा वह है। 3 जो भी मसीह में यह उम्मीद
रखता है वह अपने आप को पाक-साफ़ रखता है,
वैसे ही जैसा मसीह ख़ुद है।

4 जो गुनाह करता है वह शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी
करता है। हाँ, गुनाह शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी ही
है। 5 लेकिन आप जानते हैं कि ईसा हमारे गुनाहों को
उठा ले जाने के लिए ज़ाहिर हुआ। और उस में गुनाह
नहीं है। 6 जो उस में क़ाइम रहता है वह गुनाह नहीं
करता। और जो गुनाह करता रहता है न तो उस ने
उसे देखा है, न उसे जाना है।

7 प्यारे बच्चो, किसी को इजाज़त न दें कि वह आप
को सहीह राह से हटा दे। जो रास्त काम करता है वह
रास्तबाज़, हाँ मसीह जैसा रास्तबाज़ है। 8 जो गुनाह
करता है वह इब्लीस से है, क्यूँकि इब्लीस शुरू ही से
गुनाह करता आया है। अल्लाह का फ़र्ज़न्द इसी लिए
ज़ाहिर हुआ कि इब्लीस का काम तबाह करे।

9 जो भी अल्लाह से पैदा हो कर उस का फ़र्ज़न्द
बन गया है वह गुनाह नहीं करेगा, क्यूँकि अल्लाह की
फ़ित्रत उस में रहती है। वह गुनाह कर ही नहीं सकता
क्यूँकि वह अल्लाह से पैदा हो कर उस का फ़र्ज़न्द बन
गया है। 10 इस से पता चलता है कि अल्लाह के फ़र्ज़न्द
कौन हैं और इब्लीस के फ़र्ज़न्द कौन : जो रास्त काम
नहीं करता, न अपने भाई से मुहब्बत रखता है, वह
अल्लाह का फ़र्ज़न्द नहीं है।

एक दूसरे से मुहब्बत रखना

11 क्यूँकि यही वह पैग़ाम है जो आप ने शुरू से
सुन रखा है, कि हमें एक दूसरे से मुहब्बत रखना है।
12 क़ाबील की तरह न हों, जो इब्लीस का था और
जिस ने अपने भाई को क़त्ल किया। और उस ने उस
को क़त्ल क्यूँ किया? इस लिए कि उस का काम
बुरा था जबकि भाई का काम रास्त था।

13 चुनाँचे भाइयो, जब दुनिया आप से नफ़रत करती
है तो हैरान न हो जाएँ। 14 हम तो जानते हैं कि हम
मौत से निकल कर ज़िन्दगी में दाख़िल हो गए हैं।
हम यह इस लिए जानते हैं कि हम अपने भाइयों से
मुहब्बत रखते हैं। जो मुहब्बत नहीं रखता वह अब
तक मौत की हालत में है। 15 जो भी अपने भाई से
नफ़रत रखता है वह क़ातिल है। और आप जानते हैं
कि जो क़ातिल है उस में अबदी ज़िन्दगी नहीं रहती।
16 इस से ही हम ने मुहब्बत को जाना है कि मसीह
ने हमारी ख़ातिर अपनी जान दे दी। और हमारा भी
फ़र्ज़ यही है कि अपने भाइयों की ख़ातिर अपनी जान
दें। 17 अगर किसी के माली हालात ठीक हों और वह
अपने भाई की ज़रूरतमन्द हालत को देख कर रहम न
करे तो उस में अल्लाह की मुहब्बत किस तरह क़ाइम
रह सकती है? 18 प्यारे बच्चो, आएँ हम अल्फ़ाज़ और
बातों से मुहब्बत का इज़हार न करें बल्कि हमारी
मुहब्बत अमली और हक़ीक़ी हो।

अल्लाह के हुज़ूर पूरा एतिमाद

19 ग़रज़ इस से हम जान लेते हैं कि हम सच्चाई की
तरफ़ से हैं, और यूँ ही हम अपने दिल को तसल्ली दे
सकते हैं 20 जब वह हमें मुजरिम ठहराता है। क्यूँकि
अल्लाह हमारे दिल से बड़ा है और सब कुछ जानता
है। 21 और अज़ीज़ो, जब हमारा दिल हमें मुजरिम
नहीं ठहराता तो हम पूरे एतिमाद के साथ अल्लाह के
हुज़ूर आ सकते हैं 22 और वह कुछ पाते हैं जो उस से
माँगते हैं। क्यूँकि हम उस के अह्काम पर चलते हैं
और वही कुछ करते हैं जो उसे पसन्द है। 23 और उस

का यह हुक्म है कि हम उस के फ़र्ज़न्द ईसा मसीह
के नाम पर ईमान ला कर एक दूसरे से मुहब्बत रखें,
जिस तरह मसीह ने हमें हुक्म दिया था। 24 जो अल्लाह
के अह्काम के ताबे रहता है वह अल्लाह में बसता है
और अल्लाह उस में। हम किस तरह जान लेते हैं कि
वह हम में बसता है? उस रूह के वसीले से जो उस
ने हमें दिया है।

हक़ीक़ी और झूटी रूह

4 1 अज़ीज़ो, हर एक रूह का यक़ीन मत करना
बल्कि रूहों को परख कर मालूम करें कि वह
अल्लाह से हैं या नहीं, क्यूँकि मुतअद्दिद झूटे नबी
दुनिया में निकले हैं। 2 इस से आप अल्लाह के रूह
को पहचान लेते हैं : जो भी रूह इस का एतिराफ़
करती है कि ईसा मसीह मुजस्सम हो कर आया है
वह अल्लाह से है। 3 लेकिन जो भी रूह ईसा के बारे
में यह तस्लीम न करे वह अल्लाह से नहीं है। यह
मुख़ालिफ़-ए-मसीह की रूह है जिस के बारे में आप
को ख़बर मिली कि वह आने वाला है बल्कि इस
वक़्त दुनिया में आ चुका है।

4 लेकिन आप प्यारे बच्चो, अल्लाह से हैं और उन पर
ग़ालिब आ गए हैं। क्यूँकि जो आप में है वह उस से
बड़ा है जो दुनिया में है। 5 यह लोग दुनिया से हैं और
इस लिए दुनिया की बातें करते हैं और दुनिया उन की
सुनती है। 6 हम तो अल्लाह से हैं और जो अल्लाह को
जानता है वह हमारी सुनता है। लेकिन जो अल्लाह से
नहीं है वह हमारी नहीं सुनता। यूँ हम सच्चाई की रूह
और फ़रेब देने वाली रूह में इम्तियाज़ कर सकते हैं।

अल्लाह मुहब्बत है

7 अज़ीज़ो, आएँ हम एक दूसरे से मुहब्बत रखें।
क्यूँकि मुहब्बत अल्लाह की तरफ़ से है, और जो
मुहब्बत रखता है वह अल्लाह से पैदा हो कर उस
का फ़र्ज़न्द बन गया है और अल्लाह को जानता
है। 8 जो मुहब्बत नहीं रखता वह अल्लाह को नहीं
जानता, क्यूँकि अल्लाह मुहब्बत है। 9 इस में अल्लाह
की मुहब्बत हमारे दरमियान ज़ाहिर हुई कि उस ने
अपने इक्लौते फ़र्ज़न्द को दुनिया में भेज दिया ताकि
हम उस के ज़रीए जिएँ। 10 यही मुहब्बत है, यह नहीं
कि हम ने अल्लाह से मुहब्बत की बल्कि यह कि उस
ने हम से मुहब्बत करके अपने फ़र्ज़न्द को भेज दिया
ताकि वह हमारे गुनाहों को मिटाने के लिए कफ़्फ़ारा
दे।

11 अज़ीज़ो, चूँकि अल्लाह ने हमें इतना प्यार किया
इस लिए लाज़िम है कि हम भी एक दूसरे को प्यार
करें। 12 किसी ने भी अल्लाह को नहीं देखा। लेकिन
जब हम एक दूसरे को प्यार करते हैं तो अल्लाह हमारे
अन्दर बसता है और उस की मुहब्बत हमारे अन्दर
तक्मील पाती है।

13 हम किस तरह जान लेते हैं कि हम उस में रहते हें
और वह हम में? इस तरह कि उस ने हमें अपना रूह
बख़्श दिया है। 14 और हम ने यह बात देख ली और
इस की गवाही देते हैं कि ख़ुदा बाप ने अपने फ़र्ज़न्द
को दुनिया का नजातदहिन्दा बनने के लिए भेज दिया
है। 15 अगर कोई इक़्रार करे कि ईसा अल्लाह का
फ़र्ज़न्द है तो अल्लाह उस में रहता है और वह अल्लाह
में। 16 और ख़ुद हम ने वह मुहब्बत जान ली है और
उस पर ईमान लाए हैं जो अल्लाह हम से रखता है।
अल्लाह मुहब्बत ही है। जो भी मुहब्बत में क़ाइम रहता
है वह अल्लाह में रहता है और अल्लाह उस में। 17 इसी
तरह मुहब्बत हमारे दरमियान तक्मील तक पहुँचती
है, और यूँ हम अदालत के दिन पूरे एतिमाद के साथ
खड़े हो सकेंगे, क्यूँकि जैसे वह है वैसे ही हम भी इस
दुनिया में हैं। 18 मुहब्बत में ख़ौफ़ नहीं होता बल्कि
कामिल मुहब्बत ख़ौफ़ को भगा देती है, क्यूँकि ख़ौफ़
के पीछे सज़ा का डर है। जो डरता है उस की मुहब्बत
तक्मील तक नहीं पहुँची।

19 हम इस लिए मुहब्बत रखते हैं कि अल्लाह ने
पहले हम से मुहब्बत रखी। 20 अगर कोई कहे, “मैं
अल्लाह से मुहब्बत रखता हूँ” लेकिन अपने भाई से
नफ़रत करे तो वह झूटा है। क्यूँकि जो अपने भाई से
जिसे उस ने देखा है मुहब्बत नहीं रखता वह किस

तरह अल्लाह से मुहब्बत रख सकता है जिसे उस ने नहीं देखा? 21 जो हुक्म मसीह ने हमें दिया है वह यह है, जो अल्लाह से मुहब्बत रखता है वह अपने भाई से भी मुहब्बत रखे।

दुनिया पर हमारी फ़त्ह

5 1 जो भी ईमान रखता है कि ईसा ही मसीह है वह अल्लाह से पैदा हो कर उस का फ़र्ज़न्द बन गया है। और जो बाप से मुहब्बत रखता है वह उस के फ़र्ज़न्द से भी मुहब्बत रखता है। 2 हम किस तरह जान लेते हैं कि हम अल्लाह के फ़र्ज़न्द से मुहब्बत रखते हैं? इस से कि हम अल्लाह से मुहब्बत रखते और उस के अह्काम पर अमल करते हैं। 3 क्यूँकि अल्लाह से मुहब्बत से मुराद यह है कि हम उस के अह्काम पर अमल करें। और उस के अह्काम हमारे लिए बोझ का बाइस नहीं हैं, 4 क्यूँकि जो भी अल्लाह से पैदा हो कर उस का फ़र्ज़न्द बन गया है वह दुनिया पर ग़ालिब आ जाता है। और हम यह फ़त्ह अपने ईमान के ज़रीए पाते हैं। 5 कौन दुनिया पर ग़ालिब आ सकता है? सिर्फ़ वह जो ईमान रखता है कि ईसा अल्लाह का फ़र्ज़न्द है।

ईसा मसीह के बारे में गवाही

6 ईसा मसीह वह है जो अपने बपतिस्मे के पानी और अपनी मौत के ख़ून के ज़रीए ज़ाहिर हुआ, न सिर्फ़ पानी के ज़रीए बल्कि पानी और ख़ून दोनों ही के ज़रीए। और रूह-उल-क़ुद्स जो सच्चाई है इस की गवाही देता है। 7 क्यूँकि इस के तीन गवाह हैं, 8 रूह-उल-क़ुद्स, पानी और ख़ून। और तीनों एक ही बात की तस्दीक़ करते हैं। 9 हम तो इन्सान की गवाही क़बूल करते हैं, लेकिन अल्लाह की गवाही इस से कहीं अफ़्ज़ल है। और अल्लाह की गवाही यह है कि उस ने अपने फ़र्ज़न्द की तस्दीक़ की है। 10 जो अल्लाह के फ़र्ज़न्द पर ईमान रखता है उस के दिल में यह गवाही है। और जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखता उस ने उसे झूटा क़रार दिया है। क्यूँकि उस ने वह गवाही न मानी जो अल्लाह ने अपने फ़र्ज़न्द के बारे में दी। 11 और गवाही यह है, अल्लाह ने हमें अबदी ज़िन्दगी अता की है, और यह ज़िन्दगी उस के फ़र्ज़न्द में है। 12 जिस के पास फ़र्ज़न्द है उस के पास ज़िन्दगी है, और जिस के पास अल्लाह का फ़र्ज़न्द नहीं है उस के पास ज़िन्दगी भी नहीं है।

अबदी ज़िन्दगी

13 मैं आप को जो अल्लाह के फ़र्ज़न्द के नाम पर ईमान रखते हैं इस लिए लिख रहा हूँ कि आप जान लें कि आप को अबदी ज़िन्दगी हासिल है। 14 हमारा अल्लाह पर यह एतिमाद है कि जब भी हम उस की मर्ज़ी के मुताबिक़ कुछ माँगते हैं तो वह हमारी सुनता है। 15 और चूँकि हम जानते हैं कि जब माँगते हैं तो वह हमारी सुनता है इस लिए हम यह इल्म भी रखते हैं कि हमें वह कुछ हासिल भी है जो हम ने उस से माँगा था।

16 अगर कोई अपने भाई को ऐसा गुनाह करते देखे जिस का अन्जाम मौत न हो तो वह दुआ करे, और अल्लाह उसे ज़िन्दगी अता करेगा। मैं उन गुनाहों की बात कर रहा हूँ जिन का अन्जाम मौत नहीं। लेकिन एक ऐसा गुनाह भी है जिस का अन्जाम मौत है। मैं नहीं कह रहा कि ऐसे शख़्स के लिए दुआ की जाए जिस से ऐसा गुनाह सरज़द हुआ हो। 17 हर नारास्त हरकत गुनाह है, लेकिन हर गुनाह का अन्जाम मौत नहीं होता।

18 हम जानते हैं कि जो अल्लाह से पैदा हो कर उस का फ़र्ज़न्द बन गया है वह गुनाह करता नहीं रहता, क्यूँकि अल्लाह का फ़र्ज़न्द ऐसे शख़्स को मह्फ़ूज़ रखता है और इब्लीस उसे नुक़्सान नहीं पहुँचा सकता।

19 हम जानते हैं कि हम अल्लाह के फ़र्ज़न्द हैं और कि तमाम दुनिया इब्लीस के क़ब्ज़े में है।

20 हम जानते हैं कि अल्लाह का फ़र्ज़न्द आ गया है और हमें समझ अता की है ताकि हम उसे जान लें जो हक़ीक़ी है। और हम उस में हैं जो हक़ीक़ी है यानी

उस के फ़र्ज़न्द ईसा मसीह में। वही हक़ीक़ी ख़ुदा
और अबदी ज़िन्दगी है।
21 प्यारे बच्चो, अपने आप को बुतों से महफ़ूज़ रखें!

२-यूहन्ना

1 [1] यह ख़त बुज़ुर्ग यूहन्ना की तरफ़ से है।
मैं चुनीदा ख़ातून और उस के बच्चों को लिख
रहा हूँ जिन्हें मैं सच्चाई से प्यार करता हूँ, और न
सिर्फ़ मैं बल्कि सब जो सच्चाई को जानते हैं। [2] क्यूँकि
सच्चाई हम में रहती है और अबद तक हमारे साथ
रहेगी।

[3] ख़ुदा बाप और बाप का फ़र्ज़न्द ईसा मसीह हमें
फ़ज़्ल, रहम और सलामती अता करे। और यह चीज़ें
सच्चाई और मुहब्बत की रूह में हमें हासिल हों।

सच्चाई और मुहब्बत

[4] मैं निहायत ही ख़ुश हुआ कि मैं ने आप के बच्चों
में से बाज़ ऐसे पाए जो उसी तरह सच्चाई में चलते हैं
जिस तरह ख़ुदा बाप ने हमें हुक्म दिया था। [5] और
अब अज़ीज़ ख़ातून, मैं आप से दरख़्वास्त करता हूँ
कि आएँ, हम सब एक दूसरे से मुहब्बत रखें। यह
कोई नया हुक्म नहीं है जो मैं आप को लिख रहा हूँ
बल्कि वही जो हमें शुरू ही से मिला है। [6] मुहब्बत का
मतलब यह है कि हम उस के अह्काम के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारें। जिस तरह आप ने शुरू ही से सुना
है, उस का हुक्म यह है कि आप मुहब्बत की रूह में
चलें।

[7] क्यूँकि बहुत से ऐसे लोग दुनिया में निकल खड़े
हुए हैं जो आप को सहीह राह से हटाने की कोशिश
में लगे रहते हैं। यह लोग नहीं मानते कि ईसा मसीह
मुजस्सम हो कर आया है। हर ऐसा शख़्स फ़रेब देने
वाला और मुख़ालिफ़-ए-मसीह है। [8] चुनाँचे ख़बरदार
रहें। ऐसा न हो कि आप ने जो कुछ मेहनत करके
हासिल किया है वह जाता रहे बल्कि ख़ुदा करे कि
आप को इस का पूरा अज्र मिल जाए।

[9] जो भी मसीह की तालीम पर क़ाइम नहीं रहता
बल्कि इस से आगे निकल जाता है उस के पास
अल्लाह नहीं। जो मसीह की तालीम पर क़ाइम रहता
है उस के पास बाप भी है और फ़र्ज़न्द भी। [10] चुनाँचे
अगर कोई आप के पास आ कर यह तालीम पेश
नहीं करता तो न उसे अपने घरों में आने दें, न उस
को सलाम करें। [11] क्यूँकि जो उस के लिए सलामती
की दुआ करता है वह उस के शरीर कामों में शरीक
हो जाता है।

आख़िरी बातें

[12] मैं आप को बहुत कुछ बताना चाहता हूँ, लेकिन
काग़ज़ और सियाही के ज़रीए नहीं। इस के बजाय
मैं आप से मिलने और आप के रू-ब-रू बात करने
की उम्मीद रखता हूँ। फिर हमारी ख़ुशी मुकम्मल हो
जाएगी।

[13] आप की चुनीदा बहन के बच्चे आप को सलाम
कहते हैं।

३-यूहन्ना

1 [1] यह ख़त बुज़ुर्ग यूहन्ना की तरफ़ से है।
मैं अपने अज़ीज़ गयुस को लिख रहा हूँ जिसे
मैं सच्चाई से प्यार करता हूँ।
[2] मेरे अज़ीज़, मेरी दुआ है कि आप का हाल हर
तरह से ठीक हो और आप जिस्मानी तौर पर उतने
ही तन्दुरुस्त हों जितने आप रुहानी लिहाज़ से हैं।
[3] क्यूँकि मैं निहायत ख़ुश हुआ जब भाइयों ने आ कर
गवाही दी कि आप किस तरह सच्चाई के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। और यक़ीनन आप हमेशा सच्चाई
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। [4] जब मैं सुनता हूँ
कि मेरे बच्चे सच्चाई के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं
तो यह मेरे लिए सब से ज़्यादा ख़ुशी का बाइस होता
है।

गयुस की तारीफ़

[5] मेरे अज़ीज़, जो कुछ आप भाइयों के लिए कर
रहे हैं उस में आप वफ़ादारी दिखा रहे हैं, हालाँकि
वह आप के जानने वाले नहीं हैं। [6] उन्हों ने ख़ुदा की
जमाअत के सामने ही आप की मुहब्बत की गवाही
दी है। मेहरबानी करके उन की सफ़र के लिए यूँ
मदद करें कि अल्लाह ख़ुश हो। [7] क्यूँकि वह मसीह
के नाम की ख़ातिर सफ़र के लिए निकले हैं और
ग़ैरईमानदारों से मदद नहीं लेते। [8] चुनाँचे यह हमारा
फ़र्ज़ है कि हम ऐसे लोगों की मेहमान-नवाज़ी करें,
क्यूँकि यूँ हम भी सच्चाई के हमख़िदमत बन जाते हैं।

दियुत्रिफ़ेस और देमेत्रियुस

[9] मैं ने तो जमाअत को कुछ लिख दिया था, लेकिन
दियुत्रिफ़ेस जो उन में अव्वल होने की ख़्वाहिश
रखता है हमें क़बूल नहीं करता। [10] चुनाँचे मैं जब
आऊँगा तो उसे उन बुरी हरकतों की याद दिलाऊँगा
जो वह कर रहा है, क्यूँकि वह हमारे ख़िलाफ़ बुरी
बातें बक रहा है। और न सिर्फ़ यह बल्कि वह भाइयों
को ख़ुशआमदीद कहने से भी इन्कार करता है। जब
दूसरे यह करना चाहते हैं तो वह उन्हें रोक कर
जमाअत से निकाल देता है।
[11] मेरे अज़ीज़, जो बुरा है उस की नक़ल मत करना
बल्कि उस की करना जो अच्छा है। जो अच्छा काम
करता है वह अल्लाह से है। लेकिन जो बुरा काम
करता है उस ने अल्लाह को नहीं देखा।
[12] सब लोग देमेत्रियुस की अच्छी गवाही देते हैं
बल्कि सच्चाई ख़ुद भी उस की अच्छी गवाही देती
है। हम भी इस के गवाह हैं, और आप जानते हैं कि
हमारी गवाही सच्ची है।

आख़िरी सलाम

[13] मुझे आप को बहुत कुछ लिखना था, लेकिन यह
ऐसी बातें हैं जो मैं क़लम और सियाही के ज़रीए आप
को नहीं बता सकता। [14] मैं जल्द ही आप से मिलने
की उम्मीद रखता हूँ। फिर हम रू-ब-रू बात करेंगे।
[15] सलामती आप के साथ होती रहे।
यहाँ के दोस्त आप को सलाम कहते हैं। वहाँ के
हर दोस्त को शख़्सी तौर पर हमारा सलाम दें।

यहूदाह

1 [1] यह ख़त ईसा मसीह के ख़ादिम और याक़ूब
के भाई यहूदाह की तरफ़ से है।
मैं उन्हें लिख रहा हूँ जिन्हें बुलाया गया है, जो ख़ुदा
बाप में प्यारे हैं और ईसा मसीह के लिए महफ़ूज़ रखे
गए हैं।
[2] अल्लाह आप को रहम, सलामती और मुहब्बत
कस्रत से अता करे।

झूटे उस्ताद

[3] अज़ीज़ो, गो मैं आप को उस नजात के बारे में
लिखने का बड़ा शौक़ रखता हूँ जिस में हम सब
शरीक हैं, लेकिन अब मैं आप को एक और बात
के बारे में लिखना चाहता हूँ। मैं इस में आप को
नसीहत करने की ज़रूरत महसूस करता हूँ कि आप
उस ईमान की ख़ातिर जिद्द-ओ-जहद करें जो एक ही
बार सदा के लिए मुक़द्दसीन के सपुर्द कर दिया गया
है। [4] क्यूँकि कुछ लोग आप के दरमियान घुस आए
हैं जिन्हें बहुत अर्सा पहले मुजरिम ठहराया जा चुका
है। उन के बारे में यह लिखा गया है कि वह बेदीन हैं
जो हमारे ख़ुदा के फ़ज़्ल को तोड़-मरोड़ कर अय्याशी
का बाइस बना देते हैं और हमारे वाहिद आक़ा और
ख़ुदावन्द ईसा मसीह का इन्कार करते हैं।
[5] गो आप यह सब कुछ जानते हैं, फिर भी मैं
आप को इस की याद दिलाना चाहता हूँ कि अगरचे
ख़ुदावन्द ने अपनी क़ौम को मिस्र से निकाल कर
बचा लिया था तो भी उस ने बाद में उन्हें हलाक
कर दिया जो ईमान नहीं रखते थे। [6] उन फ़रिश्तों
को याद करें जो उस दाइरा-ए-इख़तियार के अन्दर
न रहे जो अल्लाह ने उन के लिए मुक़र्रर किया था
बल्कि जिन्हों ने अपनी रिहाइशगाह को तर्क कर
दिया। उन्हें उस ने तारीकी में महफ़ूज़ रखा है जहाँ
वह अबदी ज़न्जीरों में जकड़े हुए रोज़-ए-अज़ीम की
अदालत का इन्तिज़ार कर रहे हैं। [7] सदूम, अमूरा
और उन के इर्दगिर्द के शहरों को भी मत भूलना,
जिन के बाशिन्दे इन फ़रिश्तों की तरह ज़िनाकारी
और ग़ैरफ़ित्री सोहबत के पीछे पड़े रहे। यह लोग
अबदी आग की सज़ा भुगतते हुए सब के लिए एक
इब्रतनाक मिसाल हैं।
[8] तो भी इन लोगों ने उन का सा रवय्या अपना लिया
है। अपने ख़्वाबों की बिना पर वह अपने बदनों को
आलूदा कर लेते, ख़ुदावन्द का इख़तियार रद्द करते
और जलाली हस्तियों पर कुफ़्र बकते हैं। [9] इन के
मुक़ाबले में सरदार फ़रिश्ते मीकाएल के रवय्ये पर
ग़ौर करें। जब वह इब्लीस से झगड़ते वक़्त मूसा
की लाश के बारे में बहस-मुबाहसा कर रहा था तो
उस ने इब्लीस पर कुफ़्र बकने का फ़ैसला करने की
जुरअत न की बल्कि सिर्फ़ इतना ही कहा, "रब आप
को डाँटे!" [10] लेकिन यह लोग हर ऐसी बात के बारे
में कुफ़्र बकते हैं जो उन की समझ में नहीं आती।
और जो कुछ वह फ़ित्री तौर पर बेसमझ जानवरों की
तरह समझते हैं वही उन्हें तबाह कर देता है। [11] उन
पर अफ़्सोस! उन्हों ने क़ाबील की राह इख़तियार की
है। पैसों के लालच में उन्हों ने अपने आप को पूरे तौर
पर उस ग़लती के हवाले कर दिया है जो बलआम ने
की। वह क़ोरह की तरह बाग़ी हो कर हलाक हुए हैं।
[12] जब यह लोग ख़ुदावन्द की मुहब्बत को याद करने
वाले रिफ़ाक़ती खानों में शरीक होते हैं तो रिफ़ाक़त
के लिए धब्बे बन जाते हैं। यह डरे बग़ैर खाना खा
खा कर उस से महज़ूज़ होते हैं। यह ऐसे चरवाहे हैं जो
सिर्फ़ अपनी गल्लाबानी करते हैं। यह ऐसे बादल हैं जो
हवाओं के ज़ोर से चलते तो हैं लेकिन बरसते नहीं।
यह सर्दियों के मौसम में ऐसे दरख़्तों की मानिन्द हैं
जो दो लिहाज़ से मुर्दा हैं। वह फल नहीं लाते और
जड़ से उखड़े हुए हैं। [13] यह समुन्दर की बेकाबू लहरों

की मानिन्द हैं जो अपनी शर्मनाक हरकतों की झाग उछालती हैं। यह आवारा सितारे हैं जिन के लिए अल्लाह ने सब से गहरी तारीकी में एक दाइमी जगह मख़्सूस की है।

14 आदम के बाद सातवें आदमी हनूक ने इन लोगों के बारे में यह पेशगोई की, "देखो, ख़ुदावन्द अपने बेशुमार मुक़द्दस फ़रिश्तों के साथ 15 सब की अदालत करने आएगा। वह उन्हें उन तमाम बेदीन हरकतों के सबब से मुजरिम ठहराएगा जो उन से सरज़द हुई हैं और उन तमाम सख़्त बातों की वजह से जो बेदीन गुनाहगारों ने उस के ख़िलाफ़ की हैं।"

16 यह लोग बुड़बुड़ाते और शिकायत करते रहते हैं। यह सिर्फ़ अपनी ज़ाती ख़्वाहिशात पूरी करने के लिए ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। यह अपने बारे में शेख़ी मारते और अपने फ़ाइदे के लिए दूसरों की ख़ुशामद करते हैं।

आगाही और हिदायात

17 लेकिन आप मेरे अज़ीज़ो, वह कुछ याद रखें जिस की पेशगोई हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के रसूलों ने की थी। 18 उन्हों ने आप से कहा था, "आख़िरी दिनों में मज़ाक़ उड़ाने वाले होंगे जो अपनी बेदीन ख़्वाहिशात पूरी करने के लिए ही ज़िन्दगी गुज़ारेंगे।" 19 यह वह हैं जो पार्टीबाज़ी करते, जो दुनियावी सोच रखते हैं और जिन के पास रूह-उल-क़ुद्स नहीं है। 20 लेकिन आप मेरे अज़ीज़ो, अपने आप को अपने मुक़द्दसतरीन ईमान की बुन्याद पर तामीर करें और रूह-उल-क़ुद्स में दुआ करें। 21 अपने आप को अल्लाह की मुहब्बत में क़ाइम रखें और इस इन्तिज़ार में रहें कि हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह का रहम आप को अबदी ज़िन्दगी तक पहुँचाए।

22 उन पर रहम करें जो शक में पड़े हैं। 23 बाज़ को आग में से छीन कर बचाएँ और बाज़ पर रहम करें, लेकिन ख़ौफ़ के साथ। बल्कि उस शख़्स के लिबास से भी नफ़रत करें जो अपनी हरकतों से गुनाह से आलूदा हो गया है।

सताइश की दुआ

24 उस की तम्जीद हो जो आप को ठोकर खाने से महफ़ूज़ रख सकता है और आप को अपने जलाल के सामने बेदाग़ और बड़ी ख़ुशी से मामूर करके खड़ा कर सकता है। 25 उस वाहिद ख़ुदा यानी हमारे नजातदहिन्दा का जलाल हो। हाँ, हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के वसीले से उसे जलाल, अज़मत, क़ुदरत और इख़तियार अज़ल से अब भी हो और अबद तक रहे। आमीन।

मुकाशफ़ा

1 1 यह ईसा मसीह की तरफ़ से मुकाशफ़ा है जो
अल्लाह ने उसे अता किया ताकि वह अपने
ख़ादिमों को वह कुछ दिखाए जिसे जल्द ही पेश
आना है। उस ने अपने फ़रिश्ते को भेज कर यह
मुकाशफ़ा अपने ख़ादिम यूहन्ना तक पहुँचा दिया।
2 और जो कुछ भी यूहन्ना ने देखा है उस की गवाही
उस ने दी है, ख़्वाह अल्लाह का कलाम हो या ईसा
मसीह की गवाही। 3 मुबारक है वह जो इस नबुव्वत
की तिलावत करता है। हाँ, मुबारक हैं वह जो सुन
कर अपने दिलों में इस किताब में दर्ज बातें महफ़ूज़
रखते हैं, क्यूँकि यह जल्द ही पूरी हो जाएँगी।

सात जमाअतों को सलाम

4 यह ख़त यूहन्ना की तरफ़ से सूबा आसिया की
सात जमाअतों के लिए है।

आप को अल्लाह की तरफ़ से फ़ज़्ल और सलामती
हासिल रहे, उस की तरफ़ से जो है, जो था और जो
आने वाला है, उन सात रूहों की तरफ़ से जो उस के
तख़्त के सामने होती हैं, 5 और ईसा मसीह की तरफ़
से यानी उस से जो इन बातों का वफ़ादार गवाह, मुर्दों
में से पहला जी उठने वाला और दुनिया के बादशाहों
का सरदार है।

उस की तम्जीद हो जो हमें प्यार करता है, जिस
ने अपने ख़ून से हमें हमारे गुनाहों से ख़लासी बख़्शी
है 6 और जिस ने हमें शाही इख़तियार दे कर अपने
ख़ुदा और बाप के इमाम बना दिया है। उसे अज़ल से
अबद तक जलाल और क़ुदरत हासिल रहे! आमीन।

7 देखें, वह बादलों के साथ आ रहा है। हर एक उसे
देखेगा, वह भी जिन्हों ने उसे छेदा था। और दुनिया
की तमाम क़ौमें उसे देख कर आह-ओ-ज़ारी करेंगी।
हाँ, ऐसा ही हो! आमीन।

8 रब ख़ुदा फ़रमाता है, "मैं अव्वल और आख़िर
हूँ, वह जो है, जो था और जो आने वाला है, यानी
क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा।"

मसीह की रोया

9 मैं यूहन्ना आप का भाई और शरीक-ए-हाल हूँ।
मुझ पर भी आप की तरह ज़ुल्म किया जा रहा है।
मैं आप के साथ अल्लाह की बादशाही में शरीक हूँ
और ईसा में आप के साथ साबितक़दम रहता हूँ।
मुझे अल्लाह का कलाम सुनाने और ईसा के बारे में
गवाही देने की वजह से इस जज़ीरे में जो पत्मुस
कहलाता है छोड़ दिया गया। 10 रब के दिन यानी
इत्वार को मैं रूह-उल-क़ुद्स की गिरिफ़्त में आ गया
और मैं ने अपने पीछे तुरम की सी एक ऊँची आवाज़
सुनी। 11 उस ने कहा, "जो कुछ तू देख रहा है उसे
एक किताब में लिख कर उन सात जमाअतों को भेज
देना जो इफ़िसुस, स्मुर्ना, पिर्गमुन, थुआतीरा, सर्दीस,
फ़िलदिल्फ़िया और लौदीकिया में हैं।"

12 मैं ने बोलने वाले को देखने के लिए अपने पीछे
नज़र डाली तो सोने के सात शमादान देखे। 13 इन
शमादानों के दरमियान कोई खड़ा था जो इब्न-ए-
आदम की मानिन्द था। उस ने पाँओ तक का लम्बा
चोग़ा पहन रखा था और सीने पर सोने का सीनाबन्द
बांधा हुआ था। 14 उस का सर और बाल ऊन या बर्फ़
जैसे सफ़ेद थे और उस की आँखें आग के शोले की
मानिन्द थीं। 15 उस के पाँओ भट्टे में दमकते पीतल
की मानिन्द थे और उस की आवाज़ आबशार के
शोर जैसी थी। 16 अपने दहने हाथ में उस ने सात
सितारे थाम रखे थे और उस के मुँह से एक तेज़ और
दोधारी तलवार निकल रही थी। उस का चिहरा पूरे
ज़ोर से चमकने वाले सूरज की तरह चमक रहा था।
17 उसे देखते ही मैं उस के पाँओ में गिर गया। मैं

मुर्दा सा था। फिर उस ने अपना दहना हाथ मुझ पर
रख कर कहा, “मत डर। मैं अव्वल और आख़िर हूँ।
18 मैं वह हूँ जो ज़िन्दा है। मैं तो मर गया था लेकिन
अब देख, मैं अबद तक ज़िन्दा हूँ। और मौत और
पाताल की कुंजियाँ मेरे हाथ में हैं। 19 चुनाँचे जो कुछ
तू ने देखा है, जो अभी है और जो आइन्दा होगा उसे
लिख दे। 20 मेरे दहने हाथ में सात सितारों और सात
शमादानों का पोशीदा मतलब यह है : यह सात सितारे
आसिया की सात जमाअतों के फ़रिश्ते हैं, और यह
सात शमादान यह सात जमाअतें हैं।

इफ़िसुस के लिए पैग़ाम

2 1 इफ़िसुस में मौजूद जमाअत के फ़रिश्ते को यह
लिख देना : यह उस का फ़रमान है जो अपने
दहने हाथ में सात सितारे थामे रखता और सोने के
सात शमादानों के दरमियान चलता फिरता है। 2 मैं
तेरे कामों को जानता हूँ, तेरी सख़्त मेहनत और तेरी
साबितक़दमी को। मैं जानता हूँ कि तू बुरे लोगों को
बर्दाश्त नहीं कर सकता, कि तू ने उन की पड़ताल
की है जो रसूल होने का दावा करते हैं, हालाँकि वह
रसूल नहीं हैं। तुझे तो पता चल गया है कि वह झूटे
थे। 3 तू मेरे नाम की ख़ातिर साबितक़दम रहा और
बर्दाश्त करते करते थका नहीं। 4 लेकिन मुझे तुझ से
यह शिकायत है, तू मुझे उस तरह प्यार नहीं करता
जिस तरह पहले करता था। 5 अब ख़याल कर कि
तू कहाँ से गिर गया है। तौबा करके वह कुछ कर
जो तू पहले करता था, वर्ना मैं आ कर तेरे शमादान
को उस की जगह से हटा दूँगा। 6 लेकिन यह बात तेरे
हक़ में है, तू मेरी तरह नीकुलियों के कामों से नफ़रत
करता है।

7 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूह-उल-क़ुद्स
जमाअतों को क्या कुछ बता रहा है।

जो ग़ालिब आएगा उसे मैं ज़िन्दगी के दरख़्त का
फल खाने को दूँगा, उस दरख़्त का फल जो अल्लाह
के फ़िर्दौस में है।

स्मुर्ना के लिए पैग़ाम

8 स्मुर्ना में मौजूद जमाअत के फ़रिश्ते को यह लिख
देना : यह उस का फ़रमान है जो अव्वल और आख़िर
है, जो मर गया था और दुबारा ज़िन्दा हुआ। 9 मैं तेरी
मुसीबत और ग़ुर्बत को जानता हूँ। लेकिन हक़ीक़त में
तू दौलतमन्द है। मैं उन लोगों के बुह्तान से वाक़िफ़
हूँ जो कहते हैं कि वह यहूदी हैं हालाँकि हैं नहीं।
असल में वह इब्लीस की जमाअत हैं। 10 जो कुछ
तुझे झेलना पड़ेगा उस से मत डरना। देख, इब्लीस
तुझे आज़माने के लिए तुम में से बाज़ को जेल में डाल
देगा, और दस दिन तक तुझे ईज़ा पहुँचाई जाएगी।
मौत तक वफ़ादार रह तो मैं तुझे ज़िन्दगी का ताज
दूँगा।

11 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूह-उल-क़ुद्स
जमाअतों को क्या कुछ बता रहा है।

जो ग़ालिब आएगा उसे दूसरी मौत से नुक़्सान नहीं
पहुँचेगा।

पिर्गमुन के लिए पैग़ाम

12 पिर्गमुन में मौजूद जमाअत के फ़रिश्ते को यह
लिख देना :

यह उस का फ़रमान है जिस के पास दोधारी तेज़
तलवार है। 13 मैं जानता हूँ कि तू कहाँ रहता है,
वहाँ जहाँ इब्लीस का तख़्त है। ताहम तू मेरे नाम
का वफ़ादार रहा है। तू ने उन दिनों में भी मुझ पर
ईमान रखने का इन्कार न किया जब मेरा वफ़ादार
गवाह अनतिपास तुम्हारे पास शहीद हुआ, वहाँ जहाँ
इब्लीस बसता है। 14 लेकिन मुझे तुझ से कई बातों
की शिकायत है। तेरे पास ऐसे लोग हैं जो बलआम
की तालीम की पैरवी करते हैं। क्यूँकि बलआम ने
बलक़ को सिखाया कि वह किस तरह इस्राईलियों
को गुनाह करने पर उकसा सकता है यानी बुतों को
पेश की गई क़ुर्बानियाँ खाने और ज़िना करने से।
15 इसी तरह तेरे पास भी ऐसे लोग हैं, जो नीकुलियों
की तालीम की पैरवी करते हैं। 16 अब तौबा कर!

वर्ना मैं जल्द ही तेरे पास आ कर अपने मुँह की तलवार से उन के साथ लड़ूँगा।

17 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूह-उल-क़ुद्स जमाअतों को क्या कुछ बता रहा है।

जो ग़ालिब आएगा उसे मैं पोशीदा मन में से दूँगा। मैं उसे एक सफ़ेद पत्थर भी दूँगा जिस पर एक नया नाम लिखा होगा, ऐसा नाम जो सिर्फ़ मिलने वाले को मालूम होगा।

थुआतीरा के लिए पैग़ाम

18 थुआतीरा में मौजूद जमाअत के फ़रिश्ते को यह लिख देना :

यह अल्लाह के फ़र्ज़न्द का फ़रमान है जिस की आँखें आग के शोलों और पाँओ दमकते पीतल की मानिन्द हैं। 19 मैं तेरे कामों को जानता हूँ यानी तेरी मुहब्बत और ईमान, तेरी ख़िदमत और साबितक़दमी, और यह कि इस वक़्त तू पहले की निस्बत कहीं ज़्यादा कर रहा है। 20 लेकिन मुझे तुझ से यह शिकायत है, तू उस औरत ईज़बिल को जो अपने आप को नबिया कहती है काम करने देता है, हालाँकि यह अपनी तालीम से मेरे ख़ादिमों को सहीह राह से दूर करके उन्हें ज़िना करने और बुतों को पेश की गई क़ुर्बानियाँ खाने पर उकसाती है। 21 मैं ने उसे काफ़ी देर से तौबा करने का मौक़ा दिया है, लेकिन वह इस के लिए तय्यार नहीं है। 22 चुनाँचे मैं उसे यूँ मारूँगा कि वह बिस्तर पर पड़ी रहेगी। और अगर वह जो उस के साथ ज़िना कर रहे हैं अपनी ग़लत हरकतों से तौबा न करें तो मैं उन्हें शदीद मुसीबत में फंसाऊँगा। 23 हाँ, मैं उस के फ़र्ज़न्दों को मार डालूँगा। फिर तमाम जमाअतें जान लेंगी कि मैं ही ज़हनों और दिलों को परखता हूँ, और मैं ही तुम में से हर एक को उस के कामों का बदला दूँगा।

24 लेकिन थुआतीरा की जमाअत के ऐसे लोग भी हैं जो इस तालीम की पैरवी नहीं करते, और जिन्हों ने वह कुछ नहीं जाना जिसे इन लोगों ने "इब्लीस के गहरे भेद" का नाम दिया है। तुम्हें मैं बताता हूँ कि मैं तुम पर कोई और बोझ नहीं डालूँगा। 25 लेकिन इतना ज़रूर करो कि जो कुछ तुम्हारे पास है उसे मेरे आने तक मज़बूती से थामे रखना। 26 जो ग़ालिब आएगा और आख़िर तक मेरे कामों पर क़ाइम रहेगा उसे मैं क़ौमों पर इख़तियार दूँगा। 27 हाँ, वह लोहे के शाही असा से उन पर हुकूमत करेगा, उन्हें मिट्टी के बर्तनों की तरह फोड़ डालेगा। 28 यानी उसे वही इख़तियार मिलेगा जो मुझे भी अपने बाप से मिला है। ऐसे शख़्स को मैं सुब्ह का सितारा भी दूँगा।

29 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूह-उल-क़ुद्स जमाअतों को क्या कुछ बता रहा है।

सर्दीस के लिए पैग़ाम

3 1 सर्दीस में मौजूद जमाअत के फ़रिश्ते को यह लिख देना :

यह उस का फ़रमान है जो अल्लाह की सात रूहों और सात सितारों को अपने हाथ में थामे रखता है। मैं तेरे कामों को जानता हूँ। तू ज़िन्दा तो कहलाता है लेकिन है मुर्दा। 2 जाग उठ! जो बाक़ी रह गया है और मरने वाला है उसे मज़बूत कर। क्यूँकि मैं ने तेरे काम अपने ख़ुदा की नज़र में मुकम्मल नहीं पाए। 3 चुनाँचे जो कुछ तुझे मिला है और जो तू ने सुना है उसे याद रखना। उसे महफ़ूज़ रख और तौबा कर। अगर तू बेदार न हो तो मैं चोर की तरह आऊँगा और तुझे मालूम नहीं होगा कि मैं कब तुझ पर आन पड़ूँगा। 4 लेकिन सर्दीस में तेरे कुछ ऐसे लोग हैं जिन्हों ने अपने लिबास आलूदा नहीं किए। वह सफ़ेद कपड़े पहने हुए मेरे साथ चलें फिरेंगे, क्यूँकि वह इस के लाइक़ हैं। 5 जो ग़ालिब आएगा वह भी उन की तरह सफ़ेद कपड़े पहने हुए फिरेगा। मैं उस का नाम किताब-ए-हयात से नहीं मिटाऊँगा बल्कि अपने बाप और उस के फ़रिश्तों के सामने इक़्रार करूँगा कि यह मेरा है।

6 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूह-उल-क़ुद्स जमाअतों को क्या कुछ बता रहा है।

फ़िलदिल्फ़िया के लिए पैग़ाम

7 फ़िलदिल्फ़िया में मौजूद जमाअत के फ़रिश्ते को
यह लिख देना :
यह उस का फ़रमान है जो क़ुद्दूस और सच्चा है, जिस
के हाथ में दाऊद की चाबी है। जो कुछ वह खोलता
है उसे कोई बन्द नहीं कर सकता, और जो कुछ वह
बन्द कर देता है उसे कोई खोल नहीं सकता। 8 मैं
तेरे कामों को जानता हूँ। देख, मैं ने तेरे सामने एक
ऐसा दरवाज़ा खोल रखा है जिसे कोई बन्द नहीं कर
सकता। मुझे मालूम है कि तेरी ताक़त कम है। लेकिन
तू ने मेरे कलाम को महफ़ूज़ रखा है और मेरे नाम का
इन्कार नहीं किया। 9 देख, जहाँ तक उन का ताल्लुक़
है जो इब्लीस की जमाअत से हैं, वह जो यहूदी होने
का दावा करते हैं हालाँकि वह झूट बोलते हैं, मैं उन्हें
तेरे पास आने दूँगा, उन्हें तेरे पाँओ में झुक कर यह
तस्लीम करने पर मज्बूर करूँगा कि मैं ने तुझे प्यार
किया है। 10 तू ने मेरा साबितक़दम रहने का हुक्म
पूरा किया, इस लिए मैं तुझे आज़माइश की उस घड़ी
से बचाए रखूँगा जो पूरी दुनिया पर आ कर उस में
बसने वालों को आज़माएगी।
11 मैं जल्द आ रहा हूँ। जो कुछ तेरे पास है उसे
मज़बूती से थामे रखना ताकि कोई तुझ से तेरा ताज
छीन न ले। 12 जो ग़ालिब आएगा उसे मैं अपने ख़ुदा
के घर में सतून बनाऊँगा, ऐसा सतून जो उसे कभी
नहीं छोड़ेगा। मैं उस पर अपने ख़ुदा का नाम और
अपने ख़ुदा के शहर का नाम लिख दूँगा, उस नए
यरूशलम का नाम जो मेरे ख़ुदा के हाँ से उतरने वाला
है। हाँ, मैं उस पर अपना नया नाम भी लिख दूँगा।
13 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूह-उल-क़ुद्स
जमाअतों को क्या कुछ बता रहा है।

लौदीकिया के लिए पैग़ाम

14 लौदीकिया में मौजूद जमाअत के फ़रिश्ते को यह
लिख देना :
यह उस का फ़रमान है जो आमीन है, वह जो
वफ़ादार और सच्चा गवाह और अल्लाह की काइनात
का मम्बा है। 15 मैं तेरे कामों को जानता हूँ। तू न तो
सर्द है, न गर्म। काश तू इन में से एक होता! 16 लेकिन
चूँकि तू नीमगर्म है, न गर्म, न सर्द, इस लिए मैं तुझे
क़ै करके अपने मुँह से निकाल फैंकूँगा। 17 तू कहता
है, "मैं अमीर हूँ, मैं ने बहुत दौलत हासिल कर ली
है और मुझे किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं।" और
तू नहीं जानता कि तू असल में बदबख़्त, क़ाबिल-ए-
रहम, ग़रीब, अंधा और नंगा है। 18 मैं तुझे मश्वरा देता
हूँ कि मुझ से आग में ख़ालिस किया गया सोना ख़रीद
ले। तब ही तू दौलतमन्द बनेगा। और मुझ से सफ़ेद
लिबास ख़रीद ले जिस को पहनने से तेरे नंगेपन की
शर्म ज़ाहिर नहीं होगी। इस के इलावा मुझ से आँखों
में लगाने के लिए मर्हम ख़रीद ले ताकि तू देख सके।
19 जिन को मैं प्यार करता हूँ उन की मैं सज़ा दे कर
तर्बियत करता हूँ। अब सन्जीदा हो जा और तौबा
कर। 20 देख, मैं दरवाज़े पर खड़ा खटखटा रहा हूँ।
अगर कोई मेरी आवाज़ सुन कर दरवाज़ा खोले तो
मैं अन्दर आ कर उस के साथ खाना खाऊँगा और
वह मेरे साथ। 21 जो ग़ालिब आए उसे मैं अपने साथ
अपने तख़्त पर बैठने का हक़ दूँगा, बिलकुल उसी
तरह जिस तरह मैं ख़ुद भी ग़ालिब आ कर अपने बाप
के साथ उस के तख़्त पर बैठ गया।
22 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूह-उल-क़ुद्स
जमाअतों को क्या कुछ बता रहा है।"

आसमान पर अल्लाह की परस्तिश

4 1 इस के बाद मैं ने देखा कि आसमान में एक
दरवाज़ा खुला हुआ है और तुरम की सी आवाज़
ने जो मैं ने पहले सुनी थी कहा, "इधर ऊपर आ।
फिर मैं तुझे वह कुछ दिखाऊँगा जिसे इस के बाद
पेश आना है।" 2 तब रूह-उल-क़ुद्स ने मुझे फ़ौरन
अपनी गिरिफ़्त में ले लिया। वहाँ आसमान पर एक
तख़्त था जिस पर कोई बैठा था। 3 और बैठने वाला
देखने में यशब और अक़ीक़ से मुताबिक़त रखता

था। तख़्त के इर्दगिर्द क़ौस-ए-क़ुज़ह थी जो देखने में
ज़ुमुर्रद की मानिन्द थी। 4 यह तख़्त 24 तख़्तों से घिरा
हुआ था जिन पर 24 बुज़ुर्ग बैठे थे। बुज़ुर्गों के लिबास
सफ़ेद थे और हर एक के सर पर सोने का ताज
था। 5 दरमियानी तख़्त से बिजली की चमकें, आवाज़ें
और बादल की गरजें निकल रही थीं। और तख़्त के
सामने सात मशअलें जल रही थीं। यह अल्लाह की
सात रूहें हैं। 6 तख़्त के सामने शीशे का सा समुन्दर
भी था जो बिल्लौर से मुताबिक़त रखता था।

बीच में तख़्त के इर्दगिर्द चार जानदार थे जिन के
जिस्मों पर हर जगह आँखें ही आँखें थीं, सामने वाले
हिस्से पर भी और पीछे वाले हिस्से पर भी। 7 पहला
जानदार शेरबबर जैसा था, दूसरा बैल जैसा, तीसरे
का इन्सान जैसा चिहरा था और चौथा उड़ते हुए
उक़ाब की मानिन्द था। 8 इन चार जानदारों में से हर
एक के छः पर थे और जिस्म पर हर जगह आँखें ही
आँखें थीं, बाहर भी और अन्दर भी। दिन रात वह
बिलानाग़ा कहते रहते हैं,

"क़ुद्दूस, क़ुद्दूस, क़ुद्दूस है रब क़ादिर-ए-मुतलक़
ख़ुदा,
जो था, जो है और जो आने वाला है।"

9 यूँ यह जानदार उस की तम्जीद, इज़्ज़त और शुक्र
करते हैं जो तख़्त पर बैठा है और अबद तक ज़िन्दा
है। जब भी वह यह करते हैं 10 तो 24 बुज़ुर्ग तख़्त
पर बैठने वाले के सामने मुँह के बल हो कर उसे
सिज्दा करते हैं जो अज़ल से अबद तक ज़िन्दा है।
साथ साथ वह अपने सोने के ताज तख़्त के सामने
रख कर कहते हैं,

11 "ऐ रब हमारे ख़ुदा,
तू जलाल, इज़्ज़त और क़ुदरत के लाइक़ है।
क्यूँकि तू ने सब कुछ ख़ल्क़ किया।
तमाम चीज़ें तेरी ही मर्ज़ी से थीं और पैदा हुईं।"

सात मुहरों वाला तूमार

5 1 फिर मैं ने तख़्त पर बैठने वाले के दहने हाथ
में एक तूमार देखा जिस पर दोनों तरफ़ लिखा
हुआ था और जिस पर सात मुहरें लगी थीं। 2 और मैं
ने एक ताक़तवर फ़रिश्ता देखा जिस ने ऊँची आवाज़
से एलान किया, "कौन मुहरों को तोड़ कर तूमार को
खोलने के लाइक़ है?" 3 लेकिन न आसमान पर, न
ज़मीन पर और न ज़मीन के नीचे कोई था जो तूमार
को खोल कर उस में नज़र डाल सकता। 4 मैं ख़ूब
रो पड़ा, क्यूँकि कोई इस लाइक़ न पाया गया कि
वह तूमार को खोल कर उस में नज़र डाल सकता।
5 लेकिन बुज़ुर्गों में से एक ने मुझ से कहा, "मत रो।
देख, यहूदाह क़बीले के शेरबबर और दाऊद की जड़
ने फ़त्ह पाई है, और वही तूमार की सात मुहरों को
खोल सकता है।"

6 फिर मैं ने एक लेला देखा जो तख़्त के दरमियान
खड़ा था। वह चार जानदारों और बुज़ुर्गों से घिरा हुआ
था और यूँ लगता था कि उसे ज़बह किया गया हो।
उस के सात सींग और सात आँखें थीं। इन से मुराद
अल्लाह की वह सात रूहें हैं जिन्हें दुनिया की हर जगह
भेजा गया है। 7 लेले ने आ कर तख़्त पर बैठने वाले
के दहने हाथ से तूमार को ले लिया। 8 और लेते वक़्त
चार जानदार और 24 बुज़ुर्ग लेले के सामने मुँह के
बल गिर गए। हर एक के पास एक सरोद और बख़ूर
से भरे सोने के प्याले थे। इन से मुराद मुक़द्दसीन की
दुआएँ हैं। 9 साथ साथ वह एक नया गीत गाने लगे,

"तू तूमार को ले कर
उस की मुहरों को खोलने के लाइक़ है।
क्यूँकि तुझे ज़बह किया गया, और अपने ख़ून से
तू ने लोगों को हर क़बीले, हर अहल-ए-ज़बान, हर
मिल्लत और हर क़ौम से
अल्लाह के लिए ख़रीद लिया है।
10 तू ने उन्हें शाही इख़तियार दे कर
हमारे ख़ुदा के इमाम बना दिया है।
और वह दुनिया में हुकूमत करेंगे।"

11 मैं ने दुबारा देखा तो बेशुमार फ़रिश्तों की
आवाज़ सुनी। वह तख़्त, चार जानदारों और बुज़ुर्गों
के इर्दगिर्द खड़े 12 ऊँची आवाज़ से कह रहे थे,

"लाइक़ है वह लेला जो ज़बह किया गया है।

वह क़ुदरत, दौलत, हिक्मत और ताक़त,
इज़्ज़त, जलाल और सताइश पाने के लाइक़ है।”
13 फिर मैं ने आसमान पर, ज़मीन पर, ज़मीन के
नीचे और समुन्दर की हर मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनीं।
हाँ, काइनात की सब मख़्लूक़ात यह गा रहे थे,
“तख़्त पर बैठने वाले और लेले की सताइश और
इज़्ज़त,
जलाल और क़ुदरत अज़ल से अबद तक रहे।”
14 चार जानदारों ने जवाब में “आमीन” कहा, और
बुज़ुर्गों ने गिर कर सिज्दा किया।

मुहरें तोड़ी जाती हैं

6 1 फिर मैं ने देखा, लेले ने सात मुहरों में से पहली
मुहर को खोला। इस पर मैं ने चार जानदारों में
से एक को जिस की आवाज़ कड़कते बादलों की
मानिन्द थी यह कहते हुए सुना, “आ!” 2 मेरे देखते
देखते एक सफ़ेद घोड़ा नज़र आया। उस के सवार
के हाथ में कमान थी, और उसे एक ताज दिया गया।
यूँ वह फ़ातेह की हैसियत से और फ़त्ह पाने के लिए
वहाँ से निकला।
3 लेले ने दूसरी मुहर खोली तो मैं ने दूसरे जानदार
को कहते हुए सुना कि “आ!” 4 इस पर एक और
घोड़ा निकला जो आग जैसा सुर्ख़ था। उस के सवार
को दुनिया से सुलह-सलामती छीनने का इख़तियार
दिया गया ताकि लोग एक दूसरे को क़त्ल करें। उसे
एक बड़ी तलवार पकड़ाई गई।
5 लेले ने तीसरी मुहर खोली तो मैं ने तीसरे जानदार
को कहते हुए सुना कि “आ!” मेरे देखते देखते एक
काला घोड़ा नज़र आया। उस के सवार के हाथ में
तराज़ू था। 6 और मैं ने चारों जानदारों में से गोया एक
आवाज़ सुनी जिस ने कहा, “एक दिन की मज़दूरी
के लिए एक किलोग्राम गन्दुम, और एक दिन की
मज़दूरी के लिए तीन किलोग्राम जौ। लेकिन तेल और
मै को नुक़्सान मत पहुँचाना।”
7 लेले ने चौथी मुहर खोली तो मैं ने चौथे जानदार
को कहते सुना कि “आ!” 8 मेरे देखते देखते एक
घोड़ा नज़र आया जिस का रंग हल्का पीला सा था।
उस के सवार का नाम मौत था, और पाताल उस
के पीछे पीछे चल रही थी। उन्हें ज़मीन का चौथा
हिस्सा क़त्ल करने का इख़तियार दिया गया, ख़्वाह
तलवार, काल, मोहलिक वबा या वहशी जानवरों के
ज़रीए से हो।
9 लेले ने पाँचवीं मुहर खोली तो मैं ने क़ुर्बानगाह के
नीचे उन की रूहें देखीं जो अल्लाह के कलाम और
अपनी गवाही क़ाइम रखने की वजह से शहीद हो
गए थे। 10 उन्हों ने ऊँची आवाज़ से चिल्ला कर कहा,
“ऐ क़ादिर-ए-मुतलक़, क़ुद्दूस और सच्चे रब, कितनी
देर और लगेगी? तू कब तक ज़मीन के बाशिन्दों की
अदालत करके हमारे शहीद होने का इन्तिक़ाम न
लेगा?” 11 तब उन में से हर एक को एक सफ़ेद
लिबास दिया गया, और उन्हें समझाया गया कि
“मज़ीद थोड़ी देर आराम करो, क्यूँकि पहले तुम्हारे
हमख़िदमत भाइयों में से उतनों को शहीद हो जाना
है जितनों के लिए यह मुक़र्रर है।”
12 लेले ने छटी मुहर खोली तो मैं ने एक शदीद
ज़ल्ज़ला देखा। सूरज बकरी के बालों से बने टाट
की मानिन्द काला हो गया, पूरा चाँद ख़ून जैसा नज़र
आने लगा 13 और आसमान के सितारे ज़मीन पर
यूँ गिर गए जिस तरह अन्जीर के दरख़्त पर लगे
आख़िरी अन्जीर तेज़ हवा के झोंकों से गिर जाते हैं।
14 आसमान तूमार की तरह जब उसे लपेट कर बन्द
किया जाता है पीछे हट गया। और हर पहाड़ और
जज़ीरा अपनी अपनी जगह से खिसक गया। 15 फिर
ज़मीन के बादशाह, शहज़ादे, जरनैल, अमीर, असर-
ओ-रसूख़ वाले, ग़ुलाम और आज़ाद सब के सब ग़ारों
में और पहाड़ी चटानों के दरमियान छुप गए। 16 उन्हों
ने चिल्ला कर पहाड़ों और चटानों से मिन्नत की, “हम
पर गिर कर हमें तख़्त पर बैठे हुए के चिहरे और
लेले के ग़ज़ब से छुपा लो। 17 क्यूँकि उन के ग़ज़ब
का अज़ीम दिन आ गया है, और कौन क़ाइम रह
सकता है?”

इस्राईल के 1,44,000 चुने हुए अफ़राद

7 1 इस के बाद मैं ने चार फ़रिश्तों को ज़मीन के
चार कोनों पर खड़े देखा। वह ज़मीन की चार
हवाओं को चलने से रोक रहे थे ताकि न ज़मीन
पर, न समुन्दर या किसी दरख़्त पर कोई हवा चले।
2 फिर मैं ने एक और फ़रिश्ता मशरिक़ से चढ़ते हुए
देखा जिस के पास ज़िन्दा ख़ुदा की मुहर थी। उस
ने ऊँची आवाज़ से उन चार फ़रिश्तों से बात की
जिन्हें ज़मीन और समुन्दर को नुक़्सान पहुँचाने का
इख़तियार दिया गया था। उस ने कहा, 3 "ज़मीन,
समुन्दर या दरख़्तों को उस वक़्त तक नुक़्सान मत
पहुँचाना जब तक हम अपने ख़ुदा के ख़ादिमों के
माथों पर मुहर न लगा लें।" 4 और मैं ने सुना कि
जिन पर मुहर लगाई गई थी वह 1,44,000 अफ़राद
थे और वह इस्राईल के हर एक क़बीले से थे :
5 12,000 यहूदाह से, 12,000 रूबिन से, 12,000
जद से, 6 12,000 आशर से, 12,000 नफ़्ताली से,
12,000 मनस्सी से, 7 12,000 शमाऊन से, 12,000
लावी से, 12,000 इश्कार से, 8 12,000 ज़बूलून से,
12,000 यूसुफ़ से और 12,000 बिनयमीन से।

अल्लाह के हुज़ूर एक बड़ा हुजूम

9 इस के बाद मैं ने एक हुजूम देखा जो इतना बड़ा
था कि उसे गिना नहीं जा सकता था। उस में हर
मिल्लत, हर क़बीले, हर क़ौम और हर ज़बान के
अफ़राद सफ़ेद लिबास पहने हुए तख़्त और लेले के
सामने खड़े थे। उन के हाथों में खजूर की डालियाँ
थीं। 10 और वह ऊँची आवाज़ से चिल्ला चिल्ला कर
कह रहे थे, "नजात तख़्त पर बैठे हुए हमारे ख़ुदा
और लेले की तरफ़ से है।" 11 तमाम फ़रिश्ते तख़्त,
बुज़ुर्गों और चार जानदारों के इर्दगिर्द खड़े थे। उन्हों
ने तख़्त के सामने गिर कर अल्लाह को सिज्दा किया
12 और कहा, "आमीन! हमारे ख़ुदा की अज़ल से
अबद तक सताइश, जलाल, हिक्मत, शुक्रगुज़ारी,
इज़्ज़त, क़ुदरत और ताक़त हासिल रहे। आमीन!"

13 बुज़ुर्गों में से एक ने मुझ से पूछा, "सफ़ेद लिबास
पहने हुए यह लोग कौन हैं और कहाँ से आए हैं?"
14 मैं ने जवाब दिया, "मेरे आक़ा, आप ही जानते
हैं।"

उस ने कहा, "यह वही हैं जो बड़ी ईज़ारसानी से
निकल कर आए हैं। उन्हों ने अपने लिबास लेले के
ख़ून में धो कर सफ़ेद कर लिए हैं। 15 इस लिए वह
अल्लाह के तख़्त के सामने खड़े हैं और दिन रात उस
के घर में उस की ख़िदमत करते हैं। और तख़्त पर
बैठा हुआ उन को पनाह देगा। 16 इस के बाद न कभी
भूक उन्हें सताएगी न प्यास। न धूप, न किसी और
क़िस्म की तपती गर्मी उन्हें झुलसाएगी। 17 क्यूँकि
जो लेला तख़्त के दरमियान बैठा है वह उन की
गल्लाबानी करेगा और उन्हें ज़िन्दगी के चश्मों के पास
ले जाएगा। और अल्लाह उन की आँखों से तमाम आँसू
पोंछ डालेगा।"

सातवीं मुहर

8 1 जब लेले ने सातवीं मुहर खोली तो आसमान
पर ख़ामोशी छा गई। यह ख़ामोशी तक़रीबन
आधे घंटे तक रही। 2 फिर मैं ने अल्लाह के सामने
खड़े सात फ़रिश्तों को देखा। उन्हें सात तुरम दिए
गए।

3 एक और फ़रिश्ता जिस के पास सोने का
बख़ूरदान था आ कर क़ुर्बानगाह के पास खड़ा हो
गया। उसे बहुत सा बख़ूर दिया गया ताकि वह उसे
मुक़द्दसीन की दुआओं के साथ तख़्त के सामने की
सोने की क़ुर्बानगाह पर पेश करे। 4 बख़ूर का धुआँ
मुक़द्दसीन की दुआओं के साथ फ़रिश्ते के हाथ से
उठते उठते अल्लाह के सामने पहुँचा। 5 फिर फ़रिश्ते
ने बख़ूरदान को लिया और उसे क़ुर्बानगाह की आग
से भर कर ज़मीन पर फैंक दिया। तब कड़कती और
गरजती आवाज़ें सुनाई दीं, बिजली चमकने लगी और
ज़ल्ज़ला आ गया।

तुरमों का असर

6 फिर जिन सात फ़रिश्तों के पास सात तुरम थे वह
उन्हें बजाने के लिए तय्यार हुए।
7 पहले फ़रिश्ते ने अपने तुरम को बजा दिया। इस
पर ओले और ख़ून के साथ मिलाई गई आग पैदा हो
कर ज़मीन पर बरसाई गई। इस से ज़मीन का तीसरा
हिस्सा, दरख़्तों का तीसरा हिस्सा और तमाम हरी
घास भस्म हो गई।
8 फिर दूसरे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस
पर जलती हुई एक बड़ी पहाड़नुमा चीज़ को समुन्दर
में फैंका गया। समुन्दर का तीसरा हिस्सा ख़ून में
बदल गया, 9 समुन्दर में मौजूद ज़िन्दा मख़्लूक़ात का
तीसरा हिस्सा हलाक और बहरी जहाज़ों का तीसरा
हिस्सा तबाह हो गया।
10 फिर तीसरे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी।
इस पर मशअल की तरह भड़कता हुआ एक बड़ा
सितारा आसमान से दरयाओं के तीसरे हिस्से और
पानी के चश्मों पर गिर गया। 11 इस सितारे का नाम
अफ़्सन्तीन था और इस से पानी का तीसरा हिस्सा
अफ़्सन्तीन जैसा कड़वा हो गया। बहुत से लोग यह
कड़वा पानी पीने से मर गए।
12 फिर चौथे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी।
इस पर सूरज का तीसरा हिस्सा, चाँद का तीसरा
हिस्सा और सितारों का तीसरा हिस्सा रौशनी से
महरूम हो गया। दिन का तीसरा हिस्सा रौशनी से
महरूम हुआ और इसी तरह रात का तीसरा हिस्सा
भी।
13 फिर देखते देखते मैं ने एक उक़ाब को सुना जिस
ने मेरे सर के ऊपर ही बुलन्दियों पर उड़ते हुए ऊँची
आवाज़ से पुकारा, "अफ़्सोस! अफ़्सोस! ज़मीन के
बाशिन्दों पर अफ़्सोस! क्यूँकि तीन फ़रिश्तों के तुरमों
की आवाज़ें अभी बाक़ी हैं।"

9 1 फिर पाँचवें फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक
मारी। इस पर मैं ने एक सितारा देखा जो
आसमान से ज़मीन पर गिर गया था। इस सितारे को
अथाह गढ़े के रास्ते की चाबी दी गई। 2 उस ने अथाह
गढ़े का रास्ता खोल दिया तो उस से धुआँ निकल
कर ऊपर आया, यूँ जैसे धुआँ किसी बड़े भट्टे से
निकलता है। सूरज और चाँद अथाह गढ़े के इस धुएँ
से तारीक हो गए। 3 और धुएँ में से टिड्डियाँ निकल
कर ज़मीन पर उतर आईं। उन्हें ज़मीन के बिछूओं
जैसा इख़तियार दिया गया। 4 उन्हें बताया गया, "न
ज़मीन की घास, न किसी पौदे या दरख़्त को नुक़्सान
पहुँचाओ बल्कि सिर्फ़ उन लोगों को जिन के माथों
पर अल्लाह की मुहर नहीं लगी है।" 5 टिड्डियों को इन
लोगों को मार डालने का इख़तियार न दिया गया
बल्कि उन्हें बताया गया कि वह पाँच महीनों तक
इन को अज़ियत दें। और यह अज़ियत उस तक्लीफ़
की मानिन्द है जो तब पैदा होती है जब बिच्छू किसी
को डंक मारता है। 6 उन पाँच महीनों के दौरान लोग
मौत की तलाश में रहेंगे, लेकिन उसे पाएँगे नहीं। वह
मर जाने की शदीद आर्ज़ू करेंगे, लेकिन मौत उन से
भाग कर दूर रहेगी।
7 टिड्डियों की शक्ल-ओ-सूरत जंग के लिए तय्यार
घोड़ों की मानिन्द थी। उन के सरों पर सोने के ताजों
जैसी चीज़ें थीं और उन के चिहरे इन्सानों के चिहरों
की मानिन्द थे। 8 उन के बाल ख़वातीन के बालों की
मानिन्द और उन के दाँत शेरबबर के दाँतों जैसे थे।
9 यूँ लगा जैसे उन के सीनों पर लोहे के से ज़िराबक्तर
लगे हुए थे, और उन के परों की आवाज़ बेशुमार
रथों और घोड़ों के शोर जैसी थी जब वह मुख़ालिफ़
पर झपट रहे होते हों। 10 उन की दुम पर बिच्छू का
सा डंक लगा था और उन्हें इन ही दुमों से लोगों को
पाँच महीनों तक नुक़्सान पहुँचाने का इख़तियार था।
11 उन का बादशाह अथाह गढ़े का फ़रिश्ता है जिस
का इब्रानी नाम अबद्दोन और यूनानी नाम अपुल्लियोन
(हलाकू) है।
12 यूँ पहला अफ़्सोस गुज़र गया, लेकिन इस के
बाद दो मज़ीद अफ़्सोस होने वाले हैं।
13 छटे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर
मैं ने एक आवाज़ सुनी जो अल्लाह के सामने वाक़े

सोने की क़ुर्बानगाह के चार कोनों पर लगे सींगों से
आई। 14 इस आवाज़ ने छटा तुरम पकड़े हुए फ़रिश्ते
से कहा, “उन चार फ़रिश्तों को खुला छोड़ देना जो
बड़े दरया बनाम फ़ुरात के पास बंधे हुए हैं।” 15 इन
चार फ़रिश्तों को इसी महीने के इसी दिन के इसी घंटे
के लिए तय्यार किया गया था। अब इन्हें खुला छोड़
दिया गया ताकि वह इन्सानों का तीसरा हिस्सा मार
डालें। 16 मुझे बताया गया कि घोड़ों पर सवार फ़ौजी
बीस करोड़ थे। 17 रोया में घोड़े और सवार यूँ नज़र
आए : सीनों पर लगे ज़िराबक्तर आग जैसे सुर्ख़, नीले
और गंधक जैसे पीले थे। घोड़ों के सर शेरबबर के
सरों से मुताबिक़त रखते थे और उन के मुँह से आग,
धुआँ और गंधक निकलती थी। 18 आग, धुएँ और
गंधक की इन तीन बलाओं से इन्सानों का तीसरा
हिस्सा हलाक हुआ। 19 हर घोड़े की ताक़त उस के
मुँह और दुम में थी, क्यूँकि उन की दुमें साँप की
मानिन्द थीं जिन के सर नुक़्सान पहुँचाते थे।

20 जो इन बलाओं से हलाक नहीं हुए थे बल्कि
अभी बाक़ी थे उन्हों ने फिर भी अपने हाथों के कामों
से तौबा न की। वह बदरूहों और सोने, चाँदी, पीतल,
पत्थर और लकड़ी के बुतों की पूजा से बाज़ न आए
हालाँकि ऐसी चीज़ें न तो देख सकती हैं, न सुनने या
चलने के क़ाबिल होती हैं। 21 वह क़त्ल-ओ-ग़ारत,
जादूगरी, ज़िनाकारी और चोरियों से भी तौबा करके
बाज़ न आए।

फ़रिश्ता और छोटा तूमार

10 1 फिर मैं ने एक और ताक़तवर फ़रिश्ता
देखा। वह बादल ओढ़े हुए आसमान से
उतर रहा था और उस के सर के ऊपर क़ौस-ए-क़ुज़ह
थी। उस का चिहरा सूरज जैसा था और उस के पाँओ
आग के सतून जैसे। 2 उस के हाथ में एक छोटा
तूमार था जो खुला था। अपने एक पाँओ को उस
ने समुन्दर पर रख दिया और दूसरे को ज़मीन पर।
3 फिर वह ऊँची आवाज़ से पुकार उठा। ऐसे लगा
जैसे शेरबबर गरज रहा है। इस पर कड़क की सात
आवाज़ें बोलने लगीं। 4 उन के बोलने पर मैं उन की
बातें लिखने को था कि एक आवाज़ ने कहा, “कड़क
की सात आवाज़ों की बातों पर मुहर लगा और उन्हें
मत लिखना।”

5 फिर उस फ़रिश्ते ने जिसे मैं ने समुन्दर और ज़मीन
पर खड़ा देखा अपने दहने हाथ को आसमान की
तरफ़ उठा कर 6 अल्लाह के नाम की क़सम खाई, उस
के नाम की जो अज़ल से अबद तक ज़िन्दा है और
जिस ने आसमानों, ज़मीन और समुन्दर को उन तमाम
चीज़ों समेत ख़ल्क़ किया जो उन में हैं। फ़रिश्ते ने
कहा, “अब देर नहीं होगी। 7 जब सातवाँ फ़रिश्ता
अपने तुरम में फूँक मारने को होगा तब अल्लाह का
भेद जो उस ने अपने नबुव्वत करने वाले ख़ादिमों
को बताया था तक्मील तक पहुँचेगा।”

8 फिर जो आवाज़ आसमान से सुनाई दी थी उस ने
एक बार फिर मुझ से बात की, “जा, वह तूमार ले
लेना जो समुन्दर और ज़मीन पर खड़े फ़रिश्ते के हाथ
में खुला पड़ा है।”

9 चुनाँचे मैं ने फ़रिश्ते के पास जा कर उस से
गुज़ारिश की कि वह मुझे छोटा तूमार दे। उस ने मुझ
से कहा, “इसे ले और खा ले। यह तेरे मुँह में शहद
की तरह मीठा लगेगा, लेकिन तेरे मेदे में कड़वाहट
पैदा करेगा।”

10 मैं ने छोटे तूमार को फ़रिश्ते के हाथ से ले कर
उसे खा लिया। मेरे मुँह में तो वह शहद की तरह मीठा
लग रहा था, लेकिन मेदे में जा कर उस ने कड़वाहट
पैदा कर दी। 11 फिर मुझे बताया गया, “लाज़िम है
कि तू बहुत उम्मतों, क़ौमों, ज़बानों और बादशाहों
के बारे में मज़ीद नबुव्वत करे।”

दो गवाह

11 1 मुझे गज़ की तरह का सरकंडा दिया गया
और बताया गया, “जा, अल्लाह के घर और
क़ुर्बानगाह की पैमाइश कर। उस में परस्तारों की
तादाद भी गिन। 2 लेकिन बैरूनी सहन को छोड़ दे।
उसे मत नाप, क्यूँकि उसे ग़ैरईमानदारों को दिया गया

है जो मुक़द्दस शहर को 42 महीनों तक कुचलते
रहेंगे। 3 और मैं अपने दो गवाहों को इख़तियार दूँगा,
और वह टाट ओढ़ कर 1,260 दिनों के दौरान
नबुव्वत करेंगे।"

4 यह दो गवाह ज़ैतून के वह दो दरख़्त और वह दो
शमादान हैं जो दुनिया के आक़ा के सामने खड़े हैं।
5 अगर कोई उन्हें नुक़्सान पहुँचाना चाहे तो उन के
मुँह में से आग निकल कर उन के दुश्मनों को भस्म
कर देती है। जो भी उन्हें नुक़्सान पहुँचाना चाहे उसे
इस तरह मरना पड़ता है। 6 इन गवाहों को आसमान
को बन्द रखने का इख़तियार है ताकि जितना वक़्त
वह नबुव्वत करें बारिश न हो। उन्हें पानी को ख़ून
में बदलने और ज़मीन को हर क़िस्म की अज़ियत
पहुँचाने का इख़तियार भी है। और वह जितनी दफ़ा
जी चाहे यह कर सकते हैं।

7 उन की गवाही का मुक़र्ररा वक़्त पूरा होने पर
अथाह गढ़े में से निकलने वाला हैवान उन से जंग
करना शुरू करेगा और उन पर ग़ालिब आ कर उन्हें
मार डालेगा। 8 उन की लाशें उस बड़े शहर की सड़क
पर पड़ी रहेंगी जिस का अलामती नाम सदूम और
मिस्र है। वहाँ उन का आक़ा भी मस्लूब हुआ था।
9 और साढ़े तीन दिनों के दौरान हर उम्मत, क़बीले,
ज़बान और क़ौम के लोग इन लाशों को घूर कर देखेंगे
और इन्हें दफ़न करने नहीं देंगे। 10 ज़मीन के बाशिन्दे
उन की वजह से मसरूर होंगे और ख़ुशी मना कर एक
दूसरे को तुह्फ़े भेजेंगे, क्यूँकि इन दो नबियों ने ज़मीन
पर रहने वालों को काफ़ी ईज़ा पहुँचाई थी। 11 लेकिन
इन साढ़े तीन दिनों के बाद अल्लाह ने उन में ज़िन्दगी
का दम फूँक दिया, और वह अपने पाँओ पर खड़े
हुए। जो उन्हें देख रहे थे वह सख़्त दह्शतज़दा हुए।
12 फिर उन्हों ने आसमान से एक ऊँची आवाज़ सुनी
जिस ने उन से कहा, "यहाँ ऊपर आओ!" और उन के
दुश्मनों के देखते देखते दोनों एक बादल में आसमान
पर चले गए। 13 उसी वक़्त एक शदीद ज़ल्ज़ला आया
और शहर का दसवाँ हिस्सा गिर कर तबाह हो गया।
7,000 अफ़राद उस की ज़द में आ कर मर गए। बचे
हुए लोगों में दह्शत फैल गई और वह आसमान के
ख़ुदा को जलाल देने लगे।

14 दूसरा अफ़्सोस गुज़र गया, लेकिन अब तीसरा
अफ़्सोस जल्द होने वाला है।

सातवाँ तुरम

15 सातवें फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस
पर आसमान पर से ऊँची आवाज़ें सुनाई दें जो कह
रही थीं, "ज़मीन की बादशाही हमारे आक़ा और उस
के मसीह की हो गई है। वही अज़ल से अबद तक
हुकूमत करेगा।" 16 और अल्लाह के तख़्त के सामने
बैठे 24 बुज़ुर्गों ने गिर कर अल्लाह को सिज्दा किया
17 और कहा, "ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा, हम
तेरा शुक्र करते हैं, तू जो है और जो था। क्यूँकि तू
अपनी अज़ीम क़ुदरत को काम में ला कर हुकूमत
करने लगा है। 18 क़ौमें ग़ुस्से में आएँ तो तेरा ग़ज़ब
नाज़िल हुआ। अब मुर्दों की अदालत करने और
अपने ख़ादिमों को अज्र देने का वक़्त आ गया है। हाँ,
तेरे नबियों, मुक़द्दसीन और तेरा ख़ौफ़ मानने वालों
को अज्र मिलेगा, ख़्वाह वह छोटे हों या बड़े। अब
वह वक़्त भी आ गया है कि ज़मीन को तबाह करने
वालों को तबाह किया जाए।"

19 आसमान पर अल्लाह के घर को खोला गया और
उस में उस के अह्द का सन्दूक़ नज़र आया। बिजली
चमकने लगी, शोर मच गया, बादल गरजने और बड़े
बड़े ओले पड़ने लगे।

ख़ातून और अज़दहा

12 1 फिर आसमान पर एक अज़ीम निशान
ज़ाहिर हुआ, एक ख़ातून जिस का लिबास
सूरज था। उस के पाँओ तले चाँद और सर पर बारह
सितारों का ताज था। 2 उस का पाँओ भारी था, और
जन्म देने के शदीद दर्द में मुब्तला होने की वजह से
वह चिल्ला रही थी।

3 फिर आसमान पर एक और निशान नज़र आया,
एक बड़ा और आग जैसा सुर्ख़ अज़दहा। उस के सात

सर और दस सींग थे, और हर सर पर एक ताज था।
4 उस की दुम ने सितारों के तीसरे हिस्से को आसमान
पर से उतार कर ज़मीन पर फैंक दिया। फिर अज़दहा
जन्म देने वाली ख़ातून के सामने खड़ा हुआ ताकि
उस बच्चे को जन्म लेते ही हड़प कर ले। 5 ख़ातून के
बेटा पैदा हुआ, वह बच्चा जो लोहे के शाही असा से
क़ौमों पर हुकूमत करेगा। और ख़ातून के इस बच्चे
को छीन कर अल्लाह और उस के तख़्त के सामने
लाया गया। 6 ख़ातून ख़ुद रेगिस्तान में हिज्रत करके
एक ऐसी जगह पहुँच गई जो अल्लाह ने उस के लिए
तय्यार कर रखी थी, ताकि वहाँ 1,260 दिन तक उस
की परवरिश की जाए।

7 फिर आसमान पर जंग छिड़ गई। मीकाएल और
उस के फ़रिश्ते अज़दहे से लड़े। अज़दहा और उस के
फ़रिश्ते उन से लड़ते रहे, 8 लेकिन वह ग़ालिब न आ
सके बल्कि आसमान पर अपने मक़ाम से महरूम
हो गए। 9 बड़े अज़दहे को निकाल दिया गया, उस
क़दीम अज़दहे को जो इब्लीस या शैतान कहलाता
है और जो पूरी दुनिया को गुमराह कर देता है। उसे
उस के फ़रिश्तों समेत ज़मीन पर फैंका गया।

10 फिर आसमान पर एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी,
"अब हमारे ख़ुदा की नजात, क़ुदरत और बादशाही
आ गई है, अब उस के मसीह का इख़तियार आ
गया है। क्यूँकि हमारे भाइयों और बहनों पर इल्ज़ाम
लगाने वाला जो दिन रात अल्लाह के हुज़ूर उन पर
इल्ज़ाम लगाता रहता था उसे ज़मीन पर फैंका गया
है। 11 ईमानदार लेले के ख़ून और अपनी गवाही
सुनाने के ज़रीए ही उस पर ग़ालिब आए हैं। उन्हों
ने अपनी जान अज़ीज़ न रखी बल्कि उसे देने तक
तय्यार थे। 12 चुनाँचे ख़ुशी मनाओ, ऐ आसमानो!
ख़ुशी मनाओ, उन में बसने वालो! लेकिन ज़मीन और
समुन्दर पर अफ़्सोस! क्यूँकि इब्लीस तुम पर उतर
आया है। वह बड़े ग़ुस्से में है, क्यूँकि वह जानता है
कि अब उस के पास वक़्त कम है।"

13 जब अज़दहे ने देखा कि उसे ज़मीन पर गिरा
दिया गया है तो वह उस ख़ातून के पीछे पड़ गया
जिस ने बच्चे को जन्म दिया था। 14 लेकिन ख़ातून को
बड़े उक़ाब के से दो पर दिए गए ताकि वह उड़ कर
रेगिस्तान में उस जगह पहुँचे जो उस के लिए तय्यार
की गई थी और जहाँ वह साढ़े तीन साल तक अज़दहे
की पहुँच से महफ़ूज़ रह कर परवरिश पाएगी। 15 इस
पर अज़दहे ने अपने मुँह से पानी निकाल कर दरया
की सूरत में ख़ातून के पीछे पीछे बहा दिया ताकि
उसे बहा ले जाए। 16 लेकिन ज़मीन ने ख़ातून की
मदद करके अपना मुँह खोल दिया और उस दरया
को निगल लिया जो अज़दहे ने अपने मुँह से निकाल
दिया था। 17 फिर अज़दहे को ख़ातून पर ग़ुस्सा आया,
और वह उस की बाक़ी औलाद से जंग करने के लिए
चला गया। (ख़ातून की औलाद वह हैं जो अल्लाह के
अहकाम पूरे करके ईसा की गवाही को क़ाइम रखते
हैं)। 18 और अज़दहा समुन्दर के साहिल पर खड़ा हो
गया।

दो हैवान

13 1 फिर मैं ने देखा कि समुन्दर में से एक
हैवान निकल रहा है। उस के सात सींग
और सात सर थे। हर सींग पर एक ताज और हर
सर पर कुफ़्र का एक नाम था। 2 यह हैवान चीते की
मानिन्द था। लेकिन उस के रीछ के से पाँओ और
शेरबबर का सा मुँह था। अज़दहे ने इस हैवान को
अपनी क़ुव्वत, अपना तख़्त और बड़ा इख़तियार दे
दिया। 3 लगता था कि हैवान के सरों में से एक पर
लाइलाज ज़ख़्म लगा है। लेकिन इस ज़ख़्म को शिफ़ा
दी गई। पूरी दुनिया यह देख कर हैरतज़दा हुई और
हैवान के पीछे लग गई। 4 लोगों ने अज़दहे को सिज्दा
किया, क्यूँकि उसी ने हैवान को इख़तियार दिया था।
और उन्हों ने यह कह कर हैवान को भी सिज्दा किया,
"कौन इस हैवान की मानिन्द है? कौन इस से लड़
सकता है?"

5 इस हैवान को बड़ी बड़ी बातें और कुफ़्र बकने
का इख़तियार दिया गया। और उसे यह करने का
इख़तियार 42 महीने के लिए मिल गया। 6 यूँ वह

अपना मुँह खोल कर अल्लाह, उस के नाम, उस की
सुकूनतगाह और आसमान के बाशिन्दों पर कुफ़्र
बकने लगा। 7 उसे मुक़द्दसीन से जंग करके उन पर
फ़त्ह पाने का इख़तियार भी दिया गया। और उसे
हर क़बीले, हर उम्मत, हर ज़बान और हर क़ौम पर
इख़तियार दिया गया। 8 ज़मीन के तमाम बाशिन्दे इस
हैवान को सिज्दा करेंगे यानी वह सब जिन के नाम
दुनिया की इब्तिदा से लेले की किताब-ए-हयात में
दर्ज नहीं हैं, उस लेले की किताब में जो ज़बह किया
गया है।

9 जो सुन सकता है वह सुन ले! 10 अगर किसी
को क़ैदी बनना है तो वह क़ैदी ही बनेगा। अगर
किसी को तलवार की ज़द में आ कर मरना है तो
वह ऐसे ही मरेगा। अब मुक़द्दसीन को साबितक़दमी
और वफ़ादार ईमान की ख़ास ज़रूरत है।

11 फिर मैं ने एक और हैवान को देखा। वह ज़मीन
में से निकल रहा था। उस के लेले के से दो सींग
थे, लेकिन उस के बोलने का अन्दाज़ अज़दहे का
सा था। 12 उस ने पहले हैवान का पूरा इख़तियार
उस की ख़ातिर इस्तेमाल करके ज़मीन और उस
के बाशिन्दों को पहले हैवान को सिज्दा करने पर
उकसाया, यानी उस हैवान को जिस का लाइलाज
ज़ख़्म भर गया था। 13 और उस ने बड़े मोजिज़ाना
निशान दिखाए, यहाँ तक कि उस ने लोगों के देखते
देखते आसमान से ज़मीन पर आग नाज़िल होने
दी। 14 यूँ उसे पहले हैवान की ख़ातिर मोजिज़ाना
निशान दिखाने का इख़तियार दिया गया, और इन
के ज़रीए उस ने ज़मीन के बाशिन्दों को सहीह राह
से बहकाया। उस ने उन्हें कहा कि वह उस हैवान
की ताज़ीम में एक मुजस्समा बना दें जो तलवार
से ज़ख़्मी होने के बावुजूद दुबारा ज़िन्दा हुआ था।
15 फिर उसे पहले हैवान के मुजस्समे में जान डालने
का इख़तियार दिया गया ताकि मुजस्समा बोल सके
और उन्हें क़त्ल करवा सके जो उसे सिज्दा करने
से इन्कार करते थे। 16 उस ने यह भी करवाया कि
हर एक के दहने हाथ या माथे पर एक ख़ास निशान
लगाया जाए, ख़्वाह वह छोटा हो या बड़ा, अमीर हो
या ग़रीब, आज़ाद हो या ग़ुलाम। 17 सिर्फ़ वह शख़्स
कुछ ख़रीद या बेच सकता था जिस पर यह निशान
लगा था। यह निशान हैवान का नाम या उस के नाम
का नम्बर था।

18 यहाँ हिक्मत की ज़रूरत है। जो समझदार है वह
हैवान के नम्बर का हिसाब करे, क्यूँकि यह एक मर्द
का नम्बर है। उस का नम्बर 666 है।

लेला और उस की क़ौम

14 1 फिर मैं ने देखा कि लेला मेरे सामने ही
सिय्यून के पहाड़ पर खड़ा है। उस के साथ
1,44,000 अफ़राद खड़े थे जिन के माथों पर उस
का और उस के बाप का नाम लिखा था। 2 और मैं
ने आसमान से एक ऐसी आवाज़ सुनी जो किसी बड़े
आबशार और गरजते बादलों की ऊँची कड़क की
मानिन्द थी। यह उस आवाज़ की मानिन्द थी जो
सरोद बजाने वाले अपने साज़ों से निकालते हैं। 3 यह
1,44,000 अफ़राद तख़्त, चार जानदारों और बुज़ुर्गों
के सामने खड़े एक नया गीत गा रहे थे, एक ऐसा
गीत जो सिर्फ़ वही सीख सके जिन्हें लेले ने ज़मीन से
ख़रीद लिया था। 4 यह वह मर्द हैं जिन्हों ने अपने आप
को ख़वातीन के साथ आलूदा नहीं किया, क्यूँकि वह
कुंवारे हैं। जहाँ भी लेला जाता है वहाँ वह भी जाते
हैं। उन्हें बाक़ी इन्सानों में से फ़सल के पहले फल
की हैसियत से अल्लाह और लेले के लिए ख़रीदा गया
है। 5 उन के मुँह से कभी झूट नहीं निकला बल्कि वह
बेइल्ज़ाम हैं।

तीन फ़रिश्ते

6 फिर मैं ने एक और फ़रिश्ता देखा। वह मेरे सर
के ऊपर ही हवा में उड़ रहा था। उस के पास अल्लाह
की अबदी ख़ुशख़बरी थी ताकि वह उसे ज़मीन के
बाशिन्दों यानी हर क़ौम, क़बीले, अहल-ए-ज़बान
और उम्मत को सुनाए। 7 उस ने ऊँची आवाज़ से
कहा, “ख़ुदा का ख़ौफ़ मान कर उसे जलाल दो,

क्यूँकि उस की अदालत का वक़्त आ गया है। उसे सिज्दा करो जिस ने आसमानों, ज़मीन, समुन्दर और पानी के चश्मों को ख़ल्क़ किया है।”

8 एक दूसरे फ़रिश्ते ने पहले के पीछे पीछे चलते हुए कहा, “वह गिर गया है! हाँ, अज़ीम बाबल गिर गया है, जिस ने तमाम क़ौमों को अपनी हरामकारी और मस्ती की मै पिलाई है।”

9 इन दो फ़रिश्तों के पीछे एक तीसरा फ़रिश्ता चल रहा था। उस ने ऊँची आवाज़ से कहा, “जो भी हैवान और उस के मुजस्समे को सिज्दा करे और जिसे भी उस का निशान अपने माथे या हाथ पर मिल जाए 10 वह अल्लाह के ग़ज़ब की मै से पिएगा, ऐसी मै जो मिलावट के बग़ैर ही अल्लाह के ग़ज़ब के प्याले में डाली गई है। मुक़द्दस फ़रिश्तों और लेले के हुज़ूर उसे आग और गंधक का अज़ाब सहना पड़ेगा। 11 और इन लोगों को सताने वाली यह आग जलती रहेगी, इस का धुआँ अबद तक चढ़ता रहेगा। जो हैवान और उस के मुजस्समे को सिज्दा करते हैं या जिन्हों ने उस के नाम का निशान लिया है वह न दिन, न रात को आराम पाएँगे।”

12 यहाँ मुक़द्दसीन को साबितक़दम रहने की ज़रूरत है, उन्हें जो अल्लाह के अह्काम पूरे करते और ईसा के वफ़ादार रहते हैं।

13 फिर मैं ने आसमान से एक आवाज़ यह कहती हुई सुनी, “लिख, मुबारक हैं वह मुर्दे जो अब से ख़ुदावन्द में वफ़ात पाते हैं।”

“जी हाँ,” रूह फ़रमाता है, “वह अपनी मेहनत-मशक़्क़त से आराम पाएँगे, क्यूँकि उन के नेक काम उन के पीछे हो कर उन के साथ चलेंगे।”

ज़मीन पर फ़सल की कटाई

14 फिर मैं ने एक सफ़ेद बादल देखा, और उस पर कोई बैठा था जो इब्न-ए-आदम की मानिन्द था। उस के सर पर सोने का ताज और हाथ में तेज़ दरान्ती थी। 15 एक और फ़रिश्ता अल्लाह के घर से निकल कर ऊँची आवाज़ से पुकार कर उस से मुख़ातिब हुआ जो बादल पर बैठा था, “अपनी दरान्ती ले कर फ़सल की कटाई कर! क्यूँकि फ़सल काटने का वक़्त आ गया है और ज़मीन पर की फ़सल पक गई है।” 16 चुनाँचे बादल पर बैठने वाले ने अपनी दरान्ती ज़मीन पर चलाई और ज़मीन की फ़सल की कटाई हुई।

17 इस के बाद एक और फ़रिश्ता अल्लाह के उस घर से निकल आया जो आसमान पर है, और उस के पास भी तेज़ दरान्ती थी।

18 फिर एक तीसरा फ़रिश्ता आया। उसे आग पर इख़तियार था। वह क़ुर्बानगाह से आया और ऊँची आवाज़ से पुकार कर तेज़ दरान्ती पकड़े हुए फ़रिश्ते से मुख़ातिब हुआ, “अपनी तेज़ दरान्ती ले कर ज़मीन की अंगूर की बेल से अंगूर के गुच्छे जमा कर, क्यूँकि उस के अंगूर पक गए हैं।” 19 फ़रिश्ते ने ज़मीन पर अपनी दरान्ती चलाई, उस के अंगूर जमा किए और उन्हें अल्लाह के ग़ज़ब के उस बड़े हौज़ में फैंक दिया जिस में अंगूर का रस निकाला जाता है। 20 यह हौज़ शहर से बाहर वाक़े था। उस में पड़े अंगूरों को इतना रौंदा गया कि हौज़ में से ख़ून बह निकला। ख़ून का यह सैलाब 300 किलोमीटर दूर तक पहुँच गया और वह इतना ज़्यादा था कि घोड़ों की लगामों तक पहुँच गया।

आख़िरी बलाओं के फ़रिश्ते

15 1 फिर मैं ने आसमान पर एक और इलाही निशान देखा, जो अज़ीम और हैरतअंगेज़ था। सात फ़रिश्ते सात आख़िरी बलाएँ अपने पास रख कर खड़े थे। इन से अल्लाह का ग़ज़ब तक्मील तक पहुँच गया।

2 मैं ने शीशे का सा एक समुन्दर भी देखा जिस में आग मिलाई गई थी। इस समुन्दर के पास वह खड़े थे जो हैवान, उस के मुजस्समे और उस के नाम के नम्बर पर ग़ालिब आ गए थे। वह अल्लाह के दिए हुए सरोद पकड़े 3 अल्लाह के ख़ादिम मूसा और लेले का गीत गा रहे थे,

“ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा,

तेरे काम कितने अज़ीम और हैरतअंगेज़ हैं।
ए ज़मानों के बादशाह,
तेरी राहें कितनी रास्त और सच्ची हैं।
4 ऐ रब, कौन तेरा ख़ौफ़ नहीं मानेगा?
कौन तेरे नाम को जलाल नहीं देगा?
क्यूँकि तू ही क़ुद्दूस है।
तमाम क़ौमें आ कर तेरे हुज़ूर सिज्दा करेंगी,
क्यूँकि तेरे रास्त काम ज़ाहिर हो गए हैं।"

5 इस के बाद मैं ने देखा कि अल्लाह के घर यानी आसमान पर के शरीअत के ख़ैमे को [b]खोल दिया गया। 6 अल्लाह के घर से वह सात फ़रिश्ते निकल आए जिन के पास सात बलाएँ थीं। उन के कतान के कपड़े साफ़-सुथरे और चमक रहे थे। यह कपड़े सीनों पर सोने के कमरबन्द से बंधे हुए थे। 7 फिर चार जानदारों में से एक ने इन सात फ़रिश्तों को सोने के सात प्याले दिए। यह प्याले उस ख़ुदा के ग़ज़ब से भरे हुए थे जो अज़ल से अबद तक ज़िन्दा है। 8 उस वक़्त अल्लाह का घर उस के जलाल और क़ुदरत से पैदा होने वाले धुएँ से भर गया। और जब तक सात फ़रिश्तों की सात बलाएँ तक्मील तक न पहुँचीं उस वक़्त तक कोई भी अल्लाह के घर में दाख़िल न हो सका।

अल्लाह के ग़ज़ब के प्याले

16 1 फिर मैं ने एक ऊँची आवाज़ सुनी जिस ने अल्लाह के घर में से सात फ़रिश्तों से कहा, "जाओ, अल्लाह के ग़ज़ब से भरे सात प्यालों को ज़मीन पर उंडेल दो।"

2 पहले फ़रिश्ते ने जा कर अपना प्याला ज़मीन पर उंडेल दिया। इस पर उन लोगों के जिस्मों पर भद्दे और तक्लीफ़दिह फोड़े निकल आए जिन पर हैवान का निशान था और जो उस के मुजस्समे को सिज्दा करते थे।

3 दूसरे फ़रिश्ते ने अपना प्याला समुन्दर पर उंडेल दिया। इस पर समुन्दर का पानी लाश के से ख़ून में बदल गया, और उस में हर ज़िन्दा मख़्लूक़ मर गई।

4 तीसरे फ़रिश्ते ने अपना प्याला दरयाओं और पानी के चश्मों पर उंडेल दिया तो उन का पानी ख़ून बन गया। 5 फिर मैं ने पानियों पर मुक़र्रर फ़रिश्ते को यह कहते सुना, "तू यह फ़ैसला करने में रास्त है, तू जो है और जो था, तू जो क़ुद्दूस है। 6 चूँकि उन्हों ने तेरे मुक़द्दसीन और नबियों की ख़ूँरेज़ी की है, इस लिए तू ने उन्हें वह कुछ दे दिया जिस के लाइक़ वह हैं। तू ने उन्हें ख़ून पिला दिया।" 7 फिर मैं ने क़ुर्बानगाह को यह जवाब देते सुना, "हाँ, ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा, हक़ीक़तन तेरे फ़ैसले सच्चे और रास्त हैं।"

8 चौथे फ़रिश्ते ने अपना प्याला सूरज पर उंडेल दिया। इस पर सूरज को लोगों को आग से झुलसाने का इख़तियार दिया गया। 9 लोग शदीद तपिश से झुलस गए, और उन्हों ने अल्लाह के नाम पर कुफ़्र बका जिसे इन बलाओं पर इख़तियार था। उन्हों ने तौबा करने और उसे जलाल देने से इन्कार किया।

10 पाँचवें फ़रिश्ते ने अपना प्याला हैवान के तख़्त पर उंडेल दिया। इस पर उस की बादशाही में अंधेरा छा गया। लोग अज़ियत के मारे अपनी ज़बानें काटते रहे। 11 उन्हों ने अपनी तकलीफों और फोड़ों की वजह से आसमान पर कुफ़्र बका और अपने कामों से इन्कार न किया।

12 छटे फ़रिश्ते ने अपना प्याला बड़े दरया फ़ुरात पर उंडेल दिया। इस पर उस का पानी सूख गया ताकि मशरिक़ के बादशाहों के लिए रास्ता तय्यार हो जाए। 13 फिर मैं ने तीन बदरुहें देखीं जो मेंढ़कों की मानिन्द थीं। वह अज़दहे के मुँह, हैवान के मुँह और झूटे नबी के मुँह में से निकल आईं। 14 यह मेंढ़क शयातीन की रूहें हैं जो मोजिज़े दिखाती हैं और निकल कर पूरी दुनिया के बादशाहों के पास जाती हैं ताकि उन्हें

---

[b]यानी मुलाक़ात के ख़ैमे को।

अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ के अज़ीम दिन पर जंग के लिए इकट्ठा करें।

15 "देखो, मैं चोर की तरह आऊँगा। मुबारक है वह जो जागता रहता और अपने कपड़े पहने हुए रहता है ताकि उसे नंगी हालत में चलना न पड़े और लोग उस की शर्मगाह न देखें।"

16 फिर उन्हों ने बादशाहों को उस जगह पर इकट्ठा किया जिस का नाम इब्रानी ज़बान में हर्मजिद्दोन है।

17 सातवें फ़रिश्ते ने अपना प्याला हवा में उंडेल दिया। इस पर अल्लाह के घर में तख़्त की तरफ़ से एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी जिस ने कहा, "अब काम तक्मील तक पहुँच गया है!" 18 बिजलियाँ चमकने लगीं, शोर मच गया, बादल गरजने लगे और एक शदीद ज़ल्ज़ला आया। इस क़िस्म का ज़ल्ज़ला ज़मीन पर इन्सान की तख़्लीक़ से ले कर आज तक नहीं आया, इतना सख़्त ज़ल्ज़ला कि 19 अज़ीम शहर तीन हिस्सों में बट गया और क़ौमों के शहर तबाह हो गए। अल्लाह ने अज़ीम बाबल को याद करके उसे अपने सख़्त ग़ज़ब की मै से भरा प्याला पिला दिया। 20 तमाम जज़ीरे ग़ाइब हो गए और पहाड़ कहीं नज़र न आए। 21 लोगों पर आसमान से मन मन भर के बड़े बड़े ओले गिर गए। और लोगों ने ओलों की बला की वजह से अल्लाह पर कुफ़्र बका, क्यूँकि यह बला निहायत सख़्त थी।

मश्हूर कस्बी

17 1 फिर सात प्याले अपने पास रखने वाले इन सात फ़रिश्तों में से एक मेरे पास आया। उस ने कहा, "आ, मैं तुझे उस बड़ी कस्बी की सज़ा दिखा दूँ जो गहरे पानी के पास बैठी है। 2 ज़मीन के बादशाहों ने उस के साथ ज़िना किया। हाँ, उस की ज़िनाकारी की मै से ज़मीन के बाशिन्दे मस्त हो गए।"

3 फिर फ़रिश्ता मुझे रूह में एक रेगिस्तान में ले गया। वहाँ मैं ने एक औरत को देखा। वह एक क़िर्मिज़ी रंग के हैवान पर सवार थी जिस के पूरे जिस्म पर कुफ़्र के नाम लिखे थे और जिस के सात सर और दस सींग थे। 4 यह औरत अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के कपड़े पहने और सोने, बेशक़ीमत जवाहिर और मोतियों से सजी हुई थी। उस के हाथ में सोने का एक प्याला था जो घिनौनी चीज़ों और उस की ज़िनाकारी की गन्दगी से भरा हुआ था। 5 उस के माथे पर यह नाम लिखा था, जो एक भेद है, "अज़ीम बाबल, कस्बियों और ज़मीन की घिनौनी चीज़ों की माँ।" 6 और मैं ने देखा कि यह औरत उन मुक़द्दसीन के ख़ून से मस्त हो गई थी जिन्हों ने ईसा की गवाही दी थी।

उसे देख कर मैं निहायत हैरान हुआ। 7 फ़रिश्ते ने मुझ से पूछा, "तू क्यूँ हैरान है? मैं तुझ पर औरत और उस हैवान का भेद खोल दूँगा जिस पर औरत सवार है और जिस के सात सर और दस सींग हैं। 8 जिस हैवान को तू ने देखा वह पहले था, इस वक़्त नहीं है और दुबारा अथाह गढ़े में से निकल कर हलाकत की तरफ़ बढ़ेगा। ज़मीन के जिन बाशिन्दों के नाम दुनिया की तख़्लीक़ से ही किताब-ए-हयात में दर्ज नहीं हैं वह हैवान को देख कर हैरतज़दा हो जाएंगे। क्यूँकि वह पहले था, इस वक़्त नहीं है लेकिन दुबारा आएगा।

9 यहाँ समझदार ज़हन की ज़रूरत है। सात सरों से मुराद सात पहाड़ हैं जिन पर यह औरत बैठी है। यह सात बादशाहों की नुमाइन्दगी भी करते हैं। 10 इन में से पाँच गिर गए हैं, छटा मौजूद है और सातवाँ अभी आने वाला है। लेकिन जब वह आएगा तो उसे थोड़ी देर के लिए रहना है। 11 जो हैवान पहले था और इस वक़्त नहीं है वह आठवाँ बादशाह है, गो वह सात बादशाहों में से भी एक है। वह हलाकत की तरफ़ बढ़ रहा है।

12 जो दस सींग तू ने देखे वह दस बादशाह हैं जिन्हें अभी कोई बादशाही नहीं मिली। लेकिन उन्हें घंटे भर के लिए हैवान के साथ बादशाह का इख़तियार मिलेगा। 13 यह एक ही सोच रख कर अपनी ताक़त और इख़तियार हैवान को दे देंगे और लेले से जंग करेंगे, 14 लेकिन लेला अपने बुलाए गए, चुने हुए और

वफ़ादार पैरोकारों के साथ उन पर ग़ालिब आएगा,
क्यूँकि वह रब्बों का रब और बादशाहों का बादशाह
है।”
15 फिर फ़रिश्ते ने मुझ से कहा, “जिस पानी के पास
तू ने कस्बी को बैठी देखा वह उम्मतें, हुजूम, क़ौमें
और ज़बानें है। 16 जो हैवान और दस सींग तू ने देखे
वह कस्बी से नफ़रत करेंगे। वह उसे वीरान करके
नंगा छोड़ देंगे और उस का गोश्त खा कर उसे भस्म
करेंगे। 17 क्यूँकि अल्लाह ने उन के दिलों में यह डाल
दिया है कि वह उस का मक़्सद पूरा करें और उस
वक़्त तक हुकूमत करने का अपना इख़तियार हैवान
के सपुर्द कर दें जब तक अल्लाह के फ़रमान तक्मील
तक न पहुँच जाएँ।
18 जिस औरत को तू ने देखा वह वही बड़ा शहर है
जो ज़मीन के बादशाहों पर हुकूमत करता है।”

बाबल शहर की शिकस्त

18 1 इस के बाद मैं ने एक और फ़रिश्ता देखा
जो आसमान पर से उतर रहा था। उसे बहुत
इख़तियार हासिल था और ज़मीन उस के जलाल से
रौशन हो गई। 2 उस ने ऊँची आवाज़ से पुकार कर
कहा, “वह गिर गई है! हाँ, अज़ीम कस्बी बाबल गिर
गई है! अब वह शयातीन का घर और हर बदरुह का
बसेरा बन गई है, हर नापाक और घिनौने परिन्दे का
बसेरा। 3 क्यूँकि तमाम क़ौमों ने उस की हरामकारी
और मस्ती की मै पी ली है। ज़मीन के बादशाहों ने
उस के साथ ज़िना किया और ज़मीन के सौदागर उस
की बेलगाम अय्याशी से अमीर हो गए हैं।” 4 फिर मैं
ने एक और आवाज़ सुनी। उस ने आसमान की तरफ़
से कहा,

“ऐ मेरी क़ौम, उस में से निकल आ,
ताकि तुम उस के गुनाहों में शरीक न हो जाओ
और उस की बलाएँ तुम पर न आएँ। 5 क्यूँकि उस
के गुनाह आसमान तक पहुँच गए हैं,
और अल्लाह उन की बदियों को याद करता है।
6 उस के साथ वही सुलूक करो
जो उस ने तुम्हारे साथ किया है।
जो कुछ उस ने किया है
उस का दुगना बदला उसे देना।
जो शराब उस ने दूसरों को पिलाने के लिए तय्यार
की है
उस का दुगना बदला उसे दे देना।
7 उसे उतनी ही अज़ियत और ग़म पहुँचा दो
जितना उस ने अपने आप को शानदार बनाया और
अय्याशी की।
क्यूँकि अपने दिल में वह कहती है,
‘मैं यहाँ अपने तख़्त पर रानी हूँ।
न मैं बेवा हूँ, न मैं कभी मातम करूँगी।’
8 इस वजह से एक दिन यह बलाएँ यानी मौत,
मातम और काल
उस पर आन पड़ेंगी।
वह भस्म हो जाएगी,
क्यूँकि उस की अदालत करने वाला रब ख़ुदा क़वी
है।”
9 और ज़मीन के जिन बादशाहों ने उस के साथ ज़िना
और अय्याशी की वह उस के जलने का धुआँ देख
कर रो पड़ेंगे और आह-ओ-ज़ारी करेंगे। 10 वह उस
की अज़ियत को देख कर ख़ौफ़ खाएँगे और दूर दूर
खड़े हो कर कहेंगे, “अफ़्सोस! तुझ पर अफ़्सोस, ऐ
अज़ीम और ताक़तवर शहर बाबल! एक ही घंटे के
अन्दर अन्दर अल्लाह की अदालत तुझ पर आ गई
है।”
11 ज़मीन के सौदागर भी उसे देख कर रो पड़ेंगे
और आह-ओ-ज़ारी करेंगे, क्यूँकि कोई नहीं रहा
होगा जो उन का माल ख़रीदे : 12 उन का सोना,
चाँदी, बेशक़ीमत जवाहिर, मोती, बारीक कतान,
अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का कपड़ा, रेशम, हर
क़िस्म की ख़ुश्बूदार लकड़ी, हाथीदाँत की हर चीज़
और क़ीमती लकड़ी, पीतल, लोहे और संग-ए-मरमर
की हर चीज़, 13 दारचीनी, मसाला, अगरबत्ती, मुर,
बख़ूर, मै, ज़ैतून का तेल, बेहतरीन मैदा, गन्दुम,
गाय-बैल, भेड़ें, घोड़े, रथ और ग़ुलाम यानी इन्सान।

14 सौदागर उस से कहेंगे, “जो फल तू चाहती थी वह
तुझ से दूर हो गया है। तेरी तमाम दौलत और शान-
ओ-शौकत ग़ाइब हो गई है और आइन्दा कभी भी तेरे
पास पाई नहीं जाएगी।” 15 जो सौदागर उसे यह चीज़ें
फ़रोख़्त करने से दौलतमन्द हुए वह उस की अज़ियत
देख कर ख़ौफ़ के मारे दूर दूर खड़े हो जाएंगे। वह
रो रो कर मातम करेंगे 16 और कहेंगे, “हाय! तुझ
पर अफ़सोस, ऐ अज़ीम शहर, ऐ ख़ातून जो पहले
बारीक कतान, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के कपड़े
पहने फिरती थी और जो सोने, क़ीमती जवाहिर और
मोतियों से सजी हुई थी। 17 एक ही घंटे के अन्दर
अन्दर सारी दौलत तबाह हो गई है!”

हर बहरी जहाज़ का कप्तान, हर समुन्दरी मुसाफ़िर,
हर मल्लाह और वह तमाम लोग जो समुन्दर पर सफ़र
करने से अपनी रोज़ी कमाते हैं वह सब दूर दूर
खड़े हो जाएंगे। 18 उस के जलने का धुआँ देख कर
वह कहेंगे, “क्या कभी कोई इतना अज़ीम शहर
था?” 19 वह अपने सरों पर ख़ाक डाल लेंगे और
चिल्ला चिल्ला कर रोएँगे और आह-ओ-ज़ारी करेंगे।
वह कहेंगे, “हाय! तुझ पर अफ़सोस, ऐ अज़ीम शहर,
जिस की दौलत से तमाम बहरी जहाज़ों के मालिक
अमीर हुए। एक ही घंटे के अन्दर अन्दर वह वीरान
हो गया है।”

20 ऐ आसमान, उसे देख कर ख़ुशी मना!
ऐ मुक़द्दसो, रसूलो और नबियो, ख़ुशी मनाओ!
क्यूँकि अल्लाह ने तुम्हारी ख़ातिर उस की अदालत
की है।

21 फिर एक ताक़तवर फ़रिश्ते ने बड़ी चक्की के पाट
की मानिन्द एक बड़े पत्थर को उठा कर समुन्दर में
फैंक दिया। उस ने कहा, “अज़ीम शहर बाबल को
इतनी ही ज़बरदस्ती से पटक दिया जाएगा। बाद में
उसे कहीं नहीं पाया जाएगा। 22 अब से न मौसीक़ारों
की आवाज़ें तुझ में कभी सुनाई देंगी, न सरोद, बाँसरी
या तुरम बजाने वालों की। अब से किसी भी काम
का कारीगर तुझ में पाया नहीं जाएगा। हाँ, चक्की
की आवाज़ हमेशा के लिए बन्द हो जाएगी। 23 अब
से चराग़ तुझे रौशन नहीं करेगा, दुल्हन-दूल्हे की
आवाज़ तुझ में सुनाई नहीं देगी। हाय, तेरे सौदागर
दुनिया के बड़े बड़े अफ़्सर थे, और तेरी जादूगरी से
तमाम क़ौमों को बहकाया गया।”

24 हाँ, बाबल में नबियों, मुक़द्दसीन और उन तमाम
लोगों का ख़ून पाया गया है जो ज़मीन पर शहीद हो
गए हैं।

19 1 इस के बाद मैं ने आसमान पर एक
बड़े हुजूम की सी आवाज़ सुनी जिस ने
कहा, “अल्लाह की तम्जीद हो! नजात, जलाल और
क़ुदरत हमारे ख़ुदा को हासिल है। 2 क्यूँकि उस की
अदालतें सच्ची और रास्त हैं। उस ने उस बड़ी कस्बी
को मुजरिम ठहराया है जिस ने ज़मीन को अपनी
ज़िनाकारी से बिगाड़ दिया। उस ने उस से अपने
ख़ादिमों की क़त्ल-ओ-ग़ारत का बदला ले लिया है।”
3 और वह दुबारा बोल उठे, “अल्लाह की तम्जीद हो!
इस शहर का धुआँ अबद तक चढ़ता रहता है।”
4 चौबीस बुज़ुर्गों और चार जानदारों ने गिर कर तख़्त
पर बैठे अल्लाह को सिज्दा किया। उन्हों ने कहा,
“आमीन, अल्लाह की तम्जीद हो।”

लेले की ज़ियाफ़त

5 फिर तख़्त की तरफ़ से एक आवाज़ सुनाई दी।
उस ने कहा, “ऐ उस के तमाम ख़ादिमो, हमारे ख़ुदा
की तम्जीद करो। ऐ उस का ख़ौफ़ मानने वालो,
ख़्वाह बड़े हो या छोटे उस की सताइश करो।”
6 फिर मैं ने एक बड़े हुजूम की सी आवाज़ सुनी,
जो बड़ी आबशार के शोर और गरजते बादलों की
कड़क की मानिन्द थी। इन लोगों ने कहा, “अल्लाह
की तम्जीद हो! क्यूँकि हमारा रब क़ादिर-ए-मुतलक़
ख़ुदा तख़्तनशीन हो गया है। 7 आओ, हम मसरूर
हों, ख़ुशी मनाएँ और उसे जलाल दें, क्यूँकि लेले की
शादी का वक़्त आ गया है। उस की दुल्हन ने अपने
आप को तय्यार कर लिया है, 8 और उसे पहनने के
लिए बारीक कतान का चमकता और पाक-साफ़

लिबास दे दिया गया।" (बारीक कतान से मुराद मुक़द्दसीन के रास्त काम हैं।)

9 फिर फ़रिश्ते ने मुझ से कहा, "लिख, मुबारक हैं वह जिन्हें लेले की शादी की ज़ियाफ़त के लिए दावत मिल गई है।" उस ने मज़ीद कहा, "यह अल्लाह के सच्चे अल्फ़ाज़ हैं।"

10 इस पर मैं उसे सिज्दा करने के लिए उस के पाँओ में गिर गया। लेकिन उस ने मुझ से कहा, "ऐसा मत कर! मैं भी तेरा और तेरे उन भाइयों का हमख़िदमत हूँ जो ईसा की गवाही देने पर क़ाइम हैं। सिर्फ़ अल्लाह को सिज्दा कर। क्यूँकि जो ईसा के बारे में गवाही देता है वह यह नबुव्वत की रूह में करता है।"

सफ़ेद घोड़े का सवार

11 फिर मैं ने आसमान को खुला देखा। एक सफ़ेद घोड़ा नज़र आया जिस के सवार का नाम "वफ़ादार और सच्चा" है, क्यूँकि वह इन्साफ़ से अदालत और जंग करता है। 12 उस की आँखें भड़कते शोले की मानिन्द हैं और उस के सर पर बहुत से ताज हैं। उस पर एक नाम लिखा है जिसे सिर्फ़ वही जानता है, कोई और उसे नहीं जानता। 13 वह एक लिबास से मुलब्बस था जिसे ख़ून में डुबोया गया था। उस का नाम "अल्लाह का कलाम" है। 14 आसमान की फ़ौजें उस के पीछे पीछे चल रही थीं। सब सफ़ेद घोड़ों पर सवार थे और बारीक कतान के चमकते और पाक-साफ़ कपड़े पहने हुए थे। 15 उस के मुँह से एक तेज़ तलवार निकलती है जिस से वह क़ौमों को मार देगा। वह लोहे के शाही असा से उन पर हुकूमत करेगा। हाँ, वह अंगूर का रस निकालने के हौज़ में उन्हें कुचल डालेगा। यह हौज़ क्या है? अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ का सख़्त ग़ज़ब। 16 उस के लिबास और रान पर यह नाम लिखा है, "बादशाहों का बादशाह और रब्बों का रब।"

17 फिर मैं ने एक फ़रिश्ता सूरज पर खड़ा देखा। उस ने ऊँची आवाज़ से पुकार कर उन तमाम परिन्दों से जो मेरे सर पर मंडला रहे थे कहा, "आओ, अल्लाह की बड़ी ज़ियाफ़त के लिए जमा हो जाओ। 18 फिर तुम बादशाहों, जरनैलों, बड़े बड़े अफ़सरों, घोड़ों और उन के सवारों का गोश्त खाओगे, हाँ तमाम लोगों का गोश्त, ख़्वाह आज़ाद हों या ग़ुलाम, छोटे हों या बड़े।"

19 फिर मैं ने हैवान और बादशाहों को उन की फ़ौजों समेत देखा। वह घोड़े पर "अल्लाह का कलाम" नामी सवार और उस की फ़ौज से जंग करने के लिए जमा हुए थे। 20 लेकिन हैवान को गिरिफ़्तार किया गया। उस के साथ उस झूटे नबी को भी गिरिफ़्तार किया गया जिस ने हैवान की ख़ातिर मोजिज़ाना निशान दिखाए थे। इन मोजिज़ों के वसीले से उस ने उन को फ़रेब दिया था जिन्हें हैवान का निशान मिल गया था और जो उस के मुजस्समे को सिज्दा करते थे। दोनों को जलती हुई गंधक की शोलाख़ेज़ झील में फैंका गया। 21 बाक़ी लोगों को उस तलवार से मार डाला गया जो घोड़े पर सवार के मुँह से निकलती थी। और तमाम परिन्दे लाशों का गोश्त खा कर सेर हो गए।

हज़ार साल का दौर

20 1 फिर मैं ने एक फ़रिश्ता देखा जो आसमान से उतर रहा था। उस के हाथ में अथाह गढ़े की चाबी और एक भारी ज़न्जीर थी। 2 उस ने अज़दहे यानी क़दीम साँप को जो शैतान या इब्लीस कहलाता है पकड़ कर हज़ार साल के लिए बांध लिया। 3 उस ने उसे अथाह गढ़े में फैंक कर ताला लगा दिया और उस पर मुहर लगा दी ताकि वह हज़ार साल तक क़ौमों को गुमराह न कर सके। उस के बाद ज़रूरी है कि उसे थोड़ी देर के लिए आज़ाद कर दिया जाए।

4 फिर मैं ने तख़्त देखे जिन पर वह बैठे थे जिन्हें अदालत करने का इख़्तियार दिया गया था। और मैं ने उन की रूहें देखीं जिन्हें ईसा के बारे में गवाही देने और जिन का अल्लाह का कलाम पेश करने की वजह से सर क़लम किया गया था। उन्हों ने हैवान या उस के मुजस्समे को सिज्दा नहीं किया था, न उस का निशान अपने माथों या हाथों पर लगवाया

था। अब यह लोग ज़िन्दा हुए और हज़ार साल तक
मसीह के साथ हुकूमत करते रहे। 5 (बाक़ी मुर्दे हज़ार
साल के इख़तिताम पर ही ज़िन्दा हुए)। यह पहली
क़ियामत है। 6 मुबारक और मुक़द्दस हैं वह जो इस
पहली क़ियामत में शरीक हैं। इन पर दूसरी मौत का
कोई इख़तियार नहीं है बल्कि यह अल्लाह और मसीह
के इमाम हो कर हज़ार साल तक उस के साथ हुकूमत
करेंगे।

इब्लीस की शिकस्त

7 हज़ार साल गुज़र जाने के बाद इब्लीस को उस की
क़ैद से आज़ाद कर दिया जाएगा। 8 तब वह निकल
कर ज़मीन के चारों कोनों में मौजूद क़ौमों बनाम जूज
और माजूज को बहकाएगा और उन्हें जंग करने के
लिए जमा करेगा। लड़ने वालों की तादाद साहिल
पर की रेत के ज़र्रों जैसी बेशुमार होगी। 9 उन्हों ने
ज़मीन पर फैल कर मुक़द्दसीन की लश्करगाह को घेर
लिया, यानी उस शहर को जिसे अल्लाह प्यार करता
है। लेकिन आग ने आसमान से नाज़िल हो कर उन्हें
हड़प कर लिया। 10 और इब्लीस को जिस ने उन को
फ़रेब दिया था जलती हुई गंधक की झील में फैंका
गया, वहाँ जहाँ हैवान और झूटे नबी को पहले फैंका
गया था। उस जगह पर उन्हें दिन रात बल्कि अबद
तक अज़ाब सहना पड़ेगा।

आख़िरी अदालत

11 फिर मैं ने एक बड़ा सफ़ेद तख़्त देखा और उसे
जो उस पर बैठा है। आसमान-ओ-ज़मीन उस के हुज़ूर
से भाग कर ग़ाइब हो गए। 12 और मैं ने तमाम मुर्दों
को तख़्त के सामने खड़े देखा, ख़्वाह वह छोटे थे या
बड़े। किताबें खोली गईं। फिर एक और किताब को
खोल दिया गया जो किताब-ए-हयात थी। मुर्दों का
उस के मुताबिक़ फ़ैसला किया गया जो कुछ उन्हों
ने किया था और जो किताबों में दर्ज था। 13 समुन्दर
ने उन तमाम मुर्दों को पेश कर दिया जो उस में थे, और
मौत और पाताल ने भी उन मुर्दों को पेश कर दिया
जो उन में थे। चुनाँचे हर शख़्स का उस के मुताबिक़
फ़ैसला किया गया जो उस ने किया था। 14 फिर मौत
और पाताल को जलती हुई झील में फैंका गया। यह
झील दूसरी मौत है। 15 जिस किसी का नाम किताब-
ए-हयात में दर्ज नहीं था उसे जलती हुई झील में फैंका
गया।

नया आसमान और नई ज़मीन

21 1 फिर मैं ने एक नया आसमान और एक
नई ज़मीन देखी। क्यूँकि पहला आसमान
और पहली ज़मीन ख़त्म हो गए थे और समुन्दर भी
नेस्त था। 2 मैं ने नए यरूशलम को भी देखा। यह
मुक़द्दस शहर दुल्हन की सूरत में अल्लाह के पास से
आसमान पर से उतर रहा था। और यह दुल्हन अपने
दूल्हे के लिए तय्यार और सजी हुई थी। 3 मैं ने एक
आवाज़ सुनी जिस ने तख़्त पर से कहा, "अब अल्लाह
की सुकूनतगाह इन्सानों के दरमियान है। वह उन के
साथ सुकूनत करेगा और वह उस की क़ौम होंगे।
अल्लाह ख़ुद उन का ख़ुदा होगा। 4 वह उन की आँखों
से तमाम आँसू पोंछ डालेगा। अब से न मौत होगी न
मातम, न रोना होगा न दर्द, क्यूँकि जो भी पहले था
वह जाता रहा है।"

5 जो तख़्त पर बैठा था उस ने कहा, "मैं सब कुछ
नए सिरे से बना रहा हूँ।" उस ने यह भी कहा, "यह
लिख दे, क्यूँकि यह अल्फ़ाज़ क़ाबिल-ए-एतिमाद
और सच्चे हैं।" 6 फिर उस ने कहा, "काम मुकम्मल हो
गया है! मैं अलिफ़ और यह, अव्वल और आख़िर हूँ।
जो प्यासा है उसे मैं ज़िन्दगी के चश्मे से मुफ़्त पानी
पिलाऊँगा। 7 जो ग़ालिब आएगा वह यह सब कुछ
विरासत में पाएगा। मैं उस का ख़ुदा हूँगा और वह
मेरा फ़र्ज़न्द होगा। 8 लेकिन बुज़दिलों, ग़ैरईमानदारों,
घिनौनों, क़ातिलों, ज़िनाकारों, जादूगरों, बुतपरस्तों
और तमाम झूटे लोगों का अन्जाम जलती हुई गंधक
की शोलाख़ेज़ झील है। यह दूसरी मौत है।"

नया यरूशलम

9 जिन सात फ़रिश्तों के पास सात आख़िरी बलाओं
से भरे प्याले थे उन में से एक ने मेरे पास आ कर कहा,
“आ, मैं तुझे दुल्हन यानी लेले की बीवी दिखाऊँ।”
10 वह मुझे रूह में उठा कर एक बड़े और ऊँचे
पहाड़ पर ले गया। वहाँ से उस ने मुझे मुक़द्दस शहर
यरूशलम दिखाया जो अल्लाह की तरफ़ से आसमान
पर से उतर रहा था। 11 उसे अल्लाह का जलाल हासिल
था और वह अनमोल जौहर बल्कि बिल्लौर जैसे साफ़-
शफ़्फ़ाफ़ यशब की तरह चमक रहा था। 12 उस की
बड़ी और ऊँची फ़सील में बारह दरवाज़े थे, और
हर दरवाज़े पर एक फ़रिश्ता खड़ा था। दरवाज़ों
पर इस्राईल के बारह क़बीलों के नाम लिखे थे।
13 तीन दरवाज़े मशरिक़ की तरफ़ थे, तीन शिमाल
की तरफ़, तीन जुनूब की तरफ़ और तीन मग़रिब की
तरफ़। 14 शहर की फ़सील की बारह बुन्यादें थीं जिन
पर लेले के बारह रसूलों के नाम लिखे थे। 15 जिस
फ़रिश्ते ने मुझ से बात की थी उस के पास सोने का
गज़ था ताकि शहर, उस के दरवाज़ों और उस की
फ़सील की पैमाइश करे। 16 शहर चौकोर था। उस
की लम्बाई उतनी ही थी जितनी उस की चौड़ाई।
फ़रिश्ते ने गज़ से शहर की पैमाइश की तो पता
चला कि उस की लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई 2,400
किलोमीटर है। 17 जब उस ने फ़सील की पैमाइश की
तो चौड़ाई 60 मीटर थी यानी उस पैमाने के हिसाब से
जो वह इस्तेमाल कर रहा था। 18 फ़सील यशब की
थी जबकि शहर ख़ालिस सोने का था, यानी साफ़-
शफ़्फ़ाफ़ शीशे जैसे सोने का। 19 शहर की बुन्यादें
हर क़िस्म के क़ीमती जवाहिर से सजी हुई थीं :
पहली यशब [c]से, दूसरी संग-ए-लाजवर्द [d]से, तीसरी
संग-ए-यमानी [e]से, चौथी ज़ुमुर्रद से, 20 पाँचवीं संग-
ए-सुलेमानी [f]से, छटी अक़ीक़-ए-अह्मर [g]से, सातवीं
ज़बर्जद [h]से, आठवीं आब-ए-बहर [i]से, नव्वीं पुखराज
[j]से, दसवीं अक़ीक़-ए-सबज़ [k]से, ग्यारवीं नीले रंग के
ज़रक़ोन [l]से और बारहवीं याक़ूत-ए-अर्ग़वानी [m]से।
21 बारह दरवाज़े बारह मोती थे और हर दरवाज़ा एक
मोती का था। शहर की बड़ी सड़क ख़ालिस सोने की
थी, यानी साफ़-शफ़्फ़ाफ़ शीशे जैसे सोने की।

22 मैं ने शहर में अल्लाह का घर न देखा, क्यूँकि
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा और लेला ही उस का
मक़्दिस हैं। 23 शहर को सूरज या चाँद की ज़रूरत
नहीं जो उसे रौशन करे, क्यूँकि अल्लाह का जलाल
उसे रौशन कर देता है और लेला उस का चराग़
है। 24 क़ौमें उस की रौशनी में चलेंगी, और ज़मीन
के बादशाह अपनी शान-ओ-शौकत उस में लाएँगे।
25 उस के दरवाज़े किसी भी दिन बन्द नहीं होंगे
क्यूँकि वहाँ कभी भी रात का वक़्त नहीं आएगा।
26 क़ौमों की शान-ओ-शौकत उस में लाई जाएगी।
27 कोई नापाक चीज़ उस में दाख़िल नहीं होगी, न

---

[c] jasper

[d] lapis lazuli

[e] chalcedony

[f] sardonyx। यानी संग-ए-सुलेमानी की एक क़िस्म जिस में नारंजी और सफ़ेद अक़ीक़ के परत यके बाद दीगरे होते हैं।

[g] carnelian

[h] peridot

[i] beryl

[j] topaz

[k] chrysoprase

[l] यूनानी लफ़्ज़ कुछ मुब्हम सा है।

[m] amethyst

वह जो घिनौनी हरकतें करता और झूट बोलता है।
सिर्फ़ वह दाख़िल होंगे जिन के नाम लेले की किताब-
ए-हयात में दर्ज हैं।

मुकाशफ़ा

22 1 फिर फ़रिश्ते ने मुझे ज़िन्दगी के पानी
का दरया दिखाया। वह बिल्लौर जैसा साफ़-
शफ़्फ़ाफ़ था और अल्लाह और लेले के तख़्त से निकल
कर 2 शहर की बड़ी सड़क के बीच में से बह रहा
था। दरया के दोनों किनारों पर ज़िन्दगी का दरख़्त
था। यह दरख़्त साल में बारह दफ़ा फल लाता था,
हर महीने में एक बार। और दरख़्त के पत्ते क़ौमों
की शिफ़ा के लिए इस्तेमाल होते थे। 3 वहाँ कोई भी
मलऊन चीज़ नहीं होगी। अल्लाह और लेले का तख़्त
शहर में होंगे और उस के ख़ादिम उस की ख़िदमत
करेंगे। 4 वह उस का चिहरा देखेंगे, और उस का नाम
उन के माथों पर होगा। 5 वहाँ रात नहीं होगी और
उन्हें किसी चराग़ या सूरज की रौशनी की ज़रूरत
नहीं होगी, क्यूँकि रब ख़ुदा उन्हें रौशनी देगा। वहाँ
वह अबद तक हुकूमत करेंगे।

ईसा की आमद

6 फ़रिश्ते ने मुझ से कहा, "यह बातें क़ाबिल-ए-
एतिमाद और सच्ची हैं। रब ने जो नबियों की रूहों
का ख़ुदा है अपने फ़रिश्ते को भेज दिया ताकि अपने
ख़ादिमों को वह कुछ दिखाए जो जल्द होने वाला
है।"

7 ईसा फ़रमाता है, "देखो, मैं जल्द आऊँगा।
मुबारक है वह जो इस किताब की पेशगोइयों के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता है।"

8 मैं यूहन्ना ने ख़ुद यह कुछ सुना और देखा है। और
उसे सुनने और देखने के बाद मैं उस फ़रिश्ते के पाँओ
में गिर गया जिस ने मुझे यह दिखाया था और उसे
सिज्दा करना चाहता था। 9 लेकिन उस ने मुझ से
कहा, "ऐसा मत कर! मैं भी उसी का ख़ादिम हूँ जिस
का तू, तेरे भाई नबी और किताब की पैरवी करने
वाले हैं। ख़ुदा ही को सिज्दा कर!" 10 फिर उस ने
मझे बताया, "इस किताब की पेशगोइयों पर मुहर
मत लगाना, क्यूँकि वक़्त क़रीब आ गया है। 11 जो
ग़लत काम कर रहा है वह ग़लत काम करता रहे।
जो घिनौना है वह घिनौना होता जाए। जो रास्तबाज़ है
वह रास्तबाज़ी करता रहे। जो मुक़द्दस है वह मुक़द्दस
होता जाए।"

12 ईसा फ़रमाता है, "देखो, मैं जल्द आने को हूँ।
मैं अज्र ले कर आऊँगा और मैं हर एक को उस के
कामों के मुवाफ़िक़ अज्र दूँगा। 13 मैं अलिफ़ और यह,
अव्वल और आख़िर, इब्तिदा और इन्तिहा हूँ।"

14 मुबारक हैं वह जो अपने लिबास को धोते हैं।
क्यूँकि वह ज़िन्दगी के दरख़्त के फल से खाने और
दरवाज़ों के ज़रीए शहर में दाख़िल होने का हक़ रखते
हैं। 15 लेकिन बाक़ी सब शहर के बाहर रहेंगे। कुत्ते,
ज़िनाकार, क़ातिल, बुतपरस्त और तमाम वह लोग
जो झूट को प्यार करते और उस पर अमल करते हैं
सब के सब बाहर रहेंगे।

16 "मैं ईसा ने अपने फ़रिश्ते को तुम्हारे पास भेजा
है ताकि वह जमाअतों के लिए तुम्हें इन बातों की
गवाही दे। मैं दाऊद की जड़ और औलाद हूँ, मैं ही
चमकता हुआ सुब्ह का सितारा हूँ।"

17 रूह और दुल्हन कहती हैं, "आ!"

हर सुनने वाला भी यही कहे, "आ!"

जो प्यासा हो वह आए और जो चाहे वह ज़िन्दगी
का पानी मुफ़्त ले ले।

ख़ुलासा

18 मैं, यूहन्ना हर एक को जो इस किताब की
पेशगोइयाँ सुनता है आगाह करता हूँ, अगर कोई इस
किताब में किसी भी बात का इज़ाफ़ा करे तो अल्लाह
उस की ज़िन्दगी में उन बलाओं का इज़ाफ़ा करेगा
जो इस किताब में बयान की गई हैं। 19 और अगर
कोई नबुव्वत की इस किताब से बातें निकाले तो
अल्लाह उस से किताब में मज़कूर ज़िन्दगी के दरख़्त

के फल से खाने और मुक़द्दस शहर में रहने का हक़
छीन लेगा।

20 जो इन बातों की गवाही देता है वह फ़रमाता
है, “जी हाँ! मैं जल्द ही आने को हूँ।” “आमीन! ऐ
ख़ुदावन्द ईसा आ!”

21 ख़ुदावन्द ईसा का फ़ज़्ल सब के साथ रहे।